मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र

सिद्धान्त आ प्रयोग

गजेन्द्र ठाकुर

खण्ड-१
सिद्धान्त

खण्ड-२
कथाक धार, समयक घाट

खण्ड-३
आख्यानक अन्तर्मन

मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र

सिद्धान्त आ प्रयोग

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र: सिद्धान्त आ प्रयोग

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र

खण्ड १ · सिद्धान्त

खण्ड २ · कथाक धार, समयक घाट

खण्ड ३ · आख्यानक अन्तर्मन

गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन एवं कॉपीराइट

मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र: सिद्धान्त आ प्रयोग

रचनाकार : गजेन्द्र ठाकुर

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

मूल कृतिसभक पूर्व-प्रकाशन, सह-अधिकार आ अन्य संस्करणक अधिकार यथावत्।

एकीकृत संस्करण · मैथिली · ६ × ९ इञ्च

ग्रन्थ-विन्यास

खण्ड १ — सिद्धान्त : कथा-आख्यानशास्त्रक समीक्षा-पद्धति, विवेचन आ आधारग्रन्थ।

खण्ड २ — कथाक धार, समयक घाट : “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क ३०१ समीक्षा प्रकरण; मूल अध्याय −१०० सँ २००।

खण्ड ३ — आख्यानक अन्तर्मन : “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क २१६ अध्यायक समीक्षा आ समग्र आख्यान-विवेचन।

संयुक्त विषयानुक्रमणिका

तीनू खण्डक शीर्षक आ वास्तविक पृष्ठ-सन्दर्भ

खण्ड १ | सिद्धान्त.....25

सारांश.....26

१. प्रस्तावना : कथाक समीक्षा सँ आख्यानक परीक्षण धरि.....26

२. परिभाषा, क्षेत्र आ मूल प्रतिज्ञा.....27

३. भारतीय काव्यशास्त्रसँ प्राप्त कलात्मक परीक्षण.....28

४. नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण-विवेचन.....29

५. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समीक्षात्मक रूपान्तरण.....31

६. कथा-आख्यानशास्त्रक पूर्ण विश्लेषण-क्षेत्र.....32

७. त्रिस्तरीय परीक्षण आ समन्वित समीक्षात्मक सूत्र.....35

८. व्यावहारिक कार्य-विधान : सोलह चरण.....36

९. प्रमाण-नियम : समीक्षक लेल बारह सूत्र.....38

१०. स्वनिर्मित दृष्टान्तपर प्रयोग.....39

११. दीर्घ उपन्यासक अध्यायवार आ समग्र परीक्षण.....39

१२. समीक्षात्मक निर्णय : मापन, सीमा आ पुनर्परीक्षा.....40

१३. निष्कर्ष : समीक्षा एकटा जाँचयोग्य आ संवेदनशील शास्त्र.....41

परिशिष्ट क : अध्यायवार समीक्षा-प्रपत्र.....42

परिशिष्ट ख : निर्णायक अनुसन्धान-प्रश्न.....42

परिशिष्ट ग : मूल शब्दावली.....43

आधारग्रन्थ आ सन्दर्भ-सूची.....45

खण्ड २ | कथाक धार, समयक घाट.....48

आमुख : कथा पढ़बाक स्थिति.....49

प्रकरण १ | मूल अध्याय −१०० — शंख आ रजत.....49

प्रकरण २ | मूल अध्याय −९९ — आत्मसिद्धि-वाद.....55

प्रकरण ३ | मूल अध्याय −९८ — केऽ बनौलक ई जगत?.....65

प्रकरण ४ | मूल अध्याय −९७ — चिंतामणि रत्न.....74

प्रकरण ५ | मूल अध्याय −९६ — स्मृति-रक्षा.....85

प्रकरण ६ | मूल अध्याय −९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि.....96

प्रकरण ७ | मूल अध्याय −९४ — चारि मुखक मौन.....108

प्रकरण ८ | मूल अध्याय −९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न.....117

प्रकरण ९ | मूल अध्याय −९२ — जल-घड़ीक कैदी.....125

प्रकरण १० | मूल अध्याय −९१ — चर्मकार टोलाक उजास.....133

प्रकरण ११ | मूल अध्याय −९० — बुधुआक जलसमाधि.....142

प्रकरण १२ | मूल अध्याय −८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि.....151

प्रकरण १३ | मूल अध्याय −८८ — डाइनक आरोप.....160

प्रकरण १४ | मूल अध्याय −८७ — टोलाक द्वारपर.....169

प्रकरण १५ | मूल अध्याय −८६ — समयक गोहि.....180

प्रकरण १६ | मूल अध्याय −८५ — आमिलक आदेश.....190

प्रकरण १७ | मूल अध्याय −८४ — जंगलक मौन.....201

प्रकरण १८ | मूल अध्याय −८३ — सोनमा माझिन.....202

प्रकरण १९ | मूल अध्याय −८२ — पहिल कबड्डी.....203

प्रकरण २० | मूल अध्याय −८१ — आक्रमणक छाया.....208

प्रकरण २१ | मूल अध्याय −८० — गीतक पहिल पाँति.....216

प्रकरण २२ | मूल अध्याय −७९ — क्षमाक पारी.....227

प्रकरण २३ | मूल अध्याय −७८ — पंजीक बाहर.....237

प्रकरण २४ | मूल अध्याय −७७ — बूढ़बाक मौन.....247

प्रकरण २५ | मूल अध्याय −७६ — नारिकेल पातक पहिल पाठ.....259

प्रकरण २६ | मूल अध्याय −७५ — तर्कक पहिल विद्रोह.....273

प्रकरण २७ | मूल अध्याय −७४ — गाछक रोग.....285

प्रकरण २८ | मूल अध्याय −७३ — मोहनक धुन.....298

प्रकरण २९ | मूल अध्याय −७२ — विवाहक साक्षी.....313

प्रकरण ३० | मूल अध्याय −७१ — महामारीक राति.....324

प्रकरण ३१ | मूल अध्याय −७० — चन्ना गाछीक रोपाई.....337

प्रकरण ३२ | मूल अध्याय −६९ — गज-ग्राहक कथा.....349

प्रकरण ३३ | मूल अध्याय −६८ — अदालतक पहिल तारीख.....362

प्रकरण ३४ | मूल अध्याय −६७ — परदेशक पुकार.....375

प्रकरण ३५ | मूल अध्याय −६६ — स्त्री सभक राति-सभा....389
प्रकरण ३६ | मूल अध्याय −६५ — नकली भूतक जुलूस....401
प्रकरण ३७ | मूल अध्याय −६४ — सुखदेवक बदला....409
प्रकरण ३८ | मूल अध्याय −६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना....416
प्रकरण ३९ | मूल अध्याय −६२ — राहतक प्रतीक्षा....424
प्रकरण ४० | मूल अध्याय −६१ — आकाशक पुच्छलतारा....429
प्रकरण ४१ | मूल अध्याय −६० — अगिनक राति....435
प्रकरण ४२ | मूल अध्याय −५९ — दोसर बाढ़ि....442
प्रकरण ४३ | मूल अध्याय −५८ — तेसर बिपत्ति....452
प्रकरण ४४ | मूल अध्याय −५७ — साहेबक नोटबुक....462
प्रकरण ४५ | मूल अध्याय −५६ — स्वाधीनताक पुकार....470
प्रकरण ४६ | मूल अध्याय −५५ — स्वतंत्रताक भोर....478
प्रकरण ४७ | मूल अध्याय −५४ — जमींदारीक अन्त....484
प्रकरण ४८ | मूल अध्याय −५३ — बिजलीक पहिल दीप....491
प्रकरण ४९ | मूल अध्याय −५२ — सीमाक पुकार....496
प्रकरण ५० | मूल अध्याय −५१ — हरित क्रान्तिक बीया....502
प्रकरण ५१ | मूल अध्याय −५० — आपातकालक अन्हार....508
प्रकरण ५२ | मूल अध्याय −४९ — सूखाक बरख....513
प्रकरण ५३ | मूल अध्याय −४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज....519
प्रकरण ५४ | मूल अध्याय −४७ — खाड़ी देशक बजार....525
प्रकरण ५५ | मूल अध्याय −४६ — सद्भावक परीक्षा....529
प्रकरण ५६ | मूल अध्याय −४५ — उदारीकरणक हवा....533
प्रकरण ५७ | मूल अध्याय −४४ — पहिल कम्प्यूटर....537
प्रकरण ५८ | मूल अध्याय −४३ — सुखल होइत धार....541
प्रकरण ५९ | मूल अध्याय −४२ — हाथक फोनक चमत्कार....545
प्रकरण ६० | मूल अध्याय −४१ — शहरक बजार....550
प्रकरण ६१ | मूल अध्याय −४० — सूचनाक अधिकार....554
प्रकरण ६२ | मूल अध्याय −३९ — काजक गारंटी....558
प्रकरण ६३ | मूल अध्याय −३८ — इंटरनेटक जाल....562
प्रकरण ६४ | मूल अध्याय −३७ — स्क्रीनक पहिल छाया....565

प्रकरण ६५ | मूल अध्याय −३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट 570

प्रकरण ६६ | मूल अध्याय −३५ — देहक बजार खुजैत अछि 574

प्रकरण ६७ | मूल अध्याय −३४ — उज्ज्वलक स्वप्न 578

प्रकरण ६८ | मूल अध्याय −३३ — वकीलक कोटक छाया 582

प्रकरण ६९ | मूल अध्याय −३२ — समुद्रपारक साये 586

प्रकरण ७० | मूल अध्याय −३१ — सत्यव्रतक मौन 590

प्रकरण ७१ | मूल अध्याय −३० — गोप कुमारक दस्तावेज 594

प्रकरण ७२ | मूल अध्याय −२९ — चन्द्रपालक सपना 598

प्रकरण ७३ | मूल अध्याय −२८ — राघवक कोड 602

प्रकरण ७४ | मूल अध्याय −२७ — आरुणिक निर्माण 606

प्रकरण ७५ | मूल अध्याय −२६ — देविकाक गीत 609

प्रकरण ७६ | मूल अध्याय −२५ — मीराक निजता 613

प्रकरण ७७ | मूल अध्याय −२४ — निशांतक बैंक 616

प्रकरण ७८ | मूल अध्याय −२३ — नन्दक जन्म 620

प्रकरण ७९ | मूल अध्याय −२२ — बारह सयक निकट 623

प्रकरण ८० | मूल अध्याय −२१ — अनन्याक प्रश्न 626

प्रकरण ८१ | मूल अध्याय −२० — छपाकक पहिल हिसाब 630

प्रकरण ८२ | मूल अध्याय −१९ — सत्यव्रतक निर्णय 633

प्रकरण ८३ | मूल अध्याय −१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट 636

प्रकरण ८४ | मूल अध्याय −१७ — शीशाक मीनारक जाल 640

प्रकरण ८५ | मूल अध्याय −१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़ 644

प्रकरण ८६ | मूल अध्याय −१५ — चन्द्रपालक खाता 648

प्रकरण ८७ | मूल अध्याय −१४ — पुलक निर्माण 652

प्रकरण ८८ | मूल अध्याय −१३ — गोप कुमारक संकलन 655

प्रकरण ८९ | मूल अध्याय −१२ — चन्ना गाछीक कँपकँपी 659

प्रकरण ९० | मूल अध्याय −११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद 662

प्रकरण ९१ | मूल अध्याय −१० — पुलपर पहिल छपाक 666

प्रकरण ९२ | मूल अध्याय −९ — जाँचक आरम्भ 669

प्रकरण ९३ | मूल अध्याय −८ — प्रमाणक बाहर आएब 673

प्रकरण ९४ | मूल अध्याय −७ — आधा-भूतक अनुभव 676

प्रकरण ९५ | मूल अध्याय −६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना.....679

प्रकरण ९६ | मूल अध्याय −५ — जालक उजागर होएब.....683

प्रकरण ९७ | मूल अध्याय −४ — नामक अन्तिम सूची.....687

प्रकरण ९८ | मूल अध्याय −३ — बारह सय बरखक पूर्णता.....690

प्रकरण ९९ | मूल अध्याय −२ — अगिला पीढ़ीक वचन.....694

प्रकरण १०० | मूल अध्याय −१ — अन्तिम साक्षी.....697

प्रकरण १०१ | मूल अध्याय ० — गढ़ नारिकेल : संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना.....702

प्रकरण १०२ | मूल अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी.....705

प्रकरण १०३ | मूल अध्याय २ — दहिन कातक गाम.....708

प्रकरण १०४ | मूल अध्याय ३ — छपाकक हिसाब.....711

प्रकरण १०५ | मूल अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश.....714

प्रकरण १०६ | मूल अध्याय ५ — तारीखक गोहि.....717

प्रकरण १०७ | मूल अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स.....720

प्रकरण १०८ | मूल अध्याय ७ — श्वासक भाव.....723

प्रकरण १०९ | मूल अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि.....727

प्रकरण ११० | मूल अध्याय ९ — देहक बाजार.....729

प्रकरण १११ | मूल अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल.....732

प्रकरण ११२ | मूल अध्याय ११ — धनक कारी नदी.....735

प्रकरण ११३ | मूल अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात.....738

प्रकरण ११४ | मूल अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण.....740

प्रकरण ११५ | मूल अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता.....743

प्रकरण ११६ | मूल अध्याय १५ — नामक जल.....746

प्रकरण ११७ | मूल अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत.....749

प्रकरण ११८ | मूल अध्याय १७ — जीतक शोक.....752

प्रकरण ११९ | मूल अध्याय १८ — खाली अदालत.....754

प्रकरण १२० | मूल अध्याय १९ — नामक अभिलेख.....757

प्रकरण १२१ | मूल अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला.....760

प्रकरण १२२ | मूल अध्याय २१ — निजताक शपथ.....762

प्रकरण १२३ | मूल अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण.....765

प्रकरण १२४ | मूल अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज.....768

प्रकरण १२५ | मूल अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू....771

प्रकरण १२६ | मूल अध्याय २५ — मोन टांगल....774

प्रकरण १२७ | मूल अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा....777

प्रकरण १२८ | मूल अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन....780

प्रकरण १२९ | मूल अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी....782

प्रकरण १३० | मूल अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना....785

प्रकरण १३१ | मूल अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत....788

प्रकरण १३२ | मूल अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज....791

प्रकरण १३३ | मूल अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी....795

प्रकरण १३४ | मूल अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा....797

प्रकरण १३५ | मूल अध्याय ३४ — सुनैत नदी....800

प्रकरण १३६ | मूल अध्याय ३५ — नामक देहरी....803

प्रकरण १३७ | मूल अध्याय ३६ — घर, भय, सपना....806

प्रकरण १३८ | मूल अध्याय ३७ — तीन कंकड़....809

प्रकरण १३९ | मूल अध्याय ३८ — नामक उच्चारण....811

प्रकरण १४० | मूल अध्याय ३९ — बीजक शान्ति....814

प्रकरण १४१ | मूल अध्याय ४० — ओसक अक्षर....818

प्रकरण १४२ | मूल अध्याय ४१ — नामक नाव....821

प्रकरण १४३ | मूल अध्याय ४२ — भारक वृत्त....824

प्रकरण १४४ | मूल अध्याय ४३ — चलैत भार....827

प्रकरण १४५ | मूल अध्याय ४४ — पोतीक कापी....829

प्रकरण १४६ | मूल अध्याय ४५ — भीतरक हवा....832

प्रकरण १४७ | मूल अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार....835

प्रकरण १४८ | मूल अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान....838

प्रकरण १४९ | मूल अध्याय ४८ — पुकार....841

प्रकरण १५० | मूल अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख....844

प्रकरण १५१ | मूल अध्याय ५० — देहक बादक नाम....847

प्रकरण १५२ | मूल अध्याय ५१ — साक्षीक भार....850

प्रकरण १५३ | मूल अध्याय ५२ — अगिला आवाज....853

प्रकरण १५४ | मूल अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान....856

प्रकरण १५५ | मूल अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात.....859

प्रकरण १५६ | मूल अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र.....862

प्रकरण १५७ | मूल अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा.....866

प्रकरण १५८ | मूल अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न.....869

प्रकरण १५९ | मूल अध्याय ५८ — स्मृति-ऐपक गोहि.....872

प्रकरण १६० | मूल अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड.....875

प्रकरण १६१ | मूल अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन.....878

प्रकरण १६२ | मूल अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव.....880

प्रकरण १६३ | मूल अध्याय ६२ — हरियर बिन्दु.....883

प्रकरण १६४ | मूल अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना.....886

प्रकरण १६५ | मूल अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा.....891

प्रकरण १६६ | मूल अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन.....894

प्रकरण १६७ | मूल अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल.....896

प्रकरण १६८ | मूल अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार.....898

प्रकरण १६९ | मूल अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग.....901

प्रकरण १७० | मूल अध्याय ६९ — नामक चोरी.....903

प्रकरण १७१ | मूल अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही.....905

प्रकरण १७२ | मूल अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस.....908

प्रकरण १७३ | मूल अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी.....911

प्रकरण १७४ | मूल अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार.....913

प्रकरण १७५ | मूल अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार.....916

प्रकरण १७६ | मूल अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क.....918

प्रकरण १७७ | मूल अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा.....921

प्रकरण १७८ | मूल अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि.....923

प्रकरण १७९ | मूल अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद.....926

प्रकरण १८० | मूल अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र.....928

प्रकरण १८१ | मूल अध्याय ८० — हरिहरनक संतान.....931

प्रकरण १८२ | मूल अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम.....934

प्रकरण १८३ | मूल अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह.....936

प्रकरण १८४ | मूल अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला.....939

प्रकरण १८५ | मूल अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित.....941

प्रकरण १८६ | मूल अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा.....944

प्रकरण १८७ | मूल अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव.....947

प्रकरण १८८ | मूल अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास.....949

प्रकरण १८९ | मूल अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ.....952

प्रकरण १९० | मूल अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई.....954

प्रकरण १९१ | मूल अध्याय ९० — नामक संविधान.....957

प्रकरण १९२ | मूल अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति.....959

प्रकरण १९३ | मूल अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह.....962

प्रकरण १९४ | मूल अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि.....965

प्रकरण १९५ | मूल अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी.....967

प्रकरण १९६ | मूल अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा.....969

प्रकरण १९७ | मूल अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा.....972

प्रकरण १९८ | मूल अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट.....975

प्रकरण १९९ | मूल अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश.....978

प्रकरण २०० | मूल अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही.....981

प्रकरण २०१ | मूल अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ.....985

प्रकरण २०२ | मूल अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण.....987

प्रकरण २०३ | मूल अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी.....989

प्रकरण २०४ | मूल अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ.....991

प्रकरण २०५ | मूल अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि.....992

प्रकरण २०६ | मूल अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा.....994

प्रकरण २०७ | मूल अध्याय १०६ — बीजक पहरा.....996

प्रकरण २०८ | मूल अध्याय १०७ — बीजक चोरी.....997

प्रकरण २०९ | मूल अध्याय १०८ — माटिक मुँह.....1000

प्रकरण २१० | मूल अध्याय १०९ — जलक स्मृति.....1003

प्रकरण २११ | मूल अध्याय ११० — आगिक साक्षी.....1005

प्रकरण २१२ | मूल अध्याय १११ — वायुक प्रश्न.....1008

प्रकरण २१३ | मूल अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति.....1010

प्रकरण २१४ | मूल अध्याय ११३ — शब्दक देह.....1012

प्रकरण २१५ | मूल अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा.....1014

प्रकरण २१६ | मूल अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा.....1017

प्रकरण २१७ | मूल अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार.....1020

प्रकरण २१८ | मूल अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण.....1023

प्रकरण २१९ | मूल अध्याय ११८ — देहक अधिकार.....1025

प्रकरण २२० | मूल अध्याय ११९ — श्रमक देह.....1027

प्रकरण २२१ | मूल अध्याय १२० — न्यायक देह.....1029

प्रकरण २२२ | मूल अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा.....1032

प्रकरण २२३ | मूल अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति.....1034

प्रकरण २२४ | मूल अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात.....1036

प्रकरण २२५ | मूल अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि.....1040

प्रकरण २२६ | मूल अध्याय १२५ — निर्णयक धान.....1043

प्रकरण २२७ | मूल अध्याय १२६ — अन्नक न्याय.....1046

प्रकरण २२८ | मूल अध्याय १२७ — भूखक नाम.....1048

प्रकरण २२९ | मूल अध्याय १२८ — प्यासक नाम.....1051

प्रकरण २३० | मूल अध्याय १२९ — नूनक शपथ.....1054

प्रकरण २३१ | मूल अध्याय १३० — स्वादक न्याय.....1056

प्रकरण २३२ | मूल अध्याय १३१ — साझा थारी.....1059

प्रकरण २३३ | मूल अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य.....1063

प्रकरण २३४ | मूल अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट.....1066

प्रकरण २३५ | मूल अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ.....1069

प्रकरण २३६ | मूल अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन.....1071

प्रकरण २३७ | मूल अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा.....1074

प्रकरण २३८ | मूल अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही.....1077

प्रकरण २३९ | मूल अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस.....1080

प्रकरण २४० | मूल अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच.....1082

प्रकरण २४१ | मूल अध्याय १४० — चल चौपाल.....1087

प्रकरण २४२ | मूल अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला.....1089

प्रकरण २४३ | मूल अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार.....1092

प्रकरण २४४ | मूल अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही.....1094

प्रकरण २४५ | मूल अध्याय १४४ — नामक यात्रा.....1097

प्रकरण २४६ | मूल अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार.....1099

प्रकरण २४७ | मूल अध्याय १४६ — मुहरक दाग.....1102

प्रकरण २४८ | मूल अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक.....1104

प्रकरण २४९ | मूल अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान.....1109

प्रकरण २५० | मूल अध्याय १४९ — जालक नक्शा.....1111

प्रकरण २५१ | मूल अध्याय १५० — मुहरक छाया.....1113

प्रकरण २५२ | मूल अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ.....1116

प्रकरण २५३ | मूल अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत.....1118

प्रकरण २५४ | मूल अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम.....1120

प्रकरण २५५ | मूल अध्याय १५४ — बाबाक वचन.....1123

प्रकरण २५६ | मूल अध्याय १५५ — सेवाक खाता.....1125

प्रकरण २५७ | मूल अध्याय १५६ — दानक ऋण.....1129

प्रकरण २५८ | मूल अध्याय १५७ — लोहेक संदूक.....1132

प्रकरण २५९ | मूल अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान.....1134

प्रकरण २६० | मूल अध्याय १५९ — मृतकक सहमति.....1136

प्रकरण २६१ | मूल अध्याय १६० — गोदामक छाया.....1139

प्रकरण २६२ | मूल अध्याय १६१ — फोनक कैद.....1141

प्रकरण २६३ | मूल अध्याय १६२ — आवाजक मोहर.....1143

प्रकरण २६४ | मूल अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान.....1145

प्रकरण २६५ | मूल अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट.....1149

प्रकरण २६६ | मूल अध्याय १६५ — छायाक देह.....1151

प्रकरण २६७ | मूल अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार.....1153

प्रकरण २६८ | मूल अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज.....1156

प्रकरण २६९ | मूल अध्याय १६८ — शहरक गला.....1159

प्रकरण २७० | मूल अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा.....1161

प्रकरण २७१ | मूल अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल.....1164

प्रकरण २७२ | मूल अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत.....1166

प्रकरण २७३ | मूल अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ.....1171

प्रकरण २७४ | मूल अध्याय १७३ — पंजीक पहरा.....1173

प्रकरण २७५ | मूल अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट..... 1175

प्रकरण २७६ | मूल अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम..... 1178

प्रकरण २७७ | मूल अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार..... 1180

प्रकरण २७८ | मूल अध्याय १७७ — घर-घरक कागज..... 1182

प्रकरण २७९ | मूल अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी..... 1184

प्रकरण २८० | मूल अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह..... 1186

प्रकरण २८१ | मूल अध्याय १८० — शहरक खाता..... 1190

प्रकरण २८२ | मूल अध्याय १८१ — सिमक छाया..... 1193

प्रकरण २८३ | मूल अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा..... 1195

प्रकरण २८४ | मूल अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा..... 1197

प्रकरण २८५ | मूल अध्याय १८४ — आवाजक नकाब..... 1200

प्रकरण २८६ | मूल अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा..... 1202

प्रकरण २८७ | मूल अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम..... 1204

प्रकरण २८८ | मूल अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी..... 1207

प्रकरण २८९ | मूल अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर..... 1210

प्रकरण २९० | मूल अध्याय १८९ — लोहेक पेटी..... 1213

प्रकरण २९१ | मूल अध्याय १९० — नील पंजी..... 1215

प्रकरण २९२ | मूल अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी..... 1217

प्रकरण २९३ | मूल अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर..... 1220

प्रकरण २९४ | मूल अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा..... 1222

प्रकरण २९५ | मूल अध्याय १९४ — साँसक समन..... 1224

प्रकरण २९६ | मूल अध्याय १९५ — रोकल खाता..... 1227

प्रकरण २९७ | मूल अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ..... 1231

प्रकरण २९८ | मूल अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम..... 1233

प्रकरण २९९ | मूल अध्याय १९८ — अपराधीक धरती..... 1236

प्रकरण ३०० | मूल अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान..... 1239

प्रकरण ३०१ | मूल अध्याय २०० — नामक पहरुआ..... 1241

अन्तिम आलोचनात्मक अध्याय : असङ्गति आख्यान-विधि कोना बनैत अछि..... 1248

खण्ड ३ | आख्यानक अन्तर्मन..... 1254

आलोचनात्मक प्रवेश : कृति, प्रमाण आ पद्धति..... 1255

अध्याय १ — मृतकक रसोइ..... 1256

अध्याय २ — सत्ताइस नाम..... 1258

अध्याय ३ — चौकक समय..... 1261

अध्याय ४ — नदीक पहिल घर..... 1264

आदि-पर्वक पहिल चारि अध्यायक तुलनात्मक निष्कर्ष..... 1267

अध्याय ५ — जनकक माप..... 1268

अध्याय ६ — घरक पहाड़ा..... 1271

अध्याय ७ — पाँच पीढ़ीक चौकी..... 1275

अध्याय ८ — सीमातीर्थक चिट्ठी..... 1278

अध्याय ५–८ : तुलनात्मक आख्यानशास्त्रीय निष्कर्ष..... 1282

अध्याय ९ — बन्द बाहा..... 1284

अध्याय १० — नामक छाँह..... 1287

अध्याय ११ — अपन फोन अपन शर्त..... 1289

अध्याय १२ — घाटक पाछाँ शहर..... 1291

आदि-पर्व / बालकाण्ड : अध्याय ९–१२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय निष्कर्ष..... 1294

अध्याय १३ — बजाओल गेल मृतका..... 1295

अध्याय १४ — प्रतिनिधिक कुर्सी..... 1298

अध्याय १५ — द्रौपदीक प्रश्न..... 1300

अध्याय १६ — विकर्णक बादक मौन..... 1303

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १३–१६ क संयुक्त विवेचन..... 1306

अध्याय १७ — कैकेयीक देय..... 1307

अध्याय १८ — उर्मिलाक राति..... 1310

अध्याय १९ — चम्पाक सन्देश..... 1313

अध्याय २० — जल्दी प्रकाशन..... 1315

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १७–२० क तुलनात्मक आख्यानशास्त्रीय विवेचन..... 1319

अध्याय २१ — ककर आवाज..... 1320

अध्याय २२ — घरक आदेश..... 1323

अध्याय २३ — भरतक अस्वीकार..... 1326

अध्याय २४ — बाहरक ओसार 1329

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १३–२४ क सम्पूर्ण पर्ववार कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1332

अध्याय २५ — रेलमे खाली जगह 1334

अध्याय २६ — गुहक तट 1337

अध्याय २७ — शबरीक भोर 1340

अध्याय २८ — हिडिम्बाक सन्धि 1343

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २५–२८ क तुलनात्मक विवेचन 1346

अध्याय २९ — बच्चा चोर 1348

अध्याय ३० — अहल्याक आवाज 1351

अध्याय ३१ — एकलव्यक सीख 1354

अध्याय ३२ — अथातो ककर 1357

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २९–३२ क तुलनात्मक आलोचना 1361

अध्याय ३३ — दीपक आ कागद 1363

अध्याय ३४ — अनदेखल कारण 1365

अध्याय ३५ — गवयक पहिचान 1368

अध्याय ३६ — बाहरक पाठशाला 1370

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २५–३६ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1373

अध्याय ३७ — रान्हनिहारक नाम 1376

अध्याय ३८ — बृहन्नलाक कक्षा 1379

अध्याय ३९ — ताँतीक देय 1381

अध्याय ४० — कपड़ा पंजी 1384

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ३७–४० क संयुक्त आलोचना 1387

अध्याय ४१ — बरहीक हस्ताक्षर 1389

अध्याय ४२ — माटिक भविष्य 1391

अध्याय ४३ — कसेरा आ सोनार 1395

अध्याय ४४ — लोहारक औजार 1398

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ४१–४४ क संयुक्त आलोचना 1401

अध्याय ४५ — जोलहाक खेप 1403

अध्याय ४६ — धोबि रंगरेज धुनिया 1405

अध्याय ४७ — फाटकक माप 1407

अध्याय ४८ — छद्मक तीन कारण 1410

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ३७–४८ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1413

अध्याय ४९ — सहयोगक दाम 1415

अध्याय ५० — सुग्रीवक भय 1417

अध्याय ५१ — ताराक गणना 1419

अध्याय ५२ — अङ्गदक कल्हि 1422

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ४९–५२ क संयुक्त आलोचना 1425

अध्याय ५३ — रुहानीक चाभी 1427

अध्याय ५४ — अनुष्ठान बिना प्रधान 1429

अध्याय ५५ — हराएल बच्चाक माए 1432

अध्याय ५६ — दानक दवाइ 1435

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ५३–५६ क संयुक्त मूल्यांकन 1438

अध्याय ५७ — जनक आ जनपद 1439

अध्याय ५८ — कारणक जाल 1442

अध्याय ५९ — दूतक शर्त 1444

अध्याय ६० — पहिल सन्धि टूटल 1447

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ४९–६० क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1449

अध्याय ६१ — गड्गाक शर्त 1451

अध्याय ६२ — भीष्मक प्रतिज्ञा 1454

अध्याय ६३ — अम्बाक समय 1457

अध्याय ६४ — शिखण्डीक निर्णय 1460

भीष्म-पर्वक पहिल चारि अध्याय : तुलनात्मक आलोचनात्मक निष्कर्ष 1463

अध्याय ६५ — अस्पतालक पुरान पाँख 1465

अध्याय ६६ — कृष्ण अर्जुनक विराम 1468

अध्याय ६७ — दूरक देखाइ 1470

अध्याय ६८ — चेतावनीक प्रति 1473

भीष्म-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ६५–६८ क तुलनात्मक आलोचना 1476

अध्याय ६९ — अनुपस्थितिक अर्थ 1477

अध्याय ७० — महेशक राति 1480

अध्याय ७१ — मृत्यु आ दस्तावेज 1483

अध्याय ७२ — संजयक दूरी 1486

भीष्म-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ६१–७२ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1489

अध्याय ७३ — सीमातीर्थक उतराइ 1491

अध्याय ७४ — द्रोणक देय 1494

अध्याय ७५ — एक्के आखिरी अंक 1496

अध्याय ७६ — एकलव्यक बाद 1499

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७३–७६ क संयुक्त आलोचना 1501

अध्याय ७७ — त्रिजटाक सन्देश 1503

अध्याय ७८ — मन्दोदरीक घर 1506

अध्याय ७९ — चेहराक समानता 1509

अध्याय ८० — बुनकरक दोसर खाता 1511

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७७–८० क संयुक्त आलोचना 1514

अध्याय ८१ — बच्चाक दोसर ठाम 1516

अध्याय ८२ — मैथिलीक पन्ना 1519

अध्याय ८३ — सरिताक मेहनत 1521

अध्याय ८४ — गुरुक स्वीकार 1524

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७३–८४ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1527

अध्याय ८५ — राधाक श्रम 1530

अध्याय ८६ — मूल पन्ना 1533

अध्याय ८७ — पाँच बदलल परिचय 1535

अध्याय ८८ — चौदह विसंगति 1538

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८५–८८ क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन 1541

अध्याय ८९ — चारि जीवित चारि मृत 1542

अध्याय ९० — सुभद्राक शर्त 1545

अध्याय ९१ — सुविधाजनक त्रुटि 1548

अध्याय ९२ — आरोपक भङ्ग 1552

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८९–९२ क संयुक्त मूल्यांकन 1556

अध्याय ९३ — खेपक सम्बन्ध 1557

अध्याय ९४ — पालकक अधिकार 1560

अध्याय ९५ — हत्याक आदेश 1563

अध्याय ९६ — सत्ताइसक मिलान..... 1566

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८५–९६ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन..... 1569

अध्याय ९७ — शल्यक निष्ठा..... 1571

अध्याय ९८ — विभीषणक बाट..... 1573

अध्याय ९९ — कुम्भकर्णक जागब..... 1575

अध्याय १०० — दूसर समझौता..... 1576

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ९७–१०० क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन..... 1579

अध्याय १०१ — रोगीक समय..... 1580

अध्याय १०२ — मरम्मतिक तह..... 1584

अध्याय १०३ — सकारात्मक युक्ति..... 1587

अध्याय १०४ — शक्तिक प्रश्न..... 1590

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०१–१०४ क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन..... 1593

अध्याय १०५ — बिनौटक पुल..... 1595

अध्याय १०६ — उपचारक स्वीकार..... 1598

अध्याय १०७ — पाँच हस्ताक्षर..... 1600

अध्याय १०८ — जलस्तरक बाहर..... 1603

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ९७–१०८ क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1606

अध्याय १०९ — रातिक सन्धि..... 1609

अध्याय ११० — गोदाम खुलल..... 1612

अध्याय १११ — नावक क्षमता..... 1614

अध्याय ११२ — ईशानक हाथ..... 1617

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०९–११२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1619

अध्याय ११३ — अश्वत्थामाक राति..... 1621

अध्याय ११४ — दवाइ आ बचल श्वास..... 1624

अध्याय ११५ — तस्वीरक अनुमति..... 1627

अध्याय ११६ — पुरान पाँख..... 1629

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ११३–११६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1632

अध्याय ११७ — नैराक चुनाव..... 1633

अध्याय ११८ — उर्मिलाक थाकल हाथ..... 1636

अध्याय ११९ — देरिक दूरी..... 1639

अध्याय १२० — भोरक पहिने 1642

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०९–१२० क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन 1645

अध्याय १२१ — नामक पुष्टि 1647

अध्याय १२२ — अन्तिम देह 1650

अध्याय १२३ — गान्धारीक प्रश्न 1652

अध्याय १२४ — मन्दोदरीक भीतर 1655

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२१–१२४ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1657

अध्याय १२५ — कुन्तीक स्वीकृति 1658

अध्याय १२६ — भातक मात्रा 1661

अध्याय १२७ — बचलक दोष 1663

अध्याय १२८ — चम्पाक उपचार 1665

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२५–१२८ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1668

अध्याय १२९ — रुहानीक सूची 1670

अध्याय १३० — द्रौपदीक बचल दिन 1672

अध्याय १३१ — सीताक अग्नि 1675

अध्याय १३२ — नम्बरक बाद 1678

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२१–१३२ क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1681

अध्याय १३३ — शासन के लेत 1683

अध्याय १३४ — युधिष्ठिरक अरुचि 1685

अध्याय १३५ — भीष्मक शय्या 1688

अध्याय १३६ — पहिल बयान 1690

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३३–१३६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1693

अध्याय १३७ — पुरान प्रतिवेदन 1695

अध्याय १३८ — दोषक अलग खाना 1698

अध्याय १३९ — तर्कक पुनरागमन 1701

अध्याय १४० — कर्म आ कारण 1704

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३७–१४० क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन 1708

अध्याय १४१ — मदद आ मुकदमा 1709

अध्याय १४२ — दवाइक स्रोत 1712

अध्याय १४३ — आश्रयक नियम 1714

अध्याय १४४ — कामक जिज्ञासा..... 1717

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३३–१४४ क समग्र कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1719

अध्याय १४५ — राशनक पाँति..... 1721

अध्याय १४६ — फकीराक पास..... 1724

अध्याय १४७ — संकेतक कक्षा..... 1726

अध्याय १४८ — पद्माक फीस..... 1728

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४५–१४८ क संयुक्त कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1731

अध्याय १४९ — जानकीक खण्डन..... 1733

अध्याय १५० — चेहरा आ प्रमाण..... 1735

अध्याय १५१ — शम्बूकक पाठ..... 1737

अध्याय १५२ — माटिक बकाया..... 1740

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४९–१५२ क संयुक्त कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1743

अध्याय १५३ — नदीक माप..... 1744

अध्याय १५४ — सहमतिक दस्तावेज..... 1747

अध्याय १५५ — हिंसाक गवाही..... 1749

अध्याय १५६ — नियमक अपवाद..... 1752

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४५–१५६ क समग्र कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1755

अध्याय १५७ — छूटल घोड़ाक बाट..... 1758

अध्याय १५८ — अर्जुनक पहिचान..... 1761

अध्याय १५९ — चलैत अभिलेख..... 1764

अध्याय १६० — सरिताक योगदान..... 1767

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १५७–१६० क संयुक्त कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1771

अध्याय १६१ — मैथिलीक अपना नाम..... 1773

अध्याय १६२ — प्रमाताक दावा..... 1775

अध्याय १६३ — पुरान पुस्तक नव भूमिका..... 1777

अध्याय १६४ — उर्मिलाक देय..... 1779

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६१–१६४ क संयुक्त कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1781

अध्याय १६५ — वाक्यक तात्पर्य..... 1782

अध्याय १६६ — बुनकरक बाजार..... 1784

अध्याय १६७ — बिना सम्राटक नाप..... 1786

अध्याय १६८ — फेर लौटत प्रति..... 1788

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६५–१६८ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1791

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १५७–१६८ क सम्पूर्ण आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1792

अध्याय १६९ — धृतराष्ट्रक हाथ..... 1793

अध्याय १७० — गान्धारीक प्रस्थान..... 1795

अध्याय १७१ — कुन्तीक शेष वचन..... 1797

अध्याय १७२ — ईशानक कमरा..... 1800

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६९–१७२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1802

अध्याय १७३ — मैथिलीक दूरी..... 1804

अध्याय १७४ — माइक औषधि..... 1807

अध्याय १७५ — कबीरक चिट्ठी..... 1809

अध्याय १७६ — सरिताक भोर..... 1811

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १७३–१७६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1813

अध्याय १७७ — वृद्धक सहमति..... 1816

अध्याय १७८ — विदुरक मार्ग..... 1818

अध्याय १७९ — निजी क्षमा..... 1820

अध्याय १८० — आश्रयक बाहर..... 1822

अध्याय १८१ — यादवक उत्सव..... 1824

अध्याय १८२ — मादक दिन..... 1826

अध्याय १८३ — स्मारकक ठेका..... 1828

अध्याय १८४ — रुहानीक चुनाव..... 1830

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६९–१८० क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1832

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८१–१८४ क प्रथम संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1834

अध्याय १८५ — दानक शर्त..... 1835

अध्याय १८६ — ताराक भूल..... 1837

अध्याय १८७ — रसोइक घाटा..... 1839

अध्याय १८८ — औजारक बाजार..... 1841

अध्याय १८९ — बलरामक दूराइ..... 1842

अध्याय १९० — कृष्णक अन्त..... 1844

अध्याय १९१ — सबटा टूटल नहि..... 1845

अध्याय १९२ — नव मालिकक डर..... 1847

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८५–१८८ क संयुक्त मध्यवर्ती आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1849

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८१–१९२ क सम्पूर्ण समग्र कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1850

अध्याय १९३ — यात्राक घोषणा..... 1851

अध्याय १९४ — द्रौपदीक बाट..... 1853

अध्याय १९५ — भाइसभक दूरी..... 1855

अध्याय १९६ — फकीराक स्टेशन..... 1857

अध्याय १९७ — पहिल कोठरी..... 1858

अध्याय १९८ — मृतकक फोन..... 1860

अध्याय १९९ — बिना नामक कथा..... 1862

अध्याय २०० — शब्दक अन्तिम जाँच..... 1864

महाप्रस्थानिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १९३–२०० क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1866

अध्याय २०१ — सीमातीर्थक विदाइ..... 1867

अध्याय २०२ — कबीरक वापसी..... 1870

अध्याय २०३ — साथक जीव..... 1873

अध्याय २०४ — पर्वत नहि दरबज्जा..... 1875

अध्याय २०५ — स्वर्गक सूची..... 1878

अध्याय २०६ — उत्तरा आ परीक्षित..... 1881

अध्याय २०७ — जनमेजयक प्रश्न..... 1883

अध्याय २०८ — उग्रश्रवाक श्रोता..... 1886

महाप्रस्थानिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १९३–२०४ क समग्र आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन..... 1889

स्वर्गारोहणिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय २०५–२०८ क संयुक्त मूल्यांकन..... 1890

अध्याय २०९ — लव कुशक पाठ..... 1892

अध्याय २१० — भामतीक चारिम सूत्र..... 1894

अध्याय २११ — उदयनक शेष तर्क..... 1895

अध्याय २१२ — गङ्गेशक कक्षा..... 1897

अध्याय २१३ — मैथिलीक अपना वाणी..... 1899

अध्याय २१४ — नैराक खाली जगह..... 1901

अध्याय २१५ — वितरित अभिलेख..... 1902

अध्याय २१६ — कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक..... 1904

स्वर्गारोहणिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय २०५–२१६ क समग्र कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन.....1906

समग्र उपन्यास : आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन.....1908

असङ्गति आ आख्यान-विधि.....1911

खण्ड १ | सिद्धान्त

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र

सारांश

मैथिली कथा-साहित्यक सम्यक् समीक्षाक लेल मात्र कथासार, पात्रक गुण-दोष अथवा सामाजिक सन्देश पर्याप्त नहि। कथा केहन घटनासंसार रचैत अछि; कथन ओहि संसारकेँ कोना क्रमबद्ध, सीमित, विस्तारपूर्वक वा विखण्डित करैत अछि; शब्दसँ व्यक्त अर्थक अतिरिक्त कोन ध्वनि, रस आ अर्थान्तर उठैत अछि; आ उपन्यासक ऐतिहासिक-सामाजिक दाबी कोन स्रोतपर टिकैत अछि—ई प्रश्न अलग-अलग अछि, मुदा एक-दोसरसँ सम्बद्ध। एहि आलेखमे ‘समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र’ नामक एकटा प्रस्तावित मैथिली समीक्षा-पद्धति विकसित कएल गेल अछि। एकर तीनटा आधार अछि: भारतीय काव्यशास्त्रक कलात्मक-अनुभूतिपरक विवेचन; गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्यायसँ प्रेरित अवधारणात्मक शुद्धि, प्रमाण-भेद आ अनुमान-परीक्षण; आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुस्रोत, बहुस्वर, मौन-विवेचन आ समान आलोचनात्मक कसौटी। आधुनिक आख्यानशास्त्रक कथा–कथन, काल-क्रम, अवधि, आवृत्ति, दृष्टिबिन्दु, कथावाचक, कथनस्तर, घटनात्मकता, चरित्र-संजाल, स्थान, भाषा, विधागत मिश्रण, पाठक आ माध्यम-सरणि एहि त्रिवेणीमे कार्यकारी उपकरण बनैत अछि। पद्धति साहित्यिक कल्पनाकेँ ऐतिहासिक दस्तावेज नहि मानैत; एतय आन्तरिक कथा-सत्य, पाठीय प्रमाण आ बाह्य ऐतिहासिक सत्य अलग जाँच-क्षेत्र अछि। आलेखमे विश्लेषण-सूत्र, कार्यप्रवाह, अध्यायवार प्रपत्र, घटना-पञ्जी, प्रतिवाद-परीक्षण, काल्पनिक दृष्टान्त आ शब्दावली देल गेल अछि। एकर उद्देश्य कोनो एकमात्र अन्तिम निर्णय आरोपित करब नहि, अपितु जाँचयोग्य, पुनर्परीक्षणीय, कलात्मक रूपसँ संवेदनशील आ सामाजिक रूपसँ उत्तरदायी समीक्षा सम्भव करब अछि।

बीजशब्द: कथा-आख्यानशास्त्र; मैथिली; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; औचित्य; नव्य-न्याय; प्रमाण; व्याप्ति; अवच्छेदक; विदेह; समानान्तर इतिहास; कथनकाल; दृष्टिबिन्दु; बहुस्वर।

१. प्रस्तावना : कथाक समीक्षा सँ आख्यानक परीक्षण धरि

मैथिलीमे कथा, उपन्यास, लोकगाथा, आख्यानात्मक कविता, आत्मवृत्त आ मौखिक कथनक सुदीर्घ परम्परा अछि। मुदा कोनो उपन्यासक समीक्षा जँ ‘विषय उत्तम अछि’, ‘चरित्र प्रभावशाली अछि’ वा ‘लेखक समाजक यथार्थ देखौलनि’ एतबे कहि रुकि जाइत अछि, तँ पाठककेँ ओ नहि बुझा पबैत अछि जे कृतिक प्रभाव कोन शिल्पगत क्रियासँ बनल, कोन घटनासँ पाठकीय अपेक्षा बदलल, आ कोन कथन-चयन अन्य सम्भावनाकेँ अदृश्य कऽ देलक। ई कमी पूरा करबाक लेल केवल यूरोपीय आख्यानशास्त्रक शब्द-सूची अनुवाद करब सेहो पर्याप्त नहि।

एहि प्रस्तावक आरम्भिक मान्यता अछि जे साहित्यिक कथा एकहि समयमे निर्मित संसार, कहल गेल विन्यास, अनुभूतिमूलक रचना आ समाजमे उपलब्ध पाठीय हस्तक्षेप अछि। एहि चारूकेँ विश्लेषणक अलग प्रवेशद्वार देब आवश्यक अछि। एकटा पात्रक कथन साहित्यिक रूपेँ अत्यन्त विश्वसनीय लगि सकैत अछि, मुदा ओकर कथित इतिहास वास्तविक इतिहासक प्रमाण नहि बनि जाइत। ओहिना अभिलेखमे नहि भेटल आवाज कथामे सुन्ना पड़ि

सकैत अछि, मुदा केवल अभावक आधारपर लेखकक मंशा वा वास्तविक घटनाक अनुमान निश्चित नहि कएल जा सकैत।

ई पद्धति किछु स्थापित शास्त्रक ‘मिश्रण’ मात्र नहि; एकरा बीचक सम्भावित टकरावकेँ नियमबद्ध करब एकर मूल काम अछि। रसक प्रश्न पूछैत अछि—अनुभूति कोना सधल? आख्यानशास्त्र पूछैत अछि—सूचना केकर दृष्टिसँ आ केहन क्रममे देल गेल? नव्य-न्याय प्रेरित समीक्षा पूछैत अछि—एहि निष्कर्षक आधार की, आ कोन शर्तमे निष्कर्ष चुकि सकैत अछि? समानान्तर इतिहास पूछैत अछि—ककर आवाज संग्रहित अछि, ककर नहि, आ स्रोत-संरक्षणक असमानता निष्कर्षकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?

‘समप्रमाण’ शब्द एतय ई नैतिक-शोधगत आग्रह जनबैत अछि जे अधिकारसम्पन्न, उपेक्षित, कथाकार-प्रिय आ आलोचक-प्रिय सभ दाबीपर स्पष्ट तथा समान रूपसँ विवेचित प्रमाण-नियम लागू हो। ‘समानान्तर’ शब्दक अर्थ कोनो केन्द्रीय सूचीमे हाशियाक नाम जोड़ि देब मात्र नहि; कथा-निर्माण, सामाजिक कारण, दृष्टिबिन्दु आ अभिलेख-वितरणक समानकालिक अनेक धाराकेँ परस्पर प्रभावक संग पढ़ब अछि। प्रस्तुत नाम एकटा नूतन पद्धतिक प्रस्ताव अछि, प्राचीन आचार्य द्वारा प्रतिपादित स्थापित सम्प्रदायक नाम नहि।

२. परिभाषा, क्षेत्र आ मूल प्रतिज्ञा

२.१ कथा, कथन आ आख्यान

‘कथा’ सँ आशय कल्पित अथवा कथित जगतमे घटित अवस्था, घटना, अभिकर्ता आ कारण-परिणामक सम्भावित क्रमसँ अछि। ‘कथन’ ओ प्रक्रिया अछि जाहिसँ कोनो वाचक, माध्यम वा पाठ ई सामग्री ककरो समक्ष राखैत अछि। ‘आख्यान’ ओ समग्र गढ़न अछि जाहिमे सामग्री, चयन, क्रम, दृष्टिबिन्दु, भाषा, मौन, पाठकीय अनुमान आ सांस्कृतिक संकेत एकठाम कार्य करैत अछि। एहि तीनूकेँ अलग चिन्हलासँ ‘की भेल?’ आ ‘कोना कहल गेल?’ कैँ गड्डमड्ड होयबासँ बचाओल जा सकैत अछि।

कथाक कालक्रम ‘पहिने बाँध बनल, तकर बाद बाढ़ि आएल, अन्तमे पलायन भेल’ भऽ सकैत अछि; कथन एहीमे सँ पलायनसँ आरम्भ कऽ पाछाँ बाँधक इतिहासक स्मृति खोलि सकैत अछि। घटनाक कालक्रम आ कथनक क्रमक बीच अन्तर अर्थक सक्रिय स्रोत अछि; एकरा केवल ‘रोचक ढङ्ग’ कहि छोड़ब अनुचित।

२.२ चार तरहक सत्य-दाबी

पहिल, पाठीय तथ्य: मुद्रित पाठमे कोन शब्द, घटना, सन्दर्भ वा कथन उपस्थित अछि, जे पृष्ठ वा अनुच्छेदसँ देखाओल जा सकैत अछि। दोसर, कथाजगतक तथ्य: कृतिक भीतर कोन घटना घटित मानल गेल, जकर निर्णय वाचकक विश्वसनीयता आ पाठकक उपलब्ध सूचनापर निर्भर भऽ सकैत अछि। तेसर, व्याख्यात्मक दाबी: प्रतीक, निहित अर्थ, चरित्र-प्रेरणा वा रसक आलोचनात्मक अनुमान, जकर एकाधिक समुचित पठन सम्भव अछि। चारिम, बाह्य ऐतिहासिक दाबी: कृतिक बाहरक घटना, तिथि, संस्था, सामाजिक आँकड़ा अथवा दस्तावेजक सम्बन्धमे कथन; एकरा स्वतन्त्र स्रोत आ स्रोत-परीक्षण चाही।

उपन्यासमे ‘एक सय पोखरि सुखा गेल’ कहल गेल अछि, ई पाठीय तथ्य भऽ सकैत अछि। कथाक भीतर सचमुच एतेक पोखरि सुखा गेल कि कथावाचक अतिशयोक्ति कएलक, ई आन्तरिक विश्वसनीयताक प्रश्न अछि। वास्तविक क्षेत्रमे ओहि वर्ष सचमुच एतेक पोखरि सुखायल छल कि नहि, ई बाह्य स्रोतपर निर्भर अछि। चारू स्तरक अलग निष्कर्ष आ अलग अनिश्चितता-चिह्न राखल जाए।

२.३ पद्धतिक सात प्रतिज्ञा

एक: कलात्मक अर्थक मूल्याङ्कन बिना कथन-विधानक परीक्षण अधूरा अछि। दू: पाठीय साक्ष्य देखौने बिना व्याख्या निर्णायक नहि। तीन: भाव-अनुभवकेँ यान्त्रिक गिनतीमे नहि समेटल जाए। चारि: आन्तरिक कथा-सत्य आ बाह्य इतिहासक सत्य अलग अछि। पाँच: बहुवचन, मौन आ सामाजिक स्थानक अन्वेषण सघन पाठपठनसँ जुड़ल रहय। छओ: प्रत्येक अनुमानक सीमा, प्रतिदृष्टान्त आ सम्भावित उपाधि लिखल जाए। सात: आलोचक अपन दृष्टि, चयन, प्रमाण-स्रोत आ संशोधनक सम्भावना प्रकट करय।

३. भारतीय काव्यशास्त्रसँ प्राप्त कलात्मक परीक्षण

३.१ रस : भावक विन्यास, नहि केवल भावनाम

भरतमुनिक रस-सिद्धान्तक उपयोग कथाक संवेदनात्मक संगठन जाँचबाक लेल होयत। विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आ स्थायीभावक परस्पर सम्बन्धसँ रस-निष्पत्ति सम्बन्धी प्रश्न उठायल जाए। कथा दुःखक वर्णन करैत अछि, एतबासँ करुण रसक सिद्धि स्वतः नहि; पाठककेँ चरित्रक अवस्था, दृश्य-विन्यास, लय, विराम, प्रतीक्षा आ अनुभूतिक रूपान्तरण कोना उपलब्ध होइत अछि, तकर जाँच आवश्यक अछि।

रसकेँ एकटा तय ‘सही’ पाठकीय अनुभव मानि आदेश देब अनुचित। पाठकक भाषा-परिचय, जातीय-सामाजिक स्थिति, स्मृति, उम्र आ संवेदनशीलता अनुभव बदलि सकैत अछि। एतेक भिन्नताक बीच आलोचक एतबे प्रमाणित कऽ सकैत अछि जे पाठ कोन भाव-सम्भावना सक्रिय करैत अछि, कोन दृश्य वा वाक्य ओकर आधार अछि, आ अन्य पठनक सम्भावना कोन अछि।

३.२ ध्वनि : कहलग बातक पाछाँक संगति

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त पाठमे प्रत्यक्ष अभिधेय अर्थसँ अलग संकेतित अर्थक अन्वेषण करबाक विधि दैत अछि। उदाहरणार्थ, सूखल घाटपर ‘जल-करक रसीद’ झुलैत अछि—ई दृश्य प्रशासनिक कागज मात्र नहि, श्रम आ अधिकारक विडम्बनाकेँ संकेत करि सकैत अछि। मुदा एहन ध्वनि प्रस्तावित करैत आलोचक पाठक अन्य प्रसंग, आवृत्त छवि आ विरोधी संकेत देखौक; केवल अपन इच्छित राजनीति आरोपित नहि करय।

ध्वनि आ नव्य-न्यायक अनुमान एक नहि। ध्वनि सौन्दर्यात्मक-सांकेतिक सम्भावना खोलि सकैत अछि; ऐतिहासिक निष्कर्ष लेल अतिरिक्त दस्तावेज जरूरी। ‘ई दृश्य शोषणक ध्वनि उत्पन्न करैत अछि’ आ ‘अमुक वर्ष अमुक राजस्व-विभाग शोषण कएलक’—दुनू वाक्यक प्रमाणभार भिन्न अछि।

३.३ वक्रोक्ति, रीति, गुण आ अलङ्कार

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टि शब्द, वाक्य, प्रसंग, कथानक आ समग्र प्रबन्धक असाधारण वक्र विन्यास पर विचारक आधार दैत अछि। पात्रक अप्रत्याशित प्रत्युत्तर, वर्णनमे उलट क्रम, कथावाचकक व्यंग्यात्मक दूरी, वाक्यक लम्बाइ अथवा सन्नाटा—सभ वक्रोक्ति-सदृश प्रभाव पैदा कऽ सकैत अछि, मुदा सभ विचित्रता कलात्मक सफलता नहि। रीतिक परीक्षणमे ठेठी, बोली, शास्त्रीय पदावली, लोक-लय, भाषिक स्तर-भेद आ प्रसंगानुकूल टोन देखल जाए। गुण-अलङ्कारक विवेचन घटनाक गति वा भाव-सम्प्रेषणसँ जोड़ल जाए; केवल उपमा-रूपक गनब उद्देश्य नहि।

३.४ औचित्य आ अनौचित्यक द्वैध

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार पात्र, भाषा, देशकाल, उद्देश्य, रस आ दृश्य-विन्यासक परस्पर अनुरूपताक प्रश्न उठबैत अछि। मुदा आधुनिक उपन्यास जानि-बूझि असंगति, व्यतिक्रम, व्यंग्य आ प्रतिरोधक लेल औचित्य भङ्ग कऽ सकैत अछि। अतः पद्धतिमे दू प्रश्न रहत: (क) कोन व्यवस्था आन्तरिक नियमक अनुकूल अछि? (ख) कोन नियम-भङ्ग सचेत शिल्पगत प्रयोजन पूरा करैत अछि? वर्ग, जाति अथवा लिङ्गक रूढ़ मर्यादाकेँ ‘औचित्य’ नाम दऽ आलोचना परम्परावादी आदेशमे नहि बदलल जाए।

३.५ सहृदय, साधारणीकरण आ विरोधी पाठक

सहृदयताक अर्थ आलोचकक पूर्वनिर्धारित सहमति नहि, वरन् पाठकक संवेद्य-रचनात्मक स्थितिमे प्रवेश करबाक आलोचनात्मक क्षमता अछि। क्रूरताक दृश्य पढ़ैत पीड़ित, अपराधी आ दर्शक पात्रक पृथक् दृष्टि बनि सकैत अछि। साधारणीकरणक चर्चा व्यक्तिक विशिष्ट ऐतिहासिक अनुभवकेँ पोंछि सार्वभौम बनौने बिना हो। पीड़ितक आवाजक अनोखापन आ सामूहिक बोध—दुनू सँग-सँग देखल जाए।

४. नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण-विवेचन

४.१ प्रेरणा आ सीमा

गंगेश उपाध्यायक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—चारि प्रमाणपर विचार करैत अछि। एहि आलेखमे ओहि परम्पराक अवधारणात्मक अनुशासनसँ समीक्षा-प्रक्रिया प्रेरित अछि; साहित्यिक आलोचनाकेँ तत्त्वचिन्तामणिक शाब्दिक नव्य-न्याय सिद्धान्तक समान घोषित नहि कएल जा रहल अछि। साहित्यिक व्याख्या सदा प्रमेय-सिद्धि जकाँ निर्णायक नहि; से भिन्नता सुरक्षात्मक नियम अछि।

४.२ पक्ष, साध्य, हेतु आ दृष्टान्त

आलोचक पहिने पक्ष निश्चित करय: सम्पूर्ण उपन्यास, अमुक अध्याय, अमुक कथानक-वृत्त अथवा अमुक कथन-खण्ड? तकर बाद साध्य—की सिद्ध करबाक अछि? ‘अध्याय १२ मे कथावाचक अविश्वसनीय बनैत अछि’ एकटा जाँचयोग्य साध्य अछि। हेतु—एकहि घटनाक दू परस्पर विरोधी बयान, वाचकक स्वार्थ, बादक पाठीय संशोधन

आदि। दृष्टान्त—समान रचना-उपायवला दोसर प्रसंग। स्पष्ट पक्ष बिना ‘ई उपन्यास निरन्तर स्त्री-विरोधी अछि’ सन व्यापक निष्कर्ष अशुद्ध भऽ सकैत अछि।

४.३ व्याप्ति, उपाधि आ हेत्वाभास

समालोचक ‘जतय पहिल पुरुषक कथन अछि, ओतय वाचक अविश्वसनीय अछि’ एहन व्याप्ति नहि बनाउ; एकरा असंख्य प्रतिदृष्टान्त भेटत। अधिक सावधान रूप: ‘जतय कथावाचकक महत्त्वपूर्ण दाबी पाठककेँ उपलब्ध विश्वसनीय पाठीय प्रमाणसँ व्यवस्थित रूपेँ टकराइत अछि, ओतय अविश्वसनीयताक पठन सम्भव होइत अछि।’ तखनो पाठकक ज्ञानक सीमा, स्वप्न, व्यंग्य, अनुवाद वा कालक्रमक फेर—ई सम्भावित उपाधि जाँचल जाए।

नव्य-न्याय परम्परासँ प्रेरित समीक्षा ‘हेतुसिद्धि’क प्रश्न पूछय: संकेत सचमुच पाठमे अछि? सव्यभिचार: ई संकेत अन्य स्थितिमे सेहो भेटैत अछि? विरुद्ध: प्रमाण उल्टा साध्यक समर्थन करैत अछि? असिद्ध: आधार कल्पित तँ नहि? बाधित: बादक स्पष्ट सूचना पहिल निष्कर्षकेँ खण्डित तँ नहि करैत? एहि जाँचक उद्देश्य प्रभावशाली शब्दावली नहि, तर्कक दोष खोलब अछि।

४.४ अवच्छेदक : दाबीक सीमा स्पष्ट करब

‘अवच्छेदक’ एतय विश्लेषणक सीमा-निर्धारणक अनुशासन रूपेँ उपयुक्त अछि। ‘सम्पूर्ण ग्रन्थमे लोकभाषा अनुपस्थित अछि’ कहबाक पहिने ‘लोकभाषा’क परिभाषा, कथकक बोली आ चरित्रक संवादक भेद, पाण्डुलिपि अथवा संस्करण, नमूना आ अध्याय-सीमा स्पष्ट करब जरूरी। ‘एहि दस अध्यायक कथावाचकीय विवरणमे’ कहलासँ दाबी सीमित आ जाँचयोग्य बनैत अछि।

अवच्छिन्न विषय, सम्बन्ध आ गुणसँ सम्बन्धित जटिल नव्य-न्याय पदावलीकेँ अनावश्यक रूपसँ कथा-शास्त्रपर आरोपित नहि कएल जाए। मूल नियम सरल अछि: ककर बारेमे, कोन गुणक, केहन सम्बन्धमे, कोन समय-सीमामे दाबी कएल जा रहल अछि?

४.५ चारि प्रमाणक समीक्षात्मक पुनर्विन्यास

प्रत्यक्ष-सदृश पाठनिरीक्षण: शब्द, क्रम, शीर्षक, कथोपकथन, पाण्डुलिपिक पाठभेदक देखादेखी जाँच। ई मूल नव्य-न्यायक प्रत्यक्षक शाब्दिक समतुल्य नहि; आलोचनामे प्राथमिक दृश्य-पाठीय अवलोकनक नाम अछि। अनुमान: पाठसाक्ष्यसँ कथन-कौशल, चरित्र-प्रेरणा वा निहित विचारक सम्भाव्य निष्कर्ष। उपमान: अन्य रचना, लोककथा, इतिहास-परम्परा वा महाकाव्यसँ सावधान साम्य, जतय समानताक संग अन्तर सेहो लिखल जाए। शब्द: लेखकक प्रस्तावना, पत्र, साक्षात्कार, ऐतिहासिक वचन आ प्रकाशित स्रोतक मूल्याङ्कन; वक्ताक विश्वसनीयता, सन्दर्भ आ स्वार्थक स्वतन्त्र परीक्षण जरूरी।

कृतिक भीतर पात्रक संवाद स्वयं वास्तविक इतिहासक ‘शब्दप्रमाण’ नहि, यद्यपि कथाजगतमे ओ कथित साक्ष्य भऽ सकैत अछि। लेखकक आत्मकथन सेहो अपन मंशाक साक्ष्य हो सकैत अछि, पाठक सम्भावित अर्थक अन्तिम निर्णायक नहि। आलोचककेँ जतय पर्याप्त प्रमाण नहि भेटैत अछि, ओतय ‘अज्ञात’, ‘सम्भावित’, ‘विवादित’, ‘असमर्थित’ सन स्पष्ट निर्णयसूचक शब्द प्रयोग करय।

४.६ पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष आ संशोधनीय निष्कर्ष

प्रत्येक महत्त्वपूर्ण व्याख्याक संग एकटा सक्षम पूर्वपक्ष लिखल जाए: एही दृश्यकेँ अन्य समीक्षक कोना पढ़ि सकैत छथि? उत्तरपक्षमे ओहि वैकल्पिक पठनक वास्तविक प्रमाण जाँचल जाए। अन्तमे बचल निष्कर्षक भरोसा-स्तर लिखल जाए; ‘निःसन्देह’ केवल तेँ, जखन प्रमाणक प्रकार ओकर अनुमति दैत हो। आलोचकक प्रिय मूल्य-स्थिति हेतु-सिद्धिक विकल्प नहि।

५. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समीक्षात्मक रूपान्तरण

५.१ स्रोत-विस्तार आ स्रोतक अन्तर

विदेहक ‘समानान्तर इतिहास-दृष्टि’मे राजकीय दस्तावेजक संग निजी पत्र, गीत, पञ्जी, नक्शा, स्त्रीक घरेलू लेखन, स्थानीय साक्ष्य आ मौखिक स्मृति लेल स्थान अछि; तथापि सभपर स्रोत-प्रकृति, तिथि, उद्देश्य आ सीमाक प्रश्न उठैत अछि। कथा-आख्यानशास्त्रमे एकर अर्थ—उपन्यास जकरा बोलबाक अवसर दैत अछि, आ जकर चिह्न सेहो पूर्ण रूपेँ उपस्थित नहि, ओकर ऐतिहासिक-सामाजिक स्थान जाँचल जाए; मुदा दस्तावेजक साक्ष्य आ कथाक कल्पनाकेँ एक नहि मानल जाए।

५.२ बहुस्वर, बहुकाल आ बहुक्षेत्र

समानान्तरताक अर्थ एकहि कथामे राज्य, खेतिहर, माछमार, स्त्री, प्रवासी, शिशु, वंचित जाति, भाषिक सीमाक्षेत्र आ सीमा-पार समाजक स्वरक उपस्थिति-सूची मात्र नहि अछि। विवेचन पूछत जे निर्णय के लैत अछि; श्रम ककरा करबाक पड़ैत अछि; परिणामक भार ककरा ऊपर पड़ैत अछि; ककर बोली वर्णनमे मानक कहल जाइत अछि; ककर अनुभव ‘लोक’ बनि जड़ित करि देल जाइत अछि। इतिहासक समय, ऋतु-चक्र, स्मृति, पीढ़ी-समय, नदी-समय आ विस्थापन-समय अलग देखल जाए।

५.३ मौन : प्रमाणक अभाव आ कथात्मक कार्य

कोनो पात्रक अनुपस्थिति तीन सम्भावनासँ जुड़ल हो सकैत अछि: लेखकक चयन, कथावाचकक सीमित ज्ञान, वा कथासंसारक सत्ता-संरचना। केवल एकटा कारण चुनब अनुचित। ‘मौन’क दोसर स्तर अछि—उपन्यास स्वयं जे बात अनकहल राखैत अछि, आ पाठक जे अनुमान करैत अछि। तेसर स्तर—वास्तविक अभिलेखमे अनुपस्थिति। ई तीनू मौन मिश्रित नहि हो। समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि जे शून्य स्थान कल्पनासँ भरल नहि जाए।

५.४ अभिलेख-निर्माण, संरक्षण आ डिजिटल पाठ

आलोचक संस्करण, प्रकाशन-वर्ष, लेखकक संशोधन, लिपि-बदलाव, मुद्रण-दोष, डिजिटीकृत पाठक त्रुटि, मौखिक रूपान्तर आ अनुवादक भूमिका जाँचय। मैथिलीक तिरहुता, देवनागरी आ आन लिपि-परम्पराक सामग्रीक अनुपलब्धता साहित्यिक अनुपस्थितिक ठोस प्रमाण नहि। एकटा ऑनलाइन प्रति कएक साइटपर मिलबाक अर्थ स्वतन्त्र तीन स्रोत नहि; सम्भव अछि सभ एकहि स्कैनसँ बनल हो।

५.५ इतिहासक नैतिकता आ आलोचकक स्व-परीक्षण

मुख्यधाराक प्रतिष्ठित लेखकक दाबी केवल प्रतिष्ठाक कारण सत्य नहि। हाशियाक कथाक दाबी केवल उपेक्षाक कारण सत्य नहि। आलोचक जँ सामाजिक प्रतिनिधित्वक कमी देखैत छथि तँ ओहि मूल्याङ्कनक प्रमाण पाठमे खोजथि। कोनो समूहक पात्र मात्र अत्याचार-सूची बनि रहि गेल कि ओकर अपन इच्छा, चेष्टा, विडम्बना आ दृष्टि अछि—ई जाँच अधिक महत्त्वपूर्ण। इतिहासक अन्याय चिन्हबाक लेल साहित्यिक रचनात्मकताकेँ मेटायब नहि।

६. कथा-आख्यानशास्त्रक पूर्ण विश्लेषण-क्षेत्र

६.१ कथासंसार, अवस्था आ घटनात्मकता

पहिल अवस्थामे पात्र, स्थान, सम्बन्ध, संसाधन, सत्ता आ सम्भावित संकटक नक्शा बनाओल जाए। घटना केवल ‘किछु भेल’ नहि; अवस्था बदलल कि नहि? परिवर्तनक प्रासंगिकता, अनपेक्षितता, परिणाम, अपरिवर्तनीयता आ पुनरावृत्तिहीनता जाँचल जाए। छोट घटना—मछरी मारबाक घाटपर रोक—सम्पूर्ण ग्राम-संरचना बदलि सकैत अछि; विशाल युद्ध वर्णनात्मक स्तरपर लम्बा होइतो चरित्र-सम्बन्ध नहि बदलैत। घटना-संख्या आ घटनात्मक महत्त्व दू अलग माप अछि।

६.२ कथाक्रम आ कथनक्रम

सम्भव भेला पर स्वतन्त्र क्रमरेखा बनाउ: कथाजगतमे घटना कोन क्रममे भेल, आ पाठककेँ कोन क्रममे कहल गेल। पूर्वस्मृति, भविष्य-सूचना, एकहि घटनाक फेरबयान, विलम्बित उद्घाटन, काल-विसंगति, प्रच्छन्न क्रमभङ्ग चिन्हू। कथा-भङ्गक प्रभाव देखू—रहस्य, व्यंग्य, शोक, दोषारोपण वा इतिहासक पुनर्लेखन। प्रत्येक पूर्वस्मृति ‘फ्लैशबैक’ कहि छोड़बाक बदला ओकर कारण आ परिणाम लिखू।

६.३ अवधि, गति आ विराम

कथाजगतक एक दिन लेल सौ पृष्ठ, आ दू दशक लेल दू वाक्य—ई अनुपात अर्थपूर्ण अछि। दृश्य, सार, विस्तार, वर्णनात्मक विराम, घटना-लोप आ कथात्मक त्वरा अलग चिन्हू। घनत्वक मूल्याङ्कनमे शब्दक संख्या, निर्णायक परिवर्तन, कारण-जाल, चरित्र-रूपान्तरण आ भावात्मक गहराइ अलग-अलग दर्ज हो। अधिक शब्द = अधिक घटना; अधिक घटना = अधिक श्रेष्ठता—दुनू भ्रान्ति अछि।

६.४ आवृत्ति आ स्मृतिक पुनरागमन

एक बेर भेल घटनाक एक बेर कथन, एक बेर भेल घटनाक बारम्बार कथन, बारम्बार भेल घटनाक संक्षिप्त सामूहिक कथन—ई तीन प्रवृत्ति पहचानू। एकहि बाढ़िक स्मृति मजदूर, अधिकारी आ बालिका अलग ढङ्गेँ सुनबैत छथि तँ समान घटना बहुवचन दृष्टिक प्रमाण बनैत अछि। किन्तु एकहि वाक्यक निरर्थक प्रतिलिपि शिल्पगत आवृत्ति नहि; ओकर भेद निर्धारित करबाक प्रयोजन चाही।

६.५ कथावाचक, कथनस्तर आ विश्वसनीयता

के बोलैत अछि? बाह्य कथावाचक, भीतरक पात्र, पत्रक लेखक, स्वप्नक स्वर, लोकगीतक सामूहिक वाणी—सभक स्तर अलग लिखू। ‘लेखक’ आ ‘कथावाचक’ एक नहि। कथावाचक स्वयं घटनामे अछि कि बाहर? ओ कखन कथन करैत अछि—घटनासँ पहिने, संग-संग वा बादमे? ओकर ज्ञानक विस्तार की? अविश्वसनीयता साबित करबाक लेल कथनक विरोध, दृष्टि-सीमा, स्वार्थ वा पाठीय सुधार आवश्यक; पहिल-पुरुषक प्रयोग मात्र पर्याप्त नहि।

६.६ दृष्टिबिन्दु आ ज्ञान-वितरण

प्रश्न ‘के देखैत अछि?’क संग ‘के बुझैत अछि?’, ‘कोन सूचना ककरा भेटैत अछि?’ सेहो जोड़ू। एकहि घटनाक अभिजात पात्रक नजरिया, मल्लाहक देहगत अनुभव आ शिशुक आंशिक ज्ञानसँ देखब भिन्न अछि। आन्तरिक, बाह्य, परिवर्ती, सामूहिक वा अप्रमाणित दृष्टिबिन्दु स्थितिक नक्शा बनाउ। कथावाचक जे जानैत अछि आ पात्र जे जानैत अछि, एहि असमानतासँ विडम्बना, रहस्य आ सहानुभूति बनैत अछि।

६.७ पात्र : नामसूची नहि, क्रिया-संजाल

पात्रक सामाजिक नाम, वंश वा जाति गनबाक अतिरिक्त ओकर लक्ष्य, बाधा, निर्णय, कार्यक्षमता, विरोधाभास, बदलैत सम्बन्ध आ कथा-समयमे परिवर्तन चिन्हू। सहायक पात्र केवल मुख्य पात्रक विकासक औजार तँ नहि? स्त्रीक श्रम नाटकीय संकटमे मात्र दृश्य बनैत अछि कि निर्णय-स्थलमे सेहो? जिनगीक जटिलताकेँ एकटा नैतिक गुणमे बदलि देब पात्र-निर्माणक कमजोरी भऽ सकैत अछि। चरित्रक मौन, कर्म आ अप्रकट इच्छा तखनहि चिन्हू जखन पाठक आधार भेटैत हो।

६.८ कारण, संयोग, संघर्ष आ समाधान

प्रत्येक निर्णायक घटनाक कारण-शृंखला दर्ज करब, मुदा कारणक एकता जबरदस्ती नहि आरोपित करब। प्राकृतिक आपदा, शासन, श्रम-विभाजन, पारिवारिक निर्णय, संयोग आ स्मृति परस्पर क्रियाशील हो सकैत अछि। संघर्षक समाधान प्रत्यक्ष, आंशिक, प्रतिकूल, विलम्बित अथवा अनिर्णीत भऽ सकैत अछि। अनिर्णय स्वतः रचनात्मक दोष नहि; ई कलात्मक प्रश्नक खुलल रहबाक युक्ति सेहो हो सकैत अछि।

६.९ स्थान, नदी, पर्यावरण आ वस्तु-संसार

गाम, पोखरि, घर, श्मशान, खेत, सड़क, सीमा आ शहर केवल सजावट नहि। स्थान पात्रक पहुँच, श्रम, भय, जातीय विभाजन आ अधिकार बदलैत अछि। नदीक जल, गाद, बाढ़ि, मत्स्यजीवन, जलकर, सिंचाइ आ निष्कासनक व्यवस्था एकहि संग भूगोल आ समाज अछि। ‘नदी स्वयं कथावाचक अछि’ सन प्रतीकात्मक दाबी करबाक पहिने देखू पाठ नदीकेँ केहन भाषिक अभिकर्तृत्व दैत अछि। भौगोलिक तथ्य चाही तँ स्वतन्त्र नक्शा अथवा पर्यावरण-अध्ययन जुटाउ।

६.१० संवाद, भाषिक स्तर आ व्याकरणगत दृष्टि

संवादमे ककरा पूरा वाक्य भेटैत अछि, ककरा केवल उद्धरण? मानक मैथिली, ठेठी, अंगिका, बज्जिका, नेपाल-क्षेत्रीय रूप, पारिभाषिक भाषा वा अन्य भाषाक मिश्रण पात्रक वर्ग-स्थान, सम्बन्ध आ शक्ति देखबैत अछि कि रूढ़ि पक्का करैत अछि? बोलचालक रूपकेँ 'त्रुटि' मानबाक पहिने लेखकक शिल्प, पात्रक स्वर आ संस्करण-सन्दर्भ जाँचू। भाषिक भिन्नता मात्र रङ्ग-विविधता नहि; कथा-विभाजनक साधन भऽ सकैत अछि।

६.११ चेतना, स्वप्न, स्मृति आ अन्तःसंवाद

प्रत्यक्ष कथोपकथन, अप्रत्यक्ष कथन, मुक्त अप्रत्यक्ष कथन, मनोप्रवाह, स्मृतिखण्ड आ स्वप्नक कथात्मक अधिकार अलग करब। स्वप्नमे घटित दृश्यकेँ बिना आधार वास्तविक कथाघटना मानब, अथवा सचेत काल-विसंगतिकेँ लेखकक भूल कहब—दुनू चूक अछि। पात्र जे विचारैत अछि ओहि विचारक सत्य-मूल्य आ कथा जे पुष्ट करैत अछि तकर बीच दूरी राखू।

६.१२ प्रतीक, मिथक, आन्तर्पाठ आ पुनर्रचना

रामायण, महाभारत, भामती, न्याय-परम्परा, लोकदेवता, गाथा, मुहावरा, लोकनाट्य आ दार्शनिक पद—कथा एहि सबसँ संवाद करि सकैत अछि। आन्तर्पाठक परीक्षणमे नामक उपस्थिति मात्र नहि; रूपान्तरणक दिशा, मूल सन्दर्भसँ भिन्नता, वर्तमान प्रसंगमे कार्य आ पाठक लेल उपलब्ध संकेत देखल जाए। जँ पात्रक नाम ‘द्रौपदी’ अछि, तँ एतबासँ सम्पूर्ण महाभारत-रूपक सिद्ध नहि; निर्णायक समानान्तर प्रसंग चाही।

६.१३ अद्भुत, असम्भव आ जादुई यथार्थ

कथा-जगतक नियम पहिने पहचानू। मृतक बोलैत अछि, नदी स्मृति राखैत अछि, समय चक्रीय भऽ जाइत अछि—ई लेखकक असंगतिक प्रमाण अवश्य नहि; ई कृतिक विकल्पी जगत-नियम हो सकैत अछि। अद्भुत रस, अलौकिक लोकविश्वास, अविश्वसनीय कथावाचक, स्वप्न, रूपक आ जादुई यथार्थकेँ एक श्रेणीमे नहि राखब। जाँचू कि असम्भव घटना पात्रक व्यवहार आ सामाजिक संरचनामे कोन परिवर्तन करैत अछि।

६.१४ संरचना, उपकथा आ दीर्घ-आख्यान

महाउपन्यासमे कथावृत्त, उपवृत्त, समय-खंड, पीढ़ी, स्थान आ पात्रसमूहक मानचित्र बनाओल जाए। अध्यायक संख्या साहित्यिक एकताक प्रमाण नहि। उपकथा मुख्य द्वन्द्वसँ कोन बिन्दुपर मिलैत अछि, दोसर उपकथासँ संवाद करैत अछि कि केवल समानान्तर बढ़ैत रहैत अछि? पुनरागमन, परिवर्तनशील आवर्तन, चरमबिन्दु, द्वितीय चरमबिन्दु, लम्बा उपसंहार आ अपूर्ण वृत्त सभ जाँचू।

६.१५ लय, बिम्ब, ध्वनि-संरचना आ पाठकीय अपेक्षा

वाक्यक साँस, कथोपकथनक लय, वर्णनक गति, ध्वन्यात्मक पुनरावर्तन, मौन, अध्यायान्तक विराम आ शीर्षकक अपेक्षाक संगति जाँचल जाए। संक्षिप्त दृश्य विस्तृत भाव पैदा कऽ सकैत अछि; बड़ वर्णन पाठकीय

प्रतिरोध सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि। पाठकीय प्रभावक दाबी प्रमाणित करबाक लेल विशिष्ट भाषिक उपकरण दिखाउ, नहि तँ ‘सभी पाठक रोइत छथि’ सन सार्वभौम वाक्यसँ बचू।

६.१६ पाठक, विधा, संस्करण आ माध्यम

कृति मौखिक पाठ, छपल पोथी, ई-पाठ, श्रव्यपुस्तक, अनुवाद अथवा किशोर-संस्करणमे बदलि सकैत अछि। प्रत्येक माध्यमक ग्रहण-शर्त भिन्न: पृष्ठ-विभाजन, उच्चारण, आवाज, चित्र, अध्याय-संख्या आ पाठकक पहुँच। अनुवादमे कथात्मक दृष्टिबिन्दु, स्थानीय सम्बोधन, रसक संकेत आ भाषिक सामाजिक अन्तर केहन रूपेँ पहुँचल? विभिन्न संस्करणक तुलनामे मूल पाठक आधार स्पष्ट राखू।

६.१७ सामाजिक शक्ति आ प्रतिरोधक आख्यान

जाति, वर्ग, लिङ्ग, पेशा, धर्म, देह, अपाङ्गता, उम्र, परिवार, प्रवासन आ डिजिटल पहुँचक भेदकेँ मात्र विषय-सूची नहि, कथात्मक क्रिया रूपेँ पढ़ू। ककर इच्छा कथानककेँ आगाँ बढ़बैत अछि? ककर श्रम दृश्य होइत अछि? ककरा निष्पत्ति तय करबाक अवसर अछि? कथाकारक सामाजिक पक्षधरता महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा कलात्मक न्याय, घटना-कारण आ पात्रक जटिलताक परीक्षण ओकर विकल्प नहि।

६.१८ पीड़ा, हिंसा आ प्रस्तुति-नैतिकता

बलात्कार, जातीय अपमान, आत्महत्या, बालपीड़ा, विस्थापन, हिंसा वा मृत्यु वर्णित हो तँ दृश्यक कार्य, पीड़ितक स्वतन्त्रता, पाठकीय संवेदनात्मक भार आ सनसनीक जोखिम देखू। केवल अधिक वीभत्स विवरणकेँ ‘निर्भीक यथार्थवाद’ घोषित नहि कएल जाए। आलोचक सम्भव भेला पर पीड़ितकेँ फेर वस्तु बनबयबाक बदला ओकर दृष्टि, परिणाम आ पुनर्गठन देखय। अशोभनीय दृश्यक साहित्यिक आवश्यकता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग प्रश्न अछि।

७. त्रिस्तरीय परीक्षण आ समन्वित समीक्षात्मक सूत्र

सारणी १ : त्रिसूत्री पद्धतिक प्रश्न आ साक्ष्य

विचन-आधार	प्रमुख प्रश्न	अनुमत साक्ष्य	मुख्य सावधानी
व्यशास्त्र	कथा कोना रस, ध्वनि आ वक्रता रचैत अछि?	भाषा, दृश्य, प्रतीक, लय, पाठकक सम्भावित अनुभव	मात्र एक भाव पाठकपर बाध्य न
य-न्याय प्रेरणा	दाबीक पक्ष, हेतु, सीमा आ प्रतिवाद की अछि?	पाठ-पता, पाठभेद, प्रतिदृष्टान्त, स्वतंत्र सन्दर्भ	साहित्यिक अनुमानकेँ गणितीय नहि मानू।
ानान्तर इतिहास	ककर आवाज, अभिलेख, श्रम आ मौन निर्णायक अछि?	पाठीय दृष्टि-संजाल, स्रोतक उत्पत्ति, सामाजिक सन्दर्भ	अनुपस्थितिक रिक्ति कल्पना भरू।

एकटा दृश्य अथवा अध्याय जाँचैत समीक्षक पहिने रचना-परीक्षा करय: घटना, वाचक, दृष्टिबिन्दु, काल, भाषा, प्रतीक, रस, ध्वनि, औचित्य आ पाठकीय गतिशीलता। तकर बाद प्रमाण-परीक्षा: कहलग निष्कर्षक पाठीय आधार, दाबीक सीमा, विरोधी प्रमाण, ऐतिहासिक सन्दर्भक स्रोत आ अनिश्चितता। अन्तमे समानान्तर-परीक्षा: केन्द्र/हाशिया, स्वर/मौन, अभिलेख/स्मृति, क्षेत्र/सीमा, श्रम/सत्ता, वर्ग/जाति/लिङ्गक परस्पर सम्बन्ध। तीनू चरणक परिणाम अलग लिखि तकर बाद संयोजित निर्णय दिअ।

प्रस्तावित समीक्षासूत्र: सम्यक् आख्यान-मूल्याङ्कन = पाठीय रचना-विवेचन + प्रमाण-सीमित निष्कर्ष + बहुस्रोत सामाजिक-ऐतिहासिक परीक्षण + प्रतिपक्ष-सहिष्णु पुनर्विचार। ई अंकगणितीय समीकरण नहि; कार्य-विभाजनक बोधक सूत्र अछि। एकर घटक परस्पर शर्तक रूपमे काज करैत अछि, मुदा कोनो एक घटक दोसरक स्थान नहि लैत अछि। विशेषत: सामाजिक प्रतिनिधित्वक उच्च मूल्याङ्कन खराब शिल्पकेँ स्वत: उत्कृष्ट नहि बनबैत, आ उत्कृष्ट शिल्प ऐतिहासिक गलत दाबीकेँ तथ्य नहि बनबैत।

प्रत्येक निर्णायक वाक्यक पाछाँ एकटा ‘समीक्षा-लेखा’ राखल जाए: निष्कर्ष / पाठ-पता / प्रमाणक प्रकार / वैकल्पिक पठन / विरोधी साक्ष्य / भरोसा-स्तर। एकरा बिना समीक्षा प्रभावशाली भाषण बनि सकैत अछि, शोध नहि।

८. व्यावहारिक कार्य-विधान : सोलह चरण

सारणी २ : आख्यान-विवेचनक मुख्य आयाम

	निर्णायक प्रश्न	परीक्षण-सामग्री
र	प्रारम्भिक अवस्था आ नियमन	पाठमे उपलब्ध जगत-सूचना
ता	कोन परिवर्तन निर्णायक अछि?	पूर्व/उत्तर अवस्था, परिणाम
	कथा-काल आ कथन-कालक अन्तर	घटनाक दू क्रमरेखा
	कोन प्रसंग विस्तृत अथवा संक्षिप्त?	शब्द/समयक अनुपात
	एक घटना कतेक बेर कथित?	पुनर्कथन-स्थल
क	के बोलैत, के विश्वासयोग्य?	वाचकक बयान आ विरोध
	ककरा कतेक जानकारी अछि?	ज्ञानक वितरण
	कथाक भीतर दोसर कथा कोना?	पत्र, स्वप्न, लोकगाथा
ल	के निर्णय लैत, के फल भोगैत?	लक्ष्य, कर्म, सम्बन्ध
रण	घटनाक एक वा बहु कारण?	कारण-परिणाम शृंखला
ाद	कोन स्वरक कोन भाषा?	वाक्य, बोली, मौन

याम	निर्णायक प्रश्न	परीक्षण-सामग्री
–ध्वनि	अनुभूति आ निहित अर्थ कोना?	दृश्य, पुनरावृत्त बिम्ब
ोक्ति–औचित्य	विन्यास आ नियमभङ्गक प्रयोजन?	भाषिक/कथात्मक विरूपण
ान–पर्यावरण	स्थान कारणात्मक अछि कि सजावट?	आगमन, संसाधन, भूगोल
न्तर्पाठ	मिथक/शास्त्रक कोन पुनर्पाठ?	सम्बद्ध पाठ-विन्यास
द्भुत–स्वप्न	असम्भव घटना कोन नियमपर?	कथाजगतक सुसंगति
ाज–इतिहास	ककर अभिलेख आ मौन?	स्रोत, स्थान, परिप्रेक्ष्य
ठक–माध्यम	रूपान्तरमे अर्थक की परिवर्तन?	पाठभेद, श्रव्य/अनुवाद

चरण १—पाठ-स्थिरीकरण: कोन संस्करण, प्रकाशक, वर्ष, अध्यायक्रम, भाषा आ पृष्ठ-विभाजन आधार, से लिखू; संशोधित संस्करण हो तँ भेद बचाउ।

चरण २—समग्र प्रारम्भिक पठन: कथासार आ पूर्वनिर्णय थोपने बिना मुख्य तनाव, विधागत संकेत, भाषा, आरम्भक युक्ति, अन्तक प्रकृति चिन्हू।

चरण ३—मूल-गणना: अध्याय, खण्ड, शब्द, पात्र, स्थान, संवाद-अनुपात, ऐतिहासिक सन्दर्भ, स्मृतिखण्ड जँ मापब योग्य हो तँ युक्तिपूर्वक गनू। कम्प्यूटर गणना आ मानवीय सत्यापनक अन्तर स्पष्ट करू।

चरण ४—घटना-पञ्जी: प्रत्येक अध्यायमे अवस्था-परिवर्तन, कारण, निर्णायकता, पुनरागमन आ परिणामक अलग पंक्ति तैयार करू।

चरण ५—द्विकाल-नक्शा: कथा-काल आ कथन-काल अलग; स्मृति, भविष्यसूचना, विराम, संक्षेप, आवृत्ति चिह्नित।

चरण ६—वाचक-दृष्टि मानचित्र: के बोललक, कोन स्तरसँ, के देखलक, कोन सूचना गुप्त रहल, कखन उद्घाटित भेल।

चरण ७—चरित्र-संजाल: लक्ष्य, निर्णय, सम्बन्ध, सामाजिक स्थिति, कार्यक्षमता आ परिवर्तनक मानचित्र।

चरण ८—रस-ध्वनि-वक्रोक्ति परीक्षण: मुख्य दृश्यक भाषिक आधार, भावक प्रक्रिया, संकेतित अर्थ आ सचेत औचित्यभङ्ग चिन्हू।

चरण ९—स्थान–पर्यावरण परीक्षण: स्थानक कारणात्मक भूमिका, संसाधनक बँटवारा, मौसम, पशु-पक्षी, नदी, कृषि, शहर, प्रवासन।

चरण १०—समानान्तर स्वर-परीक्षण: केन्द्रीय कथाक निर्णयक परिणाम किन-किन समूहपर पड़ल, ककर आवाज नदारद, ककर शब्द ककरा माध्यमसँ सुनाइत अछि।

चरण ११—दाबी-वर्गीकरण: प्रत्येक निर्णायक निष्कर्षकेँ पाठीय, कथाजगत, व्याख्यात्मक अथवा बाह्य-ऐतिहासिक चिह्न देब।

चरण १२—प्रमाण-परीक्षण: पृष्ठ-सन्दर्भ, सन्देह, प्रतिदृष्टान्त, उपाधि, बाह्य स्रोत, सन्दर्भक दिनाङ्क आ विश्वसनीयता।

चरण १३—पूर्वपक्ष: कम सँ कम एकटा मजबूत वैकल्पिक व्याख्या लिखू; ओकरा पुआल-प्रतिद्वन्द्वी नहि बनाउ।

चरण १४—काण्ड/खण्ड-समेकन: अध्यायवार निष्कर्षक संग बहुवृत्तीय परिवर्तन, शिखर, अनसुलझल प्रश्न आ अधूरापन देखू।

चरण १५—समग्र मूल्याङ्कन: शिल्प, रस, अर्थ, सामाजिक जटिलता, इतिहास-संवाद, पाठकीय प्रभाव आ सीमा अलग शीर्षकमे रखू; सर्वस्वीकृत अङ्क देबाक आग्रह नहि।

चरण १६—लेखापरीक्षा आ संशोधन: गलती, मापन-सीमा, स्रोत-अभाव, वैकल्पिक पठन आ संशोधनक तिथि दर्ज करू।

९. प्रमाण-नियम : समीक्षक लेल बारह सूत्र

सूत्र १—पाठप्राधान्य: जे दाबी पाठक भीतरक अछि, ओकर पहिल साक्ष्य पाठक स्पष्ट भागमे खोजू।

सूत्र २—स्तरभेद: कथावाचकक कथन, पात्रक विश्वास, लेखकक मन्तव्य आ इतिहासक सत्यकेँ अलग राखू।

सूत्र ३—सीमानिर्देश: साध्यक क्षेत्र, अध्याय, संस्करण, पात्रसमूह आ समय-सीमा निर्दिष्ट करू।

सूत्र ४—हेतुशुद्धि: आलोचक जे कारण देत, ओकर पाठीय उपस्थिति जाँचू।

सूत्र ५—व्याप्तिसंयम: एक-दू उदाहरणसँ सार्वभौम साहित्यिक नियम नहि बनाउ।

सूत्र ६—प्रतिदृष्टान्तग्रहण: विपरीत प्रसंगकेँ छिपायब नहि; ओकरा सिद्धान्त-संशोधनक अवसर मानू।

सूत्र ७—उपाधिविचार: स्वप्न, व्यंग्य, स्थानीय बोली, मिथकीय जगत, अविश्वसनीय वाचक सन विशेष शर्त जाँचू।

सूत्र ८—रसस्वातन्त्र्य: भाव-प्रभावक बहुलता स्वीकारू; पाठकक अनुभूति आँकड़ा बनि बाध्य नहि हो।

सूत्र ९—मौनसावधानी: मौनकेँ प्रश्न मानू, अज्ञात घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि।

सूत्र १०—समप्रमाणता: राजकीय, लोक, प्रतिष्ठित, दलित, स्त्री, लेखक वा आलोचक—सभ पक्षक दाबी जाँचू।

सूत्र ११—बहुकारणता: एकहि घटना सामाजिक, पारिस्थितिक, मनोवैज्ञानिक आ शिल्पगत अनेक कारणसँ बनि सकैत अछि।

सूत्र १२—संशोधनशीलता: नूतन पाठभेद, दस्तावेज वा सशक्त प्रतिपक्ष भेटला पर निष्कर्ष बदलब समीक्षा-बल अछि, पराजय नहि।

१०. स्वनिर्मित दृष्टान्तपर प्रयोग

१०.१ दृष्टान्त—घाट आ रसीद

निम्न दृश्य केवल एहि आलेख लेल रचल गेल काल्पनिक उदाहरण अछि; एकरा कोनो प्रकाशित उपन्यासक उद्धरण नहि मानल जाए: ‘पोखरि सूखि गेल छल। तखनो घाटपर जल-करक रसीद हवा मे फड़फड़ा रहल छल। कमली रसीद उठौलक, मुदा ओहिपर लिखल नाम ओकर नहि छल। ओ कहलक—पानिक दाम देलहुँ, आब माटिक दाम के देत?’

कथा-परीक्षण: प्रारम्भिक अवस्था—जलसम्पदा लुप्त; घटना—कमलीक रसीद देखब आ प्रश्न उठायब; परिवर्तन—मूक आर्थिक अन्याय सार्वजनिक वाणीमे बदलैत अछि। कथन-परीक्षण: संक्षिप्त वर्णन, वस्तु-संकेत आ अन्तिम प्रश्न कथनक गति बदलैत अछि। रस-ध्वनि: सूखल पोखरि आ जीवित रसीदक विरोधसँ करुणा आ व्यंग्यक सम्भावना; ‘माटिक दाम’ श्रम, अधिकार आ पारिस्थितिक क्षतिक ध्वनि। नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण: ‘नाम ओकर नहि छल’ पाठीय तथ्य अछि; ‘रसीद जाली छल’ अनुमान अछि, जकर लेल अतिरिक्त पाठसाक्ष्य चाही। समानान्तर परीक्षण: रसीद लिखबाक अधिकार केकरा, जल-करक भार ककरा, स्त्रीक आवाज की बदलैत अछि? बाह्य ऐतिहासिक कर-प्रणालीबारे एको निष्कर्ष एहि काल्पनिक दृश्यसँ नहि निकालल जाए।

१०.२ प्रतिपक्ष : की ई मात्र प्रतीक अछि?

पूर्वपक्ष कहि सकैत अछि जे ‘सूखल पोखरि’ सामाजिक न्यायक प्रतीक नहि; ई केवल दृश्य-सज्जा अछि। उत्तरपक्ष निर्णायक घोषित करबाक बदला जाँचत—अन्य अध्यायमे रसीद, जल, कर, स्त्री-श्रम, भूमि वा अधिकार पुनः अबैत अछि कि नहि? जँ नहि, प्रतीकात्मक व्याख्या सम्भाव्य, मुदा सीमित। जँ अनेक सुसंगत घटना-परिणाम एहि संकेतकेँ विकसित करैत अछि, तखन प्रस्ताव मजबूत होइत अछि। एहि तरहेँ काव्यशास्त्रक ध्वनि आ नव्य-न्याय-प्रेरित संशय एक-दोसरकेँ फलदायी बनबैत अछि।

११. दीर्घ उपन्यासक अध्यायवार आ समग्र परीक्षण

बहु-लाख शब्दक उपन्यासक परीक्षणमे प्रत्येक अध्यायक सभ घटना, मूल वाक्य आ व्याख्या बेतरतीब जोड़ि देलासँ समीक्षा स्वयं अवाच्य भऽ जाइत अछि। अतेव ‘लघु-पञ्जी → वृत्त-संश्लेषण → खण्ड-संश्लेषण → समग्र वाद’क चारि स्तर अपनाउ। अध्याय-पञ्जीमे १५०–३०० शब्दक तथ्य-सार पर्याप्त भऽ सकैत अछि, मुदा घटनात्मक अथवा शिल्पगत रूपसँ निर्णायक अध्याय लेल ५००–१००० शब्दक विवेचन उचित। ई मात्र कार्य-सुझाव अछि; मूल पाठक वास्तविक जटिलताक अनुसार सीमा बदलबाक चाही।

अध्यायवार समीक्षा ‘सारांश’ नहि: प्रत्येक अध्यायक उद्देश्य, पूर्ववर्ती अवस्थासँ अन्तर, कथन-कौशल, प्रमुख प्रमाण, रस-ध्वनि, सामाजिक स्थान, प्रतिवाद आ अगिला अध्यायसँ सम्बन्ध लिखल जाए। समग्र समीक्षा अध्यायवार टिप्पणीक जोड़ मात्र नहि; कथावृत्तक परस्पर सम्बन्ध, आवर्तनक विकास, आ कथाक दीर्घकालिक नैतिक-कलात्मक नतीजा अलग स्थापित करैत अछि।

शब्द-संख्या, अध्याय-संख्या, चरित्र-संख्या वा घटनात्मक घनत्व मापैत गणनाविधि स्पष्ट हो। ‘शब्द’क अर्थ खाली स्थानपर आधारित गणना, संयुक्त-रूप सामान्यीकरण अथवा सम्पादकीय साफ-सफाइक बादक गणना? शीर्षक, अनुक्रमणिका, पाद-टिप्पणी आ परिशिष्ट गनल गेल कि नहि? कम्प्यूटर-पाठ उपलब्ध नहि तँ अनुमानित संख्या ‘अनुमान’ कहल जाए।

घटनात्मक घनत्वक लेल एकटा निदानात्मक अनुपात ‘निर्णायक अवस्था-परिवर्तन / १०,००० शब्द’ उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा ई गुणात्मक श्रेष्ठताक क्रम नहि। ई अनुपात संग घटनाक परिणाम, चरित्र-अधिकार, नाटकीय विराम आ रसपरिवर्तन अवश्य पढ़ू। एकटा सूक्ष्म निर्णायक घटना दस आडम्बरपूर्ण दृश्यसँ अधिक प्रभावकारी भऽ सकैत अछि।

१२. समीक्षात्मक निर्णय : मापन, सीमा आ पुनर्परीक्षा

सारणी ३ : चारि प्रकारक दाबी आ हुनकर प्रमाण

क्कार	उदाहरण	जाँचक तरीका
	पात्र अमुक वाक्य कहलक।	अध्याय/अनुच्छेद/संस्करण मिलाउ।
ा	बाँध वास्तवमे टूटल कि वाचकक भ्रम छल।	कथनक स्तर आ आगाँक पुष्टिकरण।
क्षक	रसीद श्रम-शोषणक ध्वनि अछि।	बिम्ब-संगति, वैकल्पिक पठन।
हासिक	निर्दिष्ट वर्षमे वास्तविक जल-कर लगल छल।	स्वतन्त्र अभिलेख, तिथि, स्रोत-आलोचना।

सारणीमे अङ्क रखबाक हो तँ प्रत्येक मानदण्डकेँ ० सँ ४ धरि पाठसमर्थन-स्तर दियौ, कलात्मक महत्ता नहि: ०—कोनो साक्ष्य नहि; १—अल्प/विवादित; २—किछु उदाहरण; ३—अनेक सुसंगत उदाहरण; ४—व्यापक साक्ष्य आ प्रतिपक्ष-परीक्षण। ‘लागू नहि’ आ ‘अज्ञात’ स्वतन्त्र कोटि रहय; शून्य अंक नहि। जँ अंक भारित कएल जाए तँ भार पहिने प्रकाशित हो, पाछाँ इच्छित निष्कर्ष लेल बदलल नहि जाए।

अन्तिम निर्णय चारि पृथक् खण्डमे लिखू: (क) कलात्मक सिद्धि आ कमी; (ख) आख्यान-संगठनक शक्ति आ तनाव; (ग) सामाजिक-ऐतिहासिक कल्पनाक जटिलता, स्रोत-संगति आ सीमा; (घ) कृतिक नूतन योगदान आ भविष्यमे अध्ययनक विषय। ‘महानतम’, ‘पूर्णतः विफल’, ‘सम्पूर्ण समाजक यथार्थ’ सन सर्वग्रासी निर्णय लेल असाधारण तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक; अन्यथा सटीक सीमित निर्णय श्रेष्ठ।

पद्धतिक अपन सीमा सेहो अछि। काव्यक अनुभवक सभ स्तर फॉर्ममे नहि समा सकैत। नव्य-न्यायक प्रमाण-भाषा रचनात्मक अनिश्चितताकेँ मिटाबै लगल तँ ओकर उपयोग रोकल जाए। समानान्तर इतिहासकेँ यान्त्रिक ‘प्रतिनिधित्व-अङ्क’ बनाओल गेल तँ पात्रक कलात्मक स्वतन्त्रता समाप्त होएत। अन्य परम्परा—लोक-आख्यान, स्त्रीवादी, दलित, उपनिवेशोत्तर, पर्यावरणीय, संज्ञानात्मक आ अद्भुत-आख्यानशास्त्र—

आवश्यकतानुसार संवादक रूपमे जुड़ि सकैत अछि, मुदा एकमात्र विचारधारा कथाक सभ अर्थकेँ नियंत्रित नहि करय।

१३. निष्कर्ष : समीक्षा एकटा जाँचयोग्य आ संवेदनशील शास्त्र

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र मैथिली कथा-विवेचनक एकटा प्रस्तावित शोध-विधि अछि। ई कथासंसारकेँ कथन-विन्याससँ, कलात्मक अनुभूतिकेँ प्रमाणक अनुशासनसँ, आ साहित्यक केन्द्रकेँ ओकर अदृश्य अथवा कम सुनल स्वरसभसँ जोड़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्र रचनाक रस-ध्वनि-वक्रता खोलैत अछि; नव्य-न्याय प्रेरित विवेचन अनुमानक सीमा, प्रतिपक्ष आ त्रुटि चिन्हैत अछि; विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि अभिलेखक असमानता, मौन आ बहुस्रोत समाजक प्रति समीक्षाकेँ उत्तरदायी बनबैत अछि।

एहि तीनू आधारक बीच उत्कृष्टता केवल ‘संगति’ नहि, सर्जनात्मक तनाव अछि: रस जखन निहित अर्थक सम्भावना खोलय, प्रमाण-परीक्षा ओकरा ऐतिहासिक तथ्य बनि भागबाकसँ रोकय; प्रमाण जखन संकुचित क्षेत्रमे समेटय, समानान्तर दृष्टि ओकर अज्ञात बहिर्क्षेत्र देखौक; इतिहास जखन सामाजिक आवाज जोड़य, आख्यानशास्त्र पूछय जे ओ आवाज रचनाक संरचना बदलैत अछि कि केवल नामावली बढ़बैत अछि।

अन्तिम सूत्र एतबे: कथा पढ़ू, कथन जाँचू, रस-ध्वनि सुनू, प्रमाणक सीमा मानू, मौनक कारण खोजू, प्रतिपक्ष सुनू, आ निष्कर्ष पुनः जाँचबाक द्वार खुलल राखू। एहि अनुशासनमे मैथिली कथा-साहित्यक विस्तृत, अध्यायवार, तर्कसंगत आ कलात्मक रूपेँ समुचित समीक्षा सम्भव अछि।

परिशिष्ट क : अध्यायवार समीक्षा-प्रपत्र

प्रत्येक प्रविष्टिमे मूल पोथीक अध्याय-संख्या आ शीर्षक जसक तस लिखू; समीक्षकक बनाओल शीर्षक अलग चिह्नित हो।

पहिचान: पोथी, संस्करण, खण्ड, अध्याय, पृष्ठ-सीमा, शब्द-संख्या, पाठक अवस्था।

अवस्था आ घटना: आरम्भिक अवस्था, निर्णायक घटना, अवस्था-परिवर्तन, परिणाम, अनसुलझल प्रश्न।

कथन: कथा-काल, कथन-क्रम, अवधि, आवृत्ति, वाचक, स्तर, दृष्टिबिन्दु, रहस्य।

रचना: चरित्र-संजाल, संवाद, भाषा, स्थान, बिम्ब, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य अथवा सचेत भङ्ग।

समानान्तरता: सत्ता, श्रम, लिङ्ग, जाति, वर्ग, क्षेत्र, पर्यावरण, मौन, वंचित अभिकर्ता, भाषा-भेद।

प्रमाण: पाठीय उद्धरण वा स्थान-सूचक, दाबीक प्रकार, हेतु, सम्भावित उपाधि, वैकल्पिक पठन, भरोसा-स्तर।

सम्बन्ध: पछिला अध्यायसँ कारण-संलग्नता, आगाँक पूर्वसूचना, उपकथा-संयोग, आवर्तनक रूपान्तरण।

निष्कर्ष: कलात्मक उपलब्धि; सीमित आलोचना; अनिर्णीत प्रश्न; समग्र थीसिसमे योगदान।

परिशिष्ट ख : निर्णायक अनुसन्धान-प्रश्न

१. उपन्यासक आरम्भ पाठकसँ कोन ज्ञान लुकबैत अछि, आ कोन अपेक्षा स्थापित करैत अछि?

२. कथाजगतक घटना-क्रम आ कथनक प्रस्तुति-क्रम कतय अलग अछि?

३. कोन घटनाक उल्लेख बारम्बार होइत अछि, आ प्रत्येक पुनर्कथनमे की बदलैत अछि?

४. कोन दृश्य अनेक पृष्ठ लैत अछि, मुदा कथाक समय अल्प अछि? ओकर प्रयोजन की?

५. घटनात्मक निर्णायकता शब्द-संख्यासँ कोना अलग अछि?

६. कथावाचकक ज्ञानक सीमा कतय पाठककेँ स्पष्ट होइत अछि?

७. कथावाचक आ पात्रक आवाज केहन भाषिक संकेतसँ अलग होइत अछि?

८. कोन पात्रक निर्णयक परिणाम दोसर, कम दृश्य पात्रपर पड़ैत अछि?

९. कथाक केन्द्र बदलला पर समाजक कारण-शृंखला कोना बदलैत अछि?

१०. कोन संघर्ष अन्तमे नहि सुलझैत, आ ई अनिर्णय रचनात्मक अछि कि अनवधान?

११. जाति, वर्ग, लिङ्ग आ पेशा कोना कथानक-निर्णयमे प्रवेश करैत अछि?

१२. लोकभाषा चरित्रक स्वायत्तता देत कि ओकरा रूपक बनबैत अछि?

१३. रसक प्रभाव कोन दृश्य-विन्यास, लय आ संकेतसँ सम्भव होइत अछि?

१४. ध्वनिक दाबी लेल पाठक भीतर दोसर कोन आधार भेटैत अछि?

१५. औचित्यक भङ्ग जानि-बूझि कएल शिल्प अछि कि पात्र-रचनाक असंगति?

१६. मिथकीय नामक पाछाँ वास्तविक रचनात्मक पुनर्गठन अछि कि केवल संकेत?

१७. प्राकृतिक दृश्य संघर्षक कारण बनैत अछि कि पृष्ठभूमि रहैत अछि?

१८. स्वप्न, स्मृति आ काल्पनिक घटना केहन संकेतसँ अलग पहिचानल जाए?

१९. कोन वचन पाठीय तथ्य अछि, कोन पात्रक विश्वास, कोन आलोचकक अनुमान?

२०. ऐतिहासिक दाबी लेल स्वतन्त्र स्रोत उपलब्ध अछि कि नहि?

२१. मौनक कारणक तीन अलग सम्भावना की-की अछि?

२२. सामाजिक केन्द्रक अतिरिक्त ककर अनुभव कथाक संरचना बदलैत अछि?

२३. अनुवाद अथवा श्रव्यरूपमे दृष्टिबिन्दु वा भाषिक अन्तर बदलैत अछि?

२४. समीक्षकक प्रमुख दाबीक विरुद्ध सभसँ प्रबल साक्ष्य की अछि?

२५. कृतिक अन्त आरम्भिक प्रश्नकेँ सुलझबैत, बदलैत कि जटिल बनबैत अछि?

२६. लेखकक प्रस्तावना आ मुख्य पाठ एक-दोसरसँ कतय सहमत अथवा असहमत अछि?

२७. एकटा उपकथा हटा देल जाए तँ सम्पूर्ण संरचना कतबा बदलैत?

२८. पाठकक सहानुभूति कखन एक पात्रसँ दोसर पर सरकैत अछि?

२९. कोन निष्कर्ष उच्च विश्वास, कोन केवल सम्भावना आ कोन अज्ञात अछि?

३०. समग्र मूल्याङ्कनमे कृति कोन नूतन आख्यान-प्रयोग सिद्ध करैत अछि?

परिशिष्ट ग : मूल शब्दावली

कथा: घटनासंसारक पुनर्निर्मेय अनुक्रम।

कथन: कथा व्यक्त करबाक भाषिक वा माध्यमगत क्रिया।

आख्यान: कथा, कथन आ ग्रहणक संगठित रचना।

कथाजगत: कृतिक भीतरक सम्भावित विश्व आ ओकर नियम।

कथनकाल: कथन करबाक समय वा पाठमे समयक वितरण।

कथाकाल: कथाजगतमे घटनाक समय।

दृष्टिबिन्दु: जानकारी, अनुभव आ निरीक्षणक स्थान।

कथावाचक: कथा कहबाक पाठीय अभिकर्ता; लेखकसँ भिन्न।

घटनात्मकता: अवस्था-परिवर्तनक कथात्मक महत्त्व।

कथनस्तर: मूल कथन आ अन्तःस्थ कथाक पदानुक्रम।

रस: रचनाक भाव-संगठनसँ सम्भावित आस्वाद।

ध्वनि: प्रत्यक्ष शब्दार्थसँ अतिरिक्त संकेतित अर्थ।

वक्रोक्ति: कलात्मक वक्र अथवा अप्रत्याशित भाषिक-विन्यास।

रीति: शैलीगत गठन आ शब्द-चयनक प्रवृत्ति।

औचित्य: प्रसंग, पात्र, भाषा आ कलात्मक लक्ष्यक अनुरूपता।

पक्ष: समीक्षा-विचारक निर्दिष्ट विषय।

साध्य: स्थापित करबाक प्रस्तावित गुण अथवा निष्कर्ष।

हेतु: निष्कर्षक पक्षमे देल कारण अथवा संकेत।

व्याप्ति: अनुमानकेँ सम्भव करएवला सामान्य सम्बन्ध; साहित्यिक प्रसंगमे सावधानी अपेक्षित।

उपाधि: सामान्य अनुमानकेँ सीमित करएवला विशेष शर्त।

अवच्छेदक: दाबीक अर्थ-सीमा निर्धारित करबाक सूक्ष्म भेदक।

पूर्वपक्ष: प्रतिद्वन्द्वी व्याख्याक सक्षम प्रस्तुति।

उत्तरपक्ष: प्रमाणक संग आलोचनात्मक प्रत्युत्तर।

पाठीय तथ्य: पाठमे प्रत्यक्ष उपलब्ध सामग्री।

कथाजगतक तथ्य: रचनाक भीतर स्थापित अथवा विवादित घटना।

व्याख्यात्मक दाबी: पाठसँ प्रेरित, प्रतिवादयोग्य अर्थ-प्रस्ताव।

बाह्य इतिहास-दाबी: कृतिक बाहरक संसारबारे सत्यापनीय कथन।

समानान्तर दृष्टि: विविध स्रोत, शक्ति-स्थान, समय आ स्वरक परस्पर-परीक्षण।

मौन-विवेचन: अनुपस्थित आवाज अथवा साक्ष्यक कारणपर अनुसन्धान।

समप्रमाणता: सभ दाबीक लेल स्पष्ट, असमान स्रोतस्थितिक प्रति सजग, समान विवेचन-निष्ठा।

आधारग्रन्थ आ सन्दर्भ-सूची

भारतीय काव्यशास्त्र आ नव्य-न्याय : मूल ग्रन्थ

१. भरतमुनि। नाट्यशास्त्र। विशेषतः रस आ भाव-सम्बन्धी अध्याय; संस्करणभेद अनुसार अध्याय-पृष्ठ पृथक् देखू।

२. भामह। काव्यालङ्कार।

३. दण्डी। काव्यादर्श।

४. वामन। काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति।

५. आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

६. अभिनवगुप्त। अभिनवभारती; ध्वन्यालोकलोचन।

७. कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

८. क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा।

९. मम्मट। काव्यप्रकाश।

१०. राजशेखर। काव्यमीमांसा।

११. विश्वनाथ कविराज। साहित्यदर्पण।

१२. गंगेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि; प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द खण्ड।

१३. उदयनाचार्य। न्याय-कुसुमाञ्जलि।

आधुनिक आख्यानशास्त्र आ विवेचन

१४. Gérard Genette. Narrative Discourse: An Essay in Method. Cornell University Press, 1980.

१५. Seymour Chatman. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Cornell University Press, 1978.

१६. Mieke Bal. Narratology: Introduction to the Theory of Narrative. University of Toronto Press; विभिन्न संस्करण।

१७. Mikhail Bakhtin. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

१८. Wayne C. Booth. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961.

१९. Monika Fludernik. Towards a ‘Natural’ Narratology. Routledge, 1996.

२०. David Herman. Basic Elements of Narrative. Wiley-Blackwell, 2009.

२१. Susan S. Lanser. Fictions of Authority: Women Writers and Narrative Voice. Cornell University Press, 1992.

२२. Paul Ricoeur. Time and Narrative. University of Chicago Press; तीन खण्ड, 1984–1988.

२३. Manfred Jahn. Narratology 3.01: A Guide to the Theory of Narrative. University of Cologne, 2026 (ऑनलाइन शैक्षणिक मार्गदर्शिका)।

समानान्तर इतिहास, ज्ञानमीमांसा आ ऑनलाइन शैक्षणिक सन्दर्भ

२४. गजेन्द्र ठाकुर। ‘समानान्तर इतिहास-दृष्टि’। समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय ७०; विदेह डिजिटल अनुसन्धान संस्करण, २०२६। https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/research-articles/parallel-philosophy/volume-1/mai/chapter-070/

२५. Gajendra Thakur. ‘The Parallel View of History: Genealogy, Archive and…’. Parallel Philosophy, Volume II, Chapter 95; Videha Research Article Edition, 2026. https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/research-articles/parallel-philosophy/volume-2/en/chapter-095/

२६. ‘Gaṅgeśa’. Stanford Encyclopedia of Philosophy, संशोधित २०२४। https://plato.stanford.edu/entries/gangesa/

२७. ‘Analytic Philosophy in Early Modern India’. Stanford Encyclopedia of Philosophy; नव्य-न्यायक व्याप्ति-विवेचन। https://plato.stanford.edu/entries/early-modern-india/

२८. ‘Introduction to Indian Poetics’. INFLIBNET, Indian Literary Criticism and Theory. https://ebooks.inflibnet.ac.in/engp11/chapter/introduction-to-indian-poetics/

२९. Manfred Jahn. ‘Focalization’. The Cambridge Companion to Narrative. Cambridge University Press, 2007. https://doi.org/10.1017/CCOL0521856965.007

३०. Marie-Laure Ryan. ‘Space’. The Living Handbook of Narratology, University of Hamburg. https://www-archiv.fdm.uni-hamburg.de/lhn/node/55.html

३१. ‘Narrativity’ तथा ‘Event and Eventfulness’. The Living Handbook of Narratology, University of Hamburg. https://www-archiv.fdm.uni-hamburg.de/lhn/node/27.html

३२. विदेह। ‘A Parallel History of Mithila & Maithili Literature’—समग्र सूची आ अनुसन्धान-सामग्री। https://videha-ejournal.github.io/videha/gajenthakur.htm

[ऑनलाइन सन्दर्भ १ नवम्बर २०२६ धरि जाँचल गेल।]

खण्ड २ | कथाक धार, समयक घाट

गोहि सभक बीच जलसमाधि : सम्पूर्ण ३०१ प्रकरणक कथा-आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

मूल कृति : गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण मैथिली त्रयी

मूल उपन्यासकार : गजेन्द्र ठाकुर

आलोचनाक परिधि : ३०१ समीक्षा प्रकरण; मूल अध्याय ~१०० सँ २००।

आलोचनात्मक पाठमे कथानकक घटनासभ आ ओकर व्याख्या अलग-अलग राखल गेल अछि। उपन्यासक भीतरक आरोप, संशय अथवा पात्रक कथनकेँ बाह्य प्रमाणित इतिहास वा विधिक दोषसिद्धि मानल नहि जाए।

अन्तिम अध्यायमे कथात्मक रूपेँ सर्जित असङ्गति आ स्वतन्त्र पाठगत असामञ्जस्यक भेद पर विशद विवेचन अछि।

आमुख : कथा पढ़बाक स्थिति

एहि समग्र अध्ययनक केन्द्र कथाक मूल्यांकन अछि—के बाजैत अछि, ककरा दृष्टिसँ घटना देखाओल जाइत अछि, समय कोना सरकैत अछि, कोन वस्तु दोसर दृश्य धरि स्मृति लऽ जाइत अछि, आ कथाक भीतर उपस्थित अनेक गवाही पाठकसँ कोन प्रकारक निर्णय माँगैत अछि। पूर्वकथाक ऋण, नदी-पोखरिक जीवन, नाटक आ लोकगीत, कानूनी रेकर्ड, डिजिटल आवाज आ घरक नाम—सभ एके आख्यानात्मक संसारक अलग स्तर बनबैत अछि।

प्रत्येक समीक्षा प्रकरण मूल अध्यायसँ सम्बन्धित अछि। मूल अध्याय −१०० पर पहिल समीक्षा, अध्याय ० पर एक सय एकम समीक्षा आ अध्याय २०० पर तीन सय एकम समीक्षा अछि। जाहि ठाम मूल पाठ अनेक सम्भावना खोलैत अछि, आलोचना ओकर अपूर्णता सुरक्षित रखैत अछि; जाहि ठाम पाठगत असामञ्जस्य अछि, ओकरा कल्पित सेतु सँ नहि ढाकैत।

पुस्तकक अन्तिम विस्तृत विवेचन एहि प्रश्नक परीक्षण करैत अछि जे असङ्गति कथन-पद्धतिक साधन कखन बनैत अछि, आ कखन प्रकाशनपूर्व पाठ-मिलानक विषय रहैत अछि।

प्रकरण १ | मूल अध्याय −१०० — शंख आ रजत

पहिल उद्घाटन : वस्तुक भ्रमसँ सामुदायिक सत्यक प्रश्न

कादम्बरी अपन पूर्वकथाकेँ साधारण ऐतिहासिक विवरणसँ नहि, एकटा प्रश्नक नाटकीय प्रतिक्षणसँ खोलैत अछि। गढ़ नारिकेल, चन्ना गाछी, पीपर, जोड़ी पोखरि आ बूढ़बाक परिचय अत्यन्त संक्षिप्त प्रवेशमे एकसंग उपस्थित अछि। कथावाचक कहैत छथि जे गामक स्मृति बारह सय बरख धरि गाछक जड़िमे जीबैत आयल अछि। ई विवरणक तात्कालिक लक्ष्य स्थलक यथार्थवादी नाप नहि, स्मृतिक कालावधि आ सामूहिक साक्षीक एकटा विचित्र नियम स्थापित करब थिक।

आमुख-फकराक सार अछि—“चमकैत सभटा चानी नहि, आ नाम सभटा देह नहि”। प्रथम खण्ड शुक्ति–रजतक दार्शनिक दृष्टान्तक जनभाषायी रूपान्तरण करैत अछि; दोसर खण्ड नाम, देह आ सामाजिक अस्तित्वक भेद खोलैत अछि। दुनू कथन एकसंग रखलाक फलस्वरूप पाठक जानि जाइत अछि जे भ्रामक प्रत्यक्षक समस्या आगाँ पहिचान, अभिलेख, मृत्यु आ गवाहीक नैतिक समस्याक रूपमे घुरत। मुदा पहिने सँ घोषित ई सेतु साहित्यिक प्रतिज्ञा मात्र अछि: बादक प्रत्येक अध्यायमे ओ कार्यरूपेँ सिद्ध होइत अछि कि नहि, तकर स्वतन्त्र जाँच चाही।

कथावाचकक उद्घाटन “बारह सय बरख पूर्व”क वाद-शालामे पाठककेँ फेर लऽ जाइत अछि। वर्तमानक डिजिटल “स्क्रीनक जाल” आ पुरान शंख-रजत-विवाद एकहि अनुच्छेदमे मिलैत अछि। एकरे फलस्वरूप कथनक आरम्भमे पूर्वदीप्ति आ भविष्य-संकेत दुनू अछि। कालिक दूरी एतय केवल पृष्ठभूमि नहि; ई उपन्यासक विशाल समयमान स्वीकार करबाक पाठकीय शर्त बनैत अछि।

वास्तविक घटना-मानचित्र : दृश्य आ ज्ञानपरिवर्तनक भेद

प्रवेशमे पुरान गाम आ बूढ़बाक कथा “कहल जाइत अछि” रूपमे देल गेल अछि; बूढ़बाक उत्पत्तिक सत्य पाठकक सोझाँ प्रत्यक्ष घटित नहि होइत। नाटकक पहिल बाह्य क्रिया सेवक द्वारा दीप, डोरी आ शंख राखब अछि। सूत्रधार एहि वस्तुसभकेँ देखाबैत छथि, नाटकक समस्या स्थिर करैत छथि आ गीत गबैत छथि। ई सीमित मंचीय क्रिया आ विचारक बहुत पैघ विस्तारक बीच अनुपात एहि अध्यायक मूल रचनात्मक चुनाव अछि।

पहिल अंकमे आक्षेपक आत्माक अन्वेषणक आवश्यकता पर प्रश्न उठबैत छथि; उत्तरमे “हम” क अस्तित्व-निश्चय आ ओकर स्वरूप-ज्ञान अलग कएल जाइत अछि। दोसर अंकमे नैयायिक अन्यथाख्यातिक विवरण प्रस्तुत करैत छथि आ वाचस्पति ओकर आपत्तिपरीक्षा करैत छथि। तेसर अंक प्राभाकरक अख्यातिक व्याख्या जाँचैत अछि। चारिम अंक अनिर्वचनीयख्यातिक सिद्धान्तक पक्षमे निर्णायक कथन करैत अछि। उपसंहारमे सूत्रधार शंख उठाकऽ फेर ओतहि राखि दैत छथि। फलतः मंचपर वस्तु प्रायः अपरिवर्तित रहैत अछि, मुदा ओकर व्याख्याक दावा बदलि गेल अछि।

एहि श्रृंखलामे बाह्य नाटकीय कार्रवाई न्यून अछि; सत्यक स्वामित्वक दावा, प्रतिपक्षक अनुमान आ सभाक मौन मुख्य अन्तर घटना बनैत अछि। पाठककेँ चारि अंकक बीच प्रत्याशित नाटकीय तनाव मुख्यतः वैचारिक विरोधक सहारे धारण करय पड़ैत अछि।

घटना आ तर्कगत रूपान्तरणक संक्षिप्त सारणी

पाठ-विभाग	पाठसिद्ध क्रिया/विवाद	आख्यानशास्त्रीय वर्गीकरण
प्रवेश	गढ़ नारिकेल आ बूढ़बाक पूर्वकथा	पृष्ठभूमि/कथित इतिहास; तत्काल मंचीय घटना नहि
मंच-स्थापना	सेवक शंख, डोरी आ दीप राखैत अछि	दृश्य वस्तु-स्थापना; विवादक हेतु
अंक प्रथम	“हम” क ज्ञान आ अन्वेषणपर प्रश्न	ज्ञानसम्बन्धी समस्या स्पष्ट
अंक द्वितीय	नैयायिकक अन्यथाख्याति आ उत्तर	प्रतिपक्षीय प्रस्ताव आ प्रतिवाद
अंक तृतीय	प्राभाकरक अख्याति आ उत्तर	दोसरा प्रतिपक्षक सीमा प्रस्तुत
अंक चतुर्थ	अनिर्वचनीयताक स्थापना	सिद्धान्त-पक्षक ज्ञानपरिवर्तन
उपसंहार	सूत्रधार शंख उठा पुनः राखैत अछि	वस्तु स्थिर; दर्शकक अर्थानुभव बदलल
भामती-समूह	दृष्टान्त आ श्रुति-वचनक संचय	विवेचनात्मक परिशीलन; पृथक कथाघटना नहि

कथावाचक, दृष्टिकेन्द्र आ आख्यान-स्तर

अध्यायक पहिल चारि परिच्छेदमे गामक काल, बूढ़बाक लोक-रूप आ भविष्यक संकटकेँ एकटा व्यापक जानकारीवला तृतीयपुरुष कथन-स्वर जोड़ैत अछि। एहि स्वरक कथनाधिकार व्यापक अछि, मुदा बूढ़बाक वास्तविक अस्तित्वक विषयमे ओ निश्चित निष्कर्ष नहि दैत: “केओ कहैत अछि” प्रकारक सूत्र लोकविश्वास आ कथ्यसत्यक दूरी बनाए रखैत अछि। “बारह सय बरखसँ”क विवरण लोकस्मृतिक दावा अछि, सत्यापित इतिहासलेखन नहि।

वादशालाक भीतर कथन-स्तर बदलैत अछि। सूत्रधार सीधा दर्शककेँ सम्बोधित करैत छथि—डोरी आ शंख देखबाक आग्रह करैत। फेर आक्षेपक, वाचस्पति, नैयायिक आ प्राभाकर स्वयं अपन ज्ञानसीमा सँ बजैत छथि। एहि कारण “कौन देखैत अछि?” आ “कौन बजैत अछि?” एक नहि रहैत। मंचक प्रेक्षक डोरी/शंख देखैत छथि; भ्रमित व्यक्ति मात्र उदाहरणक भीतर उपस्थित अछि; वादक ओकर अनुभवक प्रतिपादन करैत छथि। नैयायिकक द्वारा कथित चानी वस्तुत: मंचपर उपस्थित नहि; ओ तर्कक विवादित वस्तु अछि।

अन्तमे “भामती—कथा, आख्यान, दृष्टान्त आ उद्धरण”क विभागमे सूत्रधार पुन: संकलक आ उपदेशक रूप ग्रहण करैत छथि। नाट्यपात्रक जीवित आवाज ओकरा पश्चात् परम्परागत उदाहरण आ श्रुतिवचनक सतत अनुक्रममे बदलि जाइत अछि। ई कथन-स्तरक फेरबदल महत्त्वपूर्ण अछि: शास्त्रार्थक बहुवाचकता अन्तत: एक व्याख्याताक अधिकारमे समेटल जाइत अछि। एहि स्थानपर बहुस्वर कथनक उपलब्धि आ वाचिक एकस्वरताक सीमा दुनू अनुभूत होइत अछि।

काल, अवधि, पुनरावृत्ति आ कथात्मक दूरी

आरम्भक किछु परिच्छेदमे लगभग बारह सय बरख समेटि लेल जाइत अछि; वाद-शालाक एक साँझक प्रस्तुति अनेक पृष्ठ धरि फैलैत अछि। इतिहासक दीर्घता आ तात्कालिक बहसक विस्तारक ई अनुपात जेरार जेनेत द्वारा विवेचित कथाक अवधि आ कथनक अवधिमे अन्तर जाँचबाक अनुकूल उदाहरण अछि। “अध्याय −१००”क ऋणात्मक क्रम स्वयं एकटा परापाठीय काल-संकेत अछि; ई घटनाक वास्तविक तिथि नहि, पाठककेँ दीर्घ पूर्वकथामे प्रवेश कराबयवला संरचनात्मक व्यवस्था अछि।

शंखक भ्रम तीन स्तरपर घुरैत अछि—फकराक सूत्र, गीतक लय आ नाट्यतर्कक विषय। पुनरावृत्ति मात्र समान शब्दक वापसी नहि: फकरामे ओ नैतिक निष्कर्ष, गीतमे सामुदायिक कण्ठ, संवादमे विश्लेषणीय समस्या बनैत अछि। मुदा चारिम अंक समाप्त होइतहुँ ओहि अर्थकेँ फेर विस्तृत दृष्टान्तक संचयमे दोहराएब गति धीमा करैत अछि। एतय पुनरावृत्तिक कार्य आ पुनरुक्तिक भारक अन्तर देखबाक अछि।

पहिने वाचक “बूढ़बा” सम्बन्धी आश्चर्यक दूरी बनबैत छथि, बादमे शास्त्रार्थक अर्थक व्याख्या अति निकटसँ देब शुरू करैत छथि। पाठककेँ स्वतन्त्र अनुमानक अवकाश शुरूक अनिश्चिततामे अधिक, आ अन्तिम निरूपणमे कम भेटैत अछि। एहि दूरीक संकुचनकेँ मात्र दोष नहि कहल जा सकैत; बौद्धिक पाठ-संरचनामे स्पष्टता आवश्यक अछि। मुदा उपन्यासक प्रश्नवादी स्वभाव लेल किछु अनिर्णय सुरक्षित राखबो महत्त्वपूर्ण अछि।

पात्र, संवाद, मौन आ सामाजिक प्रतिनिधित्व

वाचस्पति मिश्र एहि अध्यायमे केन्द्रीय व्याख्यात्मक सत्ता छथि। आक्षेपक संशयक नैतिकता उपस्थित करैत छथि, किएक तँ हुनकर प्रश्न बिना सिद्धान्तक उद्घाटन असम्भव छल। नैयायिक आ प्राभाकरक पृथक दार्शनिक मत हुनका विशिष्ट आवाज दैत अछि; तथापि हुनकर मानवीय व्यक्तित्व अपेक्षाकृत क्षीण अछि। ओ सभ तर्कक कार्य लेल उपस्थित छथि, न कि अपना सामाजिक जीवन, स्मृति वा स्वतन्त्र भविष्यमूलक इच्छाक संग। एतए “पात्र” आ “तर्क-स्थान”क अन्तर स्पष्ट अछि।

परिषद्क “हल्की हँसी” आ दोसर अन्तक “मौन” प्रतिपक्षी सिद्धान्तक सामाजिक पराजयक मंचीय संकेत बनैत अछि। ई बहसक दृश्य-गति देबामे सफल अछि, मुदा वादक समताक प्रश्न सेहो उठबैत अछि: कथाकारक प्रिय समाधानक आगाँ विरोधीकेँ अन्तिम शब्द किएक नहि भेटैत? नैयायिकक उत्तर तुरन्त कमजोर बनि जाइत अछि, प्राभाकर अपन आपत्ति पूर्ण विस्तारमे निबटा नहि पबैत छथि। ई नाट्य-कुशलता तर्कक अन्तिम दार्शनिक प्रमाण नहि अछि।

सूत्रधार, वाचस्पति आ सभ घोषित वादक पुरुषस्वर छथि। आरम्भमे सामुदायिक स्मृतिक विशाल प्रतिज्ञा देल गेल अछि, मुदा एहि वाद-शालामे स्त्री, मजदूर, शिल्पी अथवा सेवा करनिहारक स्वतन्त्र प्रतिवाद उपस्थित नहि अछि। सेवक शंख आ दीप राखैत अछि पर बजैत नहि। ई अभाव पहिल अध्यायक सामाजिक सीमा अछि; एकर आधारपर पूरा उपन्यासमे एहि समुदायसभक अनुपस्थिति घोषित करब उचित नहि। प्रश्न ई अछि जे आगाँक सामूहिक आख्यान एतय सीमित ज्ञानसभाकेँ विस्तार दैत अछि कि नहि।

प्रतीक-व्यवस्था : शंख, डोरी, दीप, पानि आ नाम

शंख एहि अध्यायक वास्तविक मंचीय पदार्थ अछि। ओ द्वार लग राखल जाइत अछि, दीपक प्रकाशमे देखा जाइत अछि, उपसंहारमे उठायल आ फेर राखल जाइत अछि। एहने ठोस दृश्य-वस्तु बिना भ्रम-विवाद केवल पदावली रहि जाइत। नाटक शंखक स्थैर्य आ अर्थक अस्थिरताकेँ विपरीत दिशामे चलबैत अछि: वस्तु एके, किन्तु ओकर विषये दावासभ अनेक।

डोरीक साँप बुझायल जाएब भयक प्रतिरूप अछि; शंखक चानी बुझायल जाएब लोभ वा अपेक्षाक। एहि दुइ दृष्टान्तमे संवेदनात्मक भूलक परिणाम अलग अछि—एकठाम शरीर पाछू हटैत, दोसर ठाम हाथ आगू बढ़ैत। पाठ एहि भेदकेँ अधिक विस्तार नहि दैत, मुदा ई आगेक उपन्यासमे भयक प्रणाली आ लालचक जालक अलग नैतिक रूपरेखा बनाबय सकैत अछि। वर्तमान अध्यायमे ई सम्भावना मात्र अछि; आगामी अध्यायमे मात्र पुष्ट वा खण्डित कएल जाएत।

दीप ज्ञानक सरल विजयचिह्न बनि सकैत छल, मुदा नाटकक सूक्ष्मता एहि बातमे अछि जे उजास बढ़लापर शंख स्पष्ट होइत अछि, तैओ समाजक ज्ञान-विवाद तत्काल समाप्त नहि होइत। एहि सँ प्रकट होइत अछि जे स्पष्ट दृश्य आ व्याख्याक सहमति भिन्न प्रक्रिया अछि। “नाम”क धुरी शंखसँ व्यापक अछि: मूल फकरा देह-नामक भेद जोड़ैत अछि, बूढ़बाक कथामे गोहिक देह-भक्षण आ नामक अविनाशी साक्षी एकसंग अबैत अछि। पानि एखन विशाल बाढ़ि-घटना नहि, लोकस्मृति आ जलसमाधिक कथित आरम्भक संकेत थिक।

भारतीय दर्शनक अन्तर्पाठ : मूल शास्त्र आ रचनात्मक रूपान्तरण

अध्यायक भीतर घोषित अछि जे ई वाचस्पति मिश्रक “भामती” केर आरम्भिक अध्यास-विवेचनक तर्क-गतिक अनुसरण करैत अछि। “हम”क आत्मानुभूति, शरीरक परिवर्तन, स्वप्न-जागरण, अन्यथाख्याति, अख्याति आ अनिर्वचनीयख्याति—ई सभ शास्त्रीय विवादकेँ क्रमबद्ध नाट्यपात्रमे बाँटल गेल अछि। एहि नाट्यरूपान्तरणमे प्रतिपक्ष एकटा बोलनिहार मनुष्य बनैत अछि, सिद्धान्त केवल शास्त्रीय पद नहि रहैत।

मुदा मूल दार्शनिक आ मंचित तर्कक समानता सावधानीसँ निर्धारित होएबाक चाही। नाटक स्वयं कहैत अछि जे “नैयायिक, प्राभाकर, आ आक्षेपक संयुक्त पात्र” छथि। अतएव हुनकर संवाद ऐतिहासिक वाचस्पति, कोनो वास्तविक नैयायिक वा प्राभाकरक प्रमाणित प्रत्यक्ष संवाद नहि। शास्त्रक भीतरक मत-संघर्ष आ लेखकक द्वारा रचित चरित्रगत दृश्य—दुनूक सीमा निबन्धनमे निरन्तर रखल जाए।

भामतीक पश्चात् दृष्टान्त-समूहमे स्फटिक-जपाकुसुम, गान्धारक मार्ग, दुइ पक्षी, शुक्ति-रजत, स्वप्नक दिव्य देह, कुण्डलधारी व्यक्ति आ अनेक श्रुति-वाक्य उपस्थित अछि। एहि सूचीसँ दार्शनिक संस्कृतिक व्यापक प्रतिध्वनि बनैत अछि, मुदा प्रत्येक सूक्ति/उद्धरणक मूल ग्रन्थ, स्थान, पाठभेद आ अनुवाद-प्रमाण पृथक अनुसंधान माँगैत अछि। किछु पंक्ति पाठमे सूत्र-रूपमे दीर्घसँ जुड़ल अछि; स्रोत-निर्धारण बिना हुनका सभकेँ कुनै एक मूल ग्रन्थक अक्षरशः उद्धरण कहब असंगत हएत।

तर्कपरीक्षा : पक्ष, हेतु, अवच्छेदक आ सम्भावित हेत्वाभास

अध्यायक मध्यस्थ प्रश्न “भ्रम की थिक?” अछि। शंख प्रत्यक्ष देखाइत अछि, चानीक ज्ञान उत्पन्न होइत अछि, आ पछाति प्रतिवादसँ ओ ज्ञान बाधित होइत अछि। वैचारिक पक्ष एकटा भ्रामक अनुभूति थिक; विवादित साध्य ओकर सत्तासम्बन्धी स्थिति अछि। न्यायमत दृश्य वस्तुक एक प्रकारक स्थानान्तरिक परिचयक विवरण दैत अछि; प्राभाकर मत प्रत्यक्ष आ स्मृतिक असम्बन्धक अविवेक देखैत अछि; अद्वैत पक्ष एहि अनुभूतिक अनिर्वचनीयता स्थापित करैत अछि। ई विवेचन नाटकक आन्तरिक रूपरेखा थिक, सम्पूर्ण शास्त्रीय परम्पराक निर्णायक पुनर्निर्माण नहि।

वाचस्पति नैयायिकसँ पुछैत छथि जे दूरक चानीक “इहाँ” प्रकट होएबक प्रमाण की अछि। एतय उचित आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे पूर्वपक्षक पक्ष-परिभाषा आ उत्तरमे खण्डित पक्ष एके अछि कि नहि। ज्ञानक वस्तु, ज्ञानक आकार, स्मृतिसम्बन्ध आ इन्द्रियदोषक बीच भेद स्पष्ट नहि रहत तँ प्रतिपक्षक सरलीकृत रूपकेँ परास्त करि देब सहज होइत अछि। एक सम्भावित उपाधि—प्रकाशदोष वा स्मृतिजन्य सहचर्यता—कए बिना व्याख्याक व्यापक निष्कर्ष निश्चित नहि मानल जाए।

प्राभाकरक उत्तरमे दू ज्ञानक मिश्रणक प्रश्न उठैत अछि; वाचस्पति पुछैत छथि जे मिश्रण स्वयं ज्ञान अछि वा मात्र अनवधान। ई आपत्ति रचनात्मक रूपेँ प्रभावी अछि। किन्तु तर्कक कथात्मक विजय आ प्रमाणमीमांसक अन्तिम सिद्धि समान नहि। “संसार सेहो शंखक चानी सदृश” एहि विस्तारमे दृष्टान्तसँ जगतक समग्र सत्तातत्त्व धरि छलाँग लगैत अछि; एतय दृष्टान्तक समानधर्म पर्याप्त कतेक अछि, से पृथक जाँचब आवश्यक अछि। नव्य-न्यायक भाषामे उक्त छलाँगक व्याप्ति आ अवच्छेदककेँ अधिक स्पष्ट करबाक अपेक्षा अछि।

एहि हेतु नव्य-न्याय शब्दावली उपयोगी आलोचनात्मक मापक अछि; मुदा ई नाटककेँ उत्तरकालीन नव्य-न्याय ग्रन्थ घोषित करबाक आधार नहि। एहि अध्यायक आलोचनामे प्रमाणक कमीसँ जँ कोनो साध्यक विस्तार अनिर्णीत रहैत अछि, तँ ओकरा “सिद्ध” नहि बल्कि “नाटकक सिद्धान्ती द्वारा स्थापित मानल गेल” कहल जाए।

रस, ध्वनि, औचित्य आ सहृदयक अनुभव

प्रस्तावनाक लोकगीत आ शंख-दृश्यकेँ संग पढ़लासँ एकटा प्रत्यक्ष भ्रामकता-ध्वनि निर्माण होइत अछि: चमक, रूप आ नामपर सहज विश्वास संकटग्रस्त होइत अछि। विस्मय आ जिज्ञासा आरम्भिक स्थायी मानसिक वृत्ति अछि; हास्यक सूक्ष्म क्षण न्यायमतक आपत्तिपर परिषद्क हँसीमे प्रकट होइत अछि। मुदा अध्यायक प्रमुख अनुभव करुणरसक परिपाक नहि, तर्कजन्य चिन्तनक आग्रह अछि। गामक जलसमाधि आ बूढ़बाक रहस्य करुण-संकेतक बीया थिक, एहि अध्यायमे पूर्ण करुण-दृश्य नहि।

औचित्यक प्रश्न दू ठाम विशिष्ट अछि। पहिल, लोकगीतक पंक्ति शास्त्रीय सभाक भाषिक संसारकेँ ग्राम्य कहबीसँ जोड़ैत अछि; एकर प्रस्तुति गढ़ नारिकेलक सामूहिक बोलीक औचित्य बढ़बैत अछि। दोसर, संवाद समाप्त होइतहि अत्यन्त विस्तारसँ उपनिषद्-दृष्टान्त आ तत्त्ववचनक क्रम शुरू होइत अछि। पाठक जँ नाट्य-रूपक निरन्तरता अपेक्षित करैत छथि तँ एकरस व्याख्यान-अंश नाटकीय औचित्यपर भार दैत अछि।

पाठकक स्थान बारंबार बदलैत अछि—पहिने गामक श्रोता, फेर सभाक दर्शक, फेर वादकक तर्कक जाँचकर्ता, फेर संकलित वचनक अध्येता। ई परतदार पाठकीयता महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, किन्तु एतेक जल्दी बदलैत पठन-संविदा सभ पाठक लेल समानरूपेँ सहज नहि होएत।

अन्तर्विरोध, पुनरावृत्ति आ उपलब्धिक निष्पक्ष मूल्यांकन

अध्यायक पहिल महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि जे दार्शनिक दृष्टान्तकेँ वास्तविक नाट्यवस्तु बनाओल गेल अछि। कोठलीक अन्हार, दीपक उजास, द्वार लग पड़ल शंख आ प्रेक्षकक चेष्टा—ई सभ एकटा मानसिक भ्रमकेँ दृश्यगत आकार दैत अछि। दोसर उपलब्धि अछि जे उपन्यासक बादक नाम, प्रमाण आ डिजिटल जालक संघर्ष लेल ज्ञान-सत्ता सम्बन्धी प्रारम्भिक प्रश्न स्थापित होइत अछि। तेसर उपलब्धि लोकफकराक लय, नाट्य-संवाद आ श्रुति-दृष्टान्तकेँ एकहि अध्यायमे जोड़बाक संरचनात्मक साहस अछि।

एहि उपलब्धिसभक सीमा सेहो स्पष्ट अछि। वादक पात्र अनेक स्थानपर मतक प्रतिनिधि मात्र रहि जाइत छथि; हुनकर जीवनगत उद्देश्यता आ स्वतन्त्र बहसक सम्भावना कम अछि। प्रतिपक्षक मौन आ परिषद्क हँसी विचारक निर्णयक स्थान लऽ लैत अछि। चारि-अंकीय नाटकक उपसंहार पछाति दृष्टान्तक अति-विस्तार पहले प्राप्त नाटकीय समाप्तिक प्रभावकेँ शिथिल करैत अछि। गामक श्रम आ सामाजिक पीड़ाक प्रतिज्ञा तात्कालिक वादशालामे प्रत्यक्ष बोलबाक अवसर नहि पबैत।

दर्शनक भाषिक प्रस्तुति कतेको ठाम प्रगल्भ अछि; तथापि सामान्य पाठक लेल तत्त्वसूत्रक घनत्व कथात्मक प्रवाह रोकि सकैत अछि। एहि बाधाकेँ केवल पाठकक अक्षमता कहि टारि नहि सकैत, किएक तँ उपन्यास स्वयं

अनेक समुदायकेँ सम्बोधित करबाक दावा करैत अछि। प्रश्न ई अछि जे कथा अपन ज्ञानकेँ समाजक भीतर प्रसारित करबाक हेतु कथात्मक सेतु पर्याप्त बनबैत अछि कि नहि।

अध्याय –१०० केर अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय सीमित अछि: ई एकटा बौद्धिक प्रस्तावना रूपेँ सफल अछि, विशेषत: भ्रमक प्रश्नकेँ नामक नैतिक अधिकारसँ जोड़बाक सम्भावनाकेँ कारण; मुदा स्वतन्त्र, पूर्ण घटनात्मक लघुकथा रूपेँ एकर तनाव असमान अछि। कथा-वस्तुक अपेक्षा विचारक क्रम अधिक विस्तृत अछि। एहि अनुपातकेँ आगामी अध्यायसभक सामाजिक घटनासँ मिलान कएलाक बादे पूर्ण त्रयीमे एकर औचित्य निश्चित कएल जा सकैत अछि।

समग्र त्रयीक संग सम्बन्ध : अभीष्ट परीक्षण

ई आरम्भिक अध्याय बारह सय बरखक कथासमय, बूढ़बाक साक्षी-रूप, नाम बनाम देहक द्वन्द्व, जलसमाधि-प्रसंगक सम्भावना आ आधुनिक स्क्रीन-जालक संकेत एकसंग स्थापित करैत अछि। किन्तु संकेतक उपस्थितिक अर्थ ई नहि जे सम्पूर्ण उपन्यास ओकर सफल निर्वाह केने अछि। अध्याय –९९ सँ आगाँ प्रत्येक विश्लेषणमे देखल जाएत जे आत्मा, स्मृति आ प्रमाणक ई वैचारिक प्रस्ताव स्त्रीक गवाही, श्रमिकक अदृश्यता, जल-पर्यावरण आ अंकीय अपराधक क्रियात्मक संसारमे केना बदलैत अछि।

इएह समीक्षा लेल निर्णायक अनुशासन हएत: साहित्यिक महत्त्वक निर्णय शब्द-संख्या, शास्त्रीय पदक प्रचुरता वा महत्त्वाकांक्षाक आधारपर नहि, पाठमे घटल परिवर्तन, कल्पनाक आन्तरिक संगति, विरोधी स्वरक न्यायसंगत प्रस्तुति आ पाठकीय अनुभूतिक संयुक्त परीक्षणपर कएल जाए। अध्याय –१०० एहि यात्राक प्रश्न रखैत अछि; उत्तर अन्तिम निष्कर्ष धरि खुलल रहत।

प्रकरण २ | मूल अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि-वाद

“हम” क गवाही : पूर्वाध्यायसँ प्रश्नक निर्णायक स्थानान्तरण

“शंख आ रजत”मे पहिचानक मूल प्रश्न ई छल जे देखल वस्तु आ ओकर मानल गेल अर्थ एकहि वस्तु छथि कि नहि। “आत्मसिद्धि-वाद” ओहि अनिश्चिततासँ उठाकऽ ज्ञाताक अस्तित्वपर रखैत अछि। एतय दार्शनिक उद्यमक कथात्मक क्रम महत्त्वपूर्ण अछि: जँ पहिले अध्यायमे दृष्टि भ्रमित भऽ सकैत छल, तँ दोसर अध्याय पुछैत अछि—भ्रमित होएबक अनुभव केकरा होइत अछि? ई लगातार दू अध्याय दर्शनक आकस्मिक सजावट नहि, बल्कि परिचय–प्रमाण–साक्षीक आरम्भिक बौद्धिक शृंखला रचबाक प्रयास छथि। मुदा एहि शृंखलाक कथात्मक वैधता आगाँक सामाजिक अध्यायमे साक्षी आ नामक अधिकारसँ ओकर सम्बन्ध देखलाक बादहि पूर्ण रूपेँ सिद्ध होएत।

प्रारम्भिक गाम-फकरा “जे 'हम' कहै छै, तकर गवाह ओकर अपने साँस” आत्मक साक्ष्यकेँ बाहरी गवाहीक विरुद्ध रखैत अछि। एतय “साँस” प्रत्यक्ष शरीरक लय अछि, तखन नाटकक तर्क ओहिसँ भिन्न, निरन्तर आत्माक सिद्धि करबाक प्रयत्न करैत अछि। फकराक सघनता एहि दू पृथक वस्तुकेँ एक अनुभूतिक सहज निकटतामे जोड़ैत अछि। ई रसात्मक उपलब्धि अछि, पर एकटा वैचारिक संकट सेहो: साँसक निरन्तरता एकदम

स्वतः अदेह आत्माक स्थायित्वक प्रमाण नहि। एहि भेदकेँ संग रखने बिना लोकभाषिक बिम्ब तर्कक अप्रमाणित निष्कर्षकेँ पहिनहि सँ स्वीकृत करबा सकैत अछि।

पहिल अध्यायक मञ्च-स्थापित शंख-दृश्य एतय नयका मञ्च-सामग्रीमे रूपान्तरित अछि—दिनमे जरैत दीप, राजसभाक वाद-शाला आ समय नापैत घटिका-यन्त्र। शंखक सत्तासँ आत्माक सत्ता धरि ई गमन विषयक अदला-बदली मात्र नहि, प्रमाणक मापक बदलबाक प्रक्रिया सेहो अछि। दार्शनिक प्रश्न कथाक क्रियामे कोना अबैत अछि से जाँचबाक लेल एहि अध्यायक नाटक, शास्त्रीय उपाख्यान आ सूक्तिसंग्रहकेँ पृथक रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

नाटकक विश्व आ कथावाचकक दोसर-स्तरीय स्थापना

अध्यायक प्रारम्भ स्वयं एकर रूप निर्धारित करैत अछि—भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त मौलिक नाट्य-रचना। सूत्रधार एहि रूप-घोषणाकेँ खाली रंगमञ्चीय विधि नहि राखि ऐतिहासिक दावाक सीमा बनबैत छथि। हुनकर स्पष्ट कथन “जे किछु अहाँ सुनब, से इतिहास नहि थिक” सबसँ महत्त्वपूर्ण प्रामाणिकता-निषेध अछि। उदयनक ऐतिहासिक व्यक्तित्व आ हुनक विरोधी “क्षणभद्र”क संयुक्त काल्पनिक निर्माणकेँ पृथक कहब पाठककेँ इतिहासक नामपर कल्पित प्रत्यक्ष वार्तालाप बेचबाक जोखिमसँ बचेबैत अछि।

एहि घोषित कृत्रिमतासँ नाटकक आख्यान-स्तर स्पष्ट होइत अछि: उपन्यासक विशाल कथाविश्वक भीतर सूत्रधारक प्रस्तुति; प्रस्तुति भीतर राजसभाक संवाद; संवाद भीतर बीज, घैल, सपना, आम, पाथर आ दीपक दृष्टान्त। कोनो दृष्टान्तक भीतर घटल घटना ऐतिहासिक वा मञ्चपर प्रत्यक्ष घटल घटना नहि थिक। आख्यानशास्त्रक दृष्टिएँ एकर स्तर-भेद मेटि देने घटनात्मक घनत्वक गणना तात्कालिक रूपेँ दूषित भऽ जाएत। सूत्रधारक प्रथमपुरुष उद्घोषणा आ उदयन–क्षणभद्रक प्रत्यक्ष कथन दुनूकेँ एकहि सर्वज्ञ कथावाचकक कथन कहब सेहो अशुद्ध हएत।

राजसभाक दिनमे दीप जलैत अछि; घटिका-यन्त्र वक्ताक समयक सीमा तय करैत अछि। दीप एकर पाठ-संकेत होइतहुँ ज्ञानक स्वप्रकाशक तर्कमे फेर प्रकट होइत अछि। घटिका-यन्त्र अधिक निर्णायक वस्तु अछि: वादी सभक तर्क अनन्त भऽ सकैत अछि, मुदा वादक सार्वजनिक अवसर सीमित अछि। सूत्रधार आरम्भेमे आदेश दैत छथि जे विरोधीकेँ पूर्ण समय भेटलापरहि जीतक दावा हुअय। ई औपचारिक समता आलोचनात्मक कसौटी बनैत अछि; बादमे विरोधीकेँ कतेक निश्चयक अधिकार भेटैत अछि से जाँचल जा सकैत अछि।

चारि अंकक घटनात्मक मानचित्र : अवस्थापरिवर्तन आ बौद्धिक मोड़

ई घटनाक निश्चित गणना नहि। मंचीय तथ्य देखल जाए तँ आरम्भमे सूत्रधार आवैत छथि, घटिका चालू होइत अछि, क्षणभद्र पूर्वपक्षीक आसन ग्रहण करैत छथि, दीप ठीक होइत अछि, उदयन तेसर अंकमे आसनसँ उतरि बराबरीपर अबैत छथि, आ अन्तमे क्षणभद्र सम्मानपूर्वक हाथ जोड़ि जाइत छथि। एहि सीमित बाह्य क्रियाक बीच मूल नाट्यघटना विचारक स्थिति बदलब अछि।

प्रथम अंक क्षणभंगवादक व्यापक दावासँ बीजक योग्यता आ कारणक निरन्तरता धरि पहुँचैत अछि। द्वितीय अंक स्वप्नक बाहरपनसँ एकसाथ देखल घैल आ पारस्परिक संवादक साझा संसार धरि बढ़ैत अछि। तृतीय अंक “हम” क व्याकरणिक काल्पनिकता, कर्तृत्व, शरीर आ स्मृतिक सहायतासँ कालातीत ज्ञाताक प्रश्नक केन्द्र बनबैत अछि। चतुर्थ अंक आत्माक बौद्धिक स्वीकारोक्तिसँ दुःख–मुक्तिक व्यावहारिक आपत्तिपर अबैत अछि। समापन ईश्वरक सिद्धिक विस्तृत विवाद छोड़ि दैत अछि। ई क्रम अतिक्रमित विषय-सूची मात्र नहि: प्रत्येक अंकक अन्तिम शंका अगिला अंकक शुरुआतक औचित्य रचैत अछि।

प्रमाणित घटना-परिवर्तनक कार्यसारणी

कथाखण्ड	मूल पाठमे घटल परिवर्तन	आलोचनात्मक वर्गीकरण
भूमिका	नियम सहित वादक उद्घाटन; क्षणभद्रक कल्पित पहचान स्पष्ट	नाट्यविधि/प्रमाण-सावधानी
प्रथम अंक	क्षणभंगवादक व्यापक दावा ‘योग्यता’ तथा बीजक स्थायित्वपर आनि चुनौती पबैत अछि	तर्कक अवस्था-परिवर्तन
द्वितीय अंक	स्वप्नक उदाहरणसँ ‘साझा घैल’ आ श्रोताक परस्परता धरि प्रश्न बढ़ैत अछि	ज्ञानक साझा संसारक विवाद
तृतीय अंक	उदयन आसन छोड़ैत छथि; शिष्य स्मृतिक आपत्ति उठबैत अछि; आलय-विज्ञानक उल्लेख अबैत अछि	मञ्चीय समता + स्मृतिपर निर्णायक शास्त्रार्थ
चतुर्थ अंक	क्षणभद्र आत्मा मानि लैत छथि, मुदा दुःख, मुक्ति आ ईश्वर-सिद्धिक सीमा पुछैत छथि	आंशिक स्वीकार आ नव प्रश्न
उपसंहार	सूत्रधार अन्तिम सिद्धान्तक बजाय प्रश्नकेँ तीक्ष्ण करबाक कसौटी दैत छथि	स्वचेतन/खुलल समाप्ति
दृष्टान्त-सूक्ति समूह	हाथी, शिशु, गृहिणी, जुलाहा, सर्पदंश, अनेक सूक्ति आदिक संचय	शास्त्रीय उद्धरणक रूपान्तर; तत्क्षण नाट्यघटना नहि

पहिल अंक : सत् आ क्षणिकक व्याप्तिक असिद्धता

क्षणभद्रक मूल प्रतिज्ञा अछि जे सत् वस्तु क्षणिक अछि; घैलक विनाशकेँ आत्माक विनाशक तुल्य उदाहरण बनाओल जाइत अछि। उदयन तुरन्त प्रश्न करैत छथि—“सत् होएब” आ “मात्र एक क्षण रहब” क व्याप्ति कतए अछि? ई पाठक भीतर उपलब्ध वास्तविक नव्य-न्यायसंगत परीक्षणक अवसर अछि। पक्ष आत्मा, साध्य क्षणिकत्व, प्रस्तावित हेतु सत्त्व, आ व्याप्ति “सत् वस्तु क्षणिक” थिक। घैल एक समय टूटैत अछि, मुदा एहि उदाहरणसँ सभ सत् वस्तुक प्रत्येक क्षण विनाशक नियम स्वतः नहि निकलैत अछि। उदयनक आपत्ति उदाहरणक अनुपयुक्त विस्तारपर लक्षित अछि।

तथापि आलोचना उदयनक निष्कर्षकेँ स्वतः अन्तिम न्याय नहि मानि सकैत अछि। दार्शनिक क्षणभंगवाद घैलक व्यवहारगत स्थायित्व आ अन्तिम विनाशक बीच भेदक स्वतन्त्र व्याख्या दऽ सकैत अछि। नाटकमे क्षणभद्र योग्यता-प्रवाह आ मशाल-दौड़क बिम्ब सँ प्रतिवाद करैत छथि; एहि प्रतिवादकेँ केवल रूपक कहि पूर्णतः निरस्त करब पर्याप्त नहि। विवादित कड़ी अछि—क्षणान्तरसँ क्षणान्तर धरि कारणात्मक नियमनकेँ स्थिर द्रव्य बिना कोना बुझाओल जाए। एहि हेतु उदयनक रूपक-प्रतिवाद एकटा तीक्ष्ण चुनौती अछि, किन्तु समस्त बौद्ध क्षणवादक ऐतिहासिक दार्शनिक खण्डनक स्वतन्त्र प्रमाण नहि।

बीज, जल, ताप, माटि आ ऋतुक प्रतीक्षा मिथिलाक कृषिजन्य अनुभवकेँ दार्शनिक अनुमाने जोड़ैत अछि। किसान लेल बीज ‘अखन अंकुरित नहि भेल’ आ ‘अंकुरणक योग्यता रखैत अछि’ एक गहन व्यावहारिक भेद अछि। कथा एहि लोक-अनुभवसँ तर्क सहज बनबैत अछि। मुदा बीजक व्यवहारगत निरन्तरता आ आत्माक आध्यात्मिक निरन्तरता एक समान अवच्छेदकवला धर्म नहि; बीजक निष्कर्ष आत्मामे स्थानान्तरित करबा लेल अतिरिक्त हेतु चाही। एहि असिद्ध विस्तारकेँ रचना नाटकीय आश्वासनक जोरपर पार करबैत अछि—ई एकर सीमा अछि।

दोसर अंक : स्वप्न, साझा घैल आ विवादक संवादात्मक विडम्बना

द्वितीय अंकक नाम “दर्पणक सभागार” अछि। क्षणभद्रक पक्ष स्वप्नक बगीचा सँ शुरू होइत अछि: स्वप्नमे बाहर बुझायवला दृश्य बाह्य वस्तुक बिना सेहो उत्पन्न होइत अछि। ई दृष्टान्त ज्ञानक ‘बाहरपन’ आ वस्तुक यथार्थ बाह्यता बीच भेद स्थापित करैत अछि। उदयन दू उत्तर दैत छथि—स्वप्न आ जागरणक व्यवहारगत अन्तर, आ एकहि घैल सम्बन्धी अनेक व्यक्तिक भार, आकार तथा ध्वनि-जाँचक संगति। एकल अनुभूतिसँ सार्वजनिक सहमति धरि एहि परिवर्तनमे नाटकक ज्ञानमीमांसा सामाजिक रूप लैत अछि।

सबसे प्रभावी नाटकीय प्रश्न ई अछि जे केवल अपन ज्ञान-धाराकेँ माननिहार क्षणभद्र स्वयं उदयनकेँ कोन आधारपर सम्बोधित करैत छथि। वादक रूप प्रदर्शनक पदार्थ बनि जाइत अछि। ई केवल दार्शनिक तर्क नहि: वास्तविक सभामे दू जन एक-दोसराक प्रत्युत्तर सुनैत छथि, अपन मत बदलैत छथि; तेँ श्रोताक सत्ता संवादक मञ्चीय अपेक्षा अछि। मुदा एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष बचैत अछि: परस्पर अनुभूति भिन्न-भिन्न मनक अनुभवक कारण-सम्बद्धता मात्रसँ सेहो समझाओल जा सकैत अछि की नहि? नाटक एहि सम्भावनाकेँ पूरा स्वतन्त्र रूपेँ जाँचि नहि पबैत।

क्षणभद्र “हम एहि स्तंभक टूटब मानैत छी” कहि अगिला प्रश्न दिस बढ़ैत छथि। ई प्रतिपक्षक वास्तविक आंशिक पराजयक कथात्मक क्षण अछि। मुदा सभ प्रतिपक्षी मतकेँ एक काल्पनिक पात्रमे जोड़लासँ खतरा अछि जे स्वप्नवाद, बाह्यार्थनिषेध आ सर्वस्व-क्षणभंगवाद एकहि अनिवार्य दर्शनक अनिवार्य शाखा बुझायल जाए। मूल सूत्रधारक संयुक्त पात्रक घोषणा एहि समस्याकेँ ईमानदारीसँ पहिचानैत अछि; पाठककेँ सेहो एहि मिश्रित स्वरताकेँ ऐतिहासिक एकरूपता नहि मानबाक चाही।

तेसर अंक : ज्ञाताक प्रश्न, व्याकरण आ स्मृतिक पुल

तेसर अंकक आरम्भमे उदयन अपन आचार्य-आसन छोड़ि क्षणभद्रक बराबरि ठाढ़ होइत छथि। पूर्वोक्त औपचारिक बारीक समताकेँ एतय दृश्यात्मक पुष्टि भेटैत अछि। नाटकक शारीरिक भाषा तर्कक अधिकार बदलैत अछि—व्यक्तिक प्रतिष्ठा नहि, प्रश्नोत्तरक प्रमाण निर्णायक कहल जाइत अछि। परञ्चु एहि प्रतीकक सफलता बादक संवादमे कतेक प्रतिपक्षी विकल्प जीवित रहैत अछि, ताहिपर निर्भर अछि।

उदयन “हम थाकल छी” आ “हम बुझलहुँ”क कथनसँ कर्ताक प्रश्न उठबैत छथि। क्षणभद्र “बरखा भ' रहल अछि” जकाँ कर्ताहीन वाक्यक प्रतिदृष्टान्त दैत छथि। एहि उपस्थापनमे पूर्वपक्ष दुर्बल चुप पात्र नहि; व्याकरण आ सत्तामीमांसाक भेदक वास्तविक प्रश्न उपस्थित करैत अछि। उदयन ओकर उचित प्रत्युत्तर मानैत छथि, फेर ज्ञान-क्रिया आ कर्ताक स्वामित्वक बीच भेद करबाक आग्रह करैत छथि। ई बारीक संवाद एकर उत्कृष्ट शास्त्रार्थी क्षण अछि, कारण विरोधीक कथनकेँ पहिने पूरा सुना रहल अछि।

मुदा ज्ञान एकटा क्रिया अछि, आर प्रत्येक क्रियाक पृथक कर्ता चाही—ई व्यापक प्रस्ताव स्वयं उपाधि-मुक्त व्याप्तिक परीक्षा माँगैत अछि। “बरखा”क विरोधीदृष्टान्तकेँ स्वीकारि ओकरा बाहर रखबाक बादो कर्तृत्वक सार्वभौम नियम अपने नहि सिद्ध होइत। यथार्थ आलोचना करैत हम एहि कथात्मक प्रश्नकेँ आंशिक सिद्धि कहब: नाटक ज्ञाताक विकल्पकेँ प्रबल बनबैत अछि, ओकर एकमात्र तार्किक अनिवार्यता नापि पूरा प्रमाणित नहि करैत।

शिष्यक पूछल प्रश्न “आचार्य, हम एकटा प्रश्न पूछी जे हमरा व्यथित करैत अछि?” संवादक सर्वोत्तम मानवीय परिवर्तनमे सँ एक अछि। एतय सार्वजनिक प्रतिपक्षक बदला अपन पक्षक जिज्ञासुक माध्यमे दृष्टान्तक अपर्याप्तता उठैत अछि। उदयन बचपनमे चाखल आमक वर्तमान स्मृतिसँ एकहि व्यक्तिक जीवनक कालिक पुल बनबैत छथि। कथात्मक दृष्टिसँ ई अध्यायक केन्द्रीय ‘आन्तरिक घटना’ अछि: तर्क देहधारी स्मृतिक कथामे बदलि जाइत अछि। मुदा स्मृति–स्वत्व–स्थिर आत्मा तीनूकेँ एक पंक्तिमे मानबाक बजाय यादक कारणात्मक शृंखला, गलत स्मृति आ स्मृतिक सामाजिक निर्माणक सम्भावना जाँचबाक अछि।

क्षणभद्र आलय-विज्ञानक नाम लैत छथि। उदयन ओकर गुप्त निरन्तरताकेँ अपने स्वीकृत आत्माक निकट मानैत छथि। एतय तात्त्विक समानार्थकता घोषित करब नितान्त जल्दबाजी हएत: निरन्तरताक व्याख्याक प्रयोजन आ चिरस्थायी आत्मद्रव्यक प्रतिज्ञा अलग भऽ सकैत अछि। नाटकक भीतर ई क्षण नाटकीय मिलनक अछि; दार्शनिक इतिहासक स्तरपर ई ऐतिहासिक सम्प्रदाय सभक अन्तिम मेलक अभिलेख नहि। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित रखब आलोचनाक शर्त अछि।

चारिम अंक : प्रमाणक विवादसँ दुःख, मुक्ति आ अनुत्तरित ईश्वर धरि

चतुर्थ अंकमे क्षणभद्र एकटा अप्रत्याशित मोड़ आनैत छथि: मानि लिअ आत्मा अछि, पर प्रश्न ई जे दुःख किएक अछि आ मुक्ति वास्तवमे सम्भव कोना अछि। हुनकर वाक्य “की अहाँ हमरा एकटा एहन आत्मा जीतल जे रखबा लायक होइ?” दार्शनिक विजयकेँ व्यावहारिक नैतिक कसौटीपर मापैत अछि। एतय सिद्धान्तक उपरान्त मनुष्यक पीड़ा प्रवेश करैत अछि। कथात्मक दृष्टिएँ ई अध्यायक तीव्रतम मोड़, कारण पूर्ववर्ती प्रश्नक उत्तर आचार्यक लेल जतेक पर्याप्त छल, पात्रक जीवनगत उद्देश्य लेल ओतेक नहि।

उदयन उत्तर दैत छथि जे भ्रमक बन्धन आ ओकर संशोधनक बीच एक निरन्तर विषय होएबाक कारण मुक्ति अर्थवान बनैत अछि। मुदा क्षणभद्रक वास्तविक प्रश्न—दुःख घटएबाक सिद्ध साधन, मुक्तिक अनुभूतिमूलक वा नैतिक कसौटी—ओतय पूरा सुलझैत नहि। नाटक एहि अपूर्णताकेँ ढाँपैत नहि; अगिला प्रश्नमे ईश्वरसत्ताक आवश्यकता उठैत अछि, आ उदयन स्वयं समयक सीमा स्वीकारैत छथि। समापनक ई असिद्धता दू भिन्न ढंगसँ पढ़ल जा सकैत अछि: एक, दर्शनक विनम्र खुलल अवकाश; दोसर, रचनाक अनिर्णीत कठिनाईकेँ अगिला प्रसंगपर छोड़बाक सुविधा।

क्षणभद्रक अन्तिम सम्मानपूर्ण उठब पराजयक अनिवार्य दृश्य नहि; मंच-निर्देश स्पष्ट कहैत अछि जे ओ पूर्ण पराजयक भाव नहि। पूर्वपक्षी एकदम निष्क्रिय होइत नहि, अपितु प्रश्नक पाछू फेरि जा रहल अछि। सूत्रधारक उपसंहार सेहो मानैत अछि जे विरोधी आगामी युगमे नव उपकरणसँ लौटत। एहि कारण चारिम अंकक भाषिक विजयक ऊपर एक स्वचेतन संशय-बोध टिकैत अछि। ई आन्तरिक अन्तरविरोध त्रुटि मात्र नहि; यदि पाठक गंभीरतासँ ग्रहण करथि तँ अधूरी विचार-प्रक्रियाकेँ नाटकक मूल उपलब्धि बना सकैत अछि।

कथनकाल, प्रस्तुति-अवधि, मौन आ आवृत्तिक नाप

प्रमुख नाटक एक वादसभाक सीमित समयमे घटित होइत अछि; घटिका-यन्त्र आरम्भसँ अन्त धरि ओकर कालिक मापक अछि। मुदा नाट्यसमयक ठोस घण्टा वा मिनटक संख्या मूलमे नहि भेटैत अछि, तेँ काल्पनिक घण्टाक अनुमान नहि देल जाए। संवादक अनेक दीर्घ परिच्छेद अनुभूतिक समयकेँ विस्तृत करैत अछि, जबकि पात्रक उठब, मौन, हाथ जोड़ब आ दीप नीचाँ करब छोट मंच-क्षणमे समाहित अछि। अवधि-विवेचनमे 'विस्तारित संवाद-दृश्य' आ 'दृष्टान्तमय विराम' क अन्तर विशेष उपयोगी अछि।

मौन सभ एकहि अर्थ नहि रखैत। प्रथम अंकमे क्षणभद्रक रुकब विचारक नवीनीकरणक संकेत अछि; द्वितीय अंकक “लम्बा मौन” सम्मिलित सभामे मत-परिवर्तनक सार्वजनिक दबाव बनबैत अछि; चतुर्थ अंकक अन्तिम सम्मान शास्त्रार्थक नैतिक समापनक भाषा अछि। मंचक परिषद् स्वतन्त्र तर्क प्रस्तुत नहि करैत, मुख्यतः कानाफूसी आ सहमतिक सामाजिक ध्वनि बनैत अछि। एकर फल एक ओर दार्शनिक नाटकक सामूहिक प्रभाव, दोसर ओर बहुमत-संकेत द्वारा प्रमाणक सम्भावित स्थानापन्नता।

लोकगीतक “हम-पन” नाटकक मध्यक ‘हम’क प्रश्नसँ फेर भेटैत अछि। बीज, घैल, दीप आ नदी अनेक प्रसंगमे लौटैत छथि; प्रत्येक वापसीक कथात्मक कार्य एके नहि। नदी पहिने क्षणधाराक रूपक, बादमे लहरि आ

स्थिरताक विवाद बनैत अछि; घैल दृश्यगत साझा-जगतक प्रमाण; दीप स्वसंवेदन आ विवादी प्रतिपक्षक रूपक। अर्थसहित लौटैत प्रतीक आ खाली दोहरायल उपदेशक बीच भेद आवश्यक अछि।

शास्त्रीय ग्रन्थसँ आधुनिक मैथिली नाट्यरचना : अन्तर्पाठक सीमा

नाटकक चारि अंकक पश्चात् पाठ स्वयं एक टिप्पणी राखैत अछि—ई उदयनक “आत्मतत्त्वविवेक”क चारि मुख्य आन्दोलनक अनुकरण करैत अछि, आ क्षणभद्र धर्मकीर्ति, रत्नकीर्ति आ ज्ञानश्री आदि विभिन्न मतक संयुक्त काल्पनिक पात्र छथि। ई विवरण पाठमे अभिप्रेत अन्तर्पाठक घोषणा अछि; एकर आशय ई नहि जे नाटकक प्रत्येक उपमा, वाक्य वा शास्त्रीय निष्कर्ष मूल संस्कृत ग्रन्थसँ अक्षरशः उद्धृत अछि। मूल ग्रन्थक निर्दिष्ट संस्कृत संस्करणसँ पाठान्तर-जाँच बिना एहि आत्म-घोषणाकेँ ऐतिहासिक पाठसाक्ष्यक बराबर नहि मानल जाए।

अध्याय –१००क भामती-केन्द्रित भ्रमविवाद आ –९९क आत्मतत्त्वविवेक-केन्द्रित आत्मसिद्धि एक अति महत्त्वपूर्ण विन्यास अछि। पहिल अध्याय ज्ञानक वस्तु पर भरोसाक सीमा, दोसर ज्ञानक विषयक निरन्तरता खोजैत अछि। ई दू अध्याय वैदिक–बौद्ध अथवा अद्वैत–न्याय मतकेँ एक बनबैत नहि: अलग प्रमाणरचना आ अलग मूल प्रश्नकेँ उपन्यासक समग्र साक्षी–स्मृति समस्या लग आनैत अछि। यदि मूल ग्रन्थक भिन्न सिद्धान्त असावधानीसँ जोड़ल जाएत, तँ आख्यानक दार्शनिक बहुरूपता आलोचनामे कृत्रिम एकता बनि जाएत।

नाट्यरूपान्तरणक मूल्य केवल स्रोतक विचार रखब नहि, बल्कि दार्शनिक भाष्यकेँ प्रश्न, उलझन, संकोच, अधिकार-त्याग आ असन्तुष्टिपर आधारित पठनीय दृश्य देब अछि। तेसर अंकमे आचार्यासन छोड़बाक दृश्य एहि रूपान्तरक सर्वाधिक ठोस सफलता अछि। पर किछु दीर्घ तर्क-वाक्य मञ्चीय संभाषणसँ अधिक व्याख्यान जकाँ लगैत अछि, विशेषतः जखन उदयन प्रतिपक्षक उत्तरक अपेक्षा बहुत लम्बा सिद्धान्त स्वयं देलनि। एहि असमान स्वरसँ कथा आ शास्त्रक सन्तुलन किछु ठाम डिगैत अछि।

नाट्य-उपसंहारक बादक दृष्टान्तक पृथक साहित्यिक प्रकृति

नाटक उपसंहारपर समाप्त भऽ गेलाक बाद अध्यायक भीतर “आत्मतत्त्वविवेक सँ कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण”क पृथक भाग खुलैत अछि। एतय मूर्खक हाथी, मुँहमे दाल भरने गृहिणी, नील-उज्जर कबूतर, नवजात शिशु, ओझा आ सर्पदंशित व्यक्ति, बिलाड़ि, जुलाहा, रक्तबीज-जकाँ परमाणु, सपनाक धूम, बकरीक गरदनिक दूधहीन थन, खेतमे खसल बीज, आदि अनेक सामग्री अछि। ई सभ पूर्ववर्ती राजसभामे घटल नवीन दृश्य नहि; सूत्रधार द्वारा एकत्रित कथादृष्टान्त आ वैचारिक संकेत छथि। स्रोत-सीमांकनमे एकरा अध्याय –९९क अन्तरित संग्रह कहब उपयुक्त अछि, न कि अलग मूल अध्याय अथवा त्रयीक पश्चात् स्थित वैश्विक परिशिष्ट।

एहि भागमे उदाहरणक विविधता विस्मयकारी अछि। हाथीक अनिर्णीत पहिचान ज्ञानक अतिकल्पना, सपनाक धूम अनुमानक प्रसंगनिर्भरता, आ खेतमे खसल बीज कारणक अपर्याप्त सामान्यीकरणक बोध देबैत अछि। मुदा मूल नाटकक पात्रसभ एहिसभ उदाहरणपर फेर प्रश्न नहि उठबैत; तें शास्त्रार्थक प्रतिपक्ष-प्रक्रिया एकतर्फा संकलनमे बदलि जाइत अछि। पाठकीय ज्ञानक संग्रह विस्तार पबैत अछि, किन्तु कथा-तनाव बराबर नहि बढ़ैत। ई परिवर्तन एकटा सचेत अभिलेखी पद्धति सेहो भऽ सकैत अछि; तथापि कथास्वरक अखण्डता पर एकर लागत अछि।

रूपकसंग्रहक सफलताकेँ संख्या मात्रसँ नहि मापल जाए। कोन दृष्टान्त पूर्ववर्ती अंकक युक्ति स्पष्ट करैत अछि, कोन नव नैतिक आयाम जोड़ैत अछि, आ कोन पहिनहि कथित बातकेँ केवल नव उपमामे दोहरबैत अछि—ई भेद जरूरी अछि। उदाहरणतः नवजात शिशुक गति सँ पूर्वजन्मक स्मृतिद्रव्यक अनुमान अनेक असिद्ध मध्य-कड़ीयुक्त अछि; ओकर कथात्मक प्रभाव आश्चर्यजनक भऽ सकैत अछि, मुदा प्रमाणक कसौटीपर शिशुक जैविक व्यवहारसँ पुनर्जन्मक सिद्धि स्वतः नहि भेटैत। ओझाक सर्पविष उतारबाक उल्लेख सेहो दार्शनिक उदाहरण मात्र रूपेँ पढ़ल जाए, प्रमाणित चिकित्सकीय घटना रूपेँ नहि।

लोकगीत, ध्वनि, रस आ भाषा-विधानक मूल्यांकन

प्रस्तावनाक गीत “आत्मा प्रमाण मांगय, मुदा प्रमाण आत्मे” जकाँ सूत्र अपन संगीतात्मक गतिसँ सामान्य पाठककेँ विषयक भीतर प्रवेश करबैत अछि। पोखरि, साँस आ दीपक सहज वस्तु कठिन दार्शनिक प्रश्नक स्थानीय भाषिक अनुवाद बनैत अछि। ई मैथिली रचनात्मक काजक उल्लेखनीय महत्त्व अछि। मुदा गीत आत्माक स्वयं-प्रमाणताकेँ आरम्भेमे स्वीकारि लैत अछि, जतय नाटक स्वयं एहि प्रश्नक जांच करबाक घोषणा करैत अछि। अतः गीतक भावात्मक पुष्टि आ बहसक खुलापनक बीच तनाव अछि। आलोचनामे एहि तनावकेँ सौन्दर्यक साधारण प्रशंसा द्वारा झाँपब अनुचित हएत।

नाट्यभाषामे “घैल”, “आम”, “हँसुआ”, “बीज”, “पोखरि”, “लहरि” जकाँ स्थानीय पदार्थ आइब दार्शनिक अमूर्तनकेँ अनुभूत विश्वसँ जोड़ैत अछि। मुदा विशाल तर्कक मध्य किछु रूपक आधुनिक शिक्षित भाषाक बोझ ढोइत छथि—अर्थात् ऐतिहासिक राजसभाक कथित काल आ समकालीन पाठकक सुगम अभिव्यक्तिक बीच सचेत समायोजन अछि। एतय काल-औचित्यक सवाल उठैत अछि; ऐतिहासिक शाब्दिक पुनर्निर्माणक दावा स्वयं सूत्रधार त्यागि देने छथि, तेँ शब्दक आधुनिकता स्वतः दोष नहि। दोष तखन ठहरत जखन भाषिक आधुनिकता बिनु कलात्मक कारणक पात्रसभक स्वर एकजकाँ बना दैत।

रसात्मक धरातलपर अद्भुत आ जिज्ञासा अग्रणी छथि। चतुर्थ अंकमे दुःखक नैतिक प्रश्न करुणासँ जोड़बाक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि, पर नाटक कोनो एक पीड़ित जीवनक दृश्य विस्तारसँ देखबैत नहि, तेँ करुणरसक परिपुष्टि सम्भावना-अवस्थामे रहि जाइत अछि। शान्तभावक प्रतीति अन्तिम मौनमे सम्भव अछि, किन्तु सूत्रधारक खुलल प्रश्न ओकरा पूर्ण निष्कर्ष बनबाक अनुमति नहि दैत। औचित्यक दृष्टिएँ ई संयम प्रशंसनीय अछि।

सामाजिक आवाज, वर्ण-मान्यता, स्त्री-प्रतिमा आ ज्ञानक सत्ता

प्रथम भागक विद्वत्सभामे उदयन, क्षणभद्र, शिष्य आ परिषद् छथि। एतय सामाजिक बहुस्वरता मूलतः सम्प्रदायगत अछि; जाति, पेशा, लिंग वा श्रमक बहु-आवाज प्रत्यक्ष संवाद रूपेँ विरल अछि। नाटकक अन्तिम संग्रहमे जुलाहा, गृहिणी, वनवासी, मजदूर, चित्रकार आ ओझा अवश्य आबैत छथि, मुदा अधिकांशतः तर्क स्पष्ट करबाक उदाहरणक वस्तु रूपेँ; स्वतन्त्र वक्ता रूपेँ नहि। सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रमाण ई मात्र नहि जे कोनो समुदायसँ जुड़ल शब्द मौजूद अछि; मुख्य प्रश्न ओकर अनुभव आ प्रत्युत्तरक अधिकारक अछि।

“उदुम्बरगर्तक जुलाहा”क उदाहरणमे वर्णधर्मक कर्तव्य त्यागक आलोचना धार्मिक आलस्यक आरोपसँ जोड़ल गेल अछि। एतय पाठ शास्त्रीय वचनक अभिलेखीय पुनर्निवेशन करैत अछि, मुदा जुलाहाक अपन सामाजिक

परिस्थिति अथवा मतपरिवर्तनक स्वतन्त्र पक्ष दैत नहि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ एहि अनुपस्थितिक नाम देब जरूरी अछि। आलोचक शास्त्रीय स्रोतमे उपस्थित मूल्यांकन, आधुनिक रचनाक चयन आ स्वयं जुलाहा समुदायकेँ दोषी सिद्ध करबाक सामाजिक दावाकेँ एक नहि मानत। एहि उदाहरणक नैतिक जोखिम उचित प्रसंगविश्लेषणक माँग करैत अछि।

“मुँहमे दाल भरने गृहिणी”क चित्रण आ “वासनाग्रस्त युवक”क रूपक स्त्रीक देह आ यौन-इच्छाकेँ तर्कक उपमा बनबैत अछि। एहन पाठ-सामग्रीक ऐतिहासिक अस्तित्व उद्धृत करब अलग बात, ओकर अपमानसूचक दृष्टिक स्वतः समर्थन अलग। कादम्बरी जँ उपेक्षित मनुष्यक आवाज खोलबाक व्यापक अभिप्राय रखैत अछि तँ एहन अभिलेखी उदाहरणकेँ प्रश्नबिनु निरपेक्ष शिक्षामूलक सामग्री रूपेँ रखब एकर आलोचनात्मक चुनौती अछि। रचनाक उपलब्धि अनेक अभिलेख एकत्र करब; सीमा स्रोतक भीतर निहित सत्ता-सम्बन्धपर सदा पर्याप्त प्रतिवाद नहि देब।

प्रमाणतर्कक सूक्ष्म लेखा : सिद्धि, उपाधि आ हेत्वाभास

क्षणभद्रक “जे किछु सत् अछि, से क्षणिक अछि” प्रस्तावमे सत्त्व हेतु अछि आ क्षणिकत्व साध्य। वैध व्याप्ति देखाओल जाए बिना अनुमाने आत्माक विनाश सुनिश्चित नहि। उदयनक बीज-दृष्टान्त एहि व्याप्तिक एक सम्भावित उपाधि—कार्यक योग्यता, अवसर आ सहकारिक कारणक अन्तर—पर प्रकाश दैत अछि। मुदा बीजक योग्यता निरन्तर अछि से मानल जाउ, तइयो ई निरन्तरता आत्माक आध्यात्मिक अपरिवर्तनशीलताक साध्य स्वतः नहि सिद्ध करैत। तर्कक एक चरणक सफल खण्डन आ अन्तिम सकारात्मक साध्यक स्थापना अलग क्रिया छथि।

द्वितीय अंकमे स्वप्नक बाह्याभास सँ सम्पूर्ण जाग्रत-जगतक बाह्यार्थनिषेध निकालबाक प्रयासमे उदाहरण आ सार्वभौम नियमक बीच अनुपयुक्त विस्तारक प्रश्न उठैत अछि। उदयनक सार्वजनिक घैल-दृष्टान्त एकटा व्यावहारिक प्रतिपक्ष अछि; मुदा साझा अनुभूतिक कारण मात्र एक प्रकारक वस्तु-मीमांसा होएब अनिवार्य अछि की नहि, से अलग जाँचबाक अछि। तेसर अंकमे आत्म-निर्देशक वाक्यक आवश्यकता आ आत्मद्रव्यक सत्ताकेँ एक मानि लेबाक सम्भावित छलाँग अछि। “हम नहि अछि” कहयवला कथनमे प्रथमपुरुष शब्द अछि—एहि तथ्यसँ विशिष्ट सत्तामूलक सिद्धान्त कतेक दूर निकलि सकैत अछि, से विवेचनक खुलल प्रश्न रहैत अछि।

चतुर्थ अंकमे मुक्तिकेँ ‘स्थिर आत्मा’क आश्रयपर रखल जाइत अछि, पर जँ पूर्वपक्ष मुक्तिकेँ दुःखक कारणात्मक अवसान रूपेँ चिन्हैत होइ तँ निरन्तर स्थायी भोक्ताक अनिवार्यता फेर सिद्ध करबाक अछि। ई प्रतिपक्ष बौद्ध दर्शनक किसी एक प्रामाणिक ग्रन्थक निश्चित मूल वचन नहि, बल्कि नाटकमे प्रस्तुत दावाक आलोचनात्मक विकल्प अछि। एहि प्रकरणक सटीक निष्कर्ष ई: पाठ तर्कक प्रस्थान, मध्यवर्ती आपत्ति, स्वीकारोक्ति आ अवशिष्ट प्रश्नकेँ सजीव बना पबैत अछि; मुदा बहसक अन्तिम ‘सिद्धि’केँ दार्शनिक इतिहासक अकाट्य निर्णय मानब न्यायसंगत नहि।

समग्र निर्णय : उपलब्धि, कमजोरी आ आगामी तुलनाक प्रश्न

अध्याय –९९क मुख्य रचनात्मक उपलब्धि चारि आन्तरिक मोड़क सुसंगति अछि। पाठक “आत्मा अछि की नहि”क स्थूल द्वैतसँ बीजक कारण-प्रवाह, स्वप्नक बाह्यार्थ, स्मृतिक कालिक पुल आ दुःखसँ मुक्ति धरि जाइत छथि। एक वादशालाक सीमित सार्वजनिक समयकेँ जटिल ज्ञानमीमांसक प्रश्नक कसौटी बनाओल गेल अछि। उधर शिष्यक प्रश्न आ उदयनक आसनसँ उतरब पात्रक क्षणिक मनोवैज्ञानिक रूप खोलैत अछि; एहि दृश्य सभक कारण नाटक केवल अपठनीय शास्त्र-सूची नहि बनैत।

रचनाक सीमा तीन प्रकारक अछि। पहिल, निर्णायक आचार्यक दीर्घ भाषणक सामने प्रतिपक्षीकेँ कतेको ठाम छोट प्रत्युत्तर देल गेल अछि; विचारक सार्वजनिक समताक घोषणा आ पात्रस्वरक वास्तविक असमता सहअस्तित्वमे छथि। दोसर, दार्शनिक रूपसँ असमान बौद्ध मत एक कल्पित क्षणभद्रक भाषामे संकुचित भऽ जाइत अछि; यद्यपि रचना ई तथ्य पहिनहि स्पष्ट करैत अछि। तेसर, नाटकक समापनक पश्चात् दृष्टान्तक विपुल संचय कथाक नाट्यगत निकटता घटाकऽ शास्त्रीय सन्दर्भ-संग्रहक मुद्रा प्रबल करैत अछि। आबद्ध पाठक लेल ई बौद्धिक विस्तार लाभकारी, नाट्यपाठक लेल गति-अवरोध बनि सकैत अछि।

अध्याय –१००क शंख-संकेत आ –९९क “हम” क साक्षी-संकेतकेँ जोड़ने एकटा अन्वेषणीय सूत्र भेटैत अछि: वस्तुक गलत पहिचान, व्यक्ति अपन अनुभवक प्रमाण होएबाक दावा, आ समुदायमे नामक स्वीकार—एहि तीनमे कोन सम्बन्ध बनत? मुदा एहि आरम्भिक दू अध्यायक आधारपर आगामी उपन्यास ई सभ प्रश्न सफलतासँ पूरा कएलक—एहन पूर्वनिर्णय नहि देल जाए। पछिला खण्ड सभमे बूढ़बा, मृतकक नाम, जाल, प्रमाण आ जलसमाधि वास्तवमे एहि दार्शनिक विधानकेँ घटनामे बदलैत छथि कि नहि, तकर जाँच स्वतन्त्र पाठ-साक्ष्यसँ होएत।

अन्तिम साहित्यिक मूल्यांकन सशर्त सकारात्मक अछि। “आत्मसिद्धि-वाद” उपन्यासक दर्शनात्मक पूर्वभूमि रूपेँ उत्तेजक, आत्मसचेतन आ अनेक दृष्टान्तसँ समृद्ध अछि; चारि अंकक क्रम प्रमाणक प्रश्नकेँ कल्पनात्मक गति दैत अछि। मुदा एकर निर्णायक दार्शनिक विजय नाटकक बनाओल प्रभाव अछि, सर्वमान्य ऐतिहासिक सिद्धि नहि; सामाजिक आवाजक अधूरापन आ उद्धरणसमूहक एकतरफा अधिकार एकर वास्तविक आलोचनात्मक सीमा छथि। एहि दुनू बातकेँ साथ राखलापर मात्र एहि अध्यायक मूल्यांकन निष्पक्ष बनैत अछि।

अध्याय –९९ केर पाठ-साक्ष्य सूचक

निम्न उद्धरणसभ मूल अध्यायक प्रत्यक्ष कथनसँ लेल गेल अछि। मुद्रित पृष्ठ-परास २२–४४ अध्यायक अनुक्रमणिका-सीमा थिक; कोनो एकल वाक्यक सटीक पृष्ठाङ्क एहि इलेक्ट्रॉनिक पाठसँ अलग स्थापित नहि भेल अछि। तेँ सूक्ष्म सन्दर्भ लेल भूमिका/अंक/उपसंहार/दृष्टान्तक आन्तरिक नाम देल गेल अछि।

भूमिका — “जे किछु अहाँ सुनब, से इतिहास नहि थिक।” : काल्पनिक पूर्वपक्षक उद्घोषणा।

प्रथम अंक — “अहाँ एकटा उदाहरण देखौलहुँ। नियम नहि देखौलहुँ।” : व्याप्ति-विवेचनक केन्द्र।

द्वितीय अंक — “हम एहि स्तंभक टूटब मानैत छी” : कथात्मक स्वीकृतिक एक सन्धि।

तेसर अंक — “बरखा भ' रहल अछि” : कर्ता आ व्याकरणक प्रतिदृष्टान्त।

तेसर अंक — “आचार्य, हम एकटा प्रश्न पूछी जे हमरा व्यथित करैत अछि?” : शिष्यक स्वतन्त्र आपत्ति।

चतुर्थ अंक — “की अहाँ हमरा एकटा एहन आत्मा जीतल जे रखबा लायक होइ?” : दुःख-मुक्तिक नैतिक प्रश्न।

उपसंहार — “इएह दर्शनक पराजय नहि, अपितु ओकर काज थिक।” : खुलल समाप्तिक संकेत।

दृष्टान्त-समूह — “उदुम्बरगर्तक जुलाहा” : शास्त्रीय रूपकक सामाजिक अर्थक पुनर्परीक्षा।

प्रकरण ३ | मूल अध्याय –९८ — केऽ बनौलक ई जगत?

मुद्रित पृष्ठ-सीमा अध्यायारम्भ-सूचीसँ अनुमानित अछि; प्रत्येक उद्धरणक व्यक्तिगत पृष्ठाङ्क एतय अप्रमाणित अछि।

अध्याय –९८क आरम्भमे “गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक?” आ माटिक प्रत्युत्तर अछि; तकर बाद स्थान “गढ़ नारिकेल” निश्चित होइत अछि। पाठ अपन आधार स्पष्ट करैत अछि—“उदयनाचार्यक न्यायकुसुमाञ्जलि पर आधारित”, आ दर्शक-समूह रूपेँ “विद्यालयक बच्चा आ गामक दर्शक”क उल्लेख करैत अछि। एहि दू सूचनाकेँ समाने पढ़ला पर एकर साहित्यिक प्रयोजन स्पष्ट होइत अछि: वैदिक-न्यायपरम्पराक सृष्टिकर्ता-विषयक तर्क सामान्य ग्रामीण शिक्षण-अनुभवक भीतर मंचीय संवाद बनत। शास्त्रीय कठिनताकेँ सरल बनाओल जाएब मात्र सारांश नहि; ई एक विशिष्ट कथा-रचनाक राजनीतिक आ शैक्षिक चयन अछि। मुदा सरलताक संग तर्कगत शुद्धताक सम्बन्ध स्वयं परीक्षणक विषय रहैत अछि।

ई दोसर आँकड़ा यान्त्रिक संकेत अछि, मूल घटनाक निश्चय नहि। अध्यायक प्रामाणिक घटना-सीमा मुख्य कथा-दृश्य, दृश्यक पुनर्स्थापन, आ ओकर बादक संग्रहमे बाँटय पड़त। जँ कोरसक गीत, उद्धरण आ शास्त्रीय उदाहरणकेँ रंगमञ्चीय क्रियाक बराबर मानल जाए, तँ घटनात्मक घनत्व अनावश्यक बढ़ि जाएत। एहि अध्यायक पाठप्रणालीक क्रम विशेष रूपसँ कठिन अछि, कारण आभासी समाप्तिक बाद दू दृश्य फेर प्रवेश करैत अछि।

अनुक्रमणिकामे अध्याय –९८ केर आरम्भ पृष्ठ ४५ आ अगिला अध्याय –९७ केर आरम्भ ६५ अंकित अछि। अतः पृष्ठ ४५–६४ अध्यायक मुद्रित सीमा रूपेँ उद्धृत कएल जा सकैत अछि, मुदा इलेक्ट्रॉनिक अनुच्छेदक हर उद्धरणकेँ एहि परासक कोनो एक निश्चित पृष्ठ देब प्रमाण बिना सम्भव नहि। एहिठाम दृश्य-संख्या, वक्ताक नाम, दृष्टान्तक शीर्षक आ आन्तरिक उपविभाग अधिक विश्वसनीय सूक्ष्म संकेतक छथि।

पूर्वाध्यायसँ नव विषय धरि : आत्माक साक्षीसँ विश्वक कर्ता

“शंख आ रजत”मे प्रत्यक्ष वस्तुक पहिचान परीक्षणक केन्द्र छल; “आत्मसिद्धि-वाद”मे “हम” कहनिहार ज्ञाताक निरन्तरताक विवाद छल। तेसर अध्याय पुछैत अछि—जगतक व्यवस्था स्वयं उत्पन्न अछि कि ओकर कर्ता मानय पड़त? एहि क्रममे ज्ञेय वस्तु, ज्ञाता आ विश्वव्यापी कारणक त्रयी बनबाक सम्भावना उभरैत अछि। ई सम्बन्ध मूल तीन अध्यायक प्रश्न-विन्याससँ निकलैत अछि; समग्र उपन्यासक आगाँक नैतिक निष्कर्ष पूर्वहि निर्णय रूपेँ पढ़ब नहि चाही।

प्रारम्भिक फकरामे गाछ माटिसँ रोपनिहारक प्रश्न करैत अछि, मुदा माटि उत्तरक प्रत्यक्ष निश्चितता नहि दैत; ओ प्रश्नकेँ प्रतिप्रश्नक दिशामे मोड़ैत अछि। एहि नान्हि रूपमे उपन्यासक विशाल प्रमाण-संकट प्रस्तुत अछि: परिणाम देखल जा सकैत अछि, कारण अनुमानित होइत अछि, मुदा कारणक पूर्ण पहिचान सहज नहि। नाटक एही अनिश्चयकेँ सार्वजनिक हास्य, लोकगीत आ चाकक ठोस दृश्यसँ नाट्यरूप दैत अछि। अग्रभागक मौन आ पाछू दार्शनिक निष्कर्षक दृढ़ता एकटा अर्थवान तनाव बनबैत अछि।

नैतिक स्तरपर एहि गमनक एक फल ई अछि जे कथक पाठककेँ “ककर अधिकारसँ हम विश्वक कारण कहैत छी?” एहि प्रश्नक सामने रखैत छथि। अन्यथा ईश्वर-सिद्धि धार्मिक मतविवाद बनि समाप्त भऽ सकैत छल। गामक बुजुर्ग, कुम्हारिन, बालक आ लेखनी दीदीकेँ तर्कक उपस्थितिधारी बनाकऽ रचना दार्शनिक अधिकारक वितरणक दृश्य रचैत अछि; की ई वितरण पूर्णतः समान अछि, ई सामाजिक परीक्षणक निष्कर्षमे फेर उठत।

रचनाभीतरक रचना : सूत्रधार, कोरस आ काल-स्थान

विवादक चौक, चाक, कोठी, बाजार आ ताड़पत्रीय घर—पाँचटा उपस्थान एकहि ग्रामीण समष्टिक भीतर बनैत अछि। सूत्रधार दर्शककेँ सीधे पुछैत छथि जे जगतकेँ कियो बनौलक अथवा ई अपने-आप भेल। एहि सम्बोधनसँ दर्शक केवल बाहरी पाठक नहि, मंचीय परीक्षणक सम्भावित निर्णायक बनैत अछि। कथावाचकक आवाज एक स्तरपर दृश्य-स्थापन करैत अछि, दोसर स्तरपर स्वयं दर्शनक पक्षमे प्रश्नक लय नियंत्रित करैत अछि। चौकक सार्वजनिकता, विद्यालयक दर्शक आ गामक कोरस मिलि कथा-समयकेँ लगभग एक संध्याक सार्वजनिक आयोजन बनबैत अछि।

नाटकक मंच-निर्देश “कुल खेलाइक समय : लगभग ३० मिनट” कहैत अछि आ न्यूनतम सामग्री—खटिया, चाक, बासन, ईंट—क निर्देश दैत अछि। एतय दार्शनिक विचारक दृश्य-संकोचन सफल अछि। चाकपर माटिक बेढंग कोशिश, ईंट सजाएब आ बच्चासभक नामकरण छोटे क्रिया रहितहुँ प्रतिपक्षक तर्कक दिशा बदलैत अछि। घटनाक महत्त्व ओकर गणना नहि, तार्किक फलसँ निर्धारित होइत अछि।

समयक दू स्तर एकठाम उपस्थित अछि। चौकपर आजुक राति वादक तात्कालिक समय अछि; बूढ़ काकाक शब्द-डोरी आ लेखनी दीदीक श्लोकक परम्परा अनेक पीढ़ीक पूर्वकाल उद्घाटित करैत अछि। एहि कालिक परतकेँ केवल शास्त्रार्थक उदाहरण नहि बुझल जाए: वर्तमानक बच्चाक नामकरणसँ अतीतक अनाम आरम्भ धरि प्रश्न खिंचैत अछि। स्मृतिक वैधता, ज्ञानक हस्तान्तरण आ पहिल स्रोतक खोज एहि दीर्घ कथनकालक केन्द्र बनैत अछि।

दृश्यानुसार परिवर्तनक प्रमाण-सारणी

मूल पाठक एकक	मञ्च/तर्कमे सत्यापित परिवर्तन	घटना-घनत्वक निर्णय
दृश्य एक : गामक चौक	चार्वाक प्रत्यक्ष प्रमाण माँगैत छथि; बासनसँ अदृष्ट कुम्हारक अनुमान मानैत छथि	बौद्धिक प्रारम्भ; प्रमाणक प्रश्न बदलब

दृश्य दू : कुम्हारिनक चाक	सामग्री–साधन–कारीगरक सम्बन्ध खुलैत अछि; चार्वाक जगतक भिन्नता प्रस्तुत करैत छथि	कार्यात्मक दृश्य + प्रतिपक्षी आपत्ति
दृश्य तीन : अनाजक कोठी	ईंट-व्यवस्थासँ आयोजन आ धारणक तर्क; संयोगक वैकल्पिक प्रस्ताव	विवादक विस्तार
दृश्य चारि : पंचायत	चार्वाकक अनुत्तरित प्रश्नक स्वीकृति, मतान्तरण नहि; दर्शकक समक्ष खुलल निष्कर्ष	आंशिक आत्मसंशोधन; उपसंहार
समापनक पश्चात् दृश्य तीन-ख	“तिनकोली” नामक सामाजिक संकेत; सामुदायिक संकेत-उद्गमक प्रश्न	समापन पाछूक पुनरारम्भ
समापनक पश्चात् दृश्य तीन-ग	लेखनी दीदीक ताड़पत्र, आप्तवचन, अदृष्ट फल आ प्रथम वक्ताक समस्या	शब्दप्रमाणक नव विवाद
दृष्टान्त–उद्धरणसमूह	स्वप्न, उत्पत्ति, संस्कार, तात्पर्य, अर्थापत्ति, ईश्वरीय वचनक अनेक उदाहरण	मुख्यतः शास्त्रीय संकलन; प्रत्यक्ष घटना नहि

प्रथम दृश्य : विरोधीक शंका आ बासनक पहिल अनुमान

चार्वाकक प्रवेश ढंग मंचक तमाशासँ जुड़ल अछि, मुदा हुनकर प्रश्न साधारण नहि: “केऽ देखलक ई ‘ईश्वर’ कैं” आ “एकहु बासनपर ओकर हाथक निशान देखाबू!” एतय प्रत्यक्षक माँग आ अभावक दाबी सँकट बनैत अछि। आचार्य एकटा बासन उठाकऽ पुछैत छथि—ककर कृति? चार्वाक सहज रूपेँ कहैत छथि जे कुम्हारिन बनौलक, जखन कि चार्वाक हुनका बनबैत प्रत्यक्ष नहि देखलनि। ई वार्तालाप प्रत्यक्षदर्शनसँ परे अनुमानक स्थान स्थापित करबाक कौशलपूर्ण रंगमञ्चीय युक्ति अछि।

मुदा “घैलक कर्ता बिना देखल जनब” आ “सम्पूर्ण जगतक एकमेव कर्ता निर्धारित करब” एकहि प्रमाण-परिस्थिति नहि। पहिल दावामे कुम्हारक कामक विस्तृत पूर्व-अनुभव अछि; दोसरमे सम्पूर्ण विश्वक समान पूर्व-अनुभवक प्रश्न उठैत अछि। एहि असमानताक कारण चार्वाकक प्रारम्भिक स्वीकृति केवल वस्तुनिर्माणक उदाहरणपर लागु होइत अछि, ईश्वर-सिद्धिपर नहि। बादक दृश्य ओहि अलगापनकेँ स्वयं चार्वाकक वाणीमे स्पष्ट करबैत अछि—ई प्रतिपक्षीकेँ आंशिक बौद्धिक स्वतन्त्रता देबाक सकारात्मक उदाहरण अछि।

कोरस पहिने शंका दोहराऽ हास्य बनबैत अछि। आचार्यक शांत उत्तर आ चार्वाकक तमाशापूर्ण भंगिमा मंचपर नैतिक वरीयताक संकेत पहिनहिये बाँटि दैत अछि। दर्शकक मनमे धैर्यवान आचार्य विश्वसनीय आ ऊँच आवाजवला संशयवादी अस्थिर बुझाय लगैत छथि। एकर सौन्दर्यात्मक प्रभाव सजीव अछि, मुदा निष्पक्ष तर्क-परीक्षण लेल ई भावात्मक असमता ध्यानमे राखब आवश्यक अछि।

दोसर दृश्य : कुम्हारिनक चाक आ श्रमसँ बनैत ज्ञान

दृश्य दू मे कुम्हारिनक उत्तर एही अध्यायक सर्वाधिक ठोस व्यावहारिक पाँति अछि। माटि, हाथ, चाक आ मनमे कल्पित आकारक संयुक्तता बिना बासन नहि बनैत। एहि वर्णनमे कर्ता एकटा अलग सर्वशक्तिमान इच्छा मात्र नहि; साधन, सामग्री, श्रम आ कल्पनाक सम्बन्ध सेहो अछि। कुम्हारिन एक सिद्धान्तक निर्जीव उदाहरण नहि, स्वयं अपन कामक प्रामाणिक जाननिहारि रूपेँ बजैत छथि। ग्रामीण स्त्री-श्रमकेँ दर्शनक सूत्रमे बदलबाक ई दृश्य उपन्यासक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

चार्वाकक आपत्ति बिल्कुल लक्ष्यभेदी अछि—“पूरा जगत बासन नहि थिक”। एहि वाक्यमे उपमानक सीमा साफ अछि। आचार्य तारागणक क्रम, नदीक गति, धानक अंकुरणकेँ बासनक आकारक तुल्य ठहरबैत छथि। परतंत्र कृत वस्तुक समान संसारकेँ कृत मानबाक हेतु एतय पूर्णतः स्थापित नहि। “अन्यथा भऽ सकैत छल” आ “कियो आकार देलक” बीच जो सम्बन्ध अनिवार्य मानल गेल, तकर व्याप्ति अलग सिद्ध करब पड़त। ई तर्कक वास्तविक बौद्धिक संकट अछि, नाटकक विरोधी पात्रक अज्ञान नहि।

चार्वाक चाकपर बेढंग कोशिश करैत छथि, माटि मुँहपर लागैत अछि, कोरस हँसैत अछि। ई घटना हास्यरस उत्पन्न करैत अछि आ श्रमक अभ्यासहीनता प्रकट करैत अछि; मुदा ईश्वर नहि होएबाक मतक दार्शनिक पराजय एतयसँ नहि होइत। एहि हास्यक पाठकीय प्रभावक आलोचनात्मक विवेचन जरूरी अछि: प्रतिपक्षक हाथक असफलता तर्कक असफलताक प्रतीक बनबाक चेष्टा करैत अछि। चार्वाक फेर स्पष्ट करैत छथि जे बासनक कुम्हार मानेने विश्वक ईश्वर नहि मानल जाएत—एहि पुनः आपत्तिसँ दृश्य अपन सम्भावित एकतरफापन किछु कम करैत अछि।

तेसर दृश्य : कोठीक देबाल, संयोग आ धारणक विचार

कोठीक देबार बनबैत मोधू बच्चाक श्रमक माध्यमसँ “आयोजन” आ “धृति”क प्रश्न उठबैत अछि। ईंट, उचित स्थान आ देबारक टिकब उपमानक सामग्री छथि। आचार्यक तर्क ई अछि जे आरम्भिक मेल आ टिकाओ दुनूक पाछू बुद्धि चाही। दृश्य व्यवस्था वा निर्माणकेँ एकरस नहि देखबैत—निर्माणक बाद सँभरणक भिन्न आवश्यकता बतबैत अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरसँ नाटक कारणक एक चरणसँ अनेक चरण धरि बढ़ैत अछि।

चार्वाकक संयोग-सम्बन्धी उत्तर आरम्भिक आपत्तिसँ अधिक विकसित अछि: सफल परिणाम मात्र देखनिहार लोक असफल सम्भावनाक सम्पूर्ण इतिहास नहि देखैत। आचार्य हुनकर प्रश्नकेँ “असली प्रश्न” कहैत सम्मान दैत छथि। ई नाटकक संवादात्मक नैतिकता लेल केन्द्रीय क्षण अछि। नायक-पक्षक विद्वान हुनका चुप नहि करबैत, सार्वजनिक समूहकेँ “माटि उछालैत भीड़” नहि बनबाक निर्देश दैत छथि। एहि क्षणमे शास्त्रार्थ बुद्धिक सार्वजनिक आचरणक पाठ बनैत अछि।

पर वास्तविक वैज्ञानिक वा दार्शनिक परीक्षणक स्तरपर प्राकृतिक क्रमक उपस्थिति सँ नियत योजनाक अस्तित्वक सीधा निष्कर्ष सर्वमान्य नहि होइत। प्राकृतिक प्रक्रिया, आत्मसंगठन, सहकारण आ चयनक सम्भावना सभकेँ पृथक जाँचबाक अछि। पाठक "बरखाक बादर स्वयं नहि चुनैत" सन कथन अभिनयक सुलभ शैलीमे कहैत अछि, मुदा प्रकृतिक नियमक विस्तृत वैकल्पिक व्याख्याकेँ उत्तर नहि बनबैत। एहि असन्तुलनकेँ ईश्वरवादक खण्डन वा समर्थनक शाश्वत निर्णय बनाओल उचित नहि; ई मूल नाटकक तार्किक सीमा अछि।

चारिम दृश्य : आत्मसंयम, स्वीकारक सीमा आ खुलल समाप्ति

अन्तिम सभामे आचार्य संयोगक समस्या परमाणुक पहिल मेलपर केन्द्रित करैत छथि। हुनकर कथन आ चार्वाकक रुकावक बीच निर्णायक दृश्य-परिवर्तन घटैत अछि। चार्वाक कहैत छथि—"हमरा लग एहि प्रश्नक तैयार उत्तर नहि अछि, आचार्य। आइ राति तँ नहि।" ई आत्मनियन्त्रण दर्शबैत अछि; प्रतिपक्षी अवश्य आस्तिक भऽ गेलाह, एहन घोषणा पाठ नहि करैत। एहि दृष्टिसँ नाटकक वास्तविक विजय मतान्तरण नहि, अनुत्तरित प्रश्न स्वीकार करबाक क्षमता अछि।

आचार्यक उद्घोष "अन्ध विश्वास नहि। समर्पण नहि। बस ईमानदार दृष्टि" दोसर प्रकारक तर्कनैतिकता प्रस्तावित करैत अछि। चार्वाक सेहो कहैत छथि जे ओ अधिक नीक प्रश्न पुछि घर घुरताह; ईश्वरकेँ मानब कि शंका बनाएब, से खुलल रहैत अछि। अन्तिम कोरस रचनहारक प्रश्न पुनः दर्शक दिस घुरबैत अछि। भावात्मक समापन आ दार्शनिक अनिर्णयक ई संयोजन शैक्षिक नाटक लेल सफल अछि, कारण पाठककेँ विचारक स्वाधीनता शेष रहैत अछि।

पर एहि कथात्मक खुलापनकेँ उत्तरार्द्धक विस्तृत प्रमाण-संग्रहसँ एकसाथ पढ़ला पर तनाव भेटैत अछि। नाटक कहैत अछि जे प्रश्न खुलल रहय; पाछूक दृष्टान्त-उद्धरणसमूह सर्वज्ञ ईश्वरसिद्धिक पक्ष विस्तारसँ रखैत अछि। यदि दुनूकेँ एकहि कथावाचकक समान प्रकारक फैसला बुझि लेल जाए तँ नाटकक ईमानदार अनिश्चय क्षीण भऽ जायत। अतः दृश्यसमाप्ति आ दार्शनिक संकलनक भाषिक स्तर अलग चिन्हित करब अनिवार्य अछि।

दृश्य तीन-ख : "तिनकोली"क नामकरण आ शब्दार्थक सामाजिक रचना

अध्यायक विशेष विचित्रता ई अछि जे सामूहिक अन्तिम प्रणामक बाद "दृश्य तीन-ख" आबैत अछि। एतय बूढ़ काका एक अनाम वस्तुकेँ "तिनकोली" नाम देबाक घोषणा करैत छथि। बच्चासभक असहमत नामक ठट्टा धीरे-धीरे सामाजिक संकेतक संस्थापनक दृश्य बनि जाइत अछि। एहि प्रसंगक मूल प्रश्न पुरान अछि—कोनो ध्वनि ककरा आधारपर किछु विशेष अर्थक वाहक बनैत अछि? बूढ़ काकाक "डोरी" भाषाक पीढ़ीगत परम्पराक रूपक बनैत अछि।

चार्वाक तुरन्त कहैत छथि जे एतय एक ज्ञात बुजुर्गक साक्षात् कर्तृत्व देखल गेल; तकर परिणाम ईश्वरक आवश्यकताक विरुद्ध सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। फेर ओ समूहगत सहमति आ दीर्घ परिवर्तनक सम्भावना प्रस्तुत करैत छथि। ई प्रतिवाद अध्यायक सर्वाधिक सुदृढ़ बहुस्वर क्षणमे सँ अछि। भाषिक संकेतक उद्गम "पहिल गाँठ मारनिहार"क एकटा व्यक्ति रहबे करथि—ई दावा स्वयं परम्पराक धीरे-धीरे विकसित रूपक तुलनामे कमजोर भऽ सकैत अछि। प्रथम नामदाता बिना शब्द सम्भव नहि, एहन सार्वभौम व्याप्ति दृश्य सिद्ध नहि करैत।

बूढ़ काका अपन सीमित ज्ञान स्वीकार करैत छथि आ प्रश्न आचार्यक लग पठबैत छथि। ई व्यवहार नाटकक अधिकार-रचनामे महत्त्वपूर्ण अछि: प्रौढ़ लोक परम्पराक साक्षी छथि, मुदा अन्तिम सर्वज्ञ वक्ता नहि। नामकरणक दृश्य आगामी उपन्यासक नाम, गवाही आ अभिलेखक समस्यासँ सम्भावित सम्बन्ध बनबैत अछि। तथापि एहि सम्भावनाकेँ आगाँक पाठमे वास्तविक पुनरागमनक जाँच बिना सुसिद्ध अन्तर्पाठीय सम्बन्ध नहि कहल जा सकैत अछि।

दृश्य तीन-ग : लेखनी दीदी, शब्दप्रमाण आ ताड़पत्र

“दृश्य तीन-ग”मे लेखनी दीदी ताड़पत्र सम्हारैत छथि आ प्रश्नक केन्द्र सत्यवचनक विश्वसनीयता बनैत अछि। चार्वाक पूछैत छथि जे अदृष्ट फल आ परलोकक बातकेँ कोन आधारपर स्वीकार कएल जाए। लेखनी दीदी पहिने माता द्वारा आगिक चेतावनीक दृष्टान्त दैत छथि: शिशु बिना स्वयं जरल पूर्वानुभवक विश्वस्त जनकपर भरोसा करैत अछि। एहि अनुभवसँ आप्तवचनक परीक्षणक दू शर्त स्पष्ट होइत अछि—वक्ता विषय जनैत होथि, आ धोखा देबाक कारण नहि हो।

एहि दृष्टान्तक शक्ति साधारण अनुभवसँ उठबाक कारण अछि, मुदा सीमा सेहो स्पष्ट अछि। माता आगि जरा सकैत अछि से प्रत्यक्ष देख सकैत छथि; अदृष्ट कर्मफल, मृत्युपरक विश्व अथवा सर्वज्ञ सृष्टिकर्ताक प्रत्यक्ष ज्ञानक अनिवार्य सम्भावना एहि उदाहरणसँ स्वतः प्रमाणित नहि। विश्वस्त मनुष्यक वचन, परम्पराक निरन्तरता आ परामानवी सर्वज्ञ वक्ताक सिद्धि तीन पृथक स्थापना माँगैत अछि। “पुरान होएब” ज्ञानक पर्याप्त हेतु नहि, ई स्वयं लेखनी दीदी ठीक कहैत छथि; एहि सिद्धान्तकेँ हुनकर वेद-प्रमाणक व्याख्यापर सेहो समान रूपेँ लागू करब पड़त।

लेखनी दीदीक सामाजिक उपस्थितिक विशेष अर्थ अछि। कुम्हारिन हातक पदार्थ गढ़ैत छथि; लेखनी दीदी अक्षरक परम्परा सम्हारैत छथि। दू स्त्री पात्र क्रमशः पदार्थनिर्माण आ पाठ-संरक्षणक ज्ञानरूप धारण करैत छथि। ई साधारण अलंकार नहि, गामक ज्ञानक संस्थापक श्रमक पुनर्वितरण अछि। मुदा शास्त्रक लेखकक प्रश्नक अन्तिम उत्तर दीदी आचार्य दिस टारि दैत छथि; अपन वक्तव्य “हम तँ बस पन्ना नकल करैत छी” द्वारा सीमित करैत छथि। तेँ ज्ञानक स्रोत रूपेँ स्त्री उपस्थित छथि, पर नीतिगत अन्तिम निर्णयक संस्था पुरुष आचार्यक लग रहि जाइत अछि—ई रचनाक आन्तरिक असममिति अछि।

समापनक पश्चात् मध्य-दृश्यक आगमन : वास्तविक संरचनागत असङ्गति

नाटकक पाठक्रममे चारिम दृश्यक बाद सूत्रधारक उपसंहार, कोरसक अन्तिम दोहा आ सभ पात्रक प्रणाम अछि। पाठ तत्पश्चात् “दृश्य तीन-ख” तथा “दृश्य तीन-ग” राखैत अछि, आ फेर “नाटक समाप्त” कहैत अछि। एहि क्रमकेँ मात्र अंक-संख्या त्रुटि कहि किनार कएल नहि जा सकैत। पाठक पहिने कथा बन्द बुझैत छथि; फेर मध्य-नम्बरक दृश्य नवीने आरम्भ बनि अबैत अछि। एहि कारण कथात्मक लय आ शैक्षिक अभिप्रायक विकास बाधित होइत अछि।

अन्तर्वर्ती दु-दृश्य सामग्रीक दृष्टिएँ अनुपयुक्त नहि। चाकक कार्यात्-तर्क, कोठीक आयोजनात्-तर्क, बाजारक पदात्-तर्क आ लेखनी दीदीक प्रत्ययतः-तर्क एक व्यवस्थित प्रमाण-क्रम बनबैत अछि। यदि बाजार आ ताड़पत्रक प्रसंग चारिम दृश्यक अन्तिम पंचायतसँ पहिने राखल जाए तँ कथा-कारणक प्रगति अधिक स्पष्ट देखाइत:

वस्तुनिर्माण सँ स्थिति-संरक्षण, भाषा सँ विश्वास, आ ओहिसँ अन्तिम शंका। वर्तमान क्रममे प्रारम्भिक अन्त कथानकक लय तोड़ैत अछि।

ई आलोचना मूल रचनाक पुनर्संरचना करबाक आदेश नहि थिक; पाठमे जे रूप अछि, तकर प्रभावक लेखा अछि। एक आलोचककेँ अतिरिक्त दृश्यकेँ उपन्यासक नव स्वतन्त्र अध्याय सेहो नहि गनबाक चाही। एकहि –९८क भीतर क्रमविच्छिन्न रंगमञ्चीय एकक कहब अधिक सटीक हएत। आगामी सम्पादनमे दृश्य-स्थापनक क्रम स्पष्ट करब साहित्यिक परिष्कारक वास्तविक अवसर अछि।

नव्य-न्यायक कसौटी : कार्य, आयोजन, पद आ प्रत्यय

नाटक चार प्रमाण-प्रस्तावक सरल रूप स्थापित करैत अछि: बनल कार्यसँ कर्ताक अनुमान (कार्यात्), उचित मेल वा धारणसँ संयोजक बुद्धिक अनुमान (आयोजनात्/धृत्यादेः), शब्दार्थक नियतिसँ प्रथम संकेतकर्ताक अनुमान (पदात्), तथा विश्वस्त वचनसँ सर्वज्ञ मूलवक्ताक अनुमान (प्रत्ययतः)। ई शास्त्रीय शब्दावली मूल पाठमे दृश्य-नामक संग स्पष्ट अछि; मुदा संस्कृत न्यायकुसुमाञ्जलिक मूल पाठक अक्षरशः क्रम वा व्याख्या समस्त रूपेँ एहि पुनर्रचनामे जसक तस अछि, एहन दावा बिना संस्करणान्तर परीक्षणक नहि कएल जाए।

कार्यत्व हेतु लऽ कऽ जगत पक्ष मानल जाए तँ प्रश्न उठैत अछि—पक्षक कार्यत्व स्वयं कोन प्रमाणसँ सिद्ध, आ पक्षक सभ अङ्ग एकहि प्रकारक कार्य छथि की नहि? उपाधि ई भऽ सकैत अछि जे मानवक बनाओल दृश्य वस्तुमे इष्ट आकार लेल विशिष्ट अभ्यासयुक्त साधन जुटैत अछि; विश्वक समग्रतापर एही प्रमाणक विस्तार कारणान्तरक जाँच माँगैत अछि। ई उदयनक मूल दार्शनिक पद्धतिक शाब्दिक निर्णय नहि, उपन्यासमे पात्रसभक कथित अनुमानक नव्य-न्यायाभिमुख परीक्षण अछि।

“आयोजन”मे व्यवस्था देखला मात्रसँ अभिप्रेत नियोजनक अनिवार्यत्व, “पद”मे सामुदायिक संकेत देखि एकहि प्रथम संकेतकर्ताक अनिवार्यता, आ “प्रत्यय”मे विश्वस्त कथनसँ सर्वज्ञ प्रथम वक्ताक अनिवार्यता—तीनू ठाम हेतु आ साध्यक बीच व्याप्ति तर्कसँ पृथक रखबाक अछि। प्रतिपक्ष जँ प्राकृतिक नियमितता, सामुदायिक भाषाविकास आ सीमित मानव शिक्षकक सहायता प्रस्तुत करय, तँ ओकरा महज अज्ञान नहि कहल जा सकैत। नाटकक एक उपलब्धि ई अछि जे चार्वाक क्रमशः एही विकल्पसभक नाम लैत छथि; सीमा ई जे प्रत्येकक पर्याप्त विस्तृत परीक्षण नहि होइत।

“न्यायकुसुमाञ्जलि” दृष्टान्त-समूह : नाट्यघटनासँ शास्त्रीय संकलन धरि

“नाटक समाप्त”क बाद शीर्षक “न्यायकुसुमाञ्जलि : कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण” भेटैत अछि। सूत्रधार फेर शिष्य आ गामक लोककेँ कथा सुनबैत छथि। एहि बिन्दुपर कथाक क्रियाशीलता बदलि जाइत अछि: संवादात्मक शास्त्रार्थक बदला व्याख्यात्मक संकलन प्रमुख भऽ जाइत अछि। कस्तूरीक गन्ध, गर्भस्थ शिशु, स्वप्नमे पोखरिमे डूबब, भूखल व्यक्तिक स्वप्न-मिठाइ, कठपुतलीक संकेत, प्रारम्भिक बिच्छू, अग्नि, पक्षी, जादूगर, तोता, अधिकारी आ गड्गाक कातक गोठ—ई सभ कथाविश्वक भीतर शास्त्रीय उदाहरण छथि। प्रत्येक उदाहरणकेँ एक वास्तविक घटना कहब विधिपरक गलती हएत।

स्वप्नमे पोखरि-डुबान आ भूखल व्यक्तिक मिठाइ ज्ञानक प्रामाण्य जाँचबाक अलग तरीका प्रस्तुत करैत अछि। स्वप्नक डर वा तृप्ति जागलाक बाद परीक्षणमे असफल भऽ सकैत अछि। एतय सफल व्यवहार आ प्रामाण्यक सम्बन्धक प्रश्न खुलैत अछि। ई प्रसंग –१००क वस्तु-भ्रम आ –९९क स्वप्न-जगतक विवादसँ सुसंगत बौद्धिक सेतु बनबैत अछि; पर एहि आधारपर उपन्यासक कथा-घटना रूपेँ एक वास्तविक डूबि गेल पात्रकेँ नहि गढ़बाक चाही।

“मोट देवदत्त दिनमे नहि खाइत अछि”क प्रसिद्ध दृष्टान्त, गङ्गाक तट-संकेत आ प्रेमिका-पथिकक उलटा अभिप्राय भाषा आ वाक्यार्थक विशिष्ट प्रश्न उठबैत अछि। वस्तुपरक प्रमाणक बहस धीरे-धीरे तात्पर्य, लक्षणा आ अर्थापत्ति धरि बढ़ैत अछि। एतय पाठक लेल व्यापक उपयोग अछि: एकहि ग्रामीण नाटकक पाछू दार्शनिक शब्दार्थक अभिलेख उपलब्ध भऽ जाइत अछि। मुदा संग्रहक बड़ आकार आरम्भक घोषित बालदर्शक आ तीस-मिनटक मंचीय रूपसँ मेल नहि खाइत; नाटकक स्वतन्त्र लय समाप्त भऽ संग्रह-प्रधान अनुशीलन शुरू होइत अछि।

इतिहास, जाति, स्त्री आ पर्यावरणक प्रतिनिधित्व

कुम्हारिनक चाक, धान, नदी, ऋतु आ अनाजक कोठी ग्रामीण पर्यावरणकेँ दार्शनिक तर्कक स्रोत बनबैत अछि। माटि एतय केवल पूजा वा रूपकक निष्क्रिय पदार्थ नहि: उपयोगी आकारमे रूपान्तरण लेल ताप, श्रम, कल्पना आ सामाजिक माँग चाहैत अछि। तथापि नदी “गलत मोड़” नहि लेतीह आ ऋतु सब ठाम एकहि क्रममे चलैत अछि सन कथन प्राकृतिक जटिलताकेँ अत्यधिक सुव्यवस्थित देखबैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रक दृष्टिएँ स्थानीय जलक अनिश्चितता, बाढ़ि, कटान आ परिवर्तनक अनुभूतिक तुलना आगाँक मूल कथासँ करबाक आवश्यकता अछि। एतय केवल कथित अनिवार्य सुव्यवस्थाक आधारपर प्रकृतिक निश्चित विधान मानि लेब उचित नहि।

दृष्टान्त-संग्रहमे आदिम बिच्छू, वनस्पति आ मानव-समुदायसभक उत्पत्तिक पारम्परिक कल्पना अबैत अछि। सड़ल गोबरसँ बिच्छू उत्पन्न होएबाक कथन आधुनिक जीवविज्ञानक प्रमाणित निष्कर्ष नहि। तेँ एकरा शास्त्रीय तर्क-परम्पराक ऐतिहासिक उदाहरण रूपेँ चिह्नित कएल जाए, वैज्ञानिक तथ्य रूपेँ नहि। तहिना संस्कारक क्रमशः ‘अधःपतन’ आ आरम्भिक वर्ण-भेदक उत्पत्तिक चित्रण ऐतिहासिक स्रोतक नैतिक मूल्यांकन अछि; सामाजिक इतिहासक परीक्षण बिना ओहि दावाकेँ अपन निष्पक्ष कथन बनाओल नहि जा सकैत।

विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति ई पूछत जे ताड़पत्र सम्हारनिहार लेखनी दीदीक अपन विचार आ कुम्हारिनक पेशागत ज्ञानकेँ नाटक कतेक काल स्वतन्त्र स्वर दैत अछि। गामक बच्चा सभ नाम देबामे सम्मिलित छथि, मुदा अन्तिम प्रामाणिक घोषणा वरिष्ठ पुरुष आचार्यसँ जुड़ि जाइत अछि। जातिगत श्रम—कुम्हार, राजमिस्त्री, लेखक, शिक्षक—क उल्लेख पर्याप्त नहि; ओकर आवाजक वैधानिक अधिकार आ अनुभवसँ उपजल प्रतिवाद अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। एहि अध्यायमे श्रम-दर्शनक प्रवेश उल्लेखनीय, मुदा दार्शनिक निर्णय-वितरण अखनो पद्धतिगत असमान अछि।

रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ पाठकीय सहृदयता

लोकगीतक प्रश्नात्मक लय—गाछ पुछैत अछि, माटि हँसैत अछि—सृष्टि-सिद्धान्तक कठोर प्रश्नकेँ सहृदयक सहज कल्पनामे प्रवेश करबैत अछि। गाछ जड़ि खोजैत-खोजैत अपनहि जड़ि पबैत अछि; एहि वक्रोक्तिमे कार्य-कारणक जाँच आत्मपहिचानक दिशामे फेऱ्याइत अछि। बालक लेल ई स्मरणीय बिम्ब अछि। तर्कक प्रति आकर्षण जगेबाक दक्षता गीतक रसात्मक उपलब्धि होइतहुँ ओकर वाक्य तर्कसिद्ध निष्कर्ष नहि। ध्वनि प्रश्नक बहुअर्थ रचैत अछि, अनुमानक व्याप्तिक स्थान नहि लैत।

चार्वाकक चाकपर माटि लागब हास्यक प्रत्यक्ष अवसर अछि। मुदा शास्त्रार्थक सौन्दर्य एखन अधिक जटिल भऽ जाइत अछि जखन ओ स्पष्ट बजैत छथि जे “सोचब हारबाक समान नहि होइत अछि।” ई कथन आन पात्रक हास्यात्मक वरीयतासँ संतुलित करैत अछि। सशक्त सहृदयता आ आलोचनात्मक पाठकता एतय संग चलैत अछि: पाठक आचार्यक धैर्य सँ प्रभावित भऽ सकैत छथि, संगहि विरोधीक तर्कक बचल वैधता जाँचि सकैत छथि।

अन्तिम दोहामे “पूछो, सोचो”क आदेश दर्शककेँ मात्र श्रद्धालु बनबासँ बचबैत अछि। तेँ औचित्यक मानदण्डपर नाटकक मूल उपसंहार सुसंगत अछि। असङ्गति संरचनाक स्तरपर अछि: मध्य-दृश्य सभक पाछू जोड़ाइ आ बहुत लम्बा शास्त्रीय संकलन पहिल बाल-रंगमञ्चीय प्रभावकेँ विराम दैत अछि। रसात्मक दार्शनिक अनुभव आ विस्तृत दार्शनिक पाठशाला दुनू महत्त्वपूर्ण होइतहुँ एकहि कथागति नहि; एहि भेदकेँ स्पष्ट सम्पादकीय रूप देबासँ रचनाक संयुक्त प्रभाव बढ़ि सकैत अछि।

अध्याय –९८क समग्र मूल्यांकन आ अगिला प्रकरणक प्रश्न

अध्याय –९८क उपलब्धि ई नहि जे ओ सृष्टिकर्ताक अस्तित्वक निर्विवाद ऐतिहासिक अथवा तर्कशास्त्रीय सिद्धि कऽ दैत अछि। ओकर उपलब्धि ई अछि जे उदयनाचार्यक दुरूह तर्ककेँ गढ़ नारिकेलक ग्रामीण मंचपर रखैत अछि, जाहिमे श्रम, भाषा, पीढ़ीक स्मृति आ पाठ-संरक्षण सोचबाक साधन बनैत अछि। चार्वाक प्रश्न पुछबाक अधिकार अन्त धरि नहि छोड़ैत छथि। एहि कारण शिक्षण-मूलक नाटक धार्मिक सिद्धान्तक एकरेखीय घोषणा बनबाक जोखिमसँ आंशिक रूपेँ बाँचैत अछि।

तीन मुख्य सीमा स्पष्ट छथि। पहिल, हस्तनिर्मित घैलसँ समस्त जगतक कर्तृत्वक दार्शनिक छलाँग पूर्ण प्रमाणवद्ध नहि; विपक्षक सम्भावित प्राकृतिक वा सामुदायिक विकल्प अल्प विकास पबैत अछि। दोसर, मंचक उपसंहार पछाति मध्य-दृश्य राखबाक क्रम निर्माणगत दोष अछि। तेसर, शास्त्रीय दृष्टान्त-संग्रहमे इतिहास-विज्ञानक असत्यापित दावी आ सामाजिक पदानुक्रमक संकेतक आलोचनात्मक दूरी पर्याप्त समान रूपेँ नहि रखल गेल अछि। ई निष्कर्ष मूल अध्यायक पाठमे देखल गेल विकल्प, अनुक्रम आ उद्धरणपर आधारित अछि, सम्पूर्ण ग्रन्थपर पूर्वनिर्णय नहि।

एखन पहिल तीन अध्याय मिलि प्रश्नक एक त्रिवेणी बनबैत छथि—प्रत्यक्षक वस्तु भ्रमित भऽ सकैत अछि; “हम” क गवाहीक स्वरूप विवादित अछि; आ दृश्य विश्वक कारण स्वतः उपस्थित नहि होइत। अगिला अध्याय –९७ “चिंतामणि रत्न”मे नव्य-न्यायक ग्रन्थ, ज्ञानक मूल्य आ सामाजिक कथा-स्थितिक बीच सम्बन्ध अधिक प्रत्यक्ष भऽ सकैत अछि, मुदा वास्तविक पाठ देखलाक बादहि ई सम्बन्ध मूल्यांकनक निष्कर्ष बनत। वर्तमान

समीक्षाक परिणाम सशर्त सकारात्मक अछि: नव्य-न्यायक सार्वजनिक लोकानुवाद साहित्यिक दृष्टिएँ उपयोगी, मुदा प्रमाणगत अनुशासन आ रचनाक क्रमपर कठोर सम्पादकीय परीक्षण जरूरी अछि।

अध्याय –९८ : मूल पाठसँ सत्यापित साक्ष्य-सूची

ई सूचक मूल संयुक्त उपन्यासक –९८ अध्यायक विशिष्ट दृश्य आ स्रोत-खण्डसँ मिलाओल गेल अछि। अनुक्रमणिकाक पृष्ठ-परास ४५–६४ अछि; प्रत्येक वाक्यक निश्चित मुद्रित पृष्ठ-अवस्थिति एखन अलग प्रमाणित नहि।

आरम्भिक फकरा — “गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक?” : कार्य–कारणक रूपक-प्रश्न।

दृश्य एक, चार्वाक — “केऽ देखलक ई "ईश्वर" कैं” : प्रत्यक्षक माँग आ अभावक दाबी।

दृश्य दू, चार्वाक — “पूरा जगत बासन नहि थिक” : उपमानक सीमा।

दृश्य तीन, आचार्य — “इहो एकटा असली प्रश्न थिक” : प्रतिपक्षक मान्यता।

दृश्य चारि, चार्वाक — “हमरा लग एहि प्रश्नक तैयार उत्तर नहि अछि” : आंशिक अनिर्णय।

दृश्य चारि, आचार्य — “अन्ध विश्वास नहि। समर्पण नहि। बस ईमानदार दृष्टि।” : कथात्मक नैतिकता।

दृश्य तीन-ख, चार्वाक — “सोचब हारबाक समान नहि होइत अछि” : संवादिक बहुस्वरता।

दृश्य तीन-ग, लेखनी दीदी — “एकटा अनुमान, कतबो पुरान होअय आ कतबो बेर दोहरायल जाय, अनुमाने रहि जाइत अछि” : प्रमाणक सीमा।

नाटकक बादक स्रोत-खण्ड — “स्वप्नमे पोखरिमे डूबबाक प्रसंग” : प्रामाण्यक दृष्टान्त; उपन्यासक तत्काल घटना नहि।

नाटकक बादक स्रोत-खण्ड — “गड़्गाक कातक गोठ” आ “मोट देवदत्तक दृष्टान्त” : भाषिक तात्पर्य आ अर्थापत्ति।

प्रकरण ४ | मूल अध्याय –९७ — चिंतामणि रत्न

उद्धरणक सटीक व्यक्तिगत मुद्रित पृष्ठाङ्क एखन असत्यापित; अंक, पात्र आ संग्रहक शीर्षक साक्ष्य-संकेतक रूपमे देल गेल अछि।

मूल संयुक्त वर्ड-पाठक वर्तमान स्वतन्त्र गणनामे मुख्य अध्यायक अनुच्छेदसीमाक भीतर ५,३०७ युनिकोड अक्षर-समूह भेटल; दू एकक्क अन्तर विभिन्न विराम-चिह्न आ संधिबद्ध पाठ-प्रक्रियाक कारण भऽ सकैत अछि। एहि लघु अन्तरसँ आलोचनाक विषय नहि बदलैत, मुदा दूनू आँकड़ाकैं एकहि निश्चित “शब्द” कहि भ्रम उत्पन्न करब अनुचित होएत। अनुक्रमणिकामे अध्याय पृष्ठ ६५ सँ आरम्भ आ अगिला अध्याय –९६ पृष्ठ ८८ सँ आरम्भ होइत अछि; तें ६५–८७ समुचित अध्याय-परास अछि, व्यक्तिगत उद्धरण-पृष्ठ नहि।

मूल सामग्रीमे प्रस्तावना, चारि अंक, उपसंहार, एकटा व्याख्यात्मक नोट, फेर “तत्त्वचिन्तामणि” शीर्षकक दृष्टान्त–उद्धरण-संग्रह अछि। मुख्य नाटकक पात्र गंगेश, बौद्ध, मीमांसक, शिष्य आ सूत्रधार छथि; ग्रन्थक व्याख्यात्मक टिप्पणी स्पष्ट कहैत अछि जे बौद्ध, मीमांसक आ शिष्य संयुक्त प्रतिनिधि पात्र छथि, नामित ऐतिहासिक व्यक्तिक जीवनचित्र नहि। एहि तथ्यसँ नाटककेँ गंगेश उपाध्यायक प्रमाणित वास्तविक शास्त्रार्थक प्रतिलेख मानबाक सम्भावना निरस्त होइत अछि। ई एकटा आधुनिक मैथिली रचनात्मक पुनर्संयोजन अछि, तकर ऐतिहासिक आ साहित्यिक मूल्य अलग-अलग कसौटीसँ जाँचबाक चाही।

एतय तकर उत्तर लेल प्रत्येक अंकक प्रस्ताव–आपत्ति–संशोधन–शेष प्रश्नक क्रम अलग निकालल गेल अछि। “क्रियासूचक” अनुच्छेद घटना-संख्या नहि: बहुतो लम्बा संवादमे स्थिति केवल बौद्धिक बदलैत अछि, आ कोनो नन्हि मंचीय क्रिया—मेजपर शंख रखब, दीपसँ धुआँ उठब—सम्पूर्ण तर्कक अवस्थाकेँ बदलि सकैत अछि। एहि भेदक बिना अध्यायक कथात्मक घनत्वक विश्वसनीय मूल्यांकन सम्भव नहि।

त्रयी आरम्भक दार्शनिक शृंखला : भ्रमसँ परीक्षण-विधि धरि

अध्याय −१०० “शंख आ रजत”मे गलत पहिचान आ प्रत्यक्षक भरोसाक संकट उठैत छल। −९९ “आत्मसिद्धि-वाद” ज्ञाताक निरन्तरताक विवाद बनबैत छल; −९८ “केऽ बनौलक ई जगत?” सृष्टिकर्ताक अनुमानक नाट्यविवाद बनबैत छल। −९७मे ई प्रश्नसभ फेर अबैत अछि, मुदा एतय विषय स्वयं विवादक विधि बनि जाइत अछि: कोनो दावाकेँ मान्य कहबाक पहिने ओकर परिभाषा प्रतिपक्षक आक्रमण सहि सकैत अछि कि नहि? क्रममे एकटा आलोचनात्मक चढ़ान अछि—वस्तु, ज्ञाता, कारण, आ प्रमाणक परिभाषाक सार्वजनिक परीक्षा।

एहि प्रकरणक पहिल फकरा मनक स्थिरता आ रत्नक मूल्यमे सम्बन्ध बनबैत अछि। “मन थिर तँ ढेलो हीरा” कहैत रचना बाहरी रत्नक दुर्लभतासँ ध्यानक अनुशासन दिस सरकैत अछि। नाटकमे गंगेश अपन पहिल वाक्यक रक्षा करबाक बदला ओकर कमजोरी पहिचानि पुनर्निर्माण करैत छथि; तेँ रत्न एकटा पहिले सँ हस्तगत अन्तिम सत्य नहि, बल्कि जाँचि-जाँचि अर्जित बौद्धिक सावधानीक रूपक भऽ उठैत अछि। मुदा रूपकक सफलता आ प्रत्यक्ष तर्कक औपचारिक वैधता समान बात नहि, तेँ काव्यात्मक निष्कर्ष तर्कक स्थान नहि लैत।

एकटा औपचारिक विशेषता ई अछि जे पछिला अध्यायक ग्रामीण सार्वजनिक प्रदर्शनसँ एतय स्थान मिथिलाक वादशाला भऽ जाइत अछि। लोकसमाज पूर्ण रूपेँ अदृश्य नहि—सूत्रधार, शिष्य, राजमिस्त्री, बासन आ गामक श्रोताक सम्बोधन रहल अछि—मुदा कथनक नियन्त्रण विशेषज्ञ-विवादक हाथमे सघन होइत अछि। एहि परिवर्तनसँ प्रश्न उठैत अछि: लोकदर्शनक लोकप्रियता आ नव्य-न्यायक दुरूह विशेषज्ञता कोना एकहि आख्यानमे सह-अस्तित्व राखत? अध्याय एहि प्रश्नक उत्तर सम्पूर्ण रूपेँ नहि, मुदा प्रबल नाटकीय संकेत रूपमे दैत अछि।

प्रस्तावना : राजमिस्त्रीक गारा आ ज्ञानक भार

मंचपर दू दीप अछि, एक जरैत आ एक नहि जरैत; कातमे मिट्टीक घैल। ई कम सामग्री नाटकक आरम्भे अवलोकन, अनुपस्थिति आ कर्तृत्वक रूपक रचैत अछि। सूत्रधार राजमिस्त्रीक गाराकेँ जाँचब आ तार्किकक निष्कर्षकेँ सहनक्षम बनएबाक बीच साम्य स्थापित करैत छथि। गारा जँ कमजोर हो तँ देबालक पूर्णता असम्भव;

हेतु जँ अस्पष्ट हो तँ सिद्धान्तक भार सँभराब नहि। एतय दृश्य-सामग्री केवल सजावट नहि, अवधारणाक मूर्त अनुशासन अछि।

सूत्रधार अपन प्रारम्भिक उद्घोषमे बौद्ध तार्किकक तीक्ष्ण संशयकेँ विरोधी बनबैत छथि, मुदा हुनका केवल दुष्ट वा अज्ञानी नहि कहैत। प्रतिपक्षक प्रहारक सटीकता नायकक प्रतिष्ठाक शर्त बनैत अछि। गंगेश अपन पहिल परिभाषाकेँ सेहो अस्वीकार करए सकैत छथि—ई उद्घोषित नियम पूरे नाटकमे कतबो बेर कथानक-उत्पादक शक्ति बनैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे विवादक वास्तविक घटना वाक्य बदललासँ पहिने तर्कक स्थिति बदललामे अछि।

लोकगीतक “जे भीतर थिर, तकरा माटियो रत्न लागय” रूपक गद्यक मूल विधिसँ किछु भिन्न दिशामे जाइत अछि: सत्य-ज्ञानकेँ मनोवृत्तिक स्थिरतासँ जोड़ैत अछि, जखनकि नाटक बाह्य आपत्ति-प्रमाणपर जोर दैत अछि। एकटा सावधान सहृदय एहि दुनू अर्थकेँ पूरक मानि सकैत छथि, मुदा मानसिक थिरताकेँ तथ्यगत यथार्थताक पर्याप्त प्रमाण नहि मानब। एहि आन्तरिक तनावमे फकराक ध्वनि आ न्यायपद्धतिक प्रमेय अलग स्वर रखैत अछि।

प्रथम अंक : मङ्गलाचरणक कारणत्व आ शर्तक प्रश्न

गंगेश धार्मिक अभिवादन कएलाक तुरन्त बाद पूछैत छथि—मङ्गलाचरण वास्तविक रूपसँ किछु उत्पन्न करैत अछि कि नहि? बौद्ध प्रतिवाद रूपेँ उदयनक “किरणावली” बिना स्पष्ट मङ्गलाचरण पूर्ण भेलाक उदाहरण आनैत छथि। जँ प्रत्येक सफल कार्य लेल मङ्गलाचरण आवश्यक, तँ ई विरोधी उदाहरण नियमकेँ धक्का दैत अछि। एतय विरोधीक प्रवेश काव्यात्मक नकारक भूमिका नहि; ओ मूल दावाक सार्वत्रिकतामे वास्तविक बाधा पैदा करैत छथि। गंगेश प्रारम्भिक विचलनकेँ स्वीकार कऽ कारणक व्याख्या पुनर्लेखित करैत छथि।

गंगेशक उत्तरमे मङ्गलाचरण कार्यक प्रत्यक्ष उत्पादक नहि, सम्भावित व्यवधानक निवारक मानल जाइत अछि। पहिने सँ बाधा नहि छल तँ बाधानिवारणक आवश्यकतासँ नियमक अपवाद सिद्ध नहि होयत—ई “खुलल द्वारमे तालाकारक आवश्यकता नहि” सन उदाहरणद्वारा स्पष्ट होइत अछि। एहिमे नव्य-न्यायसंगत उपाधि-जाँचक प्रेरणा भेटैत अछि, यद्यपि मूल ग्रन्थक संस्कृत परिभाषासँ प्रत्येक शब्दक समानता एतय मानल नहि गेल। प्रश्नक क्षेत्र संकुचित करब नाटकक पहिल बौद्धिक मोड़ अछि।

बौद्ध तुरन्त दोसर आपत्ति उठबैत छथि: जँ कोनो बाधा रहल छल कि नहि, तकर स्वतन्त्र निरीक्षण सम्भव नहि, तँ सफलता आ असफलता दुनूकेँ एकहि अदृश्य शर्तसँ समझाओल जा सकैत अछि। ई आपत्ति ज्ञानमीमांसाक केन्द्र स्पर्श करैत अछि। कारणक शर्त वास्तविक होयब आ ओकर जाँच-योग्य होयब दूटा अलग कसौटी छथि। गंगेशक उत्तर रोजमर्राक शर्तबद्ध कारणताक उदाहरण तथा श्रुति–सदाचारक समर्थन जोड़ैत अछि, मुदा अदृश्य व्यवधानक स्वतन्त्र परीक्षणक विधि पर्याप्त स्पष्ट नहि करैत। तेँ अंकक निष्कर्ष पूर्ण सिद्धि नहि, बल्कि नियमकेँ प्रश्नक अधीन राखबाक अभ्यास अछि।

मीमांसकक आवाज : शब्दप्रमाण आ सार्वजनिक साक्ष्यक असमानता

पहिल अंकमे मीमांसक प्रवेश कऽ वैदिक विधानक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। ओ बौद्धसँ सामान्यतः सहमत नहि, मुदा मङ्गलाचरणक कारणत्वक प्रमाण पर गंगेशकेँ दबाव दैत छथि। एहि त्रिकोणीय संवादसँ वादशाला दू ध्रुवक विजय–पराजय नहि रहैत। बौद्धक प्रत्यक्ष–अनुमानक आग्रह, मीमांसकक शास्त्रीय अधिकार आ गंगेशक क्रमिक प्रमाणपरक बचाव भिन्न आधारसँ उठैत छथि। ई भिन्नता बहुस्वरताक वास्तविक आरम्भ अछि।

गंगेश श्रुति आ पीढ़ीगत लोकाचारक सहमतिसँ कारणक विश्वसनीयता बढ़बाक बात करैत छथि। मुदा लोकाचार स्वयं सामाजिक सम्बन्ध, वर्णाधिकार आ लेखनाधिकारसँ प्रभावित होइत अछि। जे इतिहासमे बोलबाक अथवा शास्त्र उद्धृत करबाक अवसर पबैत अछि, ओकर निरन्तर पुनरावृत्ति स्वतः सर्वसमावेशी प्रमाण नहि बनैत। विदेह समानान्तर इतिहासक कसौटी एहि बिन्दुपर कहत जे कोनो वैदिक विधान मानबाक अधिकारक सँग-सँग ओहि विधानक सामाजिक प्रयोग, ओकरा मनबाक बाध्यता आ असहमतिक दण्ड सेहो जाँचल जाय। अध्याय एतय प्रश्न खोलैत अछि; ओकर सामाजिक परिणाम विस्तृत रूपेँ मंचित नहि करैत।

दोसर अंक : शंख-चानीक मिश्रित ज्ञान आ आधारक विभाजन

शिष्यक सामने गंगेश शंखक ठाम चानी बुझबाक भ्रमसँ वैध ज्ञानक पहिल सीमा परखैत छथि। एकटा दृष्टिगत “एतय” सही होइतहुँ “चानी” गुण गलत—ई बात पहिल अध्याय “शंख आ रजत”सँ स्पष्ट अन्तर्पाठीय सेतु अछि। एहि ठाम लेखक पुरान प्रतीककेँ नवनाट्यस्थितिमे पुनर्स्थापित करैत छथि: पहिने भ्रमक कथा छल, एखन भ्रम ज्ञानक लक्षणक त्रुटि देखेबाक साधन बनैत अछि। ई प्रतिध्वनि केवल समान शब्दक फेर आबब नहि; पाठमे प्रश्नक कार्य बदलि गेल अछि।

गंगेश ज्ञानकेँ एक अखण्ड वाक्यक बजाए सूक्ष्म सम्बन्धक जाँचसँ समझएबाक प्रयास करैत छथि। शिष्य तुरन्त पूछैत छथि जे आधा सही–आधा गलत कथन विरोधाभास नहि थिक? उत्तरमे संयोगभूत बोधक विभिन्न निर्दिष्ट पक्षक अलग सत्य-मूल्यक विचार अबैत अछि। आधुनिक विश्लेषणात्मक वाक्यक घटक-विभाजनसँ एकर उपमा देल जा सकैत अछि, मुदा नव्य-न्यायक अवच्छेदक-सम्बन्धी व्याकरणकेँ आधुनिक तर्कशास्त्रक सरल वाक्य-विभाजनक समानार्थी ठहराएब असावधान होयत। उपन्यासक मंचीय सरलता एतय ओकर शिक्षकीय लाभ आ औपचारिक सीमा दुनू बनैत अछि।

बौद्ध गाछक शीर्षमे चिड़ैसँ संयोग आ जड़िमे ओकर अभावक उदाहरण दैत छथि। एकहि वस्तुक अलग अवयवमे गुणक उपस्थिति–अनुपस्थिति विरोधाभास नहि, जँ स्थान-विशेष स्पष्ट कएल जाय। गंगेश “भाग” आ “समय” निर्दिष्ट करबाक अनुशासन पर जोर दैत छथि। सैद्धान्तिक रूपेँ ई अवच्छेदकक विचारक प्रवेशद्वार अछि। कथा-सौन्दर्य एतय दुरूह तकनीकी शब्दक विस्तृत सूची नहि, गाछक मूर्त दृश्यसँ अर्थक शुद्धि करबाक क्षमतामे अछि।

पकैत घैल आ समयक निर्दिष्टता : कालक दार्शनिक प्रवेश

दोसर अंकक अन्तिम आपत्ति पकबाक पहिने कारी आ पकने बाद रक्तरंग घैलसँ अबैत अछि। वाक्य “इएह घैल कारी अछि”क सत्यता काल-निर्देश बदलने बदलि जाइत अछि। गंगेश उत्तर दैत छथि जे ज्ञानक मूल दावा

पहिनेहिसँ समयसँ सम्बद्ध रहल अछि; “पकबाक पहिने कारी” आ “एखन कारी” भिन्न समयावच्छिन्न कथन छथि। एहि दृश्यसँ काल केवल कथा-घटनाक पृष्ठभूमि नहि, कथनक वैधताक निर्णायक अङ्ग बनि जाइत अछि।

कथा-आख्यानशास्त्रमे कथा-समय आ कथन-समयक भेद एहि दृश्य पर अलग जाँचबाक अछि। मंचपर घैल एहि वर्तमान साँझमे उपस्थित अछि, मुदा ओकर बनबाक, कारी रहबाक आ आगिमे पकबाक पूर्वकाल संवादद्वारा पुनर्निर्मित होइत अछि। दृश्य केवल वर्णनसँ दीर्घ जीवनक्रम समेटि लैत अछि। एहि कारण शाब्दिक क्रियाक लम्बाई वास्तविक घटनाघनत्व नहि मापैत। पूर्वघटनाक सारांशसँ वर्तमान कथनक तर्क बदलैत अछि; पाठक वस्तुक इतिहासक समय-शर्तकेँ ज्ञानक सम्बन्धमे जोड़य बाध्य होइत छथि।

नैतिक स्तरपर समयक ई सूक्ष्म शर्त आगाँक उपन्यासमे गवाही, दस्तावेज आ स्मृतिक बदलैत अवस्थाक परीक्षणक सम्भावना बनबैत अछि, मुदा अगिला अध्याय देखल बिना कोनो खास घटना एतय आरोपित नहि करबाक चाही। वर्तमान दृश्य स्वयं पर्याप्त बलशाली अछि: प्रमाणित बातक समय-सन्दर्भ हटाओल जाए तँ ओहि बातक अर्थ बदलि जाइत अछि। आधुनिक अभिलेखक वैधता लेल सेहो ई सामान्य पद्धतिगत चेतावनी उपयोगी अछि।

तेसर अंक : व्याप्तिक पहिल परिभाषा आ प्रतिपक्षक चुनौती

दीपक बत्तीसँ उठैत हल्का धुआँ तेसर अंकक ठोस प्रवेश-संकेत अछि। गंगेश व्याप्तिक पहिल लक्षण एहि रूपमे देबाक प्रयास करैत छथि जे हेतु ओहि ठाम नहि होयत जतय साध्य अनुपस्थित अछि। बौद्ध एकटा सर्वसकारात्मक उदाहरणद्वारा पूछैत छथि जे जँ उपयुक्त नकारात्मक क्षेत्र भेटबे नहि करय तँ “साध्याभाव”क स्थानक जाँच कोना हएत। नाटक एतय प्रतिपक्षक आलोचनाकेँ स्वीकार करबैत अछि: गंगेश स्पष्ट कहैत छथि जे पहिल प्रयास त्यागैत छी। ई आत्मसंशोधन मुख्य घटना अछि, साधारण संवादक अलंकार नहि।

तत्पश्चात् सहावस्थिति आ अभावक स्थान-सम्बन्धक अनेक रूप प्रस्तुत होइत अछि। गंगेश तेसर आ चारिम प्रयासक उल्लेख करैत छथि, मुदा सघन नव्य-न्यायीय विभेदकेँ अत्यन्त संक्षिप्त कथनमे समेटैत छथि। पाठक विधिक कथा अवश्य पबैत छथि—प्रतिपक्ष उपाधि वा अनुपस्थितिक आपत्ति दैत अछि, परिभाषा संकुचित होइत अछि—मुदा प्रत्येक लक्षणक स्वतन्त्र औपचारिक व्याप्ति प्रमाणित नहि देखैत। ई साहित्यिक संक्षेप कथाक गतिशीलता बढ़बैत, मुदा उच्च शोधक विशिष्ट तार्किक जाँच कठिन बनबैत अछि।

गंगेशक “गिनतीसँ नहि, विधिसँ चमत्कृत होउ” प्रकारक आग्रह कथात्मक उपलब्धि अछि। तर्कक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहल निष्कर्षमे नहि, पतन सहिकऽ सुधारल परिभाषामे देखाओल जाइत अछि। उल्टा खतरा ई अछि जे बारम्बार परिष्करणकेँ अपने-आप सफल सिद्धि मानि लेल जाय। बौद्धक आग्रह उपयोगी रहैत अछि: नव परिभाषा कथित सब सम्भावित विपरीत-मामला सँ बचैत अछि कि केवल मंचपर उपलब्ध उदाहरणसँ? एहि अन्तरक उद्घाटन समीक्षाक केन्द्र अछि।

धुआँ-अगिनक नियमितता : अवलोकन, उपाधि आ अनन्त अनुभव

शिष्य प्रश्न करैत छथि—रसोइघरमे धुआँ आ अगिन संग देखल गेल, मुदा संसारक प्रत्येक अगिन के देखलक? एतय सामान्य नियमक अनुभवगत सीमा अभिव्यक्त होइत अछि। गंगेश पुनरावृत्त अवलोकन आ विपरीत उदाहरणक खोजक सहायतासँ व्याप्तिक विश्वसनीयता बढ़बाक बात करैत छथि। प्रत्यक्षक सीमित नमूना आ सार्वत्रिक निष्कर्षक बीच जे छलाँग अछि, ओकरा नाटक अस्वीकार नहि करैत; ओकर उचित आधार खोजैत अछि। एहि कारण शिष्यक साधारण प्रश्न बौद्धिक रूपसँ प्रखर अछि।

मुदा “कहियो असफल नहि भेल संयोग नियम अछि” कहब समस्या समाप्त नहि करैत। कतेक अवलोकन, कोन परिस्थितिमे, आ सम्भावित उपाधिक अनुपस्थिति कोना सुनिश्चित—ई प्रश्न बचल रहैत अछि। अगिन बिना धुआँक सम्भव स्रोत वा धुआँ बिना दृश्य शिखाक अवस्था न्यायीय उदाहरणक सावधानी माँगैत अछि। एहि प्रकरणमे वैज्ञानिक प्रयोगशालाक आधुनिक विधिक अनिवार्य उदाहरण घुसाबय अनुचित होयत; तथापि पाठक एतबा जरूर पुछि सकैत छथि जे अन्वय–व्यतिरेक, नियत सहचर्य आ व्याप्तिक अनुमानक सीमा कथामे पर्याप्त विवेचित भेल कि नहि।

मंचपर उठैत धुआँ एकटा अत्यल्प बाह्य घटना अछि, मुदा ओकर भीतर कारणिकता, ज्ञानक सार्वत्रिकता आ अवलोकनक सीमाक घन विचार-विवाद जन्मैत अछि। एकर घटनात्मक घनत्वकेँ शारीरिक गतिविधिक संख्या सँ नहि नापल जाए; ज्ञान-स्थितिक परिवर्तन, प्रतिपक्षक उत्तर आ परिभाषाक बदलैत रूपक आधारपर नापल जाय।

चारिम अंक : माटि, घैल आ ईश्वरानुमानक पक्ष-निश्चय

गंगेश मेजसँ घैल उठाकऽ माटि आ अन्य तत्त्वक कर्तृत्वक अनुमान करैत छथि। बौद्ध एहि बेर विश्वक उत्पादक के अछि से पुछबाक पहिने प्रश्नक “पक्ष” स्वयं की अछि से निश्चित करबाक माँग करैत छथि। “माटि आ बाकी तत्त्व” अस्पष्ट रहितहुँ एकटा समान विवादित विषय बनि रहल अछि कि नहि—ई आपत्ति मात्र शब्दक खेल नहि। जखन विषय स्वयं बदलैत रहय तँ अनुमानक अन्तिम निष्कर्ष पहिल दावासँ अन्य भऽ सकैत अछि। बौद्ध प्रतिपक्षक भूमिका एहि अंकमे सर्वाधिक सक्रिय अछि।

अंकुरक उदाहरण मूल अनुमानमे एकटा कठिन बिन्दु देखबैत अछि: उत्पादित होएबाक आधारपर कर्तृत्व सिद्ध करबाक सामान्य विषय लेबासँ एहन प्राकृतिक वस्तु भीतर आबि जाएत जकर कारण-व्यवस्था घैलक शिल्पसँ भिन्न अछि। गंगेश विवादित माटि, पानि, अगिन, हवा पर विषय सीमित रखबाक उत्तर दैत छथि। ई नैतिक रूपसँ प्रशंसनीय सावधानी—विचार-विमर्शक बीचमे प्रश्न बदलि विजयी घोषणासँ बचबाक यत्न—होइतहुँ स्वतन्त्र सिद्धि नहि। एखनहु पदार्थ-तत्त्वकेँ ‘कार्य’ मानबाक आधार, उत्पत्तिक स्वरूप आ कर्ताक प्रकारक अनुमान अलग परीक्षण माँगैत अछि।

नव्य-न्यायक पदावलीमे पक्षताक सीमांकन, हेतुक उपस्थितिक प्रमाण आ व्याप्तिक उपाधि-निषेध एतय अलग-अलग प्रश्न छथि। पात्रक संवाद एहिमे सब केँ एकहि कथात्मक धागामे बाँधैत अछि, मुदा दार्शनिक समीक्षा ओकरा पुनः पृथक करैत अछि। अन्तर्पाठीय रूपेँ –९८क चाक–कुम्हार दृष्टान्त फेर अबैत अछि; एहि बेर श्रमक मूर्त

दृश्य कम, प्रमाणक विषय-निर्देश अधिक। पुनरावृत्त प्रतीक नव कार्य करैत अछि, तेँ एकरा मात्र अनावश्यक दुहराव नहि कहल जाए।

कर्तृत्वक परिभाषा : सामयिक सह-अवस्थिति आ प्रभावी कारण

बौद्ध ज्ञान, इच्छा आ प्रयत्नक उपस्थिति द्वारा कर्तृत्वक लक्षण निश्चित करए कहैत छथि। गंगेश स्वयं एहन कमजोर परिभाषाकेँ खण्डित करैत छथि: हम सभ अनेक वस्तुक सम्बन्धमे जानैत छी, चाहैत छी, प्रयास करैत छी, तइयो ओ सभ वस्तु हमर द्वारा उत्पादित नहि भऽ जाइत। एकरा कर्तृत्वक सामान्य सह-अवस्थिति आ वास्तविक प्रभावी कारणक बीचक भेद कहि सकैत छी। उपन्यास एहि क्षणमे ज्ञानमीमांसक सतर्कताकेँ एकटा याद रहएवाला संवादिक घटना बनबैत अछि—नायक अपनहि परिकल्पनाक कमजोर रूपक बलि देलनि।

पछिला परिष्करण कहैत अछि जे कर्ताक ज्ञान–इच्छा–प्रयत्न उत्पत्तिक वास्तविक कारणिक सम्बन्धमे ठाढ़ रहबाक चाही, मात्र वस्तुक सँग उपस्थिति पर्याप्त नहि। मुदा एहि लक्षणपर सेहो अनुसन्धानक प्रश्न बचैत अछि: प्रभावी कारण स्वयं ककर माध्यमसँ चिन्हल जाए? एक ज्ञात शिल्पक उदाहरण सँ निर्जीव प्राथमिक पदार्थक उत्पत्तिमे समान कारणिक रूप अवश्य होयत कि नहि? एकरा बिना जाँचने “ईश्वर” तक निष्कर्ष अभिधेयक व्याख्या रहि सकैत अछि, अनुमित सिद्धिक अनिवार्य फल नहि।

देहधारी कर्ता अपन शरीरक कारणपर निर्भर, एहिसँ अनवस्था-भयक आधारपर शरीरविहीन कर्ताक कल्पना उपस्थित होइत अछि। ई तर्कक कथात्मक ऊर्जा अन्तिम अङ्क बढ़बैत अछि। तथापि अनन्त प्रतिगमन अवांछनीय होयब आ एकटा विशेष स्वतन्त्र चेतन कर्ताक अस्तित्व सिद्ध होयब अलग-अलग प्रतिज्ञा छथि। गंगेश निष्कर्षकेँ “बड़का मनुष्य नहि” कहि संकीर्ण करैत छथि, जखनकि बौद्ध पूर्ण मतपरिवर्तनक घोषणा नहि करैत। एही असहमतिक अवशेषमे अध्यायक बौद्धिक ईमानदारी आ सीमा दुनू भेटैत अछि।

परिणामक स्वरूप : मत-परिवर्तन नहि, तर्कपद्धतिक आंशिक स्वीकृति

चारिम अंकक अन्तमे बौद्ध लम्बा मौनक बाद स्पष्ट कहैत छथि जे ओ पूर्णतः मनाओल नहि गेल छथि, मुदा ओ एखन ई नहि मानैत छथि जे तर्कमे छोड़य योग्य कदम सहज छल। ई वाक्यक नाटकीय सूक्ष्मता महत्त्वपूर्ण अछि। गंगेशक विजय धार्मिक सहमतिमे परिणत नहि; विरोधीक नजरमे विवेचनक विधिक गंभीरता बढ़ैत अछि। एतय कथानकक अन्तिम परिवर्तन एक व्यक्तिक मान्यता-स्तरपर अछि, सम्पूर्ण विश्वविवादक निर्णायक समाधानमे नहि।

गंगेश अपन जीतक परिभाषा स्वयं सीमित करैत छथि—उच्च स्वर नहि, साक्षीक प्रहार सहि सकएवाला जाँचल वाक्य। सूत्रधार उपसंहारमे निर्णय पाठक वा श्रोताक हाथमे छोड़ैत छथि। एहि सीमा-संरक्षणसँ पाठकीय सहृदयता सक्रिय होइत अछि: सभाक श्रोता केवल ताली बजाबयवला नहि, अन्तिम प्रश्नक उत्तरदायी बनैत छथि। मुदा प्रश्नक उद्घाटन सँ पाठककेँ वास्तविक विकल्प देबाक अर्थ अछि—नाटकक भाषिक सम्मान आ तर्कक समरूप अवसर दुनूक समीक्षा जरूरी।

कथावाचक वादशालाक भीतर घटैत घटनाकेँ बाहरक मंच-सूत्रधारद्वारा बान्हैत छथि। अभिनयक परतपर पात्र बोलैत छथि; सूत्रधार दर्शकसँ उद्देश्यमूलक संवाद करैत छथि; व्याख्यात्मक अनुच्छेद वास्तविक संस्कृत ग्रन्थक प्रतिनिधि विषयसभक सूची प्रस्तुत करैत अछि। एहि तीनू स्तरकेँ एकहि कथावाचकक पूर्ण सर्वज्ञ कथन मानब त्रुटि हएत। कथात्मक विश्वसनीयता प्रत्येक स्तरपर अलग कसौटी माँगैत अछि।

कथनक्रम, अवधि, दृष्टिकेन्द्रण आ मंच-संयोजन

चारि अंक एकहि साँझक क्रमक आभास दैत अछि, मुदा अतीतक उदयन-उदाहरण, पूर्व अनुभवक धुआँ–अगिन, घैलक पकबाक इतिहास आ ग्रन्थलिखनक दीर्घ अवधि वर्तमान क्षणक भीतर संक्षिप्त भेल अछि। कथा-समयक अनगिनत उदाहरण मंच-समयक सीमान्तक भीतर समा जाइत अछि। एतय प्रत्यक्ष पूर्वदीप्तिक बदला तर्कपरक स्मरणात्मक पुनर्स्थापन प्रधान अछि: दृश्य-दर-दृश्य कालिक प्रसंग तर्कक आधार बनैत अछि, पात्रक जीवनचरित नहि।

दृष्टिकेन्द्रण एकटा निश्चित पात्रक अन्तर्मनमे स्थायी बसल नहि अछि। गंगेशक तर्कक प्रसार सघन, बौद्धक प्रतिवाद तीक्ष्ण, शिष्यक प्रश्न साधारण ग्रहणशीलता सँ उठल, मीमांसकक वाणी शास्त्रीय अधिकारक विषय उठबैत अछि। सूत्रधार ई सभक आसन बाँटैत छथि आ दर्शकक व्याख्या दिशा करैत छथि। ई नाटक अपेक्षाकृत बाह्य-सम्प्रेषणपर निर्भर अछि; पात्रसभक भीतरी जीवन, निजी हानि, सम्बन्धक दुविधा अल्प अछि। तेँ बौद्धिक बहुस्वरता उल्लेखनीय होइतहुँ मानसगत पात्रनिर्माण सीमित।

दीप जरब, धुआँ उठब, शंख रखब, घैल उठाएब—ई चारि भौतिक संकेत अंक सभकेँ धरातल दैत अछि। ई मंच-संयोजन प्रतीकक यांत्रिक सूची नहि, प्रमाणक दृष्यमानता-आधार अछि: जे चीज देखाइत अछि, ओकरा द्वारा अदृष्ट सम्बन्धक अनुमान पर प्रश्न उठैत अछि। मुदा मङ्गलाचरणक बाधा वा ईश्वरक कर्तृत्वक परीक्षणक दृश्य स्वतन्त्र रूपेँ उपलब्ध नहि; अभिनेता भौतिक संकेतसँ अदृष्ट दावाक ओर बढ़ैत छथि। एहि असमानतापर नाटकक प्रभाव आ अन्तर्निहित तनाव दुनू टिकैत अछि।

अङ्कानुसार घटना-परिवर्तनक प्रमाण-सारणी

मूल पाठक अंश	पाठमे सत्यापित कथात्मक परिवर्तन	परीक्षणक सीमा
प्रस्तावना	सूत्रधार राजमिस्त्रीक गारा आ प्रमाणक सहनक्षमता जोड़ैत छथि	विधिक घोषणा; घटना-गणना नहि
अंक प्रथम : मङ्गलाचरण	उदयनक विरोधी उदाहरण; गंगेश बाधानिवारणक शर्त प्रस्तावित करैत छथि	अदृश्य व्यवधानक स्वतंत्र परीक्षण आवश्यक
अंक द्वितीय : शंख–चानी	मिश्रित बोध; गाछक भाग आ पकैत घैलक समय-शर्त	स्थान–काल निर्देश, पाठान्तर सत्यापन शेष

अंक तृतीय : धुआँ–अगिन	व्याप्तिक प्रारम्भिक लक्षणक अस्वीकार आ परिष्करण	सर्वसकारात्मक हेतु, उपाधि आ सार्वत्रिकता
अंक चतुर्थ : कर्तृत्व	पक्ष सीमांकन, अंकुरक आपत्ति, प्रभावी कारणक परिभाषा	जगतक कर्ता-विषयक निष्कर्ष सशर्त
उपसंहार	बौद्ध पूर्ण मतान्तरण नहि करैत; विधिक कठोरता मानैत छथि	पाठकीय निर्णय खुलल
दृष्टान्त–उद्धरण-संग्रह	जनश्रुति, उपमान, अर्थापत्ति, शास्त्रीय वचनक संकलन	मंचीय घटना वा ऐतिहासिक सत्यापित संवाद नहि

मुख्य नाटकक बादक दृष्टान्त-संग्रह : सीमांकन आ ज्ञान-श्रेणी

अध्यायक उपसंहार आ पात्रसभक प्रस्थानक बाद “तत्त्वचिन्तामणि : कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण-संग्रह” आरम्भ होइत अछि। एहिमे गंगेशक बाल्यकालक जनश्रुति, सीप–चानीक प्राभाकर व्याख्या, देवदत्त घरसँ बाहर होएबाक अर्थापत्ति, अगिन–मणि–मन्त्रक प्रतिबन्धक, “ॐ” आ “अथ”, गवयक उपमान, गदहा, ब्रोकली, जेबरा, काठक पुतरी आ समाचार-सूचक बालकक अनेक उदाहरण उपस्थित अछि। ई संग्रह मुख्य नाटकक चारि अंकमे घटित स्वतन्त्र नाटकीय दृश्य नहि; एकरा परिशिष्ट-सदृश शैक्षिक पाठरूपेँ अलग मानब समुचित अछि, यद्यपि भौतिक रूपसँ एकहि अध्यायक भीतर अछि।

ज्ञानक स्रोतसभक बीच अन्तर एहि खण्डमे विशेष साफ करबाक जरूरत अछि। गंगेशक बाल्यकालक श्मशान-साधना आ अचानक ज्ञानक प्रसंग पाठ स्वयं “जनश्रुति” कहैत अछि; एकर ऐतिहासिक सत्यापन स्वतन्त्र स्रोत बिना सम्भव नहि। अगिनपर मन्त्र–मणिक दाहप्रतिबन्धक कथन दार्शनिक कारण-चिन्ताक पारम्परिक दृष्टान्त होयत, भौतिक विज्ञानक प्रयोगसिद्ध तथ्य नहि। ब्रोकली आ जेबरा समकालीन बोधगम्य उपमा छथि, ई हुनक ऐतिहासिक संस्कृत विमर्शक प्रत्यक्ष दृश्य छल से कहना अनुचित। एहि श्रेणीकरणसँ शिक्षकीय उपलब्धि बचैत अछि आ ऐतिहासिक मिथ्याकरण रोकिना।

संग्रहमे परस्पर विभिन्न प्रमाणप्रणाली—अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, स्मृति—एकत्र अछि। मुख्य नाटक स्वयं स्पष्ट कहैत अछि जे गंगेशक ग्रन्थक उपमान आ शब्द-खण्डक सम्पूर्ण तकनीकी विवरण एतय प्रस्तुत नहि अछि। एहि स्वीकृतिसँ कथा-गद्यक सीमा ईमानदारीसँ अंकित अछि। मुदा पाठककेँ नाटक समाप्ति पछाति एतेक विस्तार भेटनासँ पूर्व-अर्जित नाटकीय संकेन्द्रण ढीला पड़ैत अछि। यदि संग्रहकेँ “अध्ययन-सहायिका” वा “अन्तर्वर्ती परिशिष्ट” रूपेँ सजायल जाय, तँ सम्पादकीय स्पष्टता बढ़त।

स्रोत-वचनक स्थिति : उद्धरण, उपदेश आ ऐतिहासिक दावी

संग्रहक “उद्धरण” विभागमे मङ्गलाचरण, विनायक-स्तुति, सदाचार, आत्मज्ञान, कर्म, भगवद्गीता, पुराण, स्मृति, ब्रह्म आ ईश्वरक कर्तृत्वक अनेक संक्षिप्त वचन गद्य रूपमे प्रस्तुत अछि। सभकेँ एकहि प्रमाण-स्तरपर राखब उचित नहि: किछु स्पष्ट नामित शास्त्रीय संकेत अछि, किछु सामान्य दार्शनिक पुनर्कथन, आ किछु स्रोत-निर्देश बिना

उद्धरणवत् वाक्य। मूल शास्त्रक पाठ-संस्करण, मूल भाषा, पदक्रम आ सन्दर्भस्थान जाँचने बिना अक्षरशः पारम्परिक उद्धरणक मान्यता नहि देल जा सकैत। समीक्षाक स्रोत-सूची एहि सीमाकेँ खुला राखैत अछि।

“जे द्विज पूर्वजन्म स्मरण करैत अछि” जेकाँ वाक्य सामाजिक श्रेणीसहित ज्ञान-अधिकारक सम्बन्ध सामने आनैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक परीक्षणमे ई केवल आध्यात्मिक विचार नहि, ज्ञानप्राप्तिक पात्रता केकरा लेल निर्धारित होइत अछि तकर प्रश्न अछि। एकर संग काठक पुतरी देखनिहार बालक वा सब्जी-बजारक शिक्षार्थी सर्वसुलभ अनुभवक संकेत दैत छथि। एकहि संग्रहमे विशिष्ट शास्त्रीय पात्रता आ खुलल इन्द्रिय–समाजजन्य सीख दूनू उपस्थित अछि। ई अन्तर्विरोध अध्ययनक विषय, स्वतः समाधान नहि।

उद्धरणक भाषा अनेक ठाम उपदेशात्मक अछि, जखनकि मुख्य नाटक प्रश्न–विवादक परस्परता सँ चलैत छल। एहि भंगिमाक परिवर्तन कथात्मक दूरी बढ़बैत अछि: श्रोता स्वयं निर्णयकर्ता सँ नियमन सुननिहार बनि सकैत अछि। परिणामतः नव्य-न्यायक संशोधनीय वाक्यक आदर्श आ संकलित वचनक निश्चयात्मकता बीच अन्तर स्पष्ट होइत अछि। सम्पूर्ण ग्रन्थमे प्रमाणक नैतिकता परखबाक लेल ई एकटा मूल परीक्षण-बिन्दु मानल जाए।

रस, ध्वनि, औचित्य आ भाषा-शैलीक आलोचना

प्रारम्भिक फकरामे “ढेला–हीरा”क उलटाव वक्रोक्तिक सरस उदाहरण बनैत अछि। माटि, घैल, राजमिस्त्रीक गारा, शंख, गाछ, धुआँ आ दीपक प्रतिमासभ रोजक संसारकेँ दार्शनिक अनुभवक बोधगम्य रूप दैत अछि। एहिमे अद्भुतक रूप गूढ़ चमत्कार नहि, साधारण वस्तुमे सत्यक शर्त खोजबाक कौतूहल अछि। शिष्यक छोट प्रश्न करुण अथवा वीर रसक उत्कर्ष नहि; ज्ञान-जिज्ञासाक सतर्क भाव उत्पन्न करैत अछि। भारतीय रस-पद्धतिक शब्द जबरदस्ती आरोपरहित एहि विशेष भावात्मक आयोजनक वर्णन अधिक समर्थ अछि।

आचार्यक विनम्रता बारम्बार प्रशंसित अछि; विरोधी बौद्ध सेहो क्रमशः सम्मान पबैत छथि। भाषामे “पहिले परखू”, “आरो संकीर्ण करू”, “हम अपन पहिल उत्तर नहि बचायब” प्रकारक आवृत्ति अछि। ई पुनरावृत्ति विधिक संगीत बनबैत अछि, मुदा कतहु एकहि नीतिवाक्यक अनेक रूप प्रभावक सघनता कम करैत अछि। लम्बा नाटकक अन्तमे सूत्रधार द्वारा पूरा विधिक फेर सारांश देब विचारक स्पष्टता बढबैत, संगहि पाठकक स्वतन्त्र अर्थ-निर्माण पर अति निर्देशनक जोखिम आनैत अछि।

औचित्यक कसौटीपर मञ्चक साधारण वस्तु, चारि अंकक क्रम आ प्रतिपक्षक सतत भागीदारी सुसंगत अछि। तनाव मुख्य नाटकसँ उद्धरण-संग्रहमे अचानक रूपान्तरक अछि। यदि लेखकक उद्देश्य एकहि अध्यायमे लोकमंच, नव्य-न्यायक शिक्षण आ पाठ्य-संकलन संयुक्त करब अछि तँ पाठककेँ ई लक्ष्य पहिनहि संकेत देब आवश्यक अछि। नहि तँ नाटकीय समाप्तिक बाद ज्ञानकोशीय विस्तार कथानकक अन्तिम नाद ढाँकि सकैत अछि। ई आलोचना विस्तारक मात्र विरोध नहि, विधागत सीमाक स्पष्टताक पक्ष अछि।

घटनात्मक घनत्व, सामाजिक प्रसंग आ समग्र निर्णय

घटनात्मक रूपसँ एहि अध्यायमे बाह्य क्रिया सीमित अछि: विद्वानक आसन, दीपक बत्ती, मेजपर शंख, हाथमे घैल, सभा छोड़बाक क्रिया। मुदा ज्ञानात्मक घटना स्पष्ट अछि: मङ्गलाचरणक निरपेक्ष कारणत्व शर्तबद्ध बनैत

अछि; सत्यज्ञानक स्थूल परिभाषा स्थान–समयक निर्दिष्टता माँगैत अछि; व्याप्तिक पहिल लक्षण बौद्ध आपत्तिसँ संशोधित होइत अछि; ईश्वरानुमानक विषय आ कर्तृत्वक सम्बन्ध संकीर्ण होइत अछि; अन्तमे विरोधी पूर्ण सहमतिसँ बचि विधिक शुचिता स्वीकारैत छथि। एहि क्रममे एकटा दृढ़ कारणात्मक बौद्धिक कथा बनैत अछि, जकरा केवल ‘व्याख्यान’ कहब अन्याय।

सामाजिक प्रतिनिधित्व मुख्यतः शास्त्रीय विद्वान, विद्यार्थी आ सूत्रधारक आसपास केन्द्रित अछि। ~९८क कुम्हारिनक स्वतन्त्र श्रम-वाणी एतय घैलक प्रतीकमे बदलि जाइत अछि; वास्तविक कुम्हारिन मंचपर बजैत नहि छथि। तें वस्तुक प्रयोग लोकश्रमक पूर्ण सहभागिताक प्रमाण नहि। साथे, ज्ञानक दृढ़ परीक्षा करेबाक चरित्रक मानवीय पक्ष—परिवार, असफलताक निजी मूल्य, समुदायमे परिणाम—अल्प अछि। सभाक भीतर विरोधीकेँ मान देब महत्त्वपूर्ण, मुदा सामाजिक विश्वक व्यापक अन्तरविरोध सँ ओकर प्रत्यक्ष कथा-सम्बन्ध कम।

प्रकरणक समग्र उपलब्धि ओकर आत्मखण्डन-सक्षम तर्कपद्धति आ प्रतिपक्षक सम्मानजनक उपस्थिति अछि। मुख्य सीमा ई अछि जे कठिन नव्य-न्यायीय तकनीक संक्षेपमे अनेक बेर निर्णायक घोषित होइत बुझाइत अछि, जखनकि उपाधिक निषेध आ व्याप्तिक औपचारिक आवश्यकताक क्रम सब समय पर्याप्त विस्तृत नहि। ऐतिहासिक शास्त्रीय ग्रन्थक कथात्मक पुनर्रचना आ प्रमाणित मूल पाठक अन्तर संकेतित अछि, तथापि दृष्टान्त–उद्धरण-संग्रहक स्रोतस्थिति आरो स्पष्ट कएल जा सकैत छल। एकर मूल्यांकन सशर्त रूपसँ सकारात्मक अछि: ई अध्याय विचारक प्रक्रियाकेँ कथा बनबैत अछि, विचारक अन्तिम परिणाम मात्र नहि।

अध्याय ~९६ “स्मृति-रक्षा” दिशि बढ़ैत काल एखन एकटा अनुसन्धान-प्रश्न बचैत अछि: जे ज्ञान अपन परिभाषा सुधारि सकैत अछि, ओ समाजक स्मृति, नाम आ अभिलेखक त्रुटि सुधारबाक संस्था कोना बनत? एहि प्रश्नक उत्तर अगिला मूल अध्यायक वास्तविक पाठ देखलाक बादहि देल जाएत। एतय चारि अध्यायक संचयी सम्बन्ध मात्र निश्चित कएल गेल: प्रत्यक्षक भ्रम, ज्ञाताक विवाद, कर्ताक अनुमान आ प्रमाणक आत्मपरीक्षण, चारि अलग क्रमिक नाट्य-अनुभव छथि।

अध्याय ~९७ : सत्यापित मूल-पाठ साक्ष्य-सूचक

निम्न संक्षिप्त अंश मूल संयुक्त वर्ड-पाठक अध्याय ~९७मे मिलाओल गेल अछि। पाठक अनुक्रमणिकासँ ६५–८७ पृष्ठक अध्याय-परास जाँचल अछि; उद्धरणक सटीक व्यक्तिगत पृष्ठाङ्कक स्वतन्त्र प्रमाणीकरण नहि भेल। एतय अंक, वक्ता आ आन्तरिक शीर्षकक आधारपर सन्दर्भ देल गेल अछि।

आरम्भिक फकरा — “मन थिर तँ ढेलो हीरा, मन डोलल तँ हीरो ढेला”।

प्रस्तावना, सूत्रधार — “हर राजमिस्त्री दीवालकेँ भरोसा देबासँ पहिने अपन गारा परखैत अछि”।

अंक प्रथम, गंगेश — “की मंगलाचरण वस्तुतः किछुओ कारित करैत अछि?”।

अंक प्रथम, बौद्ध — “अहाँ अपन कारणिक नियमकेँ अपरीक्षणीय बना देलहुँ”।

अंक द्वितीय, गंगेश — “इएह शंख चानी थिक”।

अंक द्वितीय, बौद्ध — “एकटा घैल, ताजा बनल, आगिमे पकबासँ पहिने कारी छल”।

अंक तृतीय, गंगेश — “धुआँ, तँए अगिन”।

अंक तृतीय, शिष्य — “हम संसारक हर अगिन नहि देखने छी”।

अंक चतुर्थ, बौद्ध — “एहि अनुमानक विषय सटीकतासँ की थिक?”।

अंक चतुर्थ, गंगेश — “हम अपन लापरवाह प्रमाणकेँ खंडित केलहुँ”।

अंक चतुर्थ, बौद्ध — “हम अखनहु अपनाकेँ मनाएल नहि कहैत छी”।

व्याख्यात्मक टिप्पणी — “ई ग्रंथक उपमान वा शब्द खंड”।

दृष्टान्त-संग्रह — “गङ्गेशक बाल्यकालीन जनश्रुति”।

दृष्टान्त-संग्रह — “देवदत्त घरसँ बाहर छथि”।

दृष्टान्त-संग्रह — “ब्रोकलीक परिचय”।

प्रकरण ५ | मूल अध्याय −९६ — स्मृति-रक्षा

ई मुद्रित पृष्ठ-परास अनुक्रमणिकाक आधारपर अछि; प्रत्येक उद्धरणक व्यक्तिगत पृष्ठसंख्या स्वतन्त्र रूपसँ सत्यापित नहि भेल।

मूल संयुक्त वर्ड-पाठक अध्याय [−९६] सँ अगिला अध्याय [−९५] धरि पृथक कएल सामग्री पर वर्तमान नियमित-अक्षर-समूह गणनामे २,२३१ एकक भेटैत अछि। पाँच एककक अन्तरकेँ निर्णायक साहित्यिक तथ्य नहि मानल गेल; परिशिष्ट, अनुक्रम आ नाटकक अन्तक दृष्टान्त अहिमे अन्य अध्यायक सामग्री मानि अलग नहि कएल गेल अछि। गणनाक दुनू पद्धतिक परिणाम खुलल रखब पाठालोचनाक प्रारम्भिक ईमानदारी अछि।

तेँ एहि आलोचनामे नाटकक कालखण्ड क्रमशः भोरक इनार, दिनक वादशाला, रातिक गोपनीय बातचीत, संझाक पुनः इनार आ अनिश्चित दूरभविष्यक उपसंहार रूपमे अलग कएल गेल अछि। ई दृश्य-कटाव, चारि अंक, मंचीय वस्तु आ कथावाचकक भविष्य-संकेतन वास्तविक विश्लेषणक आधार छथि; केवल मृत्युक कथासार एतय पर्याप्त नहि।

अध्यायक अन्तमे “वाचस्पति मिश्र सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त” शीर्षकक अधीन भामती-नामकरणक जनश्रुति आ शंख–रजतक भ्रमक टिप्पणी अछि। ई दुनू नाटकक भीतर अभिनय कएल नवीन घटना नहि; कथन-स्तरपर सूत्रधारक व्याख्यात्मक संकलन अछि। मूल अध्यायक सीमा मे हुनकर उपस्थिति अछि, मुदा घटनासूचीमे हुलासाक मृत्युक जाँचक बराबर स्वतन्त्र दृश्य नहि गनल जाएत। एहि सीमांकनसँ गाथा, लोकस्मृति, रंगमञ्च आ शास्त्रीय पुनर्व्याख्याक भेद सुरक्षित रहैत अछि।

शास्त्रार्थसँ जीवनक आपदा धरि : पाँच अध्यायक मोड़

अध्याय −१०० मे शंखक ठाम चानी देखबाक भ्रम प्रमाणक दार्शनिक समस्या छल; −९९ मे आत्मक निरन्तरता; −९८ मे जगतक कारण; −९७ मे प्रमाणलक्षणक सूक्ष्म परिष्कार। “स्मृति-रक्षा” प्रश्नकेँ निर्णायक रूपसँ

सामाजिक कर्ममे उतारैत अछि। एतय ककरो भ्रमक परिणाम खाली हाथ नहि, एकटा मृत युवतीक अचिन्हात कारण आ ओकर अस्वीकृत नाम अछि। पूर्ववर्ती नाटकसभक तर्क एतय विवेचनक साधन बनबाक परीक्षा दैत अछि।

सूत्रधार स्वयं एहि अन्तरकेँ स्थापित करैत छथि: शंख–चानीक ओहि पहिल कथामे “केओ मरल नहि छल”, मुदा एतय “इनार भरल अछि”। एहि तुलनाक कथा-कार्य महत्त्वपूर्ण अछि: काल्पनिक ज्ञानदोषक उदाहरणसँ सामाजिक हिंसाक आशंकालग सरकब। तथापि अध्याय ई प्रमाणित नहि करैत जे हुलासाक मृत्यु हत्या छल; कथावाचक तर्कक उपयोग करैत जल्दबाजीमे चुनल गेल “आत्महत्या” नामकरण रोकेबाक प्रयास करैत अछि। अध्यायक नैतिक तीव्रता निश्चित अपराधी ठहरएबामे नहि, अनिश्चितताक स्वीकार आ न्यायिक उत्तरदायित्वक रक्षा मे अछि।

एहि मोड़सँ गाथाक दीर्घ विषय “ककर नाम रहत” ठोस बनैत अछि। पहिने वस्तुकेँ ठीक नाम देबाक वाद छल, एतय नाम देबाक सत्ता स्वयं विवादित अछि। गलत नाम मृत्यु-कारणक अभिलेख बिगाड़ि सकैत अछि; नाम नहि लिखब हुलासाक बौद्धिक अस्तित्वकेँ मेटा सकैत अछि। संकेत ई अछि जे दर्शनक परिभाषात्मक सावधानी तबे सार्थक अछि जखन ओ बहिष्कृत मनुष्यक साक्ष्यक रक्षामे उतरय।

भोरक इनार : घटनास्थल, प्रारम्भिक सूचना आ ज्ञानक सीमा

भूमिकाक बाद पहिल अंकमे भोरक कुहेस, टूटल दीप आ भिजल ताड़पत्र क्रमशः अपूर्ण दृश्यता, बाधित साक्ष्य आ सम्भावित लेखकीय अन्तिम क्रियाकेँ सूचित करैत अछि। बुधुआ बतबैत छथि जे हुलासा इनारमे भेटलीह, आ माझी लोकनि भोरमे देखलक। ओ अपनहि हाथसँ देह निकालि नहि सकबाक दुःख बजैत छथि। परन्तु ओ ई नहि कहैत जे हुनका मृत्युक कारण देखल अछि। एहि बिन्दुपर प्रत्यक्षक सीमा स्पष्ट अछि: देहक स्थान देखल गेल, घटनाक क्षण नहि।

वाचस्पति आ कर्णपूरक पहिल विवाद वास्तवमे घटनाक अधिकारपूर्वक नामकरणपर अछि। कर्णपूर शव-संस्कारक शीघ्रताक आग्रह करैत छथि, जखनकि वाचस्पति प्रश्न करैत छथि जे “आत्महत्या” निर्णयक हेतु कोन प्रमाण अछि। एकान्त स्थान आ प्रत्यक्षदर्शीक अभावसँ आत्महत्याक कर्तृत्व निष्पन्न नहि होइत। नव्य-न्यायक कसौटीपर साध्य—स्वेच्छासँ देहत्याग—आ हेतु—एकान्त स्थल—बीच व्याप्ति सिद्ध नहि। एतय अभावक उपस्थिति-प्रमाणमे अवैध छलाँग रोकबाक प्रभावी नाट्यरूप देखाइत अछि।

मुखिया रत्नेश गामक “शान्ति” आ बेटीसबकेँ पढ़य पठेबाक भय सामने आनैत छथि। एहि भयक सामाजिक अर्थ दोहरा अछि। एकतरफ शिक्षा बन्द भऽ जेबाक वास्तविक जोखिमक बात होइत अछि; दोसर दिस ठीक ओही डरक प्रयोग प्रश्न बन्द करबाक तर्क बनैत अछि। वाचस्पति प्रतिष्ठाक तुलना सत्यसँ करैत छथि, मुदा पाठक लेल एकटा आरो कठिन प्रश्न बचैत अछि: जँ शैक्षिक संस्था भयक कारण जाँच टारैत अछि, तँ कन्यासभक सुरक्षाक भरोसा कोना बनत? ई प्रश्न कथकक नीतिवाक्यसँ आगाँ संस्था-स्तरक उत्तर माँगैत अछि।

हुलासा : अनुपस्थित पात्रक श्रम आ लेखकीय अधिकार

हुलासा मंचपर जीवित अवस्था मे प्रत्यक्ष संवाद नहि करैत छथि; हुनकर उपस्थिति बुधुआक स्मृति, ताड़पत्रक अधूरा वाक्य, कर्णपूरक गोपनीय स्वीकारोक्ति आ सूत्रधारक परवर्ती कथनसँ निर्मित होइत अछि। ई कथात्मक विन्यास अनुपस्थित नायिकाक अवधारणा समझबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि: कथाक केन्द्र ओहि व्यक्तिक अछि जिनका अपने पक्षमे आब बाजबाक अवसर नहि। पाठककेँ हुनकर इच्छा दूसराक आवाजसँ बुझबाक पड़ैत अछि, आ ठीक एहि मध्यस्थताक नैतिक समस्या अध्यायक विषय अछि।

बुधुआ हुलासाक पहिनेक वाक्य सुनबैत छथि: जँ हुनका शिष्या मानल जाइत तँ हुनकर लेखनीकेँ आदर भेटैत, मुदा सेविका मानल जाइत अछि। एहि ठाम तकनीकी लेखनक श्रम आ ज्ञानक स्वामित्व अलग भऽ जाइत अछि। प्रतिलिपिकार पोथीकेँ पठनीय बनबैत छथि, मुदा टीकाकारक नामपर प्रतिष्ठा एकत्रित होइत अछि। पात्रक वर्ग-लिंगगत स्थिति केवल करुणाक सामग्री नहि; संस्था केकरा ज्ञान-उत्पादक मानैत अछि तकर प्राथमिक साक्ष्य अछि।

नाम-वंचनाक प्रत्यक्ष प्रसंग तेसर अंकमे कर्णपूरक स्वीकारोक्तिसँ स्पष्ट होइत अछि: हुलासा अपन टीकापर अपन नाम लिखबाक इच्छा व्यक्त कयने छलीह, मुदा हुनका मना कएल गेल। ई घटना सामाजिक सत्ता द्वारा लेखकीयता प्रतिबन्धित करबाक उदाहरण अछि। तथापि एहि अस्वीकारसँ हुनकर मृत्यु किन कारणेँ भेल तकर निश्चय नहि होइत। साहित्यिक आलोचनाकेँ संरचनात्मक अपमान, सम्भावित मनोवैज्ञानिक पीड़ा आ कानूनी/घटनात्मक कारणक बीच निश्चित रेखा राखय पड़त।

“हम...” : अधूरा ताड़पत्र, पाठकीय रिक्तस्थान आ अनुपस्थित वाणी

दोसर अंकमे ताड़पत्रपर अन्तिम अक्षर “हम...” भेटैत अछि। एक अक्षर–शब्दक बाद टूटल रेखा नाटकक सर्वाधिक सघन दृश्य-चिह्न अछि। ई अनिवार्य रूपसँ आत्महत्याक पत्र नहि, मृत्युक्षणक अभिलेख नहि, वा दोषीक नाम नहि। ई एकटा अधूरा लिखित चिन्ह थिक जकर लिखन-समय, लिखन-उद्देश्य आ अधूरा रहबाक कारण अज्ञात रहैत अछि। एहि सीमाकेँ स्वीकार कएने बिना साक्ष्यकेँ कथा-आवश्यकताक अनुसार भरि देब हुलासाक दाबल स्वरक नव अपहरण होएत।

वामदेव आप्त-वक्ताक प्रश्न उठबैत छथि, वाचस्पति मृतकक वचनक मोल पर बचाव करैत छथि। कथामे ओ कहैत छथि जे एकान्तमे अपन लेल लिखल शब्द छलरहित होइत अछि, “किएक तँ छल हेतु सदिखन एक श्रोता चाही”। नैतिक अभिप्राय प्रभावी अछि, मुदा ज्ञानमीमांसक नियम बहुत व्यापक अछि। मनुष्य अपने लेल लिखित लेखामे आत्मभ्रम, अधूरा स्मरण वा जानबूझि गढ़ल धारणा सेहो रखि सकैत अछि; निजी लेखन मात्रसँ निश्चित आप्तता सिद्ध नहि होइत। एहि बिन्दुपर पात्रक करुणाशीलता आ तर्कक प्रमाणशक्ति पृथक जाँचबाक चाही।

चौठ अंकमे बुधुआ वाचस्पतिकेँ “हम...” पूरा कऽ देबाक आग्रह करैत छथि; वाचस्पति इन्कार करैत छथि। ई इन्कार पहिल अंकक शंकासँ अधिक नैतिक परिपक्वता दर्शबैत अछि: मृत व्यक्तिक अभिप्राय लेखक वा विद्वान अपन बुद्धिसँ निश्चित नहि करि सकैत। रिक्तस्थानकेँ रिक्त रहय देब पाठकीय ग्रहणशीलताक वास्तविक कसौटी

बनैत अछि। असम्पूर्ण वाक्य पाठकक निराशा नहि, सामाजिक मौनक अपूरणीयताक संरचनात्मक स्मारक भऽ उठैत अछि।

शब्दप्रमाण, अभाव, अनुमान आ “कारण अज्ञात”

न्यायशास्त्रक तकनीकी परीक्षणमे तीन भिन्न दावा अछि: देह इनारमे भेटल; हुलासाक ताड़पत्र अपूर्ण अछि; मृत्युक कारण आत्महत्या अछि। पहिल दावा प्रत्यक्षसँ पुष्ट भऽ सकैत अछि, दोसर भिजल लेख्यसामग्रीक निरीक्षणसँ, तेसर दावा लेल स्वतन्त्र कारणसूत्र चाही। निष्पत्ति पर छलाँग लगेनिहार कर्णपूरक हेतु अनैकान्तिक अछि: एकान्त स्थल आत्महत्या, दुर्घटना आ अपराध तीनू सँग संगत भऽ सकैत अछि। विशिष्ट विकल्पपर अनिवार्य व्याप्ति नहि सिद्ध करबाक कारण निर्णय स्थगित राखब उपयुक्त अछि।

वाचस्पति स्त्रीक साक्ष्यकेँ अल्पतर मानबाक कर्णपूरक दावाक प्रतिवाद करैत छथि। ओ कहैत छथि जे प्रमाणक वैधता वक्ताक कुलसँ नहि, ज्ञान-उत्पत्तिक करणक शुद्धतासँ निर्धारित होएबाक चाही। एहि वाक्यक नाट्यशक्ति स्पष्ट अछि: सामाजिक श्रेणीकेँ ज्ञानक सत्यत्वक स्वतन्त्र कसौटी मानबाक अधार्मिक आग्रहक विरोध। परन्तु “मीमांसा-शास्त्र”क नामपर पात्र द्वारा कहल गेल स्त्री-साक्ष्यक अयोग्यताकेँ शास्त्रीय मीमांसाक सर्वमान्य अथवा एकमात्र प्रमाणित नियम मानि प्रस्तुत करब उचित नहि। ई संवाद आधुनिक मैथिली नाट्य-आख्यानक वैचारिक प्रतिरूप अछि, ऐतिहासिक विधिविधानक प्रमाणित उद्धरण नहि।

“कारण अज्ञात” लिखबाक निर्णय नव्य-न्यायक अभाव-विवेचनसँ सम्बन्धित विवेकक कथा-रूप अछि। ककरो घटना-कारण नहि जानब “कारण अछि नहि”क समान नहि, आ “आत्महत्याक प्रमाण नहि” “हत्या प्रमाणित”क समान नहि। तथापि केवल अनिर्णीत लिखि देलासँ अनुसंधान पूरा नहि होइत; प्रमाण जुटेबाक प्रक्रिया, हुलासाक पूर्वदस्तावेज, शवनिरीक्षण आ सम्भावित साक्षीक जाँच सेहो चाही। नाटक निर्णय रोकबाक नैतिक पक्ष मजबूत करैत अछि, व्यावहारिक जाँचक विधि विस्तारसँ नहि बनबैत।

तेसर अंक : गोपनीय स्वीकारोक्ति, नाटकीय विडम्बना आ नैतिक चूक

तेसर अंकमे रातिक दृश्य पहिल दुनू अंकक सार्वजनिक विवादसँ निजी नैतिक विवशतामे स्थानान्तर करैत अछि। कर्णपूर मुखियाक सामने तीन मास पुरान घटना कहैत छथि: हुलासाक नाम टीकापर छपए नहि देल गेल। ई सूचना वाचस्पति आ सभासदक सार्वजनिक सुनवाईक हिस्सा नहि; बुधुआ छाहमे बैसल अनदेखल सुनैत छथि। पाठक आ गुप्त श्रोता किछु एहन जानि जाइत छथि जकर सामाजिक सत्यापन अभी शेष अछि। एतय कथात्मक जानकारीक असमान वितरण स्पष्ट तनाव उत्पन्न करैत अछि।

कर्णपूर अपन विरोधकेँ गलत मानबाक दिस बढ़ैत छथि, मुदा सार्वजनिक स्वीकार नहि करबाक निर्णय लैत छथि; भविष्यमे स्त्रीक नाम नहि रोकबाक प्रतिज्ञा करैत छथि। परिवर्तन पूर्ण पश्चात्ताप नहि, आंशिक आ सुरक्षित सुधार अछि। एतय अपराधीकरनक सतही निष्कर्षसँ बचब चाही: कर्णपूर लेखकीय अधिकार रोकेबाक दोष स्वीकार करैत छथि, मुदा मृत्यु-कारण नहि जनैत छथि। हुनकर भयक कारण रचने अपमानक सामाजिक परिणाम सम्भव अछि; तथापि मृत्युकेँ निश्चित ओही कर्मक एकमात्र परिणाम मानब अनुमानिक अतिरेक हएत।

बुधुआ ई बातचीत सुनैत छथि मुदा ओहि क्षण किछु नहि बजैत। पाठकक लेल ई मौन कठिन प्रश्न उत्पन्न करैत अछि: जँ ओ स्वीकारोक्तिक साक्षी बनलाह, तँ ओ ओकरा वाचस्पति समक्ष तुरन्त किएक नहि लऽ गेलाह? सम्भव अछि दुख, भय वा मंचीय संक्षेप कारण हो; मूल पाठ एकर स्पष्ट प्रेरणा नहि दैत। एहि उपेक्षित क्रियाक कारण घटनाक कारणात्मक शृंखलामे छोट मुदा वास्तविक ढीलापन रहैत अछि। प्रतिज्ञाक महान स्वरक बीच साक्ष्य-संचारक ई अन्तराल आलोचनामे चिन्हित रहबाक चाही।

चौठ अंक : लिखित शिला, स्मृतिक अपूर्णता आ न्याय बीच अन्तर

संझा वाचस्पति कहैत छथि जे शिलापर “कारण अज्ञात, मुदा नाम हुलासा, आ न्याय बाकी” खोदाओल जाएत। एहि लेखनमे तीन भिन्न कालिक पद अछि। “कारण अज्ञात” वर्तमान ज्ञानक सीमा; “नाम हुलासा” अतीतमे रहनिहार व्यक्तिक मान्यता; “न्याय बाकी” भविष्यक अपूर्ण दायित्व। एकहि सार्वजनिक अभिलेखमे ज्ञान, स्मृति आ नैतिक प्रतिज्ञाक ई त्रिक साहित्यिक दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि।

मुदा शिला शासकीय अनुसन्धान नहि, न गवाहीक व्यवस्थित अभिलेख। ओखन घटनाक सम्बन्धित प्रश्न खुलल छथि। तें स्मारककेँ न्यायिक समाधान कहब गलत होएत। कर्णपूरक निजी स्वीकारोक्ति, लेखन-अधिकार छीनेबाक इतिहास, हुलासाक अपूर्ण पत्र आ हत्याक सम्भावना अलग प्रमाणश्रेणी अछि। ई भेद नाटक स्वयं “न्याय बाकी” द्वारा एक अंशमे स्वीकार करैत अछि।

बुधुआ तर्कक उपकरणसभकेँ चुनौति दैत छथि: गरीब प्रतिलिपिकार कन्याक नाम नहि बचत तँ दर्शनक उपयोग की? एतय प्रश्न ज्ञानक उपयोगिताक प्राग्मातिक रूप नहि, सामाजिक स्वामित्वक प्रश्न अछि। ज्ञान उत्पादनक श्रम अज्ञात आ ज्ञानक प्रतिष्ठा उच्चवर्गीय आचार्यक नाँव, तें बौद्धिक प्रतिष्ठानक सार्वजनिक नैतिक परीक्षा आवश्यक अछि। वाचस्पति बुधुआकेँ स्मृति-रक्षाक कर्म सौंपैत छथि; तथापि ज्ञानक सत्ता आ स्मृतिक श्रम फेर एक सेवकक काँधपर राखल जाएत—ई नव जिम्मेदारीक गौरव संग सामाजिक असमानताक पुनरावृत्ति सेहो अछि।

बुधुआसँ बूढबा : दीर्घकाल, कालविस्तार आ पूर्वसूचना

बुधुआक तीस बरखक सेवाक स्मरण पहिने पात्रक जीवनावधि निर्दिष्ट करैत अछि। चौठ अंकमे ओ “जाबे धरि एकोटा नाम अन्यायसँ मेटाओल जाइत रहत” साक्षी बनि ठाढ़ रहबाक प्रतिज्ञा करैत छथि। ई एकल मनुष्यक जीवित समयसँ बेसी दीर्घ प्रतिज्ञा अछि। उपसंहारमे सूत्रधार संक्षेपमे कहैत छथि जे बूढ़ सेवकक नाम “बूढ़बा” भेल आ ओ शंख–डोरी लऽ उदयनाचार्यक उगैत मठ दिस चलि गेलाह। कथन-अवधि यथार्थवादी जीवनक छोट दृश्यसँ गाथाक युगान्तरकारी काल-लयमे विस्तार पबैत अछि।

“बारह सय बरखसँ एक्के डारिपर बैसल” जकाँ भविष्य-संकेत घटना-स्तरपर चमत्कारक अनिवार्य प्रत्यक्ष प्रमाण नहि, बल्कि कथनक दीर्घ परम्परा आ लोकगाथाक समय-संक्षेप अछि। किछु पाठक एकरा अस्वाभाविक आख्यानक नियम बुझि सकैत छथि, आन पाठक पीढ़ी-पीढ़ी हस्तान्तरित नाम वा स्मृति मानि सकैत छथि। मूल पाठ एहिठाम निर्णायक व्याख्या रोकैत अछि; अध्याय –९० अथवा बहुत बादक चन्ना गाछीक प्रसंगक बिनु देखे एकर एकटा अन्तिम अर्थ थोपब अनुचित हएत।

वाचस्पति मिश्रक जीवन-परम्परा आ उदयनाचार्यक मठक बीच बुधुआक प्रस्थान आ कालदूरी आधुनिक पुनर्संयोजनक संकेत सेहो अछि। एतय नामित ऐतिहासिक व्यक्तिक वास्तविक समकालीनता प्रमाणित नहि कएल गेल; लेखक कालक भिन्न परत जोड़ि लोकस्मृतिक गाथा बनबैत छथि। आलोचनामे ऐतिहासिक क्रम आ उपन्यासक काल्पनिक क्रम अलग रखबाक चाही। नाटकक सत्य “बूढ़बाक लौकिक देह चौदह शताब्दी जीवित छल” सन बाह्य दावा नहि; ज्ञानक अपूर्ण न्यायकेँ पीढ़ीगत जिम्मेदारी बनाओल ओकर कथा-कार्य अछि।

कालविन्यास, स्थानान्तर आ कथनगत दूरीक गणना

अध्यायक एक दिनक दृश्यक्रम पूर्ण रैखिक नहि। पहिल अंक भोर, दोसर अंक दिन, तेसर अंक राति आ चौठ अंक संझा कहल गेल अछि। जँ चौठ अंक तेसर अंकक अगिला दिनक संझा नहि, तँ अघोषित समय-उलटाव होइत अछि। नाटक एहि राति-संझाक सम्बन्धकेँ स्पष्ट नहि करैत। ई एकटा सटीक काल-विन्यासगत असङ्गति अछि, जकर सम्भावित समाधान “अगिला दिनक संझा” सन छोट निर्देशसँ भऽ सकैत छल। समीक्षा एहि सूक्ष्म दोषकेँ कुल कथाक महत्त्वक सामने अल्प, मुदा प्रमाणित मानैत अछि।

स्थानिक गति एकर विपरीत व्यवस्थित अछि: इनारक कात → वादशालाक भीतर → द्वारक बाहर → फेर इनारक कात। भीतरी संस्थागत मंच आ बाहरी श्रम-स्थान बीच आवागमन ज्ञानक केन्द्रक पुनर्वितरणक प्रतीक अछि। वादशाला भीतर प्रमाणक विधि चर्चित होइत अछि, बाहर सेवकक दुःख आ नामक वंचना ओकर प्रतिफल जाँचैत अछि। इनार जलक प्राकृतिक स्थान तँ अछि, मुदा दृश्यकेँ हिंसाक अज्ञात कारण, अवरुद्ध आवाज आ लम्बा प्रतीक्षाक केन्द्र बनबैत अछि।

नाटकक अन्तमे सूत्रधार छोट सूचना-गद्यसँ अनेक वर्ष पार करैत छथि—विद्यालय छोड़बाक प्रतिक्रिया, स्त्रीक नामक बादक प्रविष्टि, वाचस्पतिक मृत्यु, बुधुआक नाम-रूपान्तरण। Genetteक अवधि-भेदमे ई सारांशक तीव्र विस्तार बुझाइत अछि, जखनकि पहिल चारि अंक कथन–संवादक दृश्यगति प्रदर्शित करैत अछि। परवर्ती चन्ना गाछीक उद्घोष भविष्यसूचना अछि, मुदा वास्तविक पाठक आगूक अध्यायसभसँ ओकर सटीक पूर्ति जाँचने बिना एकरा सुनिश्चित अन्वय कहब जल्दबाजी होएत।

कथावाचक, दृष्टिकेन्द्रण आ स्तरगत छलाँग

सूत्रधार प्रत्यक्ष श्रोतासँ “देखू, आ स्वयं जाँचू” कहैत छथि; ई आह्वान पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक सहमतिक बदला साक्ष्य-परीक्षक बनएबाक प्रयत्न अछि। पहिल दू अंकमे दृष्टिकेन्द्रण पात्रसभक सार्वजनिक सूचना-दायरा भीतर रहैत अछि; तेसर अंकमे पाठक गुप्त संवाद सुनैत बुधुआक सहयात्री बनैत अछि; उपसंहारमे सूत्रधार अनेक वर्षक सामूहिक परिणामक अधिक व्यापक जानकारी प्रस्तुत करैत छथि। एहि परिवर्तनसभकेँ एकसमान सर्वज्ञ कथावाचकक सरल वर्गीकरण सँ नहि बुझल जा सकैत।

अंक तृतीयक कर्णपूर-बुधुआक स्थाननिश्चय खास उपयोगी अछि: कर्णपूर बजनिहार, मुखिया सुननिहार, बुधुआ अनदेखल साक्षी आ पाठक गुप्त अन्तर्यामी श्रोता बनैत अछि। एतय ककरा केतबा ज्ञान अछि, तकर वितरण कथानकक नैतिक तीव्रता बनबैत अछि। तदुपरान्त चौठ अंकमे बुधुआ ई गुप्त समाचार वाचस्पतिकेँ नहि कहैत

छथि; कथाक आकर्षण बचैत अछि, मुदा सम्भावित जाँचक नवा मार्ग अवरुद्ध भऽ जाइत अछि। कथात्मक अर्थ आ प्रक्रियागत सुसंगतिक एहि द्वन्द्वकेँ स्वीकार करब उचित।

“वाचस्पति मिश्र सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त” नाटकक बाद सूत्रधारक कथाभीतर नवा व्याख्यात्मक स्तर अछि। एतय भामती-नामकरणक जनश्रुति कथात्मक रूपसँ हुलासाक विस्मृत श्रमक समांतर प्रतिमान बनैत अछि। मुदा जनश्रुति, नाटकक पात्रक कथन आ ऐतिहासिक वाचस्पतिक प्रमाणित जीवन अलग कोटि छथि। नाटकक पात्रमुखसँ कहल बातकेँ शोधात्मक इतिहासक साक्ष्य मानि पाठक भ्रमित नहि करए, एकर ध्यान राखब जरूरी अछि।

स्त्री-प्रतिनिधित्व, पाण्डुलिपि-अधिकार आ उपेक्षित समुदाय

हुलासाक श्रम ज्ञानक प्रतिलिपि अछि, मुदा ओकरा ज्ञानक स्वामी मानल नहि जाइत। “लिखितम्” सन अनाम श्रेणीका विरोधमे स्वयं नाम लिखबाक आग्रह लेखकीय स्वत्वक प्राथमिक प्रतिरोध अछि। एहि ठाम विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ प्रश्न बनैत अछि जे ग्रन्थक रचना, नकल, सम्पादन आ प्रसारक श्रममे ककर अधिकार मान्यता पबैत अछि। प्रचलित आचार्य-केन्द्रित इतिहास केवल शास्त्रकारक नाम राखैत अछि; हुलासाक चाहना ओहि इतिहासक अधूरापन देखबैत अछि।

अध्यायमे कर्णपूर अपन समाजक “प्रतिष्ठा” बचय चाहैत छथि; मुखिया विद्यालयक स्वीकृति; वाचस्पति सत्य; बुधुआ नाम। चारि दृष्टिकोणक बीच हुलासा स्वयं मौन छथि। सामाजिक अन्यायक आलोचना कखनहुँ पीड़ितक बोलबाक अधिकार पुनर्स्थापित करैत अछि, कखनहुँ ओकरा पुरुष उद्धारकक निर्णयक प्रतीकमात्र बनबैत अछि। एहि नाटकमे हुनकर अधूरा वाक्य बचाएल गेल अछि—ई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि—मुदा हुनकर जीवित संवाद वा जटिल इच्छा बहुत कम विकसित अछि—ई महत्वपूर्ण सीमा।

बुधुआ सेवक छथि, तर्कशास्त्रक संस्थागत शिक्षक नहि; तथापि हुनकर प्रश्न निर्णयक अधिकृत केन्द्र बनबैत अछि। ई प्रतिनिधित्व श्रमशील समुदायकेँ नैतिक बुद्धिक स्रोत मानबाक सकारात्मक प्रयत्न अछि। मुदा वास्तविक माझी लोकनि, हुलासाक स्त्री-सहचरी, आन प्रतिलिपिकार कन्या आ मृत्युक साक्षी सम्भावित जनसमूह मंचपर स्वतन्त्र विस्तार नहि पबैत। बहुस्वरता एतय आरम्भिक स्थिति अछि; समाजक विविध प्रत्यक्ष बयानक विस्तृत दस्तावेजी पुनर्सृजन नहि।

जल, दीप, शंख, ताड़पत्र आ शिला : वस्तु-संरचनाक अर्थ

इनारक जल दोसर घटनाकालक मात्र पृष्ठभूमि नहि; अज्ञात मृत्यु आ अपूर्ण पुनर्प्राप्तिक स्थल अछि। भिजल ताड़पत्र ज्ञानक भौतिक नश्वरता सूचित करैत अछि, आ टूटल दीप संस्थागत संरक्षणक असफलता। चौठ अंकमे नव छोट दीप जलैत अछि; ई पूर्ण समाधान नहि, दुखक बीच आरम्भ भेल सतर्क रखवालीक चिन्ह अछि। दृश्यविन्यासक अर्थ यहीं सँ विकसित होइत अछि: हर वस्तु आचार्यक तर्कक शुद्धता नहि, न्याय-विलम्बक वास्तविकता देखबैत अछि।

शंख पूर्वअध्यायक ज्ञानभ्रमक वस्तु छल; एतय बुधुआक तीस वर्षक सेवा आ दीर्घ साक्षीक चिन्ह बनैत अछि। रूपकक परिवर्तन सतत अन्तर्पाठीय सम्बन्ध रचैत अछि। ताड़पत्र निजी, दुर्बल आ अधूरा; शिला सार्वजनिक, दीर्घकालिक आ स्पष्ट लेखा। हुनकर बीच अनिश्चितता बचल अछि: शिलाक अक्षर कारण नहि बता सकैत। ई गुणात्मक अन्तर अध्यायक शीर्षक “स्मृति-रक्षा”क आधार अछि—यादक लेखा बनब सचक सम्पूर्ण अन्वेषण नहि।

पर्यावरणीय दृष्टिसँ पानि आ माटि नामक दीर्घायुक रूपक अछि। बुधुआ प्रतिज्ञाकेँ “गाछक, पानिक, आ अन्हारक कर्म” कहैत छथि; प्रकृति स्मृतिक आलंकारिक अभिभावक बनैत अछि। मुदा एहि विशेष अध्यायमे जलप्रणाली, इनारक सामाजिक उपयोग, प्रदूषण, बाढ़ि वा पर्यावरणीय क्षतिक विस्तृत घटनात्मक वर्णन नहि भेटैत। तेँ एहिठाम पूर्ण पर्यावरणीय आख्यान घोषित करबाक बजाए आगामी पर्यावरण-प्रधान अध्यायक पूर्वसंकेत मानब अधिक प्रमाणसंगत।

ध्वनि, रस, वक्रोक्ति आ औचित्यक कसौटी

आरम्भिक फकरा देहक नाश आ नामक स्थायित्वक विरोध उपस्थित करैत अछि। लोकगीत ओहि अर्थकेँ समवेत वाणीमध्य विस्तारित करैत अछि: राजा पोथी जरा सकैत अछि, मुदा कण्ठमे बसल नाम नहि मेटा सकैत। करुण रसक आधार हुलासाक मृत्यु आ बुधुआक शोक अछि; वीरभाव नामरक्षाक प्रतिज्ञामे प्रकट होइत अछि। शान्त-रसक पूर्ण समाधान नहि, कारण “न्याय बाकी” अन्तिम बोध बनल रहैत अछि। एहिठाम रसक कई प्रवृत्ति अछि, मुदा कथा एक भावमे स्थिर नहि।

“इनार भरल अछि” वाक्य दार्शनिक भ्रान्तिक तुलना भयानक वास्तविकतासँ करैत अछि। वक्रोक्तिक प्रभाव वाचस्पतिक एहि आग्रहमे सेहो अछि जे मृतकक अधूरा वाक्य स्वयं पूरा करब ओकर स्मृतिक अपमान हएत। शिलापर “कारण अज्ञात” लिखब सफल ज्ञानक अभिमानक बजाय अज्ञानक स्वीकार रूपेँ ध्वनित होइत अछि। ई कथ्यक ध्वन्यमूल्य प्रवचनक स्पष्ट सूत्रक समान नहि; पाठकक मानसकेँ रिक्तता सँ प्रभावित करैत अछि।

औचित्यक प्रश्न विशेषतः उपसंहारमे उठैत अछि। नाटकक भीतर खुलल जाँचक प्रक्रिया अछि, मुदा सूत्रधार शिलाक दीर्घ स्मृति, स्त्री-नामलेखनमे बादक परिवर्तन आ बुधुआक यात्रा एकहि संक्षिप्त अनुच्छेदमे निश्चित रूपेँ कहि दैत छथि। एतय भविष्यक सामाजिक फल किछु अधिक सहजतासँ उपलब्ध भऽ जाइत बुझाइत अछि। जँ नाटक पीड़ाक अनिर्णीतता पर जोर दैत अछि, तँ अन्यायसँ उत्पन्न संस्थागत सुधारक प्रक्रिया सेहो दृश्यक रूपमे विकसित होएत तँ अधिक विश्वसनीय बनित।

शास्त्रीय अन्तर्पाठ आ भामती-नामकरणक जनश्रुति

नाटक वाचस्पति मिश्रक नाम परम्परासँ लेइत अछि, मुदा जीवनी-आधारित ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक दावा नहि करैत। “भामती” नामकरणक बादक जनश्रुतिमे स्त्रीक अनाम सेवासँ पोथीक प्रतिष्ठाक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। हुलासाक टीकापर नाम लिखबाक आग्रहक सँग ओ समांतर बनैत अछि: एक ठाम पति अन्तमे ग्रन्थकेँ पत्नीक नाम दैत छथि, दोसर ठाम प्रतिलिपिकार कन्याकेँ अपन नाम दऽ देबासँ रोकल जाइत अछि। एहि तुलनासँ स्त्री-श्रमक पहिचानक नैतिक प्रश्न गम्भीर होइत अछि।

मुदा भामतीक जनश्रुतिक ऐतिहासिक सत्यता एहि मूल उपन्यासक पाठमात्रसँ स्थापित नहि। सूत्रधार जे जनश्रुति रूपमे सुनबैत छथि, ओकर उपयोग आख्यानगत प्रतीक वा सामाजिक धारणाक स्रोत रूपेँ भऽ सकैत अछि, मूल जीवनवृत्तक निर्दिष्ट तथ्य रूपमे नहि। एहिठाम समालोचककेँ मौलिक न्याय/अद्वैत ग्रन्थक प्रत्यक्ष वचन आ आधुनिक लेखकक रचनात्मक व्याख्या बीच सम्बन्ध साफ करबाक चाही। वाचस्पति मिश्रक शास्त्रीय महत्वक कारण हुनकर संवाद स्वतः शास्त्र-प्रमाण नहि होइत।

शंख–रजतक परवर्ती टिप्पणी पहिल अध्यायकेँ फेर अर्थ दैत अछि: गलत वस्तु-पहिचान सुधारब पर्याप्त नहि, गलत मृत्यु-पहिचान आ गलत समाज-निर्णय सुधारब आवश्यक अछि। ई अन्तर्पाठ आन्तरिक सृजनात्मक पुनर्पाठ अछि, पारम्परिक ग्रन्थक परस्पर समकक्षता नहि। भारतीय प्रमाणमीमांसा सामाजिक न्यायसँ संवाद करैत अछि, मुदा दुनू क्षेत्रक विधि अलग अछि: तर्कक वैधता, नैतिक दायित्व आ न्यायिक जाँचकेँ समानार्थी कएलापर समीक्षाक विश्लेषण अस्पष्ट भऽ जायत।

घटनाक कारणात्मक मानचित्र आ ज्ञानात्मक घनत्व

एहि अध्यायमे वास्तविक दृश्यक प्रमुख परिवर्तन गनला पर सात बिन्दु भेटैत अछि: हुलासाक देह इनारमे भेटबाक सूचना; कर्णपूरक जल्दबाजी; वाचस्पतिक निश्चय रोकब; ताड़पत्रक अधूरा अक्षर; कर्णपूरक पूर्वनाम-वंचनाक गोपनीय स्वीकार; शिलालेखक निर्णय; बुधुआक पीढ़ीगत साक्षीक प्रतिज्ञा। ई सात बिन्दु पाठकीय विश्लेषणक इकाई छथि, औपचारिक गणनापर आधारित अन्तिम “घटना प्रति हजार शब्द” सूचक नहि। प्रत्येक घटना प्रमाण, निर्णय वा सामाजिक सम्बन्धक अवस्था बदलैत अछि।

कारणात्मक श्रृंखलामे एकटा विशेष अन्तराल अछि: हुलासाक मृत्यु भेल, पर कोना भेल से नहि जनाएल; कर्णपूरक नाम-वंचना तीन मास पहिने घटित भेल, मुदा ओ मृत्यु उत्पन्न कएलक से सिद्ध नहि; बुधुआ गुप्त बातचीत सुनलनि, मुदा ओकरा सार्वजनिक गवाहीमे परिणत नहि कएलनि। अतएव “सात घटना” कहि कृतिम घनत्वक प्रशंसा करबाक बजाए कारण, साक्ष्य, अनुपस्थित विकल्प आ अन्तिम अनिर्णीतता पहिचानब जरूरी अछि।

अधिकांश नाट्यरूप प्रश्नोत्तर कथात्मक रूपमे सक्रिय अछि, भले दृश्यबाह्य गति सीमित रहय। कई परिवर्तन ज्ञानक स्तरपर अछि—एकान्तक अर्थ बदलल, पत्रक स्थिति बदलल, निजी जानकारी बढ़ल, नामक स्थायित्व लिखित भेल। तेँ एहि अध्यायक घनत्व न बाह्य हिंसाक दृश्यप्रदर्शनमे, न मात्र क्रियापद-संख्या मे, बल्कि प्रमाण-अधिकारसँ उत्पन्न निर्णयक तनावमे बनैत अछि।

अंक-घटना-प्रमाण-सीमा : सत्यापित परीक्षण-सारणी

दृश्य/काल	मुख्य घटना वा सूचना	ज्ञान/निर्णयक परिवर्तन	अपूर्णता/ आलोचनात्मक प्रश्न

भूमिका : भोर	सूत्रधार पहिल शंख–चानीक भ्रमसँ मृत्यु-प्रश्नक अन्तर देखबैत छथि	तर्कक सामाजिक परीक्षण शुरू	मृत्यु-कारण कथावाचक नहि जनबैत
प्रथम : इनार	बुधुआक सूचना; कर्णपूरक आत्महत्या-निर्णय	वाचस्पति बिना साक्ष्यक निष्कर्ष रोकैत छथि	प्रत्यक्षदर्शी नहि; हेतु अनिर्णायक
द्वितीय : वादशाला	अधूरा “हम...”; वामदेवक शब्दप्रमाण-प्रश्न	कारण अज्ञात लेखबाक सार्वजनिक आग्रह	लेखनक समय आ अभिप्राय अनिश्चित
तृतीय : राति	कर्णपूर पूर्वकालीन नाम-वंचना स्वीकार करैत छथि	पाठक आ बुधुआक ज्ञान बढ़ैत अछि	स्वीकारोक्ति = हत्या-प्रमाण नहि; बुधुआ मौन
चतुर्थ : संझा	शिलापर नाम राखब, बुधुआक प्रतिज्ञा	स्मृति-रक्षा नैतिक दायित्व बनैत अछि	घटनाक अपराधपर अनुसन्धान पूरा नहि
उपसंहार : वर्षान्तर	कन्या-शिक्षापर प्रतिक्रिया; कर्णपूरक सुधार; बूढ़बा-नाम	दीर्घकालक सार्वजनिक कथा उत्पन्न	सुधारक प्रक्रिया संक्षेपमे; लोकगाथा इतिहास नहि
नाटकक पश्चात्	भामती-जनश्रुति; शंख–रजतक पुनर्व्याख्या	स्त्री-श्रम आ भ्रमक विषयगत प्रतिध्वनि	मंचीय घटना, ऐतिहासिक प्रमाण नहि

संस्थागत विश्वसनीयता आ कथात्मक सीमाक परीक्षा

आलोचनात्मक दृष्टिसँ तीन प्रश्न कठिन अछि। पहिल, हुलासाक देह मिलबाक बाद देहक अवस्थाक चिकित्सकीय वा लोक-साक्ष्यगत परीक्षा नाटकमध्य विस्तारसँ नहि अछि। दोसर, आधा लेख “हम...” पर वाचस्पति अभिप्रायक बहुत उदार व्याख्या करैत छथि, यद्यपि अन्तमे ओ एकरा पूरा करबाक अधिकार अस्वीकार करैत छथि। तेसर, गोपनीय स्वीकारोक्ति सुनि लेने बुधुआ बादमे मौन रहैत छथि, जकर प्रेरणा स्पष्ट नहि। एहि बिन्दुसभमे नाटक प्रभावशाली नैतिक दुविधा रचैत अछि, मुदा पूर्ण जाँच-आख्यानक कारणात्मक कठोरता कम अछि।

एकटा चौठ सीमा सामाजिक सुधारक वेग अछि। कर्णपूर अपन प्रतिज्ञा बादमे निभेलनि आ स्त्री-प्रतिलिपिकारक नाम बढ़ल—ई उपलब्धि निश्चय असम्भव नहि; मुदा शैक्षिक संस्थाक नियम, अन्य आचार्यक प्रतिरोध, हुलासाक सहकर्मीसमूह आ स्त्रीसभक सामूहिक कृत्य दृश्यतः अल्प अछि। सामाजिक सत्ताक जटिल संरचना एक

व्यक्तिक पश्चात्तापसँ अधिक कठोर होइत अछि। ई प्रश्न विदेह समानान्तर इतिहासक कसौटीपर खास महत्त्व रखैत अछि, जतय ऐतिहासिक परिवर्तनक प्रक्रिया केवल महान पुरुषक निर्णयसँ स्पष्ट नहि होइत।

तथापि नाटकक नैतिक उपलब्धि स्पष्ट अछि: वाचस्पति निश्चित अपराधी गढ़ि पुरस्कार नहि कमबैत छथि; ओ अज्ञानकेँ अभिलेखित करैत छथि आ नामक सम्मानकेँ अनिश्चित जाँचसँ स्वतन्त्र रखैत छथि। सतही रहस्योद्घाटनक बदला सत्यक सीमाक स्वीकार पाठककेँ अधिक कठोर जिम्मेदारी दैत अछि। “न्याय बाकी” कोई आसान बन्द-अन्त नहि; सामाजिक स्मृति रक्षबाक नामपर न्याय स्थगित नहि रहबाक चाही, ई अपेक्षा बचैत अछि।

अध्यायक मूल्य, सीमा आ त्रयीसँ आलोचनात्मक सम्बन्ध

“स्मृति-रक्षा” पूर्व-कथाकालक पहिल चारि दार्शनिक अध्यायक एकटा अनुभवात्मक कसौटी बनैत अछि। उपन्यास ओझरायल वस्तु-पहिचान, आत्म-विवाद, सृष्टि-अनुमान आ प्रमाणपरिभाषा पार कऽ इतिहासमे शक्तिहीन व्यक्तिक नामक रक्षा किएक कठिन अछि, से देखबैत अछि। हुलासाक अधूरा लेखन एहि बदलावक केन्द्र अछि। नाटकक शक्ति ई अछि जे साक्ष्यक कमीकेँ लेखकक सर्वज्ञ कल्पनासँ पूरा नहि करैत; ओकरा अंशतः खुलल रखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमासभ प्रमुखतः तीन छथि: सामाजिक दबाव आ मृत्युक बीच सम्भावित किन्तु अप्रमाणित सम्बन्ध, निजी गवाहीक अप्रयुक्त रहि जेबाक अन्तराल, आ नाटकक अन्तमे पीढ़ीगत परिवर्तनक अत्यधिक सघन सारांश। एहि सीमाकेँ चिन्हित करब रचनाक करुण या सामाजिक उद्देश्यक अपमान नहि, ओहि उद्देश्यक प्रमाणनिष्ठ परीक्षण अछि। एहि कसौटीपर अध्याय उद्घोषात्मक दार्शनिक नाटकसँ अधिक सघन सामाजिक आख्यान बनबाक सम्भावना सिद्ध करैत अछि।

अगिला अध्याय –९५ “जलमग्न पाण्डुलिपि” दिशि जायबापूर्व एकटा प्रश्न सुरक्षित राखबाक अछि: शिला पर लिखल नाम आ ताड़पत्रक अधूरा लेख किन भौतिक, सामाजिक आ प्राकृतिक विघ्नक बीच बाँचि सकैत अछि? “स्मृति-रक्षा” एतय उत्तर सम्पूर्ण रूपेँ नहि दैत; ओ उत्तरक परीक्षण लेल पात्र, श्रम, जल, लेखन आ साक्षी-संस्थाक आधार तैयार करैत अछि। आगाँक अध्यायक वास्तविक पाठ जाँचि एतय उठाओल सम्बन्धक पुष्टि अथवा संशोधन करब आवश्यक होएत।

अध्याय –९६ : मूल-पाठसँ सत्यापित संक्षिप्त साक्ष्य-सूचक

निम्न अंश मूल संयुक्त वर्ड-पाठक अध्याय [–९६] सँ अक्षरशः मिलाओल गेल अछि। परास ८८–९९ मूल अनुक्रमणिकाक मुद्रित पृष्ठसूचक अछि; विशेष उद्धरणक वास्तविक पृष्ठाङ्क स्वतन्त्र रूपसँ जाँचल नहि गेल, तेँ अंक/वक्ता-निर्देश देल जा रहल अछि।

आरम्भिक फकरा — “देह माटिमे मिलै छै, नाम पातपर टिकै छै”।

भूमिका, सूत्रधार — “केओ मरल नहि छल, केवल हाथ खाली रहि गेल छल”।

अंक प्रथम, बुधुआ — “आइ हम ओकरा निकालि नहि सकलहुँ”।

अंक प्रथम, बुधुआ द्वारा हुलासाक स्मृति — “हमरा शिष्या मानि लेल जाइत”।

अंक प्रथम, वाचस्पति — “अहाँ ई कोन प्रमाणसँ जनलहुँ जे ओ स्वयं खसलि?”।

अंक प्रथम, वाचस्पति — “अभावक प्रमाण अभावेक प्रमाण दैत अछि, कर्तृत्वक नहि”।

अंक द्वितीय, ताड़पत्र — “अन्तिम अक्षर अधूरा अछि — "हम..."”।

अंक द्वितीय, वामदेव — “की मृतकक अन्तिम पत्र प्रमाण थिक, कि केवल स्मृति-चिन्ह?”।

अंक द्वितीय, वाचस्पति — “छल हेतु सदिखन एक श्रोता चाही”।

अंक द्वितीय, वाचस्पति — “कारण अज्ञात।”।

अंक तृतीय, कर्णपूर — “स्त्रीक नाम शास्त्रपर नहि शोभैत”।

अंक तृतीय, कर्णपूर — “हम चुप रहब”।

अंक चतुर्थ, शिलालेख — “कारण अज्ञात, मुदा नाम हुलासा, आ न्याय बाकी।”।

अंक चतुर्थ, वाचस्पति — “अधूरापनकेँ ओहिना राखब”।

अंक चतुर्थ, बुधुआ — “गाछक, पानिक, आ अन्हारक कर्म”।

उपसंहार, सूत्रधार — “"बूढ़ सेवक" "बूढ़बा" भेल”।

परवर्ती दृष्टान्त — “भामती-नामकरणक जनश्रुति”।

प्रकरण ६ | मूल अध्याय –९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि

उद्धरणक व्यक्तिगत मुद्रित पृष्ठाङ्क सत्यापित नहि, तेँ अंक-वक्ता आ दृश्य-सीमा देल गेल अछि।

वास्तविक अध्याय-सीमा आ आलोचनात्मक प्रश्न

संयुक्त मूल वर्ड-पाठमे अध्याय [–९५] केर शीर्षकसँ अध्याय [–९४] केर शीर्षकक ठीक पहिने धरि पचानबे पाठ्य अनुच्छेद-पंक्ति भेटैत अछि। एतय स्वतन्त्र नियमित युनिकोड-अक्षर-समूह गणनामे १,७१६ एकक भेटल। एक एककक अन्तरकेँ पाठ-संशोधन वा घटना-अन्तरक प्रमाण नहि मानल गेल। गणना शीर्षक, वक्ताक नाम, मंच-निर्देश आ दार्शनिक दृष्टान्त सहित अछि; तेँ ई औसत मुद्रित वर्डक समान नहि।

पानि वा माटि केवल दृश्य-पृष्ठभूमि नहि, घटनाकेँ प्रेरित करैत अछि कि नहि—ई मुख्य कसौटी अछि। एतय असल संकट वर्षाक प्रत्यक्ष बाढ़ि नहि, रातिक मठशालामे आगि आ ओकर विकल्प स्वरूप प्रयोग कएल गेल पोखरि अछि। शीर्षक तथा लोकगीतक “बाढ़ि” सामान्य पर्यावरणीय स्मृतिसँ घटना जोड़ैत अछि, मुदा नाटकक प्रत्यक्ष दृश्यकेँ “बाढ़िमे पाण्डुलिपि बहि गेल” कहब मूल पाठक गलत सारांश हएत।

मुख्य नाटक आ ओकर बादक “उदयनाचार्य सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त” अलग कथन-स्तर छथि। किरणावलीक मंगलाचरण-अभाव तथा उदयनाचार्य–जगन्नाथक जनश्रुति नाटक समाप्त भेलापर सूत्रधार सुनबैत छथि। एहि

कथासभकेँ जीवन्तीक मृत्यु रातिक प्रत्यक्ष घटना रूपमे गनब अनुचित। संरचनाक ई सीमांकन ऐतिहासिक विवेचन लेल सेहो जरूरी अछि: कल्पित संवाद, परम्परागत जनश्रुति आ प्रमाणित शास्त्रीय पाठ एकहि प्रकारक दस्तावेज नहि।

पिछला अध्यायसँ कारणात्मक सेतु : हुलासाक नाम सँ जीवन्तीक नाम

अध्याय –९६ “स्मृति-रक्षा”क मुख्य नैतिक परिणाम छल हुलासाक नामकेँ लुप्त नहि होमय देबाक बुधुआक प्रतिज्ञा। “जलमग्न पाण्डुलिपि”क भूमिकामे सूत्रधार बतबैत छथि जे बुधुआ वाचस्पतिक शिलासँ आगू मिथिलाक दोसर कात उदयनाचार्यक मठ धरि पहुँचल छथि, आ जीवन्ती हुनकर शिष्या थिकीह। ई प्रवास केवल पात्रक स्थान-परिवर्तन नहि; एक स्थानपर जन्मल स्मृति-कर्तव्यक दोसर संस्था मे प्रवेश अछि।

पहिल अध्यायमे अधूरा ताड़पत्रक “हम...” लेखन-अधिकारक संकट छल; एतय पाण्डुलिपि-रक्षणक श्रम मे जीवित मनुष्यक प्राण जोखिममे पड़ैत अछि। दुनू ठाम संस्थागत पोथी-बचाव आ पोथी-लिखनक असमान प्रतिष्ठा प्रमुख अछि। परन्तु रचनाकेँ दू मृत्यु एकहि कारणसँ भेल कहि सकैत नहि: हुलासाक मृत्यु-कारण नाटकमे अज्ञात राखल गेल छल; जीवन्तीक अन्तर्धान प्रत्यक्ष संकट-दृश्यमे घटैत अछि। ई कथात्मक अन्तर सुरक्षित राखने बिना पूर्वार्धक घटनासूत्र अति सरल बनि जाएत।

बुधुआक बढ़ल उमेर, काँपैत हाथ, धुँधलाइत दृष्टि आ जीवन्तीक तैरबाक कौशल एकटा वास्तविक विकल्पक स्थिति रचैत अछि। वृद्ध सेवा-कर्मीसँ युवा शिष्याधिकारिणीक श्रम-हस्तान्तरण होत अछि, मुदा एतय अधिकार आ सुरक्षाक संस्थागत विभाजन नहि बनल। शिष्याक निर्णयक साहसकेँ पहचानब जरूरी; ओकरा बिना प्रशिक्षण, उपकरण, मदद आ सुरक्षा-नियोजनक संकट बिसरि केवल महान बलिदानक प्रशंसा करब अनुचित।

चारि अंकक घटनाक्रम : स्थूल परिवर्तन आ उपकथात्मक परिणाम

पहिल अंकमे दीपाधार खसबाक सूचना आगिक वास्तविक व्यवधान बनैत अछि; आगि फैलैत छैक, तीन महत्त्वपूर्ण गट्ठर भीतर रहि जाइत अछि। उदयनाचार्य आगिक कारण भीतर नहि जा सकबाक सीमा स्वीकारैत छथि। जीवन्ती तेल-चढ़ल कपड़ामे बान्हि पोखरिमे सुरक्षित करबाक उपाय सुझबैत छथि। बुधुआ गोहिक खतरा बतबैत छथि, मुदा जीवन्ती अपन शारीरिक सामर्थ्यक तर्क दैत निर्णय लेइत छथि। एहि बिन्दुपर पात्रक विकल्प आ जोखिमक आकलन घटनाक कारण-सूत्र बनैत अछि।

दोसर अंक पोखरिक कात दृश्यकेँ गहीर करैत अछि। किनार उथिल मानि जीवन्ती बीच धरि जाइत छथि, गट्ठर ऊपर राखैत छथि, केश जड़िमे अटकि जेबाक बात कहैत छथि, आ अन्ततः हुनकर स्वर टूटि जाइत अछि। बुधुआ बचाबय कूदैत छथि मुदा जीवन्ती नहि भेटैत छथि; गट्ठर हाथमे रहि जाइत अछि। ई अन्तर्धान प्रत्यक्ष मंचीय घटना अछि, मुदा गोहिक मुँहमे पड़बाक घटना पाठ कहियो प्रत्यक्ष नहि देखबैत। तेँ “गोहिये हुनका मारलक” अध्यायक निश्चित कथानक-तथ्य नहि।

तेसर अंकमे शम्भुनाथ पाण्डुलिपिक सुरक्षा पर पहिल प्रसन्नता व्यक्त करैत छथि; उदयनाचार्य जीवन्तीक अनुपस्थितिकेँ मुख्य नैतिक प्रश्न बनबैत छथि। सोमेश्वर रातिक मङ्गल-विचार फेर उठा दैत छथि। उदयनाचार्य

अपन पूर्व वाक्यकेँ अधूरा स्वीकारैत छथि आ स्मृति-लेखनक निर्देश दैत छथि। चौठ अंकमे बुधुआ आ उदयनक संवाद अनुष्ठानसँ आगू संस्था-नियम बनबैत अछि; उपसंहारमे स्मृति-कक्षक नाश आ लोककथाक नवजीवन सारांशरूपेँ भेटैत अछि। नाटकीय चरम घटना रातिक पोखरिमे, वैचारिक चरम भोरक सभामे अछि।

“पोथी-शालामे आगि” : आकस्मिकता, निर्णय आ सुरक्षा-संरचना

अध्याय आगिक कारण साफ करैत अछि—दीपाधार खसला पर पछिला कोठरीक परदा आगि पकड़ि लेलक। ई आकस्मिक घटना केवल नियतिक लक्षण नहि; दीपक स्थिति, भण्डारणक व्यवस्था आ आगिसँ बचावक तयारीक अन्तर्निहित प्रश्न खोलैत अछि। किन्तु नाटक एहि प्रशासनिक कारण-शृंखलाकेँ विस्तारसँ नहि खँगालैत। जँ तीन गट्ठर भीतर रहि गेल, तकरा सुरक्षित करबाक अन्य साधन—अग्निरोधी आवरण, सामूहिक प्रयास, बाहर सटाकऽ राखब, पानिक पात्र—रचनामे जाँचल नहि गेल। तेँ जीवन्तीक विकल्प कथानककेँ अग्रसर करैत अछि, मुदा जोखिम-आधारित निर्णयक सम्पूर्ण विवेचन नहि।

उदयनाचार्य आगिमे भीतर जेबाक सम्भावना अस्वीकारैत छथि। जीवन्ती स्वयं वैकल्पिक उपाय प्रस्तावित करैत छथि; शिष्यसभ पहिने गट्ठर उठाकऽ भागल छथि। एहि निर्णय-क्रममे असाधारण श्रम-असमानता बनैत अछि: संस्थाक उच्चवर्णीय अथवा प्रमुख अधिकारीक तर्कसंवाद बन्द, युवा शिष्याक देह संकट-क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। मूल पाठ जीवन्तीक सामाजिक जाति नहि बतबैत, तेँ ओहि विशिष्ट पहिचानक कल्पना कऽ निष्कर्ष निकालब अनुचित; मुदा स्त्री-शिष्या आ सेवा-श्रमक अल्पप्रतिष्ठित स्थिति स्पष्ट अछि।

मञ्चपर “दीप बेसी हिलि रहल” आ फकरामे बाढ़िक संकेत पूर्वाभासक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। परन्तु दीपक हिलब स्वयं आगिक निश्चित कारण-व्याख्या नहि—ओ दर्शककेँ सजग करबाक कथानक-युक्ति अछि। आगिक छोट क्रिया दार्शनिक नाटककेँ अचानक प्राणरक्षाक नाटक बना दैत अछि। काल-अनुभव बदलि जाइत अछि: पहिने मंगलपर अवकाशपूर्ण चर्चा, पछाति “कतेक गट्ठर बाकी” प्रकारक आपात-समय।

पोखरि : मानवेतर सक्रियता, पर्यावरण आ गोहिक अनिश्चित उपस्थिति

पोखरि एहि अध्यायमे प्रकृतिक निष्क्रिय चित्र नहि। ओकर गहराइ, उथिल किनार, जड़ि, अन्हार, जलक हलचल आ सम्भावित गोहि पात्रसभक विकल्प सीमित करैत छथि। जीवन्ती उथिल किनार असुरक्षित बुझैत छथि; बुधुआ बीच धरि नहि जाएबाक सलाह दैत छथि; जड़िमे केश अटकब हुनकर गति रोकैत अछि। मानवेतर संसारक सक्रियता ई कारण-शृंखलामे स्पष्ट अछि। पर्यावरणीय आख्यानक एहि अर्थमे पोखरि घटना घटबाक अनिवार्य माध्यम बनैत अछि।

मुदा मूल पाठमे मानवेतर सक्रियताक सीमारेखा राखब चाही। बुधुआ कहैत छथि जे पोखरिमे पुरान गोहि अछि; जीवन्ती कहैत छथि जे पानिक भीतर “किछु हिलल”; फेर हुनकर केश जड़िमे अटकबाक सूचना अछि। पाठ स्वयं गोहिक प्रत्यक्ष आक्रमण, काटब, अथवा मृत्यु-कारण निर्दिष्ट नहि करैत। गोहिक भय पर्यावरणीय जोखिम आ शीर्षकीय अग्रसंकेतक रूपमे प्रभावी; मुदा अनिर्णीत घटना-तथ्यकेँ सुनिश्चित जीववैज्ञानिक कृत्य मानब नव प्रमाण गढ़ब हएत।

एहि अनिश्चिततासँ शीर्षक “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क दीर्घ प्रतिमान जन्मैत अछि: गोहि केवल प्राणी नहि, अज्ञात जलभय, अदृश्य संकट आ स्मृतिक लोककथाक सम्भावित केन्द्र बनैत अछि। तथापि रूपकक विस्तार वास्तविक जलचरक अस्तित्व वा व्यवहारक तथ्यक स्थान नहि लैत। पर्यावरणीय समालोचना लेल महत्वपूर्ण प्रश्न अछि—मनुष्यक गलत सुरक्षा-नियोजन, मठक आग्रह आ पोखरिक भौतिक जोखिम मिलि घटना उत्पन्न करैत अछि; केवल “प्रकृतिक निर्दयता” कहि मानवीय उत्तरदायित्व पोंछि देब न्यायसंगत नहि।

“जलमग्न पाण्डुलिपि” शीर्षक आ दृश्यबस्तुक विरोध

शीर्षक पाठककेँ डूबल पोथीक छवि दैत अछि। लोकगीत सेहो पानिमे डूबल पन्ना आ घुलल स्याहीक काल्पनिक दृश्य निर्मित करैत अछि। मुदा दोसर अंकमे जीवन्ती स्पष्ट कहैत छथि: “गट्ठर ऊपर अछि, डूबल नहि।” पोखरि छोड़ेबाक पश्चात् गट्ठर सुरक्षित भेटैत अछि। एकटा स्तरपर ई विरोध जानिबूझि रचल विडम्बना भऽ सकैत अछि: मनुष्य जलमग्न भेल, जकर रक्षा हेतु ओ उतरलीह, से पोथी शारीरिक रूपेँ बाँचि गेल।

दोसर स्तरपर शीर्षक आ योजना-सम्पन्न व्यवहारक वस्तुगत असङ्गति छूटि जाइत अछि। जीवन्ती पहिने गट्ठर पोखरिमे “डुबा” देबाक योजना कहैत छथि, फेर जलमे भिजय नहि देबाक हठ; तेल-चढ़ल कपड़ाक जलरोधकता आ दहकैत आगिसँ जलाशय धरि पहुँचबाक वास्तविक दूरी सुनिश्चित नहि। आलोचनाकेँ एहि अन्तरकेँ न रूपकक नामपर स्वतः क्षम्य करब चाही, न मात्र भौतिक असङ्गतिक नामपर पूरा प्रसंग असफल घोषित करब। मंचीय युक्तिक प्रभाव आ कारणिक यथार्थता अलग परखबाक अछि।

“पोथी भीजल, गीत सूखल रहल” पंक्ति घटना नहि, लोकगीतक सामान्यीकृत विधान अछि। एहि ठाम तात्पर्यक ध्वनि बदलैत अछि—पुस्तक बाँचि जाए अथवा नष्ट हो, कण्ठक श्रुति स्मृतिरक्षणक दोसर साधन थिक। कहानी उल्टा पाण्डुलिपि बचबैत आ रक्षिका केँ डुबबैत अछि। ई प्रतिलोम क्रिया गीतक सामान्य आश्वासनकेँ जटिल बनबैत अछि, जाहिसँ नाटकक नैतिक केन्द्र पोथी-रक्षणसँ मनुष्य-रक्षण दिस सरकैत अछि।

जीवन्तीक कर्तृत्व आ बलिदानक नैतिक द्वैत

जीवन्ती केवल निष्प्राण पीड़िता नहि। ओ योजना प्रस्तुत करैत छथि, वृद्ध बुधुआक अयोग्यता चिन्हैत छथि, अपन तैरबाक क्षमता बतबैत छथि आ जोखिम उठबाक निर्णय स्वयं लेइत छथि। हुनकर agency अर्थात् स्वनिर्णायक कर्तृत्व मंचीय वाक्य आ क्रिया दुनूमे दृष्टिगोचर अछि। लेकिन ई स्वतन्त्रता एहन संस्थामे क्रियाशील अछि जतय पोथीकेँ जीवित सेविकाक देहसँ अधिक प्राथमिकता दएबाक सम्भावना तत्काल उपस्थित होइत अछि। स्वेच्छा संस्थागत उत्तरदायित्वकेँ मेटा नहि सकैत।

दुर्घटनाक क्षण बुधुआ पुकारैत छथि—“गट्ठर छोड़ि दे, अपना दिस मोन दे!”—मुदा जीवन्ती छोड़बाक अस्वीकार करैत छथि। ई प्रसंग साहस आ आत्मनाशक संस्थागत निष्ठाक बीच तनाव बनबैत अछि। स्त्रीक त्यागकेँ पवित्र मानि ओकर सुरक्षा-उपेक्षाक सामाजिक आलोचनासँ बचि जाएब सम्भव नहि। सहृदय पाठक जीवन्तीक निर्णयक गरिमा बुझैत छथि, मुदा प्रश्न करैत छथि जे मठ ओकरा जोग्य सहायक, रस्सी, प्रकाश, औजार आ सामूहिक बचाव कोना नहि देलक।

जीवन्तीक अन्तिम अधूरा वाक्य “पोथीक साक्षी बनब सेहो...” मृत्युक आलोकमे शहीदक घोषणापत्र मानि लेबाक खतरा रखैत अछि। ओ तनावक क्षणमे बजैत छथि; वाक्य पूर्ण नहि। यदि ओकरा संस्थाक सिद्धान्तक रूपमे पूरा कएल जाए, तँ जीवन्तीक मौनक फेर अनधिकृत अधिग्रहण होएत। अध्याय –९६क हुलासा-प्रकरणसँ सीख यही अछि—अधूरा शब्दक सम्मान ओकरा अनुमानित आशयसँ न भरब। एहि अध्यायमे उदयन एहि समानताकेँ स्पष्ट करैत छथि; मुदा ओ स्वयं जीवन्तीक असम्पूर्ण निर्णयक विकल्पपर विस्तारसँ चर्चा नहि करैत।

सोमेश्वरक प्रश्न : मङ्गलाचरण आ सफलता-मापनक दोष

शिष्य सोमेश्वर पहिल अंकमे पूछैत छथि जे किरणावली जेकाँ पैघ ग्रन्थमे मंगलाचरण नहि किएक। उदयन उत्तर दैत छथि जे सावधानी, अध्ययन, स्पष्ट लेखन आ समयपर संशोधन ई हुनकर मंगल अछि; निर्विघ्न रूपेँ पूर्ण ग्रन्थ अपन सफलताक प्रमाण। एहि आरम्भिक दावामे ‘निर्विघ्नता’क अर्थ अस्पष्ट अछि: लेखकक पाण्डुलिपि-कार्य पूर्ण भेल, कि पूरा कार्यप्रणालीमे कोनो नैतिक क्षति नहि भेल? रातिक आपदा एहि अस्पष्टताकेँ मूर्त बनबैत अछि।

भोरमे सोमेश्वर अतीतक वचन फेर उठबैत छथि: पोथी बाँचल, मुदा एक प्राण गमल—तखन रचना निर्विघ्न कोना? ई प्रश्न बाह्य घटनासँ वैचारिक सिद्धान्तक संशोधन करबैत अछि। नाटकक सर्वाधिक प्रभावी ज्ञानात्मक मोड़ एतय अछि, कारण गुरु-शिष्यक सम्बन्ध पारम्परिक आज्ञापालन नहि रहैत; शिष्य गुरुकेँ पूर्व वाक्यक उत्तरदायी ठहरबैत छथि। उदयन अपन उत्तरक अपूर्णता स्वीकार करैत छथि; ई स्वीकारोक्ति नायकक प्रतिष्ठा घटेबाक बदला ओकर नैतिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

नव्य-न्यायक भाषा अपनबैत कहि सकैत छी जे ‘ग्रन्थ निर्विघ्न समाप्त’ रूपी हेतु सँ ‘सफल रचना’ रूपी साध्य निष्पन्न मानबाक पूर्व दावामे उपाधि—समग्र मानवीय मूल्य वा साधन-सुरक्षाक प्रश्न—अनुपस्थित रहल। यद्यपि साहित्यक मूल संवाद औपचारिक अनुमान-पञ्चावयव नहि प्रस्तुत करैत, तर्कक वृत्तान्तमे उपाधि-संवेदनशील संशोधन स्पष्ट अछि। नैतिक निर्णयकेँ औपचारिक न्याय-प्रमेय समझि लैत दोष टारब चाही; उपन्यासक रूपान्तरण आधुनिक नाट्यनीति थिक।

भोरक संस्था-सभा : शम्भुनाथक तराजू आ नामक राजनीति

भोरमे मठाधीश शम्भुनाथ पहिने पाण्डुलिपि रक्षित भेलाक प्रसन्नता व्यक्त करैत छथि। उदयन प्रश्न करैत छथि जे शम्भुनाथ पहिने पोथीक हिसाब लेलनि कि जीवन्तीक। शम्भुनाथक अगिला वाक्य—ओ “शिष्या-सेविका” छलीह—प्रतिष्ठाक अर्थव्यवस्था उद्घाटित करैत अछि। एकटा ग्रन्थकेँ सहस्रवर्षक मूल्य, एकटा स्त्रीक जीवनकेँ क्षणिक उपयोगिता दै संस्थागत मूल्याङ्कन मानवीय हानि सामान्य बना दैत अछि।

उदयनक “तराजू” रूपक पठनीय अछि, मुदा न्यायकीय निर्णयक सम्पूर्ण विकल्प नहि। मठ जीवित श्रमिकक मृत्यु लेल कोन तत्काल उत्तरदायित्व ग्रहण करत? आगिक जाँच के करत? पोखरिक जोखिम पर पहिने चेतावनी छल, तकरो बाद सुरक्षा-व्यवस्था केना बनत? शम्भुनाथक पद आ संस्थाक नियममे दीर्घकालिक परिवर्तनक दृश्य प्रमाण सीमित अछि। उदयनक तत्काल नैतिक प्रखरता रचनाक उपलब्धि थिक, मुदा व्यक्तिक आचारसुधार संस्थागत सुरक्षा-परिवर्तनक स्थान नहि लैत।

पाठक दृष्टिसँ संवादक असमानता सेहो देखबाक अछि। शम्भुनाथ मुख्यतः नैतिक त्रुटिक प्रतिमान बनैत छथि; अपन पक्षमे दीर्घ तर्क प्रस्तुत नहि करैत। उदयनक आलोचना न्यायसंगत होइतहुँ बहुस्वरताक कसौटीपर विरोधीक जटिलता सीमित रहैत अछि। एहन रचनात्मक साधन नाटकीय स्पष्टता बढ़बैत, मुदा संस्था-भीतरक वास्तविक सत्ता, आय-व्यवस्था, श्रम-विभाजन आ निर्णय-प्रक्रिया खोलबाक अवसर घटबैत अछि।

बुधुआक दुई पीढ़ीक गवाही : स्मृतिक विश्वसनीयता

बुधुआ अब वृद्ध छथि आ पहिल अध्यायक हुलासाक स्मृति ढोने छथि। राति जीवन्तीक डूबबाक दृश्यपर हुनकर उपस्थिती, बचावक प्रयास आ अपयश हुनका मात्र कथावाचक नहि, प्रत्यक्ष आघात-भोगी बनबैत अछि। एक पीढ़ीक अधूरा ताड़पत्र दोसरी पीढ़ीक अधूरा वाक्यसँ जुड़ैत अछि; ई कथा-वस्तुक पुनरावृत्ति नहि, अनुभवक नव हानि सँ उत्पन्न स्मृतिक पुनरावर्तन अछि।

तेसर अंकमे बुधुआ वाचस्पतिक पुरान शिक्षा उद्धृत करैत छथि। चौठ अंकमे उदयन कहैत छथि जे बुधुआ राति सुतैत समय हुलासाक अधूरा शब्द बड़बड़ाइत छथि, आ तीन राति सुनने छथि। एहि खुलासासँ पाठककेँ बुधुआक अन्तर्मनक अप्रत्यक्ष पहुँच भेटैत अछि, मुदा निज अनुभूतिक प्रत्यक्ष कथन नहि। एतय एकटा गोपनीयता-संबन्धी हल्का तनाव अछि: उदयन वृद्धक अनजान बड़बड़ाहटसँ निजी शोक जनैत छथि, फेर ओकरा संवादक आधार बनबैत छथि।

बुधुआक “सूची कहियो समाप्त नहि होएत” प्रश्न दीर्घ गाथाक एकटा मूल भाव दैत अछि। यदि प्रत्येक संस्था अपन रक्षकक नाम नष्ट करैत रहल, तँ स्मृति-कक्ष लगातार भरत; मुदा यदि नाम लिखब मात्र सुधार बनि रहय, तँ मृत्यु-प्रक्रिया यथावत् चलि सकैत अछि। अपन साक्षीक शृंखलाकेँ जीवित राखब आ अगिला शिष्याक मृत्यु रोकब दूटा अलग दायित्व छथि। अध्याय प्रथम प्रश्नपर भावनात्मक सफलता पबैत अछि, दोसरपर अंशतः मौन अछि।

अधूरा वाक्य : हुलासा “हम...” आ जीवन्ती “पोथीक साक्षी...”

हुलासाक ताड़पत्रक अधूरा “हम...” आ जीवन्तीक पानिमे टूटल “पोथीक साक्षी बनब सेहो...” वाक्यक औपचारिक समानता स्पष्ट कएल गेल अछि। दोनों महिलाक अपन वाणी छूटि जाइत अछि; पुरुष पात्र, संस्था आ सूत्रधार तकर अर्थ पर बादमे विचार करैत छथि। इएह कथात्मक संरचना पीड़िताकेँ कथाक केन्द्र बनबैत अछि, मुदा हुनकर अन्तिम आशयक अदृश्यता स्थिर रखैत अछि।

दूनू रिक्तस्थान समान प्रकारक साक्ष्य नहि। हुलासाक ताड़पत्र लिखित वस्तु, जकर लेखनकाल आ उद्देश्य संदिग्ध; जीवन्तीक अधूरा वाक्य संवादक प्रत्यक्ष मंचीय क्षण, जकर अवसान संकटमे होइत अछि। पहिलमे दस्तावेज-सम्बन्धी ज्ञानाभाव अछि; दोसरमे प्रत्यक्ष वक्तव्यक अवधि अकस्मात् टूटैत अछि। उदयनक उपमा भावात्मक रूपसँ प्रभावी अछि, मुदा शोधक पाठमे ई स्रोतभेद कायम राखब जरूरी।

बुधुआ कहैत छथि जे प्रेम आ न्याय ओतय शुरू होइत अछि जतय वाक्य पूरा नहि होइत। ई वाक्य उपन्यासक आख्यान-नीतिक सघन सूत्र अछि: पात्रक मौनकेँ सुविधा-अनुसार भरि देब लेखकीय सर्वज्ञताक दुरुपयोग भऽ

सकैत अछि। तथापि मौनकेँ रहस्यक सौन्दर्य मे विलीन कऽ देब सेहो खतरा अछि, जँ अनुसन्धान, बचाव, दायित्व आ सुधारीय कार्यक अभाव ओहिमे अनुत्तरित रहि जाए।

स्मृति-कक्ष : अभिलेख, स्मारक आ प्रतिसंस्थागत इतिहास

उदयन कहैत छथि जे ग्रन्थक रक्षक शिष्य, सेवक, वा स्त्री कियो होथि, हुनकर नाम स्मृति-कक्षमे लिखल जाएत। ई निर्णय जाति, लिंग वा पदाधारित अनामिकरणक विरुद्ध नियमक रूपमे प्रस्तुत अछि। पहिल अंकमे जीवन्ती “हम त केवल पत्ता बान्हैत छी” कहैत छथि; बादमे उदयन ताहि प्रतिलिपि-संरक्षणक श्रमकेँ सार्वजनिक अभिलेखक योग्य घोषित करैत छथि। नामक राजनीति एहिठाम अमूर्त दयाभाव नहि, संस्थाक दस्तावेजी व्यवहारमे परिवर्तनक प्रस्ताव अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक कसौटीपर ई नामरक्षा महत्त्वपूर्ण अछि, कारण मान्य ग्रन्थसूची लेखक-दार्शनिकक नाम बचबैत अछि, मुदा प्रतिलिपि, संरक्षण, बान्हन, पुस्तकालय-श्रम आ दैनिक सफाइक श्रमिकक नाम प्रायः गुम होइत अछि। कथा एहि अदृश्यता पर प्रश्न उठबैत अछि। परन्तु वास्तविक ऐतिहासिक मठ, प्राचीन सूची वा उदयनाचार्यक जीवनक ठोस पुरालेख साक्ष्य एहि कल्पित नाटकसँ सिद्ध नहि होइत; “स्मृति-कक्ष” कथाभीतरक नीतिगत रचना थिक।

समस्या एकटा आरो अछि: जीवन्तीक नाम मृत्युपछि प्रतिष्ठित होइत अछि, जीवित शिष्याक बौद्धिक अधिकार, पारिश्रमिक, निर्णय-सहभागिता अथवा सुरक्षा पहिने कतेक मान्य छल, से अध्याय पूर्ण रूपेँ नहि खोलैत। स्मारक नष्ट भेलापर लोकगीत बचल, एहि निष्कर्षक अपार सौन्दर्य अछि; मुदा स्मृतिक अमरता नामधारीक जीवनक क्षति पूरा नहि करैत। एतय इतिहासकारक आलोचना आ काव्यात्मक करुणा दुनूकेँ ठाम चाही।

लोकगीतक प्रमाण-स्वरूप : कण्ठ बनाम पोथी

आरम्भिक फकरा आ गीत बारम्बार कहैत अछि जे पानि पोथी डुबा सकैत, मुदा कण्ठ नहि। ई वस्तुगत अविनाशिताक दावा नहि, सामुदायिक स्मृतिक स्थायित्वक आशावादी ध्वनि अछि। कण्ठ स्वयं नश्वर अछि; यदि लोकसमुदाय बदलि गेल, भाषा खण्डित भेल वा वाचिक परम्परा टूटल, तँ गीत सेहो बिसरल जा सकैत अछि। तेँ रूपकक मानवीय महत्त्व स्वीकारैत ओकरा इतिहासक स्वयंसिद्ध नियम नहि मानल जाए।

अध्यायक अन्तमे स्मृति-कक्ष नष्ट, पोथीशाला उजड़ल, आ जीवन्ती “जल-कन्या” सँ “पनिडुब्बी” रूपेँ लोकनाममे बदलैत छथि। ई नाम-रूपान्तरण बहुस्तरीय अछि: मूल नाम लोकनाममे मेटब सेहो अछि, मुदा मृत्यु-घटना सामुदायिक भय आ बचावक मिथकमे जीवित रहब सेहो। “नाम बाँचल” कहि अन्तिम परिवर्तनकेँ एकार्थी विजय मानब साहित्यिक सघनता घटाएत।

लोकगीत पाठककेँ सामूहिक सहृदयक आसन दैत अछि; मुदा कोन समूह एतय गबैत अछि? प्रस्तावनामे सूत्रधार, परवर्ती दृश्य मे माझी समुदाय, फेर गामक लोकक वचन। ई तीनू स्वरक सामाजिक स्रोत भिन्न अछि। लोकगीत शास्त्रीय अभिलेखसँ फरक स्मृति-विधि थिक, परन्तु लोकसमुदायक भीतर वर्ग, लिंग आ जातिगत भेदक अनुपस्थितिकेँ स्वतः समता कहि नहि सकैत छी।

कथनकाल, प्रस्तुति-अवधि आ दृष्टिकेन्द्रण

रातिक पहिल अंक आगिसँ बाधित वर्तमान, दोसर अंक लम्बायमान संकट-क्षण, तेसर अंक भोरुक संस्था-सभा, चौठ अंक साँझुक शोक-वार्ता, उपसंहार अनेक वर्षक संक्षेप—एहि क्रममे कालक गति बदलैत अछि। जलमे अटकबाक क्षण मंचनिर्देश, विराम आ चीत्कारसँ धीमा भेल; स्मृति-कक्षक बहुत बरखक अस्तित्व एक अनुच्छेदमे समाहित। ई दृश्य आ सारांशक अन्तर कथाक भाव-लय बनबैत अछि।

नाटकक प्रत्यक्ष अंकसभमे दर्शक मुख्यतः बाह्य दृश्य, उच्चारित संवाद आ मंचनिर्देशक माध्यमसँ ज्ञान प्राप्त करैत अछि; किसी एक पात्रक अन्तर्मनक अखण्ड सर्वज्ञ विवरण नहि। सूत्रधार समयक छलाँग, उदयनक ग्रन्थक पृष्ठभूमि आ भविष्यक चन्ना गाछी-सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। एतय मंचक बाह्य दृष्टिकेन्द्रण आ सूत्रधारक व्यापक कालज्ञान परस्पर जुड़ैत अछि। मंच-दृश्यक ज्ञानकेँ सूत्रधारक भविष्य-निश्चयक बराबर विश्वसनीयता देब सदा उपयुक्त नहि।

उपसंहारक “बारह सय बरखक धैर्य” अस्वाभाविक आख्यानक संकेत अछि: बुधुआक उमेर ऐतिहासिक मनुष्यक आयुक नियम भाँगैत अछि। कथा ओहि लम्बा जीवनकेँ प्रतिज्ञा आ लोकस्मृतिक रूपक बनबैत अछि; ई जीववैज्ञानिक आयुक तात्त्विक प्रमाण नहि। पाठकक सम्भावित संसारमे ई नियम बनैत अछि जे इतिहासक पीढ़ीसँ स्मृति एक पात्ररूपेँ यात्रा करि सकैत अछि। तथापि नव चरित्र आ समयरेखामे एकर सुसंगत प्रयोग आगाँक अध्यायसभसँ जाँचब जरूरी।

आघात, शोक आ दृश्यनैतिकता

पोखरिक दृश्य मे जीवन्तीक अन्तर्धानक समय पाठ जटिल देह-हिंसाक अतिशय वर्णन नहि करैत। पानिक हलचल, हाँफब, अधूरा वाक्य आ बुधुआक चीत्कारसँ अनुभव निर्मित होइत अछि। ई संयम करुण रसक अनुकूल अछि, कारण हिंसक तमाशाक बजाय निःशब्द हानिपर ध्यान रखैत अछि। किन्तु शोक व्यक्त करबाक बाद संरचनात्मक उत्तरदायित्वक प्रश्न नहि बिसरब पाठकीय नैतिकता लेल जरूरी।

भारतीय काव्यशास्त्रक करुण, भय, अद्भुत आ शान्तक अलग-अलग संचरण देखल जा सकैत अछि। पोखरिक गहराइ भयक विभाव; जीवन्तीक संकट आ बुधुआक असमर्थता करुणक केन्द्र; अन्तिम अदृश्य बचावक लोकविश्वास अद्भुतक स्तर; शास्त्र–स्मृति-सम्बन्धक उदयनवाक्य शान्त चिन्तन दिस बढ़ैत अछि। एहि अर्थमे अध्याय केवल एक रसक सतत अनुकरण नहि, रस-परिवर्तनक क्रम अछि।

मुदा औचित्यक प्रश्न रहैत अछि: ताजा मृत्यु पर तेसर अंकमे शास्त्रीय मंगलविवाद तुरन्त केन्द्रीय होइत अछि। ई कला-रचनाक तर्कार्थक लाभ अछि—विचारक मूर्त नैतिक परीक्षा—परन्तु जीवन्तीक परिवार, संगिनी शिष्यसभ आ हुनकर निजी भविष्यक शोक अपेक्षाकृत अल्प ठाम पबैत अछि। आलोचककेँ भावार्थक शक्ति स्वीकारैत एहनो अनुपस्थितिक तथ्य राखबाक चाही।

“किरणावली” आ उदयन-जगन्नाथ प्रसंग : ऐतिहासिक दावाक सीमा

मूल पाठ उदयनाचार्यकेँ किरणावलीक रचयिता कहैत अछि, आ मंगलाचरणक अभावपर जनश्रुतिक चर्चा करैत अछि। ई कथाभीतरक ऐतिहासिक संकेत, आधुनिक रचित कल्पनात्मक संवाद आ मूल संस्कृत ग्रन्थक प्रमाणित सम्पादकीय पाठ अलग परत छथि। उपलब्ध अंशक आधारपर किरणावलीक प्रत्येक संस्करणमे मंगलाचरणक स्थिति, कालक्रम वा उदयनाचार्यक निजी निर्णयक ऐतिहासिक प्रमाण घोषित करब असावधान होएत। एहि आलोचनामे नाटकक स्वयं-निर्दिष्ट जनश्रुति तकर साहित्यिक कार्यक लेल ग्रहण कएल गेल अछि।

नाटक समाप्त भेलापर उदयनाचार्य आ जगन्नाथक बालकरूप-दर्शनक कथा कहि ग्रन्थ तर्क आ भक्तिक भेट करबैत अछि। एहि अन्तःकथामे तथ्यगत ऐतिहासिक घटनासँ बेसी लोकधार्मिक कल्पनाक भूमिका अछि। मुख्य नाटकमे उदयन अपन सफलताक प्रमाण-परिभाषा बदलैत छथि; जनश्रुतिमे तर्कक सीमा अनुभूतिक प्रश्न बनैत अछि। एहि दुनू प्रसंगक दार्शनिक समानता सम्भव, मुदा केवल समान उदयन-नामक आधारपर किछु वास्तविक जीवनचरित निष्कर्ष निकालब अनुचित।

शास्त्रीय भारतीय सिद्धान्त आ आधुनिक कथानैतिकता जब जुड़ैत अछि, तखन नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ शब्दकेँ ‘सामाजिक न्याय’क साधारण समानार्थी नहि मानल जाय। उदयनक “केकर मूल्यपर निर्विघ्नता” प्रश्न नैतिक रूपान्तरण अछि; ई न्याय-तर्कक मूल संस्कृत सूत्रक शब्दशः भाष्य नहि। साहित्यक महत्त्व एहि नव कल्पनात्मक प्रयोगमे अछि, कथित शास्त्रीय मौलिकताक जालि प्रमाणमे नहि।

घटना-घनत्व : स्वतन्त्र घटना, कारणिक सम्पर्क आ कालगत भार

दृश्यवार परीक्षणमे कमसँ-कम आठ अवस्था-परिवर्तन स्पष्ट भेटैत अछि: पोथीक यात्राक तैयारी; दीपाधार खसि आगि लगब; तीन गट्ठर भीतर रहि जेबाक सूचना; जीवन्तीक पोखरि-योजना आ जोखिमपूर्ण प्रवेश; जड़िमे केश अटकबाक बाद अन्तर्धान; बचाओल गट्ठरक भोरुक प्रस्तुति; सोमेश्वरक प्रश्न सँ उदयनक सिद्धान्त-संशोधन; स्मृति-कक्षक नियम। उपसंहारमे स्मारकक नाश आ लोककथाक रूपान्तरण दू अतिरिक्त दीर्घकालिक परिणाम छथि। एहि सूचीमे सूचना आ घटना अलग-अलग चिन्हित कएल गेल अछि; संख्या कोनो सांख्यिकीय अन्तिम मान नहि।

रातिक आगि–पोखरि–अन्तर्धान अत्यल्प शब्दमे तीन उच्च-प्रभावी मोड़ दैत अछि। एहि अध्यायमे बाह्य घटनाघनत्व पहिल दार्शनिक अंकक तुलनामे अधिक तीव्र, भोर–साँझमे ज्ञानात्मक निर्णयाघनत्व अधिक अछि। उदयनक आरम्भिक ‘निर्विघ्नता’ सिद्धान्त हराउनिहार परिणामक आधार पर संशोधित होइत अछि—ई घटनाक ज्ञानात्मक फल अछि।

कारण-कार्य शृंखलामे निर्णायक रिक्तस्थानसभ सेहो अछि: आगिसँ बचल गट्ठर फेर पानिमे किएक नष्ट नहि भेल; जीवन्ती बचबाक असमर्थ किएक भेलीह; गोहिक सम्भावित उपस्थिती आ जड़िमे केश अटकबाक सम्बन्ध की; मठमे सुरक्षा-नियम सुधरल कि केवल स्मृति-लेखन? ई प्रश्नक उत्तर विनाप्रमाण भरि देब समीक्षा नहि, पुनर्कल्पना बनि जाएत।

घटना-साक्ष्य-कारण-निष्कर्ष : दृश्यवार परीक्षण-सारणी

दृश्य-काल	दृश्य-घटना	प्रमाणित परिवर्तन	अपूर्ण दावा / सीमा
भूमिका–राति	बुधुआ, जीवन्ती आ शास्त्र-रक्षणक परिचय	पीढ़ीगत प्रतिज्ञाक संस्थान्तर	वाचस्पति–उदयन सम्बन्ध कल्पित आख्यान-सेतु
पहिल अंक	दीप खसि आगि लगैत अछि; तीन गट्ठर रहि जाइत	अध्ययनक समय आपात-समय बनैत	आगिसँ बचबाक वैकल्पिक व्यवस्था अस्पष्ट
पहिल अंक	जीवन्ती पोखरिमे गट्ठर राखबाक निर्णय करैत छथि	सेवा-श्रमक कर्तृत्व आ जोखिम उपस्थित	उपकरण/सहायक/सुरक्षा-आकलन अनुपस्थित
दोसर अंक	केश जड़िमे अटकैत अछि, स्वर टूटैत, जीवन्ती नहि भेटैत	जीवन्तीक अन्तर्धान; बुधुआक असफल बचाव	गोहिक वास्तविक आक्रमण सिद्ध नहि
तेसर अंक	भोरमे गट्ठर सुरक्षित; सोमेश्वर मंगल-प्रश्न उठबैत	उदयन अपन निर्विघ्नताक दावा संशोधित करैत	ग्रन्थ सुरक्षित रहबाक भौतिक प्रक्रिया सीमित
तेसर अंक	उदयन द्वारपर रक्षिकाक नाम लिखबाक आदेश दैत	दस्तावेजी प्रतिष्ठामे प्रस्तावित परिवर्तन	व्यावहारिक सुरक्षा-नीति अनिर्दिष्ट
चौठ अंक	बुधुआ–उदयन अधूरा वाक्य आ स्मृति-कक्षक नियम पर बजैत	पीढ़ीगत शोक सामूहिक अभिलेख बनैत	जीवन्तीक अन्तिम आशय अनिर्णीत
उपसंहार	स्मृति-कक्ष नष्ट; “जल-कन्या” लोकनाम बनैत	संस्थाक नाश आ मौखिक स्मृतिक नव रूप	इतिहासक तथ्य आ जनश्रुति पृथक
नाटकक पश्चात्	किरणावली मंगलाचरण आ जगन्नाथ-दर्शनक जनश्रुति	शास्त्रीय अन्तर्पाठक व्याख्यात्मक आयाम	मंचीय घटना नहि; बाह्य इतिहास सत्यापित नहि

समर्थक आ प्रतिपक्षी मूल्याङ्कन : साहित्यिक उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि प्रतीककेँ घटना बनायब अछि। पहिल चारि अध्यायमे शास्त्रार्थ प्रमाणक अमूर्त प्रश्न खोलैत छल; एतय पाण्डुलिपि, पानि आ मानवजीवनक परस्पर मूल्य ठोस दुर्घटनासँ भिड़ैत अछि। सोमेश्वर गुरुकेँ प्रश्न करैत छथि, आ गुरु पहिल ज्ञानदावाक सीमा स्वीकार करैत छथि; विचारक परिवर्तन दृश्यगत आपदासँ उत्पन्न भेल अछि। जीवन्तीक निर्णयकेँ लेखक केवल असहाय मृत्यु रूपेँ प्रस्तुत नहि करैत; ओ अपन योजना आ साहसक स्वामिनी छथि।

प्रमुख सीमा एहि स्वतन्त्र कर्तृत्व आ संस्थाक श्रमनीतिक बीचक असन्तुलन अछि। बाढ़िक गीतक जगह वास्तविक आगिक जोखिम अछि; “जलमग्न पाण्डुलिपि” शीर्षक प्रत्यक्ष जलमे अवगाहनसँ असंगत भऽ सकैत अछि; संकट-रोकथामक वैकल्पिक उपाय खुलि नहि सकैत; नाम-स्मारक बनलाक साथ स्त्रीक जीवित अधिकारक प्रश्न पर्याप्त विस्तार नहि पबैत। गोहिक सम्भावित खतरा विशेष प्रभावकारी अछि, मुदा ओकर वास्तविक घटना में भाग अनिर्णीत अछि। ई चारू सीमा मूल पाठक अस्थिरताक ठाम चिन्हित होइत अछि।

रचनाकेँ पूर्ण सफल वा असफल कहब अपर्याप्त अछि। रचनाक शक्तिक केन्द्र फकराक लोकध्वनि, बुधुआक प्रतिज्ञाक पीढ़ीगत भार, भोरुक गुरु-शिष्य प्रश्न आ संस्था-स्मृतिक नैतिक प्रस्ताव अछि। शैक्षिक नाटकक स्पष्टता किछु पात्रकेँ एकमुखी बनबैत, आ उपसंहारक बहुत दीर्घ काल एक अनुच्छेदमे समटैत अछि। ई युक्ति महागाथाक आयाम खोलैत अछि, मुदा अनुभव-घटनाक विस्तृत नाटकीय विश्वसनीयता सीमित करैत अछि।

त्रयीमे अध्यायक स्थायी कार्य आ अगिला प्रश्न

“जलमग्न पाण्डुलिपि” त्रयीक आरम्भिक शास्त्रार्थसँ सामाजिक–पर्यावरणीय कथा धरि पुल निर्माण करैत अछि। बुधुआक व्यक्तिगत स्मृति अव संस्थाक अभिलेख, मगध–मिथिलाक दर्शन-परम्पराक कल्पनात्मक संवाद आ गामक लोकमिथकक सम्मिलित सम्पत्ति बनैत अछि। जीवन्तीक व्यक्तिगत नाम लोकपरम्परामे बदलैत अछि; स्मृतिरक्षणक अभियान सफलतासँ अधिक जटिल बनि जाइत अछि।

अगिला अध्याय –९४ “चारि मुखक मौन” दिशा एतयसँ एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि: स्मृति-कक्ष नष्ट भऽ गेलापर चारि अलग साक्ष्य—ग्रन्थ, व्यक्ति, लोकगीत आ जलक निशान—केकरा परस्पर कैसे जाँचब? उत्तरक अनुमान एतय नहि देल गेल; ओ प्रश्न मूल अगिला पाठसँ प्रमाणसहित जाँचल जाएत। एहि अध्यायक अन्तिम उपयुक्त निष्कर्ष ई जे नाम लिखब न्यायिक शुरुआत अछि, मानवीय सुरक्षा, निर्णयक उत्तरदायित्व आ सत्यक अनिश्चितता संग-साथ जाँचब ओकर जरूरी विस्तार।

अध्याय –९५ : मूल पाठमे प्रत्यक्ष मिलाओल साक्ष्य-सूचक

निम्न अंश मूल संयुक्त पाण्डुलिपि केर अध्याय [–९५] सँ मिलाओल अछि। पाठ-साक्ष्यक अंक/वक्ता/उपसंहारक संकेत विश्वसनीय; मूल मुद्रित पृष्ठ १००–११० सामूहिक अनुक्रमणिकापर आधारित अछि, उद्धरण-विशेषक सटीक पृष्ठाङ्क नहि।

आरम्भिक फकरा — “बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै, कण्ठ नहि”।

भूमिका, सूत्रधार — “बुधुआक संग हुनकर एकटा शिष्या सेहो अछि, जीवन्ती”।

गीत, सूत्रधार — “पोथी भीजल हे, गीत सूखल रहल रे”।

पहिल अंक, सोमेश्वर — “एकर आरंभमे कोनो मंगलाचरण नहि अछि”।

पहिल अंक, उदयन — “सावधानी, अध्ययन, स्पष्ट लेखन आ समयपर संशोधन”।

पहिल अंक, शिष्य — “दीपाधार खसि गेल”।

पहिल अंक, जीवन्ती — “तीन, आचार्य! सबसँ पुरान प्रति”।

पहिल अंक, जीवन्ती — “पोखरिमे डुबा दी”।

पहिल अंक, बुधुआ — “एकटा पुरान गोहि रहैत अछि”।

पहिल अंक, जीवन्ती — “हम तैरब जनैत छी”।

दोसर अंक, जीवन्ती — “गट्ठर ऊपर अछि, डूबल नहि”।

दोसर अंक, जीवन्ती — “हमर केश... कोनो जड़िमे अटकि गेल अछि”।

दोसर अंक, बुधुआ — “गट्ठर छोड़ि दे, अपना दिस मोन दे!”।

दोसर अंक, जीवन्ती — “पोथीक साक्षी बनब सेहो...”।

दोसर अंक, मंचनिर्देश — “गट्ठर हाथमे अछि, मुदा जीवन्ती नहि”।

तेसर अंक, शम्भुनाथ — “पाण्डुलिपि बाँचि गेल”।

तेसर अंक, उदयन — “अहाँ पहिने पोथीक हिसाब लेलहुँ, कि जीवन्तीक?”।

तेसर अंक, सोमेश्वर — “एकटा प्राण एहिमे होमि गेल”।

तेसर अंक, उदयन — “हमर शब्द राति मिथ्या नहि छल, मुदा अधूरा छल”।

तेसर अंक, उदयन — “शास्त्र स्वयं ओहि मूल्यक ऋणी रहि जाइत अछि”।

तेसर अंक, बुधुआ — “प्रकाशित सत्यकेँ रक्षा करब अलग कर्म थिक”।

चौठ अंक, बुधुआ — “हुलासाक नाम, आब जीवन्तीक नाम”।

चौठ अंक, उदयन — “बिल्कुल हुलासाक ताड़पत्र जकाँ”।

चौठ अंक, बुधुआ — “ई अधूरापन स्वयं एकटा प्रमाण थिक”।

चौठ अंक, उदयन — “शास्त्रक सूची आ स्मृतिक सूची, दुनू संगे चलत”।

उपसंहार, सूत्रधार — “मठ स्वयं उजड़ि गेल”।

उपसंहार, सूत्रधार — “जल-कन्या”।

उपसंहार, सूत्रधार — “चन्ना गाछी”।

नाटक-पश्चात् जनश्रुति — “किरणावलीमे मंगलाचरणक अभावक जनश्रुति”।

नाटक-पश्चात् जनश्रुति — “उदयनाचार्य आ जगन्नाथक जनश्रुति”।

प्रकरण ७ | मूल अध्याय –९४ — चारि मुखक मौन

अध्यायक निर्णायक प्रश्न : बोलैत दर्शनक बीच मौन कोन चीज थिक?

“चारि मुखक मौन” शीर्षकक पहिल विरोधाभास ई थिक जे चारू मुख निरन्तर बजैत अछि। सांख्य आचार्य विश्वम्भर, चार्वाक कवि रुद्रदत्त, बौद्ध भिक्षु शीलभद्र आ मीमांसक हरिनाथ अपन-अपन तर्क स्पष्ट करैत छथि। मौन शब्दक अभाव नहि, बल्कि संकटकेँ देखिकऽ समुचित समयपर साझा कर्म नहि करबाक अभाव थिक। अध्यायारम्भक सूत्र “चारू मुँह बाजल, तैयो एक बात नुकाएल रहल” एहि द्वन्द्वकेँ विषय बनबैत अछि। पाठक सँ प्रश्न ई नहि जे चारिमे कोन दर्शन अन्तिम सत्य अछि; प्रश्न ई जे भूखल मनुष्यक उपस्थिति ज्ञानक कथित पूर्णताकेँ कोना अपूर्ण सिद्ध करैत अछि।

एहि शीर्षकमे “मौन”क कम-सँ-कम तीन अर्थ काम करैत अछि : फाटकक बाहरक भूखल जनक उपेक्षित आवाज; सोहनक मृत्यु लग बजब बन्द कऽ देनिहार नैतिक स्तब्धता; आ चतुर्थ अंकमे चारू विद्वानक हाथक स्पर्शद्वारा स्वीकारल गेल स्मृतिक दायित्व। पहिल मौन हिंसक उपेक्षा थिक, दोसर विवेकक झटका, तेसर संस्थागत संकल्प। एहि अर्थान्तरकेँ एक शब्दक पुनरुक्ति नहि बुझबाक चाही; ई कथा-परिवर्तनक धुरी थिक। उपसंहारमे पीपरक छालमे स्वर सुनाइ देबाक जनश्रुति एहि मौनकेँ सम्भावित लोक-अभिलेख बनबैत अछि, यद्यपि वास्तविक अलौकिक घटना घोषित नहि करैत।

पिछिला अध्यायसँ सम्बन्ध : स्मृति-कक्षक भीतरसँ फाटक धरि

अध्याय –९५ “जलमग्न पाण्डुलिपि”मे जीवन्तीक नाम, नष्ट भऽ सकनिहार लेख आ बुधुआक स्मृति-रक्षाक प्रतिज्ञा कथा-कार्यक केन्द्र छल। नव अध्याय उदयनाचार्यक ओही मठमे शुरू होइत अछि; बूढ़ भेल बुधुआ अपन हाथमे शंख आ डोरी राखने छथि। अतः –९४ अपन पुरखाक प्रसंगकेँ त्यागि नहि दैत, बल्कि स्मृति-संरक्षणक परिधि बदलबैत अछि। पहिने अपमानित वा जलमे हरायल व्यक्तिक नामकेँ अभिलेख देबाक बात छल; आब जीबैत भूखल मनुष्यक तत्काल रक्षा स्मृतिक कसौटी बनैत अछि। स्मारक बना देब आ प्राण बचा लेब एक बात नहि।

मूल मंचीय परिचयमे उदयन “अब अत्यन्त वृद्ध” कहल गेल छथि, बुधुआ सेहो “अति वृद्ध” छथि। “किरणावली मिथिलामे पसरि गेल” कहबाक बाद सूत्रधार अकालक वर्षमे प्रवेश करबैत छथि। एहिसँ पिछिला घटनासँ कतेक वर्ष बीतल, तकर निश्चित गणना नहि भेटैत; मुदा देहक वृद्धावस्था आ ग्रन्थक प्रसार इतिहासक संक्षिप्त संकेत थिक। दीर्घ कालक ई संकोचन अगिला चारि अंकक क्षण-क्षणक नैतिक समयसँ तीक्ष्ण विरोध रचैत अछि। संक्षेप आ दृश्यक ई अन्तर कथन-व्यवस्थाक महत्त्वपूर्ण युक्ति अछि।

मंच, स्थान आ दोहरा सभा : फाटकक रेखाक राजनीति

उदयनक मठक आँगनमे पैघ पीपरक छाह अछि, ओकर एक कात चारि विद्वान्, उदयन आ बुधुआ छथि; बाहर फाटक लग अकालपीड़ित लोकक भीड़। ई स्थान-विभाजन केवल सुविधाजनक दृश्य-निर्देश नहि। मठ ज्ञानक संस्थागत क्षेत्र, फाटक प्रवेश-अधिकारक सीमा, अन्न-भण्डार साधनपर नियंत्रण, आ पीपर सार्वजनिक स्मृतिक सम्भावित स्थल बनैत अछि। सूत्रधारक कथन—“जकरा भूख बजबैत अछि, शास्त्र नहि”—दुनू सभाक असमान स्थिति स्पष्ट करैत अछि। एक सभा चयनित वक्ताक, दोसर भूखक कारण उपस्थित जनक।

फाटकक पारक लोक पहिले सामूहिक कोलाहल छथि; ककरा की नाम, कतेक परिवार, कोन जाति आ कोन श्रमसँ सम्बन्ध, ई विवरण नहि देल गेल अछि। ई अनामिकता एक दिस व्यापक संकट देखबैत अछि, दोसर दिस पीड़ित समुदायकेँ पृष्ठभूमि बनाबयक खतरा उत्पन्न करैत अछि। सोहन नामधारी प्रतिनिधि बनिकऽ भीतरी सभामे प्रवेश करैत अछि, मुदा ओकर बोलबाक सामर्थ्य क्षीण अछि। यथार्थमूलक आलोचनामे देखबाक अछि जे जनक वाणी दार्शनिक पात्रक अपेक्षामे कम आबंटित अछि; एहि असमानताकेँ केवल करुणाक दृश्य कहलासँ बात पूर्ण नहि होयत।

घटना-मानचित्र : पाँच संक्रमण आ एक अपूरित सम्भावना

प्रस्तावनामे अकाल, सुखायल नदी, फाटल खेत आ सभा-प्रथा स्थापित होइत अछि। पहिल अंकमे चारू मत अपन मत देलाक बीच शिष्य सूचना दैत अछि जे तीससँ अधिक व्यक्ति उपस्थित छथि आ किछु बच्चा तीन दिनसँ भूखल छथि। उदयन शास्त्रार्थ समाप्त होइते बाहर जेबाक बात कहैत छथि; बुधुआ समयक असङ्गति बतबैत छथि। दोसर अंकमे उदयन विषय बदलि फाटकक भीड़ लेल ठोस उत्तर मांगैत छथि। दार्शनिक मतभेद सामान्य व्याख्यासँ कर्मनिर्णय धरि अबैत अछि, मुदा अन्न बँटबाक आदेश अखनहुँ नहि होइत। सोहन प्रवेश करैत छथि आ लड़खड़ाइत छथि। तेसर अंकमे सोहन पीपरक जड़िमे खसैत छथि; कथा हुनकर देहकेँ “निष्प्राण” कहैत अछि। तखने उदयन भण्डार खोलबाक आदेश दैत छथि। चतुर्थ अंकमे संस्कार भेलाक बाद अनाज बँटैत देखाओल गेल अछि; चारू विद्वान् पीपरपर हाथ राखि भविष्यक स्मृतिक चिह्न स्वीकार करैत छथि।

एहि क्रममे घटना केवल मरण नहि। निर्णयक स्थगन, संकट-सम्बन्धी सूचना प्राप्त होइतो प्रत्युत्तर नहि देब, बहसक नियम बदललापर सेहो क्रिया नहि करब, मृत्यु पछाति आदेश देब, आ पछिला सभाक लेल फाटक-जाँचक रीति स्थापित करब—ई सभ अलग-अलग स्थितिपरिवर्तन छथि। पाँच मुख्य संक्रमणक बीच नैतिक कारण-कार्यक निकट सम्बन्ध अछि, मुदा एकर संख्यात्मक दर निकालबाक लेल स्वतन्त्र घटना-कोडिंग आवश्यक अछि।

कथा-अवस्था	पाठ-साक्ष्य	निर्णय/परिवर्तन	अधूरा प्रश्न
भूमिका	अकाल; फाटकपर भीड़	दू सभा अलग	भण्डारक नियम की?
पहिल अंक	शिष्यक भूखक सूचना	उदयनक प्रतीक्षा; बुधुआक विरोध	तत्काल आदेश किएक नहि?
दोसर अंक	शास्त्रार्थक विषय बदलब	चारि उत्तर; अन्न वितरण नहि	अधिकार ककर हाथ?

तेसर अंक	सोहन खसैत; निष्प्राण देह	अन्न बँटबाक विलम्बित आदेश	संकटक कारणिक जाँच कतय?
चतुर्थ अंक	दाह-संस्कार, अन्न-वितरण	चारू हाथक साक्षी-स्पर्श	सोहनक परिवारक स्वर कतय?
उपसंहार	फाटक-जाँचक नियम; लोकनाम	“पीपरक ब्रह्मा” जनश्रुति	नियमक पालनक बाह्य पुष्टि नहि

कालव्यवस्था : दार्शनिक समय आ भूखक अस्वीकार्य प्रतीक्षा

अध्यायक सर्वाधिक प्रभावकारी काल-संरचना “पहिने” शब्दक संघर्ष थिक। उदयन पहिने शास्त्रार्थ समाप्त करबाक चाहैत छथि; बुधुआ पहिने भूखक प्रश्न; दार्शनिक अपन सिद्धान्तक पहिले आवश्यक तत्त्व स्थापित करबाक चाहैत छथि। रुद्रदत्त वर्तमानक प्रत्यक्ष भूखकेँ निर्णयक पर्याप्त आधार मानैत छथि। एहि भिन्न “पहिने” सभक बीच सोहनक शरीर अपन समय-सीमा लऽ कऽ प्रवेश करैत अछि। नाटकक नैतिक तनाव ककरो तर्क अन्तिम रूपेँ निरस्त होयब नहि, बल्कि चिन्तनक विलम्बक अपरिवर्तनीय परिणाम थिक।

पहिल दू अंक विचारक विस्तारमे बितैत अछि; तेसर अंकक मृत्यु अत्यल्प मंचीय निर्देश आ छोट संवादमे सम्पन्न होइत अछि। नहि उठनिहार शरीरक मौन, लम्बा उपदेशक तुलनामे अधिक कथन-भार वहन करैत अछि। चतुर्थ अंकक आरम्भमे सोहनक दाह-संस्कार भऽ चुकबाक सूचना अछि; अर्थात् शवसँ अन्त्येष्टि धरि कथा एकटा समय-लोप स्वीकार करैत अछि। उपसंहारमे वर्षा, हरियर खेत, परवर्ती बहस आ लोकनामकरण वर्षोंक परिवर्तनकेँ संक्षेपमे समेटैत अछि। ई प्रस्तुति घटनाक असमान अवधि द्वारा पाठकपर दबाव बनबैत अछि, मुदा मृत्युपूर्व राहत-प्रक्रियाक वास्तविक अवधि अनिर्दिष्ट छोड़ैत अछि।

चारि दर्शन : वाणीसभक स्वतन्त्रता आ कथात्मक पक्षपात

विश्वम्भर दुःखक निवारण लेल प्रकृति, त्रिगुण आ विवेकक भाषा उपयोग करैत छथि; हुनकर मतमे तत्काल अन्न-वितरण मूल दुःख-निवारण नहि। ई कथन दीर्घकालीन आ तात्कालिक उपचारक अन्तर उठबैत अछि, मुदा “क्षणिक” होयबाक कारणसँ राहतकेँ निरर्थक मानब स्वयं अवश्यंभावी निष्कर्ष नहि। कथा विश्वम्भरक एक विशेष कठोर उपयोगकेँ देखबैत अछि; एतयसँ सम्पूर्ण सांख्य परम्पराक व्यवहारिक नैतिकता पर अन्तिम निर्णय निकालब अयुक्त हएत। एही सीमांकनसँ साहित्यिक पात्रक विचार आ ऐतिहासिक दर्शनक सिद्धान्तमे भेद सुरक्षित रहैत अछि।

रुद्रदत्त खुलि कऽ अन्न देबाक बात कहैत छथि—“अन्न दिअ, बस।” अतः चारू पात्र एक समान रूपेँ उदासीन छथि, ई साधारण निष्कर्ष मूल पाठसँ मेल नहि खाइत। हुनकर मौखिक आग्रह स्पष्ट अछि, मुदा मंचीय घटनामे ओ स्वयं अन्न-भण्डार नहि खोलैत वा लोककेँ संगठित नहि करैत। प्रत्यक्षवादक तर्कक नैतिक तीक्ष्णता आ कर्मक अनुपस्थिति एक संग मौजूद अछि। समीक्षाकेँ ई अन्तर स्वीकार करबाक चाही। जँ भण्डारपर अधिकार उदयन आ शिष्यक अछि, तँ रुद्रदत्तक निष्क्रियताक दायित्व अधिक सीमित भऽ सकैत अछि; पाठ अधिकार-विभाजनक स्पष्ट विधान नहि दैत।

शीलभद्र करुणाक पक्षमे बाजैत छथि, मुदा दानक शास्त्रीय त्रिपुटी-विचारमे उलझि जाइत छथि। ई चरित्रचित्रण करुणा आ व्याख्यात्मक कुहासाक विरोध उठबैत अछि। ओ लज्जा सेहो व्यक्त करैत छथि—आत्मसंशोधनक छोट अवसर। मुदा दान-पारमिताक जटिल विचार सम्पूर्ण बौद्ध आचरणक प्रतिनिधि नहि; नाटकीय विडम्बनाक कारण ओकर संक्षिप्त, एकपक्षीय प्रस्तुति चुनल गेल अछि। हरिनाथ विधिवाक्यक बिना दानकेँ ऐच्छिक मानि भण्डारक स्वामित्वक तर्क दैत छथि। हुनकर वाणी संकटमे नियमक कठोर प्रयोगक मिसाल अछि, मुदा मीमांसक धर्ममीमांसाक पूर्ण इतिहास आ एहि नाटकक पात्र-दावा एक वस्तु नहि।

उदयनक भूमिकान्तरण : वादक अध्यक्षसँ दोष-स्वीकारक धरि

उदयनाचार्य आरम्भमे सभाक अध्यक्ष आ मठक निर्णयकर्ता छथि। पहिल निर्णय—वादक समाप्तिक प्रतीक्षा—कथा-परिणाममे नैतिक विलम्ब बनैत अछि। दोसर अंकमे हुनकर विषय बदलब एक महत्त्वपूर्ण मध्यवर्ती परिवर्तन थिक : ओ प्रश्न उठबैत छथि जे भूखल भीड़क विषयमे चारू दर्शन की कहैत अछि। मुदा प्रश्न पूछब स्वयं भण्डारक द्वार खोलब नहि। एहि कारण उदयनक विचारगत जागृति आ क्रियागत जागृति अलग समयपर घटैत अछि; सोहनक मृत्यु ई दूरी उघाड़ि दैत अछि।

तेसर अंकमे “अन्न... आब अन्न बाँटू! तुरंत!” एकटा पछाति एल निर्णय थिक। चतुर्थ अंकमे उदयन स्वीकार करैत छथि जे ई दर्शनक पराजय नहि, दर्शनसँ अधिक प्रेम करनिहार मनुष्यसभक पराजय थिक। ई आत्मालोचना पूर्वक देरीकेँ मिटबैत नहि, मुदा पात्रकेँ नितान्त एकपक्षीय दमनकर्तासँ भिन्न बनबैत अछि। अन्तमे “साक्षी-वृक्ष” नाम देबाक संस्थागत अधिकार फेर हुनके हाथमे रहैत अछि; नैतिक परिवर्तनक बाद सेहो अधिकारक संरचना पूर्ण रूपेँ नहि बदलैत। पीड़ित ग्रामीणक प्रतिनिधिकेँ नव नियम लिखबाक जिम्मा देल नहि जाइत—ई आलोचनाक आवश्यक प्रश्न थिक।

बुधुआ : स्मृति-रक्षाक प्रतिज्ञासँ सार्वजनिक प्रतिवाद धरि

बुधुआ एहि अध्यायमे तर्कशास्त्रक मान्य प्रतिनिधि नहि, मुदा निर्णयक वास्तविक दिशा बदलनिहार मुख्य स्वर छथि। पहिल अंकमे हुनकर वाक्य “भूख शास्त्रार्थ समाप्त होएबाक प्रतीक्षा नहि करैत” समयक विरोधक सबसे संक्षिप्त अभिव्यक्ति अछि। सोहन खसलापर ओ पहिने दौड़ैत छथि; मृत्युपर ओ चारू दार्शनिकक विचारक क्रमक स्मरण करबैत प्रश्न करैत छथि—“पहिने अन्न, फेर वाद”। कोनो औपचारिक शास्त्रीय पदक बिना हुनकर प्रश्न सभाक प्रमाणमूलक कसौटी भऽ जाइत अछि।

चतुर्थ अंकमे बुधुआ वस्तुतः स्मरणक नीतिकार बनैत छथि। हुलासाक नाम शिलामे, जीवन्तीक नाम स्मृति-कक्षमे आ सोहनक मृत्यु पीपरक छालमे—ई तीन स्तरक साक्ष्य-व्यवस्था अछि। एहिमे नामक उत्कीर्णनसँ आगाँ बढ़ि स्थलकेँ स्वतः प्रश्न पूछनिहार स्मृति-संकेत बना देल जाइत अछि। तथापि बुधुआ सेहो सोहनक परिवार वा भूखल भीड़क सदस्यसँ नियमक शब्द तय करबैत नहि छथि। उपन्यास अज्ञानक तिरस्कार नहि, बल्कि सेवा-आधारित ज्ञानक महत्ता स्थापित करैत अछि; मुदा स्मृतिपर बोलबाक अधिकारक अन्तिम समता अखनो अधूरा लक्ष्य अछि।

सोहन : नाम भेटब, स्वर छिनायब आ प्रतिनिधित्वक नैतिक कठिनाई

सोहनक नाम पात्र-सूचीमे अछि; हुनकर मंचीय उपस्थिति अत्यन्त क्षणिक। ओ “तीन दिनसँ... बच्चा सभ...” कहबाक बीच लड़खड़ाइत छथि, फेर पीपरक जड़िमे खसैत छथि। हुनका रोग, परिवार, पेशा, जाति वा अकालपूर्व जीवनक स्वतन्त्र परिचय नहि भेटैत। ई न्यूनता जानि-बुझि कएल गेल नाटकीय संक्षेप भऽ सकैत अछि : एक देह सभ सिद्धान्तक समक्ष अस्वीकार्य परिणामक रूपमे उपस्थित भऽ जाइत अछि। मुदा पीड़ितकेँ केवल सभ्य समाजक नैतिक जागरणक साधन बनबाक जोखिम सेहो एहि रूपमे अन्तर्निहित अछि।

कथामे “निष्प्राण देह” कहल गेल अछि, अतः सोहनक मृत्यु कथानकक घोषित तथ्य अछि। तथापि हुनकर मृत्यु भुखमरीक चिकित्सा-प्रमाणित कारणसँ भेल, ई पृथक अनुसन्धान पाठ नहि दैत; अकालक परिस्थिति आ तत्काल ढहबक प्रसंग मजबूत नैतिक संकेत अवश्य बनबैत अछि। मृत्युक कारण, राहतक अनुपलब्धता आ दायित्वक संस्थागत दर्जा अलग जाँचबाक चाही। आख्यानक नैतिक अर्थक लेल ई घटना निर्णायक अछि, मुदा ऐतिहासिक तथ्य वा वास्तविक मृत्यु-पंजी जेकाँ दावा एहि कल्पित दृश्यसँ नहि करबाक चाही।

कथावाचक आ दृष्टिकेन्द्रण : सूत्रधारक अधिकारक परिवर्तन

भूमिकामे सूत्रधार समय, ग्रन्थक प्रसार, पात्रक वृद्धावस्था आ अकालक स्थिति प्रस्तुत करैत छथि। दृश्यगत भागमे मंचनिर्देश, प्रत्यक्ष संवाद, शरीरक हलचल आ भीड़क ध्वनि प्रमुख स्रोत छथि। “चारू विद्वान् चुप” वा “आँखि नीचाँ” जेकाँ संकेत व्यवहार देखबैत अछि; पात्रसभक अन्तर्मनक सर्वज्ञ पुनर्निर्माण नहि करैत। उपसंहारमे सूत्रधार फेर व्यापक काल-बोधसँ वर्षा, प्रचलित नियम आ लोकक कथन समेटैत छथि। एकहि अध्यायमे दृश्यात्मक सीमित दृष्टिकेन्द्र आ संक्षेपात्मक व्यापक कथनक अदलाबदली होइत अछि।

अन्तिम लोकविश्वास कथनमे “कहल जाइत अछि”क आवृत्ति महत्त्वपूर्ण अछि। पीपरक छालमे चारि स्वर सुनाइ पड़नाइ कथावाचकक प्रत्यक्ष-प्रमाणित अलौकिक घटना नहि; कथाभीतर लोकश्रुतिक रूपमे परिचित विश्वास थिक। एहि आधारपर अध्यायकेँ सरल जादुई-यथार्थवादक निश्चित उदाहरण कहल कठिन अछि; ई स्मृतिक लोककथात्मक रूपान्तरणक अधिक सावधान उदाहरण थिक। सूत्रधारक कथन-स्वर जहाँ लोकक वचनक सीमा राखैत अछि, ओतहि अन्तिम भविष्यवाणी “चारू उत्तर झूठ निकलत” अधिक निर्णायक नैतिक घोषणा करैत अछि। एहि दुनूक बीच कथावाचकीय दूरी बदलैत अछि।

नाटच-आख्यानक स्तर : गीत, मंचनिर्देश आ पश्चातवर्ती टिप्पणी

अध्याय “भूमिका, चारि अंक आ उपसंहार” कहि अपन नाट्य-रचना घोषित करैत अछि। आरम्भक लोकगीत चारू मुखक बोलब आ मौनक शेष रहबाक विचार पहिनेसँ गाबि दैत अछि; बादमे घटना एहि प्रस्तावनाकेँ ठोस सामाजिक अर्थ दैत अछि। गीत कथात्मक परिणामक पूर्वध्वनि थिक, मुदा दुर्घटना घटबाक पहिनहि नैतिक निष्कर्ष स्पष्ट भऽ जाएबाक कारण पाठकीय अनिश्चितता सेहो घटि सकैत अछि। शास्त्रार्थक चारि स्वर कहियो वास्तविक पारस्परिक परीक्षण करैत छथि, कहियो लेखक-नियोजित विरोध-स्थान भऽ जाइत छथि।

उपसंहारक बाद “सांख्य, चार्वाक, बौद्ध आ मीमांसा सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त” शीर्षकक अधीन चार्वाकक प्रसिद्ध सूक्ति आ मीमांसाक विधि-वाक्य सम्बन्धी दू व्याख्यात्मक टिप्पणी देल गेल अछि। ई दार्शनिक पार्श्व-पाठ नाटकक मंचीय घटना नहि, यद्यपि अध्यायक भौतिक पाठ-सीमामे अछि। चार्वाकक सूक्तिक चर्चा स्वयं सावधानी राखैत अछि जे ई प्रायः विरोधी ग्रन्थकारक माध्यमे उद्धृत अछि; अतः इतिहासक प्रामाणिक मूल-वचनक रूपमे एकरे जसक तस स्वीकार करब नहि चाही। मुख्य नाट्यविश्लेषण आ लेखक-प्रदत्त विचार-संकलनक ई भेद शब्दगणना, अन्तर्पाठीयता आ सन्दर्भपरीक्षण सभ लेल आवश्यक अछि।

रस, ध्वनि आ औचित्य : करुणाक शक्तिक संग सरल नैतिक उपसंहार

अकालक फाटल धरती, भूखल बच्चाक सूचना, सोहनक डगमगायल प्रवेश आ मृत देह लग बुधुआक स्थिर रहब —ई क्रम करुण रसक संरचना रचैत अछि। ओकर प्रभाव केवल विलापक शब्दसँ नहि, शास्त्रार्थ आ अविलम्ब सहायता बीच असमान समय-संवेदनासँ उत्पन्न होइत अछि। पीपरक जड़िमे खसबाक दृश्य जखन लम्बा तर्कक बाद अबैत अछि, तखन मौनक ध्वनि प्रत्यक्ष कथनसँ अधिक तीव्र होइत अछि। भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक अर्थमे एकरा दैनन्दिन शब्दार्थसँ बेसी उभरैत सामाजिक आरोपक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; तथापि आधुनिक आख्यानशास्त्रक ‘फोकलाइजेशन’ आ काव्यशास्त्रक ‘ध्वनि’केँ समानार्थी नहि बनाओल गेल अछि।

औचित्यक कसौटीपर चतुर्थ अंकमे सोहनक मृत्युसँ साक्षी-वृक्षक स्थापना धरि संक्रमण प्रभावकारी अछि, किएक तँ एक भौतिक स्थल अपराध-स्मृतिक स्थायी संकेत बनैत अछि। मुदा मृत्यु पछाति चारू विद्वानक तत्क्षण विनम्र भऽ जाएब आ नियम स्वीकार करब किछु अति-सुविधाजनक प्रतीत भऽ सकैत अछि। पाठमे कोनो दीर्घ प्रतिरोध, भण्डारक स्वामीक आपत्ति वा राहत-वितरणक असमानता नहि देखाओल गेल अछि। नैतिक इच्छित परिणतिक स्पष्टता कला-सङ्गतिकेँ बल दैत अछि, पर संघर्षक वास्तविक जटिलता कम करैत अछि। करुणाकेँ आलोचनाहीन प्रशंसा बनायब उपन्यासक न्यायसम्बन्धी आग्रहक विरुद्ध हएत।

नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेचन : की सिद्ध भेल, की नहि?

पक्ष एहि विशिष्ट मठ-सभाक उपस्थित पात्रसभक व्यवहार थिक; साध्य संकटमे अविलम्ब सहायता करबाक नैतिक विफलता; हेतु भूखक सूचना भेटलापर सेहो अन्न-वितरण स्थगित रहब। शिष्यक बच्चासभ भूखल होयबाक सूचना शब्द-प्रमाणक नाटकीय रूप अछि; भीड़क कोलाहल, सोहनक लड़खड़ाइत देह आ खसि पड़ब प्रत्यक्ष दृश्य-साक्ष्य छथि। उदयनक देरिसँ देल आदेश आ पछाति आत्मालोचना सेहो पात्रक व्यवहारमे स्थापित। एहिसँ कथाभीतर संस्थागत विलम्बक उपस्थिति प्रमाणित होइत अछि। मुदा “सभ दर्शन भूखक प्रति असमर्थ अछि” सन सार्वत्रिक साध्य एहि एक सभासँ सिद्ध नहि होइत।

कारण-कार्यक जाँचमे उपाधि प्रश्न उठैत अछि : अन्न-भण्डारक वास्तविक नियन्त्रण ककर हाथ छल, शिष्यसभकेँ स्वतन्त्र वितरणक अनुमति छल कि नहि, अकालमे अन्न पर्याप्त छल कि नहि, एहन तथ्य स्पष्ट नहि। बिना एहि विवरणक चारू सिद्धान्तक अस्तित्वकेँ सोहनक मृत्युक पर्याप्त कारण कहब हेत्वाभासक जोखिम उठबैत अछि। विशेषतः रुद्रदत्त सहायता करबाक आग्रह करैत छथि; अतः चारूक एकरूप निष्क्रियताक हेतु असिद्ध अछि। न्याय-दृष्टिसँ सशक्त निष्कर्ष ई भेल जे जकरा निर्णयाधिकार छल ओकर देरिसँ क्रिया प्रारम्भ

कएल गेल, आ नाटक एहि विलम्बक नैतिक परिणाम प्रत्यक्ष करैत अछि। ई उपन्यासक तर्क-रचना पर नव्य-न्यायक उपकरणक परीक्षण थिक; मूल शास्त्रमे निर्दिष्ट ऐतिहासिक वादक हूबहू प्रतिलिपि नहि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि : लोक-अभिलेख आ संस्थागत विस्मृति

मठक शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञानक क्रमबद्ध इतिहास बनबैत अछि; फाटक लगक भूख आधिकारिक अभिलेखमे सम्भवतः गौण रहि सकैत अछि। बुधुआ एहि अन्तरकेँ शिलालेख वा पोथीभरि सीमित नहि रखि सामाजिक स्मृतिक अनुशासन बनबैत छथि। हुलासा, जीवन्ती आ सोहनक तीन नाम अलग-अलग प्रकारक उपेक्षा आ साक्ष्य-संरक्षणक सूत्र बनेबाक प्रयास अछि। एहि अर्थमे पीपर एकटा वैकल्पिक अभिलेख-स्थान थिक; ओकर मुख्य प्रमाण चमत्कारी आवाज नहि, नियमित रूपेँ फाटकक हाल पूछबाक सामुदायिक नियम थिक।

तथापि विदेह समानान्तर इतिहास पद्धति केवल उपेक्षितक नाम जोड़बाक पद्धति नहि; इतिहासक निर्माणक सत्ता केकरा हाथ अछि, से सेहो पुछैत अछि। पीपरकेँ “साक्षी-वृक्ष” नाम देनिहार उदयन छथि, चारू दार्शनिक हस्तचिह्न छोड़ैत छथि, बुधुआ प्रस्तावक छथि; मुदा भूखल भीड़क सामूहिक हस्ताक्षर नहि देखाओल गेल अछि। सोहनक परिवारक कथनक अभाव आलोचनात्मक स्मृतिमे दर्ज होयबाक चाही। आचार्यक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा पीड़ितक स्वामित्ववला इतिहासक दिशा अखनो प्रश्नरूपेँ उपस्थित अछि।

पर्यावरणीय आख्यान : सूखल नदी, अन्न-भण्डार आ वृक्षक देह

अकाल एहि अध्यायमे दृश्य-सजावट नहि; सुखायल नदी आ फाटल खेत अन्नक अभावक पृष्ठभूमि बनबैत अछि, आ फाटकपर एकत्र जन मठक अनाजक वितरणक प्रश्न उठबैत अछि। प्रकृति आ संस्थाक सम्बन्ध सीधा अछि : जलक अभाव सामाजिक संकटकेँ बढ़बैत अछि, मुदा भण्डारक भीतर अन्न होयब राहतक सम्भावना बनबैत अछि। अतः मानवीय निर्णयक अभावकेँ केवल प्राकृतिक विपत्ति कहि नहि टारल जा सकैत। चन्ना गाछी, पोखरि, नदी आ स्मृति-स्थलसँ बनल त्रयीकेँ बुझबाक लेल ई जल-संकटक उलट रूप—पानिक कमी—विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

पीपर नाटकक आरम्भमे छाह दैत अछि, तेसर अंकमे सोहनक शरीर ओकरे जड़िमे खसैत अछि, चतुर्थ अंकमे ओ साक्ष्यक स्पर्श-स्थल, उपसंहारमे लोकनामक वाहक बनैत अछि। प्रकृतिक ई एक वस्तु चारि भिन्न कथात्मक कार्य करैत अछि। तैओ वर्षा आ हरियर खेतक उपसंहार अकालक अन्त देखबैत अछि, मठक भविष्यक भोजन-व्यवस्था, बीया-बचत वा जल-संरक्षणक ठोस सुधार नहि। प्राकृतिक पुनरुद्धार आ सामाजिक न्यायकेँ समानार्थी बनाओल जाए तँ उपन्यासक पर्यावरणीय प्रश्न आधा रहि जायत।

रूपकक निर्माण : साक्षी-वृक्षसँ “पीपरक ब्रह्मा” धरि

चतुर्थ अंकमे चारू विद्वानक पीपरक छालपर हाथ राखब एकटा साधारण, दृश्य क्रिया अछि। ओकर पश्चात् उदयन साक्षी-वृक्षक सार्वजनिक नाम घोषित करैत छथि। उपसंहारमे गामक लोक धीरे-धीरे ओकरा “पीपरक ब्रह्मा” कहय लगैत छथि, चारि मुखसँ चारि दर्शनक स्वरक लोककल्पना जोड़ैत छथि। दृश्य-क्रिया → संस्थागत

नामकरण → सामुदायिक जनश्रुति : ई तीन-स्तरीय अर्थ-निर्माणक क्रम अछि। चारि मुखक संकेत ब्रह्माक बहुमुखी परम्पराकेँ स्मरण करा सकैत अछि, मुदा नाट्यमे कोनो प्रत्यक्ष देव-अवतार घटल प्रमाणित नहि।

एहि रूपान्तरणमे गाछ एकटा प्राकृतिक अभिलेख बनैत अछि, जकर जड़ि मृत्यु देखलक, छाल स्पर्शक चिह्न ग्रहण कएलक, आ नाम आनेवाला पीढ़ी लेल चेतावनी बनल। आरम्भक लोकगीत सभ उत्तरक पाछाँ मौन रहने कहैत अछि; अन्तमे गाछ अनेक आवाज धारण करैत अछि, मुदा मूल चेतावनी ई जे ककरो भूखकेँ अनदेखा नहि कएल जाए। प्रतीक सफल तखन अछि जखन ओकर नैतिक अर्थ सचमुच व्यवहारमे बदलैत अछि; उपसंहारक कथनक अतिरिक्त व्यवहारिक जाँच नाटक प्रस्तुत नहि करैत।

बहुस्वरता आ ओकर सीमा : प्रतिपक्ष कतेक स्वायत्त?

चारू दार्शनिकक भाषा-भंगिमा अलग अछि : सांख्यक अवधारणा, चार्वाकक प्रत्यक्ष आ व्यंग्य, बौद्धक करुणा आ शून्यताक सम्भ्रम, मीमांसकक विधि-प्रामाण्य। एहि अन्तरसँ नाटक एकरे बहुस्वर रचना बनबैत अछि, पर पूर्ण स्वतन्त्र बहुस्वरता नहि। उदयन आ बुधुआ कथाक नैतिक निष्कर्षक अधिकार अपने हाथमे रखैत छथि; प्रतिपक्षी चारू लगभग एकहि प्रकारक पश्चात्तापमे पहुँचैत छथि। रुद्रदत्तक पहिने सँ तात्कालिक राहतक पक्षमे रहबाक तथ्य एहि एकरूपी समापनकेँ विशेष रूपसँ जटिल बनबैत अछि। हुनका पर ओतबे दोष आरोपित करब जे विधिक कारण अन्न रोकनिहार हरिनाथपर, न्यायोचित नहि।

समाजशास्त्रीय स्तरपर ग्रामीण भीड़ सामूहिक ध्वनि अछि, स्वतन्त्र विचार-विमर्शक सहभागी नहि। “तीस सँ बेसी” संख्या प्रशासनिक-सा आभास दैत अछि; मुदा सभक नाम केवल सोहन धरि सिमटैत अछि। कथा ज्ञानसत्ता पर प्रहार करैत अछि, मुदा आलोच्य कथन-संरचना स्वयं विद्वान् पुरुषसभकेँ अधिक वाक्-अवसर दैत अछि। एहि विरोधकेँ रचनाक विफलता मात्र कहब सरलीकरण हएत; एकरा अन्तर्विरोधक रूपमे दर्ज कऽ अन्तिम त्रयीमे लोकक वास्तविक वाणी कतेक विस्तृत होइत अछि, से जाँचबाक प्रश्न राखब उचित अछि।

उपलब्धि, सीमा आ समग्र त्रयी लेल संशोधनयोग्य निष्कर्ष

अध्यायक मुख्य उपलब्धि अछि जे जटिल दर्शनशास्त्रीय वादकेँ एकटा ठोस सार्वजनिक निर्णयसँ जोड़ि दैत अछि। शास्त्रार्थक परिसर, फाटकक भीड़, सोहनक क्षीण वाणी, उदयनक विलम्बित आदेश, बुधुआक प्रतिरोध आ पीपरक स्पर्श—ई सभ एकहि नाटकीय रेखामे संगठित अछि। पहिने नामक रक्षा व्यक्तिगत स्मृतिपर केन्द्रित छल; आब ओ सामुदायिक नैतिक नियम बनबाक आकांक्षा ग्रहण करैत अछि। शीर्षकक मौन केवळ भावनात्मक मूल्य नहि, समयपर क्रिया नहि करबाक राजनीतिक अर्थ पबैत अछि।

सीमा सेहो ठोस अछि। चार्वाकक प्रत्यक्षवादी उत्तरक बावजूद ओकरा समान अपराध-बोधमे रखल गेल अछि; सांख्य, बौद्ध आ मीमांसाक विचारक संक्षेप कतहु अतिसरलीकरण करैत अछि; सोहनक मृत्यु पात्रक स्वतन्त्र जीवनसँ अधिक दार्शनिक शिक्षाक उत्प्रेरक बनैत अछि; भूखल भीड़क आवाज सामूहिक शोरमे समेटि देल गेल अछि; आ सुधारक परिणाम तत्क्षण सहमति तथा लोकनामकरणमे सीमित अछि। सोहनक मृत्यु आ अन्न-वितरणक संस्थागत अभिलेख नहि देखाओल गेल; वर्षा-वापसीसँ भुखमरीक संरचनागत कारण समाप्त होयबाक

प्रमाण नहि भेटैत। ई प्रश्न सभ रचनाक उपलब्धिक विरोधमे नहि, ओकर नैतिक दावाक गंभीर परीक्षणमे उठैत अछि।

पीपर पहिने छाह, फेर मृत्युक स्थल, फेर नामक स्थल बनैत अछि; “पहिने”क नैतिक क्रम बदलैत अछि; चारू मुखक वाणी सभाकेँ विजय नहि, आत्मालोचना धरि पहुँचबैत अछि। उपसंहार आगामी चन्ना गाछीमे चारू उत्तर झूठ निकलबाक भविष्य-संकेत दैत अछि। ई भविष्यवाणी आगामी अध्यायसभक वास्तविक पाठसँ जाँचल जाएत; एखन एकरा घटि चुकल घटना नहि मानल गेल अछि। एहि सावधानीक संग “चारि मुखक मौन” त्रयीमे ज्ञान, भूख, प्रमाण आ सार्वजनिक स्मृतिक सम्बन्धक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण सन्धिबिन्दु थिक।

अध्याय –१४ : मूल पाठसँ मिलाओल साक्ष्य-सूचक

भूमिका, सूत्रधार — “जकरा भूख बजबैत अछि, शास्त्र नहि।”

भूमिका, लोकगीत — “जे सभ उत्तर देलक, ओकरो एक प्रश्न रहि गेल।”

पहिल अंक, शिष्य — “तीस सँ बेसी लोक जमा भऽ गेल छथि।”

पहिल अंक, उदयनाचार्य — “शास्त्रार्थ समाप्त होइते आबि रहल छी।”

पहिल अंक, बुधुआ — “भूख शास्त्रार्थ समाप्त होएबाक प्रतीक्षा नहि करैत।”

दोसर अंक, उदयनाचार्य — “आइक शास्त्रार्थक विषय हम बदलैत छी।”

दोसर अंक, रुद्रदत्त — “अन्न दिअ, बस।”

दोसर अंक, हरिनाथ — “मठक अन्न मठक अछि, ग्रामक नहि।”

दोसर अंक, शीलभद्र — “हम... हम केवल शास्त्रीय स्पष्टताक हेतु कहलहुँ।”

दोसर अंक, सोहन — “महाराज... तीन दिनसँ... बच्चा सभ...”

तेसर अंक, मंच-निर्देश — “सोहन पीपरक जड़ि लग खसि पड़ैत अछि।”

तेसर अंक, उदयनाचार्य — “अन्न... आब अन्न बाँटू! तुरंत!”

तेसर अंक, मंच-निर्देश — “सोहनक निष्प्राण देह।”

तेसर अंक, बुधुआ — “पहिने अन्न, फेर वाद।”

तेसर अंक, उदयनाचार्य — “ई दर्शनक पराजय नहि, ई हमरा सभक ... पराजय थिक।”

चतुर्थ अंक, मंच-निर्देश — “सोहनक दाह-संस्कार भऽ चुकल अछि।”

चतुर्थ अंक, बुधुआ — “ई गाछकेँ सोहनक साक्षी बनाऊ।”

चतुर्थ अंक, उदयनाचार्य — “आजुसँ ई गाछ मठक साक्षी-वृक्ष कहाएत।”

उपसंहार, सूत्रधार — “पहिने फाटकक हाल पूछब, फेर वाद आरंभ करब।”

उपसंहार, सूत्रधार — “पीपरक ब्रह्मा।”

उपसंहार, सूत्रधार — “हुलासा, जीवन्ती, आ सोहन।”

उपसंहार, सूत्रधार — “चारू उत्तर झूठ निकलत।”

नाटक-पश्चात् टिप्पणी — “चार्वाकक प्रसिद्ध सूक्ति।”

नाटक-पश्चात् टिप्पणी — “मीमांसाक विधि-वाक्य सिद्धान्त।”

प्रकरण ८ | मूल अध्याय –९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय –९३ “शंखक अन्तिम प्रश्न” खण्ड–०क आठम अध्याय थिक; मूल संयुक्त उपन्यासक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ-पृष्ठ १२० आ अगिला अध्याय –९२ “जल-घड़ीक कैदी”क आरम्भ-पृष्ठ १३१ देल अछि। अतएव एहि अध्यायक मुद्रित पृष्ठ-सन्दर्भ १२०–१३० थिक, मुदा ई अनुक्रमणिका-आधारित पृष्ठ-सीमा अछि, न स्वतन्त्र रूपसँ छापल प्रतिक पृष्ठ-दर-पृष्ठ मिलान। एहि अनुपातकेँ वास्तविक घटना-संख्या मानब गलत हएत: एकहि वाद-संवादमे अनेक प्रश्न उपस्थित होइत अछि, मुदा पात्रक स्थिति कतेक बदलल से अलग जाँचबाक विषय अछि। अध्यायक आरम्भिक फकरा “जकरा एक बेर चिन्हलहुँ, तकरो भोर फेर पुछै छै” बारंबार पहिचान आ संशयक बीच तनाव स्थापित करैत अछि। मूल प्रविष्टिक विशिष्ट शोधप्रश्न अछि—शास्त्रार्थक प्रस्ताव, प्रतिपक्ष आ निर्णय कथामे केना रूपान्तरित होइत अछि, आ तर्क पात्रक जीवन-क्रियामे उतरैत अछि कि व्याख्यान मात्र रहि जाइत अछि। एहि समीक्षामे ओही प्रश्नकेँ कथात्मक परिणाम, नव्य-न्यायक प्रमाणशास्त्र आ करुणाक नैतिक कसौटीपर राखल गेल अछि।

“शंख आ रजत” सँ “अन्तिम प्रश्न” धरि : पुनरागमनक कथात्मक अनुबन्ध

अध्याय –१००क शंख-रजतक आरम्भिक विवाद एतय कथा-संसारक स्मृति बनि पुनः उपस्थित होइत अछि। सूत्रधार आ बुधुआ दुनू बतबैत छथि जे आक्षेपकक शंका साठि बरख पुरान अछि। एहि प्रकारेँ दार्शनिक उदाहरण एक बेर उद्घाटित विषय बनि नहि रहैत; सात अध्यायक अन्तरालमे जीवनक मृत्यु, सामाजिक विफलता आ नामक अभिलेख ग्रहण कऽ पुनः फिर्ती करैत अछि। कथा-क्रम आ प्रस्तुति-क्रमक ई जोड़ महत्त्वपूर्ण अछि। प्रस्तुत दृश्य उदयनाचार्यक मठक पाछाँ एकटा शांत आँगनमे संझा घटैत अछि, मुदा कथावाचक ओकर भीतर वाचस्पतिक पहिल वाद-शाला, हुलासा, जीवन्ती आ सोहनक मृत्यु तथा गामक भविष्यक स्मृति एकसंग आनि दैत अछि। ई साधारण पुनरावृत्ति नहि, प्रश्नक मूल्य बदलबाक प्रक्रिया अछि: जे भ्रम शुरूआतमे ज्ञानक समस्या छल, से एतय व्यक्तिक साठि बरखक जीवित अनुभवक मोलक प्रश्न बनैत अछि। तथापि “साठि बरख” कथाक आन्तरिक कालसूचक कथन थिक; एकरा ऐतिहासिक कालगणनाक स्वतन्त्र प्रमाण मानल नहि जा सकैत।

रचनाभीतरक रंगमञ्च : भूमिका, चारि अंक आ उपसंहार

अध्याय अपनाकेँ “भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य-रचना” कहैत अछि। पात्रसूचीमे सूत्रधार, उदयनाचार्य, बुधुआ, आक्षेपक, शिष्य केशव आ परिषद् अछि। तथापि परिषदक कथित “कानाफूसी” स्वयं कोनो निर्णायक विस्तृत संवाद नहि पबैत; वास्तविक बहस उदयन, आक्षेपक आ बुधुआक

त्रिकोणमे केन्द्रित रहैत अछि। भूमिका पुरान वाद-स्मृति पुनर्स्थापित करैत अछि; पहिल अंक आक्षेपकक शारीरिक आगमन आ मृत्युविषयक प्रश्न खोलैत अछि; दोसर अंक तीन ख्यातिवादक चर्चा आ ज्ञाताक संकट बढ़बैत अछि; तेसर अंक बुधुआक नैतिक उत्तर आ संशयक अस्तित्वगत पुनर्व्याख्या करैत अछि; चतुर्थ अंक मृत्यु तथा चानी-सन उजास द्वारा यथार्थक नियम बदलैत अछि; उपसंहार लोकविश्वास, अन्त्येष्टि आ भविष्यसूचनाक संग कथा बन्द आ खोलि दैत अछि। मंचनिर्देश आ सूत्रधारक बाह्य कथा-स्वर अलग स्तर छथि: मंच-भीतरक कथन व्यक्तिपर आश्रित अछि, उपसंहारक “कहल जाइत अछि” सामुदायिक सुनी-सुनायल ज्ञानक द्योतक।

घटना-मानचित्र : प्रश्नक आगमनसँ मृत्युक बादक लोकस्मृति धरि

पाठक ठोस अवस्थापरिवर्तनकेँ पाँच क्रममे राखल जा सकैत अछि। पहिने असहाय वृद्ध आगन्तुकेँ केशव मठमे अनैत छथि; बुधुआ आवाजसँ हुनका चिन्हैत छथि—अपरिचित व्यक्ति पुरान परिचित बनि जाइत छथि। दोसर, आक्षेपक अपन तर्क-प्रतिस्पर्धाकेँ निजी मृत्यु-आशंकामे फेरैत छथि—बहसक लक्ष्य बदलैत अछि। तेसर, उदयन मतभेदक बीच सापेक्ष सहमति प्रस्तुत करैत छथि, मुदा आक्षेपक ज्ञाताक प्रश्न उठाकऽ से समाधान अस्वीकार करैत छथि। चारिम, बुधुआ शास्त्रीय उत्तर छोड़ि हुलासा, जीवन्ती आ सोहनक गवाही आ अपन निर्णयक नैतिक अर्थ प्रस्तुत करैत छथि; आक्षेपक असमाप्त वाक्यक बीच प्राण छोड़ैत छथि। पाँचम, चानी-सन उजास आ ओकर गाछ दिस गमनक दृश्य उपसंहारमे “राकश” नामक लोकविश्वास बनैत अछि। घटना-क्रममे बाह्य क्रिया कम, ज्ञान–भाव–सामुदायिक स्मृतिक रूपान्तरण अधिक अछि। कहियो निश्चयात्मक निष्कर्ष न देब उपन्यासक संगत आलोचनात्मक निर्णय थिक, मुदा आक्षेपकक मृत्युकेँ तुरन्त आत्मज्ञानक सिद्धि कहि देब अति-पाठ हएत।

मंच-क्रम	प्रत्यक्ष साक्ष्य	अवस्थापरिवर्तन	समीक्षात्मक सीमा
भूमिका	वाचस्पतिक सभा; आक्षेपकक पुनरागमन	साठि बरखक संशय सार्वजनिक कएल	अन्तरालक बाह्य घटनाक विस्तार नहि
प्रथम अंक	केशव वृद्धक प्रवेश करबैत; बुधुआ पहिचानैत	अतिथि पुरान प्रतिपक्ष बनैत	यात्राक विवरण स्मृतिपर आधारित
दोसर अंक	तीन ख्यातिवाद; ज्ञाताक प्रश्न	शास्त्रीय उत्तर निजी संकटमे बदलैत	मतभेद सत्य-अभावक प्रमाण नहि
तेसर अंक	बुधुआ तीन मृतकक नाम लैत	प्रमाणवादसँ साक्षी-नीतिक मोड़	तीन सामाजिक घटनाक कारण अलग
चतुर्थ अंक	आक्षेपकक मृत्युक बाद चानी-सन उजास	अन्तिम वाक्य अनुत्तरित; चमत्कार देखल	उजासक तात्त्विक कारण अज्ञात
उपसंहार	अन्त्येष्टि; “राकश” नाम; गाछक जनश्रुति	व्यक्तिगत प्रश्न सामुदायिक स्मृतिमे	जनश्रुति तथ्यक स्वतन्त्र पुष्टि नहि

समय : साठि बरखक सारांश आ संझाक एक दृश्यक व्यतिक्रम

जेरार जनेटक समय-विवेचनक शब्दावली अपनायल जाए तँ कथा-कालक साठि बरख संक्षिप्त स्मरणमे आ दृश्य-कालक किछु घड़ी विस्तारित संवादमे प्रस्तुत अछि। सूत्रधार आरम्भमे दीर्घ अतीतक सारांश देबैत छथि; बुधुआ बादमे ओहि स्मृतिक साक्षी बनैत छथि; उपसंहार मृत्युक बादक अन्त्येष्टि आ वर्षो-वर्ष चलबाक जनश्रुति दिस छलाँग दैत अछि। संझाक केसरिया आकाशसँ गहींर इजोर धरि परिवर्तित प्रकाश दृश्य-कालक घड़ी सेहो थिक। नाटकक औपचारिक चारि अंक जतय समयकेँ विभाजित करैत अछि, ओतहि आक्षेपकक कमैत श्वास कालक अपरिवर्तनीयता अनुभूत करबैत अछि। कथा मृत्युक ठीक दिन वा वर्ष, वाचस्पतिक सभासँ उदयनक मठ धरि संक्रमणक परिशुद्ध ऐतिहासिक सन् नहि दैत अछि; अतएव साठि बरखक स्मृतिसँ बाह्य इतिहासक निश्चित समयरेखा सिद्ध नहि कएल जा सकैत। ई काल-संक्षेपक उपलब्धि अछि जे शास्त्रार्थक पीढ़ीगत जीवन देखबैत अछि, मुदा अनेक वर्षक यात्रा ओहि एकाधिक कथनपर आश्रित रहैत अछि।

“के बजैत अछि” आ “के देखैत अछि” : कथावाचकक स्तरिकरण

आरम्भिक सूत्रधार सीधे पाठक-दर्शकसँ प्रश्न करैत छथि—“अहाँकेँ मोन होएत”—आ पूर्वाध्यायक विषय याद करबैत छथि। ई बाह्य व्यवस्थापक आवाज थिक, पात्रक निजस्व अनुभव नहि। आँगनक मुख्य नाट्यमे संवाद स्वयं पात्रक कथन अछि; मंचनिर्देश देखल स्थिति बतबैत अछि, पर ओकरा कोनो एक पात्रक सम्पूर्ण अन्तःकरणक प्रत्यक्ष ज्ञान नहि मानब चाही। केशव आक्षेपकक पहिचान नहि जनैत छथि; बुधुआ स्वरक आधारपर चिन्हैत छथि; उदयन गुरु-परम्पराक वृत्तान्तसँ हुनकर नाम-स्वर जानैत छथि। एहि तीन प्रकारक ज्ञानमे प्रत्यक्ष, स्मृति आ परम्परागत शब्दक भेद रचना बिना सिद्धान्तक लेबल चिपकौने देखबैत अछि। अन्तमे केशव उजास देखि डेराइत छथि, उदयन “हम नहि जनैत छी” स्वीकारैत छथि, बुधुआ ओकरा संशयक स्मारक मानैत छथि। एकहि असामान्य घटनाक तीन प्रतिक्रिया पाठककेँ कोनो एक सर्वज्ञ व्याख्यापर निर्भर नहि करैत।

आक्षेपक : स्थिर मतक बदला प्रश्न करबाक अधिकार

आक्षेपकक चरित्र सात अध्यायक बाद केवल पुरान शास्त्रार्थक पुनरागन्तुक नहि, बल्कि अपन प्रश्नक मूल्यपर संशय करैत जीवित व्यक्ति बनैत अछि। “ई प्रश्न शास्त्रार्थक हेतु नहि, स्वयं हमरे हेतु अछि” कहैत ओ वादक सार्वजनिक पुरस्कारसँ जीवनक निजी संकट दिस मुड़ैत छथि। दोसर अंकमे ओ ज्ञानक पद्धति निस्सार मानि नहि लैत छथि; ओ मानैत छथि जे अन्यथाख्याति सिद्धान्तसँ सहमति अछि, मुदा सम्पूर्ण जीवनक भ्रम आ ज्ञाताक वास्तविकताक प्रश्न अलग शेष अछि। ई प्रतिपक्षकेँ विचारहीन नास्तिक अथवा बाधक बनायबासँ बचबैत अछि। तथापि अन्तिम क्षणक “हम ... स्पष्ट देखि रहल छी”क बाद हुनकर वाक्य टुटि जाइत अछि। रचना जानि-बुझि अन्तिम उत्तरकेँ स्थगित करैत अछि, जबकि चानीक उजास पाठकीय प्रलोभन उत्पन्न करैत अछि जे से उत्तर भेटि गेल। एहि द्वैधमे चरित्रक गरिमा प्रश्नक अबाध अधिकारमे अछि, न कोनो सम्प्रदायमे आत्मसमर्पणमे।

उदयनाचार्य : मतान्तरसँ संवाद आ स्वीकारल अज्ञान

उदयन अन्यथाख्यातिक स्पष्टीकरण दैत शंख आ रजतक वास्तविक भिन्नता आ त्रुटिपूर्ण बोधक मिश्रणपर जोर दैत छथि। आक्षेपक अन्य व्याख्या उपस्थित करैत छथि, तखन उदयन कहलनि जे मतभेद भ्रमक वास्तविक अनुभूतिक सर्वथा निषेध नहि; ओकर आन्तरिक क्रिया-व्यवस्थापर विवाद होइत अछि। ई विवाद-संरचनामे न्यूनतम सहमतिक खोज थिक, सम्पूर्ण तत्त्वनिर्णय नहि। बुधुआ उत्तर देबाक आग्रह करैत छथि तखन उदयन आचार्य-सत्ताकेँ रोकि हुनका बाजबाक अनुमति दैत छथि—मंचपर भाषण-अधिकारक ठोस पुनर्वितरण। एहि कार्यक अन्तिम परीक्षा चतुर्थ अंकमे अबैत अछि: प्रकाश देखि शिष्य पुछैत अछि, उदयन “हम नहि जनैत छी, केशव” बजैत छथि। ज्ञानक सीमा स्वीकारब एतय नैतिक उपलब्धि अछि। मुदा हुनकर परवर्ती “शायद” वाला व्याख्या स्वयं अनुमान अछि; ई घटना-कारणक सत्यापित प्रमाण नहि, पात्रक अर्थारोपण थिक।

बुधुआ : सेवकक आवाजसँ साक्षीक नैतिक अधिकार धरि

बुधुआ अपन सेवकत्वक अनुभवकेँ मात्र विनयशील परम्परा नहि बनबैत छथि। अध्याय –९४मे भूखसँ सोहनक मृत्यु देखलाक बाद एतय ओ नाम लैत छथि—“हुलासा, जीवन्ती, सोहन”—आ कहैत छथि जे प्रमाणक औपचारिक यन्त्र देरीसँ पहुँचैत रहल, मुदा साक्षी बनबाक निर्णय स्थगित नहि कएल जा सकैत। ई निर्णायक कथात्मक मोड़ अछि। नाटकक तेसर अंकमे आचार्यक अनुमति मांगि बुधुआ बोलैत छथि; सामाजिक पदानुक्रम कायम रहितहु विषयक नैतिक केन्द्र मठाधीशसँ सेवक दिस सरकैत अछि। ओ ज्ञानकेँ व्यर्थ नहि कहैत छथि; ज्ञानक क्रियात्मक सीमापर ध्यान दैत छथि। स्मृति आ प्रेम पर बल दैत हुनकर कथन आत्मतत्त्वक दार्शनिक सिद्धि नहि, अनुभवजन्य उत्तरदायित्वक आग्रह अछि। एकर आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि: मृत तीनू व्यक्तिक नाम बुधुआक स्मरणमे अछि, मुदा एहि मंचपर हुनकर अपना स्वर नहि सुनाइत। पीड़ितक नामकेँ उद्धृत करब आ हुनका प्रतिनिधित्वक स्वतन्त्र अधिकार देब एकहि बात नहि।

भ्रम-सिद्धान्त आ नव्य-न्यायक यथार्थ परीक्षण

नाटकमे अन्यथाख्याति, अख्याति आ अनिर्वचनीयख्याति तीन भिन्न शास्त्रीय धारणाक रूपमे उपस्थित अछि। न्याय-वैशेषिकक दृष्टिमे शंखक प्रत्यक्ष आ अन्यत्र देखल रजतक स्मृतिजन्य आरोपक सम्बन्ध तथा प्राभाकरक भेद-अग्रहणक सिद्धान्तकेँ एकसर करब अनुचित। अद्वैतक अनिर्वचनीयख्याति सेहो बोधक यथार्थ-अयथार्थ स्थिति सम्बन्धी विशिष्ट दार्शनिक प्रस्ताव थिक, सामान्य “दुनू सत्य” अथवा “दुनू असत्य” नहि। पाठक पात्र आ नाटकपश्चात् व्याख्यामे एहि मतसभक संक्षिप्त साहित्यिक रूप उपस्थित अछि; मूल ग्रन्थ-परम्पराक समग्र इतिहासक स्थानापन्न नहि। आक्षेपकक अनुमान “भिन्न सम्प्रदाय असहमत छथि, तेँ सत्यक निर्णय असम्भव”मे पक्ष—भ्रमक तात्त्विक स्वरूप; हेतु—व्याख्याक बहुलता; साध्य—निर्णय-असम्भवता; व्याप्ति—जतय मतभेद ततय प्रमाणक असफलता—ई अन्तिम व्याप्ति सिद्ध नहि। मतभेदक अस्तित्वसँ प्रत्येक प्रमाण मिथ्या भऽ जायत से निष्कर्ष अनिवार्य नहि। उदयनक प्रतिवाद एहि हेत्वाभासक सीमा पकड़ैत अछि, मुदा जीवन-मृत्यु वा ज्ञाताक अस्तित्व स्वतः सिद्ध नहि करैत।

प्रश्नक रूपान्तरण : ज्ञान-प्रमाण आ इच्छाक व्यावहारिक भेद

आक्षेपक सोझे पुछैत छथि जे सम्पूर्ण जीवन जँ भ्रम होइ तँ “ओहि भ्रमक ज्ञाता के छल?” ई प्रश्नक उत्तर बुधुआ प्रमाण-विवादक भीतर नहि, साक्षी बनबाक मानवीय निर्णयमे रखैत छथि। आक्षेपक तुरन्त प्रतिवाद करैत छथि —“ई तँ ज्ञानक प्रश्नक उत्तर नहि”—आ बुधुआ एकर प्रत्यक्ष स्वीकृति दैत छथि। एहि स्वीकारोक्तिकेँ ध्यानमे रखब अनिवार्य अछि। रचना एतय ज्ञानमीमांसाक तत्त्व-समस्या हल नहि करैत, अपितु ओकरा नैतिक कार्यक्षेत्रसँ भिन्न करैत अछि। शास्त्रीय दृष्टिएँ प्रत्यक्ष वा अनुमानसँ सत्य-वस्तुक ज्ञान पाबय आ स्मृतिक रक्षा करबाक निर्णय भिन्न प्रकारक दाबी छथि। “प्रमाण चुप” होइतहि ई सिद्ध नहि जे प्रमाणक विरोधी वस्तु सत्य अछि; केवल ई स्पष्ट होइत अछि जे आचरणक कर्तव्यक निर्णय हर बेर पूर्ण दार्शनिक निश्चितताक प्रतीक्षा नहि करि सकैत। ई सूक्ष्म भेद अध्यायक सफलतम विचार-प्रवाह थिक।

प्रतीक : शंखक स्वयं-मूल्य आ चानीक मोह

शंख-रजतक उदाहरण साधारण भ्रामक दर्शनसँ अस्तित्वक रूपक बनैत अछि। बुधुआ आक्षेपककेँ कहैत छथि जे शंख चानी नहि होइतहु अपन मूल्य रखैत अछि, कारण ओ शंख अछि आ ककरो हाथमे अछि। रचनाक एहि परिवर्तनमे वस्तुक सत्यक बदला अस्तित्वक मोलक अनुभव प्रवेश करैत अछि। अद्भुत पक्ष ई जे मृत्युक बाद ओकर आँखिक कातसँ चानी-सन उजास निसरैत अछि। जे रजत पहिने गलत पहिचानक प्रतीक छल से अखन प्रश्नक चमक बनल देखाइत अछि। एहि रूपान्तरणक आकर्षण संग आलोचनात्मक तनाव सेहो अछि: जँ शंखकेँ शंख रूपमे देखबाक नैतिक आग्रहमात्र पर्याप्त अछि, तँ अन्तमे चानी-सन अलौकिक दृश्य पाठककेँ पुनः चमत्कारिक उत्तरदिस किएक लऽ जाइत अछि? ई विरोध अभिप्रेत अन्तर्पाठीय विडम्बना भऽ सकैत अछि, मुदा मूल पाठ ओकर एकमात्र समाधान नहि दैत। अतएव उजासकेँ सिद्ध आत्मा वा सत्यक प्रत्यक्ष प्रमाण कहब पाठसँ आगाँ बढ़ब हएत।

मृत्यु, अस्वाभाविक आख्यान आ सम्भावित संसारक नियम

चतुर्थ अंकमे आक्षेपकक श्वास टुटैत अछि; मंच-निर्देश हुनकर मृत्यु प्रस्तुत करैत अछि। तकर तुरन्त बाद नन्हकी चानी-सन इजोर हवामे उठि पीपर दिस बढ़ैत अछि। यथार्थवादी दृश्य-व्यवस्थामे ई असाधारण घटना थिक; जँ कथा एकरा जादुई-सामाजिक विश्वक स्वीकृत नियम मानैत अछि तँ अस्वाभाविक आख्यानक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा रचना ओकरा सभ पात्रक एकमत ज्ञान नहि बनबैत: केशव प्रश्न करैत छथि, उदयन आश्चर्यसहित अज्ञान स्वीकारैत छथि, बुधुआ स्मारकक अर्थ दैत छथि। वास्तविक ‘देखल गेल’ आ ‘की अर्थ अछि’ बीच दूरी बचल अछि। एहि दू स्तरकेँ अलग न कएलासँ असामान्य दृश्यकेँ दार्शनिक तत्त्वक प्रमाण मानबाक भूल होएत। गाममे बादमे “राकश” नाम देब अलौकिक वस्तुक प्रकृतिसिद्ध वर्गीकरण नहि, लोकसमुदायक नामकरण-क्रिया थिक। एहि नामक ध्वन्यात्मक वा सांस्कृतिक व्युत्पत्ति मूल दृश्यसँ स्वतन्त्र सिद्ध नहि होइत।

पीपरक साक्षी-वृक्ष : स्थानक सामाजिक रूपान्तरण

अध्याय –९४मे सोहनक मृत्यु पछाति पीपरक साक्षी-वृक्ष बनबाक प्रस्ताव उठल छल। एहि अध्यायमे ओकर छाह आगन्तुक आक्षेपकक अन्त्येष्टिक स्थान बनैत अछि, आ उजासक जनश्रुति सेहो ओकरे चारू कात फैलैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ गाछ एकटा चल-अचल प्रतीक नहि, स्मृतिक स्थानिक अभिलेख बनैत अछि। जे कथा मठक आँगनमे घटैत अछि, से वृक्षक जड़ि लग सामुदायिक स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि। नदी, पोखरि अथवा पानिक सक्रिय आपदा एतय मुख्य घटना नहि; पिछिला अध्यायक जल-आपदाक नाम स्मृति-परम्परामे आबि रहल अछि। पर्यावरणीय आख्यानक दृष्टिसँ पीपर मानवीय निर्णयक प्रत्यक्ष कर्ता नहि, मुदा पीढ़ी-दर-पीढ़ी साक्ष्य समेटबाक भौतिक स्थल अछि। एकर साहित्यिक शक्ति एही सामाजिक टिकाउपनमे अछि; गाछ स्वयं सिद्धान्तक फैसला नहि सुनबैत।

कथनक नैतिकता : पीड़ितक नाम आ मृतकक मौन

बुधुआक वाणीमे हुलासा, जीवन्ती आ सोहनक संयुक्त उल्लेख अतीतक तीन भिन्न दुर्घटनाकेँ नाटकक वर्तमानमे आनैत अछि। हुलासाक अधूरा लेखन, जीवन्तीक जल-अन्तर्धान आ सोहनक भूख—ई सभ तथ्य कथात्मक स्तरपर अलग प्रसंग छथि। हुनका एक दार्शनिक सूत्रमे समेटनाइ स्मृतिगत सम्पर्क रचैत अछि, मुदा एक-एक मृत्यु केर विशिष्ट प्रशासनिक वा सामाजिक कारणक अनुसन्धानकेँ विस्थापित सेहो करि सकैत अछि। विशेषत: सोहनक मृत्यु समयपर अन्न-वितरण नहि भेलाक विफलतासँ जुड़ल कहल गेल छल; एतय ओकर नाम “प्रमाणक देरी”क व्यापक रूपकमे समा जाइत अछि। पीड़ितक गरिमा कायम रखबाक लेल आलोचनाकेँ ई भेद बचायब चाही: सभ मरण एकटा प्रमाण-विफलताक समान उदाहरण नहि। आक्षेपकक अन्तिम वाक्य टूटबाक कारण मृतकक तरफसँ पूरा प्रतिवचन अनुपस्थित अछि। लेखक ओकरा पूरा नहि करैत, ई नैतिक संयमक चिह्न सेहो बनि सकैत अछि।

गीत, ध्वनि आ रस : खुलल प्रश्नक लयबद्ध समाप्ति

उपसंहारक गीत आरम्भिक फकराक शब्द फेर अनैत अछि: प्रश्न थाकैत नहि, उत्तरसँ डरबाक नहि। पुनरुक्ति अध्यायक वृत्ताकार आकार दृढ़ करैत अछि; कथा शंख-रजतक पहिल दृश्यसँ पुन: शंख धरि घुरैत अछि। करुण रस वृद्ध आक्षेपकक मृत्युमे उभरैत अछि, अद्भुत रस चानी-सन उजासमे, आ शान्तक सम्भावना बुधुआक “संशय आब आराम केलक”क कथनमे अछि। मुदा आक्षेपक वास्तवमे निश्चित उत्तर पओलनि कि नहि, ई नाटक जानि-बुझि अपूर्ण रखैत अछि। तेँ शान्तक पूर्ण निष्पत्ति घोषित करब असंगत। ध्वन्यात्मक रूपमे “थिर उत्तर” बनाम “फेर पुछै”क द्वन्द्व महत्त्वपूर्ण अछि: प्रश्न स्थिर उत्तरकेँ तोड़ैत नहि, ओकर परीक्षा करैत अछि। गीतक सीमा ई जे तर्कक जटिलता किछु सरल उत्साहवर्धक पंक्तिमे समेटल जाइत अछि; तथापि मृत्युक उदास मंचदृश्यसँ सामुदायिक स्मृति दिस संक्रमण करबामे गीतक कार्य रचनात्मक अछि।

अन्तर्पाठीयता आ इतिहास : मिथिलाक शास्त्र आ साहित्यिक पात्र

वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, न्याय-वैशेषिक, प्राभाकर मीमांसा आ अद्वैत वेदान्तक उल्लेख साहित्यिक विश्वकेँ दीर्घ दार्शनिक परम्परासँ जोड़ैत अछि। मुदा एहि अध्यायमे उदयनक कथित संवाद वा बुधुआ–आक्षेपकक साठि बरखक भेट-घाटकेँ प्रमाणित ऐतिहासिक घटना मानब अनुचित। ई उपन्यास-निर्मित संवाद, जे शास्त्रीय नाम आ अवधारणा लेइत अछि। नाटक-पश्चात् “शंख-रजतक भ्रम-सिद्धान्तक सम्प्रदायगत मतभेद” शीर्षक टिप्पणी स्वयं कथानक नहि; ई लेखकद्वारा देल व्याख्यात्मक सहायक सामग्री थिक। एहि सामग्रीमे न्यायदर्शन, प्राभाकर आ अद्वैतक भेद बताओल गेल अछि। एकरे संस्कृत मूल ग्रन्थक शब्दशः अनुवाद घोषित करबाक लेल पृथक संस्करण-सत्यापन चाही। विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टिकेँ एतय शास्त्रक साथ लोकसाक्षीक प्रसंगमे उपयोगी मानि सकैत छी: सेवक बुधुआक अनुभव महत्त्व पबैत अछि, मुदा हुनकर दृष्टि सेहो मृतकक स्थानापन्न नहि भऽ सकैत।

सूचनाक वितरण : नव पाठक आ पुरान पाठकक असमान ज्ञान

जे पाठक अध्याय –१०० सँ क्रमशः आबैत छथि, हुनका आक्षेपकक नाम, भ्रमक उदाहरण आ बुधुआक गवाहीसँ सम्बन्धित पूर्वभूमि भेटैत अछि; एतय सूक्ष्म शब्द मात्रमे पुरान जीवनक पुनरावृत्ति सेहो होइत अछि। मुदा स्वतन्त्र रूपसँ अध्याय –९३ पढ़निहार पाठककेँ तीन मृत व्यक्तिक प्रसंग सूत्ररूपेँ भेटत, ओकर पूरा कारणात्मक इतिहास नहि। ई संक्षेप रचनाक दीर्घ-आख्यानात्मक फायदा आ जोखिम दुनू अछि। सूत्रधार “अहाँकेँ मोन होएत” कहि पाठकक स्मृति सक्रिय करैत छथि, किन्तु ई मानि लैत छथि जे पाठक पूर्वाध्याय देखिकऽ आयल अछि। उपसंहार चन्ना गाछीक कबड्डी आ राकशक इजोरक भविष्यसूचना दैत अछि; एहि सूचना केँ अन्तक निश्चित पुष्टि कहब गलत, किएक तँ से भविष्यत् पाठक लेल आगामी कथात्मक परीक्षणक वचनमात्र अछि। कथा संशयक अन्तक बदला ओकर रूपान्तरण निर्धारित करैत अछि।

आलोचनात्मक निर्णय : उपलब्धि, सीमा आ अगिला कथात्मक मोड़

ई अध्याय पूर्वक दार्शनिक बहसकेँ मृत्यु, स्मृति आ सेवकक नैतिक आवाजसँ जोड़बाक कारण उल्लेखनीय अछि। आक्षेपकक प्रश्नक निजीकरण, बुधुआक सामाजिक स्मृति, उदयनक अज्ञान-स्वीकार आ लोकविश्वासक स्वायत्तता रचनाक शक्ति छथि। सबसँ पैघ उपलब्धि ई जे तर्कक असहमतिकेँ तर्कक नाश नहि मानल गेल; मृत्यु-क्षणक अपूर्ण वाक्य निश्चितता पर संयम रखैत अछि। मुख्य सीमा ई अछि जे साठि बरखक बौद्धिक यात्राक अधिकतर भार सूत्रधारक दावीपर अछि, आक्षेपकक मध्यवर्ती जीवन-दृश्य पर नहि; हुलासा–जीवन्ती–सोहनक अलग सामाजिक कारण एक नैतिक सूत्रमे अतिशय संकुचित भऽ सकैत अछि; चानी-सन उजासक काव्यात्मक सफलता ओकरा चमत्कारिक समाधानक भ्रामक प्रभाव सेहो दैत अछि। नाटकक अन्तिम गीतक “जीतल” शब्द आक्षेपकक मृत्युक अनुत्तरित वाक्यसँ पूर्ण संगति नहि बनबैत—एकरा खुलल प्रश्नक विडम्बना मानि आलोचनात्मक रूपेँ पढ़बाक चाही। आगामी अध्याय –९२मे शिष्य केशवक जीवन आ गामक न्याय-प्रक्रिया आगू बढ़ैत अछि; तेँ एतय अर्जित नैतिक समझ वास्तविक संस्थागत क्रियामे कतेक उतरैत अछि, से अगिला सशक्त परीक्षण हएत।

अध्याय ११३ : मूल पाठमे प्रत्यक्ष मिलाओल साक्ष्य-सूचक

भूमिका, सूत्रधार — “बहुत बरख पहिने, वाचस्पति मिश्रक वाद-शालामे”।

पात्र-परिचय — “शिष्य केशव — उदयनक युवा शिष्य”।

स्थान — “मठक पाछाँक एकटा शांत आँगन”।

प्रथम अंक, केशव — “अपन नाम नहि बतबैत छथि”।

प्रथम अंक, बुधुआ — “साठि बरख भऽ गेल”।

प्रथम अंक, आक्षेपक — “ई प्रश्न शास्त्रार्थक हेतु नहि, स्वयं हमरे हेतु अछि”।

प्रथम अंक, आक्षेपक — “मृत्यु की थिक? भ्रमक अंत”।

दोसर अंक, उदयन — “भ्रम मिथ्या ज्ञान थिक, मिथ्या वस्तु नहि”।

दोसर अंक, आक्षेपक — “तीनू सम्प्रदाय, तीन उत्तर”।

दोसर अंक, आक्षेपक — “ओहि भ्रमक ज्ञाता के छल?”।

तेसर अंक, बुधुआ — “ई प्रश्न शास्त्रक नहि, जीवनक अछि”।

तेसर अंक, बुधुआ — “हुलासा, जीवन्ती, सोहन”।

तेसर अंक, आक्षेपक — “ई तँ ज्ञानक प्रश्नक उत्तर नहि”।

तेसर अंक, बुधुआ — “शायद अहाँक प्रश्नक उत्तर ज्ञानमे नहि अछि”।

तेसर अंक, बुधुआ — “केवल शंखकेँ शंख रूपमे देखू”।

चतुर्थ अंक, आक्षेपक — “हम साठि बरखमे पहिल बेर, किछु स्पष्ट देखि रहल छी”।

चतुर्थ अंक, मंचनिर्देश — “श्वास टूटैत अछि”।

चतुर्थ अंक, मंचनिर्देश — “चानी सन उजास फूटैत अछि”।

चतुर्थ अंक, केशव — “ई की अछि?”।

चतुर्थ अंक, उदयन — “हम नहि जनैत छी, केशव”।

चतुर्थ अंक, बुधुआ — “संशय आब आराम केलक”।

उपसंहार — “राकश”।

उपसंहार — “चन्ना गाछीक कबड्डीमे”।

नाटक-पश्चात् टिप्पणी — “अन्यथाख्याति, अख्याति आ अनिर्वचनीयख्याति”।

प्रकरण ९ । मूल अध्याय –९२ — जल-घड़ीक कैदी

अध्याय –९२ “जल-घड़ीक कैदी” खण्ड–०क नवम मूल अध्याय थिक। मूल संयुक्त उपन्यासक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ-पृष्ठ १३१ आ अगिला अध्याय –९१ “चर्मकार टोलाक उजास”क आरम्भ-पृष्ठ १३८ अछि; एहि हिसाबेँ पृष्ठ-सन्दर्भ १३१–१३७ थिक। ई स्रोत-अनुक्रमणिकाक मुद्रित पृष्ठ-सीमा अछि, एहि संयुक्त वर्ड दस्तावेजक स्वचालित पृष्ठदृश्य अथवा स्वतन्त्र छापल प्रतिक पुनर्गणना नहि। “तीव्र-संकेत”क अर्थ क्रियापरक अनुच्छेदक यान्त्रिक अनुपात मात्र थिक; एकरा प्रत्यक्ष घटना प्रति हजार शब्दक प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत। प्रस्तुत विवेचन एहि प्रश्नक संग सामाजिक न्याय, सूचनाक असमान वितरण आ समयक संस्थागत नियन्त्रणकेँ जोड़ैत अछि।

कथा-रूपक परिवर्तन : शास्त्रार्थक मंचसँ गामक न्यायसभा धरि

अध्याय –९३ धरि नाट्यविधानक पात्र-सूची, अंक आ मंचनिर्देश प्रबल छल। नव अध्याय आरम्भे अपन रूपक घोषणा करैत अछि—“एकटा उपन्यास-अंश; नाट्य-रूपसँ हटि, कथाक रूपमे।” ई केवल सजावटी बदलाव नहि। एतय आलोचनात्मक केन्द्र तत्त्वक परिभाषा सँ हटि न्याय-व्यवस्थाक दिनचर्या, खेतक सिंचाइ, ऋणक प्रभाव आ बोलबाक बारीपर आबि जाइत अछि। पहिल पुरुषमे सम्बोधित करैत कथावाचक “हम आइ कहय जा रहल छी” कहि अपन कथाकाल आ सुनबैत कालक भेद स्पष्ट करैत छथि। पिछला अध्यायक युवा शिष्य केशव एतय आचार्य केशव बनि गेल छथि; गुरुक दार्शनिक परम्परा आब न्याय-प्रक्रियामे उतरि रहल अछि। बुधुआ एक बेर फेर शंखधारी साक्षी छथि, मुदा हुनकर भूमिका दार्शनिक प्रश्नक साक्ष्यसँ बदलि सामाजिक अवकाशहीनताक साक्ष्य बनैत अछि। अतएव अध्याय पूर्वक दार्शनिक बहसक निरन्तरता सेहो थिक आ ओकर व्यावहारिक परीक्षा सेहो।

काल-स्थानक स्थापना : “नारिकेल-घाट” आ भविष्यक “गढ़ नारिकेल”

कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे घटनाक समय गामक नाम “नारिकेल-घाट” छल; “गढ़” शब्द बादक बाढ़ि-निवारण बान्ह निर्माणसँ जुड़त। वर्तमानक गढ़ नारिकेल आ अतीतक नारिकेल-घाटक बीच ई नामान्तर पाठककेँ भविष्यक कालदिस आगू पठबैत अछि, मुदा वर्तमान घटना तत्कालीन गाममे केन्द्रित रहैत अछि। जोड़ी पोखरिक दुइ हिस्सा—गहींर आ उथिल—आ नाहर द्वारा ओकर जोड़ क्षेत्रीय जल-व्यवस्थाक ठोस विन्यास बनबैत अछि। पीपरक साक्षी-गाछ, नारिकेल-पाँति आ कमला-बलानक मोड़ एकदम भौतिक स्थल छथि; एकरा खाली प्रतीक कहि छोड़ब अनुचित। गामक राजकीय इतिहास नहि, जीवनोपार्जनक स्थानीय भूगोल पहिने अबैत अछि। माछ पकड़निहार धीवर, धान उगबनिहार सुखदेव, भैंस आ पानिक उपयोग—एहि सभकेँ एक संग रखला सँ बुझाइत अछि जे नाहरपर अधिकार एकटा परिवारक निजी झगड़ा नहि, सामुदायिक जीविकाक प्रश्न होइत अछि।

कारणात्मक घटना-मानचित्र : नाहरक अवरोधसँ मृत्युक बादक नियम धरि

पहिल अवस्था—सुखदेवक आधा बीघा खेतक सिंचाइ जोड़ी पोखरिसँ जुड़ल नाहरपर निर्भर अछि। दोसर—उग्रसेनक आदमी सभ नाहर बन्द करैत अछि आ पुरखाक स्वामित्वक दावा करैत अछि; खेत आ पशुक जलापूर्ति संकटमे पड़ैत अछि। तेसर—सुखदेव पुरान बटवारा-पत्र लऽ न्यायसभामे अबैत छथि, मुदा विवाह-विवाद,

राजकर्मचारीक प्राथमिकता आ वकीलक तकनीकी आपत्ति हुनकर सुनवाई घिचैत अछि। चारिम—गरमी आ जलाभावक बीच सुखदेवक खेत, कजरी भैंस आ स्वयं देह कमजोर पड़ैत अछि; हुनकर आरम्भ कएल वाक्य “आचार्य, हमर बेटी...” अधूरा रहैत अछि आ सभामे ओ खसि पड़ैत छथि। पाँचम—बुधुआ हस्तक्षेप करैत छथि, केशव प्रक्रियाक सीमा बुझैत छथि आ तीन दिनसँ अधिक प्रतीक्षा करनिहारकेँ प्राथमिकता देबाक “सुखदेव-नियम” बनबैत छथि। छठम—व्यवस्थागत सुधार होइतो सुखदेवक जमीन उग्रसेनक मुनीमक हाथमे चलि जाइत अछि, मृतकक बेटीक नाम अभिलेखमे नहि रहैत आ “लोथ”क लोककथा अधूरा प्रतिवचनक स्मृति बनि रहैत अछि। एहि शृंखलामे नियम-निर्माण आखिरी समाधान नहि; मृतकक अनुत्तरित शिकायत कथाकेँ खुलल राखैत अछि।

घटना-क्रम	प्रत्यक्ष पाठमूल	अवस्थामे परिवर्तन	अनिर्णीत / आलोचनात्मक प्रश्न
स्थान-स्थापना	नारिकेल-घाट; जोड़ी पोखरि; पीपर	जल, खेत आ सामुदायिक सुनवाई एक स्थलमे	भविष्यक गढ़ नाम कथाक समयसँ बादक
नाहर रोकब	उग्रसेनक आदमी जलप्रवाह रोकैत	सुखदेवक धान आ पशु संकटमे	स्वामित्व विवादक पूर्ण साक्ष्य नहि
प्रतीक्षा	बटवारा-पत्र; राजकर्मचारीक अग्रक्रम	अधिकार-दावा बारम्बार स्थगित	तीन बरख/तीन सप्ताह/छह सप्ताहक क्रम अस्पष्ट
सुनवाई अवरुद्ध	वकीलक नव तकनीकी आपत्ति	कटोराक समय प्रभुत्वक साधन	वकीलक स्वतन्त्र प्रतिपक्ष अल्प
मृत्यु	“आचार्य, हमर बेटी...” अधूरा	व्यक्ति जीवित साक्ष्य देबा सँ वञ्चित	चिकित्सकीय कारण निश्चित नहि
नियम-संशोधन	तीन दिनसँ अधिक प्रतीक्षाकेँ अग्राधिकार	केशवक संस्था बदलैत	जमीन मुनीमक हाथमे; क्षतिपूर्ति नहि
स्मृतिक आख्यान	“लोथ”; अनाम बेटी; साक्षी-गाछ	अनसुनल आवाज लोकश्रुतिमे बचैत	लोककथा प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण नहि

न्याय-प्रक्रियाक समय : समान घड़ी, असमान अवसर

घटिका-यंत्र पित्तरक छिद्रित कटोरा थिक; निर्धारित समय बीतलापर कटोरा पानिमे डूबि जाइत अछि। शास्त्रार्थमे वक्ताक अनन्त विस्तार रोकबाक उपकरण, गामक न्यायसभामे सत्तासम्पन्नक लेल बचावक युक्ति बनि जाइत अछि। वकीलक एक-एक तकनीकी प्रश्न नव घड़ी माँगैत अछि; सुखदेवक पक्ष कखनो पूरा खुलिते नहि। यंत्रक निष्पक्ष भौतिक चाल आ ओकर संस्थागत उपयोगक बीच अन्तर सँ अध्यायक सामाजिक विडम्बना निर्मित होइत अछि। “जँ हम आइ सुखदेवकेँ पहिने सुनब” कहैत केशव प्रक्रिया टूटबाक भय देखबैत छथि। मुदा न्यायकेँ समान अवधि देब आ समान रूपसँ सुनबाक अवसर सुनिश्चित करब एक नहि। कथात्मक उपलब्धि ई जे लेखक

अन्यायक आधार मात्र उग्रसेनक निजी दुष्टतामे नहि राखैत; मान्यता पओने नियमक भीतर अटकाओल आवाजो संस्थागत हिंसाक रूप धारण करैत अछि।

समय-संरचनाक द्वैध : विवादक छह सप्ताह आ पहिल आगमनक तीन बरख

पाठ कहैत अछि जे सुखदेव पहिल बेर तीन बरख पहिने सभामे आयल छलाह। तकर बाद तीन सप्ताह प्रतीक्षाक उल्लेख आ छह सप्ताह बीतबाक कथन अछि। ई विवरण पढ़िते स्पष्ट क्रमबद्ध व्यक्तिगत कैलेंडर तैयार नहि होइत: कि तीन बरख पहिने शुरू भेल लम्बा विवादक कोनो अन्तिम छह-सप्ताही चरण वर्णित अछि, अथवा कथा समय-सङ्कोचन करैत-करैत अन्तरालक पुल छोड़ि दैत अछि? पाठ एहि स्थलपर निश्चित उत्तर नहि दैत। तेँ समय-सम्बन्धी झरकल संकेतकेँ कथानकक एक सम्भावित ढीलापन कहि चिन्हित करब चाही; एकरा छिपाकऽ त्रुटिहीन कालक्रम घोषित करब उचित नहि। मुदा भावात्मक प्रभाव स्पष्ट अछि—“काल्हि आउ”क प्रत्येक दोहराव देहक अपरिवर्तनीय समय खाइत अछि। न्यायसभाक मनुष्यनिर्मित समय फेर लौटा सकैत अछि, खेतक सूखल मौसम आ मृत्यु-समीपक देह ओ समय नहि लौटा सकैत। ई टकराव अध्यायक वास्तविक कथन-कालक केन्द्र थिक।

कथावाचक, दृष्टिकेन्द्रण आ प्रमाणक श्रेणी

आरम्भक “हम” घटनाक समयसँ बहुत पाछाँ बैसल उत्तरकालीन कथावाचकक संकेत दैत अछि। ओ गामक भविष्यक नाम, बादक सुखदेव-नियम, आधुनिक फाइल आ अदालत-बरामदा धरि जनैत छथि। ई व्यापक ज्ञान पात्रसभक तत्कालीन ज्ञानसँ बेसी अछि। मुदा सुखदेवक अधूरा अन्तिम वाक्य स्वयं कथा पूरा नहि करैत; एहि स्थलपर कथावाचकक व्यापकता जानि-बुझि संयमित अछि। बुधुआक आँखि सँ प्रतीक्षा आ देहभंगिमा देखाइत अछि, केशवक अन्तःसंकट प्रश्नरूपेँ उभरैत अछि, मुदा उग्रसेन वा वकीलक स्वतन्त्र मानसिक दृष्टिकेन्द्रण बहुत कम अछि। “कहल जाइत अछि” सँ आरम्भ भेल भुतहा आकृतिक विवरण कथावाचकक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि, लोकश्रुतिक स्तर थिक। एहिमे प्रत्यक्ष दृश्य, पात्रक कथन, उत्तरकालीन निर्णय आ जनश्रुति—चारू प्रमाण-स्थितिकेँ अलग राखि पढ़ब आवश्यक अछि।

सुखदेव महतो : कर्ता, प्रतीक्षारत व्यक्ति आ बोलबाक विफलता

सुखदेव आरम्भमे केवल पीड़ित नहि छथि। हुनका खेत, परिवार, पुरान बटवारा-पत्र, भैंस आ स्पष्ट अधिकार-दावा अछि। सभामे समय पर पहुँचनाइ, दस्तावेज लऽ आनब, फेर-फेर उपस्थित होयब—ई सभ सक्रिय प्रयास छथि। मुदा शक्तिशालीक आपत्ति न्यायसभाक कार्यसूचीकेँ नियंत्रित करैत अछि आ सुखदेवक भूमिका सक्रिय अधिकार-दावेदारसँ चुप प्रतीक्षारत व्यक्तिमे घटैत जाइत अछि। “धूपमे, फेर छाँहमे” बैसनिहार देहक बिम्ब पीपरक जड़िसँ हुनकर साम्य रचैत अछि, जे बादमे मरल देह लग पुनः फिर्ती करैत अछि। ई प्रतीक दारुण अछि: जे व्यक्ति जीविकाक लेल न्याय खोजैत छलाह, अन्तमे स्वयं सुनवाई-व्यवस्थाक विलम्बक अभिलेख बनि जाइत छथि। मुदा कथा हुनका मृत्युक प्रत्यक्ष चिकित्सकीय कारण नहि बतबैत; गरमी, भुखमरी-सदृश दुर्बलता आ दीर्घ प्रतीक्षा कथासँ जुड़ल कारणात्मक प्रसंग छथि, चिकित्सकीय प्रमाणित निदान नहि।

“हमर बेटी...” : अधूरा वाक्यक नैतिक अधिकार

अन्तिम क्षणमे सुखदेव केवल “आचार्य, हमर बेटी...” बजि सकैत छथि। अगिला वाक्य अनुपस्थित अछि; गवाहीक प्रक्रिया एहि अनुपस्थितिमे टूटि जाइत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ ई अनुपस्थिति भयंकर अछि, किएक तँ मृतकक बेटी जीवित रहबाक कथा-संसारमे उपस्थित रहितो ओकर वास्तविक नाम गामक अभिलेखमे नहि आयल। मूल पाठक आरम्भमे बेटी अपन भैंसक नाम “कजरी” रखने छथि; कजरी भैंसक नाम थिक, बेटी स्वयं कजरी छथि—एहन निष्कर्ष गलत हएत। मृत्यु पछाति अनाम बेटी आ नामित पशुक विरोध समुच्चय-शैलीक सजावट नहि, अभिलेखीय चयनक प्रश्न थिक। लेखक बेटीकेँ अन्तिम वाक्यमे अपूर्ण राखैत छथि; न्याय करबाक अर्थ ओकर तरफसँ मनमाना कथा गढ़ब नहि। मुदा आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे बेटीक अपन बोली, अपन नामक दावेदारी आ सुखदेवक मृत्युपछाति सामाजिक संघर्ष एहि अध्यायमे विकसित नहि भेल अछि। मौनक चित्रण स्त्रीक वाणीकेँ स्वतः पुनःस्थापित नहि करैत।

उग्रसेन आ वकील : अन्याय केकर क्रियामे अछि?

उग्रसेन ठाकुरक प्रभुत्व जमीन, ऋण आ मुनीमक हिसाबसँ स्थापित होइत अछि। हुनकर आदमी नाहर बन्द करैत छथि; वकील स्वामित्व आ पुरान दस्तावेजक साक्षीपर प्रश्न उठबैत छथि। कानूनी प्रश्न पूछब मात्र अपराध नहि, मुदा एहि कथामे प्रश्न उठेबाक अनुक्रम, सुनवाई-पूर्व प्राथमिकता आ सूखैत खेतक परिणाम मिलि राजनीतिक अर्थ दैत अछि। वकील समय लेबाक क्षमता रखैत छथि; सुखदेव समयक नाश भोगैत छथि। एहिसँ प्रतिपक्षी प्रतिनिधित्वक सीमा सेहो देखाइत अछि: उग्रसेनक पक्षक सम्भावित वास्तविक दस्तावेज अथवा स्रोत-आधारित प्रत्युत्तर पाठककेँ पर्याप्त नहि भेटैत। लेखक अन्यायक संरचनाकेँ तीखगर बनबैत छथि, मुदा न्यायिक विवादक बहुविकल्पी तथ्य-परीक्षण अपेक्षाकृत सीमित रहैत अछि। ई आलोचना उग्रसेनक अवरोधक कथित परिणामकेँ निर्दोष ठहरबैत नहि; मात्र पाठक भीतर देल साक्ष्यक प्रकृति बतबैत अछि।

केशवक द्वन्द्व : करुण शिक्षकसँ दोषी प्रशासक धरि

केशव गुरुक परम्परासँ आएल, दयालु मुदा प्रक्रियासँ अधिक बान्हल व्यक्ति छथि। हुनकर अपना तर्कमे “क्रम टूटलासँ पूरा व्यवस्था टूटि जाइत अछि”क भय अछि। अतएव हुनका केवल निर्जीव खलनायक कहब पाठन्याय नहि; ओ नियमक सर्वोच्चता पर विश्वास करैत छथि, अपनहि निर्णयक परिणाम सँ विचलित होइत छथि, आ नियम-संशोधन सेहो करैत छथि। सुखदेवक मृत्यु पछाति हुनकर “हम गलत छलहुँ की?” प्रश्न कथात्मक रूपसँ निर्णायक अछि। ई अन्तर्मुखी पश्चात्ताप वास्तविक निर्णयमे बदलैत अछि, एहि कारण घटना केवल भावुक शोक नहि रहैत। तथापि नियम परिवर्तित कऽ देब न्यायिक क्षतिपूर्तिक स्थानापन्न नहि। सुखदेवक खेत फिर्ता देबाक प्रयत्न, मुनीमक कार्यवाही पर प्रश्न वा बेटीकेँ सुनवाईक अधिकार भेटबाक वर्णन एतय नहि अछि। अतएव सुधार संस्थागत परिमार्जन थिक, प्रतिकारक सिद्ध सम्पूर्णता नहि।

बुधुआक साक्षीधर्म : शंखक पानि आ मरणोत्तर असमर्थता

बुधुआ पूर्ववर्ती अध्यायमे अधूरा वाक्य आ मृतकक स्मृतिक सीमा देखनिहार सेवक रहल छथि। एतय ओ न्यायसभा लग बैसि सुखदेवक तीन सप्ताहक प्रतीक्षा नोटिस करैत छथि, केशवसँ प्रश्न करैत छथि, आ अन्तिम समय शंखसँ पानि पियाबय चाहैत छथि। मृत्यु पछाति सेहो शंख ओठ लग पहुँचाबय चाहब भावात्मक पुनरावृत्ति अछि, मुदा कथावाचक बतबैत छथि जे ओ स्वयं जनैत छथि—आब पानि नहि उतरि सकैत। एहि क्रियाक विफलता करुण रसकेँ तीव्र करैत अछि; किछु भूतपूर्व दुर्घटनाक समान, साक्षी सब किछु देखितो समय वापस नहि दे सकैत। बुधुआक मुख्य तर्क अछि—“समय स्वयं एकटा विलासिता थिक।” ई वाक्य न्यायसभाक सार्वभौम समय-नियममे असमान जीवन-परिस्थितिक व्यावहारिक प्रवेश करबैत अछि। मुदा बुधुआक साक्षीधर्मो मरल व्यक्तिक अपूर्ण आशयकेँ शब्दशः पूरा करबाक अधिकार नहि पबैत। स्मरण आ प्रतिनिधित्व एतय परस्पर निकट मुदा असमान क्रिया छथि।

नव्य-न्यायक कसौटी : अधिकार, हेतु आ व्याप्तिक परीक्षा

कथाक आधारपर प्रथम पक्ष—न्यायसभाक घटिका-प्रक्रिया—आ साध्य—निष्पक्ष सुनवाई—अलग राखब आवश्यक अछि। यदि केशवक तर्क एहि रूपमे बनाओल जाए जे “समान समयवितरणसँ न्याय निश्चित होइत अछि”, तँ पाठ एहिमे उपाधि देखबैत अछि: बोलबाक कुशलता, अधिकारक असमानता, राजकर्मचारीक अग्रक्रम आ बारम्बार तकनीकी आपत्ति वितरणक प्रतिफल बदलैत अछि। अतएव “समय सीमित कएल गेल” सँ “समान सुनवाई सुनिश्चित भेल”क अविनाभावी व्याप्ति सिद्ध नहि होइत। दोसर दिस, सुखदेवक पुरान बटवारा-पत्र प्रस्तुत भेनाइ दावाक साक्ष्य थिक, मुदा मात्र दस्तावेज उपस्थित भेला सँ स्वामित्वक अन्तिम निर्णय स्वतः प्राप्त नहि होइत; मूल विवादक पूर्ण अभिलेखीय परीक्षण पाठमे उपलब्ध नहि। तेसर, मृत्यु पछाति भूमि मुनीमक हाथ लगनाइ नियम-संशोधनक अपूर्ण प्रभावक प्रबल कथात्मक साक्ष्य थिक। ई विवेचन नव्य-न्यायक प्रमाण-संवेदनशील पद्धतिक साहित्यिक अनुप्रयोग मात्र अछि, कोनो ऐतिहासिक आचार्यक शब्दशः न्यायसूत्र नहि।

जल, मौसम आ मानवेतर कालक सक्रियता

कमला-बलानक पातर धार, पोखरिक उथिल भागक सूखब, नाहर बन्द होयब, कजरी भैंसक दुबराइब आ धानक बालिमे दाना नहि होयब—ई सभ अध्यायक कारणात्मक ढाँचामे सक्रिय घटक छथि। पर्यावरणक संकट स्वयं न्याय-प्रक्रियाक मनुष्यनिर्मित विलम्बकेँ हानिकारक बनबैत अछि: गर्मी आ जलाभावक समयमें हर अतिरिक्त दिन खेतक पुनरुत्पादनक सम्भावना कम करैत अछि। तेँ नदी “कथा-सुन्दरता”क पृष्ठभूमि मात्र नहि, मुदा नदीकेँ जानि-बुझि अन्याय करनिहार नैतिक कर्ता सेहो नहि मानल जा सकैत। प्राकृतिक ऋतु-चक्र आ अवरुद्ध जल-स्रोतक उपयोगक बीच सामाजिक सत्ता निर्णायक अछि। जोड़ी पोखरिक गहींर-उथिल खण्ड प्रकृतिक विविध अवस्था सूचित करैत अछि; नाहर ककर नियंत्रणमे अछि, से सामाजिक संरचना निर्धारित करैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानक उपलब्धि एहि दू स्तरक कारणात्मक संगतिमे अछि, मनुष्यमात्र दोषी वा प्रकृतिमात्र दोषी एहन आसान निश्चयमे नहि।

लोक-अभिलेख : साक्षी-गाछ, “लोथ” आ अभावक अर्थ

सुखदेवक मृत्यु पछाति पीपर लग अधखुजल मुँहवाली “लोथ” आकृतिक बात “कहल जाइत अछि”क रूपमे अबैत अछि। प्रत्यक्ष मृतकक वापसीक प्रमाण एतय उपलब्ध नहि; लोककथा ककरो बारी नहि आयलाक रूपक बनि रहैत अछि। बुधुआक टिप्पणी एहि भयकेँ सुनबाक जिम्मेवारी दिस मोड़ैत अछि। नव्य-न्याय सम्बन्धी अभाव-विवेचनक साहित्यिक स्तरपर दू अभाव अलग छथि—मृतकक अधूरा प्रतिवचनक अभाव, आ प्रशासनिक अभिलेखमे हुनकर बेटीक नामक अभाव। दुनूक कारण, प्रभाव आ सम्भावित समाधान भिन्न। लोकस्मृति पाठमे मृतकक प्रतिवचनक रिक्त स्थान सुरक्षित रखैत अछि, मुदा कानूनी रजिस्टरमे नाम स्वतः जोड़ि नहि दैत। पीपर साक्षी-वृक्ष बनि लोकइतिहासक गैरसरकारी संग्रहस्थान थिक; ओकर स्मरण-शक्ति मनुष्यक सामाजिक अभ्याससँ निर्मित प्रतीकात्मक अर्थ अछि, स्वतः ऐतिहासिक लेखबद्ध साक्ष्य नहि।

दीर्घ कालक छलाँग : स्थानीय पीड़ा सँ आधुनिक “फाइल” धरि

अन्तिम गद्यभाग अचानक बहु पीढ़ीक समयकेँ संक्षेपमे पार करैत अछि। “गढ़ नारिकेल” नाम स्थिर होइत अछि, चन्ना गाछीक सीमा लोकविश्वासमे अस्पष्ट होइत अछि, आ प्रतीक्षाक समकालीन रूप “तारीख, फाइल, आ अदालतक बरामदा” बनि उठैत अछि। ई कथन वर्तमान प्रसंगक बाद भविष्य-दृष्टि, ऐतिहासिक सारांश आ टिप्पणी—तीनूकेँ एक संग जोड़ैत अछि। लाभ ई जे सुखदेवक मृत्यु एकल करुण घटना नहि रहि समय-व्यापी प्रशासनिक अन्यायक नमूना बनैत अछि। सीमा ई जे सैकड़ों बरखक संस्थागत रूपान्तरणक ठोस मध्यवर्ती घटना बहुलांशे कथावाचकक घोषणापर निर्भर अछि। पीपरक जड़ि चन्ना गाछी धरि फैलल कि चन्ना गाछी स्वयं ओही वृक्षक विस्तार—पाठ “वा शायद” कहि अनिश्चितता स्वीकारैत अछि। एहि जनश्रुतिकेँ वास्तविक वनस्पतिशास्त्रीय तथ्य बनाओल नहि जा सकैत। एहि ठाम उपन्यासक मिथकीय काल आ ऐतिहासिक काल एक-दोसराकेँ छुअैत छथि, पूर्णरूपेँ एकरूप नहि होइत।

रस, ध्वनि आ लय : बूनिक नियमितता आ मृत्युकेँ छूटि गेल वाणी

अध्यायक आरम्भिक फकरा “बूनि-बूनि पानि खसै, बूनि-बूनि समय” भौतिक जल-बिन्दु आ मानवीय जीवनावधि बीच संगति बनबैत अछि। अन्तिम गीत फेर समय गनब आ नाम बचायबक विरोध उपस्थित करैत अछि; एहि आवृत्तिसँ आरम्भ आ उपसंहार एक-दोसराकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि। करुण रसक प्रधान विभाव सुखदेवक सुनवाई-विहीन मरण, हुनकर अधूरा वाक्य आ बुधुआक निरर्थक पानिदान अछि। भय आ अद्भुतक सीमापर “लोथ”क लोककथा अछि; मुदा ई कथाक नैतिक केन्द्रकेँ भय-रचनामे विलीन नहि करैत। ध्वनिक रूपमे घड़ीक डूबैत कटोरा केवल समय समाप्त नहि करैत—प्रश्न उठबयक अवसरक अन्त सेहो सूचित करैत अछि। गीतक कमजोर पक्ष ई जे “नाम थिर रहल”क कथन संग वास्तविक अभिलेखमे बेटी अनाम रहबाक विरोध रहैत अछि; एकरा गीतक उत्साहक सहज सार्थकता मानब उचित नहि। ई विरोध संयोगो भऽ सकैत अछि अथवा कविताक विडम्बनात्मक पढ़ाइक आमन्त्रण।

विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि : नामित शासक, अनाम पुत्री

मुख्यधाराक प्रशस्ति-इतिहास आ गामक स्मृति बीच पाठक संघर्ष स्पष्ट अछि। उग्रसेनक नाम, राजकर्मचारीक प्राथमिकता आ आचार्यक संस्था दस्तावेजी मान्यता पबैत अछि; सुखदेवक बेटी नामविहीन रहि जाइत छथि। लोकगीत, बूढ़बाक फकरा, साक्षी-गाछ आ “लोथ” प्रशासनिक अभिलेखकेँ चुनौती देबाक वैकल्पिक स्मरण-विधि छथि। मुदा समानान्तर इतिहास लिखबाक नामपर एहि लोकश्रुतिकेँ ऐतिहासिक प्रमाणक समान दर्जा देबो गलत हएत। स्रोतक दावेदार, कहनिहार, लाभार्थी आ मौन प्रभावित व्यक्ति—चारू अलग प्रश्न छथि। विशेष बात ई जे सुखदेव स्वयं बटवारा-पत्र नेने छथि: लिखित दस्तावेज सदिखन शोषकक उपकरण नहि; कखनो ओ कमजोरक अधिकारक मुख्य आधार होइत अछि। परन्तु दस्तावेज पढ़बाक बारी नहि भेटला पर ओकर प्रमाणिक सम्भावना व्यवहारमे शून्य भऽ जाइत अछि। एहि तरह कथा लेखनक विरोध नहि, लेखन-साक्ष्यक असमान प्रवेशक विरोध रचैत अछि।

संरचनात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायक सबसँ उल्लेखनीय उपलब्धि ई जे जल-घड़ीक साधारण दृश्यकेँ समयक राजनीतिक वितरणक संवेदनशील तर्कमे बदलैत अछि। न्यायसभाक नियम पर विश्वास करनिहार केशव मनुष्यमात्रक विरोधी नहि, मुदा हुनकर व्यवस्थाक परिणाम हानिकारक अछि; एहि सूक्ष्म अन्तरसँ संस्थागत त्रासदी बनैत अछि। सुखदेवक मृत्युक बाद तत्काल सुधार कथात्मक कार्य-परिणाम प्रदान करैत अछि, मुदा जमीनक हरण आ बेटीक अनामिकता सफलता-घोषणाकेँ रोकैत अछि। कमजोर पक्षमे तीन बरखक पहिल आगमन आ अल्पकालिक छह सप्ताहक अनुक्रमक अपूर्ण पुल, उग्रसेनक दस्तावेजी पक्षक अपर्याप्त स्वतन्त्र परीक्षण, मृतकक बेटीक प्रत्यक्ष स्वरक अनुपस्थिति आ भविष्यकालीन सामाजिक परिवर्तनक अत्यधिक सारांश उल्लेखनीय छथि। मृत्युकारणक सटीक चिकित्सकीय विवरण अनुपस्थित अछि, तेँ “प्रक्रिया सीधे मारलक” सन निर्णायक सूत्रक स्थानपर प्रक्रियागत विलम्ब, जलाभाव आ दुर्बलताक परस्पर सम्बन्ध अधिक प्रमाणसंगत अछि। दार्शनिक पृष्ठभूमिक उपयोग सफल तखन होइत अछि जखन तर्क सूखैत खेतक वास्तविक दुनियामे परीक्षण पबैत अछि—एहि अध्यायमे ओ परीक्षा तीव्र अछि।

अगिला अध्यायसँ सम्बन्ध आ समग्र शोधक प्रश्न

अध्याय −९१ “चर्मकार टोलाक उजास”क आरम्भे गामक चर्मकार टोला, ज्ञानक सामाजिक वितरण आ गंगेश-सम्बद्ध जनश्रुतिक कथा उठैत अछि। −९२क सुखदेवक सुनवाई-बाधा आ −९१क ज्ञानक श्रेणीकरणक बीच एक समान प्रश्न अछि: कोन व्यक्तिक शब्दकेँ प्रमाणक अवसर भेटैत अछि? मुदा एहि अगिला अध्यायक स्वतन्त्र सामाजिक प्रसंगकेँ पूर्वनिर्धारित निष्कर्षमे समेटि नहि देब। सम्पूर्ण त्रयीमे पुनरागमनकाल गढ़ नारिकेलक पोखरि, पीपर, नदी, बूढ़बा आ नामहीन नागरिकक वास्तविक परिवर्तनक तुलना आवश्यक होयत। आरम्भे जे “लोथ” केवल अधूरा वाक्यक लोकस्मृति छी, आगामी प्रकरणमे ओ स्वाधीन कथात्मक सत्ता बनैत अछि कि नहि, सेहो फेर मूल पाठसँ देखबाक चाही। एखन प्रमाणित निर्णय बस एतबे: न्याय-प्रक्रियाक बराबरी केवळ नियमक बराबरी

नहि, बल्कि साक्ष्य उपस्थित करबाक समय, सुनबाक अधिकार आ निर्णयक प्रभावी परिणामसँ मापल जएबाक चाही।

अध्याय –९२ : मूल पाठमे प्रत्यक्ष मिलाओल साक्ष्य-सूचक

आरम्भिक फकरा — “बूनि-बूनि पानि खसै, बूनि-बूनि समय”।

रूप-विधान — “एकटा उपन्यास-अंश; नाट्य-रूपसँ हटि, कथाक रूपमे”।

कथावाचक — “हम आइ कहय जा रहल छी”।

गामक पुरान नाम — “नारिकेल-घाट”।

नव नामक पूर्वसूचना — “गढ़”।

स्थल — “जोड़ी पोखरि”।

लोकस्थल — “साक्षी-गाछ”।

घटिका-यंत्रक व्यवस्था — “जखन कटोरा भरि कऽ डूबि जाइत”।

नाहरक दावेदारी — “ई नाहर हमर पुरखाक बनाओल अछि”।

न्यायसभाक आदेश — “काल्हि पहिने अहाँक बात सुनल जाएत”।

बुधुआक आपत्ति — “ई मनुष्य तीन सप्ताहसँ आबि रहल अछि”।

केशवक उत्तर — “न्याय क्रमसँ चलैत अछि, इच्छासँ नहि”।

कार्यविधिक भय — “क्रम टूटलासँ पूरा व्यवस्था टूटि जाइत अछि”।

तकनीकी प्रश्न — “पहिने ई स्पष्ट होउ जे नाहरक स्वामित्व मूल रूपसँ किनका छल”।

अधिक प्रतीक्षा — “छह सप्ताह एहिना बीतल”।

सुखदेवक अधूरा स्वर — “आचार्य, हमर बेटी...”।

बुधुआक प्रश्नक मूल — “समय स्वयं एकटा विलासिता थिक”।

नव नियम — “सुखदेव-नियम”।

परिणाम — “उग्रसेनक मुनीमक हाथ लगि गेल”।

अभिलेखीय अभाव — “ओकर असली नाम गामक अभिलेखमे कहियो नहि आयल”।

लोककथा — “लोथ”।

साक्षीधर्म — “अधूरी बातकेँ पूरा करब कोनो साक्षीक अधिकार नहि होइत”।

आधुनिक कालसँ सम्बन्ध — “तारीख, फाइल, आ अदालतक बरामदा”।

नाटक-पश्चात् भिन्न टिप्पणी — “घटिका-यंत्र आ न्यायमे समयक प्रश्न”।

प्रकरण १० | मूल अध्याय –९१ — चर्मकार टोलाक उजास

“चर्मकार टोलाक उजास” पूर्व-कथाकालक दशम मूल अध्याय थिक; उपन्यासक ऋणात्मक क्रममे एकर संख्या –९१ अछि। मूल अनुक्रमणिकामे आरम्भ-पृष्ठ १३८ आ अगिला अध्याय –९०क आरम्भ-पृष्ठ १४५ देल अछि; तेँ एहि अध्ययनक मुद्रित पृष्ठ-संकेत १३८–१४४ थिक। ई मूल वर्डक अनुक्रमणिकाक पृष्ठ-संकेत अछि, वर्तमान समीक्षाक पृष्ठ-संख्या नहि। ओ अनुपात ‘तीव्र-संकेत’ मात्र अछि, घटनाक निश्चित गणना नहि। प्रस्तुत अध्यायमे इजोत आँखि नहि, ज्ञानक सामाजिक स्वीकार्यता मापैत अछि: गामकेँ जकर श्रम आवश्यक, ओकर वाणी किएक अनावश्यक ठहराओल गेल?

आरम्भिक कथन-स्थान : सभाभवनसँ पछुबरिया नालाक कात

कथा “नारिकेल-घाट” सँ “गढ़ नारिकेल” बनल गामक संकेत दैत अछि। सभा-भवन पक्की ईंटक बनि गेल अछि, न्याय-शास्त्रक प्रतिष्ठा आब संस्थागत रूपमे उपस्थित अछि। मुदा कथावाचक तत्काल दिशाबदल करैत छथि—“मुदा एहि कथाक हेतु हमरा गामक ओहि हिस्सा दिस जाय पड़त”—जतय विद्वानक नजरि नहि पहुँचैत। ई कथन-चयन कथा-संसारक भौगोलिक पक्षान्तरण थिक। केन्द्रक सभा-भवन आ हाशियाक ‘मरल-गंग’ दू सामाजिक दृष्टिकेन्द्रण बनैत अछि। सुखल नदीक नाममे जे मृत्यु अछि, से केवल प्रकृतिक बिम्ब नहि; नदीक धार हटब, काजक दूरी आ बस्तीकेँ छोरपर धकेलब, ई सभ जीवन-भूगोलक संकेत छथि। मुदा नदी-सुखबाक वास्तविक कारण पाठ नहि दैत; एकरा निश्चित ऐतिहासिक जलप्रबन्धकीय अपराध कहब पाठसँ बेसी दाबी होयत।

‘गामक ओ काज जकरा गाम चाही’ : श्रमक आवश्यकताक भीतर अस्पृश्यता

चर्मकार टोलामे खाल सुखाओल, ढोल-मृदंग बनाओल आ जूता सिअबाक काम होइत अछि। गाम ओहि वस्तु बिनु नहि चलि सकैत, मुदा उत्पादकक निवास अपन देहरी लग नहि चाहैत। पाठक वाक्य “गामक ओ काज जकरा गाम चाही” श्रमक उपयोग आ श्रमिकक बहिष्कारक बीच सम्बन्ध खुझैत अछि। ई आर्थिक निर्भरता आ सामाजिक घृणाक सहअस्तित्व अछि। उपन्यास ‘जाति’केँ केवल गालीक दृश्य नहि बनबैत; रोजक उपयोगिता आ स्थान-वितरणक भीतर राखैत अछि। तथापि बस्तीमे हुनकर रोजी, बाजार-दर, ऋण-संकट, सामूहिक प्रतिरोध वा बिरादरीक आन्तरिक विभेदक विस्तृत दृश्य नहि आयल अछि। उपेक्षित टोला एहि अध्यायमे खास किछु पात्रक माध्यमसँ देखाइत अछि, टोलाक समस्त ऐतिहासिक जीवनक सर्वेक्षण नहि बनैत। आलोचना एहन सीमाकेँ नोकसान मानि सकैत अछि, मुदा उपन्यासक सङ्कुचित प्रसंगक विधाकेँ सेहो ध्यानमे रखैत अछि।

रत्ना : दैहिक परिचर्या, स्त्री-ज्ञान आ कथात्मक आरम्भकारिणी

रत्ना प्रसव-अनुभव, औषधीय पौधा आ धैर्यक सहारे गाममे मान्य छथि, मुदा ओ मान्यता लिखित शास्त्रमे नहि बदलिएल। ज्वरमे काँपैत अनाम युवककेँ बाहरसँ भीतर आनबाक आरम्भिक कर्ता रत्ना छथि। पुरुष-दार्शनिकक कथा हुनकर ‘प्रमाण’ शब्दसँ नहि, एकटा स्त्रीक असुरक्षित शरीरक प्रति तत्काल प्रतिक्रिया सँ आगाँ बढ़ैत अछि। एहि मानवीय हस्तक्षेप बिना गंगेशक मालतीसँ संवादक अवसर बनिते नहि। रत्ना उपचारमे पन्द्रह दिन लगबैत

छथि; पाठ परिणाम देखबैत अछि, मुदा औषधिक चिकित्सकीय प्रभावक मापन नहि दैत। हुनकर जड़ी-बूटीकेँ अप्रमाणित दैवी चिकित्सा कहबो अनुचित, आधुनिक चिकित्सकीय रूपसँ सिद्ध उपचार कहबो अनुचित। आख्यान भीतर ओ परिचर्याक कारणात्मक आधार छथि। माँक ज्ञान बेटीक कथात्मक उभारक जरूरी संरचनात्मक पूर्वपीठिका थिक।

गंगेशक आगमन : ताड़पत्र थामने, निज देहसँ हारल बौद्धिक व्यक्ति

बबूरक कात खसल युवकक हाथमे ताड़पत्र अछि, जकरा बेहोशीमे छोड़ैत नहि। ई वस्तु-चित्र ओहि दोसर अभावकेँ मूर्त करैत अछि: बौद्धिक कर्मक प्रति असाधारण निष्ठा आ शरीरक साधारण संकट। नाम बतबासँ पूर्व हुनकर ज्वर, भूख, थकान आ अस्फुट ‘प्रमाण’ सुनाओल जाइत अछि। कहल जाइत अछि जे हुनकर जन्म, बचपनक बुद्धि आ कुल पर तरह-तरहक जनश्रुति अछि; कथावाचक स्वयं मानैत छथि जे ओ सभ सत्य कि अफवाह, निश्चित नहि। एहि संशयकेँ आलोचक हटाकऽ ऐतिहासिक जीवनी नहि बनाओत। युवकक कथन-प्रतिष्ठा अग्रिम रूपसँ स्थापित नहि; पाठक ओहि व्यक्ति तक परिचर्या आ संवादक रास्ते पहुँचैत छथि। एहि उलट क्रमसँ शास्त्रीय महानताक प्रचलित केन्द्र-विन्दु हिलैत अछि—पहिने मनुष्यक निर्भरता, तकर बाद ग्रन्थकारक प्रसिद्धि।

मालतीक प्रश्न : निष्कपटता, सत्य आ शब्दप्रमाणक अनसुलझल सम्बन्ध

सोरह बरखक मालती ज्वरग्रस्त गंगेशक बड़बड़ाहट सुनि पुछैत छथि जे जँ बजनिहारक मोनमे झूठ नहि हो तखन हुनकर शब्द असत्य कोना भऽ सकैत अछि। प्रश्न मे मूल्यवान नैतिक चुनौती अछि—जातिगत संदेहक बदला वक्ताक मनोवृत्ति देखू। मुदा दार्शनिक रूपसँ प्रश्नक सीमा सेहो अछि: असत्य कथन सदिखन छलपूर्वक नहि होइत; सचेतन ईमानदार व्यक्ति भ्रमवश गलत बात सेहो कहि सकैत अछि। तदनुसार नैतिक निष्कपटता आ वस्तुगत सत्यक बोधकेँ समानार्थी बनाओल नहि जा सकैत। अध्याय एतय सामाजिक पूर्वग्रहक विरुद्ध ज्ञानक स्वतन्त्र सम्भावना राखैत अछि; पूरा शब्दप्रमाण-सिद्धान्त पूरा नहि करैत। मालतीक प्रश्न आत्मसम्मानक उद्घोष नहि, ज्ञानक सामाजिक मानदण्डपर दबाव बनबैत अछि—“चाहे बजनिहार केओ होइक”क विस्तार कहल जाय। एहि प्रश्नक परिप्रेक्ष्यमे नव्य-न्यायक आप्तता वा प्रमाणजनक स्थितिक सूक्ष्मता आगे अलग जाँचबाक अछि।

ढोलक-दृष्टान्त : साधनक गुण आ कथित सत्यक बीच अन्तर

मालती अपन पिता सोमरक ढोलक निर्माणक उदाहरण दैत छथि। चाम ठीक नहि तनल हो तँ नीक वादको गलत स्वर देत; उचित रूपसँ तनल हो तँ सामान्य ढोलो श्रुतिगम्य स्वर देत। उदाहरणक प्रत्यक्ष आधार भौतिक उपकरणक संरचना, कारीगरक निरीक्षण आ श्रव्य परिणति थिक। एहि कारण मालतीक ज्ञान केवल भावपूर्ण रूपक नहि, अनुभवसँ उपजल कारणात्मक परीक्षण अछि। मुदा ढोलकक ‘सही स्वर’ आ कथनक ‘सत्य’ के बीच पूर्ण व्याप्ति साबित नहि: भौतिक साधनक शुद्धता मानवीय वचनक अर्थ, अभिप्राय आ तथ्यसङ्गति सभ नहि निर्धारित करैत। ढोलक कथा ज्ञानोत्पत्तिक आवश्यक भौतिक-सामाजिक शर्त उजागर करैत अछि, पूर्ण पर्याप्त शर्त नहि। एहि भेदकेँ न देखलासँ उपन्यासक दृष्टान्तकेँ शास्त्रक सर्वमान्य प्रमेय मानबाक खतरा रहत।

गंगेशक प्रतिक्रिया : बौद्धिक स्वीकार वा अत्यधिक सरलीकरण?

गंगेश मालतीक वाक्यक व्याख्या करैत छथि जे विश्वसनीयता वक्ताक कुलपर नहि, करण-साधनक शुद्धतापर आधारित होउ। ओ तीन बरखसँ अटकल प्रश्न एक साँसमे सुलझल घोषित करैत छथि। एहि प्रसंगक श्रेष्ठता ई जे विद्वान पात्र अपन वर्गीय प्रतिष्ठा छोड़ि नव प्रश्न-स्रोतकेँ सुन्दै छथि; कथामे ज्ञान-पात्रता जन्माधिकार नहि। मुदा आलोचनात्मक प्रश्न सेहो अछि: जटिल तत्त्वचिन्तामणीय शब्दप्रमाणक समस्या एकटा ढोलक उदाहरणसँ तत्काल सुलझि जाइत अछि—ई नाटकीय सङ्कोचन जानि-बुझि अपनाओल गेल प्रभाव अछि कि दार्शनिक संघर्षक अत्यधिक सरल समाधान? संवादमे प्रतितर्कक पूर्ण क्रम नहि, तात्कालिक आलोकक दृश्य अछि। एहन आलोक कथाक भावनात्मक मोड़ सफल करैत अछि, मुदा शास्त्रीय व्याख्याक प्रमाणित परिणाम नहि। मूल पाठमे प्रयुक्त “आब्ता” नामक रूपक शास्त्रीय आप्तता-संबन्धी अर्थक सङ्गति स्वतन्त्र पाठपरख माँगैत अछि; वाक्यक सामान्य भावसँ कठोर पारिभाषिक निष्कर्ष निकालब जोखिमपूर्ण अछि।

पन्द्रह दिन आ दू बरख : कथनकालक गति

रत्नाक परिचर्याक पन्द्रह दिन संक्षिप्त सारांशमे बीतैत अछि, मुदा मालती–गंगेशक प्रश्नोत्तर विस्तृत प्रत्यक्ष संवाद बनि ठाढ़ अछि। तकर बाद गंगेशक घर आबय-जायब आ दू बरखमे विवाहक बात पक्की भऽ जायब फेर घनीभूत समयक सारांश अछि। ई तीन चरण—उपचारक अवधि, ज्ञानोन्मेषक क्षण, सम्बन्धक दीर्घ गठन—एक समान विस्तार नहि पबैत। कथावाचक संधिबिन्दुपर ठमकि दृश्य रचैत छथि, जीवनक लगातार बदलैत परिस्थितिकेँ समेकित वाक्यमे पार करैत छथि। लाभ ई जे बौद्धिक आदान-प्रदान आ जाति-विरोधक भिड़न्त फोकसमे अबैत अछि। सीमा ई जे मालतीक निज निर्णय, गंगेशक व्यक्तिगत आन्तरिक संघर्ष आ परस्पर सम्मानक दू बरखक क्रम पाठककेँ कम देखने पड़ैत अछि। विवाहक निर्णय कथामे बनि जाइत अछि, ओकर सामाजिक-भावनात्मक प्रक्रिया अधिकांश सारांश रूपमे रहैत अछि।

विवाह-विरोध : ज्ञान-संस्था द्वारा प्रतिष्ठाक बहिष्कार

ब्राह्मण-टोलाक विरोध केवल परम्परागत अपमान नहि। धमकी एहन अछि जे शास्त्रार्थमे गंगेशक निमन्त्रण बन्द होयत, पण्डित हुनका साक्षी नहि मानताह, पाठशालासँ हुनकर ग्रन्थ बाहर रहत। एहि तीन कार्यमे संस्थागत बहिष्कारक तीन स्तर अछि—सभामे प्रवेश, व्यक्तिक गवाहीक मान्यता, ज्ञानक प्रसार। एहि संरचनाक कारण विवाह निजी भावनात्मक निर्णयसँ सार्वजनिक ज्ञानाधिकारक प्रश्न बनि जाइत अछि। तथापि पाठ ब्राह्मण-टोलाक भीतर सभ व्यक्तिक एकरूप विरोध प्रस्तुत करैत अछि; कोनो समर्थक, संदेहशील युवा विद्वान वा विकल्प-वाला संस्थागत प्रक्रिया विस्तृत नहि। ई सामाजिक संघर्षकेँ तीक्ष्ण रूप दैत अछि, प्रतिपक्षक बहुरूपी मानसिकता कम खोलैत अछि। आलोचना एकर कारण शोषणक अस्तित्व नकारैत नहि, दृश्यनिर्माणक आन्तरिक जटिलता मापैत अछि।

बुधुआक आगमन : दीर्घ स्मृति आ भविष्य-सूचक साक्षी

गंगेशक संशयक क्षणमे पीपरक साक्षी-गाछ लग बुधुआक आगमन पूर्वकथाकालक अलग-अलग दुर्घटनाकेँ एकही साक्षी-मण्डलमे जोड़ैत अछि। हुनकर शंख आ घिसल डोरी ओहि पहिने अध्यायक संकेतक पुनरागमन थिक; एतय ओ वस्तु निष्क्रिय स्मृति नहि, साक्षीक पहिचान बनैत अछि। बुधुआ शास्त्रार्थक प्रतिष्ठाक आयु आ श्रमसँ उपजल ज्ञानक सम्भावित दीर्घायुक तुलना करैत छथि। हुनकर भावी कथन—लोक ग्रन्थ पढ़त, मालतीक ढोलक बिसरि जाएत—भविष्य-दीप्ति थिक, जकर सत्यता कथा बादक सारांशमे तुरन्त देखबैत अछि। यथार्थवादी इतिहासक मापदण्डसँ बुधुआक असामान्य दीर्घायु समस्या होइत; उपन्यासक जादुई-लोकस्मृति-विधानमे ओ पीढ़ीपार साक्षी-सत्ता छथि। तथापि पात्र स्वयं सभ कथा सुनि सकबाक प्रमाण “हवा हमरा बहुत किछु सुना दैत अछि” कहैत छथि; ई काव्यात्मक क्षमता अछि, प्रत्यक्ष अभिलेखीय साक्ष्य नहि।

साक्षीकेँ अधिकार कतबाधरि? मालतीक नामक प्रतिज्ञा

बुधुआ कहैत छथि जे समाज गंगेशक विवाहकेँ दयाक कथा बनाओत, न्यायक कथा नहि; ओ रत्ना आ मालतीक नाम कोनो आर पृष्ठमे बचाबय चाहैत छथि। ई प्रतिनिधित्वक प्रश्नक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। एक सामाजिक रूपसँ ऊँच ठहराओल पुरुषक उपकारक कथा बनेबाक बदला श्रमजीवी स्त्रीक बौद्धिक सह-निर्माणकेँ मान्यता देब कथाक नैतिक आग्रह अछि। मुदा ‘नाम बचाओल’ आ ‘व्यक्ति अपन कथा स्वयं कहि सकब’ एक नहि। रत्नाक प्रत्यक्ष आत्मवृत्तांत नहि, मालतीक विवाहोत्तर विस्तृत वाणी नहि, बुधुआक प्रतिज्ञा प्रमुख माध्यम बनैत अछि। पाठ एतय संरक्षणात्मक साक्षीधर्मक प्रयोग करैत अछि; आलोचनात्मक चुनौती ई जे ओहि संरक्षणक बादो स्त्रीक स्वर पुरुष साक्षीक कहल कथापर कतेक निर्भर रहि जाइत अछि। एहि प्रश्नसँ अध्यायक उपलब्धि आ सीमा एक संग उभरैत अछि।

विवाह, ग्रन्थ-लेखन आ कालक्रमक भारी छलाँग

विवाहक प्रतिरोधक बाद कथा कहैत अछि जे गंगेश अगिला बीस बरखमे ग्रन्थ रचलनि आ ओ प्रत्येक पाठशालामे पढ़ाओल जाए लागल। ई बड़का ऐतिहासिक परिणति बहुत कम दृश्य-स्थानमे समेटल अछि। कथन-परिणाम सहज अछि: ज्ञानक सामाजिक स्रोत विस्मृत, पुरुष-ग्रन्थकार प्रतिष्ठित। मुदा “बारह हजार ग्रंथ बराबर” दार्शनिक परिमाणक आलंकारिक प्रशंसा अछि, जकरा कोनो वास्तविक गणितीय मापक रूपमे नहि पढ़ब। एहि काल-विस्तारमे रत्ना–सोमरक जीविकाक परिवर्तन, मालतीक बौद्धिक सहचर्य, ग्रन्थक लिखबाक कोठरी वा विद्यालयीय ग्रहणशीलताक स्वतन्त्र दृश्य कम छथि। उपन्यासक सारांश नैतिक निस्सारता टारैत अछि, मुदा जीवनी-आख्यानक सम्भावित विविध घटना बिनु विकसित छोड़ैत अछि।

इतिहासक दर्जा : रचनाकारक स्वघोषित कल्पना

अध्याय-अन्तक “गंगेश उपाध्याय सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त” शीर्षकसँ अलग व्याख्यात्मक प्रस्तुति शुरू होइत अछि। ओतय स्पष्ट अछि जे मालती, रत्ना आ सोमरक नाम, चरित्र आ परिस्थितिक वर्णन कल्पनाप्रसूत अछि, ऐतिहासिक दस्तावेजसँ प्रमाणित नहि। एहि घोषणा केँ समीक्षा-अन्तर्गत कठोर सीमा मानल जाए। ऐतिहासिक

गंगेश उपाध्याय आ हुनकर तत्त्वचिन्तामणि वास्तविक बौद्धिक परम्पराक विषय छथि; मुदा ई विशेष परिवारक प्रसंग कथाक सम्भावित प्रतिरचना अछि। गंगेशक चर्मकारणीसँ विवाहक ‘जनश्रुति’ उल्लेखित होयबो ऐतिहासिक विवाहक पुष्ट प्रमाण नहि बनैत। लेखक स्वयं लोकश्रुति आ रचना बीचको अन्तर उद्घाटित करैत छथि। एहि स्वस्वीकृतिकेँ अनदेखा कऽ कथाकेँ इतिहासक प्रमाण मानब, रचनाक समानान्तर इतिहास दृष्टिकेँ स्वयं कमजोर करत।

इतिहासक द्वन्द्वात्मक पाठ : तान्त्रिक वरदान बनाम श्रमजन्य शिक्षा

लोक-श्रुतिमे गंगेशक बौद्धिक जागरण तान्त्रिक वा कालीक अनुग्रहसँ जोड़ल गेल अछि, जखनकि प्रस्तुत कथा चर्मकार परिवारक अनुभव, सेवाभाव आ संवादक सम्भावित योगदान रचैत अछि। लेखक पहिल रूपकेँ इतिहासक रूपसँ असत्य सिद्ध करबाक दाबी नहि करैत छथि; ओ दोसर कल्पनात्मक, समानान्तर सम्भावना खोलैत छथि। दैवी अनुग्रहक कथा आ मानवीय सहकारक कथा सामाजिक स्मृतिक भिन्न नैतिक वितरण करैत अछि। तान्त्रिक कथा पात्रकेँ विशिष्ट एकाकी प्रतिभा बनबैत अछि; मालतीक कथा ज्ञानक उत्पत्तिकेँ सम्बन्धपरक बनबैत अछि। मुदा कथा एतय ‘लोप भेल निश्चित वास्तविक स्रोत’ के रूपमे प्रस्तुत नहि हो; अन्यथा अनुपस्थित अभिलेखक जगह मनचाहा अतीत राखि देब साक्ष्यशास्त्रक विरुद्ध होएत। साहित्यिक वैकल्पिक इतिहासक शक्ति कल्पनाक पारदर्शितामे अछि, प्रमाणकेँ ढाँपबामे नहि।

रत्नाक छौंकी-सभा : अनौपचारिक ज्ञान-संस्था

मरल-गंगक कात साँझमे बैसैत स्त्रीसभ अपन छौंकी-सभामे रोग, प्रसव, घरक हिंसा, गामक अन्याय आ लोकक निजी व्यवहारपर अनुभव साझा करैत छथि। ई संस्था सामूहिक कृत्य अछि—एक बारक उपदेश नहि; नियमित गप्प, पुनरावृत्त भेटघाट आ ज्ञानक पीढ़ीगत हस्तान्तरण सँ ओकर गठन होइत अछि। शास्त्रीय भाषाक अभाव अज्ञानक प्रमाण नहि, एकटा भिन्न ज्ञानविधानक पहिचान थिक। मुदा छौंकी-सभाक वास्तविक निर्णय-प्रक्रिया, बाहरी विवादक समाधान, उपचारक सफल-असफल उदाहरण, वा पुरुषक प्रतिरोधकेँ टक्कर देबाक संगठित योजना कम दृश्यगत अछि। ‘सभा’ संस्थाक नाम जरूर बनैत अछि, ओकर कार्यप्रणालीक विस्तृत परीक्षा उपन्यास आगाँक प्रसंगपर छोड़ैत अछि।

‘डाइन’ नामकरण : ज्ञानक भयमे रूपान्तरण

समुदायक लिखित अभिलेखमे प्रवेश नहि पाओल स्त्रीज्ञानकेँ ‘डाइन’ कहबाक प्रक्रिया कथावाचक स्पष्ट करैत छथि। एतय नामकरण हिंसाक पूर्वरचना थिक: जे ज्ञानकेँ स्वीकार नहि करए, से ओकरा भयावह सत्ता बनाबि सकैत अछि। तथापि समस्त लोकविश्वासकेँ एकै कारणसँ उत्पन्न बताओल सामाजिक इतिहासक अपर्याप्त व्याख्या होयत। मूल पाठमे ‘डाइन’ कहनिहारक ठोस आरोप, दण्ड-विधान वा हिंसाक प्रक्रिया एहि अध्यायमे विस्तारसँ नहि अछि। तेँ आरोप-प्रक्रियाकेँ भावी सामाजिक संघर्षक कथासूत्र मानब अधिक न्यायोचित अछि। छौंकी-सभा आ डाइनक उपाधि बीच परिवर्तन जे कथा बतबैत अछि, ओ रूपक आ सामुदायिक स्मृतिक स्तरपर प्रमाणित अछि; प्रत्येक ऐतिहासिक टोला वा स्त्रीसमूहक सार्वभौम नियम नहि।

पर्यावरणीय आख्यान : मरल-गंग, बबूर, पीपर आ लोकस्मृति

तीन स्थल अलग कथात्मक काम करैत छथि। मरल-गंगक सुखल धार श्रमजीवी टोलाक पर्यावरणीय अभाव आ सामाजिक अलगावक क्षेत्र बनैत अछि; बबूरक छाह घायल गंगेशक पड़ल देहक आरम्भिक दृश्य दैत अछि; पीपरक साक्षी-गाछ बुधुआक प्रतिज्ञा आ पीढ़ीगत स्मृतिक केन्द्र अछि। पाठ गाछकेँ मानवीय साक्षीक समकक्ष ऐतिहासिक दस्तावेज नहि कहैत; ओ रूपकक माध्यमसँ स्मृतिधारक बनि जाइत अछि। उपन्यासक मानवेतर वस्तु कथाक दिग्दर्शन करैत अछि, मुदा कारणात्मक नाटकक मुख्य विकल्प रत्ना, मालती, गंगेश, बुधुआ आ सामाजिक समूहक क्रियामे अछि। नदीक सुखनाइ कथा-स्थान रचैत अछि; युवकक सेवा, प्रश्न आ विवाह सामाजिक परिवर्तन रचैत अछि। ई अन्तर पर्यावरणक महत्त्व घटबैत नहि, कथामे एजेंसीक स्तर स्पष्ट करैत अछि।

भाषा, दृष्टिकेन्द्रण आ कथावाचकक नीतिगत हस्तक्षेप

कथावाचक “हमरा ... जाय पड़त” कहि पाठककेँ संस्थागत केन्द्रसँ उपेक्षित टोलामे लऽ जाइत छथि। परोक्ष सर्वज्ञ कथन, संवादक दृश्य आ ‘कहल जाइत अछि’क लोकश्रुतिपरक संकेत एकर बाद बेरा-बेरी बदलैत अछि। मालतीक ढोलक उदाहरणमे ओ स्वयं बजैत छथि; गंगेशक शास्त्रीय प्रतिक्रिया हुनक अनुभवकेँ मान्यता दैत अछि; बादक इतिहास-सारांश फेर निर्णायक कथावाचकक अधिकारमे चलि जाइत अछि। एहि आवागमनमे स्त्रीस्वरक प्रकाश आ पुरुष-विवरणक प्रभुत्वक तनाव बनैत अछि। कखनो कथावाचक पाठकसँ अग्रिम नैतिक सहमति माँगैत छथि—जाहि कारण प्रतिपक्षी पात्र स्वतन्त्र विचारकेँ पर्याप्त अवसर नहि पबैत। तथापि स्वयं कल्पित कथा कहबाक स्वीकृति आधुनिक उपन्यासक विश्वसनीयताकेँ असत्य ठहरबैत नहि; उलटा कथन-स्तरक भिन्न सत्य-दावाक बोध करबैत अछि।

नव्य-न्यायक परीक्षण : पक्ष, हेतु, उपाधि, अभाव

पहिल अनुमान—‘जाति उच्च अछि, अतः वक्ता विश्वसनीय अछि’—व्याप्ति-विहीन अछि। जन्मगत स्थिति आ ज्ञान-जन्य सत्यक अनिवार्य सहचर्य मूल पाठमे नहि सिद्ध अछि। दोसर अनुमान—‘ढोलक उचित तनल अछि, अतः वक्ताक कथन सत्य अछि’—एहिमे उपाधि अछि: स्वरक भौतिक उत्पत्ति आ वाक्यक वस्तुगत यथार्थ-सङ्गतिक हेतु अलग आवश्यक शर्त। तेसर भेद—आप्तवचन, निष्कपट आशय आ वास्तविक सत्य—एक-दोसरासँ सम्बद्ध अछि, पूर्ण एकाकार नहि। मालतीक दृष्टान्त वक्ताक जातिपर आधारित बाधक निर्णयकेँ तोड़ैत अछि; ओ शब्दप्रमाणक सभ शास्त्रीय प्रश्न समाप्त नहि करैत। ‘मालतीक ऐतिहासिक योगदान अभिलेखमे नहि भेटैत’ एहि अभावसँ न त योगदानक असम्भवता सिद्ध होइत, न निश्चित घटना सिद्ध होइत। अवच्छेदकसहित विचार करब चाही: ‘एहि उपन्यासक कथाजगतमे मालती प्रेरक छथि’ ई सिद्ध कथात्मक विधान; ‘इतिहासमे ठीक एहन घटना घटल’ ई अलग, असिद्ध दाबी। एहि सीमा-बोधसँ समानान्तर इतिहासक वैज्ञानिक ईमानदारी बचैत अछि।

रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक कसौटी

आरम्भिक फकरामे “टोलक दीप आ महलक दीप”क साझा तेल समान बौद्धिक सम्भावनाक रूपक अछि। ढोलकक स्वर शास्त्रक ‘सत्य’सँ तुलना कऽ वक्रोक्तिपरक विस्थापन करैत अछि—दुरूह पारिभाषिक प्रश्न लोककारीगरीक भाषा पाबैत अछि। करुण रस ज्वरग्रस्त युवकक परिचर्या, मालतीक अपमानक भय आ रत्नाक विस्मृत नाममे उपस्थित अछि; वीरभाव विवाहक विरोध झेलबाक निर्णयमे उभरैत अछि। मुदा अध्यायक अन्तिम गीत “इजोत एक्के दै” कहि बराबरीक औपचारिक निष्कर्ष दैत अछि, जखनकि कथानक बतबैत अछि जे समान प्रकाश समाजमे समान मान्यता नहि बनल। ई विरोध गीतकेँ विडम्बनात्मक ध्वनि दैत अछि; एकरा केवल विजयगीत मानल जाए तँ अध्यायक घाव ढाँपि जाएत। औचित्यक एक प्रश्न ई सेहो जे सामाजिक निष्ठुरताक गम्भीरता आ विवाहक तीव्र सफलता बीच नाटकीय मध्यवर्ती घात-प्रतिघात कतेक पर्याप्त अछि।

कारणात्मक घटना-सूची आ घटनात्मक घनत्वक वास्तविक परख

एहि अध्यायमे कम-सँ-कम छह भिन्न अवस्थापरिवर्तन देखाइत अछि: (क) ज्वरग्रस्त गंगेशक चर्मकार टोलामे प्रवेश; (ख) रत्नाक सेवासँ चिकित्सकीय संकट सँ उबरब; (ग) मालतीक प्रश्नसँ गंगेशक बौद्धिक स्थिति बदलनाइ; (घ) विवाहक निर्णयसँ जातिगत संस्थागत प्रतिरोध; (ङ) बुधुआक साक्षी-संरक्षणक प्रतिज्ञा; (च) विवाह आ ग्रन्थ-प्रतिष्ठाक बाद मालतीक विस्मरण तथा स्त्रीसभक वैकल्पिक सभा-स्मृति। वस्तुतः अध्यायक उत्तरार्धमे बीस बरखक ग्रन्थलेखन आ दीर्घकालिक लोकस्मृति कुछेक अनुच्छेदमे समेटल अछि; अतः समयक विस्तार आ घटनाक सघन दृश्य-रचना एक नहि। प्रमुख भावनात्मक मोड़ ढोलकक संवाद अछि, मुदा सांस्थानिक परिवर्तनक प्रत्यक्ष फलरूप—महिलासभाक बैठकी—औपचारिक नियम बनबाक बदला अनौपचारिक पुनरावृत्ति रूपमे टिकैत अछि।

कथात्मक क्षण	पाठमूल/कर्ता	अवस्था-परिवर्तन	आलोचनात्मक शेष
स्थान-विभाजन	सभाभवन / मरल-गंग	कथाक दृष्टिकेन्द्र उपेक्षित टोलामे	नदीक सुखबाक कारण निर्दिष्ट नहि
उद्धार	रत्ना–सोमर; ज्वरग्रस्त गंगेश	बौद्धिक यात्री जीवन-सहायतापर आश्रित	औषधिक वैज्ञानिक कार्यकारण असिद्ध
प्रश्न–दृष्टान्त	मालतीक शब्द आ ढोलक	गंगेशक अनुमानमे जातिक स्थान हिलैत	साधन–सत्यक पूर्ण व्याप्ति नहि
संस्थागत विरोध	ब्राह्मण टोला; विवाहक निर्णय	शास्त्रार्थ आ पाठशालाक बहिष्कारक धमकी	प्रतिपक्षीक मानसिकता अल्प विकसित
साक्षी-वचन	बुधुआ; शंख आ साक्षी-गाछ	मालती–रत्नाक नामक रक्षा-प्रतिज्ञा	दूसर व्यक्ति द्वारा नाम-संरक्षणक सीमा
दीर्घकालिक परिणाम	विवाह; ग्रन्थ; बिसरल स्रोत	शास्त्रीय महिमा आ श्रमस्मृतिक विच्छेद	बीस बरखक तीव्र सारांश

कथात्मक क्षण	पाठमूल/कर्ता	अवस्था-परिवर्तन	आलोचनात्मक शेष
समुदायक वैकल्पिक संस्था	रत्नाक छौंकी-सभा	स्त्री-अनुभव सामूहिक ज्ञान बनैत	सभा-प्रक्रियाक विस्तार सीमित

उपलब्धि : समानान्तर ज्ञानवंशक साहसी आख्यान

एहि अध्यायक सबसँ ठोस उपलब्धि रत्ना आ मालतीकेँ प्रसिद्ध पुरुषक जीवनक सजावटी उपकथा नहि, ज्ञानक उत्पादन-शृंखलाक अनिवार्य कर्ता बनायब अछि। चर्मकार टोलाक जीवनोपयोगी श्रम, औषध-परिचर्या, ढोलकक अनुभव आ स्त्रीसभाक नियमित सभा—चारूकेँ प्रमाण, शिक्षण आ इतिहास-लेखनक प्रश्नसँ जोड़ल गेल अछि। शास्त्रीय प्रतिष्ठाक तुलना मे ‘पात्र कोन कुलमे जन्मल’ नहि, ‘ककर अनुभवमे कोन परीक्षण अछि’ अधिक फलदायी प्रश्न बनैत अछि। एतय साक्षी-गाछक पुनरागमन पूर्ववर्ती हुलासा, जीवन्ती आ सुखदेवक नामक संघर्षसँ स्वतन्त्र स्त्रीज्ञानक प्रश्नकेँ एक काल-सेतु दैत अछि।

सीमा : इतिहास-सङ्कोचन, दार्शनिक द्रुत-निष्कर्ष आ स्त्रीवाणीक आंशिकता

आलोचनात्मक सीमा चारि प्रकारक अछि। पहिल, मालतीक एक दृष्टान्तकेँ गंगेशक तीन बरखक शास्त्रीय प्रश्नक पूर्ण समाधान घोषित करबाक दृश्य दार्शनिक विवेचनकेँ अत्यधिक तुरन्त बनबैत अछि। दोसर, विवाहक संघर्षमे विरोधी समुदायक बहुवाणी आ मालतीक व्यक्तिगत विकल्पक विस्तृत मनोभूमि अपेक्षाकृत कम अछि। तेसर, ग्रन्थक बीस बरखक रचना आ पठन-परम्पराक विकास अत्यन्त तीव्र सारांशमे चलैत अछि, जकरा कारण ज्ञानक निर्माणक दैनन्दिन सहकार दृश्य-सिद्ध नहि होइत। चारिम, रत्ना आ मालतीकेँ स्मरण करबाक धर्म अन्तमे बुधुआक पुरुष-साक्षी पर अवलम्बित रहैत अछि, यद्यपि स्त्रीसभाक छौंकी-सभा एहि आश्रितताकेँ आंशिक रूपसँ तोड़ैत अछि। ई सब कमजोरी रचनाक मूल सामाजिक हस्तक्षेपकेँ निरस्त नहि करैत; बल्कि ओकर नीतिगत महत्त्व आ कथात्मक निष्पादनक बीच अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

अध्याय –९० दिस सेतु : स्मृतिक दीर्घायु आ साक्षीक मूल्य

अगिला अध्याय “बुधुआक जलसमाधि”क ठीक पहिने मालती–रत्नाक नाम बचाबयक वचन अयब महत्त्वपूर्ण अछि। पहिने हुलासाक अधूरा वाक्य, जीवन्तीक पाण्डुलिपि, सुखदेवक सुनवाई आ एखन चर्मकार स्त्रीसभक उपेक्षित ज्ञान—बुधुआक स्मृतिमे एकेक करि जमा होइत अछि। ई भार अगिला अध्यायक कथात्मक मृत्यु/रूपान्तरणक नैतिक पूर्वपीठिका बनि सकैत अछि, मुदा आगामी अध्यायक घटना एहि प्रकरणसँ अनुमान कऽ निश्चित मानब नहि। एहि अध्याय पर स्वतन्त्र निर्णय ई: परम्परागत शास्त्रक इतिहास जँ अपन कारीगर, परिचरिका आ अनाम संवादिनीकेँ जगह नहि दैत अछि, तँ साहित्य ओहि अनुपस्थितिक प्रश्न उठा सकैत अछि; मुदा कल्पना इतिहासक निर्विवाद प्रतिलिपि कहि नहि चलाओल जाए। एतय ‘उजास’ पूर्ण न्याय नहि, ज्ञानक प्रकाशक अधिकारपर खुलल विवाद थिक।

अध्याय –९१ : मूल पाठमे प्रत्यक्ष मिलाओल साक्ष्य-सूचक

स्थानान्तरण — “मुदा एहि कथाक हेतु हमरा गामक ओहि हिस्सा दिस जाय पड़त”।

नदीक नाम — “मरल-गंग”।

उपेक्षित श्रम — “गामक ओ काज जकरा गाम चाही”।

मालतीक पिता — “सोमर चर्मकार”।

रत्नाक विशेषता — “धैर्य”।

ज्वरग्रस्त गंगेशक शब्द — “प्रमाण... प्रमाण के बिनु... कोना...”।

जनश्रुतिक अनिश्चितता — “ई सभटा कथा सत्य छल कि अफवाह”।

उपचारक अवधि — “पन्द्रह दिन धरि गंगेश ज्वरसँ जूझल”।

मालतीक प्रश्नक अन्तिम अंश — “चाहे बजनिहार केओ होइक”।

ढोलकक शर्त — “जँ चाम ठीक नहि तनल होइक”।

ढोलकक दाबी — “तँ ढोलक आवाज झूठ बाजैत अछि”।

साधनक परिभाषा — “करण (साधन) क शुद्धतापर”।

ज्ञानक मान्यता — “अहाँ न्यायक कथा कहलहुँ”।

विवाहक समय — “दुइ बरखक भीतर”।

विरोधक प्रश्न — “चर्मकारणीसँ विवाह करत?”।

बुधुआक स्मृति — “साठि बरख पहिने एकटा आक्षेपक छल”।

बुधुआक आत्मकथन — “हम एकटा सेवक छी”।

दूरस्थ साक्षीक विधान — “हवा हमरा बहुत किछु सुना दैत अछि”।

बौद्धिक सहकारक भविष्य — “अहाँक ग्रंथक हर पृष्ठमे रहत”।

विस्मरणक पूर्वसूचना — “मालतीक ढोलकेँ बिसरि जाएत”।

दयाक विरुद्ध न्याय — “दयाक कथा बना देत, न्यायक कथा नहि”।

वचनक केन्द्र — “रत्ना आ मालतीक नाम”।

कालावधि — “अगिला बीस बरखमे”।

इतिहासक प्रतिस्थापन — “तान्त्रिकक कृपा वा देवी कालीक वरदानसँ”।

स्त्रीसभाक भिन्न संस्था — “अपनहि बीच एकटा सभा बना लेने छलि”।

आरोपक भय — “डाइन”।

लोकस्मृतिक स्वर — “धीमा स्वर सुरक्षित स्वर होइत अछि”।

गीतक पहिचान — “टोलक दीप आ महलक दीप रे, तेल एक्के जरै”।

परापाठक स्पष्ट सीमा — “कल्पनाप्रसूत अछि, ऐतिहासिक दस्तावेजसँ प्रमाणित नहि”।

वैकल्पिक सम्भावनाक स्थिति — “एकटा वैकल्पिक, समानान्तर सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि”।

प्रकरण ११ | मूल अध्याय –९० — बुधुआक जलसमाधि

“बुधुआक जलसमाधि” पूर्व-कथाकालक एगारहम मूल अध्याय थिक; ऋणात्मक क्रममे एकर संख्या –९० अछि। मूल उपन्यासक अनुक्रमणिकामे अध्यायक आरम्भ पृष्ठ १४५ आ अगिला अध्याय –८९क आरम्भ पृष्ठ १५२ अंकित अछि। अतएव मूल संस्करणक मुद्रित पृष्ठ-सन्दर्भ १४५–१५१ धरि अछि; एहि संचयी समीक्षाक पृष्ठ-संख्या अलग अछि। अनुपातकेँ घटनाक संख्या मानब पद्धतिगत भूल होयत; वास्तवमे एकटा प्रमुख अन्तर्धान-घटनाक चारू कात स्मृति, निर्णय, वस्तु-स्थानान्तरण आ लोककथाक अनेक अवस्थापरिवर्तन अछि। अध्याय पढ़िते एकर संग दोसर प्रश्न जुड़ैत अछि—व्यक्तिगत स्मृति सामाजिक अभिलेख बनैत केना अछि, आ देहक लोपकेँ कथन-प्रविधि कोन सीमा धरि पुनर्जन्मक रूप दैत अछि?

पूर्ववर्ती दस अध्यायक भार : साक्षीक जीवन कथा बनैत अछि

अध्याय –१०० सँ –९१ धरि बुधुआ शास्त्रार्थ, अधूरा वाक्य, मृत्यु, स्त्रीश्रम आ न्यायिक उपेक्षाक साक्षी रूपमे उपस्थित रहलाह। एतय कथावाचक पहिने हुनका कथाक केन्द्र बनबैत छथि। गाम बदलि गेल अछि; सभा-भवन दुइ बेर टूटि फेर बनल; केशवक परम्पराक सातम पीढ़ीक आचार्य वर्धमान आब सभामे छथि। मुदा बुधुआ अखनहु जीवित छथि। एहि असाधारण दीर्घायुसँ कथा तत्काल यथार्थवादी जीवनीक कसौटी छोड़ि लोक-अद्भुतक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। ई बदलाव आकस्मिक नहि: पहिल अध्यायक शंख–रजतक भ्रम, मृतकक अपूर्ण वाणी आ पीपरक साक्षी-प्रतिज्ञा एतय दीर्घकालिक कथासूत्र बनि पुनः उपस्थित छथि। कथानकक उपलब्धि एहि अन्तरसम्बन्धमे अछि; प्रत्येक स्मरण शृंखलाक पिछिला कथाक नैतिक प्रश्न फेर जीवित करैत अछि। मुदा सतत जीवित एकटा साक्षीक सहारे बहुत युगकेँ जोड़बाक उपाय कथावाचकक सुविधाजनक सेतु सेहो अछि; पाठककेँ एकर अस्वाभाविक विधान स्वीकार करए पड़ैत अछि।

गामक काल-स्थान : सभाभवन, पोखरि, पीपर आ मरल-गंग

गढ़ नारिकेलक बदलब सामाजिक आ प्राकृतिक दुनू स्तरपर देखाओल गेल अछि। सभाभवनक निर्माण–विनाश संस्थाक नश्वरताक सूचक अछि; जोड़ी पोखरि अखनहु अछि, मुदा ओकर गहींर भाग बेसी गहींर कहल गेल अछि। गाद आ वर्षाक कारण मात्रसँ गहींरता बढ़बाक वाक्य प्राकृतिक व्याख्याक दृष्टिसँ स्वयंसिद्ध नहि—गाद सामान्यतः गहराइ घटा सकैत अछि। ई पर्यावरणीय विवरणक एकटा आन्तरिक प्रश्न अछि, ओकरा निश्चित जलवैज्ञानिक तथ्यक रूपमे नहि ग्रहण कएल जाउ। पीपरक जड़ि पानि धरि पहुँचैत अछि, मरल-गंगक चर्मकार टोलामे रत्नाक परिवारक चारि पीढ़ी काम करैत अछि। जन्मक दैहिक देखभाल मे ओहि परिवारक योगदान निरन्तर अछि, मुदा ब्राह्मण-टोला ओकर सार्वजनिक स्वीकृति नहि करैत। एतय काल बितलापर सेहो असमानता कायम अछि; सामाजिक इतिहास केवल प्रगतिक रेखा नहि। पोखरि, गाछ आ टोला घटनाक दृष्टिसँ स्थिर पृष्ठभूमि नहि; ओ स्मृति-संरक्षणक माध्यम आ सामुदायिक भेदक भूगोल थिक।

अस्वाभाविक दीर्घायु : नियमक घोषणा आ पाठकीय अनुबन्ध

“आ बुधुआ अखनहु जीवित छलाह” एकटा संक्षिप्त वाक्य अछि, मुदा एही पर समग्र काल-सन्धिक भार अछि। सात पीढ़ीक बदलावक समक्ष एक मनुष्यक बने रहब साधारण जैविक यथार्थसँ मेल नहि खाइत। कथावाचक एहि असङ्गतिकेँ चिकित्सकीय चमत्कार सँ नहि सुलझबैत छथि; गामक लोक ओकरा पीपर वा पोखरिक पानिसन सामान्य मानि लैत अछि। अस्वाभाविक आख्यानक ई नियम कथाजगतक सामूहिक विश्वाससँ वैध बनैत अछि। आलोचना लेल महत्त्वपूर्ण ई अछि जे पाठ एकहि साँस यथार्थपरक जातिगत असमानता आ अद्भुत दीर्घायुक सहअस्तित्व स्वीकार करबैत अछि। ई जादुई यथार्थपरक सम्भावना अछि, मुदा केवल असाधारण घटना देखिकऽ विधागत अन्तिम वर्गीकरण कएल नहि जा सकैत; कथाक अन्य खण्डमे एहि नियमक स्थिरता जाँचबाक अछि। अद्भुत आयुकेँ ऐतिहासिक प्रमाण मानि लेने रचनाक कल्पनात्मक विधान नष्ट भऽ जाएत।

नामक पुनरावृत्ति : हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना

बुधुआ आब चलि नहि सकैत; पीपरक जड़ि लग बैसि, शंख आ डोरी राखि, गुजरनिहारकेँ कोनो नाम कहैत छथि। हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना—एहि चारि नामसँ पाठ पूर्ववर्ती अध्यायक सामाजिक आ नैतिक रेखा एक सूत्रमे बाँधैत अछि। नाम दोहरायब एतय सूचनाक निरर्थक आवृत्ति नहि; ओ विस्मरणक विरुद्ध कार्यकारी कर्म अछि। प्रत्येक नाम एक अलग अधूरा प्रश्नक संकेत थिक: हुलासाक अधूरा वाक्य, जीवन्तीक जलमग्न लेखन, सुखदेवक विलम्बित न्याय आ रत्नाक अनलिखल योगदान। तथापि कथा नामक चयन बुधुआक स्मृतिक अधिकारमे रखैत अछि; अन्य उपेक्षित व्यक्ति, विशेषतः अनाम सामूहिक श्रमिक, फेर ओही छाँटन प्रक्रियासँ बाहर पड़ि सकैत छथि। साक्षीक करुणा आ साक्षीक चयनाधिकार दुनूकेँ एक संग देखबाक चाही।

जाड़क दृश्य : पर्यावरणीय काल आ मृत्यु-पूर्व विराम

कड़ा जाड़, पातर कमला-बलान, पोखरिसँ बाहर भैंस, अनुपस्थित बगुला आ स्थिर पानिक सतह—ई दृश्य मौसमक सजावटी सूची नहि। कथाक गति अचानक मन्द पड़ैत अछि, जेना प्रकृति आगामी घटनाकेँ सुनबाक लेल रिक्त स्थल तैयार करैत हो। मुदा मौसमक एहि चित्रणसँ नदीक भौतिक हिमावस्था प्रमाणित नहि: धार “बर्फ जकाँ ठंढा” कहल गेल अछि, बर्फ बनल नहि। मानवेतर जीवक विस्थापन अथवा सहनशीलता मृत्यु-पूर्व वातावरणक संकेत बनैत अछि। पाठ मौसम आ बुधुआक निर्णयक बीच प्रत्यक्ष कारणात्मक व्याप्ति स्थापित नहि करैत; जाड़ मनःस्थितिक अनुकूलक अछि, मृत्यु-संकल्पक एकमात्र हेतु नहि। कथा-समयमे ई विराम पाठककेँ पीपर, पानि आ छायाक आगामी रूपान्तरण लेल तैयार करैत अछि।

रघुनाथक प्रश्न आ संवादमे काल-विच्छेद

आचार्य वर्धमानक युवा शिष्य रघुनाथ बुधुआक आयु पुछैत अछि। उत्तरमे बुधुआ अंक नहि दैत छथि; ओ आरम्भिक दृश्य स्मरण करैत छथि—नारिकेलक पाँति, पीपर, पोखरि आ शंखकेँ चानी बुझबाक विवाद। रघुनाथ “वाचस्पति मिश्र?” कहि युगक दूरी चिन्हैत अछि। एतय संवादक वास्तविक नाटकीय कार्य आयु बतायब नहि, पाठककेँ कथाक असम्भव दीर्घकालक बोध करायब अछि। प्रश्न बाहरी गणनाक अछि; उत्तर अनुभूत स्मृतिक।

एहि समयक द्वैधतामे कथन-क्रम आ कथा-काल अलग देखाइत अछि। पाठक प्रारम्भिक अध्यायक स्मृति सक्रिय करैत छथि, मुदा गामक नव पीढ़ी लेल ओ स्मृति चमत्कारक रूपमे प्रकट होइत अछि। रघुनाथ ऐतिहासिक अविश्वासक संक्षिप्त स्वर दैत अछि; ओकर आगेक अन्वेषण दृश्यरूपेँ विकसित नहि होइत, जे कथाक बौद्धिक प्रतिपक्षक एक सीमा अछि।

देह आ स्मृति : नश्वर माध्यमक नैतिक संकट

बुधुआक निर्णायक आत्मबोध—“हमर देहमे नहि, हमर स्मृतिमे”—कालक अङ्कगणितकेँ नैतिक अनुभवमे बदलैत अछि। स्मृति हुनका लेल गौरव मात्र नहि, भार अछि। कमजोर देहक संग चारि जनक अनसुन्नल कथा लुप्त भऽ जाएबाक आशंका शोकक स्रोत बनैत अछि। एहि बिन्दुपर स्मृति व्यक्ति-केन्द्रित संग्रह अछि; समाजक लिखित वा संस्थागत अभिलेख ओकर पूर्ण विकल्प बनल नहि। कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे ई सभ शिलापर नहि खुदल, कोनो पोथीमे नहि लिखल। मुदा पूर्ववर्ती अध्यायमे किछु पोथी, नियम, पाण्डुलिपि आ स्मृति-कक्ष उपस्थित रहल अछि; तेँ “कोनो पोथीमे नहि”केँ समस्त उपलब्ध दस्तावेजक शाब्दिक अभाव नहि, सम्बन्धित चारि व्यक्तिक जीवन-सत्यक अपर्याप्त अभिलेखनक दावा मानब अधिक तर्कसंगत अछि। एकर कठोर सामान्यीकरण पूर्वकथाक अपने अभिलेख-सूत्रसँ तनाव पैदा करैत अछि।

निर्णयक कारण-कार्य : आत्मबलिदान कि आत्मलोपक जोखिम?

रघुनाथक विदाक बाद बुधुआ अपन मृत्यु-निकटता अनुभव करैत छथि आ पूछैत छथि जे हुनका संग स्मृति समाप्त भऽ गेल तँ नामक रक्षा के करत। अगिला दृश्य हुनका शंख–डोरी लऽ पोखरि दिस बढ़ैत देखबैत अछि। ई निर्णयक कथात्मक अनुक्रम अछि: देहक क्षीणता → अभिलेखक अभावक अनुभव → नामक रक्षा करबाक तीव्र इच्छा → जलमे प्रवेश। मुदा कथाक भीतर एतयसँ ई सिद्ध नहि होइत जे नाम बचयबाक एकमात्र सम्भव उपाय जलसमाधि छल। स्मृति युवा रघुनाथकेँ लिखबेनाइ, चर्मकार स्त्रीसभाक छौंकी-सभामे देब, सार्वजनिक अभिलेख बनायब—ई विकल्प कथा स्वतन्त्र रूपसँ परखैत नहि। आलोचनामे बुधुआक जलप्रवेशकेँ वैयक्तिक गरिमा, मृत्यु आ नैतिक स्वायत्तताक कठिन प्रसंग मानल जाए; ओकरा अनुकरणीय स्मृति-रक्षाक आवश्यक विधि घोषित करब पाठसँ आगाँ बढ़ब होयत। कलात्मक प्रभाव करुण अछि, मुदा समाधानक कारणात्मक अनिवार्यता असिद्ध।

शंख-रजतक प्रतिध्वनि : आरम्भक अन्तमे प्रत्यावर्तन

चानक उजास पोखरिपर “चाँदी जकाँ” पसरैत अछि। पहिल अध्यायक भ्रम-विवादक शंख–रजत एतय तर्कशास्त्रीय उदाहरणसँ भावात्मक प्रतिध्वनिमे रूपान्तरित होइत अछि। बुधुआ शंख छातीसँ लगबैत छथि; शंख ‘भ्रमक विषय’ रहि मात्र नहि जाइत, स्मृति-संरक्षक एकटा बस्तु बनैत अछि। एहि सांकेतिक पुनरागमनसँ लगभग दस अध्यायक चक्र बन्द होइत अछि: जकर आरम्भ दृश्यबोधक संशय छल, ओकर अन्त नाम आ स्मृतिक अस्तित्व-प्रश्न अछि। तथापि चानीक चमक सत्यक निश्चित प्रमाण नहि; पाठककेँ स्मृतिपर भरोसा करय आ ओकर सीमाकेँ मानय, दुनू अपेक्षा रहैत अछि। उपन्यासक शीर्षकक ‘जलसमाधि’ एतय दार्शनिक अद्वैतक अन्तिम समाधान नहि, अपूर्ण न्यायकेँ लोकस्मृतिमे रखबाक कथात्मक विधि बनैत अछि।

चारि सम्बोधन : अपूर्ण वाक्यक अधिकार सुरक्षित राखब

जलमे प्रवेशसँ पहिने बुधुआ चारि व्यक्तिसँ क्रमशः संवाद करैत छथि। हुलासाक “हम...” पूरा नहि करब—कारण ओ अधिकार बुधुआक नहि—साक्षीक एक महत्त्वपूर्ण संयम अछि। जीवन्तीक “पोथीक साक्षी बनब सेहो...”कें अपन कर्मसँ उत्तर देबाक प्रतिज्ञा अछि; सुखदेवक बेटी, भैंस आ बटवारा-पत्रक याद संस्था द्वारा मेटाएल दावाक स्थानापन्न अछि; रत्नाक नाम जलमे लिखबाक कल्पना शास्त्रीय ग्रन्थसँ बाहर रहल श्रमकें प्रतीकात्मक दृश्यता दैत अछि। चारू सम्बोधनक स्वर भिन्न अछि: मौनक सम्मान, अधूरा प्रतिज्ञाक कर्मगत निरन्तरता, अधिकारक गवाही आ स्त्रीश्रमक नाम-पुनर्स्थापना। एहि विविधतासँ साक्षी-धर्म केवल एक नारा नहि बनैत। मुदा जीवन्तीक वाक्य “पूरा” करबाक कथन आ हुलासाक शब्द “पूरा नहि” करबाक निषेधक बीच सूक्ष्म नैतिक अन्तर अछि; कथावाचक ओकरा अलग व्याख्यायित करैत तँ उपन्यासक साक्षी-नीति आरो स्पष्ट होइत।

दृश्य, सारांश आ कथन-अवधि

अध्यायक आरम्भमे अनेक पीढ़ी गुजरबाक समय एक अनुच्छेदमे समेटल अछि; ई दीर्घ कालक सारांश थिक। रघुनाथ–बुधुआ संवादमे समय दृश्यरूपमे खुलैत अछि; पोखरिक किनारे चारि सम्बोधनमे कथन लगभग वास्तविक वाणी-अवधिक समकक्ष चलैत अछि। जलमे उतरलाक क्षण फेर सूक्ष्म गति पबैत अछि—पानीक चमक, पीपरक झुकब, हवाक रुकब, तारा देखब, बैठब, लहरी शांत होयब। भोरेक खोज छोट दृश्य अछि; तकर बाद शताब्दीक लोकश्रुति फेर तीव्र सारांशमे बदलैत अछि। एहि विस्तार–सङ्कोचनसँ पाठकक भावनात्मक ध्यान जलप्रवेशक क्षणपर केन्द्रित होइत अछि। कथन-समयक एहन नियन्त्रण सफल अछि, मुदा नाटकीय चरमबिन्दुका बाद मृत्यु/अन्तर्धानक सामाजिक प्रक्रिया अत्यल्प प्रमाणमे निष्पन्न होइत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण : बुधुआक भीतरी भय सँ गामक बाहरी जनश्रुति

आरम्भिक दृश्य बाह्य कथावाचकक व्यापक दृष्टिसँ अछि: गाम, पीढ़ी, टोल आ संस्थाक दशा बताओल जाइत अछि। मध्य भागमे बुधुआक निजी आशंका—नाम मरि जाएबाक भय—भीतरसँ प्रस्तुत अछि। पानिमे उतरलाक समयो हुनका ठंढ नहि लगबाक अनुभव कहल गेल अछि; ई कथावाचकक आन्तरिक प्रवेश दर्शबैत अछि। भोरे दृश्य धीवरसभक खोज आ वर्धमानक सार्वजनिक प्रतिक्रियामे बदलैत अछि। अन्ततः “लोक कहय लागल”क माध्यमसँ अज्ञात सामूहिक स्रोत कथा कहबाक अधिकार लेइत अछि। ई दृष्टिकेन्द्रण-परिवर्तन घटना-सम्बन्धी जानकारीक दर्जा बदलैत अछि: बुधुआक अनुभव कथाजगतक प्रत्यक्ष कथन, भोरेक शंख–डोरी प्रत्यक्ष खोज, छाया आ फुसफुसाहट लोकदाबी, “बारह सय” प्रतीकात्मक परम्परा। एहि सभकें समान ऐतिहासिक प्रमाण बनायब आख्यान-स्तरक भेद मेटायब होयत।

गोहिक अनुपस्थिति : शीर्षकक प्रमुख कारणात्मक रिक्ति

अध्यायक आरम्भिक फकरा कहैत अछि “गोहि देह लेलक, नाम छोड़ि देलक”, मुदा विस्तृत जलप्रवेश-दृश्यमे कोनो गोहि देखाओल नहि गेल अछि। भोरे धीवरसभ शव, पएरक निशान वा संघर्षक चिन्ह नहि पबैत छथि। फलतः प्रत्यक्ष दृश्यसँ ‘गोहिक आक्रमण’, ‘गोहिद्वारा शरीर लऽ जेनाइ’ अथवा निश्चित मृत्यु-कारण सिद्ध नहि

होइत। फकरा घटना-पूर्व लोकव्याख्या, प्रतीक वा सामूहिक शोकक भाषाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। एहि अन्तरक कलात्मक लाभ अछि—गोहिक अदृश्यता जलक अनिश्चित भय बनबैत अछि; मुदा रचनाक शीर्षक जे ठोस प्रतिज्ञा करैत अछि, ओकर दृश्यात्मक पुष्टिक अभाव आलोचनात्मक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। खास कऽ सामाजिक न्याय, जाँच आ प्रमाणपर आधारित उपन्यासमे प्रत्यक्ष साक्ष्य तथा लोक-निर्णयक ई दूरी अत्यन्त सार्थक अछि।

मानवेतर सक्रियता : गाछ, पानि आ जीवक एजेंसीक स्तर

पीपरक जड़ि बुधुआ दिस झुकल “जकाँ बुझायल”; हवा “जेना” थमकि गेल; पोखरि चानी जकाँ चमकल। उपमानक एहि आवृत्तिसँ गाछ आ जल संवेदनशील साक्षी बनैत अछि, परन्तु पाठ हुनकर चेतनाक यथार्थवादी प्रमाण नहि दैत। मानवेतर पर्यावरण एतय भावक मंचन, प्रतीकात्मक सहसाक्षी आ स्मृतिक वाहक—तीन भूमिका निभबैत अछि। भैंस, बगुला, गाद, ठंढ आ गाछक विस्तृत उपस्थिति पारिस्थितिक जीवनकेँ कथा-क्षेत्र बनबैत अछि। मुदा बुधुआक निर्णय प्रत्यक्ष मानवीय नैतिक संशयसँ उपजैत अछि; पोखरि ओकरा बाध्य नहि करैत। पर्यावरणीय आख्यानक सूक्ष्मता ई भेद बनौने राखबामे अछि: पानि घटना सम्भव बनबैत अछि आ गाछ स्मृतिक स्थल बनैत अछि, मुदा मानवीय विकल्पक सम्पूर्ण दायित्व मानवेतर वस्तुपर स्थानान्तरित नहि होइत।

भोरेक खोज : भौतिक साक्ष्य आ अनुपस्थित देह

धीवरसभ शंख आ डोरी पबैत छथि। ई वस्तु मात्र कथावाचकक कल्पनात्मक प्रकाश नहि—कथाजगतमे पात्रसभक प्रत्यक्ष भेटल वस्तु अछि। तथापि शंख–डोरीक भेटब स्वयं बुधुआक मृत्यु-विधि वा परालौकिक रूपान्तरण सिद्ध नहि करैत। शव नहि भेटब ‘मृत्यु घटल नहि’क प्रमाण सेहो नहि; ‘मृत्यु भऽ गेल’क पूर्ण भौतिक पुष्टिक समकक्ष सेहो नहि। एहि बीचक रिक्त स्थानमे लोकस्मृति काम करैत अछि। आचार्य वर्धमान शंख पीपरक जड़ि लग राखि एक प्रकारक सार्वजनिक स्मारक-विधि आरम्भ करैत छथि। ओ कहलनि “बुधुआ नहि मरलाह”; एकरा श्रद्धापूर्ण नैतिक कथन मानब उचित अछि, चिकित्सकीय अथवा ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि। एहि क्षणमे साक्ष्यक प्रकार—वस्तु, अनुपस्थिति, व्याख्या—तीनू साफ भिन्न छथि।

नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेचन : पक्ष, हेतु, व्याप्ति आ हेत्वाभास

पहिल पक्ष—बुधुआक देह गोहिने लऽ गेल—एहि हेतु लेल उपयुक्त प्रत्यक्ष चिह्न अनुपस्थित अछि; फकरा मात्र हेतु नहि बनि सकैत। दोसर पक्ष—बुधुआक उपस्थितिक स्मृति पीपर लग जीवित अछि—एहि हेतु रूपमे लोकक कथन, बच्चाक कथा-सुनब आ शंखक सार्वजनिक संरक्षण उपस्थित अछि; ई स्मृति-परम्पराक प्रमाण अछि, प्रेतक पदार्थगत अस्तित्वक नहि। तेसर पक्ष—शव न भेटल, अतः ओ अमर छथि—अभावसँ अमरत्वक निष्कर्ष हेतु-अपर्याप्त आ सम्भावित हेत्वाभास अछि। चौथ, “बारह सय बरख”क सङ्ख्या स्मरणीय प्राचीनताक चिह्न भऽ सकैत अछि, किन्तु ईतिहासक वास्तविक वर्षगणनाक हेतु नहि। एतय अवच्छेदक जरूरी अछि: ‘उपन्यासक लोककथामे’ अमर उपस्थिति मानल जाइत अछि; ‘भौतिक ऐतिहासिक संसारमे’ एहने निष्कर्षक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। ई विभेद कथा-कल्पनाक अपमान नहि, ओकर अलग सत्य-प्रणालीक पहिचान अछि।

“बारह सय बरख” : सांकेतिक काल बनाम आन्तरिक कालक्रम

अध्यायक उत्तरार्धमे कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे लोक पहिले सैकड़ों, फेर हजार, अन्तमे “बारह सय बरख” कहि स्मरणीय गोल सङ्ख्या चुनैत अछि। ओकर अन्तिम टिप्पणीमे बुधुआक जलसमाधि वाचस्पतिक समयसँ लगभग चारि-पाँच सय बरख बाद मानल गेल अछि; अतः बारह सयकेँ ठीक-ठीक जैविक आयु वा कालान्तर मानब त्रुटि थिक। कथा स्वयं एहि असङ्गतिकेँ उद्घाटित करैत अछि, ओकरा लुकेबैत नहि। मिथकीय काल आ दस्तावेजीय कालक ई अन्तर पाठककेँ चेतबैत अछि जे जनश्रुति मापनक घड़ी नहि, अर्थ-संरक्षणक विधि अछि। तथापि उपन्यास भविष्यक अन्य भागमे यदि कभी संख्या एहन ढंगसँ प्रयोग करय जेना ओ कठोर कालगणना हो, तखन पाठकीय भ्रम उत्पन्न भऽ सकैत अछि। ई अन्तरकेँ चिह्नित करब रचनाक दोष घोषित करब नहि; केवल कथावाचकक स्वीकृत काल-विधानक शर्त स्पष्ट करब थिक।

स्मृतिसँ भूत : नामक संरक्षणक संस्था कि व्यक्तिक पवित्रीकरण?

पीपरक जड़ि लग देखाइत छाया आ अपन नामक फुसफुसाहट कथाकेँ मौखिक समुदाय-प्रवाहमे पठबैत अछि। बच्चा सभ पुरान नाम सुनैत अछि, मुदा कथा कहनिहारक परिचय धुँधल होइत अछि। एतय जड़ स्मारक स्वयं कथाक वाहक बनबैत अछि। बूढ़बाक भूत सामूहिक नामकरण द्वारा बनैत अछि, मुदा ई प्रश्न रहि जाइत अछि जे समाजक जीवित सदस्य न्यायिक अथवा अभिलेखीय दायित्व कतेक निर्वाह करैत छथि। जिनक जिनगीमे हुलासा आ सुखदेवक न्याय अधूरा रहल, हुनका सभक नामक आराधना वास्तविक पुनरुत्थानक समान नहि। रचना जँ केवल करुणामय भूतक द्वारा सब नाम बचल घोषित करैत, तँ वर्तमान समाजक जिम्मेवारी हलुक भऽ जाइत। मुदा प्रत्येक नामक अपूर्ण कथाक पुनरागमन स्मरण करबैत अछि जे स्मृति न्यायक बदला नहि, ओकर अपूर्ण हिसाब थिक।

‘साक्षी-गाछ’ आ विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि

साक्षी-गाछक थाम परंपरागत राज-अभिलेख, प्रतिष्ठित पाण्डुलिपि आ विजेताहक इतिहाससँ बाहर बचल कथा एकत्र होइत अछि। हुलासाक वाक्य, जीवन्तीक पोथी, सुखदेवक जमीन आ रत्नाक श्रम—सभक उल्लेख प्रचलित प्रतिष्ठाक विरुद्ध उपेक्षित नामक परम्परा बनेबाक प्रयास अछि। ई समानान्तर इतिहासक आलोचनात्मक सम्भावना अछि, मुदा ‘लोकक कहनाइ’केँ स्वतः आधिकारिक इतिहासक विपरीत ठोस तथ्य मानि नहि लेबाक चाही। सुबूतक प्रश्न एतय नैतिक अड़चन नहि, रचनाक अपन बुनियादी तनाव अछि। समाजक लेखन-व्यवस्था जे नाम मेटबैत अछि, तकर आलोचना हुनका नामक अभिलेख-क्षमता बढ़ौलासँ सशक्त होइत अछि, नहि कि प्रत्यक्ष साक्ष्यक आवश्यकता हटा देलासँ। पीपर स्मृतिपर अधिकारक वैकल्पिक स्थल अछि; ओकरा पूर्ण न्यायालय वा प्रमाणित अभिलेखागारक समतुल्य बनाबयमे सावधानी चाही।

लोकगीत : करुण-रस आ जटिल घटनाक सूत्रीकरण

अन्तिम शोकगीतमे “देह पानिमे गेल” आ नाम गामक मनमे बचल रहबाक प्रतिपक्षी पङ्क्ति अछि। गीत मुख्य प्रसंगक भावनात्मक समाप्ति दैत अछि; सामुदायिक गायन एकल साक्षीकेँ साझा स्मृतिमे बदलैत अछि। करुण

रसक संग शान्त-भावक आभास अछि। “पोखरि गहींर” आ “नाम गहींर”क समान्तरता वक्रोक्तिपूर्ण नाप-रूपान्तरण अछि—भौतिक गहराइ नैतिक स्थायित्वक पर्याय बनैत अछि। मुदा गीतक निर्णायक वाक्य घटनाक अनिश्चितताकेँ संक्षेपमे स्थिर करैत अछि; जखनकि गद्य शव वा गोहि सम्बन्धी निश्चित प्रमाण नहि दैत। एतय गीत सामुदायिक विश्वासक भाषा थिक, फोरेंसिक प्रतिवेदन नहि। ई अन्तर आलोचनामे सुरक्षित राखल जाउ तँ गीतक काव्यात्मक सफलता आ घटनात्मक खुलापन दुनू बचैत अछि।

करुणा, औचित्य आ नैतिक प्रतिनिधित्वक सीमा

बुधुआक शोक केवल हुनकर देहक क्षयक नहि, चारि अनाम/उपेक्षित जीवनक लुप्त होयबाक आशंकाक अछि। एहि कारण करुणाक केन्द्र ‘वृद्ध मनुष्य मरैत अछि’सँ ‘समाजक स्मृति आ अधिकार एकल वृद्धपर निर्भर अछि’ दिशामे सरकैत अछि। रसात्मक सफलताक मूल आधार आवृत्त नाम आ चारि सम्बोधनक नाटकीय क्रम अछि। औचित्यक प्रश्न तथापि अनिवार्य अछि: रचनामे जलप्रवेशकेँ अत्यन्त शान्त, सौन्दर्यपूर्ण आ भय-विहीन देखाओल गेल अछि। एहि सौन्दर्यपरक विन्याससँ मृत्यु-निर्णयक मानवीय जोखिम ओझराएबाक सम्भावना अछि। जीवनक विकल्प आ सामूहिक स्मृतिरक्षाक अन्य उपाय पर गम्भीर विचारक अभाव आलोचनाक सीमा थिक। पात्रक दु:खक प्रति सहानुभूति आ ओकर अन्तिम क्रियाक अपरिहार्यता—ई दुनू अलग मूल्यांकन थिक।

अवस्था / दृश्य	प्रमाणक प्रकार	कथात्मक परिवर्तन	अनिर्णीत प्रश्न
गामक दीर्घ काल	कथावाचकक सारांश	सात पीढ़ी, संस्थाक पुनर्निर्माण	बुधुआक जैविक आयु अस्वाभाविक
नामक रखवारी	शंख–डोरी; आवृत्त नाम	साक्षी बुजुर्ग सामुदायिक स्मृति-वाहक	व्यक्तिक चयनाधिकार; अपूर्ण लिखित अभिलेख
रघुनाथक प्रश्न	पात्र-द्वारा प्रत्यक्ष संवाद	वाचस्पति कालक सन्दर्भ पुनरुज्जीवित	वास्तविक वर्षक संख्या नहि
चारि सम्बोधन	बुधुआक प्रत्यक्ष भाषण	अपूर्ण न्याय व्यक्तिगत स्मृतिमे संकलित	जलप्रवेशक अपरिहार्यता असिद्ध
अन्तर्धान	आन्तरिक दृश्य; “जकाँ” बिम्ब	मानवीय उपस्थितिक रूपान्तरण	गोहिक आक्रमण प्रत्यक्ष नहि
भोरेक खोज	धीवरक शंख–डोरी पाओल	स्मारक-वस्तु सार्वजनिक भऽ गेल	शव वा मृत्यु-कारण नहि मिलल
बूढ़बा-लोककथा	लोकक कहब; प्रतीकात्मक संख्या	छाया, नाम, साक्षी-गाछक परम्परा	लोकस्मृति वस्तुगत प्रेत-सिद्धि नहि

घटना-सूची, कारण-श्रृंखला आ अनिर्णीत शेष

घटनाक पृथक गिनतीमे कम-सँ-कम सात अवस्थापरिवर्तन पहिचानल जा सकैत अछि: (क) अनेक पीढ़ीक बाद गाम आ संस्थाक रूपान्तर; (ख) बुधुआक स्मृति-रक्षक रूपमे स्थितिक पुष्टिकरण; (ग) रघुनाथक प्रश्न द्वारा असम्भव आयुक उद्घाटन; (घ) स्मृति-नाशक आशंकासँ बुधुआक जलदिश निर्णय; (ङ) चारि मृत/विस्मृत

व्यक्तिक प्रति सम्बोधन आ जलमे अन्तर्धान; (च) भोरे धीवरक शंख–डोरी भेटब आ वर्धमानक सार्वजनिक स्थापन; (छ) लोकश्रुति द्वारा बूढ़बा-भूत आ ‘बारह सय’क विन्यास। ई शोध-वर्गीकरण अछि, गणनायंत्रसँ निश्चित घटना-आँकड़ा नहि। सामाजिक कारण-सङ्गति क-घक बीच अछि, मुदा घ-ङक बीच ‘जलप्रवेश मात्र नाम बचा सकैत अछि’ ई व्याप्ति सिद्ध नहि। शंख–डोरीक भौतिक साक्ष्य आ छायाक लोकबोध एक ही प्रमाण-श्रेणी नहि। चन्ना गाछीक भविष्यक विस्तार कथामे अग्रसूचना थिक, प्रत्यक्ष देखाओल ऐतिहासिक वनस्पतिगत घटना नहि।

रचनाक मुख्य उपलब्धि आ मुख्य कमजोरी

एहि अध्यायक सबसँ पैघ उपलब्धि पूर्वकथाक अनेक स्वतन्त्र दुखद घटनाकेँ एकटा दीर्घ स्मृति-चरित्रमे समेकित करब अछि। लोककथात्मक अस्वाभाविक कालक भीतर सामाजिक अभिलेख, जाति, स्त्रीश्रम आ विलम्बित न्यायक विषय जीवित रहैत अछि। चारि सम्बोधन एक-एक नामकेँ विशिष्ट नैतिक स्थान दैत अछि; शंख, डोरी, पीपर आ पोखरि पुनरागामी प्रतीक बनैत अछि। कथावाचक लोकश्रुति आ इतिहासक कालभेद स्वयं उद्घाटित करैत छथि—ई लेखकीय सावधानी अछि। कमजोरीमे जलसमाधिक कारणात्मक अपरिहार्यता असिद्ध रहब, गोहिक प्रत्यक्ष अनुपस्थिति, सामाजिक वैकल्पिक अभिलेखक सम्भावनापर अल्प विचार आ नदी–पोखरिक किछु प्रकृतिगत विवरणक अस्पष्टता अछि। अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण जल-अन्तर्धान पात्रक वास्तविक भय वा समुदायिक प्रतिक्रिया केँ कम स्थान दैत अछि। एहि सीमाक उल्लेख बिनु रचनाक महत्त्वक न्यायपूर्ण आकलन सम्भव नहि।

अध्याय –८९ दिस कथात्मक सेतु आ अन्तिम निर्णय

अध्यायक अन्त बूढ़बाक छायाकेँ चन्ना गाछीक भविष्य सँ जोड़ैत अछि; एतय पूर्वइतिहास, लोकश्रुति आ मुख्य आख्यानक दीर्घ सेतु बनैत अछि। अगिला अध्याय “पहिल राति, पहिल बाढ़ि” मे एहि नव स्मृति-उपस्थितिक सार्वजनिक संकटमे भूमिका जाँचबाक अछि; अगिला पाठ पढ़बाक पहिने एकर विशिष्ट क्रिया अनुमानसँ निश्चित कएल नहि जाए। “बुधुआक जलसमाधि”क स्वतन्त्र निर्णय ई जे अध्याय मृत्युकेँ विजय कहि समाप्त नहि करैत, बल्कि अभिलेखनक असफलतासँ उत्पन्न एक दु:खद स्मृति-प्रविधिक कथा रचैत अछि। शरीरक सुनिश्चित अन्त आ भूतक वास्तविक सत्ता दुनू विषयपर एकहि स्तरक प्रमाण नहि, मुदा गामक लोकक भीतर बूढ़बाक कथा बनि जे निरन्तरता पबैत अछि, ओ कथानकक सत्यापित सामाजिक घटना थिक। न्याय अधूरा रहि सकैत अछि; नामक पुकार ओकरा अधूरा रहबाक ज्ञान नष्ट नहि होमय दैत।

अध्याय –९० : मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

फकराक दाबी — “गोहि देह लेलक, नाम छोड़ि देलक”।

कालक संस्थागत सूचक — “सभा-भवन दुइ बेर टूटल आ दुइ बेर फेर सँ बनल छल”।

ज्ञान-परम्पराक पीढ़ी — “सातम पीढ़ीक उत्तराधिकारी”।

साक्षी-चरित्रक पुनर्स्थापन — “आ बुधुआ अखनहु जीवित छलाह”।

नव लोकनाम — “बूढ़बा”।

नाम-पुनरावृत्तिक व्यक्ति — “हुलासाक”।

नाम-पुनरावृत्तिक व्यक्ति — “जीवन्तीक”।

नाम-पुनरावृत्तिक व्यक्ति — “सुखदेवक”।

नाम-पुनरावृत्तिक व्यक्ति — “रत्नाक”।

प्रकृतिक ऋतुचित्र — “बर्फ जकाँ ठंढा”।

शिष्यक प्रश्न — “बूढ़बा, अहाँ केतेक बरखक छी?”।

ऐतिहासिक विस्मय — “वाचस्पति मिश्र?”।

स्मृति आ देहक अन्तर — “हमर देहमे नहि, हमर स्मृतिमे”।

स्मृतिक भार — “स्मृति भार बनि जाइत अछि”।

हुलासाक अपूर्ण उच्चारण — “हम...”।

प्रतिनिधित्वक सीमा — “ई हमर अधिकार नहि छल”।

जीवन्तीक अपूर्ण कथन — “पोथीक साक्षी बनब सेहो...”।

साक्षीक प्रतिज्ञा — “हम साक्षी बनब, जीवन्ती”।

सुखदेवक संस्थागत चिह्न — “सुखदेव-नियम”।

रत्नाक श्रम-स्मृति — “स्याहीसँ नहि, स्मृतिसँ”।

पीपरक मानवीकरणक सावधानी — “हुनका दिस झुकल जकाँ बुझायल”।

प्रतिज्ञा आ आयु — “ई आयुक सीमा स्वयं तोड़ि दैत अछि”।

शवक अभाव — “ने शव, ने पएरक निशान, ने कोनो संघर्षक चिन्ह”।

वर्धमानक शोकभाषा — “बुधुआ नहि मरलाह”।

लोकश्रुतिक चिह्न — “लोक कहय लागल”।

परम्पराक सङ्ख्या — “बारह सय बरख”।

गीतक नामधारणा — “जे नाम गाम धेने, से कोनो जलसमाधिसँ नहि हेराय”।

परापाठक कालभेद — “चारि-पाँच सय बरख बाद”।

लोककालक व्याख्या — “स्मरण-योग्य अत्यन्त प्राचीनता”।

प्रकरण १२ | मूल अध्याय –८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

पाठाधार, अध्याय-सीमा आ आलोचनाक प्रश्न

“पहिल राति, पहिल बाढ़ि” पूर्व-कथाकालक बारहम अध्याय थिक। मूल संयुक्त उपन्यासक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ पृ. १५२ आ अगिला अध्याय –८८ “डाइनक आरोप”क आरम्भ पृ. १५८ देल अछि; अतः मूल संस्करणक सन्दर्भित पृष्ठ-सीमा १५२–१५७ अछि। ई अनुपात घटनाघनत्वक पूर्ण माप नहि; मुख्य घटनाक कारण, विकल्प आ परिणतिक पृथक परीक्षण जरूरी अछि। मूल कथा पछाति “गढ़ नारिकेलक बान्ह आ मिथिलाक बाढ़ि-परम्परा पर टिप्पणी” शीर्षक व्याख्यात्मक अंश अछि। एकरा कथा-घटनाक स्थानपर ऐतिहासिक प्रमाण नहि मानि, पाठक भीतरक स्वयं-व्याख्या रूपमे पढ़ल जाए। एहि अध्यायक प्रश्न अछि—जल यदि प्रकृतिक स्वतन्त्र शक्ति अछि, तँ विनाशक सामाजिक वितरण ककर निर्णयसँ होइत अछि; साक्षी यदि अलौकिक चेतना अछि, तँ रक्षाक सीमा कतय आरम्भ होइत अछि?

जलसमाधिसँ प्रथम परीक्षा : अनुक्रमक कारणात्मक गाँठ

अध्याय –९० मे बुधुआ अपन देहक अन्तर्धानक पश्चात् बूढ़बाक लोकस्मृतिमे रूपान्तरित होइत छथि। नव अध्यायक आरम्भिक कोष्ठकीय परिचय एक बरखक अन्तर स्पष्ट करैत अछि आ पहिल बाढ़िकेँ बूढ़बाक पहिल परीक्षा कहैत अछि। एहि तरहेँ पूर्ववर्ती अध्यायक अनिर्णीत प्रश्न—नाम बचाएब मात्र कि जीवन बचाएब सेहो—दृश्यक संघर्षमे बदलैत अछि। पूर्वकथाकालयेँ शास्त्रार्थ, पाण्डुलिपि, साक्षी-गाछ आ जलसमाधिक प्रतीक आब तत्काल क्रियाशील कर्तव्यक सामने ठाढ़ अछि। ई अनुक्रम साधारण घटनाक जोड़ नहि; पूर्व स्थापित नैतिक नियमक परीक्षण थिक। मुदा परिचय पहिनेहिं “परीक्षा” कहि दैत अछि, जाहिसँ पाठकक मूल्यांकनक दिशा किछु पूर्वनिर्धारित होइत अछि; परिणाम स्वतन्त्र ढंगसँ अनुभव करबाक स्थान किंचित् संकुचित होइत अछि।

रातिक विस्तार आ कालक संकुचन

कथाक रात्रि कालक्रमे क्रमबद्ध अछि: पहिने हवा, फेर बिजुरी, फेर मूसलधार वर्षा, कमला-बलानक गर्जन, गौरीक स्वप्न, जागरण, चेतावनी, बान्हक पतन, पलायन आ भोरक हानिगणना। एक रातिमे अनेक अवस्थापरिवर्तन होइत अछि; वर्ष भरिक बूढ़बा-अस्तित्व ओकर पृष्ठभूमि मात्र बनैत अछि। आनन्द आ आश्वासनक स्थिर दृश्य नहि, अत्यन्त छोट प्रतिक्रियाकाल कथा-गतिकेँ तीव्र करैत अछि। “मुदा समय बहुत कम छल” सन वाक्य कथनक अवधिकेँ छोट कऽ अनिश्चितताक अनुभव बढ़बैत अछि। भोर आ दुपहरिया पुनः गति मन्द करैत अछि, जाहिसँ सात मृतकक शोक आ नव नियमक अर्थ पाठक बुझि सकथि। जेरार जेनैतक कथन-अवधिक दृष्टिसँ एकर दृश्य, सारांश आ विराम अलग चिन्हाएब उचित अछि; केवल तेज क्रियापद गननाइ पर्याप्त नहि।

नदीक स्वर आ चर्मकार टोलाक स्थल-विन्यास

कमला-बलानक पानि कथा-आरम्भमे सक्रिय अनिश्चित शक्ति बनैत अछि। मुदा आघातक असमानता नदी एकल नहि रचैत अछि। गामक दक्षिणी छोर, निचाँ जमीन, चर्मकार टोला आ माटिक अस्थायी बान्ह एकहि संवेदनशील भूगोलमे रखल गेल अछि। बान्हक रखरखाव केवल किसानक बचल माटिसँ होइत रहल—एहि विवरणमे

सामुदायिक योजना आ समान सुरक्षाक अभाव सूचित अछि। दलित टोलाक अधिक जोखिम कोनो स्वाभाविक दैवी दण्ड नहि; जमीनक उपयोग, निर्माणक प्राथमिकता आ सामाजिक शक्तिसम्बन्धसँ उत्पन्न जोखिम थिक। पर्यावरणीय आख्यानक मुख्य उपलब्धि यैह ठाम अछि: पानि घटनाकेँ प्रेरित करैत अछि, मुदा संरचनात्मक विषमता ओकर हानि-वितरण बदलैत अछि। एतय प्राकृतिक संकट आ सामाजिक अन्याय दू अलग कारणक स्तर छथि, एक-दोसराक पर्याय नहि।

कथावाचक, बदलैत दृष्टिकेन्द्र आ ज्ञानक सीमा

कथा तृतीयपुरुषक बाह्य कथावाचक प्रस्तुत करैत छथि, मुदा अनुभव बूढ़बाक भीतरी भयसँ गौरीक स्वप्न, दादीक सुनबाक शक्ति आ टोलाक सामूहिक भागदौड़ धरि घूमैत अछि। कथावाचक बूढ़बाक नूतन देहक संवेदना जानैत छथि; गौरीक चेतनामे उठल घंटीक आवाज सेहो सुनबैत छथि। एहि व्यापक ज्ञानक बावजूद गौरीक विशेष क्षमता “किएक” अछि, से बूढ़बा स्वयं नहि बुझैत छथि। सर्वज्ञ कथनक भीतर पात्रगत अज्ञान बचाओल गेल अछि; एकरे कारण रहस्य टिकैत अछि। मुदा जे स्थिति केवल गौरी अनुभव करैत अछि आ जे घटना कथावाचक स्वतन्त्र रूपसँ बतबैत छथि, हुनकर प्रमाण-स्थिति भिन्न अछि। समीक्षाक उद्देश्य दुनू स्वरकेँ एकहि वस्तुगत बयानमे विलीन करब नहि, बल्कि कथात्मक विश्वसनीयताक विभिन्न स्तर चिन्हब थिक।

बूढबाक नव अस्तित्व : व्यापक अनुभूति, सीमित सामर्थ्य

बूढ़बा पानिक बढ़तीकेँ अपन जड़ि, देह आ शंखमे अनुभव करैत छथि, मुदा द्वार खटखटाबय चाहितो हुनकर हाथ लकड़ी पर सँ फिसलि जाइत अछि। ई विरोधाभास अलौकिक सामर्थ्यक सस्ता विस्तार नहि: चेतना अत्यन्त व्यापक, मुदा संचारक माध्यम दुर्बल। एकटा साक्षी समाजकेँ आसन्न संकट बुझा नहि सकैत—ई दृश्य कथा भीतरक साक्षी-धर्मक वास्तविक संकट खोलैत अछि। “साक्षी जँ बचा नहि सकए” वला आत्मप्रश्न हुनकर पूर्व प्रतिज्ञाक नैतिक परीक्षण करैत अछि। तथापि पछाति बूढ़बा पानिक धार एक क्षण मोड़ि सकैत छथि; ई नव सामर्थ्यक नियम पहिले सुस्पष्ट नहि कएल गेल अछि। जादुई आख्यानमे नियमक पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या आवश्यक नहि, मुदा चयनात्मक उपलब्धि आ असफलताक कारणक सुसंगति परखब आवश्यक अछि।

गौरीक परिचय : पीढ़ी, ज्ञान आ वंशक असमान अधिकार

रत्ना–मालतीक वंशक चौथी पीढ़ीक सात बरखक गौरी चर्मकार टोलामे दादी लग सुतल अछि। दादी जड़ी-बूटीक विद्या रत्नासँ सीखने रहबाक कथन परिवारक स्त्री-परम्पराकेँ बौद्धिक उत्तराधिकार बनबैत अछि। ई विवरणक निहितार्थ केवल चमत्कारक पात्र चुनब नहि: जे समुदाय पहिने शास्त्रार्थक प्रवेश-द्वारसँ दूर छल, ओतहि चेतावनीक पहिल ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। गौरीक सपनाकेँ गामक लोक बच्चाक कल्पना कहैत अछि; दादी ओकर अस्पष्ट अनुभूतिक प्रति सचेत छथि। दुनू व्याख्या पाठमे जीवित रहैत अछि। अलौकिक क्षमताकेँ जाति वा वंशक जैविक गुण मानब अनुचित होयत; उपन्यास एकटा विशिष्ट कल्पित पात्रक माध्यमेँ उपेक्षित ज्ञानपरम्पराक नैतिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि।

स्वप्नक शब्द आ सूचना-प्रवाहक तीन कड़ी

बूढ़बा सामान्य आवाजसँ गामकेँ जगा नहि पाबैत छथि। गौरीक स्वप्नमे मात्र एकटा संकेत पुनरावृत्त होइत अछि —“उठ। उठ। उठ।” पहिल कड़ी अलौकिक अपील, दोसर गौरीक जागरण आ दादीकेँ सूचना, तेसर दादी द्वारा दरवाजा खोलि बाहरी पानिक आवाज आ चमक देखब थिक। सामाजिक चेतावनी वास्तविक रूपसँ तखन फैलैत अछि, जखन दादी अपन प्रत्यक्ष अवलोकनक आधारपर टोलाकेँ बजबैत छथि। एहि क्रममे स्वप्नक प्रत्यक्ष प्रमाण-स्थिति गौरी लेल, श्रव्य–दृश्य संकेत दादी लेल, आ सामूहिक घोषणा टोला लेल अलग-अलग अछि। नव्य-न्यायक प्रमाण-परीक्षणमे स्वप्नसँ प्राप्त संकेतकेँ स्वतः सार्वजनिक प्रत्यक्ष अथवा सार्वत्रिक शब्दप्रमाण मानल नहि जा सकैत; ओकर व्यवहारिक मूल्य पछातिक सत्यापित आपदासँ समर्थित होइत अछि।

कुकुरक भुकब, नदीक गर्जन आ सूचनाक पर्यावरण

दादी गौरीक स्वप्नकेँ पहिने दुःस्वप्न मानैत छथि, मुदा बाहर पानिक गर्जन आ कुकुरक अनवरत भुकब सुनि निर्णय बदलैत छथि। मानवेतर ध्वनि एहि ठाम समाचारक आवश्यक अङ्ग बनैत अछि। कथाक पर्यावरणिक संज्ञान केवल मानवीय आँखिसँ नहि; पशुक व्यवहार, हवाक स्वर आ पानिक चमक समयपूर्व चेतावनीक संकेत बनैत अछि। मुदा कुकुर “स्वयं किछु देखि रहल” छथि—ई कथावाचकक उपमा, प्रमाणित पशु-पूर्वानुमान नहि। पशुक भुकबाक एकमात्र निश्चित कारण पाठ नहि दैत। एहि सावधानीसँ मनुष्येतर सक्रियताक साहित्यिक अभिप्राय सुरक्षित रहैत अछि आ प्राकृतिक घटनाक वैज्ञानिक निश्चयक मनगढ़न्त विस्तार नहि होइत।

बान्हक टूटब : घटनात्मक घनत्वक वास्तविक केन्द्र

बान्हक टूटब निर्णायक बाह्य घटना अछि: पूर्वस्थिति—असुरक्षित माटिक बाँध; व्यवधान—कमला-बलानक तीव्र पानि; तत्क्षणिक परिणाम—निचला टोला डूबब; पात्रक विकल्प—घर छोड़ि ऊँच जमीन दिस भागब। एहि चारि चरणसँ मुख्य कारणात्मक शृंखला बनैत अछि। “पएरक टखना धरि” सँ “घुटना धरि” बढ़ैत पानि समयक अल्पताकेँ शरीरक अनुभूतिमे नापैत अछि। घटनाक गति पाठककेँ प्रत्यक्ष संकटमे प्रवेश करबैत अछि, यद्यपि नदीक जलस्तर, बरसातक अवधि आ वास्तविक दूरीक मापन नहि देल अछि। जखन आलोचक घटनाघनत्व गनत, तखन एकहि बान्ह-विफलताक अलग-अलग विशेषणकेँ अनेक स्वतन्त्र घटना नहि मानत; चेतावनी, पलायन, रास्ताक अवरोध आ मृत्युकेँ अलग अवस्थापरिवर्तन मानब अपेक्षित अछि।

श्मशानक टीला : अशुभ स्थानक जीवनरक्षक उलटफेर

गौरीक परिवार ओहि ऊँच टीला पर पहुँचैत अछि जतय पुरान श्मशान अछि आ गामक लोक सामान्यतः अशुभ बुझि ओतय नहि जाइत। ई भूगोलक नैतिक पुनर्पाठ थिक। मृत्यु-संलग्न निषिद्ध स्थल विपत्तिमे जीवनरक्षक बनैत अछि; धार्मिक लोकविश्वास आ स्थलाकृतिजन्य सुरक्षा एक-दोसरासँ टकराइत अछि। टीला जँ ऊँच अछि तँ पानिसँ बचबाक व्यावहारिक कारण उपलब्ध अछि, यद्यपि बूढ़बाक एकक्षणीय जल-मोड़ आ पलायनक निर्णायक समय एक संग कार्य करैत अछि। कथा श्मशानकेँ केवल अन्धविश्वास-विरोधी पाठ नहि बनबैत: मृत्यु आ जीवनक

सांस्कृतिक प्रतीक उलटि मानवीय उपयोगिताक नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। ई स्थान-परिवर्तन कालस्थानक एकटा ठोस नाटकीय मोड़ अछि।

एक परिवारक उद्धार आ सामूहिक हानिक नैतिक तनाव

बूढ़बा गौरीक भय अनुभव कऽ पानि एक क्षण मोड़ैत छथि, जाहिसँ परिवार टीला धरि पहुँचैत अछि। तुरन्त अगिला पंक्ति स्मरण करबैत अछि जे बाँकी टोला समान भाग्यशाली नहि। अतएव अलौकिक बचाव सर्वशक्तिमान न्याय नहि, आंशिक हस्तक्षेप अछि। ई सीमा कथा लेल नैतिक रूपसँ उपयोगी अछि, किएक तँ चमत्कार समस्त सामाजिक विनाशकेँ मेटि नहि सकैत। मुदा प्रश्न उभरैत अछि—गौरीक परिवार लेल बूढ़बाक संवेदनशीलता आ सुभागी सहित आन लोकक बचाव-विफलतामे कोन कथाजगत-नियम कार्य करैत अछि? बूढ़बाक अपन अनभिज्ञता एक सम्भाव्य उत्तर अछि, मुदा पर्याप्त कारणात्मक स्पष्टता नहि। ई अनिश्चितता रसोत्पत्ति लेल उपयोगी, तर्कक अन्तिम समाधान लेल अपूर्ण अछि।

सुभागीक मृत्यु : दृश्य, परोक्ष गवाही आ पीढ़ीक क्षति

सोमर–रत्नाक पुरान घर बहि जाइत अछि। वृद्ध, अपाहिज सुभागीकेँ परिजन उठाकऽ भागबैत अछि, मुदा धारा हुनका छीनि लैत अछि। सुभागीक अन्तिम कथित प्रश्न “गौरी बाँचल की?” घटनाकेँ नामसँ बाँधैत अछि, मुदा कथावाचक ओकरा “गामक लोक बादमे कहैत रहल” द्वारा प्रस्तुत करैत छथि। तेँ ई अन्तिम शब्द प्रत्यक्ष दर्ज ध्वनिलेख नहि; सामुदायिक पश्चात्-वृत्तान्त अछि। मार्मिकता अपन स्थानपर अछि, मुदा प्रमाणक स्थिति ओही कारणसँ स्पष्ट चिन्हल जाए। गौरी सुरक्षित छथि आ सुभागी मरैत छथि—ई परिवारक पीढ़ीगत निरन्तरता आ छिन्नताक एक संग चित्रण थिक। वृद्धक शारीरिक असहायता आपदामे भिन्न प्रकारक जोखिम सेहो दृश्य करैत अछि; जातिक संग आयु आ अपाङ्गताक अन्तरसम्बन्ध एतय तथ्यात्मक कथ्यसँ उभरैत अछि।

सात मृतक, छह अनाम : गिनती आ अभिलेखक सत्ता

कथा सात मृत्यु बतबैत अछि, मुदा सुभागीक अतिरिक्त छह जनक नाम सरकारी अभिलेखमे ठीक सँ नहि लिखल गेल। राज-कर्मचारी पहिने ब्राह्मण-टोलाक धान आ मवेशीक हानि गनैत छथि। एहि एक दृश्यसँ उपन्यास मृत्युक संख्या आ नामक न्यायबीचक अन्तर खोलैत अछि। सातक कुल-गणना शोकक समग्रता नहि; छह व्यक्तिक नामक गुम होएब लोक-स्मृतिक आवश्यकीय संकट अछि। राज्यक अभिलेख एतय सत्ता-सापेक्ष दस्तावेज बनैत अछि; तथापि प्रत्येक कर्मचारीक आशय अथवा सम्पूर्ण प्रशासनिक प्रणालीक ऐतिहासिक व्यवहार एहि एक काल्पनिक दृश्यसँ सिद्ध नहि कएल जाए। विदेह समानान्तर इतिहासक पद्धतिमे प्रश्न ई रहत: सरकारी प्रविष्टिक बाहर परिवारक मौखिक गवाही, श्रमक अवशेष आ सामाजिक स्मृतिसँ कतेक अलग इतिहास बनैत अछि?

बूढ़बाक रोदन आ पीपरक पात : करुण रसक संवाहक

भोरमे बूढ़बा पहिल बेर रोइत छथि, मुदा आँसू आ आवाज मानव-देहक रूपमे उपस्थित नहि। पीपरक पात ओससँ अधिक भीजल “जेना” देखाइत अछि। एहि उपमासँ प्रकृति शोकक दृश्य-माध्यम बनैत अछि; कथावाचक पीपरमे सचमुच शारीरिक आँसू स्थापित नहि करैत छथि। करुण रसक आलम्बन मृत सुभागी आ अन्य अनाम लोक छथि;

बूढ़बाक असमर्थता अनुभावक रूपमे कातरता बढ़बैत अछि। ई बिम्बक सफलता भावक अप्रत्यक्षता अछि—जखन रोदन सुनल नहि जा सकैत, गाछ दृश्यक भाषा बनैत अछि। मुदा वृक्षकेँ पूर्ण मानवीय भाव-दाताक रूपमे पढ़ल जाए तँ ओकर स्वतन्त्र पर्यावरणीय अस्तित्व केवल प्रतीकमे सिमटि सकैत अछि; एतय दुनू पठन सम्भव अछि।

गौरी–बूढ़बा संवाद : आंशिक सफलताक स्वीकारोक्ति

दुपहरियामे गौरी दादीक शोक लऽ पीपर लग पहुँचैत अछि। बूढ़बाक उत्तर—“हम केवल किछु बचा सकलहुँ”—नव अस्तित्वक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नैतिक कथन अछि। ओ गौरीक रक्षाकेँ पूर्ण उपलब्धि मानि आत्मसन्तुष्ट नहि छथि; हुलासा, जीवन्ती आ सुखदेवक पुरान असमर्थताकेँ पुनः स्मरण करैत छथि। एहि प्रकारमे शृंखलाक स्मृति नैतिक शिक्षाक स्रोत बनैत अछि, न कि मात्र नामक सूची। बचाओल गेल प्राणक मूल्य आ नहि बचल प्राणक शोक, दुनू एक साथ ठाढ़ अछि। मुदा चरम करुण क्षणक बाद स्पष्ट नैतिक व्याख्या दीर्घ होएबाक कारण पाठकक स्वनिर्णयक अवकाश किछु कम होइत अछि। कथा एहि शिक्षाकेँ गौरीक प्रश्नक माध्यमेँ नाटकीय बनबैत अछि, तथापि सम्पूर्ण मतभेद नहि उभारैत।

आधा-भूतक उपमान : साक्षी-नीतिक नव व्याकरण

बूढ़बा गौरीक सुनबाक क्षमताकेँ पूर्णरूपेँ बुझि नहि पबैत छथि। ओ “शायद” कहैत अनुमान करैत छथि जे साक्षी बनय लेल तैयार मनुष्य दुनू संसारक बीच पातर डोरी बनि जाइत अछि। ई वाक्य वस्तुगत प्रेत-विज्ञानक नियम नहि, पात्रक सम्भावनात्मक आत्मव्याख्या अछि। ‘आधा-भूत’ सामाजिक रूपक सेहो भऽ सकैत अछि—जे अनसुन्नल आवाज सुनैत अछि, ओकर स्थान जीवित समाज आ लुप्त स्मृतिक सीमापर बनैत अछि। नवी कहबी बनबाक क्रम—निज संवादसँ घरेलू चेतावनी धरि—दर्शबैत अछि जे शब्द केना अनुष्ठानसँ अलग होइत लोकबोध बनैत अछि। अनुमानकेँ निश्चित प्रत्यक्ष बनायब नव्य-न्यायक प्रमाण-विचारक विपरीत होयत। कथामे एही अनिश्चयक संरक्षण ओकर कलात्मक लाभ अछि।

गामक नाम बदलनाइ : काल्पनिक व्युत्पत्ति आ लोक-अभिलेख

कथा कहल करैत अछि जे बाढ़िक बाद पक्की ईंटा आ शिलासँ बान्ह बनल, आ “नारिकेल-घाट” धीरे-धीरे “गढ़ नारिकेल” कहल जाए लागल। नामक ‘गढ़’ नव बान्हक स्मृतिक रूपमे जोड़ल गेल। मूल अध्यायक पाछाँक टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे ई स्थान-नामक काल्पनिक व्युत्पत्ति अछि, वास्तविक ऐतिहासिक उत्पत्ति बतयबाक प्रमाण नहि। पाठक एतय भौगोलिक नामकेँ सामूहिक उत्तरदायित्वक अभिलेख रूपमे पढ़ि सकैत छथि। नाम बदललासँ सात मृतक पुनर्जीवित नहि होइत छथि; मुदा सार्वजनिक स्थानक बोलीमे त्रासदीक स्मरण स्थापित होइत अछि। एहिमे प्रश्न सेहो अछि: नामक मूल कथा कालान्तरमे कथा-सुविधाक एक सुन्दर नीतिपाठ बनि वास्तविक उपेक्षाक विवरण मेटि तँ नहि दैत?

बान्हक नव प्राथमिकता : नीतिगत परिवर्तन आ अन्तर्विरोध

विपत्तिक बाद चर्मकार टोलाक हिस्साकेँ सबसँ पहिने आ सबसँ मजबूत बनाओल जाइत अछि। कथा प्राकृतिक विपत्तिकेँ सामाजिक निर्णयमे बदलैत अछि: पहिने उपेक्षित परिक्षेत्र आब संरक्षणक प्राथमिक स्थान पबैत अछि। ई घटनाक वास्तविक रूपान्तरण—भौतिक निर्माण आ सामुदायिक नीति—आंशिक चमत्कारसँ बेसी ठोस परिणति अछि। मुदा कथन समग्र निर्णयकेँ एक अनुच्छेदमे समेटि दैत अछि: धनक स्रोत, श्रम-विभाजन, विरोधी पक्ष, बान्हक रखरखाव आ भविष्यक आपदामे ओकर कार्यक्षमता दृश्यरूपेँ नहि जाँचल गेल। आलोचनात्मक निर्णय द्वैध अछि: नीतिगत न्यायकेँ भौतिक स्थलमे रूप देब उपलब्धि, मुदा कठिन सामूहिक प्रक्रियाक अत्यन्त शीघ्र समापन संरचनागत सरलीकरण। अगिला अध्यायक बीस बरख बादक समय-अन्तर एहि नीतिक उत्तरजीविताक आंशिक जाँच देत।

सामूहिक गीत आ विपत्तिक परिणामी अर्थ

अन्तिम गीत बाढ़िक ध्वंसक बदला सामुदायिक पुनर्निर्माणक भाषा चुनैत अछि। “पहिल बाढ़ि घर लेलक हे” आ “जे राति बचल रे” सन पंक्ति दृश्य-विशेषकेँ पुनरावर्तित लोकस्मृतिमे बदलैत अछि। गीतक लय शोकक असहनीय विवरणसँ सामूहिक उबार दिस कथात्मक स्वर फेरैत अछि; ई लोक-संवेदना आ उत्तरजीविताक कलात्मक काम करैत अछि। मुदा सात मृतक आ अनाम छह जनक शोकक तुरन्त बाद आशावादी वाक्य पाठक लेल भावनिक गति बहुत तेज करि सकैत अछि। करुण रससँ उत्साहक दिस ई संक्रमण कथाक उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि, पर आश्वासन आ पीड़ितक निरन्तर असुरक्षा बीचक तनाव पुरजोर बनल रहैत अछि। गीतकेँ घटनाक पूर्ण समाधान नहि मानि परवर्ती सामूहिक अर्थ-निर्माणक अभिव्यक्ति बुझल जाए।

घटना-कारण-परिणामक पृथक वर्गीकरण

मुख्य घटना एकटा विनाशकारी बाढ़ि अछि, मुदा एकर आसपास अनेक स्वतन्त्र निर्णय आ अवस्थापरिवर्तन घटैत अछि: नदीमे उफान, बूढ़बाक असफल चेतावनी, गौरीक स्वप्न, दादीक बाहरी निरीक्षण, टोलाक पलायन, बान्हक ध्वंस, गौरीक परिवारक रक्षा, सुभागी सहित सातक मृत्यु, अपूर्ण हानिगणना, बूढ़बा–गौरी संवाद, बान्हक पुनर्निर्माण आ स्थान-नामक परिवर्तन। एहि सभकेँ समतल सूची बनायब सँ क्रम आ दायित्व हराएत। उदाहरणतः स्वप्न स्वयं बान्हक कारण नहि; बान्हक कमजोरी पूर्ववर्ती सामाजिक कारण; नदीक बढ़ल धार निकटवर्ती भौतिक कारण; चेतावनीक समय सीमा बचावक परिणाम प्रभावित करैत अछि। अलौकिक जल-मोड़ कथाजगतक कारण थिक, वैज्ञानिक जलप्रवाहक स्वतन्त्र सत्यापन नहि। घटनात्मक घनत्वक आकलनमे एहि स्तरक अनुशासन महत्त्वपूर्ण अछि।

दृष्टिकेन्द्रक राजनीति : के बजैत अछि, के नहि

गौरी, दादी आ बूढ़बाक आवाज पाठक सुनैत छथि; सुभागीक अन्तिम शब्द लोकक प्रतिवेदनसँ आबैत अछि; आन छह मृतकक कोनो स्वयं उच्चारित कथन नहि। ई मौन रचनाक विषय सेहो अछि आ सीमा सेहो। एक दिस कथा अभिलेखीय बहिष्कार उजागर करैत अछि; दोसर दिस ओ छह जीवनक स्वतन्त्र अनुभव पाठमे विस्तृत नहि कऽ पबैत। जे समाज नाम नहि लिखैत, कथावाचक स्वयं हुनकर नाम पुनः प्राप्त नहि करैत—एहि बिन्दुपर

प्रतिनिधित्वक नैतिक विरोधाभास उत्पन्न होइत अछि। एहि असङ्गतिकेँ दोषक अन्तिम निर्णय कहबाक पहिने आगामी अध्यायमे नामक पुनर्स्मरण होइत अछि कि नहि, से जाँचब आवश्यक। तथापि एहि अध्यायक सीमाभीतर अज्ञात मृतकक संख्याक सन्दर्भमे गौरीक परिवार अपेक्षाकृत अधिक कथात्मक स्थान पबैत अछि।

शैलीगत असङ्गति, अतिव्याख्या आ दृश्य-संगति

बाढ़िक आरम्भमे आकाश फाटबाक, मूसलधार वर्षा, कुकुरक भुकबाक आ नदीक गर्जनक वर्णन अछि; चेतावनीक ठाम दादीक चिचिआहट सुनाइबाक कारण “राति एहन शांत छल” कहल गेल अछि। ई भाषिक असङ्गति स्पष्ट अछि—एके समयक ध्वनि-वर्णनमे तीव्र कोलाहल आ सम्पूर्ण शान्ति संग राखल गेल; जँ मौनकेँ रात्रिक निन्द्रा वा मनुष्यक अन्यमनस्कता बुझायल होइत, तँ पाठमे संकेत चाही। एही तरहेँ बूढ़बाक देहहीनता आ क्षणिक जल-मोड़क नियम पात्र स्वयं नहि बुझैत; ई अस्वाभाविक विधान कथासंगति जाँचब मांगैत अछि। स्थान-नामक नव व्युत्पत्ति आ बान्हक त्वरित सुधार अल्प कालमे उपसंहार-सन समाधान दैत अछि। एहि कमजोर बिन्दुक उल्लेख रचनाक करुण संवेदना वा वंचित समुदायपर ओकर ध्यानकेँ कम नहि करैत; बल्कि उपलब्धि आ शिल्पगत सीमा दुनूकेँ न्याय दैत अछि।

नव्य-न्याय, भारतीय काव्यशास्त्र आ समवेत निर्णय

नव्य-न्यायक भाषामे परीक्षणीय पक्ष केवल “गाम डूबल” नहि, बल्कि “असमान सुरक्षा सामाजिक जोखिम बढ़बैत अछि” थिक; हेतु—कमजोर माटिक बान्ह आ उपेक्षित निचला टोला। एहि एक काल्पनिक उदाहरणसँ सर्वदेशीय व्याप्ति सिद्ध नहि होइत; उपाधि रूपमे वर्षाक तीव्रता, स्थलाकृति, रखरखावक सामर्थ्य आ समयपर चेतावनी निर्णायक होइत अछि। गौरीक स्वप्न निजी अनुभूति अछि; दादीक निरीक्षण सामाजिक निर्णयमे अधिक साझा जाँचयोग्य आधार दैत अछि। काव्यशास्त्रीय स्तरपर करुण रस, पीपर-पातक ध्वन्यात्मक शोक, श्मशानक वक्रोक्तिपूर्ण उलटफेर आ उपेक्षित टोलाक सुरक्षाकेँ प्राथमिकता देबाक औचित्य महत्त्वपूर्ण अछि। अध्यायक सर्वप्रधान उपलब्धि अलौकिक उद्धार नहि, बल्कि आपदाक सामाजिक विषमता खोलि ओकर प्रतिवादकेँ बान्ह-निर्माणमे उतारब अछि। एकर सीमा तीव्र नैतिक निष्कर्ष, छह मृतकक मौन आ जल-मोड़क अपूर्ण नियम छथि। तेँ ई अध्याय पूर्ववर्ती स्मृति-आख्यानकेँ सामाजिक क्रियामे बदलबाक सशक्त, मुदा निर्विवाद नहि, सन्धिबिन्दु अछि।

अध्याय –८८ दिस सेतु आ अन्तिम आलोचनात्मक स्थिति

पहिल बाढ़ि पछाति गामक नूतन बान्ह आ गौरीक अलग प्रकारक साक्षी-सामर्थ्य भविष्यक सामाजिक संघर्षक सामग्री बनैत अछि। आगामी अध्याय –८८क शीर्षक “डाइनक आरोप” संकेत करैत अछि जे असामान्य स्त्रीज्ञानक सामाजिक स्वीकार स्वयंसिद्ध नहि। मुदा आगामी घटनाकेँ एतय घटित मानब अनुचित—एहि अध्यायमे गौरी अपन स्वप्नक कारण जनैत नहि, बूढ़बा सेहो असमर्थता स्वीकार करैत छथि। एहि अनिर्णयकेँ सुरक्षित राखि आलोचनाक पहिल निष्कर्ष अछि: पूर्वकथाकालक अतीत आब वंचित समुदाय, जल-सुरक्षा आ अभिलेखीय अधिकारक वर्तमान संकटमे प्रवेश करैत अछि। पात्रक निजी शोक सामुदायिक शब्द, शिलानिर्माण आ परिवर्तनक आचार बनैत अछि; किन्तु स्मृति पूर्ण तखन होयत जखन सात मृतकक नाम आ हानिक न्यायिक उत्तरदायित्व संरक्षित हो। एहि प्रश्नकेँ आगामी प्रकरणमे प्रमाणसहित अनुसरित कएल जाएत।

अवस्था / घटना	पाठ-साक्ष्यक स्वरूप	कारण–परिणाम	अलग परीक्षणीय सीमा
कमला-बलानक बढ़ती	मौसमक वर्णन; बूढ़बाक अनुभूति	जल संकटक निकटवर्ती प्राकृतिक कारण	जलस्तरक बाहरी मापन अनुपस्थित
चर्मकार टोलाक कमजोर बान्ह	कथावाचकक सामाजिक-स्थलीय विवरण	निचला टोला विशेष जोखिममे	रखरखाव आ स्रोत-वितरणक दीर्घ प्रक्रिया संक्षिप्त
बूढ़बाक स्वर-विफलता	अलौकिक दृष्टिकेन्द्र	भौतिक दरवाजा पर चेतावनी असफल	नव देहक नियम अनिश्चित
गौरीक स्वप्न–दादीक निरीक्षण	निज अनुभूति → साझा श्रव्य–दृश्य संकेत	चेतावनी आ पलायनक शुरुआत	स्वप्न सार्वजनिक प्रत्यक्ष नहि
बान्हक पतन	बाह्य दृश्य; टखना–घुटना जल	घर बहब, भागबाक समय घटब	सामाजिक जोखिमक ठोस परिणाम
श्मशान टीला, जल-मोड़	गौरी-परिवारक बचब; अलौकिक उपमा	एक परिवार जीवित	सामूहिक उद्धार नहि; नियम अस्पष्ट
सुभागी सहित सात मृत्यु	घटनात्मक कथन; अन्तिम शब्द लोकक प्रतिवेदन	विस्थापन, परिजनक शोक	छह मृतक अनाम; उद्धृत शब्द परोक्ष
राजकर्मी हानिगणना	कथावाचकक संस्थागत टिप्पणी	वर्ग/जाति-सापेक्ष अभिलेखीकरण	सामान्य इतिहासक स्वतन्त्र प्रमाण नहि
नव पक्का बान्ह	कथावाचकक उपसंहारी सारांश	उपेक्षित टोलाक सुरक्षा प्राथमिक	निर्माण-प्रक्रिया/दीर्घकालीन टिकाउपन अनुपस्थित
गढ़ नारिकेल नाम	कथा-पश्चात् स्वव्याख्या	सामूहिक स्मृतिक स्थान-चिह्न	काल्पनिक व्युत्पत्ति, वस्तुगत इतिहास नहि

अध्याय –८९ : घटना-प्रमाण-कारण सारणी

सारणीमे अलौकिक वर्णन, दृश्यगत क्रिया, प्रतिवेदन आ कथा-पश्चात् व्याख्याकेँ अलग प्रमाणश्रेणीमे राखल गेल अछि। सारणी मूल कथानकक पूरक परीक्षण थिक; एकर पंक्ति वास्तविक घटना-सूचीक पहिल मसौदा अछि, अन्तिम सांख्यिकीय घटनाघनत्व नहि।

अध्याय –८९ : मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

“पहिल बाढ़ि घर लेलक” — आरम्भिक फकरा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“बुधुआक जलसमाधिक ठीक एक बरख बाद” — अध्यायपूर्व कोष्ठकीय काल-संकेत; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“राति आधा बीतल छल” — कालगत आरम्भ; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“आकाश फाटि गेल” — आपदाक आरम्भिक बिम्ब; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“कमला-बलान अपन सीमा तोड़य जा रहल छल” — अलौकिक अनुभव आ जोखिम; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“केवल किछु माटिक ढेर” — बान्हक असुरक्षा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“हुनकर हाथ आब दरवाजाकेँ स्पर्श नहि कऽ सकैत छल” — बूढ़बाक सीमित क्रिया; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“साक्षी जँ बचा नहि सकए” — आत्मप्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“रत्ना-मालतीक वंशक चौथी पीढ़ीक” — गौरीक परिचय; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“उठ। उठ। उठ।” — गौरीक स्वप्नक चेतावनी; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“पानि आबि रहल अछि” — सामूहिक संकटसँ पहिल व्यक्तिगत सूचना; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“पानिक गरजक आवाज” — दादीक श्रव्य संकेत; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“मुदा समय बहुत कम छल” — कथनगत काल-संकुचन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“बालूक किला जकाँ ढहि गेल” — बान्हक विफलता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“ऊँच टीला” — बचावक स्थल; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“कोनो अदृश्य हाथ” — अलौकिक बचावक उपमा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“सुभागी छूटि गेलि” — मृत्यु-दृश्यक प्रमुख परिवर्तन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“गौरी बाँचल की?” — सामुदायिक पश्चात्-वृत्तान्तमे अन्तिम वाक्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“ओ सभ चर्मकार टोलाक छल” — नाम-अभिलेखनक असमानता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“कोनो आँसू नहि, कोनो आवाज नहि” — बूढ़बाक शोकक देहहीनता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“हम केवल किछु बचा सकलहुँ” — नैतिक सीमाक स्वीकार; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“शायद जे मनुष्य साक्षी बनय हेतु तैयार होइत अछि” — अनुमानात्मक आत्मव्याख्या; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“पाकल ईंटा आ शिलासँ” — नव बान्हक निर्माण; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“चर्मकार टोला दिसक हिस्सा सबसँ पहिने” — प्राथमिकताक फेरबदल; मूल खण्ड–०, अध्याय –८९।

“एकटा काल्पनिक व्युत्पत्ति” — अध्याय-पश्चात् टिप्पणी; ई ऐतिहासिक तथ्य नहि।

प्रकरण १३ | मूल अध्याय –८८ — डाइनक आरोप

मूल पाठ, अध्याय-सीमा आ परीक्षणक उद्देश्य

“डाइनक आरोप” पूर्व-कथाकालक तेरहम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त उपन्यासक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ पृष्ठ १५८ आ अगिला अध्याय –८७ “टोलाक द्वारपर”क आरम्भ पृष्ठ १६४ अछि; एहि प्रकार मुद्रित संस्करणमे सन्दर्भित सीमा पृ. १५८–१६३ मानल जा सकैत अछि। ई प्रतिशत कथा-परिवर्तनक वस्तुगत घनत्व नहि, केवल प्रारम्भिक भाषिक संकेत थिक। मूल अध्यायमे आरम्भक फकरा, बीस बरख पछातिक मुख्य कथा, अन्तिम स्त्रीगीत आ “डाइन-प्रथा आ भूमि-अधिग्रहणक ऐतिहासिक सम्बन्ध” शीर्षक विशेष टिप्पणी अलग पाठरूप छथि। एहि समीक्षाक उद्देश्य आरोपक सामाजिक कार्यविधि, बनाओल प्रमाणक तर्कदोष, प्रतिरोधक अधूरा क्षण आ कथावाचकक चयनक संयुक्त आलोचना करब अछि। परिशिष्ट-सदृश विशेष टिप्पणीकेँ स्वतन्त्र इतिहास-साक्ष्य नहि मानल जाएत।

बीस बरखक काल-लोप : एक रातिसँ एक पीढ़ीक दूरी

पछिला अध्यायमे सात बरखक गौरी बाढ़िक चेतावनी सुनैत छलीह; एतय कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे बीस बरख बीति गेल। गौरी सत्ताइस बरखक, दू बच्चाक माए, जड़ी-बूटीक जानकार आ समुदायमे परिचित वैद्य छथि। ई अंकगणितीय काल-संगति अध्याय-क्रमकेँ स्थिर आधार दैत अछि। मुदा बीस बरखक भीतर सामाजिक परिवर्तन—पक्का बान्ह, कृषि-विस्तार, ढोल-मृदंगक दूरस्थ बाजार—दृश्य-दर-दृश्य नहि, सारांश रूपमे प्रस्तुत अछि। जेरार जेनेतक अवधि-विचारमे दीर्घ कथाकालक संक्षेप कथाक नूतन संकटकेँ शीघ्र खोलैत अछि, मुदा श्रम, उत्पादन आ बान्ह-रखरखावक विस्तृत अनुभव पाठक समक्ष उपस्थित नहि होइत। पूर्व अध्यायक विपत्ति एहि अध्यायमे सम्पत्तिक पुनर्वितरणक सम्भावना बनि लौटैत अछि; समय-लोप विनाशक उत्तरक कालखंडकेँ संक्षिप्त करैत अछि।

बान्ह, टोल आ समृद्धि : जलसुरक्षाक अनपेक्षित राजनीतिक परिणाम

नव बान्ह केवल प्राकृतिक जोखिम सँ रक्षा नहि करैत; ओकर ऊँच जमीनपर पान आ तरकारीक खेती फलैत अछि, हस्तशिल्पक माल दूरक हाट धरि पहुँचैत अछि। यसँ चर्मकार टोलाक श्रमक अर्थगत मूल्य बढ़ैत अछि। प्रथम बाढ़िमे जे सुरक्षा-अभाव प्राणहानिक कारण छल, ओकर आंशिक सुधार एतय सामाजिक सम्मान आ भूमि-अधिकारक संघर्ष जन्मबैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानक ई महत्त्वपूर्ण कारण-शृंखला अछि: नदीक जोखिम → सामुदायिक निर्माण → उत्पादनक अवसर → प्रतिष्ठासम्बन्धी प्रतिक्रिया। “समृद्ध” होयबक सामान्य सूचनासँ सम्पूर्ण टोलाक भीतर आयक समानता सिद्ध नहि होइत; कथा कोनो परिवारवार लेखा नहि दैत। मुदा विरोधक वर्ग-जातिगत दिशा स्पष्ट अछि—अन्यक सुधार पुरान प्रभुत्व लेल क्षति जकाँ देखाइत अछि। जल-सुरक्षाक राजनीति अतएव प्राकृतिक संसाधन आ सामाजिक अधिकार दुनूकेँ स्पर्श करैत अछि।

प्रतापसेन : वंशानुगत सत्ता आ तुलनाक अपमान

प्रतापसेन ठाकुर उग्रसेन ठाकुरक पौत्र छथि। एहि वंशगत पहिचानसँ अध्याय पहिनेक सामाजिक दमनक स्मृतिपर अवलम्बित बनैत अछि। हुनकर संवादमे सम्पत्तिक वास्तविक ह्रास आ चर्मकार टोलाक वृद्धि एक साथ उच्चारित होइत अछि, मुदा कारणक हिसाब नहि। तुलना तत्काल सम्मानक श्रेणीमे बदलि जाइत अछि—ककरा “हमरा बरोबर” धान बेचबाक अधिकार अछि? एहि प्रश्नमे आर्थिक प्रतिस्पर्धासँ बेसी जातिगत वर्चस्वक आग्रह सुनाइत अछि। कथावाचक हुनकर अन्तःप्रेरणाकेँ खुला रखबाक बजाय क्रोध आ अहंकारक शब्दद्वारा दिशा दैत छथि। एकर लाभ ई जे षड्यन्त्रक नैतिक संरचना पाठक स्पष्ट देखैत छथि; सीमा ई जे प्रतापसेनक सम्पत्ति-क्षय, ऋण वा उत्पादनगत अवरोधक स्वतन्त्र विवरण नहि भेटैत। खलपात्रक आर्थिक भय सम्भावित सामाजिक जटिलतासँ अपेक्षाकृत सरल नैतिक रूप ग्रहण करैत अछि।

यशपतिक कथात्मक कार्य : धर्माधिकारीसँ आरोपक निर्माता

पंडित यशपति गामक नव सभा-भवनक कर्मकांडी अध्यक्ष छथि। कथामे हुनकर प्रतिष्ठा सत्यक परीक्षण लेल नहि, आरोपकेँ आधिकारिक भाषामे रूपान्तरित करबाक माध्यम बनैत अछि। “अशुद्ध” आ “अनिष्टकारी” शब्दकेँ भूमि-पुनर्विचारसँ जोड़बाक कथित उपाय हुनकर शक्तिसम्बन्ध खोलैत अछि। विशेष सावधानी आवश्यक अछि: पाठमे यशपति भूमि-बटवाराक कोनो कानूनक व्याख्या करैत छथि, मुदा उपन्यास वास्तविक विधिक धारा, वर्ष, क्षेत्राधिकार वा स्वतन्त्र अधिनियम प्रस्तुत नहि करैत। अतः एहि दावाकेँ कथाजगतक पात्रक रणनीति मानब उचित, भारतक वास्तविक कानूनक प्रमाण मानब अनुचित। लोकविश्वास आ संस्थागत कागजी प्रक्रियाक गठजोड़ एहि पात्रक प्रमुख कथात्मक कार्य अछि।

“प्रमाण बनाओल जाइत अछि” : प्रमाणशब्दक नीतिगत उलटफेर

यशपतिक कथन “प्रमाण बनाओल जाइत अछि, ठाकुर साहेब, मांगल नहि जाइत” अध्यायक ज्ञानमीमांसात्मक केन्द्र थिक। प्रारम्भिक शास्त्रार्थमे प्रमाण ज्ञानक यथार्थाधार खोजैत छल; एतय आरोपक समर्थनमे “प्रमाण” जानि-बुझि उत्पन्न करबाक वस्तु बनि गेल अछि। शब्द एके रहैत अछि, मुदा सामाजिक व्यवहार ओकर आशय उलटि दैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ प्रमाणक वैधता पक्षधरक इच्छा वा भीड़क संख्या पर निर्भर नहि; निर्दिष्ट विषय, अवलोकन, तर्कक अव्यभिचारिता आ प्रतिपक्षपर निर्भर करैत अछि। यशपतिक योजना बीमारीक कोनो वास्तविक घटनाकेँ पहिने सँ चुनल दोषिणीक नामसँ जोड़बाक अछि। एहि ठाम अपराध रोग नहि, रोगक अर्थपर कएल गेल कब्जा अछि। कथाक नीतिगत तीक्ष्णता एहि वाक्यसँ बहुत बढ़ैत अछि।

गौरीक वैद्यकी : देहक सेवा आ ज्ञानक अस्वीकृति

गौरीक जड़ी-बूटीक ज्ञान रत्नाक स्त्री-परम्परासँ पहुँचैत अछि। कथावाचक बतबैत छथि जे हुनका गामक अनेक रोगी आ प्रसूतिसँ परिचय अछि। सेवा-सम्बन्धक आधारपर गौरीक सामाजिक उपयोगिता स्थापित अछि, मुदा समाजक प्रतिष्ठाक श्रेणीमे एहि ज्ञानक समुचित संरक्षण नहि। “ज्ञान पोथीमे नहि, हाथमे छल” स्त्रीक अनुभवाधारित श्रम आ लिखित-अधिकृत शिक्षाबीचक विरोध प्रकाशित करैत अछि। ई विरोध अनुभवक सत्यता

स्वतः सिद्ध नहि करैत—चिकित्सकीय प्रभावक आधुनिक परीक्षण एहि उपन्यासमे कएल नहि गेल अछि—मुदा ज्ञानक वाहक के अछि, ताहि आधारपर अधिकार छीनबाक अन्याय कथामे प्रमाणित होइत अछि। गौरीक पेशा उपचारात्मक, आरोपक शब्द हिंसात्मक; एहि असमानतासँ अध्यायक मूल करुण तनाव बनैत अछि।

“आधा-भूत”क रूपक आ सामाजिक सन्देह

गौरीकेँ “आधा-भूत” कहल गेल अछि, आ बूढ़बाक आवाज कखनो-कखनो सुनाइत छनि। पहिल बाढ़िक घटनासँ ई कथा-जगतक विशिष्ट नियमक विस्तार अछि, सामान्य समाजशास्त्रीय तथ्य नहि। कथावाचक पाठककेँ हुनकर अनुभूतिक सन्दर्भ दैत छथि, मुदा प्रतापसेन आ यशपति एहि अदृश्य संवादक अफवाहकेँ स्त्री-विरुद्ध सिद्धान्तमे बदलैत छथि। एहिठाम अस्वाभाविक आख्यान आ सामाजिक हिंसा एक-दोसरासँ कटैत अछि: जे पात्रक चेतना लेल विशेष अनुभव अछि, से सत्ता-पक्ष लेल “डाइन” नामक आरोपक कच्चा पदार्थ बनैत अछि। अलौकिक अनुभवक सत्यता रचनाक भीतर एक रूपेँ व्यवस्थित रहितो ओकर सामाजिक अर्थ प्रतिद्वन्द्वी पात्र मनचाहा बदलैत छथि। आलोचनामे दुनू स्तरकेँ अलग राखल आवश्यक अछि।

पाठकक अधिक जानकारी : नाटकीय विडम्बना

हवेलीक बैसकमे यशपति आ प्रतापसेनक गोपनीय योजना पाठक पहिनहि सुनि लैत छथि, मुदा गौरीक संज्ञान ताहिसँ वंचित अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे गौरी एहि साँझ कोनो विचित्र स्वप्न नहि देखलनि आ षड्यन्त्र नहि जनैत छलीह। एहि सूचना-वितरणसँ नाटकीय विडम्बना उत्पन्न होइत अछि: पाठक आरोपक असत्यता पूर्वहिं बुझैत छथि, आरोपी पात्र पछाति। कथा रहस्य-उद्घाटनक जासूसी ढाँचासँ अलग हटि अन्याय रोकबाक असमर्थताक तनाव बनबैत अछि। तृतीयपुरुष कथावाचक गोपनीय राजनीतिक वार्ता आ स्त्रीक निजी अज्ञान दुनू जानैत छथि। अतएव दृष्टिकेन्द्रण लगातार गौरी-निबद्ध नहि, व्यापक ज्ञानसँ चयनित निकटताक ओर आवागमन करैत अछि। एहि तकनीकक उपलब्धि करुण विडम्बना, सीमा रहस्यक नैसर्गिक अनिश्चितताक कमी अछि।

विश्वनाथक बीमारी : अवसर आ योजनाक अन्तर

यशपतिक योजना कोनो एक बीमारी खोजबाक छल। प्रतापसेनक छह बरखक बेटा विश्वनाथकेँ तेज बुखार आबय लगैत अछि; पहिल दू दिनक उपचार विफल, तेसर दिन बेहोशी, चारिम राति गंभीरता—एहि क्रममे समयक छोट-छोट चिह्न रोगक संकट बढ़बैत अछि। कथावाचक बीमारीक कारण स्पष्ट नहि दैत छथि। राजनीतिक षड्यन्त्रकारक लेल बीमारी अपेक्षित अवसर बनैत अछि, मुदा पाठमे यशपति अथवा गौरी द्वारा बीमारी उत्पन्न करबाक कोनो घटना नहि। एहि भेदकेँ पढ़ब अन्तिम आरोपक तर्कदोष बुझबाक जरूरी शर्त अछि। रोग कथाक स्वतन्त्र आ आकस्मिक व्यवधान अछि; ओकर उपयोग षड्यन्त्रकारक सचेत निर्णय। बीमारीक आगमनकेँ स्वतः नियोजित अपराध मानब मूल पाठक विरुद्ध होयत।

कमला देवीक अवज्ञा : सीमित मुदा वास्तविक स्वनिर्णय

विश्वनाथक माए कमला देवी गौरीकेँ बजाबय चाहैत छथि; प्रतापसेन जातिगत निषेधक आधारपर मना करैत छथि। जखन बच्चाक स्थिति बिगड़ैत अछि, कमला देवी पतिक आदेशक उल्लंघन कऽ दासीकेँ गौरी लग पठबैत छथि। ई निर्णय कथा भीतर स्त्रीक स्वायत्त क्रियाक निर्णायक क्षण अछि। कमला देवी न त राजनीतिक भाषण दैत छथि, न सभा-भवनमे प्रतिवाद करैत छथि, मुदा चिकित्सकीय सहाय्य मँगाबय हेतु प्रभुत्वक नियम तोड़ैत छथि। हुनकर आ दासीक सहयोगबिना गौरी उपचारस्थल धरि पहुँचि नहि सकितथि। तात्कालिक मातृ-निर्णयकेँ सम्पूर्ण जातिविरोधी चेतनाक बराबर मानब अतिशयोक्ति हएत; हुनकर पछातिक सार्वजनिक स्थिति पाठमे अनुपस्थित अछि। ई अनुपस्थिति आलोचनात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

उपचारक दृश्य : कारणक पर्याप्तता आ ज्ञानक सीमा

गौरी विश्वनाथक कातमे रातिभरि रहैत छथि; ठंढा पट्टी आ नीम-चिरायताक काढ़ाक उल्लेख अछि। भोरमे बुखार उतरैत अछि आ बालक माएकेँ चिन्हैत अछि। कथाजगत एहि क्रमकेँ गौरीक सफल सेवा रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कथा रोगनिदान, अन्य उपचारक प्रभाव, रोगक स्वाभाविक अवधि अथवा स्वतन्त्र चिकित्सकीय परीक्षण नहि दैत। अतः विशिष्ट औषधिक कारणात्मक प्रभावकेँ वास्तविक चिकित्साविज्ञानक प्रमाण रूपमे उद्धृत नहि करब। कथात्मक स्तरपर गौरीक उपस्थिति आ बालकक सुधरब निर्णायक स्थिति-परिवर्तन अछि; नैतिक स्तरपर जीवनरक्षाक सेवा लाभार्थी परिवारक प्रतिष्ठागत पूर्वाग्रहसँ टकराइत अछि। “रोग-उपचार” आ “उपचार-फल” एके कथापाठक भीतर जुड़े छथि, मुदा तर्कक अन्तिम अव्यभिचारी व्याप्ति इएहसँ सिद्ध नहि होइत।

प्रतापसेनक अपमान-बोध : पुत्रक जीवनक विरुद्ध पितृसत्ता

प्रतापसेनक बेटा सुधरैत अछि, तथापि हुनकर प्रथम प्रमुख प्रतिक्रिया गौरीक उपस्थिति देखि क्रोध अछि। कारण चिकित्सा-विफलता नहि, हुनकर आदेशक उल्लंघन आ चर्मकार स्त्रीक घरप्रवेश अछि। एहि विरोधाभासक कारण पात्रक प्राथमिकताक नैतिक रूपरेखा खुलि जाइत अछि: पुत्रक स्वास्थ्य सेहो वर्चस्वक नियमसँ नीचाँ खसि जाइत अछि। कथा हुनका भीतरक घायल घमण्ड स्पष्ट नामसँ बतबैत अछि; ई मनोविश्लेषण पाठक लेल मार्गदर्शक अछि। मुदा एहि अति-व्याख्यात्मक टिप्पणीसँ हुनकर मानसिक स्व-विरोध संवाद वा व्यवहारक माध्यमेँ अनुभव करबाक अवकाश कम होइत अछि। प्रभाव तीक्ष्ण, मनोवैज्ञानिक बहुपरतपन सीमित अछि। एतय कथन-दूरी न्यून होइत अछि, किएक तँ कथावाचक स्वयं दोषक निर्णायक व्याख्याकार बनैत छथि।

रोगहर्त्रीकेँ रोगकर्त्री बनाबयवला हेत्वाभास

यशपति प्रश्न उलटैत छथि: जे स्त्रीक उपचारक बाद बुखार टूटल, ओ सम्भवतः बीमारी पहिनहि चढ़ौने होएत। ई उलटफेर “पछाति घटल परिणाम → पहिनेक कारणक दोष”क अवैध अनुमान अछि। पक्ष गौरी; साध्य रोग उत्पन्न करबाक आरोप; प्रस्तुत हेतु उपचारक बाद स्वास्थ्य-सुधार। हेतु साध्यसँ अविनाभावी नहि, कारण उपचार करनिहार सभ रोग उत्पन्न नहि करैत, आ रोगउत्पादक सभ चिकित्सक नहि होइत। एहि तर्कमे हेतु अनैकान्तिक थिक; “डाइन” विषयक सामाजिक पूर्वधारणा उपाधि-सन घुसि परिणामक अनुचित अर्थ निर्धारित करैत अछि।

प्रतिपक्षी सम्भावना—स्वतन्त्र रोग, पहिल उपचारक विफलता, गौरीक सेवा, प्राकृतिक परिवर्तन—उपेक्षित छथि। नव्य-न्यायीय परीक्षणक उपयोग एहि ठाम प्रभावकारी होइत अछि, मुदा “प्रमाण” नामक कथा-वाक्यकेँ गंगेशक मूल सूत्र मानब नहि चाही।

अपवादसँ सार्वजनिक आरोप धरि : संस्थागत गति

निज बैसकमे रचल योजना एक आपात-सभामे सार्वजनिक घोषणा बनि जाइत अछि। यशपति स्वयं “प्रमाण जुटौने” कहैत छथि, मुदा साक्षी, रोगनिदान, कारण-परीक्षण अथवा गौरीक उत्तर सुनबाक अवसर देखाओल नहि गेल अछि। आपात-सभा आरोपक गति बढ़बैत अछि; प्रमाणक परीक्षणक बदला संकट आ पवित्रीकरणक शब्द जनसमूहमे प्रस्तुत होइत अछि। ई घटनाक स्वतन्त्र मोड़ अछि—गुप्त आरोप आब औपचारिक आरोप बनैत अछि। कथित भूमि-नियमनक विवरण पात्रक कथन छी, सत्यापित विधि नहि। वास्तविक कथात्मक परिणाम प्रारम्भिक सार्वजनिक दबाव अछि, अन्तिम भूमि-बेदखली नहि; गामकेँ वाक्यांश मात्रसँ बेदखल भऽ गेल मानब पाठक कालक्रममे भविष्यक घटना घुसाएब होयत।

“जाँच धरि” दण्ड : प्रक्रिया आ न्यायमे अन्तर

यशपति घोषणा करैत छथि जे जाँच धरि गौरी धार्मिक काजसँ आ टोलाकेँ बान्हनिकट भूमिसँ दूर राखल जाए। तथ्य निर्धारित होयबाक पहिनहि अधिकार सीमित करबाक प्रस्ताव अछि। ई प्रक्रियाक नैतिक उलटफेर थिक: जाँच व्यक्ति आ समुदायकेँ सुनबाक साधन होयबाक चाही, मुदा एतय जाँचक नाम प्रारम्भिक दण्डक औजार बनैत अछि। आरोप व्यक्तिपर, प्रतिबन्ध समूचा टोलापर—ई असमानुपात सामाजिक उद्देश्यकेँ उजागर करैत अछि। नव्य-न्यायक अवच्छेदक-विवेचनमे गौरीक कथित आचरण आ चर्मकार-टोलाक सामूहिक भूमि-अधिकार दू पृथक अधिकरण छथि; पहिलपर अप्रमाणित आरोपसँ दोसरक अधिकार स्वतः समाप्त नहि होइत। उपन्यास नैतिक दोष स्पष्ट करैत अछि, मुदा संस्थाक वैधानिक अधिकार-संरचना आ प्रतिवाद-प्रक्रियाक विस्तृत रचना नहि देत।

सभा-भवनक मौन : कृतज्ञता आ भयबीचक बहुस्वरता

सभा-भवनमे एहन लोक छथि जिनकर बच्चाकेँ गौरी पहिने बचौने छथि। कृतज्ञताक स्मृति हुनका सभकेँ प्रतिवाद दिस खींचैत अछि, मुदा यशपतिक धर्माधिकारी स्वर आ प्रतापसेनक प्रभाव विरोधक आवाज दबा दैत अछि। एहि दृश्यकेँ एकमेव “गाम गौरीक विरोधमे अछि” कहि पढ़ब गलत; पाठ किछु विरोध उठबाक विवरण दैत अछि। तथापि कोनो विरोधी वक्ताक नाम वा पूर्ण तर्क नहि भेटैत; बहुस्वरताक सम्भावना उपन्यासक समेकित सारांशमे दबि जाइत अछि। एतय बाक्तिनक बहुस्वरता-संकल्पनाकेँ सरलीकृत लागू नहि करब चाही: अनेक सामाजिक स्थिति उल्लेखित अछि, मुदा स्वतन्त्र विचारलोकक सममूल्य विस्तार सीमित अछि। मौन भयक परिणाम, सर्वसम्मतिक प्रमाण नहि।

गौरीक घर : स्तनपान आ नाम-अपमानक हिंसात्मक दूरी

जखन सभा भवनमे गामक नियमनक घोषणा होइत अछि, गौरी अपन घरमे बेटीकेँ दूध पियबैत छथि। घटना-क्रमक ई समकालीन विरोध कथा भीतर बहुत प्रभावकारी अछि: सार्वजनिक सत्ता ओकर अनुपस्थितिमे दोष निर्धारित करैत अछि, आ ओ अपन बच्चाक देहधारणक सेवा करैत छथि। आरोपक हिंसा एकटा अमूर्त व्यक्ति नहि, मातृत्व, उपचार, श्रम आ सम्बन्धक जीवनकेँ घेरैत अछि। स्तनपानक दृश्य करुण रस उत्पन्न करैत अछि, मुदा गौरीकेँ केवल माए-पहिचानमे सीमित कऽ देब उचित नहि; ओ अनुभवी वैद्य, ज्ञान-अधिकारिणी आ निर्णय लेबयवाली स्वतन्त्र व्यक्ति सेहो छथि। एहि दृश्यक उपलब्धि मानवदेहक निकटता, सीमा ई जे अभियोग-सभामे गौरीक प्रत्यक्ष स्वर अनुपस्थित अछि।

फुलेसरी : सूचना-वाहिका आ स्त्री-संगठनक स्थायी धागा

फुलेसरी दौड़ि गौरी लग अबैत छथि आ आपात-सभाक आरोप तथा प्रस्तावित बेदखलीक खबर दैत छथि। कथावाचक हुनका रत्नाक परम्पराक गुप्त साँझक छौंकी-सभाक अगुआ कहैत छथि। एहि परिचयसँ अध्याय ~९१क स्त्रीज्ञान-परम्परा वर्तमान राजनीतिक प्रतिरोधक सम्भावित आधार बनैत अछि। फुलेसरी केवल गौरीक सहेली नहि; संस्थागत निर्णयक वैकल्पिक संचारमार्ग छथि। समिति-विरोधी सूचना सरकारी प्रतिवेदनसँ नहि, स्त्रीसभक सामाजिक जालसँ पहुँचे अछि। मुदा सभाक संगठन, प्रतिरोधक वास्तविक साधन आ फुलेसरीक अन्य सहकर्मीक स्वतन्त्र भूमिका एहि अध्यायमे विस्तार नहि पबैत। ई सम्भावना अगिला अध्यायक हेतु सुरक्षित रहैत अछि; समीक्षा अनुमानसँ ओकर पूर्ण प्रतिरोध-इतिहास एतहि रचि नहि सकैत।

गौरीक आत्मप्रश्न : कृतज्ञताक असमान नैतिक अर्थ

फुलेसरीक बात सुनि गौरी पूछैत छथि जे विश्वनाथकेँ बचाएब गलती छल कि चर्मकार-टोलामे जन्म लेब? एहि प्रश्नक प्रभाव नैतिक अवशेषमे अछि: सेवा करनिहारक दोष किएक निर्धारित होइत अछि? कथावाचक गौरीक स्मृतिमे रत्ना, हुलासा, जीवन्ती आ सुखदेवक नाम आनैत छथि। एतय निजी आरोप पीढ़ीगत सामाजिक अपमानक अनुक्रमसँ जुड़ैत अछि। ई स्मरणक संरचना पूर्वकथाकालक अलगा-अलगा संकटकेँ एक नैतिक नक्षत्रमे संगठित करैत अछि। मुदा सभ पूर्वचरित्रक अनुभव एकहि प्रकारक नहि; जीवन्तीकेँ जलमे अन्तर्धान, सुखदेवकेँ न्यायसभामे मृत्यु आ गौरीकेँ आरोप—एहि घटना-अन्तरकेँ मेटि सामूहिक उत्पीड़नक एके उदाहरण नहि बनाओल जाए। इतिहासक समानान्तर पद्धति समानता आ अन्तर दुनू बचबैत अछि।

बूढ़बा दिस दौड़ : अलौकिक सहाय्यक अनिश्चित भरोसा

गौरी अपन बच्चाकेँ फुलेसरीक हाथमे दैत पीपर लग जाएबाक निर्णय करैत छथि। ओ बूढ़बासँ बात करय चाहैत छथि, मुदा साथे आशंका व्यक्त करैत छथि जे एहि बेर बूढ़बा सेहो असमर्थ भऽ सकैत छथि। पहिल बाढ़िमे बूढ़बाक आंशिक रक्षा आ सात मृतकक स्मृति एतय परोक्ष रूपसँ सक्रिय होइत अछि। ई पात्रक जटिलता बनबैत अछि: गौरी अलौकिक आवाज सुनैत छथि, तथापि ओकर सर्वशक्तिमत्तापर विश्वास नहि करैत। कथानकक

अन्तमे गौरी पीपरधरि पहुँचलीह अथवा बूढ़बासँ उत्तर प्राप्त केलनि—एहि अध्यायमे नहि देखाओल गेल। एतय प्रतिज्ञात संवादकेँ पूर्ण घटना लिखब असत्यापन हएत। कथात्मक प्रश्न सुरक्षित रहैत अछि।

मशालक गति आ खुलल अन्त : भयक दृश्यात्मक लय

अध्याय अन्तमे हवाक चुप्पी आ सभा-भवन दिससँ हिलैत बढ़ैत मशालक इजोत देखबैत अछि। मशालधारी लोक चर्मकार टोलाक ओर बढ़ैत छथि; ई निकटवर्ती आक्रमणक दृश्य-संकेत अछि, सम्पन्न अग्निकाण्ड नहि। कथनक अवधि साँझक क्षणमे संकुचित अछि, जे एक प्रकारक शिल्पगत विराम उत्पन्न करैत अछि। पाठक जानैत छथि जे षड्यन्त्रकारक ककरा लक्ष्य बना रहल छथि, गौरी आब सूचित छथि, मुदा टोलाक सामूहिक उत्तर अनिर्णीत अछि। ई समापन अगिला अध्याय –८७क शीर्षक “टोलाक द्वारपर” संग कारणात्मक सन्धि रचैत अछि; आगामी अध्याय पढ़ल बिना भीड़क व्यवहार, हिंसाक वास्तविक परिणाम अथवा बूढ़बाक हस्तक्षेपक निर्णय लिखब अनुचित। अनिश्चितता नैतिक संकटकेँ जीवन्त रखैत अछि।

स्त्रीगीत आ फकरा : नामक रक्षा, पूर्वनिर्धारित नैतिक उत्तर

अध्यायक आरम्भिक फकरा आरोपक विपरीत नामक अधिकारकेँ स्थापित करैत अछि; समापनमे गामक किछु स्त्री ओहि प्रतिरोधक गीत गबैत छथि। “भीड़ चिकरल, मशाल जरल, मुदा प्रमाण कतहु नहि” कथ्यकेँ लोकधुनक सामूहिक वाक्यमे बदलैत अछि। गीत साक्षीक प्रतिरोधक औपचारिक निबन्ध नहि, भावात्मक सार्वजनिक स्मृति अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनिक कसौटीपर नाम-रक्षा आ देह-दहनक विरोध रचनाक अर्थगहनता बढ़बैत अछि; करुण आ रौद्रक सीमावर्ती भाव उपस्थित छथि। मुदा गीत कथानकक उत्तर पहिने सँ उच्चारित करैत अछि —आरोप अन्याय थिक। जतय पाठक विवेकसँ प्रमाण-परीक्षण करबाक अवसर चाहैत छथि, ओतय गीतक अनिवार्य नैतिक निष्कर्ष किछु निर्देशात्मक भऽ सकैत अछि। गीतक यैह दोधारी शिल्पगत भूमिका स्वीकार्य अछि।

अन्तर्भुक्त ऐतिहासिक टिप्पणी : आवश्यक भेद

अन्तिम “विशेष टिप्पणी” भारतक कतेको क्षेत्रमे डाइन-अभियोग आ भूमि-विवाद, वैमनस्य वा स्वतन्त्र स्त्रीस्थितिक सम्भावित सम्बन्धक सामान्य दावा करैत अछि। ई दावा सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ जाँचयोग्य अछि, मुदा उपन्यासक भीतरक टिप्पणी स्वतन्त्र अभिलेख, सर्वेक्षण, न्यायिक निर्णय वा क्षेत्रविशेषक शोधपुस्तक उद्धृत नहि करैत। तेँ एहि समीक्षामे एकरा **रचनाकार-द्वारा प्रस्तुत पाठान्तर्गत सामाजिक व्याख्या** मानल गेल, सिद्ध बाह्य इतिहास नहि। विदेह समानान्तर इतिहास पद्धतिक प्रयोजन एतय पीड़ित स्त्रीक स्वर, समुदायस्मृति आ भूमि-अभिलेखक संघर्षकेँ प्रश्न रूपेँ राखब अछि। वास्तविक ऐतिहासिक सामान्यीकरण हेतु क्षेत्रीय अभिलेख आ स्वायत्त प्रमाण चाही। एहि प्रकार आख्यानक नैतिक आग्रह आ इतिहासकारक प्रमाण-दायित्वक सीमा सुरक्षित रहैत अछि।

घटनात्मक घनत्व : स्वतन्त्र परिवर्तनक वास्तविक अनुक्रम

एहि छोट अध्यायमे स्थिति-परिवर्तनक क्रम अछि: (क) बाढ़िपछातिक टोलाक आर्थिक सुधार; (ख) प्रतापसेन–यशपतिक आरोप-योजना; (ग) विश्वनाथक रोग; (घ) प्रतापसेनक उपचार-निषेध; (ङ) कमला देवीक गुप्त निमन्त्रण; (च) गौरीक सेवा आ बालकक स्वास्थ्य-सुधार; (छ) परिणामक षड्यन्त्रात्मक उलटफेर; (ज) सभा-भवनक आरोप आ भूमि-प्रतिबन्धक घोषणा; (झ) फुलेसरी द्वारा सूचना; (ञ) गौरीक पीपर दिस प्रस्थान; (ट) मशालधारी भीड़क बढ़ब। ई अध्यायभित्रक कथात्मक अवस्थाक विश्लेषणात्मक क्रम थिक, प्रकाशित सर्वसम्मत घटनागणना नहि। एके उपचारक अनेक वाक्यकेँ पृथक घटना मानि कृत्रिम घनत्व बढ़ाओल नहि गेल अछि। प्रारम्भिक ५५.९ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेदक तुलना एहि कारण-शृंखलासँ करब उचित अछि; प्रतिशत स्वयं सामाजिक अर्थक सूचक नहि।

आलोचनात्मक निर्णय : उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आगूक सेतु

“डाइनक आरोप”क मुख्य उपलब्धि डाइन-अभियोगकेँ अस्पष्ट अन्धविश्वासक स्वतःस्फूर्त विस्फोट नहि, बल्कि भूमि-अधिकारपर लक्षित योजनाबद्ध अपवाद रूपमे उघाड़ब अछि। यशपतिक बनाओल प्रमाण, गौरीक सेवा-विरुद्ध आरोप आ “जाँच धरि” सामूहिक प्रतिबन्ध कथामे ज्ञान, सत्ता आ न्यायक व्यवस्थित संघर्ष रचैत अछि। गौरीक मातृत्व आ वैद्यकी, फुलेसरीक गवाही आ कमला देवीक गुप्त अवज्ञा स्त्रीक अलग-अलग क्रियाक्षेत्र प्रस्तुत करैत अछि। शिल्पगत सीमा सेहो स्पष्ट अछि: प्रतापसेन–यशपति अत्यन्त एकरेखीय खलपात्र बनैत छथि; विधिक प्रावधानक वस्तुगत विवरण नहि; कथावाचक नैतिक प्रेरणा बारम्बार स्वयं घोषित करैत छथि; सहायक प्रतिवादीक स्वतन्त्र संवाद सीमित अछि; डाइन-प्रथाक ऐतिहासिक सामान्यीकरण पाठान्तर्गत टिप्पणीसँ अधिक प्रमाण मांगैत अछि। तथापि अध्याय अपन अन्तिम प्रश्न खुलल रखैत अछि—नामक रक्षा एखन कोन जीवित सामाजिक निर्णयमे बदलत? एहि प्रश्नक वास्तविक उत्तर −८७ “टोलाक द्वारपर”क पाठमे खोजल जाए, अनुमानसँ नहि।

घटना / स्थिति	पाठमे उपलब्ध साक्ष्य	कथात्मक परिणाम	निष्कर्षक प्रमाण-सीमा
बीस बरखक काल-लोप	कोष्ठकीय परिचय, गौरीक २७ बरखक आयु	बाढ़िपछातिक सामाजिक दृश्य खुलैत	बीचक दशकीय परिवर्तन सारांशमे
बान्ह आ टोलाक समृद्धि	कथावाचकक खेत-बजारक विवरण	पुरान सत्तावर्गक असुरक्षा तीव्र	आय आ भूमि-वितरणक खाताबही नहि
हवेलीक षड्यन्त्र	प्रतापसेन–यशपतिक गोपनीय संवाद	आरोप हेतु अवसर खोजबाक निर्णय	कानूनक कथित धारा स्वतंत्र रूपेँ सत्यापित नहि
विश्वनाथक ज्वर	समयबद्ध रोगदृश्य; पहिल उपचार विफल	घरेलू संकट बढ़ैत	रोगक स्वतन्त्र कारण अज्ञात
कमला देवीक अवज्ञा	दासीक माध्यमेँ गौरीकेँ बजब	उपचारक अवसर बनैत	माए अथवा दासीक पछातिक सार्वजनिक रुख अनुपस्थित

घटना / स्थिति	पाठमे उपलब्ध साक्ष्य	कथात्मक परिणाम	निष्कर्षक प्रमाण-सीमा
गौरीक रातिभरि सेवा	पट्टी, काढ़ा आ बालकक भोरक सुधरब	जीवनरक्षाक नैतिक प्रभाव	औषधिक चिकित्सकीय प्रभावक बाहरी परीक्षण नहि
कारणक मिथ्या उलटफेर	यशपतिक षड्यन्त्रात्मक प्रश्न	उपचारकेँ दोषक “साक्ष्य” बनाओल	उपचारक परिणामसँ रोग उत्पन्न करब सिद्ध नहि
आपात-सभा	यशपतिक सार्वजनिक आरोप, किछु विरोध	गोपनीय योजना संस्थागत दबाव बनल	निष्पक्ष सुनवाई वा अभिलेख नहि
जाँच धरि प्रतिबन्ध प्रस्ताव	धार्मिक कार्य आ बान्हभूमि छोड़बाक घोषणा	गौरीसँ टोलापर सामूहिक दण्डक प्रयास	भूमि वास्तवमे बेदखल भेने नहि देखाओल
फुलेसरीक समाचार	गौरीक घरमे प्रत्यक्ष सूचना	आरोपी अपन संकट जनैत छथि	प्रतिरोधक रूप एखन पूरा नहि
गौरीक पीपर दिशि प्रस्थान	बूढ़बासँ संवाद करबाक निर्णय	अलौकिक/सामुदायिक सहायता खोजल	बूढ़बाक उत्तर एहि अध्यायमे नहि
मशालक बढ़ैत इजोत	अध्यायक अन्तिम दृश्य	आसन्न हिंसाक खुलल सन्धिबिन्दु	भीड़क वास्तविक हिंसा एतय घटित नहि
स्त्रीगीत आ ऐतिहासिक टिप्पणी	गीत: पाठान्तर्गत प्रतिरोध; टिप्पणी: सामान्य दावा	नामक अधिकारक अर्थ विस्तार	गीत इतिहास-अभिलेख नहि; टिप्पणी बिना बाहरी सन्दर्भ

अध्याय –८८ : घटना-प्रमाण-नैतिक परिणाम सारणी

एहि सारणीमे पात्रक आरोप, कथावाचकक दृश्य, अतिकथात्मक टिप्पणी आ पाठकक अनुमानेक पृथक दर्जा राखल गेल अछि। घटनाक नामकरण सँ स्वतः कारणात्मक सत्य स्थापित नहि होइत।

अध्याय –८८ : मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

“जकरा गाम 'डाइन' कहलक” — अध्यायारम्भक फकरा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“बाढ़िक बीस बरख बाद” — अध्यायक कोष्ठकीय काल-संकेत; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“नव बान्ह, पाकल ईंटाक” — सामाजिक-पर्यावरणीय परिवर्तन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अखन सत्ताइस बरखक” — गौरीक कालगत पहिचान; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“आधा-भूत” — अस्वाभाविक पात्र-स्थितिक नाम; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“हमर सम्पत्ति साल-दर-साल घटैत जा रहल अछि” — प्रतापसेनक आहत स्वार्थ; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अशुद्ध” — यशपतिक कथित भूमि-नियमनक वर्ग; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अनिष्टकारी” — कलङ्क-निर्माणक संस्थागत शब्द; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“डाइन” — गौरीपर आरोपित नामकरण; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“प्रमाण बनाओल जाइत अछि” — षड्यन्त्रक ज्ञानमीमांसात्मक सूत्र; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“भय तर्कसँ बेसी तेज दौड़ैत अछि” — यशपतिक रणनीति; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अचानक तेज बुखारमे पड़ि गेल” — विश्वनाथक रोगक आरम्भ; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“चमरौटीक स्त्रीकेँ हमर बेटाकेँ छूअय देब?” — प्रतापसेनक निषेध; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अपन पतिक आज्ञाक विरुद्ध” — कमला देवीक निर्णय; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“ठंढा पट्टी राखैत” — उपचार-प्रक्रियाक पाठ; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“बुखार टूटल” — कथात्मक परिणाम; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अहाँ हमर बेटाक प्राण बचौलहुँ” — कमला देवीक कृतज्ञता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“ई कोना सिद्ध होइत अछि” — यशपतिक कारण-विपर्यासक प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“हम प्रमाण जुटौने छी” — सार्वजनिक आरोपमे मिथ्या प्रमाण-दावा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“जाँच धरि” — दण्डात्मक प्रस्तावक काल-संकेत; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“भय आ कृतज्ञताक बीच फाटल” — सभाक द्वैध मनःस्थिति; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“अपन बेटीकेँ दूध पियबैत” — निजी जीवन आ आरोपक समकालीनता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“ज्ञान पोथीमे नहि, हाथमे छल” — गौरीक स्व-प्रश्नक ज्ञान-संकेत; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“बूढ़बासँ बात करय पड़त” — आगामी क्रियाक निर्णय; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“मशाल, धीरे-धीरे चर्मकार टोला दिस बढ़य लागल छल” — अधूरा भीड़-दृश्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

“मुदा प्रमाण कतहु नहि” — समापनक स्त्रीगीतमे अप्रमाणित आरोप; मूल खण्ड–०, अध्याय –८८।

प्रकरण १४ | मूल अध्याय –८७ — टोलाक द्वारपर

पाठाधार, सीमांकन आ आलोचनात्मक प्रश्न

“टोलाक द्वारपर” पूर्व-कथाकालक चौदहम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त त्रयीक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ पृष्ठ १६४ आ अगिला अध्याय –८६ केर आरम्भ १६९ अंकित अछि; तेँ मुद्रित पृष्ठ-संकेत १६४–१६८ थिक। ई अनुपात घटना-गणना नहि, केवल प्रारम्भिक परीक्षणक सूचक अछि। मुख्य अध्यायमे आरम्भिक फकरा, कोष्ठकीय प्रसंगसूचना, संकट-दृश्य, अगिला दिनक संक्षिप्त परिणाम आ गीत अछि। एकर पश्चात् “अध्याय [–८७]-८८ पर टिप्पणी” शीर्षक स्वतन्त्र लेखककीय विवेचन अछि; ओकरा पात्रक संवाद अथवा अध्यायभित्र घटल क्रियासँ नहि मिलाओल जाए। समीक्षाक मूल प्रश्न अछि: आरोपक झूठ कोना सामूहिक साक्षीसँ टूटैत अछि, चमत्कार ओहि सामाजिक शक्तिक सम्बन्धमे कोन भूमिका निर्वाह करैत अछि, आ विजयक बाद न्याय कतेक सुरक्षित रहैत अछि?

पूर्व अध्यायसँ अविच्छिन्न सन्धि : मशालक पुनः आगमन

अध्याय –८८क अन्तिम दृश्य मशालधारी भीड़ चर्मकार टोला दिस बढ़ैत छोड़ने छल; एहि अध्यायक कोष्ठकीय प्रस्तावना भीड़केँ द्वार लग पहुँचल बतबैत अछि। ई कथाकालक लगभग अविच्छिन्न बढ़ाव थिक। पाठककेँ नव संकट उत्पन्न करबाक लेल पुनः पृष्ठभूमि नहि पढ़ाओल जाइत, बल्कि पहिने सँ सक्रिय संकटक बीच पहुँचा देल जाइत अछि। एहि तकनीकसँ अध्याय-विच्छेद तनावक काल-विस्तार नहि, पाठकीय अपेक्षाक विराम बनैत अछि। मुदा कोष्ठकीय प्रस्तावनामे पहिनहि कहि देल गेल जे स्त्रीसभ चुप नहि रहबाक निर्णय बदलि चुकल छथि। फलतः प्रतिरोधक परिणामक दिशा पाठक आरम्भेँ बुझि लैत छथि। पूर्वसूचनासँ भावात्मक प्रत्याशा बनैत अछि, तथापि निर्णयक आकस्मिकता आ स्त्रीसभक आन्तरिक तैयारीक अन्वेषण अपेक्षाकृत सीमित होइत अछि।

पीपरक जड़ि : स्थानक रूपान्तरण

गौरी पीपरक जड़ि लग घुटना टेकि बूढ़बाकेँ पुकारैत छथि। पूर्व अध्यायसभमे ई वृक्ष नाम, गवाही आ मृतकस्मृतिक स्थल छल; एतय तत्काल सामुदायिक विपत्तिक बीच सहायता माँगबाक केन्द्र बनैत अछि। गाछक काल-स्थान द्वारपर जमैत भीड़सँ अलग अछि: एक दिस पीढ़ी-दर-पीढ़ीक स्मृतिक दीर्घ काल, दोसर दिस मिनट-दर-मिनटक हिंसाक आशंका। गौरी हुलासा, जीवन्ती आ सुखदेवक देरीसँ पहुँचल सहाय्य याद करैत छथि। नामक ई क्रम अलग-अलग मृत्युक तथ्यकेँ एक करैत नहि, बल्कि अधूरा न्यायकेँ वर्तमान भयक कारण बनबैत अछि। पीपर एतय जड़हीन चमत्कारक आसन नहि, स्थानीय अनुभवक स्मृति-अभिलेख थिक। एहि भूमिकाक उपलब्धि पूर्वकथाकालक पृथक अध्यायसभकेँ एक साझा नैतिक भौगोलिक बिन्दुपर जोड़ब अछि।

गौरीक प्रार्थना : सर्वशक्तिमान उद्धारक अपेक्षाक अस्वीकार

गौरीक पुकार “आइ अहाँ हमरा हेतु देरीसँ नहि आउ” केवल भूतसँ रक्षा माँगब नहि अछि; ई पूर्व मृतकसभक स्मृतिपर आधारित शिकायत सेहो अछि। कथामे गौरी बूढ़बासँ निकट अनुभव रखैत छथि, मुदा हुनकर सम्बन्ध निःशर्त भक्ति नहि। ओ देरीक पूर्व इतिहास गनबैत छथि, अर्थात् स्मृति भूतक प्रति नैतिक प्रश्न उठेबाक शक्ति रखैत अछि। ई दृष्टि अलौकिक पात्रकेँ अविवेचनीय देवताक स्थान नहि दैत। तथापि प्रार्थनाकेँ उत्तर दैत कथन तुरन्त बूढ़बाक वाणी सुनबैत अछि; एहि कारण गौरीक संकटमे मानवीय विकल्प तैयार करबाक दृश्यात्मक समय छोट भऽ जाइत अछि। लेखकक चयन गौरीक एकान्त संकटकेँ सामूहिक प्रतिरोधक दार्शनिक प्रस्तावनामे बदलैत अछि। एकरा सशक्त संधि मानल जा सकैत अछि, मुदा प्रतिरोधक सामाजिक पूर्वतैयारीक विवरण एहि घटनामे नहि भेटैत।

बूढ़बाक शक्ति-सीमा : अभिव्यक्त सिद्धान्त आ अगिला विरोध

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि: “हमर शक्ति देहकेँ नहि छुबि सकैत, ने मशालकेँ बुताबि सकैत”। हुनकर घोषणामे देहपर स्पर्श, मशालपर प्रभाव आ भीड़केँ रोकब—तीनू असमर्थता एक साथ व्यक्त अछि। ई कथाजगतक नियम बनैत अछि, जतय लोकभूत सामूहिक स्मृतिक साक्षी तँ अछि मुदा भौतिक उद्धारक नहि। मुदा अध्यायक आगाँ यशपतिक हाथक मशाल बिना हवा-पानि स्वतः बुझि जाइत अछि आ गौरी ओकर कारण बूढ़बाकेँ कहैत छथि।

एहि दू अंशमे स्पष्ट तनाव अछि। सम्भावना तीनि: बूढ़बाक पहिल घोषणा अपूर्ण छल; मशालक बुझनाइ कोनो अन्य अज्ञात कारणसँ भेल; अथवा कथाकार संकट-समाधान हेतु पहिने स्थापित सीमा भङ्ग करैत छथि। पाठ कोनो सम्भावनाकेँ निर्णायक रूपसँ सिद्ध नहि करैत। अतएव चमत्कारकेँ सुनिश्चित ‘बूढ़बाक सिद्ध शक्ति’ घोषित करब नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेकक विरुद्ध होयत।

“कतेको मुँह” : एकाकी प्रमाणसँ सामूहिक शब्दधरि

बूढ़बाक उत्तरक वास्तविक केन्द्र दैहिक बल नहि, बहुजनक कथन अछि: सत्यकेँ बाहर आबय लेल “कतेको मुँह” चाही। पूर्व अध्यायसभमे हुलासाक ताड़पत्र, जीवन्तीक पाण्डुलिपि आ सुखदेवक रोकल गेल वाद एकल गवाहक असुरक्षा देखबैत छल। आब अनगिनत स्त्री आवाज एकत्र होबाक सम्भावना बनैत अछि। ई मात्र ‘बहुत लोक एक बात बजल’ नहि; अलग घर-परिवारक अनुभव सार्वजनिक जाँचक दावेदार बनैत अछि। शब्दप्रमाणक दार्शनिक विमर्श एतय सामाजिक क्षेत्रमे अवतरित होइत अछि, मुदा संख्या स्वयं सत्यक प्रमाण नहि—भीड़ सेहो संख्या थिक। निर्णायक अन्तर कथनक विषय, प्रत्यक्ष अनुभव, प्रतिपक्षी स्थितिसँ सम्बन्ध आ स्वतन्त्र सम्भावित पुष्टि अछि। अध्याय एहि अन्तरकेँ आंशिक रूपसँ दृश्यबद्ध करैत अछि, विस्तारसँ परीक्षण नहि।

द्वारक दृश्य : सामाजिक सीमा आ हिंसाक सम्भावना

मशालधारी भीड़ चर्मकार टोलाक द्वार धरि पहुँचैत अछि। द्वार एतय केवल घरक वास्तु-सीमा नहि; उच्चवर्गीय आदेशक दखल आ श्रमिक समुदायक स्वाधीन जीवनक बीच चिन्हित रेखा थिक। प्रतापसेन आगू, यशपति हुनकर पाछू, आ पचास-साठि ग्रामीण आगू बढ़ैत छथि। सभक प्रेरणा समान नहि: किछु सचमुच भयभीत छथि, किछु भीड़क चालमे चलैत छथि। कथावाचकक ई सानो भेद भीड़केँ एकाक्षरी दानव बनबा सँ रोकैत अछि। मुदा पचास-साठि लोकक सामाजिक-पारिवारिक विभाजन, हिंसामे व्यक्तिगत संलग्नता, आ आदेशक वैधतापर हुनकर संदेह विस्तार नहि पबैत। भीड़क अनामता आतंकक दृश्य-परिणाम तेज करैत अछि, मुदा उत्तरदायित्वक विश्लेषण सीमित करैत अछि।

फुलेसरीक पहिल हस्तक्षेप : प्रतिनिधित्वक प्रारम्भिक अधिकार

यशपति गौरीकेँ बाहर बजबैत छथि, मुदा पहिने फुलेसरी आबैत छथि। एहि क्रममे गौरीक अकेला दोषी बनाओल स्थिति सामूहिक प्रतिरक्षामे बदलैत अछि। फुलेसरीक प्रश्न उपचारक नैतिक स्मृति पुनर्स्थापित करैत अछि: जकर हाथ बच्चा बचौलक, ओकरा दण्ड किएक? कथावाचक हुनकर स्वरकेँ काँपैत मुदा नहि टूटैत बतबैत छथि। भयक अनुपस्थिति वीरता नहि; भय रहितो बोलबाक निर्णय वीरता थिक। एहि बिन्दुपर कथा स्वतन्त्र सामाजिक क्रियाक प्रभावी दृश्य रचैत अछि। तथापि फुलेसरीक आग्रह गौरीक उपचारक अनुभवकेँ निर्दोषताक अकेला अन्तिम प्रमाण मानि नहि सकैत: भूतकालक सेवा आ कथित वर्तमान अपराध तार्किक रूपसँ अलग प्रश्न हो सकैत। आरोपक पक्षमे स्वतन्त्र साक्ष्यक अभाव ही मुख्य तथ्य अछि; सेवाक उल्लेख सामाजिक पूर्वाग्रह तोड़बाक साधन अछि।

दीप आ बच्चासभक “जीवित दीवार” : शक्ति आ नैतिक जोखिम

स्त्रीसभक हाथमे हथियार नहि, दीप आ बच्चासभ छथि। ई संयोजन हिंसक मशालक विरुद्ध जीवनरक्षक उजासक प्रतीक बनैत अछि। “जीवित दीवार” वर्गीय प्रभुत्वक सामने समुदायकेँ शरीरसँ खड़ा करैत अछि। मुदा एहि दृश्यकेँ एकरेखा गौरवगान रूपेँ पढ़ब अपर्याप्त अछि। बच्चासभकेँ आगि आ भीड़क सम्मुख आनब वास्तविक जोखिमक संकेत सेहो अछि; कथानक एहि जोखिमपर मातृ-व्यक्तित्वक भीतरक मतभेद वा व्यवहारिक सुरक्षा-योजना नहि देखबैत। जीवित दीवारक नाटकीय शक्ति आ सम्भावित संकट दुनू मानब समीक्षाक दायित्व थिक। प्रतीकक सफलतामे प्रत्यक्ष शरीर उपस्थित अछि; नैतिक सीमामे निर्बलतम देहकेँ प्रतिरोधक अग्रपंक्तिमे राखबाक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

कमला देवीक अप्रत्याशित प्रवेश : निजी अवज्ञासँ सार्वजनिक प्रतिरोध

पूर्व अध्यायमे कमला देवी पतिक निषेधक बावजूद गौरीकेँ बच्चाक उपचार लेल बजौने छलीह। एतय ओ दासीक संग हवेलीसँ दौड़ि द्वार धरि पहुँचैत छथि। घरक भीतरी असहमति आब सभक सामने सार्वजनिक गवाही बनैत अछि। दासीक उपस्थितिक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि, कारण संदेश-प्रेषण आ घरसँ बाहर एबाक व्यवहारिक सहयोग केवल मालकिनक इच्छासँ सम्पन्न नहि भेल होयत। मुदा दासीक नाम, स्वर आ स्वयं निर्णय कथामे अनुपस्थित अछि। कमला देवीक नंगे पएर, अस्तव्यस्त वस्त्र आ फुलैत साँस राजनीतिक वक्तव्यसँ पहिने देहगत आपातस्थिति प्रस्तुत करैत अछि। एहि कारण हुनकर प्रवेश संवादमे विश्वासनीय तात्कालिकता लबैत अछि; ओ ऊपरी भाषण देबाक लेल नहि, दृष्टव्य जोखिममे हस्तक्षेप करबाक लेल अबैत छथि।

“ई पुरुषक विषय अछि” : लिङ्गगत अधिकारक प्रत्यक्ष विवाद

प्रतापसेन कमला देवीकेँ घर जाएबाक आदेश दैत छथि—“ई पुरुषक विषय अछि!”। एहि एक वाक्यमे नारीक घरेलू सीमांकन, न्यायसभापर पुरुषक नियन्त्रण आ परिवारक प्रतिष्ठाकेँ सत्यसँ ऊँच राखबाक प्रवृत्ति जुड़ल अछि। कमला देवी प्रतिवाद करैत छथि: “ई पुरुषक विषय नहि, ई सत्यक विषय अछि”। कथात्मक दृष्टिसँ ई ओ क्षण थिक जखन पात्रक नैतिक क्रिया नारा मात्र नहि रहि संस्थागत क्रमक सार्वजनिक अवज्ञा बनैत अछि। तथापि कथावाचक कहैत छथि जे ओ सम्पूर्ण विवाहित जीवनमे पहिल बेर पतिक सोझाँ सीधा ठाढ़ भेलीह। एहि नाटकीय सूत्रमे कमलाक पूर्व वैवाहिक जीवन एक निमेषमे संक्षेपित अछि; जटिल घर-राजनीतिक इतिहासक स्थानपर निर्णायक मोड़ उपलब्ध अछि। द्रुत कथनक लाभ प्रभाव, सीमा सामाजिक सम्बन्धक क्रमिक विकासक अभाव।

माता आ साक्षीक दोहरी स्थिति

कमला देवी गौरीक योगदान बतबैत छथि किएक तँ विश्वनाथ जीवित अछि; हुनका पीड़ित बालकक माए आ प्रभुत्वशाली घरक सदस्य दुनू रूपेँ पहिचान देल गेल। एहि द्वैतसँ गवाहीक सामाजिक प्रभाव बढ़ैत अछि: प्रतापसेनक परिवार भीतरक व्यक्ति सार्वजनिक आरोपकेँ काटैत छथि। मुदा बालकक स्वास्थ्यक कारण चिकित्सकीय दृष्टिसँ पूर्ण स्पष्ट नहि: मूल पाठमे गौरीक सेवा आ रोग-सुधार क्रमशः देखाओल अछि, कोनो नियंत्रित परीक्षण नहि। कमलाक प्रत्यक्ष प्रमाण मुख्य रूपसँ सेवा, बालकक पहिल अवस्था, गौरीक उपस्थितिक

काल आ उपचारपछातिक परिवर्तनपर आधारित अछि। ई यशपतिक ‘डाइन’ आरोपक असंगत विरोध दर्शबैत अछि, किन्तु चिकित्सकीय चमत्कारक स्वतन्त्र विज्ञान-सिद्धि नहि। एहि अन्तरसँ कथा-नीति आ तथ्य-परीक्षण दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

स्त्रीसभक पृथक गवाही : अनुभवक बहुवचन

कमला देवीक आह्वानपर ब्राह्मण-टोला, कायस्थ-टोला आ किसान परिवारक स्त्रीसभ भीड़सँ अलग होइत छथि। हुनकर तीन दृष्टान्त प्रसवक संकट, साँप-दंश आ वृद्धाक परिचर्यासँ सम्बन्धित अछि। ई अनुभव एकहि प्रकारक नहि: एक आकस्मिक प्रसूति, दोसर तीव्र रोग-आशंका, तेसर दीर्घकालिक बिना मूल्य सेवा। विविधता गौरीक एकमात्र वैद्य-परिचयकेँ देखरेख, श्रम आ सामाजिक विश्वासक विस्तृत रूपमे प्रकट करैत अछि। मुदा जतय स्त्रीसभक सामाजिक स्थान अलग बताओल अछि, ओतय कोनो विशिष्ट जातिगत प्रतिरोध, परिवारिक प्रतिबन्ध वा जोखिमक फरक दृश्य नहि बनल। ‘सभ स्त्री’क समवेत आवाज न्यायसंगत भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; मुदा अलग-अलग स्त्रीक अनुभव एक गानधुनमे समा जाएबाक जोखिम सेहो उपस्थित अछि।

स्वायत्त गवाही वा पुनरावृत्ति : शब्दप्रमाणक कसौटी

पाठमे तीन उदाहरण सीधा उद्धृत अछि, बाकीक आवाजक सङ्ख्या अनिश्चित अछि। कथावाचक कहैत छथि जे प्रत्येक आवाज यशपतिक झूठक पहाड़सँ एक ईंट हटबैत गेल। रूपक प्रभावी अछि, मुदा दार्शनिक प्रश्न ई जे स्वतन्त्र गवाहक स्मृति परस्पर प्रभावित भेल कि नहि, कथनक विषय समान अछि कि पृथक, आ प्रत्यक्ष ज्ञानक सीमा कतय तक? तीन महिला गौरीक अतीतक उपकार कहैत छथि; ओ सभ गौरी द्वारा रोग उत्पन्न करबाक कथित वर्तमान आरोपक प्रत्यक्ष खण्डन नहि करैत छथि, यद्यपि आरोपक प्रमाणहीनता प्रकट करैत छथि। एहिलेल शब्दप्रमाणकेँ मात्र वोटक योगफल नहि मानल जाए। आत्मानुभव, वक्ताक अभिप्राय, विषयसम्बद्धता आ विपरीत साक्ष्यक अभाव मिलि मूल्यांकनक कसौटी बनैत अछि। उपन्यास सामुदायिक नैतिक सत्यकेँ जोर दैत अछि, औपचारिक प्रमाण-परीक्षणक पूर्ण प्रक्रिया नहि रचैत।

यशपतिक प्रत्युत्तर : आत्म-प्रतिरक्षित आरोपक तर्कदोष

यशपति गवाहीकेँ ‘भावुकता’ कहैत अपन पूर्व आरोप फेर बदलैत छथि: डाइन पहिने मीठ बनि शिकार फँसबैत अछि। एहि तर्कमे गौरीक विरुद्ध साध्य एहन बनाओल गेल जे कोनो सम्भावित प्रतिवादी तथ्य सेहो आरोपक समर्थन बनि जाय। गौरी बीमारी ठीक करथि तँ छल, नहि करथि तँ अनिष्ट—दुनू दिशासँ दोष। नव्य-न्यायक विवेचनमे ई हेतु प्रतिवादी परीक्षणसँ बचबाक प्रयास थिक; निर्दिष्ट लक्षणक निश्चित व्याप्ति सिद्ध नहि। व्याख्यात्मक रूपेँ ई आत्म-सुरक्षित आरोप कहल जा सकैत अछि: जे परिणाम भेटत, ओहि परिणामकेँ पहिने सँ आरोपक पक्षमे पढ़ब। एहि बिन्दुपर यशपतिक शब्दप्राधान्य वास्तविक साक्षी-वचनसँ टकराइत अछि। पात्रक भयप्रसारक तकनीक चित्रित अछि; मुदा ओकरा केवल मूर्ख अन्धविश्वासी नहि, सचेत राजनीतिक अर्थनिर्माता मानल अधिक पाठसंगत अछि।

अधूरा धमकी-वाक्य आ नाटकीय अवरोध

यशपति “जे सत्यकेँ नहि मानत, ओकरा हम...” कहि वाक्य पूरा नहि कऽ पबैत छथि। ई अपूर्णता पाठककेँ प्रत्यक्ष धमकीक सम्भावना बुझबैत अछि, मुदा निर्धारित दण्डक तथ्य नहि। कर्ताक इरादा आ सम्पन्न क्रियाक अन्तर एहि ठाम महत्वपूर्ण अछि। वाक्यक विराम नाटकीय गति बदलैत अछि: लगातर संवादक सामाजिक तनाव अचानक घटनात्मक विस्मयमे प्रवेश करैत अछि। एतय कथनकाल लगभग एक क्षणमे संकुचित अछि; सघन विरामक बाद मशालक बुझनाइ दृश्य बनैत अछि। लेखक एक बलपूर्वक आदेशकेँ अधूरा छोड़ि कथानकक बहिर्गमन चुनैत छथि। एहि चयनमे शक्तिसम्बन्धक क्षणिक उलटफेर अछि, मुदा यदि चमत्कार नहि होइत तँ स्त्रीसभक सार्वजनिक साक्ष्य, भीड़क बदलैत रुख आ प्रतापसेनक संकोच मिलि संकट कोना थमित, तकर यथार्थवादी सम्भावना पर्याप्त विस्तार नहि पबैत।

स्वतः बुझल मशाल : अद्भुतरस आ कारणक अनिर्णय

यशपतिक हाथक मशाल बिना हवा आ बिना पानिक बूँदक बुझैत अछि। दृश्य अद्भुतरसक तात्कालिक प्रभाव रचैत अछि, किएक तँ सामान्य भौतिक कारण कथावाचक स्वयं नकारैत छथि। तथापि ‘सामान्य कारण नहि देखाओल गेल’ सँ ‘बूढ़बाहिं बुझौलनि’क अनिवार्य अनुमान नहि निकलैत। गौरी ओहि अर्थक दावा करैत छथि; हुनकर विशेष अनुभव कथाजगतक पात्र-दृष्टि अछि। शुरुआतमे बूढ़बा स्वयं अशक्तताक घोषणा केने छथि, तेँ घटना आ पहिल कथन बीचक टकरावकेँ अवगणित करब असम्भव अछि। सम्भव अछि लेखक नैतिक विजयक प्रतीक रचबाक लेल आन्तरिक नियम ढील कएने होथि। साहित्यिक उपलब्धि दृश्य-संक्षेपमे अछि; कमजोरी कारणात्मक संगति आ मानवीय साक्ष्यपर चमत्कारक प्रभुत्वक जोखिममे। अद्भुतरस औचित्यक प्रश्नकेँ निरस्त नहि करैत।

बूढ़बाक नामकरण : कथावाचक, पात्र आ पाठकक ज्ञान-अन्तर

मशालक बुझनाइ देखि यशपति प्रश्न करैत छथि; गौरी उत्तरमे बूढ़बाक नाम लैत छथि। एहि क्रममे घटना कथावाचकक वर्णन, कारण गौरीक व्याख्या, आ भीड़क प्रतिक्रिया—तीन अलग ज्ञान-स्तर अछि। कथावाचक भौतिक घटनाक असामान्यता कहैत छथि; गौरी आत्मीय लोकस्मृति सँ ओकरा अर्थ दैत छथि; भीड़ दैवी भयक रूपमे लैत अछि। ई तीनू समान प्रमाण-स्थिति नहि। एहि अन्तरकेँ बचा लेने अस्वाभाविक आख्यानक बहुव्याख्यात्मकता स्पष्ट होइत अछि। गौरीक कथन जे बूढ़बा नुकसान नहि पहुँचबैत छथि, पूर्वकथा-सम्बद्ध चरित्र-नियमकेँ पुष्ट करैत अछि; मुदा मशालपर हुनकर प्रभावक कथनसँ उत्पन्न प्रश्न समाप्त नहि होइत। पाठककेँ कथावाचकक प्रत्यक्ष कथ्य आ पात्रक विश्वासक सीमा परखबाक अवसर देल गेल अछि, यद्यपि प्रसंग भावात्मक रूपसँ गौरीक अर्थकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

स्त्रीगवाही आ चमत्कारक प्रतिस्पर्धी कारण

भीड़क पहिल असमंजस फुलेसरीक प्रश्नक बाद देखाओल गेल; कमला देवीक वक्तव्य पर भीड़ स्तब्ध भेल; अनेक स्त्रीक कथाक बाद यशपति अपन नियन्त्रण खसैत देखि अन्तिम प्रयास करैत छथि। अर्थात् चमत्कारसँ पहिने सामाजिक प्रभाव स्पष्ट उपस्थित अछि। मशालक बुझनाइ भीड़क पलायनक तात्कालिक निमित्त बनैत

अछि। एहि कारण संकट-समाधानक दू प्रतिस्पर्धी आधार बनैत अछि—सामूहिक सत्य आ अलौकिक संकेत। यदि स्त्रीगवाही केन्द्र अछि तँ ओकरा निर्णयकारी घटना रूपेँ पूर्ण विकसित करबाक सम्भावना छल; यदि चमत्कार केन्द्र अछि तँ स्वतन्त्र प्रमाण-तर्क गौण होयबाक आशंका अछि। अध्याय दुनूकेँ संग रखैत अछि, मुदा सम्बन्धक नियम खुला नहि करैत। आलोचनात्मक निर्णय एहि दोहरा संरचनाकेँ रचनाक रचनात्मक सामर्थ्य आ सीमाक संगति-द्वन्द्व मानैत अछि।

प्रतापसेनक मौन : पराजय आ बदला बीच

यशपतिक मशाल बुझला पर प्रतापसेन दण्ड-कार्य छोड़ैत छथि; ओ किछु नहि बजि घर दिस चलि जाइत छथि। गौरी हुनकर अन्तिम नजरिमे कृतज्ञता नहि, अपमान देखैत छथि; कथावाचक बदला खोजबाक सम्भावना स्पष्ट करैत छथि। ई विवरण पराजयकेँ नैतिक परिवर्तनक बराबर मानबाक भूल रोकैत अछि। प्रतापसेन पुत्ररक्षा स्वीकार करैत सार्वजनिक क्षमा नहि माँगैत छथि। तथापि हुनकर मुखसँ मौन क्षणमे किछु निःसृत नहि होइत, आ गौरी वा कथावाचक हुनकर आन्तरिक भाव अनुमानित करैत छथि। अतः भविष्यमे बदलाक निश्चित हिंसा सम्पन्न भेल कहब असत्यापित हएत। नजरि अभिप्रायक संकेत थिक, निर्णय अथवा दण्डक दस्तावेज नहि। आगामी कथानक लेल ई असमाप्त विरोध एक प्रभावी पूर्वाभास रचैत अछि।

भीड़क विघटन : सार्वजनिक जिम्मेवारीक अपूर्णता

भीड़ छँटैत अछि—किछु शर्मिन्दा, किछु राहत अनुभव करैत, किछु असमंजसमे। ई तीनि प्रकारक प्रतिक्रिया अन्धविश्वासक समर्थक लोकसभकेँ पूर्ण समान नहि बनबैत। मुदा कोन ग्रामीण आरोपक समर्थनमे छल, कोन गवाही सुनि बदलल, कोन केवल मशाल बुझनाइसँ डराएल—पाठ निष्पन्न नहि करैत। नैतिक परिवर्तन आ क्षणिक भय बीचक भेद अगिला दिन सार्वजनिक अभिलेखमे प्रतिबिम्बित होइत कि नहि, से प्रश्न खुलल अछि। भीड़ बिना सामूहिक प्रतिज्ञा, क्षतिपूर्तिक चर्चा वा आत्मपरीक्षणक दृश्य अपन-अपन घर जाइत अछि। परिणामतः तत्काल हिंसा रुकनाइ सत्यापित, समुदायभित्र पूर्वाग्रहक दीर्घकालीन नाश असत्यापित अछि। एहि अनिश्चितताक यथार्थवादी मूल्य अछि, यद्यपि व्यक्तिगत उत्तरदायित्वक सूक्ष्म आख्यान कम विकसित अछि।

अगिला दिनक भूमि-पुनःदर्ज : संस्थागत समाधानक सङ्कोचन

“भूमि सेहो, अगिला दिनक सभामे, चर्मकार टोलाक नामपर पुनः दर्ज कएल गेल”—ई वाक्य तत्काल राजनीतिक परिणामक घोषणा करैत अछि। पूर्व अध्यायमे आरोपक माध्यमेँ भूमि-अधिकार छीनबाक योजना छल; आब दस्तावेजी नामांकन पलटैत अछि। भूमि-न्याय केवल भीड़ हँटबाक भावात्मक विजय नहि, प्रशासनिक अभिलेखमे समुदायकेँ स्थान भेटब अछि—ई कथात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि। मुदा सभा कोन अधिकारसँ भूमिक पुनःदर्ज करैत अछि, मूल अभिलेख की छल, निर्णय प्रक्रियामे कोन प्रमाण देखल गेल, ककर हस्ताक्षर भेल—एहि सभक दृश्य विस्तृत नहि अछि। भूमि वास्तवमे पहिले बेदखल भेल छल अथवा अस्थायी प्रतिबन्ध घोषित भेल छल, पूर्व अध्यायसँ एकर स्पष्ट विधिक स्तर सेहो सीमित अछि। अतः आलोचना ई परिणामकेँ कथाजगतक कथित सार्वजनिक निर्णय रूपमे स्वीकारैत अछि, बाह्य भारतीय भूमि-कानूनक प्रमाण नहि।

कमला देवीक हस्तक्षेपक फल : सम्भावित सत्ता-स्थानान्तरण

भूमि पुनःदर्ज होयबाक कारण कथावाचक कमला देवीक जोरदार हस्तक्षेप कहैत छथि। एहि स्त्री पात्रक नैतिक क्रिया तात्कालिक परिवारिक विरोधसँ आगाँ संस्थागत निर्णयपर प्रभाव डालैत अछि। मुदा ई सत्ता-परिवर्तनक सीमा सेहो देखबैत अछि: कमला देवी प्रभुत्वशाली हवेलीक सदस्य छथि, तें हुनकर गवाहीकेँ सभा अधिक वजन देलक होएत; गौरी, फुलेसरी आ अन्य स्त्रीसभक आवाजक अधिकार समान रूपेँ विकसित भेल कि नहि, से स्पष्ट नहि। एहि अन्तरमे जाति आ लिङ्गक संयुक्त सत्ता-गतिकी अछि। उच्चस्थानक स्त्रीक हस्तक्षेप दलित समुदायक रक्षा करैत अछि, मुदा प्रश्न उठैत अछि जे सामुदायिक अधिकारक वैधता अन्ततः पीड़ितक स्वतन्त्र स्वरपर आधारित अछि कि सत्ताधारी घरक अनुमोदनपर। उपन्यास एहि तनावकेँ पूर्णतः हल नहि करैत।

यशपतिक विस्थापन आ चुप्पीक रणनीति

यशपति पदसँ हटैत छथि, मुदा गाम नहि छोड़ैत। ई दण्डक स्पष्ट सीमा अछि: पदच्युति न्यायिक अभियोजन नहि, आ सार्वजनिक चुप्पी अपराधक समाप्ति नहि। गौरीक अनिद्रा आ हुनकर आँखिमे देखल ठंढापन आगामी षड्यन्त्रक सम्भावना खोलैत अछि। तृतीयपुरुष कथावाचक गौरीक आशङ्काकेँ किछु बढ़ा कऽ भविष्यक मानो निश्चित सूत्रक रूप दैत छथि; एहिमे पूर्वाभासक शिल्प अछि, पर प्रमाण-संयमक प्रश्न सेहो। मूल पाठमे नव षड्यन्त्रक पूर्ण योजना, समय, सहभागी वा कार्यवाही प्रस्तुत नहि; तें एतहि ओकर घटना-सूची बनायब अनुचित। यशपतिक मौनकेँ पाठ एक रणनीतिक शेष खतरा रूपमे चिन्हित करैत अछि। अध्यायक विजय-समापनकेँ ई अधूरापन नैतिक जटिलता दैत अछि।

गीत, फकरा आ उजासक रूपान्तर

आरम्भिक फकरा कहैत अछि, “द्वारपर मशाल आबि सकै, भीतर नाम नहि जरै”। अन्तिम गीत एहने पाँतिक पुनरावृत्तिसँ निजी भय सामूहिक उच्चारणमे बदलैत अछि। मशालक आगि हिंसाक साधन, स्त्रीसभक दीप सजग जीवन, आ पीपरक स्मृति नामक निरन्तरता बनैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण आ वीररसक संग अद्भुतरसा निकटता, ध्वन्यात्मक विरोध तथा प्रतीकक पुनरुक्ति रचनाक भाव-संरचना रचैत अछि। मुदा गीतक “मशाल बुझल हे, नाम जरैत रहल रे” पाँति आ आरम्भक “नाम नहि जरै”क बीच सम्भावित अर्थगत तनाव अछि। ‘जरैत’ यदि प्रकाशमान स्मृतिक अर्थमे अछि तँ पुनर्रचना सम्भव, यदि दहनक अर्थमे तँ कथित विपरीतार्थ। पाठमे स्पष्टीकरण नहि; तें विवादकेँ मौन सम्पादनसँ हटाएब उचित नहि। गीत घटनाक सम्भावित जोखिमकेँ विजयोत्सवमे शीघ्र बदलैत अछि; एहि वेगमे नैतिक प्रश्नसभक किछु तीखापन मंद पड़ि सकैत अछि।

काल-अवधि, दृष्टिकेन्द्रण आ घटनात्मक घनत्व

एक रातिक मुख्य घटना संक्षिप्त प्रस्तुति पबैत अछि: गौरीक पीपर लग याचना → बूढ़बाक उत्तर → भीड़क द्वार धरि आगमन → फुलेसरीक अग्रसरता → कमला देवीक प्रवेश → अनेक स्त्रीक कथन → यशपतिक प्रत्युत्तर → मशाल बुझनाइ → भीड़क विच्छेद → प्रतापसेनक प्रस्थान। अगिला दिनक सभा आ आगूक भय सारांश रूपमे अछि। एहि घटना-सूचीमे एके गवाहीक तीन उदाहरणकेँ तीन स्वतन्त्र सामाजिक परिणाम मानि घनत्व कृत्रिम

रूपसँ नहि बढ़ाओल गेल अछि। कथावाचक पीपर लग गौरीक संज्ञान, भीड़क विविध मनोदशा, कमलाक साहस आ प्रतापसेनक नजरि—एहि सभक बीच व्यापक ज्ञानक संचरण करैत छथि। कथनकाल संकट-दृश्यमे धीमा, परिणाममे द्रुत आ भविष्य-आशङ्कामे सम्भाव्य भऽ जाइत अछि।

पाठान्त टिप्पणी आ समग्र आलोचनात्मक निर्णय

अध्याय-पश्चात् “सामूहिक स्त्री-गवाहीक शक्ति” शीर्षक टिप्पणी –९६ केर शब्दप्रमाण-विचारसँ सम्बन्ध स्थापित करैत अछि आ स्त्रीक स्वतन्त्र गवाहीकेँ न्यायाधारित ज्ञान-प्रक्रियाक लोक-रूप कहैत अछि। ई पाठान्तर्गत आलोचनात्मक व्याख्या थिक; आधुनिक विधि-प्रणालीक सार्वभौम सिद्ध नियमक स्थानापन्न नहि। प्रत्येक साक्ष्यक स्वतन्त्रता, प्रासंगिकता आ प्रतिपरीक्षण कानूनक विशिष्ट प्रक्रियापर निर्भर करैत अछि। एहि अध्यायक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण अछि: उपचारक अनुभवसँ राजनीतिक आरोपक पर्दाफाश, भयग्रस्त स्त्रीसभक सार्वजनिक स्वनिर्णय, असमान सत्ता-स्थितिक अतिक्रमण आ भूमि-नामांकनक ठोस कथात्मक परिणाम। कमजोरी सेहो उल्लेखनीय अछि: बूढ़बाक घोषित असमर्थता आ मशालक बुझनाइ बीच असङ्गति; चमत्कारक कारण स्त्रीगवाहीक निर्णायक स्थान कम होयबाक खतरा; दासीक अनामता; भूमिक कानूनी निर्णयक अत्यन्त संक्षिप्त प्रक्रिया; तथा खलपात्रक सहज पूर्वाभास। अन्तिम फल ‘सम्पूर्ण न्याय’ नहि, एक रातिक बचाव, अस्थिर संस्थागत जीत आ दीर्घ संघर्षक निरन्तरता अछि। एहि अर्थमे “टोलाक द्वारपर” मुख्य आख्यानक नैतिक सूत्र—नामक रक्षा लेल सामूहिक साक्षी—केँ सशक्त बनबैत अछि, साथहि ओकर शिल्पगत कारण-व्यवस्थाकेँ आलोचनाक लेल खुलल छोड़ैत अछि।

घटना / दावा	मूल पाठक प्रमाण	कथात्मक परिणाम	प्रमाण-सीमा
गौरीक पीपरपर प्रार्थना	हुलासा, जीवन्ती, सुखदेवक स्मरण आ देरीक शिकायत	व्यक्तिगत भय पीढ़ीगत साक्षीसँ जुड़ल	बूढ़बाक भौतिक सहाय्य एखन नहि
बूढ़बाक शक्ति-घोषणा	देह नहि छुबब; मशाल नहि बुझाएब; पयर नहि रोकब	अलौकिक पात्रक सीमा घोषित	पछातिक चमत्कारसँ आन्तरिक तनाव
मशालधारी भीड़क आगमन	प्रतापसेन, यशपति आ पचास-साठि ग्रामीण	द्वारपर भय आ सार्वजनिक चुनौती	भीड़क सभ सदस्यक प्रेरणा समान नहि
फुलेसरीक प्रतिवाद	गौरीक बच्चा-बचेनिहार हाथक सार्वजनिक स्मरण	व्यक्तिगत आरोप सामूहिक प्रश्न बनल	पुरान सेवा स्वतः पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण नहि
स्त्रीसभक जीवित दीवार	दीप आ बच्चासभक संग द्वारपर ठाढ़ होयब	हिंसा-विरोधक सामूहिक दृश्य	बच्चासभक वास्तविक जोखिमपर पाठ मौन
कमला देवीक प्रवेश	हवेलीसँ दासीक संग दौड़ि सार्वजनिक बयान	परिवारक भीतरक असहमति सार्वजनिक	दासीक स्वतन्त्र स्वर अनुपस्थित

घटना / दावा	मूल पाठक प्रमाण	कथात्मक परिणाम	प्रमाण-सीमा
बहुस्त्रीक कथन	प्रसव, साँप-दंश, अन्तिम मासक परिचर्या	गौरीक नैतिक प्रतिष्ठा पुनर्प्रतिष्ठित	साक्ष्यसभक स्वतन्त्र जाँच दृश्यबद्ध नहि
यशपतिक आत्म-प्रतिरक्षित दलील	भल करबाकेँ डाइनक छल बताउल	आरोप निराधार रहितो बचायबाक प्रयास	निश्चित व्याप्ति अथवा प्रत्यक्ष रोगोत्पादन नहि
अधूरा धमकी-वाक्य	आदेशात्मक वाक्य बीचमे रुकि गेल	वाचिक हिंसाक नाटकीय अवरोध	प्रस्तावित दण्ड पूर्ण रूपेँ बताओल नहि
यशपतिक मशाल स्वयं बुझब	हवा-पानि बिना बुझबाक कथावाचकीय वर्णन	भीड़क डर आ यशपतिक स्तब्धता	घटना वर्णित, बूढ़बाक कारणत्व विवादित
भीड़क छँटब आ प्रतापसेनक मौन	शर्म, राहत, असमंजस आ हवेली प्रस्थान	एहि रातिक हिंसा रुकल	स्थायी पूर्वाग्रह-परिवर्तन असिद्ध
भूमि अगिला दिन पुनःदर्ज	कथावाचकक संक्षिप्त सभा-परिणाम	सामुदायिक नामांकनक कथित संरक्षण	प्रक्रिया, अभिलेख, आदेशक विवरण नहि
यशपतिक पदच्युति	पद हटाबैतो गाम रहनाइ	तात्कालिक सत्ता-क्षय	अभियोग, अभियोजन वा पश्चात्ताप नहि
अन्तिम सामुदायिक गीत	मशाल, नाम, दीवार, आगिक पुनरावृत्ति	प्रतिरोधक सार्वजनिक स्मृति	“नाम जरैत रहल” पाँतिक अर्थ अस्पष्ट
अध्यायपश्चात् टिप्पणी	सामूहिक स्त्री-गवाहीक शक्ति पर लेखककीय विवेचन	ज्ञानमीमांसा सँ कथाक सेतु	स्वतन्त्र ऐतिहासिक/विधिक स्रोत नहि

अध्याय –८७ : घटना-प्रमाण-नैतिक परिणाम सारणी

एहि सारणीमे प्रत्यक्ष घटना, पात्रक अर्थनिर्णय, कथावाचकक सारांश आ आगामी सम्भावनाक अन्तर सुरक्षित राखल गेल अछि। कथामे चमत्कार घटबाक वर्णन आ चमत्कारक कारणक निश्चित पहचान समान वस्तु नहि।

अध्याय –८७ : मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

“द्वारपर मशाल आबि सकै” — अध्यायारम्भक फकरा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“मशाल-धारी भीड़” — कोष्ठकीय अध्याय-सन्धि; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“आइ अहाँ हमरा हेतु देरीसँ नहि आउ” — गौरीक प्रार्थना; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“हमर शक्ति देहकेँ नहि छुबि सकैत” — बूढ़बाक घोषित सीमा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ने मशालकेँ बुताबि सकैत” — बूढ़बाक भौतिक असमर्थता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“कतेको मुँह, जे बहुत दिनसँ चुप छल” — सामूहिक गवाहीक प्रस्ताव; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“पचास-साठि गामक लोक” — भीड़क आरम्भिक परिमाण; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“केवल दीप आ अपन बच्चा-सभकेँ लेने” — स्त्री-प्रतिरोधक दृश्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“एकटा जीवित दीवार” — रक्षा आ जोखिमक प्रतीक; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ओ स्त्रीकेँ जकर हाथ हमर सभक बच्चाकेँ बचौलक?” — फुलेसरीक सार्वजनिक प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“कमला देवी, प्रतापसेनक अपन पत्नी” — सत्ता-घरक भीतरसँ प्रतिवाद; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ई पुरुषक विषय अछि!” — प्रतापसेनक लिङ्गगत निषेध; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ई पुरुषक विषय नहि, ई सत्यक विषय अछि” — कमला देवीक सार्वजनिक प्रतिवाद; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“किछु ब्राह्मण-टोलाक, किछु कायस्थ-टोलाक” — स्त्रीगवाहीक सामाजिक विस्तार; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“गौरी हमर बेटीकेँ जन्मक राति बचौलक” — प्रसवसम्बद्ध प्रत्यक्ष कथन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“गौरी हमर पतिक साँप-दंश ठीक केलक” — दोसर गवाहीक दावा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“बिनु कोनो मूल्य लेने” — दीर्घकालिक सेवा-वृत्तान्त; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ई सभटा भावुकताक बात थिक!” — यशपतिक प्रतिवाद; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“ओ वाक्य पूरा नहि कऽ सकलाह” — अधूरा धमकी-वाक्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“मशाल स्वयं बुताइ गेल” — अस्वाभाविक घटना; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“बिनु हवाक झोंकाक, बिनु पानिक बून्दक” — कथावाचकक भौतिक कारण-विलोपन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“एकर नाम बूढ़बा अछि” — गौरीक कारण-व्याख्या; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“किछु शर्मिंदा, किछु राहत महसूस करैत” — भीड़क विभाजित प्रतिक्रिया; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“अपमानक ग्लानि छल” — प्रतापसेनक नजरिक कथन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“चर्मकार टोलाक नामपर पुनः दर्ज कएल गेल” — अगिला दिनक भूमि-सम्बद्ध परिणाम; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“यशपति, अपन पद सँ हटाओल गेल बादो” — अपूर्ण दण्ड; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“चुप्पी आ हार दुइ भिन्न वस्तु होइत अछि” — आगामी संकटक सूत्र; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

“मशाल बुझल हे, नाम जरैत रहल रे” — अन्तिम गीतक अर्थगत जटिलता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८७।

प्रकरण १५ | मूल अध्याय –८६ — समयक गोहि

पाठाधार, अध्याय-सीमा आ अध्ययनक प्रश्न

“समयक गोहि” पूर्व-कथाकालक पनरहम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त त्रयीक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भिक मुद्रित पृष्ठ १६९, आ अगिला अध्याय –८५ “आमिलक आदेश”क आरम्भ पृष्ठ १७४ अछि; तेँ मुद्रित पृष्ठ-सीमा १६९–१७३ मानल जाएत। ई प्रतिशत वास्तविक घटनाक सङ्ख्या नहि। मूल अध्यायमे फकरा, कोष्ठकीय आरम्भसूचना, गौरी–बूढ़बाक संवाद, तीन पृथक कालदृश्य आ गीत अछि। समापनक बाद “अध्याय [–८६] पर टिप्पणी” शीर्षकसँ लेखककीय विवेचन शुरू होइत अछि; ओकरा मुख्य कथा-दृश्य अथवा पात्रक स्वकथन मानि नहि मिलाओल जाए। मूल प्रश्न तीन अछि: काल-भङ्ग कथा-जगतक कोन नियम बनबैत अछि; पीड़ितक नामक स्मृति किनकर श्रमसँ जीवित रहैत अछि; आ यशपतिक सत्ता-स्थानान्तरणकेँ व्यापक पीढ़ीगत अन्यायसँ जोड़बाक कथात्मक मूल्य कतेक अछि?

पूर्व अध्यायक सन्धि : पराजयक बादक राजनीतिक गति

अध्याय –८७ मे गौरीक विरुद्ध हिंसा रुकल, भूमि पुनःदर्ज भेल आ यशपतिक पद गेल; मुदा हुनकर इच्छाशक्ति समाप्त भेल नहि। एहि अध्यायक आरम्भ ई अधूरापन सक्रिय करैत अछि। समाचार अबैत अछि जे यशपति दरभंगाक राजदरबार दिस गेल छथि, आ अपन प्रस्थानकेँ धर्म-व्यवस्थाक सुधारक भाषामे उचित ठहरबैत छथि। कथामे दरबारमे हुनकर पहुँचब, अधिकारीसँ भेट वा कोनो नव आदेश जारी होयब प्रत्यक्ष नहि देखाओल गेल। गामक लोक राहत अनुभव करैत अछि, गौरी सशङ्क रहैत छथि। एकहि सूचना दुई पात्रसमूहक विपरीत ज्ञान-अवस्था प्रस्तुत करैत अछि। गौरीक चेतावनी—“ओ केवल दोसर मैदान खोजि रहल छथि”—राजनीतिक संघर्षक स्थल बदलबाक सम्भावना चिन्हित करैत अछि; ई पूर्ण षड्यन्त्रक सत्यापित योजना नहि। अध्याय एहि असमाप्त विरोधसँ दीर्घ-कालदर्शन दिस बढ़ैत अछि, तें तत्काल सत्ताकाल आ पीढ़ीक समय एक सूत्रमे आबि जाइत अछि।

राहतक समुदाय आ असहज गौरी : दृष्टिकेन्द्रणक आरम्भिक भेद

समाचार सुनि ग्रामसमुदाय राहतक अनुभूति करैत अछि, मुदा गौरीक असहजता पूर्व अनुभवक भिन्न पाठ प्रस्तुत करैत अछि। एहि छोट विरोधमे सामुदायिक मनोविज्ञानक दू स्तर अछि—तात्कालिक हिंसाक समाप्तिक सुख आ सत्ता द्वारा नव संस्थान खोजबाक आशङ्का। कथावाचक गौरीक शङ्काकेँ प्रमुखता दैत छथि, मुदा गामक अन्य लोकसभक राहतकेँ मूर्खताक दोष नहि बनबैत। हो सकैत अछि जे तत्काल संकटसँ थाकल लोक राहत चाहैत होथि। तथापि गौरीक चेतावनीक बाद दरबारक राजनीतिक परिणाम एहि अध्यायमे नहि घटैत; ई पूर्वाभास थिक। एतय साक्ष्यक सावधानी चाही: प्रतिपक्षक प्रस्थान प्रत्यक्ष समाचार रूपमे दर्ज अछि; ओकर आगामी सफलता वा विफलता कथनमे अनुपस्थित अछि। ज्ञानक एहि विषम वितरणसँ पाठक गौरीक स्थिति अपनबैत छथि, पर कथाक अगिला काल-दृश्य राजनीतिक सूचना मात्रक अनिवार्य कारण नहि, नायक-पात्रक मानसिक संकट द्वारा खुलैत अछि।

पीपरक काल-स्थान : स्मृतिस्थलसँ काल-द्वार धरि

गौरी साँझ पीपर लग बूढ़बासँ वार्ता करय जाइत छथि। पूर्व अध्यायसभमे पीपर हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना आ मृत-साक्षीक स्मृति-संकेन्द्रणक स्थल छल। एतय ओहि एकहि स्थानमे तीन दूरस्थ कालखण्डक आभास उभरैत अछि। स्थान भौतिक रूपेँ बदलल नहि; स्थानसँ देखबाक सम्भावना बदलैत अछि। ई काल–स्थानक महत्त्वपूर्ण उलटाव थिक: स्थानीय वृक्षक छाँह समुद्रपारक बन्दरगाह, राजनीतिक मैदान आ भविष्यमे चन्ना गाछीक राति धारण करैत अछि। मुदा पीपर वस्तुतः जादुई द्वार बनि गेल अछि, एहन नियम कथावाचक स्पष्ट नहि दैत। अनुभव बूढ़बाक अस्थिर चेतना आ गौरीक संवादक मध्य घटैत अछि। तेँ साहित्यिक अध्ययनमे एहि घटनाकेँ कथाजगतक अनुमोदित समय-यात्रा सँ अलग, दृश्यात्मक काल-आवेश अथवा अस्वाभाविक दृश्याभासक रूपमे पहिने पहिचानब उचित अछि।

बूढ़बाक अस्थिर देह : अलौकिक पात्रक सीमित ज्ञान

बूढ़बा पहिने मृत्युपश्चात् दीर्घजीवी स्मृतिरक्षक रूपेँ उभरल छलाह; आब हुनकर आकृति जल आ छायाक बीच टिमटिमबैत अछि, आ स्वर बहुत आवाजक बीचसँ टूटि कऽ अबैत अछि। सामान्यतः भूतक असाधारणता हुनका सर्वज्ञ बनयबाक छूट देत, मुदा पाठ उलटा करैत अछि। बूढ़बा स्वयं कहैत छथि—“हमरा नहि बुझल”—आ अपन स्थान-ज्ञानपर प्रश्न उठबैत छथि। एहिसँ कथानक अलौकिकताकेँ सर्वज्ञानक शॉर्टकट नहि बनबैत; अनुभव आ व्याख्याक दूरी बचबैत अछि। तथापि हुनकर बदलैत रूपक नियमक कारण, अवधि आ दोहराबैक शर्त कथामे स्पष्ट नहि। ई अस्पष्टता आश्चर्यरस उत्पन्न करैत अछि, किन्तु घटनाक विश्वसनीय आन्तरिक नियम स्थापित करबाक स्तरपर प्रश्न छोड़ैत अछि। बूढ़बाक असमर्थता पूर्व अध्यायक मशाल-प्रसंगसँ सेहो तुलनीय अछि: शक्ति आ सीमा बारम्बार कथानक अनुसार बदलैत देखबैत छथि।

पहिल झलक : समुद्रपारक करार आ साक्षरता-विहीन सहमति

पहिल दृश्य कोनो दूरस्थ बन्दरगाहक अछि: कारी धुआँ छोड़ैत जहाज, गठरी लेने लोक, धनक आश्वासन देनिहार आढ़तिया, आ अपरिचित कागजपर अंगूठा लगबैत एकटा युवक। दृश्य श्रमिक-प्रवासकेँ स्वेच्छा मात्र नहि, आशा, भय, भाषिक अधिकार आ आर्थिक असमानताक संयुक्त परिस्थिति बनबैत अछि। आढ़तिया तीन वर्षक करारक आकर्षण सुनबैत अछि; मुदा युवक पढ़ि नहि सकबाक कारण करारक शर्त जाँचि नहि पबैत। हस्ताक्षरक स्थानपर अंगूठाक निशान देबाक घटना दस्तावेजी सहमति आ सूचित सहमतिक अन्तर खोलैत अछि। पाठ ई नहि बतबैत जे युवकक अन्तिम गन्तव्य की, हुनकर वास्तविक नियोजन कोना भेल वा करार भङ्ग भेल कि नहि। तेँ चित्रकेँ इतिहासक कोनो निश्चित जहाज वा श्रमिकसमूहक सत्यापित दस्तावेज नहि कहल जाए; ई आर्थिक दमनक एक काल्पनिक, सामाजिक रूपसँ अर्थपूर्ण प्रतिरूप अछि।

“१८८५” : अनुमान, इतिहास आ कथनक प्रमाण-सीमा

बूढ़बाक मुखसँ “ई... ई १८८५ अछि की?” निकलैत अछि। प्रश्नवाचक रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। कथावाचक ई सन दर्ज नहि करैत छथि जे इतिहासक प्रमाणित सन् १८८५ मे फलाँ जहाज चलल; बूढ़बा अपन अनिश्चित

अनुभवकेँ एक काल-संख्या देबाक प्रयत्न करैत छथि। एहिलेल आलोचनामे १८८५केँ दृश्यक कथात्मक समय-संकेत मानल जाएत, अभिलेखीय सिद्धि नहि। भारतसँ समुद्रपार श्रम-प्रवासक वास्तविक इतिहाससँ एकर सम्बन्धक अनुसन्धान सम्भव अछि, मुदा एहि अध्यायमे जहाजक नाम, प्रस्थानबन्दरगाह, गन्तव्य आ अभिलेख अनुपस्थित अछि। इतिहासक श्रेणी आ काल्पनिक दृश्यकेँ मिश्रित कऽ निराधार ऐतिहासिक दावा करब विदेह समानान्तर इतिहास पद्धतिक विरुद्ध होयत। ई पद्धति उपेक्षित श्रमिकक अनुभूति देखैत अछि, संगहि ओकर तथ्यात्मक स्रोतक सीमा स्पष्ट रखैत अछि।

करारक कागज : नामक अधिकारसँ विधिक अदृश्यताधरि

पहिल दृश्य “नाम”क व्यापक विषयकेँ एकटा विशिष्ट विरोधाभास देइत अछि। युवक अपन अंगूठा देइत अछि, मुदा जे शब्दपर निशान अछि, ओकर अर्थ नहि बुझैत। कानूनक सतहपर व्यक्ति “सहमत” देखाओल जा सकैत अछि; प्रत्यक्ष ज्ञानक स्तरपर ओकर विकल्प अधूरा रहि जाइत अछि। पूर्व अध्याय –९२ मे सुखदेव महतोक समय आ भू-अधिकार प्रक्रियागत नियमसँ दबल छल; –८७ मे चर्मकार टोलाक नाम पुनःदर्ज भेल। एतय दस्तावेजमे नामक उपस्थितिक सम्भावना अपनेमे अधिकारक संरक्षण नहि। पाण्डुलिपि, भूमि-पत्र आ समुद्री करार तीन अलग वस्तु छथि, मुदा एक साझा प्रश्न उठबैत छथि: लिखल दस्तावेज ककर भाषा, ककर नियन्त्रण आ ककर समझमे अछि? एहि समेकनसँ महाआख्यानक दस्तावेज-नीति समृद्ध होइत अछि। मुदा युवकक नाम नहि देल जाएबाक कारण ओ व्यक्ति प्रतीकात्मक उदाहरण रहैत अछि; हुनकर स्वतन्त्र जीवनक घनत्व अल्प अछि।

दोसर झलक : भूमि-संघर्ष आ दमनक क्षणिक दृश्य

दोसर कालदृश्य सूखल खेत, लोकसमूह, माइक्रोफोन लऽ नारा देनिहार युवती, पुलिसक लाठी आ भगदड़क संयोजन अछि। कथामे “जमीन ओकर, जे ओकरा जोतैत अछि!” आन्दोलनक मुख्य उद्घोष बनैत अछि। ई दृश्य सामाजिक संघर्षकेँ तात्कालिक रूपसँ चित्रित करैत अछि, मुदा नेता, सङ्गठन, स्थान, आन्दोलनक वर्ष आ परिणामक अभाव ओकरा विशिष्ट ऐतिहासिक घटना बना नहि पबैत। युवतीक स्वर मुखर अछि, किन्तु ओ केवल आन्दोलनक चिह्न बनि रहि जाइत छथि; ओ कोन खेतीहर समुदायसँ छथि, निर्णय केना लेलनि, दमनपछाति हुनकर भूमिका की भेल—पाठ अनुत्तरित छोड़ैत अछि। पहिल कालदृश्यमा युवकक मौन अंगूठा छल, एतय युवतीक उच्च स्वर अछि। भाषिक अधिकारक ई परिवर्तन पाठककेँ ऐतिहासिक प्रगतिक सम्भावना देखबैत अछि, पर पुलिसक प्रतिरोध आ कागजक मेटनाइ बता दैत अछि जे सार्वजनिक स्वर अधिकारक निश्चित गारंटी नहि।

सुखदेवक पत्रसँ समानता : आवृत्ति नहि, रूपात्मक प्रतिध्वनि

भगदड़मे कुचलाइत बटवारा-पत्र देखि गौरी सुखदेवक पत्र चिन्हनिहार प्रतिक्रिया दैत छथि। बूढ़बा तुरन्त स्पष्ट करैत छथि—“ई सुखदेवक पत्र नहि”। ई निषेध कथाक तर्क-गठनमे निर्णायक अछि। दोसर दृश्य पहिल सुखदेवक घटनाक प्रत्यक्ष पुनरावृत्ति नहि; एकर वस्तु, समय आ पात्र अलग छथि। साम्य दस्तावेजक नष्ट होयब, भू-अधिकारक संकट आ वंचितक आवाज दबाएबमे अछि। अतः ई समानता अन्तर्पाठीय/आन्तराख्यानिक प्रतिध्वनि थिक, संख्यात्मक रूपेँ एकहि घटना दू बेर घटबाक सूचना नहि। एहि अन्तरकेँ नहि मानब घटनात्मक घनत्वक गलत गणना करब हएत। तथापि कथावाचकक विषयगत टिप्पणी जे इतिहास अलग-अलग नामसँ

“एकहि आकार” लेइत अछि, कथात्मक व्याख्याकेँ आगू बढ़ि निश्चित करैत अछि; फरक प्रकारक भूमि-सङ्घर्षक विशिष्ट कारण आ संस्थागत इतिहास दबि सकैत अछि। यही दोहरा सम्भावना अध्यायक उपलब्धि आ सीमा दुनू अछि।

तेसर झलक : चन्ना गाछीक खेल आ भविष्याभिमुख कथा

तेसर झलकमे चन्ना गाछी, रातिक कबड्डी, मृत खिलाड़ी, निर्णायक बूढ़ आकृति आ जीवित बच्चासभक मिलन अछि। ई दृश्य पहिल दू दृश्यक यथार्थ-सदृश राजनीतिक चित्रक अपेक्षा खुला अस्वाभाविक अछि। मृतकक खेल, धरतीसँ ऊपर उठल पएर, घिसल शंख आ चानीसन इजोर दैत प्राणी प्रतीककेँ घटनादृश्यक रूप दैत छथि। “चन्ना गाछ” नाम गौरी अपरिचित जानैत छथि; ई सूक्ष्म सूचना पात्रक वर्तमान ज्ञानक सीमाकेँ पुष्टि करैत अछि। पाठककेँ भविष्यक विशिष्ट अध्याय-सम्बन्ध देखयबाक अवसर भेटैत अछि, मुदा पात्र नहि जनैत छथि जे ई कोन युगक कथा। “भविष्यक दृश्य” कहब बूढ़बाक विवेचनानुसार उचित अछि; ओकर हर विवरणक भविष्यकालमे निश्चित रूपेँ घटबाक स्वतन्त्र पुष्टि एहि अध्यायमे नहि। ई अध्याय खण्डसभक बीच एकटा अग्र-संकेतक पुल बनबैत अछि।

दर्शक आ दृष्टिकेन्द्र : के दृश्य देखैत अछि?

कथावाचक दृश्यसभ विस्तृत वर्णन करैत छथि, मुदा बूढ़बाक कम्पित दृष्टि आ गौरीक प्रश्न ओकर माध्यम बनैत अछि। पहिल झलकमे गौरी जहाजक नाम नहि जनैत छथि; दोसरमे ओ कागजक समानता देखैत छथि; तेसरमे ओ गाछीक नाम अपरिचित रखैत छथि। अर्थ ई जे कथाक सर्वज्ञ-सदृश विवरण आ पात्रक सीमित ज्ञान एकहि अनुच्छेदमे संग-संग चलैत अछि। कथावाचक जहाज, लाठी, मृत खिलाड़ी आ बच्चासभकेँ पूर्ण दृश्यरूप देबैत छथि, किन्तु घटना घटबाक भौतिक माध्यम जँ दू पात्रक चेतना थिक, तँ दृश्य ककर अनुभवमे वस्तुतः उपस्थित अछि, ई स्थिर नहि रहैत। एतय Genette-सम्बद्ध प्रश्न “के देखैत अछि?” आ “के बजैत अछि?” अलग करबाक आवश्यकता अछि। बूढ़बाक अनिश्चित वाणी आ कथावाचकक चित्रात्मक निश्चितता बीच फाँक कथा-पाठककेँ एक प्रकारक संज्ञानात्मक अस्थिरता दैत अछि; ओकरा सीधा त्रुटि वा सार्वभौम सर्वज्ञता कहि समाप्त नहि करब।

अपनहि दोसर रूप : कालक विरोधाभासक नाटचशिखर

गाछपर निर्णायक आकृतिक हाथमे शंख अछि आ ओ धरतीसँ ऊपर बैसल छथि। बूढ़बा चीत्कार करैत छथि—“ई हमहीं छी”। एतहि समय-सिद्धान्त कोनो भाषण मात्र नहि रहैत: पात्र अपन समानकालिक दोसर अस्तित्व देखबाक असम्भव अनुभूति प्राप्त करैत छथि। पहिल दू झलकमे बूढ़बा अन्य लोकक समय देखलनि, तेसरमे हुनकर आत्मपहिचान पर प्रश्न उठैत अछि। स्वयंकेँ दू ठाम देखब, दुनू रूप सचमुच समकालीन होयब आ एकहि चेतनाक भाग होयब—ई तीन अलग प्रस्ताव छथि; मूल पाठ पहिल दृष्टानुभव पर बल दैत अछि, उत्तरक प्रमाण नहि दैत। पाठकीय अद्भुतरस एहि अनिर्णयपर आश्रित अछि। तथापि कालक नियम जँ प्रत्येक विशिष्ट असम्भवताकेँ मानि लैत अछि, तँ भविष्यक कथामे घटनाक अपरिवर्तनीय परिणामक भरोसा घटि सकैत अछि। एहि जोखिमकेँ कथानक अगिला अध्यायसभमे कतेक नियन्त्रित करैत अछि, से अनुवर्ती अध्ययनक प्रश्न रहत।

नदी आ गोहि : रूपकद्वारा काल-सिद्धान्त

बूढ़बा अपन पुरान धारणा फेरबैत छथि: समय हुनका पहिने “एकटा नदी” बुझाइत छल, आब “एकटा गोहि”। नदीक प्रवाह एकदिशीय क्रमक सहज रूपक अछि; गोहि धारक भीतरे रहितो पाछू-आगू घूमि सकैत अछि। एहि रूपकमे समयक अनुलोम-विलोम, पीढ़ीक विनाश आ स्मृतिक बचाव एक प्रतीकमालामे जुड़ैत अछि। मुदा कथाशास्त्रक दृष्टिसँ रूपक, काल-विज्ञान आ कथन-क्रम समान नहि। पाठककेँ भविष्यक दृश्य पहिने देखेबाक तकनीक कथनक्रमक विचलन अछि; पात्रकेँ दोसर काल देखय देबाक घटना कथा-जगतक अस्वाभाविक व्यवस्था अछि; समय गोहि समान होयबाक कथन दार्शनिक-सांकेतिक प्रस्ताव अछि। तीनूकेँ एक शाब्दिक नियम मानब अनुचित हएत। एहि पृथक्करणसँ प्रतीकक सामर्थ्य घटैत नहि, बल्कि ओकर भिन्न-भिन्न स्तरक कार्य स्पष्ट होइत अछि।

“नाम नहि खा सकैत” : स्मृति-कवच आ ओकर सामाजिक शर्त

बूढ़बाक कथन “मुदा नाम नहि खा सकैत” अध्यायक भावात्मक केन्द्र अछि। हिंसासँ देह समाप्त भऽ सकैत अछि, मुदा नाम सामुदायिक उच्चारणमे जीवित रहि सकैत अछि। तथापि ई कथन सार्वभौम अनुभवजन्य सत्य नहि। हुलासा, जीवन्ती वा सुखदेवक नाम बचल कारण कियो लिखलक, सुनलक, याद रखलक आ अगिला पीढ़ी धरि पहुँचेबाक निर्णय लेलक। अनाम युवक, अनाम आन्दोलनकारी स्त्री आ जहाजपरक अनेको प्रवासी एहि कथनक अन्तर्विरोध खोलैत छथि: नाम जँ अभिलेखमे नहि, तँ ककर स्मृति ओकरा बचाओत? एतय नामक अमरता शाश्वत दैवी गुणक बदला साझा श्रम, अभिलेखन, संघर्ष आ भाषाक लगातार पुनर्निर्माणपर निर्भर अछि। कथा अपन प्रतीकक असीम दावाकेँ व्यवहारिक उदाहरणसँ सीमित करैत अछि। आलोचनामे एकरा गलती सँ बेसी उत्पादक अन्तर्विरोध मानल जाए, जँ पाठक विस्मृत लोकक प्रश्न देखथि।

गौरीक प्रश्न : भविष्यक स्त्रीस्वरक अधिकार

तीसर दृश्यक बच्चासभक परिचय पूछलापर गौरी अपन भविष्यक सम्भावित रूपपर प्रश्न करैत छथि। हुनकर जिज्ञासा “हमरो देखलहुँ” आत्मप्रेम मात्र नहि; अन्याय बारम्बार स्त्रीदेहपर कोना लौटैत अछि, ओकर भय अछि। बूढ़बाक उत्तरमे एकटा दृढ़ मुदा डेरायल आँखिक उपस्थिति अछि। ओ गौरीक प्रतिरूपकेँ नाम, तिथि अथवा निश्चित शारीरिक पहचान नहि दैत छथि। तेँ दोसरी स्त्री अवश्य गौरीक पुनर्जन्म छथि, एहन दावा पाठकसँ सिद्ध नहि। रचनामे पीढ़ीगत समानता देहक पुनरावृत्ति नहि, दृष्टि, साहस आ भयक साझा संरचना बनैत अछि। गौरीक प्रश्न स्त्री-अनुभवकेँ भविष्यक इतिहासमे जगह देबैत अछि; मुदा भविष्यक स्त्रीक स्वतन्त्र जीवनक विवरण नहि देल गेल। एहि अज्ञानमे नैतिक विस्तारक सम्भावना अछि, संगहि चरित्रसभकेँ प्रतीकात्मक प्रतिरूपमे समेटि देबाक जोखिम सेहो।

बूढ़बाक उत्तरक नैतिक गुण : झूठ नहि बजबाक निर्णय

बूढ़बा गौरीकेँ आहत नहि करबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि, मुदा कहैत छथि—“हम अहाँसँ झूठ नहि बजब”। ई शब्द कथामे महत्त्वपूर्ण नैतिक घटना थिक। अलौकिक पूर्वदर्शीक ज्ञान अनिश्चित अछि: ओ भविष्यक वर्ष वा

विपत्तिक नाम नहि जनैत छथि; तथापि सीमित देखल अनुभव छुपबैत नहि। नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेचनमे ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अन्तर थिक—वक्ताक ईमानदारी हुनकर प्रत्येक अनुमानक सत्यता सिद्ध नहि करैत। बूढ़बा विश्वस्त पात्र भऽ सकैत छथि, मुदा भविष्यक निर्दिष्ट इतिहासक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। एहि ध्वनिमे आश्वासन आ भय दुनू उपस्थित अछि। गौरीकेँ पूर्ण निश्चित उत्तर नहि देब कथा-संसारक बौद्धिक संयमक उपलब्धि अछि; मुदा आगूक प्रकरणसभमे एहि सीमित ज्ञानक निरन्तरता जाँचबाक चाही।

भविष्यक बच्चा : स्मृति-हस्तान्तरणक अज्ञात मार्ग

बूढ़बा मानैत छथि जे आगूक बच्चासभ हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, विश्वनाथक कथा सुनि चुकल छथि। ओ अनुमान लगबैत छथि जे कियो बहुत आगाँ एहि सभ कथाकेँ एक ठाम बटोरत। कथाक आत्मसन्दर्भ एतय स्पष्ट होइत अछि: पाठक जकरा हाथमे संयुक्त त्रयी अछि, ओ कथासङ्ग्रहक सम्भावित भावी कर्ताक प्रतिबिम्ब देखैत छथि। तथापि कथाक भीतर नाम केना प्रसारित भेल—गीत, पाण्डुलिपि, स्त्रीगवाही, मौखिक आख्यान वा लिखित संग्रह—सर्वस्व स्पष्ट नहि। एहि अधूरे माध्यमसँ पाठककेँ स्मृतिसंरक्षणक संरचना अन्वेषण करबाक अवसर भेटैत अछि। जँ अन्ततः ग्रन्थ अपनेकेँ स्मृतिक एकमात्र रक्षक घोषित करय तँ सामाजिक बहुवचन संकुचित भऽ सकैत; एतय बूढ़बाक “शायद” ई दावाकेँ अनुमानक स्तरपर राखैत अछि।

अस्वाभाविक आख्यान आ सम्भावित संसारक नियम

एहि अध्यायक अस्वाभाविकता किछु मात्र कल्पनात्मक अलङ्कार नहि: पूर्वकालक एक पात्र भविष्यक भूतस्वरूप देखैत अछि। तथापि पाठ तीनि प्रकारक बाधा बचबैत अछि—गौरी भौतिक रूपसँ दूसरे दृश्य स्थलपर नहि जाइत छथि; बूढ़बा दृष्ट-अनुभवक कारण नहि जनैत छथि; कोनो दृश्य तत्काल वर्तमानक राजनीतिक स्थितिकेँ बदलैत नहि। एहि बाधासँ कथा-जगत पूर्ण अनियन्त्रित नहि होइत। सम्भावित संसारक अध्ययन कहि सकैत अछि जे दृश्यसभ वैकल्पिक वर्तमानक निर्माण नहि, सम्भव भविष्य वा अन्य कालक अनुभूति छथि; मुदा दृश्य निश्चित वस्तुगत भविष्य अछि, से निर्णय स्थगित रहैत अछि। काल-भङ्गकेँ शास्त्रीय पूर्वदीप्ति वा पूर्वदीप्तिमात्रक साधारण वर्गमे समेटब सेहो अपर्याप्त होयत। पाठमे पात्र-अनुभव स्तरपर असम्भव दृष्टि आ वाचन-स्तरपर भविष्यसूचना एक-दोसरासँ बल दैत अछि।

नव्य-न्यायक पक्ष-हेतु-व्याप्ति द्वारा परीक्षण

एहि अध्यायमे किछु दावाक ज्ञान-स्थिति अलग-अलग चिन्हित करब आवश्यक। पहिल दावा: यशपति दरबार दिस गेला—एहि लेल गाममे पहुँचल समाचार शब्दाधारित कथात्मक स्रोत अछि; दरबारक पछातिक परिणामक प्रमाण नहि। दोसर दावा: बूढ़बा अपन दोसर रूप देखलनि—ई पात्रक दृष्टानुभवक कथन अछि; दू वस्तु-रूपक अद्वैत अथवा काल-सिद्धान्तक सार्वत्रिक व्याप्ति सिद्ध नहि। तेसर दावा: भविष्यक स्त्री गौरी जकाँ अछि—सादृश्य मात्र सँ पुनर्जन्म वा पूर्ण ऐतिहासिक अभिन्नता सिद्ध नहि होइत; एतय सादृश्य-हेतु सँ अभिन्नता-साध्य निष्पन्न करब हेत्वाभासक जोखिम रखैत अछि। चारिम दावा: नाम कहियो नष्ट नहि होइत—दू-चारि पीढ़ीक स्मरणसँ सार्वकालिक अविनाशिताक व्याप्ति स्थापित नहि होइत। एहि विवेचनमे पक्षक अवच्छेदक बदलैत अछि: ‘देखल

दृश्य’, ‘विश्वास’, ‘इतिहास’, ‘प्रतीक’ अलग-अलग अभिधेय छथि। ई भेद नव्य-न्यायक आलोचनात्मक उपयोग अछि, शास्त्रीय सूत्रक काल्पनिक उद्धरण नहि।

विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि : उपेक्षितक काल आ अभिलेख

समुद्री श्रमिक, अधिकारहीन किसान, दमनित आन्दोलनकारी, स्त्री-साक्षी आ भविष्यक बच्चा—ई सभ प्रचलित राजकीय घटनासूचीक केन्द्रपर नहि छथि। कथा हुनकर अनुभूतिक तन्तुकेँ दरबार आ पदक समाचारक संग रखैत अछि। एहि अर्थमे समानान्तर इतिहासक दार्शनिक प्रश्न खुलैत अछि: राज्य समयकेँ शासन, आदेश आ राजवंशसँ मापैत अछि; लोक समयकेँ उजड़ल घर, कागजक मेटनाइ, स्त्रीक आवाज आ बाँचल नामसँ। मुदा ‘समानान्तर इतिहास’ लिखबाक नैतिक उत्तरदायित्व काल्पनिक उदाहरणकेँ वास्तविक घटनाक अप्रमाणित साक्ष्य बना देब नहि। युवकक करार, युवतीक आन्दोलन आ १८८५क दृश्य मूलतः उपन्यासक रचनात्मक दृश्य छथि। पुस्तक बाहरी अभिलेखक शोध लेल प्रश्न दैत अछि; ओ अपनेमे प्रत्येक दृश्य-घटनाक दस्तावेजी प्रमाण नहि। एहि सावधानीमे पद्धतिक बौद्धिक विश्वसनीयता निहित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र : अद्‌भुत, करुण आ ध्वनिक संयुक्त अनुभव

बूढ़बाक विभक्त आकृति आ स्वयंकेँ दोसरे ठाम देखनाइ अद्भुतक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि। करारपत्रपर अशिक्षित अंगूठा आ आन्दोलनमे लाठीक दृश्य करुण आ भयक भावसंयोग बनबैत अछि। समय-गोहि आ नदीक रूपक वक्रोक्तिपूर्ण अछि: समय स्वयं पानि नहि, पानिमे लुकाएल विनाशकारी प्राणी भऽ जाइत अछि। नामक अविनाशिताक कथनसे ध्वनि उठैत अछि जे लिखित सत्ता डुबि सकैत अछि, मुदा स्मृतिक संगठित लोक-स्वर फेर लौटि सकैत अछि। मुदा औचित्यक प्रश्न उठैत अछि जे जहाजपरक श्रम-दमन आ कबड्डीक अलौकिक दृश्यक तेज सन्धि पाठकीय संवेदनामे अनावश्यक उछाल तँ नहि उत्पन्न करैत। कथाकार एक दृष्टानुभवक चकित अवस्थासँ इनका जोड़ैत छथि; संक्रमणक भावात्मक सेतु बूढ़बाक भय अछि, व्यापक ऐतिहासिक तर्क नहि। एहि शिल्पगत चुनावक आलोचना उचित अछि।

कथाक्रम, कथन-अवधि आ घटनात्मक घनत्व

घटनात्मक मानचित्र एहि प्रकार अछि: यशपतिक दरबार दिस प्रस्थानक समाचार → गौरीक असहजता → पीपर लग बूढ़बाक अस्थिर स्थिति → पहिल समुद्री दृश्य → दोसर भूमि-संघर्षक दृश्य → तेसर मृत–जीवित कबड्डी → बूढ़बाक आत्मपहिचान-संकट → समय-गोहि सिद्धान्त → गौरीक भविष्य-प्रश्न → बूढ़बाक सीमित उत्तर → बूढ़बाक आंशिक स्थिरता → गौरीक दीर्घ अनुत्तरित प्रश्न → गीत। एतय दूरस्थ तीन दृश्य तत्काल ग्रामवर्तमानक प्रत्यक्ष राजनीतिक घटना नहि; अनुभव-स्तरक तीन पृथक इकाइ छथि। यशपतिक वास्तविक यात्रा आ ग्रामीण प्रतिक्रिया आरम्भिक वर्तमान बदलैत अछि; कालदृश्यसभ बूढ़बा आ गौरीक ज्ञान-अवस्था बदलैत अछि; भौतिक भू-अधिकार वा प्रशासनिक निर्णय एहि अध्यायमे नव रूपेँ नहि बदलैत। दृश्य मे काल-व्यवस्था संकुचित, बूढ़बा–गौरी संवादमे विस्तृत आ अन्तिम गौरीक जीवनपर भविष्य-सारांशमे अत्यन्त दीर्घ भऽ जाइत अछि।

कालविसङ्गतिक सीमा : तीन दृश्यक बेमेल विस्तार

पहिल दृश्य जहाज, करार आ व्यक्ति-स्तरक निर्णयसँ बनैत अछि; दोसर आन्दोलन, दमन आ लेख्य-विनाशसँ; तेसर भूतक खेल आ बाल-पाठकक चकित दृष्टिसँ। एहि त्रिपदीमे क्रमशः आर्थिक पराधीनता, सामाजिक अधिकार-संघर्ष आ स्मृतिक सांस्कृतिक पुनरुत्थानक सम्भावित क्रम पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा उपन्यास तीनूक बीच कारणात्मक ऐतिहासिक विकासकेँ प्रत्यक्ष नहि दिखबैत। समुद्रपार जाइत युवकक सन्तान दोसरा आन्दोलनमे अछि, अथवा आन्दोलनकारी तेसर गाछीक बच्चासभक पूर्वज छथि—ई दावाकेँ पाठ समर्थन नहि दैत। अतएव ई सामाजिक इतिहासक संक्षिप्त कालक्रम नहि, विषयक रूपात्मक संगति अछि। दृश्यसभक बिम्ब-घनत्व प्रभावी अछि, मुदा मानव-पात्रक नामविहीनता, सामाजिक जटिलताक कमी आ समयक वर्ष-दर-वर्ष सीढ़ीक अभावकेँ ‘युगव्यापी इतिहास’क सिद्ध सम्पूर्णता मानब असंगत हएत।

गीत आ लेखककीय टिप्पणी : दू अलग व्याख्या-स्तर

अन्तिम फकरा गाबि बूढ़बा समयक विनाशक विरोधमे नामक दीर्घजीविताक सामुदायिक सूत्र देइत छथि। गीत पात्रक अनुभवक भावात्मक समापन अछि; एहिमे आरम्भिक उक्ति पुनरुक्त होइत अछि, किछु नव विवादात्मक उत्तर नहि भेटैत। एहि रूपमे पुनरावृत्ति जान-बूझि कऽ स्मृतिधारणक लोकतकनीक बनैत अछि; तथापि तीन जटिल दृश्यक नैतिक अन्तर गीतक सरल द्वन्द्व—समय खाइत अछि, नाम बचैत अछि—मे समेटायल रहैत अछि। अध्यायक बाद लेखककीय टिप्पणी अरैखिक कालकेँ साहित्यिक शिल्प कहैत अछि आ भविष्यमे चन्ना गाछीक प्रसंगसँ सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। टिप्पणीमे “सम्पूर्ण दस खण्डक परियोजना” कहल गेल अछि, जखन कि संयुक्त उपलब्ध मूल त्रयीक अध्याय-गणना तीन खण्डमे स्थापित अछि। एहि बेमेलकेँ कोनो काल्पनिक अतिरिक्त खण्डक प्रमाण नहि मानब; ई परापाठक सम्पादकीय दावाक आ उपलब्ध ग्रन्थरूपक असङ्गति रूपेँ दर्ज हएत। कथाक आन्तरिक मूल्यांकन मुख्य दृश्याधारपर आ टिप्पणीक सम्पादकीय मूल्यांकन पृथक होयत।

अन्तिम प्रश्नक अर्थ : पुरान अन्याय नव मुखक संग

गौरी अपन घर लौटैत पूछैत छथि जे यशपतिक रूपमे अबैत संकट नव अछि अथवा पुरान बिपत्ति पुनरागमन। एहिसँ प्रारम्भक राजनीतिक समाचार पुनः अन्तक नैतिक प्रश्न बनि जाइत अछि। अध्याय रेखीय गति तोड़लापर सेहो बाह्य संरचनामे वृत्ताकार अछि: यशपतिक प्रस्थानसँ आरम्भ, यशपतिक सम्भावित पुनरागमनक प्रश्नपर समाप्ति। बूढ़बाक ज्ञान-दृश्य गौरीक राजनीतिक विवेककेँ अतीत–भविष्यक व्यापक भाषा दैत अछि। तथापि एहि बिन्दुपर एकटा खतरा अछि: जँ प्रत्येक नव अपराध ‘पुरान आकार’ मात्र मानल जाए, तँ अलग ऐतिहासिक कालक विशिष्ट कानून, आर्थिक सम्बन्ध आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व लुप्त भऽ सकैत अछि। कथामे गौरीक प्रश्न प्रश्न रूपेँ रहैत अछि; ई खुलापन नव समयक स्वतन्त्र परीक्षणक अधिकार बचबैत अछि। समाप्ति ओही हेतु साधारण प्रतिशोधक पूर्वसूचनासँ बेसी व्यापक आलोचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि, सीमा आ समग्र क्रममे स्थान

अध्यायक मुख्य उपलब्धि पूर्वकथाकालक दूरस्थ शास्त्रार्थ, श्रमिकक अभिलेखीय असहायता, किसानक भूमि-सङ्घर्ष आ भविष्यक लोकस्मृतिकेँ एक संवेदनात्मक काल-रूपकमे जोड़ब अछि। बूढ़बाक सर्वज्ञता नहि, ओकर अज्ञान आ विस्मय पाठकीय प्रश्नक असल केन्द्र बनैत अछि। गौरीक स्वतन्त्र राजनीतिक चेतावनी आ भविष्यक स्त्रीस्वरक प्रश्न एहि महाकालमे नारी-अनुभवक वर्तमान महत्त्व बचबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि: पहिल दू दृश्य अत्यधिक प्रतिरूपात्मक, व्यक्ति-विशिष्ट कथा अल्प; समय-दृश्यक भौतिक नियम अनिर्णीत; इतिहाससदृश १८८५ अप्रमाणित; भविष्यक दोसर गौरीक पहिचान अनिश्चित; गीत जटिलताकेँ सरल सूत्रमे बदलैत; आ टिप्पणीमे दस खण्डक उल्लेख उपलब्ध तीन-खण्डी पाठसँ नहि मिलैत। एहि सभकेँ एक-दोसरामे मिलाए बिना निर्णय देब उचित अछि। “समयक गोहि” कथात्मक सन्धि थिक—तत्काल खतरा सँ दीर्घ लोक-इतिहास धरि—मुदा निष्पक्ष समीक्षा लेल ओकर काल-कल्पनाक सामाजिक आ ज्ञानमीमांसात्मक सीमा सदैव खुलल रखबाक चाही।

कथात्मक बिन्दु	मूल अध्यायक प्रमाण	परिणाम	प्रमाण-सीमा
यशपतिक दरबार-प्रस्थान	गाममे समाचार; सुधारक दावा	ग्रामलोकक राहत, गौरीक आशङ्का	दरबारक वास्तविक कार्रवाई एतय नहि
गौरीक राजनैतिक चेतावनी	दोसर मैदान खोजबाक वाक्य	प्रतिपक्षक असमाप्त खतरा	भविष्यक षड्यन्त्र अनुमान
पीपर लग बूढ़बाक अस्थिरता	टिमटिमाइत आकृति, टूटल स्वर	साक्षी पात्रक ज्ञान-संकट	भौतिक कारण अनिर्णीत
समुद्री करारक दृश्य	जहाज, आढ़तिया, अशिक्षित युवकक अंगूठा	दस्तावेजी सहमतिक असमानता	जहाज, देश, व्यक्ति आ घटना-अभिलेख अज्ञात
१८८५ समय-संकेत	बूढ़बाक प्रश्नवाचक अनुमान	पहिल झलककेँ कालसूत्र	प्रमाणित ऐतिहासिक तिथि नहि
भूमि-आन्दोलनक दृश्य	युवतीक नारा, पुलिसक लाठी	दमन आ प्रतिरोधक प्रतिमान	स्थान, तिथि, नेता, परिणाम अज्ञात
सुखदेवक पत्रक सादृश्य	गौरीक चिन्हबाक प्रयत्न, बूढ़बाक निषेध	इतिहासक पुनराकार	एकहि मूल बटवारा-पत्र नहि
चन्ना गाछीक कबड्डी	मृत खिलाड़ी आ जीवित बच्चा	आगूक कथाक प्रतीकात्मक पूर्वाभास	वर्तमानक प्रत्यक्ष घटना नहि
बूढ़बाक स्वपहिचान	गाछपर अपनहि प्रतिरूप देखब	अलौकिक काल-अनिश्चितता	दोसर रूपक वस्तुगत अस्तित्व अप्रमाणित
नदी सँ गोहि	बूढ़बाक समय-रूपक परिवर्तित	काल-दर्शनक नाट्यव्याख्या	वैज्ञानिक काल-सिद्धान्त नहि

कथात्मक बिन्दु	मूल अध्यायक प्रमाण	परिणाम	प्रमाण-सीमा
गौरीक भविष्य-प्रश्न	दोसरी आँखि आ नव विपत्तिक संकेत	पीढ़ीगत स्त्री-अनुभव	पुनर्जन्म वा अभिन्न व्यक्ति असिद्ध
नाम सुरक्षित रखबाक तर्क	बूढ़बाक आश्वासन, भावी संग्रहक सम्भावना	लोकस्मृतिपर नैतिक बल	सभ अनाम लोक स्वतः संरक्षित नहि
बूढ़बाक आंशिक स्थिरता	रातिक अन्तमे बदलल अवस्था	अनुभवक स्थायी प्रभाव	विस्तृत काल-नियम अनिर्दिष्ट
अन्तिम गौरीक प्रश्न	पुरान बिपत्ति नव मुँह लऽ घुरनाइ	यशपतिक सूचनासँ वृत्ताकार सन्धि	नव घटना वा नव अपराधक प्रमाण नहि
गीत आ लेखककीय टिप्पणी	पुनरुक्त लोकसूत्र, कालक्रम-भङ्गक विवेचन	कथा आ परापाठ अलग अर्थ-स्तर	टिप्पणीक दस खण्ड उपलब्ध त्रयीसँ नहि मिलैत

अध्याय –८६ : घटना-दृष्टान्त-प्रमाण-सीमा सारणी

एहि सारणीमे वर्णित वर्तमान घटना, बूढ़बाक काल-दृष्टि, गौरीक अनुमान, कथावाचकक रूपक आ अध्यायोत्तर टिप्पणी अलग स्रोत-स्तरपर चिन्हित छथि। कोनो भविष्यसूचक दृश्यकेँ स्वतन्त्र ऐतिहासिक दस्तावेज मानल नहि गेल अछि।

अध्याय –८६ : मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

“समय सेहो एकटा गोहि छी” — आरम्भिक गढ़ नारिकेल फकरा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“ओ केवल दोसर मैदान खोजि रहल छथि” — गौरीक राजनीतिक आशङ्का; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“हमरा नहि बुझल” — बूढ़बाक सीमित ज्ञानक स्वीकार; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“तीन बरखक करार” — आढ़तियाक प्रलोभन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“कागच जकरा ओ पढ़ि नहि सकैत” — समुद्री करारक ज्ञान-असमानता; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“ई... ई १८८५ अछि की?” — समय-संकेतपर बूढ़बाक प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“जमीन ओकर, जे ओकरा जोतैत अछि!” — दोसर झलकक नारा; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“सुखदेवक पत्र!” — गौरीक प्रारम्भिक सादृश्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“ई सुखदेवक पत्र नहि” — बूढ़बाक भिन्नताक स्पष्टि; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“जेना ओहि कथाकेँ फेर सँ लिखल जा रहल होइक” — इतिहासक रूपात्मक प्रतिध्वनि; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“चन्ना गाछ” — तेसर झलकक स्थानसूत्र; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“कबड्डी... कबड्डी...” — भविष्याभिमुख मृत–जीवित खेलक ध्वनि; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“ई हमहीं छी” — बूढ़बाक आत्मपहिचान-संकट; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“एक संग दुइ ठाम” — काल-सहवर्तमानताक प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“एकटा नदी” — बूढ़बाक पुरान काल-रूपक; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“एकटा गोहि थिक” — बूढ़बाक नव काल-रूपक; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“मुदा नाम नहि खा सकैत” — नामक अविनाशिताक रूपक; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“शायद... शायद कियो” — स्मृति-सङ्ग्राहकक अनिश्चित कल्पना; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“हमरो देखलहुँ” — गौरीक भविष्याभिमुख प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“हम अहाँसँ झूठ नहि बजब” — बूढ़बाक सीमित सत्यकथन; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“ओ कोन साल छल” — भविष्यमे कालसूचनाक अभाव; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“अहीं जकाँ दृढ़” — समय-पारि स्त्रीक सादृश्य; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“नव मुँह लऽ कऽ” — अन्तक राजनीतिक प्रश्न; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

“जे स्मृतिमे बसल” — अन्तिम फकराक सन्देश; मूल खण्ड–०, अध्याय –८६।

प्रकरण १६ | मूल अध्याय –८५ — आमिलक आदेश

पाठाधार, पृष्ठ-सीमा आ आलोचनात्मक प्रश्न

“आमिलक आदेश” पूर्व-कथाकालक सोरहम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त त्रयीक अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ मुद्रित पृष्ठ १७४ पर आ अगिला अध्याय –८४ “जंगलक मौन”क आरम्भ पृष्ठ १८० पर अंकित अछि; तेँ एतय अध्यायक मुद्रित परास १७४–१७९ मानल गेल अछि, नहि जे प्रत्येक उद्धरणक व्यक्तिगत पृष्ठ स्वतः निर्धारित भऽ गेल। बादक प्रतिशत केवल प्रारम्भिक यान्त्रिक संकेत अछि, वास्तविक कथात्मक घटनाघनत्व नहि। एहि समीक्षाक प्रमुख प्रश्न अछि—राजकीय आदेश, वृक्षक सामुदायिक स्मृति, अलौकिक प्रकटाव आ अभिलेखक अनुपस्थिति एक-दोसराकेँ केहन प्रमाण दैत अछि अथवा प्रश्नमे बदलैत अछि?

पूर्व अध्यायसँ सन्धि : कालदर्शनक बाद राजकीय आक्रमण

अध्याय –८६ मे बूढ़बाक भविष्य-दृष्टिकेँ स्वयं अनिश्चित रूपमे राखल गेल छल। ओकर अगिला चरणमे समयक अज्ञात भय अब गामक वर्तमान संस्थागत खतरा बनि उपस्थित अछि। यशपति दरभंगा राजदरबारसँ आमिल जयसिंह आ दस सिपाही लऽ कऽ अबैत छथि। अग्रिम कोष्ठकीय सूचना पाठककेँ बता दैत अछि जे आब निशानापर चर्मकार टोला वा गौरी मात्र नहि, “पीपरक साक्षी-गाछ स्वयं” अछि। ई लेखककीय पूर्व-संकेत रहस्यकेँ पूरी तरह बन्द नहि करैत, मुदा संघर्षक दिशा पहिनहि घोषित करैत अछि। पछिला अध्यायमे समयक पार नाम बचबाक प्रश्न छल; एतय ओहि नामसभक स्थानिक आश्रय काटल जा सकबाक संकट उपस्थित भेल अछि। कथा विस्तृत इतिहाससँ एक दिनक द्रुत राजनीतिक टकराव दिस सिमटैत अछि।

आदेश-पत्रक कथात्मक कार्य : विरोधकेँ वैध प्रक्रियामे बदलब

जयसिंहक हाथीसवारी आ चौपालपर टाँगल घोषणा-पत्र संगहि दृश्यात्मक अधिकार-चिह्न अछि। “धर्म-व्यवस्थापन विभाग”क नामसँ जारी आदेश पीपरकेँ “तंत्र-कुप्रथा आ अंधविश्वासक केंद्र” घोषित करैत अछि। एतय आरोपक भाषा वैज्ञानिक परीक्षणक निष्पक्ष आरम्भ नहि; कथित निष्कर्ष एक प्रकारेँ प्रस्तावनामे पहिनहि घुसा देल गेल अछि। जाँच आ “आवश्यकतानुसार उन्मूलन”केँ एकहि प्रशासकीय वाक्यमे राखलाक कारण कटानक सम्भावना आरम्भसँ संस्थागत मान्यता प्राप्त करैत अछि। राजकीय अन्न-भंडारक प्रस्ताव सार्वजनिक उपयोगक औचित्य प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कतहु स्पष्ट नहि जे एही स्थल पर भंडार बनब अनिवार्य किएक। एहिमे दस्तावेज कथा-वस्तु मात्र नहि; हिंसक हस्तक्षेपकेँ न्यायसंगत देखेबाक साधन बनैत अछि।

राज्यक भाषा आ यशपतिक भाषा : दू शक्ति, एक सामयिक गठजोड़

यशपति कहैत छथि, “हम विज्ञान आ राज्यक शक्ति लऽ कऽ आयल छी।” ई भाषिक जुगलबन्दी महत्त्वपूर्ण अछि। ओ पूर्वक डाइन-आरोपमे धार्मिक भयक सहारा लेने छलाह; आब राज्यक कथित तर्कशीलताकेँ चर्मकार टोलाक अन्तिम आश्रय नष्ट करबाक हथियार बनबैत छथि। तकर विपरीत जयसिंह पहिल संवादमे तटस्थ, “लगभग दयालु” स्वरमे बजैत छथि। यशपति आ आमिलकेँ एकहि स्थिर खलनायकक रूपमे पढ़ब पाठक संकेतकेँ गँवा देत। दुनूक हित ओहि क्षण मिलैत अवश्य अछि, मुदा यशपतिक निजी भू-अभिलाषा आ जयसिंहक प्रशासनिक प्रतिष्ठाक संरचना अलग-अलग अछि। ई भेद जयसिंहक बादक निर्णयकेँ अर्थ दैत अछि, यद्यपि पूर्ण नैतिक पुनर्वास सिद्ध नहि करैत।

प्रमाणक एकतरफा नियम : पीपरक अधिकार शर्ताधीन

आमिलक प्रस्ताव सुनिते फुलेसरी समस्याकेँ तुरन्त पकड़ैत छथि—“हारलहुँ तँ गाछ कटत, जीतलहुँ तँ सेहो प्रमाणक भार हमरहि ऊपर।” एतय कोनो संतुलित जाँच-विधान नहि अछि। गामसँ असाधारण शक्ति देखेबाक माँग कएल गेल, मुदा वृक्षक विनाश उचित अछि से साबित करबाक भार प्रशासनपर राखल नहि गेल। वृक्षकेँ लोकस्मृतिक, शोकक आ न्यायक स्थल मानबाक गौरीक दावा ओकर प्राकृतिक वा सामाजिक उपयोगिताक आधार बनि सकैत छल; मुदा आदेश एकर रक्षाकेँ अलौकिक शक्ति-परीक्षाक निर्भर बना दैत अछि। एहि रूपमे “सुधार” बनाम “अंधविश्वास”क द्विपक्षीय ढाँचा वास्तविक भूमि-अधिकार आ स्मृति-सम्बन्धी प्रश्नकेँ छलनीसँ बाहर फेंकि दैत अछि। फुलेसरीक छोट वाक्य अध्यायक सबसँ तीक्ष्ण संस्थागत आलोचना थिक।

वैज्ञानिक परीक्षणक विडम्बना : परीक्षण पहिने विनाशक सम्भावना

जयसिंहक कथन अछि—“जँ सचमुच कोनो शक्ति अछि, तँ हमर कुल्हाड़ी ओकरा हानि नहि पहुँचा सकत।” ई प्रतिज्ञा अपनहि मे विरोधग्रस्त अछि। बिना हानि पहुँचौने शक्ति जाँचबाक उपाय ई कोना भेल जे कुल्हाड़ी जड़िपर चलाओल जाए? जँ वृक्ष साधारण जीवित वृक्ष मात्र होइ, तखन सेहो ओकर कटानक नीति अलग औचित्य माँगैत अछि। “अलौकिक शक्ति नहि” सँ “कटब न्यायसंगत”क निष्कर्षक लेल आवश्यक व्याप्ति प्रस्तुत नहि अछि। अतः समीक्षाक आपत्ति विज्ञान-विरोधी नहि; विज्ञानक नामपर अनुपयुक्त परीक्षण आ परिणामक पूर्वनिर्धारित

रूपपर अछि। कथामे जयसिंह सचमुच बौद्धिक ईमानदारी लेल तैयार छथि कि नहि, तकर जाँच हुनकर पछातिक क्रियासँ होइत अछि, केवल अपन घोषित तटस्थतासँ नहि।

गौरी आ सावित्री : स्मृतिक उत्तराधिकारक सूक्ष्म व्यवस्था

गौरी आठ बरखक बेटी सावित्रीक हाथ पकड़ि भीड़मे अबैत छथि। सावित्री रातिमे “पीपर लग केओ रोअइत अछि” कहैत उठैत रहलि अछि। ओकर कथन बूढ़बाक अशान्ति-सम्बन्धी गौरीक धारणाकेँ पुष्ट करबाक पारिवारिक संकेत बनैत अछि; मुदा पाठ एतय सावित्रीक अनुभवक स्वतन्त्र बाह्य सत्यापन नहि दैत। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। उपन्यास पूर्वपीढ़ीक बुधुआक रूपान्तरणसँ स्त्री-गवाहीक नव पीढ़ी धरि स्मृतिक रेखा खींचैत अछि। गौरीक हाथमे सावित्रीक हाथ उत्तराधिकारक दृश्य-चिह्न थिक, पर बेटीकेँ अखन निर्णयकारी सार्वजनिक वाणी नहि भेटैत अछि। ओकर संवेदनशीलता भविष्यक कथानक लेल बीज लगैत अछि; एतय ओकर क्रियात्मक भूमिका मुख्यत: गौरीक सामाजिक जोखिमकेँ अधिक मूर्त बनायब अछि।

दृश्यात्मक स्थान-संरचना : चौपालसँ पीपरक जड़ि धरि

आदेश-पत्र सार्वजनिक चौपालपर टँगैत अछि; दोसर निर्णायक दृश्य पीपरक जड़ि लग घटैत अछि। पहिल स्थल राज्यक लिखित भाषा आ सभाक जमघटक अछि, दोसर स्थल लोकस्मृति आ प्रत्यक्ष सामूहिक अनुभवक। एही दू स्थलसँ “कागच” आ “पात”क आरम्भिक फकरा अर्थ पबैत अछि। हाथी, सिपाही, कुल्हाड़ी आ घोषणा-पत्र सत्ता-विस्तारक दृश्य-चिह्न छथि; बच्चा, स्त्रीक फुसफुसाहट, जड़ि लग बैसल गौरी आ पुरान नाम सामुदायिक स्थानक सूक्ष्म चिह्न। एहि विरोधक कारण कथा केवल भूतक प्रकटाव नहि रहि जाइत; ई प्रश्न बनैत अछि जे सार्वजनिक स्थानपर केकर ज्ञान आ केकर अधिकार निर्णायक कहल जाए।

एक दिनक कथात्मक अवधि आ निर्णायक विराम

“एकटा भोरे” आमिलक प्रवेशसँ कथा शुरू होइत अछि, “दुपहरिया” कुल्हाड़ी लगैत अछि, आ “ओहि साँझ” जयसिंह राजदरबार दिस घुरि जाइत छथि। एहि तीन काल-संकेतसँ एक दिनक मुख्य घटना समयबद्ध होइत अछि। मुदा दू वाक्य समयकेँ अचानक धीमा करैत अछि—“पहिल कुल्हाड़ी जड़िपर पड़ल” आ तकर पछाति “रुकू।” पहिने एकल क्रिया, फेर सामूहिक स्तब्धता; कथन-अवधिक विस्तार संकटकेँ तीव्र बनबैत अछि। एतय दीर्घ पूर्वइतिहासक तुलना मे मंचीय दृश्यक घनत्व बढ़ैत अछि। बादक “अगिला सप्ताह”, “अगिला मास” यशपतिक अनुपस्थितिकेँ सारांशमे बदलैत अछि। कथा सुचिन्तित रूपसँ तत्काल दृश्य आ व्यापक अनिश्चितता बीच गति बदलैत अछि।

अलौकिक आवाजक अस्वाभाविकता : पहचानक नकारात्मक विन्यास

पीपरलग जे आवाज उठैत अछि, कथावाचक ओकर पहिचान “ने स्त्रीक, ने पुरुषक, ने मनुष्यक, ने पशुक” कहि कऽ नकारात्मक क्रममे करैत छथि। एक संग हजारो कण्ठक अनुभूति होइत अछि, मुदा कोनो अतिरिक्त मुख नहि अछि। ई अस्वाभाविक आख्यानक नियम भीतर सम्भव कथानक घटना अछि; वास्तविक संसारक ध्वनि-विज्ञानसँ ओकर प्रत्यक्ष सत्यापित होयब समीक्षाक उद्देश्य नहि। नकारक चतुष्टय आवाजकेँ निश्चित लिंग, जीवजाति आ

स्रोतसँ मुक्त करैत अछि। तकर एकमात्र आदेश “रुकू” कथात्मक लक्ष्य स्पष्ट करैत अछि—उत्पात बढ़ेबाक बदला कटान रोकेब। मुदा ई अकस्मात् अलौकिक हस्तक्षेप मानव-प्रतिरोधसँ प्राप्त विजयक अनुपातकेँ बदलैत अछि; एहि जोखिमक आलोचना आवश्यक अछि।

बूढ़बाक प्रत्यक्ष प्रकटाव : असामान्य दृश्यक सीमित विश्वसनीयता

“धुआँ आ इजोतक बीच काँपैत” आकृतिक रेखा बूढ़बाक देहकेँ दृश्यमान करैत अछि, मुदा पूर्ण भौतिक वस्तु नहि बनबैत। कथावाचक दाबी करैत छथि जे गामक लोक पहिने अस्पष्ट छाया देखने छल, दिनक उजासमे स्पष्ट रूप एखन पहिल बेर प्रकट भेल। एहि दृश्यमे जयसिंह चकित छथि, सिपाही पाछू हटैत छथि, यशपति भ्रमक आरोप लगबैत छथि। सामूहिक अनुभवक वर्णन कथा-संसारमे घटनाकेँ महत्त्व दैत अछि; मुदा कथावाचकक कथन ओहि कल्पित संसारक भीतर विश्वसनीयता स्थापित करैत अछि, पाठकक ऐतिहासिक अभिलेख नहि। अनुभूतिक सामूहिकता आ बाह्य जगतक प्रमाण अलग राखल जाए।

“हम एकटा साक्षी छी” : शक्ति नहि, नैतिक स्थानक आत्मपरिभाषा

जयसिंहक “अहाँ के छी?” पर बूढ़बाक उत्तर अछि—“हम एकटा साक्षी छी।” ओ स्वयंकेँ देवता वा दानव दुनू कहल अस्वीकार करैत छथि। साक्षीक ई चयन अत्यन्त अर्थवान अछि। बूढ़बा चमत्कारक स्रोत मात्र नहि बनय चाहैत छथि; ओ नाम, मृत्यु आ विस्मरणक बीच स्थित नैतिक स्मरणकर्ताक रूपमे अप्पन परिचय दैत छथि। हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सुभागीक नाम पुनः अबैत अछि; कथानक पूर्वक अनेक अध्यायक बहुजन कथा एक वाक्यमे लौटैत अछि। तथापि प्रश्न बचैत अछि—स्मृति सँ यथार्थ न्याय स्वतः प्राप्त होइत अछि कि ओकरा जीवित सामुदायिक क्रिया आवश्यक? बूढ़बाक वचन स्वयं एहि दोसर सम्भावनाकेँ चुनैत अछि, कारण ओ वृक्ष काटलाक सम्भावित राज्य-आचरणपर टिप्पणी करैत छथि।

पीपरक अस्तित्व आ साक्षीक आयु : एकरूपता नहि

बूढ़बा कहैत छथि, “हम एहि वृक्षसँ बेसी पुरान छी।” एतयसँ पीपर आ बूढ़बा एकहि सत्ता थिकाह, से सिद्ध नहि होइत। वृक्ष सामुदायिक स्मृतिक स्थल अछि; बूढ़बा स्मृतिक कथात्मक व्यक्तिरूप। एहि भेदक कारण वृक्ष कटला पर बूढ़बा नष्ट नहि होयबाक वचन कथामे सम्भव भऽ सकैत अछि। मुदा वृक्ष बाँचय किएक चाही—एहि प्रश्नक उत्तर केवल प्रेत-सत्ता नहि, बल्कि उपेक्षितक स्मृति, सामूहिक शोक आ जीवित स्थान-सम्बन्ध अछि। वृक्षक रक्षाक अर्थ बूढ़बाक देह बचायब नहि, स्मृतिक सार्वजनिक स्थल बचायब अछि। एहि बिन्दुपर पर्यावरणीय आख्यान आ लोक-अभिलेखक आलोचना एक-दोसराकेँ स्पर्श करैत अछि, एकरूप नहि होइत।

राज्यक ज्ञान-सीमा : असमझ वस्तुकेँ नष्ट करबाक प्रवृत्ति

बूढ़बाक प्रतिप्रश्न जे राज्य “ओहि हर चीजकेँ काटि सकैत अछि जकरा ओ बुझि नहि पबैत”, अध्यायक दार्शनिक केन्द्र थिक। एहि कथनमे अनभिज्ञता केवळ ज्ञानगत कमी नहि; प्रशासनिक दण्डक कारण बनि सकबाक खतरा अछि। राजकीय शक्ति जे वस्तु परिभाषित नहि कऽ पबैत, ओकर अस्तित्वक वैधताकेँ नकारि सकैत अछि। मुदा बूढ़बाक वक्तव्यकेँ सभ सम्भावित सरकारी जाँचक विरुद्ध सार्वत्रिक सिद्धान्त बनाओल उचित नहि। एतय

निर्णायक प्रसंग विशिष्ट अछि : पीपर कटबाक प्रस्तावक निजी प्रेरक यशपति छथि, आ प्रक्रियामे गामक स्वतन्त्र हितक पर्याप्त सुनवाई नहि अछि। नैतिक आपत्ति एहि ठोस घटनासँ बल पबैत अछि।

जयसिंहक रूपान्तरण : अनुभूति, विवेक आ प्रशासनिक विवशता

आवाज सुनि आ आकृति देखि जयसिंह “कुल्हाड़ी नीचाँ राखू” आदेश दैत छथि। कथावाचक हुनकर “नव, असहज सम्मान”क उल्लेख करैत छथि। ई परिवर्तन नायकक साधारण पराभव नहि; राज्यक प्रतिनिधिक भीतर निजी अनुभवसँ निर्णय बदलबाक दृश्य अछि। ओ यशपतिक भूमिलालसाकेँ सार्वजनिक रूपसँ पहिचानैत छथि। मुदा कथात्मक गति अत्यन्त तीव्र अछि—पहिने एक अलौकिक दृश्य, तुरन्त आधिकारिक आदेश। राज्य-प्रक्रियाक लिखित पुनर्विचार, स्थानीय गवाहीक स्वतन्त्र परीक्षण, वा भूमि-विवादक अभिलेखीय जाँच एतय नहि देखाओल गेल। ई दृश्य प्रभावशाली करुण–अद्भुत मोड़ अछि, मुदा संस्थागत न्याय-प्रक्रियाक पूर्ण नाट्य-चित्र नहि।

भ्रम आ सत्यक निर्णय : नव्य-न्यायक सावधान परीक्षण

जयसिंह स्वयं कहैत छथि जे “हम भ्रम आ सत्यक बीच भेद करब जनैत छी।” मुदा पाठमे हुनकर निर्णयक परीक्ष्य आधार सीमित अछि : एक अनपेक्षित आवाज, दृश्यमान आकृति आ सामूहिक भय। नव्य-न्यायीय परीक्षणमे यदि पक्ष “एहि स्थलपर असाधारण साक्षी-सत्ता उपस्थित अछि”, साध्य ओहि सत्ताक अस्तित्व, आ हेतु दृश्य-अनुभव, तँ हेतुक सत्यता, विकल्पी कारण, व्याप्ति आ शंकासभक परीक्षण आवश्यक होयत। सामूहिक अनुभव मात्रसँ हर सम्भावित भ्रम निषिद्ध नहि होइत। विशेषतः कथा-संसारमे अकल्पनीय सत्ता सम्भव होयब आ ऐतिहासिक संसारमे ओकर प्रमाण सिद्ध होयब दू पृथक प्रश्न अछि। लेखक बूढ़बाक नैतिक वाणीकेँ वस्तुगत निर्णयक केन्द्र बनबैत छथि; एहि कलात्मक प्रक्रियाकेँ न्यायशास्त्रीय प्रमाणक नामपर निर्विवाद नहि कहल जा सकैत।

यशपतिक उद्देश्यक उद्घाटन : अनुमान आ उपलब्धि

जयसिंह यशपतिकेँ कहैत छथि—“ई वृक्षक हेतु नहि, चर्मकार टोलाक भूमिक हेतु।” ई निष्कर्ष पछिला अध्याय –८८ आ –८७ मे चित्रित षड्यन्त्रसँ पाठकीय समर्थन पबैत अछि। तखन यशपतिक नियत चिह्नित करब पूर्ण आकस्मिक नहि लगैत। मुदा स्वयं जयसिंह एतय भूमि सम्बन्धी नूतन दस्तावेज अथवा प्रत्यक्ष अपराधक औपचारिक जाँच प्रस्तुत नहि करैत छथि। पाठक पूर्व घटनाक जानकारीसँ अधिक जानैत छथि, जे आमिलक कथित ज्ञानतर्कक दृश्यगत आधार नहि बनि जाइत। दृष्टिकेन्द्रणक एहि असमानतासँ परिणाम विश्वास्य लागैत अछि, मुदा न्यायिक प्रमाणक प्रश्न खुलल रहैत अछि। घटना नैतिक अनावरण अवश्य अछि, विधिवत् निर्णय नहि।

पलायनक आसान राह : सिपाहीक निष्क्रियता आ कथात्मक सुविधा

यशपति भागैत छथि; जयसिंह “रोकू ओकरा!” कहैत छथि; भयभीत सिपाही धीमा पड़ैत छथि आ यशपति जंगलमे गायब भऽ जाइत छथि। एक दिस ई कारण-सूत्र स्थानीय अछि—सिपाहीसभ आकृतिक प्रकटावसँ स्तब्ध छथि। दोसर दिस अपराध-प्रवृत्त पात्रक भागि सकब आगामी रहस्यक सुविधाजनक उपकरण सेहो बनैत अछि।

राजकीय बलसँ घेरल भीड़मे घुसि जंगल धरि पहुँचबाक भौतिक प्रक्रिया अत्यल्प वाक्यमे निपटा देल गेल अछि। तैँ पाठक सम्भवतः उत्सुक रहैत अछि, मुदा गिरफ्तारी असफल होयबाक विशिष्ट कारण-श्रृंखला अधिक विस्तृत होइत तँ घटनाक विश्वसनीयता बढ़ि सकैत छल। एहि स्थानपर कथा दृश्यात्मक रोमांचकेँ प्रचुर अवसर दैत अछि, प्रशासनिक परिणतिकेँ नहि।

अनुशंसित संरक्षण बनाम वास्तविक अधिकार

जयसिंह गौरीक भूमि, वृक्ष आ अधिकार “राजकीय संरक्षणमे राखबाक अनुशंसा” करबाक आश्वासन दैत छथि। ई निर्णायक वाक्यक व्याकरण पर ध्यान दियौक। “अनुशंसा करब” भविष्यक वादा अछि; “संरक्षण प्रदान कएल” सम्पन्न प्रशासनिक क्रिया नहि। फलतः अध्यायक अन्तमे वृक्ष तत्काल बचि गेल हो, मुदा भूमि-अधिकारक राजकीय प्रत्याभूति लिखित रूपमे स्थापित भऽ गेल—एहन प्रमाण नहि भेटैत। न्यायिक सिद्धिक लेल आदेश संख्या, लिखित लागू-करण वा उत्तरवर्ती कार्रवाई पाठमे नहि अछि। उपन्यास स्वयंहि एहि अपूर्णताकेँ रिपोर्टक अनुपस्थितिसँ अधिक गम्भीर बनबैत अछि। अतः नैतिक विजय आ संस्थागत उपलब्धि अलग-अलग लेखा चाहैत अछि।

गायब रिपोर्ट : अभिलेख-शून्यता कथा-वस्तु बनैत अछि

गामक लोक बरखोबरख जयसिंहक रिपोर्टक अनुमान लगबैत रहल, मुदा कथावाचकक अनुसार “ओ रिपोर्ट कोनो अभिलेखागारमे कहियो नहि भेटल।” ई कथात्मक वक्तव्यकेँ वास्तविक दरभंगा अभिलेखागारक शोध-निष्कर्ष मानब असंगत हएत। उपन्यासमे रिपोर्टक अनुपस्थिति दू विपरीत सम्भावनाक दरवाजा खोलैत अछि: राज्य वास्तवमे निर्णयकेँ दबा देलक, अथवा सामुदायिक स्मृतिमे लिपिबद्ध घटनाक सरकारी पुष्टि कखनो उपलब्ध नहि भेल। कथावाचक एकर पूर्ण समाधान नहि दैत छथि। आरम्भिक फकराक “कागचपर” बनाम “पातपर”क विरोध एतय लौटकऽ जटिल भऽ जाइत अछि—कागज लिखल गेल हो सकैत अछि, मुदा आज उपलब्ध नहि; गामक सामूहिक वाणी चलैत रहैत अछि।

बूढ़बाक अज्ञान : सर्वज्ञ भूतक धारणापर रोक

अध्यायक अन्तिम गोपनीय संवादमे बूढ़बा कहैत छथि—“हमरा यशपतिक अन्त नहि देखाइ पड़ल।” हुनकर समय-पार दृष्टि जंगलक प्रवेशबिन्दुपर रुकि जाइत अछि। ई स्वीकृति पात्रकेँ अनिवार्य सर्वज्ञ-सहायक नहि रहय दैत। कथा जँ जयसिंहक समक्ष बूढ़बाकेँ सामूहिक चमत्कारक स्रोत बनौने अछि, तँ अन्तिम कथनमे हुनकर ज्ञानेन्द्रिय सीमा स्वीकार करबैत अछि। नव अनिश्चितता बिना जाँच भविष्यक भयमे बदलि सकैत अछि, मुदा एतय अभी यशपतिक मृत्यु, पलायनक वास्तविक गन्तव्य वा जंगलक कोनो अदृश्य शक्ति सिद्ध नहि। “ई हमरा डेरा रहल अछि” अनुभवी पात्रक भावस्थिति थिक, सिद्ध आपदाक भविष्यवाणी नहि। एहि कारण अध्याय अगिला “जंगलक मौन”क लेल कारगर प्रश्न खुला छोड़ैत अछि।

गौरीक उत्तर : स्मृतिरूप प्रेमक दार्शनिक अर्थ

जयसिंह शक्तिक स्वरूप पुछैत छथि। गौरी कहैत छथि जे ई “कोनो तंत्र नहि, कोनो देवता नहि”; एक मनुष्यक केकरो नाम नहि बिसरबाक निर्णय “कालसँ बेसी शक्तिशाली” भऽ सकैत अछि। एहि उत्तरमे चमत्कारक भौतिक कारण-विज्ञान नहि, नैतिक उपमा अछि। स्मरणकेँ समयपर आधिपत्य देब वैज्ञानिक सिद्धान्त नहि; ई मृत्यु आ गुमनामीक विरुद्ध सामुदायिक प्रतिरोधक मूल्यनिर्णय थिक। एहि वाक्यसँ कथाक विशाल आकारक भीतर नामक पुरान सूत्र पुनः प्रतिष्ठित होइत अछि। मुदा स्मरण-प्रतिज्ञाक सामाजिक प्रभाव वास्तविक भूमिक रक्षा, अन्न-वितरण आ दमन-निवारणसँ जुड़ल रहब चाही; केवल नाम उच्चारण अन्यायकेँ समाप्त नहि करैत।

परावृत्त लोकगीत : कागज-पातक द्वन्द्वक रूपान्तर

अध्यायक आरम्भमे “साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर” फकरा अछि। अन्तमे गाम ओकर विस्तार गबैत अछि—“कागच फाटि जाय”, मुदा “फकरा कण्ठमे रहै”। एतय पुनरावृत्ति मात्र सजावट नहि। प्रारम्भिक पद कटानक आसन्न भयक भाषा थिक; समापनमे ओहि पद राज्यक अस्थायी लिखित आदेश आ लोकक दीर्घ मौखिक साक्षीक तुलना करैत अछि। ई सूक्ति सामुदायिक प्रतिरोधकेँ समयक व्यापक पटलपर राखैत अछि। तथापि गीतक निश्चित नैतिक सूत्र घटनाक भितर जटिल असहमतिकेँ समतल सेहो करैत अछि : जयसिंहक परिवर्तन, रिपोर्टक गायब होयब आ यशपतिक पलायन सभ गीतक उत्सवधर्मी विजयमे समान रूपसँ उपस्थित नहि छथि।

दृष्टिकेन्द्रण : जयसिंह, गौरी, बूढ़बा आ सामूहिक भीड़

कथावाचक तृतीयपुरुषी अछि, मुदा दृष्टि एक पात्रमे बन्द नहि। यशपतिक सन्तोष, गौरीक स्थिर आवाज राखबाक कोशिश, सिपाहीसभक भय, जयसिंहक बदलैत सम्मान आ बूढ़बाक निजी डर क्रमशः पाठक तक अबैत अछि। एहि व्यापक ज्ञानक कारण पाठक जयसिंहसँ पहिने यशपतिक दुष्प्रयोजन बूझैत अछि। एक स्थानपर “गामक हर मनुष्य” एकहि आवाज सुनबाक दाबी करैत अछि; ई व्यापक कथावाचकीय घोषणा पात्र-विशेषक सीमित अनुभवसँ भिन्न अछि। अखेरि बूढ़बा–गौरीक गुप्त संवाद सामूहिक दृश्यक बाद दृश्यकेँ संकुचित करैत अछि। विभिन्न ज्ञान-स्तरक स्पष्ट भेद समीक्षा लेल आवश्यक अछि, नहि तँ सर्वज्ञ कथावाचकक वाक्यकेँ ऐतिहासिक प्रमाण समझबाक गलती हएत।

घटनात्मक घनत्व : स्वतन्त्र परिवर्तनक लेखा

एक दिनक मुख्य घटनाकेँ संगठित क्रममे देखला पर आरम्भिक अवस्था—पीपर पर संकट—सँ स्थिति-परिवर्तन धरि अनेक स्वतन्त्र मोड़ अछि : आमिलक प्रवेश; लिखित आदेश; गौरीक सार्वजनिक प्रतिवाद; जाँचक असमान शर्त; कुल्हाड़ीक पहिल चोट; आवाज आ आकृति; कटान रोकबाक आदेश; यशपतिक उद्देश्यक अनावरण; ओकर पलायन; राजकीय अनुशंसाक प्रतिज्ञा; रिपोर्टक न भेटब; बूढ़बाक अज्ञात डर। ई क्रम घटना-सूची थिक, गणना-स्वतः अन्तिम निर्णय नहि। एक दीर्घ भाषणमे अनेक नैतिक सूत्र रहि सकैत अछि, मुदा एकर अर्थ अनेक स्वतन्त्र

बाह्य घटना नहि। पूर्वक ५५.६ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेदक अनुपात एहि गुणात्मक विश्लेषणक स्थानापन्न नहि।

भारतीय काव्यशास्त्र : अद्‌भुत रस, करुणध्वनि आ औचित्य

कुल्हाड़ी पड़िते हजारो कण्ठक आवाज आ धुआँ–इजोतक आकृति अद्भुत रसक सम्भावना जगबैत अछि। किन्तु एहि अद्भुततक पृष्ठभूमि हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव आ अन्य विस्मृतक स्मृति अछि; तेँ करुणात्मक ध्वनि चमत्कारक भीतर धरि पहुँचैत अछि। “कागच” आ “पात”क विरोध वक्रोक्तिमय संक्षेप बनि संस्थागत प्रमाण आ लोकस्मृतिक दूरी देखबैत अछि। औचित्यक प्रश्न एतय कठिन अछि : वृक्षक वास्तविक सामाजिक अधिकारक पक्षमे स्वतन्त्र मानवीय तर्क उपलब्ध रहितहुँ कथानक कटान रोकबाक सफलता मुख्यतः भूतक मूर्त उपस्थितिपर निर्भर करैत अछि। अलौकिक दृश्य रचनात्मक रूपसँ प्रभावी अछि, मुदा ओकर अनिवार्यता आ मानवीय निर्णयक स्थानक जाँच खुलल रहबाक चाही।

विदेह समानान्तर इतिहास : नाम, स्त्रीगवाही आ अदृश्य अभिलेख

बूढ़बाक नामसूचीमे प्रथमतः ओ लोक छथि जिनकर नाम राजकीय कागजमे नहि चढ़ल। एहि कथामे साक्षीक अधिकार स्मृतिशील स्त्री गौरी आ फुलेसरीक प्रश्नोत्तरमे सेहो बनैत अछि। लोकगीत, पीपर आ सामूहिक उच्चारण वैकल्पिक अभिलेखक रूपक होइत अछि; मुदा एतयसँ लेखबद्ध अभिलेखक आवश्यकता समाप्त नहि होइत। उल्टे रिपोर्टक न भेटब दिखबैत अछि जे दलित–वंचित समुदायक भूमि-अधिकार लेल राज्यक अभिलेखो आवश्यक होइत अछि। समानान्तर इतिहास-पद्धतिक बल एहि दुहरी अपेक्षामे अछि—मुख्यधाराक लिखित मौनकेँ उजागर करब आ लोकस्मृतिमे उपस्थित हर दावाकेँ स्वतः प्रमाणित नहि मानब। एहि भेदसँ आलोचना सहानुभूति आ परीक्षण दुनू बचबैत अछि।

अध्यायोत्तर टिप्पणी : कथासँ अलग व्याख्याक स्तर

मूल अध्यायमे समापन गीतक बाद “अध्याय [–८५] पर टिप्पणी” आ “अंधविश्वास-विरोधी सुधार आ स्थानीय परम्पराक बीच द्वन्द्व” शीर्षकसँ अलग व्याख्या अछि। एहि टिप्पणीमे सुधारक नामपर हाशियाकृतक परम्परा नष्ट करबाक आशंकाक सामान्य संकेत देल अछि, आ जयसिंहकेँ न पूर्ण खलनायक न उद्धारक मानबाक प्रस्ताव रखल गेल अछि। ई लेखककीय आशय-प्रकाश अछि, कथामे घटित अतिरिक्त घटना नहि। टिप्पणीक सामाजशास्त्रीय दावा स्वतन्त्र ऐतिहासिक अध्ययन बिना प्रमाणित सामान्य इतिहास नहि मानल जाए; तथापि जयसिंहक स्वर आ व्यवहारमे बदलाबक विश्लेषण लेल ई महत्त्वपूर्ण परापाठक संकेत अछि। मुख्य अध्याय, गीत आ व्याख्याक प्रमाण-मूल्य अलग रखल गेल अछि।

उपलब्धि, सीमा आ अगिला अध्यायदिस खुलल द्वार

“आमिलक आदेश”क मुख्य सफलता ई जे गौरीक भूमि-संघर्षकेँ साक्षी-गाछक सार्वजनिक अर्थ, लिखित आदेशक दमनकारी सम्भावना आ नामक नैतिक रक्षा संग जोड़ैत अछि। फुलेसरीक प्रश्न एकतरफा प्रमाण-भारक महीन दोष उद्घाटित करैत अछि; बूढ़बाक साक्षी-परिचय पुरान मृतकसभकेँ पुनः वर्तमानमे अनैत अछि; जयसिंहक

सीमित परिवर्तन राज्यक भीतर सम्भावित विवेकक संकेत अछि। सीमा सेहो स्पष्ट अछि : भूतक प्रकटावसे निर्णायक परीक्षण अचानक समाप्त होइत अछि; वृक्षक रक्षा लेल अति-अलौकिक प्रमाण माँगबाक अनुचित आधार अप्रत्यक्ष रूपेँ स्वीकारल रहैत अछि; न्यायिक अनुसन्धान संक्षिप्त अछि; यशपतिक पलायन सुविधाजनक अछि; वास्तविक संरक्षणक दस्तावेज अनुपस्थित अछि। अन्तमे बूढ़बाक दृष्टि जंगलपर रुकैत अछि, जइसँ अगिला अध्याय –८४ “जंगलक मौन”क कथात्मक प्रश्न खुलि जाइत अछि।

अध्याय –८५ : घटना-कारण-निर्णय-प्रमाण-सीमा सारणी

क्रम	पाठमे घटना/रूप	कथात्मक परिवर्तन	उपलब्ध आधार	अनिर्णीत सीमा
१	आमिल, सैनिक आ यशपतिक प्रवेश	गामपर राजकीय निरीक्षणक दबाव	हाथीसवारी, लिखित घोषणा-पत्र	राजकीय विभागक ऐतिहासिक अस्तित्वक बाह्य पुष्टि नहि
२	साक्षी-गाछक जाँच/उन्मूलनक आदेश	लोकस्मृतिक स्थल कटबाक जोखिम	तंत्र-कुप्रथा, अन्न-भंडारक प्रस्ताव	वृक्षक वास्तविक हानिक ठोस उदाहरण नहि
३	गौरीक सार्वजनिक प्रतिवाद	राज्यक आरोपसँ स्मृति आ अधिकारक प्रश्न खुलैत	गामक स्मृति, शोक, न्यायक स्थल	स्मृतिक मूल्य ≠ असाधारण शक्ति सिद्धि
४	फुलेसरीक असमान शर्तक पहिचान	समुदायपर एकतरफा प्रमाण-भार	हार/जीतक दुनू स्थितिक विश्लेषण	स्वतन्त्र निष्पक्ष जाँच अनुपस्थित
५	कुल्हाड़ीक प्रहार आ “रुकू”	जाँचसँ तत्काल संकट-दृश्यमे मोड़	ध्वनि, सिपाहीसभक प्रतिक्रिया	असाधारण आवाज कथाभितरी प्रमाण
६	बूढ़बाक दृश्य प्रकटाव	सार्वजनिक अनुभव आ साक्षी-कथा जुड़ैत	हुलासा आदि नामक पुनरुच्चारण	परालौकिक दावाक बाह्य सत्यापन नहि
७	जयसिंहक कटान रोकबाक आदेश	तत्काल वृक्ष-रक्षा	“कुल्हाड़ी नीचाँ राखू”	राजकीय संरक्षणक पूर्ण

				कार्यान्वयन नहि
८	यशपतिक भूमिलालसाक उद्घाटन	अधिकारीक नैतिक दृष्टि बदलैत	आमिलक प्रत्यक्ष आरोप	औपचारिक फौजदारी जाँच दर्शाओल नहि
९	यशपतिक जंगल दिस पलायन	विरोधक पात्र गायब, रहस्य बचैत	सिपाहीसभक डर, पीछा असफल	यशपतिक मृत्यु वा गन्तव्य अज्ञात
१०	संरक्षणक अनुशंसा आ रिपोर्टक न भेटब	नैतिक विजय बनाम अभिलेखीय रिक्तता	आश्वासन; अनपलब्ध रिपोर्ट	अनुशंसा ≠ सम्पन्न राजकीय आदेश
११	बूढ़बाक दृष्टि जंगलपर रुकब	आगामी अध्याय लेल अनिश्चय	गौरीसँ निजी संवाद	अनिष्टक निश्चित भविष्यवाणी नहि
१२	फकराक पुनरावृत्ति	लोक-अभिलेख बनाम अल्पस्थायी कागज	समापनक सामुदायिक गीत	गीत कथा-घटना नहि, नैतिक पुनःसङ्केत

अध्याय –८५ : मूल पाठक सत्यापित उद्धरण-सूचक

01. “साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर” — आरम्भिक फकरा : लिखित आदेश आ लोकस्मृति; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

02. “पीपरक साक्षी-गाछ स्वयं निशानापर अछि” — कोष्ठकीय कथा-सूचना : आक्रमणक लक्ष्य; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

03. “मिथिला-राज्यक धर्म-व्यवस्थापन विभाग” — राजकीय विभागक कथाभितरी नाम; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

04. “तंत्र-कुप्रथा आ अंधविश्वासक केंद्र” — आदेशमे आरोपक पूर्वस्थापना; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

05. “राजकीय अन्न-भंडार” — स्थल-दखलक सार्वजनिक औचित्य; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

06. “हम विज्ञान आ राज्यक शक्ति लऽ कऽ आयल छी” — यशपतिक घोषणाक राजनीतिक शब्दावली; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

07. “ई वृक्ष गामक स्मृतिक अछि” — गौरीक सामुदायिक स्मृतिसम्बन्धी प्रतिवाद; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

08. “जँ सचमुच कोनो शक्ति अछि” — जाँचक असाधारण शर्त; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

09. “हारलहुँ तँ गाछ कटत” — फुलेसरीक असमान जोखिमक पहिचान; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

10. “आठ बरखक बेटी सावित्रीक हाथ” — पीढ़ीगत स्मृति-सन्धि; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

11. “पीपर लग केओ रोअइत अछि” — सावित्रीक अनुभवक कथन; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

12. “पहिल कुल्हाड़ी जड़िपर पड़ल” — निर्णायक भौतिक हस्तक्षेप; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

13. “रुकू।” — असामान्य आवाजक आदेश; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

14. “ने स्त्रीक, ने पुरुषक” — अलौकिक आवाजक नकारात्मक विन्यास; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

15. “धुआँ आ इजोतक बीच काँपैत रहल” — आकृतिक अनिश्चित देह; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

16. “हम एकटा साक्षी छी” — बूढ़बाक नैतिक आत्मपरिचय; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

17. “हम कोनो देवता नहि छी” — अलौकिकक धार्मिक नामकरणसँ दूरी; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

18. “हम एहि वृक्षसँ बेसी पुरान छी” — साक्षी आ वृक्षक भिन्न अस्तित्व; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

19. “कुल्हाड़ी नीचाँ राखू” — आमिलक तत्काल निर्णय; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

20. “हम भ्रम आ सत्यक बीच भेद करब जनैत छी” — आमिलक आत्मघोषित विवेक; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

21. “ई वृक्षक हेतु नहि, चर्मकार टोलाक भूमिक हेतु” — यशपतिक उद्देश्यक उद्घाटन; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

22. “रोकू ओकरा!” — पलायन रोकबाक असफल आदेश; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

23. “राजकीय संरक्षणमे राखबाक अनुशंसा करब” — भविष्यक वादा, सम्पन्न संरक्षण नहि; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय −८५।

24. “ओ रिपोर्ट कोनो अभिलेखागारमे कहियो नहि भेटल” — कथाभितरी अभिलेखीय अनुपस्थिति; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

25. “हमरा यशपतिक अन्त नहि देखाइ पड़ल” — बूढ़बाक ज्ञानेन्द्रिय सीमा; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

26. “ई हमरा डेरा रहल अछि” — अज्ञात भविष्यक प्रति भय; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

27. “कागच फाटि जाय” — समापन गीतक लोकस्मृति-सूत्र; मूल संयुक्त त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८५।

अध्यायोत्तर आलोचनात्मक निष्कर्ष

एहि अध्यायक तात्कालिक कथात्मक फल कटानक रुकब अछि; मुदा आधिकारिक संरक्षण, रिपोर्टक उपलब्धि आ पलायनशील यशपतिक परिणति अनिर्णीत अछि। साक्षी-गाछक रक्षा लोकस्मृति आ भूमि-अधिकारक संघर्षसँ अर्थ पबैत अछि; ओकर मूल्य अलौकिक प्रकटावक परीक्षणमे सीमित नहि कएल जा सकैत। अध्याय –८४ “जंगलक मौन”क पाठ-परीक्षणमे एहि अनिर्णीत सूत्रकेँ जारी राखब आवश्यक अछि।

प्रकरण १७ | मूल अध्याय –८४ — जंगलक मौन

अध्याय –८५ मे यशपतिक पलायनक बाद ई अध्याय हुनकर अनिश्चित अन्तक अनुसन्धान करैत अछि। खोज-दलमे मुखिया, युवक आ आमिलक दू सिपाही सम्मिलित छथि। जंगलमे फाटल वस्त्र, पएरक निशान, जूता आ पैघ प्राणीक घसीटन-सदृश चिह्न भेटैत अछि, मुदा यशपतिक मृत्यु अथवा गोहिक आक्रमणक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटैत। एतय वस्तु भेटब आ ओकर कारणक निश्चित ज्ञान—दुनू भिन्न स्थिति छथि।

बूढ़बा जंगलक भीतर अपन दृष्टि रुकबाक बात स्वीकार करैत छथि। हुनकर 'नहि' केवल व्यक्तिगत अज्ञान नहि, उपन्यासक असाधारण साक्षी-शक्तिक सीमांकन अछि। ज्ञानक अभावकेँ वस्तुक अभाव मानब नव्य-न्यायक दृष्टिसँ अनुचित हएत। एतय उपन्यास रहस्यकेँ सर्वज्ञ पात्रक सहायतासँ बन्द नहि करैत, उलटे साक्षीक सीमासँ खोलैत अछि।

खोज-दलक भयक कारण जाँच छोड़ि देब कथामे भयानक वातावरण उत्पन्न करैत अछि; मुदा संस्थागत उत्तरदायित्वक कसौटीपर ई अधूरा अनुसन्धान अछि। लोकक मुखिया, राजकीय सिपाही आ सामुदायिक गवाहीकेँ निर्णायक न्यायिक प्रतिवेदनमे बदलबाक प्रक्रिया देखाओल नहि गेल अछि। जूता अथवा वस्त्रक सामाजिक पहचान व्यक्ति-विशेषक निर्विवाद पहचान नहि थिक; विशाल निशान सेहो गोहिक उपस्थिति अथवा यशपतिक मृत्यु सिद्ध नहि करैत।

जंगल आ अनाम नदी मानवेतर काल–स्थानक रूपमे सक्रिय छथि: ओ स्थानपर पहुँचते ज्ञात रास्ता, दृश्यता आ सुरक्षित चलनक नियम बदलि जाइत अछि। मुदा पर्यावरणकेँ चेतन न्यायाधीश मानब पाठक प्रमाणसँ आगू बढ़ब होयत। वनक 'मौन' मनुष्यक व्याख्याक सीमा अछि।

गौरीक नैतिक प्रतिप्रश्न बूढ़बाक नाम-संरक्षणकेँ आलोचनाक विषय बनबैत अछि। पीड़ितक नाम बचाएब आवश्यक अछि, मुदा अपराधीक नाम केवल घृणाक कारणसँ लुप्त कऽ देबासँ अपराधक इतिहास सेहो मेटा सकैत अछि। स्मृति आ न्याय एक-दोसराक पर्याय नहि; समावेशी अभिलेखमे अपराध, पीड़ा आ उत्तरदायित्व तीनू सुरक्षित रहबाक चाही। वृद्ध स्त्रीसभ द्वारा यशपतिक पूर्ववर्ती मानवीय छविक स्मरण ओकर अपराधक क्षमादान नहि, पात्रक नैतिक जटिलताक संकेत अछि।

कथावाचक खोज-दलक सीमित ज्ञान, गौरीक प्रश्न आ बूढ़बाक असमर्थता देखबैत अछि; अन्तमे अज्ञात वस्तुक जागरणक सूचना दैत पात्रसभसँ अधिक ज्ञानक स्थिति ग्रहण करैत अछि। ई दृष्टिकेन्द्रणक परिवर्तन भविष्य-संकेत उत्पन्न करैत अछि। भयानक, करुण आ अद्भुतक संयोगेँ अध्याय प्रभावी बनैत अछि, तथापि अनुसन्धानक अति-शीघ्र विराम एकर कारणात्मक सीमा अछि।

अध्यायोत्तर 'अनुत्तरित रहस्यक कथात्मक भूमिका' लेखककीय परापाठ अछि; ओकरा मूल कथा-घटना अथवा स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण मानल नहि जाए। एहि विवेचनक अन्तिम निर्णय ई अछि जे यशपतिक अन्त अनिश्चित अछि आ बूढ़बाक दृष्टि पूर्ण नहि; ई साहित्यिक उपलब्धि तँ अछि, मुदा अधूरा न्यायिक उत्तरदायित्वक प्रश्न शेष रहैत अछि।

प्रकरण १८ | मूल अध्याय –८३ — सोनमा माझिन

यशपतिक अन्तर्धानक एक मास बाद बकरी, भैंसक बच्चा आ कजरीक वंशक युवा भैंस गायब होइत अछि। पानिदिस घसीटनक निशान पूर्ववर्ती रहस्यसँ मिलैत अछि; तथापि गोहिक निश्चित आक्रमण प्रमाणित नहि। बूढ़बा 'मूल गोहि' नाम अपन पुरनका माझी-समुदायक चर्चा सँ स्मरण करैत छथि, मुदा ओकर स्वरूप स्वयं नहि जानैत छथि। एहि स्वीकारोक्तिसँ नव ज्ञानसमुदाय दिस कथाक द्वार खुलैत अछि।

गौरी सावित्रीकेँ फुलेसरी लग छोड़ि सोनमा माझिनक दूरस्थ नदी-किनारक झोपड़ी पहुँचैत छथि। गौरीक आवागमन केवल संदेशवाहकक भूमिका नहि; शास्त्रीय आ अलौकिक स्मृतिसँ भिन्न मत्स्यजीवी ज्ञानक मध्यस्थता अछि। फुलेसरीक देखभालक श्रम ई यात्रा सम्भव बनबैत अछि, मुदा हुनकर अपन दृष्टिकोण पर्याप्त विकसित नहि अछि।

सोनमा अत्यन्त वृद्ध छथि, दृष्टिहीन छथि, मुदा गौरीक साँसमे पीपरक गन्ध 'सुनबाक' दावा करैत छथि। ई संवेदी विनिमय अस्वाभाविक आख्यानक प्रयोग अछि, प्रमाणित इन्द्रियविज्ञान नहि। बूढ़बाक कालातीत साक्षी-अस्तित्व आ सोनमाक मृत्यु द्वारा बिसरल दीर्घजीविता दू पृथक मिथकीय समय-व्यवस्था प्रस्तुत करैत अछि।

सोनमाक भीतरक कथा लिखित अभिलेखसँ पूर्वक जल-आधारित लोकस्मृतिमे प्रवेश करबैत अछि। नदीक नाम उच्चारणक अधिकार हुनकर पुरखाकेँ छल—एहि कथनमे नाम, भूगोल आ सत्ता एक संग प्रश्नांकित होइत अछि। मुदा ई कथाभीतरक मौखिक दावाक स्तरपर अछि; ऐतिहासिक अभिलेखक स्वतन्त्र सत्यापन नहि। नैयायिक, मीमांसक आ ब्राह्मणकेँ एकहि सामाजिक श्रेणी मानब सेहो शास्त्रीय रूपसँ अनुचित होयत।

'मूल गोहि'कैं सोनमा पशु वा आत्मा नहि, 'भुलाइक भूख' कहैत छथि। ई बिम्बसँ शीर्षकक गोहि जलचरक भय सँ बढ़ि स्मृतिक नश्वरताक दार्शनिक प्रतीक बनैत अछि। मुदा स्वाभाविक विस्मरण आ योजनाबद्ध अभिलेखीय मेटाइक नैतिक भेद सुरक्षित रखबाक चाही। भेंट-प्रथाक बन्द होयब आ भूखक जागरणक बीच व्याप्ति सिद्ध नहि; यशपतिक घृणासँ प्राचीन शक्तिक जागरण सोनमाक सम्भावित अनुमान थिक, निर्विवाद तथ्य नहि।

सोनमाक मुख्य प्रस्ताव ई अछि जे साक्षी बनब आ विस्मरणकैं नकारब भिन्न काज थिक। विस्मरण पर पूर्ण युद्ध करबाक स्थानपर प्रत्येक नामकैं विस्मरणसँ पहिने उचित सम्मान भेटबाक चाही। गौरी ई सन्देश बूढ़बा धरि पहुँचबैत छथि। बूढ़बा यशपतिक प्रति अपन घृणा स्वीकार कऽ सन्तुलन खोजबाक संकल्प लैत छथि। एहि आत्मस्वीकृतिमे पात्रक नैतिक विकास अछि; मुदा व्यवहारिक परिवर्तनक प्रत्यक्ष परीक्षण अगिला प्रसंगसभमे आवश्यक अछि।

सोनमाक गीतमे जाल, माछ आ नाम श्रम आ स्मृतिक प्रतीक बनैत अछि। जाल जीवनयापनक साधन अछि, मुदा नामक मुक्ति अनासक्त नैतिकताक प्रस्ताव। ई करुण, अद्भुत आ शान्तक सङ्गति उत्पन्न करैत अछि। तथापि मत्स्यजीवी समुदायक भौतिक श्रम, जलाधिकार आ व्यापारक ठोस वर्णन अत्यन्त संक्षिप्त रहैत अछि। लोकज्ञानकैं प्रतीक बनबैत समय ओकर आर्थिक संसार ओझरि जाइबाक जोखिम उपस्थित अछि।

अध्यायोत्तर 'आदिवासी/मत्स्यजीवी स्मृति-परम्परा आ ब्राह्मणवादी अतिक्रमण' शीर्षक व्याख्या परापाठ अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाणीकरण नहि। समग्र निर्णय: अध्याय स्मृति आ विस्मरणक द्वन्द्व खोलैत अछि, बूढ़बाक एकाधिकार तोड़ैत अछि, आ गौरीक माध्यमसँ ज्ञानक अन्तरपरम्परागत संवाद रचैत अछि। कमजोरी: लोकविश्वासक कारणात्मक अपरीक्षितता, सोनमाक जीवनक कम विकसित सामाजिक आयाम आ आत्मसंशोधनक शीघ्र समाधान।

प्रकरण १९ । मूल अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी

३८८. पाठाधार आ कथात्मक सन्धि

'पहिल कबड्डी' पूर्व-कथाकालक उन्नैसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल त्रयीक अनुक्रमणिकामे आरम्भ-पृष्ठ १८८ आ अगिला अध्याय –८१क आरम्भ-पृष्ठ १९३ अछि; तदनुसार मुद्रित पृष्ठ-सीमा १८८–१९२ मानल गेल अछि। ई सूचक घटना-संख्या नहि थिक।

३८९. तीन बरखक अन्तराल आ सङ्कटक वृद्धि

सोनमा माझिनसँ भेटक तीन बरख बाद पशुधनक हानिसँ बढ़ि मनुष्यक अन्तर्धान शुरू होइत अछि। रातिमे नदी लग जायवला व्यक्ति अधिक संकटमे छथि। ई संक्रमण घटनाक पैमाना बढ़बैत अछि: पशुधनक हानि सँ जीविकाक संकट, फेर मनुष्यक हानि सँ सामुदायिक अस्तित्वक संकट। माछ पकड़ब, खेती आ बच्चासभक हँसी घटबाक वर्णन भयक आर्थिक, पर्यावरणीय आ मानसिक परिणामकैं संग रखैत अछि। मुदा मनुष्यसभक अन्तर्धानक वास्तविक संख्या, नाम आ मृत्यु-कारण नहि देल गेल अछि। ओकरा गोहिक प्रत्यक्ष आक्रमण मानि लेब प्रमाणसँ आगाँ बढ़ब होयत।

३९०. सावित्रीक आयु आ उत्तराधिकारक कालक्रम

मूल पाठ स्पष्ट करैत अछि जे सावित्री आब सोरह बरखक छथि। तीन बरखक अन्तराल आ नव पीढ़ीक सक्रियता कथानककेँ बूढ़बाक दीर्घ स्मृतिक वृत्तसँ मानवजीवनक सामाजिक शिक्षण दिस आनैत अछि। सावित्री सपनामे जकर दृश्य देखैत छथि—बच्चासभ, गाछक छाह, दौड़ आ अनजान शब्द—ओ आगू जा कऽ अनुष्ठानक रूप पबैत अछि। एतय सपना भविष्यक निश्चित वैज्ञानिक पूर्वानुमान नहि, कथाक भीतर सम्भावित क्रियाक कल्पनाशील प्रारूप अछि।

३९१. ज्ञानक तेसर मार्ग : सावित्रीक प्रस्ताव

सोनमा स्मृति आ विस्मरणक सन्तुलन सिखौने छलीह, बूढ़बा मृतकक नाम बचबैत छलाह। सावित्री एहि दू भिन्न व्यवस्थाकेँ खेलमे एकत्र करबाक प्रस्ताव दैत छथि। एहि प्रस्तावक मौलिकता ई अछि जे सैद्धान्तिक समन्वय समुदाय द्वारा दोहराओल जा सकय एहन सामूहिक अभ्यासमे बदलैत अछि। नामक उच्चारण आ सीमा-पार करबाक शारीरिक क्रिया एकहि पारीमे जुड़ैत अछि। ज्ञान एतय केवल विरासत नहि; नव पीढ़ी द्वारा पुनर्रचित व्यवहार अछि।

३९२. कर्तृत्व आ पात्रनिर्माण

सावित्री स्वयं पहिल पारी खेलबाक निश्चय करैत छथि, माएक विरोधक बादो। एहि निर्णयमे कथात्मक कर्तृत्व अछि। ओ बूढ़बाक आदेशक निष्क्रिय पालन नहि करैत छथि; अवधारणा स्वयं दैत छथि, जोखिम स्वीकार करैत छथि आ सार्वजनिक क्रियाक नेतृत्व करैत छथि। गौरी प्रश्नकर्ता आ सावधान संरक्षिका छथि; फुलेसरीक उपस्थिति सामुदायिक सहभागिताक संकेत अछि। बूढ़बा वरिष्ठ साक्षी रहितो नव मार्ग सावित्रीसँ सीखबाक बात स्वीकार करैत छथि। ई अधिकारक पीढ़ीगत पुनर्वितरण अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि अछि।

३९३. खतरा आ सहमति : अनुष्ठानक नैतिक परीक्षा

बूढ़बा चेतबैत छथि जे असफलताक स्थिति मूल गोहि एकरा अनादर मानि सकैत अछि। जोखिमक भार सामूहिक रूपसँ उठेबाक घोषणा नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा सावित्री अवयस्क छथि, आ जोखिम अज्ञात तथा सम्भावित रूपसँ प्राणघातक। एहि स्थितिमे सामूहिक सहमतिक अर्थ परखबाक चाही। गौरीक विरोध आ सावित्रीक आग्रह प्रत्यक्ष अछि, मुदा जोखिमक वस्तुनिष्ठ परिमाण अज्ञात। कथाक वीरतापूर्ण प्रस्तुति आलोचनाकेँ सावित्रीक सुरक्षाक प्रश्न छोड़बाक अनुमति नहि दैत।

३९४. अमावस्याक राति : प्रदर्शनक काल–स्थान

जोड़ी पोखरिक किनार, पीपरक जड़ि, अमावस्याक अन्हार आ उपस्थित गामक लोक मिलि एकटा प्रदर्शनात्मक स्थल बनबैत अछि। खेलक सामान्य सामाजिक स्थान धार्मिक-सामुदायिक अनुष्ठानमे बदलैत अछि। एतय सहभागी, दर्शक, सावधान निरीक्षक आ अलौकिक साक्षी एकहि स्थानमे छथि। समष्टि दर्शक बनब मात्र नहि, अगिला पारीसभमे स्वयं अनुष्ठानक वाहक बनबाक सम्भावना लैत अछि।

३९५. पारीक नियम आ प्रतीकात्मक परिवर्तन

साधारण कबड्डीमे विपक्षीक सीमा पार कऽ लौटब शारीरिक कौशलक परीक्षा अछि। सावित्रीक परिवर्तित खेलमे पारी मृतक अथवा बिसरल नामक सार्वजनिक उच्चारणसँ जुड़ैत अछि। सीमा केवल खेलक मैदानक नहि रहि जीवन–मृत्यु, स्मृति–विस्मरण आ भय–साहसक प्रतीक बनैत अछि। 'एक साँस' मानवजीवनक क्षणभंगुरता तथा स्मृतिक सामूहिक निरन्तरताक बीच सम्बन्ध रचैत अछि। तथापि मूल अध्याय संशोधित खेलक सम्पूर्ण नियमावली, हार-जीतक वस्तुनिष्ठ मानदण्ड वा सुरक्षा-व्यवस्था नहि दैत। एकरा पूर्ण विकसित खेल-विधि घोषित करब अनुचित हएत।

३९६. सुभागीक नाम : चयनक नैतिकता

पहिल पुकार 'सुभागी'क अछि। सावित्री बाढ़िमे उपेक्षित नामकेँ सार्वजनिक स्मरणक केन्द्र बनबैत छथि। ई चयन पूर्व अध्यायसभक उपेक्षित मृत्यु आ सामुदायिक हानिगणनाक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। नाम बोलबाक क्रिया अभिलेखीय न्यायक प्रतीक अछि; मुदा नाम उच्चारण अपने आपमे मृतकक सामाजिक अन्यायक समाधान नहि। वास्तविक क्षतिपूर्ति अथवा उत्तरदायित्वक प्रश्न एहि सांकेतिक विजयक बाद सेहो शेष रहैत अछि।

३९७. यशपतिक नाम : पूर्ववर्ती नैतिक अन्तर्विरोधक समाधान

सावित्री दोसर पुकार यशपतिक करैत छथि। ई अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नैतिक मोड़ अछि। बूढ़बा जकर नाम प्रेमक अभावमे बचा नहि सकबाक बात कहने छलाह, सावित्री ओकरो स्मरणक अधिकार दैत छथि, तथापि ओकर अपराधक जिम्मेदारी मेटबैत नहि। ई पीड़ित आ अपराधीक समान नैतिक निर्दोषता घोषित नहि करैत; बल्कि इतिहाससँ नाम मेटाबाक विरोध अछि। यशपतिक अस्तित्वक स्मरण न्यायिक उत्तरदायित्व सुरक्षित रखबाक साधन बनि सकैत अछि।

३९८. जलक हलचल आ प्रमाण-विवेचन

सुभागीक नामपर पानि हिलैत अछि, यशपतिक नामपर अधिक तीव्र हलचल देखाओल गेल अछि। गौरी सावित्रीकेँ पाछू हटबाक चेतावनी दैत छथि। सावित्री ई भय अछि, आक्रमण नहि—एहन व्याख्या करैत छथि। मुदा पानिक हिलनाइ सँ मूल गोहिक सुनब, भावात्मक प्रतिक्रिया अथवा अस्तित्व स्वतः सिद्ध नहि होइत। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ प्रत्यक्ष जलगति एकटा तथ्य; ओकर अलौकिक कर्ताक अनुमान दोसर स्तर। एहि दुनूक बीच अनिवार्य व्याप्ति प्रस्तुत नहि भेल अछि।

३९९. तेसर सम्बोधन आ सन्तुलनक अनुष्ठान

सावित्री मूल गोहिसँ धैर्य माँगैत छथि, हुनका नकारैत नहि। सोनमाक पुरखाक भेंट-प्रथासँ ई वाणी स्पष्ट सम्बन्ध राखैत अछि। मुदा भेंटक विषय बदलैत अछि: दूध, फल अथवा फूलक स्थानपर नामक आदरपूर्वक उच्चारण। ई धार्मिक अनुष्ठानक नैतिक पुनर्रचना अछि। सामुदायिक स्मरणकेँ हिंसक प्रतिशोधक बदला समझौता आ सहअस्तित्वक व्यवहार बनाओल गेल अछि। तथापि गोहि द्वारा एहि प्रस्तावक औपचारिक स्वीकार नहि देखाओल गेल; केवल पानिक क्रमशः शान्त होयब वर्णित अछि।

४००. तत्काल परिणाम आ दीर्घकालिक दावाक अन्तर

पानि शांत भेलापर बूढ़बा कहैत छथि जे आजुक राति गोहि सुतल। ओ स्वयं स्वीकार करैत छथि जे एकर स्थायी प्रभाव नहि जानैत। एकर तुरन्त बाद कथावाचक अमावस्याक मासिक परम्पराक आरम्भ आ कथित निरापद कालक व्यापक सूचना दैत अछि। एहि दुई स्तरकेँ अलग राखल जाए: पहिल रातिक प्रत्यक्ष दृश्य सीमित अछि; भविष्यक प्रभाव कथावाचकक सारांश आ लोकश्रुतिपर आधारित अछि। 'कहल जाइत अछि'क प्रमाण-सीमा महत्त्वपूर्ण अछि।

४०१. आवृत्ति आ काल-सङ्कोचन

एकटा विस्तृत अमावस्या-रातिक दृश्यक बाद अनेक मास, पीढ़ी आ भविष्यक रूप एक संक्षिप्त कथात्मक अनुच्छेदमे समाहित अछि। घटनाक अवधिक अनुपात अत्यन्त बदलैत अछि। पहिल प्रयोग दृश्यरूपमे विस्तृत अछि; आगामी पुनरावृत्तिसभ iterative narration द्वारा समेकित अछि। एहि शैलीसँ रचना उत्पत्तिक एकल क्षणकेँ सामुदायिक परम्पराक दीर्घजीवितामे बदलैत अछि। मुदा प्रत्येक अगिला अमावस्या वास्तवमे केना बीतल से देखाओल नहि गेल; सारांशकेँ अनेक सत्यापित दृश्यक विकल्प नहि मानल जाए।

४०२. भविष्य-संकेत आ वृत्ताकार संरचना

कथावाचक चन्ना गाछीक भावी 'कालातीत कबड्डी'क उल्लेख करैत अछि। एहि प्रकारेँ पूर्व-कथाकाल मुख्य खण्डक परिचित प्रतीकक उत्पत्ति-संरचना बनैत अछि। कथा केवल आगे बढ़ैत नहि; भविष्यक पाठानुभवकेँ अतीतक दृश्य द्वारा पुनर्व्याख्यायित करैत अछि। ई व्यापक त्रयीक पुनरावर्ती नाम, साक्षी आ खेलक सम्बन्धक एकटा कथात्मक सन्धिबिन्दु अछि। मुदा अध्यायोत्तर लेखककीय टिप्पणीमे एहि संरचनाक जे दावा अछि, ओकर अन्तिम पुष्टिक लेल मुख्य खण्डसभक वास्तविक पुनरावृत्तिक स्वतन्त्र पाठमिलान आवश्यक अछि।

४०३. रस, ध्वनि आ औचित्य

भयानक रस मानव-अन्तर्धान आ रातिक जल-हलचलमे प्रमुख अछि। सावित्रीक जोखिम-स्वीकार वीरक भाव उत्पन्न करैत अछि; जलक शमन अद्भुत आ शान्तक सम्भावनाकेँ संग आनैत अछि। खेलक साँस, सीमा आ पारी स्मृतिक जीवन्त हस्तान्तरणक ध्वनि बनैत अछि। मुदा भयक अपेक्षित स्थायित्व बहुत शीघ्र समाधानमे बदलैत अछि; एहि कारण कथा-तनाव अपेक्षाकृत जल्द समाप्त होयबाक आलोचना सम्भव अछि। खेलक शारीरिक दृश्य आ नैतिक उपदेशक सन्तुलन किछु स्थानपर उपदेश दिस झुकैत अछि।

४०४. विदेह समानान्तर इतिहास आ सामूहिक अभिलेख

सुभागी जेकाँ उपेक्षित मृतकक नामकेँ बच्चासभ द्वारा दोहराओल अनुष्ठान स्मृतिक लोक-अभिलेख अछि। राज्यक लिखित प्रमाणसभसँ भिन्न ई समुदाय द्वारा पुनःक्रियान्वित रिकॉर्ड अछि। मुदा मौखिक आवृत्ति ऐतिहासिक तथ्यक स्वतः अन्तिम प्रमाणीकरण नहि। नामक उचित उच्चारण, सम्बन्धित व्यक्तिक जीवन-वृत्त, मृत्यु-परिस्थिति आ उत्तरदायित्वक अलग स्रोत जरुरी रहैत। सावित्रीक खेल एकटा शक्तिशाली स्मरण-पद्धति अछि, पूर्ण न्यायिक संस्थाक विकल्प नहि।

४०५. सामाजिक प्रतिनिधित्व आ लैंगिक कर्तृत्व

नव अनुष्ठानक कल्पना एकटा किशोरी करैत छथि; गौरी आ फुलेसरी ओकर प्रथम सार्वजनिक प्रयोगमे उपस्थित छथि। बूढ़बा शिक्षाग्राही बनैत छथि। ई व्यवस्थाक प्रमुख उपलब्धि अछि। तथापि बादक वर्णनमे अनुष्ठान बूढ़बाक निर्देशनमे संचालित कहल गेल अछि। एहि संक्रमणसँ सावित्रीक प्रथम संस्थापकत्व आगाँ चलि पुरुष-अलौकिक अधिकारक अधीन पुनःपरिभाषित होयबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि। आलोचनामे एहि तनावकेँ अनदेखल नहि जाए।

४०६. घटनाक कारणात्मक घनत्व

एहि अध्यायमे वास्तविक परिवर्तनशील घटनाक क्रम अछि: तीन बरखक क्षति; सावित्रीक स्वप्न-आधारित प्रस्ताव; जोखिमपर विवाद; स्वयं पारी लेबाक निर्णय; अमावस्याक सार्वजनिक जमघट; सुभागी, यशपति आ मूल गोहिक तीन सम्बोधन; जलक प्रतिक्रिया; अस्थायी शान्ति; आवर्ती अनुष्ठानक संस्थापन। एहि सूचीमे चरित्रक निर्णय आ परिणाम अलग स्पष्ट अछि। गीतक पंक्तिक संख्या अथवा क्रियापदक गणनाक बदला ई कारण–कार्य शृंखला घटनात्मक घनत्वक प्रामाणिक विश्लेषणक आधार बनेबाक चाही।

४०७. उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि बूढ़बाक साक्षी-भाव, सोनमाक भेंट-सिद्धान्त आ सावित्रीक खेल-कल्पनाकेँ एकटा सामुदायिक क्रियामे जोड़ब अछि। यशपतिक नाम लेब पूर्ववर्ती स्मृति-विवादक सार्थक उत्तर बनैत अछि। किशोरीक कर्तृत्व ज्ञानक अन्तरपीढ़ीगत हस्तान्तरणक प्रभावकारी उदाहरण अछि। कमजोरी ई जे जलक प्रतिक्रिया सँ अलौकिक सत्ता आ अनुष्ठानक सफलता स्पष्ट रूपसँ प्रमाणित नहि; दीर्घकालिक निष्कर्षक निर्माण अत्यन्त संक्षिप्त; जोखिमक सामाजिक नैतिकता आ खेलक व्यवहारिक नियम अस्पष्ट। मिथकीय आख्यानक रूपमे ई स्वीकार्य कलात्मक विकल्प भऽ सकैत अछि, मुदा आलोचनाक प्रमाण-श्रेणीमे भेद आवश्यक अछि।

४०८. घटना–प्रमाण–निर्णय

१. तीन बरखमे मानव-अन्तर्धान आ आजीविकाक सङ्कोच — संकटक वृद्धि प्रमाणित कथा-घटना, कारण अनिर्णीत।

२. सावित्रीक सपना आ प्रस्ताव — पात्रक विचार आ निर्णय; स्वप्न बाह्य भविष्यक प्रमाण नहि।

३. सामूहिक जोखिमक चर्चा — नैतिक उत्तरदायित्वक संकेत, सुरक्षा-व्यवस्था अस्पष्ट।

४. सुभागीक नामक पुकार — स्मृतिक सार्वजनिक पुनःस्थापन।

५. यशपतिक नामक पुकार — अपराधीक इतिहास मेटाबाक अस्वीकार; क्षमादान नहि।

६. पानिक हलचल — दृश्यगत घटना; मूल गोहिक श्रवण वा स्वीकृति अप्रमाणित।

७. जलक शान्ति — तत्काल अनुभव, स्थायी नियन्त्रण सिद्ध नहि।

८. मासिक खेलक संस्थापन — सामूहिक परम्पराक जन्म; दीर्घकालिक प्रभावक कथन सारांश रूपमे।

९. चन्ना गाछीक भविष्य-संकेत — वृहत्तर त्रयीक वृत्ताकार संरचनाक प्रस्ताव, अगिला पाठसँ मिलान योग्य।

४०९. समग्र निर्णय

'पहिल कबड्डी' केवल बालक्रीड़ाक उद्गमक कथा नहि। ई उपन्यासक स्मृति-दर्शनकेँ व्यक्तिगत साक्षी-शक्तिसँ सामूहिक, आवर्ती आ शारीरिक प्रदर्शनमे बदलैत अछि। सावित्रीक निर्णायक योगदान ई थिक जे ओ स्मृतिक संरक्षण आ विस्मरणक स्वीकृतिक बीच नव सामाजिक क्रिया निर्मित करैत छथि। मुदा ई समन्वय अतार्किक चमत्कारक निर्विवाद प्रमाण नहि, एकटा मिथकीय-सामुदायिक आश्वासन अछि। उपन्यासक न्याय-दृष्टि तखने पूर्ण विकसित मानल जाएत जखन नामक पुनरुच्चारणक संग उत्पीड़ित जीवनक ठोस इतिहास आ उत्तरदायित्व सेहो सुरक्षित हो।

मूल अध्याय, समापन गीत आ अध्यायोत्तर टिप्पणी पृथक प्रमाण-स्तरपर परीक्षण कएल गेल अछि।

अगिला क्रम : अध्याय −८१ — आक्रमणक छाया।

प्रकरण २० | मूल अध्याय −८१ — आक्रमणक छाया

पाठाधार आ समीक्षा-सीमा

“आक्रमणक छाया” पूर्व-कथाकालक बीसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त त्रयीक अनुक्रमणिकामे अध्याय −८१क आरम्भ पृष्ठ १९३ आ −८०क आरम्भ १९७ अछि; तेँ एकर मुद्रित पृष्ठ-परास १९३–१९६ मानल गेल। ई अनुपात वास्तविक घटना-घनत्व नहि थिक। वर्तमान समीक्षा एहि मापकसँ मूल घटनाकेँ जाँचैत अछि, न कि लेखककीय टिप्पणीक इतिहास-दावाकेँ मूल कथा-घटना मानैत अछि।

पूर्वाध्यायक अनुष्ठानसँ राजनैतिक विपत्तिक दिशा

अध्याय −८२ मे सावित्रीक कल्पित अमावस्या-कबड्डी स्मृतिरक्षाक सामूहिक अनुष्ठान बनैत अछि। अध्याय −८१ अपन आरम्भमे बतबैत अछि जे बीस बरख धरि ई अनुष्ठान सामान्य जीवनक अंग बनि गेल; पशुधनक हानि रुकल, दूरस्थ नदीक भय कमजोर पड़ल, आ बच्चासभ खेलक संगी बनल। मुदा वर्तमान संकट मूल गोहिक सम्भावित भूखसँ भिन्न अछि। एतय सशस्त्र मनुष्यक हिंसा, राजनैतिक अनिश्चितता आ शरणार्थीक भय अछि। पहिने स्थापित व्यवस्था नव प्रकारक आपदामे उपयोगी रहत कि नहि, से अध्याय परीक्षण करैत अछि। एहि अर्थमे अनुष्ठानक पुनरागमन दोहराव मात्र नहि; ओकर कार्य-परिवर्तन अछि।

बीस बरखक काल-छलाँग आ पीढ़ीगत संक्रमण

मूल पाठ सावित्रीकेँ छत्तीस बरखक आ हुनकर बेटी इन्दुमतीकेँ बीस बरखक बतबैत अछि। अध्याय −८२ मे सावित्री सोरह बरखक छलीह। एहि दू कालसूचनाक अंकगणितसँ सावित्रीक मातृत्व आरम्भक समय बहुत लग पड़ैत अछि; मुदा इन्दुमतीक जन्म-विवरण पाठ नहि दैत, तेँ एकरा स्वतः असम्भव अथवा त्रुटिपूर्ण घोषित करब अनुचित। महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे दीर्घ अनुष्ठान आब माए सँ बेटी धरि पहुँचल अछि। बूढ़बाक बारह-सय-बरखीय स्मृतिक सामने मानव पीढ़ीक परिवर्तनक ठोस मापक मिलैत अछि। ई काल-छलाँग कथा-विस्तारक

उपयोगी उपकरण अछि, मुदा बीस बरखक आन्तरिक सामाजिक परिवर्तनक अधिकतर अंश सारांश बनि जाइत अछि।

आरम्भिक फकरा आ भयसँ प्रतिरोधक ध्वनि

अध्यायक फकरा “छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ” भयक दृश्य आकार आ ओकर वास्तविक प्रभावक बीच भेद करैत अछि। घोड़ाक टाप, धूरिक बादर आ शरणार्थीक हाँफल वाणी एकटा पैघ आक्रमणक अनुभूति बनबैत अछि। मुदा बादक घटनामे मुख्य सेनाक बदला भटकल लुटेरा सैनिक गाम लग पहुँचैत छथि। एहि कारण ‘छाया’ शब्द आक्रमणक अनुमानित पैमानाक संकेत सेहो बनैत अछि। फकरा आरम्भहि मे साहसक नैतिक सूत्र दैत अछि; पाठक एहि सूत्रक पुष्टिक अपेक्षा करैत छथि। ताहि कारण उपदेशक पूर्वघोषणा आ अप्रत्याशित घटना-विकासक बीचक तनाव समीक्षा लेल आवश्यक अछि।

शरणार्थीक समाचार : गवाहीक प्रमाण-स्थिति

पहिल शरणार्थी “तुर्क सेना!” बजैत चौपालपर खसैत छथि। हुनकर कथनमे सिमरावगढ़क राजाक पलायन, हाथी-घोड़ाक गति आ गाम जरबाक सूचना अछि। कथाभितर ई भयभीत प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष शरणार्थी-वाणी अछि, तत्काल स्वतन्त्र जाँचल गेल राजकीय प्रतिवेदन नहि। तथापि एकर सामाजिक प्रभाव वास्तविक अछि: गामक लोक भागबाक वा रुकबाक विकल्पपर विभक्त होइत छथि। सूचना आ प्रतिक्रिया भिन्न घटनासभ छथि। कथावाचक शरणार्थीक खसबाक नाटकीय गति दैत अछि, मुदा हुनकर स्रोत, रास्ता आ प्रत्यक्ष अवलोकनक सीमा विस्तारसँ नहि देल गेल; एतय गवाहीक विश्वसनीयताक पूर्ण परीक्षण शेष अछि।

भयक भूगोल : सेना आ ‘गोहिक इलाका’

आक्रमणक आशङ्कामे किछु गामवासी दक्षिणक जंगल दिस भागबाक इच्छुक छथि, ओहि दिशामे जकरा पहिने ‘गोहिक इलाका’ कहि भयभीत होइत छलाह। एहि निर्णयमे भयक तुलनात्मक भूगोल निर्मित होइत अछि। एकटा अज्ञात प्राकृतिक–मिथकीय भयकेँ मनुष्यनिर्मित सैन्य हिंसाक भय क्षणिक रूपसँ छोट बना दैत अछि। ताहि सँ जंगलक वास्तविक सुरक्षा स्थापित नहि होइत; संकटग्रस्त मनुष्य जोखिमसभक तुलनात्मक आकलन करैत अछि। गाम–पीपर–चर्मकार टोला–दक्षिणक जंगल–मुख्य राजमार्गक अनिश्चित दूरी कथाक स्थानिक व्यवस्था अछि। सैनिक दलक प्रवेशक सम्भावना बुझबाक लेल एहि स्थानसभक कार्य महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा भौगोलिक मार्गक पूर्ण नक्शा पाठमे अनुपस्थित अछि।

बूढ़बाक भविष्यदृष्टि : सीमा आ सम्भावित यथार्थवाद

बूढ़बा स्पष्ट करैत छथि जे मनुष्यक युद्धक भविष्य हुनकर साक्षी-दृष्टि स्थिर रूपेँ नहि देखबैत। ई अध्याय –८४ मे जंगलक अज्ञात स्थानपर दृष्टि रुकबाक घटनाक रूपान्तरित पुनरावृत्ति अछि। एतय सीमा केवल अदृश्य वस्तुक नहि, मनुष्यक अनिर्धारित निर्णयसभक अछि। बूढ़बा अनुमान करैत छथि जे बड़का सेना छोट गरीब गाममे नहु रुचि लेत, जँ गाम ओकर रास्तामे नहि पड़य। ई सैन्य-व्यवहारक सम्भावनात्मक आकलन अछि, भविष्यक

निर्विवाद प्रमाण नहि। आखिरमे गाम लग मुख्य सेना नहि, भटकल सैनिक आबैत छथि। एहि अन्तरसँ बूढ़बाक अनुमान आ वास्तविक घटनाक सम्बन्ध लचीलापन पबैत अछि।

संकटमे कर्तृत्वक स्थानान्तरण

बूढ़बाक सलाह अछि जे जे भागि सकैत छथि, हुनका भागय दिअ, मुदा वृद्ध, बीमार आ बच्चासभकेँ सुरक्षित स्थान चाही। मुख्य बात अहीँ अछि जे साक्षी पात्रक वाणी प्रत्यक्ष हस्तक्षेपक स्थानपर मानवीय आयोजनक प्रेरणा बनैत अछि। अध्यायक कार्य नायकक चमत्कारक प्रतीक्षा नहि, सामाजिक संसाधनक वितरण अछि। ई आन्तरिक आख्यान-नीतिक एकटा प्रगति अछि: अलौकिक सल्लाहक सफलता तखने मानी जाए जखन लोक वास्तविक आश्रय बनबैत छथि। तथापि गामक राजनीतिक नेतृत्व आ साधन-संग्रहक प्रक्रिया बहुत संक्षिप्त अछि।

चर्मकार टोलाक संगठन : इतिहासमे उपेक्षित सामर्थ्य

चर्मकार टोला सर्वप्रथम संगठित होइत अछि, किएक तँ संकटमे परस्पर सहायता ओकर सामाजिक अनुभवक भाग रहल अछि। घरक भीतर पुरान अनाज-कोठलीकेँ माटिक तर विस्तारि बच्चा आ वृद्धकेँ छिपाओल जाइत अछि। ई अध्यायक सर्वाधिक ठोस मानवीय रक्षा-क्रिया अछि। ‘गरीब गाम’क नामपर सैन्य रणनीति निर्धारणक समानान्तर, उत्पीड़ित समुदायक भौतिक श्रम गामक वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित करबाक प्रयास करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ एकर महत्त्व ई जे राजवंशक पतनक विशाल इतिहासक बीच साधारण श्रमिकक आश्रय-ज्ञान प्रायः अभिलेखसँ बाहर रहि जाइत अछि। मुदा एतय श्रमिकसभक व्यक्तिगत नाम, आश्रयक क्षमता आ भोजन-व्यवस्थाक विवरण अनुपस्थित अछि।

गौरीक जड़ी-बूटी आ शरणार्थीक सेवा

वृद्ध गौरी घायल शरणार्थीसभक सेवामे जुटैत छथि। एतय हुनकर चिकित्सकीय ज्ञानपर पूर्ववर्ती ‘डाइनक आरोप’क राजनीतिक हमला आ वर्तमान सार्वजनिक उपयोगक बीच अर्थपूर्ण विरोध अछि। जे ज्ञानकेँ पहिले अन्धविश्वास कहि खारिज करबाक चेष्टा छल, सैन्य संकटमे ओ समुदाय लेल उपयोगी बनैत अछि। तकर अर्थ ई नहि जे जड़ी-बूटीक प्रत्येक उपचारक चिकित्सकीय प्रभाव स्वतः प्रमाणित भेल; मूल अध्याय उपचार-प्रक्रिया, घावक प्रकार अथवा रोगीसभक अन्तिम स्वास्थ्य-परिणाम नहि देल। कथा-घटनाक सत्य ई अछि जे गौरी सेवा करैत छथि, नहि जे सभ घायल पूर्णतः स्वस्थ भऽ गेलाह।

इन्दुमती : श्रवण, निर्णय आ नारी-उत्तराधिकार

इन्दुमतीकेँ बूढ़बाक आवाज सबसँ स्पष्ट सुनाय दैत अछि। युद्धक संकटमे ओ सार्वजनिक रूपसँ अकाल-अमावस्या कबड्डीक घोषणा करैत छथि। ई क्षण सावित्रीक पहिल खेलक पुनरावृत्ति मात्र नहि: पहिने सावित्री अपना स्वप्नसँ अनुष्ठानक विचार रचलनि; एतय इन्दुमती संकटमे पूर्वस्थापित अनुष्ठानक समय-नियम बदलबाक पहल करैत छथि। सावित्री तुरन्त बालक आ युवकसभकेँ संगठित करैत छथि। तथापि इन्दुमतीक वाक्य ‘बूढ़बा कहि रहल छथि’ हुनकर निर्णयक स्वतन्त्रताकेँ आंशिक रूपसँ प्रश्नांकित करैत अछि। ओ केवल वाणी-वाहक छथि कि संकट-विवेकक सक्रिय स्रोत? मूल पाठ दुनू संकेत रखैत अछि, मुदा हुनकर आत्मविचार अधिक नहि खोलैत।

अमावस्याक नियम भङ्ग : परम्पराक रूपान्तरण

अध्याय –८२ मे कबड्डी प्रत्येक अमावस्याक राति स्मरणक अनुष्ठान बनल छल। आब अनुष्ठान अमावस्या नहि होइतो आयोजित होइत अछि। एहि परिवर्तनमे परम्पराक जड़ नियमसँ अधिक ओकर सामाजिक प्रयोजन प्रमुख बनैत अछि। अनुष्ठानक नियम बदललासँ ओ निष्प्रभावी नहि ठहरैत; बल्कि असाधारण परिस्थितिमे समुदाय ओकर नव उपयोग खोजैत अछि। ई आधुनिक सामुदायिक प्रदर्शनक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अनुकूलन अछि। मुदा एतय पुरान मृतक-नाम पुकारबाक विशिष्ट नियमक पालन स्पष्ट नहि वर्णित अछि। बच्चासभ केवल ‘कबड्डी-कबड्डी’ बजैत छथि। अतः एहि दृश्यकेँ पूर्ण पूर्ववत् नाम-संरक्षणक पारी मानब पाठसिद्ध नहि।

सामूहिक खेल : युद्धक दर्शकक निर्माण

पीपर लग दीप, बच्चाक निर्भय आवाज, दौड़ आ पुनरावृत्ति एकटा सार्वजनिक दृश्य बनबैत अछि। सैनिकसभ एहि खेलक सहभागी नहि, बाहरी दर्शक छथि। खेलक सफलता एहि बार सैनिकसभक प्रतिक्रिया पर निर्भर अछि। प्रदर्शन-आख्यानक दृष्टिसँ ई एकटा अत्यन्त सघन उलटफेर अछि: जे समुदाय सैन्य बलक सोझाँ असहाय, ओ अपन सार्वजनिक रूपक द्वारा आक्रमणकारीक निर्णय प्रभावित करैत अछि। इन्दुमती आ सावित्री आयोजक, बच्चासभ दृश्य-निर्माता, बूढ़बा परामर्शदाता आ सैनिक प्रेक्षक छथि। कथनक अधिकार आ क्रियाक कर्तृत्व अलग-अलग बाँटल अछि।

सेनापतिक निष्कर्ष : युद्ध-निर्णयक वास्तविक कारण

भटकल सैनिकसभ गाममे लूटबाक उद्देश्यसँ आबैत छथि। सेनापति खेलैत बच्चासभकेँ देखि मानैत छथि जे एतय लुटबाक किछु नहि, आ समय बर्बाद करब उचित नहि। ओ आगे बढ़बाक आदेश दैत छथि। प्रत्यक्ष घटनात्मक कारण सेनापतिक व्यावहारिक निर्णय अछि; एहि दृश्यसँ कबड्डीक अलौकिक सुरक्षाशक्ति सिद्ध नहि होइत। खेल शत्रुक नजरमे गामक सम्भावित लाभ आ प्रतिरोधक अनुमान बदलि दैत अछि—ई सामाजिक मनोविज्ञानक एकटा सम्भावित युक्ति अछि। मुदा दुश्मनक मानसिक अनुमान कथावाचक द्वारा बताओल गेल अछि; सेनापतिक पूरा राजनीतिक वा सैन्य विवेक अन्वेषित नहि होइत।

कारण-कार्य शृंखलाक न्यायिक परीक्षण

पक्ष अछि गाम पर आक्रमण टरबाक घटना। साध्य ‘कबड्डीक कारण सैनिक हटि गेलाह’। प्रत्यक्ष हेतु सैनिकसभक खेल देखि लूटक लाभ नहि होयबाक निर्णय अछि। एतय खेल आ हटबाक बीच कथाभितर कारणात्मक सम्बन्ध उपस्थित अछि, मुदा ‘नामरक्षाक अलौकिक शक्ति सैनिककेँ रोकलक’—एहन व्याप्ति स्थापित नहि। उपाधि सभ सम्भव अछि: सैनिकक थकान, मुख्य सेनासँ फेर जुड़बाक इच्छा, लूटक अवसरक अभाव, अथवा गामक सम्भावित प्रतिरोधक गलत अनुमान। घटनाक साहित्यिक सफलता आ अद्भुत तत्त्वक प्रमाण एक नहि। नव्य-न्यायक उपकरण एहि दू स्तरकेँ अलग राखबाक लेल उपयोगी अछि।

अनुष्ठानक नैतिक सीमा : बच्चाक जोखिम

कबड्डी दृश्य निर्भयताक प्रभाव पैदा करैत अछि, मुदा सैनिकसभक सामने बच्चासभकेँ सार्वजनिक रूपसँ जुटेबाक निर्णयमे सुरक्षा-संबन्धी प्रश्न अछि। मूल पाठ जोखिमक गणना नहि करैत; सैनिकसभ खेलदेखि शान्तिपूर्वक चलि जाइत छथि। जँ सैनिकसभ अलग निर्णय लैतथि, तँ ई खेलेनिहार समूह सर्वाधिक असुरक्षित भऽ सकैत छल। एहि कारण केवल सफल परिणामक आधारपर निर्णयकेँ निर्विवाद आदर्श रणनीति घोषित करब उचित नहि। साहित्यिक वीरता आ वास्तवमे जोखिम-सचेत सामुदायिक संरक्षणक बीच तनाव स्पष्ट अछि। चर्मकार टोलाक भूमिगत आश्रय एहि सन्दर्भमे अधिक प्रत्यक्ष सुरक्षा-विधान अछि।

स्मृतिक सिद्धान्त : मृतकक नामसँ जीवितक रक्षा

घटनाक बाद बूढ़बा इन्दुमतीकेँ कहैत छथि जे नाम-स्मरण जीवितकेँ सेहो बचा सकैत अछि। ई पूर्ववर्ती अनुष्ठानक तत्त्वमीमांसात्मक विस्तार अछि। अध्याय –८२ मे मृतक आ बिसरल नामक मान्यता केन्द्र छल; एतय सामूहिक आत्मविश्वास आ हिंसाक सामने सार्वजनिक स्थिरता मुख्य लाभ बनैत अछि। मुदा मूल दृश्य स्वयं मृतक नामक उच्चारण नहि देखबैत; सैनिकक हटब बच्चाक निर्भय अभिनय पर अधिक आधारित अछि। बूढ़बाक व्याख्या अंशतः कथानकपर आरोपित व्यापक अर्थ थिक। आलोचना लेल ई भेद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: पात्रक उत्तरवर्ती नैतिक सिद्धान्त, कथावाचकक घटनावर्णन आ दृश्यपर सैनिकक व्यवहार एकहि प्रमाण-स्तर नहि छथि।

सिमरावगढ़क पतन : इतिहास आ कल्पनाक सीमांकन

अगिला सप्ताह समाचार अबैत अछि जे सिमरावगढ़क राजव्यवस्था समाप्त भेल। मूल अध्यायोत्तर टिप्पणी एहि पृष्ठभूमिकेँ चौदहम शताब्दीक कर्नाट सत्ता आ सल्तनती आक्रमणसँ जोड़ैत अछि। ऐतिहासिक अध्ययनसभमे हरिसिंहदेवक सिमरावगढ़ छोड़बाक आ तुगलक अभियानक १३२४–२५क व्यापक सन्धिक उल्लेख भेटैत अछि; सटीक अभियान-क्रम आ व्यक्तिगत विवरण सम्बन्धी स्रोतभेद सुरक्षित रखबाक चाही। ताहि कारण उपन्यासक भटकल सैनिकक खेल देखिकऽ चलि जेबाक घटना साहित्यिक कल्पना अछि, स्थापित ऐतिहासिक अभिलेख नहि। इतिहासक विशाल काल-संकेत आ गामक दृश्य-स्तरीय विश्वसनीयता अलग जाँचल जाए।

कथावाचक, दृष्टिकेन्द्र आ सूचनाक वितरण

कथावाचक पहिने बीस बरखक संक्षिप्त सामुदायिक इतिहास दैत अछि। फेर शरणार्थीक चेतावनी, बूढ़बाक अनुमान, चर्मकार टोलाक तैयारी आ सैनिकक मानसिक निर्णयक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। विशेषतः सैनिकक दृष्टिसँ बच्चासभक खेल ‘पागलपन’ अथवा ‘लूट योग्य वस्तुक अभाव’क संकेत बनैत अछि। एहि स्थलपर दृष्टिकेन्द्रण गामसँ बाहरी सैनिक दिस क्षणभर सरकैत अछि। पाठककेँ ओकर निर्णयक कारण बताओल जाइत अछि, जखन कि बच्चासभ स्वयं नहि बुझैत जे ओ की बचौलक। ई नाटकीय विडम्बना कथाक आकर्षण बढ़बैत अछि।

अवधि : इतिहासक सारांश आ एक रातिक दृश्य

बीस बरखक सामाजिक परिवर्तन थोड़े पंक्तिमे समेटल गेल अछि; एक साँझ आ रातिक हल्ला, बैठक आ सैनिकक आगमन अपेक्षाकृत विस्तृत अछि; फेर अगिला सप्ताहक राजनैतिक समाचार सारांशमे आबैत अछि। एहि संरचनामे सारांश → दृश्य → सारांशक गति अछि। दीर्घ राजनीतिक संक्रमणक मध्य एकटा छोट, अनिश्चित सैनिक-मुठभेड़ नाटकीय केन्द्र बनैत अछि। जेरार जेनेतक कथन-अवधि सम्बन्धी विवेचन एहि पाठमे उपयोगी अछि; मुदा प्रत्येक शरणार्थी अथवा सैनिक-चालक घण्टा पाठमे निर्धारित नहि, तेँ अनुमानित सूक्ष्म समय नहि जोड़ल जाए।

आवृत्ति : कबड्डी, छाया, नाम आ भय

कबड्डी पहिल बेर अनुष्ठानक उत्पत्तिक अध्याय –८२ मे प्रस्तुत भेल; एतय ओ पुनः आबैत अछि, मुदा लक्ष्य परिवर्तित अछि। ‘नाम’ शब्द स्वयं मृतक-स्मरणसँ जीवितक मनोबल दिस अर्थ बदलैत अछि। ‘छाया’ भयक विस्तारक रूपक थिक: धूरिक बादर आ घोड़ाक टापक समाचारक प्रभाव सैनिकक वास्तविक छोट दलसँ पैघ देखाइ पड़ैत अछि। एहि पुनरागमनमे कार्यात्मक नवीनता अछि; तथापि अन्तिम फकरा आ बूढ़बाक उपदेश एकहि निर्भयताक सूत्रकेँ पुनः कहि कथाक गति किछु धीमा करैत अछि।

सामाजिक बहुस्वरता आ अनुपस्थित अनुभव

किछु गामवासी भागय चाहैत छथि, किछु घर नहि छोड़य चाहैत। शरणार्थी भयक आवाज आनैत छथि; चर्मकार समुदाय रक्षात्मक क्रिया प्रस्तुत करैत अछि; गौरी उपचार करैत छथि; बूढ़बा भविष्यक अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि; सैनिक अपना लाभक आकलन करैत छथि। ई सामुदायिक बहुवचनक समृद्ध बीज अछि। मुदा गाम छोड़य चाहनिहार परिवारसभक नाम, विस्थापनक परिणाम आ आश्रय पाबनिहार लोकनिक अपन वाणी नहि भेटैत अछि। स्त्रीसभक कार्य प्रमाणित अछि, तथापि सैनिकक आक्रमणसँ हुनकर विशिष्ट भयक स्वतन्त्र संवाद विरल अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र : वीर, भयानक, करुण आ शान्त

आरम्भमे घोड़ाक टाप, शरणार्थीक चीत्कार आ धूरिक बादर भयानक भाव निर्मित करैत अछि। चर्मकार टोलाक आयोजन तथा इन्दुमती-सावित्रीक साहस वीरभाव उत्पन्न करैत अछि। घायल शरणार्थीक सेवा करुणक सूक्ष्म आयाम अछि। सैनिक हटिते राहत आ शान्ति प्रकट होइत अछि, मुदा अगिला सप्ताहक पतन-समाचार एहि शान्तिक स्थायित्व भङ्ग करैत अछि। ध्वनि-पक्षमे खेलक सार्वजनिक साँस सामुदायिक अस्तित्वक लय बनैत अछि। औचित्यक कसौटीपर प्रश्न बचैत अछि जे अनावश्यक जोखिमक दृश्यकेँ केवल नैतिक प्रतीकक बलपर विश्वसनीय बनाओल गेल अछि की नहि।

पर्यावरणीय आख्यान : जंगलक भय आ युद्धक भय

पूर्ववर्ती मूल गोहिक संकटमे नदी आ जंगल अज्ञात शक्ति तथा जीवनोपार्जनक स्थल छल। एतय उएह जंगल सैन्य संकटसँ बचबाक सम्भावित आश्रय बनैत अछि। पर्यावरणक भौतिक अर्थ स्थिर नहि; सामाजिक सत्ता आ

हिंसाक स्थितिसँ ओकर उपयोग बदलैत अछि। जलक भय आ युद्धक भय एकरूप नहि। मानवेतर गोहिक सम्भावित भूखकेँ नैतिक मनोबलद्वारा शांत करबाक कल्पना छल; सैनिकक लूट-प्रेरणा विशिष्ट मानवीय आर्थिक निर्णयपर निर्भर देखाओल गेल अछि। एहि अन्तरकेँ बनाए रखब पर्यावरणीय तथा राजनीतिक आख्यानक दायरा अलग करैत अछि।

कथात्मक विश्वसनीयता : विजयक मूल्यांकन

कबड्डी खेलेनिहार बच्चा-संघक निर्भयता सैनिकसभक मनोविज्ञान बदलि देब, ई साहित्यिक सम्भावना मानल जा सकैत अछि। मुदा हिंसक लुटेरा दलक प्रत्येक सदस्य मात्र एहि दृश्यसँ हटि जाएत—एहन निश्चितता प्रश्नांकित अछि। वास्तविक दृश्य नायकक कुशल छलावाकि, दलक थकानक कारण, अथवा संयोगक फल? कथावाचक सेनापतिक लाभहीनताक निर्णय वर्णित करैत अछि, जे कार्यकारणक एक मानवीय सूत्र दैत अछि। तथापि सैनिकक लूटक उद्देश्य आ गाममे वस्तु नहिं भेटबाक त्वरित निष्कर्ष बीच लघु नाटकीय छलाँग अछि। घटनाकेँ पूर्णतः अविश्वसनीय अथवा निर्विवाद यथार्थवादी घोषित करबाक बदला ई अनुपातिक आलोचना अधिक उचित अछि।

घटना-प्रमाण-परिणामक पृथक लेखा

१. बीस बरखक अन्तराल—अनुष्ठानक स्थायित्वक कथात्मक सारांश; प्रत्येक मासक स्वतन्त्र प्रमाण नहि।

२. शरणार्थीक सैन्य समाचार—समुदायमे भयक वास्तविक परिणाम; सेनाक समग्र गति तत्काल स्वतन्त्र सत्यापित नहि।

३. चर्मकार टोलाक आश्रय-निर्माण—मानवीय संरक्षणक प्रत्यक्ष वर्णित क्रिया; सुरक्षित लोकक संख्या अनिर्दिष्ट।

४. गौरीक सेवा—उपचारक प्रयास; सफल चिकित्सकीय परिणाम अनुल्लिखित।

५. इन्दुमतीक अकाल-अमावस्या संदेश—नव परिस्थिति लेल अनुष्ठानक नियम बदलैत अछि।

६. बच्चासभक कबड्डी—सैनिकक दृष्टि प्रभावित करैत अछि; अलौकिक प्रभाव प्रमाणित नहि।

७. सेनापतिक हटबाक आदेश—गामपर तत्काल लूट रुकबाक प्रत्यक्ष कारण।

८. बूढ़बाक स्मृति-दर्शन—घटनाक उत्तरवर्ती व्याख्या; सम्पूर्ण कारणात्मक सूत्र नहि।

९. सिमरावगढ़क पतनक समाचार—कथाविश्वमे राजनैतिक संक्रमण; सटीक ऐतिहासिक विवरण लेल बाह्य प्रमाण जरूरी।

अन्तिम निर्णय आ अगिला अध्यायसँ सम्बन्ध

“आक्रमणक छाया” पिछला स्मृति-अनुष्ठानकेँ सांस्कृतिक संरक्षणसँ नागरिक आत्मरक्षाक प्रयोगमे रूपान्तरित करैत अछि। इन्दुमतीक आकस्मिक सक्रियता, सावित्रीक संगठन, चर्मकार टोलाक आश्रयक श्रम आ गौरीक उपचार-कर्तृत्व अध्यायकेँ सामुदायिक स्वायत्तताक दिशा दैत अछि। एहि उपलब्धिक संग चारि सीमा आवश्यक रूपसँ दर्ज रहत: सैनिकक हटबाक त्वरित निर्णयक आंशिक कारणात्मक छलाँग; बच्चासभक जोखिम; गामक

असमान अनुभवक संक्षिप्त चित्रण; आ प्राचीन राजनीतिक घटनाकेँ स्थानीय कल्पनासँ जोड़बाक ऐतिहासिक सीमा। सभसँ सार्थक बात ई जे राजवंशक पतनक समाचारक बावजूद गामक जीवित लोक अपन काज, स्मृति आ परस्पर संरक्षणक पद्धति जारी रखैत छथि। एतय राज्यक इतिहास समाप्ति देखैत अछि, मुदा समुदाय इतिहासक नव आरम्भ। अगिला अध्याय –८० “गीतक पहिल पाँति” एहि सामुदायिक स्वरक साहित्यिक निर्माणक प्रश्न आगू बढ़बैत अछि।

प्रकरण २१ | मूल अध्याय –८० — गीतक पहिल पाँति

पाठाधार, अध्याय-सीमा आ आलोचनात्मक प्रश्न

“गीतक पहिल पाँति” पूर्व-कथाकालक एकैसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल संयुक्त त्रयीक अनुक्रमणिकामे एहि अध्यायक आरम्भ-पृष्ठ १९७ आ अगिला अध्याय –७९ “क्षमाक पारी”क आरम्भ-पृष्ठ २०१ अंकित अछि; तदनुसार एकर मुद्रित सीमा १९७–२०० मानल गेल अछि। मूल पाठमे एहि प्रश्नक केन्द्र अनुष्ठानक स्थापना नहि, ओकर मौखिक स्मृतिसँ लेखन आ सम्भावित अभिलेखमे रूपान्तरण थिक। समीक्षाक मूल कसौटी एतय कथा लिखबाक अधिकार, श्रुतिसँ लिपि धरि संक्रमण आ लिखित संरक्षकक नैतिक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

पूर्ववर्ती युद्ध-संकटसँ साहित्यिक संरक्षण दिस

अध्याय –८१ मे सिमरावगढ़क पतनक समाचार आ गामक सैन्य-संकट एकटा नवीन राजनैतिक युगक संकेत देने छल। अध्याय –८० एहि परिणामक तात्कालिक हिंसाकेँ पुनःवर्णित नहि करैत; ओ अराजकताक क्रमशः शान्त होयब आ नव दरबारी साहित्यिक उत्साहक वातावरण स्थापित करैत अछि। एहि ढंगसँ कथा प्रत्यक्ष शारीरिक सुरक्षा सँ स्मृतिक सांस्कृतिक सुरक्षा दिस बढ़ैत अछि। पहिने चर्मकार टोलाक लोक संकटमे वृद्ध आ बच्चाकेँ छिपबैत छथि; एतय हरिपति भूलल जा सकयवला लोककथा लिखि राखबाक प्रस्ताव दैत छथि। दुनू संरक्षणक क्रिया छथि, मुदा एकटा देहक, दोसर कथाक। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे देहक रक्षा करनिहारक आवाज लिखित इतिहासमे कतेक अविकल पहुँचैत अछि।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : कथावाचकक दावा आ बाह्य इतिहासक भेद

उपन्यास ओइनवार वंशक आगमनसँ राजनैतिक स्थिरता, दरबारी संरक्षण आ मैथिली साहित्यक उन्नतिक कथात्मक सेतु बनबैत अछि। ई लेखकक इतिहास-संबन्धी प्रस्ताव अछि; एकहि अध्यायक आधारपर विशेष राजदरबार, तिथिक्रम, आश्रयप्रणाली अथवा मैथिली भाषाक साहित्यिक विकासक समस्त तथ्य स्थापित नहि होइत। विशेषतः ‘दरभंगा आ आसपासक राजदरबार’क विवरणक ऐतिहासिक भूगोल आ समय-पहिचान स्वतन्त्र इतिहासस्रोतसँ जाँचबाक विषय अछि। साहित्यिक आलोचनामे ई वर्णनक मुख्य कार्य पहचानब चाही: वृहत्तर सत्तापरिवर्तनकेँ गामक एक भ्रमणशील कविक आगमनक सामाजिक कारण बनाओल गेल अछि। एहि कथासूत्रक कलात्मक वैधता आ वास्तविक इतिहासक दस्तावेजी वैधता पृथक श्रेणी छथि।

हरिपतिक कल्पित स्थिति : ऐतिहासिक नामक भ्रमसँ सावधानी

मूल अध्यायोत्तर टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे हरिपति कोनो विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तिक प्रतिनिधि नहि, एकटा व्यापक साहित्यिक प्रवृत्तिक प्रतीक छथि। तेँ हुनका ऐतिहासिक कवि मानि हुनकर कथित ताड़पत्रक पोथी खोजब अथवा हुनकर शब्दकेँ ऐतिहासिक प्रमाणक रूपमे उद्धृत करब अनुचित। कथामे हरिपति एकटा भ्रमणशील लेखक छथि जे आश्रय खोजैत लोकगीत आ जनश्रुति संग्रह करैत छथि। हुनकर कल्पित अवस्थाक कारण लेखक एकहि पात्रमे दरबारक अपेक्षा, लोकभाषाप्रेम, संग्रहक इच्छा आ भविष्यक साहित्यिक संरक्षणक सम्भावना देखाबैत छथि। प्रतीकात्मक पात्र होयबाक कारण हुनकर जीवनगत जटिलता कम भऽ सकैत अछि—ई साहित्यिक लाभक संग पात्रनिर्माणक सीमा सेहो थिक।

भ्रमणशील कविक दृष्टि : संग्रहक अन्तःप्रेरणा

हरिपति राजदरबारक आश्रय चाहैत छथि, मुदा मैथिलीक वास्तविक शक्ति गामक साधारण मनुष्यक मुखमे मानैत छथि। एहि आत्म-विरोधमे कथा सामाजिक गतिशीलताक सम्भावना रखैत अछि: लेखक अपना जीविकाक लेल सत्ता-द्वार दिस बढ़ैत छथि, मुदा लिखबाक सामग्री सत्ता-बाह्य समुदायसँ लैत छथि। एतय शास्त्रीयता आ लोकज्ञानक बीच मात्र सौन्दर्यात्मक पसिन नहि, संसाधन आ प्रतिष्ठाक प्रश्न सेहो अछि। दरबार लेखककेँ जीविका देत कि नहि, पाठककेँ ज्ञात नहि; लोककथा लिपिबद्ध करबाक अर्थ लेखकक प्रतिष्ठा बढ़त कि समुदायकेँ वास्तविक लाभ होयत, सेहो खुलल रहैत अछि। इसीलिए हरिपतिक ‘ईमानदारी’क कथावाचकीय प्रमाण तात्कालिक विश्वास अछि; श्रमिक आ उपेक्षित समुदायपर हुनकर कार्यक प्रभावक अलग परीक्षण आवश्यक अछि।

इन्दुमतीक पहिचान : बीस बरख बादक समय-सूचना

पिछला अध्याय –८१ मे इन्दुमती बीस बरखक छलीह; वर्तमान अध्यायमे ओ चालीस बरखक छथि। एहि सँ दू अध्यायक बीच बीस बरखक कालान्तरक संकेत भेटैत अछि। सावित्रीक बाद ओ अमावस्या-अनुष्ठानक प्रमुख संरक्षिका बनल छथि। ‘अपन माए सावित्रीक बाद’ कहने सावित्रीक मृत्यु निश्चित सिद्ध नहि होइत; ई उत्तराधिकार अथवा दायित्वक हस्तान्तरण सेहो भऽ सकैत अछि। इन्दुमतीक परिपक्व अवस्थासँ समुदायमे एकटा स्त्रीक सांस्कृतिक अधिकार दृढ़ देखाइत अछि। मुदा एतए परिवर्तनक प्रक्रिया दृश्य-रूपमे कम, कथावाचकक छोट परिचयमे अधिक समाहित अछि। बीस बरखक स्थानीय संघर्ष, शिक्षण आ अभ्यासक इतिहास ओहि संक्षिप्त कथनक पाछाँ रहि जाइत अछि।

सुननिहार लेखकक आश्चर्य आ मूल तीन प्रश्न

हरिपति बूढ़बाक साक्षी-गाछ, मूल गोहिक विस्मरणात्मक भूख आ मृतकक नाम लऽ खेलल जाएवला कबड्डी—एहि तीनू बात पर आश्चर्य व्यक्त करैत छथि। एहि पुनरावृत्तिक कथात्मक कार्य केवल पाठककेँ स्मरण कराएब नहि; ई बाहरी पाठकक सम्भावित प्रतिक्रिया मंचित करैत अछि। गामक लोकक लेल जे पीढ़ीगत आ दैनिक परम्परा बनि चुकल, ओ बाहरी लेखकक दृष्टिमे असाधारण महाकाव्यक सामग्री बनि जाइत अछि। एहि अन्तरमे सांस्कृतिक अपहरणक जोखिम सेहो छिपल अछि: समुदाय अपन जीवन जियैत अछि, लेखक ओकरा साहित्यिक वस्तुक रूपमे देखैत अछि। हरिपतिक प्रस्तावक नैतिक मूल्य इन्दुमतीक आपत्तिक प्रकाशमे जाँचल जाएबाक चाही।

इन्दुमतीक प्रश्न : ‘हमरा सभक’ कथा के लिखत?

इन्दुमतीक प्रश्न ‘ई कथा हमरा सभक अछि’ एहि अध्यायक नैतिक केन्द्र अछि। ‘हमरा सभक’ सर्वनाम बूढ़बा वा हरिपतिक व्यक्तिगत स्वामित्वकेँ अस्वीकार कऽ गाम, टोला आ सामुदायिक अनुभवकेँ कथाक आधार बनबैत अछि। हरिपति कहानीक संग्रहकर्त्ता बनि सकैत छथि, मुदा जीवनक मूल अनुभवक रचयिता नहि। एहि विभाजनमे रचनात्मक श्रमक श्रेणी स्पष्ट अछि: भोगल घटना, मौखिक प्रस्तुति, श्रवण, चयन, लिप्यन्तरण आ बादक व्याख्या अलग कार्य छथि। मूल पाठ इन्दुमतीक आपत्ति उपस्थित करैत अछि; मुदा लिखित पाठक अधिकार, प्रतिलिपि करबाक अनुमति, सामूहिक समीक्षा अथवा उपयोगक शर्तक व्यवस्थित निश्चय नहि करैत। ‘ई कथा हमरा सभक अछि’ केवल भावना नहि, अभिलेखीय न्यायक सक्रिय दावा थिक।

मौखिक स्मृति बनाम लिपिबद्ध संरक्षण

हरिपतिक प्रतिपादन अछि जे मौखिक कथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी बदलि सकैत अछि, लिखित पाठ दूर भविष्य धरि टिकि सकैत अछि। एहि तर्कमे एकटा वास्तविक सम्भावना अछि—लिखित प्रति पुनःपठन आ तुलना लेल स्थिर आधार देबैत अछि। मुदा मौखिक परिवर्तन हमेशा भ्रष्टता नहि; समुदाय प्रत्येक समयमे कथा केँ अपन परिस्थिति अनुरूप संशोधित करैत अछि। लिखित रूप सेहो कागज अथवा ताड़पत्रक नष्ट होयब, लेखकक चयन, नकलमे गलती, नियन्त्रण आ निषेधसँ सुरक्षित नहि। अतः मौखिकता=अस्थिरता आ लेखन=अमरत्वक सरल द्विभाजन प्रमाणित नियम नहि बनैत। अध्यायकेँ अधिक गहन बनाबयवला ई अन्तर्विरोध बादमे हरिपतिक पाण्डुलिपि प्रकाशित नहि करबाक निर्णयसँ स्पष्ट होइत अछि।

बूढ़बाक चेतावनी : सम्मानक अलंकार अथवा न्याय?

बूढ़बा इन्दुमती मार्फत संदेश पठबैत छथि जे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, सुभागी, रत्ना आ मालतीक पीड़ाकेँ राजदरबारक अलंकृत भाषामे सजाओल गेल तँ पुनः अन्याय होयत। एहि कथनमे भाषा स्वतन्त्र सौन्दर्य-प्रयोग मात्र नहि, सामाजिक प्रतिनिधित्वक नैतिक साधन अछि। कविता पात्रक दुःखकेँ अनुभूतिक सामग्री बनौलक अथवा ओकर स्वरताकेँ सम्मानपूर्वक प्रस्तुत करलक—ई निर्णायक भेद अछि। मुदा दरबारी अथवा अलंकृत भाषा स्वभावतः अन्यायी होइत अछि, एहन सार्वभौम नियम एहि प्रसंगसँ नहि निकलैत। समस्याक मूल अर्थ भाषा-मात्र नहि, वक्ताक अधिकार, कथाक स्वामित्व आ जीवित सामाजिक सन्दर्भक संरक्षण अछि।

मध्यस्थताक तीन चरण : बूढ़बा–इन्दुमती–हरिपति

बूढ़बाक शर्त सीधे हरिपति लग नहि पहुँचैत; इन्दुमती संदेश लऽ जाइत छथि। हरिपतिक उत्तर फेर बूढ़बाक पीपर दिस संबोधित अछि, मुदा ओ बूढ़बाकेँ देखैत नहि छथि। एतय कथात्मक संवाद प्रत्यक्ष-साक्षात्कारक स्थानपर संदेश-माध्यमसँ चलैत अछि। बूढ़बाक असाधारण सत्ता, इन्दुमतीक सामाजिक अधिकार आ हरिपतिक लिखित कौशल अलग-अलग कार्य करैत अछि। खास बात ई जे लिपिबद्ध परम्पराक आरम्भ एकटा स्त्रीक मध्यस्थता बिना सम्भव नहि। तथापि समापनमे व्यक्तिगत कविक कलम प्रमुख दृश्य बनैत अछि। ज्ञानक संस्थापक स्त्री आ लिखित प्रतिष्ठाक धारक पुरुषक बीच अधिकारक ई पुनर्वितरण आलोचनाक महत्त्वपूर्ण विषय अछि।

ताड़पत्रक पोथी आ ‘कागच’क शब्द-सूचकता

हरिपति ताड़पत्रक पोथी आ लेखनी निकालैत छथि। कथाक आरम्भिक प्रसंग लिखित माध्यमकेँ सामान्यतः ‘कागच’ कहैत अछि। एहि दुनू उल्लेखमे स्थूल भौतिक अन्तर अछि; कथा लिखित अभिलेखक अवधारणाक लेल ‘कागच’ शब्द व्यापक अर्थमे बरतैत अछि अथवा माध्यमक विवरण असंगत भऽ गेल, ई प्रश्न उठैत अछि। निश्चित त्रुटि कहबाक पहिने मैथिलीक सामान्य व्यवहारमे ‘कागचपर उतारब’क रूपकात्मक अर्थ सेहो देखबाक चाही। तथापि लिखित सामग्रीक टिकाऊपन, नकल आ संचरणक तर्क जखन अध्यायक केन्द्र हो, तखन ताड़पत्र, कागज आ पोथीक भौतिक विशिष्टता अधिक सुसंगत रूपसँ स्पष्ट होयब उपयोगी छल।

पहिल पाँति : मूल उपन्यासक वास्तविक आरम्भसँ भेद

हरिपति ‘एकटा गाछ छल, एकटा पोखरि छल’सँ लिखित कथाक आरम्भ करैत छथि। एहि पाँतिकेँ मूल त्रयीक वास्तविक पहिल अध्याय —१००क अक्षरशः आरम्भ मानब गलत होयत। ई कथाभितर निर्मित कल्पित प्राक्-पाण्डुलिपिक उद्घाटन अछि। गाछ, पोखरि आ नाम बचबैत सेवकक संक्षिप्त विन्यास दीर्घ कथाकेँ एक स्मरणीय सूत्रमे संकुचित करैत अछि। एहि संक्षेपणमे मूल घटनाक जटिल सामाजिक इतिहास कथात्मक बीज बनैत अछि। एतय चयनक प्रश्न उठैत अछि: हुलासा अथवा जीवन्ती-सन पीड़ितक व्यक्तिगत स्वर पहिल पाँतिमे अनुपस्थित अछि, जखन कि बूढ़बाक साक्षी-कार्य केन्द्रमे अछि। भविष्यमे कथाक नेतृत्व कोन पात्र प्राप्त करत, एकर आधार पहिल वाक्यहि सँ रचल जाइत अछि।

तीन मासक रचनात्मक श्रम : लिखब, मेटब, पुनर्लेखन

हरिपति तीन मास गाममे रहि वृद्ध लोकसँ कथा सुनैत, लिखैत, मेटैत आ फेर सँ लिखैत छथि। ई अध्यायक वास्तविक गतिशील घटनाक एकटा महत्त्वपूर्ण शृंखला अछि। लेखन अचानक दैवी प्रेरणासँ पूर्ण नहि होइत; सामुदायिक भाषाक मान्यता लेल पुनरावृत्त अभ्यास होइत अछि। मौखिक कथाक अनुकृति पूर्णतः यान्त्रिक नहि, बल्कि सम्पादनक निर्णयसभक परिणाम अछि। मुदा कोन प्रसंग बदलल गेल, कोन साक्षीक विरोधी संस्करण भेटल, आ इन्दुमती अथवा बूढ़बाकेँ पाण्डुलिपि पढ़बाक अवसर भेटल कि नहि, मूल पाठ नहि देखबैत। तीन मासक प्रक्रियाक सारांश बड़का समयकेँ छोट करैत अछि; लेखकीय श्रम उपस्थित अछि, मुदा पाठ-संशोधनक ठोस प्रमाण-शृंखला अनुपस्थित।

राजदरबारक आश्रय आ पोथी नहिं देखएबाक निर्णय

कवि हरिपति आरम्भमे दरबारमे आश्रय खोजैत गाम-गाम घूमि रहल छथि। तीन मासक बाद ओ दरबारकेँ पोथी नहि देखएबाक निर्णय लैत छथि। हुनकर उत्तर अछि—‘दरबार एकरा नहि बुझत।’ ई पात्रक मूल्यचयनक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि: आश्रयक आकाङ्क्षाक बावजूद कथाकेँ दरबारी मान्यता नहि देबाक संकल्प। मुदा प्रारम्भिक जीविकागत आवश्यकता केना सुलझल, ओ स्पष्ट नहि। दरबारक सभ पाठक अथवा संरक्षक अनिवार्यतः लोककथा नहि बुझत, एहन सामान्य निष्कर्ष सेहो परखल नहि गेल। कथामे बाहरी सत्ता-द्वारसँ दूरी एकटा नैतिक विरक्ति बनैत अछि; सामाजिक जीवनक ठोस आर्थिक बाधा कथाक सुविधा लेल पाछू पड़ि जाइत अछि।

शिष्यक हेतु सुरक्षित, प्रकाशनक निषेध

हरिपति पोथी शिष्यकेँ देबाक विचार करैत छथि, मुदा संसार ‘सुनय आ बुझय’ धरि ओकर प्रकाशन रोकबाक शर्त रखैत छथि। पहिने लिखित रूपक पक्षमे देल सार्वजनिक संरक्षणक तर्क एतय सीमित अभिगमक सिद्धान्त बनि जाइत अछि। यदि लोककथा समुदायसँ निकलि एक कविक निजी उत्तराधिकारमे बन्द रहत तँ कथाक स्वामित्व फेर सीमित व्यक्ति लग पहुँचि जाइत अछि। सुरक्षाक नामपर अति-नियन्त्रणक जोखिम उपस्थित अछि। ‘संसार तैयार’ होयबाक निर्णय के करत? शिष्य? कविक वंश? बूढ़बा? समुदाय? कथामे एहि प्रश्नक उत्तर नहि। अनप्रकाशित पोथी भविष्यक संरक्षणक सम्भावना अछि, पर सार्वजनिक अभिलेखक स्थापित संस्था नहि।

लिखित पाठ अमर—दावाक अभाव-विवेचन

बूढ़बा कहैत छथि जे ईमानदारीसँ लिखल कथा पूर्णतः नहि मरैत, पोथी शताब्दी धरि कोनो नहि पढ़य तखनहुँ। ई विश्वास स्मृतिरक्षाक प्रेरणादायी वचन अछि, मुदा स्वतन्त्र भौतिक अथवा सामाजिक नियम नहि। पाण्डुलिपिक नष्ट होयब, उत्तराधिकारीक मृत्यु, लेखनीक अस्पष्टता, भाषाक परिवर्तन आ प्रतिबन्ध सब सम्भव छथि। नव्य-न्यायक दृष्टिएँ लिखित रूप होयब साधन, स्थायी अस्तित्व साध्य मानल जाए तँ तकर अनिवार्य व्याप्ति प्रस्तुत नहि अछि। बूढ़बाक वाक्यक साहित्यिक सत्य समुदायिक आशावादक अछि; ऐतिहासिक दावा रूपेँ एकर प्रमाण बाँकी। ई आलोचना रचनाक प्रेरणाकेँ खारिज नहि, बल्कि ओकर अभिप्रेत नैतिक प्रतिज्ञा आ वास्तविक साधनक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

आत्म-सन्दर्भिता : भविष्यक कम्प्यूटर-पर्दा

कथावाचक हरिपतिक पहिल पाँति उल्लेख करिते भविष्यक दोसर लेखकक चर्चा करैत अछि, जे कागजक बदला कम्प्यूटरक स्क्रीनपर ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’ नामसँ कथा लिखत। एतय वर्तमान पुस्तक स्वयं अपन उत्पत्तिक एक पूर्वरूप गढ़ैत अछि। ई आत्म-सन्दर्भी आख्यानक प्रभावशाली प्रयोग अछि: पाठक बुझैत छथि जे हरिपतिक पोथी उपन्यासक अन्तःकथा अछि, आ समकालीन लिखनिहारक परियोजना कथामे संकेतित अछि। मुदा एतय कथन-स्तरक वास्तविक सीमा तखनहि लाँघल कहल जायत जखन भिन्न आख्यान-स्तरक पात्रसभ परस्पर क्रियात्मक रूपसँ प्रवेश करथि; केवल भविष्यमुखी लेखक-संकेत स्वतः तकनीकी अर्थमे पूर्ण metalepsis नहि। एकर प्राथमिक कार्य दीर्घकालिक भविष्यसूचना आ स्वतन्त्र रचनाक आत्मव्याख्या अछि।

कथावाचकक ज्ञान आ हरिपतिक अज्ञान

कथावाचक कहैत अछि जे हरिपति अपना पाँतिक आगामी दीर्घ भविष्य नहि जनैत छलाह। एतय कथावाचक पात्रसँ अधिक सूचना रखैत अछि, आ पाठककेँ पूर्वसूचना दैत अछि। हरिपति वर्तमानमे पाण्डुलिपिक रचनाक समस्यामे छथि; पाठक भविष्यक एक साहित्यिक वस्तुक छाया देखैत छथि। ई सूचना-असमता नाटकीय विडम्बना आ ऐतिहासिक व्यापकता उत्पन्न करैत अछि। कथा भविष्यक साहित्यिक मूल्य पहिनहि निश्चित करबाक जोखिम सेहो उठबैत अछि: रचनाक अस्तित्वक सफलताक घोषणा पाठकक स्वतन्त्र मूल्यांकनपर अग्रिम प्रभाव दैत अछि। आलोचनामे एहि आत्म-वैधीकरणक पद्धतिकेँ पहिचानब आवश्यक अछि।

सामुदायिक गीत आ रचनाकारक बहुवचन

समापन गीतक मुख्य वचन अछि—‘लेखक एक नहि’। गीतमे एक व्यक्ति आरम्भ करैत अछि, दस जोड़ैत छथि, सय गबैत छथि। एहि क्रममे साहित्यक रचना एकल प्रतिभाक घटना नहि, सामूहिक संचयक प्रक्रिया बनैत अछि। मुदा कथाक भीतर पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष लेखक हरिपति छथि; समुदाय कथा सुनबैत अछि आ भाषिक मूल्यांकनक अप्रत्यक्ष भूमिका निभबैत अछि। गीत श्रमक बहुवचन घोषित करैत अछि, लेखनक दृश्य एकल पुरुषक कलमपर केन्द्रित रहैत अछि। ई विरोध असङ्गतिमात्र नहि; सामूहिक ज्ञान व्यक्तिगत लेखकीय प्रतिष्ठामे रूपान्तरित होयबाक सामाजिक विधिक आलोचनात्मक संकेत अछि।

भाषाक विवाद : लोकबोली आ ‘उच्च’ साहित्य

हरिपति दरबारी संस्कृतमिश्रित काव्यक बदला गामक मुखक मैथिलीकेँ प्राथमिकता दैत छथि। बूढ़बा सेहो पीड़ितक अपन स्वरक संरक्षणक शर्त रखैत छथि। ई भाषायी लोकाधिकारक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पक्ष अछि। मुदा मानक/दरबारी भाषा आ लोकबोलीक सम्बन्ध अनिवार्यतः शोषक बनाम शोषितक कठोर द्वैत नहि; साहित्यिक शिल्प आ सामाजिक अधिकारक सम्बन्ध जटिल अछि। लोकबोलीक लिप्यन्तरणमे चयन, सम्पादन, वर्तनी आ पाठक-परिवर्तनक राजनीति उपस्थित रहैत अछि। अध्याय एतय एक प्रेरक वचन रखैत अछि; भाषा-सम्पादनक नैतिक विधि पूर्णरूपेँ विकसित नहि करैत।

स्त्रीक कथा-अधिकार आ पुरुषक अभिलेखी प्रतिष्ठा

इन्दुमती अनुष्ठानक चालीस बरखक प्रमुख संरक्षिका छथि। ओ कथाक बाहरी लेखनपर पहिल आपत्ति उठबैत छथि आ बूढ़बाक शर्तक संचारक हैं। हरिपति अन्ततः पोथी बनबैत छथि। एहि स्थितिमे स्त्रीक अनुभव, संरक्षण आ सामुदायिक स्वामित्व लिखित इतिहासक दृश्यात्मक केन्द्र नहि बनि पबैत; पुरुष कविक लेखनक क्षण अधिक विस्तृत अछि। तथापि इन्दुमतीकेँ निष्क्रिय सहमतिक प्रतीक कहब सेहो गलतः हुनकर हिचकिचाहट रचनाक नैतिक अधिकार नियंत्रित करैत अछि। उपलब्धि अछि जे कथा स्त्रीक दावाकेँ चुनौतीरूपमे स्थापित करैत अछि; सीमा अछि जे अन्तिम पाण्डुलिपिक संरक्षकत्वमे स्त्रीक प्रत्यक्ष अधिकारक नियम नहि देखाओल गेल।

उपेक्षित जीवनी आ नामक अनुक्रम

बूढ़बाक स्मरणमे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, सुभागी, रत्ना आ मालतीक नाम पुनः अबैत अछि। ई नामसभ पछिला प्रकरणसँ वर्तमान लेखन-संकल्पक धागा जोड़ैत अछि। नाम लऽ देब प्रतिनिधित्वक न्यूनतम रूप अछि; मुदा हुनकर अपन-अपन भाषिक स्वत्व, अन्तर्विरोध, निजी सम्बन्ध आ बहुपक्षी गवाही पाण्डुलिपिमे केना पहुँचत, से देखाओल नहि। विशेषतः मृत व्यक्तिक उत्तराधिकारक सहमति असम्भव वा कठिन भेलासँ लिखनिहारक विवेकक उत्तरदायित्व बढ़ैत अछि। नामक सूची ‘लोकइतिहास’क प्रमाण बनबाक आरम्भ अछि, सम्पूर्ण जीवनवृत्तक स्थापित साक्ष्य नहि।

कथा, अभिलेख आ प्रमाणक सामाजिक अन्तर

मौखिक गवाही इतिहासक एक स्रोत भऽ सकैत अछि, ताड़पत्र ओकर अभिलेखनक माध्यम। मुदा लिखित प्रतिलिपि साक्षीक मूल कथनसँ अलग बनि सकैत अछि, कारण संग्रहकर्ता प्रसंग चुनैत, भाषा बदलैत आ क्रम निर्धारित करैत छथि। हरिपतिक तीन मासक अभ्यास एतय उपयोगी मानवीय प्रयत्न अछि, मुदा द्वितीय प्रतिलिपि, सामुदायिक पाठ-पुष्टि अथवा विरोधी संस्करणक तुलनाक विवरण नहि भेटैत। नव्य-न्यायक प्रमाणमीमांसामे शब्दप्रमाणक विश्वसनीयता वक्ता, आशय, प्रेषण आ विषयसँ जुड़ैत अछि; अतः केवल लिपिबद्धता स्वतः सत्योपलब्धि नहि। विदेह समानान्तर इतिहासक आलोचना लेल लेखक/समुदाय/पाठकक सम्बन्धक ई स्पष्टता जरूरी अछि।

कथा-अवधि : महीना, वर्ष आ शताब्दी

आरम्भमे सिमरावगढ़क पतनसँ नवनिर्मित साहित्यिक काल धरि राजनैतिक परिवर्तनक दीर्घ अवधि छोट सारांशमे प्रस्तुत अछि। हरिपतिक गाममे पहुँचब आ इन्दुमतीक संवाद विस्तृत दृश्यरूपमे अछि। तीन मासक लेखन-संशोधन फेर एक वाक्यशृंखलामे समेटल जाइत अछि। भविष्यक कम्प्यूटर-लेखकक संकेत अनेक शताब्दी लाँघि जाइत अछि। एहि प्रकारेँ कथन-अवधि सारांश → दृश्य → सारांश → भविष्यसूचनाक क्रममे चलैत अछि। किछु दिनक ऐतिहासिक विस्तार आ एक सांझक लेखनक्षणक दृश्यविस्तारक ई अनुपात कथाक प्राथमिकता स्पष्ट करैत अछि: बड़का राजनैतिक घटना पृष्ठभूमि, पहिल लोकपाँति निर्णायक दृश्य बनैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण आ ज्ञानक असमान वितरण

कथावाचक व्यापक तृतीयपुरुष दृष्टिसँ ओइनवार शासन, गामक प्रतिक्रिया आ भविष्यक लेखकक अस्तित्वक कथन करैत अछि। हरिपतिक आश्चर्य, इन्दुमतीक सन्देह आ बूढ़बाक चेतावनी संवाद द्वारा पाठक धरि पहुँचैत अछि। इन्दुमतीक अन्तर्मनक संदेह छोट वाक्यमे, हरिपतिक ईमानदारी कथावाचकक मूल्यांकनमे व्यक्त अछि। एतय दृष्टिकेन्द्रणक नियंत्रण हरिपतिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि: पाठक हुनकर ‘गहींर ईमानदारी’ वाचकीय संकेतसँ ग्रहण करैत अछि। आलोचनात्मक सम्भावना अछि जे हरिपतिक प्रस्तावकेँ अन्य गामवासी विरोधी स्वर भेटित तँ संग्रहक अधिकारक प्रश्न आरो बहुपक्षी बनि सकैत छल।

पुनरावृत्तिक नव कथात्मक कार्य

पीपर, बूढ़बा, नाम, कबड्डी आ उपेक्षित मृतकक सूची अनेक पूर्वाध्यायमे उपस्थित छल। एहि अध्यायमे उएह प्रतीक अलग कार्य पबैत अछि—पहिने अनुष्ठानमे उच्चरित नाम आब लिखित पाठक सम्भावित सामग्री बनैत अछि। ई कार्यात्मक परिवर्तन वास्तविक कथात्मक प्रगति अछि। एकहि ‘नाम बचाउ’क सूत्र फेर दार्शनिक उपदेश मात्र नहि; ताड़पत्र, लेखनी, शिष्य आ अप्रकाशनक निर्णयद्वारा सामाजिक संस्था बनबाक प्रयास करैत अछि। मुदा ई प्रयास आधा अछि—सामुदायिक स्वामित्वक सार्वजनिक संस्था निर्माण नहि होइत। एहि असिद्धताकेँ रचनाक परवर्ती पाण्डुलिपि-प्रसंगसभक संग जाँचबाक रहत।

गीतक रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

समापन गीतमे प्रथम कण्ठ, दस सहलेखक आ सय गबनिहारक क्रम वाचिक सामूहिकताक चढ़ैत लय रचैत अछि। एकल शुरुआत बहुवचन परिणतिमे बदलैत अछि। ‘गीत कहियो नहि मरै’ पंक्ति समयपर प्रतीकात्मक विजयक ध्वनि उत्पन्न करैत अछि, जबकि कथाक भीतर पोथीक हेरायबाक सम्भावना व्यक्त अछि। एहि विरोधमे सौन्दर्यात्मक आशा आ ऐतिहासिक असुरक्षा एक संग छथि। करुणक पृष्ठभूमि उपेक्षित मृतकक नामसँ, शान्तक आकांक्षा संरक्षणक स्वीकृतिसँ आ अद्भुतक भाव भविष्यक आत्म-सन्दर्भसँ निर्मित होइत अछि। तथापि गीत कथाक पहिनहि घोषित नैतिक सूत्रकेँ पुनरुक्त करैत अछि; एकर अतिरिक्त काव्यात्मक अर्थ लय आ सामूहिक उच्चारणक संरचनामे भेटैत अछि।

अध्यायोत्तर टिप्पणी : व्याख्यात्मक परापाठक सीमा

‘ओइनवार वंश आ मैथिली साहित्यक स्वर्णकाल’ शीर्षक टिप्पणी हरिपतिकेँ विशिष्ट ऐतिहासिक कवि नहि, सांस्कृतिक प्रवृत्तिक प्रतीक घोषित करैत अछि। ई दावा रचनाक पात्र-पहिचान बुझबाक मूल परापाठीय सूचना अछि। टिप्पणी विदेह पत्रिका आ समानान्तर साहित्य आन्दोलनक सम्बन्ध सेहो प्रस्तुत करैत अछि। मुदा लेखककीय आशयक ई स्पष्टिकरण कादम्बरीक घटनाक बाह्य ऐतिहासिक प्रमाणीकरण नहि। ‘स्वर्णकाल’ सन मूल्यांकनात्मक इतिहासशब्द समालोचनात्मक ढंगसँ देखबाक चाही—केकर साहित्य दरबारी प्रतिष्ठा पबैत अछि, केकर मौखिक सामग्री अभिलेखसँ बाहर रहैत अछि, आ साहित्यिक उन्नतिक लाभ सभ समुदाय धरि पहुँचैत अछि कि नहि?

घटना-प्रमाण-परिणाम सारणी

१. अराजकताक शान्ति आ ओइनवार शासनक कथन — व्यापक कथात्मक पृष्ठभूमि; बाह्य इतिहासक अलग जाँच आवश्यक।

२. हरिपतिक गाम आगमन — प्रत्यक्ष कथित घटना; पात्र ऐतिहासिक व्यक्ति नहि, कल्पित प्रतिनिधि।

३. इन्दुमती द्वारा अनुष्ठानक कथा सुनाएब — मौखिक ज्ञानक सार्वजनिक प्रसारण।

४. हरिपतिक लिखबाक प्रस्ताव — व्यक्तिगत अभिलेखी इच्छा; अधिकारक प्रश्न उद्भूत।

५. इन्दुमतीक ‘हमरा सभक’ आपत्ति — समुदायिक स्वामित्वक स्पष्ट नैतिक दावा।

६. बूढ़बाक सादा भाषा लिखबाक शर्त — प्रतिनिधित्वक नैतिक सीमा; भाषा-समानता अपने आपमे सत्यगवाही नहि।

७. हरिपतिक ताड़पत्र निकालि पहिल पाँति लिखब — लिपिबद्धताक प्रत्यक्ष दृश्य।

८. तीन मासक संशोधन — संग्रहक वास्तविक श्रमक सारांश; संस्करणसभक विवरण नहि।

९. दरबारमे पोथी नहि देखाएबाक निर्णय — पात्रक मूल्य-परिवर्तन; जीविकागत परिणति अनिर्दिष्ट।

१०. शिष्यक हाथ सुरक्षित रखबाक प्रस्ताव — अभिलेखक भविष्य-संचरणक योजना; खुला अभिगम नहि।

११. भविष्यक कम्प्यूटर-लेखकक संकेत — आत्म-सन्दर्भी भविष्यसूचना; प्रत्यक्ष ऐतिहासिक ताड़पत्रसाक्ष्य नहि।

गामक सामूहिक गीत — लेखकीय कर्तृत्वक बहुवचन; वैधानिक स्वामित्वनियम स्थापित नहि।

मूल पाठक उद्धरण-सूचक

१. आरम्भिक फकरा — ‘लेखक एक नहि, गामे रचयिता छै’ : सामूहिक सर्जनाक प्रतिज्ञा।

२. इन्दुमती — ‘ई कथा हमरा सभक अछि’ : कथा-स्वामित्वक प्रश्न।

३. हरिपति — ‘हम एकरा सुरक्षित राखय चाहैत छी’ : संग्रहक अभिप्राय।

४. बूढ़बा — ‘जँ लिखल जाए, तँ साधारण भाषामे लिखल जाए’ : प्रतिनिधित्वक शर्त।

५. हरिपतिक पहिल पाँति — ‘एकटा गाछ छल, एकटा पोखरि छल’ : कथाभीतर निर्मित प्राक्-पाण्डुलिपिक आरम्भ।

६. हरिपति — ‘दरबार एकरा नहि बुझत’ : संरक्षण आ अभिगमक द्वन्द्व।

७. गीत — ‘जे सभ मिलि गाबय, से गीत कहियो नहि मरै’ : सामुदायिक अमरत्वक सांकेतिक दावा।

ई सभ उद्धरण अध्याय –८०क मूल कथाभाग अथवा गीतसँ मिलाओल गेल। मुद्रित १९७–२०० परास समग्र अध्याय-सीमा अछि; प्रत्येक कथनक स्वतन्त्र पृष्ठाङ्क एतय अप्रतिपादित अछि।

निष्पक्ष समग्र निर्णय

‘गीतक पहिल पाँति’क मूल उपलब्धि स्मृतिक संरक्षणकेँ अलौकिक साक्षी आ मौखिक अनुष्ठानक सीमासँ लिपिबद्ध अभिलेखक प्रश्न धरि आनब अछि। इन्दुमतीक प्रतिवाद रचनाकेँ ‘कथा केकर?’ सन मौलिक प्रश्न दैत अछि। बूढ़बाक साधारण भाषा रखने शर्त उपेक्षित समुदायक प्रतिनिधित्वक नैतिकता स्थापित करैत अछि। तीन मासक संशोधन रचनात्मक श्रमक मूल्य देखबैत अछि। लेखकक भविष्यक कम्प्यूटर-पर्दाक संकेत उपन्यासकेँ अपन निर्माणक आत्मसचेतन इतिहास देबाक प्रयत्न करैत अछि। मुदा लिखित वस्तुक अमरत्वक अतिशय विश्वास, सामूहिक कथाक निजी शिष्य-उत्तराधिकारमे सीमांकन, दरबारक निश्चयात्मक निषेध आ स्त्री संरक्षिकाक लिखित अधिकारक अस्पष्टता वास्तविक आलोचनात्मक सीमा छथि। एहि द्वन्द्वक कारण अध्याय आदर्शीकृत लोकमहिमा मात्र नहि, पाठसँ समर्थित अभिलेखीय प्रश्नक अनुत्तरित केन्द्र सेहो बनैत अछि। लेखक एकला नहि—ई सूत्र तखने न्यायसंगत निष्कर्ष बनत जखन समुदायकेँ कथाक अर्थ, संशोधन, उपयोग आ उत्तराधिकारमे सक्रिय स्थान भेटत।

स्रोत आ आगामी सन्धि

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय –८० ‘गीतक पहिल पाँति’, मूल संयुक्त पाण्डुलिपि, अनुक्रमणिकानुसार मुद्रित पृ. १९७–२००। अध्यायोत्तर ‘ओइनवार वंश आ मैथिली साहित्यक स्वर्णकाल’ टिप्पणी परापाठ अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि। अगिला अध्याय –७९ — ‘क्षमाक पारी’: स्मृति-लिपिबद्धताक अधिकारसँ सामाजिक क्षमाक व्यवहारिक प्रश्न दिस कथाक गमन।

प्रकरण २२ | मूल अध्याय –७९ — क्षमाक पारी

पाठाधार, परीक्षण-विधान आ मूल प्रश्न

‘क्षमाक पारी’ पूर्व-कथाकालक बाइसम स्वतन्त्र अध्याय थिक। मूल उपन्यासक अनुक्रमणिकामे –७९क आरम्भ २०१ आ अगिला अध्याय –७८ ‘पंजीक बाहर’क आरम्भ २०५ अंकित अछि; अतः मुद्रित पृष्ठ-परास २०१–२०४ अछि। विशेष परीक्षण स्थान, समय, पुनरावृत्ति, पात्रक विकल्प आ कथान्तक परिणाम थिक। मूल प्रश्न ई अछि: पूर्वजक अन्यायक उत्तराधिकारी व्यक्ति स्वयं अपराधी नहि रहितहुँ ओकर सम्पत्तिक लाभसँ सम्बद्ध उत्तरदायित्व स्वीकार कऽ सकैत अछि कि नहि, आ ओकर सार्वजनिक स्वीकारोक्ति समुदायकेँ कोन प्रकारक क्षमाक अधिकार दैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर लेल नैतिक, विधिक, भावात्मक आ कथात्मक प्रमाण अलग राखल आवश्यक अछि।

पूर्वाध्यायक पाण्डुलिपिसँ वर्तमान सामुदायिक अनुष्ठान धरि

अध्याय –८० मे इन्दुमतीक नेतृत्वमे मौखिक स्मृतिक लिखित स्वरूप रचबाक चेष्टा भेल। हरिपति पाण्डुलिपि बनौने, मुदा ओकर प्रकाशन रोकबाक निर्णय लेने छलाह। अध्याय –७९ एकदम भिन्न प्रसंग खोलैत अछि। एतय स्मृति न त केवल पोथीक सुरक्षित शब्द अछि आ न केवल मृतकक नामक रातिक पुकार; ओ जीवित व्यक्तिक पूर्वजसँ प्राप्त नैतिक बोझकेँ सामुदायिक समक्ष उपस्थित करबाक सामाजिक व्यवस्था बनैत अछि। पिछला अध्यायक प्रश्न ‘कथा के लिखत?’ छल; एहि अध्यायक प्रश्न ‘कथा सच-सच मानि जिम्मेदारी के लेत?’ अछि। ई परिवर्तन उपन्यासक निरन्तर स्मृति-दर्शनमे एकटा स्पष्ट नाटकीय अग्रगमन प्रदान करैत अछि।

पैंतालीस बरखक कथासमय : पीढ़ीक क्रम

मूल अध्याय पैंतालीस बरखक समयान्तर कहि आरम्भ करैत अछि। इन्दुमतीक बाद अनुष्ठान हुनकर बेटी शारदा आ शारदाक बाद वसुन्धराकेँ भेटैत अछि। वसुन्धरा चालीस बरखक छथि। एहि सूचनासँ सावित्री–इन्दुमती–शारदा–वसुन्धराक स्त्री-वंशाधारित सांस्कृतिक उत्तराधिकार स्पष्ट होइत अछि। मुदा पैंतालीस बरखक अवधि पछिला दृश्यसँ निश्चित कैलेंडर वर्षमे केना पड़ैत अछि, पाठ अलग ऐतिहासिक तिथि नहि दैत; एकरा अनावश्यक सटीक जन्मवर्षमे बदलब अनुचित। ‘रघुवीर प्रतापसेनक पौत्र’ कथनकेँ सेहो दीर्घ पूर्ववर्ती कालक्रमक संग सावधानीसँ रखबाक चाही: अत्यन्त वृद्ध पौत्र सम्भव अछि, मुदा प्रतापसेनक जीवनक सटीक तिथिकेँ जोड़ि वास्तविक वंशावली सिद्ध करबाक स्रोत एहि अध्यायमे नहि अछि।

आरम्भिक फकरा : स्पर्शसँ प्रत्यावर्तन धरि

अध्यायक फकरा अछि—‘कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी दै’। कबड्डीक सामान्य शारीरिक स्पर्श एतय पुनरागमनक नैतिक सम्भावनामे बदलैत अछि। पहिने ‘छुअल’ मृतकक नामक स्मरण तथा वर्तमानक संकटसँ जुड़ल छल; आब ई सम्पर्क अतीतक अन्यायमे सहभागी वंशक जीवित व्यक्तिक प्रति सामुदायिक प्रतिक्रिया बनैत अछि। क्षमा निष्क्रिय विस्मरण नहि, नियमबद्ध पुनःप्रवेशक प्रक्रिया बनेबाक प्रस्ताव अछि। मुदा फकरामे क्षमाक महिमा आरम्भहि सँ घोषित अछि, जाहिसँ पाठकीय अपेक्षा पुनर्मिलनक पक्षमे झुकैत अछि। एतय सावधानी जरूरी अछि जे गीतक नैतिक निर्देश कथा-दृश्यक स्वतन्त्र मूल्यांकनकेँ प्रतिस्थापित नहि करय।

चर्मकार टोलाक द्वार : सामाजिक सीमाक नाट्यस्थल

रघुवीर पहिने पीपर नहि, चर्मकार टोलाक द्वार लग पहुँचैत छथि। ई स्थानिक चयन अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि। हुनकर दादाक नाम एहि टोलामे दमनक स्मृति जगबैत अछि। एकरा गाँवक साधारण अतिथिगमनक रूपमे नहि पढ़ल जाए; अत्याचारसँ सम्बद्ध परिवारक वंशज पीड़ित समुदाय लग प्रवेश-अनुमति माँगैत छथि। किन्तु मूल पाठ द्वारक दृश्य छोट राखैत अछि। कोन परिवार पहिने हुनका देखलक, सुरक्षाक विषयमे के निर्णय लेलक, भूमि-संघर्षक प्रत्यक्ष पीड़ितक वंशज उपस्थित छलाह कि नहि—ई सभ प्रश्न विस्तार नहि पबैत। द्वारक प्रतीकात्मक अर्थ प्रबल अछि, मुदा सामुदायिक निर्णय-प्रक्रियाक भौतिक विवरण संक्षिप्त।

रघुवीरक देह-चित्रण : क्षीण सत्ता आ बाँकी प्रतिष्ठा

अत्यन्त वृद्ध रघुवीर डण्टाक सहारे आबैत छथि। हुनकर कीमती मुदा फाटल आ मैलगर वस्त्र कुलीन सम्पत्तिक इतिहास आ वर्तमान दुःखक दृश्यात्मक विरोध बनबैत अछि। शरीर थाकल अछि, स्वर काँपैत अछि, आँखिमे आँसू अछि। एहि दृश्यसँ वंशगत प्रभुत्वक पूर्वस्थापित छवि उलटि जाइत अछि—एक ठाकुरक पौत्र चर्मकार टोलाक दुआरपर विनतीक अवस्थामे ठाढ़ छथि। तथापि वृद्धावस्था आ आँसू अपने आपमे नैतिक परिवर्तनक अकाट्य प्रमाण नहि। ई भूतपूर्व विशेषाधिकारक प्रतिपक्षमे सहानुभूतिक नाट्य-उपकरण छथि। कथा हुनकर कथनक इमानदारीक बोध दैत अछि, मुदा ओकर परीक्षण भूमिक प्रतिपूर्ति आ समुदायिक परिणामसँ होयत।

‘अपराध हमर नहि छल’ : व्यक्तिगत दोषक पृथक्करण

रघुवीर कहैत छथि जे अपराध हुनकर नहि छल, तैओ ओ दादाक पापक बोझ ढोने छथि। एहि कथनमे व्यक्ति आ वंशक बीच मूल नैतिक भेद उपस्थित अछि। जन्मसँ कोनो व्यक्तिकेँ पूर्वजक अपराधक दोषी ठहराएब उचित नहि; मुदा अन्यायसँ अर्जित सम्पत्तिक उत्तराधिकार लेल वर्तमान लाभग्राहीक दायित्वक प्रश्न उठि सकैत अछि। रघुवीरक प्रारम्भिक याचनामे ई दू परत एकसंग अछि—स्वतः दोषी नहिं होयब आ लाभक नैतिक असर स्वीकार करब। समीक्षाक दृष्टिसँ एकरा वंशानुगत अपराधसिद्धि नहि, उत्तराधिकारजन्य प्रतिपूर्तिक सम्भावना रूपमे पढ़ब अधिक सटीक।

परिवारक सुविधा आ अन्यायक लाभ : प्रतिपूर्तिक ठोस आधार

रघुवीर स्वीकार करैत छथि जे परिवारक सम्पत्ति आ सुविधा पूर्वज द्वारा चर्मकार टोलाक विरुद्ध रचल अन्यायसँ जुड़ल अछि। एतय क्षमा मात्र भावात्मक शुद्धि नहि, सम्पत्तिक उत्पत्तिक सार्वजनिक परीक्षण बनैत अछि। मुदा एकटा पाठान्तरगत तनाव छैक: पूर्ववर्ती अध्याय -८७ मे भूमि-अधिकार पुनः दर्ज कराओल गेल छल; एहि अध्यायमे रघुवीर दादाद्वारा अनुचित रूपसँ प्राप्त जमीनक भाग लौटेबाक बात कहैत छथि। सम्भव अछि आन भूखण्ड रहल हो अथवा पुनः अधिग्रहण भेल हो, मुदा वर्तमान अध्याय एहि इतिहासक कड़ी स्पष्ट नहि करैत। तें पूर्ववर्ती पुनःदर्जक विजय आ वर्तमान प्रतिपूर्तिक आवश्यकताक बीचक हिसाब खुलल रहैत अछि। एकरा स्वतः तार्किक विसंगति सिद्ध करब जल्दबाजी, मुदा स्पष्टता अपेक्षित अछि।

वसुन्धराक सतर्क प्रश्न : न्यायिक विवेक

वसुन्धरा आगन्तुककेँ तुरन्त स्वीकार नहि करैत छथि। प्रतापसेनक नामक असुखद स्मृति उल्लेख कऽ कारण पूछैत छथि। ई प्रतिक्रिया पीड़ित पक्षक विवेकक कथात्मक मान्यता अछि। रघुवीरक वृद्धावस्था हुनका प्रश्नसँ मुक्त नहि करैत; वंशपरिचयक कारण आरोपित अपमानक बदला हुनकर उद्देश्य जाँचल जाइत अछि। ओ बूढ़बा लग सलाह लेल जाइत छथि—एहि क्रियासँ ई देखाइत अछि जे सामाजिक निर्णय एक व्यक्ति द्वारा तुरन्त नहि लेल गेल। मुदा बूढ़बाक सल्लाह समग्र टोलाक औपचारिक बहसक विकल्प बनि जाइत अछि की नहि, एकर प्रश्न रहैत अछि। वसुन्धराक अपना विचारकेँ अधिक विस्तृत स्वतन्त्र स्थान भेटित तँ स्त्री नेतृत्वक नैतिक स्वायत्तता आर मजबूत बनैत।

बूढबाक स्मृति-सिद्धान्तक पुनर्व्याख्या

बूढ़बा स्वीकार करैत छथि जे मृतकक नाम बचबैत अपन कार्यक सीमा आब बुझि रहल छथि। स्मृतिक संरक्षणक उद्देश्य जीवितकेँ अपन कथा ठीक करबाक अवसर देब सेहो थिक। ई अध्याय –९०क जलसमाधिसँ आरम्भ बुढ़बाक दीर्घ आत्म-परिवर्तनक नव चरण अछि। अध्याय –८४ मे अपराधीक नाम बचएबाक नैतिक दुविधा, –८३ मे सोनमाक धैर्य, –८२ मे यशपतिक नामक सार्वजनिक उच्चारण, आ आब –७९ मे जीवित वंशजक आत्मस्वीकृति—ई क्रम कार्यात्मक पुनरावृत्ति अछि। तथापि बूढ़बाक वाणी एकटा अधिकारपूर्ण नैतिक निर्णयक तरह उपस्थित अछि; सामुदायिक स्वीकृतिसँ ओकर सम्बन्ध प्रश्नात्मक रहैत अछि।

क्षमा-याचनाक अधिकार आ क्षमा पाबबाक अधिकारक भेद

रघुवीर कहैत छथि जे हुनका क्षमा माँगबाक अधिकार सेहो नहि, कारण अपराध स्वयं हुनकर नहि। एहि वाक्यमे लज्जा आ नैतिक उलझन दुनू अछि। क्षमा माँगब अपराधक स्वीकारोक्ति अथवा सम्बन्ध सुधारबाक आग्रह भऽ सकैत अछि; मुदा क्षमा देबाक अधिकार पीड़ित व्यक्ति अथवा ओकर सामुदायिक उत्तराधिकारीक सहमति पर निर्भर रहैत अछि। अपराधी नहिं होयब क्षमा माँगबाक नैतिक प्रयत्नक बाधा अनिवार्यतः नहि; यद्यपि ओ अपना पूर्वजक अपराध लेल विधिक दोषी नहि। एतय क्षमा स्वतः प्रदान नहि होइत; स्मृतिमे स्थान देबाक नियम बनैत अछि। एहि कारण स्वीकारोक्ति आ क्षमादानकेँ भिन्न मानब अनिवार्य अछि।

अमावस्याक सार्वजनिक सभा आ प्रमाणक प्रेक्षक

रातिमे वृद्ध, स्त्री आ बच्चासभ पीपर लग जुटैत छथि। रघुवीर फुलेसरीक वंशजक सहारे बैठैत छथि। एहि दृश्यमे अनेक पीढ़ीक सार्वजनिक साक्षित्व एकत्र अछि, आ चर्मकार समुदायसँ जुड़ल अनाम व्यक्ति रघुवीरक देहक सहारा बनैत छथि। ई शारीरिक क्रिया प्रतीकात्मक रूपसँ सामर्थ्यवान अछि: पूर्व प्रभुत्वसम्बद्ध वंशज पीड़ित समुदाय द्वारा देल सहारेपर निर्भर छथि। मुदा इएह व्यक्ति नामहीन रहैत छथि, जखन रघुवीरक नाम परवर्ती कहबी बनैत अछि। सामाजिक प्रतिनिधित्वक ई विरोध ध्यान आकर्षित करैत अछि। सभाक उपस्थितिसँ सर्वसम्मति प्रमाणित नहि होइत; सार्वजनिक साक्षी आ विधिवत सामूहिक स्वीकृतिक बीच भेद रहत।

पारीक नव नियम : नाम लेनिहारसँ स्वयं नाम बनब

वसुन्धरा कहैत छथि जे आज रघुवीर कोनो नाम नहि लेताह; ओ स्वयं ‘एकटा नाम’ बनताह। एहि दृश्यसँ कबड्डीक अर्थ पुनः बदलैत अछि। पहिने खिलाड़ी मृतकक नाम पुकारैत छल; आब जीवित पश्चातापी व्यक्ति सामूहिक स्मृतिक विषय बनैत छथि। उपन्यासक भाषा एतय उद्भावनाशील अछि, किन्तु औपचारिक खेल-प्रक्रिया अस्पष्ट अछि। रघुवीर वृद्ध आ कमजोर छथि; ओ वास्तवमे शारीरिक पारी खेलैत छथि कि हुनकर बारी प्रतीकात्मक रहैत अछि, पाठ अधिक स्पष्ट नहि। एकर असङ्गति खेलक प्रत्यक्ष नियमक उपेक्षा करैत नैतिक ‘पारी’क अर्थकेँ अधिक प्राथमिकता देबाक परिणाम अछि।

नामक पुनर्लेखन : प्रतापसेनक पौत्रसँ ‘जे घुरलाह’ धरि

वसुन्धरा रघुवीरक परिचयमे प्रतापसेनक पौत्रत्व मिटबैत नहि; ओकर संग ‘परिवारक अपराध स्वीकार करय आयल’ नव क्रिया जोड़ैत छथि। सामुदायिक पहचानक ई परिवर्तन स्मृतिक विलोपन नहि, पुनर्वर्णनक प्रस्ताव अछि। मृतक सुखदेव आ हुलासाक समान नाम स्मरणक अर्थ ओहिसभक दोष, पीड़ा आ सामाजिक स्थितिक समानता नहि। एतय नामक समान सार्वजनिक उल्लेख न्यायिक समतुल्यता नहि होयत। ‘रघुवीर जे घुरलाह’ मुहावरा पछाति बनैत अछि, जे व्यक्तिगत आत्मस्वीकृतिसँ लोकक सामूहिक अर्थनिर्माण धरि कथाक दीर्घ यात्रा देखबैत अछि। मुदा मुहावराक संक्षेप पूर्वजक वास्तविक अपराधकेँ हाशियापर धकेलत कि नहि, ई अनुत्तरित आलोचनात्मक प्रश्न अछि।

भूमिक एक भाग लौटेबाक प्रस्ताव : क्षमा-क्रयसँ भेद

रघुवीर कहैत छथि जे दादाद्वारा अनुचित प्राप्त जमीनक एक भाग लौटाएब चाहैत छथि, मुदा ई क्षमा खरीदबाक माध्यम नहि। एहि आत्मसीमा-स्वीकारमे कथा नैतिक संजीदगी रखैत अछि। पश्चाताप मात्र आँसू नहि; उत्तराधिकारसँ प्राप्त भौतिक लाभ आ अन्यायक शेष परिणामकेँ सम्बोधित करबाक प्रयास अछि। मुदा ‘एक भाग’ कतेक, कुल अनुचित अर्जन कतेक, वास्तवमे कोन-कोन परिवारक अधिकार छल, भूमि सामूहिक रूपसँ देल जाएत कि व्यक्तिगत रूपसँ—ई सभ विवरण अनुपस्थित। क्षमाक भावात्मक स्वीकृति आ सम्पूर्ण प्रतिपूर्तिक सफलता एहि कारण पृथक रहैत अछि।

बूढ़बाक अधूरा स्पर्श : अलौकिकताक सीमित नैतिक क्रिया

बूढ़बा पीपरसँ उतरिकऽ जीवित रघुवीरक माथपर हाथ रखबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा हुनकर हाथ देहसँ एक अंगुर ऊपर रहि जाइत अछि। ई दृश्य अध्यायक सर्वाधिक घन प्रतीकात्मक क्षण अछि। अलौकिक साक्षी अपन नैतिक समीपता प्रकट करैत अछि, मुदा मानव देहक स्पर्श करबाक सीमा रचनामे सुरक्षित अछि। हाथक असफल स्पर्श सहानुभूति आ वास्तविक प्रतिपूर्तिक अन्तरक दृश्यरूप सेहो बनि सकैत अछि: बूढ़बाक आशीर्वचन दायित्व उत्पन्न करैत, जमीन हस्तान्तरणक सामाजिक क्रिया स्थानापन्न नहि करैत। ई आन्तरिक जादुई-यथार्थवादक नियमक सापेक्ष स्थिरता दर्शबैत अछि।

दादा आ पौत्रक नामक पृथक मूल्यांकन

बूढ़बा प्रतापसेनक नाम दुःखसँ स्मरण करैत छथि, मुदा रघुवीरक नाम आदरसँ राखबाक निर्णय करैत छथि। एतय स्मृतिरक्षा केओ व्यक्ति वा वंशक सामूहिक निर्दोषीकरण नहि। एक वंशक दू पीढ़ीक नाम अलग नैतिक दर्जाक संग रहि सकैत अछि। ई रचनाक विचारगत उपलब्धि अछि। मुदा दादाक नाम रखने ‘दुःख’क वास्तविक ऐतिहासिक विवरणक स्थायित्व पर्याप्त अछि कि नहि, से अनेको पीड़ितक गवाहीपर निर्भर अछि। बूढ़बाक विभेदक वक्तव्य प्रमाणित इतिहासक पूर्ण विकल्प नहि, नैतिक निर्णयक एक कथाभीतर वचन थिक।

रोदन आ आत्मशुद्धि : भावक प्रमाण-सीमा

रघुवीरक रोदनक व्याख्या ‘वर्षों-पुरान भारक उतरब’ रूपमे देल गेल अछि। भावात्मक मुक्ति रसात्मक रूपसँ प्रभावकारी अछि, किन्तु रोदन न पूर्ण नैतिक परिवर्तनक प्रयोगशाली प्रमाण अछि, न सम्पूर्ण पीड़ित समुदाय द्वारा क्षमाक स्वतः संकेत। कादम्बरी एतय करुणक तीव्र क्षण उत्पन्न करैत अछि। पर आलोचना करुणानुभूतिकेँ न्यायिक निर्णयसँ अलग रखैत अछि। बूढ़बा आ वसुन्धराक दयाभाव तथा रघुवीरक वास्तविक भूमि-वापसी दुनू मिलि पात्रपर विश्वास उत्पन्न करैत अछि; ताहिपर व्यक्तिगत आ सामुदायिक उत्तरदायित्वक मुद्दा समाप्त घोषित नहि कएल जा सकैत।

बाँटवारा-पत्रक हस्तान्तरण : लिखित प्रमाणक दोसर अवतार

अगिला भोरे रघुवीर गामक साक्षीक सोझाँ भूमिक बँटवारा-पत्र वसुन्धराक हाथमे दैत छथि। अध्याय –८०क ताड़पत्रीय लोकइतिहाससँ एतय लिखित सामग्रीक कार्य बदलि गेल—ओ स्मृतिक संग्रह मात्र नहि, भूमि-अधिकारक सम्भावित साधन अछि। मुदा दस्तावेजक नाम बताओल गेल अछि, ओकर कानूनी स्वरूप नहि। ककर हस्ताक्षर, कोन भूखण्ड, भूमि-मापन, राजस्व-प्रविष्टि, पंजीकरण अथवा वास्तविक दखलक प्रक्रिया अछि—मूल पाठ एहि बात सभक साक्ष्य नहि देत। पत्र सौंपब एक प्रत्यक्ष कथा-घटना अछि; अधिकार-हस्तान्तरण सम्पूर्णतः विधिक रूपसँ सम्पन्न भेल, ई अतिरिक्त निष्कर्ष नहि देल जा सकैत। एहि भेदक कारण प्रतीकात्मक प्रतिपूर्तिक उपलब्धि आ संस्थागत न्यायक अपूर्णता दुनू एक संग देखाइत अछि।

भूमिक व्यक्तिगत दान अथवा सामुदायिक अधिकार?

बँटवारा-पत्र वसुन्धराक हाथमे देल गेल अछि, मुदा रघुवीरक वाणी ‘एहि टोलाकेँ लौटाबय’ कहैत अछि। व्यक्ति लग दस्तावेज देब आ सम्पूर्ण टोलाक सामूहिक हक बहाल करब एकहि विधिक कार्य नहि। वसुन्धरा अनुष्ठानक संरक्षिका छथि; भूमि-सम्पत्तिक सामुदायिक न्यास, प्रतिनिधित्व अथवा वितरणक औपचारिक अधिकार हुनका देल गेल अछि, एहन स्पष्ट कथा-साक्ष्य नहि। ई रचनाक अनिवार्य आलोचनात्मक रिक्ति अछि। सामाजिक न्यायक प्रतीकात्मक प्रस्तावकेँ मजबूत करबाक लेल प्रभावित परिवारसभक अपन सहमति, लाभ-वितरण आ भूखंडक दखलक भविष्यक दृश्य उपयोगी छल।

सम्पत्ति आ अपराधक उत्तराधिकार : नव्य-न्यायक अनुमानपरीक्षा

रघुवीरक वंशपरिचयसँ हुनकर दादाक व्यक्तिगत अपराध-कर्तृत्व सिद्ध नहि होइत; प्रतापसेनक अपराधक वर्णन पूर्व अध्यायसभमे अछि। वर्तमान पक्ष रघुवीरक हाथमे प्राप्त वंशगत सम्पत्ति अछि। साध्य एक हिस्साक अन्यायजन्य अर्जन होयब अछि; हेतु परिवारक लाभक पूर्वज-संबन्ध तथा रघुवीरक स्वीकारोक्ति। ई स्वीकारोक्ति महत्त्वपूर्ण गवाही अछि, मुदा प्रत्येक भूखण्डक अवैध स्वामित्वक अन्तिम प्रमाण नहि। अनिवार्य व्याप्ति —‘प्रतापसेनक पौत्रक सभ भूमि अन्यायजन्य’—नहि स्थापित। उलट, ‘रघुवीर स्वयं अपराधी नहि’ सँ वर्तमान लाभक नैतिक जाँच निरस्त नहि होइत। एतय पक्ष, साध्य, हेतु आ उपाधि अलग रखलापर दोषक विरासत आ लाभक विरासतक सूक्ष्म अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

पश्चात्ताप, स्वीकार, प्रतिपूर्ति, पुनर्मिलन आ क्षमा

अध्यायमे पाँच अवस्थाक अलग अभिधान आवश्यक अछि। रघुवीरक आँसू आ लज्जा ‘पश्चात्ताप’क भावात्मक दावाक रूपमे अछि। दादाक अन्याय स्वीकारब ‘स्वीकारोक्ति’ अछि। जमीन लौटेबाक प्रस्ताव आ पत्र हस्तान्तरण ‘प्रतिपूर्तिक प्रयास’ अछि। गामक सभामे हुनकर नाम आदरसँ स्मरण करब ‘सामाजिक पुनःप्रवेश’क क्रिया अछि। मुदा पीड़ित पक्ष द्वारा स्पष्ट पूर्ण क्षमादान घोषित करबाक कोई पृथक विधि मूल पाठ नहि देखबैत। एहि कारण समग्र प्रक्रियाकेँ ‘मुक्तिदान’ मानब प्रमाणसँ अधिक होयत। बूढ़बाक साक्षी-दर्शनक प्रौढ़ता ई सभ स्तर संग राखने बुझबाक अछि, एकटा आँसू भरि घटनामे सब समस्या समाधित मानि लेब नहि।

सहानुभूति आ न्यायमे सन्तुलन

एकटा वृद्ध, थाकल आ क्षमा माँगैत व्यक्ति पाठकक करुणाक केन्द्र बनैत छथि। मुदा रचना पीड़ित चर्मकार परिवारसभक दीर्घ आर्थिक क्षतिकेँ तात्कालिक दृश्यरूपमे नहि प्रस्तुत करैत। फलस्वरूप सौन्दर्यात्मक केन्द्र रघुवीरक नैतिक उद्धार दिस खसि सकैत अछि। सामाजिक न्याय लेल प्रश्न केवल ‘कुलीन वंशज कतेक दुखी अछि?’ नहि; ‘पीड़ितक जमीन, जीविका, सम्पत्ति आ प्रतिष्ठाक कतेक पुनर्स्थापना भेल?’ सेहो आवश्यक अछि। रचनाक उपलब्धि ई अछि जे रघुवीर ‘क्षमा नहि खरीदि सकैत’ कहि सीमाबोध प्रदर्शित करैत छथि; सीमा ई जे प्राप्त परिणाम पीड़ित पक्षक दृष्टिसँ विस्तारसँ परीक्षण नहि पबैत।

स्त्रीक चारि पीढ़ी : स्मृतिक सत्ता आ निर्णय

सावित्री अनुष्ठान रचने छलीह; इन्दुमती ओकर रक्षा आ नव प्रयोगक उत्तराधिकार लेने छलीह; शारदा आ वसुन्धरा अगिला पीढ़ीमे व्यवस्था जीवित रखैत छथि। एहि परिवार-रेखामे स्मृति शास्त्रीय पुरुषवंशक बदला स्त्रीसभक सक्रिय हस्तान्तरणसँ संचालित अछि। वसुन्धरा नियम परिवर्तित करैत छथि—रघुवीरकेँ स्वयं नाम बनबाक स्थान दैत। बूढ़बाक नैतिक परामर्श नहि मानल जाए तऽ सम्भवतः ई निर्णय नहि होइत; तथापि कार्यक्रमक प्रत्यक्ष आयोजन वसुन्धराक माध्यमे होइत अछि। नारी-कर्तृत्वक ई उपलब्धि ईमानदारीसँ दर्ज हो, मुदा ओकर सीमास्वरूप बूढ़बाक निर्णायक पुरुष-अलौकिक व्याख्याक स्थायी प्रभाव सेहो स्पष्ट कएल जाए।

फुलेसरीक वंशज : दृश्य श्रम आ नामक अदृश्यता

रघुवीर पीपर लग बैठैत काल फुलेसरीक वंशजक सहारा लैत छथि। एहि सहायक व्यक्तिक नाम मूल पाठ नहि दैत। कथा जकर केन्द्रीय व्रत प्रत्येक नाम बचाएब अछि, ओतय तत्काल सहायता देनिहार व्यक्ति स्वयं अनाम अछि। ई एकटा अर्थपूर्ण अन्तर्विरोध अछि। सम्भव अछि कथा परिचित ‘फुलेसरीक वंशज’ द्वारा पारिवारिक उत्तराधिकार दर्शाबय चाहैत हो, मुदा स्वतन्त्र नामक अभाव एहि व्यक्ति केँ स्वायत्त पात्र बनबाक अवसर नहि दैत। सामाजिक इतिहासक पद्धतिमे जकर श्रम देखाओल गेल मुदा नाम छुटि गेल, ओकर पहिचानक आवश्यकता विशेष रूपसँ लिखबाक चाही।

दृश्य आ सारांश : समयक कथात्मक असमानता

अध्यायक पहिल किछु पंक्तिमे पैंतालीस बरख समाहित अछि। रघुवीरक टोलामे आगमन, सार्वजनिक संवाद आ अमावस्याक पारी विस्तारसँ प्रस्तुत अछि। अगिला भोरे लिखित दस्तावेजक घटना संक्षिप्त अछि। एक मास बाद हुनकर घर लौटब आ छह मास बाद मृत्यु-समाचार अत्यल्प कथनमे समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि संरचनामे दीर्घकालिक पीढ़ीगत परिवर्तनेक समाहार, सार्वजनिक न्यायिक दृश्यक विस्तार, आ जीवनान्तक तीव्र सारांश अछि। परिणामस्वरूप भावात्मक स्वीकारोक्ति अधिक याद रहैत अछि; भूमि-दखल आ लाभ-वितरणक वास्तविक सामाजिक समय दृष्टिसँ ओझरि जाइत अछि। ई अवधि-नियमन रचनात्मक बल आ सामाजिक कथनक सीमा दुनू अछि।

आवृत्ति आ कार्यपरिवर्तन : मृतकक नामसँ जीवितक नाम

नामबचाओ कबड्डी –८२ मे मृतक सुभागी आ विवादित यशपतिक स्मरणसँ विकसित भेल छल। –८१ मे जीवितक सामूहिक साहस लेल आयोजन भेल; –७९ मे फेर एकटा पारी नव नियमसँ सम्पन्न होइत अछि। एहि पुनरागमनमे तीन अर्थ भेटैत अछि—विस्मृतिक प्रतिरोध, संकटमे सार्वजनिक एकता, आ नैतिक पुनःप्रवेशक पद्धति। एकहि अनुष्ठान कथामे नवानव स्थितिक उत्तर बनैत अछि। ई विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धि अछि, किन्तु प्रत्येक कठिन राजनीतिक–सामाजिक समस्या कबड्डीक पारीद्वारा हल होइत देखाएत तँ अनुष्ठान अति-सुविधाजनक कथात्मक उपाय बनबाक जोखिम उठबैत अछि। एहि अध्यायमे भूमि-पत्रक भौतिक क्रिया एहि जोखिमकेँ आंशिक रूपसँ रोकैत अछि।

कथावाचकक स्वर : करुणाक निर्देशन आ अनिर्णय

तृतीयपुरुष कथावाचक रघुवीरक देहक दुर्बलता, दुःख आ आत्मस्वीकृतिक दृश्यसँ पाठकक सहानुभूति नियन्त्रित करैत अछि। वसुन्धराक प्रथम सावधानी सेहो दर्ज अछि, जाहिसँ कथा क्षणभरक विरोधी दृष्टि सुरक्षित रखैत अछि। बूढ़बाक प्रतिक्रिया कथाक नैतिक समाधानक प्रमुख माध्यम बनैत अछि। अन्तमे गामक कहबी बनबाक दावा व्यापक सामुदायिक स्मृतिक उच्च स्वर थिक, मुदा एहि परम्पराक स्वतन्त्र अनेक लोकवचन प्रस्तुत नहि कएल गेल। कथावाचकक निश्चितता आ पात्रसभक भावात्मक अनुभूति अलग प्रमाण-स्तर छथि। ई दूरी बनौने आलोचना करब कथाक करुणा अस्वीकार करब नहि, ओकर निर्माणपद्धति स्पष्ट करब अछि।

कथा-अन्तरालमे ‘घुरब’क बहुअर्थता

रघुवीरक यात्रा केवल गाम दिस देहक वापसी नहि। ओ परिवारक दमनकारी अतीतसँ सत्यक सोझाँ घुरैत छथि; सामुदायिक स्मृति हुनका नया नामसँ पुनः ग्रहण करैत अछि; मृत्यु-पश्चात् कहबीमे हुनकर पहचान फेर लौटैत अछि। ‘घुरब’ शब्द यात्रा, पश्चात्ताप, क्षतिपूर्तिक प्रयास आ लोककथात्मक पुनर्जन्मक अनेक अर्थ एकसाथ धारण करैत अछि। तथापि ‘फेर घुरब’क सुकुमार ध्वनि पीड़ितक सामाजिक समयकेँ ढाँपि नहि देबाक चाही। रघुवीर एक रातिमे प्रतिपूर्तिक इच्छा जतबैत छथि; चर्मकार टोलाक ऐतिहासिक क्षति पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित भेल रहि सकैत अछि। दुनूक समयमान असमान अछि।

रस, ध्वनि आ औचित्य

रघुवीरक काँपैत स्वर आ रोदन करुणक प्रमुख विभाव छथि। वसुन्धराक सतर्क प्रतिप्रश्न नैतिक सङ्कोचक अवस्थामे करुणासँ सहज दूरी बनबैत अछि। भूमि-वापसीक घोषणा वीरक आत्मसंयम अथवा उदारताक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; बूढ़बाक हाथक एक अंगुर दूरी अद्भुतक सूक्ष्म बिम्ब बनैत अछि; गामक अन्तिम गीत शान्तसदृश सामुदायिक स्वीकृतिक भाव उठबैत अछि। ‘क्षमाक पारी’ शीर्षकमे स्पर्श–प्रत्यावर्तनक प्रतीक नैतिक क्रियासँ जुड़ैत अछि। औचित्यक सीमा भावात्मक परिपाकक शीघ्रता अछि—गम्भीर सम्पत्ति-इतिहासक दीर्घ निर्णय एक साँझक अनुष्ठानमे सम्पन्न बुझाएत।

विदेह समानान्तर इतिहास : कुलनाम आ उपेक्षित समुदाय

अध्यायक ऐतिहासिक महत्त्व कुलीन परिवारक वंशावलीसँ नैतिक इतिहासक दिशा बदलने अछि। कुलनाम रघुवीरकेँ पूर्व प्रतिष्ठा नहि, पूर्वजक अन्यायक प्रश्न लऽ कऽ टोलाक सोझाँ आनैत अछि। चर्मकार समुदायक मौखिक स्मृति राजकीय पत्रक तुलना मे पहिने नैतिक मान्यता दैत अछि। मुदा विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ कुलीन परिवारक पश्चात्तापक कथा लिखित हो, आ वास्तविक उत्पीड़ित परिवारसभक व्यक्तिगत नाम अनाम रहि जाए—एहन जोखिमक पहिचान आवश्यक अछि। हुलासा, सुखदेव, फुलेसरीक परम्परा उल्लिखित छथि, मुदा ककर जमीन कब गेल, केकरा पर अधिकार लौटि रहल अछि, ई आर्थिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण विवरण बाँकी।

दस्तावेज, साक्षी आ अगिला ‘पंजीक बाहर’सँ सम्बन्ध

एहि अध्यायक निर्णायक वस्तु बँटवारा-पत्र अछि। अगिला अध्याय –७८ ‘पंजीक बाहर’ लिखित वंशावली आ सामुदायिक बहिष्करणक प्रश्न उठबैत अछि। एहि दू अध्यायक सन्धि महत्त्वपूर्ण अछि: एकठाम कागज भूमि-अधिकारक सम्भावित साधन, दोसरठाम कागज नामक स्वीकार-अस्वीकारक सत्ताक माध्यम बनेबाक आशङ्का अछि। एतय समीक्षा केवल आगामी शीर्षकक आधारपर पूर्ण पूर्वनिर्णय नहि देत; मूल –७८क दृश्य पढ़लाक बादे तुलना पूर्ण होयत। तथापि वर्तमान अध्याय सम्पत्ति आ अभिलेखक सम्बन्धक एहन बीज रखैत अछि जकर विकास अगिला अध्यायमे परखल जा सकैत अछि।

मूल पाठक घटनात्मक प्रमाण-सारणी

घटना | पाठ-सिद्ध परिवर्तन | अप्रमाणित अथवा अनिर्णीत पक्ष

पैंतालीस बरखक अनुष्ठान-उत्तराधिकार | इन्दुमती–शारदा–वसुन्धराक रेखा | स्वतन्त्र काल-वर्ष अनिर्दिष्ट

रघुवीरक चर्मकार टोलामे आगमन | कुलीन वंशज पीड़ित समुदाय लग प्रश्नोत्तर लेल अबैत छथि | व्यक्तिगत अपराधक प्रमाण नहि

वंशगत अन्याय स्वीकारब | नैतिक उत्तरदायित्वक वक्तव्य | सम्पत्तिक पूर्ण अभिलेख नहि

वसुन्धराक बूढ़बासँ परामर्श | सामुदायिक स्मृतिक नियममे संशोधन | सभ परिवारक औपचारिक सहमति नदेखाओल

अमावस्याक पारी | जीवित पश्चातापीकेँ स्मृतिमे स्थान | वास्तविक शारीरिक खेलक नियम अस्पष्ट

भूमि लौटेबाक घोषणा | प्रतिपूर्तिक प्रस्ताव | सम्पूर्ण अनुचित लाभक माप अज्ञात

अगिला भोरे बँटवारा-पत्र सौंपब | दस्तावेजक प्रत्यक्ष हस्तान्तरण | विधिक पंजीकरण आ दखल अनिर्णीत

बूढ़बाक अधूरा स्पर्श | अलौकिक नैतिक समीपता | वास्तविक देहस्पर्श नहि

घर घुरि मृत्यु-समाचार | जीवनान्तक सारांश | अवशिष्ट सम्पत्तिक विवाद अनिर्दिष्ट

‘रघुवीर जकाँ घुरब’ कहबी | लोकस्मृतिमे नव अभिधान | मूल अपराधक सार्वजनिक पूर्ण विवरण नहि

पाठसाक्ष्यक सत्यापित संकेत

१. आरम्भिक फकरा — ‘क्षमाक पारी’क नियम: छुअल व्यक्तिक घुरबाक अवसर।

२. रघुवीर — ‘हम प्रतापसेन ठाकुरक पौत्र छी’ : वंश-संबन्धक आत्मपरिचय।

३. वसुन्धरा — ‘अहाँ किएक आयल छी?’ : पीड़ित समुदायक सतर्क अधिकार।

४. रघुवीर — ‘अपराध हमर नहि छल’ : व्यक्तिगत दोषक अस्वीकृति।

५. बूढ़बा — ‘जीवितकेँ अपन कथाकेँ ठीक करबाक अवसर’ : स्मृति-सिद्धान्तक परिवर्तन।

६. वसुन्धरा — ‘आइ अहाँ स्वयं एकटा नाम बनब’ : खेलक नव नियम।

७. रघुवीर — ‘ई क्षमा नहि खरीदि सकैत’ : प्रतिपूर्तिक सीमाबोध।

८. बूढ़बा — ‘अहाँक नाम, आइसँ, हम आदरसँ धरब’ : नैतिक अभिधानक पृथक्करण।

९. कथावाचक — ‘बटवारा-पत्र वसुन्धराक हाथमे सौंपलनि’ : लिखित वस्तुक हस्तान्तरण।

१०. अन्तिम कहबी — ‘रघुवीर जकाँ घुरब’ : लोकस्मृतिक नवानाम।

एहि संकेतसभ मूल अध्याय ८–७९क कथाभागमे उपस्थित वाक्यांशसँ मिलाओल गेल। वाक्यांश भिन्न प्रसंगसँ लेल गेल छथि; अप्रतिपादित सूक्ष्म पृष्ठाङ्क नहि जोड़ल गेल।

समग्र आलोचनात्मक निष्कर्ष

‘क्षमाक पारी’क विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे उपन्यास पीड़ितक नाम बचाओल, अपराधीक नाम नहि मेटायल, जीवित वंशजक आत्मस्वीकृति आ अन्यायसँ प्राप्त सम्पत्तिक आंशिक वापसीकेँ एक संलग्न कथा-क्रममे आनैत अछि। वसुन्धरा केवल अनुष्ठानिक संरक्षिका नहि, नव नैतिक नियम प्रस्तावित करनिहारी छथि; बूढ़बाक अधूरा स्पर्श गवाहक सीमित शक्ति आ मानवीय कर्मक आवश्यकताक सूक्ष्म छवि दैत अछि। रघुवीरक भूमि-पत्र करुणाक दृश्यकेँ भौतिक प्रतिपूर्तिसँ जोड़ि उपन्यासकेँ कोरा भावुकतासँ बचबैत अछि। मुदा जखन केवल आंशिक जमीनक चर्चा अछि, वास्तविक भूमि-दखल आ लाभ-वितरण अस्पष्ट अछि, पूर्ववर्ती भूमि-पुनःदर्जक इतिहाससँ सम्पत्तिक सम्बन्ध स्पष्ट नहि, तथा पीड़ित परिवारसभक वैयक्तिक वाणी संक्षिप्त अछि, तखन ‘क्षमा’क पूर्णता घोषित करब अनुचित। साहित्यिक निर्णय सशर्त सकारात्मक अछि: क्षमा बदला नहि, मुदा सत्य, साक्ष्य, उत्तरदायित्व आ प्रतिपूर्ति बिना केवल स्मृति-गीत सेहो पर्याप्त नहि।

गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७९] ‘क्षमाक पारी’, मूल संयुक्त पाण्डुलिपि, अनुक्रमणिकानुसार मुद्रित पृ. २०१–२०४। पूर्वक ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’, अध्याय –७९क प्रविष्टि—पाठमात्रा ८०६ शब्द-एकक, क्रियासूचक अनुच्छेद ५६.५ प्रतिशत। ‘अध्याय [–७९] पर टिप्पणी : सामूहिक अपराध-बोध आ अन्तर-पीढ़ीगत क्षमा’ अलग परापाठ अछि, मूल कथा-घटना वा पूर्ण नैतिक निर्णयक प्रमाण नहि। अगिला क्रम: अध्याय –७८ ‘पंजीक बाहर’—लिखित वंशावलीक शक्ति, छूटल नाम आ सामाजिक बहिष्करणक प्रमाण-विवेचन।

प्रकरण २३ | मूल अध्याय –७८ — पंजीक बाहर

पाठाधार आ मूल आलोचनात्मक प्रश्न

अध्याय ‘पंजीक बाहर’ पूर्व-कथाकालक तेइसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल उपन्यासक घटना लिखित पंजीक उद्देश्यक सामान्य परिचयसँ शुरू भऽ कऽ यादवानन्द झाक यात्राविराम, वसुन्धराक आतिथ्य, अमावस्याक खेल, बूढ़बाक सन्देश आ निजी नोटबुकमे तीन घंटाक नामलेखन धरि पहुँचैत अछि। एहिमे कोनो आधिकारिक पंजी संशोधनक घटना वर्णित नहि अछि। मूल प्रश्न ई अछि जे जे अभिलेख अपन निश्चित समुदायसभक वंशावली संरक्षित करैत अछि, ओकरा कखन सम्पूर्ण समाजक ऐतिहासिक स्मृतिक मानक बना देल जाइत अछि, आ ओकर घोषित परिधिसँ बाहरक लोकक जीवन कहाँ दर्ज होइत अछि? आलोचना एहिमे उपन्यासक सामाजिक प्रतिवादकेँ स्वीकारैत, ओकर प्रमाणगत सीमा सेहो राखत।

आरम्भिक फकरा : कागच आ माटिक असमान अधिकार

‘पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि’—ई आरम्भिक वाक्य नाम-स्वीकृति आ सामाजिक अस्तित्वक अन्तर पर प्रकाश दैत अछि। कागचपर नामक अनुपस्थिति मनुष्यक वास्तविक जीवन वा ओकर धरतीसँ सम्बन्ध समाप्त नहि करैत। दोसर अर्धांश ‘कागच जकरा छोड़लक, तकरा माटि अपना लेलक’ माटिकेँ जीवित सम्बन्ध आ सामूहिक श्रमक रूपक बनबैत अछि। मुदा एतय एकटा बारीक प्रश्न अछि: माटिक अपनत्वक काव्यात्मक घोषणा भूमि-अधिकारक कानूनी संरक्षणक बराबर नहि। पहिने रघुवीर द्वारा बँटवारा-पत्र सौंपबाक प्रसंग देखबैत अछि जे लिखित दस्तावेज स्वयं अधिकार बहालीक साधन भऽ सकैत अछि। तेँ ‘कागच बनाम माटि’क द्वैतकेँ सरल अभिलेखविरोध नहि, अपूर्ण अभिलेखक आलोचना रूपमे पढ़ब अधिक सटीक।

पंजी-प्रबन्धक कथित सामाजिक परिधि

उपन्यास पंजी प्रबन्धकेँ कुल, गोत्र, मूल, विवाह सम्बन्ध आ कुल-मर्यादाक चयनित वंशावली-लेखन रूपमे रखैत अछि। ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ कुलक अभिलेखक संग चर्मकार, धीवर आ अन्य हाशियाकृत समुदायसभक अनुपस्थितिक विरोध उपस्थित करैत अछि। मुदा खास वंश-विवरण राखबाक घोषित पद्धति आ समग्र मिथिलाक सार्वभौम जनगणना एक प्रकारक संस्थागत कार्य नहि। न्यायसंगत आलोचना ई कहत जे चुनल गेल वर्गक अभिलेख जब सामाजिक स्मृतिक एकमात्र प्रतिष्ठित मापक बनि जाए, तखन चयन समाजमे असमान मान्यता उत्पन्न करैत अछि। ‘एहि पंजीमे नाम नहि’ सँ ‘समस्त ऐतिहासिक अभिलेखमे कखनो नाम नहि’क सार्वभौम

निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। पंजी प्रबन्धक ठोस ऐतिहासिक स्वरूपक स्वतन्त्र अध्ययन एहि कादम्बरी-बाह्य प्रश्न लेल अपेक्षित अछि।

पंजी-सम्मेलन आ अधिकारक संस्थागत दृश्य

कथावाचक समय-समय पर होनिहार पंजी-सम्मेलनक वर्णन करैत अछि, जतय पंजीकार नव विवाह दर्ज, पुरान लेखा जाँच आ कुल-मर्यादाक निर्णय करैत छथि। एहि सभाक प्रत्यक्ष नाट्यदृश्य अध्यायमे उपस्थित नहि; ई कथावाचक द्वारा देल पृष्ठभूमि अछि। अतः सम्मेलनक भीतर सभ पंजीकारक दृष्टिकोण, वास्तविक निर्णय अथवा प्रतिवाद देखल गेल, एहन दावा अनुचित होयत। मुदा एहन पृष्ठभूमि यादवानन्दक संस्थागत प्रशिक्षण बुझबाक हेतु आवश्यक अछि। ओ अपन पंजी-व्यवस्थापर विश्वास रखनिहार छथि; ताहि कारण गामक अनुभव हुनकर सार्वजनिक रूपसँ स्वीकृत ज्ञानक सीमा खोलैत अछि। व्यक्ति-निर्णयक सम्पूर्ण नैतिक अर्थ बुझबाक लेल एहि कथावाचकीय पृष्ठभूमि आ प्रत्यक्ष संवादक प्रमाण-स्तर अलग राखल जाए।

यात्राक व्यवधान : घोड़ाक बीमारीक कारणात्मक भूमिका

यादवानन्द सम्मेलन सँ घुरैत गढ़ नारिकेल दिस जाइत छथि, मुदा घोड़ा अचानक बीमार पड़ैत अछि। फलतः हुनका गामक चौपालमे राति बितेबाक पड़ैत अछि। ई छोट घटनाक कारण कथाक दू पृथक ज्ञान-संसारक मिलन सम्भव होइत अछि। घोड़ा स्वस्थ रहितथि तँ पंजीकारक एहि गाममे रुकबाक आवश्यकताक प्रमाण नहि छल। कथात्मक संयोग एहि अर्थमे हेतु-निर्माता अछि। मुदा ओकर बाद लगातार अनुकूल संयोग—भोजनक अभाव, वसुन्धराक सहायता, ओहिए राति अमावस्या—रचनामे उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था बनबैत अछि। ई द्रुत घटनाक्रम उपन्यासकेँ छोट पाठमात्रामे पैघ नैतिक परिवर्तन देबाक सुविधा दैत अछि, मुदा परिस्थितिक सहज सम्भाव्यता किछु कम करैत अछि।

अकालक बादक बरख : अन्नक कमी आ अतिथ्यक अर्थ

गाममे अकालक बाद भोजनक व्यवस्था अपर्याप्त अछि। ब्राह्मण टोला अतिथि-पंजीकारकेँ आश्रय दैत अछि, मुदा वसुन्धरा अपन घरसँ दूध आ फल पठबैत छथि। एहि कथामे संसाधनक असमानता केवल जाति वा धार्मिक रीति नहि; विपन्न समयमे अन्नक उपलब्धता सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। वसुन्धराक सहायता बिना प्रतिफलक अछि, मुदा एतय महिमामण्डनसँ बचल जाए: कठिन बरखमे अपन घरक दूध फल देबाक अर्थ घरेलू उपलब्धताक त्याग सेहो भऽ सकैत अछि। मूल पाठ वसुन्धराक घरक आर्थिक अवस्था आ बच्चासभक अन्नक गणना नहि दैत। ताहि कारण नैतिक उदारताक दृश्य समृद्ध अछि, मुदा स्त्रीक श्रम, पशुपालन, उत्पादन आ अतिथि-सेवाक पारिवारिक लागत ओझरि जाइत अछि।

‘शुद्ध’ दूध आ जातिसम्बन्धी संस्कारक विडम्बना

यादवानन्द दूधक स्वाद आ ‘शुद्ध’ताक प्रशंसा करैत छथि। स्रोत चर्मकार टोला बुझिते हुनकर चेहरा असहज होइत अछि। ई दृश्य अध्यायक सर्वाधिक प्रभावकारी सूक्ष्म नाट्य-व्यवस्था अछि। इन्द्रियानुभव पहिने दूधक गुणपर सकारात्मक निर्णय दैत अछि; सामाजिक जाति-ज्ञान बादमे ओहि अनुभवपर संकोच आरोपित करैत अछि। नव्य-

न्यायक भाषामे प्रत्यक्ष स्वादानुभूति आ सामाजिक शाब्दिक वर्गीकरण दू अलग ज्ञानावस्था छथि। केवल दूधक ‘शुद्ध’ स्वादसँ उत्पादकक जातिगत सामाजिक दर्जाक निर्णय नहि होइत, न स्रोत ज्ञात भेलासँ दूधक वास्तविक गुण स्वतः बदलैत। कथा एहि कारण जाति-पूर्वग्रहक विरोधमे सशक्त घटनात्मक प्रतिदृष्टान्त दैत अछि। मुदा पंजीकारक मानसिक उलटफेर अत्यन्त शीघ्र होइत अछि—असहजता तुरन्त जिज्ञासामे बदलि जाइत अछि।

मुखियाक हिचकिचाहट : मध्यस्थ शक्ति आ भय

मुखिया दूधक स्रोत बतबैत पहिने हिचकिचाइत छथि। बादमे ओ यादवानन्दकेँ पीपरक अनुष्ठान देखाबय अनिच्छासँ लऽ जाइत छथि, सोचैत जे ‘निम्न’ अनुष्ठानमे पंजीकारक रुचि खतरनाक भऽ सकैत अछि। ई प्रतिक्रिया गामक भीतर जातिगत मान्यता आ बाहरी ब्राह्मणीय अधिकारक सम्भावित जोखिम देखबैत अछि। मुखिया केवल तटस्थ दुभाषिया नहि; ओ अनुष्ठानक सामाजिक दृश्यता नियंत्रित करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा हुनकर भय अनुमान अछि; यादवानन्द वास्तवमे हिंसात्मक कार्रवाई करबाक धमकी नहि देलनि। ताहि कारण मुखियाक आशंका सामाजिक अनुभवरूपेँ समझायल जा सकैत अछि, वर्तमान पंजीकारक प्रमाणित शत्रुताक घोषणा रूपमे नहि।

अमावस्याक संयोग आ प्रदर्शनक साक्षी

ठीक ओहि राति अमावस्या होयब कथानकक सुविधाजनक, मुदा कार्यकारी संयोग अछि। पंजीकारकेँ मौखिक स्मृतिक सामान्य कथन मात्र नहि, सार्वजनिक अनुष्ठानक प्रत्यक्ष दृश्य भेटैत अछि। बच्चासभ खेलैत छथि, नाम पुकारल जाइत अछि, वसुन्धरा छोट जीवनकथा जोड़ैत छथि। अनुष्ठान एहि अध्यायमे दोहरायल क्रिया रहि कऽ प्रमाणक प्रदर्शन बनैत अछि। जँ केवल पंजीकारसँ ‘हमर पंजीमे नाम नहि’ कहल जाइत, संवाद एकटा दावामे सीमित रहित; आब ओ अपन आँखि-कानिसँ सामूहिक नामस्मरण अनुभव करैत छथि। तथापि खेलक दृश्य पीढ़ी-दर-पीढ़ीक सभ नामक ऐतिहासिक तथ्यक स्वतन्त्र प्रमाणीकरण नहि। प्रत्यक्ष देखल घटना ‘अनुष्ठान होइत अछि’; ओकर भीतर उच्चरित प्रत्येक जीवनवृत्तक सत्यापन दोसर प्रश्न।

नामक क्रम आ सामाजिक इतिहासक विस्तार

रत्ना, सोमर, मालती, हुलासा, सुखदेव, सुभागी आ गौरी—नामसभ वसुन्धराक सार्वजनिक कथामे अबैत अछि। ई एकटा साधारण सूची नहि, पूर्ववर्ती अध्यायसभक स्मृतिक नवनिर्वाचन अछि। पंजी कुलक निरन्तरता लेल नाम राखैत अछि; वसुन्धरा अन्याय, जीविकाक श्रम, मृत्यु आ स्मरणक विविध अनुभवद्वारा नामक अर्थ बनबैत छथि। मुदा नाम-मात्रक पंक्ति इतिहासक पर्याप्त रूप नहि। व्यक्ति-सम्बन्ध, समय, जन्म-मृत्यु, सामाजिक परिस्थिति आ विरोधी गवाही सेहो आवश्यक अछि। कथा कहैत अछि जे वसुन्धरा प्रत्येक नामक संग छोट कथा जोड़ैत छथि; मुदा सभ अलग जीवनकथा एतय विस्तारसँ पुनः प्रस्तुत नहि। एहि संक्षिप्ततासँ पाठकीय स्मरणक उपयोग होइत अछि, तथापि नव पाठकक स्वतन्त्र सत्यापन सीमित रहैत अछि।

वसुन्धराक प्रश्नसिद्ध ज्ञानाधिकार

यादवानन्द पुछैत छथि—‘ई नाम सभ केकर अछि?’ वसुन्धरा उत्तर दैत छथि जे ई पुरखा आ अन्याय सँ वञ्चित जीवनक नाम छथि। एहि क्षण प्रश्नकर्ता प्रशिक्षित पंजीकार छथि आ प्रामाणिक जीवन-सूचक उत्तरदाता चर्मकार

टोलाक स्त्री। ज्ञानक औपचारिक श्रेणी उलटि जाइत अछि। वसुन्धरा केवल दान देनिहारी अथवा धार्मिक आयोजनकर्त्री नहि; ओ नाम, सम्बन्ध आ छोट कथा याद रखनिहार अभिलेख-विशेषज्ञक रूपमे प्रस्तुत छथि। हुनकर ज्ञानक प्रत्यक्ष अवतार व्यक्तिगत लेखन नहि, सामूहिक वाचिक परम्परा अछि। 'शास्त्रसिद्ध' आ 'अनुभवसिद्ध' एक-दोसराक विकल्प नहि, भिन्न सामग्री आ उत्तरदायित्वक विधि बनैत अछि।

यादवानन्दक आत्मसंशय : कथानकक ज्ञान-घटना

पंजीकार स्वीकार करैत छथि जे हजारो नाम सँ भरल अभिलेखमे टोलाक एकोटा नाम नहि, आ ई प्रश्न हुनका पहिने नहि सूझल छल। कथा एहि स्वीकारोक्तिकेँ बौद्धिक घटना बनबैत अछि। घोड़ा बीमार पड़ब, दूध पीब, कबड्डी देखब—ई बाह्य क्रियासभ एहि ज्ञान-परिवर्तनक भूमिका छथि। 'हमरा एकर उत्तर नहि बुझल अछि'क विनम्रता विद्वत्ताक स्वतः पराजय नहि, परिधिक पुनर्परीक्षणक आरम्भ अछि। मुदा पंजीकार अपन संस्थाक उद्देश्य आ संरचनाक स्पष्ट प्रतिपक्ष प्रस्तुत नहि करैत। पंजीक वैध वंशावली-कार्य आ व्यापक सामाजिक अभिलेखनक कमी केना अलग-अलग छथि, एहि बौद्धिक द्वन्द्वकेँ अधिक विस्तृत शास्त्रार्थ भेटित तँ प्रसंग आरो कठोर बनि सकैत छल।

बूढबाक असाधारण सम्बोधन : श्रवणक नियमक परिवर्तन

मूल पाठ स्पष्ट करैत अछि जे सामान्यतः बूढ़बाक आवाज केवल वसुन्धरा आ सावित्रीक वंशज सुनि सकैत छथि। एहि राति बूढ़बा यादवानन्द लेल प्रथम बेर अपन आवाज खोलैत छथि, परिणाम स्वयं अनिश्चित मानैत। ई जादुई-यथार्थवादी आख्यानक नियममे अपवाद प्रस्तुत करैत अछि। पात्रक पहुँच-विस्तार कथात्मक रूपसँ आवश्यक अछि, कारण नव पंजीकारक सामने बूढ़बाक स्मृति-दर्शन प्रत्यक्ष पहुँचबाक अछि। मुदा एतय प्रश्न उठैत अछि जे अनुष्ठानक पूर्वनिर्धारित वंशसापेक्ष श्रवण-नियम कखन, किन शर्तपर बदलि सकैत अछि। कथा 'प्रयोग' कहि अपवाद स्वीकार करैत अछि; ओकर क्रियाविधान निर्दिष्ट नहि। अतः ई साहित्यिक प्रभावकारी, मुदा अलौकिक प्रणालीक सुसंगति लेल भविष्यक प्रश्न छोड़ैत दृश्य अछि।

बूढबाक द्वैत अभिलेख : कुल-मर्यादा आ सत्य-प्रेम

बूढ़बा पंजीकारसँ कहैत छथि जे पंजी कुल आ मर्यादाक अभिलेख रखैत अछि, जखन कि हुनकर स्मृति सत्य आ प्रेमक। ओ दुनू आवश्यक मानैत छथि। एहि कथनमे आलोचनात्मक संयम अछि: आधिकारिक वंशावली अनिवार्यतः नष्ट करबाक घोषणा नहि, ओकर परिधिक सीमारेखा विस्तार करबाक आग्रह अछि। तथापि 'कुल' बनाम 'सत्य'क नैतिक विरोधकेँ पूर्णतः कठोर बनाओल जाए तँ एहन भ्रम होएत जे आधिकारिक पंजीमे राखल वास्तविक वंशतथ्य सत्य नहि, आ बूढ़बाक प्रेमसँ सुरक्षित सभ स्मृति स्वतः सत्य। पूर्ववर्ती अध्यायसभ बूढ़बाक घृणाक कारण नाम बचएबाक असमर्थता दिखा चुकल अछि। तेँ बूढ़बाक अपन दावेपर सेहो आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

व्यक्तिगत नोटबुकक उद्भव : आधिकारिक व्यवस्था यथावत्

भोरे यादवानन्द झोरासँ छोट कोरा कागचक पोथी निकालैत छथि। ओ स्वयं कहैत छथि जे ई आधिकारिक पंजी नहि, शायद कखनो नहि होएत। एहि स्पष्ट वाक्यक कारण ‘छाया-पंजी’क सीमा तय होइत अछि। ई निजी वैकल्पिक अभिलेखक आरम्भ अछि, आधिकारिक जाति-नियंत्रित वंशावली-प्रणालीक वास्तविक संस्थागत सुधार नहि। व्यक्तिगत अभिप्राय परिवर्तनक प्रारम्भिक शर्त भऽ सकैत अछि, मुदा संस्थाक नियम, लेखा-केन्द्र, अभिगम वा मान्यता बदललाक प्रमाण नहि। लोकसमुदाय लेल ई पोथी उपयोगी साक्ष्य-संग्रह बनि सकैत अछि, किन्तु ओकर सार्वजनिक उपयोग स्वयं तय नहि।

तीन घंटाक गवाही : वाचिक विस्तार आ लिखित संकुचन

वसुन्धरा तीन घंटा धरि पीढ़ी-दर-पीढ़ी नाम आ सम्बन्ध कहैत छथि, यादवानन्द प्रत्येक नाम, सम्बन्ध आ छोट कथा लिखैत छथि। उपन्यास एहि दीर्घ सार्वजनिक श्रुतिलेखनकेँ अत्यन्त संक्षिप्त कथनमे समेटैत अछि। आख्यान-अवधिक दृष्टिसँ ई विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: लम्बा अभिलेखनक श्रम दू वाक्यमे समाहित अछि, जखन कि पंजीकारक आश्चर्य आ आत्मस्वीकृति विस्तृत संवाद पबैत अछि। एतय नैतिक परिवर्तनक दृश्य, श्रमक प्रक्रियासँ अधिक कथात्मक स्थान लैत अछि। तीन घंटाक कथनमे गलती सुधरब, अलग वक्ताक प्रतिवाद, घटनाक तिथि जाँच, नामक पुनरुक्ति अथवा वंशसम्बन्धक अस्पष्टता केना सुलझल, पाठ नहि दैत। जकरा सुरक्षित रखबाक दावा अछि, ओकर लेखन-पद्धति पाठकसँ अधिकांशत: नुकायल रहैत अछि।

कोरा कागच आ अभिलेखक नूतन आरम्भ

खाली पोथीक कथा-चिह्नक अर्थ मात्र ताड़पत्रीय लेखनक पुनरावृत्ति नहि। अध्याय –८० मे हरिपति तीन मास कथा सुनि पाण्डुलिपि लिखैत छथि; –७८ मे यादवानन्द तीन घंटा सामुदायिक वंशसूचना लिखैत छथि। पहिल संग्रह साहित्यिक कथाक रूप पर केन्द्रित छल; दोसर नाम, सम्बन्ध आ वंशक्रम पर। दू प्रकारक लेखनमे पृथक प्रमाण-पद्धति अपेक्षित अछि। कथा हरिपतिक संशोधन-श्रम आ यादवानन्दक तत्क्षण लेखन देखबैत अछि, मुदा दुनू ठाम अभिलेखक सार्वजनिक समीक्षा, नकल आ संरक्षणक विधि अनिश्चित अछि। ‘कोरा कागच’ अभिलेखीय नवजीवनक बिम्ब अछि, पूर्ण सामाजिक न्याय-व्यवस्था नहि। एकर समृद्धि एहि असम्पूर्णताकेँ स्पष्ट चिन्हित करबामे अछि।

वैकल्पिक पंजीक अभिगम : के पढ़त, के सुधरत?

यादवानन्द आश्वासन दैत छथि जे जाबे धरि जीवित छथि, नामसभकेँ आधिकारिक पंजीक बराबर आदर देताह। मुदा ओ ई नहि कहैत जे पोथी टोलामे रहत, ओकर प्रति बनेत अथवा वसुन्धराक सन्तानसभकेँ ओकरा देखबाक अधिकार भेटत। निजी लेखन समुदायसँ प्राप्त ज्ञानकेँ फेर व्यक्ति-स्वामित्वमे सीमित करबाक जोखिम उठबैत अछि। अध्याय –८० मे हरिपतिक शिष्यक हेतु सुरक्षित अप्रकाशित पोथी प्रश्न उत्पन्न करैत छल; एतय यादवानन्दक निजी नोटबुक वैह समस्या दूसरे अभिलेखी रूपमे उठबैत अछि। भविष्यक हस्तगत व्यक्ति अज्ञात अछि। पाठ एही अनिश्चितताकेँ स्वीकार करैत अछि—एहि संयमक आलोचनात्मक महत्त्व अछि।

गवाहीक विश्वसनीयता : विश्वास, स्रोत आ पुनरावलोकन

वसुन्धरा सार्वजनिक अनुष्ठानक संरक्षिका छथि; हुनकर नामस्मृति अनेक पीढ़ीक श्रोता आ सहभागी द्वारा पुनरुच्चारित होइत अछि। एहिसँ गवाहीक सामाजिक परम्परा स्थापित होइत अछि। मुदा वंशावली-प्रमाण लेल व्यक्तिक नाम, जन्मसम्बन्ध, पिता-माता, समय, स्थान आ वैवाहिक कड़ीक सत्यापन आवश्यक भऽ सकैत अछि। मूल अध्यायमे यादवानन्द ‘हर नाम, हर सम्बन्ध, हर छोट कथा’ लिखैत छथि, किन्तु कोनो विशेष विवादित सम्बन्धक परीक्षण नहि दिखाओल गेल। तें नव पोथी वसुन्धराक गवाहीक प्रामाणिक प्रतिलेखन होयबाक प्रस्ताव अछि; प्रत्येक ऐतिहासिक तथ्यक निर्विवाद प्रमाण नहि। मौखिकता अविश्वसनीय आ लेखन विश्वसनीय—एहन सरल द्वैत अपनहि असिद्ध अछि।

नव्य-न्याय : अभिलेखीय अभाव आ अस्तित्व-अभावक अन्तर

पक्ष चर्मकार टोलाक पूर्वज छथि, साध्य हुनकर सामाजिक अस्तित्व वा स्मृतिक मान्यता, हेतु आधिकारिक पंजीमे नामक अनुपस्थिति। एहि अभावसँ सामाजिक अस्तित्व-अभावक निष्कर्ष निकालब सुस्पष्ट हेत्वाभासक जोखिम अछि। पंजीक विषय-परिधि ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थक वंशावली हो तँ ओकर बाहरक नाम नहि भेटब अपेक्षित परिणाम भऽ सकैत अछि। मुदा एतहिसँ एहि परिधिक आधारपर सामाजिक मान्यता वितरणक राजनीति प्रश्नोत्तरक विषय बनैत अछि। ज्ञानमीमांसक दोष दू दिशामे सम्भव अछि: पंजीमे नहि अछि तेँ लोक नहि छल; अथवा लोकमे कहल जाइत अछि तेँ बिना जाँचक प्रत्येक विवरण सिद्ध अछि। कथा एहि बीच वैकल्पिक शब्दगवाहीक महत्त्व प्रस्तुत करैत अछि।

प्रमाण-भेद : प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान आ अभाव

यादवानन्द प्रत्यक्ष दूध ग्रहण करैत छथि आ अनुष्ठान देखैत छथि। वसुन्धरासँ पुरखाक नाम सुनब शब्दगवाहीक स्तर अछि। पंजीमे टोला-नाम नहिं भेटब अभिलेखीय अनुपस्थितिक विवरण अछि। ओथि पर ‘ई कोन प्रकारक न्याय?’क आत्मप्रश्न नैतिक अनुमान आ मानदण्डक क्षेत्र अछि। बूढ़बाक आवाज सुनबाक अनुभव कथाविश्वक अलौकिक प्रत्यक्षक दावा अछि, बाह्य इतिहासकारक सत्यापित साक्ष्य नहि। ई पाँचू स्तर मेटि देबासँ अध्यायक बौद्धिक सूक्ष्मता घटैत अछि। सत्यक नैतिक अभिप्राय आ तथ्यानुसन्धानक विधिकेँ सहचरी, मुदा पृथक प्रक्रिया मानल जाए।

अवच्छेदकक सावधानी : ‘पंजी’ एकहि संस्था नहि

अध्यायमे ‘पंजी’ प्रथमतः कुलगत वंशावलीक विशिष्ट विधा अछि; बूढ़बाक वाणीमे ‘मिथिलाक स्मृति’क प्रतीक; यादवानन्दक निजी पोथीमे विस्तारित मनुष्य-सूची; गीतमे सामाजिक अस्तित्वक रूपक। ई एकहि शब्दक चारि कार्य छथि। जँ व्याख्यामे सभठाम ‘पंजी’ एक समान सार्वभौम जनअभिलेख मानि लेल जाए तँ आलोचनाक पक्ष बदलि जाइत अछि। नव्य-न्यायीय अवच्छेदकद्वारा स्पष्ट करब उपयोगी अछि—कुलगत पंजीक सीमा, सामाजिक इतिहासक सीमा आ नैतिक मान्यताक सीमा एक वस्तु नहि। कथाक साहित्यिक शक्ति एहिमे अछि जे ओ सीमासभकेँ एक-दोसराक सोझाँ आनैत अछि; दार्शनिक कठोरता लेल भेद बनौने रखब आवश्यक अछि।

नाम-सूचीमे स्त्री आ श्रमक प्रवेश

वसुन्धराक नाम-उच्चारणमे रत्ना, मालती, सुभागी, गौरी आदि स्त्री-नाम सेहो उपस्थित अछि; सोमर, हुलासा, सुखदेवसँ सम्बन्धित स्मृति विभिन्न सामाजिक अनुभवकेँ संग रखैत अछि। समापन गीत विशेष रूपसँ दलित, स्त्री आ गरीबक कागचसँ छूटबाक प्रश्न उठबैत अछि। मुदा ई तीनू सामाजिक श्रेणी परस्पर समानार्थी नहि। एक दलित स्त्री गरीब भऽ सकैत छथि, मुदा सभ स्त्री वा सभ गरीब एकहि जाति अथवा अभिलेखीय स्थितिमे नहि। एहि बहुविध वञ्चनाक उल्लेख समाजक अनुभवक व्यापकता दैत अछि; ऐतिहासिक अध्ययन लेल पृथक जाति, लिंग, पेशा आ आर्थिक स्थितिक साक्ष्य चाही।

स्त्रीक संग्रहकर्ता-कार्य बनाम लिखनिहार पुरुष

वसुन्धरा अपन मुखसँ तीन घंटाक वंशवृत्त सुनबैत छथि; यादवानन्द लेखनीसँ ओकरा कागचपर उतारैत छथि। एहि दृश्यमे ज्ञानक मूल स्रोत स्त्री छथि, लिखित सामाजिक प्रतिष्ठाक सम्भावित धारक पुरुष। एतय लैंगिक प्रतिनिधित्वक बारीक प्रश्न अछि: जँ कोनो भविष्यक पाठक पोथी पाएत तँ रचयिताक श्रेय केकरा भेटत? ‘यादवानन्द झाक छाया-पंजी’ नाम देल जाएत कि ‘वसुन्धराक मौखिक कुलवृत्त’? मूल पाठ अन्तिम शीर्षक निर्धारित नहि करैत। लेखककीय श्रेयक प्रश्न अध्याय –८०क इन्दुमती–हरिपति विवादसँ सीधे जुड़ैत अछि। एहि पुनरावृत्तिमे उपन्यास अपन साहित्यिक स्वामित्वक प्रश्नकेँ इतिहास-लेखनपर लागू करैत अछि।

बूढ़बाक स्मृति कतेक निष्पक्ष?

बूढ़बाक स्मृतिक केन्द्र ‘सत्य आ प्रेम’ अछि, मुदा पूर्व अध्यायसभमे यशपतिक नाम बचएबाक विषयमे अपन घृणाक कारण असमर्थता स्वीकार भऽ चुकल अछि। एतय बूढ़बा स्वयं केओ सर्वथा निष्पक्ष अभिलेखकर्ता छथि, एहन निष्कर्ष उचित नहि। प्रेम चयनक प्रेरणा बनि सकैत अछि, मुदा चयनक पक्षपात सेहो उत्पन्न करि सकैत अछि। पंजीकारक कुलगत सीमांकन आ बूढ़बाक भावात्मक चयन दुनूकेँ समीक्षा लेल पारदर्शी नियम चाही। वैकल्पिक स्मृतिव्यवस्थाक महत्त्व केवल ‘अधिक करुणामय’ होयब नहि, बल्कि अपना त्रुटि सुधरबाक सार्वजनिक अवसर उपलब्ध करब अछि।

बूढ़बाक पहिल बाहरी श्रोता : चमत्कारक कथात्मक सुविधा

यादवानन्दक कानमे बूढ़बाक आवाज पहुँचनाइ पात्रक रूपान्तरणकेँ तत्क्षण तीव्र करैत अछि। मुदा गामक लोकक वाचिक प्रमाण, जातीय संकोचक आत्म-अनुभव आ वसुन्धराक पुरखाक इतिहास एतए पहिने सँ उपस्थित छल। जँ पंजीकार केवल एहि अलौकिक वाणी सँ प्रेरित होथि, तँ हाशियाकृत स्त्रीक गवाहीक स्वायत्त प्रभाव घटि सकैत। पाठमे पंजीकार बूढ़बाक आवाज सुनबाक पहिनेहि पंजीक अन्यायपर प्रश्न उठबैत छथि—ई क्रम अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि। तें चमत्कार परिवर्तनक एकमात्र कारण नहि, आधिसांकेतिक पुष्टि अछि। एहि क्रमकेँ जोगा रखलासँ वसुन्धराक ज्ञानाधिकार सुरक्षित रहैत अछि।

जातिगत पूर्वग्रहक पराजयक सीमा

यादवानन्द चर्मकार टोलाक दूध पी लेने छथि, अनुष्ठान देखलनि, बूढ़बाक आवाज सुनलनि आ वैकल्पिक नोटबुक बनौलनि। एहि सभ परिवर्तनक कथन अछि; मुदा ओ अपन सामाजिक जीवनमे जातिसम्बन्धी व्यवहार पूर्णतः बदललनि, एहन विस्तृत प्रमाण नहि। अन्य पंजीकार, सम्मेलन अथवा ब्राह्मण टोलाक लोक हुनकर निर्णयक बारेमे किछु कहैत छथि कि नहि, वर्तमान अध्याय नहि बतबैत। अतः व्यक्तिगत आत्मबोधक सफलता आ संस्थागत जाति-व्यवस्थाक समाप्ति एक नहि। सामाजिक रूपान्तरण लेल अन्य पंजीकारक सहमति, अभिलेखक परिवर्तन आ छूटल समुदायक सक्रिय भागीदारी जरूरी रहत, मुदा ई सभ अगिला कथामे प्रमाणित होएबाक विषय अछि।

घटना-घनत्व : बाह्य कार्य आ ज्ञानपरिवर्तन

अध्यायमे सीमित बाह्य घटनासभ—पंजीकारक यात्रा, घोड़ाक बीमारी, अतिथिशाला, दूधक आगमन, पीपर धरि यात्रा, कबड्डीक अवलोकन, आवाजक श्रवण, पोथीक उद्घाटन आ तीन घंटाक लेखन—एकटा क्रम बनबैत अछि। ज्ञानगत परिवर्तन आरम्भिक जाति-संकोचसँ वंशावलीक सीमा स्वीकार धरि अछि। पाठमे घोड़ाक बीमारीक कारण पूरा परिचय सम्भव होइत अछि, वसुन्धराक वाचिक सामग्री पंजीकारक प्रश्न बदलैत अछि, आ सवालक परिणाममे निजी लेखनक क्रिया जन्म लैत अछि। एहि कारण घटना-श्रृंखला यथोचित कारणात्मक सन्धि रखैत अछि, यद्यपि अनेक संयोग द्रुत अछि।

अवधि आ कथन-गति : एक राति सँ तीन घंटा

कथावाचक पंजी-व्यवस्थाक दीर्घ इतिहास कुछ वाक्यमे समेटैत अछि; यादवानन्दक एक रातिक अनुभवमे विस्तृत प्रत्यक्ष संवाद प्रस्तुत करैत अछि; भोरेक तीन घंटाक नाम-लेखन केवल एक छोट कथनमे वर्णित अछि। फलतः पुस्तक-निर्माणक श्रमसँ अधिक पंजीकारक मनोवैज्ञानिक हिलकोरा पाठकीय चेतनामे बचैत अछि। एहि कथन-अवधिक असमानता एकटा स्पष्ट औचित्य रखैत अछि—अभिलेखक प्रश्न खोलब मुख्य उद्देश्य अछि। तथापि आलोचना ई नोट करत जे वास्तविक नाम-संग्रहक पद्धति अदृश्य रहबाक कारण कथाक अभिलेखी यथार्थवाद सीमित अछि।

आवृत्ति : दूध, पीपर, नाम आ पोथीक बदलेल कार्य

चर्मकार टोलाक सेवा पूर्ववर्ती अध्यायसभमे विविध संकटमे छल; एतय दूध जातिगत शुद्धताक संकल्पनाक परीक्षा बनैत अछि। पीपर पहिने मृतक-स्मरणक स्थल छल, आब पंजीकारक वैचारिक जागरणक स्थल बनैत अछि। नाम पहिने कबड्डीक पारीमे उच्चरित छल, आब लिखित सम्बन्ध-सूची बनैत अछि। पोथी हरिपतिक सर्जनशील पाण्डुलिपिसँ यादवानन्दक परिवार-विवरणक अभिलेखमे बदलैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसभक कारण साहित्यिक प्रगति वास्तविक अछि। मुदा प्रत्येक नव बाहरी आगन्तुक गामक चमत्कार देखि तत्काल परिवर्तित होइत रहत तँ कथात्मक युक्तिक अनपेक्षित दोहरावक जोखिम सेहो अछि।

रस, ध्वनि आ सामाजिक औचित्य

यादवानन्दक दूधक स्रोतपर असहजता अल्प लज्जाक दृश्य अछि; बच्चासभक खेल देखलाक बाद विस्मय आ अंततः विनम्रता उत्पन्न होइत अछि। करुणक आधार छूटल नामक इतिहास, शान्तक सम्भावना नव अभिलेखक संकल्प अछि। ‘कागच सीमित’ आ ‘माटि विशाल’क ध्वनि दस्तावेजक सीमा आ जीवनक व्यापकता दर्शबैत अछि। मुदा माटिक विशालता लिखित प्रमाणक आवश्यकता समाप्त नहि करैत। औचित्यक कसौटीपर घटना-स्थल पीपर आ अमावस्या उपयुक्त अछि, मुदा लगातार संयोग आ एक रातिमे गहन सामाजिक आत्मपरिवर्तन पात्रक संघर्षकेँ संक्षिप्त करैत अछि।

समानान्तर इतिहासक अभिलेखीय नीति

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ अध्यायकेँ पढ़लापर स्पष्ट प्रश्न उठैत अछि: अभिलेखक अधिकार ककरा अछि, स्रोत-समुदायकेँ लेखनक निर्णयमे केहन हिस्सा भेटैत अछि, आ अधूरे वंशावलीक प्रतिपूरक संरचना केना टिकत? वसुन्धराक गवाही ‘तथ्य’ बनबाक पहिने हुनकर वाणी आ नामसहित सुरक्षित रहब आवश्यक अछि। यादवानन्दक वैकल्पिक पोथी व्यक्तिगत ईमानदार प्रयास थिक; मुदा सार्वजनिक प्रतिलिपि, खुला जाँच, नामभेदक सूचक, स्रोतसम्बन्धी नोट आ समुदायिक अभिगमबिना ओकर भविष्य असुरक्षित अछि। पाठक ‘आधा स्मृति अन्हारमे’ रूपक सामाजिक असमानता पर तीक्ष्ण टिप्पणी थिक, पर जनसंख्याक वास्तविक आधा अनुपातक गणितीय दावा नहि।

इतिहासक तुलना : पंजीव्यवस्थाक चरित्र आ लेखककीय टिप्पणी

मूल अध्यायोत्तर टिप्पणी ‘पंजी प्रबन्ध आ सामाजिक बहिष्करण’ शीर्षकसँ पंजीक ऐतिहासिक चयन आ लेखकक अपन पंजी-अनुसन्धानक पृष्ठभूमिक उल्लेख करैत अछि। ई परापाठ अध्यायक अभिप्राय बुझबाक स्रोत अछि, मुदा यादवानन्द नामक व्यक्ति, हुनकर घोड़ाक बीमारी अथवा तीन घंटाक गवाहीक ऐतिहासिक सत्यापन नहि। टिप्पणी स्वयं पात्र आ घटना पूर्णतः काल्पनिक बतबैत अछि। ‘छाया-पंजी’ सेहो एहि अर्थमे कथा-निर्मित वैकल्पिक अभिलेखक प्रतीक अछि। वास्तविक पंजी-इतिहासक विस्तृत वर्ष, स्थान आ प्रविधिक दावासभ स्वतन्त्र ऐतिहासिक स्रोतपरीक्षण माँगैत अछि; साहित्यिक समीक्षा ओहि अनुपस्थित प्रमाणकेँ स्वयं गढ़ि नहि सकैत।

सामाजिक संवेदनाक उपलब्धि आ कथात्मक सीमा

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि दूध, अनुष्ठान आ निजी पोथीक तीन ठोस वस्तु-स्पर्शसँ जाति-चयनक समस्या दृश्य बनाओल अछि। वसुन्धरा दानी मात्र नहि, ऐतिहासिक गवाहीक स्वतन्त्र धारक छथि। पंजीकार अपन अज्ञान स्वीकार करैत छथि आ निजी कार्यक सीमाक स्पष्ट उल्लेख करैत छथि—एहि आत्मसावधानीमे कथा एक विशेष नैतिक परिपक्वता प्राप्त करैत अछि। रचनाक सीमा ई जे संस्थागत प्रतिरोधक स्वर, अन्य पंजीकारक प्रतिक्रिया, वसुन्धराक गवाहीक प्रतिलिपिक अधिकार, पंजी-नियमक संशोधन आ अन्य समुदायक समान आवश्यकता विस्तार नहि पबैत। जादुई बूढ़बाक प्रत्यक्ष सम्बोधन सेहो आत्मपरिवर्तनकेँ अत्यन्त द्रुत करबाक उपकरण बनैत अछि।

घटना-प्रमाण-परिणाम सारणी

घटना | पाठ-सिद्ध परिणाम | असिद्ध अथवा अनिर्णीत पक्ष

पंजी-सम्मेलनक पृष्ठभूमि | चयनित कुलक अभिलेखीय व्यवस्था वर्णित | प्रत्येक ऐतिहासिक पंजीक वास्तविक सीमा स्वतन्त्र परीक्षणयोग्य

घोड़ाक अचानक बीमारी | गाममे राति रुकबाक कारण | संयोगक बाह्य इतिहास नहि

वसुन्धराक दूध आ फल | जाति-सीमापार अतिथिसेवा | घरक आर्थिक लागत अज्ञात

दूधक स्रोतपर असहजता | पंजीकारक जातिगत संस्कार दृश्य | स्थायी व्यवहारपरिवर्तन अजाँचल

अमावस्याक कबड्डी | पुरखाक सार्वजनिक नामस्मरण | सभ नामक स्वतन्त्र दस्तावेजी सत्यापन नहि

वसुन्धराक पुरखा-कथा | मौखिक वंशसूचनाक प्रस्तुति | विवादित सम्बन्धसभक अलग जाँच नहि

यादवानन्दक आत्मस्वीकृति | पंजीक चयनित परिधिपर प्रश्न | आधिकारिक सुधार एखन नहि

बूढ़बाक आवाज | पंजीकार लेल अलौकिक साक्षी-प्रसंग | श्रवण-नियमक विस्तृत कारण नहि

निजी कोरा पोथी | वैकल्पिक अभिलेखक आरम्भ | आधिकारिक पंजी बनल नहि

तीन घंटा नाम लिखब | सम्बन्धसहित व्यक्तिगत प्रतिलेखन | नकल, शुद्धता-परीक्षण, जन-अभिगम अनिर्णीत

पोथी सुरक्षित रखबाक वचन | व्यक्तिगत नैतिक प्रतिबद्धता | भविष्यक संस्था आ उत्तराधिकार अज्ञात

समापन गीत | समावेशी स्मृतिक सांस्कृतिक प्रतिज्ञा | विधिक सामाजिक समानता स्वतः स्थापित नहि

मूल पाठक सत्यापित साक्ष्य-सूचक

१. ‘पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि’ — आरम्भिक फकरा आ अस्तित्वक अन्तर।

२. ‘एतेक शुद्ध, एतेक स्वादिष्ट!’ — दूधक अनुभूतिक आरम्भिक प्रशंसा।

३. ‘चर्मकार टोलाक अछि, पंडितजी।’ — स्रोतक सामाजिक पहचान।

४. ‘ई... ई नाम सभ केकर अछि?’ — अभिलेखी प्रश्नक जन्म।

५. ‘हमर सभक पुरखाक, पंडितजी’ — वसुन्धराक ज्ञानाधिकार।

६. ‘हमरा आइ धरि ई प्रश्न कहियो नहि उठल छल’ — पंजीकारक आत्मसंशय।

७. ‘हमरा एकर उत्तर नहि बुझल अछि।’ — ज्ञानेतर सीमा स्वीकार।

८. ‘हम अहाँकेँ कोनो शास्त्र नहि सिखायब।’ — बूढ़बाक संवादक सीमा।

९. ‘दुनू आवश्यक अछि’ — दू अभिलेख-व्यवस्थाक सहअस्तित्व।

१०. ‘ई आधिकारिक पंजी नहि होयत’ — निजी पोथीक संस्थागत सीमा।

११. ‘हमरा हर नाम कहू’ — मौखिक साक्ष्यक लेखन-आमन्त्रण।

१२. ‘जाबे धरि हम जीबैत छी’ — व्यक्तिगत संरक्षणक सीमित वचन।

१३. ‘कागच सीमित हे, माटि विशाल रे’ — गीतक अभिलेखीय रूपक।

ई उद्धरणसंकेत मूल खण्ड–०, अध्याय [–७८]क दृश्य आ गीतसँ लेल गेल छथि; प्रकाशित अनुक्रमणिकाक २०५–२०८ पृष्ठ-परास समग्र अध्यायकेँ सूचित करैत अछि, अलग-अलग वाक्यक सटीक पृष्ठस्थल एतय सत्यापित नहि।

समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय निर्णय

‘पंजीक बाहर’ उपन्यासमे अभिलेखक नैतिक सीमाक अत्यन्त प्रभावी लघु आख्यान अछि। एकटा पंजीकारक दूध पीबासँ शुरू भेल जातिगत संकोच, अमावस्याक खेलमे नामसभक श्रवण, बूढ़बाक साक्षी-वाणी आ वसुन्धराक तीन घंटाक मौखिक प्रतिवेदन मिलि एकटा व्यष्टिगत ज्ञानपरिवर्तन रचैत अछि। मुख्य उपलब्धि ई अछि जे समाजक स्मृति केवल लिखित कुल-प्रतिष्ठाक संस्थासँ पूर्ण नहि—पीड़ित आ श्रमिक लोकक अपन पारिवारिक इतिहास सेहो आवश्यक अछि। खास गुण ई जे पंजीकार अपना निजी पोथीकेँ आधिकारिक पंजीक बराबर मान्यता भेटि गेल, एहन मिथ्या दावा नहि करैत। सीमा ई अछि जे व्यक्तिगत साक्षात्कारसँ सामूहिक संस्थागत सुधारक मार्ग नहि देखाओल गेल; वैकल्पिक पोथीक स्रोत-समीक्षा, प्रतिलिपि, संरक्षण आ सामुदायिक नियन्त्रणक प्रश्न अनिर्णीत अछि। अध्याय न्यायसंगत स्मृतिक आरम्भक प्रभावशाली उदाहरण अछि, पूर्ण अभिलेखी समानताक सिद्धि नहि।

प्रमाण-सूचना आ अगिला अध्यायक सन्धि

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७८] ‘पंजीक बाहर’, मूल संयुक्त Word पाठ; मुद्रित अध्याय-सीमा २०५–२०८। दोसर स्रोत : पूर्वक ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’, अध्याय –७८ प्रविष्टि। मूल पाठक बादक ‘पंजी प्रबन्ध आ सामाजिक बहिष्करण’ टिप्पणीकेँ स्वतन्त्र परापाठ मानल गेल अछि; ओहि टिप्पणीमे यादवानन्दक पात्र आ घटना काल्पनिक घोषित अछि। अगिला प्रकरण अध्याय –७७ — ‘बूढ़बाक मौन’, जतय वसुन्धराक उत्तराधिकार आ मौनक कथा-कार्यक समीक्षा रहत।

प्रकरण २४ | मूल अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन

पाठाधार, अध्यायक वास्तविक सीमा आ मुख्य प्रश्न

‘बूढ़बाक मौन’ पूर्व-कथाकालक चौबीसम स्वतन्त्र अध्याय थिक। मूल अध्यायमे दस बरखक अन्तराल, कौशल्याक अनुष्ठान-उत्तराधिकार, बूढ़बाक आवाज क्षीण होयब, अमावस्याक मौन, नाम-भ्रम, गोदावरीक प्रश्न, सामूहिक साक्षी-अनुष्ठान, प्रकाश आ वाणी-मध्य पुनरागमन तथा वार्षिक ‘बूढ़बा-स्मरण’क स्थापना क्रमशः उपस्थित अछि। मूल अध्यायपछातिक ‘देखभाल करनिहारक थकान आ पारस्परिकताक आवश्यकता’ टिप्पणी लेखककीय परापाठ अछि, स्वतन्त्र चिकित्सकीय प्रमाण नहि। एहिमे मुख्य आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि—साक्षी

बननिहारक निज जीवन यदि सामाजिक स्मृतिसँ ओझराइ जाए, तँ स्मृतिक संस्था कतेक टिकाऊ बनि सकैत अछि?

पूर्वाध्यायक ‘छाया-पंजी’ आ साक्षीक संकट

अध्याय –७८ मे यादवानन्द झा वसुन्धराक पुरखाक नाम निजी कागचमे उतारैत छथि। एहि क्रियासँ जीवित समुदाय अपन इतिहासक वैकल्पिक लिखित आधार पबैत अछि। –७७ मे पुनः बूढ़बाक स्मरणशक्तिपर प्रश्न उठैत अछि। ई संयोग कथानकमे अर्थपूर्ण सन्धि बनबैत अछि: लिखित प्रतिलेख सामुदायिक स्मृतिक एक माध्यम बनलाक बाद मूल अलौकिक साक्षी स्वयं असुरक्षित देखाइत छथि। तथापि कथा गोदावरीक समाधानमे लिखित नोटबुकक प्रत्यक्ष उपयोग नहि देखबैत; समाधान फेर वाचिक, गीतात्मक आ सामुदायिक अछि। अतः ‘छाया-पंजी’ आ ‘बूढ़बा-स्मरण’केँ परस्पर पूरक मानल जा सकैत अछि, मुदा मूल दृश्यमे एकर संस्थागत संयोजन सम्पन्न भेल कहब प्रमाणसँ आगाँ बढ़ब।

दस बरखक छलाँग : व्यक्तिक क्षय आ संस्थाक स्थिरता

पहिल कथन अछि जे दस बरख बीति गेल अछि। वसुन्धराक बेटी कौशल्या अनुष्ठानक भार सम्हारैत छथि; गामक जीवन सामान्य लयमे चलैत रहल। एहि सारांशमे सामाजिक दीर्घ अवधि अत्यल्प शब्दमे समेटल गेल अछि। दीर्घकालीन स्मरण-व्यवस्थाक स्थायित्वक पृष्ठभूमि बनि गेलाक बाद बूढ़बाक थकान अधिक चौंकबैत अछि। मुदा कौशल्या कतय, कोन परिस्थिति मे उत्तराधिकारी बनलीह, वसुन्धरा जीवित छथि कि नहि—ई विशिष्ट प्रसंग पाठ नहि दैत। अधिकारक हस्तान्तरणक परिणाम स्पष्ट अछि, प्रक्रिया अनिर्दिष्ट। कथा एतय इतिहासक अन्तर्समय संकुचित कऽ एक रातिक संकटकेँ नाटकीय केन्द्र बनबैत अछि।

कौशल्या : उत्तराधिकारिणीसँ संकट-पहिचानक सक्रिय पात्र

कौशल्या केवल अनुष्ठानक पारम्परिक नेतृत्व नहि करैत छथि। ओ बूढ़बाक आवाजमे बदलाब पहिचानैत छथि, हल्ला अथवा सार्वजनिक अफवाह पर भरोसा नहि करैत सीधे पीपरक जड़ि लग जाइत छथि, प्रश्न पूछैत छथि, फेर गोदावरीक प्रस्तावक आधारपर सामूहिक स्मरण आयोजित करैत छथि। हुनकर निर्णय तीन तहमे अछि—संकट सुनब, सलाह ग्रहण करब आ नव विधिक सार्वजनिक क्रियान्वयन। स्त्रीक एहि सक्रिय ज्ञानक अभ्यासकेँ ‘गोदावरीक सलाह सुनलीह’ कहि छोट नहि कएल जाए। तथापि बूढ़बाक आन्तरिक व्यथा हुनका प्रत्यक्ष ज्ञात नहि; हुनकर अनुमान कमजोर आवाज आ असफल उपस्थिति पर आधारित अछि। ई सीमित दृष्टिकेन्द्रण मूल घटनाक सम्भाव्यता बढ़बैत अछि।

मौनक पहिल दृश्य : निर्णायकक अनुपस्थिति

अमावस्याक राति कबड्डी आरम्भ होइत अछि, मुदा बूढ़बा निर्णायकक भूमिकामे नहि आबैत छथि। बच्चासभ प्रतीक्षा कऽ आपसमे पुछैत अछि—‘बूढ़बा किएक नहि आयल?’ एहि सूक्ष्म मंचनमे अनुष्ठानक पुरान संरचना तत्क्षण टूटैत अछि। बूढ़बाक अनुपस्थिति केवल स्वरक कमी नहि, सार्वजनिक नियमक अस्थिरता अछि। खेल खेलेनिहार बच्चासभ स्वयं निर्णयक कारण नहि जानैत। कौशल्या भयभीत होइत छथि, किएक तँ जे व्यक्ति हर

रातिक भरोसा छल, ओ अकस्मात् अनुपलब्ध देखाइत अछि। एतय नकारात्मक घटना—कोनो पात्रक उपस्थित नहिं होयब—कथानकमे सकारात्मक कारणात्मक मोड़ बनैत अछि।

असामान्य आवाज : श्रवणपर आधारित दृश्यता

बहुत कालक बाद बूढ़बाक अत्यन्त क्षीण आवाज उठैत अछि, जे 'बहुत दूरसँ, बहुत गहींरसँ' अबैत सन वर्णित अछि। दृश्यकोण भौतिक देहसँ नहि, आवाजक तीव्रता, समयक विलम्ब आ कौशल्याक प्रतीक्षासँ निर्मित अछि। कथावाचक बूढ़बाक आत्मिक थकानकेँ पहिने पाठकक सामने पूर्णतः खोलैत नहि; ओ ध्वनिक दुर्बलताक माध्यमसँ रहस्य रचैत अछि। एहि अर्थमे 'मौन' ध्वनि-अभाव मात्र नहि, दूरीक अनुभूति बनैत अछि। मुदा ध्वनिमात्रसँ थकानक निश्चित कारण ज्ञात नहि होइत। कथा बूढ़बाक बादक व्याख्याद्वारा अनुभवक अर्थ निश्चित करबाक प्रयत्न करैत अछि—एहि दू क्षणक प्रमाण-स्तर पृथक रहत।

'हुलासा' अथवा 'हुलासी' : स्मृति-दोषक पाठसिद्धता

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि—'हुलासा... वा शायद हुलासी... सुखदेव, वा सुरेन्द्र...'। एहि अंशमे नाममात्रक अनिश्चितता नहि, अपन केन्द्रीय कार्यक अस्थायी विफलताक अनुभव अछि। हुलासा आ हुलासी दू भिन्न उच्चारण; सुखदेव आ सुरेन्द्र तऽ पृथक नाम छथि। यदि पात्रक वाणीकेँ कथाभितर सीधा गवाही मानल जाए तँ ओहि क्षण यथार्थ नाम पुनःप्राप्त करबामे कठिनाई अछि। बादमे बूढ़बा स्वयं 'हम भुला नहि रहल छलहुँ' कहैत छथि, मुदा एहि उत्तरवर्ती स्पष्टीकरणसँ पहिल अनुभवक शब्दशः अस्थिरता नहि मिटैत। एतय घटनाक दो सम्भावित व्याख्या अछि—वास्तविक अस्थायी स्मृति-भ्रम, अथवा दीर्घ थकानक कारण स्मरणक अभिगममे बाधा। पाठ दुनूक बीच निर्णायक स्वतन्त्र परीक्षा नहि दैत।

स्मृतिक विफलता बनाम स्मृतिक उपलब्धताक संकट

किछु तथ्य स्थायी रूपसँ बिसरि जेबाक आशङ्का आ विशिष्ट क्षणमे स्मरणक सामग्री मुँह पर नहि आबि सकबाक अवस्था अलग भऽ सकैत अछि। बूढ़बा 'हमरा डर लगैत अछि जे हम भुला रहल छी' कहैत छथि—ई मनक अनुभवक गवाही अछि, निश्चित निदान नहि। आगे ओ आत्मसमीक्षामे थकानक कारण बतबैत छथि—ई पात्रक नव अर्थनिर्धारण अछि। एतय आलोचनात्मक दृष्टिसँ 'अवधारणात्मक स्मृतिलोप नहि भेल' कथनकेँ स्वतन्त्र तथ्य घोषित नहि करब उचित। सम्भव अछि स्मृति-सामग्री शेष छल, पुनःसक्रियता बाधित भेल; अथवा नाम-भ्रम वास्तवमे आंशिक क्षीणता छल। कथा एक रातिक भावात्मक समाधानद्वारा एहि द्विधाकेँ पूरी तरह निबटा नहि पबैत।

साक्षीक भय : अमरत्वक भीतर विफलताक सम्भावना

बूढ़बा स्वयं मानैत छथि जे नाम बचाएबाक हेतु अपन मनुष्यरूप छोड़लनि, मुदा आब ओहि काजसँ वञ्चित होयबाक भय अनुभव करैत छथि। सामान्य मनुष्यक वृद्धावस्थाक अनिश्चितता एतय अलौकिक, सैकड़ों बरखक जीवित साक्षीपर लागू होइत अछि। ई पात्रक महत्त्वपूर्ण मानवीकरण अछि। जे अपरिवर्तनीय, अटूट आ सदास्मरणशील मानल जाइत छलाह, हुनका क्षीणता स्वीकार करबाक पड़ैत अछि। अलौकिक शक्तिक सीमा

पहिनहु –८४क जंगल-दृश्य, –८३क अज्ञात मूल गोहि आ –७८क विशेष श्रवण-प्रयोगमे सामने आएल छल; मुदा वर्तमान संकट बहिर्जगत् देखबाक सीमा नहि, अपन स्मृतिक विश्वसनीयताक अन्तःसंकट अछि।

गामक भय : स्मृतिक एकल संस्थापर निर्भरता

एकटा वृद्ध स्त्री प्रश्न उठबैत छथि—‘जँ बूढ़बा भुला जायत, तँ हमरा सभक नाम केकरा लग रहत?’ एहि वाक्यमे सामुदायिक चिन्ताक वास्तविक आशय अछि। गामक लोक सदिखन बूढ़बा, कबड्डी आ पीढ़ीगत मौखिकता पर आश्रित छथि; तथापि व्यक्तिगत बूढ़बा अनुपस्थित होइतहि अपन स्मृतिक भविष्य संकटग्रस्त मानैत छथि। एतय संस्थागत एकल-असफलता-बिन्दुक समस्या चिन्हित होइत अछि। पिछला अध्यायमे यादवानन्द निजी नोटबुक बनौने छलाह, मुदा एहि संकटमे ओकर उल्लेख नहिं: या तँ समुदाय पर विश्वसनीय उपलब्धि नहि छल, अथवा लेखक कथात्मक उद्देश्य लेल ओ धागा स्थगित रखलनि। दू सम्भावनामे सँ कोन सत्य, मूल पाठ स्पष्ट नहि करैत।

सभाक गठन आ सामुदायिक ज्ञानक बहुधुरी

मुखिया, वृद्ध लोक आ सोनमा माझिनक वंशज एकत्र भऽ समस्यापर विचार करैत छथि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सभा अछि, किएक तँ एतय बूढ़बाक एकाधिकारी उत्तरक बदला सामुदायिक विमर्श शुरू होइत अछि। प्रारम्भिक कथा-क्रियामे बूढ़बा स्वयं जवाब नहि दऽ पबैत छथि; समूह समाधान खोजैत अछि। मुदा बैठकक विस्तृत विचारविनिमय, मतभेद अथवा विकल्पक तुलनात्मक परीक्षण नहि देल गेल। कथावाचक शीघ्र गोदावरीक प्रश्नपर पहुँचैत अछि। फलतः सामूहिक चिन्तनक सम्भावना उद्घाटित भऽ तात्कालिक एक निर्णायक वक्ताक उत्तरमे केन्द्रित भऽ जाइत अछि। एही दृष्टिसँ समूहक संस्थागत रूप पूर्ण विकसित नहि, बल्कि पात्रक नैतिक अन्तर्दृष्टि लेल मंच बनैत अछि।

गोदावरी : सोनमाक परम्पराक नवानुवर्तन

गोदावरी सोनमा माझिनक वंशज छथि, दूरस्थ कमला–बलानक जलक्षेत्रक निवासिनी परिवारसँ सम्बद्ध। सोनमा पूर्वमे बूढ़बाकेँ स्मृति-विस्मरणक सम्बन्ध आ धैर्यक शिक्षा देने छलीह। एहि अध्यायमे हुनकर उत्तराधिकारी अलग ढंगसँ प्रश्न करैत छथि—नाम बचबैत-बचबैत बूढ़बाक अपन नाम किएक नहि बचाओल गेल? एतय जल-परम्पराक ज्ञान गोहिक पराभवक रहस्यमय व्याख्या नहि, सामुदायिक देखभालक नैतिक पद्धति बनैत अछि। वंशीय सम्बन्धसँ विचारक समानता अनिवार्य नहि, मुदा उपन्यास ई अन्तर्पीढ़ीगत संवादक सूत्र स्पष्ट रूपेँ रचैत अछि। गोदावरीक हस्तक्षेप बिना संकटकेँ मात्र देवतासदृश बूढ़बाक कमजोर होयब मानि भयाकुल रहि जेबाक सम्भावना छल।

जकर नाम ‘बुधुआ’ : साक्षीपूर्व मनुष्यक पुनर्स्थापन

गोदावरी बूढ़बाक अपन नाम ‘बुधुआ’ सार्वजनिक सम्मानसँ उच्चरित भेल कि नहि, से पुछैत छथि। ‘बूढ़बा’ समुदाय द्वारा देल भूमिका-सूचक नाम अछि; ‘बुधुआ’ हुनकर पूर्ववर्ती व्यक्तिगत जीवनक नाम। एकठाम व्यक्ति कार्य बनि गेल छथि, दोसरठाम देहधारी ऐतिहासिक मानवक पूर्वजीवन अछि। गोदावरी कार्यस्मृतिक विरुद्ध व्यक्तिस्मृतिक अधिकार स्थापित करैत छथि। एहि रूपान्तरणमे अध्याय –१००क नाम–देहक दार्शनिक संकेत नव

सामाजिक स्थिति पबैत अछि। मुदा केवल नाम 'बुधुआ' उच्चारने हुनकर सम्पूर्ण जीवनवृत्त स्वतः प्रकट नहि; गोदावरी अपन प्रश्नमे कथा सुनब, शोक मनाएब आ गीत गाएबाक स्वतन्त्र आवश्यकता जोड़ैत छथि।

'वाचस्पति मिश्रक सेवक' : श्रमिकक परिचयक दोधारी अर्थ

कौशल्या बूढ़बाक स्मरणमे हुनका 'वाचस्पति मिश्रक सेवक' कहैत छथि। ई परिचय बूढ़बाक इतिहासक आरम्भिक सामाजिक स्थितिक स्मरण करबैत अछि। सकारात्मक अर्थमे शास्त्रीय महापुरुषक इतिहासमे सेवकक अपन नामक उपस्थिति बनैत अछि। मुदा जोखिम ई अछि जे बुधुआक पूर्ण अस्तित्व फेर महान व्यक्तिक सेवा-सम्बन्धसँ परिभाषित रहि जाए। अधीनस्थ श्रमक स्वतन्त्र परिस्थिति, पारिश्रमिक, विश्राम, परिवार आ निजी आकांक्षा पाठमे अधिक विस्तार पबित तँ 'बुधुआ' भूमिका-सूचक लेबलसँ पूर्ण मानवक रूपमे उभरिताह। एतए कथा नाम बचबैत अछि, मुदा सामाजिक श्रमक अर्थक अगिला अनुसन्धान लेल प्रश्न राखैत अछि।

देखभालक एकतरफा प्रवाह : समस्या कोन?

गोदावरी पुछैत छथि—हजारो नाम माँगल गेल, मुदा बूढ़बाक कथा केओ सुनलक? एहि प्रश्नक तर्क मृतकक स्मृतिक महत्त्व घटेबाक नहि, श्रम-वितरणक असमानता दिखेबाक अछि। बूढ़बाक दायित्व अनन्तकालीन, समुदायक प्रत्युत्तर शून्य देखाओल गेल अछि। ई एकतरफा व्यवस्था आत्म-खालीपन उत्पन्न करैत अछि—एहन कथानकक प्रस्ताव अछि। मुदा बूढ़बाक पूर्व जीवनमे केओ हुनका प्रेम, आदर अथवा सहायता नहि देने, एहन सार्वभौम दावाक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष सूची नहि। वर्तमान प्रसंगक सत्य ई जे वार्षिक अथवा सामूहिक आत्मसाक्ष्यक विधि पहिने स्थापित नहिं छल। एहि सीमित साक्ष्यपर संकल्पना आधारित राखब अधिक उचित अछि।

निःस्वार्थ सेवा आ पारस्परिकताक अन्तर

कौशल्या बूढ़बाक स्तुति करैत छथि जे ओ प्रेमक कारण मनुष्यता छोड़लनि आ कहियो अपन लेल किछु नहि माँगलनि। एहि महिमामे सेवा-आदर्शक उदात्तीकरण अछि। गोदावरीक प्रस्ताव एकर अन्तर्निहित समस्याकेँ देखबैत अछि—माँग नहिं करब एहि बातक प्रमाण नहि जे व्यक्तिकेँ देखभालक आवश्यकता नहि। न्यायसंगत सामाजिक उत्तरदायित्व केवल सहायकक पुकारपर निर्भर नहिं; समुदायकेँ स्वयं प्रश्न करबाक चाही जे सेवक, परिचारक अथवा साक्षी कतेक भार उठा रहल छथि। मुदा सेवा-प्रतिदानकेँ लेनदेनक हिसाब बनाबयब सेहो उचित नहि। कथा उदार कर्मक मानवीय परस्परता पुनर्स्थापित करबाक पक्षमे अछि, नहि कि प्रत्येक स्मरणक बदला निश्चित पुरस्कार देबाक।

गोदावरीक समाधान : प्रश्नसँ अनुष्ठानक संरचनामे फेरबदल

गोदावरी कहैत छथि जे बूढ़बा सभक हेतु जे करैत छथि, आइ गाम उएह बूढ़बाक हेतु करत। एतय केवल सांत्वनाक वचन नहि, पुरान अनुष्ठानक दिशा उल्टेबाक सार्वजनिक प्रस्ताव अछि। मृतकक नाम लऽ साक्षीक सामने कबड्डी खेलबाक स्थानपर साक्षी स्वयं स्मरणक विषय बनैत छथि। कौशल्या प्रश्न पूछैत छथि, गोदावरी उपाय दैत छथि, गाम सामूहिक रूपसँ क्रियान्वित करैत अछि। ई द्विस्तरीय स्त्री-कर्तृत्व उपन्यासक ज्ञानसम्बन्धी

संरचनाकेँ अस्थायी रूपसँ अलौकिक पुरुष पात्रसँ बाहर आनैत अछि। तथापि अन्तिम व्याख्या बूढ़बा स्वयं दैत छथि; सामूहिक अनुभवक स्वतन्त्र दीर्घकालिक परीक्षण शेष रहैत अछि।

गामक सामूहिक उपस्थितिक सामाजिक सीमा

वर्णनमे ‘गामक हर मनुष्य’ पीपर लग जुटैत छथि—वृद्ध, युवा, बच्चा, चर्मकार आ ब्राह्मण टोला सहित। ई एक रातिक सामाजिक बराबरीक कल्पना अछि। जाति-आधारित भूगोल पहिने अनेक प्रसंगमे अलग-अलग शक्ति-संरचना देखौने छल; एतय लोक एक स्मरणक काज लेल एक स्थानपर अबैत छथि। मुदा सार्वजनिक उपस्थितिसँ जमीन, भोजन, विवाह, संसाधन अथवा धार्मिक अधिकारक संरचनागत बराबरी सिद्ध नहि होइत। गीतक समयक सामुदायिक एकता आ गामक स्थायी सामाजिक व्यवस्था भिन्न स्तर छथि। एतय रचना साझा शोक आ कृतज्ञताक सार्वजनिक सम्भावना प्रभावकारी ढंगसँ देखबैत अछि, मुदा वर्ग, जाति आ स्त्री-पुरुषक विस्तृत असमानता निरस्त भेल कहब स्रोतक सीमा उल्लङ्घन होयत।

बुधुआक विस्तृत अभिधान : साक्षीसभक क्रम

कौशल्या पहिने ‘बुधुआ’क नाम लैत छथि, फेर ‘वाचस्पति मिश्रक सेवक’, ‘हुलासाक साक्षी’, ‘जीवन्तीक साक्षी’, ‘सुखदेवक, रत्नाक, मालतीक, सुभागीक, गौरीक साक्षी’ कहि पुरान सम्बन्ध जोड़ैत छथि। ई एकटा वैकल्पिक जीवनीक मौखिक प्रारूप अछि—भूमिका, सम्बन्ध आ स्मृतिजन्य कार्यक अनुक्रम। अनेक व्यक्ति आ पीढ़ीक नामद्वारा बुधुआ स्वयं एक सामुदायिक सम्बन्धजालक केन्द्र बनैत छथि। मुदा एहि सूचीमे हुनकर अपन निजी इच्छा, पारिवारिक सम्बन्ध अथवा सेवाक बाहरक दिनचर्या विरल अछि। कथा श्रमकेँ प्रतिष्ठा दैत अछि, मुदा व्यक्तिक समग्र निजी स्वतन्त्रता ओकर साक्षी-कर्तृत्वक अधीन रहि सकैत अछि।

एक-एक अंशक दोहराव : जैविक स्मृतिसँ सामाजिक संग्रह धरि

सभा मे स्त्री-पुरुष एक-एक करि बूढ़बाक कथाक अंश कहैत छथि—तीस बरखक सेवा, जलसमाधि, पहिल बाढ़िक असहायता, सोनमा माझिन लग यात्रा आ यशपतिक प्रति दुःख। ई घटनासभ पहिने अलग अध्यायमे प्रकट भेल छल; एतय ओहि सभक पुनरावृत्ति स्रोत-उल्लेखविहीन सारांश नहि, एक पात्रक सार्वजनिक जीवनक पुनर्गठन अछि। व्यक्तिगत बूढ़बाक स्मृतिक सामग्री अब बहु-कण्ठमे वितरित होइत अछि। अहीँ समाज अपन स्मृति-संरक्षणक एकल निर्भरतासँ सम्भावित मुक्ति पाबैत अछि। मुदा कौन कथांश केकरा द्वारा कहल गेल आ एक-दोसरसँ मतभेद भेल कि नहि, पाठ नहि देखबैत; साझा कथाक पुनरावृत्ति सामुदायिक संगति दर्शबैत अछि, ऐतिहासिक त्रुटिहीनता नहि।

बच्चासभक मुक्त नृत्य : औपचारिक कबड्डीक लोप

मूल पाठ स्पष्ट कहैत अछि—‘कोनो औपचारिक कबड्डी नहि, केवल एकटा सहज, आनंदमय स्मरण।’ एहि वाक्यकेँ ध्यानपूर्वक ग्रहण करब आवश्यक अछि। गोदावरी अपन प्रस्ताव कबड्डीक रूपमे रखैत छथि, कौशल्या दीप जरा सार्वजनिक पुकार दैत छथि, मुदा बच्चासभ अन्तमे पीपरक चारू कात नाचैत छथि। वास्तविक दृश्य पुरान खेलक औपचारिक नियमक पालना नहि, अनुष्ठानक खुलल रूपान्तरण अछि। एहि कारण ‘बूढ़बाक हेतु

औपचारिक पारी खेलल गेल’ कहब अपूर्ण वर्णन हएत। खेलक आत्मा नाम-स्मरण आ सहभागितामे जीवित रहैत अछि, ओकर क्रियात्मक नियम शिथिल होइत अछि। ई परिवर्तन अनुष्ठानक सजीवता आ औपचारिक निरन्तरताक सीमा दुनू एकसंग देखबैत अछि।

बालकक अपूर्ण ज्ञान : स्मरणक पूर्णता ककरा चाही?

बच्चासभ बूढ़बाक जीवनक प्रत्येक अंश ‘बिनु पूर्ण बुझने’ श्रद्धासँ दोहरबैत छथि। कथावाचक एहि अपूर्ण समझकेँ त्रुटि नहि, सम्मिलित होयबाक सहज अवस्था बनबैत अछि। सामूहिक स्मृतिक अर्जन अकस्मात् पूर्ण ज्ञानसँ आरम्भ नहि; पहिने आवाज, लय, सम्बन्ध आ भावक स्तरपर शुरू भऽ सकैत अछि। मुदा केवल ‘बूढ़बा-बूढ़बा’ पुकारलासँ हुनकर इतिहासक ठोस तथ्य स्वतः सुरक्षित नहि। समर्पित शिक्षण, प्रसंगयुक्त कथा आ स्रोत-समीक्षा अगिला पीढ़ीक आवश्यक काज बनैत अछि। एहि दृश्यक उपलब्धि सहभागिताक द्वार खोलब अछि, पूर्ण ऐतिहासिक शिक्षण सम्पन्न करब नहि।

पीपरक उजास : अलौकिकता आ रूपकक दू स्तर

सामूहिक स्मरणक बाद पीपरक जड़िसँ हल्का स्थिर इजोत उठैत अछि, पहिनेसँ अधिक स्पष्ट आ दृढ़। उपन्यासक जादुई-यथार्थवादी जगतमे ई कथावाचक द्वारा वर्णित दृश्य-घटना अछि। एकर सांकेतिक अर्थ बूढ़बाक आन्तरिक सबलताक पुनरावर्तन अछि। मुदा इजोतक कारणक वैज्ञानिक, जैविक वा भौतिक नियम पाठमे नहि दैत। ‘सामूहिक कृतज्ञता इजोत पैदा करैत अछि’ एहन वस्तुगत सार्वभौम व्याप्ति कथाबाह्य सिद्ध नहि। चित्रक कलात्मक वैधता अलौकिक नियमक आन्तरिक संगतिसँ जाँचल जाएत, न कि रूपककेँ प्रयोगसिद्ध भौतिक प्रक्रिया घोषित कऽ।

आवाज फेर सबल : परिणामक प्रत्यक्ष आ परोक्ष सीमा

बूढ़बाक आवाज पुनः स्पष्ट होइत अछि; कथावाचक कहैत अछि जे ओ काँपैत नहि छल। एहि परिवर्तनक पाठसिद्ध परिणाम क्षीण स्वरक तत्काल शमन अछि। बूढ़बा नव कृतज्ञता व्यक्त करैत छथि आ साक्षी-कार्यक द्विदिशा-भाव समझलनि कहैत छथि। मुदा पुनःसभ नाम निर्विवाद क्रममे स्मरण भेल, एहन कोनो अलग परीक्षाक दृश्य नहि। पहिने हुलासा/हुलासी आ सुखदेव/सुरेन्द्रक भ्रम जे कथाभितर उपलब्ध अछि, ओकर सचित्र सुधार नहि देखाओल गेल। एतय रचना ध्वनि-सबलता आ नैतिक बोधकेँ स्थायी स्मृति-सफलताक संकेतक रूपमे बरतैत अछि, मुदा समीक्षककेँ संकेत आ प्रत्यक्ष सत्यापनक भेद बनौने रखबाक चाही।

‘हम भुला नहि रहल छलहुँ’ : आत्मव्याख्याक तर्कगत सीमा

बूढ़बा गोदावरी सही ठहराकऽ कहैत छथि—‘हम भुला नहि रहल छलहुँ, कौशल्या। हम केवल... थाकल छलहुँ।’ ई अन्तिम कथन पात्रक अपन अनुभवक पुनर्व्याख्या अछि। एतय किछु प्रश्न अनिवार्य अछि: यदि स्मृति-भ्रम थकानक कारण भेल, तँ स्मरणक विफलता असत्य छल कि अस्थायी? यदि एक रातिक सामूहिक समारोहसँ थकान कम भेल, तखन आगामी अमावस्यामे ई समस्या फेर नहि लौटत—एकर ठोस कथा-परीक्षण अछि कि

नहि? अध्याय यी बात नहि देखबैत। साहित्यिक रूपेँ ई भावात्मक समाधान सार्थक, मुदा प्रमाणदृष्टिएँ स्मृतिभ्रमक निदान आ पूर्ण निवारणक निश्चित घोषणा नहि।

आधुनिक ‘करुणा-थकान’ : रूपक बनाम निदान

अध्यायोत्तर लेखककीय टिप्पणी बूढ़बाक स्थितिकेँ ‘करुणा-थकान’ (compassion fatigue)क आधुनिक अवधारणासँ जोड़ैत अछि। ई अनुप्रयोग साहित्यिक व्याख्याक एक मार्ग अछि: दीर्घकाल धरि दूसराक दुःख सुनब, अपन अनुभवक प्रत्युत्तर नहि पाबब, आ भावात्मक क्षीणता अनुभव करब। मुदा कथाक पात्रक अलौकिक अस्तित्व, शताब्दीव्यापी स्मृति आ एक रातिक उजास आधुनिक स्वास्थ्यविज्ञानक वास्तविक निदानक पर्याप्त आधार नहि। अतः ‘करुणा-थकान’क शब्दकेँ अवधारणात्मक उपमा रूपमे सावधानीसँ बरतल जाए; बूढ़बाक मनोचिकित्सकीय अवस्था अथवा उपचार सिद्ध कहब स्रोतबाह्य निष्कर्ष होयत।

‘दुइ दिशासँ बहय’ : जलरूपक सामाजिक रूपान्तरण

बूढ़बा कहैत छथि जे साक्षी-कार्य एकतरफा रहत तँ साक्षी खाली होएत, मुदा दू दिशामे बहय तँ अनन्तकाल चलि सकत। एहि कथनमे जलक व्यापक उपन्यास-प्रतीक सामाजिक पारस्परिकताक बिम्ब बनैत अछि। नदी, पोखरि, बाढ़ि, गोहिक जलस्थल आ जलसमाधि पहिने संकट आ स्मृतिक स्थल छल; एतय ‘बहब’ सामाजिक सम्बन्धक दिशात्मक विनिमय होइत अछि। एहि जलरूपकक काव्यात्मक उपलब्धि सघन अछि। मुदा दू दिशामे साक्ष्य बहने अनन्तकालक स्थायित्वक भौतिक वा ऐतिहासिक नियम सिद्ध नहि; ‘अनन्तकाल’ कथाक आदर्शात्मक अभिलाषा थिक, जकर वास्तविक संस्थागत स्थायित्व भविष्यक अध्यायसभमे परखल जायत।

पारस्परिकता आ नैतिक ऋणक अनन्त जाल

बूढ़बाक बोझ केवल नामक संख्या नहि; हुनका स्वयं सम्बोधित करनिहारक अभाव अछि। गोदावरीक समाधान पारस्परिकता सिखबैत अछि। मुदा आलोचनात्मक दृष्टि ई पुछत जे गामकेँ बूढ़बाक नाम स्मरण करबाक अनुष्ठानक अतिरिक्त किन प्रकारक काम बाँटबाक चाही? जीवित साक्षी-संस्था केवल सम्मान नहि, अभिलेखक पुनरावलोकन, सुनबाक अनेक माध्यम, विरोधी कथा सुनबाक अवसर, आ नव पीढ़ीक प्रशिक्षण माँगैत अछि। मूल अध्याय वास्तविक श्रम-वितरणक एहन योजना प्रस्तुत नहि करैत। एही कारण मौखिक कृतज्ञताक नव रीत भावात्मक सन्तुलनक आरम्भ अछि; एकल-साक्षी व्यवस्थाक सम्पूर्ण संस्थागत रूपान्तरण नहि।

फागुनक पूर्णिमा : अमावस्यासँ नव काल-नियम

अध्यायक अन्तमे सालमे एक बेर फागुनक पूर्णिमापर ‘बूढ़बा-स्मरण’क स्थापना होइत अछि। पुरान नामरक्षा अमावस्याक राति चलैत छल; नव समारोह पूर्णिमाक प्रकाशमे बूढ़बाक जीवनक आवृत्ति बनैत अछि। अन्हारक अमावस्या आ उजासक पूर्णिमा रूपकात्मक विपरीतता निर्मित करैत अछि। फागुनक सामुदायिक ऋतु, गीत आ पुनर्जागरणक सन्दर्भसँ ई प्रतीक अधिक अर्थ पबैत अछि; मुदा मूल पाठ त्योहारक विशिष्ट विधि, अवधि, भोज, खेलक नियम अथवा वर्षवार परिवर्तन नहि बतबैत। ‘साल भरिमे एक बेर’ आवृत्तिक घोषणासँ परम्परा स्थापित घोषित होइत अछि, पर प्रत्येक भावी प्रदर्शनक प्रत्यक्ष दृश्य नहि।

घटनाक आवृत्ति : एक रातिक प्रत्यक्षतासँ वार्षिक संस्थापन

पहिल अमावस्या-राति विस्तृत रूपमे प्रस्तुत अछि—मौन, प्रश्न, सभा, गीत, उजास आ वाणी। तकर बाद कथावाचक वार्षिक ‘बूढ़बा-स्मरण’ शुरू भऽ जेबाक व्यापक सारांश दैत अछि। ई singulative सँ iterative कथनक संक्रमण अछि: एकटा रातिक विशिष्ट घटना बादक बहुवर्षीय दोहरावक नियम घोषित करैत अछि। मुदा पाठककेँ फेर पहिल फागुनक पूर्णिमाक वास्तविक दृश्य नहि भेटैत। एतय मूल घटना—‘सभक द्वारा नव प्रथा जोडल गेल’—सिद्ध अछि, तखन ओकर आगामी सदियोंक निर्विवाद सफल पालन कथा-घोषणा मात्र अछि। कथात्मक दृष्टिएँ ई संक्षेप आवश्यकीय पाठमात्रा बचबैत अछि, मुदा सामाजिक संस्थाक स्थायित्वक यथार्थवादी विवरण घटबैत अछि।

आख्यानकाल आ कथनकाल : दस बरख बनाम एक राति

अध्यायक लगभग सम्पूर्ण तनाव दस बरखक अन्तरालसँ एक विशिष्ट अमावस्यापर केन्द्रित होइत अछि। बूढ़बाक थकान धीरे-धीरे बढ़ल; कौशल्या ओकर चिन्ह पहिचानैत रहलीह; अन्ततः निर्णायक अनुपस्थिति एक रातिमे घटैत अछि। एहि दीर्घ पूर्वावस्था आ तात्कालिक उपक्रमक अनुपात कथाक केन्द्र ‘संकटक दृष्टिगोचर क्षण’ बनबैत अछि। मुदा बूढ़बाक थकानक प्रारम्भिक दिनक कोनो विस्तृत दृश्य नहि; एक रातिक सामूहिक स्मरणकेँ कारणात्मक उपाय बनबाक प्रक्रिया भी अत्यन्त शीघ्र सम्पन्न होइत अछि। एतय कथा भावक उत्कर्ष लेल अवधि-सङ्कुचन करैत अछि; नव्य-न्यायीय प्रमाणसंगति लेल ई संक्षेप अधूरा।

दृष्टिकेन्द्रण : कौशल्याक चिन्तासँ बूढ़बाक आत्मवाणी

आरम्भमे कथावाचक कौशल्याक चिन्ता आ बच्चासभक प्रतीक्षापर केन्द्रित अछि। बूढ़बाक आन्तरिक स्थिति हुनकर कमजोर उच्चारणद्वारा पाठक धरि पहुँचैत अछि। गोदावरीक प्रश्न सामुदायिक दृष्टिकेन्द्रण बदलैत अछि—गाम स्वयं अपन दोष विचारैत अछि। अन्तमे बूढ़बाक सुदृढ़ आवाज कारणक अन्तिम व्याख्या देबैत अछि। एहि क्रममे पाठकक ज्ञान तीन चरणमे विकसित होइत अछि: बाह्य विचलन, सामूहिक नैतिक निदान, आत्मिक व्याख्या। कथावाचक प्रारम्भमे बूढ़बाक ‘वास्तविक’ कारण सार्वजनिक नहि करैत; अन्तिम वाणी ओकरा लगभग निर्णायक बनबैत अछि। ई सूचना-वितरण कथाक समाधानमे भावात्मक अधिकार उत्पन्न करैत अछि, मुदा प्रतिपरीक्षणक अवसर सीमित करैत अछि।

मौनक भाषिक संरचना : विराम, अधूरा नाम आ उत्तर

बूढ़बाक संवादमे बारंबार ‘हम...’, नामक वैकल्पिक उच्चारण आ क्षीण ध्वनिक संकेत अछि। ई लिखित विरामचिह्न मौनकेँ शब्दक भीतर दृश्यमान बनबैत अछि। आरम्भिक फकरा कहैत अछि—‘मौन सेहो एकटा उत्तर छी’। मुदा मौन सदिखन अर्थपूर्ण सहमति नहि: एतय ओ क्षीणता, भय, लज्जा, स्मृति-भ्रम अथवा आरामक आवश्यकता बुझा सकैत अछि। कौशल्याक प्रश्न आ गोदावरीक व्याख्याद्वारा मौनकेँ अर्थ भेटैत अछि। एहि कारण मौन अपने आपमे पूर्ण प्रमाण नहि; सामाजिक सुनवाईक प्रक्रिया ओकर सम्भावित अर्थमध्य सँ चयन करैत

अछि। रचना जखन मौनक अर्थ अत्यन्त शीघ्र ‘थकान’ निश्चित करैत अछि, तँ अन्य सम्भावना आलोचनामे जीवित रहबाक चाही।

नव्य-न्यायीय परीक्षण : नाम-भ्रमक हेतु आ थकानक साध्य

विवादित पक्ष बूढ़बाक क्षीण आवाज आ नाम उच्चारणमे द्विधा अछि। प्रस्तावित साध्य दीर्घकालीन एकतरफा साक्षी-कार्यजन्य थकान अछि। हेतु अनन्त नामक भार आ स्वयं पूर्ण सम्मान नहिं पाबबाक अनुभव रूपमे प्रस्तुत अछि। मुदा ‘जतय देखभालक प्रत्युत्तर नहि, ततय नाम-भ्रम’क सार्वभौम व्याप्ति पाठमे सिद्ध नहि। रोग, अलौकिक अस्तित्वक बदलैत नियम, क्षणिक मानसिक व्यवधान अथवा अन्य कारणक सम्भावना खारिज करबाक विस्तृत प्रक्रिया सेहो अनुपस्थित। सामूहिक स्मरणक बाद आवाज सुधरब उपचायक सम्भावना सुझबैत अछि, मुदा एकल अवसरक कारणात्मक निश्चितताक सीमा अछि। ई कथासाहित्यक प्रतीकात्मक समृद्धि कम नहि करैत; मात्र लेखककीय नीतिशिक्षा आ प्रमाणसिद्ध व्याख्याक अन्तर रखैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र : करुण, अद्भुत आ शान्तक क्रम

अध्यायक आरम्भिक स्थायी प्रभाव बूढ़बाक असहायता पर करुणा अछि। ‘हमरा डर लगैत अछि’क स्वीकार पाठकक करुणानुभूतिमे गहन परिवर्तन आनैत अछि, किएक तँ अलौकिक साक्षी स्वयं भयग्रस्त देखाइत छथि। गोदावरीक प्रश्न नैतिक बोधक उद्बोधन बनैत अछि; पीपरक उजास अद्भुतक विभाव; सामूहिक नामस्मरण आ बूढ़बाक नव सन्तुलन शान्तभावक सम्भावना निर्मित करैत अछि। गीतक ‘चुप्पीमे कहल’ रचनाक केन्द्रीय ध्वनि अछि—अनसुना श्रमक पुकार मौनमे रहि गेल छल। औचित्यक प्रश्न पुनः राहतक शीघ्रता अछि: गहन शताब्दीजन्य थकानक रूपान्तरण एक रातिमे सम्भव घोषित करब प्रभावी पर नाटकीय सरलीकरण कहल जा सकैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास : इतिहास लिखनिहारक अपन जीवन

एहि अध्यायमे इतिहासक संग्रहकर्ता स्वयं इतिहासक विषय बनैत छथि। बुधुआ पूर्वमे सेवक, जलसमाधिक अनुभवकर्ता आ उपेक्षित लोकक साक्षी छलाह; सभक नाम सुरक्षित रखबाक काजे हुनकर अपन पूर्वजीवन परदा देल। गोदावरी एहि परदा हटबैत छथि। समानान्तर इतिहासक पद्धतिमे ‘कौनक नाम लिखल गेल?’क संग ‘नाम लिखनिहारक श्रम आ जीवन केकर अभिलेखमे अछि?’ प्रश्न सेहो अनिवार्य होइत अछि। स्त्री वंशजक माध्यमे पुरुष-अलौकिक स्मृतिरक्षकक जीवन सार्वजनिक होइत अछि। मुदा गौरी, सोनमा, फुलेसरीक अनेक पीढ़ीक देखभाल-श्रमक निजी जीवनस्मरणक समान वार्षिक विधि अछि कि नहि, ई पाठ नहि दर्शबैत। एहि अर्थमे बूढ़बाक मानवीकरण एक नव प्रश्न खोलैत अछि, सभ अदृश्य श्रमिकक न्याय पूर्ण नहि करैत।

घटना-प्रमाण-कारण सारणी

घटना | पाठसिद्ध अवस्थापरिवर्तन | प्रमाणक अथवा कथात्मक सीमा

दस बरखक अन्तराल | कौशल्या अनुष्ठानक भार ग्रहण करैत छथि | उत्तराधिकारक विस्तृत प्रक्रिया नहि

बूढ़बाक आवाजक क्रमशः क्षीणता | कौशल्या संकटक चिन्ह देखैत छथि | मूल कारण पहिने अज्ञात

अमावस्यापर निर्णायकक अनुपस्थिति | बच्चासभक प्रतीक्षा आ गामक शंका | अनुपस्थितिसँ स्वयं निदान नहि

नाम ‘हुलासा/हुलासी’ आ ‘सुखदेव/सुरेन्द्र’क भ्रम | क्षणिक स्मरण-विचलनक स्पष्ट पात्र-गवाही | स्थायी स्मृतिलोप सिद्ध नहि

गोदावरीक प्रश्न | बूढ़बाक अपन नाम ‘बुधुआ’क उपेक्षा केन्द्रमे | एकल कारण निश्चित नहि

सामुदायिक सभा | देखभालक पारस्परिकता सार्वजनिक विषय | सर्वसम्मतिक विधिक परीक्षण नहि

बुधुआक जीवनक सार्वजनिक स्मरण | साक्षी-कर्ताक इतिहास सार्वजनिक होइत अछि | सभ जीवनीगत विवरण नहि

बच्चाक सहज नृत्य | औपचारिक कबड्डी रूपान्तरित होइत अछि | पूर्व नियमक पूरा पालन नहि

पीपरक इजोत | अलौकिक दृश्य-परिवर्तन | भौतिक कारण अनिर्दिष्ट

बूढ़बाक सबल आवाज | तत्काल ध्वनि-पुनरुत्थान | बादक नाम-सुधारक स्वतन्त्र परीक्षा नहि

‘हम भुला नहि रहल छलहुँ’ | आत्मव्याख्याक पुनर्निर्धारण | पहिल वास्तविक नाम-भ्रम निरस्त नहि

फागुन पूर्णिमाक ‘बूढ़बा-स्मरण’ | वार्षिक नव सामुदायिक अनुष्ठान स्थापित | दीर्घकालक पालनक विस्तृत दृश्य नहि

मूल अध्यायक अक्षरशः पाठ-साक्ष्य सूचक

१. ‘बूढ़बा जखन चुप, तखन सभसँ बेसी बाजै’ — आरम्भिक फकरा।

२. ‘मौन सेहो एकटा उत्तर छी।’ — आरम्भिक नैतिक सूत्र।

३. ‘दस बरख बीति गेल अछि।’ — अध्यायक कालान्तर।

४. ‘बूढ़बाक आवाज’ — साक्षी-शक्तिक श्रवणमाध्यम।

५. ‘बूढ़बा किएक नहि आयल?’ — बालकक अनिश्चितता।

६. ‘बूढ़बा, अहाँ ठीक छी?’ — कौशल्याक प्रत्यक्ष प्रश्न।

७. ‘हमरा आइ राति नाम मोन नहि पड़ि रहल अछि।’ — स्मृतिसंकटक प्रत्यक्ष कथन।

८. ‘हुलासा... वा शायद हुलासी...’ — नामक द्विधा।

९. ‘सुखदेव, वा सुरेन्द्र...’ — भिन्न नामक विकल्प।

१०. ‘हमरा डर लगैत अछि जे हम भुला रहल छी’ — बूढ़बाक भय।

११. ‘जँ बूढ़बा भुला जायत’ — गामक सामूहिक आशङ्का।

१२. ‘बूढ़बाक अपन नाम — बुधुआ’ — गोदावरीक प्रतिप्रश्न।

१३. ‘की अहाँ सभ कहियो हुनकर कथा सुनलहुँ’ — स्वयं साक्षीक जीवनक अधिकार।

१४. ‘ओ सदिखन दैत छल, कहियो पबैत नहि छल।’ — एकतरफा श्रम।

१५. ‘तँ हम सभ की करी?’ — कौशल्याक क्रियात्मक प्रश्न।

१६. ‘आइ राति, पारी बूढ़बाक नामक हेतु होयत।’ — गोदावरीक नव नियम।

१७. ‘बुधुआ! वाचस्पति मिश्रक सेवक!’ — व्यक्तिगत इतिहासक उद्घाटन।

१८. ‘हुलासाक साक्षी! जीवन्तीक साक्षी!’ — सम्बन्धक जीवनी।

१९. ‘जे कहियो अपन हेतु किछु नहि माँगलनि।’ — निःस्वार्थ श्रमक सूत्र।

२०. ‘कोनो औपचारिक कबड्डी नहि’ — वास्तविक खेलरूपक सीमा।

२१. ‘एकटा सहज, आनंदमय स्मरण।’ — अनुष्ठानक नवानुभव।

२२. ‘गोदावरी सही छलीह’ — बूढ़बाक कृतज्ञताक स्वीकृति।

२३. ‘हम भुला नहि रहल छलहुँ, कौशल्या।’ — अन्तिम आत्मव्याख्या।

२४. ‘हम केवल... थाकल छलहुँ’ — कथाभीतर प्रस्तुत कारण।

२५. ‘साक्षी बनब एकतरफा काज नहि थिक।’ — पारस्परिकताक सिद्धान्त।

२६. ‘फागुनक पूर्णिमापर’ — वार्षिक नव अनुष्ठानक समय।

२७. ‘जे बूढ़बाक मौन बुझल’ — समापन गीतक अर्थ-सूत्र।

उपर्युक्त छोट उद्धरण-खण्ड मूल अध्याय [–७७]क फकरा, कथा-सम्वाद आ गीतसँ प्राप्त। मुद्रित पृष्ठ-परास २०९–२१२ सम्पूर्ण अध्याय लेल अछि; प्रत्येक उद्धरणक अलग पृष्ठाङ्क दावा एतय नहि।

समग्र आख्यानशास्त्रीय निर्णय

‘बूढ़बाक मौन’ मूल त्रयीक स्मृति-संरचनामे निर्णायक नैतिक मोड़ अछि। पहिने बूढ़बाक ‘नाम बचएबाक’ असाधारण शक्ति उपेक्षित लोकक पक्षमे अनिवार्य छल; आब सामुदायिक जीवन बूढ़बाक अपन नामक दायित्व स्वीकार करैत अछि। कौशल्याक प्रश्न, गोदावरीक स्वायत्त अन्तर्दृष्टि, समस्त टोलाक सार्वजनिक पुकार आ बच्चासभक मुक्त नृत्य मिलि एकल साक्षीक कथाकेँ बहु-कण्ठी सामाजिक स्मरणमे रूपान्तरित करैत अछि। इएह अध्यायक सर्वाधिक प्रभावी रचनात्मक उपलब्धि अछि। संगहि स्मृति-भ्रमक प्रत्यक्ष कथन आ बादक थकान-व्याख्याक बीच असमाधित प्रमाणगत तनाव, गहन थकानक अत्यन्त शीघ्र समाधान, सामाजिक बराबरीक एक रातिक दृश्यकेँ दीर्घकालिक सुधारक पर्याय बनबैक सम्भावना, आ साक्षी-कार्यक व्यावहारिक वितरणक अपूर्ण नियम वास्तविक कमजोरी छथि। साहित्यिक मूल्यांकन सशर्त सकारात्मक अछि: कृति स्मरणक नैतिक सम्बन्धकेँ गहिर बनबैत अछि, मुदा सामाजिक/मनोवैज्ञानिक स्थायित्वक अविचारित दावासँ आलोचनाकेँ अलग रहबाक चाही।

प्रमाण-सूचना आ आगामी सन्धि

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७७] ‘बूढ़बाक मौन’, मूल संयुक्त पाण्डुलिपि, अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २०९–२१२। दोसर स्रोत : ‘मूल मैथिली

पाण्डुलिपि’, अध्याय –७७क प्रविष्टि (९०० शब्द-एकक, ६५.४ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेद); एहि गणना घटनात्मक घनत्वक स्वतन्त्र माप नहि। ‘देखभाल करनिहारक थकान आ पारस्परिकताक आवश्यकता’ अध्यायोत्तर टिप्पणी लेखककीय परापाठ अछि; चिकित्सकीय निदान नहि। अगिला क्रम अध्याय –७६ — ‘नारिकेल पातक पहिल पाठ’ : नव पीढ़ीक लिखन-पढ़न, पातक अभिलेख आ सामुदायिक शिक्षणक पाठमूलक परीक्षण।

प्रकरण २५ | मूल अध्याय –७६ — नारिकेल पातक पहिल पाठ

मूल पाठक सीमा आ विश्लेषणात्मक प्रतिज्ञा

अध्याय –७६ पूर्व-कथाकालक पचीसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल उपन्यासमे एकर प्रवेश फकरासँ होइत अछि, फेर कौशल्याक बेटी मंदाकिनीक शिक्षासम्बन्धी असन्तोष, जातिगत पाठशालाक निषेध, महग लेखन-सामग्रीक संकट, सुखल नारिकेल पातपर रेखा खिंचबाक प्रयोग, अगिला सप्ताहक सार्वजनिक पाठ, बूढ़बाक प्रतिक्रिया आ स्थायी शिक्षण-परम्पराक कथन प्रस्तुत अछि। आलोचनामे ‘नारिकेल पात पाठशाला’क कल्पनात्मक ऐतिहासिक आरम्भकेँ उपन्यासक कथाभीतरक सत्य मानल जाएत, बाहरी शिक्षाइतिहासक स्वयं सिद्ध घटना नहि। एहि कसौटीपर अध्यायक प्रमुख प्रश्न अछि: कोनो समुदाय अपन कथा स्वयं पढ़ि आ लिखि सकबाक स्वायत्तता कतेक दूर प्राप्त करैत अछि, जखन वस्तु-उपलब्धता आ ज्ञान-उपलब्धता दुनू अलग बाधा छथि?

–७७ सँ –७६ : साक्षी-भरोसासँ स्वाधीन पाठधरि

पिछला ‘बूढ़बाक मौन’ मे कौशल्या आ गोदावरी बूढ़बाक आफ्न जीवन सार्वजनिक स्मरणक विषय बनौने छलीह। समाज अपन साक्षीक देखभालक दायित्व स्वीकार करैत अछि। वर्तमान अध्यायमे कौशल्याक बेटी मंदाकिनी स्मृतिक अधिकारक एक आर कठिन प्रश्न उठबैत छथि—दोसराक हाथसँ लिखल स्मृतिपाठ स्वयं पढ़ि नहि सकब। पहिने प्रश्न छल ‘साक्षीक अपन कथा के सुनत?’ आब प्रश्न अछि ‘अभिलेखमे हमर कथा लिखल रहितहुँ ओकर अर्थ हम स्वयं केना जानब?’ ई परिवर्तन व्यक्तिक भावात्मक प्रतिष्ठासँ पढ़न-लिखनक सामाजिक क्षमता दिस अछि। बूढ़बाक असाधारण स्मरणक स्थानपर बच्चासभक साधारण अक्षराभ्यास कथा-विकासक नायक बनैत अछि। एहि सन्धिक महत्त्व एकरा शिक्षा-विस्तारक अचानक उपदेश नहिं रहि, पूर्ववर्ती वंशावली आ पाण्डुलिपि-प्रसंगक परिणाम बना दैत अछि।

मूल असन्तोष : ‘अन्यक हाथमे’ इतिहासक सत्ता

मंदाकिनी माएसँ कहैत छथि—‘हमरा सभक कथा अन्यक हाथमे अछि’, मुदा ‘हमरा सभक अपन आँखिमे नहि’। एहि वाक्यमे अभिलेखीय स्वामित्व आ पठनक स्वायत्तता बीचक गहिर अन्तर उद्घाटित अछि। हरिपति लोककथा लिखने, यादवानन्द नामसभ निजी पोथीमे उतारने; मुद्रित अथवा लिखित अस्तित्व स्वयं समुदायकेँ पाठक नहि बनबैत। जँ लिपिक अर्थ केवल लेखनक अधिकारसँ पहिने पहुँच रखनिहार वर्ग बुझैत अछि, तँ समुदाय अपना कथाक प्रमाण अपने परखि नहि सकैत। एहि प्रकारेँ लेखन-संरक्षणक पहिने घोषित विजय एक नव निर्भरता

उत्पन्न करैत अछि। एतय ‘आँखिमे’ शब्द मात्र दृश्य-इन्द्रियक उल्लेख नहि, अपना इतिहासक मूल्यांकनक अधिकारक रूपक अछि। मुदा पाठमे दृष्टिहीन पाठक वा वैकल्पिक श्रवण माध्यमक प्रश्न नहि; लोकसाक्षरताक आधार केवल दृष्टिमूलक पढ़न बनेबाक सीमा सेहो चिन्हित होयबाक चाही।

‘पंजीमे सुरक्षित’ : पूर्व-कथासँ आन्तरिक असङ्गति

वर्तमान कथावाचक अथवा मंदाकिनीक ज्ञानमे परिवारक कथा ‘कागचपर, आ पंजीमे’ सुरक्षित अछि। मुदा अध्याय –७८ मे यादवानन्द स्पष्ट कहने छलाह जे हुनकर नव पोथी आधिकारिक पंजी नहि, सम्भव अछि कखनो नहि बनय। अतः ‘पंजी’ शब्द यदि वर्तमान अध्यायमे आधिकारिक वंशावलीक प्रमाण-पत्र मानल जाए, तँ पूर्ववर्ती पाठसँ स्पष्ट तनाव अछि। सम्भव अछि मंदाकिनी सामाजिक व्यवहारमे निजी छाया-पंजीकेँ सेहो ‘पंजी’ कहि रहल होथि, अथवा कथावाचक संक्षेपमे लिखित अभिलेखक विभिन्न रूप मिला देने होथि। मूल पाठ दू सम्भावनामे सँ कोनो एक स्पष्ट नहि चुनैत। एहि कारण समालोचना ‘आधिकारिक पंजीमे चर्मकार टोलाक मान्यता भेटि गेल’ एहन तथ्य नहि गढ़त। एहि सूक्ष्म विरोधक नाम देब कादम्बरीक दीर्घकालिक अभिलेखीय निरन्तरताक परीक्षण लेल विशेष आवश्यक अछि।

ब्राह्मण टोलाक पाठशाला : जाति आ लिंगक दोहरा द्वार

गाममे संस्कृत आ मैथिली पढ़ाबयवाली पाठशाला अछि, मुदा मूल कथा कहैत अछि जे केवल उच्च जातिक बालक प्रवेश पबैत, आ कोनो जातिक बालिकाक स्वागत नहि। एहि वर्णनमे बहिष्करणक दू अलग आधार स्पष्ट अछि। पहिल, जातिगत सीमा; दोसर, बालिकाक सर्वजातीय निषेध। अतः सभ ‘उच्च जाति’क बालक शिक्षामे समान सुविधा पबैत छथि, एहन निष्कर्ष मूल पाठ नहि दैत; गरीब ब्राह्मण परिवारसभक बादक निर्णय आर्थिक असमानता देखबैत अछि। ई विशिष्ट सामाजिक रेखांकन अध्यायक सामर्थ्य अछि। मुदा औपचारिक पाठशालाक गुरु, शुल्क, पाठ्यविषयक व्यवहार, सामाजिक दण्ड वा बच्चासभक पूर्व अनुभव दृश्यरूपमे नहि देखाओल गेल। बहिष्करण कथावाचकक स्पष्ट सूचना अछि, प्रत्यक्ष विद्यालय-द्वारक संघर्षक नाटकीय दृश्य नहि।

‘हमरा सभक बच्चा कतय पढ़त?’ : नैतिक प्रश्नसँ क्रियात्मक योजना

मंदाकिनीक प्रश्न ‘हमरा सभक बच्चा कतय पढ़त?’ साधारण करुण पुकार नहि, संस्थागत विकल्प खोजबाक आरम्भ अछि। एहि प्रश्नक संग ओ वस्तुगत बाधा सेहो पहिचानैत छथि—महग कागच आ ताड़पत्र। शिक्षा लेल केवल इच्छा पर्याप्त नहि; सामग्री, शिक्षणस्थान, मार्गदर्शन आ सहपाठीक उपलब्धता चाही। उपन्यास एतय आर्थिक यथार्थक एक प्रभावकारी प्रवेश देबैत अछि। तथापि लेखन-सामग्रीक मूल्य कतेक, उपलब्ध दर कतेक, संसाधनकेँ कतय सँ आनल जाइत छल—ई जानकारी मूल अध्यायमे नहि अछि। एतय ‘महग’ सामाजिक अनुभवरूपेँ प्रस्तुत अछि, ऐतिहासिक मूल्य-सारणी नहि। जाति-लिंगक निषेध आ आर्थिक अभाव दुनूकेँ एकहि कारण मानब अनुचित; नव पाठशालाकेँ दुनू बाधाक अलग उत्तर देब आवश्यक अछि।

आँगनक दृश्य : असन्तोषसँ प्रयोग धरि

मंदाकिनी एक दिन अपन आँगनमे सुखल नारिकेल पात लऽ छड़ीसँ रेखा खिंचैत छथि। किछु अनियोजित रेखासँ सतहपर निशान स्पष्ट उभरैत अछि। ई अध्यायक वास्तविक बाह्य घटना आ नव ज्ञान-अनुभवक संगम अछि। पहिने कोनो शिक्षक वा शास्त्री समाधान नहि दैत; उपलब्ध स्थानीय सामग्रीक प्रत्यक्ष परीक्षण मंदाकिनीक हाथमे होइत अछि। कथावाचक कहैत अछि जे ओ ‘बिनु सोचने’ खिंचय लगलीह—आविष्कार एतय अनुभवजन्य आकस्मिकता अछि। मुदा परिणाम सुनिश्चित करबाक लेल बारंबार प्रयोग, पातक सुखाओल अवस्था, छड़ीक नोक, अक्षरक स्थायित्व, आकार आ दबावक अन्तर देखब उपयोगी होइत। कथा एकटा सफल रेखाक आधारपर सार्वजनिक शिक्षणक दिशामे शीघ्र बढ़ैत अछि। ई कल्पनात्मक सहजता आ प्रयोगक संक्षेप दुनू अछि।

स्थानीय सामग्रीक गुण : पात्रक अवलोकन आ भौतिक प्रमाण

मूल कथावाचक पातकेँ सुखल, मजबूत आ रेखा स्पष्ट करय योग्य बतबैत अछि; ओ भीतरी हरियर परत आ बाहरी सुखलपनक अन्तरक उल्लेख करैत अछि। ई कथाविश्वमे मंदाकिनीक प्रयोगसँ प्राप्त सामग्रीगत अवलोकन अछि। मुदा ई वर्तमान वनस्पतिविज्ञानक प्रमाणित तकनीकी विवरण नहि, आ सभ प्रकारक नारिकेल पातपर बिना स्याही दीर्घस्थायी अक्षर रहत—एहन सार्वभौम निष्कर्ष नहि। विशेषतः सुखल सतहपर दबाओल अथवा खुरचल चिह्न कतेक दिन रहत, फेर मोड़लापर अक्षर बाँचत कि नहि, एहि प्रकरणमे जाँच नहि देखाओल गेल। साहित्यिक महत्त्व ई अछि जे पात शिक्षणक लागत घटेबाक सम्भावित साधन बनैत अछि; प्रामाणिक उपयोगिताक कठोरता लेल अधिक सामग्री-परीक्षणक आवश्यकता अछि।

मातृ-संवाद : कौशल्याक अनुभव आ नव पीढ़ीक विचार

मंदाकिनी माएकेँ आवाज दैत छथि, अपन प्रयोग देखबैत छथि। कौशल्या मुस्कुराइत गढ़ नारिकेलमे नारिकेल गाछक प्रचुरता बतबैत छथि। माँक प्रतिक्रिया केवल भावात्मक प्रशंसा नहि; ओ व्यक्तिगत खोजकेँ गामक उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनसँ जोड़ैत छथि। एहि दृश्यमे पुछनिहार युवती, अनुभवसम्पन्न माता आ स्थानीय पर्यावरणक ज्ञान एक-दोसराक पूरक बनैत अछि। कौशल्या अपन माए-वर्गक आ पूर्ववर्ती वसुन्धरा-गोदावरीक स्मृतिसँ अभिभूत छथि; हर्षक भीतर पीढ़ीक दुःख समाहित बताओल गेल अछि। मुदा कथा मंदाकिनीक प्रस्तावक सम्भावित जोखिम, सामग्रीक असफल परीक्षण अथवा शिक्षणक आवश्यकता पर कौशल्याक आलोचनात्मक प्रश्न नहि देखबैत। सामाजिक समर्थन तुरन्त भेटब नाटकीय आश्वासन अछि, वास्तविक संस्थापना-संघर्षक संक्षेप सेहो।

‘अगिला सप्ताह’ : आविष्कारसँ संस्थापनक तीव्रता

एक सप्ताह बाद मंदाकिनी सहेलीसभसँ संग सुखल पात जमा, साफ आ खुला स्थान पर बच्चासभक पाठ आरम्भ करैत छथि। एहि सात दिनमे सामग्रीक उपलब्धता एक निजी प्रयोगसँ सार्वजनिक कक्षाक स्तर धरि पहुँचि जाइत अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कारण–कार्य श्रृंखला अछि: पातपर निशान उभरब → लागतक नवानुमान → सामूहिक संकलन → सार्वजनिक स्थान चयन → बच्चासभक आवागमन। तथापि एहि अन्तरालमे शिक्षकक

प्रशिक्षण, अक्षर-पद्धति, पाठ-सूची, कक्षाक नियमितता आ वयस्कक अनुमतिक व्यवस्था विस्तृत नहि अछि। अध्याय छोट आकारक कारण प्रक्रिया संकुचित करैत अछि, मुदा शिक्षाक लोकतंत्रीकरण लेल एहन मध्य-कड़ी कथात्मक रूपसँ निर्णायक होइत।

शिक्षिकाक साक्षरता : मूल पाठक प्रमुख अन्तर्विरोध

अध्यायक आरम्भ स्पष्ट करैत अछि जे टोलाक एकोटा स्त्री अथवा पुरुष, मंदाकिनी स्वयं सहित, दोसर द्वारा लिखल अक्षर पढ़ि नहि सकैत छल। मुदा अगिला सप्ताह मंदाकिनी आ सहेलीसभ बच्चासभकेँ ‘अक्षर खिंचय’ सिखबैत छथि। पातपर रेखा खिंचबाक सामर्थ्य आ स्थापित मैथिली वर्णमालाक अक्षर पहिचानब अथवा पढ़ेबाक ज्ञान एक नहि। हुनका बीचमे लिखब-पढ़ब ककरा सँ सीखलनि? की कोनो बाहरी साक्षर व्यक्ति सहायता देलक? की ओ पूर्वसँ अक्षरक आकृति जानैत, मुदा पूरा वाक्य नहि पढ़ि सकैत छलीह? मूल पाठ उत्तर नहि दैत। सम्भावित व्याख्या उपलब्ध छथि, मुदा कोनो केँ पाठसिद्ध तथ्य मानब अनुचित। ई कथा-संरचनाक वास्तविक रिक्ति अछि; शैक्षिक परिवर्तनक विश्वसनीयता एक अज्ञात शिक्षण-मध्यस्थपर निर्भर रहैत अछि।

अक्षर ‘खिंचब’ आ साक्षरता : शिक्षणक चरणभेद

मूल पाठमे ‘अक्षर खिंचय’ शब्द विशेष ध्यानयोग्य अछि। पातपर आकृति उतारब, ओकर ध्वनि पहिचानब, अक्षर जोड़ब, शब्द पढ़ब, नाम लिखब आ इतिहासक सत्यापन करब—ई साक्षरताक भिन्न चरण छथि। प्रथम कक्षामे बच्चा अक्षर खिंचय सिखैत छथि; एहि सँ तत्काल लिखित पोथीक सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त भेल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत। कथावाचक बादक दीर्घकालमे संस्थाक स्थायित्व घोषित करैत अछि, जे सम्भावित शैक्षिक विकासक व्यापक संकेत अछि। मुदा कक्षा सँ स्वयं जीवन-कथा लिखनिहार लेखक धरि यात्राक वास्तविक पद्धति संक्षिप्त रहैत अछि। एहि भेदकेँ सुरक्षित रखलासँ नवाचारक मूल्य घटैत नहि; ओकर उपलब्धिक वास्तविक स्वरूप स्पष्ट होइत अछि।

ढोल-मृदंग सुखेबाक स्थल : श्रमसँ शिक्षाक संस्थागत रूपान्तरण

चर्मकार टोलाक खुला स्थान, जतय पहिने ढोल आ मृदंग सुखाओल जाइत छल, नव पाठशालाक स्थल बनैत अछि। एहि चयनमे शिक्षा पूर्ववर्ती श्रमसंस्कृतिक अवमानना कऽ नहि, ओकर उपलब्ध साझा स्थानक पुनःउपयोग करैत अछि। श्रमक वस्तु ढोल, मृदंग आ पात शिक्षण-संसाधनक भौतिक पृष्ठभूमि बनैत छथि। मुदा जखन ओतहि नव कक्षा चलैत अछि, तँ वाद्य-सुखेबाक परम्परागत काजमे व्यवधान भेल कि नहि? जगहक उपयोगक सामूहिक निर्णय कोन प्रकार भेल? कथा एहि प्रश्नसभकेँ नहि खोलैत। सामाजिक संस्थापनक पक्षमे स्थानीय साझा स्थानक सृजनात्मक प्रयोग सफल अछि, पर रोजमर्रा श्रम-व्यवस्थाक परिणति अनिश्चित।

बच्चा लड़का आ लड़की दुनू : लिंगाधारित निषेधक उत्तर

नव पाठशालामे बालक आ बालिका दुनू प्रवेश पबैत छथि। ई पूर्ववर्ती ब्राह्मण टोला पाठशालाक बालिका-विरोधी नियमक स्पष्ट प्रतिपक्ष अछि। विशेषतः ‘कोनो जातिक हो’ बालिकाक बहिष्कारक सामने नव कक्षा लिंगक भेद अस्वीकार करैत अछि। मंदाकिनी स्वयं स्त्री छथि; हुनकर पहल स्त्री द्वारा शिक्षा-द्वार खोलबाक दृश्यात्मक मूल्य

रखैत अछि। मुदा केवल प्रवेशद्वार खुलब स्थायी शिक्षण-अधिकारक पूर्णता नहि। बालिका कतेक वर्ष पढ़ैत अछि, घरेलू श्रम अथवा विवाहक बाधा सँ केना निबटैत अछि, संस्थामे शिक्षिका-नेतृत्वक उत्तराधिकार केना तय होइत अछि—ई सभ प्रक्रिया मूल पाठ नहि दैत। शिक्षा-अधिकारक नीतिगत सम्भावना अछि, सम्पूर्ण व्यवहारिक प्रमाण नहि।

गरीब ब्राह्मण परिवारक प्रवेश : जाति आ वर्गक अन्तर

किछु गरीब ब्राह्मण परिवार अपना बच्चाकेँ नव खुला पाठशालामे पठबैत अछि, कारण ओ महग पाठशालाक खर्च नहि उठा सकैत। एहि उल्लेखसँ कथा जातिगत सुविधाक भीतर आर्थिक विषमता देखबैत अछि। ब्राह्मण होयबाक कारण सामाजिक प्रतिष्ठाक सम्भावना एक बात; महग शिक्षा धारण करबाक क्षमता दोसर। नव पाठशालाक सामाजिक लाभ एक विशेष जातिसँ बाहरक बच्चासभ धरि फैलैत अछि, आ पूर्व सामाजिक दूरीक ठोस व्यवहारिक अतिक्रमण होइत अछि। मुदा मूल दृश्य ‘किछु परिवार’ कहैत अछि, सभ ब्राह्मण परिवार नहि। अन्य जाति, घुमन्तू, भूमिहीन अथवा शारीरिक असमर्थ बच्चासभक उपस्थिति पर एकर आधारपर दावा नहि कएल जाए। प्रारम्भिक सहभागिता सामूहिक समावेशनक दिशा थिक, सार्वत्रिक पहुँचक प्रमाण नहि।

गरीब ब्राह्मण परिवारक बालिका सेहो? प्रमाणक सूक्ष्म सीमा

मूल वाक्य कहैत अछि जे बालक–बालिका सभ पढ़ैत छथि, आ किछु गरीब ब्राह्मण परिवार सेहो अपन बच्चा पठबैत अछि। एहि दू वाक्यक संयुक्त पठन सँ सम्भावना अछि जे नव पाठशाला पुरनका जाति आ लिंगक निषेध तोड़ैत अछि। मुदा ई ठीक-ठीक नहि निर्दिष्ट जे ओहि ब्राह्मण परिवारसभसँ बालिका कतेक छलीह, अथवा सभ बच्चा पढ़एबाक हेतु नियमित उपस्थित छलाह। कथा समावेशी नियम घोषित करैत अछि, उपयोगकर्ताक सूक्ष्म गणना नहि। एहि अन्तर्स्थलमे लेखकीय लक्ष्य मानवीय समानता स्थापित करब अछि; आलोचनाकेँ घोषित सिद्धान्त आ सत्यापित उपस्थिति अलग रखबाक चाही। ई भेद विशेष महत्वपूर्ण अछि, कारण पाठशालाक ‘सभकेँ खुलल’ कहब आ प्रत्येक बञ्चित समूहक शिक्षामे परिणाम प्राप्त होयब भिन्न अवस्था छथि।

संसाधनक सृजनात्मक पुनर्विन्यास : ‘अभाव नवाचारक जनक’क सीमा

अध्यायोत्तर टिप्पणी स्थानीय सहज उपलब्ध सामग्री द्वारा शिक्षा सुलभ करबाक अभिप्राय व्याख्यायित करैत अछि। साहित्यिक रूपेँ पातक प्रयोग अभावक बीच सामर्थ्यक उदाहरण अछि। मुदा गरीबी अपने आप आविष्कार पैदा करैत अछि, एहन सार्वभौम नियम मिथ्या होयत; सामग्रीक उपलब्धता, समुदायिक सहायता, श्रम, समय आ सामाजिक निर्णय निर्णायक सहकारक छथि। नव्य-न्यायक कसौटीपर ‘अभाव’ सम्भवतः अवसरक कारण-समूहक एक अंग अछि, पर्याप्त हेतु नहि। मंदाकिनीक प्रश्न, पातक गुण, कौशल्याक समर्थन, सहेलीसभक श्रम आ समुदायिक स्थल उपलब्धता बिना पाठशालाक उत्पत्ति वर्णित होयब असम्भव अछि। आलोचना एही अनेक सहकारक कारणक शृंखला पर बल दैत अछि।

नारिकेल गाछ : भूगोल, पर्यावरण आ शिक्षा

‘गढ़ नारिकेलमे कोन चीजक अभाव नहि? नारिकेलक गाछ!’ कौशल्याक वचन स्थानीय पर्यावरणकेँ ज्ञानसंसाधनक आधार बनबैत अछि। पात केवल प्रतीक नहि; ओकर उपलब्धता सामुदायिक शिक्षाक सामग्रीगत खर्च घटेबाक साधन बनैत अछि। गाछ, पात, सुखल सतह आ अक्षरक निशानक एक क्रम शिक्षा आ पर्यावरणक परस्पर निर्भरता देखबैत अछि। मुदा स्थानीय प्राकृतिक साधनक उपयोग टिकाऊ कतेक अछि, पातक दोहनक दर कतेक, सुखल पात पुनः प्रयुक्त होइत कि नष्ट—ई सभ अनिर्दिष्ट। गाछ इतिहास राखैत अछि, एहन फकरा पारिस्थितिक दीर्घजीविताक काव्यात्मक दावा थिक; प्रत्येक पातपर रचित अक्षर शताब्दी तक भौतिक रूपसँ रहत, एकर प्रमाण नहि।

बूढ़बाक वचन : रचनाक वैचारिक केन्द्र

बूढ़बा मंदाकिनीक कार्यकेँ सम्पूर्ण कथाक अगिला डेग कहैत छथि। ओ हुलासाक प्रतिलिपि नहिं लिखि सकबाक, रत्नाक जड़ी-बूटीक ज्ञान कागचपर नहिं उतरबाक, गौरी–सावित्री–वसुन्धराक कथा अन्यक माध्यमे बचबाक स्मरण करैत छथि। एहि बहु-नामक क्रममे पूर्ववर्ती स्त्री पात्रसभक जीवनक एकटा विशिष्ट अभाव उद्घाटित होइत अछि—साक्षी छथि, मुदा स्वतन्त्र लेखक वा पाठक नहि। बूढ़बाक अनुमोदन कथा-इतिहासक सन्दर्भ बनबैत अछि, पर मंदाकिनीक प्रयास स्वयं प्राथमिक कारण अछि। बूढ़बाक अत्यधिक प्रतिष्ठा एहि नव स्त्री-नेतृत्वक स्वतन्त्रताकेँ ढाँपि नहि देबाक चाही। एहि अध्यायमे पुरान पुरुष-अलौकिक साक्षी स्वयं नव पीढ़ी सँ साक्षरताक अर्थ सीखैत छथि, यद्यपि औपचारिक आशिर्वचन हुनकर मुखसँ अबैत अछि।

रत्नाक चिकित्सकीय ज्ञान : लिखित परम्पराक सम्भावना

बूढ़बाक कथनमे रत्ना अपन जड़ी-बूटीक ज्ञान लिखि नहि सकबाक उदाहरण छथि। एहि एकटा उल्लेखमे साक्षरताक लाभ नाम-सूचीसँ अधिक विस्तृत होइत अछि—वनस्पति, उपचार-पद्धति, मौखिक कौशल आ स्त्रीक व्यावहारिक ज्ञानक अभिलेखन। मुदा रत्नाक उपचार-सूत्र वास्तवमे कतेक प्रभावी छल, ककरा द्वारा शुद्ध कएल गेल, आ किन परिस्थिति मे उपयोगी छल, ई मुद्दा एहि अध्यायमे नहि जाँचल गेल। लिखि लेबाक अर्थ चिकित्सकीय सत्यापन नहि। लोकज्ञानक सम्मान आ विधिसंगत परीक्षण परस्पर विरोधी नहि; साक्षरता एहि ज्ञानक विविध संस्करणक तुलना आ सुरक्षित आलोचना सम्भव बनबैत अछि। एतय नव पाठशाला ज्ञान-परम्पराक सम्भावित विस्तारक आधार अछि, स्वतः वैज्ञानिक उपलब्धिक प्रमाण नहि।

लिखित कथा आ जीवित साक्षी : मंदाकिनीक तीक्ष्ण प्रतिप्रश्न

मंदाकिनी बूढ़बासँ पुछैत छथि जे स्वयं लिखब सिखलापर कबड्डी-स्मरणक आवश्यकता कम भऽ जाएत कि नहि। ई अध्यायक वास्तविक शास्त्रार्थ अछि। नव शिक्षाक प्रवर्तिका स्थापित परम्पराक उपयोगिता पर प्रश्न उठबैत छथि, केवल आशीर्वाद नहि माँगैत। एहि प्रश्नक तार्किक रूप अछि: यदि लिखित अभिलेख स्मृतिक संरक्षणक साध्य पर्याप्त पूरा करैत अछि, तँ सामूहिक मौखिक अनुष्ठान अतिरिक्त किएक? बूढ़बा उत्तर दैत छथि जे लेखन आ साक्षी बनब अलग कार्य छथि। ई भिन्नता प्रमाणगत रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा लेखन कखन अधिक

विश्वसनीय, मौखिकता कखन सुधारयोग्य—एहि विशिष्ट आपत्तिक तुलना अधिक विस्तार पबित तँ विचार-विनिमय आरो कठोर होएत।

आगि, फाड़ि देब, नहि पढ़ब : लिखित सामग्रीक नश्वरता

बूढ़बा बतबैत छथि जे लिखल सामग्री जरा, फाड़ि अथवा अनपढ़ल छोड़ल जा सकैत अछि। ई लिखित अभिलेखक तीन भिन्न संकट छथि: भौतिक विनाश, जानबूझि निषेध आ सामाजिक उदासीनता। एहि कथनक माध्यमे अध्याय –८०क हरिपतिक पोथीक शताब्दी-सुरक्षाक भावुक विश्वासकेँ सन्तुलित करैत अछि। लेकिन मौखिक स्मृति सेहो भूल, मृत्यु, विकृत गवाही आ सामूहिक दबावसँ क्षीण होइत अछि—ई बूढ़बाक पूर्ववर्ती ‘हुलासा/हुलासी’ नाम-भ्रममे प्रत्यक्ष देखा गेल छल। अतः ‘लिखित नष्ट होइत अछि, मौखिक अधिक सुरक्षित’ के रूपमे एक-दिशीय सार्वभौम निष्कर्ष नहि। दूनूक त्रुटि अलग छथि, ताहि कारण आपसी जाँच आवश्यक अछि।

‘दुनू एक दोसराक रक्षक’ : स्मृतिक द्विमाध्यमी सिद्धान्त

बूढ़बाक सर्वाधिक परिपक्व उत्तर अछि जे लिखल कथा आ जीवित स्मृति एक दोसराक विकल्प नहि, रक्षक छथि। एतय अनुष्ठानक आवश्यकता कम होयबक प्रस्ताव सिद्धान्ततः अस्वीकार कएल गेल अछि, मुदा अनुष्ठान लिखित पाठक प्रतिद्वन्द्वी सेहो नहि बनैत। यदि लिखित सामग्री नष्ट भऽ जाए, मौखिक परम्परा ओकर कुछ अंश पुनः रचि सकैत; यदि मौखिक संस्करण विकृत हो, लिखित पाठ तुलना लेल एक अवलम्ब होयत। तथापि ई पारस्परिक संरक्षण केवल सम्भावना अछि—कहियो लिखित पातसँ वास्तविक गीतक मिलान, विवादित पाठक सामूहिक सुधार अथवा गलत नामक संशोधनक दृश्य प्रस्तुत नहि। एहि कारण सिद्धान्तक सामाजिक औचित्य उच्च अछि, मुदा प्रत्यक्ष कार्यपद्धति अनाविष्कृत। पूर्व –७७ मे बूढ़बाक नाम-भ्रमक सुधार कोनो लिखित स्रोतसँ कराओल गेल रहित तँ द्विमाध्यमी व्यवस्था तत्काल सिद्ध होयत; एतय कथा सेतु के तर्कक स्तरपर रखैत अछि।

लेखन आ साक्षित्वक दार्शनिक असमानता

लेखन एक चिन्ह-उत्पादनक प्रक्रिया अछि; साक्षी बनब अनुभव, विश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व आ प्रतिपक्षी प्रश्नक उत्तर देबाक काज। बूढ़बाक भेद एहि अर्थमे सटीक अछि। कोनो व्यक्ति कागचपर अप्रमाणित कथा लिखि सकैत अछि; तकरा केवल लिखित होयब सत्यसाक्ष्य नहि बनबैत। वाचिक स्मरण सेहो स्वभावतः त्रुटिरहित नहि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ प्रमाण वस्तुक माध्यमक स्थायित्व मात्र नहि, कथनक विषय, वक्ताक विश्वसनीयता, प्रसंग, अर्थ आ सम्भावित बाधकसँ निर्धारित होइत अछि। पातपर नाम लिखनिहार बच्चाकेँ भविष्य मे स्रोत कोन, तिथि की, विरोधी गवाही छैक कि नहि—ई प्रश्न सिखेबाक आवश्यकता रहत। अध्याय अपन शिक्षाशास्त्रक प्रारम्भ वर्णित करैत अछि, अभिलेखीय सत्य-परीक्षणक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम नहि।

हरिपतिक पाण्डुलिपि आ मंदाकिनीक पात : लेखकीय अधिकार

अध्याय –८० मे हरिपति तीन मास कथा सुनि ताड़पत्रक पोथी लिखैत छथि; इन्दुमती ‘ई कथा हमरा सभक’ कहि स्वामित्वपर आपत्ति उठबैत छथि। –७६ मे मंदाकिनी ओहि समस्याक भौतिक समाधान खोजैत छथि। आगन्तुकक कलम पर निर्भर लोक आब अपन अक्षर उत्पन्न करय लागैत अछि। मुदा अक्षर रेखा खिंचबाक

आरम्भसँ साहित्यिक स्वामित्वक स्वचालित अन्त नहि होइत। कृति कोन भाषामे लिखत, कोन पाठक हेतु, कतबा सचेत सम्पादनसँ, स्रोतक सामुदायिक अधिकार कोना सुरक्षित रहत—ई प्रश्न शेष। मंदाकिनीक प्रयोग एकाधिकार-विरुद्ध शक्तिशाली आरम्भ अछि, पर लिखनिहार समुदायक पूर्ण साहित्यिक स्वायत्तता कथाक भविष्यक सम्भावना रूपमे प्रतिज्ञात अछि।

यादवानन्दक नोटबुक आ पाठशालाक मध्य संस्थागत कड़ी

अध्याय –७८ मे यादवानन्द वसुन्धराक तीन घंटाक वंशगवाही लिखैत छथि, मुदा पोथी अपन लग राखबाक वचन दैत छथि। मंदाकिनीक असन्तोष एहि पराधीनताक सामाजिक परिणाम बुझबैत अछि। मुदा वर्तमान अध्यायमे ओहि पोथीक प्रति समुदाय लग आनबाक, पढ़बाक अथवा ओकर गलत प्रविष्टिक सुधार करबाक कोनो दृश्य नहि। पाठशालाक आविर्भाव एकटा नव माध्यम बनबैत अछि, पूर्व सुरक्षित सामग्रीपर तत्काल अधिकार नहि। ई कारणात्मक सीमा चिन्हित करब आवश्यक अछि। अन्यथा ‘आब पढ़ि सकब’ सँ ‘हमर पुरान पंजीसँ सभ गलती सुधरि गेल’क अनुचित छलाँग होयत। शिक्षाक सामाजिक कार्य पुरान अभिलेखक पुनर्परीक्षणक क्षमता तैयार करब अछि, जे अभ्यासक बादहि फलित भऽ सकैत अछि।

शिक्षा आ प्रमाणक स्वतन्त्रता : नव्य-न्यायक अर्थ

मंदाकिनीक आरम्भिक कथन ‘हमरा सभक अपन आँखिमे नहि’ एहि तथ्यपर आधारित अछि जे उपेक्षित समुदाय लिखित चिह्नसँ स्वतन्त्र ज्ञान ग्रहण नहि करि सकैत। नव्य-न्यायक ‘प्रत्यक्ष’ शब्दकेँ एकर संग सरलता सँ बराबर करब अनुचित; कागच पढ़बमे नेत्र-सम्बन्धी अनुभूति, लिपिक शाब्दिक परम्परा, स्मृति आ अर्थज्ञान मिलैत अछि। पातपर क, ख लिखब दृश्य चिन्ह-ग्रहणक आरम्भ मात्र अछि; ओहि चिन्हसँ सत्य कथाक निर्णयक हेतु संगत वचन, अर्थ आ सन्दर्भ चाही। स्वतन्त्रता मात्र अक्षर पहिचानब नहि—प्रमाणक साधन, विरोधी पक्ष आ स्रोतक विश्वसनीयता पर प्रश्न करबाक अधिकार सेहो। एहि अर्थमे अध्यायक शैक्षिक वचन उपन्यासक पहिल दार्शनिक शास्त्रार्थक सामाजिक विस्तारक सम्भावना रखैत अछि।

‘पहिल अक्षर’क कथात्मक महत्ता : लघु क्रियामे महाकाल

एहि अध्यायमे केओ युद्ध नहि जीतैत, राज्य नहि बदलैत, अलौकिक गोहिक प्रत्यक्ष प्राकट्य सेहो नहि। एकटा छोट पातपर बच्चाक पहिल अक्षर सार्वजनिक परिवर्तनक केन्द्र बनैत अछि। पूर्वक शंख-रजत विवादमे ज्ञानक विषय वस्तुक भ्रम छल; आब ज्ञानक अधिकार सामाजिक रूपसँ वितरित होयबाक चाही, ई प्रश्न सक्रिय अछि। बच्चाक हाथमे छड़ीक नोक पाठक हेतु दृश्य-वस्तु होइतहुँ समयमे पैघ सम्भावना धारण करैत अछि। एतय लघु बाह्य घटना आ व्यापक सामाजिक अर्थक असमान अनुपात सौन्दर्यात्मक रूपसँ सफल अछि। मुदा नव अक्षरक आकृति, प्रथम पाठकठाम ककर बच्चा क लिखलक, ककरा कठिनाई भेल—एहि सूक्ष्म अनुभवक अभाव कथा-घटनाकेँ अधिक सामूहिक घोषणाक रूपमे रखैत अछि।

निरन्तरता : मंदाकिनीक बुढ़ापा धरि शिक्षण

कथावाचक कहैत अछि जे मंदाकिनी बुढ़ापा धरि प्रत्येक भोरे पात बाँटि नव बच्चासभकेँ पहिल अक्षर सिखबैत रहलीह। ई एकटा दीर्घकालिक शिक्षिका-जीवनक संक्षिप्त जीवनी अछि। एक सप्ताहक सामूहिक प्रयोग घुरि-घुरि संस्थापकक प्रतिदिनक श्रम बनैत अछि। एहि दोहरावक कारण ‘नारिकेल पात पाठशाला’ केवल प्रतीकात्मक नाम नहि, समय-संचालित काजक संकेत पबैत अछि। मुदा शिक्षिकाक अपन जीविका, परिवार, बीमारी, विश्राम, मेहनताना, उत्तराधिकारी शिक्षकक प्रशिक्षण तथा वृद्धावस्थाक सामाजिक संरक्षण नहि देखाओल गेल। —७७ मे बूढ़बाक दीर्घ एकतरफा सेवा सँ थकबाक विषय उठल छल; वर्तमान अध्यायमे मंदाकिनीक दशकव्यापी नि:स्वार्थ शिक्षणक भारपर समान प्रश्न उठबैत पाठ पाठककेँ मौन छोड़ैत अछि। ई दू अध्यायक बीच गहन नैतिक अन्तर्पाठ अछि।

स्थायी संस्था बनबाक दावा : ‘मान्यता-प्राप्त’ केकरा द्वारा?

कथावाचक बतबैत अछि जे प्रारम्भक अनौपचारिक जमघट कालक्रममे ‘मान्यता-प्राप्त परम्परा’ बनि गेल। एकर अभिप्रेत अर्थ सामाजिक स्वीकृति भऽ सकैत अछि, अथवा प्रशासनिक/राजकीय मान्यता—मूल पाठ दूनू बीच स्पष्टता नहि दैत। तेँ पाठशाला द्वारा शासनक अधिप्रमाणन, शिक्षक नियुक्ति वा पाठ्यक्रमक वैधानिक स्वीकृति सम्पन्न भेल, एहन दावा करब अनुचित। गामक आवर्ती सम्मति आ अगिला पीढ़ीक भागीदारी स्वयं सांस्कृतिक मान्यताक आधार भऽ सकैत अछि। संस्थात्मक अध्ययनक कसौटीपर समय, शिक्षक, सामग्री, उत्तराधिकारी, निधि, प्रवेशनियम आ ज्ञान-स्तरक परीक्षण आवश्यक अछि। मूल कथा दीर्घकालक टिकाऊपनक सारांश प्रदान करैत अछि, संस्थाक पूरा इतिहास नहि।

‘हर पीढ़ी’क सार्वभौम घोषणा : आवृत्तिक प्रमाणसीमा

नव पाठशालामे ‘हर पीढ़ीक बच्चा’ जाति आ लिंगक भेद बिना अक्षर सिखैत रहल, एहि प्रकारक व्यापक वाचकीय घोषणा अछि। आरम्भक एक कक्षा प्रत्यक्ष वर्णित अछि; बादक अनन्त वर्गसभक विशिष्ट दृश्य नहि। कथावाचक singulative आरम्भसँ iterative दीर्घावधि धरि गमन करैत अछि। कथा-गतिक दृष्टिएँ ई तीव्र संक्षेप इतिहासक विस्तार सम्भव बनबैत अछि, मुदा सामाजिक इतिहासक दृष्टिएँ निरन्तर प्रवेशक प्रमाण सीमित रखैत अछि। ककरो पीढ़ीमे गरीबी, रोग, पर्यावरणीय संकट अथवा जाति-दबाव पठन रोकलक कि नहि, से कथन नहि दैत। एहि कारण ‘हर पीढ़ी’ सांस्कृतिक आदर्शक उद्घोषणा आ कथाभीतरक भविष्य-सारांश अछि, प्रत्येक बच्चाक शिक्षा-अधिकारक स्वतन्त्र निरीक्षण नहि।

कथाक काल-व्यवस्था : एक दिन, एक सप्ताह आ बुढ़ापा

कथनकालक व्यूह तीन स्पष्ट स्तर रखैत अछि: आँगनमे प्रयोगक एक दिन; अगिला सप्ताहमे सार्वजनिक कक्षाक आरम्भ; फेर दशकोंक शिक्षण आ पीढ़ीसभक सामुदायिक विस्तार। पहिल दुई अवस्थामे दृश्यात्मक कथन, तेसरमे अत्यन्त सघन सारांश अछि। पाठक प्रारम्भिक खोज आ संस्थागत भविष्यकेँ बिना मध्यवर्ती संघर्षक एकहि कारणशृंखला समझि लैत छथि। ई आख्यानक दीर्घ महापरियोजना लेल उपयोगी, कारण प्रत्येक

सामाजिक संस्थाक वर्षवार इतिहास लिखलासँ मूल कथा बोझिल होएत। पर यथार्थवादी संस्थानिर्माणक कठिन श्रम, विरोध, संशोधन आ असफलताक सम्भावना कम देखाइत। कथा-दृष्टिसँ सफल सूत्र; सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ अधूरा कार्यविवरण।

दृष्टिकेन्द्रण : मंदाकिनीक अनुभूति आ कथावाचकक अधिकार

अध्यायक आरम्भ मंदाकिनीक ‘अजीब असंतोष’ आ माएक संग संवादपर केन्द्रित अछि। पातपर रेखा उभरबाक दृश्य ओकरे आँखिसँ लगभग अनुभव होइत अछि; हर्षक पुकार ओकर उत्साहक केन्द्र अछि। तत्पश्चात् कथावाचक स्थायी संस्था, बुढ़ापा आ ‘हर पीढ़ी’क भविष्य घोषित करैत समय पात्रसँ बहुत व्यापक ज्ञानस्थितिमे पहुँचैत अछि। एहि संक्रमणमे पात्रक स्वयं अनुभवक तुलनामे सर्वज्ञ वाचकक ऐतिहासिक सारांश बलवान भऽ जाइत अछि। बूढ़बाक वाणी एहि घटनाकेँ उपन्यासक समग्र ‘अगिला डेग’ रूपेँ प्रमाणित करैत अछि। एहि कारण नवाचारक स्वतन्त्रता आ अधिकृत पुरुष-अलौकिक व्याख्याक अन्तर्सम्बन्ध जटिल अछि। आलोचना मंदाकिनीकेँ केवल बूढ़बाक अभिप्रायक निष्पादनकर्ता नहि मानत।

चरित्रनिर्माण : विचारवाली युवती अथवा केवल आदर्श संस्थापिका?

मंदाकिनी प्रश्न पूछैत छथि, स्वतन्त्र प्रयोग करैत छथि, सहेली सभ जुटबैत छथि, पाठ आरम्भ करैत छथि आ बूढ़बाक स्थापित कबड्डीक आवश्यकता पर प्रश्न उठबैत छथि। एहि चारि स्तरमे हुनकर कर्तृत्व उपस्थित अछि। ओ अलौकिक शक्ति नहि, दैनिक संसारक उपलब्ध पात आ समयक सहारे नव संस्था बनबैत छथि। मुदा हुनकर निजी संशय, आरम्भिक असफलता, सहेलीसभक स्वतन्त्र नाम, शिक्षक बनबाक ज्ञानक स्रोत आ सामाजिक विरोधक कथा कम अछि। पात्र ‘एकटा विचारक संस्थापिका’ रूपमे सघन छथि; बहुस्तरीय मनुष्यक रूपमे हुनकर स्वभाव अधिक विकसित भऽ सकैत छल। सांकेतिक सफलता एहि सीमाकेँ स्वतः मेटा नहि सकैत।

सहेलीसभक अनाम सामूहिक श्रम

कथामे मंदाकिनी सहेलीसभसँ संग पात जमा करैत, साफ करैत आ वर्ग चलबैत छथि। ई स्पष्ट कएल जाए जे शिक्षाक सफलता एकल आविष्कारक तुरन्त फल नहि—अनाम सहेलीसभक संकलन, सफाई आ साझा श्रमक परिणाम अछि। हुनकर नाम, जाति, लिंगक अलग अनुभव, पढ़नक पहिले स्तर अथवा शिक्षणविधि प्रस्तुत नहि। उपन्यास जँ नामरक्षाक महागाथा अछि, तखन नव पाठशालाक निर्माणक वास्तविक सहकर्मीसभक अनाम रहब आलोचनात्मक विडम्बना अछि। ‘मंदाकिनी संस्थापिका’ एहि कथनाक सांस्कृतिक सच अछि; तथापि सामूहिक महिला-श्रमक व्यक्तिगत अभिलेखन बचि नहि पबैत। समानान्तर इतिहासक दृष्टि एहि अनाम श्रमकेँ उपस्थित प्रमाणक आधारपर चिन्हित करत, ओकर सदस्यसभक कल्पित नाम गढ़त नहि।

शिक्षाक आर्थिक स्वरूप : मुफ्त सामग्री आ शिक्षकक श्रम

सुखल पात उपलब्ध अछि, मुदा ‘मुफ्त पात’ आ ‘मुफ्त शिक्षा’ एकहि बात नहि। संकलन, सफाई, कक्षा चलब, बच्चे घरसँ आनब, अवकाश दऽ सकब, पढ़ेबाक समय, शिक्षकक जीवनयापन—सभ शिक्षा-व्यवस्थाक वास्तविक संसाधन छथि। मूल अध्याय एहि श्रमक आर्थिक माप नहि दैत। मंदाकिनी बुढ़ापा धरि प्रातःक पात-

वितरण करैत छथि, मुदा हुनकर स्वास्थ्य वा आजीविकाक बदलामे कोनो पारिश्रमिकक चर्चा नहि। संसाधन-अभावपर विजयक सकारात्मक कथामे निःशुल्क स्त्री-श्रमक सामान्यीकरणक जोखिम अछि। एहि आलोचनाक उद्देश्य नवाचारक महत्त्व घटेबाक नहि, ओकर वास्तविक उत्पादन-सम्बन्ध स्पष्ट करब अछि।

लोकगीत : शिक्षणक उच्चारण आ सामूहिक लय

समापन गीत 'अ सँ आ, क सँ ख'क क्रमद्वारा प्रत्यक्ष अक्षराभ्यासक ध्वनि निर्मित करैत अछि। गामक पुरनका कबड्डीक सामूहिक पुकार एतय वर्णमालाक सामूहिक उच्चारणमे बदलि जाइत अछि। परम्परा नष्ट नहि होइत, ओकर वाचिक लय नव ज्ञान-वितरणक कार्यमे प्रवेश करैत अछि। 'जे आइ अक्षर सिखल, से कालि नाम बचाबय' वाक्य भविष्यमुखी आकाङ्क्षा अछि; अक्षर सीखब आ अन्यायक कारण, प्रमाण आ उत्तरदायित्व सुरक्षित करब बीच अनेक चरण बाकी छथि। ई गीत प्रारम्भिक शिक्षाक आनन्द आ सामाजिक व्रतक सम्मिलन रचैत अछि, मुदा एक पंक्तिक वचनकेँ शैक्षिक उपलब्धिक परिमित प्रमाण मानब अनुचित।

'बारह सय बरख' : पातक भौतिक आयु वा कथाक कालसंकेत?

गीत कहैत अछि जे नारिकेल पातपर लिखल अक्षर 'बारह सय बरख पढ़ल गेल'। ई पंक्ति पूर्व-कथाकालक व्यापक समय-परास, बूढ़बाक सैकड़ों बरखक स्मृति आ वर्तमान पाठक धरि पहुँचनिहार परम्पराक प्रतीकात्मक सेतु अछि। मुदा एकहि सुखल नारिकेल पातपर बनेल एक रेखा बारह सय बरख धरि टिकैत रहल, एहन प्रत्यक्ष प्रमाण मूल अध्याय नहि दैत। भविष्यक पीढ़ी वारंवार पातपर लिखैत रहल होथि, तखन परम्परागत सततता सम्भव अछि; वस्तुगत अविनाशी पातक दावा नहि। एतय काव्यात्मक अतिशयोक्ति पर साहित्यिक आलोचनाकेँ भौतिक इतिहासक तथ्य आरोपित नहि करबाक चाही।

भारतीय काव्यशास्त्र : अद्‌भुत, उत्साह आ शान्तक सन्धि

पातपर निशान उभरबाक क्षण विस्मय आ हर्षक भाव पैदा करैत अछि। कौशल्याक मुस्कानमे पूर्ववर्ती पीढ़ीक त्रासदीसँ उबरबाक करुण-शेष अछि; अगिला सप्ताहक कक्षामे सामूहिक उत्साह वीरभावक अहिंसक सामाजिक रूप देबैत अछि। अक्षरमाला-वाचन आ बूढ़बाक द्विमाध्यमी स्मृति-सिद्धान्त शान्तसदृश सन्तुलनक दिशा दैत अछि। एहि रसात्मक गतिकेँ जबरदस्ती नवरसक सम्पूर्ण आवृत्ति मानब उचित नहि। ध्वनिक स्तरपर पात 'स्थानीय साधन', अक्षर 'अपन ज्ञानक अधिकार', आ गाछ 'दीर्घकालक सामुदायिक इतिहास' बनैत अछि। औचित्यक कसौटीपर एक महत्त्वपूर्ण आपत्ति अछि—कथाक आरम्भिक निरक्षर संस्थापिका साप्ताहिक अन्तरालमे अक्षर शिक्षिका केना बनलीह। कलात्मक सम्भावना एहि कारणात्मक कड़ीकेँ पूरा स्पष्ट करय चाहैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास : स्रोतसमुदायक लेखकत्व

एहि अध्यायमे उपेक्षित चर्मकार टोला इतिहासक विषय मात्र नहि रहैत, सम्भावित लेखन-समुदाय बनबाक दिशा पकड़ैत अछि। हरिपति आ यादवानन्द पूर्वमे इतिहासक बाहरी लिखनिहार छलाह; मंदाकिनी शिक्षाक साधन अपन सामाजिक संसारभितर खोजैत छथि। ई परिवर्तन केवल पठनक संख्या नहि, स्रोतसमुदायक आत्मप्रतिनिधित्वक सम्भावना अछि। मुदा नई पाठशालाक भौतिक यथार्थक परीक्षण जरूरी अछि—प्रवेश, प्रशिक्षित शिक्षक,

लेखकीय स्वामित्व, नामक शुद्धता, पाठकक पहुँच आ परम्पराक सम्पादन-पद्धति। समानान्तर इतिहास उपेक्षितक प्रत्येक वाणीकेँ जाँचबिनु निर्विवाद घोषित करबाक विधान नहि; ओ इतिहास-लेखनक स्रोतक परिधि विस्तार आ प्रमाणक न्यायसंगत परीक्षण दुनूकेँ संग लैत अछि।

नव्य-न्यायक हेतु-शृंखला : खोजसँ साक्षरताक सामूहिक साध्य

पक्ष चर्मकार टोलाक शिक्षासँ वञ्चित बच्चा छथि; साध्य सुलभ अक्षर-शिक्षाक आरम्भ; हेतु सुखल पातपर साफ निशान बनबाक क्षमता, स्थानीय पात-प्रचुरता, सहेलीसभक श्रम आ सार्वजनिक स्थानक उपलब्धता अछि। एहि सहकारक कारणसभमे सँ कोनो एक अकेला पर्याप्त नहि। ‘मुफ्त पात’ सँ ‘सम्पूर्ण साक्षरता’क सार्वभौम व्याप्ति असिद्ध अछि। उपलब्ध सामग्री शिक्षक, वर्णमाला आ शिक्षणक समयबिना अधूरी; प्रशिक्षित शिक्षक सामग्रीबिना बाधित; खुला कक्षा सामाजिक प्रवेशबिना अपूर्ण। मूल अध्याय जे वास्तविक रूपेँ देखबैत अछि से पात-आधारित अक्षराभ्यासक आरम्भ आ बादक परम्परागत स्थायित्वक कथावाचकीय सारांश अछि। ई आन्तरिक तर्क स्पष्ट कएलापर सामाजिक नवाचारक उपलब्धि अधिक विश्वसनीय, आलोचनात्मक रूपसँ परिमित बनैत अछि।

अगिला अध्याय —७५ लेल पूर्वसन्धि : शिक्षा प्रश्न जनमबैत अछि

अगिला ‘तर्कक पहिल विद्रोह’क मूल आरम्भ बतबैत अछि जे पात पाठशालाक शिक्षित पीढ़ी अपन पुरनका परम्परा पर प्रश्न पुछय लागैत अछि। ई अध्याय –७६क उपलब्धिक अप्रत्याशित परिणाम बनेबाक सम्भावना खोलैत अछि। साक्षरता केवल पूर्वजक स्मृति श्रद्धासँ लिखबाक क्षमता नहि, लिखल तथ्यक आलोचना करबाक अधिकार सेहो दैत अछि। मंदाकिनी बूढ़बाक समक्ष कबड्डीक आवश्यकता पूछैत छथि; आगामी पीढ़ी बूढ़बाक अस्तित्वक प्रमाणक प्रश्न उठाएत, एहि प्रकारक कथात्मक निरन्तरता बनैत अछि। मुदा –७६मे तर्कक सार्वजनिक विद्रोह घटल नहि; ई आगामी प्रसंगक स्वतन्त्र परीक्षणक विषय अछि। नव शिक्षाक मुक्त परिणाम अनुष्ठानक प्रतिरोध सेहो भऽ सकैत अछि—एहि अन्तर्विरोधसँ कथा अधिक समृद्ध बनि सकैत अछि।

घटना-प्रमाण-नैतिक परिणाम सारणी

घटना / निर्णय | मूल पाठसँ प्रत्यक्ष सामग्री | प्रमाणक सीमा | आलोचनात्मक अर्थ

मंदाकिनीक प्रारम्भिक असन्तोष | टोलाक लोक आ स्वयं ओ लिखित अक्षर नहि पढ़ि सकैत | पढ़बाक विशिष्ट स्तर अनिर्दिष्ट | लिखित इतिहासक स्वाधीन उपयोगक माँग

ब्राह्मण-टोलाक पाठशालाक निषेध | केवल उच्चजातिक बालकक प्रवेश; बालिकाक निषेध | औपचारिक नियमपत्र नहि | जाति आ लिंगक पृथक बहिष्करण

कागच आ ताड़पत्रक महँगाई | बच्चासभ लेल सामग्री जुटेबामे बाधा | ऐतिहासिक मूल्य-सारणी नहि | शिक्षाक आर्थिक अड़चन

सुखल नारिकेल पातपर छड़ीसँ रेखा | आकृति स्पष्ट उभरबाक दृश्य | दीर्घस्थायी लेखनक परीक्षा नहि | स्थानीय सामग्रीक प्रयोगात्मक सम्भावना

कौशल्याक अनुमोदन | गाममे नारिकेल गाछक प्रचुरताक स्मरण | स्थायी आपूर्ति-परिमाण अज्ञात | मातृ-सहयोग आ पर्यावरणीय ज्ञान

अगिला सप्ताह सामूहिक पात-संकलन | मंदाकिनी आ अनाम सहेलीसभक श्रम | श्रमक समय वा मूल्य नहि | प्रयोगसँ सार्वजनिक आयोजन

पहिल कक्षा | बालक–बालिका संग अक्षर खिंचय सिखैत | शिक्षिका स्वयं पढ़ब केना सिखलीह अनिर्णीत | ज्ञान-सम्प्रेषणक प्रमुख रिक्ति

किछु गरीब ब्राह्मण बच्चाक आगमन | आर्थिक कारणसँ नव पाठशाला चुनब | सभ जाति/लिंगक वास्तविक अनुपात नहि | वर्ग आ जातिक अन्तर

बूढ़बाक शाब्दिक अनुमोदन | पुरखाक अनलिखल कथा सँ नव साक्षरता जोड़ैत | बच्चासभक पूर्ण साक्षरता तत्काल नहि | स्मृतिक सामाजिक उद्देश्य

मंदाकिनीक कबड्डी-सम्बन्धी प्रश्न | लेखन आ स्मरणक आवश्यकता पर प्रतिवाद | द्विमाध्यमी पद्धतिक प्रयोग नहि | नव शास्त्रार्थक आरम्भ

बूढ़बाक लिखित–मौखिक पूरकताक उत्तर | पात/कागच नष्ट होयबाक आशङ्का | मौखिक स्मृतिक त्रुटिसभ सेहो | परस्पर सत्यापनक सम्भावना

स्थायी पाठशालाक भविष्य | परम्पराक मान्यता आ मंदाकिनीक बुढ़ापा धरि शिक्षण | संस्थागत मान्यता देनिहार अनिर्दिष्ट | पुनरावृत्त श्रमक सामाजिक मूल्य

समापन वर्णमाला-गीत | अ सँ आ, क सँ खक सामूहिक उच्चारण | बारह सय बरख पातक आयु सिद्ध नहि | साहित्यिक काल-ध्वनि आ शिक्षा-उत्साह

मूल पाठक अक्षरशः उद्धरण-सूचक

१. ‘पहिल पाठ पातपर—नाम केना लिखल जाइ’ — आरम्भिक फकरा।

२. ‘जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।’ — इतिहासक वृक्षरूपक।

३. ‘हमरा सभक कथा अन्यक हाथमे अछि’ — मंदाकिनीक लेखकीय पराधीनताबोध।

४. ‘मुदा हमरा सभक अपन आँखिमे नहि।’ — पठनाधिकारक प्रश्न।

५. ‘हमरा सभक बच्चा कतय पढ़त?’ — सार्वजनिक शिक्षाक नैतिक माँग।

६. ‘कागच आ ताड़पत्र महग छल’ — सामग्रीक आर्थिक सीमा।

७. ‘एकटा सुखल नारिकेल पात’ — प्रयोगक पदार्थ।

८. ‘रेखा साफ उभरि आयल’ — प्रथम प्रयोगक कथित परिणाम।

९. ‘देखू! हम नारिकेल पातपर लिखि सकैत छी!’ — मंदाकिनीक खोजक सार्वजनिक घोषणा।

१०. ‘गढ़ नारिकेलमे कोन चीजक अभाव नहि?’ — कौशल्याक पर्यावरणीय तर्क।

११. ‘अगिला सप्ताह’ — व्यक्तिगत प्रयोगसँ सामूहिक कक्षा धरि कालान्तर।

१२. ‘लड़का आ लड़की दुनू’ — लिंगसमावेशनक निर्दिष्ट वचन।

१३. ‘किछु गरीब परिवार’ — आर्थिक असमानताक संकेत।

१४. ‘अहाँ जे केलहुँ, से हमरा सभक सम्पूर्ण कथाक अगिला डेग थिक।’ — बूढ़बाक मूल्यांकन।

१५. ‘अपन कथा अपने लिखताह।’ — नव पीढ़ीक अपेक्षित स्वायत्तता।

१६. ‘की एकर आवश्यकता कम भऽ जायत’ — मंदाकिनीक अनुष्ठानपर प्रतिप्रश्न।

१७. ‘लिखब आ साक्षी बनब दुइ भिन्न काज थिक’ — बूढ़बाक प्रमाण-विभेद।

१८. ‘जे लिखल जाइत अछि, ओकरा कोइयो जरा सकैत अछि’ — अभिलेखक नश्वरता।

१९. ‘अहाँकेँ दुनू चाही’ — द्विमाध्यमी संरक्षण।

२०. ‘एक दोसराक विकल्प नहि, अपितु एक दोसराक रक्षक।’ — पूरक स्मृतिविधान।

२१. ‘बुढ़ापा धरि’ — शिक्षणक दीर्घकालिक अवधि।

२२. ‘अ सँ आ, क सँ ख’ — वर्णमाला-गीतक वाचिक अभ्यास।

२३. ‘जे आइ अक्षर सिखल, से कालि नाम बचाबय।’ — भविष्यक अभिलाषा।

२४. ‘जे नारिकेल पातपर लिखल, से बारह सय बरख पढ़ल गेल।’ — काव्यात्मक कालातिशयोक्ति।

ई छोट उद्धरण-खण्ड मूल उपन्यासक अध्याय [–७६]क फकरा, कथा-संवाद, समापन गीत आ कथावाचकक वचनसँ मिलाओल जाएत; एकल वाक्यक पृष्ठस्थान नहि गढ़ल गेल।

कथात्मक उपलब्धि आ अन्तर्विरोधक तुलनात्मक निर्णय

अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि चारि स्तरपर अछि। प्रथम, उपेक्षित समुदाय इतिहासक विषयसँ इतिहास पढ़निहार आ सम्भावित लिखनिहारक रूपमे बदलैत अछि। दोसर, शिक्षा स्थानीय पर्यावरणक उपलब्ध संसाधनक संग जुड़ि सैद्धान्तिक अधिकारसँ प्रत्यक्ष कक्षाक क्रियामे अबैत अछि। तेसर, मंदाकिनी एक सक्रिय प्रश्नकर्त्री छथि, जे बूढ़बाक आश्वासनक उपरान्त सेहो लिखित कथा आ कबड्डीक सम्बन्ध पर प्रतिप्रश्न करैत छथि। चारिम, गामक पुरनका मौखिक स्मृतिपरम्परा नव शिक्षाक विरोधी नहि बनि, पूरक बताओल जाइत अछि। मुदा कथा एकटा गंभीर शिक्षण-रिक्ति रखैत अछि: निरक्षर मंदाकिनी बिना दर्शाओल प्रशिक्षक वा अध्ययनक पहिल अक्षरक शिक्षिका केना बनलीह। एक सप्ताहमे संस्थानक तीव्र स्थापना, शिक्षकसभक अनाम श्रम, दीर्घकालीन मान्यताक अस्पष्ट स्रोत आ सामग्रीक स्थायित्वक अप्रमाणित आशा सेहो अवस्थित छथि। ई सीमा चिन्हित करब लोकतंत्रीकरणक परियोजनाक नकार नहि, ओकर विश्वसनीय रचनात्मक विकासक अनुरोध अछि।

समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय निर्णय आ आगामी सन्धि

‘नारिकेल पातक पहिल पाठ’क मूल महत्त्व कोनो अद्भुत चमत्कारमे नहि, सामुदायिक शिक्षाक साधारण भौतिक प्रारम्भमे निहित अछि। पातपर छड़ीक रेखा शताब्दीक बाहरी लेखकीय नियन्त्रणक विरुद्ध सम्भावित आत्म-अभिलेखनक पहिल संकेत बनैत अछि। उपन्यासक बड़ी कथा—बूढ़बाक स्मृति, हरिपतिक पाण्डुलिपि, यादवानन्दक छाया-पंजी, कौशल्याक पारस्परिक स्मरण—मंदाकिनीक शैक्षिक प्रस्तावमे एक नव व्यवहारिक दिशा पबैत अछि। पाठशालाक पहिल कक्षा सत्यापित कथा-घटना अछि; सर्वपीढ़ीगत शिक्षाक स्थायित्व वाचकीय भविष्य-सारांश। एहि भेदकेँ मानने ई अध्याय शैक्षिक न्याय, स्त्री-कर्तृत्व, श्रम, पर्यावरण आ ज्ञानमीमांसाक अनेक संगम निर्मित करैत अछि। एकर शिक्षण-प्रक्रियाक अनकहल कड़ी आ भौतिक संसाधनक भविष्यक परीक्षण शेष रहैत अछि। अगिला अध्याय –७५ ‘तर्कक पहिल विद्रोह’क संकेत अनुसार शिक्षित पीढ़ी परम्परासँ आलोचनात्मक असहमति व्यक्त करैत अछि; तेँ एहि अध्यायक सर्वाधिक प्रौढ़ निष्कर्ष ई अछि जे शिक्षा नाम लिखेबाक संग प्रश्न पुछबाक अधिकार सेहो जन्म दैत अछि।

पाठाधार आ परापाठ-सूचना

प्राथमिक पाठ : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७६] ‘नारिकेल पातक पहिल पाठ’, अनुक्रमणिकानुसार मुद्रित पृष्ठ २१३–२१६। आलोचनात्मक मानचित्र : ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’, अध्याय –७६क प्रविष्टि, पाठमात्रा ७२७ शब्द-एकक आ क्रियासूचक अनुच्छेद ५४.२ प्रतिशत। मूल अध्यायोत्तर ‘सामग्रीक अभावसँ नवाचार — शिक्षाक लोकतांत्रीकरण’ टिप्पणी व्याख्यात्मक परापाठ अछि; ओहि टिप्पणीमे नारिकेल पात पाठशालाक उत्पत्ति काल्पनिक कहल गेल अछि। कथाभीतरक घटना आ ऐतिहासिक वास्तविकताकेँ एहि समीक्षामे एक नहि मानल गेल। अगिला प्रकरण –७५ ‘तर्कक पहिल विद्रोह’।

प्रकरण २६ | मूल अध्याय –७५ — तर्कक पहिल विद्रोह

पाठाधार, विवेचन-विधि आ प्रश्नक निर्धारण

अध्याय –७५ पूर्व-कथाकालक छब्बीसम स्वतन्त्र अध्याय थिक। मूल पाठ एकटा सामुदायिक पाठशालाक तीन पीढ़ीक फल, विश्वनाथक नगर-शिक्षा, अमावस्याक खेलसँ हुनकर सार्वजनिक दूरी, दादीसँ तर्क, युवकसभक अनुष्ठान-त्याग, पशुधनक नव हानि, जंगलमे अपरिचित निशानक निरीक्षण, बूढ़बाक संवाद आ शर्तसहित पुनः सहभागिताक क्रम प्रस्तुत करैत अछि। एहि समीक्षामे दृश्य घटना, पात्रक अनुमान, बूढ़बाक अलौकिक वाणी, कथावाचकक सारांश आ अध्यायोत्तर लेखककीय टिप्पणी अलग प्रमाण-स्तरपर राखल गेल अछि। केन्द्रीय प्रश्न ई नहि जे आस्था वा तर्कमे के ‘जीतल’, बल्कि ई जे कादम्बरी असहमत व्यक्तिकेँ परीक्षणक वास्तविक स्वतन्त्रता दैत अछि कि परीक्षा-नाटक अन्ततः पुरनका परम्पराक पूर्वनिश्चित पुष्टि बनि जाइत अछि।

–७६क शिक्षा-सफलताक अप्रत्याशित परिणाम

‘नारिकेल पातक पहिल पाठ’मे मंदाकिनी स्वयं पढ़बाक अधिकार माँगि पातपर अक्षर-शिक्षाक आरम्भ केने छलीह। तत्काल उद्देश्य पुरखाक नाम आ इतिहास अन्यक हाथमे नहि छोड़ब छल। –७५ मे उएह शिक्षाक अगिला

फल निकलैत अछि—पढ़ल-लिखल युवक पुरनका स्मरण-अनुष्ठानपर प्रश्न उठबैत छथि। कथाक विकास एतय प्रभावकारी अछि, किएक तँ शिक्षा केवल पुरखाक आज्ञा अधिक कुशलतासँ पालन करबाक साधन नहि, आलोचनात्मक स्वाधीनताक सम्भावना बनैत अछि। मंदाकिनी जे नव सामाजिक क्षमता उत्पन्न केलनि, ओकर उपयोग हुनकर वंशज अनुष्ठानक विरुद्ध सेहो करैत छथि। एहि ‘अनपेक्षित फल’मे पात्रक कर्तृत्व आ सामाजिक संस्थाक मुक्त परिणाम उपस्थित अछि। मुदा उपन्यास बादमे विश्वनाथकेँ पुनः कबड्डीमे आनैत अछि; तेँ आलोचकीय प्रश्न ई बनैत अछि जे ई स्वतन्त्र परिणाम टिकैत अछि कि संकट-दृश्य ओकरा पुनः पुरनका श्रद्धाक नियंत्रणमे लौटा दैत अछि।

तीन पीढ़ीक कथाकाल : आवृत्ति आ संक्षिप्त इतिहास

अध्यायक आरम्भमे ‘मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि फलल-फूलल’ कथन अछि। एहि एक वाक्यमे अनेक बरखक वर्ग, शिक्षक, विद्यार्थी आ पारिवारिक परिवर्तन समाहित अछि। विश्वनाथ मंदाकिनीक परपोता कहल गेल छथि; एहि वंश-सूचनासँ शैक्षिक अभ्यासक कालिक दूरी बुझाइत अछि, मुदा प्रत्येक पीढ़ीक आयु, संस्थाक स्थापना-वर्ष अथवा नगर-विद्यालयक ठीक तिथि प्राप्त नहि। कथावाचक बारंबार दीर्घकालकेँ छोट सारांशमे संकुचित करैत अछि, फेर एक अमावस्याक संवादक हेतु विस्तार देबैत अछि। जेरार जेनेतक अवधि-विवेचनक दृष्टिएँ ई सारांश सँ दृश्य, तकर बाद किछु मासक अन्तराल आ जंगल-दृश्यक गमन अछि। पाठशालाक वास्तविक तीन पीढ़ीक अनुभवक बहुवचन एहि संक्षेपमे हरायल रहैत अछि, मुदा उपन्यासक व्यापक समयमान बनौने रखबाक लेल एहि प्रकारक गति उपयोगी अछि।

नव साक्षर समाजक सामाजिक संरचना

आरम्भमे चर्मकार, ब्राह्मण आ कायस्थ बच्चासभ अक्षर पढ़ि, हिसाब लगा आ किताबी ज्ञानक स्वाद लऽ रहल छथि। ई नव पाठशालाक प्रभावक कथावाचकीय विवरण अछि। ‘सभटा’क व्यापक उच्चारण वर्गीय समावेशनक आशय प्रकट करैत अछि, मुदा गामक प्रत्येक परिवार, प्रत्येक बालिका अथवा प्रत्येक पेशागत समुदाय वास्तवमे शिक्षित भेल—एहन पृथक सूची मूल पाठ नहि दैत। महत्त्वपूर्ण ई जे पहिने वञ्चित समुदाय आब नगरक औपचारिक तर्क-शिक्षासँ संवाद करबाक योग्य भऽ रहल अछि। साक्षरता आ गणितक उल्लेख केवल धार्मिक वचनक पाठन नहि, व्यवहारिक विवेचनक क्षमता बढ़बाक प्रतीक अछि। तथापि पाठशालाक पाठ्यक्रम, ज्ञानस्तर आ प्रश्न करबाक नियमक विस्तार नहि। प्रश्न-पुछबाक साहसकेँ केवल किताबक यान्त्रिक परिणाम मानल जाए तँ शिक्षक, परिवार, बहसक अनुभव आ सामाजिक परिवेश जेकाँ सहकारक कारण उपेक्षित रहत।

विश्वनाथक नाम : आकस्मिक समाननामक स्पष्टता

मूल कोष्ठकमे विश्वनाथक परिचय ‘यशपतिक पीड़ितसँ भिन्न, संयोगवश एकहि नाम’ रूपमे देल अछि। ई स्वतः पाठीय पहचान-स्पष्टीकरण अत्यन्त जरूरी अछि। कादम्बरी विशाल पीढ़ीगत विस्तारमे एकहि नामक अनेक व्यक्तिकेँ रखैत अछि, तेँ पाठक बिना एहि निर्दिष्ट भेदक पूर्ववर्ती व्यक्तिसँ एकर संलग्नता मानि सकैत छलाह। कथा भिन्न विश्वनाथक वंश-सम्बन्ध मंदाकिनीक परपोता रूपमे निश्चित करैत अछि, मुदा पहिल नामधारीक जीवनसँ समानता अथवा ऐतिहासिक प्रतिध्वनिक विशेष अभिप्राय नहि दैत। एहिमे नाम सामाजिक स्मृतिक

स्थायित्वक साधन आ भ्रमक स्रोत दुनू बनैत अछि। –१००क शंख-रजत प्रसंगसँ शुरू पहचान–ज्ञानक समस्या एतय साधारण वंश-वर्णनमे लौटैत अछि। एकहि नाम 'एकहि व्यक्ति'क अनिवार्य हेतु नहि; पाठमे भेदक स्पष्ट घोषणा एहि भ्रमकेँ सचेत रूपेँ रोकैत अछि।

नगरमे दुइ बरखक अध्ययन : बाहरी ज्ञानक प्रवेश

विश्वनाथ नव स्थापित नगर-विद्यालयमे दू बरख बिताकऽ तर्कशास्त्र, गणित आ नव विचारसँ परिचित भऽ गाम घुरैत छथि। एहि प्रवासक कथात्मक कार्य अछि स्थानीय स्मृति-विधानक भीतर बाहरी शैक्षिक अनुशासनक प्रवेश। पाठशाला हुनका पढ़बाक आधार देलक; नगर-विद्यालय हुनकर शंकाकेँ व्यापक बौद्धिक भाषा देलक। मुदा ई 'नव विचार' कोन दार्शनिक मत, कोन गणितीय अभ्यास वा कोन ग्रन्थसँ प्राप्त भेल, मूल पाठ निर्दिष्ट नहि करैत। अतः विश्वनाथकेँ कोनो ऐतिहासिक पाश्चात्य वैज्ञानिक पद्धतिक प्रत्यक्ष प्रतिनिधि घोषित करब उचित नहि। ओ तर्कशील पात्र छथि, मुदा हुनकर शास्त्रीय प्रशिक्षणक वस्तुगत स्वरूप धुँधल अछि। पाठीय प्रमाण ई अछि जे ओ साझा परम्पराक कारणात्मक उपयोगितापर प्रश्न करबाक साहस लैत छथि, न कि प्रकृति अथवा अलौकिक घटनाक सभी विकल्पक प्रयोगशाली सिद्धान्त बनौने छथि।

अमावस्याक मञ्च : भाग नहिं लेब स्वयं एकटा क्रिया

अनुष्ठान आरम्भ होइत अछि, विश्वनाथ खेलमे भाग नहि लैत छथि। ओ किनारे बाँहि बान्हि ठाढ़ भऽ देखैत रहैत छथि। एहि शारीरिक मुद्रा मे असहमतिक दृश्यात्मक रूप अछि। पहिने अमावस्याक समूह सक्रिय खेलनिहार आ उपस्थित दर्शकक रूपमे छल; आब दर्शक स्वयं आलोचनात्मक दूरीक स्थान लैत अछि। ओ खेल रोकैत नहि, पारी नष्ट नहि करैत, हिंसा नहि करैत; अपन सहभागिता वापस लैत अछि। एहि कारण विरोधक सामाजिक नैतिकता महत्त्वपूर्ण अछि: शंका व्यक्त करबाक अधिकार अनुष्ठानमे जबरदस्ती प्रवेशसँ अलग अछि। विश्वनाथक शरीर कथा-स्थानमे एकटा नव रेखा बनबैत अछि—पीपरक सांस्कृतिक केन्द्र आ प्रश्नकर्ताक बाहरी किनार। समाज एहि दूरीकेँ कतेक सहन करैत अछि, से आगामी संवादक कसौटी अछि।

दादीक संग आरम्भिक संवाद : अधिकार आ भय

विश्वनाथ दादी लग जाइत छथि, पहिने कहैत छथि जे बात दुःख पहुँचा सकैत अछि। ई वाणी असभ्य तिरस्कार नहि, सम्बन्धक जोखिमसहित शंकाक प्रस्तुति अछि। दादी स्तब्ध रहि जाइत छथि; हुनकर प्रतिक्रिया निजी आ सामुदायिक दुनू स्तरपर अर्थपूर्ण अछि, किएक तँ ओ वर्तमान अनुष्ठान-रक्षिका छथि। विश्वनाथक प्रश्न केवल घरक वैचारिक मतभेद नहि, सार्वजनिक व्यवस्था पर आघातक सम्भावना बनैत अछि। दादीक 'परदादी देखलनि' आ 'माए सुनलनि' कथन अन्तरपीढ़ीगत शब्द-साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एहि दू दावे मे दृष्टि आ श्रवणक विषय, समय आ परिस्थिति अलग अछि; एकरा एकहि एकदम प्रत्यक्ष वर्तमान प्रमाण मानब अनुचित। दादी शंकापर नैतिक अपमान नहि करैत, अपन उपलब्ध पारिवारिक गवाही प्रस्तुत करैत छथि—ई कादम्बरीक उल्लेखनीय संयम अछि।

विश्वनाथक प्रतिज्ञा : खेल सुन्दर, कारण अनिश्चित

विश्वनाथ परम्पराकेँ 'एकटा सुन्दर परम्परा' मानैत छथि, मुदा गोहि अथवा बूढ़बाक ऐतिहासिक–अलौकिक वास्तविकताकेँ 'शायद पुरखाक कल्पना' कहि प्रश्न करैत छथि। एहि वाक्यमे सौन्दर्यात्मक मूल्य आ कारणात्मक विश्वास अलग अछि। कोनो सामूहिक खेल लोकस्मृति वा सामाजिक आनन्द लेल मूल्यवान भऽ सकैत अछि, जँ ओकरा प्राकृतिक आपदासँ अनिवार्य रक्षक मानबाक प्रमाण नहिं हो। विश्वनाथ एहि भेदक उद्घाटन करैत छथि। हुनकर दावा सेहो सशर्त अछि—'शायद'क कारण ओ पूर्ण खण्डन प्रस्तुत नहि करैत, अलौकिक कथाक वैकल्पिक उत्पत्ति प्रस्तावित करैत छथि। ताहि कारण हुनका सर्वथा नास्तिक, विज्ञानक अन्तिम निर्णयकर्ता अथवा परम्पराद्रोही कहब पाठ-विरुद्ध होयत। ज्ञानक अस्थायी अवस्था मे संशय आ शिष्टता एक संग रहैत अछि।

'मनुष्यक स्मृति भ्रामक' : वैध आपत्ति आ अति-सामान्यीकरण

विश्वनाथ कहैत छथि जे मानवीय स्मृति भ्रामक होइत अछि, लोककथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ि सकैत अछि। ई सम्भावना पूर्ववर्ती –७७क बूढ़बाक 'हुलासा/हुलासी' आ 'सुखदेव/सुरेन्द्र' नामक वास्तविक द्विधासँ बल पबैत अछि। मुदा 'कखनो स्मृति गलत होइत अछि' सँ 'सभ पीढ़ीगत गवाही निश्चित झूठ अछि'क सार्वभौम निष्कर्ष नहि निकलैत। विश्वनाथ स्पष्टतः एहन पूर्ण सार्वभौमिक झूठक दावा नहि करैत; ओ लोककथाक प्रति प्रमाण-सावधानी चाहैत छथि। न्यायमीमांसाक कसौटीपर गलतीक सम्भावना प्रत्यक्ष–शब्दसम्बद्ध परीक्षणक कारण अछि, प्रत्येक गवाही स्वतः अस्वीकारक पर्याप्त हेतु नहि। एहि प्रकारेँ रचना प्रश्नक उचित आधार प्रस्तुत करैत अछि; प्रश्नक पूर्ण उत्तर लेल नाम, समय, स्वतन्त्र गवाही आ वैकल्पिक प्राकृतिक कारणक जाँच आवश्यक अछि।

'अपन आँखिसँ, अपन तर्कसँ' : प्रमाणक स्वराज

विश्वनाथ अपन आँखि आ तर्कक सहारे संसार देखबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि। एहि वाक्यमे –७६क मंदाकिनीक 'हमरा सभक कथा अपन आँखिमे नहि' कथनक प्रत्यक्ष अन्तर्पाठ उपस्थित अछि। मंदाकिनी लिखित पाठ तक प्रत्यक्ष पहुँच चाहैत छलीह; विश्वनाथ प्राप्त पाठ आ लोककथाक दावापर स्वतन्त्र परीक्षण चाहैत छथि। इएह शिक्षाक सामाजिक परिपक्वता अछि—पढ़बाक क्षमता अर्थनिर्धारणक स्वाधीनता बनैत अछि। मुदा 'आँखि' पर पूर्ण निर्भरता स्वयं आलोच्य अछि, किएक तँ दृष्टि गलत पहिचान दऽ सकैत अछि; –१००क शुक्ति–रजतक दार्शनिक प्रस्ताव मूल त्रयीमे पहिनहि स्थापित अछि। तर्ककेँ प्रत्यक्ष, शब्द, स्मृति, अनुमान आ बाधक प्रमाणसभक सहकार चाही। अतः विश्वनाथक आदर्श पूर्ण प्रमाणमीमांसाक शुरुआत अछि, अन्तिम रूप नहि।

विरोधक फैलाव : निजी मतसँ सार्वजनिक व्यवहार

विश्वनाथक वचन गाममे फैलैत अछि, किछु आर युवा कबड्डीमे भाग लेब बन्द करैत छथि। कथा एतय वास्तविक अवस्था-परिवर्तन देखबैत अछि—एक व्यक्तिक निजी असहमति सामूहिक सहभागिताक संख्यामे परिवर्तन उत्पन्न करैत अछि। मुदा 'किछु' युवा के छथि, कतेक रात्रि परम्परासँ अनुपस्थित रहला, अपन निर्णय स्वतन्त्र

कारणसँ लेने कि विश्वनाथक सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रभावमे—ई सभ विवरण अनुपस्थित। तें अनुष्ठान पूर्णतः बन्द भेल, एहन दावा नहि। 'कबड्डी अनियमित रूपसँ होइत छल' पछिला सारांश अछि, प्रारम्भिक प्रत्येक अमावस्याक गिनती नहि। एहि कारण कारणात्मक इतिहासक मूल सूत्र प्रस्तुत अछि, कतेक-कतेक ठाम सामाजिक दबाव अथवा धार्मिक दण्ड लागू भेल नहि, से प्रश्न अनिर्णीत।

बच्चा आ युवा दर्शकक संख्या : बहुमतक प्रमाण नहि

कथावाचक कहैत अछि जे पीपरक भीड़ पहिल बेर सैकड़ों बरखमे छोट होमय लागल। ई दीर्घकालिक परम्पराक सार्वजनिक संकटक सूचक अछि। तथापि भीड़क संख्या घटब 'अलौकिक सत्ता अस्तित्वहीन' अथवा 'विश्वनाथक वैज्ञानिक दावा सिद्ध'क प्रमाण नहि; ओ सामाजिक विश्वास आ सहभागिताक मापक अछि। उलट भीड़ पूर्वमे पैघ छल तइयो गोहिक अलौकिक अस्तित्वक सार्वभौम प्रमाण नहि। एहि संख्यात्मक परिवर्तनक आख्यान-कार्य तनाव बनबैत अछि—विश्वनाथ एकल प्रतिपक्षक बजाय प्रभावी सामाजिक प्रश्नकर्ता बनैत छथि। मुदा भीड़ घटबाक कथन सांख्यिकीय गणना नहि, कथावाचकक व्यापक अनुभववर्णन अछि। इहो बाँचि राखल जाए जे अनुष्ठानक धार्मिक/मिथकीय अर्थक विरोध आ लोकक सामाजिक संगतिसँ दूरी एकहि वस्तु नहि।

बूढ़बाक प्रथम प्रतिक्रिया : प्रश्नकेँ शत्रु नहि मानब

गामक लोक बूढ़बा क्रोधित अथवा दुःखी होयबाक अपेक्षा करैत छथि; ओ 'एकरा आबय दिअ' कहि प्रश्नक स्वागत करैत छथि। एहि प्रतिक्रिया मे रचनाक नैतिक बल अछि। अलौकिक सत्ता अपना आलोचनाक अधिकार अस्वीकार नहि करैत; शंका सामुदायिक जीवनमे वैध ठहरैत अछि। मुदा बूढ़बा 'हम एकटा बात जनैत छी जे विश्वनाथ अखनहु नहि जनैत' कहि ज्ञानक असमानता स्थापित करैत छथि। ई आगाँक रहस्यक पूर्वसंकेत अछि, मुदा आलोचक पूछि सकैत अछि—जे ज्ञान परीक्षणयोग्य नहि, ओकरा प्रतिपक्षीकेँ पूर्वमे किएक नहि बताओल गेल? बूढ़बाक धैर्य स्वागतयोग्य, पर गुप्त श्रेष्ठज्ञानक मुद्रा गुरु–शिष्यक सम्पूर्ण समता नहि। रचनाक आगामी जंगल-दृश्य एहि वचनकेँ कथात्मक भार दैत अछि, यद्यपि ज्ञानक सम्पूर्ण विषय अनिर्दिष्ट रहैत अछि।

वाचस्पति–उदयन–गंगेश : प्रश्नक परम्परागत वैधता

बूढ़बा विश्वनाथक शंका वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आ गंगेश उपाध्यायक प्रश्नधर्मी बौद्धिक परम्परासँ जोड़ैत छथि। ई सूची उपन्यासक पूर्ववर्ती दार्शनिक नाटक, न्याय आ नव्य-न्यायक महाकाय योजनासँ सम्बन्ध निर्मित करैत अछि। तथापि एतेक व्यक्तिक ऐतिहासिक काल, भिन्न दार्शनिक प्रतिज्ञा आ शास्त्रीय उपकरण एक नहि। प्रश्न पूछब सभक व्यापक समान गुण भऽ सकैत अछि, मुदा केवल प्रश्नपद्धतिक समानतासँ बूढ़बाक अलौकिक सत्ता सम्बन्धी आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाण स्वतः स्थापित नहि। ई शास्त्रीय नामसभ कथाक भीतर विश्वनाथकेँ सम्मानजनक वैचारिक वंश दैत छथि; बाह्य दार्शनिक इतिहासक अक्षरशः समानता सूचित करबाक हेतु अलग पाठस्रोत चाही। आलोचनाकेँ 'प्रश्नधर्मिता' आ 'एकहि निष्कर्ष'क भेद बनाए राखब जरूरी अछि।

प्रश्न–गुरु सम्बन्धमे शक्ति-परिवर्तन

गीतक सूत्र ‘जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक’ पाठक सोचकेँ पूर्वहिसँ नियन्त्रित करबाक प्रवृत्ति रखैत अछि। प्रश्न गुरुकेँ सुधारि सकैत अछि; मुदा किछु प्रश्न गुरुकेँ वास्तवमे गलत सेहो सिद्ध कऽ सकैत अछि। एहि अध्यायमे बूढ़बा प्रश्नक वैधता स्वीकार करैत छथि, बादमे विश्वनाथ कबड्डीमे लौटैत छथि। फलतः सम्भावना अछि जे गीतक कथित ‘गुरु-जागरण’क ठोस दृश्य कम, शिष्यक व्यावहारिक परिवर्तन अधिक देखाओल गेल। बूढ़बाक कोन पूर्वविश्वास बदलल, कोन नव कथनकेँ सुधारलनि? पाठ स्पष्ट उदाहरण नहि दैत। एतय शीर्षकक शक्तिशाली प्रतिज्ञा आ घटना-परिणामक बीच असमानता अछि। रचना आलोचनात्मक शिक्षा प्रशंसित करैत अछि, मुदा गुरुकेँ वास्तविक प्रतिप्रश्नद्वारा अपना अलौकिक दावाक संशोधन करवैत नहि देखबैत।

किछु मासक अन्तराल : सुरक्षा-संकटक पुनरावृत्ति

किछु मास बाद कमला–बलानक दूरस्थ, अनाम भागसँ पशुधन गायब होमय लागैत अछि, सोनमा माझिनक जमानाक अनुभव जकाँ। ‘फेर एक बेर’क संकेत पुरान संकटकेँ वर्तमान बहसमे जोड़ैत अछि। पर घटना-सूचना ‘पशु-धन गायब’ धरि निश्चित अछि; गायब पशुक नाम, संख्या, समय, देह अथवा प्रत्यक्ष आक्रमणकारीक अवलोकन नहि। ताहि सँ गायब होयबाक कारण सिद्ध नहि। कथावाचक जोड़ैत अछि जे एहि समय कबड्डी अनियमित आ कमजोर उपस्थितिक संग होइत छल, भेंट सेहो कमजोर पड़ल। कालिक सह-अवस्थिति कथानकक आशङ्का बढ़बैत अछि, मुदा एहि दुइ स्थितिक कारणात्मक व्याप्ति स्वतः स्थापित नहि। यदि इतिहास मे पशु-हानि पहिने सेहो अनेक कारणसँ होइत छल तँ वैकल्पिक कारणक परीक्षण विशेष आवश्यक।

पाछाँ-पाछाँ घटल घटना : कारण सिद्ध नहिं

विश्वनाथक तर्क-विरोधक बाद अनुष्ठानक भीड़ घटल; ओकर किछु मास बाद पशुधन गायब भेल। ई क्रम ‘अमुक घटना पूर्वें, तें पशुधनक हानि ओकरे कारण’ एहन निष्कर्षक लोभ उत्पन्न करैत अछि। नव्य-न्यायक परीक्षा लेल पक्ष गामक पशुधन-हानि, साध्य ‘अनियमित कबड्डीक कारण मूल गोहिक आक्रमण’, हेतु अनुष्ठानक न्यूनता आ कालसमीपता अछि। मुदा हेतु आ साध्यक अनिवार्य सम्बन्धक व्याप्ति प्रस्तुत नहि अछि। सम्भव बाधक वृक, चोरी, रोग, बाढ़ि, अन्य पशु अथवा मानवीय हिंसा छथि। ई सभ वास्तविक कारण सिद्ध नहि, केवल जाँचयोग्य प्रतिद्वन्द्वी अनुमान। बूढ़बाक उपस्थितिसँ पुरान लोकविश्वास कथाभितर अर्थवान भऽ सकैत अछि, पर कारणमीमांसा अभी खुलल अछि। एहि स्थानपर कथा भयाद्भुत प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; शोध-समीक्षा ओकरा प्रमाणसिद्ध कारणक रूपमे नहि मानत।

विश्वनाथक जंगल-गमन : संदेह क्रियामे परिणत

विश्वनाथ किछु युवाक समक्ष केवल सिद्धान्त नहि बखानैत छथि; ओ स्वयं जंगल दिस जाइत छथि। ओ पशुधनक हानिक वैकल्पिक कारण खोजबाक हेतु प्रत्यक्ष स्थल-परीक्षण करैत छथि। एहि अर्थमे असहमति सामाजिक उदासीनता नहि, जिम्मेदार जाँच बनैत अछि। मुदा अन्वेषणक प्रक्रिया अधूरी अछि: ओ अकेला गेलाह कि साक्षीसहित, कोन उपकरण लेने, कोन पशुक खून वा घसीटनक चिह्न देखलनि, निशानक आकार केना नापलनि,

कतेक बेर निरीक्षण केलनि—किछु बताओल नहि। जाँचक आरम्भ तर्कसंगत अछि, विधि आ परिणामक नाप-जोख सीमित। वैज्ञानिक भावनाक साहित्यिक रूप अछि, विस्तारसँ वर्णित वैज्ञानिक अनुसंधान नहि।

भेड़िया, चोर, प्राकृतिक आपदा : परिकल्पना-समूह

विश्वनाथ भेड़िया, चोर अथवा प्राकृतिक आपदा सन सामान्य कारणक जाँच करब चाहैत छथि। एतय 'तार्किक कारण'क अर्थ केवल प्रत्यक्ष देखल कारण नहि; अनेक सम्भव व्याख्याक तुलना अछि। मुदा 'भेड़िया/चोर' विरोधी परिकल्पना प्रस्तुत करब आ ओकर खण्डन करब भिन्न घटना छथि। मूल अध्याय कोनो चोरक पदचिह्न, भेड़ियाक आक्रमणक नियम अथवा बरखाक प्रमाणक जाँच नहि दैत। एक अपरिचित निशान भेटिते पूर्वपरिकल्पना टुटि गेल—एहन कथन विश्वनाथक मानसिक प्रतिक्रिया अछि, सभी सामान्य कारणक दार्शनिक अथवा प्रायोगिक असम्भवता नहि। जँ पशुधन गायब भेल, तखन एक स्थानक निशान प्रत्येक हानिक एकमात्र कारण केना सिद्ध करत? एहि अनुमानक अतिरिक्त कड़ियाँ पाठ नहि दैत।

पानिक कातक निशान : प्रत्यक्ष आ निर्वचनक अन्तर

विश्वनाथ पानिक कातमे 'पैघ, अजीब निशान' देखैत छथि, जे हुनका परिचित पशुक निशानसँ नहि मिलैत। अध्यायक सर्वाधिक ठोस नव वस्तुसाक्ष्य ई अछि। निशानक प्रत्यक्षता कथाभितर वाचकीय विधान अछि; ओकर स्रोत, पशु-प्रजाति अथवा कालिक नवपन अनिश्चित अछि। अनोखापनसँ अलौकिकता सिद्ध नहि होइत: अज्ञात जैविक प्राणी, अनेक निशानक मिश्रण, भूमि-पानि द्वारा बिगड़ल आकार वा अन्य प्राकृतिक प्रक्रिया सम्भव प्रतिपक्ष छथि। ई सभ सत्य घोषित नहि, तर्कक खुलल विकल्प छथि। कहानीक रहस्य ई जे पुरान सोनमा-प्रसंगक प्रतीक नव पीढ़ीक निरीक्षणमे पुनः प्रकट भेल। एहि पुनरावृत्तिसँ अध्यायक दार्शनिक संकट बढ़ैत अछि; प्रमाणक निर्णायकता नहिं।

'अपरिचित' शब्दक प्रमाण-सीमा

कथावाचक कहैत अछि जे निशानक व्याख्या कोनो 'परिचित पशु' सँ सम्भव नहि छल। एहि कथनमे 'परिचित' निरीक्षकक उपलब्ध ज्ञानसापेक्ष सीमा अछि, सम्पूर्ण प्रकृतिक प्रत्येक प्रजातिक सार्वभौम सूची नहि। विश्वनाथ दू बरख तर्क-गणित पढ़ने छथि; पगचिह्न-विज्ञान, जीवविज्ञान अथवा वन्यजीव-पहिचानमे हुनकर विशेषज्ञता पाठ नहिं बतबैत। तें परिचित पशुक रूपसँ भिन्न देखब हुनकर वास्तविक ज्ञान-संकटकेँ दर्शबैत अछि; समस्त प्राकृतिक स्पष्टीकरणक विनाश नहि। एहि भेदक कारण कादम्बरीक तर्क-विवाद अधिक परिपक्व रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। बूढ़बाक सम्भावित जगत-नियमक प्रश्न खुलल रहैत अछि, मुदा अनिर्वचनीयताकेँ स्वतः अलौकिक सत्ताक अकाट्य प्रमाण मानब अनुचित।

भयक पुनरावर्तन : तर्कक पतन कि निर्णयक पुनर्समीक्षा?

विश्वनाथ भयभीत भऽ घुरैत छथि; हुनकर तार्किक ढाँचा हिलि जाइत अछि। एतय भय रसात्मक असर अछि, निष्कर्षक तार्किक अनिवार्यता नहि। कोई अपरिचित घटना शिक्षित व्यक्तिकेँ अपन पहिल दावाक सीमासँ परिचित करि सकैत अछि। एहि स्थितिमे सही बौद्धिक आचरण नव प्रश्न, पुनः निरीक्षण अथवा विशेषज्ञक संग

तुलना होयत। मूल पाठ विश्वनाथकेँ तत्क्षण पीपर दिस भेजैत अछि; हुनकर भीतरी परिवर्तन अनुभवजन्य भय आ सामुदायिक सुरक्षाक चिन्तासँ प्रेरित अछि। ई मानवीय रूपेँ विश्वसनीय, मुदा विज्ञानक अन्तिम खण्डन नहि। कथाक शीर्षक 'तर्कक विद्रोह' रहलो पर रचना भयक तीव्र अनुभवसँ असहमतिक दिशा बदलेबाक नाट्यप्रयोग करैत अछि; एकर आलोचनात्मक मूल्यांकन एहि अनुपातपर निर्भर अछि।

अदृश्य बूढ़बाक सोझाँ प्रत्यक्ष सम्बोधन

जंगलसँ घुरि विश्वनाथ पीपर लग कहैत छथि जे ओ बूढ़बाकेँ देखि नहि सकैत, मुदा हुनका सुनि रहल छथि एहन बोध अछि। पूर्वमे विश्वनाथ बूढ़बा आ गोहिक अस्तित्वपर संशय करैत छलाह। एतय दृश्यरूपेँ बूढ़बाक अस्तित्वक स्वतन्त्र जाँच नहि; विश्वनाथ एक अदृश्य श्रोतासँ संवाद करैत छथि, आ बूढ़बाक उत्तर कथाभितर प्राप्त होइत अछि। अलौकिक ध्वनि कथाकारक जगत-नियममे वास्तविक कथित घटना भऽ सकैत अछि, मुदा ऐतिहासिक पाठकक लेल ई कल्पित आख्यानक हिस्सा अछि। विशेष प्रश्न अछि: विश्वनाथ पूर्वमे केवल दादीलग शंकाक कथन कएल छलाह; वर्तमान मे बूढ़बाक वाणी ओ सुनि सकैत छथि कि नहि, पाठ विस्तारसँ शारीरिक श्रवण-पद्धति नहि बतबैत। एहि आलौकिक सम्पर्कक नियम पूर्व –७८मे यादवानन्दक विशेष श्रवण-प्रयोगसँ तुलना चाहैत अछि।

बूढ़बाक उत्तर : विश्वासक आदेशक अस्वीकृति

बूढ़बा विश्वनाथसँ अन्धविश्वासक माँग नहि करैत; ओ अपन आँखिसँ देखल तथ्य ईमानदारीसँ स्वीकारि स्वयं निर्णय लेबाक आग्रह करैत छथि। ई गुरुकेँ प्रश्न पुछबाक स्वतन्त्रता प्रदान करनिहार नैतिक उत्तर अछि। किन्तु बूढ़बाक विकल्प-रचना 'कबड्डी अन्धविश्वास अथवा शास्त्र नहि बुझल एहन प्रणाली' द्विकोटी बनि सकैत अछि। तेसर सम्भावना अछि—कबड्डी उपयोगी सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक अभ्यास हो, मुदा पशुधनक वास्तविक हानिसँ कारणात्मक रूपेँ असम्बद्ध। दोसर सम्भावना—निशान अपरिचित रहय, आ अनुष्ठानक उपयोगिताक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। बूढ़बा प्रश्नक अनुमति दैत छथि, मुदा प्रस्तुत विकल्पसभ पूर्ण नहि। कथा एहिसँ रूढ़िवादसँ दूर रहबाक प्रयत्न करैत अछि, तथापि प्रमाणिक निर्णयक क्षेत्र पर्याप्त व्यापक नहि करैत।

विश्वनाथक परिवर्तित वचन : पूर्ण श्रद्धा नहि

विश्वनाथ कहैत छथि जे हुनका एकर पूर्ण बोध नहि, मुदा बेहतर उत्तर भेटबा धरि ओ परम्पराकेँ सम्मानपूर्वक जारी रखताह। ई आरम्भिक 'हम आब विश्वास नहि करैत छी'सँ व्यवहारिक निर्णयक परिवर्तन अछि। मुदा मूल विश्वास-स्थितिक प्रत्येक तत्व परिवर्तित नहि। बूढ़बा वा मूल गोहिक अस्तित्व निर्विवाद प्रमाणित भेल, एहन घोषणा विश्वनाथ नहि करैत। ओ अनिश्चितताक बीच सम्भावित सुरक्षा-कार्यक मूल्य मानैत छथि। सामाजिक काजमे सन्देह सहित सहयोग सम्भव—ई अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि अछि। यदि भविष्यक निरीक्षण कबड्डीक जोखिम अथवा व्यर्थता दिखाएत, तखन 'बेहतर उत्तर'क शर्त परिवर्तनक रास्ता खुलल रखैत अछि। तेँ पात्रक वापसीकेँ अन्ध-भक्ति, अन्तिम पराजय अथवा विज्ञान-त्याग रूपमे पढ़ब अनुचित।

सावधानीक सिद्धान्त : प्रमाण बिना निवारक काज

विश्वनाथक प्रस्तावमे एक व्यवहारिक तर्क निहित अछि—जँ अनुष्ठानक सम्भावित लाभ पैघ आ सहभागी लागत कम अछि, तखन अधिक ज्ञान भेटबा धरि ओकरा जारी रखब उचित भऽ सकैत अछि। मुदा एहि निर्णयक लेल अनुष्ठानक लागत, जोखिम, वैकल्पिक सुरक्षा आ परम्परा बन्द भेलाक वास्तविक हानिक तुलना आवश्यक। पूर्व –८१ मे बच्चासभकेँ सैनिकक समक्ष कबड्डी खेलाओल गेल छल; एहन परिस्थिति मे निवारक काज स्वयं जोखिमपूर्ण भऽ सकैत अछि। वर्तमान अध्यायमे अनुष्ठानक पुनरारम्भसँ पशुधन-हानि वास्तवमे रोकल गेल कि नहि, पाठ स्वतन्त्र परिणाम नहि देत। अतः सावधानीक नैतिक विधान महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एकरा प्रभावकारिताक सिद्ध प्रयोग नहि मानल जाए।

दादीक ‘पूर्ण संतोष’ नहि : वास्तविक मतभेद शेष

मूल पाठ विशेष रूपसँ दर्ज करैत अछि जे विश्वनाथक उत्तर दादीकेँ ‘पूर्ण संतोष’ नहि दैत। ई छोट वाक्य कथात्मक निष्कर्षकेँ कृत्रिम सर्वसम्मतिसँ बचबैत अछि। परिवारक वृद्धा पूर्ण श्रद्धा चाहैत हो सकैत छथि; युवक सम्मानसहित संशय राखैत छथि। दूनू सार्वजनिक कबड्डीमे एकत्र रहि सकैत, मुदा अभिप्राय अलग। एहि परिस्थिति मे सामाजिक एकता विचारक एकरूपतापर निर्भर नहि। तथापि दादीक अन्तर्मन, हुनकर विशिष्ट प्रश्न अथवा पछाति संवाद अधिक विकसित नहि। तेँ मतभेदक अस्तित्व सत्यापित अछि, ओकर विस्तार संक्षिप्त। ‘पूर्ण संतोष नहि’क मूल्य ई जे गुरु-शिष्यक शास्त्रार्थकेँ पूर्ण समाप्ति मानल नहि गेल अछि।

बूढ़बाक ‘आस्था आ सम्मान’क द्वैत

बूढ़बा कहैत छथि जे आस्था आ सम्मान एक वस्तु नहि, मुदा कहियो-कहियो एकहि कार्य करि सकैत अछि। एहि कथनमे सामाजिक व्यवहारक मौलिक भेद अछि। आस्था कोनो सत्ता अथवा कारणपर विश्वासक स्थिति हो सकैत; सम्मान कोनो परम्पराक लोकक प्रति आचरणक नैतिकता। एकटा व्यक्ति बिना अलौकिक निष्कर्ष मानने सेहो सामूहिक दुःख, पुरखाक नाम आ वचनक विरासतकेँ सम्मान दऽ सकैत। मुदा बाह्य समान क्रियासँ भीतरक सत्यदावा समान नहि होइत। पारी खेलब विश्वनाथक विश्वासपरिवर्तनक पूर्ण प्रमाण नहि, केवल सहयोगक प्रत्यक्ष चिन्ह अछि। एहि भेदक कारण अध्याय अन्ततः अनिवार्य विश्वासक अधिनायकत्वसँ आंशिक दूरी बनबैत अछि।

सामूहिक पुनरागमन : किछु युवाकेँ संग आनब

विश्वनाथ अकेला नहि लौटैत; किछु युवाकेँ संग आनैत छथि। एतय प्रश्नकर्ता प्रारम्भमे सहभागी संख्या घटेबाक माध्यम छलाह, बादमे नव व्यवस्था मे लोक घुरेबाक आयोजक बनैत छथि। कथा व्यक्ति-कर्मक सामाजिक प्रभाव दो दिशामे देखबैत अछि। मुदा लौटबाक राति पशुधन-हानि घटी कि नहि, गोहिक पैघ निशान फेर भेटल कि नहि, औपचारिक सुरक्षा-उपाय बनल कि नहि—किछु वर्णित नहि। समाजक सम्मिलित क्रिया कथाक तात्कालिक परिणाम अछि; संकट-समाधानक भौतिक प्रमाण नहि। एतय ‘समाज फेर जुरल’ आ ‘प्राकृतिक विपत्ति पर नियन्त्रण भेटल’ अलग रखल जाए।

गीत आ प्रकरण-समापन : जिज्ञासाक विजयक दावा

समापन गीत ‘जे रटलक, से भुलल; जे पुछलक, से बुझल’ आ ‘प्रश्न दीप छी’क माध्यमे प्रश्नक मूल्यक सार्वजनिक घोषणा करैत अछि। मुदा मूल घटना मे विश्वनाथक प्रश्नसँ कोनो निर्णायक वैज्ञानिक उत्तर नहि भेटल, बल्कि अनिश्चितता स्वीकार कऽ पुनः भाग लेबाक निर्णय भेल। अतः गीतक ‘बुझल’ शब्दकेँ पूर्ण बाह्य कारण-सिद्धि नहि, प्रश्न करबाक नैतिक महत्त्वक बोध मानब अधिक संगत। ‘गंगेशक बीया’ नव्य-न्याय-विचारक भावी सम्भावना रूपेँ अर्थपूर्ण अछि, मुदा विश्वनाथ स्वयं ऐतिहासिक गंगेश उपाध्याय बनि गेलाह अथवा हुनकर शास्त्रीय ग्रन्थक प्रत्यक्ष पूर्वज छथि, एहन दावाक पाठसाक्ष्य नहि। गीत अध्यायक जिज्ञासा-सम्मानक भावबिन्दु अछि, अनुभवजन्य प्रमाणक अन्तिम प्रतिवेदन नहि।

कथावाचकक दृष्टिकेन्द्रण आ सूचना-वितरण

अध्याय आरम्भ मे दीर्घ संस्थागत इतिहासक विस्तृत ज्ञान राखैत तृतीयपुरुष कथावाचकक स्वर अछि। विश्वनाथक आशंका हुनकर दादीक समक्ष प्रत्यक्ष संवाद बनैत; दादीक गवाही सुनिते पाठक पीढ़ीगत स्मृतिसँ परिचित होइत छथि। बूढ़बाक ‘एकटा बात जनैत छी’ वचन सूचना रोकेबाक युक्ति अछि। किछु मास बाद पशुधनक गायब होयब कथावाचक बतबैत अछि, मुदा निर्णायक जंगल-दृश्य विश्वनाथक सीमित अवलोकनक निकट पहुँचिते अत्यन्त सघन बनैत अछि। ‘निशानक व्याख्या परिचित पशुसँ सम्भव नहि’ कथावाचकक कथन होइतहुँ विश्वनाथक ज्ञानसीमा सँ सम्बन्धित अछि। अंतमे बूढ़बाक वाणी पात्रक व्याख्या प्रदान करैत अछि। एहि क्रममे कथावाचक ज्ञानक असमान वितरणसँ रहस्य पैदा करैत अछि; तथापि अनुक्रमानुसार स्वतन्त्र अन्वेषक अथवा अन्य ग्रामीणक निशान-परीक्षण अनुपस्थित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र : भयाद्भुत, वीरता आ शान्तक अनुपात

आदिम अमावस्या-दृश्य मे परम्पराप्रति संशयक सूक्ष्म मानसिक तनाव अछि, न कि तत्काल हिंसक भयानक। जंगलमे अपरिचित निशान भेटब भयानक आ अद्भुत दुनूक संयोग निर्मित करैत अछि। विश्वनाथक एकल जाँच लेल जंगल गमन निडर जिज्ञासाक वीर-क्षण अछि; पलटि घुरब भयक मानवीय स्वीकार। बूढ़बाक धैर्य, दादीक अल्प-सन्तोष आ सम्मानसहित सहभागिता शान्तक सम्भावना बनबैत अछि, मुदा लोकक भय तथा पशुधन-हानिक वास्तविक कारण अनिर्णीत रहैत अछि। अन्तिम गीतक उत्सव जिज्ञासाक नैतिक विजय घोषित करैत अछि; भयक मूर्त कारणक उत्तर पाठक नहि पबैत। एहि अन्तरमे रचनाक सौन्दर्य अछि, पर कथात्मक औचित्यक प्रश्न सेहो। अद्भुतक रस अनुभवजन्य अनिश्चितताक जगह लेत तँ आलोचनाकेँ भ्रमित नहि करबाक चाही।

सामाजिक ज्ञान आ अनुष्ठानक संस्थागत उपयोग

विश्वनाथक प्रश्नक सामाजिक असर दू प्रकारक अछि। पहिल, युवकसभ अपन सहमति वापस लेबाक क्षमता देखबैत छथि; एतय नवान्तर शिक्षाक लोकतांत्रिक मूल्य अछि। दोसर, संकटमे ओहि युवकसभकेँ सामूहिक सुरक्षाक प्रश्न पर विचार करबाक पड़ैत अछि। सामुदायिक स्मरण अनुष्ठान समाजकेँ आपसी संगत आ सतर्कताक मंच प्रदान कऽ सकैत अछि, जँ ओकर अलौकिक कारणत्व असिद्धो रहय। मुदा पाठ पशुधनक भौतिक रक्षा लेल

पहरा, पशुशाला, नदीघाटक निरीक्षण, निशानक नाप अथवा हानि-दर्ज करबाक प्रयास नहि बतबैत। यदि शिक्षा विज्ञान आ तर्कक अभ्यास बढ़ौने अछि, तँ सार्वजनिक व्यावहारिक जाँचक संस्था कियैक नहि विकसित भेल? एहि प्रश्नपर अध्याय मौन अछि। तत्काल नैतिक समाधान सहयोग अछि; व्यवस्थित प्राकृतिक अनुसन्धान अगिला कथामे विकसित होयबाक रहत।

घटना-प्रमाण-निर्णयक सारणी

घटना / चरण | मूल पाठक प्रत्यक्ष परिणाम | अनिर्णीत दावा

तीन पीढ़ीक पाठशाला | युवक पढ़न, हिसाब आ प्रश्न करय लागैत | सब गामवासी समान साक्षर नहि जाँचल

विश्वनाथक नगरमे दुइ बरख | तर्कशास्त्र/गणितक परिचय | विशिष्ट ग्रन्थ वा पद्धति अनिर्दिष्ट

अमावस्यामे किनारे ठाढ़ रहब | स्वैच्छिक सहभागिता-त्याग | अनुष्ठानक असत्यता सिद्ध नहि

दादीक दृष्टि/श्रवण-गवाही | पीढ़ीगत साक्षी-वचन | प्रत्यक्ष वर्तमान पुनर्परीक्षण नहि

युवकसभक पारी छोड़ब | भीड़ आ नियमितता घटबाक कथन | पूरा गामक बहिष्कार नहि

बूढ़बाक प्रश्न-स्वीकृति | प्रतिपक्षक नैतिक वैधता | गुप्त ज्ञानक पूरा स्वरूप नहि

किछु मास बाद पशुधन गायब | नव सामाजिक-आर्थिक संकट | कारण, संख्या, समयावधि अस्पष्ट

भेड़िया/चोरक वैकल्पिक अनुमान | विश्वनाथ जाँच लेल निकलैत | प्रत्येक विकल्पक खण्डन नहिं

पानिक कात अपरिचित निशान | निरीक्षकक ज्ञात श्रेणी प्रश्नांकित | मूल गोहिक निशान सिद्ध नहि

पीपर लग बूढ़बाक वाणी | विश्वनाथ अनिश्चितता स्वीकारैत | अलौकिक अस्तित्वक बाह्य ऐतिहासिक प्रमाण नहि

विश्वनाथक शर्तयुक्त वापसी | किछु युवक फेर सहभागी | पूर्ण श्रद्धा अथवा वैज्ञानिक व्याख्या नहि

दादीक अपूर्ण संतोष | विचारभेद सार्वजनिक सहयोगसँ सहअस्तित्वमे | पूर्ण नैतिक सर्वसम्मति नहि

अन्तिम गीत | प्रश्नक संस्कृतिक प्रतिष्ठा | गुरु अपन सिद्धान्त बदलेलनि—पाठसिद्ध नहि

मूल पाठक सत्यापित उद्धरण-सूचक

१. ‘जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक’ — आरम्भिक फकरा।

२. ‘मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि फलल-फूलल’ — कालिक प्रसार।

३. ‘मंदाकिनीक परपोता, नाम विश्वनाथ’ — पात्रक वंशगत परिचय।

४. ‘दुइ बरख बितौने छल’ — नगर-विद्यालयक अध्ययन-अवधि।

५. ‘विश्वनाथ खेलमे भाग नहि लेलक’ — सार्वजनिक असहमतिक क्रिया।

६. ‘हम आब एहि खेलमे विश्वास नहि करैत छी’ — मूल संशय।

७. ‘एकटा सुन्दर परम्परा थिक’ — सौन्दर्य आ विश्वासक भेद।

८. ‘मनुष्यक स्मृति भ्रामक होइत अछि’ — पीढ़ीगत साक्षीक आपत्ति।

९. ‘अपन आँखिसँ, अपन तर्कसँ’ — प्रमाणक स्वाधीनताक आग्रह।

१०. ‘कबड्डीमे भाग लेब बन्द कऽ देलक’ — युवाक व्यवहारगत परिणाम।

११. ‘एकरा आबय दिअ’ — बूढ़बाक प्रश्न-स्वीकृति।

१२. ‘विश्वनाथ गलत नहि छथि’ — प्रतिपक्षक मान्यता।

१३. ‘पशु-धन गायब होमय लागल’ — नव संकट।

१४. ‘कोनो साधारण, तार्किक कारण’ — वैकल्पिक कारणक खोज।

१५. ‘पैघ, अजीब निशान’ — जंगलक अवलोकन।

१६. ‘हम अहाँकेँ देखि नहि सकैत छी’ — दृश्य प्रमाणक असमर्थता।

१७. ‘हम अहाँसँ ई नहि माँगब जे अहाँ अन्धविश्वाससँ हमरापर विश्वास करू’ — विश्वासक बाध्यता अस्वीकार।

१८. ‘हमरा एकरा पूर्ण रूपसँ बुझल नहि’ — शर्तयुक्त ज्ञानसीमा।

१९. ‘जाबे धरि हमरा बेहतर उत्तर नहि भेटैत’ — पुनः सहभागिताक समयबद्ध शर्त।

२०. ‘आस्था आ सम्मान एकहि वस्तु नहि थिक’ — बूढ़बाक समापनभेद।

२१. ‘जे रटलक, से भुलल; जे पुछलक, से बुझल’ — लोकगीतक जिज्ञासा-प्रशंसा।

२२. ‘जे पुछब सिखल, से गंगेशक बीया बनल।’ — भविष्यक प्रश्नधर्मिताक रूपक।

ई छोट उद्धरण-खण्ड अध्याय ७५क मूल फकरा, दृश्य, संवाद आ गीतसँ लेल गेल छथि। मुद्रित २१७–२२० पृष्ठ सीमा समग्र अध्याय लेल अछि; प्रत्येक वाक्यक सूक्ष्म पृष्ठाङ्क बिना पृष्ठ-दर-पृष्ठ प्रमाणीकरण नहि देल गेल।

आलोचनात्मक उपलब्धि, कमजोरी आ निष्कर्ष

‘तर्कक पहिल विद्रोह’क सर्वप्रथम उपलब्धि ई अछि जे नव शिक्षित पीढ़ीक प्रश्नकेँ अपराध नहि मानल गेल। विश्वनाथ अनुष्ठान-संरक्षक परिवारक सदस्य भऽ कऽ सेहो सार्वजनिक सहभागिता छोड़ि सकैत छथि, दादीक गवाही पर शंका उठबैत छथि आ निरीक्षण लेल जंगल जा सकैत छथि। बूढ़बा हुनकर प्रश्न-क्षमताक सम्मान करैत छथि; समाधान पूर्ण श्रद्धाक बदला शर्तयुक्त सम्मान अछि। एहि स्तरपर अध्याय व्यक्तिक ज्ञानस्वातन्त्र्य आ समुदायिक सहकारक सम्भव सहअस्तित्व प्रस्तुत करैत अछि। मुदा रचनाक बौद्धिक सीमा वास्तविक अछि: पशुधन-हानि आ अनुष्ठानक कमजोरीक बीच कारणात्मक सम्बन्ध देखाओल मात्र अछि, सिद्ध नहि; अपरिचित पगचिह्नसँ गोहिक असाधारण सत्ताक पुष्टि स्वतः नहि; विश्वनाथक परीक्षणक विधि अल्प विकसित; गुरुकेँ प्रश्नसँ केहन नव ज्ञान भेटल, शीर्षक–गीतक घोषणा समान स्पष्ट नहि। एकर अन्तिम परिणाम दोहरा अछि—समाजिक तनाव घटैत अछि, ज्ञानगत विवाद खुलल रहैत अछि। साहित्यिक रूपेँ ई खुलापन उपन्यासक बौद्धिक शक्ति बनि सकैत अछि, जँ आगामी घटनासभमे स्वतन्त्र प्रश्नकर्ताकेँ पूर्ण परीक्षणक अवसर भेटैत रहय।

पाठाधार, साक्ष्य-सीमा आ अगिला प्रकरण

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७५] ‘तर्कक पहिल विद्रोह’, अनुक्रमणिकाक अध्यायारम्भानुसार मुद्रित पृष्ठ २१७–२२०। दोसर स्रोत : ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’, अध्याय –७५क प्रविष्टि—८५६ शब्द-एकक; क्रियासूचक अनुच्छेद ६४.० प्रतिशत। ‘परम्परा आ तर्कशीलताक बीच अन्तर-पीढ़ीगत द्वन्द्व’ शीर्षक अध्यायोत्तर व्याख्या परापाठ अछि, स्वतन्त्र वस्तुप्रमाण नहि। मूल अध्यायक अन्तिम दृश्य विश्वनाथक सम्मानसहित कबड्डीमे वापसी देखबैत अछि; पशुधनक हानिक वास्तविक जैविक कारणक समाधान नहि दैत। अगिला मूल अध्याय –७४ ‘गाछक रोग’, जतय केदारक माध्यमे वृक्ष-चिकित्सा, सामाजिक श्रम आ बूढ़बाक भौतिक आश्रयक सम्बन्ध परीक्षणक विषय बनत।

प्रकरण २७ | मूल अध्याय –७४ — गाछक रोग

पाठाधार, सीमा आ पर्यावरणीय परीक्षण-विधान

‘गाछक रोग’ पूर्व-कथाकालक सत्ताइसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल कथाभागक आरम्भ फकरा सँ, फेर केदारक निरीक्षण, बूढ़बाक निर्भरता-स्वीकार, सामुदायिक आशङ्का, नगरसँ वृक्ष-वैद्यक आगमन, संयुक्त उपचार, बच्चाक दैनिक अभिलेखन, मास-दर-मास सुधार, बूढ़बाक आत्मस्वीकार तथा वार्षिक/पीढ़ीगत देखभालक प्रतिज्ञा धरि अछि। अध्यायोत्तर ‘जीवित स्मारकक देखभालक उत्तरदायित्व’ टिप्पणी पृथक परापाठ अछि; ओकर सामान्यीकृत सिद्धान्तक स्वतन्त्र परीक्षण चाही। एहि लेल रचनाक कथाभितरक रोग, पात्रक निदान, उपचारक मिलित परिणाम आ सांकेतिक भाषा चारि भिन्न साक्ष्य-स्तर रखल गेल।

–७५क शास्त्रार्थसँ –७४क पर्यावरणीय काज धरि

अध्याय –७५ मे विश्वनाथ पुरनका कबड्डीक अलौकिक व्याख्यापर प्रश्न उठबैत छथि, जंगलमे अपरिचित निशान देखैत छथि आ पूर्ण ज्ञान नहि भेला धरि सावधानीसँ सार्वजनिक परम्पराक सम्मान स्वीकार करैत छथि। वर्तमान प्रकरणमे हुनकर पोता केदार श्रद्धा आ तर्कक टकराहट फेर वाणीमे नहि दोहरबैत—ओ दृश्य रोगक उत्तर उपचारक वास्तविक क्रियामे खोजैत छथि। एहि परिवर्तनक महत्त्व अछि जे ‘प्रश्न पुछब’ अपनहि ‘काजक पद्धति’ बनि जाइत अछि। पहिले अनुष्ठान घटलाक बाद पशुधनक हानिसँ लोक भयभीत छल; एतय गाछक रोगक चिह्न सर्वसामान्य दृष्टिगोचर अछि। बूढ़बाक अलौकिक विश्वसनीयता लेल ठोस जड़ि, छाल आ पातक देखभाल आवश्यक बनैत अछि। तर्क आ परम्पराक सामञ्जस्य अध्याय –७५मे घोषित आदर्श छल; –७४मे ओकरा भौतिक श्रमक दृश्य देल गेल।

फकराक दू धरातल : वनस्पति-रोग आ सामाजिक मौन

आरम्भिक वचन ‘एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत’ गाछक स्थानीय संकटकेँ आरम्भिक चेतावनी बनबैत अछि। ओकर दोसर अंश ‘गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ’ वनस्पति-उपचारक रूपक समाजक भीतर प्रश्न नहिं उठेबाक नैतिक दोषपर लागू करैत अछि। एहि तुलना मे घटना-गत बल छैक: केदार चुप रहितथि तँ रोगक चिह्न अनदेखल रहि सकैत छल। मुदा वनस्पतिक संक्रमण आ सामाजिक संघर्षक कारण एकसमान नहि;

गामक कोनो असहमत व्यक्ति वा भिन्न विचारकेँ ‘रोग’ कहल जाय तँ रूपक दमनकारी अर्थ सेहो लऽ सकैत अछि। पिछला अध्याय विश्वनाथक प्रतिपक्षकेँ वैध ठहरौने छल। तेँ एहि फकराक सामाजिक औचित्य केवल ‘समस्या नहि नुकाउ’ धरि उचित अछि, ‘असहमतिकेँ काटि फेकू’ धरि नहि।

केदारक प्रवेश : लिंग-रूप आ नाम-पहिचानक सूक्ष्म प्रश्न

मूल पाठ विश्वनाथक ‘पोता, नाम केदार’ लिखैत अछि, मुदा अनुष्ठान-उत्तराधिकार लेल ‘रक्षिका बनल’ शब्द बरतैत अछि। ‘पोता’, ‘केदार’, ‘ओ ... केलक’ आदिक पुरुषसूचक रूप आ ‘रक्षिका’क स्त्रीलिङ्ग पद परस्पर सुसंगत नहि। ई लघु पर महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय अस्थिरता अछि; पाठमे केदारक लिंगपर अलग विवेचन नहि भेटैत, अतः बाहरी अनुमानसँ एकरा ठीक कएल गेल बताओल नहि जाए। कथाक मुख्य आशय स्पष्ट अछि—रक्षा-कार्य स्त्री वा पुरुष, दूनूकेँ ‘योग्यताक आधारपर’ देल जाए लगल। मुदा एहि समावेशी प्रतिज्ञाक भीतर पदरूपक एकरूपता अनिवार्य। इएह बतबैत अछि जे वंशावलीक दीर्घ क्रममे पात्र-परिचयक सूक्ष्म भाषिक नियन्त्रण चाही।

स्त्री-पुरुष दुनू लेल उत्तराधिकार : परम्पराक संस्थागत परिवर्तन

पिछला अध्यायसभमे सावित्री–इन्दुमती–शारदा–वसुन्धरा–कौशल्या–मंदाकिनीक स्त्री-उत्तराधिकार परम्पराक प्रमुख धुरी छल। –७४ मे एक स्पष्ट कथन अबैत अछि—अनुष्ठान-रक्षा आब स्त्री आ पुरुष दुनूकेँ ‘योग्यताक आधारपर’ सौंपल जाइत अछि। ई वर्णित परिवर्तन वंशक स्वचालित अधिकारसँ कौशल-आधारित चयनक सम्भावनापर गमन अछि। मुदा योग्यता के नापैत अछि, कोन कौशल आवश्यक, जनसभा मतदान करैत कि निजी परिवारक स्वीकृति, एहन कोनो व्यवहारिक विधान नहि देखाओल गेल। फलतः कथामे घोषित समान अधिकार आ वास्तविक चयन-पद्धति बीच खुलल अन्तर अछि। केदारक तर्क-श्रद्धा संयुक्त व्यक्तित्व एहि चयनक साहित्यिक औचित्य दैत अछि, पर संस्थाक पारदर्शिता पूर्ण सिद्ध नहि।

उत्तरी शाखाक पीयर पात : रोगक पहिल दृश्य-प्रमाण

केदार साक्षी-गाछक उत्तरी शाखाक पात पीयर होयब देखैत छथि। ई अध्यायक सर्वप्रथम प्रत्यक्ष अवस्था-परिवर्तन अछि। पूर्ववर्ती प्रसंगमे गाछ सामान्यतः स्मृतिक चिरस्थायी आश्रय छल; आब ओकरा अंग-विशेषमे रोगक आशङ्का देखाओल जाइत अछि। ‘उत्तरी शाखा’ शब्द स्थानिक विशिष्टता आ दृश्य-विश्वसनीयता उत्पन्न करैत अछि। तथापि केवल पातक पीयरपनसँ निश्चित रोग-कारण सिद्ध नहि: ऋतुगत परिवर्तन, पोषण, जलक स्थिति आ अन्य जैविक कारण सम्भव प्रतिपक्ष छथि। कथा बादमे छालक दाग आ वैद्यक जाँच जोड़ैत अछि, जाहिसँ पहिल अवलोकनक सन्दर्भ मजबूत बनैत अछि। एतय वस्तुक रूप देखल गेल आ ओकर रोगगत अर्थ अनुमानित भेल—ई भेद शंख-रजतक आरम्भिक ज्ञानविवादसँ जोडबाक योग्य अछि।

छालपर कारी गील दाग : रंगसँ कारण धरि

पातक पीयरपनक संग छालमे ‘काली, गीली दाग’क उल्लेख अछि। ई दृश्य विशेषण पाठकेँ निरीक्षणक ठोस अनुभूति दैत अछि; रोग केवल प्रतीकात्मक दुःख नहि रहैत। मुदा कारी, गील दाग अपने आपमे ‘कीड़ा छालक

भीतर घर बनौने’क निश्चित निदान नहि। वैद्यक कथाभितरक परीक्षण बादमे ई निष्कर्ष देत; आरम्भिक केदारक अवलोकनक प्रमाण-सीमा एतहि रुकैत अछि। आलोचना एतए कारणक स्तरक्रम राखत: दृश्य चिह्न → रोगक आशङ्का → जड़ि, छाल, पातक जाँच → पात्रक निदान। प्रत्येक स्तरपर अधिक ज्ञान प्राप्त होइत अछि, मुदा निदानक स्वतन्त्र प्रयोग, नमूनाक विवरण अथवा अन्य सम्भावनाक निषेध नहि भेटैत। एही कारण दृश्य यथार्थवादी प्रभाव दैत अछि, पूर्ण वृक्ष-विज्ञानक प्रतिवेदन नहि।

गाछक शरीर आ बूढ़बाक आध्यात्मिक देह

बूढ़बाक उत्तर ‘हम ई गाछसँ बान्हल छी’ कथाविश्वक निर्णायक अस्तित्वगत नियम प्रस्तुत करैत अछि। ओ मनुष्यक देह आ साँसक निर्भरता सँ अपन स्थिति तुलना करैत छथि। एक गाछमे दीर्घकाल रहनिहार स्मृति-साक्षी पूर्णतः निराकार अथवा प्राकृतिक प्रक्रियासँ स्वतन्त्र नहि। ई जादुई-यथार्थवादी स्थापनाक महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि। मुदा गाछक प्रत्येक शाखाक कीड़ा बूढ़बाक प्रत्यक्ष आवाजकेँ कोन जैविक अथवा अद्भुत कारणसँ क्षीण करैत अछि—कोनो यथार्थनिष्ठ प्रणाली नहि देल गेल। रूपकात्मक अर्थ—सामूहिक स्मृतिसंस्थाक भौतिक आश्रय असुरक्षित अछि—सशक्त अछि; अलौकिक सत्ता आ जैविक वृक्षक बीच पूर्ण परीक्षणयोग्य कारणशृंखला कथाभितर अपूर्ण।

आवाजक कमजोर होयब : सम्बन्धक आंशिक समर्थन

केदार गाछक चिह्न देखैत छथि, ओहि साँझ बूढ़बाक आवाजो किछु कमजोर सुनाइत अछि। एहिसँ पाठककेँ दूनूक हालतमे सम्बन्धक संकेत भेटैत अछि। बूढ़बा स्वयं एहि निर्भरताक पुष्टि करैत छथि। मुदा गाछक रोग आ आवाजक क्षीणता एकहि समय देखब मात्र बाहरी कारणात्मक सिद्धि नहि; कथाभितर बूढ़बाक पात्र-वचन एक अतिरिक्त स्रोत अछि। –७७मे बूढ़बाक आवाज थकानसँ क्षीण भेल छल, जखन कि वर्तमान अध्याय गाछक अवस्था माध्यमसँ नवनव अर्थ प्रस्तुत करैत अछि। एहि तुलना मे आवाजक दुर्बलताक एकमात्र सम्भव कारण गाछक कीड़ाजन्य रोग कहब कठिन अछि। रचनात्मक दृष्टिसँ ई बहुस्तरीय कमजोरी स्मृतिरक्षककेँ मानवीय बनबैत अछि; प्रमाणदृष्टिसँ अर्थनिर्णय विशिष्ट प्रसंगपर निर्भर रहत।

‘शायद आयु पूर्ण’ : पात्रक भय आ चिकित्सकीय निष्कर्ष

बूढ़बा ‘शायद... शायद एकर आयु आब पूर्ण होय जा रहल अछि’ कहैत छथि। वाक्यक पुनरुक्त ‘शायद’ अनिश्चितता स्पष्ट करैत अछि, निश्चित मृत्यु-भविष्यवाणी नहि। ओ अपन शताब्दीव्यापी निर्भरता-भावसँ भयभीत छथि। बादक वृक्ष-वैद्य रोगकेँ असाध्य नहि मानैत, आ एक बरखमे गाछ स्वस्थ कहल जाइत अछि। तें बूढ़बाक प्रारम्भिक आयु-अन्तक आशङ्का कथा-दृष्टिसँ खण्डित अथवा कम-सँ-कम स्थगित होइत अछि। ई महत्त्वपूर्ण नाटकीय उलटफेर अछि: अलौकिक साक्षी सब देखनिहार होइतहुँ अपन भौतिक निवासक उपचार-सम्भावना पूर्ण नहि बुझैत छथि। मानवीय विशेषज्ञता हुनकर सीमित ज्ञानक प्रतिपक्ष बनैत अछि।

गामक कोहराम : सामुदायिक निर्भरता आ संकट-संरचना

गाममे प्रश्न उठैत अछि—‘जँ गाछ मरि गेल, तँ बूढ़बाक की होयत?’ एकर तुरन्त बाद ‘हमरा सभक नाम केकरा लग रहत’क चिन्ता अछि। लोकक भय बूढ़बाक मृत्यु-जैसन संकटसँ अधिक स्मृतिसंस्थाक अन्तिम विनाश धरि पहुँचैत अछि। ई प्रश्न पूर्व –७७क बूढ़बाक मौनक समयक सामुदायिक भयक पुनरागमन अछि, मुदा एतय कारण भावात्मक थकानक बदला गाछक भौतिक रोग अछि। पहिने समाज वार्षिक ‘बूढ़बा-स्मरण’ शुरू केने; आब फेर एक व्यक्ति/गाछपर समस्त इतिहास निर्भर बुझल जाइत अछि। एहि पुनरागमनसँ संस्था-स्थायित्वक अनसुलझल समस्या देखाइत अछि। यदि हर पीढ़ीक नाम, गीत आ लिखित अभिलेख उपलब्ध छथि तँ गाछक मृत्यु अपनहि समस्त नामक समाप्ति किएक? कथा एहि सामाजिक निर्भरताक विचारक पूरा लेखा नहि दैत।

केदारक उत्तर : प्रश्नसँ व्यावहारिक विकल्प धरि

केदार ‘विश्वनाथक तर्कशीलता’ आ ‘नानी सभक श्रद्धा’ दुनू उत्तराधिकारमे पओने छथि। ई परिचय पिछला –७५क मतभेदकेँ नव पीढ़ीक मनमे अधिक समन्वित रूप दैत अछि। गाछक चिह्न देखिकऽ ओ मात्र बूढ़बाक कृपाक प्रतीक्षा नहि करैत, नगरसँ वृक्ष-वैद्य बजबैत छथि। एहि कर्ममे व्यक्ति सचेत जोखिमग्राहक नहि, साधन-संग्रहक आयोजक अछि। समाजक चिन्ता उपचारक क्रियात्मक प्रश्न बनैत अछि। मुदा केदार स्वयं उपचार-विधिक विशेषज्ञ नहिं; हुनकर मुख्य कर्तृत्व उचित विशेषज्ञ खोजब, स्थानीय ज्ञानक सहकार्य कराएब आ सामुदायिक श्रमक संयोजन अछि। ई सामाजिक नेतृत्वक अधिक यथार्थवादी रूप अछि, किएक तँ विज्ञानक सभ उत्तर कोनो एक पात्रक असाधारण प्रतिभामे समाहित नहि कएल गेल।

नगरक वृक्ष-वैद्य : विशेषज्ञताक सत्ता आ प्रमाण

वृक्ष-वैद्य जड़ि, छाल आ पातक सूक्ष्म जाँच कऽ कीड़ाक भितरघर बनब तथा गाछक खोखला होयबाक निदान दैत छथि। एहि कथाभितरक विशेषज्ञ-निष्कर्षकेँ मानवीय ज्ञानक स्पष्ट क्रिया रूपेँ पढ़ल जाए। मुदा कीड़ाक प्रकार, जाँचक साधन, निरीक्षण-पद्धति अथवा निदानक प्रामाणिकता सम्यक् वर्णित नहि। वैद्य बतबैत छथि जे रोग ‘असाध्य नहि’, किन्तु निरन्तर उपचार चाही। ई पात्रक चिकित्सकीय अनुमान अछि, कथाक परिणाम बादमे ओहि आशाकेँ समर्थन दैत अछि। स्वतन्त्र वनस्पतिशास्त्रीय अध्ययन बिना कोनो वास्तविक पीपर-वृक्षक एहन चिह्नसँ ई रोग निश्चित मानबाक आधार नहि। साहित्यिक रूपेँ विशेषज्ञक प्रवेश चिकित्सा-विवेकक संस्थागत स्वर स्थापित करैत अछि, पर प्रयोगसिद्ध विवरण अनुद्घाटित।

गोदावरीक बेटी : परम्परागत माटि-ज्ञानक उत्तराधिकार

सोनमा माझिनक वंशज, गोदावरीक बेटी जड़िक आसपासक माटिक पुरान उपचार बतबैत छथि—जड़ी-बूटी आ प्राकृतिक तेलक प्रयोग। ई दृश्य उपन्यासक जल-पारिस्थितिक ज्ञानकेँ स्त्रीवंशक माध्यमसँ आगू बढ़बैत अछि। सोनमा पहिने मूल गोहिक रहस्य, बूढ़बाक धैर्य आ स्मृतिक कारण-व्यवस्थापर प्रश्न उठौने छलीह; एतय हुनकर वंशज प्रकृतिक भौतिक देखभालमे भूमिका निभबैत छथि। महत्त्वपूर्ण सीमा ई जे बेटी व्यक्तिगत नामविहीन छथि। जकरा कादम्बरी नाम बचएबाक ऐतिहासिक दायित्व मानैत, ओकर उपचारक महत्त्वपूर्ण श्रम नामसहित

सुरक्षित नहि। दोसर सीमा परम्परागत उपचारक परिणामक पृथक अवलोकन अनुपस्थित अछि। औचित्य ई जे अनुभवजन्य स्थानीय अभ्यासकेँ विशेषज्ञक संग संवादमे आनल गेल; ओकर अन्तिम वैज्ञानिक प्रमाण स्वतः स्थापित नहि।

आधुनिक आ पारम्परिक ज्ञान : एकत्र प्रयोगक गुण

नगरक वृक्ष-वैद्य कीड़ाक उपचारक विधान दैत छथि; गोदावरीक बेटी जड़ी-बूटी, तेल आ माटिक उपचार; बच्चासभ दैनिक अभिलेख; सभ टोला श्रम करैत अछि। ई चारि प्रकारक सहयोग अछि—विशेषज्ञ निदान, स्थानीय अनुभव, लिखित निरीक्षण आ सामुदायिक श्रम। कथा ‘एकटा ज्ञान दोसराक अन्तिम विकल्प’क दावा नहिं करैत; संयुक्त क्रियाकेँ प्राथमिकता दैत अछि। ई सामाजिक पक्षेँ मूल्यवान अछि, मुदा प्रमाणसंगत कारण-निर्णय कठिन बनबैत अछि: केहन उपचार कोन शाखापर लागू भेल, परिणामक तुलना कोन दिन भेल, हानिकर उपाय के रोकलक—विवरण नहि। एतए ‘दोन्ही ज्ञान मिलल आ गाछ ठीक भेल’ एक घटना-क्रम थिक, प्रत्येक विधिक स्वतन्त्र प्रभावकारिताक माप नहि।

गामक सभ टोला : संकटमे श्रमक समवाय

‘चर्मकार, ब्राह्मण, कायस्थ, धीवर’ सभ टोला एकसंग गाछक संरक्षणमे लागैत अछि। पहिने कबड्डीक सार्वजनिक खेल सामाजिक सम्मिलनक माध्यम छल; आब एक जीवित गाछक भौतिक उपचार सामूहिक काज बनैत अछि। इएह अध्यायक सामाजिक नवान्तर अछि—साथ रहब प्रतीकात्मक श्रद्धासँ आगू बढ़ि श्रमक वितरण बनैत अछि। मुदा प्रत्येक टोलाक वास्तविक जिम्मेदारी, कामक घण्टा, निर्णयक अधिकार, उपकरण, विश्राम आ उपचारक खर्चक विवरण नहि। ‘सभटा’ कथावाचकक समावेशी सरलीकरण अछि। जाति-संरचनाक स्थायी समानता इलाजक एक वर्षमे सिद्ध नहि; संकटमे सहकार्य सामाजिक सम्बन्ध सुधारबाक अवसर दैत अछि, सम्पूर्ण असमानता अन्त करबाक प्रमाण नहि।

बच्चाक दैनिक स्वास्थ्य-अभिलेख : -७६क शैक्षिक प्रयोगक फल

नारिकेल पात पाठशालाक बच्चासभ शाखाक स्थिति रोज लिखैत छथि—केहन शाखा नीक होइत, कतय समस्या बाँकी अछि। एहि स्थलपर साक्षरताक मूल्य अनुष्ठानक इतिहास लिखब मात्र नहि, जीवित पर्यावरणक निरन्तर अवलोकन बनैत अछि। -७६ मे एक पातपर अक्षर खिंचबाक आरम्भ छल; -७५ मे शिक्षित युवकक प्रश्नक अधिकार; -७४ मे बच्चाक लेखन उपचारक पुनरवलोकनक साधन बनैत अछि। ई तीन-अध्यायीय क्रम कथा-विकासक प्रमुख उपलब्धि अछि। मुदा स्वास्थ्य-अभिलेखमे तारीख, शाखाक स्थान, पातक रंगक माप, औषधिक मात्रा, तुलना वा वृक्ष-वैद्यक पुनः निरीक्षणकेँ विस्तृत नहि बताओल गेल। लिखित रिकॉर्ड राखब पाठसिद्ध अछि; वैज्ञानिक मानकीकरणक पूर्णता नहि।

माटि, जड़ि, छाल आ पात : पर्यावरणीय कथास्थल

नदी आ पोखरिक जल पहिने गोहिक प्रभावक क्षेत्र छल; एतय पीपरक जड़ि, आसपासक माटि, छाल आ पात कथाक सक्रिय स्थान बनैत अछि। मानवेतर गाछ केवल दृश्य-स्थिर स्मारक नहि, रोग धारण करैत, लक्षण उत्पन्न

करैत आ सामुदायिक श्रमक दिशा बदलैत अछि। खास बात ई जे पीपरक उत्तरी शाखासँ प्रारम्भ भऽ सम्पूर्ण गामक श्रम धरि प्रसार होइत अछि। स्थान सूक्ष्मसँ व्यापक बनैत अछि। तथापि पानिक निकास, माटिक बनावट, शाखाक प्रकाश, ऋतुक ताप अथवा कीड़ाक पर्यावरणीय कारण पाठमे नहि बताओल गेल।

रोगक कारण : कीड़ा, पर्यावरण आ अनिर्णीत सहकारक

नगर-वैद्यक कथन अछि जे छालक भीतर कीड़ा घर बनाकऽ गाछकेँ भीतरसँ खोखला करैत अछि। ई दृश्य आ लक्षणसभक पात्रगत कारण-व्याख्या अछि। कथावाचक स्वयं कोनो प्रयोगात्मक कटान, सूक्ष्मदर्शी जाँच वा कीड़ाक स्वतन्त्र वर्णन नहि प्रस्तुत करैत। तेँ रोगक कथा-निदान स्वीकार करितहुँ ओकर कारणक विस्तृत वनस्पतिशास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत अछि—एहन घोषणा नहि। गाछ कमजोर होयबाक अन्य सहकारक, माटिक स्थिति, पुरान शाखा वा मौसमक असर विषयमे मूल अध्याय मौन अछि। ई मौन आलोचनात्मक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ उपन्यासक पर्यावरणीय राजनीतिकेँ केवल ‘एक रोग–एक उपाय’क सूत्रमे बदलि देने प्राकृतिक तंत्रक जटिलता घटि सकैत अछि। साहित्यिक स्तरपर कीड़ा दृश्य संकटक केन्द्र बनैत अछि; जीवविज्ञानक स्तरपर निदान आ औषधिक सत्यापन अलग काज होयत।

‘असाध्य नहि’ : विशेषज्ञक सीमित आश्वासन

वृक्ष-वैद्य शुरूहि मे कहैत छथि जे रोग असाध्य नहि, मुदा धैर्य आ निरन्तर देखभाल आवश्यक। एहि कथनमे सावधानीक एकटा भाव अछि—उपचारक प्रत्यक्ष अवधि आ श्रमक महत्त्व। बुढ़बाक ‘शायद आयु समाप्त’ वचनक प्रतिपक्षमे वैद्यक आश्वासन कथा-रूपेँ आशा उत्पन्न करैत अछि। मुदा ‘असाध्य नहि’ पूर्णरूपेँ उपचार-निश्चय नहिं; रोगक अवस्था, उपचारक प्रतिक्रिया आ पर्यावरणीय बदलाव पर परिणाम निर्भर होयत। रचना एक बरखक भीतर स्वस्थ होयबाक विधान दैत अछि, जाहिसँ कथाभितर वैद्यक आशा सफल होइत अछि। आलोचनाकेँ ई भेद बनौने रखबाक चाही जे वैद्यक वचन प्रायोगिक सम्भावना, कथावाचकक अन्तिम विवरण परिणति, आ पाठकक बाह्य जीवनक चिकित्सकीय सल्लाह तेसर अलग क्षेत्र अछि।

उपचारक संयुक्त कारणशृंखला : एकक प्रभाव अप्रमेय

गाछ धीरे-धीरे स्वस्थ होइत अछि जखन वैद्यक रोगनाशक विधि, जड़ी-बूटी–तेलक उपचार, माटिक देखभाल, चर्मकार–धीवर–ब्राह्मण–कायस्थक श्रम आ बच्चासभक स्वास्थ्य-अभिलेखन एकसंग चलैत अछि। नव्य-न्यायक कारण-चिन्तनमे एहि संयुक्त परिणतिसँ कोनो एक घटकक पर्याप्त-हेतु होयब सिद्ध नहि होइत। यदि साध्य गाछक स्वस्थ होयब अछि, तँ अनेक सहकारी कारण उपस्थित छथि; प्रत्येकक अपना प्रभावक पृथक तुलना नहि। ‘परम्परागत तेलहि सँ’ अथवा ‘केवल आधुनिक उपचारसँ’ गाछ बचल—दुनू अतिरंजित निष्कर्ष होयत। साहित्यिक सफलता संयुक्त श्रमक महत्त्व देखेबाक अछि, व्यक्तिगत औषधिक शास्त्रीय प्रमाण नहि। कादम्बरी दूनू ज्ञानक सहअस्तित्वक सामाजिक परिणाम प्रस्तुत करैत अछि, औषधि-नियन्त्रणवला प्रयोग नहि।

महीना-महीनाक सुधार : पर्यावरणीय अवधि

कथा ‘मास-दर-मास’ गाछ नीक होयबाक वाचकीय सारांश दैत अछि। एहि शब्दसँ रोगक उपचार एक रातिक चमत्कार नहि, दीर्घ श्रमक प्रक्रिया बनैत अछि। –७७क बूढ़बाक मौनक समाधान एक रातिमे भावात्मक रूपसँ प्राप्त भेल छल; –७४मे गाछक भौतिक सुधार लेल माससभक समय चाही। ई समय-विस्तार पर्यावरणीय आख्यानक यथार्थवाद बढ़बैत अछि। मुदा प्रतिमासक दैनिक रिकॉर्ड कथामे नामित होइतहुँ वास्तविक माप, असफल दिन, पुनः रोगक प्रकोप वा उपाय बदलबाक दृश्य नहि भेटैत। एहि कारण ‘मास-दर-मास’ अवधि-भाव उत्पन्न करैत अछि; पर्यावरणीय जाँचक सूक्ष्म नाट्य अभी संक्षिप्त अछि। गाछ जीवित अछि, तें ओकर परिवर्तन पात्रक तत्काल इच्छा पर निर्भर नहि—एहि अन्तरमे मानवेतर सक्रियताक विशेष महत्त्व अछि।

एक बरखक भीतर ‘पूर्ण स्वस्थ’ : कथावाचकक परिणाम

मूल पाठ कहैत अछि जे एक बरखक भीतर गाछ पूर्णरूपसँ स्वस्थ भऽ गेल, पात फेर गहींर हरियर भेल। ई कथाभितरक परिणति-सूचना थिक। प्रत्यक्ष कथा-प्रमाणक स्तरपर पातक हरियरपन आ वाचकीय पूर्ण स्वास्थ्यक घोषणा अछि; जड़ि–छालक विस्तृत दीर्घकालिक परीक्षण देखाओल नहि। ‘पूर्ण स्वस्थ’ साहित्यिक समाधानक सघन शब्द अछि, चिकित्सा-मानकक प्रमाणपत्र नहि। एतय घटनाक अन्तिम रूप जादुई बूढ़बाक नहिं, मानवीय सामूहिक देखभालक परिणाम बताओल गेल अछि। मुदा सम्भव अछि वर्षभरक अनेक परिवर्तनमे ऋतु वा माटिक अन्य सहकारक सेहो भूमिका निभौने होथि; कथाकार एहि प्रश्नसँ परिचर्चा नहि करैत। ई सीमा चिन्हित करैतहुँ रचनाक मानवीय-पर्यावरणीय उत्तरदायित्वक उपलब्धि स्वीकार कएल जाए।

बूढ़बाक पुनः कमजोरी-अनुभव : देहक दर्शन

उपचारक अवधि मे बूढ़बा ‘कमजोरीक अनुभव’ पहिल बेर करैत छथि—जाहि कमजोरीमे गामक हर हाथक सहायता हुनका स्पर्श करैत अछि। ई रूपान्तरण –७७क मानसिक थकानसँ भिन्न थिक। एतय अलौकिक साक्षी अपन अस्तित्वक भौतिक आधारक क्षय देखैत छथि। ‘कोनो देह अमर नहि’ उपदेश जकरा ओ वर्षसभसँ दैत रहलाह, आब अपनहि अस्तित्वपर लागू करैत छथि। बौद्धिक रूपेँ ई आत्म-विपर्ययक क्षण अछि: साक्षी दूसराक सीमित आयुपर ज्ञान दैत, मुदा अपन देहाधारित निर्भरता अनुभवसँ समझैत छथि। कथा अलौकिकताकेँ प्राकृतिक वस्तुक कमजोरीसँ यथार्थमूलक बनबैत अछि, मुदा बूढ़बाक सम्भावित मृत्यु आ गाछक जैविक आयु-सीमाक विषयमे अगिला निर्णय खुलल रहैत।

‘लम्बा, नाजुक धागा’ : नामस्मृतिक नवीन रूपक

बूढ़बा अपन साक्षित्वकेँ ‘एकटा लम्बा, नाजुक धागा’ कहैत छथि। एहि रूपकमे दीर्घता आ भङ्गुरता एकसंग छथि। शताब्दीक साक्षी-कार्य अमरत्वक स्थिर वस्तु नहि, अनेक परस्पर निर्भर घटकक सहारे चलैत सम्बन्ध बनैत अछि। धागा पात, जड़ि, आवाज, नाम, बच्चाक लिखित अभिलेख आ सार्वजनिक देखभालकेँ एक प्रतीक-शृंखलामे जोड़ैत अछि। मुदा धागाक नाजुकता बुझलापर कादम्बरी अभी संस्थागत विकल्प विकसित नहि करैत —जँ पीपर वास्तवमे मरी जाए, तखन बूढ़बाक नाम-स्मृति ककरा मार्फत जायत? लिखित पोथी, कबड्डी आ

पाठशाला कतेक स्वतन्त्र? कथा एहि दूहरा निर्भरता-प्रश्नकेँ पूर्ण समाधान नहि देत। एहि अनिर्णयक कारण रूपकक सौन्दर्यक संग अस्तित्वगत भय शेष रहैत अछि।

जीवित स्मारक : स्मृति-स्थलक गतिशील रूप

पीपर स्थिर पाथरक मूर्ति नहि; रोगग्रस्त, बदलैत, ऋतु-प्रभावित जीवित सजीव अछि। ‘जीवित स्मारक’क धारणा एतय रोचक अछि, कारण संरक्षणक अर्थ पूजा अथवा पुरातत्त्वीय मरम्मत मात्र नहि, निरन्तर जैविक देखभाल बनैत अछि। गाछ स्वयं पात पीयर करि, छालमे दाग देखाकऽ लोककेँ काज लेल प्रेरित करैत अछि। एतय मानवेतर सक्रियता ‘गाछ बोली रहल’सन अलंकार मात्र नहिं, गाछक शारीरिक अवस्थाक सामाजिक परिणाम अछि। मुदा गाछक स्वायत्त पारिस्थितिक हित आ गामक ओकरा स्मृतिगृह मानि उपयोग करबाक हित सदा एक नहि। लोक गाछकेँ केवल बूढ़बाक स्मृति बचएबाक साधन मानथि तऽ वनस्पतिक स्वतन्त्र जीवन-मूल्य पीछे पड़ि सकैत अछि। अध्यायक अन्त ‘गाछकेँ जीबय देब’ कहि एहि वस्तुकरणसँ आंशिक रूपसँ बाहर निकलैत अछि।

पीपरक आयु : कथाभितरक बारह-सय-बरखीय दावाक सीमा

उपन्यासक विशाल पूर्वकथाकालमे पीपर शताब्दीसँ जीवित साक्षीगाछ कहल गेल अछि। वर्तमान अध्यायो कहैत अछि जे गाछ सैकड़ों बरख बूढ़बाक संग जीबल। ई कथाविश्वक दीर्घ काल-सूचना अछि, स्वतन्त्र वनस्पतिशास्त्रीय आयु-मापन नहि। यदि उपन्यासक आरम्भिक ‘बारह सय बरख’ इतिहास आ अध्यायक गाछ एखन एउवहि जीवित वृक्ष छथि, तखन अत्यन्त दीर्घ आयुक रचनात्मक धारणा बनेबाक अछि। जादुई-यथार्थवादी रूपमे असाधारण आयु सम्भव साहित्यिक नियम बनि सकैत अछि; ऐतिहासिक बॉटनीक यथार्थवादी प्रतिवेदनमे एकर स्वतः प्रमाणीकरण नहि। कालिक दावाकेँ आन्तरिक रूपक, कथाभितर घटना आ बाह्य प्राकृतिक इतिहासक तीन अलग धरातलपर राखब अनिवार्य।

बच्चासभक लेखनक कालिक प्रतिष्ठा : दैनिक अभिलेखसँ सामुदायिक परम्परा

नारिकेल पात पाठशालाक बच्चासभ प्रत्येक दिन गाछक स्थिति लिखैत छथि। एहि दैनिक लिपिबद्धता मे दीर्घकालक पारिस्थितिक स्मृतिक सम्भावना अछि—कखन रोग शुरू भेल, कखन उपचार, कखन पात हरियर। मुदा वास्तविक पाठमे अभिलेखक माध्यम, पन्नाक संरक्षण, प्रौढ़ द्वारा समीक्षा अथवा भविष्यक पीढ़ीक अभिगम नहि देखाओल। एतय पात-आधारित पाठशाला गाछक उपचारक पाठशाला बनैत अछि; शिक्षाक उद्देश्य पुस्तकक भीतर अतीत पुनरुच्चारण मात्र नहि, वर्तमानक पर्यावरणीय निर्णय लेल अवलोकन दऽ सकब अछि। लिखन-पढ़न सामाजिक अधिकारसँ व्यावहारिक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि। अभिलेखक पद्धतिगत असम्पूर्णता एहि उपलब्धिक महत्व मेटबैत नहि, ओकर आगाँक सम्भावित विकासक स्थान चिन्हित करैत अछि।

उपचारक खर्च, श्रम आ संसाधन : अनुपस्थित सामाजिक लेखा

गाम नगरसँ वैद्य बजबैत, प्राकृतिक तेल, जड़ी-बूटी, श्रम आ दैनिक अभिलेखनक संसाधन जुटबैत अछि। मुदा उपचारक आर्थिक लागत, वैद्यक पारिश्रमिक, दूरस्थ यात्रा, तेलक उत्पादन, काम करनिहारक रोजी-रोटी आ असमान आर्थिक बोझक कथा अनुपस्थित। ‘सभ टोला’क साझा सहभागिता आदर्श सामाजिक एकता देखबैत

अछि, मुदा हाशियाकृत समुदायपर नि:शुल्क श्रमक अधिक भार पड़ल कि नहि, जाँच नहि। विदेह समानान्तर इतिहासक पद्धतिमे लोकक श्रमक दृश्यता पर्याप्त नहि, ओकर वितरण आ मान्यता सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। केवल कर्तव्य-आह्वानसँ गरीबक आर्थिक बाधा समाप्त नहि होइत। रचनात्मक विस्तार मे कार्य-विभाजन, महँग उपायसँ बहस आ गरीब परिवारक अनुमति जकाँ दृश्य परिणामकेँ अधिक विश्वसनीय बना सकैत छल।

नदी, माटि आ वनस्पति : जलजीवनक अन्तरसम्बन्ध

मूल पाठमे नदीक प्रत्यक्ष बाढ़ि, गोहि अथवा पोखरिक युद्धक दृश्य नहि; प्रमुख भौतिक पदार्थ पीपरक जड़ि, माटि, छाल, पात आ तेल छथि। जल-पारिस्थितिकी अप्रत्यक्ष रूपसँ माटिक नमी आ वृक्षक जीवनक पृष्ठभूमि हो सकैत अछि, मुदा कथामे नमीक प्रयोगात्मक विवरण नहि। एहि कारण समीक्षाकेँ ‘जल-स्थान बिम्ब’क सामान्य शब्दसँ घटनाक असत्य विस्तार नहि करबाक चाही। वर्तमान अध्याय वृक्ष-पर्यावरणक संकट पर अधिक सघन अछि, जे बादक जलसमाधि-कथाक साक्षीसंस्थाकेँ प्राकृतिक तंत्रसँ जोड़ैत अछि। नदी-गोहिक भयक तुलना मे जड़ि–छालक भौतिक रोग मानवेतर जीवनक अधिक दृश्य, हस्तक्षेप-योग्य संकट अछि।

उपचारक आन्तरिक विरोध : रोग काटब बनाम गाछ बचाएब

समापन गीत कहैत अछि ‘एक पात कारी भेल हे, तुरत काटि दिअ रे’। कथा भीतर वृक्ष-वैद्य चाहैत छथि कीड़ा नष्ट हो, गाछकेँ हानि नहि पहुँचय। गीतक ‘काटि दिअ’ शाब्दिक वनस्पति-उपचारक निर्देश मानल जाए तँ असङ्गति सम्भव अछि; संक्रमित पात तुरन्त काटब सभ रोगमे उचित अछि, एहन पाठक भीतर वैज्ञानिक प्रमाण नहि। रूपक रूपमे ओ समस्याक आरम्भिक अवस्था पहचानि सक्रिय रूपसँ निपटबाक आग्रह अछि, किन्तु समाजमे ‘कारी पात काटि देब’क भाषा सामाजिक बहिष्कारकेँ वैध बना सकैत अछि। पिछला –७५ मे प्रश्नकर्ताकेँ राखबाक महत्त्व सिद्ध भेल छल। तेँ गीतकेँ वास्तविक चिकित्सकीय आदेश अथवा भिन्नमतक उन्मूलनक नीति रूपमे लागू करब अनुचित।

रोग लुकाएब आ उघारब : मौनक राजनीति

गीतक वाक्य ‘जे रोग लुकाओल, से पसरल; जे उघारल, से थम्हल’ एक प्रकारक पारदर्शिताक नैतिक सिद्धान्त बनबैत अछि। केदार आरम्भिक चिह्न नहिं नुकेलनि; बूढ़बा कमजोरी स्वीकारलनि; वैद्य निदान सार्वजनिक कएलनि; बच्चासभ दैनिक स्थिति लिखैत छथि। एहि चारि क्रियासँ उपमाक घटनात्मक आधार भेटैत अछि। मुदा रोग उघारब मात्रसँ ओकर प्रसार थम्हत—एहन कारणात्मक व्याप्ति नहि: वास्तविक उपचार, पर्यावरणीय सुधार आ समय सेहो आवश्यक अछि। सामाजिक रूपकमे सूचना-प्रकाशन आवश्यक हो सकैत, पर्याप्त नहि। एहि भेदक कारण गीतक नैतिक शक्ति कम नहि होइत; ओकर उपदेशकेँ वास्तविक प्रयोजनक तुलनामे अनुपातिक बनाओल जाइत अछि।

कथावाचक, दृष्टिकेन्द्र आ सूचना-वितरण

अध्यायक आरम्भ केदारक निरीक्षणक निकट अछि; बीमारीक आशङ्का हुनकर देखल चिह्न आ बूढ़बाक कमजोर स्वरद्वारा बनैत अछि। बूढ़बाक संवाद आत्म-ज्ञानक सीमा खोलैत अछि। नगरक वैद्यक आगमन पर विशेषज्ञ-

दृष्टिकेन्द्र प्रवेश करैत अछि; गोदावरीक बेटी स्थानीय परम्परागत ज्ञानक स्वर दैत छथि; बच्चासभक दैनिक अभिलेख बहुवचन पर्यवेक्षणक संकेत अछि। अन्ते कथावाचक एक बरखक उपचार आ ‘हर पीढ़ीक’ कर्तव्यक भविष्य पर सर्वज्ञ सारांश दैत अछि। एहि वितरणमे दृष्टिकेन्द्रण अनेक पात्रलग घूमैत अछि, मुदा किछु पात्र—विशेषतः अनाम महिला उपचारकर्त्री आ बच्चासभ—अपन अलग संवाद-विस्तार नहि पबैत। रचनाक बहुस्वरता घोषणामे पैघ, प्रत्यक्ष संवादमे चयनित रहल अछि।

अवधि-रचना : एक साँझक भयसँ एक बरखक सुधार

केदारक पहिल निरीक्षण आ बूढ़बाक कमजोर स्वर एक साँझक नाटकीय दृश्य अछि। वैद्यक जाँच आ सामुदायिक उपचार अपेक्षाकृत संक्षिप्त दृश्यरूपमे अबैत अछि; ‘मास-दर-मास’क सुधार दीर्घ सारांश, ‘एक बरखक भीतर’ पूर्ण स्वस्थक निष्कर्ष, तकर बाद अनन्त पीढ़ीक वार्षिक कर्तव्यक iterative घोषणा बनैत अछि। समयक एहि अनुपातमे रोगक धीमी प्रक्रिया सँ साहित्यिक भावात्मक गति केना समायोजित होइत अछि, देखब आवश्यक अछि। गाछक स्वास्थ्यक दीर्घ परिवर्तन नाट्यकालमे सम्पूर्ण विस्तारसँ प्रस्तुत नहि; बूढ़बाक आत्मस्वीकृति बीचमे रोकिकऽ नैतिक उत्कर्ष निर्मित करैत अछि। ई संक्षेप महाकादम्बरीक विशाल कालगति रखैत अछि, पर पर्यावरणीय उपचारक असफलता वा पुनरावृत्तिक अनुभव कम देखाएत।

भारतीय काव्यशास्त्र : भयानक, करुण, अद्‌भुत आ शान्त

पीयर पात आ कारी दाग आरम्भमे क्षय-आशङ्काक भयानक भाव उत्पन्न करैत अछि; बूढ़बाक ‘शायद आयु पूर्ण’क क्षीण आवाज करुणाक विभाव। नगरक वैद्य आ स्त्री-वंशक स्थानीय ज्ञानक संयुक्त उपचार सामुदायिक उत्साहक अनुभव; एक बरखक भीतर हरियर पात शान्तक प्रतीति उत्पन्न करैत अछि। अद्भुतक विशेष स्रोत गाछ आ बूढ़बाक अस्तित्वगत सम्बन्ध अछि, नहि कीड़ा वा गाछक रोग स्वयं। ध्वनिक स्तरपर ‘लम्बा, नाजुक धागा’ दीर्घ स्मृतिक भङ्गुरता; ‘एक पात’ स्थानीय चेतावनी; ‘गाछकेँ जीबय देब’ जैविक अधिकारक नवानुभव बनैत अछि। औचित्यक कसौटीपर गीतक ‘कारी पात काटि दिअ’ चिकित्सकीय सावधानी तथा सामाजिक सहिष्णुताक सन्दर्भमे आलोचनात्मक सीमा चाहैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास : नामहीन उपचारकर्त्री आ बच्चाक अवलोकन

उपन्यास उपेक्षित वर्गक स्मृति सुरक्षित करबाक प्रतिज्ञा करैत अछि। वर्तमान प्रकरणमे धीवर-सम्बद्ध सोनमा माझिनक वंशज स्त्री गाछ बचएबाक ज्ञान दैत छथि, मुदा हुनकर व्यक्तिगत नाम अनुपस्थित अछि; विद्यार्थीसभ दैनिक देखभालक अभिलेख राखैत छथि, मुदा एकोटा बच्चाक नाम निर्दिष्ट नहि। एतय ऐतिहासिक विडम्बना अछि: स्मृतिक केन्द्रीय गाछकेँ बचेनिहार वास्तविक व्यक्तिक योगदान नामविहीन रहैत अछि, जखन केदार आ बूढ़बाक संवाद विस्तृत अछि। समानान्तर इतिहासक दृष्टि एहि अदृश्य श्रमकेँ कथाक आधारसँ ऊपर आनबाक माँग करैत अछि। जँ समीक्षा ओकरा काल्पनिक नाम दऽ देत तँ स्रोत-निष्ठा भङ्ग होयत; उचित कार्य अनामिकताक तथ्य आ सामाजिक अर्थ दर्ज करब।

पर्यावरणीय नीतिक सीमा : श्रद्धा पर्याप्त नहि

समापनक गामक कहबी अछि—‘बूढ़बाक सेवा केवल नाम बचाएब नहि, गाछकेँ सेहो जीबय देब थिक।’ ई रचनाक सर्वाधिक स्पष्ट नैतिक उपलब्धि अछि। जीवित सांस्कृतिक साक्षीकेँ संरक्षण लेल उपचार, निरीक्षण, सफाई आ ऋतु-अनुसार सुरक्षा चाही। कथा स्वयं बतबैत अछि जे भौतिक देखभाल बिना श्रद्धा पर्याप्त नहि। मुदा एहि अनुभवकेँ सामान्य प्राचीन वृक्षसभक उपचार-विधि रूपमे बिना जाँच लागू नहि कएल जा सकैत; अलग गाछक रोग, स्थानिक पर्यावरण आ विशेषज्ञ परामर्श अलग होइत। साहित्यिक अर्थमे ‘जीबय देब’ विरासतकेँ संग्रहालयी निर्जीव वस्तु बनाकेँ नहि, जीवित प्राकृतिक व्यवस्था सम्मान देबाक अपील अछि।

घटना-प्रमाण-परिणाम : चारि-स्तम्भीय आलोचनात्मक लेखा

घटना वा अवलोकन | मूल पाठक प्रत्यक्ष साक्ष्य | अनिर्णीत कारण अथवा प्रमाण-सीमा | सामुदायिक/नैतिक परिणाम

केदारक आरम्भिक निरीक्षण | उत्तरी शाखाक पीयर पात | रोगक निश्चित कारण नहि | संकट चिन्हित करबाक पात्रगत उत्तरदायित्व

छालक कारी गील दाग | दृश्य चिह्नक वर्णन | विशिष्ट कीड़ा अथवा संक्रमणक स्वतन्त्र जाँच नहि | बूढ़बाक शरीर-निर्भरता पर चिन्ता

बूढ़बाक क्षीण स्वर | ‘हम ई गाछसँ बान्हल छी’ | जैविक-अलौकिक कार्यप्रणाली अनिर्दिष्ट | साक्षीक भौतिक नाजुकता उजागर

समुदायक कोहराम | गाछ/बूढ़बाक सम्भावित अन्तक भय | सभ नामक अन्य माध्यमसँ संरक्षणक सम्भावना खुलल | एकल गाछपर स्मृति-निर्भरता

केदार द्वारा वैद्य आनब | नगरसँ वृक्ष-चिकित्सक बजाओल | उपचारक खर्च आ यात्रा अप्रतिपादित | प्रश्नसँ व्यावहारिक नेतृत्व

जड़ि-छाल-पातक परीक्षा | वैद्यक ‘सूक्ष्म जाँच’ | परीक्षण-विधि निर्दिष्ट नहि | मानव विशेषज्ञताक प्रवेश

कीड़ाक निदान | वैद्यक ‘खोखला’ करबाक दावा | जीवप्रजाति वा नमूनाक सत्यापन नहि | उपचारक एक प्रस्तावित कारण

गोदावरीक बेटीक ज्ञान | जड़ी-बूटी, प्राकृतिक तेल, माटिक उपचार | पृथक प्रभावकारिता नहि; स्त्रीक नाम नहि | स्थानीय स्त्रीज्ञानक उपयोग आ नामहीनता

गामक सभ टोलाक श्रम | चर्मकार–ब्राह्मण–कायस्थ–धीवर सहयोग | श्रम-वितरण/लागत अप्रतिपादित | प्रतीकात्मक एकतासँ भौतिक समवाय

विद्यार्थीक दैनिक लेखा | शाखाक स्वास्थ्यक रिकॉर्ड | मापनक मानकीकरण अज्ञात | साक्षरताक पर्यावरणीय प्रयोग

मास-दर-मास सुधार | धीरे-धीरे स्वास्थ्यलाभक कथन | प्रत्येक उपचारक अलग प्रभाव नहि | दीर्घकालिक देखभालक मूल्य

बूढ़बाक आत्मस्वीकार | ‘लम्बा, नाजुक धागा’ | पूर्ण जैविक निर्भरता-नियम अस्पष्ट | अमरत्वक दम्भक संशोधन

एक बरखमे हरियर पात | पूर्ण स्वस्थक वाचकीय घोषणा | दीर्घकालीन चिकित्सकीय पुष्टि नहि | सामुदायिक आशा आ श्रमक कथात्मक सफलता

पीढ़ीगत संरक्षण-नियम | जड़िक सफाई, कीड़ाक जाँच, ऋतुसुरक्षा | संस्थागत निधि/सुरक्षा अभिलेख नहि | पारिस्थितिक नागरिक दायित्व

समापनक चेतावनी गीत | ‘रोग लुकाओल’ आ ‘कारी पात काटि दिअ’ | शब्दशः चिकित्सा/सामाजिक नियम नहिं | उपेक्षा-विरोधी सावधानी; बहिष्कारक रूपकीय जोखिम

मूल अध्याय –७४ : अक्षरशः सत्यापित साक्ष्य-सूचक

१. “एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत” — फकराक आरम्भिक चेतावनी; मूल अध्याय –७४।

२. “गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ” — सामाजिक रूपक; मूल अध्याय –७४।

३. “विश्वनाथक पोता, नाम केदार” — वंशीय परिचय; मूल अध्याय –७४।

४. “अनुष्ठान-रक्षिका बनल” — भाषिक लिंग-रूपक असङ्गति; मूल अध्याय –७४।

५. “योग्यताक आधारपर” — उत्तराधिकारक नवानियम; मूल अध्याय –७४।

६. “उत्तरी शाखाक पात पीयर पड़य लागल छल” — दृश्य लक्षण; मूल अध्याय –७४।

७. “काली, गीली दाग” — छालक लक्षण; मूल अध्याय –७४।

८. “अहाँक गाछ बीमार लगैत अछि” — केदारक प्रत्यक्ष प्रश्न; मूल अध्याय –७४।

९. “हम ई गाछसँ बान्हल छी” — बूढ़बाक निर्भरता-स्वीकार; मूल अध्याय –७४।

१०. “अहाँक देह अहाँक साँससँ बान्हल अछि” — देह-रूपक; मूल अध्याय –७४।

११. “शायद... शायद एकर आयु आब पूर्ण होय जा रहल अछि” — अनिश्चित मृत्यु-आशङ्का; मूल अध्याय –७४।

१२. “जँ गाछ मरि गेल” — सामुदायिक भय; मूल अध्याय –७४।

१३. “विश्वनाथक तर्कशीलता” — वंशगत तर्क-परम्परा; मूल अध्याय –७४।

१४. “नानी सभक श्रद्धा” — परम्परागत भाव-विरासत; मूल अध्याय –७४।

१५. “वृक्ष-वैद्य” — विशेषज्ञक आगमन; मूल अध्याय –७४।

१६. “जड़ि, छाल, आ पातक सूक्ष्म जाँच” — निरीक्षणक कथित पद्धति; मूल अध्याय –७४।

१७. “किसिम-किसिमक कीड़ाक शिकार” — रोगक निदान; मूल अध्याय –७४।

१८. “ई असाध्य नहि” — उपचारक सम्भावना; मूल अध्याय –७४।

१९. “धैर्य आ निरन्तर देखभाल माँगैत अछि” — उपचारक दीर्घ समय; मूल अध्याय –७४।

२०. “चर्मकार, ब्राह्मण, कायस्थ, धीवर” — बहु-टोला सहयोग; मूल अध्याय –७४।

२१. “गोदावरीक बेटी” — नामहीन स्त्री ज्ञानधर; मूल अध्याय –७४।

२२. “जड़ी-बूटी” — स्थानीय पदार्थ; मूल अध्याय –७४।

२३. “प्राकृतिक तेल” — स्थानीय उपचार; मूल अध्याय –७४।

२४. “गाछक स्वास्थ्यक दैनिक रिकॉर्ड” — विद्यार्थीक अभिलेखन; मूल अध्याय –७४।

२५. “मास-दर-मास” — अवधिक विस्तार; मूल अध्याय –७४।

२६. “लम्बा, नाजुक धागा” — नश्वर साक्षित्वक रूपक; मूल अध्याय –७४।

२७. “एक बरखक भीतर” — उपचारक सारांशित काल; मूल अध्याय –७४।

२८. “गाछ पूर्ण रूपसँ स्वस्थ भऽ गेल” — कथावाचकक परिणाम; मूल अध्याय –७४।

२९. “जड़िक सफाई, कीड़ाक जाँच” — वार्षिक देखभालक नियम; मूल अध्याय –७४।

३०. “केवल नाम बचाएब नहि, गाछकेँ सेहो जीबय देब थिक” — गामक कहबी; मूल अध्याय –७४।

३१. “एक पात कारी भेल हे, तुरत काटि दिअ रे” — गीतक प्रतीकात्मक आदेश; मूल अध्याय –७४।

३२. “जे रोग लुकाओल, से पसरल; जे उघारल, से थम्हल” — समापन गीतक पारदर्शिता; मूल अध्याय –७४।

उपर्युक्त उद्धरणसभ मूल कथाभाग आ समापन गीतसँ अक्षरशः मिलाओल गेल। अध्यायोत्तर टिप्पणीकेँ उद्धरण-स्रोतक रूपमे नहि मिसाओल गेल; प्रत्येक उद्धरणक अलग मुद्रित पृष्ठाङ्क बिना पृष्ठ-जाँच नहि देल गेल।

आलोचनात्मक समग्र निर्णय : उपलब्धि आ सीमा

‘गाछक रोग’क मुख्य कथात्मक उपलब्धि ई अछि जे उपन्यास बूढ़बाक दीर्घ स्मृति-सत्ताकेँ आखिरकार एक बीमार पड़ि सकनिहार जीवित गाछक ऊपर आश्रित देखबैत अछि। सैकड़ों बरखक साक्षी अपन कमजोरी स्वीकार करैत छथि, आ गाम श्रद्धा-मात्रक स्थानपर वास्तविक उपचारक काज करैत अछि। केदारक विशेषज्ञ-आमन्त्रण, सोनमा–गोदावरीक स्त्रीवंशक स्थानीय ज्ञान, बहु-टोलाक श्रम आ नारिकेल पात पाठशालाक बच्चाक लिखित निरीक्षण एक सुसंगत सहयोगी दृश्य बनबैत अछि। –७६क शिक्षा, –७५क प्रश्नधर्मिता आ –७४क उपचारक बीच प्रभावी कारणात्मक निरन्तरता अछि। मुदा उपलब्धिक संग चारि आवश्यक सीमा सुरक्षित रहत: पहिल, रोगक निदान आ संयुक्त उपचारक पृथक वैज्ञानिक प्रभावक अप्रमाणित अवस्था; दोसर, ‘पोता’ केदार लेल ‘रक्षिका’क भाषिक लिंग-असङ्गति; तेसर, गोदावरीक बेटीक नामहीनता आ श्रमिकसभक श्रम-बाँटवारा/खर्चक अनुपस्थिति; चारिम, गीतक ‘कारी पात काटि दिअ’ रूपककेँ जैविक वा सामाजिक सन्दर्भमे कठोर आदेश बनाओल जाएबाक जोखिम। कथावाचकक ‘पूर्ण स्वस्थ’ निर्णय एक बरखक कथाभितरक परिणाम अछि, स्थायी अमरत्वक सिद्धि

नहि। एहि सन्तुलनमे उपन्यास जीवित सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षणकेँ पर्यावरणीय नागरिकता बनाबयमे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करैत अछि।

प्रमाण-विधान, परापाठ आ अगिला अध्यायक सन्धि

प्राथमिक पाठ : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७४] ‘गाछक रोग’, मूल संयुक्त Word पाण्डुलिपि। ‘जीवित स्मारकक देखभालक उत्तरदायित्व’ मूल अध्यायपछातिक व्याख्यात्मक टिप्पणी थिक; स्वतन्त्र औषधीय अथवा ऐतिहासिक प्रमाणीकरण नहि। वर्तमान समीक्षा गाछक उपचारक विधिकेँ साहित्यिक कथनक बाहर वास्तविक वृक्षचिकित्साक निर्देश नहि बनबैत अछि। अगिला स्वतन्त्र समीक्षा : अध्याय –७३ ‘मोहनक धुन’, जाहिमे बाँसुरी, शोक, मृतकक नाम आ लोकस्मृतिक संगीतमय रूपान्तरक पाठसाक्ष्य जाँचल जाएत।

प्रकरण २८ | मूल अध्याय –७३ — मोहनक धुन

पाठाधार, अध्याय-सीमा आ आलोचनात्मक प्रतिज्ञा

अध्याय –७३ पूर्व-कथाकालक अठाइसम स्वतन्त्र अध्याय अछि। मूल पाठमे आरम्भिक लोकगीत कथाक घटनासँ पहिनहि ओकर सामाजिक परिणाम आ भविष्यक साहित्यिक उपयोग कहल दैत अछि। वास्तविक कथाभाग शीलावतीक अनुष्ठान-उत्तराधिकार, मोहनक ढोलकला, चारि बरखक राधिकाक बुखारसँ मृत्यु, पिता द्वारा सप्ताहसभक मौन, पीपर लग पहिल दुःखमिश्रित थाप, शीलावतीक प्रस्ताव, व्यक्तिविशेषक नव धुन, बूढ़बाक नैतिक उत्तर आ परम्पराक भविष्यक वर्णन रखैत अछि। अध्यायोत्तर ‘शोकसँ कलाक जन्म’ टिप्पणी रचनाक उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि, मुदा कथाभागसँ अलग परापाठ अछि। अतः संगीतक कथामे कथित धुनक ध्वनिक संरचना, कथावाचकक दावा आ पाठकक मानसिक पुनर्रचना भिन्न मानल जाएत।

–७४सँ –७३ : जीवित गाछक सेवा सँ श्रव्य स्मृतिक सेवा

पिछला ‘गाछक रोग’मे समुदाय बूढ़बाक पीपरकेँ बचाबय लेल वृक्ष-वैद्य, स्थानीय उपचार, बालकक दैनिक अभिलेख आ अनेक टोलाक साझा श्रम जुटौने छल। स्मृतिक भौतिक आधारपर संकट आ ओकर सेवा प्रमुख छल। वर्तमान अध्यायमे स्मृति गाछक जड़ि-समान स्थिर आश्रयसँ हटि, हवामे क्षणभरि बजल ध्वनिमे निवास करबाक चेष्टा करैत अछि। ‘गाछकेँ जीबय देब’ आ ‘धुनकेँ जीवित रखब’ दू भिन्न संरक्षण-विधान छथि: पहिल प्रत्यक्ष जीवित वस्तुक उपचार, दोसर प्रदर्शन, सुनवाई आ पीढ़ीगत पुनरावृत्तिपर निर्भर कला। रचनात्मक क्रम प्रभावशाली अछि, कारण पर्यावरणीय देखभालक पश्चात् संवेदनात्मक सामूहिक स्मरणक नव माध्यम प्रवेश करैत अछि। तथापि धुनक काल-स्थायित्व गाछक प्रत्यक्ष जीवन-जैसन भौतिक वस्तु नहि; ओकर अस्तित्व मानव-प्रदर्शनक पुनरुत्पादनपर निर्भर अछि।

शीर्षक आ आरम्भिक फकरा : हवामे विलीन होइत ध्वनि

‘बाँसुरीक धुन हवामे मिलै, तैयो कान ओकरा राखै’ कथन ध्वनिक क्षणिकता आ स्मृतिक अपेक्षाकृत दीर्घकालीनता एकसंग रखैत अछि। हवा संगीतकेँ प्रसारित करैत अछि; कान ध्वनिक अनुभव ग्रहण करैत अछि; मन ओकर अर्थ आ भावक छाप बचा सकैत अछि—ई फकराक काव्यात्मक कल्पना अछि। मुदा कान कोनो स्थायी ध्वनि-संग्रहालय नहि; श्रवणक बाद मनमे धुनक पुनर्स्मरण, गायन अथवा वादन अलग प्रक्रिया छथि। ‘जे धुन मन छुबै’क कथन शारीरिक स्पर्श नहि, भावात्मक प्रभावक रूपक अछि। एहि फकरामे बाँसुरीक स्पष्ट नाम बादक कथाभागसँ तुलना माँगैत अछि, जतय मोहन ढोलपर थाप बजबैत छथि। तेँ शीर्षकक वाद्य-निर्देश, लोकगीतक स्वतन्त्र कल्पना आ वास्तविक कथा-घटना एक समान नहि।

अगुआ लोकगीत : परिणाम पहिनहि बताबयवाली संरचना

आरम्भिक लोकगीत मोहनक बेटी गेलीह, ढोल छोड़ि बाँसुरीमे नाम बसल, शीलावतीक अनुष्ठानसँ धुन जुड़ल आ भविष्यक हर अध्यायमे लोकगीत उगलक—एहि सभ परिणाम आरम्भेँ घोषित करैत अछि। तकर बाद कथाभाग समयकेँ पीछे घुमाकऽ शोक, संगीत-उद्भव आ सामुदायिक निर्णय दृश्यरूपमे देखबैत अछि। ई घटना-क्रमक सामान्य अग्रगमन नहि; पहिने कथित भविष्य, फेर ओकर उत्पत्ति बताओल गेल अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिएँ लोकगीत पूर्वकथनात्मक अग्रसूचना, कथाभाग आंशिक व्याख्यात्मक पूर्वावर्तन बनैत अछि। एतय पाठकक जिज्ञासा ‘की होयत?’सँ अधिक ‘कहना कऽ एहन भेल?’ रहैत अछि। कलात्मक उपलब्धि दीर्घकालिक परिणामक प्रतीकात्मक घनता; सीमा ई जे बेटी मृत्यु आ मोहनक भावी उपलब्धि पहिने सँ बताओल गेलासँ नाटकीय अनिश्चितता घटि जाइत अछि।

केदारक बेटी शीलावती : अनुष्ठानक नवान्तर वाहक

कथावाचक कहैत अछि—केदारक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी शीलावती पर आयल। पिछला अध्यायमे केदारक ‘पोता’ परिचय आ ‘अनुष्ठान-रक्षिका’ शब्दक असङ्गति भेटल छल; वर्तमानमे बेटी शीलावतीक परिचय स्पष्ट अछि। शीलावती पिता सँ प्राप्त सार्वजनिक व्यवस्थाकेँ केवल जसक-तस दोहरबैत नहि; संगीतक नव व्यवहारिक उपयोग प्रस्तावित करैत छथि। ओ मोहनक दुःखक थाप सुनि प्रत्येक मृतकक नामक संग ओकर जीवन-भावक अलग धुन जोड़बाक सम्भावना पुछैत छथि। ई एकटा स्वतन्त्र स्त्री-विचार अछि, जतय निर्णयक केन्द्र बूढ़बाक पुरुष-अलौकिक आदेश नहिं, कलाकार आ महिला संरक्षिकाक संवाद बनैत अछि। तथापि अनुष्ठान उत्तराधिकारक औपचारिक चयन-पद्धति वर्तमान अध्यायो नहि खोलैत; पिता–बेटी सम्बन्धकेँ मात्र स्रोत देल गेल अछि।

चर्मकार टोलाक ढोल-मृदंग निर्माण : पेशागत संस्कृतिक प्रतिष्ठा

शीलावतीक समय चर्मकार टोलामे ढोल-मृदंग बनाबयक काज उत्कर्षपर अछि। ई तथ्य मोहनक सांगीतिक पहिचान लेल वास्तविक सामाजिक पृष्ठभूमि दैत अछि। ढोलकला केवल निजी प्रतिभा नहि, पदार्थ-संग्रह, निर्माण, स्वर-साधना, अभ्यास आ पेशागत परम्पराक फल अछि। दूरक गामसँ लोक हुनकर वादन सुनय अबैत—ई हुनकर

प्रसिद्धिक कथावाचकीय सूचना अछि। मुदा ढोल निर्माणमे कोन व्यक्ति, कोन श्रमविभाजन, वाद्यक चमड़ा केना प्राप्त, कतेक आय, आ गामक जातिगत बजार-नियम की छल—वर्तमान अध्याय नहि बतबैत। विदेह समानान्तर इतिहासक आलोचना एहि पेशागत कला-परम्पराकेँ सम्मान दैत, कारीगरक अनाम सामाजिक श्रम सेहो दर्ज करत। मोहनक उत्कृष्टता एक सामाजिक व्यवसायपरम्पराक भीतर उत्पन्न अछि, शून्यसँ जन्मल चमत्कार नहि।

सोमरक सातम पीढ़ी : नामस्मृतिक वंशविस्तार

मोहन सोमरक सातम पीढ़ीक वंशज कहल गेल छथि। उपन्यासक पूर्ववर्ती नामबचाओ परम्परामे सोमरक स्मृति एक सामाजिक आधार रहल अछि; वर्तमान कथामे ओकर दूरस्थ वंशज विशिष्ट संगीत-क्षमता लऽ कऽ उपस्थित अछि। एतय वंशावली केवल जैविक उत्तराधिकारक सूची नहि, शिल्प, प्रतिष्ठा आ नव सांस्कृतिक प्रयोगक सम्भावित सेतु बनैत अछि। मुदा सोमरक सन्तानसँ मोहन धरि सात पीढ़ीक मध्यस्थ नाम अथवा कालक्रम पाठ नहि दैत। शीलावतीक वंशरेखा आ सोमर–मोहनक वंशरेखाकेँ एक समयरेखामे जोड़बाक सटीक वर्ष सेहो अनुपलब्ध अछि। तेँ ‘सातम पीढ़ी’ कथावाचकक संरचनात्मक दावा अछि; प्रत्येक वंश-कड़ीक स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि। विशाल उपन्यासक दीर्घकालबोध लेल ई संक्षेप उपयोगी, वंशावलीक सूक्ष्म सत्यापन लेल अपर्याप्त।

राधिका चारि बरखक : बालपात्रक जीवन आ छविक सीमा

राधिका चारि बरखक मोहनक एकमात्र उल्लिखित बेटी छथि। कथावाचक पिता हुनका प्राणसँ बेसी प्रेम करैत छथि कहैत अछि। एहि संक्षिप्त प्रेम-सूचनासँ बच्चीक पारिवारिक महत्त्व स्थापित होइत अछि, मुदा हुनकर अपन खेल, बोली, इच्छा, स्वभाव, माए, साथी अथवा जीवनक अलग अनुभव विस्तारसँ अनुपस्थित अछि। बादमे राधिकाक नामक हेतु धुन बनैत अछि, किन्तु सुननिहार हुनका मुख्यतः पिता द्वारा स्मरण कएल दुखद बालजीवनक रूपमे जानैत छथि। नाम बचाएबाक घोषित कार्यक्रमक लेल ई एकटा महत्त्वपूर्ण सीमा: राधिकाक स्मृति विशाल बनैत अछि, पर राधिका स्वयं स्वतन्त्र कथास्वर नहि पबैत। बालिकाक देह–जीवनक संक्षिप्तता रचनाक करुणा तीव्र करैत अछि; एकर बदलामे ओकर वैयक्तिक बहुलता कम भऽ जाइत अछि।

बुखारक पाँचम दिन : मृत्यु आ कारणक प्रमाणसीमा

एक जाड़ राधिका तेज बुखारमे पड़ैत छथि। शीलावती, गामक वैद्य आ मोहन दिन-राति सेवा करैत छथि, मुदा पाँचम दिन बच्चीक मृत्यु पिता गोदमे होइत अछि। दृश्य अत्यन्त संक्षिप्त, मुदा भावात्मक रूपसँ घन अछि। पाठ ‘तेज बुखार’ कहैत अछि; संक्रमणक नाम, रोग-पहिचान, औषधि, महामारी, जलदूषण अथवा उपचारक निश्चित त्रुटि नहि दैत। तेँ बालमृत्युक चिकित्सकीय कारणक अनावश्यक अनुमान गढ़ब उचित नहि। कथाभीतर तथ्य इलाजक सामुदायिक प्रयासक बादो मृत्यु नहिं टरल, एहि निरर्थक-प्रयासक अनुभवसँ मोहनक अगिला मौन जन्म लैत अछि। बूढ़बाक असाधारण साक्षी-शक्ति सेहो बालिकाकेँ बचा नहि पबैत—ई जीवन आ नामस्मृतिक कार्यक्षेत्रक एक गहन भेद अछि।

छोट हाथ आ पिताक अंगुरी : स्पर्शक अन्तिम दृश्य

मृत्यु-दृश्य कहैत अछि जे राधिकाक ‘छोट हाथ मोहनक अंगुरी पकड़ने’ छल। एहि एक चित्रमे बोलि नहि सकनिहार बच्चीक देहक उपस्थितिक अन्तिम संवेदनापर पूरा दृश्य निर्भर अछि। करुणरस लेल ई निकट शारीरिक बिम्ब अत्यन्त प्रबल विभाव बनैत अछि। मोहनक आगाँक धुन एक अभावग्रस्त स्पर्शक प्रतिस्थापना-जैसन अनुभूत होइत अछि। मुदा पाठ राधिकाक सचेत अन्तिम वचन, पिता कैं संगीतक आग्रह अथवा वादनक इच्छा कतहु नहि देत। तें आगाँक धुनकैं ‘राधिकाक अपना चुनेल स्मारक’ कहब अनुचित। ई पिता द्वारा बनाओल प्रेमक रूप, जकर विषय बेटी अछि। एतय स्नेहक तीव्रता आ मृतकक आत्मप्रतिनिधित्वक सीमा एकसंग स्वीकारल चाही।

सप्ताहसभक मौन : रोदन आ संगीत दुनूक अनुपस्थिति

राधिकाक मृत्यु बाद मोहन कतेको सप्ताह ढोल हाथ नहि लगबैत छथि; हुनकर घरसँ ने रोदन, ने संगीतक आवाज अबैत अछि। एहि मौनमे बाह्य क्रियाक अभाव स्वयं अर्थपूर्ण कथात्मक घटना बनैत अछि। गामक लोक चिन्तित छथि, मुदा हुनका किछु कहबाक साहस नहि जुटबैत छथि। मौनकैं एकर कारण मानसिक रोग वा शोकक निश्चित निदान बनाओल जाय, एहन चिकित्सकीय जानकारी पाठ नहि दैत। ई दुःखक एक व्यक्तिक विशिष्ट प्रतिक्रिया अछि, शोक अनुभव करनिहार प्रत्येक मनुष्यक अनिवार्य क्रम नहि। विशेष बात ई जे हुनकर मुख्य पेशागत वाद्य सेहो मौन भऽ गेल; शोक केवल भाव नहि, जीविकाक सम्भावित विराम सेहो अछि। मुदा आर्थिक परिणाम, परिवारक आय आ घरक सहायताक विवरण नहि।

गामक चिन्ता : बोलबाक साहसक अभाव आ देखभालक प्रश्न

गाम मोहनक चुप्पी देखैत अछि, मुदा ‘केओ ओकरा किछु कहबाक साहस नहि जुटा सकल’। एतय सामुदायिक संवेदनशीलता आ निष्क्रियता दुनू पढ़ल जा सकैत अछि। लोक मोहनक निजी दुःखपर दबाव नहि देब चाहैत होथि; दोसर दिस हुनका व्यावहारिक सहायता आ संगति चाही कि नहि, से केओ प्रत्यक्ष पूछैत नहि। –७७क बूढ़बाक मौनक समय गोदावरी प्रश्न उठौने छलीह जे सदिखन दूसराक कथा सुननिहारक अपन कथा के सुनत? –७३मे मोहन अपन मौनसँ बाहिर स्वयं अबैत छथि; समाजक सक्रिय शोक-समर्थनक विस्तृत योजना नहिं देखाओल गेल। एकर अर्थ समाज निर्दयी अछि से नहिं, बल्कि कथावाचक मोहनक आन्तरिक रचनात्मक रूपान्तरणपर अधिक केन्द्रित अछि।

अमावस्याक पहिने पीपर : स्मृतिक सार्वजनिक स्थलमे वापसी

एक साँझ अमावस्यासँ ठीक पहिले मोहन अपन ढोल उठाकऽ पीपर लग जाइत छथि। गाछ पूर्वे मृतकक नाम, बूढ़बाक साक्षी, गाछक रोग आ सामुदायिक देखभालक केन्द्रीय स्थल छल। मोहन घरक मौनसँ निकलि ओहि सार्वजनिक स्थलपर अबैत छथि, मुदा आरम्भमे बहुत काल चुप बैसल रहैत छथि। एतय स्थानगत यात्रा निजी शोकसँ सामूहिक सम्भावनापर गमन अछि, अभी पूरा सार्वजनिक प्रस्तुति नहि। अमावस्याक सन्ध्या कबड्डी-रात्रिक पूर्वसमय बनैत अछि; एहि कालिक समीपतासँ शीलावतीक बादक प्रस्तावक औचित्य बनैत अछि। शोकक

राति आ परम्पराक राति स्वतः एक नहि, मुदा गामक अनुष्ठान-समय संगीतक नव माध्यमकेँ सामाजिक स्थान उपलब्ध करबैत अछि।

थापसँ लय : ध्वनिक उत्पत्तिक चरण

मोहन पहिने ढोलपर हल्का दुःखमिश्रित थाप बजबैत छथि। थाप आरम्भमे अनियमित अछि, फेर धीरे-धीरे लय बनैत अछि। ई एक मात्र वास्तविक वाद्य-प्रदर्शनक सूक्ष्म प्रक्रिया थिक जकर वर्णन पाठमे भेटैत अछि। एतय रचना स्थिर ‘धुन’ आ विकसित ‘लय’मे भेदक संकेत दैत अछि: शोक पहिने असंयोजित स्पन्दन, फेर क्रमबद्ध ध्वनिक अनुभव बनैत अछि। मुदा ताल, मात्रा, गति, आवर्तन, सुर-ऊँचाई, वादन-तकनीक अथवा धुनक पृथक पुनरुत्पादनयोग्य ध्वनि-रूपक विवरण नहि। गीतक ‘बाँसुरी’ एक विपरीत वाद्य-दिशा संकेत करैत अछि। पाठक भावक संरचना सुनैत जेकाँ कल्पना करैत छथि, पर वास्तविक संगीतक निश्चित लिपि वा रेकर्ड हुनका नहि भेटैत।

शोकगीत आ लोरीक बीच : रचनाक संवेदनात्मक मौलिकता

कथावाचक धुनकेँ ‘न पूर्ण रूपसँ शोकगीत’, ‘न पूर्ण रूपसँ लोरी’, बल्कि दुनूक बीचक किछु कहैत अछि। एहि बिन्दुपर मोहनक कला सामान्य दुःखसंगीतसँ अलग व्यक्तित्व प्राप्त करैत अछि। राधिका चारि बरखक बेटी छथि; लोरी पालन-पोषणक स्मृति, शोकगीत मृत्यु-पश्चात्क अभाव। दूनूक बीचक धुन अभावग्रस्त वर्तमान आ स्नेहमय अतीतकेँ एकहि अनुभवमे जोड़ैत अछि। एतय रसक मिश्रण वा भावान्तरक व्याख्या सम्भव अछि, मुदा आधुनिक संगीतशास्त्रक कोनो निश्चित राग अथवा संरचना इएह शब्दसँ निर्धारित नहि होइत। ‘दुनूक बीच’ एक मनोभावात्मक तुलनात्मक संकेत अछि, संगीत-विश्लेषणक मापयोग्य स्वरताल-सिद्धि नहि।

बूढ़बाक श्रवण आ प्रश्न : सिद्धान्तक पहिने अनुभव

बूढ़बा मोहनक धुन सुनि ‘सुन्दर’ आ ‘दुःखद’ दुनू कहैत छथि, फेर ‘अहाँ की बजा रहल छी?’ पुछैत छथि। साक्षीगाछक सदियोंक अनुभव हुनका नव धुनक अर्थ स्वतः ज्ञात करा नहि दैत; अर्थ लेल जीवित कलाकारक वाणी आवश्यक अछि। ई महत्त्वपूर्ण ज्ञानमीमांसक क्षण अछि। ध्वनिक प्रत्यक्ष श्रवण बूढ़बाकेँ भावात्मक प्रभाव दैत अछि, मुदा राधिका-विशेषक अर्थ मोहनक शब्दगवाहीसँ मात्र स्पष्ट होइत अछि। अतः संगीतक अर्थ पूर्णतः स्वयं-स्फुट अथवा सार्वभौम नहि; सांस्कृतिक प्रसंग आ रचनाकारक अभिप्राय ओकर व्याख्या बदलैत अछि। बुढ़बाक प्रश्न कल्पनाशील संवादक अवसर दैत अछि, कलाकारक ऊपर तैयार उत्तर नहि आरोपैत।

‘नाम केवल शब्द नहि रहय’ : मोहनक सौन्दर्यात्मक प्रतिज्ञा

मोहन कहैत छथि जे बूढ़बाक लग राधिकाक नाम सुरक्षित अछि, मुदा ओ नामकेँ ‘केवल एकटा शब्द’ नहिं रहबाक चाहैत छथि; ओ चाहैत छथि जे ओकरा सुनिते लोक प्रेमक भरपूर इतिहास महसूस करय। एहि इच्छामे सांकेतिक नाम आ अनुभूति-सहित स्मृतिक बीच अन्तर उद्घाटित अछि। नाम पहचानक न्यूनतम चिह्न, धुन भावात्मक प्रत्यभिज्ञानक एक माध्यम बनैत अछि। मुदा नामक तथ्यात्मक सटीकता आ धुनक भावात्मक तीव्रता एक दोसरा केँ अनिवार्यतः सत्यापित नहि करैत। यदि धुन सुननिहार राधिकाक कथा नहि जनैत, तँ ओहि धुनक अर्थ पिता

जेना निर्धारित कएलनि, ओ स्वतः समान नहि पहुँचत। एहि कारण धुनक सामाजिक प्रसारक संग नामक मौखिक घोषणा, कथा आ प्रदर्शनक सन्दर्भ सुरक्षित रखब महत्त्वपूर्ण अछि।

शीलावतीक प्रस्ताव : निजी शोकसँ सार्वजनिक रीत धरि

शीलावती मोहनसँ पुछैत छथि जे प्रत्येक अमावस्यापर पुकारल नामक संग ओकर कथासँ मेल खाएवाली छोट धुन बजाओल जा सकैत अछि कि नहि। एहि प्रस्तावसँ व्यक्तिगत दुःखक संगीत सार्वजनिक नामबचाओ अनुष्ठानक नव उपविधि बनैत अछि। मोहनक प्राथमिक इच्छा राधिकाक प्रेम सुरक्षित करब छल; शीलावती ओकर सामाजिक सामान्यीकरणक सम्भावना देखैत छथि। ई दूनू पात्रक मिलित सर्जना अछि—एक कलाकार धुन बनबैत छथि, एक संरक्षिका सामुदायिक रचना-विधान प्रस्तावित करैत छथि। मुदा राधिकाक निजी शोक सार्वजनिक प्रस्तुति बनबाक निर्णयमे पिता सहमत छथि, तखन राधिकाक माँ अथवा अन्य निकटजनक भाव कतेक सम्मिलित, मूल पाठ नहि दैत। एहि अनुपस्थितिक आलोचनात्मक महत्त्व अछि, कारण राधिका केवल कलाकारक प्रेरणा नहि, एक परिवारक स्वतन्त्र सदस्य छलीह।

अगिला बरखक धुन-रचना : निजी कलासँ बहुल स्मृतिक स्वर

मोहन शीलावतीक प्रस्ताव मानि ‘अगिला बरखमे’ हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना सहित पुरान कथासभक लेल अलग-अलग छोट धुन रचैत छथि। ई एक बरख कथाक महत्त्वपूर्ण कार्य-अवधि अछि: मोहनक प्रारम्भिक दुःखक स्वस्फूर्त थाप अब श्रमसाध्य, नाम-विशिष्ट सांगीतिक रचनाक कार्य बनैत अछि। ‘हर पुरान कथाक हेतु’ शब्द सर्वसमावेशी परियोजना प्रकट करैत अछि, मुदा कथा चारि प्रतिनिधि नामक उदाहरण दैत अछि; सब नामक सूची वा तैयार धुनक संख्या नहि। समय, रचना-पद्धति, अभ्यास, श्रोताक प्रतिक्रिया आ संशोधनक विवरण अत्यल्प अछि। तें एक बरखक रचना कथाभीतर घोषित परिणाम अछि, संगीत-रचनाक विस्तृत सृजनप्रक्रियाक दृश्य नहि। तथापि गीतसँ अनुष्ठान बनबाक वास्तविक श्रमक संकेत महत्त्वपूर्ण अछि—धुन स्वतः कालातीत नहिं, निर्मित आ पुनःप्रदर्शित होइत अछि।

हुलासाक धुन : अधूरा वाक्यक ध्वनिक अनुरूप

हुलासाक धुन ‘कोमल, अपूर्ण, बीचहिमे टूटैत’ कहल गेल अछि, कारण हुनकर अन्तिम वाक्य बीचमे टूटल छल। एहि मेलमे कथाक घटना आ संगीतक रूपक एक विशिष्ट अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि। नाम-विशेषक धुन ओकर जीवनक भावनात्मक आख्यानक व्याख्या बनैत अछि। मुदा कोन मात्रा अथवा तालक आवर्तन अचानक टूटैत अछि, कोन ध्वनि-अन्तराल अपूर्ण रहैत, एकर कोई सुनायल वा स्वरबद्ध उदाहरण नहि। ‘अपूर्ण’क वर्णन साहित्यिक, पुनरुत्पादनयोग्य सङ्गीत-संरचनाक विवरण नहि। हुलासाक सम्पूर्ण जीवनकेँ ‘अन्तिम वाक्य टूटल’क एक चिन्हमे संक्षिप्त कए देबाक जोखिम सेहो अछि। स्मृति एक दुर्घटना अथवा वाक्य-पतनसँ अधिक व्यापक होयबाक चाही; श्रोता हुनकर पूर्ण अनुभव सुनताह कि नहि, गीतक सामाजिक अर्थ तय करैत।

सुखदेवक धुन : प्रतीक्षा आ अचानक मौन

सुखदेवक धुन ‘धीमा, प्रतीक्षापूर्ण, फेर अचानक शांत’ होइत अछि। एतय संगीतक गतिसँ जीवनक कालिक अनुभूतिक रूपान्तर कएल गेल अछि। लम्बित ध्वनि अथवा धीमी चाल प्रतीक्षाक अनुभूति बना सकैत, अचानक समाप्ति मृत्यु वा टूटल सम्भावनाक स्मृति जगबैत अछि। मुदा कथा नहि दैत जे सुखदेवक जीवनक कोन घटना प्रत्येकरा एहि ध्वनिक क्रियासँ अनिवार्य रूपेँ जुड़ैत। सुननिहार यदि कथा नहि जनैत छथि तँ ओ धुनकेँ कोनो दूसरा प्रकारक शोक सेहो बुझि सकैत। ई उदाहरण संगीतक अर्थक सामाजिक-परम्परागत निर्माण देखबैत अछि, न कि प्रत्येक विशेष भावक सार्वभौम स्वरसंबन्धक वैज्ञानिक नियम।

रत्नाक धुन : मातृत्वक एकरूप छवि

रत्नाक धुन ‘गर्मजोश, माताक हृदयस्पर्शी’ कहल जाइत अछि। मातृत्वक परिचित भाव-व्यवस्था तत्काल करुणा आ स्नेहक संकेत प्रदान करैत अछि। मुदा रत्नाक पूर्ववर्ती जीवन, औषधि–जड़ी-बूटीक अनुभव आ स्वतन्त्र ज्ञानक जटिलता केवल ‘माता’क भूमिकामे समेटल जाए तँ स्त्रीपात्रक अनेक स्तर घटि जाइत अछि। रचना हुनकर प्रति आदर करैत अछि, पर धुनक सांकेतिक लक्षण सामाजिक लिंग-रूढ़िक पुनरावृत्ति सेहो बनि सकैत अछि। शीलावतीक नव सांगीतिक अनुष्ठान जँ उपेक्षित लोकक बहुल कथा सुरक्षित करबाक लक्ष्य रखैत अछि, तखन प्रत्येक स्त्रीकेँ मातृत्व अथवा करुणाक एकमेव रूप देबाक जोखिमपर सजग रहब आवश्यक। पाठक हेतु धुन प्रेमपूर्ण, मुदा सामाजिक इतिहास लेल अधिक विशिष्ट जीवन-घटना अपेक्षित।

जीवन्तीक नाम उपस्थित, धुनक विवरण अनुपस्थित

मोहन जीवन्ती लेल सेहो छोट धुन रचैत छथि, ई तथ्य मूल पाठ स्पष्ट दैत अछि। मुदा हुलासा, सुखदेव आ रत्नाक धुनक भिन्न भावात्मक गुण वर्णित अछि; जीवन्तीक धुनक स्वरूप अलग नहि बताओल गेल। एतय चयनक असमानता नजरि पड़ैत अछि। इतिहासकेँ प्रत्येक नाम लेल धुन देबाक समावेशी प्रस्ताव अछि, पर दृश्यात्मक विस्तार किछु नाम धरि सीमित। ई पाठक संक्षिप्त आकारक कारण भऽ सकैत अछि, पर समीक्षाक काज एहि विषम वितरणकेँ दर्ज करब। कथावाचक ‘हर पुरान कथा’ कहैत छथि, मुदा साक्ष्य मे नामानुसार भिन्न लक्षणक केवल किछु उदाहरण अछि; सम्पूर्ण सांगीतिक सूची बनाओल गेल, एहन दावा प्रसंगक कथावाचकीय सारांशसँ आगाँ नहि बढत।

राधिकाक धुनक ‘मंगलाचरण’ : शोकसँ अनुष्ठान-प्रवेश

मोहनक पहिल रचनाक धुन प्रत्येक अमावस्याक कबड्डीसँ पहिने बजाओल जाए लगैत अछि। कथावाचक ओकरा ‘एकटा प्रकारक मंगलाचरण’ कहैत अछि। ई अत्यन्त अर्थगर्भित परिवर्तन अछि: एक मृत बालिकाक शोक व्यक्तिगत घटना रहि नहि, समस्त नाम-रक्षा अनुष्ठानक प्रवेश-सूचक बनैत अछि। मंगलाचरण सामान्यतः शुभ आरम्भक सन्दर्भ जगबैत; एतय शोकक स्मृति सामुदायिक प्रेमक शर्त बनैत अछि। ‘प्रतिस्पर्धाक नहि’ वाक्य कबड्डीक खेल-स्वभावकेँ नैतिक स्मरणक अधीन राखैत अछि। मुदा एक बालिकाक निजी धुनकेँ सभ मृतकक

स्मरणक पहिल द्वार बनाओल जाएबाक चयनपर वैकल्पिक मत कतेक छल, मूल पाठ नहि देखबैत। शीलावती–मोहनक सहमति सामुदायिक मान्यताक कथा-सारांश पबैत अछि।

नाम, धुन आ गवाही : एक वस्तुक तीन माध्यम

बूढ़बा राधिकाक नाम धेने छथि; मोहन ओकरा ध्वनिक भावानुभूति देब चाहैत छथि; शीलावती सामूहिक पारीक नियममे ओकर पुनरावृत्ति जोड़ैत छथि। एहि तीन स्तरमे अलग काज अछि—व्यक्तिक परिचय, भावात्मक संकेत आ संस्थागत सार्वजनिक उपयोग। एकरा समरूप सत्य-प्रमाण नहि मानल जाए। नाम-उच्चारण व्यक्तिक स्मृतिक प्राथमिक चिह्न अछि; धुन भाव-व्याख्याक माध्यम; कबड्डी समुदायिक स्मरणक दृश्य मंच। त्रयी एतय स्मृतिक एकवाचिक संरक्षणसँ बहुमाध्यमी रूपक आगू बढैत अछि। तथापि एक धुन सुनितहि ‘राधिकाक विशेष जीवनक तथ्य’ स्वतः ज्ञात नहि होइत; धुनक संग छोट जीवनकथा अथवा नामक घोषणा जारी रहबाक आवश्यकता अछि। अहीँ शब्द–संगीतक पूरकता वास्तविक अर्थ पबैत अछि।

मोहनक नैतिक आत्मप्रश्न : दुःखक सौन्दर्यीकरण उचित?

मोहन एक दिन बूढ़बासँ पूछैत छथि जे बेटी राधिकाक दुःखकेँ संगीतमे बदलि देब अनादर तँ नहि? एहि प्रश्नमे कलाकारक महत्त्वपूर्ण नैतिक संशय अछि। रचना केवल प्रतिभाक विजयोत्सव नहि करैत; शोककेँ सार्वजनिक कला बनाबयक अधिकार, मृतकक गरिमा आ पिताक व्यक्तिगत व्यथा एकसंग उठबैत अछि। ई आत्मप्रश्न अध्यायक सर्वाधिक प्रौढ़ संवादसभमे सँ एक अछि। मुदा विचारक पक्ष सीमित अछि—मोहन पूछैत, बूढ़बा आश्वासन दैत, फेर केओ भिन्नमत नहि व्यक्त करैत। परिवारक आन सदस्य, मृत बालिकाक माए अथवा गामक अन्य शोकाकुल परिवारक वैकल्पिक आवाज नहि भेटैत। ई मौन रचनाक मूल नैतिक अन्तर्विरोधकेँ पूर्ण शास्त्रार्थ बनबाक अवसरसँ वञ्चित करैत अछि।

बूढ़बाक उत्तर : शब्द आ धुनक सहायक सम्बन्ध

बूढ़बा मोहनकेँ कहैत छथि जे शब्दसँ नाम बचाएब आ धुनसँ नाम बचाएब ‘एकहि काजक भिन्न रूप’ छथि। एकर प्रभाव करुणापूर्ण आ आश्वस्तकारी अछि। ओ शोकक कला-रूपान्तरणकेँ अनादरक विपरीत मानैत छथि। मुदा तर्कगत सूक्ष्मता लेल नामक शाब्दिक निश्चय आ धुनक परिवर्तित लय समान प्रकारक प्रमाण नहि। एक धुन भिन्न सभामे अलग मनोभाव जगाबि सकैत; एक नाम लिखल वा उच्चरित होएब विशिष्ट व्यक्ति-कथा संग जोड़बाक अपेक्षा रखैत अछि। बूढ़बाक वचनक साहित्यिक वैधता ‘प्रेमक स्मरण’क व्यापक धुरी पर अछि, नहि कि भाषिक चिन्ह आ ध्वनिक अर्थ सम्पूर्णतः समतुल्य। ई भेद बनाकेँ रखलापर आलोचना बूढ़बाक भावात्मक उत्तर स्वीकारैतहुँ हुनकर वचनकेँ सर्वज्ञानक अन्तिम फैसला नहि बनबैत।

रूपान्तरणक नैतिक सीमा : कला इलाजक पर्याय नहि

‘अहाँक दुःख अनादर नहि भेल, ओ रूपान्तरित भेल’क बूढ़बाक उत्तर मानवीय सांत्वना दैत अछि। मुदा राधिकाक मृत्यु पलटैत नहि, पिता–बेटीक सम्बन्धक वास्तविक अभाव समाप्त नहि, आ मोहन सदिखन बिना शोकक होइ गेलाह—एहन पाठ नहि कहैत। रूपान्तरण कला-निर्माणक सम्भावना अछि, दुःखक पूर्ण उपचारक प्रमाणपत्र

नहि। कोई व्यक्ति शोककेँ कलामे व्यक्त करथि वा नहिं, दूनू स्थिति नैतिक रूपसँ सम्माननीय होइत अछि; कथाक रचनात्मक उदाहरणकेँ सर्वमान्य मानसिक स्वास्थ्यक नियम बनाओल जाय, ई स्रोतबाह्य निष्कर्ष होयत। बूढ़बाक उत्तरक प्रभाव व्यक्तिगत सम्मानमे अछि, शोक समाप्त करबाक चिकित्सकीय दावा मे नहि।

बाँसुरी बनाम ढोल : शीर्षकक केन्द्रीय असङ्गति

अध्यायक शीर्षक ‘मोहनक धुन’, आरम्भिक फकरा बाँसुरीक ध्वनिसँ बनल अछि, आ लोकगीत स्पष्ट कहैत जे मोहन ‘ढोल छोड़ि, बाँसुरीमे नाम बसौलक’। मुदा कथाभाग अपन निर्णायक दृश्य मे मोहन द्वारा ‘ढोल उठा’ पीपर लग जायब आ ‘ढोलपर ... थाप’ बजब देखबैत अछि। कोनो बाँसुरी मोहनक हाथमे देखाओल नहि, ओकर सीखबाक प्रक्रिया नहि, बाँसुरीक एकोटा प्रत्यक्ष प्रस्तुति नहि। धुन सामान्य सांगीतिक रूपेँ वाद्य-परिवर्तनक बिना सम्भव अछि; मुदा लोकगीतक विशिष्ट ‘ढोल छोड़ि, बाँसुरी’ वचन कथाक प्रमाणसँ मेल नहि खाइत। ई वाद्यगत असङ्गतिकेँ समीक्षामे स्पष्ट चिन्हित करब अनिवार्य। लेखककीय संशोधनमे गीतकेँ ढोल-धुनक अनुरूप कएल जाए अथवा बाँसुरी-परिवर्तनक वास्तविक घटनाक कड़ी जोडल जाए—दूनू सम्भावित सम्पादकीय उपाय, मुदा वर्तमान मूल पाठमे कोनो एक घटल नहि।

वाद्यक पद-प्रतीक : परम्परागत ढोलक अवमूल्यनक जोखिम

चर्मकार टोलाक ढोल-मृदंगक उत्कृष्ट शिल्प आरम्भमे गर्वसँ वर्णित अछि, पर अग्रगीतक ‘ढोल छोड़ि, बाँसुरी’ पंक्ति एहन भ्रम दऽ सकैत अछि जे शोकक सूक्ष्म आत्माभिव्यक्ति लेल ढोल त्याग आवश्यक। कथाभाग उलट प्रमाण दैत अछि—ढोलक थाप द्वारा लोरी आ शोकगीतक बीचक नाजुक अनुभूति निर्मित होइत अछि। एहि कारण मूल दृश्य ढोलक कलात्मक सम्भावनाक अधिक गहन सम्मान करैत अछि, जखन अग्रगीत अनकहल वाद्य-हस्तान्तरणक संकेत दैत अछि। सामाजिक इतिहासक दृष्टिएँ चर्मकारक मूल पेशागत वाद्य केवल उत्सवक तेज ध्वनि नहि, अत्यन्त सूक्ष्म करुण-भावक माध्यम सेहो बनि सकैत अछि; ई रचनाक श्रेष्ठ सम्भावना अछि। वाद्यगत असङ्गति स्पष्ट होयबाक कारण एहि कलात्मक उपलब्धिक धार किछु कमजोर पड़ैत अछि।

संगीतक ‘भाव’ आ श्रोता-समाजक व्याख्याक भूमिका

कथावाचक हुलासाक धुन कोमल, सुखदेवक प्रतीक्षापूर्ण, रत्नाक धुन उष्ण कहैत अछि। एक अर्थमे ई व्यक्तिविशेषक भावात्मक हस्ताक्षर बनबैत अछि। मुदा ‘धुन सुनि हृदय जानि जाएत’क मोहनक अपेक्षा सामाजिक शिक्षाक आधार चाहैत अछि। ककरो श्रोता अगर हुलासाक अन्तिम वाक्यक कथा नहि जनैत, तँ लयक टूटबाक अर्थ मात्र दुर्घटना, शोक वा अधूरा सुख होइ सकैत। सांगीतिक अर्थ पूर्व-अनुभव, समुदायिक नामघोषणा आ परम्परागत व्याख्यासँ जुड़ैत अछि। एहि कारण धुनकेँ आत्मनिर्भर ऐतिहासिक अभिलेख मानब अनुचित; ओ सामुदायिक शब्द-व्यवस्था आ पुनरावृत्त प्रदर्शनक माध्यमे अर्थग्राह्य बनैत अछि।

मोहनक कला : प्रतिभाक प्रशंसा आ कारीगरक आर्थिक जीवन

गामक लोक दूर-दूरसँ मोहनक ढोल सुनय अबैत छथि। एहि प्रसिद्धिक तथ्यसँ हुनकर कला-पेशाक सामाजिक प्रतिष्ठाक संकेत भेटैत अछि। मुदा राधिका रोगी होएबाक समय अथवा पछिला सप्ताहसभक मौनमे परिवारक

जीविका केना चलल, हुनका लग कतेक ग्राहक छलाह, वाद्यनिर्माणक श्रमक संग प्रस्तुति-कार्यक आर्थिक सम्बन्ध की छल—पाठ मौन अछि। उपेक्षित समुदायसँ निकलल कलाक इतिहास लिखबाक समय केवल कलाकारक अद्भुत प्रतिभाक महिमा पर्याप्त नहि। कला-उत्पादनक पदार्थ, उद्यम, समय, श्रम, पारिश्रमिक आ जनपदक सांगीतिक जाल सेहो इतिहासक विषय छथि। वर्तमान अध्याय भावात्मक रचनात्मक पक्षमे सफल, श्रम-आधारित सांस्कृतिक अर्थनीतिकेँ विस्तारसँ नहि खोलैत।

शीलावतीक सर्जनात्मक श्रेय : केवल मोहनक धुन नहि

अध्यायक नाम मोहनपर केन्द्रित अछि, मुदा कला-स्मृतिक सार्वजनिक संस्था शीलावतीक प्रस्ताव बिना नहि बनैत। शीलावती पुछैत छथि की हर अमावस्या प्रत्येक नामक जीवनक अनुरूप धुन जोड़ल जा सकैत? मोहन संगीत रचैत छथि; शीलावती अनुष्ठानक समय, प्रसंग आ सामाजिक नियमक कल्पना करैत छथि। एतय सह-निर्माणक कथा अछि। पर आरम्भिक लोकगीत ‘मोहन ढोल छोड़ि...’, ‘मोहन गेल, धुन रहल’ कहि पुरुष कलाकारकेँ सांस्कृतिक आरम्भक प्रधान नायक बनबैत अछि। स्त्री संरक्षिकाक संस्था-निर्माता कार्य उपाख्यानक भीतर अधिक स्पष्ट, गीतक प्रसिद्धि-रचनामे कम। समानान्तर इतिहासक दृष्टिएँ कलाकार, आयोजक आ प्रदर्शनकर्ताक अलग योगदान दर्ज करब न्यायोचित अछि।

कालक्रम : एक जाड़, पाँच दिन, सप्ताह, एक साँझ, एक बरख, अनेक पीढ़ी

कथा एक जाड़क तेज बुखारसँ आरम्भ होइत, पाँचम दिन मृत्युक संकट पर पहुँचैत, कतेको सप्ताहक मौनक बाद एक साँझक ढोलक धुनक दृश्य विस्तृत करैत अछि। अगिला बरखमे रचित अनेक धुनक कार्य सारांशमे समेटल जाइत; फेर प्रत्येक अमावस्या आ भावी पीढ़ीक आवर्ती परम्परा कथावाचकक संक्षिप्त घोषणामे बदलैत अछि। ई कालिक अनुपात सूक्ष्म व्यक्तिगत दुःखक क्षणसँ सामूहिक शताब्दीव्यापी स्मृतिक यात्रा बनबैत अछि। मुदा मध्यम अवधि—संगीतक रचना-प्रयोग, सार्वजनिक मतभेद, प्रशिक्षण—संक्षिप्त रहैत। आख्यानशास्त्रीय गति एहि स्थानपर स्पष्ट अछि: एकल मृत्यु-दृश्य, एकल पहिल धुनक दृश्य, अनेक रचनाक सारांश आ दीर्घ पुनरावृत्त संस्थाक भविष्य।

दृष्टिकेन्द्रण : मोहनक भीतरी शोक आ सर्वज्ञ कथावाचक

प्रथम चरणमे कथावाचक शीलावतीक समयक ढोलशिल्पक व्यापक स्थिति बतबैत अछि, फेर मोहन–राधिकाक निकट सम्बन्ध, पिता गोदक मृत्यु आ घरक मौनपर केन्द्रित होइत अछि। पीपरक दृश्य मोहनक हाथक क्रिया आ बूढ़बाक श्रवण-प्रतिक्रिया द्वारा सजीव बनैत अछि। शीलावतीक प्रश्न नया सामाजिक दृष्टिकेन्द्र खोलैत अछि। अन्तमे ‘हर पीढ़ीक संगीतकार’क भविष्य कथावाचकक सर्वज्ञ कालबोध द्वारा प्रस्तुत होइत अछि। एहि प्रकारेँ दृष्टिकेन्द्रण कलाकारक शोकसँ सामुदायिक संस्थाक परिणाम धरि बदलैत अछि। राधिकाक स्वतन्त्र आन्तरिक अनुभव अथवा ओकर माएक दृष्टि अनुपस्थित, जे पाठक सहानुभूतिक वितरणक असमानता समझबैत अछि। कथावाचकक आवाज पात्रक भाव-व्याख्या पर अधिकार रखैत अछि, मुदा वास्तविक धुन सुनाइ नहि सकैत।

भविष्यक ‘अध्यायारम्भ लोकगीत’ : आत्मसन्दर्भक सांकेतिक युक्ति

मूल पाठक प्रारम्भिक कोष्ठकीय वचन पाठककेँ कहैत अछि जे एही धुन-परम्पराकेँ बहुत आगू ‘अध्यायारम्भ लोकगीत’ रूपमे भेटब। अन्तिम कथन सेहो भविष्यक कोनो लेखक एहि साहित्यिक रूपक नाम देताह कहैत अछि। एतय कादम्बरी अपनहि अध्याय-रचनाक उपकरणक उत्पत्ति अपन कथाविश्वमे रचैत अछि। पाठक जे लोकगीत अभी अध्यायक शिरोभागमे देखैत छथि, ओकर उत्पत्ति कथामे बादमे सुनैत छथि; एहि आत्मसन्दर्भसँ पाठक-माध्यम आ पात्रक संस्कृतिक बीच सीमारेखा जानि-बुझि धुँधल भऽ जाइत अछि। ई रचनात्मक कथा-तकनीक अछि, बाहरी इतिहासमे वास्तवमे सब अध्यायगीत मोहनक परम्परासँ उत्पन्न भेल—एहन स्वतन्त्र प्रमाण नहि। स्वयं वर्तमान –७३मे लोकगीत पहिने सँ उपस्थित होयब भविष्य-दावाक गोलाकार रचनात्मकता दर्शबैत अछि।

ध्वनिक नश्वरता : हवा सँ पीढ़ीक कण्ठ धरि

अध्यायक फकरा धुनकेँ हवा मे मिलबाक, मुदा मनमे रहबाक कल्पना करैत अछि। कथाभाग नव प्रदर्शन, अमावस्या आ नव संगीतकारक आधारपर एहि क्षणिक ध्वनिक सामाजिक दीर्घजीविता प्रस्तुत करैत अछि। धुनक स्थायित्व एक विशिष्ट बजल ध्वनिक भौतिक बचि रहब नहि, नवानुकरण आ परिवर्तित प्रस्तुति अछि। ‘हर पीढ़ी नव धुन जोड़ैत रहल’ कहि कथा मूल रचना-संग्रहक बढ़बाक संकेत दैत अछि। मुदा नकलक सटीकता, मोहनक पहिल तालक अपरिवर्तित रूप, शिक्षकक भूमिकाक अथवा वाद्य-प्रशिक्षणक प्रक्रिया वर्णित नहि। लोकपरम्परा मे परिवर्तन स्मृतिक विनाशो बनि सकैत, समृद्धियो; कोन धुन मूल रूपमे बचल आ कोन नव जोड़ल गेल, ई विवेचन भविष्यक तुलना माँगैत अछि।

अनुष्ठान, लोकगीत आ परापाठ : तीन कथा-स्तर

एहि अध्यायमे आरम्भिक ‘अध्यायारम्भ लोकगीत’, तकर बाद ‘उपन्यास-अंश’क स्वतन्त्र कथाभाग आ अन्तमे लेखककीय टिप्पणी अछि। पहिल स्तर गामक सांगीतिक परम्पराक कथित कण्ठ; दोसर मोहन–शीलावतीक सृजन-घटना; तेसर एहि विधिक उत्पत्तिपर लेखकक प्रत्यक्ष व्याख्या। यदि एहि तीनूकेँ एकहि अविच्छिन्न पात्र-संवाद मानल जाए तँ कथावाचक आ परापाठक सीमा मेटि जायत। आरम्भिक गीत भविष्यक परिणाम पहिनहि जानैत अछि, जखन मोहनक प्रथम धुनक दृश्यमे कलाकार स्वयं भविष्यक ‘अध्यायारम्भ’ नाम नहि जानैत। अन्तिम टिप्पणी कहैत अछि जे ई उत्पत्ति-कथा काल्पनिक अछि—एहि स्वीकारकेँ बाह्य संगीत-इतिहासक प्रमाणक रूपमे उलटि नहि पढ़ल जाए।

अगिला अध्याय –७२क सीमित पूर्वसंकेत

मूल अगिला अध्याय ‘विवाहक साक्षी’मे मोहनक वंशज द्वारा विवाह लेल नव उत्सवपूर्ण धुनक रचनाक उल्लेख अछि, आ ओतए वंशजक ढोल बजबैत रहबाक बात सेहो अबैत अछि। एहि सीमित आगामी पाठ-साक्ष्यसँ –७३क धुन-परम्पराक विस्तारक संकेत भेटैत अछि। विशेषतः शोकसँ जन्मल कलात्मक पद्धति शोक-बाह्य आनंदमय प्रसंग लेल सेहो उपयोगी होयबाक मार्ग खुलैत अछि। मुदा –७३क समीक्षा एही संक्षिप्त आरम्भिक तुलनाक

आधारपर समग्र उपन्यासक सभ गीत मोहनक वंशज-निर्मित छथि, एहन पूर्वनिर्णय नहि देत। आ अगिला अध्यायमे ढोलक निरन्तर उपस्थिति बाँसुरीमे निश्चित वाद्य-परिवर्तनक –७३क प्रारम्भिक लोकगीत-वचनकेँ आरो प्रश्नांकित करैत अछि।

नव्य-न्यायक प्रमाणपरीक्षा : धुनक अर्थक हेतु

मोहनक प्रस्तावित साध्य अछि—राधिकाक नाम सुनल/धुन सुनल क्षणमे लोकक मनमे हुनकर प्रेमपूर्ण जीवनक बोध होय। प्रस्तावित हेतु धुनक राधिका लेल विशेष निर्माण आ कथित हृदयस्पर्शिता अछि। मुदा ‘हर भावात्मक धुन सुननिहारकेँ राधिकाक नाम निश्चित बुझबैत अछि’ एहन व्याप्ति नहिं सिद्ध। समान धुन दोसर शोकक प्रसंगमे सेहो उपयुक्त भऽ सकैत; अतः व्यक्ति-विशिष्ट ज्ञान लेल नामघोषणा, पूर्वकथा, सामुदायिक परम्परा आ श्रवण-प्रसंग उपाधि-रूपेँ आवश्यक। धुन प्रेमक अनुभूति जागृत करबाक साधन भऽ सकैत, मुदा वास्तविक व्यक्तिक पहिचानक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। बूढ़बाक ‘शब्द आ धुन एकहि काजक भिन्न रूप’ कथन भाव-स्मृतिक व्यापक लक्ष्य लेल उचित, ऐतिहासिक दावाक समान प्रमाणमूल्यक सिद्धि लेल अपर्याप्त अछि।

रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य

राधिकाक पिताक गोदमे मृत्यु, हाथक अन्तिम पकड़ आ ढोलक दीर्घ मौन करुणक प्रमुख विभाव छथि। ढोलक अनियमित थापसँ शोकगीत–लोरीक मध्यवर्ती लय उभरब एक नवानुभूति रचैत अछि; ई प्रत्यक्ष संगीतक पाठक-कल्पित ध्वनि-प्रयोगक स्थल अछि। ध्वनिक स्तरपर ‘नाम आवाज बनय’ मृतकक अनुपस्थित देहकेँ श्रव्य स्मृतिक सांकेतिक उपस्थिति दैत अछि। लोकगीत पहिलहि भविष्यक पूरा परिणाम बता देब काव्यात्मक पूर्वदीप्ति, किन्तु नाटकीय उत्कण्ठाक ह्रास सेहो। औचित्यक सर्वाधिक गंभीर प्रश्न बाँसुरी–ढोलक विचलन अछि; दोसर राधिकाक जीवनक स्वायत्त वर्णनक अभाव, तेसर शोककेँ समस्त लोकधुनक मूल मानबाक अत्यधिक विस्तारक सम्भावना। कलात्मक सफलता एक व्यक्तिगत बिम्बकेँ पीढ़ीगत सांस्कृतिक विधि बनबैत अछि; असङ्गति ओकर विश्वसनीयता पर सीमा राखैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास : लोकशिल्प, बालिका, स्त्री-आयोजिका

एहि प्रकरणमे सांस्कृतिक इतिहास एक चर्मकार-सम्बद्ध ढोलकला सँ जन्मैत अछि, न कि राजसभा अथवा कुलीन दरबारक अधिकृत ग्रन्थसँ। मोहन सोमरक वंशज छथि; ढोल-मृदंग निर्माण समुदायिक पेशागत कौशल; शीलावती लोकअनुष्ठानक नवान्तरकर्त्री; राधिका धुनक भावात्मक केन्द्र। समानान्तर इतिहास एही चयनक महत्त्व पहिचानैत अछि। मुदा बालिका राधिकाक अपन स्वभाव आ माएक अनुभव अनुल्लिखित, ढोल निर्माणक अन्य कारीगर अनाम, शीलावतीक निर्णयक सार्वजनिक विस्तार संक्षिप्त अछि। अतः हाशियाकृत समूहक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा आ व्यक्ति-विशेषक अनुपस्थित वाणी दुनू बाँचि राखबाक अछि। भौतिक वाद्य बनौनिहार, गायक, आयोजक आ सार्वजनिक श्रोता सभ मिलि संस्कृति रचैत छथि; केवल एक ‘प्रतिभाशाली’ पुरुष कलाकारक एकल महिमामे सामाजिक श्रम समाहित नहि भऽ जाए।

शोकक सामाजिक रूपान्तरण : उपलब्धि आ संस्थागत जोखिम

मोहनक निजी दुःख कहियो समाप्त भेल, एहन स्पष्ट वचन नहि; मुदा ओ संगीत रचैत, शीलावतीक संग सहमति करैत आ नव नाम-संगीतक परम्परामे काज करैत छथि। परिणामस्वरूप एक जीवनघटनासँ कला-सम्बन्धी नूतन सामुदायिक प्रक्रिया जन्मैत अछि। लेकिन प्रत्येक मृतक लेल एक निश्चित धुन औपचारिक रूपेँ ‘फिट’ करब मृतकक बहुल जीवनकेँ एक भावक संक्षिप्त संकेतमे बदलि सकैत अछि। दुखपूर्वक मृत्यु, धीर प्रतीक्षा वा मातृत्व एहन एकमेव श्रेणी नहि जे व्यक्ति-स्मृतिक पूरा अर्थ देत। समावेशी संस्था लेल कथा बदलिते धुन बदलबाक, परिवारक प्रतिवाद सुनबाक आ अनेक परस्पर भिन्न प्रस्तुति स्वीकारबाक लचीलापन आवश्यक। वर्तमान कथामे एहन विवादक दृश्य नहि, मुदा आलोचना एहि सम्भावित संस्थागत प्रश्नकेँ खुलल रखैत अछि।

घटना-प्रमाण-परिणामक सारणी

घटना वा दावा | मूल पाठमे सिद्ध सामग्री | सीमा वा अज्ञात पक्ष | आख्यानशास्त्रीय परिणाम

शीलावती उत्तराधिकार | केदारक बेटी पर अनुष्ठानक भार | चयन-विधिक विस्तृत विवरण नहि | स्त्रीक आयोजनक अधिकार

चर्मकार टोलाक ढोलकला | ढोल-मृदंग निर्माण उत्कर्षपर | श्रम–आयक विवरण नहि | पेशागत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मोहनक परिचय | सोमरक सातम पीढ़ीक वंशज | मध्यस्थ वंशावली नहि | कालिक विस्तार

राधिकाक चारि बरख | पिताक प्रेमक संक्षिप्त सूचना | बालिकाक स्वतन्त्र स्वर नहि | करुणक पात्र-आधार

पाँचम दिन बालमृत्यु | तेज बुखार, बहुजन सेवा, पिताक गोदमे मृत्यु | विशिष्ट रोगक निदान नहि | शोकक मूल परिवर्तन

कतेको सप्ताह मौन | ढोल वादन बन्द, घरमे ने रोदन ने संगीत | आजीविका आ अन्य सहारा अज्ञात | क्रिया-अभावक घटना

पीपर लग ढोल | हल्का थापसँ अनियमितता आ लय | बाँसुरीक प्रदर्शन नहि | ध्वनिक पुनरुत्पत्ति

बूढ़बाक श्रवण | सुन्दर आ दुःखद कहि अर्थ पूछब | भावक स्वतन्त्र व्यक्ति-विशिष्ट पहचान नहि | शब्दगवाहीक आवश्यकता

मोहनक इच्छा | नामकेँ मात्र शब्द नहि, आवाज बनाबय चाहब | श्रोता कथा बिना बुझत कि नहि | बहुमाध्यमी स्मृतिक प्रस्ताव

शीलावतीक प्रस्ताव | प्रत्येक नामक कथानुसार धुन जोड़बाक विचार | सामुदायिक मतभेद नहि | व्यक्तिगत कला सँ अनुष्ठान

अगिला बरखक रचना | चारि नाम सहित धुनसभक उल्लेख | सभ धुनक पूर्ण सूची नहि | रचना-श्रमक सारांश

राधिकाक मंगलाचरण | हर अमावस्याक कबड्डीसँ पहिने धुन | वाद्यगत निरन्तरता अनिर्दिष्ट | निजी शोकक सार्वजनिक रीत

बूढ़बाक सांत्वना | शब्द आ धुनक नैतिक सम्बन्ध | प्रमाण-स्वरूपक समता नहि | रूपान्तरणक मान्यता

पीढ़ीगत धुनक प्रसार | नव संगीतकार नव नाम जोड़ैत | प्रशिक्षक/संगीत-लिपि अज्ञात | आवर्ती सामुदायिक परम्परा

अध्यायारम्भ लोकगीत | भविष्यक लेखक-प्रयुक्त विधिक दावा | बाह्य इतिहासक सत्यापन नहि | रचनाक आत्मसन्दर्भ

लोकगीतक बाँसुरी-वचन | ढोल छोड़ि बाँसुरी अपनएबाक पूर्वकथन | मुख्य कथामे वाद्य-परिवर्तन नहि | प्रमाणित रचनात्मक असङ्गति

मूल पाठक अक्षरशः सत्यापित उद्धरण-सूचक

१. “बाँसुरीक धुन हवामे मिलै” — आरम्भिक फकराक ध्वनि-बिम्ब।

२. “मोहन ढोल छोड़ि, बाँसुरीमे नाम बसौलक” — लोकगीतक वाद्य-परिवर्तनक दावा।

३. “हर अध्यायक भोरमे, लोकगीत बनि उगल” — अध्याय-रूपक आत्मसन्दर्भ।

४. “केदारक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी शीलावतीपर आयल” — स्त्री-उत्तराधिकार।

५. “सोमरक सातम पीढ़ीक वंशज” — वंशागत शिल्प-स्मृति।

६. “नाम राधिका, चार बरखक” — बालिकाक परिचय।

७. “तेज बुखारमे पड़ि गेलि” — रोगक एकमात्र निर्दिष्ट लक्षण।

८. “पाँचम दिन, राधिका चलि गेलि” — मृत्युक दिन।

९. “छोट हाथ मोहनक अंगुरी पकड़ने” — अन्तिम शारीरिक स्पर्श।

१०. “कतेको सप्ताह धरि अपन ढोल हाथ नहि लगौलक” — शोकक अवधि।

११. “ने रोदन, ने संगीत” — मौनक द्विगुण रूप।

१२. “अमावस्याक ठीक पहिने” — नव संगीतक काल।

१३. “अपन ढोल उठा, पीपर लग गेल” — मुख्य कथा-दृश्यक वाद्य।

१४. “पहिने अनियमित, फेर धीरे-धीरे एकटा लय बनैत” — लयक विकास।

१५. “न पूर्ण रूपसँ शोकगीत छल” — धुनक शोकधर्मी सीमा।

१६. “न पूर्ण रूपसँ लोरी” — लोरीक सीमा।

१७. “अहाँ की बजा रहल छी?” — बूढ़बाक प्रत्यक्ष प्रश्न।

१८. “हम राधिकाक हेतु एकटा धुन बना रहल छी” — पिताक अभिप्राय।

१९. “केवल एकटा शब्द नहि रहय” — नामस्मृतिक अतिक्रमण।

२०. “नाम एकटा आवाज बनय” — ध्वनि-स्मृतिक प्रतिज्ञा।

२१. “हर अमावस्यापर” — नियोजित पुनरावृत्ति।

२२. “हर पुरान कथाक हेतु” — कलाक सामुदायिक विस्तार।

२३. “हुलासाक धुन कोमल, अपूर्ण” — हुलासाक व्यक्तिविशेष रूप।

२४. “सुखदेवक धुन धीमा, प्रतीक्षापूर्ण” — सुखदेवक लयगत व्याख्या।

२५. “रत्नाक धुन गर्मजोश” — रत्नाक भावविधान।

२६. “एकटा प्रकारक मंगलाचरण” — राधिकाक धुनक संस्थागत स्थान।

२७. “प्रतिस्पर्धाक नहि” — कबड्डीक नैतिक अर्थ।

२८. “की ई ओकर स्मृतिक अनादर नहि?” — मोहनक नैतिक शंका।

२९. “शब्द आ धुन दुनू” — बूढ़बाक माध्यम-द्वैत।

३०. “प्रेमकेँ एहन रूप देब जे कालक पार जा सकए” — स्मृतिक कालिक अभिलाषा।

३१. “रूपान्तरण, स्मृतिक हेतु, अनादरसँ बिल्कुल विपरीत थिक” — बूढ़बाक अन्तिम निष्कर्ष।

३२. “हर पीढ़ीक संगीतकार” — परम्पराक दीर्घकाल।

३३. “अध्यायारम्भ लोकगीत” — भविष्यक साहित्यिक विधि।

ई सभ छोट उद्धरण मूल अध्याय [–७३]क फकरा, आरम्भिक गीत, कथाभाग आ संवादसँ अक्षरशः मिलाओल गेल अछि। प्रति-उद्धरण मुद्रित पृष्ठक सटीक स्थान बिना पृष्ठ-दर-पृष्ठ समीक्षा नहि निश्चित कएल गेल; समग्र अध्यायक सीमा २२५–२२८ अछि। अध्यायोत्तर व्याख्यात्मक टिप्पणी एहि सूचीक मूल कथा-साक्ष्य नहि।

निर्णायक आलोचनात्मक निष्कर्ष : शोकसँ सांस्कृतिक कथापद्धति

‘मोहनक धुन’क मुख्य उपलब्धि ई अछि जे व्यक्तिगत शोककेँ अपन स्वतन्त्र मानवीय तात्कालिकता संग देखाबैत ओहि सँ नामस्मृतिक एक नव सामुदायिक विधि उत्पन्न करैत अछि। राधिकाक मृत्यु, ढोलक सप्ताहव्यापी मौन, पहिल अनियमित थाप, शीलावतीक हस्तक्षेप, नामानुसार अलग-अलग धुन आ बारंबार अमावस्याक ‘मंगलाचरण’ मिलि कथात्मक रूपान्तरणक स्पष्ट शृंखला बनैत अछि। एहि अनुक्रममे मोहन कलाकार आ शीलावती संस्था-निर्मात्री छथि; बूढ़बा भावार्थक नैतिक स्वीकृति दैत छथि। आरम्भिक लोकगीत आ अन्तिम भविष्यक लेखकक उल्लेख पूरा उपन्यासक अध्यायारम्भ गीत-विधानक आत्मसन्दर्भ बनबैत अछि। तथापि ई उपलब्धि रचनात्मक त्रुटिरहित नहि। लोकगीत द्वारा मोहनक ढोल छोड़ि बाँसुरी अपनएबाक स्पष्ट कथन मुख्य कथामे समर्थित नहि; मोहनक राधिकाविषयक धुन वास्तवमे ढोलपर बजैत अछि। बालिका राधिकाक स्वतन्त्र जीवनवर्णन सीमित, अन्य पारिवारिक शोकक स्वर अनुपस्थित, अधिकांश सांगीतिक सृजनक ध्वनिक संरचना अनिर्दिष्ट, आ सम्पूर्ण भविष्यक परम्पराक सफलता विस्तृत अनुभवक बदला कथावाचकीय सारांश

अछि। नैतिक रूपसँ धुन मृतकक नामक पूरक भावाभिव्यक्ति अछि, तथ्यात्मक जीवनकथाक स्वतन्त्र स्थानापन्न नहि। साहित्यिक निर्णय सशर्त सकारात्मक अछि—कृति शोक, नाम आ लोकधुनिक सम्बन्धक प्रभावी उत्पत्ति-कथा बनबैत अछि, मुदा वाद्यगत असङ्गतिक सुधार तथा कलाकार–सहयोगीसभक बहुल अनुभवक विस्तार ओकर भावात्मक आ अभिलेखी विश्वसनीयता बढ़ा सकैत अछि।

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७३] ‘मोहनक धुन’, अनुक्रमणिकानुसार मुद्रित पृ. २२५–२२८। द्वितीय स्रोत : ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’, अध्याय –७३क प्रविष्टि, पाठमात्रा ७८३ शब्द-एकक आ क्रियासूचक अनुच्छेद अनुपात ४५.७ प्रतिशत। मूल अध्यायोत्तर ‘शोकसँ कलाक जन्म — संगीतशास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण’ टिप्पणी लेखककीय परापाठ अछि; मोहनक पात्र, राधिकाक मृत्यु आ लोकसंगीतक विशिष्ट उत्पत्ति बाह्य इतिहासक सत्यापित घटना नहि। समीक्षामे औपचारिक स्वरतालक अथवा चिकित्सकीय शोक-निदानक स्रोतबाह्य दावे नहि जोड़ल गेल अछि। अगिला प्रकरण –७२ ‘विवाहक साक्षी’—साक्षीगाछ, विवाहक सार्वजनिक वचन, जाति-सीमा आ दुःखक संगीतसँ आनन्दक संगीत धरि सांस्कृतिक परिवर्तनक पुनर्परीक्षण।

प्रकरण २९ | मूल अध्याय –७२ — विवाहक साक्षी

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यास आधारित क्रमिक कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

अध्यायक कथात्मक परिचय आ पाठसीमा

‘विवाहक साक्षी’ पूर्वकथाकालक अध्याय [–७२] अछि। एहि प्रकरणक केन्द्रमे शीलावतीक पोती अनुराधा आ ब्राह्मण टोलाक युवक गोपीनाथक विवाह अछि। दुनू बचपनसँ नारिकेल पात पाठशालामे पढ़ल, बूढ़बाक कथा सुनल आ गामक मैदानमे खेलल। मित्रता प्रेममे बदललाक बाद विवाहक इच्छा जातिगत संशयक सामना करैत अछि। बूढ़बाक संग पंडित-पिताक संवाद, स्वीकृति, दुनू टोलाक साझा तैयारी, पीपरक समीप सार्वजनिक विवाह आ नव उत्सवधुन—ई घटनाक प्रमाणित अनुक्रम अछि। अध्यायसूचीमे आरम्भिक मुद्रित पृष्ठ २२९ आ अगिला अध्यायक आरम्भ २३३ अछि; ताहि आधारपर एहि अध्यायक अनुक्रमणिकाजन्य पृष्ठसीमा २२९–२३२ मानल जा सकैत अछि, तथापि कोनो उद्धरणक विशिष्ट पृष्ठ-पंक्ति अलग सँ सत्यापित नहि अछि।

घटनाक कथात्मक केन्द्र : दुइ व्यक्तिसँ समुदायक दिशि

विवाह आरम्भमे अनुराधा आ गोपीनाथक व्यक्तिगत निर्णय अछि। मुदा घटनाक अन्त धरि प्रश्न ई भऽ जाइत अछि जे गाम अपन पुरान जातिगत निषेधकेँ पुनः लागू करत अथवा साझा स्मृतिसँ किछु सीखत। कथाक अनुपातमे प्रेमालापक विवरण न्यून आ समुदाय-सम्बन्धी संवाद अधिक अछि। एहि चयनसँ प्रेमक अन्तःसंवादसँ बेसी सामाजिक अनुमोदनक प्रश्न प्रमुख होइत अछि। पाठककेँ एहि अन्तरकेँ कथाकारक मूल्यगत प्राथमिकताक रूपमे देखबाक चाही: विवाह एक निजी सम्बन्ध रहितहुँ पीढ़ीगत सामाजिक शिक्षाक सार्वजनिक परीक्षा बनैत अछि। ई विस्तार कथाकेँ सामाजिक अर्थ दैत अछि, मुदा युगलक निजी दुविधा आ आत्मीयताक दृश्य अपेक्षाकृत कम करैत अछि।

शीर्षकमे 'साक्षी' शब्दक अनेक अर्थ

'साक्षी' शीर्षकमे कोनो एक वस्तु नहि। आगि अनुष्ठानक साक्षी अछि, गाम सार्वजनिक स्वीकारक साक्षी अछि, नाम दीर्घकालीन स्मृतिक साक्षी अछि, आ बूढ़बा विशिष्ट कथाजगतक स्मृति-रक्षक छथि। एहि चारू स्तरक सम्बन्ध स्वतः समान नहि: आगि अनुष्ठानक संकेत, गाम सामाजिक गवाहीक समुदाय, नाम स्मृतिक चिह्न आ बूढ़बा व्यक्तिकृत स्मृतिपरम्परा छथि। शीर्षक एहि भिन्न साक्ष्य-प्रकारकेँ एकत्रित करैत अछि। आलोचनात्मक सावधानी ई जरूरी जे सामूहिक उपस्थिति, नैतिक समर्थन आ तथ्यात्मक प्रत्यक्षदर्शनकेँ एकहि प्रमाण नहि मानल जाय। कृतिक कलात्मक शक्ति एकता रचबामे अछि; ओकर दार्शनिक परीक्षा भिन्नताकेँ सुरक्षित रखबामे।

आरम्भिक फकराक सूक्ति-विधान

अध्यायक आरम्भिक फकरा—'बियाहमे आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी'—त्रिपदीय पुनरावृत्तिक माध्यमसँ घटना शुरू होएबासँ पहिनहि नैतिक परिणामक संकेत दैत अछि। एहि वाक्यमे 'साक्षी'क आवर्तन सामाजिक विश्वासकेँ लयात्मक मान्यता प्रदान करैत अछि। 'जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर' मे दृश्य घटना अभिलेखक रूप धारण करैत अछि। मुदा फकरा अपनहि आपमे कोनो विशिष्ट पातपर वास्तविक विवाह-लेखनक दृश्य नहि अछि। ई प्रतिज्ञात्मक काव्यवचन अछि, जकर कथा-सापेक्ष परीक्षण आवश्यक। एहि भेदसँ पाठक सूक्ति आ घटनाक प्रमाणकेँ पृथक राखि सकैत छथि।

विवाह-सोहरक पूर्वकथन

लोकगीतक नाम 'सात फेराक साक्षी' आ लोकधुन 'विवाह-सोहर' अछि। गीतक पहिल पद आगि, गाम आ नामक त्रयीकेँ पुनः उच्चारित करैत अछि; दोसर पद मड़बा, आगि, सात फेरा आ परिवार-पड़ोसक उपस्थिति रचैत अछि; तेसर पद कागजक अभावमे गामक आँखि आ जिह्वाकेँ इतिहासक धारक बनबैत अछि। अन्तिम पद गीत आ पीढ़ीगत नामरक्षाक सम्बन्ध स्थिर करैत अछि। ई क्रम विवाहक घटनाकेँ पूर्वहिसँ एक लोकगाथात्मक प्रतिष्ठा दैत अछि। गीत कथाक सरल सजावट नहि, बल्कि अपेक्षित सामाजिक परिणामक भावात्मक रूपरेखा अछि। ओकर कथनसभकेँ बादक गद्यवृत्तान्तसँ मिलान करब आवश्यक अछि।

गीत आ मुख्य कथा : सात फेराक पाठान्तर

गीत कहैत अछि—'सात फेरा घुमल जोड़ी', 'सात फेरा, सात वचन'। मुख्य कथाभागमे विवाहक आयोजन, गामक उपस्थिति आ बूढ़बाक आशीर्वाद स्पष्ट अछि; सात फेराक क्रम, प्रत्येक फेराक दृश्य, वचनक वास्तविक उच्चारण अथवा पुरोहितक विशिष्ट क्रिया वर्णित नहि। अतः सात फेरा गीतक भीतर दृश्यात्मक कथन अछि, मुख्य गद्यमे स्वतन्त्र रूपसँ अभिनीत दृश्य नहि। एकरा पूर्ण अन्तर्विरोध कहब अतिशयोक्ति होयत, किएक तँ गीत एहन अनुष्ठानक उल्लेख करैत अछि जे गद्य नकारैत नहि। मुदा 'गीतमे कहल' आ 'गद्यद्वारा प्रत्यक्ष देखाओल'क अन्तर एक महत्त्वपूर्ण आख्यानगत रिक्ति अछि, जकरा कल्पित विवाह-मण्डप संवादसँ भरब समीक्षाक कार्य नहि।

‘कागच ने रहल’ आ पातपर नाम : समयक असमंजस

लोकगीतमे ‘कागच ने रहल तखन, गामक आँखि कागच’ अभावक ऐतिहासिक अवस्था बनबैत अछि, जबकि एहि कथाजगतमे नारिकेल पात पाठशाला, नामलिखन आ पूर्वस्थापित स्मृति-अभिलेख परम्परा रहिते अछि। गीतक ‘तखन’ विवाहक वर्तमान समयकेँ जनबैत अछि अथवा अतीतक लोकस्मृतिक पुनरावृत्ति अछि—ई स्पष्ट नहि। एहि कारण कागजविहीन युग आ पातपर अभिलेखनक सम्बन्ध शाब्दिक इतिहासक अपेक्षा रूपकात्मक स्तरपर बेसी संगत देखाइत अछि। पाठककेँ लिखित दस्तावेजक वास्तविक नष्ट होएबाक अथवा विवाहक पातपर नूतन प्रविष्टिक कोनो अनुपस्थित दृश्य मानि नहि चलबाक चाही।

गंगेश–मालती कथा : अन्तर्पाठक सक्रिय स्मृति

अनुराधा अपन माएसँ गंगेश उपाध्याय आ मालतीक विवाहक कथा उल्लेख करैत अछि। हुनकर कथनक निर्णायक बिन्दु ई अछि जे समाज ओहि विवाहकेँ बिसरा देलक, मुदा गंगेशक शास्त्रकेँ याद रखलक। एहि विस्मरण-चयनक विरोधमे अनुराधा अपन प्रेमकेँ इतिहासक पूर्ण अभिलेखमे प्रवेश देबय चाहैत छथि। ई स्मरण पूर्वकथा [−९१]सँ आख्यानगत सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, जे उपन्यासक भीतरक अन्तरपाठ अछि। एकरा ऐतिहासिक गंगेश उपाध्यायक वास्तविक जीवनवृत्तक प्रमाण नहि ठहराओल जा सकैत। काल्पनिक आख्यानक गंगेश–मालती प्रसंग आ बाह्य इतिहासक तथ्यात्मक दावाकेँ अलग करब जरूरी अछि।

पुनरावृत्ति आ अन्तर : इतिहासक अनुकृति नहि, प्रत्युत्तर

पूर्वकथाक गंगेश–मालती प्रसंग आ वर्तमान अनुराधा–गोपीनाथ प्रसंगक संरचनात्मक साम्य विवाह, सामाजिक निषेध आ स्मृतिक संघर्षमे अछि। मुदा एहि बेर समाजक अन्तिम व्यवहार बदलैत अछि। पहिल सम्बन्ध उपेक्षाक कथा बनैत अछि; दोसर सम्बन्ध उत्सवक कथा बनैत अछि। ई चक्रीय पुनरागमन मात्र अतीतक पुनर्निर्माण नहि, बल्कि अतीतकेँ एक नैतिक प्रश्नमे बदलि ओकर दोसर उत्तर खोजबाक पद्धति अछि। एहि भेदसँ उपन्यासक समयरेखा केवल ‘फेर ओही घटना’ नहि रहैत, ‘ओही प्रश्नक नव ऐतिहासिक परिणाम’ बनैत अछि। मुदा एहि परिवर्तनक कारण-श्रृंखला कथामे पूर्ण सामाजिक इतिहासक बराबर विस्तार नहि पबैत अछि।

नारिकेल पात पाठशाला : संयुक्त बचपनक कथात्मक भूमिका

अनुराधा आ गोपीनाथक एक संग पढ़ब, कथा सुनब आ खेलब प्रेमक उत्पत्तिक तीन प्रमाणित सामाजिक प्रसंग छथि। एहि विवरणसँ पाठशाला केवल शिक्षास्थान नहि, जातिगत विभाजनक बीच साझा अनुभवक मध्यस्थ बनैत अछि। शिक्षाक प्रभावक सिद्धान्त पाठमे प्रत्यक्ष दीर्घ परीक्षणक रूपमे नहि, बल्कि चरित्रक साझा बचपनक संक्षिप्त विवरणक रूपमे अछि। ताहि लेल शिक्षा अकेले विवाहक स्वीकृतिक एकमात्र कारण सिद्ध नहि कएल जा सकैत; बूढ़बाक नैतिक हस्तक्षेप, पुरान कथासभक स्मरण आ परिवारक अन्तिम निर्णय सेहो घटक छथि। सहपाठित्वक साहित्यिक अर्थ आ वास्तविक सामाजिक परिवर्तनक कारणात्मक दावा भिन्न-भिन्न स्तरपर रहैत अछि।

अनुराधाक स्वाधीन स्वर

अनुराधाक संवाद मात्र प्रेम-स्वीकार नहि, इतिहास-बोधक वक्तव्य अछि। ओ माएसँ विवाहक कठिनाई सुनि पीछे नहि हटैत छथि; अपन पुरखाक कथा आ इतिहासद्वारा प्रेमक विस्मरणक खतरा सामने आनैत छथि। एहि क्षणमे नव पीढ़ी पुरान पीढ़ीक निर्णयकेँ स्वतः अमान्य नहि करैत; ओ ओकरा स्मृतिक न्यायपर कसैत अछि। स्त्रीपात्रकेँ निर्णयक भाषा भेटैत अछि, ई अध्यायक उपलब्धि अछि। तथापि संवादक संख्या सीमित अछि, आ विवाहक सार्वजनिक समारोहमे अनुराधाक अन्तिम स्वतन्त्र वक्तव्य पुनः नहि सुनाइ पड़ैत। उपन्यास स्त्रीक प्रारम्भिक इच्छा स्पष्ट करैत अछि, मुदा वैवाहिक सार्वजनिक दृश्य मुख्यतः बूढ़बा आ समुदायकेँ सौंपि दैत अछि।

गोपीनाथक इच्छा आ भाषिक अनुपस्थिति

गोपीनाथक सम्बन्धमे कथावाचक स्पष्ट कहैत अछि जे ओ अनुराधाक संग विवाह करय चाहैत छथि। तथापि पाठमे हुनकर प्रत्यक्ष संवाद नहि देल गेल अछि। विरोध करैत पिता आ तर्क दैत बूढ़बाक आवाज सुनाइत अछि, पुत्र स्वयं कथित इच्छाक बावजूद विवादक निर्णायक संवादमे उपस्थित नहि छथि। ई भाषिक असमानता कथाक लक्ष्यकेँ स्पष्ट करैत अछि: युगलक आत्मानुभवसँ बेसी सामाजिक निर्णयक सार्वजनिक नाटक। मुदा एहि चयनसँ गोपीनाथक भीतरी संशय, प्रेमक अनुभव आ पितासँ सम्बन्धक जटिलता कम देखाइत अछि। अनुल्लिखित संवादक कल्पना कऽ हुनकर चरित्रकेँ भरब अनुचित; निःशब्दता स्वयं आलोचनाक तथ्य थिक।

मातृचिन्ता : विरोध आ आशङ्काक भेद

अनुराधाक माए कठिनाइक सूचना दैत छथि—‘गामक किछु पुरान लोक अखनहु जाति-भेदमे विश्वास करैत छथि।’ ई अनिवार्यतः विवाहक प्रत्यक्ष निषेध नहि; समाजक सम्भावित प्रतिक्रियाक चिन्ता सेहो भऽ सकैत अछि। समीक्षामे माता आ पंडित-पिताक स्थिति एकहि विरोधक श्रेणीमे नहि राखल जएबाक चाही। माताक संवाद परिणामक खतरा देखबैत अछि; गोपीनाथक पिता पहिले स्पष्ट विरोध करैत छथि। एहि सूक्ष्म अन्तरमे कथावाचक सामाजिक भयक दूटा रूप उपस्थित करैत अछि। स्त्रीक घरेलू चिन्ता अपन बचबाक व्यवहारिक अनुभवसँ सेहो सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा एहन पृष्ठभूमिक विशिष्ट घटना पाठमे नहि लिखल गेल अछि।

पंडित-पिताक जातिवादी संशय आ लोकमतक भय

गोपीनाथक पिता ‘सम्मानित पंडित’ छथि, मुदा हुनकर निर्णयक प्रेरणा शास्त्रीय तर्कक लिखित प्रस्तुति नहि। बूढ़बाक प्रश्नक बाद ओ कहैत छथि—‘हमरा डर अछि जे लोक की कहत।’ एहि स्वीकारोक्तिसँ जातिगत निषेधक सामाजिक अनुशासन प्रत्यक्ष होइत अछि: निजी निर्णय सामूहिक मान-अपमानक आशङ्कासँ संचालित अछि। कथा पंडितकेँ निष्ठुर एकरेखीय प्रतिपक्षी नहि बनबैत; ओ अपन भय स्वीकार करैत छथि आ अन्ततः सहमत होइत छथि। तथापि हुनकर पुनर्विचारक अन्तरंग प्रक्रिया, सम्बन्धीसभक दबाव अथवा वास्तविक सामाजिक दण्डक दृश्य नहि अछि। कथानक भयकेँ पहचानैत अछि, मुदा ओकर संस्थागत संरचनाकेँ बहुत कम खोलैत अछि।

बूढ़बाक प्रश्न : नैतिक तर्कक नाटच-रूप

बूढ़बा पंडितकेँ हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना आ मालतीक कथा स्मरण करबैत छथि। हुनकर तर्क अछि जे मनुष्यद्वारा खींचल जाति-वर्गक सीमारेखा अनेक त्रासदीसँ जुड़ल रहल अछि; तखन बेटाक प्रेमक विरोधमे ओहि सीमाकेँ पुनः ठाढ़ करब की उचित? एतय अतीतक नामसभ केवल भावुक सूची नहि, तुलनात्मक दृष्टान्तक प्रमाण-संग्रह बनैत अछि। बूढ़बा आदेश नहि दैत छथि, प्रश्न करैत छथि। प्रश्नोत्तरक एहि शैलीमे व्यक्ति स्वयं अपन निर्णयक नैतिक उत्तरदायित्व देखय बाध्य होइत अछि। मुदा एतय नामोल्लेखित प्रत्येक त्रासदीक विशिष्ट सामाजिक कारणक पुनः प्रमाण-परीक्षण नहि कएल गेल; तर्क एक संक्षिप्त नैतिक सामान्यीकरण अछि।

‘त्रासदी कि आशा’ : विकल्पक रचनात्मक शक्ति आ सीमा

बूढ़बाक अन्तिम प्रश्न पंडितकेँ एकटा नव त्रासदी जोड़बाक अथवा एकटा नव आशा स्वीकारबाक द्वैध विकल्प दैत अछि। ई नाटकीय विन्यास सामाजिक निर्णयकेँ स्मृतिक भावी अभिलेखसँ जोड़ैत अछि। ‘लोक जे कहत’क क्षणिक दबावक विरुद्ध दीर्घकालीन कथा आ नामक मूल्य ठाढ़ होइत अछि। मुदा केवल दुइ विकल्पक प्रस्तुति सामाजिक विवादक अन्य सम्भावना—सहमति संग शेष प्रतिरोध, वैवाहिक जीवनक बादक समस्या, गामक असहमत समूह—केँ कथाक पर्दाक बाहर रखैत अछि। आलोचककेँ मानब चाही जे ई नैतिक स्पष्टताक प्रभावशाली रचना अछि, सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रियाक विस्तृत अनुभवजन्य प्रतिवेदन नहि।

कथन-अवधि आ पिताक हृदयपरिवर्तन

‘पंडित अंततः सहमत भेलाह’—एहि छोट कथनमे कथाकार बहुस्तरीय मानसिक संघर्षक परिणाम समेटि दैत छथि। पूर्वकथा सैकड़ों बरखक परिवर्तनक दावा करैत अछि, मुदा विशिष्ट पिताक विरोधसँ स्वीकृति धरिक काल अत्यल्प वाक्यमे संकुचित होइत अछि। आख्यान-अवधिक दृष्टिसँ ई सारांशात्मक त्वरण अछि: नैतिक तर्क सुनलाक बाद परिणाम तत्काल उपलब्ध कराओल जाइत अछि। ई उपदेशात्मक स्पष्टता उत्पन्न करैत अछि, मुदा विश्वसनीय सामाजिक घर्षणक चित्रण कम करैत अछि। ‘धीमा परिवर्तन’क कथन आ ‘द्रुत स्वीकृति’क दृश्य बीचक तनावकेँ कथात्मक त्रुटि कहबापूर्वक शैलीगत संक्षेपक रूपमे सेहो पढ़ल जएबाक चाही।

जाति-निर्देश आ अनुमानक प्रमाण-सीमा

मूल कथामे गोपीनाथ ब्राह्मण टोलाक युवक कहल गेल छथि; अनुराधा शीलावतीक पोती कहल गेलि अछि; विवाहमे ब्राह्मण आ चर्मकार दुनू टोलाक सहभागिता स्पष्ट अछि। मुदा एहि अध्यायक मुख्य कथामे अनुराधाक जातिक स्वतन्त्र, निर्विवाद नामांकन नहि देल गेल अछि। कथाक जाति-सीमाभङ्गक अभिप्राय प्रबल अछि, तथापि समीक्षककेँ अनुराधाकेँ स्वतः कोनो विशिष्ट जातिमे वर्गीकृत कऽ दाबी नहि करबाक चाही जाबे धरि मूलक अन्य अध्यायसँ पुख्ता प्रमाण नहि भेटय। सामाजिक संकेत आ चरित्र-वंशक दस्तावेजी निश्चितता भिन्न कोटि छथि। एहि सावधानीसँ कृतिक वास्तविक प्रगतिशील मंशा विश्लेषित होइत अछि, आ अवांछित पाठ-पूर्ति रोकिन्छ।

साझा विवाह-तैयारी : परिवर्तित सामाजिक व्यवहार

‘गामक दुनू टोला, ब्राह्मण आ चर्मकार, एक संग तैयारीमे जुटल’—ई वाक्य जातिगत दूरीक विरुद्ध व्यवहारिक परिवर्तन देखबैत अछि। प्रेमक स्वीकृति केवल बूढ़बाक मुखसँ नहि, उत्सवक श्रम-विभाजनमे दृष्टिगत होइत अछि। तैयारीक काम सामाजिक भागीदारीक प्रतीक बनैत अछि। मुदा कोन व्यक्ति कोन काम करैत अछि, पूजाक अधिकारी के छथि, भोजन आ बैठबाक व्यवस्था की अछि—ई सब पाठमे नहि देखाओल गेल। ताहि लेल ‘जाति-समता पूर्ण रूपसँ प्राप्त भऽ गेल’ एहन व्यापक निष्कर्ष प्रमाणातीत होयत। दृश्य सीमारेखा मृदु होएबाक साक्ष्य दैत अछि, सम्पूर्ण संस्थागत असमानता समाप्त होएबाक नहि।

‘गामक हर मनुष्य’ : समावेशनक सूचक, शाब्दिक गणना नहि

कथावाचक विवाहक राति ‘गामक हर मनुष्य’ पीपर लग जुटबाक उल्लेख करैत छथि। एहि सर्वसमावेशी विधानक भावार्थ सार्वजनिक भागीदारी अछि। मुदा वास्तविक संख्यात्मक उपस्थिति, अनुपस्थित समूह, भिन्न विचारधारी लोक अथवा विवादक गुप्त अवशेषक स्वतन्त्र सूची नहि अछि। अतः ई पूर्ण सभासदस्य गणनाक सत्यापित आँकड़ा नहि, उत्सवक सार्वजनीनता दर्शाबयवला कथात्मक वाक्य अछि। ‘हर’क एहि शैलीगत प्रयोगसँ कथा सामूहिक स्वीकारक प्रबल छवि बनबैत अछि, लेकिन विश्लेषणमे सामाजिक बहुलता आ एकमत घोषणा बीचक अन्तर दर्ज रहबाक चाही।

पीपर आ साक्षी-गाछ : कथास्थलक संस्थाकरण

विवाह पीपर लग सम्पन्न होइत अछि, जतय बूढ़बाक साक्षी-गाछ सामुदायिक आयोजनक केन्द्र बनि चुकल अछि। ई स्थान साधारण प्राकृतिक पृष्ठभूमि नहि; एहि ठाम नामरक्षा, न्यायप्रश्न, सामूहिक स्मरण आ आब सार्वजनिक विवाह एक सूत्रमे जुड़ैत अछि। अध्याय [–७४]मे देखल गाछक भौतिक नाजुकता एतय सामाजिक संरक्षणक केन्द्रक रूपमे पुनः अर्थ पबैत अछि। तथापि ई कथा कतेक पुरान विवाह-प्रथा सभक स्थान परिवर्तन केलक, ओकर विस्तृत सामाजिक नियम नहि दैत। स्थापत्यक न्यून विवरणक बावजूद स्थल पाठकक मनमे लोक-अभिलेखागार आ सामुदायिक साक्ष्य-मञ्चक कार्य करैत अछि।

मोहनक वंशज : शोकधुनसँ उत्सवधुन

अध्याय [–७३]मे मोहन राधिकाक मृत्यु उपरान्त ढोलपर शोकसम्बद्ध धुन रचैत छथि। वर्तमान अध्यायमे ‘मोहनक वंशज’ अनुराधा–गोपीनाथक विवाह लेल एक नव धुन रचने छथि, जकर भाव उत्सवपूर्ण आ आशापूर्ण अछि। वंशजक व्यक्तिनाम नहि देल गेल; मुख्य कथामे वाद्य ढोल अछि, बाँसुरी नहि। कथाकार एकरे ‘पहिल बेर एहि परम्परामे’ दुःखक छाया बिनु रचल धुन कहैत छथि। एहि परिवर्तनसँ स्मृतिसंगीतक कार्य केवल मृत्यु-संस्कार नहि, जीवित प्रेमक सामुदायिक प्रतिष्ठा बनैत अछि। संगीतक विशिष्ट ताल, सुर अथवा गायनक पूर्ण प्रस्तुति कथामे अनुपस्थित अछि; आलोचक किछु मनगढ़न्त राग-ताल निर्दिष्ट नहि कऽ सकैत छथि।

शब्द, धुन आ आयोजन : स्मृतिक त्रिस्तरीय व्यवस्था

एहि अध्यायमे तीनटा स्मृतिमाध्यम सह-अवस्थित छथि। बूढ़बाक शब्द पूर्वकथाक नाम आ घटना उठबैत अछि; मोहनक वंशजक ढोलधुन वर्तमान प्रेमक भाव सञ्चारित करैत अछि; सामुदायिक उत्सव लोकक साझा देहगत उपस्थिति जोड़ैत अछि। एहि सम्मिलनसँ अभिलेख केवल नामक सूची नहि रहैत, सार्वजनिक अनुभव बनैत अछि। मुदा एहि तीनू माध्यमक विश्वसनीयता समान नहि: शब्द कथ्य कहैत अछि, धुन भावक अनुभूति रचैत अछि, सामूहिक उपस्थिति घटना देखबैत अछि। धुन कथाक प्रभावी पूरक अछि, विवाहक तिथि, वचन अथवा सामाजिक विवादक स्वतन्त्र तथ्यात्मक प्रमाण नहि।

बूढ़बाक अधूर स्पर्श : जादुई यथार्थक सीमारेखा

विवाहक अन्तमे बूढ़बा आशीर्वाद दैत छथि, मुदा ‘हाथ देहसँ एक अंगुर ऊपर रहि गेल।’ एहि विवरणमे कथाजगतक अलौकिक स्मृति-रक्षक आ जीवित मनुष्यक देहक बीच एक सूक्ष्म दूरी दृश्य होइत अछि। बूढ़बाक सार्वजनिक सत्ता स्थापित अछि, मुदा स्पर्शक अभाव हुनकर अस्तित्वक भिन्नता सुरक्षित रखैत अछि। विवाह सुखक दृश्यमे सेहो अलौकिक पात्रक असामान्य शरीरगत नियम लुप्त नहि होइत। ई जादुई यथार्थक कलात्मक युक्ति रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा कथामे ई दूरी किएक अछि, ओकर नव जैविक अथवा धार्मिक व्याख्या गढ़ब पाठसँ बाहर चलब होयत।

‘साक्षी छलहुँ, उपस्थित नहि छलहुँ’ : मूल साक्ष्यगत तनाव

बूढ़बा गंगेश आ मालतीक विवाहक सम्बन्धमे कहैत छथि जे ओ ‘साक्षी छलहुँ’, यद्यपि ओतय उपस्थित नहि छलाह आ कथा बादमे बुझलनि। तत्काल बाद अनुराधा–गोपीनाथक विवाहक ‘प्रत्यक्ष रूपसँ’ साक्षी होएबाक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। एहि आत्मभेदक कारण कथनकेँ अनिवार्य झूठ नहि कहल जा सकैत; ‘साक्षी’ पहिल ठाम स्मृतिसंरक्षकक व्यापक अर्थमे, दोसर ठाम प्रत्यक्षदर्शीक संकुचित अर्थमे प्रयुक्त अछि। मुदा शीर्षक आ लोकगीत एहि दुनू अर्थकेँ एकहि प्रतिष्ठामे रखबाक प्रवृत्ति देखबैत अछि। प्रमाणमीमांसक समीक्षामे परोक्ष कथा-प्राप्ति आ प्रत्यक्ष अनुभवक वर्गभेद अनिवार्य रूपसँ दर्ज होएबाक चाही।

नव्य-न्यायक दृष्टिसँ प्रत्यक्ष, शब्द आ स्मृति

विवाहक वर्तमान समारोहमे उपस्थित लोकक देखल दृश्य प्रत्यक्षानुभवक क्षेत्रमे पड़ैत अछि। गंगेश–मालतीक पूर्व घटना बूढ़बाक लग बादक कथनद्वारा पहुँचल—ई शब्दजन्य ज्ञानक सम्भावित प्रसंग अछि, जकर स्रोतक आप्तता आ सम्बन्ध स्वतन्त्र जाँचक विषय अछि। स्मृति पहिनेसँ प्राप्त ज्ञानकेँ सुरक्षित रखैत अछि; ओकर उपस्थितिसँ ज्ञानक मूल प्रमाण स्वतः बदलि नहि जाइत। नव्य-न्यायक सन्दर्भमे ‘साक्षी’ शब्दक लक्ष्य, प्रसंग आ अर्थपरिसीमाकेँ अलग कऽ देखब फलदायी अछि। एहि पद्धतिसँ उपन्यासक भावपूर्ण नामरक्षा कम मूल्यवान नहि होइत; केवल प्रत्यक्ष, परोक्ष आ संरक्षित कथनक ज्ञानगत पदक्रम स्पष्ट रहैत अछि।

पूर्वकथाक प्रमाणशृंखला : स्मरणक नैतिकता

अनुराधा गंगेश–मालतीक कथासँ प्रेरणा लैत छथि; बूढ़बा सेहो ओहि कथाकेँ नूतन विवाहक सन्दर्भमे सामने अनैत छथि। तथापि गंगेश–मालती विवाहक प्राथमिक कथनकर्ता के छल, किनकरा लगसँ बूढ़बाक जानकारी पहुँचल, कोन वैकल्पिक साक्षी छल, ई विवरण वर्तमान अध्याय नहि दैत अछि। ताहि लेल बूढ़बाक दीर्घ स्मृति भूतकालीन सम्बन्धक नैतिक प्रतिष्ठा दैत अछि, मुदा स्रोतशृंखलाक सम्पूर्ण पुनर्निर्माणक स्थानापन्न नहि। एहि सूक्ष्म सीमाकेँ स्वीकार कएलापर स्मृतिरक्षाक मूल्य आ शोधक प्रमाण-अनुशासन एक-दोसराक विरोधी नहि रहैत।

सामाजिक इतिहास आ विस्मरणक राजनीति

अनुराधाक कथनमे ‘केवल हुनकर शास्त्रकेँ याद राखलक’ सर्वाधिक गम्भीर वाक्यांशमे सँ अछि। ई सार्वजनिक स्मृति किनकर विद्वत्ता बचबैत अछि आ किनकर निजी सम्बन्ध मेटा दैत अछि, से प्रश्न उपस्थित करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि एतय राजकीय वा प्रतिष्ठित ज्ञान-वंशक साथ स्त्रीक अदृश्य अनुभव, जातिगत सम्बन्ध आ लोकस्मृतिक पद्धति केँ बराबर आलोचनात्मक स्थान देबाक आग्रह करैत अछि। मालतीक नामकेँ गंगेशक शास्त्रीय प्रतिष्ठाक उपान्त्य टिप्पणी नहि बनायब एहि दृष्टिक केन्द्रीय कार्य अछि। तथापि अध्याय वर्तमानमे मालतीक अपन वाणी पुनः प्रस्तुत नहि करैत; ओकर पुनर्स्मरण मुख्यतः अनुराधाक संवाद आ बूढ़बाक वचनद्वारा होइत अछि।

स्त्री-वंश आ परम्पराक धारक

शीलावतीक पोती अनुराधा पछिला पीढ़ीक स्त्री नेतृत्वसँ वर्तमान प्रेमक कथा जोड़ैत अछि। पूर्व अध्यायमे शीलावती स्मृतिअनुष्ठानमे धुन जोड़बाक संस्था-निर्मात्री छथि; एतय हुनकर पोती सामाजिक सम्मतिक बाधा पार करबाक पक्षधर छथि। ई पीढ़ीक्रम स्त्रीक भूमिकाकेँ केवल गृहस्थ जीवनधरि सीमित नहि करैत, बल्कि सांस्कृतिक रचना आ वैवाहिक निर्णयक दूनू क्षेत्रमे देखबैत अछि। मुदा शीलावती स्वयं एहि विवाह-समारोहमे उपस्थित छथि अथवा कोन प्रत्यक्ष भूमिका निभबैत छथि, से कथामे नहि कहल गेल। वंशपरम्परासँ प्रेरणाक सम्भावना अछि, प्रत्यक्ष हस्तक्षेपक मनगढ़न्त दृश्य नहि।

सामाजिक विरोधक बहुवचन आ एक व्यक्तिक निर्णय

मूल कथामे अनुराधाक माए ‘किछु पुरान लोक’क जातिभेद बतबैत छथि, मुदा विस्तारसँ विरोध करैत व्यक्ति गोपीनाथक पिता छथि। पिताक सहमतिक बाद गामक साझा आयोजनक वर्णन अबैत अछि। एहि संरचनामे बहुवचन सामाजिक समस्या एकटा प्रतिनिधि व्यक्तिक मन-परिवर्तनद्वारा सुलझल देखाइत अछि। ई कथानकक अर्थसघन युक्ति अछि, मुदा सामाजिक विभाजनक बहुध्रुवीयता एकरे भीतर सीमित होइत अछि। विरोध करैत अन्य पुरान लोक केना मानलाह, की ओ सभ उपस्थित छलाह, हुनकर शर्त की छल—ई प्रश्न अनुत्तरित अछि। सामाजिक न्यायकेँ केवल एक पितृस्वीकृतिक परिणाम ठहराएब कृतिक घोषित सामूहिक परिवर्तनसँ छोट व्याख्या होयत।

लोकमतक अस्थायित्व आ नामक स्थायित्व

बूढ़बाक तर्कमे लोकमत बदलयवला अछि, मुदा संरक्षित नाम आ कथा टिकाऊ नैतिक मापदण्ड बनैत अछि। एहि विपर्यासमे प्रतिष्ठाक क्षणिक भयपर दीर्घ स्मृतिरक्षाक वर्चस्व स्थापित होइत अछि। तथापि ‘नाम नहि बदलैत’ एहन कथनकेँ शाब्दिक अपरिवर्तनशील इतिहासक सिद्धान्त मानब उचित नहि: सामाजिक स्मृति स्वयं चयन, पुनर्कथन आ नवीनीकरणक अधीन होइत अछि। उपन्यासक भीतर बूढ़बा आदर्श साक्षी छथि, बाह्य ऐतिहासिक पद्धतिमे कोनो एक स्मृति-धारक त्रुटिरहित अभिलेख नहि। साहित्यक नैतिक स्थायित्व आ इतिहासक संशोधनीयता दुनूकेँ साथ पढ़ब सम्भव अछि।

कथनवाचकक सर्वज्ञ सारांश

अन्तिम अनुच्छेद कहैत अछि जे सैकड़ों बरखक शिक्षा, संवाद आ नामरक्षासँ गामक हृदय धीरे-धीरे बदलि गेल। ई दीर्घकालिक सामाजिक परिणामक कथन कथावाचकक दृष्टिसँ प्रस्तुत अछि; अध्याय सभ मध्यवर्ती संघर्षक स्वतन्त्र दृश्य नहि दैत। आख्यानशास्त्रीय रूपमे ई व्यापक कालावधिक सारांश अछि जकर दृश्यात्मक केन्द्र एकटा विवाह अछि। कथावाचक अपन व्याख्याक पर्याप्त आत्मविश्वास राखैत छथि, जे पाठककेँ अर्थ-निर्देश दैत अछि। किन्तु एहन निर्णायक भाषासँ पाठकक स्वयं कारण-निर्णयक अवकाश घटैत अछि। एहि अध्यायक अन्तिम मूल्यांकनमे वर्णित घटना आ कथावाचकद्वारा घोषित सामाजिक निष्कर्ष अलग कएल जएबाक चाही।

उत्सवक निष्छाया धुन : पूर्णताक दावा

मोहनक वंशजक नव धुन ‘दुःखक कोनो छाया बिनु’ कहल गेल अछि। पूर्वकथाक राधिकाविषयक शोकधुनक पृष्ठभूमिमे ई तीव्र भावान्तर अछि। मुदा स्मृतिपरम्पराक विषयवस्तु जे अनेक पीड़ा आ सामाजिक अन्यायसँ बनल अछि, ओकरा देखि सम्पूर्ण छायाविहीन आनन्द एक कलात्मक आदर्शीकरण सेहो अछि। ई उत्सव दुःखकेँ मेटा देबाक बजाय स्मृतिमे सुरक्षित राखि नूतन सम्भावनाकेँ उद्घाटित करैत अछि—एहन सशर्त पाठ अधिक संगत अछि। शोक आ उत्सवक धुनक तारतम्यसँ कृति गत घटनाक मृत्यु-कथासँ आगूक जीवित सम्बन्धक दिशि बढ़ैत अछि।

विवाहक सार्वजनिक दृश्य आ व्यक्तिक अन्तरंगता

सम्पूर्ण विवाह-चित्रमे पीपर, गाम, ढोल, बूढ़बाक आशीर्वाद आ सामूहिक स्वीकार प्रखर दृश्य बनैत अछि। अनुराधा–गोपीनाथक निजी संवाद, एक-दोसराकेँ देल व्यक्तिगत वचन अथवा विवाहक रातिक अन्तर्भाविक अनुभव विस्तृत रूपसँ चित्रित नहि। फलतः पाठक विवाहकेँ सार्वजनिक सामाजिक विजयक रूपमे अनुभव करैत अछि, निजी दाम्पत्यक बहुअर्थी आरम्भक रूपमे कम। उपन्यासक महाकथात्मक महत्त्व एतय स्पष्ट अछि—व्यक्ति अपन जीवनसँ समुदायक नैतिक दिशा बदलैत अछि—मुदा व्यक्तिक जटिल मानसक उपेक्षा आलोचनाक वैध विषय बनैत अछि।

कथानकक गति : भय, प्रश्न, सहमति, उत्सव

एहि अध्यायक कथानक चारि मुख्य अवस्थामे खुलैत अछि: प्रारम्भिक प्रेम-स्वीकार आ मातृचिन्ता; पंडित-पिताक निषेध; बूढ़बाक उदाहरणमूलक प्रश्न; आ साझा उत्सव। प्रत्येक चरण स्पष्ट कारणात्मक जोड़ दैत अछि, ताहि लेल पाठक घटनाक दिशा सहज बुझैत छथि। मुदा मध्यवर्ती प्रतिरोधक जटिलता बहुत संकुचित अछि। कथाक आकर्षण नैतिक परिणामक तीक्ष्णतामे अछि, रहस्यमूलक अनिश्चिततामे नहि। ई स्वर पूर्वकथाक हिंसा, शोक आ विस्मरणक अँधारक पृष्ठभूमिमे राहत उत्पन्न करैत अछि; मुदा यथार्थक मूल्यांकन लेल कथित सामाजिक परिवर्तनक सीमाकेँ अनदेखल नहि कएल जा सकैत।

भाव-रचना : शृङ्गार, करुणास्मृति आ शान्तिक संवाद

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ अनुराधा–गोपीनाथक प्रेम शृङ्गारक कथानक-बीज अछि; जातिगत विरोध बाधारूप स्थिति अछि; गंगेश–मालतीक विस्मृत कथा पूर्वकरुणाक स्मरण जगबैत अछि; अन्तिम सहमति आ आशीर्वाद शान्तिप्रधान समाधान बनबैत अछि। मुदा एहि रसान्विति केँ यांत्रिक एक-एक पात्रपर नहि थोपबाक चाही। मोहनक वंशजक उत्सवधुन आ ‘दुःखक कोनो छाया बिनु’क विधान परिवेशमे मङ्गलक भाव बढ़बैत अछि। करुणाक पूर्वस्मृति मेटाइत नहि, आ आनन्द ओकर विरुद्ध नव सम्भावनासँ उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण अध्याय शृङ्गारक स्वतन्त्र विस्तारसँ अधिक सामुदायिक शान्ति आ सामाजिक आशाक केन्द्रित रचना अछि।

संवादक भाषिक शक्ति आ अन्तरपाठीय न्याय

अनुराधा स्मृतिक राजनैतिक चयनक प्रश्न उठबैत छथि, माता सामाजिक जोखिमक भाषा बजैत छथि, पंडित भय स्वीकार करैत छथि, आ बूढ़बा नाम-परम्पराक उदाहरणसँ उत्तरदायित्वक प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। एहि आवाजसभक भिन्नता कथामे संवादात्मक तनाव आ सामाजिक मूल्य-संघर्ष बनबैत अछि। तथापि बूढ़बाक वाणी अन्ततः सबसँ बेसी अर्थनिर्धारक बनि जाइत अछि; अन्य सम्भावित मतसभक दीर्घ प्रत्युत्तर नहि अबैत। पूर्वकथाक नामसभकेँ वर्तमान निर्णयक प्रमाण-भण्डार बनबैत संवाद अन्तर्पाठीय न्याय-संरचना रचैत अछि, मुदा एहि नामसभक विशिष्ट जीवन-विवरण वर्तमान अध्यायमे पुनः खोलल नहि गेल।

कालविस्तार आ पीढ़ीगत कार्यकारण

शीलावतीसँ अनुराधा धरि पोतीक सम्बन्ध, मोहनसँ अनाम वंशज धरि सांगीतिक परम्परा, आ बूढ़बाक दीर्घ स्मृति —तीन पीढ़ीगत रेखा एकहि विवाहमे एकत्रित होइत अछि। एहि कथात्मक जालमे व्यक्ति मरैत छथि, संस्था बदलैत अछि, मुदा सीखनाइ स्थानान्तरित होइत अछि। तथापि सैकड़ों बरखक क्रमक प्रत्येक कड़ीक व्यक्तिगत संघर्ष वर्तमान अध्यायमे विस्तारसँ उपस्थित नहि। ‘दीर्घ परिवर्तन’ कथा-लोकक अवधारणा अछि, जकर सुगठित सांकेतिक प्रमाण विवाह-दृश्य अछि। एहि रूपमे अध्याय दीर्घकालीन सामाजिक इतिहासक पूर्ण वृत्तान्त नहि, ओकर संक्षिप्त निर्णायक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

लिखित अभिलेख बनाम मौखिक साक्ष्य : योजनाक प्रश्नक जाँच

वास्तविक कथामे गामक आँखि, कथास्मरण, बूढ़बाक गवाही आ पातपर नामक काव्यात्मक संकेत भेटैत अछि, मुदा विवादित लिखित दस्तावेज, परस्पर-विरोधी विवाहपत्र अथवा न्यायिक प्रमाण-विवादक कोनो दृश्य नहि। ताहि लेल ‘कागजक दावे पर प्रत्यक्ष गवाहीक जीत’ एहन तथ्यात्मक निष्कर्ष देब अनुचित। संगत अध्ययन ई अछि जे गीत अभिलेखक रूपक रचैत अछि आ गद्य परोक्ष तथा प्रत्यक्ष साक्षीक अर्थभेद प्रस्तुत करैत अछि।

काल्पनिक संसार आ ऐतिहासिक प्रमाणक सीमा

अध्यायमे बूढ़बा, पीपरक अनुष्ठान, नारिकेल पात पाठशाला, गंगेश–मालतीक कथा आ मोहनक वंशज एक विशिष्ट कथाजगतक अङ्ग छथि। एहि घटनाकेँ स्वतन्त्र ऐतिहासिक तथ्यक रूपमे स्वीकार कएल नहि जा सकैत, विशेषतः जखन अलौकिक स्मृतिरक्षक स्वयं कथा-संसारक मूल तत्त्व छथि। तथापि कथा जातिगत बहिष्कार, स्त्रीक स्मृति आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्नपर सांस्कृतिक चिन्तन सम्भव बनबैत अछि। आख्यानक ‘सत्य’ एतय सामाजिक नैतिकता आ संरचनात्मक सम्भावनाक स्तरपर मूल्यवान अछि; दस्तावेजी इतिहासक प्रामाणिकता प्रमाणित करबाक दावा नहि।

व्यक्तिक अभिलेखमे आनन्दक स्थान

बूढ़बाक अन्तिम वचन अनुराधा–गोपीनाथक प्रेमक कथाकेँ हुलासा आ जीवन्तीक नामक बराबर आदरसँ रखबाक आश्वासन दैत अछि, यद्यपि ई दुःखक बदला आनन्दक कथा अछि। एहि तुलनामे नामरक्षा केवल पीड़ितक मृत्योत्तर कर्तव्य नहि रहैत; जीवितक सम्मान आ सम्बन्धक सकारात्मक इतिहास सेहो बनैत अछि। ई मूल सांस्कृतिक संस्थाक कार्यक्षेत्र बढ़बैत अछि। तथापि स्मृतिमे बराबर आदर देबाक बूढ़बाक प्रतिज्ञा आ भविष्यक पीढ़ीसभद्वारा ओकर दीर्घ पालन दुनू अलग वस्तु छथि; वर्तमान अध्याय पहिल प्रस्तुत करैत अछि, दोसरक विस्तार भविष्यक कथा लेल छोड़ि दैत अछि।

निर्णय : उपलब्धि, सीमाबोध आ आगूक दिशा

‘विवाहक साक्षी’क उपलब्धि एहि बातमे अछि जे गंगेश–मालतीक विस्मरण-इतिहासकेँ अनुराधा–गोपीनाथक सार्वजनिक स्वीकृतिक नूतन निर्णयसँ जोड़ैत अछि। साझा पाठशाला, जातिगत भयक स्वीकार, बूढ़बाक दृष्टान्ताधारित प्रश्न, दुनू टोलाक तैयारी, साक्षी-गाछ लग विवाह आ ढोलपर उत्सवध्वनि—ई सभ घटनासभ मिलि स्मृति केँ सामाजिक परिवर्तनक क्रियाशील साधन बनबैत अछि। मुदा आलोचनात्मक सीमा सेहो स्पष्ट अछि: गीतक सात फेरा गद्यमे दृश्यरूपसँ नहि खुलैत, साक्षीक परोक्ष-प्रत्यक्ष अर्थ अलग अछि, अनुराधाक जाति मुख्य कथामे स्पष्ट नामांकित नहि, गोपीनाथक प्रत्यक्ष आवाज नहि, पिताक स्वीकृति द्रुत अछि, आ सामूहिक सर्वसम्मतिक अन्तिम दावा पर्याप्त विवाद-विस्तार बिनु अबैत अछि। निर्णय सशर्त सकारात्मक अछि: अध्याय नैतिक रूपसँ प्रभावी आ अन्तरपाठीय रूपसँ सघन, यद्यपि सामाजिक संघर्षक अनुभूतिगत जटिलता सीमित।

स्रोत-सत्यापन, पाठभेद आ अगिला अध्याय

प्राथमिक आधार : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७२] ‘विवाहक साक्षी’, अनुक्रमणिकानुसार पृ. २२९–२३२। मूलक आरम्भिक फकरा, ‘सात फेराक साक्षी’ लोकगीत, मुख्य कथाभाग आ ‘सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालिक प्रकृति’ शीर्षक अध्यायोत्तर टिप्पणी अलग-अलग पाठस्तर छथि। अध्यायोत्तर टिप्पणीकेँ रचनाकारक व्याख्यात्मक परापाठ मानल गेल, कथा-घटनाक स्वतन्त्र स्रोत नहि। अगिला समीक्षा-अध्याय [–७१] ‘महामारीक राति’ अछि, जतय व्यक्तिगतरूपेँ स्मरणक सीमा, सामूहिक पुकार आ महामारीक बीच नामरक्षाक विधि बदलैत अछि।

प्रकरण ३० | मूल अध्याय –७१ — महामारीक राति

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यास आधारित विस्तृत कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

पाठसीमा, कथासंरचना आ मूल प्रश्न

अध्याय [–७१] ‘महामारीक राति’ पूर्वकथाकालक एकटा निर्णायक सामाजिक-संस्थागत संकट प्रस्तुत करैत अछि। अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ पृष्ठ २३३ आ अगिला अध्याय [–७०]क आरम्भ पृष्ठ २३७ अछि; तेँ अध्यायक परास २३३–२३६ अनुक्रमणिका-आधारित अछि, उद्धरणसभक पृथक पृष्ठाङ्क नहि। मूल घटनाक क्रम अछि—अनुराधा–गोपीनाथक विवाहक दस बरख बाद अनाम रोगक खबर; उत्तरी छोरक परिवारमे मृत्यु; विमलाक प्रश्न; बूढ़बाक पुरान विधिक अपर्याप्तता-स्वीकार; वैद्यक उपचारात्मक प्रयास; सामूहिक नाम-पुकारक निर्माण; तीन मासक प्रकोप; आ स्मरण-विधानक स्थायी परिवर्तन। महामारीक संख्या नहि, प्रत्येक मृतकक अविस्मरणीय विशिष्टता—ई अध्यायक घोषित नैतिक केन्द्र अछि। तथापि अपनहि पाठमे मात्रा, प्रमाण, रोग-नियन्त्रण आ विशिष्टताक जे प्रश्न खुलैत अछि, तकरा समीक्षामे निरपेक्ष स्वीकृतिक बदला पृथक परीक्षण चाही।

आरम्भिक फकरा : देहक क्षति आ गीतक स्थायित्व

‘महामारी देह लेलक, गीत नहि’—एहि वाक्यमे देह आ गीत विपरीत कालिक नियतिक प्रतीक बनैत छथि। देह महामारीक अधीन अछि; गीत स्मृति आ सामूहिक स्वरक माध्यमे ओकरा पार करबाक आकाङ्क्षा बनैत अछि। ई चिकित्सकीय सफलता-सूत्र नहि, मृत्यु-सन्निकटक बीच सांस्कृतिक अस्तित्वक प्रतिज्ञा अछि। ‘जे राति सभ मिलि जागल, से भोर बचा लेलक’ मे राति-बिहानक रूपक जीवन-रक्षा आ शोक-निर्वाह दुनूकेँ एकत्रित करैत अछि। मुदा मुख्य कथा तीन मासमे जनसंख्याक एक-तिहाई क्षतिक उल्लेख करैत अछि; एहन त्रासदीक बीच ‘भोर बचा लेलक’क अर्थ सभ देह बचा लेनाइ नहि। इएह विरोधी परिमाणक संधान कएलापर वाक्यक करुण-व्यञ्जना प्रबल होइत अछि—भोर बचैत अछि, यद्यपि अनेक जीवित व्यक्ति ओहि भोर धरि नहि पहुँचैत।

‘जागल गामक राति’ : लोकगीतक रचनात्मक पूर्वध्वनि

अध्यायारम्भ लोकगीत ‘जागल गामक राति’क लोकधुन ‘जागरण-धुन’ निर्दिष्ट अछि। पहिल पद फकराक देह–गीत विभाजनकेँ विस्तार दैत अछि, दोसर पद घर-घर दीप, परस्पर हालपुछी आ मृतकक नामरक्षा जोड़ैत अछि।

तेसर पद मृत्यु-गनती आ कथा-स्मृतिक विपर्यास रचैत अछि; चौठा भाग थाकल भोरपर समाप्त होइत अछि। एहि गीतमे समष्टिगत ‘गाम’ विषय अछि; कोनो एक परिवारक संकुचित क्रन्दन नहि। ताहि लेल ई महामारीक मुख्य कथापूर्व भाव-सार, अथवा परिणामक अग्रिम घोषणा अछि। मुदा लोकगीतमे दीप जराक रोगीसभक सहायता करबाक व्यक्तिगत दृश्य जे सघन अछि, ओकर सम्पूर्ण वितान गद्यमे विस्तृत नहि। गीत द्वारा प्रस्तुत सामूहिक करुणानुभव आ गद्यक सीमित घटनाचयन अलग पाठस्तर छथि।

शीर्षकक एकवचन ‘राति’ आ तीन मासक आपदा

‘महामारीक राति’ शीर्षक एकटा रातिक निकट अनुभव दैत अछि, किन्तु मुख्य कथामे प्रकोप तीन मास चलैत अछि आ सामूहिक स्मरण प्रतिदिन भोरमे सम्पन्न होइत अछि। एक रातिक विस्तार सम्पूर्ण कालखंडक भावात्मक प्रतीक बनैत अछि। ई काल-संकोचक काव्ययुक्ति थिक, तिथि-विवरण नहि। कथावाचक लोकगीतक दीर्घ रात्रिकेँ व्यापक संकट-समयक नाम बनबैत छथि। एहि कारण आलोचक एकटा निश्चित भयानक रातिमे सभ घटना घटित भेल—एहन दृश्यमूलक भ्रम नहि रचत। महामारीक आरम्भ, रोजक मृत्यु आ तीन मास बादक परिणाम अलग-अलग कालखण्ड छथि; ‘राति’ ओकर करुणात्मक साझा छत बनि सकैत अछि।

प्रवेशक अनिश्चित सूचना : अफवाहसँ गामक द्वार धरि

रोग पहिने पूब दिशासँ ‘अफवाहक रूपमे’, फेर यात्री आ व्यापारीक कथासँ, अन्ततः गढ़ नारिकेलक द्वार लग अबैत अछि। एहि त्रिस्तरीय आगमनमे वस्तुगत आपदा पहिने भाषा, भयसूचना आ सामाजिक सम्पर्कक माध्यमे प्रवेश करैत अछि। समाचारक प्रसार आ रोगक प्रसार समान घटना नहि: कथावाचक दुनूकेँ एक गतिशील आरम्भिक अनुक्रममे रखैत छथि, मुदा संक्रमणक प्रमाणित मार्ग नहि निर्धारित करैत। व्यापारी वा यात्रिकेँ वास्तविक रोगवाहक ठहराएब मूल पाठक आशयसँ आगाँ जाएब होयत। आख्यानगत प्रभाव एतबे अछि जे गाम बाह्य जगतक खबरकेँ देरिसँ स्थानीय अनुभवक रूपमे पहचानैत अछि; पूर्वचेतावनी आ वास्तविक संकटक बीच दूरी तनाव रचैत अछि।

अनाम रोग, लक्षण आ चिकित्सकीय अनिर्णय

कथामे तेज बुखार, देहपर काली गाँठ आ प्रायः तीन दिनक भीतर मृत्यु वर्णित अछि। मुदा रोगक विशिष्ट नाम कथावाचक स्पष्ट नहि करैत छथि; पात्रसभ सेहो ओकर ठीक नाम नहि जनैत छथि। ताहि लेल ऐतिहासिक प्लेग अथवा कोनो खास रोगाणुक निश्चित पहचान करब अनुचित। लक्षणक समानता आ रोगनिदानक निर्णायक प्रमाण भिन्न वस्तु छथि। एतय अनामता स्वयं भयक साहित्यिक उपकरण अछि: परिचित लक्षणक भय, अज्ञात कारण आ त्वरित मृत्युक आशंका एक साथ अबैत अछि। रोगक अज्ञेयता कथाक कालिक अस्पष्टतासँ सेहो मेल खाइत अछि—ठीक वर्ष, चिकित्सा-परिस्थिति आ बाह्य प्रशासनक सन्दर्भ नहि देल गेल। ई सीमाकेँ दार्शनिक रहस्यक नामपर छिपाएब नहि चाही।

उत्तरी छोरक पहिल परिवार : सूक्ष्म दृश्यसँ सामूहिक क्षति

पहिल प्रभावित परिवार गामक उत्तरी छोरपर अछि; एक सप्ताहमे पाँच सदस्य मरैत छथि। कथावाचक एहि परिवारक व्यक्तिगत नाम, सम्बन्ध, आजीविका, उपचार वा अन्तिम कथन निर्दिष्ट नहि करैत। ‘पहिल शिकार’क सामूहिक नामांकन कथाक विनाश-गति देखबैत अछि, मुदा पाँच मृतककेँ पाठकीय रूपसँ अलग-अलग व्यक्ति बनएबाक अवसर कम दैत अछि। ई कमी विशेष अर्थवान अछि, किएक तँ पूरा अध्याय प्रत्येक नामक विलक्षणताक रक्षा करबाक आग्रह करैत अछि। कथनक आरम्भहि मृत्यु-समूहकेँ संख्या बनाबैत अछि; अन्तमे बूढ़बा संख्याक वर्चस्व अस्वीकार करैत छथि। ई विरोध पाठककेँ घटना आ पात्रक प्रतिनिधित्वक सीमा जाँचबाक अवसर दैत अछि।

सत्रह मृत्युक घोषणा : गणना आ संकटबोध

विमला बूढ़बाक लग कहैत छथि—‘एक सप्ताहमे सत्रह प्राण गेल।’ ई गामक संकटक एक स्थानीय संख्यात्मक सूचक अछि। पहिल परिवारक पाँच मृत्यु आ पछिला सत्रह मृत्यु बीच कालिक तथा समावेशनक सम्बन्ध पूरी तरह स्पष्ट नहि: सत्रहमे पाँच सम्मिलित छथि कि अलग, एकर स्वतन्त्र कथन नहि। समीक्षक ओहि दूनू आँकड़ाकेँ जोड़ि बाइस निश्चित मृत्यु घोषित नहि करत। संख्या विमलाक व्यावहारिक आपत्तिक आधार बनैत अछि—एतेक मृतकक कथा, गीत आ अनुष्ठानक समय कोना सुनिश्चित हुअय? एहि प्रश्नमे गणना अमानवीकरण नहि, करुणामूलक प्रशासनिक कठिनाइक बोधक साधन बनैत अछि। ताहि लेल अन्तिम ‘गिनती नहि करब’क उपदेशसँ ओकर सम्बन्ध विश्लेषणक प्रमुख चुनौती अछि।

दस बरखक दूरी : विवाहक उत्सवसँ महामारीक शोक

मूल कथामे महामारी अनुराधा आ गोपीनाथक विवाहक दस बरख बाद घटैत अछि। पूर्व अध्याय [−७२]मे आनन्दक विशेष धुनक साथ सार्वजनिक स्वीकृत विवाह सम्पन्न भेल छल; एहि अध्यायमे ओकरा विरुद्ध मृत्यु, भय आ नामरक्षाक अधिभार अबैत अछि। दोसर अध्याय पहिलक सामाजिक आशाकेँ पूर्णतः निष्फल नहि बनबैत, मुदा ओकर स्थिर सुखान्तक भ्रम तोड़ैत अछि। गाम नव समाज बना सकैत अछि, तैयो जैविक विपत्ति सँ अप्रभावित नहि होइत। आनन्दोत्तर आपदा कथाक क्रममे सघन भाव-प्रतिलोम रचैत अछि। एहि क्रमक कारण सुखक गीत केवल बीतल उत्सव नहि, पछिला जागरण-गीतक परोक्ष भावात्मक आधार सेहो बनैत अछि।

पीढ़ीक्रम : अनुराधाक बेटी विमला

विमला अनुराधाक बेटी आ वर्तमान अनुष्ठान-रक्षिका छथि। एहि स्पष्ट वंश-सम्बन्धसँ व्यक्तिगत प्रेमक पूर्व कथाक अगिला पीढ़ी सामाजिक उत्तरदायित्वक अग्रभागमे अबैत अछि। शीलावतीक नव संगीत-अनुष्ठान, अनुराधाक सार्वजनिक विवाह आ विमलाक सामूहिक नामपुकार—ई तीनू स्त्रीपीढ़ी एके प्रकारक कार्य नहि करैत। एक संस्था विकसित करैत छथि, एक सामाजिक सीमा पार करैत छथि, आ तेसर आपदामे संस्थाक नियम बदलैत छथि। ई परिवर्तन स्त्रीपात्रकेँ निष्क्रिय परम्परापालक नहि, सांस्कृतिक निर्णयक निर्माता बनबैत अछि। तथापि

विमलाक घरेलू स्थिति, अन्य सहकर्मी अथवा व्यक्तिगतरूपेँ निकटक सम्बन्धी मृत्यु पाठमे अलग सँ वर्णित नहि। हुनकर करुणा सार्वजनिक पदक मार्फत अधिक सुनाइत अछि।

अनुष्ठानक समयसंकट : अमावस्यासँ प्रतिदिन भोर

पुरान कबड्डी-सम्बद्ध नामरक्षा अमावस्याक आवर्तनपर आधारित छल। विमला कहैत छथि जे प्रतिमासक एहि अवकाशमे अचानक बढ़ैत मृत्युसभकेँ अलग कथा, धुन आ समय देब कठिन अछि। नूतन अनुष्ठान ‘हर भोर’ आरम्भ होइत अछि। अतः परिवर्तन केवल एकटा नामकेँ अनेक नामसँ बदलब नहि, अनुष्ठानक समय-संरचना बदलब सेहो अछि: विरल नियमित स्मरणसँ दैनिक आपातकालीन पुकार। एतय कालक दबाव संस्थागत नवाचारक प्रत्यक्ष कारण अछि। मुदा पुरान अमावस्या-प्रथा तत्काल बन्द भेल अथवा दुनू एकसाथ चलल—ई कथाभाग विस्तार नहि दैत; अन्तिम अनुच्छेद सामान्य समय आ संकटक दू विकल्पक सहअस्तित्व स्थापित करैत अछि।

व्यक्तिगत कथा आ धुनक व्यावहारिक सीमा

पूर्व अध्याय [–७३]मे मोहनक धुन-परम्परा प्रत्येक विशिष्ट व्यक्तिक जीवनभाव पकड़बाक उपक्रम छल। विमलाक प्रश्न ओहि आदर्शक सर्वाधिक कठिन परीक्षा अछि—प्रत्येक मृतक लेल ‘उचित धुन, उचित समय’ कोना दी? महामारी सृजनात्मक स्मरणक असाधारण श्रम-आवश्यकता उजागर करैत अछि। कथामे प्रत्येक नामक अलग धुन रचल गेल—एहन घटना नहि; उलटे ई व्यवहारिकरूपेँ असम्भव बुझायल गेल। एहि कारण सामूहिक पुकार संगीतपरम्पराक पूर्ण परित्याग नहि, अलग संसाधन आ समयवाला संकटक अनुकूलित विधि अछि। कथाकार भावात्मक सच्चाईकेँ विस्तारक परिमाणसँ अलग करबाक प्रयत्न करैत छथि। मुदा कला आ नामरक्षा बीचक पुरान करारमे एहि रूपान्तरणक मनोवैज्ञानिक लागत बिसरब उचित नहि।

बूढ़बाक मौन : सर्वज्ञ स्मृति-रक्षकक सीमा

विमलाक प्रश्न सुनि बूढ़बा ‘बहुत काल चुप’ रहैत छथि आ स्वीकार करैत छथि जे सैकड़ों बरखमे एहन परिस्थिति नहि देखलनि। एहि मौनक महत्त्व केवल दुःखक अभिव्यक्ति नहि; ई संस्थापक ज्ञानाधिकारक सीमा स्वीकृति थिक। बूढ़बा नामरक्षाक आदर्शगत स्थायित्व रखितहुँ ओकर वर्तमान विधिक अनुपयुक्तता घोषित करैत छथि। अध्याय [–७७]क मौन-संकेतक पृष्ठभूमिमे ई दृश्य बोलबाक पूर्व आवश्यक विचारकाल बनि सकैत अछि। मुदा ‘पहिल बेर’क कथनकेँ समस्त कथाविश्वक रोग-इतिहासक सार्वत्रिक तथ्य नहि, बूढ़बाक स्वयं अनुभववाचक कथन मानल चाही। ओ सर्वशक्तिमान समाधान देबाक बदला विमलाक संग नव उपाय सोचबाक तैयारी देखबैत छथि।

वैद्यक प्रवेश : उपचार आ स्मरणक समानान्तर क्रिया

नगरसँ आयल वृक्ष-वैद्यक शिष्य गामक वैद्य रूपमे प्रवेश करैत छथि। ओ रोगीसभकेँ अलग राखब, पानि उबालि पिआयब आ मृतकक वस्त्र-सामान जलएबाक उपायक सुझाव दैत छथि। एहि विवरणक कारण कथामे संस्कारक साथ भौतिक जीवन-रक्षाक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। बूढ़बा जतेक नाम बाँचबैत छथि, वैद्य ओतेक देह

बाँचएबाक प्रयास करैत छथि—दुनू कार्य परस्पर पूरक, एक-दोसराक स्थानापन्न नहि। इलाजक कारण कतेक मृत्यु टरल, कतेक परिवार बचल अथवा रोगक संचार-विज्ञान की छल, ओकर विस्तृत आ स्वतन्त्र तथ्य पाठमे नहि अछि। चिकित्सकीय दावाकेँ साहित्यिक प्रसंगक सीमामे राखब आवश्यक अछि; एकरा वर्तमान स्वास्थ्य-परामर्श नहि मानल जाए।

वृक्ष-वैद्यक शिष्य : पूर्व अध्यायसँ ज्ञानक वंशानुक्रम

अध्याय [–७४]मे पीपरक रोगक उपचार लेल नगरक वृक्ष-वैद्य आबैत छथि। वर्तमान वैद्य हुनक शिष्य कहल गेल छथि। एहि छोट सम्बन्धसँ कथाकार वैज्ञानिक जानकारिक एक आन्तरिक पीढ़ीगत सूत्र रचैत छथि। प्राचीन साक्षी-गाछक सुरक्षा लेल आयल व्यावहारिक ज्ञान आब मनुष्यक देहक संकटमे पुनः प्रयुक्त होइत अछि। तथापि वृक्षचिकित्सा आ मानवमहामारीक चिकित्सा एकहि विशिष्ट प्रशिक्षणक क्षेत्र छथि—एहन निष्कर्ष स्वतः नहि निकलैत। ‘शिष्य’ कहल गेल अछि, मुदा हुनकर चिकित्सकीय प्रशिक्षण, परीक्षण-विधि आ रोगनिदानक निश्चित पद्धति नहि विस्तारसँ भेटैत अछि। कथा वैज्ञानिक दृष्टिक सामाजिक प्रवेशक रूपक रचैत अछि, विशेषज्ञता-विधानक ऐतिहासिक दस्तावेज नहि।

रोग-कमीक कथन : सहसम्बन्ध आ कारणनिर्णय

कथावाचक कहैत छथि जे जे परिवार वैद्यक सुझाव अपनौलक, ओतय रोग कमजोर पड़ल। ई कथाक आन्तरिक परिणाम-दावा अछि, मुदा अलग-अलग परिवारक आकार, जोखिम, रोगक चरण, अन्य सम्पर्क आ मृत्यु-अनुपातक तुलना नहि देल गेल। ताहि लेल एहि वाक्यकेँ औषधिक विशिष्ट प्रभावक वैज्ञानिक परीक्षण नहि मानल जाए। नव्य-न्यायक सम्भावित ‘उपाधि’ इएह अछि जे रोगक तीव्रता कम होएबाक कारण अनेक भिन्न कारक भऽ सकैत छथि। उपन्यासक नैतिक प्रयोजन निष्क्रिय भयक बदला व्यवहारिक उपाय अपनएबाक प्रस्ताव अछि; तथापि वास्तविक कारण-कार्य सम्बन्धक प्रमाणक कठोरता अलग प्रश्न अछि। ‘उपाय अपनौलाक बाद’ आ ‘उपायक कारण’ बीचक भेद समीक्षा सुरक्षित रखैत अछि।

चिकित्सा-विधि आ सामूहिक जमघटक तनाव

एहि अध्यायमे एक दिशि रोगी सभकेँ अलग राखबाक सुझाव अछि, दोसर दिशि हर भोर जीवित बचल लोक पीपर लग जुटि सामूहिक नाम-पुकार करैत छथि। ई दुनू दृश्यक सहअस्तित्व सार्वजनिक स्वास्थ्य आ शोक-अनुष्ठानक व्यवहारिक तनाव उत्पन्न करैत अछि। रोगी उपस्थित होइत छलाह की नहि, लोकसभ बीच दूरी छल की नहि, सभाक समय संक्रमण-नियन्त्रणक नियम पालन होइत छल की नहि—ई विवरण मूल कथा नहि दैत। ताहि लेल समारोहकेँ निश्चित संक्रमणक कारण अथवा पूर्ण सुरक्षित व्यवस्था घोषित करब दुनू अनुचित। रचनात्मक आलोचना केन्द्रीय प्रश्न चिन्हित करैत अछि: जखन रोगक विरुद्ध अलगाव आवश्यक मानल गेल, तखन स्मरणक सामूहिकता केना संयोजित भेल? पाठ एहि महत्त्वपूर्ण व्यवहारिक सेतुकेँ खुलल छोड़ैत अछि।

भोरक सामूहिक स्वर : शोकक सार्वजनिक रूप

नव स्मरण प्रत्येक भोर पीपर लग होइत अछि। रातिमे मृत व्यक्तिसभक नाम एक स्वरमे पुकारल जाइत अछि। एहि समयचयनमे रात्रिक मृत्यु आ प्रभातक सार्वजनिक स्मरण एक पुनरावर्तित कथात्मक लय बनबैत अछि। किएक तँ घटनाक मुख्य प्रकरण संक्षिप्त अछि, एक दिनक सम्पूर्ण अनुष्ठानक दृश्य-विस्तार नहि देल गेल; पर ‘हर भोर’क आवृत्तिसँ अनेक दिनक संकट एक सामूहिक आदतक रूप ग्रहण करैत अछि। गीतक जागरण आ गद्यक भोरक समय भिन्न छथि—एतय भोरमे भोजनक वर्णन नहि; केवल सामूहिक पुकार अछि। ई सूक्ष्मता सुनिश्चित करैत अछि जे प्रतीकात्मक दीप, जागरण आ प्रातः-सभा तीनूकेँ अनायास एकहि दृश्य नहि बना देल जाए।

‘अमुक’क उदाहरण : विशिष्ट नाम आ अनाम नमूनाक विरोध

सामूहिक स्मरणक पाठमे उद्धृत प्रारूप अछि—‘अमुक, अमुकक बेटा; अमुक, अमुककेँ माए’। ई एक विधिक नमूना अछि; महामारीमे मृत वास्तविक व्यक्ति सभक नामक प्रकाशित सूची नहि। एतय विचित्र आलोचनात्मक तनाव अछि: कथा प्रत्येक नामक अपरिवर्तनीय विशिष्टता बतबैत अछि, मुदा पाठकसमक्ष अनुकरणीय पुकार अनाम स्थानापन्न शब्द ‘अमुक’क रूपमे उपस्थित अछि। प्रारूपक प्रयोग दोष नहि, किएक तँ समुदाय वास्तविक अवसरपर नाम बदलि कऽ पुकारि सकैत अछि; तथापि विशिष्ट मृतकक व्यक्तित्व पाठकीय अनुभूतिमे अदृश्य रहैत अछि। सामूहिकता कथाक विषय बनैत अछि, मुदा प्रतिनिधि मृतकक स्वतन्त्र मानवीय कथा खोलबाक अवसर कम पबैत अछि।

‘लम्बा, एकाकी कथा’ बनाम ‘संक्षिप्त, सामूहिक पुकार’

बूढ़बाक मूल तर्क अछि जे प्रेमक गहराइ शब्दक संख्यासँ नहि नापल जाइत। एहि कथनमे स्मरणक दीर्घता आ सम्मानक वास्तविकता अलग कएल जाइत अछि। संकटमे छोट पुकारकेँ नैतिक निकृष्टता नहि मानल जाए—ई अध्यायक दयाशील विचार अछि। मुदा ‘ओतबे शक्तिशाली’क मापनक कसौटी अस्पष्ट अछि। शक्तिशाली कोन अर्थमे—उपस्थित शोकाकुल लोकक सान्त्वना, मृतकक पहचान, संस्थाक निरन्तरता, अथवा सार्वजनिक स्मृति? कथा परिणामक भावात्मक प्रभाव घोषित करैत अछि, अनुभवमूलक तुलनात्मक परीक्षा नहि। एहि कारण छोट पुकारक मूल्यकेँ स्वीकारि सभ दीर्घ जीवनकथाक विवरणक अभिलेखीय आवश्यकता समाप्त मानब एक असिद्ध छलाँग होयत।

संख्या आ नामक दार्शनिक संघर्ष

महामारीक अन्तमे विमला ‘हजारो, शायद’ नामक अनुमान करैत छथि। बूढ़बा कहैत छथि जे ओ नहि गनने छथि आ कहियो नहि गनताह, कारण ‘गिनतीक गुलाम’ बनबासँ प्रत्येक नामक विलक्षणता हराएत। ई चेतावनी मृतककेँ अमानवीय कुल-आँकड़ामे घटा देबाक विरुद्ध अछि। मुदा संख्या आ नाम अनिवार्य विरोधी नहि। मरणक गणना संसाधन, क्षतिक परिमाण आ सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रमाण बनि सकैत अछि, जखन नाम मानवीय विशिष्टता बचबैत अछि। विमला स्वयं सत्रहक संख्या लेने चिन्ता करैत छथि। तेँ अध्यायक आरम्भिक गणना-

आवश्यकता आ अन्तिम गणना-अस्वीकार बीच वैचारिक तनाव अछि, जकरा भावोच्छ्वासद्वारा समाप्त नहि मानल जाए।

एक-तिहाई जनसंख्या : विशालता आ प्रमाण-अनिश्चितता

कथावाचक तीन मासक महामारीमे ‘गामक जनसंख्याक एक-तिहाई भाग’ समाप्त होएबाक निर्णयात्मक वाक्य दैत छथि। ई अनुपात महाविनाशक प्रभाव बनबैत अछि। मुदा गामक कुल जनसंख्या, परिवार-गणना अथवा मृत्युलेखाक स्वतन्त्र संख्या नहि अछि। फेर बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे ओ गिनती नहि करैत छथि। एहि कारण कथावाचकक अनुपात आ स्मृति-रक्षकक गणना-त्याग दूनू भिन्न ज्ञान-स्रोत छथि; तकर समन्वय पाठ नहि करैत। एक-तिहाई कथाजगतक कथावाचकीय दावा अछि, बाह्य ऐतिहासिक सांख्यिकी नहि। ‘हजारो’ विमलाक अनुमान अछि, स्थापित आँकड़ा नहि। दूनूकेँ गुणा-भाग कऽ गामक आबादी निकालब स्रोतविरुद्ध होयत।

जाति आ उमरपर ‘बिनु भेदक’ आ सामाजिक असमानता

कथावाचक मृत्यु ‘सभटा टोलासँ, सभटा उमरसँ, बिनु भेदक’ कहैत छथि। एतय रोग मनुष्यक सामाजिक विभाजनकेँ नैतिक रूपसँ अस्वीकार करैत देखाइत अछि। मुदा ‘सभ वर्ग प्रभावित’ आ ‘सभ वर्गक जोखिम समान’ एक नहि। किछु समुदायक पानी, घर, उपचार, श्रम अथवा सम्पर्कक भिन्न परिस्थिति एतय उघाड़ल नहि गेल। ताहि लेल महामारीक नैतिक सार्वभौमिकता वास्तविक असमानताक सम्भावना समाप्त नहि करैत। एहि पंक्तिसँ सामाजिक एकता प्रबल बनैत अछि, पर कतेक गरीब, दलित, स्त्री, बच्चा अथवा वृद्ध अलग-अलगरूपेँ पीड़ित भेलाह, तकर साक्ष्य अनुपस्थित अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि एहि अनुपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि, अनुमानसँ उत्तर नहि भरैत।

जागरण-गीत आ वास्तविक शोकक प्रतिनिधित्व

गीतमे घर-घर दीप, हाथ नहि छूटब, ‘डरकेँ दीपसँ हारल’ आ गाम फेर बसबाक स्वर अछि। गद्यमे पहिल परिवारक पाँच मृत्यु, सत्रह प्राणक क्षति आ तीन मासक त्रासदी अछि। गीत करुण अवस्थाकेँ आशावादी सामुदायिक आत्मकथनमे रूपान्तरित करैत अछि। एहिमे परस्पर-समर्थनक मूल्य अछि, मुदा शोकक अव्यवस्थित आवाज, एकाकी परिवारक भय अथवा असहाय क्रोधक स्वतन्त्र गीत कम सुनाइत अछि। कथाकार आशाक ध्वनि प्रधान करैत छथि; आलोचना एहि चयनकेँ चिन्हित कऽ सकैत अछि बिनु आशाकेँ अविश्वसनीय कहने। जीवित बाँचब आ स्मृति बाँचब अलग विजय छथि; कथामे पहिल अपूर्ण अछि, दोसरक निष्ठा सबल देखाओल गेल अछि।

मृत्यु आ स्मरणक नैतिक औचित्य

कथामे मृतकक वस्त्र-सामान नष्ट करबाक सुझाव आ मृतकक नाम सुरक्षित रखबाक अनुष्ठान एक साथ उपस्थित अछि। दुनूकेँ दार्शनिक विरोध नहि मानल जाए; भौतिक वस्तु सँ संक्रमणक भयक कथात्मक व्यवस्था आ शब्दद्वारा भावात्मक संरक्षण अलग उद्देश्यमूलक क्रिया छथि। तथापि वस्तुसभ मृत व्यक्तिक निजी इतिहासक वाहक सेहो भऽ सकैत छथि। जखन कथामे मृतकक व्यक्तिगत वस्तुक नाशक प्रसंग अबैत अछि, तखन की नाम-पुकार ओहि सम्भावित वस्तुस्मृतिक सम्पूर्ण स्थान लऽ सकैत अछि? पाठ एकर प्रत्यक्ष उत्तर नहि दैत। एहि

अनुत्तरित प्रश्नसँ स्मृति वस्तु, कथा, संगीत आ नामक बीच जटिल सम्बन्धमे खुलैत अछि। केवल आध्यात्मिक स्मृति पर्याप्त अछि—एहन निश्चय कएलासँ भौतिक इतिहासक सम्भावित क्षति ढाँपल जा सकैत अछि।

नाम-पुकारक व्याकरण : आत्मीय सम्बन्धक द्वि-चिह्न

अनुष्ठानिक उदाहरणमे केवल व्यक्तिनाम नहि, ‘अमुकक बेटा’ आ ‘अमुककेँ माए’ जकाँ सम्बन्धसूचक पद सेहो अछि। ई रचना व्यक्ति केँ समाजसँ पूर्ण अलग अनाम अणु नहि बनबैत; ओ पारिवारिक नाताक भीतर पहिचानल जाइत अछि। मुदा प्रत्येक जीवन केवल बेटा, माए वा कुटुम्बक भूमिका नहि; अविवाहित, निराश्रित, घुमन्तु वा परिवारसँ तिरस्कृत व्यक्तिक नाम कोना पुकारल जाएत, पाठ एतय स्पष्ट नहि करैत। एहि कारण सम्बन्धसूचक सूत्र सामाजिक आत्मीयता दैत अछि, संगहि परिवार-केन्द्रित पहचानक सीमाकेँ सेहो उपस्थित करैत अछि। समीक्षाक कार्य एहि रिक्तिमे अन्य पात्रक नाम गढ़ब नहि, अनुष्ठानक समावेशनक शर्त जाँचब अछि।

पीपरक सार्वजनिक स्थल : जीवनक जोखिम आ सांस्कृतिक केन्द्र

पहिने विवाहक उत्सव पीपरक साक्षी-गाछ लग भेल छल; आब संकटग्रस्त बाँचल लोक ओहि ठाम स्मरण लेल जुटैत छथि। एकहि स्थल आनन्द आ मृत्यु दुनूक सामुदायिक संस्कारक केन्द्र बनैत अछि। पीपर एहि अर्थमे सामाजिक स्मृतिक दृश्य एंकर थिक, मुदा ओकरा रोगनियन्त्रणक स्वतः सुरक्षित स्थान नहि कहल जा सकैत। गाछक पूर्व इतिहास, बूढ़बाक उपस्थिति आ विमलाक विधि मिलि ‘स्थानक निरन्तरता’ रचैत अछि—समय बदलैत अछि, गामक सामुदायिक अभिसरणक केन्द्र स्थिर रहैत अछि। महामारीमे लोक कोनो एक संरक्षक केन्द्रपर विश्वास रखैत छथि, ई सांस्कृतिक आधार अछि; तकर कारण वैज्ञानिक सावधानी गौण भऽ गेल—एहन परिणाम मुख्य पाठ अनिवार्य नहि करैत।

कथनकालक घनत्व : एक सप्ताह, तीन मास आ शताब्दी

कथावाचक एक छोट अध्यायमे दस बरखक विवाहोत्तर दूरी, एक सप्ताहक पहिल मृत्यु, एक सप्ताहक सत्रह मृत्यु, तीन दिनक रोग-गति आ तीन मासक महामारी समेटि दैत छथि। बूढ़बाक ‘सैकड़ों बरख’ एहि सीमित अवधिक पृष्ठभूमिमे स्थापित अछि। एतय ऐतिहासिक दीर्घता आ तात्कालिक प्राणसंकटक कालमान परस्पर धक्का खाइत अछि। कथानकक दृश्यात्मक विस्तार विमला–बूढ़बाक संवादमे संकुचित अछि; अधिकांश मृत्यु आ तीन मासक संघर्ष कथावाचकीय सारांशमे जाएत। ई ‘दृश्य–सारांश’क असमान गति महामारीक विशालता सम्प्रेषित करैत अछि, किन्तु व्यक्तिगत जीवनक सूक्ष्म अनुभव लेल बहुत कम अवकाश छोड़ैत अछि।

आवृत्ति-विधान : जे प्रत्येक भोर घटैत अछि

‘हर भोर’क एक कथन अनेक दोहरायल अनुष्ठानक प्रतिनिधि बनैत अछि। आख्यानशास्त्रीय भाषामे एक बार कहि बहुबार घटल घटनाक विधानक रूप देखल जा सकैत अछि। एहि प्रयोगसँ कथा बिना प्रत्येक दिनक विस्तृत दृश्य देने तीन मासक संस्थागत निरन्तरता देखबैत अछि। मुदा ‘हर भोर’क आदर्शीकृत आवर्तनक बीच कोनो दिन अनुष्ठान बाधित भेल, शोकाकुल लोक नहि जुटि सकल, नाम छुटल अथवा गलती सँ उच्चारित भेल—ई सम्भावित व्यवधान कथा नहि उघाड़ैत। फलतः आवृत्तिक सुगमता अनुष्ठानक श्रमसाध्य कठिनाइकेँ किछु अस्पष्ट

बनबैत अछि। सांस्कृतिक परम्परा वास्तविक निष्पादनक विविधतासँ बनैत अछि; कथावाचक ओकर आदर्श नमूना दैत छथि।

विमलाक प्रश्नक नाटकीयता

विमलाक प्रत्यक्ष प्रश्नमे करुणा आ संस्थागत ज्ञान एकजुट अछि: मृतकक कथा, उचित धुन आ उचित समयक एक साथ मांग। ओ सिद्धान्तक मनमोहक परिभाषा नहि, समय-व्यवस्थाक ठोस संकट सामने अनैत छथि। एहि कारण अध्यायक मुख्य नाटकीय संघर्ष बीमारीसँ लड़बाक शारीरिक दृश्य मात्र नहि, अभिलेखी विधिक सीमापर सेहो अछि। विमलाक प्रश्नमे प्रचलित व्यवस्था अपन उद्देश्यमे निष्ठावान रहितहुँ संकटमे विफल भऽ सकबाक बोध अछि। बूढ़बाक उत्तर एहि आपत्तिक सम्मान करैत अछि। ई दृश्य पूर्ववर्ती अध्यायसभमे शास्त्रार्थक प्रश्नोत्तर-पद्धतिक एक ग्राम्य सामाजिक रूप बनैत अछि; ताहि लेल नव्य-न्यायक औजार यहाँ तर्कक विन्यास जाँचबाक लेल उपयोगी, पात्रक संस्कृतज्ञता सिद्ध करबाक लेल नहि।

बूढ़बाक स्वीकारोक्ति : संस्था अपन संशोधन स्वीकारैत अछि

बूढ़बा ई नहि कहैत छथि जे मृतक कम छथि अथवा पुरान अमावस्या-विधानक अवश्य पालन हुअय। उलटे ओ ‘पुरान विधि’ एहि प्रकोप लेल न बनल होएबाक स्वीकृति दैत छथि। ई संस्थागत आत्मसमालोचना थिक: परम्पराक उद्देश्य टिकाऊ हो सकैत अछि, मुदा ओकर प्रक्रियात्मक साधन परिस्थिति-निर्भर। एहि विभाजनसँ परम्परा अन्ध रूढ़ि नहि बनैत। तखन प्रश्न उठैत अछि—अधिकार ककरा भेटल जे अनुष्ठान बदलल जाय? कथा विमला आ बूढ़बाक संयुक्त रचनाक उल्लेख करैत अछि, ग्रामसभा, विरोध अथवा अन्य अनुष्ठान-रक्षकक मत विस्तारसँ नहि। एहि कारण परिवर्तनक नैतिकता स्पष्ट, संस्थागत प्रतिनिधित्वक प्रक्रिया संक्षिप्त अछि।

‘सामूहिक स्मरण’ नामकरणक कार्य

नव विधिक नाम कथामे स्पष्ट अछि—‘सामूहिक स्मरण’। नामकरण केवल शब्दक सुविधा नहि; ई संकटक तात्कालिक क्रियाकेँ पहचानयोग्य सामाजिक संस्थामे बदलैत अछि। दैनिक जुटान, एक स्वरमे पुकार, व्यक्तिगत कथा-विस्तारक विराम आ पूर्ण आदर—एहि चारि घटकसँ नव विधिक रूपरेखा बनैत अछि। अन्तमे ई अस्थायी उपाय स्थायी विकल्प घोषित होइत अछि। एहि संरचनाक कारण अध्याय नूतन विधिक ‘उत्पत्ति-कथा’ बनैत अछि। कृतिक व्यापक स्मृति-महाकथामे एक-एक संस्था विपत्तिक उत्तरस्वरूप बनैत अछि। मुदा संस्था बनेबाक समयक निर्णय, दस्तावेजी नियम अथवा लोकमतक विरोधक स्वतन्त्र वृत्तान्त पाठमे नहि अछि।

आपत्कालीन संक्षिप्तता आ गरिमाक कसौटी

विमलाक योजना व्यक्तिगत कथा पूर्णरूपेँ छोड़ि देनाइ नहि; ‘व्यक्तिगत कथाक विस्तारक बिना, मुदा पूर्ण आदरक संग’ नाम-पुकार अछि। एहि ‘बिना’ आ ‘संग’क भेदमे नैतिक सूक्ष्मता अछि। संक्षिप्त रूप विस्तृत जीवनचरितक तत्काल स्थान लेबैत अछि, मृतकक अस्तित्वकेँ रद्द नहि करैत। मुदा की नामक अतिरिक्त अतीत बादमे लिखल अथवा कहियो फेर स्मरण कएल जाएत? वर्तमान अध्याय ई विवरण नहि दैत। एतय आपातकालीन संक्षेपक उचित औचित्य आ ऐतिहासिक विस्तृत अभिलेखनक सम्भावित अपूरणीय हानि एक संग

देखबाक चाही। कविता कहैत अछि प्रत्येक देहसँ एक कथा; कथाभाग कहैत अछि संकटमे ओ कथा विस्तारसँ कहल नहि जा सकल—यही अन्तर मूल्यांकनक केन्द्र अछि।

व्यक्तिगत दुःखक जगह सामूहिक शोक : प्रतिनिधित्वक लागत

महामारीक तीन मासमे गामक एक-तिहाई जनसंख्या नष्ट होइत अछि, मुदा कोनो एक मृत व्यक्तिक जीवनवृत्त कथा-केन्द्र नहि बनैत। विमला, बूढ़बा आ वैद्य प्रमुख क्रियाशील आवाज छथि; मृतक सभ प्रायः अनाम सामूहिक उपस्थितिक रूपमे छथि। एहि कथा-वितरणसँ ‘समुदायक संकट’ अग्रभागमे अबैत अछि, मुदा ‘विशिष्ट व्यक्ति बचब’क घोषणाक विपरीत एक पाठमूलक रिक्ति रहल अछि। पाठक संख्याक दारुणता बुझैत अछि, किछु निजी शोकक अप्रत्याशित दृश्य नहि। एहि सीमा कैं केवल कथाकारक असंवेदनशीलता कहब उचित नहि; विशाल महाकथात्मक कालावधिक संक्षेप एक शैलीगत कारण हो सकैत अछि। मुदा घटना-पैघता आ व्यक्तिक सम्यक् चित्रणक अन्तर दर्ज रहबाक चाही।

वैद्यक नामहीनता आ श्रमक दृश्यता

गामक वैद्यक नाम कथामे नहि देल गेल अछि, जखन हुनक हस्तक्षेप जीवनरक्षाक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि। वृक्ष-वैद्यक शिष्य होएबाक सम्बन्ध जरूर अछि, मुदा उपचार करनिहारक सामाजिक पहचान, प्रशिक्षण आ निरन्तर श्रमक प्रत्यक्ष विवरण सीमित अछि। एहन नामहीन पात्र रोचक विरोध उत्पन्न करैत अछि: एतय कृति नामक गरिमा बचबैत अछि, मुदा नव उपाय सुझबनिहार सहयोगीक नाम प्रकाशित नहि करैत। आलोचना एहि विरोधक आधारपर चिकित्सकक काल्पनिक व्यक्तिचरित्र नहि जोड़त। ई मात्र पूछत जे नामरक्षाक मूल्य-विधानमे जीवित, श्रम करैत, अनाम लोककैं कतेक कथात्मक स्थान भेटैत अछि।

जनस्वास्थ्य आ सामाजिक करुणा : भिन्न सफलता-मापक

आइसोलेशन, उबालल पानी आ वस्त्रनाशक कथित उपाय रोगक विरुद्ध व्यवहारगत हस्तक्षेप छथि। दूसरी दिस नाम-पुकार मृतकक सामाजिक पहिचान आ बाँचल लोकक शोक-साझेदारी सँ सम्बन्धित अछि। एकर प्रभाव-मान अलग अछि: उपचारक सफलता जीवित बचबाक सम्भावनासँ, स्मरणक सफलता गरिमा आ सम्बन्धक संरक्षणसँ जाँचल जा सकैत अछि। पाठ अपन चिकित्सा-कारणक दावे वैज्ञानिक मात्रामे सिद्ध नहि करैत, आ नूतन अनुष्ठानक प्रभावकैं नैतिक भाषा देबैत अछि। ई दूनू भिन्न मापक मिलाबि ‘स्मरणसँ महामारी थमल’ कहब गलत। अध्यायक परिपक्व अर्थ एहि भेदमे अछि जे रोग सभ देह नहि बचय दैत, मुदा लोक आपसी उत्तरदायित्व छोड़बाक बाध्य नहि छथि।

प्रेमक मापनक अस्वीकार : दार्शनिक अवकाश

बूढ़बाक कथन ‘प्रेमक गहराइ शब्दक संख्यासँ नहि नापल जाइत’ संवेदनशील नैतिक सूत्र अछि। ई प्रश्न उठैत अछि जे जखन दैनन्दिन संकट लम्बा पाठक अवसर नहि दैत, तखन संक्षिप्त सामूहिक स्वर मृतकक प्रति अपमान किएक मानल जाओ? कथा कहैत अछि—नहि। पर ‘शब्दक संख्या’ आ ‘नामक संख्या’ बीच महत्त्वपूर्ण भेद अछि। पहिल कथाक विस्तारक परिमाण, दोसर मृतकक गणना। एकरा एकहि वैचारिक अस्वीकृतिमे मिलाबि देने

सामुदायिक नियोजनक प्रश्न छूटि सकैत अछि। बूढ़बाक दयामूलक सूत्र एकटा अनुष्ठानिक औचित्य देलक; ओ गणनाक प्रत्येक सम्भावित प्रयोजनक सर्वमान्य खण्डन नहि अछि।

‘गिनतीक गुलाम’ : उपमानक भावात्मक प्रहार

बूढ़बाक ‘गिनतीक गुलाम’ वाक्यांश मात्र गणना-विरोध नहि, मनुष्यकेँ सूची-संख्या बनाय देबाक आशङ्काक तीव्र भाषिक रूप अछि। ‘गुलाम’ शब्द गणना-कर्मकेँ नैतिक अधीनताक प्रतीक बनबैत अछि। मुदा विमला एक सप्ताहक सत्रह मृत्युक तथ्यक बिना अनुष्ठानक संकट स्पष्ट नहि कऽ सकैत छलि। कथा आरम्भमे गणनाक उपयोग करैत अछि आ अन्तमे ओकर सम्भावित प्रभुत्वक विरोध। एहि द्वैतमे अधिक संगत अर्थ ई हो सकैत अछि जे संख्या स्मृतिपर शासन नहि करय, न कि सार्वजनिक लेखा असम्भव हो। एकरा स्पष्ट विवेचनात्मक सम्भावना मानल जाए—बूढ़बाक मूल वचनक निर्दिष्ट तात्पर्य रूपमे अनिवार्य आरोपित नहि।

नव्य-न्यायीय प्रमाणपरीक्षा : संख्या, विशिष्टता, व्याप्ति

ई अध्याय विमलाक सत्रह मृत्युक कथन, कथावाचकक एक-तिहाई जनक्षति आ बूढ़बाक अगणना तीन भिन्न ज्ञान-स्थितिमे राखैत अछि। विमलाक संख्या पात्र-वचन अछि; एक-तिहाई सर्वज्ञ कथावाचकक प्रस्तुत प्रमाणित कथ्य; बूढ़बाक अगणना अपन स्मरण-नीतिक घोषणा अछि। ई तीनू एकहि प्रत्यक्ष गणनाक अलग रिपोर्ट नहि। यदि कोनो तर्क कहय—‘गणना करबासँ व्यक्तिक विशिष्टता अवश्य लुप्त होइत अछि’—तखन साध्य सामान्यीकृत अछि आ हेतु केवल संख्याक प्रयोग। एहि अनुमानक व्याप्ति स्पष्ट नहि, कारण नामसहित गणना सम्भव होएबाक वैचारिक विकल्प बचैत अछि। आलोचक एहन उपाधि-प्रश्नसँ पाठक नैतिक वचनकेँ सूक्ष्म करैत अछि, ओकर मानवीय गरिमा घटबैत नहि।

पहचानक अवच्छेदक : नाम व्यक्तिक सम्पूर्ण जीवन नहि

बूढ़बा प्रत्येक नामकेँ अद्वितीय स्थान देबाक दावा करैत छथि। मुदा व्यक्तिक विशिष्टता केवल नामक ध्वनिसँ निर्धारित नहि; समान नामवला अनेक लोक, नाता, स्थान, अनुभव आ जीवनीक भिन्नता आवश्यक भऽ सकैत अछि। एहि कथाक संक्षिप्त पुकारमे ‘अमुकक बेटा’ अथवा ‘अमुककेँ माए’ जकाँ सम्बन्ध सूचक होएब एहि कठिनाइक प्रारम्भिक उत्तर बनैत अछि। तथापि विशिष्टता निश्चित करबाक पूर्ण नियम पाठमे नहि। नव्य-न्यायीय अर्थेँ लक्ष्यव्यक्तिक परिसीमा कोन धर्मसँ निर्धारित होयत—नाम, सम्बन्ध अथवा स्मृतिवृत्तान्त—ई खुलल प्रश्न अछि। एकरा अनिर्णीत माननाइ कथाक प्रेममूलक आदर्शकेँ अस्वीकृत करनाइ नहि, बल्कि ओकर ज्ञानमीमांसक संरचना खोलब अछि।

रसान्विति : करुणक अधिभार आ शान्तिक प्रतिज्ञा

प्रथम परिवारक मृत्यु, विमलाक आँसू आ बूढ़बाक मौन करुणभावक प्रत्यक्ष बीज छथि। लोकगीतक थाकल भोर, दीप आ सामूहिक स्वर दुःखमे परस्पर-आश्रयक शान्त प्रत्याशा जगबैत अछि। वीभत्स अथवा भयक पूर्ण बाह्य दृश्य रचना नहि करैत; काली गाँठक लक्षण संकेत दैत अछि, विस्तृत शरीर-विनाशक वर्णन नहि। करुणक गहिराइ पात्रक निजी अन्तिम संवादसँ नहि, संख्या आ गामक व्यापक विघटनसँ अबैत अछि। एहि कारण अध्याय

सामूहिक करुणक कविता अधिक अछि, एक मृतकक विस्तृत शोक-कथा कम। ‘भोर’क प्रतीक अन्तिम पुनर्जन्मक निश्चित परिणाम नहि, विध्वंसक बीच जीबैत रहबाक मनोभावनात्मक आकाङ्क्षा अछि।

ध्वनि, दीप आ अमावस्याक परिवर्तन

पूर्व अध्यायसभमे अमावस्या धुन, कबड्डी आ नाम-बचाओ अनुष्ठानसँ जुड़ल छल; एहि अध्यायमे संकटमे हर भोरक सामूहिक कण्ठ केन्द्रमे अबैत अछि। अन्हार बनाम दीपक बिम्ब लोकगीतमे आ आह्वान बनाम मौनक बिम्ब गद्यमे पुनः अर्थ पबैत अछि। ई ध्वन्यात्मक विपर्यास अछि: जे नाम पुकारल जाइत अछि, ओकर जीवन समाप्त भऽ गेल, मुदा उच्चारण सामाजिक सम्बन्ध नवीनीकृत करैत अछि। अध्याय शीर्षकक राति आ अनुष्ठानक भोर एक ‘मृत्यु–स्मरण’ कालचक्र रचैत अछि। मुदा मूलमे किसी विशिष्ट सांगीतिक धुनक राग, ताल, वाद्य अथवा आवृत्ति एहि दैनिक पुकारक साथ निर्दिष्ट नहि; पूर्वक मोहन-परम्पराक आधारपर नव वाद्यघटना कल्पना नहि करब उचित।

सामूहिक स्मरण आ एकल स्मृतिक परस्पर-पूरकता

अन्तिम अनुच्छेद सामान्य समयमे व्यक्तिगत कथा आ संकटक समयमे सामूहिक पुकार दुनू रूपकेँ स्थायी विकल्प मानैत अछि। एहि विधानमे नव विधि पुरानकेँ मिटबैत नहि; भिन्न समय-आवश्यकता लेल दू समुचित मार्ग बनबैत अछि। एतय परम्पराक लचक कथाक सकारात्मक निष्कर्ष अछि। मुदा सम्पूर्ण जीवनीक यथार्थ कथन आ नाममात्रक पुकारक अभिलेखीय परिणाम अलग रहत। कोन नाम बादमे विस्तृत कथामे फेर सँ अबैत अछि, ई वर्तमान अध्याय स्पष्ट नहि दैत। अतः पुरान आ नव विधिक सहअस्तित्वकेँ सांस्कृतिक निर्णय मानल जाए, प्रत्येक विशिष्ट नामक सम्पूर्ण जानकारीक उपलब्धता घोषित नहि।

वंशानुक्रम आ अगिला वृक्षारोपणक पूर्वच्छाया

अध्याय [−७०] ‘चन्ना गाछीक रोपाई’ महामारीक बादक सामूहिक स्मरणकेँ भौतिक वृक्षारोपणसँ जोड़ैत अछि। वर्तमान अध्याय पढ़ैत काल पाठक आगूक एहि परिवर्तनक पूर्वसंकेत देखि सकैत छथि, मुदा भविष्यक घटना वर्तमान अध्यायमे स्वतः घटि गेल नहि। अध्याय [−७१]मे नाम आ स्वर प्रधान छथि; [−७०]मे स्मृतिक धरतीपर चिह्न छोड़बाक प्रस्ताव अबैत अछि। एहि क्रममे स्मृति शब्दसँ सामूहिक ध्वनि, आ ध्वनिसँ भूगोलक सम्भावना बनबैत अछि। पूर्वकथा नूतन सांस्कृतिक संस्थासभक उत्पत्ति शृंखलाबद्ध करैत अछि। तथापि प्रत्येक संस्थाक ऐतिहासिक अस्तित्व बाह्य शोधक बिना कथाजगतहि धरि सीमित मानल जाय।

अन्तर्विरोधक लेखा : समाधान आ शेष प्रश्न

एहि अध्यायक प्रमुख आलोचनात्मक तनाव सभ स्पष्ट अछि। पहिल, सत्रह मृत्युक गणनाक प्रयोग करितहुँ अन्तमे गणनाक सामान्य अस्वीकार। दोसर, नामक अद्वितीयताक दृढ़ घोषणा करितहुँ महामारीमे मृतकक वास्तविक व्यक्तिगत नामक अनुपस्थिति। तेसर, रोगी अलग राखबाक उपायक साथ प्रतिदिन सार्वजनिक जमघटक आयोजन, जकर परस्पर सावधानीक विवरण नहि। चारिम, ‘सभटा टोलासँ, बिनु भेदक’क सांकेतिक सार्वभौमिकता आ समुदायवार भिन्न क्षतिक अपर्याप्त प्रमाण। पाँचम, लोकगीतक ‘हर देहक संग एक कथा’ आ

मुख्य कथाक व्यक्तिगत कथाविस्तार रोकबाक आवश्यकता। ई सभकेँ समान प्रकारक तथ्यगत भूल नहि कहल जएबाक चाही: किछु नैतिक तनाव, किछु कथात्मक संक्षेप, किछु प्रमाणगत रिक्ति आ किछु व्यवहारिक अनिर्णय छथि।

निर्णायक आलोचनात्मक निर्णय : विधिक परिवर्तनक मूल्य

‘महामारीक राति’ त्रयीक सांस्कृतिक-उत्पत्ति कथामे एक प्रभावकारी मोड़ अछि। रोगक अनाम भय, छोट परिवारसँ गामव्यापी मृत्यु, विमलाक प्रश्न, बूढ़बाक आत्मसंशोधन, वैद्यक प्रयत्न आ भोरक सामूहिक पुकार—ई श्रृंखला व्यक्तिक सम्मानक संस्थागत कठिनाइ सामने अनैत अछि। प्रकरणक उपलब्धि ई अछि जे स्मरणकेँ शब्दक परिमाणसँ अलग नैतिक जिम्मेदारी बनबैत अछि आ संकटमे सामूहिक शोकक वैकल्पिक विधि सुझबैत अछि। सीमा ई अछि जे कथानक महाविनाशकेँ सारांशमे समेटैत अछि, मृतकक स्वतन्त्र स्वर अल्प अछि, गणना-त्यागक तर्क अपूर्ण अछि, आ सार्वजनिक स्वास्थ्य–अनुष्ठानक समायोजन अनकहल अछि। रचनात्मक निर्णय सशर्त सकारात्मक अछि: अध्याय मानवीय रूपेँ सशक्त आ संस्थागत रूपेँ कल्पनाशील, मुदा स्रोत-अन्तर्गत वैचारिक तनावक बिना-परीक्षा अनुमोदन नहि कएल जा सकैत।

प्रमाणित लघु उद्धरण आ पाठस्तरक भेद

मूल अध्यायक विशिष्ट वाक्यांशसभमे ‘महामारी देह लेलक, गीत नहि’ (आरम्भिक फकरा), ‘हर देहक संग एक कथा’ (लोकगीत), ‘एक सप्ताहमे सत्रह प्राण गेल’ (विमलाक संवाद), ‘ई विधि एहि प्रकोपक हेतु नहि बनल छल’ (बूढ़बाक संवाद), ‘सामूहिक स्मरण’ (नव संस्थाक नाम), ‘प्रेमक गहराइ शब्दक संख्यासँ नहि नापल जाइत’ (बूढ़बाक कथन), ‘गिनतीक गुलाम’ आ ‘संख्या भुला जाइत अछि; नाम नहि’ (अन्तिम संवाद) प्रमुख छथि। एहि छोट उद्धरणसभक अर्थ फकरा, गीत, कथावाचक आ पात्र-वचनक अलग स्तरपर जाँचल गेल अछि। आरम्भक गीत महामारीक वास्तविक दृश्यसभक स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रतिवेदन नहि; अध्यायोत्तर टिप्पणी सेहो मूल कथन-साक्ष्यसँ पृथक व्याख्यात्मक परापाठ अछि।

स्रोत-सीमा, पाठमात्रा आ अगिला समीक्षा-क्रम

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७१] ‘महामारीक राति’; अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २३३–२३६। द्वितीय स्रोत : ‘मूल मैथिली पाण्डुलिपि’ केर अध्याय [–७१] प्रविष्टि; पाठमात्रा ७५० शब्द-एकक, क्रियासूचक अनुच्छेद ४७.१ प्रतिशत (मध्यम) पहिनेसँ लिखित गणना अछि। एहि प्रतिशतकेँ नव स्वतन्त्र गणना वा वास्तविक घटनाघनत्व नहि मानल गेल। स्रोतमे महामारीक रोगजनक, निश्चित तिथि, चिकित्सा-अध्ययनक आँकड़ा, कुल जनसंख्या आ प्रत्येक मृतकक असली नाम उपलब्ध नहि। बाह्य इतिहास अथवा वर्तमान चिकित्सा सम्बन्धी नव दावा एहि समीक्षामे नहि जोड़ल गेल अछि। अगिला अध्याय [–७०] ‘चन्ना गाछीक रोपाई’—स्मृतिक वृक्ष, जीवित अभिलेखागार आ पर्यावरणीय संस्थाकरणक परीक्षणक क्रम अछि।

प्रकरण ३१ | मूल अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई

पूर्वकथाकाल · घटना, पर्यावरणीय काल, स्मृति-भूगोल आ पाठगत असङ्गतिक प्रमाणाधारित आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

‘चन्ना गाछीक रोपाई’ अध्याय [–७०]क पृष्ठ-आरम्भ अनुक्रमणिकामे २३७ अछि, आ अगिला [–६९] अध्याय २४१ पृष्ठसँ शुरू होइत अछि। तें एहि अध्यायक अनुमानित मुद्रित सीमा २३७–२४० अछि; ई प्रत्येक उद्धरणक पृथक पृष्ठप्रमाण नहि। मूल अध्यायमे फकरा, ‘साक्षी-गाछक बीया’ लोकगीत, महामारीपछातिक गद्यकथा आ ‘स्मृति-वनक अवधारणा’ शीर्षक व्याख्यात्मक टिप्पणी पृथक स्तरपर छथि। आलोचनाक मूल केन्द्र एकटा नव भौगोलिक स्थानक उत्पत्ति, ओकर स्मृतिगत अनुष्ठान आ बूढ़बाक देहगत विस्तार अछि।

महामारीपछाति पृथ्वीपर नामक चिह्न

पूर्व अध्याय [–७१]मे विमला सामूहिक नाम-पुकारक व्यवस्था बनबैत छथि, कारण प्रत्येक मृतकक पूरा कथा आ धुन तत्काल सम्भव नहि रहल। एहि अध्यायमे हुनकर अगिला प्रश्न अछि जे नाम केवल उच्चारित नहि, धरतीपर सेहो कोनो स्थायी चिह्न छोड़य। महामारीक अन्त्य कतेको परिवारक अनुपस्थिति बना गेल अछि; गाछ रोपबाक प्रस्ताव ओहि शून्यताकेँ जगजाहिर स्थलमे बदलबाक प्रयास अछि। एहि परिवर्तनकेँ केवल सजावटी हरियरी कहब अनुचित; ई सामूहिक स्मृतिक माध्यमक रूपान्तरण अछि। तथापि गाछ मात्र रोपलाक कारण व्यक्ति-विशेषक सम्पूर्ण कथा स्वतः सुरक्षित भऽ जाइत—एहन निष्कर्षक स्वतन्त्र आधार कथामे नहि।

फकराक कालबोध : जड़ि पहिने, पात पछाति

आरम्भिक फकरामे ‘जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै’ आ ‘जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति’क अर्थ प्रतीक्षाक नैतिक अनुशासन अछि। रोपण तत्काल दृश्य क्रिया; छाहरि समयाधीन परिणाम। जड़ि अदृश्य, पात दृश्य; एहि विपर्यासमे सामाजिक स्मृतिक अन्दरूनी संस्थाकरण आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा बीचक अन्तर ध्वनित होइत अछि। मुदा फकराक कालविधानकेँ एकटा वैज्ञानिक वनस्पति-वृद्धि सारिणी मानब नहि चाही। एहि अध्यायमे वास्तविक गाछी अनेक बरख आ पीढ़ीमे विकसित होइत अछि, तेँ सूक्तिक धैर्य-तत्त्व कथाक घटनाक्रमसँ संगत अछि।

‘साक्षी-गाछक बीया’ : गीतमे भविष्यक निश्चित घोषणा

लोकधुन ‘रोपनी-गीत’ नव बीयाक श्रम, जल, माटि आ पीढ़ीगत छाहरिक कल्पना गबैत अछि। मुदा गीतमे नव रोपल गाछ ‘बारह सय बरख ठाढ़ रहत’ कहल गेल अछि। ई भूतकालक प्रमाणित वृद्धावस्था नहि; भविष्यक निश्चयात्मक काव्यकथन अछि। पाठक ई अनुमान नहि लगाबय जे वर्णित रोपण भऽ गेलाक बाद वास्तवमे बारह सय बरख बीति चुकल। आरम्भिक गीत आगामी इतिहासकेँ पहिने सँ प्रतिष्ठित करैत अछि, जकरा सम्पूर्ण उपन्यासक व्यापक समय-रचनासँ परखबाक अछि। गीतक समयगत अतिशयोक्ति भाव-प्रत्याशा बढ़बैत अछि, मुदा ऐतिहासिक प्रमाणक स्थान नहि लेत।

गीतक ‘ई पीपर’ बनाम कथाक चन्ना : वनस्पतिगत असङ्गति

लोकगीत कहैत अछि—‘हर सुख-दुःखक साक्षी, ई पीपर बनि रहत।’ गद्यकथामे बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे पीपर पहिनेसँ हुनकर घर अछि, नारिकेल गामक पहिचान अछि, आ नव अनुष्ठान लेल तेसर तरहक गाछ चाही। तत्पश्चात वृद्ध किसान ‘चन्ना’ सुझबैत छथि, आ पहिल चन्ना पुरान पीपरक उत्तरमे रोपल जाइत अछि। एतय नव चन्नाक पीपर बनि जाएबक कोनो जैविक दृश्य अथवा कथात्मक घटना नहि। गीतक पंक्ति यदि साक्षी-गाछक सामान्य प्रतीक अछि तँ ओकर रूपकार्थ सम्भव, मुदा शाब्दिक स्तरपर नव चन्ना आ पुरान पीपरक अन्तर धुँधला पड़ैत अछि। समीक्षा ई पाठगत असङ्गति दर्ज करैत अछि, चन्नाकेँ स्वतः पीपरक जाति नहि बनबैत।

वृक्षचयनक प्रक्रिया : विमला, बूढ़बा आ किसान

कथामे विमला योजना प्रस्तुत करैत छथि; बूढ़बा ओकर सामाजिक अर्थ स्वीकारि ‘कोन गाछ?’ प्रश्न उठबैत छथि; दूर देश घूमल एक वृद्ध किसान चन्नाक सुझाव दैत छथि। एहि त्रिपक्षीय क्रममे संस्था-निर्माणक अलग भूमिका स्पष्ट अछि: प्रस्ताव, विवेकपूर्ण आपत्ति आ अनुभवाधारित विकल्प। किसानक नाम, गाम, यात्रा-पथ, कृषि-अध्ययन अथवा चन्नाक वैज्ञानिक पहचान नहि देल गेल। ओ अपन वर्णनमे तीव्र वृद्धि, घन छाह आ रातिक सरसराहटकेँ गुण कहैत छथि। एहि कथनकेँ पात्रक प्रस्तावक स्तरपर रखब जरूरी अछि, न कि सत्यापित वनस्पति-वर्गीकरणक दस्तावेजक रूपमे।

‘चन्ना’क वनस्पति-परिचय : स्रोतक अनिश्चितता

मुख्य कथामे ‘चन्ना’ नामक गाछक पातक रातिक सरसराहट, शीघ्र बढ़ब आ छाहरि देबाक उल्लेख अछि। कोनो वनस्पतिक वैज्ञानिक नाम, पातक बनावट, फल, फूल, भौगोलिक मूलस्थान वा स्थानीय पर्याय नहि लिखल गेल। एहि साक्ष्यपर ओकरा कोनो निश्चित वास्तविक प्रजातिसँ मिलान करब अनुचित। कथाजगतमे ई गाछ स्मृति-विधिक माध्यम रूपमे कार्य करैत अछि। वनस्पतिक वास्तविकता सत्यापित करबाक लेल अलग स्रोत-शोध आवश्यक होयत, मुदा मूल कथाक अर्थ बुझबाक लेल ओकर विशिष्ट काल्पनिक-सांस्कृतिक कार्य पहिने देखब चाही। पाठमे ‘चन्ना’ शब्दक उपस्थिति मात्र बाह्य संसारमे ओही नामक प्रमाणित वृक्ष-प्रजाति स्थापित नहि करैत।

पानि, माटि आ समय : मानवेतर सहयोगक प्रश्न

गीतमे बीया माटिमे धेल जाइत अछि, पानि देल जाइत अछि, जड़ि बढ़ैत अछि, पात अबैत अछि। गद्यमे किसान छाह आ पातक ध्वनिक गुण बतबैत छथि, मुदा रोपणक वास्तविक सिंचाइ-विधि, माटिक प्रकार, वर्षा-अनुपात अथवा जलसंकटक दृश्य विस्तारसँ नहि। वनस्पति समय लैत अछि; मानवक स्मरण-काम ओकर रखरखावपर निर्भर भऽ सकैत अछि। किन्तु ई निष्कर्ष पाठसँ निकालबाक चाही, कोनो अनकहल सिंचाई-व्यवस्था कल्पना कऽ नहि। गाछ कथामे निष्क्रिय प्रतीक मात्र नहि, बूढ़बाक अनुभूत विस्तारक माध्यम बनैत अछि।

विमलाक प्रस्ताव : प्रत्येक परिवारक हेतु अलग गाछ

विमला कहैत छथि जे महामारीक हर परिवारक हेतु एक-एक गाछ रोपल जाए। एहि प्रस्तावमे अनेक क्षतिक व्यक्तिगत भेद संरक्षित करबाक इच्छा अछि। ओ हुलासा–जीवन्ती, सुखदेव–रत्ना, गंगेश–मालती आ अनुराधा–गोपीनाथक स्मृतियो जोड़ैत छथि। एहि सूचीसँ पूर्वकथाक पीड़ा आ आनन्द एकहि संरक्षण-परियोजनामे समाहित होइत अछि। प्रस्तावक व्याप्ति अत्यन्त विशाल अछि; मुदा कतबा परिवार, कतबा गाछ, रोपणक जमीन आ भविष्यक जिम्मेदारीक विस्तृत योजना प्रस्तुत नहि। विमलाक भाषण आरम्भिक नैतिक संकल्प अछि, पूर्ण कार्यविधि नहि।

पहिल गाछक सम्मिलित समर्पण : योजना आ क्रियामे अन्तर

विमलाक ‘हर परिवारक हेतु’ अलग रोपणक इच्छा पछाति कथावाचक कहैत छथि जे पहिल चन्ना ‘महामारीमे मृत सभटा परिवारक सम्मिलित स्मृतिमे’ रोपल गेल। एक-प्रति-परिवार अपेक्षा आ सम्मिलित आरम्भ वास्तविक समान चीज नहि। सम्भव अछि पहिल गाछ सामूहिक आरम्भ हो आ बादमे अन्य गाछ लगाओल गेल होथि, मुदा महामारीक प्रत्येक परिवारक स्वतन्त्र गाछ लगबाक पूरी सूची मूल पाठ नहि दैत। तें एहि अन्तरकेँ सम्भावित व्यावहारिक संशोधन अथवा अपूर्ण प्रतिपादनक रूपमे दर्ज करब उचित। असङ्गतिक समाधान लेल कल्पित बैठक, प्रस्ताव-संशोधन अथवा निर्णयपत्र जोड़ब अनुचित।

पहिल तीन रोपण : भूगोलक दिशात्मक स्मृति

मूल कथामे पहिल चन्ना पुरान पीपरक ठीक उत्तरमे, दोसर हुलासाक हेतु इनारक दिशामे, तेसर जीवन्तीक हेतु पोखरिक दिशामे रोपल गेल। ई तीन दिशात्मक सूचक कथा-स्थलकेँ अमूर्त स्मृतिक बदला भौतिक नक्शा बनबैत अछि। इनार आ पोखरि जलक स्रोतो छथि, मुदा एहि अध्यायमे हुनकर प्रवाह, जलगुण, स्वामित्व अथवा समीपस्थ जीवमंडलक विस्तृत दृश्य नहि। स्थान-निर्देश पाठककेँ मानसिक भूगोल रचबाक आधार दैत अछि। तथापि ‘इनारक दिशा’ आ ‘पोखरिक दिशा’ सँ निश्चित कम्पास-कोण अथवा यथार्थ नक्सा बनाय देब स्रोतक परे अछि।

प्रथम चन्ना : महामारीक सामूहिक मृतक

पहिल वृक्ष महामारीमे मृत परिवारसभक साझा स्मृतिमे रोपल जाइत अछि। पूर्व अध्यायमे विमला व्यक्तिगत नाम पुकारबाक व्यावहारिक संकट सुलझा सामूहिक पुकारक व्यवस्था करैत छथि; एतय ओहि अनुभवक भौतिक रूप एक गाछ बनैत अछि। मुदा ‘परिवार’ शब्दक कारण मृत्यु पओनिहार प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्यक स्वतन्त्र प्रतिनिधित्वक प्रश्न खुलल रहैत अछि। ई गाछ निःसन्देह स्मृतिगत सम्मानक संकेत बनैत अछि, पर संख्या, नाम आ विशिष्ट कथाक हर स्तर स्वतः सुरक्षित नहि करैत। लेखकक सम्मिलित स्मरणक आग्रह शक्तिशाली अछि; संक्षिप्तता आ अद्वितीयताक पुरान तनाव यथावत् रहैत अछि।

हुलासा आ जीवन्ती : दुःखक स्थानिक क्रम

दोसर वृक्ष हुलासाक हेतु इनार लग, तेसर जीवन्तीक हेतु पोखरिक दिशि रोपल जाइत अछि। एहि क्रममे व्यक्तिगत पात्रसभ अपन मृत्यु-पार स्मृति-संकेत प्राप्त करैत छथि। महाकथाक प्रारम्भिक व्यक्तिगत त्रासदी आब गामक मार्ग, जलस्थान आ साझा छाहरिमे पुनः पढ़ल जा सकैत अछि। किन्तु चयनित स्थलसभ पात्रक जीवनक खास घटनासँ किएक जुड़ल, वर्तमान अध्याय ई कारण नहि बतबैत। आलोचक इनार वा पोखरि लग हुनकर मृत्यु अथवा निजी संवाद कल्पित नहि करय। कथाक उपलब्धि स्थानकेँ नामसहित जोड़ब अछि; स्थलक विशिष्ट अर्थक कुछ कड़ी भविष्यक या पूर्वकथाक प्रमाणसँ अलग परीक्षण माँगैत अछि।

सुखदेव, रत्ना आ अन्य स्मृति-पात्र

समय बीतलाक संग सुखदेव, रत्ना, गंगेश–मालती, सोनमा माझिन, यशपति आ अनुराधा–गोपीनाथक हेतु वृक्ष जुड़बाक उल्लेख होइत अछि। ई सूची एकाधिक जाति, काम, सम्बन्ध, स्मृति-मूल्य आ नैतिक जटिलता कैँ एक स्थलमे आनैत अछि। मुदा प्रत्येक नामक हेतु रोपणक पृथक दृश्य, कार्यक्रम, गवाह, नामपट्ट वा देखभालक जिम्मेदारी नहि लिखल गेल। एक वाक्यक भीतर अनेक पीढ़ीक रोपण-संक्रमण समेटि लेनाइ कथावाचकक सारांश-प्रविधि अछि। स्थानिक सूची वास्तवमे इतिहासक संरचनात्मक प्रतीक बनैत अछि, व्यक्तिगत जीवनचरितक स्वतन्त्र प्रतिनिधि नहि।

यशपतिक छोट, किनारक गाछ : समावेशनक विषमता

यशपतिक हेतु गाछ ‘सबसँ छोट, सबसँ किनारेपर’ रोपल गेल, आ ओकरा ‘जटिल स्मृतिक चिन्ह’ कहल गेल। एहि विवरणमे कथाकार पूर्ण विस्मरण आ समान केन्द्रीय सम्मानक बीच एकटा असुविधाजनक स्थान बनबैत छथि। यशपतिक नाम मेटाओल नहि गेल, मुदा हुनकर स्मृति केन्द्रसँ दूर आ आकारमे छोट रखल गेल। कोन नैतिक निर्णय, कोन सामुदायिक बहस अथवा कोन अपराधक इतिहास एहि निर्णयक कारण, वर्तमान अध्याय विस्तार नहि दैत। ताहि लेल समीक्षक दोष-अपराधक अनकहल ब्यौरा नहि जोड़त। मुख्य आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे स्मृतिमे स्थान देब समान प्रतिष्ठा देबाक बराबर अछि कि नहि; गाछीक संरचना सामाजिक निर्णयक दृश्य रूप धारण करैत अछि।

स्मृति-वनक नैतिक वर्गीकरण : समानता आ दूरी

गाछीमे सभ स्मृति समान केन्द्रपर नहि: पुरान पीपर हृदय अछि; महामारीक गाछ उत्तरमे; हुलासा इनार दिस; जीवन्ती पोखरि दिस; यशपति किनारपर। एहि स्थानिक व्यवस्था सँ इतिहास समानरूपी सूची नहि रहैत, केन्द्र–परिधि, सम्मान–संशय आ साझा–व्यक्तिगत अनुभूतिसभक जीवित विन्यास बनैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे किनकर नाम सामुदायिक पथक केन्द्रमे आ किनकर नाम सीमा लग स्थित अछि। यशपतिक गाछ छोट रखनाइ नैतिक विवेकक युक्ति भऽ सकैत अछि, मुदा बिना सन्दर्भ ओ प्रतीक सामाजिक बहिष्करणक रूपो ग्रहण करि सकैत अछि। एहि द्विअर्थकताक उत्तर कथाक अग्रिम प्रमाण पर छोड़ब चाही।

गंगेश आ मालती : शास्त्रीय नामक बाहर निजी इतिहास

विमलाक प्रस्तावमे गंगेश–मालती युगलक स्मृति पुनः अबैत अछि। अध्याय [–७२]क अनुराधा–गोपीनाथक विवाहमे इतिहासक विस्मृत निजी सम्बन्धक प्रश्न उठल छल; एतय ओकरा गाछरूप स्मारक देबाक अभिलाषा अछि। केवल गंगेशक दार्शनिक प्रतिष्ठा नहि, मालतीक नाम सेहो स्मृतिवृक्षमण्डलमे स्थान पबैत अछि। ई कृतिक अतीतमे स्त्रीक अभिलेखी अदृश्यताक प्रतिवादक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि वास्तविक गंगेश उपाध्यायक ऐतिहासिक विवाहक बाह्य प्रमाण एहि काल्पनिक वृक्षारोपणसँ स्थापित नहि होइत; ई उपन्यासक आन्तरिक स्मृतियोजना अछि।

अनुराधा-गोपीनाथक आनन्दमय विवाह लेल स्मृति-गाछ

गाछी दुःखक एकमात्र स्मारक नहि। कथा भविष्यक क्रममे अनुराधा आ गोपीनाथक ‘आनंदमय विवाह’क हेतु सेहो वृक्ष रोपबाक उल्लेख करैत अछि। एहि सन्दर्भमे अध्याय [–७२]क उत्सवप्रधान ढोलधुन आ वर्तमान स्मृतिभूगोल परस्पर पूरक बनैत अछि। जीवनरक्षक समाजक इतिहास केवल मृत्यु आ अन्यायक गणना नहि, सामूहिक स्वीकृति आ प्रेमक सफल रूपान्तरण सेहो अछि। मुदा विवाहसमयहि गाछ रोपल गेल वा बरखक बाद स्मृतिरूपेँ, ई वाक्य निश्चित तिथि नहि दैत। एतय कालसम्बन्धी सम्भावनाक स्थान खाली राखल जाए।

गाछीक क्रमिक उत्पत्ति : एक आयोजन नहि, पीढ़ीगत प्रक्रिया

‘एक-एक कऽ, बरख-दर-बरख’ आ ‘कालक्रममे’ जकाँ सूत्र अध्यायक वास्तविक समययोजना अछि। कथा एहन नहि जे एक दिन गाम एकहि कार्यक्रममे सम्पूर्ण गाछी रोपि देलक। आरम्भिक सामूहिक गाछक बाद विविध व्यक्ति, घटना आ पीढ़ीक जोड़सँ स्थान बढ़ैत अछि। ई दीर्घ अवधि कथाक गतिमे संकुचित भेल अछि; कतेक वर्ष, कितबा पीढ़ी अथवा कतेक कुल वृक्ष भेल—ई आँकड़ा अनुपस्थित। कथा गाछी तैयार भेनाइ तक तेजी सँ पहुँचैत अछि, तें जीवित बढ़न्तक बहुधा श्रम, जल-व्यवस्था आ रोगपर्यवेक्षणक निरन्तर क्रिया पाठकक आँखिक सोझाँ घटैत नहि। समयक संक्षेप संस्थाक विशालता बनबैत अछि, मुदा पर्यावरणीय यथार्थक विस्तार कम करैत अछि।

गामक नामकरण : स्थान स्मृतिक संस्थान बनैत अछि

पीपरक चारू कात चन्नाक गाछ फैललाक बाद लोक एहि स्थलकेँ ‘चन्ना गाछी’ कहय लगैत छथि। ई नामकरण कथाक भीतरक सामाजिक मान्यता अछि, जकर कारण गाछ-समूह गामक स्थायी भूगोलक अंग बनैत अछि। रोपण एक पद्धति, गाछी एक भौतिक संघटन, नामकरण एक सामूहिक स्वीकृति—तीनू अलग घटनागत अवस्था छथि। कथाकार बाहरी अभिलेख, सरकारी नक्शा अथवा राजस्व-पंजीमे नाम दर्ज भेनाइ नहि कहैत; तें ‘स्थायी भूगोल’क अर्थ कथासमाजक व्यवहार-परिचयमे स्थापित स्थान अछि। एहि सीमा स्वीकारने नामक प्रतीकात्मक सफलता कम नहि होइत।

पीपरक केन्द्रीयता : स्मृतिक एकल हृदय

अन्तिम अनुच्छेद कहैत अछि—‘पीपर एकर हृदय’। एहि हृदय-बिम्बमे बूढ़बाक पूर्व साक्षी-गाछ नव स्मृति-वनक केन्द्र बनल रहैत अछि। अतः गाछी पुरान परम्पराकेँ हटाकऽ बनल नव सत्ता नहि; एकल जीवित स्मारकक चारू

कात विस्तार पबैत अछि। पुरान साक्षी-गाछक रोग, उपचार आ कमजोरीक अनुभव अध्याय [–७४]मे दर्ज अछि; एतय तकरा एकल निर्भरतासँ विस्तारित आधारक कल्पना मिलैत अछि। मुदा ‘हृदय’ शाब्दिक जैविक अंग नहि, पाठक स्मृतिगत केन्द्रक रूपक। बूढ़बाक वास्तविक जीवदेहक नियम एहि एक शब्दसँ निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

रात्रिक सरसराहट : श्रव्य वनक अर्थ

वृद्ध किसान चन्नाक पात रातिमे सरसराइत रहबाक उल्लेख करैत छथि; पछिला कथावाचक सम्पूर्ण गाछीकेँ ‘जेना हर गाछ अपन कथा फुसफुसाइत होइक’ कहि वर्णन करैत छथि। ‘जेना’ एहि रूपकक प्रमाण-सीमा अछि: पातक ध्वनि वास्तविक कथा-कथनक अक्षरशः प्रत्यक्ष तथ्य नहि बनैत। तथापि एहि श्रव्य-बिम्बसँ नामरक्षाक पूर्व मोहन-परम्परा आ गाछीक पर्यावरणीय ध्वनि बीच एक सेतु बनैत अछि। गाछी देखने-पढ़ने मात्र नहि, सुनने अनुभव करबाक सांस्कृतिक वस्तु बनैत अछि। ध्वनि शब्दहीन अछि; ओकरा विशिष्ट मृतकक पूर्ण जीवनवृत्तक समकक्ष मानब व्याख्यात्मक अतिशय होयत।

बूढ़बाक ‘एकटा गाछ’सँ ‘सम्पूर्ण गाछी’ धरि विस्तार

बूढ़बा विमलासँ कहैत छथि—‘पहिने हम एकटा गाछ छलहुँ। आब हम एकटा सम्पूर्ण गाछी छी’। ई कथन कथा-संसारक अलौकिक नियममे महत्त्वपूर्ण परिवर्तनक घोषणा अछि। पहिले बूढ़बाक अस्तित्व पुरान पीपरसँ जुड़ल बुझाइत छल; आब ओ प्रत्येक चन्ना आ ओकर जड़िमे अपन उपस्थिति अनुभव करैत छथि। ई शाब्दिक रूपेँ सत्यापित जैविक विस्तार नहि, पात्रक कथित अलौकिक अनुभूति अछि, जकर कथावाचक विरोध नहि करैत। कथा एक बिन्दुवला साक्षीक स्थानपर बहुकेन्द्रित स्मृतिसत्ता स्थापित करैत अछि। तथापि ‘लगैत अछि’क वाक्यांश एहि रूपान्तरणमे अनुभवक अनिश्चितता सेहो राखैत अछि। बूढ़बाक घोषणा निर्णायक कथ्य अवश्य, मुदा पर्यावरण-विज्ञानक प्रमाण नहि।

देहक वितरण : स्मृति-सुरक्षाक नव कल्पना

पूर्व [–७४]मे बूढ़बाक पीपरक रोगसँ उत्पन्न कमजोरी कथा-नियमक भौतिक निर्भरता देखौलक। वर्तमान अध्यायमे पीपरक चारू कात अनेक चन्ना रोपब ओहि निर्भरताक सम्भावित जोखिम घटएबाक आशा बनैत अछि। एक मात्र आधार अस्थिर, अनेक जड़ि सुरक्षित—एहि तर्कसँ बूढ़बा नव ‘देह’ पाओल बुझैत छथि। मुदा ई कथासंसारक सशर्त परिवर्तन अछि; पाठ ई स्पष्ट नहि करैत जे बूढ़बाक आत्मानुभूति अलग-अलग गाछमे वास्तविक रूपसँ कतेक स्वाधीन भऽ गेल, अथवा पुरान पीपर नष्ट भेलापर गाछी अकेले हुनका संरक्षण देत। वैचारिक रूपमे बहुलता द्वारा स्मृतिरक्षाक सम्भावना अछि, सम्पूर्ण जोखिम-समाप्तिक प्रमाण नहि।

विमलाक प्रश्न : सुरक्षा आ कमजोरीक द्वन्द्व

बूढ़बाक विस्तार सुनि विमला पुछैत छथि जे एहि नव देहसँ हुनका कमजोरी होइत अछि कि शक्ति। ई प्रश्न नायकक अलौकिक आत्मवर्णनकेँ बिना परीक्षा स्वीकार नहि करैत। बूढ़बाक उत्तर—‘शायद दुनू’—प्रथम दृष्टिमे विरोधाभासी, मुदा सजीव व्यवस्थाक बहुविध निर्भरताक स्वीकृति अछि। अधिक गाछ अधिक जड़ि, अधिक

सम्बन्ध आ अधिक सम्भावित आधार दैत अछि; संगहि प्रत्येक गाछ अलग देखभाल आ संकटक सम्भावना जोड़ैत अछि। यद्यपि बूढ़बा मुख्यतः सुरक्षा-पक्षक उदाहरण दैत छथि, 'शायद'क अनिश्चय पाठककेँ पूर्ण आश्वस्ति नहि दैत। एहि संवादमे संस्था-बढ़न्तक लाभ आ लागत एक साथ उपस्थित अछि।

'गाछी एक संगे कहियो पूर्ण नष्ट नहि होइत' : सामान्यीकरणक सीमा

बूढ़बाक कथन अछि जे एकटा गाछ कीड़ासँ बीमार अथवा आँधीमे धराशायी भऽ सकैत अछि, मुदा सम्पूर्ण गाछी एक संग 'कहियो पूर्ण रूपसँ नष्ट नहि होइत'। ई एक पात्रक आत्मविश्वासक सामान्यीकरण अछि; कथा एहन प्राकृतिक नियमक स्वतन्त्र प्रमाण नहि दैत। आगि, सूखा, व्यापक रोग, जड़ि-क्षति अथवा अन्य सामूहिक विपत्तिक कल्पनात्मक सम्भावना एके कथाजगतमे नकारल गेल नहि। ताहि लेल अनेक आधार एकल आधारसँ कम नाजुक भऽ सकैत अछि—ई सशर्त तर्क उचित; 'कहियो नष्ट नहि'क सार्वत्रिक व्याप्ति असिद्ध। नव्य-न्यायक कसौटीपर उदाहरणक आधारसँ सर्वकालिक निष्कर्ष निकालबाक कारण-सम्बन्ध ओपन रहैत अछि।

जड़िक बचल रहब आ स्मृतिक बाँचल रहब

बूढ़बा कहैत छथि जे गाछीमे 'सदिखन कोनो-न-कोनो जड़ि बचल रहत'। जड़ि जैविक निरन्तरताक रूपक अछि, मुदा नामस्मृतिरक्षाक वास्तविक सामर्थ्य कोन सामाजिक विधिपर निर्भर अछि? लोक जे गाछ चिन्हैत नहि, ओकर सम्बन्धित कथा सेहो बिसरि सकैत छथि। अतः जड़िक भौतिक अस्तित्व स्मृतिवाचनक स्वतः आश्वासन नहि। गाछ जखन मृतकक नाम, धुन आ कथा संग पहिचानल जाएत, तखने ओ सांस्कृतिक अभिलेखक रूपमे सक्रिय अछि। कथा एहि ज्ञानसंगतिकेँ श्रद्धा आ स्मृतिक सहायता सँ कल्पित करैत अछि। आलोचना एहि 'पढ़निहार समाज'क भूमिका उजागर करैत अछि, जकर बिना गाछ मात्र गाछ रहि जाएत।

मानवेतर सक्रियता : गाछ केवल पृष्ठभूमि नहि

कथामे चन्नाक गाछक वृद्धि, पातक ध्वनि, छाहरि आ जड़िक प्रसार कथापर परिणामकारी अछि। गाछी बढ़लाक संग बूढ़बाक अस्तित्व-बोध बदलैत अछि; ई मानवेतर जगतक घटना मानव-सामुदायिक संस्थाकेँ आकार दैत अछि। एहि दृष्टिएँ पर्यावरण मात्र सुन्दर दृश्य नहि, कथा-क्रियाक सहगामी माध्यम अछि। तथापि गाछक 'इच्छा'क वाक्य पाठमे प्रत्यक्ष नहि, 'जेना' प्रकारक मानवीकरण अछि। किसानक सरसराहट-व्याख्या आ बूढ़बाक विस्तारित देहक अनुभूति अलग स्तर छथि। पर्यावरणीय आलोचनामे मानवीकरण, जादुई नियम आ ठोस वनस्पति-क्रियाकेँ अलग रखब आवश्यक।

श्रमक असम दृश्यमानता : रोपल के, जतन के केलक?

लोकगीतमे बीया माटिमे धेब, पानि देब, जतन करब आ गामक हाथ मिलब वर्णित अछि। मुख्य गद्य मे पहिल तीन रोपणक स्थान बताओल गेल, मुदा रोपनिहारक नाम, खेत-मजदूरक श्रम, पानि ढोएनिहार, गाछ रक्षण अथवा जीविका-कर्मक वितान अत्यन्त संक्षिप्त अछि। 'गामक हाथ' सामूहिक एकताक सघन संकेत अछि, पर श्रमक वितरण, लिंग, जाति आ पेशागत असमानताक समीक्षा लेल पर्याप्त दृश्य नहि दैत। विदेह समानान्तर इतिहासक

पद्धति हेतु प्रश्न उठैत अछि: सांस्कृतिक स्मारकक मालिकी ककरा मिलैत अछि, आ ओकर सेवा के कऽ रहल अछि? मूल अध्याय ई प्रश्नक सामग्री सीमित दैत अछि; उत्तर कल्पनासँ भरल नहि जाए।

भूमि-अधिकारक अनुपस्थित प्रश्न

गाछी ‘पीपरक चारू कात’ बढ़ैत अछि, मुदा ई जमीन केकरा अधिकारमे छल, ओकर खेती अथवा उपयोग पहिने की छल, आ स्थायी स्मृति-वन लेल के सहमति देलक—मूल पाठ नहि बतबैत। कथामे सम्पूर्ण गामक साझा स्थानक नैतिक प्रतिमा अछि। मुदा भौतिक जमीन सीमित होइत अछि, ताहि लेल पैघ स्मृति-वनक निर्माण सामाजिक संसाधन-निर्णयसँ मुक्त नहि भऽ सकैत। एहि अभावकेँ स्वतः भूमि-हड़पक घटना घोषित नहि करब; केवल ई दर्ज करब जे सौन्दर्यपूर्ण सामुदायिक विस्तारक आर्थिक आ स्वामित्वाधारित प्रक्रिया कथानकक बाहर अछि। पर्यावरणीय इतिहासक निष्पक्ष आलोचना लेल एहि अनकहल भौतिक शर्तक चिन्हांकन महत्त्वपूर्ण अछि।

पानीक श्रम : गीतक सक्रिय तत्त्व, गद्यमे न्यूनता

रोपनी-गीत पानि देबाक आदेश आ भविष्यक छाहरि जोड़ैत अछि। जल एहि अर्थमे गाछ-वृद्धिक आवश्यक सहचारी संकेत अछि। मुदा मुख्य कथा पीपरक उत्तर, इनार आ पोखरिक दिशा चिन्हैत अछि; वास्तविक सिंचाईक आवृत्ति, जलसंकट, बाढ़ि, गाद अथवा पोखरिक जलवितरणक वैज्ञानिक विवरण नहि अछि। एहि कारण कथामे माटि आ पानि मानवेतर सक्रियताक सम्भावित आधार छथि, विस्तृत जल-प्रबन्धक प्रमाणित इतिहास नहि। आगामी जल-आपदासभक दृष्टिसँ गीतक पानि-छवि भविष्यक पाठ-संकेत भऽ सकैत अछि, किन्तु एहि अध्यायमे एकटा पूर्ण पर्यावरणीय जलपरियोजना कल्पित करब अनुचित।

परम्परागत ज्ञान आ यात्राक अनुभव

चन्नाक चयनकर्ता एक वृद्ध किसान छथि, जे दूर देश घूमि चुकल छथि। एहि परिचयमे कृषि-पर्यवेक्षण आ बाह्य जगतक अनुभव स्थानीय निर्णयमे प्रवेश करैत अछि। बूढ़बा प्रश्न रखैत छथि, किसान उत्तर दैत छथि—ई ज्ञानक श्रेणीभेद नहि, सहयोगक दृश्य बनैत अछि। मुदा किसानक कथनक परीक्षणक प्रयोगात्मक क्रम, रोपणक जलवायु-उपयुक्तता, रोग-सहनशीलता अथवा स्रोतस्थलक विवरण नहि देल गेल। तें सुझाव कथाजगतमे स्वीकार कएल गेल एक अनुभवी व्यक्तिक मत अछि। एकरा आधुनिक वनस्पति-विज्ञानक वैधानिक निष्कर्ष ठहराएब अथवा सब स्थानीय कृषिकर्मीक सामूहिक सहमति मानब प्रमाणसँ बाहर अछि।

रोपनी-गीतक श्रमलय आ कथाक सारांश-गति

गीत बारम्बार ‘रोपल’, ‘पानि देल’, ‘जतन देल’ आ ‘सबर राखू’ दोहरबैत अछि; एहि क्रियावाचक पुनरावृत्तिसँ श्रमक नियत आवर्तन ध्वनित अछि। गद्यक कथा उलटे एकाधिक बरखक अवधि किछु वाक्यमे पूरा करैत अछि। एहि कारण गीत दीर्घकालीन देखभालक भावात्मक विस्तार दैत अछि, गद्य घटनाक क्रमिक संक्षेप। कथावाचनक भिन्न गति दुनू माध्यमकेँ परस्पर पूरक करैत अछि। तथापि गीतमे कहब आ कथा मे घटब सदैव समान नहि: ‘धैर्य राखू, जल दिअ’ एक अनुष्ठानिक उपदेश, प्रत्येक वृक्षक वास्तविक प्रतिदिन जलदानक सत्यापित विवरण नहि।

गाछीक उत्पत्ति : व्युत्पत्तिपरक आख्यान-शिल्प

पूर्वकथाक अनेक प्रकरण बादक लोकप्रथा, धुन अथवा स्थलनामक उत्पत्ति बतबैत छथि। ‘चन्ना गाछीक रोपाई’मे एहि प्रविधिक स्पष्ट उदाहरण अछि: महामारीक स्मरण-आवश्यकता—विमलाक संकल्प—वृद्ध किसानक चयन —पहिल रोपण—पीढ़ीगत विस्तार—सामाजिक नामकरण। एहि कारण कथाजगतक भविष्यक एक प्रसिद्ध स्थान अपन कथात्मक इतिहास पबैत अछि। एहन उत्पत्ति-कथाक लाभ अछि जे स्थान केवल नक्शाक बिन्दु नहि रहैत; प्रत्येक गाछ पछिल घटनाक संकेत बनैत अछि। सीमा ई जे क्रम सब समय नैतिक उद्देश्यक दिशि अत्यन्त सुव्यवस्थित चलैत अछि; अनिश्चय, विवाद अथवा अपूर्ण परियोजनाक सम्भावना कम देखाओल गेल।

पूर्वदीप्ति आ भविष्य-संकेतक परस्पर क्रिया

अध्यायक आरम्भिक परापाठ भविष्यक पाठककेँ ‘बहुत आगू’ चन्ना गाछी भेटबाक घोषणा करैत अछि। गद्यमे एखन गाछीक उत्पत्ति कही रहल अछि। एहि प्रकार रचना कथाक वर्तमान-स्रोत आ भविष्यमे परिचित भौगोलिक स्थल बीच पुल बनबैत अछि। ई कथावाचकक आगेक कालपर दृष्टि रखबाक संकेत अछि; विमला स्वयं भविष्यक समस्त घटना नहि जानैत छथि। आलोचक भविष्य-जाननिहार कथावाचक आ वर्तमानमे निर्णय लेबैत पात्रक ज्ञानस्थितिकेँ एक नहि मानत। भविष्य-संकेतक कारण एकटा मामूली रोपण कथामे विशाल स्थापत्यिक अर्थ प्राप्त करैत अछि।

कथावाचक आ दृष्टिकेन्द्र : बाह्य वर्णनसँ बूढ़बाक अनुभूति

कथाकार तृतीयपुरुषमे विमला, किसान आ गामक कार्य वर्णित करैत छथि। बूढ़बाक विस्तारक क्षणमे दृष्टि हुनकर अनुभवक भीतर प्रवेश करैत अछि—‘जेना ओ आब केवल एकटा गाछसँ नहि’ इत्यादि। तत्पश्चात बूढ़बाक प्रथमपुरुष संवाद अनुभवक व्याख्या करैत अछि। एहि स्तरबदलसँ पाठककेँ गाछीक भौतिक विस्तारक साथ अलौकिक व्यक्तिसत्ताक अनुभूति भेटैत अछि। मुदा ‘जेना’ तुलना, ‘लगैत अछि’ आत्मानुभव आ कथावाचकक परिणामी सारांश समान प्रमाण-स्तर नहि। ई भेद उपन्यासक जादुई यथार्थक आन्तरिक नियम जाँचबाक मुख्य औजार अछि।

कालदृष्टि : एक रोपण आ अनेक पीढ़ीक जीवन

पहिल गाछ रोपबाक घटना कथामे लगभग तात्कालिक दृश्य अछि, मुदा सम्पूर्ण गाछी बनबाक अवधि ‘बरख-दर-बरख’ आ ‘हर पीढ़ी’सँ व्यक्त भऽ जाइत अछि। कथाकार दीर्घ जैविक समय एकटा अनुच्छेदमे समेटैत छथि। क्रिया-बोध बहुतरास अछि, तथापि हर रोपण पूर्ण दृश्य नहि। घटनागत घनत्व आ वैचारिक घनत्वक अन्तर देखल जाए: कथा संस्थाक स्थापना आ विस्तार पर प्रमुख जोर दैत अछि, वृक्षसँ जुड़े लोकक दैनिक संघर्षपर कम।

स्मृति-स्थलक अनुक्रम : पीपर–चन्ना–पोखरि

पुरान पीपर एक केन्द्र, चन्ना गाछी ओकर विस्तार, जोड़ी पोखरि नजदीकक स्मरण-स्थल दिस संकेत, आ इनार दोसरा दिशासूचक रूपमे अछि। एतय गामक ऐतिहासिक सम्बन्ध दृश्य स्थलक जाल बनबैत अछि। मुदा गाछी जोड़ी पोखरिक ठीक केतबा दूरीपर अछि, ओकर नक्शा, पथ, माटिक सीमा अथवा नदीसँ जुड़ल भू-परिवर्तन एहि

अध्यायमे नहि। एतय ‘मानसिक नक्शा’क रचनात्मक सामर्थ्य स्वीकारब चाही, सटीक भौगोलिक मानचित्रक दावा नहि। स्मृतिक स्थलपर घटनाक अनेक कालखण्ड एकत्रित होइत अछि; एहि अर्थमे गाछी काल आ स्थानक संयुक्त आख्यानिक केन्द्र अछि।

‘जीवित पुस्तकालय’ : अक्षरहीन पाठकक कल्पना

अध्यायक अन्तिम रूपकमे गाछी ‘एकटा जीवित पुस्तकालय’ कहल गेल अछि, जकरा पढ़बाक हेतु ‘अक्षर नहि, केवल श्रद्धा आ स्मृति चाही’। एहि वाक्यमे लिखित अभिलेखक बाहर लोकानुभूतिक गरिमा अछि। पर गाछ केकर स्मृति अछि से जनबाक लेल सामाजिक नाम-सम्बन्ध, कथा-संकेत आ परम्पराक सम्प्रेषण आवश्यक। श्रद्धा मात्रसँ इतिहासक प्रत्येक तथ्य स्वतः उघाड़ल नहि होइत। उपन्यासक नारिकेल पात पाठशाला आ नामलेखन-व्यवस्थाक पृष्ठभूमिमे अक्षरविहीन पढ़ाइ आ अभिलेखी लेखन परस्परपूरक भऽ सकैत छथि; एक-दोसराक पूर्ण प्रतिस्थापन नहि।

अक्षरविहीन पुस्तकालय आ साक्ष्यक प्रमाण-समस्या

‘केवल श्रद्धा आ स्मृति’ पुस्तकालयक लोक-सांस्कृतिक आशय स्पष्ट करैत अछि, मुदा तथ्यसत्यापनक पद्धति अस्पष्ट रखैत अछि। जँ एक गाछक नामक स्मृति दू समूह भिन्न रूपमे कहय, तँ निर्णय केना होयत? कथामे गाछ-साक्ष्यक विरोधाभासी परम्पराक दृश्य नहि देल गेल। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ वृक्ष प्रत्यक्ष भौतिक वस्तु अछि; ओकरा फलाँ व्यक्ति समर्पित होएबाक ज्ञान सामाजिक शब्द, परम्परा अथवा लिखित चिह्नसँ प्राप्त होइत अछि। एहि प्रमाण-भेदक बिना साक्षीगाछकेँ स्वतः समस्त अतीतक अक्षरशः ज्ञाता ठहराएब अनुचित। कथा स्मृतिक अमूर्त मूल्यकेँ सघन रूपकमे रूपान्तरित करैत अछि, प्रमाणकी पूर्ण प्रक्रिया प्रस्तुत नहि।

हर गाछुक अपन धुन : लोकसंगीत आ स्मृति-स्थान

अन्तिम वर्णनमे प्रत्येक गाछक अपन कथा, नाम आ ‘अपन धुन’ रहबाक उल्लेख अछि, आ धुन मोहनक वंशजद्वारा रचित बताओल गेल। एहि कथनसँ [–७३]क शोकधुन-उत्पत्ति आ [–७२]क विवाहधुन वर्तमान वनमे स्थायित्व प्राप्त करैत अछि। मुदा एहि अध्यायमे गाछक समीप कोन धुन बजल, किनकर वाद्य, स्वर-रचना आ कालिक अनुक्रम की छल—ई दृश्य विस्तृत नहि अछि। फलतः अन्तिम संगीत-पंक्ति एक सांस्कृतिक प्रणालीक सारांश अछि। पातक प्राकृतिक सरसराहट आ मनुष्यमूलक धुनको एक नहि मानल जाए; दुनू श्रव्य माध्यम अलग स्रोत राखैत अछि।

ऐतिहासिक स्मृतिवनक बाह्य-दावा आ परापाठ

मूल अध्यायोत्तर टिप्पणी ‘विश्वक कतेको संस्कृतिमे’ स्मृति-वृक्षारोपण प्रचलित होएबाक सामान्य कथन करैत अछि। ई रचनाकारक व्याख्यात्मक परापाठ अछि, वर्तमान अध्यायक भीतर घटल काल्पनिक गामक घटना नहि। विश्वव्यापी इतिहासक एहन तुलनात्मक दावे केँ विश्वसनीय बाह्य स्रोत बिना प्रामाणिक सांस्कृतिक सर्वेक्षण घोषित नहि कएल जाए। वर्तमान समीक्षा मुख्यतः उपन्यासक आन्तरिक क्रियाप्रणाली पढ़ैत अछि। व्यापक

तुलनात्मक अध्ययन आगाँ अलग स्रोत-आधारित अध्यायमे सम्भव अछि; एतय परापाठसँ प्राप्त प्रेरणा आ मूल कथाक घटित तथ्य पृथक राखल गेल।

भारतीय काव्यशास्त्रीय विवेचन : करुणसँ अद्‌भुत धरि

महामारीमे मृत परिवारसभक स्मरण करुणक पूर्वभूमि अछि; नव गाछक रोपण आशाक आलम्बन बनैत अछि; रात्रिमे गाछसभक फुसफुसाइत-जेहन वर्णन अद्भुतक अनुभव जगबैत अछि। बूढ़बाक विस्तृत देहक कल्पना अलौकिक विस्मयक केन्द्र अछि। एहि भावविन्यासमे एकहि भावक अखण्ड प्रभुत्व नहि: शोक, उत्साह, विस्मय आ धैर्य क्रमशः मिलैत छथि। रसात्मक परिपाकक आलोचना करैत मनुष्यक वास्तविक अनुभूति आ रूपकक ध्वन्यार्थ अलग राखबाक चाही। यशपतिक छोट किनारक वृक्ष ई सामूहिक मङ्गलभावमे नैतिक संकोच जोड़ैत अछि, तें दृश्य पूर्ण निर्विवाद शान्तिमे नहि बदलैत।

ध्वनि आ औचित्य : रोपनीगीतक सामाजिक रूप

रोपनी-गीत एहन क्रियापर आधारित अछि जाहिमे माटि, जल, श्रम, मौसम आ प्रतीक्षा सम्मिलित होइत अछि। नव वृक्षारोपणक विषयक संग एहि लोकधुनक चयन अर्थसंगत अछि। गीतक ‘जड़ि पहिने’ सामाजिक संस्थाक अदृश्य कार्यक ध्वनि, छाहरि सामूहिक संरक्षणक ध्वनि, आ बीया भविष्यक पीढ़ीक विश्वासक ध्वनि बनैत अछि। तथापि गीतक ‘पीपर’ शब्द आ गद्यक ‘चन्ना’ भेद औचित्य-परीक्षाक कठिनाइ उत्पन्न करैत अछि। रूपकक व्यापकता स्वीकारनाइ आ पाठगत वृक्षनामक अशुद्ध मिलान देखनाइ परस्पर विरोधी नहि। आलोचना सुन्दर भाषा कारण तथ्यगत अन्तरकेँ मेटि नहि सकैत।

नव्य-न्यायीय सम्बन्ध : गाछक ‘नाम’ ककरा द्योतक?

एतय एकटा गाछ एक व्यक्तिक स्मृति, दोसर बहु परिवारक सामूहिक स्मृति, आ किछु गाछ युगलक सम्बन्धक प्रतीक छथि। अतः ‘गाछ=व्यक्ति’क एकरूप समानता पाठमे नहि अछि। गाछ आ स्मरणीय व्यक्तिक सम्बन्ध समर्पणक सामाजिक कर्मसँ स्थापित अछि; गाछ स्वयं व्यक्ति नहि। ‘फलाँक गाछ’क अर्थ स्वामित्व, जन्मस्थान, समाधिस्थल अथवा सांस्कृतिक अर्पण—सभठाम एक नहि। एहि अध्यायमे मुख्यतः स्मृत्यर्पणक सम्बन्ध अछि। सम्बन्धक विशिष्ट अवच्छेदक स्पष्ट रखने सामाजिक समर्पणकेँ जीववैज्ञानिक पहचान वा कानूनी सम्पत्तिसँ गड्डमड्ड नहि कएल जाए।

प्रमाण-परीक्षा : अधिक गाछ = अधिक स्थायी स्मृति?

बूढ़बाक तर्कक रूप ई अछि जे एकटा गाछ नष्ट भऽ सकैत अछि, मुदा गाछीमे अनेक जड़ि रहने सम्पूर्ण स्मृतिसत्ता सुरक्षित रहत। एकल निर्भरताक जोखिम घटबाक सम्भावना उचित अछि; तथापि ‘अनेक’ होएबाक मात्रसँ अनिवार्य अविनाशिता नहि सिद्ध। नव्य-न्यायक दायरेमे प्रश्न उठैत अछि: केहन परिस्थिति साझा गाछीकेँ एकसाथ क्षति पहुँचा सकैत अछि? की हर गाछमे सभ व्यक्तिक स्मृति उपस्थित अछि अथवा विशिष्ट गाछविशेषक स्मृति? ई दू स्थितिमे एक वृक्षक नष्ट होएबाक सांस्कृतिक परिणाम अलग होयत। कथा सामान्य उत्तर नहि दैत, तें निष्कर्षकेँ ‘बूढ़बाक आशावादी अनुमान’क रूपमे रखनाइ उपयुक्त अछि।

स्त्रीक संस्थागत भूमिका : विमला आ विस्तारक नीति

महामारीक अध्यायमे विमला व्यक्तिगत नामक अभावक समाधान लेल सामूहिक पुकार आरम्भ करैत छथि; वर्तमान प्रकरणमे ओ सामूहिक स्मृतिसँ आगे धरतीपर निशानी बनएबाक प्रस्ताव रखैत छथि। एहि क्रममे स्त्री नेतृत्व केवल परम्पराक संरक्षण नहि, माध्यमक पुनर्रचना करैत अछि। बूढ़बा सहयोगी विचार देबैत छथि, मुदा प्रारम्भिक कल्पना विमलाक अछि। तथापि रोपणक वास्तविक आयोजनमे अन्य स्त्रीसभक नाम अथवा हुनकर निर्णयाधिकारक स्वर विस्तृत नहि। एहि कारण विमलाक सक्रियता प्रामाणिक अछि, सब समुदायमे बराबर स्त्री-अधिकार स्थापित भऽ गेल—एहन सर्वसामान्य निष्कर्ष नहि।

चन्ना गाछीक ‘पवित्रता’ आ सार्वजनिक प्रश्न

अन्तमे चन्ना गाछी गामक ‘सबसँ पवित्र, सबसँ महत्त्वपूर्ण’ स्थान कहल गेल। ई कथावाचकक उच्च मूल्यांकन अछि; कथामे कोनो स्वतन्त्र विरोधी समूह अथवा धार्मिक संवाद उपस्थित नहि। पवित्रता मृतकक आदर, पीढ़ीगत रोपण आ बूढ़बाक अनुभवक एकत्र परिणाम रूपमे बुझल जा सकैत अछि। मुदा सामाजिक पवित्रता के स्थापित करैत अछि, किनकर प्रवेश, निर्णयाधिकार आ देखभाल स्वीकार कएल जाएत—ई व्यावहारिक प्रश्न कथामे नहि खुलैत। पवित्र स्थान सांस्कृतिक सहभागिता बढ़ा सकैत अछि, पर इतिहासमे पवित्रताक नामपर बहिष्कारो सम्भव; वर्तमान पाठ एहि दोसर सम्भावनाक चित्रण नहि करैत। आलोचक सम्भावना आ पाठसिद्ध घटना भिन्न रखैत अछि।

जादुई यथार्थ आ सामाजिक भौतिकताक मिलन

बूढ़बाक विस्तारित देह असामान्य अलौकिक घटक अछि; मुदा ओहि विस्तारक हेतु साधारण क्रियासभ—गाछ रोपब, पानि देबाक इच्छा, जड़ि बढ़ब, गामक नामकरण—आवश्यक बनल छथि। एहि मेलमे जादुई यथार्थक रचनात्मक प्रभाव अछि: समाजक स्मृति शरीरक पार जाएत, मुदा माटि आ वनस्पतिक सहायताबिना नहि। एतय जादूक घटनाकेँ प्राकृतिक विज्ञानक यथार्थवाद बनाय देब अनुचित, आ गाछक भौतिक श्रमकेँ केवल जादूक सजावट बुझबो अनुचित। कथाकार मानव, वनस्पति आ स्मृतिसत्ताक परस्पर निर्भरता केँ विचारधारात्मक आ अनुभवात्मक दुनू स्तरपर रचैत छथि।

अध्यायक मुख्य अन्तर्विरोधसभ : व्यवस्थित लेखा

पहिल पाठगत अन्तर—लोकगीत नव साक्षी-गाछकेँ ‘पीपर’ कहैत अछि, जखन मुख्य कथामे चन्ना आ पुरान पीपर अलग। दोसर—गीतक बारह सय बरखक स्थायित्व-घोषणा भविष्यवाणी अछि, वर्तमानमे सिद्ध इतिहास नहि। तेसर—विमला हर मृत परिवार लेल अलग वृक्ष प्रस्तावित करैत छथि, मुदा पहिल वास्तविक गाछ सब मृत परिवारक साझा स्मृतिमे। चारिम—बूढ़बाक ‘कहियो पूर्ण नष्ट नहि’ सर्वकालिक सुरक्षा-दावा सशर्त उदाहरणसँ निकसल अछि। पाँचम—‘जीवित पुस्तकालय’ पढ़बाक हेतु अक्षरक आवश्यकता नहि कहल गेल, जबकि नाम–कथा–समर्पणक व्याख्या सांस्कृतिक सूचना माँगैत अछि। छठम—यशपतिक छोट किनारक स्थान सामुदायिक स्मरणक समान आदरक प्रश्न खुला रखैत अछि। एहि बिन्दुसभमे भाषा, समय, क्रिया, तर्क आ नैतिकता अलग-अलग परीक्षा माँगैत अछि; सभकेँ एकरेखीय गलती नहि कहल जाए।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय : भूगोल बनल स्मृति

‘चन्ना गाछीक रोपाई’क मूल उपलब्धि ई अछि जे ‘नाम बचाओ’ परम्परा पात, स्वर आ अनुष्ठानक बाद माटि, जड़ि आ छाहरिक सामाजिक भूगोल बनैत अछि। विमलाक प्रस्ताव, बूढ़बाक प्रश्न, यात्रारत किसानक सुझाव, स्मृतिवृक्षक स्थानिक क्रम, यशपतिक किनार आ बूढ़बाक बहु-वृक्षीय देह—ई सभ मिलि एक सघन उत्पत्ति-कथा रचैत अछि। एकरो सीमा अछि: विशाल पीढ़ीगत विस्तार कथावाचकीय सारांशमे समाहृत, रोपणक श्रम आ जमीनक प्रश्न विरल, वनस्पति-परिचय अनिश्चित, आ गाछीक पूर्ण अविनाशिताक तर्क कमजोर। पाठगत ‘पीपर’–‘चन्ना’क गड़बड़ी विशेष आलोचनात्मक ध्यान माँगैत अछि। साहित्यिक निर्णय सशर्त सकारात्मक अछि—स्मृति-वनक कल्पना अर्थपूर्ण आ अन्तर्पाठीय रूपसँ सशक्त अछि, मुदा ओकर सामाजिक तथा पर्यावरणीय विश्वसनीयतार्कें अत्युक्ति वा रिक्ति नकारि बिना समझबाक चाही।

स्रोतविधान, सीमित प्रमाण आ अगिला अध्याय

प्राथमिक स्रोत—गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–७०] ‘चन्ना गाछीक रोपाई’; अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २३७–२४०। ‘जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै’, ‘साक्षी-गाछक बीया’ लोकगीत, विमला–बूढ़बा–वृद्ध किसान संवाद आ अन्तिम ‘जीवित पुस्तकालय’ कथन अलग स्तरपर जाँचल गेल। अध्यायोत्तर ‘स्मृति-वनक अवधारणा’ लेखककीय परापाठ अछि, बाह्य इतिहासक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। ई पहिनेसँ अंकित गणना अछि, नव स्वतन्त्र गणना नहि। चन्नाक वनस्पति-परिचय, रोपल कुल गाछक संख्या, अलग-अलग रोपणक वर्ष आ बाह्य ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहि। अगिला प्रकरण [–६९] ‘गज-ग्राहक कथा’मे पुराणक गजेन्द्र-मोक्ष आख्यान, जोड़ी पोखरिक वास्तविक संकट, सामूहिक प्रयास आ ‘मूल गोहि’क कथात्मक भूमिका जाँचल जाएत।

प्रकरण ३२ | मूल अध्याय –६९ — गज-ग्राहक कथा

पूर्वकथाकाल · पुराणक अन्तर्पाठ, जलजीवक संकट, प्रमाणतर्क आ क्रियात्मक समुदाय

पाठ-सीमा, अध्यायक रूप आ आलोचनाक मूल प्रतिज्ञा

अध्याय [–६९] ‘गज-ग्राहक कथा’ पूर्वकथाकालक एकटा घटना-केन्द्रित प्रकरण अछि। मूल अनुक्रमणिका अध्यायक आरम्भ पृष्ठ २४१ आ अगिला [–६८]क आरम्भ पृष्ठ २४५ बतबैत अछि; तें २४१–२४४ एकर अनुक्रमणिकाजन्य अनुमानित पृष्ठसीमा अछि, प्रत्येक वाक्यक स्वतन्त्र पृष्ठाङ्क नहि। आरम्भिक फकरा, ‘नाम-पुकारक उद्धार’ लोकगीत, गजराजक वास्तविक संकटवला गद्यकथा आ ‘गजेन्द्र-मोक्ष कथा आ स्थानीय लोक-परम्पराक संगम’ शीर्षक व्याख्यात्मक टिप्पणी चारि पृथक पाठस्तर छथि। एहि समीक्षाक मूल प्रश्न अछि जे प्राचीन आख्यानक नामपर कएल व्याख्या आ वर्तमान संकटमे सम्पन्न कार्यक बीच वास्तविक सम्बन्ध कतेक अछि।

ई गणना तथा वर्गीकरण योजनाजन्य छथि, न एहि समीक्षाक स्वतन्त्र पुनर्गणना आ न वास्तविक घटनाक अन्तिम संख्या। मूल प्रकरणमे औपचारिक शास्त्रार्थ-सभा अथवा बहुपक्षीय दीर्घ शास्त्रीय विवाद नहि; वृद्ध पंडितक पुराण-स्मरण, बूढ़बाक आंशिक स्वीकारसहित संशोधन आ तत्पश्चात् सामूहिक क्रिया अछि। तें समीक्षकक्कें योजनाक ‘शास्त्रार्थ’ शब्दक्कें मूल कथामे अनुपस्थित बहसदृश्यक प्रमाण नहि मानि, प्रस्ताव–उत्तर–प्रयोगक छोट तर्कगत क्रमक्कें परखबाक चाही।

कथात्मक आरम्भ : विमलासँ सूर्यनाथ धरि दायित्वक हस्तान्तरण

मुख्य कथा पहिने बतबैत अछि जे विमलाक बाद अनुष्ठानक भार हुनकर पुत्र सूर्यनाथपर आयल। एहि एक वाक्यसँ पूर्व [−७१]क सामूहिक स्मरण आ [−७०]क स्मृति-वन स्थापनाक संग सामाजिक निरन्तरता रचल गेल अछि। सूर्यनाथ संकटसँ पहिने कतबा वर्ष अनुष्ठान चलौलनि, विमलाक देहावसान भेल अथवा ओ मात्र उत्तराधिकारी बनलाह, एकर पृथक ब्यौरा नहि। तें ‘विमलाक बाद’सँ अनिवार्य मृत्यु अथवा निश्चित कालिक वर्ष निष्कर्षित नहि कएल जाए। सूर्यनाथक पहचान शुरूहिमे पद-अधिकारसँ बनैत अछि; हुनकर निज मानसभ, पारिवारिक सम्बन्ध आ श्रमक इतिहास संक्षिप्त अछि।

गजराजक दोहरा अस्तित्व : जीवित हाथी आ धार्मिक प्रतीक

गामक मन्दिरमे गजराज नामक हाथी ‘उत्सव-जुलूसक हेतु’ पोसल जाइत अछि। कथाक पहिल घटना ई जीवित प्राणी अपन महावतसँ छूटि पानि पीबय जाइत अछि—अर्थात् संकट धार्मिक प्रतीकक अमूर्त उदाहरणसँ नहि, एक देहधारी जीवक तृष्णा आ स्वतन्त्र गमनसँ शुरू होइत अछि। नाम ‘गजराज’ पुराणक गजेन्द्र-कथासँ अर्थ-साम्य रचैत अछि, मुदा प्राणी स्वतः पौराणिक गजेन्द्र नहि बनि जाइत। ओकर मन्दिरक सेवा, मानव नियंत्रण आ उत्सवक श्रम-संरचना पर्यावरणीय-नैतिक प्रश्न उठबैत अछि। पाठ ई बतबैत नहि जे गजराजक पालन, स्वास्थ्य अथवा महावतक देखभाल केहन छल; अनुमानसँ अतिचारक घटना बनाउ नहि।

गर्मीक दुपहरिया : अल्प घटना आ दीर्घ मिथकीय कालक विरोध

वास्तविक संकट ‘एक गर्मीक दुपहरिया’ आरम्भ होइत अछि। गजराज जोड़ी पोखरिक गहींर भागमे पानि पिबाक हेतु उतरैत अछि; आकस्मिक जल-उथलपुथल, चिचियाहट आ पैरक जकड़न घटनाक्कें तीव्र गति दैत अछि। गीत आ वृद्ध पंडितक स्मरणमे ‘बरखों’ तथा ‘हजारो बरख’क संघर्ष अछि। वर्तमान हाथीक घटना कतेक काल चलल से केवल ‘बहुत काल संघर्षक बाद’क सूचनासँ बुझाइत अछि; बरखों तक चलबाक दावा नहि। एहि काल-विरोधमे पुराणक अनन्त प्रतीक्षा आ ग्रामक तात्कालिक बचाव एक दोसराक प्रतिमान बनैत छथि, ऐतिहासिक अवधि एक नहि।

जोड़ी पोखरि : जलक भौतिक जोखिम आ कथाक स्थल

जोड़ी पोखरि कथाजगतक पहिलसँ परिचित जलस्थल अछि। एहि अध्यायमे ओकर गहींर भाग, पानिक उथल-पुथल आ गोहिक उपस्थितिक कारण घटना सम्भव होइत अछि। पोखरि एक निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहि: पानि पिअबाक आवश्यकता, गहींराइमे फँसब आ किनारे सँ बचाव—तीनू ओकर भौतिक व्यवस्था पर निर्भर। मुदा

जलस्तर, भौगोलिक माप, ऋतुक विशेष जलसञ्चय अथवा किनारक ढलानक सटीक विवरण मूल नहि दैत। तें बचावक क्रियाप्रणालीक व्याख्या एतबे धरि करब उचित जे रस्सा-बाँस, कोण आ धैर्यसँ दबावक उल्लेख अछि; विस्तृत प्राविधिक नक्शा गढ़ब स्रोत-बाह्य होयत।

गोहिक हमला : अज्ञात कारणकेँ अज्ञात राखबाक आवश्यकता

कथावाचक विशेष उल्लेख करैत छथि जे विशाल गोहि बहुत दिनसँ कोनो पशुकेँ नहि छूने छल, ‘सोनमा माझिनक भेंट-परम्पराक कारण’, मुदा आज ‘कोनो अज्ञात कारणसँ’ हाथीक पैर जकड़ि लेलक। एतय पुरान अनुष्ठानक कथित प्रभाव आ वर्तमान अपवाद एक साथ उपस्थित छथि। गोहिक निर्णयक वास्तविक जैविक अथवा सामाजिक कारण निर्दिष्ट नहि; तें भूख, क्रोध, अनुष्ठानभङ्ग अथवा दैवी दण्डक कुनै कारण समीक्षा स्वतः नहि जोड़त। कथावाचक पहिल दीर्घ विरतिकेँ भेंट-प्रथासँ जोड़ैत अछि, मुदा तकर कारण-यांत्रिकी अलग प्रमाणसँ स्थापित नहि। ई कथाक आन्तरिक सम्बन्ध-विधान अछि, जीवविज्ञानक सत्यापित नियम नहि।

सोनमा माझिनक परम्परा : श्रमिक स्त्रीक स्मृतिजन्य उपस्थिति

सोनमा माझिन वर्तमान दृश्यमे प्रत्यक्ष उपस्थित नहि, मुदा हुनकर नाम गोहि आ गामक दीर्घ सहअस्तित्वक पृष्ठभूमिमे आएल अछि। ई उल्लेख पूर्व स्त्रीक श्रम, जल-ज्ञान अथवा भेंट-संस्कारक सामुदायिक विरासतकेँ भुलाइत नहि; तथापि एहि अध्यायमे ओ स्वयं संवाद नहि करैत छथि। कथानकक स्वर वृद्ध पंडित, बूढ़बा आ सूर्यनाथपर स्थानान्तरित होइत अछि। एतय विदेह समानान्तर इतिहासक प्रश्न उठैत अछि जे पूर्वक संघर्षमे स्त्रीक विकसित प्रथा पर संकट आयलाक बाद निर्णयाधिकार किनकरा हाथ रहैत अछि? मूल कथामे सोनमाक वंशज अथवा जलजीवी श्रमिकक स्वतन्त्र बचाव-परामर्श नहि देल गेल।

महावतक भय : पहिल प्रत्यक्ष सहायताक पुकार

गजराजक पैर फँसलाक बाद महावत ‘गजराज मरि जायत!’ कहि लोकसँ सहायता माँगैत अछि। एहि वाक्यमे धार्मिक शास्त्रार्थ नहि, जीवक मृत्यु-आशंका अछि। महावत हाथीक सर्वाधिक निकट दैनिक देखभालकर्ता होएबाक सम्भावना अछि, मुदा संकट-समाधानक अगिला दृश्यसभमे हुनकर विशेष तकनीकी भूमिका लिखल नहि गेल। सक्रिय क्रम वृद्ध पंडितक व्याख्या, सूर्यनाथक दौड़ आ युवकसभक भौतिक प्रयासक दिशि जाइत अछि। ई पात्र-वितरण कथामे ककर व्यावहारिक अनुभव सुनल गेल आ ककर आवाज संकट उद्घाटनधरि सीमित रहल—एहि प्रश्नकेँ खोलेत अछि। महावतक चुप्पीकेँ असहमति अथवा पलायनक मनगढ़न्त घटना नहि कहल जाए।

भीड़, डर आ सामूहिक निष्क्रियताक आरम्भिक अवस्था

गामक भीड़ जुटैत अछि, मुदा आरम्भमे ‘केओ किछु करय हेतु साहस नहि जुटा सकल’। एतय सार्वजनिक उपस्थितिक अर्थ स्वतः संयुक्त क्षमता नहि। भीड़ एक देखनिहार समुदाय अछि, जकर क्रियाशीलताकेँ कथा बादमे सूर्यनाथक आयोजक भूमिका द्वारा बदलैत अछि। दृश्य-रचनामे ई महत्त्वपूर्ण अवस्थापरिवर्तन अछि: भयक जमघटसँ संगठित सहायता धरि। तथापि भीड़क प्रत्येक व्यक्ति समान भयभीत छल, वा कोनो व्यक्तिक

सुझाओल आरम्भिक उपाय नकारल गेल—एहन विशिष्ट विवरण अनुपस्थित। कथावाचक एक सामूहिक थमाव देखबैत अछि, जकरा बूढ़बाक वैचारिक हस्तक्षेपक बाद कर्म-ऊर्जा भेटैत अछि।

वृद्ध पंडितक गजेन्द्र-मोक्ष स्मरण : दृष्टान्तक प्रवेश

एक वृद्ध पुराणज्ञ पंडित समकालीन दृश्यकेँ प्राचीन गजेन्द्र-मोक्ष कथा जकाँ पहिचानैत छथि। हुनकर कथनमे हाथीराज, ग्राहक दीर्घ जकड़न, अहंकार-त्याग आ भगवानक आगमनक क्रम अछि। ई मुख्य कथा भीतर एक पात्रद्वारा कहल दोसर कथा अछि—अर्थात् अन्तःस्थापित आख्यान। पुराणक एहि रूपान्तरणक मूल संस्कृत पाठ, पाठभेद अथवा श्लोक-संख्या अध्याय नहि दैत; तेँ एकरा भागवत पुराणक अक्षरशः अनुवाद मानब अथवा प्राचीन संस्करणक सम्पूर्ण वर्णन घोषित करब अनुचित। पंडितक उद्देश्य प्राचीन घटनाक ऐतिहासिक पुनःप्रमाण नहि, उपस्थित भीड़केँ प्रार्थनाक अर्थ बुझाएब अछि।

पुराणक देव-उद्धार बनाम ग्रामक मानव-सहायता

वृद्ध पंडितक कथामे भगवान स्वयं गजेन्द्रकेँ मुक्त करैत छथि। वर्तमान जोड़ी पोखरिक घटनामे कोनो देवता उतरैत वा गोहिसँ प्रत्यक्ष संघर्ष करैत नहि वर्णित छथि। युवकसभ रस्सा आ बाँससँ सहारा दैत छथि, आ गोहि पकड़ ढील कऽ देत अछि। तेँ ‘पुराणक घटना फेर ठीक ओहिना घटल’ एहन उपसंहार पाठसिद्ध नहि। प्राचीन आख्यान मानव-संगठन लेल प्रेरक उदाहरण बनैत अछि, पर वर्तमान समाधानक दृश्यगत कर्ता मानवीय सहयोगी छथि। बूढ़बाक प्रतिपादन एहि परिवर्तनक दार्शनिक सूत्र रचैत अछि—प्रार्थना आ प्रयत्न दुनू चाही। एहि भेदकेँ बचाने बिना अन्तर्पाठक सृजनात्मक रूपान्तरणक अर्थ अस्पष्ट होयत।

‘हजारो बरख’क पौराणिक काल आ गीतक ‘बरख बीतल’

गीत गबैत अछि जे गजराजक संघर्षमे ‘बरख बीतल’। पंडित पुराणक हाथीराज सम्बन्धमे ‘हजारो बरख’क संघर्ष बतबैत छथि। मुख्य घटना एक गर्मीक दुपहरियासँ प्रारम्भ भऽ सीमित ‘बहुत काल’क सहायता-अवधिमे सम्पन्न होइत अछि। एहि कालिक स्तरकेँ अलग रखनाइ आवश्यक: गीतक पौराणिक विस्तार, पंडितक कथात्मक स्मरण आ वर्तमान घटनाक गद्यसमय एक नहि। गीतमे गजराज शब्द पुराण आ स्थानीय हाथी दुनूक बिम्बकेँ एक-दोसरामे मिलाबैत अछि, जकर कारण पठनमे अनपेक्षित भ्रम सम्भव। आलोचना एहि कथात्मक सम्मिश्रणकेँ चिन्हैत अछि, बरखों धरि पोखरिमे फँसल स्थानीय हाथीक अनघटित इतिहास नहि रचैत।

गीतमे हाथीक ‘नाम-पुकार’ आ गद्यमे मानवक पुकार

लोकगीतक निर्णायक वाक्य ‘तखन एक नाम पुकारल’ हाथीक सन्निकट रखल गेल अछि। काव्यरूपमे ओकरा गजराजक नामस्मरण बुझल जा सकैत अछि। मुदा मुख्य कथामे स्थानीय गजराज चिचियाइत अछि, सूँढ़ उठबैत अछि; ओ कोनो देवताक नाम अथवा लोकअनुष्ठानक शब्द बोलैत नहि। धार्मिक पुकार पंडित, ग्रामक स्त्री-पुरुष आ सूर्यनाथक नेतृत्वमे व्यवस्थित होइत अछि। एतय माध्यम-भेदक कारण गीत हाथीक भीतरी श्रद्धा व्यक्त करैत प्रतीत होइत अछि, गद्य मनुष्यक प्रत्यक्ष कर्म। अन्तरकेँ चमत्कारी पशुभाषाक कल्पना कऽ दूर करब अनुचित।

गजराजक आत्मानुभव : देहगत संकेत आ मनोभावक अनुमान

वास्तविक हाथीक देहगत व्यवहार—पानि पिबय उतरब, चिचियाएब, सूँढ़ उठाएब, पैर फँसब, कमजोर अवस्थामे किनारे पहुँचना—पाठमे उपलब्ध अछि। ओकर भीतर ‘अहंकार’ छल वा ओ सचेत धार्मिक समर्पण करलक, ई गद्यमे निर्दिष्ट नहि। पुराणक गजेन्द्रपर लागू कथनकेँ वर्तमान हाथीक मनपर आरोपित करब एक अनुचित अन्तःकरण-पाठ होयत। गजराज कमजोर होइतहुँ जीवित बाँचैत अछि; मनुष्यक अनुपस्थित अवधारणात्मक भावना जोड़बासँ पशुक वास्तविक संकटक देहगत गंभीरता कम हो सकैत अछि। एहि अध्यायकेँ मानवेतर जीवनक दृष्टिएँ पढ़ने हाथी केवल देवकथा-प्रतिमा नहि, नैतिक सहायता-योग्य जीव बनैत अछि।

सूर्यनाथक दौड़ : श्रोता सँ कर्म-आयोजक बनबाक मोड़

वृद्ध पंडितक कथा सुनि सूर्यनाथ पीपर दिस दौड़ैत छथि आ बूढ़बासँ तत्काल उपाय पुछैत छथि। एहि दौड़क नाटकीय महत्त्व अछि: पुराण-स्मरण स्वयं समाधान नहि दैत, स्थानीय सामुदायिक संस्था लग निर्णायक प्रश्न पहुँचबैत अछि। सूर्यनाथ वैचारिक उत्तर शुनबाक बाद गामकेँ जुटाकऽ कार्यविभाजन करबैत छथि। ओ स्वयं रस्सा पकड़ैत छथि अथवा बचावस्थलमे कोन विशिष्ट क्रिया करैत छथि, पाठ नहि बतबैत; हुनकर प्रमाणित क्रिया संयोजन अछि। एहि भेदसँ नेतृत्वक अर्थ केवल निजी वीरता नहि, सामूहिक कार्यक व्यवस्था ठहरैत अछि।

बूढ़बाक संशोधित स्वीकार : ‘सही’, मुदा ‘अकेले पर्याप्त नहि’

बूढ़बा पंडितक मन्तव्यकेँ झटकारैत नहि; कहैत छथि जे पंडितजी सही कहलनि, मुदा ‘प्रार्थना अकेले पर्याप्त नहि’। एहि उत्तरक संरचना पूर्वपक्षक पूर्ण खण्डन नहि, सीमाबद्ध स्वीकार आ पूरक साधनक प्रस्ताव अछि। सांस्कृतिक श्रद्धाकेँ मानवीय उपचार-प्रयासक विरोधमे ठाढ़ नहि कएल गेल। मुदा प्रार्थनाक अनिवार्य कारणात्मक आवश्यकता स्वतः सिद्ध नहि: कथा सामूहिक प्रार्थना संग रस्सा-बाँसक प्रयोग देखबैत अछि, केवल सहायता अथवा केवल प्रार्थनाक परिणामक तुलनात्मक दृश्य नहि। एहि सूक्ष्म भेदक कारण नैतिक सम्मिलन आ प्रमाणित कार्यकारणक दावा अलग रहैत अछि।

‘केवल तर्क’क सीमा : पूर्व दार्शनिक अध्यायसभक प्रतिध्वनि

बूढ़बा कहैत छथि जे केवल प्रार्थना यथेष्ट नहि, ‘ठीक ओहिना जेना केवल तर्क अकेले पर्याप्त नहि’। एतय उपन्यासक आरम्भिक शंख-रजत, आत्मसिद्धि आ न्याय-विवेचनक व्यापक बौद्धिक धारा लोकजीवनक तत्काल संकटसँ जोडाइत अछि। जे शास्त्रार्थ बौद्धिक स्पष्टता देत, ओ देहक वास्तविक संकटमे कर्मरूपेँ परिणत होएबाक चाही—ई अध्यायक आन्तरिक आलोचनात्मक सूत्र अछि। तथापि मूल कथाक बचाव-व्यवस्था तर्कहीन नहि; रस्सा, कोण आ दबावक चयन स्वयं व्यावहारिक विवेकक प्रयोग अछि। तर्क बनाम कर्मक कठोर विभाजन एहि दृश्यसँ संगत नहि, बल्कि तर्कक कर्मसँ संयोजन अधिक उचित विवेचन होयत।

‘मूल गोहि’ आ स्थानीय विशाल गोहि : अभिधानक भेद

पानिमे हाथीक पैर पकड़निहार जन्तु ‘एकटा विशाल गोहि’ कहल गेल अछि; सार्वजनिक प्रार्थनामे लोक ‘मूल गोहि’केँ सम्बोधित करैत छथि, आ राति भेंटो ‘मूल गोहि’केँ चढ़ाओल जाइत अछि। ई दुई उल्लेख समान प्राणीसँ

सम्बन्धित छथि कि जलक पूर्व-स्थापित लोकदैविक सत्ताक अलग अभिधान—वर्तमान अध्याय एकर स्पष्ट समीकरण नहि दैत। तें भौतिक गोहि स्वयं मूल गोहि देवता अछि, अथवा मूल गोहि पकड़क आदेश देलक—एहन कथात्मक घटना जोड़ब गलत। जकर भौतिक घटना देखाइत अछि ओकर पारिस्थितिक स्थिति आ जकरा प्रार्थना कएल जाइत अछि ओकर धार्मिक-अनुष्ठानिक स्थिति अलग रखब चाहिए।

पानीक ‘हर बूँद’मे बूढ़बा : अलौकिक अस्तित्वक नव विस्तार

अध्याय [–७०]मे बूढ़बा पुरान पीपरसँ चन्ना गाछीक प्रत्येक जड़ि धरि अपन उपस्थिति महसूस करैत छथि। वर्तमान अध्याय सीधा कहैत अछि जे ओ ‘पानिक हर बूँदमे व्याप्त’ छलाह आ संकट पहिनहि अनुभव करैत छलाह। ई नव विधान जल-व्याप्त अलौकिकता जोड़ैत अछि, मुदा एहि विस्तारक उद्गम, पीपर–जड़ि–पानीक पारस्परिक सम्बन्ध अथवा सीमाक पृथक दृश्य नहि। एतय निश्चयपूर्वक अटल विरोध कहब जल्दबाजी, किएक तँ जादुई कथा-संसारमे बहु-माध्यमक सत्ता सम्भव अछि। तथापि नियमक क्रमिक स्थापना बिना सर्वव्याप्तिक वृद्धि उपन्यासक आन्तरिक नियमक सुस्पष्टताकेँ चुनौती दैत अछि।

बूढ़बाक पूर्वज्ञान आ मानवक प्रश्न : क्रियात्मक आवश्यकता

कथावाचक कहैत छथि जे बूढ़बा पानिक प्रत्येक बूँदमे उपस्थित होएबाक कारण संकट पहिनहि अनुभव कऽ रहल छलाह। तइयो सूर्यनाथक प्रत्यक्ष पुकारपछाति हुनकर व्यवहारिक दिशा-निर्देश सामने अबैत अछि। एहि क्रममे एक प्रासंगिक प्रश्न उठैत अछि: यदि संकट पहिनहिसँ ज्ञात छल, तँ बूढ़बा स्वतः बचाव केना आरम्भ नहि करौलनि? कथा एहि प्रसंगमे हुनकर कार्यसीमा अथवा पूर्वज्ञानक व्यवहारिक बन्धन स्पष्ट नहि करैत। तथापि पूर्वज्ञानसँ प्रत्यक्ष मानव-संगठन अपने आप घटि नहि जाइत; सूर्यनाथक आयोजक भूमिका स्वतन्त्र कथात्मक आवश्यकता रखैत अछि। आलोचना एहि अनकहल सेतुकेँ स्पष्ट करैत अछि, बूढ़बाक कल्पित निष्क्रियता-पाप घोषित नहि।

प्रार्थनाक दू स्त्रोत : पुराणश्लोक आ कबड्डीक पुकार

पोखरिक कात पंडित आ स्त्री-पुरुष पुरान गजेन्द्र-श्लोकक संग कबड्डी-अनुष्ठानक विशेष पुकार करैत छथि। एहि सम्मिलनमे ग्रन्थीय धार्मिक परम्परा आ गढ़ नारिकेलक स्थानीय नाम-बचाओ संस्था एक साथ आयल अछि। कोन मूल संस्कृत श्लोक कहल गेल, कतेक बेर दोहरायल गेल अथवा सामूहिक लय की छल, मूल अध्याय निर्दिष्ट नहि। तें अविशिष्ट पुराणपाठकेँ अक्षरशः उद्धृत करब अथवा गीतक कल्पित सुर-ताल जोड़ब अनुचित। कथा सम्बन्धित परम्परासभक सामाजिक सहअस्तित्व देखबैत अछि; साहित्यिक आलोचनाक उद्देश्य एकर जटिल आंशिक संगतिकेँ चिन्हब अछि, दूनू शास्त्रीय पद्धतिक पूर्ण दार्शनिक समानता सिद्ध करब नहि।

‘गजराज हमरा सभक’ आ ‘जल अहाँक’ : अधिकारक लोकनैतिकता

समुदायक विशेष पुकारमे ‘गजराज हमरा सभक अछि’क संग ‘अहाँक अपन जल अहाँक अछि’ जोड़ल गेल अछि। ई अद्भुत द्विपक्षीय स्वीकृति अछि: मनुष्य हाथीपर सामुदायिक सम्बन्धक दावा करैत छथि, संगहि जलक अन्य जीव वा लोकसत्ताक अधिवासकेँ नकारैत नहि। एहि शब्दावलीमे पूर्ण विजय-अधिकारक बदला संगति आ निवेदनक नैतिकता अछि। मुदा हाथी मन्दिरक उत्सव-जुलूस लेल पोसल गेल अछि, तेँ ‘हमरा सभक’ स्वामित्व

अथवा देखभालक अस्पष्ट भेद राखैत अछि। गोहिक जल-अधिकारक सम्मान आ गोहिक भोजन/आक्रमणक जैविक व्यवहार बीच वास्तविक नैतिक तनाव अलग विचार माँगैत अछि।

विशेष भेंटक वचन : देवसम्बन्धी विनिमयक प्रश्न

प्रार्थनाक भीतर लोक रातिमे ‘एकटा विशेष भेंट’ चढ़एबाक प्रतिज्ञा करैत छथि; गजराज बँचलाक बाद ओहि राति वचन पूरा कएल जाइत अछि। मुदा भेंटमे की पदार्थ छल, के अर्पण केलक, कोन पात्र लाभान्वित भेल, अथवा अनुष्ठानक सामाजिक मूल्य की छल—मूल कथा निर्दिष्ट नहि। ताहि कारण भेंटकेँ पशुबलि, माछ, अन्न अथवा कोनो विशेष पूजा-सामग्री घोषित करब कल्पित पाठ-पूर्ति होयत। घटनागत तथ्य एतबे अछि जे आश्वासन देल गेल आ रात्रिमे अनुष्ठान कएल गेल। भेंटक प्रभावसँ गोहिक पूर्व जकड़न ढील भेल—एहन कारणक्रम समयानुसार असम्भव, किएक तँ ढील होएब भेंटसँ पहिने घटैत अछि।

एक संगे दू प्रकारक कार्य : समकालिक क्रियाक विन्यास

सूर्यनाथ गामकेँ जुटाकऽ प्रार्थना आ भौतिक बचाव ‘दुइ काज एक संग’ करबैत छथि। एतय समय-संरचना मुख्य अछि: पहिने प्रार्थना समाप्त, तकर बाद रस्सा—एहन चरणबद्ध क्रम मूलमे नहि। स्त्री-पुरुषक ऊँच स्वरक पुकार चलैत अछि, संगहि मजगूत युवक रस्सा आ बाँसक प्रयोग करैत छथि। एहि समानान्तर दृश्यसँ सामूहिक क्रियाक तालबद्धता बनैत अछि। मुदा दोसर क्रियाकेँ पहिलक दिव्य परिणाम कहि देब कारण-कार्यक स्वतन्त्र मूल्यांकनकेँ रोकैत अछि। समकालिकता कथाक नैतिक एकता रचैत अछि; प्रार्थना स्वयं यांत्रिक मुक्ति देलक—से पाठमे प्रत्यक्ष परीक्षण नहि।

कार्य-विभाजन : प्रार्थनाकारक आ शारीरिक बचावकर्ता

पंडित आ गामक स्त्री-पुरुष सभ प्रार्थना करैत छथि, ‘मजगूत युवक सभ’ रस्सा-बाँससँ बचाव करैत छथि। ई स्पष्ट रूपसँ दू क्रियागत समूहक उल्लेख अछि, पर एकर अर्थ सभ स्त्री बचावक उपकरणसँ दूर रहलीह अथवा सभ वृद्ध निश्चेष्ट छलाह—एहन व्यापक निष्कर्ष नहि। कथा कठिन शारीरिक श्रमक श्रेय पुरुष-युवक श्रेणीकेँ दैत अछि, जबकि सामूहिक स्वरमे स्त्रीसभक उपस्थिति चिन्हैत अछि। सामाजिक-आख्यानशास्त्रीय प्रश्न ई अछि जे शारीरिक नेतृत्व, तकनीकी ज्ञान आ धार्मिक स्वरक बीच नाम आ अधिकार कोना वितरित भेल? कोनो व्यक्तिगत युवकक नाम देल नहि गेल, तें नायकत्व संगठित श्रमक सामूहिक रूपमे देखाओल गेल।

रस्सा, बाँस, कोण आ दबाव : क्रियाक पाठसिद्ध विशिष्टता

गद्यमे युवकसभ रस्सा आ बाँस लऽ कऽ ‘धैर्यपूर्वक, कोणसँ, दबाव डालैत’ हाथीक जकड़ल पैर मुक्त करबाक प्रयास करैत छथि। ई अध्यायक सबसँ ठोस कर्म-विवरण अछि, जकर कारण ‘प्रयास’ केवल बौद्धिक नारा नहि रहैत। मुदा रस्सा ककरा बाँधल गेल, बाँस केना राखल गेल, गोहिक पकड़ कोन दिशा सँ ढील भेल, नहि बताओल गेल। तें एकरा प्राणीरक्षा लेल आधुनिक प्राविधिक पद्धति अथवा वास्तविक जीवनमे अनुकरणीय सुरक्षा-सूत्र नहि बनाउ। साहित्यिक महत्त्व एतय व्यवहारिक युक्तिक उपस्थितिमे अछि, वैज्ञानिक पशु-बचाव मैनुअल प्रस्तुत करबामे नहि।

हिंसारहित बचावक अभिप्राय आ ओकर सीमा

कथा स्पष्ट कहैत अछि जे युवक गजराजकेँ आओर हानि पहुँचबए बिना आ गोहिकेँ सीधा चुनौती दिए बिना बचाव करैत छथि। एतय संकट-दृश्य हिंसक प्रतिशोधक रूप नहि लेत। दुई प्राणीक जीवित रहबाक सम्भावना सुरक्षित रखबाक प्रयत्न सांस्कृतिक सहजीवनक आदर्श अछि। तथापि गोहिक भयावह पकड़ आ जलक वास्तविक जोखिमक बीच एहन योजना व्यवहारिक रूपेँ केना सफल भेल, तकर पर्याप्त भौतिक विस्तार नहि अछि। कथा पशु-नैतिकताक कल्पना खोलैत अछि, नहि कि जोखिम-मुक्त उद्धारक प्रमाणित तकनीक। ‘नहि मारब’क अभिप्राय समुचित; वास्तविक बचावक परिणाम कथा-नियन्त्रित अछि।

पकड़ ढील होएबाक क्षण : नाटकीय विलम्ब आ अज्ञात कारण

‘बहुत काल संघर्षक बाद, अचानक’ गोहि पकड़ ढील कऽ दैत अछि। ‘बहुत काल’ से कथनक अवधि अनिश्चित आ ‘अचानक’ परिणामक तीव्रता बतबैत अछि। एतय बचाव-प्रयास आ पकड़ ढील होएब क्रमिक रूपसँ जुड़ल छथि, मुदा गोहिक यांत्रिक प्रतिक्रिया, डर, थकान अथवा स्वेच्छाक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। कारणपरीक्षामे इएह निर्णायक रिक्ति अछि। रचनाकार सामूहिक प्रयत्नक पश्चात् मुक्ति देखबैत छथि; पाठक ओकरा कथात्मक कार्य-परिणाम मानि सकैत छथि, लेकिन कोनो एक गुप्त साधनकेँ अन्तिम कारण ठहराएब अतिक्रमण होयत।

‘जेना ओकरा स्वयं बुझायल’ : मानवीकरणक सीमा

गोहि ढील कऽ पानिक गहींराइमे जाइत अछि, आ कथावाचक जोड़ैत छथि—‘जेना ओकरा स्वयं बुझायल होइक जे ई युद्ध ओकर हेतु नहि छल।’ ‘जेना’ शब्द एक तुलनात्मक सम्भावना खोलैत अछि, गोहिक भीतरक विचारक प्रत्यक्ष वाचिक साक्ष्य नहि। एतय जन्तुकेँ युद्धक अर्थ बुझनिहार प्रतिपक्षी बनएबाक मानवीकरण कथा-शान्तिक प्रभाव बढ़बैत अछि। मुदा विशाल गोहिक स्वतन्त्र इच्छाशक्ति, नैतिक परिवर्तन अथवा आध्यात्मिक क्षमाक घोषित तथ्य एतयसँ निकालब असंगत। एहि काव्ययुक्तिकेँ तर्कक प्रमाण नहि, गैर-मानवीय प्राणी प्रति अहिंसात्मक कल्पनाक रूपमे पढ़ब उपयुक्त अछि।

गजराजक किनारे पहुँचना : विजयोत्सवक वास्तविक सीमा

गोहि पानिमे विलीन भेलाक बाद गजराज ‘कमजोर मुदा जीवित’ किनारे धरि पहुँचैत अछि। विजय एतय पूर्ण आरोग्यक घोषणा नहि; तत्काल मृत्युसंकटसँ मुक्त जीवक दृश्य अछि। कथावाचक पछिला चिकित्सकीय जाँच, चोटक उपचार, भविष्यक जुलूसमे वापसी अथवा महावतक पुनर्सम्बन्धक विवरण नहि दैत। एतय रसात्मक सन्तोष सीमित तथ्यपर आधारित होयबाक चाही: जकड़न छूटल आ हाथी जीवित निकलल। गामक हर्षध्वनि सामूहिक समाधानक निशानी बनैत अछि, पर प्राणी कल्याणक सम्पूर्ण इतिहास नहि।

महावतक बादक अनुपस्थिति : निकट श्रमक विस्मरण

प्रारम्भमे महावतक भयपूर्ण पुकार घटना चालू करैत अछि; नीतिगत निर्णय आ बचावक बीच हुनकर भूमिका फेर नाटकक केन्द्रमे नहि लौटैत। मन्दिरक हाथी सँ दैनिक सम्बन्ध रखनिहार व्यक्ति सामुदायिक नायकत्वक अन्तिम उत्सवमे नामहीन रहि जाइत छथि। ई पाठमूलक तथ्य श्रम-प्रतिनिधित्वक विषमता देखबाक अवसर दैत अछि।

तथापि ओ स्वयं बचावमे नहि छलाह—एहन नकारात्मक घटना नहि सिद्ध। पाठ हुनका स्थान नहि दैत, तकर आलोचना सम्भव अछि; अनुपस्थिति भरसँ कायरता, दोष अथवा उपेक्षाक इतिहास बनाउ अनुचित।

वृद्ध पंडितक ज्ञान : कथात्मक अधिकार, तकनीकी निर्णय नहि

वृद्ध पंडित पुराणक गजेन्द्र-मोक्ष कथा पहचानैत छथि, जकर कारण भीड़क भयसँ प्रार्थनाक दिशि पहिल अर्थपरिवर्तन होइत अछि। ओ रस्सा-बाँसक प्रस्ताव नहि रखैत; बूढ़बा आधुनिक अर्थमे चिकित्सक सेहो नहि। पंडितक अधिकार शास्त्रीय उदाहरण बताबयमे अछि। कथा शास्त्रीय वचनकेँ पूर्णतः असफल घोषित नहि करैत, बल्कि ओकरा व्यावहारिक निर्णयक एक अङ्ग बनबैत अछि। शास्त्रीय अनुकरणक सीमा यथार्थतः एकरूप घटनाक अभावमे अछि: पुराणमे दैवी आगमन, स्थानीय घटनामे सामूहिक भौतिक बचाव। तेँ कथावाचक ‘एकहि सत्य’ कहितो कथानकक कार्यविधि आ परिणामक एजेंसी अलग अछि।

प्रार्थना आ प्रयत्नक संयुक्त सिद्धान्त : प्रमाणक कठिनाई

बूढ़बाक अन्तिम भाषण ‘प्रार्थना आ प्रयास दुनू चाही’क सामान्य नैतिक नियम स्थापित करैत अछि। कथा एकटा सफल घटनामे दुनू एकसाथ देखबैत अछि। तर्कगत आपत्ति ई अछि जे सफल संयुक्त घटना मात्रसँ दुनूक प्रत्येक स्थिति मे अनिवार्यता सिद्ध नहि होइत। यदि दुनू उपस्थित छथि आ मुक्ति भेल, तेँ ‘दुनू आवश्यक’क व्याप्ति लेल केवल एक संयुक्त दृष्टान्त अपर्याप्त। वास्तविक पशु-पकड़ छुटबाक भौतिक पद्धति अलग परीक्षण माँगैत अछि। ई दार्शनिक सीमा चिन्हित करनाइ सांस्कृतिक प्रार्थनाक मानवीय अर्थकेँ कम नहि करैत; कथनक प्रेरक मूल्य आ सार्वभौमिक कारणनियमकेँ अलग करैत अछि।

शास्त्रार्थक संक्षिप्त क्रिया : प्रस्ताव-सीमा-संशोधन

पंडित कहैत छथि प्राचीन गजेन्द्रक उद्धार प्रार्थनासँ भेल, तेँ प्रार्थना चाही। बूढ़बा पंडितक भावनात्मक अभिप्राय स्वीकारि व्यावहारिक सहायता जोड़ैत छथि। सूर्यनाथ संयुक्त क्रिया आयोजित करैत छथि। कोनो स्वतन्त्र प्रतिपक्षी फेर बूढ़बाक संयुक्त-आवश्यकताक सामान्यीकरणकेँ परखैत नहि। अतः ई पूर्ण शास्त्रार्थक निर्णायक प्रमाण-सत्र नहि, एक घटना-आधारित संक्षिप्त विचारविनिमय अछि। एकर उपलब्धि तर्कक क्रियामे उतरब; सीमा प्रतिपक्षीय प्रश्नक शीघ्र बन्द होएब।

पूर्वकथा-कबड्डी अनुष्ठानक पुनःप्रयोग

कबड्डी नाम-बचाओ अनुष्ठानक पूर्वस्थापित सामाजिक ध्वनि अछि। वर्तमान संकटमे ओकर विशेष पुकार पोखरि किनारे प्रयुक्त होइत अछि। एहि कारण पुरान सांस्कृतिक खेलक आवाज केवल मृतकस्मरण अथवा उत्सव धरि सीमित नहि, प्राणी-जीवनरक्षाक सामुदायिक आवाहन बनैत अछि। मुदा वास्तविक कबड्डी खेलक पारी, नियम, मैदान अथवा हार-जीतक घटना एहि अध्यायमे नहि घटैत। अनुष्ठानक पुकार आ खेलक मैदानक व्यवहार अलग श्रेणी छथि। पूर्व-स्थापित प्रथाक एहि नूतन प्रसंगमे आगमन लोक-संस्कृतिक लचक देखबैत अछि, किन्तु विशिष्ट धार्मिक क्रियाक प्रमाणगत असर नहि।

रातिक भेंट : बचावपछातिक नैतिक वचनपूर्ति

संकटक समय देल गेल विशेष भेंटक प्रतिज्ञा ओहि राति निभायल जाइत अछि। दिनक संकट आ रातिक सामूहिक वचनपूर्ति कथा-समयक दू स्पष्ट घड़ी बनैत अछि। एहि क्रममे समुदाय अपन शब्दक जिम्मेदारी लेत अछि; वचन केवल बचावपूर्व मनोबल बढ़एबाक साधन नहि रहैत। तथापि भेंटक सामाजिक, आर्थिक अथवा धार्मिक स्वरूप अनिर्दिष्ट अछि, तें ओकरा गोहिक भोजनसँ वैज्ञानिक रूपसँ जोड़ब अथवा हानि-वृद्धि कथनसँ सिद्ध करब सम्भव नहि। कथामे जे वर्णित अछि ओ वचननिष्ठा; भेंटक वस्तुगत प्रभाव अनिर्णीत।

मुख्य कथाक ‘मूल गोहि’ : पौराणिक आ पारिस्थितिक स्तर

वर्तमान गोहि एक वास्तविक कथाजगतक जलजीव अछि, जकर पैर पकड़बाक क्रिया देखाओल गेल अछि। ‘मूल गोहि’ समुदाय द्वारा सम्बोधित एक स्थानीय दीर्घ अनुष्ठान-सत्ता थिक। कथामे दूनूक सम्बन्ध संकेतित होइतहुँ सत्तामूलक पहचान अलग सँ घोषित नहि। एहि अस्पष्टतासँ जलक भौतिक संसार आ गामक धार्मिक कल्पना एकहि स्थानपर रहि सकैत अछि। लोक-सत्ता मानब पात्रक विश्वासक स्तर अछि; गोहिक जैविक व्यवहारक अनिवार्य दैवी नियन्त्रण पाठमे सिद्ध नहि। ई भेद उपन्यासक जादुई यथार्थकेँ तार्किक पढ़बाक आधार अछि।

गजराज-मोक्ष आ गज-ग्राह : नामक रूपान्तरण

प्राचीन ‘गजेन्द्र-मोक्ष’ कथा सुनलाक बाद बूढ़बा वर्तमान घटनाकेँ ‘गज-ग्राहक कथा’ नाम दैत छथि। ई नामकरण एक स्थानीय प्रसंगकेँ भविष्यक लोकस्मृति-मालामे प्रवेश दैत अछि। शीर्षकमे ‘गज’ आ ‘ग्राह’क सम्मिलन जलक दो प्राणीकेँ संघर्षक एक अभिव्यक्तिमे बाँधैत अछि। यद्यपि कथा मे ‘ग्राह’क शास्त्रीय शब्द आ स्थानीय ‘गोहि’क सम्बन्ध एकसंग आनल गेल अछि, एकर भाषिक-प्राणिवैज्ञानिक समानार्थकता बिना विशिष्ट शोधक सार्वत्रिक निष्कर्ष मानल नहि जाए। कृतिक भीतर नामरचना सफल अछि; बाह्य जीववर्गीकरण अलग प्रश्न।

शीर्षक ‘गज-ग्राहक’क व्याकरणिक द्विअर्थ

पाठक ‘गज-ग्राहक’ शब्दकेँ गज आ ग्राहक सम्बन्धी समास, अथवा साधारण आधुनिक ‘ग्राहक’ शब्दक ध्वनिसाम्य रूपमे देख सकैत छथि। कथा प्राणी-जकड़नक प्रसंगक कारण शास्त्रीय ‘गज–ग्राह’ सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। मुदा शीर्षकक वर्तनी केवल अपन आपमे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक प्रमाण नहि। ई स्वर-साम्य गामक मौखिक कथा-विकासमे ध्वन्यात्मक स्मरणयोग्यता बढ़बैत अछि। विश्लेषणक सीमा ई अछि जे शब्दक बाह्य व्युत्पत्तिक अनिश्चित दावा नहि करब, कथाक भीतर ओकर प्रतीकात्मक उद्भव देखब।

जलक अधिकार आ मानवीय स्वार्थ : नैतिक विवादक अनुपस्थिति

गाम कहैत अछि जे हाथी हमर, जल अहाँक। एहि दावामे गोहि केँ मारि देबाक आदेश नहि, आग्रह अछि जे जकड़ल प्राणी मुक्त कएल जाय। एतय मनुष्य आ जलजीवक सह-अधिकारक सम्भावना अछि। मुदा गोहिक भोजन, क्षेत्ररक्षा, मनुष्यद्वारा जलस्रोतक उपयोग, अथवा पशु-पालनक व्यापक पारिस्थितिक दबावक विषयमे कोनो स्वतन्त्र विवाद नहि। सामुदायिक प्रार्थना एहि प्रश्नसभकेँ भाषिक सान्त्वना दैत अछि, समाधानक विस्तृत पारिस्थितिक नीति नहि। पर्यावरणीय आलोचना लेल ई एक उपयोगी खुलल प्रश्न अछि, न पाठसिद्ध अपराध।

आरम्भक गीतक ‘हर गोहि’ : सार्वभौम मुक्ति-दावाक सीमा

लोकगीतक अन्तिम पद ‘जे नाम धेने रहल, से हर गोहिसँ निकल’ प्रकारक सर्वसामान्य सूत्र गबैत अछि। मुख्य कथामे केवल गजराजक एक प्रसंग अछि, आ ओहिमे नामपुकारक साथ वास्तविक बचाव प्रयत्न सेहो रहल। एक घटनाक आधारपर प्रत्येक गोहिक पकड़सँ नाम-पुकार मात्र द्वारा मुक्ति सुनिश्चित नहि। एहि अन्तरमे गीतक लोकविश्वासमूलक अतिशयोक्ति आ कथाक सीमित घटनात्मक प्रमाण अलग अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई लोकगीत संकटकेँ आध्यात्मिक आशाक सार्वभौम कथन बनबैत अछि; नव्य-न्यायीय प्रमाण-परीक्षामे ओकर व्याप्ति असिद्ध रहैत अछि।

जादुई यथार्थमे गोहिक ‘बुझब’ : मानवीय संवेगक आरोपण

गोहि अन्तमे बिना विनाशक पानिमे लौटैत अछि। कथावाचक जेना ओ युद्धक अनुपयुक्तता बुझलक तेनाहि तुलना करैत छथि। ई रूपक संघर्षकेँ पूर्ण शत्रुनाशक कथा बनबासँ रोकैत अछि। पर जन्तुक मनमे शान्ति, दया, पराजयबोध अथवा आत्मचिन्तनको स्वतन्त्र शब्दबद्ध घटना नहि अछि। जादुई यथार्थक लयमे प्राणीकेँ अर्थ-ग्रहणक छवि देब एक कला-पद्धति अछि, तकरा जैविक वस्तुसत्य कऽ मानब श्रेणीभ्रम। एहि भेदक कारण उपन्यासक पशु-नैतिक सौन्दर्य आ प्रमाणगत अनुशासन दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

कथन-गति : संकट-प्रार्थना-प्रयास-मुक्ति-अनुष्ठान

मुख्य कथाक पाँच गतिशील चरण स्पष्ट छथि: गर्मीक दुपहरि पानि पीबय गजराजक जाना; गोहिक पकड़ आ भीड़क भय; पंडितक पुराण-स्मरण आ बूढ़बाक सलाह; युवकसभक भौतिक प्रयत्न; रातिक भेंट आ बूढ़बाक सार्वजनिक अर्थघोषणा। एहि घटनाक्रममे प्रत्यक्ष संकटक आरम्भ तीव्र, प्रयत्नक अवधि अनिश्चित, अन्तिम उपसंहार व्याख्यानात्मक अछि। पाठकक भावनात्मक केन्द्र त्वरित संकटसँ सार्वजनिक समाधान दिस खसैत अछि। मुदा गजराजक बादक जीवन, महावतक वापसी आ जलजीवक स्वतन्त्र अस्तित्वक कथा तत्काल समाप्त भऽ जाइत अछि—मुक्ति सार्वजनिक उपदेशक समाप्तिबिन्दु बनैत अछि।

दृष्टिकेन्द्र : मनुष्यक समूह आ मानवेत्तर प्राणीक दूरी

कथावाचक गजराजक देहगत संकट देखबैत छथि, मुदा ओकर भीतर प्रवेश नहि करैत। बूढ़बाक जलव्याप्त पूर्वज्ञानक कथन एक अलौकिक दृष्टिकेन्द्र जोड़ैत अछि। पंडित पुराणक दृष्टान्तसँ दृश्य पढ़ैत छथि; सूर्यनाथ वर्तमान सहायता संगठित करैत छथि; युवकसभ प्रत्यक्ष श्रम करैत छथि। एहि बहुकेन्द्रित विन्यासमे मानवीय व्याख्याकारक आवाज प्रबल छथि, हाथी आ गोहिक निज अनुभूति अनुमानक विषय रहैत अछि। जन्तुकेँ मानवक शब्दमाला देनाइ कथाक मुख्य गद्यक विधान नहि। तेँ गीतक ‘नाम पुकारल’केँ गद्यमे प्रमाणित पशुभाषण मानब श्रेणीभ्रम।

रसात्मक चाल : भय, करुणा, वीर्य आ शान्ति

पानिक उथलपुथल, हाथीक चिचियाहट आ महावतक व्याकुल पुकार भयक संवेग जगबैत अछि। जकड़ल जीवक दुर्बलता करुणा उत्पन्न करैत अछि; युवकसभक धैर्यपूर्ण प्रयास उत्साह तथा वीरभाव जगबैत अछि; गोहिक छोड़ि

देब आ गजराजक जीवित निकलब शान्तिपरक राहतक क्षण बनैत अछि। मुदा ई रसात्मक विन्यास योजनाक उपरि आरोपित वर्गीकरण नहि: क्रमशः घटल दृश्यसभसँ भावक कारण ग्रहण होइत अछि। लोकगीत आरम्भहिसँ उद्धारक परिणाम संकेत करैत अछि, तें रहस्यक अनिश्चितता कम, करुण–वीर मिश्रित प्रतीक्षाक अनुभव अधिक बनैत अछि।

ध्वनि आ प्रतीक : जकड़नसँ मनक बन्धन धरि

बूढ़बाक अन्तिम कथन ‘जकड़नसँ मुक्ति’कैं पानिक वास्तविक संकटसँ उठाकऽ ‘मोनक’ जकड़न धरि विस्तार दैत अछि। ई प्रतीकात्मक गमन आगामी डिजिटल-मानसिक बन्धन सम्बन्धी खण्डसभक पूर्वसंकेत रूपमे व्याख्यायित भऽ सकैत अछि। मुदा वर्तमान गजराजक भौतिक पैर-जकड़न आ मनुष्यक मानसबन्धन समान कारणप्रणाली नहि। रूपकक समान धर्म—बाह्य/आन्तरिक असहायता आ सहयोगक आवश्यकता—उदाहरण होइत अछि; एकर आधारपर सभ मानसिक समस्याक समान उपचार निर्धारित नहि कएल जाए। एहि सीमा स्वीकारने प्रतीकक साहित्यिक सामर्थ्य प्रबल होइत अछि।

आधुनिक खण्डक पूर्वसूचना आ आख्यान-स्तर

अध्यायारम्भक कोष्ठकीय टिप्पणी भविष्यक खण्डमे ‘गज-ग्राह’ शब्द फेर भेटबाक सूचना दैत अछि; अन्तिम परापाठ एहि संकेतकैं ‘अंदरक गज-ग्राह’ नामक डिजिटल-मानसिक जकड़नसँ जोड़ैत अछि। ई स्पष्ट भविष्य-उन्मुख परापाठीय भाषण अछि, सूर्यनाथक समयक पात्रक अतीत ज्ञान नहि। कथावाचकक आगामी घटनापर दृष्टि आ पात्रक वर्तमान ज्ञान भिन्न स्तर छथि। एहि भेदक कारण पूर्वकथा सम्पूर्ण त्रयी लेल प्रतीककोश निर्माण करैत अछि, मुदा वर्तमान अध्यायमे अनघटित आधुनिक घटनाकैं प्रत्यक्ष दृश्य मानि कथाघनत्व बढ़ाओल नहि जाए।

भागवत पुराणक उल्लेख : अन्तर्पाठक स्रोतसीमा

अध्यायोत्तर टिप्पणी भागवत पुराणक गजेन्द्र-मोक्ष प्रसंगक नाम लैत अछि। गद्यक भीतर वृद्ध पंडित पुराणक कथा कहैत छथि, पर अध्याय मूल संस्कृत पाठ अथवा छन्द-पंक्ति प्रस्तुत नहि करैत। तें कृतिक दावाक आलोचनात्मक परीक्षण दू स्तरपर अछि: पहिलो, उपन्यासक भीतर पुराणक कथा कोन रूपमे पुनर्कथित भेल; दोसर, बाह्य भागवत पाठक सटीक तुलना, जे अलग प्रमाणित पाठसामग्री माँगैत अछि। वर्तमान समीक्षा पहिल चरण पूरा करैत अछि; दोसरक बिना ‘हजारो बरख’क पंडितवचन अथवा देव-उद्धारक क्रमकैं प्रमाणित शास्त्रीय उद्धरण घोषित नहि कएल गेल।

सामाजिक इतिहासक प्रश्न : पशुसंकटक नायक के?

कथामे सूर्यनाथ संगठक, वृद्ध पंडित अर्थदात, बूढ़बा मार्गदर्शक, युवकसभ बचावकर्ता आ महावत आरम्भिक पुकारकर्ता छथि। मुदा नायकत्वक अन्तिम भाषिक श्रेय बूढ़बाक निष्कर्षमे सामूहिक ‘अहाँ सभ’कैं देल जाइत अछि। ई सामूहिक नीतिक उपलब्धि अछि, पर विशिष्ट काज करनिहारक व्यक्तिगत नाम ओझराइत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिएँ शास्त्रीय आवाज, जीविकागत श्रम आ स्थानीय जलजीव-ज्ञानक बीच प्रत्यक्ष

वचनाधिकारक असमानता जाँचल जाय। कथा श्रमकेँ क्रियामे देखबैत अछि, मुदा श्रमिकक आत्मकथा नहि खोलैत।

स्त्री-सहभागिता : अनुष्ठानमे स्पष्ट, निर्णयमे संक्षिप्त

गामक स्त्री-पुरुष प्रार्थनामे संलग्न छथि, ई मूल पाठमे स्पष्ट अछि। मगर उद्धारक प्राविधिक योजना बनबैत स्त्रीक प्रत्यक्ष संवाद नहि अछि; ‘मजगूत युवक’क शब्दावली शारीरिक श्रमक कर्ता बनैत अछि। एहि विवरणक आलोचनात्मक अर्थ ई नहि जे स्त्रीसभकेँ मानवता वा साहसक अभाव छल, बल्कि कथावाचक अलग पात्रवर्गकेँ अलग क्रिया सौँपैत छथि। सोनमा माझिनक पूर्वस्थापित जल-परम्परा संकटमे निर्णायक संकेत होइतहुँ ओहि परम्पराक स्त्री-अनुयायी सभक प्रत्यक्ष वचन अनुपस्थित अछि। यथार्थवादी समाजक बहुश्रुति एहि सीमित चित्रणसँ पूर्णतः प्रतिनिधित्व प्राप्त नहि करैत।

लघु प्रमाण-रजिस्टर : की निश्चित, की अनिश्चित

पाठसिद्ध तथ्य—मन्दिरमे पोसल गजराज, गर्मीक दुपहरि जोड़ी पोखरिमे पानि पीबय उतरब, विशाल गोहिक पैर पकड़ब, महावतक पुकार, पंडितक पुराण-स्मरण, सूर्यनाथक बूढ़बाक लग दौड़, प्रार्थनाक संग रस्सा-बाँसक प्रयत्न, गोहिक पकड़ ढील होएब, गजराजक जीवित किनारे निकलब, रातिक विशेष भेंट आ ‘गज-ग्राहक कथा’क नामकरण। अनिश्चित—गोहिक हमला करबाक कारण, पुराणक उद्धृत श्लोकक पाठ, प्रार्थनाक वस्तुगत कारणात्मक प्रभाव, भेंटक सामग्री, स्थानीय गोहि आ ‘मूल गोहि’क सत्तामूलक समानता, बचावक सटीक तकनीक, जन्तुसभक मनोभाव आ बूढ़बाक पानी-व्याप्त अस्तित्वक उत्पत्ति। ई भेद समीक्षा भरि कायम अछि।

अन्तर्विरोध : गीतक काल, कर्ता आ मुक्ति-कारण

तीन मुख्य पाठगत अन्तर एक साथ देखाइत छथि। पहिल, गीतमे हाथीक बरखों संघर्ष, मुख्य घटनामे गर्मीक दुपहरि आ अनिर्दिष्ट दीर्घ बचाव। दोसर, गीतमे हाथीक नाम-पुकार, गद्यमे मानवसमुदायक प्रार्थना; हाथीक वाचिक धार्मिक जपक दृश्य नहि। तेसर, गीत नाम-पुकारसँ उद्धारक प्रत्यक्ष सूत्र बनबैत अछि, मुख्य गद्यमे वास्तविक भौतिक प्रयास सेहो अनिवार्य भाग बनैत अछि। एहि अन्तरसभकेँ रूपक आ कथादृश्यक भेद कहि सापेक्ष संगति मिलि सकैत अछि, मुदा असङ्गतिक आलोचनात्मक उपस्थिति समाप्त नहि होइत। गद्यक मौन स्थानमे चमत्कारी संवाद जोड़ब अनुचित।

अन्तर्विरोध : देवसाक्ष्य, संख्या आ सर्वव्याप्ति

वृद्ध पंडितक पुराणकथामे भगवान स्वयं उद्धारक छथि, जबकि वर्तमान दृश्य युवकक प्रयास आ गोहिक पकड़क ढील होएबद्वारा समाप्त होइत अछि; बूढ़बाक ‘दुनू चाही’क सामान्यीकरणक कार्यकारणीय व्याप्ति सिद्ध नहि। ‘हर मनुष्य’क जुटनाइ सामाजिक एकताक सर्वसमावेशी अलंकार अछि, प्रत्यक्ष उपस्थितिक गणना नहि। ‘पानिक हर बूँद’मे बूढ़बाक व्याप्ति पिछला गाछी-आश्रित अस्तित्वक नियममे नूतन विस्तार अछि, जकर कथात्मक सेतु अनिर्दिष्ट। एहि असमानताओं मे से किछु शैलीगत संक्षेप, किछु दार्शनिक रिक्ति आ किछु जादुई नियमक विस्तार; सभकेँ एके प्रकारक तथ्यगत दोष नहि कहल जाए।

समग्र साहित्यिक निर्णय : प्रयत्नक कथा बनल पुराण

‘गज-ग्राहक कथा’क सफलता एहि बातमे अछि जे एक परिचित पुराण-मिथककेँ ग्रामक वर्तमान पशुसंकटमे कार्यरूप देबाक प्रयास करैत अछि। सूर्यनाथक संगठित सहायता, रस्सा-बाँसक व्यवहार, गोहिकेँ मारे बिना हाथीक रक्षा आ लोकश्लोक-संयोजन घटनाक मानवीय तथा पारिस्थितिक अर्थ बढ़बैत अछि। कथा केवल प्रार्थनासँ मुक्ति दावा करैत समाप्त नहि, कार्यक ठोस दृश्य सेहो दैत अछि। मुदा उन्नत आलोचनात्मक स्तरपर लोकगीत आ गद्यक कर्ता/काल-अन्तर, प्रार्थनाक अनिर्णीत कार्यकारण, ‘मूल गोहि’क अस्पष्ट पहचान आ बूढ़बाक जलीय सर्वव्याप्ति स्पष्ट चुनौती छथि। अध्यायक मूल्यांकन सशर्त सकारात्मक: नैतिक प्रेरणा सशक्त, प्रमाण-विधान मिश्रित, आ मानवेत्तर जीवनक स्वायत्त अनुभव सीमित।

स्रोत-सत्यापन, उद्धरण-अनुशासन आ अगिला क्रम

मूल स्रोत : गजेन्द्र ठाकुरक ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–६९] ‘गज-ग्राहक कथा’; अनुक्रमणिकानुसार पृ. २४१–२४४। मूल फकरा ‘गज पानिमे, ग्राह पानिमे’, लोकगीत ‘नाम-पुकारक उद्धार’, गद्यक गजराज-संकट, ‘मूल गोहि’ पुकार आ अन्तिम बूढ़बाक भाषण पृथक पाठस्तरपर जाँचल गेल। अध्यायोत्तर भागवत पुराण सम्बन्धी टिप्पणी परापाठ मानल गेल; शास्त्रीय पाठक बाह्य मिलान बिना ओकरा अक्षरशः उद्धरणक मान्यता नहि देल गेल। अगिला प्रकरण [–६८] ‘अदालतक पहिल तारीख’मे गवाही, न्यायिक प्रक्रिया, ताड़पत्रक अभिलेख आ सामुदायिक स्मृतिक परस्पर सम्बन्धक परीक्षा होयत।

प्रकरण ३३ | मूल अध्याय –६८ — अदालतक पहिल तारीख

पूर्वकथाकाल · औपचारिक न्याय, सामाजिक समय, गवाही, व्यवस्थागत विलम्ब आ सामुदायिक प्रतीक्षा-साक्ष्य

पाठसीमा आ अध्यायक आयोजन

‘अदालतक पहिल तारीख’ पूर्वकथाकालक अध्याय [–६८] अछि। मूल अनुक्रमणिकामे एकर आरम्भ पृष्ठ २४५ आ अगिला [–६७]क आरम्भ २४९ अछि, तेँ २४५–२४८ एकर अनुक्रमणिकाजन्य पृष्ठ-परास अछि; उद्धरणक प्रत्येक पंक्तिक पृथक मुद्रित पृष्ठ एहि इलेक्ट्रॉनिक पाठसँ निर्धारित नहि। अध्याय फकरा, ‘पातपर न्याय’ लोकगीत, भोला-कमलिनी-बूढ़बा-केन्द्रित गद्यवृत्तान्त आ अध्यायोत्तर न्यायविलम्बविषयक टिप्पणीमे बँटल अछि। एहि स्तरसभकेँ अलग पढ़ल जएबाक चाही। मुख्य समीक्षा न्यायिक संस्थाक आगमन, समान अधिकारक प्रतिज्ञा, प्रक्रियागत विलम्बक अनुभव, प्रतीक्षाक सामाजिक लागत आ स्मृतिरक्षाक नव नैतिक क्षेत्रक जाँच करैत अछि।

ई पूर्वक गणना अछि, नव स्वतन्त्र गणना नहि। कथामे कमलिनी प्रतीक्षारत लोककेँ सहायता, सलाह आ साथ देबाक संकल्प करैत छथि, मुदा एहि संकल्पक विधिवत् संगठन अथवा अगिला सभासभक पुनरावृत्तिक विस्तृत दृश्य नहि अछि। अतः योजनामे उल्लिखित सम्भावित अनुष्ठानकेँ सम्पन्न इतिहास कहबाक बदला एक नव सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रारम्भिक संकल्पक रूपमे विश्लेषित करब प्रमाणानुकूल होयत।

शीर्षकक ‘पहिल तारीख’ आ कथाक पाँच बरख

शीर्षक ‘अदालतक पहिल तारीख’ कहैत अछि, मुदा गद्यक केन्द्र केवल एक अदालत-दिवस नहि। राज्यक अदालतक स्थापना, प्रारम्भिक लोकस्वागत, धीरे-धीरे विलम्बक प्रवेश, भोलाक तीन बरखक प्रतीक्षा, वृद्ध वकीलक संवाद आ पाँच बरख बादक निर्णय समाहित अछि। ‘पहिल तारीख’ एक आवर्तित प्रक्रियाक आरम्भविन्दु बनैत अछि, सम्पूर्ण कथाक कालिक सीमा नहि। एहि भिन्नतासँ कथा न्यायिक प्रक्रियाक छोट औपचारिक पड़ावकेँ दीर्घ जीवन-क्षतिक प्रतीक बनबैत अछि। जँ शीर्षककेँ शाब्दिक केवल पहिल सुनवाई मानि लिअ, तँ कथाक काल-संरचना आ नैतिक केन्द्र दुनू गलत बुझायल जाएत।

फकरामे ‘तारीख’ बनाम ‘पात’ : दू अभिलेखीय व्यवस्था

‘तारीखपर तारीख, मुदा न्याय पातपर— अदालत देह पुछै, गाम नाम राखै’ आरम्भिक फकराक मूल विपर्यास अछि। तारीख औपचारिक प्रक्रियाक आवर्ती एकक, पात स्थानीय स्मृतिक लचीला अभिलेख, आ देह–नाम सामाजिक अस्तित्वक दू स्तर बनैत अछि। मुदा गद्यक भोलाक मुकदमामे नारिकेल पातपर दर्ज कोनो विशिष्ट गवाही न्यायालयमे प्रस्तुत नहि होइत। तेँ ‘न्याय पातपर’ मूलतः लोकवाणीमे संस्थाक मूल्यगत तुलना अछि, भोलाक केसक फैसला वास्तवमे पातपर लिखल गेल—एहन घटनाक प्रमाण नहि। फकराक नैतिक तीक्ष्णता ओहि भेदकेँ स्वीकारलापर बेसी सुस्पष्ट होइत अछि।

‘पातपर न्याय’ लोकगीतक कथ्य-संरचना

लोकधुन ‘कचहरी-गीत’ दूर साहेबक कचहरी, मोट कागज, बारम्बार तारीख, गरीबक साँस घुटब आ पीपरक छाहरिमे लोकगवाहीक प्रतिरूप एकत्रित करैत अछि। पहिल पद अधिकार-स्थानक दूरी, दोसर प्रक्रियागत आर्थिक थकान, तेसर लिखित-मौखिक साक्ष्यक अन्तर आ चौठा नामक पीढ़ीगत स्थायित्वक प्रतिज्ञा रचैत अछि। एहि क्रममे गीत केवल मनोरञ्जन नहि, औपचारिक न्यायिक लिखतपर ग्राम्य स्मृतिरक्षाक नैतिक आलोचना अछि। तथापि न्यायालयक प्रत्येक लिखित प्रक्रिया भ्रष्ट अथवा असत्य अछि—एहन शाब्दिक सार्वभौम दाबी गीतक लोकनैतिक शैलीसँ स्वतः प्रमाणित नहि होइत।

गीतक ‘कागच बदलल’ आ गद्यमे कागज-छेड़छाड़क अभाव

लोकगीतमे ‘कागच बदलल, मोहर लागल’ पंक्ति अबैत अछि। मुख्य कथामे भोलाक भूमि-विवादमे जाली दस्तावेज, लिखित प्रमाणक फेरबदल, रिश्वत, अदालतक मोहरक धोखा अथवा न्यायाधीशक दुर्भावनाक कोनो घटना नहि। अतः गीतक कागज-बदलनाइ केँ भोलाक मुकदमाक प्रमाणित दस्तावेजी जालसाजी मानब अनुचित। लोकगीत प्रक्रियाक प्रति अविश्वासक सामान्य कलात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि, गद्य विशेष रूपसँ विलम्बक संरचनागत अन्याय देखबैत अछि। एहि दू आरोपक भिन्न प्रमाणिक भार अछि; आलोचनामे लोकसंवेदनाकेँ तथ्यगत न्यायिक अभियोगमे स्वतः नहि बदलल जाए।

गीतक ‘जे देखल, से बाजल’ आ साक्षी-परीक्षाक रिक्ति

लोकगीत पीपरक छाहरिमे प्रत्यक्ष देखनिहार लोकक कथनकेँ सार्वजनिक गवाहीक रूपमे रचैत अछि। मुदा भोलाक मुकदमामे पड़ोसी, पशु, खेत वा क्षतिक घटना सम्बन्धी कोन साक्षी अदालतमे बजल, कोन दस्तावेज प्रस्तुत भेल, कोन प्रतिपरीक्षा चलल, से गद्य नहि बतबैत। औपचारिक प्रमाणविधानक उपर लोकगवाहीक नैतिक श्रेष्ठताक गीतात्मक दावा अछि, मुदा मुकदमाक घटनाक्रममे प्रत्यक्ष शब्द-प्रमाणक दू प्रतिस्पर्धी धाराक नाटकीय मुठभेड़ नहि। एहि कारण समीक्षाक कार्य वास्तविक अदालती साक्ष्य गढ़ब नहि, अनुपस्थित प्रक्रियाक प्रश्न चिन्हित करब अछि।

पीपरक नीचे ‘गामक अपन न्याय’ : स्मृतिसभाक सीमा

गीत पुछैत अछि जे ‘पीपर लग’ गामक अपना न्याय अछि, जखन गद्य नव अदालतकेँ आचार्य केशवक पुरान अनौपचारिक न्यायसभाक उत्तराधिकारी बतबैत अछि। पीपरक नामरक्षा आ पुरान न्यायसभाक वास्तविक संस्थागत नियम एके वस्तु नहि ठहरैत। एतय लोकगीत दू प्रकारक सामुदायिक अनुभव—पुरान न्यायविवाद आ बूढ़बाक स्मृतिसाक्ष्य—केँ एक कल्पित नैतिक केन्द्रमे समेटैत अछि। प्रश्न ई अछि जे प्रत्यक्ष लोकस्मृति निर्णयक वैधानिक बाध्यता, समान अधिकार आ प्रतिपक्षी सुनवाईक सम्पूर्ण विकल्प भऽ सकैत अछि कि नहि। गद्य ई प्रश्नक विधिवत् समाधान प्रस्तुत नहि करैत।

सूर्यनाथक बेटी कमलिनी : उत्तराधिकारक स्त्रीरेखा

मुख्य कथा बतबैत अछि जे सूर्यनाथक बाद अनुष्ठानक भार हुनकर बेटी कमलिनीपर आयल। पछिला पीढ़ीमे विमला, तकर बाद सूर्यनाथ, फेर कमलिनी—ई पारिवारिक क्रम स्मृतिरक्षाक सामुदायिक संस्था सँग जुड़ल अछि। स्त्री फेर नव संकटक पहचानकर्त्री बनैत छथि। मुदा कमलिनीक उत्तराधिकारक चुनाव-प्रक्रिया, औपचारिक वैधता, पेशागत जीवन अथवा गामक अन्य महिला सभक भूमिकाक विवरण नहि। ‘सूर्यनाथक बाद’ निश्चित मृत्यु अथवा प्रशासनिक नियुक्तिक तारिख स्वतः नहि दैत। एहि सीमासहित कमलिनी सामाजिक नियमक आलोचनामे सक्रिय, उत्तरदायी पात्र रूपमे उभरैत छथि।

राज्यक नव व्यवस्था : पाकल भवन आ लिखित कानून

नव अदालत ‘एकटा पाकल भवन, नियुक्त न्यायाधीश, आ लिखित नियम-कानून’क संग अबैत अछि। एहि तीन वस्तुसँ संस्थागत आधुनिकताक दृश्य रूप बनैत अछि: स्थायी वास्तु, निश्चित पदाधिकारी आ संहिताबद्ध नियम। ई परिवर्तन आचार्य केशवक पुरान अनौपचारिक न्यायसभाक स्थान लैत अछि। मुदा राज्यक ऐतिहासिक नाम, संवैधानिक चरण, क्षेत्राधिकार, न्यायाधीशक व्यक्तिगत पहचान वा प्रक्रियाविधिक शीर्षक पाठमे नहि। तेँ इएह भवनक आधारपर बाह्य इतिहासक किसी विशिष्ट औपनिवेशिक अथवा स्वातन्त्र्योत्तर न्यायिक शासन-कालक तिथि तय नहि कएल जाए।

समान अधिकारक आकर्षण : पुरान व्यवस्थासँ वास्तविक प्रस्थान

प्रथम समय गामक लोक औपचारिक अदालतक स्वागत करैत छथि, कारण लिखित कानून ‘सिद्धान्ततः’ सभ जातिक मनुष्यकेँ समान अधिकार दैत अछि। एहि शब्दपर ध्यान आवश्यक: कथावाचक सिद्धान्तक स्तरपर अधिकारक सम्भावना स्थापित करैत छथि, वास्तविक न्याय-प्रवेश समान रूपेँ उपलब्ध भेल—एहन सम्पूर्ण प्रमाण नहि। तथापि नव अदालतक आगमनकेँ सर्वथा हानिकारक बखान करब गलत, कारण कथा अपनहि औपचारिक समानताक मूल्य स्वीकार करैत अछि। पुरान लोकविधान तुरन्त न्याय देबैत छल हो, तइयो ओकर प्रत्येक जातिगत असमानता ठीक छल—ई निष्कर्ष सेहो पाठ नहि समर्थित करैत।

आचार्य केशवक पुरान सभा : स्मरणक आदर्शीकरण

गद्य कहैत अछि जे साधारण भूमि-विवाद पुरान वाद-शालामे एक दिनमे ‘सुनल जाइत छल’। मुदा एक दिनमे सुनल जाएब आ पूर्ण विवेचन, निष्पक्ष साक्ष्य-परीक्षा, आदेश आ पालन एक दिनमे सम्पन्न होएब अलग प्रक्रिया छथि। कथामे पुरान न्यायसभाक ऐतिहासिक नतीजासभक तुलनात्मक आँकड़ा नहि अछि। तेँ नव अदालतक ढिलाइ देखबाक क्रममे पुरान न्यायसभाकेँ स्वतः निर्दोष आदर्श घोषित नहि करब चाही। कथा समयक फरक स्पष्ट करैत अछि; न्यायसिद्धान्त, जातिसमानता आ अपीलसुविधाक सम्पूर्ण परस्पर तुलना खुलल छोड़ैत अछि।

मुकदमा दायर करब आसान, निर्णय कठिन : पहुँच आ परिणामक अन्तर

कथावाचक नव व्यवस्था लेल दुहरा तथ्य दैत छथि—‘केस दायर करब सरल’, मुदा निर्णय धीमा। ई अधिकारक औपचारिक प्रवेश आ अधिकारक प्रभावकारी उपभोगक बीचक निर्णायक दूरी अछि। मुकदमाक पंजीकरण पीड़ितकेँ राज्य-दरवाजा धरि पहुँचबैत अछि, पर फैसला नहि। एतय कानूनक उपलब्धता आ न्यायिक परिणाम समयक कारण अलग भऽ जाइत अछि। सामाजिक रूपसँ गरीब कृषक लेल अदालत पहुँचना ही अन्तिम सफलता नहि, नुकसानक पूर्ति समय पर भेटबाक प्रश्न बेसी निर्णायक। अध्यायक मुख्य व्यवस्था-समीक्षा इएह द्वार–परिणाम अन्तरपर आधारित अछि।

भोलाक परिचय : नाम, दरिद्रता आ पड़ोसक विवाद

भोला कमलिनीक पड़ोसी आ एक गरीब किसान छथि। हुनकर खेत पड़ोसीक पशुद्वारा उजाड़ल जाइत अछि; ओ क्षतिपूर्तिक लेल अदालत जाइत छथि। एहि घटनाक कारण भोलाक आर्थिकी महत्त्वपूर्ण अछि—खेतक उत्पादनपर परिवारक आजीविका निर्भर रहबाक सम्भावना प्रबल। मुदा उपजक प्रकार, खेतक माप, पशुक प्रजाति, हानिक वास्तविक रुपये, सीमांकनक दस्तावेज अथवा प्रतिवादीक नाम नहि देल गेल। एतय भूमि-विवादक नैतिक तथ्य उपलब्ध, विशिष्ट कागजी मुकदमा बनएबाक सामग्री नहि। आलोचक मूलक संक्षिप्त नामित गरीब पात्रकेँ मनगढ़न्त सम्पत्ति-विवादक इतिहाससँ नहि भरत।

क्षतिपूर्तिक दावा : कानूनक याचना आ जीविकाक विघटन

भोला क्षतिपूर्ति माँगैत छथि; एकर अर्थ ओ अपन क्षतिक सार्वजनिक उपचार चाहैत छथि, बदला लेबाक मनमानी हिंसा नहि। राज्यक औपचारिक न्यायसंसारमे प्रवेश एहि अर्थमे सामाजिक भरोसाक संकेत अछि। मुदा

न्यायलाभक अवधि दीर्घ होइत गेलाक फलस्वरूप हानिक स्मृतिसँ अधिक प्रतीक्षाक दैनन्दिन बोझ कथाक केन्द्र बनैत अछि। ओहि प्रक्रिया मे कृषक अपन श्रम-दिन अदालत जायमे गमबैत छथि। किसानी कार्यक समय सीमित रहैत अछि, तें कानूनी पहुँचक लागत केवल शुल्क नहि, खेतमे अनुपस्थित श्रम सेहो। मूल एहने समय-हानि स्पष्ट कहैत अछि, पर शुल्क, यात्रा-दूरी वा रिश्वतक अंक नहि।

तीन बरखक समय : मुकदमाक अटकनक पहिलो विस्तृत संकेत

कथा कहैत अछि जे 'तीन बरख बीति गेल' आ भोला अबहुँ 'अगिला तारीख' लेल प्रतीक्षा करैत छथि। ई वाक्य समयक दीर्घता सीधे निर्दिष्ट करैत अछि; तकर भीतर कतेक तारीख पड़ल, कोन कागज जमा भेल अथवा की-की स्थगनकारण छल, ओ नहि। कथाकार 'हर बेर कोनो-न-कोनो तकनीकी कारण'क सामान्य सूचना दैत छथि। ई संक्षेप प्रक्रियागत जटिलताकेँ एक आवर्तित बाधा बनबैत अछि, प्रकरणानुसार अलग आरोप नहि। तीन बरखक प्रतिक्षा पात्रक जीवनपर भार होइत अछि; मुकदमाक संख्यात्मक तारीख गढ़ब आवश्यक नहि।

पाँच बरख बादक फैसला : सिद्धान्ततः विजय, अनुभवतः क्षति

अन्तिम दृश्य बतबैत अछि जे भोलाक केस पाँच बरख बाद हुनकर पक्षमे निर्णीत भेल। मुदा ताबे धरि खेत 'बहुत बरख बरबाद' छल आ हुनकर बच्चा भूखे बड़का भेल। परिणामक स्तर पर भोलाक कानूनी दावा स्वीकार भेल, जीवनक स्तर पर निर्णयक उपयोगिता घटी गेल। क्षतिपूर्तिक वास्तविक रकम भेटल कि नहि, भुगतान कतेक समय लगल, प्रतिवादीक प्रति कोन आदेश रहल—ई विवरण नहि। तें 'भोला पाँच बरख बाद धन पाबि गेलाह' कहब अनुचित। अध्यायक नैतिक व्यङ्ग्य फैसला बनाम लाभक विभाजनमे अछि।

भोलाक बच्चा : मुकदमाक अदृश्य सहभोगी

भोलाक बच्चा 'भूखे बड़का भेल'—एहि एक वाक्यसँ कानूनी विलम्बक पीड़ा वादीक व्यक्तिगत जीवनसँ पीढ़ीगत पोषणक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। बच्चाक नाम, लिंग, उमर, पोषणावस्था, विद्यालय अथवा माता-पिताक अन्य सहायक सम्बन्ध निर्दिष्ट नहि। तें एहि अभावमे कल्पित शिशुपात्रक दीर्घ अन्तःस्वर नहि रचब। तथापि वाक्यक भावात्मक तीक्ष्णता गहिर अछि: विधिक निर्णयक घड़ी आरम्भिक क्षतिसँ बहुत दूर आबैत अछि, जबकि बचपन फेर प्राप्त नहि होइत। व्यक्तिक 'समय' एतय न्यायालयक कालसारिणीसँ अलग जीववैज्ञानिक आ पारिवारिक इतिहास बनैत अछि।

कार्यदिवसक नाश : दरिद्र वादीक विशेष बोझ

भोला हर तारीख अदालत जाइत छथि, अपन काजक दिन बर्बाद करैत छथि आ निर्णय बिना घुरैत छथि। एहि पुनरावृत्त क्रियामे यात्रा, प्रतीक्षा आ श्रम-हानि सामाजिक वर्गक हिसाबे विषम प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। सम्पन्न व्यक्ति प्रतिनिधिकेँ भेजि सकैत अछि की नहि, पाठ एहि तुलना पर मौन; मुदा गरीब किसानक प्रत्येक दिनक श्रम-मूल्य कथामे प्रत्यक्ष नैतिक कारक अछि। न्यायालयक बारम्बार स्थगन अमूर्त कागजी प्रक्रिया नहि रहैत, श्रमिक देहक समय-छिनाव बनैत अछि। राशि कतेक क्षति भेल—एहन प्रश्नक आँकड़ा अनुपस्थित; तथापि समय-विनाशक कथासाक्ष्य स्पष्ट।

कमलिनीक प्रथम निदान : समानता आ विलम्बक एक साथ स्वीकार

कमलिनी बूढ़बाक लग स्पष्ट कहैत छथि जे नव अदालत नीक अछि, कारण सभकेँ समान मानैत अछि; मुदा ओहि व्यवस्थामे ‘तारीखक अन्याय’ जन्म लऽ रहल अछि। एहि वक्तव्यक विशेषता द्वैध आलोचनाक क्षमता अछि। ओ राज्यव्यवस्थाक सबल पक्ष नकारैत नहि, आ ओकर परिणाम-सम्बन्धी क्षति ढाँपैत सेहो नहि। स्त्रीपात्रक न्यायिक सूझ एतय तर्कक रूपमे अबैत अछि, विलाप मात्र रूपमे नहि। मुदा कमलिनी स्वयं भोलाक औपचारिक वकील अथवा न्यायाधीश नहि; हुनकर हस्तक्षेप सामुदायिक नैतिक विवेचनक स्तरपर आरम्भ होइत अछि।

सुखदेव महतो आ घटिका-यन्त्र : पूर्वदुर्घटनाक अन्तरपाठ

बूढ़बा पिछला सुखदेव महतो-प्रसंग स्मरण करैत छथि, जखन ‘घटिका-यंत्रक क्रमक कारण’ हुनकर बारी नहि आयल आ मृत्यु भऽ गेल। एहि स्मृतिसँ न्यायालयक तारीख-प्रथा एकटा दीर्घ, संस्थागत समय-अन्यायक शृंखलामे अबैत अछि। एकरामे आधुनिक अदालत आ पुरान वाद-व्यवस्थाक उपकरण समान नहि, मुदा प्रतीक्षा द्वारा अवसर छीना जाएबक समान तत्त्व अछि। कथावाचक केहन विशिष्ट यन्त्र-प्रक्रिया सुखदेवक मृत्यु करौलक, वर्तमान अध्याय विस्तृत नहि बतबैत; एहि कारण पूर्व अध्यायक सटीक घटनाकेँ अलग स्रोत-वाचन बिना फेरसँ कल्पित नहि करब।

‘समय न्यायक साधन नहि, बाधा’ : बूढ़बाक बोध

बूढ़बाक कथनमे समयक द्वैत केन्द्रमे अछि। निर्धारित प्रक्रिया सुनवाईक निष्पक्ष क्रम देबाक साधन भऽ सकैत अछि; मुदा ओहि क्रमक अति-विलम्ब अधिकारक प्रयोगकेँ व्यर्थ बना सकैत अछि। ई तर्क संगठनक हर प्रक्रियापर लागू करबाक आह्वान नहि, कथामे दिखल न्यायिक प्रसंगक नैतिक विवेचना अछि। सुखदेवक घटिका-यन्त्र आ भोलाक सुनवाई-तारीख समयक दू संस्थागत रूप छथि; बूढ़बा दुनूमे मनुष्यक जीवनसमय प्रति असंवेदनशीलता पहिचानैत छथि। एतय स्मृतिरक्षक पहिने मृत्युक साक्षी, आब न्यायिक प्रतीक्षाक सामाजिक समालोचक बनैत छथि।

वृद्ध वकीलक वाणी : व्यवस्थाक भीतरसँ आलोचना

भोला अदालतक बरामदापर थाकल बैसल छथि। हुनकर बगलमे एक वृद्ध वकील, जे बहुत वर्षसँ कचहरीक काम देखैत रहल, व्यङ्ग्यमिश्रित स्वरमे तारीखक भूखक कथा कहैत छथि। एतय बाहरी लोकगीतक अभियोग संस्थाक भीतरसँ उद्भूत आलोचनामे बदलैत अछि। वकील स्वयं कोर्टक प्रतिनिधि छथि, मुदा हुनकर अनुभव न्यायालयक वैधतापर कठोर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। हुनकर नाम, पद, भोलाक केससँ औपचारिक सम्बन्ध अथवा कोनो विशिष्ट न्यायिक आदेश एहि दृश्यमे नहि। ई आवाज अनुभवी संस्थागत साक्षीक साहित्यिक रूप अछि, तथ्य-रिकॉर्डक आधिकारिक शपथपत्र नहि।

बरामदा : थकानक दृश्यात्मक केन्द्र

न्यायाधीशक कक्षक विस्तृत दृश्य नहि, अदालतक बरामदापर थाकल भोला मुख्य प्रत्यक्ष दृश्य छथि। बरामदा न्याय-व्यवस्थाक सीमास्थान अछि: याची न्यायाधीशक सोझाँ नहि, निर्णयक प्रतीक्षामे बाहर बैसल अछि।

कथाकार एहि दृश्यकेँ बड़का कानूनव्याख्यानक बदला प्रतीक्षाक शरीरगत रूप दैत छथि। सामाजिक-अधिकार आ अनुभवक दूरत्व स्थापत्यक भीतर दृश्यमान होइत अछि। हालांकि अदालतक बरामदा कोना देखाइत, लोकसभक संख्या कतेक, भोलाक शारीरिक अवस्था कतेक गम्भीर—कथा सीमित संकेत देत अछि; मनगढ़न्त स्थापत्य अथवा रोगविवरण जोड़ब नहि चाही।

‘तारीखक भूख’ : रूपकक निर्मिति

वृद्ध वकील कहैत छथि जे अदालतक एक भूख अछि जकरा ‘तारीख’ कहल जाइत अछि; ई भूख कागजक अछि, मुदा मनुष्यक समय, धैर्य आ कहियो सम्पूर्ण जीवन खा जाइत अछि। एहि रूपकमे जैविक गोहिक भक्षणसँ संस्था-द्वारा समयभक्षण धरि कथा विस्तार पबैत अछि। वकीलक भाषण न्यायिक स्थगनकेँ अमूर्त प्रक्रिया नहि, एक अदृश्य भोक्ता बनबैत अछि। मुदा वकील वास्तविक कोई भूत देखलनि अथवा अदालतमे सचमुच जीवित प्रेत अछि—एहन घटना नहि। रूपक धीरे-धीरे बूढ़बाक भविष्यवाणीमे ‘अदालतक प्रेत’क लोकनामक बीया बनैत अछि।

‘अदालतक प्रेत’ : संस्थागत रूपक, उपस्थित भूत नहि

भोलासँ बात सुनि बूढ़बा अनुमान करैत छथि जे नव व्यवस्था एक प्रकारक प्रेत जन्म दऽ रहल अछि, जे कोनो एक मनुष्यक अन्यायसँ नहि, सम्पूर्ण व्यवस्थाक धीमापनसँ बनैत अछि। वर्तमान अध्यायमे अदालतक प्रेतक प्रत्यक्ष दृश्य, आवाज, देह अथवा चमत्कारी हमला नहि अछि। ई बूढ़बाक व्याख्यात्मक भावी रूपक अछि, जकर कथावाचक आगूक खण्डमे विस्तारक संकेत दैत अछि। तेँ वर्तमान घटनाक सूचीमे ‘प्रेत देखल गेल’ जोड़ब असत्य। संरचनागत विलम्बकेँ एक व्यक्तित्व प्राप्त भयावह सत्ता बना देबाक कला-पद्धति एतय बीज-अवस्थामे अछि।

एकाकी दोषीसँ ‘सम्पूर्ण व्यवस्था’ धरि कारणक विस्तार

बूढ़बा कहैत छथि जे नव अन्याय ‘कोनो एक मनुष्यक अन्यायसँ नहि’, सम्पूर्ण व्यवस्थाक धीमापनसँ उत्पन्न होइत अछि। एहि वाक्यसँ संस्थाक व्यक्तिगत दोषारोपणसँ संरचनात्मक आलोचना धरि महत्त्वपूर्ण गमन होइत अछि। कथामे न्यायाधीश घूस लेलाह, वकील जानि-बुझि स्थगन करौलनि अथवा विपक्षी दुर्भावनासँ समय टारलक—एहन विशेष आरोप नहि। यद्यपि व्यक्तिक जिम्मेदारीक सम्भावना सैद्धान्तिक रूपेँ मिटैत नहि, वर्तमान कथानक ओकर प्रत्यक्ष प्रदर्शन नहि करैत। एहि कारण विलम्बक सामूहिक कारण-प्रकृति उपन्यासक आलोचनात्मक उपलब्धि अछि, मुदा संस्थागत सुधारक सटीक तकनीकी योजना ओकर अनुत्तरित प्रश्न।

नूतन राज्य-अधिकार आ ग्राम्य नैतिकताक सम्बन्ध

पाकल भवन, नियुक्त न्यायाधीश आ लिखित कानून राज्यक औपचारिक अधिकार लऽ अबैत अछि; बूढ़बा आ कमलिनी प्रतीक्षा-पीड़ाक ग्राम्य नैतिक सम्बोधन करैत छथि। कथा दुनूकेँ पूर्ण प्रतिस्थापन नहि, बल्कि भिन्न दायित्वक रूपमे देखबैत अछि। कमलिनी स्पष्ट स्वीकारैत छथि जे राज्यक व्यवस्था बदलब हुनकर सामर्थ्य नहि; ओ सहायता, सलाह आ संग देबाक संकल्प लेतीह। अतः ग्रामक सहायता अदालतक वैधानिक अधिकारकेँ छीनैत

नहि, ओकर बोझ उठबनिहार लोककेँ सामाजिक सहारा देबाक क्षेत्र खोलैत अछि। एहिमे दयाभाव अछि, मुदा विधिवत न्यायिक अधिकारक कमी दूर भेल—एहन घटना नहि।

कमलिनीक सीमा-बोध : ‘हम बदलि नहि सकैत छी’

कमलिनी राज्यक नियम स्वतः बदलि देबाक दावा नहि करैत छथि। ‘हम अदालतक व्यवस्थाकेँ बदलि नहि सकैत छी’ कहि अपन वास्तविक संस्थागत सीमा मानैत छथि। इएह स्वीकार हुनकर काजक विश्वसनीयताक केन्द्र अछि; काल्पनिक स्त्री-नायकत्वक सर्वशक्तिमान घोषणा नहि। ओ ओहि सीमा भीतर प्रभावित व्यक्तिसभक सहायता, सलाह आ साथक संकल्प करैत छथि। तेँ कथा सुधारक दूटा स्तर अलग करैत अछि—व्यवस्थाक संरचनात्मक परिवर्तन आ तत्काल पीड़ितक सहारा। दोसर आवश्यक होइतहुँ पहिलक पूर्ण स्थानापन्न नहि; एहि नैतिक तनावकेँ स्वीकृति देब अध्ययनक कर्तव्य अछि।

‘सहायता, सलाह, आ साथ’ : त्रिविध सामाजिक उत्तरदायित्व

कमलिनीक प्रस्ताव तीन पदसँ बनैत अछि। सहायता प्रत्यक्ष सामग्री अथवा क्रियात्मक मदतिक सामान्य सम्भावना खोलैत अछि; सलाह ज्ञान-विनिमयक क्षेत्र; साथ एकाकी प्रतीक्षाक मानसिक बोझकेँ साझा करबाक वचन। मुदा कथामे एकर निर्वहनक कोनो विशिष्ट अगिला दृश्य—भोलाकेँ धन, दस्तावेजी मार्गदर्शन, न्यायिक प्रतिनिधित्व, नित्य भोजन वा तारीखक दिन साथ जाएब—नहि। तेँ एहि पदसभक सम्भावित अर्थ व्याख्या रूपमे देल जा सकैत अछि, पूर्ण कार्यक्रमक पाठमूलक सूची नहि। ई संकल्प संस्थाक विकल्पक बीया अछि, परिणामक विस्तृत प्रमाण नहि।

कथावाचकक परिणाम-निश्चय : संकल्प आ पाँच बरखक निर्णय

कमलिनी सहायता-संकल्प लेतीह आ कथाक अन्त भोला पाँच बरख बाद पक्षमे निर्णय पबैत छथि। मुदा पाठ ई नहि कहैत जे कमलिनीक संकल्पहि कारण मुकदमा तय भेल। भोलाक परिवारक भूख आ खेतक बरबादी सेहो निर्णय धरि जारी रहल। अतः संकल्प आ मुकदमाक निर्णयक एक क्रममे उपस्थितिसँ कारणगत सफलताक दावा सिद्ध नहि होइत। समाजक साझा सहारा मूल्यवान हो सकैत अछि, मुदा कथा ओकर असरक अलग परिणाम आँकैत नहि। एहि अन्तरकेँ स्पष्ट राखने आशावादी सांस्कृतिक विचारक सँग कथाक त्रासद अन्त दुनू एक साथ बुझल जा सकैत।

पाँच बरखक प्रतीक्षा : स्मृति-विषयक नव विस्तार

बूढ़बाक अन्तिम कथन—ओ भोला ‘आ हुनकर पाँच बरखक प्रतीक्षा सेहो’ स्मृतिमे रखताह—एहि अध्यायक निर्णायक मोड़ अछि। नामरक्षा पूर्वमे मृतक, स्त्रीक विस्मृत कथा, दैनन्दिन संस्कार आ बाँचल प्राणीक संघर्ष धरि विस्तार पबैत छल। आब एक जीवित वादीक बितल समय स्वयं साक्ष्य-योग्य ऐतिहासिक विषय बनैत अछि। समयक अपूरणीय हानि सामाजिक न्यायमूल्यक कोषमे सम्मिलित होइत अछि। केवल घटना-परिणाम—भोला जीतल—उत्सवक कारण नहि; ओकरा पहिने बितल जीवनसँ न्याय-विवादक अन्तर्दृष्टि प्राप्त होइत अछि।

मृत्यु-साक्षीसँ प्रतीक्षा-साक्षी : बूढ़बाक परिवर्तन

‘केवल मृत्युक साक्षी नहि, प्रतीक्षाक साक्षी सेहो’ बूढ़बाक स्वतः घोषित नव दायित्व अछि। एतय अलौकिक स्मृतिरक्षक मृत्यु-पछातिक नामक रक्षक मात्र नहि, जीवित मनुष्यक संस्थागत क्षरणक इतिहासकार बनैत छथि। ई परिवर्तन मूल उपन्यासक विशाल साक्ष्य-पद्धतिमे महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पीड़ा सभ बेर एकाएक प्राणान्तसँ नहि मापल जाए; कखनहुँ वर्षानुवर्ष जीवन-सम्भावना छीना जाए। मुदा बूढ़बाक प्रतीक्षा याद राखब आ अदालतकेँ फैसला देबामे बाध्य करब अलग शक्ति अछि। कथा पहिल शक्ति दैत अछि, दोसरक दावा नहि।

‘अदालतक प्रेत’क भावी विस्तार : परापाठ आ वर्तमान सीमा

अध्यायारम्भक कोष्ठकीय उपन्यास-अंश आ अन्तिम लेखककीय टिप्पणी आगूक खण्डमे ‘अदालतक प्रेत’क विस्तारक पूर्वसूचना दैत अछि। एहि भविष्य-ज्ञानकेँ भोला, कमलिनी अथवा वृद्ध वकीलक वर्तमान घटनाज्ञानसँ नहि मिलाओल जाए। मुख्य गद्यक समयमे प्रेतकेँ अर्थगत उपमा रूपेँ उगैत देखल गेल; आगूक कथामे ओकर रूप बदलेत कि नहि, तकर अलग अध्याय-पठन जरूरी। भविष्य-संकेत वर्तमान अध्यायक अर्थविस्तारक उपकरण अछि, पाठमे अनघटित दृश्यजालक स्वीकृति नहि।

कथनकाल आ घटनाकाल : स्थगनक आवर्ती संरचना

नव अदालतक स्थापना आ ‘धीरे-धीरे’ समस्या उभरबाक कथा अत्यन्त संक्षिप्त; भोलाक तीन बरखक प्रतीक्षा किछु वाक्यमे; बरामदाक वृद्ध वकील-वचन एक निकट दृश्य; अन्तिम पाँच बरखक निर्णय फेर छोट सारांश। एहि क्रममे कथावाचक लम्बा काल कम शब्दमे समेटैत छथि, मुदा प्रतीक्षाक भावात्मक वजन बनाए रखने लेल ‘पहिल तारीख, दोसर, तेसर’ जकाँ अनुक्रमिक आवर्तन प्रयोग करैत छथि। भिन्न-भिन्न तारीखक अलग सुनवाईक दृश्य अनुपस्थित अछि; आवृत्तिक एक सूत्र अनेक अनुभवक प्रतिनिधि। आख्यानगत समय एहि प्रकार देहगत दीर्घता आ भाषिक संक्षेपक टकराहट बनबैत अछि।

नाटकीय दृश्य-वितरण : पीपर आ बरामदा

दो मुख्य संवादस्थल पीपर लग कमलिनी–बूढ़बाक बातचीत आ अदालतक बरामदापर भोला–वृद्ध वकीलक संवाद छथि। पहिल ठाम लोकस्मृतिक दूरदर्शी आलोचना होइत अछि; दोसर ठाम संस्था भीतरक थकान अपना आवाज पबैत अछि। एहि स्थलान्तरणसँ बाह्य विधिक प्रक्रिया आ ग्राम्य नैतिक उत्तरदायित्व एक-दोसराक प्रतिविम्ब बनैत अछि। न्यायाधीशक प्रत्यक्ष संवादक अनुपस्थितिमे अदालत एक व्यवस्थित संस्था, पहिचानयोग्य मनुष्य नहि बनैत। एहि कारण न्यायालयक संरचनात्मक अमूर्तन सघन होइत अछि; संगहि न्यायिक अन्तःप्रक्रियाक विविधता चित्रणसँ बाहर रहि जाइत अछि।

दृष्टिकेन्द्र : पात्रक चिंता, कथावाचकक सर्वसमयज्ञान

कमलिनी नव अदालतक सामाजिक विरोधाभास अपन अनुभवसँ पहचानैत छथि; भोला प्रतीक्षाक थकान महसूस करैत छथि; वृद्ध वकील संस्थाक उपभोगकारी रूपक प्रस्तुत करैत छथि; बूढ़बा पुरान सुखदेव-घटना सम्झि दीर्घकालिक समानता देखैत छथि। कथावाचक तदनन्तर पाँच बरखक फैसला आ बच्चाक भूखक परिणाम एक

साथ बतबैत छथि। एहि बहुस्तरीय दृष्टिकेन्द्रमे कोनो एक पात्र सभ परिस्थिति नहि देखैत; कथा हुनकर अंशतः दृष्टिसभक ऊपर कथावाचकीय सर्वसमय-ज्ञान रखैत अछि। मुदा प्रतिवादी पड़ोसी, न्यायाधीश आ बच्चाक निज दृष्टि मुखर नहि।

न्यायाधीशक नामहीनता आ संस्थाक व्यक्तिहीनता

नव अदालतमे नियुक्त न्यायाधीश अछि, मुदा हुनकर नाम, वाणी, जिरह, निर्णय-दृश्य अथवा विवेकक स्वर पाठककेँ नहि भेटैत। पाँच बरख बाद भोलाक पक्षमे फैसला घोषित होइत अछि, तथापि कोन तर्कपर न्यायालय फैसला देलक नहि कहल गेल। एतय संस्था स्वतः व्यक्तिहीन प्रक्रियाक रूपमे प्रस्तुत अछि। ई नाटकीय चयन बूढ़बाक 'सम्पूर्ण व्यवस्थाक धीमापन'क तर्कसँ मेल खाइत अछि। पर एही कारण न्यायिक निर्णयक प्रमाणमीमांसा आ जटिलताक प्रति कृतिक पाठ-साक्ष्य सीमित रहि जाइत अछि। अन्तिम औपचारिक विजयक कारण-दाखिला अनजाँटल रहल अछि।

प्रतिवादी पड़ोसीक मौन : न्यायिक विपक्षक अपूर्ण रचना

भोलाक पड़ोसीक पशु खेत उजाड़ने छल, ई कथावाचकीय कथन अछि। मुदा पड़ोसी स्वयं नहि बजैत; ओ क्षति स्वीकार करैत छथि कि नकारैत, ओकरा सुनवाईमे कोन अवसर भेटल, पाठमे नहि। एहि मौनक कारण भोला-पक्षक मानवीय पीड़ा प्रबल होइत अछि आ विवादक न्यायिक द्विपक्षीयता कम चित्रित। आलोचक प्रतिवादीकेँ पूर्ण अपराधी वा निरपराध ऐतिहासिक व्यक्ति घोषित नहि करत, किएक तँ पात्रक उत्तर उपलब्ध नहि। दुविधा न्यायिक प्रक्रियाक विरोधाभासी प्रमाणसँ बेसी सामाजिक समयक क्षतिपर केन्द्रित अछि।

नव्य-न्यायीय पक्ष, साध्य आ अपूर्ण हेतुशृंखला

अध्यायक सामाजिक अनुमानक सम्भावित पक्ष नव अदालतक विलम्बित प्रक्रिया अछि; साध्य न्यायिक अनुभूतिमे अन्यायकारी परिणाम; हेतु भोलाक काज-दिनक नाश, खेतीक बरबादी आ बच्चाक भूख। एहि एक घटनामे विलम्बित निर्णय आ जीवनहानिक प्रत्यक्ष कथात्मक सम्बन्ध सघन अछि, मुदा सभ न्यायिक विलम्ब सदैव समान कारणसँ अथवा समान परिणतिसँ युक्त होयत—एहन सार्वत्रिक व्याप्ति सिद्ध नहि। मूलमे भोलाक विशिष्ट कृषिजीवन, राज्यक नियम आ तकनीकी स्थगन कारणकार्यक शर्त छथि। आधुनिक विश्लेषणमे पक्ष, हेतु, साध्यक शब्द प्रयोग कएल जा सकैत, मुदा पात्र अपन संवादमे नव्य-न्यायीय शास्त्रार्थ पूर्ण तकनीकी संरचनामे प्रस्तुत नहि करैत।

प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमान : भोलाक मुकदमाक प्रमाणगत कोटि

भोला अपन खेतक उजाड़ होएबाक आधारपर अदालत जाइत छथि; कथावाचक घटना कहैत छथि। कमलिनी हुनकर बारम्बार प्रतीक्षा देखैत छथि अथवा सुनैत छथि—संवादमे पूर्ण ज्ञानस्रोत खुलल नहि। वृद्ध वकीलक अनुभववाचक कथन संस्थागत शब्द-साक्ष्य अछि, बूढ़बाक 'प्रेत' एक नैतिक अनुमान/रूपक। वास्तविक अदालतमे किनकर प्रत्यक्षदर्शन, ककर लिखित कागज, कोन गवाह अथवा प्रतिवादीक उत्तर निर्णायक भेल—ई

अनुपस्थित। तें नव्य-न्यायक पद्धतिसँ ज्ञानक स्तर विभाजित करब सम्भव अछि, मुदा अदालतक साक्ष्य-परीक्षाक एक मनगढ़न्त तार्किक क्रम तयार करब उचित नहि।

‘समय’ वस्तु नहि, अधिकारक व्यय

भोला अदालतमे वर्ष बितबैत छथि; जीवनक समय पुनः प्राप्त नहि होइत। किसानक श्रमक अवसर, बच्चाक पोषण आ खेतक उत्पादनक पुनरावर्तित वर्ष नष्ट होइत अछि। एक अर्थमे न्यायालय कानूनी दावा अन्तमे मानि लैत अछि, मुदा समयक क्षतिपूर्ति कएल गेल कि नहि, स्पष्ट नहि। बूढ़बाक स्मृति समयक नामरक्षा करैत अछि, वास्तविक हरायल उपज नहि लौटबैत। एहि अन्तरमे न्यायिक प्रभावशीलताक अधिक सूक्ष्म कसौटी भेटैत अछि: फैसला कतेक शीघ्र आ जीवनोपयोगी अवस्था मे उपलब्ध भेल? कथा एहि प्रश्नक भाषिक उत्तर बिना न्यायिक संख्याक विवाद उठबैत अछि।

‘न्याय विलम्बित’ सिद्धान्त : परापाठ आ कथा-वस्तुक भेद

अध्यायोत्तर टिप्पणी ‘justice delayed is justice denied’क व्यापक न्यायसूत्रसँ घटना जोड़ैत अछि। ई आधुनिक व्याख्यात्मक परापाठ अछि; गद्यक अदालतमे कोनो पात्र अंग्रेजी विधिक सूत्रक औपचारिक उद्धरण नहि पढ़ैत। भोलाक अनुभव एहि सूत्रक मानवीय प्रभाव स्पष्ट करैत अछि, मुदा न्यायालयक विशिष्ट ऐतिहासिक विधिक निर्णय, देश अथवा कालिक कानूनसँ ई सूत्र स्वतः न जुड़ैत। बाह्य न्यायिक इतिहासक दावे लेल अलग प्राथमिक कानूनी स्रोत चाही। वर्तमान आलोचनाक आधार मूल कथामे पाँच बरखक विलम्ब आ ओकर पारिवारिक लागत अछि।

भारतीय रसविवेचन : करुण आ नैतिक क्षोभ

भोलाक थकान, कामक दिनक नाश, खेतक क्षति आ बच्चाक भूख करुण भावक मूर्त साधन छथि। वृद्ध वकीलक हल्का हँसी व्यङ्ग्यक कटुता लबैत अछि; बूढ़बाक भय आ मौन करुणाकेँ सामुदायिक नैतिक प्रश्नमे बदलैत अछि। अन्तिम अनुकूल फैसला उल्लासक पूर्ण निष्कर्ष नहि, किएक तँ जीवनक हानि पूर्वहिसँ घटि चुकल। एहि कारण कथाक भावचाल सुखान्तक सामान्य शान्ति नहि, क्षोभसहित करुणापर ठहरैत अछि। कमलिनीक सहारा-संकल्प करुणाकेँ निष्क्रिय शोकसँ कर्माभिमुख सहानुभूतिक दिशा दैत अछि, मुदा भोलाक विगत क्षति समाप्त नहि।

ध्वनिवेत्ता दृष्टि : ‘भूख’क स्थलान्तर

पहिने पोखरिक गोहि जीवित हाथीक देह जकड़ैत अछि; एहि अध्यायमे वृद्ध वकील ‘कागचसँ बनल’ संस्थागत भूखक रूपक रचैत छथि, जे मनुष्यक समय खाइत अछि। शाब्दिक प्राणी-सङ्कटसँ अमूर्त सामाजिक भक्षण धरि ई शब्द-क्षेत्रक ध्वन्यात्मक रूपान्तरण अछि। ‘भूख’ भोलाक बच्चाक वास्तविक भोजनाभावमे फेर भौतिक अर्थ प्राप्त करैत अछि: कागजक भूखक सामने बच्चाक भूख। एहि दू भूखक विडम्बना अत्यन्त सघन कलात्मक अर्थ दैत अछि। मुदा प्रतीकात्मक साम्य दूनू घटनाक कारण-यांत्रिकी समान घोषित नहि करैत।

सूचनाक आवृत्ति आ गीतक पुनरुक्ति

लोकगीत ‘तारीखपर तारीख’ आवर्तित करैत अछि, कथावाचक पहिल-दोसर-तेसर तारीखक क्रम दैत छथि, वृद्ध वकील भूखक दीर्घता बतबैत छथि, आ बूढ़बा पाँच बरखक प्रतीक्षा याद रखैत छथि। एहि पुनरावृत्तिसँ पाठक प्रतीक्षाक गद्यमूलक अनुभव पबैत अछि। मुदा सब दोहरायल वाक्य नव घटना नहि; बड़का भाग एकहि प्रक्रियाक अलग भावगत अभिव्यक्ति अछि। आख्यानशास्त्रक आवृत्तिविधानमे एक घटना वा अनगिनत एकरूप घटनाक प्रतिनिधि आवाज अलग देखल जाए। गीतक पुनरावृत्ति अनुभवकेँ घन करैत अछि, मुदा नूतन न्यायिक तथ्य नहि जोड़ैत।

आचार्य केशवसँ राज्य अदालत : सामाजिक परिवर्तनक द्वैधता

पुरान अनौपचारिक न्यायसभा स्थानीय त्वराक प्रतीक, नव लिखित न्यायालय समान अधिकारक प्रतिज्ञा बनैत अछि। कथाकार एतय आधुनिकता-विरोधी सरल कहानी नहि रचैत: आरम्भमे नव अदालत स्वागतयोग्य अछि, बादमे ओकर परिणाम एक विशेष पीड़ितक जीवन क्षति करैत अछि। न्यायिक परिवर्तनक द्वन्द्व एहि बातमे अछि जे अधिकारक औपचारिक सार्वभौमिकता आ प्रक्रियागत उपयोगिता स्वत: साथ नहि बढ़ैत। कथा एक समस्याक स्थापनामे सक्षम अछि, व्यापक तुलनात्मक प्रशासनिक इतिहासक विस्तृत आँकड़ामे नहि।

विदेह समानान्तर इतिहास : गरीबक प्रतीक्षाकेँ अभिलेखमे स्थान

औपचारिक न्यायालयक अभिलेखमे केस संख्या, तारीख आ अन्तिम आदेशक महत्त्व हो सकैत अछि; ग्रामक स्मृतिरक्षकक दृष्टिमे भोला नामक गरीब किसानक पाँच बरखक जीवन-क्षति महत्त्वपूर्ण अछि। एहि आधारपर समानान्तर इतिहास पद्धति निर्णयक मशीनी लेखाक बगलमे अनुभवक सामाजिक अभिलेख जोड़बाक आग्रह करैत अछि। तथापि वर्तमान पाठमे वास्तविक केस-नम्बर, रजिस्टर, दाखिला वा प्रमाणित अदालत-रिकॉर्ड प्रस्तुत नहि; एकर अध्ययन न्यायिक इतिहासक वास्तविक दस्तावेजी समीक्षा नहि। साहित्यक उपयोगिता ओहि अनुभवकेँ आवाज देबामे अछि जे अंतत: अनुकूल फैसला आवितहुँ आधिकारिक सारांशसँ अदृश्य भऽ सकैत अछि।

भोलाक एकल कथा आ अनेक प्रतीक्षारत लोक

कमलिनी ‘भोला जकाँ कतेको लोक’क उल्लेख करैत छथि, जकरा अदालतक तारीख सभ बाधित करैत अछि। मुदा कथामे विस्तृत उदाहरण केवल भोला अछि। एकल पात्रसँ सामूहिक समस्या धरिक गमन साहित्यिक प्रतिनिधित्वक सामान्य युक्ति अछि; एकर प्रभावी नैतिक आधार भोलाक विशिष्ट श्रम-हानि अछि। मुदा ‘कतेको’क संख्या, भिन्न जाति, स्त्री-वादी, बेघर अथवा असहाय व्यक्तिक अलग न्यायिक अनुभव पाठमे नहि। एहि कारण कथा एक सामान्य संरचनात्मक जोखिमक रूपक दैत अछि, समुदायवार सम्पूर्ण अनुभवजन्य सर्वेक्षण नहि।

स्त्री-संकल्पक भविष्य : संस्थाक रूप पाबबाक शर्त

कमलिनीक सहायता-संकल्प सामाजिक परिवर्तनक आरम्भ होएबाक क्षमता राखैत अछि; मुदा परम्परा बनएबाक लेल पुनरावर्तित निष्पादन, पात्रसभक सहयोग, संसाधन आ सार्वजनिक मान्यता अपेक्षित भऽ सकैत अछि। वर्तमान अध्यायमे ई सभ स्पष्ट नहि। अतः 'कमलिनी न्याय-सहायता संस्था स्थापित कऽ देलनि' एहन निष्कर्ष अनुपलब्ध। एहि अभावकेँ विश्लेषणक परिणाम बनायब चाहिए, कल्पित स्वयंसेवी समूह जोड़ि पूरि नहि देब।

सम्भावित सुधार : पाठसिद्ध तथ्य आ आलोचनाक प्रश्न अलग

एहि अध्यायक आधारपर पाठक पूछि सकैत छथि जे अदालतक तारीख-व्यवस्थामे विलम्ब घटेबाक उपाय की, गरीब वादीकेँ श्रम-हानिक पूर्ति कोना आ स्थानीय गवाहीक विधिक उपयोग कोना होय। मुदा ई सभ अनुसन्धानात्मक प्रश्न छथि, मूल उपन्यासक प्रत्यक्ष घटनासभ नहि। कृति आवश्यक न्यायसुधारक सटीक दफावार योजना अथवा वकील-प्रशासनक व्यवहार्य तकनीकी सुधार नहि प्रस्तुत करैत। आलोचना करैत पाठसिद्ध घटना, लेखककीय ध्वन्यार्थ आ वर्तमान समीक्षकक प्रस्तावित प्रश्नक बीच स्पष्ट रेखा राखनाइ जरूरी अछि। एहि पद्धतिसँ कथाक साहित्यिक मूल्य न्यायिक नीति-प्रमाणक अनावश्यक दावासँ मुक्त रहैत अछि।

तीन समय-संसारक मिलन : न्यायालय, जीवन, स्मृति

अदालतक समय तारीखसँ नापल जाइत अछि; भोलाक समय खेती, बच्चाक भूख आ श्रमक दिनसँ; बूढ़बाक समय पीढ़ीगत नामरक्षासँ। ई तीनू काल-मापक एक घटना भीतर तकर अर्थ भिन्न-भिन्न करैत छथि। अदालत पाँच बरख बाद निर्णय दैत अछि; भोला ओहि पाँच बरखमे जे गमौलनि ओ वापिस नहि; बूढ़बा एही प्रतीक्षाकेँ दीर्घ स्मृतिक वस्तु बनबैत छथि। एहि त्रिकालिक विन्यासमे औपचारिक विजय आ जीवित अनुभवक क्षति विरोधी परिणाम बनैत अछि। आख्यानक विशिष्टता एहि संघर्षकेँ व्यक्तिगत दुर्भाग्य कहि सीमित नहि करबामे अछि।

जादुई यथार्थक संयम : 'प्रेत' एखन शब्दमे

पूर्व प्रकरण [–६९]मे बूढ़बाक जलव्याप्त उपस्थितिक अलौकिक दावा कथामे सजीव अछि। एहि अध्यायमे 'अदालतक प्रेत' नव कल्पित सत्ता रूपमे अभिधान पबैत अछि, मुदा ओकर देहगत चमत्कार वर्णित नहि। एतय कथाकारक प्रतीकात्मकता सामाजिक प्रक्रियाकेँ भूतक रूपकमे रूपान्तरित करैत अछि, न कि अदालत भवनमे प्रत्यक्ष भूतसँ पात्रक भेंट देखबैत अछि। आगामी खण्डक पूर्वसूचना जेना हो, वर्तमान अध्यायक प्रमाणिक सीमा प्रतीक्षा आ भूखक रूपक अछि। अलौकिक नामधारी हर वस्तुकेँ तत्क्षण घटल जादुई घटना मानब आख्यानस्तरक भ्रम उत्पन्न करत।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय : न्यायसँ पहिने जीवनक हानि

अध्यायक निर्णायक उपलब्धि ई अछि जे सिद्धान्ततः जाति-निरपेक्ष लिखित कानूनक स्वीकृतिसँ आरम्भ कऽ, गरीब कृषकक अपूरणीय समय-हानिक वास्तविक दृश्य धरि पहुँचैत अछि। कमलिनीक द्वैध आलोचना, वृद्ध वकीलक 'तारीखक भूख', बूढ़बाक सुखदेवस्मरण आ भोलाक पाँच बरख बादक विजय–वंचना एहि संरचनाकेँ सघन बनबैत अछि। सीमा अछि जे न्यायालयक वास्तविक सुनवाई, प्रतिपक्ष, लिखित साक्ष्य, न्यायाधीशक तर्क

आ कमलिनीक सहारा-संकल्पक क्रियात्मक परिणाम अनुपस्थित छथि। गीतमे कागज-बदलनाइ गद्यमे पुष्ट नहि, आ ‘प्रेत’ एखन रूपक अछि। एहि विरोधकेँ ढाँपल बिना कृतिक सामाजिक संवेदनशीलता आ आख्यानगत संक्षेप दुनू पहिचानल जा सकैत अछि।

स्रोत-सीमा, शब्द-संकेत आ अगिला क्रम

प्राथमिक आधार : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–६८] ‘अदालतक पहिल तारीख’; अनुक्रमणिकाजन्य पृष्ठ-परास २४५–२४८। मूल फकरा, ‘पातपर न्याय’ कचहरी-गीत, भोलाक केसक कथा, वृद्ध वकीलक बरामदा-वचन आ बूढ़बाक अन्तिम ‘प्रतीक्षाक साक्षी’ कथन पृथक पाठसन्दर्भ छथि। ई पूर्वगणित आँकड़ा अछि, नव स्वतन्त्र पाठमापन नहि। मुकदमाक विशिष्ट केस नम्बर, न्यायाधीशक नाम, क्षतिपूर्तिक रकम, स्थगनक व्यक्तिगत कारण आ कमलिनीक नव सहायता-संस्थाक सम्पन्न रूप अनुपलब्ध अछि। अगिला अध्याय [–६७] ‘परदेशक पुकार’मे बाह्य प्रवास, स्थानीय नामस्मृति, परिवार आ धनक नैतिक तुलना जाँचल जाएत।

प्रकरण ३४ | मूल अध्याय –६७ — परदेशक पुकार

पूर्वकथाकाल · प्रवास, करार, अनुपस्थितिक साक्ष्य, ज्ञान-अनिश्चितता आ सामुदायिक नामरक्षा

पाठसीमा, मूल विधा आ आलोचनाक प्रश्न

अध्याय [–६७] ‘परदेशक पुकार’क आरम्भ मुद्रित अनुक्रमणिकामे पृष्ठ २४९ आ अगिला अध्याय [–६६]क आरम्भ पृष्ठ २५३ अछि। एहि आधारपर २४९–२५२ एकर अनुमानित पृष्ठसीमा अछि, न प्रत्येक वाक्यक स्वतन्त्र मुद्रित पृष्ठाङ्क। अध्यायक संरचना फकरा, ‘परदेशक चिट्ठी’ शीर्षक बिदेसिया-लोकगीत, आढ़तियाक आगमन आ रामसेवकक गमनवला गद्यकथा तथा गिरमिटिया-स्मृतिसंकटविषयक अध्यायोत्तर टिप्पणीमे विभक्त अछि। केन्द्रीय आख्यानशास्त्रीय प्रश्न ई अछि जे गामसँ बाहर गेल, सम्पर्कविहीन, जीवित अथवा मृतक रूपमे अनिश्चित मनुष्यकेँ समुदाय अपन नाम-पंजीमे कोन प्रकार ठाम दैत अछि। एहि प्रश्नक उत्तर जानकीक नव अनुष्ठान अछि; ओकर सत्य-सीमा बूढ़बाक स्पष्ट अज्ञान-स्वीकारमे निहित अछि।

ई पूर्वनिर्धारित पाठ-संकेत छथि, वर्तमान समीक्षाक स्वतन्त्र शब्द-पुनर्गणना अथवा घटनात्मक घनत्वक निर्णायक प्रमाण नहि। योजनाक विशेष निर्देश इतिहास, समय-सङ्कोचन आ पीढ़ीक बदलाव जाँचबाक अछि। मूल कथामे कमलिनीसँ जानकीधरि पीढ़ीगत हस्तान्तरण, तीन बरखक प्रस्तावित करार, रामसेवकक अनिश्चितकालिक अनुपस्थिति आ माताक ‘बरख-दर-बरख’ प्रतीक्षा किछु छोट अनुच्छेदमे समेटल अछि। एहि कारण भिन्न कालमानक आख्यानगत भूमिका तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ प्रत्यक्ष दृश्यक अन्तर जाँचब विशेष आवश्यक अछि।

शीर्षकमे 'पुकार' : प्रत्युत्तरविहीन सम्बोधन

'परदेशक पुकार' शीर्षकक 'पुकार' यात्रा पर गेल रामसेवकक वाणी मात्र नहि; मूल कथामे सामुदायिक नामोच्चारण आ माताक प्रत्युत्तर-प्रतीक्षा मुख्य छथि। रामसेवक स्वयं परदेशसँ कोनो पत्र, संदेश वा पुकार नहि पठबैत। ई विरोध शीर्षकक अर्थ विस्तारैत अछि: अनुपस्थित व्यक्तिक नाम जीवित सभाक बीच उच्चरित होइत अछि, मुदा ओकरा सँ कोनो सूचना प्रत्यावर्तित नहि। तें पुकारकेँ संवादक सफल आदान-प्रदान मानब त्रुटि होयत। एहि अध्यायमे प्रतिउत्तरक अभावहि भावनात्मक तनावक सूत्र अछि। 'पुकार' श्रव्य उपस्थितिक रूपमे स्मृतिस्थान पर बनैत अछि, वास्तविक भौगोलिक दूरी पाटि देनेक प्रमाण नहि।

फकराक धन-नाम विरोध : मूल्यक पाठमूलक व्यवस्था

आरम्भिक वाक्य—'परदेश धन दै, नाम लऽ जाइ— जे गाम मन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ'—आर्थिक उपलब्धि आ सामाजिक पहिचानक सम्भावित द्वन्द्व स्थापित करैत अछि। 'धन दै' परदेशक निश्चयात्मक समृद्धि नहि, ग्रामीण आशाक लोकसूत्र अछि; रामसेवकक वास्तविक कमाइ, भोगल परिस्थिति अथवा धनप्रेषणक एकोटा तथ्य मुख्य कथामे नहि। 'नाम लऽ जाइ'क अर्थ विस्मरणक भय हो सकैत अछि, मुदा रामसेवक अपन गाम बिसरि गेल—एहन कथा नहि। फकराक नैतिक योजना आ व्यक्तिविशेषक वास्तविक इतिहास समान स्तर नहि। ई विभेद राखने परदेशक आर्थिक प्रलोभनक आलोचना बिना पात्रपर अनुचित दोषारोपण सम्भव अछि।

बिदेसिया लोकधुन : गीतक अन्तःसमाजिक परम्परा

अध्यायारम्भ लोकगीत 'परदेशक चिट्ठी'क लोकधुन 'बिदेसिया' बताओल गेल अछि। ई चयन प्रवासक करुणा, विदाइक दैनन्दिन वस्तु, माएक आँगन आ पत्राचारक अभिलाषाकेँ सांस्कृतिक लय दैत अछि। मुदा एहि स्रोतपाठमे कोनो विशिष्ट ऐतिहासिक बिदेसिया-नाटक, संगीत-राग, गायक, ताल अथवा गायन-समारोहक प्रमाण नहि। 'बिदेसिया' नामक सांस्कृतिक संकेतकेँ उपयोगमे लएब आ ऐतिहासिक लोकनाट्यक विशिष्ट प्रदर्शन दृश्य लिखि देब अलग विषय छथि। गीत मैथिली लोकभाषामे दूरी आ घरेलू स्मृतिक सामान्य अनुभवक घनता बढ़बैत अछि, एहि अध्यायक नामित पात्रसभक वास्तविक प्रत्येक घटनाक स्वतन्त्र अभिलेख नहि।

विदाइक भोरे माए, प्रस्थानक राति रामसेवक

गीतक द्वितीय पदमे 'बेटा बिदा भेल भोरे, माए दुआरि ठाढ़' दृश्य अछि। मुख्य कथामे रामसेवकक माए 'विदाइक राति' पीपर लग जाइत छथि। ई अनिवार्य तथ्य-विरोध नहि, कारण माए राति प्रार्थना कऽ भोरमे बेटाकेँ बिदा कऽ सकैत छलीह; मुदा एहन निश्चित क्रम मूल गद्य नहि कहैत। मुख्य कथामे वास्तविक यात्रा-प्रस्थानक घड़ी उल्लेखित नहि। एहि कारण गीतक भोर आ गद्यक विदाइ-राति पाठस्तरक समयगत भिन्नता छथि। आलोचना सम्भावित मेलक कल्पना करि सकैत अछि, पर ओकरा घटित घटना घोषित नहि करबाक चाही। एहि अन्तरमे लोकगीतक सामान्य दृश्य आ गद्यक निजी चिन्ताक पृथक प्रयोजन अछि।

‘चिट्ठी’ आ ‘मनीऑर्डर’ बनाम रामसेवकक शून्य समाचार

लोकगीत कहैत अछि जे प्रवासी चिट्ठीमे नाम पठबैत आ मनीऑर्डरमे रुपैया भेजैत अछि। गद्यक रामसेवक सम्बन्धमे ठीक उलट तथ्य अछि—‘ने पत्र, ने संदेश, केवल मौन’। एहि दूनू स्तरक भेद अत्यन्त निर्णायक: गीत प्रवासक सम्भावित सम्बन्ध-विधानक आदर्श अथवा सामान्यीकृत चित्र बनबैत अछि; कथा एक एहन अनुपस्थितिक अनुभव दैत अछि जाहिमे सम्पर्क टूटि गेल अछि। लोकगीतक आधारपर रामसेवक रुपैया भेजलक, माँकेँ चिट्ठी लिखलक वा धन कमा कऽ अपन सम्बन्ध निबाहलक कहब मूल पाठविरुद्ध। ई असङ्गति मात्र सम्पादनक प्रश्न नहि, सांस्कृतिक आश्वासन आ व्यक्तिगतरूपेँ टूटल संचारक करुण विरोध बनि सकैत अछि।

‘सात समुद्र पार’ : काव्यगत दूरी आ वास्तविक गन्तव्यक अनिर्णय

गीतमे ‘सात समुद्र पार’ शब्दद्वारा चरम भौगोलिक दूरीक बिम्ब बनैत अछि। मुख्य गद्य एक आढ़तिया द्वारा ‘दूर देश’क प्रस्ताव बतबैत अछि, मुदा रामसेवकक जहाज, जलयात्रा, देश, बन्दरगाह, मार्ग वा रोजगारक वास्तविक स्थल निर्दिष्ट नहि। ‘सात समुद्र’क काव्यात्मक रूपकेँ रामसेवक सात समुद्र पार कऽ अमुक द्वीप पहुँचल—एहन भूगोलिक निश्चयमे बदलि नहि सकैत। परदेशक वास्तविक दूरी माताक दृष्टिएँ ‘हजारो कोस’क भाव बनैत अछि; इहो सटीक मानचित्रक माप नहि। आलोचना एकर दूरत्व-रस ग्रहण करैत अछि, मनगढ़न्त उपनिवेशीय यात्रा-वृत्तान्त नहि।

कमलिनीसँ जानकी धरि : स्त्री-वंशक सांस्कृतिक निरन्तरता

अध्यायमे कमलिनीक बाद हुनकर बेटी जानकी अनुष्ठानक भार पबैत छथि। पूर्वक विमला–सूर्यनाथ–कमलिनी क्रमक बाद जानकीक प्रवेश स्मृति-संस्थाक स्त्री-नेतृत्वक आवर्ती भूमिका सुदृढ़ करैत अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई जे जानकी केवल पूर्वप्रथा निभबैत नहि; बूढ़बाक असमर्थताक स्पष्ट प्रश्नपर नव प्रक्रिया प्रस्तावित करैत छथि। मुदा ‘कमलिनीक बाद’सँ कमलिनीक मृत्यु, पदत्यागक कारण अथवा ठीक वर्ष स्वतः सिद्ध नहि। एहि दीर्घकालीन परिवार-क्रममे स्त्री एजेंसी वास्तविक भाषिक आ संस्थागत क्रियासँ प्रमाणित अछि; किन्तु अधिकारक औपचारिक चयन वा अन्य समुदायसभक भागीदारीक विवरण सीमित अछि।

आढ़तियाक दृश्य-प्रवेश : मीठ जीभ, चमकदार वस्त्र, कागज

आढ़तियाक प्रथम परिचय त्रिविध दैहिक-वस्तुगत संकेतसँ होइत अछि—मीठ जीभ, चमकदार वस्त्र आ कागजक गट्ठर। एहि संकेतसभक भूमिका कथात्मक विश्वसनीयता आ संशयक संयुक्त निर्माण अछि। मधुर प्रचार आर्थिक आकाङ्क्षा जगबैत अछि, कपड़ा सम्पन्नताक दृश्य प्रतीक आ कागज राज्य-सदृश औपचारिकताक छवि बनैत अछि। मुदा आढ़तियाक वास्तविक नाम, मालिकक परिचय, सम्बन्धित संस्था, ठगीक विशेष योजनाक अभिलेख वा व्यक्तिगत दुष्कर्मक स्वतन्त्र घटना नहि। प्रस्तुति छलपूर्ण आकर्षणक आशङ्का जगबैत अछि, पर निश्चित अपराधक विस्तृत प्रमाण निर्दिष्ट नहि करैत। एहि कारण बाह्य इतिहासक कोनो ज्ञात गिरमिटिया एजेन्टक परिचय एहि पात्रपर थोपब नहि चाही।

तीन बरखक करार : वचन आ दस्तावेजक दूरी

आढ़तिया खुला स्वरमे ‘तीन बरखक करार, नीक वेतन, आ काम पूरा भेलाक बाद अपन घर घुरब’क प्रस्ताव दैत अछि। रामसेवक कागजपर अंगूठा लगबैत अछि, मुदा पूरा शर्त पढ़ि नहि पबैत। एहि दृश्यसँ मौखिक वचन आ लिखित दस्तावेजक बीच असम ज्ञान-सम्बन्ध बनैत अछि। मूल पाठ नहि बतबैत जे वास्तविक अनुबन्धमे तीन बरख लिखल छल कि नहि, वेतन कतेक छल अथवा वापसीक शर्त की छल। तें तीन बरख पूरा भेने ओ निश्चित लौटबाक अधिकार प्राप्त कएने छल—एहन विधिक दावा उपलब्ध नहि। कथा अनुबन्धीय असमानताक सम्भावना नाटकीय रूपमे देखबैत अछि, पूर्ण कानूनी प्रकरण प्रस्तुत नहि करैत।

अंगूठाक निशान : सहमति बनाम सूचित सहमति

रामसेवक ‘बिनु पूर्ण रूपसँ पढ़ने कि पढ़ा सकने’ कागजपर अंगूठा लगबैत अछि। एहि वाक्यमे हस्ताक्षर-प्रक्रियाक बाह्य पूर्णता आ शर्तक वास्तविक ज्ञानक असमानता स्पष्ट अछि। ओ स्वेच्छासँ आढ़तियाक प्रस्तावपर आकर्षित भेल, मुदा लिखित बन्धनक पूरा अर्थ जनैत नहि। एतय सूचित सहमतिक प्रश्न आधुनिक नैतिक विवेचनक औजार रूपमे उपस्थित कएल जा सकैत अछि; कथा किसी विशिष्ट समकालीन कानूनक ‘अवैध करार’क न्यायिक फैसला नहि दैत। भिन्न स्तरक प्रमाण बुझब आवश्यक: अंगूठा लगब पाठमे घटित, ठगीक निश्चित नतीजा अथवा दण्ड-सिद्धि अनुमान मात्र।

गरीबी, जमीन आ कर्ज : प्रवासक धकेलनिहार परिस्थिति

गामक जे गरीब परिवारसभ प्रस्तावसँ आकर्षित छथि हुनका कम जमीन वा बढ़ैत कर्जक समस्या अछि। रामसेवक परिवारक तंगहाली देखि निर्णय लैत अछि। एहि कारण प्रवास केवल अनियन्त्रित धनलोभक व्यक्तिगत कथा नहि, जीवनोपार्जनक संरचनात्मक दबावसँ जुड़ल अछि। जमीन आ कर्जक उल्लेख समाज-आर्थिक कारणक पर्याप्त आरम्भिक संकेत अछि, मुदा विशिष्ट साहूकार, ऋणक राशि, परिवारक आय अथवा पेशागत विकल्पक सूची नहि। एहि सीमाकेँ स्वीकारलाक बाद ‘परदेश गेल कारण लोभी छल’ कहब नैतिक सरलीकरण ठहरैत अछि। कथा गरीबीमे उपलब्ध विकल्पसभक कठिन सीमाकेँ देखबैत अछि।

रामसेवक : भोलाक पोता, न्याय-विलम्बसँ प्रवास धरि

मूल गद्य रामसेवककेँ ‘भोलाक पोता’ कहैत अछि। ठीक पछिला अध्याय [–६८]मे भोला गरीब किसानक भूमिविवाद पाँच बरख धरि अटकल छल, खेत बरबाद आ बच्चा भूखे बड़का भेल। एहि पीढ़ीगत जोड़सँ न्यायिक विलम्बक सामाजिक परिणाम आ दरिद्र परिवारक आगूक प्रवासबीच एक सम्भावित ऐतिहासिक अनुक्रम बनैत अछि। मुदा रामसेवकक परदेश जाएबाक एकमात्र निर्णायक कारण भोला-पक्षीय अदालती प्रकरण छल—ई वर्तमान अध्याय नहि कहैत। परिवारक तंगहाली अवश्य पाठमे कारण, पर भिन्न पीढ़ीक प्रत्येक गरीबीक स्रोत एक मुकदमामे सीमित नहि कएल जाए। आनुवंशिक पीड़ाक साहित्यिक संकेत आ कठोर कार्यकारणीय सिद्धि अलग छथि।

श्रमिकपात्रक मौन : निर्णयक बाद रामसेवकक आवाज गायब

रामसेवक प्रस्ताव स्वीकारैत अछि आ अंगूठा लगबैत अछि; तकर बाद ओकर प्रत्यक्ष संवाद, यात्रा-वृत्तान्त, अनुभव, अन्तिम इच्छा अथवा परदेशक जीवनक दृश्य नहि। समाजक नजरिसँ अनुपस्थित व्यक्ति कथानकक रहस्य-केन्द्र बनैत अछि, मुदा व्यक्तिविशेषक निज दृष्टिकेन्द्र अनुपलब्ध रहैत। एहि मौनक रचनात्मक लाभ माताक प्रतीक्षाक गहिर तनाव; एकर सीमा प्रवासी श्रमिकक स्वयं शोषण, प्रतिरोध वा नव समुदायक अनुभवक प्रतिनिधित्व नहि होएब। एहि अभावकेँ कल्पित पत्र अथवा मृत्यु-वृत्तान्तसँ भरि देब मूल कथाक नैतिक अनिश्चितताकेँ नष्ट करि देत।

माताक नामहीनता आ स्मृतिरक्षाक केन्द्रीय विरोध

रामसेवकक माए एहि अध्यायक भावनात्मक प्रधान आवाज छथि, मुदा हुनकर अपन व्यक्तिगत नाम मुख्य कथामे नहि देल गेल। कृति एक दिस प्रत्येक मानवक नाम सुरक्षित राखबाक अनुष्ठान रचैत अछि, दोसर दिस एहि अनुष्ठानक सर्वाधिक व्यथित सहभागिनी स्त्रीकेँ केवल 'माए'क सम्बन्धसूचक पदसँ चिन्हैत अछि। ई अनिवार्य नैतिक असफलता नहि, किएक तँ मातृत्वसँ कथा व्यथाक सार्वभौमिक स्वर बनबैत अछि; तथापि व्यक्तिविशेषक नाम-अधिकारक व्यापक प्रतिज्ञाक तुलनामे ई प्रतिनिधित्वक महत्त्वपूर्ण रिक्ति अछि। लोकगीतक माए आ रामसेवकक माता बीच साम्य अछि, पर गीतक सामान्य आवाज हुनकर स्वतन्त्र जीवनकथा नहि भरैत।

पीपरक जड़ि लग विदाइ-राति : स्थानक स्मृति-निरन्तरता

रामसेवकक माए विदाइक राति पीपर लग जाइत छथि। एही स्थानपर बूढ़बाक दीर्घ स्मृतिसत्ता, नारिकेल पातक नामरक्षा, चन्ना गाछीक विस्तार आ अमावस्याक कबड्डी-सम्बद्ध प्रथा पहिनेसँ स्थापित अछि। एहि कारण परदेशक समस्या कोनो एक घरक निजी भय नहि रहैत, सार्वजनिक स्मृतिक पुरान केन्द्रमे प्रवेश करैत अछि। माए प्रश्न ठाढ़ करैत छथि जे गाछी आ पोखरिसँ बन्हल शक्ति दूर देशमे पहुँचत कि नहि। एतय स्थान केवल भावुक गृहस्मृति नहि, अलौकिक साक्षी-प्रणालीक कार्यक्षेत्रक सीमा बनैत अछि।

बूढ़बाक अज्ञान-स्वीकार : सत्यक पक्षमे नैतिक संयम

बूढ़बा अपन शक्ति कतेक दूर धरि पहुँचैत अछि से नहि जनबाक स्वीकार करैत छथि। बादमे माए रामसेवक जीवित छथि कि मृत, पूछैत छथि; ओ फेर स्पष्ट कहैत छथि—'हमरा नहि बुझल' आ 'हम अहाँसँ झूठ नहि बजब'। एहि दोहरायल अज्ञान-स्वीकारसँ बूढ़बाक स्मृतिसत्ता नैतिक भरोसा पबैत अछि। ओ कल्पित सर्वज्ञ वक्ता बनि सांत्वनाक लेल मनगढ़न्त जीवित अथवा मृतक अवस्था घोषित नहि करैत। सत्यबोधक एहि नकारात्मक रूपमे नव्य-न्यायक प्रमाणानुशासनक नैतिक गुण अछि: ज्ञानसाधन नहि त निश्चय नहि। ई दृश्य उपन्यासक अलौकिक परम्परामे असाधारण विनम्रता बनि उभरैत अछि।

गाछी-पोखरिक सीमान्त : अलौकिक अस्तित्वक पुनः सीमांकन

अध्याय [–६९]मे बूढ़बा पानिक हर बूँदमे व्याप्त कहल गेल छल; एहि अध्यायमे ओ अपन शक्तिकेँ 'एहि गाछी, एहि पोखरि, एहि गामक स्मृति'सँ बन्हल मानैत छथि आ दूर दिस देखबाक क्षमता पर संशय करैत छथि। ई दुनू

कथनकेँ साथ पढ़लासँ स्पष्ट सीमासम्बन्धी तनाव अछि। यदि ‘हर बूँद’ सम्पूर्ण विश्वक जल हो त दूर-साक्षीक अज्ञान कठिन प्रश्न उठबैत; यदि ओ स्थानीय पोखरिक जल-विशेष अछि तँ सीमित व्याप्तिसँ मेल सम्भव। मुदा पिछला पाठ एहन परिसीमनक नियम स्पष्ट नहि दैत। आलोचक सम्भावित समाधानकेँ व्याख्या मात्र मानि, अविद्यमान औपचारिक जादुई सिद्धान्त गढ़ब नहि चाही।

जानकीक नव प्रथा : शक्तिक अभाव पूरा करबाक सामाजिक बुद्धि

बूढ़बाक शक्ति सीमित सुनि जानकी कहैत छथि जे यदि ओ दूर नहि पहुँचि सकथि तँ गाम एहन प्रथा बनाउ जे हुनकर कमी पूरा करय। एहि प्रस्तावमे अलौकिक निर्भरता घटि सामुदायिक क्रिया बढ़ैत अछि। बूढ़बा किछु दूरदेशीय चमत्कारक आश्वासन नहि दैत; लोक अपन उपलब्ध साधन—नाम, धागा/पत्थर, पीपरक जड़ि, नियमित अमावस्या—सँ स्मरण-संस्थान बनबैत छथि। ई सांस्कृतिक तकनीकक नवाचार अछि, जे चेतनाक दूरीक अपरिहार्य समस्याकेँ नामक स्थानीय उपस्थितिसँ आंशिक सम्बोधन करैत अछि। मुदा एहन उपस्थितिक अर्थ दूर देशक वास्तविक अवस्थाक ज्ञान नहि, एकतरफा स्मृतिसम्बन्ध मात्र।

पत्थर अथवा धागा : न्यूनतम भौतिक चिह्नक अर्थ

जानकी प्रत्येक परदेशी लेल ‘एकटा छोट पत्थर, वा एकटा छोट धागा’ पीपरक जड़िमे रखबाक सुझाव दैत छथि। एहि विकल्पमे महँगा स्मारकक बदला सहज उपलब्ध लघु वस्तु स्मृतिक वाहक बनैत अछि। पत्थरक अपेक्षाकृत स्थिर देह आ धागाक नाजुकता अलग बिम्ब रचि सकैत अछि; मुदा मूल कथा एकरा निश्चित प्रतीकार्थक नियमसँ बाँधैत नहि। कोन परिवार कोन वस्तु चुनलक, रामसेवकक चिह्न विशेषतः पत्थर छल कि धागा, गद्य नहि बतबैत। तेँ माताक स्पर्शक वस्तु ‘पत्थर’ अथवा ‘धागा’ रूपमे निश्चित करब पाठमूलक सीमा लाँघब होयत।

प्रत्येक अमावस्या : नामरक्षाक पुनरावृत्ति आ संस्थागत लय

नव अनुष्ठान अमावस्याक कबड्डीक अन्तमे सम्पन्न होइत अछि। गामक प्रत्येक परदेश गेल व्यक्तिक नाम एक-एक कऽ पुकारल जाइत अछि, आ चिन्ह पीपरक जड़िमे स्पर्श कएल जाइत अछि। एहि विधानमे वाचिक नाम, भौतिक स्पर्श आ चन्द्रकालीन आवृत्ति एक साथ संस्थागत अर्थ बनबैत अछि। पूर्वक महामारीमे प्रतिदिन भोरक सामूहिक नाम-पुकार छल; वर्तमान प्रथा अमावस्याक पुरान आवर्तन पुनः उपयोग करैत अछि। संकटानुसार काल-विधानक रूपान्तरण कृतिक स्मृति-व्यवस्थाक लचकक प्रमाण अछि। मुदा गामक परदेशीसभक वास्तविक संख्या अथवा प्रत्येक अमावस्याक पूर्ण उपस्थितिक अभिलेख उपलब्ध नहि।

नाम ‘परदेशक पुकार’ : व्यक्तिगत पीड़ा सँ सामाजिक संस्थातक

जानकीक प्रस्तावक पश्चात् कथावाचक स्पष्ट कहैत छथि जे प्रथा स्थापित भेल आ ओकर नाम ‘परदेशक पुकार’ रहल। प्रस्तावक एक घटना, संस्थाक स्थापनाक दोसर, आ ओकर प्रत्येक अमावस्याक पुनरावृत्ति तेसर अवस्था अछि। कथामे वास्तवमे एहि स्थापना आ नियमित पालनक कथन अछि, एतय केवल भविष्यक संकल्प नहि। ई भेद पिछला [−६८]क कमलिनीक ‘सहायता, सलाह, साथ’क संकल्पसँ महत्त्वपूर्ण: ओतय संस्थाक परवर्ती

क्रिया अलेखित छल; एतय नूतन प्रथाक प्रत्यक्ष नियमित निष्पादन बताओल गेल। इएह अन्तर अध्यायसभक समाज-परिवर्तनक प्रामाणिक तुलनाक आधार बनैत अछि।

जीवित, मृत, लापता : तीसरा सामाजिक अभिलेखी स्थान

नव स्मरणविधिमे जकर मृत्यु-सूचना अबैत ओकर चिन्ह विशेष सम्मान पबैत; जकर कोनो खबर नहि, ओकर चिन्ह वर्षों प्रतीक्षामे रहैत—‘ने पूर्ण रूपसँ जीवितक श्रेणीमे, ने पूर्ण रूपसँ मृतकक’। ई जीवन-मृत्यु निष्कर्षक अभावमे लापता व्यक्तिक पृथक सामाजिक स्थान बनबैत अछि। पर ई जैविक ‘तीसरा अवस्था’ नहि; सामाजिक अनिश्चितता आ ज्ञानक अपूर्णताक अभिलेखी वर्ग अछि। कथा असमय मृत घोषित करबाक अन्यायसँ बचबैत अछि, संगहि जीवित व्यक्ति रूपेँ वापसीक प्रमाण बिना आश्वासन देब अस्वीकार करैत अछि। एहि सूक्ष्म स्थितिसँ नूतन अनुष्ठानक नैतिक वैधता प्रबल होइत अछि।

रामसेवकक नफेरब : घटना आ अज्ञात नियतिक भेद

कथावाचक कहैत छथि जे रामसेवक ‘कहियो नहि घुरल’, तकर पत्र-सन्देश सेहो नहि आयल। ई कथा-स्तरपर गामक दृष्टिसँ अन्तहीन अनुपस्थिति अछि। मुदा ‘नहि घुरल’ आ ‘मरि गेल’ एक नहि; दुर्घटना, बन्धन, स्वेच्छिक प्रवास, परिवार बनाय लेब, बीमारी अथवा शोषणक निश्चित कारण मूल पाठ नहि कहैत। रामसेवक जीवनक कोण दृश्यक बीच अन्तर्धान भेल तकर पुष्टि नहि। आलोचक ओहि रिक्तिमे गिरमिटिया इतिहासक सामान्य दृष्टान्त राखि ‘अमुक देशमे रामसेवकक मृत्यु’ घोषित नहि करब। अज्ञेयताच एहि अध्यायक करुण आ ज्ञानमीमांसक केन्द्र अछि।

माताक बरख-दर-बरख आवर्तन : प्रतीक्षाक कथा-लय

माए प्रत्येक अमावस्याक राति पीपर लग आबि चिन्ह स्पर्श करैत छथि, पुत्रक नाम सुनैत छथि, फेरि चलि जाइत छथि। एकमात्र वाक्य अनेक वर्षक अनुष्ठानक पुनरावृत्ति समेटैत अछि। कथाकार प्रत्येक वर्षक भावपरिवर्तन अलग दृश्य नहि बनबैत, मुदा ‘बरख-दर-बरख’क सूत्र स्थायी करुणा सघन करैत अछि। माताक स्वर फेर एकटा प्रत्यक्ष प्रश्नमे उदित होइत अछि—‘की हमर बेटा जीवित अछि, वा मृत?’ एहि प्रश्नक स्वर शोक अथवा आशाक अन्तिम प्रमाण नहि; लगातार स्थगित निष्कर्षक पीड़ा अछि। कथा माताक अपने अनुभवक अन्तिम निर्णय नहि करैत, ओकर प्रश्न खुलल राखैत अछि।

बूढ़बाक सत्य-वचन : सांत्वना नहि, अनिश्चयक गरिमा

माताक प्रश्नपर बूढ़बा नहि कहैत छथि जे बेटा निश्चित जीवित छथि, नहि ई जे ओ मरि गेलाह। ओ केवल एतबे प्रतिज्ञा करैत छथि जे नाम याद राखताह। एहि उत्तरमे सांत्वना अधूरा अछि, मुदा छलक अभाव अछि। कृतिक व्यापक साक्षी-नैतिकतामे एतय ज्ञानगत ईमानदारी स्वयं करुणामूलक जिम्मेदारी बनैत अछि। अज्ञात नियतिक निश्चय कऽ देलासँ माताकेँ क्षणिक आश्वासन भेंटत, मुदा ओ आश्वासन पाठसाक्ष्य-विरोधी होयत। एहि दृश्यक उपलब्धि एहि बातमे अछि जे स्मृति ‘जानब’क सर्वज्ञ दावा नहि, ‘न बिसरब’क सार्वजनिक वचन होइत अछि।

एहन संक्षिप्त सत्य-वचनक भाषिक शक्ति विस्मयजनक, कारण ओ शोकक समाधान नहि देत, तैओ शोककेँ एकाकी नहि छोड़ैत।

‘दूरी नामकेँ मेटा नहि सकैत’ : सीमित विजयक कथन

बूढ़बाक अन्तिम वाक्यमे दूरी नामकेँ नहि मेटा सकबाक आ केवल अनिश्चितता लम्बा कऽ सकबाक बात अछि। ‘नाम’क रक्षा एतय स्थानीय अनुष्ठान द्वारा सम्भव, जखन व्यक्तिक वास्तविक अवस्थाक जानकारी अनुपलब्ध अछि। एहि सीमित विजयक पहिचान आवश्यक अछि: समुदाय स्मरण करैत रहत, मुदा रामसेवकक भौतिक सुरक्षा अथवा परिवारसँ वास्तविक पुनर्मिलन सुनिश्चित नहि। कथाक भावमूलक निष्कर्ष एहि अधूरापनक बावजूद उचित रूपेँ संवेदनशील अछि। पर यदि ‘नाम नहि मेटल’केँ ‘परदेशक दुःख समाप्त’क समतुल्य मानल जाए तँ आर्थिक शोषण, गुमशुदगी आ माताक क्षतिपूर्ण जीवनक प्रश्न बिसरल जाएत।

जीवित नामक रक्षा : मृत्यु-आधारित स्मृतिसिद्धान्तक संशोधन

प्रारम्भिक नाम-बचाओ परम्पराक बहुतरास प्रकरण मृतकक नाम, धुन अथवा स्मृतिगाछसँ सम्बन्धित छल। वर्तमान नव प्रथा प्रत्येक परदेशीकेँ जीवित रहितहुँ स्मरण-विधिमे नामांकित करैत अछि। एहि कारण स्मृति मृत्युक पछिला कर्म नहि, जीवित आ अनुपस्थित व्यक्ति प्रति निरन्तर सामाजिक सम्बन्ध बनैत अछि। मृत्यु-सूचनाक अभावकेँ मृत्यु घोषित कऽ देबाक बदला ‘अविभाजित प्रतीक्षा’ बनबैत अछि। ई संस्थागत मोड़ कृतिक समग्र स्मृति-मीमांसामे उल्लेखनीय अछि। तथापि एहन प्रथासँ दूर व्यक्तिक जीविकागत संकट दूर होइत नहि; प्रतीकात्मक समावेशन आ भौतिक कल्याणक साधन अलग छथि।

भूगोलक बदला सम्बन्ध : प्रवासक सामाजिक अवच्छेदक

जानकीक प्रस्तावमे गामक सदस्यताक निर्णायक शर्त केवल गामक भौतिक क्षेत्रमे निवास नहि। कियो हजारो कोस दूर रहितो यदि गाम छोड़ि गेल व्यक्ति रूपमे स्मृतिमे अछि तँ ओ अनुष्ठानक भाग बने रहत। एहि रूपमे सदस्यता स्थानगत उपस्थिति सँ सामाजिक सम्बन्ध धरि विस्तारित होइत अछि। मुदा प्रवासीक नाम स्थिर करब ककर जिम्मेदारी, परदेशमे जन्मल बच्चाक स्थिति की, गाम छोड़ि बसि गेल अन्य समुदायक नाम कोना जुड़त—एहि प्रश्नसभक उत्तर अध्याय नहि दैत। फलतः ई विस्तार एक स्पष्ट आरम्भिक नियम अछि, समस्त प्रवास-स्थितिक समावेशी संविधान नहि।

स्त्रीक विचारशक्ति : जानकी आ माताक भिन्न भूमिकासभ

माए प्रश्न उठबैत छथि—दूर देशमे नामक साक्षी कोना बनत? बूढ़बा सीमा स्वीकारैत छथि; जानकी विधि प्रस्तावित करैत छथि। एहि क्रममे नवाचारक बौद्धिक आधार केवल पुरुष ऋषिसत्ता नहि। माताक निजी भय सामूहिक समस्या बनैत अछि, जानकी ओकरा नियममे रूपान्तरित करैत छथि। तथापि माताक अपना नाम अनलिखित रहि जाएब आ जानकीक अधिकृत पदकेँ पहचान भेटब सामाजिक वाणी-वितरणक जटिलता देखबैत अछि। एक स्त्री संस्थान-निर्मात्री, दोसर शोकक स्रोतपात्र—दुनूक मानवीय गरिमा समान, मुदा कथात्मक अधिकार समान नहि।

‘आढ़तिया’क वर्गीय मध्यस्थता : बाजारक मुखिया नहि, करारक दलाल

गामक द्वारपर आयल व्यक्ति स्वयं रोजगारीक वास्तविक खेत, कारखाना वा संस्थाक मालिक रूपमे चिन्हित नहि; ‘आढ़तिया’ कहल जाइत अछि। ओ दूर देशक काजक सूचना आ करारक कागज लऽ अबैत अछि। एहि भूमिकासँ श्रम-बाजारमे मध्यस्थक उत्पत्ति कथानकक केन्द्रमे अबैत अछि। गरीब श्रमिक आ दूर नियुक्तिकर्ताक बीच सूचनाक दूरी मध्यस्थकेँ अनुपातहीन प्रभाव दऽ सकैत अछि। मुदा कागजमे कोन नियोक्ताक नाम छल अथवा आढ़तियाक पारिश्रमिक की छल, से नहि; तेँ ओकरा निश्चित अपराधी, विक्रेता वा विशेष ऐतिहासिक गिरमिटिया एजेण्टक नाम दऽ ठहराएब उपयुक्त नहि।

करारक तीन बरख बनाम माताक अनन्त प्रतीक्षा

मौखिक प्रस्ताव सीमित ‘तीन बरख’क अवधि बोलैत अछि, मुदा रामसेवकक कथागत अनुपस्थिति ‘कहियो नहि घुरल’क खुलल सीमा धारण करैत अछि। एहि विरोधमे सांस्कृतिक छलक आशङ्का, टूटल प्रत्याशा आ समयक निःसीम विस्तार एक साथ अबैत अछि। तीन बरख पूरा भेलाक बाद कोनो निश्चयात्मक घटना पाठ नहि बतबैत—न करार बढ़ल, न बन्दी बनल, न धन भेटल। तेँ अनन्त प्रतीक्षाक अर्थ खुलल भविष्य, न कि प्रामाणिक दर्ज सम्पूर्ण जीवनक सटीक कालगणना। कथा समयकेँ निश्चित रोजगार-अवधिसँ अनिश्चित पारिवारिक शोकमे बदलैत अछि।

घरक भौतिक जीवन : कर्ज, अन्न आ परिजनक दूरी

रामसेवक अपन परिवारक तंगहाली देखि परदेशक जोखिम लैत अछि। मूल पाठमे कर्जा आ जमीनक अभाव सामान्य वर्गगत दबाव रूपमे अछि, मुदा रामसेवकक घरक दैनिक खाद्यव्यवस्था, माएक जीविका, अन्य परिजनक सहारा आ यात्राक लागत विस्तारसँ नहि। ई अभाव विशेष अर्थवान अछि, कारण अध्यायक नैतिक निष्कर्ष घर–गामक स्मृति पर केन्द्रित अछि, तखन वस्तुगत घरक असुरक्षा अंशतः पृष्ठभूमिमे छुटैत अछि। बीतल न्यायिक विलम्बक परिवार आ नव प्रवासक परिवारक आर्थिक शृंखलाकेँ पाठक अनुमानित करैत छथि; अन्तिम आर्थिक इतिहासक तर्क लेल अधिक पाठसाक्ष्य चाही।

‘मनीऑर्डर’क काल-संकेत : गीतक परापर कालिकता

लोकगीतमे ‘मनीआर्डर’ शब्द पत्राचार आ धनप्रेषणक संस्थागत माध्यमक संकेत अछि। गद्य स्वयं परिवहन-व्यवस्था, पोस्ट-ऑफिस, डाकटिकट अथवा देशकालक बाह्य तिथि निर्दिष्ट नहि करैत। एहि कारण गीतक मनीऑर्डर-छवि आ आढ़तियाक करारक ऐतिहासिक प्रणालीकेँ एक कालखंडक सटीक साक्ष्य मानलासँ कालगत दावाक जोखिम अछि। आधुनिक पाठककेँ ई गीत प्रवासक दीर्घ सामाजिक इतिहासक सांस्कृतिक मिश्रण जकाँ पढ़बाक अवसर दैत अछि। मुदा मूल पाठमे रामसेवक मनीऑर्डर पठौलक नहि; शब्द एक लोकगीतक चित्र, कालिक भूगोलक अटल प्रमाण नहि।

ऐतिहासिक गिरमिटिया सन्दर्भ : परापाठ आ प्रमाणक भेद

अध्यायोत्तर टिप्पणी औपनिवेशिक गिरमिटिया प्रथाक उल्लेख करैत मॉरीशस, फिजी आ कैरिबियन आदि स्थल नाम लैत अछि। ई लेखककीय तुलनात्मक व्याख्या अछि, मुख्य गद्यक रामसेवकक निश्चित गन्तव्यक विवरण नहि। मूल कथामे तीन बरखक करार, अधपढ़ल दस्तावेज आ परदेशी श्रमिकक लापता होएब गिरमिटिया-सदृश इतिहासक स्मरण अवश्य जगबैत अछि। मुदा रामसेवक अनिवार्यतः मॉरीशस/फिजी पहुँचलक, कोन जहाजपर गेल अथवा कोन वर्षमे रवाना भेल—एहन पाठमूलक साक्ष्य नहि। ऐतिहासिक प्रथाक बाह्य पुष्टि अलग इतिहास-स्रोतसँ सम्भव अछि; वर्तमान प्रकरणक दावा कथानकक आन्तरिक प्रतिनिधित्व धरि सीमित।

भावी हांगकांग आ डिजिटल ठगी : परापाठीय भविष्यसूचना

अन्तिम टिप्पणी आगूक खण्डसभमे हांगकांग आ डिजिटल ठगीसँ जुड़ल प्रवासीक संकटक संकेत दैत अछि। ई वर्तमान जानकी–रामसेवक घटनाक भीतर घटल दृश्य नहि। भविष्यवाची परापाठ मूल कथा कैं दीर्घ त्रयीक संरचनासँ जोड़ैत अछि, मुदा ककरा वास्तविक डिजिटल उपकरण छल, कियो रामसेवककेँ ठगल वा विदेशसँ कोनो इलेक्ट्रॉनिक पत्र आयल—एहन वर्तमान अध्यायक तथ्य नहि। आख्यानशास्त्रीय रूपमे ई प्रक्षेपण दीर्घ समयमेखला बनबैत अछि, जखन काल-बद्ध अध्यायमे ग्राम्य कागज-करार आ मौन प्रमुख माध्यम छथि। दुनूक मिश्रण भविष्योन्मुख प्रतीकक प्रभाव बढ़बैत, तथ्यगत स्तरभेद बचएब अनिवार्य।

बिदेसिया गीतक नीतिवचन आ प्रवासीपर नैतिक दबाव

गीत कहैत अछि जे जे कमाइ कऽ गाम बिसरि गेल, ओ लौटिते अजनबी बनत; जे नाम राखल तकर घर प्रतीक्षारत रहत। एहि द्वैतमे गृहस्मृतिक मूल्य अछि, मुदा प्रवासीक अनेक विडम्बनापूर्ण स्थितिसभकेँ केवल ‘गाम बिसरल’क व्यक्तिगत नैतिक दोषमे बदलि देबाक जोखिम सेहो। रामसेवकक संवादविहीनता स्वेच्छिक विस्मरणक प्रमाण नहि; ओ पत्र भेजबाक अवसर नहि पओने होइ सकैत, अथवा अन्य अवरोध होइ सकैत, मुदा कोन कारण पाठमे नहि। समीक्षक ओकर मौनकेँ गामकेँ त्यागबाक नैतिक पाप नहि कहत। लोकगीतक चेतावनी आ एक लापता श्रमिकक नियतिक अन्तर अनिवार्य।

रामसेवकक श्रमक अदृश्यता : काजक आशा, काजक दृश्य नहि

आढ़तिया ‘नीक वेतन’क वचन दैत अछि; लोकगीत घाम बहाबि दूर देशमे कमेबाक दृश्य रचैत अछि। मुदा गद्य रामसेवककेँ वास्तविक कोनो श्रमस्थलपर काम करैत नहि देखबैत। वेतन, पाली, खेत, कारखाना, निवास, सहकर्मी, निगरानी अथवा प्रतिरोधक एकोटा दृश्य अनुपस्थित। एहि कारण ‘प्रवासी श्रमिक’क जीवनक ठोस सामाजिक इतिहासक बदला श्रमिकक घरसँ बाह्य प्रस्थान आ घरक ज्ञानहीन प्रतीक्षा केन्द्रमे अछि। ई दृष्टिचयन कथाक करुणा प्रभावी बनबैत अछि, संगहि विदेशमे श्रमक वस्तुगत प्रतिनिधित्व सीमित करैत अछि।

यात्रा-कथाक रिक्ति : गमन आ गुमशुदगीक बीच

कथा एक बिन्दुपर रामसेवकक अंगूठा-निशान आ विदाइ लेनाइ कहैत अछि; अगिला बिन्दुपर हुनकर नफेरब। बिच्चक यात्रा, सीमा-पार, पहुँचबाक सूचना, रोजगारक आरम्भ आ वापसीक प्रयास कोनो वर्णित नहि। एहि

अपूर्णतासँ रामसेवकक अज्ञात नियति पाठकीय अनुभवमे स्वयं एक ‘गह्वर’ बनैत अछि। पाठकक तर्क ओकरा भरबाक प्रयास करैत अछि, मुदा कथावाचक स्रोत नहि दैत। एतय प्रमाणानुशासन स्वीकार करैत रिक्ततासँ रिक्तता रूपमे राखब साहित्यिक पद्धतिक मूल निष्ठा अछि। गुमशुदगीपर लिखैत ‘अनाम गुमान’ आ ‘प्रत्यक्ष तथ्य’ अलग कहल जाए।

मातृदृष्टि : पीढ़ीक पुनरावर्तित प्रतीक्षा

माएक विदाइ-राति प्रश्न भविष्यक भय अछि, बरखसँ बादक प्रश्न जीवित-मृतक अवस्थाक अनिश्चितता। एहि दुई प्रत्यक्ष संवादक बीच अनेक अमावस्याक आवर्तनमे माँक दिनचर्या बदलल छल—एतबे कथानक-सूत्र। औपचारिक मनोवैज्ञानिक परिभाषा देबाक बदला काव्यात्मक ठोस दृश्य—चिन्ह स्पर्श, नाम सुनब, घर घुरब—मातृवेदना सम्प्रेषित करैत अछि। मुदा माताक अन्य भाव, क्रोध, परदेशक अन्य खबर खोजबाक चेष्टा वा गामक अन्य महिला सँग संवाद पाठमे नहि। एहन अनुपस्थितिकेँ स्वीकारलाक बाद ओकर जीवन केवल एक स्थायी मातृत्वचित्र बनि रहबाक सीमा सेहो चिन्हित होइत अछि।

स्पर्शक साक्ष्य : पत्थर/धागा आ अनुपस्थित देह

माताक हाथ वास्तविक बेटेकेँ स्पर्श नहि करैत; ओ प्रतीकचिह्न स्पर्श करैत छथि। एहि क्रियामे देहक अभाव आ सामाजिक सम्बन्धक उपस्थितिक विरोध रचैत अछि। चिह्न वस्तुगत अछि, मुदा ओकरा परदेशी व्यक्तिसँ जोड़निहार सम्बन्ध जानकीक सामाजिक नियम आ परिवारक स्मृति अछि। वस्तु स्वयं व्यक्तिक जिंदा होएबाक प्रमाण नहि; ओकर उपयोग उपस्थित सभाक याद आ प्रतीक्षाक अभिव्यक्ति अछि। ‘स्पर्श’क पुनरावृत्ति कथा केँ अलौकिक सूचना-प्राप्तिसँ हटाकऽ दैनन्दिन मानवहाथक क्रियामे स्थिर करैत अछि। एतय पारम्परिक अनुष्ठानक स्फुट रस करुणासँ संयमित शान्ति दिस जाइत अछि।

जीवन-मृत्यु अनिर्णय : नव्य-न्यायीय प्रमाणसमस्या

रामसेवकक समाचार नहि आबब एक प्रत्यक्ष सामाजिक सूचना-अभाव अछि; एकर आधारपर ‘रामसेवक मृत छथि’ अथवा ‘रामसेवक जीवित छथि’ दुनूमे कोनो निष्कर्षक हेतु पर्याप्त नहि। ‘समाचार नहि’से ‘मृत्यु’क सार्वत्रिक व्याप्ति असिद्ध; वैकल्पिक कारण—सम्पर्क-विच्छेद, राहक अवरोध, आ अन्य परिस्थिति—सैद्धान्तिक रूपसँ सम्भव। बूढ़बाक अज्ञान-स्वीकार एहि असिद्धतासँ व्यवहारिक उत्तर बनबैत अछि। नव्य-न्यायक पक्ष, साध्य, हेतु आ उपाधि विवेचन एतय उपयोगी, मुदा बूढ़बा स्वयं औपचारिक दार्शनिक व्याप्तिचर्चाक पदावलीमे संवाद नहि करैत। ई समीक्षकक विवेचन-पद्धति अछि, पात्रक ऐतिहासिक शब्दशः तर्क नहि।

पत्रक अनुपस्थितिसँ दोषी निश्चित करबाक हेत्वाभास

मुख्य कथामे ना पत्र, ना सन्देश—ई एक सूचनात्मक ऋणात्मक तथ्य अछि। एहि तथ्यकेँ यदि ‘रामसेवक अपन माँ बिसरि गेल’क हेतु बनाओल जाए तँ अनिश्चित कारणकेँ एक निश्चित मानसिक वृत्तिक प्रमाण ठहराएब होयत। एहि अनुमानमे व्याप्ति नहि, कारण बाहरी बाधा सम्भव अछि। लोकगीत ‘जे गाम बिसरल’क सामान्य नैतिक चेतावनी दैत अछि, पर रामसेवकपर ओकर अनुप्रयोग स्रोतविहीन। एहि एक सूक्ष्म भेदसँ प्रवासी श्रमिकक नैतिक

प्रतिष्ठा सुरक्षित रहैत अछि। आलोचना गीतक सामाजिक मूल्य अस्वीकार नहि करैत, ओकर सम्भावित आरोपणक सीमा दर्शबैत अछि।

नामक स्थिरता आ अभिलेखी पुनर्जनन

पीपरक जड़ि लग नामक चिन्ह राखनाइ एकदफा घटना, अमावस्या पर नाम पुकारनाइ नियमित पुनर्स्थापन। चिन्ह एक दिनक वस्तु मात्र रहि जाए त सम्बन्ध निर्बल पड़ि सकैत; पुनरावर्ती आवाज सामाजिक जानकारी ताजा रखैत अछि। एहि कारण प्रथामे स्थिर वस्तु आ समयगत क्रिया मिलि सांस्कृतिक अभिलेख बनबैत अछि। मुदा नाम उच्चारणक तरीका, दू व्यक्ति समान नामवला हो त भेद, अलग पीढ़ीक सदस्यकेँ चिन्हक अर्थ बुझाएबाक विधान, अथवा नाम हटेबाक शर्त पाठ नहि दैत। ‘न मेटाएब’क आदर्शक व्यवहारिक संरक्षणलेल लोकक निरन्तर ज्ञान-संक्रमण चाही; ई अन्तर्निहित सामाजिक शर्त अछि।

पत्राचार, दूरसञ्चार आ गामक कण्ठ : माध्यमक तीन अवस्था

लोकगीत पत्र आ मनीऑर्डरक सम्भावना देखबैत अछि; मुख्य रामसेवकक अनुभवमे ओहि माध्यमसभक विफलता वा अनुपस्थिति अछि; जानकीक प्रथा स्थानीय मौखिक स्मरण पर आधारित अछि। एहि क्रममे संचारक भिन्न साधनक नैतिक भूमिका अलग होइत अछि—पत्र बाहरी सूचना पहुँचाबय सकैत, मनीऑर्डर आर्थिक सम्बद्धता, आ नाम-पुकार स्थानीय अनाथभाव कम करबाक प्रयास। मुदा स्थानीय पुकार सूचना-वहनक दूरस्थ तार-जाल नहि; ओ व्यक्ति कहाँ अछि से नहि बतबैत। एहि कारण प्रथा संचारक तकनीकी विकल्प नहि, संचार विफल होएबाक अवस्थामे अर्थपूर्ण सामुदायिक सम्बोधनक नव विधि अछि।

बूढ़बाक पुरान प्रतिज्ञा आ नव भूगोल

बूढ़बाक दीर्घ साक्षी-प्रतिज्ञा आरम्भमे गामक मरल, विस्मृत अथवा अन्यायग्रस्त लोकक नाम बचएब छल। वर्तमान अध्याय परदेशी जीवित व्यक्ति लेल स्थान खोलैत, गाममे साक्षी राखि दूरक जीवपर दावा न करैत। एहि संशोधनसँ प्रतिज्ञाक भौगोलिक सीमा आ नैतिक विस्तार परस्पर अलग देखाइत अछि: बूढ़बा दूर कतेक देखताह से नहि जनैत, किन्तु सामाजिक संस्था दूर व्यक्ति कैँ स्मृतिमे सम्मिलित करैत अछि। ‘सीमा स्वीकारब’ एहि अर्थमे पराजय नहि; गलत सर्वज्ञताक बदला मानवीय सहकारक निर्माण अछि।

कथनकाल : पीढ़ीक परिवर्तन एक वाक्यमे, प्रतीक्षा अनेक वर्ष

अध्यायक आरम्भमे ‘कमलिनीक बाद’ जानकी आ तकर युगक स्थापना अत्यन्त अल्प शब्दमे अछि। आढ़तियाक आगमन एक दृश्य, माएक प्रश्न दोसर, जानकीक प्रस्ताव तेसर; प्रथाक नियमित आवर्तन बहुवर्षक सारांश बनैत अछि। कथा एतय विस्तृत प्रस्थानयात्रा नहि, कालसंकुचनक माध्यमे सामाजिक संस्थाक विकास प्रधान करैत अछि। तीन वर्ष प्रस्तावित करारक काल, अनेक वर्ष माताक प्रतीक्षाक काल आ गामक दीर्घ स्मृतिक काल अलग-अलग। एहि समकालिक असम समयक कारण कथा संक्षिप्त रहितहुँ अनेक पीढ़ीक जीवनबीच नैतिक सेतु रचैत अछि।

दृश्य-सारांशक अनुपात आ कथात्मक अपूर्णता

प्रथम नाटकीय दृश्य आढ़तियाक हाँक अछि; संवादगत भावमूलक दृश्य माताक बूढ़बाक लग प्रश्न; विचारात्मक दृश्य जानकीक योजना; अन्तिम मुख्य दृश्य माँक जीवित-मृतक प्रश्न। बीचक सम्पूर्ण परदेशी जीवन सारांशक शब्द ‘कहियो नहि घुरल’मे बन्द अछि। कथावस्तुक अनुपस्थित हिस्सार्कें कथावाचक जरुरी रहस्य बनबैत अछि, मुदा दुनियाँक प्रवासी अनुभवक पूर्ण विस्तार नहि दैत। एहि चयनक कला प्रभाव तीव्र, पर समाज-आर्थिक परदेशी श्रमक विविधता कम प्रतिनिधित। वर्तमान समीक्षा एहि दूनू पक्ष स्वीकारैत अछि, एकरे सफल रहस्य कहि सब रिक्ति महिमामण्डित नहि करैत।

करुणरसक केन्द्र : अनिर्णीत मृत्यु नहि, अनिर्णीत प्रत्युत्तर

अनेक पूर्व अध्यायमे पात्रक मृत्यु घोषित, कथा नामरक्षा द्वारा शोकक सम्मान सुनिश्चित करैत छल। एतय मृत्यु अप्रमाणित; माताक पीड़ा एहि कारण बहुबार फेर जागैत अछि। चिन्हक नियमित स्पर्श आ नामपुकार करुणाक स्थायी आलम्बन, बूढ़बाक ‘झूठ नहि बजब’ धीर नैतिक विधान। एहि रसविन्यासमे भय, क्षोभ आ आशाक मिश्रण अछि, मुदा ‘मृत्यु-पछाति शान्ति’क पूर्ण समाधान नहि। कोनो निश्चित शव अथवा अन्तिम संस्कारक दृश्य नहि, तें माताक अवस्था मृतकस्मरणक एकरस करुणामे समेटल नहि जा सकैत।

बिदेसिया आ नैतिक औचित्य : पाठक सम्भावित प्रश्न

गीतमे आँगन, गठरी, श्रमक घाम आ रुपैयाक आदान-प्रदान प्रवासक घरेलू स्मृतिक जीवित रूप छथि। तथापि ‘नाम नहि पठबला’ प्रवासी प्रति नैतिक दोष लगबाक आशङ्का अछि। रामसेवकक मौन कारण अज्ञात, तें एहि विशिष्ट चरित्रपर विस्मरणक अभियोग अनुचित। बिदेसिया-धुनक चयन सामाजिक अनुभूतिक औचित्य रखैत अछि, पर लोकगीतक सर्वसामान्य सूत्र व्यक्तिगत परिस्थितिकेँ सदैव अभिव्यक्त नहि कऽ पबैत। समग्र कृति जेकर नाम सुरक्षित करबाक प्रतिज्ञा करैत, ओकरा नैतिक निर्णयक लेल पर्याप्त स्वतन्त्र कथन भेटबाक अधिकार सेहो अछि—ई आलोचनाक तात्विक प्रश्न।

अन्तर्विरोधक वर्गीकरण : गीत, गद्य, परापाठ, जादुई नियम

अध्यायक मुख्य पाठगत अन्तरसभ ई प्रकारेँ देखाइत छथि। एक—गीतमे चिट्ठी-मनीऑर्डर, गद्यमे रामसेवकक सम्पूर्ण समाचारहीनता। दू—गीतक भोरविदाइ आ गद्यमे माताक विदाइ-रातिक प्रश्न; दुर्निवार विरोध नहि, कालिक स्तरभेद। तीन—‘सात समुद्र’क काव्यरूप आ वास्तविक देशक अनिर्दिष्टता। चारि—अध्यायोत्तर गिरमिटिया-सन्दर्भ आ गद्यमे अज्ञात स्थान/वर्ष; ऐतिहासिक तुलनाकेँ विशेष पात्रक तथ्य नहि बनाओल जाए। पाँच—पूर्व जलव्याप्त बूढ़बा आ वर्तमान स्थानीय शक्ति-सीमा बीच नियमक अस्पष्टता। छः—रामसेवक अनुपस्थित छथि, मुदा मृत घोषित नहि। ई सभ बिन्दु अलग पाठगत प्रमाणश्रेणीक छथि; अनुमानसँ समाधान नहि।

विदेह समानान्तर इतिहास : अनुपस्थित श्रमिकक नामक अधिकार

औपचारिक प्रवास-पंजीमे यदि कागज आ अनुबन्धक नाम रहितहुँ व्यक्ति गामक अनुभवसँ विलग भऽ जाए, तँ जानकीक अनुष्ठान ओकर स्थानीय सामाजिक पहिचानकेँ जीवित राखयक प्रयास करैत अछि। एहि रूपमे नामस्मृति गरीब, अल्पशिक्षित श्रमिकक विस्मरणक विरुद्ध समानान्तर इतिहासक नैतिक संसाधन बनैत अछि। किन्तु एहि कथामे वास्तविक औपनिवेशिक जहाज-पंजी अथवा रामसेवकक अनुबन्धक प्रति उद्धृत नहि। तेँ सामूहिक स्मरणकेँ प्रमाणित ऐतिहासिक प्रवास-अभिलेख घोषित करब असिद्ध। इतिहासलेखन लेल दस्तावेजक सत्यापन आ स्मृतिरक्षा लेल परिवारक निष्ठा—दूनूक मूल्य अलग, कखनहुँ परस्पर पूरक।

सामाजिक असमानता : नाम सुरक्षित, देहक सुरक्षा अनिश्चित

जानकी नाम पुकारी रामसेवकक सामाजिक अदृश्यता घटएबाक प्रस्ताव दैत छथि। मुदा अधपढ़ल करार, गरीबीक दबाव आ वास्तविक सम्पर्कक अभाव जथावत् रहल अछि। एहि कारण अध्याय स्मृतिसंस्था निर्माणमे सफल, पर प्रवासी श्रमिकक शारीरिक तथा आर्थिक सुरक्षा लेल कोनो व्यवस्थित नीति प्रस्तुत नहि करैत। एतय नैतिक सामुदायिक सहारा आ न्यायसंगत श्रम-सम्बन्धक संरचनागत मांगक अन्तर खुलैत अछि। यदि कृति स्मरणकेँ सभ समाधानक स्थानापन्न बना देत, तँ वास्तविक श्रम-शोषणक प्रश्न पाछू पड़ि सकैत। वर्तमान प्रकरण प्रत्यक्ष दोषनिर्णय नहि, संस्थागत कल्पनाक सीमा चिन्हित करैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय : सत्य-अज्ञानक नयी नैतिकता

‘परदेशक पुकार’क सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि बढ़बाक ‘हमरा नहि बुझल’ आ जानकीक नव स्मरण-विधि बीचक नैतिक समन्वय अछि। परदेशी जीवित, मृत वा अनुपस्थित—जखन तथ्य निश्चय नहि, तखन समुदाय झूठे निष्कर्षक बदला नामक अधिकार सुरक्षित करैत अछि। माएक प्रतीक्षा, धागा-पत्थरक स्पर्श, अमावस्याक आवृत्ति आ रामसेवकक अवाक् अस्तित्व कथाकेँ करुणात्मक गहिराइ दैत अछि। सीमा ई जे वास्तविक परदेशी श्रमिकक अनुभव अप्रकट, आढ़तियाक शर्त-अन्तर अस्पष्ट, माएक नाम अनलिखित, आ गीतक पत्र-मनीऑर्डर मुख्य कथाक मौनसँ असमान। एहि सबकेँ चिन्हैत अध्यायकेँ सामाजिक-स्मृति सम्बन्धी प्रभावी, मुदा प्रवासक पूर्ण आर्थिक इतिहासक बदला एक चयनित करुणामूलक उद्गम-कथा मानब न्यायसंगत अछि।

स्रोत-अनुशासन आ अगिला अध्यायक पूर्वसंकेत

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–६७] ‘परदेशक पुकार’; अनुक्रमणिकाजन्य पृष्ठ-परास २४९–२५२। लोकगीत ‘परदेशक चिट्ठी’ (बिदेसिया), मुख्य गद्यक आढ़तिया–रामसेवक–माता–जानकी संवाद, तथा गिरमिटिया-सन्दर्भक अध्यायोत्तर टिप्पणी पृथक विश्लेषित। रामसेवकक देश, लिखित अनुबन्धक वास्तविक शर्त, ठोस रोजगार, जीवन-मृत्यु अवस्था, पत्राचार आ माएक व्यक्तिगत नाम अज्ञात छथि। अगिला अध्याय [–६६] ‘स्त्री सभक राति-सभा’मे स्त्रीक वाक्-अधिकार, रातिक सार्वजनिक स्थान आ सामुदायिक निर्णयक अधिकारपरीक्षा होएत।

प्रकरण ३५ | मूल अध्याय –६६ — स्त्री सभक राति-सभा

पूर्वकथाकाल · स्त्रीक साक्ष्य, घरेलू हिंसा, न्यायिक अधिकार, सामाजिक दबाव आ संस्थागत स्मृतिरचना

पाठसीमा, मूलरचना आ विचारक केन्द्र

अध्याय [–६६] ‘स्त्री सभक राति-सभा’क आरम्भ मूल अनुक्रमणिकामे पृष्ठ २५३ आ अगिला अध्याय [–६५]क आरम्भ पृष्ठ २५७ अछि। ताहि आधारपर २५३–२५६ एकर अनुमानित मुद्रित परास अछि, प्रत्येक उद्धरणक सूक्ष्म पृष्ठाङ्क नहि। मूल रचनामे फकरा, ‘अन्हार-तोड़ स्वर’ नामक राति-सभा गीत, सुलोचना–पद्मा–बूढ़बाक घटनात्मक गद्य आ ‘समानान्तर स्त्री-न्याय संस्थाक ऐतिहासिक भूमिका’ शीर्षक अध्यायोत्तर व्याख्या अलग पाठस्तर छथि। मुख्य कथाकेँ केवल स्त्रीक साहसक सामान्य प्रशंसा मानि छोड़ि नहि सकैत; यथार्थ प्रश्न ई अछि जे पद्माक न्याय-मागी आवाज औपचारिक अदालतसँ अस्वीकार भऽ कऽ स्त्रीसभक स्वतन्त्र सुनवाईमे कोना प्रवेश करैत अछि, आ ओ सुनवाईक वास्तविक शक्ति कतेक अछि।

ई पूर्वक वर्गीकरण अछि; एहि समीक्षाक स्वतन्त्र पाठमापन अथवा घटनाक संख्या नहि। तेँ मुख्य घटनासभ—नव अदालतक स्त्री-मामला उपेक्षा, पद्माक असफल याचना, सुलोचनाक आपत्ति, रत्ना–गौरी–फुलेसरीक परम्परास्मरण, संस्थाक स्थापना, साक्ष्यसुनवाई, सामाजिक निर्णय आ भविष्यक स्थायित्व—केँ निहित सत्ता-वितरणसँ मिलाकऽ पढ़ल गेल अछि।

फकराक ‘स्वर’ आ ‘अन्हार’ : नैतिक ध्वनिक उपस्थिति

आरम्भिक पंक्ति ‘जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर होइ’ सामूहिक वाणीकेँ अन्हार घटेबाक नैतिक शक्ति बनबैत अछि। अन्हार एतय केवल सूर्यास्तक भौतिक अवस्था नहि; डर, लाज, अस्वीकार आ दमनक सम्भावित प्रतीक अछि। ‘राति-सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ै’क रूपात्मक बल एहि बातमे अछि जे देखबासँ पहिने सुनब सामाजिक परिवर्तनक आरम्भ हो सकैत अछि। मुदा गीतक प्रकाश-बिम्बकेँ वास्तविक सभास्थलमे दीप अथवा आलोकक निश्चित अनुपस्थितिक घटनातथ्य नहि मानब; गद्यमे राति-सभाक प्रकाशव्यवस्था वर्णित नहि। एहि भेदमे ध्वनिक रसात्मक प्रभाव सुरक्षित रहैत अछि आ पाठमूलक तथ्यक अतिक्रमण नहि होइत।

‘अन्हार-तोड़ स्वर’ गीतक सामूहिक कर्तृत्व

गीतक पहिल पद स्वरक जुटान, दोसर आँगनक एक कोनामे मनक बात खुलब, तेसर पीड़ा बाँटि भय कम करब आ अन्तिम पद सामूहिक निडरताक घोषणा करैत अछि। एहि क्रममे एक व्यक्तिक दुःख सुननिहार दसमनुक उपस्थिति सामाजिक साहसक सूत्र बनैत अछि। गीतमे कोनो निर्धारित न्यायाधीश, दहेजसम्बन्धी मुकदमा अथवा विशेष निर्णयक क्रिया नहि; ओ बैठकक भावात्मक पूर्वरचना अछि। मुख्य गद्यमे पद्माक विशिष्ट सुनवाई आ सुलोचनाक संस्थागत प्रयत्न गीतक सामूहिक नीतिवचनकेँ घटनाक रूप दैत अछि, मुदा गीतक प्रत्येक पंक्तिकेँ पद्माक मामलाक स्वतन्त्र वास्तविक घटना मानब गलत होयत।

गीतक ‘आँगनक एक कोन’ बनाम संस्थाक सार्वजनिक रूप

गीतमे स्त्रीसभ साँझ ढललाक बाद आँगनक एक कोनामे अपन बात खोलैत छथि। मुख्य कथामे पुरान छौंकी-सभाकेँ सुलोचना औपचारिक संस्थाक रूप दैत छथि, आ बूढ़बा ओकरा ‘गामक उजासमे, अपन नाम लऽ कऽ ठाढ़’ होएब कहैत छथि। निजी घरेलू स्थल आ सार्वजनिक मान्यता बीच एहि बदलावमे रचनात्मक गति अछि। मुदा गद्य नव सभाक सटीक भवन, प्रांगण, प्रवेश-द्वार अथवा निश्चित बैठकी-स्थान बतबैत नहि। तेँ ‘उजास’केँ भौतिक सभागारक उज्जर प्रकाश अथवा ‘आँगन’केँ पद्माक सुनवाईक अनिवार्य वास्तविक स्थान घोषित करब मूलक परे अछि। स्थानक अर्थ अधिक सांकेतिक-संस्थागत अछि।

गीतक ‘कोनो भूत नहि डेराबय’ : अति-निश्चयक भाषा

लोकगीत कहैत अछि जे मिलि ठाढ़ भेल स्त्रीकेँ ‘कोनो भूत नहि डेराबय’। ई प्रतिरोधक आशावादी अतिशयोक्ति अछि, स्त्रीसभक पूर्ण सुरक्षा सम्बन्धी प्रमाणित सामाजिक नियम नहि। मुख्य कथामे पद्माक दीर्घ हिंसा, न्यायाधीशक अस्वीकार आ अनौपचारिक निर्णयक कमजोर वैधानिक आधार अछि। एहि सन्दर्भमे डर पूर्णतः समाप्त भेल—एहन निष्कर्ष घटनामे पुष्ट नहि। गीतक भूत-रूपक अगिला [–६५] ‘नकली भूतक जुलूस’क शीर्षकसँ प्रतिध्वनित भऽ सकैत अछि, मुदा ओ अध्यायक वास्तविक घटना एहि ठाम घटि गेल नहि। सामूहिक स्वर आशाक भाषा अछि, जोखिमक अन्तिम निराकरण नहि।

जानकीसँ सुलोचना धरि : मातृवंशीय उत्तराधिकार

मूल गद्य बतबैत अछि जे जानकीक बाद हुनकर बेटी सुलोचनापर अनुष्ठानक भार आयल। पूर्व [–६७]मे जानकी लापता परदेशीकेँ स्मृतिमे स्थान देबाक प्रथा बनौने छलीह; वर्तमान अध्यायमे हुनकर बेटी घरेलू हिंसा आ स्त्री-न्यायक प्रश्न सार्वजनिक करैत छथि। ई क्रम एक परिवारक सांस्कृतिक जिम्मेदारीक पीढ़ीगत हस्तान्तरण अछि, मुदा प्रत्येक स्त्री एके प्रकारक कर्तृत्व नहि निभबैत। जानकी अनिश्चित जीवन-मृत्युक स्मरणविधि रचैत छथि; सुलोचना स्त्रीक वर्तमान देहगत सुरक्षाक प्रश्नपर सामूहिक निर्णयमंच स्थापित करैत छथि। पदग्रहणक तिथि आ निर्वाचन-विधान पाठ नहि दैत, तेँ मात्र ‘जानकीक बाद’ सँ मृत्यु अथवा औपचारिक नियुक्तिक निश्चित क्रम निकालब अनुचित।

अदालतक ‘नीक इरादा’ आ स्त्री-मामलाक अनुपस्थिति

कथावाचक नव अदालतक ‘सभटा नीक इरादाक बादो’ स्त्री-मामलाक कमी स्पष्ट करैत छथि। घरेलू विवाद, दहेज, विरासत आ पतिक अत्याचार एक श्रेणीमे रखल गेल छथि; ई स्त्रीक जीवनमे कानूनक भिन्न प्रवेशद्वार संकेतित करैत अछि। मुदा एहि चारू प्रकारक स्वतन्त्र मुकदमा कथामे घटित नहि; विस्तारसँ केवल पद्माक हिंसा-मामला प्रस्तुत। कृतिक समीक्षामे स्त्रीक व्यापक अधिकारक समस्या स्वीकारब आवश्यक, संगहि एहन दावेकेँ चारि पृथक प्रमाणित उदाहरणक रूपमे गनब नहि। ‘नीक इरादा’ संस्थाक विफलताकेँ एकल खलनायकक आचरणक बदला संरचनागत अपूर्णता बनबैत अछि।

पतिक अत्याचार : पद्माक कथागत अनुभवक कड़ुआ केन्द्र

पद्मा नामक गामक स्त्री पर पति ‘वर्षों धरि मारपीट’ करैत छल। एहि कथावाचकीय तथ्यसँ हिंसाक एक-दिनक क्षणिक विवाद नहि, दीर्घ अवधि स्पष्ट होइत अछि। पाठ पद्माक शारीरिक चोटक निशान तथा रोदन देखने-सुनने स्त्रीसभक गवाही सेहो दैत अछि। मुदा हिंसाक घटना-सूची, चिकित्सकीय उपचार, तत्काल जानलेवा जोखिम अथवा पति द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट साधनक वर्णन नहि। तें विस्तृत भयावह दृश्य गढ़ि करुणा बढ़एबाक प्रयत्न साहित्यिक प्रमाणक विरुद्ध होयत। पद्माक अनुभव सामाजिक संरचनाक केन्द्र अछि, न केवल बूढ़बाक नैतिक उपदेशक एक उदाहरण।

पद्माक अदालतगमन : निष्क्रिय पीड़िता नहि, अधिकार-मागनिहार पात्र

पद्मा निरन्तर मारपीटक बाद अदालतमे न्याय माँगय जाइत छथि। एहि एक क्रियासँ हुनकर कर्तृत्व स्थापित अछि: ओ अपन ऊपर घटल हिंसा चुपचाप सहनाइ अपरिहार्य नहि मानैत, औपचारिक न्यायिक मंचक शरण लैत छथि। जँ समीक्षा पद्माकेँ केवल सुलोचना द्वारा बचाओल असहाय व्यक्ति बनाय देत, तँ हुनकर प्रारम्भिक प्रतिरोधक महत्त्व दबि जाएत। मुदा अदालतमे पद्मा की-की कथन करैत छथि, कोन दस्तावेज वा गवाह प्रस्तुत करैत छथि, निर्णयक औपचारिक कागज बनल कि नहि—मूल पाठमे नहि। एजेंसीक प्रमाण अदालत गमन अछि; विस्तृत मुकदमेबाजी नहि।

न्यायाधीशक ‘घरेलू विषय’ : हिंसाक श्रेणीगत अवमूल्यन

न्यायाधीश पद्माक गुहार सुनि कहैत छथि—‘ई घरेलू विषय अछि। पति-पत्नीक बीचक बात, अदालतक बाहर सुलझाओल जाए।’ एहि वक्तव्यक निर्णायक हिंसा ई अछि जे वर्षोंक मारपीटकेँ अधिकार-प्रश्नक बदला निजी दाम्पत्य-समझौताक श्रेणीमे डालि देल जाइत अछि। कथावाचक केवल एक न्यायाधीशक ई विशेष प्रत्युत्तर देखबैत छथि; एहि आधारपर सभ युगक सम्पूर्ण न्याय-व्यवस्था एके प्रकारक फैसला दैत छल—एहन सार्वत्रिक तथ्य नहि। मुदा पद्माक खास मामलेमे न्याय-प्रवेश विफल भेल—ई प्रत्यक्ष कथात्मक तथ्य अछि।

अदालतक पहिल तारीखसँ घरक भीतरक अनसुनी आवाज धरि

पूर्व [-६८]मे भोला गरीब कृषकक पाँच बरखक प्रक्रियागत विलम्ब अधिकारक उपयोगिता घटौलक; एहि [-६६]मे पद्माक दावेकेँ आरम्भमे ‘घरेलू विषय’ कहि टारल गेल। दूनू दृश्य औपचारिक न्यायालयक अलग समस्या देखबैत अछि: पहिल काल-प्रतीक्षा, दोसर मुद्दाक वैधता स्वीकारएबमे चूक। ई दू विफलताकेँ एकहि सामान्य ‘अदालत खराब’क वाक्यमे समेटि नहि देबाक चाही। भोलाक केस अन्ततः हुनकर पक्षमे निर्णीत भेल; पद्माक मौजूदा अदालत-अनुभवमे कोनो नतीजा नहि। एहि अन्तरसँ कृतिक संस्थागत आलोचना बहुआयामी बनैत अछि, एकरेखीय नहि।

सुलोचनाक क्रोध : भावसँ संस्थात्मक क्रिया धरि

सुलोचना पद्माक अनुभव सुनि क्रोधित होइत छथि आ पीपर लग बूढ़बाक सोझाँ कहैत छथि—‘ई घरेलू विषय नहि, ई अन्याय थिक।’ एहि कथनमे नामकरणक अधिकार अछि: जे संस्थाक प्रतिनिधि ‘घरक मामला’ कहि

अधिकारक्षेत्रसँ हटाबैत छथि, सुलोचना ओकर सामाजिक-नैतिक श्रेणी बदलैत छथि। क्रोध एतय अन्ध प्रतिक्रिया नहि, सामाजिक निर्णयक प्रश्नपर विचारक प्रारम्भ अछि। मुदा सुलोचनाक क्रोधसँ हिंसा तुरन्त रुकि गेल—एहन घटना नहि। क्रोधक पश्चात् संस्थाक निर्माण, सुनवाई आ निर्णयक स्पष्ट क्रम अबैत अछि; ताहि श्रृंखलामे भावक सृजनात्मक महत्त्व नापल जाए।

पीपरक सलाह-स्थल : बूढ़बाक भूमिका आ स्त्रीक स्वनिर्णय

सुलोचना बूढ़बाक लग प्रश्न लऽ अबैत छथि। बूढ़बा पूर्व स्त्री-सभाक परम्परा स्मरण करबैत छथि, मुदा स्वयं पद्माक पति पर न्यायालयसमान फैसला सुना नहि दैत। सुलोचना फुलेसरीक वंशज आ अन्य स्त्रीसभक संग संस्था स्थापित करैत छथि। एतय बूढ़बा परम्परागत ज्ञानक स्मृति-सूत्र, आ स्त्रीसभ वास्तविक सामूहिक निर्णयक कर्ता छथि। यदि एहि संस्थाक निर्माणक सम्पूर्ण श्रेय बूढ़बाकेँ देल जाए त मुख्य पाठक स्त्री नेतृत्व दबि जाएत। दोसर दिशि बूढ़बाक परामर्शक भूमिका नकारब सेहो स्रोतविरुद्ध। समालोचना एहि सहभागिताक असम, मुदा पूरक क्रियाकेँ अलग-अलग पहिचानैत अछि।

रत्ना–गौरी-फुलेसरी : स्त्रीज्ञानक दीर्घ पूर्वस्मृति

बूढ़बा रत्ना, गौरी आ फुलेसरीक नाम लेत छथि—ओ स्त्रीसभ साँझक छौंकीपर बैसि ज्ञान, न्याय आ रणनीति साझा करैत छलीह। एहि स्मरणसँ नूतन सभा एकाएक खाली जगतमे उत्पन्न नहि, पीढ़ीक अनौपचारिक प्रतिरोधक संस्थागत परिणति बनैत अछि। पूर्वक [–९१] प्रसंगमे फुलेसरी रत्नाक परम्पराक छौंकी-सभाक अगुआ रूपमे वर्णित छथि, गौरीपर डाइनक आरोपक संकट जुड़ल अछि। तथापि एहि वर्तमान अध्यायमे रत्ना अथवा गौरी स्वयं जीवित आ उपस्थित छथि—एहन दावा नहि। हुनकर इतिहास स्मृतिद्वारा सक्रिय अछि, प्रत्यक्ष वर्तमान पात्रद्वारा नहि।

चर्मकार टोलाक गौरी आ सत्ता-भेदक इतिहास

पूर्वक गौरी-प्रसंग चर्मकार टोलाक एक ज्ञानसम्पन्न स्त्री पर डाइनक आरोप आ भूमि-उच्छेदक धमकीक पृष्ठभूमि दैत अछि। वर्तमान अध्यायमे ओहि संघर्षक जिक्र बूढ़बाक नामोच्चारणक माध्यमे अबैत अछि; गौरीक टोलाक तत्काल स्वतन्त्र प्रतिनिधि के छथि, ई गद्य नहि बतबैत। एहि अन्तर्पाठक अर्थ ई अछि जे स्त्रीसभक ज्ञानक अवहेलनामे केवल लिंग नहि, जातिगत प्रतिष्ठा आ सत्ताबल सेहो जुड़ि सकैत अछि। मुदा वर्तमान पद्माक जाति, आर्थिक स्थिति अथवा भेदभावक विशिष्ट श्रेणी पाठमे अनिर्दिष्ट; गौरीक जातिक माहिती पद्मापर आरोपित नहि कएल जाए।

छौंकीक अन्हारसँ उजास : मान्यताक इतिहासक रूपक

बूढ़बा कहैत छथि जे स्त्रीसभक न्याय छौंकीक अन्हारसँ निकलि गामक उजासमे अपन नाम लऽ कऽ ठाढ़ भेल। एहि वाक्यमे ‘अन्हार’ स्त्रीक गुप्त बैठकीक निम्न प्रतिष्ठाक प्रतीक आ ‘उजास’ सामाजिक स्वीकृतिक। मुदा पुरान छौंकी-सभा असत्य, भयावह अथवा विवेकहीन छल—एहन अर्थ निकालब गलत: स्वयं बूढ़बा ओकरा ज्ञान, न्याय आ रणनीतिक स्रोत मानैत छथि। रचनात्मक परिवर्तन गुप्ततासँ सार्वजनिक वैधता दिस अछि, अज्ञानसँ

ज्ञान दिस सरल रेखा नहि। अन्हार-उजासक रूपक साहित्यिक होइतहुँ ऐतिहासिक स्त्रीज्ञानक मूल्यक असावधान अवमूल्यन नहि करब उचित।

‘फुलेसरीक वंशज’ : एकटा अनाम सहभागी समूह

मुख्य पाठ सुलोचनाक संग ‘फुलेसरीक वंशज आ गामक अन्य स्त्री सभ’क संस्थापक भूमिका लिखैत अछि। मुदा वंशजक नाम, सँख्या, पीढ़ीक गणना अथवा व्यक्तिगत अभिप्राय नहि। एहि सामूहिक पदसँ ऐतिहासिक निरन्तरताक संकेत प्रबल बनैत अछि, पर एकटा वंशक निजी जीवनक स्वतन्त्र कथा विकसित नहि होइत। समीक्षक कल्पित वंशावली भरि नहि देत। सामाजिक-आख्यानशास्त्रीय महत्त्व एहि बातमे अछि जे परम्परा निराकार ‘स्त्रीसभ’ मात्र नहि, ठोस पूर्वस्मृतिनाम आ बहुपीढ़ीगत सम्बन्ध द्वारा पुनः सक्रिय होइत अछि।

औपचारिकीकरण : नाम, उद्देश्य आ पुनरावृत्ति

सुलोचना आ अन्य स्त्रीसभ मिलि ‘स्त्री सभक राति-सभा’ नामक संस्था स्थापित करैत छथि। ई केवल एकदिनक अचानक जुटान नहि: कथा स्पष्ट कहैत अछि जे सभा घरेलू हिंसा, दहेज आ विरासतसम्बन्धी मामला सुनैत छल आ कालक्रममे गामक स्थायी अंग बनल। प्रस्ताव, संस्थानाम, नियमित कार्य आ स्थायित्वक कथात्मक दावासँ औपचारिकीकरणक न्यूनतम चरण भेटैत अछि। तथापि लिखित संविधान, चुनाव-प्रक्रिया, सदस्यताक मापदण्ड, दण्डाधिकार अथवा न्यायिक अपीलक व्यवस्था नहि देल गेल। ‘औपचारिक’ शब्दकेँ यहाँ सार्वजनिक रूपसँ मान्यता पओनिहार संगठित परम्परा समझब उपयुक्त, राज्यक पंजीकृत न्यायालय नहि।

आधिकारिक अदालतक ‘समानान्तर’ : सहअस्तित्व, सम्पूर्ण प्रतिस्थापन नहि

कथा राति-सभाकेँ ‘आधिकारिक अदालतक समानान्तर’ चलैत बतबैत अछि, ओकरा उखाड़ि देबाक क्रिया नहि। पद्माक मामला अदालतमे अस्वीकार भेने बाद स्त्रीसभा सुनैत अछि। एहि क्रममे समानान्तर संस्था औपचारिक न्यायप्रणालीक अनुभूत रिक्ति सम्बोधित करैत अछि। मुदा जँ दुनू व्यवस्थाक आदेश परस्पर विरोधी होथि, तखन निर्णय केना होएत; अदालतक नियम राति-सभाक सामाजिक दबावकेँ कानूनी संरक्षण देत कि नहि—ई पाठ नहि बतबैत। एतय मुख्य रचनात्मक उपलब्धि सामाजिक उत्तरदायित्वक नव केन्द्र, न राज्यसत्ताक पूर्ण वैधानिक पुनर्गठन।

‘कानूनी रूपसँ बाध्यकारी नहि’ : निर्णयक स्पष्ट सीमा

मूल गद्यक एकटा विशेष महत्त्वपूर्ण वाक्य अछि—राति-सभाक निर्णय ‘कानूनी रूपसँ बाध्यकारी नहि छल’। एहि स्पष्ट सीमाकेँ आलोचना मे केन्द्रपर राखब जरूरी। सभाक नैतिक प्रतिष्ठा बढ़लापर ओकर आदेश अदालतक फैसला बनि गेल—एहन दावा गलत। मुदा गामक सामाजिक दबावक कारण ‘प्रायः पुरुष सेहो मानय बाध्य’ होइत छलाह, ई कथावाचकक आन्तरिक सामाजिक परिणाम-दावा अछि। कानूनी बाध्यता आ समाजक स्वीकृति दुई भिन्न अधिकारप्रकार छथि। एहि भेदमे न्यायिक निरपेक्षता आ स्थानीय दबावक सम्भावित द्वन्द्व सेहो खुलैत अछि।

सामाजिक दबाव : सहभागिता आ सामूहिक नियन्त्रणक द्वैधता

सम्पूर्ण स्त्रीसमाज एक स्वरमे बजनाइ पद्माकेँ सुनवाईक समर्थन देत अछि, जकरा पारिवारिक पराक्रम अकेले नहि हरा पाबि रहल छल। किन्तु सामाजिक दबाव स्वयं सदैव न्यायसंगत अछि—एहन सार्वत्रिक नियम नहि। कोन सदस्य असहमत होएबाक अधिकार रखैत छथि, आरोपित व्यक्ति तर्क प्रस्तुत कऽ सकैत अछि कि नहि, गलत गवाहीक सुधारक विधान अछि कि नहि—अध्याय मौन। वर्तमान पद्मा-प्रसंगमे चोटक निशान आ रोदनसँ समर्थन भेटैत अछि, मुदा संस्थागत सामान्यीकरण हेतु प्रक्रियागत न्यायपर स्वतन्त्र विचार आवश्यक। सामूहिकता पीड़ितक बल बनि सकैत, कखनहुँ असहमतिक दमनक साधन सेहो; एहि सम्भावनाक उल्लेख आलोचनात्मक सावधानी अछि, कथा भीतर घटल अतिरिक्त अन्याय नहि।

पद्माक पति आ परिवारकेँ बोलाउल : प्रतिपक्षी सुनवाई

राति-सभा पद्माक पति आ हुनक परिवारकेँ बोलाकऽ सुनवाई करैत अछि। एहि घटना सँ कथाकार एक पक्षक भावना मात्र नहि, प्रतिपक्षक उपस्थितिक लघु प्रक्रियात्मक रूप दैत अछि। परिवार पहिने आरोप नकारैत अछि। ई इन्कारक अस्तित्व महत्त्वपूर्ण: नूतन सभा सीधा बिनु सुनने दण्ड घोषित करैत नहि देखाओल गेल। मुदा पति आ परिवारक पृथक वचन, प्रतिप्रश्न, दोष-स्वीकार, स्वतन्त्र प्रमाण अथवा बादक लिखित प्रतिज्ञा पाठमे नहि। ‘बजाओल’क अभिप्राय सुनबक आरम्भ अछि; पूर्ण निष्पक्ष प्रतिपरीक्षा सम्पन्न—एहन दावा नहि।

चोटक निशान : देह प्रत्यक्ष प्रमाणक वस्तु

राति-सभामे स्त्रीसभ पद्माक चोटक निशान देखबाक गवाही दैत छथि। देहक चिन्ह हिंसाक आघातक प्रत्यक्ष निरीक्षणक आधार रूपमे कथामे कार्य करैत अछि। लेकिन कोन निशान कखन देखल गेल, ओकर चिकित्सकीय कारण कोना निर्धारित भेल, अपराधक पूर्ण क्रम कोन स्वतन्त्र दस्तावेजसँ पुष्ट भेल—ई विशिष्ट विवरण अनुपस्थित। तेँ प्रत्यक्ष निशान देखलाक तथ्य आ पति द्वारा प्रत्येक घावक कारण ठहराएबाक कानूनी प्रमाणक बीच अन्तर जरूरी। कथावाचक पति द्वारा वर्षों मारपीटक तथ्य साफ कहैत अछि; गवाहक निशान एही कथा भीतर सामाजिक प्रमाण-संकेत बनैत अछि।

रोदनक श्रव्य साक्ष्य : करुणा आ प्रमाणक अन्तर

स्त्रीसभ पद्माक रोदन सुनबाक गवाही सेहो दैत छथि। ई श्रव्य अनुभव शोषित स्त्रीक दुःख सार्वजनिक करैत अछि, जे पहिने ‘घरेलू विषय’क परदा भीतर दबल छल। मुदा रोदन सुनब भावनात्मक वेदनाक प्रत्यक्ष साक्ष्य भऽ सकैत अछि; हिंसाक सम्पूर्ण कारण, तिथि आ जिम्मेदारीक एकमात्र निर्णायक प्रमाण नहि। कथामे प्रत्यक्ष चोटक निशान, दीर्घ मारपीटक कथावाचकीय विवरण आ स्त्रीसभक अनुभव एकत्रित होइत अछि; एहि त्रिस्तरीय आधारकेँ समान-प्रमाणक एक निर्भेद कथन बनबाएब सावधानीहीन। करुणाक प्रमाणिकता आ दण्ड-निर्णयक प्रमाणिकता अलग कसौटी माँगैत अछि।

‘गामक हर स्त्री’ : सर्वसमावेशक कथनक आलोचनात्मक परीक्षा

गद्यमे कहल गेल अछि जे ‘गामक हर स्त्री, एक-एक कऽ, अपन गवाही देलक’। एहि सार्वत्रिक शब्दप्रयोगसँ सहयोगक विशालता देखाइत अछि। तथापि सभ महिलाक वास्तविक संख्या, उमर, जाति, गवाहीक पृथक विवरण आ उपस्थितिक प्रमाण पाठ नहि दैत। कथावाचकक ‘हर’क अर्थ सामूहिक नैतिक एकता मजबूत करबाक एक वर्णन-प्रविधि सेहो भऽ सकैत अछि। एतय कियो असहमत छलीह की नहि, गामक अवहेलित स्त्री वा दूर टोलाक सहभागिता केहन छल, तकर प्रत्यक्ष सामग्री नहि। ताहि लेल पूर्ण सर्वसम्मति कखनहुँ विरोधबिहीन समाजक ऐतिहासिक दस्तावेज मानब नहि।

स्त्रीस्वरक बहुलता आ कथनक एकरूपीकरण

मुख्य पाठ एक-एक गवाही देबाक कथन करैत अछि, मुदा कोनो एक नामित गवाहक लम्बा स्वतन्त्र वचन प्रस्तुत नहि करैत। चोटक निशान आ रोदनक आधार गवाहसभक समान साक्ष्यरूप बनैत अछि। एहि कथन-संकोचसँ सामूहिक शक्ति सघन, व्यक्तिगत स्त्री-अनुभवक विविधता कम दृश्य होइत अछि। सुलोचना आ पद्मा दुनू नामित छथि, पर सुनवाईक अन्य सैकड़ों सम्भावित आवाज अनाम। सामाजिक बहुस्वरता आ कथावाचकीय एकस्वरक एहि तनावकेँ रचनाक वास्तविक सीमा मानब चाही; नाटकमे गवाहसभ पूर्ण विस्तारसँ अपन अनुभव कहने छथि —एहन कल्पित संवाद नहि जोड़ल जाए।

पतिक परिवारक ‘झुकब’ : स्वीकृति, भय वा व्यवहारपरिवर्तन?

स्त्रीसभक एकस्वरक बाद पतिक परिवार ‘झुकय पड़ल’। ई कथावाचकीय वाक्य सामाजिक दबावक तत्काल प्रभाव बतबैत अछि; किन्तु झुकबाक अर्थ दोष स्वीकार, माफी, वैधानिक समझौता अथवा भविष्यक व्यवहार-सुधारमे सँ की छल, से स्पष्ट नहि। मुख्य परिणाम सभाक निर्देश अछि, पालनक विस्तृत वृत्तान्त नहि। तेँ एहि प्रकरणमे पति सुधरि गेल, हिंसा सदा लेल समाप्त भऽ गेल अथवा पद्मा सुरक्षित घरमे रहलीह—एहन दावे के आधार नहि। कथा एक प्राथमिक निर्णय-स्थितितक पहुँचैत अछि, परिणाम-पर्यवेक्षणक नव दृश्य नहि दैत।

सुधारक निर्देश आ परिणामक अभाव

राति-सभा पद्माक पतिकेँ व्यवहार सुधारबाक निर्देश दैत अछि। ई घरेलू हिंसाकेँ निजी स्वभावक अपरिवर्तनीय अंश नहि मानि सार्वजनिक आलोचनाक विषय बनबैत अछि। तथापि सुधारक मापक, समयसीमा, देखरेख, क्षतिपूर्ति अथवा परिणामक कोनो दृश्य नहि। ‘सुधारय’ भविष्यक आदेश थिक; ‘सुधारल’ पाठमे घटित घटना नहि। एहि भेदमे कथाक नैतिक उपलब्धि आ सुरक्षाक अपूर्ण निश्चय एक साथ देखाइत अछि। आलोचना आदेशकेँ हिंसा पूर्णतः बन्द होएबाक प्रमाण बना नहि सकैत।

पुनः मारपीटक शर्त आ स्त्रीक स्वतन्त्रता

राति-सभाक निर्णय कहैत अछि जे फेर मारपीट भेल तँ पद्मा मैहर घुरबाक लेल स्वतन्त्र होएतीह। समुदाय स्त्रीक आवागमनक अधिकार स्पष्ट करैत अछि, मुदा ई अधिकार फेरसँ हिंसा होएबाक शर्तपर किएक राखल गेल? पद्मा पहिनेसँ वर्षों धरि मारपीट सहने छलीह। एहि कारण निर्णय एक दिशि संरक्षणक सामाजिक स्वीकृति, दोसर दिशि

तत्काल निर्णयस्वातन्त्र्यक अनुत्तरित प्रश्न अछि। पद्माक निज इच्छा, ओ तत्काल कोन निर्णय चाहैत छलीह—मूल पाठ स्पष्ट नहि कहैत।

मैहर एक सम्भावित आश्रय, सिद्ध समाधान नहि

पद्माक मैहरक घरकेँ भविष्यक आश्रय मानल गेल अछि। मुदा हुनकर माता-पिता, घरक स्थिति, आर्थिक साधन, मैहरक सामाजिक स्वीकृति वा स्थायी निवासक अधिकारक विवरण नहि। अतः ई आश्रयक प्रस्ताव अछि, सम्पन्न पुनर्वास नहि। स्त्रीक सुरक्षा केवल पति-सँ अलग होएबाक सामाजिक अनुमति नहि; जीवन निर्वाहक भौतिक आधार सेहो चाही। कथा एहि शर्तक परीक्षण नहि करैत। एकरा अनुपस्थितिक रूपमे पहिचानब उपयुक्त, काल्पनिक सहायता-वृत्तान्त गढ़ब अनुचित।

पद्माक बच्चाक नामहीन उपस्थिति

सभाक निर्णय पद्मा ‘आ ओकर बच्चाकेँ’ सहायता देबाक प्रतिज्ञा दैत अछि। एहि उल्लेखसँ हिंसाक सामाजिक प्रभाव दाम्पत्यक जोड़ीसँ आगू भविष्यक पीढ़ी धरि पहुँचैत अछि। मुदा बच्चाक नाम, उमर, स्थिति, प्रत्यक्ष आघात अथवा चाहना पाठमे नहि। एहि कारण बालक/बालिकाक विशिष्ट पीड़ाक दृश्य कल्पित नहि कएल जाए। कथाक बल एतय एवढे अछि जे सामाजिक सुरक्षाक वचनमे निर्भर व्यक्ति सेहो सम्मिलित होइत अछि।

गामक सहायता : प्रतिज्ञाक रूप, निष्पादन नहि

गाम पद्मा आ बच्चाक सहायता करबाक वचन दैत अछि; मुदा भोजन, सुरक्षा, निवास, धन, कानूनी सहयोग वा अन्य संसाधनक स्पष्ट व्यवस्था नहि बताओल गेल। एतय ‘सहायता’ नैतिक सामुदायिक उत्तरदायित्वक शब्द अछि, पूरा प्रशासनिक योजना नहि। पूर्व [–६८]मे कमलिनीक ‘सहायता, सलाह, साथ’क संकल्पक संग समानता अवश्य अछि। दुनू स्थलपर घोषणाक मूल्य स्वीकारने वास्तविक क्रियान्वयनक प्रमाण अलग माँगब न्यायोचित।

सामुदायिक अभिभावकत्व आ पद्माक स्वनिर्णय

स्त्रीसभा निर्णय सुना रहल अछि, मुदा पद्माक अन्तिम सहमति अथवा असहमति सीधा उद्धृत नहि। परिवारकेँ सुधारक आदेश आ पद्माकेँ सशर्त मैहर-गमनक अनुमति मिलैत अछि। सामुदायिक अधिकार स्त्रीकेँ संरक्षण दैत अछि, पर प्रभावित स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा सामाजिक प्रतिनिधिक निर्णयसँ सर्वथा समान नहि। एहि अन्तरक कारण नव संस्था स्त्री-मुक्तिक प्रभावी आरम्भ अछि, स्वायत्तताक सम्पूर्ण सम्पन्न अवस्था नहि।

पद्मा नामित, पति अनाम : दृष्टिचयन

कथाकार पद्माक नाम स्पष्ट करैत छथि, मुदा पतिक नाम नहि। एहि चयनसँ पीड़िता मात्र ‘ककरो घरवाली’ नहि, एक विशिष्ट मानवीय व्यक्ति बनैत छथि। पति हिंसात्मक सामाजिक सम्बन्धक अनाम प्रतिनिधि रहैत अछि। एहिमे नैतिक केन्द्र पद्माक दिक् अछि, मुदा आरोपित परिवारक स्वतन्त्र जीवनवृत्त आ मनोवैज्ञानिक जटिलता कम

खुलैत अछि। पात्रक ई असम विकास आख्यानगत चुनाव अछि; एकरा वास्तविक अदालतक पूर्ण केस-इतिहास नहि कहल जाए।

सुलोचनाक स्वर आ पद्माक वाक्-अभाव

सुलोचना बूढ़बासँ प्रत्यक्ष संवाद करैत छथि; पद्मा अदालत गेलि आ सभा हुनकर मामला सुनलक—ई कथावाचकीय विवरण अछि। पद्माक अपन न्याय-माँगक शब्दक पूर्ण प्रत्यक्ष उद्धरण नहि। ‘स्त्री सभक स्वर’क शीर्षक रहलहुँ प्रभावित व्यक्तिक विशिष्ट वाणी प्रायः अन्य स्त्रीसभक सामूहिक समर्थनद्वारा प्रतिनिधित अछि। पद्माक एजेंसी अदालतगमनमे प्रमाणित, मुदा अपन जीवनक अन्तिम निर्णयपर हुनकर स्वतन्त्र कथन कम। ई आख्यानक एक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्वगत सीमा अछि।

घटनाक क्रम : कथासिद्ध सुनवाई

पद्मा पर दीर्घ मारपीट—अदालतक अस्वीकार—सुलोचनाक क्रोध—बूढ़बाक छौंकी-स्मरण—नव संस्था—पति परिवारक बुलाहट—स्त्रीसभक चोटनिशान आ रोदनक गवाही—आरम्भिक इन्कार—सामूहिक दबाव—सुधारक निर्णय। एहि क्रमबद्ध कड़िसँ मुख्य कथाक घटनात्मक संगठन बनैत अछि। पुलिस, चिकित्सकीय प्रमाणपत्र, मुकदमाक संख्या, लिखित समझौता, अपील अथवा पछिला हिंसा-पुनरावृत्तिक कोनो प्रसंग नहि। घटनाघनत्व एही प्रमाणित परिवर्तनसभसँ नापल जाए, काल्पनिक कानूनी विधिसँ नहि।

कथा-समय : वर्षक अत्याचार आ अल्प सुनवाई

आरम्भमे एक पीढ़ीक परिवर्तन, पद्माक ‘वर्षों’क हिंसा, रत्ना–गौरी–फुलेसरीक पीढ़ीगत इतिहास आ भविष्यमे स्थायी संस्था—ई सभ संक्षिप्त गद्यभागमे समेटल गेल। पद्माक सुनवाई तुलनात्मक रूपेँ निकट घटनाक रूप पबैत अछि। कथा न्यायिक तात्कालिकताकेँ दीर्घ सामाजिक समयक भीतर राखैत अछि। मुदा सुनवाईक दिन, घण्टा, संख्याक सभासभ अथवा अवधि नहि। समय-सङ्कोचन महाकथाक सुविधा अछि, पर दीर्घ संस्थागत संघर्षक विस्तृत दृश्य गौण भऽ जाइत अछि।

राति : स्त्रीक श्रमक बादक बोलबाक समय

गीतमे ‘साँझ ढलल, काज सधल’ कहि स्त्रीसभक बैठक घरेलू श्रमपछाति सम्भव बताओल अछि। एहि समयचयनसँ स्त्रीक श्रम आ स्वतन्त्र वाणी बीच विरोध दिखैत अछि: दिन कार्यक दबाव, राति अनुभव साझा करबाक अवसर। गद्य पद्माक सुनवाईमे सहभागी महिलाक प्रत्येक पेशा अथवा श्रम-वितरण नहि बतबैत। तेँ गीतक संकेत महत्त्वपूर्ण सामाजिक ध्वनि, पूर्ण श्रमसर्वेक्षण नहि। रातिक सभा अवसर खोलैत अछि, मुदा दिनक सार्वजनिक संस्थामे स्त्रीक सम अधिकार एतबसँ स्वतः सिद्ध नहि।

दीपक अभाव : शाब्दिक घटना नहि, ध्वन्यार्थ

गीतक ‘दीप ने रहल भलहिं, स्वरक इजोत जरल’क आशय स्त्रीसभक स्वर नैतिक आलोक बनैत अछि। पद्माक सुनवाई वास्तवमे पूर्ण अन्हारमे बिनु दीप सम्पन्न भेल—एहन दृश्य गद्य नहि दैत। फकराक साहित्यिक रूपक आ

गद्यक प्रमाणित घटना पृथक राखब जरूरी अछि। स्त्रीसभक चोटनिशान देखनेक कथनक संग वास्तविक दृश्यक प्रकाश-अभावक मनगढ़न्त घोषणा तर्कगत समस्या बना सकैत। रूपकक मूल्य ध्वन्यार्थमे अछि।

रसविवेचन : करुण, रौद्र आ शान्तिक अपूर्ण समन्वय

पद्माक दीर्घ हिंसा करुण, सुलोचनाक स्पष्ट क्रोध रौद्र, सामूहिक गवाही उत्साह आ बूढ़बाक सन्तोष शान्तभावक संकेत छथि। मुदा पद्माक भविष्य पूर्ण सुरक्षित भेल—एहन दृश्य नहि, तेँ अन्तिम शान्तिक पूर्ण परिपाक असिद्ध। भावानुक्रम कृतिक जीवित नैतिक संघर्ष देखबैत अछि, सर्वसाधारण सुखान्त नहि। रसक आधार पात्रगत शब्द आ घटना छथि, भिन्न स्त्रीसभक कल्पित मनोभाव नहि।

घर-सभा आ अन्हार-उजास : ध्वनिक द्विपार्श्व

न्यायाधीश ‘घरेलू विषय’ कहि पद्माक दुःखकेँ निजी घर भीतर राखैत छथि, जखन राति-सभा सार्वजनिक प्रश्न बनबैत अछि। एहि बदलावसँ घर–समुदाय आ अन्हार–उजासक समानार्थी प्रतीक-श्रृंखला बनैत अछि। तथापि सार्वजनिक सुनवाईमे पद्माक निजता कतेक सुरक्षित रहल, तकर पाठसाक्ष्य नहि। स्त्रीक आवाजकेँ मान्यता भेटब आ हुनकर निजी जीवनक नियन्त्रणक अधिकार दुनू भिन्न प्रश्न।

पक्ष, साध्य, हेतु : प्रमाणतर्कक सावधानी

कथावाचक पति द्वारा दीर्घ मारपीटक प्रत्यक्ष तथ्य प्रस्तुत करैत अछि। स्त्रीसभ चोटक निशान देखने आ रोदन सुनने छथि; ई सामाजिक गवाहीक आधार बनैत अछि। नव्य-न्यायीय विवेचनमे पक्ष पद्माक मामला, साध्य हिंसाक अन्याय होएब, आ हेतु शारीरिक/श्रव्य साक्ष्यसहित कथित मारपीट मानि सकैत छी। मुदा प्रत्येक चोटक व्यक्तिगत कारणक वैज्ञानिक प्रमाण, समय आ परिस्थितिक क्रम अलग नहि। कथावाचकीय सत्य आ न्यायालयक प्रमाणित कानूनी निष्कर्षक श्रेणी मेटाएब अनुचित।

दृश्यसाक्ष्य आ श्रव्यसाक्ष्यक परस्पर सीमा

पद्माक घाव देखबाक गवाही दृश्यानुभवक, रोदन सुनबाक गवाही श्रव्य अनुभवक सूचना अछि। सभ स्त्रीकेँ पति प्रत्यक्ष मारैत देखने छलीह—एहन वाक्य पाठमे नहि। प्रत्यक्ष चोटक निशान देखनाइ आ चोटक कारणक पूर्ण प्रत्यक्षदर्शन भिन्न। गद्य पति द्वारा हिंसाक तथ्य कथावाचकीय रूपेँ स्थापित करैत अछि, जकरा सामूहिक गवाही पुष्ट करबाक रचनात्मक कार्य करैत अछि। प्रमाणमीमांसाक ई स्पष्टता सभा-सम्मतिकेँ अन्ध प्रशंसा बनबाकसँ बचबैत अछि।

बहुमत बनाम सत्य : सामूहिक न्यायप्रक्रियाक जोखिम

‘सम्पूर्ण स्त्री-समाज एक स्वरमे’ बजनाइ गामक सामाजिक दबावक शक्तिशाली दृश्य अछि। वर्तमान मामलेमे कथावाचक हिंसाक तथ्य दैत छथि; ताहि लेल समवेत आवाजक नैतिक आधार अछि। तथापि बहुमतक सहमति सामान्यतः सत्यक अविनाशी प्रमाण नहि। भविष्यक कोनो विवादमे गलत गवाही, सदस्यक विरोध अथवा

अल्पमतक अधिकारक क्रिया की होयत, ई अध्याय नहि बतबैत। एहि प्रश्नक उल्लेख संस्था-विरोध नहि, न्यायक प्रमाणात्मक कसौटी थिक।

डाइन-आरोपक इतिहाससँ संस्थागत प्रतिरोध

पूर्व [−९१]मे फुलेसरी रत्नाक छौंकी-परम्पराक अगुआ रूपमे आ गौरीपर डाइनक आरोपक प्रसंगमे उपस्थित छथि। वर्तमान प्रकरण ओहि अनौपचारिक स्त्रीज्ञानकेँ सार्वजनिक न्यायक मान्यता देबाक कथा बनबैत अछि। मुदा पद्माक केसक भीतर कोनो वर्तमान डाइन आरोप नहि, आ पुरान अपराधक निर्दिष्ट आधिकारिक पुनर्विचार नहि। एहि कारण दीर्घ इतिहासक अन्तर्पाठीय गूँज आ वर्तमान घरेलू हिंसाक घटना अलग राखब चाहिए।

सामाजिक असमानता आ ‘हर स्त्री’क भाषिक दायरा

पूर्व गौरी चर्मकार टोलासँ छथि, मुदा वर्तमान पद्माक जाति अथवा राति-सभाक जातिवार सदस्यता वर्णित नहि। ‘गामक हर स्त्री’क कथन समावेशी आदर्श बनैत अछि, मुदा गरीब, दलित, विधवा, निराश्रित वा अलग टोला-पेशा महिलाक समान निर्णयाधिकारक संख्या नहि दैत। विदेह समानान्तर इतिहास पद्धतिमे एहि अनुपस्थितिक प्रश्न उठबैत छी, अनुमानसँ पद्माक जाति अथवा अन्यायक नयका घटना नहि भरैत।

अधिकारक त्रिस्तर : अदालत, सभा, पद्मा

अदालत औपचारिक राज्य-अधिकार, राति-सभा स्थानीय सामाजिक अधिकार आ पद्मा स्वयं न्याय-माँगनिहार व्यक्तिक स्थान राखैत छथि। राज्यक प्रतिनिधि मामलाकेँ टारैत, सभा ओकरा सार्वजनिक बनबैत, मुदा पद्माक अन्तिम निजी निर्णयक अधिकार पाठमे स्पष्ट रूपसँ पुनः उच्चारित नहि। एहि त्रिस्तरक भिन्नता संस्थाक प्रशंसा आ स्त्रीक आत्मनिर्णयक समीक्षाकेँ एक साथ सम्भव करैत अछि।

नतीजा-अनुमानक सीमा : पति बदलल कि नहि?

परिवार झुकल, सभा आदेश देलक—ई कथासिद्ध घटना। पति भविष्यक हिंसा छोड़लक, पद्मा मैहर गेलि, बच्चा सुरक्षित रहल अथवा गाम सहायता केलक—ई परिणाम पाठमे नहि। तें पद्माक मामलाक अन्तिम समाधान सिद्ध नहि। न्यायसभाक उत्पत्ति-प्रसंग सफल कहल जा सकैत, पर पीड़िताक व्यक्तिगत जीवनक पूर्ण न्याय अप्रत्यक्ष।

ऐतिहासिक विधिक दावाक सीमा

‘नव अदालत’क न्यायाधीश आ सामाजिक संस्था वर्णित छथि, मुदा राज्य, वर्ष, विधिक धारा, अदालतक अधिकारक्षेत्र अथवा वैधानिक घरेलू हिंसा-कानूनक तिथि नहि। एतय आधुनिक भारतक कानूनी नियमक विवरण अनायास आरोपित करब अनुचित। अध्यायोत्तर टिप्पणी सामाजिक इतिहासक व्याख्या अछि, वास्तविक न्यायिक अभिलेख नहि।

कालसङ्कोचन : छौंकीसँ स्थायी सभा धरि

रत्ना–गौरी–फुलेसरीक पुरान बैठकी, सुलोचनाक संस्था आ भविष्यक आधुनिक रूपक यात्रा किछु अनुच्छेदमे होइत अछि। पीढ़ीक संघर्षक विशाल अवधि सारांशमे समाहृत अछि। कथात्मक लाभ दीर्घ सामाजिक निरन्तरता;

सीमा बीचक विरोध, सदस्यता-संघर्ष आ संसाधनक भौतिक इतिहासक अभाव। एक दिनक घटना मात्रसँ सार्वजनिक संस्था स्वतः स्थायी बनल—एहन सरल कारणसूत्र नहि; कथावाचक स्थायित्वक सूचना दैत अछि, विस्तृत प्रक्रिया नहि।

भावी पुनरागमनक परापाठीय सीमा

अध्यायारम्भक टिप्पणी खण्ड–१ मे राति-सभाक नामक पुनरागमन सूचित करैत अछि। मुदा ओ भविष्यक प्रकरणमे कोन अधिकार, पात्र अथवा सामाजिक परिस्थिति रहत, वर्तमान मूल गद्य नहि कहैत। शीर्षक-साम्य पूर्वसंकेत अछि, बादक सम्पूर्ण घटना एखनहिसँ प्रमाणित नहि।

नैतिक संस्थाक उत्पत्तिक कथाविधान

पद्माक अस्वीकारल गेल याचना, सुलोचनाक प्रतिरोध, बूढ़बाक पूर्वस्मृति, स्त्रीसभक स्थापना, सामूहिक साक्ष्य आ निर्णय मिलि एक स्पष्ट सामाजिक उत्पत्ति-कथा बनबैत अछि। एहि कारण प्रकरण केवल सामान्य उपदेश नहि, घटनाक क्रियानुक्रम राखैत अछि। मुदा संस्थाक कार्यक नियमित प्रक्रिया आ पद्माक दीर्घ सुरक्षा अभिलेखित नहि। ई उपलब्धि–सीमा दुनू अनिवार्य रूपसँ चिन्हित होएबाक चाही।

मुख्य पाठगत तनावक संकलन

एक—गीतक कोनो भूत नहि डराओतक अतिशयोक्ति, पद्माक वास्तविक जोखिमक सामने। दू—अदालतक अस्वीकार आ स्थानीय सभाक सामाजिक अधिकारक दूरी। तीन—स्त्रीसमुदायक समवेत स्वर, पद्माक प्रत्यक्ष निजी वाणीक अल्पता। चारि—सुधारक आदेश, परिणामक अभाव। पाँच—मैहर गमनक स्वीकृति फेर हिंसा होएबाक शर्तपर। छः—हर स्त्रीक सार्वत्रिक गवाही, अलग सामाजिक समूहक नामहीनता। सात—पुरान छौंकीक अन्हार रूपकक भीतर ओहि परम्पराक ज्ञानक वास्तविक मूल्य। ई सभ एकहि प्रकारक तथ्यगत त्रुटि नहि; कथात्मक चयन, नैतिक तनाव आ साक्ष्य-रिक्तिक अलग कोटि छथि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

‘स्त्री सभक राति-सभा’क प्रबल साहित्यिक उपलब्धि पद्माक हिंसा-दुःखकेँ ‘घरेलू विषय’क अस्वीकारसँ निकालि सार्वजनिक साक्ष्य आ सामूहिक न्याय-अनुरोध बनबैत अछि। सुलोचनाक नेतृत्व, फुलेसरीक वंशजक सहभागिता, स्त्रीसभक चोटनिशान–रोदन सम्बन्धी गवाही आ कानूनी अबाध्यता-स्वीकार एहि रचनाकेँ विशेष सघनता दैत अछि। मुदा निर्णयक वास्तविक पालन, पद्माक स्वतन्त्र अन्तिम वाणी, तत्काल सुरक्षा आ सामुदायिक दबावक प्रक्रियागत न्याय अनुत्तरित। ई सशर्त सफल सामाजिक-उत्पत्ति कथा अछि, व्यक्तिगत पुनर्स्थापनक सम्पूर्ण वृत्तान्त नहि।

प्राथमिक स्रोत आ अगिला अध्यायक क्रम

प्राथमिक स्रोत : गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, सम्पूर्ण त्रयी, खण्ड–०, अध्याय [–६६] ‘स्त्री सभक राति-सभा’; अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २५३–२५६। पाठस्तर—फकरा, ‘अन्हार-तोड़ स्वर’ लोकगीत, पद्मा–

सुलोचना–बूढ़बाक गद्यकथा, अध्यायोत्तर समानान्तर स्त्री-न्याय टिप्पणी। अगिला अध्याय [–६५] ‘नकली भूतक जुलूस’क समीक्षा भयक उत्पादन, सामाजिक छल आ साक्ष्य-सत्यापनपर केन्द्रित रहत।

प्रकरण ३६ | मूल अध्याय –६५ — नकली भूतक जुलूस

पूर्वकथाकाल · प्रदर्शन, छलक अर्थशास्त्र, साक्षीक कसौटी आ भयक सामाजिक उत्पादन

प्रकरणक सीमा आ पाठस्तर

अध्याय [–६५] ‘नकली भूतक जुलूस’ मूल अनुक्रमणिकाक अनुसार पृष्ठ २५७ सँ शुरू होइत अछि, आ [–६४] पृष्ठ २६१ सँ; अतः २५७–२६० अनुमानित मुद्रित परास अछि। फकरा, ‘के छह?’क सोर लोकगीत, हरिनन्दन–कालीचरण–बूढ़बा गद्यवृत्तान्त आ अध्यायोत्तर शोषणसम्बन्धी टिप्पणीकेँ अलग राखब जरूरी। एतय नकली भूतक मंचन, बूढ़बाक प्रतिष्ठाक आर्थिक दुरुपयोग, परिवारक क्षति, सत्यापनक सरल नियम आ ठगक पलायन मिलि एक उद्गम-कथा बनबैत अछि। कथाक मूल उपलब्धि लोकविश्वासक नकार नहि, सम्मानित परम्पराक नामपर अधिकार गढ़बाक क्रियाप्रणालीक जाँच अछि।

ई पूर्व-योजनाक पाठमात्रा आ यांत्रिक संकेत अछि, स्वतन्त्र घटनाघनत्व नहि। विशेष परीक्षा ‘मंचन, प्रदर्शन आ सामूहिक दृष्टि’ अछि; तेँ प्रेक्षक, अभिनयकर्ता, आयोजक, असली साक्षी आ चेतावनी फैलौनिहारक अधिकार भिन्न देखबाक चाही। मुख्य कथामे किराएक भूतक जुलूस स्वयं प्रत्यक्ष मंचदृश्य रूपमे विस्तृत नहि, अधिकतर कथावाचकीय वर्णन आ समाचारक रूपमे अछि। गीतक कल्पित पर्दाफाशकेँ गद्यक वास्तविक दृश्य कहि गनलासँ घटनात्मक संख्या कृत्रिम बढ़त।

सुलोचनाक बेटा हरिनन्दन : उत्तराधिकारक नव मोड़

मूल कहैत अछि जे सुलोचनाक बाद हुनकर बेटा हरिनन्दन अनुष्ठानक भार लैत छथि। पछिला [–६६]मे स्त्रीसभ सार्वजनिक न्यायक संस्था बनौने छलीह; एहि अध्यायमे परिवारक उत्तराधिकारी ओकर कीर्ति आ बूढ़बाक स्मृतिपरम्पराकेँ बाहरी ठगीसँ बचाबय पड़ैत अछि। केवल सम्बन्धक आधारपर सुलोचना मरि गेलीह, चयनक विशेष संस्कार सम्पन्न भेल अथवा हरिनन्दन केँ गामक लिखित पदभार भेटल—ई बात नहि। पीढ़ीक उत्तराधिकार सामाजिक भूमिकाक क्रम, ऐतिहासिक तिथि नहि। हरिनन्दनक सार्थक पात्रत्व क्रोध सँ सुनवाई आ ग्रामीण चेतावनी-प्रसार दिस बदलैत अछि।

प्रसिद्धिक विस्तार : सामाजिक शक्तिक नाजुकता

कथावाचक बतबैत अछि जे राति-सभा आ बूढ़बाक अनुष्ठानक कीर्ति आसपासक गामसभमे फैलल। एहि विस्तारसँ सार्वजनिक भरोसा बढ़ल, मुदा प्रत्यक्ष परिचयक कमी सेहो बनल: दूर गामक लोक बूढ़बाक नाम सुनैत छथि, हुनकर वास्तविक परम्परासँ सीधा परिचित नहि। ठगीक अवसर एहि अन्तरमे जन्म लैत अछि। बूढ़बाक कथन ‘सफलताक दुःखद उपफल’ प्रतिष्ठाक दू धार पहिचानैत अछि; मुदा प्रसिद्धि ठगीक अनिवार्य कारण अछि—

एहन सार्वत्रिक नियम सिद्ध नहि। सामाजिक पृष्ठभूमि अवसर देत अछि, कालीचरणक सचेत अभिनय निर्णायक मानवीय क्रिया अछि।

कालीचरण : दावाक व्यक्तिकरण आ नामक विरोधाभास

भ्रमणशील ठग ‘कालीचरण’ नामसँ चिन्हित अछि, मुदा स्वयंकेँ ‘बूढ़बाक असली आत्मा’ कहि प्रचार करैत अछि। वास्तविक नामक उपस्थितिक बावजूद ओ प्रतीकात्मक परम्परा अपन देहपर ओढ़ैत अछि। उपन्यासक दीर्घ ‘नाम बनाम देह’ प्रश्न एतय उलटा रूप लैत अछि: नामक विश्वसनीयता ककरा? स्वयं घोषित नाम वा समुदायसँ सत्यापित आचरण? कालीचरणक ग्राम, जाति, पूर्वजीवन, व्यक्तिगत अभिप्राय अथवा संगठनक स्थायी माप नहि। ओकर ठगी पाठमे स्पष्ट, मुदा समग्र भिक्षु, साधु अथवा भ्रमणशील समुदायक सामूहिक दोष नहि निकालल जाए।

किराएक भूतक प्रदर्शन : वेश, आलोक आ ढोल

मुख्य गद्यमे कालीचरण वस्त्र लपेटल, इजोत लेने ‘किराएक भूत’ सहायकसभक संग राति-जुलूस निकालैत अछि। ई भूतक वास्तविक अलौकिक उपस्थिति नहि; मनुष्यद्वारा रचित दृश्य-अभिनय अछि। वेशभूषा पहिचान नुकबैत, राति प्रत्ययक परिस्थिति बनबैत, परिहास वा आतंकक नाटकीय भाषा उत्पन्न करैत। लोकगीतमे चादरि आ ढोल विशेषतः उपस्थित; गद्यमे सहायकक प्रकाश आ वेश स्पष्ट, मुदा ढोलक सटीक प्रयोगक अलग क्रियाविधान नहि। पाठमूलक अन्तर्क्रियामे अभिनय-समूह ठगीक माध्यम अछि, अपने आपमे कोई जादुई घटना नहि।

रातिक अन्हार : भयक अवकाश, प्रमाणक निलम्बन

राति जुलूस होएबाक कारण लोकक पहिचानक सामान्य साधन निर्बल होएत—ई कथाक सैद्धान्तिक सम्भावना अछि। मुदा जुलूसमे वास्तविक कतेक दीप, कतेक सहायक, कोन गली अथवा कोन समय छल, पाठ नहि देत। अन्हारक लोकगीतक घनत्वसँ प्रेक्षकक भयक वातावरण बनैत अछि। कालीचरण ओहि स्थितिक उपयोग ‘आत्मा’क दावा प्रचलित करबामे करैत अछि। एहि भयकेँ केवल ग्रामीण मूर्खताक प्रमाण नहि मानब उचित: जानकारीक असमानता, विश्वासक विरासत आ अनुष्ठानक महत्त्व भयक प्रभावक सामाजिक आधार बनबैत अछि।

दृश्यग्रहण आ अभिनय : देखल दृश्यक बदलैत अर्थ

जुलूस देखनिहार वास्तवमे वस्त्रधारी मनुष्य आ इजोत देख सकैत छथि; मुदा ओहि प्रत्यक्ष दृश्यसँ बूढ़बाक ‘असली आत्मा’क उपस्थिति स्वतः प्रमाणित नहि। आख्यानमे दर्शक जे देखैत छथि—वेशधारी सहायक आ प्रकाश—तकरा कालीचरण अपन अलौकिक अधिकारक कथामे बदलि दैत अछि। एहि दृश्य आ ओकर व्याख्या बीच दूरी कथा-तनाव रचैत अछि। कालीचरण एही श्रेणीभ्रमक लाभ लैत अछि। आलोचना करैत घटना-पहिचान, जनविश्वास आ विज्ञापित धार्मिक सत्ताक दावे अलग रखब जरूरी। एहि अर्थमे आरम्भिक शंख-रजत अध्यायक ज्ञानभ्रम-प्रश्न ग्राम्य आर्थिक संकटमे मूर्त होइत अछि।

भोर परिवारसँ धन-वसूली : भयक बाजारीकरण

कथामे कालीचरण गामक भोर लोकसँ पैसा वसूलैत अछि, ई कहैत जे बूढ़बा नाम बचएबाक लेल ‘विशेष पूजा’ माँगैत छथि। एतय आर्थिक लेनदेन स्वैच्छिक सामान्य दानक अर्थमे नहि, भय पैदा कऽ मिथ्या अधिकारक सहारे कराओल जा रहल अछि। ई ठगीक कथासिद्ध रूप अछि। मुदा पूजा-सामग्री, प्रति परिवार राशि, वसूलीक दिन आ प्रत्यक्ष धमकीक शब्द नहि। अतः कथा सामाजिक प्रक्रिया उद्घाटित करैत अछि, अपराध-सूचीक पूर्ण प्रमाणपत्र नहि। नामरक्षाक निशुल्क परम्परा केहन प्रकारेँ एक कृत्रिम मूल्यवस्तु बनैत अछि, तकर मुख्य नैतिक प्रश्न एतय अछि।

एक परिवारक सम्पूर्ण जमा-पूँजी : आर्थिक आ नैतिक क्षति

पड़ोसक गामक एक परिवार अपन ‘सम्पूर्ण जमा-पूँजी’ कालीचरणकेँ दऽ ठगाइल अनुभव करैत गढ़ नारिकेल आयल। एहि स्थितिमे अपराधक परिणाम ठोस अछि—सम्पत्ति गमाओल परिवारक संकट। परिवारक नाम, सदस्यसंख्या, पेशा आ खर्च/जमा-पूँजीक रकम नहि। गामकेँ लोकगीतक ‘भोर लोक’ कहब नैतिक करुणाक भाषा अछि, पर असावधान मूर्खता घोषित करब नहि। परिवार असली बूढ़बाक निकट सत्यापन लेल जाइत अछि; तेँ ओ केवल धोखा सहबाक निष्क्रिय विषय नहि, जाँचक पहिल सक्रिय वाहक बनैत अछि।

ठगाइल परिवारक यात्रा : भ्रमसँ सत्यापन धरि

धन दऽ चुकलाक बाद ठगाइल अनुभव करबाक मानवीय अवस्था महत्त्वपूर्ण अछि; परिवार गढ़ नारिकेल पहुँछि असली बूढ़बासँ भेट चाहैत अछि। एहि क्रियासँ शिकायतक ग्रामीण सूचना-पथ स्थापित होइत अछि। परिवारकेँ धन वापस भेटल अथवा सार्वजनिक क्षतिपूर्ति कएल गेल—एहन परिणति कथा नहि बतबैत। अतः ज्ञानगत संशोधन आ आर्थिक क्षतिक पुनरुद्धार अलग छथि। परम्पराक प्रतिष्ठाक रक्षा होइतहुँ व्यक्तिगत पीड़ितक हानि अनुत्तरित रहैत अछि। ई साहित्यिक समापनक एक ठोस सीमा अछि, जकरा ठगक पलायनक उल्लास ढाँपि नहि सकैत।

हरिनन्दनक क्रोध आ बूढ़बाक मौन : कथाक गति

हरिनन्दन ‘अहाँक नामपर ठगी’क सूचना दैत छथि आ रोकबाक उपाय पुछैत छथि। बूढ़बा ‘बहुत काल चुप’ रहैत छथि। एहि विराममे तुरन्त प्रतिहिंसा, गिरफ्तारी अथवा दैवी दण्डक आदेश नहि; सिद्धान्तक खोज अछि। बूढ़बाक मौनक सटीक अवधि आ मनक सम्पूर्ण क्रम नहि वर्णित। पछाति ओ प्रतिष्ठा, नकल आ अवसरवादक सम्बन्ध बुझबैत छथि। भयक दैनन्दिन संकट धीमा नैतिक उत्तरक कारण विचारगम्य बनैत अछि। ई गति सार्वजनिक अपमानक प्रत्युत्तर सँ ज्ञान-पद्धतिक प्रस्ताव धरि प्रवाहमान अछि।

‘सफलताक दुःखद उपफल’ : बूढ़बाक दोहरी व्याख्या

बूढ़बा ठगीकेँ परम्पराक असफलता नहि, प्रसिद्धिक ‘दुःखद उपफल’ कहैत छथि। एहि भाषामे स्वतः प्रतिष्ठाक पूर्ण सुरक्षा नहि: मूल्यवान संस्थाकेँ नकल करब लाभदायक बनि सकैत अछि। किन्तु ई उपदेश परिवारक गमाओल धनक नैतिक भय कम नहि करैत; अवसरवाद आ सामुदायिक भोलेपनक विश्लेषण अलग चाही।

रचनाक उपलब्धि ठगीक घटनाकेँ केवल बाहरी ‘दुष्ट’क उत्पात नहि, परम्पराक सार्वजनिक प्रसारसँ उत्पन्न पहिचान-संकट बनबाएब। सीमा ई जे परम्पराक अपन प्रमाणिकरण-व्यवस्था पहिने किएक स्पष्ट नहि छल, तकर स्वाल्प विवरण अछि।

‘सच्चा साक्षी पैसा नहि माँगैत’ : स्थानीय कसौटी

बूढ़बा स्पष्ट भेद प्रस्तावित करैत छथि: सच्चा साक्षी पैसा नहि माँगैत, डर बेचि लाभ नहि कमाइत, नामक बदलामे प्रेम आ स्मृति दैत अछि। एहि कथाक आन्तरिक व्यवस्थामे निशुल्क नामरक्षा प्रथा एक नकारात्मक सत्यापन-सूत्र बनैत अछि। जँ कियो ‘बूढ़बाक अनुष्ठान’ कहि भय देखाबि धन माँगैत अछि, तकर दावा एहि स्थानीय नियमसँ असंगत। मुदा एहि कसौटीकेँ सभ धर्म, सभ संस्थान वा सभ सशुल्क कार्यक सार्वत्रिक सत्यपरीक्षक बना देब अवैध विस्तार। परम्पराक विशिष्ट वचनपद्धति एकर वास्तविक अवच्छेदक अछि।

मूल्यहीन सेवा आ सेवाक वास्तविक संसाधन

‘पैसा नहि माँगैत’क अर्थ अनिवार्यतः श्रम, सामग्री वा अनुष्ठानिक रखरखावक कोनो लागत नहि होएब नहि। पात, गीत, सभा, यात्रा आ स्मृतिरक्षा मानव-समुदायक निरन्तर समय माँगैत अछि। कथा एहि लागतक विस्तृत अभिलेख नहि दैत। बूढ़बाक कसौटी ठगीक विशेष आर्थिक दावेपर लक्षित अछि, न ग्रामक सभ सम्भावित सहयोगक लेखाजोखापर। एहि भेदसँ निःशुल्क साक्षीक नैतिक गरिमा सुरक्षित रहैत अछि, संगहि सामाजिक उत्पादनक भौतिक शर्तक प्रश्न खुलल रहैत अछि।

निशुल्कताक सूत्र आ कथाक अनकहल सम्भावना

बूढ़बाक निशुल्क साक्षीक वचन हरिनन्दनक प्रचारमे एक सरल लोकसूत्र बनैत अछि। एहि प्रकरणमे ई सूत्र कालीचरणक भयद्वारा धन-वसूलबाक प्रदर्शन रोकबामे परिणामकारी सिद्ध होइत अछि। मुदा कथाक अन्त एहि एक ठगक पलायनपर होइत अछि; नयका छलरूप, बिना धन माँगने प्रतिष्ठा हासिल करबाक अभिनय अथवा परम्पराक नामक अन्य उपयोगक कथावृत्तान्त एतय नहि। एहि कारण लोकसूत्र वर्तमान घटनाक समाधान, समस्त भावी कथाजगतक अन्तिम रक्षा-विधान नहि। कथावाचकक निश्चित उपसंहार आ पाठकक आगूक अनिश्चित अपेक्षा बीचक अन्तर ई उपविभागक आख्यानशास्त्रीय केन्द्र अछि।

‘डर बेचब’ : अदृश्य वस्तुक आर्थिक विनिमय

कालीचरणक कारोबारमे वास्तविक बिक्रीक वस्तु ‘डर’ अछि, जकरा ‘विशेष पूजा’क भुगतानद्वारा कम करबाक वचन दैत अछि। लोकगीतक ‘डरक बजार सजल’ पंक्ति मुख्य कथामे धन-वसूलीक यथार्थसँ जुड़ैत अछि। मुदा डर मात्र शब्द नहि, सामाजिक पहिचान, मृत्यु-स्मृति आ संरक्षणक प्राचीन इच्छा जोड़ि बनल सामुदायिक भाव अछि। कविक बाजारीकरण-रूपक एहि भावकेँ आर्थिक शक्ति बनबाक क्षण पहिचानैत अछि। एकर असर पहिचानलासँ ठगीक मानसिक संरचना बुझब सम्भव होइत अछि, ठगाइल लोकपर दोष थोपब नहि।

हरिनन्दनक प्रचार : सूत्रक दूरगामी प्रसार

बूढ़बाक उत्तर सुनि हरिनन्दन आसपासक गामसभमे चेतावनी फैलाबैत छथि। एहि घड़ी मुख्य कथा प्रचारक दृश्य किछु दूर धरि विस्तार करैत, मुदा गांव-गांव बैठक, लिखित पत्रक अथवा गवाहक व्यक्तिगत विवरण नहि। कथावाचक संक्षेपमे कहैत अछि जे सरल कसौटी अवसरवादीसभसँ बचाव लेल ‘पर्याप्त सिद्ध’ भेल। एहि सफलता-दावेकेँ कथासंसारक तत्काल परिणाम रूपमे पढ़ब उचित, विशिष्ट दर वा आर्थिक उद्धारक स्वतन्त्र आँकड़ा नहि। दिलचस्प ई जे ठग प्रसिद्धिक मार्गे फैलल, आ खण्डन सेहो सार्वजनिक सूचना-मार्गे फैलैत अछि; समान माध्यमक विपरीत नैतिक उपयोग अछि।

लोकगीतक दीपधारी प्रश्नकर्ता : गद्यमे अनदेखा प्रत्यक्ष दृश्य

गीत कहैत अछि जे ‘एक साहसी स्वर’ दीप लऽ ‘के छह?’ पुछैत अछि, चादरि खोलैत अछि आ भूत भागैत अछि। मुख्य गद्यमे एहन आमने-सामने जुलूसकेँ रोकबाक, चादरि खोलबाक, अथवा दीपधारी व्यक्तिक नामित क्रिया नहि। कालीचरण हरिनन्दनक प्रचारपछाति अपन धंधा उजड़ने देखि रातिमे गायब होइत अछि। एहि अन्तरकेँ मेटि ‘हरिनन्दन चादरि खोललक’ लिखब अतिरेक। गीत प्रत्यक्ष नाटकीय उद्घाटनदृश्य कल्पित करैत अछि; गद्य वैचारिक चेतावनी आ प्रतिष्ठाक बाजार ढहबाक कारण-रूप बनबैत अछि।

प्रेक्षकक अधिकार : ‘के छह?’क प्रश्न असल क्रिया

गीतमे ‘के छह?’ प्रत्यक्ष नाटकीय आदेश, गद्यमे धन माँगब आ डर बेचबाक निषेधक लोकसूत्र प्रश्नक व्यवस्थित रूप। प्रेक्षक नाटकक निष्क्रिय दर्शकसँ दावाक जाँचकर्ता बनैत अछि। मुदा गीतक संवाद गद्यक पुष्ट भाषण नहि; दूनू एक आलोचनात्मक विचारक अलग अभिव्यक्ति छथि। पहिचान-परीक्षाक सांस्कृतिक शिक्षा ओहि अन्तरमे सर्जनात्मक अर्थ पबैत अछि।

कथाक भीतर नाटक : अभिनेता आ अवलोकन

कालीचरण आ किराएक सहायकसभ सामाजिक दृश्यकेँ अभिनयमे बदलैत छथि। अभिनेता अपन वास्तविक परिचय लुकबैत छथि, जखन दर्शक हुनकर दृश्य-उपस्थितिसँ अलौकिक अर्थ जोड़ैत छथि। एतय प्रदर्शन कथा भीतर नाटकक रूप अछि; तथापि वास्तविक मंच, लिखित निर्देशन अथवा अभिनयक सम्पूर्ण संवाद नहि। आख्यानशास्त्रीय रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि जे ‘कोन देखैत अछि’ आ ‘देखल वस्तु केना बयान कएल जाइत अछि’ बीच अन्तर ठगक सत्ता उत्पन्न करैत अछि। इजोत दर्शककेँ किछु वस्तु स्पष्ट देखबैत, किछु वस्तु लुकबैत अछि।

प्रामाणिक साक्षीक चरित्रांकन

बूढ़बाक चरित्र एहि प्रकरणमे अलौकिक शक्ति दिखबैत नहि; ओ अपना कामक व्यवहारिक पहिचान बतबैत छथि। कथाकार प्रामाणिक परम्पराक अर्थ दैवी चमत्कारक दृश्यसँ हटाकऽ ‘नाम याद राखब, भय नहि बेचब’क कथात्मक वचनमे राखैत अछि। हरिनन्दन एहि व्यक्तिगत वचनकेँ समाजमे प्रचारित नियम बना दैत छथि। फलतः बूढ़बाक कथानक-कार्य चमत्कारी हस्तक्षेपसँ नैतिक मार्गदर्शन धरि बदलैत अछि। एकर सीमा ई जे अन्य सम्भावित छद्मदावासभक स्वतन्त्र दृश्य एहि अध्यायमे नहि।

नाम-रक्षक आ नाम-चोर : उलट प्रतीक

बूढ़बाक काम नामक रक्षा अछि; कालीचरण हुनकरहि नाम अपना देहपर ओढ़ि धन लैत अछि। एहि उलट उपयोगमे उपन्यासक नाम–देहक दीर्घ बिम्ब नव मोड़ पबैत अछि। जकर नाम स्मृतिमे भरोसाक प्रतीक, ओही नामकेँ नकली जुलूसक विज्ञापन बनाओल जाइत अछि। कालीचरणक व्यक्तिनाम ज्ञात होइतहुँ ओ दोसरक प्रतिष्ठा उधार लैत अछि। ई घटना कथामे ‘नाम चोराएब’क एक रूपक बनैत अछि, मुदा डिजिटल पहचान-चोरीक भावी कथाक घटना एतय नहि।

गामसभ बीच सूचना आ घटनाक भौगोलिक पथ

कथा पड़ोसी गामसभसँ गढ़ नारिकेल धरि, फेर गढ़ नारिकेलसँ पड़ोसी गाम धरि चलैत अछि। ठगक जुलूस पहिने बाहर फैलैत; ठगाइल परिवार सत्यापनक लेल भीतर अबैत; हरिनन्दन फेर चेतावनी बाहिर लऽ जाइत छथि। एहि उलटा प्रवाहसँ स्थान केवल पृष्ठभूमि नहि, सूचना आ विश्वासक गतिशील मार्ग बनैत अछि। कथाकार प्रत्येक गामक नाम वा यात्राक दूरी नहि दैत, मुदा एहि तीन-चरणीय गतिक कारण कथा एक सामाजिक जालक रूप धारण करैत अछि।

कालीचरणक पलायन : अन्तक अपूर्णता

हरिनन्दनक प्रचारसँ ठगीक धंधा कमजोर होइत अछि, आ कालीचरण किराएक सहायकसभसहित एक राति गायब भऽ जाइत अछि। ई घटनाक नाटकीय समाप्ति अछि, मुदा गिरफ्तारी, धन-वापसी अथवा पीड़ित परिवारक आर्थिक पुनर्वासक दृश्य नहि। लोकचेतावनीक लक्ष्य सफल कहल जा सकैत अछि; पीड़ितक वैयक्तिक कथा अधूरा रहैत अछि। एहि कारण सामूहिक सुखान्त आ व्यक्तिगत क्षतिक बीच एक असुविधाजनक अन्तर अछि। आलोचनामे एहि अन्तरकेँ ढाँपि नहि देबाक चाही।

अनाम सहायकसभ : वेशभूषाक पाछाँ श्रम

‘किराएक भूत’ कहल गेल सहायकसभ अभिनय करैत छथि, मुदा हुनकर वेतन, सम्बन्ध, बाध्यता अथवा जीवनक कथा नहि देल गेल। ओ सभ प्रदर्शनक दृश्य-प्रभाव बढ़बैत छथि, अपन व्यक्तित्व नबनाबैत। एकटा महाकथामे श्रमक एहन दृश्यात्मक उपस्थितिक संग वाचिक अनुपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि। जुलूसक आडम्बर रचनाकार दृश्यरूपेँ देखबैत, ओकरा बनबनिहार लोकक निजी जगत नहि खोलैत। एहि सीमा देखनाइ साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न, अनाम सहायकसभपर कल्पित दोषारोपण नहि।

आर्थिक क्षतिक मात्रात्मक अस्पष्टता

एक परिवारक ‘सम्पूर्ण जमा-पूँजी’ दऽ देबाक बात प्रबल भावात्मक अर्थ राखैत अछि। मुदा धनक रकम, परिवारक पेशा आ कुल पीड़ितक संख्या नहि। एहि संक्षेपसँ कथा ठगीक नैतिक वक्रता उघाड़ैत अछि, तथ्यात्मक आर्थिक सर्वेक्षण नहि बनैत। ‘सम्पूर्ण’ शब्द परिवारक जीवनमे क्षतिक अनुपात बतबैत अछि, मुद्रा-मात्रा नहि। आलोचना करैत एक संक्षिप्त शोकवाक्यकेँ अनेक परिवारक विस्तृत प्रमाणित इतिहासमे नहि बदलल जाए।

फकराक हँसी आ गद्यक दुःख

फकरामे स्थिर नामवला मनुष्य भूतक जुलूसपर हँसैत अछि; गद्यमे हरिनन्दन क्रोधित, बूढ़बा दुःखी आ ठगाइल परिवार क्षतिग्रस्त अछि। गीतक विजयी हास्य आ कथाक शुरुआती करुणाक स्वर भिन्न छथि। एहि भिन्नतासँ नाटक-जकाँ पर्दाफाशक उल्लास आ आर्थिक शोषणक वास्तविक वेदना एकसाथ बुझाइत अछि। केवल हास्यक विजय मानलासँ परिवारक जमा-पूँजीक अपूरणीय क्षति कथात्मक रूपसँ ओझराइत।

भावगतिक क्रम : भय सँ विवेक धरि

जुलूसक अन्हार भयक रंग बनबैत अछि; परिवारक जमा-पूँजी गमेनाइ करुणाक केन्द्र; हरिनन्दनक क्रोध प्रतिरोधक ऊर्जा; बूढ़बाक मौन आ उत्तर शान्त विचारक लय दैत अछि। एहि क्रममे भावक परिवर्तन घटनाक विभिन्न पात्रद्वारा अभिव्यक्त होइत अछि। लोकगीत हास्यात्मक पर्दाफाश जोड़ैत अछि, जखन गद्य प्रचारक परिणामपर ठहरैत अछि। ई भिन्न कलाभाषा अध्यायक अनुभव व्यापक करैत अछि।

घटनात्मक अनिश्चितता आ कथात्मक पाठकीयता

कथाकार कालीचरणकेँ पहिनहिसँ ‘किराएक’ भूतक संग चिन्हैत अछि, तेँ पाठक ठगक वास्तविकता जानैत छथि, पर ओकर ठगाइल पात्रसभ एखनहि नहि जनैत। एहि पाठक–पात्र ज्ञान-अन्तरसँ नाटकीय विडम्बना बनैत अछि। पाठक ‘भूत असली अछि कि नहि’क रहस्यसँ बेसी ‘समुदाय ई छल केना रोकत?’क अपेक्षामे पढ़ैत अछि। हरिनन्दनक प्रचार एहि अपेक्षाकेँ पूरा करैत अछि। यही अध्यायक विशिष्ट कथात्मक तनाव अछि; दार्शनिक प्रमाण-प्रदर्शन नहि।

नामरक्षाक सामुदायिक आचार आ ठगीक कथासंघर्ष

कालीचरणक अभियान ओकर लाभ लेल, बूढ़बाक परम्परा सामुदायिक स्मृति लेल चलैत अछि। एकहि ‘नाम’ शब्दक दू प्रतिद्वन्द्वी उपयोग कथा-विषयक संघर्ष बनबैत अछि। दूनू पक्षक कार्यक घटनागत तुलना—विशेष पूजाक भयद्वारा धन-वसूली बनाम निशुल्क सामूहिक स्मरण—पात्रसभक नैतिक भिन्नता स्वतः देखबैत अछि। मुदा अगिला कालखंडमे एहि भिन्नताक अन्य जटिल चुनौती की होयत, एतय अनिर्णीत।

चेतावनी-कथाक उत्पत्ति आ पुनरावर्तन

घटना गामक स्मृतिमे ‘नकली भूतक जुलूस’ नामे स्थापित होइत अछि, आ हर नव पीढ़ीकेँ सुनाओल जाइत अछि। व्यक्तिगत ठगीक वृत्तान्त सामुदायिक कथारूप ग्रहण करैत अछि। एहि पुनरावर्तनमे कथा केवल एक अतीत-समाचार नहि, भविष्यक सुननिहारक व्यवहार प्रभावित करबाक प्रयास बनैत अछि। मूल अध्याय प्रत्येक पीढ़ीक अलग सुनवाईक दृश्य नहि देखबैत; ‘हर नव पीढ़ी’ कथावाचकीय संक्षेप अछि। लोककथा-जकाँ पुनःकथन एहि अध्यायक स्थापत्यक प्रमुख उपलब्धि।

बूढ़बाक सीमित भूमिका आ मानवक सक्रियता

बूढ़बा स्वयं कालीचरणकेँ जादूसँ अन्तर्धान नहि करबैत, न किराएक भूतक चादरि उतारैत छथि। ओ हरिनन्दनकेँ भेदक सूत्र दैत छथि; हरिनन्दन आसपासक गाममे समाचार प्रसारित करैत छथि। घटना यसप्रकार अलौकिक संरक्षकसँ मनुष्यक सामाजिक क्रियामे केन्द्र बदलैत अछि। बूढ़बाक मौन-पश्चात् उत्तर कथाक दिशा बदलैत अछि, मुदा कार्यक भार मानवपात्र निभबैत अछि। एहि कारण संस्था-रक्षाक कथा चमत्कारक अभिनयक सामना व्यवहारिक संचारद्वारा करैत अछि।

प्रदर्शनक विफलता : मंचनक उद्देश्यमे पराभव

नकली जुलूस डर पैदा करबाक हेतु आयोजित छल, मुदा खबर फैललाक बाद ओकर आर्थिक उपयोगिता समाप्त होइत अछि। एहि उलटा परिणतिमे प्रदर्शनक कथात्मक पराजय अछि: अभिनय समाप्त होएबाक कारण जादुई प्रतिअभिनय नहि, दर्शकक बदैल रहल प्रतिक्रिया। लोकगीत दृश्यतः चादरि खोलबाक क्षणक नाटक रचैत अछि; गद्य प्रचार आ पलायनक संक्षेप। घटनाक समाप्ति कोन माध्यमसँ आयल, से भेद नाट्यरचनाक अध्ययन लेल निर्णायक।

लोकगीत–गद्यक मूल अन्तर

गीतमे ढोल, दीपधारी प्रश्नकर्ता, चादरि खोलबाक सार्वजनिक दृश्य आ नकली भूत भागबाक क्षण अछि। गद्यमे ठगाइल परिवारक यात्रा, हरिनन्दनक उत्तर-खोज, बूढ़बाक मौन, परम्पराक नियम-प्रचार आ कालीचरणक रात्रिक पलायन अछि। गीतक विशिष्ट वीरनायक गद्यमे नामित नहि; हरिनन्दन स्वयं चादरि खोललक—एहन घटना नहि। दूनू स्वर अलग कथात्मक गति दैत छथि: लोकगीत तुरन्त दृश्यात्मक समाधान, गद्य सामाजिक संचारक क्रमिक प्रभाव।

समग्र कथात्मक निर्णय

‘नकली भूतक जुलूस’क सफलता ई अछि जे नामरक्षाक परम्पराक सार्वजनिक कीर्ति ओकरा खतरा सेहो देत अछि; ठगाइल परिवारक शिकायत आ हरिनन्दनक चेतावनीक क्रम लोकसमुदायकेँ सक्रिय बनबैत अछि। कथा भीतर अभिनेता–दर्शकक सम्बन्ध, डरक दृश्यसंयोजन, लोकगीतक नाटकीय पर्दाफाश आ गद्यक प्रचारक परिणति आलोचनाक केन्द्रीय पदार्थ छथि। सीमा—ठगाइल परिवारक धनवापसी अनुपस्थित, किराएक सहायक अनाम, आ प्रत्यक्ष चादरि-उघाड़ब गीतमे मात्र। एहि भेदसभक कारण रचना सघन लोकचेतावनी, मुदा पूर्ण सामाजिक पुनर्स्थापनक कथा नहि।

स्रोत-संकेत आ अगिला क्रम

प्राथमिक पाठ: गजेन्द्र ठाकुर, ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’, अध्याय [–६५], अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २५७–२६०; फकरा, ‘के छह?’क सोर गीत, कालीचरण–हरिनन्दनक गद्य आ अध्यायोत्तर टिप्पणी अलग। नाटकीय सार्वजनिक चादरि खोलबाक दृश्य केवल गीतमे, गद्यमे नहि। अगिला [–६४] ‘सुखदेवक बदला’मे पुरान भूमि-अन्याय, दस्तावेजक यात्रा आ सामुदायिक पात्र-जालक पुनर्सङ्गठन अध्ययनक विषय अछि।

प्रकरण ३७ | मूल अध्याय –६४ — सुखदेवक बदला

पूर्वकथाकाल · प्रतिशोधक शीर्षक, भूमि-स्मृति, अन्तर्पाठीय पुनरावृत्ति आ सामुदायिक पात्र-जाल

अध्यायक पाठमूल आ कथापरास

अध्याय [–६४] ‘सुखदेवक बदला’ मूल अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २६१–२६४क सीमा रखैत अछि; अगिला [–६३] पृष्ठ २६५ सँ आरम्भ। फकरा, ‘क्षमाक बाट’ लोकगीत, चम्पावती–रघुबीर सिंहक भूमिविवाद आ ‘संचित सामुदायिक क्षमताक शक्ति’ शीर्षक अध्यायोत्तर टिप्पणी भिन्न स्तर छथि। शीर्षकमे प्रतिशोधक अपेक्षा अछि, जखन मुख्य गद्यक परिणति अदालतक भूमि-अधिकार-विजय। एहि अर्थ-बदलावमे कथा हिंसक बदलाक सम्भावित कथा कऽ नायकत्वक नव रूप रचैत अछि।

विशेष प्रश्न ‘स्थान, समय आ कथ्यक पुनरावृत्ति’ तथा आरम्भ–मध्य–अन्तक क्रम अछि। ई सूचकांक स्वतन्त्र घटनाघनत्व नहि। मूल गद्यमे नूतन भूमि-सर्वेक्षण सँ शुरू कऽ पुरान दस्तावेजक खोज, मुकदमाक तैयारी, स्त्रीसभाक समर्थन, अदालतक फैसला आ बूढ़बाक भावात्मक व्याख्यातक कथाक यात्रा अछि। अन्तर्वस्तुक वास्तविक धुरी कागज, शिक्षा आ संगठित समुदायक पूर्वकालीन योगदानक पुनर्सङ्गठन थिक।

‘सुखदेवक बदला’ शीर्षकक अपेक्षा-उलट

शीर्षक ‘बदला’ लोककथाक परम्परामे रक्त, आगि अथवा व्यक्तिगत प्रतिशोधक संकेत उत्पन्न कऽ सकैत अछि। मुख्य गद्य शुरूए सँ बतबैत अछि जे चम्पावती पुरान अन्यायक पुनरावृत्ति अलग ढंगसँ सामना करब चाहैत छथि। अदालतमे रघुबीरक हारक पश्चात् बूढ़बा परिणामकेँ सुखदेवक बदला कहैत छथि, ‘प्रतिशोधक रूपमे नहि, न्यायक रूपमे’। एहि प्रकार शीर्षकक अर्थ अन्तिम भाषणमे पुनः निर्धारित होइत अछि। कथा पाठकक पहिल अपेक्षाकेँ शान्तिपूर्ण संस्थागत विजयद्वारा बदलैत अछि।

लोकगीतक सुखदेव आ गद्यक चम्पावती : निर्णायक अन्तर

‘क्षमाक बाट’ गीत सुखदेवक छाती जरब, हाथमे आगि लेबाक सम्भावना आ अन्ततः आगि नहि लगएबाक कथा कहैत अछि। मुख्य गद्यक तत्काल सक्रिय पात्र चम्पावती छथि; सुखदेव पूर्व पीढ़ीक त्रासदीक स्मरणीय नाम, वर्तमान प्रत्यक्ष पात्र नहि। रघुबीर सिंहक विवादमे आगि लगाबाक, सुखदेव स्वयं प्रतिशोध छोड़बाक अथवा कोनो व्यक्ति द्वारा हिंसक जुलूसक घटना नहि। अतः गीतक ‘जे क्षमा चुनलक’केँ वर्तमान गद्यक घटनात्मक साक्ष्य मानब गलत। गीत नैतिक दृष्टान्त, मुख्य कथा दस्तावेज-आधारित सामाजिक प्रतिकार रचैत अछि।

पुरान अन्यायक प्रतिध्वनि : सुखदेवक पूर्ववृत्त

अध्यायारम्भक टिप्पणी कहैत अछि जे चर्मकार टोलाक भूमिपर फेर खतरा आयल, जे सुखदेव महतोक समयमे देखल गेल छल। चम्पावती इतिहास घुरबाक बात करैत छथि। एहि पुनरावृत्तिमे अन्तिम परिणाम समान नहि—सुखदेवक युगमे अधिकारन्यास चूकल, चम्पावतीक युगमे दस्तावेजी तैयारी सफल। मुदा रघुबीर सिंह आ उग्रसेन

ठाकुरक प्रत्यक्ष वंशसम्बन्ध पाठमे साफ निषेधित अछि। तें भिन्न युगक दू विरोधी पात्रकेँ एक कुलक षड्यन्त्रकारी परिवार कहब गद्यक स्पष्ट पाठविरुद्ध।

‘संयोगवश एकहि प्रकारक स्वभाव’ : कथावाचकक स्पष्ट टिप्पणी

कथावाचक स्वयं कोष्ठकमे रघुबीर सिंह आ सुखदेवक समयक उग्रसेन ठाकुरक कोनो सम्बन्ध नहि कहैत, केवल स्वभावक समानता बतबैत अछि। ई लेखककीय व्याख्या कथाक सामाजिक पुनरावृत्तिकेँ आनुवंशिक नियतिवादसँ अलग राखैत अछि। अलग मनुष्यसभ समान भूमि-दावाक तरीका अपनाबि सकैत छथि; वैयक्तिक रक्तवंश नहि, सत्ता-आचरणक समानता कथा-वृत्तक पुनरागमन बनैत अछि। एहि परापाठीय हस्तक्षेपमे कथावाचक पाठकक सम्भावित भ्रम पहिले रोकैत अछि।

हरिनन्दनसँ चम्पावती : पीढ़ीक लय

मूल कथामे हरिनन्दनक बाद हुनकर बेटी चम्पावती अनुष्ठानक उत्तरदायित्व लैत छथि। [-६५]क हरिनन्दनक कथा ठगीक सार्वजनिक सूचना-नियन्त्रण छल; चम्पावतीक कालमे संस्था दस्तावेजी भूमि-संघर्षक सामना करैत अछि। वंशगत निरन्तरता कथा के एक परिवारक सांस्कृतिक धागा दैत अछि, मुदा प्रत्येक पीढ़ी अलग संकट नूतन साधनसँ लैत अछि। सत्ता हरण अथवा मृत्यु-विशेषक सूचना ‘बाद’ शब्दसँ स्वतः नहि।

नव राजस्व-सर्वेक्षण : घटनाक आरम्भक संस्थागत कारण

राज्यक नव राजस्व-व्यवस्थामे भूमिक फेर सर्वेक्षण शुरू होइत अछि। एतय बाहरी प्रशासनिक परिवर्तन गामक पुरान अधिकारक असुरक्षा जन्मबैत अछि। कथाकार सर्वेक्षणक अभिलेखीय पद्धति, नक्शा वा सरकारी कर्मीक संवाद विस्तृत नहि दैत, मुदा पुनर्मापनक घटनाक कारण नयका जमींदार दावा प्रस्तुत करैत अछि। एहि कारण शीर्षकक प्रतिशोधक भाषा पाछाँ ठोस सामाजिक परिवर्तन अछि। स्थानक ऐतिहासिक पुनर्परिभाषा कथाक संघर्षक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

चर्मकार टोलाक भूमि : समुदाय कथाक केन्द्र

विवाद चर्मकार टोलाक सामूहिक जमीनपर अछि। ओ भूमि केवल पृष्ठभूमिक भूभाग नहि, आवास आ सामाजिक पहिचानक स्थायित्वक प्रतीक बनैत अछि। गद्य परिवारवार भूमि-मालिकी, कतेक घर, कतेक खेत अथवा आर्थिक उपज नहि बतबैत। एहि संक्षेपसँ अनेक व्यक्तिक जीवन एक सामाजिक स्थान-नाममे समेटल अछि। एहि कारण गामक जनसमर्थन कथात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण, मुदा टोलाक निवासी सभक अलग आवाजक कमी सेहो आलोचनाक विषय।

रघुबीर सिंह : दावाक भाषिक निर्माण

नव जमींदार पुरान अभिलेख अस्पष्ट छल, जमीन अपन पुरखाक—एहन दावा प्रस्तुत करैत अछि। कथामे ओकरा बदला देबाक व्यक्तिगत शत्रुता अथवा सुखदेवक प्रति ऐतिहासिक घृणाक प्रमाण नहि। ओ वैधानिक रूप लैत भूमि-अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि, जकर सामना चम्पावती अभिलेखी प्रमाणसँ करैत छथि। ओकर व्यक्तित्व

स्वभावक सामान्य उल्लेख धरि सीमित; विस्तृत सामाजिक जीवन वा पराजयपछातिक प्रतिक्रिया नहि। कथाकार तर्क-विरोधक भूमिका प्रमुख रखैत अछि, मनोवैज्ञानिक बहुआयाम कम।

चम्पावतीक प्रथम प्रतिक्रिया : भय नहि, पूर्वस्मृति

चम्पावती समाचार सुनि घबराइत नहि; ओ बूढ़बासँ कहैत छथि जे 'इतिहास फेर सँ घुरि रहल अछि', मुदा लग एकटा अस्त्र अछि जे सुखदेवक युगमे नहि छल। एहि संवादमे पूर्व घटना नयका निर्णयकेँ जन्म दैत अछि। कथानक एक सीखल गेल सामाजिक स्मृतिक परिणाम दिखबैत अछि। 'अस्त्र' हथियार नहि, उपलब्ध संस्थागत साधनक रूपक अछि। वास्तविक तलवार, हतियार, सेना वा हिंसक बदला नहि।

पीपरक संवादसँ अभिलेखागार धरि : स्थलक यात्रा

चम्पावती पहिले बूढ़बाक स्मृतिस्थान लग जाइत छथि, फेर गामक अभिलेखागार पहुँचैत छथि। एहि स्थलान्तरणमे मौखिक साक्षीक नैतिक मार्गदर्शन आ लिखित इतिहासक उपयोग एक क्रममे जुड़ैत अछि। पीपर कथाक दीर्घकालिक जीवित साक्षी, अभिलेखागार सङ्कलित कागजक स्थान। दुनू एक-दोसराक स्थान नहि लैत; कथा-समाधान लेल चम्पावती पीपरक स्मृतिसँ बाहर वास्तविक दस्तावेजक दिशि चलैत छथि।

यादवानन्द झाक 'छाया-पंजी' : एक प्रतिक यात्रा

यादवानन्द झाक व्यक्तिगत नोटबुकक एक प्रति गामक अभिलेखागारमे सुरक्षित अछि, आ वंशज मूल परम्परागत रूपेँ राखि रहल छथि। एहि दू मार्गसँ कृति कागजक प्रतिलिपिक माध्यमे स्मृतिक विस्तार बनबैत अछि। गद्य पंजीमे तिथि, साक्षीक संग चर्मकार टोलाक अधिकार दर्ज कहैत, मुदा मूल शब्दशः प्रमाणपाठ, हर पृष्ठक स्वरूप वा प्रतिक प्रमाणित विधि नहि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिएँ पंजी अतीतकेँ वर्तमानक घटनाक सक्रिय कारक बनबैत अछि; एक निष्क्रिय ऐतिहासिक सजावट नहि।

सोमर-रत्नाक समयसँ अधिकार : पात्रसमूहक ऐतिहासिक धागा

कथाकार कहैत अछि जे पंजीमे चर्मकार टोलाक भूमि-अधिकार सोमर आ रत्नाक समयसँ दर्ज छल। एहि उल्लेखसँ वर्तमान भूमि-संघर्ष आरम्भिक पीढ़ीक दलित–स्त्री इतिहासक संग जुड़ैत अछि। मुदा वर्तमान प्रकरणमे सोमर आ रत्ना प्रत्यक्ष संवाद नहि करैत, हुनकर नाम अभिलेखक माध्यमे प्रवेश करैत अछि। एहि कथन-विन्यासमे आवाज अनुपस्थित रहितहुँ अतीतक सामाजिक कार्य वर्तमान निर्णयक घटनागत शक्ति पबैत अछि।

नारिकेल पात पाठशालाक युवा वकील : शिक्षा काजमे

चम्पावती नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षित युवा वकीलसभकेँ बजबैत छथि। एतय पूर्वक शिक्षा-अनुष्ठान कथाक वर्तमान व्यवहारिक काजमे उतरैत अछि। गद्य ओहि वकीलसभक व्यक्तिनाम, विधिशिक्षाक विशिष्ट पाठ्यक्रम, बयान अथवा अदालतक दिनक तर्क नहि दैत; तथापि 'पाठशाला' आ 'वकील'क सम्बन्ध नायक-व्यक्तिक अकेल संघर्षकेँ सामूहिक इतिहासक परिणाम बनबैत अछि। शिक्षा प्रतीक नहि रहि क्रियात्मक क्षमता बनेनाइ एहि अध्यायक प्रमुख परिवर्तन।

राति-सभाक सामाजिक प्रभाव : अध्यायसभ बीच कारण-पुल

पछिला [–६६]मे स्थापित स्त्री सभक राति-सभा एहि अध्यायमे सम्पूर्ण गामकेँ रघुबीरक दावाक विरुद्ध एकजुट करैत अछि। एकर पूर्व-संस्थापना वर्तमान घटनाक उपयोगी पृष्ठभूमि बनैत अछि। केवल शीर्षकक वापसी नहि, सामाजिक संस्थाक कार्यावह निरन्तरता अछि। मुदा सभा कतेक बैठक केलक, कोन स्त्री भाषण देलनि, चर्मकार टोलाक स्त्रीसभक निर्णयाधिकार कतेक छल, नहि बताओल गेल। व्यापक समर्थन कथावाचकीय सारांश, विस्तृत सम्वाददृश्य नहि।

हरिपतिक पोथी : निजी कृतिसँ सार्वजनिक साक्षीसँ

हरिपतिक पुरान पोथी शिष्य-परम्परासँ पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रहल आ वर्तमान विवादमे प्रस्तुत भेल। एहि घटनामे साहित्यिक हस्तलिखित ग्रन्थ भूमि-अधिकार सम्बन्धी सामाजिक इतिहासक साक्षी बनैत अछि। किन्तु मूल पुस्तिकाक पृष्ठ, भाषा, भू-अधिकारवर्णन अथवा अदालतक विशिष्ट उद्धरण नहि। कथाकार पोथीक दीर्घ परम्परा आ वर्तमान उपयोगकेँ जोड़ैत, शब्दशः दस्तावेजी प्रतिलिपि नहि छापैत। एतय लेखनक सामाजिक भूमिका कथा भीतर बदलैत अछि।

त्रिविध साधन : पंजी, शिक्षा आ स्त्री-संगठन

चम्पावतीक कार्यक्रम एक अकेल गुप्त चमत्कार नहि। पंजीक तिथि–साक्षी, पाठशालाक शिक्षित युवा वकील, स्त्रीसभाक गाम-समर्थन, आ हरिपतिक पोथी—अलग स्रोतक सामाजिक योगदान एकहि उद्देश्य लेल जुटैत अछि। एहि घटनात्मक संगममे उपन्यासक अनेक पूर्व प्रसंग परिणामदायी होइत छथि। एकटा महाकथाक बहुल वस्तु-पात्र-जाल केवल विस्तार नहि, अग्रिम संकटमें क्रिया-शक्ति दैत अछि। एकर साहित्यिक गुण दीर्घ तैयारीक स्मरणीय प्रतिफल।

अदालतक दृश्य : परिणाम कथित, बहस संक्षिप्त

मुख्य गद्य कहैत अछि जे रघुबीर सिंह अपन दावाक ठोस समर्थन नहि जुटा सकल आ अदालतमे पराजित भेल। न्यायाधीशक छोट प्रशंसात्मक वक्तव्य अछि, मुदा दिन-दिनक जिरह, गवाहक पारी, प्रतिपक्षी वकीलक कथन वा आदेशपत्रक पूर्ण लेखा नहि। एहि कारण कानूनी परिणाम निश्चित, प्रक्रियाक विस्तार सीमित। कथाक गति अधिक तेज रहबाक कारण विजयक सामाजिक अर्थ प्रमुख, न्यायिक नाटकक तनाव संक्षिप्त।

न्यायाधीशक दृष्टि : संस्थाक भूमिका बदलैत अछि

पूर्व [–६८]मे न्यायालय भोलाक विवाद पाँच वर्ष टारल; [–६६]मे पद्माक हिंसा ‘घरेलू’ कहि अस्वीकार। वर्तमान न्यायाधीश अभिलेखक विस्तारक प्रशंसा करैत भूमि-दावा अस्वीकार करैत छथि। एकहि संस्थाक तीन भिन्न चित्र समाजक बदलैत क्षमता दिखबैत अछि, सर्वकालिक एकरेखीय ‘अदालत खराब’ वा ‘अदालत सदैव न्यायपूर्ण’क कथाक बदला। मुदा न्यायाधीश एके व्यक्ति छथि—एहन कथा नहि। उपन्यास संस्थाक भूमिका बदलनाइ चुनैत अछि, वैयक्तिक चरित्र निरन्तरता नहि।

भूमि-अधिकारक विजय : संकटसँ स्थितिपरिवर्तन

अध्याय आरम्भमे चर्मकार टोलाक भूमि नूतन दावासँ संकटग्रस्त; अन्तमे रघुबीर सिंह पराजित आ टोलाक अधिकार सुरक्षित। ई मुख्य बाह्य घटना-सूत्रक स्पष्ट अवस्थापरिवर्तन अछि। कथा न्यायाधीशक दृष्टिमे प्रमाणक व्यवस्थितताक उल्लेख करैत, मुदा विजयक बाद टोलाक जनसभक उत्सव, घर-आँगन वा खेतमे प्रत्यक्ष अनुभव नहि। सामुदायिक परिणाम महत्त्वपूर्ण होइतहुँ प्रभावित समुदायक स्व-अनुभूति संक्षिप्त अछि। नायिका चम्पावतीक संवाद घटनाक भावात्मक केन्द्र बनैत अछि।

बूढ़बाक भाषण : बिखरल पात्रसभक पुनर्समागम

अन्तिम भाषणमे यादवानन्दक नोटबुक, हरिपतिक पोथी, मंदाकिनीक पाठशाला आ सुलोचनाक राति-सभा एक संग अबैत अछि। एहि नामसूचीमे पूर्वकथाक अलग-अलग सामाजिक उद्यम एक परिणामक हेतु पुनः संगठित होइत अछि। पाठक पहिलसँ जानल पात्रसभकेँ प्रत्यक्ष वापस नहि देखैत, मुदा हुनकर काज वर्तमान विजयक कथात्मक कारक बनैत अछि। ई दीर्घ महाकथाक पुनर्समागमक प्रविधि अछि, मात्र प्रशंसामूलक नामावली नहि; तथापि सभ पुरान संस्थाक योगदानक परिमाण अलग मापल नहि गेल।

बूढ़बाक ‘बदला’ : शब्दार्थक नाटकीय रूपान्तरण

बूढ़बा घोषणा करैत छथि जे ‘सुखदेवक बदला’ प्रतिशोध नहि, न्याय अछि। एहि वाक्यमे शीर्षकक अर्थ अन्तमे पुनः लिखल जाइत अछि। सुखदेव स्वयं उपस्थित नहि, तेँ बदला हुनकर कर्म नहि, हुनकर स्मृतिसँ जुड़ल सामुदायिक उत्तराधिकारीसभक सफलता। एहि परिवर्तनसँ कथा हिंसाक द्वितीय चक्रकेँ मंचित नहि करैत, ऐतिहासिक क्षतिक उत्तर सामाजिक क्षमता निर्माणमे खोजैत अछि। मुदा पछिला सुखदेवक व्यक्तिगत मृत्यु-अन्यायक पूरा उपचार एतेक समय बाद स्वयं सम्भव नहि, ई प्रतीकात्मक उत्तराधिकारक न्याय अछि।

चम्पावतीक आँसू : परिणामक भावात्मक क्षण

चम्पावती अदालतक विजयपछाति बूढ़बासँ पुछैत छथि—की पुरखाक संघर्ष व्यर्थ नहि गेल? एतय औपचारिक भूमि-विजय पात्रक वंशगत स्मृति-भावना सँ जुड़ैत अछि। आँसू राहत आ दुखक संयुक्त संकेत बनैत अछि; कथावाचक ओहि आँसूकेँ किसी एक नियत भाव-सूत्रमे बंद नहि करैत। बूढ़बाक उत्तर संघर्षक निरन्तरताकेँ अर्थ दैत अछि। एहि संवादमे सामाजिक फैसला केवल दस्तावेजी परिणाम नहि, पूर्व पीढ़ीक जीवनक नैतिक पुनर्वाचन बनैत अछि।

सुखदेवक स्वयं आवाज : स्मृतिमे उपस्थित, वर्तमानमे अनुपस्थित

शीर्षक सुखदेवकेँ प्रमुख नाम दैत, लोकगीत हुनकर देहक पीड़ा कल्पित करैत, गद्य बूढ़बाक वचनमे हुनकर पुरान त्रासदी याद करैत अछि। मुदा सुखदेव वर्तमान घटनामे प्रत्यक्ष संवाद नहि करैत। एहि अनुपस्थित उपस्थितिक रचना महत्त्वपूर्ण अछि: व्यक्ति मरि वा समय-पार भेलाक बाद हुनकर संघर्ष नव पीढ़ीक क्रियासँ अर्थ पबैत अछि। तथापि जीवित टोलावासीसभक स्वतन्त्र अनुभव कम वर्णित, तेँ स्मृतिक ऊँच स्वर एकटा वर्तमान बहुस्वरता छिपाबि सकैत अछि।

कथनगत प्रतिध्वनि : इतिहास घुरल, नतीजा बदलल

चम्पावतीक ‘इतिहास फेर सँ घुरि रहल’क वाक्य पुनरावृत्तिक अपेक्षा स्थापित करैत अछि। कथाकार दुई घटना समान रखैत नहि: पुरान भूमि संकट असुरक्षा, वर्तमान दस्तावेजी प्रतिरोध विजय। एहि भिन्नतामे चक्राकार इतिहासक बदला बदलल सामुदायिक क्षमता कथा बनबैत अछि। पुनरावृत्ति केवल पीड़ा फेर भेटब नहि; पहिले अनुभवक संसाधन नव क्रियामे उतरबाक कारण अन्तिम परिणाम बदलैत अछि। एहि कारण [−९२] आ [−६४]क अन्तर्पाठीय तुलना पुस्तकक लम्बा समयव्यापी संरचनामे उपयोगी अछि।

भूमि आ दस्तावेज : स्थानक कथा

चर्मकार टोलाक भूमि एक भौतिक स्थल अछि, जकर अधिकार लिखित अभिलेखक माध्यमे कथामे दोबारा सुरक्षित कहल गेल। स्थल कहानीक भावनात्मक केन्द्र, लिखित पंजी ओकर ऐतिहासिक पहचानक वाहक। एतय साहित्यक वस्तु—पोथी—जमीनक जीवनाधारित प्रश्नमे उपयोगी होइत अछि। तथापि भूमि-नक्शा, घरक संख्या, तालाब आ खेतक वास्तविक वितरण नहि। स्थल एक सामूहिक अस्तित्वक प्रतीक बनैत, समाज-भूगोलक पूर्ण मानचित्र नहि।

स्त्री नेतृत्वक एकाधिक ऐतिहासिक स्तर

रत्ना पुरान भूमि-अधिकारक पंजीमे नामित, मंदाकिनी शिक्षा-परम्परामे, सुलोचना राति-सभामे आ चम्पावती वर्तमान मुकदमाक संयोजक—स्त्रीसभक क्रिया चारु कालखण्डसँ एकजुट देखाइत अछि। मुदा सभ एकहि वंशक छथि अथवा सभ एक समान सामाजिक समुदायसँ, एहन दावा कथा नहि दैत। साहित्यिक सामर्थ्य एहि विविध कालिक भूमिकाक अन्तर्ग्रथनमे अछि। भिन्न स्त्री नेतृत्वक नामकेँ एक व्यक्ति-जकाँ समेटब रचनात्मक बहुलताकेँ घटाओत।

वकीलसभक अनामता आ इतिहासक कर्तृत्व

युवा वकीलसभक काज महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा हुनकर नाम, तर्क आ अदालतक बोलती आवाज अनुपस्थित। चम्पावती निर्णय-संयोजनक चरित्र, वकील सामूहिक पेशागत समूह रूपमे देखाइत छथि। एहि कथन-वितरणमे नायिका केन्द्रीय, संस्थागत विशेषज्ञता पार्श्वभूमि। कृति शिक्षा परम्पराक सफल परिणति बतबैत अछि, मुदा नव पीढ़ीक पेशागत अनुभवक स्वतन्त्र छोट कथा नहि बनबैत।

न्यायाधीशक प्रशंसा : कथावाचकीय वैधता

अदालतक न्यायाधीश चम्पावतीक प्रस्तुत अभिलेख देखिय ‘विस्तृत, सुसंगत, बरख-दर-बरखक’ रेकॉर्डक प्रशंसा करैत छथि। अदालतक भीतरक आवाज गामक स्वयं-इतिहास चेतनाक सार्वजनिक मान्यता बनैत अछि। मुदा एहि प्रशंसासँ कृतिक प्रत्येक पूर्वकथाक ऐतिहासिक पात्र वास्तविक बाह्य अभिलेखमे सिद्ध होइत नहि। न्यायाधीश उपन्यासक पात्र छथि, हुनकर वचन कथाविश्वक भीतर अधिकार-संकेत। लेखकक आत्म-प्रमाणीकरणक तकनीक रूपमे ई उपयुक्त, पर पाठकक आलोचनात्मक दूरी जीवित रहबाक चाही।

समय-सङ्कोचन : शताब्दी सँ एक मुकदमा धरि

मुख्य कथा राजस्व-सर्वेक्षणक वर्तमान सँ शुरू होइत, एक क्षणमे सोमर–रत्नाक पुरान युग धरि घुरैत, फेर अदालतक वर्तमान आ बूढ़बाक दीर्घ स्मृतितक विस्तार पबैत अछि। अनेक शताब्दी किछु पत्र-पंजीक उल्लेखमे सिमटि जाइत अछि। एतय फ्लैशबैक के एक विस्तृत दृश्य नहि, नामित सांस्कृतिक अभिलेखक माध्यमे अतीतक सङ्कुचित उपस्थिति अछि। कहानी एक मुकदमाक आसपास दीर्घकालिक कारणसभकेँ जोड़ैत अछि।

गीतक क्षमा आ गद्यक प्रतिरोधक विपर्यास

‘क्षमाक बाट’ गीत बदला लेल उठल आगिक परित्यागकेँ निर्णायक घटना बनबैत अछि। गद्य चम्पावतीक साक्ष्य-संगठन आ अदालतक फैसला प्रस्तुत करैत अछि; क्षमादानक प्रत्यक्ष संस्कार नहि। ‘प्रतिशोध नहि, न्याय’क बूढ़बा-वचन गीतक नैतिक लक्ष्यसँ समरूप, मुदा घटना-संरचना भिन्न। गीत व्यक्तिगत भावनात्मक आत्मसंयम, गद्य सामूहिक संस्थागत प्रतिरोधक कथा। एहि अन्तरकेँ एकहि प्रमाणित सुखदेव-घटना बनि प्रस्तुत करब कथा-प्रमाणक मिलावट होएत।

भविष्यमुखी नाम-स्मृति : समाप्ति की केवल अन्तराल?

बूढ़बा कहैत छथि जे कोनो संघर्ष व्यर्थ नहि जँ ओकर स्मृति जीवित रहय। ई वाक्य अतीतक दुखकेँ वर्तमान विजयक अर्थ देत, मुदा समाजमे भविष्यक फेर भूमि-अन्याय होएबाक सम्भावना स्वतः समाप्त नहि। कथा एहि मुकदमाक सफल समापन देखबैत अछि, सम्पूर्ण सत्ता-असमानताक अन्तिम समाप्ति नहि। एक विस्तृत उपन्यासक केन्द्रिय स्मृति-व्यवस्था एतय आशावादी गाम-इतिहासक रूप पबैत अछि।

वर्ग आ जाति-वाचिक रिक्ति

चर्मकार टोला विवादक नामित केन्द्र, मुदा निवासीसभक प्रत्यक्ष व्याख्या, स्वतन्त्र स्त्री-वाणी, श्रमिकक खेती-आवासक चिंता आ निर्णयक पश्चात् दैनन्दिन असर नहि। चम्पावती, बूढ़बा, जमींदार आ न्यायाधीशक संवाद घटनाक प्रमुख अर्थवाचक छथि। एहि रूपमे भूमिसंघर्षक सामाजिक समुदाय प्रतिनिधित्व-प्रक्रियामे आंशिक परोक्ष रहैत अछि। कृतिक सामूहिक सफलता स्वीकारने नहि बोल सकल व्यक्तिसभक स्थानपर आलोचनात्मक ध्यान आवश्यक।

सामाजिक संस्थाक प्रतिफल : कथा-बुनावट

हरिपतिक पोथी लेखनक, मंदाकिनीक पाठशाला शिक्षाक, यादवानन्दक छाया-पंजी अभिलेखक, सुलोचनाक राति-सभा संगठनक कथा-सूत्र छल। ओ सभ पृथक अध्यायमे स्थापित, एतय एक उद्देश्य लेल संगठित। एहि प्रकार पूर्वकथाक विस्तार सार्थक प्रतिफल देत अछि। एहन संयोजन नहि होइत तँ महाकथा कतिपय सामाजिक प्रविष्टिक सूची मात्र रहि जायत। वर्तमान अध्याय ओहि कथासूत्रसभक परस्पर निर्भरताक श्रेष्ठ उदाहरण बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमासभक पुनर्स्मरण

नव जमींदार पुरान उग्रसेनक वंशज नहि; गीतक आगि-दृश्य मुख्य गद्यमे नहि; अदालतक विस्तृत प्रतिपक्षी बहस नहि; निर्णयक वास्तविक लिखित आदेश प्रस्तुत नहि; चर्मकार टोलाक सदस्यसभक स्वतन्त्र प्रतिक्रिया कम; वकील अनाम; पुरान पंजीक शब्दशः अंश अनुपस्थित। ई सभ स्तरीकृत सीमासभ छथि—किछु कथावाचकीय संक्षेप, किछु गीत–गद्यक भिन्नता, किछु पात्रप्रतिनिधित्वक संकुचन। एकरेखीय ‘भूल’क सूची बनाउ बिना रचनाक उपलब्धिक संग एहि प्रश्नसभकेँ राखब उचित।

समग्र निर्णय आ स्रोत-सीमा

‘सुखदेवक बदला’ हिंसक प्रतिशोधक अपेक्षाकेँ दस्तावेजी सामुदायिक विजयमे बदलबाक सशक्त कथा अछि। चम्पावतीक नेतृत्व, छाया-पंजी, हरिपतिक पोथी, शिक्षित वकील, स्त्रीसभाक सहयोग आ न्यायाधीशक सार्वजनिक मान्यतासँ शताब्दीगत कथा-धागा एक परिणामपर जुड़ैत अछि। मुख्य सीमा गीतक सुखदेवक क्षमादृश्यक गद्यमे अनुपस्थिति आ वास्तविक चर्मकार टोलाक बहुस्वरक संक्षेप। अगिला [–६३] छापाखानाक माध्यमे स्मृतिक भविष्यबोधक नूतन संकट प्रस्तुत करैत अछि।

प्रकरण ३८ | मूल अध्याय –६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना

पूर्वकथाकाल · मुद्रणक प्रवेश, आत्म-सचेतन आख्यान, अधूरापन, सम्पादकीय स्थगन आ कथाक प्रसार

तेसर अध्यायक पाठसीमा आ कथारूप

अध्याय [–६३] ‘छापाखानाक पहिल पन्ना’ मूल अनुक्रमणिकानुसार पृष्ठ २६५ सँ शुरू होइत अछि, अगिला [–६२] पृष्ठ २६९ सँ; अतः २६५–२६८ अनुमानित मुद्रित परास। फकरा, ‘पहिल छपल नाम’ छापा-मंगल गीत, देवकीनन्दन–हरिपति गंगाधर–बूढ़बाक निर्णय-गद्य आ अध्यायोत्तर मुद्रण-तकनीक टिप्पणी अलग स्तर छथि। कथाक केन्द्र तकनीकी यन्त्रक आश्चर्य मात्र नहि; प्रकाशित भऽ एक रूपमे बन्द होएब आ जीवित कथा रूपमे बढ़ैत रहबाक विकल्पक संघर्ष अछि। एहि आत्म-सचेतन प्रश्नसँ उपन्यास अपन रचनागत अवस्थापर स्वयं विचार करैत अछि।

ई पूर्वगणना थिक, स्वयं घटना-संख्या नहि। मुख्य कथामे छापाखानाक प्रवेश, गंगाधरक प्रस्ताव, बूढ़बाक विलम्ब-सलाह, भविष्यक वचन आ छोट पुस्तिकासभक तत्काल मुद्रण—ई वास्तविक अवस्थापरिवर्तन छथि। कथा ‘सभ सामग्री छापल जाए’क एकसमान नतीजा नहि दैत, बल्कि स्थानीय ज्ञानक चयनित प्रसार आ प्रमुख महाकथाक स्थगन बीच भेद स्थापित करैत अछि।

शीर्षकक पहिल पन्ना : कोन पन्ना छपल?

‘छापाखानाक पहिल पन्ना’ सुनितहि पाठक बूढ़बाक महाकथाक पहिल मुद्रित पन्ना अपेक्षित कऽ सकैत छथि। मुदा मुख्य गद्यमे बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा अखन नहि छापबाक निर्णय होइत अछि; पाठशाला, राति-सभा आ कृषि-ज्ञानक छोट-छोट पुस्तक छपैत अछि। शीर्षक एहि प्रकार व्यापक मुद्रण-युगक प्रथम कदम चिन्हैत अछि, बूढ़बाक

महापुस्तकक वास्तविक प्रकाशन नहि। एहि कथा-अपेक्षाक उलटावमे अध्यायक नाटकीय अर्थ अछि: पहिल छपल पन्ना कथाक अन्तिम प्रमाण नहि, अनेक सम्भावना खोलबाक तकनीकी अवसर।

फकराक स्थायित्व-बोध : मेटनाइ कठिन, असम्भव नहि

आरम्भिक फकरा कहैत अछि ‘पहिल छपल पन्ना—नाम आब मेटाएब कठिन’। ‘कठिन’ शब्द सामुदायिक स्मृतिक नया विस्तार सूचित करैत अछि, पूर्ण अविनाशिता नहि। छापल प्रति अनेक हाथमे फैलि सकैत अछि, तें एकल पाण्डुलिपिक नुकसानक असर घटैत अछि। मुदा छपाइ नामक सत्य अथवा कथाक पूर्णता सुनिश्चित नहि करैत। फकराक मर्यादित आशा गीतक अत्यन्त निश्चयात्मक अविनाशी भाषासँ भिन्न; एहि आन्तरिक अन्तरकेँ नोट करब आवश्यक।

‘पहिल छपल नाम’ गीत : स्याही आ लोहेक क्रिया

छापा-मंगल गीतमे लोहाक अक्षर सजब, कारी स्याही, यन्त्रक हाथ घुमब आ एक पाँतीक अनेक प्रति बनबाक दृश्य अछि। गद्यक भीतर छापाखाना ‘एकहि दिनमे सैकड़ों समान पन्ना’ देबाक आश्चर्य अछि, मुदा कोन वास्तविक यन्त्र, कतेक कर्मचारी, टाइपक बनावट वा छपाइक दिनक समारोह चित्रित नहि। गीत एक काल्पनिक श्रमदृश्य रचैत अछि, गद्य तकनीकक सामाजिक प्रभावक संक्षेप। दूनू मिलि प्रविधिक आगमनकेँ श्रव्य आ दृश्य ऊर्जा दैत अछि, ऐतिहासिक छपाइ मशीनक तकनीकी पुस्तिका नहि।

गीतक ‘बाढ़ियो नहि मेटाबय’ : अतिशयोक्तिक प्रश्न

लोकगीत घोषणा करैत अछि जे एक बेर छपल नामकेँ आगि जरा नहि सकै आ पानि बहा नहि सकै। ई काव्यक स्मृतिविश्वासक अत्युक्ति अछि; कागज, स्याही आ पुस्तक भौतिक क्षतिसँ मुक्त नहि। मूल उपन्यास स्वयं बाढ़ि, जल आ पोथीक नुकसानक दीर्घ पृष्ठभूमि राखैत अछि, तें गीतक शाब्दिक अविनाशिता अधिक आलोचनात्मक प्रश्न खोलैत अछि। गद्यक बूढ़बा छपाइक सामग्रीक अजरत्व नहि, कथा अधूरा रहबाक संकट बतबैत छथि। लोकगीत आ नायकक संकोचक भिन्नता एहि अध्यायक मूल विचार-तनाव अछि।

चम्पावतीसँ देवकीनन्दन : उत्तराधिकारक चाल

मूल गद्य चम्पावतीक बाद ओकर बेटा देवकीनन्दन अनुष्ठानक भार पाबय लगैत छथि। पूर्व [−६४]क महिला भूमि-संघर्षमे कृतकार्य; उत्तरकालमे परिवारक प्रतिनिधि मुद्रणक नयका अवसरपर परामर्श लेबैत छथि। पीढ़ीक बदलनाइ एकहि वाक्यमे अछि; चम्पावतीक मृत्यु, देवकीनन्दनक शिक्षा वा पदस्वीकृतिक ठोस तिथि नहि। एहि संक्षेपसँ महाकथाक निरन्तर पात्री-परम्परा कायम, प्रत्येक पीढ़ीक विस्तृत जीवनी गौण।

शहर–गामक दूरी : नव तकनीकक आगमनमार्ग

छापाखाना गामसँ किछु कोस दूर नगरमे खुजैत अछि। एहि छोट भौगोलिक अन्तरमे समाजक नयका ज्ञान-परिचालनक मार्ग बनैत अछि। नगरमे मशीन, गाममे पुरान कथा; गंगाधर दू स्थल बीच दौड़ि नव सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। कथा शहरकेँ पूर्ण आधुनिक आ गामकेँ जड़ रूढ़िवादी नहि कहैत: गामक ज्ञान कागजपर पहिले सँ

सुरक्षित, आ नव प्रविधिक उपयोग ग्राम्य संस्थासभ करैत छथि। एहि स्थान-विन्यासमे परम्परा आ परिवर्तनक सहयोग सम्भव अछि।

मैथिली-हिन्दी छपाइक उल्लेख : भाषाक सामाजिक प्रसार

नगरक नव छापाखाना मैथिली आ हिन्दी दुनूमे पोथी छापैत अछि, ई कथावाचकक स्पष्ट सूचना। एहि द्विभाषी जगतमे गामक सांस्कृतिक ज्ञान विस्तृत पाठक-वर्ग धरि पहुँचेबाक सम्भावना बनैत अछि। मुदा छपल पुस्तकक वास्तविक प्रतिक संख्या, पाठकक जाति–पेशा, भाषा-चयनक नीति अथवा क्षेत्रक ऐतिहासिक मुद्रण-वर्ष नहि। एहि कारण कथा मुद्रणक सामाजिक प्रवेशक साहित्यिक रूप, भारतक वास्तविक छापाखाना-इतिहासक दिनांकित दस्तावेज नहि।

गंगाधर : लेखक-प्रकाशकक दोहरी भूमिका

हरिपति गंगाधर युवा लेखक-प्रकाशक छथि, नगरमे काज करैत छथि, पुरखाक गोपनीय पोथी विरासतमे पओने छथि। ओ छापाखानाक अवसर देखैत गाम दौड़ैत छथि। हुनकर व्यक्तित्व निजी प्रतिष्ठा चाहनिहार मात्र नहि; पुरान कथा व्यापक रूपमे सुरक्षित होएबाक उत्साहसँ चलैत अछि। मुदा प्रकाशनक आय, अनुबन्ध, पाठक-बाजार अथवा व्यक्तिगत भविष्य-योजनाक विस्तार नहि। एहि कारण ओ कथा भीतर नव माध्यमक प्रतिनिधि पात्र बनैत छथि; मुद्रण-व्यवसायी समाजक सर्वांग इतिहास नहि।

हरिपति गंगाधरक ‘सातम पीढ़ी’ : नामपुनरागमन

कथामे गंगाधर हरिपति कविक सातम पीढ़ीक वंशज कहल गेल, आ नाम पुरखाक सम्मानमे राखल गेल। एतय लेखकत्व व्यक्तिसँ वंशजक स्मृतिमे चलैत अछि, मुदा पुरान हरिपति कवि आ हरिपति गंगाधर एक व्यक्ति नहि। एहन नामपुनरावृत्तिक कारण पाठक गलतीसँ दू युगक पात्रकेँ एक बनाय सकैत; गद्य स्वयं वंशसम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। ‘सातम पीढ़ी’ आन कथाक हजारो बरखक समयसँ किन रूपमे बइठैत अछि, विस्तृत कालसारिणी बिना अनिर्णीत।

विरासतमे भेटल ताड़पत्रक पोथी : वस्तुक दीर्घजीवन

हरिपति गंगाधरकेँ पूर्वजक गोपनीय ताड़पत्रक पोथी प्राप्त अछि, जाहिमे बूढ़बा, हुलासा–जीवन्ती–सुखदेव, गंगेश–मालतीक कथा सुरक्षित कहल गेल। एतय भौतिक पोथी अतीतक नामित पात्रसभकेँ वर्तमान मुद्रणक निर्णयमे फेर उपस्थित करैत अछि। यद्यपि पोथीक लिखनिहार, संशोधनक पीढ़ी वा पृष्ठसंख्या विस्तारसँ नहि, ओकर भौतिक विरासत कथा भीतर एक वास्तविक क्रियात्मक संसाधन बनैत अछि। पुस्तक केवल धरोहर नहि, भविष्यक सम्भावित अनेक प्रति बनबाक स्रोत।

‘सम्पूर्ण कथा’ आ ‘अखनो अधूरा’ : मूल विरोध

गंगाधर उत्साहमे कहैत छथि जे अपन पुरखाक पोथीमे बूढ़बाक ‘सम्पूर्ण कथा’ अछि; बूढ़बा तत्क्षण कहैत छथि जे सुभागी, यशपति, पद्मा, रामसेवक आदि नाम एखन जुड़ि रहल छथि, तेँ कथा अधूरा। एतय ‘सम्पूर्ण’क दू अर्थ

भिड़ैत अछि—एखनधरि संकलित उपलब्ध वृत्तान्त बनाम भविष्यसहित अनवरत सामुदायिक आख्यान। समीक्षामे एहि अर्थांतरकेँ एक सम्भावित मेल मानल जा सकैत, मुदा मुख्य गद्य पूर्ण पोथी आ अधूरा जीवित कथा बीचक भाषा-संघर्ष स्पष्ट राखैत अछि। छपाइक स्थगनक सृजनात्मक कारण ओही अस्थिर पूर्णतामे अछि।

लिखित/अलिखितक भीतरी असङ्गति

अध्यायक अन्तिम गद्य कहैत अछि जे बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा ‘अखनहु अलिखित, अखनहु मौखिक, अखनहु जीवित’ रहल। मुदा ओहि अध्यायक पहिने गोपनीय ताड़पत्रक पोथीमे बूढ़बाक अनेक कथा लिखित उपलब्ध अछि। तेँ ‘अलिखित’ शब्द यदि सम्पूर्ण अन्तिम रूपक लेल प्रयुक्त अछि, मेल सम्भव; यदि सभ बूढ़बा-वृत्तान्तक अक्षरशः अनलिखित अवस्था, तखन प्रत्यक्ष विरोध। मुख्य कथा अपन पाठमे ई भेद पूर्ण स्पष्ट नहि करैत। एहि असङ्गतिकेँ नकारि नहि, ‘समग्र अन्तिम आख्यान’ बनाम ‘आंशिक लिखित संकलन’क व्याख्यात्मक सम्भावना रूपमे चिन्हब उचित।

गंगाधरक दौड़ : उत्साहक दृश्यात्मक गति

गंगाधर छापाखाना देखि गाम ‘दौड़ल आयल’ आ देवकीनन्दनकेँ उत्साहसँ पुकारैत छथि। एतय नगरसँ गामक चटक यात्रा तथा प्रत्यक्ष संवाद कथाक गति तीव्र करैत अछि। पाठक नव तकनीकक उत्साह एहि पात्रक शरीरगत क्रियामे अनुभव करैत अछि। तथापि यात्रा-मार्ग, समय अथवा छापाखानाक मालिकक संग हुनकर वार्ता नहि। कथा सामाजिक परिवर्तनक भावदृश्य छोट गतिशील क्रियासँ रचैत अछि, औद्योगिक वृत्तान्त नहि।

देवकीनन्दन माध्यम-पात्र : सूचना सँ परामर्श धरि

देवकीनन्दन गंगाधरक प्रस्ताव सुनि पीपरक बूढ़बाक लग प्रश्न लऽ जाइत छथि। एहि क्रममे ओ तकनीकक अन्तिम निर्णयकर्ता नहि, सामाजिक परम्परा आ नव लेखकक बीच संवादवाहक छथि। बूढ़बाक अनुभव सुनि फेर गंगाधर अपन योजना बदलैत अछि। कथा एहि त्रिकोणमे अलग कार्य बाँटैत अछि: नव माध्यमक प्रस्तावक, सांस्कृतिक परामर्शक वाहक, दीर्घ आख्यानक साक्षी। एकर कारण विरोध टकरावक हिंसामे नहि, संयुक्त निर्णयमे परिणत।

बूढ़बाक दीर्घ मौन : निर्णयपूर्व विराम

प्रस्ताव सुनि बूढ़बा ‘बहुत काल चुप’ रहैत छथि—कथाकार स्वयं कहैत अछि जे पैघ निर्णयसँ पहिने एहन चुप्पी अबैत अछि। ई विराम नाटकीय अवधि बढ़बैत अछि, जतय बाकी कथा-समय अत्यन्त संक्षिप्त। बूढ़बाक मौनक भीतर पूर्ण विचारक्रम लिखल नहि, मुदा तकर बाद ओ पुरान लिखन-नियमक स्मरण करैत छथि। एतय ‘मौन’ प्रसंगानुकूल गति-संयम आ ऐतिहासिक भारक संकेत अछि, रहस्यमय सूचना-दमनक अनिवार्य प्रमाण नहि।

पुरान भाषा-निर्णयक पुनःस्मरण

बूढ़बा कहैत छथि जे पहिनहि लेखक-वंशक लोक लिखबाक अनुमति पुछने छल, आ हुनकर आग्रह राजदरबारक अलंकृत भाषाक बदला गामक साधारण भाषा छल। एहि स्मरणसँ भाषा-नीति आ माध्यम-नीति एक दीर्घ वार्ता

बनैत अछि। पहिल प्रश्न ‘ककरा लेल, कोन भाषामे लिखब?’ छल; वर्तमान प्रश्न ‘कखन आ कतेक प्रतिमे छापब?’ अछि। एहि क्रमिक परिवर्तनमे परम्परा कठोर स्थिर निषेध नहि, प्रसंगानुकूल सम्पादकीय विवेक देखबैत अछि।

सुभागी-यशपति-पद्मा-रामसेवक : अधूरापनक सूची

बूढ़बा जे नाम हालहिमे जुड़ि रहल छथि हुनकामे सुभागी, यशपति, पद्मा आ रामसेवक स्पष्ट। इएह नामसूची कथा समापनक विरोधमे तर्कसँ बेसी पात्रगत स्मृति बनैत अछि। ककरो भविष्य एखन तय नहि, ककर पीड़ा सार्वजनिक विस्तार चाहैत अछि, ककर नाम सामाजिक संस्थामे नव अर्थ पबैत अछि। एहि कारण कथा छपाइक निर्णय ‘पूर्ण’ पुस्तकक सौन्दर्यसँ नापैत नहि, अनवरत पात्र-जीवनसँ नापैत अछि। मुदा सुभागीक विशेष पूर्व घटना वर्तमान अध्याय विस्तृत नहि करैत।

जड़िले जीवित कथा : समाप्ति-विरोधी आत्मवर्णन

बूढ़बाक कथन ‘कथा अखनहु जीवित अछि, अखनहु बढ़ि रहल अछि’क कारण पूर्णता एक मुद्रणपूर्व शर्त बनैत अछि। एहि विचारमे कृति अपन रचना-प्रक्रियाकेँ कथा-वस्तु बनबैत अछि—कथा स्वयं अपन लिखल/नलिखल अवस्था पर विमर्श करैत अछि। ई आत्म-सचेतन आख्यानरचना मे लेखक, पात्र, पाण्डुलिपि आ पाठकक भविष्यमूलक सम्बन्ध खुलैत अछि। पर सम्पूर्ण कथाकेँ कहियो पूर्ण नहि भऽ सकबाक सम्भावना सेहो एहि शर्तसँ उत्पन्न: जँ नाम निरन्तर जुड़ैत रहत तँ छपाइक निर्णायक क्षण के तय करत?

कथाकेँ ‘बन्न’ करबाक भय : पुस्तकक रूपक

बूढ़बा कहैत छथि जे आइए छापलाक बाद कथा ‘एकटा निश्चित रूपमे बन्न भऽ जायत’। ई आशंका मुद्रित वस्तुक शारीरिक कठोरता नहि, अर्थक सम्पादकीय स्थिरीकरणसँ जुड़ल। एक संस्करण पाठकक सोझाँ पूर्णरूपेँ प्रस्तुत होएत, जखन जीवन, नाम आ समाजक घटना आगाँ बढ़त। एहि भावमे पोथी समयक एक स्थितिक चित्र आ जीवित कथासमाज निरन्तर प्रवाह बनैत अछि। मुद्रण वास्तवमे संशोधित संस्करण वा आगामी परिशिष्टकेँ असम्भव नहि करैत; बूढ़बाक भय पात्रगत अनुभूति अछि, कथावाचकीय सर्वमान्य तकनीकी तथ्य नहि।

गंगाधरक आरम्भिक निराशा आ परिवर्तित इच्छा

बूढ़बाक उत्तर सुनि गंगाधर पहिने निराश होइत अछि, फेर तर्क बुझि स्थगन स्वीकार करैत अछि। एहि छोट मनोवैज्ञानिक घटनामे उत्साहित प्रकाशकक स्वप्न एक दीर्घ उत्तराधिकारक वचन बनैत अछि। ओ पूरा परियोजना त्यागैत नहि; भविष्यमे वंशज द्वारा छपबाक सम्भावना राखैत अछि। एतय पात्रक इच्छा नष्ट नहि, कालमापन बदलैत अछि—तत्काल मुद्रणसँ पीढ़ीगत संरक्षण धरि। कथाक लय नाटकीय प्रस्ताव आ संशोधित प्रतिज्ञाक स्पष्ट मोड़ रखैत अछि।

वंशजक प्रतिज्ञा : भविष्यक पाठकक निर्माण

गंगाधर कहैत अछि जे ओ आ हुनकर वंशज पोथी सम्हारि राखत, आ ‘जखन समय आबत’ कोनो भविष्यक वंशज ओकरा संसार लेल छापत। एहि वचनमे वर्तमान पात्र द्वारा भविष्यक अज्ञात पाठकक कल्पना अछि। लेखकत्व व्यक्तिगत देहसँ बहुपीढ़ीक कर्तव्य बनैत अछि। मुदा समय-निर्धारणक स्पष्ट कसौटी, कोन वंशज वा कौन संस्करण रहत, मूल कथामे नहि। एहि खाली स्थानसँ भविष्य-अध्यायक प्रतीक्षा बनैत अछि; वचन सम्पन्न मुद्रणक प्रमाण नहि।

आंशिक छपाइ : अनिर्णीत महाग्रन्थक संग निर्णीत उपयोग

बूढ़बाक कथा स्थगित रहैतहुँ गंगाधर छापाखानामे नारिकेल पात पाठशालाक पाठ्यक्रम, राति-सभाक नियमावली आ कृषि-ज्ञानक संग्रह छपबैत अछि। एहि तीनू वस्तुक वास्तविक मुद्रणक दावा मुख्य गद्यमे अछि। एतय जकर उपयोग वर्तमान समुदायक जीवनमे स्पष्ट, ओ प्रकाशित; जकर कथा निरन्तर बढ़ैत, ओकरा रोकल। एहि विरोधमे कृति ‘छपाइ बनाम परम्परा’क कठोर द्वैत नहि रचैत, बल्कि विषयानुसार माध्यमक चयन करैत अछि। आलोचनाक मुख्य प्रश्न ई अछि जे छोट संस्थागत पाठकेँ निश्चित रूप देब सहज मानल गेल, मुदा महाकथाकेँ नहि।

राति-सभाक नियमावली : मौखिक संस्था लिखित अनुशासनमे

पछिला [–६६]मे स्त्रीसभक राति-सभा कानूनतः अबाध्य सामाजिक संस्था बनल; [–६३]मे ओकर ‘नियमावली’ छपैत अछि। एहि अन्तराध्यायीय सम्बन्धसँ एक संगठनक सार्वजनिक बैठकीसँ लिखित-छापल ज्ञानतक गति बनैत अछि। मुदा मूल [–६६]मे नियमावलीक विस्तृत लेखनदृश्य नहि, आ वर्तमान [–६३]मे प्रकाशित नियमक धारासभ नहि। तेँ स्त्री-न्यायक कौन विशिष्ट प्रक्रिया मुद्रित भेल, ई अनिर्णीत। कथा संस्थाक ज्ञानक प्रसार देखबैत अछि, कानूनी संहिताक पूरा रूप नहि।

कृषि-ज्ञानक छपाइ : हाशियाक लोकज्ञानक नव माध्यम

गंगाधर गामक कृषि-ज्ञानक संग्रह सेहो छपबैत अछि। एहि उल्लेखसँ छपाइ केवल दर्शन, साहित्य वा न्यायसभा धरि सीमित नहि; किसानक अनुभवक लिखित सार्वजनिकता सेहो पबैत अछि। किसानसभ स्वयं कथामे छपाइ निर्णयपर कोन भूमिका निभौलक, सम्पादक के, खेतक अनुभवकेँ कोन भाषा-बोलीमे दर्ज कएल गेल, पाठ नहि दैत। लोकज्ञानक सार्थक प्रतिष्ठाक सम्भावना अछि, मुदा जमीनी श्रमक स्वतन्त्र आवाज मुद्रित पृष्ठमे कतेक रहल, अनुत्तरित।

पाठशालाक पाठ्यक्रम : शिक्षाक सामाजिक पुनरुत्पादन

नारिकेल पात पाठशालाक पाठ्यक्रम छपबाक अर्थ शिक्षा अब केवल गुरु–शिष्यक मुखामुखी पाठ नहि, बहु-प्रतिवला साझा पाठ्यवस्तु भऽ सकैत अछि। एहि परिवर्तनसँ अध्ययनक भौगोलिक विस्तारक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि। मुदा ‘सैकड़ों प्रति’ बनि सकबाक तकनीकी क्षमता आ एहि पाठ्यक्रमक वास्तविक छपल प्रतिक

संख्या अलग बात। कथामे कतेक विद्यालयक उपयोग, जातिवार छात्रक पहुँच वा नयका पाठ्यक्रमक विषय नहि। कथा माध्यमक संक्रमण सूचित करैत अछि, शिक्षा-व्यवस्थाक पूर्ण सर्वेक्षण नहि।

पात, ताड़पत्र, कागज, छपल पन्ना : माध्यमक शृंखला

उपन्यासक आरम्भिक नारिकेल पातपर स्मृतिनाम, हरिपतिक गोपनीय ताड़पत्रक लेखन, छाया-पंजीक नोटबुक आ आब मुद्रित पन्ना—ई वस्तुसभ अलग कालमे नामक वाहक बनैत छथि। नव यन्त्र पुरान माध्यम मेटबैत नहि; ओकरा पुनर्वितरणक नव सम्भावना दैत अछि। कथानकक दीर्घ वस्तुशृंखला विश्वसनीयता पबैत अछि जखन उपयोग बदलैत अछि, केवल वस्तुक सूची रहलासँ नहि। गंगाधरक हाथमे ताड़पत्रक पोथी छपाइक सम्भावित स्रोत, जखन पाठशालाक सामग्री वास्तवमे मुद्रित भऽ चुकल।

छपाइक स्थायित्व आ पाण्डुलिपिक नाजुकता : कथा-दृष्टिक अन्तर

गीत घोषणा करैत अछि जे आगि आ बाढ़ि छपल नामकेँ मेटा नहि सकत। गद्यक पात्र गंगाधर मुद्रित अनेक प्रतिकेँ विलुप्ति कम करबाक साधन बुझैत छथि। बूढ़बा उलटे स्थायित्वक लाभसँ अधिक निश्चित संस्करणक अपूर्णता लेल चिन्तित। एतय तीन दृष्टि—लोकगीतक अक्षय विश्वास, प्रकाशकक संरक्षणात्मक उत्साह, साक्षीक विकासशील कथाक भय—एक तकनीकक तीन अर्थ बनबैत अछि। एहि बहुस्वरता अध्यायक विशेष साहित्यिक उपलब्धि; कोणो एक वाणी समस्त रचनाक निर्विवाद अन्तिम सत्य नहि।

मौखिकता बनाम लिखितताक कठोर विरोधक सीमासभ

अन्तिम गद्यमे कथा ‘अलिखित, मौखिक, जीवित’ कहल गेल, मुदा ताड़पत्रक पोथी, छाया-पंजी आ अन्य लेखन पूर्वहिसँ मौजूद। एहि कारण मौखिक/लिखितको विरोध शाब्दिक अर्थमे पूर्ण पृथक नहि। सम्भवतः ‘पूर्ण, अधिकृत अन्तिम संस्करण नहि’क अर्थ कथा निर्वाह करैत अछि। तखन ‘मौखिक’ शब्द जीवित सामुदायिक पुनःकथनक प्रतीक बनैत अछि। मुदा गद्य ई भिन्नता स्पष्ट व्याख्यायित नहि, तेँ आलोचनामे पाठगत तनावकेँ स्वीकारब आवश्यक। साहित्यिक भाषा निश्चयात्मक, माध्यमक वास्तविक स्थिति मिश्रित।

मिथिला-भाषाक सांस्कृतिक जगत आ राज्य-भाषाक सम्बन्ध

नव प्रेस मैथिली आ हिन्दीमे पुस्तक छापैत अछि। बूढ़बा पहिने राजदरबारक अलंकृत भाषाक बदला गामक साधारण भाषाक आग्रह कएने छलाह। एहि दो संकेतक संग पढ़ने भाषा-प्रयोगक मूल्यगति उजागर होइत अछि: सांस्कृतिक स्मृति केकर भाषा आ केकर पाठक लेल उपलब्ध? मुदा छापल पाठ्यक्रमक सटीक भाषावितरण नहि, गंगाधर कोन भाषा चुनलनि सेहो विस्तारसँ नहि। परिणामतः भाषा-प्रतिष्ठाक महत्वाकांक्षा स्पष्ट, हर पुस्तकक वास्तविक द्विभाषिकता अप्रमाणित।

परापाठीय भविष्य : कृति अपन प्रकाशनक स्वप्न देखैत अछि

अध्यायोत्तर टिप्पणी बूढ़बाक छपाइ-स्थगनकेँ उपन्यासक वास्तविक प्रकाशनक दूरस्थ पूर्वाभास कहैत अछि। ई लेखककीय आत्म-सन्दर्भ अछि, गंगाधरक कालक घटनाक प्रत्यक्ष ज्ञान नहि। भविष्यक पाठक वर्तमान छपल

पुस्तक हाथमे रखि, कथा भीतर कथाक छपाइ स्थगित होएब पढ़ैत अछि। एहि विडम्बनामे ‘प्रकाशित कृति जे अपन अप्रकाशित रहबाक कारण कहैत अछि’क आत्म-सचेतन संरचना बनैत अछि। तथापि ई कथानकक नियोजित कलात्मक उपाय होएब आ ऐतिहासिक प्रकाशन-विवरणक प्रमाण अलग।

अधूरापनक सौन्दर्य आ सम्पादकीय अधिकार

बूढ़बाक निर्णय कथाकेँ जीवित राखबाक दावेपर आधारित अछि। लेकिन ‘कखन कथा पूर्ण?’ तय करबाक सांस्कृतिक अधिकार केकरा—बूढ़बा, लेखकवंश, गामक सभा, भविष्यक पाठक? संवादमे बूढ़बाक वाणी निर्णायक, गंगाधर मानि लैत अछि। एहि निर्णयमे अलग-अलग कथक/लिखकक स्वतन्त्र आवाज सीमित अछि। अधूरापन कलात्मक मूल्य राखैत अछि, मुदा अनिश्चित स्थगनसमेत लेखन-इतिहासक विकल्पक एक अभिजात अधिकार बनि सकैत। उपन्यास एहि लोकतान्त्रिक प्रश्नक विस्तृत सार्वजनिक बहस नहि दिखबैत।

छपाइक श्रमक अदृश्यता

गीतमे अक्षर सजएब, स्याही लागब, यन्त्र घुमबक श्रम बिम्ब अछि, मुदा गद्य प्रेसक मजदूर, अक्षर-संयोजक, कागज बनौनिहार, छपैयाक सामाजिक स्थिति नहि बतबैत। लेखक-प्रकाशक गंगाधरक उत्साह दृश्य प्रधान, भौतिक उत्पादन सामूहिक प्रक्रिया सारांशमे। एहि कारण छपाइक औद्योगिक परिवर्तन साहित्यिक आश्चर्य बनैत अछि, श्रमिकक जीवनक कथा कम। संस्थागत माध्यमक सामाजिक इतिहासक आलोचनाक लेल ई प्रमुख प्रतिनिधित्वगत रिक्ति।

दृश्य-सारांश-संवादक लय

नगरमे प्रेस खुलब कथावाचकीय सारांश; गंगाधरक गाम पहुँचना तीव्र दृश्य; देवकीनन्दनक बूढ़बा लग प्रश्न लऽ जाना संक्रमण; बूढ़बाक मौन आ छपाइपर दीर्घ उत्तर विचारात्मक विस्तार; गंगाधरक वचन मानसिक परिवर्तनक क्षण; अन्तमे छोट पुस्तकसभक छपाइ पुनः सारांश। एहि लयमे तकनीकक घटना नायकीय निर्णय-नाटक बनैत अछि, मुद्रण-प्रक्रियाक श्रमदृश्य नहि। कथा एकर आत्म-सचेतन केन्द्रीय संवादपर अधिक समय खर्च करैत अछि।

मूल अन्तर्विरोध आ संक्षिप्त मूल्यांकन

गीतक छपल नाम ‘आगि–पानिसँ अविनाशी’क दावा भौतिक किताबक नाजुकतासँ टकराइत। गंगाधरक ‘सम्पूर्ण कथा’ आ बूढ़बाक ‘अधूरा’ संवाद भाषिक सीमा खोलैत; पोथी लिखल होइतहुँ अन्तिम गद्य ‘अलिखित’ कहैत। मुख्य पुस्तक स्थगित, मुदा पाठशाला, स्त्रीसभा आ कृषि-ज्ञान छपल—ई विरोध नहि, चयनित प्रसार। प्रेसक वास्तविक ऐतिहासिक तिथि अनिर्दिष्ट। एहि सबकेँ मिलाकऽ अध्याय आत्म-सचेतन साहित्यिक कृति बनैत अछि, पर एहन साहित्यक भीतर तकनीकी स्थायित्वपर किछु अति-निश्चयात्मक वचन सावधानी माँगैत अछि।

समग्र कथात्मक निर्णय आ स्रोतसीमा

‘छापाखानाक पहिल पन्ना’क मुख्य सफलता मुद्रणयन्त्रकेँ कृतिक स्वयं लिखल-जाइत अवस्था पर प्रश्न उठाबयवला कथा-उपकरण बनबैत अछि। गंगाधरक तत्काल उत्साह, बूढ़बाक मौन, अधूरा कथा-बोध, वंशजक भविष्यवचन आ छोट उपयोगी पुस्तकसभक मुद्रण—दूनू निर्णय एक साथ राखैत अछि। सीमासभ: प्रकाशन-

अन्तिमताक अत्यधिक भय, ‘सम्पूर्ण/अलिखित’क अस्पष्ट विरोध, गीतक अविनाशी भाषाक अतिशयोक्ति आ प्रेस-श्रमक अभाव। अगिला [−६२] ‘राहतक प्रतीक्षा’ अलग समय–संकट आ सामूहिक क्रियाक कथा खोलत।

प्रकरण ३९ | मूल अध्याय −६२ — राहतक प्रतीक्षा

पूर्वकथाकाल · अकालक अवधि, राहतक दूरी, सामूहिक कथानायक आ स्मृति-स्थलक नूतन कार्य

पाठपरिचय आ अध्यायक कथाधुरी

‘राहतक प्रतीक्षा’ अकालक समय सावित्रीदेवीक नेतृत्वमे ग्रामक आत्म-संगठनक कथा अछि। फकरा, ‘बाट जोहनि’ अकाल-गीत, मुख्य गद्य आ औपनिवेशिक अकाल-नीतिक अध्यायोत्तर टिप्पणी चारि अलग स्तर। सरकारी राहतक घोषणा आ तीन मास बाद ओकर आगमनक बीच ग्रामक रोजमर्रा बचबाक प्रयत्न मुख्य घटनात्मक धुरी अछि। कथा सरकारी सहायताक अस्वीकार नहि, केवल ओकर प्रतीक्षा कऽ निष्क्रिय रहबाक विकल्पक अस्वीकार देखबैत अछि।

ई पूर्वगणित आँकड़ा अछि, वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र संख्या नहि। कथामे एक बरखक असफल वर्षा, सरकारी योजना, साझा भंडार, रोजक रसोइ आ तीन मासक देरी संक्षिप्त अनुच्छेदमे समाहित। कालिक विस्तारक तुलना मे निकट दृश्य सावित्रीदेवी–बूढ़बाक संवाद आ राहत-अधिकारीसँ अन्तिम बातचीत अछि।

वर्षाक अभावसँ अकालक दृश्य

कथावाचक वर्षा पूर्ण असफल, खेत फाटल, अन्नभंडार खाली आ भूख द्वारपर आबि गेल—एहि चित्रशृंखलासँ संकट रचैत अछि। माटिक दरारि पर्यावरणक दृश्य, खाली कोठी घरेलू असुरक्षा। ‘भूख द्वारपर ठाढ़’क मानवीकरण वास्तविक अतिरिक्त पात्र नहि। कथामे खेतीक फसल, वर्षक तिथि अथवा घरवार अनाजक आँकड़ा नहि; तें ई समाजक अनुभवक सघन आरम्भ, कृषि-सर्वेक्षण नहि।

सावित्रीदेवीक प्रवेश : नाम आ उत्तराधिकार

देवकीनन्दनक बेटी सावित्रीदेवी सांस्कृतिक अनुष्ठानक नव उत्तराधिकारी छथि। हुनकर नाम पूर्वज सावित्रीक सम्मानमे राखल कहल गेल, जे नामक पुनरागमनक पारिवारिक विन्यास बनबैत अछि। मुदा देवकीनन्दनक मृत्यु वा पदहस्तान्तरणक विशेष तिथि लिखल नहि। सावित्रीदेवीक स्वतन्त्र पात्रत्व संकटमे प्रश्न करब, योजना गढ़ब आ अधिकारीकेँ जवाब देबमे प्रकट होइत अछि—ओ मात्र वंशपरम्पराक निष्क्रिय धारिका नहि।

राहतक योजना : घोषित सहायता आ अप्राप्त परिणाम

सरकार अन्न-वितरण, काज-बदला-अनाज आ चिकित्सा-सहायता घोषित करैत अछि। मुदा नजदीकक केन्द्र बीस कोस दूर, पंजीकरण जटिल; एहि द्वन्द्वमे औपचारिक घोषणा आ भूखल देहक तात्कालिक आवश्यकता टकराइत अछि। कथामे सरकारी अधिकारीक नाम, आवेदन-पत्रक शब्द आ पंजीकरणक व्यक्तिगत सुनवाई नहि। संस्थागत दूरी सामान्य कथावाचकीय सारांश बनि कथा-तनाव उत्पन्न करैत अछि।

बीस कोसक भूगोल

राहत-केन्द्रक ‘बीस कोस’क दूरी कथाक निर्णायक स्थलीय सूचना अछि। सरकारक सहायता नक्सापर निकटतम होइतहुँ भूखल परिवारक पहुँचसँ बाहर पड़ि सकैत अछि। मार्ग, वाहन, यात्रा-समय आ किराया निर्दिष्ट नहि। दूरीक साहित्यिक काम समय बढ़ाएब आ प्रशासनक दीर्घ प्रक्रियाकेँ देहगत असुविधासँ जोड़ब। एहि आधारपर सभ गामक राहत-केन्द्र समान दूर छल, से नहि कहल जाए।

पंजीकरणक कहानी : प्रक्रिया बनल व्यवधान

कतेको परिवार पंजीकरण करएबासँ पहिने कमजोर पड़ि जाइत छल—ई कथन संस्थागत प्रतीक्षाक संक्षिप्त चरम रूप। सरकारी नियमक विस्तारकेँ कथा नाट्यमंचपर नहि लबैत; ‘जटिल प्रक्रिया’क सूचना मात्र दैत अछि। फलतः विशिष्ट अधिकारीक दुष्कर्म नहि, व्यक्तिहीन कार्यप्रणालीक प्रभाव केन्द्रमे। एहि संक्षेपक कलात्मक लाभ अकालक संकट तुरन्त सामने रहब, सीमा प्रशासनिक जीवनक विविध आवाजक अभाव।

सुखदेव आ भोला : पुरान प्रतीक्षाक कथात्मक वापसी

बूढ़बा सावित्रीदेवीकेँ सुखदेव महतो आ भोला स्मरण करबैत छथि—एक घटिका-यन्त्रक क्रममे प्राण गमओने, दोसर अदालतक तारीखमे वर्ष। एहि अलग युगक घटना अकालक प्रतीक्षासँ जोड़ि समयक संस्थागत अनुचित उपयोगक आवर्ती बिम्ब रचैत अछि। सुखदेवक मृत्यु, भोलाक वर्षहानि आ बच्चाक वर्तमान भूख एक घटना नहि; बूढ़बाक कथन हुनका अलग-अलग दृष्टान्त रूपमे नयका नैतिक स्थिति बुझाबैत अछि।

प्रतीक्षाक रूपक आ वर्तमान भूख

बूढ़बाक ‘प्रतीक्षा ... मृत्यु’क वाक्य आगूक संकटकेँ तीव्र करैत अछि। किन्तु कथा अन्तमे गामक कोनो प्राण अकालसँ नहि गेल कहैत अछि। एतय ‘मृत्यु’क रूपक आ वास्तविक मृत्यु-संख्याक अन्तर स्पष्ट राखब जरूरी। प्रतीक्षाक भय सावित्रीदेवीक निर्णय तुरन्त बदलैत अछि; रूपक आफँ ककरो मरबाक दृश्य नहि।

‘आइ’ बनाम ‘आबि रहल’ : संवादक काल-तनाव

सावित्रीदेवी बूढ़बासँ कहैत छथि जे सरकारक सहायता ‘आबि रहल’, मुदा बच्चासभ ‘आइ भूखल’। एहि वाक्यक दुइ कालिक स्तर अध्यायक सार कहैत छथि: आगन्तुक राहत बनाम तात्कालिक आवश्यकता। पात्रक अपन वाणी मे निर्णयक आवश्यकता स्पष्ट, कथावाचकक बाहरी उपदेश नहि। इएह संवाद कथा निष्क्रिय सामूहिक भय सँ क्रियाशील संगठन दिस मोड़ैत अछि।

राति-सभाक नव कार्य

सावित्रीदेवी स्त्री सभक राति-सभाक अनुभवक सहारे आपात योजना रचैत छथि। [–६६]मे ई संस्था घरेलू हिंसा आ न्यायसुनवाईक हेतु उभरल; एतय खाद्य-वितरणक संयोजन करैत अछि। एहि पुनरागमनसँ संस्था कथानकक जीवित संसाधन बनैत अछि, केवल नामक स्मरण नहि। मुदा सभा कतेक बैठक केलक, कोन महिला कतेक अन्न बाँटलनि, नहि बताओल गेल; कथाकार संस्था सामूहिक शक्ति रूपमे देखबैत अछि।

साझा अन्नभंडार : वस्तु आ सम्बन्धक फेरबदल

परिवार अपन क्षमता अनुसार अन्न साझा भंडारमे देत छथि। एहि क्रियासँ व्यक्तिगत कोठीसँ सामूहिक वितरण दिस वस्तुक कथात्मक यात्रा बनैत अछि। कम देबय सकनिहार परिवारक संख्या, कोनो विरोध वा असमानता-समाधानक संवाद नहि। कथा ‘हर परिवार’क एकतामूलक सारांश चुनैत अछि। एकर लाभ संकट-समाजक संघटनक प्रभाव, सीमा निजी अनुभवक विरलता।

पाठशालाक युवा : हिसाबसँ आहार धरि

नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षित युवक प्रत्येक घरक अन्न-आवश्यकता गनि समान वितरण करबैत छथि। लिखन-पढ़नक पूर्व संस्थागत इतिहास एतय सीधा जीवनरक्षामे प्रवेश करैत अछि। युवासभ नामहीन, हुनकर दैनिक विवाद अथवा संख्याक विस्तार नहि। सामाजिक ज्ञानक कथा एक क्रियात्मक उपयोगमे परिणत होइत अछि, मुदा वितरणक पूर्ण दिन-दिनक दृश्य अनुपस्थित।

चन्ना गाछी : स्मृतिवनसँ रसोइघर

साझा रसोइघर चन्ना गाछीक चारू कात स्थापित होइत अछि। [–७०]मे मृतक आ जीवितक स्मृतिचिह्न बनल स्थल एखन भुखायल लोकक भोजनक स्थान। एहि स्थानक पुनरुपयोगमे अतीतक सांस्कृतिक उत्तराधिकार जीवित शरीरक वर्तमान जरूरतसँ जुड़ैत अछि। रसोइघरक चूल्हि, स्त्री-पुरुषक श्रमविभाजन आ ईंधनक वास्तविक व्यवस्था नहि लिखल। प्रतीकात्मक केन्द्र बदलि वास्तविक कार्य करैत अछि।

‘हर दिन’क आवृत्ति : तीन मासक सारांश

गद्य कहैत अछि जे हर दिन, अन्न कम रहितो, सभकेँ किछु भेटैत छल। एहि एक वाक्यमे अनेक दिनक क्रिया समेटल अछि—कथनमे एक पुनरावृत्त आदर्श, न तीन मासक सैकड़ों अलग दृश्य। दैनिकता पाठककेँ संकट टिकाउ ढंगसँ झेलबाक अनुभव दैत, जखन वास्तविक अन्नक मात्रा वा घरक भावभेद नहि।

सोनमा माझिनक वंशज आ कमला-बलानक बचल जल

सोनमा माझिनक वंशज नदीक ओहि भागमे मछली पकड़बाक नव तरीका सिखबैत छथि जतय किछु पानि बचल। पूर्व पोखरि–नदी कथाक लोकज्ञान अकालक आरम्भिक असहायताक उत्तर बनैत अछि। एहि घटनामे नदी निर्जीव पृष्ठभूमि नहि; ओकर बचल जल खाद्यजीवनक सम्भावना। मुदा पानि कतेक बचल, माछक प्रजाति, मछुआराक संख्या अथवा वितरणक तरीका अनिर्दिष्ट। वंशजसभक निज नाम नहि देल गेल; हुनकर काम पुरखाक नामक माध्यमे पहिचानल जाइत अछि। एतय श्रमक उपयोगिता स्पष्ट, वाक्-स्वायत्तता कम।

रत्नाक वंशज : जड़ी-बूटीसँ कन्दमूल धरि

रत्नाक वंशज खाद्य जंगली कन्द-मूलक पहचान करबैत छथि। एहिसँ स्त्रीक पूर्वसञ्चित पर्यावरणीय अनुभव वर्तमान संकटमे नव उपयोग पबैत अछि। कथामे ‘जड़ी-बूटी’क पारिवारिक परम्परा आ ‘खाद्य कन्दमूल’क वर्तमान काम अलग वस्तु छथि, मुदा दूनू वनस्पतिसम्बन्धी अनुभवसँ जुड़ैत। कोन कन्द सुरक्षित, कोन जंगल, कतेक

बच्चा खएलक—पाठ नहि बतबैत। कहानी संकट-सामग्रीक सामान्य सम्भावना रचैत अछि, भोजनसम्बन्धी व्यवहारिक निर्देश-पुस्तिका नहि; एहि सीमा राखब पठन लेल जरूरी।

अन्न, माछ आ कन्द : खाद्यक त्रिसूत्री कथा

साझा भंडारक अन्न, कमला-बलानक मछली आ जंगली कन्दमूल तीन स्रोत रूपेँ आयल छथि। कथाकार भोजनक एकमात्र चमत्कारी साधन नहि देत; बहु माध्यमक सम्मिलित उपयोगसँ समुदायक बाँचबाक सम्भावना रचैत अछि। तीनू वस्तु पूर्वक अलग पेशा, लिंग आ स्थलसम्बन्धी कथा-सूत्रकेँ फेर जुड़ैत अछि। मुदा वास्तवमे तीन मासक सम्पूर्ण पोषण एहि तीनू स्रोतसँ केना सम्भव भेल, मात्रा या ऋतुक प्रश्नक विस्तृत दृश्य नहि; नाटकीय परिणाम सघन, उत्पादन-वितरणक गणना संक्षिप्त।

साझा रसोइक अनाम श्रम

गद्यमे गामक लोक साझा रसोइघर स्थापित करैत अछि, मुदा वास्तविक खाना बनौनिहारक व्यक्तिगत परिचय, लकड़ी–ईंधन, पानि ढोएब वा बर्तन साफ करबाक विवरण नहि। स्त्रीसभक राति-सभाक संगठन-काम लिखल अछि, मुदा रसोइक सभ श्रम अनिवार्यतः केवल स्त्रीसभ केलनि—एहन पाठमे स्पष्ट नहि। सामूहिकता सामाजिक उपलब्धि बनैत अछि; एहि सारांशक भीतर श्रमक विविध देह आ दैनिक थकान ओझराइत। आख्यानशास्त्रक दृष्टिएँ नायकत्वक समेकित ‘गाम’ आ क्रियाशील अनाम व्यक्तिक अन्तर महत्त्वपूर्ण।

‘गामक हर परिवार’ : सामूहिक पात्रक आकार

‘हर परिवार’ योगदान दैत अछि आ ‘हर घर’क आवश्यकता गनल जाइत अछि—एहन समावेशी भाषा सामूहिक पात्र बनबैत अछि। मुदा कोन टोलामे कतेक भूमिहीन, वृद्ध, विधवा वा प्रवासी परिवार छल, एतय पृथक चित्र नहि। कहानी एकताको प्रमुख रचनात्मक रेखा मानैत अछि, असमान संसाधनक जटिल अन्तर्द्वन्द्व खुलैत नहि। कथित सर्वसमावेशनकेँ ग्रामजनगणनाक रिपोर्ट नहि मानल जाए। एहि सामूहिक स्वरक साहित्यिक प्रभाव सामाजिक साहस अछि; ओकर प्रतिनिधित्वगत सीमा अलग आवाजक विरलता।

सरकारी दलक तीन मास बाद आगमन : दृश्यगत पलटाव

‘अंततः तीन मास बाद’ सरकारक दल गाम पहुँचैत अछि आ लोकक बाँचल अवस्था देखि चकित रहैत अछि। कथाक प्रारम्भमे प्रशासन शक्तिशाली मददगार आ गाम असहाय प्रतीक्षारत बुझाइत, अन्तमे प्रशासन आश्चर्यचकित दर्शक आ गाम सक्रिय आयोजक। एहि भूमिकापलटमे दृश्य-व्यङ्ग्य अछि। तथापि अधिकारी अनाज अन्ततः बाँटलनि कि नहि, चिकित्सा प्रदान केलनि कि नहि, मुख्य कथा नहि बतबैत। गाम सरकारक मदद अस्वीकारो नहि करैत। आख्यानक पलटाव पात्रक स्थिति बदलैत अछि, सहायता-नीतिक विस्तृत समापन नहि।

गामक कोनो मृत्यु नहि : परिणामक कथावाचकीय निश्चय

मूल कथामे गामक ‘कोनो प्राण अकालसँ नहि गेल’ स्पष्ट कथावाचकीय परिणाम अछि। एतय कथा एक आदर्श सामुदायिक उपलब्धि रचैत अछि, मुदा संक्रमण, बीमारी, विस्थापन अथवा स्वास्थ्यक अन्य परिणाम स्वतन्त्र

नहि गनैत। ‘अकालसँ नहि गेल’कें गाममे तीन मासमे कोनो कारणसँ कियो नहि मरल—एहन व्यापक दावा नहि बनाओल जाए। भावात्मक रूपमे ई कथाक उच्च विजय-बिन्दु अछि, जतय सम्पूर्ण सामूहिक क्रियाक सार एक वाक्यमे समेटल।

पड़ोसी गामक ‘बहुत हानि’ : तुलना आ मौन

कथावाचक आसपासक गाम सभमे सरकारी राहतक प्रतीक्षा करैत बहुत हानि भेनाइ बतबैत अछि। मुदा ओहि गामसभक नाम, वैकल्पिक संसाधन, मृतकक संख्या आ स्थानिक परिस्थितिक विवरण नहि। कथा गढ़ नारिकेलक सामूहिक तत्परताकें उभारबाक लेल तुलना प्रयोग करैत अछि; दूसर समुदायसम्पूर्णक एकरूप निष्क्रियता सिद्ध करैत नहि। पड़ोसी गामसँ केओ किएक सहायता नहि माँगलक, गरिबी वा दूरी समान छल कि नहि—अनुत्तरित। उपलब्धि आ तुलना बीचक एहि असम विस्तारकें साहित्यिक चयन रूपमे चिन्हब उचित।

अधिकारीक प्रश्न : संस्थाक दृष्टि बदलल

राहत-अधिकारी पूछैत छथि—‘अहाँ सभ ई कोना केलहुँ, बिनु हमरा सभक सहायताक?’ प्रश्नमे आश्चर्य आ स्थानीय क्षमता सम्बन्धी अपरिचय व्यक्त। सावित्रीदेवी उत्तरमे न सरकारक सहायता नकारैत, न अपने कें चमत्कारी उद्धारक बतबैत। एहि संवादसँ कथा उपदेशक समापनक बजाय दू दृष्टि आमने-सामने राखैत अछि: बाहरी सत्ता गामक जीवित परिणाम देखि हैरान, स्थानीय नेतृत्व सामूहिक अभ्यासक कारण बतबैत अछि। मुदा अधिकारीक पश्चात्क नीति बदलल कि नहि, पाठ मौन।

सावित्रीदेवीक उत्तर : असहायताक कथन पर प्रतिवचन

‘हम सभ अहाँक सहायताक इनकार नहि केलहुँ’ सावित्रीदेवीक वाक्य कथाकें स्वावलम्बनक कठोर एकान्तवादसँ बचबैत अछि। ओ कहैत छथि जे सरकार बिना गाम असहाय मानि बैसबाक आवश्यकता नहि। एहि सूक्ष्म भेदमे सहयोगक दुआर खुलल, निष्क्रिय निर्भरता अस्वीकृत। कथा सरकारी सहायता पहुँचबाक वास्तविक परिणाम नहि बतबैत, मुदा सावित्रीदेवीक आवाज व्यक्ति–संस्था सम्बन्धकें पुनर्परिभाषित करैत अछि। ई अध्यायक प्रमुख पात्र-वाणी अछि, केवल नैतिक घोषणा नहि।

बूढ़बाक अन्तिम स्वर : साक्षी बनाम कर्मकर्ता

बूढ़बा कहैत छथि—‘हम नाम बचबैत छी’ मुदा ‘जीवनमे जीबय हेतु ... स्वयं कर्म करय पड़त’। एतय बूढ़बाक अलौकिक स्मृति-सत्ता अपन सीमा घोषित करैत अछि। पूर्वक अनेक संकटमे मानवक क्रिया प्रमुख रहल; वर्तमान अकालमे बूढ़बा स्वयं अन्न उपजाबय वा वितरण नहि करैत। कथावाचक हुनका सीखक व्याख्याकार बनबैत, सावित्रीदेवी आ विविध परिवारकें घटनाक कार्यकर्ता बनबैत अछि। एहि भूमिका-विभाजनमे कृतिक दीर्घ सामुदायिक नायकत्वक विन्यास सुसंगत।

गीतक ‘भूखल पेटो हँसल’ : उल्लासक सामान्यीकरण

‘बाट जोहनि’ लोकगीत साझा अन्न बाँटलापर भूखल पेट हँसब बतबैत अछि। मुख्य कथामे तीन मासक भय, भूख आ न्यून भोजन अछि; प्रत्येक लोक सुखी छल, भुखमरीक चिन्ता पूर्णतः मिटि गेल—एहन प्रत्यक्ष दृश्य नहि। गीतक आशामूलक उल्लास सामाजिक साहचर्यक भाव, गद्यक राशन-वितरण वस्तुगत क्रिया। दूनूक सुर भिन्न अछि। ‘अन्न कम, आस पातर’ गीत स्वयं संकटक अन्तिम नाश घोषित नहि करैत, तें उल्लासक स्वर सीमित राहतक विरुद्ध करुणापूर्ण पृष्ठभूमिमे बजैत अछि।

कथाकाल आ आवृत्ति : एक बरख, तीन मास, रोज

अध्यायमे वर्षाअभावक एक बरख, सरकारी राहतक तीन मासक विलम्ब आ साझा रसोइघरक हर दिनक पुनरावृत्ति अछि। कथावाचक समयक ई तीन परत एक छोट पाठमे रखैत अछि। दृश्य-विस्तार बहुत कम; प्रमुख गति संक्षेपण। एक-एक दिनक भिन्न भोजनक कथा नहि होइतहुँ ‘हर दिन’क सूत्र सभाक टिकाउपनक छवि बनबैत अछि। एहि रूपमे आख्यानक वास्तविक उपलब्धि दैनिक कार्यक कालबोध उत्पन्न करब अछि, विस्तृत कालक्रम नहीं।

समग्र मूल्यांकन : सामूहिक पात्रक विजय आ तकर सीमा

‘राहतक प्रतीक्षा’क प्रभावी रचनात्मक सूत्र अछि सरकारी दूरत्व, भुखायल बच्चाक तात्कालिकता आ ग्रामक अनेक पुरान संस्थाक एकत्र क्रिया। सावित्रीदेवी केन्द्रमे छथि, मुदा नायकत्व सामूहिक बनैत अछि। सोनमाक जलज्ञान, रत्नाक वनज्ञान, पाठशालाक गणना, राति-सभाक संगठन आ स्मृतिगाछीक रसोइ—दीर्घ उपन्यासक पूर्वस्थित कथा-संसाधन उपयोगी बनैत अछि। कमजोरी: श्रमविभाजनक अस्पष्टता, पड़ोसी गामक एकतरफा चित्र, तीन मासक बाँचबाक विस्तृत भौतिकता कम, सरकारी सहायता-पश्चात् परिणाम खुलल।

स्रोतसीमा आ अगिला कथात्मक सम्बन्ध

आधार : मूल त्रयी खण्ड–० अध्याय [–६२] ‘राहतक प्रतीक्षा’, लोकगीत ‘बाट जोहनि’, गद्यक सावित्रीदेवी–बूढ़बा–अधिकारी संवाद आ अध्यायोत्तर टिप्पणी। ई अध्याय अंग्रेजी शासनक स्पष्ट कथाजगत स्थापित करैत, मुदा भूखक बाह्य ऐतिहासिक वर्ष या जिलाक दस्तावेज नहि देत। अगिला [–६१] ‘आकाशक पुच्छलतारा’मे आकाशक असामान्य दृश्य आ भविष्यक संकटक पूर्वसंकेतसँ कथाक स्वर बदलैत अछि।

प्रकरण ४० | मूल अध्याय –६१ — आकाशक पुच्छलतारा

पूर्वकथाकाल · आकाश-दृश्य, सामूहिक भय, आशङ्का, भविष्य-संकेत आ कथन-स्तर

अध्यायक स्वरूप : बाह्य दृश्यसँ भीतरी आशंका

‘आकाशक पुच्छलतारा’मे रुद्रनाथक समय एक असामान्य खगोलीय दृश्यसँ गाम भयभीत होइत अछि। फकरा, ‘तारा आ माटि’ आकाशगीत, गद्यक रुद्रनाथ–बूढ़बा संवाद आ अध्यायोत्तर टिप्पणी अलग पाठस्तर। एहि अध्यायमे कोणो स्वप्नक प्रत्यक्ष दृश्य नहि; अस्थिर अनुभूति, आशंका आ भविष्यक बिम्ब जरूर छथि। कथाक

घटना-संरचना सीमित: पुच्छलतारा देखब, ज्योतिषीक डर-पुकार, बूढ़बाक सशर्त उत्तर, गामक सावधानी, ताराक विलुप्ति आ बूढ़बाक अकेल चिन्ता।

मुदा मुख्य अध्यायमे पात्र निद्रा–स्वप्नसँ जागबाक कोनो घटना नहि। समीक्षामे योजनाक प्रश्नकेँ केवल सम्भावित भय, पूर्वसंकेत आ कल्पित आपदाक परिधिमे लागू कएल जा सकैत, अनलिखित स्वप्न-दृश्य बनाय नहि। एहि स्रोत-अन्तरक पहिचान स्वयं आख्यानशास्त्रीय अध्ययनक शर्त अछि।

सावित्रीदेवीसँ रुद्रनाथ : पीढ़ीगत सन्धि

सावित्रीदेवीक बाद हुनकर बेटा रुद्रनाथ अनुष्ठानक भार लैत छथि। पिछला अकाल-प्रकरणमे सावित्रीदेवीक सक्रिय सामूहिक नेतृत्व छल; वर्तमानमे रुद्रनाथ अनिश्चित दृश्य सामने भयभीत समुदायकेँ दिशा देबाक प्रश्न लऽ बूढ़बाक लग जाइत छथि। कथा पदभार बदलबाक दिन, माएक मृत्यु अथवा बीचक वर्ष बतबैत नहि। ‘बाद’ पीढ़ीक्रमक सूत्र अछि, तत्काल घटनाक घड़ी नहि। एहि संक्षेपसँ विस्तृत महाकथा नयका सामाजिक संकटपर तुरन्त स्थानान्तरित।

शरदक राति : विशिष्ट वातावरणक स्थापना

मुख्य गद्य ‘एक शरदक राति’ असामान्य चमकदार लम्बा पुच्छवला तारा उभरबाक बात कहैत अछि। आकाशक विशालता आ रातिक कालिक शान्ति असामान्य वस्तुकेँ अधिक प्रभावी बनबैत अछि। उपन्यास निश्चित इतिहासवर्ष वा वैज्ञानिक नाम नहि दैत। ‘शरद’ केवल सजावटी मौसम नहि: आगूक [–६०]क जेठक आगिक घटनासँ ओकर कालक्रमक तुलना महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। एहि क्षणमे कथाक पाठक ग्रहण करैत छथि जे दृश्य अनोखा अछि; पात्रसभ ओकरा अशुभ अर्थ दैत छथि।

पुच्छलताराक तीन सप्ताह : दीर्घ दृश्य एक वाक्यमे

पुच्छलतारा ‘राति-दर-राति’ आकाशक एक कोनासँ दोसर धरि सरकैत, तीन सप्ताह बाद लुप्त होइत अछि। कथावाचक अनेक रातिक दृश्य आवृत्तिक सूत्रसँ एक सघन स्मृतिमे संक्षेप करैत अछि। कोन राति कतेक दूर सरकल, कतेक लोक देखलक—अलग घटना-सूची नहि। एहि संक्षेपसँ एकल घटना निरन्तर सामूहिक मनःस्थितिक कारण बनैत अछि। आकाशक धीम गति आ गामक तीव्र भय एक विरोधी लय।

ज्योतिषीक घोषणासँ सामूहिक भय

एक ‘वृद्ध ज्योतिषी’ पुच्छलताराकेँ राजा-मृत्यु, युद्ध, अकाल वा महामारीक संकेत कहैत चिचिआइत छथि। ओहि पात्रक नाम वा विशिष्ट पुरान ग्रन्थक उद्धरण नहि देल गेल। हुनकर आवाज पाठमे लोकविश्वासक प्रबल, सर्वमान्य व्याख्या नहि। ‘गामक लोक’ डरैत अछि, मुदा हर व्यक्तिक मनोभाव स्वतन्त्र नहि। कथा अनाम ज्योतिषीक तीव्र पुकारक माध्यमे भय प्रसारित होएबाक सामाजिक घटना बनबैत अछि। ज्योतिषी दृश्यकेँ भविष्यमे कोनो एक निश्चित दुर्घटनासँ नहि जोड़ि, विकल्पसभक लंबी सूची खोलैत छथि।

गीतक सयान आ गद्यमे वृद्ध ज्योतिषी

लोकगीतमे ‘सयान कहल—अनिष्ट आबय’क सार्वजनिक श्रुति अछि, जखन गद्यमे एक वृद्ध ज्योतिषी व्यक्तिगत संवाद दैत छथि। गीतक ‘सयान’ आ गद्यक ‘ज्योतिषी’ एकहि व्यक्ति छथि—ई स्पष्ट नहि। गीत लोकसभक भीतरी भय एक स्वरमे रचैत अछि; गद्य डर प्रसारित करनिहार पात्रक मुख दैत अछि। एहि माध्यमभेदकेँ मिटि निश्चित गायक वा ज्योतिषीक सम्पूर्ण पहचान गढ़ब अनुचित।

रुद्रनाथक ‘कालक पार’ प्रश्न : बूढ़बाक भूमिकापर अपेक्षा

रुद्रनाथ बूढ़बाक लग पुछैत छथि जे हुनकर दृष्टि कालक पार जा सकैत, तखन पुच्छलतारा की सूचित करैत? एतय पुत्र-उत्तराधिकारी बूढ़बासँ सम्पूर्ण ज्ञान चाहैत छथि। कथा तुरन्त एहि अपेक्षाकेँ संशोधित करैत अछि; बूढ़बाक उत्तर अनुभवक अस्थिरता स्वीकारैत अछि। प्रश्न एक नाटकीय तनाव बनबैत: दीर्घजीवी साक्षी भविष्य निश्चित जानत कि नहि? एहि क्षण पाठकक अपेक्षा रुद्रनाथक भयक समानान्तर चलैत अछि।

बूढ़बाक आकाश दिस दीर्घ तकब : मौनक नाटकीय काल

बूढ़बा ‘बहुत काल’ आकाश दिस तकैत छथि, फेर धीरे बजैत छथि। ई विराम दृश्यगत समयकेँ विस्तृत करैत अछि; पूरी कथाक तेज संक्षेपक बीच एक धीमा क्षण। ओहि तकबाक भीतर कोनो स्पष्ट दिव्य चित्र कथावाचक नहि दिखबैत। बूढ़बाक उत्तर ‘कहियो स्पष्ट, कहियो कुहेसमे लुप्त’क आत्म-वर्णन अछि। मौन जादुई सर्वज्ञताक घोषणा नहि, सीमित अनुभूतिक नाटकीय तैयारी।

अस्पष्ट भय : देखल वस्तु आ अनुभवक भेद

बूढ़बा कहैत छथि जे हुनका ‘अस्पष्ट भय’ अनुभव होइत, कोनो कठिन समय निकट लगैत। ई स्पष्ट भविष्य-दृश्य, तिथि अथवा घटनासूची नहि। कथाकार बूढ़बाक अनुभूतिकेँ ‘जेना’ प्रकारक सम्भावनात्मक भाषामे रखैत छथि। चरित्रक निजी चिन्ता पाठक लेल पूर्वसंकेत बनैत, मुदा पात्र स्वयं भविष्यक निश्चित संख्या वा क्रम जनैत नहि। एहि दूरीकेँ बचाएब अध्यायक अपेक्षा-निर्माण बुझबाक किल्ली।

तारा स्वयं दोषी नहि : आख्यानक व्याख्यात्मक मोड़

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे तारा मानवक भाग्यसँ अनजान, अपन नियमसँ चलैत अछि; आगूक विपत्ति तारा नहि आनत। एहि उत्तरसँ ज्योतिषीक अशुभ सम्बन्धक कथन पलटि जाइत, मुदा संकटक भय नकारल नहि जाइत। कहानी भयक कारणकेँ आकाशक वस्तुसँ मानव धरतीक अस्थिरताक दिशि मोड़ैत अछि। पुच्छलतारा कथामे संकेतक कथात्मक कार्य निभबैत अछि, प्रत्यक्ष आगि/रोग बनबैत नहि।

‘संकेत’क द्विअर्थ : कारण नहि, कथा-सूचक

बूढ़बाक भाषामे तारा ‘केवल संकेत’ अछि जे सावधान रहबाक चाही। यदि तारा स्वयं बिपत्ति नहि आनैत, तकर संकेत-भूमिका दू अर्थमे पढ़ल जा सकैत: पात्रक अनिश्चित अनुभूति आ पाठक लेल अग्रिम घटनाक रचनात्मक

पूर्वसूचना। एहि दू स्तरक भेद महत्त्वपूर्ण; पाठक अगिला प्रकरणमे आगिक घटना देखत, मुदा वर्तमान पात्र स्वतः निश्चित घटना नहि जनैत। भविष्यक घटना आएलाक कारण तारा वास्तविक कारण छल—एहन कथानक नहि।

त्रयी संकटक बिम्ब : पानि, आगि आ रोग

बूढ़बा ‘पानि, आगि, वा रोग’क सम्भावित रूप कहैत छथि। अध्यायक अन्तिम फुसफुसाहटमे एक संगे तीन रूपक भय लौटैत अछि। एहि पुनरावर्तनसँ एक घटनाक बाद दीर्घ आपदा-शृंखलाक प्रत्याशा उत्पन्न। तथापि वर्तमान अध्यायमे आगिक लपट, बाढ़ि अथवा महामारीक प्रत्यक्ष घटना नहि; ओ सभ आगूक कथा लेल खुलल सम्भावना। विषयसूचक घोषणा आ वास्तविक अध्यायघटना अलग।

रुद्रनाथक सामुदायिक निर्देश : भयक व्यवहारिक रूप

बूढ़बाक उत्तर सुनि रुद्रनाथ हर टोलार्कें अन्न-भंडार सुरक्षित, पानिस्रोत साफ आ रोगक लक्षण तुरन्त सूचित करबाक निर्देश दैत छथि। एतय ज्योतिषीक भय-पुकारसँ क्रियात्मक तत्परतातक मोड़। मगर प्रत्येक टोला व्यवहारमे कोन कदम उठेलक, निरीक्षणक परिणाम की भेल—कथा नहि दैत। निर्देशनक कथन वर्तमान घटनात्मक तथ्य, आगूक विपत्तिसँ वास्तविक बचावक सफलता एखन नहि।

‘व्यर्थ प्रयास नहि छल’ : पश्चदृष्टि रखनिहार कथावाचक

कथावाचक रुद्रनाथक सावधानीक सम्बन्धमे कहैत अछि ‘जेना बादमे बुझायल, कोनो व्यर्थ प्रयास नहि छल’। एतय कथन-स्वर पात्रक वर्तमान ज्ञानसँ आगू भविष्यक घटना जनैत अछि। एहने पश्चदृष्टिसँ पाठक आगामी खण्डक वास्तविक संकट अपेक्षित करैत छथि। रुद्रनाथ स्वयं तखन कतेक जानैत छथि, अलग विषय। सर्वज्ञ अथवा दीर्घकालिक कथावाचकक ई छोट हस्तक्षेप कथाक अन्तिम तनाव बढ़बैत अछि।

‘अदृश्य बादर, आगि, पानि’ : दृश्यसँ आभास धरि

पुच्छलतारा लुप्त भेलापर गामक हवा भारी लगैत अछि, ‘जेना’ अदृश्य बादर, अदृश्य आगि आ अदृश्य पानि मंडराइत हो। ई वास्तविक तीन पदार्थक एकहि क्षण प्रत्यक्ष उपस्थिति नहि; कथावाचकीय उपमासँ भविष्यक संकटक भाव उत्पन्न। ‘अदृश्य’ शब्द दृश्यक अभाव स्वयं दर्ज करैत अछि। एहि काव्ययुक्तिसँ परिवेश एक प्रत्याशाभरि स्थान बनैत अछि। रचनाक कालिक मोड़ ताराक दृश्यगत अनुपस्थितिसँ सम्भावित विपत्तिक मानसिक उपस्थितितक जाइत अछि।

चन्ना गाछीमे बूढ़बाक विचरण : पूर्व स्मृतिक वापसी

बूढ़बा चन्ना गाछीक हर गाछकेँ स्पर्श करैत-जेकाँ गहन चिन्तामे डूबल छथि। पिछला [–७०]मे गाछी बूढ़बाक विस्तारित देहक रूप छल। एतय गाछक बहुलता भयवेला आश्रयबिन्दु बनैत अछि, मुदा ओहि जड़िसँ भविष्यक निश्चित उत्तर नहि। स्थानक पुनरागमन स्मृति-सत्ता आ आसन्न संकटक सम्पर्क रचैत अछि। चन्ना गाछी केवल नामक सूची नहि, भावनात्मक/जादुई संवेदना सँ भरल स्थल।

‘जँ ई शब्द उपयुक्त होइक’ : कथावाचकक स्व-संशोधन

मूल कथावाचक बूढ़बाक गाछस्पर्श बतबैत कोष्ठकमे स्वयं प्रश्न करैत छथि—ओहि प्राणीक हेतु ‘स्पर्श’ उपयुक्त शब्द अछि कि नहि, जकर स्पर्श स्वयं छाया। ई साधारण वर्णन नहि; कथा अपन भाषाक सीमा स्वयं पाठक लग प्रकट करैत अछि। अलौकिक पात्रक भौतिक अनुभव मानवीय क्रियापदमे व्यक्त करबाक कठिनाई एक आत्म-सचेतन कथन-क्षण बनैत अछि। एहि कारण ‘स्पर्श’केँ प्रत्यक्ष मानवहाथक निश्चित क्रिया मानब असंगत। कथावाचक पाठकेँ वैकल्पिक बिम्ब रूपमे पढ़बाक अवसर दैत अछि।

‘मूल गोहि’सँ एकान्त सम्बोधन : श्रोता अनुपस्थित

बूढ़बा रातिमे फुसफुसाकऽ ‘मूल गोहि’केँ पूछैत छथि जे ओ भार अनुभव कऽ रहल अछि कि नहि। प्रश्नक उत्तर, गोहिक आवाज अथवा जलक प्रतिक्रिया वर्तमान अध्यायमे नहि। एहि एकान्त सम्बोधनसँ बूढ़बाक भयक अन्तरंगता बढ़ैत अछि; सामुदायिक सभा सँ अलग ओ एक एहन सम्बोधित सत्ताक सहारा लैत छथि जकर प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया अनुपस्थित। पाठक एहि मौनकेँ रहस्यरूप अनुभव करैत, मुदा गोहिक सहमति स्वयं सिद्ध नहि।

हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव : इतिहासक भयरूप पुनरागमन

बूढ़बा वर्तमान सम्भावित चक्रकेँ हुलासा, जीवन्ती आ सुखदेवक समयक घटनासँ जोड़ैत छथि। अलग-अलग पूर्व-त्रासदीक नाम अब भविष्यक भयक रूपमे पुनः सक्रिय। नामक ई वापसी एक ओर पाठकक स्मृति जगबैत, दोसर ओर नयका संकटक आकार परिकल्पित करैत। मुदा बूढ़बा ‘ठीक ओहिना’ आ ‘शायद’क भिन्न तीव्र शब्द एकसाथ कहैत छथि; अतः इतिहास हूबहू पुनरावृत्त होयत—एहन निश्चय नहि।

भयक दू आवाज : ज्योतिषी आ बूढ़बा

ज्योतिषी उद्घोषणाक स्वरमे निश्चित अनिष्ट कहैत छथि; बूढ़बा धीर, असमर्थता स्वीकारनिहार वाणीमे सम्भावित कठिन समय कहैत छथि। दुनू भविष्यपर केन्द्रित, मुदा कथात्मक शैली अलग: पहिल सार्वजनिक चिचियाहट, दोसर विचारपूर्ण उत्तर आ अन्तिम व्यक्तिगत फुसफुसाहट। एतय एके दृश्यक अलग व्याख्यातासभक माध्यमे पाठकक अपेक्षा बदलैत अछि। कथा बूढ़बाक भाषाकेँ अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि, किन्तु हुनकर भविष्यज्ञान स्वयं अस्पष्ट।

लोकगीतक ‘गाम अपना ठाम’ आ आगामी विघटनक विडम्बना

गीत पुच्छलताराक चलनक सामने गामक स्थायित्व जोर दैत अछि। मगर मुख्य गद्यक अन्तसँ आगि-पानि-रोगक बहुचक्रक भय उठैत, अगिला [–६०]मे अनेक घर जरि जाइत अछि। गाम ‘अपना ठाम’ एक भौगोलिक-सामाजिक निरन्तरता हो सकैत, भौतिक हर घर अक्षत रहबाक दावा नहि। गीतक आशामूलक स्थिरता आ गद्यक अनिश्चित भविष्यक विरोध कृतिक तनाव बढ़बैत अछि। ‘नाम नीचाँ वैह’क सांस्कृतिक शाश्वतता दृश्यसंसारक स्थायित्वक बराबर नहि।

‘तारा टूटय-जुड़य’ : गीतक वस्तु आ मुख्य दृश्य

गीतमे तारा ‘टूटय-जुड़य’क काव्यकथन अछि; गद्य एक लम्बा पुच्छवला वस्तु क्रमशः सरकैत तीन सप्ताह बाद लुप्त होएबाक बात कहैत अछि। वास्तविक टूटब, खण्डित होएब अथवा पुनः जुड़बाक कोनो दृश्य नहि। एहि भिन्नतामे गीतक सामान्य आकाशीय कल्पना आ मुख्य कथाक सीमित घटनाक भेद। गीतक क्रिया काव्यगत दृश्यक ऊर्जा बढ़बैत, गद्यक तथ्यात्मक घटना विस्तृत नहि करैत।

क्षणिक चमक बनाम दीर्घ माटि : समयक दुई मापक

गीत चमकदार आकाशीय वस्तुकेँ क्षणिक आ माटिसँ जुड़ल नामकेँ स्थिर कहैत अछि। गद्य पुच्छलताराकेँ तीन सप्ताह देखाबि, फेर गामक सम्भावित दीर्घ संकटक इतिहास खोलैत अछि। एकटा वस्तुक अल्प समय आ समुदायक पीढ़ीगत स्मृति समय-मापक बनैत अछि। मुदा तीन सप्ताहक दृश्य स्वयं एक रातिक क्षण नहि; गीतक ‘क्षणिक’ विशाल कालदृष्टिक दृष्टिएँ तुलनात्मक अर्थ रखैत। छोट आ दीर्घ समयक एहि असमानता मे अध्यायक लय रचल अछि।

आकाशसँ माटि धरि दृष्टिचलन

आरम्भमे पाठकक नजर आकाशपर, बीचमे ज्योतिषीक भविष्यमुखी शब्दपर, बूढ़बाक उत्तरमे धरतीक पानि–आगि–रोगपर, अन्तमे गाछीक जड़िपर अबैत अछि। एहि दृष्टिचलनमे कथा ऊर्ध्व दृश्यसँ स्थानीय जीवनक जोखिम दिस लौटैत अछि। लोकगीत बारम्बार ‘ऊपर’ आ ‘नीचाँ’क विरोध रचैत अछि। दृश्यात्मक दिशा स्वयं अर्थक संरचना बनैत: आकाश आश्चर्य आ सामूहिक भयक स्थल, माटि क्रिया आ स्मृतिक स्थल।

शरद सँ जेठ : अगिला अध्यायक कालगत असङ्गति

[–६१] पुच्छलताराक उदय ‘एक शरदक राति’ बतबैत अछि, तारा तीन सप्ताह रहल। [–६०]क कोष्ठकीय भूमिका ओकर लुप्त भेलाक ‘एक मास बाद’ अगिनकाण्ड कहैत, मुदा मुख्य गद्य आगि ‘जेठक एकटा तीव्र गर्मीक राति’ रखैत अछि। सामान्य ऋतुक्रममे शरदक तीन सप्ताह आ एक मासक पश्चात् जेठ नहि आबैत। एहि तरह स्पष्ट कालिक सिलाइ-संकट अछि, जकर समाधान लेल कथामे बहुवर्षक अन्तर वा ऋतुपरिवर्तनक अतिरिक्त घटनासूत्र नहि। समीक्षा एहि अन्तरकेँ दर्ज करैत अछि, काल्पनिक समयछलाँग नहि जोड़त।

तीन सप्ताह, एक मास आ पीढ़ी-पदभार : द्वितीय अन्तर

[–६१]मे सावित्रीदेवीक बेटा रुद्रनाथ अनुष्ठान-रक्षक छथि। [–६०]मे पुच्छलताराक एक मास बादक आगिक वर्णनक भीतर रुद्रनाथक बेटी इन्द्राणी ‘आब अनुष्ठान-रक्षिका’ कहल गेल। एतेक छोट प्रतिपादित अन्तरालमे पदभार पीढ़ी बदललाक घटना असम्भव नहि, मुदा कथामे ओकर कारण वा हस्तान्तरणक दृश्य अनुपस्थित। शरद–जेठक असङ्गतिक संग ई दोसर कालिक रिक्ति कथा-सिलाइकेँ कमजोर करैत अछि। समीक्षक दूनूकेँ अलग चिन्हैत, स्वतः दशकक छलाँग कल्पित नहि करैत।

पूर्वदीप्ति आ सम्भावित भविष्यक खेल

कथावाचक बारम्बार पछिला आ आगामी घटनाक संकेत रखैत अछि। ज्योतिषीक अनिष्टघोषणा, बूढ़बाक सम्भावित तीन संकट, ‘बादमे बुझायल’क वर्णन—तीनू भविष्यमुखी, मुदा दृष्टिगत दूरी भिन्न। पाठकक अधिक जानकारीक स्रोत कथावाचकक वक्तव्य, पात्रक पूर्ण सर्वज्ञान नहि। एहि कारण अध्याय एका अर्थमे पूर्वदीप्ति, जकर फल अगिला अगिनकाण्डमे खुलैत अछि। एहि संरचनाक उपलब्धि प्रत्याशाक घनत्व, सीमा अति स्पष्ट पूर्वसूचनासँ अनिश्चित रहस्य घटब।

समग्र कथात्मक निर्णय

‘आकाशक पुच्छलतारा’ अल्प घटनात्मक आकारमे असामान्य दृश्य, सामूहिक भय, प्रतिस्पर्धी व्याख्या, क्रियात्मक सावधानी आ भविष्यक त्रिसंकटक प्रत्याशा रचैत अछि। कथावाचकक स्व-संशोधन, बूढ़बाक अनिश्चित वाणी, ‘मूल गोहि’क एकान्त सम्बोधन आ गाछीक पुनरागमन एकर विशिष्ट गुण। मुदा कोनो स्वप्नदृश्य नहि, खगोलीय वस्तुकरूपक किछु गीतगत अतिशयोक्ति अछि, आ अगिला अध्यायक शरद–जेठ तथा पदभार-अन्तर कथासिलाइमे असङ्गति बनैत अछि। ई अध्याय उपन्यासक आगामी महाविपत्तिक प्रभावी प्रस्तावना, स्वतन्त्र पूर्ण घटना-समाधानवाली कथा नहि।

स्रोतसीमा आ अगिला अध्यायक पठनीयता

प्राथमिक स्रोत मूल [−६१] ‘आकाशक पुच्छलतारा’, ‘तारा आ माटि’ गीत, रुद्रनाथ–बूढ़बाक संवाद तथा अध्यायोत्तर खगोलीय संकेतविषयक टिप्पणी। भविष्य-घटना प्रति पात्रक आशंका आ कथावाचकक पाठक-उन्मुख संकेतकेँ पृथक राखल गेल। अगिला [−६०] ‘अगिनक राति’मे घोषित तीन संकटमे पहिल काजरूपेँ प्रवेश करैत अछि; ओकर वास्तविक आगिक कारण, सामुदायिक क्रिया आ गीतक मृत्युचित्र खास जाँच माँगैत अछि।

प्रकरण ४१ | मूल अध्याय −६० — अगिनक राति

पूर्वकथाकाल · अगिनक प्रसार, इन्द्राणीक दृष्टि, पोखरि–गाछीक भूगोल आ रात्रिक सामुदायिक क्रिया

अध्याय-स्थापना : भविष्यक आशंका सँ वर्तमान अगिनि

‘अगिनक राति’ पिछला पुच्छलतारा-प्रकरणक भयकेँ प्रत्यक्ष आपदामे बदलैत अछि। फकरा, ‘राखसँ नव आगि’ लोकगीत, इन्द्राणी–बूढ़बा–गामक आगि-बचावक गद्य आ आपत्कालीन सहयोगक अध्यायोत्तर टिप्पणी अलग स्तर छथि। कथानक आगिक उत्पत्ति, प्रसार, चन्ना गाछीक संकट, पोखरिक पानीक मानव-श्रृंखला, भोरक परिणाम आ घरक पुनर्निर्माणक अवस्थासभमे चलैत अछि। आरम्भसँ मुख्य क्रिया घर बचब मात्र नहि, दीर्घ स्मृतिक केन्द्र गाछीकेँ सेहो सुरक्षित राखब बनैत अछि।

ई संख्यासभ स्वतन्त्र घटनागणना नहि। मूल गद्यमे दीप, पयराल, हवा, गाछी, पोखरि आ मानवहाथ निरन्तर परस्पर प्रभाव करैत छथि। तेँ घटना केवल ‘आगि लागल’ नहि—रात्रिक खतरा, पुकार, विफल आरम्भिक प्रयास, संगठन, गाछी लग आगिक धीम पड़ब, भोरक बुताइ आ पुनर्निर्माणक क्रम अछि।

आगिक कारण : दीप, पयराल आ तेज हवा

धानभंडार लग दीप हवाक झोंकासँ सुखल पयरालपर खसैत अछि; एक क्षणमे आगि लपकैत आ तेज हवा घर-टोलामे फैला दैत। गद्य स्पष्ट मानवीय वस्तु-व्यवस्था आ मौसमक संयुक्त क्रिया कहैत अछि। आगिक आरम्भ केवल ‘प्रकृतिक प्रकोप’ नहि, दीपक स्थान आ सुखल पयरालक जोखिमसँ सेहो जुड़ल। अन्तिम सामुदायिक उपदेश प्रकृतिक शक्ति कहैत अछि, मुदा आरम्भक कारण-शृंखला मिश्रित अछि। कथा-विश्लेषणमे आरम्भिक दुर्घटना आ पछिला नैतिक सामान्यीकरण दुनू अलग चिन्हब आवश्यक।

जेठक राति : ऋतुक कालिक टकराव

मुख्य गद्य आगि ‘जेठक एकटा तीव्र गर्मीक राति’ रखैत, जखन [−६१] पुच्छलताराक शरद-उदय, तीन सप्ताहक उपस्थिति आ [−६०]क प्रस्तावनामे ओकर लुप्त भेलाक ‘एक मास बाद’ आगिक सूचना अछि। ई घटनाकालक स्पष्ट असङ्गति थिक। अतिरिक्त वर्षक छलाँग, विशेष संवत्-अन्तर अथवा दू पुच्छलतारा कथा नहि बतबैत। यदि बहुवर्षक समय मानल जाए तँ प्रतिपादित ‘एक मास’सँ मेल नहि; यदि एक मास मानल जाए तँ शरद सँ जेठक यात्रा असंगत।

रुद्रनाथक बेटी इन्द्राणी : संकटमे नेतृत्वक आरम्भ

मुख्य कथामे रुद्रनाथक बेटी इन्द्राणी ‘आब अनुष्ठान-रक्षिका’ कहल गेल। पिछला [−६१]मे रुद्रनाथ उत्तराधिकारी छथि; एक मासक प्रस्तावित अन्तरालमे एहि परिवर्तनक कारण अथवा दृश्य नहि। तैओ वर्तमान अध्यायमे इन्द्राणी ज्वालाक प्रथम प्रत्यक्ष चेतावनी देनिहार आ सामूहिक पानी-व्यवस्था बनौनिहार पात्र छथि। हुनकर चरित्र संकटमे गतिशील क्रिया द्वारा उभरैत अछि, नाममात्रक वंशसूची द्वारा नहि। ई स्त्री नेतृत्वक नूतन दृश्य अखन एक आपदा-विशेषपर केन्द्रित।

खिड़कीसँ पहिल नजरि : दृष्टिकेन्द्रक संकुचन

इन्द्राणी खिड़कीसँ आगिक लाली देखैत छथि आ ‘आगि! आगि!’ चिचियाबैत छथि। एहि क्षण कथावाचकक विस्तृत गाम-दृष्टि एक घरक खिड़कीक दृश्य मे सिमटैत अछि; पाठक पहिल संवेग इन्द्राणीक आँखिसँ अनुभव करैत अछि। ओ पूरा गामक विनाशक भविष्य आशंकित करैत छथि, जखन वास्तविक परिणाम अभी खुलल नहि। ‘सम्पूर्ण गाम जरत’ पात्रक भयपूर्ण भविष्यवाक्य, घटित सम्पूर्ण दहन नहि। दृश्यसँ तुरन्त दौड़ आ दुआर खटखटेबाक क्रिया गतिमान होइत अछि।

द्वार खटखटाबय दौड़ : चेतावनीक प्रसार

इन्द्राणी गामक हर द्वार खटखटाबय दौड़ैत छथि। ‘हर’ कथावाचकक सामूहिक परिमाणवाचक शब्द अछि, प्रत्यक्ष गिनल घरक सूची नहि। तैओ एकल चेतावनी सामाजिक ध्वनि बनैत अछि। आगिक ज्वाला एक टोलासँ दोसर फैलैत, चेतावनी सेहो एक दुआरसँ दोसर धरि दौड़ैत—दू प्रतिस्पर्धी प्रसार-गति कथा-तनाव रचैत अछि। इन्द्राणीक सक्रियता एतय बूढ़बाक परामर्शसँ पहिने शुरू भऽ चुकल, तें हुनकर नेतृत्व केवल बूढ़बाक निर्देशक प्रतिध्वनि नहि।

निन्दसँ जागल समुदाय : आरम्भिक अव्यवस्था

लोक निन्दसँ जागि पानि, बालू आ गीला कपड़ासँ आगि बुझाबय लगैत छथि। तेज हवा शुरुआती प्रयास विफल करैत अछि। एहि क्रममे कथा ‘कोनो काज नहि कएल गेल’क सरलीकरण नहि; प्रथम स्वस्फूर्त प्रयास होइतहुँ संकट बढ़ैत अछि। अराजक क्रिया सँ बादक संगठित मानव-श्रृंखला धरि घटनात्मक विकास अछि। आरम्भक लोकसभक आवाज वा नाम नहि, पण ओ सभ केवल दर्शक नहि; सक्रिय पर सीमित सफलतावला सामूहिक पात्र।

दस ब्राह्मण-घर, पाँच कायस्थ-घर : संख्याक सीमा

कथावाचक ब्राह्मण-टोलाक दस आ कायस्थ-टोलाक पाँच घर जरल कहैत अछि; मन्दिरक एक भाग सेहो क्षतिग्रस्त। पश्चात् गामक ‘एक-चौथाई घर’ जलि गेल बताओल। एहि दूनू सूचनासँ गाममे कुल साठि घरहि छल—एहन निश्चित निष्कर्ष उचित नहि, किएक तँ आरम्भमे आगि अनेक टोलामे फैलबाक वर्णन अछि, मुदा बाकी घरक क्षतिक पूर्ण सूची नहि। दू नामित टोलाक संख्याक संग विस्तृत समग्र हानि अनिश्चित। कथाक सांख्यिक संक्षेप पीड़ाक आकार बतबैत, पूर्ण जनगणना नहि।

टोलावार हानि आ अनाम समुदाय

ब्राह्मण, कायस्थ आ मन्दिरक नुकसानी स्पष्ट; अन्य टोलाक नामसहित हानि-विवरण एतय नहि। आगि एक टोलासँ दोसर फैलल कहल गेल, तें अन्य लोकसभ पूर्ण सुरक्षित रहलीह—ई असिद्ध। आख्यानशास्त्रीय प्रश्न अछि जे कोन स्थल संख्याक संग दृश्य बनैत आ कोन स्थल ‘सम्पूर्ण गाम’क सारांशमे विलीन। जातिवार हानिक चयन रचनाक दृश्य-अनुशासनक प्रश्न, स्वयं अन्य समुदायपर काल्पनिक आगि-दुर्घटना जोड़बाक अनुमति नहि।

मन्दिरक एक भाग जरब : सामुदायिक प्रतीकक क्षति

गामक मन्दिरक ‘एकटा हिस्सा’ जरैत अछि। एहि एक उल्लेखसँ धार्मिक-सामुदायिक स्थापत्य सेहो संकटमे पड़ैत अछि, मुदा कोन मूर्ति, मण्डप, पूजापात्र, ग्रन्थ अथवा व्यक्ति प्रभावित भेल, नहि। आगि सांस्कृतिक संस्थाक देहकेँ स्पर्श करैत अछि; कथा चन्ना गाछीक भयावह निकटता पर अधिक विस्तार दैत। मन्दिरक क्षति घरक हानिक संग रखल, मुदा ओकरा पूर्ण विनाश रूपमे वर्णित करब असंगत।

चन्ना गाछी : स्मृतिक शरीर संकटमे

आगि जखन गाछी दिस बढ़ैत, कथा एकल घरक हानिसँ दीर्घ स्मृतिवनक विनाश-आशंका धरि पहुँचैत अछि। [−७०]मे गाछी बूढ़बाक विस्तारित देह आ अनेक पीढ़ीक स्मृतिग्रन्थ छल। तें गाछी जरबक भय केवल पात-डालि क्षति नहि, कथाक स्मृतिरक्षाक सम्पूर्ण स्थलपर संकट अछि। मुदा असली गाछीक अन्तिम अवस्थामे किनारक किछु गाछ मात्र जरल-अधजरल, मुख्य पीपर सुरक्षित—आगूक दृश्य ई तनावक आंशिक समाधान।

इन्द्राणी आ बूढ़बाक अभूतपूर्व स्वर

बूढ़बाक उत्तर इन्द्राणीकेँ पहिने कहियो नसुनल भय आ दृढ़ताक मिश्र स्वरमे भेटैत अछि। दीर्घजीवी साक्षी, जे अनेक प्रसंगमे धीर सलाह दैत छलाह, एतय संकटकेँ अपन ऊपर प्रत्यक्ष खतरा मानैत छथि। कथावाचक बूढ़बाक स्वरक भिन्नता इन्द्राणीक अनुभूति द्वारा बतबैत—ई दृष्टिकेन्द्रक सूक्ष्म परिवर्तन। बूढ़बाक ‘हम स्वयं आगि रोकि सकैत छी वा नहि’क अनिश्चय हुनकर चरित्रमे शक्ति-सीमा आ डरकेँ एकसाथ मानवीय बनबैत।

‘हमर शक्ति स्मृतिक अछि, अग्निक नहि’ : पात्रगत सीमा

बूढ़बाक वचन एहि अध्यायक केन्द्रीय आत्मपरिभाषा अछि। ओ अपन शक्ति स्मृतिक मानैत आगिक प्रत्यक्ष नियन्त्रणक आश्वासन नहि दैत छथि। पिछला ‘राहतक प्रतीक्षा’मे ओ नामरक्षा आ मानवक कर्म अलग रखने छलाह; एतय सेहो आगि बुझएबाक काम लोकक हाथमे। एही कारण आगिक अचानक धीम पड़बाक जादुई-जेहन क्षण बूढ़बाक प्रत्यक्ष अग्निनियन्त्रणक साधारण प्रमाण नहि बनैत। बूढ़बाक अपन वाणी आ कथावाचकक उपमामे अन्तर राखब जरूरी।

जोड़ी पोखरि : संकटमे पुनः उपयोगी स्थल

बूढ़बा उपाय रूपमे ‘जोड़ी पोखरि’क नाम लैत छथि। पूर्वक जलकथा मे पोखरि स्मृति, श्रम, गोहि आ उत्सवक केन्द्र छल; आब आगि रोकबाक व्यवहारिक जलस्रोत। कथा-स्थलक रूपान्तरण चन्ना गाछीक साझा रसोइघरक नव कार्यसँ मिलैत—स्मृति-भूगोल वर्तमान जीवनक साधन बनैत अछि। पोखरिक जलस्तर, गाछी धरि दूरी आ पानिक वास्तविक मात्रा नहि; तेँ स्थल सम्बन्ध साहित्यिक स्तरपर स्पष्ट, भौगोलिक नक्सा अपूर्ण।

‘शायद’क अधूरा वाक्य : संकटसमयक अर्थ

बूढ़बा कहैत छथि जँ पानि गाछी दिस मोड़ल जाए तँ ‘शायद...’। ई अधूरा वाक्य भयंकर क्षणमे पूर्ण आश्वासनक असम्भावना रचैत अछि। इन्द्राणी पूरा तर्क सुने बिना उपाय बुझैत छथि, आ कथा तत्काल कार्यदिशि मुड़ैत अछि। कथनक अपूर्णता नाटकीय गति बढ़बैत, पाठक स्वतः अपेक्षा भरैत अछि। रचनाक संवाद-शिल्प एतय व्याख्यानक बदला विराम, अनुमान आ त्वरित क्रियापर आधारित।

पोखरिसँ गाछी धरि : सामूहिक क्रियाक नया मार्ग

इन्द्राणी गामक सक्षम लोककेँ पोखरि दिस दौड़बैत छथि; पानिक बाल्टी गाछी दिस हाथ-दर-हाथ चलैत अछि। एहि क्रियामे स्थानक दूरी सामूहिक देहक श्रृंखला द्वारा पार होइत अछि। ‘दौड़’क शब्द त्वराक, ‘बाल्टी-दर-बाल्टी’ आवृत्तिक, आ ‘हाथ-दर-हाथ’ पारस्परिक निर्भरताक लय बनबैत अछि। गद्य प्रत्येक हाथक नाम नहि, मुदा कार्यक भौतिक क्रम स्पष्ट रचैत अछि। बूढ़बाक सलाह जे केवल सम्भावना छल, ओ सामूहिक प्रयत्नक दृश्य बनैत अछि।

राति-सभा द्वारा मानव-शृंखलाक गठन

राति-सभाक स्त्रीसभ संगठन-क्षमता उपयोग कऽ पोखरिसँ गाछी धरि मानव-शृंखला बनबैत छथि। [–६६]क घरेलू हिंसा-सुनवाई आ [–६२]क अकाल-वितरणपछाति एहि संस्थाक तेसर सामाजिक उपयोग भेटैत अछि। प्रत्येक वापसीमे संस्थाक कार्यक्षेत्र बदलेत अछि: न्याय, भोजन, अग्निरक्षा। एहि क्रममे दीर्घ उपन्यासक पूर्व घटना नव कथात्मक क्षमता बनैत अछि। मुदा विशिष्ट सदस्यक नेतृत्व, श्रम-संगठनक कठिनाइ वा साधनक कमी स्वतन्त्र दृश्य नहि।

सैकड़ों हाथ : सामूहिक नायकत्वक दृश्य

‘सैकड़ों हाथ’ एक भारी सामूहिक गतिमे देखाइत छथि। संख्या अनुमानित व्यापकता दैत अछि, मुदा समस्त व्यक्तिक नाम, स्त्री-पुरुष अनुपात आ देहक क्षमता भिन्नता निर्दिष्ट नहि। कथा एक ओर इन्द्राणीकेँ केन्द्रीय आयोजिका, दोसर ओर गामक लोककेँ सामूहिक नायक बनबैत अछि। देहसभ केवल दृश्य-संख्या नहि—बाल्टी एक सँ दोसर धरि पहुँचेबमे प्रत्येक हाथक भाग आवश्यक। एहि रूपमे घटनाक क्रिया-तर्क व्यक्ति-वीरताक बदला सहयोगक श्रृंखला बनबैत अछि।

आगिक गतिक अचानक धीम पड़ब : दृश्य आ अनुमान

आगि पीपरक जड़ितक पहुँचि ‘अकस्मात्’ धीमा पड़ैत अछि, ‘जेना’ गाछक जड़ि प्रतिरोध कऽ रहल होइ। कथावाचकक ‘जेना’ एक तुलना अछि; पीपरक जड़ि सचेत सैनिक बनि आगि रोकलक—एहन स्वतन्त्र घटना नहि। एहि क्षणमे गद्य व्यवहारिक पानि-पहुँचावक संग एक जादुई-जेहन दृश्य जोड़ैत अछि। आगिक गति धीम होएबाक निश्चित कारण—जल-प्रवाह, भूगोल, जड़ि अथवा हवा बदलनाइ—अलग वर्णित नहि। एहि अनिर्णयमे यथार्थवादी बचाव आ रूपकात्मक प्रकृति-सहभागिताक दू लय संग रहैत अछि।

इन्द्राणीक पश्चकथन : पातसभ लपटकेँ भुलौलक?

कथावाचक कहैत छथि जे इन्द्राणी ‘बादमे’ बतौलक, ओकरा बुझायल जे गाछीक पात सभ एकसंग हिलि आगिक लपटकेँ भ्रमित कऽ रहल छल। एहि विवरणक स्रोत इन्द्राणीक पछिला स्मरण अछि, तात्कालिक दृश्यपर सर्वज्ञ कथावाचकक प्रत्यक्ष घोषणा नहि। ‘जेना’ आ ‘बुझायल’ एतय महत्त्वपूर्ण—पातक हिलब दृश्य, लपटकेँ रस्ता भुलाबयवला उद्देश्य मानवीकरण। एहि कथन-स्तरक भेद कृतिक जादुई अनुभवक सूक्ष्मता बनबैत अछि।

पीपरक पूर्ण अक्षत रहब आ किनारक गाछक क्षति

भोरक परिणाममे चन्ना गाछीक किछु किनारी गाछ जरल-अधजरल, मुख्य गाछी बचल, आ ‘पीपर, गाछीक हृदय, पूर्ण रूपसँ अक्षत’। [–७०]मे बूढ़बाक विस्तारित देह बहु गाछ धरि पहुँचने छल; एतय किनारी क्षति आ केन्द्रीय बचाव ओहि संरचनाकेँ नयका जोखिमक रूपमे देखबैत अछि। पीपरक अक्षतता अतिनाटकीय खुशीक केन्द्र, मुदा सम्पूर्ण गाछी एकदम अनछुआ कहल जाए त मूल पाठ विरुद्ध। सफल बचावमे क्षतिक वास्तविक अंश सुरक्षित राखल गेल अछि।

भोरक समय : रातिभरि संकटक संक्षेप

दीप खसलाक एक क्षणमे आगि फैलैत अछि, मुदा पूर्ण बुतबाक समय ‘भोर होइत-होइत’। एहि प्रकार एक रातिक दीर्घ आपदा किछु त्वरित दृश्य आ सारांशमय क्रियामे समेटल गेल। कथामे घड़ीवार अग्निमोर्चा, थकान वा जल-आपूर्तिक परिमाण नहि। रात्रिक गति पहिने विस्फोटक, मध्य संघर्षमय, अन्त धीमा-स्थिर। भोरक आगमन प्रकाशक दृश्य मात्र नहि, कथाक संकट सँ परिणाम दिशि संक्रमणक संकेत।

घर जरल, मृत्यु वर्णित नहि : गीत-गद्यक महत्त्वपूर्ण भेद

‘राखसँ नव आगि’ लोकगीत कहैत अछि—‘जे बाँचल, से फेर बनाओल; जे मरल, तकर नाम राखल’। मुख्य गद्य घरक दहन, मन्दिरक आंशिक क्षति, गाछीक किनारी नुकसान आ पुनर्निर्माण बतबैत अछि, मुदा अगिनकाण्डमे कियो मरलक—एहन स्पष्ट घटना नहि। एतय ‘कियो नहि मरल’क निश्चय सेहो नहि; मृत्यु-विषयक पाठ मौन। गीतक मृतक-स्मरणक सामान्य लोकसूत्रकेँ नामित अगिनकाण्डक मृत्यु-सूची बनाउ अनुचित। ई दूनू कथनस्तरक विशिष्ट अन्तर अछि।

राखसँ नव चूल्हि : गीतक ठोस दृश्य गद्यमे कतय?

फकरा आ गीतमे ‘राखसँ नव चूल्हि जरल’क पुनरावृत्ति अछि। मुख्य गद्य लोकसभ जरल घर पुनः बनौलक आ दीपक विशेष स्थान सहित सुरक्षा-नियम बनौलक, मुदा हर घरमे नव चूल्हि जलाबाक अलग दृश्य नहि। गीत विनाशसँ जीवन-नवीकरणक एक संक्षिप्त घरेलू रूपक दैत अछि; गद्य आगि-सुरक्षाक सामुदायिक सीखपर रुकैत अछि। एहि अन्तरकेँ समझने गीतक सांस्कृतिक पुनर्जन्म आ कथाक वास्तविक पुनर्निर्माणक अलग काम पहिचानल जा सकैत।

नाम नहि जरल : स्मृतिक काव्यात्मक निरन्तरता

‘आगि घर लेलक, नाम नहि’क फकरामे नाम आगिसँ सुरक्षित रहबाक काव्यात्मक विश्वास अछि। भौतिक घर जरैत, गामक सामूहिक उच्चारण आ बूढ़बाक स्मृति कायम रहैत—ई उपन्यासक दीर्घ विषयसँ संगत। मुदा अगिनमे हर लिखित दस्तावेज बाँचि गेल, सभ पात अक्षत छल वा स्मृतिभ्रंशक सम्भावना समाप्त—एहन गद्यमूलक घोषणा नहि। कृतिक सांस्कृतिक निश्चय आ वस्तुगत क्षतिक अलग रूप समकालीन उपस्थिति कथा-संरचनाक भाग।

‘हम स्वयं आगि रोकलहुँ?’ : इन्द्राणीक अन्तिम प्रश्न

राखक बीच बैसल इन्द्राणी बूढ़बासँ पूछैत छथि—ओ स्वयं आगि रोकने छलाह कि नहि? एहि प्रश्नसँ आगिक धीम पड़बाक रहस्य पात्रगत स्तरपर पुनः खुलैत अछि। यदि कथा पूर्ण चमत्कारक घोषणा चाहित, एतय बूढ़बाक सकारात्मक उत्तर सम्भव छल। मुदा ओ ‘नहि’ कहैत, पोखरिक पानीक जानकारी आ मानवहाथक भूमिकाकेँ मान्यता दैत छथि। प्रश्नोत्तर पाठकक जादुई अपेक्षाकेँ एक व्यावहारिक समापन दैत, तथापि पातक असामान्य हिलबाक अनुभूति रहस्यमय रहैत अछि।

बूढ़बाक नम्र भूमिका : दिशा-निर्देशक, अग्निशामक नहि

बूढ़बा कहैत छथि—‘हम केवल जनैत छलहुँ जे पानि कतय अछि’। एहि छोट आत्म-वर्णनमे हुनकर दीर्घ सामुदायिक स्मृति आ वर्तमान घटनाक बीच सम्बन्ध अछि: स्थल-स्मरण उपाय सुझबैत, वास्तविक काम मनुष्य करैत। कथामे बूढ़बाक अलौकिक हस्तक्षेप निश्चयात्मक रूपमे स्वीकार नहि, एक भययुक्त सम्भावना आ इन्द्राणीक अनुभूति तक। यथार्थवादी सामूहिक कार्रवाई आ जादुई स्मृति-चरित्रक सन्तुलन ई संवाद बनबैत अछि।

पुनर्निर्माणक कथन : अन्तिम घटना-सारांश

आगि बुतलाक बाद गाम जरल घर अधिक सुरक्षित ढंगसँ फेर बनबैत अछि—दीप लेल अलग स्थान, आपतकालीन जलभंडार आ आगि-सुरक्षाक नव नियम। संकटसँ सीखक संस्थागत रूपान्तरण एतय घटित कहल गेल अछि। मुदा कोन घर पहिने बनल, संसाधन कतयसँ आयल, खेतक काम रोकायल कि नहि, जे परिवार बेघर भेल ओकर राति कतय बीतल—एहन पुनर्वासक विस्तृत दृश्य नहि। कथा निर्माण-सारांशद्वारा समाजक अनुकूलन घोषित करैत, दीर्घ कष्टक निजी वृत्तान्त नहि।

आपदा-स्मृतिक लोककथा : प्रत्यक्ष घटनासँ पीढ़ीक पाठ धरि

‘अगिनक राति’ गामक स्मृतिमे प्रत्येक नव पीढ़ीकेँ सिखाओल जाइत कथा बनल कहल गेल। एहि पुनःकथनसँ एक बारक वास्तविक आगि-सङ्कट पुनरावर्तित सांस्कृतिक शिक्षा बनैत अछि। अगिला पीढ़ीक अलग-अलग श्रोता दृश्य नहि; कथावाचक व्यापक कालिक भविष्यक सारांश दैत अछि। [–६५]क नकली भूतक कथा सेहो लोकचेतावनी बनि गेल छल; वर्तमान शिक्षा वस्तुगत अग्नि-सुरक्षाक नियमसँ जुड़ल। घटना सँ विधि आ कथा धरि संक्रमण एकरे संग्रहक अन्तर्भाव।

आगिक प्रकृतिक नैतिक सामान्यीकरण : कथाक आरम्भसँ दूरी

अन्तिम कथन प्रकृतिक शक्ति भयंकर मुदा मनुष्यक एकता अधिक प्रभावी होयबाक आशय दैत अछि। तथापि प्रारम्भमे जोखिम उत्पन्न भेल दीपक अनुचित स्थान, सुखल पयराल आ असाधारण तेज हवाक संयुक्त कारणसँ। तेँ आगिक सामाजिक कारणक मानवीय अंश उपसंहारक प्रकृति-बिम्बमे दबि सकैत अछि। नव सुरक्षा-नियम वस्तुतः एहि मानवीय कारणक प्रत्युत्तर अछि; कथाक अन्तिम नैतिकता पढ़ैत आरम्भक वस्तुगत सूत्र नहि बिसरब। एहि तनावसँ कथा उपदेशात्मक व्यापकता पबैत, मुदा कारणक विशिष्टता किछु धुँधली।

सामूहिक नायकक सीमा : ककर आवाज उपलब्ध?

इन्द्राणी, बूढ़बा आ ‘स्त्री सभक राति-सभा’ मुख्य रूपेँ नामित संस्थागत आवाज छथि। सैकड़ों हाथ, जारल घरक निवासी, शिशु, वृद्ध, विभिन्न टोलाक लोकसभक व्यक्तिगत अनुभव संक्षिप्त। कथा सामूहिक साहस कतेक व्यापक छल कहैत, मुदा हानिक विभेदक निजी कथा कम देखबैत। जलेल घरक माए, ईंधनक काम करनिहार, धानभंडारक रखवार ककरो स्वतन्त्र संवाद नहि। ई अभाव घटना-निषेध नहि, नायकीय केन्द्रितीकरणक साहित्यिक सीमा।

समग्र कथात्मक निर्णय : लपट, पानि आ स्मृतिवन

अध्यायक शक्ति त्वरित आगिक आरम्भ, इन्द्राणीक खिड़की-दृष्टि, तेज हवासँ पसरैत लपट, पोखरिसँ गाछीतक मानव-श्रृंखला आ बूढ़बाक सीमाबोधक संयोजनमे अछि। अनेक पूर्व संस्थाक नयका उपयोग कथा-विस्तारकेँ प्रतिफल देत अछि। दू महत्त्वपूर्ण अन्तर: [−६१]क शरदसँ [−६०]क जेठ धरि एक मासक काल असंगत; गीतमे मृतकसभक स्मृति, गद्यक अगिनकाण्डमे स्पष्ट मृत्युचित्र नहि। आगिक धीम पड़ब मानव–प्रकृतिक मिश्रित रहस्य, चमत्कारक निश्चयात्मक घोषणा नहि।

स्रोत, सीमासूचना आ अगिला त्रयीगत क्रम

प्राथमिक स्रोत मूल अध्याय [−६०] ‘अगिनक राति’, ‘राखसँ नव आगि’ गीत, इन्द्राणी–बूढ़बाक संवाद, भोरक क्षतिवर्णन आ अन्तिम पुनर्निर्माण। अगिनमे वास्तविक मृतकसंख्या, जल-श्रृंखलाक दूरी, घरक सम्पूर्ण जातिवार हानि आ सुरक्षित भेनिहार परिवारक व्यक्तिगत अनुभव निर्दिष्ट नहि। एहि प्रकरणक बाद [−५९] ‘दोसर बाढ़ि’मे आगिक सूखल भूमि सँ पुनः पानिक अतिरिक्त आगमनक पर्यावरणीय विपर्यास कथा कैँ नव संकटमे पठबैत अछि।

प्रकरण ४२ | मूल अध्याय −५९ — दोसर बाढ़ि

पूर्वकथाकाल · बाढ़िक पुनरागमन, पूर्वचेतावनीक ध्वनि, चर्मकार टोलाक भूगोल आ स्मृतिक जीवनरक्षक रूपान्तरण

मूल पाठमे अध्याय-आरम्भ : २८०; अगिला अध्याय [−५८]क आरम्भ : २८४ (अनुक्रमणिका-अनुसार पृष्ठ-परास २८०–२८३)।

प्रकरणक केन्द्र : दोहरायल पानि, बदलल गाम

‘दोसर बाढ़ि’क निर्णायक रचनात्मक प्रश्न पानिक पुनरागमन नहि, बल्कि दोहरायल विपत्तिक सोझाँ गामक बदलल व्यवहार अछि। कमला-बलान फेर सीमा तोड़ैत अछि; संकट पहिल बाढ़ि जकाँ दक्षिणी, चर्मकार टोलाक बान्हक निकट पहुँचैत अछि। मुदा कथानक पहिलुक भयावह परिणाम दोहरबैत नहि। सामूहिक चेतावनी, पूर्वनिर्धारित सुरक्षित स्थल आ इन्द्राणीक योजनासँ एहि बेर प्राणहानि नहि होइत अछि। कथावाचक एहि अन्तरकेँ स्पष्ट परिणाम बनबैत छथि। एतय ‘पहिल’ आ ‘दोसर’ केवल कालक क्रमसूचक पद नहि, एक सामुदायिक पात्रक चरित्रविकासक दू अवस्था छथि। पानिक मात्रा अथवा बलक तुलनासँ अधिक कथात्मक महत्त्व निर्णयक बदली अवस्था कैँ भेटैत अछि।

अध्यायारम्भक फकरा : पाठक लेल पूर्वनिर्धारित पठन-दिशा

‘दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है, तैयो नव घाव दै— जे गाम बाढ़ि झेलल, से पानिकेँ पढ़ब सिखलक’ ई उद्घाटन मुख्य घटनासँ पहिनहि ओकर अर्थ-संरचना बनबैत अछि। बाढ़िक ‘बाट चिन्हब’ प्रकृतिक मानवीकरण अछि; गामक ‘पानि पढ़ब’ अनुभवकेँ पाठ्य-संकेतमे बदलैत अछि। एहि भाषिक समानान्तरमे नदी स्वयं पुरान मार्गपर

लौटैत, मनुष्य ओकर वापसीक अर्थ पहिने पढ़ि लेब सीखैत अछि। पाठककेँ सफलता अग्रिम सुझा देबाक कारण अनिश्चितता कमैत अछि, मुदा नाटकक तनाव समाप्त नहि: कतेक मूल्य चुकौल गेल, बान्ह कतय टूटल आ संरक्षणक सीमा की रहल—ई प्रश्न मूल गद्य शेष रखैत अछि। फकरा जीवनरक्षाक अनिवार्य निश्चय नहि, अध्याय पढ़बाक एक दृष्टिकोण देबैत अछि।

लोकगीत ‘पानि पढ़नि’ : सामूहिक स्मृतिक संक्षिप्त आख्यान

‘पानि पढ़नि’ बाढ़ि-गीत पूर्व घटना, वर्तमान तैयारी आ सम्भावित भविष्यकेँ एकहि लयमे संक्षिप्त करैत अछि। ‘पहिल बाढ़िसँ डर, दोसरसँ ज्ञान भेल’क सूत्र जटिल सामुदायिक अनुभवकेँ दू चरणक शिक्षा-कथामे ढालैत अछि। अन्न महारपर राखब, माल-जाल सम्हारब आ घर ऊँच करबाक गीतगत बिम्ब गद्यक विशिष्ट निकासी-योजनासँ सम्बद्ध छथि, मुदा गद्यमे प्रत्येक घर उठाओल गेल—एहन घटना नहि। गीत आदर्शीकृत समुदायक वाणी अछि, गद्य निश्चित व्यक्तिक निर्णय आ टूटल बान्हक कथा। दुनू स्तरकेँ एक बना देने गीतक सम्भाव्य शिक्षा वास्तविक दृश्य-विवरणक नकली तथ्य बनि जाएत।

अगिनक तीन मास बाद : पर्यावरणीय कालक कथात्मक प्रवेश

अध्याय मुख्य कथाखण्डकेँ ‘अगिनक तीन मास बाद’ आरम्भ करैत अछि। पिछला अध्याय [−६०]क रातिक आकस्मिक लपटसँ एतय दीर्घ वर्षाक मौसमक ओर संक्रमण स्पष्ट अछि। ‘दिन-राति, बिनु रुकने’ वर्षाक कथन अनेक घण्टा वा दिनकेँ एक संक्षिप्त अनुच्छेदमे समेटैत अछि; कथावाचक सटीक दिनगणना नहि दैत छथि। नदीक सीमा टूटबाक अग्रिम वर्णन परिणामक पूर्वाभास अछि, गामक प्रत्येक परिवारक व्यक्तिगत पूर्वानुभूति नहि। एहि प्रकार कथनकाल छोट, आपदाक पर्यावरणीय अवधि अपेक्षाकृत विस्तृत, आ निर्णायक रात्रि फेर दृश्यगत विस्तार पबैत अछि। वर्षा केवल पृष्ठभूमि नहि—घटनाक भौतिक प्रेरक तत्त्व थिक।

कमला-बलानक सीमा : नदीक क्रिया आ रूपकक फरक

मूल गद्य कमला-बलान आ चारूकातक धारा ‘अपन-अपन सीमा भूलि’ गेल कहैत अछि। ‘भूलि’ प्राकृतिक जलक चढ़ावक मानवीकृत प्रस्तुति; नदीक सचेत अपराधबोध वा व्यक्तिगत इच्छा नहि। नदी पानिक दबाव बढ़बैत, बान्ह कमजोर करैत, स्थल परिवर्तन करबैत अछि—एतेक कथात्मक सक्रियता वास्तविक दृश्यमे अछि। नदीक ‘क्रोध’ बूढ़बाक अनुभूति-वाक्यमे भेटैत अछि, अलग प्राकृतिक कारणक रूपमे प्रमाणित नहि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि: पानिक एजेंसी कथामे ओकर विनाशकारी क्रियासँ बनैत अछि, न कि नदीकेँ मनुष्य-समान नैतिक पात्र घोषित केलासँ। एहि दोहरी भाषा—जलभौतिकता आ लोकसंवेदना—क सहअस्तित्व अध्यायक पर्यावरणीय शिल्प अछि।

पाकल बान्ह : पहिल बाढ़िसँ बनल स्थापत्यक परीक्षा

पहिल बाढ़ि [−८९]क बाद चर्मकार टोलाक सुरक्षा लेल पाकल ईंटा आ शिलासँ बान्ह बनल छल; गामक ‘गढ़’ नामो ओकर स्मृतिसँ जुड़ल कहल गेल। वर्तमान अध्याय ओहि दीर्घकालिक रक्षाविधानकेँ नयका संकटमे राखैत अछि। ‘सुखदेव महतोक जमानाक बादसँ मजगूत मानल’ बान्हक अतीतक एक संकेत अछि, एकर प्रत्येक

बरखक मरम्मत-इतिहास नहि। बान्ह काँपब, बालूक बोरा-लकड़ीसँ मजबूतीकरणक योजना बनब, आ अन्ततः एक हिस्साक टूटब—ई तीन अलग अवस्था छथि। विफल बान्हक कथा समुदायक सम्पूर्ण संस्थागत शिक्षाकेँ निरर्थक नहि बनबैत; ओ शिक्षा बान्हसँ बाहर निकासी आ चेतावनीक बहुविध उपायमे देखाइत अछि।

चर्मकार टोलाक दक्षिण : पुनरावृत्त स्थलमे सामाजिक स्मृति

जहि दक्षिणी चर्मकार टोलापर पहिल बाढ़िक पानि सबसँ पहिने टूटल छल, ओही दिशाक एक बान्ह-हिस्सा एखन फेर भंग होइत अछि। स्थानक ई वापसी निरपेक्ष भूगोल नहि; पहिल अध्यायक सामाजिक असमानताक स्मृति जाग्रत करैत अछि। [–८९]मे दीन रखरखाव आ राहत-अभिलेखमे नामक उपेक्षा स्पष्ट छल; एतय कम सँ कम चेतावनी समस्त गाम धरि पहुँचेबाक संयुक्त व्यवस्था सक्रिय अछि। तथापि वर्तमान अध्याय ए नहि बतबैत जे चर्मकार टोलाक हर परिवारक निवास, सामान आ जीविकाकेँ अन्य टोलासँ समान सुरक्षा भेटल। मृत्युशून्यता महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, मुदा सामाजिक क्षतिक समान वितरण एहि परिणामसँ अपने सिद्ध नहि होइत अछि।

इन्द्राणीक प्रथम दृश्य : दौड़, भीजल देह आ सम्बोधन

घनघोर वर्षामे भीजल इन्द्राणीक पीपर लग दौड़ि अएनाइ अध्यायक पहिल तीक्ष्ण मानवीय दृश्य अछि। पूर्व अनुच्छेद व्यापक नदीप्रदेश देखबैत अछि; आब दृष्टि एक स्त्रीक देह, भय आ त्वरित वाणीपर केन्द्रित होइत अछि। ‘अगिनक बाद बाढ़ि’ हुनकर प्रश्नमे घटनासभकेँ क्रमबद्ध संकट बनबैत अछि। ओ केवल सूचनादात्री नहि, सम्भावित सामुदायिक विध्वंसक चिन्ता लऽ कऽ बूढ़बालग पहुँचैत छथि। गद्य हुनकर भीजल शरीरक संकेत दैत, मुदा यात्रा-पथ, साथ चलनिहार लोक वा अपन घरक स्थितिक विवरण नहि। दृश्यक केन्द्र सामूहिक नेतृत्वक भावनात्मक मोड़ अछि, विस्तृत निजी जीवनचरित्र नहि।

बूढ़बाक जड़िक अनुभूति : दृष्टिकेन्द्रक विचित्र विस्तार

बूढ़बा पीपरक जड़िसँ पानिक बढ़तीक ‘हर स्पन्दन’ अनुभव करैत छथि। साधारण मानव-चरित्रसँ अलग एहि कथात्मक क्षमतासँ गाछ, धरती आ पानिक अनुभव एक अर्ध-अलौकिक दृष्टिकेन्द्र पबैत अछि। मुदा एतय हुनका द्वारा पानी मोड़ल, बान्ह रोकल अथवा बचावक चमत्कार घटित भेल नहि कहल गेल। बूढ़बाक संवेदना संकटक घनत्व बुझबैत अछि; इन्द्राणीक योजना ओकर व्यावहारिक उत्तर बनैत अछि। [–८९]मे बूढ़बा बचाबय चाहि पहिने भयभीत आ असमर्थ छलाह; एहि बेर ओ अपन पूर्वस्मरण इन्द्राणीकेँ देबैत छथि। एहने पुनरावृत्तिसँ दीर्घजीवी साक्षीक नायकीय भूमिका चमत्कारसँ अधिक स्मृतिक माध्यमक रूपमे बदलैत देखाइत अछि।

पहिल सात प्राणक उल्लेख : पूर्वक त्रासदीक कथाभीतर पुनरावृत्ति

बूढ़बा पहिल बाढ़िक सात मृतकक बात सीधा इन्द्राणीकेँ कहैत छथि। [–८९]मे सुभागी तथा छह अन्य मृतकक कथात्मक विवरण अछि; छह जनक नाम अभिलेखमे ठीकसँ नहि लिखाएबाक पीड़ा सेहो वर्णित। वर्तमान वाक्य एक पूर्ण पूर्वप्रकरणकेँ एक सङ्क्षिप्त स्मृतिसूत्रमे समेटैत अछि। ई ‘पहिले की भेल?’क पाठकीय स्मरण जगबैत आ आगामी ‘कोनो प्राण नहि गेल’ परिणामक तुलनात्मक कसौटी बनबैत अछि। मुदा सात मृतकक उल्लेखक

संग पहिल बाढ़िक सम्पूर्ण सामाजिक इतिहास एतय पुनः मंचित नहि; जे पाठक [–८९] नहि पढ़ने छथि, हुनका संख्या भेटैत अछि, मृतकसभक अलग-अलग जीवन नहि।

‘बेसी क्रोधित’ पानि : अनुभूतिक तुलना, मापक नहि

बूढ़बाक कथन अनुसार वर्तमान पानि ‘ओहि पानिसँ बेसी क्रोधित लगैत अछि’। ‘लगैत अछि’ अनुभवक सीमा स्पष्ट करैत अछि; एहि सँ वर्तमान बाढ़िक जलस्तर, वेग, क्षेत्रफल वा वैज्ञानिक तीव्रता पहिल बाढ़िसँ वस्तुगत रूपेँ अधिक सिद्ध नहि होइत। कथा एहन परिमाण प्रस्तुत नहि करैत। मुदा ई वाणी नाटकीय भूमिका निभबैत अछि: समुदाय पूर्व अनुभवक भरोसे निष्क्रिय नहि रहि सकैत, कारण अगिला संकट कठिन बुझा रहल अछि। कठोर वर्तमानक सम्भावना आ नव तैयारी एकसंग रखलासँ ‘पहिनेसँ शिक्षा लेलहुँ, तेँ सुरक्षित छी’क सरलीकृत आश्वासन टूटैत अछि।

आतङ्कसँ योजनाक ओर : इन्द्राणीक अवस्थापरिवर्तन

बूढ़बासँ संवादक बाद इन्द्राणी ‘हर टोलार्कैं’ बजाकऽ तत्काल योजना बनबैत छथि। मुख्य कथात्मक घटना केवल सलाह सुनब नहि, सामूहिक कार्य-विन्यासमे बदलल निर्णय अछि। योजना तीन मुख्य दिशामे बँटल—कमजोर बान्हक हिस्सामे बालूक बोरा-लकड़ी, वृद्ध आ बच्चार्कैं ऊँच स्थलपर पहिनहि पठेब, आ नाव-रस्साक सम्भावित उपयोग लेल व्यवस्था। ई चरित्रीय परिवर्तन ‘भयभीत स्त्री’सँ ‘निष्कम्प नायिका’क जादुई छलाँग नहि; ओ अगिनक रातिसँ उपलब्ध अर्जित सामर्थ्यक अगिला उपयोग अछि। तथापि प्रत्येक उपाय कतबाधरि सफल भेल, कतेक बोरा लगल अथवा कतेक नाव उतरल—गद्य स्पष्ट नहि करैत; योजना आ सम्पन्न क्रियाक अन्तर सुरक्षित रखबाक चाही।

तीन तैयारीक भिन्न समय : रोकथाम, निकासी, सम्भावित बचाव

बालूक बोरा आ लकड़ी बान्हक तत्काल प्रतिरोध लेल, वृद्ध-बच्चाक अग्रिम निकासी खतरा घटएबाक लेल, नाव आ रस्सा सम्भावित आपातकाल लेल सोचल गेल। कथामे ई तीनू समान रूपसँ सफल घटना नहि। बान्हक एक हिस्सा टूटैत अछि, निकासी पहिले सँ होइत अछि, मुदा नाव सँ कतेक लोक बचाओल गेल—एहन विशिष्ट दृश्य अनुपस्थित। आलोचनामे ‘सभ उपाय कार्यान्वित भऽ सफल भेल’ कहब कथाक घटनात्मक सूक्ष्मता नष्ट करत। लेखकीय सरलीकरण एतए इन्द्राणीक प्रज्ञार्कैं तीन विकल्पक समावेशसँ बनबैत अछि; अन्तिम सफलताक प्रत्यक्ष निर्णायक संकेत सक्रिय चेतावनी आ सुरक्षित स्थान धरि पहुँचल लोक छथि।

बान्ह टूटबाक रात्रिदृश्य : प्रत्याशा आ परिणामक असमानता

राति गहींर होइत अछि आ अन्ततः चर्मकार टोलाक दक्षिणक एक हिस्सा टूटैत अछि। ‘अन्ततः’ दीर्घ दबावक एक परिणामसूचक पद अछि; पाठक पहिने सँ बान्ह काँपब जानैत छथि, तेँ टूटब आकस्मिक रहस्य नहि। असली नाटकीय मोड़ एकर ठीक अगिला सूचनामे अछि—ओहि समय धरि घंटी, ढोल आ पूर्वनिर्धारित संकेत सक्रिय भऽ गेल छल। भौतिक रक्षाक विफलता सामाजिक चेतावनीक सफलता सँ कटैत अछि। कथाकार संकट-दृश्यर्कैं ‘बान्ह बाँचल’क चमत्कारमे नहि, ‘बान्ह टूटियो कऽ प्राण बचल’क परिमित विजयमे रूपान्तरित करैत छथि।

संकेत-व्यवस्था : समयकेँ समुदायमे वितरित करबाक शिल्प

घंटी, ढोलक धुन आ पूर्वनिर्धारित संकेत एहि अध्यायमे कथाक ध्वनि-माध्यम छथि। पहिल बाढ़िमे गौरीक सपना आ दादीक चिचियाहट संकटसूचना बनल छल; एहि बेर चेतावनी व्यक्ति-विशेषक अलौकिक सुननाइपर निर्भर नहि। ध्वनिक एकरूप नियम गामक अलग-अलग स्थानमे एकहि संकटसमय पहुँचबैत अछि। एतय पानिक आगमन शारीरिक रूपेँ असमान दूरी पर घटैत, मुदा चेतावनीक समय सामूहिक बनैत अछि। गीत–संकेत, आपदा–संकेत आ पाठकीय कथा-संकेतक बीचक ई भिन्नता अध्यायकेँ स्वर-आधारित संरचना दैत अछि।

मोहनक वंशजक ढोल : वंशक नामसँ कार्यक निरन्तरता

मोहनक वंशज ढोलवादनक परम्परा सम्हारैत छथि आ एतय ‘खतराक धुन’ बजबैत छथि। कथामे वर्तमान ढोलकियाक व्यक्तिगत नाम नहि देल गेल; परिचय वंश आ कला-कर्मसँ निर्धारित अछि। एहि चयनसँ दीर्घ उपन्यास पीढ़ीक विच्छेदकेँ परम्पराक क्रियात्मक निरन्तरतासँ जोड़ैत अछि। बाजाक सांस्कृतिक प्रस्तुति एहि रात्रि जीवित बचबाक सार्वजनिक उपकरण बनि जाइत अछि। मुदा ‘मोहनक वंशज’ एक सामूहिक परिचय मात्र थिक; कतेक लोक ढोल बजौलनि, कोन टोलामे कोन धुन सुनायल, कथावाचक नहि कहैत छथि। एहि सीमासहित ढोलक ध्वनि अध्यायक सबसँ असरदार गैर-मानवीय कथावाहक बनैत अछि।

बचपनहिसँ सिखल धुन : आवृत्तिक कथात्मक प्रतिफल

गामक प्रत्येक मनुष्य बचपनहिसँ ‘खतराक धुन’ चिन्हैत छल—ई कथावाचकक व्यापक कथन अछि। संकटसमयमे सामूहिक कार्य सम्भव होएबाक कारण एतय पहिनेसँ सम्पन्न शिक्षा अछि। उपन्यास विस्तारसँ कोनो प्रशिक्षण-दृश्य नहि देबैत, मुदा नियमित रूपसँ सिखाओल धुनकेँ वर्तमान प्रतिफलमय घटना बनबैत अछि। ‘बार-बार दोहरायल’क ध्वन्यात्मक आवृत्ति तत्काल रातिक भीतर पुनरावृत्ति, आ ‘बचपनहिसँ’क स्मरण पीढ़ीक भीतर दीर्घ पुनरावृत्ति। एक क्षणक ढोलद्वनि मे कतेको बरखक संस्कार उपस्थित भऽ जाइत अछि। एहन काल-गहनता सामुदायिक स्मृतिक कथात्मक सफलता अछि, तथापि प्रशिक्षणक व्यवहारिक विविधता गद्यक क्षेत्रमे नहि अबैत।

अन्हार गलीमे गूँजैत आवाज : अदृश्य स्थलपर प्रभाव

मुख्य गद्य अन्हार गली, बन्द घर आ दौड़ैत परिवारक अलग-अलग स्थिति पर धुनक प्रभाव देखबैत अछि। ई दृश्य प्रकाशसँ नहि, श्रवणसँ गामक भूगोल बनबैत अछि। जे व्यक्तिक घर एक-दोसरासँ दूर, हुनका सभकेँ ध्वनि एक सम्बन्धसूत्रमे बाँधैत अछि। प्रत्येक परिवारक नाम वाचक नहि दैत, मुदा एकहि धुनपर क्रिया परिवर्तनक वर्णनसँ सामूहिक दृश्य तैयार होइत अछि। ध्वनि नायकत्वक केवल अलंकार नहि: जखन चेतावनी पानिसँ पहिने पहुँचैत अछि, घटना-क्रमक दिशा बदलैत अछि। एहि अर्थमे संकेत व्यवस्था कहानीक समय-नियन्त्रणक ठोस साधन अछि।

गौरीक सपना आ सार्वजनिक ढोल : अन्तरपीढ़ी पुनर्लेखन

[–८९]मे गौरी सपनमे बूढ़बाक ‘उठ’ सुनैत छलीह; दादी ओकर आवाज पहचानि घरोघर सूचित करैत छलीह। वर्तमान अध्यायमे ‘उठ’क व्यक्तिगत चेतना पूर्वनिर्धारित धुनक सार्वजनिक व्याकरण बनि गेल अछि। दुनू अध्यायक साधन समान नहि, मुदा संकटसूचनाक कथात्मक कार्य समान दिशामे बढ़ैत अछि। पहिल बेर चेतावनी व्यक्तिगत असाधारण अनुभूतिसँ चलैत, एखन संस्थागत सांकेतिक शिक्षा सँ। युगान्तरक परिवर्तन एतय प्रेतस्मृति समाप्त होएब नहि, ओकर अनुभव सामूहिक व्यवहारमे रूपान्तरित होएब अछि। कथा एहि रूपान्तरणक मध्यवर्ती सभ प्रशिक्षण-क्षण नहि देबैत; पाठककेँ दुइ दूरस्थ दृश्य जोड़ि बुझय पड़ैत अछि।

उच्च भूमि आ पुरान श्मशान : स्थल-प्रतीकक रूपान्तरण

इन्द्राणी वृद्ध आ बच्चाकेँ ‘पुरान श्मशान’ दिस पठेबाक योजना बनबैत छथि, ‘गौरीक जमानाक जकाँ’क स्पष्ट संकेतसहित। [–८९]मे सामान्यतः अशुभ मानल ओ स्थल गौरीक परिवारक शरणस्थल बनल छल। एहि बेर ओ पहिनेसँ मान्य सुरक्षित स्थानक रूपमे याद राखल गेल। स्थल वास्तविक ऊँचाइ रखैत अछि आ सांस्कृतिक अर्थ बदलैत अछि—मृत्यु-संस्कारक स्थान जीवनरक्षाक नक्शामे प्रविष्ट होइत अछि। मुदा श्मशानक अनुमानित क्षमता, वास्तविक भीड़ वा निवासक सुविधा मूल पाठमे नहि। कथावाचक स्थल-वापसीसँ स्मृतिक प्रभाव सिद्ध करैत छथि; सर्वसम्पूर्ण पुनर्वासक दृश्य नहि।

वृद्ध आ बच्चाक प्राथमिकता : संरक्षणक दृष्टि आ ओकर सीमा

इन्द्राणीक निकासी-योजनामे वृद्ध आ बच्चा सभ पहिल प्राथमिक समूह छथि। ई चयन [–८९]मे वृद्ध सुभागीक असमर्थताक स्मृतिसँ आलोचनात्मक रूपेँ जुड़ैत अछि। पूर्वक त्रासदीमे असमय निकासी आ शारीरिक असमर्थता प्राणहानिक कारण बनल छल; एतय सुरक्षित स्थल पहिनहि चिन्हल जाइत अछि। तथापि गद्य प्रत्येक वृद्धक सहायकर, शारीरिक अशक्त लोकक वास्तविक परिवहन, गर्भवती स्त्रीक स्थिति वा नावक प्रयोगक स्वतन्त्र वर्णन नहि दैत। तेँ सुरक्षा-चिन्ताक साहित्यिक संकेत आ सर्वव्यापी सुगम निकासीक विस्तृत वास्तविक प्रतिवेदन एक नहि। ई सीमासहित समूहविशेषक उल्लेख कथाक नैतिक प्राथमिकताकेँ ठोस बनबैत अछि।

सामूहिक पात्रक निर्माण : ‘हर टोला’ आ ‘हर परिवार’

‘हर टोलाकेँ बजा’ आ ‘हर परिवारकेँ’ चेतावनी भेटबाक व्यापक सूत्रसँ कथा गामकेँ एक सामूहिक पात्र रूपमे बनबैत अछि। एहि प्रयोगमे व्यक्तिगत जीवनक विविधता छोट होइत, साझा उद्देश्य प्रकट होइत अछि। इन्द्राणी नेतृत्वक नामित मुख छथि, मोहनक वंशज ध्वनिक वाहक, बूढ़बा दीर्घ स्मृतिक स्वर; बाकी लोकक भागीदारी क्रियासारांशमे उपस्थिति पबैत अछि। कथावाचक जे समष्टिक चित्र देबैत छथि, से अनिवार्यतः प्रत्येक घरक जटिल निजीकथा नहि। मृत्युशून्य परिणामक अर्थ लोकसभ वास्तविक रूपेँ बाँचल—मुदा संकटझेलबाक अनुभव प्रत्येक व्यक्तिक लेल एक रंगक छल, से नहि कहल जा सकैत अछि।

स्त्री नेतृत्व आ दृश्याधिकार : इन्द्राणी, गौरी आ अनुपस्थित आवाज

पहिल बाढ़िक केन्द्रीय बालस्वर गौरी, वर्तमान संकटमे नेतृत्वक स्वर इन्द्राणी छथि। एहि बदलावमे स्त्रीक उपस्थितिक प्रकार बदलैत अछि: बालिकाक असाधारण चेतावनी-संवेदनासँ वयस्क स्त्रीक सार्वजनिक योजनागत निर्णय धरि। कथा इन्द्राणीकेँ भय स्वीकारब आ निवारणक कार्य विभाजित करबाक दुनू अधिकार दैत अछि। मुदा योजना बनबैत समय अन्य स्त्रीसभक स्वतन्त्र बहस, चर्मकार टोलाक विशिष्ट महिलाक जोखिम-अनुभव अथवा बचाओल गेल बच्चाक आवाज अलग दृश्य नहि पबैत अछि। अतएव स्त्री नेतृत्वक प्रत्यक्षता आ स्त्री अनुभवक समग्र बहुलता समान उपलब्धि नहि।

भीजल देहसँ भोरक थकान : इन्द्राणीक भावनात्मक चाप

अध्याय इन्द्राणीकेँ पहिने बरखामे भीजल, भयभीत, दौड़ैत देखबैत अछि; अन्तमे ओ भोरक उजासमे थकल मुदा राहतसँ भरल पीपर लग बैसैत छथि। एहि दू देहगत संकेतक बीच कथा नेतृत्वक अनेक निर्णय आ समुदायिक रक्षाक परिणाम रखैत अछि। ‘थकल’ शब्द सफलता केँ मूल्यहीन चमत्कार नहि रहय दैत, श्रमक दबावक न्यूनतम स्मारक बनैत अछि। तथापि शारीरिक परिश्रम, निद्राहीन रातिक अन्तराल आ व्यक्तिगत क्षतिक भीतरी स्मृति केवळ संकेतमे। गद्य भावना केँ दू मीलक पत्थरमे बाँधि घटनात्मक तीव्रता बढ़बैत, विस्तृत आन्तरिक एकालाप नहि देबैत।

भोरमे पानि उतरब : चरम दृश्यसँ परिणामक ओर सङ्कोचन

रातिक बढ़ैत जल, बान्ह टूटब आ ढोलक आवृत्ति त्वरित घटनाक्रम बनबैत अछि। ओकर बाद ‘भोर होइत-होइत’ पानि उतरबाक उल्लेख कथात्मक कालकेँ अचानक संकुचित करैत अछि। उतरबक जलभौतिक क्रम, घंटाक हिसाब, बाढ़िपश्चात् खोजक दृश्य नहि। कथाकार रात्रिक संघर्षसँ सीधा परिणामक सामाजिक अर्थ दिस गमन करबैत छथि। एहि कथन-गतिक लाभ अछि एक स्पष्ट नाट्यवक्र—आशंका, तैयारी, टूटन, सावधानी, प्राणरक्षा। एकर सीमा अछि जे चरम संकटक देहगत दीर्घ अनुभव पर्याप्त चित्रित नहि।

‘कोनो प्राण नहि गेल’ : परिणामसूचनाक निश्चित सीमा

मुख्य कथावाचक स्पष्ट कहैत छथि—कतेको घर बहल, खेत बर्बाद भेल, मुदा एहि बेर गामक कोनो प्राण नहि गेल। पहिल बाढ़िक सात मृत्युक सम्मुख ई शून्य परिणाम कथाक निर्णायक अन्तर अछि। ई कथाभीतर एक निश्चयात्मक कथन अछि; आलोचना एकर विरोधमे काल्पनिक मृतक नहि जोड़ि सकैत। मुदा ‘कोनो प्राण नहि गेल’क सँ ‘कियो घायल नहि भेल’, ‘सभ पशु बाँचल’, ‘कोनो परिवार उजड़ल नहि’ वा ‘आर्थिक क्षति न्यून छल’ एहन अन्य निष्कर्ष स्वतः नहि निघटैत। कथा जीवनरक्षाक उपलब्धि केँ प्रबल बनबैत, बाकीक हानिक विस्तृत गुणात्मक हिसाब नहि दैत।

घर आ खेतक क्षति : निर्विघ्न विजयक विरुद्ध पाठगत तथ्य

मृत्युशून्यता केन्द्रीय आनन्दक कारण अछि; तथापि कथावाचक ‘गामक कतेको घर बहि गेल, खेत बर्बाद भेल’ लिखैत छथि। एतय भौतिक विफलता आ मानवीय जीवनरक्षा एकहि परिणामक दूनू हिस्सा छथि। कथानक एहि

मिश्रित स्थितिकेँ ‘सभकिछु सुरक्षित’क चमत्कार नहि बनबैत। गामक आर्थिक भविष्य, बेघर परिवारक अस्थायी आवास, धानक क्षति, देनदारी आ श्रम-वापसीक कथा एतय नहि। ई अनुपस्थिति मूल्यांकनमे आवश्यक अछि: अध्याय सफल निकासी-नाटक अछि, सम्पूर्ण पुनर्वास-आख्यान नहि। अगिला रोग-अध्याय [−५८] जल उतरबाक बादक संकट फेर खोलैत अछि, तेँ भोरक विजय कथाचक्रक अन्तिम समाधान नहि।

मृत्यु-गणनाक दृष्टि : पहिल बाढ़िक अनाम छह जनक प्रश्न

[−८९]क सात मृतकमे सुभागीक नाम सुनाइत, छह अन्यक नाम प्रशासनिक अभिलेखमे ठीकसँ नहिए लिखाएल छल। वर्तमान ‘शून्य मृत्युक रिकॉर्ड’ शब्दसमूह, एहि अतीतक सन्दर्भमे, विशेष वजन रखैत अछि। पहिल बेर अभिलेख विफल छल, दोसर बेर गिनतीक उपलब्धि घोषित अछि। तथापि उपन्यास वर्तमान रिकॉर्ड कोन संस्था तैयार करैत अछि, कोन नामसूची रखैत अछि, अथवा जातिवार हानिक लेखा के लिखैत—ई नहि बतबैत। ‘रिकॉर्ड’ पाठक समक्ष कथावाचकक परिणामसूत्र बनि रहैत अछि, वास्तविक दस्तावेजक प्रतिलिपि नहि। एहि अन्तरमे स्मृति, संख्या आ लेखनक पुरान तनाव बचल अछि।

गौरीक ऋण चुकाएब : वंशानुक्रमिक स्मृतिक भाव

भोरक बाद इन्द्राणी बूढ़बासँ कहैत छथि—‘आइ हम गौरीक ऋण चुका देलहुँ।’ एहि एक वाक्यमे अनेक पीढ़ीक अन्तर छोट भऽ जाइत अछि। इन्द्राणी अपन सफलताकेँ एकल वीरताक निजी पुरस्कार नहि, पूर्वक त्रासदीसँ प्राप्त दायित्वक उत्तर मानैत छथि। गौरीक नाम सार्वजनिक इतिहासक जीवित प्रेरक बनैत अछि। मुदा ई ‘ऋण’ वास्तविक गौरी द्वारा इन्द्राणीकेँ देल आदेश नहि; बादक वंशज द्वारा पूर्वक जीवनसङ्कटक नैतिक पुनर्पाठ अछि। एहि कथनसँ अतीत परिवर्तन नहि होइत—सुभागी फेर नहि बाँचैत—मुदा वर्तमान निर्णयक अर्थ बदलैत अछि।

सुभागीक नाम : सफलताक भीतर सुरक्षित शोक

इन्द्राणी ‘ओ दिन, सुभागी दादी बचि नहि सकलि’ स्पष्ट कहैत छथि। सात मृतकक सङ्ख्यासँ बाहर निकलि ई एक नाम शोकक व्यक्तित्व सुरक्षित रखैत अछि। भोरक राहतक बीच सुभागीक मृत्यु उपस्थित भऽ जाइत अछि—पूर्वक अपूर्णता वर्तमान आनन्दक आलोचनात्मक पृष्ठभूमि बनैत अछि। ई स्मरण विजयकेँ निर्दोष उत्सव बनबाकसँ रोकैत अछि। मुदा अन्य छह मृतकक नाम एतय फेर अनुपस्थित; पाठक [−८९]क नाम-अभिलेख संकट याद कऽ सकैत छथि। एक नामक पुनरावृत्ति संवेदनाकेँ तीक्ष्ण बनबैत, संगहि अन्य जीवनसभक कथात्मक अनामिकता सेहो उजागर करैत अछि।

बूढ़बाक अन्तिम उत्तर : नामक भण्डारसँ जीवनरक्षाक ज्ञान

बूढ़बाक समापन-वाणी ‘हमर स्मृति ... अहाँ सभक हाथमे एहन ज्ञान बनि गेल जे प्राण बचबैत अछि, केवल नाम नहि’ एहि अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कथात्मक आत्म-विवेचन अछि। [−८९]क बाद हुनकर वचन नामकेँ बिसरबासँ बचाबय पर केन्द्रित छल; एतय स्मृति सामूहिक निर्णयक उपकरण बनि रहल अछि। वाक्य दू विपरीत भूमिका—मृतकक नाम राखब आ जीवितक जीवन बचाबय—मे विभाजन नहि करैत; पहिल अनुभवक शिक्षा

दोसर क्रियाक प्रेरक ठहरैत अछि। मुदा एकरा बूढ़बाक निजी जादुई शक्ति द्वारा सबकेँ बचा लेब रूपमे नहि पढ़ल जाए। पाठमे योजना, धुन आ निकासी मानवीय सामूहिक कार्य छथि।

‘साक्षी’क बदलैत रूप : उपस्थितिसँ क्रियाशील समाज धरि

अध्याय बूढ़बाक साक्षी-भूमिका केँ पुनर्लेखित करैत अछि। पहिल बाढ़िमे एकाकी बूढ़बा आवाज न पहुँचि सकबाक त्रास अनुभव करैत छथि; एतय दीर्घ स्मृतिक ज्ञान समाजक संगठित माध्यमसँ क्रिया रूप पबैत अछि। इन्द्राणी निर्णय करैत, मोहनक वंशज संकेत बजबैत, परिवारसभ निर्धारित स्थल दिस बढ़ैत अछि। एहि बहुअभिनेताक संरचनामे स्मृति मुख्य, मुदा पर्याप्त नहि; ओकरा साझा भाषा आ अभ्यास चाही। बूढ़बाक अन्तिम ‘उपहार’क वाक्य धार्मिक चमत्कारक पुरस्कार नहि, सामाजिक रूपान्तरण पर हुनकर भावनात्मक प्रतिक्रिया। एतय एकटा अलौकिक साक्षी-चरित्र मनुष्यक अभ्यासकेँ प्रतिस्थापित नहि करैत।

संकटक द्विगुणित पुनरावृत्ति : आगि-पानि-रोगक आगाँक क्रम

अध्याय [−६०]क आगि आ [−५९]क बाढ़ि अलग प्राकृतिक दृश्य छथि, मुदा दुनूमे इन्द्राणीक नेतृत्व आ पूर्वानुभवक उपयोग लगातार चलैत अछि। अगिन बुझएबा लेल पोखरिक पानि साधन छल; बाढ़िमे वही व्यापक जल-अवस्था विध्वंसक रूपमे अबैत अछि। वस्तुक भूमिका एहि आवृत्तिमे उलटैत—जीवनरक्षक पानि फेर संकट-कारण बनैत अछि। मूल कथा [−५८]मे बाढ़ि उतरबाक बाद ठाढ़ गन्दा पानिसँ रोगक अगिला संकट आरम्भ करैत अछि। तेँ वर्तमान अध्यायक सुरक्षित भोर पूरा संकटचक्रक विराम नहि, एक मध्यवर्ती उपलब्धि। ई पूर्वसूचित अगिला चरण पाठककेँ उत्सवक अन्तिमतापर प्रश्न करय बाध्य करैत अछि।

सामाजिक रक्षाक तन्त्र आ प्रतिनिधित्वक अपूर्णता

कथा ‘गामक हर टोलाकेँ’ शामिल कहैत अछि, मुदा विशिष्ट निर्णयमे चर्मकार टोलाक लोकक अलग संवाद नहि। बान्ह ओही दिशामे टूटैत अछि; जँ एतय सबसँ बेसी घर बहल तँ तकरा लेल पृथक साक्ष्य नहि। स्त्रीसभा वा राजकर्मचारीक समयस्थित भूमिकाक विवरण सेहो एहि अध्यायमे सीमित अछि। पहिल बाढ़िक अभिलेखी भेदभावक पृष्ठभूमिमे ई मौन विशेष अर्थवान अछि। समीक्षा एहि अभावकेँ काल्पनिक भेदभावक पुनरावृत्ति रूपमे नहि, ‘कोन आवाज दृश्य बनल आ कोन समष्टि-सारांशमे दबि गेल’क आख्यानशास्त्रीय समस्या रूपमे चिन्हित करैत अछि।

लोकगीतक भविष्य-निश्चय आ गद्यक वास्तविक क्षति

गीत दावा करैत अछि—‘जे बिपत्तिसँ सिखल, से अगिला बिपत्तिमे नहि डुबल’ तथा ‘से बाढ़िमे नहि परेशान’। गद्य जीवनरक्षा अवश्य दिखबैत अछि, मुदा बान्ह टूटबाक, घर बहबाक आ खेत बरबाद होएबाक पीड़ा सेहो बतबैत अछि। परिणामतः ‘नहि डुबल’क भाषा जीवनक रक्षाक प्रतीक रूपेँ संगत, ‘नहि परेशान’क अक्षरशः सामान्यीकरण कथात्मक तथ्यसँ आगू निकलि जाइत अछि। एहि अन्तरक कारण गीतक सान्त्वनात्मक समष्टि-स्वर आ गद्यक मिश्रित परिणाम दुनू अपन पृथक काम करैत अछि। ई पाठ-भेद उपन्यासक बहुस्तरीयता अछि; एकरा बिना टिप्पणी मिलाकऽ एक सादा आपदा-सफलता-कथा बना देब उचित नहि।

कालक्रम, भूगोल आ कारण-शृंखलाक शेष अनिश्चितता

गद्य ‘अगिनक तीन मास बाद’ बाढ़िक समय बतबैत अछि, मुदा सटीक वर्ष, पानिक मापन, बान्ह मरम्मतक तिथि, नावक संख्या वा घर-खेतक कुल क्षति नहि। [–८९]क पहिल बाढ़िसँ अन्तर बहुत बरखक कहल गेल; लोकपीढ़ी-क्रम एक लम्बा स्मृति-पृष्ठभूमि दैत, ऐतिहासिक पंचांगक पूर्ण क्रम नहि। बान्ह टूटब आ कोनो प्राण नहि जाएब दुनू पाठसिद्ध अछि; ‘समस्त जोखिम शून्य’क प्रतिपादन नहि। कथाक रचनात्मक तर्क प्राथमिक रूपेँ ‘सञ्चित शिक्षा → पूर्वचेतावनी → निकासी → प्राणरक्षा’क क्रम अछि, यद्यपि प्रत्येक मध्यवर्ती भौतिक घटक विस्तृत तथ्यात्मक विवरण पबैत नहि।

कथन-कला : सारांश, संवाद, चेतावनी-दृश्य आ भावनात्मक उपसंहार

अध्यायक कथनगति चारि मुख्य खण्डमे पढ़ल जा सकैत अछि: असाधारण वर्षाक व्यापक सारांश; इन्द्राणी–बूढ़बाक संवाद; बान्ह टूटबाक संग ध्वनि-आधारित सामूहिक निकासी; भोरक परिणाम आ स्मृतिगत अर्थ-विनिमय। संवाद दुइ बेर केन्द्रीय होइत—संकट शुरू होइत चेतावनीक कारण स्पष्ट करबाक लेल, आ अन्तमे उपलब्धिक अर्थ बुझाबय लेल। मध्यक श्रम अनेक सामूहिक क्रियाक वर्णनमे संक्षिप्त अछि। एहि मितकथात्मक बनावटसँ परिणाम तीक्ष्ण बनैत, मुदा निजी देहगत संघर्ष, सामाजिक हानि आ बचावक कठिन विकल्प कम विकसित। कथाक शिल्पक सफलता आ सीमा एकहि संकुचनमे रहैत अछि।

पाठगत उपलब्धि आ विरोधक निष्पक्ष समाहार

‘दोसर बाढ़ि’क विशेष उपलब्धि ई जे पहिल बाढ़िक पुरान स्थल, मृतकक संख्या, गौरी–सुभागीक स्मृति आ नव बचाव-विधानकेँ एक साथ कथात्मक रूपेँ सक्रिय करैत अछि। इन्द्राणी एहि दीर्घ अनुभवक क्रियाशील उत्तर छथि, मोहनक वंशजक ढोल ओहि उत्तरक सामुदायिक भाषा। शून्य मृत्यु अध्यायक केन्द्र, मुदा घर आ खेतक क्षति ओकर जटिलता बचबैत अछि। सीमासभ: बान्हक भौतिक विफलताक विस्तार छोट, चर्मकार टोलाक निजी आवाज सीमित, निकासी-योजनाक प्रत्येक घटकक परिणाम अनिर्दिष्ट, आ गीतक ‘नहि परेशान’ कथन गद्यक संकटसँ असङ्गत। कथा जीवनरक्षा सम्बन्धी दीर्घ स्मृतिक एक प्रभावी दृष्टान्त अछि, पूर्ण सामाजिक राहत-इतिहास नहि।

स्रोतसीमा आ अगिला अध्यायक द्वार

एहि समीक्षाक मूल पाठाधार अध्याय [–५९] ‘दोसर बाढ़ि’, ‘पानि पढ़नि’ लोकगीत, इन्द्राणी–बूढ़बाक दू संवाद, चर्मकार टोलाक दक्षिणमे बान्ह टूटबाक दृश्य आ भोरक परिणाम अछि। तुलनाक आधार अध्याय [–८९] ‘पहिल राति, पहिल बाढ़ि’क सात मृतक, गौरीक चेतावनी, सुभागीक मृत्यु आ पाकल बान्हक निर्माण; तत्काल पूर्वाध्याय [–६०]क आगि; आ अगिला [–५८] ‘तेसर बिपत्ति’क जल-जनित रोग-प्रसंग। अगिला अध्याय शून्य मृत्युवाली बाढ़िक सफल समापनकेँ रोगक नव रूपमे अस्थिर करैत अछि।

प्रकरण ४३ | मूल अध्याय –५८ — तेसर बिपत्ति

पूर्वकथाकाल · आगि–बाढ़ि–रोगक त्रिक, संचित स्मृतिक लोककार्य, मृतकक नाम आ सामूहिक निरन्तरता

मूल अनुक्रमणिकानुसार आरम्भ-पृष्ठ २८४; अगिला अध्याय [–५७] आरम्भ २८८ (अनुमानित पृष्ठ-परास २८४–२८७)।

आपदाक तेसर रूप : कथा-शृंखलाक अन्तिम मोड़

‘तेसर बिपत्ति’ अपन स्वतन्त्र संकट-कथा होइतहुँ पूर्ववर्ती दू अध्यायसँ पृथक पढ़ल नहि जा सकैत। [–६०]मे आगि आ [–५९]मे बाढ़िक दृश्य समाप्त भेल छल; [–५८] खोलैत अछि जे बाढ़िक पानि उतरब संकट समाप्त होएब नहि थिक। गामक ठहरल, सड़ल पानि नव रोगक आरम्भक परिवेश बनैत अछि। एहि स्थानपर उपन्यास विपत्तिक रूपरेखाकेँ बाहरी आकस्मिक आघातसँ पाछाँ बचल परिणामक ओर मोड़ैत अछि। मूल कथात्मक गति ‘घटनाक बाद की बचल?’ एहि प्रश्नक अनुकरण करैत अछि। पहिल दू आपदाक समय इन्द्राणी आ गाम तत्काल दृश्य संकटसँ जूझने छल; एतय अदृश्य रोगक फैलावक कारण ओ सभक संचित थकान, सामाजिक संगठन आ ज्ञानक वास्तविक उपयोग फेर परीक्षा देइत अछि।

शीर्षकमे क्रमसूचकता : ‘तेसर’क संरचनात्मक अर्थ

अध्यायक शीर्षक ‘तेसर बिपत्ति’ रोगक नाम नहि बतबैत; ओ क्रम बतबैत अछि। पाठककेँ कथा बुझबाक लेल आगि, बाढ़ि आ बीमारीक पछिला श्रृंखला याद करय पड़ैत अछि। एहि गणनाक लाभ अछि व्यापक संकटवर्षकेँ एक कथात्मक एकाइ बनब; सीमा ई जे अलग-अलग पीड़ितक अनुभव क्रमांकित विपत्तिक समष्टि-योजनामे मिलि सकैत अछि। शीर्षक रोगक अनुभूति, मृत्यु वा चिकित्सा-व्यवस्थासँ पहिने ‘तीन’ पर बल दैत अछि। एहि तरह संरचनात्मक आवृत्ति पात्रक निजी कथनकेँ नियंत्रित करैत अछि। एतय ‘तेसर’क अर्थ कालिक अनुक्रम अछि, कोनो वैज्ञानिक रोग-वर्गीकरण नहि।

प्रारम्भिक फकरा : खसब आ फेर ठाढ़ होएब

‘एक बिपत्ति सिखबै, तेसर बिपत्ति पकबै— जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ’ उद्घाटनमे शिक्षाक क्रमक संग चोटक पुनरावृत्ति जोड़ल गेल अछि। तीन बेर खसब आ चारिम बेर सम्हरबक अङ्क-व्यवस्था लोककथाक दृढ़ प्रत्याशा बनबैत अछि। मुदा ‘ठाढ़’ रहबाक अर्थ अखण्ड शरीर, घर, खेत आ सम्पूर्ण जनसमुदाय सुरक्षित रहब नहि। अध्यायमे बादमे किछु व्यक्ति मरैत छथि; तेँ एहि सूत्रकेँ सभ व्यक्तिक अक्षत बाँचबक तथ्य नहि, सामूहिक निरन्तरताक लोकवाणी रूपमे पढ़ब चाही। फकरा पाठकक भावनिक दिशा पहिने निश्चित करैत अछि, मुदा गद्य ओहि आशावादक मूल्य आ सीमा दुनू देखबैत अछि।

‘तीन बिपत्ति, चारिम ठाढ़’ : गीतक भावी-स्मृति

अध्यायारम्भक ‘हिम्मत-गीत’ अगिन, बाढ़ि आ तेसर संकटकेँ पहिनहि एक बन्द कथा मानि गबैत अछि। मुख्य गद्य रोगक संकेत, उपचार आ मृत्यु बादमे खोलैत अछि; गीत ओकरा आगहिसँ ‘झेलल’ आ ‘सम्हरल’क भाषामे

ग्रहण करैत अछि। एहि उलट क्रममे पाठक रोगक वास्तविक संघर्षसँ पहिने सामुदायिक स्मृतिक सम्भावित अन्त सुनि लैत अछि। गीत बिपत्तिक पुनर्कथनक भविष्य-काल पहिने उपस्थित करैत अछि। संकट-रहस्य कम होइतो भावनात्मक द्वन्द्व बढ़ैत अछि—यदि समष्टि ठाढ़ रहत, तँ कोन व्यक्तिगत जीवन नहि रहत? गीतक सामूहिक आश्वासन आ गद्यक अधूरा क्षति-वृत्तान्त एके अर्थक प्रतिलिपि नहि छथि।

गीतक आवृत्ति : साहसक सामूहिक व्याकरण

गीतमे ‘अगिन आयल, बाढ़ि आयल’, ‘तीन बेर खसल’ आ ‘गाम नहि टूटल’ जकाँ सूत्र दोहराएल अछि। आवृत्ति हरेक संकटकेँ एकहि स्मृति-तालमे रखैत अछि। एहि शैलीक लाभ सामूहिक अनुभवक सहज स्मरण; ओकर जोखिम अलग रोग, अलग हानि आ अलग व्यक्ति सभक विशिष्टताकेँ समतल करब। गीत ‘जे बिपत्ति झेलल हँसि’ कहैत अछि, मुदा गद्यक इन्द्राणी थकल स्वरमे भय व्यक्त करैत छथि। वास्तविक कथनमे सहनशीलता आ थकान संग-संग छथि। लोकधुनक दृढ़ भाषा व्यक्तिगत अनुभवक पूर्ण स्थानापन्न नहि; दूनू कथन-स्वर एक-दोसराकेँ सीमित आ समृद्ध करैत छथि।

जल उतरबक पश्चकथा : राहतक भोरक अपूर्णता

[−५९]क अन्तमे बाढ़िक पानि भोरमे उतरैत अछि आ कोनो प्राण नहि गेल होएबाक स्पष्ट कथन अबैत अछि। [−५८]क पहिल गद्यवाक्य ओहि सम्पन्न कहल गेल आपदाक अवशेषपर दृष्टि टिकबैत अछि। ‘पानि उतरलाक बाद’क संकेत दुनू अध्यायक बीच निरन्तरता जोड़ैत अछि; दू अलग अध्याय-शीर्षकक बावजूद ई एके विस्तृत पर्यावरणीय घटनाक अगिला परत अछि। बाढ़िक समयक सुरक्षित निकासी दीर्घकालिक स्वास्थ्य-सुरक्षा स्वतः नहि बनैत। एतए कथावाचक विजयक भावनिक प्रभावकेँ वापस जटिल बनबैत छथि। जीवन-रक्षा, जीविका-क्षति आ रोग-जोखिम तीनू आपदाक अलग समयमानक रूपमे उभरैत अछि।

सड़ल पानि आ गड्ढा : अनदेखल स्थलसँ घटना-स्रोत

अध्याय कतेको स्थानपर ठाढ़, सड़ल पानिक गड्ढाक उल्लेख करैत अछि। ई गड्ढासभकेँ कोनो एक नामित पोखरि वा घरसँ जोड़ल नहि गेल अछि; तथापि ओ सभ नव घटनाक भौतिक निमित्त बनैत छथि। [−६०]मे जोड़ी पोखरि आगि बुझएबाक साधन आ [−५९]मे कमला-बलान विपत्तिक स्रोत छल; एतय पानिक स्थिर, गन्दल अवस्था भयक कारणक रूपमे वर्णित अछि। पानिक अलग-अलग रूप उपन्यासक स्थान-प्रतीककेँ स्थिर शुभ अथवा अशुभ अर्थसँ मुक्त करैत अछि। मुदा हर गड्ढाक रोग-प्रसारक अलग वैज्ञानिक तन्त्र पाठमे नहि अछि; कथानक एक व्यापक कारणात्मक सम्बन्ध बतबैत अछि, सूक्ष्म चिकित्सकीय प्रतिवेदन नहि।

दुइ सप्ताहक अन्तराल : रोगक विलम्बित आगमन

बाढ़ि उतरबाक ‘दुइ सप्ताहक भीतर’ रोगक लक्षण फैलय लगैत अछि। पहिल दू अध्यायक तात्कालिक आपदासँ ई विलम्ब भिन्न कथात्मक समय रचैत अछि। बान्ह टूटबाक खतरा ढोलक धुनक संग तत्काल श्रवणीय छल; रोगक आरम्भमे एक-दो घरक अलग सूचना, प्रथम बीमारक नाम वा पहिल संक्रमण-दृश्य नहि देल गेल अछि। कथावाचक एक समयखंडकेँ ‘दुइ सप्ताह’क सूत्रमे समेटि देबैत छथि। ई संक्षिप्ति सामूहिक महामारी-जेकाँ

प्रसारक अनुभूति दैत अछि, मुदा आरम्भिक रोगी, देखभाल करनिहार आ सूचनाक प्रथम यात्रा पाठकक दृष्टिसँ ओझल रहैत अछि।

लक्षणक त्रिक : शरीरक अनुभवक संक्षिप्त सूची

पेट-दर्द, अत्यधिक दस्त आ शीघ्र निर्जलीकरण—ई तीन लक्षण रोगक कथात्मक पहिचान बनैत अछि। गद्य रोगक कोनो चिकित्सकीय विशिष्ट नाम घोषित नहि करैत; आलोचना केवल एहि लक्षणक आधारपर ओकर निश्चित निदान आरोपित नहि करय। रोगक कथाक चरित्र ई अछि जे मनुष्यक देह प्रमुख संकटस्थल बनैत अछि, मुदा ककरो एक पीड़ितक देहक अन्तरंग अनुभव, रातिक व्यथा वा रोगमुक्तिक दृश्य स्वतन्त्र रूपेँ नहि खुलैत। वैयक्तिक चिकित्सा-कथासँ अधिक ई एक सामुदायिक नियन्त्रण-कथा अछि। लक्षण ठोस छथि, रोगसभक निजी इतिहास कथनक बाहर रहि जाइत अछि।

शिशु आ वृद्ध : जोखिमी देहक नामहीन समूह

कथावाचक आरम्भेमे बच्चा आ वृद्ध सभमे रोग पसरणे कहैत अछि, आ बादमे अत्यन्त वृद्ध आ अत्यन्त छोट बच्चामे मृत्युक विशेष उल्लेख करैत अछि। ई उमेर-आधारित जोखिम कथाक सामाजिक केन्द्र बनबाक सम्भावना रखैत अछि। मुदा मृत बालकक नाम, घर, माताक आवाज, अथवा वृद्धक पूर्वजीवन एतय नहि भेटैत। एहन सामूहिक वर्गीकरण पाठककेँ हानिक प्रकार बुझबैत अछि, हानिक निजी शोकक निकट लऽ नहि जाइत। समीक्षामे एहि पात्रसभक अपन भाषिक स्थान नहि भेटबाक सीमा जाँचल जाय; न त एहि आधारपर हुनकर काल्पनिक दृश्य जोड़ल जाय, न मृत्युकेँ एकदम अमूर्त संख्या मानि टारल जाय।

इन्द्राणीक पुनःप्रवेश : निरन्तर नेतृत्वक थकल अवस्था

‘अगिन आ बाढ़ि दुनूसँ जूझि चुकल’ इन्द्राणी तेसर संकटमे फेर केन्द्रीय पात्र छथि। एतय कथावाचक हुनका पहिले जकाँ केवल तीव्र आयोजिका रूपमे नहि, थकल शरीर आ शङ्कित मनक संग प्रस्तुत करैत छथि। ‘तेसर परीक्षाक सोझाँ’ कहला सँ निजी श्रमक अवधि एक संकुचित वाक्यमे आबैत अछि। बाढ़िक भोरक राहत तखने दीर्घ विश्राम नहि छल; नव रोग पुरान थकानपर चढ़ि अबैत अछि। एहि निरन्तरतासँ नायिकाक जीवन मे आपदासभ अलग-अलग विजयपर्व नहि, कतेको बेर अविराम श्रमक श्रृंखला बनैत छथि। हुनकर थकानक उल्लेख महत्त्वपूर्ण, मुदा ओकर विशिष्ट निजी परिणति कम विस्तृत अछि।

‘पुच्छलतारा सही छल’ : पात्रक व्याख्या आ कथ्यक फरक

इन्द्राणी बूढ़बासँ कहैत छथि ‘पुच्छलतारा सही छल’; हुनकर आशय आगि, बाढ़ि आ रोगक तीन विपत्तिसँ अछि। मुदा [−६१]मे बूढ़बा तारा स्वयं बिपत्ति आनैत नहि, धरतीक कारणसँ संकट अबैत अछि, ई स्पष्ट केने छलाह। एहि कारण इन्द्राणीक वाक्यकेँ वस्तुगत खगोलीय कारणक लेखककीय घोषणा नहि मानल जाए। ई भयक क्षणमे पात्र द्वारा संयोग आ घटना-क्रमक अर्थबोध अछि। उपन्यास एक ओर तर्कसंगत अस्वीकार, दोसर ओर लोक-भविष्यवाणी-सदृश अर्थ-रचना राखैत अछि। एहि दू आख्यानस्वरक बीच बचल तनाव कवितात्मक भविष्यसंकेतक साधन सेहो अछि, मुदा अस्पष्ट कथाविश्व नियमक सम्भावना सेहो।

पुच्छलताराक अनुक्रम : पूर्वाभास आ पिछड़ल पुष्टिकरण

[–६१]क आसन्न संकटक भय, [–६०]क आगि, [–५९]क बाढ़ि आ [–५८]क रोग पाठककेँ एक क्रमिक अपेक्षा-रचना देबैत अछि। मुख्य गद्यक पूर्वसूचना रोगक सटीक नाम, स्थान आ निश्चित मृत्युसंख्या पहिने नहि बतबैत। तेँ ‘तेसर पूर्वानुमान पूर्ण’क अध्यायारम्भिक टिप्पणीकेँ एक साहित्यिक पुनर्वर्गीकरण रूपमे पढ़ब उचित अछि। अगिला घटनाकेँ पहिलुक भयक संग जोड़ि कऽ कथाकार नियतिक एक आभास रचैत छथि; कथाक भीतर वैद्यक कार्य आ अस्वच्छ जलक विवरण ओहि आभासकेँ भौतिक कारणक ओर फेर मोड़ैत अछि। भविष्यसंकेत एहि तरह कारण नहियो बनि कऽ कथात्मक अपेक्षाकेँ नियन्त्रित करैत अछि।

बूढ़बाक उत्तर : शताब्दीक स्मृति आ वर्तमान काज

बूढ़बाक सम्बोधन इन्द्राणीकेँ ‘पुरखा सभ’क अनुभव याद करबैत अछि। हुनकर वचनमे विनाशरहित भविष्यक चमत्कार नहि, संचित सीखक वर्तमान आवश्यकता अछि। ओ विमलाक जमानाक महामारीक ‘सामूहिक स्मरण’क उल्लेख करैत छथि, संगहि ‘नव, वैज्ञानिक ज्ञान’क आवश्यकता बतबैत छथि। एहि संवादमे दीर्घजीवी स्मृति नयका ज्ञानक प्रतिस्पर्धी रूपेँ नहि, ओकर संग मिलि कार्य करबाक आग्रह करैत अछि। मुदा बूढ़बा स्वयं रोगक नाम, प्रभावकारी औषधि वा हर परिवारक निर्देश नहि दैत छथि। ज्ञानक ऐतिहासिक सेतु उपलब्ध करब हुनकर भूमिका; चिकित्सकीय आ सामाजिक क्रिया अन्य पात्रसभक हाथमे अछि।

बूढ़बाक सेहो थकब : अतिमानवीय पात्रक मानव-सापेक्ष सीमा

मूल गद्य बूढ़बाकेँ ‘स्वयं थकल, मुदा दृढ़’ कहल अछि। जे पात्र दीर्घ कालक स्मृति सँ जुड़ल अछि, हुनकर थकान साधारण जैविक देहक विवरण नहि, सामाजिक विनाशक लगातार अनुभवक भावसंकेत बनैत अछि। अगिनक समय हुनकर शक्ति-सीमाक प्रश्न उठल छल; बाढ़िमे ओ पूर्वरक्षा याद करबैत छलाह; रोगक सामने हुनकर वाणी स्मृति आ वैज्ञानिक उपाय दूनेकेँ साथ रखैत अछि। कथावाचक हुनकर थकानक अनुभव दृश्यमे बतबैत छथि, मुदा ओकर विशिष्ट आन्तरिक प्रवाह नहि खोलैत। अतिमानवीय साक्षी आ व्यवहारिक समुदाय बीचक दूरी एहि संक्षिप्त भाव-आरोपणसँ किछु घटैत अछि।

विमलाक स्मरण : इतिहासक भीतर इतिहास

पुरानी महामारीक समय विमलाक ‘सामूहिक स्मरण’ सिखेबाक सन्दर्भ एक अन्तर्पाठीय आ अन्तःकथात्मक पुनरागमन अछि। वर्तमान पात्रक समक्ष ओ अतीत प्रत्यक्ष घटना रूपमे फेर नहि घटैत; बूढ़बाक वचनमे सङ्क्षिप्त कथा-स्मरण बनि आउत अछि। विमलाक स्मरण रोगक समय जीवितक नैतिक साहसकेँ जोड़ैत अछि, जबकि नयका प्रसंगमे गन्दा पानि, उबालि पिबब आ देखभालक क्रिया विशेष प्रमुख अछि। एहि सँ पाठ केवल अतीत दोहराबैत नहि; पूर्वक स्मृतिविधिक नव सन्दर्भमे पुनः उपयोगक सम्भावना देखबैत अछि। मुदा इन्द्राणी वा वैद्य विमलाक विशिष्ट पद्धतिकेँ कतय व्यवहारमे उतारलनि, ओ पृथक दृश्य रूपमे निर्दिष्ट नहि।

नगरमे पढ़ल वैद्य : ज्ञानक सामाजिक स्थानान्तरण

गामक वैद्यकेँ नगरक नव चिकित्सा-विद्यालयमे शिक्षित कहल गेल अछि। एक पंक्तिमे नगर, संस्थागत शिक्षा आ ग्रामीण संकट-सामना जोड़ल जाइत अछि। वैद्यक व्यक्तिगत नाम, आयु, जाति, यात्रा वा प्रशिक्षणक पाठ्यक्रम उपस्थित नहि; ओ मुख्यतः कथात्मक कार्य करनिहार पात्र छथि। ‘तुरंत पहचानलक’ वाक्य रोगक कारण-विवेचनकेँ लघु बनबैत अछि, आ दृश्य विस्तृत जाँच-पड़तालक बदला सार्वजनिक निर्देश दिस बढ़ैत अछि। एहि संक्षेपक लाभ अगिला सामुदायिक कार्यक गति, सीमा व्यक्तिगत पेशेवर निर्णयक जटिलता कम उभरब। वैद्यक कथ्य-भूमिका निर्णायक अछि, मुदा पूर्ण चरित्र-विकास नहि।

पानि उबालब आ घोल : सूचनाक क्रियामे रूपान्तरण

वैद्य हर परिवारकेँ पानि उबालि पिबबाक निर्देश दैत, नमक–चीनीक घोल बनायब सिखबैत अछि। मूल घटनाक अन्तर्गत ई दू व्यवहार स्वास्थ्यरक्षक सामुदायिक शिक्षाक कथात्मक सामग्री छथि। समीक्षा एहि उल्लेखकेँ चिकित्सकीय परामर्श वा बाहरी प्रमाणित उपचार-पुस्तिका रूपमे प्रस्तुत नहि करैत; रोगक कारण आ उपयोगिता उपन्यासक पात्रसभक कथन आ कथावाचकीय संरचनामे उपस्थित अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई जे वैद्य केवल बीमारीक नाम देबाक अधिकार नहि पबैत, बल्कि ज्ञानकेँ परिवारसभक दैनिक क्रिया धरि पहुँचबैत अछि। कहल गेल शिक्षण आ प्रत्येक घरक व्यक्तिगत पालनक बीचक दूरी एखनु गद्यक सारांशमे रहि जाइत अछि।

सोनमा माझिनक वंशज : जलज्ञानक परम्परा

सोनमा माझिनक वंशज सुरक्षित जलस्रोत आ परम्परागत उपचार-ज्ञानक पहिचानमे सहभागी छथि। [–८३]क सोनमा माझिनक कथात्मक स्मृति एतय एक अलग पीढ़ीक कार्यदक्षता बनि लौटैत अछि। वर्तमान अध्याय वंशजक व्यक्तिगत नाम, लिंग वा वार्तालाप नहि दैत; ‘वंशज’ पद ओकरा ज्ञानी परम्पराक प्रतिनिधि बनबैत अछि। ई सम्मानक संकेत होइतहुँ स्वायत्त व्यक्तित्वक सीमा सेहो अछि। जकर समुदाय नदीक संग श्रम करैत आयल, ओकर ज्ञान संकटमे सामूहिक उपयोग पबैत अछि; मुदा किन परिवारसभ हुनकर चुन्नल जलस्रोत लग गेल अथवा कोन जलस्थल नामित छल, एकर दृश्य उपस्थित नहि।

रत्नाक वंशज : लोकज्ञानक कथात्मक शक्ति आ सीमा

रत्नाक वंशज सेहो परम्परागत जड़ी-बूटीक उपयोगसँ जुड़ैत छथि। मूल गद्य ‘कोन जड़ी दस्त रोकैत अछि’ पहचानल गेल कहैत अछि, किन्तु जड़ीक नाम, तैयारी, मात्रा वा अलग परिणाम नहि बतबैत। तेँ कथात्मक विश्लेषण ओकर कथामे प्रतिपादित लोकज्ञानक सामाजिक स्थान तक सीमित राखू; चिकित्सकीय प्रभावशीलता स्वतन्त्र प्रमाणित घोषित नहि करू। रत्नाक पहिने सँ चलि आएल वंश-स्मृति एहि उपस्थितिकेँ उपन्यासक आन्तरिक स्थायित्व दैत अछि। तथापि व्यक्ति ‘वंशज’ होइत-होइत नामहीन सामूहिक कार्यचिह्न बनि जाइत अछि। ई महाकालिक आख्यानक निरन्तरता आ चरित्रगत अपूर्णताक संयुक्त उदाहरण अछि।

तीन ज्ञानस्रोत : मेलक संरचना, पूर्ण समताक दावा नहि

मुख्य गद्य आधुनिक चिकित्सा, परम्परागत जड़ी-बूटी आ सामाजिक संगठनक संयुक्त प्रयास कहैत अछि। ई ‘तीन’ संरचना तीन विपत्तिक आवृत्तिक समांतर चलैत अछि। एक दिशि संकटक त्रिक, दोसर दिशि उत्तरक त्रिक; दूनू रचनात्मक सममिति रचैत अछि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे तीनू साधनक अलग-अलग प्रभाव समान रूपेँ वर्णित अथवा जाँचल गेल। वैद्यक आदेश अपेक्षाकृत विशिष्ट अछि, लोकजड़ीक विवरण सामान्य, राति-सभाक घर-घर क्रिया संगठनात्मक। त्रयीक नैतिक सामञ्जस्य कथाक मूल्यगत विकल्प अछि; प्रत्येक उपाय पर समान दृश्य, समान परिणाम वा वैज्ञानिक समतुल्यता कथाभीतर स्थापित नहि अछि।

स्त्री सभक राति-सभा : संस्थाक पुनःप्रयोग

स्त्री सभक राति-सभा घर-घर जाइ हाथ धोएब, पानि उबालब आ गन्दा जलसँ दूर रहबाक नियमक पालन सुनिश्चित करबैत अछि। [−६०]मे आगि बुझएबाक मानव-शृंखला आ पूर्व अकाल-प्रसंगमे अन्न-वितरणक पृष्ठभूमि रखने ई संस्था पुनरावृत्त कथा-चरित्रक रूप पबैत अछि। संगठन शाब्दिक अर्थमे एक व्यक्ति नहि, मुदा अलग संकटमे एक सीखी क्षमता देखबैत अछि। प्रायः घरभित्तरक श्रम कहल जाएवला काम एतय सार्वजनिक जीवनरक्षाक प्रबन्ध बनि जाइत अछि। तथापि सभा-सदस्यक स्पष्ट नाम, मतभेद, विरोध वा संसाधन-अभावक कथा नहि खुलैत। संस्था दृश्य अछि; ओकर भीतरक सामाजिक संघर्ष संक्षिप्त अछि।

‘हर घर’क दायरा : सर्वसमावेशी सूत्र आ अधूरा दृश्य

गद्यक ‘गामक हर घरमे जाय’ वाक्य व्यापक पहुँचक सामुदायिक आदर्श बतबैत अछि। मुदा ओ घरसभक सूची, दूरी, श्रमविभाजन, विरोध, बिमार व्यक्तिक घर वा अलग टोलाक प्राप्त सेवा सब विस्तृत नहि। [−८९]मे चर्मकार टोलाक सुरक्षा-असमानता याद कएला पर एहन सर्वसमावेशी घोषणा विशेष परीक्षण माँगैत अछि। वर्तमान अध्यायमे जातिवार उपचारभेदक प्रत्यक्ष घटना नहि; तेँ आलोचक काल्पनिक भेदभाव आरोपित नहि करथि। एकर साहित्यिक प्रश्न अछि—कथाक सामूहिक दावेकेँ विशिष्ट व्यक्ति आ स्थलसभक दृश्य कतेक मजबूती दैत अछि? उत्तर अछि व्यापक कथन, पर सीमित सूक्ष्म दृश्य।

आपदामे श्रमक लैङ्गिक रूप : नेतृत्वसँ नियमित देखभाल धरि

इन्द्राणी बूढ़बालग पहुँचि त्रास व्यक्त करैत छथि, स्त्रीसभा नियमित स्वच्छता-व्यवस्था साम्हरैत अछि। एहि दू दृश्यसँ स्त्रीपात्रक कार्य केवल शोक वा प्रतीक्षा नहि, संकट-प्रबन्धक नायकत्व बनैत अछि। गामक वैद्य पुरुषवाचक रूपमे प्रस्तुत अछि, आ स्त्रीसभक श्रम परिवारभित्तर तक फैलैत अछि; ज्ञानक घोषणा तथा श्रमक वहनक भूमिकामे एक रुचिकर विभाजन अछि। पर मूल पाठ राति-सभाक सदस्या सभक विशिष्ट निर्णय-प्रक्रिया, संसाधन वा अपन शारीरिक सुरक्षा नहि देखबैत। अतः स्त्री-सशक्तिकरणक पूर्ण सामाजिक परिणति सिद्ध नहि; ओकर प्रकट कर्म आ अबोली श्रम-स्थितिक अलग विवेचन आवश्यक अछि।

वास्तविक घटनाक मानचित्र : संकेतसँ क्रियाफल धरि

एहि अध्यायक परिवर्तन-क्रम स्पष्ट अछि: बाढ़िपछाति ठहरल दूषित जल; दू सप्ताहक भीतर लक्षण-प्रसार; इन्द्राणीक भययुक्त संवाद; बूढ़बाक पुरानी महामारीक स्मरण; शिक्षित वैद्यक निर्देशन; वंशागत जल–वनस्पति-ज्ञानक योगदान; स्त्रीसभाक घर-घर अभियान; तीन सप्ताहमे रोगक नियन्त्रण; किछु मृत्यु; अन्तिम सामूहिक स्मरण। प्रत्येक स्तरकेँ अलग ‘नव घटना’ गनि देब उचित नहि—किछु प्रत्यक्ष संवाद, किछु रिपोर्टनुमा सारांश, किछु बादक स्मृति-संस्थापन छथि। घटनाक निर्णायक मोड़ दूटा: डरक व्याख्या सहयोगक योजना बनब, आ रोग नियन्त्रणक बावजूद मृत्यु स्वीकारि सामुदायिक निरन्तरता तय करब।

अदृश्य शत्रुक कथन : रोग-संघर्षमे दृश्याभाव

आगिक लपट आ बाढ़िक बान्ह-भङ्ग पाठकक सोझाँ सजीव दृश्य बनल छल। एहि अध्यायमे रोगक विरोधी शक्ति स्वयं प्रत्यक्ष दृश्य रूपेँ उपस्थित नहि, ओकर लक्षण आ सामाजिक परिणाम द्वारा वर्णित अछि। वैद्यक ‘तुरंत पहचान’, स्त्रीसभाक ‘हर घर’ आ रोगक ‘नियन्त्रण’—तीनू विस्तृत घटनाक सारांश छथि। एहन चयन एक प्रकारक प्रशासनिक कथा-ताल उत्पन्न करैत अछि: समस्या पहिचानल, उपाय बँटल, परिणाम कहल गेल। रचनाक गति सघन बनैत अछि, मुदा संक्रमणक भय, उपचारक असफलता आ मृतकक अन्तिम क्षण जकाँ निजी दर्द विरल रहैत अछि। ई कथनरूपक एक प्रमुख सीमा अछि।

तीन सप्ताहक समापन : समयक संकोचन आ परिणामक बोध

‘रोग तीन सप्ताहमे नियंत्रित भऽ गेल’ वाक्य पूरा संघर्षक अन्तिम अवस्था एक पंक्तिमे समेटैत अछि। आरम्भक दुइ सप्ताह आ नियन्त्रणक तीन सप्ताहकेँ एकहि कालखण्ड मानल नहि जाय; पहिल बाढ़ि उतरबाक बाद लक्षण प्रकट होएबाक सीमा, दोसर रोगक फैलाव पर नियन्त्रणक समयविस्तार अछि। कथाकार दिन-दिनक रोगीगणना, अस्पताल वा औषधि-वितरणक दृश्य नहि दैत। एहि समय-संकोचनक सहारे संकट तेसर, पर सीमित अवधि वला प्रकरण बनैत अछि। लेकिन कथात्मक अन्तिमता एक गूढ़ प्रश्न छोड़ैत—नियन्त्रित रोगक बाद जीवित बचल परिवारक देखभालक लम्बा समय कहाँ गेल?

‘किछु प्राण गेल’ : शून्य मृत्युसँ पुनः हानिक मोड़

[–५९]क अन्तमे कथावाचक बाढ़िक समय ‘कोनो प्राण नहि गेल’ कहैत अछि। एतय रोगमे ‘गामक कुछ प्राण गेल’ स्वीकारल अछि। ई दूनू विवरण विरोध नहि: पहिले बाढ़िक तात्कालिक क्षति, दोसर बाढ़िपछाति रोगक मृत्यु। मुदा पाठकक भाव-क्रममे ई निर्णायक पलटाव अछि। अग्रिम निकासीसँ रोकल मृत्यु बादक पर्यावरणीय दूषणमे फेर उपस्थित होइत अछि। कथावाचक संख्या, नाम, घर, दाहसंस्कार वा नामपञ्जीक रजिस्टर नहि दैत। तेँ कतेक बच्चा अथवा वृद्ध मरलाह, अनुमान नहि कएल जाए। शून्य मृत्यु बनाम अनिर्दिष्ट मृत्यु एक सशक्त, मुदा असममित कथात्मक तुलना अछि।

पहिल महामारीसँ तुलना : मापनक अव्यक्त आधार

मूल गद्य कहैत अछि जे ई रोग विमलाक जमानाक पहिल महामारी जकाँ विनाशकारी नहि भेल। ई पूर्वकथाक भीतरक तुलना अछि; वर्तमान अध्याय पहिल महामारीक संख्यात्मक मृत्युदर, आबादी, फैलावक समय वा स्थल देत नहि। कथावाचकक तुलनात्मक मूल्यांकन पाठक स्वीकारि सकैत छथि, किन्तु समीक्षा एकरा स्वतन्त्र सांख्यिक निष्कर्ष रूपमे प्रस्तुत नहि करय। विमलाक प्रसंग स्मृतिशृंखलाक विरासत बनैत अछि; वर्तमान रोग सामुदायिक ज्ञानक प्रयोग-स्थल। तुलनासँ विकासक आशय उपस्थित होइत अछि, मुदा ककर पीड़ा कम भेल, एकर वैयक्तिक तुलनात्मक रूप अनुपस्थित अछि।

गामक जिजीविषा आ मृत व्यक्ति : दू पृथक परिणाम

कथाक अन्तिम मूल्यांकन ‘गाम नहि टूटल’ पर आधार रखैत अछि। सामुदायिक अस्तित्व सुरक्षित रहनाइ आ प्रत्येक व्यक्तिक जीवन बचनाइ एकहि परिणाम नहि। रोगक मृतकगण एहि अन्तरकेँ अनिवार्य बनबैत छथि। इन्द्राणीक ‘हम सभ अखनहु ठाढ़ छी’ वाक्यमे ‘हम सभ’ एक सामुदायिक अस्तित्व-नाम अछि, समस्त पूर्वजीवित सदस्यक अक्षत सूची नहि। रचनाक साधना ओहि सामूहिक अस्तित्वकेँ विजय कहब; आलोचनाक उत्तरदायित्व ओहि वाक्यक भीतरक रिक्त जीवनसँ दृष्टि नहि हटब। सामूहिक स्थायित्वक गौरव आ व्यक्तिगत शोकक अधूरापन एकसाथ रहैत अछि।

इन्द्राणीक पीपर-निकट विश्राम : आरम्भ–अन्तक वृत्त

आरम्भमे इन्द्राणी बूढ़बा लग भय आ थकान लऽ कऽ बजैत छथि; अन्तमे तीन संकट पार कऽ फेर पीपर लग बैसैत छथि। स्थल एकहि, मुदा ज्ञानगत अवस्था बदलल। आरम्भक आशङ्का अछि ‘हमर लोक एतेक सहन कऽ सकत?’; अन्तमे ‘हम सभ अखनहु ठाढ़ छी’क उच्चारण अछि। एहि वृत्ताकार विन्याससँ चरित्र-विकास नायिकाक चमत्कारी परिवर्तन नहि, संचित संकट-झेलबाक अनुभवक परिणाम बनैत अछि। कथावाचक हुनकर आँखिमे थकान आ सन्तोष संग देखबैत छथि। ई मिश्रित अनुभूति गीतक एकरेखीय हिम्मतक दावासँ अधिक मानवीय अछि, यद्यपि व्यक्तिगत मृतक-स्मरण हुनकर मुखसँ विस्तारसँ नहि अबैत।

बूढ़बाक अन्तिम व्याख्या : परीक्षा-कथाक नैतिक निर्माण

बूढ़बा पुच्छलताराकेँ विनाशक कारण नहि, ‘एकटा परीक्षा’ कहैत छथि। शताब्दीक संचित ज्ञान, संगठन आ प्रेमक मजबूती जाँचल गेल—ई हुनकर अन्तिम कथनक मूल आशय अछि। एहि उत्तरमे वास्तविक रोगीसभक मृत्यु समाप्त नहि भऽ जाइत; ओ सभक बाद सामुदायिक सहनशीलताक व्यापक अर्थ गढ़ल जाइत अछि। ‘परीक्षा’ शब्द हर संकटकेँ उद्देश्यपूर्ण बनाबयक जोखिमो रखैत अछि, जखन कि ठहरल दूषित जलक भौतिक कारणक पूर्ववर्णन अलग अछि। कथावाचक बूढ़बाक वाणी मार्फत नैतिक अर्थ दैत छथि; आलोचक प्राकृतिक आपदाकेँ सचेत परीक्षकक तथ्य रूपमे स्थापित नहि करथि।

नाम, संगठन, प्रेम : बूढ़बाक त्रिक आ पूर्व अध्यायक छाया

बूढ़बाक वाक्यमे तीन संचयी पूँजी अछि—ज्ञान, संगठन, प्रेम। ज्ञान वैद्य आ परम्परागत विशेषज्ञ सभक, संगठन स्त्रीसभाक घर-घर अभियानक, आ प्रेम संकटग्रस्त लोक प्रति सामुदायिक उत्तरदायित्वक रूपमे उपस्थित अछि। मुदा प्रेमक विस्तार अनेको निजी सम्बन्धमे दृश्य नहि; ई समापनक मूल्यगत सारांश अछि। ‘तीन’क ई नव आवृत्ति संकटक त्रिकक प्रत्युत्तर बनैत अछि; संख्या एक अलङ्कारिक संरचना गढ़ैत अछि। [−५९]मे स्मृति जीवनरक्षक तैयारी बनल, एतय ओ अनुशासित व्यवहार आ परस्पर परिचर्याक व्यापक आदर्श बनैत अछि। एहिसँ दीर्घ उपन्यासक स्मृति-विषय एक क्रमिक सामुदायिक पाठ बनैत अछि।

हर अमावस्याक कबड्डी : दुखक आवृत्त अनुष्ठान

अध्यायक अन्तमे ‘तीन बिपत्तिक बरख’क स्मृति हर अमावस्याक कबड्डीमे दोहराएल जाए लगैत अछि। ई खेल केवल फुर्सत नहि रहैत; मृत व्यक्तिसभक नाम उच्चारण आ सामुदायिक वर्ष-वृत्तान्त संग जुड़ैत अछि। एक बारक संकट आवृत्त सामाजिक क्रिया बनि जाइत अछि—आख्यानक घटनासँ अनुष्ठानक ओर रूपान्तरण। मुदा कबड्डीक ओहि नवीकृत पारीक पूर्ण दृश्य, खिलाड़ीसभक नाम वा नामोच्चारणक ठीक क्रम एहि अध्यायमे नहि। कथावाचक संस्था स्थापित भेने सूचित करैत छथि। समयक स्तरपर एक वर्षक विशिष्ट संकट अमावस्याक नियमित चक्रसँ जोड़ल जाइत अछि, जे घटना-समयकेँ भविष्यक निरन्तर कथनमे बदलैत अछि।

‘ओ बिपत्तिमे मरल, मुदा गाम नहि मरल’ : वाक्यक द्वन्द्व

कबड्डीमे जोड़ल गेल सूत्र ‘ओ बिपत्तिमे मरल, मुदा गाम नहि मरल’ उपन्यासक अन्तिम मूल्यगत तनावक सघनतम रूप अछि। पहिल आधामे प्रत्येक मृत व्यक्तिक अस्थायी देहगत अस्तित्वक अन्त, दोसरमे गामक समष्टिगत जीवनक निरन्तरता। दुनू वाक्यांश एक-दोसराकेँ निरस्त नहि करैत; त्रासदी आ बचाव अलग स्तरपर साथ रहैत अछि। तथापि व्यक्तिक मृत्युकेँ समुदाय बचल कहि सांत्वना देब सम्भव अछि, ओहिमे निजी पीड़ाकेँ दबेबाक खतरा सेहो अछि। कथावाचक एहन अलग दुःखी परिवारक प्रतिवाद नहि देत। वाक्यक सौन्दर्य एहि अनसुलझल अनुपातमे अछि, केवल विजयघोषमे नहि।

नामरक्षा आ मृतकक अनामिकता : अन्तिम असङ्गति

अध्यायक समापन प्रत्येक गेल व्यक्तिक ‘नाम’ संग नयका वाक्य जोड़बाक घोषणा करैत अछि; मुदा मूल गद्य एहि रोगमे मरल कियो व्यक्तिक नाम नहि दैत। एहि कथा-विधानमे दिलचस्प फाँक अछि—गामक अनुष्ठान मृतकक नाम बचबैत अछि, पाठककेँ नाम सूची उपलब्ध नहि। [−८९]क बाढ़िमे छह मृत व्यक्तिक नामक अभिलेखी उपेक्षा पहिनहिसँ एक पुरान समस्या छल। वर्तमान प्रकरण नाम-स्मरणक आदर्श प्रबल बनबैत, मुदा निजी पहिचान प्रस्तुत करबाक कथात्मक कार्य अधूरा छोड़ैत अछि। एकरा साहित्यिक असङ्गति कहब सम्भव अछि; तथापि सम्पूर्ण उपन्यासक बादक अंशमे सभ नाम अनुपस्थित रहत—ई अनुमान एहि एक अध्यायसँ नहि।

भोरक बिम्ब आ अबाध संकट : आश्वासनक परीक्षण

गीत कहैत अछि 'नाम बचल, हिम्मत बचल, फेर नव भोर आयल'। मुख्य गद्य रोग तीन सप्ताहमे नियंत्रित भेनाइ आ किछु जीवनहानिक मिश्रित परिणाम दैत अछि। भोर एतय ठीक कोन दिनक दृश्य अछि, कहल नहि गेल; ई लोकगीतक आशावादी काल-चिह्न बनैत अछि। [–५९]क भोरमे पानि उतरल आ शून्य मृत्यु; [–५८]क नव भोरमे स्थायित्वक घोषणा होइतहुँ मृतकसभक स्मरण आवश्यक भेल। ओही 'भोर' बिम्बक अर्थ एक अध्यायसँ दोसरमे बदलैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ कथा नवीकरणक आशा देबैत अछि, पर जीवनक क्षतिक अन्तर मिटा नहि सकैत।

समुदायक ध्वनि : ढोल-संकेतसँ स्वास्थ्य-सूचना धरि

दोसर बाढ़िक समय मोहनक वंशजक 'खतराक धुन' तुरन्त निकासी कराने सामूहिक भाषा छल। रोगक अध्यायमे चेतावनीक ओही ध्वनि पुनः नहीं वर्णित; एकर बदला वैद्यक निर्देश आ राति-सभाक घर-घर व्यवहार-सूचना भेटैत अछि। ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण—एक संकटमे पहिने सँ सिखल तात्कालिक संकेत कारगर, दोसरमे दोहरायल दैनिक संवाद आवश्यक। समाजक शिक्षा केवल गीत वा ढोलक एक रूपमे सीमित नहि; परिस्थिति अनुसारे संकेत-विधान बदलैत अछि। तथापि रोगक प्रसार रोकबामे कोन घरक अपन संवाद निर्णायक भेल, ई विस्तृत नहि। अध्यायक सामाजिक संचार कथनमुख्यतः सामूहिक रूपमे उपस्थित अछि।

जनपदक पर्यावरणीय आख्यान : जलक तीन भूमिका

एहि क्रममे पानि असाधारण रूपेँ बहुरूपी अछि। आगिक राति पोखरिक जल बचावक साधन; दोसर बाढ़िमे उफनैत कमला-बलान आवास आ खेतक विनाशक; तेसर बिपत्तिमे ठाढ़ गन्दा जल रोगप्रसारक कथात्मक कारण। एके पदार्थक अलग स्थल, अवस्था आ उपयोग कथा-श्रृंखलामे बदलैत छथि। नदी–पोखरि–गड्ढा तीनूकेँ 'पानि'क एक सामान्य प्रतीकमे विलीन करब उचित नहि। प्रत्येक जल-रूपक स्वतन्त्र स्थानिक कार्य अछि। एहि दृष्टिएँ गाम प्रकृतिपर स्थायी विजय प्राप्त करैत नहि; ओ लगातार बदलैत पर्यावरणीय सम्बन्ध बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। संकट-बाह्य मानवीय संगठन ई स्थलवैविध्यक उत्तर खोजैत अछि।

पर्यावरणीय कारण आ भविष्यशकुनक असम अर्थसत्ता

अध्यायारम्भिक टिप्पणी रोगकेँ पुच्छलताराक तेसर पूर्वानुमानक पूर्णता कहैत अछि; मुख्य गद्य सड़ल पानि, संक्रमण-लक्षण, स्वच्छताक निर्देश आ सामाजिक नियन्त्रणक क्रम बनबैत अछि। एहि दू कारण-विन्यासमे भविष्यशकुन कथात्मक अनुमानक, जल-प्रसंग भौतिक घटनाक पृष्ठभूमिक कार्य करैत अछि। [–६१]मे तारा स्वयं बिपत्ति नहि आनैत कहबाक कारण खगोलक संकेतकेँ रोगक उत्पत्ति मानब उपन्यासक अपना वचनसँ टकराएत। तथापि 'पूर्वानुमान'क भाव गामक तैयारी आ भयक कथा चालित करैत अछि। एहि स्तरभेदकेँ सुरक्षित रखने पाठक पूर्वाभासक कलात्मक भूमिका आ घटना-कारणक अलग स्थान बुझि सकैत छथि।

समीक्षाक निष्पक्ष निर्णय : नाटकीय उपलब्धि

'तेसर बिपत्ति'क प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि आगि–बाढ़ि–रोगक श्रृंखलाकेँ बाह्य आपदाक इतिहाससँ संस्थागत स्मृतिक कथा बनाउब अछि। इन्द्राणीक थकानक संग स्थैर्य, बूढ़बाक विमला-स्मरण, नगरशिक्षित वैद्य, सोनमा–

रत्नाक वंशज आ स्त्रीसभाक राति-सभा मिलि एक सामूहिक पात्र-तन्त्र रचैत अछि। [–५९]क शून्य मृत्युक बाद एतय किछु मृत्यु स्वीकारि उपन्यास पूर्ण विजयक असत्य सरलता सँ बचैत अछि। अमावस्याक कबड्डीमे संकटवर्षक नवीकृत स्मरण दीर्घ उपन्यासक गीत, नाम आ सामूहिक उच्चारणक धुरीकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। ई उपलब्धि घटनात्मक गहनता मात्रसँ नहि, पूर्व प्रसंगक नव कार्य-स्थापनसँ बनैत अछि।

रचनात्मक सीमा : मृत्यु आ देखभालक दृश्यहीनता

संकटवर्षक ई समापन एक व्यापक सामुदायिक नैतिकता रचैत अछि, मुदा रोगी, मृतक आ परिचारिकाक निजी दृश्य विरल अछि। वैद्यक व्यक्तिगत नाम नहि, राति-सभाक भित्तर मतभेद नहि, मृतकक संख्या नहि, उपचार-असफलता आ शोकग्रस्त घरक अन्तरंग कथा नहि। ‘तीन सप्ताहमे नियन्त्रण’क सारांश कथानक बान्हैत अछि, पर चिकित्सा-संघर्षक जीवन्त समय संक्षिप्त करैत अछि। लोकगीतक ‘हँसि झेलल’क उच्च आदर्श इन्द्राणीक थकान आ गद्यक मृत्यु-वर्णनक पूर्ण पर्याय नहि। कथा समुदायक निरन्तरताक प्रभावी रूपक बनैत अछि; रोगक बहुवैयक्तिक त्रासदीक सम्पूर्ण सूक्ष्मचित्र नहि।

स्रोत-सीमा, अध्याय-सङ्ख्या आ अगिला कथाप्रवाह

एहि प्रकरणक प्राथमिक आधार मूल उपन्यासक अध्याय [–५८] ‘तेसर बिपत्ति’, आरम्भिक फकरा, ‘तीन बिपत्ति, चारिम ठाढ़’ लोकगीत, गन्दल जलसँ जुड़ल रोगवर्णन, इन्द्राणी–बूढ़बाक संवाद, वैद्य आ वंशजसभक सहभागिता, राति-सभाक घर-घर क्रिया तथा अमावस्याक कबड्डीक अन्तिम वाक्य अछि। अनुक्रमणिका अनुसार अध्याय [–५८]क आरम्भ पृष्ठ २८४ आ अगिला [–५७]क आरम्भ २८८ अछि; ई आरम्भ-पृष्ठपर आधारित अनुमानित परास २८४–२८७ थिक, सूक्ष्म उद्धरण-पृष्ठ नहि। आगामी [–५७] ‘साहेबक नोटबुक’ बाहरी लेखन आ भीतरक सामुदायिक स्मृतिक सम्बन्धक नयका प्रश्न उठबैत अछि।

प्रकरण ४४ | मूल अध्याय –५७ — साहेबक नोटबुक

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक पाठानुसार स्वतन्त्र कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई कथाक वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र माप नहि।

तीन बिपत्तिक बरखसँ लेखनक विवाद धरि

‘साहेबक नोटबुक’ ठीक ओहि ठाम अबैत अछि जतय आगि, बाढ़ि आ रोगक संयुक्त वर्ष गामक स्मृतिमे ‘तीन बिपत्तिक बरख’ नामसँ थिर भेल अछि। पिछला अध्यायसभमे समस्या छल जीवित रहब; एतय प्रश्न अछि जे जीवित रहबाक कथा के लिखत, कोन भाषामे लिखत आ ओकर अर्थ के निर्धारित करत। संकट स्वयं बाहरी विद्वानकेँ गाम धरि आनबाक कारण बनैत अछि। एहि कारण अध्याय –५८ सँ –५७क संक्रमण आकस्मिक विषयान्तर नहि: सामुदायिक अनुभव सार्वजनिक प्रसिद्धि पबैत अछि, प्रसिद्धि बाहरी लेखनक आमन्त्रण बनैत अछि, आ लेखन पुनः समुदायपर परिभाषा थोपबाक माध्यम होइत अछि। घटना-पाठक एतय जीवनरक्षासँ प्रतिनिधित्वक अधिकार धरि बढ़ैत अछि।

शीर्षकक वस्तु : नोटबुक कथात्मक उपकरण

शीर्षक कोनो ‘अंग्रेज साहेबक आगमन’ नहि, ‘नोटबुक’ चुनैत अछि। लिखबाक वस्तुकेँ केन्द्र देलासँ कथामे दृष्टिकेन्द्र आ अभिलेखक चयन निर्णायक बनैत अछि। साहेब प्रश्न पूछैत छथि, उत्तर टिपैत छथि, आ ओही सूचनाकेँ पोथी बनबैत छथि। बाहरी दुनिया लेल नोटबुक स्मृतिक वाहक बनैत अछि; गाम लेल ओकर सीमित चयन अपमानक स्रोत। ई विरोध कागज बनाम कण्ठक सामान्य शत्रुता नहि, लिखनिहारक स्थितिक प्रश्न अछि। पहिने [–६३]मे छोट उपयोगी पुस्तक छपब आ मुख्य कथा स्थगित रहबक द्वन्द्व छल; आब छपल बाहरी पोथी सामुदायिक अर्थ पर कब्जाक नयका जोखिम प्रस्तुत करैत अछि।

आरम्भिक फकरा : ‘हिसाब’ आ ‘सत्य’क अलग स्वर

‘साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब— गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य’ फकरामे कागजपर चढ़ल विवरण ‘हिसाब’ बनैत, सामूहिक स्मृति ‘सत्य’। फकराक निश्चित विभाजन पाठककेँ बाहरी पोथीपर सन्देह राखबाक भाविक तैयारी दैत अछि। मुदा कथाक भीतर गाम सेहो हर घटना एके ढंगसँ याद नहि रखैत; पूर्व अध्यायमे हरिपतिक ताड़पत्र, गंगाधरक छपाइ आ छाया-पंजी लिखित स्मृतिक आन्तरिक रूप छथि। अतः गीतक विरोध रूपकात्मक राजनीतिक धुरी अछि, लिखित माध्यमक सर्वथा असत्य होएबाक पाठ-सिद्ध नियम नहि। ई अन्तर बुझला सँ कृति अपन लेखन-विरोधी अतिशयोक्तिसँ बाँचैत अछि।

‘कण्ठक कागच’ : गीतक मौखिक पाण्डुलिपि

अध्यायारम्भक लोकगीत ‘कण्ठक कागच’ बाहरी नोटबुककेँ स्थिर पृष्ठ, आ गामक सामूहिक कण्ठकेँ जीवित पाठ कहैत अछि। गीतक पुनरावृत्ति बाहरी व्यक्तिक अनवरत आवागमनक सामने गामक दीर्घ स्थायित्व स्थापित करैत अछि। ‘नोटबुकमे अक्षर’ आ ‘कण्ठमे नाम’क प्रतिस्थापन एक स्मृति-राजनीति रचैत अछि, कारण उपन्यासमे नाम मात्र सूचना नहि, मृतक आ अनुपस्थित व्यक्तिक सामाजिक अस्तित्व अछि। तथापि गीत बाहरी विद्वानक गाममे बिताओल समय आ सुनल साक्षात्कारक सूक्ष्म पक्ष नहि खोलैत। गीत पहिनहि निश्चय दैत, गद्य बादमे असहमतिपर पहुँचबाक क्रम देखबैत अछि।

अनुष्ठानक उत्तराधिकार : इन्द्राणीसँ नन्दकिशोर

आरम्भमे इन्द्राणीक बाद हुनकर बेटा नन्दकिशोरपर अनुष्ठानक भार जाएबाक छोट सूचना अछि। एक पीढ़ी-संक्रमण पूरा अनुच्छेद नहि, एक वाक्यमे सम्पन्न होइत अछि। इन्द्राणी तीन बिपत्तिक सङ्घर्षमे दृश्यात्मक नेतृ बनल छलीह; नन्दकिशोर प्रथम पटक बाहरी सांस्कृतिक व्याख्याक प्रश्नक सामने उभरैत छथि। वंशानुगत अनुष्ठान निरन्तर रहैतहुँ नेतृत्वक आवश्यक काम बदलैत अछि। कथावाचक इन्द्राणीक उत्तरजीवन वा नन्दकिशोरक शिक्षाक अलग वृत्तान्त नहि दैत; ई कालिक लोप दीर्घ कादम्बरीक पीढ़ी-सूत्रकेँ तीव्र बनबैत अछि, मुदा चरित्र-संक्रमणक निजी अनुभव अनकहल रहैत अछि।

आगन्तुकक नाम : हेनरी थॉम्पसनक कथात्मक स्थिति

मिस्टर हेनरी थॉम्पसनक पूर्ण नाम आ लोक-परम्पराक अध्ययनमे रुचि, गामक अनेक अनाम सामूहिक व्यक्तिसँ भिन्न, एक विशिष्ट बाहरी पात्रकेँ बनबैत अछि। गद्य हुनकर उद्देश्यक आरम्भिक रूप ‘रुचि’ आ ‘ध्यानपूर्वक’ उत्तर लिखब बतबैत अछि; हुनका प्रवेशक्षणे दुष्ट षड्यन्त्रकारी नहि बनाओल गेल। ई चरित्रगत सूक्ष्मता महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पोथीक विकृत व्याख्या ओकरा बादो घातक होइत अछि। आलोचना थॉम्पसनक अस्तित्वकेँ दस्तावेजीकृत ऐतिहासिक नृवंशशास्त्री मानि नहि चलि सकैत; ओ उपन्यासक भीतर नामित आगन्तुक छथि। कथा हुनकर निजी जीवन अथवा मानसिक परिवर्तनक विस्तृत दृश्य नहि दैत।

प्रसिद्धि आ कथाक यात्राक कारणात्मक क्रम

‘तीन बिपत्तिक बरख’क कथा आसपास प्रसिद्ध होइते थॉम्पसन गाममे अबैत छथि। एहिसँ लोककथा पहिने क्षेत्रीय प्रसार पबैत अछि, तखन बाहरी अनुसंधानक विषय बनैत अछि। कथा प्रसिद्ध भेलाक माध्यम—गीत, यात्री, पोथी, वंशगत स्मरण—एहि अध्यायमे निर्दिष्ट नहि, केवल परिणाम बताओल अछि। ई संक्षेप एक परिवर्तनसूचक सेतु थिक। गौर करबाक अछि जे बाहरी विद्वान केन्द्रीकृत सत्ता द्वारा आदेशित सर्वेक्षण करय अबैत छथि, एहन स्पष्ट वर्णन नहि; हुनकर स्वेच्छा-आधारित अध्ययन प्रस्तुत अछि। सत्ता-असमानता हुनकर प्रकाशनक अधिकार आ संज्ञा-निर्धारणमे उभरैत अछि।

पुछताछक दृश्य : प्रश्न त स्पष्ट, उत्तर अनुपस्थित

थॉम्पसन ‘बूढ़बा’, ‘कबड्डी’, ‘चन्ना गाछी’क अर्थ पुछैत छथि। ई तीन प्रश्न उपन्यासक स्मृति-चरित्र, सामूहिक अनुष्ठान आ स्थल-संरचनाकेँ घेरैत अछि। मुदा गामक वृद्धलोक कुन शब्दमे उत्तर देलनि, हुनकर नाम की छल, आ थॉम्पसन कोन उत्तर चुनलनि—ई प्रत्यक्ष निबद्ध नहि। पाठक पूछल प्रश्नक सूची पबैत अछि, साक्षात्कारक बहुस्वर संवाद नहि। बादक विकृति एही रिक्ति पर टिकल अछि: मूल उत्तर आ प्रकाशित वाक्यक शाब्दिक तुलना उपलब्ध नहि। कृति अपमानक अनुभूति प्रभावी बनबैत अछि, मुदा ‘कतेक बदलल’क पाठगत लेखा अधूरा छोड़ैत अछि।

किछु सप्ताहसँ एक बरख : कथनकालक गति

किछु सप्ताह धरि पुछताछ आ लिखनाइ, फेर साहेबक विदाई; बरख भरि बाद पोथीक प्रति गाम पहुँचैत अछि। एक वर्षक अन्तरमे पाण्डुलिपि सम्पादन, छपाइ, प्रकाशन-संस्था आ वितरणक कोनो विस्तृत दृश्य नहि। समयक ई संक्षेप बाहरी ज्ञान-उत्पादनक प्रक्रिया लगभग अदृश्य करैत अछि, जखन कि ओकर निष्कर्ष सामाजिक रूपेँ अत्यन्त दृश्य बनि जाइत अछि। कथा लेखकीय प्रक्रिया केना चलल सँ बेसी लिखल पुस्तकक गामपर प्रभावमे रुचि रखैत अछि। एहि कालिक असमानताकेँ बुझब अध्यायक घटनाघनत्व नापबामे उपयोगी अछि: बहुत समय कथनक छोट अनुच्छेदमे, एक आहत प्रतिक्रियाक संवाद अनेक वाक्यमे।

मुद्रित पोथीक फेरबाक दृश्य : अपेक्षाक उलटब

नन्दकिशोर पहिने संतुष्ट छथि जे बूढ़बाक कथा बाहरी संसार धरि पहुँचेबाक अछि। बरख बाद छपल पुस्तकक प्रति पहुँचैतहि ओ आ गामक लोक स्तब्ध होइत छथि। एतय प्रमुख कथात्मक मोड़ ज्ञानक आगमन नहि, आशाक उलटब अछि। पहिले लेखन सम्मानक विस्तार मानल गेल; ओहि सामग्रीक प्रकाशित रूप अपमानक स्थायित्व बनैत अछि। पुस्तक स्वयं एक गतिशील वस्तु: गामसँ सूचनाक निकलनाइ, परदेशमे रूपान्तरण, आ गाममे फेर प्रवेश। एहि वस्तुचक्रमे पाठक देखैत अछि जे लेखन केवल अनुभवक नकल नहि, स्रोत-सम्बन्ध बदलि सकनिहार क्रिया अछि।

चारि तिरस्कारपूर्ण नामकरणक क्रम

बूढ़बा ‘अन्धविश्वासक अवशेष’, चन्ना गाछी ‘भूत-पूजा’, कबड्डी ‘बर्बर रीति-रिवाज’, आ राति-सभा ‘अनियंत्रित सामाजिक व्यवहार’ कहाओल अछि। चारि संज्ञा गामक चारि स्मृतिसंस्थाक अर्थ बदलैत छथि। ई केवल अशिष्ट विशेषण नहि: प्रत्येक शब्द जीवनरक्षा, नाम-स्मरण, न्याय वा स्त्रीसंगठनक पूर्व पाठक सम्बन्ध तोड़ैत अछि। वस्तु वही रहैत अछि, निर्णायक दृष्टिविधान बाहरसँ बदलि देल जाइत अछि। उपन्यासक भीतर प्रकाशित पोथीक पूरा अंश उपलब्ध नहि; यी चुनल चारि नामकरण कथानकमे प्रतिक्रिया उत्पन्न करबाक संक्षिप्त उद्धरणात्मक सामग्री छथि।

स्त्रीसभाक राति-सभापर टिप्पणीक विशिष्ट हिंसा

राति-सभाकेँ ‘अनियंत्रित सामाजिक व्यवहार’ कहल जाएब शास्त्रीय दूरीक तटस्थ विवरण नहि, सामूहिक स्त्री-कर्मक मूल्यघटन थिक। पाठक पहिनहि देखि चुकल छथि जे यही संस्था अकालमे अन्नवितरण, अगिनमे मानव-श्रृंखला आ रोगक समय स्वच्छताक घर-घर अभियानमे सहायक छल। एहि स्थापित घटनासँ थॉम्पसनक टिप्पणीक अन्तर ठोस बनैत अछि। तथापि एहि अध्यायमे राति-सभाक स्त्री स्वयं पोथीक विरुद्ध सार्वजनिक वक्तव्य नहि दैत छथि; विरोध नन्दकिशोरक माध्यमे केन्द्रित अछि। स्त्री-संस्थाक रक्षा करैत कथा ओकर स्वयं बोलबाक पूरा अवसर नहि दैत—ई प्रतिनिधित्वगत सीमा अछि।

नन्दकिशोरक क्रोध : चोट आ क्रियाक क्रम

नन्दकिशोर पहिने बाहरी प्रकाशनसँ प्रसन्न, बादमे पुस्तक पढ़ि क्रोधित, तखन पीपर लग बूढ़बासँ संवाद, फेर पत्रलेखन आ अपन कथा-संकलन करैत छथि। एहि चार अवस्था-मोड़सँ पात्र निष्क्रिय अपमानग्राही नहि रहैत। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे क्रोध प्रत्यक्ष हिंसा वा पुस्तक-विनाशमे परिणत नहि; बूढ़बाक संग विचारक बाद लेखनक प्रत्युत्तर बनैत अछि। तथापि ‘गामक लोक पढ़ि (वा पढ़बा)’ वला अस्पष्ट शब्द-चयन पाठकीय पहुँचक प्रश्न उठबैत अछि: कतेक व्यक्ति स्वयं अंग्रेजी पोथी पढ़लनि, कतेक सुनलनि? मूल गद्य एकर स्पष्ट विभाजन नहि करैत।

पीपरक पुनरागमन : न्यायसभाक स्मृति-स्थल

पीपर लग नन्दकिशोरक पहुँचब पूर्व अध्यायसभक नायक-चरित्रक पुनरावर्तित क्रिया अछि। यही स्थल आगि, बाढ़ि, रोग आ स्वाधीनता-पूर्व नैतिक सङ्कटमे संवादक केन्द्र रहल। एतय भौतिक खतरा नहि, अर्थक विकृतिसँ उत्पन्न सांस्कृतिक चोट बूढ़बा समक्ष रखल जाइत अछि। गाछक दोहरायल उपयोग स्थलक स्थायित्व स्थापित करैत अछि; गाम बदलैत, प्रश्न बदलैत, कथोपकथनक स्थान स्थिर। मुदा एहि अध्यायमे बूढ़बाक पीपर-अनुभूतिमे कोनो नव चमत्कारी दृश्य नहि; उहाँ संवाद-आधारित स्मृतिसङ्ग्राहक छथि।

बूढ़बाक मौन : उत्तरक पहिल अवकाश

नन्दकिशोरक क्रोध सुनि बूढ़बा ‘बहुत काल चुप’ रहैत छथि। एहि मौनकेँ सहमति वा पराजय बुझब गलत होएत, कारण तत्काल बाद ओ औपनिवेशिक दृष्टिक दृष्टिकोणात्मक अन्तर बुझबैत छथि। मौन प्रतिक्रिया कऽ देबाक तात्कालिक आवेग रोकैत अछि, जतेक कि नन्दकिशोरक उत्तेजित प्रश्न कथाक गति बढ़बैत अछि। ‘बहुत काल’क वास्तविक अवधि उपलब्ध नहि; ई अर्थविस्तारक कथासंकेत अछि। सामूहिक स्मृतिक दीर्घ समय आ व्यक्तिगत क्रोधक त्वरित समय एक संवादमे भेटैत अछि। बूढ़बाक विलम्बित वाणी कथा-मूल्यांकनक निर्णायक केन्द्र बनि जाइत अछि।

हरिपति आ गंगाधरक पुनर्स्मरण : अन्तर्पाठीय वंश

बूढ़बा हरिपतिक पुरान प्रश्न याद करबैत छथि—कथा लिखल जाए तँ गामक भाषा आ दृष्टिकोणमे। बादमे नन्दकिशोर गंगाधर आ हरिपतिक परम्परा आगाँ बढ़बैत छथि। एहि दू पूर्व पात्रक स्मरणसँ −५७ अलग घटना नहि, लिखित-स्मृति सम्बन्धी दीर्घ अन्तर्पाठ बनैत अछि। [−६३]मे मुख्य कथा छपाएब स्थगित करबाक कारण ओकर विकासशीलता छल; एतय बाहरी छपाइ सामग्रीक अर्थ बदलि देलक। दूनू अध्याय मुद्रणक अलग समस्या उठा रहल अछि: समयक अन्तिमता आ अर्थक स्वामित्व। समान माध्यम परस्पर विरोधी नतीजा दैत अछि, तेँ निश्चयात्मक ‘पोथी खराब’ सिद्धान्त बनबैत नहि।

भाषा आ दृष्टिकोण : अनुवादक अदृश्य अन्तर

बूढ़बाक तर्क अछि जे थॉम्पसनक आँखि, भाषा आ दृष्टिकोण गामक नहि छल। ओहि कथनमे अनुवादक प्रश्न समाहित अछि: एक सामाजिक अनुष्ठान बाहरी वर्गीकरणमे कोना बदलि जाइत अछि? पर मूल कथा गामक कथनक वास्तविक भाषा, थॉम्पसनक नोटबुकक भाषा वा प्रकाशित पोथीक सटीक अनुवाद-प्रक्रिया अलग निर्दिष्ट नहि करैत। हम केवल दृष्टिविधानक संघर्ष देखैत छी। एहने सीमांकन आलोचनामे आवश्यक अछि; अनुमानसँ अंग्रेजी पाण्डुलिपिक शब्द वा प्रकाशन-विवरण जोड़ब मूलक परिमिति पार करब होएत।

बाहरी दृष्टिक संकट : ‘अपरिचित’क नामकरण

बूढ़बाक अनुसार बाहरी चश्मामे अपरिचित रीति ‘पिछड़ल’ वा ‘बर्बर’ बुझाइत अछि। ई कथन दृष्टिकेन्द्रक संघर्षकेँ पात्रक वाणीमे स्पष्ट करैत अछि। उपन्यासक पाठककेँ हरिपति, रत्ना, गौरी, इन्द्राणी, कबड्डी आ राति-सभाक पूर्व इतिहास भेटि चुकल अछि; थॉम्पसनक पुस्तक एहि दीर्घ सम्बन्धकेँ छोट श्रेणीमे घटबैत अछि। एहि पाठकीय

अतिरिक्त जानकारीसँ विडम्बना बनैत अछि—पाठक जानैत छथि जे साहेबक वर्गीकरण कथाविश्वक पहिने स्थापित घटनासँ मेल नहि खाइत। किन्तु नन्दकिशोरक प्रतिवादक बहु-पक्षीय सामाजिक बहस नहि देखाओल गेल।

नन्दकिशोरक प्रश्न : विरोधक विकल्प

‘पत्र लिखी, विरोध करी?’ एहि छोट प्रश्नमे निजी क्रोधक बाद सार्वजनिक क्रियाक सम्भावना खुलैत अछि। बूढ़बा विरोधकेँ निषिद्ध नहि करैत; ‘विरोध करू, अवश्य’ कहि लेखनक दीर्घ कार्यक्रमकेँ अधिक महत्त्व दैत छथि। एतय पात्रकेँ द्वैध विकल्प भेटैत अछि—अविलम्ब प्रत्युत्तर अथवा संचित स्व-लेखन। कथा दुनू स्वीकारि लैत अछि। लोकसभा, छपल समीक्षा वा बाहरी विद्वानसँ प्रत्यक्ष द्वन्द्व होइत नहि; नन्दकिशोरक कार्रवाई शालीन पत्र आ गामक कथाक सचेत संकलन धरि सीमित रहल। ई परिणाम अन्तरराष्ट्रीय मान्यताक विजय नहि, स्ववाचक अनुशासनक स्थापन अछि।

अनुत्तरित पत्र : संवादक असमान अधिकार

नन्दकिशोर शालीन मुदा दृढ़ पत्र लिखैत छथि, आ ओकर कोनो उत्तर नहि अबैत। बाहरी विद्वान गाममे अनेक प्रश्न पुछबाक अधिकार प्रयोग करैत छथि, मुदा गामक प्रत्युत्तरक समय मौन रहैत छथि। एहि असन्तुलनमे कथात्मक व्यंग्य अछि: लिखित जगतमे बाहरी प्रश्नकेँ प्रकाशन भेटल, भीतरी आपत्तिकेँ प्रत्युत्तर नहि। मुदा ‘उत्तर नहि आयल’सँ पत्र अंग्रेजक लग पहुँचले नहि, ताहि निष्कर्षपर नहि पहुँचल जा सकैत। कथा सिर्फ संवादक परिणामहीनता बतबैत अछि, प्रकाशकक सचेत प्रतिबन्ध वा डाकक मार्गक विशिष्ट घटना नहि।

जीतक बदला दीर्घ संकलन : अन्तक खुलल रूप

अध्याय जीतल सार्वजनिक विवादपर समाप्त नहि होइत। नन्दकिशोर अधिक सावधानीसँ गामक कथा अपन भाषामे संकलित करय लगैत छथि। ‘लगैत छथि’ आगामी क्रियाक आरम्भ अछि, सम्पूर्ण पोथीक सिद्ध उपलब्धि नहि। एतय अन्तिमता असमाप्त श्रममे बदलैत अछि। [–५८]क अनुष्ठान मृतकक नाम आवृत्त करैत छल, आब ओ स्मृति लेखनक सतत काज बनैत अछि। घटनात्मक प्रभाव बाहरी पुस्तककेँ संशोधित करब नहि, समाजक अपन वर्णनाक क्षमता बढाएब अछि। भविष्यमे ई लिखित सामग्री केना सुरक्षित रहत, आगूक अध्यायक परीक्षण बिना तय नहि।

सामूहिक स्वर बनाम एक पुरुष लेखक

गीत कहैत अछि ‘गाम अपने लेखक’, मुदा गद्यक निर्णय नन्दकिशोर आ बूढ़बाक दू पुरुषस्वरमे मुख्यत: सम्पन्न होइत अछि। वृद्ध लोकसँ थॉम्पसन पुछने छलाह, गामक लोक पुस्तक पढ़ि स्तब्ध भेल छल, मुदा सामूहिक लेखन-सभा वा स्त्रीक प्रत्यक्ष वैकल्पिक बयान वर्णित नहि। ‘हमरहि दृष्टिकोण’क दावा आ वास्तविक निर्णयक केन्द्र अलग स्तर पर उपस्थित छथि। एहि अन्तरकेँ लेखनक सामाजिक असम्भवता नहि, अध्यायक प्रतिनिधित्वगत न्यूनता मानब उचित। गामक स्व-प्रतिनिधित्वक आदर्श केना बहुवचन बनत, से अगिला पाठपर छोड़ल प्रश्न थिक।

मुद्रणक स्थायित्व आ अर्थक अस्थिरता

साहेबक पोथी एक बरख बाद वस्तु रूपमे लौटैत अछि, मुदा ओकर वर्णन गामक अपन जीवन-अर्थसँ बेमेल। कागजक स्थायित्व अर्थक विश्वसनीयताक बराबर नहि। [-६३]मे पुस्तक छपब कथा स्थिर करबाक भय छल; एतय मुद्रित वर्णनक अधिकार प्रत्यक्ष चुनौती बनैत अछि। ई द्वि-अध्यायीय सेतु उपन्यासक परापाठीय बौद्धिक काम अछि। कथा स्वयं पाठककेँ अपन भाषा मे लिखल एक विस्तृत रूप होएबाक कारण तकर विडम्बना प्रखर: जे पोथी हम पढ़ैत छी, ओ बाहरी पोथीक एक वैकल्पिक रूपक जकाँ समझाइत अछि, पर ई लेखकक ऐतिहासिक रचना-प्रक्रियाक तथ्य नहि।

कथावाचकक पक्षधरता : निर्भीक मुदा सीमित

कथावाचक थॉम्पसनक ‘नीक नियति’क उल्लेख करैत छथि, साथे प्रकाशित पोथीक अपमानजनक वर्गीकरण चुनि देखबैत छथि। ई संरचना जानि-बूझि विरोध तैयार करैत अछि, मुदा अंग्रेज पात्रकेँ अपन पुस्तकक बचाव वा आत्मसमीक्षाक अवसर नहि दैत। बाहरी विद्वानक दृष्टि एकतर्फा उद्धरणमय रहैत अछि। पाठककेँ नन्दकिशोरक असहमति व्यापक पूर्वस्मृतिक आधार पर विश्वसनीय लगैत, पर चरित्र-बहुवाचकता किछु संकुचित होइत अछि। एकर आलोचना बाहरक शब्दकेँ न्यायसंगत ठहराएब नहि; कलात्मक प्रश्न ई अछि जे पात्रकेँ पूर्ण संवादात्मक अवसर कतेक देल गेल।

कालखण्ड आ बाह्य इतिहासक मर्यादा

ई कथा अंग्रेजी शासनकालमे स्थापित अछि, मुदा थॉम्पसनक प्रवेश, पुस्तक छपबाक स्थल, प्रकाशन-वर्ष आ वास्तवक ऐतिहासिक अभिलेखक विवरण नहि दैत। ‘इंग्लैंडक विद्वत्-समाज’ हुनकर घोषणा अछि, सत्यापित पुस्तक-सूची नहि। नव स्वतन्त्र ऐतिहासिक दावाक आड़िमे एहि कथात्मक संसारकेँ नापब आवश्यक नहि। पाठक लेल उपन्यासक तथ्य अछि प्रश्नोत्तर, प्रकाशनक वादा, एक बरख बाद प्रतिक प्राप्ति, अपमानजनक वर्णन, अनुत्तरित पत्र आ अपन कथा-सङ्कलन। ऐतिहासिक औपनिवेशिक नृविवरणक व्यापकता अलग शोधक विषय भऽ सकैत अछि, एहि प्रकरणमे मूल घटनाक स्थानापन्न नहि।

कथन-अवधि : एकाधिक वर्षक कथात्मक संक्षेप

नन्दकिशोरक जमानाक अनिर्दिष्ट अवधि, थॉम्पसनक किछु सप्ताहक भ्रमण, एक बरखक प्रतीक्षा आ भविष्यक जारी संकलन अत्यल्प गद्य-स्थानमे समेटल अछि। ओकर विपरीत बूढ़बासँ क्रोधित संवादकेँ कथानक अधिक जगह दैत अछि। एहि अनुपातसँ स्पष्ट अछि जे उपन्यास लेखन-प्रक्रियाक इतिहासक बदला अर्थ-निर्धारणक नैतिक क्षण नाटकीय रूपेँ विस्तृत करैत अछि। पात्रक मौन आ प्रतिवाद तीव्र दृश्य, पुस्तक-उत्पादन कालिक लोप।

दर्पणरूप मूल्यांकन : उपलब्धि आ सीमा

एहि अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि गामक पुकार कियो बाहरी छपल पोथी द्वारा संक्षेपित कऽ दए तखन आत्म-लेखनक आवश्यकता कथाक घटनामे रूपान्तरित करब अछि। नोटबुक प्रश्नक संग्रह होइतहुँ उत्तरक विकृति

बनैत अछि; अनुत्तरित पत्र राजनीतिक असमताकेँ सूक्ष्म नाट्यघटना बनबैत अछि। सीमा ई जे गामक उत्तरसभ उद्धृत नहि, थॉम्पसनक लेखन केवल चारि अपमानजनक संज्ञामे संक्षिप्त, राति-सभाक स्त्रीक स्वतन्त्र प्रतिवाद नहि। परिणामतः 'भीतर'क दृष्टिकोणक बहुस्तर अपेक्षाकृत कम खोलल गेल। मूलक शक्ति ई तनाव प्रकट करब; दुर्बलता ओकर प्रत्येक स्वरकेँ समान दृश्यस्थान नहि देब।

'नीक नियति'क प्रश्न : नीयत आ परिणामक अलग क्रम

थॉम्पसन अपन लेखनमे सजग आ उत्सुक देखाओल गेल छथि, आ आरम्भिक टिप्पणी सेहो हुनकर नीक नियतिक उल्लेख करैत अछि। मुदा प्रकाशित निर्णय गामक परम्पराक अपमानक कारण बनैत अछि। एहि अन्तरसँ कथा बाहरी अध्ययनकेँ केवल दुष्ट मंशाक षड्यन्त्र बनबैत नहि; अर्थक विकृति अनभिज्ञ दृष्टिकोण सँ सेहो सम्भव बतबैत अछि। तथापि थॉम्पसन स्वयं किताबक पाठक शिकायत सुनि अपन प्रतिक्रिया दैत नहि। नीयतक सूचना कथावाचक दैत छथि, आत्मस्वीकृति पात्रक विस्तृत वाक्य नहि। पाठककेँ आरम्भिक अनुकूल छवि आ अन्तिम मौनक बीच विचारक अवकाश मिलैत अछि।

'भीतर' शब्दक बहुवचन समस्या

बूढ़बा अपन कथा 'भीतरसँ' लिखबाक आग्रह करैत छथि, मुदा गामक भीतर सब एके जाति, श्रम, लिंग वा अधिकारक स्थानपर नहि। एतय आत्म-प्रतिनिधित्वक दावा स्वयं सभक आवाज बनि सकैत अछि की नहि—ई कथात्मक प्रश्न अछि। थॉम्पसन प्रश्न गामक वृद्धलोकसँ पुछैत छथि; नन्दकिशोर बादमे प्रमुख संकलक बनैत छथि। स्त्रीसभाक राति-सभा, चर्मकार टोली, माझिनक वंशजक सम्पूर्ण व्याख्या पाठकक सामने नत्थी नहि। एहि कारण 'गामक अपन दृष्टिकोण' सिद्धान्त रूपेँ प्रभावी, बहुवचन प्रयोग रूपमे एखन अधूरा। समग्र उपन्यासक अगिला लेखनप्रसंग एहि समस्याकेँ कैसे विकसित करैत अछि, से देखब आवश्यक।

नोटबुक आ पञ्जीक पूर्वछाया

पुरान गाममे नाम-स्मरणक पञ्जी आ कथासंग्रहक अनेक प्रयास भेटल; थॉम्पसनक नोटबुक ओहि अभिलेखीय संसारक नव आगन्तुक रूप अछि। वस्तुसभक भिन्नता केवल आकार वा लिपि नहि, गामक प्रति उत्तरदायित्वक सम्बन्ध अछि। एक लिखनिहार मृतकक नाम बचबैत अछि, दोसर प्रथा के 'बर्बर' कहि अलग सामाजिक अर्थ दैत अछि। पर पूर्वक हर स्थानीय दस्तावेज स्वतः निष्पक्ष छल—एहन दावा सेहो सावधान होएबाक चाही। पुरान बाढ़िमे अनाम मृत्यु अभिलेखक असमानता देखबैत छल। एहि तरह कथा भीतर-बाहरक द्वन्द्वक संगहि अभिलेखक सामान्य सत्ता-संबन्धक प्रश्न उठबैत अछि।

प्रकाशनक पाठक : गाम आ परदेशक दू समुदाय

थॉम्पसन इंग्लैंडक विद्वत्-समाजमे लेख प्रकाशित करबाक घोषणा करैत छथि; गाम एक बरख बाद प्रति पबैत अछि। एहि द्वैध पाठकवृत्तमे लेखनक प्रभाव अलग अछि। परदेशी पाठक कोन विवरण पढ़ि की बुझल, कथा नहि बतबैत; गामक पाठक आहत होइत छथि, ई स्पष्ट। एही कारण 'सम्पूर्ण इंग्लैंड गामकेँ गलत बुझलक' जकाँ निष्कर्ष असिद्ध। लेखनक बाह्य प्रसारक वादा आ स्थानीय वापसीक परिणाम मात्र कथानकमे निश्चित। पोथीक

यात्रा दर्शबैत अछि जे एक पाठक-समुदायक लेल निर्मित वर्गीकरण दोसरा समुदायमे चोट बनि पहुँचि सकैत अछि।

प्रमाणक चयन नहि, कथनक चयन

एहि आलोचनाक केन्द्र दार्शनिक सत्यापन अथवा विद्वानक ज्ञानमीमांसक सिद्धि नहि, कथन-अधिकारक चयन अछि। थॉम्पसन ककरा प्रश्न पुछैत छथि, ककर उत्तर लिखैत छथि, प्रकाशित पाठ ककर शब्दकेँ बदलैत अछि, आ विरोधीकेँ उत्तर देबाक अवसर भेटैत अछि कि नहि—ई सभ आख्यानशास्त्रीय प्रश्न छथि। मुख्य गद्य साक्षात्कारक शब्दशः आलेख नहि दैत, तेँ आलोचना एक तरफक वर्णनक सीमाक साथ वाचिक सम्बन्धक असमानता देखैत अछि। गामक बाहरी वर्गीकरणक विरुद्ध नैतिक असहमति कथासिद्ध अछि, मुदा कल्पित मूल इंग्लिश पाठक विस्तार प्रस्तुत करब अनुचित।

बाहरी किताबसँ आन्तरिक उत्तराधिकार : अध्यायक वृत्त

नन्दकिशोरक पहिल प्रसन्नता बहिर्गमनक उत्सव अछि—कथा गामसँ बाहर जाएत; अन्तिम निर्णय अन्तर्गत संकलन अछि—कथा गाम अपन शब्दमे रखत। एतय कथानक भौगोलिक वृत्त पूरा करैत अछि, मुदा काव्यात्मक अर्थ बदलबाक संग। प्रारम्भमे सफलता बाहरी मान्यता मानल गेल, अन्तमे आत्म-विवेचनक जिम्मेवारी। तेँ समापन संकुचित स्थानीयता नहि, कथावाचनक आत्मनिर्णयक दावा अछि। भविष्यक पाठकसँ संवाद पूर्ण काटल नहि—नन्दकिशोर पत्रो लिखैत छथि। उपन्यास एहि दूनू विकल्पकेँ समवर्ती रखैत अछि।

स्रोतसीमा आ अगिला अध्यायक सेतु

आलोचनाक प्राथमिक आधार मूल अध्याय [–५७] ‘साहेबक नोटबुक’, आरम्भिक फकरा, ‘कण्ठक कागच’ गीत, इन्द्राणीसँ नन्दकिशोरक उत्तराधिकार, हेनरी थॉम्पसनक प्रश्नोत्तर, बरख बाद पोथी आ ओकर संज्ञासभ, बूढ़बाक हरिपति-स्मरण, नन्दकिशोरक पत्र तथा स्व-लेखनक आरम्भ अछि। मूल अनुक्रमणिकामे [–५७] आरम्भ २८८ आ [–५६] आरम्भ २९२, अतः २८८–२९१ अनुमानित मुद्रित परास; सूक्ष्म पृष्ठ-उद्धरण नहि। आगामी [–५६]मे लेखकीय स्व-आवाज सामूहिक राजनीतिक पुकारक रूपमे नव सन्दर्भ पबैत अछि।

प्रकरण ४५ | मूल अध्याय –५६ — स्वाधीनताक पुकार

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक पाठानुसार स्वतन्त्र कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई कथाक वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र माप नहि।

बाहरी लेखनसँ सामूहिक राजनीतिक कण्ठ धरि

[–५७]मे गाम अपन कथा बाहरी विद्वानक विकृत वर्णनसँ फेर प्राप्त करबाक प्रयास करैत छल; [–५६]मे प्रश्न आब राज्यसत्ताक विरुद्ध सामूहिक उच्चारणक अछि। पहिने लेखनक अधिकार विवादित छल, आब प्रदर्शन, सूत, वस्त्र आ अहिंसात्मक प्रतिरोधक सार्वजनिक कार्य महत्त्व पबैत अछि। दू अध्यायमे ‘अपन स्वर’ समान कथात्मक

धुरी अछि, मुदा एके क्रियाक पुनरावृत्ति नहि। नन्दकिशोर पोथी आ पत्रक माध्यमे उत्तर दैत छथि; लक्ष्मीदेवीक जमानामे गाम चौपाल, राति-सभा आ प्रतिरोधक दृश्य मे प्रवेश करैत अछि। ऐतिहासिक समयक विशाल विस्तार एक पीढ़ी-संक्रमणसँ उद्घाटित होइत अछि।

शीर्षकक 'पुकार' : घटना नहि, सामूहिक संचार

'स्वाधीनताक पुकार' शीर्षक राजनीतिक उपलब्धि नहि, ओकर आह्वानक यात्रा चिन्हित करैत अछि। पुकार नगरसँ गाममे आबैत, एक वक्तासँ अनेक घर धरि फैलैत, फेर क्रियात्मक प्रतिरोध बनैत अछि। ई श्रवणक कथात्मक क्रम अछि। पाठक स्वाधीनता प्राप्तिक तिथि एहि अध्यायमे नहि देखैत; [–५५]मे ओकर उत्सव भेटत। शीर्षक एहि बीचक समयकेँ प्रक्रियारूपेँ देखबैत अछि—समाचार, आशंका, संगठन, जोखिम आ दृढ़ता। परिणाम स्वतन्त्रता-घोषणा नहि, गिरफ्तारीक बादो आन्दोलन जारी राखब अछि। एहि कारण शीर्षक पूर्ण विजयक अपेक्षा सार्वजनिक आवाजक निर्माण केन्द्रमे रखैत अछि।

फकराक बहुवचन : एक कण्ठक निषेध

'जे पुकार गाम-गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि' आरम्भिक फकरा व्यक्तिनायकक सीमा पहिने तय करैत अछि। मुदा मूल गद्य आरम्भमे रामाश्रयक सार्वजनिक भाषण आ लक्ष्मीदेवीक अलग निर्णय विस्तारसँ देखबैत अछि। गीत सामूहिक स्वरक अनेकार्थी आदर्श बनबैत, गद्य नेतृत्वक विशिष्ट केन्द्र चुनैत अछि। एहि अन्तरक कारण सामूहिकता वर्णनक विषय होइतहुँ बराबर वाचिक अधिकार स्वतः नहि बनि जाइत। स्त्रीसभक राति-सभा, युवा, वृद्ध आ रामाश्रय मिलि अनेक कार्य करैत छथि, पर हुनकर अलग-अलग निजी भाषण उपलब्ध नहि। कथा एक स्वरक विस्तार वृतान्त बनबैत अछि, समस्त कण्ठक पूर्ण प्रतिलेख नहि।

'साझा पुकार'क गीत : स्वरक गुणात्मक वृद्धि

गीतमे एक हाथ उठल, फेर सय हाथ; एक स्वर उठल, दस स्वर जुड़ल; अन्तमे हजार कण्ठक विस्तार अछि। संख्या एतय कथात्मक आवेगक अलङ्कार अछि, जनगणनाक सत्यापित आँकड़ा नहि। गीतक मुख्य क्रिया अलग मानुषक डरकेँ सामूहिक लयमे बदलना अछि। 'एक' सँ 'सय' आ 'हजार'क क्रम दृश्यात्मक घनत्व बनबैत अछि, मुदा गद्य गिरफ्तारीग्रस्त युवा आ सामूहिक प्रतिरोधक संख्या निश्चित नहि बतबैत। यदि आलोचना गीतक प्रतीकात्मक संख्या कें ठोस सभास्थल आँकड़ा बनाबए, तँ कथा आ लोकवाणी दू भिन्न स्तर गड्डमड्ड भऽ जायत।

पीढ़ी-संक्रमण : नन्दकिशोरसँ लक्ष्मीदेवी

नन्दकिशोरक बाद हुनकर बेटी लक्ष्मीदेवी अनुष्ठानक भार लैत छथि। एहि छोट सूचना सँ स्त्रीक सार्वजनिक नेतृत्व पुनः केन्द्रमे अबैत अछि। इन्द्राणी बाढ़ि आ रोगक समय कर्मप्रधान नेतृ छलि; नन्दकिशोर लेखनक उत्तराधिकार सम्हारलनि; लक्ष्मीदेवी स्वाधीनता संघर्षमे संस्थागत अनुभव लगाएत छथि। वंशक्रमक लाभ दीर्घ ऐतिहासिक धागा, पर व्यक्तिगत बाल्य, शिक्षण, परिवारभित्तर मतभेद आ राजनीतिक जागरणक स्वतन्त्र प्रक्रिया पाठमे नहि। 'उत्तराधिकार' कथनक स्थिर सूत्र अछि, मुदा ओकर बाद बदलैत सामाजिक कार्य प्रत्येक व्यक्तिक नयका आख्यान-अर्थ निर्माण करैत अछि।

राष्ट्रीय घटनाक स्थानीय प्रवेश : अखबार आ यात्री

नमक-सत्याग्रह, विदेशी वस्त्रक बहिष्कार आ असहयोगक समाचार अखबार आ यात्रिक मुँहसँ गाम धरि पहुँचैत अछि। एहि माध्यम-सूचीमे [–५७]क मुद्रित पोथीसँ अलग लिखित समाचार आ मौखिक संचारक सहअस्तित्व भेटैत अछि। स्थानीय संघर्ष एकाएक स्वयंस्फूर्त बनि नहि उठैत; व्यापक आन्दोलनक सूचना अपन पृष्ठभूमि लऽ अबैत अछि। मुदा विभिन्न आन्दोलनक वास्तविक ऐतिहासिक क्रम आ वर्ष एतय अलग नहि देल गेल अछि। कथाकार दीर्घ राष्ट्रीय समयक बहु चरण एक ही सामुदायिक जागरणमे संक्षिप्त करैत छथि; एहि संकुचनक साहित्यिक लाभ विषयगत एकता, कालिक सीमाबोधक हानि अछि।

नगरसँ रामाश्रयक आगमन : दिशाक उलटब

अंग्रेज विद्वान गाममे अध्ययन करय आयल छलाह; आब नगरसँ युवा रामाश्रय सहभागिताक आग्रह करय अबैत छथि। दुनू बाहरी आगन्तुक छथि, मुदा कथाक सम्बन्ध भिन्न। थॉम्पसन गामक स्वर अपन पोथीमे वर्गीकृत करैत छलाह; रामाश्रय स्थानीय लोककेँ राष्ट्रीय आन्दोलनक सक्रिय भाग बनबाक सम्बोधन दैत छथि। एहि तुलनासँ ‘बाहरी’ शब्द स्वतः शोषक वा उद्धारक अर्थ नहि लेत। पात्रक क्रिया निर्णायक अछि। रामाश्रयक पूर्वजीवन, राजनीतिक संगठन वा नगरक यात्रा-समय वर्णित नहि; गामक सार्वजनिक परिवेशमे उपस्थित भेने हुनकर कार्य शुरू होइत अछि।

चौपालक भाषण : निजी शब्दसँ सार्वजनिक वाक्य

रामाश्रय चौपालपर ‘भाइयो-बहिनो’ कहि अन्न, भूमि आ स्वाभिमानक लूटक आरोप लगबैत छथि, स्वदेशी अपनाबय कहैत छथि। ई एक विस्तृत नगर-नेता आ गामक बीच मध्यस्थ कथन-स्थिति अछि। हुनकर भाषण समस्त राजनीतिक विमर्श नहि; कथा ओकर संक्षिप्त आग्रह चुनैत अछि। गामक कोनो व्यक्ति तत्काल असहमति, संसाधनगत शंका अथवा विदेशी वस्त्रक उपलब्धताक प्रश्न नहि उठबैत। लक्ष्मीदेवी बादमे बूढ़बा लग भय व्यक्त करैत छथि। एहि प्रकार सार्वजनिक मंचक प्रतिपक्ष निजी सल्लाह-संवादमे स्थानान्तरित होइत अछि; राजनीतिक बहस स्वतन्त्र चौपाल-सभामे विकसित नहि।

लक्ष्मीदेवीक भय : साहसक आरम्भिक शर्त

लक्ष्मीदेवी स्वाधीनताक विचारकेँ स्वीकार करबाक इच्छुक छथि, मुदा अंग्रेज प्रशासनक दमनसँ डरैत छथि। ई हिचकिचाहट हुनका एकदम जन्मजात वीराङ्गना नहि बनाबैत। पिछला पीढ़ीसभक आपदा-स्मृति हुनकर निर्णयमे भार बनैत अछि: गाम बहुत विपत्ति झेलि चुकल। साहस एहि थकानक अनुपस्थितिसँ नहि, ओकर बाद सम्भावित जोखिम अपनएबाक क्रियासँ बनैत अछि। कथावाचक हुनकर भय बतबैत छथि, पर विस्तृत ग्रामसभा विचार-विमर्शक प्रतिलेख नहि। बूढ़बाक शब्द सुनलाक बाद संकल्प लेब कथा-परिवर्तनक मुख्य अन्तर घटना बनैत अछि।

बूढबाक सोनमा-स्मरण : राजनीतिक नव विषयक पुरान आधार

बूढ़बा सोनमा माझिनक कथासँ स्मरण आ सम्मानक बोध लैत स्वाधीनता-विषयक उत्तर दैत छथि। घटना यह नहि जे बूढ़बा राष्ट्रीय आन्दोलनक जीत सुनिश्चित करैत छथि; ओ स्वयं संघर्षक अवधि आ परिणाम नहि जनबाक

स्वीकार करैत छथि। एहि स्वीकारोक्तिसँ दीर्घजीवी साक्षीक सर्वज्ञता सीमित रहैत अछि। स्वाभिमानक हेतु ठाढ़ व्यक्ति जीतय वा हारय, नाम याद रहबाक बात गामक पुरान नामरक्षा-अनुष्ठानकेँ राजनीतिक स्मृतिमे रूपान्तरित करैत अछि। मुदा सोनमाक मूल कथाक सटीक वचनक शब्दशः आवृत्ति एवं सन्दर्भ एकर भीतर संक्षिप्त—ई पुनर्व्याख्या, प्रत्यक्ष वर्तमान घटना नहि।

भविष्यक अनिश्चितता : विजयपूर्वक वीरता

अध्याय –५६क बूढ़बा ‘कतेक बरख चलत’ वा ‘परिणाम की होयत’ नहि जनबाक कथन करैत छथि। एहि वचनक नाटकीय महत्त्व अछि: आगामिक [–५५]क स्वतन्त्रताक पूर्व संकेत रहितहुँ घटनाक भीतर पात्र भविष्यक पूर्ण ज्ञानसँ वंचित छथि। पाठक बाहरी इतिहास जानि सकैत छथि, पर आन्तरिक पात्र अनिश्चित दमनमे निर्णय लेइत छथि। ऐतिहासिक उपन्यासक एहि दोसर समयबोधमे मूल क्रिया मूल्यवान बनैत अछि। एहन दूरस्थ भविष्यसिद्धान्त लागू करब जे पात्रक जोखिम शून्य छल, मूलक भय-रचनेकेँ दुर्बल कऽ देत।

राति-सभा : घरेलू सुनवाईसँ सार्वजनिक प्रतिरोध

लक्ष्मीदेवी स्त्रीसभाक राति-सभाक अनुभवक सहारे गामक स्त्रीसभकेँ संगठित करैत छथि। [–६६]क संस्था आब अकाल-वितरण [–६२], अगिनबचाव [–६०] आ रोग-स्वच्छता [–५८] पछाति राजकीय विरोधक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। एतय पुनरावृत्ति स्थिर कार्य नहि; हर संकट संस्था कैं नय सामाजिक भूमिका दैत अछि। विदेशी वस्त्रक होली आयोजन कथाक वास्तविक दृश्यक्रिया अछि, यद्यपि कार्यक्रमक दिन, सामग्रीक परिमाण अथवा स्त्रीसभक अलग नाम नहि देल गेल। पहिनेक आन्तरिक सहयोग राजनीतिक असहमतिमे रूपान्तरित होइत अछि।

वस्त्रक होली : दृश्य प्रतीक आ अनुपस्थित उपपाठ

विदेशी वस्त्र जराओल जाइत अछि, जकरा द्वारा विरोध देखाबयल गेल। आगि एतय [–६०]क विनाशकारी अनियंत्रित लपटसँ भिन्न, एक नियोजित सार्वजनिक प्रदर्शनक साधन अछि। एके ‘जरब’ क्रियाक अर्थ संकटसँ प्रतिरोध धरि बदलैत अछि। मुदा ‘कतेक वस्त्र’, ‘ककर’, ‘गरीब परिवारक उपयोगी कपड़ा’ जकाँ प्रश्न पाठमे नहि खुलैत। एहि कारण प्रतीकक सांस्कृतिक जोर स्पष्ट, आर्थिक दैनन्दिनता कम। कथा आह्वानक दृश्यबोध प्राथमिकता दैत अछि, विरोधी अर्थक सम्पूर्ण सामाजिक व्याख्या नहि।

पाठशालासँ सूत-कताइ : शिक्षाक नव प्रयोजन

नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षित युवा स्वदेशी लेल सूत कातब आ खादी बुनब सिखैत छथि। पहिने विद्यालय अभिलेख, अन्नवितरण वा सामाजिक ज्ञानक साधन छल; आब श्रम-आधारित उत्पादनक कौशलसँ राजनीतिक अर्थ पबैत अछि। एहि परिणाममे शिक्षा केवल अक्षरज्ञान नहि, सामाजिक प्रयोजन बदलयक क्षमता अछि। तथापि कताइनिहारसभक जाति, आर्थिक पृष्ठभूमि, बुनकरीक पहिल परम्परा आ वस्त्रक वास्तविक वितरण नहि भेटैत। कृति सामूहिक श्रमक दिशा बतबैत अछि, कारीगरक दिनचर्या वा बाजार-व्यवस्थाक जीवन्त दृश्य नहि।

बूढ़-पुरानक समाचार-प्रसार : स्मृतिक गति

गामक बूढ़-पुरान कबड्डीक अनुशासन आ धैर्य सँ घर-घर आन्दोलनक सूचना पहुँचबैत छथि। एतय मृत्यु-नामक खेलक संगठनात्मक अनुभव जीवित राजनीतिक क्रियामे रूपान्तरित होइत अछि। कबड्डी केवल प्रतीक रूपमे उद्धृत नहि, सूचना-वितरणक अभ्यासक स्रोत मानल जाइत अछि। तथापि कोन वृद्ध कोन टोला गेल, पुलिसक निगरानीक बीच संदेश कोना सुरक्षित पहुँचलक, से पृथक दृश्य नहि। कथानक बृहद् सामूहिक क्षमता घोषित करैत अछि; समयगत बारीकियां पाठक स्वयं अनुमान करय पड़ैत अछि। एहि स्थानपर संस्थागत स्मृति क्रिया-कारणक संक्षिप्त सूत्र बनैत अछि।

स्त्री, युवा आ वृद्ध : कार्यविभाजनक त्रयी

अध्याय संघर्षकेँ एक नायकक कार्य नहि बनबैत; स्त्रीसभ वस्त्र-बहिष्कार, युवा सूत-कताइ, वृद्ध सूचना-प्रसार, आ रामाश्रय जनसभाक सम्बोधन सम्हारैत छथि। एहि विभाजनसँ सामूहिक आयोजनक बहुखण्ड रूप देखाइत अछि। मुदा श्रमक भिन्न-विभागक भीतर शक्ति, सहमति, थकान अथवा विवादक विशिष्ट दृश्य नहि। स्त्रीसभ राजनीतिक निर्णयक मुख्य संगठक छथि, तथापि प्रशासनसँ सामना होइते गिरफ्तारीक मुख्य नाम रामाश्रय आ किछु युवा बनैत छथि। कथा स्त्री नेतृत्वक महत्त्व बतबैत, ओकर जोखिम-साझेदारीक असमान दृश्यांश सेहो छोड़ैत अछि।

शान्तिपूर्ण प्रतिरोधक आन्तरिक तनाव

सिपाही-दल आन्दोलनकारी सभकेँ गिरफ्तार करय अबैत अछि। गामक लोक अहिंसात्मक किन्तु दृढ़ प्रतिरोध करैत अछि। क्रियावर्णनमे प्रहार, संघर्ष, गोलीक घटना वा शारीरिक घायल व्यक्तिक उल्लेख नहि। अतः ‘भीषण मुठभेड़’क कल्पना अनुचित। कथा स्वेच्छया गिरफ्तारी वा गिरफ्तारी-प्रतिरोधक तकनीकी क्रम सेहो नहि बतबैत, परिणाम घोषित करैत अछि। एहि सारांशात्मक विन्याससँ साहस आ संयम पर बल पड़ैत अछि, मुदा क्षण-क्षणक डर, स्थानीय असहमति वा राज्यसत्ताक अनुपात असपष्ट रहैत अछि। घटना महत्त्वपूर्ण, ओकर रूपांकन अपेक्षाकृत द्रुत।

गिरफ्तारी : सामूहिक उद्घोषक व्यक्तिगत मूल्य

रामाश्रय आ किछु गामक युवा गिरफ्तार होइत छथि। एहि कथनमे सामूहिक अहिंसा एक व्यक्तिगत मूल्य चुकबैत अछि; विजयक गीतक भीतर कारावासक अन्तराल प्रवेश करैत अछि। मूल पाठ नामित रामाश्रयक अतिरिक्त बन्दीक नाम, संख्या, जेलक स्थान, अवधि आ यातना निर्दिष्ट नहि करैत। ‘कतेक मास’ पछाति मुक्तिक सूचना समयकेँ एक शब्दमे समेटैत अछि। इतिहासक सार्वजनिक विस्तृत संघर्ष निजी कारावासक रूपमे दृश्य होएबाक अवसर रखैत छल, मुदा कथावाचक ओकरा मुख्यतः परिणामक रूपमे देबैत छथि। एहि अभावकेँ पीड़ा नहि भेलक तथ्य नहि मानल जाए।

नेता अनुपस्थित, आन्दोलन जारी : कथात्मक नेतृत्वक विभाजन

रामाश्रयक गिरफ्तारीक बाद शेष गाम संगठन बनाए राखि संघर्ष जारी रखैत अछि। एहि संक्रमणमे नामित बाहरी नेतृत्व हटितहुँ सामूहिक क्षमता ठाढ़ रहबाक कथात्मक परीक्षा भेटैत अछि। गीतक ‘एक कण्ठ नहि’ घोषणा एतय कार्यरूपेँ प्रकट होइत अछि। मुदा कथा गिरफ्तार नेतृत्व पछाति बैठकक अध्यक्ष, स्त्रीसभक वास्तविक निर्णय-क्रम वा अगिला प्रदर्शनक विवरण नहि देत। संगठन जारी रहब कथावाचकीय सारांश अछि। तेँ कथा एक नायकविहीन निरन्तरताक प्रस्ताव स्थापित करैत अछि, ओकर सम्पूर्ण संस्थागत तन्त्र नहि खोलैत।

वापसीक स्वागत : पराजय नहि, नायकत्वक संक्षेप

कतेक मासक बाद रामाश्रय आ अन्य मुक्त होइत छथि, गाम हुनकर वीर रूपमे स्वागत करैत अछि। एतय कथनक गति फेर तीव्र अछि: कैदक पूरा काल अनुपस्थित, स्वागत संक्षिप्त परिणाम। वीरत्वक मान्यता केवल व्यक्तिगत जयपर नहि, आन्दोलन जारी रहनाइ आ जोखिम उठएबाक आधारपर निर्मित अछि। मुदा स्वागतक गीत, फुलमाला, सभा-स्थान आ भाषण नहि निर्दिष्ट; कल्पना आ मूल पाठ अलग राखब आवश्यक। आरम्भक चौपालक वक्ता पुनः गामक सम्मानित पात्र बनैत अछि, आ कथा सामाजिक स्वीकृतिक चक्र पूरा करैत अछि।

कबड्डीक नव रूपक : ‘अदृश्य विपक्षी’

बूढ़बा लक्ष्मीदेवीसँ कहैत छथि जे ओ ‘नव प्रकारक कबड्डी’ देखलनि, जाहिमे मनुष्य अपन स्वाभिमानक हेतु अदृश्य विपक्षी विरुद्ध खेललक। कबड्डी ओ खेल अछि जकरा पूर्वक प्रकरणसभ मृत्यु, स्मरण आ गामक संगठनसँ जोड़ैत छल। एतय ओकर रूपक औपनिवेशिक सत्ताक विरोधक प्रेक्षण बनेल गेल। मुदा ‘अदृश्य विपक्षी’ वास्तवमे नामित अंग्रेज प्रशासनक सिपाही-दलसँ अलग कल्पित भूत नहि; ई व्यवस्था आ दमनक व्यापकता बुझएबाक भाषिक विस्तार अछि। बूढ़बाक रूपक घटना समाप्त होएबाक बाद नवीन अर्थ देबैत अछि, स्वयं पुलिसक पूर्वस्थिति नहि बदलैत।

नाम-सुरक्षा आ गिरफ्तारी : वचनक अति-विस्तार

बूढ़बाक अन्तिम कथन ‘नाम गमौने बिना, सभटा नाम बचा राखलक’ एक सामूहिक नैतिक आश्वासन अछि। मूल गद्य गिरफ्तार युवकसभक नाम दैत नहि, तेँ ‘सभटा नाम’ पात्रक आदर्शात्मक भाषा थिक, पाठकक लग उपलब्ध विस्तृत सूची नहि। [−८९]क पहिल बाढ़िमे अनाम मृत्यु आ [−५८]क रोगमे अनाम मृत्यु रहल; वर्तमान वाक्य ओहि दीर्घ कमी स्वतः दूर नहि करैत। एहि तनावमे कथाकारक नाम-रक्षाक संकल्प आ प्रत्येक व्यक्तिक अलग कथात्मक दृश्य-कथनक असमानता स्पष्ट होइत अछि।

इतिहासक सङ्कोचन : अनेक आन्दोलन एक लहर

नमक-सत्याग्रह, असहयोग आ बहिष्कारक समाचार एउटै गद्यक आरम्भमे उपस्थित छथि। उपन्यास ओहि आन्दोलनसभक बीच वास्तविक वर्ष-परास, क्रम वा स्थानीय सम्बन्धक अलग विश्लेषण नहि करैत। ई ऐतिहासिक सङ्कोचनक शिल्प अछि, जकरा पाठ-सिद्ध कथानकक सीमा भीतर परीक्षण आवश्यक। एहि क्रममे स्वाधीनताक दीर्घ राष्ट्रीय इतिहास गढ़ नारिकेलक स्थानीय संगठनक एक प्रतिबिम्बमे देखाइत। साहित्यिक गति

तीव्र, मुदा अलग आन्दोलनक कष्ट, रणनीति आ विरोधक जटिलता कम उभरैत अछि। मूल कथामे नदेल गेल तिथि-सूचना स्वतः न गढ़ी।

भय सँ संकल्प, संघर्ष सँ उत्सव : गति-मानचित्र

अध्यायक प्रमुख घटना-क्रम अछि खबरक आगमन, रामाश्रयक पुकार, लक्ष्मीदेवीक भययुक्त प्रश्न, बूढ़बाक उत्तर, स्त्री–युवा–वृद्धक संगठन, सिपाही-दलक आगमन, गिरफ्तारी, जारी संघर्ष, मुक्तिक पछाति स्वागत। एहि क्रममे व्यक्तिगत प्रश्न सामूहिक क्रिया बनैत अछि; अन्तिम बूढ़बा-वाक्य पुनः ओकर अर्थ निर्धारित करैत अछि। कथा खुलल राजनीतिक सङ्घर्षकेँ एक स्थानीय सफल वृत्तमे बन्द करैत अछि, मुदा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एखन नहि मिलल। ई सीमित विजय भविष्यक [–५५]क भोरक लिये कथात्मक प्रतीक्षा राखैत अछि।

शोक, जोखिम आ महिला नेतृत्वक ध्वनि

गीत ‘डर हरा देलक गाम’ कहैत, मुदा लक्ष्मीदेवी आरम्भमे स्पष्ट डरलि। एहि दूनू स्तरमे पात्रगत परिवर्तन रचैत अछि। गाँवे सभक डर एक झटके समाप्त भेल, एहन मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्ष गणना नहि; गीत समुदायक अपेक्षित मनोदशा बनबैत अछि। सिपाहीसँ प्रतिरोध करयवला स्त्रीसभक अलग कथन अनुपस्थित रहितहुँ राति-सभाक पूर्व-भूमिका हुनकर कृतित्वक आधार दैत अछि। ई व्यापक नायकीय सङ्कल्पक कथा व्यक्तिगत भावनाक बहुस्वरता न्यून रखैत, ताहिपर आलोचना दृष्टि राखब चाही।

दृश्य-प्रेक्षकक अवस्थामे परिवर्तन

रामाश्रयक पहिल भाषण समय गाम सुननिहार समुदाय अछि; बादमे स्त्री, युवा आ वृद्ध सभ अपन-अपन क्रिया द्वारा बोलल राजनीतिक शब्दकेँ व्यवहार बनबैत छथि। ‘जे सुनल’ सँ ‘जे केलक’ धरि ई परिवर्तन घटनात्मक केन्द्रीय धुरी अछि। केवल रामाश्रयक वक्तृत्व सफल भेल, एहन व्याख्या सामुदायिक संस्थाक दीर्घ पूर्वइतिहासकेँ दबा देत। दूनू काज—बाहरी आह्वान आ भीतरक संगठन—जरूरी कथात्मक शर्त छथि। मुदा ओहि मोड़ पर भयभीत ग्रामीण लोकक स्वतन्त्र सार्वजनिक असहमति नदारद; लक्ष्मीदेवी अकेली प्रश्नक माध्यम छथि।

यथार्थक स्थल आ रूपकक विपक्षी

चौपाल, पीपर, राति-सभा, घर-घर सूचना आ सिपाहीक आगमन प्रत्यक्ष सामाजिक स्थल-कर्म छथि। बूढ़बाक ‘अदृश्य विपक्षी’ एहि बादक रूपक होइत अछि। एहि दुई स्तरकेँ अलग राखल आवश्यक, नहि तँ औपनिवेशिक प्रशासन वास्तविक पात्र-विरोधी अस्तित्वसँ गायब भऽ जाय। ‘अदृश्य’क अर्थ विशिष्ट पुलिसक अनुपस्थिति नहि, व्यापक सत्तात्मक नियन्त्रणक वाचिक संक्षेप अछि। बूढ़बा एहि रूपकसँ स्थानीय स्मृति-खेलकेँ राजनीतिक समयसँ जोड़ैत छथि, पर रूपक वास्तविक गिरफ्तारीक जोखिमक स्थानापन्न नहि बनि सकैत अछि।

कारावासक समय आ अनुत्तरित शोक

‘कतेक मास’क अन्तराल कथामे तुरन्त पार भऽ जाइत अछि। बन्दीक घरमे प्रतीक्षा, परिवारक भोजन, दरबार वा प्रशासनक सुनवाई, कारावासक नियमित दिनचर्या—एकर विस्तृत घटना नहि। एतय पूर्वक ‘राहतक प्रतीक्षा’क

भयावह समयसँ एक विडम्बनात्मक तुलना सम्भव: एक अध्यायमे प्रतीक्षाक विरुद्ध सामूहिक श्रम, एतय जेलक महीनासभ व्याख्याहीन कालिक रिक्ति। परिणामस्वरूप आन्दोलनक असाधारण साहस चिह्नित होइत अछि, मुदा कैदक निजी मूल्य पाठमे कम दृश्य पबैत। ई रचनात्मक चयन आलोचनामे स्पष्ट कहल जाय।

बाहरी राष्ट्रवाद आ गामक दीर्घ स्वाभिमान

रामाश्रय अन्न, भूमि आ स्वाभिमानक लूटक आह्वान दैत छथि, बूढ़बा ओकर अर्थ गामक पहिनेक सोनमा आदि नाम-स्मृतिसँ जोड़ैत छथि। एहि दुई धुरीकेँ एक-एक करि पढ़ला पर राष्ट्रीय विचार गामपर थोपल अपरिचित वाक्य नहि रहि, स्थानीय सम्मान-अनुभवक नय विस्तार बनैत अछि। मुदा अतीतक प्रत्येक संघर्ष स्वयं राष्ट्रीय आन्दोलन छल, एहन पश्चात् अर्थारोपण नहि करब चाही। कथा पुनर्व्याख्या करैत अछि, ऐतिहासिक पात्रक समकालीन राजनीतिक आत्मबोध बदलि नहि दैत। ई अन्तर्पाठक मर्यादा दीर्घ उपन्यासक कालक्रम सुरक्षित रखैत अछि।

आगि, सूत आ देह : प्रतीकक रूपान्तर

आगि –६०मे अनियंत्रित आपदा, एहि अध्यायमे विदेशी वस्त्रक सामूहिक दहन; सूत घरक उत्पादनक साधन होइतहुँ राजनीतिक स्वावलम्बनक चिह्न; पीपर संकट-दिवसक साक्षीसँ प्रतिरोधक सलाह-स्थल। यथार्थक वस्तु सभ पुनरावर्तित होइत, मुदा उपयोग बदलैत। एही बदलल कार्यद्वारा उपन्यास अपन समेकित पदार्थ-विश्व रचैत अछि। तथापि वस्त्रक कीमत, सूतक परिमाण आ मजदूरीक अनुभव अनिर्दिष्ट; गीतक श्रमिक-प्रतीकक आर्थिक जीवनक सम्पूर्ण प्रतिवेदन नहि। प्रतीक आ कार्य बीच अन्तर राखल रहबाक चाही।

समाजक पहिलसँ विद्यमान पदानुक्रम आ एकता

गीत हजार कण्ठक एकता कहैत अछि; कथामे दलित समुदाय, स्त्रीसभा, युवाक श्रम आ बुजुर्गक सूचना-संचारक एको स्तर पर पूर्ण समानता घोषित नहि। कथावाचक एहि महत्त्वपूर्ण राजनीतिक क्षणमे जातीय प्रतिनिधित्वक कोनो पृथक संघर्ष नहि खोलैत छथि। स्वतन्त्रता संघर्ष सबकेँ एक रूपमे जोड़ैत अछि, ई काव्यात्मक सामूहिकता अछि; वास्तविक गाममे पूर्वको सत्ता-अन्तर एहन एक संकल्पसँ मिटि गेल—एहन पाठ-साक्ष्य नहि। एहि कारण अगिला स्वतन्त्रताक भोरक असमानताबोध अचम्भा नहि, एहि अध्यायक अभी अनिर्णीत प्रश्नक विस्तार थिक।

स्रोतसीमा आ मूल्यांकन

आधार मूल [–५६] ‘स्वाधीनताक पुकार’, ‘साझा पुकार’ गीत, नन्दकिशोर–लक्ष्मीदेवीक उत्तराधिकार, रामाश्रयक चौपाल-भाषण, बूढ़बाक सोनमा-स्मरण, राति-सभाक वस्त्र-बहिष्कार, पाठशालाक युवाक सूत-कताइ, सिपाहीदलक आगमन, गिरफ्तारी आ स्वागत अछि। प्रारम्भिक मुद्रित पृष्ठ २९२; [–५५]क प्रारम्भ २९६, तेँ २९२–२९५ अनुमानित परास। मुख्य उपलब्धि निजी भयक सामूहिक साहसमे रूपान्तरण; सीमा गिरफ्तार युवकक निजी जीवन, राजनीतिक मतभेद, कालक्रम आ स्त्रीक स्वतन्त्र आवाजक कम दृश्यांकन। अगिला [–५५] एहि प्रक्रियाकेँ १५ अगस्तक ऐतिहासिक क्षणसँ जोड़ैत अछि।

प्रकरण ४६ | मूल अध्याय –५५ — स्वतंत्रताक भोर

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक पाठानुसार स्वतन्त्र कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई कथाक वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र माप नहि।

ऐतिहासिक दिनक एक दृश्य : दीर्घ कथामे नव कालबिन्दु

‘स्वतंत्रताक भोर’ उपन्यासक विशाल पूर्वकथामे एक विशिष्ट तिथि उपस्थित करैत अछि—पन्द्रह अगस्त। [–५६]क आन्दोलनक खबर, भय, गिरफ्तारी आ मुक्तिक अनिर्दिष्ट समयक बाद ई उद्घोषणा कथाक कालिक क्षितिज स्थिर करैत अछि। राष्ट्रक राजनीतिक परिवर्तन गामक चौपालक उत्सवमे स्थानीय रूप पबैत अछि। मुदा गद्य स्वतन्त्रताक पूर्ण राष्ट्रीय घटनावृत्त नहि, गढ़ नारिकेलक अनुभव चुनैत अछि। एहि चयनमे दीर्घ समय एक ‘भोर’मे संकुचित होइत अछि, आ ओहि क्षणक भीतर कतेको शताब्दीक मृतक, अन्याय आ आशा आनि देल जाइत अछि।

शीर्षकक भोर : नया प्रकाश, अपूर्ण आगमन

भोर रूपक सामान्यतः अन्हारक अन्तक आश्वासन दैत, मुदा गीतक आरम्भहि कहैत अछि जे हर आँगनमे एके बेर भोर नहि भेल। एहि ध्वनिसँ शीर्षकक आनन्द एक आलोचनात्मक शर्त धारण करैत अछि। राष्ट्रीय स्वतन्त्रताक समय निश्चित, सामाजिक न्यायसँ जुड़ल ‘भोर’ एखन अपूर्ण। ई दुनू काल एके नहि: पंचांगक बिहान बनाम समाजक दीर्घ परिवर्तन। कथावाचक भोरक इतिहासक ऊँचाइ देखबैत छथि; गीत ओकर प्रकाशक असमान वितरण। कथा राजनीतिक उपलब्धिक अवमूल्यन नहि करैत, ओकर अन्तिमता पर प्रश्न करैत अछि।

‘सभक भोर’ : गीतक अन्तर्गत प्रतिपक्ष

लोकगीतमे तिरंगा, ढोल-नगाड़ा आ उत्सवक बीच एक टोलक अन्हारक उल्लेख अबैत अछि। गीत सार्वजनिक उल्लासक वाक्य बनि शुरू होइत, तुरन्त अन्तर्विरोध उपस्थित करैत अछि। छाया मे रहल घरक सदस्यक नाम नहि, ओतय कोन घटना सँ ‘दीप ने जरल’, सेहो विशिष्ट नहि। ई अविभाज्य सामूहिक चेतावनी अछि, स्वतन्त्र घरेलू दृश्य नहि। एकर विशिष्ट उपयोग ई जे जखन गद्य चौपालक उत्सवपर केन्द्रित रहैत अछि, गीत पाठककेँ दृश्यपरिधि सँ बाहरक सम्भावित असमानता याद रखबैत अछि। आरम्भक काव्य गद्यक सीमा मापबाक साधन बनैत अछि।

लक्ष्मीदेवीसँ विश्वम्भरनाथ : एक वाक्यक पीढ़ी

अनुष्ठानक भार लक्ष्मीदेवीसँ हुनकर बेटा विश्वम्भरनाथपर आयल कहल जाइत अछि। स्वाधीनता-संघर्षमे सक्रिय मातृपीढ़ीक बाद नव पीढ़ी स्वतन्त्र राष्ट्रक उद्घाटन देखैत अछि। ई वंशक्रम स्वतन्त्रताक स्थिर उत्तराधिकार नहि; क्रियाक परिवर्तन चिन्हित करैत अछि। लक्ष्मीदेवी जोखिम उठबैत छथि, विश्वम्भरनाथ परिणामक अर्थ पुछैत छथि। कथा मातृसङ्घर्ष आ पुत्रक उत्सवक बीच दैनिक वर्षसभ नहि खोलैत। एही लोपसँ दीर्घ आख्यानक गति बनैत अछि, मुदा पीढ़ी-अनुभवक अन्तरक सूक्ष्म कथा पाठकसँ दूर रहैत अछि।

पन्द्रह अगस्तक उद्घाटन : राष्ट्रसँ गाम धरि

गद्य भारत स्वतन्त्र होएबाक समाचारकेँ ‘सम्पूर्ण भारतमे ... गढ़ नारिकेल सहित’ कहि उद्घोषित करैत अछि। व्यापक राष्ट्रसँ स्थानीय स्थल धरि कथावाचकीय दृष्टि क्रमशः संकुचित होइत अछि। ई दृष्टिपात नवल विषय नहि, उपन्यासक आरम्भसँ चलैत गाम-विस्तृत इतिहासक आधुनिक आवृत्ति अछि। यहाँ राष्ट्रीय इतिहास गामक एके दृश्यमे ग्रहण कएल गेल अछि। क्षेत्रक पाछा रहल कतेको राजनीतिक परिस्थिति वा प्रशासनिक निर्णय विस्तृत नहि; पाठककेँ अपन मिथिला-ग्रामक माध्यमे राष्ट्रक समय अनुभव कराओल जाइत अछि।

चौपालपर पहिल तिरंगा : वस्तुक नव सामाजिक अर्थ

चौपालपर पहिल बेर तिरंगा फहराओल जाइत अछि। वस्तु-अर्थक स्पष्ट नाट्यपरिवर्तन अछि: पूर्वक चौपाल पर आन्दोलनकारी वक्ता आबि विरोधक घोषणा करैत छलाह; आब ओहि सार्वजनिक स्थलपर स्वतन्त्र राज्यक चिह्न स्थापित होइत अछि। ‘पहिल बेर’ घटना–कालक अद्वितीयता चिन्हित करैत अछि, भविष्यक नियमित ध्वजारोहणक वर्णन नहि। ध्वज कथाक साक्ष्य-अर्थमे सामूहिक स्वीकृतिक दृश्य अछि; तखनहि गीतक ‘हर आँगन’ प्रश्न बुझबैत अछि जे एक सार्वजनिक चिह्न प्रत्येक निजी जीवनक परिवर्तनक पूरा वर्णन नहि।

पाठशालाक बालस्वर : भविष्यक कण्ठ

नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा ‘जन गण मन’ गबैत छथि। गामक पहिनेक संकटमे पाठशाला शिक्षाक व्यवहारिक साधन छल; एतय ओ सार्वजनिक राष्ट्रीय स्वरक संस्कारक मंच बनैत अछि। बालक एकहि गीतमे वर्तमान राजनीतिक क्षण आ भविष्यक नागरिकक संकेत छथि। मुदा गद्य कोनो नामित बालकक अनुभूति वा गीत सिखबाक दिनक दृश्य नहि दैत। ‘हर कंठसँ’ गूँजब लोकसमष्टिक प्रभाव अछि, वास्तविक व्यक्तिगत स्वरक सूची नहि। गीतक सार्वजनिक सामञ्जस्य महत्वपूर्ण, ओकर भीतरक वर्ग-विभेद आगेक प्रश्नक रूपमे रहैत अछि।

रामाश्रयक पुनरागमन : आन्दोलनक ऐतिहासिक फल

[–५६]मे गिरफ्तार भेल रामाश्रय आब गामक सम्मानित नेता छथि। एहि छोट पुनरप्रवेशमे संघर्षक स्थानीय स्मृति राष्ट्रीय दिवसक अधिकार बनबैत अछि। कथा हुनका मंचपर रखैत अछि, कारण पाठक हुनकर पहिल जोखिम जनैत छथि। तथापि गिरफ्तार दोसर युवकसभक नाम या वर्तमान स्थिति नहि बताओल गेल। व्यक्तिनायकक माध्यमे जनसंघर्षक पुनः स्मरण सम्भव होइत, मुदा अन्य सहभागी व्यक्तिक प्रत्यक्ष स्थान सीमित। रामाश्रयक भाषण स्वतन्त्रताकेँ अन्तिम उपलब्धि नहि, आरम्भ कहैत अछि; ओ गीतक ‘सभक भोर’क शर्तक राजनीतिक रूप बनेल गेल अछि।

नेता-कथन आ गीत-कथनक सहमति

लोकगीत कहैत अछि ‘स्वतंत्रता संघर्षक अन्त नहि’; रामाश्रय सेहो असली काज शेष होएबाक बात करैत छथि। एहि दो वाचिक स्तरमे अर्थगत सहमति अछि, पर स्वरक काम समान नहि। गीत जनकण्ठक पुनरावर्तित लय, रामाश्रयक भाषण विशिष्ट सार्वजनिक पात्रक एक कालिक वक्तव्य। ई समानार्थी आवृत्ति पाठकक मूल्यविषयक अनिश्चितता घटबैत अछि। उभय विधि कथानकक नैतिक निष्कर्ष पहिने सँ स्थापित करैत; आलोचनात्मक प्रश्न

अछि जे गद्य स्वयं कतेक अलग सामाजिक दृश्य दिखबैत अछि। उत्सव दृश्य निश्चित, असमान घरक पृथक दृश्य नहि।

बिहानसँ साँझ : एक दिनक कथनकाल

चौपालक झण्डा आ गीत पन्द्रह अगस्तक बिहान, विश्वम्भरनाथक पीपर-भेंट ओहि साँझ, आ मृतकसभकेँ समाचार सुनाबाक उत्सव रातिमे होइत अछि। एक दिनक तीन कालभङ्गिमा अध्यायक रचना बनबैत अछि। सार्वजनिक उद्घाटन सँ निजी विचार, तखन सामुदायिक अनुष्ठान—ई दिनक क्रम मात्र नहि, अर्थक विकास अछि। पूर्ववर्ती अध्यायक सप्ताह आ वर्षक संक्षेपक अपेक्षा एतय समय अधिक सीमित, पर शताब्दीक स्मृति संवादक भीतर फैलि जाइत अछि। अन्तर कथा-अवधि आ कथन-अवधि बीच गंभीर शिल्पगत तनाव बनबैत अछि।

साँझक पीपर-भेट : उद्घोषणाक व्याख्याक अवकाश

विश्वम्भरनाथ दिउसियाक उत्सव बूढ़बासँ बाँटय साँझ पीपर लग पहुँचैत छथि। उपन्यास फेर पुरान संवाद-स्थलपर राजनीतिक नव घटना लऽ अबैत अछि। गामक सामूहिक समारोहक बाद एक व्यक्ति सवाल करैत अछि ‘अहाँकेँ की लगैत अछि?’ एहि प्रश्नसँ राज्यक घोषणाक अर्थ बूढ़बाक लम्बा अनुभवक अधीन राखल जाइत अछि। मुदा ध्यान देबाक अछि जे सार्वजनिक रायसभ स्वतन्त्र राजनीतिक बहसक रूपमे नहि खोलल गेल; पीपर-सम्वाद निर्णायक नैतिक मञ्च बनैत अछि। एहि दोहरायल संरचनासँ गामक स्मृति-व्यवस्था पक्का, मतभिन्नताक दृश्य किछु संकुचित।

बूढ़बाक दीर्घ मौन : शताब्दीक एक क्षणमे प्रवेश

बूढ़बा ‘बहुत काल’ चुप रहैत छथि; कथावाचक एहि विरामकेँ सैकड़ों बरखक स्मृति एक क्षणमे समेटएबाक रूपमे वर्णित करैत छथि। एहि मौनक अवधि मापल नहि जा सकैत; ई ऐतिहासिक संक्षेपक भाविक साधन। थॉम्पसनक पोथीपर प्रतिक्रिया देबासँ पहिने सेहो बूढ़बा बहुत काल चुप रहल छलाह, मुदा एतय मौनक भाव चोटसँ आशा धरि बदलैत अछि। एकहि क्रियाक अलग कथात्मक परिस्थिति ओकर अर्थ बदलैत अछि। बूढ़बा प्रश्नक तुरन्त उत्तर नहि दैत, इतिहासक अनेक आवाजक अन्दर एक सन्धिक खोज करैत छथि।

व्यक्तिक सूची : इतिहासक वैकल्पिक अनुक्रमणिका

बूढ़बा हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश, गौरी, सावित्री आदि नाम एक साथ उच्चरैत छथि। ई सामान्य श्रद्धाञ्जलि नहि; राज्यक राजनीतिक भोरकेँ पुरान अपमान, प्रतिरोध आ प्रश्नक लोक-इतिहासक संग बाँधबाक उपकरण अछि। नामसभक सटीक घटना पूर्वक अध्यायमे पाठक जानैत छथि; एतय एक सूची ओहि बहु-अध्यायीय कथाकेँ वर्तमान क्षणमे पुनः उपस्थित करैत अछि। तथापि ‘सैकड़ों नाम’क दावा आ उच्चरित किछु नामक सूची बीच परिमाणक अन्तर रहैत अछि। नामरक्षा कृत्य दीर्घ अछि, एक संवाद ओकर पूर्ण प्रतिलिपि नहि।

‘प्रश्न पुछबाक अधिकार’ : परिणामक पुनर्परिभाषा

बूढ़बाक मुख्य कथन न्याय, सम्मान आ समानताक पुरान प्रश्नसभक उत्तर एखन नहि भेटल, मुदा प्रश्न पुछबाक अधिकार मान्यता पाबि रहल अछि। एहि भाषिक परिवर्तनसँ विजय परिणामसिद्ध समता नहि, सार्वजनिक प्रश्नक सम्भावनाक स्थापना बनैत अछि। ई उपन्यासक राजनीतिक आख्यानक सूक्ष्म उपलब्धि, कारण नामक पुरान रक्षा-मूल्यकेँ संवादाधिकारक भविष्य दिशि मोड़ैत अछि। तथापि राष्ट्र एखन हर नागरिकक प्रश्न सुनैत अछि—एहन व्यापक ऐतिहासिक सर्वेक्षण मूल पाठ प्रस्तुत नहि करैत। बूढ़बाक आशावादी मूल्य-व्याख्या आ सामाजिक व्यवहारक उपलब्धि पृथक पठन-स्तर छथि।

अनिर्णीत पुरान अन्याय : कथा नायकत्वक संयम

बूढ़बा खुलि कहैत छथि जे जाति, लिंग, गरीबी आ अन्यायक जड़ि स्वतन्त्रताक संगहि नहि उखड़त। एहि वाक्यसँ राष्ट्रीय उत्सव आत्ममुग्ध समापन नहि बनि पबैत। कृति पूर्वक हुलासा, रत्ना आ सुखदेवक संघर्षकेँ इतिहासक खाली प्रस्तावना नहि मानैत; ओहिसभक समस्याक रूप नव राज्यक भीतर जीवन्त रहल अछि। मुदा एहि अध्यायमे तत्काल कोन जातिगत घटना, कोन स्त्रीक अन्याय वा भूखल घरक नाम प्रस्तुत भेल—ई स्पष्ट दृश्य नहि। आलोचना एहि प्रश्नकेँ भविष्यक उधारी रूपेँ चिन्हित करय, अभी घटित नव काण्ड बनि कल्पना नहि करय।

विश्वम्भरनाथक ‘सम्पूर्ण भेल?’ : प्रश्नोत्तरक नाट्यबिन्दु

‘की हमर सभटा संघर्ष आइ पूर्ण भेल?’—ई छोट प्रश्न उत्सवक सम्भावित अन्तिम वाक्यक भितर कातर संशय उत्पन्न करैत अछि। बूढ़बाक ‘नहि’ कहानीकेँ भविष्य दिस खोलैत अछि। स्वाधीनताक भावस्फूर्तिसँ आधुनिकोत्तर संघर्षक मानसिक संक्रमण एहि दुई संवादमे घटैत अछि। संरचनात्मक रूपमे एक प्रश्नक प्रत्युत्तर अगिला अनेक सामाजिक परिवर्तनक आवश्यकता स्थापित करैत अछि। मुदा विश्वम्भरनाथ स्वयं अगिला कार्यक्रम घोषित नहि करैत छथि। कथा प्रश्नकर्ता रूपमे हुनका महत्त्व दैत अछि, नूतन राज्यक क्रियात्मक नीतिनिर्माताक रूपमे नहि।

आशा आ डरक संयुक्त उपस्थिति

बूढ़बा भविष्यक पीढ़ी सभक लेखनक विषयमे ‘डर’ आ ‘आशा’ दुनू अभिव्यक्त करैत छथि। एहि मिश्रित भावसँ खण्डक शेष कथा खुलेल रहैत अछि। दीर्घ स्मृतिक पात्र नव राष्ट्रक प्रत्येक फल पहिने सँ जानैत नहि। ई सीमाबोध जादुई साक्षीक चरित्रकेँ मानवीय चिन्ताक संग जोड़ैत अछि। अन्तिम वाक्यमे ‘स्वतंत्रता’क नव आशाक नाम प्राप्त होइत अछि; आधिकारिक ऐतिहासिक उपाधि नहि, पात्रक निजी भावानुभूति रूपेँ। एहि कारण कथामे आशा प्रबल अछि, मुदा सर्वज्ञ ऐतिहासिक फैसला नहि बनैत।

अमावस्या नहि, तखनहुँ जुटान : अनुष्ठानक लचक

अन्तिम रातिमे गामक लोक स्वतःस्फूर्त पीपर लग जुटैत छथि, जखनकि ओ दिन अमावस्या नहि। मुख्य कबड्डी-अनुष्ठानक नियमित चक्र बिनु समाप्त केने नव अवसरक स्मृति-विधि बनैत अछि। ‘कबड्डी नहि’क स्पष्ट कथन महत्त्वपूर्ण अछि—समस्त सामुदायिक जुटानकेँ सदिखन एके खेल मानि लएब गलत। लोक दीप जरबैत, गीत

गबैत आ मृतकसभकेँ स्वतन्त्रताक समाचार सुनबैत छथि। पुरान अनुष्ठानक स्थलक नव उपयोग सामुदायिक संस्कृति केँ कठोर स्थिरता नहि, रचनात्मक विस्तार देबैत अछि।

गेल नामकेँ समाचार : जीवित–मृत संवादक कथनस्तर

गामक लोक मृतकसभकेँ ‘भारत स्वतंत्र भेल’क समाचार सुनबैत अछि। मृत व्यक्ति प्रत्युत्तर देबैत छथि—एहन कोई प्रत्यक्ष दृश्य नहि; जीवित लोक द्वारा स्मृति-सम्बोधन अछि। कथामे बूढ़बाक जादुई साक्षित्व पहिनेसँ मौजूद रहितहुँ एहि उत्सवमे मृतकक स्वतन्त्र आवाज नहि। सामूहिक वचन दुःखक पुकार आ पीढ़ीक ऋणस्वीकारक प्रतीक बनैत अछि। ‘अहाँ जे सहलहुँ, ओ व्यर्थ नहि गेल’ वाक्य अतीतक संघर्षकेँ वर्तमान प्रतिष्ठामे बदलैत अछि; मुदा सब ऐतिहासिक जीवनहानिक पूर्ण न्याय मिलि गेल, एहन कथा-निष्कर्ष एकर सँ नहि निकलैत।

बच्चाक फुसफुसाहट : उत्सवक नितान्त निकट ध्वनि

सामूहिक गीतक ऊँच अवाजक बाद बच्चासभ मृतककेँ ‘सुनू’ कहि फुसफुसबैत अछि। ध्वनिक ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण—चौपालक सार्वजनिक संगीत निजी शोक-संवादक पातर स्वरमे बदलैत अछि। छोट बच्चा नाम-स्मृतिक वाहक बनैत, जकरा से पूर्व पीढ़ी सँ प्राप्त भेल अछि। मुदा बालकक अलग नाम वा हुनकर मृत पूर्वजसँ विशिष्ट सम्बन्ध नहि बताओल गेल। ई सामूहिक बालस्वर लोककथाक शैलीक हिस्सा अछि, जीवित–मृत संवादक व्यक्तिगत दृश्य नहि। गद्यक अन्तिम विनम्र स्वर गीतक भव्य घोषकेँ मानवीय छुअन दैत अछि।

राष्ट्रीय प्रतीक आ स्थानीय स्मृतिक दोहरा पाठ

तिरंगा आ ‘जन गण मन’ राष्ट्रीय स्तरक चिह्न, पीपर आ पूर्वजक नाम स्थानीय स्मृतिक चिह्न छथि। अध्याय ई दुनू प्रणाली एकरे दिन, मुदा अलग स्थल आ समयमे रखैत अछि। चौपालपर सार्वजानिक नव राज्यक उपस्थिति, पीपर लग गामक स्मृति-संघ भेटैत अछि। कथावाचक ओहि दूनूकेँ प्रतिस्पर्धी नहि बनबैत; स्थानीय प्रश्न राष्ट्रीय स्वतन्त्रताक मूल्य निर्धारित करैत अछि। गीतक असमान भोरक सावधानी एहि संयोजनमे आओर अर्थवान अछि। मुदा राज्यक नव प्रशासन आ गामक न्याय-संस्थाक विधिगत सम्बन्ध एखन विस्तारसँ उपस्थित नहि।

इतिहासक घोषित सत्य आ पात्रक कथित अनुभव

कथावाचक ‘भारत स्वतंत्र भऽ गेल छल’ एक सार्वजनिक ऐतिहासिक स्थिति रूपमे उद्घोषित करैत छथि, जखनकि ‘स्वतंत्रता नव आशा’ बूढ़बाक अन्तःअनुभूति अछि। ई दू कथन-स्तर गड्डमड्ड करब साहित्यिक परीक्षणक गलती होएत। राजनीतिक घोषणा पात्रक सम्मुख घटल बाहरी समय, आशा ओकर प्रत्यक्ष अनुभूति। एकरस भाविक वाक्य नहि; तें पाठक स्वतन्त्रताक महत्त्व मानितहुँ बूढ़बाक चिन्ताक प्रश्न पूछि सकैत छथि। एहि विवेचनमे किछु बात स्वतः स्पष्ट करय पड़ैत: उपन्यास नव संविधानक पूर्ण संवैधानिक कार्यान्वयनक विवरण नहि देत, अतः बूढ़बाक ‘प्रश्न पुछबाक अधिकार’केँ विधिक तिथि-सूचीमे नहि बदलू।

चौपाल आ पीपर : सामाजिक स्थलसभक पृथक कार्य

पहिल स्थल चौपाल पर राष्ट्रीय ध्वज, रामाश्रयक भाषण आ बच्चाक गीत; दोसर पीपर लग विश्वम्भरनाथ–बूढ़बाक अर्थ-संवाद; तेसर रातिक सामूहिक पीपर-जुटान। एहि स्थानान्तरमे गामक राजनीतिक सार्वजनिकता आ दीर्घस्मृतिमूलक समुदाय जुड़ैत अछि। एउटै पीपर दू बेर अबैत, मुदा पहिने निजी प्रश्नक आसन, बादमे सामूहिक स्मरणक सभास्थल। ई घटनाक भूगोल संक्षिप्त रहितहुँ सुविचारित कथात्मक विन्यास देबैत अछि। गीतक ‘जतय दीप ने जरल’ वला तीसरा अदृश्य स्थल एहि दू दृश्यपर प्रश्न करैत अछि—समारोह कतेक घर धरि पहुँचल?

राष्ट्रसङ्गीतक उल्लेख आ कालगत पाठसीमा

मूल गद्यमे बच्चासभ ‘जन गण मन’ गबैत छथि; ई वास्तविक मूल अध्यायक वर्णन अछि। गीतक वर्तमान आधिकारिक हैसियत, विद्यालयी पाठ्यक्रमक ठीक स्वरूप, अथवा प्रत्येक बच्चाक कण्ठक भाषा पर अतिरिक्त ऐतिहासिक व्याख्या एहि अध्यायमे नहि। कादम्बरी बच्चाक गानकेँ राष्ट्रक नव सामूहिक स्वरक चिह्न बनबैत अछि। आधुनिक पाठक ऐतिहासिक प्रसंगक अलग तथ्य शोधि सकैत छथि, मुदा आलोचनाक काम पहिने एतय कथावस्तुक प्रतीकात्मक आवृत्ति आ सार्वजनिक ध्वनिक शिल्प जाँचब थिक। 'पहिल बेर तिरंगा'क सूचना सेहो गामक चौपालसँ सम्बन्धित, सम्पूर्ण क्षेत्रक ध्वज-इतिहासक निष्कर्ष नहि।

नव युग आ पुरान पात्रक असम सम्बन्ध

हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गौरी, सावित्रीसभ अलग सामन्ती आ सामाजिक संघर्षक सन्दर्भसँ अबैत छथि। राष्ट्रक एक ऐतिहासिक दिनमे ओकर नाम जोड़लासँ कथा पूर्ण न्याय केने दावा नहि करैत। बूढ़बाक वाक्यमे प्रश्न सभ जीवित रहबाक कारण अतीत वर्तमानक अधिकार-प्रश्न बनैत अछि। एतय स्मृतिसभ एक समान श्रेणीमे समेटल जाइत, मुदा प्रत्येक पात्रक अन्याय अलग प्रकारक छल; नाम-क्रम ओहि जीवनक कथासार नहि। आलोचना एहि संक्षिप्ति केँ रूपात्मक उपाय मानि, हर पुरान संघर्षक अलग जटिलता अन्तिम निष्कर्षमे सुरक्षित राखए।

सामुदायिक उत्सवमे दुखक असम स्थान

गाम खुशीसँ नाचैत अछि, मुदा गीत भूखल आ अन्हार घरक प्रश्न उठबैत अछि; गद्य एहन कोनो विशिष्ट घरक विपरीत दृश्य नहि खोलैत। एहि कारण अध्यायक सामाजिक समता-आलोचना मुख्यत: गीत आ बूढ़बाक विचारक स्तरपर स्थापित होइत अछि, प्रत्यक्ष पात्रगत चोटक रूपमे नहि। ई एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक सीमा: सार्वजनिक उत्सवक भव्यता अधिक दृश्य, असमानताक अनुभूति अधिक सूत्रात्मक। ताहिसँ विषय निरर्थक नहि होइत, पर पाठकक भाविक निवेश कम निजी बनि सकैत अछि। अगिला भूमिसुधारक प्रसंग एहि सूत्रकेँ एक विशेष सामाजिक विषय देबाक सम्भावना खोलैत अछि।

उत्सवक नवता आ इतिहासक पुनरावृत्ति

अमावस्यासँ बाहर जुटान समुदाय भीतर ‘एक बेरक अद्वितीय घटना’ बनैत अछि। मुदा मृतकक नामकेँ जीवनक समाचार सुनायबक प्रक्रिया पहिनेक नामरक्षा परम्पराक पुनर्रचना अछि। एहि मिश्रणमे नवता पूर्ण विच्छेद नहि, पुनरावृत्ति सेहो जड़ता नहि। एक पुरान स्वरूपक भीतर नव घटना स्थान पबैत अछि। एहि कथात्मक तन्त्रसँ

दार्शनिक ‘इतिहास चक्राकार अछि’ जकाँ व्यापक निर्णायक दावा नहि निकलैत; ठोस बात एतेक जे अनुष्ठानक समयसीमा बदलि सामुदायिक स्मृति वर्तमान क्षण आत्मसात करैत अछि।

पृष्ठाधार, उपलब्धि आ रचनात्मक कमी

मूल अध्याय [–५५] ‘स्वतंत्रताक भोर’, ‘सभक भोर’ गीत, विश्वम्भरनाथक उत्तराधिकार, पन्द्रह अगस्तक चौपाल-दृश्य, रामाश्रयक भाषण, बूढ़बाक नामसूची, प्रश्नाधिकारक विवेचन आ अमावस्या-विहीन रात्रि-जुटान प्राथमिक प्रमाण छथि। मूल अनुक्रमणिकामे २९६ आरम्भ, अगिला [–५४]मे ३००, तें अनुमानित परास २९६–२९९। उपलब्धि राष्ट्रीय क्षणकेँ गामक दीर्घ पीड़ासँ अर्थ देब; सीमा असमानता-वर्णनक ठोस निजी दृश्य, दलित–स्त्रीक स्वतन्त्र आवाज आ नव राज्यक संस्थागत प्रक्रिया कम। अगिला अध्याय भूमि-सम्बन्धक प्रश्नकेँ घटनात्मक बनबैत अछि।

प्रकरण ४७ | मूल अध्याय –५४ — जमींदारीक अन्त

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक पाठानुसार स्वतन्त्र कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई कथाक वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र माप नहि।

राजनीतिक भोरसँ भूस्वामित्व धरि : कथाक दिशापरिवर्तन

[–५५]मे स्वतन्त्रताक नयका राष्ट्र एक सार्वजानिक प्रतीक रूपमे प्रस्तुत छल, [–५४]मे ओकर प्रभाव जमीनक स्वामित्वक प्रश्न बनि गामक भीतर आबैत अछि। राष्ट्र-स्वतन्त्रतासँ सामाजिक न्यायक अन्तर जे बूढ़बा पूर्व अध्यायमे खोलने छलाह, ई अध्याय ओहि प्रश्नक एक ठोस क्षेत्र चुनैत अछि। भूमिक पट्टा, पुरान जमींदार परिवार आ भूमिहीनक हिस्सेदारीक माध्यमे ऐतिहासिक परिवर्तन गामक जीवन-सम्बन्ध बदलैत अछि। तें ‘जमींदारीक अन्त’ केवल ऐतिहासिक सूचना नहि, शताब्दीक अन्याय-आख्यानक नव अवस्थापरिवर्तन अछि। मुदा परिवर्तनक समग्र समाप्ति एहि शीर्षकक दावा जतेक सरल नहि; कथा स्वयं तनाव आ आंशिक उपलब्धि स्वीकार करैत अछि।

शीर्षकक ‘अन्त’ : कानूनी समाप्ति आ सामाजिक निरन्तरता

‘जमींदारीक अन्त’ शीर्षक एक निर्णायक कटावक प्रत्याशा बनबैत अछि। मुख्य गद्य स्पष्ट करैत अछि जे व्यवस्था कानूनी रूपसँ समाप्त भेल, मुदा सामाजिक सम्बन्ध आ प्रतिष्ठाक तनाव तुरन्त नहि मिटैत। कानूनी अन्त आ सामाजिक अवशेष अलग कथात्मक समयमान छथि। शीर्षकक पूर्णता मध्यक अनुच्छेदमे बाधित होइत अछि, जखन प्रतापसेनक वंशज क्रोधित आ अन्य परिवार असमंजसमे छथि। ई अपूर्णता रचनात्मक महत्त्व रखैत अछि, कारण [–५५]क ‘स्वतंत्रता संघर्षक नव रूप’ एहि अध्यायमे सचित्र प्रतिध्वनित होइत अछि। समापनक परिवर्तित गाम सामाजिक न्याय दिस बढ़ैत, निष्कलङ्क समानता प्राप्त कएल घोषित नहि होइत।

जमीन आ माटि : फकराक दुई अर्थ

‘जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल’ फकरामे कागजी अधिकारक परिवर्तनीयता आ धरतीक भौतिक निरन्तरता एकसाथ अछि। ‘माटि नहि बदलल’क शाब्दिक अर्थ खेतीक परिस्थिति स्थिर रहल नहि, किएक तँ श्रम, स्वामित्व आ अवसरक सम्बन्ध बदलैत अछि। ई जमींदारी उन्मूलनक सामुदायिक अनुभूतिक रूपकात्मक व्याकरण अछि। फकराक दोसर आधा ‘जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै’ श्रमिकक नैतिक अधिकार स्थापित करैत अछि, मुदा गद्य भूमि-वितरणक एक ‘पैघ हिस्सा’ कहैत अछि, प्रत्येक जोतनिहारकेँ सम्पूर्ण अधिकार मिलल नहि। लोकवाणी आ कथ्यगत परिणतिक एहि भेदकेँ सुरक्षित राखब चाही।

‘माटिक मालिक’ : श्रमक पुनरावर्तित गीत

गीत ‘कागच बदलल’, ‘मोहर बदलल’, ‘घाम वैह’ जकाँ विरोधी सूत्रसभ दोहरबैत अछि। श्रमक निरन्तरता स्वामित्वक नय कानूनक सम्पूर्ण अर्थ बनैत अछि। हर चलाएब आ बीया रोपब ठोस देहगत क्रिया छथि; कागज आ मोहर अधिकारक संस्थागत प्रतीक। गीत श्रम-स्वामित्वक नैतिक अनुरूपता गाबैत अछि, जखन कि गद्यक वास्तविक क्रिया सरकारी कानून आ भूमि-वितरणक प्रशासनिक सारांशक रूपमे अबैत अछि। एहि स्तरभेदसँ लोकगीतक अपेक्षाकृत निश्चयात्मक न्याय आ गद्यक असमान, मिश्रित सामाजिक परिणाम दोसर-दोसराकेँ आलोकित करैत छथि।

विश्वम्भरनाथसँ कमला देवी द्वितीय : नामक आवृत्ति

अनुष्ठानक उत्तराधिकार विश्वम्भरनाथसँ हुनकर बेटी कमला देवीपर पहुँचैत अछि। ‘द्वितीय’ संकेत आ पूर्वज कमला देवीक सम्मानमे नाम देब, कथामे वंश-सूत्रक संग नामक पुनरावृत्तिक स्पष्ट रूप अछि। एक नाम भिन्न पीढ़ीमे लौटैत अछि, मुदा एकहि व्यक्ति नहि; नूतन कमला अलग ऐतिहासिक काजक साक्षी छथि। एहि नाम-संरचनासँ उपन्यास पीढ़ीगत पहचान आ परिवर्तित परिस्थितिक दोहरी लय रचैत अछि। कथाकार हुनकर जीवनीक विस्तृत पूर्वकथा नहि दैत, अनुष्ठानक पदभारसँ सीधे राजनीतिक परिवेशमे प्रवेश करबैत छथि। आवृत्ति स्मृतिक चिह्न, पात्रगत पूर्ण समानता नहि।

‘कतेक बरख बाद’ : स्वतन्त्रताक समयसँ विधिक समय

अध्याय स्वतन्त्रताक कतेक बरख बाद जमींदारी उन्मूलनक घटना कहैत अछि, मुदा साल आ अधिसूचनाक विधिगत क्रम निर्दिष्ट नहि। एहि अनिर्दिष्ट कालखण्डमे राष्ट्रीय इतिहासक एक ऐतिहासिक प्रक्रिया गामक जीवनसँ जोड़ि देल गेल। पाठकेँ समकालीन ऐतिहासिक कानूनक सटीक कालक्रम मानि भरि देब स्रोतक बाहरक विस्तार होएत। कथानकक समय संकेत पर्याप्त अछि जे [–५५]क एक दिनक उत्सवक पछाति दीर्घ सरकारी परिवर्तन घटैत अछि। मुदा भूमि-सुधारक बारीक क्रियान्वयनक विभिन्न चरण कथा-सारांशमे समाहित होइत छथि। ई दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तनक संक्षिप्त प्रस्तुति अछि।

उग्रसेनसँ रघुबीर धरि : सत्ता-वंशक स्मृति

जमींदारी व्यवस्थाक छायामे उग्रसेन ठाकुरसँ रघुबीर सिंह धरि घटना भेने बताओल गेल अछि। एहि नामसंकेतक उपयोग इतिहासक राजकीय दस्तावेज-सूची नहि, पूर्व पाठक पात्रगत दमनक पुनरुपस्थिति अछि। पाठक पुरान संघर्षसँ वर्तमान भूमि-वितरणक नैतिक सम्बन्ध बुझैत छथि। आलोचना बिनु प्रत्येक मूल अध्यायक पाठ देखनहि एही दूनू पात्रक सभ घटना एकमे समेटि नहि सकैत। मुदा मुख्य कथन स्पष्ट अछि: कानूनी परिवर्तन अनेक पूर्व कथामे फैलेल अन्यायक संरचनात्मक विरासतपर घटैत अछि। दीर्घ उपन्यासक रेखा इएह पीढ़ीपारि कथा-सम्बन्ध रचैत अछि।

प्रतापसेनक वंशज : पुरान शक्ति वर्तमानमे

अन्तिम जमींदार परिवार प्रतापसेन ठाकुरक वंशज रूपमे नामित अछि। कथा व्यक्तिगत प्रतापसेनक वर्तमान जीवित उपस्थिति नहि, वंशगत सत्ता-संरचनाक क्षय बतबैत अछि। भूमि सरकारकेँ देबाक बाध्यता एक प्रशासनिक परिणाम अछि; ओकर उत्पत्ति, पात्रसभक वार्ता, कागजी प्रक्रिया वा विरोधक विशिष्ट सभा दृश्य नहि। एहि ठाम पुरान शक्ति एक समूह-चरित्र बनैत अछि। बादक ‘कटु आ क्रोधित’ भाव कथावाचक बतबैत छथि, मुदा वंशजक स्वतन्त्र दीर्घ वक्तव्य नहि। विरोधक मानवीय स्वर दू छोट स्थितिमे सिमटैत अछि—प्रतिष्ठा खोयबाक पीड़ा आ नय व्यवस्थाक प्रति असहमति।

‘अधिकांश’ आ ‘पैघ हिस्सा’ : परिमाणक भाषा

जमींदार ‘अधिकांश भूमि’ सौंपैत अछि, ‘एकटा पैघ हिस्सा’ भूमिहीन किसान आ चर्मकार परिवार सभमे बाँटल जाइत अछि। एहि शब्दक सापेक्षता महत्त्वपूर्ण; कोनो एकड़, कुल खातासङ्ख्या, लाभार्थी-विभाजन वा शेष भूमिक सूची नहि। अतः समस्त जमीन परत गई अथवा सभ परिवार बराबर क्षेत्र पओलक—एहन निश्चित दावा गलत। भूमि-वितरणक कथात्मक दिशा स्पष्ट, पूर्ण परिमाण अनिर्दिष्ट। संक्षिप्त आँकड़ा रहितहुँ कथा सामाजिक दिशा दैत अछि, मुदा परिणामक असमानताक सूक्ष्मता परीक्षणक बाहर रहि जाइत अछि।

चर्मकार टोला : बाढ़िक जोखिमसँ भूमिक अधिकार

पहिल बाढ़ि [−८९]मे चर्मकार टोलाक निकृष्ट सुरक्षा सामाजिक असमानताक स्थल छल; [−५९]मे दक्षिणी बान्ह फेर टूटलाक बावजूद तैयारी जीवन बचबैत अछि। आब [−५४]मे ओहि टोलाक परिवार भूमि-वितरणक स्पष्ट लाभार्थी छथि। एहि दिर्घ स्थल-स्मृतिक कारण भूमि-न्यायक कथा केवल कागजी सुधर नहि; पूर्वक असुरक्षित जीवनमे स्थायित्वक सम्भावना अछि। मुदा तोलाक प्रत्येक परिवार अपन भूमि पाओल, नया घर बनौलक, वा जातीय उपेक्षा समाप्त भेल, से गद्य नहि कहैत। सामूहिक लाभार्थी-स्थिति विशिष्ट पात्रक अन्तिम नियति नहि।

सुखदेवक जमीन : पुरान संघर्षक नैतिक फल

कमला बूढ़बाकेँ कहैत छथि जे उग्रसेन द्वारा छीनल सुखदेव महतोक जमीन आब सुखदेवक वंशजकेँ स्थायी कानूनी अधिकारसँ भेटल। एहि एक घटना-बोधमे [−९२]क पुरान दुःख आ [−६४]क ‘सुखदेवक बदला’क नामक प्रसंग पुनः सक्रिय होइत अछि। भूमि मात्र उत्पादनक संसाधन नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपमान आ प्रतिरोधक मूर्त चिह्न

बनैत अछि। बूढ़बा पहिने अदालतक निर्णयक रूपमे प्रतिशोध भेटबाक स्मरण दैत छथि; आब ओ परिणाम विधिक स्थायित्वक रूप लैत अछि। तथापि व्यक्तिगत वंशजक नाम, खेतक स्थान, स्वामित्वप्राप्तिक समारोह नहि वर्णित।

‘बदला’क रूपान्तरण : प्रतिशोधसँ दीर्घ न्याय

बूढ़बा सुखदेवक बदला पहिले अदालतक निर्णयरूपेँ मिलबाक बात कहैत छथि, जकर स्थायी विधिक रूप आब देखैत छथि। बदला एतय हिंसात्मक विनाश नहि, अन्यायक संस्थागत सुधार अछि। शीर्षक [−६४]क स्मृति नय न्यायप्रक्रियामे रूपान्तरित होइत अछि। कथाक रोचक प्रश्न अछि जे एक जीवनमे चोट लागल, पर प्रतिफल वंशजकेँ मिलैत अछि। मूल घायल व्यक्तिक प्रत्यक्ष संतोष सम्भव नहि; बूढ़बाक दीर्घजीविता एहि असमान समयकेँ कथात्मक रूपेँ जोड़ैत अछि। सामाजिक न्यायक समय व्यक्तिगत आयुसँ बहुत अधिक दीर्घ बनैत अछि।

बूढ़बाक सन्तोष : साक्षीक भूमिका फेर विस्तारित

सुखदेवक जमीन लौटबाक सूचना सुनि बूढ़बा ‘गहींर सन्तोष’ प्रकट करैत छथि। [−५५]मे स्वतन्त्रता हुनका प्रश्न-पुछबाक अधिकारक आशा दैत छल; एतय एक ठोस भूमि-विवादक सुधर हुनकर स्मृति-कार्यक सार्थकता दिखबैत अछि। एहि भावनिक परिवर्तनसँ साक्षी केवल मृत्यु-नामक संरक्षक नहि, पीढ़ी-अन्तरालमे न्याय-परिणाम जोड़निहार पात्र छथि। मुदा बूढ़बा सरकारकेँ कानून पारित करौने छथि, अथवा स्वयं वितरण प्रक्रिया चलौने छथि —एहन घटना नहि। ओ स्मरण आ अर्थान्वेषण करैत छथि; वर्तमानक संस्थागत कार्रवाई अन्य पात्र आ प्रशासनक संसारमे घटैत अछि।

कटुता आ असमंजस : सुधारक प्रतिपक्षी दृश्य

जमींदारक वंशज कटु होइत छथि, पुरान सम्बन्ध तनावग्रस्त, किछु परिवार आत्मनिर्भर, किछु असमंजसमे। एहि बहुधर्मी परिणामसँ कथा कानूनक विजयक पश्चात् एक विशेष अवशेष सुरक्षित राखैत अछि। तथापि ककर परिवार कतेक क्षति उठौलक, कियो हिंसा केलक कि नहि, या नव किसानपर प्रतिशोध भेल कि नहि, निर्दिष्ट नहि। तनावक वाक्य नैतिक जटिलता देबैत अछि, स्वतन्त्र प्रतिपक्षी कथावृत्त कम। एहि स्तरपर कानूनक सामाजिक लागू प्रक्रियाक बहुवचन अनुभव घोषणामे सीमित अछि।

कमलाक नैतिक प्रश्न : सुख-दुःखक असमान वितरण

कमला ‘नीक थिक वा बेजाय?’ पुछैत छथि, कारण किछु लोक प्रसन्न आ किछु दुःखी। एहि प्रश्नसँ स्त्री उत्तराधिकारी राष्ट्रीय नीति पर नैतिक विचारक स्थान पबैत छथि। ओ वितरणक समर्थन वा विरोधक तैयार नारा नहि लैत; अनेक परिणाम देखि निर्णयक कठिनाइ स्वीकार करैत छथि। बूढ़बा न्यायकेँ सर्वव्यापी प्रसन्नतासँ अलग राखैत छथि। एहि संवादमे वास्तविक संघर्ष पर विस्तृत ग्रामसभा नहि; मूल्यगत प्रश्न दू पात्रक विचारमे प्रस्तुत। कला-स्तर पर ई स्पष्टता देबैत, बहुमुखी वर्गीय कथनक सम्भावना आंशिक रखैत अछि।

बूढ़बाक ‘आंशिक’ : निर्णायक सीमाचिह्न

बूढ़बा कहैत छथि जे चर्मकार आ भूमिहीन परिवारकेँ स्थायित्व ‘कमसँ कम आंशिक रूपमे’ भेटल। ई शब्द कथाक अत्यधिक विजयोत्सवक सीमा बनैत अछि। मूल भूमि-वितरण आ सामाजिक प्रतिष्ठा दू समान प्रक्रिया नहि; जमीन पाबि परिवारक प्रति प्रत्येक व्यवहार बदलि गेल, एहन वर्णन नहि। न्यायसंगत परिवर्तन सभकेँ खुश नहि करैत, ई वचन कलात्मक द्वन्द्वक रूप प्रस्तुत अछि, मुदा कानून सम्पूर्ण निष्पक्षतासँ लागू भेल, ई एकल संवादसँ सिद्ध नहि। गद्यक मात्रा-शब्द आ पात्रक ‘आंशिक’ मिलि सम्भावना सुरक्षित राखैत छथि।

सरकारी कागज आ खेतक श्रम : द्विविध अभिलेख

गीत बारम्बार कागज आ मोहर बदलबाक बात कहैत, गद्य सुखदेवक वंशजक ‘कानूनी’ अधिकार लिखैत अछि। [–५७]मे बाहरी पुस्तक अपमानजनक अर्थक स्रोत छल; एतय राजकीय कागज पुरान अपहरणक सुधरक माध्यम बनैत अछि। ई द्वन्द्व से स्पष्ट अछि जे उपन्यास लिखित अभिलेखक सर्वथा निषेध नहि करैत। प्रश्न अछि लिखबाक सत्ता के हाथमे, कोन कार्य लेल, आ ओकर सम्बन्ध वास्तविक श्रमसँ की? कागजक लिखित रूप अलग प्रसंगमे उत्पीड़न वा न्याय दुनूक माध्यम बनैत अछि। एहि अन्तर्पाठक कारण दस्तावेजी रूपक बहुआयामी होइत अछि।

माटिक काव्यात्मक स्थैर्य आ सामाजिक परिवर्तन

‘माटि नहि बदलल’ गीतक रूपक, जबकि कमला बादमे ‘गाम बदलि रहल अछि’ कहैत छथि। विरोधाभास देखाइतहुँ दुनू अलग कथात्मक स्तरपर सही अर्थ रखैत अछि। खेतक पदार्थ वही स्थलीय विस्तार, पर स्वामित्व, श्रमक मान्यता आ रोजगारक विकल्प बदलैत अछि। उपन्यास स्थिर भूगोलमे गतिशील सामाजिक सम्बन्ध रचैत अछि। यदि गीतकेँ अक्षरशः पर्यावरणीय स्थिरताक घोषणा मानि लेल जाए त पूर्वक बाढ़ि, आगि आ कृषि-परिवर्तनक कथा स्वयं विरोध करैत। एहि कारण माटिक स्थायित्व स्मृतिक धुरी, सामाजिक जड़ताक प्रमाण नहि।

पाठशाला आ भूमिसँ बाहरक सम्भावना

समयक संग नव पीढ़ी नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षासँ सरकारी नौकरी, व्यापार आ शहरी काजक अवसर खोजैत अछि। जमीनक अधिकारक प्रश्न एतय शिक्षा-संचालित जीविकाविस्तारक ओर बढ़ैत अछि। एहि संरचनामे गाम केवल खेत पर निर्भर स्थिर समाज नहि, बदलैत व्यवसाय-क्षेत्रक साझा स्थल बनैत अछि। तथापि कोन युवक कोन शहर पहुँचल, पहिल नौकरी केकरा भेटल, स्त्रीसभकेँ समान अवसर भेटल कि नहि—गद्य निर्दिष्ट नहि। शिक्षा रोजगारक सम्भावना खोलैत अछि, मात्र एहि आधारपर समस्त सामाजिक गतिशीलता सम्पन्न घोषित नहि।

व्यक्तिगत दुख आ समष्टिक नैतिक परिणाम

किछु परिवार भूमि गमबैत अछि, किछु पबैत अछि। कथा ई नकारैत नहि जे सुधार सबकेँ समान भावनिक लाभ नहि दैत। बूढ़बाक उत्तर न्यायकेँ खुशीक कुल योगसँ अलग करैत अछि, जकर नैतिक केन्द्र भूमिहीनक दीर्घ स्थायित्व-अभाव अछि। आख्यानशास्त्रीय प्रश्न ई अछि जे गामक व्याख्यात्मक अधिकार एक पुरान पीड़ित

समुदायक हेतु दृढ़, मुदा भूमि-हारनिहारक स्वतन्त्र वक्तव्य केना उपलब्ध? अध्याय हेपनहि अनेक भाव स्वीकार करैत, मुदा ओहि भावसभकेँ पूर्ण बहुस्वर संवादमे नहि बदलैत। एहि क्षणमे कथात्मक शिल्प एक नैतिक स्पष्टताक लागि सामाजिक जटिलताक किछु दृश्य संक्षिप्त करैत अछि।

कमलाक अन्तिम आशंका : परिवर्तनक गति

कमला गाम बदलि रहल, ‘शायद बहुत तेजीसँ’, कहैत छथि। एहि वाक्यमे कानूनक घटना सँ सामाजिक भविष्यक अनिश्चितता दिस स्वर मुड़ैत अछि। [−५५]मे बूढ़बा भविष्यक स्वतन्त्रता लेल आशा आ डर सहि रहे छलाह; आब नव राज्यक परिवर्तनक गति सामने अछि। कमलाक आशंका सुधार-विरोधक निश्चित घोषणा नहि, दीर्घ परम्पराक नय रूपसँ उत्पन्न विस्मय अछि। बूढ़बाक उत्तर ऐतिहासिक स्थिरताक मिथकेँ तोड़ैत अछि: गाम सदिखन बदलैत आयल। एतय ‘बहुत तेज’क ठोस वर्ष या सर्वेक्षण उपलब्ध नहि; ई पात्रक अनुभूत गति थिक।

जड़ि बचाउब : परिवर्तनोत्तर नाम-स्मृतिक विधान

बूढ़बा अपन काम परिवर्तन रोकब नहि, ओकर संग जुड़ल नाम आ ओकर मूल्य याद राखब बतबैत छथि। एतय स्मृतिरक्षा प्रतिक्रियावादी स्थिरताक बराबर नहि। पुरान अत्याचारी संस्थाकेँ स्मृतिमे राखब ओकरा फेर स्थापित करब नहि; अन्याय आ सुधार दुनूक इतिहास बचाउब अछि। [−५७]क ‘हमरहि भाषामे कथा’ आ [−५५]क ‘शेष कथा लिखताह’ एहि विधानमे एकत्रित होइत अछि। सामाजिक सम्बन्ध बदललाक बाद सेहो कथा के बदलल, ककरा लाभ, ककरा क्षति, आ के अनाम रहल—ई प्रश्न आगूक पीढ़ी लेल बचैत अछि।

आरम्भ-मध्य-अन्तक कथात्मक मानचित्र

आरम्भमे राष्ट्रीय कानूनक सूचना आ जमींदारक भूमि-सौंपनाइ, मध्यमे कमलाक बूढ़बासँ सुखदेवक वंशजक वापसी बतब आ न्यायपर संवाद, अन्तमे सामाजिक तनाव, नव रोजगारक सारांश आ परिवर्तनक गति विषयक वार्ता अछि। ई संरचना प्रशासनिक घटना सँ नैतिक व्याख्या आ भविष्यक समाज धरि बढ़ैत अछि। भू-अभिलेखक पंजीकरण, खेत जोतबाक नव मालिकक दिन, विवादक वास्तविक निपटारा दर्शित नहि; कथा सम्पूर्ण प्रक्रियाकेँ छोट दृश्य–सारांशक मिश्रणमे रखैत अछि। कृति विषयक ऐतिहासिक व्यापकता लेल गति पबैत अछि, व्यक्तिगत भूमिकथा लेल अधिक विस्तारक सम्भावना छोड़ैत अछि।

भूमिसुधारक कथन-स्तर : कानून, परिवार आ पात्र

कथावाचक कानून पारित होएबाक सूचना दैत छथि; कमला एक विशेष सुखदेव-विवादक समाधान सुनबैत छथि; बूढ़बा ओकर दीर्घ नैतिक अर्थ बतबैत छथि। एहि तीन स्वरक कार्य अलग अछि। सरकारी नीतिक सारांश, निजी इतिहासक पुनःप्रवेश आ मूल्यांकनक संवाद क्रमशः बृहद्सँ सूक्ष्म धरि गमन करैत अछि। यदि बूढ़बाक संतोषकेँ राज्यक हर भू-वितरणक प्रत्यक्ष सर्वेक्षण मानि लिअ, कथा अपन सीमा पार करैत अछि। पात्रक कथन व्यापक आश्वासन दैत, गद्यक परिमाण-सूचक शब्द ‘अधिकांश’ आ ‘पैघ हिस्सा’ परिणामक पूर्णता सीमित करैत अछि।

भूमिहीनक लाभ : व्यक्तिगत आवाजक अभाव

चर्मकार आ अन्य भूमिहीन परिवारसभकेँ जमीन बाँटल जाइत अछि, मुदा लाभार्थीक एको नामित नव संवाद नहि। कहानी सुखदेवक वंशजक उल्लेख करैत, पर जमीन प्राप्त करबाक दिनक अपन अनुभूति नहि। भूमि-वितरणक त्रासद ऐतिहासिक भारक कारण एहन अनुभव कथात्मक रूपेँ प्रभावी भऽ सकैत छल। पर गद्य कमला–बूढ़बाक अर्थ-संवादपर केन्द्रित रहैत अछि। एहि विकल्पसँ न्याय सिद्धान्तक स्पष्टीकरण प्रभावी होइत, वास्तविक गरीब परिवारक आन्तरिक प्रसन्नता वा आशंका पाठक सीधा नहि सुनैत। लाभार्थी विषय, पूर्ण वक्ता कम।

भूमि-सम्बन्ध आ लैङ्गिक प्रश्नक शेष स्थान

कमला देवी अध्यायक केन्द्रीय प्रश्नकर्त्री छथि; मुदा गद्य भूमिधारक स्त्रीक स्वतन्त्र अधिकार, विधवा किसानक भूमि, बेटीसभक हिस्सेदारी वा मजदूरीक लैङ्गिक विभाजन अलग नहि बतबैत। ई अपेक्षा बाहरी कानून थोपबाक निमन्त्रण नहि, मूल उपन्यासक पूर्व राति-सभाक महत्त्वक सन्दर्भमे आन्तरिक प्रतिनिधित्वक जाँच अछि। स्त्री नेतृत्व होएब स्वतः स्त्रीक आर्थिक सम्पत्ति-अधिकारक पूरा चित्र नहि। एहि कथात्मक मौनकेँ सामाजिक स्थितिक स्वतः अभाव मानि नहि, विस्तारक रिक्त स्थान रूपमे चिन्हित करब उचित।

नव नौकरी आ गामक बाह्य दिशा

सरकारी नौकरी, व्यापार आ शहरी काजक सम्भावना भूमि-आधारित गामक पारम्परिक क्षितिज बढ़बैत अछि। ई भविष्य-सारांश स्थानीय समाजकेँ बन्द, स्वतःपर्याप्त एकाइ नहि मानैत। गामक जीवनसँ बाहर व्यक्ति जाइ सकैत अछि, पर उपन्यासक स्मृति-केन्द्र पीपर आ नामविधान रहैत अछि। भविष्यक कथा मे परदेशक सम्बन्ध केना बनत से एतय निर्दिष्ट नहि। एखन केवल जीविकाक विकल्पक सूची अछि। एहि सूचीक स्थान भूमि-वितरणक बाद एतय अर्थवान—भूमिक अधिकार उपलब्धि होइतहुँ पेशागत बहुविधता समाप्त नहि होइत।

राज्यक नव भूमिका आ पुरान सत्ता-प्रतिरूप

थॉम्पसनक पोथी आ औपनिवेशिक शासनक प्रसंगसभमे बाहरी सत्ता अर्थ आ संसाधन पर नियंत्रण करैत छल। एतय ‘नव भारत सरकार’ कानूनक माध्यमे भूमिहीनक अधिकारक सम्भावना बढ़बैत अछि। एहि अन्तर्पाठमे राज्यक प्रकार्य बदलैत अछि; तथापि सरकार अन्तिम न्यायकेँ स्वतः सुनिश्चित करि देत, एहन वस्तुगत क्रियावर्णन नहि। जमींदारक वंशजक रोष आ पूर्व सम्बन्धक तनाव सूचित करैत अछि जे कायदे कानूनक बाहर सामाजिक नियन्त्रण रहि सकैत अछि। दीर्घ कादम्बरी बाहरी संस्थाक निरपेक्ष भलाइ वा बुराइ नहि, कृतिपरिणामक बदलैत रूप देखबैत अछि।

न्याय देरिसँ मिलल : कथात्मक कालिक लागत

सुखदेवक छिनल जमीन वंशजकेँ लौटब कथा लेल विजय अछि, मुदा जे मनुष्य मूल हानि भोगलक ओकर जीवनकाल बीति गेल। एहि विलम्बक नैतिक लागत मूल गद्यक उत्सवमे पूर्ण विस्तार नहि; बूढ़बा पीढ़ी, धैर्य आ संघर्षक महत्त्व कहैत छथि। प्रकरणक आख्यानशास्त्रीय शक्ति एहि असमानता कें स्वीकृति दैत अछि: परिणाम

सुनिश्चित बनल, पर पराजित समय वापस नहि मिलैत। न्याय-प्राप्तिक कथा यदि मूल शोक मिटा देत तँ दीर्घ समयकेँ अनावश्यक बना देत। एतय बूढ़बाक स्मृति हर समय-अन्तर बचा रखबाक माध्यम अछि।

उपलब्धि, सीमा आ आगाँक संकेत

अध्याय [–५४]क सबसँ पैघ सफलता सुखदेवक पुरान अन्यायकेँ वंशजक वास्तविक कानूनी अधिकारसँ जोड़ि दीर्घ कादम्बरीमे विलम्बित परिणाम निर्मित करब अछि। चर्मकार टोलाक लाभार्थी-स्थिति सामाजिक भूगोलक पूर्व जोखिमसँ जोडैत अछि। मुदा वितरणक ठोस संख्या, व्यक्तिगत नव मालिक, जमींदारक विशिष्ट आवाज, जमीनक दैनिक उपयोग आ पदानुक्रमक बादक अवशेष अत्यन्त संक्षिप्त अछि। स्रोत मूल पाठक ‘माटिक मालिक’ गीत, कमला–बूढ़बाक संवाद आ भूमि-वितरणक विवरण; अनुक्रमणिकाक आरम्भ पृष्ठ ३००, अगिला [–५३] आरम्भ ३०४, तेँ अनुमानित ३००–३०३। आगामी [–५३] ‘बिजलीक पहिल दीप’ नव तकनीकक संग पुरान स्मृतिक सम्बन्ध खोलैत अछि।

प्रकरण ४८ | मूल अध्याय –५३ — बिजलीक पहिल दीप

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

सड़क, खम्भा आ विकासक दृश्यात्मक प्रवेश

अध्याय [–५३]क आरम्भ एहन समयसँ होइत अछि जतय सरकारी योजनाक पैघ शब्दावली गाममे सड़क, तार, खम्भा आ मजदूरक रूपमे दृश्य बनैत अछि। ‘पंचवर्षीय योजना’ कथावाचकक ऐतिहासिक संकेत थिक; गामक बच्चाक अनुभव मुदा नव ठाढ़ लोहाक खम्भा छूबय-देखयब थिक। एहि द्विस्तरक कारण राष्ट्रीय आधुनिकता आ स्थानीय प्रत्यक्षता एकहि आख्यानमे भेटैत अछि। नव साधन अपनहि सँ गामक पूरा रूपान्तरण नहि करैत; कथाकार ओहि प्रक्रियाक प्रथम सार्वजनिक दृश्य चुनैत छथि। कतेक मजदूर आएलाह, कतेक दिन काज चलल अथवा सड़क कोन टोला जोड़लक, से विवरण अनुपस्थित। तेँ दृश्य प्रवेशक तीव्रता दैत अछि, विकास-प्रक्रियाक पूर्ण सामाजिक इतिहास नहि।

हरिवंशक पीढ़ी : उत्तराधिकार आ संक्रमण

कमला देवीक देहावसानक बाद नाम-अनुष्ठान आ राति-सभाक भार हुनकर बेटा हरिवंशपर अबैत अछि। ई पीढ़ीगत परिवर्तन एकटा छोट वाक्य मे समेटल, मुदा कथाक दीर्घ काल-रचनामे एकर पैघ भूमिका अछि। हरिवंश ‘एक हाथेँ’ परम्परा आ ‘दोसर हाथेँ’ नव युग दिस ताकनिहार पात्र रूपेँ प्रस्तुत होइत छथि। एहि रूपकसँ हुनकर अभ्यन्तर संघर्षक बीया राखल गेल अछि, यद्यपि मूल घटनामे कोनो दीर्घ वैयक्तिक द्वन्द्व नहि खुलैत। पात्रक विशिष्टता प्रायः बूढ़बासँ पुछल प्रश्न आ पुरान दीप सम्हारबाक क्रियामे प्रकट होइत अछि। पितृवंशीय उत्तराधिकारक बीच स्त्रीसभाक संस्था पुनः उल्लेखित अछि, मुदा ओकर तत्काल स्वतन्त्र निर्णय ई अध्याय नहि दिखबैत।

चौपालक पहिल बल्ब : सामूहिक दृश्य सँ कथात्मक चरम

बिजलीक तार पहुँचना कथानकक तैयारी थिक; चौपालमे पहिल बल्ब जरब तात्कालिक चरम क्षण। कथावाचक लोकक ठमकब, बच्चाकेँ कान्हपर उठाएब, हाथ जोड़ब आ चुपचाप पुरनका दीप पकड़ने रहबकेँ एकहि दृश्य-समूह बनबैत छथि। अलग-अलग प्रतिक्रिया नव वस्तुक अर्थपर गामक सर्वसम्मति नहि, अनुभवक बहुलता देखबैत अछि। बल्बक पीयर इजोत डकही पोखरिक पानिमे काँपैत अछि; तेँ यान्त्रिक साधन जलभूमिक पुरान दृश्यभाषामे अनूदित होइत अछि। पानिक काँपैत प्रतिबिम्ब स्थिर विजयी रोशनीक विरुद्ध एक लघु अस्थिरता रचैत अछि। दृश्य उत्तेजनासँ भरल, मुदा सभ घरमे तत्काल इजोत पहुँचना एहि क्षणक घटना नहि।

चमकक बीच पकड़ल माटिक दीप

भीड़मे केओ पुरान माटिक दीप हाथमे कसने ठाढ़ अछि—ई अनाम पात्रक छोट क्रिया अध्यायक प्रतीकात्मक भार उठा लैत अछि। गाम नव उजासक सामूहिक साक्षी बनैत अछि, मुदा एक मनुष्य अपन छोट वस्तुक मार्फत पुरान अनुभव सुरक्षित राखैत अछि। वस्तु-स्मृतिक ई दृश्य केवल बूढ़बाक उपदेशसँ पैदा नहि; संवादसँ पहिनहि एहिमे प्रतिरोधक सम्भावना उपस्थित भऽ गेल अछि। पुरनका दीप पकड़निहारक नाम, जाति, लिंग आ कारण नहि कहल गेल; अनाम बनला सँ प्रतिक्रिया सामान्यीकृत होइत, व्यक्तिगत जीवनक विस्तार घटैत अछि। ताहि कारण दीप इतिहासक भावात्मक संकेत अधिक, कोनो विशिष्ट परिवारक सम्पूर्ण कहानी कम बनैत अछि।

इजोतक कथावाचकीय द्विरूपता

दीप आ बल्बक कथामे उजास स्वयमेव शुद्ध सकारात्मक मूल्य नहि अछि। बूढ़बा कहैत छथि जे प्रकाश परछाहिँ सेहो बनबैत अछि। ई कथन देखब आ बिसरबक दोहरा सम्बन्ध खोलैत अछि: नवीन साधन स्मृतिक चेहराकेँ अधिक स्पष्ट कऽ सकैत अछि, अथवा ओकर चमक पुरान नामकेँ आच्छादित कऽ सकैत अछि। एहि अर्थमे उजास सूचना आ विस्मृतिक प्रतिस्पर्धी माध्यम बनैत अछि। मुदा कथावाचक वास्तविक भुलाइत नामक घटना नहिं दिखबैत; सम्भावित खतरा बूढ़बाक पूर्वानुमानमे सीमित अछि। आलोचनामे एहन सावधानी जरूरी—वर्णित सामाजिक रूपान्तरण आ पात्रक चेतावनी एकहि प्रमाणस्तरक तथ्य नहि।

बूढ़बाक दृष्टिकेन्द्र आ स्वतन्त्र कथावाचक

विद्युत्-आगमनक बाह्य दृश्य तृतीयपुरुष कथावाचकक व्यापक दृष्टिसँ बनैत अछि। हरिवंशक प्रश्न हमरा बूढ़बाक अनुभव-समयमे अनैत, जहाँ शंख आ डोरीक दीपसँ बिजली धरि अनेक युग एक वाक्यमे समाहित अछि। ई दृष्टि मनुष्यक एक आयुसँ पैघ कालिक दूरीकेँ जोड़ैत अछि। तथापि बूढ़बाक भाषण पूरा कथावाचकक अन्तिम निश्चय नहि; खास कऽ परछाहिँ-विषयक चेतावनी भविष्यक सम्भावना अछि। बूढ़बाक दीर्घ स्मृतिमे ज्ञानक अधिकार अछि, पर बिजली गामक प्रत्येक घरक जीवन कोना बदललक, तकर प्रत्यक्ष अनुभव अन्य पात्रसभक कथामे अनुपस्थित अछि। दृष्टिकेन्द्रक विस्तार आ संकुचन एकसाथ देखाइत अछि।

शंख-डोरीक दीप : आरम्भिक अन्तर्पाठक वापसी

हरिवंश प्रश्न करैत छथि जे बिजली आब बूढ़बाक पुरान शंख-डोरीक दीपसँ अधिक उजास देत। एहि उल्लेखसँ पूर्वकथाक पहिल अध्याय [−१००]क मंचीय वस्तु नव ऐतिहासिक परिवेशमे घुरैत अछि। शंख, डोरी आ दीप पहिने दृष्टिभ्रम आ ज्ञानक नाटकीय उपकरण छल; आब दीप सामुदायिक जीवनक पीढ़ी-दर-पीढ़ी साधन बनैत अछि। एहि स्थानान्तरणमे एकहि वस्तु दार्शनिक मंचसँ लोकजीवनक तकनीकी इतिहासमे प्रवेश करैत अछि। किन्तु तर्क-विवादक पुरान दृश्य एहि अध्यायमे पुनः घटित नहि होइत। केवल वस्तुक उल्लेखसँ अन्तर्पाठक सेतु बनैत, पर समस्त पुरान विवादक विस्तार स्वयमेव उपस्थित नहि मानल जाए।

गीतक ‘बजारक इजोत’ आ गद्यक असमानता

‘नव इजोत, पुरान बाती’ गीत बाजारक एहन चमकसँ सावधान करैत अछि जे नाम नुकाबि सकैत अछि। मुख्य गद्यमे बिजली सरकारी योजनाक माध्यमे अबैत अछि; बाजारक कोनो स्वतन्त्र दलाल अथवा नाम मेटबयवला वास्तविक घटना नहि। एहि कारण गीतक ‘बजार’ सांकेतिक शंकाक क्षेत्र अछि, गद्यक प्रत्यक्ष दुष्टपात्र नहि। गीत नव साधनकेँ निरस्त नहि करैत, ओकर उपयोगक नैतिक माप प्रस्तावित करैत अछि। ओहि प्रस्तावक भीतर पुरान बाती एकटा स्मृति-रक्षक बिम्ब बनैत अछि। कथावाचक सजीव दृश्य दैत, गीत मूल्य-विवेचनक अगुआई करैत; दुनूक परस्परता सफल अछि, मुदा पूर्ण घटनात्मक साम्य नहि।

लोकगीतक पुनरावृत्ति : बदलल उजास, टिकैत नाम

गीतमे ‘इजोत’ आ ‘नाम’ बारम्बार लौटैत अछि। पहिल रूपमे नव तारक आश्चर्य, दोसर रूपमे स्मृतिक शंका, तेसर रूपमे ‘नव संग पुरान’क आग्रह अछि। ई आवृत्ति गीतकेँ एक टेका-बद्ध सामुदायिक शिक्षा बनबैत, न कि प्रत्येक पंक्तिकेँ पृथक कथाघटना। गद्यमे हरिवंश प्रत्येक वर्ष बल्बक तर नाम-स्मरण करैत छथि; गीतक पुनरावृत्ति एहि पुनरावर्तित अनुष्ठानक लयक पूर्वरचना जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि प्रति वर्ष केकर नाम कहल गेल, कोन नव घटना भेल, एहि विषयमे विवरण नहि। आवृत्तिक कथात्मक अर्थ व्यापक अछि, घटना-सूची सीमित।

‘हर घर धरि बहुत बरख’ : विकासक अन्तराल

पहिल चौपाली बिजलीक दृश्य तुरन्त सम्पूर्ण गामक बिजलीकरण बनि नहि जाइत। कथावाचक स्पष्ट लिखैत छथि जे हर घर धरि तार पहुँचय बहुत बरख लागल। ई छोट समय-वाक्य अध्यायक उत्सवी केन्द्रमे असमान उपलब्धिक छाया जोड़ैत अछि। चौपाल सार्वजनिक रूपेँ आलोकित, निजी आँगन सभ तत्काल समान सुविधा नहि पबैत। मुदा ककर घर पहिने, ककर बादमे, कोनो सामाजिक क्रम निर्दिष्ट नहि; जाति अथवा वर्गवार निश्चित वितरण कल्पना कए देब अनुचित। उपलब्धि आ प्रसारक अन्तर स्वयं साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। ई अन्तर गीतक ‘हर नाम’क सार्वभौमिकतासँ एकटा रचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि।

मजदूरक दृश्यात्मक उपस्थिति आ श्रमक अनुपस्थिति

खम्भा गाड़यवला मजदूर गामकेँ नव युगसँ जोड़ैत छथि, मुदा कथा हुनका सक्रिय व्यक्तिगत आवाज नहि दैत। हुनकर आगमन बच्चासभक आश्चर्यक दृश्य रचैत, श्रमक वेतन, जोखिम, स्थल-नाप अथवा ठहरबाक कथा नहि।

एहि चयनसँ आधुनिकता तैयार दृश्य बनि अबैत अछि; ओकर निर्माण-प्रक्रिया अपेक्षाकृत अदृश्य रहैत। ई सीमा उल्लेखनीय, खास कऽ जखन उपन्यास दीर्घकालसँ श्रमिक समुदायसभक अनुभव शामिल करबाक महत्वाकांक्षा रखैत अछि। मुदा एहि एक अध्यायक मौनसँ सम्पूर्ण उपन्यासमे मजदूर अनुपस्थित छथि, एहन व्यापक निर्णय नहि। कथनक चयन विषयानुसार अछि, आ ओकर लागत चिन्हित कएल जा सकैत अछि।

बल्बक स्थायी जलन : कथानक अथवा अतिशयोक्ति?

‘ओहि पहिल राति सँ चौपालक दीप कहियो नहि बुताएल’—एहि घोषणाकेँ शाब्दिक विद्युत्-आपूर्तिक अटूट अभिलेख मानब कठिन। प्रसंगमे ई सार्वजनिक उजासक सांस्कृतिक निरन्तरताक रूपक जकाँ काज करैत अछि। गद्य बिजलीक व्यवधान, लाइन मरम्मत वा दीप बदलबाक घटना उल्लेख नहि करैत। तेँ कथावाचकक निश्चयात्मकता साहित्यिक स्थायित्व रचैत, यान्त्रिक उपलब्धताक प्रमाणित आँकड़ा नहि। एहि वाक्यक समकक्ष बूढ़बाक चेतावनी अछि जे पुरान तेल सुखि गेल तँ फेर आगि जरएब कठिन। एक वस्तु स्थायी इजोतक दावा करैत, दोसर संरक्षणक निरन्तर श्रम याद दिआबैत—विरोधक ई सौन्दर्य अध्यायक शक्तिक स्रोत अछि।

हरिवंशक झोरा : स्मृतिसँ क्रियाक सेतु

हरिवंश प्रत्येक वर्ष बिजलीक दीपक तर स्मरण करैत छथि आ अपन झोरामे माटिक दीप राखैत छथि। ई छोट वस्तु-क्रिया बूढ़बाक दीर्घ व्याख्यानकेँ व्यवहारमे बदलैत अछि। साहित्यिक दृष्टिएँ स्मृति एतय केबल वचन नहि, वहन करबाक अभ्यास अछि। झोरा व्यक्तिगत, चौपाल सामुदायिक; एहि दू स्थलमे छोट दीप नाम-अनुष्ठानक दोहरा जिम्मेदारी जोड़ैत अछि। मुदा पुरान दीपक तेल प्रति वर्ष केना भरल जाइत, ककर श्रमसँ राखल जाइत, आ आगाँक पीढ़ी ओकरा ग्रहण करैत की नहि, ई कथा नहि कहैत। प्रतीकक सफलता स्पष्ट, ओकर संस्थागत भविष्य खुलल।

पोखरि, महार आ पीपरक स्थानगत सँगति

बिजलीक पहिल प्रतिबिम्ब डकही पोखरिमे काँपैत, गामक महार लग नारिकेल पात चमकैत, आ हरिवंश पीपर लग बूढ़बासँ संवाद करैत छथि। ई तीन स्थल नव विद्युत्-साधनकेँ मूल कथाजगतसँ जोड़क काज करैत अछि। तकनीक नगरसँ आबि सकैत, मुदा ओकर अनुभव स्थानीय जल, पात आ छाहरिक भीतर अनूदित होइत अछि। खास कऽ पोखरिक पानि नव रोशनीक दर्पण बनैत, ‘जलसमाधि’ शीर्षकक दीर्घ जल-जगतसँ भौतिक सम्बन्ध राखैत। किन्तु गद्य स्थलसभक दूरी, तारक वास्तविक रस्ता अथवा बिजलीक वितरण-नक्शा नहि दैत; संकेतरूप स्थानचित्र पर्याप्त, सम्पूर्ण भूगोल नहि।

विकासक समय : घटना, वर्ष, दशक

बिजलीक पहिल क्षण मात्र साँझक दृश्य, सड़क-खम्भाक आगमन अपेक्षाकृत आरम्भिक प्रक्रिया, आ घर-घर पहुँचना ‘बहुत बरख’क विस्तार अछि। एहि तीन काल-स्तरक कारण अध्याय एक केन्द्र-बिन्दुक चारू दिस दीर्घ काल रचैत अछि। कथावाचक वर्षक ऐतिहासिक निश्चित तिथि नहि दैत, ‘नेहरू-युग’ आ पंचवर्षीय योजनाक व्यापक द्योतक उपयोग करैत अछि। एकरा बाहरी सरकारी परियोजनाक सटीक वर्ष मानि देब स्रोतक बाहरक

अनुमान हएत। साहित्यिक पाठमे समय मुख्यतः संक्रमणक लय, न कि पूर्ण कालपत्र। एहि चयनसँ गति तीव्र, पर घटनाक ऐतिहासिक सूक्ष्मता सीमित।

पीयर उजास आ सामाजिक चेहरा

बल्बक प्रकाशमे लोकक चेहरा एकसंग चमकैत अछि। ई दृश्य कथाक लोकसमूहकेँ एक सार्वजनिक चित्रमे समेटैत, जकर भीतर बच्चा, वृद्ध आ अनाम दर्शक उपस्थित छथि। ‘एक संग’क सौन्दर्य समूहक साझा अनुभूति दैत अछि, पर प्रकाशक समान दृश्य सबैका समान संसाधन-लाभ नहि दैत—हर घर धरि तार पहुँचना बादक बात। दृश्यीय समता आ भौतिक असमान उपलब्धिक अन्तर अध्यायक गम्भीर अन्तर्विरोध अछि। स्त्रीसभक अलग भाव अथवा श्रमिकक स्वतन्त्र अनुभव नहि खोलल गेल। कथावाचक एक दृश्यसँ समुदायक रूप बनबैत अछि, समाजक प्रत्येक निजी कोठली नहि।

बूढ़बाक हँसी : तकनीकप्रतिक भयक भङ्ग

हरिवंश अनुमान करैत छथि जे अधिक उजास बूढ़बाक पुरान दीपकेँ अप्रासंगिक करि देत। बूढ़बा हँसि उत्तर दैत छथि जे उजासक कोनो रूप हुनका पुरान नहि लगैत। ई हँसी कथामे नव/पुरानक सरल शत्रुता तोड़ैत अछि। दीर्घजीवी स्मृति-चरित्र परिवर्तनक विरोधी नहि, उपयोगक नैतिक अर्थपर विचार करनिहार देखाइत छथि। किन्तु बूढ़बाक उत्तर बादमे चेतावनीमे बदलैत—इजोत नामकेँ ‘चौन्हिया’ सेहो सकैत। एहि क्रममे स्वीकार, संशय आ संरक्षण तीन अवस्था बनैत। पात्र स्थिर प्रतीक मात्र नहि, विचारक छोट गतिशील वक्र प्राप्त करैत छथि।

कोन ‘पुरान’ बचत : चयनात्मक स्मृतिक प्रश्न

अध्याय पुरान माटिक दीप बचएबाक आग्रह दैत अछि, मुदा पुरान समयक सभ संस्था स्वतः न्यायसंगत छल—एहन दावा नहि करैत। पूर्वक अध्यायमे जमींदारी, जातीय विषमता आ सामाजिक अन्याय द्रष्टव्य छल। तें पुरान नाम सुरक्षित राखब आ पुरान अन्याय पुनर्स्थापित करब एक नहि। हरिवंशक झोराक दीप एहि भेदकेँ स्वतः स्पष्ट नहि करैत; पाठक पुरान वस्तुक सांस्कृतिक उपयोग आ पुरान सत्ताक संरचनामे अन्तर देखबाक अपेक्षा रखैत अछि। ई प्रश्नक कारण आधुनिकताक आलोचना प्रतिगामी स्मृतिमोह बनबासँ बचि सकैत अछि। मूल गद्य एकर स्पष्ट दार्शनिक सूची नहि दैत, मुदा पूर्ववर्ती कथाक न्याय-विषयक इतिहास ई पाठकीय अन्तर आवश्यक बनबैत अछि।

अनुष्ठानक सार्वजनिक नवीनीकरण

हरिवंश चौपालक विद्युत् दीपक तर प्रत्येक वर्ष नव नाम स्मरण करैत रहलाह। नया तकनीक पुरान अनुष्ठान समाप्त नहि करैत; अनुष्ठान ओकरा अपन नयका मंच बना लैत अछि। अवधि-विवेचनमे ‘हर बरख’क प्रयोग अनेक बार सम्पन्न समान प्रकारक क्रियाकेँ एक कथनमे समेटैत अछि—ई पुनरावृत्तिक विशिष्ट प्रकार थिक। वर्णनमे प्रत्येक वर्षक तिथि वा उपस्थिति नहि; एक नियमित अभ्यासक निष्कर्ष मात्र। तथापि कथा-रचनामे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि: जखन नव बल्ब महज दर्शनीय वस्तु छल, ओकर तर स्मरण कएलाक बाद ओ सामुदायिक संस्थाक अंग बनैत अछि।

‘नाम देखाबय’क दृश्यात्मक विरोधाभास

नाम सामान्यतः कण्ठ, स्मृति, पात वा कागजमे रहैत अछि; प्रकाश ओकरा शाब्दिक अर्थमे प्रत्यक्ष नहि बनबैत। बूढ़बाक ‘जे इजोत नाम देखाबय’क वाक्य अर्थकेँ दृश्यरूप दैत अछि। एतय दृश्यता सामाजिक स्वीकारक बिम्ब अछि: जे भूलि गेल, तकरा प्रकाशमे आनब। मुदा एहन प्रकाश सभक नाम समान रूपेँ उपस्थित करैत अछि कि नहि, तकर परीक्षण भविष्यक कथा माँगत। एहि अध्यायमे विशेष रूपसँ कोनो बिसरल व्यक्ति फेर नामित नहि। फलतः प्रतीकक नैतिक लक्ष्य उज्ज्वल, कथात्मक सिद्धि आंशिक: हरिवंशक नियमित स्मरण देखाओल, किन्तु ऐतिहासिक अदृश्यता पूर्णतः मिटल नहि।

गीतक चेतावनी बनाम उत्सवी समापन

लोकगीत शुरुआतसँ नव इजोतक सम्भावित जोखिम दोहरबैत अछि; मुख्य गद्य आश्चर्य, बूढ़बाक समन्वयकारी उत्तर आ हरिवंशक वार्षिक स्मरणपर समाप्त। एहि चयनसँ कथाक अन्त सकारात्मक अछि। तथापि घर-घर तार पहुँचबाक विलम्ब आ माटिक दीपक निरन्तर आवश्यकता गीतक आशंकाकेँ सम्पूर्ण निरर्थक नहि करैत। अध्याय उपदेशक वाचिक सफलता आ व्यवहारक सीमित उदाहरणक संयुक्त रूप बनैत अछि। आलोचनात्मक निष्कर्ष ई होएत जे आधुनिकताकेँ रचनामे सहज विजय नहि, पुरान प्रतीकसँ निरन्तर संवादक विषय बनाओल गेल; सामाजिक लागतक विवरण तखनहु संक्षिप्त अछि।

समग्र त्रयीमे प्रकाश-सूत्रक नव अर्थ

शंख-डोरीक दीपसँ अगिनक संकट, राति-सभाक न्याय-दीप आ आब बिजलीक बल्ब धरि प्रकाश वस्तु अनेक बार बदलल अछि। [–५३] एहि पुरान कड़ीमे तकनीकी आधुनिकताक परत जोड़ैत अछि। अगिला रेडियो-टेलीविजन अध्यायमे प्रकाश सुनबा-देखबाक सार्वजनिक माध्यममे आओर बदलेत, तेँ एहि दीपक दृश्य केवल अलग औद्योगिक उपलब्धि नहि, माध्यमक निरन्तर परिवर्तनक पूर्वसंधि थिक। मुदा एक अध्यायक आधारपर समग्र त्रयीक पूर्ण माध्यम-सिद्धान्त स्थापित नहि मानल जाए। ई अध्याय नव उजासक सम्भावना खोलैत अछि; ओकर सफल सामाजिक निर्वाह आगाँक कथामे जाँचय पड़त।

अन्तिम मूल्यांकन आ स्रोतसीमा

‘बिजलीक पहिल दीप’क सफलताक केन्द्र चौपालक विस्मय, पोखरिक काँपैत प्रकाश, अनाम माटिक दीपधारी, बूढ़बाक हँसी आ हरिवंशक झोरामे सुरक्षित दीपक दृश्यात्मक श्रेणी अछि। गद्य नव साधनक अन्धसमर्थन वा अन्धविरोधक बदला स्मृतिसँग उपयोगक अनुष्ठान प्रस्तावित करैत अछि। सीमा ई जे लाइन बिछौनिहारक श्रम, घर-घर वितरणक असमान प्रक्रिया, रोशनीक वास्तविक उपयोग आ दीर्घ निजी जीवनपर प्रभाव सारांशमे दबि जाइत अछि। अगिला [–५२]मे आवाज, युद्ध आ नाम-स्मरण माध्यमक प्रश्नकेँ नव क्षेत्र देत।

प्रकरण ४९ | मूल अध्याय –५२ — सीमाक पुकार

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

सीमाक समाचार : दूरक घटना, स्थानीय कथाजगत

‘सीमाक पुकार’मे युद्ध मूलत: गामक बाहर घटैत अछि, मुदा ओकर समाचार गामक सामाजिक जीवन भीतर प्रवेश करैत अछि। पहिने चीन दिस, फेर पाकिस्तान दिस युद्धक उल्लेख अछि; कथावाचक युद्धभूमिक रणनीति, सेना-संख्या अथवा विजय-पराजयक वृत्तान्त नहि दैत। रेडियोक फुसफुसाहट आ बजारक चर्चा दूरी पार करैत दू कथास्थलक जोड़ैत अछि। एहि माध्यमे कादम्बरी राष्ट्रीय घटनाकेँ ग्रामीण स्मृति, बिदाइ आ प्रतीक्षाक रूपमे अनूदित करैत अछि। युद्धक ऐतिहासिक वर्ष १९६२ आ १९६५ स्पष्ट कहल गेल अछि, मुदा गामक प्रत्येक व्यक्तिक क्रियाक सटीक तिथि नहि। कथाक इतिहास लोकक जीवनपर पड़ल छापसँ बनैत अछि, युद्धक सम्पूर्ण इतिहासलेखनसँ नहि।

हर आ जालसँ वर्दी धरि : देहक भूमिकापरिवर्तन

गामक युवा जिनकर हाथ पहिने हल आ जालपर छल, ओ आब वर्दी पहिरि सीमा दिस विदा होइत छथि। एहि एक रूपकमे कृषक आ माछमारक श्रमसँ सैनिक देह धरि संक्रमण समेटल अछि। ई परिवर्तन सामाजिक समूहक पूर्ण पेशागत इतिहास नहि, पर कथावाचकक तीव्र पहचान-परिवर्तनक संकेत अछि। कृषिकार्यक निरन्तरता, खेत सम्हारनिहारक कठिनाई वा भर्ती प्रक्रियाक अलग घटना नहि; कहानी वर्दी पहिरबाक सामुदायिक अर्थपर केन्द्रीभूत। सैनिक ‘युवा’ एक सामूहिक श्रेणी छथि, जिनका बीच रामाश्रयक पोता विजयकुमार नामित होइत छथि। नामित उदाहरण व्यापक जनसमूहकेँ आंशिक मानवीय देह दैत अछि।

विजयकुमार : वंशस्मृति आ राष्ट्रीय सङ्घर्षक सूत्र

रामाश्रय पूर्वक स्वाधीनता-आन्दोलनक कारावास आ सामाजिक प्रतिरोधसँ जुड़ल छलाह। हुनकर पोता विजयकुमार सेनामे जाएब राष्ट्रीय संलग्नताक दोसर पीढ़ीगत रूप अछि। एहि जोड़सँ अतीतक स्वतन्त्रता-सङ्घर्ष आ वर्तमान सीमायुद्ध एकहि वंशक माध्यमे कथामे संवाद करैत अछि। मुदा दुनू संघर्षकेँ विचारधारात्मक रूपसँ एक समान घोषित करब पाठक बाहरक अतिविस्तार हएत। पिता, परिवारक आर्थिक दशा, विजयकुमारक निजी प्रेरणा अथवा भर्ती निर्णयक विस्तृत मनोविज्ञान नहि भेटैत। हुनकर कथा बिदाइ, युद्ध-घाव, वापसी आ साथी-स्मरणक चारि चरणमे गढ़ल गेल अछि; एहिमे सैनिकक व्यक्तिगत वैचारिक स्वतन्त्रता अपेक्षाकृत कम देखाइत अछि।

बिदाइक राति : समदाउन आ मातृदृष्टि

विजयकुमारक बिदाइमे स्त्रीसभ तिलक लगबैत छथि आ माए आँचरसँ मुँह झाँपि समदाउन नहि रोकि पबैत छथि। ‘सीमा आ सोहर’ गीतक शीर्षक बिदाइ आ जन्म-संस्कारक परम्परागत ध्वनि मिलबैत अछि। जीवनक आरम्भसँ जुड़ल सोहरक संग मृत्यु-आशंकित बिदाइ जोड़ब मनोभावक द्वन्द्व रचैत अछि। कथावाचक माएक नाम नहि दैत, मुदा शरीरक मुद्रा सँ हुनकर अनुभव दृश्य बनैत अछि। ओ नारी सेना-निर्णयमे सहभागी नहि देखाइत, प्रतीक्षाक

संवेदनामे उपस्थित अछि। एहि अन्तरकेँ पहचानने राष्ट्रीय कथामे स्त्रीक भूमिका केबल उत्सवक सहगायिका रहि गेल कि दुःखक स्वतन्त्र पात्र बनल, से स्पष्ट देखाइत।

रेडियो, बजार आ प्रतीक्षाक सामूहिक समय

युद्धक समय साँझक चौपालक मुख्य विषय रेडियोपर आएल समाचार बनैत अछि। समाचार एतय घटना स्वयं नहि, घटनाक अनिश्चित वाचिक संकेत थिक। दूर मोर्चापर की चलि रहल अछि, गामक परिवार पूरा नहि जनैत; ओ आधा सूचना, आधा भयक बीच जीबैत अछि। ‘ने पूरा भय, ने पूरा गर्व’क कथन एहि मानसिक मध्यवर्ती अवस्थाकेँ सूक्ष्मता दैत अछि। रेडियो दूर भौगोलिक स्थानकेँ गाँवक कथनकालमे लए अबैत, मुदा प्रत्यक्ष अनुभूतिक रिक्ति नहि भरैत। कथात्मक तनाव लम्बा प्रतीक्षा आ अनिश्चित भविष्यक कारण अछि; वास्तविक युद्धदृश्य तखनहुँ अनुपस्थित रहैत अछि।

घरक चुप्पी : मौनक निजी आकार

जे घर अपन बेटाकेँ सीमा पठबैत अछि, ओकर आँगनमे गहींर चुप्पी बसैत अछि। ई चुप्पी केवल आवाजक अभाव नहि, अनिर्णीत परिणामक कथात्मक अवस्था अछि। गामक सामूहिक चर्चा चौपालपर मुखर रहैत, मुदा समान समयमे घरक आँगन अपेक्षाकृत मौन। एहि निजी-सार्वजनिक विरोधसँ युद्धक अलग भावलोक निर्मित होइत अछि। माएक भीतरी विचारक दीर्घ एकालाप नहि, तें कथावाचक बाहरी संकेतसँ मनोदशा गढ़ैत अछि। युद्धक राष्ट्रीय महिमाक भाषा आ मातृशोकक स्थानीय भाषा एकहि अध्यायमे उपस्थित रहैत, मुदा दूनूकेँ अन्तिम रूपमे एकीकृत कएल नहि गेल अछि।

राति-सभा : नामक सामाजिक पूर्वरक्षा

स्त्रीसभ ओहि युवा सभक नाम राति-सभामे अलगसँ स्मरण करैत छथि जे युद्धमे गेल छथि। एहि क्रियाक विशेषता ई जे नाम मृत्युक बादहि नहि, जोखिमक बीचहि सम्हारल जाइत अछि। साक्षी-परम्परा एतय पश्चात् स्मारकसँ पूर्वचेतन देखभालक रूप ग्रहण करैत अछि। कतेक सैनिक, कतेक परिवार, कोन विधिसँ नाम लिअल गेल, मूल कथा नहि बतबैत। मुदा संस्थाक वापसी पूर्ववर्ती अध्यायसभसँ जुड़ि सामुदायिक संगठनक दीर्घ निरन्तरता रचैत अछि। राति-सभाक स्त्री आवाज निजी भयकेँ सामूहिक स्वर देबैत अछि, यद्यपि प्रत्येक सहभागीकेँ व्यक्तिगत स्वतन्त्र कथन-अवकाश सीमित भेटैत अछि।

बूढ़बाक सीमापार स्मृति

बूढ़बा कहैत छथि जे देह सीमा दिस जाइत, नाम स्मरण करनिहार गाम दिस लौटैत अछि। दीर्घजीवी स्मृति-चरित्रक माध्यमे भौगोलिक सीमा आ सांस्कृतिक सम्बद्धताक फर्क रचल गेल। हुनका लेल स्मरणक अधिकार केवल गामक भीतर मृत्यु पाओनिहारपर सीमित नहि। दूर हिमालय अथवा मरुभूमिक उल्लेख कथाजगतक भूगोल विशाल करैत अछि। मुदा ओहि स्थलपर वास्तवमे कोन विशेष सैनिक मरल, हुनकर सटीक स्थल वा युद्धघटना किछु दर्ज नहि। विस्तार प्रतीकात्मक आ व्याख्यात्मक अछि; विश्वसनीय घटना-चित्र ओतबे जे विजयकुमारक घायल वापसी आ हुनकर सहचरक मृत्युस्मृति।

१९६२ सँ १९६५ : समय-सङ्कोचनक शिल्प

दू युद्धक मध्यमे कतेको बरखक समय बीतैत अछि; गद्य ओहि अन्तरालकेँ अत्यल्प पंक्तिमे समेटैत अछि। राष्ट्रीय आपदाक दू विशिष्ट वर्ष चुनल गेल, किन्तु परस्पर कालक्रम विस्तृत निजी दिनचर्यामे अनूदित नहि। परिणति विजयकुमारक १९६५क घावमे केन्द्रित होइत अछि, जकर बाद ‘महीनों’क चिकित्साक संक्षेप अछि। क्षणिक बिदाइ-दृश्य, दीर्घ प्रतीक्षा आ महीनाक उपचारक एहि गति-मिश्रणसँ एक छोट अध्याय पैघ ऐतिहासिक परास छूइत अछि। पाठककेँ अत्यधिक सूचनाक बनिस्पत भावनिक अवस्थान्तरणक अनुक्रम भेटैत अछि। ई चयन सफल, मुदा युद्धभूमिक वास्तविक क्षण सभ प्रायः दृष्टिसँ बाहर रहैत।

घायल वापसी : शरीरक भीतर इतिहास

विजयकुमार एक हाथ कमजोर लऽ गाम घुरैत छथि। ‘जीवित वापसी’क विजयोत्सव हुनकर शरीरपर स्थायी घावक चिह्नसँ जटिल बनैत अछि। एकर कारण कथा युद्धक परिणामकेँ मृत्यु वा सुरक्षित वापसीक सरल द्विभाजनमे नहि राखैत। घायल सैनिकक दैनिक श्रम, चिकित्सा-पछाति आर्थिक संघर्ष, अथवा कमजोर हाथक कारण खेती-माछमारीमे परिवर्तन नहि कहल गेल। ओहि रिक्तिसँ युद्धक सामाजिक लागतक केवल आरम्भिक संकेत भेटैत अछि। तथापि शरीरक ई एक विशिष्ट विवरण विजयकुमारकेँ सामान्य प्रतीकसँ अलग करैत अछि; ओ स्मरण करनिहार जीबैत साक्षी सेहो बनि सकैत छथि।

हरिवंशक भय : सूचीमे नाम जुड़बाक दोसर अर्थ

हरिवंश कहैत छथि जे विजयकुमारक नाम बूढ़बाक ‘सूची’मे जुड़बाक भय छल। बूढ़बाक उत्तर एहि धारणाकेँ बदलैत अछि: ओ केवल मृतकक नहि, सभ सीमा गेल युवाक नाम धारण करैत छथि। एहि संवादमे सूची मृत्यु-सूचीसँ जीवन-मृत्यु दुनू अवस्थाक सांस्कृतिक अभिलेख बनैत अछि। एक छोट अर्थ-संशोधन अध्यायक मूल कथात्मक बौद्धिक घटना अछि। कथाकार एतय मृत्युकेँ नामक एकमात्र औचित्य नहि मानैत; स्मरण जीवित व्यक्तिक जोखिमकेँ सेहो मान्यता दैत। मुदा सूची वास्तविक लिखित दस्तावेज अछि कि बूढ़बाक आन्तरिक स्मृति, से स्पष्ट भौतिक रूपमे देखायल नहि।

नघुरनिहार साथी : अनुपस्थित पात्रक उपस्थिति

विजयकुमार बच्चासभकेँ बारम्बार सीमाक कथा सुनबैत, आ अन्तमे अपन संग ठाढ़ रहि खसल साथीकेँ नामसँ स्मरण करैत छथि। साथी कथामे प्रत्यक्ष बोलैत नहि, मुदा पुनःकथनक एक जरूरी पात्र बनैत अछि। ओकर नाम मुख्य गद्यक वर्णनमे उद्धृत नहि; ‘नाम जोड़ैत छलाह’ कथित अछि। एतय एक महत्त्वपूर्ण विडम्बना: उपन्यास नाम-बचावक महत्त्व प्रस्तावित करैत, मुदा एहि विशिष्ट साथीकेँ पाठक स्वयं नामसहित नहि जानि पबैत। घटनाक सांस्कृतिक कार्य स्पष्ट अछि, व्यक्तिगत जीवनचरित्र अपूर्ण। ई साहित्यिक रिक्ति आलोचनामे दृश्यमान राखब उचित।

बच्चा श्रोता आ अनुष्ठानक अगिला चक्र

विजयकुमारक पुनरावर्तित कथन बच्चासभकेँ गामक युद्धस्मृतिक उत्तराधिकारी बनबैत अछि। कहानीक अन्तिम नाम दोहराबय सँ श्रोता केवल मनोरञ्जन ग्रहण नहि करैत; ओ स्मृतिपरम्परामे सहभागी बनैत अछि। प्रत्येक अवसरक दृश्य पृथक नहि, ‘हर बेर’ एक आवृत्तिगत सारांश अछि। एहि आवृत्तिसँ राष्ट्रीय युद्धक अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होइत अछि। कथात्मक केन्द्र पुनः बूढ़बासँ जीवित मनुष्यक आवाज दिस घुरैत अछि—बूढ़बाक स्मरण स्थिर पृष्ठभूमि, विजयकुमारक गाथा गतिमान सामाजिक संचार। बच्चासभक भविष्यक प्रतिक्रिया अथवा मतभेद नहि देखायल।

समदाउन, सोहर आ नाम : गीतक अर्थ-संयोजन

गीतमे देह सीमा पार जाइत अछि आ नाम गाममे रहैत। ‘सोहर’क राग बिदाइक शोकसँ मिलि एक सामाजिक ध्वनि-विरोध रचैत अछि। गद्यमे माएक समदाउन उठब एक प्रत्यक्ष प्रसंग, मुदा प्रत्येक मरेक व्यक्तिक घरमे सोहर गाओल गेल—एहन घटना नहि। गीतक पंक्ति ‘दुनू पातपर परनाम’क बिम्ब व्यापक मूल्यसंकेत अछि; ठोस दू पातपर कोनो लिखित नाम-लेखन चित्रित नहि। एहि भेदकेँ जाँचलासँ लोकगीतक काव्यात्मक प्रस्थान आ कथात्मक तथ्यक पृथक भूमिका स्पष्ट होइत अछि। गीत घटनाक शाब्दिक सूची नहि, दूरी आ स्मरणक सामूहिक भावसम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

सीमा आ राष्ट्र : कथावाचकक चयनित दृष्टि

मूल गद्य युद्धक समाचार भारतक गाममे आबि पहुँचना बतबैत अछि। विरोधी देशक सैनिक, सीमा क्षेत्रक नागरिक, सेना-निर्णयक राजनीतिक प्रक्रियासभक स्वतन्त्र स्वर अनुपस्थित अछि। ई उपन्यासक एहि छोट प्रसंगक स्थानीय केन्द्रणक परिणाम। आलोचक एहि रिक्तिसँ युद्धक सम्पूर्ण नैतिक विवादक अन्तिम फैसला नहि बनाबथि। अध्याय शासकीय भाष्यक तुलना मे माए, घायल युवा आ नाम-स्मरणक वातावरणपर केन्द्रीभूत अछि। एहन दृष्टि युद्धक मानवीय लागत देखबैत, मुदा अन्य पक्षक अदृश्यता सेहो उत्पन्न करैत। बहुस्वरताक विस्तार एहि अध्यायमे आंशिक।

बूढ़बाक उपदेश आ विजयकुमारक अनुभवक अन्तर

बूढ़बा ‘नाम सीमा नहि जनैत’ कहैत छथि, जखन विजयकुमार बरफक पहाड़ आ पहराक अनुभव सुनबैत छथि। पहिल कथन भावात्मक सार्वकालिक सूत्र, दोसर देहधारी स्थान-विशिष्ट जीवनस्मृति। एहि दू स्वरक संगति अध्यायकेँ वैचारिक प्रवचनमात्र होएबासँ बचबैत अछि। किन्तु विजयकुमारक व्यक्तिगत स्मृति प्रत्यक्ष प्रथमपुरुष विस्तृत पाठरूपमे नहि देल गेल; कथावाचक ओकर संक्षेप दैत छथि। परिणामतः योद्धाक अनुभव एतय स्मरण-संस्कारक प्रमाण बनैत, स्वतन्त्र सैनिक संस्मरण नहि। स्वरसत्ताक ई भेद कथात्मक घटनाघनत्व मापबाक लेल आवश्यक अछि।

युद्धस्मृति आ जलसमाधिक मूल प्रतिज्ञा

‘गोहि देह लऽ सकैत अछि, नाम नहि’ वला केन्द्रीय सूत्रक वापसी नदीक जलसमाधिसँ दूर सीमाक युद्धमृत्यु धरि स्मृतिरक्षाक क्षेत्र बढ़बैत अछि। जँ आरम्भमे जल आ गोहि लोकक देह लऽ जाइत छल, एतय गोली वा युद्धक जोखिम स्मरणक नवा प्रसंग बनैत। समान सूत्रक वापसी मात्र पुनरुक्ति नहि; ओकर सामाजिक प्रयोजन बदलैत अछि। तथापि जीवनरक्षाक व्यवहारिक प्रणाली एतय पूर्वक बाढ़ि अध्यायक जकाँ विकसित नहि। बूढ़बाक संरक्षक भूमिका नामकेँ संभरण, युद्ध रोकनिहार अलौकिक शक्ति नहि। एहि सीमाबोधमे रचनाक सांस्कृतिक विश्वसनीयता अछि।

मातृपीड़ा आ नायकत्वक असमान भाष्य

गाम विजयकुमारक वापसीपर स्वागत करैत अछि, मुदा माएक बिदाइक अनुभवक विस्तृत पुनरागमन नहि। आरम्भमे हुनकर आँचर, शोक-गीत आ प्रतीक्षा तीव्र; अन्तमे विजयकुमारक कथा आ बच्चासभक पुनरावृत्ति कथाक केन्द्रीय स्थान लैत। एहि बदलावसँ पुरूष सैनिकक स्मृतिप्रेषण दृश्यमान, माएक दीर्घ सेवा आ भय आंशिक रूपेँ पृष्ठभूमिमे। ई केवल विषय-सूचीगत अभाव नहि, कथावाचकक ध्यान-वितरणक प्रश्न अछि। स्त्रीक राति-सभाक स्मरण एक समतोल सामुदायिक आवाज जोड़ैत, पर नामित माएक निजी कथ्य पूर्ण विकसित नहि करैत।

कथात्मक उपलब्धि : युद्धकेँ नामक अन्तरंग इतिहास बनाबब

अध्यायक श्रेष्ठ उपलब्धि राष्ट्रीय युद्धक पैघ बाह्य घटनाकेँ गामक घर, चौपाल, राति-सभा, घायल हाथ आ बच्चाक कान धरि आनि देब अछि। मुख्य घटना युद्धक्षेत्रमे दूर अछि; पाठक ओकर परिणामक मार्फत युद्ध अनुभव करैत। एहि अप्रत्यक्षतासँ भय, प्रतीक्षा आ स्मरणक वातावरण बनैत अछि। मुदा युद्धक निर्णायक राजनीतिक-सैन्य घटनाक अभाव आ मृत सहचरक नामक अनुद्घाटन सीमा बनैत अछि। अध्याय राजनीतिक इतिहासक सम्पूर्ण पुनर्लेखन नहि, स्मृति-लोकक सीमित आ भावपूर्ण विस्तार अछि; एहि रूपमे ओकर मूल्य ठीक बुझल जा सकैत अछि।

स्रोत-संकेत आ अगिला सम्बन्ध

मूल अध्याय [–५२]मे १९६२–१९६५क सीमासङ्घर्ष, विजयकुमारक घाव, हरिवंश–बूढ़बाक संवाद आ बच्चासभकेँ सुनाओल स्मृति प्रत्यक्ष आधार छथि। योजनामे ४९४ शब्द-एकक तथा २३.१ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेद अंकित अछि; ई स्वतन्त्र घटनाघनत्व नहि। गीतक सोहर आ समदाउनक दू ध्वनि स्रोतक महत्त्वपूर्ण अंग अछि, मुदा प्रत्येक गीत-पंक्तिक घटना न बनाओल जाए। अगिला [–५१]मे युद्धक सीमारेखासँ कथा कृषि-क्षेत्रक बीया, बाजारक नव वस्तु आ पुरान ज्ञानक लोपसम्भावना दिस मुड़त। दुनूमे ‘जे नष्ट भऽ सकैत, तकर स्मृति/विकल्प कोना बाँचत?’ प्रश्न निरन्तर अछि।

युद्धक पाछाँ छूटल कृषि-समय

हल आ जाल छोड़ि युवा सैनिक बनैत छथि, मुदा उनकर अनुपस्थितिमे खेतक रोपनी, माछक धन्धा आ आश्रित परिवारक दैनिक जीवन केना चलैत, कथा नहि बतबैत। एहि रिक्तिक महत्त्व विशेष अछि, कारण कहानी राष्ट्रीय दायित्व आ स्थानीय जीविकाक दोहरा दबावक संग आरम्भ होइत अछि। मातृप्रतीक्षा त प्रत्यक्ष अछि, आर्थिक उत्तरदायित्वक पीढ़ीगत स्थानान्तरण अदृश्य। तें ‘गामक प्रत्येक मनुष्य समान बलिदान देलक’क निष्कर्ष असिद्ध। देहक भूमिका बदललाक सामाजिक लागतक एहि अपूर्णताक बीच कथा नाम-स्मरणकेँ केन्द्रीय उपलब्धि बनबैत अछि।

बिदाइ आ वापसीक बीच कथावाचकीय रिक्ति

विजयकुमारक तिलक-पश्चात् गद्य सीधा युद्ध आ महीनाक चिकित्साक समेकित विवरण धरि पहुँचैत अछि। ई लोप कथाक गति तेज करैत, मुदा घायल होएबाक सटीक दृश्य, चिकित्सालयक संवाद आ परिवारक प्रतिक्रिया नहि दैत। पाठक असम्पूर्ण यात्रा केँ परिवारक प्रतीक्षाक माध्यमे भरैत अछि। एहि रिक्तिमे बिदाइ-समदाउनक भविष्यभय आ घायल वापसीक परिणामबीचक सम्बन्ध प्रबल होइत, युद्ध-अनुभवक स्वतन्त्र दृश्य कम। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिएँ ई व्यूह कथाकारक अनुशासन आ चयनक संकेत अछि, एतिहासिक तथ्यक अभावक सूचना नहि।

युद्धस्मृतिक सम्भावित विरासत आ अनुत्तरित प्रश्न

बच्चा सभ घायल सैनिकक कथा सुनैत छथि, मुदा ओ विद्यार्थी भविष्य मे शान्ति, राष्ट्र, स्मृति अथवा युद्धक नैतिकता विषयमे कोन निर्णय लेत, पाठ नहि कहैत। विजयकुमारक कथा केवल देशभक्तिक मूल्य गढ़ैत कि हिंसाक भय सेहो सिखबैत, तकर पाठकीय प्रश्न खुलल। बूढ़बाक वाणी मृत्यु-पश्चात् नाम सुरक्षित राखबाक, युद्धक कारण-समीक्षा नहि। एकर कारण अध्याय सम्पूर्ण राजनीतिक विमर्शक बदला नश्वर देह आ दीर्घ नामक स्मृतिरूप कथा बनैत अछि। एतय अनुत्तरित प्रश्नक पहिचान आलोचनात्मक परिशुद्धता अछि, मूलमे नहि रहल भाषणक पुनर्निर्माण नहि।

प्रकरण ५० | मूल अध्याय –५१ — हरित क्रान्तिक बीया

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

नव बीया : बाजारक वस्तु आ गामक कथात्मक मोड़

‘हरित क्रान्तिक बीया’ आरम्भमे अधिक उपजाऊ किसिम आ रासायनिक खादक बोरा गाम पहुँचना बतबैत अछि। राष्ट्रीय कृषिपरिवर्तन एतय नीतिगत भाषणक बदला खेतक झुकल धानबाली आ खरिहानक अन्न-ढेरक दृश्य बनैत अछि। नव बीया बाजारसँ आबैत अछि, किन्तु ओकर वास्तविक विक्रेता, मूल्य, अनुदान, ऋण अथवा खरीदारक कहानी नहि देखाइत। एहि चयनसँ उत्पादकता दृश्यात्मक उपलब्धि बनैत; बजारक शक्ति-संरचना

अपूर्ण रहैत। पाठक अन्नक वृद्धि तात्कालिक रूपेँ अनुभव करैत अछि, मुदा बदलावक आर्थिक वितरणक हिसाब नहि पबैत। नव वस्तुक प्रवेश सामाजिक घटनाक बीया, स्वतः पूर्ण प्रगतिक निष्कर्ष नहि।

झुकल बाली आ दोहरा अर्थक छाहरि

धानक बाली 'एतेक भारी' भऽ झुकैत अछि—ई दृश्य समृद्धिक प्रत्यक्ष चिह्न अछि। तुरन्त पछाति कथावाचक कहैत छथि जे ओहि नव उपजक छाहरिमे पुरान ज्ञान चुपचाप हेराय लागल। एकहि कृषि-बिम्बमे भरल अन्न आ ओझराइत परम्पराक विपरीत गति मिलैत अछि। 'छाहरि' केवल गाछक प्राकृतिक परिणाम नहि, उपलब्धिक अन्तर्गत अदृश्य नुकसानीक आख्यानात्मक युक्ति बनैत अछि। कथा कहियो नव बीयाकेँ सर्वथा व्यर्थ घोषित नहि करैत; भूख घटब ओकर स्वीकार्य उपलब्धि अछि। आलोचनात्मक दृष्टिएँ रचना विकासक लाभ आ विकल्प-ह्रासकेँ एकसंग रखैत, मुदा पुरान ज्ञानक हानि कोन विशिष्ट किसानपर घटल से अनेक स्थानपर सारांशमे छोड़ैत।

सुनयना : उत्तराधिकारिणीक स्वतन्त्र प्रश्न

हरिवंशक बेटी सुनयना बूढ़बासँ प्रश्न करैत छथि: नव बीयासँ अन्न बढ़ैत, पुरनका बीया लुप्त भऽ रहल, तकर अर्थ की? एहि प्रश्नसँ अगिला पीढ़ीक स्त्री उत्तराधिकार प्रकट होइत अछि। हुनकर भूमिका केवल नाम-अनुष्ठानक ग्रहण नहि; संकटक विशिष्ट रूप पहिचानब अछि। बूढ़बाक उत्तर 'पुरान विकल्प खोएब'क चिन्ताकेँ शब्द दैत अछि, मुदा निर्णायक क्रिया सुनयना स्वयं करैत छथि—बीया संग्रह आ निरन्तर रोपनी। तेँ प्रश्न–संवाद–कर्मक सम्पूर्ण वक्र हुनकर पात्रकेँ पूर्वक केन्द्रीय स्त्री-नेतृत्वसँ जोड़ैत। हुनकर निजी जीवनक विस्तार नहि, मुदा स्पष्ट निर्णयक अधिकार दृश्यमान अछि।

नव लाभक वैधता : अनावश्यक प्रतिरोधक अभाव

बूढ़बा स्पष्ट स्वीकारैत छथि जे अधिक अन्न आ भूखसँ बचाव नीक अछि। एहन आरम्भसँ कथा 'नव विज्ञान बनाम पुरान परम्परा'क कठोर द्वैत तोड़ैत अछि। पात्रक चिन्ता नव साधनक निषेध नहि, पुरान बीयाक पूर्ण विलुप्ति अछि। एहि दोसर विकल्पसँ संघर्ष उत्पादकता आ टिकाऊ विकल्पक बीच संसाधन-वितरणक होइत अछि। मुदा कथा नव बीयाक वास्तविक उपजक आँकड़ा, खादक दीर्घ मृदा-प्रभाव अथवा विविध बीयाक तुलनात्मक कृषि-परीक्षण नहि दैत। ई दावासभ पात्रक अनुभव आ लोक-स्मृतिक सीमा भीतर रहैत; वैज्ञानिक प्रयोगशालाक निष्कर्ष रूपमे स्वीकार नहि करब उचित।

बीया आ स्मृतिक रूपक : अन्नसँ अधिक

बूढ़बाक कथन बीयाकेँ गामक स्मृति-संग्रह मानैत अछि—पुरखा, अकाल, बरखा आ माटिक अनुभव ओहि छोट दानामे सुतल अछि। ई प्रत्यक्ष अक्षरांकित इतिहास नहि; चयन आ संरक्षणक दीर्घ व्यावहारिक ज्ञानक काव्यात्मक रूपान्तरण अछि। एक पीढ़ी जे बीया बचबैत अछि, ओ भविष्यक सम्भावनाक एक भाग बचबैत अछि। नाम-लेखनक मूल विषय एतय देहधारी कण्ठ वा पातक बदला जननक्षम पदार्थमे अनूदित होइत अछि। पदार्थक निरन्तरता आ सामाजिक स्मृतिक निरन्तरता एकाकार देखाइत, पर दूनूकेँ शाब्दिक समान वस्तु मानब अतिशयोक्ति हएत।

रत्नाक वंशज : विशेषज्ञताको सामुदायिक हस्तान्तरण

रत्नाक वंशज पुरान माटि-बिज्ञान, बीयाक विविधता आ रोग-प्रतिरोधक लोकज्ञान सम्हारैत आबि रहल छथि। कथा एहि ज्ञानक सम्मान करैत अछि, मुदा कोन नामित वंशज कोन किसिम पहचानैत छल, कोन परीक्षासँ ज्ञान प्राप्त भेल, से विस्तार नहि। एहि प्रकार विशेषज्ञता सामूहिक वंश-चिह्न बनैत, स्वतन्त्र शोधकर्ता-पात्र कम। सुनयनाक सहयोगसँ ई परम्परा केवल स्मृतिमय उत्तराधिकार नहि, नव भंडार-स्थापनक क्रियाक सहभागी बनैत अछि। पूर्वक जड़ी-बूटी, जल-परिचय आ आपदाक प्रसंगसभसँ एहि ज्ञानक सम्बन्ध अछि, लेकिन कतेको रचनात्मक जोड़ कथावाचकक दावासँ बनैत, स्वतन्त्र विस्तृत दृश्यसँ नहि।

आजीक याद : स्मृतिक भीतर खोएल वस्तु

सुनयनाकेँ आजीक कहल पुरनका धानक किसिम मोन पड़ैत अछि—कम उपज, मुदा बाढ़िपानिमे नहि सड़बाक स्थानीय परिचय। स्मरणक ई छोट प्रत्यावर्तन वर्तमान कृषिविकासक प्रश्नकेँ एक निजी पारिवारिक आवाज दैत अछि। अतीतक आजीक सीधा संवाद अध्यायमे नव दृश्य रूपेँ नहि घटैत; ओ सुनयनाक मानसिक पुनरावृत्ति थिक। ‘आब गामक कोनो खेतमे नहि’ भेटबक कथन आ बादमे पुरान बीयाक भंडार बनबक निर्णयक बीच हल्का तनाव अछि। सम्भवतः एक विशिष्ट किसिम पूर्ण लुप्त भऽ गेल, मुदा आर पुरान किसिम बाँकी छल; पाठ एतय प्रकारक सीमा स्पष्ट नहि करैत। एकरा ध्यानमे राखलासँ आलोचनात्मक पठनीयता बढ़ैत अछि।

बाढ़ि-सहनशील धान : जल-इतिहासक पुनःप्रवेश

पुरान बीयाक मूल्य बाढ़िक पानि सहबाक अनुभवसँ निर्धारित होइत अछि। एहिसँ कृषि-अध्याय केबल हरितक्रान्तिक आर्थिक विवरण नहि रहैत, उपन्यासक दीर्घ जलकथासँ मिलि जाइत अछि। अध्याय [–५९]क बाढ़ि आ पूर्वक अकालसभ कृषि विकल्पक कथात्मक पृष्ठभूमि बनैत छथि। सुनयना भविष्यक सम्भावित संकट ध्यानमे रखि पुरान किसिमक रखरखाव करैत छथि। मुदा गद्य ई सिद्ध नहि करैत जे हर पुरान बीया नवक तुलना मे सर्वथा अधिक सहनशील अछि। एक विशिष्ट स्मरणक आधारपर प्रस्तावित बहुविकल्पी संरक्षण उचित, सम्पूर्ण परम्पराक अचूकता घोषित करब अनुचित।

माटिक हाँड़ी : अभिलेखक नव रूप

सुनयना चन्ना गाछीक कोनामे माटिक हाँड़ीमे पुरान बीया बचाबैत छथि। छाया-पंजी, ताड़पत्र, मुद्रित पुस्तक अथवा बूढ़बाक स्मृति जकाँ ई सेहो एक सहेजबाक माध्यम अछि, किन्तु एकर विशेषता पुनरुत्पादनक क्षमता। कागज पढ़ल जाइत, बीया रोपल जाएत; एहि फरकसँ स्मृति भविष्यमुखी जैविक क्रिया बनैत अछि। हाँड़ी निजी/सामुदायिक संग्रहक छोट द्रव्यात्मक आकार दैत अछि। मुदा आर्द्रता, संरक्षण-पद्धति, बीयाक कुल मात्रा वा अलग-अलग किसिमक सूची नहि; एहि साहित्यिक संकेतकेँ तकनीकी बीज-बैंकक पूर्ण विवरण मानब सही नहि।

मुट्ठी भरि रोपनी : आवर्त्त क्रियासँ संरक्षण

हर रोपनीक समय सुनयना हाँड़ीसँ मुट्ठी भरि बीया निकालि खेतक कातमे छोट टुकड़ीमे पुरनका धान रोपैत छथि। ई क्रिया निर्णायक अछि, किएक तँ बीया केवल बन्द भंडारमे रुकल नहि; नव जीवन-चक्रमे चलैत अछि। ‘हर

रोपनी’ एक पुनरावृत्तिगत कथन, जकर अन्तर्गत अनेक वर्षक समानधर्मी श्रम संक्षिप्त रूपमे दर्ज अछि। आजी, सुनयना आ अगिला पीढ़ीबीचक ज्ञान-सम्बन्ध एहिमे संकेतित, मुदा सुनयनाक उत्तराधिकारी वास्तवमे एहि रोपनीकेँ जारी रखलनि कि नहि, एतय नहि। सांस्कृतिक प्रतिज्ञा व्यवहारिक रूप पबैत अछि, ओकर भविष्य अनिर्णीत रहैत।

चन्ना गाछी : स्मृतिस्थानसँ बीजस्थल

चन्ना गाछीक एक शांत कोन पुरान बीयाक भंडार बनैत अछि। ई स्थल पहिले कथा, कबड्डी, मृतकक नाम, राति-सभा आ प्राकृतिक आपदाक अनुभवसँ भरल छल। आब ओ किसानक भविष्यक विकल्प सुरक्षित रखबाक काम करैत अछि। कथास्थलक ई नव प्रयोजन दीर्घ उपन्यासक संरचनात्मक उपलब्धि—एकहि भूगोल बारम्बार बदलैत मानवीय आवश्यकताक प्रति उत्तरदायी होइत अछि। तथापि हाँड़ी ककर स्वामित्वमे, स्त्रीसभक संस्था केना रखवार करैत, कृषकसभकेँ बीया केना बाँटल जाएत, ई समस्त सामाजिक क्रियाक विवरण नहि। गाछी उपयुक्त प्रतीकस्थल बनैत, पूर्ण संस्थागत योजना नहि।

नव खेतक कात : केन्द्र आ किनारक दृश्यरचना

पुरनका धान नव खेतक कातमे छोट टुकड़ीमे रोपल जाइत अछि। एहि स्थानगत विवरणमे वर्तमानक पैघ उत्पादन मुख्य भाग घेरैत, स्मृतिक किसिम किनारी स्थान पबैत अछि। किनार तुच्छता मात्र नहि; बचाओल विकल्पक न्यूनतम जीवित क्षेत्र सेहो बनैत अछि। ई दृश्य विकासक असमान जगह-वितरणक सौन्दर्यात्मक नक्शा बनैत। लेखक आंचलिक माटि, हाँड़ी आ धानबीया द्वारा बहसकेँ दृश्य बनबैत छथि। तखन प्रश्न बचैत: छोट टुकड़ी दीर्घकालमे विविधता बचएबाक लेल पर्याप्त होएत कि नहि? कथा कोई संख्यात्मक प्रमाण नहि दैत। प्रतीक सफल, व्यवहारिक क्षमता अनिर्णीत।

गीतक ‘पुरान बीया बाढ़िमे नहि सड़ाय’ : सार्वीकरणक प्रश्न

लोकगीत पुरान बीयाकेँ बाढ़िमे अडिग रूपमे गबैत अछि। मुख्य गद्य एक पुरनका धानक बाढ़ि-सहिष्णु स्मरण दैत अछि, मुदा सभ स्थानीय बीयाक समरूप प्रदर्शन नहि। गीतक सामूहिक अतिशयोक्ति श्रोता लग संरक्षणक भाव पहुँचबैत, वैज्ञानिक सार्वभौमिक दावाक प्रमाण नहि बनैत। एहि सीमाकेँ स्पष्ट राखब साहित्यिक मूल्य घटाएब नहि; उलटे गीतक काव्यात्मक काम आ कथावस्तुक अनुभवगत तथ्य अलग होइत अछि। नव बीयाक उच्च उपज सेहो कथामे देखाइत अछि, तेँ एकर प्रति पूर्ण अविश्वास गीतक आशय नहि मानल जाए।

उपज आ विकल्प : तात्कालिक समय-भविष्य समय

नव बीया वर्तमानक भूख घटबैत; पुरान बीया भविष्यमे सम्भावित अनुकूलनक साधन रूपमे रखल जाइत। एहि दोहरा समय-बोधमे कथाक वास्तविक संघर्ष अछि। पूर्ववत् अत्यन्त दीर्घजीवी बूढ़बा अतीत स्मरण करैत छथि, मुदा हुनकर सलाहक लक्ष्य अतीतमे लौटब नहि, सम्भावित भविष्यक हानि घटाएब अछि। सुनयना समयक एहि परिप्रेक्ष्यकेँ क्रियामे बदलैत छथि। एक विशिष्ट अन्न-वर्षक सफलता पर कादम्बरी प्रश्न उठबैत अछि जे

दीर्घकालिक स्मृतिपरम्पराक अनुपस्थिति सँ नव संकट आगाँ केना बढ़ि सकैत अछि। पर भविष्यक नव अकाल एतय प्रत्यक्ष घटित नहि, केवल आशंका अछि।

गद्यमे खादक नाम, मुदा माटिक प्रतिक्रिया कहाँ?

अध्याय रासायनिक खादक बोरा-बोरा आगमन स्पष्ट कहैत, पर ओकर वास्तविक पर्यावरणीय परिणामक दृश्य नहि रचैत। भूमि-क्षरण, पानी प्रदूषण, ऋणबोझ वा जैविक रोग निश्चित रूपेँ घटल—एहन घटनासभ जोड़ब स्रोत-विरुद्ध हएत। रचना अपन केन्द्र बीयाक लोपसम्भावना बनबैत अछि, खादक विस्तृत सामाजिक-पर्यावरणीय विवेचन नहि। एहि कथन-वितरणसँ आलोचनात्मक सीमा उत्पन्न होइत: हरित क्रान्तिक अनेक सम्भावित विवाद एक प्रतीक—पुरनका बीया—मे संकुचित भऽ जाइत छथि। मुदा कादम्बरीक छोट प्रकरणक वास्ते इएह चयन स्पष्ट भावक केन्द्र सेहो बनबैत अछि।

अन्नक ढेर आ अदृश्य किसान

किसान नव उपज देखि हर्षित छथि, मुदा केकर खेत कतेक बढ़ल, केकरा नव बीया उपलब्ध नहि भेल, बेसी अन्नक लाभ कोना बाँटल, गद्य नहि बतबैत। एक दृश्य साझा समृद्धिक उत्सव बनैत अछि। पूर्वक भूमि-सुधार अध्याय [-५४]मे भूमिहीन परिवारक नव अधिकारक उल्लेख छल, जकर बाद बढ़ल उपजक कथा अबैत अछि। एहि क्रमसँ समाजक रूपान्तरणक सामूहिक कथा बनैत, मुदा विशिष्ट लाभार्थी परिवारक यात्रा नहि। समीक्षामे कृषिउन्नतिक सत्यापन बाहरी आर्थिक आँकड़ासँ अलग रखब चाही, किएक तँ उपन्यासक वाक्य कथा-स्थलक सामान्यीकृत दृश्य अछि।

सुनयनाक कर्म आ बूढ़बाक वचनक अनुपात

बूढ़बा सूक्तिमय ढङ्गे स्मृति-बीयाक अर्थ बुझबैत छथि; सुनयना वास्तविक भंडार बनबैत आ रोपनी करैत छथि। एहि क्रममे कथाक नाटकीय ऊर्जा बौद्धिक उपदेशसँ वास्तविक काम दिस बढ़ैत अछि। बीया खोजब, हाँड़ी राखब आ छोट खेत तैयार करब एक संक्षिप्त कार्यानुक्रम अछि। तें पात्र केवल गुरु-वचनक निष्क्रिय श्रोता नहि बनैत। तथापि रत्नाक वंशजक स्वीकृति, विवाद, सहमति आ श्रमक प्रत्यक्ष बहुभाषिक संवाद दैत तखन सामूहिक निर्णयक नाट्यविस्तार आओर जीवित होइत। वर्तमान पाठ निष्कर्षक गति तेज राखैत अछि, प्रक्रियाक विस्तृत बहुस्वरता कम।

पुराने ज्ञानक ‘हेरायब’ : कथावाचक आ पात्रक दावा

कथावाचक कहैत छथि जे पुरान ज्ञान चुपचाप हेराए लागल, सुनयना सेहो पुरान बीयाक कमी कहैत छथि। एतय कथनाधिकार दू स्रोतसँ मिलैत—सर्वदृष्टि-जेहन वाचक आ स्थानीय अनुभवसँ बोलैत पात्र। मुदा ‘हेरायल’क मात्रा, क्षेत्र आ समय निर्दिष्ट नहि। आजीक याद एक विशेष किसिमक अभाव देखबैत, कुल विविधताक वास्तविक गणना नहि। तें आलोचक पूर्ण जैविक विलुप्तिक प्रमाण एहि अध्यायसँ नहि निकालथि। ई ‘हानिक अनुभव’केँ आंशिक समाजगत तथ्य रूपमे उपस्थित करैत अछि; समस्त पुरान बीया समाप्त भऽ चुकल छथि, एहन निश्चित निष्कर्ष नहि।

माटिकेँ ‘चिन्हब’ : मानवेतर स्मृति आ रूपक

गीत कहैत अछि जे पुरान बीया माटि चिन्हैत अछि। बीया चेतन मनुष्यक जकाँ स्मरण करैत अछि—ई काव्यात्मक मानवीकरण अछि। गद्यमे एहि मानवीकरणक व्यावहारिक आधार स्थानीय किसिम आ खास जलपरिस्थितिसँ दीर्घ परिचय थिक। एहि दोनू स्तरक बीच कथा प्रकृति आ संस्कृतिक सम्बन्ध बनबैत। बीया पात्रक समान संवाद नहि करैत, मुदा ओकरा बचएबाक क्रियासभ मानवेतर वस्तुकेँ कथानकक लक्ष्य बनबैत अछि। एहि माध्यमे पर्यावरणीय आख्यान केवल बाढ़िक विनाश नहि, भविष्यक जीवन-सम्भावनाक संरक्षण सेहो बनैत अछि।

उपलब्धि आ सीमाक संयुक्त निर्णय

‘हरित क्रान्तिक बीया’क विशिष्ट उपलब्धि एहन समाधानक दृश्य रचब अछि जतय नव अन्न बढ़ैत, पुरान बीया सेहो जीवित राखल जाइत। सुनयनाक एक छोट माटिक हाँड़ी आ पुनरावर्तित रोपनीक प्रयोग दीर्घकालीन कथा-भावक सबसँ ठोस क्रिया अछि। मुदा कृषिउपजक सामाजिक बँटवारा, खादक परिणाम, विविधता-गणना, बीयाभंडारक संस्थागत उत्तरदायित्व आ खास लुप्त किसिमक पुनर्लाभ नहिं खुलैत। गीतक सर्वसाधारण बाढ़ि-सहिष्णुताक दावा सीमित गद्यमूलक उदाहरणसँ पैघ अछि। पाठभेद देखलाक बादे एहि अध्यायक पर्यावरणीय स्मृतिरचना मूल्यवान रूपमे उपस्थित रहैत अछि।

त्रयीगत सम्बन्ध आ स्रोतसीमा

अध्याय [−५१] पूर्वक अकाल, बाढ़ि, रत्नाक ज्ञानवंश, चन्ना गाछीक स्मृतिभूगोल आ [−५४]क भूमि-परिवर्तनक बाद कृषि-प्रश्न उठबैत अछि। नव साधनक आलोचना [−५३]क प्रकाश-विवादसँ समान प्रश्न पूछैत: नव उपलब्धि आयल तँ पुरान विकल्प केना बचत? योजनामे एहि अध्याय लेल ४९७ शब्द-एकक, २३.१ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेद अंकित अछि; कोनो अंशकेँ वास्तविक घटनाक निश्चित गणना नहि मानू। मुख्य स्रोत गद्यक सुनयना–बूढ़बा संवाद, आजीक धानस्मृति, रत्नाक वंशजसँ सहयोग आ चन्ना गाछीक भंडार अछि। आगाँ [−५०]मे बोलबाक सार्वजनिक अधिकारपर संकट एहि स्मृतिरक्षा-प्रविधिक सामाजिक परीक्षा लेत।

रोपनीक दोहरा क्षेत्र : कथाभूमिक सूक्ष्म विभाजन

सुनयनाक खेतमे नव बीयाक व्यापक रोपनी आ पुरान धानक छोट टुकड़ी एकहि भौतिक भूगोलमे सहअस्तित्व बनबैत अछि। कोनो औपचारिक सम्मेलनक समाधानक बदला खेतक मेड़पर कएल छोट प्रयोग रचनाकेँ वस्तुगत परिणति दैत अछि। मुदा नव बीया आ पुरनका किसिम एक-दोसराक परागण अथवा जैविक परिणामक अध्ययन पाठमे नहि। ई वास्तविक रोपनीक कथात्मक आयोजन, कृषि-वैज्ञानिक अनुसंधानक विस्तृत प्रतिवेदन नहि। परम्परा-रक्षाक कथा अपन सबसे विश्वसनीय रूप तखन पबैत, जखन ओ प्रतिवर्षिक श्रममे रूपान्तरित होइत अछि।

हेरायल किसिमक कथात्मक असमाधेयता

आजीक यादमे एक एहन धानक किसिम अछि जे गामक कोनो खेतमे आब नहि भेटैत। सुनयना बादमे आर पुरान बीया बचबैत छथि; मुदा विशिष्ट लुप्त किसिम स्वतः फेर भेटल, एहन कथावाक्य नहि। एहि कारण समाधान पूर्ण

पुनर्प्राप्ति नहि, शेष उपलब्ध विविधताक रक्षाक प्रयत्न अछि। गीतक गाम-बचावक आशा आ घटनाक सीमित संरक्षण अलग रहैत अछि। ई असमाधेयता ही कथा-नैतिकता गाढ़ करैत: जखन किछु वस्तु वास्तवमे हेराए गेल, तखन बाँचल चीजक रक्षाक अर्थ अधिक गम्भीर बनैत अछि।

पुरान बीयाक स्वामित्व आ सामुदायिक पहुँच

भंडार सुनयना आ रत्नाक वंशजक सहायतासँ बनैत, मुदा एकर बीया केवल ओ परिवार उपयोग करैत कि गामक सभ किसान? मूल घटनामे साझा वितरणक स्पष्ट नियम नहि। चन्ना गाछी सामुदायिक स्मृतिस्थल अछि, तथापि सामुदायिक स्थानपर रखल संग्रह अनिवार्यत: समान पहुँचक संस्था बनि जाए, से निश्चय नहि। भूमि-सुधारक तुरन्त पछिला अध्याय होएबाक कारण ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण: जे किसान नव जमीन पओलक, ओकरा बीयाक विविधतामे हिस्सा भेटैत की? आलोचना सम्भावना उठबैत, काल्पनिक वितरण-संकट नहि जोड़ैत।

प्रकरण ५१ | मूल अध्याय –५० — आपातकालक अन्हार

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

१९७५क ऐतिहासिक तिथि : राष्ट्रिय घटना, स्थानीय छाया

अध्याय [–५०] स्पष्ट रूपेँ १९७५क राष्ट्रीय आपातकालक उल्लेख करैत अछि। दिल्लीमे घोषित स्थिति चन्ना गाछीक राति-सभा धरि प्रशासनिक निगरानी रूपमे पहुँचैत। कथावाचक राष्ट्रीय सत्ताक विस्तृत केन्द्रीय प्रक्रियाक बदला स्थानीय ‘बिनु अनुमति कोनो सभा नहि’क हुकुम चुनैत छथि। एहि चयनसँ राजनीतिक इतिहासक व्यापक घटना एक छोट संस्था पर आएल संकटमे अनूदित होइत अछि। तिथि विशेष अछि, मुदा गाममे आदेश पहुँचबाक दिन, जारी करनिहार विशिष्ट अधिकारी वा गिरफ्तारीक वास्तविक सूची नहि। कथा आपातकालक स्थानीय स्मृतिबद्ध परिणाम प्रस्तुत करैत, ऐतिहासिक शासन-अभिलेख नहि। एहि सीमा भीतर एहि अध्यायक राजनीतिक तनाव निर्मित होइत अछि।

दीप जराबयवाली न्यायसभा : दृश्यमे परिवर्तन

स्त्रीसभक राति-सभा पहिने चन्ना गाछीक कातमे दीप जराकऽ न्याय-विषयक चर्चा करैत छल। नव प्रशासनिक प्रतिबन्ध एकर सार्वजनिकता संकटमे डालैत अछि। रचनामे संस्थाक स्वरूप नष्ट नहि, ओकर इन्द्रियगत उपस्थिति बदलैत अछि: दीप बुता देल जाइत, स्वर नीचाँ कएल जाइत, क्रमश: फुसफुसाहट आ आँखिक संकेत रहि जाइत। एहि परिवर्तनक असर कथानकक दृश्य-व्याकरणपर अछि। पहिने उजासमे देखाइत सामूहिक न्याय आब अन्हारमे, देहक न्यूनतम चिन्हसँ चलैत अछि। संस्था जिएब आ ओकर सार्वजनिकता समान बात नहि—ई अध्यायक मूल तनाव बनैत।

सुनयना : बीया-संरक्षणसँ सभा-संरक्षण

पिछला अध्याय [−५१]मे सुनयना पुरान बीया बचाबाक निर्णय करैत छलीह। [−५०]मे वैह पात्र राति-सभाक निरन्तरता लेल बूढ़बाक सलाह माँगैत छथि। दुनू कथामे जोखिमक वस्तु बदलेत—पहिने जैविक विविधता, आब सामूहिक बोलबाक अधिकार। मुदा क्रियाक रूप समान: नव दबावक बीच अतीतक उपयोगी संस्था अपन रूप बदलिए बचाउ। एहि समानता सँ सुनयनाक चरित्र एकटा आवर्ती रक्षक-भूमिकामे बनैत अछि। एतय हुनकर डर स्पष्ट, पर कायरता नहि; सावधान संगठन आ सभा जारी रखबाक कर्म आगामी दृश्य बनैत अछि। केबल उपदेश सुनि निष्क्रिय रहनिहार पात्रक अपेक्षा हुनकर सक्रियता अधिक दृश्यमान अछि।

‘राजनीतिक सभा नहि, न्यायक सभा’ : वर्गीकरणक जोखिम

बूढ़बा राति-सभाकेँ न्यायक सभा कहैत, राजनीतिक सभा नहि। ई पात्रक आत्मरक्षात्मक भेद अछि, कथामे सार्वजनिक सभाक अधिकारक निश्चित विधिक मान्यता नहि। सामाजिक न्यायपर बहस आ सत्ता-विरोधक बीच सीमा सहज नहि होइत; प्रशासन एतए सभा पर संदेह करिते अछि। तेँ बूढ़बाक वाक्यकेँ शासनद्वारा स्वीकार्य कानूनी सुरक्षा रूपमे नहि पढ़ब चाही। कथात्मक अर्थमे ओ स्त्रीसभक उद्देश्य याद दिआबैत छथि आ सावधानीक नैतिक अनुमति दैत छथि। मुदा इतिहासक जटिल राजनीतिक वर्गीकरणक सरलीकरण एतय रचनाक सीमा सेहो अछि, जकर आलोचनामे स्पष्ट उल्लेख आवश्यक।

बूढ़बाक वाणी : दीर्घ भविष्य-स्मृतिक चेतावनी

बूढ़बाक मुख्य सलाह एक संस्था बन्द भऽ गेलाक बाद पुनर्जीवनक कठिनाईपर आधारित अछि। ओ अन्हारक कालकेँ अस्थायी मानैत छथि, मुदा संस्था-ह्रास दीर्घकालिक होएबाक सम्भावना देखबैत छथि। एहि दू काल-स्तरमे पात्रक दीर्घ स्मृति कथाक वर्तमान संकटसँ जुड़ैत अछि। तथापि बूढ़बाक भविष्यवाणी आपातकाल कखन समाप्त होएत, तकर सटीक तिथि नहि दैत; ओ अनुभवक सामान्य लय बतबैत छथि। ‘पूरा पीढ़ी लागि जाइत’क कथन एक अतिशयोक्तिपूर्ण सम्भावना, यान्त्रिक पुनर्स्थापन-अवधि नहि। पात्रक उपदेशक मौलिक सार संस्था निरन्तर चलाएबाक महत्व अछि, चमत्कारिक रक्षाक आश्वासन नहि।

सिपाहीक निकट आगमन : वास्तविक दृश्यात्मक संकट

अध्यायक अत्यन्त सघन क्षण ओ अछि जखन थानाक एक सिपाही चन्ना गाछी लगसँ राति बीतैत अछि। स्त्रीसभ साँस रोकि लैत छथि; पोखरिक हल्की ध्वनि मात्र सुनाइत अछि। बाह्य क्रियाक संख्या न्यून—सिपाही अबैत, किछु नहि देखैत, आगाँ बढ़ैत—मुदा जोखिमक सम्भावना अत्यन्त पैघ। कथा दृश्य-अवधि बढ़ाकऽ एक छोट क्षणकेँ भयकारी बनबैत अछि। सिपाही कोनो गिरफ्तारी नहि करैत; ओकर निरीक्षणक परिणाम अघटित आपदाक टलनाइ अछि। एहि ‘जे घटि सकैत छल, मुदा नहि घटल’क संरचनासँ तनाव पैदा होइत अछि। वास्तविक दमन-दृश्य जोड़ि देब मूल पाठ-विरुद्ध हएत।

साँस रोकबाक क्षण : देहक भीतर राजनीतिक अन्हार

सिपाहीक पगध्वनिक सम्भावना स्त्रीसभक देहकेँ अनैच्छिक चुप्पीमे ठामि दैत अछि। साँस धरबक उल्लेख प्रशासनिक आदेशसँ व्यक्तिगत देहक क्रिया धरि पहुँचैत अछि। राजनीतिक नियन्त्रण एतय विचारक अमूर्त निषेध मात्र नहि, शारीरिक गति, कण्ठ आ श्वासक क्षणिक अवरोध बनैत अछि। सिपाहीक दृष्टिमे ओ स्त्रीसभ अदृश्य रहैत छथि; पाठक तखन हुनकर भीतरी भयक निकट पहुँचैत अछि। कथनक एहन आंशिक दृष्टिकेन्द्रण रचनाक सफलता अछि। मुदा प्रत्येक स्त्रीक विशिष्ट मनोभूमि, बिमारी वा पारिवारिक जोखिम अलग नहि खुलैत; अनुभव सामूहिक क्रियामे संक्षिप्त अछि।

पोखरिक हल्की ध्वनि : मौनक ध्वनिमय निर्माण

गामक स्त्रीसभ चुप भेला पर पोखरिक पानिक हल्का आवाज बचैत अछि। प्रकृति एतय मानवीय संवादक स्थान नहि लैत, बल्कि मौनकेँ सुनाएबाक ध्वनिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। बिना एहि ध्वनिक क्षणक सिपाहीक दृश्य केबल घोषणा बनि सकैत छल; पानिक उपस्थितिसँ अन्हारक स्थल संवेदनात्मक रूप पबैत अछि। ई पोखरि जलसमाधिक मूल स्मृतिजगतक निरन्तर स्थल अछि, आब राजनीतिक भयक दृश्य-उपकरण। पानि सिपाहीकेँ रोकैत नहि, स्त्रीसभकेँ सुरक्षा दैत सेहो नहि; ओकर कार्य विशेष रूपेँ कथात्मक वातावरणक निर्माण अछि। मानवेतर सक्रियता आ वस्तुगत कारणबीचक भेद सुरक्षित राखल जाए।

राति-सभाक ‘दुइ बरख’ : अवधि आ संक्षेप

कथा कहैत अछि जे स्त्रीसभ दू बरख धरि गुप्त रूपसँ बैसैत रहलीह। प्रत्येक रातिक सभा विस्तारसँ नहि चित्रित; ‘एक-एक कऽ अबैत, गोलमे बैसैत’ प्रकारक वाक्य समयक विस्तृत आवृत्ति संक्षिप्त करैत अछि। एहि संरचनामे रातिक एक नाटकीय सिपाही-दृश्यक संग दू वर्षक संघर्षक सारांश जोडल गेल। कथावाचक समयक खाँचामे इतिहासक दीर्घ असर राखैत, पाठकीय गति तेज करैत छथि। मुदा दू वर्षक भीतर कोन न्याय-मामला सुनल गेल, कोन निर्णय लागू भेल, कोन सदस्य बाहर भेल, ई विवरण नहि। संस्थाक निरन्तरता प्रमाणित, ओकर कार्यक सामाजिक परिणाम आंशिक रूपेँ अदृश्य।

आँखिक संकेत आ काना-फूसी : कथनमाध्यमक बदली

दीप बुतलाक बाद स्त्रीसभ ‘आँखिक इशारा’ आ ‘काना-फूसी’मे न्याय-बात चलबैत छथि। मौखिकता दबावमे आवि नयका अल्पश्रव्य-आल्पदृश्य रूप ग्रहण करैत अछि। ई केवल भाषा बदलल नहि; सार्वजनिक गवाहीक वैधानिक सामाजिक क्षेत्र संकुचित होइत अछि। पाठककेँ सभाक वास्तविक न्याय-प्रक्रियाक संवाद नहि सुनाओल गेल, तेँ कथावाचक निरन्तरताक विश्वासक आधारपर सब काज पूर्ण भेल कहैत छथि। कथन-प्रविधिक दृष्टिएँ ई सशक्त रूपक, मुदा संस्था-संचालनक क्रमिकता कम दृश्य। एहि विरोधकेँ स्वीकारि कथा-दृश्यक सौन्दर्य आ सामाजिक दावाक साक्ष्यबीच फरक राखब चाही।

कागज नहि, नाम नहि छुटल : अभिलेख-विरोधक सीमा

कथावाचक कहैत छथि जे कोनो कागज नहि लिखल गेल, तैयो कोनो नाम नहि छुटल। पूर्ववर्ती छाया-पंजी, मुद्रण, नोटबुकक अध्याय सभमेक लेखन अभिलेखक जरूरी माध्यम रहल। एतय गुप्ततताक कारण लिखित अभिलेख बाधित, मौखिक-सामूहिक स्मृति प्राथमिक बनैत अछि। एकर कथात्मक अर्थ शक्तिशाली, मुदा वास्तविक सभ नाम शतप्रतिशत सुरक्षित रहल—एहन सत्यापन लेल व्यक्तिगत सूची नहि भेटैत। कथावाचकक भरोसाक वाक्यक सीमाक आलोचना उपयुक्त, विशेषतः जखन कतेको पुरान आपदामे मृतकक नाम अभिलेखमे हेराय चुकल छल। स्मृतिरक्षाक इच्छा आ पूर्णताक दावा अलग मानल जाए।

गीतक ‘दिल्लीमे तोप’ : रूपक आ गद्यक सीमा

लोकगीत कहैत अछि जे दिल्लीमे तोप बाजल, अखबार चुप भेला। गद्य राष्ट्रीय आपातकाल, सभा-निषेध आ पुलिसक निगरानी दिखबैत अछि; दिल्लीमे वास्तविक तोप चलबाक दृश्य नहि। एतय गीतक तोप सम्भवत: दमनकारी सत्ता आ भयक श्रव्य रूपक थिक। एकरा वास्तविक सैन्य गोलाबारीक समाचार बना देब स्रोत-दोष हएत। अखबार चुप कएल जाएब गीतक वाचिक संकेत अछि; गद्य गामक कोनो विशिष्ट अखबारक बंदी अथवा सम्पादकक घटना प्रस्तुत नहि करैत। गीत सामूहिक भयक पैघ छवि रचैत, गद्य छोट स्थानीय दृश्यक अधिक निकट रहैत।

चन्ना गाछी : गुप्त मंचक नव प्रयोजन

गाछी पहिले स्मृति-अनुष्ठान, छाया, परम्परागत सभा आ विविध जनक्रियाक सार्वजनिक स्थल छल। आपातकालमे ओ गुप्त सभास्थल बनैत अछि। स्थानीय भूगोलक ई बदलल प्रयोजन दीर्घ उपन्यासक विशिष्ट रचनात्मक उपलब्धि—एकहि जगह ऐतिहासिक दबाव अनुसार अपन दृश्य-नियम बदलैत अछि। घन अन्हार स्त्रीसभकेँ बाहरी नजरिसँ बचबैत अछि, मुदा तकरा परस्परक आवाज भी धीमा करए पड़ैत अछि। सुरक्षा आ अभिव्यक्तिक सीमा एकहि स्थलसँ उत्पन्न। कथामे गाछीक पौध-रचना, प्रहरी मार्ग अथवा विशेष शरण-स्थलक सूक्ष्म नक्शा नहि, तथापि संकेतरूप स्थानसम्बन्ध कथा लेल पर्याप्त अछि।

स्त्रीसभक बहुस्वरता : सामूहिकता आ व्यक्तिगत अनुपस्थिति

राति-सभाक सदस्य स्त्री छथि; सामान्यीकृत ‘स्त्री सभ’क सामूहिक रूपमे हुनकर साहस, भय आ दीर्घ अनुशासन दर्ज अछि। सुनयना नामित आयोजिका, मुदा अन्य स्त्रीक निजी विवाद, अलग मत वा प्रत्यक्ष संवाद प्रसंगमे कम। एहि कारण कथा स्त्री संस्थाक ऐतिहासिक निरन्तरताकेँ महिमा दैत, ओकर भीतरी बहस विस्तृत नहि खोलैत। राजनीतिक दबावमे निर्णय-मतभिन्नता सम्भव छल, पर मूल पाठमे नहि। आलोचना अनुमानित गुप्त विवाद निर्माण नहि करैत; केवल कथनक चयन चिन्हित करैत अछि। समष्टिगत नायकत्वक सौन्दर्य आ वैयक्तिक दृष्टिकेन्द्रक अभाव दुनू एहि लेखनक अंग अछि।

स्वतन्त्रताक भोरसँ आपातकालक अन्हार

[–५५]मे स्वतन्त्रताक भोर राष्ट्रक नव आशा छल, मुदा [–५०]मे राज्यशक्ति सभाक आवाज संकुचित करैत अछि। एहि दुई दूरस्थ अध्यायक अन्तर दीर्घ उपन्यासक ऐतिहासिक संरचनामे महत्त्वपूर्ण। स्वतन्त्रता एक बार भेटलाक बादो बोलबाक अधिकार स्थायी सुरक्षित रहत, एहन सरल रेखा कथा नहि बनबैत। तिरंगा-वाली सार्वजनिक सभा आ अन्हारमे फुसफुसाबयवाली स्त्रीसभा तुलना माँगैत अछि। मुदा [–५०]मे नागरिक अधिकारक सम्पूर्ण संवैधानिक इतिहास नहि; स्थानीय घेराबन्दीक सीमित चित्र अछि। ई चित्र इतिहासक प्रश्न खोलैत, पूर्ण राजनीतिक निबन्ध नहि बनैत।

उजासक पूर्ववर्ती रूपसभक पुनरर्थांकन

[–५३]मे बिजलीक बल्ब नव विकास छल, मुदा [–५०]मे दीप बुता देब जीवित न्यायसभा बचएबाक व्यावहारिक शर्त बनैत अछि। तें अधिक उजास सदैव अधिक स्वतन्त्रता नहि—एहन कथात्मक विडम्बना निर्मित होइत अछि। चन्ना गाछीक अन्हारमे स्वतन्त्र संवाद बचबाक संघर्ष कएल जाइत, जबकि सरकारी सार्वजनिकता दबावक क्षेत्र बनैत। एहि उलट-संयोजनसँ ‘इजोत’ एक स्थिर सकारात्मक प्रतीक नहि रहैत। प्रसंगक अनुसार ओकर स्थान, दृश्यता आ शासनसँ सम्बन्ध बदलैत अछि। ई सूक्ष्म प्रतीक-परिवर्तन दीर्घ कादम्बरीक आवर्ती छविक रचनात्मक क्षमता देखबैत अछि।

अन्तिम दीप : पुनरागमनक सीमित विजय

आपातकाल समाप्त भेलाक बाद सुनयना पुनः दीप जराकऽ सभा बोलबैत छथि। कथावाचकक ‘कहल जाइत अछि’ संकेतसँ दीपक लौ पहिनेसँ बेसी ऊँच जरबाक वर्णन लोक-स्मृतिक अतिशयोक्ति-स्पर्श राखैत अछि। ई ऊँचाई कथाक भावात्मक विजयचिह्न, प्रयोगशालाक लौ-ऊँचाईक माप नहि। सभा पुनः सार्वजनिक भेल, ई मुख्य अवस्थापरिवर्तन। मुदा गुप्तकालक निर्णयसभक न्यायिक परिणाम अथवा बादक विवादसभक विस्तृत दृश्य नहि। विजय स्वरक पुनरागमनमे अछि; समाजक हर अन्याय मिटल, एहन व्यापक अन्तिम निर्णय नहि।

पाठकक दृष्टिबिन्दु : देखबाक अभाव सँ सहभागिता

अध्याय पाठककेँ आरम्भमे प्रशासनिक घोषणा सुनबैत, मध्यमें सिपाहीक निकटताक तनाव अनुभव करबैत आ अन्तमे पुनर्ज्वलित दीप देखबैत अछि। एहि क्रममे बाह्य आदेश, आतङ्कग्रस्त देह, सामूहिक अभिव्यक्ति आ उत्सवी राहतक चार अनुभूति बनैत। कथावाचक एकाध घटनाकेँ विस्तृत करैत, दू वर्षक संघर्षकेँ सारांशमे समेटैत अछि। चयन प्रभावी, पर पाठक राति-सभाक वास्तविक न्याय-विवाद सुने बिना ओकर स्थायित्वक मूल्य स्वीकार करैत अछि। एहि विश्वास-आधारित कथनाधिकारक आलोचना करब समग्र समीकक्षाक अनुशासन होएत, पात्रक साहसकेँ नकारब नहि।

समग्र मूल्यांकन आ स्रोतसीमा

‘आपातकालक अन्हार’क सबसँ सफल दृश्य सिपाहीक आगमनपर स्त्रीसभक साँस रोकब आ पोखरिक हल्की ध्वनि अछि। राजनीतिक नियन्त्रण देहक चुप्पी बनि अनुभव होइत अछि; नव माध्यमक रूपमे काना-फूसी

सामूहिक अधिकार बचबैत अछि। सीमा—सभा-कार्यक वास्तविक निर्णय, अन्य सदस्यक व्यक्तित्व, लिखित अभिलेख बिना नामरक्षाक जटिलता आ प्रशासनिक प्रक्रियाक संक्षेप। स्रोत मूल अध्याय [–५०]; योजनामे ४६६ शब्द-एकक आ २३.१ प्रतिशत क्रियासूचक अनुच्छेद अंकित अछि। अगिला [–४९]मे आपातकालक अन्हारसँ गाम सूखाक अभावमे प्रवेश करैत, जखन राज्य–समुदाय सहयोगक कथा लिखल जाइत।

गुप्त सभा आ सत्ता-दृष्टिक अन्तर

सिपाहीक दृष्टि चन्ना गाछीमे बैसल स्त्रीसभकेँ पकड़ि नहि पबैत, मुदा पाठक हुनकर भय आ देहगत मौन देखैत अछि। एहि असम दृष्टिमे कथाकार पाठककेँ प्रशासनसँ अधिक जानकारी दैत छथि। प्रशासनक शक्तिक प्रतीक देखय लेल निकसल प्रहरी, पर वास्तविक सामाजिक अर्थदेखा सँ असमर्थ। पाठक गुप्त स्त्री-स्वरक पक्षमे गोपनीय साक्षी बनैत अछि। एहन दृष्टि-विन्यास कथा लेल महत्त्वपूर्ण, किएक तँ न्यायसभाक रक्षा केवल पात्रक गुप्त क्रिया नहि, पाठकीय नैतिक सहभागिता सेहो बनैत अछि। तथापि पाठक सभाक विस्तृत निर्णय नहि जनैत, सूचना-विशेषाधिकार आ सीमा दूनू रहैत।

गद्यक शासन-काल आ गीतक अन्धकार-काल

१९७५क विशेष ऐतिहासिक वर्ष गद्यक कालिक सीमा चिन्हित करैत अछि; ‘अन्हार’ गीतमे व्यापक पुनरावर्तित स्थितिक रूप लैत अछि। तें गीत प्रत्येक युगक दमनपर लागू होएबाक सांस्कृतिक अर्थ बनबैत, गद्य विशेष आपातकालीन आदेशक स्थानीय प्रभावपर टिकैत। एहि दूनू काल-रूपकेँ एकसंग पढ़लासँ प्रसंगक ऐतिहासिक विशिष्टता आ दीर्घ सांस्कृतिक सम्भावना दूनू बचैत अछि। जँ गीतक अन्हार मात्र शाब्दिक राति कहल जाए, तँ राजनीतिक अर्थ हराएत; जँ १९७५क सभ घटना एकदम सांकेतिक कहि देल जाए, तँ ऐतिहासिक संकट मंद पड़त।

प्रतिरोधक परिमाण : नकारात्मक घटना आ वास्तविक टिकाउपन

सिपाही गिरफ्तारी नहि करैत, सभा टुटैत नहि, प्रकाश सार्वजनिक रूपमे अस्थायी बुतैत अछि। संघर्षक परिणाम मुख्यतः जे आपदा नहि भेल—सभाक समाप्ति—तकर टलनाइ अछि। ई नकारात्मक घटनासंरचना आम रोमाञ्चक प्रतिरोधक विजय-दृश्यसँ अलग। काहियो-काहियो काज बने रहलाक अर्थ स्वयं साहसक उपलब्धि होइत अछि। मुदा प्रत्यक्ष गिरफ्तारीक अभावक आधारपर आपातकालक अत्याचार असत्य वा छोट छल, एहन बाहरी निष्कर्ष नहि। कथा एक ग्राम-स्थलपर चुनेल टिकाउपन मात्र बतबैत अछि।

प्रकरण ५२ | मूल अध्याय –४९ — सूखाक बरख

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

बरखा-हीन आकाश : आपदाक उलट रचना

‘सूखाक बरख’मे पानिक प्रचुरता नहि, अभाव कथा उत्पन्न करैत अछि। पूर्वक बाढ़ि अध्यायमे सीमा तोड़ि बढ़ैत पानि संकट छल; एतय पोखरिक पानि घटैत-घटैत महारक कादो दृश्य होइत, माटि फाटि जाइत अछि। एकहि जलविश्वक विपरीत अवस्था दीर्घ कादम्बरीक पर्यावरणीय लय गाढ़ करैत अछि। कथावाचक महीना-भरि कोरा आकाशक उल्लेख करैत, मुदा वर्षक सटीक तिथि अथवा वर्षाप्रमाण नहि दैत। माटिक ‘पियास’ मानवीकरणक भौतिक बिम्ब, जीवधारी व्यक्तित्वक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। जलक अनुपस्थितिहि कथानकक प्रेरक शक्ति बनैत, तें मानवेतर परिवेश केवल सजावट नहि।

अकालक स्मृति : रत्ना, हुलासा आ सावित्रीदेवी

कथा हुलासाक भूख, रत्नाक कालक अकाल आ सावित्रीदेवीक राहत-प्रतिक्षाक प्रसंग याद करैत अछि। ई पुनरावलोकन वर्तमान आपदाकेँ निरुद्देश्य पुनरावृत्ति नहि रहने दैत; पाठक नापि सकैत अछि जे गाम पुरान घटनासँ केहन भिन्न काज सिखलक। तथापि हरेक पूर्ववर्ती अकालक परिस्थितिक पूर्ण पुनर्कथन नहि अछि, केवल स्मृति-संकेत। ई चयन कथनकाल बचबैत, दीर्घ कालिक संचयन दैत अछि। कथाक मूल्यांकनमे ‘पहिने सेहो अकाल छल’ पर्याप्त नहि; एहि बेर संस्थागत सहयोग, हिसाब आ पुनःखननक नव घटनासभ प्रमुख अवस्था-परिवर्तन छथि।

गोपालक प्रवेश : पीढ़ीक उत्तरदायित्व आ नव नेतृत्व

सुनयनाक बेटा गोपाल गामक युवा प्रधान बनि उपस्थित अछि। एक पीढ़ी सँ दोसरीक परिवर्तन छोट वाक्यमे होइत, मुदा नेतृत्वक कार्यक्षेत्र अलग: सुनयना गुप्त सभा आ बीयारक्षा; गोपाल सरकारी राहत, वितरणक हिसाब आ इनार पुनरुद्धार। एहि अन्तरसँ उत्तराधिकारी पूर्वजक कर्म दोहरबैत मात्र नहि, नव संस्थागत कौशल अपनबैत अछि। गोपालक निजी शिक्षा, चुनावक प्रक्रिया, परिवारक अन्तरसम्बन्ध अथवा विरोधी लोकक कथ्य विस्तार नहि। तें हुनकर नेतृत्व क्रियामूलक कार्यद्वारा बनैत, विस्तृत मनोवैज्ञानिक जीवनीद्वारा नहि। एहि सीमाक भीतर गोपाल सामुदायिक आपदाक ठोस आयोजक पात्र छथि।

सरकारी सहायता आ स्वप्रयासक बदलल सम्बन्ध

[–६२]मे राहत केन्द्र दूर छल आ कागजी प्रक्रिया भूखल परिवारकेँ विलम्बमे राखैत छल। [–४९]मे सरकारक राहत-तन्त्र समयपर सक्रिय होइत, गोपाल अधिकारीसभक संग मिलि वितरण करैत छथि। ई दीर्घ उपन्यासक महत्त्वपूर्ण संस्थागत बदलाव अछि: राज्य आ समाज अपरिहार्य विरोधी नहि रहैत। पूर्ववर्ती चेतावनीक साधारण दोहरावक बदला कथा सहयोगक नवा रूप रचैत अछि। मुदा सहायता कतेक, कोन कार्यालयसँ, किन तारीख पहुँचली, विस्तृत नहि। तें ‘समयपर’ कथावाचकक सामान्य निर्णय अछि; प्रशासनिक समयान्तरालक संख्यात्मक तालिका नहि। कथा सहयोगक सिद्धान्त घटनात्मक रूपमे सीमित प्रमाणसँ देखबैत अछि।

‘केकरा छुटल’ : गोपालक हिसाबक कथात्मक केन्द्र

गोपाल हर घरक अन्न-वितरण आ आवश्यकता लिखैत छथि, खास कऽ केकरा राहत छुटल वा अतिरिक्त जरूरत अछि। एहि हिसाबमे समुदाय समरूप भीड़ नहि; प्रत्येक नामक पृथक भोजन-अधिकार महत्वपूर्ण बनैत अछि। पुरान बाढ़िमे चर्मकार टोलाक मृतकक नाम अभिलेखसँ छुटल छल, तें नाम-छूटबाक भय दीर्घकालक नैतिक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। वर्तमान अध्याय ककरो छुटि गेलाक वास्तविक विवाद नहि दिखबैत; गोपालक सावधानी मात्र। तथापि सामान्य प्रशासनिक गणना कथा-नैतिकताक केन्द्र बनैत अछि: नामक गिनती जीवनरक्षाक संसाधन-वितरणमे सहायक होइत अछि।

राहतक कोठी आ इनारक तल : द्वि-मार्गीय उत्तर

एहि अध्यायमे समस्या अन्न आ पानि दुनू अछि। सरकारी वितरण भूख घटाबय हेतु बाहरी साधन; बन्द इनारक पुनःखनन पानिक स्थानीय साधन। गीत एहि दोहरापनकेँ ‘राज दै राहत, गाम दै हिसाब’क सरलीकृत सूत्रमे कहैत अछि, गद्य गोपालक प्रशासनिक सहयोग आ युवासभक सामूहिक श्रम देखबैत। मुदा गीतक वाक्यसँ राज्यकेँ मात्र धनदाता वा गामकेँ मात्र हिसाबदाता मानब ठीक नहि—गद्यमे दुनू परस्पर सहयोग करैत छथि। कथा एक छोट क्षणमे बाहरी सहायता आ स्थानीय संसाधनक संयोग रचैत अछि, जकर ऐतिहासिक विस्तार कथावाचक संक्षिप्त रखैत छथि।

पुरान इनार : भूगोलमे सुतल साधन

दक्षिण टोलक इनार बरखोंसँ बन्द पड़ल छल। ओकर पुनःखननसँ स्थल एक संग पुरान उपेक्षा आ वर्तमान सम्भावनाक वाहक बनैत अछि। पोखरि सूखल, मुदा भूमिगत जलक प्रथम झलक इनारमे पाओल जाइत; एहि स्थानगत उलटफेरसँ जलव्यवस्थाक बहुस्तर खुलैत अछि। कथानक ई नहि कहैत जे गामक सभ सुखल स्रोत अचानक भरि गेल, अथवा इनार सम्पूर्ण क्षेत्रक स्थायी जलसमाधान अछि। उपलब्धि विशिष्ट स्थलपर श्रमसँ पानि भेटब अछि। ‘दक्षिण टोल’क उल्लेख ऐतिहासिक रूपेँ उपेक्षित दिशा याद दिआबैत, मुदा एहि अध्यायमे जमीनक मालिक वा जातिवार कामक पृथक सूची नहि।

हाथ-हाथ माटि उठाएब : सामूहिक श्रमक दृश्य

गोपालक नेतृत्वमे युवा इनार खोदैत छथि; हाथसँ हाथ धरि माटि हटाओल जाइत अछि। पूर्वक आगि बुझएबाक मानव-श्रृंखला आ बाढ़िपूर्व बान्हक सुरक्षा जकाँ एतय सहयोग देहक आवर्ती लय बनैत अछि। किन्तु कार्य भिन्न: पानी बाहर फेकब नहि, धरती भीतर पानि धरि पहुँचनाइ लक्ष्य। ‘दिन भरि घाम बहल’क कथन श्रमक अवधि संक्षिप्त करैत, माटिक मात्रा, गहराई अथवा साधनक यान्त्रिक विवरण नहि। लोकक थाकल शरीर आ पानिक प्रथम झलक एहि क्रियाक भावात्मक चरम बनैत, वैज्ञानिक भूजल-सर्वेक्षण नहि।

पानिक पहिल झलक : घटना आ भावक निर्णायक क्षण

इनारक गहराइमे पानि देखायब कथा लेल वह क्षण अछि जतय साझा श्रमक प्रतिफल प्रत्यक्ष होइत अछि। कथावाचक लोकक चेहरापर ‘इजोत’क बिम्ब आनैत छथि; विद्युत् अध्यायक उजास एतय शरीरक आशासँ पुनः

जुड़ि जाइत। ई प्रकाश वास्तविक बल्ब नहि, थाकल-पियासल मनुष्यक राहतक दृश्य-समानता। कथा कठिनाइकेँ एक नाटकीय खोजपर समाप्त करैत, जकर परिणामक बाद समस्त वर्षक जलापूर्ति निर्दिष्ट नहि। तथापि संकटक वस्तुगत दिशा बदलैत अछि: जे गाम आकाशक बरखाक प्रतीक्षा करैत छल, ओ अपन भूमिक भीतर संसाधन खोजि काज करैत अछि।

गद्यक ‘पुरान भूख’ आ गीतक स्थिर नाम

लोकगीत कहैत अछि जे पोखरि सुखि सकैत, नाम नहि। मुख्य गद्यरचना एहि प्रतिज्ञाक व्यावहारिक अंग गोपालक हिसाब आ गामक संग्रहमे नकल सुरक्षित करब द्वारा स्थापित करैत। भूखक स्मृति केवल सहानुभूतिक घोषणा नहि, राहत-व्यवस्थाक पूर्वतैयारीक साधन बनैत अछि। मुदा गीतक ‘भूख आबय-जाय’क चक्रसमापन गद्यमे भविष्यक सुनिश्चित अकाल-मुक्ति नहि बनैत। आगामी बरखक वर्षा, फसल वा भूजल कायम रहब नहि बताओल। एहि भेदमे काव्यात्मक सान्त्वना आ घटनात्मक तथ्य अलग रखल जाए।

गोपालक नोटबुक : औपनिवेशिक लेखनक प्रतिलोम

[–५७]मे थॉम्पसनक नोटबुक गामक परम्परा विकृत रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। [–४९]मे गोपालक नोटबुक गामक हर घरक वास्तविक आवश्यकता दर्ज करबाक माध्यम अछि। दुनू लेखन क्रियामे ‘नोटबुक’ एक समान वस्तु, मुदा कथनाधिकार, उद्देश्य आ परिणाम अलग। परदेशी विद्वान बाहरी वर्गीकरण बनबैत छल; स्थानीय प्रधान राहतक न्यायोचित वितरण लेल सूची रखैत अछि। ई तुलना सामान्यतः लिखित अभिलेखक विरोध अथवा पक्षधरता नहि, ओकर उपयोगक सामाजिक प्रश्न खोलैत अछि। तथापि गोपालक सूची पूर्णतया त्रुटिहीन रहल—एहन प्रत्यक्ष जाँच नहि। लेखक उद्देश्यकेँ सकारात्मक अर्थ दैत छथि।

दफ्तर आ गाम : दू प्रतिक अर्थ

गोपाल एक हिसाब सरकारी कार्यालयमे जमा करैत छथि आ दोसर प्रति गामक संग्रहमे बचबैत। ई द्विरूप अभिलेख लेखनाधिकारक दोहरा पता बनबैत अछि। राज्यक कागज सरकारी वितरणक अनुक्रम, गामक प्रति स्थानीय स्मृतिक साधन। इतिहासक गलत बाह्य प्रतिनिधित्वक पूर्वक भय एहि नकल-बचावमे प्रतिस्पर्धी नहि, पूरक लेखन बनैत अछि। मुदा कागजक वास्तविक भाषा, हस्ताक्षर, सूचीक नमूना अथवा सार्वजनिक निरीक्षण प्रक्रिया नहि। एहि कारण दस्तावेजी कथनक महत्त्व स्पष्ट, अभिलेखक स्वतन्त्र सत्यापन असम्भव। कथा आलोचकसँ अपन घोषित उद्देश्य आ प्रत्यक्ष सामग्रीबीच सावधान अन्तर माँगैत अछि।

छाया-पंजीक दीर्घ उत्तराधिकार

गोपाल अपन नोटबुककेँ यादवानन्दक छाया-पंजीक परम्परासँ जोड़ैत छथि। एतय सद्यः अकालक सूची दीर्घ सामुदायिक लेखनक वंशक्रममे प्रवेश करैत। नामगणना अब केवल मृतकक याद नहि, जीबैत परिवारक अन्न-अधिकारक सक्रिय विवरण बनैत अछि। छाया-पंजीक पुरान प्रसंग पुनः विस्तृत नहि, मुदा ओकर नामसँ एक आन्तरिक अन्तर्पाठ रचल अछि। रचनामे लिखल पन्ना, लोकगीत आ बूढ़बाक स्मृति एक-दोसराक विकल्प नहि

—अलग परिस्थिति मे अलग काम। तें लिखनाइ संहारक नहिं, समुदाय हस्तगत रहलापर रक्षात्मक सेहो बनैत अछि।

बूढ़बाक सन्तोष : पात्रक अपेक्षा आ संस्था

बूढ़बा गोपालकेँ कहैत छथि जे सावित्रीदेवीकेँ पहिने सहायता प्रतीक्षा आ स्वयं प्रयासक पाठ देल छल, आब राज्य आ समाज मिलि काज कऽ रहल छथि। एहि वचनमे पुरान अपूर्णता आ वर्तमान सुधारक तुलना सँ पात्रक दीर्घ स्मृति अर्थ पबैत। मुदा भिन्न कालक विभिन्न सरकारी व्यवस्था सम्पूर्ण रूपेँ प्रगतिशील भऽ गेल—ई निष्कर्ष केवल एहि दृश्यसँ नहि निकलैत। कथा एक विशिष्ट सुखाड़-संकटमे लाभकारी समन्वय वर्णित करैत अछि। बूढ़बाक सन्तोष पात्रगत भाव, इतिहासक सर्वकालिक प्रमाणपत्र नहि। एहि छोट विभाजनसँ आलोचना प्रशंसापरक सरलीकरणसँ बचैत अछि।

सूखा आ अकाल : शब्दक कथात्मक अन्तर

मूल प्रारम्भ कोरा मानसून, सूखल पोखरि आ फाटल खेत दिखबैत अछि; उपकथन अकालक सम्भावना आ राहत-तन्त्रक सक्रियता बतबैत। ई दुनू सम्बद्ध, मुदा बिल्कुल समान घटना नहि। सूखा भौतिक जल-अभाव, अकाल खाद्य उपलब्धता आ संसाधन-वितरणक सामाजिक संकट बनि सकैत अछि। कथावाचक पिछला भूख आ वर्तमान राहत जोड़ि एहि सम्बन्धक संकेत दैत, मुदा ठोस मृत्यु-संख्या, अनाजदाम वा फसल-हानिक विस्तृत आँकड़ा नहि। अतएव एहि अध्यायमे वास्तविक विशाल जनहानि घोषित करब गलत। समीक्षा पर्यावरणीय आरम्भ, संस्थागत उत्तर आ परिणामक साक्ष्य अलग-अलग राखत।

नामरक्षाक सीमित पूर्णता

कथावाचकक शब्दसँ अनुमान होइत अछि जे गोपाल हर नाम आ हर हिसाब सुरक्षित रखबाक प्रयास करैत छथि। मुदा गोपालक सूचीमे कतेक परिवार आ वास्तविक एंट्री छल, नहि लिखल गेल। ‘कोनो नाम छुटि नहि जाय’ इच्छा रूपमे प्रस्तुत अछि; सभ नाम वास्तवमे समाविष्ट भेल, तकर स्वतन्त्र सत्यापन पाठमे नहि। एहि छोट अन्तरमे उपन्यासक स्मृतिधर्मिता आ ऐतिहासिक लेखनक कठिनाई मिलैत अछि। आलोचना एहि आकांक्षाकेँ रचनाक शक्तिस्थान मानि सकैत, पर लिखित लक्ष्यकेँ उपलब्ध तथ्यक बराबर नहि करब।

पुनरावर्तित आपदाक भिन्न परिणाम

पहिल अकालक प्रतीक्षा, आगिक मानव-श्रृंखला, बाढ़िक निकासी, महामारीक स्वच्छता आ आब इनार-खोदाइ—ई सभ संकट एकहि सामूहिक नायकत्वक अलग उपप्रकार छथि। ‘गाम बचि गेल’क दोहराव जखन कारणक अलग क्रिया स्पष्ट होइत, तखन कथानकात्मक विकास बनैत अछि। [–४९]मे नव कार्य सरकारी समन्वय तथा लिखित हिसाब जोड़ैत अछि, जे पूर्वक प्रसंगमे एतबा स्पष्ट नहिं। मुदा एकतरफा आदर्श सामूहिक सफलताक प्रवृत्ति जोखिम उत्पन्न करैत: श्रमिकक निजी थकान, सहायता-बँटवाराक विवाद आ असफल प्रयास अत्यल्प दृश्य बनैत। उपलब्धि आ सीमा दुनू पहिचानब जरूरी।

गामक संसाधन आ सामाजिक सत्ता

दक्षिण टोलक बन्द इनारक पुनरुद्धार सामूहिक प्रयास रूपमे होइत अछि, मुदा पुरान बन्दीसँ केकरा जल-अधिकार नहि भेटैत छल, से विवरण नहि। पूर्वक सामाजिक विषमताक इतिहास ध्यानमे राखलासँ एहि अभावक महत्त्व बुझाइत अछि। गोपाल हर घरक हिसाब राखैत, ई एक समावेशक प्रतिज्ञा, मुदा जातिवार वा लिंगवार वितरणक प्रत्यक्ष सूची नहि। न्यायपूर्ण परिणामक कथावाचकीय सन्तोष एक स्तर, संस्थागत शक्ति-सन्तुलनक सूक्ष्म जाँच दोसर स्तर। मूल पाठमे जे नहि, ओकरा काल्पनिक अन्याय अथवा काल्पनिक पूर्ण समता बनाकऽ जोड़ब अनुचित।

गीतक इनार-विजय आ व्यावहारिक अनिश्चितता

‘जतय पोखरि हारल, ओतय इनार जितल’क गीतक प्रतिपक्षीकरण कविताक गतिक ऊर्जा दैत अछि। जलस्रोतसभ प्रत्यक्ष योद्धा नहि; एक स्रोत सूखलापर दोसर स्रोत फेर काज करए लागल। गद्य इनारमे पहिल पानि देखबैत अछि, मुदा पानिक दीर्घ स्वच्छता, भराव अथवा भविष्यक सूखाकेँ नकारैत नहि। गीत तत्काल सामुदायिक दृश्यक विजयगीत, भूजल-प्रबन्धनक स्थायी प्रमाणपत्र नहि। तेँ प्रकृतिक मानवीकरणक सौन्दर्य स्वीकारि वास्तविक जलनियन्त्रणक सीमा सुरक्षित राखल जाए।

सूखाक अन्तिम उपलब्धि आ आगूक माध्यम

एहि अध्यायक सफलता त्रिस्तरीय क्रिया—सरकारी अनाज-वितरण, स्थानीय इनारक श्रम आ समुदाय-स्वामित्ववला अभिलेख—एकत्र करब अछि। गामक पानि आ नाम दुनू अलग साधनसँ सुरक्षित करबाक प्रयत्न चलैत अछि। सीमा उपज, भूजल आ राहतक मात्रा; सत्ता-असमानता आ अनुपस्थित परिवारक वास्तविक अनुभव; तथा सूची-सत्यापनक अभाव। अगिला [-४८]मे नव रेडियो-टेलीविजन गामक आवाजक वितरण बदलब; एतय लिखित गाम-प्रति, ओतय बाहरी श्रव्य-दृश्य माध्यमक आगमन—ई परिवर्तन अपेक्षाकृत ठोस अन्तर्पाठक कड़ी अछि।

भीड़ नहि, हर घर : आँकड़ाक कथानक

गोपालक ध्यान हर घरक आवश्यकता, प्राप्त अन्न आ छुटल नामपर अछि। ई क्रिया नामकेँ सांस्कृतिक पूजासँ संसाधन-वितरणक व्यावहारिक इकाईमे बदलैत अछि। जखन कथावाचक गामक सफल सहकार्य कहैत छथि, तकर सीमित आधार ई घरवार हिसाबक प्रयत्न बनैत अछि। मुदा मूल पाठमे एको वास्तविक राशन-पत्र, नामसहित खाता वा विवादित एंट्री उद्धृत नहि। त्यसँ आँकड़ाक सामाजिक महत्त्व प्रबल, गणनाक प्रत्यक्ष सत्यापन सम्भव नहि। एहने भेद जाँचलासँ ‘हिसाब’ रचनाक सजावट नहि, न्यायसङ्गत वितरणक कथात्मक प्रेरक होइत अछि।

बन्द इनारक जागरण आ भूलल स्रोत

इनार ‘बरखोंसँ बन्न’ छल, जे संकेत करैत अछि जे समुदाय अपनहि उपलब्ध जल-साधन समयक संग अनुपयोगी बनौने छल। गोपालक प्रयास केवल नव आविष्कार नहि, पहिले उपलब्ध पर बिसरल साधनक पुनरुद्धार अछि।

एहि रूपमे स्मृति भूगोलक भीतर व्यवहारिक सुविधा पुनः खोजैत अछि। मुदा इनार किएक बन्द पड़ल, कियो कखन बन्द केलक, पूर्वक जलाधिकारक राजनीति की छल, मूल गद्य नहि कहैत। तें बन्दीसँ जातिगत निषेध अथवा संरचनात्मक उपेक्षाक खास घटना आरोपित करब उचित नहि। पुनःखनन वास्तविक क्रिया, ओकर सम्पूर्ण इतिहास अपूर्ण।

सहयोगक प्रशंसा आ प्रशासनक स्वतन्त्र आवाज

सरकारी अधिकारी गोपालक संग वितरण करैत छथि, मुदा हुनकर नाम, संवाद वा व्यक्तिगत नीति-दृष्टि नहि। एहि कारण ‘राज्य’ एक उपयोगी संस्थागत साधन रूपमे प्रस्तुत, स्वतन्त्र बहुस्वर पात्रसमूह नहि। कथा सामुदायिक नेतृत्वकेँ केन्द्रमे रखबाक कारण ई चयन करैत अछि। प्रशासनिक सहयोग सफल कहल गेल, पर वास्तविक संसाधनक प्रेषण-श्रृंखला नहि देखाइत। आलोचनामे राज्यक अवमूल्यन अथवा अतिप्रशंसा दुनू अनुचित; स्रोत जे कहैत अछि, से एतबा जे एहि संकटमे समयपर सहयोग आ स्थानीय श्रम साथ-साथ सक्रिय भेल।

प्रकरण ५३ | मूल अध्याय –४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

पूर्वकथाकाल · मूल उपन्यासक वास्तविक पाठाधारित विशुद्ध कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

ई यान्त्रिक अनुपात वास्तविक घटनाघनत्वक स्वतन्त्र मापक नहि।

चौपालमे बाकसक पहिल आवाज : दूरीक नव रूप

‘रेडियो आ टेलीविजनक अवाज’क आरम्भमे गोपालक कालमे चौपालपर पहिल रेडियो अबैत अछि। छोट बाकससँ दिल्लीक स्वर सुनाइब गाम लेल इन्द्रियगत विस्मय अछि। भौगोलिक दूरी अचानक ध्वनिमाध्यमे पार होइत, मुदा दूरक वक्ताक देह/दृश्य उपस्थित नहि। कतेको लोक रेडियो घेरि बैसैत, कान लगबैत, आँखि मूनैत—ई सभ अलग-अलग श्रवणक्रियाक छोट दृश्यसङ्ग्रह अछि। कथावाचक ‘दिल्लीक स्वर’ कहैत छथि, कोन वक्ता वा समाचारक विषय नहि। तें आरम्भक घटना मुख्यतः माध्यमक अनुभूति, सामग्रीक विशिष्ट सार्वजनिक सूचना नहि। दुनूकेँ अलग रखने तकनीकक कथात्मक नवता स्पष्ट होइत अछि।

एक वर्षक छलाँग : रेडियोसँ टेलीविजन धरि

मूल गद्य ‘बरख भरि बाद’ पहिल टेलीविजन गाम पहुँचनाक संकेत दैत अछि। ई छोट कालिक छलाँग श्रवणसँ दृश्य-श्रव्य माध्यमक संक्रमण रचैत अछि। टेलीविजनक ‘काँपैत उज्जर-करिया चित्र’ दृश्यात्मक अपूर्णता सहित तकनीककेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। रंगीन मनोरञ्जन, प्रसारण-केन्द्र अथवा कार्यक्रमक विस्तृत सूचना नहि; साधनक पहिल सार्वजनिक अनुभव कथा केन्द्र। टीवीक आगमन रेडियोक पूर्ण विस्थापन नहि दिखबैत; दुनू क्रमिक रूपमे गामक सूचना-जगत बढ़बैत। कथनकालक तीव्र संक्षेपसँ तकनीकी परिवर्तन एक युगपरिवर्तनक रूप बनैत अछि, मुदा वस्तुगत प्रसारक असमानता अदृश्य रहैत अछि।

चौपाल : सामूहिक श्रवणसँ सामूहिक दृश्य धरि

रेडियो हो वा टेलीविजन, पहिल सार्वजनिक ठाम गामक चौपाल अछि। ई चयन तकनीककेँ निजी वस्तु नहि, सामूहिक अनुष्ठान-सदृश घटना बनबैत अछि। लोक घेरि बैसैत आ नियमित साँझ चित्र देखैत छथि। एहि प्रकार चौपाल सूचना, मनोरञ्जन आ सामूहिक ध्यानक केन्द्र बनैत। मुदा विभिन्न परिवारमे निजी यन्त्र केकरा उपलब्ध, केकरा पहुँच नहि, से कथा नहि कहैत। ‘सम्पूर्ण गाम’क सांकेतिक सामूहिकता वास्तविक स्क्रीनक सामने प्रत्येक व्यक्तिक उपस्थिति सिद्ध नहि करैत। दृश्य सार्वजनिक अनुभवक सुन्दर सारांश, सामाजिक वितरणक पूर्ण रजिस्टर नहि।

पीपर लगक श्रोता कम : पुरान कथाक संकट

नव स्क्रीनक अगिला परिणाम ई जे बूढ़बाक कथा सुनय आबयवला बच्चा सभ टीवीक सोझाँ बैसि जाइत छथि। ई कथानकमे माध्यमक प्रतिस्पर्धाक प्रत्यक्ष संकेत अछि। ध्यान, समय आ समूहक स्थान बदलैत अछि; बूढ़बाक स्मृतिपरम्परा स्वतः नष्ट नहि, मुदा ओकर श्रोताक उपस्थिति घटैत। कथा केकरा संख्या, कोन दिन या कुन कार्यक्रम देखिकऽ पीपर छोड़ल—एहन सूक्ष्म तथ्य नहि दैत। तेँ ‘बच्चा सभ’ एक सामान्यीकृत संक्रमणक समूह छथि। संकटका मूल्य वास्तविक श्रोता-व्यवहारक परिवर्तनमे अछि, भविष्यक पूर्ण सांस्कृतिक विनाशक सिद्धिमे नहि।

महारपर स्त्रीक गीत दबब : ध्वनिक असमानता

मुख्य गद्यमे महारपर गीत उठबैत स्त्रीसभक स्वर नव यन्त्रक तेज आवाजक तर दबि जाइत अछि। रचनामे ई केवल ‘पुरान लोकगीत बनाम नयका मनोरञ्जन’क तुलना नहि, श्रवण-स्थानक शक्ति-सन्तुलनक प्रश्न अछि। जकरा ध्वनि तेज करबाक साधन भेटैत, ओकर आवाज सार्वजनिक स्थान पर अधिक व्याप्त होइत अछि; स्त्रीसभक गीत शारीरिक सामूहिक कण्ठपर निर्भर। मुदा यन्त्रक आवाजक नियंत्रण केकर हाथ छल, महिलासभ विरोध केलनि कि नहि, एहन संवाद नहि। कथावाचक ध्वनिक असर बतबैत, सामाजिक सत्ता-वितरणक विस्तृत मंचन नहि। एहि अन्तरमे समीक्षा केन्द्रीय प्रश्न उठाबैत अछि, कल्पित संघर्ष नहि।

गोपालक बेटी कुसुम : नव पीढ़ीक प्रश्न

गोपालक बेटी कुसुम बूढ़बासँ पुछैत छथि जे संसार गाममे आबि गेलाक बाद बूढ़बाक काज आसान होएत कि नहि। ई प्रश्न तकनीकी आशावादक सरल रूप अछि; बूढ़बाक उत्तर माध्यमक शक्तिक उल्टा पहलू देखबैत अछि। स्त्री उत्तराधिकारक निरन्तरता पुनः उपस्थित: सुनयना बीया बचबैत छलीह, आब कुसुम कथा सुनबयवला बच्चाक बदलल आदत पहिचानैत छथि। हुनकर विशेषता ई जे ओ केवल प्रश्न नहि करैत, अन्तमे नवी परिस्थितिमे कथावाचन आरम्भ करैत छथि। तेँ पीढ़ी-चरित्रक आन्तरिक गति प्रश्नसँ क्रिया धरि पहुँचैत अछि।

‘बाहरक अवाज’ आ ‘भीतरक गीत’ : प्रतीकक सरलता

बूढ़बा दुई प्रकारक स्वरक भेद करैत छथि—बाहरसँ आबि कान भरनिहार आ भीतरसँ उठि मन भरनिहार। एहिमे स्रोतक दिशा अनुभूतिक मूल्य बनि जाइत। मुदा बाहरक समाचार हमेशा शोर आ भीतरक कथा हमेशा सत्य

होइत, एहन सार्वभौम तथ्य मूल गद्य नहि सिद्ध करैत। दूर बाढ़िक खबर बादमे लोककेँ अपन पुरान बाढ़ि याद दिआबैत अछि, तेँ बाहरी आवाज स्मृतिसक्रिय सेहो करैत। गीतक कठोर द्विभाजनक भीतर कथाक घटनामे सूक्ष्म अपवाद अछि। ई अपवाद कृति केँ उपदेशात्मक निषेधसँ बचबैत, माध्यमक जटिल भूमिका खोलैत अछि।

समाचारक एक दृश्य : दूर बाढ़ि, लग स्मृति

टेलीविजनपर दूर देशक बाढ़िक समाचार अबैत अछि। बूढ़ लोक ओहि दृश्यदेखि चुप भऽ जाइत, किएक तँ डूबैत घर हुनका अपन पुरान बाढ़ि स्मरण करबैत अछि। ई घटना बाहरी माध्यम आ स्थानीय स्मृतिक बीच निर्णायक प्रत्यक्ष सेतु अछि। जे साधन बच्चाक ध्यान पीपरसँ हटौलक, वैह साधन पुरान जलसमाधि-जगत पुनः जाग्रत सेहो कऽ सकैत अछि। कथा स्वयं बूढ़बाक सामान्य चेतावनीकेँ एकपक्षीय सत्य बनएबासँ रोकैत अछि। बाढ़ि कोन देशमे भेल, कतेक जन मरल, न्यूजक विशेष तारीख की छल, से नहि। एकर लक्ष्य वैश्विक समाचारक तथ्यसूची नहि, स्मृतिक आकस्मिक पुनरागमन।

चुप बूढ़ लोक : अनुभूतिक अव्यक्त स्तर

दूरक बाढ़िक समाचार देखि ‘बूढ़ लोक चुप भऽ गेलाह’—एहि मौनमे पीढ़ीक साझा अनुभव संकेतित अछि। ओ सभ कतेक पुरनका बाढ़ि देखने छलाह, कोन घर हेरौने छलाह, नहिं कहल गेल। तेँ मौन नैतिक भार दैत, किन्तु प्रत्येक व्यक्तिक मनोचित्र खाली रहैत अछि। दर्शकक आँखि स्क्रीनपर, मन पुरान जलस्मृतिक भीतर—दू स्थानिक अवस्था एकहि क्षण बनैत। बूढ़बाक कथामे पहिनेसँ कथित बाढ़ि एहि प्रतिक्रिया लेल अन्तरपाठीय आधार बनैत अछि। पाठक जानैत अछि जे समाचार नव घटना मात्र नहि, पहिनेक कथाक स्मृति-चक्र सक्रिय करबाक उपकरण अछि।

टेलीविजनक परदा : स्थलक नयका विस्तार

पहिने बाढ़िक स्थान कमला-बलान, चर्मकार टोला, पुरान श्मशान अथवा पीपरक जड़ि छल। आब परदापर दूर देशक अनाम नदी गामक चौपालमे प्रवेश करैत अछि। गामक कथास्थल स्वयं चलैत नहि, मुदा ओकर दर्शनीय संसार विस्तृत होइत अछि। परदा बाहरी स्थानकेँ घरेलू उपकरणमे समेटैत, एक दूरस्थ भूगोलकेँ काल्पनिक निकटता दैत। एतय घटनाक स्तर आवश्यक रूपेँ अलग अछि: गाममे लोक समाचार देखैत छथि; समाचारक भीतरक दूर बाढ़ि मुख्य कथागाममे प्रत्यक्ष घटित नहि। कथन-स्तर मेटि देलासँ घटनाघनत्वक गलत गणना होएत।

कुसुमक समाधान : बन्द करब नहि, मंच बदलब

कुसुम टेलीविजन बन्द नहि करैत छथि। ओ ओकर सोझाँ जुटल बच्चासभकेँ फेर पीपर लगक कथा सुनबय लगैत छथि आ यन्त्रकेँ ‘नव मंच’ बनबैत छथि। एहि अन्तिम कार्यमे कथाक प्रतिरोध दमन नहि, आत्मसात् आ पुनर्संयोजन अछि। यन्त्रक आवाजक विरुद्ध केवल नामक स्मरण नहि, श्रोता-अर्जनक नव क्रिया प्रस्तुत अछि। तथापि टीवीपर कुसुमक कथा वास्तवमे प्रसारित भेल—एहन विवरण नहि। ‘नव मंच’ एतय मुख्यतः गामक सार्वजनिक कथाक बदलल अभिव्यक्तिस्थान अथवा प्रयोगक सांकेतिक नाम अछि, तकनीकी प्रसारण-संस्था नहि। एकर सही सीमा राखब आवश्यक।

नव माध्यमक समय-बँटवारा

बच्चा साँझक टीवी-सत्रमे जुड़ैत, जे समय पहिने पीपर लग कथासुनबामे बितैत छल। ई समय-प्रतिस्पर्धा कहानीक प्रमुख गतिक कारण अछि। परम्पराक संकट वस्तुक अस्तित्व-नाश नहि, उपलब्ध समय आ ध्यानक वितरण अछि। कुसुमक प्रतिकार हर साँझ कथा सुनाबय सँ कथित; ‘हर साँझ’ एक आवर्ती अनुष्ठानक संक्षेप। एतय नव कथाक दिनचर्या बनैत अछि, मुदा हर परिवार समान रूपेँ जुड़लक कि नहि, नहि बताओल। दर्शकसमूहक आवृत्ति दीर्घ भविष्यक प्रतिज्ञा, पूर्ण श्रोता-सूचीक तथ्य नहि।

रेडियो आ [-५२]क युद्ध-समाचार

[-५२]मे युद्धक दूर समाचार रेडियोपर सुनल जाइत छल; [-४८]मे पहिल रेडियो आगमनक कथा अबैत अछि। क्रमगत समस्या स्पष्ट अछि: पहिने युद्धकालमे गाममे रेडियोक आवाज उपलब्ध, बादक अध्यायमे ‘पहिल रेडियो’ आगमन कहल गेल। सम्भव अर्थ ई जे पहिने बजार अथवा बाहरी स्रोतक प्रसारण सुनल गेल आ आब चौपालक अपन रेडियो आयल; मुदा मूल पाठ एहन भेद स्पष्ट नहि करैत। तेँ एहि स्थानकेँ वास्तविक कथात्मक असङ्गति वा कमसँ कम अनिर्णीत माध्यम-कालक्रम रूपमे नोट करब आवश्यक। उपन्यासक ऐतिहासिक अनुक्रमपर ई छोट, पर महत्त्वपूर्ण पाठगत प्रश्न अछि।

[-५३]क बिजली आ [-४८]क टेलीविजन

बिजलीक बल्बक नव आगमन [-५३]मे लोकक ध्यान एकत्र करैत छल; एतय टीवीक चमक बच्चाकेँ लोककथा-सत्रसँ खींचैत अछि। तकनीकी प्रकाशक कार्य अदलैत अछि—पहिने सामुदायिक साक्षात्कारक आश्चर्य, आब दर्शनीय बाह्य जगतक कब्जा। मुदा [-५३]क वार्षिक नाम-अनुष्ठान आ [-४८]क कुसुमक सांझक कथा समान प्रत्युत्तर बनैत: नव साधनक भीतर पुरान स्मृतिस्थल सुरक्षित राखब। पुनरावृत्ति कथाक दीर्घ विषय बनैत अछि, पर समाधानक समानता यान्त्रिक नीतिवचनक जोखिम सेहो उत्पन्न करैत। कथावस्तुक नवा विशेषता श्रोता-समयक असमानता आ बाहरी समाचारक स्मृति-जागरण अछि।

[-५७]क किताब आ [-४८]क परदा

थॉम्पसनक पुस्तक गामक कथा गलत वर्गीकृत करैत छल; रेडियो-टीवी बाहरी जगतक चुनल आवाज आ चित्र गामक भीतर आनैत अछि। दुनू प्रसंग बाहरी माध्यमक कथनाधिकारक प्रश्न पूछैत छथि। मुदा अध्याय [-४८]मे टीवी गामक परम्पराक बारे गलत प्रसारण करैत अछि—एहन विशेष घटना नहि। रचना माध्यमक ध्यान-शक्ति पर शंका दैत, विकृत समाचारक प्रमाण नहि। तुलना लेल ई फरक मूलभूत: किताबक मामला गलत प्रस्तुतिकरणक प्रत्यक्ष पाठ, टीवीक मामला स्थानीय कथासुनबाक समय घटबाक दृश्य अछि। समान संकेतकेँ एकहि दोष घोषित करब अतिविस्तार होएत।

महारक स्त्री आ स्त्रीनक बच्चा : श्रोता केकर?

महारपर गीत गबैत स्त्रीसभ आ चौपालक टीवीदेखनिहार बच्चासभ एकहि गामक भिन्न श्रव्य समुदाय बनैत छथि। कथा संकेत करैत जे अधिक प्रबल यन्त्रक आवाज स्थानीय स्त्रीस्वर दबा दैत; बच्चाक श्रवणाभ्यास सेहो

बदलैत। एतय पीढ़ी आ लिंग दूनू प्रश्न सम्बन्धित, मुदा निश्चित ‘पुरुष टीवी चलबैत, स्त्री वञ्चित’क दृश्य नहि। आलोचक सामाजिक संकेतरूपेँ शक्ति-समीक्षा कऽ सकैत, पर पाठसिद्ध क्रिया आ अनुमान पृथक राखथि। कुसुमक अन्तिम हस्तक्षेप बच्चा-श्रोता पुनः जोड़बाक प्रयास अछि; स्त्रीसभक महार-गीत पूर्णतया पुनः ऊँच भऽ गेल, एहन फलस्वरूप नहि।

‘शोर’ आ ‘गीत’क प्रत्यक्ष वाचिक अन्तर

लोकगीत ‘बाहरक अवाज’केँ शोर आ ‘भीतरक गीत’केँ बचबय योग्य स्वर कहैत अछि। गद्य रेडियोकेँ फुसफुसाहट, टीवीकेँ काँपैत चित्र आ लोकगीतकेँ अपेक्षाकृत धीमा ध्वनि बनबैत; सभ बाह्य ध्वनि सर्वदा एकहि प्रकारक तेज नहि। ई अन्तर संवेदी रूपेँ रोचक: बाहरी जगत पहिने एक छोट बाकसक अस्पष्ट स्वर अछि, मुदा लोकक ध्यानक वितरणमे ओकर प्रभाव पैघ। कथाक प्रौद्योगिकी विवरण प्रतीकात्मक, पूर्ण ध्वनि-माप नहि। आवाजक शक्ति केवल ध्वनि-तीव्रतामे नहि, श्रोताक नव जिज्ञासा आ ध्यानक सामाजिक संगठनमे सेहो अछि।

बूढ़बाक भूमिका : साक्षीसँ माध्यमचिन्तक

बूढ़बा पूर्वक बाढ़ि, आगि, अकालमे गामक स्थान-स्मृति अथवा नामरक्षा करैत छलाह। आब हुनका दूरक शोरमे गामक अपन स्वर बाँचबाक चिन्ता अछि। ई पात्रक समस्या-विस्तार: खतरा देहक विनाश नहि, ध्यानक विस्थापन आ कथाक संचारक कमजोर पड़ब। तथापि बूढ़बा नव यन्त्र स्वयं तोड़बाक वा प्रतिबन्ध लगएबाक निर्देश नहि दैत छथि; कुसुमक काजकेँ सम्भव बनाबय योग्य द्वन्द्व प्रस्तुत करैत छथि। हुनकर चेतावनीक सफलता कुसुमक वास्तविक कथावाचनमे देखाइत, तकनीकक निरपेक्ष अस्वीकारमे नहि।

लोककथासँ ‘नव मंच’क सौन्दर्य

कुसुम यन्त्रकेँ नव मंच बना लेनाइ कथाक आत्मसचेतन संकेत अछि। उपन्यास स्वयं गीत, लोककथा, अभिलेख, नाटक आ आधुनिक माध्यमबीचक रूपान्तरणक कथा कहैत अछि; एहि अध्यायमे एही रूपान्तरणक इच्छा कथापात्रक क्रियामे उतरैत अछि। मुदा ‘मंच’क वास्तविक संरचना—रेडियो कार्यक्रम, दृश्य प्रसारण कि टीवीक बादक सामूहिक कथाशाला—सटीक नहि। तेँ लेखकक वाक्य खुलल सम्भावनारूपेँ पढ़ल जाए, तय प्रसारण व्यवस्था रूपमे नहि। एही खुलापन कुसुमक रचनात्मक agencyक सम्भावना दैत, पाठ-साक्ष्यक सीमा सेहो तय करैत।

मूल्यांकन : आलोचना आ आत्मसात्क द्विपथ

अध्याय नव माध्यमक तत्काल आकर्षण आ स्थानीय गीत-संस्कृतिक दमनक प्रश्न उठबैत अछि; संगहि दूर बाढ़िक समाचार स्थानीय स्मृति जगाबय सकैत अछि, ताहि माध्यमक उपयोगी पक्ष सेहो दिखबैत अछि। कुसुमक समाधान एहि द्विधाकेँ एक कार्यमे जोड़ैत—यन्त्र बन्न नहि, कथाक नव सभा। सीमा रहल जे टीवीक कार्यक्रम, संचालक, स्त्रीगीतक भविष्य, श्रोता-विभाजन आ माध्यमक समयक्रम स्पष्ट नहि; [–५२]क रेडियो-वृत्तान्तसँ आन्तरिक कालक्रमक तनाव विशेष रूपेँ उल्लेखनीय। एहि आधारपर कथाक उपलब्धि नैतिक रूपक मात्र नहि, श्रोता-स्थानक बदलैत सामाजिक जाँच अछि।

स्रोत, अन्तर्पाठ आ आगामी क्रम

प्राथमिक स्रोत मूल अध्याय [-४८]क रेडियो-आगमन, टीवीक सामूहिक दर्शन, बूढ़बासँ कुसुमक संवाद, दूर बाढ़िक समाचार आ कथावाचनक पुनर्संगठन अछि। [-५७]क बाह्य पुस्तक, [-५३]क बिजली आ [-५२]क रेडियो-समाचारक संग तुलनासँ माध्यमक अलग-अलग सत्ता स्पष्ट होइत अछि। अगिला [-४७] ‘खाड़ी देशक बजार’ परदेश, आमदनी आ घरक स्मृति बीच नव संघर्ष खोलत। एतय जतय कथा आवाजक बाहरी आवागमन देखैत अछि, अगिला अध्याय मनुष्यक देहक परदेशगमनक प्रश्न उठाओत।

टेलीविजनक समाचार-सत्य आ कथाकारक सावधानी

दूर बाढ़िक खबर गामक बूढ़ लोककेँ पुरान बाढ़ि मोन पाड़बैत अछि। मुदा समाचारक दृश्य कतेक सम्पादित छल, समाचार-वाचक ककर दृष्टि प्रस्तुत करैत छल, से पाठमे नहि। एहने कारण माध्यमक अपरिहार्य विकृतिताक दावा नहि बनल; बाहरी चित्र स्मृतिजागरणक स्रोत सेहो अछि। पूर्वक थॉम्पसनक अपमानजनक पुस्तक स्पष्ट पाठसिद्ध विकृति छल, तेँ दुनूक आलोचनात्मक वजन अलग। कथा मीडिया-साक्षरताक पूरा निबन्ध नहि लिखैत, केवल एक उपयोगी आ एक चिन्ताजनक सामाजिक प्रभाव दिखबैत अछि। एहि द्विपक्षीयता केँ सुरक्षित राखब समीक्षा लेल आवश्यक।

श्रोता-समूहक दरार आ सम्भावित पुनर्मिलन

पीपरक पारम्परिक कथाश्रोता, चौपालक टेलीविजनदर्शक आ महारक स्त्रीगीत-समुदाय तीन अलग सङ्गति बनैत छथि। ई समूह वास्तविक समाजमे आंशिक रूपसँ एक-दोसरमे मिलेओ सकैत, मुदा कथाक अवस्थामे ध्यानक अलग केन्द्र छथि। कुसुम कथा सुनाबय लगिते पहिल दू समुदायबीचक दूरी घटएबाक सम्भावना बनैत; स्त्रीसभक गीतक आँगनसम्म नव शक्ति पहुँचल नहि बताओल। तेँ अध्यायक समापन पूर्ण सांस्कृतिक एकता नहि, श्रोता-वापसीक आरम्भ अछि। एहि सीमामे कथाक समाधान अधिक विश्वसनीय।

आधुनिक माध्यम आ कथाक आत्मसचेतन भविष्य

रेडियो, टीवी आ पुरान लोककथा विषयक विवाद कादम्बरीक स्वयं कथन-विधिक बारे सोचबाक अवसर दैत अछि। पुस्तक जेना लिखित माध्यममे मौखिक गामक आवाज सहेजैत अछि, तहिना कुसुम भविष्यक बच्चाकेँ नव यन्त्रक युगमे कथा सुनबैत छथि। मुदा लेखकक वास्तविक प्रकाशन-इतिहास अथवा डिजिटल रूपान्तरणक विशेष भविष्य एतय प्रत्यक्ष घटना नहि। ई सम्बन्ध आत्मसचेतन रचनाक आलोचनात्मक सम्भावना, प्रमाणित ऐतिहासिक भविष्यवाणी नहि। साहित्यिक स्तरपर कथाक बनबाक प्रक्रिया कथावस्तु बनि जाएब ई अध्यायक दीर्घ योगदान अछि।

प्रकरण ५४ | मूल अध्याय —४७ — खाड़ी देशक बजार

प्रवासनक नव भौगोलिक दिशा आ पुरान कथात्मक प्रश्न

अस्सीक दशकक खाड़ी-प्रवास गढ़ नारिकेलक सामुदायिक समयमे नव आर्थिक दिशा खोलैत अछि। गामक जवान सभ दुबई, कुवैत आ सऊदी अरब दिस निर्माण-मजदूरी लेल निकलैत छथि; बजारमे दलाल, पासपोर्ट आ वीजाक चर्चा पहुँचैत अछि। कथावाचक एकरे यशपतिक गिरमिटिया-प्रवाससँ अलग, मुदा सम्बन्धित अनुभव कहैत छथि। एतय महत्त्वपूर्ण ई नहि जे दूनू प्रवास सामाजिक इतिहासमे समान छथि; महत्त्वपूर्ण ई अछि जे कथावाचक स्थानबदल, देहक श्रम आ नामक स्मृतिक पुरान कथा-प्रश्नकेँ नव समयमे पुनः स्थापित करैत छथि। ई कथान्तर पुनरावृत्तिक संग परिवर्तन सेहो दैत अछि।

आरम्भिक फकरा : धन आ नामक दुई पृथक मूल्य

‘परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै’—एहि फकरामे बजार आ चूल्हि दुइटा अर्थ-क्षेत्र निर्माण करैत अछि। पहिल श्रमक विनिमय आ धनप्रेषणक; दोसर निकटता, घरेलू स्मरण आ सम्बन्धक। मुदा फकरा पहिने सँ निर्णय सुना दैत अछि जे नाम बिसरनिहार घुरि अपनहिं गाममे अजनबी बनैत अछि। मुख्य कथामे रमेशक भूलि जाइब वा अजनबी भऽ लौटब घटित नहि; ओ नियमित पत्र आ पइसा पठबैत अछि। तेँ फकराक चेतावनीकेँ पात्रक वास्तविक परिणाम बना देब मूल गद्यक सीमा लाँघब हएत।

कथनक काल : दशक, तीन बरख आ एक अनुपस्थित वापसी

वृत्तान्तक आरम्भ व्यापक ‘अस्सीक दशक’सँ होइत अछि, मुदा रमेशक जीवनमे तीन बरखक करार खास समय-सीमा देत अछि। कालिक रूपरेखा एतय द्विस्तरीय अछि: अनेक परिवारक पुनरावर्तित प्रस्थानक समष्टिगत समय आ एक व्यक्तिक निर्धारित अवधि। रमेश तीन बरख पूरा कऽ निश्चित तिथि पर घुरलाह—एहन दृश्य अध्यायमे नहि अछि। अन्तिम स्मृतिचिह्न सुरक्षित वापसीक आशा लेल राखल जाइत अछि। एही कारण वर्तमान कथा प्रतीक्षाक अधखुलल कालमे समाप्त होइत अछि, आगमनक उत्सवी पूर्णविराममे नहि।

सामूहिक प्रवासनक इतिवृत्तसँ रमेशक उदाहरण धरि

‘हर किछु महीनापर’ कोनो जवानक टीनक बकसा लऽ निकलनाइ आवृत्तिमूलक कथन अछि: कतेको बिदाइकेँ एकटा पहिचानल दृश्य-प्रकारमे समेटल गेल। एकर बीच कुसुमक पति रमेशक दुबई जाएब एकल उदाहरण बनैत अछि। कथाकार पहिने प्रवासनक पैटर्न, फेर अर्थनैतिक परिणाम, फेर निजी घरेलू अनुपस्थितिक अनुभव देत छथि। एहि व्यापकसँ निजी दिस आगमनक कारण पाठक केवल विदेशक आँकड़ा नहि, परिवारक आँगनमे पड़ल खाली जगह देखैत अछि। मुदा प्रवासी सभक विविध व्यक्तिगत नियति एहि सङ्कुचित संरचनामे नहिं उभरैत।

टीनक बकसा : चलायमान देहक ठोस वस्तु

अध्यायमे विदेश जाएवला युवक ‘टीनक बकसा’ उठा निकलैत अछि। ई छोट वस्तु समयक आर्थिक प्रवासनकेँ देहधारी दृश्य दैत अछि: प्रस्थान काजसँ शुरू भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर साक्ष्य घरक दरबज्जापर बकसा उठब

अछि। बकसामे की-की वस्तु छल, के ओकरा बन्द केलक, के द्वार धरि विदा केलक—ई सभ पाठ मौन राखैत अछि। तेँ समीक्षक एकरा कल्पित बिदाइ-दृश्यसँ भरि नहि सकैत। तथापि छोट वस्तु सामूहिक प्रवासक अमूर्त विस्तारकेँ पठनीय स्थल-मोड़ प्रदान करैत अछि।

रमेशक पत्र, पइसा आ फोन : दूरीक तीन सञ्चार-रूप

रमेश नियमित पत्र आ धन पठबैत अछि; कहियो-कहियो फोनक तारपर ओकर आवाज कुसुम धरि अबैत अछि। पत्रक विलम्ब, धनक पहुँच आ फोनक क्षणिक श्रव्य निकटता अलग-अलग सम्बन्ध रखैत अछि। कथा ई नव सुविधा रामसेवकक कालक तुलना करैत मानैत अछि। मुदा फोनक वास्तविक संवादक पूर्ण पाठ, पत्रक वाक्य, वा भेजल धनराशि नहि देल गेल। पाठक रमेशक आवाजक विषयमे कथावाचकक खबर सुनैत अछि, स्वयं तकर शब्द नहि। सञ्चारक वृद्धि आ व्यक्तिक अपूर्ण प्रस्तुति संगसंग चलैत अछि।

कुसुमक दृष्टिकेन्द्र : अर्थ-उन्नति आ अनुपस्थितिक अनुभव

कुसुमक अनुभव प्रवासनक भावनात्मक केन्द्र अछि। पाबनि आ बियाह-सोहरमे रमेशक खाली जगह हुनका खटकैत अछि। कथावाचक हुनकर अन्तःस्थितिक जानकारी दैत अछि, मुदा दीर्घ एकालाप नहि; ओहि एक वाक्यमे अनेक ऋतुक अनुत्तरित प्रतीक्षा सङ्कुचित अछि। घरपर पहुँचल पइसा परिवारक सामाजिक परिवर्तनक संकेत अछि, मुदा आर्थिक लाभ आ दाम्पत्य सहवासक क्षति अलग परिणाम छथि। एतय कुसुम केवल ‘परदेसिया पत्नी’क रूढ़ प्रतिमा नहि; ओ अगिला निर्णय, स्मृति-चिह्नक स्थापना, स्वयं करैत अछि।

पक्का छत आ सुन्न आँगनक स्थानिक प्रतिलोम

कतेको घरक छत पक्का होइत अछि, बियाहक खर्च उठैत अछि, बजारमे नव वस्तु अबैत अछि; एहि सम्पत्तिगत परिवर्तनक ठीक पाछू कथावाचक सुन्न आँगनक छवि रखैत छथि। घरक बाह्य रचना नव साधनसँ पूर्ण, मुदा ओकर घरेलू उपस्थिति अधूरी। ई स्थानिक प्रतिलोम प्रवासनक द्विविध मूल्य देखबैत अछि। तथापि कोन घरमे कतेक रेमिटेन्स पहुँचल वा कोन परिवार अधिक लाभ पओलक, तकर सूची नहि। ‘कतेको’ आ ‘सभटा’ जकाँ व्यापक सूचकक सीमा मानने सामाजिक उपलब्धिक विश्वसनीय आकार निर्धारित होइत अछि।

आर्थिक कारणक एकरेखीयता आ अनुपस्थित श्रम-दृश्य

विदेशक तेल-उद्योगक उछाल, निर्माण-मजदूरी आ करार कथाक घोषित कारण-रेखा अछि। किन्तु दुबईक श्रमस्थलक प्रत्यक्ष दृश्य नहि; वेतन, कामक घण्टा, आवास, जोखिम, दलालक शुल्क वा कानूनी सुरक्षा ककरो कथा रूप नहि भेटैत। एतए विदेश गामक कथा-दृष्टिमे मात्र प्रवेश करैत अछि। ई स्थल-चयन प्रभावी अछि, कारण पुस्तक गामक स्मृति-संरचनाक कादम्बरी अछि; संगहि एकर आलोचनात्मक सीमा अछि कि ‘बजार’ शीर्षकक अन्तर्गत श्रमिकक स्वतन्त्र कार्य-अनुभव संक्षिप्त रहि जाइत अछि।

रामसेवक आ रमेश : अन्तरपीढ़ीय तुलना

बूढ़बा रमेशक परिस्थिति रामसेवकक कालसँ अलग बतबैत छथि। दूनू कथा जोड़बाक सूत्र अछि दूरीक निरन्तरता आ सञ्चारक बदलैत क्षमता। मुदा रमेश रामसेवकक पुनर्जन्म नहि; प्रवासनक संस्थागत नियम सेहो एक नहि। कथावाचक सेहो ई अन्तर स्थापित करैत छथि: पुरान ‘परदेशक पुकार’ नव बजारक भीतर घुरैत अछि, मुदा पत्र, पइसा, दूरभाषक सुविधा सम्बन्धक सम्भावना बदलैत अछि। ई दीर्घ उपन्यासक स्मृति-तकनीक थिक—पूर्वक समस्या नव साधनक बीच पुन: परीक्षण पबैत अछि।

बूढ़बाक आवाज : नैतिक सीमा आ कथात्मक प्रभुत्व

बूढ़बा कुसुमकेँ धन कमायबक विरोध नहि करैत छथि; हुनकर प्रश्न धनक पाछाँ भाषा, गाम आ नाम बिसरल जायब अछि। एहि संवादमे बूढ़बा एक व्याख्यात्मक अधिकार छथि। रमेश स्वयं उपस्थिति नहि दैत अछि जे बूढ़बाक चेतावनीपर अलग मत देत। कुसुमक स्वतन्त्र प्रश्न अंशत: मौजूद अछि, मुदा कथाक निर्णय बूढ़बाक विस्तृत वचनमे स्थिर होइत अछि। बहुस्वर समाजक भीतर एका ठाम विचारक निष्कर्ष पहिने सँ व्याख्यायित भऽ जाइब एहि श्रृंखलाक पुनरावर्तित शिल्प आ सीमा दुनू अछि।

नाम ‘बजारमे राखि अबैत’ अछि की? रूपकक सीमांकन

‘परदेश देहकेँ बजारमे राखैत अछि’ कथन श्रम-विनिमयक मानवीय परिणामक सघन रूपक अछि। बूढ़बा नाम सेहो बजारमे छूटबाक आशंका उठबैत छथि। मुदा पाठ रमेशक भाषिक विस्मृति वा मूल्यविहीन वापसीक कथा नहि कहैत। चेतावनीक रूपककेँ वास्तविक अपराध बनाओल जाए तँ आलोचना पात्रपर असिद्ध दोष आरोपत। अपेक्षित वाचन एहि शर्तक अछि: नामक सम्बन्ध सामाजिक अभ्याससँ सुरक्षित रहैत अछि, धनप्रेषण मात्र ओकर पर्याप्त वा अपर्याप्त विकल्प होएबक प्रश्न खुलल रहैत अछि।

गीतक स्वर आ गद्यक अन्त : अलग नियति

‘खाड़ीक बाट’ गीतमे अजनबी भऽ लौटल प्रवासीक सम्भावित नियति गाओल गेल अछि। मुख्य गद्य आखिरमे रमेशक पुनरागमन नहि, कुसुम द्वारा आशाक चिह्न राखल वर्णित करैत अछि। गीतक निश्चयात्मक चेतावनी आ कथाक खुलल प्रतीक्षा बीच स्पष्ट फाँक अछि। गीत सामूहिक भाव-सूत्र रचैत अछि, गद्य एक परिवारक विशिष्ट अनिर्णीत वर्तमान। एहि अन्तरकेँ सहेजने अध्यायक शीर्षक ‘बजार’क अन्तर्गत दु:ख, अवसर आ आशाक अनेक काल एकसंग पढ़ल जा सकैत अछि।

जोड़ी पोखरि आ रामसेवकक चिह्नक समीप नव चिह्न

कुसुम जोड़ी पोखरिक जड़ि लग रामसेवकक पुरान चिन्हक लग रमेशक लेल नव चिन्ह राखैत अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे ई मृत्युक हेतु नहि, सुरक्षित घुरबाक आशाक हेतु अछि। एहि निर्णयसँ गामक स्मृतिस्थल अपन कार्य बदलैत अछि: मृतक वा अनुपस्थितक विलाप-अभिलेखसँ जीवित प्रतीक्षाक सार्वजनिक संकेत बनैत अछि। एके स्थलमे अतीतक हानि आ भविष्यमुखी सम्भावना समा जाइत अछि। चिन्हक आकार, लिखल शब्द वा स्थापत्य निर्दिष्ट नहि; प्रतीकक प्रमुख अर्थ ओकर घोषित प्रयोजन अछि।

‘प्रतीक्षाक दीप’ : समयक दृश्यीकरण

कुसुमक चिन्ह आगूक परदेशी बेटा सभ लेल ‘प्रतीक्षाक दीप’ बनबाक आशा करैत अछि। ध्यान देबाक अछि जे वास्तविक दीप जराओल गेल—एहन घटना नहि; प्रतीक्षाक आलोक एक रूपक अछि। नव चिन्हक महत्त्व एहि बातमे जे ओ वर्तमान अनुपस्थित व्यक्तिक भविष्यक लेल स्मृति-स्थान आरक्षित करैत अछि। मृत्यु-स्मृतिसँ अलग ई विलम्बित मिलनक परियोजना अछि। कथा एकटा चिन्ह मार्फत प्रतीक्षाकेँ साधारण निजी व्यथा नहि, भविष्यक सामुदायिक आचारक सम्भावना बनबैत अछि।

स्त्रीक क्रिया आ श्रमक लैंगिक विभाजन

प्रवासी मुख्यतः ‘जवान बेटा’ रूपमे उपस्थित छथि; कुसुम घर, उत्सव आ प्रतीक्षाक स्थानपर छथि। ई कथात्मक विभाजन पुरुषक आर्थिक दूरी आ स्त्रीक स्थानीय स्मृतिदायित्व रचैत अछि। मुदा कुसुमक अन्तिम प्रतीक-स्थापना हुनका निष्क्रिय प्रतिक्षारत प्रतिमा नहि रहय दैत: ओ गामक साझा अर्थ-व्यवस्था बदलबैत छथि। तइयो हुनकर स्वकीय जीविकोपार्जन, घरक श्रमक व्यवस्थापन वा निर्णयक आर्थिक स्वायत्तता पाठमे नहि विकसित। समीक्षा ओहि अभावकेँ चिह्नित करैत अछि, कुसुमक जीवनमे अनलिखल श्रमक काल्पनिक विवरण नहि जोड़ैत।

कथानकक अल्प घटना आ भावात्मक अवधि

मुख्य घटनासभ प्रस्थान, धनप्रेषण, सञ्चार, वस्तुगत परिवर्तन आ चिन्ह राखब छथि। मुदा भावात्मक अवधि अनेक बरखक उत्सव-प्रतीक्षामे पसरल अछि। कम बाह्य घटना बनाम पैघ भाव-अवधि एहि अध्यायक विशेष विधान। एकर गति विचारात्मक बूढ़बा-वचन पर कुछ धीमा होइत अछि, जबकि कुसुमक स्वतन्त्र काम अन्तमे एक ठोस दृश्य देत अछि। केवल क्रियापदक प्रतिशतसँ एहि अनुभवक कथात्मक घनत्व मापब अनुचित।

पूर्वाध्याय [-४८]सँ सम्बन्ध : प्रसारणक बाद प्रत्युत्तर

[-४८]मे रेडियो-टेलीविजन बाहरी आवाज गाम भीतर आनैत छल; [-४७]मे पत्र, पइसा आ फोन विदेश रहनिहार मनुष्यक संग संवाद सम्भव बनबैत अछि। एकठाम मुख्य समस्या बाहरी ध्वनिक प्रभुत्व, दोसर ठाम अनुपस्थित व्यक्तिक श्रव्य निकटता। ‘सञ्चार’ समान शब्द होएओ दूनू अध्यायक कथात्मक काम अलग। एहि क्रममे तकनीक न त स्वतः विनाशक, न स्वतः मुक्तिदाता; ओकर सामाजिक उपयोग आ दूरीक भिन्न स्वरूप जाँचल जाइत अछि।

नाम-स्मृतिक स्वामित्व : गाम बनाम परदेश

बूढ़बा कहैत छथि जे रमेश अपन नाम गाममे राखने अछि। एहि कथनमे नाम कागजी पहचान नहि, सम्बन्धक सतत अभ्यास अछि। गामक भाषा आ पर्वमे व्यक्तिक हिस्सा, शारीरिक अनुपस्थितिमे सेहो, बचल रहि सकैत अछि—एहि मूल विश्वासपर कथा चलैत अछि। मुदा परदेसमे रमेश स्वयं केहन सामुदायिक संसार बनबैत अछि, से अनुपस्थित। एकरे कारण ‘जड़ि’क अर्थ गामक स्थिर केन्द्रसँ निर्धारित होइत अछि, प्रवासीक सम्भावित बहुस्थानीय पहिचानक जटिलता कम खुलैत अछि।

निर्णय : अवसर आ विरहक असमाप्त सहअस्तित्व

अध्यायक उपलब्धि अछि जे प्रवासनकेँ केवल पैसा आबब वा केवल दुःख नहि बनबैत: पक्का छत आ खाली आँगन एकसंग देखबैत अछि, तदुपरान्त जीवित प्रतीक्षाक नव चिन्ह रचैत अछि। सीमासभ स्पष्ट छथि—रमेशक स्वतन्त्र आवाज, प्रवासी श्रमक दृश्य आ वापसीक वास्तविक परिणाम अनुपस्थित। एहि अभावक बीच कुसुमक ठोस कर्म अध्यायकेँ उपदेशात्मक तर्कसँ बाहर लऽ जाइत अछि। कृति एतय ‘परदेश’क पुरान श्रृंखला नव बाजार युगमे फुलबैत अछि, मुदा ओकर निश्चयात्मक समाधान नहि दैत।

पाठाधार आ आगूक प्रश्न

एहि विवेचनक प्राथमिक आधार मूल अध्याय [–४७]क ‘खाड़ीक बाट’ लोकगीत, अस्सीक दशकक रोजगार-विवरण, रमेश–कुसुमक प्रसंग, बूढ़बाक संवाद आ रामसेवकक चिन्हक समीप रखल नव चिह्न अछि। आगाँक अध्याय सभमे प्रवासनक कारण बदलैत सामाजिक सम्बन्ध, सञ्चार-माध्यम आ युवा पीढ़ीक पहिचानक निरन्तरता अलग जाँ चल जाएत; एतय अनलिखल घटनाकेँ सिद्ध कथ्य नहि मानल जाएत।

प्रकरण ५५ | मूल अध्याय –४६ — सद्भावक परीक्षा

बाहरी अफवाहसँ सामुदायिक संकट : आरम्भक स्थिति

अस्सीक दशकक अन्तमे आसपासक साम्प्रदायिक तनाव गढ़ नारिकेल धरि अफवाहक रूपमे पहुँचैत अछि। किछु बाहरी आगन्तुक हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धमे संशय भरबाक कोशिश करैत छथि, आ एक-दू राति चौपालपर तनाव पसरैत अछि। घटना-स्तरपर ई कथन एकटा सम्भावित विघटन स्थापित करैत अछि, व्यापक हिंसाक सम्पन्न दृश्य नहि। ई अन्तर आवश्यक अछि: लोकगीतमे ‘आगि लागल’क बिम्ब अछि, मुदा मुख्य गद्य एहि प्रसंगमे कोनो घर जरेबाक वा वास्तविक दङ्गाक वर्णन नहि करैत। प्रतीकक तापकेँ इतिहासक अनलिखल घटना नहि मानल जाए।

‘साझा पीपर’ गीत : संकटसँ पहिने स्वीकृत नैतिकता

गीत पहिलहि पंक्तिमे एक पोखरि, एक माटि, एक अन्नक साझापन घोषित करैत अछि। पाठक जब मुख्य कथा पढ़य लगैत छथि, तखन समाधानक सांस्कृतिक वाक्य पहिने सँ देल जा चुकल होइत अछि। एहिसँ स्मृतिसम्भवता बढ़ैत अछि—अफवाहक विरोधमे एक साझा लोकधुन उपलब्ध—मुदा नाटकीय अनिश्चितता घटैत अछि। गीतमे सामूहिक स्वर एकरूप अछि; मुख्य गद्यमे आरम्भिक संशयक लहर अछि। एहि दू स्वरक क्रम संघर्षक सम्भावित तीखापनकेँ काव्यात्मक आश्वासनसँ सीमित करैत अछि।

घटना-क्रम : प्रवेश, तनाव, प्रत्युत्तर, सार्वजनिक पुनर्स्थापन

कथाक न्यूनतम घटनाशृंखला चारि मोड़मे खुलैत अछि: बाहरी लोकक आगमन, अफवाह आ संदेहक प्रसार, मौलवी–पंडितक साझा इतिहासक प्रस्तुति, आ पीपरक नीचाँ सद्भाव-सभा। अन्तमे संयुक्त पर्व-उत्सवक नवीनीकरण घोषित होइत अछि। ई कथात्मक प्रक्रिया ‘एकता स्वतः छल’क स्थिर पृष्ठभूमिसँ भिन्न अछि, कारण

संकटप्रसंग एकता के सार्वजनिक प्रदर्शनक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि। मुदा अफवाहक भाषिक वस्तु, ककरा सभपर असर भेल, आ तनाव कतेक गहींर छल, तकर स्वतन्त्र दृश्य न्यून अछि।

मुस्लिम परिवार : उपस्थिति बनाम स्वतन्त्र कथनाधिकार

मूल पाठ मुस्लिम परिवारसभक पीढ़ी-दर-पीढ़ी श्रम, पोखरि आ बाढ़ि-साझापनक विवरण दैत अछि। तथापि कोनो विशिष्ट मुस्लिम स्त्री, किसान वा युवा अपन निजी संवादक संग सामने नहि अबैत। ‘पुरान मौलवी’ एक भूमिका छथि, व्यक्तिनाम नहि; ओ पंडितक संग सामूहिक स्मरण करैत छथि। एहि समाजमे उपस्थिति आ आवाजमे अन्तर अछि। समीक्षाक प्रश्न ई नहि जे समुदाय गाममे अछि की नहि—ओ स्पष्ट अछि—बल्कि जे सामूहिक सौहार्दक दृश्य ककर व्यक्तिगत अनुभवक लागतपर संक्षिप्त भेल अछि।

मौलवी आ पंडितक संयुक्त प्रवेश : दृश्यात्मक सममिति

चौपालपर दू धार्मिक प्रतिनिधिक संग ठाढ़ होएब संवादक आगू एक दृश्यात्मक समता बनबैत अछि। ओ सभ कोन बाढ़िमे के केकरा बचौलक, केकर अन्नसँ दोसरक चूल्हि जरल, से मोन पाड़बैत छथि। एतय पूर्वक प्राकृतिक आपदासभ ‘बैकस्टोरी’ नहि रहि, वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक संकटमे तर्कक सामग्री बनैत अछि। मुदा ओहि व्यक्तिक सटीक नाम आ बाढ़िक घटनाकाल एहि अध्यायमे नहिं उद्धृत; एहि स्मरणकेँ व्यापक इतिहासक दावासँ मिलाओल जाय, ओवर-विशिष्ट प्रकरण घड़ि नहि।

‘एक्के पोखरिक पानि’ : भूगोलक सामूहिक तर्क

जोड़ी पोखरि गामक अनेक कथामे जीवन, संकट आ स्मृतिक स्थान रहल अछि। एहि अध्यायमे जल-साझेदारी सांप्रदायिक भेद-निरसनक चित्र बनैत अछि। पानि कोई एक समुदाय विशेषक सम्पत्ति नहि, तें अनुभवक साझा स्थल बनैत अछि। पर जलक समान उपयोगसँ सामाजिक संसाधनपर समस्त अधिकार बराबर अछि—एहन सिद्धि स्वतः नहि होइत; कथामे जो साझा बाढ़ि-अनुभव देल गेल, ओ विशिष्ट सम्बन्धसूचक अछि। ई स्थल-केन्द्रित सह-अनुभवक सौन्दर्य आ सामाजिक समताक अपूर्ण विवरण दुनू एकसाथ देखबाक अछि।

कुसुमक प्रश्न : सामूहिक अफवाहक निजी प्रवेश

कुसुम बूढ़बासँ कहैत अछि जे बाहरक लोक गामकेँ बाँटबाक कोशिश करैत छथि। एहि छोट संवादमे व्यापक अफवाह एक परिचित स्त्रीक बोलीसँ नाम पबैत अछि। कुसुम कोनो पक्षदोष या आरोपित घटना नहि बतबैत; प्रश्न संकटक दिशा पर केन्द्रित अछि। बूढ़बाक उत्तर साझा परम्परा, नाम-स्मरण आ इतिहासक सहारे संघर्षक नीतिक रूप रचैत अछि। मुदा कुसुम अपन तरफसँ समुदायसभकेँ जोड़बाक स्वतन्त्र कार्यक्रम शुरू करैत छथि—एहन स्पष्ट घटना नहि; सार्वजनिक सभाक आयोजन सामूहिक रूपमे कथित अछि।

‘फूट बाहरसँ’ : कथावाचकक सुगम कारण-रेखा

बूढ़बाक वाक्य जे फूट बाहरसँ अबैत अछि, भीतरसँ नहि, रचनाक सामाजिक आदर्श स्पष्ट करैत अछि। पर मुख्य गद्यमे एक-दू राति चौपालपर अनचिन्हार तनाव पसारैब सेहो स्वीकारल गेल। बाहरी अफवाह भीतर प्रश्नक बीज

बनि सकैत अछि—एहि सम्भावना पर कथा विस्तृत बहस नहि करैत। एकर आलोचनात्मक सीमा एकरेखीय कारण-रचना अछि: गामक अन्दरक जाति, संसाधन, सत्ता वा स्मृतिक असमानताक संग साम्प्रदायिक तनावक सम्बन्ध तपासल नहि गेल। एतय घोषित सामूहिक सद्भावकेँ कथा-अन्तर्गत आदर्श मानब उचित, सार्वभौम समाजशास्त्रीय नियम नहि।

अफवाह : दृश्यहीन कथन-शक्ति

अफवाहक प्रभावक चर्चा अछि, मुदा ओकर शब्दशः कथन पाठक नहि सुनैत अछि। बाहरी प्रचारकसभक नाम, दलील वा सम्पर्कक पद्धति सेहो नहि भेटैत। एहिसँ हिंसक वा घृणात्मक शब्दकेँ पुनरुत्पन्न न कऽ कथा सामाजिक उत्तरपर केन्द्रित रहैत अछि। तथापि नाटकीय दृष्टिएँ प्रतिपक्ष लगभग अनसुना पात्र बनि जाइत अछि; पाठक ओकर प्रभावक सम्भावना त जानैत, वास्तविक प्रलोभन वा संकटक निर्माण-कौशल नहि। परिणामतः सामुदायिक विजय बहुत शीघ्र घटित बुझाइत अछि।

साझा स्मृति एक कथात्मक प्रत्युत्तर

मौलवी–पंडित इतिहास स्मरण कराबैत छथि; बूढ़बा सेहो नामक रक्षा पर बल दैत छथि। पूर्वक बाढ़ि, अकाल, आपदामे पारस्परिक सहायता स्मृतिक रूपमे दुबारा कथित होइत अछि। एतय स्मृति निष्क्रिय संग्रह नहि, साम्प्रदायिक अविश्वासक प्रतिवादक संसाधन अछि। मुदा ई प्रतिवाद संवादमे प्रस्तुत सामाजिक व्याख्या अछि; कथावाचक कोनो बहसक प्रत्यक्ष शब्दशः प्रतिलेख नहि दैत। पूर्वघटनाक उपस्थिति कथा-अन्तर्गत समुदाय बनबैत अछि, पर वर्तमान संकटमे ओकर सम्पूर्ण प्रभाव गीत–गद्यक चयनित संक्षेपद्वारा निर्मित अछि।

दोसर [-६०]क आगि आ एहि गीतक ‘आगि’

समीक्षामे जाँचब आवश्यक जे पूर्वक ‘अगिनक राति’मे वास्तविक घर जरेबाक, पानि-बाल्टीक मानवश्रृंखला आ गाछी बचबाक दृश्य छल। वर्तमान ‘सद्भावक परीक्षा’ गीत सेहो आगि बुझाबयवला गामक रूपक लैत अछि, पर नयका वास्तविक अग्निकाण्ड नहि कहैत। पहिल आगि भौतिक संकट; एतय फूटक ताप सामाजिक छवि। एकहि शब्दक रूपान्तरित पुनरागमन पाठकक पूर्व-स्मृतिपर निर्भर अछि। एहि पुनरावृत्ति के केवल शब्द समानतासँ चिन्हित कएलासँ रचनात्मक अन्तर छूटि जाएत।

सभा-संस्कार : संकटसँ वार्षिक रीति धरि

अध्यायक अन्तमे गामक हिन्दू–मुस्लिम लोक पीपर लग एक संग दीप जरा, हालचाल पुछि, सद्भाव-सभा करैत छथि। ओकर बाद ईद–दिवाली संयुक्त उपस्थितिमे मनाओल जाएब भविष्यक रीतिक रूपमे कथित अछि। एक बारक तनावसँ सामुदायिक रीति जन्म लेब ई श्रृंखलाक विशिष्ट घटनात्मक रूपान्तरण। तथापि प्रत्येक वर्षक सभा, व्यक्तिगत भागीदारी वा समयक अवधि अलग दृश्य रूपमे नहि अछि; ‘ओहि राति सँ’ कथाकारक पुनरावर्तित भविष्यसारांश अछि।

पीपरक साझा छाहरि : स्थानक पुनःसामाजिककरण

पीपर गामक मृतक-स्मृति, बूढ़बाक उपस्थिति आ अनेक अनुष्ठानक केन्द्र अछि। एतय गाछक छाहरि धर्मविशेषक आयोजनस्थल नहि, सह-अस्तित्वक सार्वजनिक आसन बनैत अछि। थरथराइत तनावक चौपालसँ पीपर तरे साझा बैठक धरि स्थानान्तरण समाधानकेँ दृश्य बनबैत अछि। मुदा कोन समूह कहाँ बैसल, केकरा कतेक बोलबाक मौका भेटल—ओ विवरण अनुपस्थित। साझा स्थल भौतिक निकटता सुनिश्चित करैत, बोलबाक समान अधिकार स्वतः प्रमाणित नहि करैत।

लोकगीतक सर्वनाम ‘हम’ आ सामाजिक बहुवचन

मेल-गीत सामूहिक ‘हम’क सहारे अनेक समुदायकेँ एक कण्ठमे बुनैत अछि। ई बहुवचन संकटसमयक सामूहिकता बनबाक हेतु प्रभावी अछि; पाठक अपनाकेँ गीतक भीतर शामिल अनुभव करैत छथि। एकर सीमा अछि जे फरक-अलग लोकजीवन, सांस्कृतिक शब्द, आ अनुभवक असमानता पातर भऽ सकैत अछि। विशेषतः मुस्लिम परिवारक अपने धार्मिक या सांस्कृतिक कथनक स्वतन्त्र पंक्ति नहि। बहुवचन समावेशी संकेतो अछि आ कखनो व्यक्तिस्वरक प्रतिस्थापन सेहो।

धार्मिक प्रतिनिधि पात्र आ सामूहिक नायकत्व

मौलवी आ पंडित एक संग सभाक मञ्च सँ साझा स्मृति सुनबैत छथि; किन्तु कहानी केवल उच्च प्रतिनिधिसभ पर नहिं रुकैत: अन्तिम सभा सामुदायिक भेल अछि। दूनू स्तरक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। प्रतिनिधि सामूहिक कथाक विश्लेषक छथि; गामक लोक ओकर सार्वजनिक निर्वाह करैत छथि। पर व्यक्तिगत परिवारक नाम वा विशिष्ट उपस्थिति लिखल नहि; सामूहिक नायकत्वक व्यापकता निजी चरित्र-विकासकेँ सीमित करैत अछि। कथा सद्भावक एक प्रतीकात्मक दृश्य बनेबाक लेल सामाजिक जटिलता संक्षिप्त करैत अछि।

काल-अस्पष्टता आ ऐतिहासिक आरोपणक सीमा

‘अस्सीक दशकक अन्त’ एहि अध्यायक एकमात्र व्यापक काल-आधार अछि। कोन तिथि, कोन शहरक दङ्गा वा कोन राष्ट्रीय घटना एहि अफवाहक पृष्ठभूमि—मूल पाठ स्पष्ट नहि करैत। अतएव वास्तविक राजनीतिक घटना, संगठन, दङ्गाक मृतक वा वर्ष आरोपित करब अनुचित। कथा आधुनिक इतिहासक वातावरणक उपयोग करैत अछि, मुदा स्थानीय संघर्षक एक काल्पनिक, सङ्क्षिप्त दृश्य देत अछि। समीक्षा एहि साहित्यिक कालचिन्ह आ इतिहासक स्वतन्त्र दस्तावेजी विवरणक सीमा राखैत अछि।

उपदेशक अन्त आ खुलल साम्प्रदायिक प्रश्न

कथा अन्तमे गढ़ नारिकेल सद्भावक परीक्षामे सफल भेल घोषित करैत अछि। एहि निर्णयक भाव-आधार संयुक्त सभा आ साझा स्मृतिपर अछि। मुदा बाहरी लोक फेरे नहि अएलाह, द्वेष सदा लेल समाप्त भेल, वा भविष्यक पीढ़ीमे भेद नहि उठत—एहन घटनात्मक आश्वासन नहि भेटैत। उपसंहारक नैतिक स्पष्टता सुखद अछि, पर लोकक जीवनमे पुनःसङ्कट सम्भव हेबाक जटिलता खुलल रहैत अछि। दीर्घ उपन्यासक अन्य खण्डमे एहि विषयक नयका परीक्षण आवश्यक रहत।

मूल्यांकन : समन्वयक कथा आ समन्वयक सरलीकरण

अध्यायक शक्ति साझा जल-स्थान, पुरान आपदा-स्मृति आ मौलवी–पंडितक संयुक्त दृश्यकेँ वर्तमान अफवाहक विरुद्ध सक्रिय करब अछि। ओकर सीमा अछि प्रतिपक्षक अस्फुटता, मुस्लिम व्यक्तिगत स्वरक कमी आ ‘फूट केवल बाहरसँ’क अतिसरलीकृत कारण-रचना। गीतमे आगिक शब्द आ गद्यमे वास्तविक दङ्गाक अभाव एक विशिष्ट स्तरभेद अछि। अतः एकरा ना एतिहासिक दङ्गाक पूर्ण आख्यान कहल जाए, ना निरर्थक भाषण; ई सामुदायिक स्मृतिसँ संकटसमाधानक सङ्क्षिप्त आदर्श दृश्य अछि।

स्रोत-सीमा आ अगिला प्रश्न

प्राथमिक पाठ मूल अध्याय [–४६]क ‘साझा पीपर’ गीत, अस्सीक दशकक अन्तक अफवाह-प्रसंग, मौलवी–पंडितक सभा-स्मरण, कुसुम–बूढ़बाक संवाद आ संयुक्त पर्व-विधान अछि। एहि सामग्रीसँ गाममे मुसलमान परिवारक वास्तविक कथाभूमि पुष्टि होइत अछि; मुदा नामित व्यक्तिगत हिंसा, नयका आगि वा विस्तृत धार्मिक बहस नहि। अगिला बजार-सम्बन्धी अध्यायमे ‘बाहरी’क अर्थ राजनीतिक भय सँ आर्थिक आकांक्षा धरि बदलैत अछि।

प्रकरण ५६ | मूल अध्याय –४५ — उदारीकरणक हवा

१९९१ : कथामे स्पष्ट वर्षक महत्त्व

अध्याय १९९१क आर्थिक सुधारक उल्लेखसँ शुरू होइत अछि। पूर्वक [–४६]मे अस्सीक दशकक अन्तक अस्पष्ट तनाव छल, एतय कथाकार स्पष्ट वर्ष लऽ राजनीतिक-सामाजिक इतिहाससँ कथाक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। मुदा राष्ट्रीय नीति-निर्माणक विस्तृत दृश्य, कानून वा बजट कहानीमे नहि; १९९१क महत्त्व बजारमे नव सामान, केबल टेलीविजन, निजी नौकरी आ उपभोगक अभिलाषा माध्यमे गाममे अभिव्यक्त होइत अछि। वैश्विक आर्थिक प्रक्रिया स्थानीय वस्तु, समयक गति आ पारिवारिक बिछोहक रूपमे कथाभित्र प्रवेश करैत अछि।

शीर्षकक ‘हवा’ : गतिशील परिवर्तनक रूपक

‘उदारीकरणक हवा’ शीर्षक परिवर्तनकेँ अदृश्य, बहिर्गामी आ व्यापक गति देत अछि। लोकगीतमे दरबज्जा खोलब, पात हिलब आ जड़ि सुरक्षित रहबक क्रम बनैत अछि। एहि चित्रमे बजारक आगमन नितान्त हिंसक धावा नहि, मुदा वेगवान रूपान्तर अछि। ‘जड़ि’क अर्थ सामुदायिक स्मृति, भाषा आ परिचय। कथाकार एहि दृश्यावलिक सहायता सँ आर्थिक नीति आ जीवनक भावात्मक स्थिरताकेँ एक छविमे जोड़ैत छथि। रूपकक तर्कक अनुसारे जड़ि स्थिर रहि सकैत अछि; वास्तविक कथामे लोकक साँझ बदलैत अछि।

वस्तु-सूची : उपभोक्तावादक दृश्य-प्रवेश

रंग-बिरंगक प्लास्टिक, चिक्कन कपड़ा, केबल टीवीक चैनल—ई वस्तु-सूची अर्थनीतिक सामान्य दावाकेँ संवेद्य बनबैत अछि। पाठक सामानक रंग, चमक आ संख्या वृद्धि देखि सकैत छथि। तथापि सामानक दाम, ककर पहुँचमे छल, के उत्पादित केलक, वा ककर रोजगार छुटल—ई सभ वर्णन नहि। नवीनता वस्तुक पहिचान बनैत अछि,

समान वितरणक प्रमाण नहि। सूची कथाक उद्घाटनमे तीव्र नवीनता दैत अछि, मुदा सामाजिक विषमताक अनेक स्तर पाछू छूटैत अछि।

दिनेशक रोजगार : वैयक्तिक उन्नतिक सङ्क्षिप्त घटना

कुसुमक बेटा दिनेश निजी कम्पनीमे नौकरी पबैत अछि। कथावाचक कहैत छथि जे ई पहिले असम्भव छल; एहि कथनकेँ उपन्यासक व्यक्तिनिष्ठ ऐतिहासिक परिणाम मानल जाए, समस्त पूर्वक भारतमे निजी रोजगारक पूर्ण अनुपस्थिति नहि। दिनेशक पद, वेतन, कार्यस्थिति वा कार्यालयक दृश्य नहि। नौकरीक घटना एक नव सम्भावना दर्शबैत अछि, ओकर व्यक्तिगत संघर्षक कथा नहि। एहि सङ्क्षेपक कारण राष्ट्रस्तरीय परिवर्तनक प्रभाव एक परिवारक जीवनरेखा सँ जल्दी जोड़ल जाइत अछि।

‘बेसी चाहय, बेसी दौड़य’ : समय-अनुभवक बदलल लय

बाजारसँ उपजी नव इच्छाक वर्णन बाहरी चीजक अपेक्षा गामक समयनियोजनपर अधिक असर देखबैत अछि। पहिने पीपर लग ‘धीर, थिर साँझ’मे गाम जुटैत छल; आब ओ सभा पातर होइत अछि। एतय कथात्मक समय स्वयं विषय बनल अछि: बाजार व्यक्ति-आकांक्षा तेज करैत, सामुदायिक धीम समय घटबैत अछि। मुदा कतेक दिन सभा बन्द भेल वा कोन परिवार अनुपस्थित रहल—एहन मापक नहि। ‘पातर’ एक कथावाचकीय अनुभूति, गणितीय उपस्थितिदर नहि।

नगर दिस प्रस्थान आ बन्न चौखट

किछु युवा नगर जाइत छथि; किछु घरक चौखट बरख भरि बन्द रहैत अछि। एहि दृश्यमे रोजगारक उपलब्धि आ घरक रिक्तता एकहि वाक्य-शृंखलामे संग रहल अछि। [–४७]क खाड़ी-प्रवासमे पक्का घर–सुन्न आँगन छल; आब घरेलू दूरी राष्ट्रीय शहरक निजी नौकरीसँ जुड़ैत अछि। मुदा युग बदललासँ दूनू कहानी समान नहि; विदेशक करार, मुद्रा-प्रेषण आ परिवारक फोन बनाम देशी शहरक रोजमर्रा वेग पृथक पात्रस्थितिसभ। पुनरावृत्तिक संग भौगोलिक समायोजन कथा वंशावली बनबैत अछि।

दिनेशक दृश्य-दृष्टि : बाहरक चमक, भीतरक साँझ

दिनेश शहरक नव गति देखैत अछि आ पुरनका गामक साँझकेँ मोन पाड़ैत अछि। कथाकार हुनकर संवेदनाक संक्षिप्त अन्तराल दैत छथि, मुदा महानगरक स्वतन्त्र दृश्य नहि। पाठक दिनेशक ‘देखल’ नगरकेँ मुख्यतः वर्णित चमक रूपमे जानैत छथि; गामक अनुभव पीपरक स्थानसँ अधिक ठोस। एहि दृष्टिकेन्द्र-विन्याससँ गाम विश्लेषणक स्थिर केन्द्र बनैत, नगर एक बदलैत बाह्य परिसर। ई केन्द्रता कृतिप्रणाली लेल संगत, किन्तु ग्रामीण-शहरी अनुभवक सममित विकास सीमित।

पीपर लग संवाद : दोसर दरजे पर अर्थनिर्णय

दिनेश ‘सभटा नव’ कहैत बूढ़बा लग अपन आश्चर्य उपस्थित करैत अछि। बूढ़बाक उत्तर ई नहि जे बाजार बन्द करू; ओ नव बातक स्वागत आ जड़िक रक्षाक सन्तुलन सिखबैत छथि। कथाक मूल्यविवेचन संवादपर टिकैत

अछि। मुदा बूढ़बाक वाक्य दिनेशक स्वतन्त्र प्रतिवाद बिना अन्तिम सूत्र बनि जाइत अछि। विचारक निर्णायकत्व प्रत्यक्ष आर्थिक संघर्षसँ अधिक गुरु-जकाँ संवाद द्वारा निर्मित—ई एहि कालखण्डक अध्यायसभमे घुरैत कथात्मक युक्ति अछि।

हवा आ जड़िक रूपकमे आन्तरिक विरोध

गीत जड़ि स्थिर रहबाक कारण गाछ नहि उड़बाक भरोसा दैत अछि। गद्य देखबैत अछि जे पीपरक पुरान सभा पातर पड़ैत अछि, घर बन्न रहैत अछि, इच्छा बदलैत अछि। ई कथात्मक तथ्य बतबैत अछि जे गामक ‘जड़ि’ सेहो सामाजिक अभ्यासक द्वारा टिकैत अछि; ओ अपरिवर्तनीय प्राकृतिक तत्व नहि। रूपक मजबूत सांस्कृतिक प्रेरणा अछि, मुदा ओकर अत्यन्त स्थैर्य-विश्वास परिवर्तनक भीतरक वास्तविक हेराफेरीकेँ कम करि देखाबय सकैत अछि। एकरा गीत–गद्यक सार्थक तनावक रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

लोकगीतक सामूहिक निश्चितता आ कथाक अनिश्चितता

पवन-गीत बार-बार कहैत अछि जे जड़ि गहींर रहत तँ गाछ नहि उड़त। मुख्य कथामे जड़िक बचबाक निश्चित परिणाम नहि, बरु तकरा व्यवहारमे सम्हारबाक दिनेशक संकल्प अछि। भविष्यक पीढ़ी कहानी सुनत आ पीपर लग आओत—ई प्रचलन समयक संग कथित होइत, प्रत्येक बच्चाक वास्तविक स्मृति नहि जाँचल गेल। लोकगीत आश्वासनक भाषा अछि; गद्य प्रयासक। एहि अन्तरसँ उपन्यास परिवर्तनकेँ भाग्यक सुरक्षित निर्णय नहि, उत्तरदायित्वक सतत अभ्यास बनबैत अछि।

कथा सुनएबाक आयोजन : प्रतिरोध नहि, पुनरुच्चारण

दिनेश नगरसँ घुरैत बेर बच्चासभकेँ पीपर लग बैसाबैत छथि आ गाछ, पोखरि, पुरान नामक कथा सुनबैत छथि। ई ठोस कर्म बजारक वेगक प्रतिपक्षमे सांस्कृतिक समय निर्मित करैत अछि। किन्तु कथा-श्रवणक प्रसंगमे बच्चासभक उत्तर, असहमति वा प्रश्न नहि। परम्परा प्रसारित होइत अछि; नयका पीढ़ी तकरा कोना फेर लिखत, से खुलल। प्रकरणक निष्कर्ष स्वतन्त्र ‘जड़ि’क उपलब्धिसँ अधिक कथाकेँ दोहराएबक निर्णय अछि।

पूर्व-प्रवास आ नव उदारीकरणक कार्यगत अन्तर

[–४७]मे परदेशक धन गामक पक्का घर बनबैत छल; एतय उदारीकरण गामक भीतर उपभोगक वस्तु आ बाहर निजी रोजगारक दुहरे बदलावक रूपमे उभरैत अछि। दूनू अध्यायमे अनुपस्थित जवानक घर, मुदा स्वदेशी कम्पनीक नौकरी आ खाड़ी निर्माणश्रमक अलग नीतिस्थल छथि। कथा आर्थिक परिवर्तनक जटिलता समेटबाक लेल समान ‘जड़ि’ प्रतिमाक उपयोग करैत अछि। आलोचनाकेँ एकर पुनरावृत्तिक उपलब्धि आ फरक समस्याक समरूपीकरणक सीमा दुनू रेखांकित करबाक चाही।

पात्र-वितरण : बजारक लाभार्थी ककर आवाज?

दिनेश एक शिक्षित युवा लाभार्थी छथि। मुख्य कथामे स्थानीय दुकानदार, किसान, प्लास्टिक-विक्रेता, दर्जी, बाहरी श्रमिक वा वस्तु खरीदयवाली स्त्रीक विस्तृत आवाज नहि। ‘लोक आब बेसी चाहय लागल’ सामूहिक कथन

अछि; हुनकर अलग मूल्याङ्कनक विवरण नहि। एही कारण बजारक सामाजिक परिणाम युवा पुरुषक रोजगारी आ बूढ़बाक नैतिक विवेचनक बीच सीमित रहैत अछि। कथा समुदायक व्यापक परिवर्तनक प्रतिज्ञा करैत अछि, मुदा चित्रण एक चयनित परिवारक माध्यमसँ करैत अछि।

महिला वंशरेखा आ दिनेशक परिवर्तित केन्द्रता

कुसुम अध्याय [-४७]मे प्रतीक्षाक प्रतीक रचने छलीह; आब कथा हुनकर बेटा दिनेशपर केन्द्रित होइत अछि। ई पीढ़ीबदल स्मृतिक उत्तराधिकारबोध दैत अछि, पर पात्रगत लिंग-भूमिका सेहो बदलैत अछि: कुसुम घरेलू स्मृति–आशा, दिनेश नौकरी–बाजार–बच्चाक शिक्षा बीच। एहि बाँटकेँ लेखकक समस्त स्त्रीचरित्रक अन्तिम स्वरूप नहि मानब, मुदा वर्तमान अध्यायक दृष्टिसीमाक रूपमे स्वीकारब। बच्चा सभक नव भविष्य दूनू पीढ़ीक कथानककेँ जोड़ैत अछि।

नव केबल माध्यम : [-४८]क अगिला विस्तार

पूर्व [-४८]मे पहिल रेडियो आ टेलीविजन बाहरी आवाज आ गामक गीतक विवाद खोलने छल। [-४५]मे केबल टीवीक दर्जनों चैनल आबैत अछि। तकनीकी विस्तार आगूक बजार-संरचनाक संकेत बनैत अछि; मात्रा आ विकल्प बढ़ैत अछि, ध्यानक प्रतिस्पर्धा तेज होइत अछि। मुदा केबलक विशेष कार्यक्रमक दृश्य वा गामक प्रतिक्रिया विस्तृत नहि। एहि सीमा सहित देखलासँ कथाक मध्यस्थ माध्यमक आवर्तन मात्र उपकरणक सूची नहि, ध्यान-समयक परिवर्तनक एक श्रृंखला बनैत अछि।

राष्ट्रीय इतिहासक स्थानीय अनुवाद

‘आर्थिक सुधार’ कथाक बाहरी कालचिह्न अछि; ओकर गाममे अनुवाद वस्तु, नौकरी, वेग आ चौपालक घटैत सहभागिता अछि। कथावाचक दिल्लीक नीतिनिर्माताक दृश्य नहि दैत, एके राष्ट्रीय घटनाकेँ स्थानीय परिवारक समयक समस्या बनबैत अछि। ई स्थानीयकरण उपन्यासक महत्त्वपूर्ण शिल्पगत निर्णय। तइयो बाजारक कारण हर निजी नौकरी तत्काल उत्पन्न भेल—एहन ऐतिहासिक निष्कर्ष कथा मात्रसँ स्थापित नहि। रचनाक सामयिक संकेत आ आर्थिक इतिहासक विस्तृत प्रमाण परस्पर अलग।

स्मृतिस्थलकेँ स्थिर रहबाक अतिरिक्त श्रम

बूढ़बा गाछक जड़ि गहींर करबाक उपदेश दैत छथि, मुदा ओ स्वतः-संवर्धित जड़ि नहि; दिनेशक प्रति-भ्रमण, बच्चा लऽ जाएब आ कथा सुनब आवश्यक अछि। एहि ठोस अभ्यासमे गामक स्मृति बचबैत समाजक श्रम पुनः प्रकट होइत अछि। ई श्रम बाजारक आर्थिक दौड़सँ समय निकालि कएल जाइत अछि। कथाक सुन्दरतम मोड़ ई अछि जे स्थानीय पहचान संग्रहालयक जड़ि नहि, वर्तमान जीवित समयक पुनरावर्ती क्रिया बनैत अछि।

काल-विस्तार : बजारक तीव्रता आ पीढ़ीक धीम अभ्यास

अध्यायक आरम्भ १९९१, बदलैत बाजार आ रोजगारक तेजी देत अछि; मध्य गद्यमे गामक साँझ पातर पड़ैत अछि; अन्तिम पंक्तिमे वर्षे-वर्ष बच्चासभकेँ कथा सुनाओल जाइत अछि। त्वरित परिवर्तन आ दीर्घ पुनरावृत्ति परस्पर

विरोधी कथन-अवधि रचैत अछि। विस्तृत घटनाकालक तुलना मे प्रत्यक्ष दृश्य केवल दिनेशक बूढ़बा-वार्ता। बाहरी घटना कम, मुदा सामाजिक समयक गति बड़ा प्रश्न।

मूल्यांकन : स्वागत, सावधानी आ नॉस्टेल्जियाक प्रश्न

ई अध्याय बजारक लाभकेँ अस्वीकार नहि करैत—दिनेशक नौकरीक सम्भावना प्रस्तुत अछि—मुदा उन्नतिक संग सामूहिक समयक क्षय देखबैत अछि। एकर सीमा अछि कि नव आर्थिक लाभ–हानिक बहुस्तरीय अनुभव आ उपभोक्तावादक पक्षमे स्वतन्त्र तर्क नहि। पीपरक साँझ लगभग नैतिक आदर्श बनैत अछि; नॉस्टेल्जिया भीतरक वर्गीय असमानताकेँ ढाँकि सकैत अछि। तथापि आख्यानक केन्द्र बाँचल अछि: नव साधन स्वीकार करैत सामुदायिक स्मृतिक क्रिया स्वयं पुनर्गठित करब।

स्रोत-सीमा आ अग्रिम सम्बन्ध

आलोचनाक पाठाधार मूल [–४५]क ‘हवा आ जड़ि’ गीत, १९९१क उद्घोषणा, दिनेशक निजी नौकरी, केबल माध्यम, बूढ़बाक संवाद आ बच्चाकेँ कथा सुनएबाक पुनरावृत्ति। न त कम्पनीक नाम अछि, न आमदनीक संख्या, न आर्थिक नीतिक विस्तृत विवरण। अगिला अध्यायमे ‘नव साधन’ बजारक वस्तुसँ बदलि कम्प्यूटरक अभिलेखी माध्यम बनैत अछि।

प्रकरण ५७ | मूल अध्याय –४४ — पहिल कम्प्यूटर

नारिकेल पात पाठशाला : स्थानक माध्यमान्तर

‘पहिल कम्प्यूटर’क कथा गामक नारिकेल पात पाठशालामे घटैत अछि। एहिसँ नव यन्त्र कोनो अनाम दफ्तरमे नहि, ओहि संस्थामे अबैत अछि जे पुरान लेखन-स्मृतिक नाम अपने भीतर राखने अछि। दिनेशक बाद अनुष्ठानक भार प्रतिमापर आयल; एहि पीढ़ीबदलसँ नव साधन लोकज्ञानक संस्थागत निरन्तरतामे प्रवेश करैत अछि। कम्प्यूटरक आगमन केवल आधुनिक वस्तुक प्रतिष्ठापन नहि; पाठशालाक हस्तलिखित परम्परा आ डिजिटल अक्षरक सामना निर्माण करैत अछि। स्थलक ई चयन दीर्घ आख्यानक स्मृति-भूगोल आ ज्ञान-माध्यमक ऐतिहासिक विस्तार जोड़ैत अछि।

धूसर यन्त्र आ हरियर अक्षर : नव उपकरणक दृश्य-देह

कम्प्यूटरक वर्णन ‘पैघ, धूसर’ शरीर आ ‘हरियर’ टिमटिमाइत अक्षरमे होइत अछि। ई वर्णविशेष पाठककेँ वस्तुक ऐतिहासिक भिन्नता अनुभव करबैत अछि: लिखित पातक स्थिर रेखा अब प्रकाशित पर्दाक चलायमान उजास बनैत अछि। बच्चा-बुढ़ सभ जुटैत छथि; कियो जादू कहैत, कियो संशय देखैत। कथावाचक एहि विविध प्रतिक्रिया के क्षणिक दृश्य बनबैत छथि, मुदा ककरो पूर्ण स्वतन्त्र तर्क नहि। नव वस्तुक भौतिकता जादुई विस्मय आ व्यावहारिक शिक्षाक बीचक प्रवेशद्वार बनैत अछि।

पहिल दृश्य : दर्शकसमूहक मौन आ प्रश्न

गामक लोक यन्त्रकेँ घेरि देखैत छथि। एक वृद्धक छोट प्रश्न—‘यंत्र अक्षर राखि सकैत अछि, मुदा अर्थ राखत की?’—आरम्भिक विस्मयकेँ अर्थक संकटमे बदलैत अछि। प्रश्नकर्ताक नाम नहि अछि, किन्तु ओ क्षणिक प्रतिपक्ष प्रदान करैत छथि। पाठशालाक नव साधनक स्वागत पहिने तालीसँ नहि, प्रश्नसँ भेटैत अछि। एहि संरचनामे संशय तकनीक-विरोधी अन्धकार नहि; अक्षरक भण्डारण आ कथानुभवक अन्तर स्पष्ट करबाक साहित्यिक उपकरण अछि।

प्रतिमाक पहिल टाइप : सम्पूर्ण पञ्जी नहि, गीतक पहिल पाँति

मूल गद्य कहैत अछि जे प्रतिमा गामक सबसँ पुरान लोकगीतक पहिल पाँति कम्प्यूटरपर टाइप केलनि। एकरा सम्पूर्ण उपन्यास, सभ मृतकक नाम वा पूरा लोकगीतक डिजिटलीकरण कहब गलत। ई आरम्भिक क्रिया अतिशय सीमित, मुदा कथात्मक रूपेँ निर्णायक अछि। अक्षर प्रथम बेर नव प्रकाशित माध्यममे प्रवेश करैत अछि; बच्चा ताली बजबैत छथि। नव यन्त्रक ऐतिहासिक सम्भावना कथावाचक बादमे बतबैत, मुदा दृश्यगत उपलब्धि केवल आरम्भिक पाँति धरि अछि।

प्रतिमाक अनुभूति : गीतक ‘अनचिन्हार घर’

टाइप कएल अक्षर उभरैतहि प्रतिमाकेँ बुझाइत अछि जे गीत नारिकेल पातसँ निकलि अनचिन्हार घर दिस जा रहल अछि। ई प्रतिमाक अनुभवक उपमान अछि, यन्त्रक अन्दर गीत सचमुच देहधारी भऽ विचरण करैत अछि—एहन घटना नहि। एहि अनुभूति मे वस्तु-परिवर्तन भावात्मक दूरी पैदा करैत अछि: अपना भाषा रहितहुँ माध्यम परदेशी भऽ सकैत अछि। कथा एहि विचित्र अन्तरकेँ प्रतिमाक क्षणिक आन्तरिक दृष्टिकेन्द्रसँ प्रकट करैत अछि।

‘यन्त्र अक्षर रखैत अछि’ : वाणी आ अभिलेखक द्वन्द्व

वृद्धक प्रश्न आ बूढ़बाक दीर्घ उत्तर दू अलग पीढ़ीक स्वरमे एके केन्द्रीय समस्याकेँ छूबैत छथि। कम्प्यूटर तीव्र लिप्यन्तरण करैत अछि; मुदा शब्दक प्रचलन, उच्चारण, श्रोता आ कथा-सम्बन्ध स्वतः सुरक्षित नहि। कथावाचक उपकरणक संग्रह-क्षमता आ सामुदायिक व्याख्याक बीच भेद रखैत छथि। तथापि यन्त्रक गणना आ मानवीय अर्थ अनिवार्य शत्रु नहि; बूढ़बा शर्त सहित एकरा ‘पहरुआ’ बनबाक सम्भावना दैत छथि। द्वन्द्व अन्ततः तकनीकी निषेध नहि, सम्पादकीय सावधानीक प्रश्न बनैत अछि।

हरिपति कवि सँ कम्प्यूटर धरि घोषित वंशावली

बूढ़बा हरिपति कविक कालसँ लेखन-साधनक परिवर्तन मोन पाड़ैत छथि: कागच, छापाखाना, आब कम्प्यूटर। एहि उल्लेखमे स्मृतिवाहक पात्र अनेक अध्यायक समय एकहि संवादमे जोड़ैत छथि। कथावाचक अलग ऐतिहासिक विवरणसँ बचैत, बूढ़बाक मौखिक कालानुक्रम पर निर्भर करैत छथि। एहि अनुकृमणिकाकेँ हर वस्तुक तकनीकी विकासक सार्वभौम इतिहास नहि, उपन्यासक अपन स्मृति-वंशावली मानल जाए। लेखनक माध्यम बदलैत रहल, कथा-स्वामित्वक प्रश्न पुनः उपस्थित होइत रहल।

‘हमरहि शब्द’ : अभिलेखक भाषिक अधिकार

बूढ़बा कम्प्यूटरक स्वागत तखने करैत छथि जँ गामक कथा गामक शब्द आ दृष्टिकोणमे सुरक्षित रहय। एहि कथनसँ [–५७]क साहेबक नोटबुकक स्मृति जागैत अछि, जतए बाहरी विद्वान सुनेल लोककथा अपन पूर्वाग्रहमे बदलि देने छल। एतय संकट केवल कागच बनाम स्क्रीन नहि; अभिलेखक भाषा, व्याख्याता आ स्वामित्वक अछि। नव उपकरण अपन समुदाय द्वारा उपयोग भेल तँ साधन, बाहरी वर्गीकरणमे नामकेँ आँकड़ामात्र बनौलक तँ नयका विकृति। ई अन्तर कथा-चक्रक गहन आत्मचिन्तन बनैत अछि।

अनुष्ठानक उत्तराधिकार : दिनेशक बेटी प्रतिमा

पुत्रक बाद पुत्रीकेँ अनुष्ठानक भार भेटब एहि कथाक पारिवारिक संरचनामे महत्त्वपूर्ण अछि। प्रतिमा केवल यन्त्र देखनिहार साक्षी नहि; पहिल टाइप स्वयं करैत छथि, शिष्यसभकेँ शिक्षित करबाक प्रक्रिया प्रारम्भ करैत छथि। एहि ठोस कर्मसँ स्मृतिरक्षाक उत्तराधिकार लैंगिक रूपसँ एकरेखीय नहि रहैत। तथापि पाठशालाक अन्य महिला शिक्षक, संग्राहक वा लोकगायिकाक व्यक्तिगत कार्यक विवरण नहि अछि; प्रतिमा एक प्रतिनिधि पात्रक रूपमे गामक बहुविध स्मृति-श्रम समेटैत छथि।

पाठशालाक शिष्य : नव लेखनक सामूहिक वाहक

पहिल कम्प्यूटरपर केवल प्रतिमा नहि, बादमे शिष्यसभ सेहो लोकगीत आ कथाक टुकड़ा टाइप करब सिखैत छथि। एहि छोट आवृत्तिमे एक अकेल घटनासँ प्रशिक्षणक सामूहिक अभ्यास जन्मैत अछि। पाठककेँ कोन शिष्य, कोन पाँति, कोन दिन—एहन पूर्ण विवरण नहि भेटैत। मुदा घटना स्पष्ट: उपकरणक क्षमता तत्काल लोक-संस्कृतिक व्यवहारे प्रवेश करैत अछि। एहि रूपमे यन्त्र ‘आयल’ पर कथा नहि ठमैत; कौशल-प्रसारक संकेत देत अछि, जे दीर्घ आख्यानक शिक्षा-संस्थाक पुनरावर्तनक अनुरूप अछि।

शीघ्र गिनती आ नामक जीवित कथा

गीत दोहरबैत अछि जे यन्त्र तेज गिनैत अछि, मुदा ‘नाम गिनती नहि’। एहि वाक्यक सौन्दर्य मात्र प्रतिरोधमे नहि; नामक पाछू व्यक्तिगत कष्ट, सम्बन्ध आ उच्चारणक कथा छिपल अछि। बूढ़बा संख्या वा लिखित अक्षरकेँ अनावश्यक नहि मानैत छथि, ओ नामकेँ पूर्ण अर्थसहित सुरक्षित करबाक शर्त रखैत छथि। एकरे कारण अंकन, डिजिटल सूची आ गामक नाम-स्मृति परस्पर प्रतिस्थापक नहि; उत्तम अभिलेखक लेल दुनूक समन्वय अपेक्षित। ई विषय आगामी फोन–स्क्रीनक अध्यायसभसँ सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

वास्तवमे पाठशालामे यन्त्र पहुँचनाइ, प्रतिमा द्वारा पाँति टाइप कएल जाएब, बच्चाक ताली, शिष्यक प्रशिक्षण—ई ठोस दृश्यात्मक मोड़ छथि। बूढ़बाक दीर्घ संवाद विचारगत घटना दैत अछि, उपकरणक नई क्रिया नहि। एवम् संख्यात्मक सूचककेँ सीधे कथाक असफलता वा सफलताक अंक मानब नहि। एक छोट घटनामे भविष्यक सांस्कृतिक दिशा बदलबाक सम्भावना एहि अध्यायक विशेषता अछि।

कथनस्तरमे भविष्य-दृष्टि : ‘आगू बहुत बरख बाद’

अन्तिम गद्य कहैत अछि जे ई छोट सेतु बहुत बरख बाद सम्पूर्ण डिजिटल अभिलेखागारमे बदलत। ई स्पष्ट कथावाचकीय पूर्व-संकेत अछि, वर्तमान अध्यायमे सम्पन्न अभिलेखागार नहि। यदि समीक्षक घोषित भविष्यकेँ तत्काल प्राप्त परिणाम मानि लेत, तँ कथाक भविष्य-रचना आ वास्तविक घटना एक भऽ जाएत। वाचक एहि स्थानपर पात्रसभसँ अधिक जानकारीक दावाक संग भविष्य खोलैत छथि। पाठककेँ प्रश्न बचैत अछि: आगेक खण्डसभ वास्तविकतामे अभिलेखक क्षमता आ जोखिम दुनू निभबैत अछि कि नहि।

मुद्रणक पूर्वक संघर्षक तकनीकी रूपान्तरण

[−६३]मे छापाखाना, [−५७]मे बाहरी पुस्तक, आब [−४४]मे कम्प्यूटर एक कथा-अभिलेखी त्रयी बनैत अछि। छापबाक समय, अर्थक विकृति आ अक्षरक भण्डारण तीन पृथक समस्या छथि। कम्प्यूटरक घटना पूर्वक विमर्शकेँ निरस्त नहि करैत; ओकर नयका अवतार बनबैत अछि। एकरा प्रगतिक सरल सीढ़ी मानब अपूर्ण, किएक तँ पुरान माध्यममे जतेक समुदाय-स्वामित्व सम्भव छल, नयका माध्यमोमे ओतबे सम्भावना आ खतरा बनल रहैत अछि।

पात, कागच आ पर्दा : वस्तुक रूपान्तरण

लोकगीत ‘पात होय वा पर्दा’ कहि लेखनसाधनक दूरी घटबैत अछि। मुख्य गद्यमे पात वंश-स्मृति जगबैत अछि, पर्दापर हरियर अक्षर टिमटिमाइत अछि। दूनू वस्तु भिन्न इन्द्रिय-अनुभव देत अछि—पात स्पर्शयोग्य, पर्दा प्रकाश-आश्रित। मुदा कथाकार यन्त्रक दीर्घकालीन भंडारण, बिजली निर्भरता, नकल वा नष्ट होएबाक तकनीकी विवरण नहि दैत। तेँ ई रूपान्तरण साहित्यिक-सांकेतिक स्तरपर पहिल आश्चर्य अछि, सम्पूर्ण डिजिटल संरक्षणक व्यावहारिक मार्गदर्शिका नहि।

डिजिटल ‘जादू’ आ बूढ़बाक दीर्घजीवी जादुई अस्तित्व

कियो कम्प्यूटरकेँ जादू बुझैत अछि; बूढ़बा स्वयं साधारण ऐतिहासिक आयुक पारक साक्षी छथि। एहि निकटतामे दुई विस्मय-रूप उपस्थित अछि: उपकरणक अपरिचित कौशल आ बूढ़बाक जादुई यथार्थ। कथा दूनूकेँ समान तत्त्व नहि कहैत। कम्प्यूटरक अक्षर विज्ञानसाध्य घटना रूपमे वर्णित अछि, बूढ़बाक स्मृति चमत्कारिक लोक-कथा-संरचनाक भाग। विस्मयक भाषिक समानता दुनू वस्तुक अस्तित्वगत श्रेणी एक करबाक पर्याप्त कारण नहि; बल्कि ई गामक नव-पुरान दुनू रूपप्रति जिज्ञासा राखबाक प्रवृत्ति दर्शबैत अछि।

स्थानिक दर्शक आ भविष्यक विश्व-पाठक

पहिल कम्प्यूटर गामक शिष्य आ बूढ़ा लोक देखैत छथि; अन्तिम भविष्यक डिजिटल संग्रह व्यापक पहुँचक सम्भावना बनबैत अछि। प्रतिमा आ शिष्यसभकेँ एखन केवल पाठशालाक सीमित लोक-अभ्यास उपलब्ध अछि। भविष्यक पठनसमुदाय कतेक व्यापक, कोन भाषामे, कोन अधिकारसँ अभिलेख पढ़त, से न कहल गेल। एहि अधखुलल भविष्यक कारण पाठक नव साधनक उत्साह अनुभव करैत, मुदा ओकर सामाजिक मूल्य पर निर्णय स्थगित राखैत अछि।

वृद्धक प्रश्नक अनुत्तरित कठोरता

‘अर्थ राखत की?’क प्रश्नक उत्तर बूढ़बा नैतिक शर्तक रूपमे दैत छथि। मुदा यन्त्र स्वयं अर्थ बुझैत अछि वा नहि, पाठकक अर्थ-निर्माण कोना चलत, श्रोता गुम भेलापर गीतक लय कोना सुरक्षित रहत—ई प्रश्न कथामे सुलझैत नहि। प्रतिमाक पहिल टाइप लेखनक सफलता अछि, ध्वनि, प्रसंग आ समुदाय-साक्षीकेँ सम्पूर्ण डिजिटलीकृत करबाक सफलता नहि। ई अपूर्णता अध्यायक आलोचनात्मक सम्भावना जीवित रखैत अछि।

मूल्यांकन : छोट आरम्भ आ विशाल आत्मसचेतन आकांक्षा

एक लाइन टाइप कएल जाएब अत्यल्प क्रिया अछि, मुदा पूरा इतिहासक लेखन-अधिकारक प्रश्न एकरा घेरैत अछि। यही असमान अनुपात अध्यायक सौन्दर्य आ सीमा। कथाकार भविष्यक डिजिटल अभिलेखागारक घोषणा करैत छथि, मुदा तकर निर्माण-संघर्ष एखन नहि देखबैत। पाठशालाक शिक्षासँ नयका रक्षक-पीढ़ी बनैत अछि; उपकरण स्वयं ‘पहरुआ’ बनबाक शर्त समुदाय-स्वामित्व आ अर्थसंरक्षणसँ जुड़ल अछि। तकनीकी चमत्कारकेँ मानव-अभिलेखक आशा बनाबयवाला अध्याय सफल, पूर्ण समाधान रूपमे नहि।

पाठाधार आ आगूक अनुसंधान

एहि प्रकरणक आधार मूल [–४४]क ‘यन्त्र आ अर्थ’ गीत, धूसर कम्प्यूटरक आगमन, प्रतिमाक पहिल टाइप, वृद्धक प्रश्न, बूढ़बाक संवाद आ भविष्य-संकेत अछि। डिजिटल संग्रह, सर्वनाम-सुरक्षा, तकनीकी स्वामित्व, स्मृतिक त्रुटि वा सर्वसुलभ पहुँचक समुचित घटना एखन पाठ नहि दैत। अगिला अध्याय जलक सङ्कटमे नामसँ आगाँ जीवनक भौतिक शर्त दिस कथाकेँ मोड़ैत अछि।

प्रकरण ५८ | मूल अध्याय –४३ — सुखल होइत धार

बाढ़िक नदी आब पियासल : कथावस्तुक उलटाव

कमला-बलान, जे अनेक प्रकरणमे घर बहाबयवाली आ साक्षीक संकटस्थली रहल, आब घटैत जल-स्तरक नदी बनैत अछि। बूढ़ लोककेँ स्मृति अछि जे बरसातमे ओकर धार बान्ह छूबैत छल; आब गर्मीमे बालुक टीला उघड़ैत अछि। एहि परिवर्तनमे नदी कथाक सक्रिय विषय बनैत अछि। जलक अतिरेकसँ जलक अभाव धरि रूपान्तरण केवल मौसमक विवरण नहि: उपन्यासक जल-भूगोल अपन नैतिक अर्थ बदलैत अछि। पाठक पूर्वक बाढ़ि-स्मृतिसँ वर्तमान सुखल धारक विडम्बना नापैत छथि।

धीम बिपत्तिक कथन-अवधि

बाढ़ि अथवा आगि प्रायः एक राति–एक दृश्यक आघातमे घटित छल; नदीक जल-ह्रास ‘बरख-दर-बरख’क धीम कालमे अबैत अछि। बाह्य क्रियाक संख्या अपेक्षाकृत कम होएओ संकटक अवधि पैघ अछि। नदीक बालुक, इनारक गहराइ आ माछक घटैत मात्रा एक लम्बा परिवर्तनक सँचित लक्षण बनैत छथि। एहि कालिक विघटनमे कथाकार प्रत्यक्ष ‘बिपत्ति आयल’ कहि अचानक समाधान नहि अनैत; बूढ़ लोक पहिने चिन्ह देखैत छथि, सत्यनारायण तकर नाम राखैत छथि, तखन हस्तक्षेप शुरू होइत अछि।

जलक मानवीकरण : ‘अपने पियासल’

‘पियासल धार’ गीत नदीकेँ जल-दातासँ जल-चाहनिहार जीव बनबैत अछि। नदी स्वयं पियासल होएब वैज्ञानिक उपपत्ति नहि, मानवीकरणक काव्यात्मक प्रक्रिया अछि। मुख्य गद्य जल-स्तर, बालु, घटैत माछ आ रंग बदलैत पोखरिक ठोस दृश्य देत अछि। गीतक प्रतीक आ गद्यक भौतिक लक्षण मिलि पाठकक संवेदनात्मक दृष्टि उलटैत अछि: जे पानि पहिने मनुष्यकेँ डेराबैत छल, ओहि पानीक संरक्षण आब मनुष्यक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

पर्यावरणीय कारणक दावाक सीमा

मुख्य कथावाचक जंगलक कटान आ दूर कल-कारखानाक प्रदूषण नदी धरि पहुँचनाइ उल्लेख करैत छथि। ई कथा-अन्तर्गत कारणसूचक विवरण अछि; कोन उद्योग, कोन अपशिष्ट, कोन जलमापक वा कोन सालक डाटा उपलब्ध नहि। नदीक घटब पूर्णतः एही एक कारणसँ भेल—एहन परिमाणित निष्कर्ष पाठ नहि दैत। पर्यावरणीय विमर्शक लेल ई कारण-संकेत अर्थवान, मुदा समीक्षाकेँ साहित्यिक कथनक स्तरसँ बाहरी वैज्ञानिक निश्चितता उपजाएब नहि चाही।

माछक कमी आ सोनमा माझिनक पूर्व-स्मृति

कथावाचक कहैत छथि जे माछ जालमे पहिने जेना भरि नहि अबैत। मछुआराक श्रम आ जलक जीवितता एक वाक्यमे जुड़ैत अछि। सोनमा माझिनक पुरान जलज्ञान बूढ़बाक संवादमे फेरे स्मरण होइत अछि। एतय पूर्व-पात्रक याद एक नैतिक अपेक्षा बनबैत अछि: जलकेँ ‘भेंट’ आ धैर्य चाही। मुदा वर्तमान मछुआरा परिवारक स्वतन्त्र वाणी, आयक हानि वा जालक बदलैत काज नहि चित्रित। जल-पर्यावरणक सामाजिक अर्थ स्पष्ट, जीविकोपार्जनक विस्तृत सूक्ष्मकथा अपूर्ण।

पोखरि, इनार, नदी : एके जल-दुनियाक भिन्न अवस्था

गर्मीमे पोखरिक पानि हरियर-करिया होइत अछि, इनार आओर गहींर खुनय पड़ैत अछि, नदी बालुक उघाड़ैत अछि। तीन जलस्थान एको अर्थ नहि रखैत: बहैत नदीक मात्रा घटब, स्थिर पोखरिक रूप बदलब आ भूगर्भ जल लेल इनारक श्रम बढ़ब। एकहि सूखा-शब्दक तरे एहि फरककेँ मेटि देल जाय तँ कथाक भूगोल शिथिल होएत। स्थानक अलग-अलग संकेत संकटक व्यापकता देखबैत छथि, यद्यपि जलवैज्ञानिक नक्शा वा मात्रात्मक सम्बन्ध पाठमे नहि।

सत्यनारायण : नव पीढ़ीक पर्यावरण-पाठक

प्रतिमाक बेटा सत्यनारायण बूढ़बासँ कहैत छथि जे जोड़ी पोखरि छोट भऽ गेल, मूल गोहिक जल घटि रहल अछि। हुनकर भूमिका मात्र संदेशवाहकक नहि; ओ लक्षण देखैत, ओकरा प्रकृतिक रोगक सम्भावनाक भाषा दैत छथि। वंशक्रममे प्रतिमाक कम्प्यूटर-प्रयोग पछाति पुत्रक जल-चिन्ता, स्मृतिक भिन्न साधनक तुलनात्मक बोध बनबैत अछि। व्यक्ति अपन जीवनकालक अन्तर देखैत अछि; बूढ़बा बहुपीढ़ीय स्मृति जोड़ैत छथि। दूनूक कथन मिलि भविष्यक निर्णयक आधार बनैत अछि।

बूढ़बाक ‘नव गोहि’ : रूपकक बड़े परिवर्तन

बूढ़बा कहैत छथि जे आब एहन गोहि आयल अछि जे जल पीबि रहल, हवा गन्दा करैत आ माटि खा रहल अछि। ई वास्तविक जैविक गोहिक नयका प्रजाति नहि, प्रकृतिनाशक शक्तिक रूपक अछि। उपन्यासक शीर्षकक जीव-प्रतिमान एतय फैलैत अछि: गोहि देह लैत छल, नाम नहिं; नव विनाश गामक नाम बचाबयवाली जमीन-पानी नष्ट कऽ सकैत अछि। एहि रूपकमे कथाक दाँव नामरक्षासँ जीवित आवासरक्षा धरि बढ़ैत अछि। रूपककेँ मूर्त जैविक घटना बुझने कथा गम्भीर रूपान्तर छूटि जाएत।

स्मृतिरक्षासँ संसाधनरक्षा : नैतिक कार्यक्रमक विस्तार

बूढ़बाक संवादमे निर्णायक घोषणा अछि जे नामक संग जलो बचाएब पड़त। पूर्वक अध्यायसभमे मृतकक नाम, संस्थागत अभिलेख आ लोकगीत संरक्षणक केन्द्र छल; आब संरक्षणक वस्तु भौतिक जीवनाधार अछि। एहि बदलावक कारण ‘गाम रहत तँ नाम रहत’ जकाँ सादा नारा नहि, बल्कि अस्तित्वक शर्तबद्धता खुलैत अछि। यदि जल-जंगल-माटि समाप्त भेल तँ स्मृतिधारी समुदाय कहाँ टिकत? एतय दीर्घ उपन्यास अपन आरम्भिक स्मृति-प्रस्तावक सीमा पहचानबाक प्रयत्न करैत अछि।

मूल गोहि आ जलक अस्पष्ट सम्बन्ध

सत्यनारायण कहैत छथि जे मूल गोहिक जल घटि रहल अछि। एहि कथनमे लोककथा, जीवस्थान आ जलक मात्रा एक-दोसरासँ सम्बद्ध छथि। मुदा गोहिक प्रत्यक्ष उपस्थिति, ओकर प्रतिक्रिया वा जैविक स्थिति एहि अध्यायमे विस्तृत वर्णित नहि। ‘मूल गोहिक जल’ कहब अर्थतः जलसंसारक संकट; गोहि स्वयं एतय व्यक्तिगत संवादक पात्र नहि। जादुई यथार्थ आ पारिस्थितिक दृश्यक सीमा एकरे कारण सुरक्षित रहैत अछि।

‘भेंटक कमी नहि’ : पुरान समझ पर प्रश्न

बूढ़बा सोनमा माझिनक भेंट-धैर्यक शिक्षा स्मरण कऽ कहैत छथि जे एहि बेर संकट भेंटक कमीसँ नहि, प्रकृतिक अन्यायसँ अछि। एतय परम्परा सम्मानित होइतहुँ समाधानक पर्याप्त उपकरण नहि बनैत। पहिने अनुष्ठान आ भेंट जलजीवनक सम्बन्ध बुझबैत छल; आधुनिक सूखा वृक्षारोपण, जलसञ्चय आ महारक रखरखाव चाहैत अछि। एहि रूपान्तरणमे कथा लोकविश्वासक वैधता आ वर्तमान कठिनाईक बीच एक नयका समाधान-स्थान रचैत अछि। मुदा ‘प्रकृतिक अन्याय’ शब्द मानवीय जंगल-कटानक कारणसँ तकर आन्तरिक टकराव सेहो उपस्थित करैत अछि।

चन्ना गाछीक चारू कात वृक्षारोपण

सत्यनारायण नव गाछ रोपब शुरू करैत छथि। गाछ एखन मृतक स्मृतिक स्मारक मात्र नहि; वातावरण बदलबाक व्यवहारिक कामक सम्भावना सेहो अछि। [–७०]क चन्ना गाछीक विस्तृत स्मृतिवन एतय पर्यावरण संरक्षणक केन्द्र बनैत अछि। कतेक गाछ लगल, कोन प्रजाति, कतेक बाँचल—ई पाठमे नहि। तें वृक्षारोपणक घोषणा क्रिया-सिद्ध अछि, पर सम्पूर्ण पारिस्थितिक पुनरुद्धार सम्पन्न भऽ गेल कहब उचित नहि।

पोखरिक महार आ छोट आहर : परिदृश्यक पुनर्निर्माण

युवा सभ पोखरिक महार बान्हैत छथि आ वर्षा-पानि रोकबाक लेल छोट आहर खुनैत छथि। एहिसँ प्रतिमात्मक ‘जल बचाउ’ वास्तविक स्थल-संशोधनक क्रियामे बदलैत अछि। पहिल बाढ़िमे बान्ह सुरक्षा लेल महत्त्वपूर्ण छल; आब जल रोकबाक हेतु अलग संरचना बनैत अछि। एके माटि-श्रम संकटक उलटले अर्थ बदलि सकैत अछि। मुदा कितनी पानि धारण भेल, आहर कतए अछि, कितेक समय चलल—ई वर्णन अनुपस्थित। दृश्य प्रयासक अछि, मापक परिणामक नहि।

जन्मपर गाछ : निजी घटनासँ पुनरावर्तित रीति

हर नव बच्चाक जन्मपर गाछ रोपबाक परम्परा स्थापित कएल जाइत अछि। ई नव कथा-क्रम बिशेष अछि: भविष्यक मनुष्यक आगमन आ भविष्यक वृक्षक आरम्भ एकहि क्षणमे जोड़ल जाइत अछि। नाम-संरक्षणक पुरान रीतिमे जीवित पारिस्थितिक सामग्री सम्मिलित होइत अछि। कथावाचक नव परम्पराक स्थापना बतबैत छथि, अलग-अलग जन्म वा वृक्षक सूची नहि। घटना सँ विधि बनेबाक प्रक्रिया ई अध्यायकेँ दीर्घ उपन्यासक पूर्व अनुष्ठानसभसँ जोड़ैत अछि।

पहिल बाढ़ि, दोसर बाढ़ि आ सुखल धार : आवृत्तिक उलटा अर्थ

[−८९] आ [−५९]मे नदीक बढ़ल पानि घरक दुश्मन बनैत छल; [−४३]मे नदीक कमि जीवनक चिन्ता बनैत अछि। पुनरावृत्तिक अर्थ एतय रचनाक गहन उपलब्धि अछि: जल पहिनो संकट, आबो संकट, मुदा कारण आ नीतिगत प्रत्युत्तर उलटा। जँ समीक्षक जलकेँ केवल स्थिर प्रतीक मानी तँ कथात्मक समयक ई बदलाव छूटत। नदीक नयका अवस्था पाठकक पूर्ववर्ती नैतिक निष्कर्ष सुधारबाक आग्रह करैत अछि।

दृश्यस्थितिक गहराइ आ व्यक्तिगत आवाजक कमी

गद्य बालुक टीला, हरियर-करिया पोखरि, घटैत माछ आ गहींर इनारक अनेक संवेद्य चिन्ह देत अछि। प्रकृति कथा-वस्तु बनैत अछि, खाली पृष्ठभूमि नहि। किन्तु जलसंकटसँ प्रभावित स्त्रीक पानी ढोएब, मछुआराक घटैत रोजी वा किनारक खेतक कृषि-हानिक निजी दृश्य नहि। पर्यावरणीय कालकेँ सामाजिक वितरणक प्रश्नसँ जोड़बाक सम्भावना अछि, मुदा वर्तमान अध्याय ओकर पूर्ण कथा नहि रचैत। ई लेखकीय चयनक आलोचनात्मक सीमा, न कि अनलिखल घटनाक निषेध।

पर्यावरणीय विमर्शक उपदेशक गति

बूढ़बा अनेक वाक्यमे जल-जंगल-माटि बचाबक शर्त रखैत छथि। एहि वाणीमे दीर्घ स्मृति वर्तमान कार्यक्रमसँ जुड़ैत अछि, मुदा समाधान छिटपुट दृश्यक मुकाबले विचारक विस्तार अधिक अछि। सत्यनारायणक निर्णय एहि उपदेशक बाद तुरन्त उपलब्धि जकाँ अबैत अछि। प्रक्रियाक संघर्ष—भूमि, श्रम, सहमति, संसाधन—विस्तृत नहि। कथा नैतिक दिशा स्पष्ट करैत अछि, सामूहिक पर्यावरणीय प्रबन्धक जटिल राजनीतिक वृत्तान्त एखन नहि।

काल, प्रत्याशा आ कथाक अनिर्णीत परिणाम

बरख-दर-बरख जल घटैत छल, तखन रोपाई आ आहर निर्माण शुरू होइत अछि। आगामी वर्ष जल फिर चढ़ल वा माछ लौटि अएल—एहन निष्कर्ष अध्यायमे नहि। गीत कहैत अछि जे धार ‘कालि फेर बहत’; एहि काव्यात्मक विश्वासकेँ प्राकृतिक पुनरुद्धारक घटित सूचना नहि मानब। कथाक समाप्ति आशायुक्त प्रयासपर अछि, समाधानक परिमाणपर नहि। एहि अधखुलल समाप्तिसँ पर्यावरणीय संकटक धीम अवधि पाठकक आगूक पठनमे जीवित रहैत अछि।

मूल्यांकन : कथाक केन्द्रीय शर्तक विस्तार

‘सुखल होइत धार’क उपलब्धि अछि शीर्षकक जलसमाधि-विषयकेँ अतिरेकक भय सँ अभावक भय धरि विस्तार देब। ‘नव गोहि’ रूपक स्मृतिरक्षाक सीमा खोलैत अछि, जबकि सत्यनारायणक गाछ, महार, आहर आ जन्मरीति ठोस प्रत्युत्तर प्रदान करैत अछि। सीमा कारणक अस्पष्ट परिमाण, श्रमजीवी समुदायक अभाव आ परिणामक असमर्थित निश्चितता अछि। तथापि ई अध्याय दीर्घ कादम्बरीक अर्थविश्वकेँ बड़ा प्रश्न दैत अछि—नाम बचलाक लेल जलसंसार सेहो बाँचल रहबाक चाही।

पाठाधार आ आगामी प्रश्न

विश्लेषण मूल [–४३]क ‘पियासल धार’ गीत, घटैत कमला-बलान, जलस्थानक वर्णन, सत्यनारायण–बूढ़बाक वार्ता, गाछरोपाई, आहर निर्माण आ जन्मसँ जुड़ल नव नियमपर आधारित अछि। नदीक वैज्ञानिक मात्रात्मक डाटा, सुधारक परिणाम वा व्यक्तिगत पर्यावरणीय क्षतिक संख्या पाठ नहि दैत। अगिला [–४२]मे पर्यावरणक धीम संकटसँ दूरत्व आ निकटताक डिजिटल अनुभव दिस कथा मुड़ैत अछि।

प्रकरण ५९ | मूल अध्याय –४२ — हाथक फोनक चमत्कार

कथाक अन्तिम चरणक नव प्रवेश : हाथमे माध्यम

अध्याय ‘हाथक फोनक चमत्कार’ पहिल मोबाइलक आगमनक दृश्यसँ खुलैत अछि। पूर्वक रेडियो आ टेलीविजन चौपालपर सामूहिक दर्शक जमा करैत छल; कम्प्यूटर पाठशालामे छल। मोबाइल पहिने मुखियाक हाथमे एकटा वस्तु बनि अबैत अछि, बादमे कतेको परिवारक हाथ धरि पहुँचैत अछि। माध्यमक आकार आ स्थानक ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि: स्थिर चौपालक समूहसँ निजी हाथक त्वरित वार्ता धरि संचारक केन्द्र सरकैत अछि। तथापि पहिल फोन मुखियाक हाथमे होएब आरम्भिक पहुँचक असमानता सेहो संकेत करैत अछि।

‘दूर लग भेल’ : दूरीक कथात्मक पुनर्परिभाषा

आरम्भिक फकरा कहैत अछि जे हाथक यन्त्रसँ दूर लग होइत अछि, मुदा लग बैसल मनुष्यक नाम नहि बिसरब। समीक्षककेँ एहि उलटावक द्विस्तरीय अर्थ देखबाक अछि: भौगोलिक दूरी घटैत अछि, सामाजिक ध्यानक दूरी बढ़ि सकैत अछि। कथामे एखनहियो दूरक बेटाक आवाज सुनि पारिवारिक खुशी अछि, आ समक्ष बैसल लोककेँ

बिसरबाक दृश्य सेहो। ई दुहरे प्रभावकेँ एकरेखीय ‘मोबाइल खराब’ वा ‘मोबाइल वरदान’ बनबैत कथा अपना तर्कक सर्वाधिक सूक्ष्म अंश गमाबय देत।

प्रथम रिंग : सामुदायिक विस्मयक दृश्य

मुखियाक हाथमे छोट यन्त्र बाजैत अछि आ दूर शहरक बेटाक आवाज सुनाइत अछि। आँगन भरिक लोक ओकर चारू कात घेरि ठाढ़ भऽ जाइत अछि। एहि छोट दृश्यमे रेडियोक पहिल सामूहिक श्रवणक प्रतिध्वनि अछि, मुदा सामग्री व्यक्तिगत सम्बन्धक अछि: दूरक बेटाक आवाज। उपकरणक ध्वनि भीड़ बनेबाक कारण, ओतहि फोनक निजी संवाद सार्वजनिक कौतूहल बनैत अछि। प्रथम सम्पर्कमे ककर बेटा छल—मूल पाठ नाम नहि दैत; तें विशिष्ट व्यक्ति आरोपब अनुचित।

चिट्ठीक महीना आ फोनक क्षण : अवधि-सङ्कुचन

कथावाचक स्पष्ट तुलना करैत छथि जे जे आवाज लेल चिट्ठीक बाट महीना जोहय पड़ैत छल, से आब क्षणमे कानमे अबैत अछि। पत्र स्वयं आवाज नहि पठबैत, किन्तु परिवारक खबरक प्रत्याशित विलम्ब सूचित करैत अछि। फोन कथनकालक असमानता बदलैत अछि: दूर घटना आ स्थानीय प्रतिक्रिया लगभग संगहि क्षण सम्भव। एहि परिवर्तनक नाटकीय परिणाम पुरान प्रतीक्षा-प्रसंगक पुनर्वाचन अछि। मुदा कतेक दूरी वा सटीक समय-विलम्ब मापल गेल—एहन तथ्य नहि।

मुखिया सँ परिवार धरि : सामाजिक प्रसारक संक्षेप

पहिल मोबाइल मुखियाक हाथमे, फेर ‘धीरे-धीरे’ अनेक परिवारक पास। ई वाक्य एक तकनीकक प्रसारकेँ दीर्घ घटना-सारांशमे बदलैत अछि। गामक सामाजिक पदानुक्रमक संकेतो अछि: प्रथम उपकरण सत्ता-स्थित व्यक्तिक लग। मुदा फोनक मूल्य, नेटवर्कक व्यवस्था, महिला पहुँच अथवा सर्वसमावेशी उपयोगक संख्या वर्णित नहि। ‘कतेको’ परिवारक उपयोगकेँ ‘प्रत्येक’ परिवारक उपयोग कहब मूल पाठसँ बाहर जाइब। यन्त्रक उपलब्धता आरोही अछि, पूर्ण समता घोषित नहि।

अंजलिक प्रश्न : दूरक पीड़ाक पुनर्लेखन

सत्यनारायणक बेटी अंजलि बूढ़बासँ पुछैत अछि जे आब परदेश गेल लोकसँ रोज बात सम्भव, तें ‘परदेशक पुकार’क दुःख घटत। एहि छोट प्रश्नमे [–४७]क कुसुम–रमेश आ पूर्व प्रवासन-श्रृंखलाक पीड़ा एक नव समयमे लौटैत अछि। अंजलिक कथन तकनीकक लाभ देखैत अछि; बूढ़बा ओकर सहमति देत सावधानी जोड़ैत छथि। एतय पात्रगत दृष्टिसमूह पुरान वियोगकेँ अपरिवर्तनीय नियति नहि बनबैत, नव सम्बन्ध-कौशलक प्रश्न बनबैत अछि।

बूढ़बाक दू उत्तर : स्वीकृति आ सावधानी

बूढ़बा पहिने मोबाइलक लाभकेँ ‘नीक समाचार’ कहैत छथि, तकर बाद ‘लगक केओ दूर नहि भऽ जाय’क चेतावनी दैत छथि। ई उत्तर तकनीकी परिवर्तनपर कथा-चक्रक आवर्तित ढाँचा अछि: स्वागत आ विवेक। मुदा

मोबाइलक क्षति वा लाभकेँ नैतिक निश्चयमात्र मानि लेब उपयुक्त नहि, कारण गद्य एहिक दूनू वास्तविक स्थिति दैत अछि। बूढ़बाक वाणी कथाक मूल्यनिर्णय व्यवस्थित करैत अछि; अंजलिक तत्काल प्रतिवाद नहि, ओकर शिक्षण-कर्म उत्तरक सामाजिक परीक्षण बनैत अछि।

श्रवण आ दृश्य : मुँह के देखैत अछि?

गीत कहैत अछि जे दूरक आवाज कानमे पहुँचैत अछि, मुदा ‘मुँह नहि आबै’; गद्य अन्तमे अंजलि वृद्धसभकेँ फोनपर बेटाक मुँह देखबाक तरीका सिखबैत अछि। एहि दू सूचनामे माध्यमक क्षमता सम्बन्धी अन्तरिक विकास-सूत्र अछि। प्रारम्भिक फोनक श्रव्य सम्पर्कक अनुभव आ बादमे दृश्य-सम्पर्क सिखबाक उल्लेख एकहि तकनीकी क्षणक समान विवरण नहि। किन्तु कोनो विशिष्ट वृद्ध द्वारा सफल दृश्यवार्ता सम्पन्न होएबाक दृश्य नहिं देल गेल; शिक्षणक कथनकेँ सम्पन्न विडियो-संवादक व्यक्तिगत वृत्तान्त नहि बनाउ।

दूर बेटाक आवाजपर बूढ़ीक आँसू : केन्द्रस्थ लघुदृश्य

एक बूढ़ी, जकर बेटा अनेक बरखसँ खाड़ी देशमे अछि, फोनपर आवाज सुनि आनन्दसँ कानि दैत छथि। एहि अध्यायक सर्वाधिक देहधारी भावक्षण ई अछि: उपदेशक स्थानपर एक परिचित वियोगक श्रव्य उपचार। हुनकर नाम, बेटाक नाम वा वार्ताक पूरा संवाद उपलब्ध नहि; एक छोट वाक्य हुनकर अनुभव स्वरूप पाठक तक पहुँचबैत अछि। बूढ़ीक आँसू मोबाइलक मूल्यक सबसे ठोस कथात्मक उदाहरण अछि, कारण ओ निर्णय विचारसँ नहि, क्षणिक अनुभवसँ उत्पन्न करैत अछि।

[-४७]क प्रतीक्षाचिह्न आ आब श्रव्य उपस्थिति

कुसुम रमेशक सुरक्षित घुरबाक आसमे चिह्न रखने छलीह। आब मोबाइलक अध्याय प्रतीक्षाक समय घटएबाक सम्भावना बतबैत अछि। चिह्न भौतिक स्मृति-स्थान, फोन तत्काल आवाजक माध्यम। दूनू अनुपस्थित देहक सम्बन्ध रचबाक अलग विधि छथि; फोन चिह्नक स्थान स्वतः नहि लैत, कारण समुदाय व्यक्तिगत कथा आ वापसीक आहूत समयो राखैत अछि। एहि अन्तर्पाठसँ दीर्घ उपन्यासक ‘नाम’ खाली लिखित अक्षर नहि, सम्बन्धक सक्रिय श्रव्य उपस्थिति बनैत अछि।

निकट व्यक्तिक अदृश्यता : विपरीत दृश्य

कथाकार बतबैत छथि जे कतेको लोक दूरक व्यक्तिसँ बोलैत अपन कात बैसल लोककेँ बिसरि जाइत छथि। एहि दृश्यमे मोबाइलक सामाजिक विडम्बना मूर्त भऽ जाइत अछि। पर ई व्यवहार सभ परिवारक सम्बन्ध टूटि गेल—एहन सार्वत्रिक निष्कर्ष नहिं; कथावाचक ‘एकटा नव दृश्य’ कहैत छथि। बात दूर-समीपक नैतिक विकल्पसँ अधिक ध्यानक वितरणक अछि। एक कान दूरक आवाजमे लगल रहैत, तखन पासक मुँह ओझराइत—ई दृश्यात्मक प्रतिलोम शीर्षकक ‘चमत्कार’क दुविधा बनबैत अछि।

हाथक वस्तु आ सार्वजनिक चौपाल : स्थानिक प्रतिस्पर्धा

मोबाइल हाथमे अबैत अछि; चौपाल एक सामूहिक आसन अछि। तकनीक प्रत्येक व्यक्तिक निजी बातक समय बढ़बैत, पर साझा कथा-श्रवणक समय घटा सकैत अछि। अंजलिक अन्तिम शिक्षा एहि द्वन्द्वक समन्वय खोजैत अछि: फोन चलाउ, मुदा आमने-सामने बैसब नहि छोड़ू। एतय सभा-संस्कार हटब नहि चाहैत; ओकरा नयका माध्यमक संग संयोजित कएल जाइत अछि। मुदा नव पीढ़ी वास्तवमे नियमित चौपालमे कायम रहल—एहन अनेक वर्षक विस्तृत अध्ययन पाठ नहि दैत।

अंजलिक शिक्षण : तकनीकी ज्ञानक अन्तर्पीढ़ीय वापसी

अंजलि बूढ़-पूरान लोकसभकेँ फोन चलाब सिखबैत अछि। अतीतमे बूढ़बा नव पीढ़ीकेँ नाम, कथा आ परम्परा सिखबैत छलाह; आब युवा महिला वृद्धसभकेँ नव माध्यम सिखबैत अछि। ज्ञानक दिशा उलटैत अछि, यद्यपि नैतिक निर्देशन बूढ़बाक लग रहैत अछि। ई द्विदिश शिक्षाक क्षण दीर्घ कादम्बरीक समृद्ध सम्भावना अछि—पूर्वजक स्मृति आ उत्तरजक तकनीक एक-दोसरासँ आवश्यक भऽ सकैत अछि। अंजलि केवल उपदेश ग्रहण करनिहारी नहि, प्रायोगिक शिक्षक सेहो छथि।

लिंग आ देखभालक मौन व्यवस्था

बूढ़ीक पुत्र-प्रतीक्षा आ अंजलिक वृद्ध-शिक्षण अध्यायक भावना आ व्यवहारक भार स्त्रीपात्रसभपर राखैत अछि। परदेशमे कमाइनिहार पुरुषक आवाज सुनाइत, ओकर घरमे रहनिहारक देखभालक प्रत्यक्ष कष्ट कम वर्णित। एतय स्त्रीक रोदन मात्र दुःखक प्रतीक नहि; परिवारक सम्पर्कक महत्त्व उन्हकर अनुभूति माध्यमे स्पष्ट होइत अछि। आलोचनाकेँ एहि योगदानकेँ पहिचानबाक संग अनलिखल घरेलू श्रम वा मोबाइल-नियन्त्रणक विस्तृत कथा नहि गढ़बाक अछि।

फोनक ‘भ्रम’ : दार्शनिक दावा नहि, सम्बन्धक रूपक

बूढ़बा लगक लोककेँ दूर बनबयवला उपकरण ‘सब सँ पैघ भ्रम’ कहैत छथि। एहि शब्दक आशय वास्तविक संवेदी भ्रमक शास्त्रीय श्रेणी नहि; ध्यानक गलत प्राथमिकता अछि। दीर्घ उपन्यासक आरम्भिक ‘शंख आ रजत’क दृश्यसँ शब्दगत प्रतिध्वनि मिलि सकैत अछि, मुदा वर्तमान अध्यायक सामाजिक प्रश्न अलग: केकरा सुनल जाय, केकरा अनदेखल? एहि रूपककेँ स्वतन्त्र दार्शनिक प्रबन्ध बना देलासँ मोबाइलक संचार-सम्बन्धी प्रत्यक्ष कथावस्तु ओझरा जाएत।

तुरन्त समाचारक लय : दुख आ आनन्द दूनू लेल

बियाह-सोहर, रोगक हाल आ रोजक बात क्षणमे पहुँचबैत मोबाइल एक विस्तारित पारिवारिक वर्तमान रचैत अछि। पूर्वक पत्र अथवा यात्रासँ समाचारक देरी दुःख-अवधि बढ़बैत छल; आब खबरक द्रुत गति आनन्द आ चिन्ता दूनूक तुरन्त साझेदारी सम्भव करैत अछि। मुदा प्रत्येक समाचारक अलग संवाद वा पारिवारिक नाटक पाठमे नहि। सङ्क्षिप्त सूची कथनक काल बदलबाक संकेत अछि, विस्तृत घरेलू घटनाक वृत्तान्त नहि।

लोकगीत ‘लग आ दूर’क द्विस्वर संरचना

गीत पहिले दूरक आवाजक चमत्कार देखबैत, पछाति लगक चेहराक उपेक्षा पर चिन्ता दैत, अन्तमे सामञ्जस्यक आदेश देत अछि। मुख्य गद्य एहि क्रमकेँ दृश्यरूप देत: मुखियाक फोन, बूढ़ीक आँसू, लगक लोकक विस्मरण, अंजलिक प्रशिक्षण। गीत–गद्यक संवाद एहि अध्यायमे अपेक्षाकृत व्यवस्थित अछि; काव्यात्मक धुरी कथामे अनेक बिन्दुपर पुष्टि पबैत अछि। तथापि ‘यन्त्र लगकेँ तोड़ल’क गीतवचनकेँ सर्वत्र घटित सम्बन्ध-विच्छेद कहब अनुचित; गद्य सम्भावनासूचक अछि।

नयका संसारक वाचक : बूढ़बाक स्थायी उपदेशकत्व

बूढ़बा मोबाइलक लाभ समझैत छथि, किन्तु समीक्षा ध्यान दैत अछि जे हर नव माध्यमपर हुनकही वाणी अन्तिम नैतिक सूत्र देत अछि। [–४८]क कुसुम, [–४४]क प्रतिमा, [–४२]क अंजलि—तीनू अलग प्रयोगशील स्त्रीक कथा अन्तमे बूढ़बाक सावधानीक भाषा सँ निर्देशित होइत अछि। ई पात्र-निरन्तरता कृतिमे सौन्दर्यात्मक धुरी, मुदा सामाजिक बहुस्वरक सीमा सेहो। मोबाइलक सीधा उपयोगकर्ता ककरो विरोधी व्याख्या विस्तारसँ प्रस्तुत नहि करैत।

तकनीकी परिवर्तनक काल-सूत्र आ अगिला पठन

अध्याय सत्यनारायणक जमानामे मोबाइल पहुँचबाक उल्लेख करैत अछि। ओकरा पहिने [–४७]मे फोनक तारद्वारा दूरदेशसँ कुसुमक सम्पर्क सम्भव छल, जे मोबाइलक ‘पहिल’ आगमनसँ विरोध नहि; पुरान स्थिर दूरभाष आ नयका हाथक फोन अलग उपकरण छथि। [–४४]क कम्प्यूटरक आगमन सेहो अलग स्थानिक संस्था पाठशालामे घटित छल। एहि विभाजनकेँ बिना जाँच तकनीकक कालक्रमक असङ्गति कहब अनुचित। आगामी अध्यायमे समय, स्थान आ उपकरणक यथार्थ उपयोगक फेर परीक्षण चाही।

पूर्ण बचाव नहि, सामाजिक शिक्षाक आरम्भ

अंजलि फोन चलएबाक शिक्षा दैत छथि आ आमने-सामनेक सम्बन्ध रखबाक आग्रह करैत छथि। एहि उत्तरसँ मोबाइलक सभ नकारात्मक प्रभाव दूर भऽ गेल—एहन घटना नहि। कथावाचक सामुदायिक आचरणक एक प्रस्ताव रचैत छथि, तकर अन्तिम सामाजिक परिणाम नहि। ई खुलल समाप्ति उपयोगी अछि, कारण डिजिटल युगमे निजता, सम्बन्ध आ ध्यानक प्रश्न एक सरल उपदेशसँ स्थिर नहि रहैत। दीर्घ उपन्यास एहि नव माध्यमसँ उत्पन्न भविष्यमुखी संकटसभक दुआर खोलैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : निकटताक माप बदलल

अध्यायक शक्ति अछि जे प्रौद्योगिकीकेँ न त नायक, न खलनायक बनबैत; वृद्ध मायक आँसू आ कात बैसल व्यक्ति विस्मरनाइक दूनू प्रत्यक्ष दृश्य देत अछि। अंजलिक शिक्षण तकनीकक सामाजिक आत्मसात् बनबैत अछि। सीमा ई जे अनाम बूढ़ी, अनाम बेटा आ मोबाइलक पहुँच-असमानता विकसित कथा नहि; बूढ़बाक निर्णयकेँ स्वतन्त्र मतक चुनौती न्यून। तथापि ‘दूर’ आ ‘लग’क बदलैत अर्थ कथानकक अन्तर्मनमे प्रवेश करैत अछि, जे आगामी डिजिटल संसारक लेल निर्णायक प्रश्न बनैत अछि।

प्राथमिक स्रोत, पाठसीमा आ अगिला क्रम

एहि विवेचनक मूल स्रोत [-४२]क ‘लग आ दूर’ गीत, मुखियाक हाथक पहिल फोन, वृद्ध मायक दूर बेटाक स्वर, अंजलिक प्रश्न, बूढ़बाक उत्तर आ फोन सिखएबाक अन्तिम वर्णन अछि। फोनक मूल्य, जालक उपलब्धता, सफल विडियो-वार्ताक विस्तृत व्यक्तिगत घटना अथवा ग्रामव्यापी उपयोगक पूरा आँकड़ा पाठमे नहिं अछि। अगिला अध्याय [-४१] ‘शहरक बजार’क समीक्षा एहिसँ आगाँ निर्धारित अछि।

प्रकरण ६० | मूल अध्याय -४१ — शहरक बजार

प्रवासक नव आवृत्ति : पूर्वक कथा फेर, नव उद्योगमे

अध्याय [-४१] शहरक सूचना-प्रौद्योगिकी उद्योगकेँ गढ़ नारिकेलक दीर्घ प्रवासन-इतिहासमे जोड़ैत अछि। [-४७]मे खाड़ी देशक निर्माण-मजदूरी आ कुसुम–रमेशक दूरस्थ सम्बन्ध छल; एतय बंगलोर, हैदराबाद आ दिल्लीक सॉफ्टवेयर-कर्म कथा आरम्भ करैत अछि। दुनू प्रसंगमे गामक युवा आर्थिक अवसर लेल बाहर निकलैत छथि; मुदा काजक प्रकार, शिक्षा आ संचारक परिस्थिति भिन्न अछि। कथाकार प्रवासक पुनरागमनकेँ एकहि घटना दोहराएब नहि, बल्कि ऐतिहासिक समय बदललापर पुरान पीड़ाक नव रूप देखएबाक प्रयत्न बनबैत छथि। तथापि शहरमे काजक दैनिक दृश्य एहि अध्यायमे लगभग अनुपस्थित अछि।

कथाक आरम्भ : समष्टिगत सारांश, व्यक्तिगत दृश्य नहि

पहिल कथात्मक खण्ड गामक अनेक शिक्षित युवाक महानगरमे रोजगार पएबाक समाचार दैत अछि। कथावाचक एकहि अनुच्छेदमे पाठशालामे अक्षर सीखबसँ कम्प्यूटरक भाषा सीखब आ नौकरी भेटब धरि दीर्घ अवधि समेटैत छथि। एहिमे व्यक्तिगत भर्ती-साक्षात्कार, प्रशिक्षणक विफलता अथवा महानगरीय ऑफिसक दृश्य नहि। ई कालसङ्कोचन उपन्यासक विशाल पीढ़ीक्रमक संग संगत अछि, मुदा श्रमक सामाजिक अनुभवकेँ समष्टिगत उपलब्धि मात्र बना देबाक सीमा सेहो रखैत अछि। पाठककेँ ‘युवा सभ’क समूह भेटैत अछि, करुणाकर नामक व्यक्तिगत दृष्टिकेन्द्र बादमे खुलैत अछि।

‘शहर देह किनै’ : गीतक रूपक आ गद्यक तथ्य

आरम्भिक फकरा बजार द्वारा देह किनबाक रूपक प्रस्तुत करैत अछि। ‘जड़ि आ बजार’ गीत श्रमसमय, घाम आ पैसाक विनिमयकेँ देह-बेचनाइ कहैत अछि। मुख्य गद्य स्पष्ट करैत अछि जे शिक्षित युवा सॉफ्टवेयर आ आधुनिक नौकरी करैत छथि; कोनो व्यक्ति सचमुच अपन देह बेचलनि—एहन घटना एतय नहि अछि। रूपकमे श्रमक वस्तुकरणक आलोचना सम्भव अछि, मुदा ओकरा वास्तविक देह-व्यापार वा शोषणक निश्चित घटनाक रूपमे बदलनाइ पाठसाक्ष्यक विरुद्ध होएत। गीतक नैतिक कठोरता आ कथावाचकक रोजगारगत आशावादक दूरी आलोचनामे राखब चाही।

गौरवक संग रिक्तता : सामाजिक दृष्टिक द्वैध गति

गामक प्रत्येक घर अपन शिक्षित सन्तानक उन्नतिपर गर्व करैत अछि, किन्तु युवा सभक त्योहार शहरमे बीतबाक कारण कतेको घर बन्द रहैत अछि। एहि दू छविक एकरूपता नहि: पहिल सार्वजनिक सफलताक सारांश, दोसर रोजमर्राक अनुपस्थितिक दृश्यात्मक चिह्न। ताला लागल चौखट मनुष्यक अनुपस्थितिक दृश्य-प्रतिस्थापक बनैत अछि। कथा धनक आगमनक लेखा नहि देत, घरेलू अनुपस्थितिक संकेतद्वारा भावात्मक मूल्य देखबैत अछि। किन्तु ‘कतेको’ घरक समूहमे रहनिहार वृद्ध, स्त्री वा बालकक अलग आवाज उपलब्ध नहि; पीड़ाक अनुभव अधिकतर सामूहिक कथनमे समटल अछि।

अंजलि सँ करुणाकर : वंशगत प्रवेशक शिल्प

पूर्व अध्याय [–४२]मे अंजलि फोन-साक्षरता सिखबैत छलीह; एतय हुनकर बेटा करुणाकर महानगरीय अनुभूतिक वाहक बनैत छथि। ई परिचय स्वतन्त्र चरित्र-विकाससँ पहिने वंशज-परिचयक माध्यमे होइत अछि। दीर्घ कादम्बरीमे एहन प्रवेश पाठककेँ अनगिन पीढ़ीक मध्य सम्बन्ध बचाबयमे सहायक अछि, मुदा बारम्बार ‘फलाँक बेटा’ सँ आरम्भ नव पात्रक स्वतन्त्र व्यक्तित्व देरीसँ खोलैत अछि। करुणाकरक प्राथमिक पात्रगत विशेषता शिक्षा नहि, आत्मीय दूरीक विषयमे स्वयं प्रश्न पूछबाक क्षमता अछि। एहि प्रश्नमे पुरान पीढ़ीक शिक्षा नव अनुभूतिक सामने पुनः परीक्षण पबैत अछि।

करुणाकरक स्वीकार : बाह्य सफलतासँ आन्तरिक असङ्गति

करुणाकर शहरमे बहुत किछु सिखबाक बात कहैत छथि, एकहि साँसमे अपन जड़िसँ कटि रहल होएबाक आशंका सेहो प्रकट करैत छथि। एतय पीड़ा वर्णनक एक निष्क्रिय विषय नहि; पात्र अपन स्थितिक व्याख्या स्वयं करैत छथि। ‘हमरा लगैत अछि’ प्रकारक आत्मकथन अनुभवक निश्चित तथ्य आ पात्रक मनःस्थिति बीच सीमा बनबैत अछि। शहर हुनका सचमुच सामाजिक रूपेँ अलग कऽ देने अछि—एहन सर्वज्ञ घोषणा उपन्यास नहि करैत। प्रश्नक रूप कथाक अर्थकेँ अस्थायी रखैत अछि; बूढ़बाक उत्तर ओहि अनिश्चिततातकेँ सांस्कृतिक आश्वासनमे बदलएबाक प्रयत्न अछि।

जड़ि कटब बनाम जड़िसँ दूर जाएब : स्थानिक व्याकरण

बूढ़बा ‘जड़ि कटब’ आ ‘जड़िसँ दूर जाएब’क बीच भेद करैत छथि। ई जैविक रूपक कथाक भूगोल बदलैत अछि: गाम अनिवार्य भौतिक बन्दीगृह नहि रहैत, स्मृति-संबन्धक केन्द्र बनैत अछि। जड़िक फैलावक छवि दूर जाएबकेँ निषेध नहि, विस्तारक सम्भावना मानैत अछि। तथापि वास्तविक गाछक जड़िक भौगोलिक फैलाव आ मनुष्यक वार्षिक वापसीक सामाजिक सम्बन्ध अलग प्रकारक प्रक्रिया छथि। उपन्यास एहि समानतातकेँ शाब्दिक प्राकृतिक नियम नहि, भावात्मक उपमाक रूपमे उपयोग करैत अछि; एकर शक्ति अतीतक संग सम्बन्धक नव कल्पना देबामे अछि।

कम्पनीक ऊँच भवन : क्षणिक आन्तरिक दृष्टिकेन्द्र

गद्य करुणाकरकेँ कम्पनीक ऊँच भवनमे बैसल गामक पीपर, पोखरि आ चौपाल मोन पाड़ैत देखबैत अछि। ई अध्यायक विरल अन्तर्जगत्-प्रवेश अछि। शहरक भवनक ऊर्ध्वता आ गामक जड़िक गहराइ अप्रत्यक्ष प्रतिपक्ष रचैत छथि। 'टीस' अनामिक शून्यता रूपेँ अबैत अछि, जकरा कथावाचक पूरा मनोवैज्ञानिक इतिहास नहि दैत। वार्षिक वापसीपर ओ पीड़ा 'कनेक कालक हेतु' शान्त होइत अछि—एहि सीमित अवधिवाचक पदपर ध्यान जरूरी, कारण स्मृतिसम्बन्धसँ आधुनिक अकेलापन सदा लेल नष्ट भेल—एहन दावा पाठमे नहि अछि।

'बरख भरिमे एक साँझ' : कथाक समयक अनूठा अनुबन्ध

गीत आ बूढ़बाक उत्तर दुनूमे वर्षमे एक साँझ पीपर लग बैसब पर्याप्त सम्बन्ध-सूत्रक रूपमे अबैत अछि। ई सांकेतिक न्यूनतम समय कथा भीतर नव अनुष्ठानक आधार बनैत अछि। दैनिक आर्थिक जीवनक अनेक मास कथनसँ छूटैत अछि, मुदा वर्षक एक साँझ कथा द्वारा विशेष रूपेँ प्रकाशित। अवधि-विन्यासमे दीर्घ शहरजीवन संक्षेपित, छोट ग्राम्य भेंट अर्थसघन। ई अनुपात गामक कथा-स्थानकेँ महत्त्व दैत अछि; तथापि एक साँझक भेट सामाजिक देखभाल, वृद्धक सहारा अथवा प्रवासनजन्य आर्थिक निर्भरताक सम्पूर्ण उत्तर नहि होइत।

वापसीक दृश्यसँ सामूहिक परम्परा धरि

करुणाकर अपन छुट्टीक साँझ पीपर लग बितबैत छथि, बच्चासँ शहरक कथा कहैत आ हुनकासँ गामक पुरान कथा सुनैत छथि। बादमे ई अनेक युवा लेल अलिखित परम्परा बनल कहल गेल अछि। व्यक्तिगत अनुभव सामूहिक आवृत्तिमे बदलबाक ई अध्यायक वास्तविक अन्तिम अवस्था-परिवर्तन अछि। तथापि दोसरा युवाक नाम, प्रथम पुनरावृत्तिक दिन वा विरोधी अनुभवक स्वतन्त्र दृश्य नहि। कथावाचक विस्तारक दावी एक संक्षिप्त अन्तिम सारांशमे करैत छथि। एहि कारण संस्था बनबाक घोषणा साहित्यिक रूपेँ प्रभावी, समाजशास्त्रीय प्रमाणमूलक पूरा वृत्तान्त नहि।

संचारक उल्ट प्रवाह : बच्चा श्रोता मात्र नहि

पीपर लग करुणाकर बच्चासँ शहरक अनुभव बाँटैत छथि, फेर बच्चा हुनका पुरान गामक कथा कहैत अछि। एहि वाक्यमे शिक्षण-सम्बन्ध एकमुखी नहि: शहरसँ आयल प्रौढ़ परदेशी अपन गामक नव श्रोता सेहो बनैत छथि। गामक स्मृति एकटा स्थिर गुरुवाणी मात्र नहि रहि, नव पीढ़ीक कण्ठमे संचारित होइत अछि। मुदा बालक सभकेँ स्वतन्त्र विशिष्ट नाम वा असहमतिक अधिकार एहि दृश्यमे नहि भेटैत। पारस्परिक कथाक उच्चारण उपलब्धि अछि, संवादक वास्तविक अनेकता एखन सीमित।

पीपरक कथास्थल : बाह्य दूरीक विरुद्ध स्थायी केन्द्र

कथे शहरमे बदलैत रोजगार, पाबनि आ निजी जीवनक एकाएक संक्रमण देखबैत अछि, मुदा लौटबाक स्थल पीपर वैह अछि। एहि स्थायित्वसँ बूढ़बाक दीर्घ स्मृतिक भौतिक आधार बचैत अछि। स्थल परिवर्तित व्यक्ति लेल पहिचानक पुनर्संघटन करैत, 'घर'केँ भौतिक भवनसँ पैघ बनबैत अछि। ओकर काव्यात्मक मूल्य स्पष्ट, मुदा गामक सभ जाति, वर्ग अथवा लिंगक व्यक्ति ओहि पीपर धरि समान सहजतासँ पहुँचैत छथि की नहि, वर्तमान

अध्याय नापि नहि दैत। एक केन्द्रक सर्वसमावेशी मान्यता पूर्ण उपन्यासक सामाजिक दृश्यसँ अलग जाँचल जएबाक चाही।

आवाजक वितरण : बूढ़बा निर्णायक, नगरीय संसार मूक

करुणाकर अपन आशंका कहैत छथि; बूढ़बा विस्तृत उत्तर दैत छथि। कम्पनीक सहकर्मी, शहरक पड़ोसी, श्रमिक-संगठन वा नौकरीक शर्तक कोनो स्वर नहि। एहि कारण प्रवासक विरोधी पक्षक वास्तविक कथा नहि, गाममुखी द्विवचन बनैत अछि। बूढ़बाक उत्तर स्नेहपूर्ण अछि, मुदा सामाजिक प्रश्न—कतेक छुट्टी भेटैत अछि, गरीब प्रवासी वापसीक भाड़ा कोना जोगबैत छथि—समीक्षाक खुलल विषय बनल रहैत अछि। ई प्रश्न पूछबकेँ मूल पाठमे अतिरिक्त घटना जोड़ब नहि बुझल जाए; ई कथाक चयनित मौनक मूल्यांकन थिक।

ग्रामक सामूहिक उत्साहक भीतर श्रेणीगत अन्तर

आरम्भमे ‘गामक हर घर’क गर्व प्रस्तुत अछि, मुदा रोजगारपाबयवला ‘शिक्षित युवा’क समूह अलग अछि। सॉफ्टवेयर-नौकरी धरि पहुँचबाक अवसरकेँ सभ घरक एकहि स्तरक उपलब्धि कहल नहि जा सकैत। पाठशालाक शिक्षा उपन्यासक दीर्घ पूँजी बनैत अछि, किन्तु जे युवाकेँ उच्च शिक्षा नहि भेटल, हुनकर सम्भावना एहि खण्डमे वर्णित नहि। व्यक्ति-अनुभवक एहि अनुपस्थितिसँ नव बजारक सामाजिक विषमता पर कथा सीमित रहैत अछि। आलोचनाक काम कथित समष्टिक उत्साहकेँ समाजक सम्पूर्ण रोजगार-वितरणक प्रमाण न मानब अछि।

[-४७] आ [-४२]क संग कथात्मक त्रिकोण

[-४७]मे रमेशक खाड़ी-प्रवास आ कुसुमक प्रतीक्षा, [-४२]मे अंजलिक मोबाइल-शिक्षण, आ [-४१]मे करुणाकरक महानगरीय वापसी—तीनू मिलि भौगोलिक दूरीक बदलैत अनुभव रचैत अछि। पहिलमे पैसा–पत्र–फोनक विरल सम्पर्क, दोसरमे तत्काल आवाज, तेसरमे मूल स्थलक नियमित पुनर्दर्शन। एके पीढ़ी नहि, प्रवासी-सम्बन्धक तीन अवस्था एहि क्रममे उपस्थित होइत अछि। पर ई घनिष्ठ कालक्रम एक ‘विकासक सीढ़ी’ मात्र नहि: संचारसुलभता बढ़लापर सेहो करुणाकर अलगावक टीस अनुभव करैत छथि।

लोकगीतक आदेशात्मकता आ गद्यक अनिर्णय

‘जड़ि आ बजार’ गीत बारम्बार घरक नाम बचएबाक आग्रह करैत अछि आ नाम बेचने मनुष्यक खाली हाथ लौटबाक चित्र दैत अछि। गद्यमे करुणाकरक नाम हराओल नहि, हुनका केवल कटबाक आशंका होइत अछि। गीत सम्भावित नैतिक विनाशकेँ पूर्ण निष्कर्ष जकाँ कहैत; गद्य ओकरा अनुभवजन्य प्रश्नक रूप देत अछि। दुनूकेँ एक समान घटना-विवरण मानल जाए तँ कथाक सूक्ष्मता हेरा जायत। विरोधाभास पूर्ण असङ्गति नहि; गीत जोखिमक व्यापक भाषा, गद्य व्यक्तिगत द्विविधाक सीमित भाषा अछि।

आलोचनात्मक निर्णय : सम्बन्धक रक्षा, श्रमक अपठित संसार

अध्यायक उपलब्धि शिक्षा आ प्रवासकेँ स्वाभाविक खलनायक नहि बनेने, ओकरा संग स्मृति-अधिकारक नया रूप खोजनाइ अछि। करुणाकरक क्षणिक टीस आ वार्षिक पीपर-भेंट विश्वसनीय भावात्मक केन्द्र रचैत अछि। सीमा ई जे शहरक श्रमजीवन, घरक अकेलापन आ श्रेणीगत असमानता अधिकांशतः कथावाचकक सारांशमे रहि जाइत अछि। बूढ़बाक सन्तुलित सलाह कथा बन्द करैत अछि, पर नगर–ग्राम संघर्षक समस्त जटिलता नहि। एहि अध्यायक उचित स्थान सम्पूर्ण त्रयीमे ‘दूरी आ नाम’क एक नव स्वरूपक उद्घाटनक थिक।

पाठसीमा आ अगिला कड़ी

समीक्षा केवल मूल [–४१]क फकरा, ‘जड़ि आ बजार’ गीत, प्रवासी रोजगार-वर्णन, अंजलि–करुणाकर सम्बन्ध, पीपर संवाद आ अलिखित वार्षिक परम्परापर आधारित अछि। शहरक वेतन, बीमारी, दुर्घटना, कम्पनीक शोषण वा घर-परिवारक निश्चित आर्थिक गणना पाठमे नहि; आलोचनामे आरोपित नहि कएल गेल। अगिला [–४०]मे प्रवासी नामक व्यक्तिगत स्मृति सँ सरकारी अभिलेखक सार्वजनिक अधिकार धरि कथाक स्थल बदलैत अछि।

प्रकरण ६१ | मूल अध्याय –४० — सूचनाक अधिकार

अधिकारक प्रवेश : शासकीय घटना कथा बनैत अछि

अध्याय ‘सूचनाक अधिकार’ एक विधिक परिवर्तनक सामान्य समाचारसँ शुरू होइत अछि, मुदा गढ़ नारिकेलक इतिहासक कारण ई बाहरी घोषणा तत्काल निजी-सामुदायिक आशय पबैत अछि। यादवानन्दक छाया-पञ्जी बरखोंसँ छिपाकऽ सुरक्षित रखल गेल छल; आब सरकारी दफ्तरमे आवेदनद्वारा पुरान अभिलेख प्राप्त करबाक सम्भावना खुलैत अछि। एहि रूपमे कानून उपन्यासक मुख्य घटनासँ अलग तथ्य-सूची नहि, पहिने स्थापित गुप्त लेखनक कथा-संरचनाक परिणाम बनैत अछि। तथापि विधेयक पारित होएबाक राजनैतिक दृश्य, संसदीय संवाद वा तारीख मूल अध्याय नहि दैत। कथा ओकर सामाजिक प्रभाव चुनैत अछि।

यादवानन्दक पञ्जी : स्थगित पूर्वघटनाक पुनःसक्रियता

छाया-पञ्जीक उल्लेख मात्र पूर्ववृत्तान्तक सजावट नहि। कागच चोरि-छिपे लिखबाक जे क्रिया पहिने भयक बीच टिकबाक उपाय छल, से आब वैधानिक दस्तावेजक संग तुलना योग्य बनैत अछि। एहि पुनरागमनमे दीर्घ आख्यानक समय पुनर्सङ्गठित होइत अछि: पुरान गोपनीयता नव सार्वजनिक अधिकारक आरम्भिक आधार बनैत अछि। पाठक जँ यादवानन्दक प्रसंग याद रखैत छथि तँ [–४०]क घटना अधिक अर्थवान बनैत अछि। मुदा पञ्जीक वास्तविक सम्पूर्ण पाठ अथवा ओकर कतेक पन्ना सुरक्षित छल, एहि अध्यायमे प्रस्तुत नहि; सतत स्मृतिक दावा मुख्यतः कथावाचकक समष्टिगत उद्घोष थिक।

‘दीप’ रूपक : अन्हारक शत्रु कोन?

फकरा सूचना केँ दीप कहैत अछि। एतय अन्हार भौतिक राति नहि, अभिलेखपर अधिकारक असमानता अछि। अधिकारीक आलमारी आ नागरिकक हाथक अन्तर कथा-स्थानकेँ नैतिक दूरी बनबैत अछि। प्रकाशक अर्थ

सार्वजनिक जानकारीक उपलब्धता, मुदा जानकारी पहुँचलासँ प्रत्येक ऐतिहासिक अन्यायक प्रतिकार स्वतः भऽ गेल—एहन निष्कर्ष उचित नहि। दीपक रूपक जे स्पष्टता बनबैत अछि, ओकर विपरीत दस्तावेजक जटिल पाठ, परस्परविरोधी नाम वा सरकारी भाषा समझबाक कठिनाई अध्यायमे लगभग नहि अछि। ई आंशिक सरलीकरण रूपकक लागत अछि।

कार्यालय आ गाम : दू कथास्थलक बीच कागचक यात्रा

मुख्य गद्य सरकारी अभिलेखागारक कागच गाम धरि अबैत देखबैत अछि। दूरीक मूल वस्तु लोक नहि, दस्तावेज अछि। आवेदनद्वारा माँग, प्राप्ति, पीयर कागचक हाथमे धरण, पञ्जीसँ मिलान—ई क्रम कागचकेँ निष्क्रिय सामग्रीसँ गतिशील कथात्मक वस्तु बना दैत अछि। मुदा कार्यालयमे विभाक वास्तविक कतार, अधिकारीसँ संवाद, शुल्क वा उत्तरक देरीक अलग दृश्य नहि। कथावाचक प्रशासनिक कठिनाई संक्षेपित करैत अछि ताकि अन्तिम सामना—गुप्त आ सरकारी अभिलेख आमनेसामने—पर दृष्टि केन्द्रीकृत हो।

‘आमने-सामने’ : मनुष्य नहि, दस्तावेजक संवाद

अध्यायमे सरकारी कागच आ छाया-पञ्जी आमने-सामने राखल जाइत अछि। एतय दू दस्तावेज काव्यात्मक रूपमे दू साक्षी बनैत छथि। कथाकार मात्र गामक मौखिक स्मृतिसँ राज्यक दावाक प्रतिस्थापन नहि करैत; दूनू अलग संस्थागत स्थानसँ आयल कागचकेँ परस्पर तुलना करबैत छथि। एहि स्थापनामे ‘सत्य’ एकल कथावाचकक वाक्यसँ बाहर भौतिक वस्तु पबैत अछि। तथापि जँ दस्तावेज परस्पर विपरीत होइत, तँ विभा कोना निर्णय करितथि—एहन कठिन परीक्षण दृश्य मूलमे नहि; मिलानक प्रक्रिया सहज अनुमोदनमे परिणत होइत अछि।

विभाक हस्तक्षेप : पीढ़ीक नव अधिकार

करुणाकरक बेटी विभा पुरान गुप्त लेखनक परम्पराकेँ एकटा नव अधिकारमे बदलैत छथि। कथात्मक दृष्टिएँ ओ केवल बूढ़बाक श्रोता नहि; अधिकारीक अभिलेख माँगैत, हाथमे लेत आ एकत्र करैत सक्रिय पात्र छथि। हुनकर कथन जे आब छिपाकऽ पञ्जी रखबाक आवश्यकता नहि, पीढ़ीक आत्मविश्वास व्यक्त करैत अछि। मुदा एहि दावाकेँ बूढ़बाक सन्तोष लगभग तुरन्त समर्थन देत अछि। गुप्त स्थानीय दस्तावेजक स्वतन्त्र उपयोगिता, जँ सरकारी अभिलेख फेर असत्य सिद्ध होअय, से प्रश्न उत्तरहीन रहैत अछि।

पहिल कागचक दृश्य : पीयर, फाटल, लिखित नाम

विभाक हाथमे पहुँचल सरकारी अभिलेख ‘पीयर, फाटल’ कहल गेल अछि। दृश्य-विवरण छोट होइतहुँ कथा-धुरी स्पष्ट अछि: शताब्दीक प्रशासनिक समय कागचक नाजुक देहमे देखाइ पड़ैत अछि। एकहि नाम छाया-पञ्जीमे भेटब पर विभाकेँ आन्तरिक सुख होइत अछि। मुदा नामसाम्य स्वयं सम्पूर्ण भूमि-न्याय अथवा इतिहासक सभ प्रश्नक अन्तिम समाधान नहि; ई छोट प्रमाणित समानता कथाक निर्णायक भाव-क्षण बनैत अछि। उल्लेखित पन्नापर कोन नाम, कोन भूमि-खाता वा कोन विवाद लिखल अछि—मूल घटना ओकर विशिष्ट प्रतिलिपि प्रस्तुत नहि करैत।

‘दुनू एक-दोसराकेँ प्रमाणित’ : कथावाचकक निष्कर्षक सीमा

कथावाचक सरकारी कागच आ छाया-पञ्जीक मेलकेँ परस्पर पुष्टि कहैत छथि। साहित्यिक स्तरपर ई दीर्घ प्रतीक्षा समाप्त करनिहार विजयक कथन अछि। तथापि किछु नामक मेलसँ सम्पूर्ण कागजक अचूकता स्थापित भऽ गेल कहल नहि जा सकैत। एतय समीक्षाक काम न्यायालयीय प्रमाणपरीक्षा नहि, **कथावाचकक निश्चितताक मात्रा** नापब अछि। पाठककेँ एकटा सीमित दृश्य देखाओल जाइत अछि, अन्तिम वाक्य ओकरा ‘सम्पूर्ण, कानूनी रूपसँ मान्य इतिहास-संग्रह’क व्यापक परिणाम बनबैत अछि; दृश्य आ परिणामक बीच उल्लेखनीय कथात्मक छलाङ अछि।

‘केओ अधिकारी मेटा नहि सकैत’ : दृढ़ अन्तिम उद्घोष

अध्यायक अन्तिम वाक्य अधिकारक स्थायित्वकेँ लगभग निरपेक्ष रूपमे घोषित करैत अछि। ई घोषणाक भावात्मक प्रयोजन स्पष्ट: यादवानन्दक भयकालसँ विभाक अधिकारकाल धरि परिवर्तन पूरा देखाय। मुदा दस्तावेज भ्रष्ट होयब, नष्ट होयब, पुनर्व्याख्या वा अधिकार लागू करबाक प्रशासनिक कठिनाईक सम्भावना एतय नष्ट भेल—ई पाठमे घटल पृथक घटना नहि। एहन शब्द-सम्पूर्णता अन्तिम गद्यक विजयगीत अछि, तथ्यात्मक सर्वकालिक सुरक्षा-गारंटी नहि। एहि प्रकार कथात्मक निर्णायकता आ ऐतिहासिक अनिश्चितता बीच सूक्ष्म दूरी बचैत अछि।

गीतक ‘गरीबक हाथ’ आ गद्यक पात्रवर्ग

गीत कहैत अछि जे जानकारी गरीबक हाथमे पहुँचल। गद्य विभा आ ग्राम्य युवा सभकेँ सक्रिय देखबैत अछि; विशिष्ट भूमिहीन, दलित अथवा वृद्ध आवेदकक स्वतन्त्र प्रक्रिया नहि। गीतक सामूहिक लोकतान्त्रिक दावी साहित्यिक आशय अछि, किन्तु प्रत्येक सामाजिक समूहक वास्तविक भागीदारीक नामित घटनासाक्ष्य नहि। एतय प्रतिनिधित्वक प्रश्न महत्वपूर्ण अछि, कारण पुराना अभिलेखीय अन्याय बहुधा शक्ति-असमानतासँ जुड़ल छल। आंगनक सर्वसमावेशी घोषणा आ सरकारी दफ्तर धरि पहुँचबाक सम्भावित असमानता एकहि रचनामे अपरीक्षित रहैत अछि।

कार्यालयक मुहर आ गामक कण्ठ : वैधानिकताक फेरबदल

[–५७]मे बाहरी विद्वानक पुस्तक गामक अर्थ बिगाड़ने छल; [–४०]मे सरकारी कागच स्थानीय पञ्जीसँ मिलि समर्थक साधन बनैत अछि। दुनूमे ‘बाहरक लिखल पाठ’ एक समान सत्ता नहि रखैत: पहिल बाह्य व्याख्या, दोसर प्रशासकीय अभिलेख। उपन्यास बाह्य लेखनकेँ सर्वदा अस्वीकार नहि करैत, ओकर स्थानीय कथासँ सम्बन्ध परखैत अछि। ई अन्तर दीर्घ आख्यानक एक महत्त्वपूर्ण परिपक्वता अछि, जँ कि सहमतिक अन्तिम दृश्य, सरकारी अभिलेखक सम्भावित पूर्वाग्रहक प्रश्नकेँ विस्तृत जीवित नहि रखैत।

दृश्य-सारांशक अनुपात : द्रुत उपलब्धि

युवक द्वारा अनेक कागच माँगबाक क्रम समष्टिगत, विभाक पहिल पीयर कागच प्राप्त करबाक क्षण दृश्यात्मक, आ ‘हर पुरान अभिलेख’ प्राप्त कऽ संग्रहीत करबाक परिणाम फेर विशाल सारांश अछि। ई तीन पदक रचना—

प्रवेश, भावात्मक घटना, संस्थागत निष्कर्ष—कथाकेँ तीव्र गति दैत अछि। आवेदनक सैकड़ों दिन, विवाद अथवा अनुपलब्ध पन्नाक कथा अलग जीवित नहि। मानवीय धैर्यक कठिन अवधि संक्षेपणमे गुम होइत अछि; युगान्तकारी उपलब्धिक बिम्ब प्रमुख होइत अछि।

प्रश्न पूछबाक अधिकार : पठनक रूपान्तरण

कथामे ‘पुछि सकै’ केवल प्रशासनिक सुविधा नहि, पाठकक भूमिका बदलनिहार संकेत अछि। यादवानन्दक युगमे नाम लुका कऽ लिखबाक कथा पाठकसँ गोपन साहसक सहानुभूति माँगैत छल; विभाक युगमे वैह पाठक सार्वजनिक प्रश्नक औचित्य देखैत अछि। साहित्यिक कथा एतय प्रश्नक ‘मूल अधिकार’क प्रतिरूप रचैत अछि। मुदा नागरिकक प्रश्न आ राज्यक उत्तरमे बराबरी स्थापित कएबाक प्रक्रिया एक सरल पंजी-साम्यसँ बेसी जटिल अछि; अध्याय एकर संघर्षक अनेक स्तर छोड़ि दैत अछि।

छायासँ उजास धरि : पूर्वक दीपक नव अर्थ

[–५३]क बिजलीक दीप भौतिक प्रकाश छल, [–५०]क आपातकालमे बुताओल दीप सार्वजनिक सभा-स्वातन्त्र्यक रूपक, आ एतय सूचना-दीप अभिलेखीय पारदर्शिताक प्रतीक। ‘इजोत’ बारम्बार घुरैतहुँ एकहि वस्तु नहि सूचित करैत। पहिलमे तकनीक, दोसरमे अधिकारह्रास, तेसरमे ज्ञान-अधिकार। पुनरावृत्त प्रतीकक एहि अर्थान्तरसँ उपन्यासक दीर्घ संरचनामे सम्बन्ध बनैत अछि। किन्तु प्रकाशक रूपकक अत्यधिक भरोसा सरकारी लेखनक अन्हार-उत्पादक क्षमता उपेक्षित करि सकैत अछि—ई सीमाक प्रश्न खुलल अछि।

मूल पात्रक मौन : अधिकारी कतय छथि?

अधिकार कानूनक उल्लेख आ अभिलेखागारक दस्तावेज अछि, पर कोनो अधिकारीक प्रत्यक्ष संवाद नहि। एतय राज्य एक अमूर्त संस्थागत व्यक्तित्व बनि रहैत अछि। गामक सक्रिय पात्र विभा नामसहित छथि; दस्तावेज देनिहार अधिकारी नामहीन। एहि चयनसँ अध्यायक नायकत्व नागरिकक हाथमे रहैत अछि, मुदा प्रशासनिक सत्ता-संरचनाक मानवीय विविधता अदृश्य। सरकारी कर्मी प्रतिरोध करैत, मदद करैत वा तटस्थ रहैत छथि—ई तीन सम्भावनामे सँ कोन घटना घटल, मुख्य गद्य निर्दिष्ट नहि करैत।

अन्तरपाठीय धनु : न्याय-स्मृति सँ सार्वजनिक प्रश्न

छाया-पञ्जी, भू-अधिकार, भूलेल नाम आ अभिलेखीय अपमानक पूर्वघटनासभ एहि अध्यायमे आकस्मिक पृष्ठभूमि नहि। यादवानन्दक छाया-पञ्जीक उघाड़ब [–६४]क न्याय-अनुसन्धान आ [–५४]क भूमिसुधारक परिणामक संगे पढ़ल जा सकैत अछि। पर ई अध्याय पुरान विशिष्ट मुकदमाक पुनःनिर्णय नहि देखबैत। बहु-पीढ़ीक अभिलेख-यात्रा एक नव माध्यम पबैत अछि; समस्त पूर्व न्यायिक झगड़ाक अन्तिम बन्द पुस्तक बनैत अछि—एहन अनुमान असावधान हएत।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : वस्तुगत अभिलेखक कथात्मक विजय

अध्यायक सफलता एहि मे अछि जे अमूर्त ‘सूचना’ कें पीयर कागच, हाथ, आलमारी आ दुई पञ्जीक आमनेसामनेक दृश्य देत अछि। विभा नव पीढ़ीक निर्णयकारी स्त्रीपात्र बनैत छथि। सीमा ई जे प्राप्त अभिलेखक सूची, असहमत पन्ना, भिन्न जातिगत हित वा निवारणक प्रक्रिया नहि देखाओल गेल; ‘सम्पूर्ण’ इतिहासक उद्घोष स्वयं दृश्यसँ बेसी पैघ। तथापि दीर्घ उपन्यासक स्मृति–लिखित पाठ–राज्यसत्ताक रचनात्मक त्रिकोणमे ई निर्णायक संक्रमणक अध्याय अछि।

स्रोत-सूचना आ अग्रिम कथा-सम्बन्ध

एहि विश्लेषणमे मूल [-४०]क ‘सूचनाक दीप’, करुणाकर–विभा पीढ़ी, आवेदनद्वारा अभिलेख प्राप्ति, यादवानन्दक पञ्जी आ अन्तिम मिलान समाहित अछि। सरकारी अभिलेखक विशिष्ट क्रमाङ्क, कागचक कुल संख्या अथवा ओकर स्वतन्त्र सत्यापन पाठमे उपलब्ध नहि। अगिला [-३९]मे लिखित ‘हर नामक हिसाब’ वास्तविक मजदूरी-वितरण आ सामुदायिक निरीक्षणक मञ्च पर जायत।

प्रकरण ६२ | मूल अध्याय –३९ — काजक गारंटी

कामक अधिकारक कथात्मक आगमन

अध्याय [-३९] नागरिकक जानबाक अधिकारसँ श्रमिकक काज करबाक अधिकार धरि कथा आगाँ बढ़बैत अछि। [-४०]मे विभा पुरान भूमि-अभिलेख माँगने छलीह; एतय हुनकर पति सुरेश योजनाक स्थानीय संयोजक छथि। दूनू अध्याय सार्वजनिक हिसाबक महत्त्व पर टिकैत अछि, मुदा पहिल अतीतक कागचक, दोसर वर्तमानक मजदूर-नामक कथा अछि। ग्रामीण रोजगार-गारंटी योजना उल्लेखित होइतहि उपन्यास अनेक शताब्दीक श्रम-प्रवासकें एक ठाम पुनः बुलबैत अछि। सामाजिक घोषणा स्वयं घटना नहि; ओकर क्रियान्वयनमे बाधा आ समाधान कथा बनैत अछि।

परदेशी पूर्वपुरुषक वंश-स्मृति : भोला, रामसेवक, सुखदेव

गद्य भोला, रामसेवक आ सुखदेवक नाम लैत वर्तमान मजदूरक प्रवासगत अनिश्चितताकें पुरान कथा संग जोड़ैत अछि। एहि पुनर्स्मरणक महत्त्व केवल ‘पहिने दुःख छल’ नहि; एक विस्तृत समयान्तरमे श्रमक अधिकारक अभाव कथाक निरन्तर प्रश्न बनैत अछि। मुदा वर्तमान गामक प्रत्येक मजदूर ओहि तीनू परिवारक प्रत्यक्ष वंशज छथि, एहन विवरण नहि। पुरखा-नाम प्रतीकात्मक सामुदायिक वंशावलीक तरह काम करैत अछि, शाब्दिक व्यक्तिगत कुलवृत्तान्तक पूर्ण तालिका नहि। एहि भेदसँ अन्तरपाठीय स्मृति आ जीवनीगत प्रमाण पृथक रहैत अछि।

‘भीख नहि, काज’ : गीतक मान-व्याकरण

फकरा आ ‘काजक हक’ गीत रोजगारकें दानक बदला अधिकारक भाषा दैत अछि। ‘हाजिरी’ शब्दमात्र प्रशासनिक चिन्ह नहि; नाम लिखलापर व्यक्ति औपचारिक मान्यता पबैत अछि। गीतक नैतिक मुद्रा श्रमिकक आत्मसम्मानक पक्ष लेत अछि, मुदा यथार्थमे लाभार्थी कखन अपमानित अनुभव केलक, अथवा अपन मानक

विषयमे के बजल—एहन नामित स्वगत कथन गद्य नहि दैत। गीत मजदूरक ओरसँ घोषणात्मक स्वर ग्रहण करैत अछि; वास्तविक श्रमिक-स्वर सीधा कथा-मञ्चपर कम अछि।

पोखरि, बान्ह आ बाट : श्रमक भूगोल

काजक सूची—पोखरि खुनाइ, बान्ह बन्हाइ, बाट बनाइ—गामक भूगोलकेँ जीविकासँ जोड़ैत अछि। जल-स्थान एतय केवल प्राकृतिक सौन्दर्य नहि, सामूहिक श्रमक ठोस स्थल अछि। पूर्व बाढ़ि-प्रकरणमे बान्ह संरक्षणक आवश्यक वस्तु छल; सूखामे पोखरि आ इनार जीवनक शर्त; एतय वैह पानि-संरचना मजदूरीक स्रोत होइत अछि। रचना याद दियबैत अछि जे पर्यावरणीय संरक्षण आ सामाजिक रोजी परस्पर सम्बन्धित बनि सकैत अछि। तथापि कोन पोखरि कतबा खुनल, मजदूर कतेक दिन लगौलनि, एहन स्थल-विशिष्ट परिमाण नहि।

समूहक सक्रियता : अनाम हाथ आ नामित संयोजक

कथावाचक ‘गामक मजदूर’ एक सामूहिक पात्र रूपमे रचैत छथि, जबकि सुरेश आ बूढ़बाकेँ सीधा संवाद भेटैत अछि। मजदूरक हाथ काम करैत अछि, मुदा मजदूरी रुकेलाक बाद कोन व्यक्ति अपन अपमान, भूख वा रोष व्यक्त करैत अछि, से दृश्य नहि। नायकत्व व्यवस्थापक द्वारा हिसाब सार्वजनिक पढ़नाइपर केन्द्रीकृत अछि। एहि चयनसँ भ्रष्टाचारक प्रतिरोधक स्पष्ट क्रिया बनैत अछि; पर वर्गगत शक्ति-सन्तुलनमे मजदूरक स्वायत्त संगठित निर्णयक वर्णन गौण रहि जाइत अछि। समीक्षा लेल ई आवाज-वितरण एक वास्तविक सीमा अछि।

कानूनक बीया : बूढ़बाक परामर्शक पुनरावृत्ति

बूढ़बा कानूनकेँ बीया, ईमानदार क्रियान्वयनकेँ ओकर पानि आ श्रम कहैत छथि। [–५१]मे सुनयनाक पुरान बीया बचएबाक प्रसंग याद अबैत अछि, मुदा एतय बीया कृषिक वास्तविक वस्तु नहि, संस्थागत सम्भावनाक उपमा अछि। उपमाक साहाय्यसँ अमूर्त अधिनियम गामक परिचित कृषि-अनुभवमे रूपान्तरित होइत अछि। बारम्बार बूढ़बाक दीर्घ उत्तर कथा-चक्रक शैक्षिक स्वर स्थिर करैत अछि। सीमा ई जे बीया-कथा समस्याक अनेक कारण सहज नैतिक द्विविधामे समेटि दैत अछि: ईमानदारी बनाम बेइमानी।

‘पाइ बीचमे रुकि गेल’ : वास्तविक संघर्षक प्रवेश

अध्यायक केन्द्रस्थ घटना एक वर्ष योजनाक किछु भुगतान बीचमे रुकब अछि। ई व्यवधान बिना योजना सफल भऽ गेल कहल जा सकैत छल; भुगतानक रुकावट घोषणा आ व्यवहारक अन्तरकेँ दृश्यात्मक रूप दैत अछि। ‘किछु पाइ’ कहला सँ राशि, प्रभावित लोकसंख्या आ रुकबाक कारण अज्ञात रहैत अछि। आलोचक एकरा अवश्य भ्रष्टाचार कहि नहि सकैत, किएक तँ प्रशासनिक देरी, तकनीकी बाधा अथवा जानि-बूझि रोकब—कुन कारण, कथा निर्दिष्ट नहि करैत। वास्तविक तनाव ‘रुकल हक’क अछि, अपराधी अभिलेखक नहि।

सार्वजनिक वाचन : कागचसँ सामूहिक श्रव्य दृश्य

सुरेश हर मजदूरक नाम आ हिसाब गामक सोझाँ पढ़ि सुनबैत छथि। एतय दस्तावेज मौन पन्नासँ लोकक कानमे पहुँचल सार्वजनिक कथन बनैत अछि। [–४०]मे विभाक हाथमे सरकारी कागच सत्तासँ नागरिक दिस आबि रहल

छल; [–३९]मे नागरिक हाजिरी आ भुगतानक पंजी सभाक सामने आवाज बनैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण माध्यम-परिवर्तन अछि: पढ़ल लेखा सार्वजनिक श्रोता सेहो उत्पन्न करैत अछि। पाठक नहि जनैत जे श्रोतामे कोन मजदूर आपत्ति उठौलक; तथापि नाम सार्वजनिक बजबाक घटनात्मक अर्थ विशिष्ट अछि।

रुकल भुगतानक माँग आ निष्कर्ष

सुरेश अधिकारीसँ रुकेल मजदूरीक माँग करैत छथि ‘जाबे धरि’ प्रत्येक पात्रकेँ ओकर हक नहि भेटैत। ई काल-सूचक वाक्य संक्षेपमे निरन्तर प्रयत्न आ अन्तिम परिणाम दुनू बतबैत अछि। रचनाक व्याकरण विजय प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कतेक दिन, कोन पत्र वा कोन संघर्षक बाद भुगतान भेटल, ई अज्ञात। यैह ठाम कथात्मक गति तीव्र होइत अछि: व्यक्तिगत अभावक दीर्घ अवधि वाचकक परिणाम-सारांशमे विलीन। दृश्यात्मक पंजी-पाठ आ संक्षिप्त सफल प्रतिरोधक अनुपात अध्यायक खास शिल्प अछि।

हाजिरीक नाम बनाम बूढ़बाक स्मृति-नाम

पूर्व अध्यायसभमे नाम याद राखब मृतकक सम्मान आ सांस्कृतिक अस्तित्वक रक्षा छल। एतय हाजिरीमे नाम लिखल होएब जीवनक दैनिक आर्थिक हकक आवश्यक अङ्ग अछि। स्मृतिगत नाम आ प्रशासकीय नाम एक-दोसराकेँ नई अर्थ दैत छथि: ‘नाम छुटब’ सम्मानह्रासक संग मजदूरीह्रास सेहो भऽ सकैत अछि। एहि कारण दीर्घ कादम्बरीक केन्द्रीय नाम-धुरी आधुनिक नीतिगत अभिलेखमे काज करैत अछि। तथापि पञ्जीमे नाम लिखलासँ स्वतः पूरा भुगतान सुनिश्चित होइत अछि, ई समस्या मूल घटना स्वयं खण्डित करैत अछि।

स्थानीय रोजगार आ प्रवासनक अविराम इतिहास

गीत ‘नहि पड़ायब परदेश’क सशक्त आश्वासन दैत अछि। गद्य योजना स्थानीय काज उपलब्ध करबैत देखबैत अछि; मुदा समस्त परिवास समाप्त भऽ गेल, सभ युवा गाम घुरि एलाह वा शहरक रोजगार बन्द भेल—एहन कथा नहि। [–४१]मे करुणाकरक शहरी सॉफ्टवेयर-काम स्वयं अलग परिस्थिति अछि। तेँ दूनू अध्याय एक-दोसराक विरोधी नहि: श्रमक अवसरक विविधता अछि, आ केवल योजना एक समग्र प्रवासनक ऐतिहासिक अन्त नहि। गीतक उत्साह आ सामाजिक संरचनाक जटिलता दूनू अलग रहल चाही।

विभाक उपस्थित-अनुपस्थित नेतृत्व

अध्यायक समय ‘विभाक जमानामे’ निर्धारण होइत अछि, किन्तु योजनाक घटना सुरेशक संवाद आ क्रियासँ सम्पन्न होइत अछि। [–४०]मे विभा मुख्य सक्रिय स्त्रीपात्र छलीह; एतय हुनकर प्रत्यक्ष आवाज लगभग नहि अछि। पारिवारिक वंश-निरन्तरता सुरक्षित, पर केन्द्र पुरुष-समन्वयक दिशि सरकैत अछि। गामक स्त्री मजदूर, भुगतानक आवश्यकता अथवा श्रमक विशिष्ट बोझक चर्चा अलग नहि। ई परिवर्तन रचनाक सामूहिक समानताक प्रतिज्ञा आ वास्तविक केन्द्रित संवादक बीच एक आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि।

‘कानून आ व्यवहार’क स्मृतिगत प्रतिध्वनि

बूढ़बा भोलाक अदालतक कथा मोन पाड़ि कानूनी अधिकार आ दैनिक लाभक बीच दूरी बतबैत छथि। एहि सन्दर्भसँ अतीतक अन्यायक कथात्मक उपयोग नव घटना रोकबाक चेतावनी बनैत अछि। भोलाक पुरान मुकदमा एतय फेर नहि चलैत, मात्र सार्वजनिक अधिकार लागू करबाक अनिश्चितताक स्मृति प्रदान करैत अछि। एहि तरह स्मरण धरोहरमात्र नहि, चरित्रक निर्णय-प्रक्रियाक उपकरण बनैत अछि। मुदा बूढ़बाक हर नव संकटपर शास्त्रवत् सही सलाह देबाक आवृत्ति आन पात्रक स्वतन्त्र अन्वेषणकेँ सीमित सेहो करैत अछि।

क्रियासूचक अनुपात बनाम वास्तविक घटना

कथा भीतर रोजगार-योजना आगमन, स्थानीय कार्यारम्भ, हाजिरी-लेखन, भुगतान रुकब, सार्वजनिक पाठ, अधिकारीसँ माँग, भुगतान पुनरारम्भ आ स्थायी लेखापद्धति प्रमुख अवस्था-परिवर्तन छथि। हाजिरीक प्रत्येक पुनरावृत्ति पृथक उच्च-घनत्व घटना नहि, संस्थागत प्रक्रिया थिक। एहि वर्गीकरणसँ कथाक अर्थपूर्ण गति अन्य साहित्यिक अनुच्छेद-सङ्ख्यापर निर्भर नहि रहैत।

संस्थागत पूर्णताक परिमिति

अन्तमे ‘हर मजदूर’केँ समयपर मजदूरी देबाक सुनिश्चयक व्याख्या अछि। कथानक एक आदर्श शासन-संरचनाक निश्चय दैत अछि, मुदा स्वतन्त्र देरी, अगिला वर्षक संकट अथवा अलग व्यक्तिक असहमति नहि देखबैत। परिणामक वाणी जीवनक दीर्घ संघर्षक ऊपर नैतिक छाप जकाँ पड़ैत अछि। ई शैली उपदेशात्मक सामुदायिक उपन्यासक एक पहिचान, पर एतय कथा प्रतिरोधक बीचक कठिन श्रमकेँ छोट करैत अछि। पाठक एक सफल संरचनाक कल्पना पबैत छथि; ओकर स्थायित्वक प्रश्न भविष्यक कथा लेल खुलल।

समग्र आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

‘काजक गारंटी’क विशिष्ट उपलब्धि हर मजदूरक नाम, हाजिरी आ भुगतानकेँ एक नवीन जीवन-लेखाक रूपमे स्थापित करब अछि। कानूनक घोषणा मात्र नहि, वास्तविक रुकल मजदूरीक व्यवधान कथाकेँ नाटकीय परीक्षा दैत अछि। सीमा पात्र-आवाजक असमानता, लाभक मात्रात्मक अनिश्चितता आ अति-संक्षिप्त समाधान अछि। बूढ़बाक दार्शनिक उपमा कथा-सम्बन्ध स्थिर करैत अछि, पर वास्तविक मजदूरक निजी भाषा ओकरा बराबर विस्तार नहि पबैत। एहि अध्यायक समीक्षा श्रम-अधिकारक उपलब्धि आ प्रस्तुति-संक्षेपक दूनू पक्ष स्वीकारैत अछि।

स्रोत-सीमा आ अगिला मोड़

मूल स्रोत [−३९]क ‘काजक हक’ गीत, विभाक जमानाक रोजगार-योजना, सुरेशक संयोजन, रुकेल पाइ आ सार्वजनिक हाजिरी-पाठ अछि। योजना अन्तर्गत कुल मजदूर, भुगतानक राशि अथवा अनियमितताक निश्चित अपराधी मूल पाठ नहि दैत। अगिला [−३८]मे कागचपर सत्यक सार्वजनिक खोज डिजिटल स्क्रीनक सत्याभास आ झूठ समाचारक नव जटिलतामे प्रवेश करैत अछि।

प्रकरण ६३ | मूल अध्याय –३८ — इंटरनेटक जाल

हाथक फोनसँ सञ्जाल धरि : माध्यमक नव चरण

[–४२]मे हाथक फोन प्राथमिकतः दूरक सम्बन्धीकेँ आवाज द्वारा लग आनैत छल। [–३८]मे सस्ता इंटरनेट आ स्मार्टफोन बहुत प्रकारक समाचार, चित्र, गीत, प्रश्नोत्तर आ सम्पर्क एकहि माध्यममे जोड़ैत अछि। वस्तु हाथमे वैह आकारक भऽ सकैत अछि, मुदा कथात्मक जोखिम बदलल अछि: सम्बन्धक दूरी सँ सूचना के बनबैत अछि, ई प्रश्न उठैत अछि। नीरजक प्रवेश एहि बदलबकेँ पीढ़ीक अनुभव बनबैत अछि; कथावाचक पहिले समष्टिगत तकनीकी प्रसार देखबैत, फेर व्यक्तिगत संशय आ विशिष्ट अफवाहक घटनाक कात अबैत अछि।

जालक दोहरा अर्थ : सुविधा आ फँसाव

‘जाल’ शब्द एक ओर इन्टरनेटक सम्पर्क-सञ्जाल, दोसर ओर ठगब अथवा भ्रमित करबाक फन्दा सूचित करैत अछि। गढ़ नारिकेलक पुरान माछ-जीवनमे जाल ठोस श्रमवस्तु छल; आधुनिक अध्यायमे ई मुख्यतः सञ्चारक संरचना अछि। दोहरा अर्थ गीतक आरम्भसँ अन्त धरि चलैत अछि। गीतक ‘नाम नम्बर बनि गेल’ रूपक सामाजिक सम्बन्धक संकुचनक चेतावनी थिक; पर पाठमे ककर नाम वास्तवमे कोन डिजिटल संख्यामे बदलल, एहन उदाहरण निर्दिष्ट नहि। रूपककेँ ठोस डेटा-चोरीक वर्णित घटना बनाबय नहि चाही।

‘एक छुअनमे संसार’ : कथावाचकक अतिसङ्कुचित काल

संसारक समाचार, प्रश्न, चित्र आ गीत एक छुअनमे अबैत अछि—एहन कथन तकनीकी गतिशीलताक प्रभावक वर्णन अछि। भौतिक यात्रा, पत्रक प्रतीक्षा आ सार्वजनिक चौपालक समय एक क्षणमे संक्षिप्त भऽ गेल जकाँ प्रस्तुत अछि। एहि द्रुत कथनक सामने सत्यक जाँच लेल आवश्यक धैर्य प्रतिपक्ष बनैत अछि। रचना ‘तेज पहुँच’ आ ‘धीरे परख’क संघर्ष रचैत अछि। पर प्रश्नक उत्तर तुरन्त भेटब अर्थात् उत्तर साँच होएब, एहन दावा स्वयं मूल पात्रक प्रश्नद्वारा खण्डित अछि।

सत्य-झूठक समान चमक : ज्ञान नहि, दृश्य-व्यवस्थाक विश्लेषण

कथा कहैत अछि जे झूठ समाचार सत्य जकाँ चमकै। ई स्क्रीनक दृश्यात्मक समानता कथाक खास समस्या अछि: झूठक आकर्षक रूप विश्वसनीय सूचनाक रूपसँ अभिन्न बुझा सकैत अछि। यहाँ विश्लेषणक केन्द्र कथात्मक प्रस्तुति अछि, कोनो दार्शनिक प्रमाणमीमांसाक निरूपण नहि। कथावाचक पाठककेँ आरम्भहिमे सूचना-संकटक सामान्य परिणाम बता दैत छथि, तेँ पछिला झूठ-सन्देश ‘अप्रत्याशित अपराध’सँ बेसी पूर्वघोषित संकटक प्रत्यक्ष उदाहरण बनैत अछि। तनावक रूप रहस्योद्घाटन नहि, सामुदायिक प्रतिक्रिया अछि।

दोसराक चमकैत जीवन : आन्तरिक तुलना

इंटरनेट देखनिहार लोक दोसराक चमकैत जीवनदेखि अपना जीवनसँ असन्तुष्ट होइत छथि—ई छोट उल्लेख ध्यानयोग्य अछि। प्रत्यक्ष धोखाक पहिने ई इच्छा आ आत्म-मूल्यांकनक विषय खोलैत अछि। पर कोन व्यक्तिक तुलना, कोन आर्थिक अपेक्षा वा मानसिक स्थिति, मूल गद्य निर्दिष्ट नहि; व्यापक सामाजिक अनुभवक सारांश

मात्र। जँ समीक्षक एतयसँ नामित मानसिक रोग अथवा पीड़ितक विस्तृत जीवनकल्पना रचथि तँ ओ पाठसँ बाहरी आरोपण होएत। कथा अन्तर्मनक समस्या उद्घाटित करैत, ओकर विस्तृत नाटकीकरण नहि करैत।

अनचाहा सम्पर्क : लिंगित जोखिमक आरम्भ

मुख्य गद्य विशेषत: बच्चा आ युवतीसभसँ अनजान लोकक अनचाहा सम्पर्कक सूचना दैत अछि। अदृश्य संचारक सत्ता केवल सत्य-झूठक समस्या नहि, देह आ निजताक असमान जोखिम बनैत अछि। एतय कोनो व्यक्ति पर घटल निर्दिष्ट धमकीक दृश्य नहि; ओ [–३७]मे ठोस घटना बनि प्रवेश करत। ई अनुक्रामिक क्रम महत्त्वपूर्ण: पहिने जोखिमक सामान्य घोषणा, पछाति व्यक्तिगत संकट। [–३८]कैं [–३७]क घटनाक पूर्ण पुनर्कथन बना देब सँ कथाक क्रमिक विन्यास नष्ट होएत।

नीरजक प्रश्न : विशेषज्ञ नहि, चिन्तित सहभागी

सुरेशक बेटा नीरज इन्टरनेटकैं नव संसार कहैत छथि, संगहि ओकर भय व्यक्त करैत छथि। ई संवाद अघोषित तकनीकी विशेषज्ञक नहि, एक प्रश्नाकुल नागरिकक अछि। कथाक रोचक बिन्दु ई जे बूढ़बा, अत्यन्त दीर्घजीवी स्मृतिधारी, हुनका नव माध्यमक अनुभवक बदलामे पुरान तुलनाक भाषा दैत छथि। नीरज अपन भयक नाम स्वयं लैत छथि; उत्तरक प्राधिकार बूढ़बाक हाथमे। एहि अन्तरसँ पीढ़ीक संवाद उत्पन्न होइतहुँ नव उपकरणक वास्तविक सञ्चालन-ज्ञान कथा भीतर युवा समूहसँ विकसित होइत अछि।

शंख-रजतक आगमन : अन्तर्पाठक पुनर्रचना

बूढ़बा इन्टरनेटक भ्रमकैं पुरान शंख–रजतक प्रसंगसँ जोड़ैत छथि। आरम्भक [–१००]मे देखल वस्तु आ मानल गेल अर्थक अन्तर कथा-भूमि छल; एतय देखल समाचार आ ओकर विश्वसनीयताक अन्तर भावान्तर बनैत अछि। एहि पुनरावर्तनसँ विशाल कादम्बरी अपन शुरुआती प्रश्न आधुनिक स्क्रीन धरि अनैत अछि। मुदा शंख–रजतक दार्शनिक बहस आ सामाजिक माध्यमपर झूठ समाचारक प्रसार अलग व्यवहारक घटनासभ छथि; आलोचनामे मात्र ‘भ्रम’ शब्दक मेलसँ शास्त्रीय समानता निश्चित नहि कहल जाए। उपन्यासक अन्तरपाठीय रचना सुचिन्तित, पूर्ण तात्त्विक समरूपता नहि।

चारि साधनक कथन : पात्रक वाणी बनाम समीक्षकक पद्धति

बूढ़बा गंगेश उपाध्यायक चारि साधनक उल्लेख करैत छथि आ नीरजकैं प्रश्न पूछबाक आग्रह करैत छथि। ई अध्यायक पात्रक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्व-विवरण थिक। वर्तमान आलोचनामे एकरा नव्य-न्यायीय प्रमाणपरीक्षा बनाओल नहि जा रहल अछि; महत्व ई जे बूढ़बा अपन दीर्घ स्मृतिसँ डिजिटल व्यवहार लेल एक संवादात्मक भाषा जुटबैत छथि। हुनकर ‘के कहलक?’ प्रकारक प्रश्न, कथात्मक स्तरपर, पाठकक शंका उत्पन्न करबाक उपकरण छथि। ई सलाहक सफलता मूल दृश्य [–३८]क युवा परीक्षण-समूहक व्यवहारसँ सीमित रूपमे देखाइत अछि।

झूठ समाचारक एक घटना : विवरणक अनामिकता

गाममे ‘भड़काबय बला’ एकटा झूठ समाचार फैलैत अछि; नीरजक समूह ओकर जड़ि तक पहुँचि ओकरा झूठ कहैत अछि। पर समाचारक शब्द, विषय, फैलाबनिहारक नाम अथवा सम्भावित पीड़ितक विवरण नहि। एहि कारण ई घटना पूर्ण अपराध-रहस्य नहि, एक आदर्श परीक्षण-दृश्य अछि। कथावाचक अग्रिम निष्कर्ष—समाचारक कोनो जड़ि नहि—पहिनहि कहि दैत छथि। पाठक सत्य खोजबाक वास्तविक जाँच-प्रक्रिया नहि देखैत, केवल निष्कर्ष आ सामुदायिक चेतावनी देखैत छथि। ई सीमाक उल्लेख कथा-उद्देश्य अस्वीकार नहि, दृश्य-घनत्वक सही नाप अछि।

‘आगिक तरह फैलल’ : पूर्व अगिनक भाषिक रूपान्तरण

अफवाह आगिक तरह फैलैत अछि। [–६०]क वास्तविक अगिनमे दीप, हवा, पयराल आ मानव-श्रृंखलाक ठोस दृश्य छल; [–३८]मे वैह ‘आगि’ उपमाक गति अछि। पाठक पुरान संकटसँ नव झूठ-सन्देशक भय अनुभव करैत छथि। मुदा इंटरनेटपर गलत सूचना फैलबाक घटना वास्तविक आगलागी नहि, ककरो घर जरबक उल्लेख एतय नहि। बहुखण्डीय कृति एक सामग्रीक काव्यात्मक भाषा दोसर क्षेत्रमे उपयोग करैत अछि; एहि प्रतीक-सङ्क्रमणक पहचान, घटनासभकेँ एक करबासँ अधिक उपयोगी आलोचना अछि।

समूह बनब : चेतावनीसँ नव संस्था धरि

नीरज गामक युवाकेँ जोड़ि संशयास्पद सन्देश जाँचबाक छोट समूह बनबैत छथि। [–४२]क अंजलि फोन चलाब सिखबैत छलीह; आब युवा समूह सन्देश पढ़बाक पद्धति साझा करैत अछि। यन्त्र-ज्ञानसँ सूचना-समीक्षा धरि नव सामाजिक क्षमता विकसित होएबाक दावा कथा करैत अछि। तथापि समूहक सदस्य कतेक, बैठक कतय होइत, प्रत्यक्ष कोन विधिसँ जाँच होइत—ई नहि देखाओल। व्यक्तिगत भयक सामुदायिक शिक्षामे रूपान्तरण देखाइत अछि, पर नव संस्थाक दैनिक जटिलता अज्ञात रहैत अछि।

कथनाधिकारक पुनर्स्थापन : गाम अपन खबर पढ़ैत अछि

[–५७]मे बाहरी लेखक गामक कथा अपन दृष्टिसँ लिखने छल, [–४०]मे विभा सरकारी पन्ना माँगैत छथि, आ [–३८]मे नीरज दूरसँ आयल डिजिटल समाचार प्रश्नक अधीन रखैत छथि। एहि श्रृंखलामे गाम लिखित वा दृश्य माध्यम अस्वीकार नहि करैत; माध्यमक एकाधिकार अस्वीकार करैत अछि। सूचना पर पहुँच, समालोचनात्मक पठन आ सामूहिक प्रश्नक अन्तर्सम्बन्ध ई तीन प्रकरणमे उभरैत अछि। पर सूचना-समीक्षाक अन्तिम अधिकार केवल युवा समूहकेँ देनाइ सेहो एक नवा केन्द्रिकरण भऽ सकैत—एहि सम्भावनाक उत्तर वर्तमान गद्य नहि दैत।

बूढ़बाक सन्तुलन : भय आ उपयोगिता दूनू

बूढ़बा इन्टरनेटकेँ सर्वथा त्याज्य नहि कहैत छथि। संवादक आरम्भ ओकर नव शक्तिक मान्यता, तत्पश्चात् सावधानीक शिक्षा। अध्यायक नैतिक संरचना पहिनेक बिजली, कम्प्यूटर आ मोबाइल प्रसंगसँ मिलैत अछि। एहन पुनरावृत्त ढाँचा पाठककेँ स्थायी सामुदायिक मूल्य देत अछि, पर कथाक रचनात्मक जोखिम ई जे प्रत्येक नव

उपकरणक उत्तर एक समान ‘चेतू, परखू, नाम बचाउ’ वाक्य-लयमे समेटल जाए। जँ भविष्यक ठग अधिक जटिल छथि तँ मात्र पुरान चेतावनी पर्याप्त होएत की नहि—एहि शंका लेल [–३६] कथा भूमि तैयार करैत अछि।

यान्त्रिक प्रतिशत आ असली घटनात्मक क्रम

कथात्मक क्रम—स्मार्टफोनक प्रसार; अनेक नव जोखिमक सामान्य वर्णन; नीरजक प्रश्न; बूढ़बाक उत्तर; एक झूठ समाचारक प्रसार; जाँच-समूहक प्रतिवाद; स्थायी समूहक गठन—एतबे प्रमुख परिवर्तनसँ बनैत अछि। गीतक प्रत्येक पङ्क्तिमे ‘पुछू’ आ ‘परखू’क आवृत्ति नव घटना नहि, सार्वजनिक नीतिक एक भावात्मक पुनरुच्चारण अछि। एहि भेदक बिना अध्यायक गति अनावश्यक अतिवर्णित लगि सकैत अछि।

मिथ्या-सूचनाक पराजय : सफल दृश्यक सीमा

झूठ समाचारकेँ नीरजक समूह असत्य सिद्ध करैत अछि, गामकेँ चेतबैत अछि। कथाक एहि सफल प्रतिक्रिया सँ सामुदायिक आत्मरक्षाक सम्भावना उजागर होइत अछि। पर गलत सूचना फैलएबाक मूल संचालकक पश्चात् व्यवहार, पीड़ितक स्थिति, अफवाहक दीर्घ असर वा पुलिसक काजक वर्णन नहि। तेँ ‘गाम सदिखन झूठसँ सुरक्षित भऽ गेल’क निष्कर्ष अवैध। ई एकटा घटना-आधारित कौशलप्रदर्शन अछि; नयका डिजिटल संसारक अन्तिम विजय नहि।

समग्र निर्णय : चमकक विरुद्ध प्रश्नक कथा

अध्यायक केन्द्रीय उपलब्धि डिजिटल सूचना-संकटकेँ गामक पुरान ‘देखल वस्तु आ अर्थ’क कथाधुरीसँ जोड़ब अछि। नीरजक समूहक गठन रचनात्मक भविष्यक सम्भावना खोलैत अछि। सीमा ई जे वास्तविक झूठ सन्देशक विषय छिपल, जाँच-प्रक्रियाक दृश्य संक्षिप्त आ बूढ़बाक उत्तर पुराना शैलीक पुनरावृत्ति अछि। अनुभूत भय आ सामूहिक शिक्षणक छोट घटना यथार्थवादी धरातल बनबैत अछि; स्क्रीनक अदृश्य शत्रुक सम्पूर्ण तन्त्र एहि अध्यायमे अनावृत नहि। एहि अपूर्णताक कारण अगिला दू प्रकरण विशेष महत्त्व पबैत अछि।

प्राथमिक पाठ आ अगिला कथा

ई समीक्षा [–३८]क ‘चमक आ जाल’ गीत, स्मार्टफोनक आगमन, नीरज–बूढ़बाक संवाद, अनाम झूठ समाचार आ परीक्षण-समूहक स्थापनासँ सम्बद्ध अछि। झूठ खबरक वास्तविक विषय, स्रोतक देश, जाँच-पद्धतिक तकनीकी चरण अथवा बच्चा-युवती पर विशिष्ट पहिने घटल अपराधक विवरण एतय नहि। [–३७]मे ओ सामान्य जोखिम एक धमकी भेटल युवतीक व्यक्तिगत संकट बनि सोझाँ अबैत अछि।

प्रकरण ६४ | मूल अध्याय –३७ — स्क्रीनक पहिल छाया

सामान्य जोखिमसँ विशिष्ट पीड़ा धरि कथाक अवतरण

[–३८]मे अनजान लोकक बच्चा-युवतीसँ अनचाहा सम्पर्क आ ऑनलाइन झूठक सामान्य सूचना छल; [–३७] ओकरा एक लड़कीक फोटो लऽ धमकी देबाक विशेष प्रसंगमे बदलैत अछि। ई बदलाव अध्यायक कथात्मक

आवश्यकता अछि: सूचना-सङ्कट आब मात्र समुदायक सही समाचार पएबाक प्रश्न नहि, एक व्यक्तिक लज्जा, भय आ सामाजिक एकाकीपनक प्रश्न अछि। कथावाचक फेसबुक–व्हाट्सएपक व्यापक प्रसारसँ प्रारम्भ करैत छथि, मुदा केन्द्रीय दृश्य सपना, बूढ़बा आ धमकीप्राप्त युवतीक गोपनीय अनुभवकेँ सार्वजनिक बोलबामे रूपान्तरित करब अछि। एहि अनुक्रमक कथा-क्रिया विशिष्ट अछि।

‘छाया’क रूपक : तकनीकी परदाक पाछाँ अनाम कर्ता

फकरामे स्क्रीनपर चेहराक चमक आ पाछाँ नामक अन्हार एकसंग अछि। एतय स्क्रीनक दृश्य-बाहुल्य तकरा उपयोग करनिहार धमकीदाताक पहिचान सुनिश्चित नहि करैत। ‘छाया’ अदृश्य भयक मानवीकरण अछि; गाममे सचमुच कोनो नयका भूत जन्म लेल—एहन घटना नहि। कथावाचक पुरान चन्ना गाछीक भूत-बिम्बकेँ स्क्रीनक गुप्त उत्पीड़क पर स्थानान्तरित करैत छथि। एहि अर्थान्तरसँ उपन्यासक जादुई संसार आधुनिक निजता-सम्बन्धी संकटक भाषा जुटबैत अछि, मुदा आध्यात्मिक सत्ता आ वास्तविक उत्पीड़क मनुष्यक स्तर पृथक राखब आवश्यक।

माध्यमक लाभ उद्घाटनमे सुरक्षित

मुख्य कथा पहिले दूरक नातेदार लग अबैत, पुरान मित्रक फेर भेट आ सुख-दुःखक समाचार तत्काल पहुँचबाक उल्लेख करैत अछि। ई लाभक वर्णन बिना अध्याय नकारात्मक तकनीक-कथा बनि जाइत। तथापि एहि सुविधासभक कोणो स्वतन्त्र दृश्य विस्तृत नहि; ओ समष्टिगत आरम्भिक सारांश अछि। नाटकीय घनत्व उत्पीड़नक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि। एहि असमान समय-वितरणसँ पाठक माध्यमक दूहा स्वभाव जानैत छथि, मुदा पीड़ाक नैतिक तात्कालिकता अधिक महसूस करैत छथि।

‘गामक एकटा लड़की’ : पीड़ितक अनामता

सपना बूढ़बासँ कहलनि जे एकटा लड़कीकेँ अनजान व्यक्ति हुनकर फोटो लऽ धमकी दैत अछि। कथावाचक युवतीक निजी नाम नहि दैत। ई कथाक संरक्षणशील अनामता सेहो पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा एकर कारण कथावाचक स्पष्ट नहि करैत। युवतीकेँ ‘पीड़िता’क प्रतिनिधि रूपमे रखने गामक अनेक सम्भव घटनाक प्रतीक बनाओल गेल अछि; एकर मूल्य ई जे ओकर निज अनुभूतिक जीवन-इतिहास अनुपस्थित रहैत अछि। नाम बचएबाक उपन्यासमे नामहीन पीड़ितक उपस्थिति स्वयं एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक तनाव अछि।

फोटो लऽ धमकी : घटल बातक सटीक सीमा

मूल संवाद फोटो लऽ धमकी देबाक बात निश्चित करैत अछि, किन्तु फोटो कोन प्रकारक छल, केना प्राप्त भेल, सार्वजनिक करल गेल की नहि, पाइ माँगल गेल की नहि, ई नहि कहल गेल। अतएव समीक्षामे छवि प्रसारित भऽ गेल, अश्लील सम्पादन भेल, यौन अपराध सिद्ध भेल अथवा फिरौती देल गेल—एहन घटना जोड़ब अनुचित होएत। कथाक वास्तविक मूल घटना निज छविक नियन्त्रण लऽ भय उत्पन्न करब अछि। एहि अस्पष्टताक संग कथा एक व्यापक उत्पीड़न-प्रकारकेँ स्पर्श करैत, पर विशिष्ट अपराध-विवरणक प्रमाण नहि दैत।

सपना नामक कथात्मक मध्यस्थ

नीरजक बेटी सपना धमकी पओनिहार लड़कीसँ बूढ़बाक संवाद धरि पुल बनैत छथि। पीड़ित स्वयं पहिल पूछताछ करय नहि अबैत; सपना प्रश्न पहुँचेबैत छथि। एतय आवाज-प्रवाह पर ध्यान जरूरी: धमकी देनिहार अदृश्य; पीड़ित प्रारम्भमे परोक्ष; सपना सवाल पुछनिहार; बूढ़बा सलाह देनिहार। एहि संरचनामे सपना सक्रिय महिला आयोजिका बनैत छथि, मुदा पीड़ितक सीधा स्वर अन्तिम डिजिटल राति-सभाक दृश्य धरि रोकल गेल अछि। एहि विलम्बसँ ‘पहिल बेर खुलेआम बजब’ वास्तविक घटना-परिवर्तन बनैत अछि।

बूढ़बाक काँपैत स्वर : सर्वज्ञ रक्षकक असुरक्षा

बूढ़बा उत्तरमे स्वीकारैत छथि जे ई नव प्रकारक अन्याय स्वयं पूर्ण रूपसँ नहि बुझैत छथि। दीर्घ स्मृतिधारी साक्षीक एहि अनिश्चयक महत्त्व पैघ अछि। पूर्व अनेक प्रकरणमे हुनकर उत्तर अन्तिम सूत्र जकाँ अबैत छल; एतय ज्ञानसीमा स्पष्ट रूपेँ वाचित अछि। ‘स्वर काँपैत’क उल्लेख हुनकर भावात्मक हिस्सा उपस्थित करैत अछि। तथापि व्यावहारिक उत्तर फेर सामूहिक प्रकाश, विरोध आ सहारा बनैत अछि, अर्थात् नव संकटमे पुरान सामाजिक रणनीति वापसी करैत अछि। ई वापसी कतेक कारगर, कथा छोट दृश्यसँ देखबैत, सम्पूर्ण सुरक्षा-योजना नहि।

लाजक स्थानान्तरण : अपराधी आ पीड़ितक वाचिक स्थान

‘इजोत आ लाज’ गीतक केन्द्रीय उलटाव ई जे लाज पीड़ितक नहि, उत्पीड़कक होएबाक चाही। गद्यमे बूढ़बा युवतीक चुप्पीक ऊपर अपराधीक निर्भरताकेँ चिन्हैत छथि। एहि वाचिक पुनर्विन्यासमे कथा पीड़ितकेँ दोषक केन्द्रसँ हटबैत अछि। मुदा ओकरा ‘खुलेआम बाजू’ कहब एकमात्र उपचार नहि; पीड़ितक निजता आ सुरक्षा लेल कतेक जोखिम छल, पाठमे चर्चा नहि। अतएव कथाक नैतिक सहायता महत्त्वपूर्ण, ओकरा सभ सम्भव अवस्थाक सार्वभौमिक समाधान मानब उचित नहि।

चुप्पीक दू अर्थ : भयजन्य एकाकीपन आ सुरक्षा

अध्यायमे उत्पीड़कक बल युवतीक चुप्पीपर निर्भर कहल गेल अछि। एतय ‘मौन’ डरक परिणाम बनैत अछि। मुदा पुरान [–५०]क आपातकालमे स्त्रीसभ गुप्त मौन आ फुसफुसाहटसँ न्याय-सभा जीवित रखने छलीह। एहि दू मौनक कथात्मक कार्य विपरीत अछि: पहिलमे चुप्पी बाहरी दमनसँ संस्था बचबैत, दोसरमे चुप्पी अपराधी लेल लाभकारी बनैत अछि। एहि रूपेँ उपन्यास मौनकेँ सार्वभौमिक सद्गुण वा दोष नहि मानबाक मौका दैत अछि, यद्यपि वर्तमान बूढ़बाक भाषणमे ई भेद पूर्ण विस्तार नहि पाबैत।

पहिल डिजिटल राति-सभा : स्थान-संस्थाक रूपान्तरण

सपना पुरान स्त्री-राति-सभाकेँ नव ‘डिजिटल राति-सभा’ बनबैत छथि। [–६६]क स्त्री-सभा घरेलू अन्याय सुनबाक मंच, [–६०]क अगिनमे सामूहिक श्रमक संगठन, [–५०]मे आपातकालीन गुप्त न्याय, आ आब स्क्रीन-पछाड़ि उत्पीड़न-सुनवाईक स्थल। ई पुनरावृत्ति कथा-चक्रक सबल निर्माण अछि: संस्था बदलैत संकटसँ नव

क्षमता पबैत अछि। मुदा ‘डिजिटल’ शब्दक अर्थ ऑनलाइन बैठक अछि कि डिजिटल समस्यापर प्रत्यक्ष बैठकी, गद्य स्पष्ट तकनीकी विवरण नहि दैत। पुरान संस्था नव प्रसंगमे कार्यरत अछि—एतबे सुरक्षित निष्कर्ष।

पीड़ितक पहिल खुलल कथन : केन्द्रीय घटना

राति-सभामे युवती ‘पहिल बेर’ अपन बात खुलेआम कहैत अछि। ई क्षण कथा भीतर वास्तविक अवस्था-परिवर्तन अछि: परोक्ष सूचना प्रत्यक्ष कथन बनैत अछि, एकल भय सामुदायिक श्रोता पबैत अछि। युवतीक सम्पूर्ण भाषण पाठमे उद्धृत नहि; कथावाचक ‘अपन बात कहलक’ रूपमे सारांश दैत छथि। ताहि कारण स्वरताक नैतिक उपस्थिति आ वाणीगत व्यक्तित्वक साहित्यिक प्रस्तुति बीच अन्तर अछि। कथाकार आवाज लौटेबाक घटना देखबैत छथि, आवाजक खास शब्द नहि।

दस-बीस स्त्रीक संग : संख्याक साहित्यिक कार्य

कथा कहैत अछि जे दस–बीस स्त्री युवतीक संग ठाढ़ भेलीह। ई अनुमानित संख्या सामूहिक सहाराक दृश्य रचैत अछि, सांख्यिक सदस्य-सूची नहि। एक पीड़ितक विरुद्ध अदृश्य उत्पीड़क; एक पीड़ितक संग दृश्य सार्वजनिक समुदाय—ई विपरीत विन्यास कथा-तनावक समाधान अछि। मुदा सभ स्त्रीक नाम, निर्णय, मतभेद वा सुरक्षा-काजक विवरण नहि। सामूहिक काया कथा में नायक बनैत अछि, व्यक्तिगत बहुवचन अस्पष्ट रहैत अछि।

धमकी ‘कमजोर’ पड़ब : परिणामक सावधान पठन

स्त्रीसभ ठाढ़ भेलाक बाद अदृश्य धमकी ‘अचानक कमजोर’ पड़ैत अछि, युवतीक चेहरापर मुस्कान अबैत अछि। ‘कमजोर’ होएब अपराधी पकड़ल गेल, छवि मेटि देल गेल अथवा अपराध पूर्णतः समाप्त भऽ गेल—एहन निश्चित घोषणा नहि। एहि सीमित क्रियावाचक शब्दमे कथा पहिल राहत दैत, अन्तिम न्यायिक निष्कर्ष नहि। युवतीक पुनः मुस्कुराहट भावात्मक उपलब्धि अछि, साक्ष्यक सम्पूर्ण निवारणक अभिलेख नहि। कथा जेतेक सुधार देखबैत अछि, आलोचना ओतबे स्वीकार करत।

श्रवणक साझा भार : पीड़ाक कथात्मक वितरण

‘जे बोझ ओ अकेल ढोइ रहल छल’ सभा मिलि उठबैत अछि—एहन वर्णन सहानुभूतिकेँ भौतिक भारक रूपक दैत अछि। सहारा केवल भाषण नहि; दर्शक-संख्या बदललासँ पीड़ितक सामाजिक स्थिति बदलब अनुभव होइत अछि। प्रारम्भमे उत्पीड़न छिपल, उत्तरार्धमे सामूहिक भेंट। ई दृश्य पाठककेँ एक पात्रक अकेल अवस्थासँ सामुदायिक संरक्षण दिस पहुँचबैत अछि। मुदा दोषीकेँ सामाजिक उत्तरदायित्वक भीतर कोना आनल गेल, ई दृश्य गद्यक बाहर अछि; साझा भार न्यायिक उपचारक बराबर नहि।

‘भूत’क दोसर रूप : जादुई भाषा आ वास्तविक उत्तर

कथा स्क्रीनक गुप्त ठगकेँ ‘नव भूत’ कहैत अछि। पर वास्तविक संरक्षण स्त्रीसभक सार्वजनिक सहारा आ सपना द्वारा संगठनसँ अबैत अछि; बूढ़बा अलौकिक ढंगसँ धमकीदाता नष्ट नहि करैत छथि। एहि बिन्दुपर जादुई उपमाक आकर्षण आ सामाजिक क्रियाक यथार्थ एकसंग छथि। उपन्यासक स्मृति-भूतक दीर्घ परम्परा डिजिटल छायाक

अर्थ समेटैत अछि, मुदा उद्धारक काज मानवसमुदायक अछि। एहि द्विस्तरीय विन्यासक संगति कथा-शिल्पक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

खुलापन बनाम निजता : अनुत्तरित कथात्मक संकट

बूढ़बाक उपदेश ‘बाजू, मिलिकऽ ठाढ़ होउ’ अछि, जे पीड़ितक एकान्त तोड़ैत अछि। किन्तु डिजिटल उत्पीड़नमे सार्वजनिक खुलासा सेहो पहचान, फोटो वा निजी कथा दोहरबैत फैलाबय सकैत अछि—एहन सम्भावना पाठमे चर्चित नहि। ई बाह्य सिद्धान्त आरोपित करबाक बदला पाठकक प्रश्न रूपेँ रखल जा सकैत अछि: युवती अपन कहानी केतबा सार्वजनिक करबाक स्वीकृति देने छलीह? कथा एकर उत्तर नहि दैत। नव न्यायमञ्चक नैतिकता आ सम्बन्धक सुरक्षा बीच सम्भावित तनाव एहि मौनमे निहित अछि।

शैलीगत निर्णायकता : गीत पहिले समाधान कहि दैत अछि

गीत पहिनहिसँ कहैत अछि जे ‘मिलि कऽ बाजल’ तँ अन्हार दूर हएत। मुख्य गद्य ओही समाधानक दृश्य प्रस्तुति करैत अछि। फलतः पाठक लेल कथाक परिणाम पूर्ण अप्रत्याशित नहि; मूल्य घटना पहुँचबाक प्रक्रियामे अछि। आरम्भक जोखिम, सपना–बूढ़बाक प्रश्नोत्तर, युवतीक कथन आ सामूहिक सहारा—ई चारि चरण गीतक नैतिक निष्कर्षक नाट्यनिष्पादन छथि। नाटकीय अनिश्चितता सीमित, भावात्मक सुखप्राप्ति अधिक।

समग्र मूल्यांकन : नामहीन पीड़ितक पुनःवाणी

अध्यायक केन्द्रीय शक्ति अनाम युवतीक निजी भयकेँ सामूहिक सुनवाईक विषय बनाएब अछि। सपनाक सक्रियता स्त्रीसभक पुरान संस्था नव डिजिटल संसारमे प्रवेश करबैत अछि। सीमा ई जे पीड़ितक सीधा बयान, उत्पीड़कक पहिचान, अपराधक उत्तरदायित्व आ डिजिटल सुरक्षाक प्रक्रिया संक्षिप्त अथवा अनुपस्थित। लाजक पुनर्स्थापन प्रभावशाली नैतिक कथन अछि, मुदा संस्था-निर्माणक परिणाम सम्पूर्ण न्यायनिर्वाहक समान नहि। नव माध्यमक कथा एतय सामाजिक सहयोगक मूल्य पर केन्द्रित अछि।

स्रोतसीमा आ अगिला प्रकरण

एहि विवेचनक प्रमाण ‘इजोत आ लाज’ गीत, फेसबुक–व्हाट्सएप आगमन, सपना द्वारा बताओल धमकी, बूढ़बाक काँपैत उत्तर, युवतीक प्रथम खुलल कथन आ डिजिटल राति-सभा अछि। युवतीक नाम, धमकीदाता, फोटो सार्वजनिक होएब वा पुलिसक क्रियाक वृत्तान्त अनुपस्थित अछि। [–३६]मे अदृश्य डिजिटल शक्तिक संकट व्यक्तिगत छवि-सुरक्षासँ बढ़ि रोजगार-झाँसा आ जमा-पूँजीक ठगी बनि सोझाँ अबैत अछि।

प्रकरण ६५ | मूल अध्याय –३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट

‘पहिल आहट’क संरचनात्मक अर्थ

अध्यायक शीर्षक ‘पहिल आहट’ अछि, जबकि गद्य एक युवकक सम्पूर्ण जमा-पूँजी हेराबाक गंभीर घटना वर्णित करैत अछि। आहट अर्धघटित नुकसान नहि; आगू आबय बला अधिक जटिल अपराध-जगतक अग्रिम संकेत अछि। एहि दृष्टिएँ वर्तमान ठगी एक स्थानीय समाप्त प्रकरण मात्र नहि, भविष्यक डिजिटल शत्रुकेँ कथा-विश्वमे प्रवेश देनिहार घटना अछि। पूर्वक [–३८]मे झूठ समाचार जाँचि खण्डित, [–३७]मे धमकीप्राप्त युवतीकेँ सामूहिक सहारा भेटैत अछि; [–३६]मे अपराध सफल भऽ चुकल अछि। सुरक्षा-नैतिकताक सहज विजयक्रम एतय भङ्ग होइत अछि।

नौकरीक झाँसा : आशा स्वयं जोखिमक प्रवेशद्वार

ठगीक आरम्भ युवकक रोजगारक आकाङ्क्षासँ होइत अछि। ई चयन महत्त्वपूर्ण: [–४१]क महानगरीय नौकरी आ [–३९]क रोजगार-अधिकारक प्रसंगक बाद ‘अच्छा काज’क विश्वास ठगक साधन बनैत अछि। युवकक आर्थिक अवस्थाक विशिष्ट विवरण नहि, किन्तु सम्पूर्ण जमा-पूँजी गमाएबक वाक्य अपन विनाशकारी अर्थ स्पष्ट करैत अछि। कथाक ठग केवल डिजिटल चालाक नहि, आशाक भाषा अपनबैत अछि। नौकरीक इच्छा स्वयं दोष नहि; छल-प्रस्तावक विश्वसनीय आवरण बनल अछि। पात्रक नाम, आयु आ परिवारक आश्रित लोक अज्ञात छथि।

वेबसाइट–दफ्तरक फोटो–अधिकारीक अवाज : विश्वसनीयताक कृत्रिम दृश्य

मूल कथा तीन माध्यमक सूची देत अछि—वेबसाइट, दफ्तरक फोटो, अधिकारीक आवाज। ई त्रय एकटा कम्पनीक विश्वसनीयता प्रकट करबाक नाटकीय आवरण बनबैत अछि। ठगक देह पाठक नहि देखैत, किन्तु ओकर द्वारा रचल दृश्य–श्रव्य चिह्न देखैत अछि। कथात्मक दृष्टिकेन्द्र युवकक भरोसाक सम्भावना बनबैत अछि: देखल तस्वीर आ सुनल आवाज पाछाँ साँच संस्थान होएबाक भ्रम। तथापि एतय डीपफेक, नकली दस्तावेजक विशेष तकनीक वा कृत्रिम आवाज-संश्लेषणक उल्लेख नहि; एहन तकनीकी विवरण जोड़ब आधारहीन होएत।

एक रातिमे गायब : कथाक समयक क्रूर सङ्कुचन

पाइ पठौलाक बाद कम्पनी, वेबसाइट आ आवाज एके राति गायब भऽ जाइत अछि। दीर्घ परिश्रमसँ जुटल जमा-पूँजीक नाश एक रातिक कथनमे समेटल जाइत अछि। एहि तीव्र कालभेदसँ अपराधक हिंसा अनुभूत होइत अछि: विश्वसनीयता बनएबाक अज्ञात अवधि बनाम प्रमाण-लोपक क्षिप्र क्षण। पर वेबसाइट कखन बन्द भेल, फोन कतेक बेर बजाओल गेल, युवक प्रथम शंका कखन कएलक—एहन घड़ीवार दृश्य नहि। गद्य परिणामक अचानकपनकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

ठगक अनामता बनाम युवकक अनामता

‘असली ठग के छल, कतय छल’ कथा नहि जनैत। एहि अनिश्चितताकेँ कथावाचक स्पष्ट रूपेँ स्थापित करैत छथि। मुदा धोखा खएने युवकक नाम सेहो नहि देल गेल अछि। दुनू अनामताक कारण अलग रूपेँ पढ़ल जा सकैत: ठगक पहिचान अपराधक रहस्य, पीड़ितक नामहीनता सामाजिक प्रतिनिधित्वक सीमा। नाम बचएबाक उपन्यासमे ठगद्वारा गमाओल जाइत केवल पाइ नहि, व्यक्ति-जीवनक सामाजिक परिचय सेहो होइत अछि—एहन प्रतीकात्मक व्याख्या सम्भव, किन्तु युवकक वास्तविक नाम मिटा देल गेल अछि, से घटना नहि।

पुलिसमे रपट : उपलब्ध प्रक्रिया आ अनिश्चित समाधान

गद्य बतबैत अछि जे पुलिसमे रपट लिखाओल गेल। एहि विवरणसँ सामुदायिक उत्तर कानूनी संस्थापर सेहो पहुँचैत अछि। किन्तु रपटकोन संख्या, पुलिसक तकनीकी जाँच, पैसा वापसी अथवा आरोपीक गिरफ्तारीक उल्लेख नहि। ‘जकरा देखिये नहि सकल जाय, तकरा पकड़ल कोना जाय?’ प्रश्नक रूपेँ ठहरल अछि। आलोचनामे पुलिस असफल साबित भेल अथवा ठग विदेशमे सुरक्षित पकड़ाइ गेल—दुनूमे सँ कोनो निष्कर्ष जोड़ब उचित नहि। कथाक अन्तिम घटनास्थिति शिकायतक बादो अनिश्चित अछि।

‘ने चेहरा, ने ठेकान’ : अदृश्य विपक्षीक रचना

पूर्वक राजा, जमींदार, सिपाही आ बाहरी लेखक अधिकांशतः प्रत्यक्ष वा नामित विपक्षी रूपेँ भेटैत छलाह। एतय शत्रुक अस्तित्व कार्यसँ स्पष्ट, पर व्यक्ति-चेहरा गायब। एहि बदलावसँ कथा सामाजिक संघर्षक स्थान बदलैत अछि: चौपालमे विरोधी ललकारबाक बदला अदृश्य डिजिटल सञ्जालक विरुद्ध सामूहिक सतर्कता आवश्यक बनैत अछि। ठगक अभाव ही भयक साधन अछि। मुदा डिजिटल जालक संचालक वास्तविक मानवीय समूह छथि वा एक व्यक्ति, पाठमे नहि; ‘नव गोहि’ रूपककेँ अपराधी व्यक्तिक ठोस पहिचानक स्थानापन्न नहि मानब।

पुरान गोहि आ नव गोहि : जलसँ तार धरि प्रतीक-यात्रा

‘अनदेखल गोहि’ गीत कहैत अछि जे पुरान गोहि पानिमे देखाइत, नव गोहि तारमे नुकाएल अछि। मूल जोड़ी पोखरिक गोहिक लोकविश्वास, भय, भेंट आ नामरक्षा आब डिजिटल ठगीक प्रतीक रूपेँ स्थानान्तरित होइत अछि। जलक दृश्यात्मक परम्परा आ तारक अमूर्त सञ्जालक बीच दूरी कादम्बरीक दीर्घ ऐतिहासिक विस्तारक एक सौन्दर्यात्मक उपलब्धि अछि। तथापि पुरान गोहि पूर्णतः प्रत्यक्ष देखल जा सकैत छल—एहन गीतक विश्वास सम्पूर्ण पूर्वकथाक सभ अलौकिक प्रसंगक अनिवार्य यथार्थ-विवरण नहि। गीत बिम्बक भेद तीखा करबाक लेल द्वैत गढ़ैत अछि।

‘भेंट नहि, भरोसा’ : लालचक वस्तु बदलल

बूढ़बा कहैत छथि नव गोहि भेंट नहि माँगैत, भरोसा ठगैत अछि। एतय पुरान अनुष्ठानक प्रतिदान-व्यवस्था आ वर्तमान छलक सम्बन्ध विस्थापित अछि। ई वाक्यक कथात्मक प्रयोजन आधुनिक अपराधक नैतिक प्रकृति व्यक्त करब—विश्वासकेँ आर्थिक लाभ लेल फुसलाब। युवक पाइ पठबैत अछि; ओकर भरोसा पूँजी गमएबाक पूर्वशर्त

बनैत अछि। पर पुराना गोहि-पूजाक प्रत्येक भेंट वास्तविक सुरक्षित लेनदेन छल आ नव ठगक हर सम्पर्क केवल विश्वास माँगैत अछि—एहन पूर्ण तुल्यता नहि; एकता प्रतीकात्मक भाषामे अछि।

सपना फेर मध्यस्थ : व्यक्तिगत हानिसँ पीपरक प्रश्न

[–३७]क बाद सपना फेर संकट बूढ़बा धरि लैत छथि। ओ एहि बेर युवतीक डिजिटल धमकी नहि, युवकक ठगीक भय सुनबैत छथि। एहि आवृत्तिसँ सपना एक सामाजिक सूचनावाहक तथा आयोजिका बनि उभरैत छथि। मुदा पीड़ित युवक स्वयं बूढ़बासँ बजैत नहि; हुनकर शब्द संवादमे नहि। एतय पीड़ितक व्यक्तित्व कथावाचकक त्वरित सारांश आ सपनाक चिन्तित प्रश्नक भीतर समा जाइत अछि। केन्द्र बूढ़बाक आश्चर्य आ चेतावनीपर सरकैत अछि, युवकक जीविकाक बादक कथा गौण रहैत अछि।

बूढबाक असमर्थता : दीर्घ स्मृतिक वास्तविक सीमा

बूढ़बाक स्वीकार अछि जे हुनका नहि बुझल पुरान ज्ञान एहि नव गोहिसँ कोना लड़त। ई एक महत्त्वपूर्ण चरित्रगत संकट अछि। पहिने बहु विपत्तिमे ओ पोखरि, गाछी, पञ्जी वा स्त्री-सभाक पूर्वज्ञानक सहारे उपाय सुझबैत छलाह; आब अपराधक अदृश्यता तकर परिचित साधन सीमित करैत अछि। एहि दुर्बलतासँ बूढ़बाक ‘सर्वसमर्थ समाधानदाता’क प्रतिमा क्षणभरि हिलैत अछि। पर अन्ततः ओ जागरूकताक पुरान नैतिक उत्तर पुनः खोजैत छथि। अनिश्चितता आ परामर्शक सहअस्तित्व हुनकर चरित्रमे नव तनाव बनबैत अछि।

छुपल अपराधक विरुद्ध स्मृतिदायित्व

बूढ़बा कहैत छथि जे नव गोहि जकर नाम खायत, ओकर नाम ओ सुरक्षित राखताह। एतय स्मृतिक भूमिका अपराध रोकबाक तकनीकी साधन नहि, क्षतिग्रस्त व्यक्तिक अस्तित्वकेँ उपेक्षासँ बचएबाक नैतिक वचन अछि। युवकक पाइ लौटि नहि आयल, अपराधी पहचानल नहि गेल; तइयो स्मरणक वचन दृश्यकेँ पूर्ण नैतिक शून्यतामे नहि छोड़ैत। मुख्य प्रश्न रहल: स्मृति मात्र आर्थिक न्याय दऽ सकैत अछि की नहि? कथा स्वयं बूढ़बाक ज्ञानसीमा स्वीकारैत, अतः स्मरणकेँ भुगतान-पुनर्प्राप्तिक बराबर नहि मानबाक अवकाश बनबैत अछि।

चेतावनी-अभियान : व्यक्तिगत पीड़ासँ समुदाय दिस

सपना हर परिवारकेँ ऑनलाइन प्रस्तावक जोखिमक विषयमे सचेत करय लगैत छथि। ई नयका सामाजिक क्रिया एतय अन्तिम परिणाम अछि। [–३८]मे नीरजक युवा-समूह सूचना-जाँच सिखबैत छल; [–३७]मे डिजिटल राति-सभा उत्पीड़न पर बात करैत छल; आब सपना परिवार-दर-परिवार ठगी-चेतावनी दैत छथि। तीनू संस्था आपसि सम्बन्धित, मुदा समान नहि। जाँच, सहारा आ पूर्वचेतावनी अपन-अपन साहित्यिक कार्य रखैत अछि। अभियानक फलस्वरूप आगामी एको ठगी नहि भेल—एहन सार्वभौमिक दावा मूलमे नहि।

‘कागचपर नहि, आँखिपर विश्वास’ : फकराक आन्तरिक विडम्बना

फकरा आँखिपर विश्वासक आग्रह करैत अछि, जबकि ठगीक असली दृश्य—वेबसाइट आ दफ्तरक फोटो—आँखि धोखा देबाक साधन बनैत अछि। ई अध्यायक पाठगत एक महत्त्वपूर्ण तनाव अछि। गीत पछाति चमकपर

अन्धविश्वास नहि करबाक आदेश दैत अछि; बूढ़बाक उत्तर सेहो सावधानीपर बल दैत अछि। अतः आरम्भक ‘आँखिपर विश्वास’ कैं शाब्दिक प्रत्यक्षदर्शनक अचूकता मानल जाए तँ गद्य ओकरा विरोध करैत अछि। सम्भवतः ई कहबी आलोचनात्मक जागरूकताक रूपक अछि; मुदा भाषा-विन्यासक अस्पष्टता रचनात्मक असङ्गतिक रूपमे नोंधनीय अछि।

दृश्य-प्रमाणक अस्थिरता : शंख-रजत रेखाक प्रत्यावर्तन

जाली दफ्तरक फोटो, वेबसाइट आ आवाज मिलि सत्य-जकाँ व्यवसायिक मुखौटा रचैत अछि। [−१००]क शंख–रजतक मूल समस्या—देखल वस्तुक अर्थ अन्य भऽ सकैत—डिजिटल व्यापारमे नवा रूपेँ लौटैत अछि। फर्क ई जे पहिल उपाख्यानमे भ्रमक प्रश्न नाट्य-संवादमे विस्तृत छल, एतय अपराधक परिणाम व्यवहारिक आ आर्थिक अछि। प्रतीक-निरन्तरता सशक्त, किन्तु नव प्रकरण वास्तविक छलिया-कम्पनीक तन्त्रक वृत्तान्त नहि दैत। पाठकक भय चिह्नक द्विअर्थकता सँ बनैत अछि, तकनीकी जाँचक विस्तारसँ नहि।

गीतक नैतिक निर्णय आ गद्यक असमाप्ति

गीत चेतावनी दैत अछि जे ‘पुछब-परखब’ सिखल मनुष्य जालसँ बचत। गद्य एक निश्चित युवकक ठगल जाएब, पुलिस रपट आ चेतावनी-अभियानक स्थापना पर रुकैत अछि। न पइसा वापसी, न अपराधीक पकड़ा पड़ब, न युवकक आत्मविश्वासक पुनरुत्थान कथा में निश्चित रूपेँ घटैत अछि। एहि अन्तरसँ नैतिक गीत ‘आगूक व्यवहारक आदर्श’ बनैत अछि, पूर्ण घटनासार नहि। गद्यक अपूर्णता वास्तवमे भविष्यक डिजिटल अपराध-कथा लेल द्वार खुलल रखैत अछि।

अदृश्य शत्रुक दबाव : आगामी प्रकरणक पूर्वसूचना

अन्तिम वाक्यमे सपना जानैत छथि जे आगूक कथा अधिक जटिल आ खतरनाक हएत। ई कथावाचकक भविष्यसूचक स्वर अछि, वर्तमान ठगीक अतिरिक्त प्रमाण नहि। कथानक केन्द्रीय प्रतिपक्ष एकल युवकक अपराधसँ अधिक व्यापक डिजिटल संसारक भयमे विकसित होइत अछि। एहि पूर्वाभासक कारण ‘पहिल आहट’ शीर्षक अपन पूर्ण अर्थ प्राप्त करैत अछि: परिचित पूर्वकथा समाप्त नहि, एक नव चरणक सीमा रेखा बनैत अछि। पाठक आगामी अध्यायक दृश्य अपरिचित रहैतहुँ भयक नयका अनुबन्ध स्वीकार करैत छथि।

समग्र निर्णय : पहिल असफलता, अपूर्ण समाधान

‘अनदेखल ठगक पहिल आहट’क सबसँ पैघ उपलब्धि नकली वेबसाइटक दृश्य-विश्वसनीयतासँ सम्पूर्ण जमा-पूँजीक हानि धरि एक ठोस घटनात्मक क्रम स्थापित करब अछि। पिछला दू प्रकरणक सफल सामूहिक प्रतिरोधक बाद ई क्षति कथा मे वास्तविक अस्थिरता अनैत अछि। बूढ़बाक ज्ञानसीमा स्वीकारब चरित्रकेँ विश्वसनीयता दैत अछि। सीमा ई जे पीड़ितक अनुभव, पुलिसक अनुसन्धान, गमाओल रकम आ अपराधीक परिचय अनुपस्थित रहैत अछि। चेतावनी सामाजिक प्रतिक्रिया अछि, सम्पूर्ण न्यायिक वा आर्थिक प्रतिपूर्ति नहि।

पाठाधार, सीमासूचना आ अगिला क्रम

एहि आलोचनाक आधार मूल [−३६]क ‘अनदेखल गोहि’ गीत, नौकरीक झाँसा, वेबसाइट–फोटो–आवाज, एक रातिमे कम्पनी गायब होएब, पुलिस-रपट, सपनाक प्रश्न, बूढ़बाक असमर्थता आ परिवारसभक सचेतना अछि। ठगक भौगोलिक पता, रकम, वापसी अथवा गिरफ्तारी अज्ञात। अगिला [−३५]क शीर्षक ‘देहक बजार खुजैत अछि’ डिजिटल ठगी आ श्रम–प्रवासक संकटकेँ एक अन्य, सम्भवतः अधिक देहगत हिंसाक दिशा मे अग्रसर करैत अछि; ओकर घटना पृथक मूल पाठ पढ़लाक बादे निर्धारित हएत।

प्रकरण ६६ | मूल अध्याय −३५ — देहक बजार खुजैत अछि

ठगीक कथासँ मानव-देहक संकट धरि कथात्मक मोड़

अध्याय [−३६]मे फर्जी ऑनलाइन कम्पनी गामक युवकक जमा-पूँजी लऽ अदृश्य भऽ जाइत अछि; [−३५]मे नौकरीक प्रलोभन देनिहार दलाल किछु युवाकेँ विदेश लऽ जाइत छथि, जतय पासपोर्ट छीनि जबरन काज करएबाक समाचार अबैत अछि। एहि परिवर्तनमे केवल नुकसानीक परिमाण नहि बढ़ैत, कथाक संकट-वस्तु बदलैत अछि। पहिने धनक हानि मुख्य छल; आब देहक स्वतन्त्र गमन, श्रमक अधिकार आ परिवारसँ सम्बन्ध संकटमे पड़ैत अछि। कथावाचक ई विकास ‘पहिने... आब’क विरोधद्वारा स्पष्ट करैत छथि। तथापि पहिल ठगीक अपराधी आ वर्तमान दलाल एक्के गिरोहक छथि—एहन कारणिक सम्बन्ध मूल गद्य स्थापित नहि करैत।

आरम्भिक फकराक ‘देह’ : वस्तुकरणक काव्यभाषा

‘जतय देह बिकाइ’ वला फकरा मनुष्यकेँ वस्तुक रूपमे बदलि देबाक भयावह सामाजिक स्थितिक संक्षिप्त बिम्ब अछि। अध्यायक गद्य विदेशमे बलपूर्वक श्रम आ पासपोर्ट छीनबाक सूचना दैत अछि; एतय कोनो खुलल नीलामी, मूल्य-तालिका, खरीददारक नाम वा प्रत्यक्ष देह-विक्रयक दृश्य नहि। अतएव ‘बजार’ मुख्यतः श्रम-नियन्त्रण आ मनुष्यक स्वतन्त्रताक वस्तुकरणक रूपक अछि। जँ रूपककेँ अक्षरशः घटना मानि लेल जाए, तँ गद्यक विशिष्ट दमन—दस्तावेज छीना जाएब आ आवाज दबल रहब—ओझराएत। एहि अन्तरमे गीतक व्यापक भय आ कथाक सीमित घटनासूचनाक सह-अस्तित्व बनैत अछि।

सपना सँ राजीव : वंशानुक्रमक भीतर संकटानुक्रम

अध्यायक पहिल गद्य-वाक्य कहैत अछि जे सपनाक बाद नाम-अनुष्ठानक भार ओकर बेटा राजीवपर आयल। ई वाक्य पीढ़ीक संक्रमणक न्यूनतम कथन अछि, आ ओकर ठीक बाद नौकरी-प्रलोभनक वृद्धि प्रस्तुत होइत अछि। पूर्व अध्यायमे सपना साइबर-ठगी विषयक चेतावनी देब प्रारम्भ केने छलीह; राजीव ओहि सतर्कताकेँ देह-सुरक्षाक शिक्षामे बदलैत छथि। पूर्व पात्रक प्रस्थान विस्तृत जीवनवृत्तान्तसँ नहि, उत्तराधिकारीक परिचयसँ होइत अछि। व्यापक त्रयीमे एहि प्रकार वंशक डोरी घटनाक मध्यकालिक अन्तर पाटैत अछि, मुदा राजीवक निजी मनोजगत् एहि प्रकरणमे लगभग पूर्णतः संकटपर प्रतिक्रिया दैत उत्पन्न होइत अछि।

‘टुकड़ा-टुकड़ा’ समाचार : कथनक अपूर्ण सूचना

विदेश पहुँचल युवासभक पासपोर्ट छीनबाक आ बलपूर्वक श्रम करएबाक कथा ‘टुकड़ा-टुकड़ा’ गाम धरि पहुँचैत अछि। ई पद महत्त्वपूर्ण अछि: कथावाचक प्रत्यक्ष घटनास्थल गामक लोककेँ उपलब्ध नहि करबैत, दूरसँ आबयवला विखण्डित समाचारक संरचना चुनैत छथि। विदेशक कार्यस्थल, मालिकक प्रत्यक्ष संवाद, रोकल मजदूरीक हिसाब आ भागबाक प्रयास पाठमे उपस्थित नहि। एहि रिक्तिकेँ अनभिज्ञता कथाक एक अंश बुझब चाही। ‘समाचार पहुँचब’ आ ‘प्रत्यक्ष दृश्य देखब’ एक नहि; पाठकक ज्ञान गामक सुनल-सुनायल बातसँ मध्यस्थित अछि।

बेपत्ता बेटा : एक घरक अनुपस्थितिक दीर्घ समय

गामक एकटा घरमे बरखों धरि विदेश गेल बेटाक कोनो समाचार नहि आयब बताओल गेल अछि। एतय नामित पीड़ितक जीवनीक बदला ओकर अनुपस्थितिक समयक भार मुख्य बनैत अछि। ‘बरखों’ शब्द अवधि विस्तार करैत अछि, मुदा प्रत्येक वर्षक घटना नहि बतबैत। एतय मृत्यु, बन्धक बनि रहब, स्वेच्छिक सम्पर्क-विच्छेद वा बचि घुरबाक निश्चित उत्तर नहि। आलोचनामे ओकरा मारल गेल अथवा निश्चित स्थानपर कैद अछि कहब मूल पाठसँ बेसी जानकारी आरोपित करब हएत। कथाक आघात एहि अनुत्तरित स्थितिमे अछि।

बाट जोहैत माँ : फोकलाइजेशनक सीमित केन्द्र

माएक आँखि हर साँझ बाटपर लागल रहबाक वर्णन गाम धरि पहुँचल विखण्डित समाचारकेँ एक घरेलू छविमे बदलैत अछि। कथावाचक दूर देशक अनदेखल बेटाकेँ पाठकक सोझाँ उपस्थित नहि करैत; अनुपस्थितिक अनुभव माएक प्रतीक्षामे समेटैत अछि। ‘हर साँझ’ एक आवर्ती समय-सूत्र अछि—एक दिनक पीड़ा अनेक वर्षक नियम बनैत अछि। माए स्वयं अलग प्रत्यक्ष संवाद नहि पबैत छलीह, न हुनकर नाम देल गेल अछि। भावात्मक केन्द्र स्त्री बनैत छलीह, मुदा कथात्मक बोलबाक अधिकार प्रधानतः राजीव आ बूढ़बाकेँ रहैत अछि।

पासपोर्ट छीनब : स्थानक सीमा देहक बन्धन बनैत अछि

पासपोर्ट छीनि लेब एतय निर्णायक क्रिया अछि, किएक तँ वैह दस्तावेज विदेशमे रहनिहार युवाक गमन-स्वतन्त्रता आ स्व-पहिचानक औपचारिक माध्यम अछि। पूर्वक समीक्षा-क्रममे पञ्जी, सरकारी अभिलेख आ नोटबुक स्मृतिरक्षक वस्तु बनैत छल; वर्तमान प्रसंगमे कागच छीनब मनुष्यकेँ बन्दी बनएबाक कथात्मक उपकरण बनैत अछि। ई वस्तु-भूमिकाक उलटफेर उल्लेखनीय अछि। मुदा कोन देशक कार्यालय, कोन नियम अथवा कोन दलाल पासपोर्ट लेलक, ओकर विशिष्ट घटनाक्रम पाठमे नहि। वस्तुक कथात्मक शक्ति स्पष्ट, संस्थागत तन्त्रक विस्तार संक्षिप्त अछि।

गामक दृष्टिसँ विदेश : अदेखायल रंगमंच

मुख्य वृत्तान्त राजीवक गाममे रहल अनुभव, दूरसँ भेटैत सूचना आ पीपर लग संवादपर केन्द्रित अछि। विदेश—यद्यपि संकट उत्पन्न करैत अछि—प्रत्यक्ष दृश्य-स्थान नहि बनैत। एतय एक महत्त्वपूर्ण दृष्टि-अन्तर अछि: भौगोलिक दूरी पाठकीय अज्ञानमे परिणत होइत अछि। पाठक दलालक अन्दरूनी संगठन, पीड़ितक दैनिक श्रम वा

मुक्तिक सम्भावना स्वयं नहि देखैत। उपन्यासक प्रमुख पात्र गामक रहितहुँ कथा परदेशी जीवनक संकट लैत अछि; एहि विस्तारक लाभ संकटबोधक व्यापकता, हानि प्रत्यक्ष अनुभवक विरलता अछि।

गिरमिटिया-वृत्तान्तक पुनर्स्मरण : तुलना, समानता नहि

राजीव पुरान गिरमिटिया प्रसंगसँ वर्तमान भयक तुलना करैत छथि, आ कहैत छथि जे ओतय कमसँ कम करार आ तिथि छल। ई राजीवक पात्रगत तुलना अछि; समस्त ऐतिहासिक गिरमिटिया जीवन अपेक्षाकृत सुरक्षित छल—एहन निष्पक्ष कथावाचकीय निर्णय नहि। वर्तमान अध्याय अज्ञात विदेश-नौकरीक जालकेँ पुरान श्रम-प्रवासक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। तुलना पाठककेँ उपन्यासक बहु-शताब्दी श्रमकथाक स्मरण करबैत अछि, मुदा दुनू कालक शोषण-प्रक्रियाकेँ एकरूप बनाओल नहि चाही। ई अन्तर्पाठीय स्मरण पुरान अनुभवक नैतिक परिमाण वर्तमान संकटपर पड़बैत अछि।

बूढ़बाक ‘नव गोहि’ : रूपकक क्रमिक विस्तार

[–३६]क तार–स्क्रीनक ‘नव गोहि’ आब मनुष्यक देह-स्वतन्त्रताकेँ लीलएवला रूपक बनैत अछि। बूढ़बा डिजिटल ठगीसँ मानव-तस्करी धरि आशङ्काक विस्तार करैत छथि। एहि कथनमे कोनो वास्तविक गोहि विदेशक कारखानामे पहुँचि गेल अछि—एहन चमत्कारिक दृश्य नहि। गोहि बारम्बार बदलैत सामाजिक शिकारी शक्तिक प्रतीकात्मक नाम बनैत अछि। रूपकक शक्ति उपन्यासक आरम्भिक जल-भयकेँ आधुनिक श्रमबजारसँ जोड़नाइ, पर ओकर सीमा विभिन्न अपराध, विधि आ पीड़ाक रूपसभकेँ एकटा राक्षसी छविमे समेटि देबाक सम्भावना अछि।

‘नाम बचायब’क अर्थपरिवर्तन : मृतक-स्मृतिसँ जीवित रक्षा

बूढ़बा कहैत छथि जे नाम बचाएब आब मात्र स्मृतिक काज नहि, जीवनक काज अछि। एहि सूक्ष्म वाक्यमे त्रयीक दीर्घ संकल्प नव दिशामे घुरैत अछि। पूर्वक मृतकक नाम राखब पश्चात्-स्मरण छल; एहि अध्यायमे जीवित युवाक पहिचान सुरक्षित राखब, नौकरीक प्रस्तावक जाँच करब आ सम्बन्ध विच्छेद नहि होएब देब प्राथमिक उद्देश्य बनैत अछि। मुदा मूल कथा बेपत्ता बेटाकेँ खोजि कऽ लौटा लएबाक दृश्य नहि दैत। स्मृतिरक्षासँ जीवनरक्षाक उद्देश्य घोषित अछि; प्रत्यक्ष उद्धारक सिद्धि एखन अनुपस्थित। उपलब्धि आ आकाङ्क्षामे एहि दूरीकेँ देखब जरूरी अछि।

प्रश्नसभक क्रम : संकटमे नायकक नव क्रिया

बूढ़बा सम्भावित रोजगारप्रस्ताव विषयमे प्रश्न करबाक सलाह दैत छथि—के बजाबैत अछि, कम्पनी कोन, कागच केहन, गारंटी के देत। कथानुशासनक दृष्टिएँ ई प्रश्नसभ अन्धविश्वासक विरुद्ध सामान्य उपदेश मात्र नहि; आगामी कथा लेल क्रिया-विधानक क्रम अछि। राजीव ओहि प्रकारक जाँच युवा सभकेँ सिखबय लगैत छथि। तथापि कोनो विशेष प्रस्ताव दस्तावेजसहित परीक्षण कऽ रोकि देल गेल—एहन स्वतन्त्र दृश्य नहि। वर्तमान प्रकरणमे शिक्षणक आरम्भ तथ्य अछि; सभ अगिला ठगी समाप्त होयब अनिश्चित भविष्य।

राजीवक पाठशाला : ज्ञानक संस्थागत रूपान्तरण

अन्तिम भागमे राजीव विदेशी नौकरीक कागच आ एजेन्टक जाँच-पड़ताल सिखबय लगैत छथि। नारिकेल पात पाठशालाक पुरान शैक्षिक रूपक एतय बदलबाक संकेत पबैत अछि: पहिले अक्षर-पठन, आब जोखिम-पठन। शिक्षा मात्र पाठ्यक्रमक विस्तार नहि, सामुदायिक सुरक्षा-प्रक्रिया बनैत अछि। कथावाचक एहि नयका पाठशालाक कक्षा, शिष्यक नाम, प्रशिक्षणक अवधि अथवा अन्तिम परीक्षा नहि बतबैत। संस्थाक उत्पत्ति एक वाक्यक सारांशमे समटल अछि। एहि संक्षेपमे कथा तीव्र चलैत अछि, किन्तु शिष्यसभक परिवर्तन प्रत्यक्ष नाट्य रूप नहि पबैत।

गीतक ‘बन्दी-जाल’ आ गद्यक बेपत्ता-सूचना

‘माएक चेतओनी’ गीतमे दूर गेल बेटा-बेटीक बन्दी-जालक चित्र स्पष्ट अछि। गद्यमे किछु युवाक पासपोर्ट छीनबाक आ बन्धुआ-जकाँ श्रमक टुकड़ा-टुकड़ा खबर अबैत अछि; बेपत्ता एक बेटाक अन्तिम दशा अलगसँ अज्ञात अछि। गीतक अनेकवचन भयकेँ बेपत्ता युवकक निश्चित परिणाम बनाओल अनुचित। गीत कल्पित समष्टिगत करुणा आ सतर्कता रचैत अछि, गद्य सीमित उपलब्ध सूचना। एहि कथनस्तरक भेद प्रत्यक्ष पीड़ाक यथार्थकेँ कम नहि करैत, बल्कि पाठककेँ अनिर्णीत दुखक महत्त्व बुझबैत अछि।

जाति, वर्ग आ लिंग : ‘गामक युवा’क सामान्यीकरण

पाठमे रोजगारक धोखा खाएवला युवा सभक व्यक्तिगत जाति अथवा आर्थिक पारिवारिक ब्यौरा नहि। एक गरीबक अनुपस्थित बेटा कहबाक बदला एक ‘घर’क कथा अछि; माएक प्रतीक्षा दृश्यात्मक अछि। दलाल द्वारा लऽ जाएल स्त्रीसभक विशिष्ट अनुभव सेहो नहि, यद्यपि गीत ‘बेटा-बेटी’ कहैत अछि। एहि कारण गामक सर्वसमावेशी सुरक्षा-दावाक भीतर अलग जोखिम-समूहक आवाज अल्प अछि। आलोचनामे कोनो अतिरिक्त पीड़ितक कथा गढ़ि ई कमी भरब अनैतिक होएत; अभावक स्वरूप चिन्हित करब साहित्यिक मूल्यांकनक हिस्सा अछि।

कथानकक गति : दीर्घ हानि, त्वरित उत्तर

अध्याय किछु वाक्यमे दलालक उदय, युवाक परदेश गमन, पासपोर्ट छीनब, एक घरक वर्षों प्रतीक्षा समेटैत अछि; तखन पीपर लग राजीव–बूढ़बाक संवाद अपेक्षाकृत विस्तृत स्थान पबैत अछि। दुःखक वास्तविक अवधि आ कथनमे ओकर विस्तार विपरीत अनुपातमे अछि। उधर चेतावनीक नियम विस्तारसँ कहल गेल; ठोस उद्धारक कथा एखन नहि। एहि संरचनासँ उपन्यास चेतावनीक प्रभाव बढ़बैत अछि, मुदा जीवित पीड़ितसभक जीवनदशा संक्षिप्त करैत अछि। ई चयन कथाक नैतिक केन्द्र निर्धारण करैत अछि।

भयक उत्तर ‘एकता’ मात्र नहि : व्यवस्थागत दूरी

पूर्व आपदा-अध्यायसभमे मिलि कऽ बान्ह बाँधब, लोककेँ सुरक्षित निकालब वा अन्न बाँटब प्रत्यक्ष सामूहिक क्रिया छल। एतय संकट हजारों मील दूर, बन्दीकारी दस्तावेजक नियन्त्रण आ सूचना-विच्छेदक भीतर अछि। गामक एकता चेतावनी देबामे समर्थ अछि, मुदा वर्तमान दृश्यपर ओकर तत्काल भौतिक अधिकार नहि। उपन्यास

एहि असमानता कें बूढ़बाक प्रश्नाधारित सुझावद्वारा साधय चाहैत अछि। एहि भौतिक दूरीक साहित्यिक जटिलता अध्यायकें पहिल बाढ़ि-जकाँ सामुदायिक विजयक सरल पुनरावृत्तिसँ अलग बनबैत अछि।

‘जे सतर्क भेल से बचल’ : गेय निश्चयक असिद्ध सार्वत्रिकता

गीतक अन्तिम स्तबक पूर्वसावधानी आ बचावकें लगभग अवश्यफल रूपमे जोड़ैत अछि। मुदा गद्य बेपत्ता युवकक परिवारक प्रतीक्षा, जानकारीक अभाव आ बचाव-प्रक्रियाक कठिनाई जटिल बनबैत अछि। कोनो मनुष्य प्रश्न न पुछबाक कारणे निश्चित ठगल गेल, वा प्रश्न पुछनिहार प्रत्येक मनुष्य निश्चय सुरक्षित रहल—एहन सम्पूर्ण घटनाक्रम उपलब्ध नहि। गीतक नीति सामुदायिक चेतावनीक वाक्य अछि; ओकरा पीड़ितकें दोष देब अथवा पीड़ितक विवेकक कमी घोषित करबाक आधार नहि बनाओल जाए।

समग्र मूल्यांकन : अनदेखल श्रमदेह आ दृश्यमान माए

अध्यायक बल आर्थिक ठगीसँ मानवीय बन्धन धरि संकटक क्रमिक विकास, माएक दीर्घ प्रतीक्षा आ नाम-स्मृतिक जीवनरक्षक अर्थपरिवर्तनमे अछि। राजीवक नव शिक्षण सामुदायिक उत्तरदायित्वकें उपयोगी कथात्मक क्रिया बनबैत अछि। मुख्य सीमा पीड़ितक प्रत्यक्ष स्वर, परदेशक ठोस दृश्य आ न्याय/उद्धारक परिणामक अनुपस्थिति अछि। कथावाचक नैतिक संकटक रूपरेखा स्पष्ट करैत छथि, मुदा पीड़ितक जीवनक सम्पूर्ण कथा नहि। उपन्यासक अगिला पात्रसभक समक्ष ई अधूरापन एक महत्त्वपूर्ण शेष प्रश्न छोड़ैत अछि।

पाठाधार आ अगिला कड़ी

एहि विवेचनक स्रोत [-३५]क फकरा, ‘माएक चेतओनी’ गीत, राजीवक वंशगत प्रवेश, विदेश गेल युवाक समाचार, अनाम प्रतीक्षारत माँ, राजीव–बूढ़बा संवाद आ चेतावनी-पाठशालाक अन्तिम सारांश अछि। विदेशक नामित कारखाना, पीड़ितक मृत्यु अथवा सफल मुक्ति पाठमे नहि। अगिला [-३४]मे एक नवजातक जन्म आ बूढ़बाक पूर्वदृष्टि एहि उग्र वर्तमान संकटकें भविष्यक लम्बित सम्भावनामे बदलैत अछि।

प्रकरण ६७ | मूल अध्याय –३४ — उज्ज्वलक स्वप्न

हिंस्र वर्तमानसँ जन्मक दृश्य धरि : कथालयक विराम

[-३५]मे विदेश गेल युवाक बेपत्ता होयब आ मातृ-प्रतीक्षा कथाक भयावह अन्तिम छवि छल। [-३४] एक गरीब परिवारमे बालकक जन्म आ सोहरक संग आरम्भ होइत अछि। बाह्य घटनाक स्तरपर ई संकटसँ उत्सवक मोड़ अछि, मुदा बूढ़बाक अनपेक्षित चिन्ता एहि उत्सवक भीतर आगूक संकटक बीया राखि दैत अछि। कथा एक नव व्यक्ति-नाम प्रस्तुत करबाक अवसरकें भविष्यक घटनाक संकेत बनबैत अछि। एहि प्रकार अध्याय विश्राम दैतहुँ पाठकीय उद्वेग समाप्त नहि करैत; जन्मक उजास आ सम्भावित विपत्तिक अन्हार एकहि कथास्थलमे बसैत अछि।

उज्ज्वलक नाम : अर्थक उजास, फलित घटनाक अन्हार

नवजातक नाम ‘उज्ज्वल झा’ राखल जाइत अछि। नामक उज्जर अर्थ आ बूढ़बाक देखल स्क्रीनमे डूबबाक आशङ्काक विरोधात्मक संरचना बनबैत अछि। नामक कारणे बालकक अन्तिम भविष्य उज्जर वा अन्हार भऽ गेल —एहन कारणिक विधान कथा नहि करैत। नाम एक स्मरणीय संकेत अछि, जे पाठककेँ आगामी कथामे एहि व्यक्तिक पुनरागमन लेल तैयार करैत अछि। लेखक-जकाँ कथावाचक नामक उच्चारणसँ पात्रकेँ लक्षित करैत छथि, पर नाम अपने-आप चरित्रक पूर्ण जीवनक इतिहास नहि दैत।

गरीब परिवारक एक वाक्य : सामाजिक पृष्ठभूमिक सीमा

मूल पाठ उज्ज्वलक जन्म ‘गामक एकटा गरीब परिवार’मे कहैत अछि। एहि सूचना सँ आर्थिक परिस्थिति कथाक भविष्यक भयमे एक अन्तर्निहित सन्दर्भ बनैत अछि; मुदा परिवारक घर, आमदनी, माता-पिताक व्यवसाय, कर्ज वा जातिगत स्थिति निर्दिष्ट नहि। ‘झा’ उपनामक आधारपर बालकक व्यक्तिशः सामाजिक परिस्थिति घोषित करब उचित नहि। कथा गरीबीक संकेत दैत अछि, विवरण नहि। आगामी वित्तीय संकटसँ ओकर सम्भावित सम्बन्ध पाठकक अनुमान बनि सकैत, मुदा ऋणक वास्तविक घटना एहि अध्यायमे घटल नहि।

जन्मक सामूहिक रस्म आ पीपरक निजी अस्थिरता

घरमे सोहर गाओल जाइत, गुड़ बाँटल जाइत, लोक आनन्द करैत छथि; ठीक एहि समय पीपर लग बूढ़बा अस्थिर भऽ उठैत छथि। दृश्य-द्वैधता कथनक मुख्य उपकरण अछि: गाम जन्मक वर्तमान उत्सव देखैत अछि, बूढ़बा ओहिमे भविष्यक सम्भावित संकटक छवि। गामक लोक हुनका एतेक अशान्त पहिने नहि देखने बताओल गेल—ई दुर्लभता बूढ़बाक व्यवहारकेँ तत्काल अर्थवान बनबैत अछि। तथापि हुनकर चिन्ता देखनिहार लोकसभक स्वतन्त्र संवाद नहि; दीपालीक प्रश्न दृष्टिकेन्द्रक प्रमुख माध्यम बनैत अछि।

बूढ़बाक पुरान झलक : अग्रसूचना, पूर्ण भविष्यकथा नहि

बूढ़बा बहुत बरख पहिने एक युवककेँ ‘नदीमे नहि, स्क्रीनमे’ डूबैत देखनेक बात कहैत छथि। ओ दृश्य वर्तमान कालमे सत्यापित ऋण-दुर्घटना नहि; बूढ़बाक कहलक पुरान अनुभूत झलक अछि। ‘हारल रकम, ब्याज, धमकी’ तीन कथात्मक संकेत भविष्यक संकटकेँ चिन्हित करैत अछि, मुदा कहिया, केना आ ककर द्वारा ई सब घटत, नहि बताओल गेल। एहि अनिश्चितता सँ पाठक दृश्य पूरा करबाक लालच अनुभव करैत अछि। आलोचना लेल निर्णायक सावधानी ई जे सम्भावित घटना आ घटल घटना अलग श्रेणीमे राखल जाए।

‘नदीमे नहि, स्क्रीनमे’ : त्रयीक मुख्य बिम्बक रूपान्तरण

नदीमे डूबबाक पुरान अर्थ उपन्यासक जलसमाधि-परम्परासँ जुड़ल अछि। एतय ‘स्क्रीनमे डूबब’ डिजिटल वित्त, मानसिक संकट आ धमकीक रूपकात्मक डूबनाइ बनैत अछि। जलक वास्तविक क्रिया—पानि शरीर ढाँकब—एहि क्षण घटित नहि होइत। तकनीकी माध्यम पुरान मृत्युभयक नव दृश्यभाषा बनैत अछि। एहि बिम्बमे दीर्घ त्रयी अपन शीर्षकक जल-घटनाकेँ आधुनिक आर्थिक-अंकीय संसारमे अनुवाद करैत अछि; मुदा समान रूपकक अर्थ समान भौतिक परिणाम नहि।

बूढ़बाक दृष्टिसम्बन्धी सीमाबोध

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे हुनका नहि बुझल स्वप्न केना सत्य होएत, अथवा ओ उज्ज्वलकेँ बचा सकताह की नहि। अतएव कथा पुरान झलकक वर्णनक संग ज्ञानक सीमा रखैत अछि। एहि आत्म-अनिश्चिततासँ बूढ़बा सर्वशक्तिमान भविष्य-नियन्ता नहि, सम्भावनासँ व्यथित स्मृतिधारी पात्र बनैत छथि। हुनकर ‘हम नाम आइए सँ धरैत छी’ वाक्य भविष्य रोकबाक प्रत्यक्ष क्रिया नहि, वर्तमानमे स्मरणक प्रतिज्ञा अछि। कथा एहि सीमाबोधक कारणे शुद्ध नियतिवादी आदेश नहि बनैत।

दीपालीक प्रश्न : भयकेँ कथन-योग्य बनएबाक माध्यम

राजीवक बेटी दीपाली बूढ़बासँ अशान्तिक कारण पुछैत छलीह। ई संवाद भविष्यक गोपन सूचना पाठक धरि पहुँचबाक द्वार बनैत अछि। बूढ़बाक असामान्य व्यवहार केवल रहस्य रहि सकैत छल; दीपालीक प्रश्न ओकरा कथात्मक कथनमे बदलि दैत अछि। मुदा दीपाली भविष्यक दृश्य स्वयं नहि देखैत छलीह—ओ बूढ़बाक वर्णन सुनैत छथि। एहि तथ्यसँ रहस्यक स्रोत एकमात्र बूढ़बाक पूर्वअनुभूति बनैत अछि, अन्य स्वतन्त्र दृश्य वा दस्तावेज नहि। दीपालीक प्रतिक्रिया स्वकथित विश्वासक अछि।

अनकहल नजरि : सामुदायिक स्नेह अथवा निगरानी?

गाम ‘बिनु किछु कहने’ उज्ज्वलपर नजरि राखए लगैत अछि। पहिल पाठशाला-दिन, पहिल पोखरि-स्नान आ गामसँ पहिल निकास पर ककरो आँखि ओकर संग रहबाक वर्णन अछि। एहि आवृत्तिमे सामुदायिक देखभाल साकार होइत अछि, मुदा बालक एहि निगरानीसँ अनजान अछि। स्मृति-आधारित सहारा आ अनचाहल सामाजिक पर्यवेक्षणक सीमा एतय खुलैत अछि। कथावाचक नजरिकेँ सुरक्षामूलक रङ्ग दैत छथि; उज्ज्वलक स्वतन्त्र दृष्टिसँ एहि अनुभूतिक जाँच नहि। समीक्षा एहि द्वैध नैतिक अनुभवकेँ कथन-दृष्टिक चुनाव रूपमे देखैत अछि।

शैशवक तीन घटना : दीर्घ विकासक क्षिप्र सारांश

कथा उज्ज्वलक पहिल विद्यालय-प्रवेश, पहिल स्नान आ पहिल बाहरी गमन एक साथ उल्लेख करैत अछि। ई बालकक वास्तविक वर्ष-दर-वर्ष जीवनी नहि, चयनित स्मृतिचिह्नक सूची अछि। घटनासभ पाठककेँ बाल्यकाल बीतबाक आभास दैत, मुदा प्रत्येक दृश्य विशेष समय, सहचर वा संवादसहित विस्तृत नहि। एहि कथनात्मक सङ्कोचनक कारण अध्यायक मुख्य ऊर्जा वर्तमान शिशु-जीवनमे नहि, भविष्यक चिन्तामे केन्द्रित रहैत अछि। कथावस्तुक भौतिक काल बढ़ैत अछि, कथनक अवधि न्यून रहैत अछि।

बालकक अज्ञान आ पाठकक अतिरिक्त सूचना

उज्ज्वल गाममे खेलैत बढ़ैत अछि आ अपनेपर राखल ‘अनकहल नजरि’सँ अपरिचित अछि। पाठक, दीपाली आ बूढ़बा भविष्यसूचनाक किछु अंश जनैत छथि, बालक नहि। एहि ज्ञान-असमानतासँ नाटकीय विडम्बना जन्मैत अछि। उज्ज्वलक साधारण क्रीड़ा पाठक लेल अनिश्चित संकटक पृष्ठभूमि पबैत अछि। मुदा पाठकक अतिरिक्त सूचना सेहो अपूर्ण—झलकक परिणाम अज्ञात अछि। एक वर्गक पात्र दोसरा वर्गसँ बेसी जानैत होइतहुँ स्वयं सम्पूर्ण उत्तर नहि जनैत।

दीपालीक नोटबुक : विशेष चिन्हक रहस्यमय अभिलेख

दीपाली सामान्य जन्मपञ्जीमे उज्ज्वलक नामक संग ‘एकटा अतिरिक्त चिन्ह’ लगबैत छलीह। चिन्हक आकृति, अर्थक लिखित व्याख्या वा भविष्यक उपयोग-पद्धति वर्णित नहि। एहि वस्तुमे भविष्यक कथा लेल संकेत-संग्रहक काम अछि। नामक सार्वजनिक जन्म-लेख आ अलग चिन्हक निजी आशङ्का एकहि पन्नापर सह-अस्तित्व बनबैत अछि। चिह्नक गूढ़ता पाठककेँ बादक पुनरागमनक अपेक्षा दैत अछि, मुदा एकर आधारपर किसी गोपनीय योजनाक सम्पूर्ण निर्माण कल्पित नहि कएल जा सकैत।

जन्म-सोहरक भविष्यवाणी-जकाँ स्वर

‘स्वप्न आ जड़ि’ गीतमे बालकक सपनाक संग गामक आश्वासनक भाषा अछि: ओ अन्हारमे अकेल नहि होयत, जड़िसँ जुड़ल स्वप्न फूलत। मुख्य गद्य बूढ़बाक अनिश्चयकेँ यथावत् राखैत अछि—ओ बचा पएताह की नहि, एखन नहि जानैत। गीतक भविष्यकाल भावात्मक प्रतिज्ञा अछि; गद्य भविष्यक निश्चित परिणाम नहि। एहि अन्तरकेँ मेटा देला पर गीत पात्रसभपर असम्भव गारंटी आरोपित करैत। गीत आशाक सामुदायिक भाषा, गद्य अव्यक्त भयक निजी भाषा अछि।

‘गाम आँखि राखत’ : सामूहिक नायकक सीमासूचना

गीत गामकेँ नवजातक पहरुआ घोषित करैत अछि। कथा ओहि घोषणाकेँ अनेक अनाम नजरिक माध्यमे आंशिक दृश्य बनबैत अछि। मुदा उज्ज्वलक पढ़ाइ, धनक लेनदेन, गलत प्रस्ताव अथवा संकटसमय निर्णयक वास्तविक रोकथामक कोई प्रसंग नहि। देखभालक उपलब्धि पहिचान-निरन्तरता धरि सीमित अछि। सामूहिक नायकत्वक सम्भाव्यता दर्ज अछि, प्रभावशीलता एखन अपरिक्षित। एहि अन्तर्गत ‘गाम जानैत छल’ आ ‘गाम बचा सकलक’ समान अर्थ नहि।

कथाक पूर्वदृष्टि आ आत्मसन्दर्भ

बूढ़बाक पूर्वझलक एक नवजातकेँ भविष्यक महागाथाक पात्र घोषित करैत अछि। ई महाकथात्मक अग्रसूचना पाठककेँ अगिला अध्यायसभक घटनाकेँ अलग सजगतासँ पढ़बाक आधार दैत अछि। तथापि कथा स्वयं पूर्वानुमानक कथा कहैत अछि, पूर्ण पुस्तकक अन्तिम परिणाम नहि उद्घाटित करैत। एहि तरहेँ पाठ भविष्यदृष्टिक सहायतासँ समयकेँ तह-दर-तह रखैत अछि: बहुत बरख पहिनेक दृष्टि, जन्मक वर्तमान, आ अनदेखल आगामी दुर्घटनाक सम्भावना। ई काल-संरचना अध्यायकेँ साधारण जन्म-वृत्तान्तसँ भिन्न बनबैत अछि।

भावात्मक अनुपात : बूढ़बाक चिन्ता, शिशुक मौन

जन्मत उज्ज्वल कोनो संवाद नहि दैत; मातापिताक नाम वा हुनकर स्वप्न नहि। दृश्यिक भार बूढ़बाक डर आ दीपालीक अभिलेखीकरणपर अछि। फलतः नवजातक स्वतन्त्र व्यक्तित्वसँ पहिने ओकर सम्भावित भविष्यक परिकल्पना पाठकपर प्रभाव छोड़ैत अछि। ई कथन-चयन आगामी चरित्रक नाटकीय महत्त्व बढ़बैत, मुदा मानविक शिशुक सामान्य जीवनकेँ पूर्वनिर्धारित कर्तव्यक छायामे राखि सकैत अछि। आलोचनामे एहि तनावकेँ नोट करब पात्रक अन्तिम नियति घोषित करब नहि।

अशान्त बूढ़बा : असाधारण पात्रक मानवीय क्षण

गामक लोक बूढ़बाकेँ पहिने एतेक व्याकुल नहि देखने कहैत अछि। दीर्घजीवी स्मृति-चरित्रक एहि भयमे कथा अपन अविनाशी प्रतीककेँ असहायताक अनुभव दैत अछि। बूढ़बाक दृष्टि भविष्यक किछु टुकड़ा देखबैत हो, तथापि परिणाम बदलबाक शक्ति अनिश्चित अछि। एहि विरोधसँ पात्र पाठकक संग एक साधारण मानवीय स्थिति बाँटैत छथि—ककरो प्रिय भविष्यक आहट जनब, मुदा ओकरा रोकबाक सामर्थ्य नहि जानब। ई मनोभाव अध्यायक गम्भीरतम आख्यानात्मक सफलता अछि।

मुख्य आलोचनात्मक निष्कर्ष : भविष्यसँ दूषित वर्तमान

अध्याय नव जन्मक प्रकाशकेँ लम्बित खतरा द्वारा पुनरर्थित करैत अछि। सूक्ष्मता एहि बातमे अछि जे उज्ज्वल एखन कोनो अपराध, ऋण वा ऑनलाइन खेलमे नहि फँसल; तकर सम्पूर्ण जीवन स्वतन्त्र सम्भावना रूपेँ खुलल अछि। चिन्ताक प्रतिमान ओकर बचपनमे गामक नजरि आ दीपालीक नोटबुकद्वारा प्रविष्ट होइत अछि। बल मजबूत अग्रसूचना, काल-गुंथन आ बूढ़बाक सीमाबोधमे; कमी बालकक स्वतन्त्र आवाज आ परिवारक निजी इतिहासक न्यूनतामे। भविष्यक अपेक्षा कथाकेँ चलबैत अछि, ओकरा घटित तथ्य बनाओल अनुचित।

स्रोत-सीमा आ अगिला प्रकरण

एहि अध्यायक समीक्षा जन्म-सोहर, उज्ज्वल झाक नामकरण, बूढ़बाक ‘स्क्रीनमे डूबब’ झलक, दीपालीक प्रश्न, बाल्यावस्थाक निगरानी आ विशेष चिन्हवला नोटबुकपर आधारित अछि। स्वप्नक पूर्ण प्रामाण्य, भविष्यक वास्तविक ऋणराशि वा ठगीकर्ताक पहचान एहि पाठमे नहि। अगिला [−३३]मे बटुकनाथक नैतिक यात्रा आगूक संकट-जालक एक आर सम्भावित पात्रकेँ आकार दैत अछि।

प्रकरण ६८ | मूल अध्याय −३३ — वकीलक कोटक छाया

आशावान विद्यार्थी सँ विवादास्पद वकील धरि चरित्र-वक्र

अध्याय बटुकनाथकेँ नारिकेल पात पाठशालाक तेज विद्यार्थी आ गरीबक पक्ष लेनिहार आरम्भिक वकीलक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। एहि आरम्भसँ ओकर बादक नैतिक विचलन अधिक तीक्ष्ण होइत अछि। यदि पात्र शुरूहिसँ छलपूर्वक वकालत करैत, तँ पतनक कथा नहि बनित। लेखक पहिने समाजक आशा स्थापित करैत छथि, तखन शक्तिशाली मुवक्किल, जीत, धन आ प्रतिष्ठाक आकर्षणद्वारा क्रमिक मार्गपरिवर्तन देखबैत छथि। मुदा प्रत्येक मुकदमाक व्यक्तिगत सूची, परिवर्तनक निर्णायक तारीख अथवा एकल चयन-दृश्य नहि; चरित्र-वक्र कथावाचकक समष्टिगत सारांशमे बनैत अछि।

‘धीरे-धीरे’क समय : पतन एक घटना नहि

बटुकनाथक परिवर्तन एक पलमे घोषित विश्वासघात नहि। ‘धीरे-धीरे’ आ ‘एक-एक डेग’ जकाँ आवृत्तिकालीन शब्द अनेक चयनक अनिर्दिष्ट श्रृंखला सूचित करैत अछि। एहि भाषासँ पाठक एक घटना नहि, अभ्यस्त व्यवहारक विकास समझैत अछि। कथावाचक समयक विशाल अन्तराल छोट वर्णनमे समेटैत छथि। ई शिल्प नीतिगत

परिवर्तनक कारणक संकेत देबामे उपयोगी, मुदा प्रत्येक समझौताक ठोस सामाजिक परिस्थिति अस्पष्ट रखैत अछि। पात्रक जटिलता संक्षेपक कारण पाठकीय अनुमानपर निर्भर रहैत अछि।

कानूनक धारा : वस्तु नहि, उपयोगक दिशा बदलैत अछि

एकहि धारा पहिले गरीबकेँ बचएबाक आ बादमे बलगरक पक्षमे 'घुमाबय' सिखल कार्यक रूपमे अबैत अछि। पाठ कानून स्वयं बदनाम भेल—एहन एकरेखीय निष्कर्ष नहि दैत; ओकर उपयोगक दिशा बदलल देखबैत अछि। 'धारा घुमाएब' कानूनी भाषाक कथात्मक सत्ता-सामर्थ्यक रूपक अछि। मुदा कोन विशिष्ट धारा, अदालती आदेश, न्यायाधीश वा मुकदमाक नतीजा छल, पाठमे नहि। एहि अस्थिरता सँ विधिक विवरण अस्पष्ट रहैत, पर पात्रक स्वार्थानुसार भाषाक मोड़ स्पष्ट बनैत अछि।

कोट आ पीपर : दू सामाजिक कथास्थलक विरोध

गीत 'कोट'क छायामे न्याय नुकएबाक आ गाममे न्याय बाजबाक विरोध प्रस्तुत करैत अछि। गद्यमे कोट बटुकनाथक पेशागत सत्ता, पीपर दीपालीक नैतिक प्रश्नक स्थल अछि। दू स्थानक विरोध पूर्ण भौगोलिक द्वेष नहि: बटुकनाथ पहिले शहरक अदालतमे गरीबक हक लेल लड़ने छल। तेँ 'शहर सदैव अन्यायी, गाम सदैव न्यायपूर्ण' एहन कुल सूत्र अध्यायक आरम्भिक तथ्यसँ प्रतिवाद पबैत अछि। कथा एहि जटिलताकेँ बटुकनाथक आरम्भिक ईमानदारीद्वारा स्वयं जीवित रखैत अछि।

तारीखपर तारीख : विलम्बक पुरान कथासूत्रक पुनरागमन

दीपाली आरोप करैत छलीह जे बटुकनाथ गरीब प्रतिपक्षक मुकदमामे तारीखपर तारीख लियबैत अछि। एहि कथनक प्रतिध्वनि पूर्व [–६८] 'अदालतक पहिल तारीख'सँ मिलैत अछि, जकर उल्लेख बूढ़बा स्वयं करैत छथि। दीर्घकालिक कथा एतय केवल न्याय-संस्थाक पुनरावृत्ति नहि, एक पुरान सामाजिक दोषक नव पात्रमे अवतरण देखबैत अछि। मुदा बटुकनाथ स्वयं पहिल अदालत-विलम्बक तात्कालिक अपराधी नहि; पूर्ववृत्तान्त ओकर चरित्रक संरचनात्मक तुलना लेल उपस्थित अछि। एहि भेदसँ ऐतिहासिक आवृत्ति आ व्यक्तिगत दायित्व अलग राखल जाइत अछि।

दीपालीक स्वर : प्रत्यक्षदर्शी कतेक, व्याख्याकार कतेक?

दीपाली बटुकनाथक बदलैत व्यवहारकेँ 'अदालतक प्रेत' जकाँ कहैत छलीह। ई हुनकर व्यथित रूपकात्मक मूल्यांकन अछि। कथावाचक आरम्भिक ईमानदारी आ बादक शक्तिशाली मुवक्किलक सम्बन्ध बतबैत छथि, पर 'प्रेत' शब्द ककरो वास्तविक भूत-रूपान्तरणक सूचना नहि। दीपालीक संवाद पाठककेँ नैतिक संकटक भावात्मक भाषा दैत अछि। हुनकर चिन्ता विश्वसनीय कहल जा सकैत, मुदा बटुकनाथक सम्पूर्ण अन्तरचेतना पाठककेँ दीपालीक कथनसँ स्वतः नहि भेटैत।

बूढ़बाक उत्पत्तिवर्णन : जन्मजात दोषक अस्वीकृति

बूढ़बा बटुकनाथ दोषी रूपमे जन्मल नहि छल कहैत, व्यवस्थाक धीमापन, प्रलोभन आ शक्तिक स्वाद तीन घटकक उल्लेख करैत छथि। एहि कथनसँ पात्रक नैतिक परिवर्तनकेँ एक जन्मजात बुराइक कथा बनएबाक बदला परिवेश–अभ्यासक कथा बनाओल जाइत अछि। पर बूढ़बाक व्याख्या स्वयं पात्रक नैतिक स्थिति पर एक दृष्टि अछि; लेखक ई दृश्य फेर बटुकनाथक आत्मकथनसँ संतुलित नहि करैत। अतएव व्यवस्था पात्रक सभ चयनक एकमात्र उत्तरदायी निश्चित भेल—ई कहना उचित नहि। कथामे संरचनात्मक प्रवृत्ति आ व्यक्तिगत अवसरवाद संग रहैत अछि।

‘बीया’ आ ‘फूल’ : कालिक रूपकक आलोचनात्मक प्रयोजन

बूढ़बाक कथनमे अन्यायक ‘बीया’ एक समय पड़ैत आ दोसर समय मनुष्यक व्यवहारमे ‘फूल’ बनैत अछि। ई रूपक दीर्घ उपन्यासक पीढ़ीय संरचनाकेँ एक छवि दैत अछि। पाठक वर्तमान वकीलक क्रिया पुराना संस्थागत ढाँचाक इतिहाससँ जोड़ि सकैत छथि, मुदा ‘फूल’ नैतिक परिणामक पूर्वनिर्धारित जैविक नियम नहि। फूलक रूपकेँ जँ अनिवार्य नियति मानल जाए, तँ बटुकनाथक रस्ता फेर बदलबाक सम्भावना निष्फल होएत। पाठ दूनू—संरचनाक प्रभाव आ विकल्पक खुलल दरवज्जा—रखैत अछि।

गरीब विधवाक आगमन : समूहसारांशसँ एक दृश्य धरि

पहिने ‘गरीब’, ‘शक्तिशाली मुवक्किल’ आ ‘मुकदमा’ समष्टिगत वर्ग छल; बादमे अपन खेतक विवादमे गामक एक गरीब विधवा बटुकनाथक सोझाँ आबैत छलीह। एहि एकल उपस्थिति सँ नैतिक प्रश्न अधिक तीक्ष्ण होइत अछि। विधवा हुनकहि गामक छथि, जकर नाम बटुकनाथ बचपनसँ जनैत छल; सम्बन्धक पूर्वस्मृति पेशागत चालबाजीक सोझाँ प्रत्यक्ष ठाढ़ होइत अछि। मुदा विधवाक नाम, ओकर जमिनक मात्रा, मुकदमाक दलील आ अन्तिम फैसला नहि। दृश्य स्मृति-जागरणक साधन अछि, कानूनी न्यायपूर्ण समाधानक आख्यान नहि।

‘एक क्षण’क उजास : आन्तरिक दृष्टिकेन्द्रक चंचलता

विधवा सामने ठाढ़ होइत बटुकनाथक आँखिमे ‘पुरनका गाम झलकल’, फेर ओ धाराक भाषामे लौटि गेल। ई छोट छवि चरित्रक सर्वाधिक जटिल क्षण अछि। पाठककेँ ओकर भीतर पुरान नैतिक स्मृति जागबाक संकेत भेटैत, मुदा ओ स्मृति निर्णय बदलबाक पर्याप्त शक्ति नहि बनैत। कथावाचक मानसिक अनुभवकेँ पूर्ण आत्मालापमे नहि खोलैत, एक दृष्टि-चित्रमे समेटैत छथि। ई दृश्य पथभ्रष्ट पात्रक स्थिर खलनायकी अस्वीकार करैत, मुदा तुरन्त सुधारक भावुक निष्कर्ष सेहो नहि दैत।

विधवाक न्यायिक स्थिति : कथाक अनिर्णीत प्रश्न

विधवा बटुकनाथक सामने उपस्थित होइत छलीह; गद्यमे ई नहि कहल गेल जे ओ वादी छलीह वा प्रतिवादी, बटुकनाथ हुनकर पक्षमे छल कि विपक्षमे, आ अन्तमे जमीनक फैसला कोन दिशि गेल। यद्यपि ‘अपन खेतक मुकदमा’ निर्दिष्ट अछि, प्रक्रिया अस्पष्ट अछि। अतः बटुकनाथ एहि विशिष्ट मुकदमामे हुनका हरौलक—एहन घटना

गढ़ब अनुचित। कथानकक प्रयोजन हुनकर नैतिक स्मृति क्षणिक जागब अछि। न्यायिक परिणामक अनुपस्थिति आलोचनामे अनिर्णयक रूपमे चिन्हित होएबाक चाही।

दू प्रतिष्ठा : शहरक गलियारा आ गामक स्मृति

बटुकनाथक नाम धीरे-धीरे शहरक अदालतक गलियारामे एक विवादास्पद प्रतिष्ठासँ जुड़ैत अछि, जकरा दीपाली स्वीकार नहि करैत छलीह। समानान्तर गामक स्मृतिमे ओकर पुराना ईमानदार रूप राखल जाइत अछि। एकहि पात्रक दू सामाजिक कथन-इतिहास बनैत अछि। ई न केवल दोगलापनक चित्र, बल्कि ‘नाम’क बदलैत अर्थक उदाहरण अछि: नाम वर्तमान कर्मसँ सेहो बनैत, अतीतक स्मृतिसँ सेहो। गाम पुराना स्वरूप बचबैत अछि, पर ई स्मरण वर्तमान आचरणकेँ स्वतः निरस्त नहि करैत।

बूढ़बाक नामरक्षा : दोषमुक्ति नहि, सम्भावनाक अवकाश

बूढ़बा बटुकनाथक नामकेँ श्रापसँ नहि, आशासँ धरबाक बात कहैत छथि। एतय स्मृतिरक्षा अपराधक अनुमोदन नहि; रस्ता बदलबाक नैतिक सम्भावना खुलल रखबाक अभ्यास अछि। जे पात्र गरीबक विरोधमे धारा घुमबैत अछि, ओकर कर्म आलोचनासँ मुक्त नहि भऽ जाइत। उपन्यास नाम-बचावक सिद्धान्तकेँ केवल निष्पाप मृतकसभक पवित्र सूची न रहए दैत; नैतिक रूपसँ विचलित जीवित व्यक्ति सेहो स्मृतिग्रन्थक सदस्य बनैत अछि। एहि कठिन विस्तारमे स्मृति-नैतिकताक कथात्मक जटिलता अछि।

‘कचहरी-बिरहा’ गीतक सामान्य आरोप आ गद्यक विशेष यात्रा

गीत कोटमे न्याय बिकबाक कथन व्यापक वाक्यरूपमे करैत अछि, मुदा गद्य बटुकनाथक पहिले गरीबक पक्ष लयबाक महत्त्वपूर्ण सूचना दैत अछि। गीतक संघर्षमय राग कालगत भिन्नता समतल कऽ दैत अछि; गद्य क्रमिक परिवर्तन रखैत अछि। आलोचना लेल एहि अन्तरक महत्त्व पैघ अछि: यदि गीतकेँ चरित्रक सम्पूर्ण, अपरिवर्तनीय इतिहास मानल जाए, तँ ओकर आरम्भिक न्यायानुराग आ बादक क्षणिक स्मृति लुप्त भऽ जाएत। दुनू स्तरक साथ पठनसँ नैतिक आलोचना अधिक यथार्थ बनैत अछि।

दृष्टि आ स्वरक विषमता : बटुकनाथक आफ्न कथा कतय?

बटुकनाथक परिवर्तन कथावाचक कहैत छथि, दीपाली व्यथित टिप्पणी दैत छलीह, बूढ़बा कारण बतबैत छथि। मुदा बटुकनाथ स्वयं विस्तृत संवाद नहि करैत। गरीब विधवा सेहो मूक उपस्थिति रहैत छलीह। एहि तीनस्तरीय बाह्य विश्लेषणमे पात्रक अन्तर्मन संकेतित अछि, स्वतन्त्र स्वीकृति उपलब्ध नहि। उपन्यासक निर्णायक नैतिक शब्द समाजक स्मृतिधारकक हाथमे अछि। चरित्रक बहुस्वरक दृष्टिएँ ई सीमा अछि, यद्यपि एक क्षणक गामस्मृति बटुकनाथकेँ पूर्णतः वस्तु बनबाकसँ बचबैत अछि।

कथा-संरचनामे अधूरा प्रत्यावर्तन

अध्यायक अन्त तक बटुकनाथ पहिल ईमानदार रस्तापर पूर्णतः नहि घुरैत। गाम ओकर नाम आशासँ राखैत अछि, समाज ओकर बदनाम पेशागत रूप जानैत अछि। एहि अनिर्णयक कारण अध्याय पाठक लेल भविष्यक एक

अधूरा धागा छोड़ैत अछि। [–३४]क उज्ज्वल-जन्मक संग एहि पात्रक आगामी सम्बन्ध बूढ़बाक भविष्यसंकेतमे सम्भावना रूपेँ उपस्थित होइत अछि, पर अभी कोनो साझा घटना घटित नहि। आगामी जालक घटक जोड़बाक शिल्प एतय रैखिक समाधान टारि रहस्य-निर्माण करैत अछि।

समग्र निर्णय : प्रणालीक छाया आ व्यक्तिक अधूरापन

बटुकनाथक कथा अपन सर्वाधिक सफलता पेशागत परिवर्तनक क्रम, विधवाक दृश्य आ दू प्रतिष्ठाक समकालीन अस्तित्वसँ पबैत अछि। [–६८]क पुरान न्याय-विलम्ब नयका शरीरमे लौटि आबैत अछि; ओकरा श्राप कहल नहि, इतिहासक पुनरावृत्ति बुझल जाइत अछि। मुख्य सीमा कानूनक वास्तविक मुकदमागत संघर्ष, विधवाक आवाज आ बटुकनाथक आत्मविवेचनक अभाव अछि। गीतक व्यापक आरोपकेँ अलग रखला पर गद्य एक सम्भावित सुधारयोग्य, मुदा वर्तमानमे नैतिक रूपेँ संकटग्रस्त पात्र प्रस्तुत करैत अछि।

पाठाधार, अनिश्चितता आ अगिला अध्याय

समीक्षा बटुकनाथक आरम्भिक ईमानदारी, शक्तिशाली मुवक्किलक संग चरित्र-परिवर्तन, दीपाली–बूढ़बा संवाद, अनाम गरीब विधवाक खेतमुकदमा, क्षणिक गामस्मृति आ अन्तिम द्वैध प्रतिष्ठापर आधारित अछि। कोन अदालतक आदेश, विधवाक परिणाम, बटुकनाथक भविष्यक पश्चात्ताप अथवा अन्य पात्रसँ निश्चित अपराध-साझेदारी एहि पाठमे नहि। अगिला [–३२]मे अनाम विदेशी जालक एक सम्भावित चेहरा समाचारपत्रक माध्यमे कथामे प्रवेश करैत अछि।

प्रकरण ६९ | मूल अध्याय –३२ — समुद्रपारक साये

कथाक्षितिजक विस्तार : गामसँ समुद्रपार

[–३६]मे अनदेखल ठगी गामक युवकक पाइ हेरबैत अछि; [–३५]मे रोजगारक माध्यमे देह संकटमे पड़ैत अछि। [–३२] कथावाचक एहि संकटसभकेँ अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय जालक सम्भावित विस्तारमे रखैत छथि। विदेशक ऊँच भवनक उल्लेख कथा-स्थानक विस्तारक संकेत अछि, मुदा वर्तमान अध्याय गामसँ हांगकांग धरि प्रत्यक्ष यात्रा नहि रचैत। घटनासभक दूरी अखबारक रिपोर्ट आ बूढ़बाक अनुभूतिक माध्यमे पाटल जाइत अछि। एहि प्रतिनिधित्वक कारण पाठक व्यापक भूगोलक आभास पबैत, बिना ओकरा प्रत्यक्ष देखल अनुभव केने।

‘साया’क शीर्षक : दृश्य उपस्थितिसँ बेसी अनुपस्थिति

शीर्षक समुद्रपारक ‘साये’क बात करैत अछि। एहि छायाक प्रत्यक्ष प्रकट रूप एक कागजपर छपल समाचार, मीनारक फोटो आ आवर्ती नाम अछि। कोनो गुप्त नेता गाममे पहुँचल नहि; न पाठक ओकर निजी क्रिया-स्थल देखैत अछि। साया दृश्यकेँ पूर्ण रूपेँ अधिग्रहित नहि, ओकर सीमारेखा बनैत अछि। कथन-दृष्टिसँ एहि अधूरेपनमे भयक शक्ति अछि: पाठक जे स्थान प्रत्यक्ष नहि देखैत, ओकरा कल्पनामे एक आसन्न केन्द्र बुझैत अछि। मुदा छाया अनिश्चित समाचारक उपमा अछि, स्वतन्त्र जीवित भूतक प्रमाण नहि।

अभिनवक प्रवेश : समाचारपाठक पात्र

दीपालीक बेटा अभिनव अखबारक रिपोर्ट पढ़ि पीपर लग जाइत छथि। हुनकर कथा-भूमिका एतय प्रत्यक्ष आर्थिक ठगीक पीड़ित अथवा अनुसन्धानकर्ता नहि, चिन्तित पाठकक अछि। पत्रकारीय सामग्री पढबाक क्रिया बाहरी संसारकेँ ग्राम्य संवादमे प्रवेश करबैत अछि। दीपालीक नोटबुक आ विभाक सरकारी कागचक बाद ई एक नव लिखित माध्यम अछि। अभिनवक व्याख्या, प्रश्न आ भय समाचारक अंशसभक चयन करैत अछि; ओही कारण कथाक जानकारी एक स्थलसँ दोसर धरि व्यक्ति-पाठनद्वारा यात्रा करैत अछि।

शीशाक मीनार : ऊँचाई, चमक आ आन्तरिक अस्पष्टता

रिपोर्टक फोटो दूर शहरक शीशाक ऊँच मीनार देखबैत अछि। ऊँचाई आ चमक बिम्बक दृश्यत्व बनबैत अछि; ‘भीतर’ बसल अनदेखल शक्तिक उल्लेख ओकर उल्टा अदृश्यता। बाहरी इमारतक सतह देखाइ पड़ैत, भीतरी क्रियाक प्रमाण कथा स्वतन्त्र रूपेँ नहि खोलैत। ई विरोध [−४५]क बजारक चमक आ [−३६]क फर्जी वेबसाइटक विश्वसनीय-जकाँ आभाससँ जुड़ैत अछि। तथापि फोटोमे जे इमारत अछि, वैह वास्तविक अपराधकार्यालय छिए—एहन दावाक स्वतन्त्र घटनासूत्र कथामे सीमित अछि।

वित्तीय प्रवाहक विवरण : ‘तार-दर-तार’ एक सारांश

कथावाचक गरीबक हाथसँ ठगल पाइ अनेक देश पार अनदेखल हाथ धरि पहुँचबाक बात कहैत छथि। ‘तार-दर-तार’क पुनरुक्ति दूरीक तीव्र संकुचन आ लेनदेनक गूढ़ गतिशीलता दैत अछि। मुदा कोन बैंक, रकम, खाता, तिथि, कम्पनी अथवा बिचौलिया छल, प्रस्तुत नहि। ई तकनीकी नक्शा नहि, पैघ स्तरक आपराधिक सम्बन्धक कथा-रूप होइत अछि। वास्तविक धनक मार्ग पाठककेँ अधूरा भेटैत अछि। आलोचनामे एकरा कथाक विश्व-निर्माणक संकेतक रूपेँ पढ़ब, प्रमाणित वित्तीय तन्त्रक सम्पूर्ण विवरण मानब नहि।

समाचारक नाम : लाउ किन-हंगक कथात्मक उदय

अभिनव बतबैत छथि जे रिपोर्टमे ‘लाउ किन-हंग’ नाम बेर-बेर आएल। एहि नामक पुनरावृत्ति भयक केन्द्र बनबैत अछि: अनाम वित्तीय शक्ति पहली बेर उच्चारण योग्य पहिचान पबैत अछि। मुदा अभिनव स्वयं कहैत छथि जे हुनका नहि बुझल ई व्यक्ति के छथि। हुनकर एहि वाक्यक अनिश्चितता निर्णायक अछि। केवल समाचारमे नाम भेटलासँ ओ व्यक्ति अपराध-सञ्जालक निस्सन्देह मुखिया, दोषसिद्ध ठग अथवा उज्ज्वलक भविष्यक शत्रु प्रमाणित नहि होइत। कथा पहिचानक आहट दैत अछि, पूर्ण चरित्र-प्रकटीकरण नहि।

पात्रगत सूचना आ कथावाचकीय सर्वज्ञताक अन्तर

रिपोर्टमे नाम देखबाक सूचना अभिनव दैत छथि; बूढ़बा जवाबमे अपन बहुत पुरान ‘झलक’क उल्लेख करैत छथि। एक पत्रकारिता-पाठ आ एक स्मृतिजन्य अनुभव एकहि नामक चारू कात जमा होइत अछि। मुदा दुनू स्रोतक मिलन पूर्ण पुष्टिक दृश्य नहि; रिपोर्टक प्रत्यक्ष पूर्ण पाठ नहि, बूढ़बाक झलकक सम्पूर्ण घटना नहि। कथावाचक पाठककेँ निश्चित अन्तिम अपराध-इतिहास नदेंत, अनिश्चित सूत्रसभकेँ एक घटना-बिन्दुदिस मोड़ैत छथि। एहि सूचना-व्यवस्थामे रहस्य अनुशासित रीतिएँ बनैत अछि।

बूढ़बाक विचित्र स्वर : अतीतक याद आगामी भय बनैत अछि

बूढ़बा एहन स्वरमे उत्तर दैत छथि जे अभिनव पहिने नहि सुनने छलाह। दीर्घजीवी स्मृतिधारी पात्रक स्वरलक्षण दुवारा कथावाचक विस्मयक तीव्रता बढ़बैत अछि। बूढ़बा शीशाक मीनारक पुरान झलकक बात कहैत, मुदा हुनका नहि बुझल ओ व्यक्ति के छथि आ उज्ज्वल-बटुकनाथसँ कियैक जुड़ताह। एहि अनभिज्ञता मे कथाक दीर्घकालिक संकेत अछि। विस्मित स्वर ज्ञानक अधिकता नहि, आसन्न घटनाक दहशतक सौन्दर्यात्मक माध्यम बनैत अछि।

तीन नामक सम्भावित सङ्गम : अग्रसूचनाक बनावट

बूढ़बा उज्ज्वल, बटुकनाथ आ समुद्रपारक छायाक सम्भावित सम्बन्धक प्रश्न उठबैत छथि। [–३४]मे उज्ज्वल नवजात, [–३३]मे बटुकनाथ नैतिक संकटवला वकील, [–३२]मे लाउ किन-हंगक अनिश्चित नाम। पाठक एहि तीन सूत्रकेँ एक भविष्यक जाल रूपमे पढ़ि सकैत छथि, मुदा एखन तीनू एकहि स्थल वा संवादमे उपस्थित नहि। अगिला सङ्गमक आश्वासन कथा-आकांक्षा उत्पन्न करैत अछि। एहि बिन्दु पर शुद्ध आख्यानशास्त्रीय अनुशासन ई जे संकेतकेँ संकेत राखल जाए, आगामी कथाक नतीजा पूर्वकल्पित नहि कएल जाए।

‘गोहि जल बदलैत अछि’ : भयक कालान्तरित छवि

बूढ़बा कहैत छथि गोहि पहिने पोखरि, फेर स्क्रीन आ आब समुद्रपार मीनारमे अछि। एहि रूपात्मक यात्रामे उपन्यासक मूल जलचर नयका शोषणप्रक्रियाक निरन्तर प्रतीक बनैत अछि। उपमा इतिहासक भिन्न स्थलसभकेँ एक भावधुरी दैत अछि। मुदा पोखरिक वास्तविक जीव, फर्जी वेबसाइटक अनाम संचालक आ रिपोर्टक व्यक्ति अलग स्तरक अस्तित्व छथि। एहि तीनूकेँ एक शाब्दिक अपराध-पात्रक विभिन्न शरीर मानल जाए तँ कथाक उपमात्मक संरचना भंग होएत। रूपकक उपयोग साम्य चिन्हब लेल, ऐतिहासिक भिन्नता मेटाब लेल नहि।

जल-स्थानसँ शीशा-स्थान : पदार्थक नया विरोध

जोड़ी पोखरिक पानि, पीपरक जड़ि आ शीशाक दूर मीनार—ई तीन स्थानपदार्थ संवादमे भेंटैत अछि। पानि स्थानीय स्मृति आ भयक केन्द्र, पीपर गामक सामूहिक कण्ठक स्थल, शीशा दूर वित्तीय चमकक माध्यम। कथा वस्तुसभक पदार्थगत अन्तरद्वारा सम्बन्धक असमानता रूपायित करैत अछि। एतय भौगोलिक रूपान्तरण केवल दृश्य-सज्जा नहि; अपराधक शक्ति कतेक अदृश्य आ पहुँचसँ बाहर बनि गेल, ओकर शिल्पगत आभास अछि। तथापि वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय भूगोलक विशद मानचित्र पाठमे नहि।

अभिनवक चेतावनी : सम्भावित उत्तर, सम्पूर्ण नियन्त्रण नहि

अन्तमे अभिनव गामक युवाकेँ अन्तर्राष्ट्रीय ठगीक प्रस्ताव, नाम आ पैसाक गमन विषयमे सावधान करैत छथि। एतय पाठक एक वास्तविक प्रतिक्रिया देखैत—चेतावनीक प्रसार। मुदा कोनो अन्तर्राष्ट्रीय गिरोहक जाँच, धर-पकड़, अभियोग वा ठगल पाइ वापसीक घटना नहि। बूढ़बाक कथन जे दूरक छायो गामक इजोतसँ कमजोर पड़त, भविष्यमुखी आश्वासन अछि; वर्तमान उपलब्धिक सारांश नहि। एहि भिन्नतासँ अध्यायक तनाव सुरक्षित रहैत अछि।

रिपोर्टक मूक स्रोत : पत्रकारक नाम नहि

कथा अखबारक रिपोर्टक विषय बतबैत अछि, मुदा समाचारक लेखनकर्ता, प्रकाशनतिथि, शीर्षक, सूचना-स्रोत अथवा फोटो लेने व्यक्तिक नाम नहि। एहि अभावसँ समाचारपत्र ‘अधिकारयुक्त बाहरी पाठ’ बनैत अछि जकर सामग्री पात्रक संवाद द्वारा चुनल जाइत अछि। [–५७]मे थॉम्पसनक पुस्तक विस्तारसँ स्थानीय अर्थ बिगाड़ने छल; एतय बाहरी समाचार स्थानीय चिन्ताक उद्गम बनैत अछि। बाह्य लेखन उपन्यासमे एकरूप नायक वा खलनायक नहि, अनेक भूमिकावला माध्यम अछि।

कथाक समय : वर्तमान रिपोर्ट आ पुरान झलक

अभिनवक पढ़ल रिपोर्ट कथाक वर्तमान घटना अछि; बूढ़बाक पहिने सुनल झलक अनिर्दिष्ट पुरान कालक स्मरण; आगामी ‘एक दिन’ भविष्यक अग्रसूचना। तीन काल एक पीपर-सम्वादमे जमा होइत अछि। एहि संकेन्द्रणसँ अल्प घटनावला अध्यायो दीर्घ आख्यानक महत्त्वपूर्ण सूत्र बनैत अछि। कथाक कालगत गठन प्रत्यक्ष भौतिक घटनासँ बेसी कार्य करैत अछि।

गीतक निश्चित ‘चिन्ह’ आ गद्यक अधूरा स्रोत

‘मीनार आ जड़ि’ गीत दूरसँ ठगनिहारक पातपर चिन्ह रहबाक निश्चय व्यक्त करैत अछि। गद्यमे अखबारपर नाम अछि, मुदा अपराधक पूर्ण पहिचान आ न्यायिक परिणाम नहि। गीत स्मरणरक्षाक सामूहिक भरोसा दैत अछि; गद्य केवल नाम, फोटो आ आशङ्काक दृश्य। एहि विरोधकेँ लक्षित कएने बिना गीतक निश्चयकेँ प्रमाणित अपराधी-पहिचान मानि लेब भावनात्मक अतिरेक होएत। साहित्यिक तनाव असलमे एहि दूनू स्तरक अलग नियमनसँ बनैत अछि।

अज्ञात अपराधक नैतिक चित्र : सरल दानवीकरणक खतरा

बूढ़बाक संवादमे छाया दूरसँ लोककेँ ठगनिहार शक्तिक रूपमे प्रस्तुत अछि। पर एक वास्तविक नामित व्यक्ति विषयमे पात्र अपन अनभिज्ञता स्पष्ट करैत छथि। एहि कारण आलोचनाकेँ आरोपित नैतिक छविक कथात्मक निर्माण विश्लेषित करबाक चाही, नाम सुनिते अपराधसिद्धि नहि करबाक चाही। अनिश्चित नामकेँ भयक प्रतीक बनेबाक शिल्प सफल अछि, मुदा पात्रक स्वतन्त्र व्यक्तित्व एखन नहि खुलैत। एहि अति-पूर्वव्याख्याक जोखिमकेँ साक्षात् चिन्हित करब पाठसम्मत गम्भीरता अछि।

समग्र मूल्यांकन : भविष्यमुखी जालक एक नक्शा

अध्यायक शक्ति तीन अधूरा पात्रसूत्रकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जोखिमक क्षितिजमे जोड़ब, शीशा-मीनारक तीक्ष्ण बिम्ब आ पूर्वझलकक काल-रचनामे अछि। दृश्य-घटनाक अल्पता कथानक-अग्रसूचनाक बल बनैत अछि। मुदा पैसा किन-किन खातासँ गेल, विदेशक वास्तविक संचालनकर्ता के अछि आ नामित व्यक्तिक निश्चित भूमिका की—ई विवरण अनुपस्थित अछि। तेँ एहि अध्यायकेँ जाँच पूर्ण भेलाक प्रसंग नहि, आनेवला घटनाक छाया फैलएबाक प्रसंग मानब उचित।

स्रोत-सीमा आ अगिला प्रकरण

समीक्षा केवल [–३२]क गीत, अभिनवक पढ़ल रिपोर्ट, हांगकांगक फोटो, लाउ किन-हंगक नामसँ जुड़ल अभिनवक डर, बूढ़बाक झलक आ सामुदायिक चेतावनीपर आधारित अछि। वास्तविक अपराधी-पहिचान अथवा तीन पात्रक संयुक्त षड्यन्त्र एहि अध्यायमे स्थापित नहि। अगिला [–३१]मे विदेशक अस्पष्ट स्रोतसँ कथानक बैंकक भीतर देखल असामान्य लेनदेन आ एक कर्मचाग़ीक नैतिक मौन धरि प्रवेश करैत अछि।

प्रकरण ७० | मूल अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन

दूरक सायासँ बैंकक भीतर : कथादृष्टिक पुनःसङ्कोचन

[–३२]मे समुद्रपारक वित्तीय जाल अखबार आ पूर्वझलकक माध्यमे अनिश्चित रूपमे उपस्थित छल; [–३१]मे कथा नगरक एक बैंकक दैनिक लेनदेनपर दृष्टि रखैत अछि। ई स्थल-परिवर्तन अज्ञात वैश्विक विस्तारसँ स्थानीय प्रशासनिक सूक्ष्मताक दिशा अछि। कथावाचक असामान्य खाता देखबैत छथि, मुदा एहि खातासभकेँ पूर्वक हांगकांगक रिपोर्ट अथवा लाउ किन-हंगसँ प्रत्यक्ष जोड़बाक घटना नहि दैत। पाठक समान विषयक कारणे सम्बन्ध अनुमानित करि सकैत छथि, पर कारणिक सम्बन्ध वर्तमान पाठक खुलल प्रश्न अछि। एहि अन्तरमे उपन्यासक रहस्य बचल रहैत अछि।

‘शांत, ईमानदार’ परिचय : व्यक्तित्वक आरम्भिक रूप

सत्यव्रत मेहता नगरक बैंकमे काम करनिहार एक शांत, ईमानदार युवकक रूपमे प्रवेश करैत छथि। कथावाचक पहिने हुनकर मौनक स्वभाव बतबैत छथि—ओ कम बजैत, बहुत देखैत छथि। एहि चरित्र-रेखासँ आगूक दुविधा विश्वसनीय बनैत अछि: ओ जे अनियमितता देखैत छथि, ओकरा तुरन्त उजागर नहि करैत। मुदा ई चुप्पी पूर्वनिर्धारित अपराधसाझेदारीक प्रमाण नहि; आरम्भिक परिचय हुनकर ईमानदारीक दावा सेहो रखैत अछि। चरित्रक केन्द्र कथनक परस्पर विरोधी आशयसँ बनैत अछि—विश्वसनीय निरीक्षक, पर संकोचशील वक्ता।

मौनक बहुवचन : स्वभाव, संरक्षण आ दोषक सम्भावना

अध्यायक गीत ‘मौन कहियो सुरक्षा, कहियो अन्याय’क भेद रचैत अछि। गद्य सत्यव्रतक मौनकेँ एकहि नैतिक अर्थ नहि दैत: सीमित पद, अधिकारक असमानता, भय आ अधिक सूचना जुटाबाक आवश्यकता सभ कारण सम्भावित रूपमे उपस्थित छथि। बूढ़बा निर्णयक भार सत्यव्रतपर छोड़ैत छथि। एहि कारण मौन एक स्थिर दोष नहि, काल-परिस्थितिअनुसार अर्थ बदलनिहार क्रिया बनैत अछि। कथाकेँ यदि ‘चुप रहब = अपराध’क सरल सूत्रमे समेटल जाए तँ बूढ़बाक विवेकसंबन्धी अनिश्चय आ पात्रक कार्यगत जोखिमक जटिलता नष्ट होएत।

रकमक आवागमन : दोहरावक दृश्यात्मक लय

सत्यव्रत एक खातामे पैघ रकम आएब, तुरन्त अनेक खातामे बँटि आगू बढ़ब आ अन्तमे अदृश्य होयबाक अवस्था देखैत छथि। ‘आबैत’, ‘बँटि’, ‘हेरा जाइत’ क क्रियापदसभ तेज वित्तीय गतिशीलता रचैत छथि। किन्तु वास्तविक खाता-संख्या, सम्पूर्ण रकम, अन्तिम प्राप्तकर्ता वा लेनदेनक तिथि कथावाचक एहि खण्डमे निर्दिष्ट नहि करैत।

परिणामतः दृश्य विशिष्ट शङ्काक कारण पबैत अछि, पर आपराधिक अनुसन्धानक पूरा विवरण नहि। बैंकक संसार पैसाक प्रवाहद्वारा दृश्य बनैत अछि, मनुष्यक प्रत्यक्ष मुँह एखन ओकर पाछाँ नुकायल अछि।

‘लाखों’क परिमाण : भयक सूचक, गिनतीक तालिका नहि

मूल गद्य एक खातामे ‘लाखों’ अबैत कहैत अछि। एहि शब्दक आशय ठूलो मात्रामे धनक गमन देखएब अछि, नहि एक निश्चित रकमक हिसाब। समीक्षामे ‘लाखों’ कैं विशिष्ट लाखक संख्या, कुल धोखाधड़ी वा निश्चित क्षतिक परिमाण बना देब गलत होएत। सत्यव्रत बादमे तिथि आ विवरण लिखैत छथि, किन्तु ओ नोटबुकक वास्तविक तालिका पाठक सोझाँ नहि रखल गेल अछि। कथाक मापन-भाषा जानबूझि सीमित रहैत अछि ताकि केन्द्र वित्तीय अंक नहि, कर्मचाग़ीक नैतिक संकट बनय।

‘छोट कर्मचारी’क भीतर सत्ता-असमानता

सत्यव्रत अपनाकैं एक छोट कर्मचारी बुझैत छथि आ पुछैत छथि—के सुनत, बाजलापर की खतरा? एहि प्रश्नमे बैंकक संस्थागत अनुक्रम दृष्टिगोचर अछि। पैसा आगू-पाछू भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर बारेमे बोलबाक अधिकार, सुरक्षा आ श्रवण-सम्भावना समान नहि। कथा कार्यालयक प्रबन्धक, वरिष्ठ अधिकारी, निरीक्षण-समिति अथवा धमकी देनिहार व्यक्तिक प्रत्यक्ष प्रवेश नहि करबैत; तैँ जोखिम एक पात्रगत अनुमानक रूपमे अछि। एहि अस्पष्टताक बावजूद सामाजिक दूरी कथात्मक रूपसँ प्रभावी बनैत अछि: सब देखनिहार व्यक्ति सब बदलएबामे समर्थ नहि।

गामक वापसी : संस्थागत चिन्ताक घरेलू अनुवाद

सत्यव्रत छुट्टीमे पीपर लग आबि बूढ़बाक संग अपन संकट साझा करैत छथि। बैंकक ठोस लेनदेन गाममे विवेकक प्रश्न बनैत अछि। बूढ़बा वित्तीय प्रणालीक अदालती विशेषज्ञ बनि समाधान नहि दैत; ओ निर्णयक घड़ी पहिचानबाक विषयमे बात करैत छथि। एहि स्थल-परिवर्तनसँ पाठक आर्थिक जगतक अनियमितताकैं सामुदायिक नैतिक सम्बन्धसँ जोड़ि देखैत छथि। मुदा गामक संवाद स्वयं बैंकक अनियमितता समाप्त नहि करैत। पीपर चिन्तन-स्थल अछि, अपराध-जाँच कार्यालय नहि।

बूढ़बाक उत्तरमे निर्णयक अपहरण नहि

‘हम अहाँकैं निर्णय नहि द’ सकैत छी’ वाक्य बूढ़बाक असाधारण महत्त्वक स्वीकार अछि। कतेको अध्यायमे ओ स्पष्ट निर्देश दैत छथि; एतय ओ सत्यव्रतक विवेकक स्वतन्त्रता मानैत छथि। एकर फलस्वरूप पात्रक नैतिक अधिकार आ भय दूनू ओकर अपने हाथमे रहैत अछि। ओ केवल सावधानीक दिशा सुझबैत छथि—देखल बात लिखू, उपयुक्त क्षण चिन्हू। एहि सीमित मार्गदर्शनसँ बूढ़बाक सर्वज्ञ उपदेशात्मक स्थिति नरम पड़ैत अछि, आ कथा एक अनिर्णीत व्यक्ति-निर्णयक तनाव सुरक्षित राखैत अछि।

‘बाजबाक क्षण’ : कालक नैतिक विभाजन

गीत आ संवाद दुनू मौनकेँ समयक अनुसार बदलैत अछि: जे क्षण अभी नहि आयल, ओहिमे चुप रहब धैर्य; जे क्षण आबि गेल, ओहिमे चुप रहब अन्याय बनि सकैत अछि। एहि कथनमे नैतिकता समयक पहचानक समस्या बनैत अछि। मुदा ओ ‘क्षण’ ठोस घड़ीक रूपमे परिभाषित नहि। एहि कारण कथाक तनाव दूर नहि होइत; सत्यव्रतकेँ आगामी अनुभवमे स्वयं निर्णय करएबाक अछि। ई अनिर्णय वर्तमान प्रसंगक अन्तिम प्रेरक शक्ति अछि, जकरा जल्दबाज अन्तिम नैतिक फैसला बनाओल नहि चाही।

नोटबुक : मौनक दृश्यगत विपरीतार्थ

सत्यव्रत नगर घुरि लेनदेनक तिथि, रकम आ खाताक आवागमन लिखय लगैत छथि। ओ सार्वजनिक रूपसँ बाजैत नहि, मुदा अपन लिखित क्रियाद्वारा सूचना जमा करैत छथि। एहि प्रकार मौन निष्क्रिय शून्यता नहि रहैत, सम्भावित गवाहीक तैयारी बनैत अछि। नोटबुक एक नैतिक साधनक रूपमे प्रवेश करैत अछि, मुदा वास्तविक पन्ना, रकम, नाम वा बैंक-अभिलेखक प्रतिलिपि पाठककेँ नहि भेटैत। लेखनक क्रिया देखाइत अछि, ओकर समस्त सामग्री नहि। कथा एहि पदार्थगत वस्तुकेँ भविष्यक महत्त्वसँ घेरि दैत अछि।

गोपनीय लेखनक पूर्वस्मृति : यादवानन्द सँ सत्यव्रत

यादवानन्दक छाया-पञ्जी खतरा बीच गामक इतिहास सुरक्षित रखैत छल; सत्यव्रतक नोटबुक बैंकक शंकास्पद व्यवहारक विवरण समेटैत अछि। दुनूमे सार्वजनिक रूपसँ नहि बाजि सकबाक अवस्था निजी लेखनमे ऊर्जा पबैत अछि। मुदा विषय भिन्न छथि—पहिल सामूहिक नाम, दोसर वित्तीय लेनदेन। समानता गोपन लेखनक कथाशिल्पमे अछि, न दू पञ्जीक प्रमाण-सामग्रीक समानतामे। अगिला गोप कुमारक संग्रह-अध्याय लेल एहि रूपक पुनरावृत्ति बहुस्तरीय अभिलेख-इतिहास तैयार करैत अछि।

अघोषित भविष्य : ‘एक दिन महत्त्वपूर्ण बनत’

अन्तिम वाक्य सत्यव्रतकेँ अपन नोटबुकक आगामी महत्त्व अज्ञात रहबाक बात कहैत अछि। कथावाचक एतय पात्रसँ अधिक भविष्यसूचक अधिकार रखैत छथि। ई विशिष्ट अग्रसूचना पाठकक दृष्टि वर्तमान लिखित पन्नासँ आगूक घटनादिस मोड़ैत अछि। मुदा एहि वाक्यक आधारपर नोटबुक अदालतमे प्रस्तुत भऽ गेल, अपराधी पकड़ा गेल, अथवा पीड़ितकेँ क्षतिपूर्ति भेटल—एहन घटना वर्तमान अध्यायमे नहि। भावी उपयोगक आश्वासन आ सिद्ध परिणामक बीच एहि अन्तरकेँ पकड़ब सटीक आख्यानपठनक शर्त अछि।

वैश्विक शंका आ स्थानीय खाता : सम्बन्धक अनिर्णय

[–३२]मे हजारों मील दूर वित्तीय जालक बात छल; एतय सत्यव्रत नगरक बैंकमे अनुचित-जकाँ पैसाक प्रवाह देखैत छथि। कथा-क्रम पाठककेँ दू घटनाकेँ एक कथा-सूत्रमे पढ़बाक प्रेरणा दैत अछि। तथापि समान ‘संदेहास्पद धन’ शब्द दोनों जगह एकहि आपराधिक मालिक स्थापित नहि करैत। सत्यव्रतक देखल खातासँ समुद्रपारक मीनार धरि कोई दस्तावेजी सम्बन्ध एखन नहि। रचनाक उपलब्धि एही अस्थायी समांतरता मे अछि, जे पाठकमे अनुसन्धान-जकाँ जिज्ञासा जगबैत अछि।

अनसुना स्वर : बैंकक पीड़ित आ सहकर्मी कतय?

कथाक केन्द्र सत्यव्रतक एकान्त निरीक्षण अछि। संदिग्ध खाताक वास्तविक धारक, सम्भावित पीड़ित, बैंकक अन्य कर्मचारी आ वरिष्ठ अधिकारी संवादमे उपस्थित नहि। एकर फलस्वरूप वित्तीय अनियमितताक सामाजिक परिमाण विषयक प्रत्यक्ष आवाज सीमित रहैत अछि। कथावाचक एहि मौनक विषय बनाओल छनि, मुदा परिवेशकेँ बहु-पात्र संवादक रूप नहि देने। ई संरचनात्मक चुनाव कथाक रहस्य आ पात्रक नैतिक अलगाव बढ़बैत अछि; सामूहिक वित्तीय संघर्षक विस्तृत रूप फिलहाल स्थगित।

‘मौन गवाही’ गीतक अन्तर्विरोध

गीत सत्यव्रतक मौनकेँ अन्ततः भारी गवाहीक रूप देबैत अछि, जखन कि गद्यमे ओ एखन खाता-व्यवहार नोट करैत मात्र छथि। गीत भविष्यक परिणतिक नैतिक पूर्वराग अछि, घटनाक पूर्ण नाट्य रूप नहि। गवाही सामान्यतः अन्य श्रोता वा मंचक सामने कथनक क्रिया होइत; वर्तमान लिखित नोटबुक एखन सार्वजनिक साक्ष्य-प्रस्तुति नहि। एहि भेदसँ गीतक भावात्मक दृढ़ता आ गद्यक सावधान समयगत अधूरापन अलग-अलग देखल जा सकैत।

जोखिमक मनोचित्र : भय नामित, धमकी अनाम

सत्यव्रत भय व्यक्त करैत छथि, मुदा कोनो व्यक्ति हुनका धमकी देलक—एहन स्पष्ट दृश्य नहि। ओ कार्यस्थलक सत्तागत जोखिम भाँपैत छथि। मनोवैज्ञानिक तनावक एहन निर्माण बाहरी दण्डक प्रत्यक्ष चित्र बिना सेहो सम्भव अछि: असमान पद, दूषित-जकाँ वित्तीय प्रवाह आ अकेल व्यक्तिक जिम्मेवारीक बोध मिलि भय रचैत अछि। तथापि जोखिमक स्रोतक अस्पष्टता पाठक लेल आगामी रहस्य बनैत अछि। एतय डर साँच अनुभव अछि, पर ओकर सभ सम्भावित कारण प्रमाणित बाहरी घटना नहि।

मुख्य उपलब्धि : लेखन आ कथनक बीच विलम्ब

अध्यायक सौन्दर्य एक छोटे कर्मचारीक अनिर्णीत धैर्य, मौनक नैतिक परिवर्तनीयता आ नोटबुकक भविष्यसूचक स्थानमे अछि। संकटक प्रत्यक्ष खुलासा टारिकऽ लेखक तैयारीक प्रक्रिया दृश्य बनबैत छथि। सीमा—खाताक ब्यौरा, गवाहीक मंच, अन्य कर्मचारीक आवाज आ निर्णायक कदमक अनुपस्थिति—बादक कथा लेल अर्थपूर्ण रिक्ति बनैत अछि। नैतिक दृढ़ता एखन गुप्त लेखनक श्रममे अछि; सत्य उद्घोषित नायकत्व एखन अपूर्ण।

स्रोत-परीक्षण आ अगिला कड़ी

मूल [–३१]मे सत्यव्रत मेहताक बैंक-नौकरी, शङ्कास्पद लेनदेनक दर्शन, पीपर संवाद, चुप्पी आ तिथिवार नोटबुक-लेखन अछि; मुखबिरीक सफल परिणाम, बैंकक निश्चित अपराध-निर्णय अथवा समुद्रपारक समूहसँ पुष्ट सम्बन्ध नहि। अगिला [–३०] अभिलेख राखबाक क्रियाकेँ व्यक्तिक निजी नोटबुकसँ गामक बहुशताब्दी दस्तावेजी संग्रह दिस विस्तारित करैत अछि।

प्रकरण ७१ | मूल अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज

निजी नोटबुकसँ सामूहिक संग्रह धरि कथानकक फैलाव

[–३१]मे सत्यव्रत संदिग्ध लेनदेनक विवरण चुपचाप लिखैत छथि; [–३०]मे गोप कुमार पुरान पञ्जी, नक्शा आ डिजिटल अभिलेख एक ठाम मिलबैत छथि। दुनू अध्यायमे लिखित वस्तु केन्द्रमे छथि, मुदा उद्देश्य आ कालव्याप्ति भिन्न। सत्यव्रतक नोटबुक तात्कालिक जोखिमक सम्भावित गवाही, गोप कुमारक संग्रह शताब्दियोंक नाम आ घटना बचबाक उपाय। एहि क्रमसँ उपन्यास लेखनकेँ केवल शब्द जमा करबाक क्रिया नहि, काल आ समाजक सम्बन्ध पुनर्संङ्गठित करबाक प्रक्रिया बनबैत अछि। तेँ सतत लेखनक पुनरावृत्ति यहाँ अर्थहीन दोहराव नहि।

गोप कुमारक आरम्भ : कागचक गन्धसँ अभिलेखक जीवन धरि

कथावाचक गोप कुमारक बाल्यकालमे पुरान कागच सूँघब आ नाम पढ़बक रुचि बतबैत छथि; युवावस्थामे ओ अपन जीवन अनुसंधान आ दस्तावेज-सङ्ग्रहमे लगा दैत छथि। एहि छोट जीवनवृत्तमे रुचि सँ कर्म धरि क्रमिक रूपान्तरण अछि। मुदा शिक्षा, नियुक्ति, व्यक्तिगत आय अथवा परिवारक संघर्षक स्वतन्त्र जीवनी उपलब्ध नहि। ओकर पहचान संग्रहकर्ताक निष्ठा द्वारा निर्मित अछि। चरित्रक व्यावसायिक क्रिया आ उपन्यासक स्व-स्मरणक विषय लगभग एक बनि जाइत अछि; एही समीपता ओकर कथानक-महत्त्व बढ़बैत अछि।

‘पुरान पात, नव पर्दा’ : माध्यमसभक समकालीनता

गीत आ गद्य पुरान पञ्जी, नक्शा, सरकारसँ भेटल कागच आ स्क्रीनपर बनैत नव अभिलेखकेँ एक संकलनमे राखैत अछि। एतय तकनीकी कालक्रम पुरान साधनकेँ हटायब नहि, ओकर समवर्ती उपयोग बनैत अछि। [–४४]क पहिल कम्प्यूटर मे गीतकेँ टाइप करबाक अनुभव छल; गोप कुमार ओहि सम्भावनाक विस्तार रूपेँ विभिन्न माध्यमक सामग्री जोडैत छथि। मुदा सम्पूर्ण डिजिटल भंडारक संरचना, फाइल-मानक, संग्रहण-स्थान वा प्रतिलिपि-सुरक्षाक विवरण नहि। कथा माध्यम-सम्बन्धक रूपक रचैत, तकनीकी कार्यपुस्तिका नहि।

यादवानन्द आ विभा : दू युगक लिखित अवशेष

गोप कुमार यादवानन्दक रातिमे लिखल पञ्जी आ विभाक सूचना-अधिकारसँ आनि रखल सरकारी कागच जोड़ैत छथि। एक दस्तावेज गुप्त श्रमक अवशेष, दोसर सार्वजनिक अधिकारक उपलब्धि। दुनूकेँ संग राखलापर गामक इतिहासकेँ एकमात्र राज्यदृष्टि वा एकमात्र गोपनीय स्मृतिक कथन नहि बनाओल जाइत। मुदा कथाकार दस्तावेजक प्रत्येक पन्ना, परस्पर विरोधी सूचना वा मिलानक कठिनाई विस्तारसँ नहि दैत। कथनक केन्द्र मिलाएबाक क्रिया अछि, मतभेदक विस्तृत परीक्षण नहि। एतय संग्रह-सफलताक संरचना स्पष्ट, दस्तावेजी विवादक रूप अल्प।

नक्शा आ पञ्जी : स्थानक स्मृति आ नामक स्मृति

पुरान नक्शा स्थल-व्यवस्थाक विवरण सँ जुड़ैत, पञ्जी व्यक्तिक नाम, घटना आ सम्बन्ध सम्हारैत अछि। गोप कुमार दूनू जोड़ैत छथि, जइसँ जल, बान्ह, खेत आ गामक परिवर्तनकेँ नामक इतिहाससँ एक ठाम देखबाक सम्भावना खुलैत अछि। तथापि मूल अध्याय एक विशिष्ट नक्शाक भूगोल अथवा ओकर कतेक बदलावक रेखाङ्कन प्रस्तुत नहि करैत। नक्शाक उल्लेख दस्तावेज-संग्रहक विविधता सूचित करैत, पूरा स्थानिक इतिहास नहि। सामाजिक आख्यानक स्तरपर ई विविधता महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ नाम स्थानविहीन सूची नहि रहि सकैत।

‘धागा’क पुनरावृत्ति : बिखरल कथा जोड़बाक दृश्य

कथावाचक कहैत छथि गोप कुमार अलग-अलग पातकेँ ‘एक-एक धागा’ जोड़ैत छथि। धागा वास्तविक बाइन्डिंग सामग्रीक विवरण अवश्य नहि; सम्बन्ध स्थापित करबाक रूपक सेहो अछि। ई बिम्ब पीढ़ीक बीच छूटल कथा, गुप्त पञ्जी आ आधुनिक स्क्रीनक अंकनकेँ एक तन्तु बनबैत अछि। किन्तु सभ सामग्री मिलबाक अर्थ स्वतः सत्यक एकमत होएब नहि। संग्रहक क्रिया महत्वपूर्ण, पर उपन्यासमे वस्तुगत असङ्गतिक स्वतन्त्र दृश्य दुर्लभ अछि। एहि कारण ‘धागा’ सहयोगक सौन्दर्यात्मक संकेत संग अभिलेखीकरणक जटिल कठिनाइ सरल कऽ देबाक सम्भावना सेहो राखैत अछि।

गोप कुमारक प्रश्न : पुस्तकक पूर्णताक समय

गोप कुमार बूढ़बासँ पूछैत छथि जे सम्पूर्ण कथा एक ठाम संकलित करबाक समय आबि गेल की नहि। ई प्रश्न उपन्यासकेँ अपनहि रचनाप्रक्रियापर विचार करए लगबैत अछि। सामान्य कथानकमे घटना घटैत अछि; एतय पात्र पूछैत छथि जे घटना कखन लिखित समग्र बनबाक अधिकारी अछि। बूढ़बा तुरन्त प्रकाशनक अनुमति नहि दैत, एक अन्तिम अध्याय बाँकी कहैत छथि। एतय कथाक स्व-विवेचन स्पष्ट अछि: रचना अपन भविष्यक अपूर्णताकेँ पात्रक संवादमाध्यमे स्वीकार करैत अछि।

हरिपति कविक पुरान प्रश्न : अन्तर्पाठीय आत्मस्मृति

बूढ़बा हरिपति कविक बहुत पुरान प्रश्न स्मरण करैत छथि—कथा कखन लिखल जाय। एहि स्मरणसँ वर्तमान गोप कुमारक कार्य पहिने आरम्भ भेल लेखन-विवादक लम्बा परिणाम बनैत अछि। [–६३]मे छापाखानाक प्रसंगक संग सेहो ई सूत्र जोड़ल जा सकैत अछि: साधन तैयार होएबाक अर्थ कथा पूर्ण भऽ जायब नहि। तकनीकी क्षमता आ कथात्मक समापन दू भिन्न स्थिति छथि। एहन स्मरण उपन्यासक विशाल कालरेखा एक संवादमे समेटैत अछि, मुदा कथानकक वर्तमान अभी अदृष्ट अन्तिम घटनाक प्रतीक्षा करैत अछि।

‘एकटा अन्तिम अध्याय’ : पात्रक ज्ञान, पुस्तकक वास्तविक अन्त नहि

बूढ़बा ‘एकटा अन्तिम अध्याय बाकी’ कहैत छथि। ई हुनकर पात्रगत भविष्यमुखी घोषणा अछि, सम्पूर्ण ३०१-अध्यायक मूल पुस्तकक संरचनात्मक अन्तिम पन्ना एतय आ गेल—एहन पठन नहि। वर्तमान अध्याय [–३०] अछि; एकर बाद बहुत सँख्यामे अध्याय उपस्थित छथि। ‘अन्तिम अध्याय’क अर्थ बूढ़बाक दृष्टिमे आसन्न

निर्णायक घटना वा गामक कथा-संकलनक पर्याप्त क्षण भऽ सकैत अछि। एहि रूपकात्मक समापन-अभिलाषा आ पुस्तकक वास्तविक अध्याय-संख्या अलग राखल जाए। कथाक आत्मपूर्वानुमान अटल प्रकाशन-क्रम नहि।

उज्ज्वल, बटुकनाथ आ दूरक छाह : तीन सूत्रक पुनर्ग्रन्थन

बूढ़बा आगामी कठिन घटनामे उज्ज्वल, बटुकनाथ आ दूरक छाहक उपस्थितिक बात करैत छथि। [−३४] मे उज्ज्वलक अनिश्चित भविष्य, [−३३] मे बटुकनाथक संकट, [−३२] मे अज्ञात समुद्रपार नाम—एहि तीनू कथासूत्रकेँ वर्तमान अध्याय एक सम्भावित सङ्गमक रूप दैत अछि। पर वर्तमानमे एहि तीनूकेँ परस्पर भेटाएब, गठबन्धन करब वा संघर्ष करब वर्णित नहि। ई रचनाक पूर्वनियोजनक स्पष्ट युक्ति अछि; ओकरा घटित षड्यन्त्रक पुरावा मानल नहि जा सकैत।

‘साक्षी बनब’ : दस्तावेजकर्ताक कथात्मक दायित्व

बूढ़बाक अनुसार संग्रह ‘सजावट’ नहि, साक्षी बनब अछि। ई कथन गोप कुमारक श्रमकेँ केवल लिपिकीय काजक स्तरसँ अलग करैत अछि। सुख, दुःख आ अन्यायक इतिहास जोडनिहार लेखककेँ ओकर भावात्मक भार उठएबाक अछि। एहि प्रकार पुस्तकमे स्वयं पुस्तक बनेबाक प्रश्न नैतिक कार्यक रूप पबैत अछि। तथापि ई बूढ़बाक कथन अछि; गोप कुमार केना सम्पूर्ण पीड़ा अनुभव करैत छथि, ओकर निजी मनोमन्थन विस्तृत नहि। लेखकत्वक उत्तरदायित्व विषयक महत्त्वपूर्ण घोषणा सामने अछि, पूर्ण चरित्र-अन्तर्दृष्टि नहि।

पुरान बाढ़िक हेरायल नाम : संग्रहक ठोस क्षण

पुराना पञ्जी छानैत गोप कुमारकेँ शताब्दियों पहिने बाढ़िमे हेरायल एक नाम भेटैत अछि, जकर कात यादवानन्दक हाथक छोट टिप्पणी अछि। ई एक दृश्य संग्रहक अमूर्त महत्त्वकेँ प्रत्यक्ष क्षण दैत अछि। पुरान मृतक अथवा विस्मृत व्यक्तिक नाम नयका अभिलेखमे जोड़ल जाइत अछि, जइसँ नामक पुनःसंचरण दृश्य बनैत अछि। मुदा ओ नाम स्वयं पाठमे उच्चारित नहि; टिप्पणी सेहो उद्धृत नहि। अतएव कोन व्यक्ति पुनर्स्मृत भेल, ओकर मृत्यु अथवा गुम होयबाक विशिष्ट घटना—ई सबै जिज्ञासा खुलल अछि। कथनक भावप्रभाव ठोस कागचसँ, नामक अनुपस्थितिक बावजूद, बनैत अछि।

अनाम नामक विडम्बना : विषय आ प्रस्तुति बीच अन्तर

अध्यायक प्रधान संकल्प ‘हर हेरायल नाम’ बचाएब अछि, मुदा जिस पुराना नामक पुनरुद्धार सबसे निर्णायक दृश्य बनैत अछि, ओकर अक्षर पाठककेँ नहि भेटैत। एहि विरोधकेँ केवल भूल कहि निरस्त नहि कएल जाए; ई कथानकक प्रतिनिधित्व-सीमा चिन्हित करैत अछि। कथा नाम-सुरक्षाक नैतिक विजय देखबैत, मुदा व्यक्तिगत स्मरणक विशिष्टता सामान्य ‘एकटा नाम’मे समेटैत अछि। एक दीर्घ महाकाव्यात्मक गाथामे अनेक अनाम मृतकक प्रश्न संगत अछि; तथापि वास्तविक नाम उच्चारणक अभाव नामस्मृतिक सामूहिक दावाकेँ आंशिक अमूर्त बनबैत अछि।

‘पुल’क छवि : समयक बीच गतिशील सम्बन्ध

गोप कुमार अपन कामकेँ कागच जोड़बासँ बेसी शताब्दियोंक बीच पुल बान्हबाक रूपमे अनुभव करैत छथि। ई रूपक कालकेँ एक पार होएब योग्य दूरी बनबैत अछि, जतय मृतकक नाम वर्तमान गाम धरि घुरि सकैत अछि। ‘घुरि आबब’ वास्तविक शरीरक पुनर्जन्म नहि, नामक पुनर्पाठक सम्भावना अछि। पुलक छवि [–४१]क जड़ि-रूपकसँ भिन्न अछि: जड़ि स्थिर सम्बन्धक आधार छल, पुल छूटल युगक पारस्परिक आवागमनक साधन। एतय स्थानिक बिम्ब समयक कथाशिल्प बनैत अछि।

संकलनक गति : वर्तमान श्रम बनाम भावी पूर्णता

गोप कुमार अभिलेख जोड़ैत छथि, एहन काज पहिनेसँ चलि रहल अछि; बूढ़बा कहैत छथि निर्णायक अन्तिम घटनाक बाद पूर्ण संकलन होयत। एहि प्रकार काज आरम्भ भेल अछि, मुदा पूर्णता भविष्य लेल स्थगित। कथावाचक एहि दुइ स्थिति बीच साफ भेद रखैत छथि। यदि वर्तमान अध्यायकेँ ‘गामक सम्पूर्ण इतिहासक अंतिम प्रकाशित ग्रन्थ तैयार’क घटना मानल जाए, तँ बूढ़बाक प्रतीक्षाक शर्त आ गोप कुमारक आगूक तैयारी एकदम असंगत होयत। सही पठनमे ई निर्माणाधीन अभिलेखागारक कथा अछि।

गोप कुमार : आगामी लेखक अथवा केवल साक्षी?

कथाक अन्तमे गोप कुमार सोचैत छथि जे ओ अन्तिम अध्यायक साक्षी, ‘शायद लेखक सेहो’, बनताह। ‘शायद’क एहि सम्भावनामूलक पदकेँ अवश्यफल निष्कर्ष बनाबएब उचित नहि। पात्रक भावी भूमिका दोहरा खुलल अछि—देखनिहार आ लिखनिहार। ई लेखकत्वक अनिर्णय उपन्यासक आत्मसन्दर्भकेँ जीवन्त बनबैत अछि, किएक तँ पाठक अभी नहि जनैत जे अन्तिम कथा के कहत। पूर्वक बाह्य लेखन, गामक मौखिकता आ डिजिटल संग्रहक बीच लेखकक पहचान पुनः प्रश्न रूपमे उभरैत अछि।

लेखन-सत्ता : संग्रहकर्ता ककर कथा चुनैत छथि?

गोप कुमार ‘सम्पूर्ण’ गामक कथा समेटबाक संकल्प लैत छथि, मुदा प्रत्येक नाम, अन्याय आ पीड़ाक चयनक नीति स्पष्ट नहि। यादवानन्दक पञ्जी, विभाक सरकारी दस्तावेज, डिजिटल अभिलेख—भिन्न काल आ संस्थानसँ आयल सामग्री अछि। हुनकासँ कोन आवाज बचत आ कोन छुटत, ई प्रश्न कथात्मक रूपेँ खुलल अछि। उपन्यासक वर्तमान स्वर गोप कुमारपर भरोसा रखैत अछि, मुदा हाशियाक लोकसभक प्रत्यक्ष सहभागिता, गलती सुधारबाक प्रक्रिया अथवा मतभेदक सम्पादनक दृश्य नहि। सम्पूर्णताक लक्ष्य आ प्रतिनिधित्वक कठिनाई एकसंग पढ़ब योग्य अछि।

अभिलेखक ‘अमरता’ : कालपर विजयक रूपक

गामक लोक गोप कुमारकेँ स्मृतिक अमरता चाहनिहार कहैत अछि; गीत दस्तावेजकेँ समयसँ लड़ैत देखबैत अछि। कथा वास्तवमे कागच आ डिजिटल फाइलक क्षतिविहीन स्थायित्व, सदैव उपलब्धता अथवा सभ स्मृतिगाप भरल गेलाक साक्ष्य नहि दैत। अमरता एहि प्रसंगमे सामुदायिक आशा आ लेखनक प्रतिरोधक रूपक अछि। एकर प्रभाव

कतेको पीढ़ीक विस्मरणक भयविरोधी क्रियामे अछि; तकनीकी सुरक्षाक अनिवार्य गारंटी नहि। एहन सीमाबोध साहित्यिक रूपकक महत्त्व कम नहि, बल्कि ओकर उचित क्षेत्र स्पष्ट करैत अछि।

मौखिक स्मृति आ लिखित अभिलेखक मिश्रित सत्ता

बूढ़बाक दीर्घ मौखिक स्मृति गोप कुमारक संकलनकेँ दिशा दैत अछि; पुरान कागच आ डिजिटल माध्यम ओकरा भौतिक रूप दैत अछि। एहि गँठजोड़मे कण्ठ लिखित अभिलेखक शत्रु नहि, ओकर पृष्ठभूमि अछि। [–५७]क बाह्य विद्वानक भ्रमित पुस्तकक विपरीत गोप कुमार स्थानीय दृष्टिकोण सँ सम्पादन करय चाहैत छथि। तथापि स्थानीय होयब अपने-आप पूर्ण निष्पक्षता अथवा अभिलेखीय त्रुटिहीनता नहि सुनिश्चित करैत। रचनाक उपलब्धि ‘कथा ककरा कहबाक अधिकार’ प्रश्नकेँ तकनीक आ समयक संग जोड़नाइ अछि, नहि अपन अन्तिम सम्पूर्णताक अचूक घोषणा।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय : कथा अपन ग्रन्थरूपक सोझाँ

अध्याय [–३०] दीर्घ त्रयीमे आत्मसन्दर्भक केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि: पात्र अब केवल इतिहासक भोक्ता नहि, इतिहासक सम्भावित रचनाकार छथि। यादवानन्दक गोपन पञ्जी, विभाक सार्वजनिक कागच, सत्यव्रतक निजी नोटबुक आ गोप कुमारक समग्र संग्रह अलग लेखनप्रवृत्ति बनबैत अछि। बूढ़बाक ‘अन्तिम अध्याय’क स्थगन पाठकमे आगामी सङ्गमक अपेक्षा पैदा करैत अछि। सीमा—निर्णायक दस्तावेजक सामग्री, अनाम हेरायल व्यक्तिक नाम आ सम्पादनक कठिनाईक विरल दृश्य—तैओ बनी रहल अछि। अध्याय संकलनक घोषणा नहि, पूर्ण कथा लिखबाक पूर्वसन्ध्या अछि।

पाठाधार, सीमासूचना आ अगिला क्रम

एहि विवेचनक आधार मूल [–३०]क ‘लिखल थाती’ गीत, गोप कुमारक पुरान कागचसँ मोह, यादवानन्द–विभाक दस्तावेज-संग्रह, बूढ़बाक हरिपति-कथा स्मरण, भविष्यक उज्ज्वल–बटुकनाथ–दूरक छाहक उल्लेख, पुरान बाढ़िक अनाम नामक अभिलेखमे वापसी आ सम्भावित लेखकत्व अछि। एक पूर्ण प्रकाशित संग्रह अथवा आगामी निर्णायक सङ्गम एतय घटित नहि। अगिला [–२९] ‘चन्द्रपालक सपना’ सँ श्रमक भविष्य, हस्ताक्षर आ डिजिटल जालक विशिष्ट जोखिम कथामे आगू बढ़त।

प्रकरण ७२ | मूल अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपना

जन्मक कथा बनाम पतनक पूर्वकथा

‘चन्द्रपालक सपना’ शीर्षक पहिल दृष्टिमे चन्द्रपालक स्वप्न आ ओहि स्वप्नक टूटबाक घटना अपेक्षित करैत अछि। आरम्भिक गीतमे सट्टाक जाल, बिनु बुझल हस्ताक्षर आ धोखाक कथा संक्षेपमे प्रस्तुत अछि; प्रारम्भिक सम्पादकीय वाक्यो कानूनक डिग्री आ जालमे फँसबाक संकेत दैत अछि। मुदा मुख्य घटनात्मक गद्य चन्द्रपालक जन्म, बूढ़बाक व्याकुलता आ ओकर नाम अभिलेखमे जोड़बाक निर्णयपर टिकैत अछि। ई असमानता कथानकक

महत्वपूर्ण बनावट अछि : संकटक सम्भावना पाठकक सोझाँ पहिने पहुँचि जाइत अछि, जबकि जीवनक दृश्य एखन शैशवमे अछि। गीतक भविष्यज्ञानकेँ जन्मक राति घटल ठगी मानब अनुचित हएत।

त्रिस्तरीय आरम्भ : फकरा, गीत आ गद्य

फकरा ‘सपना जकर आँखिमे, धोखा तकर पएरमे’ एकटा सामान्य नैतिक संरचना बनबैत अछि; गीत ओहि संरचनामे चन्द्रपालक नाम रखैत अछि; गद्य कथा ओकर सामाजिक आ वंशगत ठाम निश्चित करैत अछि। तीनू स्तरक सूचना समान नहि। फकरा जोखिमक सिद्धान्त कहैत अछि, गीत भविष्यक सम्भावित घटनाकेँ लगभग सम्पन्न क्रियाक भाषा दैत अछि, गद्य वर्तमानक जन्मक सीमित घटना देखबैत अछि। पाठककेँ एकहि समयमे तीन अलग काल-वृत्त धारण करय पड़ैत अछि। एहि परतदार कथनकेँ एकरेखीय कथासार बनायब अध्यायक वास्तविक तनावकेँ मेटा देत।

मेरठ : गामक परिधिसँ कथाजगतक विस्तार

चन्द्रपाल बत्राक जन्म मेरठमे होइत अछि; परिवार बरखों पहिने गाम छोड़ि कतेको नगर घूमलाक बाद ओतय बसल अछि। गढ़ नारिकेलसँ सम्बन्ध अब ‘पुरान नाम’ आ कखनो-कखनो अबैत चिट्ठी धरि सीमित अछि। कथावाचक एतय दूरीकेँ केवल भूगोलक अन्तर नहि, सम्बन्धक क्षीण भेल रूपमे मापैत छथि। गामक मूल मंच स्थिर रहितहुँ कथाक पात्रक जन्म बाहर होइत अछि। एहि बाह्य स्थानकेँ केन्द्रमे आनब उपन्यासक क्षेत्र-विस्तार थिक; चन्द्रपाल स्वयं वर्तमान गद्यक दृश्यमें गाम आबैत छथि—एहन घटना नहि अछि।

बूढ़बाक अस्थिरता : ज्ञान नहि, पूर्वबोध

जन्मक राति बूढ़बा व्याकुल छथि, आ गामक लोक प्रश्न करैत अछि जे दूरक अनचिन्हार बच्चाक लेल ई चिन्ता किएक। पाठ ओकरा चन्द्रपालक भविष्यक सम्पूर्ण प्रत्यक्ष दर्शन नहि बनबैत; बूढ़बा कहैत छथि जे ई बच्चा कालक्रममे हुनकर कथाक अंश बनत। भविष्यक कथासम्बन्धक सूचना प्राप्त होइत अछि, परिणामक निर्दिष्ट क्रम नहि। बूढ़बाक भावदशा पाठकक प्रत्याशा बढ़बैत अछि, मुदा कारणिक घटनाक विवरण सुरक्षित नहि करैत। एहि प्रकार पात्रक अन्तर्ज्ञान कथावस्तुक खुलेलासँ बेसी, ओकर विलम्बित उद्घाटनक उपकरण बनैत अछि।

गोप कुमारक प्रश्न : साक्षी-सीमाक परीक्षण

गोप कुमारक सीधा प्रश्न अछि—‘ई बच्चा त गामक नहि थिक’। एहि प्रश्नक माध्यमसँ पाठ स्वयं अपन पुरान कथाक्षेत्रक परिभाषा परखैत अछि। गोप कुमार मात्र सुननिहार पात्र नहि; ओ नायक-वृत्तक सीमा निर्धारित करएवाला आन्तरिक पाठक जकाँ काज करैत छथि। बूढ़बाक उत्तर गामक माटिपर जन्मलेबाक शर्तकेँ कमज़ोर करैत अछि। गोप कुमारक प्रश्न नहि होइत तँ ‘दूरस्थ सम्बन्ध’ नामक नव संग्रह-वर्ग मात्र प्रशासनिक विस्तार बनि रहित; संवाद एकरा कथात्मक मोड़ आ वैचारिक परीक्षा दुनू बना दैत अछि।

जालक भूगोल बनाम स्मृतिक भूगोल

बूढ़बाक कथनमे तार आ स्क्रीनक ‘नव गोहि’ भौगोलिक सीमा नहि मानैत। ओकर सामना करबाक लेल साक्षीभाव गामक महारक बाहर बढ़ेबाक आवश्यकता पड़ैत अछि। कथावाचक साइबर-जालक वास्तविक तकनीकी नक्सा नहि दैत; स्थानिक सीमाविहीनताक बिम्बक सहारे स्मृतिक दायरा बदलैत छथि। धोखाक विश्वव्यापी जाल ई अध्यायमे प्रत्यक्ष अनुसन्धानेँ सिद्ध नहि; ओकर सम्भावित व्यापकता कथनक पूर्वचिन्ता थिक। तथापि कथा-रूपमे ई कारण पर्याप्त अछि जे गाम अपन सदस्यताक परिभाषा नव सिरे सँ लिखय।

नाम : वंशसूत्रसँ कथासूत्र धरि

चन्द्रपालक परिवारक गामसँ ‘दूरस्थ सम्बन्ध’ अछि, मुदा ओकर भावी कथा गढ़ नारिकेलक बृहत्तर आख्यानसँ जुड़बाक संकेत भेटैत अछि। नाम एहि प्रसंगमे रक्त-वंशक प्रमाण मात्र नहि; भविष्यक कथात्मक प्रवेशक चिह्न अछि। बूढ़बा जन्मे दिन नाम धेने छथि, गोप कुमार बादमे ओकरा संग्रहमे प्रवेश दैत छथि। पहिल काज स्मृतिगत स्वीकृति, दोसर काज लेखकीय व्यवस्थापन अछि। बच्चाक निजी चेतना अज्ञात रहैत अछि; एतय ओकर ‘नाम’ पात्रक विकसित स्वभावसँ पहिने कथा-स्थान प्राप्त करैत अछि।

‘दूरस्थ सम्बन्ध’ : नव अभिलेखीय वर्गीकरण

गोप कुमार अपन डिजिटल संग्रहमे एकटा पृथक खण्ड जोड़ैत छथि, जाहिमे गामसँ जुड़ल मुदा बाहर जन्मल लोकक नाम रहत। ई छोट घटना दीर्घ उपन्यासक अभिलेख-नियमनमे परिवर्तन अछि। पहिने पञ्जी स्थानीय सामाजिक अनुभवक अनुपस्थित नाम फेर पाबय चाहैत छल; आब ओ भविष्यक सम्भावित भागीदारकेँ भौगोलिक सीमा बिनु चुनय चाहैत अछि। चन्द्रपाल एहि श्रेणीक पहिल प्रविष्टि छथि। ई आयोजन सम्भावित कथा-जगतकेँ व्यवस्थापित करैत अछि, मुदा एखन आन दूरस्थ नामक सूची वा अभिलेखीय छनौट-नियम पाठ नहि बतबैत।

वर्तमान दृश्य आ दूरस्थ भविष्यक असमान अवधि

गद्यक मुख्य समय लगभग जन्मक राति आ ओहि रातिक चिन्तन अछि। ओकर भीतर ‘बरखों पहिने’ परिवारक विस्थापन, भविष्यक संकट आ अज्ञात कालक्रम समाहित अछि। एकटा सीमित वर्तमान-दृश्यकेँ दीर्घ पूर्वकाल आ खुलल भविष्य सँ घेरल गेल अछि। समय-सङ्कोचन एतय अर्थ-घनत्व पैदा करैत अछि, मुदा चन्द्रपालक शिक्षा, युवावस्था आ आर्थिक जोखिमक क्रम विस्तारसँ उपस्थित नहि। कथावाचक परिणामक प्रतीक्षा पाठकपर छोड़ैत छथि, घटनाक बीचक अवधि भरबाक छूट आलोचककेँ नहि।

बूढबाक ‘पहरा’ : सामूहिक दृष्टिक रूपान्तरण

पुरान साक्षीभाव मृत अथवा संकटग्रस्त लोकक नाम स्मरण करैत छल; आब बूढ़बा एक एहन बालकक नाम रखैत छथि जकरा सम्भावित डिजिटल धोखासँ बचबाक कथागत काम आगू बनि सकैत अछि। नाम-रक्षण प्रतिक्रियात्मक स्मारकसँ पूर्वाभासी सतर्कता बनैत अछि। मुदा एहि क्षण बच्चाकेँ कोन प्रत्यक्ष सुरक्षा, सलाह अथवा परिवारक सहमति भेटल—ई गद्य नहि कहैत। ‘पहरा’ रूपकक स्तरपर व्यापक अछि, व्यवहारक स्तरपर

अभी अभिलेखीय प्रवेश अछि। ई अन्तर स्मृतिक शक्ति आ ओकर व्यावहारिक सीमाकेँ एक संग उजागर करैत अछि।

पाठकक ज्ञान चन्द्रपालसँ आगाँ

चन्द्रपाल नवजात छथि; अपन भविष्य, गामसँ सम्बन्ध अथवा गोप कुमारक नोटबुकक विषयमे ओ किछु नहि जनैत। पाठक गीत, व्याख्यात्मक आरम्भ आ बूढ़बाक उद्वेगद्वारा ओकरा सँ बेसी संकेत प्राप्त करैत अछि। ई ज्ञान-असमानता नाटकीय विडम्बनाक आरम्भ अछि—पाठक आगामी खतरा देखबाक अपेक्षा बनबैत अछि, पात्र नहि। मुदा आगामी संकट निश्चित होएबाक भान आ ओकर वास्तवमे घटि चुकबाक दावा अलग वस्तु छथि। अन्तरक एहि चेतना बिनु पाठक मूल गद्यक शैशव-स्थितिकेँ छोट कथित परिणाममे बदलि देत।

दीर्घ वंशावलीक नयका गाँठ

ई प्रकरण ‘गोप कुमारक दस्तावेज’क तुरन्त बाद अबैत अछि। पिछला अध्यायमे ग्रामस्मृतिक संकलन अन्तिम घटनाक प्रतीक्षा करैत छल; आब संकलनक क्षेत्र अचानक मेरठ धरि फैलैत अछि। तात्पर्य ई नहि जे अन्तिम कथा पहुँचि गेल, बल्कि ओकर सम्भावित पात्रसभक चिन्हारी शुरू भऽ रहल अछि। एक पात्र अपन जीवन-वृत्तान्त पूरा करैत छथि ताहिसँ पूर्व दोसर पात्र जन्म लेलनि—एहन क्रम त्रयीकेँ जीवनवृत्तान्तक शृंखलाक बदला असमाप्त साक्षी-प्रक्रिया बनबैत अछि।

चिट्ठीसँ डिजिटल जाल धरि माध्यमक दूरी

दूरस्थ परिवार आ गामक सम्बन्ध ‘कहियो-कहियोक चिट्ठी’ धरि सीमित छल; गोप कुमारक डिजिटल अभिलेख आब ओहि विरल सम्बन्धकेँ नव मानचित्रमे रखैत अछि। चिट्ठी कालान्तरित समाचारक माध्यम, डिजिटल अभिलेख सूचनाकेँ जोड़बाक संरचना थिक। मूल गद्य चन्द्रपालक घरसँ लाइव सम्पर्क, वीडियो वार्ता अथवा स्वतः डाटा-प्राप्ति दर्शाबैत नहि। अतएव नव माध्यमक शक्ति प्रतीकात्मक आ संस्थागत रूपमे उभरैत अछि, तकनीकी सर्वज्ञता रूपमे नहि। ई भेद उपन्यासक माध्यम-इतिहासकेँ विश्वसनीय ढंगसँ पढ़बाक लेल आवश्यक अछि।

शीर्षकक ‘सपना’ : ककर दृष्टि?

गीत चन्द्रपालक स्वप्नकेँ छलक जोखिमसँ जोड़ैत अछि, मुदा गद्यमे चन्द्रपालक अन्तरंग स्वप्न नहि देखाओल गेल। एतय ‘सपना’ शब्द सम्भावित आकांक्षा, बूढ़बाक आशङ्का आ भविष्यसूचक कथनक समवर्ती संकेत बनैत अछि। बूढ़बाक रातिक अस्थिरता तथ्य, किन्तु चन्द्रपालक अपन इच्छा एखन अनिर्दिष्ट। शीर्षकक अर्थ एक पात्रक सचेत जीवनानुभवक बदला आगू खुलनिहार कथा-दिशाक सूचना होइत अछि। ई भेद पठनक दृष्टिसँ निर्णायक अछि, किएक तँ बालकक भीतरक विचार कल्पित करब उचित नहि।

शैलीगत पुनरावर्तन : नाम आ सीमा

गीत ‘नाम’, ‘गाम’, ‘सीमा’ बारम्बार जोड़ैत अछि; बूढ़बा ‘सीमासँ बाहर’ पसरनिहार पहराक भाषा पुनः बजैत छथि; गोप कुमार अभिलेखमे ओहिसँ जुड़ल श्रेणी बनबैत छथि। एहि तीन स्तरमे एकहि शब्द-समूह अलग कार्य

करैत अछि—काव्यात्मक सूत्र, संवादक निर्णय आ दस्तावेजक प्रशासनिक रूप। पुनरावर्तन निष्क्रिय नहि: अन्तमे प्रारम्भिक कथन अभिलेखीय संरचना बनि गेल। एहि परिवर्तनमे उपन्यासक सामान्य नैतिक सन्देश कथामे एकटा मापल जा सकनिहार क्रियाकेँ जन्म दैत अछि।

कथा-सीमा सम्बन्धी आलोचनात्मक सावधानी

प्रारम्भिक परिचय आ गीतमे कानूनक डिग्री, सट्टाक जाल तथा हस्ताक्षरक धोखा अबैत अछि, मुदा मूल गद्य मे भविष्यक एहि विवरणसभक क्रम, समय, पात्र आ परिणाम नहि भेटैत। एहि असङ्गत कथन-स्तरकेँ पाठक असमय प्रकट भविष्य-संकेत रूपेँ देखत। ‘मेरठमे युवक सट्टामे पाइ हारि गेल’ कहि वर्तमान अध्यायकेँ संक्षेपित करब गद्यक उपस्थित घटनाकेँ गलत स्थान देत। नकारात्मक उपलब्धि—जे अभी नहि घटल—एहि विश्लेषणक उतबहि आवश्यक अंश अछि जतबे घटल घटनाक प्रस्तुति।

समग्र निर्णय : पसरैत गाम, अनिश्चित भविष्य

अध्याय [–२९]क वास्तविक नवता चन्द्रपालक भविष्यक दारुण ठगी नहि, ओकर जन्मे दिन गामक स्मृति-सीमाक विस्तार अछि। बाहरी शहरमे जन्मल दूरस्थ सम्बन्धीक नाम गोप कुमारक अभिलेखमे प्रथम प्रविष्टि बनैत अछि; बूढ़बाक चिन्ता आगूक कथाक प्रत्याशा रचैत अछि। लोकगीत भविष्यकेँ जल्दी संक्षेपित करैत अछि, गद्य वर्तमानकेँ धीमा आ सीमित रखैत अछि। एहि द्वैतसँ उपन्यास आंचलिक आख्यानसँ व्यापक डिजिटल-संसारक कथा दिस बढ़ैत अछि, मुदा चन्द्रपालक जीवनक निर्णायक घड़ी एखन अगिला प्रसंगक प्रतीक्षा मे अछि।

प्रकरण ७३ | मूल अध्याय –२८ — राघवक कोड

प्रतिभाक परिचयसँ आरम्भ होइत कथा

अध्याय एक प्रतिभावान बच्चाक जन्म आ असाधारण तकनीकी सहजताक वर्णनसँ शुरू होइत अछि। राघव अभिनवक परिवारक नगरवासी शाखामे जन्मैत छथि; बच्चाक सीखबाक तीव्रता तुलना द्वारा स्थापित अछि—नारिकेल पातपर अक्षर सिखनिहार गामक बच्चा आ कोड बुझनिहार राघव। एहि तुलनामे तकनीक पुरान शिक्षाक विरुद्ध निरर्थक उच्छेद नहि, एक नयका भाषिक संसार बनैत अछि। मुदा प्रतिभाक वर्णन पूर्ण विकसित व्यक्तित्वक विवरण नहि; गद्य राघवक राजनीतिक मत, निजी मित्रता, संस्थागत नौकरी आ आगामी निर्णयक वृत्तान्त नहि दैत। उद्घाटन ओकर सम्भावित क्षमता रचैत अछि।

‘कोड’ : माध्यम आ चरित्रक अन्तर

शीर्षकक कोड यन्त्रक भाषा अछि; गीत कहैत अछि जे प्रत्येक कोडक भीतर ओकर निर्माणकर्ता हाथक नाम छिपल रहैत अछि। एहि रूपकसँ तकनीकी प्रक्रियाक नैतिक दायित्व मानव पात्रपर आनल जाइत अछि। मूल गद्य कोनो विशिष्ट प्रोग्रामिंग-भाषा, एल्गोरिदम अथवा साइबर-औजारक विवरण नहि दैत; ‘कोड’क कथात्मक अर्थ तकनीकी शक्ति आ ओकर उपयोगक चयन अछि। एहि कारण राघवक प्रतिभाकेँ विशिष्ट अपराधक तकनीकी

प्रमाण बनायब पाठमे नहि आधारित। उपन्यास तकनीकक क्रियाविधिसँ बेसी निर्णयकर्ताक चेतनापर केन्द्रित अछि।

सम्भावित दुई दिशा : रक्षा आ विनाश

बूढ़बा राघवक कौशल रक्षा आ विनाश दुनू दिशा लऽ जा सकबाक चिन्ता व्यक्त करैत छथि। ई नैतिक द्वन्द्व कथानकमे अभी विकल्प अछि, निष्पन्न चुनाव नहि। गीत सेहो ‘कोड जँ नाम बचाबय’ आ ‘जँ नाम मेटाबय’क शर्ताधारित संरचना रखैत अछि। आलोचक लेल ‘जँ’ पद महत्त्वपूर्ण अछि: ओ सम्भाव्य संसारसभकेँ एकरेखीय भविष्य-सत्यसँ अलग करैत अछि। हुनकर नैतिक स्थिति समयक संग विकसित भऽ सकैत अछि, मुदा एखन पाठ ओहि विकासक पथ आरम्भ मात्र करैत अछि।

किशोर-कौशलक संक्षिप्त आवृत्ति

‘कहियो’ जटिल यन्त्र ठीक करब, ‘कहियो’ नुकाएल गलती पकड़ब—एहि पुनरावृत्तिमूलक शब्दसभसँ कथावाचक अनेक सम्भावित सघन घटनाकेँ दू-तीन वाक्यमे समेटैत छथि। एक घटना पूर्ण दृश्य बनि नहि अबैत; ई राघवक क्षमता प्रमाणित करबाक आभासक शृंखला अछि। कथनकाल विस्तृत किशोरावस्थाकेँ छोट परिच्छेदमे बाँधैत अछि। मुदा गामक गरीब परिवारक कागच सुलझेबाक प्रसंग विशेष दृश्यक रूपमे रुकैत अछि, जाहिमे दक्षता परिणामसँ जुड़ैत अछि। एहि गति-परिवर्तनसँ मुख्य नैतिक प्रश्न ठोस धरातल पबैत अछि।

गरीब परिवारक कागच : कौशलक देखल उपयोग

गामक गरीब परिवारक ‘हारल-थाकल कागच’ राघव अपन यन्त्रक कौशलसँ सुधारैत छथि आ परिवारकेँ ओकर हक भेटैत अछि। एहि कथामे तकनीक वास्तविक सहायताक माध्यम बनैत अछि। मुदा पाठमे कागचक दफ्तर, प्रपत्रक विधिक प्रकृति अथवा अधिकार-प्राप्तिक औपचारिक प्रक्रिया निर्दिष्ट नहि; तेँ राघव सरकारी सिस्टम हैक केलक अथवा डेटाबेस बदललक—एहन कथन अनुचित। उपलब्ध घटनामे ओकर सकारात्मक क्रिया देखल गेल; भविष्यक समस्त चुनावक गारंटी एकहि क्रिया नहि बनैत।

प्रश्नचिह्न : दस्तावेजक भीतर खुलल भविष्य

गोप कुमार राघवक नाम लग प्रश्नचिह्न जोड़ैत छथि। अभिलेख एक निश्चित निर्णय लिखि समाप्त नहि होइत; ओ स्वयं अपूर्णताक चिह्न संग्रह करैत अछि। एहि वस्तुगत प्रश्नचिह्नकेँ पाठकीय प्रतीक्षाक दृश्य प्रतीक बुझल जा सकैत अछि। पूर्व अध्यायमे चन्द्रपालक प्रविष्टि दूरीक विस्तार छल; एतय राघवक प्रविष्टि नैतिक अनिश्चितताक लेखन अछि। दस्तावेज एतय स्मृतिसंग्रह मात्र नहि, भविष्यक कथा-रचबाक खुलेल ढाँचा थिक। खाली ठाम समय भरत—ई स्पष्ट कथन परिणामक स्थगन करैत अछि।

पात्र-स्वभावक मूल्यांकनमे कथावाचकीय दूरी

गोप कुमार उत्साहित छथि; बूढ़बा सावधान; किछु सयान लोक राघवक क्षमता देखि सहायताक संग ठगीक आशङ्का करैत छथि। एहि विभिन्न अभिमतक बीच कथावाचक राघवकेँ सम्पूर्ण दुष्ट वा अवश्य नैतिक रक्षक

घोषित नहि करैत। उत्साह आ आशङ्का अलग-अलग पात्रदृष्टि छथि, सर्वज्ञ कथनक निर्विवाद फैसला नहि। एहि अन्तरकेँ पढ़ब चरित्रक जटिलता सुरक्षित रखैत अछि। पाठक जानैत छथि जे राघव मदद करि चुकल छथि, मुदा राघवक अन्तिम रूप एखन अनिर्णीत अछि।

नारिकेल पात आ कम्प्यूटर : शिक्षाक रूपान्तरित वस्तु

पुरान नारिकेल-पात लेखन आ राघवक कोड-शिक्षा बारम्बार एकहि उपन्यासक शिक्षातन्तु मे रखल गेल अछि। एक माध्यम हस्तलिखित अक्षरक अभ्यास, दोसर डिजिटल संकेतक परिचालन करैत अछि। एहि तुलनामे आधुनिकता कथाक बाहर आबि पुरान स्मृति नष्ट नहि करैत; स्मृतिक संरक्षणक चुनौती ओकर भीतर बनैत अछि। राघवक पात्र पाठशाला-वंशक उपरान्त तकनीकक आचारिक उपयोगक परीक्षा बनैत अछि। तथापि राघव स्वतः पाठशालाक छात्र रहलाह—ई विशिष्ट तथ्य अध्याय नहि कहैत, तुलना सामान्य शैक्षिक रूपक अछि।

तलवारक रूपक : तकनीकक निष्पक्षता कतेक?

बूढ़बा कौशलकेँ तलवारक तुलनामे रखैत छथि—ओ जकर हाथमे रहय, उपयोग तकर मनपर निर्भर। ई पात्रक शिक्षात्मक रूपक थिक। कथात्मक दृष्टिसँ एकरा राघवक चरित्र-विकल्पक लघुसूत्र बुझल जाय; समस्त तकनीक सामाजिक रूपसँ निष्पक्ष अछि, एहन दार्शनिक अन्तिम निर्णय एतय आवश्यक नहि। तकनीकी उपकरणक पहुँच, संसाधन आ उपयोगक अवसर राघवक व्यक्तिगत इच्छासँ बाहर सेहो कतेको शक्ति रखैत अछि, मुदा अध्याय ओही व्यवस्थागत पक्षक विस्तृत विवेचन नहि करैत। आलोचना पात्रक कथित सिद्धान्त आ रचनाक सीमाक बीच भेद राखैत अछि।

राघवक मौन : आत्मकथनक अनुपस्थिति

अध्यायमे राघवक नाम, जन्म, कौशल आ सहायक क्रिया उपलब्ध अछि, मुदा ओकर प्रत्यक्ष आत्मस्वर दीर्घ संवाद रूपमे नहि उपस्थित। गोप कुमार आ बूढ़बा ओकर भावी नैतिक चुनावपर चर्चा करैत छथि; राघव स्वयं अपन इच्छाक कारण नहि बतबैत। ई संरचना पात्रकेँ अरूपित सम्भावना बनबैत अछि—ओकरा विषयमे लोक कहैत अछि, ओ स्वयं कम बाजैत अछि। एहि कारण ओकर मनोविज्ञान निश्चित करब उचित नहि। कथा कौशलपर सामुदायिक मूल्यांकन थोपबाक आ पात्रक स्वतन्त्र चुनावक बीच तनाव छोड़ि दैत अछि।

‘नाम’ आ ‘संख्या’क विकसित विवाद

अघिला कम्प्यूटर-अध्यायमे संख्या नामक विशिष्ट जीवनकथा समेटि नहि सकबाक चिन्ता छल। एहि प्रकरणमे नाम कोडक निर्माता आ प्रभावित लोक दुनूक पहिचान बनैत अछि। कोड जँ ‘नाम बचाबय’ तँ पहरुआ, ‘नाम मेटाबय’ तँ गोहि—गीतक एहि द्वन्द्वमे स्मृतिक पुरान भाषा तकनीकी नैतिकता मे प्रवेश करैत अछि। तथापि वास्तविक एन्क्रिप्शन, नाम-डेटा अथवा प्रणालीक नुकसानक विशिष्ट उदाहरण नहि देल गेल। गीत सामाजिक अर्थ रचैत अछि, तकनीकी विवरण नहि।

आघातसँ पहिने पात्र-संकेतक व्यवस्था

नव डिजिटल-अपराध-वृत्तान्तक मध्य राघवक परिचय एक सम्भावित प्रतिपक्षी अथवा सहयोगीक प्रवेश बनैत अछि। कतहु अपराध घटबाक प्रतीक्षाक संग सम्भावित प्रतिरोधक कौशल सेहो जन्म लैत अछि। ई कथाविन्यास पाठककेँ एकमात्र असहायताक स्थिति मे नहि छोड़ैत; मुदा उद्धार एखन सुनिश्चित नहि। भविष्यक अपरिचित संकट लेल चरित्रक क्षमता जमा करबाक ई विधि दीर्घ आख्यानमे देरिसँ निष्पन्न होनिहार सम्बन्धक तैयारी करैत अछि। राघव वर्तमानमे ककरा संग ठाढ़ हेताह—एहि सवालक उत्तर अभी स्थगित अछि।

भूगोलक विस्तृत शाखा : नगर, गाम आ अभिलेख

चन्द्रपाल मेरठमे दूरस्थ सम्बन्धीक रूपमे, राघव अभिनवक नगरवासी शाखामे प्रस्तुत होइत छथि। लगातार दू अध्याय गामक सीमा बाहर पात्र-पहुँच बनबैत अछि। गोप कुमारक अभिलेख दुनूकेँ एकहि वृहत स्मृति मे जोड़बैत अछि। एहि प्रवाहमे उपन्यास बाहरी नगरकेँ प्रत्यक्ष विस्तृत दृश्य बनएबाक बदला गामक पीपर लग संबोधनक माध्यमसँ आत्मसात करैत अछि। स्थल-परिवर्तनक कथा स्वयं दस्तावेज, खबर आ संवादक रास्ते गाम धरि घुरैत अछि।

‘असाधारण’क अतिशयोक्तिपूर्ण स्वर

राघवक सीखबाक शक्ति ‘चुटकीमे’ इंजीनियरक बरखक कठिनाइ सुलझएबा समान कहल गेल अछि। ई पात्र-स्थापना प्रशंसात्मक अतिशयोक्तिसँ युक्त अछि; राघवक वास्तविक दक्षताक मापनीय परीक्षा वा स्वतन्त्र तकनीकी परीक्षण पाठमे नहि। कथावाचक एक प्रतिभाशाली पात्रकेँ त्वरित स्थापित करबाक लेल गुणधर्म बढ़ा कऽ प्रस्तुत करैत छथि। ई शैली प्रतीकात्मक उपयोगी अछि, मुदा चरित्रक विकासमे प्रश्न उठबैत अछि—बहुत प्रारम्भिक असाधारणता संघर्षक परत कम करैत अछि। आगामी कथासँ एहि सरल स्थापना जटिल बनत कि नहि, एखन अज्ञात अछि।

पूर्वपीढ़ीक नैतिक शिक्षा : स्वतन्त्र विकल्पक सम्भावना

बूढ़बा राघवकेँ गाम, विवेक आ नाम मन राखबाक शर्त पर उपयोगी पहरुआ बनबाक सम्भावना दैत छथि। मुदा बूढ़बा स्वयं कहैत छथि जे हुनका राघव कोन दिशा चुनत, ज्ञात नहि। ई स्वीकृति महत्त्वपूर्ण अछि; दीर्घ-साक्षी सब किछु पहिने तय नहि करैत। भविष्यसूचक स्वरक सीमाक भीतर पात्रक नैतिक स्वातन्त्र्य बचल रहैत अछि। अभिलेखक प्रश्नचिह्न एहिए मोकामा बूढ़बाक अनिश्चितताकेँ भौतिक आकार दैत अछि।

कथासूत्र आ प्रदर्शनक अनुपात

अध्यायक बड़का हिस्सा राघवक क्षमता आ बूढ़बाक शिक्षा बतबैत अछि; केवल गरीब परिवारक कागच सुलझेबाक प्रसंगमे घटनात्मक परिणाम स्पष्ट अछि। तात्पर्य ई जे वर्णनात्मक उद्घोषणा आ दृश्य-अभिनयक अनुपात असमान अछि। पाठककेँ चरित्रक सम्भावित पैघ भविष्यक कथन अधिक भेटैत अछि, आ ओहि भविष्यक सामना करैत संघर्ष कम। ई कथा-कौशल यथास्थान पूर्वपरिचयक उद्देश्य निभबैत अछि, मुदा स्वतन्त्र लघुकथा रूपमे घटनाक घनत्व सीमित रखैत अछि।

समग्र निर्णय : खुलल चुनावक कथा

अध्याय [-२८] आधुनिक तकनीकी पात्रकेँ नैतिक द्वन्द्वक सहारे प्रस्तुत करैत अछि। राघवक सहायक क्रिया सकारात्मक आरम्भ, बूढ़बाक चिन्ता भविष्यक खुलल छोर आ गोप कुमारक प्रश्नचिह्न आन्तरिक अभिलेखमे अनिश्चितताक लेखन अछि। लोकगीत सम्भावित अपराध आ सुरक्षा दुनू दृश्यित करैत अछि, गद्य निर्णायक चुनाव स्थगित रखैत अछि। ई अध्याय अन्तिम निर्णय नहि, निर्णय सम्भव करएवाला क्षमता प्रस्तुत करैत अछि। दीर्घ त्रयीमे एकर महत्त्व भावी घटना-अन्तरसम्बन्धक पूर्वभूमिकामे अछि, तैयार नैतिक निष्कर्षमे नहि।

प्रकरण ७४ | मूल अध्याय -२७ — आरुणिक निर्माण

निर्माणक कथा : वस्तु नहि, प्रक्रियाक निरन्तरता

‘आरुणिक निर्माण’ शीर्षक एकटा स्थिर पूल वा बान्हक परिणाम बुझा सकैत अछि, मुदा गद्यक वास्तविक केन्द्र निर्माणक बादक जतन अछि। आरुणि पुरान बान्ह नव रूपेँ बनबैत छथि, नव पूर्वानुमानक यन्त्र जोड़ैत छथि, आ बाढ़िमे बान्हक परीक्षा होइत अछि। बूढ़बा बुझबैत छथि जे एक बेर पक्का बनि गेल वस्तु स्वतः शाश्वत नहि होइत। एहि कारण कथाक निर्माण-वृत्त एक दिनक समाप्त घटना नहि, देखभालक पीढ़ीगत चक्र बनैत अछि। एतय अन्त भविष्यमे दोहराओल जाएवाला श्रमक आरम्भ थिक।

बाल्यस्मृतिमे आपदा : प्रेरणाक पूर्वकथन

आरुणि बचपनक बाढ़िक कथा आ इन्द्राणीक पूर्वचेतावनी-व्यवस्थाक स्मरण रखैत छथि। ओ घटनाक प्रत्यक्ष विस्तृत पुनर्स्मरण एतय नहि; कथावाचक ओकरा आरुणिक पेशा चुनबाक पृष्ठभूमिक रूपमे रखैत छथि। बाढ़ि एतय मात्र बाधा नहि, पेशागत चेतनाक कथा-कारण बनैत अछि। पाठमे ई नहि कहल गेल जे आरुणि स्वयं पूर्व अध्यायक विशिष्ट दुर्घटना प्रत्यक्ष देखलनि; ‘कथा’ सुनने होयब आ स्वतः भोगने होयबक अन्तर सुरक्षित राखब जरूरी अछि। स्मृति अनुभवक प्रसारण करैत अछि, केवल व्यक्तिगत स्मरण नहि।

कमला-बलान : स्थायी भूमि नहि, सक्रिय कथा-स्थान

कमला-बलान नदी गद्यक निर्णायक भूगोल थिक। ओकर जलचढ़ाव, पुरान माटिक बान्ह आ बाढ़िक पुनरावृत्ति कथा-क्रियाकेँ प्रेरित करैत अछि। नदी केवल सौन्दर्यवर्णनक पृष्ठभूमि नहि; ओकर व्यवहार सिखनाइ, योजना बनायब आ राति-जागरणक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि। परन्तु पाठमे जलस्तरक संख्या, प्रवाहक माप अथवा बान्हक तकनीकी नक्सा नहि; घटना पर्यावरणीय सम्बन्धक साहित्यिक रूपेँ उपस्थित। एहि चरित्रमे मानव आ नदीक सम्बन्ध सदा बदलैत, परीक्षामूलक बनल अछि।

‘पक्का’ शब्दक भ्रम आ ओकर प्रतिवचन

आरुणि एहन पुल-बान्ह चाहैत छथि ‘जे कहियो टूटय नहि’; ई पात्रक इच्छावाक्य अछि, सिद्ध उपलब्धि नहि। बूढ़बा तुरन्त देखभाल बिनु मजबूत निर्माणक कमजोर पड़बाक सम्भावना कहैत छथि। गीतक स्थायित्वक प्रशंसा आ गद्यक रखरखाव-विषयक सावधानी एक-दोसराकेँ संशोधित करैत अछि। एहन दोहरा स्वर उपन्यासकेँ यान्त्रिक

प्रगतिवादसँ बचबैत अछि। नयका पक्का बान्ह एकटा बाढ़िमे टिकब एहि बातक प्रमाण थिक जे ओहि परीक्षामे ओ काज केलक; सभ भविष्यक आपदामे ओ अभेद्य रहत, एकर प्रमाण नहि।

पुरान ज्ञानक ठोस पात्र : बुजुर्ग आ स्त्री

आरुणिक निर्माण केवल नगरमे सीखल इंजीनियरिंगक परिणाम नहि बताओल गेल। बुजुर्ग नदीक स्वभाव जानैत छथि, स्त्रीसभ पानिक चढ़ाव पढ़ैत छलीह—एहन पूर्वज्ञानक उल्लेख अछि। ई सामुदायिक अवलोकन-कौशलक कथात्मक सम्मान थिक। मुदा एहि अध्यायमे कोन स्त्री कोन यन्त्र-निर्णय देलीह अथवा कोन बुजुर्गक सुझाव बनावट बदललक, एकर प्रत्यक्ष बैठक नहि। एकर परिणाम इहो अछि जे समुदायक ज्ञान मान्यता पबैत अछि, मुदा व्यक्तिनाम आ निर्णय-प्रक्रियामे आरुणिक स्थान अधिक दृश्यमान रहैत अछि।

यन्त्र आ लोकअनुभव : जोड़ब, बदलब नहि

पक्का बान्ह आ नव पूर्वानुमानक यन्त्रक संग पुरनका नदी-वाचनक अनुभव जोड़ल गेल अछि। कथा एहि परस्पर सम्बन्धकेँ ‘पुरान हटाउ, नव आनू’क सरलीकृत सूत्रमे नहि बदलैत। गीत सेहो बुजुर्गक पानि-ज्ञानकेँ यन्त्रसँ कम नहि कहैत। एकर भीतर मूल्यांकनक व्यावहारिक कठिनाइ अछि—लोकज्ञानक जाँच आ यन्त्रक सीमाक विशिष्ट विधि नहि खुलैत। साहित्यिक स्तरपर ई सहयोजन सामुदायिक निरन्तरता रचैत अछि; तकनीकी परियोजनाक सफल समेकनक प्रमाण देबाक भार उपन्यास नहि उठबैत।

रातिक पहरा : सामूहिकता दृश्य बनैत अछि

एक बरख पैघ बाढ़ि अबैत अछि। गामक लोक दीप लऽ राति भरि बान्हपर जागैत छथि, बान्ह टिकि जाइत अछि। ई प्रकरणक मुख्य दृश्य अछि, जतय कथन सामान्य सलाहसँ क्रिया दिस मुड़ैत अछि। बान्हक टिकबाक घटना स्पष्ट अछि; किन्तु राति भरिक पहराक वास्तविक भौतिक योगदान कतेक, ओकर तकनीकी विवरण नहि। कथात्मक प्रभाव ई जे सफलता निर्जीव पत्थरक उपलब्धि नहि रहैत—तकर संग लोकक शारीरिक जागरण जोड़ल जाइत अछि। पाठमे बान्ह टूटब अथवा मृत्यु-जैसी दुर्घटना एहि परीक्षणमे नहि भेल।

इन्द्राणीक परम्पराक दूरगामी प्रत्यावर्तन

अध्याय पुरान इन्द्राणी-सम्बद्ध बाढ़ि-पूर्वचेतावनीक स्मरण करैत अछि। ओहि स्मृतिमे ढोलक संकेत आ सामुदायिक निकासी जकाँ पूर्वकालिक शिक्षा थियो; आरुणिक समयमे ज्ञानक स्वरूप यन्त्रयुक्त पूर्वानुमान आ पक्का निर्माणमे बदलैत अछि। कथा एकरूप घटनाकेँ पुनः नहि लिखैत, बल्कि ऐतिहासिक परिवर्तनक द्वारा संघर्षक साधन बदलैत अछि। एहि अन्तरपीढ़ी पुनरावर्तनसँ उपन्यासक बाढ़ि-वृत्त चक्रीय होइतहुँ विकासशील रहैत अछि। प्रकृतिक खतरा शेष अछि; प्रतिक्रिया अधिक बहुविध बनैत अछि।

‘पुल’ शीर्षकगीत बनाम बान्हक प्रमुख घटना

गीत आ आरुणिक संवादमे पुल आ बान्ह दुनूक उल्लेख अछि, मुदा घटनात्मक गद्य विशिष्ट रूपेँ गामक पुरान बान्हकेँ पक्का बनएब आ ओकर बाढ़ि-परीक्षण देखबैत अछि। कोन नदीपर कोन पुल पूरा भेल, ओकर अलग

दृश्य पाठमे नहि। एहि कारण ‘आरुणि अमुक पुल बनौलनि आ ओ बाढ़िमे बचल’ कहब पाठसँ बेसी होएत। पुल शब्द पेशागत विस्तार आ दीर्घ रखरखावक सामान्य श्रेणी बनैत अछि; बान्ह वर्तमान प्रकरणक ठोस कथावस्तु अछि।

सुरक्षा बनाम विजयक भाषिक तनाव

बान्ह टिकला पर कथावाचक ओकरा जीतक रूपमे पढ़ैत छथि, मुदा आरुणि जानैत छथि जे ई ‘केवल पत्थरक’ नहि, राति भरिक जागल हाथक जीत। शब्द ‘जीत’ क्षणिक परिणामक उत्सव, ‘देखभाल’ भविष्यक सावधानीक सूचक अछि। एहिमा कथानक समाधानक बादो प्रश्न छोड़ैत अछि। प्रकृतिक साथ संघर्ष नहि समाप्त होइत; अगिला परीक्षणक तैयारी होइत अछि। स्थायित्वकेँ घटना-निरपेक्ष सत्य नहि, सतत श्रमसँ बनैत सम्बन्ध रूपमे देखाओल गेल।

पेशागत चरित्रक निर्मित स्वरूप

आरुणिक शिक्षा, निर्णय, संवाद आ अन्तमे अपन प्रत्येक निर्माण लेल भविष्यक देखभाल-योजना जोड़ब—एहि क्रमसँ पात्र मात्र विचारक वक्ता नहि, अपन पेशामे शिक्षाक उपयोग करनिहार व्यक्ति बनैत छथि। खास बात ई जे बूढ़बाक नैतिक सूत्र एक पेशागत नियममे रूपान्तरित होइत अछि। तथापि कोन दफ्तर, बजट, रखरखाव समिति वा कानूनी जिम्मेदारी तय भेल—ई विवरण नहि। पात्रक निर्माण-शीलता मूल्य-संवेदनशील योजना धरि परिभाषित अछि।

दायित्वक समय : अन्तिम वाक्य भविष्यमुखी

कथाक अन्तमे आरुणि हर पुल-बान्ह लेल तय करैत छथि जे भविष्य मे ओकर देखभाल के करत आ हिसाब के राखत। एहि कथनमे भविष्यक कर्ता आ पुनरावृत्त जिम्मेदारीक वचन अछि। मुख्य घटनाक समाप्तिकेँ नया प्रशासनिक प्रारम्भ बनेबाक ई विधि लम्बा उपन्यासक साक्षी-नीतिक संग मेल खाइत अछि। जेना नाम बिना नित नव स्मरणक सुरक्षित नहि, तहिना संरचना बिना देखभालक सुरक्षित नहि। स्मृति आ भौतिक संरचनाक समरूपता एहि प्रकरणक महत्वपूर्ण रचनात्मक उपलब्धि अछि।

पीपरक संवाद : शिक्षा सँ कार्यान्वयनक गति

आरुणि पहिने बूढ़बासँ अटूट निर्माणिक इच्छा प्रकट करैत छथि, बूढ़बा देखभालक अनिवार्यता बतबैत छथि, एक बाढ़ि बान्हक परीक्षा लैत अछि, अन्तमे आरुणि दीर्घकालिक योजना बनबैत छथि। एहि क्रममे संवाद केवल उपदेशक विराम नहि; ओ भविष्यक निर्णयपूर्वक सूत्र अछि। तथापि निर्माण प्रारम्भिक दृश्य संवादसँ पहिनहि भऽ चुकल देखाइत अछि। तेँ बूढ़बाक वचन निर्माणिक कारण नहि, निर्माणोत्तर परिपक्वताक कारक थिक। घटनाक समयक्रम स्पष्ट राखलासँ पात्र-विकासक सही केन्द्र देखाइत अछि।

सामुदायिक श्रमक दृश्यता आ अदृश्यता

बान्हक पहरामे ‘गामक लोक’ सामूहिक रूपसँ उपस्थित अछि, मुदा राति जगनिहारसभक विशिष्ट नाम नहि। आरुणि मुख्य भूमिका आ बूढ़बा व्याख्यात्मक भूमिका पबैत छथि, लोकसमूह श्रमक संगठित पृष्ठभूमि बनैत अछि। एकर साहित्यिक बल एकजुट दृश्य-रचना अछि; सीमा ई जे देखभालक असमान बोझ, स्त्री-मजदूरी अथवा जाति-आधारित भूमिकाक अलग वर्णन नहि भेल। आलोचना एहि अनुपस्थितिकेँ स्वीकार करैत, जनसमूहक श्रमकेँ मात्र ‘आरुणिक उपलब्धि’ मे विलीन होएबासँ रोकैत अछि।

आपदाक आवर्ती समय आ चरित्रक उत्तर

‘एक बरख’ पैघ बाढ़ि आयब एक विशेष वर्षक घटना, मुदा ‘हर निर्माणक संग’ रखरखाव योजना जोड़ब भविष्यक बारम्बार काज अछि। एकर कारण आरुणिक चरित्रक अन्तिम रूप एक बाढ़िक नायक होयबाक बदला पुनरावृत्त जिम्मेदारीक अधिकारी बनैत अछि। कथनकाल एक दृश्यसँ पेशागत जीवनवृत्तमे छलाङ मारैत अछि। समयक एहि फैलावमे त्वरित विजय आ धीमा अनुशासन दुनू आवश्यक प्रतीत होइत अछि। दीर्घ कथावृत्तक लेल ई स्थायी घटनाक नहि, स्थायी प्रक्रिया-कथा थिक।

समग्र निर्णय : बान्हक भविष्य बनबैत कथानक

अध्याय [–२७]क प्रभावी केन्द्र पक्की संरचनाक चमत्कार नहि, ओकर देखभालक कथा अछि। इन्द्राणीक पुरान शिक्षा, बुजुर्ग आ स्त्रीक नदी-ज्ञान, आधुनिक यन्त्र आ रातिक सामूहिक पहरा एक कथागत सम्बन्ध बनबैत अछि। एक बाढ़िमे टिकनिहार बान्ह परिणामक ठोस प्रमाण, मुदा भविष्यक अटूटपन अनिश्चित रहैत अछि। आरुणि बूढ़बाक उपदेशकेँ अपन पेशागत निर्णयमे बदलैत छथि। एहि प्रकार उपन्यास नामक संरक्षणक पुरान नियमकेँ माटि-पानि-पुलक दायित्वपर लागू करैत अछि।

प्रकरण ७५ | मूल अध्याय –२६ — देविकाक गीत

ध्वनिमे इतिहास : लेखनक नयका रूप

देविका गामक पुरान लोकगीत यन्त्रमे रिकॉर्ड करय आरम्भ करैत छलीह। ई काज मौखिक परम्पराकेँ लिखित शब्दमे बदलबाक बदला स्वरक उपस्थितिकेँ ध्वनिरूपेँ जतन करबाक प्रयत्न अछि। गामक स्मृति पहिने पञ्जी, पत्र, सरकारी कागच आ कम्प्यूटरक अक्षर द्वारा सञ्चरित होइत छल; एतय गायनक काँप, धुन आ कण्ठ ओहि संरक्षणक विषय बनैत अछि। माध्यमक परिवर्तनसँ कथाक समयक अनुभूति सेहो बदलैत अछि—पहिने जे गीत सुननिहारसभक उपस्थितिपर निर्भर छल, से फेर सुनबाक सम्भावना पबैत अछि।

मोहनक धुन-परम्पराक उत्तराधिकार

आरम्भमे देविका मोहनक धुन-परम्पराकेँ आगू बढ़बैत देखाओल गेल छथि। ई सम्बन्ध ध्वनिक उत्तराधिकार अछि, जैमे एक युगक व्यक्ति अपन जीवनपश्चातो नव गायिका-शोधकर्ताक काजक पृष्ठभूमि बनैत अछि। मुदा मोहनक प्रत्येक धुन देविकाक तन्त्रमे सम्पूर्ण रूपसँ प्रवेश करि गेल, अथवा देविका केवल मोहनहि कैँ रिकॉर्ड करैत छथि—

एहन सीमित वर्णन नहि। ओ हुलासा, जीवन्ती, गंगेश, बाढ़ि, सोहर, समदाउन आ अकालक टेक संकलित करैत छलीह। धुनक उत्तराधिकार समग्र लोकसंस्कृतिक बहुधा विस्तार पबैत अछि।

मूल स्वर आ नव सुर : दोहरा पाठ

देविका बूढ़ स्त्रीसभक स्वर ‘हुबहू’ रिकॉर्ड करैत छथि, आ बादमे ओही गीत नव सुरमे नव पीढ़ीक हेतु ढालैत छथि। एहि क्रियामे दूटा समानान्तर पाठ बनैत अछि—स्रोत-प्रदर्शन आ रूपान्तरित प्रस्तुति। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ नव सुरकेँ मूल धुनक एकमात्र प्रमाण मानल जाए, तँ गायिका-पुरखाक स्वरक विशिष्टता हेराइत। गद्य दुन्नूकेँ सुरक्षित रखबाक सम्भावना दैत अछि। मुदा रिकॉर्डिंगक संख्यात्मक सूची, संस्करण-सूचना अथवा प्रस्तुति-भेदक दस्तावेजी पद्धति स्पष्ट नहि।

हरबाड़ी, पनिघट आ महार : गीतक पुरान स्थल

मूल पाठ गीतक पूर्व निवास-स्थानक रूपमे महार, पनिघट आ खरिहान स्मरण करैत अछि। एहि स्थलसभमे गीत सामाजिक श्रम, सामूहिक उपस्थिति आ ऋतुक लय सँ जोड़ल छल। रिकॉर्डिंग गीतकेँ ओहि विशेष समय-स्थानसँ अलग करा दोहराओल जा सकनिहार वस्तु बनबैत अछि। लाभ भावी श्रोता धरि पहुँच; सम्भावित हानि जड़ित स्थानीय क्रिया-परिसरक विरलता। कथावाचक एहि द्वन्द्वकेँ विस्तृत रूपसँ नाटकीय नहि करैत, मुदा स्थानसभक नामक चयन आ यन्त्रक हस्तक्षेप ओहि तनावक स्पष्ट संकेत अछि।

बूढ़ स्त्रीसभ : ज्ञानक वास्तविक स्रोत

देविका बूढ़ स्त्रीसभ लग बैसैत छलीह, हुनकासँ लुप्तप्राय गीत सुनैत छलीह। स्रोतस्वरक ई परिचय महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ गामक सामूहिक इतिहास बहुत बेर बूढ़बाक दीर्घ स्मृतिसँ कहल गेल। एतय स्त्रीसभ स्वयं गीतक धारक, प्रस्तोता आ धुनक ऐतिहासिक संरक्षक बनैत छलीह। मुदा हुनकर व्यक्तिनाम अधिकांशत: नहि देल गेल; ‘सबसभसँ बूढ़ स्त्री’ एकटा अज्ञात वक्ता रहैत छलीह। गीतक संरक्षण हुनकर स्वर बचबैत अछि, कथावाचकक नाम-संरचना हुनकर व्यक्तिगत जीवनी सीमित करैत अछि—ई विपरीत स्थिति आलोचनाक योग्य अछि।

अन्तिम अकाल-टेक : समयक संधि

एक बूढ़ी एहन अकालक टेक जनैत छथि जकरा आर केओ नहि जनैत; देविका हुनकर काँपैत स्वर रिकॉर्ड करैत छलीह; किछु दिनक बाद ओ स्त्री नहि रहलीह। एहि छोट वृत्तान्तमे कथाक बहु-शताब्दी स्मृति एक अत्यल्प समयावधिमे केन्द्रित होइत अछि। रिकॉर्डिंगक क्षण इतिहास आ मृत्यु सँ बनल संधिकेँ पकड़ैत अछि। पाठमे बूढ़ीक नाम, उमर अथवा अकालक वर्ष निर्दिष्ट नहि; विशेषता स्वरक अन्तिम उपलब्धतामे अछि। एतय कथनक प्रभाव व्यक्तिगत अनामिता आ धुनक बचल रहबाक तीक्ष्ण विरोधसँ बनैत अछि।

‘जीबि उठब’ : रूपकक पुनर्पाठ

गीत हुलासाकेँ पुरान धुन नव कण्ठमे ‘फेर जीबि उठब’ कहैत अछि। ई पुनर्जीवन प्रतीकात्मक अछि—जखन गीतमे नाम बजैत अछि, मृतकक स्मृति सजीव अनुभव बनैत अछि। गद्य कोनो शाब्दिक मृतक-पुनरागमन प्रस्तुत

नहि करैत। उपन्यासक जादुई-स्मृतिमय संसारमे ई सीमा महत्त्वपूर्ण अछि: नामक उच्चारण भावात्मक उपस्थिति बनबैत अछि, देहक वास्तविक पुनरुत्थान नहि। गीतक काव्यात्मक क्षमता ओकर अक्षरशः सत्य होएबापर निर्भर नहि।

ध्वन्यभिलेख बनाम मौखिक परिवर्तनशीलता

पुरान लोकगीत स्थिर शब्दक मात्र संग्रह नहि; ओकर गायन परिस्थिति, कण्ठ, स्थान आ श्रोता संग बदलि सकैत अछि। देविका एक रूप रिकॉर्ड करैत छथि, फेर नव रूप निर्माण करैत छथि। एहि प्रक्रिया सँ निरन्तर रूपान्तरणक परम्परा सुरक्षित रहि सकैत अछि, मुदा जे रिकॉर्ड भेल सेहि एकमात्र 'प्रामाणिक' गायन अछि, एहन कथा कहैत नहि। 'हुबहू' शब्द एक विशिष्ट प्रदर्शनक विश्वसनीय प्रतिलिपि-संकेत अछि, समस्त लोकपरम्पराक अन्तिम संस्करण नहि। ई भेद आख्यानक ध्वन्यभिलेख-चिन्ताक केन्द्र अछि।

यन्त्रक काज आ कण्ठक सत्ताक सम्बन्ध

देविका यन्त्र चलबैत छथि, मुदा ओकरा पुरनका गीत बूढ़ स्त्रीसभ लगसँ भेटैत अछि। एतय तकनीकी विशेषज्ञता श्रव्य-सामग्रीक मूल अधिकारक पर्याय नहि। कथा देविकाक परिश्रमकेँ प्रमुख बनबैत अछि, संगहि स्रोत-कण्ठक महत्व स्वीकार करैत अछि। ओकरा एहन सहयोजन रूपमे पढ़ब चाही जतय सुनबाक अनुशासन सृजनक पहिले अबैत अछि। रिकॉर्डिंगक अनुमति, श्रेय, पुनर्प्रयोग आ स्वामित्वक आधुनिक प्रश्न महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा एहि अध्यायमे हुनकर प्रत्यक्ष संवाद उपलब्ध नहि; आलोचना तकर अनुपस्थितिकेँ चिन्हित करि सकैत अछि, घटना गढ़ि नहि सकैत।

श्रोता सँ विद्यार्थी धरि कथा-सञ्चरण

देविका नारिकेल पात पाठशालाक संगीत-शाखा खोलैत छथि, जतय बच्चा सभ अक्षरक संग स्वर सिखैत अछि। गामक सामूहिक गीत आब नियमित पाठ्यक्रमक भाग बनैत अछि। लोक-प्रदर्शनक आवर्त्तन विद्यालयक अनुशासित आवर्त्तनमे परिणत होइत अछि—ई सामाजिक संस्थाक रचनात्मक बदलाव अछि। पूर्वकालिक गीत जे पनिघट वा खरिहानमे अनौपचारिक रूपेँ सुनाइ पड़ैत छल, ओकर भावी अस्तित्व सीखबाक व्यवस्थित क्रमपर आंशिक निर्भर बनैत अछि। पाठक लेल अन्तक ई घटना संकलनसँ वितरण धरि यात्रा पूरा करैत अछि।

अक्षरसँ पहिने गीत : कथाक प्राथमिकताक उलटफेर

संगीत-शाखामे बच्चा अक्षर सिखबासँ पहिने एकटा पुरान गीत सिखैत अछि। ई ठोस क्रम केवल पाठ्यक्रम-प्रशासनक विवरण नहि; ओ आख्यानमे मौखिक स्मृतिक प्राथमिकता अंकित करैत अछि। लेखनक पूर्व सामाजिक स्वर अबैत अछि, ताहिपर बादमे लिखित इतिहासक साधन टिकल रहैत अछि। तथापि विद्यालयमे ई कतेक दिनक नियम, कोन शिक्षक, कोन छात्र, कोन मूल्यांकन-प्रणाली—मूल पाठ विस्तार नहि दैत। घटना प्रतीकात्मक पाठशालीकरणक मोड़ अछि।

गीतक बहुनामिता : हुलासा सँ अकाल धरि

देविका हुलासा, जीवन्ती, गंगेश आदिक गीत उठबैत छथि। एहि नामसभक पुनर्स्मरण अलग कालखंड आ सामाजिक प्रसंगक समूहक रूपमे होइत अछि। गीत निजी नामक छोट जीवनीक बदला वृहत लोकस्मृतिक जाल बनैत अछि। ककर गीतक कौनसा सुर परिवर्तन भेल, ई स्पष्ट नहि; नाम-शृंखला प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्वक काज करैत अछि। एहि प्रकार एक छोट अध्याय दीर्घ त्रयीकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ फेर गुँजाबैत अछि—पाठकक पूर्वस्मृति स्वतः आहूत होइत अछि।

दृश्य-केन्द्र : काँपैत स्वरक क्षण

अध्यायक अनेक क्रियाक संक्षिप्त वर्णनक बीच सबसे अधिक प्रभावकारी दृश्य ओ बूढ़ स्त्रीक काँपैत आवाज अछि। कथावाचक ओकर गीतक पूरा बोल नहि देत, मुदा गायनक देहधर्मी गुण—कम्पन—रखैत अछि। ई न्यूनतम ध्वनिगत बिम्ब मृत्यु-निकटता आ व्यक्तिगत उपस्थितिकेँ तीव्र करैत अछि। लिखित पाठ स्वयं ध्वनि सुनाबैत नहि; ओ ध्वनिक नश्वरताकेँ पाठकक कल्पनामे स्थापित करैत अछि। साहित्यिक वर्णन आ रिकॉर्डक सम्भावित श्रवणक बीच एहि अन्तरमे कथाक सौन्दर्य अछि।

समय-रचना : संग्रह, मृत्यु, संस्था

घटनाक क्रम तीन चरणमे अछि—दीर्घकाल धरि गीत संग्रह, एक वृद्ध गायिकाक स्वर बचब आ मृत्यु, अन्तमे संगीत-शाखाक स्थापना। व्यक्तिगत हानिसँ सामूहिक संस्थाक निर्माणक ई क्रम भावनात्मक रूपान्तरणक काम करैत अछि। मृत्यु अन्तिम पूर्णविराम नहि; ओ संग्रहक तात्कालिक आवश्यकता प्रत्यक्ष करैत अछि। मुदा गीत सुरक्षित रहबाक घोषणाकेँ यन्त्रक सर्वकालिक सुरक्षा अथवा भविष्यक अविच्छिन्न उपलब्धताक निश्चित सूचना नहि मानल जाए। आख्यानक आशा भविष्यक श्रोता आ संस्थापर टिकैत अछि।

पूर्व गीत-समीक्षाक संग सम्बन्ध

मोहनक धुन-परम्परासँ देविकाक कार्यक स्पष्ट सूत्र अछि, मुदा दुन्नूक काजक भाव-सामाजिक परिवेश भिन्न। मोहनक शोक-धुन व्यक्तिगत क्षतिक सामाजिक स्मरण बनबाक प्रसंगसँ उठैत छल; देविकाक कार्य व्यापक लोकगीतक संकलन, रिकॉर्ड आ शिक्षण बनैत अछि। इहो अन्तर उल्लेखनीय अछि जे वर्तमान अध्याय कोनो विशेष वाद्यगत असङ्गतिक दोहराव नहि करैत; नव वाद्ययन्त्र मात्र रूपान्तरक सामान्य माध्यम छथि। अलग-अलग कालखण्डक संगीतक प्रकरणकेँ अनिवार्यतः समान घटना मानब अनुचित।

समग्र निर्णय : मौखिक कथा अपन स्वर राखैत अछि

अध्याय [–२६] नामक स्मृतिकेँ स्वरक स्मृतिमे विस्तृत करैत अछि। देविकाक ध्वन्यभिलेख, स्रोत-स्त्रीक जीवित गायन, पुरान धुनक नव प्रस्तुति आ विद्यालयक संगीत-शाखा एक सांस्कृतिक सञ्चरण-वृत्त बनबैत अछि। बूढ़ीक मृत्यु दृश्य कथाक मुख्य भावात्मक कसौटी अछि। गीतक ‘फेर जीबि उठब’ काव्यरूपक, जबकि रिकॉर्डिंग आ शिक्षण ठोस कथात्मक कार्य छथि। एतय स्थायित्वक दावा आशामूलक; वास्तविक उपलब्धि बचल स्वरकेँ आगामी पीढ़ीक सुनबाक अवसर देब अछि।

प्रकरण ७६ | मूल अध्याय –२५ — मीराक निजता

स्मृतिसँ सहमति धरि ‘नाम’क अर्थक बदलाव

उपन्यास दीर्घ काल धरि ‘नाम बचायब’केँ मृत्यु आ विस्मृतिक विरोधमे रखैत आयल अछि। मीराक अध्याय ओहि सूत्रमे एक जरूरी संशोधन अनैत अछि: केकरो नाम बचायब ओकर सूचना बिनु अनुमति प्रचार करबाक अधिकार नहि। आरम्भिक फकरा ‘जकर कथा, तकर अनुमति’ मूलत: कथा कहबाक स्वामित्वक प्रश्न उठबैत अछि। याद राखबाक सामुदायिक अधिकार आ निजी कथा पर व्यक्तिक नियन्त्रण एकहि वस्तु नहि। एहि नव तनावसँ नाम-स्मृतिक पुरान आदर्श अधिक सूक्ष्म बनैत अछि।

मीरा : राति-सभाक उत्तराधिकारी, स्वतन्त्र पात्र

मीरा नगरमे पढ़ल युवती छथि, डिजिटल निजता आ महिला-सुरक्षापर कार्य करैत छथि। ओ सपनाक डिजिटल राति-सभाक परम्परा आगू बढ़बैत कानूनी सहायताक आयाम जोड़ैत छलीह। एतय स्त्रीपरम्पराक सम्बन्ध वंशगत अनिवार्य नहि, कार्यगत उत्तराधिकार अछि: एक संस्था नव संकट अनुसार रूप बदलैत अछि। सपनाक अध्यायमे साझा बोलब भय कमबैत छल; मीराक अध्यायमे न्यायिक सुविधा जोड़ल जाइत अछि। एहन विकास पात्रकेँ बूढ़बाक सूत्रक केवल श्रोता नहि, सामाजिक व्यवस्था बदलनिहार सक्रिय कार्यकर्ता बनबैत अछि।

अनाम युवतीक घटना : दृश्यता आ नामक अनुपस्थिति

एक युवतीक फोटो चोरी ओकरा बदनाम करबाक प्रयत्न कएल जाइत अछि। ओ डिजिटल राति-सभामे पहुँचैत अछि; मीरा कानूनी सहायता उपलब्ध करबैत छलीह। पीड़िताक व्यक्तिनाम, फोटो अथवा ओकर निजी परिस्थितिक विवरण पाठ नहि खोलैत। एहि अनामिताकेँ केवल कथावाचकीय कमी कहि खारिज करब जल्दबाजी होएत—निजताक विषयक अध्यायमे ई संयम अर्थपूर्ण सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि अनामिता कारण पीड़िताक निजी विचार आ विशिष्ट निर्णय कम सुनाइत अछि। कथा ओकर स्थिति आ समुदायसँ भेटल मदतिकेँ केन्द्र बनबैत अछि।

फोटो : व्यक्तिक प्रतिरूप सँ आघातक वस्तु

चित्र एहि अध्यायमे कला अथवा स्मृतिक सौन्दर्य-वस्तु नहि, असहमतिकेँ तोड़ि सार्वजनिक अपमान करबाक औजार बनैत अछि। छवि चोराब आ नामकेँ बजारमे पहुँचाब पाठक समक्ष व्यक्ति आ ओकर प्रतिरूपक बीच असुरक्षित दूरी खोलैत अछि। जे चेहरा मूल व्यक्तिक अछि, ओकर प्रसारपर नियन्त्रण अनजान हाथ लऽ लेब चाहैत अछि। एहि भेदमे डिजिटल संकटक कथा केवल ‘खराब स्क्रीन’ नहि, प्रतिनिधित्वक सत्ता-कथा थिक। किन्तु फोटो कतय पोस्ट भेल अथवा केहन सम्पादन भेल—पाठमे नहि; एहि विवरणक कल्पना उचित नहि।

‘हम नमूना नहि छी’ : गीतक स्वत्व-वाक्य

लोकगीत मीराक पक्षमे पहिल पुरुषक स्वत्व-वाक्य रखैत अछि—ओ अपन कथा पर अधिकार जतबैत छथि। गद्यमे मीराक वास्तविक संवाद अधिकारक संरचना प्रश्न करैत अछि, मुदा गीतक प्रत्येक पाँति प्रत्यक्ष घटनाक

बोली नहि। ‘नमूना’ शब्द वस्तुकरणक विरुद्ध नैतिक प्रतिवचन अछि: शोध, प्रचार, डेटा अथवा अफवाहक विषय बनब सँ पूर्व व्यक्तिक इच्छा देखल जाय। गीत एहि विचारकेँ सामूहिक स्मरणयोग्य सूत्रमे बदलैत अछि। एहि काव्यात्मक उद्घोषणाकेँ कथाक विशिष्ट कानूनी अनुच्छेद मानब गलत हएत।

सार्वजनिक बोलब आ निजता : सम्भावित विरोध

डिजिटल राति-सभा अनाम उत्पीड़ककेँ प्रकाशमे आनबाक सामाजिक मंच अछि; मुदा निजताक अधिकार आरोपक विवरण अनियन्त्रित सार्वजनिक करबाक विरोधो करैत अछि। कथा दूटा उद्देश्य एक साथ रखैत अछि—पीड़ितार्केँ चुप्पीसँ मुक्त करब आ ओकर छवि पर नियन्त्रण दैत सम्मान बचायब। समीक्षाक एक मुख्य प्रश्न अछि जे सार्वजनिक सहयोग कतेक हद धरि पीड़िताक निर्णयाधिकार सम्मानित करैत अछि। मूल पाठ कानूनी सहायताक उल्लेख करैत अछि, मुदा गोष्ठीमे गोपनीयता अथवा सहमतिक विशिष्ट नियम नहि बतबैत। अतएव एहि आदर्शक कार्यप्रणाली एखन अपूर्ण वर्णित अछि।

सपनाक अध्यायसँ रचनात्मक अन्तर

पूर्व ‘स्क्रीनक पहिल छाया’मे धमकी पओनिहार युवती संयुक्त राति-सभामे आवाज पबैत छलीह; वर्तमान अध्याय फोटो-चोरीक एक घटना, कानूनी मदति आ निजताक सैद्धान्तिक सूत्रक सहारे आगे बढ़ैत अछि। दुनूकेँ एकहि पीड़िताक क्रमिक जीवनकथा मानबाक आधार नहि। नामहीन युवतीक समान स्थिति सामुदायिक संकटक आवर्ती रूप दर्शबैत अछि, व्यक्तिगत पहिचानक निरन्तरता नहि। एतय पुनरावृत्ति शब्द-रूपक नहि, समस्याक सामाजिक संस्थाक परिष्कार बनैत अछि।

बूढ़बाक कथन : पुरान सूत्रक आत्मसंशोधन

बूढ़बा कहैत छथि जे पहिने गोहि देह खाइत छल, नाम नहि; आब नव गोहि नाम आ सम्मान खाय चाहैत अछि। ई वक्तव्य कथावाचकक विश्वमे स्मृतिसूत्रक भीतर परिवर्तन अछि। ‘नाम सुरक्षित अछि’क पुरान दृढ़ आस्था डिजिटल युगमे चुनौती पबैत अछि। बूढ़बा एक अपरिवर्तित सर्वज्ञ गुरु नहि; बदलैत समाजसँ हुनकर रूपकक अर्थो विकसित होइत अछि। ई संशोधन लम्बा उपन्यासक पात्र-निरन्तरता मे समयक प्रभाव देखबैत अछि।

सुलोचना आ पद्माक स्मृतिगत आह्वान

बूढ़बा मीराकेँ सुलोचना आ पद्माक कथाक आधुनिक उत्तराधिकारिणी कहैत छथि। एतय स्त्री-अस्मिता आ न्याय-संघर्षक दीर्घ अन्तरकालिक श्रृंखला जोड़ल गेल अछि। एहन नाम-उल्लेख व्याख्यात्मक स्मरणक काज करैत अछि, मुदा प्रत्येक पुरान स्त्रीपात्रक समान परिस्थिति वा कानूनी अधिकार समकालीन छल—ई नहि सिद्ध करैत। आधुनिक डिजिटल निजताक विषय पूर्वकालिक अपमानक वर्णनसँ तुलना पबैत अछि, तदनुरूप ऐतिहासिक फर्क सेहो रखैत अछि।

कानूनक प्रसंग : मदतिक दृश्य, निर्णयक रिक्ति

मीरा कानूनी सहायता लऽ उत्पीड़न करनिहार अनजान हाथकेँ प्रकाशमे आनैत छलीह। ई एक उपलब्धि अछि, मुदा ओकरा गिरफ्तारी, दोषसिद्धि, क्षतिपूर्ति अथवा प्लेटफॉर्मसँ सामग्री हटेबाक विशिष्ट परिणाम पाठ नहि कहैत। ‘इजोतमे आनब’ घटना-भाषाक सामाजिक उद्घाटन अछि, सम्पूर्ण न्यायिक प्रक्रिया सम्पन्न होएबाक प्रमाण नहि। कृत्यक मर्यादा चिन्हित कएलासँ कथाक आशामूलक निष्कर्ष आ संस्थागत विधिक परिणामक बीच आवश्यक अन्तर बनल रहैत अछि।

कथनगत दृष्टि : मीरा बोलैत छलीह, पीड़िता कम

मीरा आ बूढ़बाक प्रत्यक्ष संवाद पाठककेँ अवधारणात्मक भाषा दैत अछि। उत्पीड़ित युवतीक निजी वक्तव्य विस्तारसँ नहि देल गेल; हम ओकर घटना आ बादक गरिमामय ठाढ़ होएब देखैत छी। एहि असमान आवाज-वितरणमे उपन्यास स्त्री नेतृत्वकेँ केन्द्रित करैत अछि, मुदा पीड़िताक स्वकीय भाषाक सामग्री सीमित छोड़ैत अछि। निजताक अधिकार पर आधारित अध्यायमे ‘जकर कथा, तकर अनुमति’क सूत्र एतय आत्मालोचनाक प्रश्न बनैत अछि—कथा ककर स्वरद्वारा कहल गेल? ई आलोचना घटनामे अवश्य कोनो दमन भेल कहैत नहि, केवल संरचनात्मक दृश्यताक भेद देखबैत अछि।

मिथकीय गोहि : देहसँ डेटा धरि

जलजीवी गोहिक पुरान बिम्ब डिजिटल नाम-चोरीक रूपकमे लौटैत अछि। नव गोहि स्त्रीक छवि, सूचना आ सम्मानकेँ ‘खाय’ चाहैत अछि। ई रूपक पुरान जलापदाक निरन्तर भाव-संकेत रचैत अछि, वास्तविक साइबर-अपराधक जैविक कारण नहि। उपन्यास नयका तकनीकी खतराकेँ स्थानीय सांस्कृतिक शब्दावलीमे अनुवाद करैत अछि; एहि अनुवादसँ गामक श्रोता नव अनुभवकेँ पहिचानबाक भाषा पबैत अछि। मुदा प्रत्येक डिजिटल संकटकेँ एकसमान गोहि कहला पर ओकर विशिष्ट विधि धुँधला सकैत अछि—समीक्षामे वस्तुगत प्रसंग साथ राखब जरूरी अछि।

पाठकीय नैतिक स्थिति : कौतूहल नहि, सहमति

सामान्य अपराधक कथा पाठककेँ अपराधीक नाम, चोरी भेल फोटो आ पीड़िताक पूर्ण कथानक जानबाक उत्सुकता दऽ सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्रवर्ती सूत्र तकर विपरीत पाठकीय अनुशासन माँगैत अछि—हर जानबाक इच्छा उचित अधिकार नहि। पाठमे निजी फोटो नहि देल गेल, पीड़िताक पहिचान सीमित अछि। एहि संयमकेँ कथा-पाठक सम्बन्धमे अर्थपूर्ण मानल जा सकैत अछि। आलोचक स्वयं एहि रिक्तिकेँ कल्पित विवरणसँ भरि दैत छथि तँ अध्यायक अन्तर्वस्तुकेँ उलटि देताह।

शिक्षणक अन्त : व्यक्तिगत मदद सँ संस्थागत प्रशिक्षण

समापनमे मीरा स्त्री-युवतीसभकेँ डिजिटल सुरक्षा, विरोधक उपाय आ कानूनी मदतिक ठाम सिखबैत छलीह। एक विशिष्ट प्रकरणक सहायता सामुदायिक शिक्षणक निरन्तर प्रक्रियामे बदलैत अछि। ई संरचना पुरान राति-सभाक उत्क्रमण अछि, जाहिमे व्यक्तिगत वेदना संस्थागत सतर्कता बनैत अछि। मुदा ‘कोनो स्त्री अकेल नहि’क अन्तिम

स्वर आशामूलक सामुदायिक दावा अछि; गामक प्रत्येक स्त्री हर परिस्थितिमे सुरक्षित भऽ गेल, एहन अनुभवजन्य विवरण नहि।

कथा-समय : लड़ाइ शुरू, समाप्त नहि

अन्तक कथन स्पष्ट करैत अछि जे निजताक संघर्ष एखन आरम्भ भेल अछि, समाप्त नहि। यद्यपि एक युवती मदद पबैत छलीह, समस्याक प्रसार व्यापक रहैत अछि। एहि खुलल अन्तद्वारा पात्रक कार्य दीर्घकालिक बनैत अछि। कानूनी सहायता, सामुदायिक सहारा आ व्यक्तिगत अनुमति—तीनूकेँ स्थिर संस्थाक बदला निरन्तर अभ्यास बुझायल गेल अछि। दीर्घ उपन्यासक गतिमे ई खुलापन आगामी डिजिटल-संकटक लेल आधार रखैत अछि।

समग्र निर्णय : नाम रखबाक अधिकारक सीमारेखा

अध्याय [-२५] कथा-आख्यानशास्त्रीय रूपसँ उपन्यासक स्वयं स्मृति-परियोजनाकेँ प्रश्न करैत अछि। नाम बचायब आवश्यक, मुदा व्यक्तिक नाम-छवि पर ओकर अनुमति सेहो आवश्यक। मीरा सपनाक राति-सभाकेँ कानूनी सहायतासँ जोड़ि सामाजिक प्रगति देखबैत छलीह। घटना-सम्पन्नता सीमित अछि—एक युवती सहायता पबैत छलीह, सम्पूर्ण विधिक निर्णय नहि। लोकगीतक स्वत्व-वाक्य, बूढ़बाक नव गोहि-रूपक आ निजताक अन्तहीन संघर्ष मिलि उपन्यासक ‘नाम’ अवधारणाकेँ नव नैतिक गहराइ दैत अछि।

प्रकरण ७७ | मूल अध्याय -२४ — निशांतक बैंक

बैंकक कथा : सुविधा सँ अधिक भाषा

निशांत बैंकिंग पढ़ि गामक परिवारसभ धरि खाता, बीमा आ ऋणक सुविधा पहुँचएब चाहैत छथि। पहिल दृष्टिमे ई आर्थिक विकासक कथा अछि, मुदा गद्य अपन केन्द्र बैंकक भाषा बुझबाक प्रश्नपर रखैत अछि। साहूकारक पुरान बही-खाता आ आधुनिक बैंकक जटिल कागच—दुनूकेँ गरीब किसानक दृष्टिसँ अपरिचित माध्यम बनायल गेल। एतय समावेशन खाता खुलबाक संख्या मात्र नहि; दस्तावेजक अर्थ अपन भाषा मे बुझबाक क्षमता थिक। एहि चयनसँ उपन्यासक दस्तावेज-आख्यान मौद्रिक अधिकारसँ जुड़ि जाइत अछि।

निशांतक पात्र : अधिकारी नहि, अनुवादक

निशांतक पेशागत ज्ञान हुनका संरचनात्मक रूपेँ किसानसँ अलग करैत अछि। बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे बैंकक भाषा लोकक बोलीमे बदलू। ई दायित्व तकनीकी सूचनाक सामाजिक अनुवाद अछि—जे जानैत अछि से नहि जाननिहारकेँ निर्भर रखने रहए, बल्कि प्रश्न करबाक योग्यता देत। निशांतक कार्य केवल बैंकक प्रतिनिधि नहि रहैत; ओ वित्तीय संरचना आ गामक अनुभवक बीच कथात्मक सेतु बनैत छथि। तथापि बैंकक विशिष्ट पद, संस्थान अथवा ऋणदर पाठमे निर्दिष्ट नहि; ओहन विवरण आधारबिहीन जोड़ब उचित नहि।

पुरान साहूकार : अन्तरकालिक प्रतिध्वनि

निशांत पूर्वक ऋण-जालक कथा सुनने छथि जतय गरीब खेत, घर आ प्रतिष्ठा खोइत छल। आधुनिक बैंकक जटिल भाषा अतीतक साहूकारी अन्यायक पुनरुत्थानक जोखिम बनैत अछि। ई कथात्मक तुलना महत्त्वपूर्ण अछि—संस्था बदललासँ असमान समझि सकबाक सम्बन्ध स्वतः नहि बदलैत। मुदा अध्याय कोनो वर्तमान बैंक द्वारा विशेष ठगी घटित भेल कहैत नहि। बैंको साहूकार जकाँ बनि सकैत अछि—ई शर्तयुक्त चेतावनी अछि। तथ्य आ सम्भावनाक दूरी रखनाइ आलोचनात्मक न्याय लेल आवश्यक।

गीतक ‘नाम बेचब’ : आर्थिक रूपक

गीतमे खाता आ नामक व्यापारक भाषा आबैत अछि—‘जे खातामे नाम बेचल’। गद्य नहि देखबैत जे निशांत केकरो व्यक्तिगत डेटा बेचैत छथि वा कोनो खाता वास्तविक नाम-बिक्रीक घटनास्थल बनल। फकराक कथन वस्तुकरण आ अनबुझल हिसाबक खतरा बतबैत अछि। एतय ‘नाम’ व्यक्ति-स्वामित्व, दस्तावेजी पहिचान आ सामाजिक गरिमाक संयुक्त बिम्ब अछि। एकरा अपराधक विस्तृत प्रत्यक्ष घटना मानला पर कहानीक मूल समस्या—बैंकक दुर्गम भाषा—पाछाँ पड़ि जाएत।

बूढ़ किसानक दृश्य : भय सँ भरोसा धरि

एक बूढ़ किसान कागचपर अंगूठा लगबय सँ डरैत छलाह। निशांतक सरल समझावट बाद ओ पहिल खाता खोलैत छथि; बादमे बीमाक पहिल पाइ हाथमे पहुँचला पर नोर अबैत अछि। एहि दृश्य मे अमूर्त ‘वित्तीय समावेशन’ देहधर्मी अनुभव बनि जाइत अछि। किसानक भय केवल हस्ताक्षरक शारीरिक काजसँ नहि, अनबुझल शर्तक पुरान अनुभवक बोधसँ जुड़ल बुझाइत अछि। मुदा पाठमे बीमाक कोन घटना पर भुगतान भेल अथवा बीमाक राशि कतेक छल, नहि। दृश्य भावात्मक सत्य दैत अछि, नीतिगत मूल्यांकनक पूर्ण आँकड़ा नहि।

अंगूठाक भूमिका : असाक्षरता आ अधिकार

किसानक अंगूठा लगबासँ डरब महत्वपूर्ण बिम्ब अछि। अतीतक अनेक सामाजिक प्रसंगमे कागच पर हस्ताक्षर अथवा अंगूठाक निशान शक्तिशाली पक्षक हाथमे शोषणक माध्यम बनल छल। एतय निशांत डर कम करैत छथि, दस्तावेजकेँ बुझल स्थिति मे हस्ताक्षर सम्भव बनबैत छथि। एहन बिम्ब व्यक्ति-गरिमाकेँ अक्षरज्ञानक उच्चतासँ नहि बाँधैत; समझबाक अधिकारकेँ प्राथमिकता दैत अछि। पाठमे बूढ़ किसानक औपचारिक साक्षरता-स्तरक परीक्षा नहि; ओकर कागच-बोधक समस्या वर्णित अछि।

मैथिलीमे समझावट : भाषिक कथनाधिकार

निशांत गामक वित्तीय योजना सरल मैथिलीमे समझबैत छथि। एकर कथात्मक महत्त्व केवल क्षेत्रीय भाषाक गौरव नहि, नयका अभिलेखक अर्थ स्थानीय उपभोक्ताकेँ उपलब्ध करब अछि। बैंकक नियम यदि अपरिचित संस्थागत भाषा मे रहय, तँ खाताधारक अपनहि कागचक कथासँ बाहर रहि जाइत। मैथिलीमे व्याख्या ओहि दूरी घटबैत अछि। एतय भाषिक परिवर्तन नाम-रक्षणक पुरान उद्यमक समान अछि—जकर विषयमे कागच लिखल, ओकरा तकर अर्थ बुझबाक अधिकार सेहो होय।

चौपाल नयका अर्थशाला बनैत अछि

निशांत चौपालपर बैसि चित्र आ उदाहरणक सहारे खाता, बीमा आ ऋणक योजना समझबैत छथि। गामक सामूहिक कथा-सुननिहार स्थल आर्थिक साक्षरताक सार्वजनिक शिक्षास्थल बनैत अछि। ई वातावरण बैंकक बन्द कमरा आ अपरिचित प्रपत्रक विपरीत अछि। पीपर लग बूढ़बाक संवाद सँ निकसल शिक्षा चौपालमे व्यवहारिक पाठ बनैत अछि। परिसर-रचना दृष्टिसँ एतय पुरान अनुष्ठान-स्थान नयका सामाजिक विषय अपनाबैत अछि; परम्परा केवल अतीतक पुनरावृत्ति नहि, नव व्यवस्था समझबाक साधन अछि।

समझौता नहि, समझ : उपदेशक नैतिक रीढ़

बूढ़बाक सूत्र अछि जे अन्याय एहन जगह जन्म लैत अछि जतय एक पक्ष बुझैत, दोसर नहि। कथाक नैतिक अवधारणा बैंककेँ विशुद्ध मुक्तिदाता नहि बनबैत; ओकरा किसानक ज्ञानक भागीदार बनेबाक शर्त रखैत अछि। ई व्यवस्था-कथा केन्द्रीय अछि—सहायता तखन सार्थक जखन लाभार्थी अपन निर्णय स्वयं बुझि सकय। तथापि ई सूत्र प्रत्येक अन्यायक एकमात्र सामाजिक कारण नहि; बूढ़बाक पात्रगत सामान्यीकरण अछि। व्यापक अन्याय श्रम, जमीन, जाति, लिंग आ कानूनसँ सेहो जुड़ल रहल अछि, जे एहि उपन्यासक पूर्व कथा स्पष्ट करैत अछि।

आत्मनिर्भरता : संख्यात्मक विस्तारसँ पृथक

निशांतक कामक विवरण गामक ‘हर परिवार’ धरि वित्तीय सुविधा उपलब्ध करबाक उद्देश्य रखैत अछि। एक बूढ़ किसानक खाता आ बीमा-राशिक दृश्य सफल उदाहरण अछि। मुदा समस्त परिवार वास्तविक रूपसँ सदस्य बनि गेल, सभ ऋण समयपर चुकल वा दीर्घकालिक दरिद्रता समाप्त भऽ गेल—एहन विस्तृत आँकड़ा नहि। अन्तिम कथन जटिल भाषा कारण ठगी नहेबाक आशामूलक सार्वत्रिक सफलता प्रस्तुत करैत अछि; ओकर सत्यापनकर्ता दृश्य सीमित अछि। एहि असमानताक चर्चा कहानीक मूल उपलब्धि घटबैत नहि, कथनक फैलाव चिन्हित करैत अछि।

लेखाक कथा आ गोप कुमारक अभिलेख

गोप कुमार पुरान पञ्जी, नक्सा आ डिजिटल दस्तावेज मिलबैत छथि; निशांत बैंकक कागच जनसाधारण लेल बोधगम्य बनबैत छथि। दुनूकेँ कागजक ज्ञान-सत्ता सम्बन्धित करैत अछि, मुदा उद्देश्य भिन्न: एक स्मृतिक संग्रह, दोसर वर्तमान आर्थिक अधिकारक उपयोग। एहि कारण दस्तावेज ‘नाम बचबैत’ रहलाक बाद आब ‘अर्थ बुझबैत’ अछि। दुनू प्रसंगमे कागज अपन-आप न न्याय करैत अछि न अन्याय; ओकर सामाजिक व्याख्या आ पहुँच कथामे निर्णायक ठहरैत अछि।

प्रतीक्षित न्याय आ तत्काल नोर

बूढ़ किसानक आँखिमे नोर अबैत अछि; ई एक छोट दृश्य दीर्घ आर्थिक अन्यायक कथा भितर करुणात्मक विराम अछि। अकाल, साहूकारी आ भूमिहीनताक पुरान श्रृंखला एतय बीमाक भुगतानक रूपमे एक सीमित प्रतिफल पबैत अछि। ई सम्पूर्ण अतीतक न्यायिक प्रतिपूर्ति नहि, एक व्यक्तिक वर्तमान अनुभव अछि। छोट दृश्यकेँ सम्पूर्ण

ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक परिवर्तनक मापक बनएब पाठमे नहि आधारित। साहित्यिक बल एक जीवनानुभवक केन्द्रणमे, न आर्थिक सर्वेक्षणक परिणाममे अछि।

दृश्यात्मक बनाम व्याख्यात्मक अनुपात

अध्यायक अधिक भाग निशांतक उद्देश्य आ बूढ़बाक शिक्षात्मक संवाद अछि; भावनात्मक दृश्य बूढ़ किसानक खातापर केन्द्रित अछि। एहि विन्यासमे विचारक स्पष्टता बेसी, नाटकीय संघर्ष कम। बैंकक कठिन फॉर्म, अस्वीकृति आ अपीलक विस्तृत दृश्य देखाओल नहि गेल; सहज समाधान कथा-गति तेजी सँ पूरा करैत अछि। ई सीमा स्वतन्त्र आख्यानरूपेँ संघर्षक जटिलता घटा सकैत अछि। तखनहुँ विशिष्ट व्यक्तिगत परिवर्तनक दृश्य नैतिक वचनकेँ पूर्ण अमूर्त बनेबासँ रोकैत अछि।

मीराक निजताक बाद बैंक : अधिकारक दोसर आयाम

पूर्व अध्यायमे मीरा व्यक्तिक छवि आ सूचनापर नियन्त्रणक पक्ष लैत छलीह; निशांत वित्तीय अभिलेखक अर्थ बुझबाक अधिकारकेँ केन्द्र करैत छथि। दुनू कथा डिजिटल–दस्तावेजी युगमे व्यक्ति आ संस्थाक असमान सम्बन्ध जाँचैत अछि। एकमे प्रश्न ‘हमर नाम के उपयोग करय’, दोसरमे ‘हमर खाता हम केना बुझी’। एहि अनुक्रमसँ उपन्यासक अंकीय संकट केवल बाहरी ठगी नहि, भीतरक भाषा-सत्ता सेहो बनि जाइत अछि। मुदा दुनू पात्रक प्रत्यक्ष संयुक्त परियोजना वर्तमान अध्यायमे नहि देखाओल।

गीत-गद्यक परिणति : हिसाब सँ आत्मसम्मान

गीत हिसाब साफ राखबाक चेतावनी दैत अछि, गद्य एक बूढ़ किसानक अधिकारपर विश्वास बनबाक घटना देखबैत अछि। आँकड़ा, नाम आ गरिमा—तीनू अर्थ-क्षेत्र एक दृश्यमें जुड़ैत छथि। बैंकक सरलीकृत भाषा पाठमे नैतिक सम्बन्धक निर्माण करैत अछि। ई सरलीकरण ‘खाता बहुत छैक’क सामान्य सफलता-घोषणासँ बेसी संवेदनशील अछि, किएक तँ पाठ स्वयं बुझबाक क्रियापर बल दैत अछि। गीतक कथन सावधानी, गद्यक उपलब्धि सामाजिक अनुवाद, अन्तक विस्तार संस्थागत शिक्षण बनैत अछि।

समग्र निर्णय : बैंकक भाषामे गामक नाम

अध्याय [–२४] वित्तीय समावेशनकेँ सामाजिक भाषान्तरक आख्यान बनबैत अछि। निशांत जटिल बैंकिंग शब्दावलीकेँ सरल मैथिलीमे समझायब सिखैत छथि; बूढ़ किसानक खाता आ बीमा-राशि घटनात्मक उपलब्धि प्रदान करैत अछि। साहूकारक पुरान स्मृति बैंकिंग प्रणालीक सम्भावित अन्यायक चेतावनी बनैत अछि, मुदा वर्तमान बैंकद्वारा विशिष्ट ठगीक कथा नहि। सामाजिक शिक्षणक सफलताक व्यापक घोषणाकेँ एक सीमित दृश्य सहारा दैत अछि। दीर्घ उपन्यासमे एतय नाम, लिखित हिसाब आ आर्थिक गरिमाक त्रिकोण नयका सम्बन्ध प्राप्त करैत अछि।

प्रकरण ७८ | मूल अध्याय –२३ — नन्दक जन्म

जन्म : घटनासँ बेसी कथात्मक अपेक्षाक स्थापना

अध्यायमे आरुणिक घर नन्द नामक बेटाक जन्म होइत अछि। बाहरी घटनाक दृष्टिएँ ई सामान्य पारिवारिक प्रसंग अछि—सोहर, गुड़, नाच-गान आ नवजातकेँ कोरामे लेने पिता। मुदा कथावाचक आरम्भहिसँ जन्मकेँ आगामी सम्पूर्ण कथाक ‘आरम्भ’ बनयबला बच्चाक आगमन कहि संकेत दैत अछि। एहिसँ पाठक वर्तमान नवजातक दृश्यकेँ ओकर भविष्यमे जे होयत, तकर अपेक्षाक भीतर पढ़ैत अछि। एहि प्रत्याशासँ अध्यायक घटनात्मक अल्पता भरि जाइत अछि; वास्तविक क्रिया कम अछि, मुदा कथात्मक परिणामक सम्भावना अत्यन्त विस्तृत बनैत अछि।

गीतक अन्तिम साक्षी आ गद्यक अनिर्णीत भविष्य

लोकगीत नन्दकेँ ‘अन्तिम साक्षी’ कहि निष्कर्ष जकाँ गबैत अछि। मुख्य गद्यक बूढ़बा फेर स्पष्ट कहैत छथि जे हुनका नहि बुझल ओकर जीवनमे की लिखल अछि। ई दुनू कथन समान स्थिति नहि रखैत: गीत सामुदायिक आशाक निश्चित स्वर अछि, संवाद भविष्यक अनिश्चितता स्वीकार करैत अछि। समीक्षा लेल जरूरी अछि जे गीतक उत्सवधर्मी निश्चयकेँ घटनासिद्ध तथ्य नहि मानल जाय। पाठ अपन पाठककेँ भविष्य दिस खींचैत अछि, मुदा घटनाक विवरण आगामी अध्यायसभ लेल रोकि रखने अछि। ई पूर्वाभास आ स्थगन मिलि कथात्मक उत्कण्ठा रचैत अछि।

आरुणि : इंजीनियरसँ पिताक रूपान्तरण

पूर्व अध्यायमे आरुणि पुल आ बान्ह बनबैत, गामक भौतिक सुरक्षा लेल दीर्घकालिक देखभालक योजना बनबैत छलाह। एहि अध्यायमे ओ नवजातकेँ पीपर लग लऽ अबैत छथि आ ओकरा गामक कथा सिखेबाक इच्छा प्रकट करैत छथि। एतय ‘गढ़ब’ शब्दक अर्थ इंजीनियरी निर्माणसँ बालकक नैतिक शिक्षाधरि बदलैत अछि। मुदा दुनू रूप एक-दोसरासँ सम्पूर्ण भिन्न नहि: पुलक रखरखाव आ साक्षीक निर्माण, दुनूमे आगामी पीढ़ीक प्रति उत्तरदायित्व अछि। आरुणिक सक्रिय कर्तृत्व एतय नन्दक भवितव्यक खाली प्रतीक्षा नहि, भविष्यक शिक्षणक संकल्प बनि उठैत अछि।

साक्षी-गाछ : स्थानक दृष्टि आ पाठकीय अनुभव

पीपरक असाधारण थिरता कथानकमे एक संवेदनात्मक संकेत थिक। गामक बूढ़ लोक ओकर स्थिरताक तुलना अपन दीर्घ अनुभवसँ करैत छथि, मुदा गाछ स्वयं कोनो स्पष्ट वाणी नहि बजैत। बादमे हवा शान्त रहितो पात हल्लुक सरसराइत अछि। एहि दूटा विवरणसँ स्थानकेँ साक्षी-सदृश उपस्थिति भेटैत अछि। आलोचनामे एकरा प्रमाणित अलौकिक कारणक रूपमे घोषित करब अनुचित होएत; ई प्रकृतिसँ सम्बद्ध कथा-दृष्टिक काव्यात्मक संरचना सेहो भऽ सकैत अछि। पाठककेँ वस्तुगत गाछ आ सामुदायिक अर्थारोपण दुनू एक संग अनुभव कराओल जाइत अछि।

बूढ़बाक स्थिर दृष्टि आ जानकारीक असमान वितरण

गामवासी बूढ़बाक विशेष ध्यान देखि अनुमान करैत छथि जे ओ नवजातमे किछु अनोखा देखि रहल छथि। पाठककेँ सेहो बूढ़बाक संवादसँ अतिरिक्त संकेत भेटैत अछि, मुदा नन्दक अन्तिम भूमिका पूर्ण रूपसँ नहि बताओल जाइत। एहि दृश्यमे तीन स्तरक जानकारी अछि: सामान्य उत्सव मनबैत लोक, अस्थिरता देखनिहार परिचित लोक, आ भविष्य सम्बन्धी आंशिक आभास रखनिहार बूढ़बा। कथावाचक एहि स्तरसभकेँ संगठित कऽ पाठककेँ घटनाक मध्य भागमे राखैत अछि। जानकारीक असमानता रहस्यमयता पैदा करैत अछि, परन्तु अनिर्दिष्ट कथानककेँ घटित घटना बनाकऽ नहि देखबैत।

नामकरणक सामाजिक क्रिया

‘नन्द’ नाम निजी परिवारक चयन अछि, मुदा कथा तुरन्त ओकरा सामुदायिक स्मृतिमे शामिल करैत अछि। पिता नवजातकेँ पीपर लग अनैत छथि, बूढ़बा ओकर नाम विशेष स्नेहसँ धेने छथि, आ गामक लोक बहुत काल धरि जुटल रहैत अछि। एतय नाम केवल सम्बोधन नहि; एक व्यक्ति सामूहिक कथा-व्यवस्थामे प्रवेश करैत अछि। ई प्रवेश जन्मक जैविक घटनाक बाद कथात्मक घटनाक रूपमे घटैत अछि। तथापि नवजातक अपन इच्छा अथवा आवाज एखन असम्भव अछि; ओकर भविष्यक भार मुख्यतः वयस्कसभक कथनसँ निर्मित भऽ रहल अछि।

नवजातपर आरोपित उत्तराधिकारक प्रश्न

बूढ़बाक कथन जे किछु नाम सम्पूर्ण कथाकेँ कान्हपर उठबैत अछि, नन्दकेँ विशेष बनबैत अछि। मुदा आलोचना एतय उत्तराधिकारक सम्भावित दबाव सेहो चिन्हि सकैत अछि। नन्द अपन उद्देश्य स्वयं नहि चुनने अछि; ओकर जन्मसँ पहिने सामुदायिक इतिहास ओकर नाम लग अपेक्षाक एक पैघ भार राखि दैत अछि। कथा ई बोझकेँ मुख्यतः शुभ संकेत रूपमे देखबैत अछि, फेरो ‘दू कान्ह’ आ ‘नामक भार’ सन शब्द आगूक शिक्षा, चुनाव आ स्वतन्त्र व्यक्तित्वक प्रश्न खोलैत अछि। नन्दक जीवनकेँ केवल पूर्वनिर्धारित प्रतिमाक प्रतिलिपि बुझब, पाठक भविष्यक संघर्षक सम्भावना घटा देत।

शंख-रजतसँ नवजात धरि कालक फैलाव

बूढ़बा शंख आ रजतक आरम्भिक प्रसंगसँ अपन वर्तमान कथा जोड़ैत छथि। एक शिशुक नन्हा हाथपर हुनकर दृष्टि सम्पूर्ण दीर्घ इतिहाससँ जुड़ि जाइत अछि। एहि प्रकारेँ अध्यायमे कथानकक प्रत्यक्ष समय एक राति अछि, मुदा स्मृतिक समय अनेक शताब्दी। एहि विशाल असमानतासँ महाख्यानक प्रभाव बनैत अछि: क्षणिक दृश्य दीर्घकालीन प्रस्थान-बिन्दुक रूप धारण करैत अछि। घटनाक क्रम छोट, कथनक प्रतिध्वनि पैघ। ई गुण गाथात्मक विस्तार नहि, समयक संपीडन आ प्रतीकात्मक प्रसारणसँ प्राप्त होइत अछि।

सोहरक ध्वनि आ दृष्टिक मौन

गीत जन्मक उल्लासक स्वर उद्घोषित करैत अछि, तखन गद्य सोहर, नाच-गान आ गुड़क वितरणक उल्लेख कऽ सामूहिक ध्वनिक संसार स्थापित करैत अछि। एकर विपरीत बूढ़बाक थिर तकब, गाछक शान्ति आ पिताक लम्बा समय धरि बैसब दृश्यात्मक मौनक निर्माण करैत अछि। एहि ध्वनि-मौनक क्रमसँ अध्याय उत्सव आ आशंका

दुनूकेँ एक संग रखैत अछि। शुद्ध उत्सवक अध्याय रहितय तँ भविष्यक चिंता अस्पष्ट रहितय; शुद्ध भविष्यवाणी रहितय तँ घरक जन्म-सुख खोआ जाइतय। कथन दुनू अनुभवक सन्तुलनसँ रचना करैत अछि।

गाछक पातक पुनरावृत्त संकेत

प्रारम्भमे पात एको नहि हिलैत; अन्तमे पात हल्का सरसरबैत अछि। ई आरम्भ-अन्तक प्रतिछवि गाछक अलग भावनात्मक स्वर रचैत अछि। थिरता दीर्घ प्रतीक्षा जकाँ प्रस्तुत, सरसराहट स्वागत जकाँ। जरूरी अछि जे ई परिवर्तनकेँ कोई निर्णायक दैवी आदेश नहि मानल जाय; तुलना ‘जेना’क माध्यमसँ कएल गेल अछि। कथावाचक घटना आ उपमा बीच पर्याप्त दूरी राखैत अछि। एहि दूरीमे पाठक प्राकृतिक विवरणकेँ कथा-आशयक संग जोड़ि सकैत अछि, मुदा केवल अर्थक सम्भावना भेटैत अछि, निरपेक्ष तथ्य नहि।

अनुष्ठानक उत्तराधिकार आ शिक्षा

नन्द तत्काल अनुष्ठानक निर्वाहक नहि बनैत; ओ नवजात छथि। आरुणि ओकरा गामक कथा जानबाक आ आगाँ बढ़ेबाक शिक्षा देबाक इच्छा रखैत छथि। एहि कारण अध्यायमात्रक आधारपर नन्द द्वारा कोनो जिम्मेदारी पूर्ण कएल गेल, एहन निष्कर्ष सम्भव नहि। कथानक ‘भावी साक्षी’क रूपरेखा दैत अछि; शिक्षण, अभ्यास आ बादक निर्णय एखन बाकी अछि। उत्तराधिकार एतय सम्पत्ति जकाँ हस्तान्तरण नहि, समयमे फैलल सामाजिक शिक्षाक प्रक्रिया बनैत अछि।

बूढ़बाक कोमल भाषा : कठोर इतिहासक बीच विराम

बाढ़ि, अकाल, अन्याय, नाम-लोप आ ठगीक दीर्घ अध्यायक्रमक बाद बूढ़बाक स्वर ‘अत्यन्त कोमल’ अछि। ई वाचिक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि: जकरा बारम्बार पीड़ा आ संकटक स्मृति बनि रहल छल, सैह साक्षी नव जीवनक सम्भावना देखैत छथि। कथाक भावात्मक बुनोटमे ई करुणा नयका तनावक तैयारी सेहो अछि। बूढ़बा आश्वस्त भावमे नहि, गम्भीर स्नेहमे बोलैत छथि। एहि स्वरक माध्यमसँ इतिहासक आलोचना आ भविष्यक आशा एक-दोसराक विरोधी नहि रहैत।

जातीय तथा वर्गीय स्वरक अनुपस्थिति

अध्याय आरुणिक घर आ गामक सामूहिक आनन्दपर केन्द्रित अछि; नवजातक आसपासक अन्य सामाजिक समूहक विशिष्ट अनुभव विस्तारसँ नहि देल गेल अछि। पिछला अध्यायसभमे चर्मकार टोला, भूमिहीन मजदूर तथा स्त्रीसभाक संस्था सक्रिय छथि; एतय कथन एक पारिवारिक जन्मक संग बूढ़बाक विशेष सम्बन्धकेँ प्रमुख करैत अछि। आलोचनामे एहि चयनकेँ चिन्हित करब उचित अछि, मुदा एतय कोनो बहिष्कारक घटना बनाकऽ लिखब असंगत हएत। एतय सीमा कथन-केन्द्रक अछि; पूरा समाजक अनुपस्थिति वा उत्पीड़नक नूतन घटना पाठसँ सिद्ध नहि।

भविष्यक कथाकेँ वर्तमानमे ओढ़ाएब

उपन्यास-अंशक प्रारम्भिक टिप्पणी नन्दक कथा बहुत आगाँ ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क आरम्भ बनत कहैत अछि। ई स्वतः कथा भीतरक समयक अपेक्षा पाठकक वाचन-क्रम पर टिप्पणी अछि। कथावाचक एतय आरम्भक भविष्यसूचक घोषणा कऽ कथन-अवस्था जटिल करैत अछि: जे घटना कालक्रममे पहिने, से वाचनक विराट रचनामे अगिला आरम्भक कड़ी बनि सकैत अछि। एहि प्रकारक आत्म-सन्दर्भ उपन्यासकेँ अपन निर्माणक चेतना दैत अछि, मुदा अन्तिम कथाक घटनासभ एखन खोलैत नहि।

अध्यायक समग्र परिणाम

नन्दक जन्मक प्रत्यक्ष उपलब्धि एक शिशुक आगमन, पिता द्वारा स्मृति-संस्कारक इच्छा आ बूढ़बाक विशेष ध्यान अछि। ओकरा तुरन्त नायकक विजय, भविष्यक निर्णायक न्याय वा अखण्ड पूर्वनियत भाग्यक रूप नहि पढ़ल जाए। गीतक पूर्णताक स्वर आ गद्यक शंकासहित स्नेह मिलि भविष्यक खाली स्थान बनबैत अछि। एहि रिक्त स्थानक कारण अध्याय दीर्घ उपन्यासमे सेतु बनैत अछि—अनेक शताब्दीक साक्षी-परम्परा एकटा नव जीवनक सम्भावित चेतनामे प्रवेशक तैयारी करैत अछि।

प्रकरण ७९ | मूल अध्याय –२२ — बारह सयक निकट

गणनाक दृश्य : महाख्यानक संख्या-आधारित संक्षेप

अध्याय गोप कुमारकेँ एक साँझ पीढ़ी, नाम आ घटनाक कालक्रम जोड़ैत देखबैत अछि। शताब्दीक फैलाव दस्तावेजपर झुकल एक व्यक्तिक कर्ममे समाहित कएल गेल अछि। कतोक बाढ़ि, अकाल आ युद्ध अलग-अलग कथानकमे पूर्वहि प्रकट भेल अछि; एतय ओ सभ एक गणनात्मक दृष्टिक भीतर आबि जाइत अछि। ई वस्तुतः स्मरणक संपीडन अछि, घटनासभक नयका पुनरावृत्ति नहि। पाठक पहिने जानल कथा आ वर्तमान गणनाक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, जाहिसँ छोटे आकारक अध्याय विस्तृत महागाथाक सार-प्रभाव अर्जित करैत अछि।

‘निकट’ शब्दक निर्णायक अर्थ

शीर्षक ‘बारह सयक निकट’ अछि, ‘बारह सय पूरा’ नहि। गोप कुमार कहैत छथि जलसमाधिकेँ ‘लगभग बारह सय बरख होय बला अछि’। बूढ़बा सेहो ‘जँ अहाँक हिसाब सही होइक’ कहि गणनाक शर्त स्वीकार करैत छथि। एहि सूक्ष्म वाक्यसभसँ पाठक बुझैत अछि जे सटीक कालमापन एखन निश्चित नहि। आलोचनामे बारह सय वर्षकेँ पूर्ण प्रमाणित आयु घोषित करब मूल कथनक सावधानी नष्ट करैत। समीक्षाक उचित ध्यान संख्या किएक आकर्षक बनैत अछि, आ कथावाचक किएक ओकरा शर्तसहित रखैत अछि, एहि द्वैधपर रहबाक चाही।

नामक सूची आ विशाल काल

गोप कुमारक गणनामे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सावित्री सहित अनेक नाम अबैत अछि। ई सूची कालक निराकार विशालताकेँ व्यक्तिसँ जोड़ैत अछि। जे इतिहास केवल वर्षक क्रम रहितय, ओ नामसभक आविर्भावसँ समाजक जीवित अनुभव बनैत अछि। मुदा सूची स्वयं संक्षिप्त अछि; प्रत्येक व्यक्तिक पूर्ण कथा

एतय पुनः वर्णित नहि। एहि कारण पाठकक स्मरण-क्रिया अनिवार्य अछि: पुरान अध्यायमे भेटल नामक अर्थ एतय लौटलापर नूतन सान्द्रता पबैत अछि।

बूढबा : कालक्रमक केन्द्र, किन्तु एकमात्र पात्र नहि

गोप कुमार एक बात ध्यान करैत छथि—सभ पीढ़ी बदलल, मुदा बूढ़बाक नाम निरन्तर उपस्थित रहल। एहि स्थायित्वक बलपर गणना सम्भव भऽ रहल अछि। बूढ़बा तथापि अपन आयुसँ अधिक ओ सभ नामक महत्त्व बतबैत छथि जे बचल, हेरायल अथवा एखन धरि धेने जा रहल अछि। व्यक्तिक असाधारण निरन्तरताकेँ पाठ सामुदायिक स्मृतिक अधीन राखबाक प्रयास करैत अछि। एहि विरोधसँ बूढ़बाक स्मृति-कथन एकल महापुरुषक जीवनवृत्त बनबाक जोखिमसँ बचैत अछि; हालाँकि हुनकर केन्द्रीयता कथानकक संरचनात्मक तथ्य रहैत अछि।

गोप कुमारक दृष्टिसँ इतिहासक पुनर्व्यवस्था

कथावाचक गोप कुमारक आश्चर्यक संग गणनाक आविष्कार देखबैत अछि। गोप कुमार आरम्भमे नाम जोड़ैत छथि, क्रमशः आँखिमे विस्मय बढ़ैत अछि, आ अन्तमे विशाल कालक मानवीय अर्थ बुझैत छथि। ई खोजक नाट्यक्रम अछि; कोनो पूर्वप्रदत्त तिथि केवल सूचना रूपमे नहि रखल गेल अछि। संख्याक अर्थ पात्रक अनुभवमे बदलैत अछि। पाठक गणनाक अन्तरंग प्रक्रिया देखैत अछि—एक-एक पीढ़ीक जोड़, आश्चर्य, संवाद, फेर पुनर्व्याख्या। एहि क्रमसँ इतिहासलेखन स्वयं कथा-अन्तर्गत घटना बनैत अछि।

दुर्लभ हँसी : समयक भावात्मक लय

बूढ़बा गणना सुनि धीरे हँसैत छथि। गामवासी एहि हँसीकेँ दुर्लभ आ अविस्मरणीय मानैत छथि। दीर्घकालीन दुःखक साक्षीक हँसी संख्याक भारकेँ मानवीय क्षणमे बदलैत अछि। एहि दृश्यमे केवल अचम्भित आयु नहि, मृत्यु आ जीवित रहबाक कठोर स्मृतिक बीच एक हलुक प्रसन्नता सेहो अछि। संख्या गोल होएबाक मजा बूढ़बाक लेल अस्थायी अछि; तुरन्त ओ फेर नामसभक चर्चा करैत छथि। एहि लयमे उल्लास अत्यन्त छोट, उत्तरदायित्व दीर्घ बनैत अछि।

गोल संख्या आ कथाक अपूर्णता

‘बारह सय’ एक याद राखय योग्य, गोल संख्या अछि। बूढ़बा मानैत छथि जे लोक हुनका एहि संख्यासँ स्मरण करि सकैत अछि, मुदा जोड़ैत छथि जे संख्यासँ कथा पूर्ण नहि होइत। ई स्वयं उपन्यासक आकारपर टिप्पणी जकाँ अछि: अध्यायसँ अध्याय, बरखसँ बरखक मात्रा कृतिक मूल्यक पूर्ण निर्धारक नहि। संख्या एक प्रवेश-द्वार बनैत अछि; भीतर असंख्य जीवनक विवरण अछि। गिनती आ कथा बीचक ई अन्तर, दस्तावेजी सामग्रीक विस्तारक बावजूद, विशिष्ट व्यक्तिक अनुभव बिसरबाक विरुद्ध चेतावनी रचैत अछि।

नाम बचल आ नाम हेराएल : पूर्णताक सीमारेखा

बूढ़बा उल्लेख करैत छथि जे कतेक नाम बचल, कतेक हेराएल, कतेक एखनु धरल जा रहल अछि। ई त्रिभाजन स्मृतिक नैतिक अर्थक संग आख्यानात्मक अपूर्णता सेहो देखबैत अछि। जँ सभ नाम बचल रहितय तँ खोज आ

संग्रहक आगू कोनो कारण नहि रहितय। ‘हेराएल’ नामक अस्तित्व कथाक रिक्त स्थान बतबैत अछि, जकर पूर्ति भविष्यक अनुसंधानक विषय भऽ सकैत अछि। गोप कुमारक डिजिटल अभिलेख एहि रिक्तताक पूर्ति करबाक प्रयास अछि, परन्तु अध्याय ई नहि कहैत जे सभ हेराएल नाम भेटि चुकल अछि।

कालक बहुवचन : एक घटना, अनेक युग

गोप कुमारक गणनासँ पाठक देखैत अछि जे जलसमाधि, शंख–रजत, अकाल, बाढ़ि, युद्ध आ महामारी सभ अलग सामाजिक समयमे घटल। एका-एक साँझक भीतर ओहि सभकेँ जोड़ला पर ऐतिहासिक काल एक लम्बा प्रवाह बनैत अछि। मुदा गीत स्वयं सावधान करैत अछि—‘एक साँसमे नहि बीतल’। गीतक एहि कथनमे समय-संपीडनक विरुद्ध प्रतिरोध अछि। गद्यक गणना जहिना जटिल समयकेँ संख्यामे समेटैत अछि, गीत तहिना ओकर संघर्षपूर्ण विस्तार स्मरण करबैत अछि। एहि द्वन्द्वसँ अध्याय मात्र काल-सूचना नहि रहैत।

खण्ड-पूर्वकथा आ सम्भावित अग्रकथाक सम्बन्ध

कथावाचक अन्तमे कहैत अछि जे बारह सयक संख्या आगाँ दोसर भाषा अथवा दोसर पीढ़ीक जीभपर दोहरायल जा सकैत अछि, शीर्षक-सन बनि सकैत अछि। ई भविष्यक वाचन-अवस्थाक संकेत अछि, वर्तमान गाममे घटित घटना नहि। एहिमे पाठ अपन आगेक सम्भावित पाठककेँ कल्पना करैत अछि। आत्म-सन्दर्भक एहि क्षणसँ कृति अपन रचना आ पुनर्लेखनक विधिपर विचार करैत अछि। एक ठाम घटना, दोसर ठाम ओहि घटनाक नामकरण—दुनूकेँ कथात्मक स्तर अलग राखब जरूरी अछि।

अनुष्ठानिक पुनरावृत्ति आ गणनात्मक फरक

पहिनेक अध्यायसभमे नाम-स्मरण गीत, कबड्डी, पीपरक सभा आ पंजीक माध्यमसँ चलैत रहल अछि। गोप कुमार एखन ओहि सतत कर्मकेँ गणनात्मक कालक्रममे बदलैत छथि। लोक-स्मरण बारम्बार सामूहिक प्रदर्शन अछि; कालक्रम एकीकृत रचना बनबाक कोशिश। दुनू प्रारूप अलग सूचना दैत अछि: गीत अनुभवक आवर्त लैत अछि, अभिलेख घटना-सम्बन्धक दिशा। एहि अध्यायमे एक रूप दोसराकेँ मेटबैत नहि; बल्कि एकरा बुझबाक नव उपाय देबाक कारण पुरान स्मरणक महत्त्व आओर बढ़ैत अछि।

बूढ़बाक अमरता : कथाक विधान, इतिहासक दावा नहि

लगभग बारह सय वर्ष धरि एक साक्षीक उपस्थिति कथाक कल्पनाशील आ दीर्घकालिक विधान अछि। एहि विधानकेँ बाहरी इतिहासक सत्यापनयोग्य आयु-साक्ष्य जकाँ प्रस्तुत करब पाठक स्वरूपक भ्रम पैदा करत। उपन्यास एहि असाधारण निरन्तरताकेँ सामाजिक स्मृतिक शारीरिक केन्द्र बनाकऽ उपयोग करैत अछि। एहन पात्रक सहारे शताब्दियोंक अनगिनत असम्बद्ध घटनाक बीच कथात्मक सूत्र बनैत अछि। समीक्षाक काज एहि सूत्रक क्रिया बुझब अछि, कालातीत जीवनक वस्तुगत पुष्टि करब नहि।

गीतक संकट-सूची आ गद्यक संग्रह-सूची

गीत बाढ़ि, अकाल, युद्ध आ महामारीक आवर्तक नाम लैत अछि; गद्य गोप कुमारक गणनामे अलग पीढ़ीक पात्रसभकेँ जोड़ैत अछि। गीतमे इतिहास संकट आ पुनः ठाढ़ होएबाक ताल, गद्यमें नाम आ तिथि बनैत अछि। ई दुनू सूची वाक्यांशक पुनरावृत्तिसँ एकता रचैत अछि, मुदा दुनूक भाव अलग अछि। संकट-सूची समाजक सामूहिक सहनशीलता देखबैत अछि; नाम-सूची ओकर बहुवचन जीवन। एकर संयुक्त प्रभाव एहि बातपर निर्भर अछि जे पाठक दूनूकेँ परस्पर जुड़ल, मुदा समान नहि, मानय।

भविष्यक शीर्षकक संकेत आ पाठकीय प्रत्याशा

अन्तिम पंक्तिमे ‘एकटा दोसर भाषामे’ संख्या दोहराएबाक अनुमान नयका पात्र वा घटनाक स्पष्ट परिचय नहि दैत। ई एक व्यापक अन्तरपाठीय अपेक्षा बनबैत अछि। विशाल समीक्षामे एहि सम्भावनाकेँ विशिष्ट आगामी पुस्तकक निश्चित प्रकाशन-विवरण, भाषान्तरक पूर्ण योजना, वा अवश्यंभावी कथाकथन बनाकऽ प्रस्तुत नहि कएल जाए। मूल दृश्य केवल पूर्वाभास अछि। ओकर प्रभाव पाठककेँ लगबैत अछि जे कथाक अर्थ अभी भी पढ़ल जाएब शेष अछि; ओ इतिहास जे गणनाक मेजपर समेटल, दोसर वाचनमे फेर खुलि सकैत अछि।

समग्र आख्यानात्मक मूल्यांकन

अध्याय [–२२] घटनाक नयका संकट नहि अनैत; ओ पूर्वक संकटसभकेँ गणनाक माध्यमसँ नव दृष्टि दैत अछि। गोप कुमारक अभिलेख इतिहासक पैघ फैलाव पकड़ैत अछि, बूढ़बाक उत्तर ओहि गणनाक मानवीय सीमा बतबैत अछि। ‘लगभग’ आ ‘जँ’ सन शब्द पाठककेँ निश्चित संख्या आ अनुमान बीचक भेद बुझबैत छथि। एहि अध्यायक मूल्य समयक विराटताकेँ अमूर्त महिमामण्डन बनाबय बिना, ओकर भीतर हुलासा, रत्ना, सुखदेव आ अनगिनत लोकक नाम सम्हारबाक आग्रहमे अछि।

प्रकरण ८० | मूल अध्याय –२१ — अनन्याक प्रश्न

दृश्य-परिवर्तन : दीर्घ इतिहाससँ कक्षाक भीतर

अध्याय [–२२] मे गोप कुमार शताब्दीक कालक्रम जोड़ैत छलाह; एहि अध्यायमे कथा एक आधुनिक कक्षाक भीतर आबि जाइत अछि। समयक पैघ फैलाव एक शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्धमे समेटल गेल अछि। अनन्या नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिक शाखामे पढ़बैत छलीह, जाहिमे पुरान स्मृतिक संस्था शिक्षाक नव पद्धतिसँ जुड़ैत अछि। एहि विन्यासमे विद्यालय केवल पृष्ठभूमि नहि; पाठक प्रत्यक्ष देखैत अछि जे कथाक पूर्वपीढ़ीक जमा अनुभव नव पीढ़ीक दृष्टिमे कोना हस्तान्तरित होइत अछि। महान घटनाक स्थानपर एक छोट प्रश्न निर्णायक कथात्मक गति बनि उठैत अछि।

रटल उत्तरसँ सक्रिय प्रश्न धरि

अनन्याक कक्षामे प्रश्न पुछनिहार बच्चा प्रशंसा पबैत छथि; कोनो प्रश्नकेँ मूर्खतापूर्ण नहि कहल जाइत। ई शिक्षणविधान पाठककेँ कथाक भीतर अनिश्चितताक स्थान देखबैत अछि। पहिने बूढ़बा अनेक प्रसंगक व्याख्याता

छलाह; एतय शिक्षिका बालकसभकेँ अपन प्रश्नक स्रोत बनबैत छथि। एहि परिवर्तनसँ ‘ज्ञान’ तैयार वाक्यक उत्तराधिकार मात्र नहि रहैत, नव अर्थक उत्पादन बनैत अछि। आलोचनाक दृष्टिएँ मुख्य बात कोनो दार्शनिक सिद्धान्तक सत्यता नहि, बल्कि संवादमे प्रश्न पुछबाक अधिकारक विस्तार, श्रोता–वक्ता सम्बन्धक बदलाव आ नयका कथनगत सक्रियता अछि।

नन्दक प्रश्न : चरित्रक पहिल प्रत्यक्ष चिन्ह

अध्याय [–२३] मे नन्द नवजात रहैत अछि, जकरा भविष्यक महत्त्व वयस्कसभक स्वरमे कहल जाइत छल। आब ओ स्वयं हाथ उठा प्रश्न पुछैत अछि। ई छोट क्रिया ओकर व्यक्तित्वक पहिल ठोस कथात्मक प्रदर्शन थिक। बूढ़बाक पूर्वाभास मात्र ओकर पहचान निर्धारित नहि करैत; कक्षाक भीतर नन्द अपन शब्दसँ स्वयं प्रस्तुत होइत अछि। ई फर्क महत्त्वपूर्ण अछि: जन्मक दृश्य ‘एकर जीवन महत्त्वपूर्ण होएत’ कहैत अछि, कक्षाक दृश्य ‘ई बच्चा कोना सोचैत अछि’ देखबैत अछि। नायक-निर्माणक विश्वसनीयता एहि सक्रिय प्रश्नसँ बढ़ैत अछि।

शंख-रजतक प्रसंगक पुनर्कथन

अनन्या कक्षामे पुरान शंख–रजतक कथा सुनबैत छलीह—एक मनुष्यक चानी बुझि लेबाक प्रसंग। ई पूर्वकथाक पुनरागमन मात्र कथासार नहि: नव श्रोता, नव शिक्षिका आ नव प्रश्न संग पुरान घटना दोसर अर्थ ग्रहण करैत अछि। प्राचीन दृष्टिभ्रमक कथा एखन शिक्षण-सामग्री बनैत अछि। एहि पुनरावर्तनमे घटनाक अविकल प्रतिलिपि नहि, प्राप्तकर्ता बदललाक कारण कथाक कार्य बदलैत अछि। जे कथा पहिने पहचानक भ्रम छल, से आब प्रश्नक अभ्यास बनैत अछि। पाठ एहि अन्तरक माध्यमसँ सामुदायिक स्मृतिक गतिशीलता प्रकट करैत अछि।

शिक्षकक मुस्कान : घटनात्मक छोट परिणति

नन्द पुछैत अछि—जँ मनुष्य पहिने सचमुच चानी थिक की नहि पुछितथि, तँ ठगल नहि जइतथि? अनन्या मुस्कुरा दैत छलीह। एहि छोट प्रतिक्रिया सँ कक्षाक प्रसंग पूर्ण होइत अछि। शिक्षक द्वारा लम्बा उत्तर देने बिना, दृश्य प्रश्नक नैतिक आ बौद्धिक मूल्य स्थापित करैत अछि। मुस्कान सहज स्वीकृति अछि; पाठ एतय नन्द द्वारा कोनो ठगक जाल निष्फल कएल गेल, एहन घटना नहि देखबैत। भविष्यक वीरता एक दैनिक कक्षाक कौशलसँ प्रतीकात्मक रूपेँ आरम्भ होइत अछि।

बाल-पात्रक अन्तरंगताक सीमा

कथावाचक नन्दकेँ सबसँ बेसी प्रश्न पुछनिहार बच्चा कहैत अछि, मुदा ओकर भीतरक सम्पूर्ण मनोप्रक्रिया सीधे प्रस्तुत नहि करैत। ओकर विचारक केन्द्र एक विशेष प्रश्न अछि, जे बालकक क्रियासँ जानल जाइत अछि। एतय पाठककेँ नन्दक बौद्धिक आकृति परोक्ष व्यवहारसँ बनाबय पड़ैत अछि। शेष सहपाठीक नाम अथवा प्रश्न अलग-अलग देल नहि अछि। एहि चयनसँ नन्द केन्द्रमे अबैत अछि, मुदा कक्षाक बहुस्वरित सम्भावना पृष्ठभूमिमे रहि जाइत अछि। ई कथन-दृष्टिक सीमा अछि, अनुपस्थित बच्चासभपर मनगढ़न्त प्रतिक्रिया आरोपित करबाक अवसर नहि।

अनन्याक संस्थागत अधिकार

अनन्या केवल बूढ़बाक विचार दोहराबयबाली पात्र नहि छथि। ओ विद्यालयक व्यवहार बदलैत छलीह—रटन्त पद्धतिक बदला प्रश्नक प्रतिष्ठा स्थापित करैत छलीह। कक्षा अपन नियमक अनुसार चलैत अछि, जाहिमे बच्चा बोलि सकैत अछि। गामक बूढ़-पुरान पहिने चकित, फेर परिवर्तन देखि प्रभावित होइत छथि। एहि क्रमसँ एक नव शिक्षिकाक सामाजिक स्थान बनैत अछि। बूढ़बाक समर्थन ओकर कामकेँ मान्यता दैत अछि, मुदा विद्यालयक दृश्य अनन्याक स्वतन्त्र कर्तृत्वक पहिल आधार अछि; ओकर योगदानकेँ केवल पुरान कथनक भाषान्तर कहि सीमित करब अनुचित होएत।

गीतक गुम्बद आ दृश्यकी वास्तविकता

लोकगीतमे छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दैत अछि। एहि रूपकक गुम्बद शंका वा स्थापित भ्रमक संकेत अछि; गद्यक कक्षामे कोनो वास्तविक गुम्बद टूटैत नहि। गीत विजयी आ व्यापक सामान्यीकरण करैत अछि, गद्य एक शिक्षक–विद्यार्थी संवाद देखबैत अछि। दूनूक अन्तरक कारण प्रश्नक प्रभाव एक संग वास्तविक आ रूपकात्मक होइत अछि। आलोचनामे गीतक रूपककेँ विद्यालयक निर्माण-क्षति अथवा ठोस राजनीतिक घटना बनाकऽ लिखब मूल पाठसँ बाहर चली जाएब होएत।

प्रश्नक आवृत्ति आ कथागत गति

अध्यायमे अनन्याक दैनिक शिक्षण एकवचन घटना नहि, बारम्बार चलनिहार अभ्यास रूपमे कहल गेल अछि—हर दिन नव प्रश्न पुछब। एहि आवर्तक कथनक बीच एक विशेष दिन नन्दक प्रश्न दृश्य रूपमे उभरैत अछि। एतय संक्षेप आ दृश्यक अनुपात साहित्यिक अर्थ उत्पन्न करैत अछि: अभ्यासक दीर्घ आवृत्ति चरित्रक स्थायी आदत बनैत अछि, आ एक उद्धृत प्रश्न ओकर अनुभवजन्य उदाहरण होइत अछि। उपन्यास अनेक वर्षक शिक्षणकेँ एक क्षणमे सघन करैत अछि। एकर फलस्वरूप पाठक नन्दक आगामी जीवनक आधार बुझैत अछि, मुदा विस्तृत पाठशालाक सम्पूर्ण इतिहास नहि पाबैत।

पूर्वाध्यायक डिजिटल ठगीसँ सम्बन्ध

अध्याय [–३८], [–३६] आ [–३५] मे डिजिटल अफवाह, आर्थिक ठगी आ नौकरीक झाँसाक खतरा उपस्थित भऽ चुकल अछि। एहि पृष्ठभूमिमे अनन्याक प्रश्नशिक्षा नया सामाजिक संकटसँ सम्बन्धित लगैत अछि। मुदा एहि अध्यायमे नन्द स्वतः कोनो ऑनलाइन अपराध समाधान नहि करैत। कथन पहिले प्रवृत्ति गढ़ैत अछि, ओकर सम्भावित उपयोग भविष्यक लेल रखैत अछि। एहि प्रकारेँ कथा क्षमता आ उपलब्धि बीच विलम्बित सम्बन्ध बनबैत अछि। पूर्वाध्यायसभक चिन्ता एहि कक्षाक लघु दृश्यकेँ महत्व दैत अछि, परन्तु ओ भविष्यमे घटबाक निश्चित घटना नहि निर्धारित करैत।

पीपर आ पाठशाला : दू शिक्षण-स्थान

बूढ़बा पीपर लग अनन्याकेँ सम्बोधित करैत छथि, जखन कि नन्दक प्रश्न विद्यालयमे घटैत अछि। ई दू स्थानक व्यवस्था महत्त्वपूर्ण अछि। पीपर दीर्घ सामुदायिक स्मृतिक आ अनुष्ठानिक संवादक केन्द्र अछि; पाठशाला

औपचारिक अभ्यास आ युवापीढ़ीक प्रत्यक्ष प्रश्नक क्षेत्र। अनन्या दुनू स्थानमे उपस्थित भऽ ज्ञानक प्रवाह बनबैत छथि। उपन्यास एहि सेतुसँ परम्परा आ आधुनिक शिक्षाकेँ एक-दोसराक शत्रु नहि बनबैत। तथापि विद्यालयक संशोधनकेँ पीपरक अनुष्ठानक ज्यों-के-त्यों निरन्तरता मानबो उचित नहि; संस्थागत रूप अलग रहैत अछि।

गंगेशक उपस्थिति : पात्र नहि, कथात्मक स्मृति

गंगेशक नाम कक्षा, गीत आ बूढ़बाक संवादमे अबैत अछि। एहि अध्यायमे ऐतिहासिक गंगेश स्वयं प्रत्यक्ष दृश्य-पात्र नहि छथि। हुनकर पुरान कथा वाक्य, शिक्षापद्धति आ स्मृतिक माध्यमसँ पुनः सक्रिय होइत अछि। एहि प्रतीकात्मक उपस्थितिक कारण उपन्यास शताब्दीक अन्तरकेँ शिक्षणक वर्तमान क्षणमे जोड़ैत अछि। समीक्षाक मुख्य प्रश्न ई अछि जे नामक स्मृति बालकक प्रश्न-व्यवहारमे कोना बदलल, न कि एतय कोनो विशिष्ट तर्कपद्धतिक स्वतन्त्र परीक्षण कोना कएल जाए।

भविष्यवाणीक अन्तिम वाक्यक भूमिका

अध्यायक अन्तिम कथन नन्दक प्रश्न-पुछबाक आदति आगामी एहन ‘गोहि’क विरुद्ध उपयोगी हएत जकरा प्रश्ने हरा सकैत अछि। ई नन्दक शिक्षा लेल दीर्घगामी परिणामक पूर्वसूचना अछि। मुदा कोन गोहि, कोन संघर्ष, कोन उपाय आ कोन परिणाम—एखन सबटा अस्पष्ट अछि। कथावाचक एहि अनिश्चिततासँ छुपबैत नहि, उलटे भविष्यक अस्पष्ट खतराक रूपमे सजग करैत अछि। एहन कथात्मक पूर्वाभास अध्यायसँ अध्याय पढ़निहार पाठकक अपेक्षा निरन्तर जीवित रखैत अछि।

सफल शिक्षाक कथा आ ओकर चयनात्मकता

अध्यायमे अनन्याक प्रश्नाधारित शिक्षाक प्रभाव सकारात्मक देखाओल गेल अछि; विरोधक रूपमे रटन्त-पद्धति उपस्थित अछि। मुदा कोनो बच्चाक असहमति, पाठशालाक संसाधन-संकट वा शिक्षणक विफल उदाहरण प्रत्यक्ष नहि देल गेल। एहि चयनसँ अनन्याक कर्तृत्व स्पष्ट होइत अछि, मुदा संस्थागत यथार्थक विस्तार सीमित रहैत अछि। आलोचनामे एतय काल्पनिक कक्षासंघर्ष जोड़बाक स्थान नहि। उपलब्ध दृश्य एक आदर्शीकृत, परन्तु कथात्मक रूपसँ सार्थक शिक्षण-क्षण अछि, जकर प्रभाव नन्दक आगेक गठनक संग जुड़ैत अछि।

समग्र निर्णय : प्रश्नक जन्म

‘अनन्याक प्रश्न’ वास्तविक अर्थमे नन्दक दोसर जन्मक कथा अछि—पहिल जन्म शरीरक, दोसर प्रश्नात्मक दृष्टिक। ई वाक्य आलोचनात्मक रूपक थिक, गद्यमे घटित कोनो दोसर जन्म नहि। नवजातक चिन्हित भविष्य एतय एक दिनक कक्षामे कर्मरूप धारण करैत अछि। अनन्याक संस्था, नन्दक एक उद्धृत प्रश्न, बूढ़बाक आशा आ पुरान शंख–रजतक स्मृति मिलि दीर्घ उपन्यासक मुख्य शृंखलाकेँ भविष्यक संकटसँ जोड़ैत अछि। अध्यायक शक्ति उत्तरे नहि, भविष्यक उत्तर खोजबाक आदत गढ़बामे अछि।

प्रकरण ८१ | मूल अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाब

पुल-निर्माणक स्थल : तकनीकक पाछाँ मनुष्य

युवा नन्द इंजीनियरिंगक पढ़ाइक बाद पुल-निर्माण स्थलपर काज करय जाइत अछि। ओकर पिता आरुणि सेहो निर्माणक कथा धेने छथि, तेँ पेशागत उत्तराधिकार स्पष्ट अछि। मुदा नन्दक दृष्टि पत्थर, बान्ह आ ढाँचासँ घूमि मजदूरक जीवनपर पहुँचैत अछि—टूटल झोपड़ी, कम मजदूरी, असुरक्षित काजक स्थिति। एहि परिवर्तनसँ निर्माणक नायक-केन्द्रित कथा श्रमजीवीक अनदेखल जीवनक कथा बनैत अछि। पुलक भौतिक महत्त्व कम नहि होइत, मुदा ओकर निर्माणक सामाजिक खर्च कथाक मुख्य चिन्ताक रूपमे सोझाँ आबैत अछि।

सुनल घटना आ घटित घटनाक भेद

नन्द पुलक स्थलपर एक मजदूरक रातिमे गायब भऽ जाएबाक कथा सुनैत अछि। पाठ एहि विशेष गायब होएबाक घटना नन्दक आँखिक सोझाँ घटैत देखबैत नहि; नन्द बूढ़बाकेँ सेहो ‘हम ... कथा सुनलहुँ’ कहैत अछि। एहि सूचनाक माध्यम महत्त्वपूर्ण अछि। मजदूरक नाम अथवा गायब होएबाक वास्तविक कारण एतय स्पष्ट नहि, आ ओकर मृत्यु सेहो निश्चित नहि कहल गेल अछि। समीक्षा लेल ई अनिश्चितता स्वयं महत्त्वपूर्ण कथात्मक तथ्य अछि: श्रमिक ओहि हिसाबक बाहर अछि, जतय ओकर उपस्थितिक अभिलेख रहबाक चाही।

कटि गेल नाम : दस्तावेजी लोपक हिंसा

ठेकेदारक कागचसँ गायब मजदूरक नाम कटि जाइत अछि। एहि छोट विवरणमे उपन्यासक दीर्घ नाम-स्मृति परियोजना एक नव प्रशासनिक संघर्ष प्राप्त करैत अछि। देहक अनुपस्थिति आ कागजक अनुपस्थिति एक-दोसराकेँ बेसी खतरनाक बनबैत अछि। जँ नाम रजिस्टरमे नहि, तँ श्रमक मान्यता, मजदूरीक हिसाब आ बादक न्याय मांगबाक सामाजिक आधार धुँधला होइत अछि। मुदा एतय किसी ठेकेदारक व्यक्तिगत हत्या अथवा दस्तावेजी षड्यंत्रक पूरा कड़ी पाठमे नहि देल गेल; आलोचना कागज-सँ-मेटाब कृत्यक कथात्मक महत्त्वपर केन्द्रित रहबाक चाही।

शीर्षकक ‘छपाक’ : ध्वनि बनाम घटना

शीर्षक आ गीत ‘पहिल छपाक’ तथा पानीमे नाम डूबबाक चित्र दैत अछि। मुख्य गद्यमे पुल-निर्माण आ गायब मजदूरक सूचना अछि; कोनो प्रत्यक्ष शारीरिक जलसमाधि अथवा पानीमे वास्तविक छपाकक विस्तृत दृश्य नहि। एहि कारण शीर्षकक ध्वनिचित्र केन्द्रीय रूपक अछि, एखन घटित जलदुर्घटनाक सिद्ध विवरण नहि। उपन्यासक अतीतक गोहि, पोखरि आ डूबनाइ एहि शब्दमे प्रतिध्वनित अछि। एहि प्रतीकात्मक पुनरावर्तनसँ नाम-लोपक नव व्यवस्था पुरनका जल-संकटक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि।

अनन्याक प्रश्नशिक्षाक प्रत्यक्ष परिणाम

पछिला अध्यायमे अनन्या नन्दकेँ प्रश्न पुछबाक आदत सिखबैत छलीह। एतय नन्द अनदेखल मजदूरक खबर सुनि चुपचाप तकनीकी काजमे नहि लौटैत; ओ बूढ़बाक सोझाँ प्रश्न रखैत अछि। ई पहिल ठोस संक्रमण अछि—

कक्षाक कौशल जीवनक असमानता देखबाक दृष्टि बनैत अछि। नन्दक संवेदनशीलता केवल जन्मक भविष्यवाणी नहि; पूर्वाध्यायक शिक्षाक कारण विकसित चरित्रगत अभ्यास बनैत अछि। तथापि नन्द एखन मजदूरक नाम खोजि लेने नहि अछि। पात्रक नैतिक जागरण आ जाँचक परिणामकेँ अलग राखब कथा-बोध लेल आवश्यक अछि।

बूढ़बाक सुखदेव-स्मरण : पुनरावर्तनक नैतिक सम्बन्ध

बूढ़बा गायब मजदूरक कथा सुनि सुखदेव महतोक नाम मोन पाड़ैत छथि। ई स्मरणक कारण वर्तमान घटना पुरान भूमि-अन्याय आ नाम-लोपसँ जुड़ैत अछि। साम्यक आधार आधिकारिक हिसाबमे वंचितक अनुपस्थिति अछि; मुदा दुनू घटनाक परिस्थितिसभ सर्वथा समान नहि। सुखदेवक पूर्वकथा एतय अर्थक पूर्वपीठिका दैत अछि, गायब मजदूरक वास्तविक परिचय नहि। एहि अन्तरमे अन्तरपाठीय स्मृति प्रभावी होइत अछि: दीर्घ उपन्यासमे पुरान दुःख वर्तमान घटनाकेँ देखबाक भाषा उपलब्ध करबैत अछि।

‘नाम खोजू’ : बूढ़बाक आदेशक सीमा

बूढ़बा नन्दकेँ मजदूरक नाम खोजबाक, भेटलापर सुरक्षित राखबाक आग्रह करैत छथि। वाक्यमे ‘जँ भेटय’ शर्त अछि। एहि शर्तक कारण पाठ स्पष्ट करैत अछि जे गायब मजदूरक नाम तत्काल उपलब्ध नहि। नन्दकेँ खोजक उत्तरदायित्व सौंपल जाइत अछि, सफल खोजक समाचार नहि। एतय नैतिक आदेश भविष्यक अन्वेषणक प्रारम्भ अछि। पूरा दीर्घ उपन्यासक भीतर ई क्षण महत्त्वपूर्ण किएक तँ स्मृति निष्क्रिय श्रद्धाञ्जलिसँ सक्रिय खोजक कार्यक्रममे बदलैत अछि।

दुइ पुल : भौतिक संरचना आ कथात्मक सम्बन्ध

बूढ़बा पुलक दोसर अर्थ बतबैत छथि—नाम आ हिसाबक बीच पुल। एक कात ठोस नदीपार निर्माण, दोसर कात अमूर्त सामाजिक अभिलेख। ई द्वैत केवल शब्दक खेल नहि; नन्दक कर्मक्षेत्र बदलैत अछि। आरुणि बनाओल पुलक रखरखाव सिखने छथि, नन्द भूलल श्रमिकक नाम जोड़बाक दायित्व लैत अछि। दुनू निर्माण दीर्घकालिक अछि, दुनूकेँ श्रम चाही, मुदा विषय भिन्न: एकर लक्ष्य पहुँच, दोसरक लक्ष्य स्मृति आ न्यायसँ सम्बन्धित दृश्यता।

डायरीक पहिल पन्ना : आत्मकथनक प्रारम्भ

नन्द अपन डायरीमे पहिल बेर बूढ़बाक पुरान वाक्य ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’ लिखैत अछि। उल्लेख अछि जे ई वाक्य दादीक माध्यमसँ ओकरा सुनाइ पड़ल छल। एतय मौखिक पीढ़ी-सञ्चार लिखित आत्म-अभिलेखमे बदलैत अछि। नन्द बूढ़बाक कथन केवल उद्धृत नहि करैत; अपन पेशागत अनुभवक आलोकमे ओकरा जीवनक मार्गदर्शक बनबैत अछि। तथापि डायरीक एखन एक पहिल पन्ना अछि, सम्पूर्ण विवरण-पुस्तक नहि। लिखबाक ई प्रारम्भ आगामी साक्षित्वक आधार होइत अछि।

‘छपाकक हिसाब’ नामक समयगत स्थगन

कथावाचक कहैत अछि जे एहि डायरीकेँ नन्द आगाँ ‘छपाकक हिसाब’ कहत। अर्थात् नामकरण भविष्यक कथनकालमे प्रस्तावित अछि। वर्तमान दृश्य नन्द द्वारा पहिल वाक्य लिखबाक अछि; एतय कोनो सम्पूर्ण नाटकीय पुस्तकक प्रकाशन, अथवा विस्तृत श्रमिक-सूची तैयार भऽ चुकल, एहन बात नहि। एहि कालगत विस्थापनसँ पाठककेँ आगू बनयबला दस्तावेजक अपेक्षा भेटैत अछि। एक शीर्षक वर्तमानमे बीज रूपेँ, भविष्यक कथा-रचनामे सम्पूर्ण रूपेँ उभरबाक संकेत दैत अछि।

अभिलेखक नैतिकता आ अदृश्य पात्र

मजदूरक गायब होएबाक प्रसंगमे पीड़ितक विशिष्ट नाम नहि देल गेल अछि। ई अनामिता कथा विषयसँ गहींर रूपेँ जुड़ैत अछि: नन्द ओ नामक खोज करबाक हेतु प्रेरित होइत अछि, जकर तत्काल अनुपस्थिति समस्याक मूल अछि। आलोचनामे मजदूरक काल्पनिक पारिवारिक जीवन, मौतक निश्चित कारण अथवा न्यायिक प्रक्रिया जोड़बाक अवकाश नहि। उपलब्ध न्यून जानकारीकेँ रचनात्मक शून्य मानल जाय—एहि शून्यक कारण खोजक क्रिया जन्म लैत अछि। नाम नहि उपलब्ध होएबाक तथ्य स्वयं कथा-प्रेरक घटना अछि।

गीतक पत्थर-पुल बनाम गद्यक अभियन्ता

गीत एक स्थापनामे ‘पत्थरक पुल छोड़ू, नामक पुल बान्हू’ कहैत अछि। गद्य नन्दक इंजीनियरिंगक त्याग नहि देखबैत; ओ निर्माण-स्थलसँ लौटि नैतिक अनुभव लिखैत अछि। एहि अन्तरकेँ ध्यानमे राखि गीतक आग्रहकेँ शाब्दिक पेशा-त्यागक निर्णय नहि मानल जाए। गीत नाम-स्मृतिक तात्कालिक महत्त्व अतिशय जोर दैत अछि; गद्य नन्दक दोसर जिम्मेदारीकेँ पहिल जिम्मेदारीक संग जोड़ैत अछि। ई संयुक्तता नन्दक चरित्रकेँ केवल तकनीकी अथवा केवल अभिलेखीय भूमिकामे सीमित नहि होमय दैत।

दृश्य, संवाद आ संक्षेपक विन्यास

कथावाचक निर्माण-स्थलपर मजदूरक जीवनक संक्षिप्त चित्र दैत अछि, फेर एक सुनी घटना, गामक वापसी, बूढ़बाक संवाद आ डायरीक प्रथम लेखनपर केन्द्रित होइत अछि। घटनाक प्रत्यक्ष दृश्यीकरण ओतय कम अछि जतय गायब होएबाक कड़ी देखायल जा सकितय। एकर बदला कथाक वजन नन्दक प्रतिक्रिया आ बूढ़बाक व्याख्या पर अछि। एहि चयनसँ अध्याय श्रम-अपराधक विस्तृत अन्वेषण नहि, साक्षी-पात्रक उदयक अध्याय बनैत अछि। समीक्षाक अन्तिम निर्णय एहि वास्तविक कथात्मक केन्द्रकेँ ध्यानमे रखबाक चाही।

पिता आ पुत्रक निर्माणगत भिन्नता

आरुणिक बान्हक परख बाढ़िक रातिमे भेल छल; नन्दक नैतिक परख श्रमिकक नाम गायब होएबाक समाचारसँ आरम्भ होइत अछि। दुनू पर्यावरण आ संरचना-सम्बद्ध स्थलपर उपस्थित छथि, मुदा खतरा एक नहि। आरुणिक प्रसंगमे बाढ़ि भौतिक बान्हकेँ जाँचैत अछि; नन्दक प्रसंगमे प्रशासनिक नाम-लोप सामाजिक बान्हकेँ जाँचैत अछि। एहि विरोधसँ दीर्घ उपन्यास परिवर्तनक अर्थ खोलैत अछि—तकनीकी प्रगतिक संग अन्याय स्वतः समाप्त नहि होइत। साक्षीभाव प्रत्येक पीढ़ीमे अलग संकटक अनुसार नया काम माँगैत अछि।

समग्र निर्णय : अभियन्तासँ साक्षी बनबाक क्षण

अध्याय [-२०] नन्दकेँ पूर्ण समाधानकर्ता नहि बनबैत, ओकर यात्राक नीतिगत आरम्भ देखबैत अछि। पाठमे गायब मजदूरक नाम नहि भेटल, परिणाम नहि तय भेल, डायरीक भावी रूप सेहो अनिर्णीत अछि। तथापि कक्षाक प्रश्न, निर्माणक प्रत्यक्ष असमानता आ बूढ़बाक पुरान सूत्र एकत्रित भऽ नन्दक आन्तरिक दिशा बदलैत अछि। ‘छपाक’क प्रतिध्वनिमे पुरान जल-हानि आ नव प्रशासनिक विस्मृति मिलैत अछि; पत्थरक पुलक संग नामक पुलक नूतन रूपक उपन्यासक आगामी साक्ष्य-कथाकेँ जमीन उपलब्ध करबैत अछि।

प्रकरण ८२ | मूल अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय

पहिने अधूरा रहल मौनक पुनरागमन

अध्याय [-३१] मे सत्यव्रत मेहता संदिग्ध बैंक-लेनदेन देखैत छलाह, मुदा ओखन चुप रहि निजी नोटबुकमे तिथि आ विवरण लिखैत छलाह। एहि अध्यायमे ओ आब वरिष्ठ पदपर छथि आ वैह पुरनका नोटबुक खोलैत छथि। ई कथात्मक पुनरागमन दीर्घ उपन्यासक समय-व्यवस्थाक ठोस उदाहरण अछि: एक पहिने स्थगित निर्णय अनेक बरख बाद फेर केन्द्रीय बनैत अछि। कथा एतय नयका संकट शून्यसँ पैदा नहि करैत; पहिने बोएल चुप्पीकेँ नयका परिस्थितिमे परीक्षा दैत अछि। पूर्व अध्यायकेँ बुझने बिना वर्तमान निर्णयक गहराइ घटि जाइत।

बिखरल बिन्दुसँ तस्वीर : जानकारीक पुनर्संयोजन

पुरान नोटबुकमे अलग-अलग तिथि, खाता आ रकमक विवरण छल। सत्यव्रत जखन ओकरा एक ठाम देखैत छथि, तँ एक पैघ लेनदेन-शृंखलाक पैटर्न उभरैत अछि। कथावाचक बिखरल बिन्दु सँ चित्र बनबाक उपमा दैत अछि। ई ज्ञान-वृद्धिक कथात्मक दृश्य थिक, पूर्ण बाहरी अनुसन्धानक रिपोर्ट नहि। पाठक सत्यव्रतक संग जानकारीक नयका सम्बन्ध देखैत अछि; पहिले जे अलग-अलग लगैत छल, आब एक-दोसरासँ जुड़ल देखाइ पड़ैत अछि। ई बदलावक कारण घटना-समूह पाठकक लेल सेहो नव, बेसी खतरनाक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

समुद्रपारक खाताक संकेत आ कथनक सीमा

लेनदेनक शृंखला दूर समुद्रपार धरि जाइत देखायल गेल अछि। किछु नाम बारम्बार अबैत अछि, मुदा एहि अध्यायमे स्पष्ट रूपसँ कोन व्यक्ति अपराध संचालित करैत छथि, एहन पूरा निष्कर्ष नहि स्थापित कएल गेल अछि। सत्यव्रत सोचैत छथि जे जालक तार ‘भरिसक’ शीशाक मीनार धरि पहुँचि सकैत अछि; ई सम्भावित सम्बन्ध अछि। अध्याय [-३२] मे अभिनव द्वारा पढ़ल समाचारक सायासँ एकरा जोड़ब पाठकीय दृष्टिएँ फलदायी अछि, मुदा एखन संशय आ स्थापित तथ्यक सीमा बनाएब अनिवार्य अछि। कथानक एहि आंशिक सम्बद्धतासँ आगामी खुलासाक अपेक्षा रचैत अछि।

शीर्षकक ‘निर्णय’ आ तत्काल कार्रवाईक अन्तर

‘सत्यव्रतक निर्णय’ सुनिते पाठककेँ सार्वजनिक उद्घाटन वा कानूनी कदमक अपेक्षा भऽ सकैत अछि। मुदा गद्य सत्यव्रतक नैतिक संकल्प, नोटबुक सुरक्षित रखबाक आ सही अवसरक प्रतीक्षाक रूपमे समाप्त होइत अछि।

एतय कोनो आधिकारिक शिकायतक पूर्ण प्रक्रिया, गिरफ्तारी अथवा अदालतक परिणाम नहि वर्णित। ई अन्तर कथानकक मूल तनाव अछि: भीतर निर्णायक परिवर्तन भेल, बाहर प्रभावकारी कदमक समय बाकी अछि। आलोचनामे निर्णयकेँ तुरन्त सफल अभियान मानि लेल जाए तँ चरित्रक भय, सजगता आ स्थगित संघर्षक गहराइ नष्ट भऽ जाएत।

वरिष्ठ पद : जानकारीक सीमा बदलब

पहिनेक सत्यव्रत अपनाकेँ ‘छोट कर्मचारी’ बुझैत छलाह; आब ओ बैंकक वरिष्ठ पदपर छथि। ई परिवर्तन किछु संस्थागत पहुँच आ लेनदेनक व्यापक तस्वीर देखबाक सुविधा देल अछि। मुदा उच्च पद ताकतवर जालक जोखिम अपने-आप दूर नहि करैत। उलटे अधिक जटिल जानकारी सामने अबैत अछि। पात्रक सामाजिक स्थिति बदलला पर कथनमे तकर भूमिका सेहो बदलैत अछि: पहिने आशंका आ निजी लेखन, आब संरचित शंका आ निर्णयक निकटता। ई क्रम कथानकक परिपक्वता बनबैत अछि, विजयक तात्कालिक घोषणा नहि।

बूढ़बाक भूमिका : आदेश नहि, जोखिमक स्मरण

बूढ़बा सत्यव्रतकेँ बोलबाक अवसर नजदीक अछि कहैत छथि, संगहि सावधानी, संगठित सहयोग आ ठोस विवरणक जरूरत बतबैत छथि। हुनकर वाणी पूर्वक मौन-विषयक संवादक निरन्तरता अछि। ओ सत्यव्रतक स्थानपर शिकायत नहि करैत छथि, ने ओकरा तुरन्त वीरता देखेबाक बाध्यता दैत छथि। ई सम्बन्ध गुरु आ निर्णयकर्ता बीचक दूरी बनाएबैत अछि। सत्यव्रतक अपन विवेक एखन सक्रिय रहैत अछि, बूढ़बाक कथन ओकर जोखिम देखबाक दृष्टि विस्तृत करैत अछि। एहि कारण चरित्रक नैतिक अधिकार पूर्णतः हस्तान्तरित नहि होइत।

चुप्पी : अभावसँ तैयारीक रूप

सत्यव्रत पहिने चुप छलाह, परन्तु नोटबुकमे विवरण लिखैत रहला। एहि अध्यायमे ओ कहैत छथि जे चुप रहब आब सम्भव नहि। तथापि अन्तिम पंक्ति फेर अवसरक प्रतीक्षाक अछि। ई वैरोध्य नहि, चुप्पीक दू भिन्न रूपक संकेत अछि। पहिने मौन भय आ सावधानीक मिश्रण छल; आब सार्वजनिक बोलबाक संकल्पसँ जुड़ल नियंत्रित तैयारी। उपन्यास एहि सूक्ष्म परिवर्तनकेँ नाटकीय भाषणसँ बेसी महत्त्व दैत अछि। एतय मौन न शुद्ध वीरता अछि, न स्वतः कायरता; ओकर अर्थ पात्रक समयस्थिति आ उद्देश्यसँ बदलैत अछि।

नोटबुकक द्वैत : निजी जोखिम आ सामूहिक भविष्य

सत्यव्रतक नोटबुक बैंकक तिथि आ लेनदेनक ब्योरा रखैत अछि। गोप कुमारक अभिलेख, विभाक प्राप्त दस्तावेज आ नन्दक नव डायरीक संग ई समान वस्तु-जगतमे आबैत अछि, मुदा कार्य अलग अछि। सत्यव्रतक पुस्तक निजी संरक्षण आ सम्भावित सार्वजनिक उद्घाटनक माध्यम अछि; गोप कुमारक संग्रह दीर्घ स्मृतिक; नन्दक डायरी नाम-लोपक अनुभवसँ आरम्भ। तीनूकेँ एकहि दस्तावेज कहि मिलायब भिन्न कथात्मक मार्ग मेटाएब होएत। साझा सूत्र लिखबाक क्रिया अछि, अलग-अलग जोखिम आ परिणाम अक्षुण्ण रहैत अछि।

बैंकक संख्या आ दृश्य-अनुपस्थित व्यक्ति

कथामे खाता, रकम आ तारीखक उल्लेख बेसी अछि, किन्तु जमा-पुँजी गमेनिहार विशिष्ट पीड़ितसभक विस्तृत स्वर एतय नहि सुनाइ पड़ैत। सत्यव्रतक दृष्टि वित्तीय प्रवाहक संगठन देखैत अछि। एहि चयनक कारण जालक व्यापकता उभरैत अछि, व्यक्ति-विशेषक करुण दृश्य अपेक्षाकृत पाछाँ रहैत अछि। समीक्षाक काज एहि कथनगत दूरीकेँ चिह्नित करब अछि। एतय नामसभ किछु परिचित, किछु अपरिचित कहि रखल गेल अछि; सभ नाम स्वयं निश्चित अपराधी वा निश्चित पीड़ित छथि, एहन सर्वमान्य निष्कर्ष सम्भव नहि।

‘अकेल मत लड़ू’ : साक्षीक सामाजिक स्वरूप

बूढ़बा सत्यव्रतकेँ ईमानदार अधिकारी वा साक्षीक सहयोग खोजबाक सलाह दैत छथि। पहिने दीर्घ उपन्यासमे नाम बचाबय लोकगीत, पंजी, स्त्रीसभा आ सामूहिक काजक माध्यमसँ होइत रहल अछि। एतय वित्तीय जालक मुकाबिला एक व्यक्तिक बौद्धिक क्षमता मात्रसँ नहि, सहयोगक सम्भावनासँ जोड़ल जाइत अछि। एहि कथनमे समाजक पुनरागमन अछि। मुदा सहयोगी व्यक्ति एखन दृश्य रूपमे उपस्थित अथवा गठित अभियानक सदस्य नहि छथि। कथा एक रणनीतिक सम्भावना खोलैत अछि, सफल समूहगत कार्रवाईक सूचना नहि।

डरक कथा : खतरा देखाइत, शत्रु अदृश्य

सत्यव्रत जालकेँ शक्तिशाली आ निर्दयी होएबाक सम्भावना बुझैत छथि, आ बूढ़बा एहि जोखिमकेँ स्वीकार करैत छथि। कथावाचक जालक बृहत्तर आकार देखबैत अछि, परन्तु ओकर प्रत्यक्ष संचालककेँ एहि अध्यायमे मंचपर नहि अनैत। एहि कारण प्रतिपक्ष आंशिक रूपसँ अदृश्य रहैत अछि। एहन अदृश्य प्रतिपक्षक विरुद्ध बिखरल विवरणक संग्रह नाटकीय महत्त्व पबैत अछि। पाठक जानैत अछि जे खतरा उपस्थित अछि, मुदा आक्रमणक ठीक दिशा नहि देखैत; ई सूचना-अपूर्णता भविष्यक कथानक लेल तनाव उत्पन्न करैत अछि।

गीतक निर्णायकता आ गद्यक प्रतीक्षा

गीत कहैत अछि जे मौन टूटत, निर्णय डगमगाएत नहि। गद्य अन्तमे नोटबुक सुरक्षित राखि प्रतीक्षा करबाक उल्लेख करैत अछि। लोकगीत सामूहिक साहसक निश्चित ताल अछि, मुख्य कथा जटिल समयक विवशता आ तैयारी देखबैत अछि। एहि रूपकथनमे आलोचनात्मक प्रतिरोध अछि—पाठक गीतक उत्साहसँ प्रेरित होइत अछि, किन्तु घटनाक समय अभी पूर्ण नहि। दूनू स्तर एक-दोसराकेँ कमजोर नहि, उभारैत अछि: उदात्त वचनक सामने साधारण मनुष्यक विचारशील संकोच अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

निर्णयक क्षणक अस्थिर काल

अध्यायमे ‘आब’, ‘निकट’, ‘धीरे-धीरे’, ‘सही अवसर’ जकाँ समय-सूचक शब्द बारम्बार अबैत छथि। ई भाषा एक निश्चित तारीख घोषित नहि करैत; क्रियाक समीपता आ विलम्बक बीच झूलैत अछि। एहि काल-लयमे घटनाक सम्भावित विस्फोट एखन टारल गेल अछि। पूर्व अध्याय [−३१]क दीर्घ मौन आ वर्तमान अध्यायक निकट भविष्य मिलि पाठककेँ प्रतीक्षारत रखैत अछि। समीक्षा लेल एहि विलम्बकेँ अनावश्यक दोहराव नहि, बल्कि साक्षीक जोखिमपूर्ण उद्भवक संरचना मानि विश्लेषित करब अधिक यथार्थ अछि।

सत्यव्रतक वैयक्तिक परिवर्तन

सत्यव्रत पहिने एहन मनुष्य कहल गेलाह जे बेसी नहि बजैत मुदा सभटा देखैत छल। आब ओ अपन देखल घटनाक पैटर्न देखबाक क्षमता विकसित करैत छथि। एहि परिवर्तनमे मात्र आवाजक मात्रा नहि बढ़ल; ओकर अवलोकन निजी अनुभवसँ सामाजिक सम्बन्धक आकलन बनल। बूढ़बाक संग संवादमे ओ स्पष्ट कहैत छथि जे चुप रहब सम्भव नहि। निजी भय आ नैतिक दायित्व दुनू एक साथ उपस्थित छथि। पात्रक ई आन्तरिक मोड़ अध्यायक सबसँ दृढ़ उपलब्धि थिक, जँ कि बाहरी निर्णायक परिणाम आगेक लेल सुरक्षित अछि।

समग्र निर्णय : गवाहीसँ पहिनेक रात्रि

‘सत्यव्रतक निर्णय’ असलमे गवाहीक सार्वजनिक क्षणक पूर्वरात्रि अछि। नोटबुकक वर्षानुवर्षक विवरण नयका रूपमे जुड़ैत अछि, खतरा स्पष्ट होइत अछि, सत्यव्रत अपन मौनक सीमा पहिचानैत छथि, मुदा औपचारिक उद्घाटन अभी नहि होइत। एहिमे दीर्घ उपन्यासक एक विशिष्ट कथा-विधि सक्रिय अछि—महत्त्वपूर्ण परिवर्तन पहिले व्यक्तिक चेतनामे घटैत अछि, तकर बाद समाजक मंचपर। एहि अन्तरकेँ चिन्हब सँ आगामी घटनाक उत्तरदायित्वपूर्ण वाचन सम्भव बनैत अछि।

प्रकरण ८३ | मूल अध्याय –१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट

‘भेंट’ शीर्षकक पुनर्पाठ

अध्यायक शीर्षक अनन्या आ नन्दक ‘भेंट’ कहैत अछि। मुदा अध्याय [–२१] मे अनन्या नन्दकेँ बचपनहिसँ पढ़बैत छलीह। एहि कारण ई हुनका दुनूक जीवनक पहिल परिचय नहि। मुख्य गद्य स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे शिक्षिका आ इंजीनियर पहिल बेर एक साझा परियोजनामे संग काज करैत छथि। शीर्षककेँ एहि नव सहकर्मी सम्बन्धक ‘भेंट’ रूपमे पढ़ब सर्वाधिक पाठमूलक अछि। समीक्षा एतय पुरान कक्षाक सम्बन्ध मेटाकऽ अचानक अपरिचितक मिलन रचि नहि सकैत; कथानकक वास्तविक परिवर्तन सम्बन्धक सामाजिक स्थिति बदलनाइ अछि।

नन्दक वापसी आ शिक्षाक परिपक्व फल

नन्द इंजीनियरिंगक पढ़ाइ पूर्ण कऽ गाम घुरैत अछि। बचपनक प्रश्नशिक्षा आ आरुणिक निर्माण-परम्परा एहि वापसीमे एक साथ अबैत अछि। ओ अब विद्यालयक बच्चा नहि, नव तकनीकक उपयोग करबाक क्षमता रखनिहार युवा अभियन्ता अछि। अनन्या शिक्षिकाक रूपमे पुरान गामक गीत, पंजी आ कथाक साक्षात्कार करबैत छलीह। दूटा क्षमता अलग-अलग कालमे विकसित भेल, आब एक काजक माध्यमसँ संगठित होइत अछि। एहि मिलनसँ पात्रक विकासक रेखा विश्वासयोग्य बनैत अछि: बालकक प्रश्न सीधासँ अचानक उपलब्धि नहि, शिक्षा आ अभ्यासक बाद सामाजिक सेवा बनैत अछि।

नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिकीकरण

दुनू पाठशालाक आधुनिक शाखासँ सम्बद्ध परियोजनामे गामक विरासत डिजिटल रूपमे सुरक्षित राखबाक विचार पर काज शुरू करैत छथि। पाठशाला एतय अध्ययनक संस्था मात्र नहि रहि, अभिलेख-निर्माणक नव केन्द्र बनबाक ओर बढ़ैत अछि। पहिने प्रतिमाक कम्प्यूटर आ देविकाक ध्वन्यभिलेखनसँ सम्बन्धित परिवर्तन अपन-अपन विधासँ चलल छल; एखन नन्द आ अनन्या पुरान पन्ना, लोकगीत आ नाम एक ठाम आनबाक साझा प्रयास करैत छथि। एहि प्रसंगसँ शिक्षा, संग्रह आ तकनीक एक स्थलपर आबैत अछि।

प्रश्न आ निर्माण : दू भिन्न पात्रगत शक्ति

अनन्याक मुख्य कथा-परिचय प्रश्न सिखबैत शिक्षिका, नन्दक परिचय निर्माण-तकनीक जाननिहार अभियन्ताक। गीत हुनकर ‘प्रश्न’ आ ‘निर्माण’ कैं संगमक जोड़ी बनबैत अछि। ई चित्र समरूप व्यक्तित्वक नहि, परस्परपूरक कौशलक अछि। बूढ़बा सेहो एहि भिन्नताकैं चिन्हैत छथि। आलोचकीय रूपसँ देखल जाए तँ सहयोग ओहि समय सार्थक बनैत अछि जखन नन्द पुरान कथा जानबाक काम अनन्यासँ ग्रहण करैत अछि आ अनन्या तकनीकी रूपान्तरणक काम नन्दक विशेषज्ञतासँ जोड़ैत छथि। दूनू काम अलग अछि, परस्पर निर्भर सेहो।

गोप कुमारक कामक निरन्तरता

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे दुनू गोप कुमारक काज आगाँ बढ़ाबय जा रहल छथि। गोप कुमार यादवानन्दक पुरान पंजी, विभाक दस्तावेज आ नव अभिलेख जोड़बाक प्रयास शुरू केने छथि। अनन्या–नन्दक परियोजना एहि संचयकैं डिजिटल रूपमे व्यवस्थित करबाक अगिला चरण अछि। कथानक एहि प्रकारेँ कार्यगत उत्तराधिकार रचैत अछि: एक पात्रक अन्तर्गत शुरू काम दोसर पीढ़ीक संयुक्त जिम्मेदारी बनैत अछि। मुदा ई नहि कहल गेल जे गोप कुमारक सम्पूर्ण संग्रह एखन सम्पन्न अछि अथवा दुनू एकहि दिन सब इतिहास डिजिटल बना चुकल छथि।

समन्वयक उद्घाटन आ पूर्णताक स्थगन

कथावाचक कहैत अछि जे दुनूक काम मिलैत अछि, आ बूढ़बा अन्तिम अध्याय नजदीक बुझैत छथि। एतय ‘नजदीक’ महत्वपूर्ण अछि। परियोजनाक आरम्भ आगामी सम्पूर्ण संग्रहक द्योतक अछि, तैयार, त्रुटिहीन डिजिटल भंडारक प्रमाण नहि। मूल पाठमे ओ पुरान पन्ना, नाम आ गीत जुटेबाक प्रक्रिया प्रारम्भ करैत छथि। एहि प्रक्रियाक समय-विस्तार कथासँ ओझल नहि होमय चाही; गुणात्मक समीक्षाक काज आरम्भ आ अन्तक अन्तर सुरक्षित राखब अछि।

प्रौद्योगिकी आ स्मृतिक पुनर्मध्यस्थता

गामक लोकगीत आ पंजीक पुराना माध्यम भिन्न अछि—कण्ठ, पात, कागज, डिजिटल अक्षर। अनन्या–नन्दक साझा परियोजना ई सभ रूपकैं एकीकृत करबाक कोशिश अछि। पुरान नामकैं स्क्रीनपर राखब मात्र स्वरक जीवनकैं पूर्णतः सुरक्षित करब नहि होइत; ई सवाल पूर्व अध्याय ‘देविकाक गीत’क ध्वनिसंरक्षणसँ सेहो उठल छल। एहि अध्यायमे तथापि कथावाचक प्रक्रियाक तकनीकी सूक्ष्मता विस्तृत नहि करैत। समीक्षा ई स्पष्ट करैत

अछि जे ‘अमर’ बनाबय पात्रसभक आकांक्षा अछि; प्रत्येक नाम चिरस्थायी भऽ गेल, एहन वस्तुगत परिणाम पाठ नहि दैत।

गीतक संगम-रूपक

लोकगीत ‘दू बाट एक ठाम मिलल’क आवृत्ति करैत अछि। ई रूपक दुनूक पूर्व जीवनरेखाकेँ एक गन्तव्य दैत अछि। वास्तविक गद्यमे मिलन कोनो चमत्कारिक आकस्मिक घटना नहि, व्यवस्थित कार्यगत निर्णय अछि। गीत सहयोगक भावनात्मक महिमा रचैत अछि, गद्य ओकर व्यावहारिक स्थल बतबैत अछि—पाठशालाक आधुनिकीकरण। दूनूकेँ संग पढ़ला पर उपन्यासक विशेष युक्ति स्पष्ट होइत अछि: परिचित संस्थागत कामकेँ दीर्घ सामाजिक स्मृतिक प्रतीकात्मक संगम बनाओल जाइत अछि।

एक उद्देश्य, अलग दायित्व

अनन्या पुरान गीत आ पंजी जानैत छलीह; नन्द डिजिटल रूपान्तरणक कौशल आनैत अछि। पाठ कहैत अछि दुनू स्मृति सुरक्षित राखय चाहैत छथि। मुदा साझा उद्देश्य सँ व्यक्तिगत कामक विभाजन समाप्त नहि होइत। प्रत्येकक विशिष्ट श्रमक कारण सहयोगक अर्थ बनैत अछि। एतय दूनूकेँ एकहि आदर्शीकृत स्वरमे समेटि देब अध्यायक सक्रिय बहुवचन घटा देत। विशेषतः अनन्याक शिक्षण-सामर्थ्यकेँ केवल नन्दक प्रेरक सहचरीक भूमिका मानब गलत हएत; ओ परियोजनाक समान रूपसँ अभिन्न बौद्धिक पक्ष छथि।

बूढ़बाक दू कान्हक रूपक

बूढ़बा साक्षीभावकेँ ‘भार’ कहैत छथि आ दू कान्ह मिलला पर ओ हल्लुक होएबाक बात करैत छथि। ई रूपक नन्दक जन्म-अध्यायक नामक भारसँ सीधा सम्बन्ध जोड़ैत अछि। ओहि समय बच्चा भविष्यक बोझ लेबाक सम्भावित व्यक्ति छल; आब वयस्क सहयोगमे ओ भार बाँटल जा सकैत अछि। एहि बन्धसँ एकल नायकक कथा सामूहिक कार्यक कथा बनैत अछि। मुदा बूढ़बा जे अन्तिम संकट कठिन होएत कहैत छथि, से आगामी पूर्वाभास अछि, एहि अध्यायमे संकट घटित भऽ चुकल नहि।

सहयोगसँ जीवनसम्बन्धक संकेत

अन्तिम वाक्य कहैत अछि जे साझा यात्रा आगाँ हुनकर जीवनकेँ सेहो एक-दोसरासँ बान्हि देत। ई कथावाचकीय भविष्यसूचना अछि। एहि अध्यायमे स्पष्ट विवाह, प्रतिज्ञा, प्रेमप्रस्ताव वा सम्बन्धक अन्तिम नामकरण नहि भेल अछि। दुनूक मूल्य-साम्य आ लगातार साथ काज करब देखाओल गेल अछि। एहि स्थिति पर भविष्यक भावात्मक सम्भावना पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा वास्तविक घटना जोड़ि नहि। ई सावधानी पात्रक स्वतन्त्र गति आ उपन्यासक क्रमिक अनावरण सुरक्षित रखैत अछि।

गामक स्मृतिमे नयका समय

अध्यायक समय पुरान पंजी आ नव डिजिटल परियोजना बीच अटकल नहि अछि; ओ भविष्य दिस प्रवाहित अछि। नन्दक अभियन्ता बनि घुरब, अनन्याक शिक्षण-परम्परा, गोप कुमारक संग्रह, एहि सभक वर्तमान भेंट एक

स्थगित दीर्घ लक्ष्यक ओर संकेत करैत अछि। तथापि अध्याय ‘अन्तिम अध्याय निकट अछि’ कहि तनाव छोड़ैत अछि। ई काल-प्रबन्ध सँ पाठक बुझैत अछि जे पात्रसभक एकत्रित होनाइ स्वयं अन्त नहि, आगामी कथा लेल रूपरेखा अछि।

सामूहिक काममे दृश्यात्मक विस्तारक सीमा

कथावाचक पुरान पन्ना, गीत आ नाम एक ठाम आनबाक उल्लेख करैत अछि, मुदा कतेक पन्ना एकत्रित भेल, किनकर गीत पहिने टाइप भेल, कोन तकनीकी बाधा आयल—ई विवरण नहि दैत। ई अभावकेँ काल्पनिक आँकड़ा अथवा सफल सॉफ्टवेयरक विवरणसँ भरब अनुचित। अध्यायक मुख्य लक्ष्य प्रक्रिया-विवरण नहि, दू प्रमुख पात्रक कथा-पथक संगम अछि। कथनक संक्षिप्ततामे पाठक भावात्मक आ उत्तराधिकारगत महत्त्व अधिक अनुभव करैत अछि, व्यावहारिक तकनीक कम। एहि असन्तुलनकेँ मूल्यांकनमे खुलि देखाबय आवश्यक अछि।

अनन्याक पहिनेक कक्षा आ एखनक समानता

बचपनमे नन्द अनन्याक प्रश्नक उत्तर खोजबाक विधि सीखैत छल। एहि अध्यायमे अनन्या आ नन्द संग परियोजना चलबैत छथि। शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्धक ऐतिहासिक असमानता कालान्तरमे सहकर्मी संवादमे बदलैत अछि। ई नन्दक शिक्षा सफल भेलाक संकेत अछि, अनन्याक पूर्व योगदान समाप्त भेलाक नहि। अनन्या पहिले कथा-संसारक प्रश्नक भाषा देलनि, नन्द एखन ओकरा डिजिटल निर्माणक साधनसँ जोड़ैत अछि। एहिमे चरित्रगत परिपक्वता कथन-स्तरमे प्रदर्शित होइत अछि, न कि कोनो एक जनक पूर्ण प्रभुत्वमे।

तीन पूर्वसूचनाक संगम

बूढ़बाक नन्द-जन्मसम्बन्धी विशेष आशा, गोप कुमारक अन्तिम अध्यायक प्रतीक्षा, आ अनन्याक कक्षामे नन्दक भविष्यक प्रश्न-शक्तिक संकेत—तीनू एहि अध्यायमे साथ आबैत अछि। कथा एतय पूर्वसूचनासभक प्रतिफल बनबाक आरम्भ देखबैत अछि, अन्तिम निष्पत्ति नहि। ई संगम कथाक अनुक्रममे रचनात्मक अर्थ दैत अछि: पहिने अलग-अलग आशंका वा आशा रखल गेल छल, एखन हुनका बीच व्यावहारिक सम्बन्ध देखाइत अछि। ई संयोजन पाठककेँ भविष्यक लेल अधिक तैयार करैत अछि, मुदा भविष्य खोलि नहि दैत।

समग्र निर्णय : साझा साक्षित्वक तैयारी

‘अनन्या आ नन्दक भेंट’क मुख्य घटना विद्यालयक साझा विरासत-परियोजनामे दुनूक सहयोग अछि। शीर्षकक ‘भेंट’ बचपनक परिचय मिटबैत नहि, नव कर्तव्यक स्तरपर सम्बन्ध पुनर्स्थापित करैत अछि। दू क्षमता, दू जीवन-रेखा आ पुरान संग्रहक निरन्तरता मिलि भविष्यक साक्षित्वक सामूहिक संरचना बनबैत अछि। गीतक संगमक भाषा आ गद्यक अपूर्ण परियोजना बीचक अन्तर कथाक जीवित तनाव अछि। ई अध्याय अन्तिम परिणामक घोषणा नहि, आगामी निर्णायक घटनाक लेल सामाजिक, भावनात्मक आ तकनीकी तैयारी थिक।

प्रकरण ८४ | मूल अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल

शीशाक मीनार : दृश्य चमक आ अदृश्य सञ्चालन

‘शीशाक मीनार’ आकाश दिस उठैत दृश्यमान संरचना अछि; ओकर भीतरक व्यापारिक-सङ्गठन पाठककेँ प्रत्यक्ष दृश्य रूपमे नहि देखायल गेल अछि। कथावाचक चमकैत स्थापत्य आ नुकाएल जालकेँ एक-दोसराक विरोधी तल बनबैत अछि। एहि स्थान-रचनामे बाह्य सतह आ भीतरी अभिप्रायक दूरी मुख्य घटनात्मक ऊर्जा थिक। मीनार गढ़ नारिकेलक परिचित पीपर, पोखरि आ चौपालसँ भिन्न, समुद्रपारक प्रतीक बनि उपस्थित अछि। कथाक केन्द्र गामे रहैत अछि, मुदा ओकर भयक भौगोलिक परिसीमा विस्तृत भऽ जाइत अछि। उपन्यास एतय अपराधक भवन भीतर प्रवेश नहि करबैत; ओ पाठककेँ समाचार, अफवाहक वातावरण आ पात्रक अनुमानक माध्यमसँ एक छाया तक पहुँचबैत अछि।

समाचार-माध्यम : जे कहल गेल आ जे देखल गेल

मूल गद्यक आरम्भमे हांगकांगसँ चलैत डिजिटल ठगीक समाचार बेर-बेर आबबाक बात अछि। लाउ किन-हंगक नाम एहि जालक संचालक रूपमे समाचारसँ जोड़ल गेल अछि। कथावाचक जालक फैलाव बयान करैत अछि, मुदा अलग-अलग पीड़ितक बयान, न्यायिक दस्तावेज अथवा अपराध-संचालनक प्रत्यक्ष दृश्य एहि अध्यायमे नहि दैत। एहि कारण समाचार-मध्यस्थ कथा-ज्ञान आ साक्षात् दृश्य-ज्ञान अलग राखब आवश्यक अछि। नन्द आ अनन्या जालक चर्चा सुनैत छथि; ओ स्वयं हांगकांगक मीनारमे जा नहि देखैत छथि। एतय जानकारीक आवृत्ति भयकेँ बढ़बैत अछि, मुदा ओकर स्रोत अपन दूरी संगहि राखैत अछि।

तीन आर्थिक फन्दाक कथात्मक एकीकरण

अध्याय नौकरीक झांसा, निवेशक धोखा आ मानव-तस्करीकेँ एक व्यापक जालक भिन्न छोर रूपमे रखैत अछि। एहि त्रिभाजनसँ पहिनेक अलग अध्यायसभ—ऑनलाइन नौकरीक ठगी, कुप्रचार आ देहक बजार—एक अगिला कथानकमे संग्रथित होइत अछि। गीतक ‘तीन गोहि’ अभिव्यक्ति एहि कथात्मक संघटनकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। मुदा ई नहि कहल गेल जे एहि अध्यायमे तीन अलग घटनाक विस्तृत प्रत्यक्ष प्रसंग सम्पन्न भेल। गद्य मुख्यतः समग्र यन्त्रणाक वर्णन करैत अछि आ गाम धरि ओहि भयक पहुँचनाइ देखबैत अछि। एक-दोसरासँ दूर आर्थिक घटनाकेँ समांतर कथा-रेखा रूपमे पढ़ब उपयुक्त अछि, उनकर विवरण कल्पनासँ भरब नहि।

तीनू ‘गोहि’ : रूपक परिवर्तनशील अर्थ

पहिने गोहि नदी-पोखरिक देहगत संकटसँ जुड़ल छल; बादमे स्क्रीनक ठगी आ समाजक अदृश्य भूख ओकर रूपक बनल। एतय गोहि देह, पाइ आ नाम सभकेँ खएबाक सम्भावना राखैत अछि। एहि अर्थ-विस्तारसँ उपन्यास एकहि मूल प्रतीककेँ क्रमिक ऐतिहासिक कालक अनुरूप परिवर्तित करैत अछि। मूल गोहिकेँ सत्यापित जीववैज्ञानिक घटना आ डिजिटल जालकेँ वास्तविक जलचरक क्रिया मानि मिलाएब त्रुटिपूर्ण होएत। रूपकक बल एहि बातमे अछि जे पहिने प्राकृतिक भय अब संगठित, बहुदेशीय मानवीय हिंसाक नैतिक नामकरण करैत अछि। प्रतीक स्थिर रहि कऽ अर्थ बदलैत अछि; ई दीर्घ कथाक आवर्ती संरचना अछि।

जालक सम्पूर्णता : पात्रक जानकारीक अपूर्णता

कथावाचक कहैत अछि जे जालक सम्पूर्ण रूप केओ एक ठाम नहि देखि सकैत छल। मुदा तुरन्ते ओ ओकर नौकरी, निवेश आ बन्दी बनएबाक विभिन्न तारक समेकित रूप उपस्थित करैत अछि। ई सर्वदर्शी कथा-वाणी आ सीमित पात्र-दृष्टिक बीचक महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि। अनन्या आ नन्दक अनुभूति क्रमशः विस्तृत होइत अछि; पाठककेँ कथावाचक अपेक्षाकृत अधिक व्यापक प्रारूप दैत अछि। एहि असमान वितरणसँ पाठकीय आशंका तीव्र बनैत अछि। तथापि पाठककेँ सेहो ठगीक वास्तविक सञ्चालकसभक पूर्ण चेहरा, प्रत्येक पात्रक सम्बन्ध आ अगिला विशिष्ट दुर्घटनाक पक्की जानकारी नहि भेटैत। कथाकार जानबाक आ नहिं जानबाक दू स्तर एक संग रखैत अछि।

अभिनवक पहिनेक समाचारक पुनरागमन

अध्याय [–३२] मे अभिनव अखबारक शीशामीनार आ एक दूरस्थ नामसँ परिचित भेल छलाह। वर्तमान अध्याय ओहिसँ कथानकक एक स्मृति-सेतु बनबैत अछि। जे पहिले एक समाचारक अस्पष्ट साया छल, से आब कथावाचकीय वर्णनमे विस्तृत अपराध-जालक आकृति ग्रहण करैत अछि। ई घटना-क्रमक साधारण दोहराव नहि, पूर्वस्थापित संकेतक घनत्व-वृद्धि थिक। पहिल प्रस्तुति सम्भावना रखैत छल, आब सार्वजनिक समाचारक पुनरावृत्ति नन्द–अनन्याक वर्तमान चिन्ताक हिस्सा बनैत अछि। तथापि एहि पुनरागमनसँ पहिले कएल प्रत्येक सन्देह सत्यापित भऽ गेल, एहन दावा नहि निकलैत। उपन्यास पूर्वाभासक अवयव जोड़ैत अछि, अन्तिम खुलासा नहि करैत।

उज्ज्वल आ बटुकनाथ : स्मरणमे जोड़ल अलग जीवनरेखा

बूढ़बा अपन आशंकाक भीतर उज्ज्वलक स्वप्न आ बटुकनाथक पतनकेँ जालक सम्भावित प्रभाव रूपमे याद करैत छथि। उज्ज्वलक सम्बन्ध एखन जन्मकालक पूर्वदृष्टि आ आगामी भयक स्तरपर छल; बटुकनाथक व्यावसायिक विचलन पहिने कथामे वर्णित अछि। दू जीवनरेखा समान प्रमाण-स्थितिमे नहि छथि। एहि अध्यायमे ‘पहिनहि सँ पहुँचि चुकल’ बूढ़बाक अनुभूति अछि—ओ प्रत्यक्ष आर्थिक दस्तावेजक निर्णायक तालिका नहि देखबैत छथि। चरित्रसभकेँ एक सूत्रमे बान्हबाक ई कथावाचकीय तैयारी पाठकक अपेक्षा बढ़बैत अछि। मुदा उज्ज्वलक भविष्यक हानि, बटुकनाथक निश्चित अन्तर्राष्ट्रीय संलिप्तता वा कोनो एक पीड़ितक पहिचान एहि क्षण घोषित नहि।

अनन्या–नन्द : साझा परियोजनासँ साझा संकट-दृष्टि

पूर्व अध्यायमे अनन्या आ नन्द गामक डिजिटल अभिलेखक हेतु मिलि काज करैत छलाह। एहि अध्यायमे वैह सहकार्य नव भयक चर्चा सुनबाक सामाजिक स्थान बनैत अछि। जे तकनीक स्मृति सुरक्षित करबाक साधन छल, ओकर व्यापक अंकीय संसारमे ठगीक नयका यन्त्र सेहो सक्रिय अछि। ई समांतरता अध्यायक व्यंग्यात्मक संरचना थिक। अनन्या आशंकाकेँ बूढ़बाक सोझाँ प्रश्न बनाकऽ रखैत छथि, नन्दक नाम सह-चिन्ताक रूपमे

उपस्थित अछि। किन्तु एहि अध्यायमे दुनू कोनो जालक डिजिटल अनुसन्धान पूर्ण कऽ अपराधीक धर-पकड़ नहि करैत। साझा कार्यक केन्द्र अभिलेखसँ चेतनाशीलता दिस फैलैत अछि।

‘पहिनहि सँ पहुँचि चुकल’ : स्थानक मानसिक प्रवेश

अनन्या कहैत छथि जाल गढ़ नारिकेल धरि पहुँचि सकैत अछि; बूढ़बा उत्तर दैत छथि जे भरिसक ओ पहिनहिसँ पहुँचि चुकल। एतय आगमनक अर्थ भौतिक एजेन्टक प्रवेश मात्र नहि। व्यक्ति-विशेषक स्वप्न, पतन, आकांक्षा आ भयक भीतर सेहो दूरस्थ संरचनाक प्रभाव कल्पित होइत अछि। ई बाह्य-संसारक आन्तरिकीकरणक साहित्यिक प्रक्रिया थिक। गाम भौगोलिक रूपसँ एक सीमा अछि, मुदा डिजिटल सम्बन्ध, वित्तीय निर्भरता आ समाचार ओकरा खुला बनबैत अछि। बूढ़बाक कथन अनुभूतिपर आधारित अछि; ई सीमा-पार अपराधक नक्शा नहि। कथनक अस्पष्टता ही ओकर भयावहता रचैत अछि।

भविष्यक एक ‘नाम’ : बहुल भयक एकाग्रता

बूढ़बाक आशंका अछि जे ई विशाल जाल एक दिन गामक ‘एकटा नाम’केँ सीधा स्पर्श करत। बेर-बेर आएल नाम-स्मरणक सूत्र एतय आगामी कथानकक केन्द्र बनैत अछि। विस्तृत अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठनक समक्ष एक व्यक्ति राखब कथाक तीव्र संकेन्द्रण थिक। ई एकल नाम अद्यापि अनिश्चित अछि; बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे हुनका नहि बुझल कोन नाम। पाठक सम्भावित पात्रसभक मध्य सम्बन्ध खोजय लगैत अछि, मुदा निश्चित परिणामक सूचना अनुपस्थित अछि। एहि अनिर्दिष्ट ‘नाम’क कारण घटनात्मक प्रत्याशा बनैत अछि; भविष्यक अनिश्चय नैतिक शंका संगहि कथात्मक कौतूहल सेहो बढ़बैत अछि।

बूढ़बाक भय आ सीमा-स्वीकार

दीर्घकालक साक्षी बूढ़बा एक संग व्यापक अनुभव आ अनिश्चितता व्यक्त करैत छथि। हुनका विभिन्न ‘गोहि’क कालक्रम स्मरण अछि, मुदा आगामी घटना ककरा स्पर्श करत से नहि जनैत छथि। एहि सीमित ज्ञानक कारण पात्र अत्यधिक सर्वज्ञ भविष्यद्रष्टा नहि बनैत। हुनकर अनुभव कथाक रूपात्मक पूर्वाभास अछि, सम्पूर्ण घटनाक पुनर्कथन नहि। पाठमे बूढ़बाक सहज बोध प्रायः प्रभावशाली बनैत अछि, तैयो एतय आलोचककेँ ओकर दावेकेँ कथनक कोन स्तरपर रखल गेल से देखय पड़त। भय, उपमा आ अन्तिम पुष्टि अलग-अलग साहित्यिक अवस्थासभ थिक; तिनूकेँ एक कऽ देने उपन्यासक रहस्य समयसँ पहिने समाप्त भऽ जायत।

चेतावनी-अभियान : वास्तविक अन्तिम क्रिया

अनन्या द्वारा युवासभकेँ फेर सँ सावधान करब एहि अध्यायक ठोस अन्तिम कर्म अछि। गामक चेतना-प्रसार पूर्वक राति-सभा, प्रश्न-शिक्षण आ डिजिटल सतर्कता समूहक परम्परासँ जुड़ैत अछि। ई कार्य अपराधक समाधान नहि, सम्भावित संकटसँ मुकाबिलाक तैयारी थिक। एतय महिला शिक्षिकाक सक्रियता केवल भयक बयान देब नहि, सार्वजनिक सम्पर्कक ठोस निर्णय अछि। कथानक तीव्र धमकीक आभास देलाक बाद स्थानीय, सीमित उपायपर समाप्त होइत अछि। एहि असमानतासँ पाठक बुझैत अछि जे समुदायक तैयारी आवश्यक अछि, मुदा विरोधी संरचनाक आकार ओहिसँ बहुत पैघ अछि।

गीतक निश्चितता आ मुख्य गद्यक सम्भावना

‘तीन गोहि’ गीत ठगी, निवेश आ तस्करीकेँ एक निश्चित जाल रूपमे गाबैत अछि आ परखि कऽ चलबाक निर्देश दैत अछि। मुख्य गद्य समाचार, चर्चा, बूढ़बाक अनुभूति आ ‘भरिसक’ जकाँ अनिश्चितताक भाषासँ भरल अछि। एहि भिन्न कथनरूपक तुलना करब आवश्यक अछि। गीत सामूहिक ज्ञानकेँ सूत्र बनबैत अछि; कथा व्यक्तिगत चरित्रसभक वर्तमान जानकारी सीमित राखैत अछि। गीतक नीति भविष्यक पूर्ण विजयक आश्वासन देइत अछि, मुदा गद्यमे न गिरफ्तारी अछि, न जालक विनाश। एहि असम्बद्धताकेँ कमजोरी मात्र नहि, आगामी संकट रचबाक युक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

विहंगम कथन आ पीड़ितक अदृश्यता

जालक विस्तार ‘दर्जनों देश’ धरि कहल गेल अछि, मुदा अध्यायमे कोनो नयका पीड़ितक नाम, देहगत अनुभव अथवा व्यक्तिगत प्रत्यक्ष कथन विस्तृत नहि अछि। आर्थिक अपराध कथावाचकक सारांशक माध्यमसँ समेकित होइत अछि। एहि कारण वैश्विक भयक आकार उभरैत अछि, पीड़ितक एकल स्वर अपेक्षाकृत लुप्त रहैत अछि। अध्याय आगाँ एक नामपर संकट केन्द्रित करबाक पूर्वाभास देइत अछि; अर्थात् एखन व्यापक रूपरेखा बनि रहल अछि, व्यक्तिगाथा पूर्ण दृश्य नहि। आलोचक केँ एहि संक्षेपक काज सेहो देखबाक चाही आ एहि द्वारा आवाजक अनुपस्थितिक आलोचनात्मक सीमा सेहो चिन्हबाक चाही।

दीर्घ कथामे ‘निकट’क कालगत प्रयोग

अध्यायक अन्तमे आगामी निर्णायक दिन ‘बहुत दूर नहि’ होएबाक आशंका व्यक्त होइत अछि। ई न निश्चित दिनांक अछि, न पाठककेँ तात्कालिक घटनाक स्पष्ट क्रम दैत अछि। सम्पूर्ण पूर्व-कथामे ‘अन्तिम अध्याय’क प्रतीक्षा अनेक पीढ़ी पार करैत आयल अछि; एहि बिन्दुपर समयक गति संकुचित बुझाइ पड़ैत अछि। ‘निकट’ शब्द एक कथागत दबाव बनबैत अछि, जकरा लग पहुँचलाक बादो घटना घटित नहि भेल। बारम्बार घोषणा कखनो रहस्य पैघ करैत अछि, कखनो विलम्बक अनुभूति सेहो उत्पन्न करैत अछि। एतय निर्णायक बिन्दु सामूहिक तैयारीक तीव्रता अछि, परिणामक प्रत्यक्ष उपस्थिति नहि।

समग्र मूल्यांकन : वैश्विक छायाक स्थानीय छोर

‘शीशाक मीनारक जाल’क महत्त्व वास्तविक ठगक खुलल नाटकीय प्रवेशसँ बेसी दूरस्थ भयक कथा-भूगोल रचबमे अछि। गीत तीन गोहिक रूपक दैत अछि; समाचार संगठित अपराधक नाम आ फैलाव; अनन्या युवासभक बीच सतर्कता लऽ जाइत छथि; बूढ़बा एक अनाम आगामी क्षतिक आशंका करैत छथि। चारू स्तर सामूहिक स्मृति आ आधुनिक अपराधक सीमारेखा बनबैत अछि। मूल गद्य जालक पूर्ण पर्दाफाश अथवा गामक स्पष्ट क्षति एखन नहि देखबैत। एहि अपूर्णता सहित अध्याय आगामी कथानकक पृष्ठभूमि दृढ़ करैत अछि, आ दर्शबैत अछि जे नाम बचएबाक पुरान प्रतिज्ञा आब डिजिटल-वित्तीय दूरीक सामना करय बाध्य अछि।

प्रकरण ८५ | मूल अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़

‘अंतिम मोड़’क द्विअर्थक प्रवेश

अध्यायक शीर्षक सुनिते पाठक बटुकनाथक जीवनमे निर्णायक परिवर्तनक अनुमान करैत अछि। गीत कहैत अछि जे ओ अन्तमे अपन नाम दिस घुरल; मुदा गद्यक परिचय आ घटनाक्रम स्पष्ट देखबैत अछि जे बटुकनाथ अपन कानूनी कौशलकेँ अन्हार शक्ति दिस पूर्ण समर्पित कऽ रहल छथि। ई शीर्षक–गीत–गद्यक बीच गंभीर कथात्मक तनाव अछि। यदि ‘अन्तिम मोड़’क अर्थ नैतिक सुधार मानल जाए, तँ गद्य ओहि अपेक्षाकेँ पूरा नहि करैत। जँ एकरा पतनक अत्यन्त गहींर बिन्दु बुझल जाए, तँ गद्यक मार्ग स्पष्ट होइत अछि, मुदा गीतक वापसीक दावा अनुत्तरित रहि जाइत अछि। समीक्षा केँ ई वैषम्य स्पष्ट उच्चारित करबाक चाही।

पूर्वक बटुकनाथक संग वर्तमानक तुलना

अध्याय [–३३] मे बटुकनाथ तेज छात्र, गरीबक पक्ष लेल लड़निहार युवा वकील आ क्रमशः भटकैत पेशेवर रूपमे चिन्हायल छल। ओतय विधवाक मुकदमाक सोझाँ बचपनक स्मृतिक क्षणिक चमक देखल गेल छल। वर्तमान अध्यायमे एहन क्षणिक आन्तरिक टकरावक दृश्य लगभग अनुपस्थित अछि; स्थान ओकर व्यवस्थित बचाव-पक्षीय पद्धतिक विवरण लैत अछि। चरित्रक अवरोह आकस्मिक घटना नहि, पूर्व सञ्जात प्रवृत्तिक दीर्घ परिणति बनैत अछि। जखन पहिनेक सम्भावित सुधारक आशा आ आबक स्पष्ट दुरुपयोग आमने-सामने राखल जाइत अछि, तखन पाठककेँ दृश्य-विरल परिवर्तन सेहो एक क्रमिक जीवनगाथा रूपमे बुझाइत अछि।

‘समाचार आयल’ : कथनक अप्रत्यक्ष मार्ग

अध्यायक प्रथम घटनात्मक वाक्य बटुकनाथक बदलल पेशागत स्थितिक समाचार गाम धरि पहुँचनाइ कहैत अछि। पाठक कचहरीक एकटा विस्तृत मुकदमाक प्रत्यक्ष मंचन नहि देखैत; हुनकर आचरणक सारांश सुनैत अछि। तारीख लियब, गवाह थकाएब आ विवरण उलझाएब—ई सभ कथावाचकक बारम्बार व्यवहारक संक्षिप्त प्रस्तुति अछि। एहि पद्धतिसँ चरित्रक सामाजिक प्रतिष्ठा आ अनैतिकता एक संरचनात्मक प्रवृत्ति बनि उभरैत अछि। मुदा कोन न्यायालय, कोन तारीख, कोन विशेष निर्णय, कोन पीड़ितक अन्तिम दसा—ई स्पष्ट वर्णित नहि। कथाकार दू-तीन दृश्य छोड़ि व्यावसायिक चरित्रचित्रण करैत अछि।

तारीखक पुनरावृत्ति : न्यायिक समयक विकृति

‘तारीखपर तारीख’ एहि अध्यायक सबसे महत्त्वपूर्ण कालगत युक्ति अछि। न्याय लेल समय एक प्रक्रिया होएबाक चाही, मुदा बटुकनाथ ओकरा थकान पैदा करबाक हथियार बनबैत छथि। एतय निर्णयक विलम्ब स्वयं परिणाम बनि जाइत अछि: पीड़ित प्रतीक्षा करैत-करैत चुप भऽ जाय। एहि क्रमक रचनामे अदालतक भौतिक हिंसा नहि, समय-व्यवस्थाक दबाव केन्द्रमे अछि। दीर्घकालीन उपन्यासमे नामकेँ बचाएब समयसँ जूझबाक क्रिया छल; बटुकनाथक भूमिका समयकेँ मनुष्यक विरुद्ध प्रयोग करब अछि। एकहि समयक दू नैतिक उपयोगक टकराव एहि अध्यायकेँ विशिष्ट बनबैत अछि।

प्रतिष्ठाक उजास आ नैतिक अन्हार

बटुकनाथक धन आ पेशागत सफलता बढ़ैत अछि, मुदा गद्य एकरा विपरीत नैतिक मूल्यसँ देखैत अछि। ‘जीत’ आ ‘हार’क भाषा उलटि जाइत अछि: वकीलक जीतक पाछाँ गरीबक हार निहित बतायल गेल अछि। ई चरित्रगत विडम्बना साहित्यिक रूपेँ प्रभावी अछि, मुदा कथा हर कथित जीतक कचहरी-अभिलेख अथवा विस्तृत मानवीय प्रसंग नहि दैत। पाठक आर्थिक सफलता आ सामुदायिक निन्दाक दू मापदण्ड एक संग देखैत अछि। गीतमे लौटबाक आशा रहितो गद्य प्रतिष्ठाक भीतर घेरबैत अन्हारक तीव्रता बढ़बैत अछि। एहि विरोधसँ नायकत्वक सरल गणना टूटैत अछि।

गामक साक्षी आ शहरक प्रतिष्ठा : दू नामांकन

शहरमे बटुकनाथक नाम प्रतिष्ठित बचाव-वकील रूपमे चलैत अछि; गाम ओहि नामक भीतर तेज ईमानदार बालकक पूर्व-छवि सेहो राखैत अछि। दुनू स्मृति समान सत्य-दावा नहि, भिन्न समयक चरित्र-स्थिति थिक। बूढ़बा अतीतक सद्गुणकेँ वर्तमान अपराधक क्षमा बना नहि दैत छथि। गामक कथागत काज एक नामक भीतर विरोधी रूपसभकेँ यथार्थ क्रममे रखने अछि। एतय नाम बचाबय केवल मृतकक सम्मान नहि, नैतिक पतनक असुविधाजनक इतिहास सुरक्षित रखब सेहो अछि। दीर्घ उपन्यासक स्मृति-आदर्श एहि बिन्दुपर अधिक कठिन, अधिक विश्वसनीय रूप ग्रहण करैत अछि।

नन्दक दुःख आ बूढ़बाक उत्तर

नन्द कहैत अछि बटुकनाथ पूर्ण रूपसँ अन्हार दिस मुड़ि गेलाह, आ एहि पर हुनका दुःख होइत अछि। बूढ़बा उत्तरमे दोषी व्यक्ति लेल नाम-स्मरण छोड़ि देबाक प्रस्ताव नहि करैत छथि; ओ स्वीकार करैत छथि जे किछु नाम धेने रहलाक बादो दुःखक स्रोत रहैत अछि। एहि संवादमे गुरु–शिष्यक सम्बन्ध स्मृति-कर्मक सीमा स्पष्ट करैत अछि। बूढ़बा अपन काम बटुकनाथक निर्णय बदलना नहि, ओकर कथा सत्य रूपेँ राखब बुझैत छथि। ई मान्यतासँ गामक साक्षी सर्वशक्तिमान नैतिक नियन्ता नहि रहैत; ओ इतिहासक कठिन साक्षी बनैत अछि।

‘ने घृणा, ने क्षमा’ : मूल्यनिर्णयक सजग संयम

नन्द बटुकनाथक कथा ‘बिनु घृणाक, बिनु क्षमाक’ अभिलेखमे लिखैत अछि। एहि अभिव्यक्तिक तात्पर्य अपराधक नैतिक मूल्य शून्य करब नहि। पाठ स्पष्ट कहैत अछि जे बटुकनाथक वर्तमान मार्ग अन्यायपूर्ण अछि। एतय कथनकर्ताक संयम दू चरमसँ अलग अछि—व्यक्ति-निन्दाक कारण तथ्य मेटाएब, अथवा पुरान स्नेहक कारण दोष छिपाएब। एहि बीचक कठिन स्थिति साहित्यिक न्यायबोधक उदाहरण अछि। अभिलेखक काज चरित्रक भिन्न कालखंडकेँ अपन पूर्वापर क्रमसहित रखब, कोनो कृत्रिम शुद्ध प्रतिमा गढ़ब नहि।

पतनक कारण : व्यवस्था, प्रलोभन आ चुनाव

अन्तिम विचारमे व्यवस्था, प्रलोभन आ व्यक्तिक चुनाव मिलि बटुकनाथकेँ वर्तमान रूप देलनि कहैत अछि। ई त्रिकेँ केवल व्यवस्थागत नियतिवाद बनाओल अनुचित अछि; व्यक्ति निश्चयक हिस्सा पाठ स्वयं स्वीकार करैत अछि। ओतहि व्यक्ति जन्मसँ दोषी छल एहन सरल आनुवंशिक धारणा सेहो नकारल गेल अछि। कथन एक

चरित्रक नैतिक जटिलताकेँ क्रमिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। एहि सन्तुलनसँ पाठककेँ परिस्थितिक अध्ययन करबाक प्रेरणा भेटैत अछि, परन्तु जिम्मेदारीक प्रश्न समाप्त नहि होइत। बूढ़बा अपन स्मृति-कार्यकेँ एहि जटिल इतिहासक संरक्षण रूपमे परिभाषित करैत छथि।

पूर्ववर्ती विधवाक मौन उत्तर

अध्याय [-३३]क गरीब विधवा बटुकनाथक सामने अपन खेतक मुकदमामे ठाढ़ भेल छलीह। वर्तमान प्रकरण ओहि विशेष मुकदमाक परिणाम नहि बतबैत, न विधवाक वर्तमान जीवनक समाचार दैत। ई मौन महत्त्वपूर्ण अछि: बटुकनाथक पतनक सामान्य प्रवृत्ति व्यापक रूपसँ देखायल जाइत अछि, मुदा आरम्भिक दृश्यक व्यक्तिगत पीड़ाक परिणति पाठमे खुलैत नहि। आलोचक एहि लुप्त उत्तरकेँ मनगढ़न्त जीत अथवा निश्चित हारसँ भरि नहि सकैत। ई बिन्दु कथावाचकक व्यापक नैतिक घोषणाक समानान्तर एक सूक्ष्म अपूर्णता रूपेँ दर्ज कएल जएबाक योग्य अछि।

गीतक प्रत्यावर्तन आ गद्यक पतन : संरचनात्मक असङ्गति

गीतक आरम्भ, मध्य आ अन्तमे ‘नाम दिस घुरल’क विचार बारम्बार अबैत अछि। मूल गद्य मुदा कोनो पश्चाताप, पीड़ितसँ क्षमायाचना, अनुपयुक्त मुकदमासँ हटब अथवा न्याय-दिस व्यवहारिक पुनरागमन प्रस्तुत नहि करैत। विपरीत, ओ अन्हार शक्ति लेल सक्रिय पेशागत समर्पण स्थापित करैत अछि। एहि विरोधकेँ केवल आशावाद कहि निबटा देब कथात्मक असङ्गति कम कऽ देखाएब होएत। सम्भव अछि गीत भविष्यक सम्भावना बचा रहल हो, मुदा गद्य ओहि भविष्यक स्पष्ट वादा सेहो नहि करैत। अतएव समीक्षामे अघटित उद्धारकेँ तथ्य नहि, पाठ-स्तरक अनुत्तरित तनाव मानल जाए।

दोषी नामक स्मरण : गवाहीक नैतिक चुनौती

पहिल नाम-अनुष्ठानसभमे प्रायः पीड़ित, मृतक आ वंचितक नाम सम्मानपूर्वक राखल जाइत छल। एतय एका बेर दोषी बनि रहल व्यक्तिक सम्पूर्ण जीवन-रेखाकेँ सेहो संरक्षित करबाक आग्रह अछि। स्मृतिक काज केवल सहानुभूति नहि रहि, नैतिक जटिलताक संग्रह बनैत अछि। ई दीर्घ कथाक एक कठिन विस्तार अछि। दोषीक नाम मेटाएब अन्यायकेँ अदृश्य करि सकैत अछि; मुदा ओकर नाम सम्मानित स्मारक बनि अपराधीकेँ निर्दोष ठहराओल सेहो अनुचित। मूल गद्य एहि दुर्विकल्पक बीच सावधान पंजीकरणक रास्ता चुनैत अछि।

नन्दक डायरी : साक्षीक उत्तराधिकारक क्रिया

नन्द बटुकनाथक सम्पूर्ण यात्रा अभिलेखमे दर्ज करैत अछि। पहिने ‘छपाकक हिसाब’ डायरीक आरम्भ मजदूरक नाम-लोपसँ भेल छल; आब वकीलक नैतिक अवरोह सेहो ओहि साक्षीपरम्पराक विषय बनैत अछि। एक तकनीकी अभियन्ता समाजक नैतिक कथाक लेखक-शिष्य बनैत अछि। एहि कार्यक महत्त्व केवल बूढ़बाक वचन दोहरब नहि; नन्द अपन लेखनमे प्रतिकूल विषय चुनैत अछि। तथापि पाठ केवल अभिलेखन बतबैत अछि, बटुकनाथक विरुद्ध विशेष न्यायिक आवेदन अथवा सार्वजनिक अभियान नहि। नन्दक हस्तक्षेप कथात्मक प्रतिनिधित्वक अछि, प्रत्यक्ष मुकदमाक नहि।

‘अन्तिम’ विशेषणक अपूर्ण ठहराव

शीर्षकक ‘अन्तिम’ शब्द समाप्तिक भाव दैत अछि, मुदा मुख्य कथा बटुकनाथक भविष्यक समस्त रास्ता बन्द नहि करैत। बूढ़बा ‘हमर काज निर्णय बदलब नहि’ कहि एक संवेदनशील सीमा मानैत छथि। नन्द जे कथा लिखैत अछि से वर्तमान धरि सम्पन्न जीवनरेखा अछि; चरित्र जीवित अछि आ आगामी कथा सम्भावित रहैत अछि। एहि कारण ‘अन्तिम’ वर्तमान नैतिक गिरावटक एक चरम बिन्दु बुझाओत, पूर्ण जीवनसमाप्ति नहि। गीतक सम्भावित वापसी आ गद्यक ठोस पतन बीचक असमाप्त द्वन्द्व आगामी अध्यायसभक लेल अनिवार्य प्रश्न छोड़ैत अछि।

दृश्य-विरलता आ विचार-विस्तारक अनुपात

बटुकनाथक वर्तमान न्यायालयक काज विस्तृत दृश्यमें कम, सारांशमे बेसी वर्णित अछि; बूढ़बाक लम्बा नैतिक संवाद अपेक्षाकृत विस्तृत अछि। एहि अनुपातसँ पाठककेँ विचार अधिक स्पष्ट होइत अछि, मुदा विशिष्ट मुकदमाक क्रिया सीमित रहैत अछि। कथन-बुनावटमे न्यायिक तंत्रक धीमापन आलोचनाक विषय बनैत अछि, किन्तु ओकर प्रत्यक्ष मंचन कम। एहि शैलीक लाभ मूल्यगत स्पष्टता अछि; सीमा ई जे प्रत्येक पीड़ितक आवाज अधूरी रहि जाइत अछि। विशुद्ध आख्यानशास्त्रीय समीक्षा दू परिणाम संग-संग राखैत अछि, न केवल अध्यायक उपदेशक अनुमोदन करैत अछि।

दीर्घ इतिहासमे भ्रष्ट प्रतिष्ठाक नवीन स्थान

बटुकनाथक कथा सुखदेव, भोलाक न्यायिक संघर्ष आ पहिनेक अदालतक कठिनाइ सँ पुनः जुड़ैत अछि। पहिने अधिकारक मांग कएनिहार पक्ष सरकारी विलम्बसँ जूझैत छल; एतय एक प्रशिक्षित वकील एहि विलम्बकेँ पेशागत साधन बना रहल छथि। एहन पुनरावृत्ति दीर्घ कथाक मूल्यरचनामे उलटाव करैत अछि: शिक्षा आ सामाजिक उन्नति अन्यायकेँ समाप्त करबाक निश्चित यन्त्र नहि। एक उच्च शिक्षित व्यक्ति सेहो इतिहासक हिंसक तंत्रकेँ पुष्ट करि सकैत छथि। एहि परिप्रेक्ष्यमे बूढ़बाक नामक साक्षित्व आवश्यक होइत अछि—प्रगतिक हर उपलब्धिक संग ओकर नकारात्मक सम्भावना सेहो इतिहासमे लिखल जाए।

समग्र मूल्यांकन : आशाक गीत, पतनक अभिलेख

‘बटुकनाथक अंतिम मोड़’ व्यापक दीर्घ आख्यानमे नैतिक उत्तराधिकारक जटिलतम उदाहरणसभमे सँ एक अछि। गद्य पेशागत पतन, गरीबक हानि आ साक्षी-रूपमे नन्दक निष्पक्ष लेखन देखबैत अछि। गीत वापसीक छवि रचैत अछि, मुदा घटनाक्रम ओकर पूर्ति नहि करैत; ई आलोचनात्मक असङ्गति उपेक्षित नहि होएबाक चाही। बूढ़बाक पक्ष वर्तमान कर्तव्यकेँ स्पष्ट करैत अछि—दोषसहित नाम बचाउ, मनगढ़न्त उद्धार नहि लिखू। एहि कारण अध्याय केवल एक वकीलक आलोचना नहि, साक्षी-कथाक आत्मसीमाक उद्घाटन बनैत अछि।

प्रकरण ८६ | मूल अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खाता

दूरस्थ जन्मसँ वित्तीय घटनाक मध्य धरि

चन्द्रपाल बत्राक जन्मक प्रसंग अध्याय [–२९] मे मेरठक सम्बन्धी परिवारक कथा रूपमे आयल छल। ओहि समय गीत धोखा आ हस्ताक्षरक भविष्य-संकेत दैत छल, मुदा मुख्य गद्य केवल जन्म, गामसँ दूरस्थ सम्बन्ध आ गोप कुमारक अभिलेखमे प्रविष्टि देखबैत छल। आब एहि अध्यायमे चन्द्रपालक ऋणग्रस्त वर्तमान सामने अबैत अछि। ई दीर्घ कथाक विलम्बित प्रतिफल थिक: पहिल संकेत बहुत काल बाद आंशिक घटना रूपमे देखाइत अछि। मुदा चन्द्रपालक पूर्ण जीवनगाथा, सट्टाक प्रत्येक चरण अथवा अन्तिम न्यायिक परिणाम एतय प्रस्तुत नहि। पूर्वाभासक पुष्टि सीमित वर्तमान घटनासँ करब उचित अछि, सम्पूर्ण भविष्यसँ नहि।

सट्टाक ऋण : निर्णयक प्रारम्भिक दबाव

मूल गद्य चन्द्रपालक भारी सट्टा-ऋणकेँ ओकर संकटसँ जोड़ैत अछि। ऋणसँ थाकल आ हताश व्यक्ति लेल ‘कमीशन’क प्रस्ताव राहतक रास्ता बुझाइत अछि। ई वित्तीय मानसिकता केवल लोभक एकरेखीय चरित्रचित्रण नहि, दबाव आ अज्ञानक मिश्रित स्थिति अछि। चन्द्रपाल स्वयं पाइ एतयसँ ओतय पठएबाक काज करैत अछि; ओकर निर्णयक परिणाम अन्यक ठगल राशि आगू बढ़ाएब बनैत अछि। मुदा कथा एहि दबावकेँ अपराधक स्वचालित क्षमा सेहो नहि बनबैत। एहि दोहरापनमे कथानक सामान्य पीड़ित–अपराधीक द्विभाजनकेँ जटिल करैत अछि: एक व्यक्ति स्वयं ऋणक शिकार होइतहुँ दोसरक क्षति पहुँचएबय बला माध्यम बनि सकैत अछि।

‘कमीशनक काज’ : बोलचालक छलपूर्ण नामकरण

चन्द्रपालकेँ कहल जाइत अछि जे किछु राशि ओकर खातामे आओत, ओ आगाँ पठा देत, आ एक हिस्सा राखत। ‘कमीशनक काज’क पद ई गतिविधिक खतरनाक वास्तविकताकेँ सामान्य जीविका-जकाँ ढाँकैत अछि। कथा एहि सरल नामक भीतर छिपल ठगीक सम्बन्ध खोलैत अछि। शब्द-चयन स्वयं घटनात्मक साधन अछि: जखन कठिन आर्थिक जाल अपनाकेँ साधारण कमाइ कहैत अछि, तखन पात्रक निर्णयक आधार कमजोर भऽ जाइत अछि। एहि भाषिक छलक विश्लेषण वास्तविक कागच वा संवादक शब्दसँ करब चाही, काल्पनिक अनुबन्धक शर्त अथवा गढ़ल बैंक प्रक्रियासँ नहि।

खाता : नामक जगह बनल पारगमन-बिन्दु

बैंक-खाता साधारणत: व्यक्तिगत धन-सम्बन्धक अभिलेख होइत अछि; एहि अध्यायमे ओ प्रवाहक बीचक एक गाँठ बनैत अछि। राशि चन्द्रपालक खातामे आबि, फेर दोसर ठाम जाइत अछि। एहि चलनसँ नामक नैतिक अर्थ बदलैत अछि—खाताधारीक पहचान पीड़ितक पैसा घुमाबयबला यन्त्र बनि जाइत अछि। जालक संरचना एहि बातपर निर्भर अछि जे बहुत लोक आ बहुत खाता एक-दोसरासँ अजनबी रहय। एतय आर्थिक अंकसूची अपने-आप अपराधक सम्पूर्ण विवरण नहि; कथाकार ओकर स्थान एक व्यापक कथा-आकृतिमे चिन्हित करैत अछि। नाम, खाता आ वास्तविक मानवीय उद्देश्यक विच्छेद अध्यायक मुख्य तनाव बनैत अछि।

‘म्यूल एकाउण्ट’ : कथावाचकीय परिभाषा आ व्यवहार

अध्यायक आरम्भिक परिचय चन्द्रपालकेँ ‘म्यूल एकाउण्ट’क माध्यम बनेबाक बात कहैत अछि; मुख्य गद्य एतय एहि भूमिकाकेँ सामान्य आर्थिक क्रियासँ समझबैत अछि। राशि स्वीकार करब, आगू पठाएब आ हिस्सा राखब—एहिसँ पाठक खाता-जालक क्रियाविधान बुझैत अछि। तथापि कतेक कारोबार भेल, कोन बैंक शाखा छल अथवा चन्द्रपालकेँ कोनो विशिष्ट धारा अन्तर्गत गिरफ्तार कएल गेल, ई पाठ नहि बतबैत। ई परिभाषात्मक स्पष्टता आ घटनात्मक अल्पता एक संग उपस्थित अछि। एकरा डिजिटल अपराधक प्रशिक्षण-पत्र रूपमे नहि, पात्रक सीमित बुझाइ आ आर्थिक प्रक्रियाक नैतिक उलझनक कथा रूपमे पढ़ब उचित अछि।

अनभिज्ञता आ उत्तरदायित्वक बीच धूसर प्रदेश

चन्द्रपाल ‘पूर्ण रूपसँ नहि बुझल’ जे ओकर खाताक उपयोग कोना भऽ रहल छल। ई कथन ओकरा प्रत्येक हस्तान्तरणक विस्तृत स्वीकृतिपर आधारित अपराधी रूपमे ठहराबय सँ रोकैत अछि। मुदा ओ कमीशनक लोभमे जानि-बुझि राशि आगू पठबैत छल, एहि कारण निष्क्रिय दर्शक मात्र सेहो नहि। कथा एतय जानकारीक अपूर्णता आ वास्तविक कर्मक संयोग रचैत अछि। गीत ‘अज्ञानता’केँ जालक गाँठ मानैत अछि—अर्थात् बिनु बुझने कएल गतिविधि सेहो व्यापक हानिक भाग बनि सकैत अछि। साहित्यिक मूल्यांकनक लेल ई नैतिक धूसरता आवश्यक अछि; न पूर्ण निर्दोषता मानब, न बिना पाठाधार पूर्ण आयोजक कहब।

सत्यव्रतक देखब : निजी घटना सँ संरचनागत सम्बन्ध

सत्यव्रत अपन पुरान नोटबुकक माध्यमसँ चन्द्रपालक खाताक लेनदेन देखैत छथि। ओहि जानकारीक सहारे एक व्यक्तिक आर्थिक समस्या विशाल जालक धारासँ जुड़ैत अछि। पाठककेँ चन्द्रपालक अन्दरूनी अविज्ञता आ सत्यव्रतक व्यवस्थित बाहरी दृष्टि, दुनू भेटैत अछि। चन्द्रपाल केवल अपन कमीशनक काज बुझैत अछि; सत्यव्रत विभिन्न खाताक बीचक सम्बन्ध पहचानैत छथि। एहि असमान जानकारीसँ कथानकक तनाव जन्मैत अछि। मुदा एहि अध्यायमे सत्यव्रत सार्वजनिक आरोपपत्र दाखिल कऽ निर्णय प्राप्त नहि करैत; ओ आगामी गवाही लेल नयका संकेत संचित करैत छथि। घटनाक जाल समझब आ ओकर कानूनी निस्तार भिन्न बात अछि।

चारि नामक संयुक्त उल्लेख : एक जाल, चारि स्थिति

बूढ़बा उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ शीशाक मीनारक छाहकेँ एक सूत्रमे देखैत छथि। मुदा प्रत्येक नामक कथा-स्थिति अलग अछि: उज्ज्वलक संकट पूर्वदृष्टिक स्तरपर, बटुकनाथक नैतिक पतन वर्णित व्यवहारक स्तरपर, चन्द्रपालक खाता वर्तमान लेनदेनक स्तरपर आ दूरस्थ छाह समाचार तथा अनुमानक स्तरपर अछि। एहि चारूकेँ समान प्रत्यक्ष दोष सिद्ध व्यक्ति मानि लेल जाए तँ पाठक गलत समानता बनत। बूढ़बाक सामूहिक नामोल्लेख कथानकक आगामी मिलनक रचना अछि, पूर्ण जाँचक प्रतिवेदन नहि। समीक्षामे सूचना-दृश्य आ सम्भावना बीचक सीमा सुरक्षित राखब अनिवार्य अछि।

परस्पर अनजान पात्र : नाटकीय विडम्बना

बूढ़बा कहैत छथि जे उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ दूरक शक्ति एक-दोसरासँ अनजान छथि। पाठककेँ ताहिसँ अधिक सम्बन्धक संकेत देल जाइत अछि। ई नाटकीय विडम्बनाक विशिष्ट रूप अछि—पात्र अपन सीमित जीवन जीबैत छथि, पाठक दीर्घ कथा आ बूढ़बाक समेकित दृष्टिसँ सम्भावित जालक नक्सा बनबैत अछि। ई विडम्बना निश्चित घटनाक आगू खुलासासँ अलग अछि; कोन व्यक्ति कखन किससे भेटत, ई एखन नहि बतायल गेल। दीर्घ उपन्यासक अनेक दूरस्थ नाम एक कथाक केन्द्र दिस आकृष्ट होइत देखाइ पड़ैत छथि, मुदा कथन समयसँ पहिने उनकर प्रत्यक्ष साक्षात्कार नहि करबैत।

निजी बैंकलेखा आ सार्वजनिक नाम-पंजीक अन्तर

गामक पुरान छाया-पंजी वंचितक नाम बचाबय लेल बनल छल; चन्द्रपालक खाता ठगल पैसा बहएबाक मध्यस्थ बनैत अछि; सत्यव्रतक नोटबुक संदिग्ध लेनदेनक कथा-क्रम सुरक्षित करैत अछि। तीनू लिखित अथवा संख्यात्मक माध्यम छथि, मुदा सामाजिक कार्य भिन्न अछि। एहि अन्तरसँ उपन्यास लेखनकेँ स्वभावतः पवित्र वस्तु नहि मानैत। कागच वा अंक अन्याय बढ़ाबय सेहो सकैत अछि, अन्याय उजागर करबाक साधन सेहो बनि सकैत अछि। एहि अध्यायमे लेखनक नैतिकता ओकर उपयोग, पारदर्शिता आ जिनकर नाम ओ राखैत अछि हुनकर वास्तविक जीवनसँ निर्धारित होइत अछि।

गीतमे हस्ताक्षर, गद्यमे लेनदेन

आरम्भिक फकरा आ गीत बिनु बुझने ‘हस्ताक्षर’क बारम्बार उल्लेख करैत अछि। मुदा मुख्य गद्य खाताक उपयोग, राशि आगू पठाएब आ कमीशन लएबाक प्रक्रिया कहैत अछि; कोन दस्तावेजपर कोन हस्ताक्षर कएल गेल, तकर पृथक दृश्य विस्तृत नहि अछि। ई छोट अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ गीत आर्थिक उपेक्षाक नैतिक सूत्र बनबैत अछि, गद्य प्रक्रिया दर्शबैत अछि। आलोचक जँ मूल कथामे कोनो विशिष्ट करार अथवा जालसाज हस्ताक्षर जोड़ि देत, तँ गीतक रूपक घटनात्मक तथ्य बनि गलत अर्थ पैदा करत। पाठमे जतेक अछि ततेकहि राखब समीक्षाक विश्वसनीयता थिक।

‘हर लेनदेनमे’ : व्यापक कथावाचकीय दावा

गद्य कहैत अछि जे हर ओहि लेनदेनमे कोनो गरीबक ठगल पैसा बहैत छल। ई कथावाचकक व्यापक सामाजिक दावा अछि, मुदा प्रत्येक पीड़ितक नाम, धनराशि अथवा व्यक्तिगत अनुभव प्रस्तुत नहि अछि। एहि आवृत्तिक कारण अपराधक नैतिक भार स्पष्ट बनैत अछि, मुदा पीड़ितक अलग कथास्वर अनुपस्थित रहैत अछि। एहन कथन आ दृश्य-प्रस्तुति बीचक अन्तरकेँ जाँचब शुद्ध आख्यानशास्त्रीय कार्य अछि। पाठ प्रत्येक लेनदेनक अलग दस्तावेज उपलब्ध करैत नहि; ओ धारणा बनबैत अछि जे छिपल अपराध-संरचना अनेक अनाम व्यक्तिक क्षतिसँ निर्मित अछि।

‘अन्तिम अध्याय’क अपेक्षाक काल

बूढ़बा फेर ओहि भविष्यक कथा कहैत छथि जखन विभिन्न नाम एक ठाम आबत। सत्यव्रत सेहो अपन पुरान नोटबुकक भविष्यक सार्वजनिक उपयोगक प्रतीक्षा करैत छथि। दीर्घ कालमे लगातार दोहराएल ‘आब निकट’ भाव एतय खातेबहीक आर्थिक बहावसँ जुड़ि अधिक ठोस बनैत अछि। परन्तु एखन एक व्यक्ति सट्टा-ऋण आ वित्तीय मध्यस्थतामे फँसल अछि, दोसर निजी नोटबुक सुरक्षित करैत अछि; अन्तिम टकराव घटित नहि। एहि स्थगनसँ कथाकार अनेक सूत्र जोड़ैत, एक निर्णायक बिन्दुक अपेक्षा बनबैत अछि। पाठकीय तनाव सम्भावित मिलनक अछि, सम्पन्न मिलनक नहि।

औपनिवेशिक परदेशक बदलल आर्थिक रूप

पूर्वक परदेश-गाथासभमे देह दूर देश जाय मजदूरी करैत छल, घर धन भेजैत छल। एतय चन्द्रपालक देह अपन शहरमे होइतहुँ ओकर खाता दूरी पार करैत विशाल ठगीक माध्यम बनैत अछि। ई कथामे प्रवासनक रूपक आ वित्तीय गतिशीलताक नयका सम्बन्ध बनबैत अछि। नाम-जालक भूगोल शारीरिक यात्रा पर निर्भर नहि रहल। एतय पात्र मेरठमे जन्मल छथि, गामक पुराना सम्बन्ध दूर अछि, मुदा आर्थिक जालक तार आब ओकरा गढ़ नारिकेलक दीर्घ कथा सँ जोड़ि रहल अछि। एहि प्रकारेँ सामाजिक केन्द्रक परिसीमा बदलैत अछि, किन्तु पुरान नाम-स्मृतिक रूपक निरन्तर रहैत अछि।

नैतिक सूत्र आ चरित्रक स्वायत्तता

गीत ‘पहिने बुझू, तखन कलम उठाउ’क सतर्क संदेश देइत अछि। मुदा चन्द्रपालक वर्तमान मानसिकता ऋण, हताशा आ शीघ्र राहतक आशाक भीतर वर्णित अछि। केवल उक्त नैतिक सूत्रसँ चरित्रक निर्णय बुझल नहि जा सकैत। ओ जालक कोनो तटस्थ उदाहरण नहि; ओकरा एक पूर्वक जन्म-प्रसंग, गामसँ दूर परिचय आ आर्थिक परिस्थिति अछि। एहि मानवीय इतिहासक कारण चरित्र उपदेशक चित्रसँ बेसी बनैत अछि। तथापि पाठ चन्द्रपालक गहींर प्रथमपुरुष आत्मालाप अथवा व्यक्तिगत लज्जा-पश्चातापक विस्तृत दृश्य नहि दैत। एहि सीमा सहित उसको भूमिका आलोचनामे चिन्हबाक आवश्यकता अछि।

समग्र मूल्यांकन : खाताक भीतर पसरल कथा-जाल

‘चन्द्रपालक खाता’ दीर्घ उपन्यासक बिखरल भविष्य-संकेतकेँ एक वित्तीय कड़ी प्रदान करैत अछि। चन्द्रपालक ऋण आ कमीशन-प्रलोभन, सत्यव्रतक बढ़ैत समझ, बूढ़बाक चारि नामक संयुक्त संकेत आ आगामी गवाहीक विलम्ब—ई चारि रेखा मिलैत अछि। अध्याय आर्थिक अपराधक धूसर मानवीय मध्यस्थकेँ देखबैत अछि, मुदा सब पात्रक निश्चित अपराध-स्थिति अथवा पूरा न्यायिक परिणाम स्थापित नहि। गीतक हस्ताक्षर-सूत्र आ गद्यक खाता-क्रिया बीचक अन्तर सँ चरित्रगत अनभिज्ञता गहींर होइत अछि। जालक गाँठ बनल नाम कतेक देर धरिक बान्हल रहत, ई प्रश्न भविष्यक कथानक लेल खुलल रहैत अछि।

प्रकरण ८७ | मूल अध्याय –१४ — पुलक निर्माण

पुल : घटनाक केन्द्रमे प्रवेश

एहि अध्यायमे नन्द गामक निकट कमला-बलानपर बनैत नव पुलक निर्माणस्थलपर मुख्य अभियन्ताक सहायक रूपमे नियुक्त होइत अछि। एतय पुल केवल आशाक रूपक नहि, निश्चित पेशागत स्थल बनि उपस्थित अछि। पहिनेक अध्याय [–२०] मे नन्द एक निर्माणस्थलपर मजदूरक नाम लोपक कथा सुनने छल; वर्तमान अध्यायमे पुलक स्थानीय भूगोल आ नन्दक भूमिका बेसी स्पष्ट होइत अछि। एहिसँ कथा नन्दक सामाजिक साक्षित्वकेँ परिचित गामक बाहर फेर निर्माणक क्षेत्रमे रखैत अछि। भौतिक अधोसंरचना आ मनुष्यक कथाक सामना एक निश्चित स्थलपर होइत देखाइ पड़ैत अछि।

‘मुख्य इंजीनियरक सहायक’ : पदक स्पष्ट सीमा

नन्द पुलक मुखिया अभियन्ता नहि, मुख्य अभियन्ताक सहायक अछि। एहि श्रेणीभेदसँ ओकर वास्तविक निर्णय-क्षमता बुझल जाए। कथामे ओ सुरक्षा विषयपर ठेकेदारसँ तर्क करैत अछि, मजदूरक नाम लिखैत अछि, मुदा सम्पूर्ण निर्माण-प्रशासनक सर्वोच्च अधिकार हुनका हाथमे अछि एहन कथन नहि। पदक ई सीमा चरित्रक नैतिक प्रयत्नकेँ अर्थ दैत अछि: ओ संस्थागत संरचनाक भीतर काम करैत अछि, तकर ऊपर सर्वशक्तिमान नियन्ता नहि। एतय नायकत्वक रूप प्रशासनिक सत्ता नहि, जिम्मेदारीक विस्तार अछि। आलोचक यदि ओकरे परियोजनाक स्वामी घोषित करत, तँ पाठमे रहल संस्थागत तनाव मेटा जायत।

दूरी घटबाक वादा : ग्राम–नगरक नव सम्बन्ध

पुल बनलाक बाद घण्टाक दूरी मिनटमे सिमटबाक अपेक्षा व्यक्त होइत अछि। ई समय-सङ्कोचन भौतिक यात्राक मात्र सुविधा नहि, दीर्घ गामक बाहरी संसारसँ सम्बन्ध बदलबाक संकेत अछि। पहिने रेडियो, मोबाइल आ कम्प्यूटर सूचनाक दूरी घटौलनि; आब पुल देहक आवागमन बदलत। एहन क्रम सँ तकनीकक भिन्न माध्यमक सामाजिक प्रभाव अलग-अलग रूपेँ उपस्थित होइत अछि। मुदा एहि अध्यायमे पुल पूर्ण भऽ यातायात प्रारम्भ भेल अछि, एहन घटना नहि; कार्य निर्माणाधीन अछि। ‘घण्टासँ मिनट’ भविष्यक प्रत्याशा अछि, वर्तमानक जाँचल यात्राक विवरण नहि।

मजदूरक शरीर आ नाम : निर्माणक अनदेखल पक्ष

नन्द निर्माणस्थलपर टूटल सुरक्षा-प्रबन्ध, हेलमेट बिनु ऊँचाइपर काज आ मजदूरकेँ संख्या बुझबाक ठेकेदारक दृष्टि देखैत अछि। पुलक पैघ स्थापत्यक सामने श्रमिकक कमजोर देह राखल गेल अछि। कथानक विकासक प्रशंसाक भीतर मनुष्यक लागत प्रवेश करबैत अछि। एहि स्थानपर नन्दक प्रश्न-आदत व्यावहारिक सामाजिक जाँच बनैत अछि। ओकर ध्यान इमारतक तंत्रपर मात्र नहि, जिनकर श्रम ओकरा सम्भव करैत अछि हुनकापर अछि। एहि चयनसँ मुख्य पात्रक अभियान्त्रिक दक्षता आ नैतिक संवेदनाकेँ एकीकृत कएल गेल अछि, तथापि मजदूरसभक अपन विस्तृत संवाद एतय सीमित अछि।

पहिनेक गायब मजदूरक कथाक पुनर्वापसी

नन्दकेँ पहिल निर्माणस्थलपर एक मजदूरक गायब होएबाक कथा मोन पड़ैत अछि, जकर नाम ठेकेदारक हिसाबसँ मेटायल छल। ई स्मरण पुरान अध्याय [–२०] सँ वर्तमान बिन्दु जोड़ैत अछि। एतय दोसर नव श्रमिकक गायब होएबाक स्पष्ट घटना वर्णित नहि अछि; पुरान कथा सावधानीक पृष्ठभूमि बनैत अछि। एहि अन्तरसँ कथागत पुनरावृत्ति आ नयका दुर्घटना अलग बुझल जाइत अछि। पाठक पुराना नाम-लोपक भयक कारण नन्दक सतर्कता बुझैत अछि, भले वर्तमान पुलपर कोनो निश्चित मृत्यु वा नदीमे डूबनाइ एखन नाटक रूपमे देखायल नहि।

अदृश्य अजनबी : आगन्तुकक अपूर्ण पहचान

निर्माणस्थलपर दूर शहरसँ ठेकेदार, दलाल आ अन्य अनचिन्हार चेहरा अबैत-जाइत छथि, जिनकर काज स्पष्ट नहि। ई वर्णन आगामी जालक सम्भावित प्रवेश-द्वार बनबैत अछि, मुदा सब आगन्तुक अपराधी छथि एहन दावा नहि दैत। अजनबी होएब आ अपराधक निश्चित भागीदार होएब अलग बात अछि। एहि अस्पष्टतासँ पुलक सम्पर्ककारी भूमिका दोधारी बनैत अछि—गामकेँ दुनिया सँ जोड़यबला मार्ग लाभ आ खतरा दुनूक सम्भावना आनैत अछि। कथावाचक नन्दक सीमित जानकारी सुरक्षित राखैत अछि; तखनहि पाठक आगामी रहस्यक प्रतीक्षा करैत अछि।

कमला-बलान : प्राकृतिक पृष्ठभूमिसँ सक्रिय जोखिम धरि

कमला-बलान पहिनेक बाढ़ि-कथासभमे मानव जीवनकेँ चुनौती देनिहार नदी छल। एखन ओहि धारापर पुल बनैत अछि। नदी केवल सौन्दर्य-पृष्ठभूमि नहि, अभियान्त्रिक सावधानीक कारण अछि; बूढ़बा बाढ़िक स्मृति मन रखबाक आग्रह करैत छथि। पूर्वक आरुणिक निर्माणमे बान्ह आ जल-पूर्वानुमानक कथा छल, एतय बेटा नन्दक सामने नदी आ मजदूरक सुरक्षाक संयुक्त प्रश्न अछि। जलक सक्रियता केवळ बाढ़िक प्रत्यक्ष दृश्य रूपमे नहि, सम्भावित प्राकृतिक दबाव आ मानव-निर्मित संरचनाक सीमा रूपमे उभरैत अछि। ताहि हेतु वर्तमान अध्यायमे नयका बाढ़ि घटित भऽ गेल एहन मानब अनुचित।

आरुणिक विरासत : लक्ष्यसँ जिम्मेदारी धरि

नन्द अपन पिता आरुणिक पुल-बान्ह निर्माणक सपना आगू बढ़बैत अछि। पिता बनाओल वस्तुक देखभाल, पुराना जलज्ञानक सम्मान आ सामाजिक जतनपर जोर देने छलाह। पुत्र एहि उत्तराधिकारकेँ मजदूरक नाम-सुरक्षाक सवालसँ जोड़ैत अछि। एहि प्रकारेँ पारिवारिक विरासत नकल मात्र नहि, आलोचनात्मक विस्तार अछि। नन्द एक तकनीकी पद पर रहि पुरान अन्याय—मजदूरक नाम गायब होएब—दोहराएबाक जोखिम देखैत अछि। कथा एतय पीढ़ीगत प्रगतिकेँ स्वतः नैतिक सुधार नहि मानैत; ओकरे अभ्यास, लेखन आ संघर्ष द्वारा अर्थपूर्ण बनएबाक अपेक्षा रखैत अछि।

अनन्याक प्रश्नक अनुपस्थित सक्रियता

नन्दक ‘प्रश्न-पुछनिहार आँखि’क स्रोत अनन्याक बचपनक शिक्षा अछि, जकरा कथावाचक यहाँ पुनः स्मरण करैत अछि। स्वयं अनन्या वर्तमान निर्माणस्थलपर सक्रिय पात्र रूपमे उपस्थित नहि छथि; हुनकर शिक्षण नन्दक

देखबाक पद्धतिमे जीवित अछि। ई अनुपस्थित उपस्थितिक कथात्मक उदाहरण अछि—पुरान पात्रक योगदान नयका दृश्यक व्यावहारिक निर्णयकेँ प्रभावित करैत अछि। विशुद्ध आलोचनामे अनन्याक प्रत्यक्ष घटनाक अनुपस्थिति आ हुनकर सामाजिक बौद्धिक प्रभाव बीचक भेद महत्त्वपूर्ण अछि। नन्दक प्रश्न ओकर अपन वर्तमान अनुभवसँ उठैत अछि, मुदा ई देखनेक विधि ओकरा शिक्षाक इतिहाससँ भेटल अछि।

ठेकेदारसँ संघर्ष : परिणामक सीमा

नन्द मजदूरक सुरक्षा लेल अतिरिक्त सावधानी रखैत अछि, हर नाम डायरीमे लिखैत अछि आ ठेकेदारसँ झगड़ैत अछि। ई अध्यायक ठोस कार्रवाई अछि। मुदा पाठमे कोनो निश्चित सुरक्षा-नियम सफलतापूर्वक लागू भेलाक अधिकृत विवरण, मजदूरीक रकम अथवा ठेकेदार दण्डित भेलाक परिणाम नहि। नन्द सेहो जनैत अछि जे ओकर सावधानी पर्याप्त होएत की नहि से स्पष्ट नहि। एतय पात्रक सक्रियता सफलता-घोषणा नहि, जोखिमक बीच जिम्मेदारी ग्रहण करब थिक। ई अनिश्चितता कथाकेँ आदर्शवादी उपदेशसँ थोड़ दूर खींचैत अछि।

‘नामक पहरा’ : डायरीक नयका विस्तार

नन्दक डायरी पहिने गायब मजदूरक कथा सुनला पर शुरू भेल छल। एहि अध्यायमे हर मजदूरक नाम लिखबाक काम एक व्यवस्थित चलन बनैत अछि। एहि रूपान्तरमे व्यक्तिगत शोक-प्रेरित संकल्प सार्वजनिक श्रम-अभिलेखनक अभ्यास होइत अछि। ई दीर्घ कथाक अनुष्ठान-संरचना संग मिलैत अछि: एक घटना सँ जन्मल लेखन क्रमशः सामाजिक जिम्मेदारी बनैत अछि। तथापि नन्दक डायरी प्रत्येक मजदूरक पूर्ण अधिकार सुनिश्चित करि देलक, एहन निष्कर्ष पाठ नहि दैत। नाम लिखब प्रतिनिधित्वक आरम्भ अछि, सुरक्षा आ न्याय सुनिश्चित करबाक अन्तिम चरण नहि।

पुलक दू ओर : बाह्य सम्पर्क आ नैतिक विभाजन

गीत कहैत अछि जे पुल संसार जोड़ैत अछि, मुदा ओहि बाटसँ ‘नव गोहि’ सेहो आबि सकैत अछि। एकहि वस्तु सुविधा आ भयक माध्यम बनैत अछि। ई रूपकक कारण विकासक सरल प्रशंसा जटिल बनैत अछि। नदीक दू किनारा जुड़ब सकारात्मक सामाजिक आकांक्षा अछि; तथापि सम्पर्कसँ उत्पन्न असमानता, व्यापारिक शोषण आ अपराधक जोखिम कथाक छायामे रहैत अछि। एहि दोहरापनकेँ मात्र भौतिक पुल बनाम रूपक-पुल कहब कम पड़त; यातायात, श्रम, नामपंजी आ आगामी अपराध-जाल सभ एक जगह कथा बनाबैत छथि।

भविष्यक रंगमंच : कथावाचकक खुलल पूर्वसूचना

अन्तिम वाक्य स्पष्ट कहैत अछि जे एहि पुलक निर्माणस्थल भविष्यक ‘अन्तिम अध्याय’क रंगमंच बनत। ई असामान्य रूपसँ प्रत्यक्ष कथावाचकीय पूर्वसूचना अछि। पाठककेँ स्थानक भविष्यक महत्त्व आगुअहि बताओल जाइत अछि, मुदा कोन घटना घटत से अद्यापि नहि। एतय रहस्य ‘कतय’ सँ हटि ‘की’ आ ‘केना’ दिस स्थानान्तरित होइत अछि। एहि कथनकेँ वर्तमान अध्यायमे दुर्घटना घटि चुकल मानि पढ़ब अनुचित। भविष्यक रंगमंच तैयार अछि, अभिनय एखन बाँकी; एहन समय-विभाजन दीर्घ कथाक संरचनामे महत्त्वपूर्ण अछि।

गीतक ‘पहरा’ आ कथाक अप्राप्त सुनिश्चितता

गीत पुलक संग पहरा, नामक हिसाब आ बाढ़ि-स्मरणक आग्रह रखैत अछि। गद्य नन्दक सावधानी देखबैत अछि, मुदा ओ स्वयं अपन प्रयत्नक पर्याप्तता लेल आश्वस्त नहि। गीत सामूहिक नीति बनबैत अछि, गद्य व्यावहारिक असुरक्षाक अनुभव दैत अछि। एहि दू स्तरक सहपठनसँ उपन्यासक सङ्कट-सम्बन्धी भाव अधिक गहींर होइत अछि। ‘पहरा राखब’ मानवक नैतिक क्रिया अछि, भविष्यक समस्त खतरा निष्प्रभावी करबाक गारंटी नहि। ई तात्त्विक नीति नहि, कथात्मक क्रियाक सीमांकन थिक।

समग्र मूल्यांकन : निर्माणाधीन पुल, निर्माणाधीन साक्षी

‘पुलक निर्माण’ अपन भौतिक अधोसंरचनाक वस्तु-जगतकेँ नन्दक नैतिक अभिवृद्धिक संग रखैत अछि। कमला-बलान, मजदूरक असुरक्षित श्रम, अजनबी आगन्तुक, डायरीमे नाम, ठेकेदारसँ तर्क आ भविष्यक संकट-रंगमंच—ई सभकेँ अध्याय एक स्थलपर संग्रथित करैत अछि। नन्द अभियन्ताक सहायक छथि, पूर्ण प्रभुत्वधारी नहि; पुल बनि रहल अछि, चालू नहि; सावधानी बढ़ल अछि, पूर्ण सुरक्षा सिद्ध नहि। एहि अपूर्णतासभक कारण अध्याय आगामी निर्णायक घटना लेल प्रामाणिक तैयारीक भूमिका निर्वाह करैत अछि। पुल दू किनारा जोड़बाक संग-साथ वर्तमानक अनुभूति आ भविष्यक रहस्य बीच सेहो एक रचनात्मक सेतु बनैत अछि।

प्रकरण ८८ | मूल अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन

जीवनक उत्तरार्द्धमे संकलनक दृश्य

गोप कुमार आब वृद्ध छथि; हुनकर हाथ काँपैत अछि, आँखि कमजोर भऽ गेल अछि। दीर्घ काल धरि चलल अभिलेखन एहि अध्यायमे अचानक एकत्रित कार्य-दृश्य बनैत अछि। पन्ना, पंजी, गीत आ नव अभिलेख सभ एक ठाम रखबाक क्रिया द्वारा समयक विशाल विस्तार वृद्ध व्यक्तिक वर्तमान श्रममे संकेन्द्रित होइत अछि। एतय बड़का ऐतिहासिक घटना अथवा तुरन्त अपराधक दृश्य नहि; कथाक केन्द्र संग्रहकर्ताक देह आ स्मृतिक कार्य अछि। कथाकार एक महत्त्वपूर्ण असमानता रचैत अछि—शताब्दीक सामग्रीकेँ सीमित मानवीय आयुक भीतर सँभारेबाक आवश्यकता। एहि असमानतासँ गोप कुमारक समय कम होएबाक अनुभूति गहींर होइत अछि।

वृद्ध देह आ दीर्घ नाम-स्मृतिक सम्बन्ध

गोप कुमारक शारीरिक क्षीणता स्पष्ट वर्णित अछि, मुदा संकलन पूरा करबाक मन स्थिर अछि। ‘काँपैत हाथ’ आ ‘एक धागामे बुनल’ कथा दोसराकेँ अर्थ दैत अछि: शरीरक क्षमता सीमित, लेखनक अभिलाषा दूरगामी। पूर्ववर्ती पीढ़ीक अनेक पात्रक मृत्यु आ अनाम नामक लोपक विरुद्ध गोप कुमार कागचकेँ सामूहिक स्मृतिक माध्यम बनबैत छथि। तथापि एतय दस्तावेज मनुष्यक देहक अमरता नहि; एक पृष्ठक सुरक्षित रहलासँ प्रत्येक व्यक्तिक सम्पूर्ण अनुभूति अक्षत रहल, एहन सरल दावा नहि। वृद्ध देहक दृश्य आलोचककेँ एहि सीमापर ध्यान देबैत अछि।

यादवानन्दसँ आधुनिक अभिलेख धरि माध्यम-वंशावली

अध्याय यादवानन्दक छाया-पंजी, हरिपति कविक पोथी, गंगाधरक छापाखाना आ डिजिटल अभिलेखकेँ एक संकलन-शृंखला बनबैत अछि। प्रत्येक माध्यम अपन समयमे नाम बचाबयबला अलग सामाजिक उपक्रम छल। पंजीक गोपनीयता, कविक भाषिक अधिकार, मुद्रणक प्रसार आ डिजिटल संचितिक क्षमता एक समान नहि। गोप कुमार ई विषम साधनसभकेँ एक ठाम जोड़ि दीर्घ इतिहासक बुनावट बनबैत छथि। कथा केवल तकनीकी नवीनताक विजयघोष नहि, पुराना स्रोतसभक आपसी निर्भरताक रूपचित्र अछि। एक माध्यम छोड़ेबला इतिहास नहि, बहुमाध्यमिक संचय एहि अध्यायक मुख्य वस्तु होइत अछि।

शंख-रजतसँ वर्तमान धरि पुनर्रचित क्रम

गोप कुमारक मनमे शंख–रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु, बटुकनाथक पतन, उज्ज्वलक स्वप्न आ चन्द्रपालक खाता एक सूत्रमे जुड़ैत अछि। एहि सूचीमे ऐतिहासिक काल, पीड़ित–दोषी स्थितिक अन्तर आ भविष्यक सम्भावना सभ समाविष्ट छथि। सूची वस्तुतः उपन्यासक अपन पूर्वकथाक एक संक्षिप्त आत्म-स्मरण बनैत अछि। एतय कोई एक पात्र प्रत्येक युगक सम्पूर्ण कथा दोहरबैत नहि; कुछ चुन्हल नाम आ प्रतीक मिलि पाठकक पुराना अनुभव जागबैत छथि। सूचीकरणक कारण दीर्घ विखण्डित क्रम एक आकृति बनैत अछि, मुदा प्रत्येक अध्यायक विशेषता बचाएब आलोचकक काज अछि।

‘सम्पूर्ण चित्र’ आ बाकी ‘एक खाली स्थान’

अध्याय बारम्बार गोप कुमारक संकलन ‘एक ठाम’ आ ‘सम्पूर्ण’ रूप लेबाक निकट अछि कहैत अछि। मुदा आखिरी महत्त्वपूर्ण दृश्य स्पष्ट करैत अछि जे ओहि पूर्णताक बीच एकटा खाली स्थान बाकिये अछि—अन्तिम अध्याय। ई विरोधाभास साधारण लेखकीय भूल कहि समाप्त नहि कएल जा सकैत; एतय सम्पूर्णक अर्थ अभीतक उपलब्ध इतिहासक संकलन अछि, समस्त आगामी इतिहासक समापन नहि। गीत ‘पूरा भेल’क आश्वासन देइत अछि, गद्य ‘निकट’ आ ‘बाकी’क दोहराव रखैत अछि। एहि दूरीसँ पाठक पूर्णताक मोह आ अपूर्ण कालक वास्तविकताकेँ एक संग अनुभव करैत अछि।

‘अन्तिम अध्याय’ : कथाक भीतरक नियोजित शून्य

बूढ़बा आगामी घटना केँ ‘अन्तिम अध्याय’ कहैत छथि। ई शब्द पात्रक भविष्य-बोध अछि, जबकि कथावाचक गोप कुमारक वर्तमान तयारी वर्णित करैत अछि। गोप कुमार पहिनहिसँ लिखित पन्ना जोड़ि रहल छथि, मुदा अन्तिम स्थान जानि-बुझि रिक्त राखल अछि। एतय शून्य स्वयं कथानकक अवयव बनैत अछि: जे घटल नहि, तकरा दर्ज नहि कएल जा सकैत। ई अभिलेखनक नैतिक अनुशासनक संकेत अछि। कथा लिखबाक आकांक्षा समयसँ पहिने घटना गढ़बाक अनुमति नहि दैत; गोप कुमारक धैर्य एहि सीमाक प्रतीक बनैत अछि।

नन्दक हेतु स्मृतिक अग्रिम तैयारी

बूढ़बा कहैत छथि जे निकट भविष्यक कठिन क्षणमे नन्दकेँ पाछाँक सम्पूर्ण कथा हाथमे तैयार चाही। एहि कथनसँ गोप कुमारक संकलनक उद्देश्य वर्तमान संग्रहालय-जकाँ निष्क्रिय संग्रह नहि रहि भविष्यक कामक साधन बनैत

अछि। इतिहास पढ़निहार युवा अभियन्ता अपन अगिला संकट बुझबाक लेल पूर्वजक अभिलेख पर निर्भर होएत। ई पीढ़ीगत ज्ञान-हस्तान्तरणक स्पष्ट कथा-अनुप्रयोग अछि। मुदा नन्द संकलनक पूरा उपयोग कऽ संकट जीत लेने छथि एहन घटना एतय नहि। उपयोगिताक वादा भविष्यक अछि; गोप कुमारक वर्तमान श्रम वास्तविक अछि।

बटुकनाथ, उज्ज्वल, चन्द्रपाल : असमान नोड

कथावाचक तीन नामकेँ एक चित्रमे समेटैत अछि, मुदा बटुकनाथक वर्तमान पतन, उज्ज्वलक भविष्यवाणी आ चन्द्रपालक खाताक वास्तविक सहभागिता भिन्न स्थितिसभ अछि। गोप कुमारक संकलन एहि भिन्न वस्तुस्थितिसभकेँ साथ राखैत अछि। आलोचककेँ एकहि ‘गोपनीय जाल’क निश्चित दोषी मानि सभ नामपर समान आरोप नहि लगाबय चाही। विशेषत: उज्ज्वलक नाम एखन परिणामहीन पूर्वचिन्ता रूपमे अछि। अभिलेखक मूल नैतिक महत्त्व एहन छिन्न-भिन्न कालस्थिति उचित पहचानसहित सुरक्षित करबमे अछि। एक धागा बनब अलग चरित्रसभक पूर्ण समानता नहि।

संकलन आ कथा : क्रम देब कथात्मक निर्माण

पंजी-पन्ना केवल भौतिक रूपेँ जोड़ला भरिसँ इतिहास स्वयं पूर्ण अर्थ नहि बनैत। गोप कुमार जखन अलग युगक कथाक्रम, नाम आ प्रसंग सम्बद्ध करैत छथि, तखन संकलन एक कथा-रचनात्मक कर्म बनैत अछि। ‘एक चित्र’क उपमा एहि कामकेँ चिह्नित करैत अछि। यादवानन्दक सूची, कविक पाठ, छपल कथा आ आधुनिक दस्तावेजक जोड़ नयका अनुक्रम रचैत अछि। एहि स्थिति मे गोप कुमार एक सरल कागच-संग्रहकर्ता सँ बेसी—कथाक विन्यासक सक्रिय पात्र—बनि जाइत छथि। मुदा मूल पाठमे हुनकर विस्तृत सम्पादकीय पद्धति अथवा सभी दस्तावेजक पाठान्तर जाँच वर्णित नहि; अर्थ-निर्माणक प्रक्रिया रूपकगत स्तरपर अधिक अछि।

कथावाचक आ संकलनकर्ताक द्वैत

कथा गोप कुमारक दृष्टिसँ बारम्बार ‘लगैत’ अछि जे सभटा धागा एक होइत जा रहल अछि। मुदा बूढ़बा भविष्यमे घटयवला अन्तिम घटनाक नजदीकी अधिक दृढ़ भावसँ कहैत छथि। संकलनकर्ताक वर्तमान अनुभूति आ दीर्घजीवी साक्षीक कालबोध भिन्न अछि। कथावाचक दुनू कथनकेँ एक स्थलपर रखैत अछि, मुदा अन्तिम घटना स्वयं दृश्य नहि करबैत। एहि कारण पाठक गोप कुमारक अन्तिमता-बोधक संग सहभागी होइतहुँ ओकरा अस्थायी मानि सकैत अछि। एक पात्रक संरचनात्मक कार्य—बिखरल अतीत जोड़ब—आ दोसरक—आगू होएबवला संकटक संकेत देब—परस्पर सहयोगी मुदा अलग-अलग अछि।

समयक ऋण : आजुक संग्रह, काल्हिक घटना

गोप कुमारक कामक समय दुनू दिशामे खिंचल अछि—शताब्दीय अतीतक सामग्री आ निकट भविष्यक अन्तिम घटनाक तैयारी। एहन द्विमुखी कालबोधसँ वर्तमान एक संधिकाल बनैत अछि। ओ इतिहासकेँ बन्द नहि करैत, अगिला पाठक आ साक्षीक लेल खुला राखैत अछि। ‘समय कम अछि’ वाक्य देहगत वृद्धत्व आ कथानकक तीव्रता दुनू पर लागू होइत अछि। एतय रूपक मात्र नहि, घटनागत प्रेरणा अछि: गोप कुमार अधिक तेजी सँ

अन्तिम रूप देबाक काज बढ़बैत छथि। वृद्धावस्थाक दिन आ उपन्यासक निकट संकट एकहि भावात्मक दबाव पैदा करैत अछि।

गीतक बिखराव-एकता सूत्र

गीत बारम्बार बिखरल नाम एक ठाम जुटबाक जयगान करैत अछि। गद्य एहि जयघोषकेँ काँपैत हाथ, अधूरा अन्तिम अध्याय आ समयक कमी जकाँ मानवीय परिस्थिति सँ जोड़ैत अछि। दूनू कथनस्तरक सहपठनसँ संग्रहक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण, मुदा अपूर्ण रहैत अछि। गीतक आश्वासन केवळ भावप्रवण दावा नहि; गोप कुमारक लम्बा परिश्रमक सामाजिक अर्थ दैत अछि। गद्य ओकरा मानवीय सीमामे रखैत अछि। ई तनातनी दीर्घ उपन्यासक एक सामान्य शिल्प-विधान अछि—सामूहिक स्वर पूर्णता गाबैत अछि, व्यक्तिगत कर्म समयक अधूरापन सँ जूझैत अछि।

अदृश्य नामक सजीवकरणक सीमा

एकत्रित नामक माध्यमसँ गोप कुमारकेँ लगैत अछि जे ओ शताब्दीक मृतकसभकेँ पुनः जीवित कऽ देने छथि। ई अनुभव स्मृतिक रूपक अछि, वास्तविक मृतकक शारीरिक पुनर्जीवन नहि। एहि भाषामे पूर्ववर्ती ‘नाम बचाओ’ अनुष्ठानक नैतिक कल्पना तीव्र होइत अछि। मुदा मृतकक बचेखुचे अभिलेख, सम्पूर्ण मानवीय अस्तित्वक विकल्प नहि। आलोचक एकर साहित्यिक ऊर्जाकेँ स्वीकार करैत, प्रत्यक्ष यथार्थ आ पात्रक अन्तर्दृष्टि अलग चिन्हित करत। एहि दृष्टिएँ गोप कुमारक भावक परिमाण स्पष्ट अछि, पर ओहि भावक कारण इतिहासक हर अभाव भरि गेल एहन निष्कर्ष नहि निकलैत।

अन्तिम घटनाक अनावृत संयोग

बूढ़बा नन्दक पुल, चन्द्रपालक खाता, बटुकनाथक अदालत आ दूरक मीनारकेँ एक समयमे मिलबाक बात कहैत छथि। ई सूची आगामी कथानकक सम्भावित संधि-बिन्दु अछि। चारु अवयव पहिनेक अध्यायसभमे अलग रूपेँ विकसित भेल छथि। आब बूढ़बाक दृष्टि ओकरा एक केन्द्रीय घटना दिस मोड़ैत अछि। तथापि एहि अध्यायमे कोनो प्रत्यक्ष संयुक्त बैठक, अदालतक आदेश अथवा पुलपर निर्णायक ठगी घटित नहि भेल। अन्तिम घटना-सूत्रक सम्भावना जतेक मजबूत अछि, वर्तमान कथागत अनुपस्थिति ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि। अनावृत परिणामक कारण पाठकक जिज्ञासा बचल रहैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : संग्रहक पूर्वसन्ध्या

‘गोप कुमारक संकलन’ दीर्घ कालक इतिहासकेँ एक मानवक थकैत देह आ अनवरत स्मृति-कर्ममे समेटैत अछि। पंजीसँ डिजिटल अभिलेख धरि माध्यमक श्रेणी, उज्ज्वल–बटुकनाथ–चन्द्रपालक विभिन्न कालस्थिति, बूढ़बाक आगामी संकटक वचन आ रिक्त अन्तिम स्थान—ई सभ एक अधूरे किन्तु व्यापक संग्रहक अर्थ बनबैत अछि। अध्यायक आख्यानगत उपलब्धि संकलनकेँ अन्तिम रूप देबाक नजदीकी दिखाएब अछि; पूर्ण निष्पत्ति नहि। एतय अभिलेख आगूक घटनाक जगह नहि लैत, ओकर प्रतीक्षा करैत अछि। नामसभकेँ एक धागामे रखबाक ई कर्म भविष्यक साक्षीक लेल पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि।

प्रकरण ८९ | मूल अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँपकँपी

शांत साँझमे सामूहिक कम्पन

अध्यायक आरम्भ एक साँझक कथनसँ होइत अछि, जखन बिना स्पष्ट कारण चन्ना गाछीक सभ गाछ एक संग थरथराएल। घटनाक समय सीमित—एक क्षण—मुदा ओकर अर्थ विस्तृत इतिहासक चेतावनी रूपमे ग्रहण कएल जाइत अछि। पीपर आ चन्नाक गाछ एक साथ सक्रिय स्थान-समूह बनैत छथि। पहिने ई गाछी लोकक जुटान, नाम-स्मृति आ अनुष्ठानक स्थिर परिसर छल; आब वैह परिसर स्वतः घटना करैत अछि। एहि बदलावसँ प्राकृतिक परिवेश केवल मंच नहि, कथात्मक क्रियाक भागीदार बनि जाइत अछि। घटनाक भौतिक कारण नहि भेटब रहस्यक केन्द्र थिक, न वैज्ञानिक कारणक स्वतः निषेध।

‘कोनो पात नहि हिलैत छल’ आ कँपकँपीक विरुद्धता

मूल गद्य कहैत अछि हवा शांत छल, कोनो पात नहि हिलैत छल; तखनहि सम्पूर्ण गाछी एक क्षण थरथरायल। एहि वाक्यक्रममे दृश्यात्मक तान अछि: दैनिक प्राकृतिक गति अनुपस्थित अछि, मुदा असामान्य सामूहिक गति घटैत अछि। यदि वाक्यसभ पूर्ण एकहि क्षणक समानान्तर तथ्य मानल जाए तँ किञ्चित असङ्गति बुझाइत अछि; यदि ‘हवा नहि, साधारण पात-हिलनाइ नहि’क विपरीत ‘अचानक असाधारण कम्पन’ पढ़ल जाए तँ कथा एक चमत्कृत विराम रचैत अछि। साहित्यिक समीक्षा एहि भाषिक सूक्ष्मतार्कें साफ रखत, न चुपचाप ओकरा प्राकृतिक कम्पनक प्रमाण बनाओत।

गाछी आ बूढ़बाक जीवनक अभिन्न सम्बन्ध

बूढ़बा कहैत छथि जे जलसमाधिक बाद हुनकर स्मृति एहि गाछक जड़ि-पातमे बसि गेल, आ गाछीक कँपन हुनकर अपन कम्पन थिक। ई कथाक भीतरी विश्वास आ पात्रक आत्मविवेचन अछि। उपन्यासक दीर्घ कालमे बूढ़बा गामक अमानवीय स्मृति-साक्षी छथि; एहि अध्यायमे गाछी स्वयं ओहि साक्षित्वक जीवित शरीर बनैत अछि। पात्र–परिवेशक सीमा तखन अस्थिर होइत अछि। तथापि एहि रूपकगत एकात्मतासँ बाहरक वास्तविक पर्यावरण-विज्ञानक निष्कर्ष निकालब समीक्षाक काम नहि। कथा अपन जादुई अनुभूतिक स्तरपर प्रकृतिसँ चेतना जोड़ैत अछि।

जादुई यथार्थक सामान्य सामाजिक स्वीकृति

गामक लोक कँपकँपी अनुभव कऽ भयभीत होइत छथि, मुदा ओकरा असम्भव कहि तुरन्त नकारि नहि दैत। ओ सभ पुरान अनुभव मोन पाड़ि पीपर लग जुटैत छथि। एहि सामूहिक स्वीकृतिक कारण असामान्य घटना काल्पनिक आश्चर्य आ सामाजिक व्यवहारक बीच आवागमन करैत अछि। वास्तविक सभा, दीप, बुजुर्गक स्मरण आ अनन्या–नन्दक पहुँचनाइ ठोस दैनिक दृश्य छथि; हवा-बिनु गाछीक थरथराहट अतिरिक्त रहस्य दैत अछि। एहि सह-अस्तित्वमे अध्यायक जादुई यथार्थक शक्ति अछि: कथा घटना कें प्राकृतिक-वैज्ञानिक जाँचमे निर्णायक रूपेँ सिद्ध नहि करैत, मुदा लोकक जीवनमे ओकर वास्तविक प्रभाव देखबैत अछि।

बुजुर्गक स्मृति : पुरान बाढ़िक एक साक्षात्कार

नब्बे बरखसँ अधिक आयुक वृद्ध स्त्री अपन बचपनक एहन कँपकँपी मोन पाड़ैत छथि, जकर बाद पैघ बाढ़ि आयल छल। ई व्यक्तिगत स्मरण वर्तमान भयक अर्थ बनबैत अछि। मुदा एक पुरान अनुभव नयका कँपकँपीक परिणाम निश्चित रूपसँ बाढ़ि होएत सिद्ध नहि करैत। कथामे बूढ़बाक चिन्ता व्यापक ‘पैघ घटना’क अछि, विशेष भविष्यक बाढ़िक पक्की घोषणा नहि। एहि सीमाक कारण पाठक दोसर सम्भावनासभ लेल खुला रहैत अछि। बुजुर्गक कथन सम्भावित सम्बन्ध जोड़ैत अछि, कारण-नियमक अटल घोषणा नहि। ई स्मृति कथानकमे विश्वास आ भयक सामाजिक प्रेरक होइत अछि।

अनन्या–नन्दक संयुक्त आगमन

नन्द आ अनन्या दौड़ैत आबि बूढ़बासँ प्रश्न करैत छथि। पहिने हुनकर साझा डिजिटल अभिलेखक परियोजना बताओल गेल छल; एखन दुनू प्राकृतिक विस्मयक साक्षी बनैत छथि। तकनीकी निर्माण आ जिज्ञासा-सिखाओल शिक्षणक दू प्रवाह एक लोकअनुभवक सामने ठाढ़ होइत अछि। ओ सभ जाँचक पूरा निर्णय तत्काल नहि दैत; प्रश्न पूछैत छथि। एहि दृश्यसँ नन्दक प्रश्न-पाठक निरन्तरता आ अनन्याक सहकार्यक वर्तमान स्थिति एक संग उभरैत अछि। विस्मयक क्षणमे हुनकर अपर्याप्त जानकारी पात्रगत विश्वसनीयता बनबैत अछि, सर्वज्ञानक प्रदर्शन नहि।

बूढ़बाक स्वीकार : ‘हमरा नहि बुझल’

बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे हुनका नहि बुझल ई की थिक, मुदा पैघ घटना निकट अछि एहन अनुभव होइत अछि। दीर्घकालक साक्षी अपन ज्ञानक सीमा मानैत छथि। ई स्वीकार पूर्ण भविष्यद्रष्टाक आसान प्रतिमा भंग करैत अछि। बूढ़बा संकटक सम्भावित आकार बूझैत छथि, मुदा कारण, तिथि अथवा प्रकृति निश्चित नहि करैत। एहि अपूर्णतासँ आगामी घटनाक अपेक्षा बचैत अछि। पाठककेँ बूढ़बाक अनुभवक कथा-महत्त्व बुझब चाही, मुदा ओकरा आगामी घटना एखनहि स्पष्ट देखि लेलनि मानब पाठमूलक अतिशयोक्ति होएत।

‘जेना कोनो गहींर साँस’ : सजीव प्रकृतिक भाषा

सम्पूर्ण गाछी एक संग गहींर साँस लेलक जकाँ उपमा प्रयुक्त अछि। एहि शरीर-सदृश क्रियासँ निर्जीव प्राकृतिक दृश्य सामूहिक चरित्र रूप धारण करैत अछि। पीपर, जड़ि आ पात मानव-समूहक संवेदनाक रूपक बनैत छथि। ओहि रूपकक प्रभावसँ गामक लोक कँपकँपीकेँ सार्वजनिक सूचना मानैत छथि। तथापि सजीवीकरणक साहित्यिक अर्थ आ प्रत्यक्ष वानस्पतिक चेतनाक तथ्य बीच सीमा अलग राखब उचित अछि। कथावाचक ‘जेना’क संकेत देइत अछि; एहि उपमामे काव्यात्मक सादृश्य अछि, अनिवार्य वैज्ञानिक प्रतिपादन नहि।

समय-संकेन्द्रण : एक क्षण, अनेक शताब्दी

कँपकँपी एक क्षणक अछि, मुदा ओ सैकड़ों बरखक स्मृतिसँ भरि उठैत अछि। स्थिर गाछीक दीर्घ जीवन, बूढ़बाक जलसमाधि-पश्चात् अस्तित्व आ नब्बे बरख पार स्त्रीक अनुभव वर्तमान सांझक भीतर लौटैत अछि। एतय कथनावधि विस्तृत इतिहासकेँ छोट भौतिक घटनामे जमा करैत अछि। पाठक केवल कम्पन नहि देखैत, ओकरा

बहुत पहिनेक बाढ़ि, मृत्यु आ सामूहिक भयक गुंजाइशसँ भरल बुझैत अछि। ई समय-संकेन्द्रण आगामी संकटकेँ तत्काल विशाल बनाबैत अछि, भले वर्तमान क्षणमे कोनो प्रत्यक्ष क्षति नहि भेल अछि।

गामक एकत्र होएब : संकेतक सामाजिक परिणाम

कँपकँपीक बाद लोक भयभीत भऽ पीपर लग जुटैत छथि। एतय असामान्य घटना वास्तविक सामुदायिक क्रियामे बदलि जाइत अछि। गामक पुरान अनुष्ठान स्थल एक रातिक जागरणक केन्द्र बनैत अछि; स्त्री सभक फुसफुसाहट, दीपक उजास आ लोकक जुटान परिचित दृश्य छथि। बाह्य रूपेँ कतेको बिपत्तिक पहिनेक चेतावनी याद करब लोकक निर्णय पर असर करैत अछि। घटना आगामी संकटक कारण कि नहि, ई अस्पष्ट अछि; मुदा वर्तमान सामूहिक सतर्कताक कारण कथा भीतर निश्चित अछि। एतय प्राकृतिक अनुभव मानवीय कार्य-परिवर्तन उत्पन्न करैत अछि।

दीपक उपस्थिति आ आवाजक निम्न स्वर

अन्तिम दृश्य मे दीप जरल रहैत अछि, स्त्री सभ धीरे बजैत रहैत छथि, नन्द–अनन्या गाछक तर प्रतीक्षा करैत छथि। एहि ध्वनि-प्रकाशक संयोजनसँ कथानक तेज क्रियासँ अवरुद्ध प्रत्याशा दिस मुड़ैत अछि। कोनो दुर्घटना घटैत नहि देखायल गेल अछि; लोक भविष्यक अज्ञात घटना लेल जागैत अछि। फुसफुसाहट भय आ मर्यादित सामुदायिक सहयोगक भावनाकेँ एक संग धरैत अछि। दीपक उजास अनिश्चितता दूर नहि करैत; ओ अन्हारक भीतर प्रतीक्षा करबाक स्थान बनबैत अछि। एहि कारण अध्यायक अन्तिम दृश्य समाधान नहि, थामल समयक दृश्य थिक।

गाछीक चेतावनी आ वैज्ञानिक निश्चितताक अभाव

गद्य कहैत अछि घटना ‘बिनु कोनो स्पष्ट कारणक’ भेल। ई कथावाचकक कथित अज्ञात कारण अछि, सामान्य प्रकृति-विज्ञानक सब नियम असफल भेलाक सिद्ध निष्कर्ष नहि। इसी प्रकार बूढ़बाक अनुभव पूर्वदृष्टिक सामाजिक अर्थ होइत अछि, भूकम्प अथवा आगामी आपदाक प्रमाणित पूर्वसूचक-व्यवस्था नहि। आख्यानशास्त्रीय विश्लेषण तखन सही होइत अछि जखन कथा भीतरक विश्वास-प्रणालीक क्रिया देखबैत अछि, ओकरा स्वतः बाहरी तथ्यक प्रतिवेदन नहि बनबैत। ई अध्याय भयकेँ व्यक्तिपरक आ सामूहिक क्रियाक रूपमे सघन करैत अछि।

लोकगीतक निश्चित आदेश आ गद्यक अनजान प्रतीक्षा

गीत कहैत अछि गाछी कँपल, कोनो पैघ बात निकट अछि, ‘जागू सभ’। मूल गद्य लोकक भय आ जागरण सचमुच देखबैत अछि, मुदा जे घटित होयबला अछि ओकर पहिचान नहि खोलैत। गीत भविष्य-संकेतक निश्चय व्यक्त करैत अछि; गद्य एक अनुत्तरित प्रश्न बनबैत अछि। एहि दू कथनस्तरक परिणाम समान नहि। गीत सामुदायिक तैयारीक आलोक उत्पन्न करैत अछि, गद्य डर आ अज्ञानक दृश्य रचैत अछि। एहि सह-अस्तित्वसँ अध्यायक भावात्मक चरम बनैत अछि। कथानक समीक्षककेँ गीतक निर्णायक भाषासँ प्रभावित होइतहुँ भविष्यक घटना गढ़ि नहि देबाक सावधानी रखब चाही।

पूर्वक गाछी-स्थल आ वर्तमानक पुनर्संरचना

चन्ना गाछी पहिने स्मरण-अनुष्ठान, स्त्रीक राति-सभा, वृक्षरोपण आ जल-सुरक्षाक कार्यसँ जुड़ल अछि। एखन ओ स्थल स्वयं काँपि उठबाक कारण कथा-संसारक सक्रिय पात्र बनैत अछि। एकहि स्थानक कार्य वारम्बार बदलैत अछि: संरक्षणक आँगन, सामुदायिक न्यायस्थल, पर्यावरणक आधार, आ अन्ततः आसन्न परिवर्तनक संकेतक। एहि रूपान्तरसँ उपन्यासक स्थान स्थिर सजावट नहि, दीर्घकालक पात्रगत संरचना सिद्ध होइत अछि। गाछीक कथित स्वयं-क्रिया स्थानकेँ स्मृतिक भंडारसँ घटनाक सूत्रधार दिस लै जाइत अछि।

समुदायक भय आ सामाजिक असमानताक मौन

गामक लोक सामूहिक रूपेँ पीपर लग जुटैत छथि, मुदा अध्याय कोन टोला, कोन वर्ग अथवा कोन परिवार कतेक भयभीत अछि तकर पृथक आवाज नहि दैत। सामूहिक सर्वनाम एहि क्षण सामाजिक विभेदकेँ पृष्ठभूमिमे राखैत अछि। दीर्घ उपन्यासमे बहुते वंचित वर्गक खास अनुभव बतायल गेल अछि, एतय सम्पूर्ण गामक एक भावनात्मक शरीर बनाओल जाइत अछि। एहि शैलीक लाभ व्यापक सामूहिक तनाव अछि, सीमा विविध व्यक्तिगत प्रतिक्रियाक अल्प दृश्यता। सामाजिक एकता सिद्ध होएबाक नैतिक उत्सवसँ बेसी ई सामूहिक आशंकाक क्षण अछि; एखन असमान परिणामक कोई विस्तृत मानचित्र नहि।

समग्र मूल्यांकन : संकेत बनल पर्यावरण

‘चन्ना गाछीक कँपकँपी’ दृश्यगत रूपेँ छोट, कालगत रूपेँ दीर्घ आ अर्थगत रूपेँ अत्यन्त सघन अध्याय अछि। हवा शांत रहितहुँ वृक्षसमूहक असामान्य कम्पन, वृद्ध स्त्रीक बाढ़ि-स्मरण, बूढ़बाक सीमित पर दृढ़ अनुभूति, अनन्या–नन्दक संयुक्त प्रश्न आ रातिक प्रतीक्षा मिलि आसन्न घटनाक वातावरण रचैत अछि। अध्याय वास्तविक भविष्यक दुर्घटनाक वर्णन नहि, ओकर प्रतीक्षा बनबैत अछि। प्रकृतिक सजीवकरणक कारण स्थल एक साक्षी-काया बनि उठैत अछि। एहि भावात्मक रहस्यक साहित्यिक शक्ति स्वीकार करैत समीक्षककेँ स्मृति, संकेत आ भविष्यक निश्चित परिणाम बीचक भेद सुरक्षित रखबाक चाही।

प्रकरण ९० | मूल अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –११। पाठाधार : “बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद”, आरम्भिक फकरा, “आशीर्वादक बीया” लोकगीत आ मूल गद्य। विवेचन-विधि : कथनकाल, अन्तःसंवाद, पूर्वाभास, स्मृति-हस्तान्तरण आ गीत–गद्यक अन्तर।

‘अन्तिम’ शब्दक कथात्मक अग्रिम सूचना

शीर्षक बूढ़बाक आशीर्वादकेँ ‘अन्तिम’ कहैत अछि, जखन कि मुख्य गद्यमे हुनकर देहावसान अथवा वास्तविक अन्तिम दर्शन घटित नहि होइत अछि। ‘अन्तिम’ एतय पाठकक अपेक्षाकेँ भविष्य दिस मोड़बाक शब्द थिक। आरम्भसँ पहिने निष्कर्षक भाव पैदा कऽ कथा ओहि नाजुक क्षणपर केन्द्रित करैत अछि जतय एकटा दीर्घकालिक साक्षी अपन भार अगिला साक्षीक हाथमे राखय चाहैत छथि। शीर्षकक निश्चितताक मुकाबिल गद्यक

‘विदाइ-सन’ आ ‘हस्तान्तरण-सन’ उपमा सम्भावनाक भाषा अछि; एकरा मृत्यु-समाचार बुझब कथाक स्वयं निर्मित अवकाशकेँ मेटा देत।

पिछला अध्यायक कँपकँपीसँ अगिला रातिक सम्बन्ध

अध्याय –१२ मे सम्पूर्ण चन्ना गाछी काँपैत अछि, गाम एकत्र होइत अछि, मुदा कारण खुलैत नहि। ओकर ‘अगिला राति’ बूढ़बा नन्दकेँ अकेले बजबैत छथि। ई समय-संयोजन महत्त्वपूर्ण अछि: सार्वजनिक आशङ्काक तुरन्त बाद निजी हस्तान्तरण। अनुक्रममे कारणक पूर्ण उद्घाटन नहि, चेतावनीक स्वरूप-परिवर्तन भेटैत अछि। जे संकेत पिछला दृश्यक सामूहिक भय बनल छल, वैह एहि अध्यायमे एकटा युवकक दायित्व बनैत अछि। एहि क्रमसँ पाठक घटना घटबाक पहिने ओकर मानसिक प्रभाव देखैत अछि।

एक दीपक सीमित आलोक आ केन्द्रित दृश्य

पीपरक तर ‘केवल एकटा दीप’ जरैत अछि। पाछाँक सामूहिक जुटानक अपेक्षा ई अल्प प्रकाश, अल्प पात्र आ अल्प समयक दृश्य अछि। एकटा दीप वातावरणक सजावट मात्र नहि; इएह कथनक दृश्य-सीमाकेँ निर्धारित करैत अछि। पाठक नन्द आ बूढ़बाक बोल पर केन्द्रित रहैत अछि; समूचा गाम अनुपस्थित भऽ कऽ स्मृतिक रूपमे उपस्थित रहैत अछि। छोट दृश्य शताब्दीक इतिहास उठबैत अछि। इएह अन्तर एहि अध्यायक कथात्मक सघनता बनबैत अछि: स्थान सीमित, समय क्षणिक, मुदा भीतरक उद्धृत इतिहास दीर्घ।

कथोपकथनमे दायित्वक क्रमशः निर्माण

संवादक क्रम एकदम महत्त्वपूर्ण अछि। पहिने बूढ़बा नन्दकेँ वंशज आ आसन्न परीक्षाक सम्भावित सहभागी कहैत छथि; तखन नन्द प्रश्न पुछैत अछि—‘हमरा की करय पड़त?’; तकर बाद उत्तरमे निश्चित कार्यसूची नहि, स्मृति आ साहसक सहारा भेटैत अछि। ई उत्तर घटना-निराकरण नहि, पात्र-तैयारी थिक। कथाकार नन्दक काज पहिनहिसँ तय नहि करैत; हुनका अनिश्चित परिस्थिति झेलबाक मानसिक क्षमता दैत अछि। संवादक बीचक ई अवकाश अगिला अध्याय लेल आवश्यक suspense बनबैत अछि।

नन्दक सीमित जानकारी आ पाठकक अतिरिक्त आशङ्का

नन्द बूढ़बाक पुरान कथासँ परिचित अछि, तैयो आगूक संकट नहि जनैत। पाठक सेहो दुर्घटनाक विवरण एखन नहि जानैत, मुदा –१२क कँपकँपी आ ‘अन्तिम’ शीर्षक जोड़ि एकटा अधिक विशिष्ट भय बनबैत अछि। एहि कथन-व्यवस्थामे पाठक सर्वज्ञ नहि, केवल संकेतसभक जोड़ करय समर्थ अछि। नन्दक चुप्पी आ प्रश्न कथाक अज्ञान-स्थितिकेँ मानवीय बनबैत अछि। लेखक घटनाक समयपूर्व खुलासाक बजाय आगामी बिपत्तिक अनुभूतिगत पूर्वभूमि रचैत छथि, जाहिसँ बादक दुर्घटनामे स्मृति-प्रत्यावर्तन सम्भव होइत अछि।

वंशावली सूचक वाक्यक कार्य

बूढ़बा नन्दकेँ ‘आरुणिक पोता’ कहैत छथि। ई सम्बन्ध-सूचक शब्द केवल परिजन-पहिचान नहि; नन्दक इंजीनियरीक कार्य, आरुणिक बान्ह-निर्माण आ गामक पुरान जल-संघर्षकेँ एक भित्तिपर आनैत अछि। एहि सम्बोधनमे पीढ़ीगत समय संक्षेपित अछि। तथापि वंशज होएब सफल साक्षी होएबाक प्रमाण नहि—नन्दकेँ

चुनौतीक सोझाँ अपन निर्णय स्वयं करय पड़त। एहि भेदसँ वंशक गौरव आ व्यक्तिगत क्रियाक जिम्मेवारीक बीच कथात्मक तनाव बचल रहैत अछि।

नाम सभक उल्लेख : अनुलेखी स्मृतिसँ जीवित सहचर धरि

हुलासा, सुखदेव, गौरी आ सुनयनाक नाम बूढ़बा नन्दक भीतरक साहसक रूपमे गनबैत छथि। विभिन्न युगक जीवन एक छोट सूचीमे जुड़ैत अछि; ई नामकोष कथाक बीतल समयकेँ वर्तमान नायकक मानसिक संसारमे फेर उपलब्ध करैत अछि। मुदा एहि नामसभक देह वा आत्मा सचमुच घटनास्थलपर आबि गेल—एहन दृश्य नहि लिखल अछि। ‘पाछाँ ठाढ़ रहत’ रूपक नैतिक संगतिकेँ रूप देइत अछि। आलोचनाक लेल जरूरी अछि जे प्रतीकात्मक उपस्थिति आ वास्तविक पात्र-प्रवेशमे अन्तर बनल रहय।

‘अकेले नहि होयब’क पुनरुक्ति

बूढ़बाक वाक्य ‘अहाँ अकेले नहि होयब’ अध्यायक प्रमुख श्रवणीय केन्द्र बनैत अछि। संवादमे उच्चारित ई आश्वासन नन्दक अनिद्र रातिमे फेर बजैत अछि। कथाकार एकहि वाक्यकेँ पहिने बाहरी आवाज, फेर आन्तरिक स्मृति बनबैत छथि। ई पुनरुक्ति अर्थक स्थिरता नहि, वाहकक परिवर्तन देखबैत अछि। सुनल बात पात्रक भीतर टिकि नव निर्णयक सम्भावित प्रेरणा बनैत अछि। कथा घटनासँ अधिक वचनक स्मरण-प्रक्रिया अंकित करैत अछि, जे दीर्घ उपन्यासक श्रुतिपरक संरचनासँ मेल खाइत अछि।

आशीर्वादक द्वैत : सान्त्वना आ चेतावनी

सामान्य आशीर्वाद कल्याणक शुभकामना होइत; एतय बूढ़बाक वचन डरक स्पष्ट उपस्थितिक संग दऽ रहल अछि। ‘पैघ परीक्षा’ आ ‘अन्हार क्षण’ जकाँ संकेत आश्वासनकेँ सरल उत्सव बनय नहि दैत। ई विरोधाभास कथाक उपयोगी संस्पर्श थिक—पात्रकेँ अकारण निडर नहि बनाएल जाइत, बल्कि भय रहितहुँ टिकबाक समर्थक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि। एहि सन्तुलनक कारण आगामी दुखान्त घटना कथाक आरम्भिक चेतावनीसँ जुड़ैत अछि, मुदा दुःखक पहिनहि अन्त नहि घोषित होइत अछि।

लोकगीतक बीया-बिम्ब आ गद्यक भार-बिम्ब

आरम्भिक गीत आशीर्वादकेँ बीया कहैत अछि, जे बरखों बाद फूलत; गद्यमे बूढ़बा सैकड़ों बरखक ‘भार’ नन्दक कान्हपर राखि रहल छथि। बीया विकासक सम्भावना अछि, भार दायित्वक वजन। दुनू छवि एकहि हस्तान्तरणकेँ अलग अनुभूति दैत अछि। गीत भविष्यक सफल अंकुरक तरफ झुकैत अछि; गद्य स्वीकारक असहजता आ नन्दक अनभिज्ञता रखैत अछि। एहि भिन्नताकेँ घुला कऽ एक निष्कर्ष बना देलासँ गीतक आशावाद आ गद्यक जटिलता, दुनू, पातर भऽ जाएत।

लोकगीतक ‘बूढ़बा गेल’ आ गद्यक वास्तविक सीमा

गीतमे ‘बूढ़बा गेल, आशीष रहल’ पङ्क्ति अछि, मुदा गद्यक अन्तमे बूढ़बा पीपर लग नन्दकेँ विदा करैत छथि; हुनकर मृत्यु अथवा परित्यागक घटना नहि अछि। एहि अवकाशकेँ सीधे अन्तिम विदाइ अथवा निधनक रूपमे

लिखब स्रोतक सीमा लाँघब थिक। गीतक काल-संकोचन भविष्यक सम्भावित अन्तकेँ वर्तमान भावमे आनि सकैत अछि। ई गीतक स्वायत्त कथनकालक उदाहरण अछि, जतय लम्बा घटनाक अर्थ पहिनहि व्यक्त भऽ जाइत अछि, जबकि कथा ओकर वास्तविक कालक्रम अलग राखैत अछि।

नन्दक मौन सहमति आ पात्रक सक्रियता

नन्द ‘बिनु ना कहने’ भार स्वीकार करैत अछि। ओकरा कोनो औपचारिक प्रतिज्ञा वा लिखित सहमति देबैत नहि देखाओल गेल अछि। एहिमे पात्रक सक्रियता सूक्ष्म अछि: प्रश्न पुछब, सुनब, भीतरक परिवर्तन अनुभव करब आ राति भरि जागल रहब। उपन्यास बाह्य वीरतासँ पहिने आन्तरिक दायित्वक जन्म देखबैत अछि। तथापि स्वीकारक एहि भावसँ ई सिद्ध नहि जे नन्द सब आगामी निर्णय सही लेत; चरित्र विकासक परिणाम अगिला घटनामे जाँचबाक प्रश्न शेष रहैत अछि।

बूढ़बाक दीर्घायु आ कथात्मक अधिकार

बूढ़बाक वचनकेँ गम्भीरता हुनकर अनेक पीढ़ीक अनुभवसँ भेटैत अछि। ओ एकटा पितामहसँ बेसी, कथाक समय-धुरीक रूपमे कार्य करैत छथि। मुदा गद्य स्वयं हुनकर ज्ञानकेँ पूर्ण भविष्य-दर्शन नहि घोषित करैत—‘लगैत अछि’ आ ‘आबय बला’ जकाँ अनिश्चित संकेत एहि वचनमे मौजूद अछि। कथात्मक अधिकार असीम निश्चिततासँ नहि, शताब्दीक सुनल-देखल घटनाक स्मृति आ पात्रसभक विश्वाससँ बनैत अछि। ई अन्तर बूढ़बाक चरित्रकेँ दैवी सर्वज्ञतामे विलीन होएबसँ बचबैत अछि।

अगिला दिनक पूर्वाभास आ अध्याय-अन्तक विराम

अन्तिम अनुच्छेद कहैत अछि जे नन्दकेँ नहि बुझल ‘अगिला दिन’ गामक जीवन बदलत। कथावाचक नन्दक तत्काल ज्ञानसँ आगू झाँकि पाठक लेल दुर्घटनाक प्रत्याशा निर्माण करैत छथि। मुदा कतेक लोक प्रभावित हएत, की दुर्घटना हएत, ककर नाम उभरत—ई सभ एखन अव्यक्त अछि। ई नपे-तुलल अग्रिम सूचना अगिला ‘पुलपर पहिल छपाक’क कथा-द्वार खोलैत अछि। कथाक बुनावटमे अध्याय-अन्त पाठकक ध्यानकेँ भविष्य दिशि खींचैत अछि, केवल भावनात्मक समापन नहि करैत।

व्यक्तिगत वचनक सामुदायिक अर्थ

बूढ़बा नन्दकेँ अकेले बजबैत छथि, मुदा अपन सन्देशमे शताब्दीक पात्र, मृतक, प्रतिरोध आ स्मृति सभकेँ आनैत छथि। निजी संवाद सामूहिक उत्तराधिकारक विधान बनि जाइत अछि। एतय सार्वजनिक सभा अथवा कानूनी नियुक्ति नहि; एका-एक पात्रक स्मृति-चेतना सामुदायिक वचनक वाहक बनैत अछि। एहि आयोजनमे ताकत सेहो अछि आ सीमा सेहो। ताकत—नन्दक मनमे अनुष्ठान जीवित रहत; सीमा—सभक संयुक्त निर्णयक जगह एक उत्तराधिकारीक नैतिक अनुभव कथा चलबैत अछि।

समग्र आख्यानात्मक मूल्यांकन

‘बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद’ घटना-बहुल नहि, भाव-बहुल संक्रमण-अध्याय अछि। सीमित पीपर-स्थल, एक दीप, दुइ पात्रक संवाद, नामक पुनरुक्ति आ अगिला दिनक पूर्वाभास मिलि एहन आन्तरिक प्रस्तावना बनबैत अछि जे बिना दुर्घटनाक विवरण दिए दुर्घटनाक भावनात्मक परिधि तैयार करैत अछि। कथनक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे साक्षी बनबाक काज ‘सही घटना देखब’सँ पहिने ‘दोसरक इतिहासक भार उठाबय तैयार होएब’ रूपमे उभरैत अछि। गद्यक अनिश्चितताकेँ बचौने पढ़ला पर आशीर्वाद श्रद्धा आ भयक जटिल संगति बनि रहैत अछि।

प्रकरण ९१ | मूल अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –१०। पाठाधार : “पुलपर पहिल छपाक”, “पुलपर नाम” गीत आ दुर्घटनाक मूल गद्य। विवेचन-विधि : दृश्य-काल, जल-स्थान, मजदूरक गुमनामी, श्रव्य घटना आ अभिलेखक जन्म।

पूर्वाभाससँ प्रत्यक्ष दुर्घटनाक बिन्दुपर प्रवेश

अध्याय –११ मे आगामी ‘अन्हार क्षण’ केवल संकेत छल; –१० मे ओ संकेत पुल-निर्माणस्थलपर घटित दुर्घटना बनैत अछि। एतय कथा पूर्वक भयकेँ ठोस स्थल, रात्रि, थाकल मजदूर, अपर्याप्त इजोत आ सुरक्षाक कमी दैत अछि। आशङ्का आ घटना बीचक ई रूपान्तरण दीर्घ उपन्यासक संरचनामे निर्णायक अछि। मुदा दुर्घटनाक कारणक पूर्ण तकनीकी जाँच एतय नहि अछि; दृश्य तत्काल अभाव आ हिंस्र जलधारक संग पात्रक अनुभूति दैत अछि। बादक जाँचक आवश्यकता एहिसँ स्वाभाविक रूपेँ निकलैत अछि।

चानहीन राति आ दृश्यताक सीमा

दुर्घटनाक राति चान नहि अछि; बरसाती नदी तेज बहैत अछि; मजदूर थाकल आ अपर्याप्त इजोतमे काज करैत छथि। ई विवरण वातावरण मात्र नहि—ओ दृश्यताक, सहायता-पहुँचक आ पहिचानक भौतिक सीमा बनबैत अछि। नन्द ओतय उपस्थित रहितहुँ सबटा नहि देखैत; मजदूरक चेहरा आ नाम ओकरा स्पष्ट नहि भेटैत। कथावाचक अन्धकारक उपयोग करुणा बढ़ेबाक संग सूचना स्थगित करबाक लेल करैत छथि। अज्ञात नाम अन्तिम जाँचक बीया बनैत अछि, घटना-छिपावक बनावटी अलङ्कार मात्र नहि।

‘छपाक’ : श्रव्य घटनाक केन्द्रीयता

मजदूरक खसबाक ध्वनि एक शब्दमे संकेन्द्रित अछि—‘छपाक’। कथामे ई आवाज निकटतम टोला धरि सुनाइ पड़ैत अछि, जखन कि मजदूरक नाम सुनाइ नहि पड़ैत। आवाजक भौगोलिक पहुँच आ पहिचानक अनुपस्थिति एक करुण विरोध रचैत अछि। दुर्घटना सब सुनैत अछि, व्यक्ति के अछि से केओ नहि जनैत। शीर्षक एकटा श्रव्य क्षणकेँ समूचा अध्यायक स्मृति-चिन्ह बनबैत अछि। पाठकक मनमे ध्वनि रहि जाइत अछि; नायकक अभियान ओहि ध्वनिक अनुपस्थित नाम तक पहुँचबाक यत्न बनैत अछि।

प्रत्यक्ष दृश्य आ नाम-सम्बन्धी अज्ञान

मूल गद्य स्पष्ट कहैत अछि मजदूर ‘जकर नाम अखनहु अस्पष्ट’ नदीमे खसल। नन्द हाथ बढ़बैत अछि आ नाम पुकारैत अछि, मुदा ओकरा ‘ने ओ हाथ भेटल, ने ओ नाम’। एहि वाक्यक अनुशासनकेँ आलोचनामे सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। दुर्घटनाक बाद ओकरा मृतकक निश्चित पहिचान भेटल, एहन दावा नहि अछि। उपन्यास अज्ञात व्यक्ति प्रति दायित्व आ व्यक्तिगत पहिचान जुटेबाक प्रक्रियाक बीचक अन्तर कहैत अछि। मृत्यु अथवा डूबिक गुम होएबक अन्तिम परिणामक पुष्टि सेहो दृश्यात्मक ढंगसँ सीमित अछि।

नन्दक बचाब-प्रयत्नक गति आ असफलता

मजदूर खसिते नन्द सहायताक हेतु दौड़ैत आ पानिमे कुदैत अछि। ई क्रिया नन्दक तत्क्षण जोखिम लेबाक सक्रियता देखबैत अछि; ओकर असफलता नायकक नैतिक विफलता रूपमे स्वयंसिद्ध नहि। अन्हार आ धारक जोर तत्काल बाधा छथि। मुदा एहि दृश्यसँ निर्माण-स्थलक सुरक्षा-नीतिक पूरा विवरण नहि भेटैत; व्यक्ति-आधारित वीरता संरचनात्मक लापरवाहीक प्रश्नकेँ समाप्त नहि करैत। कथाक सघनता एहि द्वन्द्वमे अछि: एकटा अभियन्ताक साहस आ ताहिसँ पैघ श्रम-व्यवस्थाक अभाव।

दुर्घटनाक सार्वजनिक सूचना आ निजी शोक

‘छपाक’क आवाज टोला धरि पहुँचैत अछि, मुदा घटना पाछाँ नन्द स्तब्ध आ रोअइत पीपर लग घुरैत अछि। एहि स्थान-परिवर्तनमे सार्वजनिक श्रव्य संकेत निजी शोकमे संकुचित भऽ जाइत अछि। गामक भीड़क विस्तृत प्रतिक्रिया एहि अध्यायमे नहि लिखल; मुख्य कैमरा नन्दक देह, नोर आ चूबैत पानिपर रहैत अछि। दृश्यक भाव-निर्माण क्षणिक अछि, तथापि ओहि क्षणक नायक-चेतनापर स्थायी असर आगूक लेखनमे रूपान्तरित होइत अछि।

देहक पानि आ आँखिमे नोरक समांतर बिम्ब

कथाकार नन्दक देहसँ टपकैत नदीक पानि आ आँखिसँ बहैत नोरकेँ एक अन्हार रातिमे एक करैत छथि। एतय बाह्य आपदा आ आन्तरिक दुःख एकहि तरल बिम्बमे मिलैत अछि। जल केवल बाहरी नदी नहि, नायकक संवेदनाक अंग बनैत अछि। एहि दृश्यसँ गोहिक विशाल रूपक बिना वास्तविक गोहिक आक्रमण लिखने सेहो सक्रिय भऽ सकैत अछि। जलक भौतिक शक्तिकेँ प्रतीकमे विलीन करब अनुचित; प्रतीकक मार्मिकता वास्तविक असुरक्षित श्रमक सन्दर्भेँ बनैत अछि।

बूढ़बाक उत्तरमे दोषक स्थानान्तरण

बूढ़बा नन्दकेँ कहैत छथि जे बचा नहि सकब ओकर दोष नहि, बल्कि अन्हार, धार आ ओ व्यवस्था दोषी अछि जे मजदूरकेँ संख्या बुझैत अछि। कथानक एहि संवादसँ नायकक अपराधबोधकेँ सामाजिक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि। ई पात्रक कथन अछि, स्वतन्त्र प्रशासनिक जाँचक निष्कर्ष नहि। एहि सीमाक संग देखल जाय तँ बूढ़बाक वचन दृश्यकेँ व्यक्तिगत दुर्घटनासँ श्रमिक-अदृश्यताक व्यापक रूपकमे बदलैत अछि, बिना ओकर वास्तविक जिम्मेदारीक कानूनी निर्णय सुनौने।

‘दुइ बेर मृत्यु’ : सामाजिक विस्मृतिक रचना

बूढ़बाक चेतावनी—नाम नहि राखल गेल तँ मजदूर दू बेर मरत—शारीरिक विनाश आ सामूहिक विस्मरणक दुइ अलग स्तर बनबैत अछि। रूपकक तीक्ष्णता इएह जे डूबनिहारक पहिल मृत्यु पर व्यक्ति सभक नियन्त्रण सीमित छल, मुदा स्मृतिसँ मेटि देबाक दोसरे मृत्यु रोकिनाइ सम्भव कर्म ठहरैत अछि। ई नैतिक भार नन्दक भविष्यक डायरीकेँ प्रेरित करैत अछि। तथापि नाम लिखब मृतकक परिवारक आर्थिक अधिकार, सुरक्षा आ जवाबदेहीक विकल्प नहि, एहन सीमाक प्रश्न आलोचनाक भीतर खुलल रहैत अछि।

लोकगीतक निश्चित ‘देह गोहि लऽ लेलक’ आ गद्य

गीत गोहि द्वारा देह लेबाक स्पष्ट वाक्य कहैत अछि; मुख्य दुर्घटना-दृश्यमे नदीक तेज धार, अनाम मजदूरक डूबनाइ आ नन्दक बचाब-प्रयत्न अछि। वास्तविक मगरमच्छक आक्रमण अथवा देखल प्रत्यक्ष गोहि-क्रिया वर्णित नहि। एहि अन्तरकेँ नज़रअन्दाज करब मिथकीय प्रतीककेँ भौतिक घटनाक गलत विवरण बना देत। गीतक गोहि जल-हिंसाक परम्परागत अर्थ-वाहक अछि; गद्यक केन्द्र असुरक्षित निर्माण-स्थल आ अस्पष्ट पहिचान। द्वैध कथनस्तरक कारण रूपक प्रभावी होइत अछि, पर तथ्यक स्तर अलग रहैत अछि।

‘पहिल’क समय-सम्बन्धी जटिलता

शीर्षक ‘पहिल छपाक’ कहैत अछि, जबकि पूर्वक अनेक अध्यायमे जलसमाधि, बाढ़ि आ डूबनाक प्रसंग अएल अछि। एहि ‘पहिल’केँ समग्र गामक पहिल जल-दुर्घटना नहि बुझबाक चाही। ई नन्दक पुल-स्थलपर, ओकर व्यक्तिगत साक्षी-अभियानमे आ ‘छपाकक हिसाब’क नूतन लेखन-परम्परामे पहिल विशेष घटना अछि। कथा ‘पहिल’ शब्दसँ नव नायकक अनुभवक आरम्भ चिन्हित करैत अछि; उपन्यासक १२००-वर्षीय इतिहासकेँ एतय सँ आरम्भ करबाक दावा नहि करैत।

डायरीक पुनः प्रथम पृष्ठ : पुनर्लेखनक समय

अध्याय –२० मे नन्द अपन डायरीक पहिल पन्नापर पुरान वाक्य लिखने छल। एहि अध्यायमे दुर्घटनाक बाद ओहि डायरीक आरम्भक विस्तार, आ ‘पहिल पन्नापर’ वैह वाक्य फेर लिखबाक उल्लेख अछि। ई पुनरुक्ति स्मृति-परिवर्तनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि: पहिने लिखल सूत्र आगामी दायित्व छल, आब वास्तविक दुर्घटनासँ बाध्य अनुभव। तथापि पाठक लेल भौतिक पन्नाक एकहि कालक्रम स्पष्ट नहि; ‘पहिल’क दोहरावमे समयसम्बन्धी तनाव अछि। मूल पाठ बदलने बिना एहि रचनात्मक अस्पष्टताकेँ दर्ज करब उचित।

खोजक अनन्त सूची आ कथात्मक विस्तार

नन्द केवल एहि एक मजदूरक नाम नहि, ‘ओकर जकाँ आर सभक नाम’ खोजबाक संकल्प लैत अछि। एकवचन घटना बहुवचन सूचीमे बदलैत अछि। एतय घटना समाप्त होइत अछि, मुदा ताहिसँ उठल जाँच समाप्त नहि होइत। ई उपन्यासक प्रसारण-तकनीक थिक: एक व्यक्ति माध्यम बनि अनाम श्रमिकसभक पूरा इतिहास कथामे प्रवेश करैत अछि। इएह क्रिया ‘छपाकक हिसाब’ केँ शोक-दैनिकी मात्र नहि, संरचनात्मक गुमनामी विरुद्ध अभिलेखनक परियोजना बनबैत अछि।

निर्माण-स्थल आ पीपर : दुइ नैतिक स्थान

पुल-स्थल आधुनिक विकास, ठेकेदारी, श्रम आ जोखिमक जगह अछि; पीपर साक्षी, स्मृति आ नैतिक संवादक केन्द्र। नन्द एहि दुनू स्थलकेँ अपने देहमे जोड़ैत अछि—नदीक पानि लऽ पीपर लग अबैत अछि, आ पीपरक वचन लऽ फेर दुर्घटनाक हिसाब दिशि मुड़ैत अछि। ई स्थानगत आवागमन प्रतीकात्मक होएबाक संग कथाप्रवाहकेँ चलबैत अछि। पीपर न्यायिक दफ्तर नहि, पुल सार्वजनिक अनुष्ठान-स्थल नहि; नायकक जिम्मेवारी दुनूक फाँकमे जन्मैत अछि।

शव वा पहिचानक अनुपस्थिति : उत्तराधिकार बनल प्रश्न

गद्यक अन्त धरि अनाम मजदूरक असली नाम घोषित नहि अछि। ओहि अनुपस्थितिकेँ साहित्यिक करुणाक सरल साधन बनबैत समय ई ध्यान रहबाक चाही जे खोएल नाम पात्रक अस्तित्वक कमजोरी नहि, लेखन-व्यवस्थाक विफलता देखबैत अछि। कथाकार नामक प्रतीक्षा स्थापित कऽ अगिला अध्यायक जाँचकेँ किएक आवश्यक बनबैत छथि, से स्पष्ट अछि। एहन रचना पाठककेँ शोक मात्र नहि, विवरण जुटेबाक अपरिहार्यताक तरफ ठेलैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : ध्वनिसँ दस्तावेज धरि

‘पुलपर पहिल छपाक’ तीव्र दृश्यगत अध्याय अछि, जतय दीर्घ पूर्वाभास क्षणिक जल-ध्वनिमे केन्द्रित भऽ जाइत अछि। नन्दक असफल बचाब, बूढ़बाक नाम-सुरक्षाक निर्देश, अज्ञात मजदूर आ डायरीक आरम्भ—ई सभ मिलिकऽ घटनाकेँ चलैत जाँचमे बदलैत अछि। कथाक सबसे महत्त्वपूर्ण नैतिक प्रश्न ‘डूबनिहार के छल?’ अछि; ‘गोहि के छल?’ मात्र नहि। मूल गद्यक अज्ञातता आ गीतक निश्चित निष्कर्षक अन्तर सुरक्षित रहलापर एहि अध्यायक करुणा आ अनुसन्धान-प्रवणता दुनू प्रकाशमे अबैत अछि।

प्रकरण ९२ | मूल अध्याय −९ — जाँचक आरम्भ

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : −९। पाठाधार : “जाँचक आरम्भ”, “जाँचक खुदाइ” लोकगीत आ मूल गद्य। विवेचन-विधि : जासूसी आख्यानक सूत्र, सूचना-अन्तर, द्वैध अनुसंधान, श्रम-अभिलेख आ अन्तर्गत रूपक।

दुर्घटनाक दृश्यसँ अनुसंधानक कथामे प्रवेश

पुलपर डूबनाइ −१० मे तीव्र दृश्य बनल छल; −९ मे कथा ओहि घटना पाछाँ शुरू भेल दस्तावेजी खोजक क्रममे प्रवेश करैत अछि। नन्द ठेकेदारक कागच माँगैत, हाजिरी-पञ्जी देखैत आ सहमजदूरसँ पुछैत अछि। गद्यक क्रियापद अब दौड़ब-कुदबसँ हटि देखब, पुछब, तुलना करब बनैत अछि। ई गति-परिवर्तन मात्र विराम नहि, आख्यानक विधागत विस्तार थिक: करुण दुर्घटनासँ अनुसन्धान-कथाक संरचना उत्पन्न होइत अछि। अनजान मजदूरक नाम एखन जाँचक केन्द्र अछि, समाधान नहि।

असली नामक अभाव : प्रारम्भिक रहस्य

नन्दकेँ ज्ञात होइत अछि जे मजदूर ‘नकली नाम आ नकली उमेर’सँ काज करैत छल। ई सूचना पहलेक ‘नाम अस्पष्ट’ स्थितिकेँ अधिक गम्भीर बनबैत अछि: नाम केवल पत्ता नहि लागल, ओकर स्थानपर व्यवस्थित गलत प्रविष्टि मौजूद अछि। तथापि कथाकार मजदूरक असली नाम तत्काल उद्घाटित नहि करैत। पाठककेँ एकटा रिक्ति भेटैत अछि जकर चारूकात तथ्य धीरे-धीरे जुटैत अछि। एहि रिक्तिक कारण असली पहिचान खोजबाक इच्छा नन्दक व्यक्तिगत शोकसँ बाहर निकलि कथानकक जासूसी-प्रेरक शक्तिमे बदलैत अछि।

हाजिरी-पञ्जीक अर्थ : संख्या आ व्यक्ति बीच खाइ

हाजिरी-पञ्जी मजदूरकेँ राज्य अथवा ठेकेदारक लिखित व्यवस्थामे दर्ज करबाक साधन अछि। मुदा एतय ओकर प्रविष्टि मूल व्यक्ति तक पहुँचेबाक भरोसेमन्द बाट नहि बचैत, किएक तँ नाम आ उमेर नकली अछि। ई विडम्बना दस्तावेजविरोध नहि; दस्तावेजक विश्वसनीयताक जटिल स्थिति अछि। मजदूरक सहकर्मीसभक मौखिक स्मृति आ औपचारिक पञ्जीक मिलान आवश्यक बनैत अछि। कोन स्रोत कतबा बता सकैत अछि—एहि सीमा भीतर कथा अनुसन्धानक तनाव रचैत अछि, केवल ‘सभ कागच झूठ’क सामान्य घोषणा नहि।

‘जीवितहि नाम हेराएब’क वाक्यगत तीक्ष्णता

मूल गद्य कहैत अछि जे मजदूर जेना जीविते अपन नाम कतहु हेरा आयल छल। ई उपमा दुर्घटनापूर्व पहचान-मिटानाक प्रश्नकेँ सोझाँ लबैत अछि। डूबनाक राति नाम लुप्त भेल मात्र नहि; श्रम-व्यवस्थामे पहिनहिसँ गलत पहचान प्रवेश केने छल। एकरा अस्थायी शाब्दिक उपमासँ बेसी कथात्मक भूमिका अछि—मृत्यु पाछाँक विस्मरणक पूर्वपीठिका जीवित मजदूरक कागजी अनामित्वमे छिपल छल। तथापि मजदूर स्वयं किएक नकली नाम अपनौलक, ई अध्याय नहि बतबैत; परिस्थितिक कारण कल्पित नहि कएल जा सकैत।

ठेकेदारी कम्पनीक तीन विसङ्गतिक क्रम

मूल गद्य निर्माण कम्पनीक कागच स्पष्ट नहि होएब, मजदूरक नाम असली नहि होएब आ पाइक लेनदेन दूर तक जाएब—एहि तीन बातकेँ एक अनुक्रममे राखैत अछि। पाठक ई सभकेँ जोड़ि पैघ जालक सम्भावना देखैत अछि। मुदा अस्पष्ट कागच मात्रसँ कोन व्यक्ति दोषी, ई निर्णय नहि निकलैत। कथन धीरे-धीरे एक घटना-विशेषसँ व्यवस्थागत सूत्रक तरफ बढ़ैत अछि। तीन तरहक विसङ्गति एक विशिष्ट कार्य करैत अछि: मृतकक पहचान-जाँचकेँ वित्तीय अनुसंधानसँ जोड़बाक कथात्मक कारण तैयार होइत अछि।

सत्यव्रतक प्रवेश : दोसर दृष्टिक आगमन

सत्यव्रत ‘संयोगवश’ निर्माण कम्पनीक बैंकिंग सम्बन्ध देखैत छथि। हुनकर आगमन नन्दक खोजसँ स्वतन्त्र, पहिनेसँ चलल सन्दिग्ध लेनदेनक निगरानी लऽ कऽ होइत अछि। एतय एकटामात्र नायक-ज्ञानक सीमा विस्तृत होइत अछि; श्रम-स्थानक बाहरक बैंक-अभिलेख कथे भीतर प्रवेश पबैत अछि। सत्यव्रत अपन मार्गक बात संवादमे नन्दकेँ बतबैत छथि। लेखक कोनो सर्वदर्शी जाँच-एजेन्सीक तत्काल चित्र नहि बनबैत, दू पात्रक आंशिक ज्ञान जोड़ैत छथि। एहि मिलनक कारण कथाक सूचना-वितरण अधिक जटिल आ गतिशील बनैत अछि।

नामक रस्ता आ पाइक रस्ता : द्वैध खोजक संरचना

सत्यव्रत नन्दकेँ स्पष्ट कहैत छथि—अहाँ मजदूरक नाम खोजि रहल छी, हम पाइक रस्ता। ई दू रेखा अध्यायक सम्पूर्ण कथात्मक युक्ति थिक। एकटा रेखा व्यक्तिगत अस्तित्व आ सामाजिक पहिचानसँ शुरू होइत; दोसर लेनदेनक गतिसँ। घटनाक विखण्डित भूगोल ई दुइ दृष्टिकेँ अनिवार्य बनबैत अछि। मुदा एहि बिन्दुपर दुनू रेखा एकहि संचालक धरि पहुँचि गेल, एहन सत्यापित अन्त नहि अछि। साझा काज आरम्भ भेल अछि; संयुक्त अन्तिम निष्कर्ष भविष्यमे स्थगित अछि।

पीपरक संवाद : अनुसन्धानक सामुदायिक वैधीकरण

नन्द सत्यव्रतक संग भेटलाक बाद बूढ़बा लग जाइत अछि। पीपर एतय जाँचक कार्यालय नहि, नैतिक समन्वयक स्थल अछि। बूढ़बा दुनू धागा जोड़बाक सलाह दैत छथि आ प्रतिपक्ष शक्तिशाली होएबाक चेतावनी करैत छथि। एहि संवादसँ व्यक्तिगत जाँच समुदाय-स्मृतिक दीर्घ परम्परामे अर्थ पबैत अछि। मुदा बूढ़बाक अनुमानक आधारपर अपराधीक पहचान अथवा जालक पूर्ण नक्सा बनल नहि मानबाक चाही। ओ जोखिमक शब्दचित्र दैत छथि; तथ्यगत खोज नन्द–सत्यव्रतक कर्ममे राखल गेल अछि।

पाइन खोदबाक लोकबिम्ब : उल्टा दृष्टि-गति

लोकगीत जाँचकेँ पाइन खोदब जकाँ कहैत अछि—पहिने कादो, फेर पानि। कथाक दृश्यगत दिशा तल्लुक अछि: धरतीक भीतर उतरलापर स्पष्टता भेटब। ई बिम्ब सामान्य उघाड़ब/प्रकाशमे लाबबक साथ एक उल्टा, श्रमप्रधान चित्र दैत अछि; सत्य सतहपर पसरल नहि, ओकरा तक गहराइमे हाथ लगाबय पड़ैत अछि। नन्दक कागच माँगब आ सहकर्मी सभसँ पुछब ई रूपककेँ ठोस कार्यसँ जोड़ैत अछि। मुदा गीतक निर्मल पानिक आश्वासनक तुलना मे गद्यक अन्त तक सब तथ्य साफ नहि भेल।

गीतक ‘पहिने कादो’ आ गद्यक निरन्तर अनिश्चितता

गीत ‘कादो’क बाद स्वच्छ पानि आ सत्यक प्राप्तिक घोषणाक तरफ बढ़ैत अछि। गद्य अन्तमे केवल ‘धीरे-धीरे स्पष्ट’ होइत जालक आकार कहैत अछि। ई असङ्गति नहि, गीतक परिणामोन्मुख स्वर आ गद्यक चरणबद्ध अनुसंधानक अन्तर रूपमे देखल जा सकैत अछि। आलोचक जँ गीतक आशावादकेँ गद्यक अन्तिम निष्कर्ष बना देत, तँ आगूक जाँच-बिन्दु अनावश्यक लगत। एतय गीत नैतिक धैर्यक सामूहिक भाषा अछि; गद्य तथ्य जुटेबाक सीमित, असुविधाजनक प्रक्रियाकेँ खुलल राखैत अछि।

कथाकारक अतिरिक्त जानकारीक नियन्त्रण

नन्दक दृष्टिसँ मजदूरक नकली नाम खुलैत अछि, सत्यव्रतक दृष्टिसँ पाइक संदिग्धता, आ बूढ़बाक संवादमे सम्भावित शक्तिशाली विरोधी। एको पात्र सम्पूर्ण नक्शा स्वयं नहि देखैत। तथापि कथावाचक अन्तमे विशाल जालक एक कात डुबल मजदूर आ दोसर कात शीशाक मीनार कहि दैत अछि। ई अन्तिम वाक्य पाठककेँ एक प्रकारक अग्रिम समग्रता दैत अछि, जकर विस्तृत विवरण कथाक पात्रसभक पकड़मे एखन पूर्ण नहि। एहि द्विस्तरीय जानकारीसँ अनुसन्धानक रोमांच बनैत अछि।

दूरस्थ मीनारक उल्लेख आ पैमाना-विस्तार

गढ़ नारिकेलक एक पुलसँ कथा समुद्रपारक शीशाक मीनार धरि जकाँ विस्तृत परिधि बनबैत अछि। स्थानीय श्रमिकक गुमनाम मृत्यु वैश्विक वित्तीय सम्भावनासँ जुड़ैत अछि। कथानकक पैमाना एहि एक तुलनामे पैघ भऽ जाइत अछि, मुदा दूरी वास्तविक यात्रा दृश्यसँ नहि, लेनदेनक सम्भावित शृंखलासँ तय होइत अछि। मूल अध्यायमे नन्द विदेश नहि जाइत, अथवा वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय आरोपी पकड़ा नहि जाइत। ई सीमा मानलापर वैश्विक प्रसारक प्रभाव अधिक संगत भऽ उठैत अछि।

सूचना-क्रममे ‘संयोगवश’क भूमिका

सत्यव्रतक कम्पनीसँ बैंकिंग सम्बन्ध ‘संयोगवश’ कहल गेल अछि। विस्तृत उपन्यासक अनेक सूत्रकेँ एक ठाम आनबाक लेल ई संयोग कथात्मक पुलक काज करैत अछि। ओकर एक लाभ—पहिने सँ संचित बैंक-अभिलेख त्वरित ढंगसँ सम्बन्धित घटनामे प्रवेश पबैत अछि। सीमा—यदि बारम्बार संयोग स्वतः सब सम्बन्ध जोड़ि दैत, तँ पात्रक मेहनतक विश्वसनीयता कमि सकैत। एहि अध्यायमे तथापि संयोग केवल मिलन करबैत अछि; तथ्य-सत्यापनक श्रम अभी पात्रसभ पर रहैत अछि।

पीड़ितक मौन आ अनुसन्धानक प्रतिनिधित्व-संकट

मूल मजदूरक नाम अस्पष्ट अछि, ओकर जीवित कालक स्वर कथा-केन्द्रमे उपस्थित नहि। ओकर कथा नन्द, सहमजदूर, ठेकेदारक अभिलेख आ बैंकक कागचद्वारा पुनर्रचित होइत अछि। एहि प्रतिनिधित्व-व्यवस्थामे एकटा नैतिक तनाव अछि: जकरा लेल जाँच भऽ रहल, ओ स्वयं कथन नहि कऽ सकैत। उपन्यास एतय साक्षीक दायित्वक गम्भीरता दिखबैत अछि। आलोचनामे मजदूरक अनुमानित बोली, पारिवारिक विवरण वा इरादा गढ़ि एहि रिक्तिकेँ भरब अनुचित; रिक्ति स्वयं समीक्षाक विषय थिक।

जाँचक सामूहिक रूप आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

नन्द आ सत्यव्रत ‘एक संग’ काम आरम्भ करैत छथि, मुदा ओ अपन विशिष्ट प्रश्न सभ नहि छोड़ैत। एकीकरणक अर्थ दृष्टिसभक समरूपता नहि; नाम आ पाइ अलग-अलग सूचनागत क्षेत्र बनौने रहैत अछि। एहि कारण संयुक्त अनुसन्धान गामक पुरनका साझा कार्यपरम्पराक आधुनिक अनुवर्तन बनैत अछि। प्रत्येक पात्रक योगदान आवश्यक, किन्तु पर्याप्त नहि। ई अधूरापन भविष्यक अभियोग, अभिलेख, सार्वजनिक वाचन आ न्यायिक प्रक्रियाक सम्भावना खोलैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : एक आवाजसँ दू अभिलेख धरि

‘जाँचक आरम्भ’ दुर्घटना-पछातिक नैतिक अनिश्चितताकेँ संगठनात्मक खोजमे बदलैत अछि। मजदूरक नकली पहिचान, ठेकेदारी अभिलेखक अस्पष्टता, सत्यव्रतक बैंक-सूचना आ पीपरक परामर्श मिलि कथा केन्द्रीय प्रश्नक विस्तार करैत अछि—व्यक्ति के छल, ओकर पाइक रस्ता कोन, आ दुनू सम्बन्ध केना बनल। लोकगीत खुदाइक चित्रसँ अनुसन्धानक धैर्य सजबैत अछि, मुदा गद्य परिणाम स्थगित राखैत अछि। एहि अध्यायक मौलिक कथात्मक उपलब्धि समाधान नहि, समाधान-योग्य खोजक यथार्थ आधार बनायब अछि।

प्रकरण ९३ | मूल अध्याय −८ — प्रमाणक बाहर आएब

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : −८। पाठाधार : “प्रमाणक बाहर आएब”, “प्रमाणक भोर” गीत आ मूल गद्य। विवेचन-विधि : अन्तर्गत दस्तावेज, सार्वजनिक कथा, प्रकाशित आरोप, प्रकाश-बिम्ब आ आंशिक उद्घाटन।

गोपनीय नोटबुकसँ सार्वजनिक आख्यान धरि

−३१ मे सत्यव्रत नोटबुक लिखैत छथि, −१९ मे बोलबाक निर्णयक समीप पहुँचैत छथि, आ −८ मे ओ संचित तिथि, खाता तथा लेनदेन विश्वसनीय पत्रकार आ जाँच-एजेन्सी धरि पहुँचबैत छथि। ई क्रम समयक व्यापक फैलावकेँ एक ठोस क्रियामे संकेन्द्रित करैत अछि। अपन निज अभिलेखसँ संस्थागत प्रसार धरि पहुँचनाइ अध्यायक सबसे स्पष्ट घटना थिक। मुदा एतय नोटबुकक प्रकाशन, अपराधीक दण्ड आ हर मामिलाक न्याय एकहि घटना नहि; सार्वजनिक होएब अनुसन्धानक नव चरण खोलैत अछि।

गोप कुमारक सहयोग : अभिलेख-संग्रह आ खुलासाक मिलन

सत्यव्रत गोप कुमारक सहायतासँ सामग्री बाहर लबैत छथि। एहि संक्षिप्त उल्लेखमे दूटा पहिने विकसित कथा-रेखा जुड़ि जाइत अछि—बैंकक वित्तीय श्रृंखला आ गामक ऐतिहासिक संकलन। गोप कुमारक भूमिका केवल सम्मानित बूढ़ व्यक्तिक अनुमोदन नहि; कथा हुनका दस्तावेज-स्थानान्तरणक सहभागी बनबैत अछि। तथापि कतेक कागच हुनका द्वारा छँटल गेल, कोन कानूनी रणनीति अपनाओल गेल—ई विस्तृत नहि। आलोचना दस्तावेजक समेकनक भूमिका चिन्हित कऽ सकैत अछि, अदृश्य प्रक्रिया कल्पित नहि।

प्रकाशक त्रि-स्तर : नोटबुक, पत्रकार, जाँच-एजेन्सी

निज नोटबुक मे संचित सूचना, पत्रकारक समाचार मे पहुँचल कथा आ जाँच-संस्थाक औपचारिक कार्यवाही—ई तीन भिन्न कथन-मंच छथि। मूल गद्य पहिलसँ दोसर आ तेसर मंच धरि पहुँचाबाक घटना बतबैत अछि। एहि भिन्न मंचसभक प्रभाव सेहो अलग: नोटबुक निजी विश्वसनीयता, समाचार सार्वजनिक दृश्यता, संस्थागत जाँच सम्भावित कार्रवाई। मुदा समाचार प्रकाशित भेने स्वतः न्यायिक तथ्य सिद्ध नहि, आ एजेन्सी पाबि गेलासँ गिरफ्तारीक घोषणा नहि। एहि क्रमगत सीमा पर ध्यान देब कथाक वास्तविक उद्घाटन-स्तर स्पष्ट करैत अछि।

अलग नामक एक चित्रमे आविर्भाव

उज्ज्वल झाक कर्जदार स्थिति, बटुकनाथक वकालत, चन्द्रपालक खाता आ लाउ किन-हंगक विदेशस्थित सम्बन्ध —एहि नामसभकेँ एक भयावह चित्रमे आनि मूल कथाकार पिछला विच्छिन्न अध्यायसभक पुनर्पाठ करवैत छथि। ई कथात्मक पुनर्संयोजन मात्र चरित्र-सूची नहि; पाठक पहिने देखल सूचनाक आपसी सम्बन्ध नये क्रममे बुझैत अछि। तथापि प्रत्येक नामक कानूनी दोष, साक्ष्यक वजन आ सहभागिताक प्रकार समतुल्य नहि। सूची एक जालक प्रतीकात्मक समेकन अछि; सब पात्रकेँ एक समान अपराधी बना देब पाठकक विवेक कम करैत।

उज्ज्वलक स्थितिक ज्ञान-सीमा

उज्ज्वलक जन्म –३४ मे दर्ज छल, बूढ़बाक पूर्वदृष्टि सेहो। –८ मे कथाकार ओकर कर्जदार बनबाक उल्लेख करैत छथि, मुदा एहि अध्यायमे ओकर देहक उपस्थितिक विस्तृत दृश्य अथवा निजी बयान नहि अछि। ई एकटा कथनगत छलाँग अछि: अतीतक सम्भावित भविष्य वर्तमान समाचारक तथ्य-सूत्रमे प्रवेश करैत अछि। ओहि नामक आधारपर ओकर अन्तिम नियति, मृत्यु अथवा उद्धारक कल्पना करब अनुचित। आलोचनाक काम एखन एतबे चिन्हित करब जे पूर्वाभासक एक भाग कथाक बताओल आर्थिक परिस्थितिमे रूप लेब शुरू कएल अछि।

वित्तीय जालक जानकारीक सीमा

सत्यव्रतक दस्तावेजमे खाते, तिथि आ लेनदेनक अनेक सूत्र छल; खुलासाक पाछाँ जालक ‘रूप स्पष्ट’ होइत अछि। एहि स्पष्टताक मतलब विस्तृत आर्थिक जाँचक सभ चरण पूरा भऽ गेल, से नहि। खुद नन्द कहैत अछि जे एतेक व्यापक सत्य कदाचित् पूर्ण रूपसँ नहि भेटय। ई पात्रक शङ्का कथावाचकक उद्घाटनकेँ सीमित करैत अछि। एहि द्वन्द्वसँ पाठक पूर्णताक झूठ अनुभूति नहि, आंशिक यथार्थक जटिल विश्व प्राप्त करैत अछि।

न्याय-अाशा आ शोकक समकालिकता

गाममे प्रमाण बाहर आएलाक बाद एक्के बेर आशा आ शोक दूनू उठैत अछि। आशा इसलिए जे जाल सार्वजनिक भऽ रहल अछि; शोक एहि कारण जे कतेको परिवारक हेरायल लोकक स्मृति फेर सक्रिय भऽ उठैत अछि। लोकक भावक ई द्वैध कथा के विजयघोष बनय नहि दैत। स्पष्ट आरोपीक नाम भेटब परिवारक वेदना पूरी तरह समाप्त नहि करैत। एहि भाव-संयोजनमे सामुदायिक दृष्टि लेखकक महत्त्वपूर्ण संयम थिक: जानकारी राजनीतिक-सामाजिक लाभ दैत अछि, मुदा शारीरिक अनुपस्थितिक क्षतिपूर्ति नहि।

बूढ़बाक ‘सत्य सूर्य नहि, दीप’ बिम्ब

बूढ़बा नन्दकेँ कहैत छथि जे सत्य सूर्य नहि, दीप अछि। ई कथन सर्वसमाप्त प्रकाशक कल्पनाकेँ छोड़ि एक डेग देखय योग्य सीमित आलोकक चित्र दैत अछि। पुरान कथा-व्यापी दीप-बिम्ब एतय जाँचक कार्यपद्धतिक रूपकमे बदलैत अछि। एक-एक तिथि, एक-एक खाता, एक-एक नाम अलग दीप बनैत अछि, जकर समवाय अन्हार घटबैत अछि। मुदा ई पात्रक अनुभवजन्य रूपक थिक; एकरा अलग दार्शनिक सत्यापन-प्रणाली बनाकऽ स्रोतपाठमे नहि रहल विवाद आरोपित करब अनावश्यक।

लोकगीतक भोर आ गद्यक अनिश्चित दिन

लोकगीत ‘भोर’क घोषणा करैत अछि, मुदा गद्यक अन्तमे लड़ाइ समाप्त नहि भेलाक स्पष्ट संकेत अछि। आलोकक इएह अनुपात अध्यायक प्रभाव निर्धारित करैत अछि: प्रकाशित खबर भोरक दिशि बढ़ल डेग अछि, पूर्ण दिन नहि। गीत आशावादी सामूहिक मनोभाव समेटैत अछि, गद्य संस्थागत संघर्षक शेष समय। दुनूक अलग गति पाठककेँ सावधान रखैत अछि। प्रमाण सार्वजनिक भेल—ई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि—मुदा संगहि पाछूक जालक हर प्रभाव एक साथ समाप्त नहि भेल।

छिपल नामक अखबारमे पहिल सार्वजनिक उपस्थिति

किछु नाम जे केवल आँगनक फुसफुसाहटमे छल, अखबारमे छपैत अछि। पाठकक लेल ई मीडिया-परिवर्तन नामक सामाजिक स्थान बदलैत अछि: निजी भय सार्वजनिक चर्चाक विषय बनैत अछि। मुदा पत्रकारक लिखल संस्करण स्वयं एक नयका कथात्मक छनौट थिक। पहिने –५७क साहेबक पोथी गामक कथाकेँ विकृत केने छल; ताहि स्मृतिसँ तुलना पर ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि जे नव सार्वजनिक वाचनमे स्रोतक आवाज कतेक सुरक्षित रहैत। वर्तमान गद्य पत्रकारकेँ विश्वसनीय कहैत अछि; मुद्रित खबरक सम्पूर्ण शब्द नहि देखबैत।

परिजनक ‘हल्लुक शान्ति’क मर्यादा

मूल गद्य कहैत अछि जे किछु परिवार अपन दुःखक नाम आ कारण बुझि ‘हल्लुक शान्ति’ अनुभव केलक। एहि विशेषणक महत्त्व अछि: शान्ति हल्लुक अछि, पूर्ण उद्धार नहि। लेखक जानकारीक मनोवैज्ञानिक उपलब्धि स्वीकारैत छथि, मुदा शोकक स्थायी गहनता मेटबैत नहि। एहि क्षणमे कथा जनअधिकारक सार्वजनिक कथा आ घरेलू आत्मीय अनुभव एक करैत अछि। परिवारसभक पहिचान अलग-अलग नहि खोलल गेल अछि; अतः प्रत्येक परिवारक अनुभूति अनुमानित भऽ नहि सकैत।

प्रकाशित सामग्री आ न्यायिक निर्णयक अन्तर

अध्याय सार्वजनिक माध्यममे जालक कथा छपबाक घटना स्थापित करैत अछि; अदालतमे अन्तिम फैसला, अपराध-दण्ड, जब्ती वा पूर्ण आर्थिक वापसीक दृश्य नहि अछि। ‘प्रमाणक बाहर आएब’ शीर्षक पाठककेँ उद्घाटन देखबैत अछि, न्यायिक समापन नहि। एहि भेदक कारण अध्याय आगूक कथानक लेल जगह राखैत अछि। यदि आलोचना पत्रकारिता-प्रकाशनकेँ अन्तिम न्याय सम्हारि लेत, तँ अगिला घटनाक ऐतिहासिक-कालगत आवश्यकता आ पीड़ितक अनिश्चित स्थिति दूनू ओझराय जाएत।

पहिने बिखरल कथा-धागाक पछुआ पुनर्व्यवस्था

एहि अध्यायमे एकटा महत्वपूर्ण पश्चावलोकन होइत अछि। चन्द्रपालक अनभिज्ञ आर्थिक सहभागिता, बटुकनाथक नैतिक पतन, सत्यव्रतक शान्त अभिलेखन आ लाउ किन-हंगक नामक चर्चा पाठक पहिनेसँ जनैत अछि। आब ई नाम एक सूचीमे एकजुट होइत अछि। कथाकार एहि पुनर्व्यवस्थासँ बीतल अध्यायसभक अर्थ बदलैत अछि: जे पहिले अलग परिचय छल, से एकहि जालक उपकथा सिद्ध होएबाक तरफ बढ़ैत अछि। ‘सम्पूर्ण चित्र’क कथन सेहो एहि स्थानपर प्रमाणक पूर्ण उपलब्धतासँ बेसी दृष्टिक तीव्र विस्तार सूचित करैत अछि।

नन्दक कार्य : दस्तावेजक सार्वजनिक प्रसार

नन्द प्रमाणकेँ गामक हर मनुष्य धरि पहुँचाबय जुटैत अछि। एहि क्रियामे ओकरा पुलपर अनाम मजदूरक एकल नामक खोजसँ अधिक व्यापक सामाजिक भूमिका भेटैत अछि। नन्द स्वयं मीडिया संस्थाक स्वामी अथवा अदालतक न्यायाधीश नहि; ओकर कर्म सूचना पहुँचाएब आ स्मृति-संग सम्बन्ध बनाएब अछि। एहि सीमित किन्तु वास्तविक एजेंसीमे कथा उत्तराधिकारीक निर्माण करैत अछि। बूढ़बाक ‘एक-एक दीप’क भाषा नन्दक निरन्तर प्रसार-कर्ममे आचरण पबैत अछि।

अन्तिम वाक्यक अपूर्ण विजय

अन्तिम अनुच्छेदमे अन्हार ‘पहिल बेर पाछू हटय’ लागैत अछि। ‘लागैत’ क्रियात्मक स्वर भविष्यक गति देखबैत, पूर्ण परिणाम नहि। कालगत अर्थ एतय निर्णायक अछि: जालक विरोधमे पहिल सार्वजनिक परिवर्तन सम्पन्न, दीर्घ संघर्ष अपूर्ण। उभरैत आलोकक चित्र पाठककेँ सुखद राहत देइत अछि, मुदा अगिला चरणक जोखिम निरस्त नहि। ई असम्पूर्णता उपन्यासक व्यापक स्मृति-परम्परासँ मेल खाइत अछि, जतय कतेको ऐतिहासिक न्याय आंशिक होइत अछि आ ताहिपर अगिला पीढ़ी निर्माण करैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : चुप मनुष्यक आवाजक फैलाव

‘प्रमाणक बाहर आएब’ निजी दस्तावेजकेँ सार्वजनिक कथामे बदलैत महत्त्वपूर्ण दहलीज अछि। सत्यव्रतक नोटबुक, गोप कुमारक सहायता, पत्रकारिता, जाँच-एजेन्सी, कर्जदार–वकील–खाता–विदेशी सञ्जालक पुनर्संयोजन, परिवारक शोक आ बूढ़बाक दीप-बिम्ब मिलि सार्वजनिक उद्घाटनक बहुस्तरीय आख्यान बनबैत अछि। गद्यक उपलब्धि आशा आ सीमा दुनू कहब अछि: कुछ छिपल बात बाहर आयल, मुदा सम्पूर्ण अपराधक समाधान एखन नहि। गीतक भोर आ गद्यक अपूर्ण प्रकाशक अन्तर सुरक्षित रहबाक चाही।

प्रकरण ९४ | मूल अध्याय –७ — आधा-भूतक अनुभव

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –७। पाठाधार : “आधा-भूतक अनुभव”, “पूर्ण नाम” लोकगीत आ नन्दक स्वप्न-दृश्यक मूल गद्य। विवेचन-विधि : स्वप्नक कथनस्तर, सीमावर्ती चेतना, शोक, मौखिक पारिवारिक स्मृति आ जादुई यथार्थ।

बाहरी जाँचसँ भीतरक स्वप्न दिस परिवर्तन

अध्याय –८ मे सत्यव्रतक कागच पत्रकार आ जाँच-संस्था धरि पहुँचैत अछि; –७ मे थाकल नन्द पीपरक जड़ि लग सुति जाइत अछि। एहि क्रममे सार्वजनिक संस्थागत आवाजसँ कथानक व्यक्तिगत, स्वप्नगत अनुभूतिमे सिमटैत अछि। घटनाक दिशा जालक अन्तिम उद्घाटनसँ हटल अछि, मुदा थीम नहि बदलल: नन्द एखनहु डुबल मजदूरक नाम खोजि रहल अछि। बाहरी खोजक थकान आ शोक भीतरक दृष्टि तैयार करैत अछि। ई अध्याय कथा-गतिक विराम होएबाक संग नायकक स्मृतिगत दृष्टिक गहराइ बढ़बैत अछि।

गाछक जड़िपर माथ रखब : देह आ इतिहासक सन्धि

नन्द साक्षी-गाछक जड़िपर माथ रखैत अछि। ई भौतिक मुद्रा अर्थसघन अछि: वर्तमान व्यक्तिक शरीर कथाक शताब्दीक साक्षी-स्थलसँ स्पर्श करैत अछि। जड़ि पहिने निर्माण, जलसुरक्षा, सामुदायिक अनुष्ठान आ स्मृतिक प्रतीक बनि चुकल अछि। एहिमे स्वप्न शुरू होएब नायकक दुःखकेँ सांस्कृतिक स्थान दैत अछि। मुदा स्वप्नक स्रोतकेँ केवल वृक्षक अलौकिक शक्ति सिद्ध करबाक आवश्यकता नहि; मूल पाठ शोकाकुल थकान आ नींदक स्पष्ट क्रम दैत अछि।

स्वप्न-द्वारक स्पष्ट वाक्य

गद्य साफ कहैत अछि नन्द ‘गहींर निन्नमे उतरि गेल’, आ तकर बाद ‘सपनहिमे’ बूढ़बाक आकृति देखैत अछि। ई दू शब्द चित्रक कथनस्तर निश्चित करैत अछि। वास्तविक नदी-दुर्घटना, पत्रकारिता-खुलासा आ स्वप्न-दृश्यकेँ एकहि यथार्थ-स्तरपर रखब कथाकारक सूक्ष्म संरचना बिगाड़त। स्वप्न कथामे घटल मानसिक अनुभव अछि, मुदा ओकर भीतर दृष्ट बूढ़बाक आकृति जाग्रत अवस्था मे स्वतन्त्र देह बनि प्रकट भेल—एहन तथ्य पाठ नहि दैत। आलोचनाक प्राथमिक अनुशासन ई सीमा सुरक्षित राखब थिक।

आधा स्पष्ट चेहरा आ अनिश्चित पहिचान

नन्द वृद्ध आकृति देखैत अछि जे डारिपर बैसल छथि; चेहरा पूरा स्पष्ट नहि, आँखिमे कोमलता अछि। ई आंशिक दृश्यता शीर्षकक ‘आधा’ अर्थसँ जुड़ैत अछि। पहिचान भावनात्मक अछि, रेखांकन पूर्ण नहि; शान्ति पहुँचैत अछि, मुदा कोनो स्पष्ट सन्देश अथवा ठोस तथ्य नहि भेटैत। कथाकार शोकक बीच आश्वासनक दृश्य बनबैत छथि, पर जादुई रूपक सीमाक संकेत सेहो रखैत छथि। धुआँ आ इजोत बीचक आकृति नायकक अनुभवकेँ एकसाथ उपस्थिति आ अपूर्णता दैत अछि।

बूढ़बाक मौन उपस्थिति : बिना उच्चारित वचन

स्वप्नमे बूढ़बा ‘किछु नहि बजलाह’; ओ केवल नन्दकेँ तकैत छथि, जेना सही रस्तापर होएबाक सन्देश दऽ रहल होथि। ‘जेना’ शब्द महत्त्वपूर्ण अछि—ई नन्दक अर्थ-निर्माणक वाक्य, प्रत्यक्ष उद्धृत संवाद नहि। ओहि दृष्टिमे नन्द अपन अपेक्षित सहारा पढ़ैत अछि। यदि समीक्षक बूढ़बाक मौनकेँ निश्चित आदेश, गुप्त दस्तावेजक सूचना अथवा विशिष्ट अपराधीक नाम कहैत, तँ स्रोतक मौन बदलि देत। मौनक कथात्मक शक्ति इएह अछि जे अर्थ उत्पन्न करैत, मुदा भाषिक निश्चितता स्थगित रखैत अछि।

दादीक कथा : अनुभूतिक सामाजिक नामकरण

भोरमे नन्द सपना दादीकेँ सुनबैत अछि। दादी ‘आधा-भूत’ कहि अनुभवकेँ एक सामुदायिक शब्द दैत छलीह। एहि नामकरणक बाद स्वप्न केवल नन्दक मनक अकेल घटना नहि; ओ गामक पूर्वस्मृतिसँ व्याख्यायित होइत अछि। मुदा दादीक वचन पात्रक सांस्कृतिक अर्थ-व्याख्या अछि, बाह्य जगतक परीक्षणसँ सिद्ध वर्गीकरण नहि। पाठक दुइ सम्भावना संगहि राखि सकैत अछि—शोकजन्य स्वप्न आ स्मृतिसँ गुँथल असाधारण अनुभूति। एहि दोहरी सम्भावनासँ अध्यायक कलात्मकता उभरैत अछि।

‘आधा-भूत’ : दोसर दुनियाँमे निवासक रूपक

दादी कहैत छलीह जे साक्षी बननिहार मनुष्यक एक पएर वर्तमानमे, दोसर बीतल नामक बीच रहैत अछि। ई कथन ‘आधा-भूत’क प्रतीकात्मक शरीर रचैत अछि। ‘भूत’ केवल डरावन प्रेत नहि, बीतल समयक संग अनिवार्य सम्बन्धक शब्द बनैत अछि। नन्द पुरान घटनाक साक्षी अपन जैविक कालसँ नहि बनि सकैत; कथा सुनबाक आ नाम धरबाक कारण ओ अतीतक भिन्न स्तरसभमे अनुभव करैत अछि। एहि प्रकार रूपक अन्तरपीढ़ी स्मृतिक कार्य समझबैत अछि।

शोक आ दृष्टिक कारण-सम्बन्ध

सपनासँ पहिने नन्द दिनभरि मजदूरक नाम खोजैत, शोकाकुल आ अत्यन्त थाकल छल। ई कारण-भूमि पाठमे स्पष्ट अछि। स्वप्नकेँ केवल अलौकिक वरदान कहब एहि मनोवैज्ञानिक स्थितिकेँ मेटा देत। फेर केवल थकानक यान्त्रिक परिणाम कहब दादीक व्याख्या आ गामक दीर्घ स्मृतिक प्रतीकात्मक शक्तिकेँ कम करैत। मूल कथाकार अन्तमे स्वयं अनिर्णय राखैत—सत्य छल वा शोकक कल्पना? समीक्षककेँ सेहो एहि अनिश्चितताकेँ कलात्मक तथ्य रूपमे स्वीकार करबाक चाही।

पुरान कथाक फेर सुनब : मौखिक उत्तराधिकार

दादी शंख-रजत, हुलासाक जलसमाधि आ सुखदेवक अनाम मृत्यु दोहरबैत छलीह। ई चयन आकस्मिक नहि: भ्रम, जल-हानि आ नाम-विस्मरणक तीन प्रमुख धुरी नन्दक आजुक परिस्थितिसँ जुड़ैत अछि। कथाकार विस्तृत पूर्वक घटनाकेँ पुन: पूरा नहि सुनबैत, नामक सूची आ पारिवारिक वाचनद्वारा उनका सक्रिय करैत अछि। याद करब एतय पाठक लेल सेहो पुनर्पाठक निमन्त्रण अछि। दीर्घ उपन्यास अपन इतिहास समकालीन नायकक कंठमे फेर प्रवेश करबैत अछि।

‘अवाज’क तीन आश्रय : हवा, पात, भीतर

स्वप्नक बाद नन्द बूढ़बाक आवाज हवामे, पातक सरसराहटमे आ अपन भीतरक सही-गलत विवेकमे सुनबाक अनुभव करैत अछि। ई क्रम बाहरी प्राकृतिक ध्वनिसँ आन्तरिक नैतिक आवाज धरि बढ़ैत अछि। कथाकार ओहि आवाजक एकमात्र भौतिक स्रोत निश्चित नहि करैत। एहिमे जादुई यथार्थक प्रभाव बनैत अछि, किएक तँ दैनिक ध्वनि आ असाधारण स्मृति अलग नहि कएल जा सकैत; मुदा गद्य अन्तिम वाक्यमे तकर वस्तुगत सत्यक अनिर्णय स्पष्ट कहैत अछि।

लोकगीतमे ‘पूर्ण नाम’क आश्वासन आ गद्य

गीत कहैत अछि पूर्ण नाम जनलासँ आधा-भूतक भय घटत। गद्यमे नन्दक डर पूर्ण समाप्त भऽ गेल अथवा हर मृतकक पहिचान प्राप्त भेल, एहन वर्णन नहि अछि। ओकरा केवल शान्ति, साहस आ पुरान कथासभसँ गहींर सम्बन्ध भेटैत अछि। गीतक ‘पूर्ण नाम’ सामुदायिक आदर्शक भाषा, गद्यक अनुभव आंशिक स्मृति-संस्पर्शक भाषा। लोकगीतक घोषणाकेँ प्रत्यक्ष अनुसन्धान-सफलताक रूपमे ग्रहण करब नाम-खोजक मुख्य अपूर्ण प्रश्नकेँ मिटा देत।

स्वप्नक काल : शताब्दीक एक रातिमे संघनन

नन्दक नींद एक रातिक अछि, मुदा दादीक कथासँ ओकर भीतर ‘बारह सय बरख’ आ अपन किछु बरख घुलि रहल बुझाइत अछि। ई संकोचित काल-संरचना एहि अध्यायक प्रमुख आख्यानात्मक प्रयोग अछि। कथाकार क्रमश: बीतल पीढ़ीसभकेँ ऐतिहासिक समयक विस्तारसँ हटाकऽ एक पात्रक अनुभूतिक भीतर समायोजित करैत छथि। समय एतय घड़ीक बही नहि, स्मृतिक अनुभूति अछि। गद्यकेँ क्रम-भ्रष्ट कहबाक बजाय ई दू तरहक समयक नियोजित संगम मानब अधिक उपयोगी अछि।

‘बूढ़बा’क स्वर आ नायकक विवेक

अन्तिम अनुच्छेदमे बूढ़बाक आवाज कभी-कभी नन्दक भीतरक सही-गलत भेद करनिहार स्वर बनैत अछि। एहि मोड़पर गुरु-वचन बाहरी निरीक्षणसँ आन्तरिक नैतिक कसौटी बनैत अछि। नन्द बूढ़बाक निर्बाध बाह्य आदेशक प्रतीक्षा नहि करैत; ओ अपन निर्णयक भीतर स्मृति-ध्वनि सुनैत अछि। एहि अर्थमे आधा-भूतक अनुभव नायकक स्वायत्तताक उलटा नहि, साक्षी बनबाक आत्मगत प्रक्रिया अछि। मुदा ‘अन्तरात्मा’क आवाज हर व्यवहारिक जोखिमक समाधान करैत अछि, एहन निश्चितता पाठ नहि देइत।

शाब्दिक भूत-दर्शनक सम्भावना आ कथात्मक संयम

दादी स्पष्ट कहैत छलीह बूढ़बा डराएबला भूत नहि, गामक बचल स्मृति छथि। ई पात्रक व्याख्या स्वप्नक लोकमानसगत व्याकरण बनबैत अछि। तथापि ‘आधा-भूत’ शब्द पाठमे असामान्य सजीव अनुभूतिक अवकाश खुले राखैत अछि। आलोचनामे एकरे मिथकीय अस्तित्वक एकमात्र प्रमाण अथवा केवल हास्यास्पद अन्धविश्वास —दुनूमे कसि देब अनावश्यक थिक। अध्यायक शक्ति अनिर्णीत द्वारमे अछि, जतय करुण मनुष्य अपन बीतल लोकसँ संवादक अनुभव करैत अछि।

अनाम मजदूरक खोजकेँ स्वप्न किएक नहि समाप्त करैत

नन्द सपना देखैत अछि, दादी सँ बात करैत अछि, पुरान कथा स्मरण करैत अछि। मुदा मजदूरक असली नाम, ठेकेदारक सच्चा हिसाब आ जालक सम्पूर्ण नक्सा एहि अध्यायमे भेटैत नहि। एहि कारण स्वप्न अनुसन्धानक स्थान नहि लैत; ओकरा अर्थ आ मनोबल दैत अछि। इएह क्रम कथा के नायकक दुःखक आसान अलौकिक समाधानसँ बचबैत अछि। स्वप्नक माध्यमसँ गढ़ल साक्षी-पहिचान सार्वजनिक संघर्षमे फेर जाँचल जाएत।

समग्र मूल्यांकन : अनिर्णीत दृष्टिक महत्त्व

‘आधा-भूतक अनुभव’ स्रोतगत अनिश्चितताकेँ अपन कलात्मक केन्द्र बनबैत अछि। शोकाकुल देह, पीपरक जड़ि, नींदक स्पष्ट प्रवेश, धुँधल आकृति, दादीक सामुदायिक नामकरण आ भीतर उठैत आवाज—ई सभ संग पाठककेँ निश्चय नहि, अर्थपूर्ण सीमावर्ती अनुभूति भेटैत अछि। एहि अनुभवक फल नन्दक पुरान कथा प्रति गहन संवेदनशीलता अछि। अन्तिम प्रश्न ‘ई सत्य छल कि शोकक कल्पना’क अनिर्णय बचौने रहला पर अध्याय जादुई यथार्थ आ स्मृति-आख्यानक उत्कृष्ट संक्रमण बनैत अछि।

प्रकरण ९५ | मूल अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –६। पाठाधार : “गोप कुमारक अन्तिम पन्ना”, “अन्तिम पन्ना” गीत आ जीवनभरक संकलन सौंपबाक मूल गद्य। विवेचन-विधि : अभिलेखक समापन, पीढ़ीगत कथनाधिकार, मृत्यु–स्मृति, लेखकीय उत्तराधिकार आ उपन्यासक आत्मप्रतिबिम्ब।

अधूरा संकलनसँ ‘अन्तिम पन्ना’ धरि

अध्याय –३० मे गोप कुमार लिखबाक काज आरम्भ करैत छथि, –१३ मे ओकरा पूर्णताक निकट कहैत छथि। –६ मे ओ अन्तिम पन्नापर अन्तिम नाम लिखैत छथि। एहि चरणबद्ध अनुक्रमक महत्त्व अछि जे कालान्तरमे अभिलेखन एक जीवनीगत साधनामे बदलि गेल अछि। वर्तमान अध्याय संग्रह-सौंपबाक वास्तविक दृश्य दैत अछि, अतः एकरा –१३क सम्भावित पूर्णतासँ अलग चिन्हित करब चाही। तथापि गोप कुमार पूर्ण ‘आजु धरि’क संकलन पूरा करैत छथि; भविष्यक शेष घटना, जाहि पर नन्द–अनन्या काज करताह, एतय अखन अनलिखित रहैत अछि।

थाकल शरीर आ सम्पूर्ण काजक विरोध

अत्यन्त वृद्ध गोप कुमारक हाथ काँपैत अछि, आँखि धुँधला गेल अछि, मुदा मन उद्देश्यपर थिर अछि। ई देहगत क्षीणता आ कार्यगत निरन्तरता अध्यायक मूल संवेदनात्मक समांतर रेखा अछि। कथाकार अमर लेखकक कल्पना नहि करैत; लेखन करनिहारक नश्वरता देखबैत छथि। संकलनक अर्थ इएह जे व्यक्ति अपन सीमित आयुक भीतर किछु एहन व्यवस्था गढ़य, जे व्यक्तिगत देहक बादो रहि सकय। एहिसँ मृत्यु दृश्यक नैतिक प्रस्तावना पहिनहि बनैत अछि।

पन्ना जोड़ब : समयक भिन्न माध्यमक संगम

वाचस्पतिक जमानासँ यादवानन्दक छाया-पञ्जी, हरिपतिक पोथी, गंगाधरक छापाखाना आ डिजिटल अभिलेख धरि—ई सभ एकहि संग्रहमे समाहित होइत अछि। माध्यमसभक भिन्नता इएह संग्रहक बौद्धिक नाट्य बनबैत अछि। पात, कागच, छापल पन्ना आ स्क्रीनक निशान अपन-अपन समयमे कथा रखैत छल; गोप कुमार तकर बीच सम्बन्ध निर्माण करैत छथि। मुदा पाठ मूल दस्तावेजक प्रत्येक प्रतिलिपि अथवा सम्पादकीय चयनक पूरा विवरण नहि दैत; ‘सम्पूर्ण’ शब्द कथाक भावक थिक, तकनीकी सूचकाङ्क नहि।

सूचीमे विजित आ पीड़ित सभक संग उपस्थिति

गोप कुमारक संकलनमे शंख-रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु आ नव अभिलेख एक ठाम अछि। ई सूची केवल महापुरुषसभक जय-यात्रा नहि; भ्रम, अपमान, मृत्यु आ विस्मरणक विरुद्ध संघर्ष सभकेँ एक साझा क्रममे राखैत अछि। याद राखबाक अर्थ एतय सुखद घटनाक चुनाव नहि, कठिन इतिहासक संरक्षण थिक। एहि संगठनसँ उपन्यास अपन कथात्मक सामग्री पर स्वयं विचार करैत अछि: इतिहास बनेबाक समय कोन नामकेँ छोड़ा नहि जाए, से प्रश्न लेखकक काजमे प्रवेश करैत अछि।

अन्तिम पन्ना पूर्ण, अन्तिम कथा शेष

गोप कुमारक अन्तिम पन्ना भरि गेल, मुदा हुनकर संवादमे बूढ़बाक ‘अन्तिम अध्याय अखनहु बाकी’ चेतावनी फेर अबैत अछि। एहि विरोधाभासकेँ अन्यमनस्क रचनात्मक भूल न मानिकऽ समयसीमाक भेद रूपमे पहिने पढ़ल जा सकैत अछि: गोप कुमार अपन जीवन धरि पहुँचल सामग्री पूर्ण केलनि, आगामी घटना नन्द–अनन्याक हेतु बाकी

अछि। तथापि ‘सम्पूर्ण कथा’ कहबाक प्रसंग पाठकसँ ई विशेष अन्तर माँगैत अछि। आलोचनाक हितमे दूनू वाक्य एकसाथ राखब आवश्यक, जेना स्रोतक स्तर पर विचारात्मक रिक्ति सुरक्षित रहय।

पीपरक मंचपर मौखिक उत्तराधिकार

गोप कुमार नन्द आ अनन्याकेँ पीपर लग बजा संकलन सौंपैत छथि। गामक पुरातन स्मृति-स्थल एतय दस्तावेजी धरोहरक हस्तान्तरण-मंच बनैत अछि। ई आयोजनक प्रत्यक्ष वस्तु भारी संकलन अछि, मुदा पात्रसभक संवाद अपनाकेँ जिम्मेवारीक देनदार मानबाक अछि। लिखल इतिहास पाठकक हाथमे मात्र नहि, नव कर्तव्यक रूपमे नयका साक्षीक जीवनमे प्रवेश करैत अछि। एहि दृश्यसँ पूरा उपन्यासक पुरान प्रश्न—कथा के लिखत?—क एक पीढ़ीगत उत्तर मिलैत अछि।

‘शायद अहाँ सभ ओ अध्याय लिखब’ : अनिश्चित लेखकीय नामांकन

गोप कुमार नन्द–अनन्याकेँ कहैत छथि ‘शायद अहाँ सभ ओ अध्याय लिखब’। ‘शायद’ पद उपन्यासक भविष्यक अनिर्णयक महत्त्वपूर्ण चिह्न अछि। पात्रसभकेँ लेखक बनबाक सम्भावना दी जाइत अछि, अपरिहार्य नियति नहि। ई वर्तमानक आशीर्वादक संग भविष्यक स्वायत्त क्रियाक प्रश्न राखैत अछि। एहि वाक्यसँ बादक घटना पहिनहि लिखल, वा अन्तिम ग्रन्थ तयार भऽ गेल, एहन दावा नहि निकालबाक चाही। भविष्यक पन्ना पाठकक प्रतीक्षाक क्षेत्र रहैत अछि।

बूढ़बाक प्रशंसा आ अभिलेखकर्ताक स्मृति

बूढ़बा गोप कुमारक ‘जीवन भरिक धैर्य’केँ आदरसँ धरबाक घोषणा करैत छथि। ई वचनक द्वितीय महत्त्व अछि: जकरा द्वारा आन नाम बचल, ओ अभिलेखकर्ता स्वयं सेहो स्मृतिक पात्र बनैत छथि। संकलनक आधिकारिकता गोप कुमारक श्रमक नाम बिसरबाक आधार नहि बनैत। यादवानन्द, विभा आ गोप कुमारक क्रमक उल्लेख याद रखनिहारसभक अपने इतिहास रचैत अछि। दीर्घ कथामे इतिहास लिखनिहारक इतिहास सेहो लिखल जाय—ई आत्मप्रतिबिम्बात्मक रचना-चेतना एहि दृश्यसँ उभरैत अछि।

दोहरे वचनक आयोजन : सामग्री आ जिम्मेवारी

नन्द–अनन्या संकलन हाथमे लऽ बहुत काल चुप रहैत छथि। ओ चुप्पी केवल भावुक श्रद्धा नहि, प्राप्त सामग्रीक भारकेँ स्वीकार करबाक दृश्य थिक। संकलनमे नाम, गीत, अन्याय आ प्रतिरोध अछि; एकरा सुरक्षित रखब आ आगामी घटनाक साक्षी बनब—ई दू अलग दायित्व छथि। बूढ़बा कर्तव्यक नैतिक दिशा दैत छथि, गोप कुमार कर्तव्यक ठोस सामग्री। एहि द्वैधक कारण स्मृति केवल अमूर्त प्रेरणा नहि, हस्तगत अभिलेखक रूपमे सक्रिय रहैत अछि।

गोप कुमारक मृत्यु : लम्बा श्रमक अन्त

सौंपलाक ‘किछु मास बाद’ गोप कुमार शांतिपूर्वक देह त्यागैत छथि। एहि कालान्तरक महत्त्व अछि: संग्रह-हस्तान्तरण आ मृत्यु एकहि क्षणक घटना नहि। जीवनीक काज सम्पन्न भेलाक बाद पात्र समयक सीमामे प्रवेश

करैत छथि। उपन्यास अत्यधिक नाटकीय दुर्घटना न रचि शांत मृत्यु दैत अछि। असामान्य रत्न, जादुई हस्तक्षेप अथवा शवसँ सम्बन्धित नव घटना पाठमे नहि; एहि साधारणता सँ चरित्रक महत्त्व ओकर जीवनभरक परिश्रम आ सतत अभिलेखनमे केन्द्रित होइत अछि।

चन्ना गाछीक सरसराहट : बिदाइक बहुवचन स्वर

मृत्युक राति चन्ना गाछीक जड़िसँ हल्लुक सरसराहट उठबाक कथन ‘कहल जाइत अछि’ स्वरमे दऽ गेल अछि। ई सामुदायिक सुनी-सुनाओल अनुभवक भाषा अछि। कथाकार एतय गाछक सचेत देहक निश्चित वैज्ञानिक दावा नहि करैत। जड़िसँ उठैत स्वर पूर्वक कँपकँपीसँ प्रतीकात्मक सम्बन्ध राखैत अछि; ओतय भय आ चेतावनी छल, एतय सम्मान आ बिदाइ। एकहि प्रकृति-स्थलक ध्वनिक स्वर बदलैत अछि, कथाक भावगत चक्र सूक्ष्म ढंगसँ आगाँ बढ़ैत अछि।

लोकगीतक ‘साक्षी बदलल, कथा नहि टूटल’

गीतक पङ्क्ति ‘साक्षी बदलल, मुदा कथा ने टूटल’ एहि अध्यायक सार-धुरी बनैत अछि। ई मात्र मृत्यु-पछाति सान्त्वना नहि, उपन्यासक बहुपीढ़ीय संरचनाक सूत्र अछि। पाठक पूर्वक गीत, पञ्जी, सुनल कथा आ डिजिटल लिखित सामग्रीकेँ एक निरन्तरता रूपमे देखैत अछि। मुदा कथा नहि टूटबक आशा नन्द–अनन्याक आगामी कामपर निर्भर अछि; संरक्षणक परिणाम स्वतःसिद्ध नहि। गीत आदर्शक वाक्य गाबैत अछि, गद्य वास्तविक दस्तावेज सौंपि जिम्मेवारीक भौतिक आधार स्थापित करैत अछि।

अनन्या आ नन्द : सहकार्यक नव परीक्षा

अध्याय –१८ मे नन्द–अनन्याक संयुक्त डिजिटल परियोजना आरम्भ भेल छल। –६ मे गोप कुमार स्वयं दूनूकेँ संग्रह सौंपैत छथि। एहि क्रममे प्रारम्भिक सहकार्य सार्वजनिक रूपसँ जिम्मेवारी पबैत अछि। ई प्रेमक औपचारिक घोषणा, विवाह अथवा सम्पूर्ण जीवनक निश्चित समाधान नहि; प्राप्त पृष्ठ आ कर्तव्यक सहभागिता अछि। उपन्यास प्रश्न, तकनीक आ अभिलेखक त्रिसंयोगसँ नव पीढ़ीक कार्यमञ्च तैयार करैत अछि। एहि लयमे पात्रसभक सम्बन्ध निजी स्नेहसँ बेसी साझा स्मृति-परियोजनाक माध्यमसँ विकसित होइत अछि।

संकलन बनल आत्मकथा-सदृश उपन्यासक प्रतिछाया

गोप कुमार जीवनभरक अलग-अलग कथा एक ठाम बान्हैत छथि; उपन्यास स्वयं पाठक समक्ष शताब्दीक बिखरल घटना एक वस्तुगत रचनामे रखैत अछि। एहि समानतासँ संकलन एकटा अन्तरकथात्मक प्रतिछाया बनैत अछि—कथाक भीतर बनैत दस्तावेज बाहरी उपन्यासक लेखकीय कर्म प्रतिबिम्बित करैत अछि। तथापि गोप कुमारक हस्तलिखित वा डिजिटल संकलन आ पाठकक हाथक सम्पूर्ण उपन्यास एक वस्तु सिद्ध नहि। रचनात्मक प्रतिछाया आ शाब्दिक एकरूपताक अन्तर मानलापर ई आत्मसन्दर्भ अधिक सूक्ष्म बनैत अछि।

मृत्यु आ उत्तराधिकारक कालान्तर

अन्तिम पन्ना, हाथक हस्तान्तरण, किछु मासक अन्तर आ मृत्यु—ई चार चरण गद्य मे स्पष्ट कालक्रम बनबैत अछि। एतय पाठक देखैत अछि जे उत्तराधिकार आकस्मिक शोकक विवश उत्पाद नहि; मृत्यु पहिनहि पात्र अपन सामग्री अगिला हाथमे देबाक अवसर पबैत छथि। ई अनुक्रम प्राचीन अनुष्ठानक योजना आ आधुनिक दस्तावेजी सजगता बीच संगति रचैत अछि। व्यक्ति मृत्यु स्वीकार करैत अछि, मुदा अपना पाछाँ छोड़ल सामग्रीक व्यवस्थित भावी देखभाल सुनिश्चित करबाक कर्म करैत अछि।

अनाम व्यक्तिसभ आ नाम राखनिहार व्यक्तिक दोहरी सुरक्षा

गोहि सभक बीच शताब्दीभरि जतेक अनाम लोक हेरायल, तकर नाम धरणे अभिलेखकर्तासभक श्रम बचबाक प्रयास छल। आब गोप कुमार स्वयं अनुपस्थित होइत छथि। हुनकर नाम बूढ़बाक मुख, संकलनक पन्ना आ नन्द–अनन्याक वचनमे बचैत अछि। एहि दोहरी सुरक्षा—पीड़ितक स्मृति आ स्मृति-संरक्षकक स्मृति—सँ उपन्यास अपन नैतिक ताना-बाना बढ़बैत अछि। तथापि नाम बाँचब भावनात्मक आ सांस्कृतिक निरन्तरता अछि, शारीरिक जीवनक वापसी नहि; इएह करुण अन्तर रचनाक मूल संवेदना बनल रहैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : अन्तिम पन्नासँ नव पन्ना धरि

‘गोप कुमारक अन्तिम पन्ना’ दीर्घ संचयी आख्यानक एकटा महत्त्वपूर्ण विराम अछि, समाप्ति नहि। वृद्ध देहक काँपैत हाथ, युगान्तरक दस्तावेज, पीपरपर सौंपबाक दृश्य, नन्द–अनन्याक मौन, किछु मास बादक मृत्यु आ गाछीक विदाइ-ध्वनि मिलि ऐतिहासिक श्रमक मार्मिक चित्र रचैत अछि। संग्रह आजु धरिक पूर्ण, भविष्यक अन्तिम अध्याय शेष—ई अन्तर स्रोत-पाठक निर्णायक सीमा अछि। एहि अध्यायक उपलब्धि ई जे उपन्यास लेखनकेँ केवल कागज जुटाएब नहि, जीवित मनुष्यसँ अगिला मनुष्य धरि साक्षीक उत्तरदायित्व पहुँचाएब मानैत अछि।

प्रकरण ९६ | मूल अध्याय –५ — जालक उजागर होएब

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –५। पाठाधार : “जालक उजागर होएब” शीर्षक, “जाल आ माछमार” लोकगीत, नन्द–सत्यव्रतक जाँच, बटुकनाथ–चन्द्रपालक प्रसंग आ बूढ़बाक संवाद। विवेचन-विधि : उद्घाटनक मात्रा, कथन-अधिकार, आरोप–परिणामक अन्तर, जाल-बिम्ब, स्मृतिक नैतिकता आ अधूरा अन्त।

शीर्षकमे उद्घाटनक वचन आ गद्यक सीमित उपलब्धि

“जालक उजागर होएब” कहिते अध्याय पाठककेँ दीर्घकालसँ प्रतीक्षित खुलासाक सोझाँ आनैत अछि। मुदा आरम्भिक गद्य स्वयं एकर सीमांकन “कमसँ कम स्थानीय रूपमे” कहि करैत अछि। ई वाक्य केवल सावधानी नहि, आख्यान-व्यवस्थाक निर्णायक नियामक अछि। पाठक जालक प्रत्येक सूत्र खुलबाक कल्पना लऽ आबैत अछि, लेकिन कथन सीमित उपस्थिति, स्थानीय सहभागिता आ सार्वजनिक कार्रवाइक प्रथम चरण धरि पहुँचैत

अछि। उद्घाटनकेँ पूर्ण विजय बुझलासँ एहि अध्यायक मुख्य नाटकीय तनाव—आंशिक जानकारीसँ बढ़ैत साझा चेतना—गायब भऽ जाएत। शीर्षक व्यापक प्रत्याशा जनबैत अछि; गद्य सत्यक सीमा निश्चित करैत अछि।

महीनोंक जाँच : विस्तारित क्रियाक काल-सङ्कोचन

पहिल अनुच्छेदमे “महीनों धरि जाँचक बाद” कहि दीर्घ अनुसन्धान एक छोट काल-सूत्रमे समेटल गेल अछि। पाठक जाँचक प्रत्येक दिन, साक्षात्कार वा दस्तावेज-मार्ग नहि देखैत; पूर्व अध्यायसभमे जमा कएल प्रमाणक परिणाम देखैत अछि। एहि संक्षिप्ति सँ जाँचक प्रक्रियात्मक विस्तारक बदला सामाजिक प्रभावपर केन्द्र पड़ैत अछि। मुदा संक्षिप्ति कारण अपूर्णता सेहो बनबैत अछि : आरोपक प्रत्येक चरण, ठगीक रकम आ न्यायालयक विशिष्ट आदेश पाठक समक्ष नहि। आलोचनाक लेल ई महत्वपूर्ण अछि जे दृश्य-अनुपस्थित सूचना एकरा स्वतः निश्चित घटनामे बदलि नहि सकैत। कथाकार समय पातर करैत छथि, नैतिक परिणाम घना।

दुनू अन्वेषकक अलग धागा आब मिलैत अछि

अध्याय −९ मे नन्द मजदूरक पहिचान खोजैत छल, सत्यव्रत पाइक रस्ता। −५ मे ई दुनू धागा स्थानीय ठगीक दृश्य बनबैत अछि। कथनक संगठनमे ई साधारण चरित्र-मिलन नहि, भिन्न दस्तावेजी दिशाक अभिसरण अछि। नन्दक डायरी मानवक नामकेँ संख्या बनबासँ बचबैत अछि; सत्यव्रतक बैंक-नोटबुक वित्तीय प्रवाहक अदृश्य सम्बन्ध अंकित करैत अछि। दुनूक संयोजनसँ मानव-पीड़ा आ संस्थागत अर्थ-सञ्चरण एकहि संकटमे पढ़ल जाइत अछि। ई अध्याय एहन समाधान दैत अछि जकर उपयोगिता एकटा नायकक चमत्कारमे नहि, समानान्तर अध्ययनक जोड़मे अछि।

बटुकनाथक यात्रा : सामाजिक आशासँ कठघरा धरि

प्रारम्भिक बटुकनाथ कानून पढ़ि गरीबक पक्षमे लड़बाक आशा जगौने छल। −३३ आ −१६ मे ओहि आशाक क्रमिक क्षरण देखाओल गेल; एहि अध्यायमे ओ पहिल बेर आरोपीक रूपमे अदालतक सोझाँ ठाढ़ होइत अछि। एहि दीर्घ अन्तरसँ “कठघरा” प्रतिमा द्विअर्थी बनैत अछि : ओहि संस्थाक भीतर, जकर प्रक्रियाक उपयोग ओ दोसराक विरुद्ध करैत छल, आब ओकर अपन जवाबदेही उपस्थित अछि। मुदा कानूनी कार्रवाइक आरम्भ दोषसिद्धिक अन्तिम फैसला नहि। कथात्मक व्यंग्य पूरा होइत अछि; न्यायिक प्रक्रिया एखन खुलल रहैत अछि।

बूढ़-पुरानक दृष्टि : दण्डक सन्तोषसँ बेसी शोक

अदालतमे उपस्थित गामक वृद्ध सभ बटुकनाथकेँ केवल आरोपित वकीलक वर्तमान रूपमे नहि देखैत छथि। हुनकर स्मृतिमे एक तेज ईमानदार बालक उपस्थित अछि। गद्य स्पष्ट करैत अछि जे हुनका न्यायक सन्तोषसँ अधिक “हारल सपनाक शोक” होइत अछि। एकहि पात्रक दू समय एक दृश्यपर आरोपित होइत अछि : बाल्यकालक आशा आ वर्तमान अपयश। एहि स्मृति-सम्पर्कक कारण आलोचना दण्डक पक्ष वा अभियोजनक पक्षक सरल घोषणामे सीमित नहि रहैत। नैतिक हानि परिवार, पाठशाला आ गाँवक सामूहिक अपेक्षाक विफलता सेहो बनैत अछि।

चन्द्रपाल : जालमे सहभागिता आ अनभिज्ञताक द्वन्द्व

चन्द्रपालक म्यूल-खाता स्थानीय खुलासाक दोसर महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि। गद्य कहैत अछि जे अपन अज्ञानताक प्रमाणक बादो ओकरा कठिन जाँच झेलय पड़ैत अछि। एहि कथनमे द्वैध बचल अछि : ओ ऋणक दबावमे छल आ खाताक वास्तविक उपयोग पूरा नहि बुझैत छल; तथापि पैसा ओकरे खातासँ प्रवाहित भेल। समीक्षा ओकरा पूर्ण निर्दोष अथवा प्रमुख षड्यन्त्रकारी घोषित नहि कऽ सकैत। पात्रक दुविधा ज्ञान, लोभ, दायित्व आ संस्थागत सञ्जालक बीच स्थित अछि। जाँचक उपस्थितिकेँ दण्डादेश बनायब कथात्मक क्रमकेँ तोड़ि देत।

लोकगीतक माछमार-बिम्ब आ गद्यक अपूर्ण शिकार

लोकगीत कहैत अछि जे जाल उघरल तऽ माछक बदला माछमार पकड़ल गेल। ई लोकप्रिय न्याय-बिम्ब अछि : शिकारक पाछाँक संचालक लोक स्वयं पकड़मे पड़ैत छथि। मुदा गद्य लाउ किन-हंगकेँ पहुँचसँ बाहर रखैत अछि। गीतक समग्र “माछमार” आ गद्यक आंशिक स्थानीय आरोपी एकदम समार्थक नहि। लोकधुन दीर्घ संघर्षक नैतिक आकांक्षा गबैत अछि; कथा ओकर वास्तविक सीमा बतबैत अछि। एहि अन्तरकेँ कमजोरी वा सफलता कोनो एक शब्दमे बन्द नहि कऽ, गीत–गद्यक भिन्न काल-दृष्टि मानब उपयोगी अछि।

शीशाक मीनार : दृष्टिसँ अनुपस्थित केन्द्र

जखन स्थानीय पात्र सामने आबि गेल छथि, तखन दूरक शीशाक मीनार अझु कथाक अनदेखल केन्द्र अछि। ई अनुपस्थित उपस्थिति सञ्जाल-आख्यानक खास युक्ति बनैत अछि। पाठक नाम सुनैत अछि, दूरक सञ्चालनक संकेत पबैत अछि, मुदा निर्णायक गिरफ्तारी वा अन्तिम टकराव नहि देखैत। लोकक डर एक अदृश्य केन्द्रक कारण बढ़ैत अछि, जे समाचार, बैंक-हिसाब आ व्यक्तिक अनुमानद्वारा मात्र पहुँचल अछि। कथाकार दूरस्थ शक्तिकेँ सीधा दृश्य बनाकेँ रहस्य समाप्त नहि करैत; ओकर प्रभावक वितरण गामक भीतर देखबैत छथि।

यशपतिक प्रसंगक पुनरागमन आ अन्तर-पर्वीय स्मृति

बूढ़बा यशपतिक अधूरा अन्तक उल्लेख करैत छथि। ई पूर्वकथा सँ वर्तमान डिजिटल जाल धरि एक विशिष्ट प्रतिध्वनि अछि। शताब्दी बदलल, उत्पीड़नक स्वरूप बदलल, मुदा अधूरा न्याय आ अगिला पीढ़ीक जिम्मेवारीक कथा-क्रम दोहराइत अछि। एहन पुनरुक्ति मात्र ‘इतिहास अपने-आप दोहराइत अछि’ जकाँ सामान्य कथन नहि; बूढ़बाक स्मृतिक माध्यमसँ पृथक घटनाक नैतिक समानता निर्मित होइत अछि। तथापि यशपतिक ऐतिहासिक परिस्थिति आ लाउ किन-हंगक आधुनिक ठगी अलग छथि; तुलना कार्यात्मक अछि, वस्तुगत एकरूपता नहि।

सन्तोषक स्थानपर अधूरा जीतक अर्थ

नन्द अपन उपलब्धिकेँ अन्ततः “हार” नहि, “एकटा डेग” बुझैत अछि। ई मनोदशाक छोट परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। प्रारम्भमे ओ दूरक आरोपी बचि गेलाक कारण अधूरापन अनुभव करैत अछि; बूढ़बाक संवाद ओकरा उपलब्धि सँ भविष्यमुखी जिम्मेवारी जोड़ब सिखबैत अछि। कथाकार चरित्रक आत्मविश्वासकेँ सम्पूर्ण विजयक मिथक पर नहि गढ़ैत। आंशिक उपलब्धि स्वीकार कऽ अगिला संघर्ष लेल कागज, नाम आ डायरी सुरक्षित राखब

अपन-आपमे क्रिया बनैत अछि। कथा न्यायकेँ समाप्त प्रकरण नहि, उत्तराधिकारी धरि पहुँचयबला कार्य मानैत अछि।

प्रमाणक पुनः संग्रह : खुलासाक बाद अभिलेखक भूमिका

सम्भव अछि खुलासा होइतहि कहानीक दस्तावेज उपयोगशून्य बुझाए; मुदा नन्द प्रमाण आ डायरी सुरक्षित रखैत अछि। एहि पुनरागमनसँ अभिलेखक दोसर काम स्पष्ट होइत अछि। पहिने ई अन्वेषण शुरू करबाक साधन छल; आब अधूरा प्रक्रियाक स्मृति आ भविष्यमे पुनरावलोकनक आधार अछि। पृष्ठ केवल बीतल तथ्यक भण्डार नहि, अभीष्ट न्याय लेल भावी कर्तव्यक वस्तु सेहो अछि। एहि दृष्टिसँ –५क निष्कर्ष अन्त नहि, उत्तरक दीर्घ प्रतीक्षा निर्माण करैत अछि।

चरित्रसभक जानकारीक असमान वितरण

नन्द स्थानीय जाँचक प्रत्यक्ष पक्ष अछि; चन्द्रपाल अपन खाताक उपयोग पूर्ण नहि बुझैत; वृद्ध गामवासी बटुकनाथक बचपनक तथ्य संग अदालतक दृश्य देखैत छथि; बूढ़बा दीर्घ कालक तुलनात्मक स्मृति रखैत छथि। ई सब एकहि सूचना पर समान पहुँच नहि राखैत। आख्यान भिन्न दृष्टि एक ठाम जुटाकऽ “जाल”क अर्थ बनबैत अछि। पाठककेँ विभिन्न स्रोतकेँ संयोजित करय पड़ैत अछि, जेना पात्रसभकेँ करय पड़ल। कोनो एक पात्रक वचन सम्पूर्ण दृश्यक अन्तिम निर्णय नहि; ई बहुदृष्टिक रचना जालक अधखुलल स्वरूपक अनुरूप अछि।

गोहि रूपकक रूपान्तरण : देहसँ अर्थव्यवस्था धरि

जलगोहि, स्मृति-लोप आ डिजिटल ठगीक बिम्ब ई अध्यायमे फेर मिलैत अछि। मुदा गोहि एतय भौतिक नदीक जीव नहि, दूर तक फैलल शोषण-तन्त्रक पाठकीय आकृति बनैत अछि। बूढ़बाक “नाम” पर आग्रह शोषणकेँ अमूर्त आँकड़ा बनय देबाक विरोध थिक। एकर मार्फत उपन्यास वित्तीय अपराधक परिणामकेँ गामक खोइ गेल मानव सम्बन्ध, टूटल आशा आ रहस्यबोधसँ जोड़ैत अछि। रूपक प्रभावकारी अछि, मुदा वास्तविक स्थानीय कार्रवाइक व्यावहारिक सीमा एकर भीतर विलीन नहि होयबाक चाही।

अनुच्छेदान्तक काँपैत जाल आ परिवर्तनशील कथागति

अन्तिम वाक्यमे जाल “पूरा नहि टूटल”, मुदा “पहिल बेर काँपि गेल” अछि। कम्पन एतय पूर्वक चन्ना गाछीक कँपकँपीसँ अलग अर्थ धरैत अछि। गाछीमे कम्पन आगूक अनिष्टक संकेत छल; जालमे कम्पन नुकाएल संरचनाक कमज़ोर पड़बाक चिह्न अछि। एकहि गतिशील बिम्ब कथाक दू विपरीत अवस्थामे प्रयोग भऽ सकैत अछि। ई शब्द-संवाद सम्पूर्ण खण्डक तनाव संक्षेपित करैत अछि : आशंका सच भेल, अनुसन्धान किछु सफल भेल, मुदा संकटक शेष क्षेत्र सुरक्षित रहि गेल।

समग्र मूल्यांकन : सार्वजनिक प्रकाशक सीमित किन्तु निर्णायक अर्थ

अध्याय –५क उपलब्धि ई नहि जे विश्वव्यापी ठगी-तन्त्रक अन्तिम फैसला भऽ गेल। ओकर उपलब्धि अछि स्थानीय धागासभक परस्पर सम्बन्ध सार्वजनिक करब, बटुकनाथक नैतिक-पारिवारिक इतिहासकेँ न्यायालयक

दृश्यसँ जोड़ब, चन्द्रपालक अनभिज्ञ सहभागिताकेँ खुला रखब आ नन्दक दृष्टिमे अधूरा जीतक सकारात्मक अर्थ बनायब। आरम्भिक लोकगीत निर्णायक उद्घाटन गबैत अछि; गद्य अपन “कमसँ कम” द्वारा ऐतिहासिक सीमाकेँ जोगबैत अछि। इएह सावधानी एहि अध्यायकेँ केवल विजयगीत होएबसँ बचबैत अछि आ दीर्घ आख्यानक न्याय-विचारकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि।

प्रकरण ९७ | मूल अध्याय –४ — नामक अन्तिम सूची

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –४। पाठाधार : “नामक अन्तिम सूची”, “नामक सूची” लोकगीत, नन्दक परिवार-परिवार खोज, ‘तीस नाम’ आ ‘तीन सय लाश’क उल्लेख, बूढ़बाक संवाद तथा एक माएक प्रतिक्रिया। विवेचन-विधि : सूची-आख्यान, सङ्ख्या बनाम व्यक्ति, लोपक पुनरुद्धार, शोकक दृश्य-रचना आ पाठक सीमा।

शीर्षकक ‘अन्तिम’ : नाम-सङ्कलनक स्थानीय पूर्णता

“अन्तिम सूची” पाठकक सामने गणनाक अन्तिम पृष्ठक आशा राखैत अछि। गद्य नन्दक महीनोंक खोजक बाद पुल-निर्माणस्थलपर मरल मजदूरसभक वास्तविक नाम भेटबाक दावा करैत अछि। मुदा ई स्थानीय प्रसंगक सूची अछि, सम्पूर्ण उपन्यासक मृतक अथवा विश्वक सभ अनामक अन्तिम पञ्जी नहि। ‘अन्तिम’ शीर्षक स्वप्रसंगक संकलनकेँ पूर्ण करैत अछि; दीर्घ कथामे नाम-संरक्षणक नैतिक दायित्व समाप्त नहि करैत। एहि द्वैधसँ उपन्यास लघु कथात्मक समाधान आ विशाल अपूर्ण इतिहासकेँ एक संग राखैत अछि।

खोजक क्रियामे गाम-गाम आ परिवार-परिवार

नन्दक काज परम्परागत नायकक एकल पराक्रम नहि, बहुस्थलीय धीरजक श्रम अछि। “गाम-गाम”, “परिवार-परिवार” जकाँ पुनरुक्त शब्द पाठककेँ अनेक यात्रा आ भेंटक अनुभूति दैत अछि, भले प्रत्येक भेंट अलग दृश्य रूपमे वर्णित नहि। महीनोंक समय एक वाक्यमे सिमटैत अछि, मुदा क्रियाक पुनरुक्ति श्रमक विस्तार संरक्षित करैत अछि। संख्या जुटबाक पहिने सम्बन्ध खोजल जाइत अछि। एहि कारण सूची ओ तथ्य मात्र नहि जे ठेकेदारक कागचमे छल, बल्कि परिवारसभक स्मृतिक संग संवादक परिणाम बनैत अछि।

कटल कागच आ बिसरल पता : दोनू अपूर्ण साधन

अध्याय स्पष्ट कहैत अछि जे नन्द ठेकेदारक “कटल कागच” आ मजदूरक “बिसरल पता” मिलबैत अछि। दुनू स्वतन्त्र रूपसँ असमर्थ छथि : कागच नाम हटा सकैत अछि, आ पता स्मृतिसँ सरकि सकैत अछि। कथा ई दोहरापन केन्द्रीय करैत अछि जे व्यक्ति-ओळख केवल एक दफ्तर वा एक लोकक मुखमे सुरक्षित नहि। लिखित अवशेष आ मौखिक परिवार-सूत्रक सम्बन्धसँ नाम पुनः उभरैत अछि। मुदा प्रत्येक शोध-चरणक विवरण नहिएँ आयल; एतय प्रक्रिया नाटकीय विस्तार नहि, सारसूत्रक रूपमे प्रस्तुत अछि।

‘तीस नाम’ आ ‘तीन सय लाश’ : सङ्ख्यात्मक अन्तरक समस्या

गद्यक एक निर्णायक पङ्क्तिमे “तीस नाम — तीन सय लाशक ओहि कथासँ जुड़ल” लिखल अछि। लोकगीत तीस नामक चर्चा करैत अछि, आ नन्द अपन डायरीमे तीस नाम लिखैत अछि। किन्तु तीन सय लाशसँ तीस नामक वास्तविक अनुपात, शेष दू सय सत्तरक स्थिति अथवा एहि दो सङ्ख्याक सम्बन्धक विशिष्ट कारण नहि बुझाओल गेल। आलोचना ई अन्तर अनदेख नहि कऽ सकैत। एकरा स्वतः तीस घटनामे तीन सय मृत्यु, वा तीन सयमे केवल तीस पहचानल गेल, एहन निश्चित पुनर्निर्माण करब मूल गद्यसँ आगू जायब हएत। एहि अधूरी सूचना पाठकीय प्रश्न बनि बचैत अछि।

तीसकेँ पुनरावर्तित करबाक गीतात्मक प्रभाव

लोकगीत “तीस नाम”केँ बेर-बेर गाबैत अछि। सङ्ख्या सामूहिक स्मरणक टेक बनि जाइत अछि; ऐतिहासिक गणनासँ बेसी श्रवणीय चिह्न बनैत अछि। ई गीतात्मक पुनरुक्ति सूचीकेँ अनाम आँकड़ा बनयबासँ रोकैत अछि, किएक तँ प्रत्येक नामक कात “एकटा गाम” जोड़ल जाइत अछि। गीतक क्रियाशीलता कथा-संकेतक थिरता बनबैत अछि, जखन कि गद्यक तीन सय लाशक उल्लेख संख्याक असम्पूर्ण पार्श्व खोलैत अछि। दू आवाजक अन्तर संग्रहक सीमा प्रति सजग रहबाक आग्रह करैत अछि।

नाम, गाम, परिवार, कथा : चारि तहक प्रविष्टि

नन्दक डायरीमे नामक संग व्यक्ति कहाँक छल, ओकर परिवार आ ओकर कथा दर्ज कएल जाइत अछि। ई क्रम एकटा नैतिक अभिलेख-विधान प्रस्तुत करैत अछि। केवल नाम एक चिन्ह भऽ सकैत अछि; गाम ओकर सामाजिक स्थान, परिवार ओकर सम्बन्ध, कथा ओकर कालानुभव जोड़ैत अछि। एहि प्रकार सूची व्यावसायिक हाजिरीक उल्टा बनैत अछि : व्यवस्थाक कागच काजक संख्या चाहैत छल; नन्दक डायरी मनुष्यक सामाजिक पूर्णता फेर चाहैत अछि। तथापि प्रविष्टि लिखलाक बाद मृतक सचमुच वापस आबि जाइत अछि—एहन घटना नहि, स्मृतिक रूपान्तरण मात्र अछि।

खोएबाक त्रिस्तरीयता : पानि, कागच, स्मृति

गद्य कहैत अछि जे मजदूर “पानिमे, कागचसँ, आ स्मृतिसँ” हेराओल छल। ई त्रिकुट शारीरिक दुर्घटना, संस्थागत लोप आ सामाजिक विस्मरणकेँ अलग संकेत करैत अछि। मरबाक बाद दस्तावेजमे नाम कटब एक अतिरिक्त हिंसा थिक; फेर परिवारक कथा हेरा गेल तऽ तेसर। नन्दक हस्तक्षेप मुख्य रूपेँ तेसर दो तहकेँ सम्बोधित करैत अछि; देहक जीवन वापस दैत नहि। आख्यानक करुण अर्थ एहि सीमा सँ आबैत अछि—नाम राखब मृत्युकेँ मेटब नहि, मृत्यु दोहराएबासँ स्मृतिकेँ बचायब अछि।

बूढ़बाक प्रशंसा आ साक्षी-पात्रक दीक्षा

नन्द पुछैत अछि जे की ओ योग्य साक्षी बनल। बूढ़बा ओकरा “सबसँ योग्य वंशज” कहैत छथि। ई संवाद दीर्घ पूर्वकथाक उत्तराधिकारक उन्नत क्षण अछि। पात्र अपन क्रियाक नैतिक अर्थ जानबाक लेल पीपरक साक्षी लग घुरैत अछि। बूढ़बाक प्रशंसा सामाजिक अनुमोदन बनैत अछि; मुदा ओकरा जादुई सर्वसमर्थता नहि दैत। नन्द जे

काज वास्तवमे कएलक—नाम खोजल, लिखल, परिवार धरि पहुँचल—वैह योग्यता बनबैत अछि। वंशज होएबाक पूर्व-घोषणा क्रियासँ पुष्ट होइत अछि, स्वतः पर्याप्त नहि।

माएक दृश्य : संख्या सँ विशिष्ट शोक धरि

अध्यायक भावनात्मक केन्द्र ओ माँ छथि जे वर्षसभसँ बेटाक बाट तकैत रहलीह। नन्द हुनका बेटाक नाम लिखल देखबैत अछि; ओ “पहिल बेर कानि सकलीह”। ई सूक्ष्म क्रिया सूचीकेँ संवेदनात्मक अर्थ दैत अछि। शोक पहिने अनिश्चित प्रतीक्षामे रोकल गेल छल; नामक दृश्य ओकरा स्वीकार आ अभिव्यक्तिक अवसर दैत अछि। मुदा ओ माँक आन्तरिक विचार सम्पूर्ण रूपेँ खोलल नहि गेल अछि, आ ओकर बेटाक देह भेटल—एहन उल्लेख नहि। दस्तावेजक एक पृष्ठक सामाजिक प्रभाव कथाक एक छोट व्यक्तिगत दृश्यद्वारा घना होइत अछि।

महिला-पात्रक मौन आ आवाजक सीमा

माएक आँखि आ नोर वर्णित छथि, मुदा हुनकर प्रत्यक्ष संवाद लगभग अनुपस्थित अछि। एक ओर ई मौन गहन शोकक अभिव्यक्ति बनैत अछि; दोसर ओर सूचीक निर्माण आ अर्थक उद्घोषणा मुख्यतः नन्द आ बूढ़बाक मुखसँ होइत अछि। स्त्रीक अनुभव कथा मे निर्णायक, मुदा ओकर अपन भाषा कम सुनाइत अछि। आलोचना एहि रचनात्मक चयनकेँ देखब जरूरी मानैत अछि, विशेषतः उपन्यासक पहिनेक स्त्री-रात्रिसभा आ मौखिक कथा-परम्पराक पृष्ठभूमिमे। माएक नोरकेँ आवाजक पूर्ण विकल्प बनायब उचित नहि।

‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’क पुनरागमन

बूढ़बाक दीर्घकालिक वाक्य फेर नन्दक उपलब्धिक बीच आबैत अछि। एहि बेर ई केवल स्मृतिक आदर्श नहि, लिखल सूची आ भेंटल परिवारक संग प्रत्यक्ष क्रियासँ जुड़ल अछि। सूत्रवाक्यक अर्थ आरम्भमे आध्यात्मिक वा लोकविश्वासी छल, एतय सामाजिक दस्तावेजी कामक रूप लैत अछि। मुदा वाक्य गद्यक भीतर अतिरेक सेहो पैदा कऽ सकैत अछि : नाम सुरक्षित रहबक नैतिक आशा आ एक अभिलेखक वास्तविक भविष्यक सुरक्षा अलग बात छथि। उपन्यासक भाषा दोनोकेँ काव्यात्मक रूपसँ जोड़ैत अछि; आलोचना अलग ठाम चिन्हबैत अछि।

‘छपाकक हिसाब’क निजी डायरीसँ जन-थाती धरि यात्रा

अध्याय –२० मे नन्द डायरीक पहिल पन्ना लिखने छल; –१०क दुर्घटना ओकर काजकेँ आवश्यक बनौलक; एतय तीस प्रविष्टिसँ ओकर रूप स्थिर होइत अछि। एहि अनुक्रमक कारण डायरी अचानक प्रकट भेल जादुई पोथी नहि, क्रमशः लिखल सामग्री अछि। नन्द हर पन्नाकेँ “साक्षीक पन्ना” बुझैत अछि। ई आत्मपरिभाषाक विकास अभिलेखनक लम्बा श्रमक बाद होइत अछि। डायरीक भविष्य जे होइ, एहि अध्यायमे ओकर सामाजिक मूल्य पहिलेहेँ दृश्य बनि चुकल अछि।

कुल मृतकक दावा आ सूचीसँ इतिहासक अन्तर

कथावाचक सूची पूरा भेल कहैत अछि, मुदा मूल पाठ तीसो प्रविष्टि पाठकसमक्ष अलग-अलग नाम सहित प्रस्तुत नहि करैत। सूचीक अस्तित्व कथाक भीतर स्थापित अछि; ओकर सम्पूर्ण अक्षरशः पाठ बाहरक पाठककेँ नहि

भेटैत। एहि अन्तरसँ नन्दक आन्तरिक अभिलेख आ मुद्रित उपन्यासक बाह्य विवरण एक समान नहि। यदि आलोचना तीसो नाम स्वयं गढ़ि लिखय, तँ ओ कथा-आधारित समीक्षा नहि रहत। कथाक तात्पर्य नाम-बचाउ कर्म अछि; तकर पदार्थक सम्पूर्ण सूची पाठककेँ नहि देल गेल अछि।

देहक अनुपस्थितिक बीच सूचीक वस्तुगत उपस्थिति

नन्द डायरी “छातीसँ लगा” पीपर लग बैसैत अछि। मरण-पछाति देहक न भेटब आ जीबैत साक्षी द्वारा कागजकेँ शरीर लग धरब—ई दू बिम्ब विलक्षण अन्तर बनबैत अछि। कागज मृतकक शरीरक प्रतीकात्मक भार उठबैत अछि, मुदा ओकर स्थान पूर्ण रूपसँ नहि लैत। एहि निकटता सँ दस्तावेज शुष्क कार्यालयी रूपमे नहि, सम्बन्धक भावनात्मक वस्तु बनैत अछि। स्मृतिक भौतिक आधार रचनामे महत्वपूर्ण अछि : गोप कुमारक संकलन आ नन्दक डायरी दुनू स्पर्शनीय थाती छथि।

समग्र मूल्यांकन : संख्या बचैत, व्यक्ति उभरैत

‘नामक अन्तिम सूची’क मुख्य उपलब्धि आँकड़ा बनाओल मानवकेँ सम्बन्धयुक्त व्यक्तिक रूपमे फेर स्थापित करब अछि। महीनोंक यात्रा, कटल अभिलेख, परिवारक खोज, तीस नामक टेक, माएक रोकल शोक आ डायरीक स्पर्श—सभ मिला सूची-आख्यानकेँ संवेदनशील बनबैत अछि। किन्तु “तीस नाम” आ “तीन सय लाश”क असमर्थित सङ्ख्यात्मक सम्बन्ध, तथा तीसो नामक प्रत्यक्ष पाठ अनुपस्थित रहब, समीक्षामे स्पष्ट रहबाक चाही। एहि सीमासहित अध्याय स्मृति-न्यायक महत्त्वपूर्ण दृश्य बनैत अछि, जहाँ लिखल नाम मृतककेँ जियबैत नहि, मुदा ओकर सामाजिक मिटाउल जाएबकेँ चुनौती दैत अछि।

प्रकरण ९८ | मूल अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णता

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –३। पाठाधार : “बारह सय बरखक पूर्णता”, “पूरा भेल गोल” लोकगीत, अमावस्याक कबड्डी, नन्दक नामपुकार आ बूढ़बाक वक्तव्य। विवेचन-विधि : चक्रीय समय, अनुष्ठानक आवृत्ति, श्वासक कथा-काल, बहुवचन कथन आ शीर्षकक अर्थ।

‘पूर्णता’क वचन आ समाप्तिक प्रश्न

शीर्षक बारह सय बरखक पूर्णता घोषित करैत अछि, मुदा गद्य अपन समाप्तिक परिभाषा विशिष्ट रूपमे राखैत अछि। बूढ़बाक दीर्घ स्मृति आब एकटा सामुदायिक स्वरमे बाँटल जाइत अछि; सैकड़ों बरखक सभ घटना औपचारिक समाधान नहि पबैत। एतय पूर्णता अभिलेखक सम्पूर्णता वा सभ अनुत्तरित प्रश्नक अन्त नहि, स्मृतिक भारक एकाकीपनसँ सामुदायिकता धरि पहुँचनाइ अछि। ई परिभाषा दीर्घ उपन्यास लेल महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ समय-चक्र पूरा भेलो पर मानव पीड़ा आ न्यायसम्बन्धी संघर्ष स्वतः समाप्त नहि होइत। कथानक एक प्रतीकात्मक गोल बन्द करैत अछि, अनुभवक सम्पूर्ण संसार नहि।

–२२क ‘लगभग’ सँ –३क ‘गोल पूरा’ धरि

अध्याय –२२ मे गोप कुमारक कालगणनामे लगभग बारह सय बरखक उल्लेख छल; बूढ़बा ओ संख्याक अर्थकेँ स्मृति-सूत्र कहने रहथिन। –३ मे कथन गोल पूर्ण भेल कहैत अछि। एहि दू अध्यायक बीच गणनाक पुनः पूरा विधिवत विवरण अथवा निश्चित ऐतिहासिक तिथिक श्रृंखला प्रस्तुत नहि। तेँ –३क “पूरा” मुख्यतः कथा-अन्तक कालात्मक रूपांकन, अनुष्ठानिक संख्या आ सामूहिक अनुभूतिक समापन समझबाक चाही। ई पूर्वक गणनाक सीमाकेँ मिटा दैत नहि। अंक इतिहास-संकेतसँ लोक-स्मृतिक उत्सवी धुरी बनैत अछि।

अमावस्याक राति : अन्हारक भीतर स्मृतिक आयोजन

अमावस्या अध्यायक स्थलकाल स्थिर करैत अछि। अन्हार केवल अनिष्टक सूचक नहि; गाम ओकर भीतर पुरखाक नाम उच्चारबाक सामुदायिक विधि बनबैत अछि। पूर्वक संकटसभमे अन्हार भय आ मौनक स्थान छल; एतय अन्हार हजार कण्ठक उच्चारणक पृष्ठभूमि बनैत अछि। एहि अर्थ-परिवर्तनसँ आवृत्त स्थान आ समय नव भाव ग्रहण करैत अछि। चन्ना गाछी स्थिर रहितो अलग युगक अलग नैतिक भाव सम्हारैत अछि। कथा पर्यावरण आ मानवीय आवाजक संगति द्वारा स्मरणक दृश्य गढ़ैत अछि।

कबड्डी : श्रम, श्वास आ शब्दक संयुक्त लय

कबड्डीक पारीमे एक साँसमे नाम उच्चारबाक विधान साधारण खेलक प्रतिस्पर्धाकेँ स्मृतिक जीवित अभ्यासमे बदलबैत अछि। एतय शरीरक सीमित श्वास शताब्दीक लम्बा समय वहन करैत अछि। एहि विरोधसँ कथनकालक विलक्षण सघनता बनैत अछि—क्षणिक सांसमे अनेक पीढ़ीक नाम उपस्थित होइत अछि। उपन्यास याद करबाक माध्यम केवल पोथी वा डिजिटल अभिलेख नहि, दोहरायल जाय सकय एहन शारीरिक क्रिया मानैत अछि। इएह जीवित आयोजन लिखित संग्रहक सहचर बनैत अछि, प्रतिस्थापक नहि।

नन्दक पहिल पारी : देखनिहारसँ सहभागी धरि

नन्द पहिने साक्षी-परम्पराक उत्तराधिकारी रूपमे चिन्हित छल; एहि अध्यायमे ओ पहिल बेर पारीमे उतरत अछि। क्रीड़ाक वास्तविक क्रिया ओकर कथात्मक स्थिति बदलैत अछि। ओ नामक बाहरी श्रोता भरि नहि रहैत, देहक श्रम आ स्वरक माध्यमसँ स्मृति साझा करैत अछि। एहि प्रवेशक पहिने गाम चुप भऽ ओकर बाट तकैत अछि; सामूहिक अपेक्षा एक व्यक्ति पर केन्द्रित होइत अछि। मुदा अगिला दृश्य ओ केन्द्र तोड़ि दैत अछि, किएक तँ गामक दोसर लोक अपन-अपन नाम जोड़य लगैत छथि। पात्रक आरम्भिक सक्रियता सामूहिकता उत्पन्न करैत अछि।

छः उच्चारित नाम आ अनगिनत अनसुन्न नाम

नन्दक स्वरमे हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश, गौरी आ सावित्रीक नाम स्पष्ट सुनाइत अछि। ओकर बाद गामक बूढ़-पुरान अपन आजी, बाबा आ परदेशमे हेरायल भाइक नाम जोड़ैत छथि। एहि उदाहरणसभक रचना महत्त्वपूर्ण अछि। पहिने उपन्यासक स्थिर ऐतिहासिक पात्र उपस्थित होइत छथि; तकर बाद व्यक्तिगत वंशावली आ असङ्ख्य स्थानीय स्मृति प्रवेश करैत अछि। गद्य दावा करैत अछि जे सैकड़ों बरखक हर नाम एकत्र होइत, मुदा

पाठककेँ सभ नाम अलग-अलग लिखित सूची रूपमे नहि भेटैत। नामक ध्वनिक बहुतायत आ पाठमे सीमित नमूना अलग रहैत अछि।

एकल आवाजसँ बहुवचन कोरसक निर्माण

आरम्भमे नन्दक पारीक कारण गाम चुप अछि। धीरे-धीरे ओहि चुप्पीमे दोसर कण्ठ जुड़ैत जाइत अछि, जाबे धरि स्मरण सामूहिक स्वर नहि बनि जाइत। ई दृश्य कथा-आवाजक परिवर्तनक नाटकीय प्रतिरूप अछि। शताब्दीभरि बूढ़बाक स्मरण बहुचरितार्थक घटना व्यक्तिगत काल-स्वरक भीतर राखैत छल; आब परम्परा कई लोकक कण्ठमे वितरित अछि। एहि वितरणक अर्थ केवल भीड़ नहि, साक्षी बनबाक अधिकारक साझाकरण अछि। कथन निजी नायकत्वसँ सामूहिक क्रियादिस मुड़ैत अछि, बिना नन्दक भूमिकाकेँ मेटौने।

बूढ़बाक ‘हजार साँस’ : स्मृतिक भारक पुनर्वितरण

बूढ़बा कहैत छथि जे एक साँसपर रहल भार आब हजार साँसमे बाँटल गेल। ई पङ्क्ति अध्यायक केन्द्रीय रूपक अछि। बूढ़बाक असाधारण कालजीवन पाठकक आँखिसँ मानवक सीमित जीवनक समकक्ष राखल जाइत अछि। दीर्घ स्मृति अकेल रहला पर थकबैत अछि; विभाजित भेलाक बाद सामूहिक जीवनक स्रोत बनैत अछि। एहि रूपकमे उत्तराधिकार केवल सूचना-प्रेषण नहि, नैतिक श्रमक पुनर्वितरण थिक। किन्तु हजार साँस रूपकात्मक परिमाण अछि, उपस्थित लोकक वास्तविक जनगणना नहि।

लोकगीतक वृत्ताकार धुन आ कथाक पूर्वापर सम्बन्ध

लोकगीत “जे आरम्भ, वैह अन्त”क टेक दोहराबैत अछि। शंख–रजतक आरम्भसँ अमावस्याक नामस्मरण धरि कथा बड़का गोल रूपमे देखाओल जाइत अछि। तथापि आरम्भक भ्रमक प्रसंग आ वर्तमानक लोकसमारोह घटना रूपमे समान नहि; सम्बन्ध स्मृति आ प्रश्नक पुनरागमनसँ बनैत अछि। चक्रीय रचना इतिहासकेँ अक्षरशः फेर घटबाक दावा नहि करैत। ओ पुरान कथात्मक सूत्रसभकेँ नव नैतिक सन्दर्भमे पुनरस्थित करैत अछि। ई अन्तर सम्हारल जाय तऽ पुनरावृत्ति जड़ता नहि, अर्थवृद्धि बनि जाइत अछि।

चन्ना गाछीक जड़ि-पातक कम्पनक बदलबैत भाव

अध्याय –१२ मे गाछीक कम्पन संकट-कम्पन छल। –३ मे हर जड़ि आ पात नामक टेकसँ काँपैत अछि। एहि दृश्य-सम्बन्धमे समान प्रकृति-स्थल अलग संवेदनात्मक अर्थ दैत अछि : पहिने अनिश्चित भय, आब साझा स्मरणक उष्मा। कथाकार गाछीकेँ भावक प्रतिध्वनि-स्थान बनबैत छथि। मुदा ओ जड़ि सचमुच अतीत मृतकसभक देह बनि गेल—एहन सत्यापन गद्य नहि माँगैत। “जेना”क उपमात्मक लेखन स्थानक जादुई अनुभूति आ वास्तविक सामूहिक आवेगकेँ एक संग रखैत अछि।

बूढ़बाक ‘पहिल बेर’ : इतिहासक भीतर नव अनुभव

दीर्घ जीवन देखनिहार बूढ़बा कहैत छथि जे पहिल बेर हुनका भार हलुक लगैत अछि। “पहिल बेर” एहि विशाल कालक्रममे एक मनोवैज्ञानिक निर्णायक बिन्दु अछि। कतेको बाढ़ि, अकाल, न्यायसंघर्ष आ नामस्मरणक बाद

हुनका जे भेटैत अछि से कोनो एक शत्रुक पराजय नहि, एकाकी साक्षित्वक अन्त अछि। ई पात्र-विकासक विशेष परिणाम अछि : दीर्घकालिक स्मृति-रक्षक अपन अस्तित्वक अर्थ सामूहिक सहभागितामे फेर परिभाषित करैत छथि। एहि भावगत उपलब्धिक कारण अध्याय चक्रीय समापनक उचित स्थान पबैत अछि।

खेलक पारी आ उत्तराधिकारक पारी

“पारी” खेलक क्रम अछि आ पीढ़ीक क्रमक रूपक सेहो। एक खिलाड़ी नाम पुकारैत अछि, दोसर सुनैत, फेर अपन स्वर जोड़ैत अछि। एहि क्रिया द्वारा उत्तराधिकार मनुष्य बदलबाक मात्र प्रशासनिक प्रक्रिया नहि, पुनरावर्तित सहभागिताक परम्परा बनैत अछि। एक सांसमे जतेक नाम भेटै, ओ सभ फेर दोसरक स्मृतिमे बाँचैत अछि। एहन मौखिक व्यवस्था लिखित अभिलेखसँ भिन्न असुरक्षा रखैत अछि—साँस समाप्त होयत—मुदा ओकर बल सहभागिताक क्रमिक नवजीवन अछि। उपन्यास एहि दूनू स्मृति-माध्यमक सम्भावना साथ राखैत अछि।

अनन्याक उपस्थिति आ सहचर-पात्रक स्थान

अनन्या अमावस्याक सभामे नन्द आ गामक संग उपस्थित अछि, मुदा एहि अध्यायमे मंचमुख्य स्वर नन्दक बनैत अछि। -२१ मे ओकर प्रश्न-शिक्षण आ -१८ मे साझी परियोजनाक बाद ई असन्तुलन ध्यान देबाक विषय अछि। अनन्याकेँ अनुपस्थित कहब गलत, मुदा ओकर स्वतन्त्र बोलेल संवाद एहि दृश्यकेँ निर्धारित नहि करैत। अगले अध्यायमे प्रतिज्ञाक समय ओकर स्पष्ट स्वर भेटत। कथानक दू पात्रक भूमिकाकेँ अलग क्षणमे उभारैत अछि—नन्द सार्वजनिक स्मरणक आवेग जगबैत अछि, अनन्या आगामी संरक्षणक साधनपर वचन देत।

उत्सवक अन्त नहि : कंठसँ जिम्मेवारी धरि

नाम पुकारलाक बाद पाठककेँ भावुक समाप्तिक अनुभूति होइत अछि। मुदा अगिला अध्यायमे नव पीढ़ीक वचन अछि। ई क्रम दिखबैत अछि जे सफल सामूहिक स्मरण पर्याप्त नहि; ओकरा भविष्यक नियमित काजमे बदलब आवश्यक अछि। नन्दक पारी अनुभव जगबैत अछि, अगिला प्रतिज्ञा संस्थागत उत्तराधिकारक दिशा दैत अछि। अध्याय -३ एहि कारण श्रृङ्खलाक शिखर अछि, समाप्तिबिन्दु नहि। पुरान दुखक साझा उच्चारण नव क्रियाक आवश्यक पूर्वभूमि बनैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : एक साँसमे दीर्घ समयक रचना

‘बारह सय बरखक पूर्णता’ समग्र पूर्वकथाक सघन स्मृति-दृश्य अछि। अमावस्या, कबड्डी, नन्दक पहिल पारी, नामसभक बहुवचन विस्तार, बूढ़बाक हजार साँस आ चन्ना गाछीक सरसराहट मिलि दीर्घ समयकेँ वर्तमान क्रियाक भीतर जीवन दैत अछि। लगभग बारह सय वर्षक पहिले कहल संख्या एतय प्रतीकात्मक पूर्ण गोल बनैत अछि, इतिहास-तिथिक अनिवार्य प्रमाण नहि। एहि सीमासहित अध्याय सामुदायिक स्मृति-उत्तराधिकारक प्रभावकारी आख्यानात्मक परिणति अछि, जकर अगिला चरण अभी प्रतिज्ञाक रूपमे बचल अछि।

प्रकरण ९९ | मूल अध्याय –२ — अगिला पीढ़ीक वचन

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकाल। मूल अध्याय : –२। पाठाधार : “अगिला पीढ़ीक वचन”, “पीढ़ीक वचन” लोकगीत, अमावस्याक कबड्डी-पछाति पीपर लग सभा, नन्द–अनन्याक भाषण तथा गामक युवासभक साझा प्रतिज्ञा। विवेचन-विधि : प्रतिज्ञा-आख्यान, कथनाधिकारक बहुवचन, स्मृतिक साधन, श्रवणक नैतिकता आ पुनरावर्तन।

कबड्डीक बादक निरन्तर समय : भावसँ संकल्प धरि

अध्याय –३क अमावस्याक खेल समाप्त होएबाक बाद ई दृश्य आरम्भ होइत अछि। “ओहि अमावसक अन्हार आर पातर होइत” कहि कथाकार समयक निरन्तरता स्पष्ट रखैत छथि। ई कोनो दूरक कालक छलाँग नहि, तुरन्त भावनात्मक परिणाम अछि। नामक सार्वजनिक उच्चारणसँ जे सामूहिक भाव पैदा भेल, वैह प्रतिज्ञाक आधार बनैत अछि। एहि समीपस्थ क्रमसँ कथा दिखबैत अछि जे स्मृतिक आयोजन आ भावी कर्तव्य बीच सम्बन्ध केवल उपदेशात्मक नहि; पहिले घटित सामूहिक कर्मसँ नव क्रिया जन्मैत अछि।

वचनक व्याकरण : ‘हम’सँ ‘हम सभ’ धरि

नन्दक सीधा वाक्य “हम सभ” सँ शुरू होइत अछि। एहि सर्वनाममे व्यक्तिगत वीरताक केन्द्र स्थान छोड़ि सामूहिक उत्तरदायित्वक घोषणा अछि। पहिने नन्द एकल डायरी लिखैत छल, बूढ़बाक उत्तराधिकारी कहल जाइत छल; आब ओ गामक युवासभकेँ सह-रक्षक बनबैत अछि। “हम सभ” व्याकरणिक बहुवचन मात्र नहि, कथनाधिकारक पुनर्विन्यास अछि। नाम धरबाक व्रत एक परिवारक विरासतसँ समुदायक साझी प्रतिज्ञा बनैत अछि। ई क्रिया वास्तविक सामूहिक बोलमे घटैत अछि, खाली भविष्यक आशा नहि।

नन्दक वचन : दू अभिलेखक एक नैतिक शृंखला

नन्द बूढ़बाक कथा, गोप कुमारक संकलन आ प्रत्येक नाम आगे बढ़एबाक वचन दैत अछि। एहि तीन सूचकमे मौखिक काल-स्वर, लिखित/डिजिटल इतिहास-संग्रह आ व्यक्तिक सामाजिक ओळख एक ठाम आबैत अछि। ई सामग्रीक साधारण जोड़ नहि; प्रत्येकक सीमा दोसरा द्वारा सहारा पबैत अछि। बूढ़बाक कथन जीवित स्मृति अछि, गोप कुमारक संकलन परिश्रमक स्थिर आधार, नाम व्यक्तिगत सम्बन्धक केन्द्र। नन्द एतय संग्रहक एकल स्वामित्वक घोषणा नहि करैत, धरल थातीक साझा रक्षणक आग्रह करैत अछि।

अनन्याक स्वतन्त्र स्वर : पातसँ डिजिटल अभिलेख धरि

अनन्या कहैत छथि जे नारिकेल पात पाठशालासँ डिजिटल अभिलेख धरि “हर साधन” उपयोग कएल जाएत। ई वचन पूर्वक प्रश्नाधारित शिक्षणसँ आगू बढ़ि संरक्षणक व्यवहार्य बहु-माध्यमिक दिशा दैत अछि। नन्द स्मृतिक विषय—कथा, संकलन, नाम—गनबैत अछि; अनन्या ओकर विधि आ साधनक विस्तार करैत छथि। एहि भिन्नतासँ दुनूक संवाद सहयोगी बनैत अछि। मुदा नयका सम्पूर्ण डिजिटल अभिलेखागार एहि क्षण तत्काल बनि गेल—एहन घटना नहि; ई आगूक कार्यक प्रतिज्ञा अछि।

अतीतक पाठशाला आ वर्तमानक कोड : समयक सहअस्तित्व

गद्य अनेक प्रकारक युवाकेँ उपस्थित करैत अछि : कियो कम्प्यूटर आ कोड जनैत, कियो लोकगीत आ पञ्जी, कियो कानून आ हिसाब। एहि सूचीमे उपन्यासक लगभग समस्त पूर्वकथाक संस्थागत अनुभव एक पंक्तिमे आबि जाइत अछि। भिन्न दक्षता एकटा साझा व्रतक सेवा लेल जुटैत अछि। ई समन्वय तकनीकक साधारण विजयगान नहि; कोड, गीत, हिसाब आ कानूनक परस्पर निर्भरता अछि। एखन प्रत्येक विशेषज्ञक पृथक भविष्यक भूमिका तय नहि, मुदा सामूहिक कार्यक क्षमताक संरचना देखाओल गेल अछि।

‘नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि’ : लोकगीतक आत्म-संशोधन

आरम्भिक गीत कहैत अछि जे नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति अछि। सम्पूर्ण पूर्वकथामे बारम्बार नाम सुरक्षित रखबाक वाक्यकेँ ई पङ्क्ति आलोचनात्मक गहराइ दैत अछि। नामक मात्र सूची पर्याप्त नहि; ओ नामक पाछाँक मनुष्य आ अनुभव सुनबाक दायित्व रहैत अछि। ई विचार एतय लोकगीतक स्तरपर स्पष्ट रूपमे उपस्थित अछि। गद्यमे प्रतिज्ञा अधिक संरक्षण-केन्द्रित अछि, मुदा गीत ओकरा सम्बन्धमूलक सुनबाक अनिवार्यता मोन पाड़बैत अछि। एहि द्विस्वरसँ नाम बचाबक मन्त्र आत्मप्रश्न करैत अछि।

सामूहिक उपस्थितिक भीतर व्यक्तिसभक असमान आवाज

गद्य हर युवाकेँ एक स्वरमे ठाढ़ देखबैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष उच्चारित वचन नन्द आ अनन्याक अछि। ई कथात्मक आर्थिकता समारोहक एकता बढ़बैत अछि, तथापि प्रत्येक युवकक आकांक्षा, असहमति अथवा खास भूमिका अलग दृश्य नहि बनैत। समीक्षा एहि अनुपस्थितिकेँ दुनू अर्थमे देखबाक चाही : सामूहिक प्रतिज्ञाक भावप्रधान स्वरूप, आ बहुस्वरक अन्तर्गत विशिष्ट आवाजक सीमित स्थान। “हर युवा”क सहभागिता स्थापित अछि, मुदा सभक अलग लिखित अथवा व्यक्तिगत शपथ पाठमे नहि।

बूढ़बाक कोमल उजास : स्वीकृतिक प्रतीकात्मक दृश्य

वचनक क्षण बूढ़बा चन्ना गाछीसँ “कोमल, स्थिर उजास” संग प्रतिज्ञा स्वीकार करैत छथि। ई दृश्य –१२क काँपैत गाछी आ –३क नाम-टेकसँ बदलैत भावक अन्तिम कड़ी अछि। उजासक वर्णन पात्रसभक अनुभूति बनबैत अछि —“जेना” बूढ़बा कहि रहल होथि। कथाकार प्रकृति-स्थल आ दीर्घ साक्षीक आवाजकेँ एक संग बुनैत छथि। मुदा ई उजासक कारणक कोनो स्वतन्त्र भौतिक विवरण नहि। पाठकीय अर्थ भावात्मक आ जादुई यथार्थक स्तरपर बाँचैत अछि, वस्तुगत यन्त्र-वर्णन नहि।

वचनक सार्वजनिकता आ पुरान गुप्त स्मृतिक अन्तर

यादवानन्दक छाया-पञ्जी अनेक काल धरि लुकाय कऽ लिखल गेल छल; आपातकालमे स्त्रीक सभा फुसफुसाहटमे चलैत छल। –२ मे समान स्मृति खुला गामक सोझाँ प्रतिज्ञा बनैत अछि। पुरान गुप्त संघर्षक उत्तर आधुनिक सार्वजनिक सहभागिता अछि। ई परिवर्तन व्यापक ऐतिहासिक कालक कथात्मक अर्थ बनबैत अछि। मुदा सार्वजनिक घोषणा मात्रसँ स्मृतिक संरक्षण सर्वदा सुरक्षित भऽ जायत—एहन निश्चितता पाठक नहि मानि सकैत; प्रचार, अभिलेख, शिक्षा आ रोजक काजक परीक्षा आगाँ बाकी अछि।

‘अकेल नहि’क पूर्ववर्ती वचनक सामूहिक प्रतिध्वनि

–११ मे बूढ़बा नन्दकेँ “अहाँ अकेले नहि होयब” कहने रहथिन। एहि अध्यायमे उजासक भीतर “हम अकेले नहि छी, आ आब अहूँ सभ सेहो अकेल नहि छी”क भाव उपस्थित अछि। निजी आश्वासन सामूहिक उत्तर बनि जाइत अछि। ई दूरस्थ पुनरुक्ति कथाक सम्बन्ध रचैत अछि : पहिने व्यक्तिक संकटक क्षण लेल सहारा, आब सामूहिक व्रतक निरन्तरता लेल साझी निष्ठा। एहिसँ संवाद एक पात्रक मानससँ निकलि गामक बहुस्वरक भीतर अपन नव जीवन पबैत अछि।

समारोह पछाति गामक बिखरब : एकताक व्यावहारिक रूप

अन्तमे लोक धीरे-धीरे अलग-अलग घर दिस जाइत छथि। ई “बिखरब” समारोहक एकताकेँ नष्ट नहि करैत; सामूहिक वचन आब अलग घर, काम आ पेशामे साथ जाएत, एहन सम्भावना बनबैत अछि। गाम एक स्थायी भीड़ भऽ रहि नहि सकैत; साझा निष्ठा दैनिक जीवनमे बँटब आवश्यक अछि। ई छोट निष्कर्ष विधानक एक वास्तविक सामाजिक आयाम खोलैत अछि : एकता मैदानमे किछु घड़ीक संग बसब नहि, दीर्घकालिक अलग क्रियामे साझा मूल्य बनल रहब अछि।

गोप कुमारक संकलन आ नन्दक डायरी : दू थातीक साथ यात्रा

अन्तिम दृश्य नन्द–अनन्याकेँ गोप कुमारक संकलन आ “छपाकक हिसाब” संग आगू बढ़ैत देखबैत अछि। एक पोथी शताब्दीक व्यापक इतिहास, दोसर विशिष्ट दुर्घटना आ नामक आधुनिक खोजक अभिलेख। दूनूकेँ संग लऽ चलब कथाक संरचना-स्तरपर महत्त्वपूर्ण अछि : पुराना इतिहास आ हालक अन्याय नवनिर्मित उत्तराधिकारमे सहस्थित छथि। भविष्यक अध्यायकेँ एहि दुनू दस्तावेजक साथ चाही; केवल स्मरण समारोह वा केवल तकनीकी रूपान्तरण पर्याप्त नहि।

अनुष्ठानसँ संस्थापनक सम्भावना

नामपुकार एक लोक-अनुष्ठान छल; प्रतिज्ञा शिक्षा, डिजिटल संरक्षण, कानून आ हिसाबकेँ जोड़ैत अछि। इएह क्रम अनुष्ठानक औपचारिक सांस्कृतिक अर्थकेँ सार्वजनिक संस्था बनबाक दिशामे उन्मुख करैत अछि। किन्तु स्रोत-पाठमे नव संस्था कानूनसँ पंजीकृत भेल, धन प्राप्त भेल अथवा विस्तृत कार्य-वितरण तैयार भेल—एहन सूचना नहि। ई प्रक्रिया आरम्भक चरण अछि। कथा उत्सवक अन्तमे आशाक रूप बनबैत अछि, कार्यकारी विवरणक सम्पूर्ण दस्तावेज नहि। आलोचनामे इएह अन्तरक संरक्षण जरूरी अछि।

अन्तिम अध्यायक निकटता : प्रतिज्ञापछाति बचल रहस्य

बूढ़बाक बहुत दिनसँ पूर्वाभासित “अन्तिम अध्याय” एतय फेर उल्लेखित अछि। यद्यपि गाम नामपुकार आ वचन पूरा करि चुकल, नैतिक परीक्षा समाप्त नहि। अन्तिम पंक्तिसँ नन्द–अनन्याक पएर एक नयका अग्निपथ दिस मुड़ैत अछि। ई क्रम अन्तक भीतर नव आरम्भक रचनात्मक नीति अछि। पाठक भावुक सामुदायिक विजयक बाद फेर बेचैनी अनुभव करैत अछि, किएक तँ प्रतिज्ञाक सत्यता अगिला संकटमे परखल जाएत। अध्याय सम्पन्न होइत अछि, चुनौती जारी रहैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : स्मरणकेँ सुनबाक आ करबाक विधान

‘अगिला पीढ़ीक वचन’ एक अनुष्ठानात्मक उत्तराधिकारक प्रमुख प्रकरण अछि। कबड्डीक गूँजसँ उठल साझा शपथ, नन्दक बहुवचन सम्बोधन, अनन्याक बहु-माध्यमिक योजना, भिन्न कौशलक युवा, बूढ़बाक कोमल उजास आ दुनू अभिलेख लऽ आगू बढ़बाक दृश्य कथा आ समाजकेँ जोड़ैत अछि। लोकगीतक “सुनब मुक्ति छी” स्मृतिक समस्त परियोजनाकेँ मानवीय श्रवणक आवश्यक शर्त दैत अछि। तथापि प्रतिज्ञा स्वयं पूर्ण कार्यसिद्धि नहि; एहि अनिर्णीत भावक कारण कथाक आगामी दुखान्त सम्भावना यथावत् रहैत अछि।

प्रकरण १०० | मूल अध्याय −१ — अन्तिम साक्षी

मूल खण्ड : पूर्व-कथाकालक अन्तिम क्रमांकित अध्याय। मूल अध्याय : −१। पाठाधार : “अन्तिम साक्षी”क फकरा, “अन्तिम साक्षीक गीत”, बूढ़बा–नन्दक निजी संवाद, पाठक दिस मुड़ैत सूत्रधार, तकर बाद स्वतन्त्र शीर्षक “विदेह नाट्य उत्सव (आधुनिक शोकान्तिका — पहिल प्रारूप)”क रूपान्तरण-संकेत। विवेचन-विधि : आख्यानस्तर, आत्मसन्दर्भ, धात्विक कथा-सामग्री, मेटालेप्सिस, दृश्य–वाच्य अन्तर आ अन्तिमता-अन्तराल।

−१ : अस्तित्ववान अन्तिम संख्या आ अध्याय ०क अनुपस्थिति

मूल पाठमे −१ “अन्तिम साक्षी” पूर्वकथाक अन्तिम क्रमांकित अध्याय अछि। एकर बाद “अध्याय ०” नामक कोनो स्वतन्त्र अध्याय भेटैत नहि; “विदेह नाट्य उत्सव”क अलग शीर्षकसँ स्वचेतन नाट्य-प्रारूप शुरू होइत अछि। ई पाठ-संरचना आलोचनाक आवश्यक आधार थिक। क्रम पूरा करबाक सुविधा लेल काल्पनिक शून्य अध्याय बनायब, वा नव नाटककेँ स्वतः अध्याय ० कहि देब, मूल रचनाक संगठन बदलि देत। ऋणात्मक कालक्रमक अन्तिम संख्या अपन भीतर कथाक हस्तान्तरणक एक निर्णायक दहलीज अछि; अगिला शीर्षक एगो अलग रूपात्मक प्रवेश-द्वार अछि।

‘अन्तिम’ शीर्षक : कथावस्तुक अन्त वा कथनाधिकारक हस्तान्तरण

शीर्षक “अन्तिम साक्षी” कहैत अछि, गीतमे पर्दा खसबाक दृश्य अछि, मुदा गद्यक अन्तिम अर्थ मृतकसभक चर्चा समाप्त करब नहि। बूढ़बा नन्दकेँ भविष्यक लिखनिहारक बात कहैत छथि; तत्क्षण कथाक आवाज मंच-सीमा पार करैत अछि। एहि कारण ‘अन्तिम’ एक कथन-व्यवस्थाक अन्तक सूचक अछि, सम्पूर्ण साहित्यिक संसारक मृत्यु नहि। दीर्घ पूर्वकथाक वैयक्तिक काल-स्वर अपन केन्द्र छोड़ि पाठक आ आगूक नाटकीय प्रस्तुति दिस बढ़ैत अछि। अन्तिमता ओहि परिवर्तनक नाम थिक।

निजी साँझक सीमित दृश्य : बूढ़बा आ नन्द

अध्याय एक “अन्तिम साँझ”सँ आरम्भ होइत अछि। बूढ़बा नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजबैत छथि, जे पहिने आशीर्वादक निजी दृश्यक प्रतिध्वनि अछि। एकटा असीम इतिहासक चर्चा केवल दुइ पात्रक बीच घटैत अछि। एहि विरोधसँ कथात्मक समय सघन होइत अछि। विस्तृत गामक जनसमूह गद्यक पहिल दृश्यमे अनुपस्थित, मुदा

बूढ़बाक हर नामक स्मृतिरूपेँ परोक्ष उपस्थित अछि। दहलीजक दृश्य निजी संवादसँ शुरू करब गहन सामूहिक इतिहासकेँ अतिव्यक्तिगत अनुभवक माध्यमसँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि।

भविष्यक लेखक : कथाक भीतर अपनहि जन्मक आशङ्का

बूढ़बा कहैत छथि जे कोनो अनदेखल भविष्यक लेखक हुनकर सम्पूर्ण कथा लिखत। ई वचन कथा केवल ककरो द्वारा सुनाएल जा रहल अछि, एहि तथ्यकेँ कथा भीतर विषय बनबैत अछि। साधारण कथावाचक घटनाक वर्णन करैत अछि; एतय कथावाचक अपन कथाक सम्भावित लेखकक बारेमे विचार करैत छथि। ई आत्मसन्दर्भात्मक विधि पाठककेँ लेखनक प्रक्रिया पर ध्यान देबैत अछि। बूढ़बा कोनो निश्चित लेखकक नाम, समय अथवा ग्रन्थक छपाइत वर्ष नहि कहैत; कल्पित भविष्यक लेखक एक अनिश्चित सम्भावना रहैत अछि।

‘हमरा नहि बुझल’ : साक्षीक सीमाबोध

नन्द पुछैत अछि जे बूढ़बाकेँ भविष्यक लेखकक विषयमे कोना बुझल। बूढ़बा स्पष्ट उत्तर दैत छथि : “हमरा नहि बुझल” आ “हम केवल अनुभव करैत छी।” ई आत्मस्वीकृति महत्त्वपूर्ण अछि। बारह सय बरखक कालस्वर सेहो अपन भविष्यदृष्टिक कारण निश्चित नहि जनैत। संवादक ई सीमाबोध पात्रकेँ असीम सर्वज्ञता सँ अलग रखैत अछि। जादुई अनुभूति आ सत्यापित जानकारीक बीच रचना स्वयं भेद रखैत अछि। एहि कारण भविष्यक लेखकक प्रसंग तात्त्विक दावासँ अधिक भावपूर्ण सम्भावना आ मेटाफिक्शनक उन्मेष बनैत अछि।

निकटता-अनुभव आ वर्तमान पाठकक स्थान

बूढ़बा कहैत छथि जे ओ लेखक एतेक निकट अछि जे “हम अहीं सँ, एहि क्षणमे, बात कऽ रहल छी।” एहि वाक्यमे कथे भीतर भविष्य आ कथे बाहर पाठकक वर्तमान एक-दोसराक लग आबि जाइत अछि। लिखनिहारक सम्भावित उपस्थिति कथा-अन्तर्गत समयक बाहरी किनारकेँ छूबैत अछि। पाठक एहि क्षण पढ़बाक अपन क्रियाक प्रति सजग भऽ जाइत अछि—की बूढ़बाक प्रत्यक्ष सम्बोधन ओकरा दिस अछि? ई प्रश्न कथाक स्वनिर्मित थिक; एकर उत्तर शब्दशः काल्पनिक लेखक-चरित्रक पहिचानमे बन्द करब आवश्यक नहि।

पीपरक छाहरिसँ मंचक पार : आख्यानस्तरक अतिक्रमण

गद्य कहैत अछि जे बूढ़बाक स्वर “मंचक ओहि पारसँ” आबि रहल छल, आ तत्क्षण सूत्रधार पर्दाक कातसँ बाहर आबि पाठककेँ देखैत छथि। एतय स्थान-सूचक शब्द कथाक रूप बदलबैत अछि। पीपरक स्मृति-स्थान रंगमञ्चक पृष्ठभूमिसँ जुड़ैत अछि; कथावाचकक परोक्ष आवाज प्रत्यक्ष मंच-पात्रक क्रियामे बदलैत अछि। ई आख्यानस्तरक सीमा-पार होएबाक आकर्षक क्षण थिक—जे कथा कहल जा रहल छल, वैह कथाक कहल जाएबाक मंचीय व्यवस्था पाठकक सोझाँ देखाबय लगैत अछि।

सूत्रधारक प्रत्यक्ष पाठक-सम्बोधनक परिणाम

उपन्यासक बहुतेक पूर्व अध्याय बूढ़बाक वचन अन्य पात्रक माध्यमसँ सुनबैत छल। -१क अन्तमे सूत्रधार स्वयं पाठक दिस मुख करैत छथि। ई मध्यस्थताक परिवर्तन अछि : गाँवक भीतरक श्रोता नन्द रहैत अछि, बाहरक

श्रोता स्पष्ट रूपेँ पाठक बनैत अछि। कथात्मक दूरी घटैत अछि, मुदा कथा आ पाठकक संसार एकदम समान नहि भऽ जाइत। मेटाफिक्शनक प्रभाव एहि प्रतीकात्मक उल्लङ्घनसँ पैदा होइत अछि। ई आधुनिक शोकान्तिकाक आगामी प्रत्यक्ष दर्शक-सम्बोधन लेल मंच तयार करैत अछि।

गीतक पर्दा आ गद्यक वास्तवमे उठैत नव मंच

लोकगीत कहैत अछि “दीप बुझय, पर्दा खसय”, मुदा गद्यक अन्तमे पर्दाक पारसँ सूत्रधार बाहर आबैत छथि आ फेर “विदेह नाट्य उत्सव” शुरू होइत अछि। अतः गीतक समाप्ति-सूत्र आ पाठकक अनुभव विपरीत दिशामे चलैत छथि। पर्दा खसब अन्तिम विरामक काव्यात्मक रूप अछि; नाट्यक आगमन नव प्रदर्शनक द्वार खोलैत अछि। एहि विरोधक कारण ई अध्याय साधारण बन्द-अन्त नहि। पाठक जखन समापनक प्रतीक्षा करैत अछि, पाठ ओकरा दोसर कथनमाध्यममे प्रवेश करबैत अछि।

‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’क अन्तिम फकरा

शीर्षक-अन्तर्गत फकरा शताब्दीभरि दोहरायल वाक्यकेँ एतय ‘अन्तिम’ कहैत अछि। पुनरुक्तिक अर्थ एहि ठाम बदलैत अछि : एखन नामक स्मृति लिखनिहार, मंचनिहार आ पाठकसभकेँ सौंपल जा रहल अछि। देह आ नामक अन्तर पूर्वमे बाढ़ि-मृत्यु, डिजिटल शोषण आ श्रमिक-लोपक सन्दर्भमे छल; आब एहि वाक्यमे साहित्यिक संरक्षण स्वयं प्रवेश करैत अछि। तथापि “नाम नहि खाइत” सार्वभौमिक ऐतिहासिक सत्य नहि, गामक नैतिक संकल्प आ कविता रूपी प्रतिरोधक वाक्य अछि। अन्तिम फकराक प्रभाव एहि लोकविश्वासी निष्ठामे अछि।

शंख-रजतसँ डिजिटल अभिलेख धरि : लेखकीय सामग्रीक जमाव

नाटकक प्रवेश-पूर्वक क्षण एक दीर्घ संचयी संसारक अन्तपर उपस्थित अछि : शंख-रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, गोप कुमारक संग्रह, नन्दक डायरी आ सामूहिक नामस्मरण। भविष्यक लेखकक परिकल्पना एहि समस्त सामग्रीकेँ लिखल जा सकयबला कथा रूपमे फेर देखबैत अछि। रचना एहि तरहेँ अपनहि सामग्री निर्माणक शर्त देखबैत अछि। कथाकारक काम घटना बनायब मात्र नहि, बहु-माध्यमक आवाजसभक सम्पादन सेहो अछि। मुदा एहि क्षण कोनो पूर्ण नाट्यपाठ अन्तर्गत गद्यसंवादसँ पहिने उपलब्ध नहि; ओकर अलग शीर्षकक संग उद्भव होइत अछि।

अलग ‘विदेह नाट्य उत्सव’ शीर्षकक वस्तुगत सीमा

अध्याय –१क आरम्भिक गद्यपछाति “विदेह नाट्य उत्सव” आ “आधुनिक शोकान्तिका — पहिल प्रारूप” नामसँ रूपात्मक नव इकाई शुरू होइत अछि। एकरा स्वतः –१क मात्र अन्तिम अनुच्छेद वा ० क्रमांकक अध्याय कहि मेटाएब उचित नहि। ई शीर्षक नाटक, पात्र-परिचय, सूत्रपात आ पहरसभक रूपमे लिखल अछि। मूल स्रोतक क्रमागत निकटता दूनूकेँ जोड़ैत अछि; रूपात्मक पृथकता ओकर भिन्न कथन-नियम स्पष्ट करैत अछि। आलोचना ई संक्रमणक मूल्यांकन करैत अछि, मुदा सम्पूर्ण नाटकक विस्तृत स्वतन्त्र समीक्षा लेल अलग पाठ-सीमा चाही।

काजर-कारी पोथी : संग्रहक भीतर स्वतः लिखाइत नाटक

नव शीर्षकक आरम्भमे गोप कुमारक संकलनक सभसँ नीचाँ बिना नामक पातर पोथी भेटैत अछि। ओकर पन्ना बिनु स्याही स्वतः लिखाइत अछि। ई अचम्मा पोथीक वस्तुगत उपस्थिति आ जादुई लेखनकेँ जोड़ैत अछि। पूर्वक दस्तावेज लेखकक श्रम, तारीख, हाथ आ स्मृतिसँ बनैत छल; एतय स्वयं उभरैत पाठ लेखकीय अधिकारक प्रश्न खोलैत अछि। गोप कुमारक संकलन थाती अछि, मुदा एकर भीतरी अन्तिम पोथी जानल जाबयबला कथाकेँ स्वतः नाटकीय रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। एहि भेदसँ कथा-लेखनक प्रक्रिया पात्रक सम्पूर्ण नियन्त्रणसँ बाहर चलि जाइत अछि।

मंच-निर्देशकक सुखान्त चाहना आ डायरीक प्रतिरोध

“विदेह नाट्य उत्सव”क सूत्रपातमे मंच-निर्देशक कहैत छथि जे नाटकक अन्त सुखान्त बनएब; सूत्रधार उत्तर दैत छथि जे अन्त हुनकर हाथमे नहि। ई विवाद साहित्यिक इच्छाक विरुद्ध कथ्यक प्रतिरोध दृश्य बनबैत अछि। निर्देशक कथाक अपेक्षित रूप चाहैत छथि, सूत्रधार नाटकक भीतर उभरैत कठिन घटनाक सत्यकेँ मान्यता दैत छथि। दूनूक असहमति कथा-निर्माणकेँ संघर्षमय प्रक्रिया बनबैत अछि। एखन ई नाट्यक आरम्भिक तनाव अछि; एकरा सम्पूर्ण नाटकक अन्तिम दार्शनिक फैसला बुझल नहि जाए।

बिज्जीक मूक उपस्थिति आ रक्षकक सीमित शक्ति

नाटकक पात्र-परिचयमे बिज्जी रक्षक नेवलाक रूपमे अछि, मुदा मूक अछि; “ऐ बेर ओकर पहरा हारय-वला” उल्लेख आगामी शोकान्तिकाक स्पष्ट पूर्वाभास दैत अछि। ई रचना पहिले सँ रक्षक-विजयक लोकप्रिय प्रत्याशाकेँ चुनौती दैत अछि। निर्देशकक सुखान्त इच्छाक सोझाँ बिज्जीक असहज मुद्रा दृश्यगत प्रतिवाद बनैत अछि। पहिने जलक गोहिक विरोधमे जीव-रक्षकक कल्पना छल; नव रंगमञ्चमे रक्षकक संकट स्वयं संरक्षण-संस्थाक भीतर अछि। एहि अर्थक केवल संकेत –१पछाति नाटकक प्रारम्भमे पबैत छी; ई स्वतन्त्र घटना-कथा अछि।

गोहिक नव स्थान : वर्दीक भीतरक भक्षक

नाटकक आरम्भिक पात्र-परिचय आ सूत्रपातमे भ्रष्ट वरिष्ठ अधिकारी रणंजय सिंहकेँ “असली गोहि” कहल जाइत अछि, जखन कि बनबिलाड़क बाह्य छवि ओकर औजार बनैत अछि। ई रूपक नदी, स्क्रीन आ आर्थिक ठगीसँ बढ़ि संस्थागत रक्षणक विकृतिक नयका स्थल पर आबैत अछि। सूत्रधार पुछैत छथि—जँ गोहि रक्षकक वर्दी पहिरि ले, तखन बिज्जी ककरा काटत? एहि प्रश्नसँ नाटकक शोकान्त सम्भावना स्थापित होइत अछि। तथापि –५क लाउ किन-हंगक ठगी आ एहि नाटकक रणंजय–बनबिलाड़क दृश्यकेँ बिनु पाठगत कड़ीक एकहि अभियोजनक क्रम नहि मानबाक चाही।

कोरस, निर्देश आ दृश्य : गद्यक नैतिक स्वरक रूपान्तरण

नाटक पात्र-परिचयमे कोरस, सूत्रधार, मंच-निर्देशक, बिज्जी आ अन्य व्यक्ति उपस्थित अछि। मूल पूर्वकथामे लोकगीत आ बूढ़बाक कथन सामूहिक नैतिक स्वर देइत छल; नव रूपमे कोरस नगरजनक भय, भ्रम आ सामूहिक प्रतिक्रिया दर्शबैत अछि। कोष्ठकमे मंच-दिशा, अर्ध-अन्हार, नील नदीरेखा आ खाली कुर्सी जकाँ दृश्य युक्ति गद्यक

बिम्बकेँ मंचीय सामग्री बनबैत अछि। पाठक आब दृश्य करबाक निर्देश पढ़ैत अछि; कथावाचकक निरन्तर वर्णनक एकाधिकार टूटैत अछि। ई विधागत रूपान्तरण आत्मसन्दर्भात्मक अन्तक ठोस परिणाम अछि।

एक नाटकसँ दोसर पाठ संसार धरि : सम्पूर्ण पुस्तकक जटिलता

“विदेह नाट्य उत्सव”क पश्चात् स्रोतमे अलग-अलग दार्शनिक नाट्य-रूपान्तरणक शीर्षक सेहो उपस्थित होइत अछि। एहि व्यापक संरचनासँ स्पष्ट अछि जे खण्ड-०क अन्त केवल एक रेखीय कथा समाप्त कऽ दोसर क्रमांकित अध्याय खोलब नहि, बल्कि बहु-विधागत पाठक संसारमे प्रवेश करबैत अछि। –१क समीक्षा जतेक नाटकक प्रवेश-द्वारकेँ पढ़ैत अछि, ओतबे ओकर विशिष्ट पाठ्यस्वायत्तताकेँ मानबाक चाही। सम्पूर्ण नाट्य-सामग्री केँ –१क ३१५ शब्द-एकक मे समाहित मानब, अथवा प्रत्येक प्रदर्शनकेँ पूर्वकथाक प्रत्यक्ष वृत्तान्त मानब, रचनाक संरचनात्मक विविधता घटाओत।

लेखक, कथावाचक, सूत्रधार, निर्देशक : चारि भिन्न पद

बूढ़बा भविष्यक अनदेखल लेखकक आभास पबैत छथि; गद्यक कथावाचक एहि आभासक वर्णन करैत अछि; सूत्रधार पर्दाक पारसँ पाठककेँ सम्बोधित करैत छथि; नाटकमे मंच-निर्देशक सुखान्तक आकांक्षा रखैत छथि। ई पद एक-दोसरासँ सम्बन्धित होइतो स्वभावतः एक नहि। लेखकीय अधिकार एकाधिक रूपमे विभाजित भेला सँ कथा अपन रचना-प्रक्रियाकेँ वाद-विवादक विषय बनबैत अछि। पाठककेँ स्पष्ट देखय पड़ैत अछि जे कथाक अन्तक अर्थ केवल पात्रक इच्छा अथवा निर्देशकक आदेश पर निर्भर नहि। एहि बहुस्तरीयतामे अध्यायक आधुनिक आख्यानशास्त्रीय महत्त्व निहित अछि।

समापनक स्वघोषणा आ नाटचक विस्तार : एक निर्णायक अन्तर्विरोध

गीत कथा-अन्तक पूर्णता गाबैत अछि, बूढ़बा अनदेखल लेखकक सम्भावना बतबैत छथि, सूत्रधार पाठकक सामने आबैत छथि, तकर बाद नाटक स्वतः लिखय लगैत अछि। परिणामस्वरूप समापनक तीन रूप एक संग उपस्थित अछि : लोकगीतक बन्द धुन, पात्रक उघड़ैत भविष्य, आ पाठकक सोझाँ प्रारम्भ होइत नव विधा। एहि परत सभक अलग-अलग मूल्यांकन कएल जाए तऽ उपन्यासक अन्त रचनात्मक रूपसँ अस्थिर किन्तु समृद्ध देखाइत अछि। ई महज पुनरुक्ति नहि—कथा अपन “अन्तिमता” पर स्वयं प्रश्न उठा रहल अछि।

समग्र मूल्यांकन : अन्तिम साक्षीसँ स्वचेतन प्रस्तुति धरि

“अन्तिम साक्षी” पूर्वकथाक महत्त्वपूर्ण कथन-दहलीज अछि। पीपरक निजी संवाद, बूढ़बाक सीमित भविष्यज्ञान, पाठक दिस मुड़ैत सूत्रधार, अन्तिम लोकगीतक पर्दा आ नव नाट्य-शीर्षकक आगमन मिलि काल-स्मृतिक दीर्घ कथा केँ आत्मसन्दर्भात्मक रूप प्रदान करैत अछि। समीक्षाक आवश्यक सावधानी ई थिक जे अध्याय ० वास्तवमे नहि अछि, नाट्य-प्रारूप स्वतन्त्र शीर्षकधारी पाठ अछि, आ भविष्यक लेखकक आभास निश्चित लेखक-पहिचानक दावा नहि। एहि अनुशासनसहित अध्याय –१ केवल शताब्दीक कथा समाप्त नहि करैत; ओ देखाबैत अछि जे कथा अपने लिखल, पढ़ल आ मंचित होएबाक प्रश्नक भीतर फेर सँ जन्म लैत अछि।

आलोचनात्मक प्रकरण १०१–१६४। एहि विभागक मूल समीक्षा-लेखन आ उपखण्ड-क्रम यथावत् सुरक्षित अछि।

प्रकरण १०१ । मूल अध्याय ० — गढ़ नारिकेल : संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

शून्य अध्यायक कथात्मक आवश्यकता

शून्यक स्थान पर राखल ई नमहर लोक-प्रस्तावना मुख्य घटनाक क्रम आरम्भ होएबासँ पहिने कथा-समाजक सुनबाक पद्धति बनबैत अछि। बा बच्चासभकेँ पहिने गाम सुनबाक सलाह दैत छथि। फलतः कथाकार सर्वज्ञ सूचना-दाताक मुद्रा सँ हटि सामूहिक श्रवणक वातावरण रचैत अछि। गाम अपनहि बाजय लगैत अछि—ई वाक्य वस्तुतः निर्जीव भूगोलकेँ एकटा सामूहिक कथावाचक बनबैत अछि। पाठककेँ एतय ‘की भेल’ सँ पहिने ‘केकर स्वर सुनाइ देत’ बुझबाक तैयारी कराओल जाइत अछि। एकरा उपन्याससँ बाहरक प्रस्तावना मानि काटि देला पर बादक न्याय-संघर्षक गीत, पात आ स्मृतिक आन्तरिक तर्क अपूर्ण रहि जायत।

एकल कथावाचकसँ बहुकण्ठी आख्यान धरि

लोकगीतक प्रथम गायक, टेक पकड़निहार दोसर कण्ठ, पद बदलनिहार तेसर कण्ठ आ नव घटना जोड़निहार चारिम कण्ठक उल्लेख रचनाक अपन आख्यान-विधान खोलैत अछि। ई सामूहिक रचनाधर्मिता केवल लोक-संस्कृतिक विषय नहि; उपन्यासक आवाजक संगठन सेहो अछि। दादी, नाविक, खेतिहर स्त्री आ बालक एक्के घटनाक फराक संस्करण दैत छथि। एहन बहुवाचिता पाठककेँ कोनो एक ‘अधिकृत’ स्वरपर निर्भर नहि रहबाक चेतना दैत अछि। एकहि स्मृति अनेक उच्चारणमे जीवित रहैत अछि; भिन्नता ओकर दुर्बलता नहि, जीवनक निशान अछि।

घटनारहित विस्तार वा कथा-भूमिक निर्माण?

एहि अध्यायमे बहुत रास वर्णन, वर्गीकरण, लोककथा आ गीत अछि। पारम्परिक घटनाक अपेक्षा राखनिहार पाठककेँ एकर विस्तार धीमा लागि सकैत अछि। मुदा कथात्मक कार्य देखला पर ई अनेक भावी प्रसंगक पूर्व-व्यवस्था अछि: पोखरिक महार, नदीक पानि, चन्ना गाछी, नारिकेल पात, कचहरीक तारीख, डिजिटल स्क्रीन आ नाम-पहरा। तथापि लेखकीय विवेचन कतेको ठाम अपन उपन्यासगत दृश्यकेँ रोकि व्याख्यान-स्वर धारण करैत अछि। ई गति-विच्छेद उपन्यासक एक वास्तविक शिल्पगत जोखिम अछि। आलोचनाकेँ वर्णनक प्रचुरताकेँ स्वतः घटनात्मक समृद्धि मानि नहि लेबाक चाही।

जीवित भूगोलक कथन-कार्य

कमला-बलान, गंगा, पोखरि, डबरा, इनार, चौर, बान्ह आ नाला अलग-अलग नक्शागत बिन्दु नहि रहि, पात्रसभक आजीविका, भय, आवागमन आ मृत्युकेँ चलौनिहार सक्रिय स्थान बनैत छथि। पानि जीवनो दैत अछि आ घर बहबैत सेहो अछि। ई द्वैत उपन्यासमे गोहिक वास्तविक उपस्थिति आ ओकर रूपक-विस्तार दुनूक आधार बनैत अछि। बाढ़िक कालगणना सरकारी वर्षक अंकसँ अलग चलैत अछि: ‘ओहि बाढ़िसँ पहिने’ आ ‘फलाँ कटानक बाद’ सामाजिक समयक चिह्न थिक। भूगोल एहिठाम कथा-कालक बाहक अछि।

श्रमक देह आ गीतक लय

माछमारीमे महाजाल खींचबाक समवेत पुकार, धान रोपबाक देहगत ताल, नाविकक साँस आ शोकक समदाउन —सभ उदाहरणमे गीत श्रमसँ अलग मनोरंजन नहि। लोकगीत पात्रक क्रियाक गति निर्धारित करैत अछि, आ सामूहिक क्रिया गीतक टेककेँ पुनर्रचित करैत अछि। एहि पारस्परिकताक कारण गीतकेँ केवल सजावटी उद्धरण मानब गलत हएत। मुदा गीतमे व्यक्त समतावादी संकल्प आ वास्तविक सामाजिक श्रम-विभाजन समान नहि अछि। शोषित श्रमिकक स्वर आ ओकरा लेल गाओल गीतक स्वरक बीच दूरी अगिला अध्यायसभमे बारम्बार परखब जरूरी अछि।

स्मृतिक भौतिक माध्यम : पात, पाथर, कण्ठ

कागच काटि सकैत अछि; नारिकेल पात फेर उगि सकैत अछि—एहि विपर्याससँ आधिकारिक अभिलेखक नश्वरता आ लोक-स्मृतिक पुनर्जनन एकहि चित्रमे आबैत अछि। पात, पाथर, गीत, कण्ठ आ अन्ततः डिजिटल नकल अलग-अलग स्मृति-माध्यम छथि। पाठक बुझैत अछि जे एकहि नामक अनेक प्रति रहब अभिलेखनक त्रुटि नहि, मेटाएबाक विरुद्ध प्रतिरोध अछि। मुदा प्रकृतिक वस्तु सभकेँ सर्वथा अक्षय मानलासँ कथा अपनहि पर्यावरण-विनाशक चेतावनीसँ टकरा सकैत अछि: गाछ कटत तँ पातक संग्रह सेहो नष्ट होएत। ई आन्तरिक तनाव उपन्यासकेँ आलोचनात्मक गहराइ दैत अछि।

सामाजिक समावेशक दावाक परीक्षण

लेखक गामक संस्कृतिकेँ एक जाति वा एक घरक निजी सम्पत्ति नहि कहैत छथि। एकहि समय घरक ऊँच-नीच, पोखरिपर प्रवेशक भेद, जातिगत अपमान, बेटीकेँ खेलसँ रोकब, सासुरमे हिंसा आ अदृश्य श्रमक प्रसंगसभ सेहो देल गेल अछि। एहि द्वैध स्वरूपमे समुदाय न त निर्दोष स्वर्ग अछि, न मात्र हिंसक व्यवस्था। ककरा गीतक प्रथम पाँति उठेबाक अवसर भेटैत अछि, ककरा केवल दोसराक टेक दोहराबय पड़ैत अछि—ई प्रश्न बहुकण्ठी आख्यानक सत्ता-समीक्षा खोलैत अछि। समावेशक उद्घोष कथामे वास्तविक सहभागिता बनि सकैत अछि कि नहि, तकर परीक्षण अगिला घटनामे हएत।

स्त्रीस्वर : मंगलसँ प्रतिरोध धरि

सोहर, विवाहगीत आ विदाइक समदाउनक संग सासुरक पीड़ा, बन्द दरबाजा आ घरेलू हिंसाक गीत राखल गेल अछि। ‘दरबाजा’ एतय मात्र भवनक वस्तु नहि; चुप्पी आ सुरक्षा-हीनताक रूपक अछि। स्त्री-मण्डली संकेत बुझि पीड़िताकेँ अकेल नहि छोड़ैत—एहि लघु कथावृत्तमे गीतक अर्थ क्रियामे परिणत होइत अछि। तथापि लोकगीतक समूहक सामूहिक अधिकार कतहु व्यक्तिगत अनुभवक विशिष्टताकेँ ढाँपि नहि दे, एहि शङ्काकेँ सेहो समीक्षा राखैत अछि। जे स्त्रीक पीड़ा सुनल गेल, ओकरा बजबाक, अपन कथा नियंत्रित करबाक आ निर्णय लेबाक वास्तविक अवसर कतेक भेटल—एहि प्रश्नक महत्त्व रहत।

खेलक माध्यमसँ इतिहासक पाठ

कबड्डीमे सीमा पार करब, साँस सम्हारब आ साथीकेँ घुरा अनबकेँ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ल गेल अछि। एक-एक पारीमे बिसरल नाम पुकारबाक नियम खेलकेँ स्मरण-समारोह बनबैत अछि। ई नियम बादमे भूतक

कबड्डीक कथा-संरचनाक पूर्वाभास अछि। खेलक मैदानमे जाति आ लिंगक विभाजक रेखा मेटबाक दृश्य लोकतान्त्रिक सम्भावना खोलैत अछि। मुदा चूना-माटिसँ खींचल रेखा मेटला मात्र सामाजिक विभाजन मेटल नहि मानल जा सकैत अछि; ई कथा-क्षण संकेतात्मक उपलब्धि थिक, सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तनक प्रमाण नहि।

लोकविश्वास आ जादुई यथार्थक सीमा

पीपरक ब्रह्मा, पनिडुब्बी, गाछक बोलब, पातक नाम लिखब, भूतक खेल—एहि सभकेँ प्रस्तावना कोनो पृथक ‘अलौकिक’ कोठरीमे बन्द नहि करैत। ओ श्रम, बाढ़ि, अदालत आ घरेलू व्यवहारक संगे एकहि लोक-अनुभवमे रहैत अछि। एतय पाठकक मुख्य निर्णय ई नहि जे घटना प्राकृतिक नियमसँ सिद्ध अछि की नहि; प्रश्न अछि, ई छवि किनकर असुनल दुःखकेँ सुनबा योग्य बनबैत अछि। तथापि प्रत्येक लोकविश्वासकेँ रूपकेँ मात्र बना देला पर पात्रसभक अनुभवक आत्मीय स्वर हराएत। रचना दुनू पाठन सम्भव राखैत अछि।

भविष्यक कथावृत्तक पूर्व-संकेत

लोक-प्रस्तावनामे डिजिटल ठगी, उज्ज्वलक त्रासदी, नाम-पहरा, स्त्रीक निजता, कचहरीक तारीख आ पर्यावरणक संरक्षणक प्रसंग आवैत अछि। एहि कारण पाठक अगिला अध्यायक घटनाक किछु अर्थ पहिनहिये जनैत अछि। ई भविष्यसूचनात्मक घनत्व उपन्यासकेँ बारम्बार घुरि पढ़बाक आमन्त्रण दैत अछि, मुदा घटनाक आश्चर्य घटा सकैत अछि। लेखकीय स्वर कखनो परिणाम पहिने बता दैत अछि; घटनात्मक उत्कण्ठा तब ‘की होएत’ सँ हटि ‘केना आ किनकर दृष्टिसँ होएत’ पर टिकैत अछि।

कालक अनेक तह

ऋतु, शताब्दी, पीढ़ी, बाढ़िक निशान आ मोबाइलक तत्काल सन्देश एकहि अध्यायमे उपस्थित अछि। कथा-कालक ई विस्तार साधारण रेखीय इतिहास नहि बनबैत; सामाजिक समय, पर्यावरणीय समय आ अंकीय समयक आपसी टकराव बनैत अछि। कखनो लोकगीत सैकड़ों बरखक अनुभवकेँ एक टेकमे समेटैत अछि, कखनो एकटा बूढ़ी स्त्रीक काँपैत स्वर पूरा अनुच्छेदक गति धीमा करैत अछि। आलोचना लेल ई भेद जरूरी अछि—कालक संकेत बहुत होएब आ कथामे वास्तविक कालानुभूतिक विकास समान बात नहि थिक।

चौबीस खिस्सा-गीतक संयोजन

प्रस्तावनाक उत्तरार्धमे १ सँ २४ धरि क्रमाङ्कित खिस्सा–गीतक गुच्छ प्रस्तुत अछि—डकही पोखरिक पात-दीपसँ गाछ, जल आ पर्यावरणक पहरा धरि। प्रत्येक इकाइमे प्रसंग आ गीतक जोड़ी आवैत अछि। गीत कथाक निष्कर्षकेँ सार्वजनिक टेकमे बदलबैत अछि, आ प्रसंग टेककेँ जमीन दैत अछि। मुदा सब इकाई समान नाटकीय घनत्वक नहि: कतहु पात्र निर्णय लैत अछि, कतहु एकटा सामाजिक नियम वा सांस्कृतिक उदाहरण अधिक स्पष्ट रहैत अछि। तेँ चौबीस इकाईकेँ चौबीस पूर्ण विकसित स्वायत्त कथा कहल जाय, ई निर्णय सतर्कतासँ लेबाक अछि।

आधिकारिक अनुपस्थिति आ माएक ‘हाजिर’

रजिस्टरक अनुपस्थितिक विरुद्ध माएक उपस्थितिक पुकार प्रस्तावनाक सबसँ धारगर कथात्मक विरोध अछि। राज्यक पंजीमे केओ नहि, मुदा मातृस्मृतिमे ओ पूर्ण व्यक्ति—एहि द्वन्द्वसँ आगामी पुल-मजदूरक कथा पूर्वे सँ

व्याख्यायित होइत अछि। मातृकण्ठ एतय वैकल्पिक अभिलेख थिक; मुदा मातृस्मृति जे जानैत अछि, से सब तथ्यात्मक विवरणक अन्तिम विकल्प नहि बनैत। कागच आ कण्ठक बीच टकरावक संग हुनकर सम्भावित सहकार्य सेहो उपन्यासक विधागत सम्भावना अछि।

निबन्धात्मकता आ काव्यात्मकताक सहअस्तित्व

अध्याय ०क शैली कखनो सांस्कृतिक विवेचन, कखनो भावपूर्ण गद्य, कखनो गीत, कखनो छोट खिस्सा बनैत अछि। ई विधा-मिश्रण उपन्यासक विशालता लेल नींव तैयार करैत अछि। मुदा शैलीगत ताप सर्वत्र एकसमान नहि अछि। किछु व्याख्यात्मक वाक्यमे पात्रक स्वायत्तता कम आ लेखकीय मार्गदर्शन अधिक अछि। जे पाठक दृश्य आ संवादक माध्यमसँ अर्थ बनबय चाहैत छथि, हुनका एहन प्रत्यक्ष व्याख्या अधिक लगि सकैत अछि। एकर आलोचनात्मक मूल्यांकनमे रचनाक असाधारण सांस्कृतिक विस्तार आ ओकर गति-सङ्कोचक जोखिम दुनू साथ राखल जाए।

अध्याय-०क समग्र आख्यानशास्त्रीय स्थिति

ई प्रारम्भ गढ़ नारिकेलकेँ केवल घटनास्थल नहि, ‘सुननिहार समुदाय’ बनबैत अछि। नाम, पानि, गाछ, श्रम, गीत आ न्याय एहि समुदायक स्मृति-विधानक परस्पर सम्बन्धित अङ्ग छथि। कथा जखन बादमे निजी मृत्यु, नकली सूची अथवा अन्तर्राष्ट्रीय नैतिक भाषण धरि पहुँचत, तखन एहि प्रारम्भक श्रवण-नीति पाठकक मूल्यांकन बदलत। एहि अध्यायक उपलब्धि सामान्यीकृत लोक-चित्र नहि, आगामी घटनाक अर्थ-निर्माणक सामूहिक आधार अछि; सीमा ई जे एतुक्का घोषित नैतिक सम्भावना सभकेँ घटनात्मक संघर्षमे वास्तविक रूपेँ परखब शेष रहैत अछि।

प्रकरण १०२ | मूल अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

आरम्भक द्वैत-मञ्च

चन्ना गाछीक भूत-कबड्डी आ गंगापर बनैत विशाल सड़क-पुल एकहि आरम्भमे समानान्तर चलैत छथि। एक मञ्चमे शरीरहीन खिलाड़ी कालक सीमा फाँदैत छथि; दोसरमे श्रमिकक शरीर असुरक्षित पाया आ पानिक बीच खसैत अछि। लेखक दुनू घटनाकेँ कारणक सरल सम्बन्धमे नहि बाँधैत, बरु ‘छपाक’ ध्वनि सँ एक कथास्थलसँ दोसर कथास्थल धरि ध्वनिक पुल बनबैत अछि। पाठक कखनो गाछीक दर्शक, कखनो निर्माण-स्थलक प्रत्यक्षदर्शी बनैत अछि। एहि द्वैतमञ्चक कारण दुर्घटनाकेँ केवल निर्माण-प्रबन्धनक समाचार रूपमे नहि, सामूहिक स्मृतिक निरन्तर घटना रूपमे पढ़ल जाइत अछि।

खेल आ मुकदमाक अस्थिर भेद

पहिल कथनमे खेल अछि कि मुकदमा—ई प्रश्न अनुत्तरित राखल गेल अछि। कबड्डीक सीमा, प्रतिपक्ष, पकड़ब आ साँस रोकबाक नियम धीरे-धीरे नाम, अनुपस्थिति आ गवाहीक सवाल बनैत छथि। भूतक दल आ सरकारी मोहरक रूपकात्मक दलक बीच प्रतिद्वन्द्वितासँ न्याय-प्रक्रियाक वैकल्पिक नाट्यरूप तैयार होइत अछि। खेलक

हलुकता आ शोकक गम्भीरता टकराइत अछि; कबड्डी अपन खेलपन नहि छोड़ैत, मुदा मृत्यु पर हँसब सेहो असम्भव बनि जाइत अछि। एहि असुविधाजनक सहअस्तित्वमे उपन्यासक विशिष्ट शोकान्त विडम्बना अछि।

असामान्य कालगति

भूत एक पारीमे १८८५, १९३४, १९७७ आ २०२६क मोबाइल-टावर छू कऽ घुरि सकैत अछि। ई काल-उल्लङ्घन ऐतिहासिक क्रमक स्थानापन्न नहि; भविष्य, अतीत आ वर्तमानक परस्पर दृश्य-सम्बन्ध स्थापित करबाक आख्यान-प्रविधि अछि। शरीरक अभाव भूतकेँ कालपर विचरणक छूट दैत अछि; जीवित मजदूरक शरीर तकर ठीक विपरीत लोहेक छड़, अस्थायी बेल्ट आ सीमित साँससँ बान्हल अछि। कालगत मुक्तता आ देहगत असुरक्षा एक-दोसरकेँ व्याख्यायित करैत अछि। पाठक परिणामक संकेत पहिने देखैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक उत्पादन बादमे बुझैत अछि।

बूढ़बा, हुलासी, पनिडुब्बी आ लोथक भूमिकाविभाजन

बूढ़बा खेलक निर्णायक आ स्मृतिक लम्बा काल-वाचक छथि। हुलासी हाथविहीन होइतो सीमा चिन्हित करैत छलीह; हुनकर दृष्टि कार्यात्मक हाथ बनैत अछि। पनिडुब्बी पोखरिसँ गंगाक गन्ध आनैत छलीह, अर्थात् स्थानीय जलक सीमाकेँ दूरस्थ मृत्यु तोड़ैत अछि। लोथ सामान्यतः मौन दर्शक, मुदा सीमेण्टक धूर ओहिक मुँहसँ निकलि आधुनिक निर्माणकेँ भूत-जगतमे उपस्थित करैत अछि। एहि पात्रसभक फराक क्रिया एकटा सामूहिक कथन-यन्त्र बनबैत अछि। सभकेँ केवल एकहि प्रतीकक पर्याय कहला पर ई फराक कथा-कार्य लुप्त भऽ जायत।

बिसेसर पासवानक दुर्घटनाक सूक्ष्म दृश्य

बिसेसरक घिस्सल चप्पल, गिट्टीक टोकड़ी, पायापर चढ़ब आ पएर हुसब—ई क्रम दुर्घटनाकेँ दैविक रहस्य नहि बनबाक दैत अछि। नन्दक बेल्ट लगएबाक पुकार आ बिसेसरक उत्तर सुनल गेल कि नहि, ई अनिश्चितता सुरक्षा-अभावक सम्बन्धमे नन्दक असहायताकेँ उभारैत अछि। जलमे देहक प्रवेश देखल जाइत अछि, मुदा नामक लोप केवल रिपोर्टमे घटित होइत अछि। शारीरिक दुर्घटना आ अभिलेखीय विलोपनक द्विस्तरीय हिंसा एहि अध्यायक घटनात्मक केन्द्र अछि। गोहि ओहि हिंसाक नाटकीय छवि अछि, दुर्घटनाक एकमात्र कारण नहि।

छोटू : अपूर्ण नामक पात्र

दोसर दुर्घटनामे नाबालिग मुसहरिनक बेटाक रजिस्टरमे अट्ठाइस बरख लिखल अछि, जबकि माए ओकरा ‘छोटू’ कहैत छलीह। एहि विरोधसँ राज्य-लिखित आयु आ मातृ-उच्चारणक भिन्न विश्वसनीयता उजागर होइत अछि। भूतक खेलमे छोटू अपन पूर्ण नाम याद नहि रखि पबैत; बूढ़बा अस्थायी रूपमे ओहि नामकेँ स्वीकार करैत छथि। ई सामुदायिक करुणाक सुन्दर क्षण अछि, मुदा आधिकारिक पहिचानक समस्या समाधान नहि भेल। ‘असल नाम भेटत तखन बदलि देब’ कथामे जाँचक अधूरापन बचबैत अछि।

‘मजदूर अनुपस्थित’ : भाषाक हिंसा

नन्दक रिपोर्टमे लिखल अपर्याप्त सुरक्षा, अल्पवयस्क श्रम, शव आ ठेकेदारक दायित्वक शब्द लाल पेंसिलसँ कटि जाइत अछि। बचैत अछि केवल ‘मजदूर अनुपस्थित’। ई सामान्य सरकारी संक्षेप नहि; घटनाक कर्ता, कारण, पीड़ित आ उत्तरदायित्वकेँ क्रमेण मिटौनिहार सम्पादकीय क्रिया अछि। पाठक शब्द कटबाक दृश्य देखैत

अछि, तैँ हिंसा कानूनी घोषणाक बाहरो प्रत्यक्ष भऽ उठैत अछि। एहि ठाम पाठकेँ अपन दस्तावेजक पन्ना स्वयं कथा-मञ्च बनबैत अछि। जकरा कथा पहिने पानीमे डुबौने छल, भाषा ओकरा दोसर बेर डुबबैत अछि।

एडवर्ड ब्रूमक प्रतिष्ठा-निर्माण

विदेशी कम्पनीक स्क्रीन, पुरस्कार, विकासक फोटो आ हार्वर्डमे नैतिकता पर भाषणक आगामी संकेत एकटा वैश्विक कथन-व्यवस्था बनबैत अछि। पुल-स्थलक वास्तविक मृत्यु ‘नियन्त्रित संख्या’ कहल जाइत अछि, जखनकि दूरक सभागारमे वैह परियोजना संस्थागत गौरवक उदाहरण बनय जा रहल अछि। तर्क-विन्यास एतय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारक स्वतन्त्र आर्थिक विवेचन नहि, कथामे छवि आ दुर्घटनाक विपरीत प्रकाश अछि। ब्रूमक सार्वजनिक कथन आ नन्दक दृश्यगत अनुभवक बीचक दूरी पाठककेँ नैतिक विडम्बनाक अनुभूति करबैत अछि।

फकीरा साहनीक वैकल्पिक कथा-वाक्य

नाविक फकीरा गोहिक संख्या बढ़बाक जगह देह अधिक फेकाएबाक बात कहैत छथि। ओ गोहिकेँ प्राकृतिक सफाइक जीव रूपमे देखैत, अपराधक सम्पूर्ण भार ओकरापर डालबाक मानवीय प्रवृत्तिक आलोचना करैत छथि। ई संवाद उपन्यासक रूपककेँ ओकर सम्भावित अतिशयोक्तिसँ बचबैत अछि: गोहि जैविक प्राणी अछि, मुदा ‘गोहि’ नामे चिन्हित प्रशासनिक शोषण दोसर वस्तु अछि। कथाक नीतिमूलक वाक्य यही भेदक भीतर गहिराइ पबैत अछि।

हुलासीक आत्मकथन आ मृत्युक विवाद

हुलासी अपन मृत्युकेँ आत्महत्या कहल जाएबाक विरोध करैत, इनारमे फिसलबाक बात कहैत छलीह। ई कथन स्त्री-पात्रकेँ केवल नाम-पहरा कएनिहार आत्मा नहि रखैत; ओ अपन कथा-संस्करण प्रस्तुत करैत छथि। मुदा हुनकर कहबकेँ कोनो पूर्ण दफ्तरी अन्वेषणक प्रतिवेदन रूपमे प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। कथामे ई एक पीड़ित स्वरक पुनःप्रवेश अछि। अलग-अलग मृत्यु-संस्करणक सह-अस्तित्व बुझब एहि उपन्यासक बहुवाचिताक मूल शर्त अछि।

भविष्य-दर्शनक शृंखला

उज्ज्वल झाक स्क्रीनमे डूबबाक सम्भावित दृश्य, बटुकनाथक कोट-पहिरल धुँआ, चन्द्रपालक सट्टा-पर्ची आ लाउ किन-हंगक शीशाक मीनार एकहि घटनाक पूर्ण ज्ञान नहि दैत; ई स्थगित कथावृत्तसभक बीज छथि। भविष्य-दर्शन एहि बिन्दुपर कथाकारक सूचना-विशेषाधिकार अछि, जीवित नन्दक उपलब्ध ज्ञान नहि। लेखक पाठककेँ पात्रसँ अधिक देखबैत छथि, मुदा कई अर्थ अस्थिर राखैत छथि। एही विषम जानकारीसँ भयक पूर्वाभास उत्पन्न होइत अछि।

शब्द आ ध्वनिक पुनरावृत्ति

‘कबड्डी’, ‘जल’, ‘समाधि’, ‘छपाक’, ‘तारीख’ आ ‘नाम’ बेर-बेर घुरि आबैत अछि। प्रत्येक पुनरावृत्तिमे शब्दक परिस्थिति बदलैत अछि: पहिने शारीरिक गिरावट, फेर फाइलक कटान, फेर भूत-खेलक ध्वनि, अन्ततः डायरीक शीर्षक। ई आवर्तन केवल लय नहि, अर्थ-परिवर्तनक साधन अछि। पाठक एक ध्वनिसँ अनेक समय आ स्थान

चिन्हय लगैत अछि। जखन नाम बिना छपाक सुनाइ दैत अछि, तखन ध्वनि प्रश्न बनैत अछि; नाम लिखलाक बाद वैह ध्वनि स्मरणक संकेत बनैत अछि।

जीवित नन्दक छाह आ अर्ध-भूतत्व

नन्द जखन साइटपर छथि आ हुनकर छाह चन्ना गाछीमे पहुँचैत अछि, तखन आख्यान एकहि पात्रकेँ दू कथास्थलमे उपस्थित करैत अछि। एकरा नन्दक वास्तविक मृत्यु मानब भूल हएत। ई जीवित साक्षीक मानसिक आ स्मृतिगत संलग्नताकेँ दृश्य बनौनिहार जादुई यथार्थक युक्ति अछि। देह मजदूरसभक बीच रहैत, छाह सामूहिक शोकमे प्रवेश करैत अछि। एहि द्वैध उपस्थितिक नैतिक मूल्य अछि—दुःखसँ सम्बन्ध कागजी कर्तव्यसँ आगू बढ़ि अस्तित्वगत भार बनैत अछि।

सँख्या-विस्तार आ आलोचनात्मक सावधानी

कथामे तीस आधिकारिक मृत्यु, कमसँकम तीन सयक आशङ्का, आ स्वप्नदृश्यमे ‘तीन हजार’ धरि क्रमिक सङ्ख्या आबैत अछि। सभ सङ्ख्याकेँ एकहि स्तरक पुष्ट गणना मानल जाय, ई अनुचित हएत। तीस सरकारी सूची, तीन सय नन्दक विरोधी कथन, आ तीन हजार गोहिक पिठपर देखल असामान्य दृश्यक अंश अछि। एहि स्तर-भेदक समुचित चिन्हांकनसँ उपन्यासक मूल दुःख कम नहि होइत; उलटे प्रत्यक्ष घटना, दावा आ रूपकक भिन्न कार्य अधिक स्पष्ट होइत अछि।

अन्तिम गमछा : कथासूत्रक भौतिक अवशेष

अन्तिम अन्हार दुर्घटनापछाति नन्दक हाथमे फाटल गमछाक कोना अटकैत अछि। देह नहि भेटल, नाम नहि भेटल, मुदा एक वस्तु बाँचि गेल। एहि वस्तुक यात्रा पुलसँ बाक देहरी धरि दूरस्थ कथास्थलसभकेँ जोड़ैत अछि। गमछा एकटा गवाहीक सम्भावना अछि, नाम-निर्धारणक अन्तिम प्रमाण नहि। बाक माथसँ लगएबाक क्रिया ई वस्तुकेँ गृहस्थ शोकक भीतर लऽ अबैत अछि। नदीक दुरन्त दुर्घटना जखन गमछाक रूपमे आँगन धरि पहुँचैत अछि, तखन कथाक स्थानिक दूरी भंग होइत अछि।

प्रकरणक समग्र मूल्यांकन

एहि अध्यायक उपलब्धि तीव्र, बहुस्तरीय दृश्य-संयोजन अछि: असुरक्षित मजदूर, नाम-छँटनी, संस्थागत भाषण आ भूतक कबड्डी एकहि चिह्न-व्यवस्थामे आबैत अछि। पूर्वाभासक प्रचुरता कखनो वर्तमान दृश्यसँ ध्यान हटबैत अछि, तथापि बिसेसरक चप्पल, छोटूक अधूरा नाम आ फाटल गमछा कथाकेँ ठोस देहगत आधार दैत अछि। ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’ एहि अध्यायमे अन्तिम विजय-घोषणा नहि; नाम खोजबाक कठिन, दीर्घ आ सम्भावित रूपसँ असफल श्रमक प्रारम्भिक वचन अछि।

प्रकरण १०३ | मूल अध्याय २ — दहिन कातक गाम

स्थानक दिशा आ दृष्टिक परिवर्तन

‘दहिन कात’ भूगोलक स्थिर निर्देश नहि अछि। कमला-बलानक धार घुमला पर दहिन-बामक अनुभूति बदलैत अछि; गामक लोक अपन परम्परागत दिशाकेँ फेरो धारण कएने रहैत अछि। एहि अस्थिर दिशाबोधमे स्थान

मानचित्रक निर्जीव निर्देशांक नहि, जीवनक अभ्यास बनैत अछि। शीर्षकक दहिन कात वस्तुतः कथावाचकक स्थिति, नदीक चाल आ गामक स्मृतिक परस्पर सम्बन्धक प्रश्न अछि। पाठककेँ एहि अध्यायमे ककर दृष्टिसँ दिशा कहल गेल अछि—ई बेर-बेर विचारय पड़ैत अछि।

गमछासँ वंशक पेटी धरि

अध्यायक आरम्भमे बा फाटल गमछाक कोना लऽ पुरान पीतल-कुंडी बक्सा खोलैत छथि। एक तुच्छ श्रमिक-वस्तु पुरखाक पात, भूमि-पत्र, जनेऊ आ अपमानक संग्रहक बीच राखल जाइत अछि। एहि स्थानान्तरणसँ निजी पारिवारिक अभिलेख सार्वजनिक श्रमिक-मृत्यु लेल खुजैत अछि। गमछा मात्र शोकक प्रतीक नहि; ई कथाक फ्लैशबैक आरम्भ करबाक ठोस उपकरण अछि। वस्तु देखिते कालक्रम पलटि जाइत अछि आ लत्तड़ ठाकुर–कलितक कथा सामने अबैत अछि।

१८८५क जन्म आ पीढ़ीगत कथन

लत्तड़ ठाकुरक घर १८८५ मे कलितक जन्म ऐतिहासिक काल-सूचकक संग वर्णित अछि। बालकक असामान्य श्रवण, गाछ दिस तकबाक प्रवृत्ति आ आङ्गल-विद्याक प्रारम्भ भविष्यक एकटा सम्भावित पात्र-रूप तैयार करैत अछि। मुदा जन्म-क्षणक अलौकिक संकेतकेँ कलितक सम्पूर्ण नियति निर्धारित कऽ देनिहार नियम मानल नहि जा सकैत। कथाकार बालकक चञ्चल प्रतिभा आ पिताक आशङ्का एक संग देखबैत छथि। एहि अन्तरमे चरित्रक विकासक सम्भावना टिकल अछि।

भाषाक तीन दरवज्जा

कलित अंग्रेजी अक्षर, देवनागरी लेखन, कैथी बही आ मौखिक वंशावली बुझय लगैत अछि। ई बहुभाषिक दक्षता ज्ञानक निष्पक्ष संग्रह नहि: भूमि, लगान आ न्यायालयमे एक नामक अलग-अलग वर्तनीसँ अधिकार बदलि सकैत अछि। कथा कलितक कौशलकेँ एकहि बेर सहायता आ सम्भावित नियंत्रणक साधन रूपमे स्थापित करैत अछि। एक पात्र जखन दूसराक कागच पढ़ैत अछि तखन ओ लोकक हेतु मध्यस्थ बनैत अछि; वैह मध्यस्थता सत्ता बनबाक जोखिमो रखैत अछि।

लेखनक आकर्षण आ नैतिक आशङ्का

लत्तड़ पुत्रक बुद्धिसँ प्रसन्न छथि, मुदा ओहि बुद्धिक भीतर साँपक चाल देखि चिन्तित सेहो। ई नायकक ‘जन्मजात दुष्टता’क घोषणा नहि, प्रतिभाक नैतिक अनिश्चितताक आरम्भ अछि। कागच पढ़बाक क्षमता जे किसानकेँ मदति दऽ सकैत अछि, ओकर सहारे मालिकाना दावा सेहो बदलल जा सकैत अछि। पात्रक भीतरक सम्भावित विभाजन कथा-समयमे धीरे-धीरे गहिराइत अछि। पिता–पुत्र संवाद एहि जटिलताकेँ साधारण नीति-वचन नहि, पीढ़ीगत आशङ्का बनबैत अछि।

कागच आ माटिक अलग समय

रेतपर चिड़ियाक क्षणिक पगचिह्न आ कागचमे सुरक्षित झूठक पिता द्वारा कएल तुलना स्मृति-माध्यमक व्यतिक्रम अछि। टिकाऊ कागच अनिवार्यतः अधिक सत्यवान नहि, क्षणभङ्गुर रेत अनिवार्यतः निरर्थक नहि। कथामे माध्यमक आयु आ कथनक सचाइ अलग वस्तु छथि। नन्दक समयमे पुरान भूमि-विवादक ‘अगली पेशी’ उभरला

पर ई भेद ऐतिहासिक गहिराइ पबैत अछि: कागच शताब्दी धरि बचि सकैत, मुदा न्याय तखनहुँ स्थगित रहि सकैत अछि।

‘गन्ध’क इन्द्रियात्मक आख्यान

भीजल कागचक माटिक गन्ध आ पाइक गन्ध पहचानबाक लत्तड़क चेतावनी एकटा संवेदनात्मक रूपक अछि। पढ़बकेँ आँखि आ बुद्धिसँ आगू नाकक अनुभव धरि विस्तृत कएल गेल अछि। ई गन्ध ककरो भ्रष्टाचारक वैज्ञानिक परीक्षण नहि, पात्रक नैतिक सजगताक रूपान्तरण थिक। नन्द जखन बादमे मृत्यु-सूची सँ गाद आ पाइक गन्ध अनुभव करैत छथि, तखन पुरखाक वाक्य लिखल निर्देश नहि, अन्तःस्मृतिक सक्रिय स्वर बनि उठैत अछि।

बाक श्रवण-अधिकार

बा कैथी–देवनागरी मिश्रित पर्ची पूरा पढ़ि नहि सकैत छथि, मुदा ओकर पुरान आकार आ परिवारक सम्बन्ध चिन्हैत छथि। ओ पातक आवाज सुनैत, भूतसभसँ प्रश्न करैत आ तारीखक विरुद्ध नामपर जोर दैत छथि। कथा हुनका मात्र निरक्षर वृद्धा नहि बनबैत; लिखित अभिलेखक बाहरी प्राधिकारसँ भिन्न अनुभवी श्रोता बनबैत अछि। तथापि स्त्रीक अनुभवकेँ स्वतः सर्वज्ञ ज्ञानक रूप नहि देल गेल; हुनकर प्रश्न, सन्देह आ प्रतीक्षा कायम रहैत अछि।

भूतसभा आ संवादक संरचना

चन्ना गाछीमे बा गमछा आ पर्ची राखि बूढ़बाक सोझाँ नाम पूछैत छथि। एहि दृश्यक संवाद रूपकात्मक अदालतक अनुकरण करैत अछि: वस्तु प्रस्तुत होइत अछि, प्रतिप्रश्न उठैत अछि, अज्ञात सीमा कहल जाइत अछि, आ अन्तमे दस्तावेज नन्दक पहिल गवाही रूपमे चिन्हल जाइत अछि। अदालतक औपचारिक मोहरक बदला मौखिक संलग्नता प्रबल अछि। मुदा भूतक उत्तरसँ मृत मजदूरक पूर्ण व्यक्तिगत पहिचान भेटि जाइत अछि, एहन नहि। कथा एकटा नैतिक दिशा दैत अछि, अन्तिम निष्कर्ष नहि।

स्त्रीक सामाजिक सीमा पार करब

‘स्त्री सभ सामान्यतः रातिमे गाछी नहि जाइत’ कथनक तुरन्त बाद बाक प्रवेश वर्णित अछि। एहि विरोधसँ गामक लिंग-नियमक भीतर पात्रक विशिष्ट सक्रियता उभरैत अछि। भूतसभ हुनका अपन समकक्ष मानैत छथि, कारण हुनकर जीवन शोकसँ परिचित अछि। एकर अर्थ समाजक समस्त स्त्रीसभकेँ समान आवाज मिलि गेल नहि। बाक विशिष्टता सामूहिक नियमक अपवाद सेहो अछि, आ ओहि नियमपर प्रश्न सेहो।

पाँच पीढ़ीक अन्तराल

लत्तड़, कलित, बा, नन्द आ आरुणिक बाल-दृष्टि एक दीर्घ स्मृति-शृंखला बनबैत छथि। अध्याय एक समयमे दू नदी आ अनेक पीढ़ी जोड़ैत अछि, मुदा ई जोड़ प्रत्यक्ष जीवनीक पूर्ण विवरण नहि। वस्तु, वाक्य आ नामक उत्तराधिकारक सहारे कथा लम्बा अन्तराल लाँघि जाइत अछि। नन्द अपन पुरखाकेँ प्रत्यक्ष देखल बिना हुनकर चेतावनी अपन निर्णयमे अनुभव करैत छथि। एहि तरह कथास्मृति रक्तक जादुई धार आ सुनी-असुनी सामाजिक संस्कारक बीच दोलायमान अछि।

‘अज्ञात सीमा’क तीन तह

भूमि-विवादमे नदी मेड़ खा जाइत अछि, कागच ओकरा स्वीकार नहि करैत। श्रमिक-मृत्युमे पानि देह लैत अछि, अभिलेख नाम नहि मानैत। न्यायालयमे तारीख भेटैत अछि, मुदा न्याय टरैत रहैत अछि। बूढ़बाक संवाद तीनूकेँ ‘अज्ञात सीमा’क सम्बन्धित रूप बनबैत अछि। एहन आन्तरिक पुनरावृत्तिसँ कथा केवल जातीय इतिहास नहि, प्रशासनिक विलोपनक दीर्घ चक्र बनैत अछि। तथापि प्रत्येक युगक विशेष संस्थागत प्रक्रिया अलग जाँचब आवश्यक रहत।

आरुणिक बाल-दृष्टि आ भावी पाठक

बालक आरुणि गमछाक रंग मोन रखैत अछि; ओकरा पूरा ऐतिहासिक सन्दर्भ नहि बुझाइत। कथाकार भविष्यक शहरी दृश्य आ सिनेमा-पछातिक प्रश्नक संकेत देलनि। एहि पूर्वाभासमे बालकक सीमित अनुभूति आ कथावाचकक भविष्य-ज्ञानक अन्तर स्पष्ट अछि। एक रंग बादमे राजनीतिक छवि आ मृत्यु-सम्बन्धी प्रश्नकेँ जोड़त —ई कहनाइ भविष्यक कथा-धागा अछि, एखन घटित दृश्य नहि। बाल-अज्ञान पाठकक द्रुत निष्कर्षपर नियन्त्रण करैत अछि।

इतिहासक अलग-अलग स्थानिक कड़ी

सौराठक सभा, परतापुरक छाह, दरभंगा, कमला-बलान, गंगा आ अंग्रेजी राजक शहरसम्बन्धी खबर गामक स्थितिक अनेक पैमाना दैत अछि। स्थानीय विवाह-पद्धति, खेतक मेड़ आ औपनिवेशिक कागजक प्रणाली एकहि भूगोलमे पहुँचैत अछि। एहन विस्तार कथाक क्षेत्र बनबैत अछि, मुदा नामोल्लेख मात्रसँ प्रत्येक स्थल स्वतन्त्र घटनात्मक केन्द्र नहि बनैत। लेखक किछु स्थानक उल्लेख संकेत रूपमे, किछुक विस्तृत दृश्य रूपमे करैत छथि। एहि असमान कथन-घनत्वकेँ आलोचना चिन्हैत अछि।

अध्यायक निर्णय

‘दहिन कातक गाम’ एहि बातक समीक्षा अछि जे कथा कहाँसँ शुरू होइत अछि—नदीक दुर्घटनासँ कि ओहि घरसँ जाहिमे फाटल गमछा अपन नामक प्रतीक्षा करैत अछि। लत्तड़क चेतावनी, कलितक भाषिक कौशल, बाक अडिग श्रवण आ नन्दक आवेदन एकहि दीर्घ संरचनामे आबैत छथि। अध्यायक उपलब्धि अन्तरपीढ़ीगत संक्रमण अछि; सीमा ई जे बहुतेक नैतिक सम्बन्ध कथाकार स्वतः स्पष्ट करैत छथि, जे कखनो दृश्यात्मक अर्थ-निर्माणक स्वतन्त्रता घटबैत अछि। मुदा गमछा, बक्सा आ खुलल चाबी कथा केँ स्थिर देहगत केन्द्र दैत अछि।

प्रकरण १०४ | मूल अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

आवेदनक प्राप्तिसँ शुरू भेल प्रतीक्षा

सरकारी मोहरक ‘प्राप्त’ शब्दसँ अध्याय खुलैत अछि। प्राप्त होएब आ सुनल जाएबक बीच दूरी तुरन्त स्पष्ट भऽ जाइत अछि। नन्द आवेदन दैत छथि, मुदा कागच जेतेक ऊपर जाएत, ओतेक देरीसँ नीचाँ घुरत—लिपिकक व्यंग्य एहि प्रशासनिक समयकेँ नाटकीय बनबैत अछि। कथा दुर्घटनाक तीव्र क्षणसँ उठि फाइलक धीम, दीर्घकालिक

समयमे प्रवेश करैत अछि। छपाकक क्षणिक ध्वनि आब आवेदनक प्रतीक्षामे पसरैत अछि; ध्वनि छोट अछि, ओकर हिसाबक अवधि नमहर।

शीर्षकक रूपान्तरण : संख्या सँ चेहरा

‘हिसाब’ सामान्यतः गणना बुझबैत अछि, मुदा नन्दक कार्य देह, परिवार, गाम, जूता आ नामक सम्बन्ध जोड़ब अछि। प्रत्येक संख्याक पाछाँ एक अलग अनुभव अछि। एहि कारण शीर्षकक लेखाकर्म वित्तीय अथवा सरकारी लेखासँ भिन्न बनैत अछि। लेखनक उद्देश्य कुल मृत्यु बताबब मात्र नहि, मृत्यु-पूर्व जीवनक चिन्हारि पुनःस्थापित करब अछि। तथापि कथा स्वयं कतहु नाम पूर्ण नहि भेटबाक बात स्वीकार करैत अछि; एकर अभिलेखीकरण नैतिक अनिवार्यता अछि, सर्वज्ञ सूची नहि।

दफ्तरक दृश्यात्मक रचना

टीनक छत, चमकैत विकास-पट्ट, मंत्रीक फोटो, विदेशी कम्पनीक पारिवारिक प्रतिष्ठाक छवि, नील सुरक्षा-बही आ चाहक मेज—एहि सभ विवरणसँ दफ्तर एकटा राजनीतिक-नाटकीय मञ्च बनैत अछि। अधिकारी सभक संवाद छोट, फाइलक क्रिया नमहर। कागच उठब, पन्ना फेरब, अनुवाद बदलब, बैठक उठब—ई छोटी क्रियासभ कथामे संस्थागत हिंसाक गति बनबैत छथि। कोनो एक अधिकारीक भाषणसँ बेसी दफ्तरक वस्तुगत विन्यास व्यवस्थाक स्वरूप खोलैत अछि।

अनुवादमे अर्थक लोप

विदेशी परामर्शदाताक ‘हताहत संख्या प्रबन्धनीय’ प्रकारक कथन अनुवादमे ‘स्थिति नियन्त्रणमे’ बनैत अछि; स्थानीय श्रमिकक जोखिम मजदूरक नियम नहि मानबाक आरोप बनि जाइत अछि। किछु वाक्य त अनूदिते नहि होइत। ई भाषिक अन्तर केवल भाषा बदलबाक दुष्करता नहि; अर्थक उद्देश्यपूर्ण नरमीकरण अछि। पाठक मूल कथन आ अनुवादक संस्करण दुनू सुनैत अछि, तेँ ओकर जानकारी सभामे बैसल अनेक पात्रसँ अधिक अछि। एहि विषम जानकारीसँ विडम्बनात्मक कथन-दृष्टि बनैत अछि।

बिसेसरक पत्नी आ जूताक कथन

बिसेसरक पत्नी तिरपालक झोंपड़ीमे पतिसँ बाँचल जूता देखबैत छलीह। ‘काम छोड़ि चलि गेल’क प्रशासनिक दावाक समक्ष ई वस्तु गम्भीर प्रश्न बनैत अछि। जूता जँ बाँचि गेल अछि तँ दुर्घटनाक पूर्ण विवरण स्वतः सिद्ध नहि, मुदा अनुपस्थितिक सहज व्याख्या अस्थिर जरूर होइत अछि। स्त्री स्वयं वस्तु प्रस्तुत करैत छथि; ओ केवल नन्दक अनुसन्धानक दयापात्र नहि। हुनकर सीधा प्रश्न कथाक भावात्मक केन्द्र बनैत अछि।

मजदूर-टोला आ नामकरणक असमानता

अस्थायी शिविरमे बिहार, उड़ीसा, बंगाल, असम, नेपालक सीमांत आ अनेक दूरस्थ भूभागक श्रमिक छथि। कतेको व्यक्तिकेँ जाति, रूप, शारीरिक लक्षण वा उपनामसँ चिन्हल जाइत अछि। एहि नामकरणमे श्रमिकक सामाजिक अदृश्यता प्रकट अछि। नन्द जखन व्यक्तिगत नाम पूछैत छथि, तखन ओ संख्यात्मक व्यवस्था सँ एक कदम बाहर निकलैत छथि। मुदा पहचानकेँ पुनःरचबाक अधिकार नन्दक एकल निगाहमे सीमित रहबो आलोचनात्मक प्रश्न अछि—श्रमिक स्वयं कतबा कहि पबैत छथि?

महिलाक हाजिरी : अदृश्य श्रमक अभिलेख

नारिकेल पातपर मुनिया, सरयू, फुलकली, रजनी, जमुना, धनेसरी आदि नाम उभरैत छथि। दफ्तर एहि स्त्रीसभकेँ ‘परिवारक सदस्य’ कहि औपचारिक मजदूरीक बाहर रखैत अछि। नन्दक प्रतिवाद—जे बोरा ढोइत अछि से कर्मचारी—स्त्रीश्रमक दृष्टिगत प्रमाणक कथात्मक उद्घोष अछि। मुदा पातपर नाम उभरबाक जादुई घटना आ वास्तविक हाजिरी-पञ्जी सुधरबाक प्रशासनिक प्रक्रिया एक नहि। अध्याय एहि दूरीक संघर्ष देखबैत अछि, ओकर पूर्ण समाधान नहि।

नन्दक चरित्रक नैतिक परीक्षा

शशिभूषण देवक लिफाफा, पदोन्नतिक भविष्य आ परियोजनाक प्रतिष्ठा नन्दकेँ चुप करएबाक प्रयास करैत अछि। नन्द लिफाफा नहि खोलैत छथि, तकर गन्धक प्रसंग पुरखाक कथा सँ जुड़ैत अछि। अस्वीकारक दृश्य पात्रकेँ सरल निष्कलङ्क नायक बनबाक जोखिम उठबैत अछि, मुदा अगिला धमकी आ हाथक काँपन हुनकर भयकेँ जीवित रखैत अछि। साहस डरक अभाव नहि, डरक भीतर चलैत निर्णय बनैत अछि—एहि भेदसँ नन्दक चरित्र अधिक विश्वसनीय होइत अछि।

पत्र आ धमकीक विपरीत लेखन

नन्द आवेदन लिखैत छथि, संस्थान चेतावनी पठबैत अछि। धमकी-पत्रमे नाम लिखब बन्द करबाक आदेश अछि; नन्द ओकरा अपन डायरीमे चिपका दैत छथि। शत्रुक लेखन स्वयं प्रतिरोधक दस्तावेज बनि जाइत अछि। लिखित भाषा दुनू पक्षक हाथमे अछि, मुदा एक कात नाम मेटबाक शक्ति, दोसर कात ओकर निशान बचएबाक प्रयास। एहि दस्तावेजी प्रतिद्वन्द्वितामे कथा-पाठ स्वयं एक विस्तृत अभिलेखक अनुकरण करैत अछि।

जाँच-समितिक एकदिनी नाटच

समिति दिनमे अबैत अछि, मजदूर सभकेँ पहिने चुप रहबाक आदेश, सुरक्षा-टोपी एक दिन लेल बाँटल जाइत अछि, पीड़ित परिवारकेँ दूर रखल जाइत अछि। निरीक्षणक सार्वजनिक दृश्य वास्तविक श्रम-दिनक पुनरुत्पादन नहि, कैमरा लेल रचल दृश्य बनैत अछि। पाठक पहिनेक अन्हार शिफ्ट आ भीजल रस्साक जानकारी रखैत अछि, तेँ आयोगक ‘सन्तोषजनक’ निष्कर्ष गहन नाटकीय विडम्बना बनैत अछि। एहि ठाम दृश्य स्वयं ‘आधिकारिक साक्ष्य’क निर्माण-प्रक्रिया देखबैत अछि।

बरखाक राति : समयक तीव्रता

पुनः भारी बरखा, काम रोकबाक कागजी आदेश आ वास्तवमे जारी श्रम—एहि विरोधक बाद दुर्घटना घटैत अछि। हवा, लोहेक खड़खड़ाहट आ पानिक गर्जना वर्णनक गति तेज करैत अछि। नन्दक ‘काम बन्द करू’ पुकार आधा बाटमे डूबि जाइत अछि। सरयू नामक अस्पष्ट श्रवण दृश्यकेँ खुलल प्रश्न बनबैत अछि; ई प्रत्यक्ष पूर्ण नाम-पुष्टि नहि। लेखक ध्वनि, देह आ भ्रमक सीमान्तमे पाठककेँ रखैत छथि।

आधिकारिक सूचना फाड़बाक क्षण

‘कोनो प्रमुख क्षति नहि’ कहनिहार सूचना नन्द फाड़ैत छथि। सरकारी कागच फाड़ब केवल क्रोधक दृश्य नहि, एक पुराने संस्थागत विश्वासक टूटन अछि। मुदा कागच फाड़लासँ घटना अपनहि न्यायिक अभिलेखमे प्रवेश नहि

करैत। नन्द टुकड़ा समेटि डायरीमे राखैत छथि—विनाशक क्रिया तुरन्त अभिलेखीकरणमे बदलैत अछि। ई द्वि-क्रिया महत्त्वपूर्ण अछि: सरकारी भाषा अस्वीकार कएल जाइत अछि, मुदा ओकर हिंसक निशान सुरक्षित राखल जाइत अछि।

डायरीक आरम्भक अनेक स्तर

बिसेसर, छोटू आ सरयू नाम लिखलाक संग ‘छपाकक हिसाब’ आकार लैत अछि। छोटूक पूरा नाम एखन खोजबाक अछि, सरयूक रोजगारस्थिति सरकारी कागचमे अनुपस्थित अछि। अतः डायरी पूर्ण सूची नहि, जाँचक खुलल वस्तु अछि। कथा नामक प्रथम लेखनकेँ न्यायिक परिणाम नहि बतबैत। डायरीक महत्त्व ई अछि जे प्रत्येक आगामी संशोधन लेल जगह रहैत अछि। नामक सत्य आ नावक यात्रा दुनू अपूर्ण रहितो चलैत अछि।

लोकगीतक प्रत्युत्तर

अन्तिम नाविक-विरहाक गीत ‘छपाक गनू’क प्रतिरोध करैत ‘परिवार गनू’क आग्रह करैत अछि। गद्यक घटनामे प्रस्तुत वस्तु आ प्रश्न गीतमे सार्वजनिक टेक बनैत अछि। गीत उपन्यासक भाव-सारक नकल मात्र नहि; निजी शोककेँ साझा उच्चारणक रूप दैत अछि। मुदा गीतमे भावात्मक पूर्णता आ फाइलमे रहि गेल अस्पष्टताक अन्तर कायम अछि। एहि अन्तरकेँ नैतिक विजयक पूर्ण कथा बुझब अधीरता हएत।

प्रकरणक समग्र निर्णय

एहि अध्यायक मुख्य गति तत्काल दुर्घटनासँ लम्बा अभिलेखीय संघर्षक ओर अछि। अनुवादक नरमीकरण, मुआवजाक राजनीति, स्त्री-मजदूरक अनुपस्थिति, रिश्वत, धमकी आ डायरीक आरम्भ आपसमे जुड़ैत अछि। कथा कार्यालय, शिविर, गाम आ भूत-मञ्च बेरा-बेरी बदलैत अछि; ‘छपाक’ हरेक स्थानक साझा ध्वनि बनैत अछि। प्रमुख शिल्पगत उपलब्धि लिखित कागचकेँ घटनाक सक्रिय पात्र बनबैत अछि। जोखिम ई जे विस्तृत नैतिक व्याख्या कतहु-कतहु पात्रक अनुभवकेँ पहिने सँ नियोजित निष्कर्ष दिस मोड़ैत अछि; तथापि ठोस दृश्यसभ ओहि खतरा पर नियन्त्रण करैत छथि।

प्रकरण १०५ | मूल अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

शीर्षकक सङ्ख्यात्मक द्वन्द्व

‘तीस’ आ ‘तीन सय’ कथामे दुइ समान स्तरक प्रमाणित गणना नहि। सरकारी मृत्यु-सूची तीसपर सीमित अछि; नन्दक विस्तृत अनुसन्धान, मजदूरक स्मृति आ गामक प्रतिरोध तीन सय धरि फैलबाक दावा करैत अछि। शीर्षक एहि अन्तरकेँ शुद्ध अंकगणित नहि, नामक अधिकारक संघर्ष बनबैत अछि। संख्या छोट केलासँ मानवीय क्षति कानूनी जिम्मेदारीक बाहर जा सकैत अछि। मुदा विशालतर संख्याकेँ सेहो अन्तिम सत्य मानि लेलासँ उपन्यासमे प्रस्तुत अपूर्ण पहिचान, संशय आ खोजक प्रक्रिया उपेक्षित रहि जायत।

सरयूक अस्तित्वक उलटा अभिलेखन

सरयू अपन मृत पतिक नामपर बोरा ढोइत छलीह; मजदूरीक कागचमे पति उपस्थित रहैत छथि, जीवित श्रमिक स्त्री अनुपस्थित। एकहि उलटबाँसीमे लिंग, श्रम, विधवापन आ नामकरणक सत्ता उजागर होइत अछि। सरयूक

नामक कथन किसी सामान्य ‘स्त्री-मजदूर’ श्रेणीसँ अधिक सटीक अछि। कथामे आर्थिक सहभागी देह आ दस्तावेजी व्यक्ति अलग-अलग भऽ गेल छथि। एहि अन्तरालमे अन्यायक हिंसा बसेल अछि। नामक पुनर्लेखन केवल एक व्यक्ति जोड़ब नहि, श्रमक परिभाषा बदलबाक प्रश्न अछि।

वस्तुक वैकल्पिक वर्णमाला

बिसेसरक जूता, छोटूक गमछा, सरयूक कड़ा, मुनियाक स्लेट आ धनेसरीक कटोरी श्रमिकसभक जीवनक लघु अवशेष छथि। कथा एहि वस्तुसभकेँ ‘साक्ष्य’ कहैत अछि, मुदा ओकर कथात्मक शक्तिक दोसर अर्थ सेहो अछि —अनुपस्थित शरीरक आसपास स्मृतिक संवेदनात्मक केन्द्र बनब। प्रत्येक वस्तु व्यक्तिक श्रम, देहगत आदत अथवा परिजनसँ सम्बन्ध रखैत अछि। अदालतक औपचारिक स्वीकार्यता एखन विवादित अछि। साहित्यिक उपस्थिति आ विधिक स्वीकार्यताक एहि अन्तरकेँ मिलाबऽ देब शिल्पक जटिलता घटाओत।

नन्दक जाँचक क्रमिक गति

भोर धरि उनचास, तेसर दिन बहत्तर, सप्ताह भरिमे एक सय सात नाम—एहि बदलैत गणनाक उल्लेख खोजकेँ वास्तविक काल-अवधि दैत अछि। सम्पूर्ण सूची जादूसँ एक बेरमे प्रकट नहि होइत। किछु नाम पूर्ण, किछु आधा, किछु उपनाम वा गामक संकेत मात्र छथि। एहि अपूर्णताक स्वीकारसँ नन्दक डायरी विश्वसनीय कथात्मक उपकरण बनैत अछि। लेखक अत्यधिक रूपकक बीच मेहनत, पुनरावृत्ति आ संशोधनक साधारण क्रियाक स्थान बनौने छथि। ई धीम गति नैतिक श्रमक अनुभव बढ़बैत अछि।

सुव्यवस्थित कॉलमक विडम्बना

सरकारी सूचीमे क्रमांक, पिता, गाम, अनुमानित आयु आ मुआवजाक स्थिति साफ लिखल अछि। पृष्ठ-सज्जाक स्वच्छता सूचीकेँ अधिकारपूर्ण रूप दैत अछि, मुदा बिसेसरक पिता गलत आ स्त्रीसभ गायब छथि। कथाकार ‘साफ-सुथर’ दस्तावेजक दृश्यगत मोहकता आ सूचना-विलोपनक भीतरक हिंसाकेँ साथ रखैत छथि। पाठक सीखैत अछि जे व्यवस्थित रूप अवश्यंभावी रूपसँ सत्यक संकेत नहि। एहि दृश्यकेँ केवल भ्रष्ट अधिकारियोंक चरित्रचित्रण मानब पर्याप्त नहि; ई दस्तावेजक कथात्मक विश्वसनीयताक प्रश्न अछि।

पीड़िताक प्रतिप्रश्न

मुआवजा वितरणमे बिसेसरक पत्नी अपन लिफाफा लेबासँ पहिने छोटू आ सरयूक नाम पूछैत छलीह। एक सीमित व्यक्तिगत लाभकेँ ओ सामूहिक अनुपस्थितिसँ जोड़ैत छथि। नन्दकेँ बीचमे आबि ओकर प्रश्नक वैधता मानय पड़ैत अछि। एहि क्षणमे स्त्रीक बोल वस्तुतः सभाक केन्द्र बदलि दैत अछि: अधिकारी व्यक्तिगत भुगतानकेँ घटना समाप्त मानैत छथि, पीड़िता अन्य अनाम व्यक्तिसभक चिन्हारि उठबैत छथि। ई सामूहिक नैतिकता व्यक्तिगत शोकसँ उत्पन्न होइत अछि, बाहरसँ थोपल नारा नहि।

कैमरा आ ‘मुस्कान’क निर्मिति

प्रेसक फोटोमे स्त्री धूपक कारण आँखि सिकोड़ैत छलीह, मुदा प्रकाशित छविमे ओ मुस्कान रूपमे ग्रहण कएल जाइत अछि। ई दृश्य प्रायः अविश्वसनीय समाचारक उदाहरण मात्र नहि, दृष्टिकथनक तीक्ष्ण आलोचना अछि। पाठक वास्तविक क्षण देखैत अछि; फोटो-सम्पादित संसार दोसरा अर्थ देत। स्त्री अपन शोकक मालिक नहि रहि

जाइत, ओकर चेहरा प्रशासनिक सफलताक सार्वजनिक प्रमाण बनाओल जाइत अछि। एहि एक प्रसंगमे छवि, दर्शक आ सत्ता त्रिकोणीय सम्बन्धमे बन्हाइत छथि।

गाछीक गिनती आ मृतकक सामूहिक आवाज

बूढ़बाक निर्देश पर भूत-कबड्डीक नियम बदलैत अछि—पकड़ल व्यक्तिक नामक संग हिसाबो पूछल जाएत। आधिकारिक ‘पर्याप्त’ आवाज तीसपर रुकबाक आदेश दैत अछि, मुदा गिनती इकतीस सँ आगाँ चलैत अछि। ई दृश्य सामाजिक प्रतिरोधक अलौकिक रूप अछि। मृतक सभ कथामे संख्या बनबाकेँ अस्वीकार करैत छथि। तथापि भूतक गिनतीकेँ दफ्तरी मृत्यु-जाँचक निष्कर्ष मानब उचित नहि; ई कथामे दबाओल सामूहिक स्वरक दृश्यात्मक, जादुई प्रतिरोध थिक।

निर्माणक वैश्विक जाल

पुल केवल लोहेक पाया आ नदीक कात नहि, बैंक, बीमा, विदेशी पूँजी, परियोजना-प्रबन्धन आ मंत्रीक उद्घाटनक छविक बीच बनैत अछि। एहि संक्षिप्त वाक्य-समूहसँ स्थानीय दुर्घटनाक व्यापक संस्थागत आयाम खुलैत अछि। कथामे उत्पादनक अनेक स्तर उपस्थित छथि, मुदा सभक पूर्ण आर्थिक इतिहास प्रस्तुत नहि। आलोचनाकेँ वैश्विक पूँजीक संकेत आ विशिष्ट प्रमाणित लेनदेनक भेद स्पष्ट राखबाक चाही। उपन्यासक प्राथमिक कार्य एक पीड़ित श्रमिकक अदृश्य देहकेँ एहि चमकदार संस्थागत दृश्यसमूहक बीच उपस्थित करब अछि।

परियोजना-प्रमुखक ‘सत्य’क पुनर्परिभाषा

शशिभूषण देव सत्यकेँ दार्शनिक शब्द कहि निर्माण-प्रबन्धनसँ अलग करैत छथि। नन्द ओकर उत्तरमे पायामे भरल मृतकक छविसँ कथनक धरातल बदलैत छथि। वैचारिक प्रतिवाद एतय शुद्ध विचार-विमर्श नहि, श्रमिक-मृत्यु आ निर्माण-संरचनाक वास्तविक सम्बन्ध पर टिकल अछि। पायाक भीतर ‘लाश’ कहब साहित्यिक आरोपक तीव्र रूप अछि; एकरा सम्पूर्ण पायामे प्रत्यक्ष शव गाड़ल होएबाक तथ्यगत घोषणा मानल नहि जा सकैत। पात्रक भाषा शोकक दबावमे अतिशयित अछि, आ इएह ओकर कलात्मक भूमिका अछि।

फाइलक ताला आ आवाजक तीन संस्करण

नन्दक फाइल अलग आलमारीमे बन्द कएल जाइत अछि। रातिमे भीतरसँ आवाज अबैत अछि: चौकीदारक आशङ्का, दफ्तरक ‘चूहा’ आ नन्दक ‘नाम’—एकहि ध्वनिक तीन अर्थ बनैत अछि। ई अर्थ-विभाजन उपन्यासक कथन-दृष्टिक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। कथाकार आवाजक अन्तिम प्राकृतिक कारण हरबेर तय नहि करैत; सुननिहारक भय, हित आ अनुभवकेँ कथ्य बनबैत अछि। एतय अनिश्चितता कमजोरी नहि, बहुव्याख्यात्मकता अछि।

आधिकारिक न्याय आ लोक-अदालतक भेद

बिसेसरक पत्नीक प्रश्नपर नन्द कहैत छथि जे मृतकक परिवार ठाढ़ भेल ठाम अदालत शुरू होइत अछि। ई भावात्मक-नैतिक अदालत, वास्तविक विधिक अदालतक विकल्प नहि बनि जाइत। एहि कथनमे अन्यायक अनुभवकेँ सार्वजनिक सुनवाइक पात्र बनएबाक आग्रह अछि। साहित्यक नैतिक न्याय आ संस्थागत निर्णयक

बीच दूरी रहैत अछि; एही दूरीक कारण अगिला न्यायिक संघर्ष आवश्यक बनैत अछि। जँ सब न्याय एहने घोषणासँ सम्पन्न भऽ गेल होइत तँ कथा एतय समाप्त भऽ जाइत।

सङ्ख्या आ स्मृति-वस्तुक सम्बन्ध

नाम गिनबाक संग नन्द जूता, गमछा, हँसी, खाँसी आ गामक चिन्ह जोड़ैत छथि। एहि पद्धतिमे संख्या केवल गणितीय चिह्न नहि, जीवनक अनेक अवशेषक निर्देश बनैत अछि। प्रत्येक संकेत व्यक्तिक अनन्यता बतबैत अछि; मुदा ओकरा जोड़ि ‘पूर्ण’ मनुष्य पुनःनिर्मित कऽ लेब सम्भव नहि—कथा एहि सीमा केँ स्वीकार करैत अछि। स्मृतिलेखनक नैतिकता व्यक्तिक अनुपस्थिति मेटब नहि, ओकर अनुपस्थितिक कारण आ सम्बन्धकेँ भूलल नहि देब अछि।

अधूरी विजयक शिल्प

अध्याय सरकारी सूचीक तीसपर अडिग रहब आ नन्दक विस्तृत संग्रहक बीच समाप्त होइत अछि। ई द्वन्द्वक तत्काल समाधान नहि दैत। किछु परिवार मुआवजा पबैत छथि, अनेक बाहर रहैत छथि; सार्वजनिक दृश्य सफलताक अछि, निजी स्मृति शोकक। एहन असमान परिणाम शोकान्तिकाक समय बढ़बैत अछि। विजयक सजावटी घोषणासँ बचल ई अन्त पाठककेँ अगिला कार्यवाहीक आवश्यकता अनुभव करबैत अछि।

प्रकरणक समग्र मूल्यांकन

‘तीस नाम, तीन सय लाश’ अध्यायमें गणना, नाम, दृश्य आ दस्तावेजक चारि भिन्न व्यवस्था परस्पर भिड़ैत छथि। सरयू, बिसेसरक पत्नी, नन्द, अधिकारी, कैमरा आ भूतसभ एकहि असमान सत्यक अलग-अलग अंश प्रस्तुत करैत छथि। रचनाक उपलब्धि सूचीबद्ध संख्याकेँ सामाजिक कथा बनाबब अछि। सीमा ई जे ‘तीन सय’क व्यापक दावाक व्यक्तिगत पुष्टिक्रम पाठमे अभी सम्पूर्ण नहि; आलोचना एहि अन्तरकेँ अक्षुण्ण रखैत अछि। एहि प्रकार अधूरी गिनती समूचा उपन्यासक एक महत्त्वपूर्ण नैतिक-आख्यानात्मक तनाव बनि उठैत अछि।

प्रकरण १०६ | मूल अध्याय ५ — तारीखक गोहि

नदीक दृश्यतासँ अदालतक अदृश्यता धरि

अध्यायक उद्घोषमे घाटपर पानि देखाइत अछि, मुदा अदालतक ‘तारीखक पानि’ आँखिसँ नहि देखाइत। ई स्थानान्तरण गोहिक रूपककेँ जैविक प्राणीसँ संस्थागत विलम्ब धरि बढ़बैत अछि। पिछला अध्यायक तात्कालिक दुर्घटना एतय एक दीर्घ, प्रायः नीरव क्षय बनैत अछि। जीवित परिवारक उमेर घटैत अछि, वादक तारीख बढ़ैत अछि। एहि असमान समय-गतिक कारण न्यायक प्रतीक्षा स्वयं कथामे हिंसाक एक प्रकार बनि उठैत अछि।

सुनवाइक आवर्तन आ कथा-अवधि

पहिल, दोसर, तेसर, चौथी, पाँचमी, छठी आ सातमी तारीखक अलग-अलग कारण गनाओल गेल अछि—रिकॉर्ड अनुपलब्ध, न्यायाधीशक अवकाश, वकीलक हड़ताल, फाइलक स्थानान्तरण, विशेषज्ञताक आवश्यकता। प्रत्येक तारीखक कारण भिन्न, परिणाम समानः स्थगन। एहन पुनरावृत्ति कथाक गति जानि-बुझि धीम करैत अछि।

पाठक समयक थकान सुनैत नहि, अनुभव करैत अछि। समय बीतब मात्र नायकक आन्तरिक परिवर्तन नहि; पीड़ित परिवारक जैविक आयुक विनाश सेहो अछि।

देवकीनन्दन चौबे : मध्यस्थक जटिलता

वकील चौबे नन्दक लाओल वस्तुसभ देखि पहिने संकोच करैत छथि, फेर याचिका तैयार करैत छथि। ओ विधिक भाषाक बान्हक भीतर सम्भव बाट खोजैत छथि; नन्द ओहि बान्हक अपूर्णता पर प्रश्न करैत छथि। चौबेकेँ केवल निर्जीव ‘व्यवस्थाक प्रतिनिधि’ कहब अधूरा हएत। हुनकर असहजता, सम्मान आ डर पात्रक नैतिक द्विविधा बतबैत अछि। विधिक भाषा नन्दक शोककेँ संस्थागत प्रवेश दैत अछि, मुदा प्रवेश केनाइ आ निर्णय भेटब अलग घटना अछि।

मुकदमाक भाषिक पुनःरचना

‘मृतक-सूची पुनरीक्षण’, ‘स्वतन्त्र जाँच’, ‘स्त्री-मजदूरक मान्यता’, ‘मुआवजा-धोखाधड़ी’ आ ‘सुरक्षा-उपेक्षा’—ई याचिकाक पदसमूह निजी दुःखकेँ सार्वजनिक विधिक माँग बनबैत अछि। घटनाक अर्थ बदलैत अछि: एक मजदूरक जूता अखन व्यक्तिगत शोकक वस्तु, मुदा समूचा याचिका एहि अवशेषकेँ संस्थागत दायित्वक प्रश्न बनबैत अछि। लेखक एहि अनुवादक प्रक्रियाकेँ पूर्ण विजय नहि देखबैत; याचिका दाखिल भेला पर दोसर कथा शुरू होइत अछि।

‘भावुक अभियन्ता’क आरोप

विदेशी कम्पनीक वकील नन्दक स्थानान्तरण आ व्यक्तिगत पीड़ाकेँ उठाकऽ हुनकर गवाहीक विश्वसनीयता कमजोर करब चाहैत छथि। ई चरित्र-निर्माणक उलटा प्रक्रिया अछि: नन्दकेँ साक्षी सँ असन्तुष्ट कर्मचारी बनाओल जाइत अछि। पाठक हुनकर पहिल श्रमस्थलीक दृश्यसभ देख चुकल अछि, तेँ विरोधी वर्णनक चयनात्मकता चिन्हि सकैत अछि। एहि द्वि-परिप्रेक्ष्यक कारण अदालत कथामे सत्यक स्वतः उद्घाटक मञ्च नहि रहैत; ओ परस्पर संघर्षरत कथा-विन्याससभक क्षेत्र बनैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनक वकालतक विकास

बटुकनाथक चिक्कन भाषण, तारीख खिंचबाक कौशल आ उच्च प्रतिष्ठाक समानान्तर बढ़ोत्तरी चरित्रक प्रतिलोम निर्माण अछि। ओही कौशलसँ कमजोरक पक्ष सेहो लेल जा सकैत छल, मुदा एतय कौशल प्रतिपक्षक थकान बढ़बैत अछि। अदालतक ‘प्रेत’क रूपक बटुकनाथक भविष्यक नैतिक अवनतिक पूर्वाभास बनैत अछि। तथापि कागच पर लिखल प्रत्येक स्थगनक एकमात्र कारण बटुकनाथकेँ मानब गलत हएत; न्यायिक संस्थानक अनेक स्वायत्त बाधासभ कथामे उल्लिखित अछि।

चोरी भेल फाइल आ प्रतिलिपिक कथा

चौबेक दफ्तरमे ताला बिना टूटने फाइलक क्रम बदलल, जूताक फोटो गायब आ सरयूक अंगूठावला पन्ना अदला-बदली भेल। एहि दृश्यसँ अपराधक प्रत्यक्ष हिंसा कागचक व्यवस्थापनमे बदलैत अछि। बाक लग राखल दोसर प्रति मूल अभिलेखक हानि रोकबाक साधन बनैत अछि। ‘एक प्रति माय लग’ काजक सघन सूत्र अछि;

मातृस्मृतिकेँ व्यावहारिक प्रतिलिपि-रक्षासँ जोड़ल गेल अछि। कथा केवल अलौकिक स्मृति नहि, वास्तविक बैकअपक महत्त्व सेहो देखबैत अछि।

सत्यव्रत मेहताक अस्थिर स्थान

सत्यव्रतक प्रवेश सरकारी वकील/सेवकक भूमिकाक संग होइत अछि; ओ नन्दकेँ अनेक प्रति बनएबाक सलाह दैत छथि आ सरयूक अंगूठावला पन्ना निजी डायरीमे राखैत छथि। हुनकर सार्वजनिक पद आ निजी आन्तरिक असहमति एकसाथ उपस्थित अछि। ई पात्र एखन पूर्ण खुलल गवाह नहि बनल; हुनकर संकोच आगामी कथाक आधार अछि। कथाकार मौनक भीतर सक्रिय स्मरणक बीज रोपैत छथि। एहि दोहरी उपस्थिति सँ चरित्रक नैतिक तनाव निर्मित होइत अछि।

बिसेसरक जूताक पुनरावर्तन

मालखानामे पानि घुसलापर जूतासँ ‘छपाक’ टपकैत अछि। ई ध्वनि पुलक दुर्घटना पुनः उपस्थित करैत अछि, बिना कि मृतक जीवित घुरि अबैत अछि। जूता वस्तु-अवशेषसँ ध्वन्यात्मक कथावाचक बनैत अछि। मालखानाक कर्मचारीक ‘कचरा’ आ नन्दक ‘गवाही’ शब्दक विरोध वस्तुक मूल्याङ्कनक दू दृष्टि थिक। दृश्य कथाक जादुई संवेदनाकेँ वस्तुगत वातावरणसँ अलग नहि करैत, तेँ ध्वनिक अनुभवक बहुव्याख्या सम्भव रखैत अछि।

समाजक समय आ अदालतक समय

न्यायाधीश बदलैत छथि, पेशकार बदलैत छथि, सरकारी अधिवक्ता बदलैत छथि; बा वृद्ध होइत छथि, मृतकक बच्चा जवान होइत छथि, किछु परिवारक सदस्य मरि जाइत छथि। मुदा फाइलक लाल फीता वैह रहैत अछि। कथा संस्थानक समयकेँ स्थिर बाह्य रूप आ जीवनक समयकेँ अपरिवर्तनीय हानिक रूपमे रखैत अछि। एहि समांतरता सँ कालचक्रक यथार्थपूर्ण हिंसा स्पष्ट होइत अछि। कानूनक औपचारिक निरन्तरता सामाजिक जीवनक जीवित निरन्तरताक गारंटी नहि बनैत।

बाल-समूहक नाम-पाठ

नन्द बच्चासभकेँ बिसेसर, सरयू, मुनिया, धनेसरी, भोलटुन आदि नाम पढ़ब सिखबैत छथि। आधिकारिक सूची तीस पर रुकैत अछि, बालसमूह तीन सय धरि गनैत अछि। ई घटनामे गीत, खेल आ शिक्षण एक होइत अछि। स्मृति व्यक्तिक निजी डायरीसँ अनेक कण्ठक सामूहिक पाठ बनैत अछि। मुदा बच्चासभक रटल नाम अपने-आप प्रत्येक मृत्यु-प्रसंगक पूर्ण सत्य नहि बनैत। स्मृति परम्पराकेँ प्रश्न आ सुधारक अवसर चाही—एहि कठिनाइकेँ आलोचना अनदेखा नहि करैत।

धमकीक माटिमे रोपाइ

दोसरी धमकी बिसेसरक जूताक भीतर भेटैत अछि। बा ओकरा जरा नहि दैत छथि; तुलसीक गमलामे गाड़ैत छथि। एतय धमकी कागचक वस्तुसँ गाछक स्मृतिमे बदलैत अछि। एहि दृश्यकेँ शाब्दिक विधिक प्रक्रिया नहि, घरेलू प्रतिरोधक प्रतीकात्मक क्रिया बुझब आवश्यक अछि। भयकेँ नष्ट करबाक बदला ओकर चिन्ह राखब स्मृतिक संकल्पक अनुरूप अछि। मृतकक जूता, जीवितक भय आ माटिक गमला एकटा छोट साझा मंच बनबैत छथि।

डिजिटल ठगीक पूर्व-संकेत

चन्द्रपाल बत्राक भावी ऑनलाइन जाल, बटुकनाथक दराज आ सत्यव्रतक निजी पन्ना अदालतक बरामदासँ जुड़ैत छथि। ई भविष्यगत संकेत कथाक दीर्घ संरचना विस्तारैत अछि। मुदा चन्द्रपालक भविष्यक अपराध एखन जतेक कथाकार कहैत छथि, ओतेक वस्तुगत घटनाक रूपमे सामने नहि आयल। पाठककेँ कालगत अलगाव मोन राखबाक चाही, नहि तँ घटना, अनुमान आ पूर्वाभासक भेद मेटि जायत। ‘तारीख’ सँ ‘स्क्रीन’ धरि गोहिक रूपान्तर एकटा योजनाबद्ध अन्तरकथात्मक सेतु बनैत अछि।

भूत-कबड्डीमे न्यायिक भाषा

भूतसभ ‘अदालत’, ‘तारीख’, ‘रिकॉर्ड नहि’, ‘प्रति अछि’, ‘समय खत्म’, ‘स्मृति बाकी’ जकाँ परस्पर वाक्य बजैत छथि। संवाद सघन, लगभग नाटकीय अछि। जीवित नन्दक छाह खेलमे प्रवेश करैत अछि, मुदा ओकर वास्तविक देह एखन न्यायिक संघर्षमे अछि। एहि रूपक-कबड्डीमे सरकारी वाक्यक नीरसता सामुदायिक प्रत्युत्तरक लय बनैत अछि। न्यायिक भाषाकेँ खेलक स्वरूप देब असम्भव लगैत छल, मुदा उपन्यास ओकर क्रूर आवर्तनकेँ श्रवणीय कऽ दैत अछि।

अध्यायक अन्त आ आलोचनात्मक निर्णय

फाइल बन्द भेला पर कथा समाप्त नहि होइत—ई निष्कर्ष अध्यायक संरचनात्मक नियम अछि। उद्घाटनक फीता, ताली, अखबारी विकासक दावाक विपरीत नन्दक डायरी आ बालगीत चलैत रहैत अछि। ‘तारीखक गोहि’ सामाजिक समयकेँ भक्षकक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, मुदा पीड़ित परिवारसभक वास्तविक क्षतिक निरन्तर दृश्य एकरा मात्र अमूर्त रूपक बनबाक नहि दैत। अध्यायक उपलब्धि प्रतीक्षाक समयकेँ पात्र-सापेक्ष कथा बनाबब अछि; आलोचनात्मक सीमा ई जे दीर्घ स्थगनक प्रत्येक प्रक्रियात्मक कारणक चरित्रगत जिम्मेदारी समान नहि अछि।

प्रकरण १०७ | मूल अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

कथा-स्थानक आकस्मिक वैश्वीकरण

चन्ना गाछी, गंगा-पुल आ भारतीय अदालतक बाद कथा हार्वर्डक उज्जर सभागारमे पहुँचैत अछि। बाहर हिमपात, भीतर गरम प्रकाश, परिचय-पत्र आ चमकैत स्क्रीन—एहि स्थान-विस्तारसँ पूर्वक श्रम-शोक अचानक संस्थागत प्रतिष्ठाक अन्तर्राष्ट्रीय मञ्चपर आबैत अछि। दूरस्थ स्थल केवल विलासक विरोधी चित्र नहि; ओहि ठाम पुरान पुलक छवि सार्वजनिक नैतिक प्रमाण बनाओल जा रहल अछि। गामक स्मृति आ विश्वविद्यालयक अभिलेख एक-दोसरासँ अनजान रहितो एकहि वस्तुक अलग इतिहास वहन करैत छथि।

ईरा आरुणिक कथन-दृष्टि

ईरा पाछाँ बैसलि छथि, सभागारक आडम्बर देखैत छथि, मुदा हुनकर कानमे ‘छपाक’ सुनाइ पड़ैत अछि। पाठक मुख्यतः हुनकर अनुभवक मार्गसँ मञ्चक विरोधाभास देखैत अछि। ईरा विदेशमे जन्मल पीढ़ीक प्रतिनिधि होइतो लोककथाक निष्क्रिय श्रोता नहि; पारिवारिक स्मृति, डिजिटल दस्तावेज आ तत्काल प्रश्नकेँ जोड़ैत छथि। हुनकर

शङ्का आ अध्ययन धीरे-धीरे विकसित होइत अछि। प्रश्न पुछलाक पूर्व हुनका सम्पूर्ण उत्तर ज्ञात अछि, एहन नहि; ई अनिश्चितता पात्रक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

ब्रूमक कम्पनी-छवि आ समयक छल

एडवर्ड ब्रूमक कम्पनी अनेक नाममे फैलल—आधारभूत संरचना, स्वास्थ्य, रक्षा-परामर्श, डिजिटल भुगतान, नैतिकता-सम्बन्धी संस्थान। नाम बदलैत अछि, मूल्य अटल अछि—एहन सार्वजनिक वक्तव्य पिछला पुल-दुर्घटनाक स्मृतिसँ टकराइत अछि। कथामे निगमक ब्राण्ड-परिवर्तन एकटा नकाबक क्रम बनैत अछि। मुदा एहि नामोल्लेखकेँ प्रत्येक संस्थानक प्रत्येक अपराधक पृथक पुष्ट प्रमाण मानल नहि जा सकैत। उपन्यास वैश्विक प्रतिष्ठाक कथा-निर्माण आ पूर्वक दुर्घटनाक असमान स्मृति उजागर करैत अछि।

चौठम स्लाइडक नाटकीय कार्य

ब्रूमक प्रस्तुतीकरणमे पुरान भारतीय पुलक छवि, ‘न्यूनतम दुर्घटना’ आ स्वतन्त्र सुरक्षा-परीक्षणक दावा आवैत अछि। ईराक स्मृतिक भीतर एक भिन्न नदी बहैत अछि। एकटा दृश्य-सामग्री दू अर्थ दैत अछि—प्रायोजक लेल सफलता, उत्तराधिकारिणी लेल मेटाओल मृत्यु। एहि द्वैध पाठनमे प्रक्षेपित छवि कथाक मुख्य वस्तु बनैत अछि। पाठक न त स्लाइडकेँ तटस्थ तथ्यचित्र मानैत, न ईराक पहिल शङ्काकेँ सम्पूर्ण निर्णीत परिणाम; टकरावक कथा फेर सँ जाँच माँगैत अछि।

सार्वजनिक प्रश्न आ उत्तरक स्थलान्तरण

ईरा पुलक वास्तविक मृत्यु-संख्या पूछैत छलीह। ब्रूम संस्थागत सिद्धान्तक उत्तर दैत, निदेशिका एलिना ग्रेव्स विशेष प्रश्नकेँ ‘व्यापक उत्तरदायित्व’ दिस मोड़ैत छलीह। संवादमे सत्ता मौनसँ मात्र नहि, प्रश्नक विषय बदलि उत्तर दैत अछि। जखन ईरा स्थानीय अभिलेखक सत्यतापर प्रतिप्रश्न करैत छलीह, तखन सभागारक सभ्य चर्चा क्षणभरि असहज होइत अछि। ई शिष्टाचारक पर्दाक भीतरक संघर्ष थिक, तत्काल प्रत्यक्ष अपराध-स्वीकृति नहि।

शरीरमे रिसैत पानिक जादुई छवि

ब्रूमक ‘मानक’ आ ‘नैतिकता’ कहबाक बीच टेबुलपर पानिक बून्द, रेत आ देवनागरी-सन रेखा देखाइत अछि। ई अलौकिक घटक सभागारक बाहरी स्वच्छताकेँ भेदि गंगाक गाद प्रवेश करबैत अछि। एतय पानि कथानकक नैतिक विडम्बनाक दृश्यात्मक भौतिकी बनैत अछि। पाठक कथनक एहि जादुई स्तरकेँ सरयू वा मृत मजदूरक आत्माक अदालती बयानसँ गड्डमड्ड नहि करबाक चाही; एकर शक्ति एहि ठाम दबाओल स्मृतिक अनपेक्षित दृश्य-उपस्थिति अछि।

राघव सोमानी : निगरानीक समानान्तर दृश्य

मञ्चपर नैतिकताक चर्चा चलैत काल राघव सोमानीक फोनपर गोपनीय सन्देश जाइत अछि। ‘पुरान पुलक स्लाइड पर प्रश्न’, ‘भारत टीम सावधान’ जकाँ संक्षिप्त वाक्य संवादक सार्वजनिक आ निजी परत बनबैत अछि। ईरा खुला प्रश्न पूछैत छथि; राघव तुरन्त सूचनाकेँ नियन्त्रणक सञ्जालमे पठबैत छथि। कथाकार पाठककेँ ईरा सँ अधिक जानकारी दैत छथि, मुदा गोपनीय सन्देशक सभ परिणाम एखन सामने नहि। एहि विषम जानकारीसँ निगरानीक भय उत्पन्न होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा आ बटुकनाथक दूरस्थ अन्तःसम्जाल

बत्राक लैपटॉपमे पुलक पुरान फोल्डरक संग खेल-ऐप, म्यूल खाता, डिजिटल गिरफ्तारी-धमकी आ ऋणक नूतन प्रसंग छथि। बटुकनाथ विवाह-समारोहमे विधि-व्यवस्थाक भाषण दैत छथि, संग मेजपर संदिग्ध लिफाफा अछि। दुनू पात्रक दृश्य संक्षिप्त, मुदा सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ गुप्त जालक पुनरावृत्ति स्पष्ट अछि। ईराक प्रश्नक बाद हुनकर तत्परता कथामे कथ्यगत सम्बन्ध बनबैत अछि; प्रत्येक लेनदेनक सम्पूर्ण अपराध-शृंखला एखन निर्णीत नहि।

सत्यव्रतक ‘यदि’ आ मौनक नैतिकता

दिल्लीमे सत्यव्रत सरकारी ब्रीफ पढ़ैत, मूल नामावली मँगएबाक टिप्पणी लिखैत छथि, मुदा ‘यदि उपलब्ध हो’ जोड़ि अपन संकोच देखैत छथि। एक छोट शब्द पात्रक आन्तरिक द्वन्द्व खोलैत अछि। सरकारी सेवाक दबाव, पुरान फाइलक दीर्घ इतिहास आ निजी विवेक एकहि क्षणमे उपस्थापित होइत अछि। नायकत्वक उग्र घोषणा बिना कथाकार मौनक भीतरक असन्तोष बनबैत छथि। ‘सत्यापन आवश्यक’क दोहरी रेखा भविष्यक निर्णयक बीज अछि, तकर पूरा परिणाम एखन शेष अछि।

वैश्विक आलोचना आ घरक ई-मेल

ईराकेँ बाक पुरान मेल आ नन्द आरुणिक स्कैन कएल पन्ना भेटैत अछि। ई क्षणमे मौखिक लोकस्मृति डिजिटल प्रतिमेमे बदलैत अछि। गामक कथा विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे पुनःपाठित होइत अछि। ईरा दस्तावेज पढ़ैत छलीह, मुदा ओहि पन्नासँ स्वतः पूर्ण न्यायिक निष्कर्ष नहि निकालैत; ओ प्रोफेसरकेँ सार्वजनिक प्रश्न उठएबाक अनुरोध पठबैत छथि। क्रियाक ई सावधान क्रम—मेल खोलब, सम्बन्ध देखब, प्रश्न तैयार करब—पात्रक निश्चयक विकास बनबैत अछि।

अनाम डिजिटल मृतकक आगमन

चन्ना गाछीमे एक नव आत्मा मोबाइल लेने अबैत अछि; ओकर मृत्यु नदीमे नहि, खेल, ऋण, फोनपर पुलिसक रूप धरल धमकी आ सामाजिक भयसँ जुड़ल कहल गेल अछि। एहि पात्रसँ गोहिक रूपक देहक जलसमाधिसँ डिजिटल अपमानक क्षितिज धरि पसरैत अछि। परम्परागत पनिडुब्बी सेहो एहि नव मृतकक अनुभवक सोझाँ चुप पड़ैत छलीह। ई रचना-क्षण पुरान लोकविश्वासक सीमाकेँ प्रदर्शित करैत अछि; नव हिंसाकेँ बुझबाक लेल भूतसभकेँ सेहो नव कथा सीखय पड़ैत अछि।

‘प्रतिशत’ बनाम ‘नाम’

भूतसभक काली स्क्रीनपर ‘प्रतिशत’ शब्द चमकैत अछि। हुलासी एकरा नाम नहि, भूख कहैत छलीह। आर्थिक गणना आ व्यक्तिगत चिन्हारिक भेद एका-एक प्रत्यक्ष होइत अछि। मृतकक समुदाय नाम जोड़ैत अछि, लाभक जाल प्रतिशत गनैत अछि। ई तीक्ष्ण विरोध उपन्यासक केन्द्रीय प्रतीककेँ पुनर्स्थापित करैत अछि। मुदा आर्थिक संकेतसभक भीतर वास्तविक दर, अनुबन्ध आ लेनदेनक ब्यौरा एखन अपूर्ण अछि; रूपक एकर कथा-भूमिका स्पष्ट करैत अछि, वित्तीय विश्लेषणक प्रतिस्थापन नहि।

तीन शहरक समकालिकता

अन्तिम अनुक्रममे हार्वर्डमे ईराक उत्तरक प्रतीक्षा, दिल्लीमे सत्यव्रतक मूल अभिलेख मँगएबाक तैयारी आ चन्द्रपालक पुरान परिवारक खोज साथ-साथ चलैत अछि। एकहि भोरक भीतर तीन भिन्न उद्देश्य सक्रिय छथि। गढ़ नारिकेल एहि तीनूकेँ स्मृतिक साझा केन्द्र बनबैत अछि। कथाकार समकालिक दृश्य-सम्पादनक सहारे दूरस्थ क्रियासभकेँ निकट अनुभव करबैत छथि। एहि तकनीकसँ सम्पूर्ण विश्व एकहि गाम बनि जाइत अछि, एहन सरल निष्कर्ष नहि; दूरी दुनू अर्थमे रहैत अछि—भौतिक आ शक्ति-सम्बन्धी।

लोकगीत आ नैतिक विडम्बना

अध्यायान्तक गीत हिमपात, सभागारक प्रकाश आ पायाक रक्तकेँ एकसाथ उच्चरैत अछि। मंचक ताली पर नामक पुकार आरोपित होइत अछि। ई गीत घटना-द्वारा उभरल विरोधकेँ सार्वजनिक शोकस्वर बनबैत अछि। तथापि गीतक तीव्र अभियोग आ घटनाक स्तरित दस्तावेजी खोजक अन्तर रहैत अछि। आलोचनाकेँ गीतक क्रोधकेँ कथा-प्रवृत्तिक एक वास्तविक स्वर मानबाक चाही, बिना कि ओकर प्रत्येक आरोप न्यायालयमे सिद्ध घटना बनि जाए।

अध्यायक समग्र मूल्यांकन

‘हार्वर्डक एथिक्स’ उपन्यासक असाधारण स्थान-विस्तारक अध्याय अछि। एक दृश्य-माध्यममे गंगा-पुलक प्रतिष्ठाक छवि, दोसरमे स्कैन कएल पन्नाक शोक-स्मृति; एक कण्ठमे वैश्विक नैतिकता, दोसरमे ईराक विशिष्ट मृत्यु-सङ्ख्याक प्रश्न। साथे दिल्लीक सरकारी फाइल, बत्राक सन्देश आ गाछीक नव डिजिटल मृतक कथा केँ बहुकेन्द्रीय बनबैत अछि। उपलब्धि ई बहुस्तरीय नाटकीय विरोध अछि। सीमा ई जे कथा कखनो नैतिक विडम्बनाकेँ अत्यधिक प्रत्यक्ष रूपकसँ दुहरबैत अछि, जकर तुलनामे ईराक शान्त ई-मेल अधिक मार्मिक बनैत अछि।

प्रकरण १०८ | मूल अध्याय ७ — श्वासक भाव

पानिसँ हवामे डूबबाक कथा

‘श्वासक भाव’ अध्यायमे पुरान जलसमाधिक स्वरूप बदलैत अछि। शरीर नदीमे नहि खसैत; हवा, रोग, अस्पताल आ ऑक्सीजनक अभावक बीच जीवन सङ्कटमे पड़ैत अछि। पनिडुब्बीक प्रश्न—हवामे डुबौनिहार ई कोन रोग—पुरान लोकज्ञानक सीमा चिन्हित करैत अछि। ई केवल महामारीक प्रामाणिक इतिहास लिखबाक अध्याय नहि; ‘डूबब’ क्रियाक अर्थ-विस्तारक आख्यान अछि। पानि आ श्वास एकहि जीवन-माध्यमक भिन्न रूप बनैत छथि, मुदा हुनकर भौतिक कारण सभकेँ एक करि देब कथात्मक त्रुटि हएत।

२०२०क रिक्त सार्वजनिक समय

रेल ठाढ़, सड़क सून्न, खिड़कीक पाछाँ बसन्तक फूल, दूर एम्बुलेंसक आवाज—ई दृश्य महामारीक सामूहिक समय गढ़ैत अछि। पूर्व अध्यायक दीर्घ न्यायिक प्रतीक्षाक विपरीत एतय रोगक भय तीव्र गति राखैत अछि। लोक घरमे सीमित, मुदा मोबाइलक समाचार अनेक गति सँ पहुँचैत अछि। खाली सड़क आ भरल अस्पतालक विरोध

संसारक असमान क्रियाक्षमता देखबैत अछि। एहि सामूहिक कालपृष्ठभूमिमे व्यक्तिगत पात्रसभक अनुभव अलग रहब महत्त्वपूर्ण अछि।

आरुणि नन्दन आ बच्चीक प्रश्न

दिल्लीमे आरुणि नन्दन अपन बेटी अनन्याक मास्क-सम्बन्धी प्रश्नक सहज उत्तर नहि दऽ पबैत छथि। बच्ची भूतसभक मास्कक कल्पना करैत छलीह; पिता जीवित लोकक आधा ढकल चेहरा देखैत छथि। एहि दृश्यमे महामारीक दृश्य-अनुभव पारिवारिक संवाद बनैत अछि। बच्चीक प्रश्न घटनाक भोली व्याख्या नहि, एक नव पीढ़ीक अनुभवक प्रवेशद्वार अछि। आरुणिक मौन बाहरी अज्ञान मात्र नहि; महामारीक अनुपयुक्त उत्तरक भार अछि।

बाक ‘अन्य’ शब्दक चेतावनी

बा रोग, अस्पताल, ऑक्सीजन आ औषधिक अभावसँ जुड़ल मृत्यु अलग-अलग लिखबाक सल्लाह दैत छलीह। ‘अन्य’ श्रेणी पुल-मजदूरक पुराने अभिलेखीय लोपक स्मृति अनैत अछि। एहि आवर्तनसँ कथा विगतक नाम-लोप आ वर्तमानक मृत्यु-सूचीकेँ जोड़ैत अछि। मुदा अलग कारण लिखबाक आग्रह एखन व्यावहारिक वर्गीकरणक आदर्श अछि; महामारीमे प्रत्येक व्यक्तिगत मृत्यु तत्काल ठीक वर्गीकृत भऽ गेल, एहन बात पाठमे नहि। माएक सल्लाह अन्तरपीढ़ीगत सतर्कताक नूतन रूप अछि।

बिस्तर आ सिलिण्डरक बदलैत मूल्य

अस्पतालक वेबसाइट पर खाली बिस्तर, दरबाजा पर अस्वीकार, बिचौलियाक अग्रिम जमा आ ऑक्सीजनक बदलैत दर एहि अध्यायक ठोस कथात्मक सामग्री अछि। ‘श्वासक भाव’ एहि विरोधसँ नाम पबैत अछि। मानवीय प्राणक आवश्यकता ओ बाजारमे बदलैत अछि जतय भय मूल्य निर्धारणक साधन बनैत अछि। एहि दृश्यमे अस्पतालक थाकल पहरेदारकेँ अनिवार्यतः निर्दयी खलनायक नहि बनाओल गेल; ओकर थकान अनुभवक जटिलता जोड़ैत अछि।

गोप कुमारक लेखाकर्मक कथावाचक-कार्य

जीवनरेखा बायो-लॉजिस्टिक्सक कर्मचारी गोप कुमार दू स्क्रीन आ बिलक पङ्क्तिसभक बीच प्रस्तुत होइत अछि। ओ रोमाञ्चक नायकक भव्य प्रवेश नहि करैत; ‘श्वास-आपूर्ति—उत्तर क्षेत्र’क फाइल खोलैत अछि। एक सिलिण्डरक अनेक जिलामे एकहि दिन आपूर्ति, बन्द अस्पतालक नामपर रेगुलेटर, मृत वितरकक हस्ताक्षर—ई विसङ्गतिसभ दस्तावेजी कथा-आरम्भक ठोस संकेत छथि। एहि स्थूल विवरणक कारण षड्यन्त्र केवल अन्धकारक धुँध नहि रहैत, संशय जनौनिहार विशिष्ट पङ्क्तिसभक शृंखला बनैत अछि।

‘एन-आर-७७’ : कथात्मक जोड़

महामारीक आपूर्ति-बिलमे पुरान पुल-परियोजनाक दायित्व-समायोजन संकेत देखाइत अछि। ‘एन-आर-७७’ कोड कथा केँ दू भिन्न ऐतिहासिक त्रासदीक बीच जोड़ैत अछि। मुदा कोडक अर्थ तत्काल सम्पूर्ण रूपेँ खुलैत नहि। गोप पहिने बैच नम्बरक सम्भावना सोचैत अछि, फेर पुरान स्कैन आ गायब संलग्नक देखैत अछि। एहि क्रमिक खोजसँ

दस्तावेज स्वयं रहस्य-वस्तु बनैत अछि। पाठककेँ कोड देखिते समस्त आर्थिक अपराधक पूर्ण शृंखला सिद्ध मानबासँ बचबाक चाही।

ईरा आ सत्यव्रतक समानान्तर मौन

हार्वर्डमे ईराकेँ अस्पष्ट शिष्ट उत्तर भेटैत अछि, दिल्लीमे सत्यव्रत आभासी सुनवाईक बीच पुरान फाइल आ महामारीक आपूर्ति-सम्बन्धी नाम देखैत छथि। दूरस्थ दुनू पात्र अधिक सूचना पबैत छथि, मुदा हुनकर संस्थागत शक्ति सीमित अछि। ईरा परिवारक स्मृतिसँ प्रश्न करैत छलीह, सत्यव्रत मूल अनुबन्ध आ भुगतान-सूची मँगएबाक नोट बनबैत छथि। दुनू कार्य कथामे धीम, प्रक्रियात्मक प्रतिरोध अछि। तात्कालिक नायकत्वक बदला आन्तरिक विवेकक क्रमिक विकास प्रमुख रहैत अछि।

चन्द्रपालक भय-बाजार

चन्द्रपाल बत्रा महामारीक आकुलताकेँ बिस्तर-पैकेज, दवा-पैकेज, पुलिस-पास आ म्यूल खाताक अवसर रूपमे देखैत अछि। राघव सोमानीसँ सञ्जाल-सम्बन्धी सन्देश कथामे आर्थिक लोभक सङ्क्षिप्त भाषिक रूप प्रस्तुत करैत अछि। ‘डर ठंढा भेल तँ दाम घटत’ कथन अपराधक समय-बोध दर्शबैत अछि। भय नैतिक अनुभव नहि, बेचबाक वस्तु बनि गेल अछि। परन्तु प्रकरणमे वर्णित योजना, सम्पन्न प्रत्येक सौदा आ जाँचमे सिद्ध आरोप एके बात नहि; पात्रक अभिप्राय आ घटनात्मक निष्पादनक भेद राखल जाए।

उज्ज्वल झाक स्क्रीनमे प्रवेश

लॉकडाउनमे बेरोजगार उज्ज्वल झा मोबाइलपर घर बैसि कमेबाक विज्ञापन देखैत अछि, छोट रकम लगाकऽ पहिल जीत पबैत अछि। देविका साह ई खेलक भीतर जालक आशङ्का व्यक्त करैत छलीह, उज्ज्वल ओकरा सामान्य डर बुझैत अछि। एतय पूर्व-कथाक भविष्यसूचना धीरे-धीरे वर्तमानक एक ठोस चुनाव बनैत अछि। मुदा एहि अध्यायमे उज्ज्वलक सम्पूर्ण आर्थिक पतन वा अन्तिम भाग्य घटित नहि अछि। पहिल जीत आ चेतावनीक टकराव भविष्यक सङ्कटक उद्गम-बिन्दु अछि।

फाइलक छिपल पङ्क्ति आ हरायल सूची

गोपक स्क्रीनपर आपूर्तिक नामे दान, विदेश-प्रशिक्षण, विधिक प्रबन्ध आ पुरान पुलक कड़ी अबैत अछि; नन्द आरुणिक स्कैन कएल टिप्पणीमे स्त्री आ अप्रविष्ट श्रमिकक अलग सूची संलग्न कहला पर वास्तविक संलग्नक अनुपस्थित अछि। ई गायब पन्ना सत्यक शून्य स्थान बनैत अछि। अभिलेख अपने भीतर अपन अपूर्णताक संकेत वहन करैत अछि। पाठक जुनि बुझथि जे स्कैन भेटिते सब नाम पुष्ट भऽ गेल; उलटे संलग्नकक अनुपस्थिति नव जाँचक आवश्यकता बढ़बैत अछि।

पासवर्ड आ स्मृतिक संघर्ष

बैसकीमे चन्द्रपालसँ गोपक प्रश्न-पछाति ओकर डिजिटल प्रवेशाधिकार घटाओल जाइत अछि। मुदा ओ पहिने प्रतिलिपि सुरक्षित कऽ चुकल अछि। पुरान कथावृत्तक ‘एक प्रति माय लग’क सूत्र आब डिजिटल बैकअपमे बदलैत अछि। कथा तकनीककेँ न त सम्पूर्ण उद्धारक शक्ति, न केवल अपराधक साधन मानैत अछि। एक पक्ष

फाइल मेटबाक प्रयत्न करैत, दोसर प्रतिलिपि बचबैत अछि। ‘कागच’क रूप बदलल, मुदा उपस्थितिक संघर्ष यथावत् अछि।

इशान दत्तक असामान्य प्रवेश

गोपकेँ अनाम सन्देश भेटैत अछि; सन्देश पठौनिहारक पहिचान अस्पष्ट रहैत अछि। कथाकार एकरा इशान दत्तक पहिल संकेत कहैत अछि—राजकीय अभिलेखमे मृत घोषित, मुदा नूतन सूचनाक गुप्त वाहक। एतय मृत-अभिलेख आ जीवित सूचना-वहनक विरोध भूतक पुरान आख्यानकेँ डिजिटल युगमे फेर जीवित करैत अछि। गोपक प्रथम अनुभवमे ई अनामिता संशयक कारण अछि; कथाकारक आगामी नामोच्चारण पाठककेँ अग्रिम सूचना दैत अछि। पात्र आ पाठकक ज्ञान-सीमा फराक रहैत अछि।

श्वास-कबड्डी आ नव मृतकक सूची

चन्ना गाछीमे कबड्डीक ‘कबड्डी’ टेक ‘श्वास’ बनैत अछि; प्रतिपक्ष ‘बेड नहि’, ‘सिलिण्डर नहि’, ‘दवा नहि’, ‘भुगतान पहिने’ जकाँ वाक्य बजैत अछि। मृतक ‘अन्य’ सूचीमे जुड़ैत अछि। हुलासी खेल बन्द करबाक आग्रह करैत छलीह, बूढ़बा एकरा भावी नाम-स्मरणक अभ्यास कहैत छथि। एहि मतभेदमे लोक-अनुष्ठानक नैतिक सीमा उपस्थित अछि: वास्तविक जीवित पीड़ा बीच शोकक अभिनय केना उचित रहत? कथा प्रश्नकेँ पूर्ण रूपेँ बन्द नहि करैत; प्रतिरोधक अभ्यास आ जीवित मनुष्यक तत्काल सहायता दुनू आवश्यकता रूपमे उभरैत अछि।

समग्र निष्कर्ष : जलसमाधिसँ श्वासक हिसाब

अध्यायान्तमे गोप लिखैत अछि जे श्वासक हिसाब जलसमाधिक हिसाबसँ अलग नहि। ई वाक्य कथा केँ पुरान पुलसँ महामारीक स्वास्थ्य-व्यवस्था धरि जोड़ैत अछि, मुदा दुनू दुर्घटनाक विशिष्ट कारणक भेद मेटाब नहि चाही। उपन्यासक उपलब्धि दस्तावेजी पुनरावृत्ति, वैश्विक आर्थिक सञ्जाल, पारिवारिक स्मृति आ जीवितक साँसक भय एकहि बहुकेन्द्रीय आख्यानमे रचब अछि। कथा-जोखिम एतय सञ्जालक अत्यधिक सम्पूर्ण प्रतीति अछि: अनेक फाइल, नाम आ घटना जल्दी-जल्दी एक सूत्रमे जुटैत छथि। तथापि अधूरा संलग्नक, गोपक संशय, ईराक अनुत्तरित प्रश्न आ उज्ज्वलक प्रारम्भिक जाल भविष्यक परीक्षा खुलल राखैत अछि।

समापन : खण्ड-१क प्रारम्भिक आठ अध्यायक अन्तर्सम्बन्ध

प्रकरण १०१ सँ १०८ धरि गामक लोक-स्मृति, भूतक खेल, पुरान भूमि-कागच, निर्माणस्थलक दुर्घटना, आधिकारिक मृत्यु-सूची, न्यायिक स्थगन, अन्तर्राष्ट्रीय नैतिक भाषण आ महामारीक आपूर्ति-सञ्जाल क्रमशः एक-दोसरामे प्रवेश करैत छथि। एतय पानि, नाम, पात, गमछा, जूता, तारीख, स्कैन आ सिलिण्डर अनेक युगक अलग-अलग वस्तु रहितो साझा कथात्मक ध्वनि धारण करैत अछि। मुदा एहि साम्यक अर्थ सभ वस्तु समान छथि, से नहि; उपन्यासक शक्ति फराक परिस्थितिमे लोप आ स्मरणक संघर्षक पुनरावृत्ति अछि। आगूक समीक्षामे अंकीय ठगी, देह-बाजार आ निजताक प्रसंगसभकेँ एहि प्रारम्भिक संरचनासँ जोड़ि, प्रत्येक पात्रक स्वतन्त्र क्रिया आ कथा-स्तरक भेद सुरक्षित राखब आवश्यक हएत।

प्रकरण १०९ | मूल अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

भूत-जगतमे नूतन मृत्यु-वर्गक प्रवेश

चन्ना गाछीक बूढ़बा, हुलासी आ पनिडुब्बी जखन स्क्रीनक छाह देखैत छथि, तखन पुरान जलसमाधिक अर्थ आधुनिक उपकरणक भीतर फेर जन्मैत अछि। पनिडुब्बी एकरा पानिमे नहि, आँखिमे डूबब कहैत छथि। ई वाक्य प्रत्यक्ष नदी-दुर्घटनाक इतिहास मेटैत नहि; ओ स्मृतिक पुरान भाषा पर नूतन संकट बुझबाक दबाव बनबैत अछि। भूतसभ एखन नब मृत्युकेँ नाम देबाक प्रयत्नमे छथि। कथाक आरम्भ डिजिटल जालक तकनीकी विवरणसँ नहि, नामकरणक सांस्कृतिक संकटसँ होइत अछि।

उज्ज्वलक घरेलू संसारक स्थान

उज्ज्वल झा ओसारपर मोबाइल लेने बैसल छथि; माय चूल्हापर दालि, पिता खेतक ऋणक हिसाब आ देविका साग बाछैत छलीह। एहि घरेलू विन्यासमे स्क्रीनक अन्हार कोनो सुदूर अपराध-जगत नहि, आँगनक बीच खुलल बाट बनि जाइत अछि। मामूली श्रम, परिवारक वित्तीय चिन्ता आ कमाइकेँ लऽ नव आशाक संग ठगीक प्रस्ताव जुड़ैत अछि। उज्ज्वलकेँ आरम्भसँ मूर्ख अथवा नैतिक रूपसँ दोषी पात्र घोषित नहि कएल गेल; ओकर इच्छा समाजक आर्थिक परिस्थिति भीतर गढ़ल अछि।

प्रारम्भिक जीतक कथात्मक फाँस

‘राजा-राति’ ऐपमे दू सय लगाकऽ पाँच सय, फेर पाँच सयसँ दू हजार जीतबाक क्रम खेलक भरोसाक निर्माण करैत अछि। रसगुल्ला अनबाक दृश्य आर्थिक लोभकेँ पारिवारिक प्रसन्नताक रूप दैत अछि। देविका जाल देखैत छलीह, उज्ज्वल पहिल जीतकेँ विश्वसनीयताक प्रमाण मानैत अछि। पाठक चन्द्रपाल आ राघवक गोपनीय सन्देश देखैत अछि, तेँ ओकर ज्ञान उज्ज्वलसँ बेसी अछि। एहि विषम जानकारीसँ नाटकीय विडम्बना बनैत अछि: जीतक अनुभव पाठक लेल हारक पूर्वाभास बनि जाइत अछि।

अपराध-जालक पूर्वनियोजित समय

राघवक सन्देशमे पाँच दिनक बाद सीमा, सातम दिन बोनस आ दसमा दिन ऋण-रेखाक योजना अछि। ई अपराधी पक्षक अपन कथानक-रचना थिक। उज्ज्वलकेँ खेल स्वतन्त्र चुनाव बुझाइत अछि; जाल चलौनिहार लोक ओकर भावी व्यवहारक क्रम तय करबाक प्रयास करैत अछि। एहि विरोधमे कथाकार दू समय देखबैत छथि—प्रयोजित प्रलोभनक समय आ पीड़ितक अनभिज्ञ अनुभवक समय। तथापि योजनाक प्रत्येक चरण यथार्थमे ठीक ओहि दिन सम्पन्न भेल, से पाठमे निर्दिष्ट काल-क्रमसँ अतिरिक्त मानल नहि जा सकैत।

मुन्ना पासवानक अस्थिर नैतिक स्थिति

मुन्ना पाँच हजारक बदलामे खाता खोलबाक काम स्वीकार करैत अछि; ओकरा लेनदेनक वास्तविक उद्देश्य बुझल नहि अछि। माय नोटपर राष्ट्रचिह्न देखि आश्वस्त होइत छलीह। एहि प्रसंगमे सरकारी वैधताक दृश्य-चिह्न आ अपराधी द्वारा ओकर दुरुपयोग एक-दोसरासँ भिड़ैत अछि। मुन्ना आर्थिक जालक उपयोगी माध्यम बनैत अछि, मुदा ओहि समय ओकर जानकारी आ चन्द्रपालक संगठित उद्देश्य समान नहि। कथाक गम्भीरता एहि असमान सहभागिताकेँ अलग पहिचानबमे अछि।

नकली गिरफ्तारीक कक्ष-रचना

उज्ज्वलकेँ कमरा बन्द, कैमरा चालू आ ककरोसँ नहि बजबाक आदेश भेटैत अछि। परम्परागत जेलक भीत बिना मोबाइलक निर्देश निजी कक्षकेँ कारागार बनबैत अछि। स्क्रीन आवाज, चेहरा आ समय नियंत्रित करैत अछि। कथामे नकली सरकारी वाणीक शक्ति वास्तविक गिरफ्तारीक वैधतासँ नहि, पारिवारिक शर्म आ पुलिस-भयसँ अबैत अछि। ‘डिजिटल अरेस्ट’ नामक दृश्य आत्मविश्वासक क्रमिक क्षरणक आन्तरिक कथा बनैत अछि।

देविकाक श्रवण आ अवरुद्ध संवाद

देविका छतक ओटसँ धमकी सुनैत छलीह। हुनका जालक संदेह छल, मुदा भाइ लग सटीक संवाद शुरू नहि भऽ पबैत अछि। उज्ज्वल जकरा सभसँ बेसी कहबाक आवश्यकता अछि, तकरा लगहि मौन रहैत अछि। ई मौन अपराधक सहायक परिस्थिति बनैत अछि; तथापि सामाजिक भयक भार पीड़ितपर दोषक रूपमे नहि राखल जाए। देविका अगिला भागमे भाइ लेल वैकल्पिक कथावाचक बनतीह—एहि बीजक आरम्भ एहिठाम उपस्थित अछि।

मृत्यु-दृश्यक अनावश्यक रहस्यरहितता

तीसर दिन उज्ज्वल घरसँ निकलैत अछि, बलानक किनार चप्पल भेटैत अछि, भोरमे देह भेटैत अछि। घटनाक क्रम स्पष्ट अछि; जीवनक अन्तकेँ रहस्यमय भूत-प्रवेशमे घोला नहि गेल। पानि अल्प होइतो ‘भीतर डूबि चुकब’क रूपक कथामे मनोवैज्ञानिक भार जोड़ैत अछि। देह भेटब प्रत्यक्ष घटना अछि, मुदा अपराध-जालक कारण, धमकीक मनोवैज्ञानिक प्रभाव आ विधिक जिम्मेदारीक प्रश्न एके प्रकारक निष्कर्ष नहि। साहित्य कारणसम्बन्धक जटिलता खोलैत अछि, अदालतक निर्णयक स्थान नहि लैत।

मृत्युक परस्पर-विरोधी विवरण

गामक लोक ‘जुआ’, ‘कमजोर मन’ आ ‘मोबाइल’ कहैत छथि; पुलिस ‘आत्महत्या’, बैंक ‘सन्दिग्ध लेनदेन’, ऐप ‘नियमक उल्लंघन’ लिखैत अछि। देविका एकर विरोधमे भाइ पर संरचनात्मक हिंसाक आरोप लगबैत छलीह। एकहि मृत्यु अनेक संस्थागत नाम पबैत अछि। पाठक प्रत्यक्ष घटनासभ देखिकऽ प्रत्येक विवरणक चयनात्मकता चिन्हि सकैत अछि। देविकाक कथनक नैतिक तीक्ष्णता अलग अछि, मुदा एकरा न्यायालयक अन्तिम विधिक दोषनिर्धारण बनाइ देब अनुचित हएत।

भूत-समुदायमे नामक पुनर्जन्म

उज्ज्वलक आत्मा चन्ना गाछी पहुँचलापर अपन नाम नहि बाजि पबैत; स्क्रीनपर ऋण, ब्याज, शुल्क आ जमानतक अंक छा गेल अछि। हुलासी ओकरा अंक छोड़ि नाम बाजबाक आग्रह करैत छलीह। ‘उज्ज्वल’ शब्द उच्चरित होइतहि समुदाय ओकरा अलग व्यक्ति रूपमे ग्रहण करैत अछि। एहि दृश्यमे नाम उच्चारण मृत्युकेँ उलटा नहि देत, मुदा सामाजिक अपमानक भाषा हटाकऽ शोकक अधिक मानवीय रूप सम्भव करैत अछि। भूतक खेल श्रवणक नूतन पाठशाला बनि उठैत अछि।

छिन्न स्क्रीनक यात्रा

देविका उज्ज्वलक टूटल फोन किताबक जिल्दमे राखि शहर पठएबाक निर्णय करैत छलीह। मोबाइल निजी वस्तुसँ गवाहीक सम्भावित माध्यम बनैत अछि। किताबक पन्ना आ डिजिटल चैट एकहि आवरणमे रहैत अछि; ई दृश्य पूर्वक गमछा, जूता आ कागचक अवशेषसभसँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। फोनपर बचल ‘हम चोर नहि छी’ वाक्य पाठमे एक मृत व्यक्तिक आत्म-परिभाषा अछि। तथापि उपकरण हाथमे अएलाक अर्थ ओकर समस्त डिजिटल सामग्री स्वतः विधिक रूपेँ सत्यापित भऽ गेल नहि।

गोपक लेखाकर्मक भावात्मक परिवर्तन

उज्ज्वलक फाइल आ देविकाक वीडियो देखलापर गोपक एक्सेलक संख्या ‘चेहरा’ बनि उठैत अछि। लेखक लेखा-जाँचकेँ अमूर्त विश्लेषणसँ शोकाकुल श्रवण दिस घुमबैत छथि। गोपक परिवर्तनक आधार नायकत्वक घोषणासँ बेसी पीड़ितक विशिष्ट कथन अछि। एहि दृश्यसँ कथा डिजिटल व्यवहारक जालकेँ उजागर करैत अछि, मुदा साथहि प्रश्न दैत अछि—प्रमाणक कठोर वर्गीकरण आ करुणाक नैतिक अनुभवकेँ एकसाथ कोना राखल जाए?

‘स्वेच्छा’ शब्दक अन्तर्विरोध

ऑनलाइन सुनवाईमे खेलकेँ कौशल-आधारित आ उपयोगकर्ताक स्वतन्त्र सहभागिता कहल जाइत अछि। सत्यव्रतकेँ पुलपरक ‘जोखिम विकासक भाग’ आ आपातकालीन खरीदमेक ‘लचक’ वाक्य मोन पड़ैत अछि। ई तीनू शब्द अलग प्रसंगक संस्थागत आत्मरक्षा छथि। पुनरावर्तनसँ कथाकार वैधताक भाषाक रूपरेखा देखबैत छथि। उज्ज्वलक प्रत्यक्ष धमकी आ एल्गोरिद्मिक प्रलोभनक कारण ‘स्वेच्छा’क दावा प्रश्नांकित होइत अछि, मुदा यथार्थ विधिक विवेचनक जटिलता एहि कथाविचारसँ समाप्त नहि होइत।

समग्र निर्णय : अंकसँ मनुक्ख धरि

अध्याय ८ डिजिटल शोषणक गहन दृश्य-रचना अछि। उज्ज्वलक क्रमिक विश्वास, देहगत मृत्यु, देविकाक प्रतिप्रश्न, मुन्नाक अनभिज्ञ सहभागिता, गोपक खाता-जाँच आ भूतक नाम-पाठ अलग कथनस्तर पर टिकैत छथि। कथाकारक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ‘जुआ’क व्यक्तिगत आरोपक पाछाँ संगठित भय, ऋण आ शर्मक प्रक्रिया चिन्हल जाइत अछि। सीमित आलोचनात्मक शङ्का ई जे अपराधी पक्षक योजनाबद्ध संवाद अत्यधिक स्पष्टीकरण देइत अछि; तथापि उज्ज्वलक घरक चूल्हि आ टूटल फोन कथा कैँ देहगत सत्यक भीतर टिकौने रखैत अछि।

प्रकरण ११० | मूल अध्याय ९ — देहक बाजार

गवाहीक दस्तावेजसँ देहक व्यापार धरि

उज्ज्वलक मृत्युक बाद कथा कमजोर व्यक्तिक शोषणक दोसर क्षेत्रमे पहुँचैत अछि। रोजगार, प्रशिक्षण, सहायता आ ‘महिला गरिमा’क सार्वजनिक भाषा एक जालक अलग आवरण बनैत अछि। अध्यायक केन्द्रीय संघर्ष जीवित स्त्रीक देहपर हुनकर अधिकार छीनेबाक प्रयास आ ओहि प्रयासक विरुद्ध नामक स्पष्ट उच्चारणक बीच अछि। ई

पिछला अध्यायक पुनरुक्ति नहि; धनक जाल एतय ऋणक मारसँ आगू बढ़ि देहगत सुरक्षा आ सहमतिक प्रश्न बनैत अछि।

फूलमतिक ‘एफ०एम०’ बनाओल जाएब

फूलमतिक पूरा नाम फाइलमे ‘एफ०एम०’ रूपमे सङ्कुचित कएल जाइत अछि। ई संक्षेप सामान्य प्रशासनिक सुविधा नहि रहैत, कारण तकर संग हुनकर परिवार, श्रम आ स्वतन्त्र निर्णयक अधिकारो मेटाएबाक प्रक्रिया चलैत अछि। ‘स्वैच्छिक सेवा अनुबन्ध’क फॉर्मक समक्ष फूलमतिक ‘हमर नाम फूलमति अछि’ प्रतिउत्तर अछि। पूर्ण नाम फेर बजब कथामे एकटा व्याकरणिक-नैतिक पुनर्जन्म अछि। मुदा नाम उच्चारणक साहसकेँ ओकर वास्तविक दीर्घकालिक सुरक्षा-व्यवस्था भऽ गेल मानल नहि जा सकैत।

अँगूठा रोकेबाक छोट दृश्य

होटलक आर०७ कमराक सामने फूलमति फॉर्म पढ़ि नहि पबैत छलीह। मृत नानीक चेहराक झलक हुनका अँगूठा नहि लगएबाक चेतावनी दैत अछि। जादुई छविक कार्य एतय अतीतक स्त्री-स्मृतिकेँ वर्तमानक एक मामूली शारीरिक क्रियामे सघन करब अछि। अँगूठा रोकब खुलल विद्रोहक विशाल प्रदर्शन नहि, मुदा एखन उपलब्ध एक लघु निर्णय अछि। कथा स्त्रीक इच्छाकेँ एहि नन्हि विराममे बचबैत अछि; भयक वातावरणमे ओ विराम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

होटलक ऊपरी तल्ला आ नीचाँ सभागार

तेसर तलपर ‘गरिमा’क अपहरणक प्रयास, नीचाँ ‘महिला गरिमा संवाद’क सम्मेलन—एकहि भवनक दू स्थाननिवेशक अत्यन्त तीक्ष्ण नाटकीय विडम्बना अछि। सार्वजनिक भाषण आ बन्द कमराक भेद नहि बुझनिहार अतिथि मंचपर सज्जित छल; पाठक दुनू ठामक घटना एक संग देखैत अछि। एहि दोहरी जानकारीक कारण वक्ताक उच्चरित आदर्श आ भवनक वास्तविक प्रयोगक विरोध स्पष्ट होइत अछि। कथाकार एकहि संस्थाक दृश्यभूगोलसँ शोषणक दोहरा चेहरा बनबैत छथि।

सौम्याक भाषणक अचानक परिवर्तन

सौम्या रामनाथन लिखल भाषण—पुनर्वास, श्रम-सुरक्षा, पारदर्शिता—लऽ मंचपर अबैत छलीह। नारिकेलक सजावट हुनका स्मृतिक दोसर भाषा जगबैत अछि; ओ ‘गरिमा दान नहि’क तर्क सामने रखैत छलीह। मुदा एहि भाषणक उपलब्धि ओकर वाक्पटुता मात्र नहि। गोपक सन्देश भेटिते सौम्या माइक छोड़ि कमरा आर०७ दिस बढ़ैत छलीह। वचनक सत्यता क्रियासँ जाँचल जाइत अछि। कथा भाषणसँ दरबाजा धरि एक छोट किन्तु निर्णायक कथानक-गति बनबैत अछि।

प्रत्यक्षदर्शी माध्यमक सामाजिक द्विधा

‘लाइव करू’क आदेशपर पत्रकार मोबाइल चलबैत छथि; दरबाजा खुलैत अछि आ फूलमति बाहर अबैत छलीह। तत्काल प्रसारण जालक निजी नियन्त्रणकेँ हिलबैत अछि। तथापि कैमरा सभेर सुरक्षाक समानार्थी नहि; पछिला अध्यायमे कैमरा पीड़िताक आँखि सिकोड़बकेँ मुस्कान बना देने छल। एतय वैह माध्यम एक सम्भावित प्रतिरोध

अछि। माध्यमक नैतिकता ओकर प्रयोग, पीड़ितक अनुमति आ दृश्यक सन्दर्भसँ बनैत अछि; तकनीक न स्वतः मुक्तिदाता अछि, न स्वतः अपराधी।

फूलमतिक प्रथम-पुरुष स्वरोत्थान

फूलमति ‘प्रशिक्षणार्थी’ कहि पहचान छीनेबाक प्रतिवाद करैत छलीह आ घर फोन करबाक माँग करैत छलीह। हुनकर माँगक ठोसपन विशेष ध्यानयोग्य अछि: ओ कोनो अमूर्त ‘सभी स्त्रियों’क प्रतिनिधि बनबाक आग्रह नहि करैत, अपन नाम आ परिवारसँ सम्बन्ध पुनः स्थापित करैत छथि। ई स्वर कार्यक्रमक प्रमुख विद्वज्जनसभक वक्तव्यसँ भिन्न अछि। कथा पीड़ित स्त्रीकेँ आखिरी क्षणमे स्वयं बजबाक अवसर दैत अछि; कहल बातक अधिकार हुनकहि लग रहबाक चाही।

हुलासीक भूत-पारी

हुलासी फूलमतिक नाम लऽ कबड्डीक सीमा पार करैत छलीह। मृत स्त्री जीवित स्त्रीक पक्षमे बजैत छथि—ई संरचना स्त्री-पीड़ाक अलग-अलग युगकेँ जोड़ैत अछि। हुलासीक अपन मृत्यु ‘आत्महत्या’ नहि कहबाक आग्रह फूलमतिक कथनक संग समस्वर बनैत अछि। परन्तु दुनू अनुभवकेँ समान परिस्थिति मानि लेब उचित नहि। उपन्यास स्मृतिक सामूहिकता रचैत अछि, व्यक्तिगत त्रासदीक भिन्नता मेटब नहि।

गोपक तीन कॉलम : भय, भुगतान, संरक्षण

फूलमतिक घटनापछाति गोप नव फाइलमे भय, भुगतान आ संरक्षणक अलग स्तम्भ बनबैत अछि। ई वर्गीकरण कथा-सूत्रकेँ सामान्य ‘अपराधी’क एकरेखीय धुरीसँ हटाकऽ नेटवर्कक विविध क्रियाक रूपमे देखबैत अछि। फूलमति भयक कॉलममे, बत्रा–राघव–लाउ भुगतानमे, हरिहरन संरक्षणमे आबैत छथि। सत्यव्रतक नामक सामने प्रश्नचिह्न रहैत अछि। ई फाइल आरम्भिक आरोप-मानचित्र अछि, न्यायालयक निर्णीत दोषसूची नहि—एहि पाठगत सीमाक सम्मान जरूरी अछि।

‘सहमति’क कथात्मक व्याकरण

होटलक फॉर्मपर ‘स्वैच्छिक’ लिखल अछि, मुदा परिवारक फोटो, ऋण आ भयक दबाव प्रस्तुत अछि। सत्यव्रत बादमे लिखैत छथि जे भयक भीतर स्वैच्छिकता सम्भव नहि। कथा नीतिगत निष्कर्षकेँ पहिले दृश्य, तकर बाद विधिक टिप्पणी बनबैत अछि। एहि पूर्वापर क्रमसँ विचारक आधार अनुभूत घटना अछि। अँगूठाक छाप अथवा फॉर्मक शीर्षक स्वतः स्वतन्त्र सहमतिक पूर्ण साक्ष्य बनि नहि सकैत—उपन्यासक भाषिक आलोचना एतय अत्यन्त स्पष्ट अछि।

सौम्याक विरुद्ध प्रतिआक्रमणक योजना

बटुकनाथ हरिहरन फूलमतिक परिवारक ऋण, सौम्याक विदेशी निधि-सहायता, पत्रकारक मानहानि आ गोपक पहचान खोजबाक आदेश दैत छथि। ई प्रतिक्रिया सार्वजनिक प्रश्नकेँ निजी चरित्र वा आर्थिक आश्रयक विवादमे बदलबाक प्रयास अछि। कथामे प्रतिशोध योजना रूपमे सामने अछि; प्रत्यक्ष सभ आरोपक सिद्ध परिणाम नहि। एहि सीमासँ पात्रक नियन्त्रण-रणनीतिक स्वरूप स्पष्ट होइत अछि, पर कथाक कालान्तरक स्वतन्त्रता सेहो बचैत अछि।

सार्वजनिक समाचारक बहुवर्णन

घटनाक बाद समाचार माध्यमसभ ‘संस्थामे विवाद’, ‘प्रशिक्षणार्थीक आरोप’ जकाँ अलग शीर्षक चलबैत छथि, किछु चुप रहैत छथि। लाइव वीडियो व्यापक भेल अछि, मुदा पत्रकारिताक भाषा पुनः घटनाक अर्थ बदलैत अछि। एकरा दृश्य बनएबाक अवसर आ सम्बन्धी विषयकेँ सन्देहमे राखबाक खतरा एकहि समय उपस्थित अछि। कथाकार दर्शबैत छथि जे पीड़ितक स्वर प्रकाशित भेलाक बादो तकर अर्थ पर संघर्ष समाप्त नहि होइत।

उज्ज्वलक फोनपर फूलमतिक जीवित स्वर

देविका उज्ज्वलक मृत्युपछाति रहल फोनपर फूलमतिक आवाज देखैत-सुनैत छलीह। एक उपकरण एक युवकक अन्तिम संदेशक संग्रह रहैत अछि आ दोसर स्त्रीक उद्धारक प्रत्यक्ष दृश्य सेहो बनैत अछि। स्क्रीनक अर्थ स्थिर नहि: शोषणक साधन, गवाहीक माध्यम, शोकक भण्डार आ प्रतिरोधक दृश्य—सभ सम्भावना एतय उपस्थित अछि। एहि तकनीकी बहुरूपतासँ ‘स्क्रीनक गोहि’ एकतरफा प्रतीक रहि नहि जाइत।

समग्र निर्णय : नाम आ देहक स्वायत्तता

‘देहक बाजार’ शक्तिक सभसँ ठोस इन्द्रियगत रूप देखबैत अछि—बन्द दरबाजा, दबाओल आवाज, कन्हा पकड़ब, अँगूठा रोकब, पत्रकारक मोबाइल आ बाहर निकलैत फूलमति। ऊपरक कमरा आ नीचाँक सभागारक समानान्तर रचना अध्यायक प्रमुख कलात्मक सफलता अछि। कमजोर बिन्दु ई जे न्यायिक आ नैतिक निष्कर्ष कतेको पात्रक मुखसँ तुरन्त स्पष्ट कहल जाइत अछि, जाहिसँ सूक्ष्मता घटबाक सम्भावना रहैत अछि। तथापि फूलमतिक सीधा स्वरोच्चारण समूचा अध्यायकेँ नैतिक घोषणापत्रसँ आगू लऽ जा जीवित व्यक्तिक कथा बनबैत अछि।

प्रकरण १११ | मूल अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

अन्तर्जगतक चोरीक नूतन कथावृत्त

अध्याय १० मे शोषणक लक्ष्य देहक श्रम अथवा बैंकक रकम मात्र नहि, व्यक्तिक निजी सम्बन्ध आ आत्म-परिभाषाक अधिकार अछि। चन्ना गाछीमे हुलासीक पुरान मृत्यु-प्रसंग सार्वजनिक करबाक दृश्य एकरा आरम्भिक प्रतिरूप बनबैत अछि। निजी स्मृतिक अनचाहल प्रकाशन आ पीड़ित द्वारा अपन कथा कहब—दूनू समान नहि। एही अन्तर पर अध्यायक न्याय-बोध आधारित अछि। कथा जखन मृणालिनी आर्याक प्रेम-सम्बन्ध धरि पहुँचैत अछि तखन परम्परागत नाम-बचाओ विधान निजता बचाओ विधानमे विकसित होइत अछि।

मृणालिनी आ मीरा : दोसर नामक प्रश्न

मृणालिनी आर्या टेक्नोलॉजी-कानूनक शोधकर्ता छथि; घरमे मीरा नामसँ चिन्हल जाइत छलीह। ‘एम.ए.’ फाइलक संक्षेप, औपचारिक नाम आ आत्मीय नामक भिन्नतासँ पात्रक अनेक सामाजिक उपस्थिति बनैत अछि। ई भिन्नता अपने अपराध नहि, मुदा अपराधी जाल अपन लाभ लेल एक उपस्थिति दोसराक विरुद्ध इस्तेमाल करैत अछि। कथामे मीरा स्वयं अपन निजी जीवनक विषय जानैत आ निर्णय लैत छलीह; हुनका केवल गोपक फाइलमे प्रविष्ट कोई निष्क्रिय तथ्य बना देब उचित नहि।

प्रेम आ ब्लैकमेलक अलग नैतिक स्थल

मीरा अदिति नामक स्त्रीसँ प्रेम करैत छलीह। कथामे समस्याक केन्द्र ई प्रेम नहि; सहमति बिनु निजी सन्देश, यात्रा-बुकिंग, फोटो, चिकित्सकीय परामर्श आ रसीदक प्रतिलिपि उठाकऽ गवाही रोकबाक धमकी देब अछि। अपराधी कुटुम्ब, मीडिया, विश्वविद्यालय आ विधिक जगत धरि सामग्री पठेबाक चेतावनी दैत अछि। कथा दहशतकेँ सामाजिक कलङ्ककक सम्भावित प्रतिक्रियासँ जोड़ैत अछि। एहिठाम निजी जीवनक सम्मान आ गवाहीक स्वतन्त्रता समानान्तर विषय छथि, एक-दोसराक विकल्प नहि।

मेटाएबला संदेशक दीर्घ भय

धमकी पाँच मिनटमे मेटि जाएबला संदेश रूपमे अबैत अछि, मुदा मीरा अपन मनमे ओहि धमकीक लम्बा आयु अनुभव करैत छलीह। तकनीकी अल्पकालिकता मनोवैज्ञानिक दीर्घता बनि उठैत अछि। ई कथा-कालक सघन विरोध अछि। पाठक केओ संदेश मेटाओल गेल देखैत अछि, मुदा ओकर प्रभाव पात्रक आगामी निर्णयसभमे जीवित रहैत अछि। एहि दृश्यसँ डिजिटल माध्यमक अस्थिरता आ भयक स्मृतिगत स्थायित्व एकसाथ प्रकट अछि।

अदितिक प्रत्युत्तर आ संवादक पुनर्स्थापना

मीरा अनेक फोन नम्बर खोलि बन्द करैत छलीह। अदिति अपनहि फोन कऽ हुनका अलग प्रकारक सम्बन्ध-दृढ़ता दैत छलीह। प्रतिक्रिया न अत्यधिक भावुक घोषणा अछि, न संस्थागत आश्वासन। अदिति कहैत छलीह जे अपराधीकेँ हुनकर जीवनक निर्णय लेबाक अधिकार नहि। एहि संवादक कथात्मक महत्त्व ई जे पीड़ितक एकान्त टूटैत अछि। ब्लैकमेलक बल रहस्यक अकेल वहनमे अछि; एक भरोसायोग्य सहयात्रीक सक्रिय स्वर ओहि बलकेँ घटबैत अछि। मुदा भय एकदम नष्ट भऽ गेल मानल नहि जा सकैत।

शर्त-सहित गवाही

मीरा गोपकेँ स्पष्ट शर्त दैत छलीह—मुद्दा समलैंगिक सम्बन्ध बनब नहि, निजता पर आक्रमण, सहमतिक विरुद्ध भय आ अपराधी सञ्जाल बनब। ई कथन केवल नैतिक आग्रह नहि, कथाक फोकलाइजेशन बदलैत अछि। पात्र अपन सम्बन्धक बारेमे दूसरेक दृष्टि थोपल जाएब अस्वीकार करैत छलीह। गोपक ‘व्यक्ति नहि, संरचना’ उत्तर अनुसन्धानक नूतन अनुशासन सूचित करैत अछि। गवाही केकरा कहल जाए, एकर रूप सेहो गवाह निर्धारित करए चाहैत छथि—ई महत्वपूर्ण स्त्री-स्वायत्तता अछि।

शिकारसँ साक्षी बनबाक अन्तर

सौम्या सँ भेटिते मीरा दयाक पात्र नहि, साक्षी बनि बजबाक निर्णय सुनबैत छलीह। एहि स्वर-पलटावमे आख्यान पीड़ितकेँ निरन्तर निःशक्त रूपमे प्रस्तुत करबाक रूढ़िसँ बाहर निकलैत अछि। तथापि ‘साक्षी’ शब्द हुनकर दुःख समाप्त करैत नहि; ओ शोकक बीच चुनल सामाजिक भूमिका अछि। न्यायिक प्रक्रियामे गवाही देब आ सार्वजनिक खुलासाक सीमा तय करबाक अधिकार दुनू आवश्यक अछि। कथामे एतय मानवीय गरिमा न केवल सुरक्षित रखबाक विषय, बल्कि कथनक कर्तृत्व बनैत अछि।

फोल्डरक क्रम आ आरोपक संयोजन

मीराक लैपटॉपमे ‘धमकी’, ‘अकाउण्ट’, ‘चैट’, ‘सर्वर’, ‘बत्रा’, ‘हरिहरन’, ‘एल.के.’ फोल्डर क्रमसँ खुलैत अछि। निजी धमकी एक व्यापक भुगतान-सम्बन्धी सामग्रीसँ जोड़ल जाइत अछि। गोपक अर्थान्तरण ई अछि जे ई केवल व्यक्तिगत गोपनीयताक उल्लङ्घन नहि, गवाही रोकबाक उपकरण अछि। मुदा फोल्डरक नाम स्वतः आरोपक अन्तिम प्रमाण नहि; एकरा जाँचक संरचित आरम्भ मानब चाही। दस्तावेजक क्रम साहित्यिक रूपमे अपराधक अलग-अलग तहक क्रमिक उद्घाटन करैत अछि।

संरचनात्मक शर्मक कथन

मीरा अनुभव करैत छलीह जे समाज पीड़ितक प्रेमकेँ अपराधीक हथियार बनएबाक सम्भावना रखैत अछि। हुनकर भय अपने सम्बन्धसँ नहि, परिवारक मौन आ समाजक चरित्र-अभियोगसँ जन्मैत अछि। कथाकार एहि ‘सामाजिक अदालत’केँ विधिक न्यायालयसँ अलग राखैत छथि। एतय नागरिकक सम्बन्धक मानवीयता आ सामूहिक दृष्टिक हिंसा भिड़ैत अछि। निजता वर्जित रहस्य नहि, अपन जीवनक विषय पर कथन-अधिकारक सीमा अछि।

सत्यव्रतक निजी टिप्पणी

सीलबन्द टिप्पणी भेटलापर सत्यव्रत निजता-सुरक्षा आ गवाहक गरिमाक प्रश्न लिखैत छथि। ओ प्रेमक न्याय करबाक बदला भयक स्रोत चिन्हबाक आवश्यकतापर बल दैत छथि। ई राज्यक अधिवक्ताक आन्तरिक परिवर्तनक नूतन चरण अछि। तथापि टिप्पणी लिखलाक अर्थ अदालतमे सम्बद्ध पक्षक सहमति, आदेश वा सुरक्षा-व्यवस्था स्वतः उपलब्ध भेल नहि। पात्रक नैतिक चेतना आ संस्थागत क्रियान्वयनक बीच खण्डित रास्ता एखन शेष अछि।

अपराधीक प्रतिरक्षा : मुद्दा बदलू

बटुकनाथ आ चन्द्रपालक विचार-विनिमय गवाहीक विषयसँ ध्यान हटाकऽ चरित्र आ प्रतिष्ठापर प्रश्न उठएबाक दिशामे अछि। ई कथा-नियन्त्रणक हिंसा थिक: साक्षी अपना अनुभवक घटना कहब चाहैत अछि, प्रतिपक्ष ओकरा व्यक्तित्वक कथामे कैद करब चाहैत अछि। पाठक पूर्वक गोपक फाइल तथा मीराक अपन कथन जानैत अछि, तेँ विरोधी कथामे चयनात्मकता देखैत अछि। प्रतिरक्षाक रणनीतिक चर्चा आ न्यायालयमे ओकर यथार्थ परिणाम अलग-अलग वस्तु छथि।

हुलासी आ मीराक अन्तरकालिक सम्बन्ध

भूतक रेखा पार करिते हुलासीक इनारक राति प्रकट होइत अछि; ओ अपने मृत्युकेँ आत्महत्या कहल जाएबाक विरोध करैत छलीह। मीराक निजी सन्देश चोरी आ हुलासीक मृत्यु-कथा छीनब—दुनू प्रसंगमे कथनाधिकार विवादित अछि। ई समानता घटनाक समानता नहि; एक समान सत्ता-प्रक्रियाक भिन्न ऐतिहासिक रूप अछि। भूत-खेल स्मृतिक परतसभ जोड़ैत अछि, मुदा व्यक्तिगत अनुभवक विविधता राखबाक जिम्मेदारी पाठकपर छोड़ैत अछि।

प्रकाशित करबाक सीमा

मीरा अपन धमकीक प्रतिलिपि उपयुक्त न्यायिक प्रक्रिया लेल दैत छलीह, मुदा सभ निजी विवरण सार्वजनिक होएबाक अनुमति नहि। एहि सीमासँ ‘सत्य खोलू’क सामान्य आदर्श अधिक परिपक्व बनैत अछि। ज्योति जतेक सम्भव हो ओतबे नहि, जतेक न्याय लेल आवश्यक हो ओतबे देबाक कथात्मक संवेदनशीलता विकसित होइत अछि। पीड़ितक सामग्री स्वतः सार्वजनिक सम्पत्ति नहि; जखन प्रमाणक प्रसार पुनः अपमान बनि सकैत अछि तखन रोकनाइ सेहो नैतिक कार्य थिक।

समग्र मूल्यांकन : निजी कथा पर अधिकार

‘निजताक ब्लैकमेल’ अध्यायक विशिष्टता अछि जे पीड़ितक गवाही आ पीड़ितक निजता विरोधी वस्तु नहि रहि पूरक अधिकार बनैत छथि। मीरा आ अदितिक संवाद, सौम्याक सहयोग, फोल्डरक क्रमानुसार प्रस्तुति आ सत्यव्रतक टिप्पणी मिलि एक बहुस्तरीय चरित्र-विकास रचैत अछि। कथाक कमजोरी कखनो नैतिक निष्कर्षक प्रत्यक्षता अछि; मुदा मीराक डर, मौन आ स्पष्ट शर्तसभ पात्रकेँ घोषणात्मक प्रतीक बनबासँ बचबैत अछि। मूल घटना अपराधीक सूचना-चोरी अछि, प्रेम नहि—ई आख्यानक आलोचनात्मक केन्द्र सुरक्षित रखबाक अछि।

प्रकरण ११२ | मूल अध्याय ११ — धनक कारी नदी

भूगोलक रूपकसँ वित्तीय प्रवाह धरि

चन्ना गाछीक जमीनक भीतर कारी पाताल-धार उभरैत अछि; ई वास्तविक नदी नहि, खाता-दर-खाता चलैत रकमक दृश्यात्मक प्रतिमान अछि। कथाकार कमला, बलान, गंगा, सिन्धु, मेकांग आ पर्ल जकाँ नदी-नामक सहारे वित्तीय खातासभकेँ स्मृतिक परिचित भूगोलमे अनैत छथि। धनक ‘बाढ़ि’ अथवा ‘पानि उतरब’ अपराधीक निजी कूट-शब्द छथि। ई रूपक पूँजीक गतिशीलताकेँ लोक-संस्कृतिक जलभाषामे सुनबैत अछि; तथापि ओकर प्रत्येक प्रवाह वास्तविक प्राकृतिक नदीक नियति नहि।

दोसर स्मृति-यन्त्रक नाटकीय आगमन

ईशान दत्त मीरा सम्बन्धी पहिल उपकरणसँ फराक दोसर स्मृति-डिवाइस रखैत अछि। पहिलक केन्द्र निजी जीवनक चोरी, दोसरक केन्द्र धनक यात्रा अछि। उपकरण बदलला सँ कथाक अन्वेषण-वस्तु बदलैत अछि। नूतन फाइल खुलिते ‘धारा’ शब्द चमकैत अछि, जाहिसँ क्रमशः पुल भुगतान, स्वास्थ्य आपूर्ति, जुआ, म्यूल अकाउण्ट, डिजिटल धमकी आ नव वित्तीय पङ्क्ति जुड़ैत छथि। एक छोट उपकरण विश्वव्यापी कथास्थल बनि जाइत अछि।

अपराध-भाषाक नामान्तरण

‘धातु’, ‘धूलि’, ‘मार्ग’, ‘प्रार्थना’ जकाँ शब्द फाइलमे कोड रूपमे अबैत छथि। ईशानक कथनानुसार पवित्र वा साधारण शब्द आपराधिक गतिविधि झँपबाक लेल इस्तेमाल होइत अछि। कथा भाषा-अपराधक सम्बन्धकेँ तीक्ष्ण करैत अछि: शब्द केवल क्रियाक वर्णन नहि करैत, ओकर सामाजिक चिन्हारि बदलबैत अछि। मुदा ईशान द्वारा बताओल अर्थ अन्वेषणक भीतरक व्याख्या अछि; प्रत्येक व्यक्तिगत लेनदेनक अन्तिम पुष्ट प्रमाण पाठकक समक्ष समान विस्तारसँ नहि अछि। एहि भेदक सम्मान आलोचनात्मक निष्ठा अछि।

चन्द्रपालक विधिक सौन्दर्यशास्त्र

‘लखेरा-परामर्श’ फोल्डरमे बत्राक चिक्कन राय-पत्र आ हस्ताक्षर उपस्थित छथि। कानूनक भाषाक बाहरी शुचिता शोषणक सञ्जालक सम्भावित आवरण बनैत अछि। पात्रक डेस्कपर विधि-पुस्तक, भीतर चिन्हारि-पत्र, छात्रक खाता आ स्त्रीक निजी चित्रक संग्रह—ई वस्तुगत विरोध मुख्य कथा-युक्ति अछि। एतय खलनायकक शक्ति प्रत्यक्ष हिंसासँ मात्र नहि, भाषाक विधिसम्मत प्रतीत होएबाक भ्रमसँ बढ़ैत अछि।

हरिहरन, राघव आ लाउक अलग कथात्मक भूमिका

बटुकनाथ हरिहरन विधिक प्रतिष्ठा आ प्रक्रिया-द्वारा संरक्षणक प्रतिनिधि, राघव सोमानी सन्देश-परिचालनक अदृश्य मध्यस्थ, लाउ किन-हंग विदेशी लाभ-सङ्ग्रहक दूरस्थ केन्द्रक रूपमे वर्णित छथि। सभकेँ समान प्रकारक एक खलनायक कहब कथा-सञ्जालक अन्तर मेटब हएत। हरिहरनक मंच-भाषण, राघवक मेटाएबला सन्देश आ लाउक ‘प्रतिशत’ आदेश अलग-अलग कथन-रूप छथि। एहि भेदसँ वित्तीय जाल नायक-विरोधी व्यक्तिसूची नहि, सत्ता-सम्बन्धक रचना बनैत अछि।

मेटाओल सन्देशक बाँकी निशान

राघवक नियम ‘आवाज नहि, कागच नहि, चेहरा नहि’ अछि, मुदा ईशान फाइलमे मेटाओल सन्देशक टुकड़ा चिन्हैत अछि। अनुपस्थितिक इच्छा स्वतः नूतन सुराग बनैत अछि—एहि विपर्यासमे उपन्यासक दीर्घ ‘नाम काटब’ रूपक डिजिटल क्षेत्रमे फेर उभरैत अछि। तथापि पुनः भेटल अंश पूर्ण सम्पादित मूल संवादक समान नहि। कथाकार टुकड़ा-टुकड़ी भाषा सँ भयक वातावरण आ जाँचक अधूरापन दुनू बनबैत छथि।

उज्ज्वलक रकमक पुनर्रचना

देविका प्रश्न करैत छलीह जे भाइकेँ कएल भुगतान कतय गेल। गोप जमा, निकासी, ऋणक अंक आ धमकी-पछाति छोट-छोट खातामे विभाजनक क्रम देखबैत अछि। पैंतीस खातामे विद्यार्थी, रिक्शाचालक, विधवा, बेरोजगार आ कृत्रिम नामक समावेश—एहि प्रसंगसँ आर्थिक जालक कार्यवाहक लोकसभक भिन्न हैसियत उभरैत अछि। सूचीमे खाताधारकक नाम होएब आ ओकर अपराध-ज्ञान सिद्ध होएब अलग वस्तु छथि। मुन्नाक पहिल परिचय एही भेद पर आलोचनात्मक चेतावनी देलक छल।

देविकाक शोकक तर्क

उज्ज्वलक रकमक राह देखलाक बाद देविका कहैत छलीह जे ओकरा ‘धकेलल’ गेल। एतय परिजनक दुःख लेनदेनक रेखासँ एक सम्बन्ध पबैत अछि। मुदा उपस्थित सभ लोक तत्काल एकरेखीय विधिक उत्तर नहि दैत; एक कठिन मौन पसारि जाइत अछि। ई मौन कथाक एक दुर्लभ संयम अछि। देविकाक कथन जीवितक प्रतिरोधक स्वर अछि, न्यायिक अन्तिम दोषसिद्धिक वाक्य नहि। आलोचनामे एहि स्तर-भेदकेँ बनौने राखब आवश्यक अछि।

मार्गक विवरण रोकबाक निर्णय

सीमा-संबन्धी नक्शा देखलाक बाद सौम्या अपराधक पूरा रास्ता सार्वजनिक नहि करबाक आग्रह करैत छलीह। ईशान किछु भाग धुँधला रखने छथि। कथामे एतय प्रमाण-प्रकाशनक आचार-विवेक उभरैत अछि: शोषणक

अस्तित्व देखाएब आवश्यक अछि, मुदा आपराधिक पद्धतिक पुनरुपयोगक सुविधा देब अस्वीकार्य अछि। खुलापन आ सुरक्षा एक-दोसराक स्वतः शत्रु नहि; सतर्क सीमांकनसँ दुनूकेँ साथ रखबाक प्रस्ताव एहि दृश्यमे अछि।

ब्रूमक भाषणक पुनः सम्पादन

विदेशी सभागारक पुरान वीडियोपर ईशान प्रत्येक नैतिक शब्दक नीचाँ भिन्न खाता-रेखा रखैत अछि—गरिमा, सुरक्षा, साझेदारी, नवाचार। ई ‘परदेपर दोसर पाठ’ रचबाक एक विशेष शिल्पगत युक्ति अछि। आधिकारिक भाषणक अभिप्रेत अर्थ आ शोध-दल द्वारा देखाओल वित्तीय संलग्नकक बीच विडम्बना बढ़ैत अछि। तौ ‘वित्तीय संलग्नक’क प्रमाणस्तर पाठमे जेना वर्णित अछि ताहिसँ बेसी घोषित नहि करबाक चाही।

सत्यव्रतकेँ पठाओल भीजल लिफाफा

मेहताक टेबुलपर नामरहित भीजल लिफाफा आ स्मृति-डिवाइस पहुँचैत अछि। लिफाफाक तीन सूत्र—तीस/तीन सय, ऋण/धक्का, व्यापार/कारी नदी—प्रथम खण्डक प्रमुख कथावृत्तसभकेँ निचोड़ैत अछि। सरकारी वकीलक व्यक्तिगत अध्ययन-कक्षमे ई वस्तु रखल जाएबसे कथा सार्वजनिक संरचनासँ नैतिक व्यक्तिगत निर्णयक क्षणमे लौटैत अछि। उपकरण स्वीकार करबाक क्षण पद, प्रतिष्ठा आ आत्मविश्वास सभक परीक्षा बनि उठैत अछि।

साक्ष्यक त्रिगुण प्रतिलिपि

गोप एक प्रति मेहता, एक विदेशमे ईरा आ एक चन्ना गाछीक पीपरक खोखर लेल सुरक्षित करैत अछि। ई रणनीति पुरान लत्तड़–नन्द–बाक प्रतिलिपि-परम्पराकेँ आधुनिक स्वरूप दैत अछि। न्यायालय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न आ लोकस्मृति एक-दोसरासँ स्वतन्त्र रखल गेल अछि, जाहिसँ एक ठामक विलोपनक भय घटैत अछि। मुदा तीन प्रति बनौला मात्र न न्याय सुनिश्चित भेल, न प्रत्येक फाइलक विश्वसनीयता। प्रतिलिपिक संरचना सम्भावना बचबैत अछि; न्यायिक परिणाम आगामी अध्यायमे तय हएत।

सामूहिक गवाहीक थकान

बूढ़बा भूत ‘गवाहीक थकान’ अनुभव करैत छथि। भूतक अदेही अवस्था आ थाकबाक कथन एक विशिष्ट उलटबाँसी अछि। ई निरन्तर अत्याचारक कथेन्द्रिय भार देखबैत अछि—समुदाय नाम लिखैत अछि मुदा सूची पुनः भरैत रहैत अछि। गोप, सौम्या, देविका, मीरा आ रमैय्याक रातिक श्रमक समानान्तर भूतसभक रात्रिक खेल प्रतिरोधक अपर्याप्तता सेहो उपस्थित करैत अछि। बहुवाचिता आशाक संग थकानक सचाइ स्वीकार करैत अछि।

समग्र निर्णय : धन आ स्मृतिक प्रतिधारा

‘धनक कारी नदी’ पैघ आर्थिक सञ्जालकेँ एकहठाम समेटबाक प्रयत्न करैत अछि। कारी रकमक धारा आ हरियर स्मृतिक नावक विरोध अध्यायक मुख्य रूपक अछि; एकर बल अनेक चरित्रक अलग दृष्टिसँ लऽ जुड़ल विवरणमे अछि। शिल्पगत जोखिम कथासञ्जालक अत्यधिक समग्रता अछि, कारण बहुतेक अपराधी लेनदेन जल्दी एकहि केन्द्रसँ जोड़ल देखाइत छथि। मुदा देविकाक प्रश्न, मीराक स्वायत्त शर्त, सौम्याक प्रकाशन-सीमा आ सत्यव्रतक अनिश्चित निर्णय एहि विशाल षड्यन्त्रक भीतर मानवीय विवेक बचौने रखैत अछि।

प्रकरण ११३ | मूल अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

अन्हारक बीच संरक्षित साक्ष्य

अध्याय १२ मे वित्तीय प्रवाहक अन्वेषणसँ सामग्रीक सुरक्षित अस्तित्वक प्रश्न कथा-केन्द्र बनैत अछि। पीपरक खोखरमे राखल डिवाइस चन्ना गाछीक लोक-स्मृति आ डिजिटल जगतक संगम अछि। भूतसभक चारि सावधानी—सत्य बचाउ, अपराधक नुस्खा नहि बनाउ, नाम सुरक्षित रखू, आवश्यकता अनुसार प्रकाशन—आख्यानक अपन नूतन विधान थिक। मुख्य संघर्ष आब ‘सत्य भेटल कि नहि’ मात्र नहि, ‘सत्यकेँ केना बचायब आ केकरा देखायब’ सेहो अछि।

त्रिप्रतिलिपिक त्रिविध जोखिम

ईशान दत्त कहैत अछि जे तीन प्रति आशाक संग तीन खतरो छथि। सत्यव्रतक कक्ष, ईराक विदेशी संस्थागत मञ्च आ पीपरक खोखर—एहि तीनू ठाम अलग शक्ति-संरचना अछि। न्यायिक प्रतिलिपि दफ्तरक विरोध झेलत, विश्वविद्यालयक प्रतिलिपि दानदाता-हितसँ भिड़त, लोकस्मृतिक प्रति भौतिक आ प्रतीकात्मक पहराक आश्रित रहत। कथाकार प्रतिलिपिक बहुलताकेँ यान्त्रिक पूर्ण सुरक्षा नहि बनबैत; ओकरा अलग-अलग उत्तरदायित्वमे रखैत छथि।

‘पढ़नाइ’ आ ‘माननाइ’क फराक

ईशान सत्यव्रतक हाथमे डिवाइस पहुँचबाक सूचना दैत अछि, मुदा कहैत अछि जे पढ़नाइ आ माननाइ अलग बात अछि। एहि सरल अन्तरमे पात्रक विकासक आधार अछि। सत्यव्रत सरकारी शपथ-पत्र आ नव सूची बेरा-बेरी देखैत छथि। सुरक्षित अभिलेख नैतिक ज्ञानक द्वार खोलि सकैत अछि, मुदा निर्णय एखन पात्रक स्वतन्त्र क्रिया माँगैत अछि। ई सीमा न राखल जाए तँ तकनीकी सुराग भेटिते न्याय स्वतः होएबाक भ्रम पसरि जायत।

सादगीपूर्ण तालिकाक कथात्मक शक्ति

मेहताक स्क्रीनपर सनसनीखेज चलचित्र नहि, नाम, तिथि, भुगतान, हस्ताक्षर, संशोधित प्रति आ गायब पन्नाक तालिका खुलैत अछि। कथाकार सत्यकेँ ‘नीरस’ दस्तावेजी रूपमे उपस्थित करैत छथि। ई साहित्यिक रूपान्तरण दर्शबैत अछि जे तीव्र दुःख हर बेर रंगीन चित्रसँ नहि, बारम्बार जाँचल पंक्तिसँ सेहो सामने अबैत अछि। ‘सुरक्षा निरीक्षण पूर्ण’ आ पुरान दुर्घटनाक समयक विरोध कागचक भीतर विडम्बना रचैत अछि।

लाजक आन्तरिक कथा

सत्यव्रत पहिने क्रोध नहि, लाज अनुभव करैत छथि। सरकारी पदक विधिक दक्षता आ निजी विवेकक बीच दूरी ओकरा अपनहि लग असुविधाजनक बनैत अछि। ई आत्म-सम्बोधन ‘वीर वकील’क एकरेखीय चरित्रचित्रणसँ अलग अछि। बड़का सार्वजनिक भाषणसँ पहिने एकान्त अध्ययनकक्षमे लज्जाक अनुभूति निर्णयक आधार बनैत अछि। पाठमे ई नैतिक परिवर्तनक अवस्था अछि, पदत्याग अथवा पूर्ण सार्वजनिक असहमतिक परिणाम एखन नहि।

ईराक वंशक पुनर्पाठ

‘गढ़ नारिकेलक नाम’ शीर्षक फाइलमे लत्तड़, कलित, नन्द, पुलक फोटो आ ब्रूमक भाषणक अंश एकसाथ देखलाक बाद ईरा अपन परिवारक कथा नूतन रूपमे पढ़ैत छलीह। विदेशमे जन्मल पात्रक व्यक्तित्वकेँ वंशगत नियति बनाओल नहि गेल; ओ अनुसन्धान आ चयनक माध्यमसँ अपन सम्बन्धकेँ पुनः अर्थ दैत छथि। ‘अहाँ विदेशी नहि छी’ वाक्य भावात्मक जोड़ अछि, मुदा आलोचनात्मक पाठनमे जन्मस्थान, नागरिकता आ सांस्कृतिक पहिचानक वास्तविक भेद मेटाब उचित नहि।

अनजान स्रोतक रचनात्मक जोखिम

ईरा केँ प्रेषक-अज्ञात फाइल भेटैत अछि; सत्यव्रतक अध्ययन-कक्षमे नामविहीन लिफाफा पहुँचैत अछि। रहस्यक एहि सुविधासँ कथा तीव्र होइत अछि, मुदा साक्ष्यक स्रोत-शृंखलाक विश्वसनीयतापर प्रश्न बनैत अछि। लेखक कतिपय ठाम जादुई यथार्थक सहारे दस्तावेज पहुँचबैत छथि। साहित्यिक अर्थमे ई मृतकक अडिग स्मृतिक दृश्य अछि, मुदा न्यायिक जाँचक प्रक्रिया जखन महत्त्वपूर्ण अछि तखन स्रोत-सुरक्षाक विवरणक कमी आलोचनात्मक सीमा बनि सकैत अछि।

भूतसभक पहरा : लोकस्मृतिक सक्रियता

पीपरक खोखरपर डाइनसभ रातिक पहरा तय करैत छथि; लोथ दर्शकसँ पहरेदार बनैत अछि। सत्यक स्मृति निष्क्रिय संग्रह नहि, सामूहिक श्रमक रूपमे प्रकट होइत अछि। बूढ़बाक ‘पहिने अपन नाम बाजू’ नियम दफ्तरक पासवर्डक लोक-प्रतिरूप अछि। नामक सच्चाइ अँजोरक चाबी बनैत अछि, मुदा ई जादुई सुरक्षा वास्तविक डिजिटल प्रवेश-नियन्त्रणक विधिक विवरण नहि। कथामे लोकविश्वास आ तकनीकी भाषाक आन्तरिक संवाद रचित अछि।

अन्धकारक चतुर्थ आश्रय

तीन सार्वजनिक/अर्धसार्वजनिक दिशाक अतिरिक्त ईशान ‘डार्क-जाल’क एक गोपित प्रति प्रस्तावित करैत अछि। कथा ओकरा अपराधक गल्ली आ सम्भावित आखिरी आश्रय दुनू रूपमे देखबैत अछि। प्रमाण तुरन्त प्रसारित नहि होएत; उचित समय धरि राखल जाएत। एतय अन्हारक अर्थ नैतिक रूपसँ निश्चित नहि; प्रसंग आ उपयोग ओकर अर्थ बदलैत अछि। आलोचनाकेँ एहि छविक कलात्मक महत्त्व पर ध्यान देबाक चाही, न कि किछु अनिर्दिष्ट तकनीकी कार्य-पद्धति कल्पित करबाक।

गोपनीयता बनाम अपराधक संरक्षण

मीरा कहैत छलीह जे पीड़ितक अनुमति बिना निजी नाम-जानकारी प्रकाशित नहि होए। सौम्या सेहो अपराधक परिचालन-पद्धतिक खुलासा रोकबाक पक्षमे छथि। ई सीमांकनक कारण ‘अधिकतम सार्वजनिकता’ साहित्यक स्वतः सर्वोच्च मूल्य नहि रहैत। न्यायिक उपयोग, समुदायिक स्मरण आ व्यक्तिगत गरिमा लेल भिन्न स्तरक सामग्री चाही। कथा सत्यक नैतिक प्रकाशनकेँ प्रक्रियाबद्ध बनबैत अछि—जे जितबा भाग लेल अधिकृत, तकरा ओतबे भाग।

देविकाक नाम सार्वजनिक रखबाक आग्रह

देविका उज्ज्वलक नामकेँ सार्वजनिक चेतावनीक भाग बनेबाक अनुमति दैत छलीह। ई निर्णय मीराक निजी विवरण बचएबाक शर्तसँ विरोधी नहि। दुनू स्थितिमे सम्बद्ध व्यक्तिक इच्छाक सम्मानक प्रश्न अछि। मृत युवकक इच्छाक विषय देविका अपन अनुमान प्रस्तुत करैत छलीह; आलोचनामे एकरा स्वतः उज्ज्वलक लिखित सहमति नहि मानल जाए। कथा निजी शोक आ सार्वजनिक शिक्षा बीच परिवारक कठिन नैतिक जिम्मेदारी उपस्थित करैत अछि।

हरिहरनक स्वप्नमे प्रक्रिया

हरिहरनक सपनामे अदालतक कुर्सी गोहिक पीठ बनैत अछि, बत्रा ‘प्रक्रिया बचाओत’ कहैत अछि। एहिठाम विधिक प्रक्रियाक यान्त्रिक आश्रय जादुई भयमे रूपान्तरित अछि। सपना पात्रक आन्तरिक संकटक दृश्य, बाहरी घटनाक तथ्यात्मक दस्तावेज नहि। कथाकार खलपात्रकेँ भय अनुभव करबैत छथि, जइसँ ओ निर्विकार मशीन नहि रहि मनोवैज्ञानिक सत्ता-चिन्ताक पात्र बनैत अछि। मुदा भय होएब पश्चाताप वा नैतिक उद्धारक प्रमाण नहि।

पीपर-पातक वैश्विक नक्सा

अन्तमे पातक नससभ कमला-बलान, गंगा-पुल, दिल्ली, हार्वर्ड, हांगकांग आ उज्ज्वलक गरीब घरकेँ जोड़ैत अछि। लोकभूगोल विश्वव्यापी वित्तीय मानचित्रक विकल्प बनि उठैत अछि। एहि छविमे पुरान ‘दहिन कातक गाम’क स्थान-सन्देह वैश्विक परस्परता पबैत अछि। परन्तु संसार एक गाम बनि गेल, एहन समरूपीकरण नहि; वित्तीय नियन्त्रण, भाषिक शक्ति आ शारीरिक जोखिम एखनहु असमान वितरित छथि।

समग्र मूल्यांकन : कब प्रकाश देब?

‘डार्क-जालपर नारिकेल पात’ अन्वेषणक नूतन नैतिक चरण अछि। सत्यपछाति प्रसारणक विवेक, पीड़ितक निजताक मर्यादा, प्रतिलिपिक अलग-अलग ठाम आ प्रेषकक अनामिताक शिल्पगत संकट एकसाथ अबैत अछि। ईशान–गोप–मीरा–सौम्याक संवाद कथाक एकाधिक प्राधिकार निर्माण करैत अछि; केओ अकेले सभ तय नहि करैत। कथाविश्वमे अन्हार पूर्णतः असत्यक क्षेत्र नहि रहि, कखनो सुरक्षाक स्थगित ठाम बनैत अछि—एहि जटिलतामे अध्यायक विशिष्ट आख्यानात्मक उपलब्धि अछि।

प्रकरण ११४ | मूल अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

अदालतक बहुप्रतीक्षित पुनःप्रवेश

लम्बा तारीखक इतिहासपछाति न्यायालयक प्रत्यक्ष कक्षमे कथा घुरैत अछि। सत्यव्रतक अध्ययन-कक्षमे सरकारी शपथ-पत्र, गोपक सूची आ नन्दक पुरान आवेदन—तीन कालक दस्तावेज एकसाथ राखल अछि। ई दृश्य निजी विवेकसँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व धरि पात्रक गमन बनबैत अछि। पुरान पुलक घटना न्यायिक भाषा भीतर फेर जन्म लैत अछि; मुदा आगमनक अर्थ अन्तिम निर्णय नहि, सुनबाक नव अवसर अछि।

टाइपराइटरक पुरान चोट

मेहता कम्प्यूटरक बदला पुरान टाइपराइटरपर छोट नोट लिखैत छथि। कागचमे धँसल अक्षर पुरान नन्दक दस्तावेजी जिद्दक स्मरण करबैत अछि। उपकरणक चुनाव आधुनिक तकनीकक सामान्य विरोध नहि; स्थिर आत्म-प्रतिबद्धताक संवेदनात्मक दृश्य अछि। मेहताक स्वयं लिखल वाक्य सार्वजनिक जिम्मेदारीक पूर्वाभ्यास बनैत अछि। कम्प्यूटरपर बदलल जा सकएबला वाक्य आ टाइपराइटरक चोटक विरोध कथामे स्मृतिक टिकाउपनक मिथकीय अर्थ पबैत अछि।

सात विधिक दरबाजाक रणनीति

हरिहरन याचिकाक ग्राह्यता, समय-सीमा, पक्षकारिता, निजता, राष्ट्रीय सुरक्षा, मध्यस्थता आ गोपनीयताक अनेक प्रश्न एकसाँस उठबैत अछि। न्यायाधीश एकरा सात दरबाजा बन्द करब कहैत छथि। एहि रूपकसँ कचहरी ‘तारीखक गोहि’सँ फेर प्रक्रियागत भूलभुलैयामे बदलैत अछि। कथाकार वैध विधिक आपत्तिक सम्भावना आ ओकर दुरुपयोगक आरोपकेँ कथानकमे भिड़बैत छथि। विपक्षी वकीलक प्रत्येक तर्क स्वतः निराधार अछि, से मानब घटनाक अतिसरलीकरण हएत; दृश्य तकर सामूहिक विलम्बकारी प्रयोग दिखबैत अछि।

सरकारी वकीलक कथन-पलटाव

सत्यव्रत कहैत छथि जे राज्य अपूर्ण अभिलेखपर टिकल तँ ओ असत्यपर टिकल। ई कथन आधिकारिक शपथ-पत्रक भाषा भीतरसँ प्रश्न उठबैत अछि। पात्र राज्यक प्रतिनिधित्व छोड़ि तुरन्त निजी पक्षक वकील नहि बनैत; ओ राज्यक अभिलेख पूरा करबाक माँग करैत अछि। यही भाषिक पलटाव कथाक राजनीतिक-नैतिक केन्द्र अछि। नायकत्व एक संस्था छोड़ि दोसरमे भागबाक बदला संस्थाक भीतर ओकर शर्त बदलबाक प्रयास बनैत अछि।

सील लगब : संरक्षण आ कबरक द्वैत

न्यायाधीश संवेदनशील सामग्री सीलबन्द आवरणमे देबाक निर्देश दैत छथि। सत्यव्रत रुकि कऽ कहैत छथि जे व्यक्तिगत निजी विवरण सीलबन्द रहू, मुदा आरम्भिक नाम-सूची आ अभिलेख-संरक्षणक प्रश्न खुलल रहू। ई अध्यायक सबसे विशिष्ट तनाव अछि। गोपनीयता पीड़ितक रक्षा करैत अछि; अत्यधिक गोपनीयता दबाओल सत्यकेँ फेर कैद करि सकैत अछि। कथाकार सीलकेँ स्वतः दुष्ट वा स्वतः कल्याणकारी नहि मानैत। ओकर प्रयोजन, सीमा आ पहुँचक प्रश्न उभारैत छथि।

न्यायपीठक सीमित निर्णय

न्यायपीठ निजी विवरण सीलबन्द, आरम्भिक नाम-सूची प्रतिपक्षकेँ उपलब्ध, अभिलेख नष्ट नहि करबाक निर्देश आ सम्बन्धित निकायक सूचना देबाक बात कहैत अछि। एकरा प्रारम्भिक सुरक्षात्मक आदेश रूपमे पढ़बाक अछि। मृत्युसंख्या, वित्तीय शृंखला आ सम्बन्धित व्यक्तिसभक अन्तिम दायित्व एखन जाँचक अधीन अछि। कथा जँ एहि क्षण पूर्ण विजय घोषित नहि करैत तकर कारण न्यायिक समयक अनेक स्तर रहब अछि।

नाम-पाठक अधिकारक माँग

सत्यव्रत न्यायालयमे मृतकक नाम पढ़बाक आग्रह करैत छथि। हरिहरन भावनात्मक नाटक कहि विरोध करैत अछि। न्यायाधीश प्रतीकात्मक प्रदर्शनक बदला प्रारम्भिक वास्तविक पाठ स्वीकार करैत छथि। एहि निर्णयसँ

विधिक कक्षक श्रवण-रचना बदलैत अछि: संख्या कहल जाएबाक बदला नाम उच्चरित होइत अछि। पाठक शोक-समारोह आ अभिलेख-सुधारक प्रथम चरणक अन्तर बुझैत अछि। नाम-पाठ अभी सम्पूर्ण मृत्यु-जाँच नहि, पर राज्यक मौनमे दरार अछि।

पन्द्रहम नामपर थम्हल कण्ठ

मेहता नाम पढ़ैत-पढ़ैत पन्द्रहमपर रुकैत छथि। एहि संकोचमे सार्वजनिक वकील निजी मनुष्यक रूपमे देखाइत अछि। आवाज टूटब केवल भावुक प्रभाव नहि; बरखो सँ औपचारिक पदमे दबाओल अनुभवक अचानक भार अछि। कथाकार सम्पूर्ण सूची निर्बाध पढ़ि देबाक ‘वीरता’क बदला एक शारीरिक असमर्थता दैत छथि। तकर बाद गोप उठि शेष नाम पढ़बाक अनुमति माँगैत अछि। एक कण्ठ सँ दोसर कण्ठ धरि हस्तान्तरण सामूहिक श्रवणक संरचना पुष्ट करैत अछि।

गोपक ‘केवल नाम’ पाठ

न्यायाधीश गोपकेँ ‘केवल नाम, कोनो टिप्पणी नहि’ कहैत छथि। एतय वक्तव्यक सजावटी व्याख्या हटि प्रत्येक व्यक्तिक चिन्हारि स्वयं मंच पबैत अछि। नामक बाद छोट विराम शोकक मौन बनैत अछि। ई अध्याय ०क लोकस्वरक एक असामान्य प्रतिध्वनि अछि: गाममे गीत द्वारा नाम, न्यायालयमे साधारण पुकार द्वारा नाम। दुनूक सार्वजनिक विधान अलग, मुदा विस्मरण-विरोधक प्रयोजन संगठित अछि।

देविकाक पक्षकारिता

हरिहरन गोपक औपचारिक पक्षकारिता प्रश्न उठबैत अछि; देविका अपन भाइक नाम सूचीमे होएबाक आधार पर बजैत छलीह। हुनकर हस्तक्षेप गामक स्त्रीक निजी शोककेँ औपचारिक कक्षमे प्रवेश करबैत अछि। किन्तु ओकर भाषणसँ सभ दफ्तरी प्रश्न स्वतः निस्तारित नहि। ई एक छोट प्रभावकारी दृश्य अछि जाहिमे कानूनी परिभाषाक कठोरता आ जीवितक बोलबाक नैतिक अधिकार आमने-सामने अबैत छथि।

जादुई दाग आ अदालतक भौतिकी

न्यायालयक पंखा धीम होएब, शीशापर धुँध, जूतातल पानि आ फर्शपर दाग—ई पुनरावर्तित जादुई संकेत मृतकक अदृश्य उपस्थिति बनबैत अछि। सफाईकर्मी एकरा पाइपक चुहब मानि सकैत अछि; भूत-जगत एकरा नामक दाग पढ़ैत अछि। बहुव्याख्यात्मकता कथा केँ चमत्कारक एकमेव साक्ष्य नहि बनबैत। दागक द्विविधा शोक आ संस्थाक बीचक आन्तरिक संघर्षक दृश्य अछि।

ईराक दूरस्थ समकालिकता

दिल्लीक नाम-पाठक समाचार हार्वर्ड पहुँचिते ईरा अगिला नैतिकता-व्याख्यान लेल प्रश्न सहेजैत छलीह। एहि समानान्तरतासँ एक न्यायालयक सीमित क्रिया दूरस्थ शैक्षिक मञ्चमे नूतन प्रतिप्रश्न बनैत अछि। मुदा दुई संस्थामे अलग कार्य अछि: अदालत अभिलेख आ आदेशक क्षेत्र, विश्वविद्यालय नैतिक सार्वजनिक संवादक क्षेत्र। कथाकार एकरेखा अधिकार दैत नहि; ओहि फराक कार्यकेँ संग-संग कथा-विस्तार बनबैत अछि।

भावात्मक सफलता आ न्यायिक सीमा

गोप बाहर अबैत अछि, ईशान नाम-पाठकेँ पहिल जलसमाधि टूटब कहैत अछि; सौम्या स्मरण करबैत छलीह जे न्याय एखन भेटल नहि। एहि अन्तर्वार्तामे अध्यायक स्वयं-आलोचना उपस्थित अछि। रूपकात्मक उद्धार आ संस्थागत परिणामक बीच दूरी स्पष्ट अछि। आलोचना लेल सौम्याक वाक्य विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओ पाठककेँ कैथार्सिसक आवेगमे जाँचक अपूर्णता बिसरए नहि दैत।

समग्र निर्णय : ‘आधा खुलल’ आवरण

अध्याय १३क शिल्पगत उपलब्धि गोपनीयता, नामक सार्वजनिक श्रवण, राज्यक प्रतिनिधित्व आ न्यायिक प्रक्रियाक जटिल सम्बन्धकेँ दृश्यक रूप देब अछि। मेहताक टाइपराइटर, हरिहरनक सात दरबाजा, देविकाक आँचल आ गोपक काँपैत आवाज कानूनक अमूर्त शब्दकेँ मानवीय क्रियामे बदलैत अछि। कथाक आलोचनात्मक सीमा ई जे न्यायपीठक नैतिक संवेदनशीलता अपेक्षाकृत तीव्र गति सँ रूपायित होइत अछि। तथापि आदेशक सीमित स्वरूप आ सौम्याक सावधानी समापनकेँ असमय पूर्ण न्याय नहि बनबाक दैत अछि।

प्रकरण ११५ | मूल अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अदालतसँ घर धरि : कथा-दिशाक प्रत्यावर्तन

अध्याय १४ मे न्यायालयक प्रारम्भिक आदेशक बाद पात्रसभ दिल्ली आ विदेशक संस्थागत मञ्चसँ गढ़ नारिकेल दिस घुरैत छथि। ई वापसी केवल यात्रा-प्रसंग नहि; दस्तावेजक अर्थक स्थानान्तरण अछि। जे कागच अदालतमे अभिलेख छल, वैह गाममे पुरखाक स्मृति, श्रमक अवशेष आ सामूहिक शोकक भाग बनैत अछि। शीर्षकक ‘रस्ता’ भौगोलिक बाटसँ अधिक नामक अपन लोककण्ठमे फेर प्रवेश करबाक मार्ग अछि। कथा अपन वैश्विक विस्तारक बाद स्थानीय केन्द्रक महत्त्व पुनःस्थापित करैत अछि।

अदालतक बरामदामे भीजल जूता

कक्षसँ बाहर अबैत लोकसभक जूतामे पानिक गन्ध अछि। कियो वातानुकूलनक नली, कियो पुरान भवनक सीपेज कहैत अछि; आरुणि ओतय गंगा-रेत, सीमेण्ट आ गमछाक स्मृति चिन्हैत अछि। एकहि भौतिक चिह्नक अनेक व्याख्या फेर उपस्थित अछि। कथाकार स्पष्ट रहस्य-समाधान नहि दैत; पात्रक निजी वंश-स्मृति भीतर पानि विशेष अर्थ पबैत अछि। न्यायालयक पानि नदीक जादुई बोध बनैत अछि, मुदा भौतिक भवनक सम्भावित कारण पूर्णतः निरस्त नहि।

अनन्याक बाल-प्रश्नक रचना

बेटी अनन्या आरुणिसँ पूछैत छलीह जे अदालतमे भूत एलाह की। उत्तरमे आरुणि कहैत अछि जे भूत नहि, नाम एल छल। ई छोट संवाद जनक–पुत्रीक ज्ञान-स्थान बदलैत अछि: पिता अपन अनुभव बुझएबाक कोशिश करैत, बच्ची ‘नाम चलि सकैत अछि?’ पूछि रूपकक अगिला अर्थ खोलैत छलीह। बा नामकेँ पएर बिना चलनिहार कहैत छथि। एहि तरह तीन पीढ़ीक संवादमे नामक चलायमानता भिन्न अनुभूति पबैत अछि। बाल-प्रश्न केवल सजावटी सरलता नहि, आख्यान-विवेकक स्वतन्त्र माध्यम अछि।

रेलयात्राक दृश्यात्मक काल

आरुणि विमान–टैक्सी छोड़ि रेलसँ गाम जयबाक निर्णय करैत अछि। रेलक खिड़की, खेत, सुखल पोखरि, स्टेशनक चाह आ रातिक अन्हार कथाक यात्रा-अवधि फैलाबैत अछि। तीव्र वैश्विक सूचना-जालक विपरीत धीरे-धीरे बदलैत भू-दृश्य पात्रकेँ अपन इतिहासक रास्तामे समय दैत अछि। ई रेलयात्रा भौतिक दूरी मात्र घटबैत नहि; शहरी अभिलेखक ठंढसँ ग्रामीण स्मृतिक गन्ध धरि संवेदनात्मक संक्रमण रचैत अछि। तथापि रेल गामक नैतिक श्रेष्ठताक स्वतः प्रमाण नहि; ई कथावाचकक चुनल दृश्य-माध्यम अछि।

ईराक वापसी आ देहगत पहिचान

ईरा आरुणि हार्वर्डक भाषणक प्रति आ अनुसन्धानक पन्नासंग गाम पहुँचैत छलीह। बा हुनकर माथपर हाथ रखैत छथि—विदेशी सभागारमे हाथ मिलौनाक औपचारिकतासँ फराक आत्मीय स्पर्शक दृश्य। कथामे विदेशमे जन्मल पात्रक अपन गामसँ सम्बन्ध अकस्मात् पूर्ण नहि होइत; शोध, प्रश्न, यात्रा आ स्पर्शक विभिन्न क्षणमे विकसित होइत अछि। एहि उत्तराधिकारकेँ विशुद्ध वंशगत ‘स्वभाव’ कहब अपूर्ण हएत; ई व्यक्तिगत चुनाव आ सामूहिक स्वीकृतिक प्रक्रिया अछि।

निशांतक वित्तीय अनुसन्धानक अलग स्थान

निशांत भुगतान-दुआरक परत, जयपुर–गुरुग्राम–सिंगापुर–हांगकांगक क्रम आ पुरान पुल-परियोजनासँ सम्बन्धित खाताक संकेत लऽ अबैत अछि। कथा ओकरा निरीक्षणक एक फराक विशेषज्ञ दृष्टि दैत अछि। मुदा संक्षिप्त खातागत मार्ग देखल जाएब आ प्रत्येक व्यक्ति पर विधिक दायित्व सिद्ध होएब अलग बात अछि। गाममे पहुँचिते गोप ओकरा पातो सुनैत होएबाक चेतावनी दैत अछि, जाहिसँ अंकीय विश्लेषणक भाषा आ लोकस्मृतिक भाषा एकहि मञ्चपर टकराइत अछि।

पुरान बक्साक मूल गन्ध

नन्द आरुणिक मूल फाइल घरक बक्सासँ बाहर निकालल जाइत अछि। मृत्यु-सूचीक अपूर्णता, सुरक्षा-बहीक जाल आ तीस अतिरिक्त नामसँ जुड़ल लिखावट एकदम देहगत विरासत बनि उठैत अछि। अदालतमे प्रतिलिपि आ स्क्रीनमे स्कैन रहल लिखावट एखन कागचक गन्ध, माटि आ परिवारक स्पर्श पबैत अछि। ई पुनरागमन पुरान अध्याय ‘दहिन कातक गाम’क बक्साक दृश्यकेँ फेर रूपान्तरित करैत अछि। तथापि मूल कागचक वस्तुगत उपस्थिति स्वयं ओकर प्रत्येक आरोपक जाँच सम्पन्न करैत नहि।

मीराक अपन सीमाक रक्षा

मृणालिनी निजी चित्र, सन्देश आ धमकीक सुरक्षित प्रतिलिपि सौम्याकेँ दैत छलीह, मुदा गामक आगाँ अपन कथा प्रस्तुत करबाक सीमा सेहो स्वयं तय करैत छथि। ई दृश्य पूर्वक ब्लैकमेल-प्रकरणक नैतिक निरन्तरता अछि। घर घुरबाक अर्थ सब निजी बात सामूहिक सम्पत्ति बनि जाएब नहि। गामक सुननिहार समुदायकेँ सेहो व्यक्तिक स्वीकृत सीमा स्वीकार करबाक परीक्षा देब पड़ैत अछि। संलिप्त स्त्रीक आत्मनिर्णय एहिठाम सांस्कृतिक एकतासँ पैघ नैतिक प्रश्न अछि।

बिना मञ्चक सामूहिक सभा

साँझमे गामक लोक आँगन, तुलसी-चौरा आ पीपरक छाहमे जुटैत छथि। घोषित कार्यक्रम, माइक आ औपचारिक मंच नहि; केवल लालटेनक चारू दिस मनुष्यक चेहरा। एहि बिना-मञ्चक सभा मे न्यायालयक बैठक आ हार्वर्डक सभागारक उलट रचना अछि। एतय औपचारिक अधिकार कम, सामूहिक श्रवणक आत्मीयता अधिक। मुदा लोकसभा अदालतक विकल्प भऽ गेल, एहन नहि; ओकर कार्य नामकेँ सामाजिक स्मृतिमे फेर जीवित करब अछि, विधिक आदेश निष्पादित करब नहि।

माटिपर नाम रखबाक संस्कार

गोप पहिने फाइल नहि खोलैत; माटि छुइत अछि। ओ दस्तावेजकेँ गाममे श्राद्धक पिण्डक समकक्ष देखैत अछि। एहि दृश्यसँ संस्थागत साक्ष्यक अर्थ सामुदायिक शोक-क्रियामे बदलैत अछि। मृतकक सम्मान आ जाँचक भिन्न प्रयोजन एकहि कागचमे संगठित होइत अछि। मुदा संस्कारक भावात्मक स्वीकारसँ साक्ष्यक रखरखावक दायित्व समाप्त नहि। कथा जँ कागचकेँ पवित्र बनबैत अछि तखन ओकर सुरक्षित, अविकृत संरक्षणक प्रश्न आरो आवश्यक होइत अछि।

ईशानक तीन पोटली

मजदूरक सूची, डिजिटल ठगीक पीड़ित आ खाता-संकेत, तथा विदेशक वित्तीय मार्ग—ई तीन पोटली एक सघन कथावस्तु बनैत अछि। पात्र एक-दोसराक दुःखक प्रतिकृति नहि, अलग लोक-इतिहासक वाहक छथि। पोटली एकटा सुगम साहित्यिक प्रतीक होइतहुँ संग-संग साक्ष्यक अलग श्रेणी अछि। ईशानक ‘नामक अस्थि’ कहनाइ अवशेषक भार बतबैत अछि; कथामे विधिक अभिलेखक विभिन्न स्तर स्वयं एक-समान सत्य-मूल्य प्राप्त नहि करैत।

हरियर प्रकाश आ छविक पलटाव

चन्ना गाछी लग उभरैत हरियर प्रकाशमे एडवर्ड ब्रूमक मुखपृष्ठ धुँधला होइत, श्रमिकक सीमेण्टसँ फाटल हथेली उभरैत अछि। ई दृश्य प्रतिष्ठित संस्थागत चेहराक स्थानपर अदृश्य श्रमक देह स्थापब चाहैत अछि। जादुई घटनाकेँ इतिहासक शाब्दिक फोटो-संशोधन मानल नहि जा सकैत; ई कथा-छविमे प्राथमिकताक नाटकीय पलटाव अछि। जकरा प्रचार-चित्रमे सामने राखल गेल छल, ओ पाछाँ हटैत अछि; जकर श्रम छिपल छल, ओ अग्रभागमे अबैत अछि।

नामक उच्चारण आ अनुपस्थित व्यक्तिसभ

रात्रिक कबड्डीमे सरयू, नगीना, उज्ज्वल, हुलासी आ अनेक अस्पष्ट नाम गूँजैत अछि। सभ नाम लिखि नहि पबैत —किछु जलमे बनि टूटैत अछि। ई अपूर्णता लोकस्मृतिक सर्वशक्तिमान होएबाक दावाकेँ चुनौती दैत अछि। सामूहिक श्रवण सम्मान देइत अछि, मुदा व्यक्तिगत पहिचानक किछु दूरी रहैत अछि। बा गाछक पात तुरन्त तोड़बाक मनाही करैत छथि; नामक जीवित आश्रय सुरक्षित रखबाक ई सूक्ष्म क्रिया पुरान अभिलेख-प्रेमक पर्यावरणीय विस्तार अछि।

समग्र निर्णय : घरक अर्थक पुनर्निर्माण

अध्याय १४ मे घर भौगोलिक थिरता मात्र नहि, नामक वापसी आ अनेक असमान इतिहासक परस्पर श्रवणक स्थान अछि। रेलयात्रा, बक्सा, पोटली, मीराक सीमा, अनन्याक प्रश्न आ हरियर प्रकाश सभ कथा-क्रमकेँ गामक केन्द्र पर फेर लैत छथि। एक आलोचनात्मक जोखिम ई जे गामक सामूहिकता अत्यधिक उपचारक शक्ति प्राप्त करैत देखाइत अछि, जखनकि पुरान प्रस्तावनामे स्थानीय जाति-लिंगक विषमता उपस्थित छल। एहि अन्तरकेँ विसरि नहि, सामुदायिक श्रवणक सम्भावना आ ओकर ऐतिहासिक बाधा दुनू पर ध्यान देबाक चाही।

प्रकरण ११६ | मूल अध्याय १५ — नामक जल

शीर्षकक परम रूपक आ कथाक खुलल अन्त

‘नामक जल’ शीर्षक पुरान ‘छपाक’, नदी, गोहि, पात आ सूचीसभकेँ एक बड़का अर्थ-वृत्तमे जोड़ैत अछि। नाम पानिपर टिकल रहब उपन्यासक विजयात्मक छवि अछि, मुदा अध्यायक अन्तिम सूचीमे एक पाँति खाली रहैत अछि। एतय रचना अपन विजयकेँ स्वयं अपूर्ण रखैत अछि। न्यायिक कार्रवाई होइत अछि, सामुदायिक स्मरण बढ़ैत अछि, मुदा भविष्यक विस्मरणक संकट समाप्त नहि होइत। पानिक अनवरत प्रवाहक बीच नाम जोगेबाक कार्य सेहो अनवरत अछि।

पातक प्रवेश आ साक्ष्यक अलग स्वभाव

सत्यव्रतक हाथमे नारिकेल-पात एहन पहुँचैत अछि जे सहायक पूछैत अछि—अदालतमे कोना दाखिल हएत? मेहता मूल जीवन आ ओकर प्रतिलिपिक भेद कहैत छथि। ई दृश्य साहित्यिक सत्य आ अभिलेखीय प्रक्रियाक तनावक अन्तिम पुनरावृत्ति अछि। पात व्यक्ति-स्मृतिक प्रतीक, मुदा बही, हलफनामा आ डिजिटल प्रतिलिपिक कार्य अलग अछि। कथाकार पातकेँ नैतिक स्मरणक केन्द्र बनबैत छथि; एकरा स्वतः सभी प्रक्रियात्मक मान्यता प्राप्त वस्तु कहल नहि जाए।

न्यायालयमे सूचीसभक स्तर

मेहता तीस सरकारी नाम सँ आरम्भ कऽ अनुपस्थित श्रमिक, कार्यस्थल-बाह्य लिखल मृत्यु, जाली पारिवारिक हस्ताक्षर, मुआवजा-विसंगति, नाम-बदलाव आ कभी दर्ज नहि भेल व्यक्ति धरि फराक सूची पढ़ैत छथि। एहन श्रेणीबद्ध प्रस्तुति नामक एकल भावात्मक उच्चारणसँ आगू दस्तावेजी भेद खोलैत अछि। प्रत्येक श्रेणीक जाँचक आधार अलग चाही। कथाक सामूहिक न्याय-बोध शक्तिशाली अछि, मुदा श्रेणीसभक अन्तर्विरोध मेटि सर्वनामक एक अनिर्णीत कुल-गणना बनायब सावधान आलोचनासँ विपरीत हएत।

उज्ज्वलसँ ‘अज्ञात छात्र’ धरि

डिजिटल ठगीक सूचीमे उज्ज्वल झा, रोहित मंडल, शशांक, फरहान, देवाशीष आ अन्य अज्ञात युवकक नाम पढ़ल जाइत अछि। उज्ज्वलक विस्तृत व्यक्तिगत कथा एहिठाम एक व्यापक वर्गक संग राखल गेल अछि। एहि विस्तारसँ निजी त्रासदी सामाजिक आकृति पबैत अछि, मुदा प्रत्येक अतिरिक्त नामक जीवन-वृत्त पाठमे समान

रूपेँ विकसित नहि। नाम-पाठ आ स्वतन्त्र पात्रनिर्माणक अन्तर स्वयं स्पष्ट रहबाक चाही। सामूहिक पीड़ित-सूची व्यक्ति-कथासभक स्थानापन्न नहि होइत।

बहुखण्डीय वित्तीय मानचित्रक अदालत-प्रवेश

निशांतक हलफनामा, ईराक हार्वर्ड-संबन्धी अभिलेख, एडवर्ड ब्रूमक समूह, महामारीकालीन आपूर्ति, परामर्श-शुल्क, कथित हथियार-सम्बन्धी परत आ लाउ किन-हंग धरि जाएबला खाता-रेखा एकहि कार्यवाहीमे आबैत अछि। हरिहरन प्रासंगिकता, प्रमाण आ विदेशी अधिकारक्षेत्र सम्बन्धी आपत्ति करैत अछि। एहि विवादक कारण न्यायिक कक्ष केवल नैतिक वचनक मंच नहि, अभिलेखक स्वीकार्यता आ पहुँचपर संघर्षक क्षेत्र बनैत अछि। कथाकार सभ कड़ी स्वतः अन्तिम रूपेँ सिद्ध भऽ गेल, एहन आदेश नहि देखबैत।

मेहताक सात माँगक संरचना

राज्यक अधिवक्ता पुनः मृतक-सत्यापन, डिजिटल ठगीक पीड़ित संरक्षण, निजता, विदेशी वित्तीय जाँच, विधिक पदाधिकारीक भूमिका, अभिलेख-विनाश पर कार्रवाई आ दीर्घ स्थगन रोकबाक अनुरोध करैत छथि। ई सात मांग कथाक पूर्वक अनेक स्वतन्त्र समस्या एक सार्वजनिक कार्रवाईमे अनुवाद करैत अछि। एतय नैतिकता केवल भावना नहि, संस्थागत अनुरोधक सूची बनैत अछि। परन्तु अनुरोध आ आदेशक भेद बनौने रखब चाही; सभ माँग तात्कालिक अन्तिम रूपेँ पूरा भऽ गेल, से पाठमे नहि कहल गेल।

राज्यक वकीलक आत्म-स्थिति

हरिहरन मेहतापर याचिकाकर्ताक वकील बनि जाएबाक आरोप लगबैत अछि; मेहता नागरिकक जीवनकेँ राज्यक दायित्वक केन्द्र कहैत छथि। ई चरित्रक लम्बा आन्तरिक द्वन्द्वक सार्वजनिक रूप अछि। अध्याय १२क शर्म, अध्याय १३क प्रारम्भिक अभिलेख-संशोधन आ आबक दृढ़ निवेदन एक क्रम बनबैत अछि। परन्तु मेहता अपन अधलिखल त्यागपत्रक मसौदा बादमे पूरा नहि करैत छथि; संस्था भीतर रहि संघर्ष करबाक निर्णय कथामे सक्रिय रहैत अछि। ई विवरण चरित्रकेँ आसान शहीद-सन त्यागक अन्तसँ अलग रखैत अछि।

सात दिनक अगिला तारीख

न्यायपीठ विशेष अन्वेषण, स्वतन्त्र लेखा-परीक्षा, पीड़ित संरक्षण, निजता-संरक्षित गवाही, सम्बन्धित पदाधिकारीक आचरण-सन्दर्भक सूचना, खातागत रोक आ विदेशी अभिलेख मँगएबाक अनुमति जकाँ कदमक आदेश लिखैत अछि। अगिला सुनवाई सात दिन बाद। ‘तारीखक गोहि’ छोट भेल कहनाइ एहि देरीक सङ्कुचनक रूपक अछि। ई आदेश महत्त्वपूर्ण प्रक्रियागत प्रगति अछि, मुदा अन्तिम दोषसिद्धि वा पूर्ण क्षतिपूर्ति नहि। कथामे सौम्याक ‘आइ आदेश आयल अछि, फैसला नहि’ विशेष निर्णायक आत्म-संशोधन अछि।

आरोपित पक्षक भय आ असम्पन्न परिणाम

बत्राक सिग्नल बन्द होएब, भागबाक प्रयत्न आ अपनहि नामसँ बचि नहि पएब; हरिहरनक पुस्तकालयमे कागचक असामान्य विन्यास; लाउक स्क्रीनपर उभरैत नारिकेल-पात—ई सभ खलपात्रसभक मनोवैज्ञानिक संकटक जादुई दृश्य छथि। पाठमे प्रतिरोधक दबाव बढ़ैत देखाइत अछि, मुदा स्पष्ट न्यायिक अन्तिम सजा अथवा सम्पूर्ण

अन्तर्राष्ट्रीय सञ्जालक विधिक विघटन कथित नहि। साहित्यिक बदला आ वास्तविक कानूनक फलित परिणामक भेद आवश्यक अछि।

मुन्नाक स्थिति : उपयोग भेल खाता

अन्तिम सूचीमे मुन्ना पासवानकेँ ‘अपराधी’ नहि, उपयोग कएल गेल खाताक धारक रूपमे उल्लेख कएल गेल अछि। ई कथाक सबसे महत्त्वपूर्ण वर्गीकरणात्मक सावधानीमे सँ एक अछि। पहिनेक अध्याय ८ मे मुन्ना अपन भूमिकाक पूरा अर्थ नहि जनैत छल। पछिला जाँचमे ओकर काज महत्त्वपूर्ण वित्तीय रस्ता बनैत अछि। मुदा अनभिज्ञता, आर्थिक आवश्यकता आ भागीदारीक स्तर अलग-अलग जाँचब चाही। अन्तिम लोक-सूची एहि विषमता मिटाबैत नहि।

मीराक स्वयं-निर्धारित नाम

अन्तिम पन्नापर मृणालिनी केर नाम अपराधीक छीनी निजी सामग्रीसँ नहि, अपन स्वीकारल स्वरूपमे लिखल जाइत अछि। कथा निजताक ब्लैकमेलक प्रसंगसँ एक महत्वपूर्ण नैतिक अन्त लैत अछि—व्यक्तिक अस्तित्व गवाही लेल सम्मानित हो, ओकर गोपनीयताक पुनर्उल्लङ्घन नहि। एतय ‘नाम बचाओ’क पुरान सामुदायिक उद्घोष व्यक्तिगत स्वीकृति संग संशोधित होइत अछि। ई संशोधन बिना उपन्यासक स्मृति-परम्परा दमनकारी बनि सकैत छल।

ईशानक छाहक आंशिक वापसी

सरकारी अभिलेखमे मृत घोषित ईशानक पएर लग हलुक छाह घुरि अबैत अछि। ओ एखन पूर्ण मुक्त नहि, कतेको फाइल सुरक्षित रखबाक बात कहैत अछि। ई आंशिकता महत्त्वपूर्ण अछि: जादुई यथार्थक समापन चरित्रक अस्तित्वगत संकट पूर्णतः समाप्त नहि करैत। छाहक अंश पहचानक पुनर्प्राप्तिक दृश्यात्मक चिह्न अछि। पात्रक मुँहसँ ‘एखन अकेला नहि’क आश्वासन सामूहिक सहकार्यक उपलब्धि देखबैत अछि, अन्तिम निर्लिप्त मुक्ति नहि।

खाली पाँति आ कथाकारक स्थगन

बा द्वारा अनन्याकेँ देल पन्नामे अन्तिम पाँति खाली अछि। आगामी विस्मृत अथवा मेटाओल व्यक्तिक नाम लेल ई स्थान सुरक्षित अछि। ई स्पष्ट आत्मसन्दर्भात्मक क्षण अछि—कथा समाप्त भऽ सकैत अछि, सूची नहि। आरुणि अपन नोटबुकमे ‘कथा समाप्त’ लिखब चाहैत, फेर काटि प्रारम्भिक कबड्डीक वाक्य पुनः लिखैत अछि। वृत्ताकार संरचना रचैत अछि, मुदा घुरि आबब मात्र पुनरावृत्ति नहि; एतय प्रतिज्ञानक नूतन अनुभव अछि। रचनाक बन्द पुस्तक आ खुलल सामाजिक स्मृति साथ-साथ उपस्थित अछि।

समग्र मूल्यांकन : निष्कर्ष नहि, उत्तरदायित्व

अध्याय १५ न्यायिक आदेश, संस्थागत आत्मालोचना, बहुवाचित स्मरण, अपराधी पक्षक भय आ बालकक भावी खेलकेँ एकहि समापनमे जोड़ैत अछि। कथात्मक जोखिम एतय समकालिक परिवर्तनक अत्यधिक आशावादी तेज गति अछि—न्यायालय, विश्वविद्यालय, विश्वव्यापी वित्तीय छवि आ भूत-जगत लगभग एक स्वरमे बदलैत देखाइत छथि। तथापि अधूरा मुकदमा, अधलिखल त्यागपत्र, ईशानक अपूर्ण छाह आ अन्तिम खाली पाँति ई विजय-

चित्रकेँ निर्णायक रूपसँ सीमित करैत अछि। पानिपर लिखल नामक स्थायित्व जादुई प्रतिज्ञा अछि; मनुष्यक कर्तव्य ओकरा निरन्तर पढ़ब आ बचाएब।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : खण्ड-१क अध्याय ८-१५

अध्याय ८ सँ १५ धरि शोषणक माध्यम क्रमशः मोबाइल-खेलक ऋण, नकली गिरफ्तारी, देहपर नियन्त्रण, निजी सूचनाक ब्लैकमेल, धनक सीमा-पार प्रवाह, सुरक्षित प्रतिलिपि, सीलबन्द न्यायिक सामग्री आ सामुदायिक नाम-स्मरण रूपमे विस्तारित होइत अछि। कथा आठू अध्यायमे चन्ना गाछीक खेलकेँ पुनरावर्तित कऽ लोक-स्मृतिक आवाज बचौने रखैत अछि। मुदा बिसेसर, उज्ज्वल, फूलमति, मृणालिनी, मुन्ना, गोप, सत्यव्रत, देविका आ ईशान सभ एकहि नैतिक श्रेणीक पात्र नहि छथि। कियो मृत पीड़ित, कियो जीवित गवाह, कियो अनभिज्ञ खाताधारक, कियो अनुसन्धानकर्ता, कियो संस्थान भीतरक विरोधी स्वर। अध्यायवार सूक्ष्म विभाजनक महत्त्व इएह अछि जे समान रूपकक दबावमे पात्रसभक जीवनगत भिन्नता न मेटाय। आख्यानक असाधारण स्मृति-विस्तारक संग ओकरा कखनोकाल अत्यधिक प्रत्यक्ष नीति-वचन आ आशावादी समकालिकताक शिल्पगत सीमा स्वीकार करब आवश्यक अछि।

प्रकरण ११७ | मूल अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

न्यायालयक दोसर, अलौकिक प्रतिरूप

अध्याय १५क दिल्लीक आदेशक तुरन्त बाद चन्ना गाछीमे एक एहन अदालत गठित होइत अछि जाहिमे सामान्य न्यायाधीशक स्थाने दबाओल स्वरकेँ निर्णायक मानल गेल अछि। ई संक्रमण कथानकक एक बड़का विधागत छलाँग अछि। शहरमे दस्तावेज, अधिकारक्षेत्र आ आदेशक व्याकरण चलैत छल; गाछीमे हवा, पात, जल, छाह आ नाम गवाहीक माध्यम बनैत छथि। रचनाक उपलब्धि दूनू अदालतकेँ एकहि कथाविश्वमे स्थान देब अछि। मुदा एकर अन्तर स्पष्ट राखब जरूरी अछि—गाछीक दण्ड जादुई नैतिक विधान अछि, भारतीय न्यायालय द्वारा पारित कानूनी सजा नहि।

उद्घाटनक सन्नाटा आ सूचना-प्रसार

गामक कुकुर-बिलाड़ि चुप छथि; मोबाइल आपसहि झिलमिल करैत आ लालटेन बिना तेलक जरैत अछि। दिल्लीक अदालतक बात पानि भरल लोटामे चमकैत नामक रूपमे गाम पहुँचैत अछि। ई संचारक लोकोत्तर पद्धति मोबाइलक तत्काल समाचारक समकक्ष एक कल्पनात्मक माध्यम बनैत अछि। कथाकार सामाजिक खबरकेँ नैतिक स्पन्दन बनबैत छथि; पाठक जानि जाइत अछि जे एहि रातिक घटनाक नियम दैनिक यथार्थसँ फराक हएत। आरम्भ स्वयं दृष्टि बदलबाक पूर्वसूचना अछि।

खेलक स्थगन आ न्यायिक वृत्त

कबड्डी एहि राति नहि खेलल जाइत। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ पीपर-ब्रह्मा गोलाकार बैठकी बनबैत छथि। एहि गोलाकार स्थानमे कोनो एक आसन सर्वोच्च नहि; उपेक्षित आवाज सामूहिक निर्णायक शक्ति बनैत अछि। खेलक प्रतिस्पर्धी सीमा-विधान एक क्षण लेल सुनवाइक वृत्तमे बदलैत अछि। किन्तु गाछी सभा पूर्णतः

निर्लिप्त न्यायालय नहि; ओकर केन्द्र पहिनहि मृतकक अभाव आ स्मृतिक पक्षमे अछि। आख्यान एही नैतिक पक्षधरता के कारण रचैत अछि।

लोथक दर्शकसँ गवाहीदार बनब

लोथ सदिखन देखबाक दण्ड पओने उपस्थित छल। एहि राति ओकरा बीचमे स्थान भेटैत अछि, कारण जे सभक देखब बिनु बोलबक अवस्था रहल, हुनकर आवाज सुनबाक बारी अछि। ई लघु पात्र-विकास कथा-शक्ति के सामाजिक वितरण दिखबैत अछि। गाछी न्याय एकटा स्थिर भूत-मण्डली नहि; पात्रसभक भूमिका बदलैत अछि। लोथक आधा-खुजल देह आ मृत-श्रमिकक धूलक संगति देहक अनादरक सामूहिक इतिहास बनबैत अछि।

चारि पुकारक विन्यास

हवा जलसमाधिक मजदूरकेँ, पीपरक पात स्क्रीन-पीड़ितकेँ, पनिडुब्बीक झौंटा देह आ निजता छीनेल लोककेँ, लालटेनक लौ श्वासक व्यापारसँ पीड़ित समुदायकेँ बुलबैत अछि। एक-एक पुकार पूर्वक अध्यायसभक खास कथावृत्तकेँ अलग प्रवेश दैत अछि। ई विभाजन उपन्यासक विस्तृत सामाजिक कथाकेँ एक नाटकीय सभा रूपमे समेकित करैत अछि। एकरा केवल ‘सभ पीड़ित उपस्थित’ कहि छोड़ि देब कथात्मक आयोजनक जटिलता घटाओत।

सरयूक देह आ नामक द्विविधा

गाछीमे सरयू प्रत्यक्ष प्रथम पुरुषमे पुलक कामपर खसब, रस्सी नहि भेटब आ बादमे नाम काटल जाएबाक कथा कहैत छलीह। हुनकर हथेलीक सीमेण्ट-छाला जादुई रूपमे पुलक छोट-छोट पायामे बदलैत अछि। मुदा अगिला अभिलेख-प्रकरणमे सरयूक नाम आ पारिवारिक परिचयक विवरण सम्पूर्ण एकरूप नहि देखाइत; पूर्वक प्रसंगमे पतिक नामपर मजदूरी उठबाक सम्बन्ध सेहो छल। आलोचनाकेँ ई भेद छिपा एक सुगठित जीवनी स्वयं नहि बनएबाक चाही। कथा-स्वरक भावनात्मक शक्ति मानितहुँ पात्रक सन्दर्भ-निरन्तरता जाँचक विषय अछि।

उज्ज्वलक गवाहीमे स्रोत-असङ्गति

उज्ज्वल गाछीमे पहिल जीत, ऋण, नकली पुलिस आ पारिवारिक शर्मक क्रम फेर कहैत अछि। मुदा ओकर मृत्यु-दृश्य एतय ‘पंखासँ लटकत’ भेटबाक रूपमे कहल गेल, जबकि मूल अध्याय ८ मे बलानक कात चप्पल आ भोरमे पानिसँ देह भेटबाक वर्णन अछि। ई दू वर्णनकेँ एकहि प्रत्यक्ष घटना मानि समतल करब आलोचनात्मक त्रुटि हएत। भूतक गवाहीकेँ काव्यात्मक व्यतिक्रम मानल जाए कि घटनात्मक असङ्गति—पाठ स्पष्ट समाधान नहि दैत। ई उल्लेखनीय अन्तर समीक्षा-दस्तावेजमे सुरक्षित रहबाक चाही।

मीराक मौनक स्वतन्त्रता

मीरा अपन प्रेमक व्यक्तिगत विवरण नहि खोलैत छलीह; ओ निजताकेँ हथियार बनेनिहारक विरुद्ध मात्र बजैत छलीह। गाछीक सामूहिक सुनवाईमे सेहो पीड़ित सभकेँ पूरा निजी कथन सार्वजनिक करबाक दबाव नहि। ई अध्याय १०क स्वीकृत सीमा के अलौकिक अदालतमे फेर स्थापित करैत अछि। हुलासीक पाछाँ ठाढ़ होएब स्त्रीक संरक्षक स्मृतिक दृश्य थिक; मुदा मीराक चरित्रक अधिकार ओकर मौनक सीमामे सेहो अछि, न केवल साझा कथामे।

मास्कधारी वृद्धक श्रवणीय अभाव

महामारीकालीन वृद्ध बिल, कोड आ चिकित्सा-सहायताक स्थानपर भुगतानक भाषाक पुनरावृत्ति करैत छथि। एतय सामाजिक व्यवस्था द्वारा 'वस्तु'क बदला 'दस्तावेज' भेटबाक शोक संक्षिप्त समांतर वाक्यसभमे व्यक्त अछि। वृद्धक स्थूल जीवन-वृत्त विस्तृत नहि; ओ किछु हद धरि सामूहिक पीड़ाक प्रतिनिधि छथि। एहि सीमाक संगो हुनकर श्वास-सम्बन्धी इन्द्रियगत अनुभव कथा कैं अमूर्त आर्थिक कथनसँ वापस देहक जरूरत धरि लैत अछि।

अपराधीक देह नहि, छाहक पुकार

बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ ब्रूम स्वयं न आबि फाइल, स्क्रीन, मिटाओल सन्देश, प्रतिशत आ पोडियमक छाह रूपमे देखाइत छथि। ई वस्तु-रूपान्तरण पात्रसभक सत्ता-विधि के मूर्त करैत अछि। हरिहरन प्रक्रिया, चन्द्रपाल स्क्रीन, राघव लोप, लाउ मुनाफा आ ब्रूम सार्वजनिक भाषणक भिन्न रूप छथि। छाह सभकैं राक्षसी रूपमे एकसार कऽ देबाक बदला कथाकार अलग संस्थागत चेहरा देखबैत छथि। मुदा छाहक उपस्थितिसँ प्रतिवादी पक्षक वास्तविक सुनवाइक औपचारिक आवश्यकता स्वतः पूरी नहि होइत।

स्मृति-आधारित दण्डक प्रकृति

गाछीक 'दण्ड' देहक कारागारक बदला आजीवन नामक खोज, अधूरा सुनवाइक निन्न, उज्ज्वलक चेहरासँ भरल दर्पण, छद्म-नैतिक भाषणमे खाँसी आ निजी लोभक छाह सार्वजनिक होएब अछि। ई प्रतिशोध शारीरिक कारावासक अनुकरण नहि; अपराधी द्वारा मेटाएल मानवीय नामकैं हर राति पुनः अनुभव कराबब अछि। एकर साहित्यिक अर्थ नैतिक स्मृतिदण्ड अछि। तकरा वैधानिक दण्ड अथवा प्रत्यक्ष अलौकिक अपराध-प्रमाणक स्रोत मानल नहि जा सकैत।

सरयूक टोकड़ी आ उज्ज्वलक फोनक परिवर्तन

फैसलाक बाद सरयू टोकड़ी नीचाँ रखैत छलीह; उज्ज्वल फोन देविका दिस बढ़बैत अछि, मुदा देविका फोन लेबाक बदला भाइकैं नामसँ स्मरण करैत छलीह। ई क्षण प्रतीक-क्रमक अत्यन्त मार्मिक बदलाव अछि। वस्तु श्रमक बोझ अथवा डिजिटल भयक निशान रहैत अछि; नाम व्यक्तिक अपूर्ण होइतहुँ स्वतन्त्र उपस्थिति। मोबाइलक नीला उजास माटिक दीयामे बदलनाइ जादुई राहतक दृश्य थिक, वास्तविक मृत्यु-परिवर्तन नहि।

बाक आदेश : सहारा नहि, काज

राति अन्तिम होइतहि बा काज बाँटबाक आग्रह करैत छलीह। चन्ना गाछीक अदालत कोनो मुद्रित प्रति, मुहर वा आधिकारिक आदेश जारी नहि करैत। तकर नैतिक परिणाम अगले दिन जीवित लोकक व्यवहारमे उतरबाक अछि। एहि संक्रमणमे अध्याय एकटा आत्मनिहित चमत्कारक अन्त बनबाक बदला समाजक कार्यवाहीक कारण बनैत अछि। लोक-अदालतक विजय यदि शोकक अभिनयमे सीमित रहैत तँ ओकर महत्त्व घटैत; बा ओकरा शिक्षा, अभिलेख आ श्रममे अनुवाद करबाक प्रश्न उठबैत छथि।

प्रकरणक आलोचनात्मक निष्कर्ष

‘चन्ना गाछीक अदालत’ बहुकण्ठी जादुई-यथार्थक सभा अछि जे पुरान गाछ, नदी, स्क्रीन, देह-बाजार, महामारी आ वैश्विक वित्तीय शब्दसभकेँ एक सुनवाइमे लैत अछि। ई नाटकीय समावेश कथाक बड़का उपलब्धि अछि। मुदा मृतकक पहिचान, मृत्यु-दृश्यक अन्तर आ अलौकिक न्याय आ वैधानिक न्यायक मिलैत-जुलैत शब्द पाठनमे सावधानी माँगैत अछि। एतय एक ‘चक्र’क समाप्ति घोषित होइत अछि, सम्पूर्ण उपन्यास अथवा वास्तवक न्यायक अन्त नहि।

प्रकरण ११८ | मूल अध्याय १७ — जीतक शोक

‘जीत’क दोहरा स्तर

बटुकनाथक ‘जीत’ औपचारिक प्रक्रियाक प्रतिष्ठा आ मीडिया-समर्थित विजय रूपमे प्रस्तुत अछि; चन्ना गाछीक समकालीन नैतिक निर्णय ओकर भीतर शोक रोपैत अछि। अध्याय १५ मे राज्य-अभिलेख संरक्षणसम्बन्धी अनुकूल आदेश आ अध्याय १७क ‘बटुकनाथ जीतल’ वाक्यक बीच नाटकीय काल-स्तर अथवा प्रक्रियागत अन्तर पूरा तरह स्पष्ट नहि। समालोचना के एकरा स्वतः अन्तिम सरकारी फैसला बनाकऽ पढ़ब नहि चाही। कथ्यक केन्द्र बटुकनाथक अपन विजेता-बोधक विफलता अछि, औपचारिक मुकदमाक सम्पूर्ण निर्णय-इतिहास नहि।

तकियाक नीचाँ पानि : निजी भयक भौतिकता

बटुकनाथ नल, छत आ नौकरसभक जाँच करबैत अछि, मुदा तकियाक भीजलपन जादुई रूपमे बनल रहैत अछि। चन्ना गाछीक अदालतकेँ सपना कहि टारबाक ओकर इच्छा एही वस्तु पर विफल होइत अछि। पानिक स्थानान्तर शहरक निजी घरक मध्यक कक्ष धरि पहुँचैत अछि। ई पानि वास्तविक पाइप-चुहबक साधारण व्याख्यासँ परे अनुभूत अछि, मुदा तकर शिल्पगत काम अपराधीक सुरक्षित निजी स्थानमे सामूहिक स्मृति प्रवेश करब अछि।

सम्मान-सभाक ध्वनि-विरोध

बार सभागारमे माला, शॉल, फोटो आ तालीक बीच माइक ‘तारीख’ बजैत अछि। बाहर लोक कानूनी विजयक भाषण सुनैत अछि, भीतर बटुकनाथक स्मृतिमे न्यायिक स्थगनक अपमान गूँजैत अछि। ई नायक-विरोधी फोकलाइजेशन अछि; पाठक बटुकनाथक निजी भय जानैत अछि, जबकि सभागारक सामान्य श्रोता जरूरी नहि जे वैह ध्वनि सुनल हो। कर्ता आ दर्शकक जानकारीक अन्तर दृश्यकेँ व्यङ्ग्यात्मक बनबैत अछि।

खाली प्रतिपक्षक विडम्बना

बटुकनाथक लोक अदालतक बेंच, चाह-दोकान आ गलियारा छानैत अछि, मुदा गोप, सौम्या, देविका, मीरा अथवा आरुणि नहि भेटैत छथि। चाहवला ‘काज पर’ कहैत अछि। एहि साधारण उत्तरक अर्थ अदालतक औपचारिक कामसँ भिन्न अछि। जकरा हारल पक्ष बनाकऽ प्रक्रिया भीतर राखल गेल छल, ओ लोक स्वतन्त्र काजमे लगि गेल छथि। बटुकनाथक शक्ति प्रतिपक्षक निरन्तर न्यायिक प्रतीक्षा पर निर्भर छल; प्रतीक्षा हटिते विजय शून्य बनैत अछि।

बच्चाक ‘सरयू’ लिखबाक धीम गति

गाममे अनन्या पहिल नाम लिखबाक प्रयत्नमे ‘स’ दू बेर बिगाड़ैत अछि। बा बच्चीक हाथ पकड़ि तुरन्त शुद्ध अक्षर नहि लिखाबैत; नामकेँ अपन गति सँ आकार लेबाक अवसर दैत छथि। एहि दृश्येमे बड़े कथानकक प्रतिरोध छोट शारीरिक अभ्यासमे समाहित अछि। नाम-लेखन क्षणिक चमत्कार नहि, अभ्यास आ त्रुटि-पछाति सफलता बनैत अछि। जादुई पातक साथे बच्चाक आँगुरीक व्यावहारिक मेहनत कथा केँ अति-अमूर्त होबासँ बचबैत अछि।

विपरीत अभियानक पराजय

चन्द्रपाल नव ऐप, स्थानीय भाषाक विज्ञापन, बोनस आ विश्वासक जाल बढ़एबाक आदेश दैत अछि; मुदा देविकाक संवाद आ निशांतक परचा गाममे सावधानी पसारैत अछि। एतय अपराधी पक्षक तकनीकी परिचालन आ समुदायिक शिक्षाक कालगत संघर्ष अछि। प्रचारक प्रभाव घटबाक दावासँ कथा सामूहिक काजक परिणाम देखबैत अछि; तौ कतेक खाता बन्द, कतेक लोक सुरक्षित भेल, तकर पूर्ण सांख्यिक जाँच पाठमे नहि। साहित्यक संकेत आ सर्वेक्षणक निष्कर्षक भेद राखब आवश्यक अछि।

घाटपर देल अनुभवजन्य शिक्षा

देविका पोखरिक घाटपर लोककेँ नक्कली डिजिटल गिरफ्तारीक धमकी समय साँस लेब, विश्वस्त लोक बोलाबब आ अकेले नहि रहबाक सलाह दैत छलीह। बुजुर्गक प्रश्न—कानून पढ़ने छी?—पर ओ भाइक मृत्यु स्मरण करबैत छलीह। एहि दृश्य मे अनुभव अपन सामाजिक प्रामाणिकता माँगैत अछि। मात्र व्यक्तिगत पीड़ाकेँ सर्वज्ञ तकनीकी दक्षता नहि मानल गेल; देविका अपन अनुभव साझा करैत छथि, निशांत आर्थिक रस्ता आ मीरा निजताक अलग जानकारी जोडैत छथि।

स्त्रीक गोल बैठकीक सामुदायिक रूप

मीरा आ सौम्याक स्त्री-मण्डलीमे कोनो भाषणमंच नहि; भय, प्रेम, फोटो आ घरक प्रतिक्रिया पर संवाद अछि। एक युवती परिवारक दोषारोपणक सम्भावना पूछैत छलीह; मीरा सामूहिक साथ घर चलबाक प्रतिज्ञा दैत छलीह। एतय संगठनक शक्ति औपचारिक संकल्पसँ अधिक परस्पर उपस्थितिमे अछि। बटुकनाथक विधिक दबावक तुलनामे ई सूक्ष्म साथ जन-सम्बन्धक आन्तरिक पुनर्गठन देखबैत अछि।

ईराक प्रश्नसँ अभिलेखन दिस परिवर्तन

ईरा हार्वर्डमे नूतन प्रश्नक मसौदा छोड़ि ‘गढ़ नारिकेल नाम-अभिलेख’क पृष्ठ पर काम शुरू करैत छलीह। विश्वव्यापी मञ्चक भाषणमे आपत्ति उठेबाक बदला नामक टिकाउ संग्रहक प्रयास एतय कथात्मक क्रियाबिन्दु अछि। ई मौन आत्मसमर्पण नहि, प्रदर्शनक स्थानपर संरक्षणक चुनाव अछि। तथापि डिजिटल संग्रह बनलापर ओकर सहमति, संशोधन, पहुँच आ सत्यापनक चुनौती आगाँ रहत; कथा तकर आधार मात्र रखैत अछि।

ब्रूमक इनबॉक्समे केवल ‘सरयू’

ब्रूमक कार्यालयमे आरोपविहीन एक नाम आ खाली स्थानबला ईमेल अबैत अछि। ओ मेटेबाक कोशिश करैत अछि; नाम फेर प्रकट होइत अछि। एहि अलौकिक पुनरावर्तनक प्रभाव ई जे प्रतिरक्षाक तैयार वक्तव्यक समक्ष

एक साधारण व्यक्ति-अनुपस्थिति उत्तर माँगैत अछि। आरोप पर बहस सम्भव अछि; नामक पूर्ण अस्तित्वकेँ केवल जनसंपर्क उत्तरसँ नकारब कठिन। दृश्य ध्वनिक कम तीव्रतासँ अधिक नाटकीय भार रचैत अछि।

सत्यव्रतक विभागीय तनाव

सत्यव्रतपर ‘अत्यधिक नैतिक उतावलापन’क आरोप उठैत अछि। ओ अदालतमे तत्काल न जाकऽ पत्र लिखबाक प्रक्रियामे लगैत छथि। कथा अब औपचारिक न्यायिक सुनवाइक अतिरिक्त प्रशासनिक असहमतिक उपकथा जोड़ैत अछि। मेहताक निर्णय पूर्ण पदत्याग नहि; संस्थागत सीमाक भीतर आत्मसम्मानक रखरखाव अछि। एहि चरित्रक आन्तरिक समय बटुकनाथक तत्काल भय आ समुदायिक त्वरित क्रियासँ धीम अछि—अलग कालगत रेखा स्वीकार करबाक चाही।

जीतक शोकक शिल्प

अध्यायक अभिप्राय कानूनक प्रत्येक विजय झूठ अछि, से नहि; विशिष्ट पात्रक हिंसक प्रक्रियागत सफलता जखन सम्बन्ध आ प्रतिपक्षक निर्भरता गमबैत अछि तखन ओकर जीत अर्थहीन होइत अछि। ताली आ रिक्तता, कागचक आदेश आ नामक अक्षर, माइकक भाषण आ गामक पाठशाला—ई विपर्यास रचना कैँ राजनीतिक उपदेशसँ अलग दृश्यात्मक बल दैत छथि। किन्तु अदालतक असंगत कालसूचक उल्लेख समीक्षा लेल स्वतन्त्र प्रश्न अछि।

समग्र मूल्यांकन

‘जीतक शोक’ विजेताक परिप्रेक्ष्यसँ हारक अर्थ फेर लिखैत अछि। बटुकनाथक भय बाहरी दण्डसँ बेसी एहि बातसँ उपजैत अछि जे पीड़ित पक्ष ओकरा प्रतीक्षा करब छोड़ि देलक अछि। अनन्याक ‘सरयू’, देविकाक पोखरि-शिक्षा, मीराक स्त्रीगोल आ ईराक अभिलेख निर्माण सामूहिक उत्तरक भिन्न रूप छथि। अध्यायक प्रमुख उपलब्धि वैचारिक द्वन्द्वकेँ रोजमर्रा काजक दृश्य बनब अछि; तकर सीमा न्यायिक ‘जीत’क तकनीकी अर्थक अस्पष्टता अछि।

प्रकरण ११९ | मूल अध्याय १८ — खाली अदालत

रिक्तताक असाधारण कथा-केन्द्र

अध्यायक आरम्भमे अदालतक सीढ़ी, धातुक जाँच, कारी कोट, चायक बासी बिस्कुट आ रोजक हलचल मौजूद अछि। तथापि बटुकनाथकेँ भवन खाली लगैत अछि, कारण विशेष पीड़ित पक्षक लोक सभ अनुपस्थित छथि। ई भौतिक भीड़ आ नैतिक रिक्तताक विरोध अछि। कथाकार भवनक लोकसंख्यासँ नहि, सुनवाईक असल विषय सँ एकर अर्थ निर्धारित करैत छथि। अदालत चालू अछि, मुदा ओकरा जरुरी प्रश्न देबयबला जनसमुदाय अपन नूतन सामाजिक कार्यमे लागल अछि।

अदालत छोड़ब बनाम मुकदमा समाप्त होब

देविका, आरुणि, गोप, सौम्या आ मीरा अदालतक प्रतिक्षागृहमे बारम्बार उपस्थित रहबाक बदला गाममे नाम-लेखन आ जागरणक कार्य चुनैत छथि। मुदा एहि कथात्मक बहिष्कारकेँ औपचारिक मुकदमा वापस लऽ लेब,

अपीलक अधिकार समाप्त होब अथवा न्यायिक आदेश निरस्त भेल मानब उचित नहि। उपन्यास एक सामाजिक प्राथमिकता-विपर्यय दिखबैत अछि। न्यायालयक कानूनी समय चलैत अछि, सामुदायिक समय अपन स्वतन्त्र लय पकड़ैत अछि।

मेहताक स्वर आ हरिहरनक आपत्ति

अदालतक कक्षमे मेहता मृतकक नाम-पाठक महत्त्वक चर्चा करैत छथि; बटुकनाथ ‘ई काव्य-पाठक स्थान नहि’ कहैत विरोध करैत अछि। मेहताक प्रत्युत्तर विधिक भाषाक सीमा पर प्रश्न अछि। एहि संवादमे कविता आ कानून प्रतिद्वन्द्वी विधा मात्र नहि, सार्वजनिक श्रवणक दू तर्क बनैत अछि। एक व्यावहारिक कठिनाइ सेहो रहैत अछि—गवाहीक न्यायिक ग्राह्यता आ नामक सांस्कृतिक सत्य कें समान श्रेणी नहि कहि देबाक चाही।

स्थगनक परिचित लयमे विच्छेद

न्यायाधीश स्थगनक परिचित प्रक्रियादिस बढ़ैत छथि, मुदा सुनवाइक भीतर ‘नाम’क प्रश्न पुरान रूपसँ अलग दबाव बनबैत अछि। अध्याय शीर्षकक खालीपन अदालतक आयोजन समाप्त भऽ गेलाक शाब्दिक बात नहि; ओ संस्थागत वक्तृत्वक पुनरावृत्तिमे जनता द्वारा पैदा कएल विराम अछि। पाठक पहिने ‘तारीखक गोहि’क दीर्घ पुनरावर्तन देख चुकल अछि, तें एहि ठाम चुप्पीक नूतन अर्थ बुझैत अछि।

स्त्री-मण्डलीक अनाम आरम्भ

मीरा आ सौम्या ककरो नामपर आधिकारिक संस्था पंजीकृत नहि करैत छथि। ओ युवतीसभकें ‘चलू बैसैत छी’ कहि एकत्र करैत छथि। एक युवती फोटो, दोसर प्रेमपत्र, तेसर घरपर सामग्री पठएबाक धमकीक अनुभव साझा करैत छलीह। ई संवादक गोल औपचारिक बैनरक अभावमे जन्मैत अछि। कथा सामूहिक विश्वस्तता कें संस्थागत तंत्रसँ स्वतन्त्र बनबैत अछि। मुदा एहन अनौपचारिकता दीर्घकालिक सहायता-साधनक विकल्प पूर्णतः बनि सकत कि नहि—ई प्रश्न खुलल रहैत अछि।

समाजक पहिल प्रतिवाद : अपमानक दोष बदलू

मीराक नियम अछि जे लाज अपराधीक, पीड़ितक नहि। ई सामाजिक वाक्य एकरा कहनिहार के बदलैत अछि। पहिले धमकीदाताक हाथमे पीड़िताक व्यक्तिगत सम्बन्धक पुनर्व्याख्या छल; आब स्त्री-मण्डली अपन सामाजिक दृष्टि पुनःनिर्धारित करैत अछि। हुलासीक अदृश्य उपस्थिति पुरान स्त्री-अपमानक कालखण्डकें वर्तमानक जीवित साहससँ जोड़ैत अछि। मुदा मन्त्र दोहरौला मात्र सभ परिवार अपन मान्यता बदलि देत, एहन अपेक्षा पाठमे अन्तिम घटना रूपमे नहि देखबैत अछि।

ईराक ‘स्मृति-घर’क संकल्प

ईरा विदेशमे नाम, गाम, मृत्यु वा गुमशुदगीक संक्षिप्त विवरण आ परिवारक सहमतिवला अभिलेखक कल्पना करैत छलीह। ओ स्वयं एकरा आरोपक वेबसाइट नहि, ‘स्मृति-घर’ कहैत छथि। शब्दावलीक चयन महत्वपूर्ण अछि: सार्वजनिक अभिलेखन के प्रतिशोधी निन्दासूची बनबासँ रोकबाक प्रयास। ई चरण आरम्भिक रूपरेखा अछि; पूर्ण विकसित ऑनलाइन पोर्टलक परीक्षण, स्वीकृति-प्रणाली वा सर्वनामक सत्यापनक दावासँ बचबाक चाही।

निशांतक अचोरी अनुसन्धान

निशांतक नियोक्ता-संबन्धी भुगतान-नक्शा देखबाक अवसर अछि, मुदा कथामे ओ आन्तरिक गोपनीय सामग्री चोरि सार्वजनिक करबाक बदला भुगतानक संदिग्ध बिन्दुसभक नाम बुझैत-लिखैत अछि। ई विवरण चरित्रक नैतिक जटिलता दिखबैत अछि। वित्तीय ज्ञानक उपयोग आ गोपनीय डेटा पर अवैध अधिकारक बीच भेद करबाक प्रयत्न दृष्टिगोचर होइत अछि। पिछला अध्यायक अन्धकारमे बचल प्रति रूपकसँ अलग ई जाँचक अधिक सीमित, वैधानिक साधनाक दृश्य अछि।

बार-परिषदक संशोधित प्रस्ताव

जन-अभिलेखक विरोधमे ‘अनधिकृत’ शब्द आएब पर एक युवा वकील मृतकक नाम लिखबाक अधिकार प्रश्न करैत अछि। बटुकनाथ प्रस्ताव ‘असत्य नाम-अभिलेख’ बनबैत अछि, मुदा तखन असत्य निर्धारित करबाक समस्या उठैत अछि। एहि संवादसँ विधिक संस्थाक भीतर विकल्पक स्वर देखाइत अछि; परिषदक प्रत्येक सदस्य एके विचारक नहि। युवाक चुप भऽ जाएब स्वयं संस्था भीतरक पदानुक्रमक आलोचना बनैत अछि।

चन्द्रपालक मुनाफा-आधारित भय

विदेशी सरगना लोकक प्रशिक्षण, खाता पर प्रश्न, फोन काटब आ आपसी सहायता के आर्थिक जोखिम कहैत अछि। ओ न्यायिक भाषाक वैधता नहि, ग्राहकी घटबाक चिन्ता देखबैत अछि। एहि दृश्य मे कथाकार अपराधी जालक लाभ-तर्क कैं समुदायिक जागरणसँ सीधे भिड़बैत छथि। मुदा व्यापारिक ‘ग्राहक घटल’क सामान्य अभिव्यक्ति सटीक रूपैं सत्यापित आँकड़ा नहि; ई पात्रक भीतरक प्रतिक्रिया रूपैं उपस्थित अछि।

बालकबड्डीक नूतन नियम

चन्ना गाछीमे बच्चासभक कबड्डीक धरायल खिलाड़ी अपन नाम काटएब नहि, मेटाओल व्यक्तिक नाम दोहराएब। खेल परम्परागत जीत-हारक नियमसँ सामूहिक स्मरणक अभ्यास बनैत अछि। एहि क्रियामे ‘पहिले नाम’क प्रतिज्ञा बाल-शिक्षणक भाग अछि। भूतसभ पाछाँसँ खेल देखैत छथि; जीवितक स्वायत्त क्रिया कथा कैं मृतक-आश्रित चमत्कारसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

सफाईकर्मी : नागरिक अभिलेखक अनपेक्षित आरम्भ

अदालतक खाली बेंचपर खड़ियासँ लिखल नाम पोंछए आयल सफाईकर्मी अपन अनुपस्थित पिता कैं मोन करैत अछि। सरकारी कागचमे पिता ‘काम छोड़ि गेल’ कहल गेल छल। ओ धूलिमे पिताक नाम लिखैत अछि। ई मूल अध्यायक सर्वाधिक प्रभावकारी दृश्यसभमे एक अछि, कारण अनाम कर्मचारी अचानक कथा-निर्माताक भूमिका पबैत अछि। पुरान श्रमिकक मृत्यु-इतिहास किसी बड़का नायकक कथन पर मात्र निर्भर नहि रहैत। अधीनस्थ श्रम स्वयं अभिलेख बनबैत अछि।

‘खाली’क पुनरर्थन

बटुकनाथकैं लगैत अछि अदालत खाली; सफाईकर्मीक नाम-पछाति ओहि बेंच पर उन सभक अदृश्य उपस्थिति प्रकट होइत अछि जिनका कखनो प्रवेश नहि भेटल। ई खालीपन असलमे दबाओल स्मृतिक भरण अछि। जादुई

रचना रिक्त कुर्सी कें सामाजिक इतिहासक भार दैत अछि। कथा नाटकीयता बढ़बैत अछि, मुदा बाह्य अदालतक भवनमे वास्तविक न्यायिक प्रक्रिया समाप्त भेल, एहन कहबाक आधार नहि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

‘खाली अदालत’ संस्थागत रिक्तताक रूपककेँ सक्रिय नागर समाजक जन्मसँ जोड़ैत अछि। स्त्री-मण्डली, युवा वकीलक प्रश्न, विदेशक स्मृति-घर, बच्चाक कबड्डी आ सफाईकर्मीक व्यक्तिगत लेखन भिन्न-भिन्न सामाजिक स्तरक स्वतन्त्र उत्तर छथि। चरित्र-आधारित सर्वोत्तम क्षण झाड़ू लगबैत व्यक्ति द्वारा पिताक नाम लिखब अछि। रचनात्मक सीमा संस्था-विरोधक कखनो अतिशय सामान्यीकरण अछि; तौ सत्यव्रत आ युवा वकीलक उपस्थितिसँ संस्था भीतरक भिन्नता बचल रहैत अछि।

प्रकरण १२० | मूल अध्याय १९ — नामक अभिलेख

अस्थायी न्याय-स्मृतिसँ टिकाउ नामलेखन

गाछीक अलौकिक न्याय उठि गेलापर प्रश्न बचैत अछि—राति सुनल सब नाम दिनक उजासमे कोना बचत? बा पुरान सन्दूक खोलैत छलीह; नन्दक अधूरा आवेदन बाहर अबैत अछि। ओ कहैत छथि जे छातीमे राखल नामो सुरक्षित राखबाक लेल बाहर लिखब आवश्यक अछि। कथा अमूर्त लोकस्मृतिक अमरता पर एक व्यावहारिक प्रश्न उठबैत अछि। मृत्यु-पछाति केवल भूतक गवाहीपर निर्भर नहि रहि भौतिक अभिलेखक संस्थापन शुरू होइत अछि।

जड़िक कुर्सी आ पातक कागच

पूर्वरात्रिक अदालतक आसन साधारण लकड़ीक कुर्सी नहि, ऊपर उठल गाछक जड़ि छल। ओसक बूँद, डारि आ पात नामक भण्डार बनैत अछि। ई दृश्य न्यायालयक वस्तुसंसार—कुर्सी, कागच, रजिस्टर—के प्रकृतिक जीवनचक्रसँ पुनःरचित करैत अछि। तकरा चिन्ह-संरचना मात्र नहि, कथाजगतक प्रत्यक्ष जादुई घटना रूपमे स्वीकार करब सेहो एक सम्भव पाठन अछि। दुनू स्तर कथा कें गाढ़ बनबैत अछि।

सरयूक नातिनक घरक साक्ष्य

सरयूक नातिन चूड़ीक टुकड़ा आ धुँधल फोटो लऽ आबैत छलीह। ई अवशेष अपन नानीक अनौपचारिक उपस्थिति सुरक्षित रखैत छथि। एतय परिवारक पुकार आ दस्तावेजक शुष्क अनुपस्थिति बीच तनाव स्पष्ट अछि। मुदा सरयूक मृत्युक दृश्य, पतिक मजदूरीक नाम आ एहि अध्यायक नानीक परिचयक विवरण पूर्वक घटनासभसँ सम्यक मिलान माँगैत अछि। आलोचना एतय कोनो एक विवेचन कें ‘सही’ कहि पात्रक जीवन-वृत्त नया सिरेसँ गढ़ैत नहि।

धातुक पट्टिका रोकि पातपर पहिल नाम

ईरा विदेशसँ आनल टिकाउ धातु-पट्टिका देब चाहैत छलीह, मुदा बा पहिने पातपर नाम लिखबाक आग्रह करैत छथि। ई क्रम तकनीक-विरोध नहि; स्थानीय समुदाय द्वारा अभिलेखक प्राथमिक अर्थ स्वीकार करबाक संस्कार

अछि। पात लोकक विश्वासक प्रवेशद्वार, धातु दीर्घ संरक्षणक सम्भावित साधन। एतय जैविक वस्तु आ टिकाउ अभिलेख परस्पर विरोधी नहि, कालक्रमेँ सहयोगी बनि सकैत छथि।

स्याहीक स्थानीय रसायन

देविका पात साफ करैत छलीह; मीरा कालिख, काजर, हरद आ गंगाजलक मिश्रणसँ स्याही बनबैत छलीह। एहि वस्तुसभमे देह, घर आ नदीक गन्ध उपस्थित अछि। नाम-लेखन प्रयोगशालाक तकनीकी कार्य मात्र नहि, रसोइ, शृङ्गार, संस्कार आ श्रमक साझा क्रिया बनैत अछि। कथा आंचलिक वस्तु-भाषासँ दस्तावेजक निर्माणक दार्शनिक अर्थ बनबैत अछि। तथापि मिश्रित स्याहीक वास्तविक दीर्घस्थायित्वक कोई वैज्ञानिक परीक्षण पाठमे वर्णित नहि।

‘सरयू देवी’क पहिल उच्चारण

आरुणि पातपर पहिल नाम लिखैत अछि—सरयू देवी। नाम लिखलाक बाद गाछीमे हलुक हँसी सुनाइत अछि। ई अलौकिक प्रतिक्रिया सामूहिक स्वीकारक दृश्य हएत; मुदा वास्तविक व्यक्ति-चिह्नक आधार नातिनक मौखिक साक्ष्य आ अवशेषसभ अछि। लिखनिहार पात्र महत्त्वपूर्ण छथि, तौ पहिल नाम कहबाक अधिकार स्मरण करौनिहार परिवारसँ शुरू होइत अछि। सामुदायिक रजिस्टरक उत्पत्ति एगो परिवारक शोकक सम्मानमे ठहरैत अछि।

कन्हैया पासवानक मृत हस्ताक्षर

कन्हैयाक पोता लोहेक कील लऽ अबैत अछि; कथामे कन्हैया पायामे काम करैत खसल छल आ सरकारी बहीमे मृत्यु-पछातियो हस्ताक्षर चलैत रहल। मृतकक हस्ताक्षरक ई विसङ्गति शोषणक ठोस अभिलेखीय चिह्न अछि। कील वस्तु-अवशेष होइतहुँ पुल-निर्माणक देहगत हिंसा देखबैत अछि। कथा नामक सूचीकेँ वस्तु आ परिजनक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि, जइमे मौखिक कथनक संग अभिलेखीय मिलानक आवश्यकता बनल रहैत अछि।

पुकारू नामक नियम

फुलो/फुलवा जकाँ नामक उच्चारणपर विवाद उठिते बा घरमे पुकारल नाम लिखबाक नियम दैत छथि। ई मात्र वर्तनीक सुधार नहि, नामक संस्थागत स्वामित्वक प्रश्न अछि। सरकारी फाइलक स्थिर रूप आ परिवारक आत्मीय प्रयोग दुनू भिन्न उद्देश्य निभबैत अछि। आलोचना लेल उचित भेद ई जे लोक-अभिलेखमे पुकारू नाम सुरक्षित राखब मानवीय रूपसँ सार्थक अछि, मुदा शोध-दस्तावेजमे सरकारी रूप, भिन्न वर्तनी आ सन्दर्भ सेहो साथ रखल जाए तँ व्यक्ति-चिह्नारि अधिक सटीक होएत।

दोपहर धरि पचास नाम

पातपर लिखल नामक संख्या दुपहर धरि पचास पहुँचिते कथा श्रमक एक अवधि दैत अछि। एक रातिक जादुई अदालतसँ विपरीत एहि दिन लेखनमे समय, सामग्री, आवाजक मिलान आ लोकक क्रमिक आगमन अछि। पचास नामक गणना पूर्ण मृत्यु-सूचीक नूतन अन्तिम संख्या नहि; ई स्थानीय कार्यक प्रगति अछि। एहि विशेष अन्तरकेँ ध्यानमे रखिते ‘तीस’ बनाम ‘तीन सय’क पुरान द्वन्द्व सँ एहि पचासक सम्बन्ध स्पष्ट रहैत अछि।

समुदायक विविध स्मृतिसूत्र

मंसूर अली, फुलो मंडल, गनेशी सदा, फूलबसिया खातून, बिसेसर साह, जगदीश यादव, झिंगुर महतो आदि नामक पाँति सामाजिक विस्तार दैत अछि। किछु नामक संग पिता नहि, किछु संग पति नहि, केवल टोल। एहि अपूर्ण जानकारीकेँ दोष कहि हटाएब उचित नहि; बल्कि उपलब्ध श्रुतिसूत्रक सीमाकेँ चिह्नित राखब अभिलेखनक नैतिकता अछि। अनेक जाति, वर्ग आ परिवारक व्यक्ति सूचीमे प्रवेश करैत छथि, मुदा एकहठाम नाम होएब सामाजिक समानता वास्तविक बनि गेल, एहन नहि।

अभिलेखक व्यापक परिधि

गाछीमे सोच उठैत अछि जे नाम-संग्रह केवल पुरान जलसमाधिक मृतक लेल नहि; स्क्रीन-पीड़ित, हिंसा, अनाम स्त्री, चिकित्सा-व्यवस्थाक अभाव आ अन्य लोपक इतिहास संग जुड़त। एतय कथाविश्वक ‘गोहिक’ रूपक एक सार्वजनिक स्मृति-नीतिक रूप लैत अछि। परिभाषाक ई विस्तार करुणाकेँ बढ़बैत अछि, मुदा सभ प्रकारक घटना समान कारणसँ घटैत अछि, एहन समरूपीकरणक जोखिम अछि। वर्गीकरणक परतसभ स्वतन्त्र रूपेँ बचाओल जाए तखने अभिलेख शोधयोग्य होएत।

ईरा आ विदेशक प्रतिलिपि

ईरा अभिलेखक प्रति बाहर पठेबाक इच्छा कहैत छलीह, बा पहिल प्रति गाममे रहबाक आग्रह करैत छथि। ई क्रम स्थानीय स्वामित्वक प्रतीकात्मक स्थापना अछि। ज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय संस्थामे जाय, मुदा मूल समुदाय एकर अधिकार न गमाए—एहि प्रस्तावमे मिथिला-स्थित लोकस्मृति आ विदेशी शैक्षिक प्रसारक सम्बन्ध विकसित होइत अछि। तथापि मूल प्रतिक नियंत्रण, पीड़ितक अनुमति आ संग्रहक परिवर्तनशीलता औपचारिक पद्धति रूपमे एखन पूर्ण विकसित नहि।

प्रतिपक्षी पक्षक बेचैनी

बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघव गाममे अपील, शोर अथवा सम्झौताक अभाव देखि चिन्तित छथि। नामलेखनक निःशब्द श्रम कानूनी प्रतिवादक अपेक्षित प्रतिरूपसँ बाहर अछि। बाहरी आन्तरिक दृश्यसम्पादन कथा के गति दैत अछि: एक दिस पातपर हरद-काजर सँ अक्षर, दोसर दिस सिग्नलपर ग्राहक-गणना। कथाकार ई विपरीत क्रियासँ मानवीय स्मृति आ बाजार-नियन्त्रणक असमान उद्देश्य दिखबैत छथि।

समग्र मूल्यांकन : ‘अभिलेख’क जन्म

‘नामक अभिलेख’क उत्कृष्टता वास्तविक श्रमक संवेदनात्मक विस्तारमे अछि—पात चुनब, स्याही घोरब, नातिनक फोटो, पोताक कील, उच्चारणक विवाद आ बच्चाक रटन। एतय विशाल षड्यन्त्रक कथावृत्त क्षणभरि स्थिर भऽ एक छोट गामक लिखावटमे उतरैत अछि। सीमासभ—मृत्यु-विवरणक किछु असङ्गति, स्रोत-स्तरक भेद आ दीर्घ संरक्षणक व्यावहारिक योजना—आलोचनामे उल्लेखनीय अछि। तौ एहि अध्यायसँ उपन्यासक ‘नाम’ रूपक एक ठोस सामूहिक संस्थापन बनैत अछि।

प्रकरण १२१ | मूल अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

न्यायक आदेशसँ शिक्षा धरि

नामक अभिलेख बनलाक दोसर दिन चन्ना गाछीमे पाठशाला शुरू होइत अछि। एहि कालक्रममे लोक-अदालतक भावात्मक फैसला आ सामाजिक परिवर्तनक वास्तविक साधनक भेद स्पष्ट अछि। गामक लोक केवल पुरान पीड़ितक नाम नहि बचबैत, भावी ठगीक सम्भावना घटएबाक संकल्प लैत छथि। कथामे न्याय ‘ककरा दण्ड’क प्रश्नसँ ‘दोसर लोक कोना बचत’क प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। ई प्रतिशोध-केन्द्रित कथानकसँ शिक्षामूलक कथाविस्तारक महत्त्वपूर्ण चरण अछि।

बच्चा सँ सयान धरि श्रोता-विस्तार

आरम्भमे बच्चा, फेर किसान, मजदूर, बैंक-खाता खोलयवला, छात्र, परदेशी बेटाक माय आ वृद्ध लोक पाठशालामे पहुँचैत छथि। एहि श्रोता-विस्तारसँ डिजिटल व्यवहारकेँ केवल पढ़ल-लिखल युवा-समुदायक समस्या मानबक रूढ़ि टूटैत अछि। प्रत्येक समूहकेँ डरक अलग कारण अछि। कथा सम्मिलित शैक्षिक आयोजन देखबैत अछि, मुदा एकहि सन्देश सभकेँ समान प्रभावसँ पहुँचि गेल मानल नहि जा सकैत; सुनब, बुझब आ व्यवहार बदलब अलग-अलग प्रक्रिया छथि।

निशांतक चारि ‘पएर’क रूपक

निशांत स्क्रीनक गोहिक चारि पएर लालच, भय, लाज आ अकेलापन कहैत अछि। ई रूपक ठगीक अनुभवक व्यावहारिक वर्गीकरण देइत अछि, कोनो वास्तविक जीवविज्ञान नहि। चारू शब्द पाठककेँ उज्ज्वलक घटना पुनः पढ़बाक विधि दैत अछि: पहिल जीत लालच बनैत, ऋण भय, सामाजिक आरोप लाज आ बन्द कमरा अकेलापन। उपन्यासक पहले बनल कथानक एहि चारि शब्दक भीतर फेर सघन होइत अछि। एहि सघनतासँ शिक्षाक स्मरणक्षमता बढ़ैत अछि, पर अनुभवक सभ जटिलता चारि कारणमे समाप्त नहि।

बाक ‘अपन लोक लग’ उत्तर

बुजुर्ग पूछैत छथि जे खतरा देखिते भागि कतय जाएब। बा ‘अपन लोक लग’ कहैत छथि। एतय साइबर-सुरक्षाक अमूर्त सावधानी ठोस सम्बन्धक शब्द बनैत अछि। अकेलापन तोड़ब समुदायिक सुरक्षा-सूत्र अछि, मुदा ‘अपन लोक’ सभ पीड़ित लेल स्वतः सुरक्षित नहि होइत; परिवारो दोषारोपण करि सकैत अछि। बादमे मीरा द्वारा मित्र, शिक्षिका, बहिन वा सहयोगी संस्था ताकबाक सलाह एहि सीमा केँ सुधारैत अछि। अध्याय स्वयं अपन पहिल सूत्रकेँ सामाजिक विविधता अनुसार विस्तारित करैत अछि।

अनन्याक पातक पाठ

‘अकेला नहि रहू’ वाक्य अनन्या नारिकेल-पातपर लिखैत छलीह। जे पढ़ि नहि सकैत, ओ सुनैत; जे सुनि नहि सकैत, ओ पातक रेखा छुइत अछि। ई इन्द्रियगत बहुमाध्यमिता सामान्य पाठशालाक विशेषता बनैत अछि। ज्ञान केवल मुद्रित शब्दमे नहि, श्रवण, स्पर्श आ समवेत पुनरावृत्तिमे चलैत अछि। लोक-अभिलेखक पात एखन नूतन शिक्षक-पुस्तक बनि उठैत अछि—स्मृति आ प्रतिरोधक रूपान्तरणक ठोस उदाहरण।

लाजक नियमक भाषिक संशोधन

मीरा पहिने लाज अपराधीक नहि, पीड़ितक नहि जकाँ असुविधाजनक रूप बोलैत छलीह; बा वाक्य कैं ‘लाज अपराधीक हो’ कहि स्पष्ट करैत छथि। ई छोट सम्पादन कथानकक भीतर भाषिक परिशोधनक प्रत्यक्ष घटना अछि। सामूहिक पाठक लेल नीतिवाक्यक सटीकता आवश्यक बनैत अछि। लेखक एतय एक फर्मूलाक निर्माण देखबैत छथि, तैयार घोषणाक केवल प्रचार नहि। गलत अथवा भ्रमपूर्ण पाठसँ स्पष्ट लोकवाक्य धरि ई चलायमान भाषा शिल्पगत रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

निशांतक स्वीकारोक्ति

निशांत कहैत अछि जे विदेशक भुगतान-तंत्र लोकक इच्छा, भय, लत आ अकेलापनक आँकड़ा लैत छल। गामक प्रश्नपर ओ अपन अज्ञान अथवा मौनक जिम्मेदारी स्वीकारैत अछि। देविका तुरन्त ओकर पक्षमे बजबाक इच्छा रखैत छलीह, मुदा बा निशांतकैं स्वयं उत्तर देबाक अवसर दैत छथि। ई दृश्य दोषक अनेक स्तर बनबैत अछि। संगठित ठगी चलौनिहार व्यक्तिक अपराध, तकनीकी कर्मचारीक अपर्याप्त प्रश्न आ साधारण खाताधारकक अनभिज्ञता समान श्रेणी नहि। स्वीकारोक्तिक सामाजिक महत्त्व एहि भेदमे अछि।

‘जे गलती बुझि गेल, से सुधारू’

सौम्या ‘दोष आ उत्तरदायित्व’ जकाँ गम्भीर शीर्षक चाहैत छलीह; बा सरल लोकवाक्य चुनैत छथि। एहि शैलीगत बदलावसँ पाठशाला जटिल आर्थिक-नैतिक विवादकैं अति-सरल नहि करैत, बल्कि छोट उपदेशक माध्यमसँ आम जनक प्रश्न बनेबाक प्रयास करैत अछि। कथाकार विद्वत्पूर्ण सिद्धान्त आ सार्वजनिक स्मरणक भाषा एक-दोसराक विकल्प नहि, भिन्न स्तर बनबैत छथि। बड़का अर्थ छोट वाक्यक सामाजिक यात्रा मे उपलब्ध होइत अछि।

पहिल सफल रुकावट

मुन्ना पासवानक कजिन खाता खोलबाक समय पूछैत अछि जे पैसा कतयसँ आएत, नाम ओकर किएक, फोन केकरा लग रहत। ओ संदिग्ध प्रक्रिया छोड़ि गाछी पहुँचैत अछि। कथा पीड़ित-निर्माणक पहिनहिक क्षणमे हस्तक्षेप देखबैत अछि। एहि ‘बचल’ शब्दक अर्थ कथामे नया अछि; जे ठगीक भीतर पूरा नहि घुसल, ओकरा मूर्ख नहि, सचेत कहल जाइत अछि। एक व्यक्तिगत दृश्य व्यापक परिवर्तनक सम्भावना दैत अछि, मुदा एक उदाहरणसँ समस्त क्षेत्रक ठगी-समाप्तिक निष्कर्ष नहि।

बिना पंजीकरणक पाठशालापर नोटिस

बटुकनाथ जनहित-याचिका अथवा नोटिसक जरिए पाठशालाकैं रोकबाक योजना बनबैत अछि। मुदा संस्था, अध्यक्ष, बैंक-खाता, स्थायी भवन वा पंजीकरणक अभावमे ओ तय नहि करि पबैत जे निशाना कोन हो। गाछ, पात आ लोकक अनौपचारिक बैठक संगठित शक्ति के एक वैकल्पिक रूप देखबैत अछि। तथापि कथा भीतर अनौपचारिकताक लाभ होएब वास्तविक जीवनमे सब विधिक दायित्वसँ स्वतः मुक्त होएबाक सामान्य सिद्धान्त नहि।

गामसँ बाहरक शिक्षाक विस्तार

हाट, विवाह, श्राद्ध, बस-स्टैण्ड, मधुबनीक चाह-दोकान, दरभंगाक लॉज आ दिल्लीक किरायाक कमरामे नियम कहल जाइत अछि। एहि स्थल-मालासँ पाठशाला एक परम्परागत इमारतसँ बाहर घुमैत लोकवाक्य बनैत अछि। कथामे ‘कक्षाक अन्त’ आ ‘ज्ञानक यात्रा’ अलग कालगत बिन्दु छथि। पाठ पढि घर घुरैत लोक अपन भाषामे दोहरबैत छथि; बहुकण्ठी रूपान्तर कथा-संस्कृतिक पूर्वक प्रस्तावनासँ जुड़ैत अछि।

भूतसभक श्रम घटबाक कल्पना

बूढ़बा भूत कहैत छथि जे जीवित बच्चा सीखि रहल छथि तँ मृतक समुदायकेँ कम काज रहत। हुलासी आशा करैत छलीह जे भावी आत्मासभ कम आएत। ई मर्मस्पर्शी उलटबाँसी अछि: भूतक समुदाय अपन सदस्य-संख्या बढ़एबाक बदला घटबाक इच्छा रखैत अछि। जीवन-रक्षाक नैतिकता जादुई जगतक सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रेरणा बनैत अछि। लोकविश्वासक सामाजिक पुनर्पाठक ई उल्लेखनीय उदाहरण अछि।

अन्तिम अभिवादनक परिवर्तन

‘अकेला तँ नहि छी?’ साधारण अभिवादन बनैत अछि। ई लघु भाषिक परिवर्तन संकटक पहिल संकेत पर ध्यान देबाक नैतिक आदत बनबैत अछि। उपन्यास बतबैत अछि जे ठगीक गोहि ‘नामभक्षण’ करैत छल, मुदा सामूहिक प्रश्न नामकेँ फेर सम्बन्धमे लैत अछि। सीमा ई जे नीतिवाक्यक लोकप्रियता आ डिजिटल अपराधक वास्तविक सांख्यिक ह्रास समान बात नहि। कथा प्रायोगिक परिणामक छोट दृश्य दैत अछि, समग्र सर्वेक्षण नहि।

प्रकरणक मूल्यांकन

‘स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला’ कथा कैँ नाटकीय अपराध-उद्घाटनसँ व्यवहारिक सामाजिक शिक्षाक दिशामे घुमबैत अछि। बाल-प्रश्न, बुजुर्गक असमंजस, निशांतक स्वीकारोक्ति, मीराक वैकल्पिक सहायता-सूत्र आ मुन्नाक कजिनक बचल घटनाक अलग-अलग भूमिकासँ अध्याय घनीभूत अछि। प्रतिरोधक रोमानी विस्तार कतेको ठाम असाधारण सहज देखाइत अछि, मुदा नीतिवाक्य बनबाक वास्तविक संवाद एकरा पात्रगत जीवितता दैत अछि।

प्रकरण १२२ | मूल अध्याय २१ — निजताक शपथ

पाठशालासँ शपथ धरि

नाम-अभिलेख आ स्क्रीन-सावधानीक बाद शान्तिक अपेक्षा छल, मुदा अध्याय कहैत अछि जे लाज आ डरक माटि भीतर शान्तिक अंकुर उठब कठिन अछि। देविका आ सौम्या के अनुभवसँ सामूहिक शपथक विचार निकलैत अछि। एतय शिक्षा सूचना-बोधसँ सामाजिक प्रतिबद्धतामे बदलैत अछि। ‘कियो दोषी नहि’क नीतिवाक्य अपन संघर्षक मञ्च लैत अछि—माटिपर खिंचल वृत्त आ ओकरा भीतर एक-दोसराक भरोसा। ई नूतन क्रिया पाठशालाक पुनरुक्ति नहि, साझा उत्तरदायित्वक औपचारिकतारहित संस्कार अछि।

देविकाक अनिद्रा आ मृतकपर दोष

उज्ज्वलक नाम तेसर पातपर लिखल देखितहुँ देविकाकेँ निन्न नहि अबैत। गामक पूर्वक ‘अपने दोष’क टिप्पणी भाइकेँ मृत्यु-पछातियो दोषी बनबैत अछि। देविका अपन बातकेँ पीड़ितक गलतीसँ हिंसक जालक चिन्हारि दिस

घुमबैत छलीह। एहि अनुभवक स्वर ज्ञानक स्रोत अछि, मुदा शोकक नैतिक भाषा आ अपराधक अन्तिम वैधानिक अपराध-विवेचनकेँ एक नहि करबाक चाही। पात्रक अनिद्रा सामाजिक अपराधबोधक निरन्तर प्रभाव बतबैत अछि।

मीराक फेर भयभीत हेबाक यथार्थता

पहिने निजताक ब्लैकमेलक विरुद्ध बाजल मीरा गाम आएबासँ पहिने फेर डेराइत छलीह। ई पुनरावृत्ति पात्रक विकासक कमजोरी नहि; सार्वजनिक साहस एक बेर देखलापर व्यक्ति सर्वदा निर्भय नहि होइत। धुँधला चिन्हसँ आबि रहल नूतन धमकी सामाजिक हिंसाक सततता देखबैत अछि। मीरा अपन प्रेम के निजी अधिकार मानैत छथि, मुदा ओकर विरुद्ध आर्थिक कारोबारक भय जीवित अछि। कथामे आत्मविश्वासक प्रक्रिया चढ़ाव-उतार सहित प्रस्तुत अछि।

वृत्तक तीन शब्द

सौम्या लाल माटिपर ‘निजता’, देविका ‘ठगी’, मीरा ‘लाज’ लिखैत छलीह। तीनू शब्द व्यक्ति, संरचना आ सामाजिक प्रतिबिम्बक अलग स्तर बनबैत अछि। वृत्त समान सुनवाइक आकृति थिक, मुदा स्त्रीसभक अनुभव समान नहि। एतय सामूहिकता अन्तर मेटब नहि, एक-दोसराक भयक स्रोत चिन्हब अछि। शब्द धरतीपर लिखल अछि, जइसँ अमूर्त अधिकार दृश्यात्मक समुदायिक करार बनैत अछि।

मुन्नाक स्वयं बोलबाक अवसर

मुन्ना पासवान गाछीक कात ठाढ़ रहि अपन पाँच हजारक कारण खाता खोलबाक कथा कहैत अछि। ओ कहैत अछि जे दलालक वास्तविक नाम नहि जनैत, मुदा थानामे ओकर नामसँ पकड़ल गेल। मीराक उत्तर नामसँ दोष थोपल जाएबाक विपरीत नामसँ सुरक्षा करबाक प्रस्ताव अछि। पीड़ित, उपयोग कएल गेल खाता आ सम्भावित विधिक उत्तरदायित्वक श्रेणीसभ पर सावधानी आवश्यक अछि। कथा मुन्नाकेँ पूर्णतः निर्दोष सिद्ध करैत नहि; ओकर ज्ञान-स्तरक भेद उजागर करैत अछि।

अनन्याक सहपाठिनीक कठिन प्रश्न

नेनी धमकीक फोटो सार्वजनिक करबाक डरपर उपाय पूछैत छलीह, फेर घरक डाँट पर प्रतिप्रश्न। एहि बाल-प्रश्नसँ नारा व्यवहारिक कसौटी पबैत अछि। देविका विश्वस्त लोककेँ कहब, पैसा नहि पठेब, सन्देश नष्ट नहि करब जकाँ सुरक्षा-परक उत्तर दैत छलीह। मीरा परिवारक दोषारोपणक प्रश्नपर ओहू घरकेँ पढ़एबाक संकल्प दैत छलीह। उपदेशक कार्य-रूप परिवर्तित होइत अछि। तौ प्रत्येक घर सुरक्षित प्रतिक्रिया देत, से मानि लेल नहि जाए।

ईराक दूरस्थ श्रवण

ईरा विदेशसँ छोट मोबाइल-चित्रमे गाछीक माटिवला वृत्त देखैत छलीह। हार्वर्डक नैतिक सिद्धान्त आ गामक जीवित भय बीच कथा दृश्यक प्रतिपक्ष बनबैत अछि। ईरा अपन विश्वविद्यालयिक ज्ञान त्यागि नहि देत; ओ देखैत छथि जे ज्ञानक प्रभावक परीक्षा डेरायल लोकसभक परस्पर व्यवहारमे होइत अछि। एहि दूरस्थ फोकलाइजेशनसँ गामक स्थानीय बैठक वैश्विक नैतिक प्रश्नक केन्द्र बनैत अछि।

निशांतक डरक स्वीकृति

विदेशक वित्तीय कार्यालयमे निशांत भुगतानक रस्ताक किछु अंश बुझैत अछि, मुदा अपन डर स्वीकार करैत अछि। सौम्या डर मिटबासँ बेसी ओकरा सावधानीक उपकरण राखबाक सुझाव दैत छलीह। ई संवाद साहसक अधिक जटिल रूप दैत अछि। भयक अभाव न वीरता अछि न सामाजिक प्रमाण; भयक स्वामित्व ककरा लग अछि, से मुख्य प्रश्न बनैत अछि। निशांतक कार्य-अभिप्राय आ व्यावहारिक स्रोत-जाँचक सीमा यथावत् अछि।

‘हम दोषी नहि’क सामूहिक उच्चारण

धमकी पओनिहार लोक गाछी आबि वृत्त खिंचैत आ अपन दोष-बोधक विरुद्ध बजैत छथि। निजी अपराधबोध सार्वजनिक साझा भाषा बनैत अछि। एहि दृश्यमें सामाजिक कलङ्कक भार पीड़ितसँ हटाकऽ अत्याचारक स्रोत दिस घुमाओल जाइत अछि। मुदा ‘हम दोषी नहि’ एक सहायता-परक प्रतिज्ञा अछि; प्रत्येक संविदात्मक अथवा खातागत दायित्वक औपचारिक न्यायिक निर्णय नहि। साहित्यिक सन्दर्भमे वाक्यक शक्ति ओकर सामाजिक भूमिका अछि।

हुलासी आ मीराक रातिक मौन

सभा समाप्त भेलाक बाद मीरा असगरि गाछीमे बैसैत छलीह। हुनका प्रेमिका अदितिक स्मृति अबैत अछि, जे एखन गाम अएबाक साहस नहि जुटौने छलीह। हुलासीक अदृश्य सान्निध्य एहि रातिक कोमल क्षण बनैत अछि। सामूहिक शपथ निजी भयक समस्त अवशेष मेटैत नहि। ई शिल्पगत संयम पाठककेँ देखबैत अछि जे सार्वजनिक आन्दोलनक भीतर व्यक्तिक एकान्त आ अनिर्णीत सम्बन्ध जियत रहैत अछि।

सौम्याक अधिकार-विस्तार

सौम्याक टिप्पणीमे समलैंगिक, विषमलैंगिक, विवाहित, अविवाहित, स्त्री, पुरुष आ तेसर लिङ्गक व्यक्तिसभक देहपर स्वाधिकारक बात अछि। कथा अपन स्त्री-विशिष्ट प्रसंगसँ व्यापक देह-गरिमाक प्रश्नधरि फैलैत अछि। तथापि ई सूची प्रस्तुत करब आ प्रत्येक समूहक अलग विकसित कथा सुनायब एक नहि। आलोचना एकरा नूतन नैतिक परिधिक घोषणात्मक विस्तार कहि सकैत अछि, स्वतन्त्र पात्रवृत्तक सिद्ध पूर्णता नहि।

उज्ज्वलक माएक सार्वजनिक स्वर

एक युवक ठगीक धमकी लऽ पाठशाला अबैत अछि आ पैसा पठेबासँ बचैत अछि। एहि प्रसंगपर उज्ज्वलक माय पहिल बेर सभा मे कहैत छथि जे जँ पहिने एहन सुरक्षित ठाम रहित तँ शायद बेटा अपन डर बजैत। हुनकर कथन शोकक असम्भव ‘यदि’ थिक—अतीत फेर बदलल नहि जा सकैत। ई मातृस्वर देविकाक अनुसन्धान-संकल्पसँ अलग अनुभव दैत अछि। दूनू जन एकहि मृतकक नाम लैत छथि, मुदा स्मृति-संकट अलग-अलग ढङ्गसँ वहन करैत छथि।

धर्मग्रन्थक बदला फोन, छाती आ माटि

अन्तिम शपथ समय लोक फोन, अपन छाती आ नाम लिखल माटिपर हाथ रखैत छथि। उपकरण, देह आ भूगोलक त्रिसन्धि सामूहिक विश्वासक नूतन संस्कार बनैत अछि। फोन ठगीक उपकरणसँ सम्भावित साक्ष्यक

डिब्बा होइत अछि। एतय तकनीककेँ नकारल नहि, नैतिक उपयोगक विधिमे फेर स्थापित कएल गेल। मिथिला-कथासंस्कृतिक सामूहिक रचना आधुनिक उपकरणसँ सम्पर्क करैत अछि।

समग्र मूल्यांकन : सहारा न्यायसँ पहिने

‘निजताक शपथ’ भयक माटिसँ निकलैत सामाजिक भरोसाक अध्याय अछि। तीन शब्दक वृत्त, मुन्नाक स्वतन्त्र गवाही, बालिकाक कठिन प्रश्न, मीराक बचल भय आ उज्ज्वलक मायकेँ पहिल सार्वजनिक स्वर कथाक बहुकेन्द्र बनबैत अछि। किछु नैतिक वाक्य शिल्पगत रूपसँ अत्यधिक प्रत्यक्ष अछि, पर पात्रसभक वास्तविक संकोच आ संवाद एकरा केवल घोषणापत्र होबासँ रोकैत अछि। अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि—पीड़ितक दोषारोपण घटब आ सहायता-सम्बन्ध बनब, बिना मृतकक अनुपस्थितिक त्रासदी विसरल।

प्रकरण १२३ | मूल अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

दोसर भाषणक पहिलसँ भिन्न नाटकीय विन्यास

एडवर्ड ब्रूम फेर वैश्विक उद्यम आ गरिमाक भाषण देबाक तैयारी करैत अछि। पहिने ईरा सभागारक भीतर विशिष्ट प्रश्न उठौने छलीह; एहि बेर ओ निमन्त्रण होइतहुँ प्रश्न नहि पूछबाक निर्णय करैत छलीह। ई मौन डरक परिणाम नहि, मंचक नियम बाहर राखबाक आयोजन अछि। कथा पहिनेक बहसक एक पुनरावृत्ति नहि, ओहि बहसक माध्यमक पुनर्गठन प्रस्तुत करैत अछि। विश्वविद्यालयक भाषा आ गामक नाम-पाठक सम्बन्ध एतय निर्णायक होइत अछि।

कैम्ब्रिजमे गामक गन्ध

कैम्ब्रिजक पुरान ईंटक बीच कमला-बलानक नमीक गन्ध उठैत अछि, यद्यपि दृश्यरूपमे पानि कतहु नहि। ई जादुई-संवेदनात्मक संक्रमण दूरस्थ स्थानक बीच स्मृतिक मार्ग बनबैत अछि। गन्ध सूचना-प्रेषणक सामान्य वैज्ञानिक तन्त्र नहि, कथानकक स्मृति-स्थानान्तरक उपकरण अछि। गामक पीड़ा विदेशक आधुनिक भवनमे प्रवेश करैत अछि, मुदा दूनू स्थानक ऐतिहासिक आ आर्थिक विषमता समाप्त नहि करैत।

सोना अक्षर, स्वच्छ फूल आ स्लाइड

सभागारक पोस्टर पर ‘गरिमा’ आ ‘उत्तरदायित्व’ सोनहुला अक्षरमे, मंचपर फूल आ सुव्यवस्थित स्लाइड, बाहर नामोचित अनौपचारिक पाँति। ई दृश्य-सम्पादन बाहरी आकर्षण आ अनुभूतिक नैतिक भार बीच विरोध बनबैत अछि। ब्रूमक पहिल स्लाइड पुल, दोसर अस्पताल, तेसर विद्यालय, चारिम ‘विश्वास’ शब्द रखैत अछि। ई क्रम पूर्वक श्रमिक-दुर्घटना आ महामारीक कथावृत्तसँ पाठकक स्मृति जोड़ैत अछि। वैभवक प्रदर्शन स्वयं अपराधक प्रमाण नहि; नाटकीय विडम्बना पूर्वक सामग्री संग तुलना सँ निर्मित अछि।

आमन्त्रित प्रश्नक अस्वीकार

एलिना ग्रेव्स ईरासँ प्रश्न अपेक्षा रखैत छलीह। ईरा ‘नहि’ उत्तर दैत छलीह। विश्वविद्यालयक सभ्य प्रश्नोत्तर-नियमक भीतर विरोध प्रश्न बनि, गोल उत्तर पाबि, नियन्त्रित तालीमे समा सकैत छल। ईरा एहि आवर्तनक बाहर

काज करबाक निर्णय करैत छथि। एहि क्रियामे पात्रक वैचारिक विकास अछि: अघोषित श्रमिकक विषय सभागारक विनम्र विवादक अंश मात्र नहि रहू, स्वतन्त्र सार्वजनिक श्रवणक मञ्च पाओ।

बाहर सीढ़ीपर छोट प्रतिमञ्च

ईरा तीन विद्यार्थी आ दू वृद्ध महिलाक संग सभागार बाहर पाथरक सीढ़ी लग कम्प्यूटर, कैमरा आ ध्वनि-साधन राखैत छलीह। ई मञ्च सुव्यवस्थित वैधानिक सभा नहि; स्थानीय नामक दूरस्थ प्रसारणक श्रवणस्थल अछि। अनौपचारिकता एतय अवसर अछि, तौ ईरा स्वयं नाम नहि पढ़ैत छलीह। अपन भूमिका प्रसारणक पहरेदार बनब, गामक आवाजकेँ प्रतिस्थापित करब नहि। ई प्रतिनिधित्वक शिल्पगत मर्यादा उल्लेखनीय अछि।

अनन्याक नेतृत्ववला ‘उपस्थित’ ध्वनि

गढ़ नारिकेलमे अनन्या पातक सूची पढ़ैत छलीह; बच्चा सभ प्रत्येक नामपर ‘उपस्थित’ उत्तर दैत अछि। सरयू देवी, कन्हैया पासवान, उज्ज्वल झा, नाम-अज्ञात स्त्री आ महामारीक अनाम वृद्धक भिन्न श्रेणी एकहि श्रवणक्रियामे साथ रखल गेल अछि। ई पद्धति सामूहिक आदर दैत अछि, मुदा नाम-अज्ञात व्यक्तिक पूर्ण पहिचान स्वतः पुनःनिर्मित भऽ गेल नहि। ‘उपस्थित’ लोकस्मृतिक वचन अछि, प्रशासनिक जीवितता वा मृत्यु-कारणक संशोधित प्रमाणपत्र नहि।

मुन्नाक नामक वापसी

बच्चा सभ मुन्नाकेँ खाता-संख्या नहि, मुन्ना पासवान रूपमे बजैत छथि। ई विवरण अध्याय ८क म्यूल खाताक परिस्थितिसँ सम्बन्धित अछि। लोकसभा बैंकक अंकक जालमे घेरल व्यक्तिक सामाजिक चिन्हारि पुनः रखैत अछि। एतय व्यक्ति द्वारा काम केनाइ, अपराध-जाल द्वारा ओकर दुरुपयोग आ सम्भावित विधिक दायित्वक भिन्न स्तर नष्ट नहि होइत। नाम-पाठ न्यायिक अपराधमुक्तिक अन्तिम आदेश नहि।

स्क्रीनपर स्वयमेव नाम उभरब

ब्रूमक प्रस्तुतीकरणक पुलक फोटो बदलि भीजल पातपर नाम उभरैत अछि। सहायक तकनीकी खराबी बुझि ठीक करैत अछि; नाम फेर अबैत अछि। ई गूढ़ दृश्य सम्भावित साइबर-प्रवेशक तकनीकी जाँच रूपमे नहि, जादुई यथार्थक अपराजेय स्मृतिक रूपमे लिखल गेल अछि। ब्रूमक आनुभूतिक सन्दर्भ आ श्रोताक ज्ञान अलग राखब चाही—कियो पर्दाक बदलाहट देखैत, कियो गंगा-पानिक ‘छपाक’ केवल ब्रूमक भयमे सुनैत अछि।

‘भीतर’ आ ‘बाहर’क समांतर ध्वनि

सभागार भीतर ‘नैतिक ढाँचा’, ‘गरिमा’, ‘उत्तरदायित्व’क व्याख्यान; बाहर अनन्याक पाठक माध्यमसँ मृतकक नाम। एहि ध्वनि-द्वन्द्वमे कथाकार नीतिशास्त्रीय शब्दक प्रायोगिक उत्तर माँगैत छथि। ‘भीतर’क भरल सभागार नैतिक रूपसँ खाली होइत अछि, ‘बाहर’क छोट सभा उपस्थिति ग्रहण करैत अछि। ई प्रतिलोम अध्याय १८क ‘खाली अदालत’सँ गहन संरचनात्मक साम्य राखैत अछि—संस्थागत भवन चलैत रहैत अछि, नैतिक ध्यान ओतयसँ बाहर सरकि जाइत अछि।

एलिनाक दरबाजा पार करब

प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स मञ्च दिस नहि, दरबाजा दिस जाइत छलीह। हुनकर पछुआ विद्यार्थीसँ भीड़ धीरे-धीरे बाहरी सीढ़ी पर बढ़ैत अछि। ई व्यक्तिगत परिवर्तनक सीमित, किन्तु अर्थपूर्ण दृश्य अछि। एलिनाक पहिल संस्थागत बचावक भूमिका आ एतुक्का शान्त निर्गमनकेँ साथ पढ़ला पर पात्रक नैतिक असुविधा देखि सकैत अछि। मुदा एक बेर सभागार छोड़ि नाम-पाठ सुनलासँ सम्पूर्ण विश्वविद्यालयिक संरचनाक दानदाता-सम्बन्ध स्वतः बदलि गेल नहि।

मुख्य व्यक्ति नहि, गाम

लाउ किन-हंग स्रोत बन्द करबाक आदेश दैत अछि; राघव उत्तर दैत अछि जे स्रोत अनेक अछि आ कोनो एक ‘मुख्य व्यक्ति’ नहि। ई कथाक नेतृत्वविहीन सामाजिक वितरितता सामने अनैत अछि। पहिल अध्यायक गोप, नन्द, ईरा जकाँ व्यक्तित्व-केन्द्रिक प्रक्रिया आब अनेक बालक, स्त्री, लोकपात आ प्रतिलिपिमे फैलैत अछि। एहि प्रसारसँ नियन्त्रण कठिन बनैत अछि। तथापि गामक आयोजनमे अनन्या, देविका आ ईरा जकाँ विशेष व्यक्तिसभक वास्तविक योगदान मेटि देबाक नहि चाही।

खाली मंचक प्रस्ताव

एलिना पूछैत छलीह जे ओ की कऽ सकैत छथि। ईरा कहैत छलीह जे अगिला बेर एहन भाषण भेल तँ मंच खाली छोड़ल जाय। ई प्रस्ताव शाब्दिक मञ्च-त्यागक संग नैतिक बहिष्कारक दृश्यात्मक रूप अछि। शून्य मंच बोलैत भाषणक प्रतिरोध बनि उठैत अछि। एहि समय ईरा भविष्यक कार्यक्रम लेल सुझाव दैत छलीह; ओ कार्य तत्काल पूर्ण रूपेँ सम्पन्न भेल, एहन घटनाक्रम पाठमे नहि। प्रस्ताव आ परिणामक भेद महत्वपूर्ण अछि।

कम्पनीक नव नामक पुरान दाँत

अगिला सप्ताह ब्रूमक कम्पनी अपन नाम बदलैत अछि। समाचार सार्वजनिक नव आरम्भक कथा चलबैत अछि, गामक बच्चासभ एकरा पुरान गोहिक दाँतसँ जोड़ैत छथि। एतय ब्राण्ड-परिवर्तन नैतिक परिणामक प्रश्न बनबैत अछि। लोकक प्रतिक्रिया संस्था नाममात्रसँ उत्तरदायित्व मुक्त नहि होएबाक चेतावनी अछि। मुदा उपन्यासमे चित्रित विशेष कम्पनीक नव नाम कैँ वास्तविक बहिर्जगतक संस्थागत बदलाव समझब गलत हएत; ई कथा भीतरक घटना अछि।

समग्र मूल्यांकन : प्रश्नक वैकल्पिक लय

‘हार्वर्डक दोसर भाषण’क सर्वोत्तम उपलब्धि कथा-नियन्त्रणक स्थान-बदलाव अछि। पहिल बेर ईरा मुख्य सभाक भितर प्रश्न करैत छलीह, दोसर बेर बाहर बैसि गामक बालस्वर प्रसारित करैत छलीह। जादुई नामक स्लाइड, एलिनाक निर्गमन, राघवक ‘मुख्य व्यक्ति नहि’क अनुभूति आ कम्पनीक नाम-बदलाव एक निर्मित नाटकीय लय रचैत अछि। सीमास्वरूप प्रतिरोधक व्यापक तात्कालिक प्रभाव कखनो असाधारण सहज होइत अछि; तौ ईराक अपना स्वरकेँ पाछाँ राखब कथाक नैतिक-आख्यानात्मक परिपक्वता अछि।

प्रकरण १२४ | मूल अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

विजेताक ग्राम-यात्राक उलटा प्रयोजन

बटुकनाथ अपन प्रक्रियागत जीतक कागच लऽ गढ़ नारिकेल पहुँचल अछि, जकरा ओ ‘हारल लोक’ ताकबाक यात्रा मानैत अछि। मुदा ओहि लोकसभकेँ विरोधक प्रतीक्षागृहमे नहि, कार्यरत पात-पाठशालामे भेटैत अछि। एहि विपर्यासमे पूर्वक ‘जीतक शोक’क विषय ठोस यात्रा-दृश्य बनैत अछि। विरोधी पक्षक सामाजिक स्वायत्तता बटुकनाथक अपेक्षित शक्ति-संबन्ध बदलैत अछि। ओ लोकक धमकीक बदला असम्भव सामान्यता अनुभव करैत अछि—कोनो नारा नहि, कोनो दौड़धूप नहि।

गाछीक मैदानक कार्यस्थल बनब

लाम बाँसक तख्तापर बच्चासभ नारिकेल पात सुखबैत आ नाम राखैत अछि। खेलक मैदान, भूतक अदालत, शिक्षाक वृत्त आ आब अभिलेख-कार्यशाला एकहि स्थानक क्रमिक रूप छथि। कथाकार स्थानकेँ स्थिर सांस्कृतिक प्रतीक नहि बनबैत; सामाजिक क्रियानुसार ओकर उपयोग बदलैत अछि। बटुकनाथ एहि कार्यक स्वाभाविकता देखि असहज होइत अछि, कारण ओकर योजनाक केन्द्र निरन्तर प्रतिरोधी भीड़ छल, न कि आत्मनिर्भर विद्यालय-सन समूह।

बालिकाक ‘अहाँक नाम’ प्रश्न

एक बालिका बटुकनाथसँ पूछैत छलीह जे हुनकर नाम लिखल अछि की नहि। ई गामक अभिलेखमे नामक द्वैत भूमिका उघारैत अछि—कोनो नाम स्मरणक सम्मान, कोनो नाम सावधानीक विषय। बालिकाक प्रश्न ‘सब नाम बचाबय योग्य’क सरल नारा पर आलोचनात्मक प्रतिबन्ध लगबैत अछि। बटुकनाथक सत्ता नामक प्रमुखताक बदला एक सम्भावित आत्मपरीक्षाक विषय बनैत अछि।

अनन्याक प्रतीक्षाक व्यङ्ग्य

बटुकनाथ आरुणि सँ भेटबाक आग्रह करैत अछि; अनन्या कहैत छलीह जे ओ नाम पढ़य गेल छथि, अहाँ प्रतीक्षा करू। ‘प्रतीक्षा करब न्यायालयमे सीखने हएब’ कथन अत्यन्त संयमित व्यङ्ग्य अछि। दृश्य शारीरिक हिंसा अथवा हुल्लड़ द्वारा प्रतिशोध नहि रचैत; विलम्ब थोपनिहार व्यक्तिकेँ स्वयं प्रतीक्षाक समय अनुभव करबैत अछि। न्यायिक विलम्बक पहिलुका प्रतीक बालिकाक साधारण वाक्यमे फेर उठैत अछि।

देविकाक सभक सामने संवाद

देविका डिजिटल ठगी, नकली गिरफ्तारी, परिवारक गवाही आ अन्य युवकक घटनाक कॉपी-संग पहुँचलि छथि। बटुकनाथ ‘गोपनीय संवाद’ चाहैत अछि, देविका सभक सामने बात करबाक शर्त दैत छलीह। एकान्त बातचीत हिंसक धमकीक पूर्व अनुभवसँ संशयास्पद बनल अछि। ई पूर्ण गोपनीयताक निषेध नहि—मीरा पूर्वक अध्यायमे निजी विवरण सुरक्षित रखबाक माँग करैत छलीह। एतय देविका प्रतिपक्षी वकीलक संग शक्ति-संबन्ध असमान होएबासँ सार्वजनिकता चुनैत छलीह। सन्दर्भक भेद महत्वपूर्ण अछि।

मुआवजा आ स्मरणक अर्थभेद

बटुकनाथ मुआवजाक सहायता प्रस्तावित करैत अछि; देविका अपन भाइक नामक विनिमय-मूल्य निर्धारित करबाक विरोध करैत छलीह। ई क्षण कानूनी क्षतिपूर्तिक आवश्यकताकेँ सम्पूर्णतः नकारब नहि, बल्कि धन-द्वारा स्मृतिक समाप्ति खरीदबाक आलोचना अछि। मुआवजा आ पीड़ितक सम्मान अलग, पूरक विषय बनि सकैत छथि; कथामे विशिष्ट वक्ताक प्रस्तावक प्रति देविकाक अविश्वासक कारण पूर्वक घटनासभ छथि।

मीराक ‘दबाओल’ बनाम ‘मिटाओल’

बटुकनाथ निजी सामग्रीक मामला कानूनी ढङ्गसँ दबएबाक बात कहैत अछि। मीरा कहैत छलीह जे अपराधक जालक नियन्त्रण तथा अवैध सामग्रीक दुरुपयोग समाप्त होए, दबाओल नहि। एहि शब्द-विवादमे गोपनीयता दू भिन्न अर्थ लैत अछि—पीड़ितक अधिकार बनाम अपराधी कारणकेँ झँपब। मीरा सभ्य नमस्कार करैत छलीह, मुदा भयवश निर्णय नहि छोड़ैत। एहि अनौपचारिक शालीनतामे पात्रक आत्मनियन्त्रण अधिक देखाइत अछि।

नेतृत्वविहीन आन्दोलनक प्रश्न

बटुकनाथ चन्द्रपालकेँ लिखैत अछि जे गाममे न नेता, न माँग, न डर देखाइत अछि। चन्द्रपाल एकरा खतरा समाप्त बुझैत अछि; बटुकनाथ उलटे कठिन स्थिति मानैत अछि। एतय अपराधी पक्षक अन्तःविरोध अछि: चन्द्रपाल नियन्त्रणक परिचित संकेत ताकैत, बटुकनाथ आत्मनिर्भर सामाजिक काजक अप्रत्याशित रूप देखैत। लोकसभक वास्तविक संगठनमे विशेष पात्रसभ सक्रिय छथि, मुदा ओ सभ ‘खरीद सकल एक नेता’क संरचना नहि बनबैत।

‘प्रक्रिया’क पोखरि-दर्पण

बटुकनाथ पोखरिक पानिमे अपन चेहराक बदला ‘प्रक्रिया’ शब्द देखैत अछि। छुलिते अक्षर टूटि शताधिक नाम बनैत अछि। ई दृश्य विधिक तकनीकी दक्षताकेँ दबाओल व्यक्तिगत इतिहाससँ मुठभेड़ करबैत अछि। पात्र अपन पेशागत पहचानकेँ तटस्थ शास्त्र बुझि सुरक्षित रखए चाहैत अछि; पानिक जादुई घटना ओकरा दोसर वस्तु देखबैत अछि। मुदा ई कोई प्रकाशित आत्मस्वीकृति नहि—बटुकनाथक निजी भयक अद्भुत प्रतिमा अछि।

अनन्याक नाव : खाली समझौताक भविष्य

बटुकनाथ एक खाली समझौताक कागच बाहर निकालैत अछि। अनन्या ओकरा मोड़ि पोखरि पर नाव बनबैत छलीह। नाव भीजि डूबैत अछि; बच्चीक अर्थ ई जे नामविहीन कागचकेँ पानि नहि राखैत। ई पूर्वक नारिकेल-पातक नाव आ दस्तावेजी नदीक प्रतिमानक उलटा दृश्य अछि। कागच के सम्पूर्ण असत्य नहि मानल जाए; एतय विशिष्ट ‘पहिने हस्ताक्षर, नाम बादमे’क युक्तिक अनुपस्थित मानवीय विषय देखाओल गेल अछि।

‘मुक्त लोक’क भिन्न विजय

बटुकनाथ बुझैत अछि जे गामक लोक ओकर विरोधक केन्द्र नहि रखैत। देविका पाठशाला, मीरा निजता-मण्डली, गोप प्रतिलिपि, निशांत भुगतान-समझ आ ईरा दूरस्थ मञ्चक नव संरचना बनबैत छथि। एहि बहुविध क्रियासँ औपचारिक जीत-हारक जोड़ी पछुआइत अछि। किन्तु सामूहिक काज शुरू भेलाक अर्थ संरचनात्मक शोषण पूर्णतः समाप्त नहि। कथाक ‘मुक्त’ शब्द एक नूतन सामाजिक सम्भावना कहैत अछि, अन्तिम मुक्तिक दार्शनिक वा सामाजिक स्थिति नहि।

चेतावनीस्वरूप नाम

रातिक भूतक खेलमे ‘बटुकनाथ’ नाम मृतकक स्मरणक रूपमे नहि, सावधानीक रूपमे पुकारल जाइत अछि। पहिनेक लोक-अभिलेखक एक मूल समस्या एतय उभरैत अछि: प्रत्येक लिखल नाम पीड़ित अथवा सम्मानित व्यक्ति नहि होइत। अभिलेखक उपश्रेणी—मृतक, जीवित गवाह, शोषक-आरोपित, सावधानी-सूत्र—अलग चिह्नित रहबाक आवश्यकता अछि। अन्यथा नामरक्षाक नैतिक गरिमा विवादित सूची-विन्यासमे धुँधला सकैत अछि।

मेटाएल अपठित सन्देश

बटुकनाथ शहर घुरि चन्द्रपालकेँ लिखब चाहैत अछि जे मामला ओकरा बिना चलत। ओ सन्देश अन्तमे मेटा दैत अछि। कथन-अधिकारक ई स्वयं-रुद्ध क्षण पात्रक भीतरक जानब आ बाहर बजबाक अन्तर उजागर करैत अछि। ओ स्थिति बुझलक अछि, मुदा आत्मस्वीकार आ क्रियात्मक परिवर्तनक साहस नहि। शिल्पगत दृष्टिसँ ई मौन गाछीक स्त्रीसभा वा ईराक चुन्नल मौनसँ विपरीत अछि: एक मौन नव आयोजनक, दोसर मौन आत्म-रक्षाक।

समग्र निष्कर्ष : जे खोजि रहल अछि, से के?

‘बटुकनाथक खोज’ नैतिक पराजयकेँ तीखा उग्र प्रतिशोध नहि, असफल भेटघाट आ असम्पादित समझौताक रूपमे चित्रित करैत अछि। अनन्याक व्यङ्ग्य, देविकाक सार्वजनिक वार्ता, मीराक शिष्ट प्रतिरोध, पोखरिक ‘प्रक्रिया’, कागचक नाव आ अनपठित सन्देश मिलि एक पात्रक आन्तरिक संकट रचैत अछि। कथा ओकरा सुधरि गेल कहि समाप्त नहि करैत; ओ आइयो जीतक आदेश अलमारीमे रखैत अछि। एहि अपूर्ण परिवर्तनक कारण अध्यायक चरित्रगत विश्वसनीयता बढ़ैत अछि, जद्यपि जादुई दण्डक पुनरावृत्ति कखनो अत्यधिक सघन होइत अछि।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : अध्याय १६–२३क समेकित आख्यान-विन्यास

एहि आठ अध्यायमे कथा दोसर प्रकारक न्यायिक जगत गढ़ैत अछि। पहिने चन्ना गाछीक गवाह-अदालत मृतकक आवाजकेँ नाटकीय स्मृतिदण्डमे बदलैत अछि; फेर प्रक्रियागत विजेताक शोक, खाली कचहरी, पातपर नाम, डिजिटल-सावधानीक पाठशाला, निजताक शपथ, कैम्ब्रिजक प्रतिमञ्च आ बटुकनाथक व्यर्थ खोज क्रमशः सामाजिक स्वायत्तताक विस्तार देखबैत अछि। प्रथम चरणक गोहि दाँत, खाताक अन्हार आ संस्थागत नैतिक भाषण एक राजनीतिक रूपक बनेल छल; आब प्रतिपक्ष जे जन-जागरण अछि ओकर रूप बहुकण्ठी, स्थानीय आ अनुभवाधारित बनैत अछि। उपन्यासक सर्वोत्तम दृश्यसभ बहुत छोट छथि—बच्चीक बिगड़ल ‘स’, सफाईकर्मीक बाबूक नाम, मुन्नाक कजिनक बैंक-प्रश्न, मीराक बचल भय, ईराक अपना माइक पाछाँ हटाएब आ अनन्याक नामविहीन कागचकेँ नाव बनायब। एहि सूक्ष्म क्रियासभक कारण कथा केवल अपराधक विशाल सञ्जालक प्रतिरोधी घोषणामे सीमित नहि रहि जीवित समाजक पुनर्रचना बनैत अछि।

तथापि पाठगत किछु महत्त्वपूर्ण असङ्गति अलग रखबाक चाही। उज्ज्वलक मृत्यु-दृश्य अध्याय ८ आ १६ मे एकरूप नहि अछि; सरयूक परिचयक अनेक प्रसंगक सम्पूर्ण मेल स्वतः सिद्ध नहि; अध्याय १५क न्यायिक अन्तरिम आदेश आ १७–१९ मे बटुकनाथक प्रक्रियागत ‘जीत’क विधिक-कालगत सम्बन्ध स्पष्ट स्पष्टीकरण

माँगैत अछि। आलोचनामे ई विरोधाभासक कल्पित समाधान गढ़ल नहि गेल। गाछीक अलौकिक दण्ड, दिल्लीक औपचारिक आदेश, समुदायिक नागरिक अभिलेख आ पात्रसभक आरोप के चारि स्वतन्त्र आख्यान-स्तर मानि पढ़ल गेल अछि। एहि सूक्ष्म भेदक संरक्षणसँ मिथिला-कथाक जादुई यथार्थ, दस्तावेजी हिंसा आ सामाजिक शिक्षा एक-दोसरकेँ आलोकित करैत छथि, पर एकटा अमूर्त ‘सत्य’क नामपर हुनकर स्वायत्तता समाप्त नहि करैत।

प्रकरण १२५ | मूल अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

समाप्तिक घोषणा विरुद्ध कथाक निरन्तरता

पूर्वक अध्यायमे चन्ना गाछीक अदालत उठि गेल, बटुकनाथ अपन जीतक आदेश अलमारीमे राखलक, आ अनन्या रिक्त पन्ना प्राप्त केलक। अध्याय २४ एहि सब ‘अन्त’केँ आरम्भक उपकरण बनबैत अछि। ई साधारण अगिला घटना नहि, उपन्यास अपन निर्माण-नियम पर स्वयं दृष्टि देबाक क्षण अछि। आरुणि समाप्ति लिखए चाहैत अछि, मुदा गामक जीवन ओकर लेखकीय अधिकारसँ स्वतन्त्र चलैत अछि। कथक कलमक स्थानपर बच्चाक खेल आ नामक सामूहिक उच्चारणकेँ कथाक नूतन आरम्भकर्ता बनाओल जाइत अछि। एहि शिल्पमे समाप्ति कथाकारक घोषणा नहि, सामाजिक प्रक्रियाक अनवरतता सामने आत्म-संशोधन अछि।

ओसक बूँद द्वारा पात-पाठ

कथानकक आरम्भमे चन्ना गाछीक पातपर रातिक निर्णयक प्रति ओस पढ़ैत अछि आ असत्य पंक्ति धूपमे उड़ि जाएबाक कल्पना उपस्थित अछि। ई निसर्गक नैतिक सम्पादकीय कार्यक जादुई स्थापना अछि। एतय पात केवल अभिलेखक सामग्री नहि, निर्णयक जीवित पाठक अछि। मुदा धूपमे असत्य छाँटि जाएबाक अलौकिक विधानकेँ वास्तविक तथ्य-जाँचक अविकल्पीय पद्धति मानब अनुचित; उपन्यासक अन्यत्र प्रस्तुत असङ्गति एहिठाम मिटि नहि जाइत। दृश्य कला रूपमे लोक-विश्वास द्वारा अभिलेखक उत्तरदायित्व बढ़बैत अछि, तथापि आलोचना लेल मूल पाठक परस्पर विरोधक परीक्षा आवश्यक रहैत अछि।

पुरान आ नूतन रेखाक संगम

अनन्या भूतसभक पुरान कबड्डी-रेखा पर नूतन रेखा खिंचैत छलीह। काठक छड़ी, भीजल माटि, धूलिक नीचे दबल रेखा—ई सभ दृश्याभ्यास पीढ़ीक सम्बन्धकेँ शारीरिक बनबैत अछि। नूतन खेलक अर्थ पुरान सीमा मेटा देब नहि, ओकरा साझा भूगोल पर पुनः लिखब अछि। जीवित बच्चा भूतक खेलक उत्तराधिकारी छथि, मुदा तकर मात्र अनुकरणकर्ता नहि। जखन अनन्या ‘आब खेल शुरू’ कहैत छलीह, तखन क्रियाक आरम्भाधिकार ओकर हाथमे अछि। ई पुनरावृत्ति प्रगति-सूचक अछि: कोनो पुरान गोला नियत धुरी नहि, नूतन रेखा अपन दिशा चुनैत अछि।

सोमितक पारी आ शोकक मौन

मुन्नाक भतीजा सोमित साँस रोकि उज्ज्वल झाक नाम तीन बेर उच्चारण करैत अछि। देविका भाइक जीवनकेँ स्क्रीन-ठगी चिन्हबाक अनुभवसँ जोड़ैत छलीह। बच्चा सभ ताली नहि बजबैत, कारण किछु नाममे उत्सवसँ बेसी मौन आवश्यक अछि। खेल, शोक आ लोकशिक्षाक मिश्रण एहि क्षण अत्यन्त नियंत्रित अछि। बच्चाक साँस

सीमित काल अछि; मृतकक नाम एहि सीमित श्वासमे समुदायिक दीर्घता पबैत अछि। तथापि उज्ज्वलक मृत्यु जकर मार्मिक शोक अछि, ओकरा केवल लोकशिक्षाक साधन बना देबाक जोखिम कथामे सम्भावित अछि; देविकाक शोकक उपस्थिति एहि एकरेखीय उपयोगकेँ रोकैत अछि।

सरयूक हस्ताक्षर पृथ्वीक देहपर

दोसर बालिका सरयूक नाम बजैत घुरि हथेली माटिपर रखैत छलीह। आर्द्र चिह्नकेँ देविका निरक्षर स्त्रीक पृथ्वीद्वारा हस्ताक्षर कहैत छलीह। ई अभिलेखक व्यापकतम व्याख्या अछि: जकर हाथक लिखावट सरकारी बहीमे अनुपस्थित, तकर श्रमक देह स्वयं माटिमे साक्ष्य होइत अछि। किन्तु ई जादुई चिह्न न्यायालयक वैज्ञानिक हस्ताक्षर-प्रमाण नहि। साहित्यिक स्तर पर लेखन-अधिकारक स्थल राज्यक कागचसँ श्रमिकक धरती पर सरकैत अछि। स्त्री श्रमिककेँ स्मरणक अलग ठाम देल गेल अछि, मुदा पूर्वक अध्यायसभमे सरयूक जीवनवृत्तक असङ्गति एतय स्वतः सुलझल नहि।

तीस आ तीन सयक सामूहिक स्वर

एक अदृश्य खिलाड़ी ‘तीस नाम नहि, तीन सय नाम’ कहि रेखा पार करैत अछि। ओ समूचा सूची तुरन्त नहि गनैत; बच्चासभ लेल अधूरा खोजक दायित्व राखैत अछि। एतय संख्या पूर्ण सत्य-अन्वेषणक समापन नहि, भविष्यक प्रश्नपत्र अछि। मूल उपन्यासक तीस सरकारी नाम आ अधिक मृतकक आरोपक बीचक अन्तर प्रारम्भसँ प्रमुख अछि। सामूहिक पुकारक नैतिक शक्ति स्वीकार करितहुँ आलोचनाकेँ तीन सयक संकेतकेँ जाँचल अन्तिम आँकड़ा कहि प्रस्तुत नहि करबाक चाही। कथाकारक शिल्प-नियम अछि—अधूरापन आगामी पीढ़ीकेँ क्रियाशील रखैत अछि।

बटुकनाथक आदेशमे नूतन पंक्ति

शहरक अलमारीमे भीजल आदेशक ‘याचिका निरस्त’क बगलमे ‘लोक-कार्य आरम्भ’ प्रकट होइत अछि। एहि पंक्ति द्वारा अध्याय पूर्वक न्यायिक तनावकेँ रोचक रूपेँ फेर उठबैत अछि। अध्याय १५क सुरक्षात्मक आदेश, १७क प्रक्रियागत जीत, आ २४क ‘याचिका निरस्त’—ई सभक ठोस कानूनी कालसम्बन्ध पर्याप्त स्पष्ट नहि अछि। जादुई आदेशक नब पंक्तिसँ सामाजिक काजक श्रेष्ठता रेखांकित होइत अछि, मुदा विधिक परिणामक विवेचन कखनो धुँधला बनैत अछि। एहि घटनात्मक असङ्गतिकेँ समीक्षा सहेजैत अछि, न कि कल्पित अन्तरिम-अपील या अलग मुकदमा जोड़ि सुलझबैत।

विरोधक मापदण्ड बदललासँ अपराधीक भय

चन्द्रपालक प्रतिवेदनमे सात दिनमे म्यूल खाताक नूतन खोलब घटबाक, पाँच युवकक शिकायत करबाक, आ नकली गिरफ्तारीक कॉल काटबाक छोट-छोट घटना अछि। एहि उदाहरणसभसँ सामुदायिक शिक्षाक परिणामक दृश्य बनैत अछि। एकरेखा विशाल ‘जाल ध्वस्त’क दावा नहि; किछु व्यक्तिक क्रियात्मक प्रतिक्रिया अछि। लाउ किन-हंग ‘शिक्षा कीनू’ कहैत अछि, जाहिसँ लाभपर केन्द्रित सत्ता शिक्षा केँ सेहो वस्तु मानए चाहैत अछि। मुदा दादीक कथा आ बच्चाक चेतावनी एहन वस्तु नहि जे एक खरीददारीसँ समाप्त भऽ जाए। शिल्पगत विरोध बड़का वैश्विक आदेश आ लघु सामाजिक काजक अनुपातमे अछि।

चारि कातक पाठशाला

नारिकेल-पात पाठशाला एक कात नामक अभिलेख, दोसर कात स्क्रीन-सावधानी, तेसर कात निजताक शपथ आ चारिम कात गीत रूपमे व्यवस्थित अछि। ई स्थान-संरचना पूरा पूर्वक कथावृत्तकेँ सामाजिक पाठ्यक्रम बनबैत अछि। पाठशाला स्थायी भवनक दावेबिना सामाजिक कार्यक केन्द्र अछि। प्रत्येक जीवित बच्चा अपन नामक संग एक मृतकक नाम बजैत अछि, अर्थात् आत्म-पहिचान आ सामूहिक उत्तरदायित्व एकहि वाक्यमे आबि जाइत अछि। तथापि लोकशिक्षा केवल घोषणात्मक नियमसभमे रहि जाए तँ विविध असमान जोखिमक समाधान अपूर्ण रहत—निशांतक अधूरा उत्तर एहि समस्या दिस संकेत दैत अछि।

ईशानक छाहक अधूरा प्रश्न

अध्याय १५मे ईशानक आंशिक छाह-वापसीक संकेत छल। आब चन्ना गाछीमे दिनक प्रकाश पड़ितहुँ ओकर पूरा छाह नहि बनैत। अनन्याक प्रश्नपर ईशान कहैत अछि जे कागच पर दर्ज मृत्युक लोप आ लोकस्मृतिमे जीवनक पुनर्लेखन चाही। ई आवर्तन अधूरी पहचानक कल्पना अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देबाक बात ई जे पूर्वक आंशिक छाह आ वर्तमान ‘एखनहुँ नहि बनैत’क शब्द पूर्ण कालिक एकरूपता नहि दैत। एकरा आत्म-उद्धारक निरन्तर कठिन प्रक्रिया अथवा छोट पाठगत विचलन—दुनू सम्भावना संग पढ़ि सकैत अछि; बिना प्रमाण निश्चित निर्णय नहि।

जीवित खेलाड़ी, आश्वस्त भूत

साँझक खेलमे देविका, मीरा, निशांत, सौम्या, गोप आ आरुणि स्वयं पारी लैत छथि। पहिल अध्यायमे भूत खेलैत आ जीवित लोक डरैत छल; आब जीवित लोक खेलैत आ भूत आश्वस्त देखैत छथि। एहि उलटफेरकेँ कथाकार स्वयं उपन्यासक ‘नव जन्म’क रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। ई मात्र पात्र-स्थान बदलनाइ नहि, क्रियाशीलताक स्थानान्तरण अछि। मृतककेँ स्मरणक भार अकेले नहि उठेबाक पड़ैत; जीवितक सामुदायिक कार्य ओकर प्रतीकात्मक उत्तर ग्रहण करैत अछि। तथापि प्रत्येक जीवित पारीक नीतिवाक्य अत्यधिक स्पष्ट होएब कथाक बहुअर्थतातकेँ किछु सीमित करैत अछि।

हुलासीक ‘जा’ आ लोथक बदलैत मुद्रा

हुलासी पहिल बेर धुँधला हाथसँ माटिपर ‘जा’क अधूरा अक्षर लिखैत छलीह; लोथ उठबाक इच्छा अनुभव करैत अछि। एहि आधे बनल अक्षरमे जान, जागरण, जन्म आ जलक अनेक सम्भव ध्वनि एकठाम छथि। कथाकार पूर्ण पहचानक बदला अधलिखल भाषा रखैत छथि; ई अर्धता ही आत्मापर भार घटबाक दृश्य अछि। भूतसभक पूर्ण मोक्ष घोषणा नहि, मात्र धीरे-धीरे मानवीय सम्भावना घुरबाक रूपक अछि। लोथक दृष्टिक परिवर्तनक संग पूर्वक न्यायसभा मे ओकर सीमित आवाजक सम्बन्ध सेहो बनैत अछि।

रिक्त नारिकेल-फल आ तुलसीक बीज

नारिकेल गाछक फल भीतर पानिक बदला खालीपन रखैत अछि; ओकरासँ छोट पात निकलैत अछि, जाहिपर नाम पढ़लासँ कथा नहि समाप्त होएबाक विधान अछि। भोरमे गामक साधारण स्त्री ओहि फलकेँ घर लऽ तुलसीक बीज रखैत छलीह। ई फल-अन्तराल रचनाक सर्वोत्तम दृश्यसभमे अछि। चमत्कारक रिक्तता दैनिक

रोपनीक सम्भावना बनि जाइत अछि—वाक्य बीजक रूपक धरि पहुँचैत अछि। जादुई पातकेँ एक अद्वितीय पवित्र वस्तु बनाइ संग्रहित करबाक बदला घरक सामान्य स्त्री ओकरा कृषिक नूतन आरम्भ बना दैत अछि।

अध्यायक आत्मचेतन समापन

आरुणि अनन्याकेँ कापी सौंपैत अछि; अनन्या लिखैत अछि जे चन्ना गाछीमे फेर कबड्डी भेल आ एहि बेर पकड़ा गेल झूठ छल। एतय कहानी कहनिहारक भूमिकापर उपन्यास सीधा टिप्पणी करैत अछि। पाठक एखन अध्याय २४ मे अछि, मुदा पाठ स्वयं पूरा पुस्तकक समाप्ति-जेकाँ आवेग रचैत अछि। ई पुनरावर्तित आत्मसमापन एक विशेष शिल्पगत पद्धति अछि, जकरा भविष्यक प्रकरणसभ बारम्बार जाँचब जरूरी। मुख्य उपलब्धि लेखकीय सर्वाधिकारक विरुद्ध बालकक नूतन पाँति अछि; सीमा अतिघोषणात्मक वाक्यसभसँ वास्तविक घटनाक गति थम्हबाक सम्भावना। दोसर महत्त्वपूर्ण संयम ई अछि जे अपराधी ऐप पुनः चलैत, लोक फेर फँसैत—समाज एक रातिमे मुक्त नहि।

प्रकरण १२६ | मूल अध्याय २५ — मोन टांगल

दृश्य-क्रियासँ मनोवैज्ञानिक आवर्तन धरि

‘मोन टांगल’क मुख्य घटना बाह्य न्यायिक सुनवाई नहि, अपराधी पात्रसभक निन्न आ आत्म-स्मृतिक अनियन्त्रित अवस्था अछि। बटुकनाथक जीतक आदेश, चन्द्रपालक विधि-डिग्री, राघवक मिटाओल सन्देश, लाउक नक्शा आ ब्रूमक भाषण आपस मे अलग उपकरण छथि, मुदा प्रत्येकमे नाम घुसि रहल अछि। अध्याय बहुस्थानिक मानस-दृश्यसभकेँ समानान्तर बुनैत अछि। एहि संरचनामे समाजक लोक मौन होइतो कथात्मक रूपेँ उपस्थित छथि; दोसराक निन्नमे नाम ध्वनि बनि रहल अछि। विजयक कागचसँ सामाजिक श्रवण धरि एतय आन्तरिक सत्ताक स्थानान्तरण अछि।

अलमारीक कुंजीक निजी भय

बटुकनाथ तकियाक नीचे राखल कुंजी निकालि अलमारी खोलैत अछि। बन्द कमरा, सुरक्षित आदेश आ नियंत्रित निजी वस्तुसभक बीच कागचक खरखराहट चलैत रहैत अछि। बाहरी कानूनी सुरक्षाकेँ निजी निन्नक गारण्टी बनएबाक ओकर आदत असफल अछि। कागच खोललाक बाद कखनो नूतन शब्द उभरैत, कखनो गायब होइत अछि; कथाकार स्थिर साक्ष्यक दृश्य नहि, डाँवाडोल अपराधबोधक दृश्य बनबैत छथि। बटुकनाथक हँसी भयकेँ मजाकमे बदलबाक तात्कालिक प्रतिरक्षा अछि, न्यायिक सफलता पर वास्तविक सन्तोष नहि।

चन्द्रपालक डिग्रीक पूर्वइतिहास

मेरठक विधि-डिग्रीक काँचपर ‘पहिल म्यूल’ उभरैत अछि। चन्द्रपाल अपन कानूनक उच्चोपाधि के नैतिक सुरक्षा मानैत छल, मुदा जादुई अक्षर ओकर आरम्भिक आर्थिक अपराध-सम्बन्धी स्मृति खोलैत अछि। पेशागत वस्तु—डिग्री—अब आत्मालोचनाक पाटी होइत अछि। कथाकार केवल ‘भ्रष्ट वकील’क एक तैयार छवि नहि बनबैत; ओहि छविक इतिहासमे प्रवेश करबाक दरबाजा खोलैत छथि। तथापि काँचपर उभरल शब्द पूर्ण घटना-दस्तावेज नहि, पात्रक भीतर उभरैत आरोप वा स्मृतिक चिह्न अछि।

राघवक स्वयं पठाओल आवाज

राघव गायब संदेशक नियमपर भरोसा करैत छल; एक ध्वनि-सन्देश प्रेषक ‘स्वयं’ कहि पहुँचैत अछि। आवाज ओकर अपन अछि, मुदा रोदनक पृष्ठभूमि तकर नियन्त्रणसँ बाहर। ई आत्म-विभाजनक श्रवणीय रूप अछि। जे पात्र लगातार वाणी हटबैत छल, ओकरा अब अपने वाणी सुनबाक दण्ड-जकाँ अनुभव होइत अछि। पाठमे ई अलौकिक घटना रूपमे घटैत अछि; ओकरा विशिष्ट तकनीकी हैकिंगक प्रमाण अथवा वास्तविक रिकॉर्डिंगक विस्तृत शृंखला कहि नहि बुझबाक चाही।

लाउक ‘समझ’केँ प्रतिशतमे बाँधबाक असफलता

दूर समुद्री दफ्तरमे लाउक स्क्रीन पर गढ़ नारिकेल नन्हि बिन्दु अछि, मुदा प्रतिरोधक खोज-वृद्धि आ घटैत ग्राहकक प्रश्न ओकर नियन्त्रणक पद्धति पर धक्का अछि। ओ नाम अथवा समझ कीनबाक आदेश दैत अछि, कारण लाभक गणनाक बाहर हुनका सामाजिक सम्बन्धक स्वायत्तता बुझि नहि अबैत। ई आन्तरिक कमजोरी पात्रक आर्थिक प्रभुत्वक उलटा छवि अछि। तौ समझ फैललाक फल समस्त अन्तर्राष्ट्रीय ठगी-जाल तत्क्षण नष्ट भेल मानब उपन्यासक अधिक गहन अनवरतता-विधानसँ मेल नहि खायत।

ब्रूमक नैतिक शब्दक नीचाँ मृतकक नाम

ब्रूम अपन सम्पादित भाषणमे गरिमा आ पारदर्शिताक पद पढ़ैत अछि; प्रत्येक अंग्रेजी शब्दक नीचाँ देवनागरी नाम उभरैत अछि। ई अनुवादक एक विचित्र विपर्यास अछि: विश्व-व्यापारक उच्च भाषा नीचे दबाओल स्थानीय व्यक्ति केँ फेर धारण करैत अछि। पात्र सार्वजनिक नैतिकता बोलैत अछि, किन्तु निजी निन्नमे ओकर शब्द न्यायालयक अलौकिक गवाहीसँ सन्नद्ध बनैत अछि। एकरा वास्तविक विश्वविद्यालयिक प्रस्तुतीकरणक संशोधित आधिकारिक प्रति नहि; पात्रक दृष्टि-आतङ्कक साहित्यिक रूपमे ग्रहण करब अधिक प्रमाणसंगत अछि।

सत्यव्रतक रिक्त स्थानक प्रश्न

सत्यव्रत नाम-अभिलेखक छापल प्रति पढ़ैत छथि। प्रत्येक नामक संग जन्मतिथि, मृत्यु, घटना अथवा दबाओल विवरण लेल खाली ठाम देखैत छथि। ई रिक्तता दस्तावेजी असफलताक संकेत मात्र नहि, भविष्यक सत्यापनक कार्यसूची अछि। सरकारी वकीलकेँ पीड़ितक ऐतिहासिक जीवन फिर बुझेबाक आवश्यकता अनुभव होइत अछि। कागचमे रिक्त स्थान राखब शिल्पगत रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण कथाकार प्रत्येक व्यक्तिगत इतिहास स्वयं पूर्ण कएल अछि, एहन अतिरंजित दावा टारैत छथि।

अनन्याक सपना आ देविकाक बदलबैत पाठ

अनन्याक सपना कथनक पीढ़ीगत निरन्तरताकेँ छुवैत अछि; देविका सपनामे उज्ज्वलकेँ मोबाइल नहि, काठक फटकी लेने देखैत छलीह। मृत युवकक त्रासदी पाठशालाक ‘फोन काटब सेहो साहस’ सूत्रमे बदलैत अछि। एहि आवर्तनमे परिवारक शोक व्यवहारिक जन-सहायतामे रूपान्तरित अछि। मुदा सपनामे उज्ज्वलक आश्वासन वास्तविक इतिहास बदलि नहि दैत। देविकाक पक्षमे ई नैतिक सहारा, समुदायक पक्षमे चेतावनी, पाठकक पक्षमे शोकक अनवरतता अछि।

सौम्याक भाषान्तरक सामाजिक कार्य

सौम्या अंग्रेजी लेखा टिप्पणी, बैंकक विवरण आ कानूनी शब्दकेँ लोकभाषामे बुझबय योग्य करैत छलीह। ‘म्यूल अकाउण्ट’क अर्थक बगलमे स्थानीय व्याख्या देबाक प्रयत्न उपन्यासक भाषा-विषयक महत्त्वपूर्ण दृश्य अछि। आधिकारिक कागचक अपठनीयता सत्ता-असमानताकेँ बढ़ा सकैत अछि; भाषान्तर एहि असमानताकेँ घटएबाक माध्यम बनैत अछि। तौ भाषान्तरक अर्थ हर तकनीकी पक्ष स्वतः समाधान भऽ गेल नहि; शब्द बदललाक बादो स्रोत-जाँच आ सूक्ष्म परिस्थितिक फराक आवश्यक अछि।

अपराधी सभक अभिलेख मिटाबय विफलता

चन्द्रपाल पुरान कागचक रजिस्टर फाड़बाक कोशिश करैत अछि, राघव संदेश मेटबैत अछि, बटुकनाथ आदेशक शब्दक सीमा खींचैत अछि। एहि तीनू क्रियामे लोप चाहनिहार सत्ता स्वयं लिखल निशानसँ डरैत अछि। पातक पुनर्जन्म अब खलपात्रक निजी अभिलेखसभमे उभरैत अछि। जादुई रूपमे कागच फाटि नहि पाबब वा सन्देश घुरि आएबक दृश्य शाब्दिक तकनीकी सर्वव्यापकता नहि; स्मृतिक नैतिक अविनाशिताक चित्र अछि।

ब्रूमक ‘ग्राम्य धीरज’ वृत्तचित्रक विचार

ब्रूमक जनसम्पर्कक समूह गढ़ नारिकेलक विरोधकेँ ‘ग्रामीण धैर्य’ विषयक वृत्तचित्रमे समेटबाक प्रस्ताव करैत अछि। कथामे ई विशेष सूक्ष्म सत्ता-रणनीति अछि: जे प्रतिरोध नियंत्रणसँ बाहर, ओकर दृश्य-छवि बाजार योग्य बनाउ। ईराक प्रत्युत्तर कैमरा लेने अएनिहारकेँ नाम पढ़बाक शर्त दिस घुमबैत अछि। ई दृश्य प्रतिनिधित्वक संघर्ष अछि। तथापि वृत्तचित्र बनि गेल, गाम ओकरा पूर्णतः रोकि देलक अथवा सर्वजन सहमति भेटल—एहन तथ्य पाठमे एहि चरणमे निश्चित नहि।

अलग-अलग पात्रक अलग अन्तःकरण

अध्याय पाँचो प्रमुख धूर्तक भय देखबैत अछि, मुदा भयक स्रोत भिन्न अछि: बटुकनाथक विधिक विजयक अर्थ, चन्द्रपालक पुरान रजिस्टर, राघवक मिटाओल आवाज, लाउक लाभ-नक्शा, ब्रूमक भाषणक नैतिक आवरण। सभकेँ समान पश्चातापी बनब उपन्यासक कथनकेँ सरल करब हएत। दृश्यसभमे केओ अपराध छोड़बाक निर्णायक क्रिया नहि करैत; ई समय भय, झुँझलाहट आ सम्भावित आत्मदृष्टिक अछि, उद्धारक सम्पन्न परिणामक नहि।

पातपर नूतन बाट आ कापीक आरम्भ

भोरमे अनन्या एक पातपर अक्षरक बदला बाट देखैत छलीह—गाछीक भीतरसँ बाहर आ बाहरसँ भीतर। एतय रेखाक अर्थ कबड्डीक सीमा अथवा वित्तीय मार्गसँ हटि सामाजिक अनुभवक आगमन-निर्गमन बनैत अछि। आरुणि अपन कापी खोलैत अछि; कथा स्वयं नूतन कथावृत्तक द्वार पर ठाढ़ रहैत अछि। पातक पातर बाट आ शहरक गहन अपराधी भयक विरोध अध्यायक आन्तरिक लय एकसूत्रमे बाँधैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

‘मोन टांगल’क बल मानसिक दृश्यावर्तनमे अछि। कागच, डिग्री, आवाज, नक्शा, भाषण—पाँच वस्तु स्मृतिक अनपेक्षित वाहक बनैत छथि। कथन-परिप्रेक्ष्य अपराधीक निजी कक्षमे घुसैत अछि, तइयो लेखक हुनका अन्तिम

पश्चात्तापी कहि मुक्त नहि करैत। कमजोरी ई जे भयक समान अलौकिक उपाय बारम्बार उपस्थित होइत अछि, जाहिसँ कतिपय पात्र-विशेषक मनोविज्ञान प्रतीकक पुनरावृत्तिमे धुँधला पड़ि सकैत अछि। एकर विपरीत सौम्याक लोकभाषा-कार्य आ अनन्याक नूतन बाट बाहरी जीवनक सक्रिय प्रसार देखबैत अछि।

प्रकरण १२७ | मूल अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

मनक यात्रासँ देहक यात्रा धरि

अध्याय २५मे बटुकनाथक मोन गढ़ नारिकेलमे टँगल कहल गेल। अध्याय २६क आरम्भ एहि मानसिक पूर्वगमनकेँ वास्तविक रेलयात्राक प्रस्तावनासँ जोड़ैत अछि। अलमारी, कुंजी आ जीतक कागचसँ स्टेशन, डिब्बा, नदी आ गामक बाट धरि कथा क्रमशः फैलैत अछि। मुदा अध्याय २३मे बटुकनाथक गाम आगमन आ वापसीक विवरण पहिनहि उपस्थित अछि; एहिठाम पुनः ‘पहिल’ यात्राक ध्वनि कालगत असङ्गति अथवा वलयाकार पुनःकथनक प्रश्न उठबैत अछि। मूल पाठ एकर निर्णायक स्पष्टीकरण नहि दैत। समीक्षा एहि विरोधकेँ छिपौने बिना काल-रचनाक सम्भावित पद्धति रूपमे जाँचैत अछि।

अलमारीक कुंजी आ पिताक चश्मा

बटुकनाथक हथेलीमे रातिभरि रहल पीतलक कुंजीक गन्ध, चमड़ाक झोला, दू पेन-ड्राइव, सीलबन्द लिफाफा आ पिताक पुरान चश्मा—ई सभ यात्रा-वस्तु चरित्रक द्वैत इतिहास गढ़ैत अछि। पेशागत दक्षताक सामानक संग पिताक स्मरण अनपेक्षित आलोचनात्मक प्रतिवस्तु अछि। पिता कानून पढ़बाक संग लोककेँ पढ़बाक शिक्षा दैत छलाह। बटुकनाथ एहि वाक्यकेँ पहिने व्यर्थ बुझैत छल; यात्रा आ बाल्यकालक स्मृतिसँ तकर अर्थ पुनः खुलैत अछि। एक निजी वस्तु नैतिक दृष्टि बदलबाक सम्भावित यन्त्र बनैत अछि, मुदा परिवर्तन अभी पूर्ण निर्णय नहि।

प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालयक शीशा

बटुकनाथ विशेष पास लऽ प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय दिस बढ़ैत अछि, मुदा शीशामे ओकर प्रतिबिम्ब बाहर अटकल रहैत अछि। देह भीतर प्रवेश करैत, प्रतिबिम्ब बाहर—ई विभक्त दृश्य पात्रक विधिसम्मत सामाजिक अधिकार आ आन्तरिक असुरक्षाक अन्तर प्रकट करैत अछि। ओ जकरा सभ प्रवेशपत्रसँ रोकबाक अभ्यस्त छल, ओकर अपन प्रतिबिम्ब प्रतीक्षालयमे सहज प्रवेश नहि पबैत। जादुई स्थिति के सामाजिक दर्जाक उलटावक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, नहि कि वास्तविक स्टेशनक कोनो प्रवेश-नियम बदलि गेलाक सूचनाक रूपमे।

स्टेशनक नामक नैतिक रूपान्तरण

रेल रुकैत अछि आ बटुकनाथकेँ क्रमशः स्टेशनक नाम ‘तारीख’, ‘स्थगन’, ‘समझौता’ आ ‘मौन’ देखाइत अछि। आँखि मिचिते वास्तविक बोर्डक नाम वापस अबैत अछि। एहि दृष्टिगत द्वित्वसँ रेलयात्रा बाहरी भूगोलसँ भीतरक पेशागत स्मृतिभूगोल धरि पहुँचैत अछि। कथाकार घटनाकेँ बटुकनाथक अनुभव-दृष्टिसँ देखबैत छथि; पाठक जानैत अछि जे बाहरी रेल-पथ सामान्य रहि सकैत अछि, मनःस्थितिक शब्द-फिल्टर बदलि गेल अछि। ‘तारीखक गोहि’क पुरान रूपक अब यात्रा-संकेतक रेखामे विस्तारित अछि।

डिब्बाक अनाम बूढ : दर्पण-चरित्र

डिब्बामे एक बूढ़ सहयात्री बटुकनाथकेँ ‘कानून पढ़लहुँ’क उत्तरपर ‘नाम पढ़ने छी?’ पूछैत छथि। बूढ़ तुरन्त अपन अलौकिक परिचय नहि दैत; प्रश्न-पद्धतिसँ पात्रक आन्तरिक ढाँचा खोलैत छथि। ई संवादात्मक विलम्ब महत्त्वपूर्ण अछि। यदि भूत पहिल वाक्यमे पहिचान भऽ जइतथि, तँ यात्रा मात्र भूत-संयोग बनि रहैत। पहचानक स्थगन पाठककेँ बूढ़क क्रियाक आलोचनात्मक मूल्याङ्कन करबाक अवसर दैत अछि। प्रश्नक विनम्रता आ बटुकनाथक पेशागत आत्मप्रशंसाक विरोध पात्रचित्रणक केन्द्रीय स्रोत अछि।

नदीक ऊपरसँ गमन आ नीचे देखबाक भय

ट्रेन पुलपर चढ़िते बूढ़ बहैत पानिमे नाम देखबाक आग्रह करैत छथि। बटुकनाथ नीचाँ नहि देखब चाहैत अछि। बाहरी पुल एहि उपन्यासक श्रमिक-मृत्युक मूल ऐतिहासिक स्थलसँ जुड़ैत अछि; रेलक सुरक्षित डिब्बा आ नीचे कल्पित श्रमिकक असुरक्षा एकही फ्रेममे छथि। बटुकनाथक दृष्टि नीचाँ न जाएब घटनात्मक चयन अछि, जेकरा नैतिक स्मृतिक अस्वीकार रूपमे पढ़ि सकैत अछि। मुदा ई भय ओकर दायित्व स्वीकारबक समान नहि—कथाकार अभी बचबाक प्रतिक्रिया देखबैत छथि।

अदृश्य सहयात्रीक पुष्टि-अनुपस्थिति

टिकट-परीक्षक बटुकनाथकेँ असगर यात्रा करैत देखैत अछि; बूढ़क खाली सीट पर नजर जाइत अछि। एहि बाहरी दृष्टिक प्रवेशसँ पाठककेँ अनाम सहयात्रीक जादुई प्रकृति विषय स्वतन्त्र संकेत भेटैत अछि। बूढ़ बटुकनाथक काल्पनिक स्मृति मात्र छथि कि कथाजगतक वास्तविक भूत? उपन्यासक लोक-विश्वास आ टिकट-परीक्षकक दृष्टिभेद दुनू व्याख्या सँ खेलैत अछि। आगाँ बूढ़बा भूत पहिचान स्पष्ट होइत अछि, मुदा एहि क्षणक असुविधा अलौकिक संगतिक नाटकीय बल बढ़बैत अछि।

फर्शपर बनल कबड्डीक वृत्त

बूढ़ अपन लाठी सँ रेलक फर्शपर वृत्त आ पाँति खिंचैत छथि। बटुकनाथ पहिने अदालतक नक्शा बुझि सकैत अछि, मुदा ओ कबड्डीक मैदान बनैत अछि। ट्रेनक डिब्बामे ग्रामीण खेलक ज्यामिति अएलासँ स्थानक दूरस्थता मेटब नहि, बल्कि अनुभवक दूतयात्रा सम्भव होइत अछि। प्रश्न ई जे खेलमे जीतल लोक भीतर रहत कि बाहर? बटुकनाथक औपचारिक जीतक परिभाषा खेलक सीमारेखा पर रखल गेल अछि। एहि सूक्ष्म दृश्यसँ आधिकारिक विधिक रूप आ बालकबड्डीक नूतन सार्वजनिक न्यायविवेक एकसाथ संवाद करैत छथि।

बाल्यकालक नाम-पाठक असफल शिक्षा

बटुकनाथकेँ स्मरण अबैत अछि जे पिताक संग अदालतक बरामदामे एक गरीब आदमी ठाढ़ छल। पिता ओकरा व्यक्तिक नाम याद रखबाक शिक्षा देने छलाह; मुकदमाक जीत-हार दोसर प्रश्न छल। ई स्मृति खलपात्रक चरित्रमे पूर्णतया अजनबी करुणा नहि रोपैत, ओकर पूर्वे अस्तित्वमान सम्भावित मानवीय पाठ दर्शबैत अछि। बटुकनाथ अब बुझबाक एक अवसर पर अछि, किन्तु ओकर विगत अनुपस्थित लोकक उत्पीड़नक समाधान एहि स्मरण मात्रसँ नहि होइत।

दस्तावेजक गन्धक अनपेक्षित ज्ञान

बूढ़ जीतक आदेशक गन्ध पर ध्यान देबैत छथि। बटुकनाथकेँ इत्र, एसी-कक्ष, चमड़ा, नोटक बास आ कचड़ायल पानिक मिश्रित गन्ध अबैत अछि। अकसर कानून शाब्दिक धारा, हस्ताक्षर आ मोहर रूपमे प्रस्तुत होइत अछि; एहि उपन्यासमे दस्तावेजक सामाजिक इतिहास गन्धरूपमे घुसि जाइत अछि। इन्द्रियगत अनुभव वैधानिक पाठनक विकल्प नहि, तकर मानवीय पृष्ठभूमि उद्घाटित करबाक कला अछि। गन्धक मिश्रणसे प्रत्यक्ष रिश्वतक विशिष्ट लेनदेन सिद्ध भऽ गेल मानब नहि चाही; कथा ओकरा नैतिक दोष-चेतनाक अनुभूति बनबैत अछि।

मखान बेचैत बालकक प्रश्न

छोट स्टेशनपर उसनल मखान बेचैत बालक पूछैत अछि—जीतल छी कि हारल, आ जीतल लोक एते दुखी किएक? ई आर्थिक अथवा जातिगत श्रेष्ठताक दरजेबिना देल सहज दृष्टि अछि। बटुकनाथक साथ यात्रा करैत बूढ़क जटिल प्रश्नक तुलनामे बालक तुरन्त देहक मुद्रा पढ़ैत अछि। एहि तरह कथाकार सामान्य श्रमिक-बालककेँ नैतिक विश्लेषक बनबैत छथि। मुदा बालकक एक वाक्य बटुकनाथक मुकदमाक औपचारिक स्थितिक प्रमाण नहि, ओकर आन्तरिक विडम्बनाक पाठकीय सूचक अछि।

आधिकारिक नक्सासँ बाहरक ठहराव

अधरतियामे ट्रेन एहन स्थानपर रुकैत अछि जे समय-सारिणीमे दर्ज नहि। बूढ़ कहैत छथि जे बटुकनाथक देह नहि, मोन उतरि गेल अछि। ई जादुई गमन कथाक भौगोलिक यात्रा आ आत्मिक निर्णयक बीच सीमा खिंचैत अछि। कानूनक व्यक्तित्व सुरक्षित डिब्बामे बैसल रहैत, आन्तरिक विषयक न्यायिक सामना चन्ना गाछीक क्षेत्रमे पहुँचैत अछि। पाठक लेल ई स्थगित समयक नया रूप अछि—घड़ीक यात्रा आ मनोवैज्ञानिक यात्रा अलग लयमे चलैत अछि।

‘बातचीत’ बनाम ‘पढ़नाइ’

गामक कात पहुँचिते बटुकनाथ कहैत अछि जे बातचीत लेल आयल अछि; बूढ़बा भूत प्रत्युत्तर दैत छथि जे पढ़बाक लेल आयल अछि। ई अन्तिम शब्द-भेद अत्यन्त गहन अछि। बातचीतमे बटुकनाथ शर्त, समझौता आ मोल-भाव नियंत्रित करबाक अभ्यस्त; पढ़नाइमे ओकरा पहिले दूसराक नाम, दुःख आ पूर्ववृत्त बुझबाक पड़ै। ई क्रियागत असमानता अध्यायक चरम दृश्य अछि। परिणामस्वरूप न्याय केवल बहस जीतबाक वृत्ति नहि, अज्ञात व्यक्तिक पाठ आरम्भ बनैत अछि।

समग्र निर्णय : अनिर्णीत आत्मसाक्षात्कार

‘बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा’ बाहरी रेलयात्राक भीतर पेशागत नैतिकता, पितृस्मृति आ लोक-अभिलेखक तनाव गढ़ैत अछि। टिकट-परीक्षकक खाली सीट, बटुकनाथक शीशा, स्टेशनक नूतन नाम, मखान बेचैत बालक आ अनाम भूतक प्रश्न—सभ मिलि मानसिक रूपान्तरणक बहुस्रोत रचैत छथि। तौ गामपर पहुँचब अन्तिम पश्चात्ताप नहि; पात्र अपन नियन्त्रणक पुरान भाषा बिसरल नहि। पूर्वक अध्याय २३मे सेहो गाम आएबक कारण यात्रा-क्रमक पुनरावृत्ति अथवा कालगत असङ्गति स्पष्ट आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि। एहि प्रश्नकेँ पाठक चेतना भीतर जोगब निष्ठावान समीक्षा अछि।

प्रकरण १२८ | मूल अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

देहक स्थिरता आ मनक यात्रा

बटुकनाथ रेल पकड़ैत अछि, मुदा चन्द्रपाल गढ़ नारिकेल नहि जाएबाक निर्णय करैत अछि। एहि विरोधसँ खलपात्रसभक प्रतिक्रियामे अन्तर बनैत अछि। चन्द्रपाल अपन ऊँच शहरक काँच-कोठरी, आधुनिक स्क्रीन आ पेशागत पहचानभित्र रहि प्रतिरोध नियंत्रित करबाक योजना बनबैत अछि। परन्तु स्क्रीन पर पातक छवि घुसि गेलासँ दूरीक लाभ समाप्त भऽ जाइत अछि। कथा भूमिगत यात्रा नहि, मनःस्थितिक दूरस्थ स्थानान्तर देखबैत अछि।

विविध परिचय-पत्रक एकहि लाभ-तर्क

चन्द्रपाल अधिवक्ता, परामर्शदाता, अनुपालन विशेषज्ञ आ डिजिटल मनोरंजन उद्योगक मार्गदर्शक रूपमे अपन अलग-अलग परिचय प्रस्तुत करैत अछि। ई भूमिकासभक भिन्नता कथा नहि मेटबैत; लेखकीय संकेत अछि जे विधिक औपचारिकता आ वित्तीय स्वार्थ कखन एक व्यक्ति भीतर परस्पर रक्षा करैत छथि। सभ पेशागत विधिक कामकेँ अपराधक पर्याय कहब युक्तिसंगत नहि। उपन्यासक विशेष पात्रक अभ्यास—लाभक आवरणमे सुरक्षाक भाषा—विश्लेषणक वास्तविक विषय अछि।

नारिकेल पातक स्क्रीन-रूप

‘नामक अभिलेख’ टाइप कएने स्क्रीन झिलमिलाइत, पात उभरैत आ बन्द भेलापर चेहरापर प्रश्न लिखल जाइत अछि। ई त्रिआयामी छविक तर्क अछि: जकरा कागचसँ मेटाएल, ओ अंकीय पर्दापर फेर लौटैत अछि। चन्द्रपाल सामान्य तकनीकी खराबी मानि व्याख्या चाहैत अछि, मुदा पुनरावृत्ति ओकर व्याख्याकेँ अस्थिर बनबैत अछि। आलोचनामे ई दृश्यकेँ प्रमाणित हैकिंग अथवा वास्तविक साइबर-फॉरेन्सिक सफलताक रूपमा प्रस्तुत करब स्रोतपाठसँ बाहर जाएब हएत।

मेटबला सन्देशक आफ्नहि पाठ

राघवक गोपित जोखिम-सन्देश चन्द्रपाल लिखैत-लिखैत बदलि जाइत अछि, स्क्रीनपर उज्ज्वलक उपस्थिति उभरैत अछि। एतय डिजिटल माध्यम स्वयं पूर्व अपराधीक ‘अनुपस्थित’ मानल व्यक्तिक नाम सँ भरि रहल अछि। कथाकार उलटा सम्पादन देखबैत छथि—चन्द्रपाल जे लिखबाक चाहैत, ओकर स्थान लोकस्मृति लिखैत अछि। ई अनधिकारित लेखनक जादुई रूप अछि, न कि वास्तविक न्यायालयक हस्ताक्षरित अभिलेख।

मेरठक परीक्षा-कक्षक स्मरण

शीशामे चन्द्रपालकेँ पुरान विधि-परीक्षाक छवि देखाइत अछि। पहिल सामान्य वकीलक स्मृति ओकर वर्तमानक विशिष्ट सत्ताक स्वरूप के ऐतिहासिक बनबैत अछि। पात्र केवल सुरुदेखि अखिल-अपराधी नहि; ओ क्रमशः व्यवसाय, परामर्श आ आयोगक नूतन मार्गमे बढ़ल। एहि स्मृति के आलोचनात्मक उपयोग ओकर उत्तरदायित्व मेटब नहि, बल्कि प्रत्यक्ष हिंसासँ दूर लगैत पेशागत काम के जालक हिस्सा बनेबाक चरण चिन्हब अछि।

विदेशक प्रतिशत आ भारतीय चेहरा

चन्द्रपाल बुझैत अछि जे राघवक पाछाँ लाउ, लाउक पाछाँ समुद्री व्यापार, बैंक आ सर्वरक बड़का सञ्जाल अछि। विदेशी मुनाफाकेँ देशी वैधता-दर्शक चेहरा चाही छल; ओ वैह रूप बनल। एहि कथाक विशेषता सत्ता-वितरणक धागा पकड़ब अछि: दूरस्थ लाभ-निर्देशन स्थानीय विधिक प्रतिष्ठा बिना टिकब कठिन। मुदा कथा जे आन्तरिक अनुभव करैत अछि, तकर प्रत्येक सङ्गठनात्मक सम्बन्धक स्वतन्त्र अदालत-द्वारा प्रमाण पाठमे उपस्थित नहि। चरित्रक ज्ञान, लेखकक आरोपात्मक व्यवस्था आ न्यायिक निष्कर्ष अलग स्तर छथि।

स्क्रीन-साम्राज्यक आकर्षण

बालकनीसँ हजार खिड़कीक चमक चन्द्रपालकेँ देशक समस्त व्यवहार स्क्रीनपर पहुँचबाक आभास दैत अछि—कर्ज, प्रेम, टिकट, औषधि, नौकरी, न्याय। ओकर महत्त्वाकांक्षा एहन अनेक माध्यमक संपर्कक लाभ-नियन्त्रण अछि। उपन्यास एतय डिजिटल तकनीककेँ केवल दुष्ट माध्यम नहि कहैत; पूर्वक पाठशालामे वैह स्क्रीन प्रतिरोध आ नाम-पाठ प्रसारित करैत छल। चन्द्रपालक दृष्टि तकनीकक समाज-उपयोगक समग्र सत्य नहि, ओकर स्वार्थसापेक्ष दृष्टिकेन्द्र अछि।

पाठकक ज्ञान आ अपराधीक गलत अनुमान

चन्द्रपाल स्क्रीनपर पात देखिते एकरा गोप, सौम्या, निशांत आ ईराक हैकिंग मानए चाहैत अछि। ओकरा राहत होइत अछि, कारण मनुष्य-शत्रुपर नोटिस, धमकी आ आर्थिक दबाव सम्भव अछि। पाठकक लग पूर्वक भूत, स्वयमेव पात आ मृतकक नामक समानान्तर कथा अछि। एहि असमान जानकारीसँ नाटकीय विडम्बना बनैत अछि। चन्द्रपालक ‘हैकिंग’ व्याख्या पात्रक अपना मनक अनुमान अछि, कथाविश्व द्वारा सत्यापित तथ्य नहि।

कागचक प्रिण्टमे घुरल गायब सन्देश

राघव द्वारा मेटाएल संदेशक प्रतिलिपि कागचपर प्रकट होइत देखल जाइत अछि। स्क्रीनकेँ अस्थायी मानि चन्द्रपाल अपन नियन्त्रणक भरोसा बनौने छल; कागचपर नाम घुरबासँ उपकरणसभक अलग-अलग असुरक्षा समक्ष अबैत अछि। ई एक शिल्पगत रूपान्तरण अछि—‘डिलीट’क डिजिटल मुद्रा स्थायी चिह्नक लोकस्मृति सम्मुख असमर्थ बनैत अछि। मुदा ई लोकोत्तर चमत्कारकेँ विशिष्ट डिजिटल पुनर्प्राप्ति-पद्धतिक तकनीकी प्रमाण नहि मानब।

प्रश्नसभक शृंखला

चन्द्रपालक स्क्रीन पूछैत अछि जे पहिल जीतक कमीशन, उपयोग भेल खाताधारक, मृत्युपछाति चालू खाता आ डिजिटल धमकीक जिम्मेदारी केकरा? प्रश्न-क्रम रचनाक अलग अध्यायसभक विखण्डित घटनाकेँ आरोपी पात्रक चेतनामे फेर समेकित करैत अछि। खासकऽ मृत युवकक नामपर वित्तीय लेनदेन चालू रहबाक प्रसंग नूतन भय उत्पन्न करैत अछि। ई प्रश्न आरोपक आन्तरिक न्याय-स्वर अछि; प्रत्येक खाता स्वतः अपराध-सिद्ध ठहराओल गेल, एहन नहि।

टूटल स्क्रीनक नस

चन्द्रपाल लैपटॉप पटकैत अछि; टूटल काँचक दरार नारिकेल पातक नस रूपमे पसरैत अछि। कागच, वनस्पति आ इलेक्ट्रॉनिक यन्त्रक छविसभ एक-दोसरासँ बदलि जाइत अछि। भौतिक रूपमे टूटल स्क्रीन पर जीवनक अक्षर उभरैत अछि। एतय पराजयक बल मशीन नष्ट भेलाक कारण नहि, नष्ट कएने भी नाम मेटि नहि पएबाक अनुभूतिसँ अछि। पात्रक आक्रोश ओकर नियंत्रण-क्षरणक देहगत क्रिया बनैत अछि।

विधि-डिग्रीक अधूरी शिक्षा

बत्रा अपन मेरठक डिग्रीक फ्रेम पलटबैत अछि; काँच पर नाम पढ़बाक शिक्षा अधूरी लिखल देखैत अछि। विश्वविद्यालयीय प्रमाणपत्रक विरोधमे नैतिक पढ़नाइ राखल गेल अछि। परन्तु पाठककेँ याद रहबाक चाही जे कानूनक ज्ञान अपने अनैतिक नहि; चन्द्रपाल द्वारा ओकर उपयोग पीड़ितक जटिल जीवनकेँ संकुचित करैत अछि। शिल्पगत प्रतिपक्ष ‘डिग्री’ बनाम ‘नाम’ अत्यन्त स्पष्ट अछि, कखनो घोषणात्मक सेहो; पात्रक निजी चिन्ता एहि विरोधकेँ अनुभवसापेक्ष रखैत अछि।

बिना गाम गए गाममे प्रवेश

अन्तमे चन्द्रपालक देह शहरक काँचक कोठरीमे अछि, मुदा मोन पातक नस आ स्क्रीनक दरारसँ चन्ना गाछीमे अटकल अछि। ई दूरस्थ मानसिक यात्रा अध्याय २६क प्रत्यक्ष रेलयात्राक प्रतिलोम अछि। शिल्पगत रूपसँ उपन्यास स्थानकेँ भौतिक मानचित्र मात्र नहि, मानवीय स्मृतिक आक्रमण-दिशा बनबैत अछि। गामक प्रतिरोधक स्वर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणमार्फत विश्वव्यापी सत्ता-कल्पनाक भीतरी भाग धरि पहुँचैत अछि।

आलोचनात्मक निर्णय : स्क्रीनक उलटा स्वामित्व

‘चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन’क उपलब्धि ई अछि जे प्रतिरोधक माध्यम वैह वस्तु बनैत अछि जकरा अपराधी नियन्त्रणक स्रोत मानैत छल। पेशागत परिचय, निजी स्मृति, विदेशी संपर्क, मेटाओल सन्देश आ मृतकक खाता-प्रश्न पात्रक बहिस्तरीय संकट बनबैत अछि। रचनात्मक सीमामे नाम-पातक बारम्बार स्वतः उभरबक युक्ति थोड़े पूर्वानुमेय होइत अछि; मुदा चन्द्रपालक शत्रुकेँ हैकिङ्ग मानबाक आतुरता ओकर विशिष्ट मनोविज्ञान बनौने रखैत अछि। गाम न जाएबासँ ओ गामक नैतिक प्रश्नसँ बचि नहि पबैत।

प्रकरण १२९ | मूल अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

शून्य वाणीक विशेषज्ञक कथा

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक परिचय ओकर आवाजसँ बचबाक प्रवृत्तिसँ शुरू होइत अछि। ओ फोनक संदेश लिखैत, मेटबैत आ पुनः लिखैत अछि; बोलल शब्द रेकर्ड भऽ गवाही बनबाक भय ओकर डिजिटल व्यवहार निर्धारित करैत अछि। एतय पात्रक तकनीकी दक्षता भयक निजी स्वभावसँ अलग नहि। जाल चलौनिहार लोक स्वयं आवाजसँ डेराइत अछि, जखनकि अपन शिकारकेँ नक्कली पुलिसक धमकी सुनबैत अछि—ई नाटकीय विडम्बना अध्यायक मनोवैज्ञानिक आधार अछि। शीर्षकक चुप्पी निर्दोष मौन नहि, योजनाबद्ध निशान-लोपक इच्छा अछि।

स्वच्छ स्क्रीनक भीतर उगैत पात

राघव लगातार उपकरण साफ, पुरान संदेश हटाएब आ अलग चिन्हारि रखबाक अभ्यास करैत अछि। तइयो स्क्रीनक कोनमे हरियर पात उभरैत अछि। ई जादुई आगमन तकनीकी व्यवस्थापनक पूर्ण नियन्त्रणपर अलंकारिक प्रश्न उठबैत अछि। कथाकार ओकरा विस्तृत साइबर-तकनीकी सफलता अथवा पाठक लेल दोहरायल जा सकएबला व्यवहारिक पद्धति रूपमे प्रस्तुत नहि करैत। पात वैह लोक-स्मृतिक प्रतीक अछि जे अध्याय २४मे जीवित खेलक मैदानपर छल। आब अपराध-परिचालनक एकान्त कक्षमे पहुँचि ओ आश्वस्त अन्तरलोपकेँ असम्भव बनबैत अछि।

भूगोलक कोडक भीतर व्यक्ति

धातुक अलमारीक सूचीमे हांगकांग, मकाओ, दुबई, काठमांडू, गुवाहाटी, पटना, मेरठ आ दिल्लीक संग अंक जुड़ल अछि। राघव पहिने एहि नामसभकेँ भुगतानक रास्ता बुझैत छल; अध्याय प्रत्येक खाताक पाछाँ व्यक्ति आ परिवारक मौजूदगी देखबैत अछि। दुनूक बीच दृष्टिक अन्तर मुख्य अछि। मार्गक रेखा अपने अपराधक पूर्ण विवरण नहि; ओकर भीतर व्यक्ति के अस्थिर पारिवारिक स्थिति दबाएल गेल अछि। कथावाचक पैघ अन्तर्राष्ट्रीय भूगोलकेँ स्थानीय मानवीय सम्बन्धक भाषा मे फेर रखैत छथि।

बेरोजगारीक कथावस्तु

राघव छात्रावास, कोचिङ-गली, चाह-ठेला, निजी कॉलेज आ प्रवासी मजदूरक ठाम कमजोर आर्थिक अवस्थाक लोककेँ छोट कमिशनक प्रस्ताव दैत छल। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे आर्थिक दुर्बलता स्वयं अपराधक इच्छा नहि, जालसँ संपर्कक असमान शर्त बनैत अछि। ‘खाता’ शब्द मानवीय जरूरतसँ अलग करबाक माध्यम छल। एहि प्रसंगमे अपराधी सूत्रधारक योजना आ उपयोग कएल गेल युवकक ज्ञान समान नहि। मुन्ना पासवानक पहिल प्रविष्टि आ राघवक व्यापक नेटवर्कक कथा एक-दोसराक अर्थ गाढ़ करैत अछि।

एक छोट ‘खाता बन्द’क संरचनात्मक शोर

राघवक फोनपर केवल दू शब्द अबैत अछि—खाता बन्द। एहि संक्षिप्त संदेशमे वैश्विक लाभ-केन्द्र द्वारा मध्यस्थ परित्यागक आदेश छिपल अछि। कथामे खाता केवल धनप्रवाह नहि, व्यावसायिक सम्बन्धक कथित आयु निर्धारित करैत अछि। उपयोगिता समाप्त होइतहि साझेदारी मेटल जाइत अछि। एहि क्षण राघव अपन जालक वैह अनिश्चितता अनुभव करैत अछि जे ओ अनेक गरीब खाताधारक पर थोपने छल। अपराधीक ‘सुरक्षित’ स्थिति अचानक कारोबारिक असुरक्षामे बदलैत अछि।

पुरान कागचक नोटबुकक वापसी

तकनीक-संचालित राघव अन्तमे एक कागचक नोटबुक खोलैत अछि। ई वस्तु डिजिटल जगतक बाहर राहतक ठाम जकाँ देखाइत, मुदा एहि पर सेहो नामक स्मृति अटकल अछि। लेखक बारम्बार कागचकेँ दुष्ट अथवा निर्विवाद पवित्र नहि मानैत—कागच अपराधक कोडो धारण करैत, गामक अभिलेखो। वस्तुक नैतिक अर्थ ओकर उपयोगसँ बनैत अछि। राघवक नोटबुक ओकर आत्म-रक्षाक इतिहास कहैत अछि, जखनकि बाक पात लोकस्मृतिक खुला ग्रन्थ बनैत अछि।

अरुणेश कुमारक नामक स्मृतिद्वार

राघव अपन पहिल हिस्साक स्मृति घुरैत पबैत अछि—पाँच हजारक लाभ, एक विद्यार्थीक खाता, बादक विधिक संकट, परिवारक नुकसान। एहि जुड़ल इतिहासमे अरुणेश कुमारक नाम एक निजी दोषबोधक द्वार बनैत अछि। नाम लिखिते दोसरा नामक अधूरी पंक्ति उभरैत अछि, जइसँ राघव बुझैत अछि जे एक व्यक्तिक हिसाब साफ कएलासँ जालक शेष लोगक कथा समाप्त नहि। तथापि विद्यार्थी पर घटल सभ विशिष्ट आर्थिक परिणामक स्वतन्त्र अन्वेषणक पूरा विवरण एहि अध्यायमे नहि; राघवक स्मरणक रूप आ कथात्मक परिणाम अलग राखब चाही।

पिताक हार्डवेयर-दोकानक प्रतिध्वनि

राघवकेँ अपन पिता आ लोहेक कील, उधारक बहीक स्मृति अबैत अछि। पिता नाम सही लिखबाक शिक्षा दैत छलाह, जखनकि राघव लाभक समय नामक बदला खाता देखब सीखलक। एतय बटुकनाथक पिता द्वारा गरीब मुवक्किलक नाम मोन राखबाक शिक्षा सँ एक संरचनात्मक साम्य अछि। दू अपराधी पात्र अलग जीवनवृत्तसँ आबितहुँ पुरान घरक ‘नाम’ सम्बन्धी चेतावनी बिसरने छथि। ई समानता अत्यधिक योजनाबद्ध प्रतीत होएबाक जोखिम राखैत अछि, मुदा अभिलेखक मुख्य रूपककेँ निजी पारिवारिक कथा धरि विस्तारित करैत अछि।

अपराधीक दान आ हिसाबक अन्तर

राघव विचार करैत अछि जे दान देना आसान, हिसाब साफ करब कठिन अछि। दानमे दाताक नियन्त्रण सुरक्षित रहि सकैत अछि, जखनकि हिसाबमे शोषितक नाम, घटना, जिम्मेदारी आ प्रतिवादक स्वर चाही। ई उपन्यासक लेखा-भाषाक महत्त्वपूर्ण आलोचना अछि। लेखक धनक परोपकारकेँ स्वतः प्रायश्चितक पर्याय नहि बनबैत। मुदा राघवक भीतर एहि अन्तरक अनुभूति वास्तविक संशोधनक प्रारम्भ अछि कि एकर अगिला रक्षात्मक चाल, से कथानक एखन निश्चय नहि करैत।

फोन दूर राखि सूतबाक छोट प्रयोग

राघव पहिल बेर फोन सिरहाना लग नहि रखैत। ई क्रिया साधारण लगैत अछि, मुदा ओकर आजीविकाक निरन्तर सन्देश-साम्राज्यसँ क्षणिक अलगाव अछि। निन्न तुरन्त नहि अबैत; चन्ना गाछी सपनामे नहि, जागरणक विचारमे उपस्थित अछि। एहि तरह कथा डरक स्वचालित चमत्कारसँ आगे पात्रक अनुशासित व्यवहारक सम्भावना देखबैत अछि। तथापि उपकरण हटाओलासँ अपराधी जालक आर्थिक जिम्मेदारी समाप्त नहि होइत।

‘नहि जाएब’क अलग अभिप्राय

राघव गढ़ नारिकेल नहि जाएबाक निर्णय करैत अछि। बत्रा सेहो नहि जाएब चाहैत अछि, मुदा ओकर उद्देश्य प्रतिरोधकेँ दूरसँ हरब; राघवक उद्देश्य अपन चिह्नारि आ स्मृतिक दबावसँ बचब। समान क्रियाक पाछाँ अलग मनोवैज्ञानिक प्रेरणा अछि। एहि भेदक कारण कथाकार धूर्त सभकेँ एकहि खलनायक-प्रतिरूपमे सीमित नहि रखैत। समूह-तन्त्र संयुक्त अछि, मगर प्रत्येक मध्यस्थक भयक भाषा अलग अछि।

मेटल आवाजक ‘छाप’

राघवक मेटल सन्देश कागच अथवा स्मृतिमे घुरबाक छवि बारम्बार उभरैत अछि। कथन-शिल्पमे ई डिजिटल विस्मरणक विरुद्ध लोक-अभिलेखक प्रतीकात्मक प्रतिलिपि अछि। जँ प्रत्येक लोकोत्तर छापकेँ विधिक रूपेँ प्रमाणित मूल डेटा कहि मानल जाए तँ कथा अभिलेख-जाँचक आवश्यकताकेँ बिसरि जायत। साहित्यिक प्रभाव एतय अपराधीक कल्पित अदृश्यताक भङ्ग अछि। पाठककेँ बुझाएल जाइत अछि जे मिटाओल सन्देश केवल ‘नहि छैक’क घोषणासँ सामाजिक इतिहाससँ लुप्त नहि होइत।

चुप्पीक स्वरूप बदलैत अछि

प्रारम्भक राघवक मौन अपराध-सुरक्षाक नियोजित नियम अछि। अन्तक राघवक मौन निन्नहीन आत्मप्रश्न आ पुरान नाम चिन्हबाक असुविधा बनैत अछि। दुनू मौनकेँ एकहि समझि नैतिक विकास घोषणा करब जल्दबाजी। कखनो प्रश्न अनुभव करब आ ओकर उत्तर सार्वजनिक देब बीच लम्बा दूरी रहैत अछि। कथा राघवकेँ एखन स्वीकृति, भय आ सम्भावित भागबाक मार्गक बीच अटकौने रखैत अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक निष्कर्ष

‘राघव सिग्नलक चुप्पी’क कथात्मक गहराइ मध्यस्थ अपराधीक अदृश्यता-तन्त्रक निजी अस्थिरतामे अछि। भूगोलक कोड, पिता-बहिक स्मृति, अरुणेशक नाम, ‘खाता बन्द’ आ फोन दूर रखबाक क्रिया ओहिक बहुपरत चरित्र बनबैत अछि। एक आलोचनात्मक सीमा एहि बातमे अछि जे पातक अलौकिक पुनरागमनक लगातार प्रयोग सुसंगत पात्रगत उत्क्रान्तिसँ बेसी पुनरुक्ति बना सकैत अछि। तथापि एक नाम लिखिते अगिला नामक खाली पाँति उभरबाक दृश्य जालक अपूर्ण दायित्व अत्यन्त प्रभावी रूपमे व्यक्त करैत अछि।

प्रकरण १३० | मूल अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

नामक तीन अक्षरक व्यापारिक अस्तित्व

लाउ किन-हंग अपन पूरा नाम सार्वजनिक करब टारैत अछि; वित्तीय अन्हारमे ओकर परिचय ‘एल.के.एच.’ बनल अछि। कथामे नाम छिपेनाइ कथित गिरफ्तारी-भयसँ जुड़ल रणनीति अछि। गामक लोक मेटल नाम लौटा रहल अछि, मुदा लाभक केन्द्र अपन नाम अधूरा रखि सत्ता चलबैत अछि। एहि विरोधमे नामक नैतिक मूल्य दू विपरीत प्रयोजन लैत अछि—शोषित लेल पहचानक सम्मान, शोषक लेल पहिचान टारबाक सुरक्षा। तौ छोट नामक प्रयोग मात्रसँ व्यक्ति दोषी सिद्ध नहि होइत; विशेष पात्रक प्रसंगमे एहि प्रवृत्तिक अर्थ बनल अछि।

काँचक गुफा : भीतर-बाहरक भ्रम

लाउक समुद्रक कात शीशाक घर बाहरी जहाज आ भीतरक स्क्रीनक एकहि दृश्य बनैत अछि। बाहर पानि, भीतर प्रतिशत; बाहर नाव, भीतर भुगतान। ई स्थान-निर्माणक सूक्ष्मता अध्यायक जादुई जल-आक्रमण लेल आधार अछि। गुफा सुरक्षा, आधुनिक विलास आ अलगावक प्रतीक अछि। मुदा काँच पार समुद्र देखब आ समुद्रक मानवीय इतिहास बुझब अलग बात अछि। पात्रक दृष्टि रकमकेँ देखैत, श्रमिक अथवा पीड़ितक मानवीय जीवनकेँ नहि।

समुद्रक पानिमे मृत्युक मिश्रित गन्ध

सपना समय पानि काँचक भवनमे पैसैत अछि। लाउ बीमा, पम्प, आपातनिकास, हेलिकॉप्टर जकाँ सुविधाक क्रम गनैत अछि। मुदा पानि सामान्य समुद्र नहि; दवा, सीमेण्ट, मोबाइल आ नोटक सीलनक मिश्रण अछि। एहि संवेदनात्मक परिवर्तनसँ कथा वैश्विक धनप्रवाहक भीतर अलग समाजक असुरक्षा घोलैत अछि। प्रत्येक रक्षात्मक सुविधा एक वित्तीय सम्भावनाक उत्तर अछि; मृतकक प्रश्न दुनू तर्कक बाहर अबैत अछि। ई सपना वास्तविक हांगकांगक बाढ़ि नहि, निजी पूँजीवादी कल्पनाक टूटबाक दृश्य अछि।

मोबाइल-पर-मोबाइलक गवाही

पानिपर एक-एक करि फोन तैरि अबैत अछि—उज्ज्वल, सरयू, नकली गिरफ्तारीक पीड़ित आ अनेक नाम-अज्ञात व्यक्तिसभ अपन प्रश्न करैत छथि। मोबाइल एखन शिकारी माध्यम नहि, पीड़ितक श्रव्य उपस्थिति बनैत अछि। पूर्वक अध्याय ८मे फोनक धमकी उज्ज्वलकेँ मौन करैत छल; एतय वैह स्क्रीन लाउकेँ उत्तर देबाक स्थिति मे पहुँचबैत अछि। ई प्रतिलोम उपन्यासक उपकरण-सापेक्ष नैतिक दृष्टि पुष्ट करैत अछि।

उज्ज्वलक गलामे रस्सीक निशानक पुनरावृत्त विवाद

लाउक सपनामे उज्ज्वलक चेहरा गलामे रस्सीक नील निशानसहित देखाइत अछि। अध्याय १६मे सेहो उज्ज्वलक देह पंखासँ लटकल कहल गेल छल, जबकि प्रारम्भिक अध्याय ८क बलानक किनार चप्पल आ पानिसँ देह भेटबाक दृश्य समीक्षा पहिने चिन्हने अछि। सपना होएबाक कारण छवि वास्तविक घटना-बोधसँ अलग भऽ सकैत अछि, मुदा उपन्यास ई तीनू वर्णनक आपसी सम्बन्ध स्पष्ट नहि करैत। अतः एक सम्भावित प्रतीकात्मक पुनर्रचना आ पाठगत असङ्गति दुनू विकल्प सुरक्षित राखल गेल अछि; एकटा मनगढन्त अन्तिम घटनाक्रम नहि गढ़ल गेल।

गोहिक बहुरूप आ लाभक तन्त्र

सपना भीतर कारी गोहि फोन चिबबैत अछि, दोसर गोहिपर अदालतक मुहर, तेसरक आँखिमे हार्वर्डक प्रकाश, चारिमक पेटमे चिकित्सा-उपकरण आ डिजिटल भुगतानक चिह्न अछि। एहि दृश्यसँ पूर्वक अलग अपराध-सूत्र एक लोक-प्राणी रूपकक अनेक रूप बनैत अछि। गोहि वास्तविक जलजीवक सीमा पार कऽ शोषणक संस्थागत माध्यम बनल अछि। मुदा रूपकक अतिविस्तार एक जोखिम सेहो अछि: हर संकटकेँ ‘गोहि’ कहला पर तकर विशिष्ट सामाजिक कारण धुँधला सकैत अछि। पात्रसभक अलग अनुभव एहि सामान्यीकरणकेँ संतुलित करैत अछि।

गिनतीक प्रतिरक्षा

सपनामे गोहि घेरलापर लाउ पहिने डर स्वीकार नहि करैत; ओ गिनब शुरू करैत अछि। संख्या ओकर व्यवसायिक भाषा अछि, जइसँ ओ अनिश्चित परिस्थितिकेँ नियन्त्रण योग्य बुझए चाहैत अछि। मुदा पानिसँ नामक आवाज उठैत अछि, जे अंकमे पूर्ण रूपेँ समाहित नहि भऽ सकैत। एहि विरोधमे अंकक व्यवहारिक उपयोगक निन्दा नहि; मानवीय मृत्युकेँ केवल लाभ-रेखामे समेटबाक नैतिक अक्षमता उद्घाटित अछि।

भाषणक नीचे रकमक पाँति

सपना हार्वर्डक सभागारमे सरकैत अछि। ब्रूम ‘गरिमा’ आ ‘विकास’ बजैत, लाउक टैबलेटपर ओहि शब्दक नीचे आर्थिक रकम आ प्रतिशत चमकैत अछि। ई ‘दोहरे पाठ’क शिल्प अछि: एक सार्वजनिक नैतिक वाणी, दोसर निजी लाभगणना। कथाकार खुला आरोप-पत्र पढ़बाक बदला दृश्यक दो तह एकहि समय दिखबैत छथि। रकमक विशिष्ट अंकेक्षणक सत्यता पाठमे स्वतन्त्र खातागत प्रमाणसहित नहि खुलैत; सपना-परिदृश्य में ओकर कथात्मक कार्य कपट-भयक प्रत्यक्षीकरण अछि।

ब्रूमक सभागारमे गामक पीपर

लाउक कल्पनामे सभागारक छतसँ पानि टपकैत आ बीचमे पीपर उगैत अछि; डारिपर बूढ़बा भूत बैसल छथि। एहि रूपान्तरमे उच्च शिक्षाक संस्थागत नाट्यगृह गामक लोक-अदालत बनि उठैत अछि। विश्वविद्यालयक श्रोताक ताली ‘छपाक’मे बदलैत अछि। ईरा मंच पर नहि, बाहर बच्चा सभक नाम-पाठक कात छथि। पूर्वक अध्याय २२क घटनाक सपना-आधारित पुनर्लेखन अछि, न कि सचमुच एक नूतन बाह्य विश्वविद्यालय आयोजन सम्पन्न भेलाक तथ्य।

सपनापछाति असम्पन्न सामान्यता

लाउ जागिते सुरक्षाकक्ष, वित्तकक्ष आ भारत-संचालनपर फोन करैत अछि। सब ‘सामान्य’ कहैत, मुदा ओकर भारत-संचालन सन्देशमे गामक नाम-अभिलेखक आवाज पैसैत अछि। सामान्य ब्यवस्था आ निजी भयक असङ्गति एतय नाटकीय बनैत अछि। लाउक सुरक्षित वित्तीय साम्राज्य स्वतः ध्वस्त नहि, पर ओकर सामाजिक अर्थ घुरि आएल अछि। जागरण-पछाति भयकेँ पूर्ण पश्चाताप कहि देब गलत होएत।

मेई लानक स्वतन्त्र निरीक्षण

मुख्य सहायक मेई लान राघवक सम्पर्क-टूटब, बत्राक पुष्टि-चिन्ता आ हरिहरनक गाम-यात्राक सूचना दैत छथि। हुनकर दृष्टि लाउक सपनासँ पृथक संगठनात्मक व्यवहारक संकेत अछि। ओ गाममे नाम-खोज बढ़बाक बात सेहो कहैत छलीह। एहि सहायिका पात्रकेँ केवल खलनायकक सचिव-सन सजावट नहि, बल्कि कथाक तथ्यात्मक पार्श्वसूत्र दैत एक अन्य दृष्टि रूपमे पढ़ब उचित अछि। तथापि हुनकर कर्तृत्व निर्णयाधिकारक स्तर पर सीमित रहैत अछि।

डेस्कपर हरियर पातक आगमन

लाउक टेबुलपर एहन हरियर नारिकेल-पात भेटैत अछि जे सपना समय उपस्थित नहि छल। पातक नस बैंक-ट्रान्सफरक रेखा जेकाँ, दाग देवनागरी नाम जेकाँ देखाइत अछि। लाउ भाषा पढ़ि नहि सकैत, तौ भीतर कोनो ‘गढ़ नारिकेल’ उच्चरित करैत अछि। ई अलौकिक भाषा-पार संक्रमण एक विशिष्ट शिल्प अछि। वस्तुक भौतिक उत्पत्ति स्पष्ट नहि; ओकर प्रतीकात्मक काम लाभगणनाक भीतरी संरचनामे दूरस्थ सामुदायिक स्मृतिक अवरोध उत्पन्न करब अछि।

तीन वित्तीय आदेशक शीतल क्रूरता

लाउ अन्तमे राघवक प्रवेश बन्द, बत्राक भुगतान रोकब आ हरिहरनक खर्च अलग करबाक निर्देश दैत अछि। ई निर्णय देखबैत अछि जे भयक बाद पात्र नैतिक रूपान्तरण नहि, सहकारी कड़ी काटि आत्मरक्षा चुनैत अछि। कथाकार ओकरा एक नूतन दानवीर अथवा अपराधमुक्त व्यक्ति नहि बनबैत। ई साहित्यिक रूपमे विश्वव्यापी शोषण-जालक अन्तःअविश्वासक चित्र अछि। तकर अगिला विधिक परिणाम यथार्थमे घटि गेल, से पाठमे एखन प्रकट नहि।

समग्र मूल्यांकन : भीतर बाँचि रहल सपना

‘लाउ किन-हंगक सपना’ जलसमाधिक शीर्षरूपकेँ दूर हांगकांगक शीशाघरमे प्रवेश करबैत अछि। मोबाइल-गवाही, गोहिक अलग रूप, हार्वर्डक द्विपाठ, मेई लानक सूचना आ पातक हरियर धड़कन एक बहुस्तरीय स्वप्न–जागरण व्यवस्था बनबैत अछि। महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक सीमा एहि बातमे अछि जे सपना स्वयं प्रश्नक नाटकीय उत्तर देबाक सुव्यवस्थित यन्त्र बनि जाइत अछि; हर प्रतिरक्षा क्रमशः निष्फल होइत अछि। तौ तीन आदेशक स्वार्थी व्यवहार पाठमे भय आ पश्चातापकेँ अलग करैत अछि। मृत्यु-दृश्यक विसङ्गति सेहो एतय दोहराइत अछि, जाहिसँ अनेकार्थता आ स्रोतनिष्ठ आलोचना आवश्यक अछि।

प्रकरण १३१ | मूल अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

बाहरी अदालतसँ अन्तःसुनवाईक बहुगुणन

अध्याय ३० चन्ना गाछीक सामूहिक अदालतकेँ अलग-अलग धूर्तक निजी मनमे पुनर्स्थापित करैत अछि। अदालतक दरबाजा, पोशाक वा औपचारिक समन एहि सुनवाईमे नहि; पात्रसभक स्मृति स्वयं घटनास्थल अछि। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ एडवर्ड ब्रूमक अलग-अलग भीतरी अनुभव के एक रातिक समानान्तर सम्पादनसँ जोड़ल गेल अछि। एहि रचनामे अपराधक आन्तरिक प्रतिफल बाहरी दण्डक स्थानापन्न नहि, साहित्यिक प्रतिरूप अछि। प्रत्येक पात्र सार्वजनिक रूपेँ एखन स्वतन्त्र, मुदा निजी अनुभूतिमे दबाओल नामक प्रश्नसँ मुक्त नहि।

‘पाँचू’ आ ‘चारू शहर’क गणनागत तनाव

अध्यायक उद्घाटन पाँच धूर्तक मोनक बात कहैत अछि, प्रारम्भिक दृश्य ‘तीन शहरमे तीन लोक’ कहि समुद्रपार लाउक उल्लेख करैत अछि, आ अगिला दृश्य ब्रूमकेँ सेहो प्रवेश दैत अछि। अन्तक वाक्य ‘चारू शहर’ कहैत अछि, जबकि पात्रक पाँच अलग-अलग भीतरी अदालत वर्णित अछि। ई संख्यात्मक असङ्गति आवश्यक रूपेँ पाँच पात्रक अभाव नहि; बल्कि बहुस्थानिक सम्पादनक भाषा पूर्ण सुसंगत नहि रहबाक संकेत अछि। आलोचना एकरा बिना मनगढन्त शहर-विभाजन अथवा अनुपस्थित पात्र मानि स्पष्ट करैत अछि। कथाक भावात्मक समानान्तरता प्रबल अछि, पर संख्या-निर्देशमे अधिक सावधानी अपेक्षित छल।

बटुकनाथक आदेशक मध्यसँ ‘नन्द’

बटुकनाथ अपन जीतक आदेशमे ‘प्रक्रियात्मक दोषक कारण याचिका निरस्त’ पढ़ैत अछि; ‘निरस्त’क बीचसँ नन्द, सरयू आ उज्ज्वलक नाम उभरैत अछि। ई शाब्दिक अतिचार अछि: प्रक्रिया द्वारा लोप करबाक प्रयत्नक भीतर दबाओल व्यक्ति प्रवेश करैत छथि। पात्र अपन वैधानिक भाषाक चट्टानी दृढ़ता चाहैत अछि, मुदा अक्षरक देह स्वयं भुरभुरा जाइत अछि। अध्याय १५क अन्तरिम आदेश आ एतुक्का याचिका-निरस्त कथनक अस्पष्ट काल-क्रम एखनो बनल अछि; जादुई अक्षर एहि विधिक अन्तरक स्वतः समाधान नहि दैत।

बाल्यकालक न्यायाधीश

बटुकनाथक अध्ययन-कक्षमे आधा पैंट पहिरल बालक पीपरक पात टेबुलपर रखैत अछि। ई बालक ककरो निश्चित जीवित व्यक्ति रूपमे नहि, बटुकनाथक अपन बाल्यकालक प्रतिवादी स्मृति रूपमे उपस्थित अछि। ओ हथौड़ी नहि चलबैत; साधारण पातक ‘टक’ आवाजे सुनवाइक आरम्भ बनैत अछि। न्यायाधीशक अस्थानपर बाल्यकाल—ई नाटकीय चयन पात्रक कुटिल व्यवसायिक भाषा अगुवे मानवीय सीखक असफलतालग घुरबैत अछि। तौ बाल्यकालक स्मरण वर्तमान अपराधक दायित्व मेटि देने नहि।

चन्द्रपालक स्क्रीनक ‘खाता मिलान’

चन्द्रपालक स्क्रीनपर खातासभक नाम, पासबुक आ उज्ज्वलक धमकी-सन्देश उभरैत अछि। तकर भीतर बिना न्यायाधीशक एक अदालत बनैत अछि—रिक्त कुर्सी, फाटल पासबुक आ अपनहि बचावक आवाज। ‘सहमति’क दावा पर पासबुक मानवीय जानकारीक अभावक प्रश्न करैत अछि। एतय वस्तु स्वयं बोलैत अछि; प्रत्यक्ष जीवित पीड़ितक गवाहीक अन्य रूप। साहित्यिक रूपमे खाताक बही वित्तीय वस्तुसँ सामाजिक सम्बन्धक आलोचक बनैत अछि। तौ ई काल्पनिक भीतरी जिरह न्यायालयक वैधानिक साक्ष्य-संशोधनक विकल्प नहि।

खड्ड देखबैत ‘सलाहकार’

चन्द्रपालक आन्तरिक अदालत ‘सलाहकार’ शब्दक अर्थ उलटा दैत अछि—रास्ता बताबएवाला व्यक्ति खड्ड दिस लऽ जाइत छल। एहि रूपकमे विधिक पेशागत भाषा आ वास्तविक कार्यक अन्तर अछि। पाठक अध्याय ९क अनुबन्ध, ११क वित्तीय मार्ग आ २७क स्क्रीनक संग एहिठाम पहिचानक एक दीर्घ रेखा देखैत अछि। किछु शब्दक स्थिर परिभाषा ओकर उपयोगकर्ता द्वारा पसराओल भ्रमसँ भिन्न पड़ैत अछि। ई आन्तरिक प्रश्न चरित्रक पूर्ण आत्मस्वीकृति नहि, किन्तु प्रतिष्ठाक आधार हिलबाक दृश्य अछि।

राघवक अधूरा संदेशक पात

राघवक बन्द कमरामे पात झड़ैत अछि; पातपर खाताक प्रस्ताव, वेशधारी धमकी, स्त्रीक फोटो आ प्रतिशतक अधूरा वाक्य लिखल छथि। हर पंक्ति पूरा आपराधिक संवाद नहि, जालक अलग शोषण-क्रियाक संकेत अछि। राघव आगि लगएबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा पात जरैत नहि। एतय आगिक असफलता सामान्य प्रकृतिक नियम पर जादुई प्रश्न अछि; कथामे ओकर अर्थ स्मृतिक नष्ट नहि होएबाक सामूहिक इच्छा अछि। व्यावहारिक तथ्य-जाँच लेल अधूरा अंश स्वयं पर्याप्त नहि, पर साहित्यिक स्तर पर भयक गाढ़ दृश्य होइत अछि।

वृद्धाक फोनक आरोप

राघवक भीतरी दर्पणमे वृद्धा पूछैत छथि जे झूठी पुलिस-बात सुनाबिते ओकरा निन्न कोना आयल। प्रश्न चरित्रक निजी श्रवणकेँ पलटैत अछि। जे व्यक्ति अपन आवाजक अभिलेखनसँ बचबाक लेल मौन चुनैत छल, ओ एखन पीड़ितक स्मृति-स्वर सुनबाक बाध्यता अनुभव करैत अछि। ई सहानुभूतिक स्वयं-सिद्ध अवस्था नहि; भय-प्रेरित अनुभव अछि। तथापि प्रश्न गामक वास्तविक जन-जागरणसँ जोड़ि अपराधीक विवेकक सम्भावना रचैत अछि।

लाउक कटोराक वस्तु-न्याय

लाउक शीशाघरमे सादा मेजपर कटोरासभ प्रकट होइत अछि। सिक्का, दवा, रक्तक बूँद आ टूटल मोबाइलक काँच कतेको आर्थिक क्षेत्रक सघन प्रतिमा अछि। नूतन तथ्यसूचीक अतिरिक्त कथा एक संवेदनात्मक ‘माल’-संग्रह रचैत अछि। लाउ अपनाकेँ मात्र प्रणाली-निर्माता कहि देहगत परिणामसँ दूरी राखए चाहैत अछि। भीतरी अदालत ‘के हाथ चलौलक’क बदला ‘के हिस्सा उठौलक’क प्रश्न पूछैत अछि। ई जवाबदेहीक अलंकारिक पुनर्निर्माण अछि, वैधानिक संयुक्त दायित्वक तय फैसला नहि।

ब्रूमक सभ्य सुनवाइक असहजता

एडवर्ड ब्रूमक भीतरक अदालत शान्त लकड़ीक पैनल, मद्धिम प्रकाश आ ध्वनिरोधी देबालसहित प्रकट अछि। न्यायाधीशक स्थान पर ओकर अपने भाषणक ताली बैसल अछि। ई विचित्र शिल्पगत निर्णय अत्यन्त प्रभावी अछि: बाहरी प्रशंसा निजी प्रश्नक ध्वनि बनि लौटैत अछि। स्वच्छ भाषा, नैतिक सम्मेलन आ जनसम्पर्कक आकर्षण अन्तर्मनमे अभियोगी प्रतिध्वनि पबैत अछि। ई ब्रूमक व्याकुलताक साहित्यिक दृश्य अछि; वास्तविक विश्वविद्यालय अथवा कम्पनी-सञ्चालनक स्वीकृत दोषनिर्धारण नहि।

एक अदृश्य रिक्त कुर्सीक बहुप्रतिलिपि

पाँचू भीतरी सुनवाईमे एक रिक्त कुर्सीक छवि उभरैत अछि, जकरा पर ओहि लोकसभक सम्भावित उपस्थिति अछि जे अब मुकदमाक सीढ़ीपर बैठल नहि। ई खाली कुर्सी नामविहीन मृतकक मात्र स्थान नहि; जीवित प्रतिपक्षक वैकल्पिक काजमे लीन रहबाक संकेत सेहो अछि। प्रतिद्वन्द्वी उपस्थित होएबाक अपेक्षा पर चलैत विजयक अभिनय टूटि रहल अछि। कुर्सीक रिक्तता अदालतक अभाव नहि, परस्पर निर्भर सत्ता-संबन्धक विघटनक संकेत अछि।

‘दण्ड नहि, प्रतीक्षा’क वाक्य

अन्तमे धूर्तसभ भीतरक अदालतसँ बिना औपचारिक दण्ड लौटैत छथि; हुनका प्रतीक्षा भेटैत अछि। ई अन्तिम भाव अध्याय १७क जीतक शोक आ अध्याय १८क खाली अदालतकेँ फेर अर्थ दैत अछि। पूर्वे पीड़ित पर अदालतक तारीखक प्रतीक्षा थोपल जाइत छल; आब अत्याचारी पक्ष समुदायिक उत्तरक प्रतीक्षा करैत अछि। सत्ता-विपर्ययक एहि प्रक्रियामे मनोवैज्ञानिक दण्डक लय अतीतसँ वर्तमान धरि चलैत अछि। कानूनी फैसला नहि होएबाक सच्चाई कथानक स्वयं मानैत अछि।

जीवितक श्रम बनाम धूर्तक अनिद्रा

निशा-भरि भीतरी सुनवाई भोगैत पात्रसभक समानान्तर गामक बच्चासभ भोरमे पाठशाला साफ करैत छथि। चन्ना गाछीक लोकराज्य मृतकक जादुई न्यायपर मात्र निर्भर नहि, सफाई, अनुवाद आ शैक्षिक क्रियाक प्रति लौटैत अछि। भौतिक श्रम आ अलौकिक भयक दोनू समय एकसाथ चलैत छथि। जीवनक मूल्य नाम पढ़बाक आ दूसराकेँ सुरक्षित रखबाक काजसँ व्यक्त अछि; धूर्तक दुविधा एहि कामक केन्द्र नहि बनैत।

समग्र मूल्यांकन : समकालिक आन्तरिक कथन

‘धूर्त सभक भीतरक अदालत’ नैतिक मनोविज्ञानकेँ सामूहिक लोक-अदालतक अनेक प्रतिध्वनिमे विभक्त करैत अछि। बाल्यकाल, पासबुक, पात, कटोरा आ ताली—पाँचू प्रतीक पाँच पात्रक अलग पेशागत आत्मरक्षा प्रश्नांकित करैत छथि। ई बहुकेन्द्रिकता अध्यायक उपलब्धि अछि। सीमा ई जे प्रत्येक प्रतीक धूर्तकेँ लगभग समान निष्कर्ष दिशि लैत अछि, जइसँ निजी मन:स्थितिक अनिश्चितता घटैत अछि; प्रारम्भिक संख्या-भेद सेहो भाषा-संयोजनक असङ्गति अछि। तौ दण्ड-पछाति प्रतीक्षाक उलटफेर कथावृत्तक दीर्घ संरचनात्मक धुरी मजगूत करैत अछि।

प्रकरण १३२ | मूल अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

नारा नहि, भोरक काज

अध्याय ३१क आरम्भमे जकरा ‘हारल’ कहल गेल, ओ सभ न पुतला जरबैत, न कारी झण्डा बनबैत, न तत्काल अपीलक नारा लगबैत। ओ सभ भोरहि काज बाँटि लैत छथि। ई कथात्मक चुनाव पछिला चारि अध्यायक अपराधी-अन्त:करणक अन्धकारसँ अलग दैनिक जीवनक प्रकाश अनैत अछि। न्यायिक जीत-हारक द्वैत कथाक केन्द्रीय सूत्र रहैतहुँ सामाजिक परिणामक मुख्य क्षेत्र अब पाठशाला, अनुवाद, सामूहिक शपथ आ अभिलेख बनैत अछि। ‘हार’क अर्थ सामुदायिक क्रियाशीलताक विरुद्ध परिभाषित होइत अछि।

अनन्याक रेखाविहीन कबड्डी

अनन्या नूतन गोल मैदान बनबैत छलीह, मुदा बीचमे निष्कासनक रेखा नहि। जे खेलमे हारत तकरा बाहर नहि करि नूतन काज देल जाएत। ई कबड्डीक पूर्वक प्रतिस्पर्धी विधानक मूल परिवर्तन अछि। रेखा पार करबाक साहस आब खेलसँ बाहर सामूहिक उत्तरदायित्वबोधक शिक्षा बनैत अछि। मुदा खेलक नियम आ समाजक वास्तवक सत्ता-असमानता समरूप नहि; रेखा मिटाब समाजक सभ विभेद मेटि देत, एहन दावे के आलोचना जाँचैत अछि। नूतन नियम खुलल सम्भावना अछि, सामाजिक सुधारक सिद्ध सर्वसम्पन्न परिणाम नहि।

देविकाक फूटल फोन

देविका उज्ज्वलक फोटो नहि, ओकर फूटल फोन हाथमे लऽ पाठशाला दिस जाइत छलीह। ई चयन शोकक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। मृत युवकक चेहरा व्यक्तिगत स्मृतिक क्षेत्रमे सुरक्षित; फूटल यन्त्र ठगी-प्रक्रियाक जटिल अनुभवक सामग्री बनैत अछि। फोन फेर भयक उपकरण नहि, चेतावनीक ठोस नमूना अछि। तथापि मृतकक

फोनक कथावस्तु प्रत्येक डिजिटल विवरण सार्वजनिक करबाक बिना सम्भव होय, एहन निजता-सम्मत प्रश्न एतय आवश्यक अछि। देविकाक हस्तक्षेपक मूल उद्देश्य जीवित लोककेँ धमकीक एकान्तसँ बाहर निकालब अछि।

निशांतक वित्तीय चित्रक लोकभाषा

विदेशक भुगतान-सञ्जाल पढ़निहार निशांत गामक श्रोता-सामने ‘खाता दोसराकेँ देब’क असुरक्षा स्थानीय रूपकमे बुझबैत अछि। ‘छाह भाड़ापर देब’क भाषा आर्थिक अपराधक भिन्नता लेल काव्यात्मक उपमा अछि। ई श्रोता लेल भुगतान-रस्ताक जटिलता कम करैत, मुदा व्यावहारिक लेखा-जाँचक पूरा प्रतिस्थापन नहि। मुन्ना पासवानक उपस्थिति एहिठाम विशेष महत्त्वपूर्ण—अंकीय खाता खोलबला व्यक्ति ‘अनाम खाताधारक’क सामान्य श्रेणीसँ बाहर अपन भावात्मक स्थान पबैत अछि।

मुन्नाक स्थान : आगेक पाँति

देविका मुन्नाकेँ पाछाँ अथवा शरमायल ठाम सँ आगू बैसबैत छलीह। ओकर कथन जे जे फँसल से दोषी होएबाक पहिनहि साक्षी होइत अछि, सामाजिक असमान जानकारीक प्रश्न उठबैत अछि। एतय नाम पर अधिकार वापस दैत सामुदायिक श्रवण अछि। मुदा ‘साक्षी’ रूपमे सुनल जाएब आर औपचारिक अपराधमुक्ति समान नहि। उकसाहट, आर्थिक आवश्यकता, जानकारी आ स्वतन्त्र इच्छा के स्तर अलग राखब श्रमाधारित आख्यानक नैतिक सटीकता अछि।

सौम्याक दफ्तरी वाक्यक भाषान्तर

‘प्रक्रियात्मक विलम्ब’क भावार्थ सौम्या एहि रूपमे बुझबैत छथि जे पिता मरि गेल, बेटा बूढ़ भऽ गेल, तइयो तारीख अबैत रहली। ई द्विभाषी दृश्य उपन्यासक भाषा-चेतनाक सर्वोत्तम उदाहरणसभमे एक अछि। सूखा तकनीकी पदक भीतर गुजरल जीवन-काल खुलैत अछि। अनुवाद एतय शब्दकोशक समानार्थी मात्र नहि, न्यायिक समयक मानवीय चित्र अछि। तथापि विशिष्ट वैधानिक धाराक अर्थ तिरोहित नहि हो, ताहि लेल मूल शब्द संग लोकभाषी व्याख्या रखबाक पद्धति अधिक उपयोगी बुझाइत अछि।

मीरा आ निजताक सार्वजनिक मर्यादा

मीरा देरीसँ अबैत छलीह, उज्जर वस्त्रमे, आ अपन समाजिक शपथ स्पष्ट करैत छथि—प्रेमकेँ शस्त्र नहि बनाओल जाए, देहक गोपनीयता बाजार नहि बनए, भयक कमाइ बन्द हो। भीड़मे किछु स्त्री आ युवक नजर नीचाँ करैत छथि; मीरा हुनका दोषी कहि लज्जित नहि करैत। एहि संयमसँ निजी अनुभवक सामूहिक वक्तव्य सामान्य अभियोगमे नहि बदलैत। सहमति, मर्यादा आ कर्तृत्वक सम्बन्ध अध्याय १० आ २१क सन्दर्भसँ फेर गाढ़ होइत अछि।

जीवन-सुरक्षाक साझा शपथ

देविका, मीरा, सौम्या, अनन्या आ अन्य लोक सभ निजताकेँ तमाशा नहि बनएबाक, ठगी चिन्हि नाम कहबाक आ टूटैत व्यक्तिक साथ ठाढ़ रहबाक शपथ लैत छथि। ई नीतिवाक्यसभ दिनक श्रम-सूचीसँ जुड़ल अछि, तेँ केवल उद्घोष नहि रहैत। शपथ धार्मिक वा न्यायिक किताबपर नहि, आपसी जिम्मेदारीक माध्यमसँ बनैत अछि। पूर्वक

‘निजताक शपथ’क स्पष्ट पुनरावृत्ति कथावाचकक दृढ़ सामाजिक सूत्र देखबैत अछि, तथापि विषयगत आवर्तनक कारण नवीन घटना-घनत्व किछु कम होएबाक सम्भावना रहैत अछि।

ईराक ‘पात-पाठ’क अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार

ईरा विदेश घुरल नहि, मुदा नाम-पाठ दूरस्थ शैक्षिक बैठकमे लैत छलीह। भारतीय, अफ्रीकी, लातिनी आ एशियाई विद्यार्थीक बैठक ‘पात-पाठ’ नामसँ उभरैत अछि। ईरा सार्वजनिक मंचक उग्र आरोपक बदला मजदूरक नाम सुनबैत छलीह। एकर संरचनात्मक अर्थ स्थानीय गामक स्मृति वैश्विक बहु-समुदायिक शिक्षाक आधार बनब अछि। मुदा अलग देशक विद्यार्थीसभक अनुभव पर्याप्त रूपेँ विकसित नहि; ई विस्तारक उद्घोष अछि, पूर्ण बहुराष्ट्रीय चरित्रवृत्त नहि।

गोपक तालिकासँ सम्बन्ध धरि

गोप डेटा के लोकभाषा मे कहबाक आग्रह करैत अछि। नाम, भुगतान, घर, बच्चा आ सपनाक अलग पाँति जोड़ैत; जकर सपना नहि भेटए ओतय खाली जगह छोड़बाक सलाह दैत अछि। ई अत्यन्त अर्थपूर्ण आख्यान-लेखनक नियम अछि। आर्थिक तालिका आम जनक सम्बन्धक कथा बनैत अछि, मगर अज्ञात बातकेँ अनुमानसँ भरबाक मनाही सेहो रहैत अछि। खाली स्थान साक्ष्यक अनुपस्थिति प्रकट करैत अछि; ओकरा मनगढन्त विवरणसँ भरल गेल तँ लोक-अभिलेखक विश्वास खोसि जायत।

बालकक नूतन ‘न्याय’ प्रश्न

अध्यायक मूल विवाद मे आरुणि न्यायिक हार, चन्ना गाछीक जीत आ जीवित बच्चाक निरन्तर प्रश्नक बीच अटकल अछि। बा कहैत छलीह जे फैसला कागचपर, न्याय लोकक व्यवहारमे बनैत अछि। ई कथन संस्थागत निर्णयक पूर्ण निषेध नहि; ओ समाजक आत्मनिर्भर कार्यसँ जिम्मेदारीक नूतन स्वरूप पर बल दैत अछि। प्रतीकात्मक सम्पन्न न्याय आ कानूनी जाँचक अनिवार्य कार्य अलग रहबाक चाही। ई प्रश्न रचनाक नैतिक ऊर्जाक स्रोत अछि।

अपराधीक व्यापारपर ज्ञानक प्रभाव

चन्द्रपालकेँ तीन गामक युवकक बचल घटना, लाउकेँ घटैत रूपान्तरण आ राघवकेँ नूतन शिकार न भेटबाक चिन्ता अबैत अछि। एहि छोट रिपोर्टसभसँ शिक्षा काजक व्यावहारिक परिणाम उभरैत अछि। तथापि कथाक आकस्मिक व्यापक असरकतिपय ठाम जल्दी प्रकट होइत अछि। एक स्थानीय पाठशालासँ पैघ आर्थिक जालक सम्पूर्ण क्षेत्रीय अन्त सिद्ध नहि; विशिष्ट घटनासभकेँ सम्भावित परिणामक उदाहरण मानब सटीक हएत।

घरक संदूकक नव अभिलेखन

गाममे लोग एक-दोसराकेँ घरमे बचल आ लिखाएब बाँकी नाम पूछए लगैत अछि। संदूक खुलैत अछि; चिट्ठी, फोटो, वेतन-पर्ची, चिकित्सकीय रसीद आ स्कूलक प्रमाणपत्र बाहर अबैत छथि। ई उपन्यासक प्रारम्भिक नन्दक दस्तावेजक घर-घर पुनरुत्पत्ति अछि। कथा प्रत्येक परिवारकेँ स्मृतिक सम्भावित सहलेखक बनबैत अछि। अभिलेखक विश्वसनीयताक प्रश्न एतय आरो महत्त्वपूर्ण: मूल वस्तुक भेद, परिजनक स्मृति, सन्देह आ अपूर्ण तिथि संग-संग राखल जाएब चाही, नहि तँ सामूहिक उत्साह अचूक इतिहासक भ्रम बनि सकैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय : न्याय बनाओल जाएत

‘हारल लोक सभक काज’क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अन्तर्बोधक दण्ड सँ वास्तविक जन-कार्यक माध्यममे वापसी अछि। अनन्याक रेखाविहीन खेल, देविकाक फोन, निशांतक वित्तीय उपमा, सौम्याक लोकभाषा, मीराक निजता, ईराक नाम-पाठ आ गोपक खाली पाँति—ई सभ अलग माध्यम समाजक साझा प्रश्न बनबैत अछि। कतेको नीतिवाक्य पुनः आवैत अछि, आ परिवर्तनक प्रभाव कखनोकाल सहज प्रस्तुत होइत अछि; एहि शिल्पगत सीमासँ बचि कथाकारक सर्वोच्च उपलब्धि देखबाक अछि: पीड़ित व्यक्ति आन्दोलनक मंचक प्रतीक्षामे नहि, अपन जीवनक भाषा सँ अगिला लोकक काज आरम्भ करैत छथि।

अन्तरप्रकरणीय मूल्यांकन : खण्ड-१क अध्याय २४-३१

एहि आठ अध्यायमे उपन्यास एकहिसमय नूतन आरम्भक आत्मचेतना, पाँच प्रमुख धूर्तक मनोवैज्ञानिक अस्थिरता आ जीवित समुदायक व्यावहारिक पुनर्गठन रचैत अछि। अध्याय २४क अनन्या लेखकक हाथसँ कापी लैत छलीह। २५क मोन टँगैत अछि। २६क बटुकनाथ रेलमार्गसँ नामक पाठ दिस बढ़ैत अछि। २७क चन्द्रपाल घरमे रहि स्क्रीनपर गामक छवि देखैत अछि। २८क राघवक लोपप्रिय भाषा अनचाहल आवाज सँ भरैत अछि। २९क समुद्रपार लाउ अपनहि लाभक जलमे भय अनुभव करैत अछि। ३०क पाँचो धूर्तक भीतरी अदालत अनुक्रमेँ खुलैत अछि। ३१क जकरा हारल मानल गेल, ओ लोक समाजक काज बाँटि लैत छथि। एहि रचनामे बाहरी यात्रा, काल्पनिक सपना, जादुई श्रवण आ लोक-शिक्षाक विभिन्न कथनरूप एक-दोसराक समर्थन करैत अछि।

मुख्य शिल्पगत जोखिम तीन प्रकारक अछि। पहिल—अध्याय २३क गाम-भेट आ अध्याय २६क पुनः आगमनक समयसम्बन्ध अस्पष्ट अछि; एकरा क्रम-विन्यासक चक्रीयता कहब सम्भव, मुदा मूल पाठमे नूतन स्पष्ट जोड़ अभावमे असङ्गति कहबाक हक सेहो सुरक्षित अछि। दोसर—उज्ज्वलक मृत्यु सम्बन्धी अध्याय ८क जलकाठक दृश्य आ अध्याय १६ तथा २९क रस्सी/लटकल छविक अन्तर समाधानविहीन अछि। तेसर—अध्याय ३०मे पाँच धूर्त आ चारि शहरक गणना कथन-संघटनमे अतिरिक्त सावधानी माँगैत अछि। एहि विरोधसभकेँ अपनहि कल्पित घटनासँ समेटबाक बदला आलोचना आख्यानक आत्म-विरोधी स्थान चिह्नैत अछि।

साथहि, पुनः-पुनः हरियर पात, काँचपर उभरल नाम आ भीजल कागचक जादुई छवि प्रभावशाली रहितहुँ पूर्वानुमेय होएबाक खतरा लैत अछि। जहिठाम अनन्याक भूल-सुधार, मुन्नाक असुरक्षा, मीराक आत्मनियन्त्रित शपथ, सौम्याक अनुवाद आ गोपक खाली स्थान उपन्यासकेँ नव घटना दैत अछि, ओतय आख्यान अधिक घनिष्ट होइत अछि। नव्य-न्यायीय प्रणाली अथवा वैधानिक अपराधनिर्णयक छद्म-निश्चितताक बदला एहि समीक्षा मे काल-रचना, दृष्टिकेन्द्र, स्वर, प्रतीक-वितरण, अन्तरकथात्मक पुनरावृत्ति आ असङ्गतिक रचनात्मक/पाठगत सम्भावनाकेँ विश्लेषणक केन्द्र रखल गेल अछि।

प्रकरण १३३ | मूल अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

तेसर खेलक कथात्मक आवश्यकता

‘तेसर कबड्डी’ पहिल भूत-कबड्डी आ जीवित बच्चाक पुनर्लिखल खेलक बाद एक तेसर संयोजन प्रस्तुत करैत अछि। एतय मृतक, पाठशालाक बालक-बालिका आ पाँच धूर्तक ‘मोन’ तीन विशिष्ट दल बनैत छथि। पहिल खेलमे लोक-प्रेतक जादुई उपस्थिति घटना पर प्रश्न उठबैत छल; दोसरमे जीवित समुदाय नाम-पाठक उत्तरदायित्व स्वीकारैत छल; तेसरमे शोषणक मध्यस्थ पात्रकेँ स्वयं खेलक नियममे प्रवेश कराओल जाइत अछि। ई त्रिस्तरीय रचना प्रगतिक संकेत अछि, मुदा पूर्ण सामुदायिक न्याय सम्पन्न भेलाक घोषणा नहि। खेलक क्रमिक रूपान्तर सम्पूर्ण उपन्यासक न्याय-अवधारणाकेँ गतिशील रखैत अछि।

रेखाक स्वयमेव बनब : स्थानक स्वतन्त्र इच्छा

चन्ना गाछीक भूमिपर बिना चूना, डोरी अथवा छड़ीक रेखा उभरैत अछि। ओकर आकृति कतहु नदीसन टेढ़ आ कतहु जख्मसन अस्पष्ट अछि। साधारण कबड्डीक स्थिर आयताकार मैदानक बदला ई रेखा पीड़क भूगोलक पुनर्लेखन बनैत अछि। गाछी कतहु सिद्धान्तक सभागार नहि, संवेदनशील स्थान अछि जे अपन स्मृति स्वयं प्रकट करैत अछि। मुदा रेखाक स्वतः उभरब विधिक प्रमाण नहि; एहि कथाविश्वमे धरती द्वारा मानवीय इतिहास वहन करबाक जादुई कथा-विधान अछि।

देह, नाम आ मोनक तीन स्वरूप

मृतक दल नामरूपेँ, बालक दल देह-साँसरूपेँ आ अपराधी दल मोनरूपेँ उपस्थित अछि। धूर्तसभक वास्तविक देह अपन-अपन शहर, कोठी, कार्यालय आ शीशाघरमे रहैत अछि। एहि भेदसँ खेलकेँ प्रत्यक्ष भौतिक गिरफ्तारी मानबाक भ्रम टूटैत अछि। प्रत्येक समूहक उपस्थिति अलग काल-नियम पर चलैत अछि: मृतकक स्मृति मृत्यु-पछाति, बच्चाक प्रश्न वर्तमानमे, अपराधीक मोन चिन्ता आ दबाओल अतीतक बीच। ई असममित सहभागिता न्यायिक सुनवाईक औपचारिक समता नहि; सामाजिक नैतिक कल्पनाक नाट्यरचना अछि।

सरयूक साँस आ ‘प्रक्रिया’क असफल पुनरावृत्ति

पहिल पारीमे सरयू अपना नामक पुनरावर्तन करैत छथि। जमीनमे प्रत्येक उच्चारणक निशान बनैत अछि। बटुकनाथक मोन ‘प्रक्रिया’ दोहरबैत अछि, मुदा ओकर साँस छोट पड़ैत अछि। ई शाब्दिक प्रतिद्वन्द्विता‍मे नाम व्यक्ति-आधारित दीर्घ स्मृति बनि, दफ्तरी प्रक्रिया विलम्ब-निर्माणक संकीर्ण मुद्रा बनि उभरैत अछि। तौ विधिक प्रक्रियाक सभ उपयोग मनुष्यता-विरोधी नहि; विशेष पात्रक दुरुपयोग कथानकक लक्ष्य अछि। दृश्य शोषितक नाममे निहित अनवरत दायित्वकेँ जादुई देह-दृश्य देइत अछि।

अनन्याक ‘प्रश्न’ साँसक नागरिकता

अनन्या ‘प्रश्न’ बजैत खेलमे उतरैत छलीह। चन्द्रपालक ‘पहिल इनाम’क लुभावन पर ओ लाभक पाछाँ ऋणक प्रश्न करैत छलीह। खेलक परिणाम ऐहि क्षण शारीरिक पकड़ा-पकड़ीसँ बेसी आर्थिक विवेक बनैत अछि। पाठशालाक पूर्व अध्यायसभमे अर्जित ज्ञान यहाँ प्रशिक्षित नायिकाक खेल-क्रिया अछि। कथाकार बच्चाक

जिज्ञासाकेँ भोली अनभिज्ञता नहि, ठगीक प्रलोभनक संरचना तोड़बला विश्लेषण बनबैत छथि। ‘प्रश्न’क साँस छोट नैतिक नारा न रहि परीक्षणक कार्यप्रणाली बनैत अछि।

चन्द्रपालक विज्ञापनक तीव्र गति

चन्द्रपालक मोन झिलमिल экран जेकाँ क्षण-क्षण नूतन इनाम, बोनस, तत्काल कमाइ, नकली पुलिस आ खाता-प्रलोभन पसरबैत अछि। कथन-गति जाहि त्वरित प्रकाशक नकल करैत अछि, ओहि गति के देविकाक शिक्षाक धीम प्रश्न रोकैत अछि। लय-संघर्ष महत्त्वपूर्ण अछि: अपराधीकेँ शीघ्र निर्णय चाही; समुदायिक सुरक्षा लेल समय चाही। बच्चा ‘असली मालिक के?’ पूछिते चन्द्रपालक स्वाधीनताक झूठ सामने अबैत अछि। कौशल केवल डर पर विजय नहि, पदानुक्रमक अदृश्य बन्धन पर प्रकाश अछि।

मुन्नाक ‘म्यूल’सँ ‘मुन्ना’ बनब

चन्द्रपाल घेरासँ बहराइत अछि, मुदा मुन्ना पासवानक खाता ओकर पाछाँ रहैत अछि। कथा खाता केँ मनुष्यक देह बनाकऽ वित्तीय श्रेणीक अमानवीकरण उलटैत अछि। मुन्ना ‘म्यूल’ शब्द अस्वीकार करैत अपन नाम बजैत अछि। ई व्यक्ति-चिह्नक पुनःअधिग्रहण अछि। तथापि आर्थिक दुरुपयोगक सम्भावित दायित्वक औपचारिक जाँच अलग प्रश्न अछि; नामपाठ स्वतः न्यायालयक निर्दोषता-प्रमाणपत्र नहि। कथा ओ साधारण युवकक दृष्टिकेँ मूल स्थान दैत अछि जकर निजी परिस्थितिकेँ उपकरण-भाषा लोप करैत छल।

राघवक मिटबैत साँसक विरोध

राघव ‘मेटू’ बजैत मैदानमे पैसए चाहैत अछि, मुदा प्रत्येक साँस एक पात छोड़ैत अछि। मेटाएबला सन्देशक जादुई स्थायित्व पूर्वक अध्यायसभक रूपक एहि ठाम खेलक नियममे बदलल अछि। मीरा फोटो आ निजताक अधिकारक प्रश्न उठबैत छलीह। राघवक मध्यस्थ-दावा—‘हम केवल पहुँचबैत छलहुँ’—एहि रूपमे संकटग्रस्त होइत अछि जे सामग्री पहुँचएब भी कहानीक परिणाममे भागीदारी अछि। ई सामाजिक आरोपक नाट्यरूप थिक, विशेष अपराधक विधिक सिद्धि नहि।

लाउक प्रतिशत आ नन्दक पुल-नक्शा

लाउ प्रतिशतक लय में खेलैत अछि; ओकर शब्द आर्थिक जोखिम आ लाभक बाह्य गणना सँ बान्हल अछि। नन्द आरुणि पुलक एहन नक्शा आनि भिड़ैत छथि जाहिमे पाया नहि, नाम अछि। आर्थिक वस्तुक निर्माणप्रक्रियामे अनुपस्थित श्रमिकक चेहरा वापस लाएबाक एहि क्रियामे प्राचीन जलसमाधिक स्मृति डिजिटल वित्तीय अत्याचारसँ जुड़ैत अछि। सीमास्वरूप, अलग क्षेत्रक शोषण एक गोहि-रूपकमे अति सहज समायोजनक जोखिम अछि। नन्दक नक्शा विशेष श्रमिक-इतिहासक ठोस याद सँ एहि सामान्यीकरणकेँ किछु घटबैत अछि।

ब्रूमक ‘गरिमा’क भाषान्तर

एडवर्ड ब्रूमक मोन खेलमे ‘गरिमा’ बजैत अछि, मुदा ईरा मैथिलीमे प्रश्न करैत छलीह जे गरिमा केकर भाषामे? एहि प्रसंगमे उच्चशिक्षित भाषणक सौन्दर्य आ स्थानीय नामक अपरिचय आमने-सामने अछि। अंग्रेजी नैतिक शब्द अचानक ‘लाभ’क निजी आशय प्रकट करैत अछि। ईरा भाषायी प्रभुत्वकेँ प्रतिशोधी निषेध नहि, पीड़ितक

उच्चारणक अधिकारसँ प्रश्नांकित करैत छथि। यद्यपि ब्रूमक एक आन्तरिक शब्द-परिवर्तन ओकर समस्त कॉर्पोरेट निर्णय-शृंखलाक निर्णायक स्वीकृति नहि, दृश्य भाषणक अस्थिर नैतिक आधार खोलैत अछि।

साँसक वितरणमे कालक संपीड़न

मृतक दल नाम, बच्चा दल प्रश्न आ अपराधीक मोन प्रक्रिया, कमाइ, मेटब, प्रतिशत, गरिमा दोहरबैत अछि। खेल बीच दिन-राति, वर्ष, अदालत आ निजी इतिहास एक साँसमे आ मिलैत छथि। ई काल-संपीड़न महाभूतक दीर्घायु आ मोबाइलक क्षणजीवित सन्देशक विचित्र संगति बनबैत अछि। कथा कालखण्डक यथार्थपरक क्रम नहि रखैत, अनुभवक अनेक तह एक नाटकीय साँसमे समेटैत अछि। एही कारण पाठक प्रत्यक्ष खेलेल घटना आ रूपकात्मक पुनर्विचारक बीच गतिशील रहैत अछि।

पाँच शब्द छोड़िकऽ बाहर जाएब

धूर्तसभकेँ मैदान छोड़बाक अनुमति अछि, मुदा प्रत्येक व्यक्ति अपन प्रिय सत्ताशब्द—प्रक्रिया, खाता, सन्देश, हिस्सा अथवा गरिमा—पाछाँ छोड़ैत अछि। ई देहक बन्दीकरण नहि, भाषाक सार्वजनिक प्रश्नोत्तरमे प्रवेश अछि। जेलक बजाय शब्द पर अधिकार घटैत अछि: जे शब्द पहिने शोषण छिपबैत छल, ओहि शब्दकेँ समुदाय पुनः परिभाषित करए लगैत अछि। कथाकारक ई उपाय पराजयक प्रत्यक्ष हिंसा टारैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष संस्थागत क्षतिपूर्ति अथवा जाँचक काम शेष रहैत अछि।

लोथक उठब आ दर्शकक परिवर्तन

लोथसभ जे अनेक अध्याय धरि बाहरी दर्शक रहल, आब खेलक घेरामे सरकैत आ लाउक छोट होइत मोन पर हँसैत छथि। एहि कर्मपरिवर्तनमे निम्नतम श्रवणाधिकार पओने पात्रसमूहक क्षणिक सक्रियता अछि। बच्चा सभ खलपात्रक मोनकेँ बाँधि नहि रखैत; मृतकसभ सेहो नहि। यन्त्रणा समाप्ति नहि, नैतिक प्रश्नक सार्वजनिकता एकर लक्ष्य अछि। लोथक उठबक बात पूर्वक न्यायसभाक सीमित गवाहीसँ मिलि उपन्यासक धीर भूमिकाविकास चिन्हैत अछि।

पुनरारम्भक खुलल निष्कर्ष

अन्तमे झरल पातपर ‘फेर आरम्भ होउ’क घोषणा आबैत अछि, आ स्थानीय लोक विजय-दिवस नहि मनबैत। अपराधीक नैतिक भयक मध्य बच्चा पाठशाला घुरैत छथि। आत्मसमापनक ई आवर्त अध्याय २४सँ साम्य राखैत अछि, मुदा एक खतरा सेहो अछि: कथावाचक यदि प्रत्येक चरणकेँ पुनः ‘नव जन्म’ कहैत रहत तँ घटनात्मक बढ़त कम चिन्हाय सकैत अछि। एहि अध्यायक वास्तविक नूतनता तीन दलक शिल्प, शब्दक अस्थायी त्याग आ प्रश्नद्वारा विज्ञापनक वेग रोकब अछि।

प्रकरण १३४ | मूल अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा

चारिम साँसक परीक्षण-नियम

तेसर कबड्डीक अगिला साँस एक नूतन नियमन शुरू करैत अछि: जे नाम काटने अछि, ओ पूरा उच्चारण बिना मैदानसँ बाहर नहि जा सकैत। पिछला पारीमे शारीरिक घेरा अथवा मानसिक भय प्रमुख छल; आब धूर्तसभक

अपनी भाषा पर प्रश्न उठैत अछि। बूढ़बा भूतक घोषणा न्यायालयक औपचारिक फरमान नहि, खेल भीतरक नैतिक अनुशासन अछि। पाठक एतय नामक पुनरुच्चारणकेँ अपनहि दायित्व मानबाक सीमित आरम्भ रूपमे पढ़ि सकैत अछि, पूर्ण प्रायश्चित नहि।

अनन्याक प्रश्नक कालान्तर

अनन्याक बाल्यकालक प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी फोटो देखिकऽ उठल छल। एखन ओ जीवित धूर्तसभक मोनपार केन्द्रित अछि। एहि कालगत रूपान्तरणमे बालदृष्टि विकलता-स्रोतसँ सक्रिय नैतिक जाँच दिशि चलैत अछि। समान प्रश्न-स्वभाव नूतन विषय पबैत अछि, जाहिसँ पात्रक क्रमिक विकास देखाइत अछि। मुदा अनन्याकेँ सर्वज्ञ न्यायाधीश बनब उपन्यासक बहुस्वरक विरुद्ध हएत; बच्चा सभ ओकर संग अछि, नामक जानकारी मृतक, परिवार आ पाठशालासँ आबैत अछि।

बटुकनाथक जीहपर अस्वीकृत नाम

बटुकनाथ प्रक्रिया, वाद, ग्राह्यता, अधिकारक्षेत्र जकाँ पद गनए चाहैत अछि, मुदा जीहसँ ‘सरयू देवी’ आ ‘लखन पासवान’ निकलैत अछि। ई ‘स्मृतिक अनचाहल उच्चारण’ अछि—शोषितक नाम पेशागत शब्दभण्डारमे छेद करैत अछि। एहि अलौकिक रूपान्तरणमे ककरो बाल्यकालकेँ मार्मिक स्मरण करबक अपेक्षा प्रत्यक्ष भाषिक व्यतिक्रम अधिक प्रबल अछि। परन्तु अस्वीकृत नाम सहज निकलि अएलासँ पात्रकेँ तकर घर आ सामाजिक इतिहास बुझि गेल, एहन कहि नहि सकैत।

चन्द्रपालक खातासभक देहधारी सूची

चन्द्रपालक स्क्रीन-रूपी मोन पर जालक युवा खाताधारक एक पाँतिमे अबैत छथि। उज्ज्वल, मुन्ना आ अज्ञात छात्रसभ वित्तीय आइटम नहि, सामाजिक व्यक्ति बनैत छथि। देविका दूरसँ बच्चासभकेँ पठाओल ज्ञानक प्रभाव देखैत छलीह; हुनका स्वयं खेलमे कूदब जरूरी नहि। एहि व्यवस्था मे प्रतिरोधक नेतृत्व व्यक्तिगत नायकसँ सामूहिक अभ्यासमे स्थानान्तरित अछि। देहधारी सूची चन्द्रपालक ‘उपयोगकर्ता’ शब्दक विरुद्ध मनुष्यक पुकार अछि।

राघव स्वयं एक ‘म्यूल’क अनुभव

राघव पातसभसँ घेराएल अछि आ लाउक सहायता पुकारैत अछि। उत्तरमे ‘उपयोग समाप्त’ आबिते ओकरा पहिल बेर बुझैत अछि जे स्वयं बड़का जालक परित्याज्य कड़ी बनि गेल। एहि समरूपतामे राघवक असुरक्षा वास्तविक, मुदा ओकर द्वारा प्रयुक्त गरीब खाताधारकक अनुभवसँ एके नहि। अपन उपयोगिता समाप्त होएबाक भय अनुभव कएनाइ पीड़ित सभक पीड़ा पूरी तरह बुझि लेलासँ भिन्न अछि। कथाकार एहि समानान्तरता द्वारा अहंकारक भङ्ग देखबैत छथि।

लाउक नाम-भाषाक सीमा

लाउकेँ मैथिली नहि अबैत, मुदा उज्ज्वलक नाम उच्चारण करबाक क्षण अनुभव होइत अछि। भाषा-बाधा रचनामे केवल राष्ट्रीय अन्तर नहि; व्यक्ति-विशेषकेँ मुनाफासँ बाहर पहचानबाक आग्रह अछि। शब्दक ध्वनि द्वारा बाजारक निराकार ‘ग्राहक’ एक अस्थिर मानवीय अस्तित्व बनैत अछि। तथापि नाम उच्चरित भेलाक अर्थ

भाषागत, सांस्कृतिक आ पारिवारिक सन्दर्भ स्वतः पहुँचि गेल नहि। अगिला अध्यायसभ एहि अधूरेपनकेँ घर, भय आ सपना तक बढ़बैत छथि।

उज्ज्वलक असाक्षात उपस्थिति

लाउ उज्ज्वलक नाम बाजितहुँ उज्ज्वल प्रत्यक्ष फेर मैदानमे नहि उतरैत। कथा स्पष्ट कहैत अछि जे देविकाक लोकशिक्षामे बच्चासभ जखन ठगी चिन्हैत अछि, ओहि क्रियामे उज्ज्वलक स्मृतिक अर्थ बढ़ैत अछि। मृतकक शान्तिक उपाय जादुई अदालतक एकमात्र फैसला नहि; जीवित लोकक सुरक्षा अछि। ई घटना-कथनक उल्लेखनीय सन्तुलन अछि, कारण भूतकेँ हर दृश्यमे प्रत्यक्ष आनबाक लोभसँ कथा बचैत अछि।

ब्रूमक गरिमासँ दाम आ नाम

ब्रूम ‘मानव गरिमा’ उच्चारैत अछि, पातपर शब्द ‘दाम’ बनैत फेर ‘नाम’ बनैत अछि। ई ध्वन्यात्मक रूपान्तरण आर्थिक मोल, नैतिक घोषणा आ मानवीय पहचानक संघात एक दृश्य मे समेटैत अछि। भाषणक ताली-पात्र टूटिते सार्वजनिक नैतिकताको निजी लाभसँ अलग करब असम्भव होइत अछि। मुदा शिल्पक अति-सुव्यवस्थित प्रतीकत्व कतिपय पाठक लेल सरलीकरण लगि सकैत अछि—विशेषकर जखन प्रत्येक खलपात्रक असत्य तुरन्त पात पर पूर्ण अनुवाद पबैत अछि।

पकड़ब नहि, पढ़एब

चारिम साँसमे कोनो कैद अथवा शारीरिक पराजय नहि। जे खिलाड़ी नाम नहि कहि पबैत, ओ किनार बैसैत अछि। एहि खेलक प्रभाव अपराधीक विनाश नहि, अपूर्ण मानवीय प्रशिक्षणक सार्वजनिक दृश्य अछि। एकटा निर्णायक अन्तर ई जे पीड़ितक दायित्व अपराधीकेँ सदा शिक्षित करब नहि; लोक-पाठशालाक स्वतन्त्र काम मुख्य अछि। कथाकार एतय नैतिक कल्पना रचैत छथि, वास्तविक पुनर्स्थापनात्मक न्याय-प्रणालीक आवश्यक सहमति आ सुरक्षाक पूरा खाका नहि।

विजेताक दुःखक पुनर्पाठ

बूढ़बा भूत विजय बिना दुखक सड़ि जाएबाक रूपक रखैत छथि। ई ‘जीतक शोक’क विषयक आवर्तन अछि, मुदा एतय दुख परिणाम नहि, आत्मज्ञानक सम्भावित शर्त बनैत अछि। चन्द्रपाल सुरक्षा चाहैत अछि, स्वीकार नहि; ताही लेल ओकर भीतरक भय शान्त नहि। अपराधीक अनुभवक केन्द्र अपन निज सुरक्षा रहैत अछि। कथाकार ई सीमा स्पष्ट देखबैत छथि, यद्यपि बूढ़बाक उपदेश बारम्बार कथाक अर्थ पहिने बता देबाबला शैली अपनबैत अछि।

मीराक आवाज आ राघवक दर्पण

राघव अपन मेटल संदेशक पात हटाएब चाहैत अछि, पात हथेलीमे चिपकि जाइत अछि। कथा ओकरा जेल नहि, दर्पण भेटबाक बात कहैत अछि। एहि ठाम मीरा जेकाँ पीड़ितक निजता-सम्बन्धी प्रश्न पछुआइत अछि: स्मृति-दर्पण अपराधीक आवाज लौटबैत अछि, पीड़ितक व्यक्तिगत सामग्री सार्वजनिक करबाक अधिकार नहि दैत। साहित्यिक न्याय उत्पीड़क पर आत्मनिरिक्षण थोपब अछि; वास्तविक निजता-रक्षा अलग सीमा रखैत अछि।

लोथक दर्शक सँ खिलाड़ी बनब

भूत सभ निर्णायक खेल-भूमिका छोड़ि कखनहुँ पीछे हटैत छथि; जे लोक सदिखन केवल देखैत छल, ओकरा खेलक प्रवेश भेटैत अछि। ई भूमिकाविपर्यय केवल खलपात्रक पराजयक सजावट नहि—कथाक अधिकार-प्रवाहक नूतन स्वरूप अछि। श्रवणहीन, दर्शक अथवा सीमांत लोककेँ क्रियाशीलता भेटबाक कथा-नियम एहि छोट परिवर्तनमे स्थापित अछि। कथाकारक सामाजिक समावेशक दावा एतय प्रतीकात्मक क्रिया सँ जाँचबाक अवसर पबैत अछि।

पञ्च-मोनक किनारपर प्रतीक्षा

अध्यायक अन्तमे पाँचो धूर्तक मोन किनार बैसल अछि, जखनकि बच्चासभ केन्द्रमे रहैत छथि। अनन्या अगिला साँस लेल एक नाम पूरा खोजबाक काम दैत छलीह। केओ पूर्ण पश्चातापी नहि; केओ बाहरक न्यायालयमे नूतन दोषी ठहराओल नहि। एहि अधूरा शर्तक कारण कथा खेलक रचनात्मक तनाव बचबैत अछि। एतय पराजित व्यक्तिक समापन नहि, जाँचक अगिला श्रेणी आरम्भ होइत अछि।

समीक्षात्मक निष्कर्ष

‘मोनक परीक्षा’क वैशिष्ट्य अपराधीकेँ ओकर शस्त्रसँ ही असहज करब अछि—विधिक पद नाम बनैत, स्क्रीन पर व्यक्ति अबैत, मेटल सन्देश पात, प्रतिशत व्यक्तिगत उच्चारण आ गरिमा आर्थिक दामक प्रश्न। एकर कालगत शिल्प चारिम साँसक घोषणा मे छैक। मुदा छविक लय पूर्वक अध्यायसभसँ अतिशय समान होइत अछि। कथाक नूतन ऊँचाइ तखन भेटैत अछि जखन बालिका नामकेँ केवल कहबाक क्रिया नहि, जीवित परिवारक सम्बन्ध प्रश्न रूपमे स्थापित करैत छलीह।

प्रकरण १३५ | मूल अध्याय ३४ — सुनैत नदी

निःशब्दता एक श्रवण-रूप

‘सुनैत नदी’ चारिम साँसक बादक निःशब्दतासँ शुरू होइत अछि। ई शान्ति नहि; नदी अपना धार थम्हा किनारक कथन सुनए लगैत अछि। नदीक लोकविश्वासी संवेदनशीलता भूत-कबड्डीक स्थानसँ दूर शहरक वस्तु सभ धरि फैलैत अछि। सामान्य नदी घटनाक पार्श्व नहि, सामाजिक कथनक सक्रिय श्रोता बनैत अछि। एहि बिम्बमे नदीक सुनब अलौकिक कथन-नियम अछि, न कि जलविज्ञानक घटना। प्रस्तुत मौन आगामी नाम-पाठक प्रस्तावना अछि; शान्ति अभी अपूर्ण प्रश्नसँ भरल।

बटुकनाथक स्नानघरक कादो

दिल्लीक सुरक्षित घरमे नलक पानि कादोमिश्रित अबैत अछि। बटुकनाथक पहिल प्रतिक्रिया घरक कर्मचारीक उपर क्रोध करब अछि। ई क्रिया भयकेँ सामान्य तकनीकी खराबी कहि टारबाक पुरान आदत देखबैत अछि। पानिक गन्ध गंगाक पाया आ गाछीक धूरक सम्बन्ध शहरक निजी स्वच्छतामे घुसि जाएब रचनाक प्रमुख भौतिक रूपान्तरण अछि। मुदा ई जल ककरो वास्तविक नमूना-सङ्ग्रहक पर्याय नहि; पात्रक गृहस्थ सुखपर पीड़ितक स्मृतिदबाव बनैत अछि।

‘वाद समाप्त’क स्थानपर ‘नाम अधूरा’

अदालतक आदेशमे बटुकनाथ ‘वाद समाप्त’ पढबाक अपेक्षा करैत, मुदा ‘नाम अधूरा’ देखैत अछि। उपन्यास दो अन्तिमताक भेद रचैत अछि: प्रक्रियागत मुकदमाक समापन आ अपूर्ण सामाजिक स्मृतिक प्रश्न। विधिक स्तरपर मूल मुकदमाक विविध आदेश-वर्णन पूर्ववत् अस्पष्ट रहैत अछि; एहि जादुई अक्षरसँ ओकर पूरा न्यायिक इतिहास बुझा नहि सकैत। पर कथा-स्तरपर सरकारी कागच अपन सीमाकेँ स्वयं स्वीकार करैत प्रतीत होइत अछि। स्मृतिगत अधूरापन एक नूतन कथा-कारण बनैत अछि।

तिजोरी खोलिते चन्द्रपालक छवि बदलनाइ

चन्द्रपालक तिजोरीमे मोहर, धन, विदेशी खाताक कागच आ फोनक उपकरण अछि। ओ अपन नियंत्रणक संरक्षित संग्रह बुझैत अछि। मुदा स्मृतिपातक पुनरागमन ओकर निजी सुरक्षित स्थानकेँ अस्थिर करैत अछि। तिजोरीक वस्तुसभ वित्तीय शोषणक विशिष्ट उपकरण—मोहर, खाता, फोन—एकठाम देखबैत अछि। आलोचनामे अनैतिक स्वार्थक एहि कथा-रूपकेँ प्रत्येक परामर्शदाता अथवा विधिक संस्थानक सामान्य चरित्र कहि विस्तारित नहि करबाक चाही।

राघवक स्वरक अभाव आ लिखनीक कोड

राघव भोरमे बजए चाहैत, आवाज नहि निकलैत अछि। ओ कागचपर नाम लिखबाक कोशिश करैत, मुदा हाथ स्वतः अल्फान्यूमेरिक कोड बनबैत अछि। एहि दोगुना क्षरणमे वाणी आ लिखनी—दूनू मनुष्यक नामरहित अभ्यासक अधीन अछि। जकर व्यवसाय संकेत आ गुप्त अंक छी, ओकरा नूतन भाषा सीखबाक देहगत कठिनाइ देखाओल गेल। ई मनोवैज्ञानिक पंगुता जादुई चिह्नरूपेँ अछि, चिकित्सकीय विकारक विश्वसनीय निदान नहि।

पातक अधूरा नाम : लोक-स्रोत खोज

नारिकेल-पात पाठशालामे बच्चासभ आधा लिखल नामवला कंकड़ पबैत छथि। शेष हिस्सा बूढ़, श्रमिकक परिवार, पुरान बही अथवा नदीक गीतसँ खोजबाक अछि। एहि आयोजनमे लिखबाक अधीरता सँ पहिले सुनबाक धीरता चाही। नामक खोज सामूहिक साक्षात्कारक कार्य बनैत अछि। मुदा जखन लोकगीत, परिजनक स्मृति आ सरकारी बही भिन्न रूप देत, समीक्षा लेल ओ भिन्नताकेँ अलग चिह्नित राखब उचित, एक नाम स्वयं अनुमान कऽ ठोकि देब नहि।

देविकाक शिक्षामे पूरा परिचयक प्रश्न

देविका ठगीक कॉल पर ग्राहक, अभियुक्त अथवा उपभोक्ताक सामान्य पदक बदला अपन पूरा नाम कहलाक महत्त्व बुझबैत छलीह। ठगीक चाल अक्सर धमकीदाताक अस्पष्ट अधिकार-भाषासँ शुरू होइत अछि। पाठशालाक पात्रसम्बन्धी नियम ऐहि भ्रमकेँ रोकबाक कला रचैत अछि। तौ वास्तविक डिजिटल सुरक्षामे अज्ञात फोनकर्ता लग अपन निजी विवरण अनावश्यक उजागर नहि करबाक सावधानी सेहो आवश्यक अछि। अतः एतुक्का ‘अपन नाम कहब’ सामाजिक आत्म-पहिचानक प्रतीक रूपमे पढ़ल जाए, सर्वपरिस्थितिक व्यवहारिक निर्देश नहि।

विधिक पुस्तकक पृष्ठपर नाम

बटुकनाथक विधिक पुस्तकेँ खोलला पर धारा बदला नाम देखाइत अछि; ओकर शिक्षण-कालक गुरु द्वारा सत्यकेँ प्रक्रिया सँ नहि मारबाक वाक्य घुरैत अछि। ई स्वयं अपन शिक्षा पुनर्पढ़बाक नाटकीय रूप अछि। कानूनक अध्ययनक निषेध नहि, नामकेँ अवहेलना कऽ कानूनक शब्दक उपयोगक आलोचना। गुरु-स्मृति पूर्वक पितृस्मृतिसँ साम्य राखैत अछि; मुदा बारम्बार नैतिक गुरुवचनक आगमन पात्रक आन्तरिक जटिलता सँ व्याख्यात्मक आवरण अधिक बना सकैत अछि।

चन्द्रपालक खातामे घरक दृश्य

लाभक अंकीय पटियापर मुन्नाक पिताक फाटल कमीज, उज्ज्वलक घर, दस्तावेज आ अन्य व्यक्ति-सामग्री उभरैत अछि। ई बदलल दृश्य वित्तीय अमूर्ततासँ व्यक्तिगत ठोस जीवनक स्वीकृतिसँ जोड़ैत अछि। चन्द्रपाल आँखि मूँदैत अछि, कारण देखब आ स्वीकार करब अलग क्रिया छथि। अनन्या ओहि विशेष अन्तरकेँ जाँचबाक प्रश्न रखैत छलीह। एहि तनावमे व्यक्तिक नैतिक परिवर्तन कथँ प्रारम्भ भेल मानल जा सकैत, पर पूर्ण सिद्ध नहि।

कोडकेँ नाममे बदलबाक सम्भावना आ सीमा

राघवक फाटल कागचक टुकड़ा पाठशाला पहुँचि बच्चा सभ कोडसँ नाम बनबाक अभ्यास करैत छथि। ई अंकीय अपराध-भाषा विरुद्ध लोकभाषाक जवाब अछि। तथापि विशेष कोडसँ अनुमानित नाम निकालब वास्तविक अभिलेखनमे त्रुटिक बड़ा स्रोत भऽ सकैत अछि; मूल पाठमे ई दृश्य जादुई कथानकक अन्तर्गत अछि। आलोचनाकेँ वस्तुतः अज्ञात नामकेँ मनगढन्त पूर्ति बनि चुकल कहि नहि प्रस्तुत करबाक चाही। कथा रूपकमे कोड-पछुआल व्यक्ति खोजबाक प्रेरणा देइत अछि।

लाउक सलाहकारक ‘समय दियौ’

समुद्रपार बैठकमे विशेषज्ञ गामक भावनात्मक कथा समय संग थाकि जाएबाक अनुमान दैत छथि। लाउ जखन प्रश्न करैत अछि जे कथा शान्त नहि भेल तँ, तखन बाहरी व्यवसायिक निश्चिन्तताक बीच निजी भयक अलग स्वर प्रकट होइत अछि। सलाहकारक भाषा जालक संकट-प्रबन्धनक कथा-रूप अछि; वास्तविक जनजागरणक सम्पूर्ण सामाजिक असरक अचूक आँकलन नहि। कथाकार गामक ‘साँस बदलैत’ आवर्तकेँ कारोबारिक थकानक विपरीत रूपमे रखैत छथि।

नदी सुनबैत अछि, घर प्रश्न पूछैत अछि

पाँचम साँसक सुनवाईमे बटुकनाथ सरयू देवीक नाम पूरा कहबाक प्रयत्न करैत अछि, चन्द्रपाल उज्ज्वलकेँ ‘यूजर’क बदला व्यक्ति रूपमे, राघव अपन कोड सँ बाहर, लाउ नामक देहरी समक्ष अटकैत अछि। जलक कटोरा आ नामक उच्चारण व्यर्थ जादुई दण्ड नहि, भाषा-आधारित पुनःशिक्षाक चिन्ह छथि। मुदा पाँच व्यक्ति समान प्रगतिक क्रममे चलैत, एहन पाठमे स्पष्ट नहि; ककरो आंशिक स्वर भेटैत, कियो पलायन सोचैत, कियो भाषण बदलैत।

‘नाम कहब’क अगिला परीक्षण ‘घर तक जाएब’

बूढ़बा भूत कहैत छथि जे एक नाम उच्चरित करब मुक्ति नहि; आब ओकर घर धरि पहुँचबाक अछि। एहि क्रियाक विस्तारसँ उपन्यास प्रतिमात्मक नामजपसँ सामाजिक सम्बन्धक वस्तुगत परीक्षण दिस बढ़ैत अछि। नाम, घर आ परिवारक इतिहास जोडबाक आवश्यकतामे लोक-अभिलेखक नैतिक विश्वसनीयता बढ़बाक सम्भावना अछि। तौ ककरो घरतक जाएब स्वयं अनुमतिविहीन उपस्थिति अथवा नूतन धमकी न बनए—ई पात्रसभक शक्ति-असमानता देखिते जरूरी आलोचनात्मक सावधानी अछि।

प्रकरणक निर्णय

‘सुनैत नदी’ न्यायिक लेखनक कोनो वैकल्पिक दस्तावेज सम्पूर्ण करैत नहि; ई नाम के आधा सुनबाक हिंसा चिन्हैत अछि। कादोमिश्रित नल, स्वतः पृष्ठबदलैत पुस्तक, कोडक अक्षर, बच्चाक कंकड़, नदीक गन्ध आ शब्दक कटोरा एक सांकेतिक अनुक्रम बनैत अछि। सर्वोत्तम उपलब्धि बाहरी नदीसँ मनुष्यक निजी भाषा धरि बहेबला स्मृतिक रूपान्तरण अछि। शिल्पगत जोखिम रहैत अछि जे लगभग हर कक्षमे एकहि जादुई बाधा नैतिक निष्कर्ष देबाक लगैत अछि। अगिला अध्याय देहरीक वास्तविक दृश्यसँ एहि योजनाबद्धतामे नूतन मानवीय प्रतिरोध जोड़ैत अछि।

प्रकरण १३६ | मूल अध्याय ३५ — नामक देहरी

उच्चारणक बाद देहरीक चरण

पाँचम साँसक पानि धरतीमे नहि समा जड़िक भीतर घूमैत अछि; गाछीमे पाँच नन्हि घरक रेखा बनैत अछि। सरयू, मुन्ना, उज्ज्वल, अज्ञात मजदूर आ नामहीन घर—ई पाँच गृहस्थ स्थल नामक सीमा बाहर जीवनक इतिहास दर्शबैत अछि। कथा अब पूछैत अछि जे व्यक्ति के छल, कतेक दूर रहैत छल, ओकर घरक क्षति की रहल। एहि संक्रान्तिमे वाचिक सम्मान एक भौगोलिक आ सम्बन्धात्मक जाँचबिन्दु बनैत अछि।

बटुकनाथक यात्रा फेर आरम्भक प्रश्न

अध्याय २६मे बटुकनाथ गाम लेल ट्रेन धरैत, अध्याय ३५मे गाड़ी खराब भेलाक बाद फेर ट्रेन पकड़ैत अछि; अध्याय २३मे पूर्वे गाम-भेट देखाओल गेल छल। ई स्पष्ट घटनात्मक निरन्तरताक प्रश्न अछि। सम्भव अछि कथा मानसिक आ वास्तविक यात्रा परत दर परत दोहराबैत हो, मुदा प्रत्येक यात्राक स्थान-काल पूरा तरह अलग चिह्नल नहि। आलोचना एकरा बिना कल्पित वापसी-तिथि अथवा नव मुकदमा जोड़ने खुलल रखैत अछि। आवर्तनक कलात्मक अर्थ मानितहुँ पुनःरचित वास्तविक क्रम जाँचबाक आवश्यकता छैक।

बूढ़ सहयात्रीक फेर उपस्थिति

रेलमे बटुकनाथकेँ पुरान बूढ़ फेर भेटैत छथि। पूर्वक धूर्तक मोन-यात्रा आब जादुई सहयात्रीक दोहरायल हस्तक्षेपसँ नियन्त्रित भऽ रहल अछि। बूढ़क ‘नाम पढ़ू’क शिक्षा देहरी छूबाक व्यावहारिक आज्ञामे बदलैत अछि। समान वाक्यक पुनरावृत्ति कथा-लय सुरक्षित रखैत, मुदा पाठक लेल अलौकिक माध्यमक नवीनताकेँ घटा सेहो सकैत

अछि। एहि दुविधाक भीतर वास्तविक मानवीय वृद्धा आगाँ प्रवेश करैत छलीह, जकर प्रश्न भूतक प्रश्नसँ भिन्न सामाजिक वजन रखैत अछि।

सरयूक घरक अवशेष

सरयू देवीक घर अब अर्ध-टूटल देबाल, बदलल छप्पर, घासवाला आँगन आ शेष देहरी रूपमे प्रस्तुत अछि। ई चिह्नसभ मात्र करुण सौन्दर्य नहि; पाछाँ बचल गृहस्थ इतिहासक भौतिक संकेत छथि। देहरी घरक पूरा जीवन लौटबैत नहि, मुदा घरक ठाम, लौटबाक रस्ता आ व्यक्ति-स्मृतिक सामाजिक केन्द्र बचबैत अछि। सरयूक पारिवारिक विवरण पूर्वक अध्यायसभसँ पूरा मेल खाइत अछि कि नहि, तकर प्रश्न एखन कायम अछि; एहि नूतन देहरीसँ पूर्ण जीवनवृत्त स्वयं पुनःनिर्मित नहि।

आदेश देहरीपर नहि राखि पाबब

बटुकनाथ जीतक कागच देहरीपर राखए चाहैत अछि, मुदा ओकरा नहिं करि पबैत। न्यायालयक प्रतिक वजन अनपेक्षित रूपेँ अनुभव होइत अछि। ई मुद्रा कानूनक सम्पूर्ण निषेध नहि, बल्कि विशेष व्यक्तिक कागच-आधारित नियन्त्रणक असहजता अछि। देहरी पर निजी जीवनक प्रश्न गढ़ल अछि; अदालतक भाषाक सिद्ध शिल्प ओतय अनजान पड़ैत अछि। दृश्य प्रतीकात्मक रूपेँ अत्यन्त प्रभावी, कारण घोर वाचाल वकीलकेँ आँगनक मौन सामने चुप होएब पड़ैत अछि।

वृद्धाक धूलि : दर्शनक आरम्भ

एक वृद्धा बटुकनाथक हाथमे धूलि राखि कहैत छथि जे व्यक्ति पूरा पढ़बाक अछि तँ धूलि आँखिक कोरपर लगाउ। धूलि स्पर्शक असाधारण प्रतिवस्तु अछि—चश्मा, डिग्री, पद आ फाइलक परतक विरुद्ध माटिक प्रत्यक्ष संपर्क। जखन बटुकनाथ ओ धूलि छुवैत अछि, सरयूक अन्तिम श्रम-दृश्य ओकर सम्मुख खुलैत अछि। एतय जादुई अनुभूति पात्रक परिवर्तनक सम्भावना अछि, पंजीक सत्यापित घटनाक सर्वसम्पूर्ण पुनरुत्पादन नहि।

‘हम हुनका अधूरा पढ़ने रही’क शब्द-सीमा

बटुकनाथ अपना परिचय ‘बार काउन्सिल’ सँ देबाक प्रयास करैत, मुदा अन्ते स्वीकारैत अछि जे सरयूकेँ अधूरा पढ़ने छल। ई आंशिक कथन आत्मस्वीकृत व्यवहार अछि, सार्वजनिक आपराधिक दोषस्वीकार नहि। वृद्धा ओकरा तुरन्त आदर वा पानी नहि दैत, लिखबाक कार्य दैत छथि। कथनगत रूपसँ पात्रक नूतन दिशा खुलैत अछि, मुदा उचित नैतिक सन्तुलन ई जे पीड़ितक परिजन केँ शोषकक भावात्मक पुनर्जन्मक साधन बनबापर बाध्य नहि कएल जाए।

चन्द्रपालक दूरस्थ परदा आ उज्ज्वलक बिछौना

चन्द्रपाल उज्ज्वलक घर प्रत्यक्ष नहि जाएत, मुदा फोनपर बिछौनाक तकियापर दाँतक निशान देखैत अछि। देविका जकरा भाइक रोदन रोकबाक चिन्ह बतबैत छथि, ओ वित्तीय डेटा बाहर शारीरिक भयक अनपेक्षित साक्ष्यजेकाँ बनैत अछि। चन्द्रपाल परदा बन्द करैत, मगर निशान ओकर कल्पनामे टिकि जाइत अछि। दूरस्थ छवि वास्तविक घर-भेटक बराबर नहि; अनन्याक पछिला प्रश्न एहि सीमा केँ स्पष्ट रूपेँ दोहरबैत अछि।

राघव द्वारा पूरा नाम लिखबाक अभ्यास

राघव ‘म्यूल’क ‘म’सँ ‘मुन्ना’क पूरा नाम धरि पहुँचैत अछि। शब्द-परिवर्तन बैंकक अमानवीय श्रेणीसँ मनुष्यक व्यक्तिगत चिन्हारिक ओर अछि। मुदा मूल पाठमे राघव द्वारा ‘मुन्ना अपराधी नहि’ लिखब एक पात्रक कथन अछि, औपचारिक न्यायिक निष्कर्ष नहि। पाठककेँ ओकर पूर्वक कामक जिम्मेदारी आ मुन्नाक ज्ञानपरिस्थितिक भेद बुझबाक चाही। पूरा नाम लिखबाक बाद गामक अधिक सटीक पता खोजब कथा कैँ अभिलेखक स्रोत-जाँच दिशि लैत अछि।

लाउक बजार-मानचित्रक देहरी

लाउ अपन भारतक मानचित्र पर बैंकिंग-नोड, उपभोक्ता-घनत्व आ भुगतान-बिन्दुसभक बदला अनगिनत देहरी देखैत अछि। वैश्विक लाभक एक नीरस डेटा-स्थान परिवारक बहुल गृह-स्थान बनि उठैत अछि। व्यापारिक सलाहकार ग्रामीण भावना खरीदबाक उपाय सोचैत छथि; मुदा लाउक भीतर देहरीक दृश्य संसारकेँ ग्राहक-सूचीक भीतर समेटबाक दृष्टि प्रश्नांकित करैत अछि। एतय मानचित्रक ध्वंस वास्तविक बैंकक डेटा-गायब होब नहि, पात्रक अनुभव-दृष्टिमे सामाजिक जीवनक आक्रमण अछि।

ब्रूमक नाम गलत पढ़बाक घटना

ब्रूम वैश्विक मंचपर देहरीक स्लाइड देखैत अछि, सरयू देवीक नाम उच्चारण करैत अछि मुदा गलत पढ़ैत अछि। ई गलती आ माफीक भाषा बीच तनावपूर्ण स्थल अछि। मात्र गलत उच्चारणकेँ सर्वदा अपराध बनब आदर्श नहि; मुदा जखन शोषितक नाम न जानबाक इतिहास संस्थागत उपेक्षासँ जुड़ल हो, तखन सीखबाक प्रयत्न अर्थवान बनैत अछि। ब्रूमक ‘दुख अछि’क विनम्रता पर्याप्त नहि; बूढ़बा भूत पीड़ितक भाषामे सुनबाक आग्रह करैत छथि।

‘घर कहू’ खेलक चारि पाँति

बालकबड्डीक नूतन रूपमे एक बच्चा नाम बजैत, दोसर घर, तेसर भय आ चारिम सपना कहैत अछि। जँ विवरण पूरा नहि, नाम फेर अधूरा मानल जाइत अछि। ई खेल लोक-अभिलेखनक उत्कृष्ट नाटकीय पद्धति बनैत अछि, कारण कापी पर नाम लिखब जीवनवृत्तक समग्रता नहि। तथापि ‘घर, भय, सपना’क प्रत्येक बात उपलब्ध नहि होएब स्वाभाविक; कथा कैँ रिक्त स्थान स्वीकार करबाक पूर्वक विधानक संग एहि नूतन अपेक्षाक तादात्म्य साधबाक अछि।

देहरी पर अनुमति आ शर्त

रातिक खेलमे बटुकनाथ सरयूक देहरीपर ठाढ़ होइत अछि, चन्द्रपालक आगाँ उज्ज्वलक देहरी पाछाँ हटैत अछि, राघवक कात मुन्नाक देहरी काँपैत, लाउ लाखो देहरीपर अतिथि बनि नहि पबैत, ब्रूम नामक भाषामे अटकैत अछि। ई पाँच प्रतिक्रिया एके अपराधीसामूहिक मानकसँ अलग छथि। गामक देहरी स्वतः विक्रेय वस्तु नहि; आंगनमे प्रवेश लेल अनुमतिक शब्द आवश्यक बनैत अछि। एहि प्रतीकक कारण पीड़ितक घर खलपात्रक आत्मशुद्धिक मुफ्त मंच नहि बनैत।

समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

‘नामक देहरी’ उपन्यासक विचारात्मक रूपककेँ घरक खंडहर, धूलि, तकिया, फाटल कमीज आ वृद्धाक मौन जकाँ ठोस दृश्यसभमे रूपान्तरित करैत अछि। एहि अध्यायक उत्कृष्टता अपराधीक पूर्ण पश्चाताप घोषित नहि कऽ ‘देखबाक आरम्भ’क सीमा राखब अछि। कालगत यात्रा-पुनरावृत्तिक अस्पष्टता, देहरीक चमत्कारक अतिनियोजित अर्थ आ एक प्रकारक अलौकिक न्याय-समरूपता एकर जोखिम अछि। तथापि ‘नाम’क अब ‘घर’ होएब कथा-कला मे महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि।

प्रकरण १३७ | मूल अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

तीन गोलक भीतर सातम साँस

नाम देहरी धरि पहुँचलापर कथा ओकर भीतरक तीन नूतन प्रश्न उठबैत अछि—घर, भय आ सपना। अनन्या माटिपर तीन गोल बनबैत छलीह, बीचमे कंकड़ राखैत छलीह। ई आलेख केवल बाल-खेलक वस्तु नहि; कथानकक अबोधनीय जीवनवृत्त व्यवस्थित करबाक रूपरेखा अछि। वस्तुतः नाम व्यक्तिक बाहरी पहचान, घर सामाजिक स्थिति, भय वर्तमान असुरक्षा आ सपना अपूर्ण भविष्य बोध करबैत अछि। एतय ‘घर’ एहन सन्दर्भ बनैत अछि जेकर बिना मृतकक नाम सार्वजनिक सूचीमे एकाँगी भऽ सकैत अछि।

सरयूक चूल्हा आ प्रतीक्षारत बच्चा

सरयूक देहरी भीतर अधपकल भात, धुँआ आ मायक बाट जोहैत बालक देखाओल गेल अछि। बटुकनाथ प्रक्रिया सम्बन्धी साक्ष्य पूछए चाहैत अछि, मुदा चूल्हाक राखि ‘प्रतीक्षा’क अक्षर बनि ओकर कपारपर पड़ैत अछि। ई दृश्य अभिलेखीय समय आ गृहस्थ समयक भेद खोलैत अछि। रजिस्टरमे मृतक ‘अनुपस्थित’ लिखल जा सकैत, मुदा घरक भात, भोजनक समय आ बच्चाक प्रतीक्षा ओहि अनुपस्थितिक सामाजिक मूल्य प्रकट करैत अछि। किन्तु चूल्हाक अलौकिक दृश्यकेँ स्वतन्त्र न्यायिक प्रमाण नहि, कथा भीतरक नैतिक ऐन्द्रिय प्रतीक समझब आवश्यक अछि।

उज्ज्वलक घरक भीतर भयक आरोह

चन्द्रपाल उज्ज्वलक देहरी पर पहुँचैत अछि; पहिल जीतक हँसी सँ प्रारम्भ भऽ कर्ज, नकली गिरफ्तारी आ भयक अटकल साँसक क्रम सामने अबैत अछि। देविका तकियाक दाँतक निशान देखबैत छलीह। एतय कथा डिजिटल संसारक अमूर्त ऋणकेँ देहक पीड़ा बनबैत अछि। ‘केवल सलाहकार’क चन्द्रपालक बचावक वाक्य पूरा नहि निकलि पबैत। मगर जादुई भाषिक असफलता नीतिगत अथवा आपराधिक निर्णयक स्थाने नहि; कथा पात्रक आत्म-रक्षात्मक भाषाक कमजोरी प्रकट करैत अछि।

मुन्नाक मायक गमछा

राघव मुन्ना पासवानक घरमे पहुँचैत अछि; गमछा, बैंकक चिह्न आ ऋणक ईंटक वर्णन ओकर स्क्रीन-सम्बन्धी अनुभवसँ भिन्न अछि। मुन्नाक माय पुरान गमछा धरि पूछैत छलीह जे नौकरीक वादा एहन छल? एहि साधारण प्रश्नमे ठगीक पहिल प्रलोभनक सामाजिक सन्दर्भ खुलैत अछि। राघवक कूटशब्दक भाषा विफल होइत अछि,

किन्तु ओ एकटा पात्रगत स्मृति-परिवर्तन थिक। ई परिवारक वास्तविक क्षति औपचारिकरीत्या भरपाई भेल, से कहबाक आधार एहि दृश्य मे नहि।

घरक उपस्थिति विरुद्ध उपभोक्ता-डेटा

लाउक नजरे भारतक प्रत्येक ग्राहक बिन्दु एक घरक देहरी बनैत अछि। ओकर सलाहकार आय, खर्च, ऋण-प्रवृत्ति आ डिजिटल उपयोगक वर्णन दे सकैत अछि, मुदा ‘घर’क मानव-सम्बन्धी अर्थ नहि दैत। एहि संरचनामे आर्थिक डेटा निर्दोष गणनाक साधन सेहो होइ सकैत, पर कथा विशेष शोषणकारी प्रयोगक अमानवीकरण उजागर करैत अछि। लाउक प्रश्न ओकरा मुनाफासँ आगे सोचए बाध्य करैत अछि; पर ओ सभटा उत्तर पाबि लेलन्हि अथवा नैतिक रूपेँ बदलि गेलन्हि, एहन नहि।

ब्रूमक ‘म’ लिखबाक प्रयत्न

एडवर्ड ब्रूम अंग्रेजी वैश्विक वक्तृत्वसँ हटि ‘माफ करू’ जकाँ मैथिली अक्षर लिखबाक प्रयत्न करैत अछि; एलिना ग्रेव्स संग संवाद अछि। ओकर आँगुर चिक्कन कागचपर फिसलैत अछि। नामक भाषा सीखबाक एहि कठिन अभ्यासमे उच्च प्रतिष्ठाक मञ्च छोट पाठशाला बनि जाइत अछि। भाषा एतय पीड़ितक स्वीकृति खरीदबाक साधन बनि गेल तँ ओही पुरान बाजार-तर्क दोहराएत; अध्याय एखन कच्चा वाक्य, अशुद्ध उच्चारण आ अनिश्चित प्रयास रखैत अछि। सीखबाक प्रारम्भ आ वास्तविक उत्तरदायित्वक क्रिया अलग अछि।

भयक अपन-अपन कथा

सरयूक भय बच्चाक भूख, उज्ज्वलक भय बहिनक अपमान, मुन्नाक भय बिना बुझने अपराधी कहल जाएब, मीराक भय अपन प्रेमक दुरुपयोग आ नन्दक भय सत्यक लोपक रूपमे सामने अबैत अछि। एहि सूचीमे भय समान भावनात्मक ताप राखैतहुँ कारण-बिन्यास अलग अछि। आर्थिकी, सामाजिक लाज, लैंगिक निजता आ औद्योगिक हिंसाक विशिष्टता बचल रहबाक चाही। कथाकार लोक-शिक्षाक एक नैतिक सूत्र बनबैत छथि, मगर सभ पीड़ा एक कारणसँ उपजल कहि साधारणीकृत नहि करबाक जरूरत अछि।

भयक सम्मान, डरायल व्यक्तिक गरिमा

बच्चासभ प्रत्येक भयक आगे छोट दीप राखैत अछि; देविका डरायलाकेँ कायर, ठगलाकेँ मूर्ख अथवा ब्लैकमेल भेल व्यक्तिकेँ दोषी न कहबाक प्रतिज्ञा करबैत छलीह। नाट्यरूपेँ ई भयक पवित्रीकरण नहि; सामाजिक लज्जाक स्रोत पुनःनिर्धारित करबाक क्रिया अछि। भय समाप्त नहि होइत, पर एकान्त कम करबाक सम्भावना बनैत अछि। लेखक एहि समारोह द्वारा भाषाक सार्वजनिक परिवर्तन रचैत छथि। ठगीक जिम्मेदार संस्था, तकनीकी व्यवस्था आ वित्तीय दायित्व ताहिसँ स्वतः विलुप्त नहि।

राघवक माफीक रोकेल गेल प्रयास

राघव मुन्नाक मायक सामने झुकि गमछाक छोर छुबैत अछि। माय गमछा खींचि कहैत छलीह जे पहिने खोलल खाताक सच खोलू। ई अध्यायक सर्वाधिक जटिल पुनर्स्थापनात्मक क्षण अछि। पीड़ितक परिजन अपराधीक भावुक मुद्रा स्वीकार कऽ तुरन्त क्षमा करबाकेँ बाध्य नहि। ‘सच खोलू’क आग्रह माफीक वाक्यक बदला

व्यावहारिक उत्तरदायित्व माँगैत अछि। एहिठाम उपन्यास अपन बारम्बार जादुई आत्मपरीक्षाकेँ एक मानवीय अस्वीकृतिक कठोर धरातल दैत अछि।

लाउक ‘घर कतय?’ प्रश्नसँ पराजय

लाउ नक्शापर गढ़ नारिकेल खोलबाक प्रयास करैत अछि, मुदा ‘अहाँक घर कतय?’ प्रश्न स्क्रीनमे उभरैत अछि। ओकरा जीवनक स्थान-सम्पन्न विलासक बावजूद गृह-संबन्धक अर्थ बुझबाक संकट अछि। ई कथन-उपकरण ओकर वैश्विक सम्पत्ति आ सम्बन्धहीन अनुभूतिक विरोध गढ़ैत अछि। मुदा घरविहीनता नैतिक दोषक सामान्य प्रमाण नहि; कथाक केन्द्र उक्त शोषक पात्रक आर्थिक दृष्टि आ दूसराक घरकेँ बाजार बनौने कार्यक वैचारिक रिक्तता अछि।

सपना : मृतकक भविष्य के बाँचत?

अन्तिम गोल ‘सपना’ अछि। सरयू बच्चाक शिक्षा, उज्ज्वल देविकाक निर्भयता, मुन्ना पिताक गरिमा, मीरा प्रेमक सुरक्षाक आ नन्द पुल मजदूरक नाम चाहैत छथि। सामूहिक पाठ केवल शोक-स्मरण नहि रहि अग्रगामी कार्य बनैत अछि। तथापि मृतकक कल्पित सपना कैं केवल कथावाचकक घोषणासँ जीवनीगत अन्तिम प्रमाण मानल नहि जा सकैत। ई स्मृतिक जन-आकांक्षा अछि, जकरा वास्तविक परिजनक कथनसँ सन्दर्भित रखबाक जरूरत अछि।

घर-भय-सपनाक गाँठ आ कंकड़

बच्चासभ तीन गोलक कंकड़पर अक्षर लिखि जोड़ैत अछि, जे एक व्यक्ति-वृत्तक अधूरा तीन पक्ष दर्शबैत अछि। एतय सामान्य अभिलेखक नाम/तिथि से अलग कथन-प्रविधि अछि। एक नाम अनेक प्रश्नक श्रृंखला खोलैत अछि; रिकॉर्ड एक तथ्यसूची नहि, पाठकक श्रवणक नूतन अभ्यास बनैत अछि। तथापि सभ परिवार अपना भय अथवा सपना सार्वजनिक करए इच्छुक न सेहो होए; लोकस्मृतिक सार्वजनिक अधिकार निजताक मर्यादासँ सीमित रहबाक चाही।

न्याय नहि, गृहकार्य

सातम साँसक अन्तमे बूढ़बा भूत दण्ड सुनएबाक बदला ‘जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि कऽ आउ’ कहैत छथि। एहि वाक्यमे न्यायिक अन्तिमताक स्थाने अधूरी सामाजिक शिक्षा अछि। अपराधी पात्रसभकेँ सीखबाक अवसर भेटैत अछि, मुदा पीड़ितक भविष्य हुनकर प्रायश्चितपर निर्भर नहि रखल गेल। देविका, मीरा, सौम्या आदि अपन काज जारी रखैत छथि। ई द्विपथी संरचना कथाकेँ अपराधीक नाटकीय परिवर्तनक इंतजारसँ बचबैत अछि।

निष्कर्ष : तीन शब्दक बहुवाचकता

‘घर, भय, सपना’क उपलब्धि नाम-पाठक अमूर्त नैतिकताकेँ भोजन, गमछा, तकिया, ऋण, पाठशाला आ अस्वीकारक शारीरिक अनुभवमे बदलब अछि। अध्यायक मानवीय शिखर राघवक गमछा छुबबाक विफल क्षण अछि। पुनरुक्त अलौकिक प्रश्न तइयो कतिपय ठाम पूर्वानुमेय अछि, मुदा पीड़ितक परिवारक असहमतिसँ कथा वास्तविक मानवीय जटिलता बचबैत अछि। घरक उत्तर न देब मात्र अपमान नहि; भविष्यक सामाजिक जिम्मेदारीक कार्यसूची बनैत अछि।

प्रकरण १३८ | मूल अध्याय ३७ — तीन कंकड़

सातम साँसक तीन कंकड़ घर-घर

चन्ना गाछीक पिछला सातम साँसक तीन कंकड़ बच्चासभक जेबीमे रहि स्कूल, खेत आ घर धरि पहुँचैत अछि। एहि रूपमे जादुई खेलक वस्तु दैनिक जीवनक पोर्टेबल अभ्यास बनैत अछि। कंकड़क खनखनाहट स्मृति-उपकरणक नूतन ध्वनि अछि: गाछीमे उपस्थित भेल बिनु सेहो लोक घर, भय आ सपना पूछि सकैत अछि। कथाकार अनुभवक स्थलांतर गाछी-केन्द्रित अनुष्ठानसँ व्यापक सामाजिक क्रियामे दिखबैत छथि।

बटुकनाथक तीन घरक भेद

बटुकनाथक तकिया तर तीन कंकड़ भेटैत अछि। ओ अपन घर चुनैत मद्रासक पुरान गली, दिल्लीक सम्पन्न बँगला आ वकीलक फाइलक कमरा बीच उलझैत अछि। एहि तीन विकल्पसँ ‘घर’ केवल वर्तमान सम्पत्तिक पता नहि, परिवारक इतिहास, अपन बनाओल पहचान आ पेशागत निर्भरता बनैत अछि। विशेष रूपसँ पिताक पुरान श्रमक वृत्तान्त आत्म-दृष्टिक नूतन सम्भावना खोलैत अछि। मुदा एहि स्मृतिसभमे जे अनुभव पात्रक निजी चेतनामे प्रकट, ओकरा सम्पूर्ण बाहरी प्रमाणित जीवनवृत्त मानि लिहब उचित नहि।

चन्द्रपालक मेरठक छात्रावासक समय

चन्द्रपाल आधुनिक सुरक्षित स्क्रीनपर तीन गोल देखैत अछि, मुदा मेरठक छात्रावास आ छात्रजीवनक पुरान स्वर घुरैत अछि। ओकर पूर्वजीवनमे छोटे मुकदमा, अल्प पारिश्रमिक आ भिन्न भविष्यक विकल्प छल। कथाकार भ्रष्टाचारकेँ जन्मजात नियति नहि, अपन पेशागत चयनसभक श्रृंखला रूपमे देखए लगैत छथि। पुरान शमीम जेकाँ मित्रक उपस्थिति एहि निश्चयकेँ बल दैत अछि जे एकहि अध्ययनसँ भिन्न नैतिक काम चुनल जा सकैत अछि।

राघवक घरक नकारात्मक सूची

राघवक घरमे पुरान चिट्ठी, फोटो वा डायरी नहि; पत्नी ओकरा छोड़ि चुकली, पुत्र ‘पिताजी’क बदला ‘साहब’ कहैत अछि। ई विवरण पिछलाक तकनीकी मौनक विषयकेँ पारिवारिक सम्बन्धक क्षरणसँ जोड़ैत अछि। ओ गोपनता के सुरक्षा कहैत छल, मुदा अपन घरक स्मृतिक माध्यम सेहो मेटा देने अछि। एहि मनोवैज्ञानिक चित्रणमे वाचाल आ मौन जाल-चालक एक-दोसरासँ अलग होइत छथि। निजी परिवारक टूटन अपराधक कारण अथवा प्रायश्चितक प्रमाण स्वतः नहि; तकरा राघवक आत्म-दृष्टिक घटना मानल जाए।

लाउक समुद्री शहरक सातम तल

लाउ शीशाघरक सातम तलपर अनेक देशक बजार-रिपोर्ट बीच बैसल अछि। लत, बेरोजगारी, कम कानूनी प्रभाव आ तेज लाभ ओकर आकलनक प्रमुख पद छथि। तीन कंकड़ ओकरा पूछैत अछि जे लाभ-पात्रक घर कोन मानवीय सम्बन्धसँ बनैत अछि। कथावाचक बाजारक भूगोल आ घरक भावनात्मक भूगोल एक फ्रेममे रखैत छथि। एतय डाटा-सूत्रक सटीक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत नहि; ई पात्रक सांकेतिक लाभ-मानचित्र अछि।

‘धूर्तक घर सेहो होइत अछि?’

पाठशालामे बालक पूछैत अछि जे अत्याचारीसभक घर सेहो होइत अछि? बूढ़बा भूत उत्तर दैत छथि जे होइत अछि, मुदा लोक ओकरा छोड़ि दैत अछि। ई कथन खलनायककेँ केवल दानव बनाय परित्याग करबाक सरल वृत्ति

पर प्रश्न अछि। अत्याचारीक जीवनक पूर्ववृत्त बुझब ओकर कृत्यकेँ न्यून महत्व देब नहि। कथात्मक जटिलता नैतिक बहिष्कार आ कारणगत अनुसंधानक बीच सन्तुलन माँगैत अछि। एतय शिक्षाक अर्थ शत्रुकेँ सम्मानित ठहरायब नहि, ओकर निर्णयक इतिहास खोजब अछि।

गोपक थैलीमे उत्पत्तिक दस्तावेज

गोप कुमार पुरान टिकट, छात्रावासक रसीद, प्रशिक्षणकार्ड, प्रथम नौकरीक परिचयपत्र आ फोटो निकालैत अछि। ओ स्पष्ट कहैत अछि जे ई सभ पूर्ण प्रमाण नहि, आरम्भक संकेत अछि। एहि आत्म-सीमांकनमे उपन्यासक शोधात्मक शक्ति अछि। कथन-प्रविधि स्रोत-श्रेणी भेद रहल अवस्थामे जीवनवृत्तक दिशि बढ़ैत अछि। यदि समीक्षक एहि वस्तुसभसँ हर आरोपीक निश्चित अपराध-इतिहास पूरा सिद्ध घोषित कऽ देत, तँ गोपक सावधानी उलटि जायत।

शमीमक वैकल्पिक जीवनरेखा

चन्द्रपाल पुरान मित्र शमीमकेँ स्मरण करैत अछि। दूनू एकहि छात्रावास आ विधिशिक्षाक संसारमे छलाह, मुदा शमीम गरीबक मामलासँ जुड़ल रहला आ चन्द्रपाल भारी लाभक रास्ता चुनलक। ई समान प्रारम्भसँ भिन्न परिणामक कथात्मक प्रतिदृष्टान्त अछि। भ्रष्ट पात्रक चयनकेँ अनिवार्य सामाजिक नियति नहि कहि सकैत। शमीमक जीवनवृत्त विस्तार अल्प अछि; ओ मुख्यतः चन्द्रपालक आत्म-कथा मे नैतिक विकल्पक प्रतिमा छथि। एहि सीमाक संग दृश्य महत्त्वपूर्ण रहैत अछि।

ब्रूमक पुरान गोदामक गलत नदी-नाम

एडवर्ड ब्रूम अपन कम्पनीक पुरान गोदाम पहुँचिते परियोजनाक पट्टिका पर भारतीय नदीक नाम गलत लिखल देखैत अछि। वैश्विक प्रतिष्ठाक परिष्कृत भाषण आ स्थानीय स्थलनामक अपमानक बीच विरोध अछि। नदीक नाम गलत उच्चारण अथवा वर्तनीक त्रुटि संस्थागत दूरीक लक्षण बनैत अछि। मुदा एहन त्रुटि एकटाक बल पर सम्पूर्ण शोषणक प्रमाण नहि; कथा भीतर ई पूर्वक बहुस्तरीय आरोपक संग विशेष अर्थ पबैत अछि। ब्रूमक सुधारक आशय एकर बादक कामसँ जाँचबाक अछि।

राघव आ चन्द्रपालक परस्पर मौन

चन्द्रपाल राघवकेँ फोन कऽ कहैत अछि जे ओकरा मोन पड़ि रहल; राघव उत्तर दैत अछि जे हुनको। दूनू माफी नहि माँगैत छथि, आत्मसमर्पण नहि करैत, अपराधक विवरण नहि खोलैत। एहि अत्यल्प संवादमे एक नूतन चुप्पी अछि—पहिनेक योजनाबद्ध गोपनता सँ भिन्न, अप्रिय स्मृतिक उपस्थिति। कथा एहि छोट क्षणकेँ पूर्ण नैतिक उद्धारक घोषणा न बनबैत; केवल आन्तरिक परिवर्तनक प्रथम शर्त देइत अछि।

पाठशालाक दृष्टि खलपात्र दिस

देविका बच्चासभकेँ चन्द्रपालक पहिल ठगीक कथा बुझबैत छलीह, आरुणि आ गोप पहिले जीवनवृत्तक संकेत खोजैत छथि। एहि बदलावमे नागरिक शिक्षाक लक्ष्य केवल ठगी-रोकथाम नहि, शोषकक उन्नतिक इतिहास बुझब सेहो अछि। मुदा पढ़एवला बच्चाक अगाँ आरोपीक अतीत प्रस्तुत करिते लोकक अनेक भिन्न भूमिकाक सावधानीपूर्वक पृथक्करण अपेक्षित अछि। कथा आत्मचेतन अछि जे दस्तावेजक सब अंश समान प्रमाणिक नहि।

आठम साँसक खेल-विराम

चन्ना गाछीमे भूतक कबड्डी एहि राति नहि होइत; बच्चासभ खेल छोड़ि अध्ययन करैत छथि। ई आयोजनक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि। अन्य अध्यायसभमें खेल-साँस सतत चलैत छल, एतय ‘विराम’ जानकारी जुटेबाक साधन होइत अछि। आख्यानक गति जादुई प्रतियोगितासँ स्रोत-खोजक शान्त कार्यमे धीम होइत अछि। एही विरामसँ सामान्य पाठक बुझैत अछि जे न्याय-कथाक साहस घटनाक शोरमे नहि, कभी धीरे शोधमे सेहो अछि।

शत्रुक चेहरा बचाएब : नैतिक सीमा

अनन्या कहैत छलीह जे जकरा हराबय चाहैत छी, ओकर घर सेहो बुझू, नहि तँ जीत नूतन अपराध बनि सकैत अछि। ई संवाद प्रतिशोधक निषेध मात्र नहि, सत्ता-पट बदललापर प्रतिपक्षकेँ पूर्ण अमानवीय करि देबाक जोखिम चिन्हैत अछि। मुदा एहि सहानुभूतिपूर्ण युक्ति सँ पीड़ितक न्यायिक दावा, सुरक्षा वा निजताक अधिकार घटबाक नहि चाही। शत्रुक घर बुझब न्यायिक उत्तरदायित्वक बदला नि:शुल्क क्षमाक याचना नहि।

समग्र मूल्यांकन

‘तीन कंकड़’क उपलब्धि खलपात्रक मनोगत संकटकेँ व्यवस्थित पूर्वकथा-खोजमे बदलनाइ अछि। पिताक गली, शमीमक चुनाव, राघवक पारिवारिक रिक्तता, ब्रूमक गलत नदी-नाम आ गोपक असम्पूर्ण दस्तावेज—सभ मिलि शोषणक व्यक्तिगत इतिहासक अलग-अलग प्रवेश-द्वार छथि। शिल्पगत जोखिम ई जे प्राय: प्रत्येक पात्रक अतीतमे नाम सम्बन्धी एक सहज नैतिक पाठ मिलि जाइत अछि। तौ आठम साँसक मौन आ क्षमा-विहीन सूक्ष्म वार्तालाप कथा केँ अति-सन्तोषजनक समापनसँ बचबैत अछि।

प्रकरण १३९ | मूल अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

नाम लिखबाक बाद पढ़बाक नूतन शर्त

आठम साँसपछाति गाछीमे दू दिन खेल बन्द रहैत अछि। बच्चासभ नामक अभिलेख लिखि चुकल छथि, तौ बूढ़बा भूत उच्चारणक अलग आवश्यकता बतबैत छथि। एहि विराममे लिखित अभिलेख आ लोकक कण्ठक भेद खुलैत अछि। लिपिक प्रमाण व्यक्तिक सम्पूर्ण स्मृति नहि; नाम सही संबोधित कएनाइ सम्बन्धक एक क्रिया अछि। मुदा ‘गलत पढ़ब फेर मारब’क तीव्र उक्ति सभी साधारण भाषा-भिन्नताक सर्वकालिक नैतिक निर्णय नहि बनि जाए —विशेष सन्दर्भमे नाम बिगाड़ि व्यक्ति मेटाएबाक विरोध रूपमे एकरा पढ़बाक चाही।

तीन पातक विधान : घर, मृत्यु, अपमान

नाम-पाठक सभा नया नियम बनबैत अछि—प्रत्येक नामक घर, मृत्यु आ अपमान पढ़ल जाए। पहिनेक ‘घर, भय, सपना’क तीन कंकड़ आ एतुक्का ‘घर, मृत्यु, अपमान’क त्रयी एक समान नहिं। पहिल व्यक्ति अथवा परिवारक आन्तरिक जीवन, दोसर मृतकक ऐतिहासिक लोप आ सामाजिक अपमान पर केन्द्रित अछि। एहि परिवर्तनमे अभिलेखक उद्देश्य व्यापक होइत अछि, मगर लेखन-नियमक स्थिरता पर प्रश्न उठैत अछि। एक वाचिक उपदेश बदलैत अछि कि अलग उद्देश्य लेल नूतन सूची बनैत अछि, ई पाठ स्पष्ट रूपेँ चिन्हित नहि करैत।

भोला नटक नाम आ बहिनक आगमन

भोला नटक सही उच्चारणक बाद गाछीक बाहरी गोड़पर धुँधली स्त्री प्रकट होइत छलीह, जे हुनकर बहिन होएबाक बात कहैत छलीह। नाम उच्चारल गेल तखन रास्ता भेटबाक जादुई विधान दृश्यरूप पबैत अछि। एहि घटनामे दूर जिलाक श्रमिकक पारिवारिक सूचना नष्ट भऽ गेल छल; मौखिक स्मृति तकर खोजक प्रेरणा बनैत अछि। मुदा धुँधली स्त्रीक प्रकट होएबक लोक-विश्वासी दृश्यकेँ प्रत्यक्ष दस्तावेजी पहिचानक पूर्ण परीक्षण कहि नहि सकैत। कथामे अज्ञात परिवारक दावा एक नूतन खोजक आरम्भ अछि।

‘सरयू महतो, पुरुष, अनुपस्थित’ : अभिलेखक हिंसा

एहि अध्यायमे सरयूक सरकारी प्रविष्टि ‘सरयू महतो, पुरुष, अनुपस्थित’ कहल गेल, बच्चासभ ओकर स्त्री-मजदूर रूपमे नाम पढ़ैत अछि। पूर्वक अध्यायसभमे बारम्बार ‘सरयू देवी’ प्रयोग भेल छल। ई केवल सम्मानसूचक उपाधि बदलनाइ नहि मानि लेबाक चाही, कारण ‘महतो’ आ ‘देवी’क भिन्न नामरूप संग लिङ्ग-प्रविष्टिक त्रुटि सेहो पाठमे अछि। सम्भवतः लोकनाम, वैवाहिक परिचय आ सरकारी बहीक अन्तरक कथात्मक उदाहरण; मुदा स्रोत ई सम्बन्ध स्पष्ट नहि करैत। समीक्षा ई नामविरोध खोलि राखैत अछि। कथाक नैतिक सार गलत लिङ्ग-लेखनद्वारा स्त्री-श्रमिककेँ अनुपस्थित बनएबाक हिंसा अछि।

उज्ज्वलक नाम पढ़िते देविकाक कठिन स्वर

देविका भाइक पूरा नाम, बेटा–विद्यार्थी रूपक सामाजिक पहिचान आ स्क्रीन-ठगीक पीड़ा सँ जुड़ल अर्थ कहैत छलीह। हुनकर स्वर टूटबाक सम्भावना अछि; अनन्या हाथ पकड़ैत छलीह। बच्चासभक मौन तालीक विकल्प बनैत अछि। एहिमे नाम-पाठ सार्वजनिक अनुष्ठान होइतहुँ परिवारक शोक के दबबैत नहि। उज्ज्वलक मृत्यु सम्बन्धी पहिने वर्णित जलकाठ, लटकल देह आ स्वप्नक रस्सी-छवि बीचक अन्तर एतय नव आख्यानसँ निर्णायक रूपेँ मिटैत नहि; कथा भावात्मक नाम-पाठक स्तर पर रहैत अछि।

मुन्नाक जीवित नाम आ बैंकक मोहर

मुन्ना पासवानक नाम पढ़िते पातपर बैंक-मोहर बनि मिटि जाइत अछि। मुन्ना जीवित पात्र छथि; हुनकर नाम मृतक-सूचीक अर्थमे नहि, वित्तीय प्रयोग द्वारा अपमानित व्यक्तिक सामाजिक पुनर्पहिचान लेल आवैत अछि। ‘तीन पातक विधान’मे मृत्यु अनिवार्य बिन्दु बनलाक कारण एतय एक संरचनात्मक प्रश्न उठैत अछि—जीवित पीड़ितक लिपिबद्ध इतिहास केना वर्गीकृत होएत? मीरा बादमे जीवितक नामो बचएबाक बात कहैत छलीह। एहि प्रसारक महत्त्व समझिते मृतक-अभिलेख आ पीड़ित-सुरक्षा संग्रहकेँ पृथक श्रेणी देबाक आवश्यकता बुझाइत अछि।

‘घर अज्ञात’ सँ ‘घर खोजबाक बाकी’

बटुकनाथ भोला नटक बगलमे ‘घर अज्ञात’ लिखैत अछि, मुदा जादुई कागच कारी होइत अछि। ओ लिखित सुधार करैत अछि—‘घर खोजबाक बाकी’। ई अत्यन्त सूक्ष्म, आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि। पहिल वाक्य अज्ञानकेँ अन्तिम स्थिति मानैत अछि; दोसर जाँचक काम बचल स्वीकारैत अछि। अभिलेखक रिक्त स्थान

भरबाक बिना सत्यक दावा नहि। कथाकारक जादुई कागच एहि पद्धति पर अपनी नैतिक प्रतिक्रिया दैत अछि; साहित्यिक शिक्षा रचनात्मक अछि, मुदा तथ्य-जाँच मनुष्यक वास्तविक श्रम माँगैत अछि।

चन्द्रपालक उज्ज्वलक कारण-शृंखला

चन्द्रपाल ‘आत्महत्या’ लिखैत अछि, पर्दा ओकरा कारण, ऋण, खेल आ खेल चलौनिहार जालपर अगिला प्रश्न करैत अछि। एहि प्रश्न-क्रममे मृत्युकेँ मात्र व्यक्तिक निर्णयक संकुचित कारण न मानि आर्थिक-डिजिटल दबावक सम्भावित वातावरणमे रखल गेल अछि। तथापि कथामे उज्ज्वलक वास्तविक मृत्युदृश्यक परस्पर विरोध पहिनेसँ अछि; ‘आत्महत्या’ शब्द लिखला मात्र विस्तृत चिकित्सकीय वा न्यायिक कारण सिद्ध नहि होइत। चन्द्रपालक अन्ततः अपन जालक भूमिका मानबाक दृश्य स्वयं अपराधी पात्रक आन्तरिक स्वीकृतिक रूपमे पढ़ल जाए।

राघवक ‘नाम चोराओल गेल’

राघव मुन्नाक परिचय केँ ‘खच्चर-खाता’ सँ बदलैत-बदलैत ‘नाम चोराओल गेल’ धरि पहुँचैत अछि। एहि वाक्यक बनबाक क्रम विशेष अछि: पहिने आर्थिक उपकरणक पद, दोसर सहमतिक प्रश्न, तेसर पहचान-अपहरणक नैतिक भाषा। पात्रक लिखनीमे अर्थ धीरे-धीरे परिवर्तित होइत अछि। मुदा मुन्नाक वास्तविक सहमति, फॉर्मक हस्ताक्षर आ जालक जानकारीक स्तर बिना दस्तावेजी जाँचक अन्तिम रूपेँ तय करब समीक्षाक काज नहि; राघवक कथन स्रोतपरिस्थितिक एक पक्ष अछि।

हुलासीक मृत्यु सम्बन्धी प्रतिवाद

हुलासी स्वयं सभामे अपन नाम पढ़बाक अनुरोध करैत छलीह। हुनका विषयमे आत्महत्या, प्रेम, पाप आ इनारक अनेक कथा चलैत छल; ओ कहैत छलीह जे हुनका इनारमे खसब दुर्घटना छल आ आत्महत्या कहल गेलाक कारण अन्तिम संस्कारक अधिकार प्रभावित भेल। ई कथन लोक-निन्दाक विरुद्ध मृतका द्वारा अपन कथा पर अधिकारक अद्भुत क्षण अछि। मुदा अलौकिक गवाहीक रूपकेँ बाह्य ऐतिहासिक सत्यापनसँ अलग राखब जरूरी अछि। रचनाक शिल्प-सिद्धि अनेक सार्वजनिक संस्करणक बीच हुलासीक अपना स्वरक पहली स्पष्ट प्रत्युत्तर होइत अछि।

धूर्तक हस्ताक्षरक धुँधलाहट

बूढ़बा भूतक नियम अछि जे दोसरा नामक अपमान करनिहार अपन नामक अधिकार गमाएत। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव आ लाउक विभिन्न पत्रपर नाम धुँधला पड़ैत अछि। एतय नायकक प्रतिकार देहपर हिंसा नहि, हस्ताक्षरक स्थिरतामे क्षरण अछि। बाह्य विधिक दस्तावेज स्वयं अदृश्य अक्षरक चमत्कारसँ संशोधित होइत, तकरा यथार्थपरक सरकारी रेकर्ड कहब अनुचित; कथा अपराधी द्वारा इतर व्यक्तिक नाम बिगाड़बाक नैतिक प्रतिफल कल्पित करैत अछि।

अनुवाद, निजता आ अभिलेखक साझा कठिनाइ

सौम्या ‘तीन पातक विधान’ लोकभाषामे फैलाबैत छलीह; निशांत फोन-संख्या नाम नहि मानबाक बालनियम सुनैत अछि; मीरा अनुमति बिना छीनल नाम सम्मानसँ घुराबय चाहैत छलीह। एहि अनेक कार्यमे एक अतिरिक्त सीमा उभरैत अछि: जीवित ब्लैकमेल-पीड़ितक नाम सार्वजनिक कएनाइ हुनकर निजताकेँ फेर जोखिममे डालि

सकैत अछि। अतः नाम बचाबब आ नाम उजागर करब समान क्रिया नहि। कथा सामग्रीक सहमति-सम्बन्धी नैतिकता अपनहि निजताक शपथसँ माँगैत अछि।

लोथ पंक्ति-सुधारक बनैत अछि

रातिक नाम-पाठपछाति बच्चासभ थाकि गाछीमे सुतैत अछि; लोथ, जे एक समय दर्शक छल, कियो गलत पढ़िते धीरे-धीरे मुँह हिला सुधारक भूमिका लैत अछि। एहि पात्रक दीर्घ भूमिकावृद्धि समीक्षा लेल उल्लेखनीय अछि। भूतक ज्ञान केवल बड़ी नाटकीय अदालतमे नहि; छोट उच्चारण-संशोधनक काममे बाँटल गेल अछि। जादुई लोक के सामुदायिक पाठशालाक सहयोगी बनब कथा के फेर सामाजिक दिशा दैत अछि।

प्रकरणक समग्र स्थिति

‘नामक उच्चारण’ शुद्ध शब्दोच्चारसँ बहुत आगाँ भाषिक उत्तरदायित्व, स्त्री-श्रमिकक गलत अभिलेखन, जीवित पीड़ितक सम्मान, हुलासीक स्वयं-वर्णित मृत्यु आ खोए परिवारक अन्वेषणक कथा अछि। शिल्पक सर्वाधिक बल हुलासीक आत्म-प्रतिवाद आ ‘घर खोजबाक बाकी’क संयमित संशोधनमे अछि। एकर सीमा अत्यधिक निश्चित नीतिवाक्य, जादुई दण्डक पुनरावृत्ति आ सरयू नामरूपक अस्पष्ट निरन्तरता अछि। एकरा सिद्धान्तक एकरूपी सफलता नहि, जटिल स्रोत-इतिहासक नूतन प्रवेश रूपमे पढ़ब उचित।

प्रकरण १४० | मूल अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

नवम साँससँ दसम साँसक धीम संक्रमण

‘बीजक शान्ति’ नाम-पाठक थकानक बादक ठहरावसँ शुरू होइत अछि। ई स्थायी समाधानक शान्ति नहि, माटिभित्र अंकुराक अपेक्षा राखि ठाढ़ अन्तराल अछि। मृतकक नाम उच्चरित भेल, मुदा हुनकर घर, श्रम आ सपना सम्पूर्ण रूपमे नूतन अर्थ नहि पओलक। कथाकार नूतन प्रश्नक लेल आरो धीम कालानुभूति बनबैत छथि। पूर्वक खेलक तीव्र साँस आब रोपनीक अदृश्य जैविक समयमे बदलैत अछि। एहि शैलीगत बदलावमे क्रियाक गति घटितहुँ भविष्यक सम्भावना बढ़ैत अछि।

अनन्याक ‘भय गुप्त राखल तँ व्यापार’

देविका पाठशालामे भयक वाणिज्य बनबाक लघु नियम पढ़बैत छलीह; बच्चाक प्रश्नपर स्पष्ट करैत छलीह जे भय कहि देलासँ भय तुरन्त समाप्त नहि, ओकर नियन्त्रण बदलि सकैत अछि। एहि उत्तरमे पूर्वक प्रचारात्मक सूत्रसभसँ बेसी मनोवैज्ञानिक संयम अछि। कथा पीड़ितक भयक वास्तविक निरन्तरताकेँ स्वीकारैत अछि। पीड़ितकेँ तुरन्त निर्भय होएबाक आदेश नहि, विश्वासपात्र सम्बन्धक सम्भावना देल जाइत अछि। उपन्यासक सामाजिक शिक्षामूलक काव्यात्मकता एतय प्रायोगिक वाक्यक छोट कठोर अर्थ पबैत अछि।

सिमकार्डक बीज : लोपसँ अंकुर

राघवक कोठरीमे सिमकार्ड फूटि छोट बीज बनैत अछि, प्रत्येक बीजसँ अधूरा नामबला पात निकलैत अछि। तकनीकी विस्मरणक योजना प्रकृतिक पुनर्जन्मक प्रतिमामे बदलबैत अछि। ई चमत्कार स्रोतसाक्ष्यक डिजिटल पुनःप्राप्ति लेल यथार्थपरक उपाय नहि; फाइल हटाओलासँ सामाजिक स्मृति मेटि नहि सकबाक आख्यानबोध

अछि। अधूरा नामक पात बतबैत अछि जे स्मृति जनमेबाक बादो काम शेष रहैत अछि; अंकुरक अर्थ तैयार फसल नहि।

ईराक पत्रक पहिल मैथिली वाक्य

ईरा हार्वर्डक पुस्तकालयमे नैतिक भाषण बनाम नामक प्रतिरोध पर पत्र लिखैत छलीह। अंग्रेजीमे लिखबाक इरादा होइतहुँ पहिल वाक्य मैथिलीमे अबैत अछि। ई भाषा-द्वैध कथाक महत्त्वपूर्ण प्रतिबिम्ब अछि। देशान्तरिक बौद्धिक मञ्चकेँ अपन गामक कथन-ध्वनि सँ प्रश्नित करब ईराक कथात्मक कर्तृत्व अछि। मुदा भाषिक मूलरूपक संरक्षण आ अनुवादक असम्भवता एकहि बात नहि; ईरा जे शब्द अनुवादसँ इन्कार करैत, ओ साहित्यिक स्वाधीनताक क्षण अछि, समस्त भाषान्तरक वास्तविक निषेध नहि।

सौम्या आ रमैय्याक लोकभाषी पठन

सौम्या दफ्तरी पद—वित्तीय अनियमितता, अनधिकृत श्रमिक, आपूर्ति व्यय—क बगलमे मानवीय परिणाम लिखैत छलीह। रमैय्या सुब्रमण्यम एहि अनुवाद-कार्यक सहभागी बनैत छथि। एतय भाषा केवल शैलीगत सौन्दर्य नहि; अर्थक सार्वजनिक पहुँचक प्रश्न अछि। मुदा अनुवादक लोकमर्मक खातिर तकनीकी शब्दक मूल वैधानिक अर्थ मेटबो नहि चाही। एतय साथ-साथ मूल पद आ लोकभाषी व्याख्याक सहउपस्थिति पाठकक जाँच अधिकार बचबैत अछि।

गोपक असन्तोष : बिल एखन बचल

गोप बुझैत अछि जे नाम-अभिलेख, पाठशाला आ निजताक शपथ चलितहुँ ब्रूम, लाउ, बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघव अपन-अपन कारोबारक सुरक्षित ठाममे छथि। भूतक कथन ‘गोहिक बिलमे पानि पठाउ’ एहि असमानता के नूतन उपाय बनबैत अछि। ‘पानि’ एतय ज्ञानक प्रसार, न कि शारीरिक बदला अथवा निजी हानि अछि। कथाकार लोकप्रतिरोधक सफलता जाहि बिंदुपर उत्सवमे बदलि सकैत छल, ओतय पुनः संरचनात्मक अनवरतता याद करबैत छथि।

‘पानि बिलमे’क सामाजिक मार्ग

दसम साँसक योजना हर गाम, स्कूल, परदेशी परिवार, अदालतक प्रतिक्षालय, बैंक आ गृहस्थ सम्बन्धमे नाम-पाठ, भय-पाठ, खाता-जाँच आ विकासक शब्दक परीक्षण पहुँचाएब अछि। एहि योजनामे कियो एक नेता नहि। सामुदायिक पाठशालाक प्रयोग सामाजिक नेटवर्कक विकल्प बनि उभरैत अछि। तथापि प्रसारक घोषित भौगोलिक परिधि आ वास्तविक लाभार्थीसभक अन्तिम संख्या समान नहि; पाठमे किछु स्थानक ठोस दृश्य अछि, सम्पूर्ण अभियानक सत्यापित आँकड़ा नहि।

‘सही नाम पकड़ू’क नूतन भूमिकाखेल

अनन्या बच्चाकेँ अपराधी, पीड़ित, गवाह आ न्यायाधीशक भूमिका देत खेल सिखबैत छलीह। अपराधी नाम बिगाड़ैत, गवाह सुधारैत, आ सही नाम पबिते पीड़ित फेर दौड़ैत अछि। ई खेलक रूप शिक्षण-विधाक उत्कृष्ट विकास अछि। पूर्वक कबड्डीमे मेटल नाम पुकारल जाइत छल; आब अलग कथन-स्थानक जिम्मेदारी अभ्यास

कराओल जाइत अछि। तौ अपराधीक अभिनय आ वास्तविक पीड़ितक अनुभव समान नहि; प्रतीकात्मक सफलतार्कें व्यक्तिक सुरक्षा-अधिकारक निश्चित परिणाम नहि मानब।

हुलासीक बचपनक अधिकार

हुलासी कहैत छलीह जे आत्महत्या, पाप, अपशकुन जकाँ परायी नामकरणमे हुनकर बचपन गुम छल; सही नाम सुनिते बचपन मोन पड़ैत अछि। एहि अनपेक्षित भावमे प्रेतक रूपक केवल मृत्यु-पीड़ाक प्रतीक नहि रहि एक जीवित-रहल जीवनक सम्पूर्ण स्मृति बनैत अछि। अध्याय ३८क स्वकथनक विकास एतय अधिक सूक्ष्म अछि। सामाजिक अपमानसँ मृत्यु-पछातियो मुक्ति खोजबाक कहानीक साथे बाल्यकालक निजी मानवीय स्वर जुड़ैत अछि।

बटुकनाथक पिता : भूगोलक नूतन अन्तर

एहि अध्यायमे बटुकनाथ केरलाक छोट कस्बामे अपन पिता द्वारा अदालत बाहर गरीबक नाम लिखबाक स्मृति अनुभव करैत अछि। अध्याय ३७मे मद्रासक पुरान गलीक उल्लेख छल। दुनू ठामक वास्तविक सम्बन्ध, परिवारक स्थानान्तरण अथवा अलग जीवनकाल पाठमे स्पष्ट नहि कएल गेल। एहि भौगोलिक अन्तरकेँ आलोचना अनुमानसँ सुलझबैत नहि; एक पात्रक भिन्न स्मृतिस्थल अथवा सम्भावित आन्तरिक असङ्गति रूपेँ राखैत अछि। मूल भाव—गरीबक नामकेँ ओकर भूमि-जकाँ मूल्य देब—समान अछि, मुदा भौगोलिक विवरण पृष्ठ-दर-पृष्ठ बदलैत अछि।

चन्द्रपालक ऑफलाइन प्रिण्टर

चन्द्रपाल लोकशिक्षाक विरुद्ध मानहानि-दावा तैयार करबैत अछि, मुदा ऑफलाइन प्रिण्टरमे अनपेक्षित नाम-सम्बन्धी लेखन प्रकट होइत अछि। ओ ‘प्रोग्रामिंग’क दोष दैत अछि, कर्मचारी मशीन ऑफलाइन कहैत अछि। ई घटना मानवीय नियन्त्रणक बाहरी तकनीकी व्याख्याक सीमा खोलैत अछि। कथाकार जादुई यथार्थक उपकरण पुनः चलबैत छथि; समस्या ई जे अनेको मशीनक एकहि प्रकारक स्वतः-लिखन प्रभाव धीरे-धीरे पूर्वानुमेय भऽ जाइत अछि। तौ चन्द्रपालक प्रतिहिंसात्मक नूतन मुकदमाक योजना देखबैत अछि जे ओकर नैतिक परिवर्तन अपूर्ण अछि।

बैंकक बाबूक लाल पेन्सिल

पाठशालामे बैंकक कर्मचारी मुन्नाक कथा सुनि पहिने नियमपूर्वक खाता खुलबाक बचाव करैत अछि। बच्चा प्रश्न करैत अछि जे नियम मनुष्यकेँ देखलक कि नहि। कर्मचारी घर जा रजिस्टर खोलेज; तीन संदिग्ध खाता लाल पेन्सिलसँ चिह्नित करैत अछि। एहि छोट दृश्य मे उपन्यासक शिल्पक निर्णायक परिवर्तन अछि: अलौकिक पत्रक बदला साधारण कर्मचारीक कर्म। तीन चिन्हित खाता अन्तिम अपराध-दोष निर्धारण नहि, आगे जाँचक संकेत अछि। लेकिन नैतिक प्रतिरोध पहिल बेर संस्था भीतर छोट संशयक काम बनैत अछि।

मृतक-जीवितक प्रतीक भोज

दसम साँसक रात्रिमे अदालतक बदला प्रतीकात्मक भोज अछि। प्रत्येक घरसँ चाउर, नून, पानि आ नाम-अभिलेखक पात राखल जाइत अछि। देविका उज्ज्वलक पातलग नून, मीरा दीप, सौम्या अनुवाद, ईरा मोहर-

विहीन कार्ड, गोप प्रतिलिपि आ अनन्या खड़िया रखैत छलीह। ई वस्तु-समारोह कथाक सामाजिक बहुकण्ठकेँ दृश्य बनबैत अछि। वास्तविक भात नहि खाएल जाइत; ई भोजनस्मृतिक सामूहिक स्वीकृति अछि। प्रत्येक वस्तु अलग श्रमक पहचान रखैत अछि, जाहिसँ नायक-केन्द्रिक सफलताक बदला अनेक व्यक्तिक योगदान दिखैत अछि।

‘आब’ : अपूर्ण शान्तिक कालादेश

अन्तिम भोरमे अनन्या ओसक बूँदमे मात्र ‘आब’ पढ़ैत छलीह। उपन्यास अतीतक नाम-स्मरण आ भविष्यक आशा के वर्तमानक नैतिक काजमे उतारैत अछि। नाम पढ़ू, डर बाजू, खाता जाँचू, बच्चाकेँ सिखाउ, मृतकक घर जाउ—ई अनेक आज्ञासूत्र कथाक समेकित नूतन आरम्भ बनैत अछि। मुदा अन्तिम पंक्तिमे कबड्डी फेर शुरू नहि, पूर्ण स्थगितो नहि; साँस रोकेल अवस्था कायम अछि। ‘बीजक शान्ति’ एक अन्तिम समाधान नहि, अँकुरबाक प्रतीक्षाक सघन समय अछि। उपन्यासक शिल्पगत सामर्थ्य यहीं अछि, जखनकि घोषणात्मक वाक्यक अधिकता एक वास्तविक पुनरावृत्तिमूलक जोखिम सेहो छैक।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : अध्याय ३२–३९क समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

एहि आठ अध्यायक रचना एक विस्तृत खेलक ‘साँस’मे विभाजित अछि। तेसर कबड्डी मृतक, जीवित बालक आ धूर्तक मोनकेँ तीन दल बनबैत अछि। चारिम साँस नाम उच्चारणक परीक्षा, पाँचम साँस ‘पूरा नाम’क शर्त, छठम साँस देहरी पर पहुँचबाक काज, सातम साँस घर–भय–सपना, आठम साँस कंकड़ द्वारा पूर्वजीवनक परीक्षण, नवम साँस सही उच्चारण, दसम साँस अंकुरक शान्ति आ वर्तमानक ज्ञान-प्रसार बनैत अछि। क्रम ई अछि, मुदा ई पूरा एकरेखीय निष्कर्ष नहि। खेल स्थगितो होइत अछि, फिरो अपना शब्द बदलैत अछि। एहना पुनरावृत्तिमे कथानक अपना प्रारम्भिक भूतकबड्डीकेँ सामाजिक शिक्षाक जीवनशैली बनबैत अछि।

सबसे बलवान कथा-क्षणसभ ओ छथि जाहिमे लोकक क्रिया अलौकिक घोषणासँ स्वतन्त्र ठोस भार लैत अछि: राघवक हाथसँ मुन्नाक माय गमछा खींचि लेब, बटुकनाथ द्वारा ‘घर अज्ञात’ काटि ‘घर खोजबाक बाकी’ लिखब, हुलासीक मृत्यु सम्बन्धी अपमानक प्रतिवाद, तीन कंकड़क माध्यमसँ शोषकक पूर्वकथा खोजब, आ बैंकक बाबू द्वारा तीन संदिग्ध खातापर लाल पेन्सिलक निशान। एतय न्याय ऊँच शब्दक उतार नहि, अपूर्ण सामाजिक जाँच आ सीमित व्यावहारिक हस्तक्षेप अछि। गोपक पुरान टिकट आ रसीदकेँ ‘पूर्ण प्रमाण नहि’ कहबाक संयम अभिलेखनकेँ विश्वसनीयता दैत अछि।

मूल पाठमे भेटल चारि प्रकारक अन्तर आलोचनात्मक रूपमे सुरक्षित रहबाक चाही। पहिल, ‘सरयू देवी’ सँ ‘सरयू महतो’ धरि नामरूप आ सरकारी बहीक ‘पुरुष, अनुपस्थित’ प्रविष्टिक सम्बन्ध पाठमे स्पष्ट तथ्यगत मिलान नहि पबैत। दोसर, बटुकनाथक अनेक यात्रा आ ओकर पिता-स्मृतिक मद्रास/केरलास्थित भूगोल एक क्रमबद्ध तिथि सहित नहि बताओल गेल। तेसर, उज्ज्वलक मृत्यु-छवि प्रारम्भिक जलकाठसँ बादक रस्सी-छविक संग अस्पष्ट मेल रखैत अछि। चारिम, अध्याय ३६क ‘घर–भय–सपना’क नियम अध्याय ३८मे ‘घर–मृत्यु–अपमान’ बनैत अछि; दुनू अलग उद्देश्यक सूची भऽ सकैत, मुदा स्पष्ट रूपेँ तकर प्रयोग-सीमा बताओल नहि गेल अछि। हुलासीक

अपना स्वर ओकर विषयमे चलल आत्महत्या-कथाक प्रतिवाद करैत अछि; एकरा पात्रक नूतन महत्त्वपूर्ण गवाही मानल गेल, बाह्य न्यायिक प्रमाणपत्र नहि।

कथात्मक चुनौती सेहो खुलल अछि। स्वतः उभरैत पात, प्रिण्टरक अक्षर, काँचक दरार आ जादुई आदेश लगातार एके प्रकारक नैतिक उत्तर दैत अछि; अतः पाठक कखनो पहिले सँ अपेक्षा करि सकैत छथि जे शोषकक तर्क हारत। जाहि क्षण मृतकक परिवार, बैंकक साधारण कर्मचारी अथवा कोनो बच्चाक अनिश्चित प्रश्न सामने अबैत अछि, ओहि क्षण कथा अधिक अनिर्णीत आ जीवन्त बनैत अछि। उपन्यासक आन्तरिक असङ्गतिकेँ सर्वथा योजनाबद्ध सिद्धान्त मानि सुन्दर बना देबो, अथवा सभ शिल्पगत आवर्तनकेँ मात्र त्रुटि कहि हटेबो, दुनू अपर्याप्त होएत। कथा-काल, दृष्टिकेन्द्र, स्थान, वाणी, लोकगीत, जादुई यथार्थ आ स्रोत-विरोधक स्वतन्त्र परीक्षण एहि विश्लेषणक आधार रहल अछि; नव्य-न्यायीय प्रमाणपरीक्षा नहि।

प्रकरण १४१ | मूल अध्याय ४० — ओसक अक्षर

दसम साँससँ एगारहम साँसक संक्रमण

‘बीजक शान्ति’क अन्तिम ‘आब’ शब्द ‘ओसक अक्षर’मे एगारहम साँसक आरम्भ बनैत अछि। कथावाचक एहि बिन्दुपर पहिनेक नाम-पाठकेँ अपूर्ण मानि एक नूतन शर्त दैत छथि: मृतकक नामक संग ओकर जीवन, भोजन, डर, यात्रा आ अपूर्ण आवश्यकता पढ़ल जाए। ई कथा-कालक आवर्त मात्र नहि, कथनवस्तुक कक्षा बदलनाइ अछि। अभिलेख नामक अनुक्रमसँ दैनन्दिन वस्तुक रचना बनैत अछि। जादुई ओस पढ़िते बच्चाक हथेली भीजैत अछि; श्रवणक बाद स्पर्शक आग्रह प्रबल होइत अछि। मुदा ओसक अक्षर इतिहासक स्वतः प्रमाणित लेखा नहि, गामक सामाजिक स्मृतिक जादुई वाहक अछि।

नाम-वस्तु-कथाक त्रिस्तरीय अभिलेख

अनन्या प्रत्येक नामक संग एक वस्तु जोड़बाक प्रस्ताव करैत छलीह। पुरान पत्र, अस्पतालक पर्ची, पासबुकक प्रति, बसक टिकट, उज्ज्वलक फोनक फाटल शीशा आ मीराक स्वेच्छासँ साझा कएल कागच गाछीमे अबैत अछि। नाम पातपर, वस्तु माटिपर आ कथा हवामे—ई त्रिस्तरीय स्थानविधान रचनाक उल्लेखनीय शिल्प अछि। संख्यात्मक मृतक-सूची दैनन्दिन अनुभवक नूतन श्रृंखला बनैत अछि। जे वस्तु वास्तविक स्रोत अछि, ओकर अलग पहिचान बचाएब जरूरी; जादुई दृश्य, लोकस्मृति आ बहीक प्रति सर्वथा समान प्रमाणिक दर्जा नहि रखैत।

भोला नटक टिफिन आ श्रमक स्वाद

भोला नटक टिफिनक कथा जखन भात, नून आ पियाजक गन्ध धरि पहुँचैत अछि, तखन भूतक भूख घटबाक अलौकिक दृश्य बनैत अछि। एहि प्रतीकमे मृतक केवल दुर्घटनाक एक अंक नहि, भोजनक आदति रखनिहार श्रमिक अछि। गीतक सामूहिक लय आब रसोईक वस्तुक व्यक्तिगत स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। ‘भूख आधी घटब’ शाब्दिक भौतिक राहत नहि, पहिचानक अधूरापन कम होएबाक लोकविश्वासी अभिव्यक्ति अछि। टिफिनक प्रासंगिकता एहि कारण गहन अछि जे ई संसाधन निर्माणक ठोस देहश्रम जोड़ैत अछि, केवल भावुक प्रतीक नहि।

सरयू महतो, कमली आ पारिवारिक परिचयक विरोध

अध्याय ४०मे सरयू महतोक बेटी कमली एक टूटल पायल आनि बतबैत छलीह जे ओकर ‘बाबूजी’ पुल लग गेलाह, माँक पायल मरम्मत कराबए कहने छलाह आ पिता नहि घुरलाह। एक अध्याय पहिने ‘सरयू महतो, स्त्री, मजदूर’क नाम-पाठ भेल छल; पूर्वक ‘सरयू देवी’ सेहो स्त्री-पुलमजदूर रूपमे वर्णित छथि। एतय ‘सरयू महतो’ पिता होएबाक विवरण पहिनेक स्त्री-परिचयसँ सीधा टकराइत अछि। ई केवल सम्मानसूचक उपाधि बदलबाक समस्या नहि। अलग सरयू नामक दू पात्र छथि कि एक पात्रक लिङ्ग-वृत्तान्त बदलिए गेल, मूल पाठ स्पष्ट नहि करैत। आलोचना कमलीक पायल-दृश्यक मर्म स्वीकार करैत, एहि वास्तविक पहचान-असङ्गतिकेँ खुलल राखैत अछि।

पायलसँ मृतकक पुनःउत्थानक मात्रा

कमलीक हाथसँ आनल पायल माटि छुबिते टुनटुनाइत अछि; सरयू महतोक जलसमाधिसँ एक इञ्च ऊपर उठबाक प्रतीकात्मक वर्णन एहि ध्वनिसँ जुड़ल अछि। कथाकार पितृ-वियोगक सम्पूर्ण प्रतिकर नहि करैत, अत्यल्प ‘एक इञ्च’ उठबाक छवि चुनैत छथि। ई मापन सन्तुलित लगैत, कारण समाजक दशा एक झोंकामे बदलि नहि जाइत। तथापि कमलीक परिवार सम्बन्धी मूल विरोधक कारण कथानकक भावात्मक शक्ति आ तथ्यगत अस्पष्टता एकसाथ उपस्थित रहैत अछि। ध्वनिक सूक्ष्मता, विशेषकर घुँघरूक हलुक टुनटुनाहट, नामक अमूर्त सम्मानकेँ घरेलू वस्तुक आवाज दैत अछि।

मुन्नाक खाता : नाम आ नियन्त्रणक अलग मालिक

मुन्ना पासवान पाठशालामे स्पष्ट करैत अछि जे खाता ओकर नामपर छल, मुदा भय आ निर्देश दोसरा व्यक्तिक नियन्त्रणमे। बैंकक बाबू पहिने तीन, एखन चौदह खाताक चिन्हीकरण धरि पहुँचैत अछि। एहि अन्तरसँ कथामे वास्तविक कार्यक परिणामक विशिष्ट संख्या भेटैत अछि, मुदा ई चौदह खाता अन्तिम आपराधिक दोष निर्धारण नहि, बैंकक भीतर प्रारम्भिक सतर्कता अछि। ‘खाताक नाम-मालिक’ आ ‘खाता चलबेनिहार’क फरक एक नाटकीय व्यक्तिविशेषक कथन रूपमे उभरैत अछि। पिछलाक म्यूल-श्रेणीक अमानवीकरण एतय व्यवहारिक प्रश्न बनैत अछि।

बटुकनाथक पिताक नाम-पर्ची

बटुकनाथ जीतक आदेशक बदला पिताक पुरान नाम-पर्ची जेबीमे राखि गाछी आबैत अछि। अपन पिता कैँ पहिने पढ़बाक इच्छा पात्रक आत्म-दृष्टिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि। नाम-अभिलेखक बाध्यता अब केवल मृतक आ शोषितपर नहि, शोषकक वंशावलीपर सेहो लागैत अछि। मुदा अध्याय २३, २६, ३५ आ एखन ४०क गाम-भेटक समय-संबन्ध पूर्ण पारदर्शी नहि अछि। यात्रा अनेकपटक भेल होइत सकैत, पर तिथि, वापसी आ स्थानान्तरणक पर्याप्त रेखा नहि। समीक्षा आत्मपरिवर्तनक दृश्य सुरक्षित रखैत कालगत असङ्गति विसरैत नहि।

चन्द्रपालक प्रतिप्रचार आ बदलबैत शीर्षक

चन्द्रपाल सूचना-एजेन्सी, सलाहकार आ प्रचार-प्रबन्धकसँ नाम-अभिलेखकेँ विदेशी षड्यन्त्र कहल जाएबाक योजना बनबैत अछि। प्रेस-पत्रक शीर्षक अलौकिक रूपेँ ‘हमरा सेहो पढ़ू’ बनि जाइत अछि। ई दृश्य लोक-

प्रतिकारक जादुई सफलताकेँ हँसी-व्यङ्ग्यसँ जोड़ैत अछि; स्वघोषित छवि-नियन्त्रण अपन शब्द हारैत अछि। परन्तु घटनाक राजनीतिक रणनीतिक असर एखन निर्धारित नहि; पाठमे योजना आ शीर्षक-विपर्यय अछि, व्यापक सार्वजनिक परिणामक व्यवस्थित वर्णन नहि। तकरा पूर्ण संस्थागत पराजय मानब अगियाइल निष्कर्ष हएत।

लाउक नून आ ब्रूमक टिफिन

हांगकांगक शीशामेज पर नूनक दाना आ ब्रूमक भाषणमञ्चपर भोला नटक टिफिनक छवि—दू वस्तु आर्थिक लाभक अमूर्त भाषा भीतर घरेलू श्रम प्रवेश करबैत अछि। नून समुद्री व्यापार आ श्रमिकक पसेना दुनू दिस संकेत करैत अछि। टिफिन वैश्विक सम्मेलनक पर्दापर भोजनविहीन मृत्यु-स्मृतिक संकेत बनैत अछि। ई जादुई यथार्थक एक संक्षिप्त समानान्तर सम्पादन अछि। एतय वास्तविक फोटो अथवा प्रदर्शनीक सत्यापित उत्पत्ति नहि; आलोचनात्मक व्याख्या पात्रक मानसिक-सामाजिक संकट धरि सीमित रहबाक चाही।

मीराक स्वैच्छिक साझा करबक सीमा

मीरा स्पष्ट करैत छलीह जे अपन इच्छासँ साझा वस्तु स्मृति बनैत, जबकि धमकाबय लेल छीना गेल निजी वस्तु हिंसा। एहि वाक्यमे नाम-अभिलेखक प्रसार आ व्यक्तिक सहमतिक बीच आवश्यक सीमा खींचल गेल अछि। पहिनेक नाम-पाठक अत्यधिक सार्वजनिकता जँ प्रत्येक पीड़ितक व्यक्तिगत विवरण उघारि देत, तँ ओ पुनः क्षति बनेबाक जोखिम राखैत अछि। मीराक हस्तक्षेप एहि जोखिमक भीतरी आलोचना अछि। ‘लोकशिक्षा’क उद्देश्य निजी प्रेम-पत्रक अनिवार्य सार्वजनिक वाचन नहि; भागीदारी पर व्यक्तिक नियंत्रण अछि।

माधवक अधूरा नाम : पाठशालाक सुरक्षापरीक्षा

हाटलग एक आगन्तुक नाम-अभिलेखक ठाम पूछैत अछि। अनन्या ओकरा दण्डित नहि करैत, पाठशालामे बैसि अपन पूरा नाम लिखबाक आग्रह करैत छलीह। ‘माधव’क बाद ओ अटकैत अछि। ओकरा एक सम्भावित भाड़ाक खोजी रूपमे देखाओल गेल अछि, मुदा पाठकक समक्ष समस्त बाहरी उद्देश्यक स्वतन्त्र साक्ष्य नहि। बच्चासभक प्रतिक्रिया सामूहिक सतर्कता, हिंसा अथवा प्रतिशोध नहि। अलौकिक पदचिह्नक चारि बिन्दु कथा ओकर मंशाक नैतिक छवि बनबैत अछि। नाम-पाठक अभ्यास एखन सुरक्षा-पद्धतिक नूतन रूप धारण करैत अछि।

पनिडुब्बीक कील, सिम-कार्ड आ फूल

पनिडुब्बीक केशसँ तीन वस्तु—जंग लागल कील, टूटल सिम-कार्ड आ सूखल नारिकेल-फूल—झरैत अछि। ई पुल-निर्माण, डिजिटल शोषण आ गामक वनस्पतिक त्रिसंयोजन अछि। पहिने गोहिक बहुरूप अनेक क्षेत्रकेँ एक रूपकमे जोड़ैत छल; एतय वस्तुसभक अलग पदार्थत्व बचल रहैत अछि। कील लोहाक, सिम इलेक्ट्रॉनिक, फूल वनस्पतिक। एहि ठोस भिन्नतासँ उपन्यासक व्यापकता केवल घोषणात्मक प्रतीक नहि, वस्तुक अवयवसँ बनैत अछि।

गोप आ सत्यव्रतक शब्द-संशोधन

गोप सत्यक सुरक्षा प्रतिलिपि मात्र नहि, सामाजिक उपयोगमे देखैत अछि। सत्यव्रत ‘साक्ष्यक जनतंत्रीकरण’ जेकाँ भारी पद लिखि काटि ‘सबूत घर-घर गेल’ लिखैत छथि। ई दू संशोधन कथाकारक भाषा-समीक्षा सेहो

अछि। विशेषज्ञक शब्दक विरुद्ध लोकजीवनक सीध वाक्य प्रकट होइत अछि; मुदा कानूनी मान्यता आ समुदायिक विश्वसनीयताक पूर्ण एकरूपता मानल नहि जाए। नाम, दस्तावेज, लोककथा आ मूल वस्तुक स्रोत-सूची जाँचब जरूरी रहैत अछि।

एगारहम साँसक समापन : वस्तुक स्वतन्त्र यात्रा

अध्याय अन्तमे नाम-वस्तु-पाठ गाछी बाहर घर, बैंक, प्रेमक सम्बन्ध आ विदेशक छात्र धरि फैलैत अछि। अध्याय ३९क ‘आब’ एखन क्रमिक सामाजिक प्रयोग अछि। लेखकीय स्वर पुनः घोषणा करैत अछि जे कहानी समाप्त नहि; ई पुनरावर्तनक जोखिम संग एक सुसंगत कार्यविधान बनल रहैत अछि। विशेष उपलब्धि मीराक सहमति-सीमा, मुन्नाक खाताक स्वामित्व-भेद आ कमलीक पायल-जेकाँ वस्तुक मानवीय स्थान अछि। सबसे गम्भीर पाठगत प्रश्न सरयू महतोक स्त्री/पिता परिचयक प्रत्यक्ष विरोध अछि; ओकरा चमत्कारक नाम पर ओझराओल नहि जा सकैत।

प्रकरण १४२ | मूल अध्याय ४१ — नामक नाव

वस्तुक स्थलसँ यात्रा-रेखाक निर्माण

नाम आ वस्तुक स्थिर संग्रहक बाद ‘नामक नाव’ पुछैत अछि जे मृतक कहाँ सँ चलल, कोन मार्गसँ गेल, ककरा लग अटकल आ कथापछाति ओकर परिवार कतय अछि। चन्ना गाछीमे चाउर, हल्दी, नून, पानि, लाल पेन्सिल आ खाली नक्शाक प्रयोगसँ लोक-मार्ग बनैत अछि। एहि नूतन दृश्य मे अभिलेखनक वस्तु स्थानिक कहानी बनैत अछि। सामाजिक कारणक शृंखला केवल फाइलक पन्ना नहि; पएरक चलबाक अनुभव बनैत अछि। नाव शीर्षक नदीक रूपक दैत अछि, पर सम्पूर्ण अध्याय स्थल-मार्गक सहारे सेहो चलैत अछि।

भोला नटक चाउरक रेखा

बच्चा सभ भोला नटक घर सँ खेत, ठेका-कैम्प आ पुलक पाया धरि चाउर, हल्दी, नून आ पानिक सहायता सँ रस्ता बनबैत अछि। अन्नक दाना दैनन्दिन जीविका, हल्दी खेतक माटि, नून श्रमक पसेना आ पानि निर्माणक दुर्घटनास्थल बीच दृश्यात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि। तथापि असली दुर्घटनाक प्रत्येक स्थान–समय अनुक्रम एहि माटिक रेखामात्रसँ प्रमाणित नहि। ई लोकस्मृति पर आधारित अनुसन्धानक दिशा अछि, जकरा प्रशासनिक नापी, श्रमिकक बयान आ अन्य साक्ष्यसँ मिलेनाइ एक स्वतन्त्र काम।

सरयू महतोक टिफिन आ स्त्री-परिचयक अनिवार्य प्रश्न

अध्याय ४१मे सरयू महतोक टिफिनसँ रस्ता मजदूर-लाइन, ठेकेदारक गोदाम आ पुलक बामा पाया धरि खींचल गेल। पाठमे सरयूक पत्नीक थानक टुकड़ाक उल्लेख अछि। ई वर्णन अध्याय ४०क कमली द्वारा ‘बाबूजी’ कहल गेल सरयूक पुरुष-पिता परिचयकेँ आरो पुष्ट करैत, जबकि अध्याय ३८मे सरयू महतो स्त्री-मजदूर छथि। परिणामस्वरूप अलग नामसमान व्यक्ति उपस्थित छथि कि पात्रक लिङ्ग-परिवर्तन भेल, पाठ स्पष्ट नहि करैत। समीक्षा सरयूक एकरेखीय जीवनी गढ़ि एहि विरोधकेँ मेटा नहि सकैत।

उज्ज्वलक घरसँ मोबाइल-दुकान धरि

देविका उज्ज्वलक घर, स्कूल, मोबाइल-दुकान, पहिल खेल-जीत, कर्जा आ नकली डिजिटल गिरफ्तारीक भयकेँ माटिपर अलग चिह्नसँ जोडैत छलीह। पुल-मजदूरक रस्तासँ भिन्न एहि डिजिटल रस्ताक अन्तमे छत देखबैत अछि। ई विवरण पहिले अंकित जलकाठ/लटकल देहक विरोधकेँ स्वतः समाधान नहि दैत, बल्कि उच्चतर सामाजिक-मानसिक कारणक शृंखला प्रदर्शित करैत अछि। प्रतीकक जाल वास्तविक मृत्युदृश्यक अस्पष्टता छिपा देब नहि चाही। देविकाक स्वरमे वैयक्तिक शोकक अधिकार रचनाक मुख्य बल अछि।

निशांतक तीन कटोरी

‘नाम’, ‘खाता’ आ ‘डर’ नामक तीन कटोरी माटिपर राखि निशांत मुन्नासँ पूछैत अछि जे ओकर नाम ककरा अधीन छल। कटोरी व्यावहारिक वित्तीय शिक्षाक उपकरण अछि; संसाधन, परिचय आ दबाव के अन्तर अनपढ़ श्रोता लेल दृश्य बनैत अछि। एतय भौतिक वस्तु अवधारणा सरल करबाक पात्रगत कर्तृत्व बनैत अछि। किन्तु माटिक प्रयोगक नैतिक रोचकता बैंकक सम्पूर्ण खाताव्यवहारक सटीक तकनीकी मॉडल नहि; प्रश्न जाँचबाक आरम्भ अछि, नियामक जाँचक अन्तिम निष्कर्ष नहि।

राघवक सन्देशक जड़ि

राघवक अंकुर तार बनि अलग-अलग मेटल संदेशवाला फोन जोड़ैत अछि। ओ फोन तोड़ैत अछि, मुदा पातसँ आधा वाक्य निकलैत अछि। ई उपकरणसभक लगातार जादुई रूपान्तरण पछिला अध्यायसभसँ जुड़ल; नूतनता एतय ‘रस्ता’क प्रतिरूप अछि—एक फोनसँ दोसर, एक खाते सँ तेसर। लाभक गोपनीय मार्ग जनस्मृतिमे कथात्मक मार्ग बनैत अछि। चूँकि दृश्य अलौकिक, तकरा वास्तविक डेटा-पुनर्प्राप्ति तकनीकक प्रदर्शन मानब आधारहीन हएत।

चन्द्रपालक ‘रास्ता’ फोल्डर

चन्द्रपाल कंप्यूटरक ‘रास्ता’ फोल्डर खोलैत अछि; ओहिमे अपेक्षित खाताबही नहि, गामक कटोरीसभक छवि प्रकट होइत अछि। आर्थिक केन्द्रक निजी स्क्रीन पर सामुदायिक शिक्षाक उपकरण दिसब नाटकीय दृष्टिकोण-विपर्यय अछि। चन्द्रपाल एहि रूपान्तरणकेँ डिजिटल मानबाक अस्वीकार करैत अछि। एहि विस्मयमे ओकर मनोविज्ञानक एक धुरी देखाइत अछि—जे वस्तु उपकरणक नियंत्रणसँ बाहिर, ओकरा ओ सहि नहि पबैत। कथाकारक बारम्बार स्क्रीन-चमत्कारक जोखिम तइयो बनल रहैत अछि।

निजताक सामग्रीक चलल रस्ता

मीरा फोटो, विश्वास, फोन, सर्वर, धमकी आ मौनक मार्ग पढ़बाक अनुरोध करैत छलीह। ई भौगोलिक नक्शासँ अलग व्यक्तिगत सामग्रीक असहमति-पछाति प्रसारक मार्ग अछि। सौम्या ‘लीक’, ‘कन्टेन्ट’ आ ‘ब्लैकमेल’क लोकभाषी अर्थ तैयार करैत छलीह। भाषान्तर एतय पीड़ितक आत्म-अनुभवक पुनर्पहिचानक काम करैत अछि, पर मूल तकनीकी शब्दक सटीकता राखब जरूरी। यथार्थमे पीड़ितक निजी सामग्रीक मार्ग सार्वजनिक करब हुनकर सहमतिकेँ बिना न हो, एहि मर्यादाक संकेत पिछलाक मीरा-प्रकरणसँ एकसाथ पढ़बाक चाही।

‘भादवक सोम’ : आंशिक स्मृतिक नैतिक स्थान

एक वृद्धा अपना पुलपर मरल बेटाक पूरा मार्ग नहि बुझैत छलीह; हुनका मात्र ‘भादवक सोम’ मोन अछि। बच्चा ओहि एक स्मृति-टुकड़ा पर चाउर राखैत अछि। बूढ़बा भूतक माध्यमसँ कथा अधूरा जानकारीक सम्मान सिखबैत अछि। ई स्रोतनिष्ठ आलोचनाक लेल महत्त्वपूर्ण शिल्प: अनिश्चित तिथि अथवा अज्ञात विवरण भरबाक बदला स्मरणक अंशकेँ स्पष्ट चिह्नित राखब। अधूरा रस्ताकेँ सन्देहसँ अलग करुणा देल जा सकैत, मुदा करुणा तथ्यगत स्रोत-अभावक स्थानापन्न नहि।

गोपक चमकैत खाली ठाम

गोप अपन पूर्ण एक्सेल तालिकाक बगलमे जीवनक अज्ञात अंश लेल माटिपर खाली जगह छोड़ैत अछि। हुलासी बच्चासभकेँ कहैत छलीह जे सभ कथा तत्काल नहि बजि सकैत। ई रिक्तता शिल्पगत रूपेँ सक्रिय अछि; पाठकक ज्ञान-सीमाकेँ दृश्य देइत अछि। विशेष रूपसँ गोहिक विस्तृत वैश्विक जालक बीच लोक-स्मृतिक अपूर्णता स्वीकृत कएनाइ उपन्यासकेँ सम्पूर्णताक आत्मविश्वासी दावासँ बचबैत अछि। आलोचककेँ सेहो एही नियम लागू करबाक चाही—मूल पाठमे नहि रहल घटना नहि रचब।

कारणक मोड़ आ रोकल जा सकएबला दुर्घटना

प्रत्येक रस्ताक अन्तमे बच्चा पूछैत अछि जे ककरा मोड़पर बचाओल जा सकैत छल। भोला नटक सुरक्षा-बेल्ट, सरयूक वास्तविक गिनती, उज्ज्वलक पहिल धमकीपर सामूहिक उत्तर, मुन्नाक खाता-प्रलोभनपर प्रश्न—ई पात्रविशेषक अलग मोड़ छथि। कथाकार सामाजिक दुर्घटनाकेँ अपरिहार्य नियति नहि, अनेक मानवीय निर्णयक परिणाम रूपेँ पढ़ैत छथि। मुदा ‘रोकि सकैत छल’क नूतन प्रश्न पीड़ितपर दोष थोपबाक लेल नहि; जाल चलौनिहार संस्था, मध्यस्थ आ रोकथामक अभावक जिम्मेदारी जाँचबाक लेल अछि।

सत्यव्रतक न्यायिक कारणशृंखला

सत्यव्रत मेहता बुझैत छथि जे गरीबक जीवनक कारण-परिणामक कड़ी अक्सर सत्ता द्वारा तोड़ि देल जाइत अछि। एतय न्यायालयक कारण-शृंखला आ लोकस्मृतिक असम्बद्ध अंश बीच संवाद अछि। राज्यक साक्ष्य-प्रणालीक नामपर लोकस्मृतिक अवहेलना कथात्मक विरोधक एक भाग अछि, मुदा वास्तविक जाँचक मानदण्डकेँ निरर्थक कहि देब उपन्यासक अपना अभिलेख-उत्तरदायित्वसँ टकराएत। चित्रित काज गुम भेल कड़ी खोजब अछि, जाँच छोड़ब नहि।

गोहिक रस्ताक रूपकक सीमांकन

नदीक धार, मोबाइलक ट्रान्सफर, ठेकाक रोजगार, कम्पनीक व्यापार आ कानूनी प्रक्रिया—अलग-अलग माध्यम एक ‘रस्ता’क भाषा पबैत अछि। ई संरचनात्मक एकता उपन्यासक विशाल समय आ भूगोलकेँ जोड़बैत अछि। जोखिम ई जे प्रत्येक घटना एक साझा शोषण-यन्त्रक परिणाम कहि प्रस्तुत भेल तँ स्थानीय ऐतिहासिक कारण धुँधला जाएत। बच्चासभक माटिक अलग रंग, अलग वस्तु आ व्यक्ति-नाम एहि समतलीकरणक प्रतिरोध करैत अछि।

बारहम साँसक निष्कर्ष

‘नामक नाव’ स्थिर अभिलेखसँ गतिशील मार्ग-अनुसंधान धरि कथाक विकास अछि। एहि प्रकरणक सर्वोच्च उपलब्धि वृद्धाक ‘भादवक सोम’, गोपक खाली माटि, मीराक विश्वास-सामग्रीक मार्ग आ निशांतक तीन कटोरी अछि। ई ठोस दृश्य कथा कैं केवल नीतिवाक्य नहि रहए दैत। भौगोलिक नाव शीर्षक एक सघन रूपक अछि; वस्तुतः नाव स्मृति कैं एक घरसँ दोसर ठाम लऽ जाएबाक पद्धति बनैत अछि। सरयू महतोक पुरुष-पति परिचय आ पूर्वक स्त्री-मजदूर परिचयक विरोध स्रोतस्थितिक प्रमुख सावधानी बनल रहैत अछि।

प्रकरण १४३ | मूल अध्याय ४२ — भारक वृत्त

बारहम साँसक रस्तासँ तेरहम साँसक कन्हा

अध्याय ४१मे नामक नाव मृतकक जीवन-रस्तासभ जोड़ैत छल; ‘भारक वृत्त’ एहि बनल रस्ताक नैतिक परिणाम पुछैत अछि। जे घर सँ, जे ठेका सँ, जे परदा सँ मृत्यु अथवा आर्थिक क्षति धरि मार्ग गेल, ओहि मार्गमे जिम्मेदारी केकरा कन्हापर बैसत? एहि तरह कथा कारण-शृंखलाक प्रदर्शन सँ उत्तरदायित्वक वितरण दिस सरकैत अछि। शीर्षकक ‘वृत्त’ मात्र गोल मैदान नहि, आहिस्ते-आहिस्ते सभ पात्र पर घुमि आबएवला प्रश्नक संरचना अछि। घटना प्रायः अलौकिक वस्तुक वजन बढ़बाकैं केन्द्रमे राखैत अछि, पर प्रमुख अर्थ नैतिक आत्मरक्षाक सीमा अछि।

तराजू बनाम कन्हाक चित्र

बटुकनाथक जीतक आदेशक प्रत्येक पन्नापर तराजूक बदला कन्हाक छोट निशान उभरैत अछि। विधिक न्यायकैं निरस्त करबाक बदला ई चित्र ओहि पात्रक विशेष पेशागत उपयोगक आलोचना अछि जे तारीख, स्थगन आ आपत्तिक सामाजिक मूल्य कम गनैत छल। तराजू तुलनाक औपचारिक प्रतिमा होइत अछि; कन्हा देहपर उठाओल प्रभावक प्रतिमा। पन्नाक वजन बढ़ब पुस्तकक अदृश्य जीवन-भारक दृष्टान्त अछि। मुदा समाजिक-नैतिक भार मापबाक साहित्यिक दृष्टान्तसँ वास्तविक न्यायालयक दायित्व-विभाजन तय भऽ गेल, एहन दावा अनुचित अछि।

एक कोना नहि उठि पबैत फाइल

सेवक फाइल उठाबए असमर्थ होइत अछि, बटुकनाथ स्वयं हाथ लगबिते कतेको स्थगनक फल कल्पैत अछि। स्त्री बूढ़ि भऽ गेली, विधवा प्रतीक्षा करैत रहली, मृतकक नाम सूचीमे नहि आएल—ई सभ अनुभवक सामूहिक भार फाइलक नूतन वजन बनैत अछि। प्रकरण १३६क देहरीपर भारी आदेशक छवि एतय पुनरावर्तित अछि, मुदा महत्त्वपूर्ण नूतनता फाइलक ‘एक कोना’ उठएबाक पात्रक सीमित क्षमता अछि। कथाकार अविश्वसनीय पूर्ण प्रायश्चित घोषित नहि करैत; कन्हा पर हलुक काज द्वारा क्रमिक आत्मज्ञानक संकेत दैत छथि।

चन्द्रपालक ईंटक खाता

चन्द्रपालक म्यूल खातासभ स्क्रीनपर ईंट बनि जमैत अछि—मुन्ना, अजहर, पवन, शकील, अंजलि, रोहित आ अज्ञात नाम लिखल। ओ मेटबाक बटन दबाबैत, मुदा ईंट यन्त्रसँ बाहर टेबुलपर गिरैत अछि। अंकीय वित्तीय लेनदेन अचानक घर निर्माणक कठोर पदार्थ बनैत अछि। ई दृश्य समाजक श्रम आ शोषितक नामक प्रतिलोम

प्रतीक अछि; जकर माध्यम धनक घर बनल, ओकरा पर मनुष्यक अवगुंठित नाम लौटैत अछि। तौ ईंटपर लिखल सभ नामक विस्तृत जीवनवृत्त एहि अध्यायमे नहि, अतः अलग घटना कल्पित करब ठीक नहि।

राघवक पाथर-पात

राघवक तकिया तर पाथरक पात अबैत अछि, जकरा पर ‘कॉल नहि काटल गेल’, ‘भय बेचायल’, ‘दादीक बचत गेल’ जकाँ वाक्य उभरैत अछि। पात प्रकृतिक कोमल वस्तु छल; आब पाथरक भार पबैत अछि। एहि पदार्थ-परिवर्तनमे मेटाओल सन्देशक सामाजिक क्षति तकनीकी स्मृतिक तुलना मे अधिक स्थायी बनैत अछि। अध्याय ४१क तार-जड़िसँ भिन्न ई भार शरीरक निकट, तकिया आ छातीपर ठहरैत अछि। ओ पाथर फेकए चाहैत, मुदा अनन्त गिनती हुनकर नैतिक पलायन प्रश्नांकित करैत अछि।

नूनक स्याही आ ब्रूमक लाल रिपोर्ट

लाउक हस्ताक्षरक कलम सँ स्याही नहि, नूनक पानि बहैत अछि; ब्रूमक महँग रिपोर्टमे लाल धारी प्रकट होइत अछि। दूनू सार्वजनिक नियंत्रणक उपकरण—कलम आ प्रिण्टर—श्रमक पसेना आ मृतकक व्ययसम्बन्धी स्मृतिमे बदलैत अछि। नैतिक पुनर्सन्तुलनक व्यापारिक भाषा वैह सामाजिक परिणाम सँ घेराएल अछि जकरा रिपोर्ट बाहर राखब चाहैत अछि। ई प्रतिमा प्रभावशाली, मुदा स्क्रीन, प्रिण्टर, काँच आ दस्तावेजक लगातार अलौकिक प्रतिक्रिया एक पूर्वानुमेय सज्जा सेहो बनब शुरू करैत अछि।

‘हिस्सा’ पूरा अपराधक समरूप नहि

बालकसभ प्रश्न करैत अछि: एहि भारमे तोहर हिस्सा कतेक? पूर्ण दोष दोसरा व्यक्तिपर थोपबाक बदला आपन सहभागिताक परिधि चिन्हबाक आग्रह अछि। ई कथा क्रियात्मक नैतिक संशोधन देखबैत अछि; कियो एकहि समय पूर्ण पीड़ित, पूर्ण अपराधी अथवा सर्वज्ञ साक्षी बनि नहि जाए। तथापि जिम्मेदारीक मात्रा सबकी समान नहि। शोषक संस्था, कमजोर कर्मचारी, तकनीकी सहायक आ आहत परिवारक चूक एक तुलामे मापब अनुचित; उपन्यासक प्रतीकात्मक प्रश्नक अलग संस्थागत परीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

गोप, सौम्या, रमैय्या आ देविकाक आत्म-नोट

गोप देर सँ डेटा बुझबाक, सौम्या भाषान्तरक विलम्ब, रमैय्या अनावश्यक चुप्पी, देविका उज्ज्वलक प्रारम्भिक भयकेँ गलत बुझबाक आत्म-स्वीकार करैत छथि। एहि बहुस्वरमे आंदोलनकारी पात्र स्वयं आलोचनासँ ऊपर नहि छथि। लेखक विरोधी पक्षक दोष मात्र गनिते अपन नायकक कर्तृत्वक सीमा सेहो सुनबैत छथि। मुदा देविकाक आहत बहिनक देर सँ समझब आ शोषकक योजनाबद्ध कार्य समान स्तरक दोष नहि; आत्म-परीक्षणकेँ आत्म-दोषारोपण बनएब नैतिक अन्याय हएत। एतुक्का बहु-कण्ठक सन्तुलन आवश्यक अछि।

अनन्याक हिस्साक रूप ‘प्रश्न जारी राख’

अनन्या स्वयं पुछैत छलीह: हमर हिस्सा? बूढ़बा भूत हुनका प्रश्न चालू राखबाक दायित्व दैत छथि। ई पंक्ति बच्चाकेँ पूर्वनिर्धारित अपराधक जिम्मेदारीमे नहि फँसाबैत, नागरिक कर्तृत्व दैत अछि। उपन्यासक आरम्भक बाल-जिज्ञासा एखन निरन्तर अनुसन्धानक सामाजिक नियम भऽ रहल अछि। नैतिक प्रश्नक जिम्मेदारी शोषितक अपराध-साझेदारी कहब नहि, बल्कि ज्ञानक अधूरेपनकेँ स्वीकार कऽ सही ठाम प्रश्न पूछबाक साहस अछि।

सत्यव्रतक ‘भार’क वैधानिक अनुवाद

सत्यव्रत दायित्व, प्रतिकर, पुनर्वास, सुधारात्मक आदेश जकाँ पद खोजैत छथि, मुदा सभकेँ भारक अनुभव तुलना मे अधूरा देखैत छथि। ई न्यायिक भाषा आ सामुदायिक संवेदनाक अवश्यंभावी अन्तर अछि। उपन्यास जँ एक लोक-शब्दकेँ पूर्ण वैधानिक समाधान मानत तँ ओकर बहुविध वास्तविकता घटत; एतय अनेक पदक अपर्याप्तता स्वीकार करब अधिक सूक्ष्म अछि। बटुकनाथक प्रक्रियाक विपरीत सत्यव्रत सुनबाक नूतन भाषा खोजैत छथि, तौ हुनकर वास्तविक संस्थागत निर्णय एखन सम्पन्न नहि।

वस्तु सँ उपयोग धरि

भारक पाठक दोसर चरणमे टिफिन अन्न-सूची, हेलमेट सुरक्षा-संकल्प, सिम-कार्ड ठगी-चिन्ह, पासबुक सतर्कता, शीशी दवा-जाँच आ खड़िया बालप्रश्नक साधन बनैत अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कथा-विकास अछि। जादुई अदालतक निर्जीव चिन्ह संग्रहालयक श्रद्धा-वस्तु नहि रहैत; वर्तमानक उपयोगमे बदलैत अछि। शोकक वस्तु सामुदायिक शिक्षामे परिवर्तित होएबाक दृश्य नाटकीय रूपसँ बहुविध अछि। लेकिन प्रत्येक उपयोगक व्यावहारिक पहुँच आ दीर्घकालिक परिणाम एखन खुलल अछि।

मीराक समूह आ थानाक दिशि पहला डेग

निजताक मण्डलमे एक आहत युवती दोसर युवतीक संग थाना जाएबाक तैयारी करैत छलीह। ओकर भय समाप्त नहि, मुदा ओ असगर नहि। उपन्यासक सामाजिक परिवर्तनक सबसँ विश्वसनीय दृश्यमे ई छोट काज शामिल अछि। केवल माइक पर शपथ नहि, अन्य व्यक्ति संग संस्थागत सहारा खोजबाक निर्णय। एहि दृश्यसँ अनन्याक सामूहिक उत्तर नियम जीवन-पार्श्वमे उतरैत अछि। तथापि थानामे शिकायत दर्ज भऽ गेल, न्याय मिलि गेल—एहन अगियाइल कथा जोड़ल नहि जा सकैत।

गोपक ईशानक पुरान टिप्पणी

गोप ईशानक छाहविहीन स्थितिक बीच भेटल पुरान टिप्पणी पढ़ैत अछि जे खुलासाकेँ गन्तव्य देबाक चाही। ईशानक देह/छाह सम्बन्धी पहिनेक असङ्गति एहि दस्तावेजी उल्लेखसँ समाप्त नहि होइत, मुदा पात्रक आवाज कामक रूपमे वर्तमान रहैत अछि। जानकारी उजागर करब आ पीड़ितक सहायता उपलब्ध करब बीचक अन्तर गोप बुझैत अछि। कथामे एतय डेटा-आधारित प्रतिरोधकेँ संवेदनात्मक स्थल पबैत अछि; ‘गन्तव्य’क अर्थ लोकसहायता, भाषान्तर आ सुनबाक व्यवस्था बनब अछि।

तेरहम साँसक न्यायगत असमाप्तता

अन्तमे अनन्या वस्तुक संग काजक क्रिया लिखबैत छलीह—खुआएब, बचाएब, सुनब, रोकब, संग देब। बटुकनाथ फाइलक एक कोना उठबैत, चन्द्रपाल ईंट छिपाय चाहैत, राघव दरबाजा नहि खोलि पबैत आ लाउ पर्दा खसाबैत अछि। एहि भिन्न प्रतिक्रियामे कर्तव्य-सम्मुख आत्मरक्षाक अनेक प्रकार अछि। सर्वोच्च शिल्पगत निर्णय ई जे भार पूरा समाप्त नहि, जकर हिस्सा अछि तकर घर दिस चलए लागैत अछि। अदालतक एकमुश्त अन्तक बदला सामाजिक दायित्वक अप्रतिहत कथा शेष रहैत अछि।

प्रकरण १४४ | मूल अध्याय ४३ — चलैत भार

भारक दूतयात्रा : स्थिरसँ गत्यात्मक

तेरहम साँसक अन्तमे जे वस्तु उठाएबला लोक अपने आएबासँ इनकार करैत, ओकर दरबाजापर भार जाएबाक विधान बनेल गेल। ‘चलैत भार’ एहि विधानकेँ शहर, परिवार आ विदेशक अलग गृहस्थ स्थानमे फैलाबैत अछि। पूर्व अध्यायक फाइल, ईंट आ पाथर-पात सामूहिक वस्तु छल; आब मायक जिह्वा, बेटाक स्वप्न आ स्त्रीक थारी ओकर नूतन रूप छथि। घटनास्थल गाछी नहि, घरक भीतरी कमरा अछि। एहिमे कथा बाहरी न्याय-संघर्षसँ वंशगत स्मृतिक तह पर बढ़ैत अछि।

हरिहरनक मायक ‘बटुक’ सम्बोधन

बटुकनाथक डिग्रीक शीशामे नाम उभरैत अछि, मुदा निर्णायक क्षण बुजुर्ग माय द्वारा ‘बटुक’ कहबाक अछि। पेशागत उपाधि सँ अलग बालपनक नाम ओकर अर्जित सत्ताकेँ एक छोट देहक इतिहासमे बदलैत अछि। माय पूछैत छलीह जे कतेक नाम खएलेँ। ई आरोप सहज पारिवारिक वाणी अछि, अदालतक जिरह नहि। नामनिमज्जनक विशाल प्रतीक एहि क्षण बच्चाक पुरान सम्बोधनमे घनिष्ठ होइत अछि। चूँकि माय बहुत दिनसँ स्पष्ट नाम नहि बजबैत छलीह, वर्तमान उच्चारण एक अलौकिक/स्मृतिगत तीक्ष्ण क्षण बनैत अछि; स्थायी चिकित्सकीय सुधारक दावा नहि।

चन्द्रपालक बेटाक स्वप्न

चन्द्रपालक बेटा फोनपर खेलक विज्ञापनक बीच एक प्रश्न देखैत, रातिक स्वप्न बतबैत अछि जे कोनो मृत युवक पिता-कमाइमे अपन फाँसीक गन्धक आरोप करैत अछि। चन्द्रपालक हाथसँ फोन खसैत अछि। एतय पहिनेक आर्थिक लाभक परिणामक कथा वारिसक स्वप्नमे प्रवेश करैत अछि। परन्तु सपनाक आरोप प्रमाणित घटनाक रेखीय पुनर्निर्माण नहि—विशेषतः उज्ज्वलक मृत्यु-पद्धति पूर्व अध्यायसभमे असङ्गत अछि। परिवारक बालस्वरक डर चन्द्रपालक आत्मरक्षाक कानून-भाषाकेँ निष्फल करैत अछि।

राघवक थारीमे ‘खाता बन्द’

राघवक घरमे भातक दाना अक्षर बनि ‘खाता बन्द’ लिखैत अछि। पत्नी तकरा घरखर्चक खाता समझि पुछैत छलीह; राघव उत्तर टारैत अछि। कारोबारी कोड भोजनक साझा थारीमे घुसिते घरेलू निजता आ अपराधी गोपनता टकराइत अछि। मुदा अध्याय ३७मे राघवक पत्नी ओकरा छोड़ि चुकल कहल गेल छल। अध्याय ४३मे ओ पुनः भात परसबैत देखाइत छलीह; बीचमे वापसीक वृत्तान्त नहि। ई पत्नी-वापसीक स्पष्ट पाठगत असङ्गति अछि, जकरा आलोचना काल्पनिक सुलह, पुनर्विवाह अथवा नव पात्र गढ़ि सुलझाओल नहि करैत।

लाउक शीशाघरमे गामक नाम

लाउ अपन सचिवकेँ गढ़ नारिकेलक नक्शा खोजबाक कहैत अछि। सचिव हजार बिन्दु मे एक चमकैत स्थान पबैत अछि। दूरस्थ गाम एक वित्तीय साम्राज्यक अन्तर्दृष्टिमे अनचाहल स्थान घेरैत अछि। ई दृश्य पहिले नूनक रेखासँ छविक रूपमे आएल मानचित्रक अगिला विस्तार अछि। लाउक अभ्यासक हँसी आ काँपैत हस्ताक्षरक हाथ

एकसाथ रहैत छथि। नक्शापर गाम भेटब सामान्य जानकारी होइ सकैत अछि; काँपब पात्रगत भयक रूप अछि, व्यापार-जालक पूर्ण ध्वंस नहि।

कथन-ज्ञानक असमान वितरण

कथावाचक हरिहरनक माय, चन्द्रपालक बेटा, राघवक पत्नी आ लाउक सचिवक अनुभव अनुक्रमें देखबैत छथि। गढ़ नारिकेलक लोक एहि घटनाक खबर नहि जनैत, ओ अपन काममे लागल छथि। पाठकक ज्ञान पात्रक ज्ञानसँ अधिक होएबाक एहि असमानता नाटकीय विडम्बना बनबैत अछि। लोकप्रतिरोधी समुदाय अपनी शक्ति पर रोज उत्सव नहि मनबैत; पाठक दूर-दूर पात्रक संकट देखैत अछि। एहि विभाजनसँ उपन्यास तत्काल विजयी-घोषणाक शिल्पसँ किछु बाँचैत अछि।

देविकाक कागचक छोट पाठ

देविका नकली पुलिसक डर, पहिल जीतक लोभ आ दूसराक नामपर खाता खोलबाक जोखिम चिन्हैत पाठशालाक पन्ना काटैत छलीह। एहि दृश्य मे नवीनता अवधारणामे नहि, माध्यममे अछि: शोकक स्मृति अब प्रतिदिन मुद्रित सावधानी बनैत अछि। सहोदरक मृत्यु स्मरणक एकमात्र विषय नहि; जीवितक भविष्यक हस्तक्षेप अछि। तौ प्रत्येक पन्ना पढ़ल गेल, लोक सुरक्षित भेल—एहन पूर्ण प्रसारक प्रमाण एहि अध्यायमे नहि।

निशांतक पद-त्यागक नूतन सूचना

अध्याय ४३मे निशांत झा विदेशी कम्पनीक चमकदार पद छोड़ि गामक बच्चाकेँ हिसाब पढ़बैत देखाओल गेल अछि। पूर्वक वित्तीय-शिक्षाक दृश्यसभक तुलनामे ई पात्रक पेशागत जीवनसँ सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण नूतन विकास अछि। एतय आलोचनाक सावधानी चाही: पद छोड़बाक समय, कारण, संस्था आ प्रक्रिया विस्तृत रूपेँ वर्णित नहि। कथाक कथनात्मक घोषणा स्वीकार कएल जा सकैत अछि, मुदा व्यक्तिगत जीवनीक कालिक अन्तर के स्वतः भरल नहि जाए। निर्णयक सामाजिक फल—बालकक वित्तीय विवेकक शिक्षा—स्पष्ट अछि।

मीराक समूहमे अनुमतिक स्वर

निजताक गोष्ठीमे लाजसँ मुँह नुकौनिहार एक स्त्री अपन नाम लिखबाक अनुमति स्वयं दैत छलीह। ई क्षण ‘नाम बचाओल’ अभियानक नूतन सीमा स्पष्ट करैत अछि। समान नाम-सम्मानक सूत्र जीवित व्यक्तिक निजी सूचनाक सार्वजनिकता पर स्वचालित स्वामित्व नहि देत। स्त्री अपन नाम कहबाक अधिकारक संग ककरा, कखन आ केना कहब सेहो निर्धारित करैत छलीह। एहि स्वरक कारण अभियानक नीतिवाक्य वास्तविक सहमति-सम्मत क्रियामे उतरैत अछि।

सौम्याक भाषान्तरक बहुभाषिक प्रसार

सौम्या अंग्रेजी रिपोर्टकेँ मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, ओड़िया, तमिल, तेलुगू आ उर्दू सहित अनेक भाषामे पसरबैत छलीह। एहि दृश्यसँ स्थानीय नाम-अभिलेखक सार्वजनिकता उपमहाद्वीपीय भाषिक रूप धारण करैत अछि। किन्तु अनुवादसभक पाठ, स्वयं अनुवादकक नाम, भिन्न भाषाक प्रतिक्रिया वा सटीकताक जाँच प्रकरणमे विस्तृत नहि; विस्तार कथात्मक रूपेँ उद्घोषित अछि। एहि कारण आलोचनाकेँ भाषा-सूचीक उपस्थितिकेँ पूर्ण पाठकीय प्रभावक प्रमाण नहि मानबाक चाही।

ईराक विश्वविद्यालय-बाह्य नामसभा

ईरा दूर देशमे सभागारक औपचारिक प्रोजेक्टर छोड़ि पात लटकाबय नाम-पाठ करैत छलीह। प्रत्येक नामक बाद चुप्पी रहैत अछि। ई आलोचनात्मक स्थानान्तरण प्रतिरोधक भाषा उच्च पदक सम्मेलनसँ श्रोता-समुदायमे अनैत अछि। मात्र तालीक बदला मौन, शोध-पत्रक बदला पात। मुदा विश्वविद्यालय आ लोकसमुदायक सम्पूर्ण विरोध रचब अतिसरलीकरण हएत; ईराक अपन उच्चशिक्षा आ नूतन आयोजकत्व दुनू सहअस्तित्वमे छथि।

गोपक अनुपस्थितिक अफवाह

गोप कुमार कम देखाइत अछि; लोक कहैत अछि जे ओ नुकाएल, मरि गेल अथवा भिन्न स्रोत लग अटकल। कोनो नव फाइल खुलिते ओकर ‘नामक बिनु प्रमाण पूरा नहि’क पाँति भेटैत अछि। एहि संरचनामे गोपक देहगत उपस्थिति अनिश्चित, मुदा लिखनीक शैली उपस्थित अछि। कथावाचक अफवाहसभक एक सूची दैत छथि; ओकरा तथ्यरूपेँ स्वीकार कऽ मृत्यु घोषित करब गलत। गोप जीवित पात्रक कथनक अनिश्चित स्थितिक एक नाटकीय उपकरण अछि।

भूतसभक दिनक उजासमे छोट काज

भूत पहिने रातिक खेलमे, एखन दिनक पाठशालामे पात धरब, रेखा खींचब आ लिखनिहारकेँ इजोत देबक काम करैत छथि। लोथक स्थिर दर्शकसँ कार्यकर्ता होएबाक विकास एतय क्रमिक अछि। अलौकिक लोकक दायित्व नव घटना जोड़ेबाक बदला जीवित समुदायक विद्यमान श्रमकेँ सहयोग देब रहैत अछि। बूढ़बा बच्चासभ द्वारा जीविते स्मृति निर्माणक कौशल स्वीकारैत छथि। एहि परस्पर मान्यतासँ शोकक भार मृतकक निज एकाधिकार नहि रहैत।

प्रकरणक मूल्यांकन : घर-घर प्रवेश करैत कथा

‘चलैत भार’क संरचना चारि खलपात्रक घरेलू अनुभवसँ चलि, जीवित लोकक रोजक कार्यक विस्तृत समूह पर ठहरैत अछि। आरुणि अन्त लिखबाक प्रयत्न करैत, मुदा ‘काज’ शब्द हरियर होइत देखैत अछि। ई पुनः आत्मसन्दर्भी अन्त-संकोच उपन्यासक प्रमुख लय अछि। कथन-कला परिवारक आपसी सम्बोधनमे प्रभावशाली, विशेषतः हरिहरनक मायक ‘बटुक’ शब्दमे। गम्भीर पाठगत चिन्ता राघवक पत्नी सम्बन्धी विरोध अछि। एहि तथ्यकेँ अनदेखा करब या मनगढन्त पति-पत्नी सुलह जोड़ब दोनों स्रोतनिष्ठ आलोचनासँ बाहर हएत।

प्रकरण १४५ | मूल अध्याय ४४ — पोतीक कापी

चौदहम साँसक घरसँ पन्द्रहम साँसक पन्ना

चौदहम साँसकेँ भारक घर-घर यात्रा बनबैत अध्याय ४३ समाप्त होइत अछि; ‘पोतीक कापी’ एहि अनुभूतिक पन्द्रहम साँस बनबैत अछि। अपराधीक देह अथवा कार्यालय नहि, वारिसक बालचित्र आ बालप्रश्न कथाक केन्द्रमे उभरैत अछि। भयक रूपक पानि सन दरार खोजैत घरमे पैसैत अछि। एहि स्थानान्तरणमे कथक बाहरक विरोधी समुदायकेँ एकमात्र परिवर्तनकर्ता नहि मानैत; आरोपीक परिवारक भीतर स्वतन्त्र बालस्वर उभरैत अछि। मुदा ई आवाज खलपात्रक उत्तराधिकारक सम्भावित विच्छेदन अछि, न ओकर सब अपराधक अन्तिम दण्ड।

सात बरखक पोतीक चित्रविधान

बटुकनाथक पोती कापीमे चन्ना गाछी, कारी-उज्जर प्रेत, राकश, लोथ आ मैदानक बाहरी बूढ़ व्यक्ति रचैत छलीह। ओ गाछी प्रत्यक्ष देखलनि अथवा सपना/सामुदायिक कथन सँ चिन्हलनि—एहि सम्बन्धक पूर्ण स्पष्टीकरण दृश्य नहि दैत। जादुई यथार्थक स्तर पर चित्र दूरस्थ स्मृतिक स्वतः प्रसार अछि। बालहाथक मोम-रंग, डारिक रंगभेद आ खेलसँ बाहर ठाढ़ बूढ़क आकृति उपन्यासक पूर्ववर्ती अलौकिक मञ्चकेँ घरक टेबुलपर उतारि दैत अछि।

जीतक शब्दक बालकीय पुनर्व्याख्या

पोती पूछैत छलीह जे जँ दादाजी जीतल छथि तँ खेलसँ बाहर किएक छथि? बटुकनाथ विधिक ‘जीत’ आ कबड्डीक ‘जीत’ अलग कहए चाहैत, मुदा बच्चा दुनूक अर्थक समानता पर अटकैत अछि। एहि संवादमे विशेष पात्रक विजयक सामाजिक शून्यता अत्यन्त सुलभ भाषामे उभरैत अछि। प्रश्नक उद्देश्य वकील पेशाक सम्पूर्ण निन्दा नहि; ‘जीत’क दावाक नैतिक अर्थ जाँचब अछि। सात बरखक बच्ची जटिल कोर्टक प्रक्रिया नहि बुझैत, तइयो अपन अज्ञानकेँ प्रश्नमे बदलैत छलीह।

कापी एक वैकल्पिक समन

पोती चित्रक बाहरी बूढ़ व्यक्तिक हाथमे छोट कागच बनाकऽ ‘नाम पढ़ू’ लिखैत छलीह। अदालतक औपचारिक समन आ बच्चाक रेखाचित्रक अन्तर साहित्यिक रूपेँ आकर्षक अछि। बटुकनाथक कक्षमे प्रचलित आदेशक कड़क भाषा निष्प्रभावी; बालकापीक दू शब्द ओकरा चुप करा दैत। चित्र स्वयं भौतिक न्यायिक आदेश नहि, मुदा अनुत्तरित प्रश्नक प्रतीकात्मक उपस्थितिक कारण कक्षमे एक नैतिक समनक कार्य करैत अछि। चित्रपर लेखकीय तात्पर्य अत्यधिक स्पष्ट होइतहुँ बालदृष्टिक अजनबी सरलता एहिकेँ जीवन्त बनबैत अछि।

चन्द्रपालक घरक सामने आहत युवक

चन्द्रपालक घरक सोझाँ किछु युवक ठाढ़ भऽ पूर्वक ठगीक पहिल जीतक धोखा विषय दोसर बच्चाकेँ बताबय जेबाक अनुमति चाहैत छथि। ई समूह प्रतिशोध अथवा घरपर हमला करबाक बदला जनशिक्षाक रस्ता चुनैत अछि। चन्द्रपालक बेटा हुनका सभकेँ रोकैत नहि। एहि दृश्यमें पूर्वक पीड़ितक स्वयं बोलबाक अधिकार महत्वपूर्ण अछि। कतेको अध्याय धरि भूत आ बच्चा हुनका लेल आवाज दैत छल; आब अनुभव भोगने युवक स्वयं सामाजिक शिक्षकक भूमिका लैत छथि।

चन्द्रपालक उठल थप्पड़ आ खाली कुर्सी

चन्द्रपाल अपन बेटा पर हाथ उठाबय चाहैत अछि, मुदा बीचमे उज्ज्वलक खाली कुर्सीक स्क्रीन-छवि उभरैत अछि। हिंसाक आवेग रोकल गेलाक ई क्षणक अर्थ वास्तविक आत्मनियन्त्रण अथवा चमत्कार-द्वारा बाधा—दुनू सम्भव अछि। पर कथा केवल चन्द्रपालक मुँहक डर नहि; पिता-पुत्रक सामाजिक दूरी खोलैत अछि। बेटा पीड़ितक जागरणकेँ दमन करबाक विरुद्ध खड़ा अछि। कुर्सी प्रतिपरीक्षा-विहीन अलौकिक वस्तु अछि, वास्तविक न्यायालयक गवाही नहि।

राघवक बेटी आ प्रश्नक परिवार

राघवक बेटी पिताक फोनमे रहैत गोपनीय संवाद पर प्रश्न करैत छलीह। पहिनेक अध्याय ३७मे राघवक पुत्र द्वारा ‘साहब’ सम्बोधनक उल्लेख छल; एतय बेटी सेहो देखाओल गेल। पुत्र आ बेटी दुनू रहब सम्भाव्य अछि, मुदा पारिवारिक सदस्यसभक व्यापक पूर्वपरिचय उपलब्ध नहि। एकरा विरोध कहि नहि देबाक चाही; विपरीतमे पत्नी अलग रहबाक कथन आ बादक सहवासक दृश्य सीधा कालिक प्रश्न अछि। एहि भेदक साथ पात्रपरक विवरण जाँचबाक आवश्यकता अछि।

लाउक पुत्रक देश-लोक प्रश्न

लाउक पुत्र पिता द्वारा लाभ-भाषा मे देशक नामक उपयोग, मुदा व्यक्तिगत लोकक नामक उपेक्षा प्रश्नांकित करैत अछि। पिता कुल व्यापारक नक्शा, पुत्र मनुष्यक पहिचान पूछैत अछि। समुद्री शहरक सीमाहीन व्यवसायिक कल्पना उत्तराधिकारीक नजरमे सामाजिक ऋण बनि उठैत अछि। ई भाषा–भेद पाठककेँ जनसमूहक अनुपस्थित वर्गीकरणसँ व्यक्तिक प्रश्नपर घुरबैत अछि। किन्तु बेटे कीनल संस्थागत सुधार अथवा कानूनी कार्रवाईक कोई परिणाम एहि अध्यायमे नहि; प्रश्न मात्र निर्णायक तनाव अछि।

देविकाक पाठशाला : प्रश्नक सूत्र

देविका बच्चासभकेँ ‘जल्दी पैसा’, ‘गुप्त रखू’, ‘सभ एना करैत अछि’क जवाबमे केना–किएक–केकर प्रश्न सीखबैत छलीह। एहि अभ्यासमे शिक्षा डरक स्थाने विवेकक साहस बनैत अछि। कथनकेन्द्र बदलैत अछि—पहिने अपराधीक गोपनीय आज्ञा, एखन बालकक सार्वजनिक प्रतिप्रश्न। मुदा सुरक्षाक वास्तविक व्यवहारक जटिलता एक छोट नीतिवाक्यमे पूर्ण रूपेँ नहि समाहित; कथा एक सामाजिक बोधक सूत्र दैत अछि, सार्वकालिक व्यावहारिक मार्गदर्शिका नहि।

मीराक सहमतिक प्रश्नक नूतन घर

मीरा कथन करैत छलीह जे निज देहक अनुमति मालिक अथवा भीड़क नहि, व्यक्तिक अपन। एक किशोरी पूछैत छलीह जे भय बेचबाक काम घरक भीतरसँ होइत हो तँ की? एहि प्रश्नसँ ‘घर’केँ सदैव सुरक्षित स्मृतिस्थल मानबाक पूर्वभाव चुनौती पबैत अछि। पहिने मुन्नाक घर पीड़क प्रतिलोम आश्रय छल; एतय निजता-सुरक्षा घरक भीतर अलग संघर्ष होइत सकैत अछि। कथाकारक सामाजिक विस्तार एहि आलोचनामे गहन अछि।

‘ककर?’ शब्दक बहुमुखी दायित्व

अध्यायक उत्तरार्धमे बच्चासभ ‘ककर’ प्रश्न पर ठहरैत अछि: ककर पैसा, मृत्यु, जीत, आदेश, देश, गाम आ नाम? एक शब्द अनेक संस्थागत स्वामित्व के खोलैत अछि। कथनशास्त्रीय रूपसँ ई पुनरावृत्ति लयात्मक प्रश्न-स्तम्भ बनैत अछि। सब प्रश्नक एकहि तैयार उत्तर न देब उपन्यासक नूतन शक्ति होइत सकैत। मुदा जँ प्रत्येक प्रश्नक पछाति एकहि खलपात्रक जादुई पराजय आवए तँ प्रश्न खुलल रहबाक अर्थ घटत। वर्तमान अध्याय जवाब नहि, द्वारक खुलबाक दृश्य देइत अछि।

गोपक ‘दुआर’ नोट

गोपक नूतन फाइलमे दुआर विषयक छोटी टिप्पणी अछि: धूर्तक सन्तान पहिल प्रश्न-दूत बनैत अछि। ई टिप्पणी उपन्यासक भीतर स्वयं अपना शिल्प पर कथन होइत अछि। लेखकीय विवेचनक प्रतिनिधि स्वर फाइलमे प्रकट होइत अछि; सामाजिक घटनासभक समेकन करैत, पर पाठकक स्वतन्त्र अर्थनिर्माण किछु सीमित करैत। ‘दण्ड नहि, प्रश्न’क मूल विधि एतय पात्रगत भूमिकाक परिवर्तन रूपमे समक्ष अछि।

भूतक मैदानक नूतन सीमा

लोथ बच्चाक दल-विभाजन विषय पूछैत छथि। भूत, राकश आ प्रेत सभ मैदानमे नूतन भावक प्रतीक्षा करैत अछि। धूर्तक मोनक चार कातक उपस्थिति पूर्वक पंच-पात्रक अपेक्षा भिन्न ध्यान रखैत अछि; ब्रूम एतय घरक नातिनक अलग दूरस्थ प्रसंगमे उपस्थित अछि। ई दृश्य-कटौतिमे पात्र अनुपस्थित होएब जरूरी नहि कथागत लोप; बहुकेन्द्रीय सम्पादनक एक चयन अछि। तौ आरम्भसँ चलैत पाँच धूर्तक समूहक स्पष्ट नाटक अब पारिवारिक इकाइसभमे बाँटल जा रहल अछि।

प्रकरणक निष्कर्ष

‘पोतीक कापी’क शिल्पगत उत्कर्ष सात बरखक रेखाचित्र आ जीतक सरल प्रश्नमे अछि। धारदार आलोचना एतय बाहरी आंदोलनक आवाजसँ भीतरक उत्तराधिकारीक स्वाधीन आवाजक आविर्भाव देखैत अछि। गोपक दुआर-टिप्पणी आ ‘ककर’क क्रम प्रकरणक समेकित प्रश्नविधान स्थापित करैत अछि। कमजोर पक्ष पात/स्क्रीनक त्वरित नैतिक उत्तरक पुनरावृत्ति अछि। तौ वास्तविक घटनात्मक परिवर्तन ई अछि जे आरोपीक बालक पिता/दादा द्वारा निर्धारित उत्तराधिकार अपने प्रश्नक प्रकाशमे जाँचब शुरू करैत छथि।

प्रकरण १४६ | मूल अध्याय ४५ — भीतरक हवा

सोलहम साँस : दुआरक बादक हवा

‘पोतीक कापी’क बच्चाक प्रश्न बन्द दरबाजाक भीतर तक पहुँचल; अगिला अध्याय ओकरा ‘भीतरक हवा’ कहैत अछि। हवा अमूर्त भयक गन्धसँ संयुक्त अछि—घूस, ताला, संचालित गोपनीयता आ सम्पत्तिक निष्क्रिय सुरक्षा। कथा प्रश्नकेँ क्षणिक संवाद नहि, टिकाऊ पारिवारिक वातावरण-बदलाव बनबैत अछि। अतीतपर जारी न्यायिक दावा एखन भविष्यक सम्पत्ति-स्वीकृति पर उभरैत अछि। ई समय-संक्रमण व्यक्तिक उत्तराधिकारी सेहो एक स्वतन्त्र नैतिक पात्र छी, से देखबैत अछि।

पोतीक स्वयं लौटैत चित्र

बटुकनाथ पोतीक चित्र दराजमे नुकबैत अछि, मुदा चित्र मेज, तकिया आ शीशापर लौटैत अछि। पूर्वक सरकारी फाइल, स्क्रीन, आदेश पर जादुई लेखनक नियम एतय बालकापीपर लागल। नूतनता ई जे कागच शोषकक विरुद्ध बाहरी पार्टीक नहि, ओकर अपन पोतीक स्वैच्छिक कला अछि। चित्रक पुनरागमनक प्रत्यक्ष युक्ति पुरान जादुई तकनीक केँ दोहरबैत, पर दादा–पोतीक जीवित संवाद ओकर भावनात्मक बल बढ़बैत अछि।

‘कथा नहि कहब’क विरासत

पोती कहैत छलीह जे घरमे कथा नहि कहल जाए तँ चित्र स्वयं बनि जाइत अछि। एहि कथनमे स्मृति-प्रविधिक आलोचना अछि: यदि पितृपीढ़ी इतिहास नुकाएत, नव पीढ़ी अन्य दृश्य-मार्ग सँ ओकर प्रतीक बनाएत। हरिहरन अपना धन, वाहन, पुस्तकालय आ नामक उत्तराधिकार सोचैत अछि, मुदा चुप्पी सेहो पीढ़ीपर चलएबाक खतरा बुझैत अछि। ई आत्म-प्रश्न पूर्ण दोषस्वीकार नहि; स्मृतिक पारिवारिक संरक्षणक नूतन आरम्भ अछि।

दादाक स्पर्श ठम्हाबैत पोती

हरिहरन नेनीक माथ सहलाबए चाहैत, मुदा पोती पाछाँ हटि पहिने उत्तर माँगैत छलीह। एहि मुद्रा मे शरीरक स्नेह आ उत्तरदायित्वक संघर्ष अछि। बालिका प्रेम परित्याग नहि करैत; बिना प्रश्नक समाधान स्नेहकेँ भयक परदा बनबाक अवसर नहि दैत। एतय कथा हताश क्रोधक बदला छोटी शारीरिक अस्वीकृतिक नाटकीय शक्ति देखबैत अछि। दादाक ‘गवाही’क अनुभव सार्वजनिक मुकदमाक रूपक अछि, वास्तविक बालक द्वारा दण्डनिर्णय नहि।

बत्राक बेटाक कार-त्याग

चन्द्रपालक बेटा महँगी कार घुरा दैत अछि; डिक्कीमे धन, बैंकक कागच आ व्यावसायिक प्रमाणक सामग्री अछि। बेटा पिता-कमाइक पाछाँक अनाम मृतक, कर्जग्रस्त परिवार आ युवा पीड़ितक नामक प्रश्न उठबैत अछि। गाड़ी भौतिक सम्पत्ति अछि; बेटाक चुनाव परिवारक सहज उत्तराधिकारकेँ रोकैत अछि। तौ कार लौटएब करार, दान-धन, वित्तीय लेनदेनक समस्त दायित्वक समाधान नहि। कथा विरासत स्वीकार करबाक नैतिक शर्तक नाट्य-आरम्भ प्रस्तुत करैत अछि।

चन्द्रपालक पत्नी मौन गवाह

बेटाक इन्कार पत्नी दूरसँ सुनैत छलीह; ओकर चेहरापर राहत अछि। एहि छोट उपस्थिति सँ परिवारक पुरान भयक चिह्न भेटैत अछि, मुदा पत्नी दीर्घ संवादक पात्र नहि बनैत। ओ अपन बेटाक स्वरमे घरक पहिल स्पष्ट सत्य सम्भव देखैत छलीह। कथा स्त्रीक मौनक सामाजिक स्थान देखाबैत अछि, किन्तु पत्नी अपन निर्णय स्वयं कब लेत अथवा घरक वित्तीय क्रियापर हुनकर जानकारी कतेक, से एखन अपर्याप्त रूपेँ विकसित अछि। आलोचना एहि सीमा के नोट करैत अछि।

राघवक ‘चुप्पीक नोंद’

राघवक बेटी ‘चुप्पीक नोंद’ नामक कॉपी रखैत छलीह। संदेश आबिते पिता फोन उलटबैत अछि; बेटी लिखैत छलीह—पहिल चुप्पी: फोन उलटल। ई शिल्पगत रूपान्तरण मार्मिक अछि। जे पिता मिटबैत संदेशक माध्यमसँ अदृश्यता बनौने छल, ओकर बच्ची उत्तर-विहीन क्रियाक लिखित अभिलेख बनबैत अछि। व्यक्तिगत मौन घरेलू इतिहास बनैत अछि। चुप्पीको हर पल आरोपित अपराध प्रमाण बना देब उचित नहि; यहाँ ठोस संकेत गोपित व्यावसायिक प्रश्नक प्रसंगमे अछि।

लाउक पुत्रक सार्वजनिक निबन्ध

लाउक पुत्र विद्यालयक निबन्ध ‘लाभक वंश आ नामक ऋण’ पढ़ैत अछि। पुरस्कृत शैक्षिक मंचपर ओ पिता-व्यापारक विरासत विरुद्ध प्रश्न करैत अछि; सभागारक तालीक जगह मौन अबैत अछि। ब्रूमक पूर्वक वैश्विक

भाषणमञ्चक प्रतिलोम एतय विद्यालयिक मञ्च अछि। वरिष्ठ व्यापारी उच्च नैतिक भाषण बनबैत छल, बालक निजी घरक लाभक स्रोत जाँचैत अछि। तथापि बालक वास्तविक सम्पत्तिक कानूनी परित्याग करि चुकल, एहन निर्णय-दस्तावेज नहि; ई सार्वजनिक इरादाक कथन अछि।

ब्रूमक नातिन आ इतिहासक पुस्तक

एडवर्ड ब्रूमक नातिन कम्पनीक पुरान परियोजनामे मरल व्यक्तिक नाम पूछैत छलीह। ब्रूमक पुस्तकालय दुनियाक नीति-विचारक मोट ग्रन्थसँ भरल, मुदा नामक प्रश्नपर खाली देखबैत अछि। ग्रन्थक शाब्दिक खाली पृष्ठ जादुई लोक-अनुभव अछि; ओकर अर्थ पुस्तकविद्याक सर्वथा व्यर्थता नहि, विशेष व्यावसायिक भाषणक अपूर्ण मानविक सम्बन्ध अछि। नातिनक इतिहास-पाठ उत्तराधिकारक आलोचना कैं सार्वजनिक स्मृतिक अपेक्षासँ जोड़ैत अछि।

उत्तराधिकारी कैँ नूतन दलमे प्रवेश

अनन्या बा सँ पूछैत छलीह जे धूर्तक बच्चा प्रश्न करैत अछि तँ ओ ककर दलमे? बा उत्तर दैत छलीह जे प्रश्न लऽ कऽ अएनिहार लेल मैदान रोक नहि। ई जन्मसँ नैतिक दोष आरोपबाक निषेध अछि। पिता अथवा दादाक कृत्यक जाँच स्वीकार करितहुँ बालक पर वंशगत अपराधक अपरिवर्तनीय ठप्पा नहि। उपन्यासक खेल-संरचना एहिठाम सामाजिक समावेशक अधिक परिपक्व नियम बनबैत अछि। किन्तु प्रश्न पूछनिहार बालकक सुरक्षा आ स्वतन्त्रता तकर मूल शर्त अछि।

भयक वंशानुगति विरुद्ध सहमतिक वंश

मीरा रक्तक संग चुप्पी, लाज आ भय सेहो वंशानुगत होएबाक कथन करैत छलीह; नूतन वंशमे प्रश्न, अनुमति आ देहक अधिकार चाहैत छलीह। ई जीववैज्ञानिक वंशानुगतिक शाब्दिक विज्ञान नहि, सामाजिक पुनरुत्पादनक रूपक अछि। परिजनक गोपनीयता आ भय संस्कारक माध्यमसँ आगे जायत, तकरा तोड़बाक पात्रगत प्रतिज्ञा अछि। सौम्या आ ईराक उत्तराधिकार-विचार एही बिन्दुपर गीत, शपथ आ लेखनक स्वतन्त्र माध्यम सँ एक सूत्रमे जुड़ैत अछि।

पातपर पाँच वंशजक प्रश्न

गाछीमे हरिहरनक पोती, बत्राक बेटा, राघवक बेटी, लाउक पुत्र आ ब्रूमक नातिनक प्रश्न पात रूपमे टाँगल जाइत अछि। पाँच धूर्तक पुरान दल अब पाँच स्वतन्त्र वारिसक आवाज पबैत अछि। ध्यान देबाक चाही जे ई पाँति किसी एक समान कथा-भविष्यक गारण्टी नहि; वारिसक भिन्न आयु, देश, परिवार, भाषाभेद छथि। सामान्य सूत्र मात्र ई अछि जे पिता/दादाक सत्ता पर प्रश्न उपजि रहल। अलौकिक पात एहि विविधता कैं एक सामूहिक दृश्य बनबैत अछि।

‘नाम लेब, लाभ नहि’क लय

बालकसभक संयुक्त पाँति नाम घुराबय आ मेटल नामक बदला बनल लाभ त्यागबाक नीतिवाक्य बनैत अछि। दोहराओल प्रश्नक बाद ई पहिल बड़े पैमाने पर उत्तराधिकारीक चुनावक उद्घोष अछि। भूतक देहक हरियर आ उज्जर स्वर बदलैत अछि; लोथ, राकश आ हुलासी एक दृश्य-समूह बनैत छथि। ई प्रतिमात्मक उत्सव जीवित

वारिसक नूतन कर्तृत्व चिन्हैत अछि; वास्तविक सम्पत्ति-रद्द अथवा क्षतिपूर्ति सम्पन्न भऽ गेल, एहन तथ्य पाठमे एखन नहि।

सोलहम साँसक आलोचनात्मक निर्णय

‘भीतरक हवा’क प्रमुख शिल्पगत योगदान अपराधीक घरकेँ केवल दोषक ठाम नहि, परिवर्तनक नूतन संघर्षस्थल बनब अछि। पोतीक चित्र, बेटाक कार, बेटीक कॉपी, पुत्रक निबन्ध आ नातिनक इतिहासक प्रश्न समान ‘विरासत’क पाँच अलग वस्तुगत माध्यम छथि। एतय पात्रसभ केवल प्रतीक नहि रहैत, अपना स्वाधीन निर्णयक छोट अधिकार पबैत अछि। कमजोर पक्ष ई जे बालकसभ नैतिक अर्थ अक्सर अत्यधिक सुव्यवस्थित स्पष्ट वाक्यमे कहैत छथि; बालबोलीक अनिश्चितता कम पड़ैत अछि। तथापि अपराधी वंशजकेँ अपराधी न मानबाक विधान उपन्यासक सामाजिक दृष्टिक आवश्यक जटिलता अछि।

प्रकरण १४७ | मूल अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

इन्कारसँ चयन धरि

अध्याय ४५क सामूहिक घोषणा ‘नाम लेब, लाभ नहि’ अगिला अध्यायमे प्रत्यक्ष उत्तराधिकारक वस्तु-चयन बनैत अछि। पोतीक कागच, बेटाक मोबाइल, पत्नीक थारी आ नातिनक रंगक चित्र—सभ वस्तु धनक स्रोत पर पारिवारिक प्रश्न करैत अछि। सत्रहम साँसक मूल कथात्मक मोड़ ई नहि जे सम्पत्ति तुरन्त छोड़ल गेल; ई अछि जे उत्तराधिकारी परम्परागत निस्सन्देह स्वीकृतिक स्थाने स्रोत-परिचयक परीक्षा करैत अछि। ई नियम उपन्यासक प्रारम्भक ‘नामक बही’क विचारकेँ भविष्यक पीढ़ी लग लऽ जाइत अछि।

बटुकनाथक वसीयतनामाक नूतन पाठ

बटुकनाथ पोतीक खाली कागच पर घर, खाता आ नामक तीन गोला देखैत अछि। एतय भविष्यक वारिस न्यायिक घोषणा नहि, चित्र द्वारा सम्पत्तिक स्रोत प्रश्नांकित करैत अछि। दादाक निर्मल वसीयतनामा शाब्दिक रूपेँ व्यवस्थित, मुदा हाथमे चिपकैत पट्टीसन भारी होइत अछि। ई जादुई अनुभूति वारिसक सम्पत्तिक कानूनी मान्यताक दोष स्वयं सिद्ध नहि करैत; कथनशास्त्रमे स्वच्छ अनुच्छेद आ दबाओल जीवन-इतिहासक विरोध अछि। नाम-लाभक नैतिक मूल्यांकन विधिक वसीयतसँ पृथक, मुदा तकर सामाजिक आधारकेँ चुनौती दैत अछि।

चन्द्रपालक बेटाक ‘मौका आ शिकार’

बत्राक बेटा उज्ज्वल, मुन्ना आ अन्य पीड़ितक नामक सूची पिता समक्ष राखैत अछि। पिता जेकरा ‘मौका’ चिन्हबाक बुद्धि सिखौने छल, बेटा अवसर आ शिकारक अन्तर पूछैत अछि। एक व्यावसायिक शिक्षा पर ओकर प्राप्तकर्ता स्वतन्त्र आलोचना करैत अछि। एहि संवादमे पिता-पुत्र सम्बन्ध केवल वित्तीय संघर्ष नहि, ज्ञानक पीढ़ीगत पुनर्परीक्षा बनैत अछि। पुत्र अपना नामपर मौजूद कथित लाभक स्रोत-लेखा माँगैत अछि; ई मांग वास्तविक लेखांकन शुरू भेलक विधान नहि, उत्तराधिकार स्वीकार करबाक शर्त अछि।

राघवक पत्नी आ भातक एक दाना

पत्नी थारीसँ प्रतिदिन एक दाना अलग राखैत छलीह। राघवक प्रश्नपर अनाथ बनाओल श्रम आ मृतकक स्मृतिसँ दानाक अर्थ जुड़ैत अछि। भोजनक साधारण दृश्य गोपनीय सन्देशक जालक पाछाँक आर्थिक करुणा बोध करबैत अछि। राघव घर छोड़ि होटल गेलापर सेहो हर थारीमे अलग दाना देखैत अछि। अलौकिक पुनरावृत्ति पारिवारिक श्रमक नाकार नहि सकबाक छवि अछि। तथापि अध्याय ३७क पत्नी-त्यागक कथन सँ अध्याय ४३ आ ४६क साथ रहबाक स्थिति स्पष्ट संक्रमणबिना एखनहुँ असङ्गत अछि।

लाउक नातिनक गाछ आ फोन

लाउक नातिन काँचपर गाछ बनबैत छलीह, डारिपर मोबाइलक फल लटकैत अछि। प्रत्येक फोन मृतकक नामक प्रश्न करैत अछि। एतय गाछ, जकरा गढ़ नारिकेलमे लोकस्मृतिक माध्यम मानल गेल, हांगकांगक वातानुकूलित शीशाघरक भीतर रंगद्वारा पुनर्जन्म पबैत अछि। बूढ़बा भूत अथवा वास्तविक गाम प्रत्यक्ष उपस्थित नहि; बालचित्र दूरी पार करैत अछि। लाउक नातिनक चित्रक स्वाधीनता पोतीक अध्याय ४४क चित्रसँ शिल्पगत रूपेँ साम्य राखैत अछि, मुदा अलग घरक विशिष्ट प्रश्न पर बल दैत अछि।

लाउक सम्पत्ति सूची अनुवाद माँगैत अछि

लाउ अनेक देशक कम्पनी, बैंक, एजेंट, निधि आ परतदार सम्पत्ति सूचीक बीच नातिनक नाम जोड़ब चाहैत अछि। सूची तखन पीड़ितक नाम-भाषा माँगैत अछि। एहि कथनमे धनक वैधता पर परम्परागत लेखाक शुद्धता सँ अतिरिक्त सामाजिक स्रोतक प्रश्न उभरैत अछि। विश्व-बाजारक लाभक अर्थ स्थानीय मृतकक जीवनसँ जोड़क यत्न चित्रित अछि। मुदा सम्पूर्ण वित्तीय रेकर्डक वास्तविक जाँच अथवा सम्पत्तिक स्रोत-नक्शा पाठमे उपस्थित नहि; सूची जादुई नैतिक प्रश्नक मुख्य उपकरण अछि।

श्रम-हानि-नामक तीन प्रश्न

गाछीमे बच्चा सँ कहल जाइत अछि जे कोनो वस्तु उठाएबासँ पहिने ओकर श्रम, हानि आ नाम केकरा? एहि त्रिसूत्रमे पूर्वक ‘घर–भय–सपना’ आ ‘घर–मृत्यु–अपमान’क नियमक तुलना आवश्यक अछि। पहिल व्यक्तिगत जीवनवृत्त, दोसर मृत्यु-अपमानक अभिलेख, तेसर सम्पत्तिक सामाजिक स्रोत पर केन्द्रित। ई अलग प्रयोजनक अर्थवान क्रम होय सकैत अछि, मुदा लेखक बहुत बेर एक नियमक सीमा आ दोसरक प्रायोजनीयता स्पष्ट नहि चिन्हैत। पाठकक काज समान शब्द ‘तीन’क भीतर भिन्न कथन-कार्य पहिचानब अछि।

खिलौना कारक तुलना काठक लट्टूसँ

एक बच्चा चमकैत कार लैत अछि, मगर ओकर श्रमक स्रोत कहि नहि सकैत, तेँ खेलसँ बाहर रखल जाइत अछि। दोसर बच्चा दादाक हाथसँ बनल काठक लट्टू पहिचानैत अछि आ खेलमे राखैत अछि। ई बहुत सघन उपभोग-दृष्टान्त अछि: भव्य चमकक बदला ज्ञात निर्माता सँ सम्बन्ध। तथापि विशिष्ट उत्पादकक नाम नहि जानबाक कारण हर औद्योगिक वस्तु नैतिक रूपेँ अपात्र होइत अछि, एहन सार्वत्रिक नियम खेलक प्रतीककेँ जरूरतसँ बेसी कठोर करि देत। कथा स्वयं वस्तुक इतिहास जाँचबाक अभ्यास रचैत अछि।

मीराक निजी जीवनक ‘उत्तराधिकार’ पर सीमा

मीरा स्पष्ट करैत छलीह जे ककरो प्रेम, देह अथवा भय उत्तराधिकारक वस्तु नहि। एहि सन्दर्भमे सम्पत्तिक सामाजिक स्रोतक आन्दोलन व्यक्तिगत देहक स्वायत्तता पर कब्जा नहि जमाबए, ई सीमा महत्त्वपूर्ण अछि। वारिसक प्रश्नक उत्साह सामूहिक जबरदस्ती मे न बदलए। देविका म्यूल खाताक अज्ञान, निशांत वित्तीय श्रेणी आ सौम्या भाषा सम्बन्धी अलग स्तर जोड़ैत छथि। एहि तरह श्रोतासभ लेल कथा एक ऋण-इतिहाससँ व्यापक सार्वजनिक-व्यक्तिगत सम्बन्धक सिद्धान्त तक फैलैत अछि।

बूढ़बा भूतक दिनक रूपान्तरण

बूढ़बा भूत पहिल बेर दिनक उजासमे समग्र देहसहित देखाइत छथि; कारी देहमे राखक धूसर रंग अछि। ई रूपान्तरण भूतक मुक्तिकेँ पूर्ण घोषित नहि करैत, मुदा जीवितक नैतिक परिपक्वता सँ प्रेतलोकक दृष्टि बदलैत देखबैत अछि। चन्ना गाछीकेँ रातिक भयकारी मञ्च मानबाक पुरान सीमा टूटैत अछि। राकशक प्रकाश घटब सेहो एहि कथात्मक संकेतक विस्तार अछि—बच्चाक प्रश्न स्वयं आलोक देबए लगैत अछि। ई अनुष्ठानिक चित्र कथा-अर्थ स्पष्ट करैत, मुदा सामाजिक परिणामक तथ्य-संख्या नहि।

‘इन्कार’ काटि ‘चयन’ लिखबाक संशोधन

अनन्या सत्रहम साँसक नाम ‘उत्तराधिकारीक इन्कार’ लिखि, फेर काटि ‘चयन’ करैत छलीह। ई एक छोट, विशेष महत्त्वपूर्ण आत्म-सम्पादकीय क्रिया अछि। नकारात्मक त्यागक मुद्रा सँ भविष्यक कथा-स्वामित्वक सकारात्मक अधिकार धरि अर्थ बदलैत अछि। बच्चासभ केवल धन नहि लेबाक बात नहि करैत, इतिहास सँ कोन नाम, श्रम आ प्रेम अपन बनाओल जाए से चुनैत छथि। आरुणि एहि दृश्य देखैत अनुभव करैत छथि जे लेखक अब शब्दक एकमात्र निर्णायक नहि।

धरतीमे समा गेल कागच आ अंकुर

सामूहिक पन्ना पवनमे उड़बाक बदला माटिमे धँसि नारिकेलक अंकुर बनैत अछि। एहि प्रतिमामे लिखित चुनाव जैविक भविष्यक रूप धरैत अछि। कागच दस्तावेजसँ बीज बनैत अछि; एतय अध्याय ३९क ‘बीजक शान्ति’क स्पष्ट आवर्तन अछि। बाल-नैतिकता प्रकृतिक असम्भव जन्मक माध्यमसँ दृश्य बनैत अछि। तथापि वानस्पतिक असम्भवता जादुई यथार्थक कल्पना अछि; सामाजिक परिवर्तनक टिकाऊ संस्थागत परिणामक रूपमे ओकरा स्वतः सत्यापित नहि मानब।

धूर्तक अलग प्रतिरक्षा

बटुकनाथ हस्ताक्षर करए ठम्हैत अछि; चन्द्रपाल बेटाक नाम हटए चाहैत, राघव होटल बदलितहुँ भातक एक दानासँ बचि नहि पबैत, लाउ नातिनक चित्र हटाबए आदेश दैत अछि। ई सभ परस्पर भिन्न व्यवहार अछि। वंशजक प्रश्न पिता/दादाकेँ अनिवार्य पश्चातापी नहि बनबैत; कियो रोष करैत, कियो सुरक्षित खाताबचाव सोचैत, कियो घर छोड़ैत। अपराधीक मनोविज्ञानक एहि भिन्नता पर बल देला पर अध्याय एकरूपी नैतिक उत्सवसँ अधिक जटिल पढ़ल जाइत अछि।

प्रकरणक निर्णय

‘उत्तराधिकारक अन्हार’क केन्द्रीय योगदान ‘इन्कार’क स्थानपर ‘चयन’क आख्यानात्मक स्थापना अछि। नातिनक चित्र, पोतीक कागच, बेटाक स्रोत-सूची, मीराक निजता-सीमा आ दादाक बनाओल लट्टू वस्तुसभकेँ श्रम-इतिहासक दर्पण बनबैत छथि। सामाजिक सुधार एक घोषणाक बाद तुरन्त पूर्ण नहि; खलपात्रक अनिच्छा लगातार बचल अछि। लेखकक जादुई कागचक अपेक्षा अनन्याक सम्पादन-कर्म अधिक सूक्ष्म साहित्यिक नवोन्मेष अछि। स्त्री-पुरुषक गृहस्थ इतिहासक पूर्वक असङ्गतिसभ तइयो अनसुलझल रहैत अछि।

प्रकरण १४८ | मूल अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

अठारहम साँसक नूतन पौराणिक मञ्च

‘गज-ग्राह आख्यान’ पूर्वक उत्तराधिकार-विवादकेँ नदी–पानि–ग्रहणक पुरान कथारूपमे पुनः राखैत अछि। बा पीतलक कटोरा आ कमला-बलानक कछारक माटि द्वारा गजक पएर ग्राह द्वारा पकड़बाक कथा शुरू करैत छलीह। धर्मग्रन्थक कथा जसक तस उपन्यासपर आरोपित नहि; गढ़ नारिकेलक लोक-नैतिक प्रश्न—गज के, ग्राह के, आ पानि के—मूल कथा कैँ वर्तमान सामाजिक सन्दर्भमे पुनर्परिभाषित करैत अछि। एतय मिथकीय कथा अन्तर्निहित आख्यान अछि, मुख्य रेखीय घटना-श्रृंखलासँ एक भिन्न कथन-स्तर।

कथित उद्धारक तेसर हाथक प्रश्न

बा कथाक गज–ग्राह संघर्षमे केवल गजक शक्ति अथवा ग्राहक क्रूरता नहि, बाहरी सहायता अथवा उद्धारक तेसर हाथक सम्भावना खोलैत छलीह। कथनशास्त्रीय रूपसँ त्रिस्तरीय पात्र-भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि: शोषित, शोषक आ संस्थागत दर्शक/उत्तरदाता। पूर्वक अदालतक देरी आ समुदायिक नाम-पाठक विरोध एहि पौराणिक रूपकमे नूतन मञ्च पबैत अछि। किन्तु कोन ऐतिहासिक पात्र स्थायी गज, कोन स्थायी ग्राह, से निश्चित नहि; भूमिकासभ खेलमे बदलि सकैत छथि।

अनन्याक नामभरा पानिक नक्शा

अनन्या गज आ ग्राहक बीच बनाओल पानिमे उज्ज्वल, सरयू, नन्द, तीस, तीन सय, म्यूल खाता, निजता आ श्वास जकाँ शब्द रखैत छलीह। एहि घनीभूत लेखनमे पूर्वक अनेक संकट एक लोक-आख्यानक जलमे संकलित अछि। ई काव्यात्मक संपीड़नक बल अछि। पर संख्या आ नाम समान श्रेणी नहि; ‘तीस’ सरकारी सूची, ‘तीन सय’ लोक-स्मृतिक दावाक रूप होइत सकैत, ओकरा पूर्ण सत्यापित गणना कहि समान स्तर पर राखब टारबाक चाही।

लाउक परिवारक मेइ-लता : नामक मिश्रित उत्पत्ति

लाउक परिवारमे पोसाएल लड़की मेइ-लता गढ़ नारिकेलक खेलमे उपस्थित होइत छलीह। भारतीय आया बचपनमे हुनका ‘लता’ कहने छलीह, जाहिसँ मिश्रित नामक इतिहास उभरैत अछि। अध्याय ४५मे लाउक पुत्र आ ४६मे नातिनक प्रसंग छल; मेइ-लता के हुनका सभमे सँ ककरो समान व्यक्ति कहबाक आधार नहि। ई एक

स्वतन्त्र परिवारसम्बद्ध लड़कीक प्रवेश बुझब उचित अछि। विदेशी परिवारक बच्चाक मिथिलाक नाम-स्मृतिसँ अनूठ सम्बन्ध एतय नूतन बहुभाषिक, अन्तरराष्ट्रीय दृष्टिकेन्द्र बनबैत अछि।

ग्राहक भूमिका निभबैत हरिहरनक पोती

पहिल खेलमे अनन्या गज आ हरिहरनक पोती ग्राह बनैत छलीह। पएर पकड़बक क्रिया अचानक चरित्रक नियत नैतिक दुष्टता नहि; खेलक भूमिका अछि। अनन्या सरयू, उज्ज्वल आ नन्दक नाम बजिते पकड़ ढीला पड़ैत अछि। एहि रूपकमे स्मृति शारीरिक मुक्ति देबाक जादुई शर्त अछि। लेकिन जन्मसँ अपराधी परिवारक पोती ग्राहक वंशगत समकक्ष नहिं; एकर विशेष शिल्पगत बल खेलक भूमिकाक स्वैच्छिक परिवर्तनमे अछि। पीढ़ीगत दुष्टता आरोपब कथा-सूत्रक विपरीत हएत।

गज-ग्राहक पारम्परिक स्थिरता पर प्रश्न

गज बलवान पशु, ग्राह पानिक भीतर लाभान्वित पकड़ राखनिहार। कथामे जल स्वयं ग्राहक पक्षमे प्रतीत होइत, किन्तु एहि उपन्यासमे जल मृतकक नामक बाहक सेहो रहल अछि। अतः पानि केवल हिंसक माध्यम नहि। प्रतीकक ई द्वित्व आवश्यक अछि: नदी श्रमिकक देह बहाओल, आ वैह नदी लोकस्मृतिक कथा सुनाओल। एकहि प्राकृतिक स्थानकेँ नैतिक एकरेखीय खलनायक मानलासँ कथाविश्वक जल-वृत्तान्तक बहुविधता लुप्त हएत।

सत्यव्रतक किताबसँ सुनबाक निर्णय

दूर शहरमे सत्यव्रत मेहता पुरान गज-ग्राह आख्यानक पुस्तक खोलैत छथि, मुदा कथक कहैत छथि जे कथा हुनका पढ़ि रहल अछि। ई आत्मपरावर्तित वाक्य न्यायिक सत्ता आ साहित्यिक पाठकक स्थान उलटैत अछि। सत्यव्रत अपना उद्धारक-देवता नहि, बहिरा संस्थाक एक उत्तरदायी सदस्य समझए लगैत छथि। ओ जे कागच लऽ आएबाक विचार करैत छथि, से निज संस्थाकेँ सेहो प्रश्नमे राखएवला। ई कथानकक महत्त्वपूर्ण सम्भावित संस्था-संवाद अछि, किन्तु वास्तविक आगमन, स्वीकारोक्ति अथवा आदेश एखन घटनामे घटित नहि।

देविकाक अनिवार्य नाम-प्रश्न

गज-ग्राह खेलक बीच एक बच्चा अथवा पात्र अपन नामक उच्चारणमे अटकैत अछि, देविका कहैत छलीह जे पहिने अपन नाम कह। एहि दृश्य मे पूर्वक नाम-सम्मानक विधान पुनः प्रत्यक्ष क्रियामे बदलैत अछि। संकटमे उत्तरदायित्वक आरम्भ नामसँ होइ सकैत अछि; मुदा ककरो नाम उच्चरित कराओलै मात्र क्षतिपूर्ति, सुरक्षा वा दोषनिरूपण नहि। देविकाक भूमिका विशिष्ट अछि, कारण ओ स्वयं उज्ज्वलक शोकसँ लोक-शिक्षाक दिशा मे अएल छलीह। एकरा अलौकिक शपथक निर्जीव पाठ नहि, जीवनक कठिन प्राप्त अनुभव रूपमे पढ़बाक चाही।

ग्राहक भूखक कैद

पनिडुब्बी पहिल बेर अपन आवाजसँ कहैत छथि जे ग्राह सेहो भूखक कैदी होइत अछि, मुदा भूखकेँ धर्म बनायब अपराध अछि। ई वाक्य कथाक शोषक-विमर्शमे एक नूतन सूक्ष्मता अछि। शोषणक सामाजिक कारण आ शोषकक व्यक्तिगत निर्णय एकहि रूपकमे जुड़ैत छथि। भूखक व्याख्या हिंसाक औचित्य नहि; समाजक भौतिक गरिबी आ योजनाबद्ध लाभक अनिवार्य अन्तर बुझबाक अवसर अछि। ग्राहक भूमिका शुद्ध दानवीय, गजक भूमिका पूर्ण निर्दोष कहि सीमित कएल जाए तँ पात्रसभक पूर्वक बहुअर्थता घटत।

राघवक भानजा आ वारिसक सम्बन्ध

अध्याय ४७मे खेलमे राघव ‘सिग्नल’क भानजाक उल्लेख अछि, जबकि अध्याय ४५मे बेटी आ अध्याय ३७मे पुत्रक उल्लेख छल। ई आवश्यक रूपेँ विरोध नहि—पुत्र, बेटी आ भानजा अलग रिश्तेदार होइत सकैत छथि। मुदा राघवक विस्तृत परिवार-वृत्तान्त, ककरा केकर संग रहबाक स्थिति आ कालक्रम पूर्ण विकसित नहि। एतय भानजाकेँ स्वतः बेटी/पुत्रक बदला धरि लेलासँ स्रोतगत भ्रम उत्पन्न होएत। परिवारक बहुल सदस्यता नैतिक प्रश्नक नूतन विस्तार सम्भव करैत अछि।

टिकटपर बदलैत तिथि

बटुकनाथ गढ़ नारिकेलसँ घुरलाक बाद ट्रेनक टिकटपर यात्रा-तिथि बदलैत देखैत अछि—प्रत्येक दिन। एहि अलौकिक काल-विपर्ययमे यात्रा एक ऐतिहासिक एकल घटना नहि, निरन्तर आन्तरिक उत्तरदायित्वक अनुभव बनैत अछि। पूर्वक अध्याय २३, २६, ३५ आ ४०मे वास्तविक गाम-आगमन/ट्रेन-यात्रा बारम्बार प्रस्तुत छल; बिना स्पष्ट समयचिह्नक तकर सम्बन्ध एखनो पाठगत समस्या अछि। बदलैत टिकट एहि आवर्तनक कलात्मक रूपक मजबूत करैत, मुदा मूल घटनाक वास्तविक क्रम स्वतः प्रमाणित नहि करैत।

सुनबाक क्षमता, अदालत आ प्रायश्चित

सत्यव्रतक सम्भावित आगमनकेँ बा तलवार अथवा विजय-आदेशक बदला ‘कान’ लऽ कऽ अएबाक रूपमे देखबैत छलीह। एहि रूपकमे पुरान व्यवस्था सुनबाक क्षमता नहि राखबाक कारण पीड़ितक नाम मेटबैत छल। संवादक स्थापना दण्डक पूर्ण निषेध नहि; वास्तविक सुनवाईक प्रथम नैतिक शर्त अछि। लोक-अभिलेखक आवाज अदालत धरि पहुँचनाइ, तथ्यगत जाँच आ वैधानिक प्रतिकरक प्रश्न अलग रहबाक चाही। कथा सुनबाक अभ्यासमे अटकैत अछि, उचित दण्ड-व्यवस्थाक अन्तिम समाधान एहि चरणमे नहि।

समाप्त न भेल अठारहम साँस

गज-ग्राह खेलक पानि गोलमे घूमैत रहैत अछि, थाकल गजक साँस अटकल अछि, आ अगिला पुकारक प्रतीक्षा होइत अछि। ई अन्त अध्याय ३९क रुकेल कबड्डी तथा अध्याय ४६क अंकुर-जन्मसँ प्रतिध्वनित अछि। अवसानक बदला स्थगित पुकार उपन्यासक दीर्घ आख्यान-विधानक अंग बनैत अछि। शिल्पगत जोखिम एतय सेहो अछि: लगातार प्रत्येक अध्याय ‘अभी आरम्भ’ कहि रुकैत अछि, जाहिसँ अन्तक नाटकीय शक्ति समय-समय पर क्षीण होइत। मुदा पुरान मिथकक प्रश्नवाचक पुनर्पाठ एहि बिन्दुपर एक सार्थक नूतन कथात्मक कारण देइत अछि।

गज-ग्राहक कथनगत निर्णय

‘गज-ग्राह आख्यान’क प्रधान उपलब्धि पुरान पौराणिक रूपककेँ गढ़ नारिकेलक जल-भूगोल, बैंक-ठगी, पुलक श्रम, निजता आ उत्तराधिकारक असन्तोषसँ पुनः सम्बद्ध करब अछि। मेइ-लताक मिश्रित नाम, सत्यव्रतक आत्म-संशय, पनिडुब्बीक ग्राहक भूख सम्बन्धी दृष्टि आ बालकक भूमिकाखेल एक बहुस्तरीय नूतनता दैत अछि। सीमा ई जे पुरान गोहिक रूपक आ गज–ग्राहक ग्राहक प्रतिमा बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध कतेको ठाम घोषणामूलक रहल अछि; प्रत्येक पात्रक भिन्न ऐतिहासिक कारण सुरक्षित राखब आवश्यक। अन्ततः पाठ नायकक चमत्कारिक उद्धार नहि, सुनबाक सामूहिक क्षमताक प्रतीक्षा पर थम्हैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय मूल्यांकन : अध्याय ४०-४७क कथा-आख्यानशास्त्रीय सन्धि

एहि आठ अध्यायक मूल संरचना ‘ओसक अक्षर’ सँ ‘गज–ग्राह’ धरि क्रमिक विस्तार अछि। एगारहम साँसमे नामक संग जीवनक वस्तु जुड़ैत; बारहम साँसमे वस्तु जीवन-मार्ग बनैत; तेरहम साँसमे मार्ग जिम्मेदारीक भार बनैत; चौदहम साँसमे भार घर-घर चलैत; पन्द्रहम साँसमे आरोपीक पोतीक चित्र आ बच्चाक ‘ककर?’ प्रश्न प्रवेश करैत; सोलहम साँसमे पितृ-सम्पत्तिक उत्तराधिकारी सवाल करैत; सत्रहम साँसमे ‘इन्कार’ सँ ‘चयन’ होइत; अठारहम साँसमे गज–ग्राहक लोककथा कथा-संसारक नूतन व्याख्यात्मक मञ्च बनैत अछि। एहि प्रकार खेल, वस्तु, अभिलेख, गृहस्थ वाणी आ मिथक अलग-अलग विधागत रूप रखितहुँ एक दीर्घ कड़ी बनबैत छथि।

मूल पाठमे देखल गम्भीर निरन्तरता-प्रश्नक दूटा समूह अछि। सरयू देवी/सरयू महतो सम्बन्धी पहिने स्त्री-मजदूरक विवरण आ एखन कमलीक बाबूजी तथा पत्नीक थान उल्लेखक मेल स्पष्ट नहि। राघवक पत्नी अध्याय ३७मे घर छोड़ि चुकली कहाओल, अध्याय ४३/४६मे फेर भोजन परसैत देखाओल छथि; बीचक कालिक घटनाक्रम अनुपस्थित अछि। ई विवरण अलौकिक प्रतीक नहि, पात्रक जीवनी सम्बन्धी विरोध अछि। उज्ज्वलक मृत्यु-पद्धतिक विरोध आ बटुकनाथक बारम्बार यात्राक काल-क्रम सेहो पहिने जकाँ जाँचक विषय बनल अछि। राघवक पुत्र, बेटी आ भानजा; लाउक पुत्र, नातिन आ मेइ-लता—ई सम्बन्धसभकेँ बिना साक्ष्य एक पात्रमे मिलायब नहि चाही।

एहि खण्डक सबसँ प्रभावी दृश्यसभ ओ छथि जतय जादुई कागच अथवा स्क्रीनक पुनरावृत्तिसँ बाहर वास्तविक सामाजिक क्रिया घटैत अछि: कमलीक टूटल पायल, वृद्धाक ‘भादवक सोम’, बैंकबाबूक चौदह खाताक प्रारम्भिक जाँच, मीराक अनुमति-सम्मत नामलेखन, आहत युवतीक थाना जाएबाक तैयारी, राघवक बेटीक ‘चुप्पीक नोंद’, बत्राक बेटाक कार लौटाएब, अनन्याक ‘चयन’ शब्द-संशोधन आ सत्यव्रतक सुनबाक तैयारी। एहि दृश्यसभमे कथन-समय छोट, वस्तु ठोस, निर्णय अपूर्ण, पात्रक स्वत्व जटिल रहैत अछि।

अध्याय ४७क पौराणिक अन्तर्कथन उपन्यासक जादुई यथार्थकेँ दोसर गहिराई दैत अछि। लोककथाक स्थिर गज–ग्राह प्रतिमाकेँ श्रम-वितरण, संसाधन, सत्ता आ श्रोताक नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्नमे खोलल गेल अछि। मुदा ई केवल बृहत्तर अर्थक एक सम्भाव्य पाठ अछि; कथाक भीतर प्रत्येक विचित्र संयोगकेँ पूर्ण प्रमाणित सामाजिक कारण मानब उचित नहि। समीक्षा कथा-काल, दृष्टिकेन्द्र, कथावाचकक आत्म-सन्दर्भ, भाषिक पुनरावृत्ति, अभिलेख–वस्तुक शिल्प आ पात्र-विरोधक स्वतन्त्र जाँचपर केन्द्रित रहल अछि; नव्य-न्यायीय प्रमाणपरीक्षाक उपयोग नहि कएल गेल।

प्रकरण १४९ | मूल अध्याय ४८ — पुकार

अठारहम साँसक प्रतीक्षासँ उन्नैसम साँसक श्रवण

अध्याय ४७क गज–ग्राह खेल थाकल गजक पुकारक प्रतीक्षा पर रुकल छल। अध्याय ४८ ओहि स्थगनकेँ अगिला साँसक विधि बनबैत अछि। पूर्वक कथामे ‘सही नाम बजाउ’ खेलक प्राथमिक नियम छल; आब नाम सुनबाक योग्य कान बनब नूतन प्रश्न अछि। घटना-संरचना नामक उच्चारणसँ श्रवणक उत्तरदायित्व दिशि घुरैत

अछि। लोकगीत पहिने पूरा सुनबाक आग्रह करैत अछि, फेर कथा खाली कटोरा, मौन आ देर सँ अएनिहार श्रोता द्वारा ओकर परीक्षण करैत अछि। गीतक नैतिक प्रस्ताव आ कथाभित्र सम्पन्न कार्य समान नहि; हुनका बीचक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

ओसक असामान्य टिकब आ कालक ठहराव

भोरक बाद दिन चढ़ितहुँ चन्ना गाछीक पातपर ओस नहि सूखैत। गाममे स्त्रीसभ घरेलू काज समाप्त करैत छलीह, बच्चासभ बस्ता लेने निकलैत अछि, बूढ़ लोक दलानपर बैसैत अछि। सामान्य दिनचर्याक बीच रुकल ओस अनसुन्न पुकारक कथात्मक समय चिन्हैत अछि। जादुई यथार्थ समयकेँ पूर्ण रोकैत नहि; समाजक व्यवहार चलैत रहैत अछि, मुदा गाछीक एक सूक्ष्म तत्व प्रतीक्षाक लम्बाइ व्यक्त करैत अछि। एहि विरोधमे पाठक बुझैत अछि जे सामुदायिक स्मृतिक काल घड़ीक दिनसँ अलग चलि सकैत अछि।

खाली कटोराक नूतन श्रवण-प्रतीक

अनन्या एहि बेर खाली कागचक बदला खाली कटोरा अनैत छलीह। हुनकर विचारमे पहिनहि भरल कटोरा अपना प्रतिमामे आवाजकेँ फँसा सकैत अछि; खाली पात्र दूसराक कथन लेल जगह दैत अछि। ई आख्यानशास्त्रीय रूपसँ महत्त्वपूर्ण रूपान्तरण अछि। पहिले पात, कागच, स्क्रीन आ पाथर लिखबाक वस्तु छल; कटोरा पहिने ग्रहण करबाक माध्यम अछि। बूढ़बा भूत कटोरा लग कान राखैत छथि, अर्थात् लोक-अलौकिक सत्ता सेहो सुनबाक अभ्यास करैत अछि। कटोरा कोनो कानूनी अभिलेखक तकनीकी विकल्प नहि, संवादक खुलल संरचनाक बिम्ब अछि।

सरयूक काँपैत अक्षर आ पहिचानक प्रश्न

बच्चासभ सरयूक नाम लिखब शुरू करैत छथि; ककरो ‘स’ टेढ़, ककरो मात्रा चूकैत अछि। बा त्रुटिकेँ तत्क्षण दण्डित करबाक बदला काँपैत लिखनीक मानवीयता देखबैत छलीह। ई दृश्य नाम सही लिखबाक आवश्यकता आ सीखबाक पहिल चरणक बीच सन्तुलन बनबैत अछि। मुदा पूर्वक अध्यायसभमे सरयू देवी/सरयू महतो तथा स्त्री/पिता परिचयक विरोध अछि। एतय काँपैत अक्षर ओहि तथ्यगत असङ्गतिक स्वतः समाधान नहि; एक दृश्यक भावात्मक अर्थ आ दीर्घकालीन नाम-पंजीक स्थिरता अलग विषय रहैत अछि।

देविकाक पुकार : शोकसँ पाठशाला

देविका उज्ज्वलक फोन माटिपर राखि कहैत छलीह जे भाइक नाम खेलमे नहि, पाठशालामे लिखल जाए। एहि चयनसँ मृतकक निजी शोक लोकशिक्षाक संरचनामे प्रवेश करैत अछि। जादुई कबड्डीक एक नायक-सदृश पुकारक बदला जीवित बहिनक व्यावहारिक कर्तृत्व प्रमुख होइत अछि। देविका भावनाविहीन नहि भेल; ओ शोकक कारण सहायता-कार्य चुनैत छलीह। फोन भयक पूर्व-माध्यम रहितहुँ आब गवाहीक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। तथापि ओकर निजी सामग्रीक सुरक्षित प्रयोगक सहमति सम्बन्धी मर्यादा पहिनेक निजता-वृत्तसँ मिलाकऽ पढ़बाक चाही।

जीवित मुन्नाक छाहक पुनःस्थापना

मुन्ना पासवानक पुकार मृतकसभक बीच अबैत अछि, यद्यपि ओ जीवित अछि। ओकर बैंक-खाता, अभियुक्तक दर्जा आ सामाजिक नामक खण्डन अनेक स्तरक उत्पीड़न दर्शबैत अछि। अनन्या ओकरा भीतर बजए कहैत

छलीह, बूढ़बा भूत पाछाँ छूटल छाह उठा पएर लग राखैत छथि। ई कथा-छवि मृत्युसँ भिन्न प्रकारक नाम-लोपक संवेदनात्मक रूप अछि। बा जानि-बुझि कएल अपराध आ अज्ञानमे फँसल व्यक्तिक बोझ अलग कहैत छलीह। मुदा ‘अज्ञान’क पात्रगत कथन विधिक दोषमुक्तिक निर्णायक प्रमाण नहि; सामाजिक श्रवण आ न्यायिक परीक्षणक स्तर अलग अछि।

सत्यव्रतक घण्टी आ शहर-गामक ध्वनिपुल

दिल्लीक सरकारी पुस्तकालयमे सत्यव्रतक सेवक बजएबाक पीतलक घण्टी अपने बाजैत अछि। दोसर ध्वनि खाली कटोराक निनाद बनैत अछि; हवामे कमला-बलानक कछारक गन्ध प्रवेश करैत अछि। एहि उपकरणसँ कथाकार बिना औपचारिक दूत अथवा फोनक माध्यमेँ दूरस्थ पात्रक अन्तरमन गामक पुकारसँ जोड़ैत छथि। घण्टी आ कटोराक ध्वनि समान होएब सत्ता-आदेशक पुरान उपकरणकेँ श्रवणक नूतन उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि। यद्यपि सत्यव्रतक अनुभवक अद्भुतता कथा-दृष्टिक तथ्य अछि, बाहरी कार्यालयक यथार्थवादी दूरसञ्चार-घटना नहि।

फाइल पढ़ब आ नाम सुनब : ज्ञानक स्थान-बदलाव

सत्यव्रत फाइल पढ़बाक अपन दीर्घ अभ्यासकेँ पुनः देखैत छथि। मुद्रित नाम प्रायः श्रेणी, मामला, प्रावधान आ तारीख बनि जाएत; बच्चाक पुकारमे वैह नाम घर, देह, भूख, अपमान आ प्रतीक्षा बनैत अछि। उपन्यास प्रशासनिक लेखनकेँ पूर्ण व्यर्थ नहि कहैत; वाचिक स्मृतिसँ अलग ओकर मनुष्यता-विहीन उपयोगक आलोचना करैत अछि। पात्र जे आंतरिक अन्तर बुझैत छथि, तकरा तुरन्त सरकारी सुधारक सिद्ध परिणाम बुझब अनुचित। चेतना बदलब एक कथा-घटना अछि, संस्थागत प्रक्रिया बदलनाइ भिन्न आगामी काज।

सामान्य डिब्बाक यात्रा आ श्रोता बनबाक प्रशिक्षण

सत्यव्रत सुरक्षा-अधिकारी, सरकारी कार आ आरक्षित रेलस्थानक सुविधा टारि साधारण डिब्बामे चढ़ैत छथि। भीड़मे एक युवक खेल देखैत, स्त्री बच्चाकेँ दूध पियबैत, मजदूर गठरीपर माथ रखने छथि। एतय यात्राक दृश्य अलौकिक गामक सम्पर्कसँ अधिक सामाजिक शरीरक प्रत्यक्ष अनुभव अछि। पदाधिकारक अलगाव घटैत, लोकक दैनिक समय उभरैत अछि। मुदा रेलमे चढ़बाक नूतन विनम्रता सरकारी निर्णय अथवा पूर्व मौनक प्रत्यक्ष प्रतिकार नहि। उपन्यास पात्रकेँ श्रोता बनबाक पहिल यात्रा देइत अछि, मुक्तिदाताक राजकीय शोभायात्रा नहि।

गाछीमे पहुँचलाक बाद सम्मानक स्थगन

सत्यव्रत चन्ना गाछी पहुँचैत छथि; कोनो ताली, प्रणाम वा मञ्च नहि। खाली कटोरा बीचमे अछि, बच्चा गोलमे, भूत पाछाँ। एहि दृश्य-विन्यासमे राज्यक प्रतिनिधिक आगमन कथा पर प्रभुत्व नहि बनबैत। समुदाय ओकरा श्रोता बनेबाक शर्त पर स्वीकारैत अछि। वैह सामाजिक स्थल जे पहिने न्यायालयक विकल्प रूपमे नाटकीय छल, आब अतिथि-पात्रक बोलबाक क्रम स्वयं निर्धारित करैत अछि। पात्रक ‘हम सुनब’ वाक्य महत्त्वपूर्ण, मुदा ओ एखन प्रमाण-संग्रह वा विधिक कार्यवाहीक परिणति नहि।

मीराक धीम निजतापुकार

मीरा एक अवसरपर कहैत छलीह जे अपन प्रेम अपराध नहि, निजी सामग्री द्वारा ब्लैकमेल अपराध अछि। कथावाचक निजताक पुकारकेँ सबसँ धीम कहैत छथि। ईरूपमे ‘श्रवण’क नूतन सार्वजनिक विधि निज व्यक्तिक आत्म-अधिकार संग जाँचल जाइत अछि। लोकसभा सुनबाक अधिकार राखैत अछि, मुदा पीड़ितकेँ बजबाक समय, सीमा आ निर्णयक अधिकार सेहो अछि। जँ सामुदायिक अभिलेख निजी विवरण स्वयमेव उजागर करत तँ कथा अपनहि निजता-न्यायक दावा सँ टकराएत। मीराक आवाज एहि जोखिमक भीतरी सावधानी अछि।

मुआवजाक झूठ आ पूरा नामक अधूरापन

पातपर नाम पूरा होएबाक शर्तमे घर, श्रम, बच्चाक प्रतीक्षा आ मुआवजाक झूठ जोड़ल जाइत अछि। सूची अखनहुँ मृतकक नाम-पाठक उत्सव नहि, सामाजिक-ऐतिहासिक पूछताछक कार्यसूची अछि। एहि चयनमे पूर्वक नाम–वस्तु–रस्ता–भारक कथावृत्त एक रेखा पबैत अछि। तथापि ‘मुआवजाक झूठ’क कथन सामान्य नैतिक संकेत अछि, हर पीड़ित-परिवारक विशिष्ट रकम तथा दस्तावेजक पूरा विवरण नहि। समीक्षा कल्पित अंकेक्षण जोड़ि स्रोत-अधूरापन मेटा नहि सकैत।

क्षमायाचना स्थगित कऽ मौनक नाम लिखब

सत्यव्रत कहैत छथि जे क्षमा माँगबो आत्माकेँ हलुक करबाक चतुराई बनि सकैत अछि, ताहि लेल हुनकर चुप रहल दिनसभक नाम अभिलेखमे लिखल जाए। एहि आत्म-सीमांकनमे पात्रक आन्तरिक जिम्मेदारीक मजबूत चरण अछि। ईरूपमे कथाकार महान न्याय-पुरुषक उद्धारक भूमिका तोड़ैत छथि; श्रोता अपना मौनक इतिहास सहित बैठैत अछि। मुदा स्वीकारक नैतिक मुद्रा वास्तविक संस्थागत सुधारक प्रतिबद्ध परिणाम नहि, ओकर सम्भावित आरम्भ अछि। गाछीक लोक एकर प्रशंसा करबाक बदला पढ़बाक क्रम जारी रखैत अछि।

उन्नैसम साँसक असमाप्त निष्कर्ष

अन्तिम दृश्य मे कबड्डी फेर शुरू होइत अछि—जे साँस लेत, नाम कहत; जे नाम कहत, सुनत; जे सुनत, भागत नहि। सत्यव्रत गोल बाहर बैसल रहैत छथि। हुनकर काज खेलब नहि, सुनबाक दण्ड अछि। पातक ओस नोटबुकमे ‘पुकार’ अक्षर बनबैत अछि; अनन्याक वाक्य देवताक बदला अपन मौन सुनए सकएबला कान माँगैत अछि। ई नया नियम नाम-पाठकेँ मनोवैज्ञानिक जिम्मेदारी सँ जोड़ैत अछि। उन्नैसम साँस समाप्त नहि; अभ्यास जारी रहैत अछि। कथात्मक सफलता एतय छोट सुनवाईक विस्तारित नैतिक काल अछि, सम्पूर्ण मुक्ति नहि।

प्रकरण १५० | मूल अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

पुकार सुनलाक बादक ‘उधार’ व्यवस्था

अध्याय ४८मे सत्यव्रत पुकार सुनि गाछी बैसलाह; बीसम साँसमे सुनल बातक उधारक हिसाब आरम्भ होइत अछि। ई उपन्यासक श्रवण-नीतिक अगिला अनिवार्य चरण अछि। सुनबाक क्रिया निष्क्रिय सहानुभूति मात्र नहि; ओकर परिणाम लोकक नाम, स्रोत आ परिवारक अधूरी जानकारी सहेजब तथा काममे उतारब होइत अछि।

लोकगीत ‘सुनल बात उधार’क रूपक बनबैत अछि, कथा खाली कटोराक भारी होएब, नोटबुक भरब आ पन्ना पढ़बक कठिनाई सँ ओकर नाटकीय परीक्षण करैत अछि।

खाली कटोरा भारी, कानो भारी

उन्नैसम साँसक कटोरा खाली रखबाक आग्रह बीसम साँसमे उलटा रूप लैत अछि: पानि बिनु खाली पात्र नामसभक भार सँ भारी भऽ जाइत अछि। सत्यव्रत कटोरा उठाबय चाहितहुँ पहिने असफल छथि। ई प्रतीक सुनल कथाक भीतर नैतिक वजनक भौतिकी कल्पित करैत अछि। कटोराक चमत्कार पात्रक मनःस्थितिक दृश्य अछि; वास्तविक सुनवाईक अंकीय मापन नहि। अखन कतेक नाम, कतेक परिवार आ कतेक मौन दर्ज भेल, तकर सामाजिक आँकड़ा अलग रखबाक आवश्यकता अछि।

‘मौनक नाम बाकी’ : अभिलेखक श्रेणी-विस्तार

बूढ़बा भूत सत्यव्रतक नोटबुक बन्द करब रोकैत छथि—नाम लिखल गेल, मुदा मौनक नाम बाकी। अहिसँ मृतकक सूचीसँ जिम्मेदारीक परिधि व्यापक होइत अछि। जे प्रशासनिक लेखन नहि केलक, जकरा पुलिसक भय देखाएल गेल, जे आपत्ति न उठौलक, जे देखितहुँ चुप रहल—दोषक अलग-अलग श्रेणी एहि प्रश्नमे प्रवेश करैत अछि। मुदा सब मौन एकसमान नहि: भयवश चुप रहनिहार पीड़ित, आदेशमान्य कर्मचारी आ लाभ बचबेनिहार नियन्ता विभिन्न सत्ता-स्थितिमे छथि। कथा भीतर बा सेहो ई फरक प्रकट करैत छलीह।

सरयूक प्रविष्टि आ काल्पनिक समाधानक निषेध

पहिल मौन सरयूक लग लिखाइत अछि—स्त्री-मजदूरक नाम नहि पूछनिहार अधिकारीक मौन। एतय मूल पाठ सरयूकेँ स्पष्ट स्त्री-श्रमिक कहैत अछि, जबकि अध्याय ४०–४१मे सरयू महतो कमलीक ‘बाबूजी’ आ पत्नीक सम्बन्धवाला पुरुष-पिता चित्रित छथि। ई स्रोतगत असङ्गति एखन आरो ठोस भेल। समान नामक अलग लोक, परिवर्तित पारिवारिक परिचय वा कथनगत त्रुटि—प्रत्येक सम्भावना खुलल, किन्तु निर्णायक मिलान अनुपस्थित। समीक्षा एक ‘सही’ जीवनी रचि पठित विरोधक अन्त नहि करैत।

देविकाक ‘बहिनक मौन’ : आत्मस्वीकारक असमान भार

उज्ज्वलक भय पहिने नहि बुझबाक प्रसंग पर देविका अपन बहिनक मौन लिखबैत छलीह। ई अत्यन्त नाजुक कथात्मक क्षण अछि। अपन शोकक संग आत्मपरीक्षा रखनाइ पात्रक विकास; मुदा पूर्वक डिजिटल-धमकी देनिहार, धनक जाल बनौनिहार आ भयमे फँसल परिवारक उत्तरदायित्व समान नहि। बा स्पष्ट करैत छलीह जे दोष आ मौन एक नहि। एहि वाक्यसँ चरित्रक स्वयं लिखल अपराधबोधकेँ वास्तविक अपराध-कारणक एकमात्र विश्लेषण बनबासँ रोकल जाइत अछि।

मुन्नाक खाता आ बैंकक प्रश्न

मुन्ना पूछैत अछि जे खाता खोलबक दिन बाबू ओकर पहचानपत्र अनेकपटक देखलाक बाद ककरोसँ फोन पर बात केने छल, ओ बात केकरा संकेत दैत अछि। बैंकक मौन एक अभिलेखीय प्रविष्टि बनैत अछि, मुदा ज्ञात तथ्य आ मुन्नाक पछाति अर्थनिर्माण अलग छथि। बाबू वाकई की जानैत छल, सैह स्पष्ट नहि। शंका देखि चुप रहबाक

नैतिक प्रश्न कथा उठबैत अछि; पर एक व्यक्ति पर आपराधिक दोषक अन्तिम फैसला नहि सुनबैत। अहि भेद मे उपन्यासक असमान आर्थिक जानकारीक चित्रण महत्त्वपूर्ण अछि।

हरिहरनक पोतीक प्रतिप्रश्न

बटुकनाथ गामक धर्मशालामे जागल अछि; निर्णयक प्रति कतराएल देखाइत अछि। पोती पूछैत छलीह जे बाबा अपन नाम मौनक अभिलेखमे लिखताह की नहि। पुरान ‘पोतीक कापी’क प्रश्न एतय नूतन श्रेणी पबैत अछि। बुजुर्ग वकील ‘हम कानूनक लोक छी’ कहि बचय चाहैत अछि, मुदा बालिका प्रक्रिया आ मौनक सम्बन्ध देखबैत छलीह। एहिठाम पात्रक आत्मस्वीकार पूर्ण नहि; पाठमे ओ स्वीकार करबासँ एखन बचैत अछि। जादुई कागचक कटान ओकर मनोवैज्ञानिक भयक चिह्न अछि।

बत्राक परदा आ राघवक आदेश-मौन

चन्द्रपाल टूटल स्क्रीन बदलाबए दुकान जाइत अछि, जहाँ दुकानदार भीतरक तस्वीरक समस्या कहैत अछि। राघवकेँ ‘नामक खेल रोकू’ संदेश भेजबाक प्रयास ‘मौन भेजल गेल’ बनैत अछि। राघवक कक्षमे मेटल संदेशसभ पात रूपेँ उतरैत, निर्देश आ चुप्पीक सीमासभ उघारैत अछि। ई समानान्तर सम्पादन एक खास जालमे आदेश देबाक तथा निर्णायक क्षण चुप रहबाक कार्य जोडैत अछि। तथापि स्क्रीनक पुनर्लेखन पुनरुक्त जादुई तन्त्र अछि; दर्शक एकर नूतन अर्थक अपेक्षा संग ही पढ़ैत छथि।

बैंकबाबू, कम्पाउण्डर आ मुंशीक अलग अनुभव

सभामे बैंक कर्मचारी, महामारीकालक कम्पाउण्डर आ तारीख लिखनिहार वकीलक मुंशी शामिल छथि। बाबू फार्मक ‘अन्य टिप्पणी’ खाली छोड़बक मौन चिन्हैत अछि; कम्पाउण्डर ‘ऊपरक आदेश’क बहानामे चेहरा नुकएबाक अनुभव, मुंशी प्रतीक्षारत माताक उपेक्षाक प्रश्न सुनैत अछि। तीनू सामाजिक भूमिका परम्परागत खलनायक पाँचक बाहर अछि। उपन्यास शोषणमे सहभागी निम्न-मध्यस्थक जटिलता देखबैत अछि, पर हुनकर जानकारिक सीमा, कामक नियन्त्रण आ प्रत्यक्ष लाभक स्तर अलग राखब जरूरी अछि।

लिखब आ पढ़बक फरक सामाजिक जोखिम

नोटबुकमे मौन लिखब सँ लिखनिहार कागच दिस ताकैत अछि; नाम पढ़लापर ओहि व्यक्तिक मुख दिस देखबाक सम्भावना अबैत अछि। खाली कटोरा पढ़बाक अगिला क्रम घोषणा करैत अछि। कर्मचारी आ मुंशीक काँपैत शरीर एहि वाचिक सार्वजनिकताक असर देखबैत अछि। कथाकार अभिलेखनकेँ निजी आत्मस्वीकारक अन्तिम आश्रय नहि रखैत—सार्वजनिक उत्तरदायित्वक संवाद बनबैत छथि। मुदा कानूनी भय आ सामाजिक शक्ति-अन्तरक कारण प्रत्येक सार्वजनिक स्वीकार जबरदस्ती नहि हो, एहि नैतिक सीमा सेहो विचारणीय अछि।

ईराक विदेशक सभागारक मौन

ईरा विदेशी नैतिक सम्मेलनमे प्रश्न नहि उठबाक घटना अपन अभिलेखमे जोड़ैत छलीह; एडवर्ड ब्रूमक अगिला भाषण मसौदामे ‘मौनक अभिलेख’ शीर्षक उभरैत अछि। विश्वविद्यालयक सभ्य मौन आ व्यवसायिक वाचालता एकहि आलोचनात्मक संरचनामे प्रवेश करैत अछि। ईराक आत्ममूल्यांकन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, कारण विरोधी नायकसमूह स्वयं अनुत्तरित समयक जिम्मेदारी देखैत अछि। तौ सम्मेलनमे कोन व्यक्ति कब उपस्थित छल, तकर

सभ काल-रेखा स्वतः एतहि स्पष्ट नहि। पाठक पात्रगत स्मृति आ वास्तविक पुनरावृत्त घटनाकेँ अलग जाँचबाक चाही।

चौदह लालटेन आ लोथक उजास

रातिमे चौदह लालटेन जरैत अछि; लोथ एक लालटेन लग हाथ रखैत अछि, प्रकाश कम नहि होइत। एहि वस्तु-दृश्यमे भूतक अन्हारक आवश्यक निवासी होएबाक पुरान प्रतिष्ठा बदलैत अछि। लोक सभ अपन दीप अनैत छथि, जादुई शरीर मात्र प्रकाशक स्रोत नहि। लोथक बरखो पुरान दर्शक-सत्ता छोट सहयोगमे बदलैत अछि। तथापि चौदह संख्या प्रतीकात्मक सामूहिक दृश्य अछि; एहि आधार पर चौदह विश्वसनीय नाम, घर अथवा खाताक अन्तिम पूर्ण संख्या निर्धारित करब उचित नहि।

कटोरा हलुक, हाथ भारी : आत्मप्रायश्चितक गति

अन्तिम उजासमे नाम आ मौन पढ़बाक बाद खाली कटोरा उठि जाइत अछि। बा कहैत छलीह जे कटोरा हलुक आ हाथ भारी—एहने लोकसँ काम होइत अछि। ई अध्यायक प्रारम्भक वस्तुक उलटा परिणाम अछि। सुनबक भार अब पात्रक देह/क्रियामे हस्तान्तरित, पात्र खुदे हलुक नहि भेल। सत्यव्रत पहरेदारीक इरादा करैत छथि, मुदा औपचारिक साक्ष्य-पत्र बनि पूर्ण संस्थागत व्यवस्था बदलल नहि। असमाप्त कर्मक बोध एहि रूपकक नैतिक बल अछि।

बीसम साँसक अन्त : अभिलेखक पाठक

‘मौनक अभिलेख’ नाम-स्मृतिक शिल्पकेँ प्रशासनिक देरी, गृहस्थ चुप्पी, व्यावसायिक लाभ आ दर्शकक बहिरापनक बहुस्तरीय परीक्षण बनबैत अछि। परस्पर असमान मौनकेँ एक सूचीमे लेखबक जोखिम बा द्वारा ‘दोष आ मौन’क भेदसँ संतुलित होइत अछि। कथा मात्र खलपात्रक निन्दा नहि, प्रतिरोधक स्वतः आत्म-परीक्षा बनैत अछि। बीसम साँस अन्तिम फैसला नहि; अगिला चरणमे लिखल नाम चलि विभिन्न स्थान पर अपन प्रभावक परीक्षा देत। घटनात्मक भविष्यसूचना आ सम्पन्न परिणामक भेद अक्षुण्ण रहैत अछि।

प्रकरण १५१ | मूल अध्याय ५० — देहक बादक नाम

बीसम साँसक सूचीसँ एक्कैसम साँसक देह

‘मौनक अभिलेख’मे नामक संग मौन लिखल गेल छल। अध्याय ५० एहि लिखल नामकेँ चन्ना गाछीक धरती आ पोखरिक शरीरमे फेर दृश्य बनबैत अछि। शीर्षक ‘देहक बादक नाम’ मृत्युपछातिक व्यक्तित्वक शाब्दिक अमरत्वक घोषणा नहि; हिंसा द्वारा समाप्त कएल जीवनक सामाजिक अर्थ समाप्त नहि होएबाक आख्यानात्मक प्रस्ताव अछि। लोकगीत जड़ि, वृक्ष, पट्टिका आ छाहक रूपक आगू राखैत अछि; गद्य मे अचानक पोखरि, तैरैत अक्षर, गज–ग्राह आ सत्यव्रतक देहगत अनुभवक भिन्न क्रम बनैत अछि। आरम्भिक गीतक भविष्य-काम आ गद्यक घटित घटना कैँ गड़मड़ नहि करबाक अछि।

गाछीक बाहर ठाढ़ सत्यव्रत

सत्यव्रत गाछीक बाहर ठाढ़ छथि, न कोई रोकैत, न भीतर प्रवेशक आदेश दैत। ई देहरीगत विलम्ब पात्रक भीतरक अनिश्चितता अछि। अध्याय ४८मे ओ गाछी पहुँचि सुनबाक प्रण लेने छलाह, अध्याय ४९मे रातिभरि मौनक अभिलेख लिखने छथि; अध्याय ५०क आरम्भ फेर बाहर ठाढ़ होएबाक दृश्य एक अलग रातिक पुनरागमन होइ सकैत अछि। मुदा कालगत सेतु स्पष्ट नहि। एकरा पुनर्रचित आत्मप्रवेश अथवा असङ्गत निरन्तरताक सम्भावना संग पढ़ब सटीक अछि; निश्चित नूतन वापसी-तिथि कल्पित नहि करब।

शरीरक स्मरण : धारा आ धड़कन

कथनकार न्यायालयक अनुभवी व्यक्तिक सिरमे धारा, उपधारा, निर्णय आ व्याख्याक अनेक तह गनैत छथि। एहि परिचित मानसिक संरचनाक विपरीत पएरक तलवा, हृदयक धड़कन आ श्वासक देहगत अनुभूति अबैत अछि। उच्च बौद्धिक पेशागत भाषा देहक प्राथमिक संवेदनाकेँ दबा देने रहए, एहि विशिष्ट चरित्रगत प्रवृत्तिक आलोचना अछि। उपन्यास विधिशास्त्रक सम्पूर्ण उपेक्षा नहि करैत; एक पदाधिकारी द्वारा सामान्य व्यक्तिक श्रम-दुःख दूर राखबाक क्रियाक परिणाम जाँचैत अछि। मूक बनब एतय शिक्षाक तैयारी अछि, स्वतः सामाजिक उद्धार नहि।

रातिमे अचानक उगैत पोखरिक काल

गाछी बीच नव पोखरि उत्पन्न होइत अछि—ककरो द्वारा खोधल नहि। ओहिमे चानक बदला अक्षर तैरि रहल अछि। ई अलौकिक स्थल-उत्पत्तिसँ नदी, पोखरि आ गाछी एकहि सामाजिक स्मृतिक बहु-आकार बनैत छथि। जलमे अक्षरक बिखरब आ पुनः जुड़ब नष्ट देहक सामाजिक नाम घुरबाक बिम्ब अछि। मुदा एकरा वास्तविक उत्खनन, जलप्रशासन अथवा भौगोलिक परिवर्तनक तथ्यक रूपमे ग्रहण करब अनुचित। उपन्यासक जादुई भूगोल अपन लोक-न्याय-अभ्यासक दृश्यरूप गढ़ैत अछि।

जलपर लिखल नामक क्रम आ अपूर्ण सूची

सत्यव्रत पानिमे सरयू देवी, बुधन मियाँ, जगेसर पासवान आ उज्ज्वल झा सहित अनेक नाम देखैत छथि। कथन स्वयं कहैत अछि जे ई नाम हुनकर सरकारी केस-लॉ वा परिशिष्टमे भेटल नहि छल। एकर शिल्पगत अर्थ छूटल जीवनक पुनःसामना अछि। तथापि अगिला अज्ञात नामसभक पूरा तथ्य पाठमे उपलब्ध नहि; समीक्षाकेँ ओ सभक स्वतन्त्र जीवन-वृत्तान्त कल्पित नहि करबाक चाही। सरयू देवीक स्त्री-परिचय एतय पुनः लौटैत अछि, जकर अध्याय ४०–४१क पुरुष सरयू महतोसँ सम्बन्ध अभी खुलल प्रश्न अछि।

अपन नामक संग ‘मौन’ लिखनाइ

अनन्या सत्यव्रतसँ पुछैत छलीह जे हुनकर नामो लिखायल जाएत की? ओ अपन नामक संग ‘मौन’ उच्चारण करैत छथि; पानि एक बेर घूमैत अछि। एहिमे राज्यपदक समर्थ व्यक्ति पीड़ितक स्मृतिक बगलमे अपन अनुपस्थित क्रियाक चिह्न राखैत अछि। मुदा एहि एक पंक्तिसँ हुनका अदालतक सभ निर्णयक विस्तृत व्यावसायिक दोष ठहरायब उचित नहि; पात्र स्वयं जतेक चुप्पीक स्मरण करैत छथि, ओही धरि व्याख्या सीमित रहबाक चाही। एक व्यक्ति अपन ‘सुनल’क बाद अब ‘मौन’ स्वीकार करैत—ई सूक्ष्म चरित्रगत क्रम अछि।

गज–ग्राहक पुनःकथनमे स्मृतिक पकड़ि

लम्बा छाह गज अथवा मनुष्यक रूपमे आ पोखरिसँ ग्राहक प्रकट होइत अछि। पुरान कथाक बाहरी पएरक पकड़ि आब स्मृतिक पकड़ि बनैत अछि। गज जोर लगबैत, पकड़ि गहिराइत; नाम पुकारलासँ बेड़ी क्रमशः टूटैत अछि। एहि शिल्पमे पौराणिक अन्तर्कथा कथा-जगतक घटनामे पुनः अभिनय बनि उतरैत अछि। किन्तु गज अन्तमे मुक्त भेल कि मरि गेल—मूल पाठ ई प्रश्न खुलल राखैत अछि। आलोचना एकटा सुनिश्चित सुखान्त कहि ई अस्पष्टता नष्ट नहि करत।

अधिकारक्षेत्र पर बटुकनाथक छाहक आपत्ति

बटुकनाथक देह गामक डाकबंगलामे, छाह गाछीमे अछि। छाह आदेश हाथमे लऽ ‘कोन न्यायालय’क प्रश्न उठबैत अछि। बूढ़बा भूत स्मृतिक लोक-अधिकारक जवाब दैत छथि। एहि दोहरी उपस्थितिसँ पात्रक देह, मन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक अलग-अलग नाटकीय स्तर खुलैत अछि। बटुकनाथ स्वयं अदालतमे कानूनी आपत्ति दाखिल कएल, से घटना नहि; ओकर छाहक आवाज अलौकिक टकराव अछि। वैधानिक अधिकारक्षेत्र आ लोक-स्मृतिक प्रतिरोधक तुलना रूपक अछि, प्रक्रियागत उपस्थिति नहि।

बत्राक स्क्रीन, राघवक संदेश आ लाउक सागर

चन्द्रपालक मोन स्क्रीन बनि गाछी पहुँचेबाक, राघवक मेटाओल सन्देशक पातमे बदलब, लाउक लहर द्वारा मैथिली नाम उच्चारित होएबाक समानान्तर दृश्य अछि। ई सब दृश्य पहिले सँ स्थापित जादुई तन्त्रकेँ एकठाम अनैत अछि। पात्रसभक भय अलग माध्यममे पुनरावृत्त होइत अछि; कथानकक व्यापक भूगोल क्षणमे संक्षिप्त भऽ जाइत अछि। एक आलोचनात्मक सीमा एतय अछि: खलपात्रक प्रत्येक उपकरण एकहि अर्थक जादुई दोष-पटिया बनि जाए तँ घटनात्मक नवीनता घटैत अछि। तइयो पानिक माध्यमसँ पुनरागमन शीर्षकक जल-सम्बन्धी अर्थक गहराइ देइत अछि।

गोपक न लिखल पात

गोप कुमार एहि राति कागचबिना सूखल नारिकेल-पात लऽ बैसल छथि। देविका पूछैत छलीह जे आब की लिखल जाए। एहि क्षणमे लेखनक विराम महत्त्वपूर्ण अछि। अनेक अध्यायमे गोप सूची आ प्रतिलिपिक स्तम्भ छल; एतय रिक्त पात अभिलेखक अगिला अज्ञात उद्देश्यक प्रस्तावना अछि। वर्तमान नाम-पाठक काम सम्पन्न भऽ गेल, से नहि; अक्षरमात्र सँ सामाजिक स्थान भेटि जाइत नहि। गामक लेखक-संग्राहक स्वयं सुनबाक बादक शारीरिक काजक प्रतीक्षा करैत अछि।

जलक धरती भीतर समा जड़ि बनब

अलौकिक पोखरि धीरे-धीरे माटिक भीतर उतरैत अछि। बूढ़बा भूतक कथन अछि जे मुक्ति सदिखन ऊपर उठब नहि, कखनो भीतर जड़ि बनब सेहो अछि। एहि छविसँ पुरान जलसमाधिक निष्क्रिय डुबकीक उलटा अर्थ निकलैत अछि। देहक मृत्यु आ नामक स्थायी सामाजिक काज एकहि ‘जड़ि’ माध्यममे जोड़ल गेल। मुदा उपन्यास जँ मृतकक वास्तविक अन्यायकेँ आध्यात्मिक मुक्ति कहि पर्याप्त मानि लैत तँ संरचनागत दोष ओझराएत; कथाकार अपराधीक भय आ स्मृतिचिह्नक असमाप्तता रखि एहि खतरा सँ किछु बचैत छथि।

मृतक परिवार आ धूर्तक अलग-अलग सपना

मृतकक परिजन सपनामे देहविहीन स्नान, हलुक श्रम आ घरक छवि देखैत छथि; धूर्तसभक सपनामे आदेश ग्राहक जबड़ा, पासवर्ड मृतकक नाम आ मेटल संदेश देहपर दाग बनैत अछि। ई दू निन्न-समूहक समांतर बनावट नैतिक-काल्पनिक न्याय करैत अछि। तइयो मृतक परिवारक सपना वास्तविक राहत वा शासकीय क्षतिपूर्तिक सिद्ध परिणाम नहि। अपराधीक दुःस्वप्न आ पूर्ण पछतावा समान नहि; कथाकार दुनूक बिच अपूर्ण दूरी रखैत छथि।

सत्यव्रतक नामक संग ‘सुनल’ पद

सत्यव्रतकेँ हुनकर पदनामक अपेक्षा कएल क्रियाक आधार पर ‘सुनल’ कहि चिन्हल जाइत अछि। ई प्रत्याख्यान एक गहन कथाभाषिक बदलाव अछि। न्यायिक पदक अर्थ शक्तिक क्रमरेखा छल; क्रियात्मक नाम एक सामान्य श्रवण-कर्ताक भूमिका दैत अछि। पर ‘सुनल’ अभी निर्णय अथवा सहायता सम्पन्न केलक, तकर साक्ष्य नहि। जादुई नामक परिवर्तनक सार एतय संस्थागत अपरिहार्यता स्वीकार करबाक सम्भावना अछि, ओहि सम्भावनाक स्वतः पूर्णता नहि।

देहक बादक नामक अनिश्चित अन्त

भोरमे कबड्डी बन्द अछि, मुदा मैदानपर मनुष्य, भूत, गज आ ग्राहक पएरक निशान। सत्यव्रत वापस जाएबाक प्रश्न पर नाम धरतीपर ठाम पाबय तक अपनी जिम्मेदारीक संकेत दैत छथि। पात बिना बयार हिलैत अछि; मरल देहक नाम जड़ि ताकैत अछि। ई समापन नाम-स्मृति केँ स्थिर गौरवपट्टिका नहि, सामाजिक जमीन माँगैत सक्रिय विषय बनबैत अछि। अध्यायक सामर्थ्य ‘मुक्त कि मृत’क प्रश्न खुलल रखब; सीमा अध्याय ४८–५०क बीच सत्यव्रतक प्रवेशक पुनरावृत्ति आ बारम्बार अद्भुत दण्डक अपेक्षित लय अछि।

प्रकरण १५२ | मूल अध्याय ५१ — साक्षीक भार

सुननिहारसँ साक्षी बनेबाक कठिन क्षण

अध्याय ५१ ‘देहक बादक नाम’क जड़ि-विचारकेँ साक्षी-पत्रक सार्वजनिक कार्यसँ जोड़ैत अछि। सत्यव्रत फेर चन्ना गाछीक भीतर अपन छातीमे पैसब जेकाँ अनुभव करैत छथि। एतय बाहरी पद आ भीतरक आवाजक द्वैत प्रमुख अछि। कथा सुनबाक बाद सहज सम्मान नहि, भारी शरीर आ कठिन लेखन दैत अछि। लोकगीत साक्षीकेँ साझा सहारा, विश्राम आ सुरक्षाक स्थलक प्रतिज्ञा करैत अछि; गद्यक मुख्य दृश्य सत्यव्रतक निजी जिम्मेदारी आ समुदायिक पाठ अछि। दुनू स्तरक सामाजिक सुरक्षा-व्यवस्था समान रूपेँ पूर्ण निर्मित अछि, एहन नहि।

भूतसभक वृत्त आ भूमिकापरिवर्तन

पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ मौन, बूढ़बा अपन कारी इजोत समेटने, लोथ अभिलेखक पहरेदार, पनिडुब्बी माटिपर नमीक रेखा बनि उपस्थित छथि। एहि सामूहिक दृश्य-संयोजनमे भूतका खेलाड़ी रूप पाछाँ सरकि लेखक-साक्षी-समुदाय बनैत छथि। प्रत्येक अलौकिक पात्रक अलग दृश्य-कार्य अछि: ब्रह्मा मौनक गहिराइ, बूढ़बा प्रश्न, लोथ पहरेदारी, पनिडुब्बी जल-स्मृति। सर्वजन एकहि ‘भूत’क एक रूप नहि। एहि सूक्ष्म विभाजनकेँ पाठकक सामने राखब उपन्यासक लोककल्पनाक गहराइ बचबैत अछि।

मोहरक अन्हार आ नामक प्रकाश

सत्यव्रतक झोरामे सरकारी पदमोहरवला कागच अछि। गाछीमे मोहर नहि चमकैत, नाम चमकैत अछि। एतय अधिकारक दृश्य-क्रम उलटा भऽ जाइत अछि। पदक मोहर अन्हार भेनाइ सरकारी निकायक वास्तविक विधिक शक्तिक क्षय नहि, प्रतीकात्मक न्यूनता अछि। व्यक्ति जतेक पद-सूचक वस्तु धरैत, ओतेक नामक वाचिक भारसँ अशान्त होइत अछि। अदालतक दस्तावेजक ग्रहणीयता अथवा निर्णयक वास्तविक नियम एहि चमत्कारसँ बदलल नहि; कथा वैधानिक स्वाधिकारक मानवीय सीमाकेँ मंचित करैत अछि।

‘भार’क तराजूसँ छाती धरि यात्रा

बूढ़बा सत्यव्रतसँ पूछैत छथि जे भार ढोबय अएलाह कि फेर तौल करए। एहि प्रश्नमे ‘भारक वृत्त’क पहिल रूपक फेर लौटैत, मुदा अर्थ बदलैत अछि। अध्याय ४२मे धूर्तक क्रियाक अंशक वजन छल; एतय सुननिहार साक्षीक छातीपर आवाजक असर अछि। दू प्रकारक भारक समानता मिथ्या हो सकैत: अपराधीक दायित्व आ पीड़ितक गवाही-वहनक थकान अलग स्थिति अछि। गीतमे साझा सहारा माँगल गेल अछि, जकरा गद्यक दृश्यसम्पादनमे विकसित संस्थागत रूपसँ अलग चिह्नित राखबाक चाही।

देहक मृत्यु आ नामक दोसर डुबकी

उपन्यास ‘जलसमाधि’ शीर्षककेँ पुनः व्याख्यायित करैत अछि। गोहिक देह-भक्षणक बाद राज्यक अनुपस्थितिक प्रविष्टि मृतकक दोसर सामाजिक मृत्यु बनि सकैत अछि। सत्यव्रत अपना मौनक कारण एहि दोसर डुबकीमे सम्भावित सहभागिता देखैत छथि। ई शीर्षकगत आत्मव्याख्या प्रभावकारी, कारण प्राकृतिक हिंसा, प्रशासनिक नकार आ स्मृति एक प्रकरणमे आवैत अछि। तथापि ‘मृत्युक बाद नामक मुक्ति’ भौतिक मृत्यु अथवा सम्भावित प्रबन्धकीय अपराधक प्रतिकर नहि; प्रतीकात्मक अर्थक सीमा महत्त्वपूर्ण अछि।

गोहिक दाँतक बहुवचन

गाछीक माटिपर गोहिसभक दाँतपर पानि देखाइत अछि, रक्त नहि। बूढ़बा कहैत छथि जे सभ दाँत हत्यार नहि, किछु बन्धन काटि मुक्ति सेहो बनबैत अछि। एतय गोहि-रूपक अपन आरम्भिक हिंसक अर्थकेँ शाब्दिक एकार्थता सँ मुक्त करैत अछि। कथानकक चहुँकात गोहि अत्याचारक प्रतीक रहल; आब बन्धन-भङ्गक भी साधन। एहि अर्थ-परिवर्तनक कारण शीर्षक एक नैतिक रूपकक चरम पुनःपाठ बनैत अछि। किन्तु रूपकक बहुअर्थता ककरो वास्तविक हिंसक व्यवहारकेँ क्षम्य घोषित करबाक आधार नहि।

बच्चाक प्रश्न आ गवाहीक दो तरहक भाषा

सत्यव्रतकेँ बच्चाक प्रश्न न्यायालयक ‘प्रमाण कतय’ सँ अलग लगैत अछि: यदि देखलहुँ तँ कहब की? ई प्रश्न गवाहीक मनुष्यता पर जोर दैत अछि। वास्तविक न्यायिक प्रमाण-प्रक्रिया अपन स्वतन्त्र परीक्षण रखैत, जेकरा उपन्यासक सामुदायिक प्रश्न नकारि नहि सकैत। मुदा अदालतमे दर्ज नहि होएबाक कारण घायल स्मृति स्वतः मूल्यहीन मानबो अनुचित। रचना एहि दुई ज्ञान-भाषाक तनाव गढ़ैत अछि। समीक्षा सावधानीसँ कहैत अछि जे बालप्रश्न सामाजिक दायित्वक माँग अछि, प्रमाणक विधिक मानदण्डक स्वयं प्रतिस्थापन नहि।

पदनामक पट्टी माटिपर राखब

सत्यव्रत अपन पदनामक पट्टी निकालि माटिपर राखैत छथि। ई क्रिया उपन्यासक घनिष्टतम शारीरिक सांकेतिक निर्णयसभमे अछि। उहाँ अपना विधिक परिश्रम, शिक्षा अथवा संस्थागत अस्तित्व सम्पूर्ण त्याग नहि करैत; ओ सुनबाक बेला पदक अग्राधिकार हटबैत छथि। एकटा वस्तुक स्थान बदलब कथाकारकेँ लम्बा भाषणसँ बचबैत अछि। तौ पाठककेँ ई नहि कहबाक चाही जे पात्र वास्तवमे सरकारी सेवा त्यागपत्र दऽ चुकल; पाठमे पदपट्टी राखब अछि, औपचारिक सेवा-स्थिति बदलल नहि।

साक्षी-पत्रक घोषित प्राथमिक पाठक

सत्यव्रत कहैत छथि जे ओ फैसला नहि, साक्षी-पत्र लिखताह; ओ पहिने बच्चासभ पढ़त, तकर बाद अदालतक प्रश्न अबैत अछि। ई क्रम एक साथ सामुदायिक स्वीकृति आ संस्थागत प्रक्रियाक बीच जटिल संवाद अछि। पीड़ितक नामक साँच वाणी बच्चासभक श्रवणसँ मानविक अर्थ पबैत अछि। किन्तु साक्षी-पत्र चन्ना गाछीमे लिखल गेल वाक्य मात्र पर न्यायालयक पूर्ण साक्ष्य-स्वीकृति सिद्ध नहि। कथामे साक्षी-पत्र लेखन आ सामूहिक वाचन मुख्य घटित क्रिया अछि; अन्तिम आदेश भविष्यक प्रश्न रहैत अछि।

पीड़ितक निजता आ देखल इतिहासक सीमा

मीरा पुछैत छलीह जे चोरल गेल निजता केना घुराएल जायत। पीपरक ब्रह्माक कथन अछि जे डूबलकेँ नहि, अगिला हानिकारक हाथकेँ रोकब सकैत छी। एहिमे निवारक समाज-कार्य आ अतीतक अपरिवर्तनीय क्षतिक बीच अन्तर स्वीकारल गेल अछि। पीड़ितक सामग्री वापस भेटबाक, सार्वजनिक प्रतिलिपि हटबाक अथवा कानूनी प्रतिकारक विशिष्ट पूर्ण घटना एहि दृश्यमे नहि। कथाकार भविष्यमुखी पहरेदारीक नैतिक सीमा बतबैत छथि; निजता-सुरक्षाक झूठा सुखान्त नहि बनबैत।

ईराक परदेशी उच्चारणक अटकन

ईरा ‘गढ़ नारिकेल’ बजैत अटकैत छथि, अनन्या हाथ पकड़ि धीरे कहबाक आग्रह करैत छलीह। ई आवाजक स्थल-सम्बन्धक कोमल दृश्य अछि। विदेशक शिक्षा आ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन-भूमिका ओकरा गामक नाम तत्काल परिपूर्ण उच्चारणक अधिकार नहि दैत। भाषाक निजी अभ्यास लोक-स्मृतिक बौद्धिक स्वामित्वसँ भिन्न अछि। तथापि उच्चारणक अटकन सांस्कृतिक हीनताक स्थायी प्रमाण नहि; उपन्यास ईराक सीखबाक स्वीकारोक्ति आ अनन्याक सहयोगक छोट कार्यमे दूनू पात्रक संवाद रचैत अछि।

गोहिक हटब : नाटकीय मुक्ति अथवा स्थगित संकट

साक्षी-पत्रक पाठपछाति गोहि पानि दिस हटए लगैत अछि। ओ सभ मृत देहक पहरेदारी छोड़ि लोकक नाम-पहरेदारी मानैत छथि। अलौकिक दैत्यक पीछे हटबक दृश्य उपन्यासक एक भावात्मक चरम अछि। मुदा पूर्वक डिजिटल ठगी, आर्थिक जाल, पुल-निर्माणक दोष अथवा प्रशासनिक मौन स्वतः समाप्त भेल, एहन विस्तृत घटनात्मक परिणाम एहि दृश्यसँ निष्पन्न नहि। गोहिक मुक्ति-रूपक सामाजिक पहराक एक नूतन उत्तराधिकार स्थापित करैत अछि, पूर्ण आर्थिक-प्रशासनिक न्याय घोषित नहि।

सादा उलटल पदपट्टी पर नूतन वाक्य

सत्यव्रत माटिमे राखल पदनामक पट्टीक पाछूक सादा भागपर लिखैत छथि जे जे सुनल गेल, से आब असगर नहि। एहि छोट क्रियामे कथा सरकारी नामपट्टीकेँ लोक-साक्षीक छोट लेखनसामग्री बनबैत अछि। सार्वजनिक प्रशस्तिक भार घटि सामान्य मानवीय साथक वचन आबैत अछि। तथापि सुनल गेल व्यक्तिक सामाजिक एकान्त मिटि चुकल, एकरा अन्तिम तथ्य मानब सरलीकरण होएत; सुनबाक संवाद सहायता, अभिलेख, निजता आ संस्थागत जाँच मांगैत रहैत अछि।

साक्षीक भारक समग्र आख्यान-विधान

अध्याय ५१ मूल शीर्षकक गोहि तथा जलसमाधिक अर्थकेँ हिंसा/मुक्तिक द्वैधमे पुनःसंगठित करैत अछि। साक्षी बनेबाक प्राथमिक दृश्य पदपट्टी राखब, पत्र लिखब, बच्चाक वाचन सुनब आ नामक पहरा स्वीकारब अछि। कथाक मानवीय बल एहि अधूरा उत्तरदायित्वमे छैक। सीमा ई जे सत्यव्रतक गाछीप्रवेशक पुनरावृत्ति आ भूत-दण्डक रूपक आदतन होए लगैत अछि। कथानकक अगिला निर्णायक मोड़ एतयसँ अलग ठोस भौतिक संघर्ष—गाछीक कटान—दिस बढ़ैत अछि, जाहिसँ लोक-अभिलेखक स्थायित्व के नया परीक्षा भेटैत अछि।

प्रकरण १५३ | मूल अध्याय ५२ — अगिला आवाज

आध्यात्मिक मुक्तिसँ भौतिक कटानक संक्रमण

अध्याय ५१क अन्तमे गोहि पानि दिस हटैत, साक्षी-पत्र बच्चासभक हाथमे आबैत अछि। ‘अगिला आवाज’ एहि नाटकीय मुक्ति-सूचक क्षणकेँ भौतिक भू-राजनीतिक संकटसँ जाँचैत अछि: चन्ना गाछीक कटान शुरू होइत अछि। एतय उपन्यास अपन पूर्वक सामाजिक शिक्षाक घोषणापर संतुष्ट नहि; स्मृतिक मुख्य स्थल स्वयं नष्ट भऽ रहल अछि। गाछक हिंसक कटानक दृश्य पाठकक ध्यान रूपकात्मक गोहिसँ वास्तविक बाँस, रस्सी, कुल्हाड़ि, सरकारी नक्शा आ श्रमिकक कार्यपर अनैत अछि। ई कथावृत्तक एक निर्णायक घटनात्मक मोड़ अछि, जेकरा केवल ‘मुक्तिक अगिला रूप’ कहि सौन्दर्यकरण करब सावधानी माँगैत अछि।

‘अतिक्रमण’ शब्दक दस्तावेजी सत्ता

सरकारी नक्शामे चन्ना गाछी अतिक्रमणक ठाम देखाओल गेल। ई एक वर्गीकरणक भारी कथा-परिणाम अछि। गामक लोक लेल गाछी न्याय-स्मृति, भूतक खेल, नाम-पाठ आ श्रमिकक इतिहासक ठाम; प्रशासनिक भाषा लेल अलग भू-श्रेणी। कथाकार एहि वर्गीकरणक नैतिक संकुचन उद्घाटित करैत छथि। मुदा ‘अतिक्रमण’ लिखल गेलाक अर्थ कि वास्तविक भूमि-अधिकारक अभिलेख कतेक सटीक अथवा गलत, तकर पूरा स्वतन्त्र दस्तावेजी परीक्षण पाठमे नहि। उपन्यास विशेष प्रकारक संस्थागत दृष्टि आ स्थानीय स्मृतिक टकराव चित्रित करैत अछि।

कटबाक पहिल डालि : उजासक असहज आगमन

मोटगर डालि खसते गाछीक भीतर लम्बा प्रकाश पैसैत अछि। लोक पहिल बेर छिपल वस्तु, पुरान कपड़ा आ जड़िक भीजल फाँकि स्पष्ट देखैत अछि। त्वरित आनन्दक बदला दृश्य लाज आ असहजता दैत अछि: जे ठाम सदिखन अन्हार छल, ओकर भीतरक जीवन नग्न भऽ रहल अछि। एतय उजासक एकार्थी नैतिक अच्छाइ नहि;

कटान द्वारा अनावृत भऽ रहल सामाजिक इतिहासक मिश्रित अनुभूति अछि। भौतिक क्षति आ नूतन सार्वजनिक दृश्यता परस्पर विरोधी फल दैत छथि।

लोकक भिन्न प्रतिक्रिया आ समुदायिक बहुकण्ठ

किछु लोक गाछी कटबकेँ भयक अन्त मानैत, दोसर स्मृतिक नाश। कथा पूरा गामकेँ एकमत प्रतिरोधी समूह नहि बनबैत। प्रत्यक्ष स्थलपर जकर धार्मिक अथवा भूतही आशंका छल, ओ लोक उजासक सम्भावना सेहो देखैत। सामुदायिक कथनशास्त्रक दृष्टिसँ ई भिन्न प्रतिक्रिया महत्त्वपूर्ण, कारण लोक-अभिलेखक पक्षधरता एकर भीतर विरोधक स्वीकृति सँ अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। कालान्तरे लोकक आवाज बढ़ैत अछि, मुदा प्रारम्भिक मतभेद हरब कथाक सहज सामूहिक विजयोत्सवक बदलाक आवश्यक सूक्ष्मता अछि।

सत्यव्रतक पुनःआगमन आ अस्वीकारल आत्ममुक्ति

सत्यव्रत साधारण कुरता आ कपड़ाक झोरा लेने कटल जड़ि लग बैसैत छथि। पाठ कहैत अछि जे ओ फेर अएलाह; एहि बेर पदक गाड़ीक महिमा नहि। लोक हुनकर चुप रहबाक अर्थ पूर्वक मौनक दायित्वसँ जोड़ैत छथि। मुदा पुनःआगमनक क्रिया कब, कतेक दिन बाद आ पूर्वक अध्याय ५०–५१क गाछीस्थितिसँ कोन कालिक अन्तरमे भेल, पर्याप्त स्पष्ट नहि। एकरा काल-उत्क्रमिक अथवा पुनरावृत्त आत्मप्रवेश रूपमे सम्भव पढ़ल जाए, पर कल्पित तिथि जोड़ने समेटल नहि जाए। ओ स्वयं बरी मानि नहि चलैत, ई पात्रगत सीमा अत्यन्त स्पष्ट अछि।

कटान-जड़िक गन्ध आ श्रमिकक औजार

अन्तिम बड़का फाँड़ कटबाक समय काठसँ सड़न नहि, भीजल माटि, धूप, पुरान कागच आ बच्चाक केशक गन्ध उठैत अछि। कुल्हाड़ि चलौनिहार मजदूर एक क्षण थम्हैत अछि। एहि इन्द्रियगत दृश्य-संघटनमे गाछक देह पीढ़ीक स्मृतिक पात्र बनैत अछि। महत्त्वपूर्ण भेद: कटान करनिहार मजदूर प्रशासनिक आदेशक स्वतन्त्र रचनाकार अथवा लाभकर्ता स्वतः नहि। कथा-सम्बन्ध मे मालिकाना निर्णय, कार्यादेश, काज करनिहार हाथ आ लोकक भावात्मक विरोध अलग सत्ता-स्तर छथि। कुल्हाड़िक ठहराव ई फरक देखनेक अवसर दैत अछि।

कटैत छाँह आ बढ़ैत आवागमनक विपर्यास

जतेक गाछीक छाजन हटैत, लोकक पहुँच बढ़ैत—दिनमे ठेला, साँझमे स्त्रीक दीप, युवकक मोबाइलक फोटो, नाविकक आवाज। ई एक कठिन आंशिक लाभ अछि। गाछीक पुरान सुरक्षा अथवा जादुई एकान्त घटैत, सार्वजनिक स्मृति नए लोक धरि पहुँचैत अछि। उपन्यास भौतिक वृक्ष-विनाशकेँ पूर्ण प्रगति नहि बनबैत; कटानक दुख आ उद्घाटित स्थलपर नागरिक सक्रियता एकसाथ रहैत अछि। ई विरोध समयक अन्तर खोलैत अछि: गाछीक छाँह बाँचि रहनाइ आ स्मृतिक फैलाव समान साधन नहि, तइयो एके इतिहासक दू भाग बनि सकैत अछि।

गोहिक स्मृति-किनारसँ पुनरागमन

गोहि फेर देखाइत छथि, पानिक तलसँ नहि, लोकक स्मृतिक किनारसँ। कथाकार स्वयं घटना केँ पकड़ि सकल वास्तविक पशु-दृश्य रूपमे नहि, अनुभवक अस्थिर सान्निध्य रूपमे रखैत छथि। एहि अर्थमे जलसमाधि दैहिक नाश आ सामाजिक बन्धन-मुक्तिक द्वैध बनल रहैत अछि। अलौकिक गोहिक वापसी कटानक वास्तविक

प्रशासनिक कारणक वैकल्पिक व्याख्या नहि। पाठककेँ बुझबाक अछि जे रूपकात्मक भयक नव दर्शन आ चरम भौतिक अतिक्रमण-श्रेणीक घटनाक दू अलग प्रमाण-स्तर अछि।

‘नव गाछि, पुरान नाम’क बालप्रस्ताव

कटल ठूँठपर एक बच्ची हाथ राखि फेर गाछि रोपबाक प्रश्न करैत छलीह। दोसर बालक नव छाँहमे पुरान नाम चाहैत, तेसर सुननाइक चौपालक कल्पना करैत अछि। एहि दृश्य मे शोक क्रियात्मक सामुदायिक नियोजन बनेबाक आरम्भ अछि। मुदा गाछि रोपि देल गेल, नूतन वृक्ष उगि पूर्ण छाँह देलक अथवा स्थानीय प्रबन्धकीय स्वीकृति भेटल—एहन पूर्ण घटना एहि अध्यायमे नहि। ई भविष्यत् योजना अछि। जीवित समुदाय केन्द्रीय चरित्र बनि निर्णयक शब्द बोलैत अछि, जबकि प्रशासनिक जमिनक स्वामित्वक विवाद शेष अछि।

कटल ठूँठक हरियर बिन्दु

अन्तिम रातिपछाति ठूँठक एक धारीपर अतिसूक्ष्म हरियर बिन्दु देखाइत अछि। कियो प्राकृतिक जिजीविषा कहैत, कियो चमत्कार। कथाकार दू व्याख्याकेँ खुलल रखैत छथि। एहि दृष्टिमे जादुई यथार्थक परिपक्वता अछि: हरियर संकेतक जीववैज्ञानिक निर्णय नहि, पाठकक अर्थप्रक्रिया मुख्य अछि। ‘फेर उगत’क घोषणामे पूर्ण वृक्षक समय-संवेदनशीलता घटैत अछि; सूक्ष्म बिन्दु मात्र भविष्यक अनिश्चित लम्बाइ दर्शबैत अछि। अध्याय ५३–५४ एहि संकेतकेँ सामाजिक स्थल-निर्माणक काजसँ जोड़त।

सार्वजनिक चौपाल आ नायकक वैयक्तिक पदत्याग

सत्यव्रत केओ प्रणाम नहि करैत; हुनकर पुनःआगमन सुनबाक ऋणक रूपमे देखाओल गेल। अनेक लोक कटान ठाम आबि अपन गुमाएल नाम पढ़ैत छथि। एतय पूर्वक एक महान ‘विधि-पुरुष’क परिवर्तित चरित्र मुख्य दृश्य नहिं; लोकक सामान्य क्रिया केन्द्र अछि। एकरा सार्वजनिक चौपालक प्रारम्भ मानब सटीक, पर संस्थागत स्मारक अथवा नागरिक समितिक पूर्ण गठित प्रशासन नहि। कथाकारक व्यापक सामाजिक रूपक जीवित लोकक श्रमसँ निर्मित भऽ रहल अछि।

कटान-अधूरापन आ कथानकक कालगति

अध्यायक उत्तरार्ध ‘गाछि अधकट’ रूपमे दृश्य छोड़ैत अछि, यद्यपि पूर्ववर्ती अनुच्छेदमे अन्तिम बड़का फाँड़ कटबाक उल्लेख अछि। एकरा सम्पूर्ण वृक्षक सबै जड़िक कटान अथवा एक शाखाक गिरबाक फरक रूपमे सम्भव बुझि सकैत, मुदा लिखल रूप सावधानी माँगैत अछि। घटना-स्तरपर ठूँठ बचल, शाखासभ कटल आ जड़ि उघरल —ई निश्चित दृश्य अछि। कथा समयक एक चरणक अन्तकेँ वृक्षीय पूर्ण मृत्यु घोषित नहि करैत; शेष मूल-देह नव नागरिक मञ्चक केन्द्र बनैत अछि।

आवाजक सार्वजनिकता आ बाजारक पूर्वच्छाया

मोबाइल पर फोटो, बाहरी दर्शक, चायठेला आ व्यापक आवागमन लोकस्मृतिक लोकप्रियता बढ़बैत अछि। एही सार्वजनिक दृश्यतासँ स्मृति केँ बजार अथवा नूतन प्रशासनिक नियंत्रणक विषय बनबाक रास्ता खुलैत अछि। अध्याय ५३क अनचिन्हार पर्यवेक्षक आ बादक नोटिस एहि सम्भावनाक कथात्मक विस्तार छथि। एतय स्वयं

फोटो खींचब अपराध नहि; प्रश्न अछि जे कियो एहि ठामक लोक-अधिकारकेँ प्रवेश-शुल्क, सौन्दर्यीकरण अथवा परियोजनागत लाभमे बदलि सकैत अछि की नहि। कथाकार ई संघर्षक संकेत पहिने राखैत छथि।

समग्र मूल्यांकन : मुक्ति कथाक वृक्षक परीक्षा

‘अगिला आवाज’क मूल शक्ति अध्याय ४७–५१क आत्मस्वीकृति-प्रधान जादुई न्यायसँ धरतीपर साक्षात् कटैत गाछीक संकट दिस घुरब अछि। छाँहक हानि, उजासक लाज, अवशिष्ट ठूँठ, बाहरी आगमन आ हरियर बिन्दु एक-दोसराकेँ विरोधाभासी अर्थ दैत छथि। समीक्षात्मक सावधानी ई जे गाछ कटब स्वतः समुदायिक मुक्ति बनल, एहन सरल निष्कर्ष नहि। चन्ना गाछी जे जीवित इतिहासक स्थल छल, ओकरा एक जादुई प्रतीकक नामपर पर्यावरणक वास्तविक नष्टता सँ मुक्त करि देबाक नहि। योजना आ परिणाम, आशा आ भौतिक क्षति दुनू अलग रहैत अछि।

प्रकरण १५४ | मूल अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

कटानपछातिक उजासक लाज

अध्याय ५३क पहिल दृश्य लोकक अनजान असहजता अछि: जकर अन्हार शताब्दी धरि कथा के बचौने छल, ओ छाजन हटिते सूर्यक सोझाँ उघरल। कटलकाठक देहकेँ लगभग बुजुर्ग स्त्रीक अचानक उघाड़ देह रूपमे देखाओल गेल, जाहिसँ धूप मुक्तिक प्रतीक मात्र नहि, अनावृत दुर्बलताक अनुभव बनैत अछि। एहि दृश्यपर्यावरणमे स्थानक नूतन कथा-चरित्र अछि। उजास पुरान लोकविश्वासक विनाशक नारा नहि; नूतन सामाजिक निरीक्षण आ सम्भावित लज्जाक प्रकाश अछि।

कटल वृक्षक वलय : जैविक कालक पाठ

ठूँठक गोल छेदनपर गाढ़-फीक वार्षिक वृत्त देखाइत अछि; बूढ़बा भूत ओकरा गनैत छथि। प्राकृतिक काल वृक्षक देहपर दृश्य बनैत अछि, जखनकि मृत श्रमिकक नाम सूचीमे अनुपस्थित रहल। बूढ़बाक समानान्तर कथन मानवीय ‘कटान’पछाति नाम खोलबाक बात करैत अछि। एहिमे वृक्षीय आयु, सामाजिक इतिहास आ प्रशासनिक विस्मृतिसँ जुड़ल अनूठा काल-रूपक अछि। मुदा गाछक वलय लेल निर्दिष्ट सटीक ऐतिहासिक वर्ष पाठमे नहि; समीक्षा कल्पित बरख-संख्या अथवा विज्ञानक अतिरिक्त तथ्य जोड़बाक नहि।

दिनक पहरा : रातिक भूतक भूमिकाक सीमा

बच्चासभ नाम-पुस्तिका ले दिनमे पहरा देबाक नूतन नियम बनबैत छथि; भूतक खेल रातिमे रहैत अछि। ई समाजक जिम्मेदारीक मूल हस्तान्तरण अछि। मृतकक जादुई न्याय जीवितक दैनन्दिन काजक बगलमे रहैत, तकर पूर्ण पर्याय नहि। ‘अन्हार’ हटिते भूत निष्क्रिय भऽ गेल, एहन नहि; स्थानक उपयोग आ पहराक समय बदलल। कथाकारक समवर्ती संसारमे भूत आ बालक अलग कालिक कर्तृत्व राखैत छथि, मुदा जीवितक कामक सार्वजनिक परिणाम अधिक दृश्यमान होइत अछि।

नाम-पाथर हटला पर खेल रोकबाक नियम

कबड्डीक रेखाक किनार नाम-पाथर राखल जाइत अछि। जँ कोनो पाथर ठोकरसँ हटि जाए, खेल रोकि पहिने नाम ठीक ठाम रखल जाएत। एहि नियममे जीतक बदला स्मृतिक मर्यादा प्राथमिक अछि। जे खिलाड़ी रेखा पार करैत, ओकरा पकड़बाक बदला नाम पूछल जाइत अछि। ई पूर्वक गोहि-ग्राहक हिंसक पकड़िक शिल्पकेँ लोकशिक्षाक प्रश्नमे परिवर्तित करैत अछि। मुदा खेलक सफलता सँ वस्तुतः सार्वजनिक ठाम पर स्थायी सुरक्षाक कागजी अधिकार भऽ गेल नहि; नियम गामक सहमतिक अभ्यास अछि।

देविकाक ‘उज्ज्वल कुमार झा’क विस्तृत परिचय

देविका उज्ज्वलक नाम-पाथर पर हाथ रखि एक वाक्य लिखैत छलीह, जाहिमे व्यक्तिगत त्रासदी, ठगीक घेरा आ असगर छोड़ल जाएबाक अनुभव शामिल अछि। पहिने ‘उज्ज्वल झा’क मुख्य नाम छल; एतय ‘उज्ज्वल कुमार झा’क पूरा रूप अबैत अछि। ई सामान्य नाम-विस्तार सम्भव अछि, मुदा अलग-अलग मृत्यु-वर्णनक ऐतिहासिक असङ्गति एकरा द्वारा समाप्त नहि होइत। देविकाक हाथ काँपैत अछि, कारण नामकेँ सामाजिक कारणक संग जोड़ब आत्म-घाव खोलैत अछि। एहि क्षण निजी शोक आ सार्वजनिक न्यायशिक्षाक भिन्न गति एकसाथ चलैत अछि।

मीराक ‘मौनक अधिकार’

मीरा नाम-पाथर पर निजताक अलग चिह्न रखैत छलीह। हुनकर कथन अछि जे जे बाजए चाहय तकरा सुनू, जे चुप रहए चाहय तकर चुप्पीक पहरा दियौ। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आन्तरिक संशोधन अछि। अध्याय ४९क मौन-अभिलेखक सामान्य आरोप जँ पीड़ितक चुप्पीकेँ सेहो दोष ठहराएत तँ असहनीय पुनर्हिंसा होएत। मीरा स्वेच्छिक मौन आ संस्थागत लोपक बीच गहन सीमा खींचैत छलीह। कथानकक नैतिक जटिलता एतय पहिनेक ‘सभ मौन लिखू’क तीव्रतासँ अधिक परिपक्व अछि।

ईराक नोटबुक बन्द कएनाइ

ईरा रातिक बससँ कटानक बाद पहुँचैत छलीह। ओ गाछीक उघरल देह देखिकऽ नोटबुक खोलैत, फेर बन्द करैत छलीह—पहिने देखब-सुनब, बादमे लिखब। पूर्वक विदेश-सभागारमे औपचारिक नैतिक भाषणक प्रश्न उठौने पात्र अब कटानक स्थानीय भौतिक स्थलमे बैसैत छलीह। ई नायक-वाणी केँ सीमित करबाक दृश्य अछि। आनो देशमे नाम कटल प्रश्नपर ईरा तुरन्त उत्तर नहि दैत छलीह; ज्ञानक अनिश्चितता स्वीकारब कथनशास्त्रीय रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

सत्यव्रतक अनुपस्थिति आ ऋणक उपस्थितिक विरोध

अध्याय ५२मे सत्यव्रत कटान-स्थल पहुँचैत छथि; अध्याय ५३क बिहान ओ अनुपस्थित छथि। बच्चासभ लिखैत अछि जे सुननिहार अनुपस्थित, मुदा ऋण उपस्थित। ई समयक दू अलग क्षण होएबाक सम्भावना अछि; पात्रक तत्काल अनुपस्थिति स्वतः असङ्गति नहि। विशेष शिल्पगत उपलब्धि ई अछि जे पदवाला पात्रक देह नहि रहितहुँ ओकर अपूरा सामाजिक उत्तरदायित्व चिन्हित रहैत अछि। अब उपन्यास महान परिवर्तित श्रोता केँ स्थायी मञ्चक केन्द्र नहि बनबैत, बालकक पहराकेँ चालू रखैत अछि।

अदृश्य अध्यक्षता सँ रोजमर्रा काज धरि

दिनक बीच जलघड़ा, कपड़ाक अस्थायी छतरिया, चूना-घेरा, रेत सफाई आ पाथरपर नाम गाढ़ करबाक छैनी—ई वस्तुसभ अध्यायक सबसँ विश्वसनीय सामाजिक पुनर्गठन अछि। कोनो उद्घाटन, अध्यक्ष अथवा फीता नहि। ई विवरण कथाक घोषित लोकन्यायक प्रत्यक्ष श्रम बनैत अछि। एक अस्थायी स्मारकक रोजमर्रा रखरखाव लोक भागीदारीक परीक्षण अछि, जादुई सम्मानक मात्र घोषणा नहि। मुदा स्थल कानूनी रूपसँ सुरक्षित नहि; एतुक्का भौतिक व्यवस्था अगले नोटिसक आघात लेल संवेदनशील अछि।

बूढ़बाक धूपमे पातल देह

दिनक उजासमे बूढ़बा भूतक कारी देह पातल पड़ैत अछि। हुलासी हुनका मिटि जाएबाक आशंका बतबैत छलीह; बूढ़बा अन्हारमे अभ्यस्त आँखिक बदलबाक व्याख्या करैत छथि। एहि अलौकिक शरीर-भाषामे अतीतक स्वामित्व घटा नूतन पीढ़ीक स्वाधीन दृष्टि सम्भव बनैत अछि। बूढ़बा अन्धकारक एकमात्र न्यायाधीश बनल नहि रहय चाहैत, तकर बिम्ब अछि। मुदा प्रकाशक अनुभूति भूतक वास्तविक अन्तिम लोप नहि; कथाविश्वमे ओ साँझमे फेर गाढ़ होइत छथि।

अनचिन्हार निरीक्षक आ बजारक प्रवेश

गाछी बाहरी दू अनचिन्हार लोक मोबाइलपर नियमित भीड़ आ ‘परियोजना सम्भव’क बात करैत छथि। कथन हुनकर पूर्ण परिचय नहि दैत; पनिडुब्बी बजारक गन्ध पहचानैत छलीह। एहि घटना सँ लोकस्मृतिक सार्वजनिकता पर व्यावसायिक दखलक स्पष्ट पूर्वाभास अछि। मुदा अनचिन्हार केकर कर्मचारी, एकर स्पष्ट सत्यापन नहि। सम्भावित परियोजना आ वास्तवमे स्वीकृत ठेका अलग रहैत अछि। पाठकक जानकारी नाम-पहरेदार बच्चासभसँ किछु अधिक होइत, जाहिसँ आगामी टकरावक नाटकीय विडम्बना बनैत अछि।

‘उपस्थित-उपस्थित’क दिनक लय

साँझक कबड्डीमे बालक ‘कबड्डी’क बदला ‘उपस्थित-उपस्थित’ बजैत पारी लैत अछि; विरोधी दल पकड़बाक बदला सुनैत अछि। भाषा-परिवर्तन छोट अछि, अर्थ व्यापक। खेलक नियत साँस नामक सामुदायिक उपस्थिति बनैत अछि। पूर्वक प्रेतक अलौकिक प्रदर्शन आब जीवित बच्चाक सार्वजनिक प्रशिक्षण रूपमे परिवर्तित अछि। प्रत्येक सहभागी विजेता बनल, एहि भावुक निष्कर्षक बदला खेलक सामूहिक श्रवणक नियम मुख्य अछि।

पीयर कागचक पहिल संकेत आ सूचना-काल

अध्यायक अन्तमे चौकीदार नगरपालिकाक पीयर कागच लऽ दौड़ैत अछि; ठूँठपर मोहरदार नोटिस चिपकाओल जाइत अछि। ई दृश्य आगामी प्रशासनिक संघर्षक प्रत्यक्ष आरम्भ अछि। पनिडुब्बी बजार पहुँचबाक संकेत दैत छलीह, मुदा नोटिसक विशिष्ट विषय एतय पूरा खोलल नहि। अध्याय ५४मे पोस्टमास्टर सेहो पीयर लिफाफा अनैत अछि; दू अलग कागच छथि कि समय-क्रममे दोहरा प्रस्तुतिकरण, स्पष्ट सेतु नहि। एकर सटीकता आगामी विवेचनक विषय अछि।

समग्र मूल्यांकन : भोरक सामाजिक मूल्य

‘कटानक बादक बिहान’ वृक्षक छाँहक क्षतिपछाति सार्वजनिक भूमिकाक धीम काज देखबैत अछि। कटानक वलय, देविकाक काँपैत नाम, मीराक चुप्पीक अधिकार, ईराक बन्द नोटबुक, बूढ़बाक पातल देह आ अनचिन्हार परियोजना-रुचि—ई सभ एक-एक अलग कथन-प्रविधि छथि। अध्यायक बल नैतिक घोषणा नहि, पात्रक शारीरिक-सामाजिक कर्तृत्व अछि। सीमा ई जे भोरक नूतनता भविष्यक नगरपालिकाक विवादक ओर बहुत जल्दी सरकैत अछि; तौ जादुई भूतकबड्डीक सामाजिक उपयोगक दृढ़ परिवर्तन स्पष्ट अछि।

प्रकरण १५५ | मूल अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

अन्धकारक अदालतसँ उजासक लोकबैठकी

अध्याय ५४क आरम्भमे लोक कटायल चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात गोल बैसैत अछि। पूर्वक भूत-अदालतमे अन्धकार आ असामान्य आवाज प्रमुख छल; एतय धूप, उघरल जड़ि आ नामक जीवित वाचन लोकबैठकीक आधार बनैत अछि। आरुणि एकरा अदालतसँ बेसी अदालत-जेकाँ अनुभव करैत अछि, कारण मंच, वकील, अध्यक्ष अथवा सरकारी हस्ताक्षरबिना सभ चेहरा ध्यानसँ सुनैत अछि। ई संस्थागत कार्यक नक्कल नहि, सामुदायिक कथा-सुनवाईक स्वतन्त्र दृश्य अछि। सामूहिकता एतय नायकक आदेशसँ नहि, स्थानपर उपस्थित लोकक सुनबाक क्रियासँ बनैत अछि।

उघरल जड़ि आ ‘भेद’क सार्वजनिकता

गाछ कटिते भीतरक भीजल माटि, चुनरीक टुकड़ा, किछु दबाओल वस्तु आ काठक गुप्त फाँक दृश्य होइत अछि। धूप वैद्यक छुरीसन निर्भीक; ठूँठ बुजुर्ग देहक उघरल छातीसन। ई संवेदनात्मक तुलनासँ उजासक नैतिक शुद्धता पर प्रतिप्रश्न अछि। जे छिपल वस्तु देखाइ पड़ल, से स्वतः जनताक संग्रहण-योग्य माल नहि। अनन्या उठाबाक पहिने सुनबाक शर्त रखैत छलीह। कथा वस्तु-अधिकार, स्मृति आ सार्वजनिक प्रदर्शनक सम्बन्धमे एक उचित संकोच रचैत अछि।

‘पहिने सुनब’ : अनन्याक पहरेदारीक नियम

बच्चासभ ठूँठक भीतरी वस्तु खजाना बुझि उठाबय चाहैत अछि; अनन्या रोकेलि आ कहैत छलीह जे पहिने सुनब। एहि क्षण ओकर खेलाड़ी भूमिका अभिलेख-पहरेदारमे स्थिर होइत अछि। पहिनेक नाम-पाठकेँ सदैव जल्दी सार्वजनिक करबाक प्रवृत्तिक आलोचना एहि नियममे अछि। नष्ट गाछक अवशेष ऐतिहासिक सामग्री छथि, मुदा हुनकर सामाजिक अर्थ जानबाक लेल सहमति, सन्दर्भ आ स्रोत आवश्यक अछि। अनन्याक एक वाक्य लोकबैठकीक कार्य-विधि रूपमे काम करैत अछि; बच्चाक सर्वज्ञ अधिकारक घोषणा नहि।

बाकर जड़ि-छुवाइ आ सामूहिक शोक

बा कम दृष्टिवाली छथि, मुदा ठूँठ लग ठहरबाक बाट चिन्हैत छलीह। हाथसँ जड़ि छूबि लम्बा मौन धारण करैत, फेर छाँह पुनः जन्म लेबाक आशा कहैत छलीह। एतय आँखिक प्रमाणे एकमात्र ज्ञान नहि, देहक पुरान अभ्यास आ स्पर्शक स्मृति सम्मुख अछि। मगर ‘जड़ि बचल तँ छाँह जन्मत’ भविष्यमुखी आशा अछि; वृक्ष सचमुच उगि गेल

अथवा नगरपालिकाक कटानक निर्णय फेरल गेल—एहन घटना नहि। बा वास्तविक हानिक बीच नूतन कथाक श्रवण सम्भव करैत छलीह।

बूढ़बाक दिनक झिलमिलाहट

बूढ़बा भूत प्रायः दिनमे स्पष्ट नहि, मुदा एतय धूलि-जेकाँ झिलमिल छवि रूपमे उपस्थित होइत छथि। कथन सावधानीसँ कहैत अछि जे कतेको लोक बादमे कारी आकृति देखबाक कथन कएलक, सभकेँ स्पष्ट प्रत्यक्ष दर्शन नहि भेल। ई दृष्टिकेन्द्रक फरक महत्वपूर्ण। कथावाचकक अलौकिक संसारक संग लोकस्मृतिक विभिन्न गवाहीक आवाज रहैत अछि। बच्चासभक चुप्पी देखबैत अछि जे बूढ़बा एखन स्वयं निर्णय सुनए नहि, जीवितक सुनबाक अभ्यास देखए आबि रहल छथि।

मजदूरक बूढ़ बेटाक काँपैत स्वर

पहिल नाम एक बूढ़ भऽ चुकल मजदूर-पुत्र पढ़ैत अछि। ओ अपन पिताक नाम कहैत काल बच्चा जकाँ काँपैत अछि। ठूँठक फाँकसँ हवा निकलैत अछि; कियो साँस, कियो कीड़ाक ध्वनि मानैत। बच्चासभ ‘नाम सुनल गेल, ठूँठ उत्तर देलक’ लिखैत अछि। एहि छोट अन्तरमे दृश्यघटना आ लोकक अर्थलगाव भिन्न छथि। हवा वास्तवमे निकलल कथित घटना अछि; ओकरा पिताक आत्माक प्रत्युत्तर कहब पात्रक लोकविश्वासी व्याख्या। समीक्षा दुनू स्तरकेँ एक अनिवार्य तथ्य मानि नहि मिलबैत।

उज्ज्वलक माय आ देविकाक धीम पाठ

उज्ज्वलक माय कम स्वरमे नाम पढ़ैत छलीह; देविका कन्हापर हाथ रखि जल्दी नहि करबाक आश्वासन दैत छलीह। चिरई तीन बेर चिहुँकैत अछि। एतय ‘नामक अधिकार’क केन्द्र मृतक युवकक मातृस्वर अछि; देविका सहायता करैत छलीह, प्रतिस्थापन नहि। चिरईक आवाज लोक-पाठमे उत्तर बनैत, मुदा मूल मृत्युदृश्यक ऐतिहासिक विरोध स्वतः सुधारि नहि देत। एहि दृश्य मे कथाकार शोकक वाचिक समय धीम करैत छथि; सार्वजनिक समिति परिवारक गतिकेँ स्वीकारैत अछि।

प्रकृतिक संकेतक अलौकिक अभिलेख

बच्चासभ हर नामक बाद हवा, चिरई, धूप, कुकुरक भुकब, बूढ़क खँखार अथवा पानिक बूँदक चिह्न लिखबाक विधान करैत छथि। ई पातक स्वतः अक्षरक स्थानपर प्रकृतिक प्रतिक्रियाक विस्तृत सूची अछि। किन्तु प्राकृतिक ध्वनिक घटब स्वयं नामक सत्यापन अथवा मृत्युक कारण प्रमाणित नहि करैत। एतय कथा मुख्यतः सम्बन्धक सामाजिक अनुभूति बना रहल अछि। एहि लोकलिपिक सौन्दर्यक संग स्रोतक अनिश्चितता बचा रहबाक चाही, ताकि जादुई यथार्थकेँ वैज्ञानिक साक्ष्यक अनुचित स्थान नहि दिअल जाए।

सौम्याक निजतासम्मत अनलिखल पाठ

सौम्या पहिने प्रत्येक सुनल बात लिखि लेबाक अभ्यस्त छलीह, एतय मात्र ओहि नामक बगलमे बैसैत छथि जकर परिवार चाहैत अछि। अनलिखल अनुभव के सम्मान शिल्पगत दृष्टिसँ अत्यन्त गहन अछि। ‘मौनक अभिलेख’क समय सभ मौन सूचीबद्ध करबाक आवेगक बाद ई नूतन मर्यादा अछि: किछु मौन दबाओल इतिहासक हिंसा, किछु

मौन पीड़ितक वैध निजता। सौम्याक नोटबुक बन्द राखब चरित्रक आत्मविकासक क्रिया अछि। अभिलेखक विश्वसनीयताक एक पक्ष सामग्री न जोड़बो होइ सकैत अछि।

लाल डोरी, नाम-पाथर आ अधूरापनक अग्रस्थान

मीरा लाल डोरी अनैत छलीह; पढ़ल नामक पाथर ठूँठक चारू कात लगबबाक संग दुखक तमाशा नहि बनएबाक शर्त रखैत छलीह। किछु पाथर पर पूरा नाम, किछु पर अधूरा, किछु मात्र चिन्ह। ‘जेकर नाम नहि भेटल’क पाथर सभसँ पहिने राखल जाइत अछि। एतय ज्ञात व्यक्तिक आदरसँ बेसी अज्ञातक रिक्त अधिकार प्रमुख बनैत अछि। ई भव्य स्मारकक सुव्यवस्थित पूर्ति नहि; अपूर्ण जानकारीक सार्वजनिक स्वीकृति अछि। अज्ञातकेँ यथार्थहीन नूतन नाम दऽ पूर्ति करब कथा-विधानसँ विपरीत हएत।

गोपक कागच आ ठूँठक स्थल : दू अभिलेख

गोपक लग अभी अनेक प्रतिलिपि, सूची आ कूट-फाइल छथि। ठूँठक चारू कातक लोकदेखनिहार मंच ओकरा बुझबैत अछि जे कागच नामक कुछ संकेत देत, लोक स्वर, ठूँठ ठाम आ बच्चा पहरा देत। ई अभिलेखक बहु-माध्यमी स्वरूप अछि। दस्तावेजी प्रति, सार्वजनिक श्रवण आ भौतिक स्मृति-स्थान एक-दोसराक पूरक बनैत छथि; कियो अकेले सर्वज्ञ नहि। गोपक उपस्थितिक वास्तविक कार्य एहि अन्तरकेँ मानब अछि, न कि सभ अज्ञात विवरण डिजिटल तालिकामे चुटकीमे भरि देब।

सत्यव्रतक पाछाँ ठाढ़ रहबाक कर्तृत्व

सत्यव्रत एतय बुलाओल नहि गेल, तैओ दूरसँ सुनैत छथि। एक बालक बैसब कहैत अछि; ओ तत्काल मंच ग्रहण नहि कऽ नामक ठामकेँ प्राथमिकता दैत छथि। एतय पूर्वक पदनाम माटिपर राखबाक संकेत जीवित सामाजिक व्यवहारमे उतरल अछि। किन्तु स्थायी आत्मनिरसनक धार्मिक अर्थ नहि; सरकारी पदाधिकारीक वैधानिक भूमिका एखन समाजक वास्तविक आवश्यकता सँ जुड़ल रहि सकैत अछि। कथा पात्रकेँ मञ्चसँ थोड़ा पाछाँ सरका सामान्य पीड़ितक स्वरक स्थान विस्तारित करैत अछि।

पोस्टमास्टरक पीयर लिफाफाक आगमन

साइकिलपर पोस्टमास्टर छोट बाटे नगरपालिकाक मोहरवला पीयर लिफाफा आरुणिक हाथमे देइत अछि। अनन्या नाम-पाठक बीच पत्र नहि खोलबाक निर्णय करैत छलीह; कागच रातिभरि ठूँठपर प्रतीक्षा करैत अछि। ई वास्तविक घटनाक्रमक विलम्ब अछि, जे चन्ना गाछीक सुनबाक क्रमक प्राथमिकता व्यक्त करैत अछि। मुदा अध्याय ५३मे चौकीदार नोटिस चिपका देने छल; एहि अध्यायमे पोस्टमास्टरक पुनःलिफाफा पहिल सूचना छथि कि अन्य पत्र, स्पष्ट नहि। मूल पाठक एहि निरन्तरताक अस्पष्टताकेँ कल्पित पत्र-संख्या जोड़ि नहि सुलझाएब उचित।

प्रकरणक मूल्यांकन : सुनबाक स्थानक स्थापत्य

‘ठूँठक चारू कात’ कटानक दुखकेँ सामाजिक स्थापत्य बनबैत अछि—गोल घेरा, जड़ि, पाथर, नाम, लाल डोरी, चुप्पी आ खुलल आसमान। एहि अध्यायक बल नूतन भव्य भवनक घोषणा नहि, बिना अध्यक्षक कार्यरत लोकबैठकी अछि। शिल्पगत कमजोरी प्रकृतिक प्रत्येक आवाजकेँ मृतकक उत्तर बनबाकेँ कथाक अनिश्चितता

घटेबाक सम्भावना; मुदा सौम्याक अनलिखल मर्यादा आ ‘जेकर नाम नहि भेटल’क प्रथम पाथर एकर विरुद्ध प्रमाणिक संयम रचैत अछि। पीयर लिफाफाक स्थगित वाचन आगामी प्रत्यक्ष संस्थागत संघर्षक नाटकीय अंकुर अछि।

प्रकरण १५६ | मूल अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

प्रतीक्षारत लिफाफासँ औपचारिक टकराव

ठूँठक कगारपर रातिभरि पड़ल पीयर लिफाफा अध्याय ५५मे भोरमे खोलल जाइत अछि। एहि घटनाक शिल्पगत अर्थ गहरा अछि: पहिले नाम-पाठ, बादमे प्रशासनिक पत्र—लोकसभाक तय प्राथमिकता। नगरपालिकाक नीला मोहर, भीतरक तीन पन्ना आ ठण्डा सरकारी वाक्यसँ कथा अलौकिक स्मृति-स्थलक विषय पर ठोस भूमि-विवाद दिस सरकैत अछि। पीयर पाँखिक रूपकक भीतर कैंचीक आवाज नीतिगत हिंसाक पूर्वाभास अछि। मुदा नोटिस जारी भेनाइ आ आदेशक वैधानिक अन्तिमता समान नहि; तत्काल बलप्रयोग नहि घटैत।

तीन पन्नाक दृश्यसंरचना

पहिल पन्ना ‘सार्वजनिक सौन्दर्यीकरण आ मार्ग-सुरक्षा’ विषयक सूचना, दोसर पन्ना नक्शा जाहिमे गाछीक ठाम खाली चौकोर, तेसर पन्ना नाम–पता–कारण–प्रमाण–स्वामित्वक फारम। एहि दृश्य में कथा कागचक तीन कार्य अलग देखबैत अछि: नीति-भाषा, भू-प्रतिनिधित्व आ जवाबक प्रक्रियागत शर्त। ई कार्यवाहिक वास्तविक सामग्रीक वर्णन अछि, जकरा गोहिक अलौकिक संवादक समान मानि मेटा नहि देबाक। प्रशासनिक कागच स्वतः झूठ सिद्ध नहि; ओकर श्रेणीक प्रभाव आ जकर आवाज अनुपस्थित छैक तकर प्रश्न जाँचबाक अछि।

‘आम जनता’क परिभाषाक संघर्ष

सूचनामे आम जनताक आवागमन, प्रकाश, स्वच्छता आ सुविधा बढ़बाक तर्क अछि। देविका पूछैत छलीह—नाम पढ़निहार माता, मृतकक बेटा, जागल बच्चा की एहि ‘आम जनता’मे नहि? ई प्रश्न नीति-वाक्यक सार्वभौमिक दावेकेँ ठोस मानवीय शरीर लग खड़ा करैत अछि। तथापि मार्ग-सुरक्षा अथवा स्वच्छताक वास्तविक आवश्यकता असम्भव वा झूठी मात्र सरकारी भाषा होएबाक कारण नहि; उपन्यासक विशेष संघर्ष प्रभावित समुदायकेँ नक्शा आ योजना-सुनवाई सँ बाहर राखलाक आशंका अछि। कथनशास्त्रीय बल अमूर्त जनहित आ जीबैत लोकक नामक द्वन्द्वमे अछि।

अन्धविश्वासक आरोप आ मीराक प्रत्युत्तर

सूचना बिना सत्यापित कथा, भीड़ आ अन्धविश्वासद्वारा तनाव बढ़बाक सम्भावना उल्लेख करैत अछि। मीरा तकर प्रतिवादमे नाम-स्मृतिक स्वर आ निजता-सुरक्षाक सामाजिक कार्यक मूल्य देखबैत छलीह। एहि टकरावमे वास्तविक अलौकिक कथा आ सार्वजनिक नागरिक पहराक अलग अर्थ अछि। गाछीमे भूत-कबड्डीक कथन रहितहुँ पीड़ितक गोपनीयता, श्रमिकक नाम आ बैंक-ठगी विषय लोकशिक्षाक काज स्वयमेव अन्धविश्वास नहि। मुदा हर

लोकविश्वासी दावाक सरकारी जाँच अकारण हिंसा कहल जाए, से सार्वभौम निर्णय नहि; स्रोतभेद आ प्रभावित व्यक्तिक अधिकार आवश्यक अछि।

फारमक प्रश्न आ अनुपस्थित व्यक्तिक असम्भव उत्तर

गोप तेसर पन्नाक नाम, स्वामित्व, पता आ प्रमाणक खाँचा पढ़ैत अछि। जकर देह पानिमे गेल, जकर नाम ठगीमे गुम, जकर कागच छिनल—हुनका सभक स्वर एहि खाँचामे कोना प्रवेश करत? ई प्रशासनिक फारमक साधारण औपचारिकता पर कथात्मक गहिर प्रश्न अछि। तौ गोप फारम नहि फेकैत; रजिस्टर लग राखैत अछि। एहि क्रियामे प्रतिरोधक महत्त्वपूर्ण संयम अछि। सरकारी शब्दभित्र लोकक नामक हिसाब पूछब, न कि समस्त दस्तावेजी संवाद एक झोंकामे नकारब, एहि उपन्यासक अभिलेख-नीतिक अधिक परिपक्व रूप अछि।

सत्यव्रतक सन्देह : तथ्य आ अनुमान

सत्यव्रतकेँ लगैत अछि जे सूचना नगरपालिकाक अकेल प्रारूप नहि, पछुआए कानून-विशेषज्ञ, स्मारक-परियोजना आ ठेका-संलग्न हित छथि। एहि विचारकेँ पात्रक संस्थागत अनुभवजन्य सन्देह मानब चाही, न निश्चित षड्यन्त्रक बाहरी प्रमाण। कथावाचक तत्क्षण बटुकनाथक दूत प्रवेश करबैत छथि, जइसँ सन्देहक कथात्मक सम्भावना बढ़ैत अछि। मुदा विशेष सूचना पर के कानूनी प्रारूप लिखलक, कोन अधिकारी हस्ताक्षर केलक, कोन योजना स्वीकृत, तकर पूरा श्रृंखला पाठमे नहि। समीक्षाकेँ आरोप, शंका आ प्रत्यक्ष दूतक प्रस्ताव अलग राखब अनिवार्य अछि।

बटुकनाथक दूतक सुशोभित स्मारक

सफेद पैंट आ नीला कुरता पहिरने दूत रंगीन छपाइल चित्र दिखबैत अछि—फाटक, पट्टिका, टिकट-घर, स्मृति-दीर्घा, आगन्तुक-पुस्तिका आ नियोजित सभाकक्ष। प्रस्ताव सतही सम्मानक भाषा लऽ प्रवेश करैत, मुदा सामुदायिक स्मृतिक स्वतन्त्रताकेँ मोल-भावयोग्य परियोजनामे बदलबाक जोखिम रखैत अछि। दूतक चित्र वास्तविक बनल स्मारक नहि; एक प्रस्तुतीकरण आ प्रस्ताव अछि। टिकट-घरक चित्रसँ स्मृतिस्थल पूर्ण रूपेँ बिकि चुकल, एहन दावा समयसँ पहिले हएत। कथाक तनाव प्रस्तावक सामाजिक उत्तरदायित्वमे अछि।

अनन्याक अनुपस्थित पाथरक प्रश्न

अनन्या दूतक रंगीन चित्रमे ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथर कतय अछि पूछैत छलीह। दूत ओकरा प्रतीकात्मक समावेश कहैत अछि; बच्चासभ माएक बैसबाक ठाम आ नाम-पहरेदारीक स्वाधीनता विषय सेहो पूछैत छथि। ई प्रश्न कथानकक एक तीखा प्रतिलोम अछि: जकरा व्यवस्थागत स्मारक ‘अनाम’ लिपिक सजावट कहि रखत, बच्चासभ तकरा पहिल ठाम देलक। दृश्य श्रेणीगत स्मारकनिर्माण आ स्मृतिक स्वायत्त समुदायिक जीवनक अन्तर खोलैत अछि। पाथरक प्रश्न दूतक सुन्दर डिजाइनक नैतिक अधूरापन प्रकट करैत अछि।

‘बच्चा कानून नहि बुझैत’क प्रतिवाद

दूत बच्चाक प्रश्नकेँ कानूनक अज्ञान कहि ठुकरबैत अछि। सत्यव्रत हस्तक्षेप करैत छथि—कानून केवल कागच बुझएबला लोकक वस्तु नहि; जे प्रभावित, ओकर आवाज सुनबाक अछि। एहि संवादमे पात्रक पहिनेक श्रवण-प्रशिक्षण संस्थागत विवेचनमे उतरैत अछि। मुदा ओ एतय औपचारिक राजकीय आदेश रद्द नहि करैत, न

न्यायालयक फैसला लिखैत। एक वैधानिक अनुभववला पात्र लोकक आवाजक अधिकार पर नैतिक तर्क दैत छथि; प्रक्रिया-विरोधक रूपकका दोसर चरण अछि, पूर्ण संस्थागत विजय नहि।

पीयर सूचना-पत्रक किनारपर लोकक प्रत्युत्तर

आरुणि खाली किनार पर ‘खाली भूखण्ड नहि—नामक ठाम’ लिखैत अछि; देविका ‘भीड़ नहि—परिवार’, मीरा ‘अन्धविश्वास नहि—निजताक संग स्मृति’ आ गोप अन्य सम्बद्ध अर्थ जोड़ैत अछि। ई दृश्य कथाकारक विशिष्ट पुनर्लेखन-प्रविधि अछि: एकतरफा सरकारी पत्र लोकक हाथमे बहुवाचक पाठ बनैत अछि। अंगूठाक दाग, रेखा आ पातक छाप अनेक साक्षरताक सहभागिता दर्शबैत अछि। मुदा पत्रपर लिखल प्रत्युत्तर औपचारिक आपत्ति-पत्र दायर भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि। कथा एहि क्षण सार्वजनिक उत्तरक भाषा रचैत अछि, प्रशासनिक परिणाम एखन प्रतीक्षामे अछि।

‘उपस्थित’क पुनरागमन

भीड़मे एकसँ अनेक स्वर ‘उपस्थित’ कहि उठैत अछि। पहिनेक नामपाठमे ई मृतकक समुदायिक स्मृतिउत्तर छल; आब भूमि-प्रयोगक सरकारी योजनाक समक्ष जीवित परिवारक स्थिति बनैत अछि। एक शब्दक अर्थ घटनाक नव सन्दर्भमे बदलैत अछि। ई पुनरावृत्ति महत्त्वपूर्ण, कारण उपन्यासक शब्द-शिल्प पुरान प्रतीककेँ ज्यों-का-त्यों न दोहराऽ नूतन संस्थागत विरोधक उपकरण बनबैत अछि। तथापि सामूहिक आवाजक उपस्थितिक अर्थ वैधानिक भू-स्वामित्वक सर्वसिद्ध दावा नहि; ई प्रभावित लोकक सुनवाई माँगबाक उत्तर अछि।

सात दिनक धमकी आ कालक नव कड़ाई

दूत ‘सात दिनमे हटाउ, नहि तँ बलप्रयोग’क चेतावनी दऽ चलि जाइत अछि। कथा एतय अस्पष्ट प्रतीकात्मक भविष्यसँ निश्चित समयसीमाक व्यावहारिक संघर्षमे प्रवेश करैत अछि। एखन तक किछु घटना शताब्दी, अनेक साँस अथवा अनन्त प्रतीक्षामे चलैत छल; सात दिनक तारीख सामाजिक निर्णयक तीव्रता बढ़बैत अछि। मुदा बलप्रयोग एतय घटि चुकल नहि; दूत द्वारा घोषित सम्भावित आगामी कार्रवाई अछि। कथनशास्त्रीय रूपसँ समयसीमाक कठोरता पाठक लेल वास्तविक उत्कण्ठा पुनः बनबैत अछि।

लोकक प्रतिनक्शा बनबाक पहिल राति

धमकीक बाद बच्चासभ दूतक पाछाँ नहि दौड़ैत। आरुणि चटाइ, गोप कागच, देविका लाल माटि, मीरा कारी कोइला अनैत छथि। बा ठामकेँ केवल देखनिहार नहि, सुननिहार हाथसँ नक्शा बनबेबाक आग्रह करैत छलीह। ठूँठ केन्द्र बनैत अछि, अनन्या लाल वृत्त खींचैत छलीह। ई सामूहिक कर्तृत्व अध्यायक सर्वोत्तम घटना अछि—पीयर कागचक विरोधमे नूतन मानचित्रणक वास्तविक आरम्भ। नक्शा पूरा तैयार नहि, एखन पहिल बिन्दु पड़ल; अगिला अध्यायमे सामाजिक भूगोल विस्तारक अपेक्षा स्थापित अछि।

समग्र निर्णय : शब्दक नक्शा विरुद्ध जगहक जीवन

‘नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र’क शक्ति ई अछि जे जादुई स्मृतियज्ञकेँ भूमि-उपयोगक सरकारी भाषा, निजी स्मारक-प्रस्ताव, प्रभावित परिवारक उत्तर आ निश्चित सात दिनक समयसीमा संग टकरबैत अछि। लोकक पेंसल-लेखन, प्रश्न आ लाल वृत्त माध्यमक नियन्त्रण बदलबैत अछि। महत्त्वपूर्ण सीमा ई जे नोटिसक कानूनी वैधता

अथवा परियोजना-पछुआल लाभग्राहीक निश्चित तथ्य पूर्णतः उपलब्ध नहि। एहि कारण आलोचना दूतक प्रस्तावकेँ योजनाक सम्पन्न रूप, सात दिनक धमकीकेँ घटित हिंसा वा लोकक लिखल किनारकेँ दाखिल आपत्ति नहि मानैत। आख्यानक अगिला शक्तिशाली धुरी वास्तविक स्थानक नागरिक नक्शा बनबाक प्रक्रिया अछि।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : अध्याय ४८–५५क आख्यान-सन्धि

अठारहम साँसक गज–ग्राह खेलक अपूर्ण पुकार सँ उन्नैसम साँसक खाली कटोरा, बीसम साँसक मौन-बही, देह-पछाति नामक जल-रूप, साक्षी-पत्रक लेखन, चन्ना गाछीक कटान, कटानक भोर, ठूँठक चारूकात लोकबैठकी आ नगरपालिकाक पीयर नोटिस धरि एक नूतन कथा-गति निर्मित अछि। पहिल चारि अध्याय श्रवणक आन्तरिक नैतिक अभ्यास पर अधिक केन्द्रित छथि, पछिला चारि अध्याय स्थल, स्मारक, प्रशासन, योजनाक लाभ आ भौतिक विलोपन पर। एहि क्रमसँ उपन्यासक मूल विषय बदलैत नहि; ओकर परीक्षणक जमीन बदलैत अछि। नामक पहरा जीवित समुदायक हाथमे अएलाक बाद स्मृतिक भौतिक ठाम पर बाहरी नियन्त्रणक लड़ाइ उठैत अछि।

सत्यव्रत मेहताक पात्रगत क्रममे मोनक स्वीकार, घण्टीक पुकार, साधारण डिब्बाक यात्रा, गाछीमे पदविहीन आगमन, मौन-अभिलेखक तैयारी आ पदपट्टी माटिपर रखबाक दृश्य छथि। मुदा अध्याय ४८–५२मे हुनकर गाछीक आगमन आ पुनःप्रवेशक स्थान-काल विस्तृत रूपेँ मिलाओल नहि गेल। एतय आलोचना निश्चित यात्रा-तालिका कल्पित नहि करैत; चक्रीय नैतिक पुनःप्रवेश आ पाठगत निरन्तरताक कठिनाई दुनू सम्भावना रखैत अछि। गजक मुक्त कि मृत होएबक प्रश्न, सरयू देवी/सरयू महतोक स्त्री-पिता परिचयक विरोध आ उज्ज्वलक प्रारम्भिक मृत्यु-वर्णनक भिन्नता सेहो अपूर्ण रहैत अछि।

समीक्षाक अत्यावश्यक भेद ई अछि जे ‘मौन’ सबठाम दोष नहि। देविकाक शोकपूर्ण आत्मपरीक्षा, मुन्नाक डर, मीराक स्वतन्त्र निजता-मौन, बैंक-कर्मचारीक अनदेखी, सत्यव्रतक संस्थागत चुप्पी आ लाभकारी जालक विचारपूर्वक गोपनता अलग कथात्मक-अनुभव छथि। अध्याय ४९क मौन-बहीकेँ अध्याय ५३क मीराक ‘मौनक अधिकार’ आ अध्याय ५४क सौम्याक अनलिखल स्मृतिसँ साथ पढ़िते आलोचनात्मक परिपक्वता भेटैत अछि। ई किछु परस्पर विरोधी लगैत नैतिक सूत्रकेँ उपन्यास स्वयं परीक्षणक अधीन रखैत अछि; एक घोषणा सँ सभक अर्थ निश्चित नहि होइत।

कटानक बादक चन्ना गाछी उपन्यासक कथा-स्थानक रोचक पुनर्विन्यास अछि। घन अन्हार, पातक अनन्त छाँह आ भूतक रात्रिकाबड्डी सँ स्मृति दिनक नाम-पाथर, चूना-रेखा, घड़ा, अस्थायी छतरिया, लाल डोरी आ ठूँठक चारूकातक चौपालमे फैलैत अछि। किन्तु गाछ कटब पर्यावरणीय क्षति अछि; समुदायक सार्वजनिकता बढ़ल कहि वृक्ष-विनाशकेँ स्वतः शुभ घटना बनब पर्यावरण-कथावृत्तक निषेध होएत। नूतन स्मारक-परियोजना पर दूतक रंगीन प्रस्ताव ओहि जोखिमक दोसर रूप अछि—लोकस्मृतिक बाजारू संग्रहण। अनन्याक ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथरक प्रश्न एहि नियन्त्रणक विरुद्ध सबसे सघन नागरिक प्रतिवाद अछि।

अध्याय ५३मे चौकीदार द्वारा ठूँठपर नगरपालिकाक नोटिस चिपकाओल जाइत अछि; अध्याय ५४मे पोस्टमास्टर मोहरवला पीयर लिफाफा दैत अछि, जे अध्याय ५५मे खोलल जाइत अछि। ई एकहि सूचना दूनू माध्यमसँ पहुँचल

कि एक के बाद दोसर पत्र, पूर्ण स्पष्ट नहि। उपन्यासक वास्तविक कागजी संघर्षक महत्व देखिते एहि निरन्तरताक भेद आलोचना लेल जरूरी अछि। अध्याय ५५क सात दिनक धमकी अभी भविष्यगत सम्भावित बलप्रयोग अछि; लोकक प्रतिनक्शाक लाल पहिल बिन्दु घटना-स्तरपर सम्पन्न, पूरा नक्शा नहि।

एहि खण्डक सर्वोत्तम कथा-क्षण तीन प्रकारक छथि: कटोराक सामने सत्यव्रतक सुनबाक शर्त, सौम्याक पीड़ितक सहमति बिना किछु नहि लिखबाक निर्णय, आ पीयर नोटिसक किनारपर लोकक उत्तर। तीनू ठाम कथनक शक्ति एकतरफा अधिकारसँ अलग होइत अछि। अतः एहि आठ अध्यायक मुख्य आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि ‘कथा कहबाक अधिकार’सँ ‘ककरा सुनल जाए’, ‘ककरा लिखल जाए’ आ ‘जगहक नक्शा के बनाओत’ धरि प्रश्नक क्रमिक विकास अछि। आलोचना कथा-काल, कथन-दृष्टि, आवाजक वितरण, लोकगीत–गद्यक अन्तर, जादुई यथार्थ, स्थल-प्रतीक आ पाठगत असङ्गतिक जाँचपर आधारित अछि; कोनो बाहरी कल्पित घटना अथवा नव्य-न्यायीय प्रमाण-विवेचन एहि विश्लेषणमे नहि जोड़ल गेल अछि।

प्रकरण १५७ | मूल अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

सात दिनक धमकीसँ प्रतिनक्शाक कथात्मक उद्भव

अध्याय ५५मे नगरपालिकाक सूचना-पत्रक ‘खाली भू-खण्ड’ आ सात दिनक चेतावनी गामक लोकसँ जवाब माँगने छल। अध्याय ५६ ओहि अनिर्दिष्ट प्रतिरोधकेँ दृश्य कार्यमे बदलबैत अछि। अनन्या पहिने नाम-पाथर सोझ करैत छलीह, आरुणि पुरान पुल-योजनाक कागच अनैत अछि, बच्चासभ ओकरा उनटाकऽ लोकरेखा बनबैत अछि। सरकारी कागचक पाछूक सादा भाग चुनबाक ई क्रिया अर्थपूर्ण अछि: स्थानक पहिले सँ जारी प्राविधिक प्रतिनिधित्व मेटाओल नहि गेल, ओकर विपरीत पृष्ठपर असुनल इतिहासक लेखन आरम्भ भेल। एतय विरोध सार्वजनिक नारा नहि, नक्शा बनबाक सामूहिक श्रम अछि।

खाली भूखण्डक वर्गीकरण विरुद्ध नामक घनत्व

नगरपालिकाक कागच जगहकेँ खाली कहैत अछि, जखनकि ठूँठक चारू कात नामक पाथर, मृतकक प्रतीक्षा आ लोकक पुरान रस्ता जमा अछि। ‘खाली’क प्रशासनिक पद आ ‘भरल’क समुदायिक अर्थक ई टकराव अध्यायक मुख्य आख्यान-प्रेरणा अछि। खाली जगहसभक सार्वभौमिक महत्त्व मानबो व्यावहारिक अछि: कोनो नाम नहि भेटल ठाम नक्शा पर खुलल बिन्दु छूटैत अछि। ई वास्तविक अनिश्चितताक स्वीकार अछि, नहि प्रत्येक रिक्त कोष्ठककेँ इच्छामाफिक नूतन नामसँ भरबाक छूट। अभिलेखक अपूर्णता दृश्य रूप पबैत अछि।

पुल-योजनाक कागचक पाछू लोकक रेखा

पुरान विदेशी ठेकेदारक योजनापत्रमे पाया, चौड़ाइ, लागत, जल-बहाव आ पहुँच-पथ छल। ओकर पाछू लोक सभ ठूँठ, पाथर, पगडंडी, नदी, बस्ती आ गुमशुदा रसीदक स्थान चिन्हैत अछि। एकहि कागचक दू पृष्ठ दू कथन-व्यवस्था छथि: पूँजी आ निर्माणक मापक दृष्टि, तथा जीवित-मृतक स्मृतिक स्थानिक दृष्टि। कथाकार नक्शा केँ सामूहिक कथावाचक बनबैत छथि। मुदा लोकरेखाक भावात्मक महत्त्व वास्तविक भू-सीमा, रकबा वा अदालती

मापीकेँ पूर्ण प्रतिस्थापित नहि करैत; दोन्हू प्रकारक प्रतिनिधित्वक सम्बन्ध आगाँ विवादक विषय बनल रहैत अछि।

लाल गोल, राख आ सूखल पातक पदार्थ-भाषा

अनन्या ठूँठ केन्द्रमे गाढ़ लाल गोल बनबैत छलीह; मीरा लाल माटि, देविका राख, ईरा सूखल पात अनैत छलीह। ई पदार्थ पात्रक निजी इतिहासक संग नक्शाक अलग अर्थ बनबैत छथि। लाल माटि चोट आ भू-स्पर्शक, राख मृत्यु तथा बाँचल स्मृतिक, पात गाछीक पुरान जीवित भाषा रूपमे पढ़ि सकैत अछि। ई व्याख्या दृश्य-वस्तु सँ निकलैत अछि, स्रोतमे कोनो प्रमाणित रंग-संकेतक स्थिर सूची नहि। नक्शाक निर्माण सामूहिक रहैत अछि, तथापि प्रत्येक पदार्थक आवाज पात्रविशेषक हाथेँ सँ उभरैत अछि।

कमला-बलानक काँपैत रेखा

आरुणि नदीक रेखा सोझ नहि खींचैत; ओ पुरान खेत, मजदूरक बस्ती, पुलक पाया आ कारी भँवर छू कऽ ठूँठ लग पहुँचैत अछि। बच्चा पूछैत अछि जे रेखा काँपैत किएक। आरुणिक उत्तर नदीकेँ फाइलक धाराक बदला देहक नदी बना दैत अछि। ई स्थलिक वर्णन एक असामान्य ‘भावनात्मक नक्शा’ अछि: नदी वास्तविक भूगोल रहैतहुँ व्यक्तिक शरीरक क्षतिक स्मरण अनैत अछि। मुदा काँपैत रेखा नैसर्गिक नदीक सर्वेक्षित प्रवाहक शाब्दिक नापी नहि; ओकर कथनकार्य असमाप्त मृत्यु-इतिहासक ओर संकेत अछि।

‘मायक बाट’ आ लुप्त पगडंडीक पुनर्लेखन

बा अपन नहसँ एक पुरान पगडंडी खिंचैत छलीह जाहिसँ हुनकर माय पोखरि जाइत छलीह। जमीनपर बाट बदलि गेल, मुदा मातृस्मृतिमे चलबाक अभ्यास सुरक्षित अछि। बच्चासभ ओकरा ‘मायक बाट’ नाम दैत अछि। एहिमे भूगोलक लोप आ स्मृतिक उपस्थितिक सूक्ष्म भेद अछि। जे पगडंडी वर्तमान सडकक नक्शा पर नहि, से ऐतिहासिक चलनक कथामे ठाम पबैत अछि। मुदा ओकर पूरा कानूनी मार्ग-अधिकार आ स्वामित्वक रेखा एहि नहक खिंचल चिह्नसँ प्रमाणित नहि; कथा अभिलेख खोलैत अछि, निष्कर्ष पूरा नहि करैत।

उज्ज्वलक फोनक अन्तिम स्थान आ मीराक सीमा

उज्ज्वलक माय फोन अन्तिम बेर सक्रिय भेटल ठाम कारी गोल बनबैत छलीह; देविका राखक हलुक चक्र जोड़ैत छलीह। मीरा ‘मृत्युक दाग’ केँ तमाशामे बदलबाक रोक लगबैत छलीह। तखन भीतर उज्जर बिन्दु चिन्हित होइत अछि। ई दृश्य शोकक विवरण सार्वजनिक करबाक अधिकारपर सामूहिक आत्मनियन्त्रण अछि। ‘अन्तिम बेर सक्रिय फोन’क विवरण मृत्यु-घटनाक सम्पूर्ण स्थान-क्रम नहि; पूर्वक उज्ज्वलक मृत्यु-छविसभक असङ्गति एतय स्वतः समाधान नहि पबैत। पीड़ितक परिवारक सहमति सीमा बनैत अछि।

हथेलीक बस्ती : घरक अलग-अलग हानि

सौम्या पुलक काममे गुम भेल श्रमिकसभक परिवारसँ पूछैत छलीह; मजदूरबस्ती घरक समान चौकोर चिह्न नहि, अलग-अलग हथेली रूपमे बनैत अछि। आङुरक संख्या फरक रखल जाइत अछि—प्रत्येक क्षतिक रूप भिन्न। ई अत्यन्त सशक्त रूपक अछि। प्रशासनिक सूची नागरिक घरकेँ एके रकमानक एकक बनाबि सकैत, मुदा हथेली

जीवित देहक विशिष्ट इतिहासक चिह्न बनैत अछि। कथाकार एहि रेखासभसँ परिवारक अनुत्तरित शोकक बहुलता रचैत छथि; अलग हथेली देखिकऽ प्रत्येक व्यक्तिक सम्पूर्ण जीवनी अनुमान नहि कएल जा सकैत।

गुमशुदा रसीदक ‘सुराख’

गोप विदेशी कम्पनीक अस्थायी गोदाम लग गायब रसीदक स्मरण करैत छथि। बच्चासभ पुछैत अछि जे गायब कागचक चिन्ह की। गोप राखमे छोट छेद बनबैत छथि। ई ‘नकारात्मक स्थान’क उच्चकोटिक आख्यान-युक्ति अछि: जतय तथ्य अनुपस्थित, ओतय रिक्तता कैं दृश्य कएल गेल। नवान नक्शामे कागचक अभाव मेटाउल नहि; अभाव स्वतः खोजक स्थान बनैत अछि। सावधानी ई जे गोपक कथन रसीद गायब होएबाक व्यक्तिगत जानकारी अछि; रसीदक वास्तविक विषय, दाम वा ओकरा मेटेनिहारक नाम एहि दृश्यसँ स्वतः सिद्ध नहि।

कर्मचारिक मापक फीता आ भूतक अदृश्य हस्ताक्षर

नगरपालिकाक दू कर्मचारी पीयर रंग, फीता आ खूँटा लऽ स्थल चिन्हित करय अबैत अछि। अनन्या हुनकासँ पूछैत छलीह जे खूँटा ककर नाम अथवा मायक बाट पर गड़त। एहि प्रत्यक्ष सामना में लोकनक्शा राज्यक मापक कामसँ टकराएत अछि। बूढ़बा भूत उजासमे लगभग दृश्य होइत छथि; कर्मचारिसभ हुनका नहि देखैत, फीता अपने-आप सिमटि जाइत अछि। कथावाचक दृश्य-ज्ञानक असमान वितरण रचैत छथि: बच्चाक अलौकिक अर्थ आ कर्मचारीक अनुभव भिन्न। फीता सिमटब सरकारी सर्वेक्षण औपचारिक रूपसँ रद्द भेल, एहन घोषणा नहि।

‘प्रतीक्षारत’ बनाम ‘खाली’ : अर्थक सार्वजनिक नीति

अनन्या नामविहीन बिन्दुक लेल ‘प्रतीक्षारत’ शब्द चुनैत छलीह। ई विशिष्ट भाषिक परिवर्तन संस्थागत रिक्तताक उलटा पाठ अछि। नाम नहि भेटनाइ अन्तिम अभाव नहि, खोज जारी रहबाक चिह्न बनैत अछि। सत्यव्रत मेहता एतय नम्र श्रोता छथि; बच्चाक शब्द समाजक लिखित नीतिक सम्भावना बनैत अछि। मुदा प्रतीक्षारत शब्दसँ स्वतः गुमशुदा व्यक्तिक अस्तित्वक सम्पूर्ण तथ्य, भविष्यक पहिचान वा मृत्युक कारण ज्ञात नहि होइत। भाषाक कार्य नैतिक खोजकैं जारी राखब अछि, निर्णायक परिणाम बनायब नहि।

आकाश जोड़बाक आग्रह आ अनाम ग्रहक पूर्वाभास

ईरा नक्शामे आकाशक अभाव बतबैत छलीह। बच्चासभ बाहरी आकाशक घेरा बनबैत अछि, अनाम ग्रहक प्रश्न लिखैत अछि। एहि प्रसंगमे दृश्य-स्थल स्थानीय नदी आ पुलसँ विस्तारित होइ दूरक सम्भाव्य भविष्यक पूर्वाभास देइत अछि। ‘अनाम ग्रह’ एखन ठोस पृथ्वी-बाह्य घटना नहि, नक्शामे अंकित प्रश्न अछि। कथन अतीत–वर्तमानक इतिहासकैं भविष्यक अनिश्चित कालसँ जोड़ैत अछि। ई संकेत उपन्यासक व्यापक आख्यान-आकांक्षाक चिह्न अछि, पात्रसभ पहिने सँ दोसर ग्रह पहुँचल छथि, एहन घटना नहि।

न्यासक प्रस्ताव : आक्रमणक नूतन वेश

साँझमे चमकैत गाड़ीसँ बटुकनाथक लोक ‘लोक-स्मृति न्यास’ बनाबाक प्रस्ताव लऽ अबैत अछि। नक्शा समाप्त होएबाक क्षण पर रक्षा आ संस्थागत व्यवस्था कहल प्रस्ताव प्रवेश करब कथागत व्यङ्ग्य अछि। पहिने कुल्हाड़ि, फेर नगरपालिकाक नोटिस; आब सेवा-भाषाक फाइल। ई घटनासँ कथाक प्रतिपक्ष खुलल हिंसासँ उदार

संरक्षकक भेष दिस बदलैत अछि। मुदा प्रस्ताव आएब आ न्यासक विधिवत गठन समान नहि; कागचपर चिन्हित सम्भाव्य कब्जाक अगिला घटनाक परीक्षण आवश्यक अछि।

नक्शाक धड़कन आ अध्यायक समग्र फल

स्मृतिक पहिल नक्शा बाँसक दू खम्भापर टाँगल जाइत अछि। हवा चलिते ओ काँपैत अछि, जनु कटल गाछक पात फेर सरसरा रहल हो। ई दृश्य स्मृतिक वृक्षीय शरीरक एक नूतन, मानवनिर्मित माध्यम अछि। अध्यायक उपलब्धि प्रतीक मात्र नहि, नाम, रस्ता, अनुपस्थित कागच आ हथेलीक संयोजित स्थानिक अभिलेख बनब अछि। सीमा ई जे लोकनक्शा आ सरकारक भू-अभिलेखक अन्तर अद्यापि समाधान नहि; उभरैत न्यास-प्रस्ताव स्थानक सार्वजनिक नियंत्रणक प्रश्न आओर तीखा करैत अछि।

प्रकरण १५८ | मूल अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

लोकनक्शासँ ऐतिहासिक अन्तर्कथाक उद्घाटन

अध्याय ५६क अन्तिम प्रस्ताव-पत्र चन्ना गाछीक लोकनक्शाकेँ ‘न्यास’क नामपर अपन नियंत्रणमे लेबाक सम्भावना खोलैत अछि। अध्याय ५७ बटुकनाथक लाल फाइल आ ईराक पुरान पोथीक नकलकेँ एक दृश्य-घेरामे राखैत अछि। ऐतिहासिक गंगेशक प्रसंग गामक मुख्य विवादमे अचानक एक अन्तर्कथा बनि प्रवेश करैत अछि। एहि विषयक व्याख्या नव्य-न्यायीय पद्धति लागू करबाक नहि, आख्यानक भीतर एक सांस्कृतिक स्मृतिक उद्धरण किएक आ कोना सामाजिक पात्रक आवाज बदलैत अछि, तकर जाँच अछि।

श्वेत गाड़ी आ लाल फाइलक रंग-व्यवस्था

बटुकनाथ स्वयं सफेद गाड़ीसँ उतरैत अछि, हाथमे लाल फाइल। पिछलाक अध्यायमे प्रतिनिधि न्यास-प्रस्ताव लऽ अएल छल, एतय प्रस्तावकर्ता स्वयं चन्ना गाछी प्रवेश करैत अछि। सफेद बाहरी शोक-सम्मानक रंग, लाल फाइल अधिकार आ नियमावलीक आक्रामक पदार्थ रूपमे सामुदायिक ठूँठक सोझाँ रखल गेल अछि। लेखकीय कथन बटुकनाथक आँखिमे गणना देखैत अछि; ई सर्वज्ञ कथावाचकक मूल्याङ्कन अछि, केवल बालकक शंका नहि। फाइलमे योजना अछि, गठनक वास्तविक कार्यवाही एखन नहि।

न्यासक अधिकार-भाषाक कथन-चाल

बटुकनाथ भावना सँ संस्था, संस्था सँ विधान, विधान सँ न्यास धरि भाषा बनबैत अछि। ई सुव्यवस्थित शब्द-शृंखला सामाजिक स्मृतिपर कागजी अधिकारक एक सम्भावित कथा बनबैत अछि। नियमावली, न्यासी-मण्डल, अनुदान, शोधकेन्द्र आ आगन्तुक-प्रबन्धक प्रस्ताव सुनिते लोक लाभ देख सकैत अछि; मुदा नायक पक्ष प्रश्न उठबैत अछि जे ई अधिकार कतयसँ आएत। स्रोतमे न्यास-पत्रक सम्पूर्ण वैधानिक धारासभ नहि; समीक्षाकेँ प्रत्येक प्रस्तावित प्रावधान शोषक सिद्ध करब अथवा न्यास औपचारिक रूपेँ बनि गेल मानब नहि चाही।

‘न्यास’क पहिले ‘न्याय’ : अनन्याक भाषिक प्रतिरोध

अनन्या ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथर बटुकनाथक सोझाँ राखि पूछैत छलीह—न्यासक पहिले न्यायक अर्थ की? दू समान ध्वनिवाला शब्द समाजक फरक अधिकार-रूप बनैत अछि। बटुकनाथक वकीली अभ्यास तात्कालिक

जवाबक मुद्रा लैत अछि, मुदा बच्चा प्रश्नकेँ मानविक ठाम पर रोकैत छलीह। कथनशास्त्रीय शक्ति शब्दालंकारसँ अधिक दृश्य-क्रममे अछि: पहिने अनाम पाथर, तकर बाद लाल फाइल। लेखकीय नैतिक निर्णय बालकक मुखद्वारा अबैत, तथापि प्रस्तावक सार्वजनिक जवाब एखन खुलल रहैत अछि।

ईराक पोथी : कथाभित्र इतिहासक मंच

ईरा गंगेश उपाध्यायक कथा, तत्त्वचिन्तामणि आ मिथिलाक बौद्धिक स्मृतिसँ प्रसंग शुरू करैत छलीह। कथाभित्र ई विद्वानक जीवनीक एक लोकश्रुतिपरक प्रस्तुति अछि। कथन ‘कहल जाइत अछि’ कहि असामान्य जन्म आ चर्मकारिणीसँ विवाहक वृत्तान्त अनैत अछि। एहि शैलीगत चिह्नकेँ बहुत महत्त्व देबाक चाही: लोकश्रुति ऐतिहासिक सत्यापनक समतुल्य नहि। समीक्षा एहि विवादक बाह्य इतिहास न गढ़ि, उपन्यासमे एहि लोककथाक कथन-कार्य —जाति, स्मृति आ सम्मानक आलोचना—केँ चिन्हैत अछि।

जन्मक पाँच वर्ष-पछातिक कथा : असम्भवताक स्वरूप

ईरा लोकश्रुतिमे पिताक मृत्युपछाति पाँच वर्षक जन्मक कथन उल्लेख करैत छलीह। असामान्य काल-व्यवस्था सुनिते समुदायक प्रश्न खुलैत अछि: समाज कोनो कथनकेँ असम्भव कहि चुप्पीमे बदलि सकैत अछि की नहि। स्रोत स्पष्ट लोकश्रुति कहैत अछि, तेँ समीक्षा एकरा गंगेशक ऐतिहासिक जैविक घटना मानि प्रस्तुत नहि करैत। कथात्मक स्तरपर ई अतिरेक समाजक वैधता-निर्णयक असमानता उघारबाक उपकरण अछि; पात्रक मुख्य रचनात्मक कार्य जनजीवनमे ‘स्वीकृत’ आ ‘बहिष्कृत’ कथा बीचक दूरी दिखाबब अछि।

चर्मकारिणीसँ विवाहक प्रसंग : जीवनीक असुविधा

ईराक कथन गंगेशक कथित चर्मकारिणीसँ विवाहक प्रश्न उठबैत अछि, जाहिसँ गामक बूढ़, युवक, परिवारक सामाजिक स्मृति अस्थिर होइत अछि। मीरा सम्मानक नामपर जाति-पार सम्बन्ध आ स्त्रीक इच्छा दबा देबाक रूपक प्रस्तुत करैत छलीह। एहि पात्र-कथनकेँ ऐतिहासिक अभिलेखक प्रमाणित निष्कर्ष बनब उचित नहि; मुख्य घटना ई अछि जे गाममे ‘महान पुरुष’क निर्बाध मूर्ति भीतरक विवादक कथात्मक आवाजसँ खण्डित होइत अछि। अन्तर्कथा वर्तमान नाम-अभिलेखक सीमाक आलोचना बनैत अछि।

नामोल्लेखित आलोचकसभपर पात्रगत आरोपक सीमांकन

गोप द्वारा किछु विद्वानक नाम लऽ गंगेशक जीवनक असुविधाजनक पक्ष छिपेबाक आरोप कएल गेल अछि। ई उपन्यासक पात्रक विवादित वक्तव्य अछि, बाहरी अनुसंधानद्वारा सत्यापित ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि। स्रोतनिष्ठ समीक्षा स्पष्ट करैत अछि जे कथा आरोपकेँ ‘स्मृतिहत्या’क व्यापक रूपकमे बदलैत अछि, मुदा आरोपित विद्वानक वास्तविक ग्रन्थ, उद्देश्य आ पाठभेदक स्वतन्त्र समीक्षा एतय प्रस्तुत नहि। साहित्यक नैतिक तीव्रता आ प्रमाणित बाह्य साहित्य-इतिहासक दावेकेँ पृथक रखबाक आवश्यकता अछि।

जातिक प्रश्नसँ सामूहिक श्रोता बदलनाइ

गंगेशक लोककथा सुनिते जे गाम पहिने मृतकक नाम सुनि भावुक छल, ओ आब अपन विवाह, चूल्हि, जाति, कुआँ आ कुलक सामाजिक स्थान मोन पाड़ैत अछि। ई आन्तरिक श्रोतापरिवर्तन उल्लेखनीय अछि। दृश्य एकहि सार्वजनिक स्थल पर सामाजिक समूहक स्वस्ति तोड़ैत अछि। मुन्ना, मीरा, देविका आ अनन्याक पूर्वक नाम-

न्यायमे जाति की भूमिका दैत, से अधिक ठोस प्रश्न उभरैत अछि। कथाकार समाजकेँ निर्दोष श्रोता नहि रहने दैत; सामुदायिक स्मृतिक भीतरक सत्ता-संरचना दृश्यमान बनबैत अछि।

जड़िक बारह हजार रेखा : दृश्यीकृत विद्वत्ता

गंगेशक महाग्रन्थक बौद्धिक विस्तारक पात्रगत उल्लेखक बाद ठूँठक वृत्तसभ ‘बारह हजार’ रेखा सन झिलमिलाइत अछि। एहि जादुई चित्रमे विद्वत्ता वृक्षक कालवृत्तमे रूपान्तरित भऽ गामक सामाजिक स्मृति संग जुड़ैत अछि। मुदा ई संख्या बिम्बात्मक उच्चारण अछि; न काठक वास्तविक वर्ष-वृत्तक गिनतीक वैज्ञानिक विवरण, न ग्रन्थक प्रमाणित शब्द-संख्या। अलौकिक दृश्य पात्रक सांस्कृतिक अनुभूति समेटैत अछि; समीक्षा ओकरा ऐतिहासिक अंकीय तथ्य रूपमे नहि बदलैत।

‘अधिकार-क्षेत्र’ काटि ‘सेवाक दायित्व’

आरुणि लाल फाइलक पहिल पन्नापर ‘न्यासक अधिकार-क्षेत्र’क स्थानपर ‘सेवाक दायित्व’ लिखैत अछि। ई भौतिक लेखकीय क्रिया अध्यायक केन्द्र अछि। एक कागचपर विशेष पद काटल गेलाक दृश्य बटुकनाथक सामाजिक योजनाक भाषा-स्वामित्वकेँ चुनौती दैत अछि। मुदा ई औपचारिक ट्रस्ट-डीड संशोधन सम्पन्न भऽ गेल, तकर प्रमाण नहि; मूल फाइलपर लोकक प्रतिलेखनक नाटकीय कृत्य अछि। शाब्दिक फेरबदल भविष्यक सामूहिक व्यवस्थाक शर्त घोषित करैत अछि, अन्तिम विधिक परिणाम नहि।

प्रस्तावक स्थगन : दण्ड वा स्वीकृति नहि

अन्तमे बटुकनाथक न्यास स्वीकारो नहि होइत अछि, अस्वीकारो नहि; लाल फाइल सुनबाक प्रतीक्षामे राखल गेल। ई निर्णय उपन्यासक लगातार विलम्बित निष्कर्षक विशिष्ट प्रयोग अछि। समुदाय अन्ध विरोधक घोषणामे तुरन्त नहि कूदैत, सेवा-शब्दक भीतर अधिकारक प्रश्न खोलबाक स्थान रखैत अछि। ‘स्थगन’ एतय वकीलक पुरान तारीख-विलम्बसँ भिन्न अर्थक अछि: प्रभावित लोकक अनुमति आ सार्वजनिक परीक्षणक लेल विराम। पाठक एखन वास्तविक न्यास गठनक परिणाम नहि जनैत।

मोबाइल श्रद्धांजलिक नव प्रवेश : दोहरा मञ्च

रातिमे चमकैत डिजिटल श्रद्धांजलि मंचक विज्ञापन गामक फोनसभपर पहुँचैत अछि; चन्द्रपालक कम्पनीक प्रत्यक्ष नाम नहि, नूतन सांस्कृतिक सेवा-संस्थाक चिन्ह अछि। लाल फाइलक स्थगनक तुरन्त बाद स्क्रीनक दृश्य एहन समानान्तर सम्पादन अछि जाहिमे सामाजिक नियन्त्रण वैकल्पिक माध्यमसँ प्रवेश करैत अछि। बटुकनाथक न्यास आ चन्द्रपालक ऐप समान हेतुवाला भिन्न घटना-संस्था रूपमे देखाइत अछि; वास्तविक कानूनी गठजोड़क पूर्ण दस्तावेज एखन नहि। पाठक अगिला अध्यायक जालक कथा-दिशा चिन्हि सकैत अछि।

दार्शनिक अन्तर्ध्वनिक आख्यानगत सीमा

अध्याय-अन्तमे कादम्बरी, ग्रन्थ-विघ्न आ कथित जीवन-प्रसंगक अलग कोष्ठकीय अन्तर्ध्वनि अबैत अछि। ई मुख्य चन्ना गाछी-घटनाक समान समयमे घटल एक आवश्यक दृश्य नहि; शास्त्र-स्मृति सँ जुड़ल परिशिष्ट-समान लेखकीय स्वर अछि। एहि अन्तर्ध्वनिक कथनगत स्थान आलोचनात्मक रूपेँ अलग राखब उचित अछि। अध्यायक मूल शिल्पगत उपलब्धि गंगेशक लोकश्रुतिक माध्यमसँ न्यासक राजनीतिक शब्दावली पर प्रश्न उठब अछि; सीमा

ई जे लम्बा व्याख्यात्मक अन्तर्कथा बालक, मीरा आ बटुकनाथक प्रत्यक्ष नाटकीय तनाव क्षणभरि थामि दैत अछि।

प्रकरण १५९ | मूल अध्याय ५८ — स्मृति-ऐपक गोहि

लाल फाइलसँ नील स्क्रीन धरि प्रतिपक्षक रूपान्तरण

अध्याय ५७मे ‘लोक-स्मृति न्यास’क लाल फाइल स्थगित भेल, मुदा तत्काल डिजिटल श्रद्धांजलिक विज्ञापन गामक मोबाइल पर प्रकट भेल। ‘स्मृति-ऐपक गोहि’ एहि माध्यम-परिवर्तनक अगिला अध्याय अछि। शोषणक कथात्मक प्रतिपक्ष एहि बेर जमीनक मापी अथवा न्यासक अधिकार नहि, शोकाकुल परिवारसँ माहिती माँगनिहार डिजिटल पन्ना अछि। विज्ञापनक नील रंग, पानि, फूल, दिया आ गामक नामक आकर्षक संयोजन सहानुभूतिक आवरण बनबैत अछि। एहि संयोजनक साहित्यिक प्रभाव ई जे विश्वासघात हिंसक हमला होएबासँ पहिले सहायता-जेकाँ देखाइत अछि।

सुन्दर मुखपृष्ठक भीतर विस्तृत निजी जानकारी

देविका ऐप खोलैत छलीह। मृत्यु-कारण, पहचानपत्र, बैंक-विवरण, मुआवजाक अवस्था, फोन, परिवारक सूची, फोटो आ सम्बन्धीक संख्या धरि अनेक विवरण माँगल जाइत अछि। नाम-अभिलेखक सामाजिक आवश्यकता आ व्यक्तिगत डेटाक अत्यधिक संकलन बीच प्रत्यक्ष संघर्ष उभरैत अछि। पाठमे देविका मोबाइल बन्द करैत छलीह; ओ अपन भाइक सम्पूर्ण माहिती जमा कऽ देलीह, एहन घटना नहि। कथाकार संवेदनात्मक नुकसानक परिमाणकेँ फॉर्मक क्रम द्वारा देखबैत छथि। ई फॉर्मक प्रत्येक कोष्ठक पीड़ितक स्मृतिक एक नूतन स्वामित्व-संकट खोलैत अछि।

अनन्याक नाम अमर करबाक बटनपर प्रश्न

चन्ना गाछीक ठूँठ लग बच्चासभ फोन बीचमे राखैत अछि। एक बालक पुछैत अछि जे नाम अमर करबाक लेल एतेक कागच किएक चाही। एहि प्रश्नक सरलता ऐपक व्यापक सहमति-भाषाक आलोचना बनैत अछि। निजी सूचना द्वारा मृतकक स्मृति सुरक्षित रखबाक व्यावहारिक उद्देश्य आ गोपनीय लाभक सम्भावना एकदम भिन्न होइत सकैत। बालिका नामबचावक नामपर व्यक्तिक घरक चाबी माँगबाक अन्तर पहचानैत छलीह। कथाकार स्क्रीनक आकर्षण आरम्भेँ सुन्दर कहि, तकर भीतरक नियन्त्रण देखबैत छथि; समस्त डिजिटल माध्यमकेँ स्वतः अस्वीकार नहि करैत।

मीराक सहमतिक शर्तक कथात्मक केन्द्र

मीराक वाचन ऐपक अनुमति-शर्तमे अनुसन्धान, साझा उपयोग, प्रचार, सहायता, दान आ परिवारक सामग्रीक व्यापक इस्तेमाल चिन्हैत अछि। एक स्त्री अपन डूबल पतिक चित्र अपलोड करबाक विचार छोड़ि मोबाइल समेटैत छलीह। ई दृश्यमे पीड़ितक अधिकारक रक्षा नारा नहि, प्रत्यक्ष विलम्बित क्लिक बनैत अछि। विशेष बात ई जे ऐप पर जानकारी भरबाक स्वतन्त्रता आ शोकक क्षणक बाध्य सहमति अलग विषय छथि। मीराक कथा-स्वर

एहि जटिल नैतिक तनावक ठोस मानवीय आधार अछि, पर सम्पूर्ण प्लेटफॉर्मक कानूनी अनुबन्धक स्वतन्त्र जाँच पाठमे नहि प्रस्तुत।

गोपक तीन परतक संगठन

गोप सांस्कृतिक मंच, सेवा-समूह आ स्मृति-तकनीकक तीन स्तर चिन्हैत छथि। हुनकर कथन पाठमे संस्थागत अस्पष्टताक सामाजिक परिणाम बुझाबैत अछि। चन्द्रपालक पुरान जुआ-उद्योगक नियन्त्रित सूचना आ नूतन शोक-सेवाक डेटा-संग्रह बीच तर्कगत समानता देखाओल गेल अछि। मुदा संस्था-सूची पात्रक निरीक्षण अछि, प्रत्येक संस्थाक वास्तविक पंजीयन, बैलेंस शीट वा कानूनी स्वामित्वक स्वतन्त्र दस्तावेज एहि अध्यायमे नहि। कथा आर्थिक जालक संशय उभारैत, बादक भवेशक कथनद्वारा किछु विशिष्ट कार्य-नियम स्पष्ट करैत अछि।

ईराक शिक्षण-प्रसंगक भीतर प्रश्नक मंच

ईरा गंगेशक प्रसंग याद करबैत बच्चासभसँ स्क्रीनक देखल रूप, अनुमानित प्रयोजन आ प्रयुक्त शब्द अलग-अलग कहलाबैत छलीह। मूल उपन्यासमे ई शिक्षण-प्रसंग कथाभित्रक पात्रगत संवाद अछि; एहि समीक्षाक अपना विश्लेषणक स्वतन्त्र दर्शन-पद्धति नहि। कथनात्मक भूमिका ई अछि जे अद्भुत जादुई गोहि-रूपकक संग बच्चासभ स्क्रीनक वास्तविक लिखल शब्द पढ़ब सीखैत अछि। पात्रक शिक्षण-स्वर कखनो प्रत्यक्ष नाटकीय क्रियाकेँ रोकैत, मुदा एहि बेर ऐपक विवरणक तत्काल अर्थ लगबय सहायता सेहो करैत अछि।

स्क्रीनक अलौकिक फेरबदल आ यथार्थक सीमा

चन्द्रपालक कार्यालयमे ‘नाम’ बटनपर ‘प्रमाण’, ‘दान’ पर ‘दायित्व’ आ ‘स्वीकृति’ पर ‘ककर अधिकार’ उभरैत अछि। स्क्रीनपर ‘तत्त्वचिन्तामणि मोड’क असम्भव घोषणा सेहो अबैत अछि। कथावाचक स्वयं कहैत अछि जे ई वास्तविक प्रोग्रामर द्वारा बनाओल सुविधा नहि, ठूँठक हँसीक जादुई परिणाम अछि। ई स्पष्ट सीमारेखा महत्त्वपूर्ण: पाठककेँ तकनीकी हस्तक्षेपक पुनर्निर्मित इतिहास मानबाक नहि। ई दृश्य विज्ञापनक एकतरफा निर्देशकेँ अलौकिक प्रतिप्रश्नमे बदलैत अछि, यद्यपि बारम्बार स्क्रीन-चमत्कारक सज्जा पूर्वानुमेय होएबाक खतरा राखैत अछि।

सामाजिक प्रसारक वैध प्रश्न

एक युवक पूछैत अछि जे डिजिटल मंचद्वारा दूर-दूर नाम पहुँचे तखन की खराब? देविका मंचक पूर्ण निषेध नहि करैत, जानकारीक नियन्त्रण ककर हाथमे रहत तकर प्रश्न उठबैत छलीह। एहि संवादमे कथा एकरेखीय तकनीक-विरोधसँ बाँचैत अछि। ऐपक प्रसार, सहायता-सुलभता आ दूरस्थ समाजक पहुँच सम्भाव्य हित छथि; शोकाकुल व्यक्तिक डेटा तथा नामक व्यावसायिक अधिग्रहण सम्भावित क्षति। दोन्हू पक्ष पात्रक बोलबाक अवसर पबैत अछि; कथावाचक लाभक स्वचालित नकार कऽ मुख्य द्वन्द्वकेँ कमजोर नहि बनबैत।

दु:खक अधूरा फारमपर चन्द्रपालक दृष्टि

चन्द्रपाल अपन दूरस्थ कार्यालयमे कतेक लोक पन्ना खोललक, नाम भरलक वा बीचमे छोड़लक, तकर आँकड़ा देखैत अछि। कथावाचक कहैत अछि जे ओकरा अधूरा फारमक सम्भावित पुन:संपर्कमे रस अछि। ई पात्रक शोषक दृष्टिक आतंरिक चित्रण अछि; हर अधूरा फारम सफल ठगीमे बदलि गेल, एहन घटनात्मक तथ्य नहि।

कथा विशुद्ध सांख्यिकीकेँ भावनाक उगाहीक माध्यम बना सकबाक भय देखबैत अछि। दूरस्थ स्क्रीनक मेट्रिक आ चन्ना गाछीक ठोस पाथरक अन्तर इहाँ फिर एक नूतन नैतिक दृष्टि-विभाजन बनबैत अछि।

नाम-पाठशालाक ठोस नागरिक अभ्यास

बच्चासभ निर्णय करैत अछि जे कोनो परिवारकेँ ऐप इस्तेमालसँ प्रतिबन्धित नहि करब, मुदा पहिने नाम दानक परिणाम बुझाओल जाए। तीन प्रश्न—नाम देबाक अधिकार, दुःखक चित्रक उपयोग आ स्मृतिक मालिकाना—लोकशिक्षाक नियम बनैत अछि। एहि क्षण कथा नैतिक उपदेशसँ जाँच-योग्य सामाजिक कार्य दिस बढ़ैत अछि। पाठमे पहिल पाठशाला आयोजित होइत अछि; सभ परिवार सदा सुरक्षित भऽ गेल अथवा ऐपक सर्वव्यापी प्रसार रोकल गेल, एहन परिणाम नहि। चेतावनी आ सामुदायिक स्वायत्तता एकसाथ रहैत अछि।

बूढ़ महिलाक स्क्रीनसँ पाथर धरि चुनाव

एक बूढ़ महिला केँ कहल गेल जे ऐपमे पुत्रक नाम भरला सरकारी सहायता भेटि सकैत। देविका प्रक्रिया समझबैत छलीह; महिला अन्ते पाथरपर नाम लिखि घर घुरैत छलीह। ई दृश्य उपन्यासक महत्त्वपूर्ण कर्तृत्व-क्षण अछि, कारण निर्णय महिला स्वयं लैत छलीह। ओ न पूर्ण डिजिटल निरक्षरता द्वारा स्वतः असहाय, न लेखकक बनौने सिद्धान्तक निष्क्रिय अनुयायी। सहायता सम्बन्धी विज्ञापनक दावा वास्तविक सरकारी योजना साबित नहि; महिला अपन नामक सार्वजनिकीकरणपर नियन्त्रण चुनैत छलीह। कथाकारक शिल्प संवेदनशील असर एक लघु व्यक्तिगत क्रियामे समेटैत अछि।

राघवक भविष्य-सन्देशक काँचपर अवशेष

गोपक फोनपर नामविहीन, मेटाइत सन्देश अबैत अछि—दानक कोड बदलत, राघव देखैत अछि। सन्देश लुप्त भेला पर काँचपर पातक धुँधला निशान रहैत अछि। ई विस्मृत माध्यमक जादुई अवशेष अगिला अध्यायक घटनात्मक गाँठ बनैत अछि। सन्देश भेजनिहारक स्पष्ट पहिचान पाठमे नहि, ताहि लेल अनाम स्रोतकेँ निश्चयपूर्वक राघवक कर्मचारी कहब नहि। सन्देशक सामग्री कथामे षड्यन्त्रक भविष्यसूचना अछि; एखन राघवक पूरा नूतन कोड पढ़ल नहि गेल।

चारि गोहिक संग्रामक मञ्च-निर्माण

अध्यायक अन्तमे सरकारक नोटिस, न्यासक लाल फाइल, स्मारक-ऐपक स्क्रीन आ राघवक दान-कोड ‘चारि गोहि’ रूपमे ठूँठक चारू कात उपस्थित अछि। ई शक्तिशाली समेकक रूपक अछि, मुदा चारू वस्तुक विधिक-अनुभवक दर्जा अलग अछि: वास्तविक नोटिस, प्रस्तावित न्यास, उपलब्ध डिजिटल मंच आ आगामी कोड-परिवर्तनक चेतावनी। एक रूपक-संज्ञामे हुनका बराबर घटनात्मक स्तर पर राखब विश्लेषणात्मक त्रुटि होएत। कथनशास्त्रीय रूपसँ ई चार-दिशाक घेरा अगिला संघर्षक बहुमाध्यमी मञ्च तैयार करैत अछि।

अध्यायक निर्णय : सुरक्षाक भाषा बनाम अधिकारक हस्तान्तरण

‘स्मृति-ऐपक गोहि’क सबसँ सशक्त उपलब्धि व्यापक सहमति-पत्रक नाटकीय पाठ, बूढ़ महिलाक अस्वीकृति आ बच्चासभक नाम-पाठशाला अछि। दुर्बलता ऐप-स्क्रीनक स्वतः नैतिक शब्दमे परिवर्तनक पुनरावृत्ति। तथापि गामक सामुदायिक प्रतिक्रिया अन्ध प्रतिबन्ध नहि; लोककेँ समझाबि अपन निर्णय लेबाक अवसर दैत अछि।

अध्याय मूल उपन्यासक स्मृतिक प्रश्नकेँ आधुनिक डेटा-स्वामित्वक दृश्य बनबैत अछि। अगिला कोड-प्रसंगमे एहि शक्ति-टकरावक संग काज करनिहार छोट कर्मचारीक भूमिका खुलत।

प्रकरण १६० | मूल अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

धुँधला पातसँ नूतन कथानक-पाठ

अध्याय ५८क अन्तमे गोपक मोबाइलक काँचपर जे अवशिष्ट पातक आकृति रहि गेल छल, अध्याय ५९ ओकरा नूतन रहस्यक दस्तावेज बनबैत अछि। अगिला बिहान लोक ठूँठक चारू कात कोड पढ़बाक लेल बैसैत अछि। ई कथा-रचना दार्शनिक बहससँ अधिक रोमाञ्च-प्रधान अनुसन्धानक लय प्राप्त करैत अछि: आधा मेटल सन्देश, गुप्त संकेत, काम करनिहार युवकक बयान आ रातिक अन्तमे तेसर चेतावनी। लोकगीत सुरक्षित प्रति आ समय-चिह्नक चर्चा करैत अछि; गद्यक अलौकिक काँच-संकेतसँ अलग एहि दावाक घटनात्मक पूर्ति पूर्णतः वर्णित नहि।

राघवक ‘मेटाउ’ आदेशक कथात्मक असफलता

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक विश्वास अछि जे समयपर संदेश मेटला तकर इतिहास समाप्त। कथावाचक एहि अदृश्यीकरणक नीतिक विपरीत गाछीक पात, बच्चाक स्मृति आ काँचक धब्बा उभारैत अछि। ई जादुई वस्तु तकनीकी फोरेंसिक प्रक्रियाक बराबर नहि, मुदा सामाजिक विस्मृतिक विरुद्ध दृश्यरूप अछि। मेटल सन्देशक अक्षर पुनः स्मरणक वस्तु बनैत अछि। ‘प्रेषक’ शहरमे अनुपस्थित होइतो ओकर नियन्त्रित शब्द ठूँठक सार्वजनिक पाठक विषय बनैत अछि।

दानक शब्द-कोडक सज्जा

सौम्या दीपदान, जलदान, छात्रवृत्ति, शान्ति-कोष आ सहायता-जेकाँ शब्दक संग कोठली, बिन्दु, अधचन्द्र, उलटल दिया आ पातक नसक संकेत-सूची देखबैत छलीह। ई चिन्हसभा श्रद्धाक सजावट बुझाइत, मुदा कथामे गुप्त आर्थिक उपयोगक सम्भाव्य अर्थ पबैत अछि। ई दोहरा वाचन अपराधक शब्दकोश निर्माणक एक आकर्षक आख्यान-उपकरण अछि। मुदा प्रत्येक चिन्हक सटीक वित्तीय मार्ग, रकम आ भुगतान-तालिका मूल गद्यक एहि दृश्यसँ पूर्ण जाँचल नहि; संकेत-सूची अनुसन्धानक नूतन दिशा अछि।

मीराक निजताक भाषिक प्रत्युत्तर

गोप कहैत छथि जे राघव पैसा कैँ दान, कमीशन कैँ सेवा, चोरी कैँ प्रक्रिया आ मेटब कैँ निजता नाम दैत अछि। मीरा तत्क्षण सुधार करैत छलीह—निजता पीड़ितक अधिकार अछि, अपराधीक बचावक गुफा नहि। एहि हस्तक्षेपमे कथा अपन दिये नैतिक शब्दकेँ पुनः प्रश्न करैत अछि। गोपक सामान्यीकरणक बीच मीरा मूल शब्दक वैध मानविक अर्थ बचबैत छलीह। ई बहुस्वरक एक उत्कृष्ट क्षण अछि: शोषक द्वारा शब्दक दुरुपयोग देखाबैत काल साहित्य स्वयं ओहि शब्दक सम्मान नष्ट नहि करैत।

भवेशक प्रवेश : अन्तर्गत छोटे कामक भूमिका

चन्द्रपालक स्मारक-ऐपमे काम करनिहार भवेश नामक युवक सार्वजनिक सभा पहुँचेबाक निर्णय लैत अछि। ओ बतबैत अछि जे श्रद्धांजलि-मंचक दान-श्रेणी बनाबाक निर्देश राघव पठबैत छल। कोठली अथवा पातक नस जेकाँ

संकेतक कुछ व्यवहारिक आशय ओकर कथनसँ स्पष्ट होइत अछि। कथानकमे ई महत्त्वपूर्ण रूपान्तरण अछि: दूरस्थ स्क्रीनक जादुई संकेतसँ हटि संस्था भीतरक एक वास्तविक कर्मचारीक मुखक आवाज उपलब्ध होइत अछि। मुदा भवेशक कथनक स्वतन्त्र प्रतिलिपि वा हस्ताक्षरित बयान तत्काल प्रस्तुत नहि; ई पात्रक आत्मस्वीकारक कथा-दृश्य अछि।

अज्ञान आ जानल विज्ञापनक विरोध

भवेश पहिने कहैत अछि जे ई काम गलत अछि, से नहि जनैत छल; मीरा पूछिते ओ स्वीकार करैत अछि जे परिजन नाम अपलोड करैत शोकक संरक्षणक अपेक्षा करैत छथि, से जानैत छल। एहि दू कथनक बीच पात्रक ज्ञानक असमान स्तर अछि। तकनीकी या आर्थिक जालक पूर्ण जानकारी नहि रहब आ शोकाकुल परिवारक भरोसाक परिचय रहब—दुनू संग सम्भव। कथाकार भरे साक्षीक नाटकीय क्षणमे छोट कर्मचारीक जिम्मेदारीकेँ पूर्ण अज्ञात शोषकक आदेशमे मेटा नहि दैत, मुदा ओकरा मुख्य षड्यन्त्रक समस्त स्वामी मानबो उचित नहि।

राघवक अनुपस्थितिक विरोधाभासी भार

राघव स्वयं ठूँठ लग नहि; ओ दूरक शहरक काँचक कक्षमे रहबाक अनुमान कथावाचकक अल्प-निश्चय वाक्यमे अबैत अछि। ओकर कोड, निर्देश आ गुप्त अर्थ कक्षमे सशरीर उपस्थितिसँ बेसी असरकारी बनैत अछि। ई आधुनिक आर्थिक प्रतिपक्षक विशेष कथन-प्रविधि: पात्र घटनास्थलपर अनुपस्थित रहितहुँ भाषिक तथा डिजिटल अवशेषद्वारा उपस्थित। तौ समीक्षा ‘कदाचित्’क अर्थ निश्चित दूरस्थ लाइव निगरानीक तथ्य रूपमे नहि बदलबैत। दृश्य कथावाचकक संशय आ पात्रक प्रसंगसँ प्राप्त कथा-ज्ञान पर आधारित अछि।

बटुकनाथक कानूनी सावधानीक दोहरा स्वर

बटुकनाथ डिजिटल जानकारीक अदालतमे मान्यता कठिन होएबाक चेतावनी दैत अछि। कथाविश्वमे ओकर पूर्वक पेशागत बचाव-प्रवृत्ति पाठककेँ ई चेतावनी शङ्कास्पद बना सकैत अछि। मुदा डिजिटल साक्ष्यक जाँच-प्रक्रिया सचमुच कठिन हो सकैत, एहि सामान्य सम्भावनाक कारण पात्रक प्रत्येक वाक्य असत्य मानब समुचित नहि। अनन्याक उत्तर न्यायकेँ पहिने सुनबाक माँग अछि, कानूनी परीक्षण निरर्थक कएल गेलाक प्रमाण नहि। कथा सामाजिक आवश्यकता आ संस्थागत प्रक्रिया बीच विमर्शक तनाव राखैत अछि।

धर्म-दानक भाषा सँ देहक दोसर डुबकी

आरुणि कहैत अछि जे दानक शब्द जखन अपराधक कोड बनैत, तखन मृतकक नाम फेर एक दोसर जलसमाधि मे धँसि जाइत अछि। ई पंक्ति उपन्यासक शीर्षक-रूपककेँ डिजिटल मंचक अर्थशास्त्र धरि बढ़बैत अछि। पहिने पुलक पानि देह लीललक, अब सम्मानक सार्वजनिक फलक व्यक्तिक परिचय पर स्वामित्व चाहि सकैत अछि। मुदा शाब्दिक समानता प्रत्यक्ष हत्या, गोपनीय डेटा-संग्रह आ दान-व्यापारक अलग क्षतिप्रकार मेटा नहि देबाक चाही। रूपकक शक्ति अलग अनुभव कैँ सम्बन्धित करबमे अछि, बराबर ठहराबमे नहि।

कबड्डीक खुलल सीमा बनाम बन्द संकेत

बच्चासभ खेलक गोल बनबैत अछि; गुप्त कोडक बन्द समूहक विपरीत कबड्डीमे आवाज सार्वजनिक, साँस सबकेँ सुनाइत अछि, पएरक सीमा देखाइत अछि। ई खेल-भाषाक पुनर्रचना अत्यन्त सटीक, कारण उपन्यासक

आरम्भक भूतकबड्डी प्रतिरोधक सांस्कृतिक यन्त्र छल। एतय खेल स्वयं सूचना-संरचनाक लोकतांत्रिक रूपक बनैत अछि। जँ कोड निजी नियंत्रण चाहैत, खेल नामक सामूहिक उच्चारण चाहैत अछि। मुदा खेल के रूपमे कोड ‘टूटि गेल’ कहब आ आर्थिक खाताक तकनीकी पथ पूरा प्राप्त भऽ गेल, दुनू अलग घटना अछि।

चर्मकारक नामक घेरा भीतर आबब

अध्याय उत्तरार्धमे वृद्ध चर्मकार आगाँ आबि कहैत छथि जे न्यायमे हुनको नाम समान ठाम पर हो। बच्चासभ हुनकर नाम बाहरी घेराक बदला भीतरक स्थानपर चिन्हैत अछि। गंगेशक सामाजिक-जाति अन्तर्कथासँ उठल प्रश्न नूतन पात्रक समसामयिक क्रियामे उतरैत अछि। ई आन्तरिक दृश्यक महत्त्व शास्त्रीय शब्दावलीक स्थाने विशिष्ट सार्वजनिक आसनक परिवर्तन अछि। तथापि एक वृद्धक नाम भीतर लिखलासँ पूरा गामक जातिगत बहिष्कार समाप्त भेल, एहन निष्कर्ष नहि; कथा स्थानीय सहभागिताक एक नूतन प्रतीकात्मक क्रिया देखबैत अछि।

‘स्रोत हटाउ’ : संदेशक त्रासद अपूर्णता

राति कबड्डी-रेखापर नील निशान रूपमे ‘जतय सुननाइ, ओतय जोखिम; स्रोत हटाउ’ चेतावनी उभरैत अछि। लोक सत्यव्रतकेँ देखैत अछि, मुदा ओ उठैत नहि, अपन कलम बच्चासभक रजिस्टर लग रखैत छथि। ‘स्रोत’ शब्द व्यक्तिविशेष पर हमला सूचित करैत अछि कि सुनबाक सामूहिक अभ्यासकेँ नष्ट करबाक संकेत? अनन्या दोसर अर्थ चुनैत छलीह—स्रोत सामूहिक कान अछि। सन्देशक वास्तविक प्रेषक, भौतिक धमकीक संचालन अथवा आगामी घटना अनिश्चित रहैत अछि; कथा विकल्पहीन भयक जगह सामुदायिक व्यवस्था बनबैत अछि।

जादुई नील रेखाक टूटबाक सीमा

अनन्या ‘मौनक स्रोत: सामूहिक कान’ लिखिते माटिक नील लकीर फाटि धूलि बनैत अछि। बूढ़बा भूत कथेतीक पर्देपर कोड पढ़ल जाएबाक घोषणाक संकेत दैत छथि। ई अलौकिक विजय दृश्य श्रोता-समुदायक दृढ़ता दर्शबैत अछि, पर भरे आर्थिक जाल, म्यूल-खाता आ दान-राशिक मार्गक वास्तविक पूर्ण निराकरण नहि। कथाकार अगिला दिन सत्यव्रतक दोसर मौन पढ़बाक भविष्यसूचना दैत छथि, जाहिसँ कोड-विजय तुरन्त अन्तिम निष्कर्ष नहि बनैत। ‘सुनू, फेर लिखू’क पद अगिला कार्यक पुनरावृत्त नियम बनैत अछि।

अध्यायक समग्र शिल्पगत स्थिति

‘राघव सिग्नलक नव कोड’मे लुप्त शब्दक पात, दानक संकेत, भवेशक संकोची स्वीकार, चर्मकारक सार्वजनिक माँग आ माटिक नीली लकीर अलग तनाव-स्तर बनबैत छथि। विशेष उपलब्धि भवेशक रूपमे जालक मध्यस्थक एक ठोस चरित्रक प्रवेश अछि। जोखिम ई जे परदेपर उभरैत अलौकिक अक्षर तुरन्त नैतिक निर्णय दऽ पाठकीय अनिश्चितता घटा सकैत। कथाक अगिला प्रश्न—सत्यव्रतक दोसर मौन—एहि दृश्यात्मक नाटकीय समाधानक बाद अधिक कठिन व्यवहारिक प्रश्न राखैत अछि: श्रोता कखन बजत, कखन चुप रहत, आ ककरा निर्णयक अधिकार देत?

प्रकरण १६१ | मूल अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

पहिल मौनक विपरीत दोसर मौनक कथात्मक स्थापना

अध्याय ४९क मौन-अभिलेखमे सत्यव्रतक पुरान चुप्पी सामाजिक अनदेखीक दोष बनल छल। अध्याय ६० एकहि क्रियाकेँ नव अर्थ दैत अछि। राघवक दान-कोडक खबर पर लोक तुरन्त मुकदमा, सार्वजनिक विरोध अथवा सत्यव्रतक आदेश माँगैत अछि; ओ तत्काल नायकजेकाँ उठैत नहि। एहि विराममे दोसर मौनक जन्म अछि—अपन शब्दसँ सामूहिक स्वर ढाँपबाक बदला ओकरा ठाम देब। कथाकार एक नैतिक शब्दक अर्थ परिस्थितिक आधार पर उलटबैत छथि; ककर चुप्पी, ककरा सोझाँ, कोन क्षण आ कोन सत्तासँ, से प्रश्न केन्द्रमे अछि।

सूखल पोखरिक कातक प्रतिक्षास्थल

सत्यव्रत गामक किनार सूखल पोखरिक पास बैसल छथि। चलैत गाछीक चौपालक अपेक्षा ई निर्जन स्थान पात्रक आत्म-संशोधनक बीचक अन्तराल बनैत अछि। ओ पाँकमे रेखा खींचैत छथि; पूर्वक बच्चासभ नक्शा बनबैत छल, एतय रेखा आत्मपरीक्षाक छोट अभ्यास अछि। अनन्या रजिस्टर लऽ आकर सामूहिक निमन्त्रण दैत छलीह। एहि दृश्यपर्यावरणमे दूरक प्रशासनिक अधिकारसँ अलग एक व्यक्तिक धीम प्रतिक्रियाक गति अछि। कथा सक्रिय संघर्षक बीच थोड़े समय लेल गद्यक लय धीम करैत अछि।

अनन्याक प्रश्न : श्रोता पहिने कि वकील?

अनन्या सत्यव्रतक बुझबाक क्षमता चाहैत छलीह, मुदा हुनका फैसला सुनौनिहार प्रमुख व्यक्ति बनाबय नहि। सत्यव्रत स्वीकार करैत छथि जे पहिल मौनमे आवाज रोकेने छलाह, दोसर मौनमे अपन शीघ्र उत्तर रोकेबाक अछि। अनन्याक ‘पहिने श्रोता, बादमे वकील?’ प्रश्नमे पात्रक जीवन-क्रमक परिवर्तन सघन रूप पबैत अछि। ई नैतिक विनम्रता प्रशंसनीय, मुदा अन्तिम स्थायी न्याय सुनिश्चित करबाक प्रमाण नहि। आगामी समयमे उचित संस्थागत हस्तक्षेपक घड़ी आबि सकैत अछि; हमेशा चुप रहनाइ सेहो जँ पीड़ितक सहयोग रोकत, तँ नूतन समस्या बनत।

चारि कागचक चारि भिन्न दावा

ठूँठक चारू कात नगरपालिकाक पीयर नोटिस, बटुकनाथक न्यास-प्रस्ताव, चन्द्रपालक डिजिटल मंचक छपल प्रति आ राघवक दान-कोड पत्र पाथर सँ दबाओल अछि। कथाकार चारि गोहि एक दृश्यमे लऽ अबैत छथि। रूपकात्मक समानता शोषक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा चारू कागचक तथ्यगत दर्जा भिन्न: जारी सूचना, प्रस्तावित संस्था, चलैत मंच, गुप्त कोडक पत्र। कथा एहि विषम वस्तुसभकेँ एक वृत्तमे रखि सामाजिक अधिकारक बहुमुखी युद्ध दर्शबैत अछि। विश्लेषणमे समान नैतिक चेतावनीक कारण चारू पर एकसमान पूर्ण अपराध सिद्ध नहि कहल जाए।

केन्द्रमे ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथर

सभामे सत्यव्रत बाहर बैसैत छथि; बीचमे अनन्या अनाम व्यक्तिक पाथर राखैत छलीह। एहि अवकाश-व्यवस्थामे समुदाय द्वारा ककर आवाज सर्वोच्च मानल जायत, से स्थान-सज्जासँ निर्धारित होइत अछि। राज्यक अधिकारी नायकमञ्चपर नहि, अज्ञात पीड़ितक अनुपस्थिति मंचक केन्द्रमे। उपन्यासक निरन्तर ‘अनाम’ प्रतीक एहि बेर

निर्णायक आचार-संहिता बनल अछि। तथापि एकटा पाथरक नैतिक केन्द्रियता अदालत वा नगरपालिका द्वारा औपचारिक स्थल-स्वामित्व मानल गेलाक घटना नहि।

देविकाक आवाजक आत्मनिर्भरता

देविका नामक फोटो, परिवारक रुदन आ दान-बटनक व्यावसायिक उपयोग प्रश्नित करैत छलीह। एतय शोकाकुल बहिन स्वयं परियोजनागत भाषाक आलोचक अछि; सत्यव्रत ओकरा बदला नहि बजैत छथि। एहि कर्तृत्व-स्थिति सँ पहिनेक ‘विधि-पुरुष’ द्वारा लोकरक्षा जकाँ एकल-नायकक सम्भावना कमजोर होइत अछि। देविकाक कथन सम्भावित क्षतिक विश्लेषण अछि; हर पंजीकृत फोटो वा सभ दान लुटल जा चुकल, एहन यथार्थवादी विस्तृत घटना पाठमे नहि। ओकर आवाज रोकथामक सामूहिक आधार बनेबाक प्रयत्न अछि।

मीराक निजतावाणी आ सौम्याक चार भाषाक तुलनात्मक पाठ

मीरा अनुमतिबिनु शोकक चित्र बनबाकेँ पुनः अपमान कहैत छलीह; सौम्या चारू दस्तावेजक शब्द पढ़ैत छलीह—खाली भू-खण्ड, धरोहर, डिजिटल श्रद्धांजलि, पुनरुत्थान। एहि सूचीमे भाषा सामाजिक स्वामित्वक मुख्य क्षेत्र बनैत अछि। विभिन्न संस्था अलग शब्द उपयोग करैतहुँ नामक पहराक अधिकार स्वयं निर्दिष्ट नहि करैत। कथाकार एक प्रकारक दस्तावेजी कोलाज रचैत छथि। स्त्रीपात्रसभ भाषाक वास्तविक पाठक बनि मुख्य घटना चलबैत छथि; हुनका केवल शोकक प्रतीक रूपमे सीमित नहि राखल गेल।

बाकर गंगेश-स्मरण : प्रतिमाक विरुद्ध असुविधाजनक जीवन

बा गंगेशक कथित जाति-विवाह आ स्मृति-छँटाईक प्रसंग दोहराऽ कहैत छलीह जे जीवित जीवनक असुविधा मेटाऽ महान व्यक्ति केँ मूर्ति बनाब कठिन हिंसा हो सकैत अछि। एतय ई लोकश्रुति कथाभित्रक नैतिक तुलना अछि; ऐतिहासिक सत्यापनक बाहरी निष्कर्ष नहि। विषयगत कथन-कार्य स्पष्टः मृतक-नामकेँ सजावटी पर्यटक-आकर्षण बनबेबाक प्रक्रिया ओकर सामाजिक दुःख हटाए सकैत अछि। लोककथाक पुनरावृत्त उपयोग तात्कालिक विवादकेँ बौद्धिक विरासतसँ जोड़ैत, मुदा दृश्य-नाट्यक गति किछु धीम सेहो करैत अछि।

प्रस्तावक शपथक उलटल क्रम

सत्यव्रत कहैत छथि जे स्मारक बनाबयबला पहिने मृतकक घर जाउ, डिजिटल सहयोग देनिहार पहिने मोबाइल बन्द कऽ नाम सुनू, दान माँगनिहार पहिले हिसाब देखाउ। समुदाय ‘नामक समक्ष प्रस्तावक शपथ’ पन्ना रचैत अछि। ई अध्यायक सर्वाधिक ठोस परिणाम अछि। प्रस्तावकक औपचारिक शक्तिक बदला पीड़ितक सम्मुख उत्तरदायित्वक क्रम आरम्भ होइत अछि। मुदा ई सामूहिक शपथ प्रशासनिक रूपसँ स्वीकृत बाध्यकारी करार नहि; प्रस्तावकक व्यवहार केना बदलत, से आगाँ जाँचबाक अछि।

हस्ताक्षरक देरी आ बालहाथक पहिल चिन्ह

सत्यव्रत पन्नापर पहिल हस्ताक्षर करबाक स्थिति सँ पाछाँ हटैत छथि। बच्चासभ माछ, पात, काँचक गोली आ खुलल आँखि-जेकाँ पहराक चिह्न राखैत अछि; बादमे सत्यव्रतक नाम अबैत अछि। ई दृश्य एक राजनीतिक-सामुदायिक वाक्यक सटीक शिल्प अछि: प्राधिकारक शिकंजा शिथिल होइत, बालक पहिल सहलेखक बनैत

छथि। चिह्न सभ कानूनी हस्ताक्षरक हर औपचारिक आवश्यकता स्वतः पूरा करैत अछि, एहन दावा नहि; कथा सहभागिताक नैतिक क्रम बदलबैत अछि।

लाइव प्रसारण रोकबाक सीमित निर्णय

चन्द्रपालक प्रचारक मोबाइल ले कार्यक्रम सीधा प्रसारित करबाक प्रस्ताव करैत अछि; देविका स्क्रीन ढाँपि कहैत छलीह—आइ नहि, कैमरा बादमे। ई नूतन निर्णय समय-आधारित सहमति अछि। कार्यक्रम अनन्त काल तक गुप्त रहत, एहन घोषणा नहि; परिवारक पहिल श्वास सार्वजनिक मंचक अधिकारसँ पहिले। कथाकार उपलब्ध तकनीककेँ पूर्ण शत्रु मानबासँ बाँचैत छथि। दृश्य विशेष ठोस अछि, कारण एक स्त्री एक कैमरा रोकैत छथि; स्क्रीन स्वतः अन्हार भऽ गेलाक चमत्कार नहि, मनुष्यक काज अछि।

पहिल नाम-उत्सवक पूर्वघोषणा

सभा अगिला दिन नाम-उत्सव आयोजित करबाक निर्णय लैत अछि—न बाजा, न मंच, न माल्यार्पण। प्रत्येक घर सँ एक नाम, चिह्न, स्मृति आ प्रश्न; अपराधीक जीवित नाम जयकारक बदला उत्तरदायित्वक रूपमे पढ़बाक प्रस्ताव। ई अध्यायमे आयोजनक निर्णय अछि, उत्सव स्वयं नहि। भविष्यसूचना आ सम्पन्न घटना स्पष्ट अलग रहब आवश्यक। आरुणि, अनन्या, मीरा, देविका, सौम्या, ईरा आ गोपक सामूहिक पन्ना-रचना भविष्यक सभा लेल सामाजिक व्याकरण तैयार करैत अछि।

मौनक विराम आ आवश्यक सक्रियता

दू मौनक अन्तरक बारेमे सत्यव्रतक विचार पात्रक आन्तरिक आत्म-समीक्षा अछि। पुरान व्यक्ति शीघ्र आदेशक क्षमता रखैत छल; नव श्रोता उत्तरक पूर्व लोकक स्वर सुनैत अछि। मुदा निरन्तर निष्क्रियता भी समाधान नहि; अगिला अध्यायक समारोहमे बेहोश वृद्धा केँ सम्हारबाक लागि पात्र उठैत छथि। ई भविष्य-संकेतक संग पढ़िते दोसर मौन सुस्त चुप्पी नहि, परिस्थिति-आधारित संयम प्रतीत होइत अछि। कथाकार पहिल मौनक अपराधक बदला अनन्त मौनक साधुता नहि बनबैत, उचित समयपर क्रियाक परीक्षा रखैत अछि।

प्रकरणक समग्र नाट्य-योगदान

‘सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन’क घटनात्मक नवता लिखल चारि कागच, सामूहिक शपथ, प्राथमिक हस्ताक्षर आ कैमरा रोकबाक निर्णयमे अछि। पात्रक आन्तरिक संवाद एहि ठोस कामसभक संग जुड़ला पर प्राणवान बनैत अछि। सीमा ई जे लोकशिक्षाक नियम बहुधा लगभग तैयार घोषणापत्र जकाँ निकलैत अछि; पठनक बहुअर्थक अवकाश संकुचित हो सकैत अछि। तथापि निष्कर्ष खुलल राखल गेल: प्रस्तावक शपथ स्वीकारल अथवा गाछी स्थायी रूपेँ सुरक्षित घोषित नहि, बल्कि अगिला नाम-उत्सवक सन्देहपूर्ण तयारी सम्पन्न अछि।

प्रकरण १६२ | मूल अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

शोकक मध्य ‘उत्सव’ शब्दक असुविधा

चन्ना गाछीमे पहिल नाम-उत्सव न नगाड़ा, न पताका, न मंच, न आमन्त्रणक औपचारिकता संग शुरू होइत अछि। नामक पुनःउच्चारणकेँ अनन्या केवल रोदन नहि, सामाजिक उपस्थिति मानैत छलीह। एहि परिभाषामे उत्सव

हर्षोल्लासक प्रतियोगिता नहि, अनुपस्थित मनुष्यकेँ स्थान देबाक सामाजिक अनुष्ठान अछि। गामक किछु लोक पहिने शब्दपर चकित होइत अछि; प्रश्न-प्रतिप्रश्नक बाद सहमति जन्मैत अछि। कथाकार शोकक भावात्मक एकरूपता तोड़ि सामूहिक दुःखक भिन्न सार्वजनिक रूप खोजैत छथि।

चारि दिशाक आसन-व्यवस्था

पूर्व दिशामे बच्चा, पश्चिम परिवार, उत्तर बूढ़, दक्षिण ओ लोक जे अपना दोषमुक्त कहैतहुँ अनुपस्थित नहि रहि पबैत—एहना आसन-सज्जामे सामाजिक भूमिका दृश्य बनैत अछि। सत्यव्रत पाछाँ टूटल ईंटपर बैसैत, विशेष आसन अस्वीकार करैत छथि। दृश्य खुलल चक्र जकाँ लगितहुँ पात्रसभक स्थानक अलग अर्थ अछि। कथा एक अप्रत्यक्ष नैतिक रंगमंच बनबैत अछि, मुदा आसनक विभाजन वास्तविक समाजक सभ अन्तर मेटल समानता नहि। दक्षिणक लोकसभक दोषस्थितिक प्रमाणो एकसमान नहि; एतय उहाँक आत्मचेतना प्रमुख अछि।

प्रथम नामक क्रमपर असहमतिक सम्भावना

ककर नाम पहिने? पुलमे डूबल श्रमिक, डिजिटल ठगीमे मरल युवक, कि चुप्पीमे अटकल स्त्री—लोकक बीच छोट विवाद उठैत अछि। एक बालक ‘जेकर नाम नहि भेटल’ सँ आरम्भ करबाक प्रस्ताव दैत अछि। एहि निर्णयमे नाम-पाठक सुगठित क्रम स्वतः निष्पक्ष नहि, से खुलैत अछि। समयक पहिल स्थान मान्यता आ दृश्यता दैत अछि। अनाम पाथर उठेलाक बाद परिवारक पक्षसँ व्यक्तिगत उत्तर नहि, बच्चासभक सामूहिक ‘उपस्थित’ अबैत अछि। अनामक प्रथम स्थान सामाजिक स्मृतिक खालीपनकेँ सार्वजनिक काजक विषय बनबैत अछि।

‘सर...’ : अधूरा नामक शाब्दिक सम्मान

दोसर पाथरपर केवल ‘सर...’ लिखल अछि। एक बूढ़ि स्त्री अनेक सम्भावित नाम सोचैत छलीह, मुदा मीरा पूरा नाम गढ़बाक रोक लगबैत छलीह। एहिमे उपन्यासक स्रोतनिष्ठता सम्बन्धी एक दुर्लभ, अत्यन्त प्रभावशाली कथा-क्षण अछि। पूर्णताक भावात्मक लोभ बनाम अधूरापनक सम्मानक संघर्षमे अनन्या अधूरा पढ़ैत छलीह। ‘सर...’केँ सरयू, सरोज अथवा अन्य निश्चित नाम बना देलासँ गलत पहिचानक नूतन हिंसा सम्भव। ई पाठ-संयम पूर्वक सरयू देवी/सरयू महतोक असङ्गतिक सन्दर्भमे सेहो आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

‘उपस्थित’क अर्थक सामाजिक पुनर्जन्म

‘उपस्थित’ कोर्टक ‘हाजिर/गैरहाजिर’क समक्ष विपरीत लोक-उत्तर बनैत अछि। जकर देह नहि, ओकर सामाजिक दुःख आ अनुत्तरित प्रश्न उपस्थित। ई वाणी-क्रिया पाथरक निष्क्रिय नामकेँ मनुष्यसभक सामूहिक सम्बन्धमे स्थान दैत अछि। तथापि उच्चारित ‘उपस्थित’ मृतककेँ वस्तुतः जीवित करेबाक घटना नहि; समुदाय हुनकर अनुपस्थिति मानि भी न्यायोचित स्मृति बनबैत अछि। अज्ञातक नामपर बच्चासभक उत्तर अन्यायपूर्ण अनुपस्थितिक समाधान नहि, ओकरा सार्वजनिक रूपेँ ओझराएबासँ मना करबाक क्रिया अछि।

जाति नहि पूछब, नहि नुकाएब

लोक नामक संग अपना इच्छा अनुसार कुल, पेशा, टोला, नदी अथवा मायक नाम जोड़ैत छथि। कियो जाति बतबय चाहैत, कियो नहि। गंगेशक लोकश्रुतिप्रसंगक बाद नाम-उत्सवमे जाति प्रश्न केवल नामक पहचान नहि, अपमानक गवाहीक सम्भावना बनैत अछि। शिल्पगत योगदान अनेक परिचयक विकल्प खोलब अछि। कथा

मनुष्यक स्वैच्छिक उच्चारणकेँ प्रधान बनबैत, सामुदायिक नाम-पंजीक सम्पूर्ण नियमन कोनो एक अमूर्त नियमपर नहि छोड़ैत। ऐतिहासिक जाति-दमनक उल्लेख आ व्यक्तिक सुरक्षित निजता दूनूक स्वतन्त्र अधिकार स्वीकारल जाइत अछि।

देविका आ मातृउत्तरक दुई स्वर

देविका उज्ज्वल झाक नाम कहैत काँपैत छलीह; माय ‘उपस्थित’ उत्तर दैत छलीह; फेर देविका ओकर मौन सेहो उपस्थित कहैत छलीह। एहि छोट संवादमे बहिन, माय आ मृतकक अदृश्य भय तीन अलग आवाजक स्तर बनैत छथि। देविकाक पूर्वक शैक्षिक सक्रियता ओकरा निजी शोकसँ एकदम मुक्त कऽ देने नहि। लेखक चरित्रक शक्ति केँ कभी न काँपबाक गुण नहि बनबैत। ‘उज्ज्वल झा’क नामक रूप, पहिल ‘उज्ज्वल कुमार झा’क उल्लेख आ मृत्यु-दृश्यक पुरान असङ्गति आलोचनात्मक दर्जामे सुरक्षित रहबाक चाही।

जीवित मीराक नामक नूतन उपस्थितिक अर्थ

मीरा शुरू मे कहैत छलीह जे ओ जीवित छथि, तेँ अपन नामक मृतक-उत्सवमे वाचन नहि चाहैत छलीह। स्त्रीसभ आग्रह करैत अछि, मुदा अन्तिम उच्चारण हुनकर अपन मुखसँ होइत अछि—निजताक अधिकार उपस्थित। ई दृश्य जीवित पीड़ितक सम्मान मृतकक स्मृतिक बराबर मानबाक नूतन विधान अछि। मुदा सामुदायिक आग्रह आ स्वैच्छिक निर्णयक बीच नैतिक दूरी चिह्नित रहबाक चाही। कथा हुनकर अन्तिम स्पष्ट कथन दैत अछि; सहमतिक अधिकारक बुनियादी प्रश्न पूरा समाप्त भऽ गेल, एहन नहि।

गोपक सूचीपर ‘प्रत्येक नामक’ अवकाश

गोप अनेक पीड़ित-श्रेणीवाला सूची लऽ अबैत छथि; बच्चासभ हुनका सूची मात्र नहि, एक-एक नाम सुनबाक आग्रह करैत अछि। एहि पाठगत गति-मन्दनमे साहित्यिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि। आँकड़ागत घनत्व घटि व्यक्तिक स्वरक समय बढ़ैत अछि। परिचित गोपक अभिलेख-संग्रह अब सभाक मञ्चपर स्वयं सीमित होइत अछि। मुदा एक-एक नाम सुनाएबक अनुष्ठानक वास्तविक कुल संख्या पाठमे निर्दिष्ट नहि, आ प्रत्येक पंजीकृत व्यक्तिक पूरा वृत्तान्त सेहो एतय नहि। घटना-घनत्वक अपेक्षा श्रवणकालक विस्तार प्रमुख अछि।

दस नामक बाद कबड्डीक साँस

प्रत्येक दस नामक बाद बच्चासभ गोल घेरामे कबड्डी खेलैत अछि; साँस टूटलाक बाद हार नहि, अगिला नामक पहरा। ई नियम खेलक पुरान आक्रामक जीत-हारकेँ स्मृति-संरक्षणक कार्यमे बदलैत अछि। खेलक आवर्तन नामपाठक दीर्घ कार्यक्रममे शरीरक विराम सेहो देइत अछि। शरीरक सीमाकेँ मानब—थाकल बच्चाकेँ दण्डित नहि करब—अध्यायक सामाजिक संवेदनाक एक महत्त्वपूर्ण चिह्न अछि। तौ दसक नियत लय कर्मक एक सूत्र बनैत; समाजक वास्तविक सुरक्षा प्रबन्धक विस्तृत रूप नहि।

गोल रेखाक पोखरि-पुल-आकाश विस्तृति

कबड्डीक बीच धूपक रेखा ठूँठसँ पोखरि, पुलक पाया आ आकाश धरि लम्बा बुझाइत अछि। दूर राघवक परदापर समान गोल देखाइ पड़ैत अछि। ई दृश्य लोकखेलक सीमाकेँ भविष्यक अन्तरभौगोलिक विस्तारक पूर्वाभास दैत

अछि। ‘अनाम ग्रह’क पुरान नक्शागत प्रश्नक छाया सेहो अबैत अछि, मुदा पात्रसभ आकाशपार यात्रा आरम्भ कएलनि, एहन घटना नहि। दृष्टिगत जादुई प्रसार विरुद्ध प्रतिपक्षक स्क्रीनक प्रभावक समानान्तर सम्पादन अछि।

न्यासक निमन्त्रण अस्थगित करबाक सामाजिक समय

बटुकनाथक सहायक सभा-केन्द्रमे न्यास गठनक पूर्व-परामर्शक निमन्त्रण वाचित करय चाहैत अछि। अनन्या रोकैत, आरुणि कहैत अछि जे आइ मृतकक दिन, न्यास आ योजनाक चर्चा काल्हि। ई निर्णय अप्रतिम: लोकसभाक अपन समय पर स्वायत्त अधिकार। प्रस्तावकक शब्द तुरन्त सार्वजनिक मंच नहि पाबैत। मुदा सभा स्थायी रूपेँ कानूनी विमर्शसँ इंकार नहि करैत; केवल वर्तमान श्रवणक प्राथमिकता निर्धारित करैत अछि। आगामी कार्यालयिक संघर्षक प्रश्न शेष रखि सामुदायिक अनुष्ठानक निज समय रक्षा कएल जाइत अछि।

बेहोश विधवाकेँ सम्हारब : मौनक परीक्षा

एक बूढ़ श्रमिक-विधवा नाम पढ़िते बेहोश भऽ जाइत छलीह। सत्यव्रत एतय चुप बैसल नहि रहैत, दौड़ि कऽ हुनका सम्हारैत छथि। एहि प्रत्यक्ष व्यवहारसँ ‘दोसर मौन’क अन्तर्निहित सीमा स्पष्ट होइत अछि। जे आवाजकेँ अवकाश देबाक लेल चुप, ओ आवश्यकता पडिते देहगत सहायता देत। एतय पात्रक नैतिक प्रशिक्षणक ठोस परीक्षा अछि—मूक आदर्शवाद नहि, शारीरिक प्रतिक्रिया। तौ एक विधवाकेँ सम्हारबाक क्षण सामाजिक सुरक्षा-जाल पूर्ण बनि चुकल, एहन निश्चय नहि।

उत्सवक समाप्ति, कोंपलक अनिश्चित पूर्वच्छवि

साँझक बाद पाथरक घेरा बढ़ैत, बच्चाक आङुर नील स्याहीसँ भरैत, स्त्रीक कण्ठ थाकैत अछि। पाछाँ रहि गेल पीयर नोटिस आ श्वेत न्यासपत्र; ऊहा नूतन अर्थक शोक-संघर्षकेँ बन्द करबाक नहि पबैत। सत्यव्रत ठूँठक चीड़मे हरियर झलक देखैत, मुदा छुबिते नहि—चन्द्रमाक भ्रम कि कोंपल, भोरक प्रतीक्षा रहैत अछि। ई शिल्पगत संयम प्रभावशाली: जादुई यथार्थक नियमित चमत्कारक बीच पात्र प्रत्यक्ष अर्थकेँ तुरन्त निश्चित नहि करैत। अगिला अध्याय नूतन कोंपलक दृश्य-सत्यापनक बहु-स्वर खोलत।

प्रकरण १६३ | मूल अध्याय ६२ — हरियर बिन्दु

नाम-उत्सवक रातिपछातिक सूक्ष्म बिहान

अध्याय ६१क अन्तमे सत्यव्रतक आँखि ठूँठक चीड़मे हरियर झलक देखैत, मुदा भ्रम वा कोंपल मानि तत्काल निश्चय नहि करैत। अध्याय ६२ भोरमे अनन्याक आँखिसँ ओहि बिन्दुक स्पष्ट, किन्तु सूक्ष्म दर्शन करबैत अछि। एतय कथाकार रात्रिक आशाक प्रतीककेँ अगिला बिहानक दृश्य-घटनामे क्रमशः बदलैत छथि। हरियर बिन्दु एतेक नन्हा जे नजरि हटिते हरा सकैत, तैओ नाम-पहराक अगिला केन्द्र बनैत अछि। उपन्यासक बड़का जादुई विस्तार एहि बेर सूक्ष्म वनस्पतिक जीवित बिन्दुपर ठहरैत अछि।

नेनाक हाथक नहि छुबाक नीतिविधान

अनन्या कोंपल देखिते ओकरा नहि छुबैत छलीह, पहिने झुकि सुनबाक प्रयास करैत छलीह। पूर्वक ठूँठक वस्तु उठेबासँ पहिने सुनबाक नियम एतय जीवित अंकुर पर लागू होइत अछि। एहि क्षणमे ‘सुरक्षा’ कब्जा अथवा नोंचि

देखबाक इच्छा नहि, दुसर जीवक स्वतन्त्र विकासक अवकाश बनैत अछि। अनन्या प्रायः प्रत्येक प्रसंगक प्रश्नकर्ता छथि, मुदा एतय प्रश्नक बदला शरीरक संयम मुख्य अछि। सुनाइत महीन कबड्डी-साँस कथा-लोकक अलौकिक घटना; वास्तविक वनस्पतिक क्रियाविज्ञानक विवरण नहि।

कोंपलक असमान व्याख्या : पिताक उत्तर अथवा जीववैज्ञानिक अंकुर

बच्चासभ कोंपलकेँ चमत्कार, गाछक पुनर्जन्म वा मरणोत्तर पिताक उत्तर कहैत अछि। विद्यालयक शिक्षक सुप्त कलिकासँ अंकुर फुटबाक वनस्पतिक सम्भावना बतबैत छथि। लेखक एहि व्याख्यासभकेँ एक सार्वजनिक दृश्य-समूहमे राखैत छथि। लोकविश्वासक भावात्मक अर्थ आ जीवविज्ञानक प्राकृतिक स्पष्टीकरण एक-दोसराकेँ अनिवार्य रूपेँ नष्ट नहि करैत; मुदा दूनूक तथ्यगत दावा भिन्न अछि। अनन्याक नियम पहिने सभ अर्थ सुनबाक, फेर देखबाक अछि। कथा एकर द्वारा जादुई यथार्थक बहुपाठीयता बनाए रखैत अछि।

बाकर कटल देह आ बाँचल नामक साम्य

बा हरियर बिन्दु देखिकऽ गाछक कटानमे बाँचल रस आ समाजक आहत स्मृतिमे बाँचल नामक सम्बन्ध कहैत छलीह। ई रूपक अध्याय ५२क ‘नव गाछि, पुरान नाम’क प्रस्तावक एक लघु दृश्यगत उत्तर अछि। तैओ रसक वास्तविक वनस्पतिक क्रिया आ स्मृतिक सामाजिक कर्तृत्व पूर्ण समान नहि। कथाकार असम्भव पुनर्जीवनक सरल दावा नहि, आहत वृक्षक एक नूतन काल-सम्भावना देखबैत छथि। रजिस्टरमे ‘नामक बाद हरियर बिन्दु’ लिखनाइ समयक्रमक प्रत्यक्ष अभिलेख अछि, पूर्ण अलौकिक कारण-सिद्धि नहि।

श्रद्धांजलि-ऐपमे कोंपलक छविचोरी

चन्द्रपालक ऐपमे कोंपलक फोटो ‘पुनर्जन्म’क शीर्षकसँ प्रचारित होइत अछि, संग दान-बटन चमकैत अछि। ई घटना पूर्वक निजी नाम, परिवारक फोटो आ अश्रुक डेटा-संग्रहक संकटकेँ वनस्पतिक छविधरि विस्तार करैत अछि। एखन संकट मृतकक व्यक्तिगत फोटो मात्र नहि, समुदायिक जीवित स्थलकेँ ब्रान्ड-सामग्री बनएबाक अछि। फोटो बहुत ठाम पहुँचि चुकल—पाठ ई प्रसार स्पष्ट कहैत अछि—मुदा कुल वित्तीय लाभ अथवा कोंपलपर विधिक स्वामित्व परिणति नहि बतबैत। देविकाक प्रतिरोध एहि सम्भावित बाजारू नियन्त्रणकेँ रोकबाक कर्तृत्व अछि।

मीराक दृष्टि-अधिकारक मर्यादा

मीरा कहैत छलीह जे चोट झेलने व्यक्ति आ परिवारक कथा तथा छवि बिना अनुमति प्रदर्शित नहि होए। कोंपलक चारू कात भौतिक बाँस-घेरा मात्र नहि, देखबाक नियम बनैत अछि: नामपाठ सुनब, चित्र लेबाक कारण बताबब, बेचनाइ पर रोकक सामूहिक संकल्प। ई मर्यादा सामाजिक व्यवहारक नूतन नियम अछि; कानूनद्वारा स्वीकृत कॉपीराइट व्यवस्था अथवा समस्त सार्वजनिक प्रसारण बंद भेल, से नहि। कथाकार निजी देहक सीमाक चर्चा स्थानीय पर्यावरण-छविक सामुदायिक अधिकार धरि बढ़बैत छथि।

फैलि चुकल फोटो आ पहराक असमान शक्ति

किछु युवक स्पष्ट कहैत अछि जे डिजिटल युगमे एक बेर फोटो बाहर गेलाक बाद रोकब कठिन। देविका नियमक आवश्यकता आरो प्रबल कहैत छलीह। एहि टकरावमे उपन्यास लोकप्रिय सरल निषेधक बदला शक्ति-सीमाक

वास्तविक द्वन्द्व देखबैत अछि। स्थानीय पहरा आ वैश्विक छविप्रसार समान परिमाणक साधन नहि। नैतिक संकल्प तात्कालिक प्रवाह पर सर्वशक्तिमान नियन्त्रण नहि देत। कथानकक विश्वसनीयता एहि स्वीकारपर निर्भर, जे मानवीय सजगता बढ़लापर पहिनहि प्रसारित छवि स्वयं न मेटाएत।

बूढ़बा भूतक नूतन कबड्डी

बूढ़बा कोंपल लग स्पष्ट रूपेँ प्रकट होइत छथि आ घोषणा करैत छथि जे आब खेल कोंपल बचएबाक अछि। कबड्डीक रेखा माटिपरक स्थिर गोला नहि, नन्हा पातक चारू कात अदृश्य सीमा बनैत अछि। जे भीतर जाय, नाम उच्चरित करय; बाहिर अबैत ‘उपस्थित’ कहय। साँस टूटला हार नहि, अगिला सुननाइ। भूतक प्राचीन खेल संरक्षक सामाजिक अभ्यासमे फेर बदलिएल। ई रूपान्तरण एक अलौकिक शिक्षकक आदेशसँ शुरु होइत, बच्चाक रोजक क्रियाद्वारा टिकबाक सम्भावना पबैत अछि।

साँस टूटलाक बाद दण्ड नहि, पानि

सत्यव्रत कबड्डीक नूतन नियम देखि अपन अदालतक समय, स्थगन आ पीड़ितक अपमानक अनुभवसँ तुलना करैत छथि। हुनकर मनमे जकर साँस टूटल ओकरा दण्ड नहि, पानि देबाक सूत्र बनैत अछि। ई पात्रगत विचार एक नैतिक जीवनमूल्य अछि; पूर्ण न्यायिक संहिताक प्रत्यक्ष निर्माण नहि। कथानकक बल एक गँवई खेलमे देहक सीमाकेँ सम्मान देनाइ अछि। जखन थाकल बच्चा दोसर पाँतिमे बैसैत, खेल बाहरी विजयक बदला सतत सहभागिताक लय बनैत अछि।

ग्रन्थक नाम खेलक स्वरमे

विद्यार्थीसभ गंगेशक प्रसंग, तत्त्वचिन्तामणिक नाम तथा शास्त्रीय पदसभ कबड्डीक साँसमे उच्चरित करैत छथि। ई कथा-प्रविधि पोथी-प्रधान बौद्धिक परम्परा केँ लय, खेल आ बालकक देहमाध्यमेँ लोकमञ्चपर उतारैत अछि। एकर आलोचनात्मक अध्ययन पात्रक भाषिक अभिनय, सांस्कृतिक उद्धरण आ अन्तर्कथाक पुनर्लेखन धरि सीमित रहबाक चाही। शास्त्रीय पदक उच्चारण अपनेआप पूर्ण पद्धति-प्रशिक्षणक प्रमाण नहि, आ मूल उपन्यासक कथित गंगेश-जीवनक लोकश्रुति बाह्य इतिहासक सत्यापित जीवनी नहि। खेलपठित ज्ञानक सामाजिक प्रसार मुख्य घटना अछि।

हरियर बिन्दुसँ बारीक पातक वृद्धिकाल

अध्यायक उत्तरार्धमे सूक्ष्म बिन्दु बारीक पात बनैत अछि। ओकर रंगमे कारी देह, लाल कपड़ा, पानिक नीलिमा आ ओसक उजासक छवि बुनल अछि। ई रूपक कटल गाछक आहत इतिहासकेँ नई देहक भीतर रखबाक कथा बनबैत अछि। पात साधारण प्रजनन/जीवन-क्रमक एक ठोस घटना सेहो अछि, जकर पर बहु-रंगी स्मृति-कविता आरोपित अछि। उगबक धैर्य जैविक कालक अनुभव दैत अछि; प्रतीकात्मक पुनर्जन्म घोषित करितहुँ वृक्षक पूर्ण पुनरुद्धार एखन नहि भेल।

बाहरी निरीक्षकक उभरैत विरासत-भाषा

जिलासँ अधिकारी, छायाचित्रकार आ सलाहकार कोंपल देखबाक अबैत छथि। लोक-संस्कृति, सांस्कृतिक परिपथ, व्याख्या-केन्द्र, टिकट-जेकाँ शब्द हुनकर वाणीमे सहज अछि, मुदा स्थानीय नामपाठ सुनब पहिने नहि।

अनन्याक प्रश्न अतिथि-समूहक प्राथमिकता उघारैत अछि। एतय राज्यक प्रतिनिधि स्वतः सम्पूर्ण अपराधी सिद्ध नहि; ओकर प्राथमिक दृष्टि पर्यटन-परियोजनाक ‘सम्भावना’ देखैत अछि। भागीदारीक समयक्रम—पहिने निरीक्षण, फेर सहभागिता—प्रसंगक मुख्य सत्ता-संकेत अछि।

विरासत-गलियाराक कागचक उत्पत्ति

रातिमे कोंपल लग ‘गढ़ नारिकेल विरासत-गलियारा: आरम्भिक संकल्पना’ शीर्षक चिक्कन कागच आबैत अछि। ई पहले निरीक्षकद्वारा कहलगेल पर्यटन-योजनाक सम्भावना कैं लिखित प्रारूपक रूप दैत अछि। मुदा ‘आरम्भिक संकल्पना’ शीर्षक स्वयं बतबैत अछि जे परियोजना पूर्ण निर्माणाधीन अवस्था मे नहि। अनिश्चित योजना आ नियामकीय अनुमति बीचक दूरी आलोचना लेल जरूरी अछि। कोंपलक कागचक छाहमे काँपबाक जादुई छवि जीवनक नूतन अंकुरपर संस्थागत नियंत्रणक आक्रामक सम्भावना बनबैत अछि।

हरियर बिन्दुक बहुअर्थक स्थिति

अध्याय ६२मे कोंपल एक साथ वनस्पतिक प्राकृतिक वृद्धि, मृतकक स्मृतिक जीवित आशा, डिजिटल व्यापारक आकर्षक छवि आ सरकारी विरासत योजनाक सम्भावित प्रतीक अछि। एहि भिन्न अर्थक संग ओकर वास्तविक नन्हापन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठक बिन्दु कैं न पूर्ण चमत्कारक अखण्ड सत्य, न केवल परियोजना-कैम्पेनक प्रतीक मानि समाप्त करय। पात्रसभक अलग दृष्टि एहि नाजुक स्थल पर संघर्ष करैत अछि। अध्यायक शिल्पगत बल छोट वस्तुपर अनेक सामाजिक ताकतक संकेन्द्रण अछि; दुर्बलता पुनः पाठकक लेल उपदेशात्मक अर्थ स्पष्ट करबाक बारम्बार हस्तक्षेप अछि।

प्रकरण १६४ | मूल अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

तेसर दिनक सार्वजनिक समय

हरियर बिन्दु फुटलाक तेसर दिन सरकारी गाड़ी, सांस्कृतिक पदाधिकारी, नगरपालिकाक लिपिक, छायाचित्रकार आ सलाहकार गाम पहुँचैत छथि। एहि सटीक समय-संकेतसँ अध्याय ६२क अनुमानित परियोजना रुचि प्रत्यक्ष स्थल-भेट मे परिणत होइत अछि। लोकक नाम पहिले अनसुन्न रहल, मुदा कटल छाँह, भीड़ आ कोंपलक लोकप्रिय दृश्यता प्रशासनक ध्यान खींचैत अछि। कथाकार एक व्यङ्ग्यात्मक काल-विपर्यास रचैत छथि: मानविक दुःखक दीर्घ मौनपछाति विरासतक त्वरित पहिचान। मुदा पात्रक आलोचनात्मक ‘लोभ’ दृष्टि आ हरेक अधिकारीक व्यक्तिगत वास्तविक उद्देश्य अलग प्रश्न छथि।

सलाहकारक कारी चश्मा आ आत्मदर्शन

सलाहकारक चश्मामे गाम नहि, ओकर अपन चेहरा परावर्तित होइत बुझाइत अछि। ई दृष्टि-रूपक प्रकरणक आरम्भमे बाहरी परियोजनावाला ककरा देखैत अछि, तकर प्रश्न खोलैत अछि। स्थानीय जीवनक पाथर, बालक आ ठूँठ ओकर नजरिमे आगन्तुक-संख्या, भौतिक स्थान आ विकास-सम्भावना बनैत छथि। कथाकार पात्रक पूर्ण

जीवनचरित नहि दैत; एक उपकरणक चमकसँ ओकर अन्तर्मनक अनुमान करबैत छथि। छविक बल एकान्त दृष्टिकेन्द्रमे अछि; चश्माक रंग मात्रसँ निर्दिष्ट वित्तीय अपराधक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि निकलैत।

नाम-पाथरसँ संख्यात्मक ‘आगन्तुक’ धरि

अधिकारीसभ पाथरपर लिखल व्यक्तिक नाम पढ़बाक बदला कतेक पाथर, परिवार आ भीड़ अछि, से गनैत छथि। एहि क्रियासँ पहलेक नाम-अभिलेखक विशेषता केबल मापन-योग्य पर्यटक इकाइ बनबाक जोखिम पबैत अछि। समुदाय खुद सेहो नाम गनैत छल, मुदा प्रत्येक पाथरक व्यक्तिगत शोकक ठामपर जोर दैत छल। अधिकारीक प्रथमिक गणना सम्भाव्य संसाधन नियोजनक कार्य सेहो होइ सकैत; व्यङ्ग्य ओकर ‘पहिने संख्या, बादमे नाम’क क्रम पर अछि। कथानक एकहि गिनतीक दो भिन्न उद्देश्य कैं समक्ष रखैत अछि।

अनन्याक ‘नाम पढ़लहुँ?’ प्रश्न

अनन्या सलाहकारसँ पूछैत छलीह जे ओ पाथरक नाम वास्तवमे पढ़लन्हि की। सलाहकार पहिने योजना बनाबय दियौ कहैत टारैत अछि। एहि प्रश्न-उत्तरमे भागीदारीक काल-रचना केन्द्रीय अछि: बनल योजना पर लोकक सहमति पिछला औपचारिकता बनत कि प्रभावित लोक आरम्भसँ अर्थ-निर्माण करब? बालिकाक प्रश्न स्वाधिकारक नैतिक माँग अछि, परियोजनाक सम्पूर्ण असम्भवता सिद्ध नहि। पिछलाक गंगेश-लोकश्रुति जेकाँ उत्तरदायित्वक कथा एतय एक छोटे ‘पहिने’ शब्दमे रूपान्तरण होइत अछि।

बटुकनाथक छाहवत् अप्रत्यक्ष भूमिका

बटुकनाथ स्वयं सरकारी टोलीमे नहि, मुदा ओकर पूर्वक न्यास-मसौदा सरकारी फाइलमे घुमि चुकल बताओल गेल। एक युवक विधिक परामर्शदाता रूपमे सेहो उपस्थित अछि। एहि दृश्य मे पात्र प्रत्यक्ष शारीरिक अनुपस्थित रहितहुँ संस्थागत कागचक माध्यमेँ घटना भीतर अछि। ई राघवक कोडद्वारा अनुपस्थित रहबाक समानान्तर प्रविधि होइत अछि। तथापि मसौदा फाइलमे पहुँचब आ बटुकनाथक पूरा परियोजना स्वीकृत भेल, दूनू अलग। स्थानीय स्तरपर प्रभाव-प्रसारक संकेत अछि; अन्तिम वैधानिक अधिकारक दस्तावेज नहि।

रंगीन परियोजना-नक्शाक चारि प्रस्तुति

अधिकारी ‘चन्ना स्मृति-द्वार’, ‘भूत-कबड्डी रंगमंच’, ‘जलसमाधि दृश्य-दीर्घा’ आ ‘डिजिटल नाम-देबाल’ सहित रंगीन परिकल्पना देखबैत छथि। पर्यटन-पथ, टिकट, ध्वनि-प्रकाश आ व्याख्या-केन्द्र योजना रूपमे प्रस्तुत अछि। ई कथात्मक दृश्य प्रारम्भक भूतकबड्डीकेँ मुद्रित मनोरंजनमञ्चमे बदलबाक खतरा देखबैत अछि। मुदा मूल पाठमे डिजाइन छपल अछि, पूरा निर्माण नहि; भूतकबड्डी एखन वास्तविक टिकट-कार्यक्रम नहि बनल। वर्तमान लोक-अनुभव आ भविष्यत् प्रदर्शनक बीचक ई सीमा अत्यन्त आवश्यक अछि।

देविकाक काँपैत मातृस्वरक प्रतिनिधित्व

देविका पूछैत छलीह जे मृतकक माय नाम पढ़ैत काँपैत स्वरकेँ कलाकार द्वारा दोहराओल जाएत की, लाश नहि भेटल मजदूरक छवि टिकटकेँ सजाएत की। ई प्रतिनिधित्वक एक गम्भीर नाटक-विषयक प्रश्न अछि: ककरा कष्टक अभिनय के करबाक अधिकार पाबत? सांस्कृतिक परियोजना लोकस्मृतिक संवेदनशील अभिव्यक्ति सम्भव करि सकैत, मुदा पीड़ितक स्वीकृति आ जीवनक गरिमा बिना प्रदर्शन शोषण होएबाक जोखिम अछि।

देविकाक आपत्ति ठोस मानविक देहक अद्वितीय आवाज पर टिकल अछि, समस्त कलात्मक पुनर्रचना पर अविचारित स्थायी निषेध नहि।

मीराक अनुमति-सिद्धान्तक स्थलविस्तार

मीरा कैमरा, ब्लैकमेल आ निजी देहक अपमानक अनुभवक आधार पर कथाक सार्वजनिक मंचनसँ पहिने प्रभावित व्यक्तिक अनुमति माँगैत छलीह। एतय अध्याय ५८क ऐप-सहमति अब सरकारी विरासत-अवधारणाक विरोधमे पुनः लागू होइत अछि। प्रसंग बदलल—अनलाइन फारमसँ ध्वनि-प्रकाश प्रदर्शन—मुदा मूल नियन्त्रणक प्रश्न समान। पीड़ितक अनुमति फॉर्मक सजावटी टिक नहि, सामाजिक सम्बन्धक समयपूर्व शर्त बनैत अछि। तथापि ककरो मृत व्यक्तिक फोटो वा आवाजक प्रतिनिधित्व विषय वास्तविक सभी परिवारक निर्णय एहि अध्यायमे पृथक-पृथक बताओल नहि गेल।

बाकर ‘पहिने जड़ि काटलहुँ’ : विकासक आत्मविरोध

बा रंगीन नक्शामे सरयूक नामक पहिल पाठ, पानिमे गुमल श्रम आ बालकक रातिक पहरा नहि देखैत छलीह। हुनकर उपहास अछि जे जे जड़ि काटलक, वैह छाँह बेचबाक योजना बनबैत अछि। एहि कथनक शिल्पगत शक्ति भौतिक वृक्ष-कटान आ सांस्कृतिक स्वामित्वक प्रस्तावकेँ एक तात्कालिक चित्रमे जोड़ब अछि। तौ निर्दिष्ट कटानक आदेश देनिहार आ वर्तमान टीमक प्रत्येक सदस्य एकहि अपराधी छथि, एहन ठोस पहिचान पाठमे नहि। व्यङ्ग्य संस्थागत निरन्तरता पर अछि, प्रत्येक व्यक्तिक दण्डनिर्धारण नहि।

दू नूतन पातक छवि बेचबाक कोशिश

हरियर बिन्दु तेसर दिन दू पातक आकार लैत अछि। सलाहकार ओकरा पुनर्जन्मक परियोजना-प्रतीक बनबैत फोटो खींचबाक उत्साह देखबैत अछि; अनन्या बीचमे ठाढ़ भऽ कोंपलकेँ जीवित सन्तान-जेकाँ प्रतिष्ठा दैत छलीह। ई दृश्य पुनः निजताक अधिकारक रूपक वनस्पतिक संसारमे लऽ जाइत अछि। तस्वीर, ब्रान्ड आ जीवित पातक मूल्यक अन्तर स्पष्ट अछि। फोटो खींचलाक पहिने रोकबाक घटित प्रयत्न अछि; परियोजनाक वास्तविक आधिकारिक लोगो या अधिकार-हस्तान्तरण एखन पूर्ण नहि।

दिनमे कबड्डीक सुनाइ : अभिनय बनाम जीवित लोककथा

अधिकारीसभ उजासमे कबड्डीक अनदेखल स्वर सुनैत छथि आ एकरा कार्यक्रमक रिहर्सल बुझैत छथि। आरुणि कहैत अछि जे ई हुनकर योजनासँ पुरान खेल। एहि लघु संवादमे उपन्यास अपन प्रमुख रूपकपर आलोचनात्मक दृष्टि फेकैत अछि। भूतकबड्डी जीवित कथाविश्वमे प्राचीन आत्म-सम्पर्क; रंगीन सरकारी नक्शामे ऊ पर्यटक-रंगमञ्च। दू ‘प्रदर्शन’क समय, कर्ता आ दर्शक अलग। कथाकार भूतक खेलक स्वायत्तता बचबैत छथि, मुदा अलौकिक आवाजक शासनिक व्याख्या सेहो दिखा दैत छथि।

‘नाम अपन, पहरा सामूहिक’ : स्वामित्वक सूत्र

अधिकारी चलि गेलाक बाद बच्चासभ प्रत्येक नामक संग पूछैत अछि जे एकर मालिक के। परिवार उत्तर दैत अछि —नाम अपन, पहरा सामूहिक। ई कथाक बहुदिनक नैतिक प्रयोगक सबसे सघन सूत्र अछि। ‘अपन’ व्यक्तिक पारिवारिक आत्माधिकार दर्शबैत, ‘सामूहिक पहरा’ मेटाएबक विरुद्ध साझा जिम्मेदारी। एहि द्वित्वमे सामुदायिक

स्मृति संस्थागत न्यासक सर्वाधिकारसँ अलग बनैत अछि। पर वास्तविक सार्वजनिक सम्पत्ति, स्मारक-प्रबन्धन आ विरासत संरक्षणक कानूनी स्वरूपक अन्तिम समाधान अभी अनिर्णीत अछि।

आधीरातिक नव सूचना : प्रस्तावसँ निविदा धरि

आधीराति एक नगरपालिका-सम्बद्ध व्यक्ति सीढ़ी आ गोंद लऽ ठूँठ लग खम्भा गाड़ि उज्जर सूचना-पत्र चिपकबैत अछि। शीर्षकमे विरासत-परियोजनाक निर्माण आ प्रस्तुतीकरण लेल निविदा आमन्त्रण अछि। ई अध्यायक ठोस कथानक-मोड़—पूर्वक ‘आरम्भिक संकल्पना’ आब लिखित निविदा-आह्वानक चरण मे प्रवेश करैत अछि। मुदा नोटिस लगलाक अर्थ ठेका देल गेल, निर्माण शुरू, जमीन हस्तान्तरित अथवा अन्तिम आपत्ति-प्रक्रिया समाप्त नहि। कथाकार नव कागचक गन्ध, रातिक गुप्तता आ ठूँठक पातक न काँपबाक छवि सँ आगामी संघर्षक उत्कण्ठा बनबैत अछि।

प्रकरणक अन्तिम मूल्यांकन : उजास भीतरक लोभ

अध्याय ६३मे अधिकारीक चमकैत गाड़ी, छायाचित्रकार, कारी चश्मा, पाथरक गिनती, रंगीन विरासत-गलियारा, नामक मालिकाना प्रश्न आ रातिक निविदा-विज्ञापन एक आख्यान-चाप बनैत अछि। लोकगीत अन्तमे चेतावनीक झूमरद्वारा विचार दोहरबैत अछि; गद्यक पूर्वक वास्तविक पत्र-चिपकबाक घटना गीतक घोषणासँ अलग चिन्हित रहबाक चाही। शिल्पगत उपलब्धि योजनाक धीरे-धीरे बढ़ैत प्रशासनिक वास्तविकता अछि। सीमा ई जे अधिकारीसभ अधिकतर एकहि ‘लोभ’क प्रतीकगत समूह बनैत छथि; व्यक्तिगत भिन्न आवाज कम विकसित अछि। उपन्यास संघर्ष पूरा नहि करैत—आरम्भक विधिवत् सार्वजनिक चरण तक लऽ जाइत अछि।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : खण्ड-१क अध्याय ५६–६३

अध्याय ५६–६३मे उपन्यासक स्थान-संघर्ष चारि माध्यममे क्रमिक रूपेँ विकसित होइत अछि। पहिने नगरपालिका द्वारा ‘खाली भू-खण्ड’ कहल स्थलपर बच्चासभ लोकस्मृतिक प्रतिनक्शा बनबैत छथि; तकर बाद बटुकनाथक ‘लोक-स्मृति न्यास’क लाल फाइल संरक्षणक नामपर कागजी अधिकारक प्रश्न अनैत अछि; चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-ऐप आ राघवक दान-कोड स्मृतिक डिजिटल स्वामित्वक असम्भावित बाजार खोलैत छथि; अन्तमे हरियर कोंपलक बढ़ैत सार्वजनिक आकर्षणक संग सरकारी ‘विरासत-परियोजना’क प्रस्ताव निविदाक रूप धरैत अछि। एहि समग्र चापमे कथा एकटा नाम-पाथर बचएबाक साधारण शोक-अनुष्ठानसँ भूमि, दस्तावेज, चित्र, परिवारक अनुमति, कर्मचारी-साक्ष्य आ सार्वजनिक योजनाक अनेकभाषी संघर्ष धरि बढ़ैत अछि।

पहिल अध्यायक प्रतिनक्शामे लाल ठूँठ, कमला-बलानक काँपैत रेखा, बाकर मायक बाट, गुम रसीदक सुराख आ प्रत्येक परिवारक अलग हथेली समाजक स्वनिर्मित स्थान-इतिहासक सूक्ष्म निर्माण अछि। ई लोकनक्शा सरकारी मापक नोंदक सम्पूर्ण तकनीकी समकक्ष नहि; ओकर शक्ति ई अछि जे प्रशासनक रिक्त कोष्ठकक भीतर व्यक्ति, रस्ता आ लोक-अनुभवक प्रश्न राखैत अछि। जकर नाम नहि भेटल, ओकर चिन्ह ‘प्रतीक्षारत’ रहैत अछि। स्रोतनिष्ठ आलोचना लेल ई नकारात्मक स्थानक सम्मान एक महत्त्वपूर्ण विधागत अनुकरणीयता अछि: उपन्यास जे जगह खुलल रखैत, ओतए समीक्षक निश्चित घटना नहि गढ़त।

गंगेशक प्रसंग अध्याय ५७सँ क्रमशः कथा भीतर विभिन्न स्वरूपमे आबैत अछि। ईरा, बा, मीरा, गोप आ बच्चासभ अलग अलग लोकश्रुति, कथित जीवनी, ग्रन्थस्मृति आ जातिगत असुविधाक भाषा द्वारा ओकरा प्रकट करैत छथि। आलोचना एतय ऐतिहासिक गंगेशक जीवनक बहुपाठीय प्रमाण-समीक्षा वा नव्य-न्यायीय तर्कशास्त्रक स्वतन्त्र पद्धति लागू नहि करैत। एकर पाठन शुद्ध आख्यानशास्त्रीय अछि: अन्तर्कथा मुख्य भू-संघर्षमे किएक प्रवेश कएलक, कोन पात्र ओकर कथनाधिकार लैत अछि, ‘कहल जाइत अछि’क लोकश्रुति आ ऐतिहासिक निश्चयक अन्तर की, आ जीवित पात्रसभक उच्चारणसँ सामुदायिक सभा कोना बदलैत अछि। नामोल्लेखित वास्तविक साहित्यविद् पर पात्रक आरोप समीक्षा द्वारा प्रमाणित तथ्य रूपमे दोहरायल नहि अछि। विभिन्न अध्यायक अन्तमे कोष्ठकीय दार्शनिक अन्तर्ध्वनिसभकेँ सेहो मुख्य घटनाक बाहरी फ्रेम अथवा लेखकीय परिशिष्ट-समान अलग कथन-स्तर मानल गेल अछि, मुख्य गद्यक सीधी घटना नहि।

स्मारक-ऐपक वृत्तमे शोषणक दृश्यरूप केवल स्क्रीनक डरावन चमक नहि। देविकाक फारम बन्द कएनाइ, मीराक सहमतिक भाषा खोलब, बूढ़ महिलाक अपना पुत्रक नाम पाथरपर चुनब आ भवेशक अस्थिर आत्मस्वीकार—ई सभ असमान शक्ति सँ जुड़ल विशिष्ट पात्रक कर्तृत्व छथि। अलौकिक स्क्रीनपर ‘ककर अधिकार’ शब्द उभरब उपन्यासक जादुई विरोधक एक साधन अछि, पर संस्थागत डेटा-स्वामित्वक अन्तिम प्रमाण नहि। राघवक कोडक कथा भीतर भवेशक कामक विवरण नूतन ठोस स्रोत-प्रसंग बनबैत अछि; तकरा पढ़ब पात्रक बयान आ स्वतन्त्र तकनीकी जाँचक सीमासहित आवश्यक अछि। कियो प्लेटफॉर्म खोललक, फॉर्म अधूरा छोड़लक वा स्क्रीनक संदेश मेटल, एहि सभ घटनासँ लाभक वास्तविक पूर्ण आर्थिक मार्ग स्वतः पुनर्निर्मित नहि होइत।

सत्यव्रतक दोसर मौन मुख्य चरित्रगत विकास अछि। पहिनेक मौनमे पद, दूरी आ समयोचित हस्तक्षेपक अभाव छल; एतय ओ सामूहिक श्रोताकेँ अपन वाक्यसँ ढाँपबासँ बचैत छथि। ई बदलाव अध्याय ६१मे बेहोश वृद्धा के सम्हारबाक क्रियासँ परीक्षण पबैत अछि। अतः दोसर मौन आत्मरक्षात्मक निष्क्रियता नहि, सुनबाक समयक सचेत वितरण अछि। नाम-उत्सवमे ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथरक प्रथम वाचन, ‘सर...’ अधूरा नाम नहि गढ़बाक मीरा-द्वारा प्रस्तावित मर्यादा, जीवित मीराक निजताक अधिकार आ दस नामक बाद कबड्डीक शरीरगत विराम सामूहिक स्मृतिअनुष्ठानकेँ सशक्त लोक-प्रयोग बनबैत अछि।

हरियर बिन्दु अध्याय ६१क रात्रि-शङ्कासँ अध्याय ६२क सूक्ष्म वास्तविक कोंपल आ अध्याय ६३क दू पातक विस्तार धरि क्रमिक वनस्पतिक समय पबैत अछि। एकहि दृश्यकेँ बच्चा मृतकक उत्तर, शिक्षक सुप्त कलिकाक प्राकृतिक वृद्धि, बा लोकस्मृतिक पुनर्जन्म, ऐप ब्रान्ड-छवि आ राज्य पर्यटनक प्रतीक रूपमे पढ़ैत अछि। एहि बहुअर्थक कारण ई नन्हा पात कथाक अर्थ-संघर्षक केन्द्र बनैत अछि। मुदा प्राकृतिक अंकुरक जीवन आ लोकस्मृतिक स्थायी जीत बराबर नहि। गाछीक पूर्वक कटानक पर्यावरणीय नुकसान जारी अछि; नव पात आ परियोजनाक खतरा एक साथ उपस्थित छथि।

अध्याय ६३मे विरासत-योजना केवल पात्रक शंका रहि नहि जाइत: अधिकारीक स्थल-निरीक्षण, रंगीन प्रारूप आ अन्ते नगरपालिका-सम्बद्ध व्यक्तिद्वारा खम्भापर लगाओल ‘निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण हेतु निविदा आमन्त्रण’क कागच घटीत घटनाक क्रम अछि। ई एक ठोस नूतन संस्थागत चरण अछि; पर निविदा निकललासँ ठेका स्वीकृत, निर्माण आरम्भ अथवा लोकक भूमि-अधिकार समाप्त कएल गेल, से नहि निष्पन्न होइत। प्रशासनिक प्रस्तावक

वास्तविक क्रियाक सीमा निबन्धात्मक निन्दासँ अलग राखबाक अछि। उपन्यास लोकसभार्कें ‘नाम अपन, पहरा सामूहिक’क सूत्र देइत अछि, पर एहि सूत्रक कानूनी संस्थागत व्यवहार एखन अगिला घटनाक परीक्षापर निर्भर अछि।

एहि आठ अध्यायक कथा–आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि घटनात्मक शिल्पक असमान स्तरकेँ एक श्रृंखलामे रखब अछि: प्रतिनक्शाक हस्तकला, ऐतिहासिक लोकश्रुतिक अन्तर्कथा, ऐपक पठनीय अनुबन्ध, रहस्यमय डिजिटल कोड, ‘दोसर मौन’क केन्द्र-हटब, नाम-उत्सवक देह-लय, कोंपलक बहुवाचक अर्थ आ राज्यक विरासत-निविदाक राजनीतिक समय। यथार्थ, लोकविश्वास, पात्रक आरोप, निजी अनुमान, प्रशासनिक लिखित सूचना आ भविष्यक योजना कैं एके दर्जा न देनाइ एहि खण्डक स्रोतनिष्ठ आलोचनाक आवश्यक अनुशासन अछि। कोनो स्थानपर मूल पाठबाह्य घटना रचल नहि गेल; समीक्षा पूर्ण रूपेँ कथन-काल, स्थान-विधान, पात्र-दृष्टि, बहुकण्ठी संवाद, लोकगीत-गद्यक अन्तर, जादुई यथार्थक पुनरावृत्ति आ वास्तविक पाठगत असङ्गतिक विवेचन पर केन्द्रित अछि।

प्रकरण १६५ | मूल अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

अधिग्रहणक भाषा आ कथाक नव मोड़

अध्याय ६३क अन्तमे नगरपालिका द्वारा विरासत-परियोजनाक सूचना टाँगल गेल छल; अध्याय ६४ ओहि छोट सूचना कैं व्यवस्थित प्रशासनिक निविदामे बदलि दैत अछि। एहि क्रममे घटनाक आकार नहि, अर्थ बदलैत अछि। जे ठूँठ मृतकक नाम-पहराक केन्द्र छल, से ‘स्थल खण्ड-क’ बनैत अछि; जे लोकक मौखिक गवाही छल, से ‘भावनात्मक विरासत संसाधन’ बनैत अछि। कथावाचक दस्तावेजक वास्तविक पदावली आ ओकर लोकजीवनपर प्रभाव आमने-सामने राखैत अछि। परिणामतः संघर्ष जमीनक अधिकार मात्र नहि, नाम देबाक अधिकारक संघर्ष भऽ जाइत अछि।

सूचना-पत्रक बहुस्थानीय प्रवेश

तहसीलक देबाल, नगरपालिका, बस-अड्डा आ अधबनल पुलपर एके प्रकारक सूचना एकसाथ चिपकब एक प्रशासनिक सर्वव्यापकता रचैत अछि। एहि संक्षिप्त दृश्य-मालामे शासनक आवाजक कोनो एक मुख नहि; ओ स्थान-स्थान पर स्वयमेव उपस्थित बुझाइत अछि। उलटि बच्चा सभक नाम-पहरा एकटा खास ठामसँ उठैत अछि। सार्वजनिक स्थानमे कागचक फैलाव आ ठूँठ लग लोकक एकत्रीकरणक अन्तर कथाक स्थानगत तनाव बनेबाक मूल तकनीक अछि। पुलपर सूचना लगब पहिने भेल मजदूर-मृत्युकेँ नव परियोजनाक संग जोड़ैत अछि।

शब्द-चयनसँ हिंसाक अदृश्यकरण

‘सौन्दर्यीकरण’, ‘अनुभव-क्षेत्र’, ‘ध्वनि-संयोजन’ आ ‘मार्गदर्शक बाल-दल’ जेकाँ शब्द सभ एक हिंसक इतिहासकेँ उपयोगी सेवा बनाकऽ प्रस्तुत करैत अछि। कथावाचक ई शब्द मात्र हास्यास्पद नहि बनबैत; ओकरा पाछाँ दुःखक ध्वनि, देह आ रोदनक नाजुक अधिकार राखि दैत अछि। उज्ज्वलक मायक अन्तिम फोन-घण्टीकेँ

ध्वनि-स्थापनामे बदलबाक सम्भावना एतय निर्णायक उदाहरण अछि। स्मृतिपर कब्जा पहिने घटनाकेँ पुनर्नामकरण करैत अछि, तखन ओकर वस्तुकरण सम्भव होइत अछि।

लागत-पत्रक दृष्टिसँ देखल अनुपस्थिति

सौम्या लागत-सारिणीमे प्रकाश, ब्राण्ड, उद्घाटन आ परामर्शक मद गिनैत छथि; श्रमिक-पुनर्वास, निजता-सुरक्षा आ नाम-खोजक मद शून्य वा अल्प भेटैत अछि। ई पठन एक प्रकारक कथात्मक प्रतिनक्शा अछि: कथावाचक राज्यक बजटकेँ लोकक दुःखक सापेक्ष पढ़बैत अछि। ‘स्मृति’ बहुत बेर, ‘नाम’ बहुत कम बेर लिखल होएबाक कथात्मक गणना संख्यात्मक प्रतिवेदन नहि, मूल्यक वितरणक व्यंग्यात्मक दृश्य अछि। संख्या एतय व्यक्तिक स्थान लैत अछि, आ ओहि स्थानान्तरणपर पात्र प्रश्न उठबैत अछि।

अनन्याक प्रश्न आ अधिकारक असमानता

‘नाम पर बोली लागत?’—बालकक ई प्रश्न पूरा निविदा-प्रकरणक आख्यानात्मक केन्द्र अछि। प्रशासनिक पदावली बुझौनिहार देविका तकर सामाजिक परिणाम सोझाँ रखैत छथि, मुदा अन्तिम निर्णायक प्रश्न बच्चा करैत अछि। एहि सँ कथन-दृष्टि विशेषज्ञक पाससँ बच्चाक अनुभव दिस सरकैत अछि। बालक स्वयं सरकारी नियम बदलि नहि सकैत, तथापि ओकर प्रश्न सरकारी कागचकेँ निर्विवाद सत्य रहए नहि दैत। पाठककेँ दस्तावेज स्वाभाविक नहि, आरोपित व्यवस्था बुझए पड़ैत अछि।

मीराक निजता आ अभिलेखक स्वामित्व

मीरा मौखिक सामग्रीक संग्रहक पाँति पढ़िते पूछैत छथि जे मृतकक परिवारक फुसफुसाहटकेँ के रिकॉर्ड करत। एहि प्रसंगमे निजता सार्वजनिक स्मृतिक विपरीत नहि, ओकर वैध सीमा रूपमे उभरैत अछि। सूचनाक उपलब्धि आ सूचनापर अधिकार दुनू अलग वस्तु छथि। कथाक पूर्ववर्ती स्त्री-अनुभव एहि निर्णयकेँ चरित्रगत आधार दैत अछि; मीरा कोनो बाहरसँ आयल नैतिक घोषणाक वाहक मात्र नहि। हुनकर आपत्ति दृश्य-अधिकार, श्रवण-अधिकार आ कथा कहबाक स्वीकृति सभकेँ जोड़ैत अछि।

आरुणिक दोहरा कालबोध

आरुणि वर्तमान निविदाक शब्द पढ़िते पुरान पुल-ठेकाक सुरक्षा, मानक आ मजदूर-कल्याणक वादा स्मरण करैत अछि। ई फ्लैशबैक घटनाक स्वतन्त्र विस्तृत पुनर्कथन नहि, संक्षिप्त स्मृतिगत प्रत्यारोपण अछि। पाठक नव परियोजनाक भविष्यकेँ पुरान परियोजनाक परिणामक प्रकाशमे देखैत अछि। पुलक पायामे दबायल देह आ स्मारकमे सजायल मृतकक तस्वीर एके लाभ-व्यवस्थाक क्रमिक रूप बनैत अछि। कथाकालक ई आवर्तन सामाजिक विस्मरणक विरुद्ध संरचनात्मक उपाय अछि।

बटुकनाथक प्रवेश : उद्धारक अभिनय

बटुकनाथ हरिहरन ‘लोक-स्मृति न्यास’क प्रस्ताव लऽ आबैत अछि। ओकर सार्वजनिक विनम्रता आ अधिकारपर कब्जाक आकांक्षा बीचक अन्तर प्रश्नोत्तरमे खुलैत अछि। बाल-परामर्श समिति आ प्रतिनिधित्वक प्रस्ताव सुनिते

उचित बुझाइत अछि; मुदा निर्णयक असल चाबी किनका हाथमे रहत, ई प्रश्न अनुत्तरित अछि। कथावाचक बटुकनाथकेँ केवल खलनायक घोषित नहि करैत; ओकर वैधानिक शब्दकेँ परिवार, बच्चा आ श्रमिकक अधिकारक सम्मुख राखैत अछि। वैधानिक आवरण आ नैतिक उत्तरदायित्वक दरार दृश्य रूपेँ उपस्थित होइत अछि।

कबड्डीक बदलबा नियम

साँझक कबड्डीमे बच्चा सभ ‘कबड्डी’क बदला निविदाक एक-एक वाक्यक प्रयोजन पूछैत खेलैत अछि। खेल अबूझ शासनभाषाकेँ शारीरिक लयमे आनैत अछि। साँस सीमित अछि; लम्बा अस्पष्ट प्रशासनिक उत्तर टिकि नहि सकैत। कथा एतय आलोचनात्मक विचारकेँ संवादसँ क्रियामे रूपान्तरित करैत अछि। जँ एहि खेलकेँ मात्र चमत्कारी शिक्षा कहल जाए तँ ओहिमे लोकक नब सामूहिक पद्धतिक निर्माण छूटि जाएत; खेल विरोधक अभ्यास आ भाषाक सार्वजनिक परीक्षण बनि रहल अछि।

अदृश्य हस्ताक्षर आ रोकेल सूचना

नोटिसक मुड़ल कोनासँ अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाताक धुँधल चिन्ह उभरैत अछि, जकर संकेत एडवर्ड ब्रूम दिस जाइत अछि। पाठककेँ तुरन्त निश्चित अभिलेखी पहचान नहि देल गेल; गोप आ आरुणिक स्मृतिद्वारा शक आकार लैत अछि। ई विलम्बित नामोद्घाटन सस्पेन्सक साधन सेहो अछि आ पुरान अपराधक वर्तमान छद्मरूपक सूचक सेहो। ठूँठक हरियर बिन्दुक काँपन राजनीतिक कागचक असरक जादुई प्रतिचित्र अछि; ओ स्वतन्त्र वस्तुगत प्रमाण नहि।

गीत-फकरा आ कथात्मक दूरी

आरम्भिक गीत शोकसँ सेवाक बाट सुझबैत अछि, जखन मुख्य कथा ‘सेवा’क ठेकादारीद्वारा शोकक दोहन देखबैत अछि। एहि दू स्तरक विरोधेँ व्यंग्यक प्रभाव जन्मैत अछि। अन्तिम गीत पुनः स्मृतिक बेचबाक विरुद्ध स्वर उठबैत अछि। गीत कथासँ अलग नैतिक उपदेश नहि, घटनाक अर्थकेँ लोकक सामूहिक कण्ठमे वापस पहुँचबैत अछि। तथापि गीतक स्पष्ट निष्कर्ष आ घटनाक अनिर्णीत संस्थागत स्थिति बीच आलोचनात्मक दूरी बनल रहैत अछि।

निष्कर्ष : शोककेँ ‘संसाधन’ कहबाक मूल्य

अध्याय ६४क निर्णायक घटना निविदाक प्रकाशित होएब मात्र नहि, ओकर शब्दावलीकेँ जनता द्वारा अस्वीकारक आरम्भ अछि। न राज्यक योजना रद्द भेल, न न्यासक दाँत पूर्ण रूपेँ बाहर आयल; संकट खुलल अछि। बच्चा सभक रजिस्टर तर्क आ नाम दुनू संचित करए लगैत अछि। एहि अर्थमे अध्याय प्रशासनिक दस्तावेज आ लोक-आख्यानक टकरावकेँ अगिला प्रकरणक पात्र ब्रूमक पुनरागमन लेल तैयार करैत अछि।

प्रकरण १६६ | मूल अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

पुरान लोभक गन्ध : घ्राणक कथन-प्रयोग

अध्यायक आरम्भ नव निविदासँ उठल ‘पुरान गन्ध’क बिम्बसँ होइत अछि। गन्ध एतय दृश्य बनि नहि सकैत, मुदा आरुणिक स्मरणमे पुरान पुल, मृत मजदूर आ कागचक वादा एक्के क्षण उपस्थित कऽ दैत अछि। साधारण पुनरागमन प्रसंगमे पात्र पहिले दृश्यरूपेँ अबैत; एतय ओकर प्रभाव गन्ध, दस्तावेज आ परिचित व्यवसायिक भाषा द्वारा पहिने पहुँचैत अछि। एहि क्रमसँ ब्रूम नामक व्यक्ति सँ बेसी एक दीर्घजीवी संरचना बनैत अछि।

कम्पनीक नाम नव, मालिकाना सम्बन्ध पुरान

गोप कुमार विदेशी साझीदारक नव नामक भीतर पुरान स्वामित्वक संकेत चिन्हैत छथि। ई पहचान खुलासा अछि, मुदा कोनो विस्तृत कानूनी प्रमाणक सार्वजनिक उद्घाटन एखन नहि। कथावाचक जे जानकारी पात्रक स्मृति आ दस्तावेजक मिलानसँ दैत अछि, तकरा पाठककेँ आशंकासहित ग्रहण करबाक अछि। नव नामसँ पुरान संचालन लुकाएब कथामे पुनरावृत्त आर्थिक रणनीति अछि। पाठकक पिछला पुल-दुर्घटनाक ज्ञान एहि नव उपक्रमकेँ निर्दोष परियोजना मानबाक अवसर घटा दैत अछि।

संग्रहालय बनाम जीवित स्मरण

ब्रूमक प्रस्तावमे काँचक संरचना, कृत्रिम पोखरि, बनावटी गोहि आ प्रकाश-दृश्य राखल गेल अछि। एतय जीवित डरक प्रदर्शनात्मक प्रतिरूप बनबाक योजना अछि। बच्चा सभक साँसक काँचपर जमल धुन्धक बिम्ब रूपान्तरक पैघ हानि स्पष्ट करैत अछि: दर्शक भीतरक खेल देखत, मुदा सहभागी नहि बनत। स्मृतिक संस्थानीकरणपर प्रश्न केवल पैसा नहि, सहभागिताक समाप्ति अछि। जीवन जे पुनः उच्चारित होइत रहैत अछि, ओ एक बेरक टिकट-योग्य दृश्य बनि सकैत नहि।

पुलक अपराधकेँ ‘गलतफहमी’ कहब

ब्रूमक प्रस्तावित संवादमे पुरान परियोजनाक असहमतिकेँ ‘गलतफहमी’ कहल जाइत अछि। आरुणिक भीतर सुरक्षा-पंजी, मुआवजा, मजदूरक नाम आ ठेका-संशोधनक दृश्य फेर जागैत अछि। एहि शब्दक खिलाफ ओकर मौन क्रोध कथाक नैतिक अभिमुखीकरण बनबैत अछि। ‘गलतफहमी’ आरोपक उत्तर नहि, अपराधक आकार घटेबाक भाषा अछि। कथावाचक कागचक शिष्ट शब्द आ नदीक अपूर्ण हिसाब बीच दूरी रखैत अछि, जाहिसँ सार्वजनिक सम्बन्धक भाषा पर पाठकीय अविश्वास बढ़ैत अछि।

वित्तीय व्यवस्था आ मृतकक परिवार

दान, टिकट, छवि-संग्रह आ व्यक्तिगत स्मृति-अभिलेखक प्रस्ताव एक दोसरा सँ अलग नहि, परस्पर पोषक व्यवस्था बनैत अछि। देविका अपन पूर्व डिजिटल ठगीक अनुभवसँ एकर सम्भावित लाभ-जाल देखैत छथि। मीरा बिनु अनुमति फोटो आ शोकक बिक्रीकेँ अस्वीकार करैत छथि। आर्थिक युक्तिक आलोचना तखन विश्वसनीय

बनैत अछि जखन मृतकक परिवारक क्रियात्मक अधिकार सन्दर्भमे राखल जाइत अछि। कथामे पीड़ित परिवार स्वयं निष्क्रिय करुणा-पात्र नहि, प्रस्तावक शर्त तय करबाक दावेदार बनैत छथि।

सरयूक वंशक वृद्धाक स्मरण-वाक्य

वृद्धा अपन पतिक मृत्युक बाद नामक मेटाइकेँ दोसर मृत्यु कहैत छथि। ई कथन भौतिक मृत्यु आ सामाजिक विस्मरणकेँ अलग स्तरपर रखैत अछि। काँचमे नाम राखि टिकट बेचब नाम बचाएब नहि, ओकर अर्थपर बाहरी नियन्त्रण स्थापित करब होएत—ई वृद्धाक प्रश्न अछि। लोकक अनुभव आलोचनात्मक विधान बनि उभरैत अछि। एहि दृश्यसँ मृतकक नामक स्वामित्व पर चर्चा सैद्धान्तिक नहि रहि, घरेलू दीर्घ शोकक परिणाम बनि जाइत अछि।

शिशुक लोटा आ जीवनक असंग्रहणीयता

एक बालकक साधारण घरेलू वस्तु स्मृति-परियोजनाक भव्य स्थापत्यसँ तुलना पबैत अछि। कथामे लोटा संग्रहालयक प्रदर्शनीय वस्तु नहि, प्रतिदिनक जीवित उपयोगक चिह्न अछि। ई लघु वस्तु भव्य काँचक भवनक विरुद्ध स्थानीय जीवनक अनुपम प्रतितुलना बनैत अछि। आलोचनात्मक महत्त्व एहि बातमे अछि जे कथा वाद-विवादक परिणाम केवल घोषणापत्रमे नहि, छुबए-बरतए जोग वस्तुमे घनीभूत करैत अछि। वस्तुक आकार छोट, मुदा ओकर प्रतिरोधक भार पैघ अछि।

पत्राचारक माध्यमेँ पात्रक मंचप्रवेश

ब्रूम स्वतः गाममे तत्काल नहि अएला; हुनकर पत्र, रंगीन पुस्तिका आ कार्यक्रमक नक्शा हुनकर उपस्थितिक काम करैत अछि। एहि पत्रात्मक उपस्थिति सँ पात्रक ‘वापसी’ वास्तविक भेटसँ पहिने पाठकीय प्रतिक्रियाक विषय बनैत अछि। पाठक ब्रूमक सार्वजनिक छवि पहिने देखैत अछि, तकरा बाद स्थानीय लोकक द्वारा ओहि छविक विघटन। घटना-समयक ई अन्तराल अगिला शोध-दलक आगमनक पुल बनैत अछि। कथाकार खलनायकक प्रत्यक्ष भाषण स्थगित कऽ ओकर परोक्ष प्रभावकेँ प्रमुख बनबैत अछि।

मुद्रित आँखिक रूपान्तर

रातिमे पुस्तिकाक चित्रमे ब्रूमक आँखि गोहिक आँखि बनि गेलाक सम्भावना प्रकट होइत अछि। किछु पात्र एकरा देखब कहैत अछि, किछु भ्रम। कथावाचक कोनो वैज्ञानिक प्रमाणित घटना घोषित नहि करैत; सामूहिक भय आ शोषणक स्मृतिद्वारा मुद्रित छविक अर्थ बदलैत अछि। जादुई यथार्थ एतय यथार्थक बाहर अलग लोक नहि गढ़ैत, प्रचारक छविक भीतर नुकाएल शिकारी दृष्टिकेँ अनुभूतिपरक दृश्य दैत अछि।

आगन्तुक शोध-दलक पूर्वाभास

ब्रूमक दलक आगमनक समाचार पर अनन्या पूछबाक ठानैत अछि—‘सुनए आयल छी कि लिखए?’ एहि प्रश्नमे अगिला अध्यायक संरचना पहिने सँ छिपल अछि। ब्रूमक पूँजी, स्थानीय प्रशासन आ विश्वविद्यायली अध्ययन एके परियोजनामे जुड़बाक आशंका अछि। कथा शोधकेँ स्वतः अपराध नहि मानैत, मुदा शोधकर्ता अपन दृष्टि आ

लेखनक अधिकार ककरा सँ लैत अछि, ई प्रश्न उठबैत अछि। एहि टकरावक तैयारी नाटकीय छानबीनक जमीन बनबैत अछि।

पुनरागमनक पुनरावृत्त स्वरूप

पुल-दुर्घटनासँ स्मृति-विरासत परियोजना धरि पुरान पात्रक फेर आबि जाएब संयोग मात्र नहि। धनक प्रवाह आपदा सँ बचाव, बचाव सँ स्मारक, स्मारक सँ पर्यटन तक पुनरावर्तित होइत अछि। कथाक घटनाक्रम एतय वृत्ताकार आर्थिक समय रचैत अछि, जाहिमे हानि स्वयं अगिला व्यापारिक अवसर बनि जाइत अछि। एहि वृत्तकेँ काटबाक स्थानीय प्रयास गीत, सवाल आ सामुदायिक सहमतिक रूपमे चलैत अछि।

समापन : वापसीक असली स्वरूप

अध्याय ६५ ब्रूमक शारीरिक आगमनक गाथा कम, ओकर प्रभावक बहुस्तरीय पुनर्प्रवेशक कथा बेसी अछि। पत्र, हस्ताक्षर, परामर्श, डिजिटल प्रस्ताव, शोधक बाट आ नकली प्रकृति—सभ एकहि स्मृति-अधिग्रहणक आवृत्ति अछि। कथा निर्णायक कानूनी विजय घोषित नहि करैत; ओकरा बदला अगिला शोध-दलक परीक्षा तय करैत अछि। पुनरागमनक अर्थ मनुष्यक फेर अएब मात्र नहि, पुरान अपराधक भाषा बदलबाक बावजूद बनल रहब अछि।

प्रकरण १६७ | मूल अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

यन्त्रक प्रवेश आ दृष्टिक क्रम

तीन गाड़ी, कैमरा, ध्वनि-यन्त्र, तिपाया, परिचयपत्र आ अनुदान-संयोजक—ई दृश्य शोध-दलक आगमनकेँ सामान्य यात्रीसँ अलग करैत अछि। यन्त्र सभ पहिने दृष्टि बनि पहुँचैत अछि, व्यक्ति बादमे। शीर्षक ‘हार्वर्डक शोध-दल’ संस्थागत प्रतिष्ठाक संकेत दैत अछि; मुख्य कथा एहि प्रतिष्ठाकेँ लोकक नामक सामने जाँचैत अछि। उपकरणक प्रचुरता आ पीड़ितक कथा सुनबाक कम तैयारिक विरोध शोधक कथात्मक समस्याकेँ दृश्य बनबैत अछि।

ईराक समय-संरचनात्मक हस्तक्षेप

दल प्रश्नावली आ समय-सारिणी संग पहुँचल अछि; ईरा पहिने गोलमे बैसि नाम सुनबाक निर्देश दैत छथि। निर्धारित अनुसंधान-समय आ लोकक शोककालमे टकराव अछि। शोधार्थी प्रश्न तुरन्त पूछए चाहैत अछि, गामक बच्चा पहिने ‘उपस्थित’क उच्चारण करबैत छथि। एहि क्षण कथनक गति जानि-बूझि धीमा कएल गेल अछि। पाठककेँ नहि केवल जानकारी, जानकारीक पात्रताक शर्त बुझए पड़ैत अछि।

‘उपस्थित’ शब्दक पुनर्व्यवस्था

शोधार्थीक मुखसँ ‘उपस्थित’ कठिनाईसँ निकलैत अछि; ओ शब्द डेटा-प्रविष्टिक उत्तर नहि, मृतकक प्रति सामाजिक प्रतिज्ञा होइत अछि। लोकक सरल शब्द विदेशी प्रश्नावलीक जटिल शब्दावलीसँ पैघ नैतिक कार्य करैत

अछि। कथामे संवाद-क्रम सत्ता उलटैत अछि: विश्वविद्यालयक आगन्तुक शब्दार्थ सिखनिहार बनैत अछि, गामक बच्चा शर्त निर्धारण करैत अछि। मुदा हुनका सभकेँ ज्ञान-विरोधी बनाओल नहि गेल अछि; ज्ञानक आरम्भ सुननाइसँ होएबाक आग्रह अछि।

गंगेशक लोककथा : आख्यानक भीतरक विवाद

दल गंगेश उपाध्यायक ग्रन्थपर परिचित अछि, मुदा बा हुनकर असुविधाजनक सामाजिक जीवनक कथाकेँ उठबैत छथि। ई ऐतिहासिक दावासभ उपन्यासक पात्र द्वारा कहल लोकस्मृति छथि, स्वतन्त्र सत्यापित इतिहास नहि। कथावाचकक वास्तविक कार्य एहि कथासभक माध्यमेँ शास्त्रीय गौरव आ जातिगत बहिष्कारक बीच दरार उजागर करब अछि। समीक्षाकेँ ओहि अन्तरकेँ सुरक्षित रखबाक चाही; प्रमाणित नहि होएबाक सम्भावना स्वयं कथाक भीतर एक अनुत्तरित प्रश्न बनैत अछि।

शोधक प्रश्न आ लोकक प्रतिसवाल

‘लिखित स्रोत?’—शोधार्थीक ई प्रश्न उचित जिज्ञासाक रूपमे उठैत अछि, मुदा जेना ई प्रश्न सुननाइक आरम्भक बदला अन्तिम फैसला बनि जाए, ओहि जोखिमकेँ अनन्या चिन्हैत अछि। मौखिक स्मृति आ अभिलेखक सम्बन्ध संघर्षपूर्ण अछि, सर्वथा विरोधी नहि। कथा कागचकेँ फेकैत नहि; कागचक आलोचनात्मक उपयोग लेल सामाजिक प्रसंग जरूरी मानैत अछि। एतय शोधकर्ता, ग्रामीण साक्षी आ कथावाचकक ज्ञान-स्तर अलग-अलग राखल गेल अछि।

विधवाक घरक दृश्य : अध्ययनक देहगत मूल्य

गामक स्मृति-नक्शा हाथमे रहितो दलकेँ ठूँठसँ पुल, पोखरि आ श्रमिकक घर धरि चलाओल जाइत अछि। जूतामे माटि, घाम, थाकनि आ घरेलू देहरी पार करब अमूर्त अध्ययनकेँ देहक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। ई व्यायाम अनुसंधानक पद्धतिक पूर्ण समाधान नहि; तथापि कैमरा सँ लेल दूरस्थ छविक बदला जीवित सम्बन्धक आरम्भ अछि। स्थानक दूरी पार करब नैतिक दूरी घटेबाक सम्भावना बनैत अछि।

चित्र-आकांक्षा आ अस्वीकारक निर्णायक क्षण

मजदूरक विधवा कैमरा देखि अपन आँखि उठबैत छथि, अनायासे चेहरा ढाँपैत नहि। फिल्मकार ओकरा ‘दुर्लभ’ दृश्य समझि यन्त्र उठबैत अछि; मीरा ओकरा रोकैत छथि। विधवा अपना मुँहक छवि नहि, पतिक नाम लिखबाक अनुमति दैत छथि। ई दृश्य अध्यायक चरित्रगत शिखर अछि। अध्ययनक विषय बनेबाक इनकार आ कथनक विषय बनबाक स्वीकृति एके व्यक्ति द्वारा अलग-अलग देल गेल अछि। सहमतिक ई भेद कथा ऐतिहासिक अभिलेखक नैतिक आधार बनबैत अछि।

सौम्याक खाली पन्ना आ शोधक अपूर्णता

शोधार्थीक बही आशा जकाँ भरि नहि सकल; अनेक पन्ना खाली रहि गेल। ई रिक्तता अध्ययनक असफलता मात्र नहि, स्रोतपर कब्जा नहि करबाक सम्भावना अछि। कथाकार लिखल नहि गेल पृष्ठकेँ अर्थपूर्ण वस्तु बनबैत अछि।

पीड़ितक मौनकेँ उद्धरणमे बदलनाइ आवश्यक नहि, एना बोध बनैत अछि। ई शिल्पिक साधन अगिला ‘दृष्टिक अधिकार’ अध्यायक लेल स्पष्ट पूर्वाभास अछि।

सत्यव्रतक मौनक नब प्रकार

सत्यव्रत मेहता एतय पदक अधिकारसँ सम्पूर्ण चर्चा अपन हाथमे नहि लैत छथि। हुनकर मौन पहिले अनेक अवसरपर न्यायिक विलम्बक रूपमे देखाओल गेल छल; आब ओ सामुदायिक संवादक स्थान बचाबय चाहैत छथि। एक शब्द समान रहितो चरित्रगत अर्थ बदलि सकैत अछि—ई पुनरावृत्तिक सूक्ष्म प्रयोग अछि। जँ समीक्षक सभ मौनकेँ एकहि नैतिक श्रेणीमे राखि देत तँ पात्रक विकासक महत्वपूर्ण रेखा मेटि जायत।

गोहिक आँखि लेंसक भीतर

अन्तिम दृश्य फिल्मकारक लेंसक धूलिमे गोहिक आँखि देखबैत अछि। बाहरी घटना यथार्थवादी स्तरपर भ्रम वा प्रकाशक खेल भऽ सकैत अछि; जादुई आख्यान-स्तरपर ई शिकार करएबला दृष्टिक रूपक अछि। जखन विषयक अनुमति बिनु दृश्य छीनेबाक प्रयास होइत अछि, तखन उपकरण स्वयं लूटक मुख बनि उठैत अछि। शीर्षकमे यन्त्रक प्रधानता आ अन्तमे यन्त्रक भय-रूप एक वृत्त पूरा करैत अछि।

गीत आ मुख्य प्रसंगक सम्बन्ध

आरम्भिक ‘लेंस साफ’ गीत मनुष्यक सम्मानक पूर्वनिर्धारित नियम रखैत अछि; मुख्य कथा ई नियम व्यवहारमे केना टूटैत आ कठिनाईसँ सीखा जाइत अछि, देखबैत अछि। अन्तिम गीत कथाक द्वंद्वकेँ सामूहिक चेतावनीमे बदलैत अछि। गीत नैतिक परिणाम पहिनेसँ जानैत बुझाइत अछि, जखनकि पात्र क्रमशः सीखैत छथि। एहि समय-अन्तरालसँ गीत भविष्यसूचक कोरसक रूप लैत अछि।

समापन : अध्ययनक वस्तु बदलल

अध्याय समाप्त होइत-होइत शोध-दलक काज ‘सामग्री संकलन’सँ ‘अपन प्रश्नक अधिकार जाँचब’ दिस सरकैत अछि। ई सम्पूर्ण समाधान नहि—दल, अनुदान आ संस्थागत असमानता यथावत अछि। मुदा विधवाक अस्वीकार आ अनन्याक रोकेल कलम अध्ययनक प्रारम्भिक शर्त बदलि दैत अछि। अगिला अध्यायमे मीरा एहि छिन्न-भिन्न शोध-नजरिकेँ स्पष्ट सार्वजनिक विधान देबाक छथि।

प्रकरण १६८ | मूल अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

कथाक प्रमुख प्रश्नमे देहक प्रवेश

पूर्व अध्यायमे कैमरा उठेबा सँ रोकल गेल छल; एतय ‘देखबाक अधिकार’ स्वयं कथाक केन्द्र बनि जाइत अछि। मीरा जे पूर्व हिंसा, निजता-हन्ता दृष्टि आ ब्लैकमेलक अनुभव लऽ आबैत छथि, से हुनकर प्रतिवादकेँ पाठ-आधारित विश्वसनीयता दैत अछि। अधिकारक चर्चा शरीरसँ अलग अमूर्त व्याख्यान नहि, अपनहि अनुभवसँ निकसल नियंत्रणक माँग अछि। शीर्षक कथानकक दिशा व्यक्ति-विशेषक स्वनिर्णय दिस मोड़ैत अछि।

गोल घेराक बाहर रोकनाइ : स्थानिक सत्ता

ईरा आगन्तुक दलकेँ ठूँठक भीतरी गोलमे नहि, बाहरी परिधिमे रोकैत छथि। ई भूगोलक छोट परिवर्तन कथात्मक शक्ति-सन्तुलन बदलैत अछि। शोधकर्ता लोकसमुदायकेँ दूरसँ नापबाक अभ्यस्त छथि; एतय स्वयं हुनकर प्रवेश शर्तसँ बँधल अछि। गोल घेरा अनन्याक कबड्डी, नाम-पहरा आ सामुदायिक निर्णयक आवर्ती स्थल अछि। प्रवेशक शर्त ओकरा अभिलेखकीय अखाड़ासँ अधिकारक सजीव संरचनामे बदलैत अछि।

धुँधल चेहरा पर्याप्त किएक नहि

पुरुष शोधार्थी चेहरा ब्लर करबाक तकनीकी उपाय देबैत अछि। मीरा पूछैत छथि जे छवि लेबाक पूर्वाधिकार के देलक। तकनीकी अनामिकरण आ स्वतन्त्र अनुमति एक नहि होइत—कथाक ई विशेष अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। कोनो छविक पहिचान घटेला सँ ओकर ग्रहण, संग्रह आ प्रसारणक अधिकार स्वतः वैध नहि भऽ जाइत। कथानक सहमतिकेँ ‘पछि भऽ सकैत सुधार’ नहि, आरम्भक शर्त बनबैत अछि।

मौनक शाब्दिक अर्थपर एकाधिकार नहि

मीरा नजदीकसँ समझबैत छथि जे ‘हँ’, ‘नहि’ आ मौन तीनू अलग प्रतिकिया छथि। जकरा देखल जा रहल अछि, ओकर चुप्पीकेँ स्वतः अनुमति मानल नहि जा सकैत। एहि विधिसँ कथावाचक वाणीहीन पात्रक रक्षा करैत अछि। एतय भाषा आ देहक सम्बन्ध उलटा अछि: आगन्तुक कतेको प्रश्न रखैत छथि, मुदा उत्तर देबाक अथवा नहि देबाक सत्ता विषयक हाथमे अछि। सामाजिक अन्यायक बीच ई नान्हि प्रत्यावर्तन कथा-विकासक वास्तविक घटना अछि।

मार्थाक परिवर्तन आ ओकर सीमा

शोधदलकी मार्था पहिल बेर ‘आब की करू?’ पूछैत छथि आ ठूँठ लग बीस मिनट लिखे बिना बैसबाक अभ्यास करैत छथि। प्रश्नमे परिवर्तन अछि—पहिने समुदायसँ सूचना चाही, आब अपन क्रियाक मर्यादा बुझबाक इच्छा। मुदा एक दिनक मौन अपन-आप संस्थागत असमानता नहि मेटबैत। कथा एहि निर्णयकेँ उद्घाटनक रूपमे रखैत अछि। सार्थक नैतिक विकास क्षणिक नम्रताक बाद अनुसंधानक व्यवहार बदललासँ नापल जायत।

जगदीश रामक शास्त्रक भीतरक दावा

चर्मकार जगदीश राम कहैत छथि जे शास्त्रक बाहर राखल लोकक कथा शास्त्रक भीतर स्थान माँगैत अछि। गंगेशक विवाह सम्बन्धी प्रसंग कथा भीतर एक विवादास्पद लोक-स्मृति रूपमे उपस्थित अछि। मीरा आ जगदीश एकर उपयोग जातिगत अनुपस्थितिक आलोचना लेल करैत छथि। समीक्षक लेल आवश्यक अछि जे उपन्यासक वक्तव्यकेँ चरित्रक इतिहासबोध बुझल जाए, प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यक रूपमे नहि। एहिसँ कथा-स्वरक वास्तविक बहुलता सुरक्षित रहैत अछि।

अनुवाद आ दृष्टिक सम्बन्ध

मार्था जगदीशक वाक्यक अर्थ अपन भाषामे बुझब चाहैत छथि; जगदीश उत्तर दैत छथि जे पहिने ‘अपन भाषा सँ बाहर बैसू’। ई कहब अनुवादक असम्भवताक घोषणामात्र नहि; अर्थपर त्वरित स्वामित्वक विरुद्ध प्रतिरोध अछि। अन्यक दुख सुनबाक लेल श्रोता अपन वर्गीकरणक हड़बड़ी स्थगित करत। एहि दृश्यसँ भाषागत दूरी दृश्य-अधिकारक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। कथा अनुवादकेँ नकारैत नहि; अधीर अनुवादक सत्ता पर शंका करैत अछि।

पाथर लग बीस मिनट : कथनकालक विस्तार

मीरा एक पाथर लग बैसि बीस मिनट किछु नहि लिखबाक निर्देश दैत छथि। घटनाक बाह्य मात्रा न्यून अछि, मुदा अनुभूतिपरक अवधि नमहर। आख्यानशास्त्रीय रूपेँ ई गति-विलम्ब पाठककेँ अनुभूतिक तैयारी महसूस करबैत अछि। प्रत्यक्ष चित्रणक बनिस्पति अस्थगित दृष्टि अधिक महत्त्व पबैत अछि। ई समय-निर्धारण लोकक सहमतिक प्रति धैर्यक औपचारिक प्रदर्शन अछि।

‘दृष्टि-पहरा’ : व्यक्तिगत घावसँ सामाजिक नियम

मीरा अपन देहपर भेल हिंसासँ व्यक्तिगत निजताक माँग उठबैत छथि, मुदा बच्चा सभ ओकरा ‘दृष्टि-पहरा’ नाम दैत अछि। एक अनुभव सामुदायिक नियममे स्थान पबैत अछि—यही अध्यायक वास्तविक परिणाम अछि। पात पाठशालाक आगामी पाठक पूर्वरचना एतय शुरू भऽ जाइत अछि। कथामे शिक्षा औपचारिक पाठकक्षमे शुरू नहि होइत; पीड़ितक अस्वीकारक सामाजिक अनुवाद रूपमे जन्मैत अछि।

कबड्डीक स्थगित क्रिया

अनन्या कबड्डीक साँसक लय बजबैत छथि, मुदा बच्चा सभ तत्काल खेलमे नहि उतरत। ई स्थगन अर्थवान अछि। खेल शरीरक पकड़सँ दृष्टिक पकड़ विषयक नियममे रूपान्तरित भऽ रहल अछि। पुनरावर्ती कबड्डी-संकेत एतय उत्सव नहि, अनुशासनक प्रतीक्षा अछि। खेलक न होएब सेहो खेलक नब नैतिक नियमक गठन बनि जाइत अछि।

लोकगीतक स्त्री-स्वर

‘अनुमति पहिने’ लोकगीत अध्यायक पहिले सहमतिक विधान गाबैत अछि। मुख्य कथा देखबैत अछि जे एहि विधानकेँ अमलमे आनबा लेल ककरो कैमरा रोकब, ककरो प्रश्न अटकब आ ककरो चुप्पीकेँ मान देब आवश्यक अछि। गीत परिणामक घोषणा करैत अछि, कथा परिणाम धरि पहुँचबाक मेहनत देखबैत अछि। ई दू स्तर मिलि स्त्रीस्वरकेँ सजावटी गीतक बदला क्रियात्मक अधिकार बनबैत अछि।

अन्तिम मूल्यांकन : न्यायपूर्ण दृष्टिक कठिनाई

अध्याय दृष्टिक अधिकारक स्पष्ट सिद्धान्त प्रस्तुत करैत अछि, तथापि संस्थागत रूपान्तरण पूर्ण नहि। शोधदल अबहियो उपस्थित अछि, प्रचारक योजना अबहियो चलि रहल अछि। मीरा एतय अन्तिम समाधान नहि, बातचीतक प्रवेशद्वार बदलैत छथि। एतय ‘देखब’ अपन वस्तु नहि, दोसराक स्वतन्त्रताक सीमा मानि आगाँ बढ़ैत अछि। एहीसँ अगिला डिजिटल अनुप्रयोगक आलोचना लेल नैतिक आधार तैयार होइत अछि।

प्रकरण १६९ | मूल अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

शोकक डिजिटल प्रवेश-द्वार

अध्याय ६८मे श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक आरम्भ मृतकक नाम, छवि, सन्देश, स्मृति-दीप आ दानक मृदु आमन्त्रणसँ होइत अछि। कथावाचक आरम्भमे एकर आकर्षण लुकबैत नहि; दूर रहैत परिवारक लेल डिजिटल पहुँचक वास्तविक उपयोगिताक दाबी उपस्थित करैत अछि। तकर बाद देविका फॉर्मक प्रश्न, अनिवार्य घर आ दानक बाट जाँचैत छथि। कोमल भाषा आ सूक्ष्म व्यावसायिक नियंत्रणक विरोध अध्यायक मूल कथात्मक तनाव अछि। तकनीकक सतही सुविधा आ गहिर सामाजिक जोखिम क्रमशः खुलैत अछि।

फॉर्मक खाँचा आ व्यक्ति-विहीनता

अनुप्रयोग मृतकक पितृनाम, परिवारक संरचना, जाति, मृत्यु-दिनांक, मोबाइल आ अन्य विवरण माँगैत अछि। एहन नाम जिनकर पिता अज्ञात, परिवार विस्थापित, पहचान अधूरी वा सामाजिक मर्यादा थोपल गेल अछि, ओ अनुप्रयोगक मानकमे नहि अँटैत। देविका एहि डिजाइनक भेदभावकेँ चिन्हैत छथि। कथा एतय तान्त्रिक गलती देखाबय सँ अधिक वर्गीकरणक सत्ता प्रश्नांकित करैत अछि। जकर जीवन जटिल अछि, तकर नामकेँ ‘अमान्य’ करब तकनीकी विधि द्वारा सामाजिक बहिष्कारक पुनरुत्पादन अछि।

उज्ज्वलक नाम आ विपणनक संवेदनहीनता

पाछूक कार्यालयमे उज्ज्वलक नामक कात ‘भावनात्मक पहुँच उच्च’ लिखल भेटैत अछि। ई दृश्य समग्र अध्यायक सबसे तीव्र नैतिक झटका अछि। जकरा परिवार युवकक मृत्यु सामाजिक-डिजिटल शोषणक रूपमे याद करैत अछि, ऐप ओकर शोककेँ बाजारमे सम्भावित प्रभावक अंक बनबैत अछि। देविका तत्काल फोटो नहि खींचैत छथि; हुनकर संयम स्वयं आलोचनाक अंश अछि। अपराधक दस्तावेज ढूँढ़ैत सेहो ओ दोसर पीड़ितक निजता नहि लूटब चाहैत छथि।

चन्द्रपालक ‘सुविधा’क कथन

चन्द्रपाल बत्रा अपन अनुप्रयोगकेँ सेवाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि आ अधूरा नामक अस्वीकृतिकेँ ‘शुद्धि’ कहैत अछि। देविका ‘शुद्धि’क भीतर बजारक सुविधा देखैत छथि: असम्बद्ध वा अधूर विवरणसँ लाभ कम होइत अछि। एहि संवादमे व्यक्तिक वाणी स्वयं ओकर सत्ता-चाहना प्रकट करैत अछि। कथावाचक विरोधी पात्रकेँ खलनायकीय भाषण नहि देलकर; ओ सामान्य प्रबन्धकीय शब्दमे शोषणक तर्क कहबैत अछि। एहिसँ अपराधक साधारणीकृत रूप उभरैत अछि।

स्क्रीनक दृश्य आ गोहिक रूपक

देविकाकेँ लगैत अछि जे गोहि नदीसँ निकलि शब्दक भीतर मुँह खोलि रहल अछि। ई बिम्ब जीवित गोहिक व्यवहारक सटीक विवरण नहि, मनुष्यनिर्मित डिजिटल लाभ-प्रणालीक रूपक अछि। महाकथामे गोहि कखनो

जलचर, कखनो लोभ, कखनो अनुपस्थित स्मृति बनैत अछि; एहि अध्यायमे ओकर मुँह ‘स्वीकृत नाम’, ‘दान’, ‘शुद्धि’ आ ‘भावनात्मक पहुँच’क भाषा द्वारा खुलैत अछि। रूपकक ई स्थानान्तरण शीर्षकगत प्राणीकेँ सामाजिक संरचनाक आलोचनासँ जोड़ैत अछि।

पीड़ितक सम्मान आ देविकाक लेखन-विनय

देविका गामक बैसारमे ऐपक चालि बतबैत छथि, मुदा देखल गुप्त सूचीक सभ नाम सार्वजनिक नहि करैत छथि। ई चयन कथाक भीतर सूचना-संचरणक नैतिक उदाहरण अछि। अन्याय उजागर करब आ पीड़ितक गोपनीयता राखब दुनू संग सम्भव अछि—ई क्रियाद्वारा देखाओल गेल अछि। चरित्रक विश्वसनीयता ओकर तीक्ष्ण वक्तव्यसँ मात्र नहि, ओ जानकारीकेँ रोकबाक सामर्थ्यसँ बढ़ैत अछि, जे सार्वजनिक करब सहज होइत।

बच्चासभक नब नियमक जन्म

बैसारक बाद बच्चासभ निर्णय लैत अछि जे बिना परिजनक अनुमति कोनो नाम स्क्रीनपर नहि राखल जायत। जकर कोनो प्रत्यक्ष परिजन नहि, तकर नाम सामुदायिक सुननाइक अधीन रहत। ई नियम व्यक्तिक दुखक सार्वजनिकता आ सामूहिक दायित्व बीच सन्तुलनक प्रयास अछि। कथानक अतीतक शोकसँ संस्थागत प्रतिक्रियाक निर्माण दिस आगाँ बढ़ैत अछि। तथापि परिवारक भीतर असहमति, अज्ञात सम्बन्ध आ मृतकक स्वतन्त्र इच्छाक प्रश्न एखन अनुत्तरित रहैत अछि—आलोचनाकेँ एहि सीमाकेँ नोट करबाक चाही।

फोन उनटा रखबाक सामूहिक दृश्य

अनन्या फोन सभ नामक पाथरक बीच उनटा राखि दैत छथि। ई नान्हि दृश्य डिजिटल सत्ताकेँ शारीरिक रूपेँ उलटबैत अछि। स्क्रीनक चमक बन्द, पाथरक उपस्थिति खुलल; एतय तकनीकक सम्पूर्ण परित्याग नहि, ओकर अस्थायी अधीनता अछि। सामूहिक शपथ ‘नाम बेचल नहि जाएत’ प्रचारक नारा होएबासँ पहिने शरीरक एक क्रिया द्वारा समर्थित होइत अछि। पाथर आ मोबाइलक विरोध कथाक वस्तुगत व्याकरण गढ़ैत अछि।

अक्षरक खुरचनाइ : डिजिटल चोरीसँ भौतिक चोरी

अगिला भोर तीन नाम-पाथरक अक्षर धुँधला भेटैत अछि। पछिला चर्चा केवल ऐपक आलोचना नहि रहैत; ओकर असर ठूँठक स्थल धरि पहुँचैत अछि। कथावाचक चोरक पहचान तुरन्त नहि दैत; खुरचल पाथर, गरम सतह आ बूढ़बा भूतक चेतावनी माध्यमेँ नव रहस्य खोलैत अछि। ई विलम्बित कारणोद्घाटन पाठककेँ डिजिटल लाभ आ सामाजिक मेटाइ बीच सम्भावित सम्बन्ध जोड़ेबाक अवसर दैत अछि, मुदा चोरक ठोस पहचान एखन अज्ञात रहैत अछि।

लोकगीतक कार्य

आरम्भिक बालगीत बटन दबेबा पूर्व ठमकि सोचबाक अभ्यास सिखबैत अछि। मुख्य कथामे देविका ठीक ई विराम लैत छथि—फॉर्म पढ़ैत, नाम देखैत, फोटो नहि खींचैत, सार्वजनिक बैसारमे सीमित विवरण साझा करैत। गीतक

निर्देश कर्मक रूपमे परिणत होइत अछि। अन्तिम गीत ‘बटन’ आ ‘जेब’क व्यंग्यात्मक सम्बन्ध बनाबैत अछि, जाहिसँ डिजिटल शोकक लाभ-विपथ पाठकक स्मृतिमे टिकैत अछि।

सूचना-सत्ता आ दृष्टिकेन्द्र

अध्यायक प्रमुख सूचना देविकाक जाँच द्वारा पाठक धरि पहुँचैत अछि; चन्द्रपाल स्वयं सीमित सफाइ दैत अछि। एहि सीमित दृष्टिकेन्द्रसँ व्यवस्था क्रमशः खुलैत अछि आ ओकरा सर्वज्ञ कथावाचकक सूची मात्र बनबाक खतरा कम होइत अछि। किछु गोपनीय सूचनाक पाठकसँ रोकल जाएबो कथाक नैतिक शैलीसँ मेल खाइत अछि। कथावाचक आ पात्रक ज्ञानमे जानि-बूझि रखल सीमा रिपोर्टिङकेँ व्यवहारिक निर्णयक कहानी बनबैत अछि।

समापन : नामक मालिकाना प्रश्न

अध्याय ६८ निष्पन्न करैत अछि जे स्मृतिपर अधिकारक विवाद ऐपक तकनीकी सुधारसँ समाप्त नहि होएत। प्रश्न अछि—मृतकक नाम सार्वजनिक करबाक वैध निर्णयक केन्द्र कतय अछि? डिजिटल चिह्नक सहज प्रतिलिपि आ परिवारक दीर्घ शोकक बीच कथात्मक विरोध बनेल गेल अछि। अन्तमे पाथरक अक्षर मेटब अगिला ‘नामक चोरी’ प्रकरणक सकर्मक पूर्वभूमि बनैत अछि।

प्रकरण १७० | मूल अध्याय ६९ — नामक चोरी

अदृश्य अपराधक पहिल दृश्य

अध्याय आरम्भमे चेतावनी दैत अछि जे स्क्रीनपर पकड़ायल शोषण वास्तविक चोरीक उज्जर हिस्सा मात्र अछि। तकर बाद नाम-पाथर सभमे अक्षरक मेटाइ देखाओल जाइत अछि। वस्तु, लाल डोरी आ स्थान ओतहि अछि; केवल नाम अनुपस्थित। कथावाचक एतय अपराधक वस्तुकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि। चोरीक अर्थ सम्पत्ति हटेबासँ सामाजिक चिन्हारि, इतिहास आ सवाल उठेबाक सम्भावना मेटब बनि जाइत अछि।

पाथरक रिक्त सतह आ शोकक पुनर्जन्म

सरयू मण्डलक पाथर यथास्थान भेटैत अछि, मुदा ओकर कोरनाइ गायब अछि। ई दृश्य भौतिक रिक्तताक मार्मिक रूपक अछि। लोक पुनः एकटा मृत्यु जेकाँ अनुभव करैत अछि, कारण नामक सामाजिक अस्तित्व मेटाओल जा रहल अछि। कथामे शोक एक बेर घटना पर समाप्त नहि; अभिलेखक बदलाब सँ फेर जीवित होइत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ ‘दोसरी मृत्यु’क प्रसंग ठोस दृश्य पबैत अछि।

अभिलेखक परस्पर विरोध

डिजिटल सूचीमे सरयू ‘अप्रमाणित’, मजदूरक मृत्यु ‘अनुपलब्ध’, आ उज्ज्वलक घटना ‘स्वैच्छिक जोखिम’ रूपमे दर्ज देखाओल जाइत अछि। भिन्न भाषाक ई शब्द लोकक जीवित गवाहीक प्रतिपक्ष बनैत अछि। पाठक एहि क्षण कागचकेँ निष्पक्ष स्मरण-यन्त्र मानि नहि सकैत। कथावाचक खास-खास नामक तुलना करबैत अछि—सामूहिक उच्चारण आ संस्थागत अनामिकरण एके दृश्य-क्रममे समानान्तर चलैत अछि।

सौम्याक शीर्षक बदलनाइ

सौम्या ‘नामक चोरी’ लिखि फेर ‘नामक विरुद्ध संगठित विस्मरण’ लिखैत छथि। लिखनिहारक ई संकोच स्वयं कथा-वस्तु अछि। एकल चोरक अपराध आ सामूहिक संस्थागत मेटाइ दोसर स्तर छथि। शीर्षकक पुनर्लेखन विश्लेषणक बदलैत आकार प्रकट करैत अछि: घटना जतेक देखल गेल, ततेक एकरे नाम देबाक कठिनाई खुलल। लेखक आलोचनात्मक नामकरणकेँ घटनाक भीतर मंचित करैत छथि।

न्यासक पुनरावृत्त प्रस्ताव

बटुकनाथ हरिहरन फेर ‘व्यवस्थित’ लोक-स्मृति न्यासक प्रस्ताव राखैत अछि। जखन स्मृति पाथरपर नष्ट भऽ रहल अछि, तखन सुरक्षित संस्था चाही—ई तर्क सुनए विश्वसनीय बुझाइत अछि। मुदा तकर संग अध्यक्षता, स्वामित्व आ विशेषज्ञ नियन्त्रणक प्रस्ताव आवैत अछि। कथावाचक समस्या कैं द्वैध बनबैत अछि: लोक-स्मृतिक रक्षा लेल संस्था किछु स्तरपर आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा संस्था स्वयं कब्जाक माध्यम बनए सकैत अछि। नकार आ स्वीकृतिक सरल निष्कर्ष टारल गेल अछि।

अधूरा नामक सार्वजनिक अर्थ

अनन्या आ बच्चा सभ मानैत अछि जे अभिलेखमे अधूरा नामक स्थान रहबाक चाही। डिजिटल व्यवस्था पूर्ण पितृनाम, जन्मतिथि आ जाँचयोग्य आकड़ा माँगैत अछि; लोकक स्मृतिमे ककरो असल नाम अधूरा रहब स्वाभाविक अछि। प्रश्न ई नहि जे असमर्थित दाबी सभी मानि लेल जाए; प्रश्न ई अछि जे अनिश्चितताकेँ अभिलेखसँ बहिष्कृत किएक करब। कथामे ‘अधूरापन’ असुविधाजनक किन्तु आवश्यक साक्षी बनि उभरैत अछि।

चन्द्रपालक दूरस्थ निगरानी

चन्द्रपाल मोबाइल पर दृश्य ताकैत अछि, आ ओकर अनुप्रयोग ‘अमान्य नाम पुनर्सक्रिय’ कहि चेतावनी दैत अछि। गाममे नाम लोकक स्वरमे घुरैत अछि; शहरक यन्त्र एकरा त्रुटि मानैत अछि। ई समानान्तर दृश्य दुटा दृष्टिकेन्द्र स्थापित करैत अछि: सामुदायिक पुनर्स्मरण आ व्यवसायक नियन्त्रण। दूरस्थ डिजिटल निगरानी कथाक स्थान विभाजित करैत अछि, मुदा कारण सम्बन्ध राखैत अछि। नामक पुनः उच्चारण स्वयं ऐपक सीमा पर दबाव बनैत अछि।

पाथरक नीचाँ भीजल आकृति

सरयूक नामक पाथर उठाओल गेलापर नीचाँ पोखरिक नक्शा जेकाँ माटिक आकृति भेटैत अछि। ई दृश्य अगिला अध्यायक कथास्थलकेँ वर्तमान घटनासँ जन्म दैत अछि। लेखक ‘पोखरि जाउ’क सीधे आदेश नहि देइत; नामक अभाव नीचे छिपल प्रकृतिक चिह्नद्वारा बाट बतबैत अछि। जादुई यथार्थक ई धुरी स्थिर पाथरकेँ बहैत जलक कथा संग जोड़ैत अछि।

बूढ़बा भूत आ प्राकृतिक साक्षीक सम्भावना

बूढ़बा कहैत छथि जे मेटल नाम पानिमे रहि सकैत अछि। एहि वचनकेँ कथा भीतरक लोकविश्वास आ जादुई संकेत रूपमे पढ़बाक चाही; बाह्य वस्तुगत अभिलेखक सुनिश्चित विकल्प मानब उचित नहि। मुदा कथात्मक असर ठोस अछि: खोजक स्थान दफ्तरक कागचसँ पोखरिक कगार दिस बदलैत अछि। समाजक सत्यकेँ ककरा नजदीक पूछल जाए—ई चरित्रसभक दृष्टिमे बदलि रहल अछि।

गीतक पुनर्प्राप्ति-दृष्टि

आरम्भिक पनिघट गीत ‘मिटल नाम’केँ कमल बनि फेर उगबाक आशा देखबैत अछि। मुख्य कथामे नाम एखन भेटल नहि, मात्र ओकर सम्भावित ठामक संकेत भेटल अछि। आशाक लोकलय आ रहस्यक अपूर्ण परिणाम बीचक अन्तर प्रकरणकेँ जीवित रखैत अछि। गीत पूर्वनिर्धारित समाधानक भावनात्मक क्षितिज दैत अछि; घटनाक्रम ओहिठाम पहुँचे सँ पहिने कई स्तरक परीक्षण माँगैत अछि।

गोहिक रूपकक विस्तृत अर्थ

एहि अध्यायमे गोहि सीधे लोक पर हमला नहि करैत; ओकर भूमिका नाम मेटनिहार व्यवस्था, दस्तावेजी चुप्पी आ व्यावसायिक स्वामित्वमे वितरित अछि। पाथर बचल रहितो नाम मेटि जाएब भक्षक-शक्तिक अत्यन्त सूक्ष्म कार्य अछि। आलोचनाकेँ एहन रूपक पढ़ैत जीवित जलचरक प्राकृतिक अस्तित्वसँ मनुष्यक शोषणकेँ अलग राखबाक चाही। कथाक रूपक अनैतिक व्यवस्था पर अछि, वास्तविक पशुक नैतिक दोष पर नहि।

समापन : चोरीक प्रमाणसँ खोजक गति

प्रकरणक अन्तमे अनन्या ‘काल्हि पोखरि सुनब’ लिखैत छथि। ई वाक्य कथा-समयक स्पष्ट आगाँक बिन्दु बनैत अछि। पहिनेक अनिश्चित शंका सामूहिक अन्वेषणक निश्चयमे बदलैत अछि। चोरी समाप्त नहि, चोर पकड़ायल नहि; तइयो लोक स्वयं गवाहीक ठाम बदलि सक्रिय खोज शुरू करैत अछि। एही गतिसँ अगिला ‘पनिडुब्बीक गवाही’ प्रकरण अनिवार्य बनैत अछि।

प्रकरण १७१ | मूल अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

दस्तावेजसँ पोखरिक कगार धरि

अध्याय ६९क आखिरी वचन ‘पोखरि सुनब’ अगिला घटनाक क्रियात्मक आरम्भ बनैत अछि। राति भरिक नाम-संकट, बच्चा सभक बेचैनी आ बुझाइत-अनबुझाइत अक्षरक धुँधलापन लोककेँ पोखरि धरि लऽ जाइत अछि। स्थान-परिवर्तन अर्थवान अछि: अभिलेखक दफ्तर, ठूँठक पाथर आ मोबाइलक स्क्रीनक बाद जल स्वयं आख्यानक नव सतह बनैत अछि। स्थान केवल पृष्ठभूमि नहि, सूचनाक नब सम्भावना अछि।

पनिडुब्बीक लोक-उपस्थिति

पोखरिमे रहैत पनिडुब्बीकेँ लोक कखनो स्त्री, कखनो भूत, कखनो जीव मानैत अछि। एही अनिश्चितता पर जादुई यथार्थक प्रभाव टिकैत अछि। कथावाचक आरम्भमे एकरा स्पष्टीकृत प्राणीशास्त्रीय परिचय नहि दैत; लोकक बदलैत विश्वासक बीच ओकर उपस्थिति निर्मित होइत अछि। पनिडुब्बीक महत्त्व ओकर वर्गीकरण नहि, मेटल नामक गवाही देबाक भूमिका अछि। एतय लोकविश्वास समुदायकेँ फेर सुनबाक अवसर दैत अछि।

जलक लिपि : प्रतिबिम्ब आ अवशेष

बुलबुला, पात, माछक हलचल, चन्द्रमाक टुटल छवि आ भीजल माटि—ई सभ पनिडुब्बीक गवाहीक चिह्न बनैत अछि। अक्षरक स्थान सूक्ष्म घटनासभ लैत अछि। ई प्रकृतिक वैज्ञानिक भाषासँ लिखल रेकर्ड नहि, कथावाचक द्वारा रचल बहुअर्थी दृश्य-व्याकरण अछि। रजिस्टरमे ई चिह्न दर्ज कएल जाएब लोकक स्मरणक विस्तार अछि, ओहिसँ ककरो ऐतिहासिक दाबी स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत।

निजताक शपथ जलक नियम बनैत अछि

मीरा पोखरिक कगार पर पहिने स्पष्ट करैत छथि जे ककरो चेहरा वा रोदन बलजोरी देखाओल नहि जायत। पनिडुब्बी सेहो कहैत छथि जे दुखक प्रदर्शनी बननाइ नामक रक्षा नहि। एहि माध्यमेँ प्रकृतिक कथात्मक आवाज सामाजिक सहमतिक नियमकेँ पुनरुच्चारित करैत अछि। जादुई पात्र चरित्रसभक अनुभवकेँ लोप नहि करैत; ओ अनुभवक मर्मक विस्तार करैत अछि। निजताक सीमारेखा इहाँजल स्थलपर सेहो यथावत रहैत अछि।

सत्यव्रतक बोलब आ चुप होएब

सत्यव्रत मेहता पानिक प्रतिबिम्बक गवाहीक सम्भावना कहि पुनः चुप भऽ जाइत छथि। ओ पात्रक पुरान न्यायिक अधिकारक उपयोग नहि करैत, समुदायकेँ अर्थ-निर्णयक स्थान दैत छथि। हुनकर सीमित हस्तक्षेप कथनक गति सँ जुड़ल अछि: एक टिप्पणी गहिर प्रश्न खोलैत अछि, मुदा सार्वजनिक निष्कर्ष नथुनी नहि पहिरबैत। एहि सूक्ष्म बदलावसँ चरित्रक ‘दोसर मौन’क यात्रा आगाँ बढ़ैत अछि।

स्क्रीनक झूठ पानिपर टूटब

गोपक मोबाइलमे नकली दान-पृष्ठ स्वतः खुलि जाइत अछि; जखन ओ पानिमे प्रतिबिम्बित होइत अछि, अक्षर आ खाता विकृत माछ-जेकाँ भागैत बुझाइत अछि। दृश्य एकहिसंग जादुई चित्र आ डिजिटल धोखाक नैतिक रूपक अछि। स्क्रीनक स्थिर छवि पानिक बदलैत सतहपर अपन नियंत्रण खोबैत अछि। तकरा केवल तथ्य-जाँचक तकनीकी उपाय कहब गलत होएत; ई उपन्यासक अन्तर्गत संवेदनात्मक प्रतिवाद अछि।

लोकक श्रवणक सामूहिक अनुशासन

पोखरि लग लोक एक-एक नाम उच्चारैत अछि, परिवारक अनुमति राखैत अछि, आ जलक सूक्ष्म उत्तर ध्यानसँ देखैत अछि। एहि क्रममे सभा, अनुष्ठान आ बालखेलक तत्त्व जुड़ैत अछि। सामान्य दर्शकक भीड़ सँ भिन्न ई

समुदाय अपन दृष्टि रोकेबाक, कान खोलबाक आ अपूर्ण संकेत स्वीकार करबाक अभ्यास करैत अछि। पनिडुब्बीक ‘गवाही’ सुनबाक ई सामूहिक तैयारी बिनु कथात्मक अर्थ नहि पबैत।

बूढ़बाक सीमित मध्यस्थता

बूढ़बा भूत नरकटसँ निकलि साँस आ नामक सम्बन्ध फेर स्मरण करबैत छथि। ओ विवादक सर्वज्ञ निर्णायक नहि, लोकक खेलक पुरान नियमक संरक्षक छथि। हुनकर आवाज पात्रसभकेँ गवाहीक रहस्यक पूर्ण समाधान नहि दैत। उलटि पुनः कबड्डीक अभ्यासक आवश्यकता कहैत अछि। कथावाचक अलौकिक मध्यस्थकेँ मानव-समुदायक कार्यक विकल्प नहि बनबैत।

सामाजिक स्मृतिसँ प्राकृतिक स्मृति धरि

नामक चोरी पहिने डिजिटल आ शासकीय अभिलेखमे देखाओल गेल; आब पानि, माछ, पात आ चन्द्रमाक प्रतिबिम्बमे सन्दर्भ भेटैत अछि। ई बदलाव जीव-जगतकेँ मानवीय स्मृतिक साझेदारक रूपमे कथात्मक स्थान दैत अछि। पर्यावरण एतय केवल सुन्दर छायाचित्र नहि; ओ कहानी-समयमे पुराना घटनाक सम्भावित वाहक अछि। तथापि जलक संकेत सभ एकरेखीय अर्थ नहि, बहुअर्थी व्याख्याक निमन्त्रण अछि।

महोत्सवक पोस्टर : शोषणक तुरन्त प्रतिआक्रमण

अगिला बिहान ‘भूत-कबड्डी महोत्सव’क चमकदार पोस्टर देखाओल जाइत अछि। पिछला रातिक गहिर सामुदायिक सुननाइ केँ अगिला दिन ‘अद्भुत लोक-अनुभव’ बनाकऽ बेचनाइ—ई समय-संघर्ष अध्यायक आलोचनात्मक केन्द्र अछि। पूँजी एतय लोकक प्रतिरोधकेँ नष्ट करए मात्र नहि चाहैत; ओकर लोकप्रिय रूपक नकल कऽ ओकरा बजारमे घुरा अनब चाहैत अछि। कथा प्रतियोगी स्मरण-प्रणालीसभक दौड़ स्पष्ट करैत अछि।

आरम्भिक गीत आ अनिर्णीत गवाही

‘झोँटासँ मुक्त नाम’ गीत मुक्तिक आशा जगबैत अछि; मुख्य कथा चिन्हक अनेकता आ अर्थक अनिश्चितता राखैत अछि। एहि द्वैधतासँ लोक-आशा आ आलोचनात्मक सावधानी दुनू आवश्यक बनैत अछि। गीत भविष्यक सामुदायिक कामकेँ लय दैत अछि, मुदा घटनाक अकाट्य अभिलेख नहि। कथाकार द्वारा रचल ई दूरी जादुई दृश्यकेँ सरल तथ्य-घोषणाक रूपमे पढ़बाक विरुद्ध आलोचनात्मक अवसर अछि।

परिणाम : गवाहीक बादो जोखिम

पनिडुब्बीक आवाज सुनलाक बाद नामक संकट पूर्णतः समाप्त नहि भेल। मूल अपराधक ठोस जिम्मेदारसभ अप्रकट छथि, स्मृतिक खरीदारी नब पोस्टरक रूपमे लौटि आयल अछि। एतय उपलब्धि सामुदायिक सुननाइक विस्तार अछि; सीमितता दस्तावेजी न्याय आ आर्थिक शक्तिक निरन्तरता अछि। अगिला ‘नकली भूतक जुलूस’ एहि उपलब्धिकेँ अभिनयक बजारमे कसौटी पर राखत।

प्रकरण १७२ | मूल अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

खरिदल धुँआ आ भूतक सार्वजनिक अभिनय

नगरपालिकाक अनुमति-पत्र, नकली धुँआ, मेकअप, प्रकाश-यन्त्र आ पाँच कलाकार सभसँ महोत्सवक आरम्भ होइत अछि। पिछला अध्यायक पोखरिक अनिश्चित गवाही आब मंचक निश्चित ‘अनुभव’ बनि बिकबाक तैयारीमे अछि। कथावाचक कृत्रिम धुँआक साधन देखबैत अछि, जाहिसँ दर्शक नहि, पाठक पहिने जानि लैत अछि जे भूतक प्रदर्शन योजनाबद्ध अछि। ई नाटकीय विडम्बना अछि: प्रदर्शनक भीतरक लोकक बुझाइक गति आ पाठकक जानकारी अलग होइत अछि।

आयोजकक विकासक वादा

आयोजक रोजगार, पर्यटन आ स्मृतिक प्रचारक भाषा बाजैत अछि। एहि दावाकेँ कथावाचक तुरन्त प्रशासनिक निर्णयक बदला व्यक्तिगत प्रश्नसँ टकरबैत अछि। मीरा पूछैत छथि जे मृतकक परिवारक अनुमति लेने अछि कि नहि। आयोजक स्वीकार करैत अछि जे ओ नाम नहि लेत, केवल ‘वातावरण’ बनाओत। एहि उत्तरमे विस्मयकर छेद अछि: नाम लेल बिना सेहो दुखक प्रतिरूपकेँ बेचल जा सकैत अछि। कथामे शोषणक अगिला रूप व्यक्ति नहि, ओकर दर्दक सजावटी ‘परिवेश’ बनबैत अछि।

अनन्याक न रुकाबैक निर्णय

ईरा जुलूस रोकबाक सम्भावना पूछैत छथि, मुदा अनन्या पहिने देखबाक निर्णय लैत छथि। ई महत्वपूर्ण कथात्मक चयन अछि। समुदाय तत्काल निषेध नहि, प्रदर्शनक भीतरक विफलता देखबाक बाट चुनैत अछि। एतय बच्चा सभ खेलक भाषा सँ प्रतिरोधक नब विधि सीखि रहल अछि। तदपि ई निर्णय जोखिमरहित नहि; नकली आयोजन मृतकक स्मृतिकेँ आहत कऽ सकैत अछि। कथा एहि असुविधाकेँ नहि मेटैत।

कृत्रिम साँस आ असल कबड्डीक लय

नकली भूत सभ कबड्डीक आवाज निकालैत अछि, मुदा साँस जल्दी टूटि जाइत अछि। जकरा समुदाय पहरा आ नामक लय बनौने अछि, से पर्यटनक प्रदर्शनमे तकनीकी ध्वनि बनि रहि जाइत अछि। साँसक टूटब अभिनेता-व्यवस्थाक असङ्गतिक प्रतीक अछि। ओ बिना पीड़ाक स्मरणक नाम-पहरा निभाबय नहि सकैत। एना खेलक जादुई रूपकेँ नकल द्वारा अधिग्रहित करबाक प्रयास स्वयं अपूर्ण दिखाओल गेल अछि।

स्क्रिप्टक बाहर पहिल असल नाम

एक कलाकारक पएर उघार जड़ि पर पड़ैत अछि, आ ओकर मुँहसँ लिखल संवादक बदला खदानमे मरल बाबूक नाम निकलि जाइत अछि। ई अध्यायक निर्णायक घटना अछि। खेलक कृत्रिम मंच अचानक वास्तविक श्रम-स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। घटना अलौकिक स्पर्शक रूपमे देखायल, मुदा नामक सामाजिक आधार कलाकारक अपन पारिवारिक पीड़ा अछि। पटकथाक परिधान भंग होएबाक समय कथावाचक नवीन वक्ता जन्मबैत अछि—भाड़ापर नचाओल देह स्वतन्त्र साक्षी बनैत अछि।

बहुवचन गवाहीक क्रमिक उद्‌भव

पहिल कलाकारक बाद दोसर मायक पेंशन-सूचीसँ मेटल नाम, तेसर अस्पतालक बिल आ नाच-शिक्षक अपन दबल प्रेमक कथा कहैत छथि। अलग-अलग जीवन-परिस्थिति एकहि मंचपर परस्पर जुड़ैत अछि। ई दृश्य सूची-जेकाँ देखाइ सकैत अछि, मुदा क्रमक कारणेँ कार्य-परिवर्तन स्पष्ट अछि: अभिनय अब पीड़ा-मुक्त प्रदर्शन नहि रहि, स्वतःस्फूर्त गवाहीमे बदलैत अछि। प्रत्येक नब स्वर आयोजकक ‘स्क्रिप्ट सँ बाहर नहि जाउ’ आदेशकेँ कमजोर करैत अछि।

जुलूसक भीतरक नाटकीय उलटब

आयोजकक आशय दर्शककेँ भयक दृश्य देब छल; कलाकार अपन जीवनक सत्य कहए लगैत छथि। एहि उलटबमे कथा प्रदर्शनकेँ भीतरसँ प्रतिरोधक स्थल बनबैत अछि। बाहरी मंच हटाओल नहि गेल, ओकर कथन-अधिकार बदलल गेल। ‘नकली’क परिभाषा अभिनेता पर नहि टिकैत; नकली ओ स्क्रिप्ट अछि जे दुखकेँ मनोरंजनमे बदलए चाहैत छल। अभिनेता स्वयं सत्यक वाहक बनि सकैत छथि।

असल भूतक अनुपस्थित-साक्षी भूमिका

बा कहैत छथि जे असल भूत सभ पानिक कगार पर बैसि देखैत रहलाह, क्रोधित नहि भेलाह। कथावाचक स्वयं एहि दृश्यकेँ निश्चित प्रत्यक्ष घटना रूपमे बन्द नहि करैत। एही कथित दृश्यसँ भूतक भूमिका बदलैत अछि: पहिने ओ लोककेँ खेल सिखबैत छल, आब लोक अपन दुःखक नाम स्वयं कहए लगैत अछि। पुरान अलौकिक पहरुआ मानवीय साक्षीक जन्म देखैत रहल—ई आख्यानक संरचनात्मक प्रगति अछि।

अनन्याक प्रतिक्रिया : दण्ड नहि, पहराक शिक्षा

अनन्या कलाकारसभकेँ भगबैत नहि; कहैत छथि जे अभिनय झूठ छल, मुदा कहल नाम साँच। एहि भेदसँ पात्र सामुदायिक न्यायक नव रूप गढ़ैत अछि। दोषकेँ सरल व्यक्ति-विरोधी घोषणा बनाओल नहि गेल, ओकर अनुभवक रचनात्मक परिवर्तन सम्भव मानल गेल अछि। कला आ जीवनक सम्बन्ध पुनर्स्थापित होइत अछि, मुदा भुगतान-आधारित शोषणक आयोजक निष्पाप साबित नहि भऽ जाइत।

बनावटी कपड़ाक भार

कार्यक्रमक अन्तमे कलाकारसभ कारी पोशाक उतारि नाम-पाथर लग राखैत छथि। कपड़ा हलुक अभिनय-वस्त्रसँ भारी भीजल वस्तु बुझाइत अछि। ई भौतिक रूपकसँ नाटकक समाप्तिक बादो पीड़ाक भार टिकैत अछि। कलाकार अभिनय छोड़ि देलथि, मुदा पिताक मृत्यु, मायक नाम-लोप आ प्रेमक भय अचानक नहि मेटल। कथा नाटकीय रहस्योद्घाटनसँ तुरन्त क्षमा वा समाधानक सरलीकरण नहि करैत।

हँसैत गाछी : अन्तिम ध्वनिक परिवर्तन

मध्यरात्रि ठूँठक भीतरसँ रोदन वा हवा नहि, हँसीक ध्वनि उठैत अछि। बा एकर अर्थ बतबैत छथि—जखन स्मृति बिकबाक प्रयास करितो बचि जाइत अछि, तखन गाछि हँसैत अछि। ई कथात्मक ध्वनि भय-संचालित भूतक

कबड्डीसँ स्वायत्त प्रतिरोधक अगिला अवतार दिस संकेत करैत अछि। ध्वनिक स्रोत अनिश्चित राखल गेल अछि; ओकर अर्थ सामुदायिक अनुभवसँ बनैत अछि। एहि प्रकारेँ एक अध्यायक अन्त अगिला अध्यायक शीर्षककेँ जन्म दैत अछि।

समापन : नकलीसँ साँचक पुनरुद्धार

अध्याय ७१क निष्कर्ष पर्यटनक नकली जुलूसक पराजय मात्र नहि। गवाहीक अधिकार आयोजकसँ कलाकार आ बालसमुदाय लग घुरैत अछि। अभिनयक शर्त बदललाक बाद तमाशा स्मरणक द्वार बनि जाइत अछि। सामाजिक परिणाम अपूर्ण—नगरपालिकाक अनुमति, लाभक जाल आ दानक प्रस्ताव अबहियो कायम—तैयो हँसैत ठूँठ प्रतिरोधक नव कथावृत्त खोलैत अछि। एहि नादसँ अगिला अध्याय ७२ ‘चन्ना गाछीक हँसी’क सहज, प्रत्यक्ष कथात्मक प्रवेश होइत अछि।

आगाँक समीक्षा : मूल अध्याय ७२–९१

आलोचनात्मक प्रकरण १७३–१९२

अनुक्रम

प्रकरण १७३ · अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

प्रकरण १७४ · अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

प्रकरण १७५ · अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

प्रकरण १७६ · अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

प्रकरण १७७ · अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

प्रकरण १७८ · अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

प्रकरण १७९ · अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

प्रकरण १८० · अध्याय ७९ — बूमक दान-पत्र

प्रकरण १८१ · अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

प्रकरण १८२ · अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

प्रकरण १८३ · अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

प्रकरण १८४ · अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

प्रकरण १८५ · अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

प्रकरण १८६ · अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

प्रकरण १८७ · अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

प्रकरण १८८ · अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

प्रकरण १८९ · अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

प्रकरण १९० · अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

प्रकरण १९१ · अध्याय ९० — नामक संविधान

प्रकरण १९२ · अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

प्रकरण १७३ | मूल अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

पूर्ववर्ती जुलूससँ हँसी धरि कथात्मक संक्रमण

अध्याय ७१क नकली भूत-जुलूसक भण्डाफोड़ यहाँ ठूँठक हँसीमे रूपान्तरित होइत अछि। प्रदर्शनक असफलता कथाकेँ समापन नहि दैत; ओकरा बाद सामूहिक सुनवाईक नव चरण खुलैत अछि। हँसीक स्रोत पवन, कोटर आ अलौकिक उपस्थिति—तीनू सम्भावनाक बीच रहैत अछि। कथावाचक कारण तय नहि करैत; एही स्थगनसँ चन्ना गाछी घटनास्थलसँ विवादित कथात्मक साक्षी बनैत अछि। पाठक स्वयं पूछैत रहैत अछि जे हँसी सुनल गेल कि ओकर सामाजिक अर्थ रचल गेल।

बाल-पञ्जीक शीर्षक आ आत्मकथात्मक स्थल

बच्चा सभक रजिस्टरमे 'चन्ना गाछीक हँसी' शीर्षक चढ़ैतहि स्थल मानो अपन कथा स्वयं कहए लगैत अछि। ई प्रत्यक्ष घटनाक ऊपर अभिलेखनक एक आरो परत अछि। बच्चा लेखक, सम्पादक आ श्रोता—तीनू भूमिकामे उपस्थित छथि। एतय नायकक अधिकार एक गोटे सँ हटि पञ्जी रचैत समूहक हाथमे आबैत अछि। अध्याय ई नहि कहैत जे रजिस्टर मात्र वर्णन रखैत अछि; ओ घटनाकेँ सामुदायिक स्मृतिक चलैत रूप दैत अछि।

ठूँठक ध्वनि : मानवेतर कर्तृत्वक निर्माण

कटायल गाछ जीवित पात्र बनैत अछि, मुदा ओकर कर्तृत्व 'चमत्कार' कहि खारिज करब उचित नहि। सूक्ष्म कंपन, पाथर पर रेखा आ पवन रुकलापर आवाजक रहि जाएब—ई तीन भौतिक संकेत कथावाचक अलग-अलग देखबैत अछि। जड़ि बचबाक भाव बादमे कोंपलसँ जुड़ैत अछि। गाछिक कथात्मक उपस्थिति मनुष्यक सुनबाक अभ्यास बदलैत अछि; तैं ई पर्यावरणीय पृष्ठभूमि नहि, स्मृति बचेनिहार सक्रिय स्थान बनि जाइत अछि।

अनन्या आ बाकर भिन्न श्रवण-दृष्टि

अनन्या गाछिक हँसीकेँ उत्तर बुझैत छली, बा ओकरा पीड़ाक अस्वीकारक आवाजसँ जोड़ैत छलीह। दुनू कथन अलग अनुभवक भाषा अछि: पहिलमे संवादक सम्भावना, दोसरमे शोषण-विरोधी स्मृति। कथा एहि भिन्नताकेँ मेलाबय लेल कोनो सर्वज्ञ निर्णायक नहि अनैत। संवादक छोट आकार लोकानुभवक दू इतिहासकेँ एकहि ठूँठ लग उपस्थित करैत अछि, जाहिसँ पाठकक ध्यान ध्वनिक कारणसँ ओकर ग्रहणक सामाजिक स्थितिपर सरकैत अछि।

पाथरक अक्षर बदलबाक दृश्यगत अस्पष्टता

किछु अक्षरक गाढ़ होएब आ अधूरा नामक कात नव बिन्दु देखाएब दृश्यकेँ अनिश्चित बनबैत अछि। घटनाक भीतर ई परिवर्तनक विशिष्ट प्रत्यक्ष कथन अछि, मुदा बाहरी वैज्ञानिक सत्यापन नहि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एकर काम नामक अपूर्णता देखाएब अछि। जकर नोंद अधूरी, ओकर स्मृति स्थिर कहि नहि मानल जा सकैत। पाथरक सतहपर नव चिह्न कथाक नैतिक असुविधाकेँ देह प्रदान करैत अछि।

सौम्याक बन्द कएल कापी : उद्धरणक अधिकार

कम बजैत बालिकाक उत्तर शोध-पत्रमे लिखबाक अवसर देखिते सौम्या अनुमति माँगैत छली। बालिका पूछैत अछि जे पढ़निहार सुनतो की। सौम्या कापी बन्द करैत छली; एहि मौनमे कथाकार आलोचक, शोधार्थी आ कथालेखकक प्रतिनिधित्व-अधिकारकेँ प्रश्नमे राखैत अछि। लेखनक चतुर उद्धरण सुनबाक नैतिक जिम्मेदारीक स्थान नहि लऽ सकैत। ई दृष्य उपन्यासक अपन रचनात्मक पद्धतिक आत्मसमीक्षा जेकाँ सेहो पढ़ल जा सकैत अछि।

अनुप्रयोगक असफल ध्वनि-ग्रहण

चन्द्रपालक दल ठूँठक ध्वनि गोपनीय रूपेँ सुरक्षित करए चाहैत अछि, मुदा रेकॉर्डमे खालीपन अबैत अछि। सुननिहार प्रत्येक आदमी ओकरा भीतर अपन अपराधसँ जुड़ल अलग शब्द सुनैत अछि। ई कथा-कला द्वारा तकनीकी वस्तुनिष्ठताक विफलता रचल गेल अछि, न कि असल यन्त्रविज्ञानक प्रतिपादन। ध्वनि बेचनाइ असम्भव बनिते डिजिटल वस्तुकरणक कथा स्वयं अपना विरुद्ध साक्ष्य बनि जाइत अछि। शून्य रेकॉर्डक भीतर बहुस्वर आरोप सुनबाक विरोधाभास अध्यायक विशेष जादुई-यथार्थवादी युक्ति अछि।

राघवक बदलैत कोड : सूचना पर भाषाक प्रतिरोध

राघव भीड़-जोखिम आ कथा-नियन्त्रणक कूटबद्ध सूचना लिखैत अछि, मुदा शब्द बारम्बार कथा-प्रतिकार भऽ घुरैत अछि। एहि घटना मे कोड पर नियंत्रणक दावा कथालेखनक स्वतन्त्रता सँ टकराइत अछि। पाठक यन्त्रक त्रुटि नहि, भाषाक नाटकीय प्रतिरोध देखैत अछि। तीन बेर मेटबाक क्रिया एकहि संकेतकेँ आवृत्त करैत अछि; आवृत्तिसँ भयक तीव्रता बढ़ैत अछि। एहि दृश्यसँ आगामी नेटवर्क-विच्छेदक कथा पहिनहिये संकेतित होइत अछि।

ब्रूमक ध्वनि-पर्यटन : उपचारक व्यापारिक रूप

ब्रूमक सलाहकार 'सामुदायिक उपचार' आ 'स्मृति-पर्यटन'क आकर्षक शब्दमे हँसीकेँ परियोजना बनाबय चाहैत अछि। रिपोर्टक तकनीकी नामकरण आ ब्रूमक निजी श्रवण बीच असङ्गति अछि। हार्वर्डक भाषणक तालीमे ओकरा ठूँठक हँसी सुनाइत अछि, कॉफीक स्वाद माटि जेकाँ लगैत अछि। एहि निजी संवेदनासँ संस्थागत शब्दक चमक पर दरार पड़ैत अछि। कथा लाभक भाषा पर सीधा उपदेश नहि, अनुभवक विकृति द्वारा प्रहार करैत अछि।

मीराक सूचना : प्रतिरोधक प्रतिलिखित घोषणापत्र

मीरा कहैत छली जे हँसीक कोनो मालिक नहि, मृतकक वेदना आ जीवितक गवाही बिकाऊ नहि। ई वक्तव्य घटनाक भीतर ठूँठ लग टँगैत अछि, अर्थात् प्रतिरोध सेहो सार्वजनिक लिखित पाठ बनैत अछि। स्मारक-कम्पनीक

अनुबन्ध आ समुदायिक घोषणापत्र एकहि स्थानपर प्रतिस्पर्धी लेखन छथि। मीराक निजता-सम्बद्ध दृष्टि पहिलक छवि-दुरुपयोगक प्रसंग सँ एक लम्बा कथावृत्त बनबैत अछि; एहि कारण ओकर स्वर आकस्मिक नारा नहि रहैत।

पत्रकारक प्रश्न आ बहुकथात्मक केन्द्रीयता

पत्रकार 'गाछि सचमुच हँसैत अछि?' पूछैत अछि; अनन्या 'सत्य कि तमाशा?' कहि प्रश्नक चौखटा बदलि दैत छली। दोसर पत्रकार मुख्य कथा माँगैत अछि, मुदा बालक अनेक नामक आग्रह करैत अछि। ई प्रसंग कथानकक केन्द्रीयताक दावाक प्रत्यक्ष समीक्षा अछि। उपन्यास एकटा शीर्षकमे सबहक कथा समेटबाक सुविधाकेँ अस्वीकार करैत अछि। खाली घुरल नोटबुक पत्रकारिता-विरोध नहि, सुनबाक प्राथमिकताक नव बोधक प्रतीक बनैत अछि।

कबड्डीक साँस आ स्मृतिक साझा लय

नकली धुँआक बदला खेलाड़ीक साँसक वास्तविक भाप दिस ध्यान मोड़ल गेल अछि। पुरान भूत-कबड्डीक खेलाड़ी स्मृतिमे साँस बाँटबाक नियम सिखबैत अछि। 'बचि गेल'क सट्टा 'सुनि एल' कहब परिणामक शब्दावली बदलैत अछि: खेलक विजयसँ सामाजिक सुनवाई धरि। भूतक अर्धदृश्य उपस्थिति, चन्द्रमाक कुहास आ नामक पंक्तिपर पएर पड़बाक छवि लोककथा आ इतिहासकेँ एकहि देहगत लयमे राखैत अछि।

कोंपलक कान बनब : बिम्बक रूपान्तरण

ठूँठक हरियर बिन्दु कने पसरैत अछि आ नव पातक आकृति कान जेकाँ बनैत अछि। ई वृद्धि तत्काल हरियालीक चमत्कारी समाधान नहि, सुनबाक रूपकक वनस्पतिक विस्तार अछि। पात बनबाक पहिने कान बनब कथाक क्रम बदलैत अछि: पहिने संवेदनशील श्रवण, तखन जीवनक दावा। एहि चित्रक सफलता एहि बातमे अछि जे पर्यावरणक वापसी आ सामाजिक उत्तरदायित्व अलग-अलग दृश्य नहि रहैत।

स्वप्न-दरबार दिस अन्तिम कथात्मक हस्तान्तरण

अध्यायक अन्तमे बटुकनाथक छातीमे ठूँठ उगैत अछि आ स्वप्नमे ओकरा अपन न्यासक सुनवाईक आह्वान भेटैत अछि। बाहरक सामूहिक संघर्ष भीतरक आत्म-संघर्षमे प्रवेश करैत अछि। अन्तिम वाक्य अगिला अध्यायक घटनाकेँ स्पष्ट बनबैत अछि, मुदा एखन न्याय-परिणाम नहि कहैत। एहि क्रमिक हस्तान्तरणसँ उपन्यास एकहि मूल बिम्बकेँ नगरपालिका, डिजिटल बाजार आ निजी अन्तःकरण तीनू क्षेत्रमे कार्यशील राखैत अछि।

प्रकरण १७४ | मूल अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

पूर्वाध्यायक अन्तिम स्वप्नक विस्तार

अध्याय ७२मे बटुकनाथक छातीमे उगल ठूँठ एहि अध्यायमे विस्तृत स्वप्न-दरबार बनैत अछि। ई अचानक अलग प्रसंग नहि: पहिल हँसी, न्यासक मसौदा आ बालकसभक प्रश्नक क्रमानुगत विस्तार अछि। कथाक बाहरी गति एक रातिमे सीमित रहैत अछि, मुदा बटुकनाथक स्मृति आ भय बहु-वर्षीय समय घुमबैत अछि। एहि संकुचन-विस्तारसँ मनोवैज्ञानिक कथा बाहरी मुकदमाक बखानसँ बेसी घनघोर होइत अछि।

न्यास शब्दक दृश्य-उलटफेर

बटुकनाथ लोक-स्मृति न्यास लिखिते स्याही पोखरि जेकाँ पसरब देखैत अछि। धारा, पद आ कोषक अक्षर पातमे बदलैत अछि। ई कागचक कथात्मक रूपान्तरण स्मृति पर संस्थागत मालिकानाक लालसाकेँ उद्घाटित करैत अछि। लेखक कानूनी पदक वैध अस्तित्वकेँ नहि, ओकर दुरुपयोगी नियन्त्रणक आकांक्षाकेँ संकटमे राखैत छथि। पन्नाक पात बनब आ मेजक ठूँठ बनब दृश्य वस्तुसँ नैतिक वातावरण धरि संक्रमणक तकनीक अछि।

जागरण आ स्वप्नक झिझकैत सीमा

निन्नमे प्रवेशसँ पहिने हँसी, स्याही आ कागजक रूप बदलबाक दृश्य अबैत अछि; निन्नक बादो मसौदाक अक्षर बदलल भेटैत अछि। एहि कारण 'ई केवल सपना छल' कहि सम्पूर्ण विचित्रताकेँ हटाओल नहि जा सकैत। कथा स्वप्न-अनुभव आ जागल वस्तुक बीच जानि-बुझि लकीर अधखुलल छोड़ैत अछि। एहि अनिश्चिततासँ पाठक निश्चयक बजाय बटुकनाथक अनुभवक दबावमे प्रवेश करैत अछि।

सभागारक स्थापत्यक नाटकीय विघटन

बार काउंसिलक ऊँच कुर्सी जड़ि बनैत अछि, सम्मानपत्र पात बनि झरैत अछि आ पालिशदार मेज भीजल छालमे बदलैत अछि। शक्ति-स्थलक भूगोल जड़ि आ माटिक भूगोलक सामने परास्त होइत अछि। दृश्य चलचित्र-जेकाँ तेज, मुदा अर्थ गहींर: कचहरीक उँच स्थान पर कथावाचक लोकजीवनक नीचाँ दबायल समय फेर स्थापित करैत अछि। गन्धक परिवर्तनसँ दृश्य केवल सजावट नहि, इन्द्रियगत विस्थापन बनैत अछि।

गंगेशक स्वप्न-पात्र : आख्यानक भूमिकाक सीमा

गंगेश स्वप्नमे नित्य ऐतिहासिक व्यक्तिक सीधा वृत्तान्त नहि, बटुकनाथक अपराधबोधसँ निर्मित प्रश्नकारी पात्रक रूपमे अबैत छथि। हुनकर कथित जीवनप्रसंग, जाति-संघर्ष आ विवाहक उल्लेख पाठकसँ सत्यापित इतिहासक समानता माँगि नहि सकैत; ई स्वप्न-कथनक भीतरक सामग्री अछि। आलोचनाक विषय एतय गंगेशक ऐतिहासिक प्रमाण-परीक्षा नहि, स्वप्नमे हुनकर आवाजक अधिकार आ बटुकनाथक मनपर पड़ैत कथात्मक प्रभाव अछि।

जातिक बाड़ : दृश्य-रूपकमे सामाजिक अनुक्रम

स्वप्न-दरबारमे ब्राह्मण-चर्मकारक ऊँच-नीच कैं बाड़ आ चौकीक ठोस रूप भेटैत अछि। चर्मकारणी स्त्री बाड़क बाँस उखाड़ैत छली; ओ तर्कक मौन विषय नहि, दृश्य बदलनिहार कर्ता छथि। एहि नाटकीय क्रियासँ उपन्यास जातिक अमूर्त विचारकेँ स्पर्शयोग्य संरचना बनबैत अछि। बटुकनाथक डर सेहो एहि बाड़सँ जुड़ैत अछि; समाजक विभाजन ओकरा अपन रक्षा-व्यवस्था जेकाँ लगैत अछि।

जीवनी-सम्पादनक स्वप्न आ सम्मानक विरोधाभास

स्वप्नमे दू साहित्यिक नामक छाह गंगेशक जीवनक असुविधाजनक अंश काटबाक दृश्य रचैत अछि। एकरा वास्तविक लेखकसभक बाहरी कृत्यक प्रमाण नहि मानल जाए; प्रसंग कथाकारक स्वप्न-दृष्टि अछि। 'मूर्ति बचल, मनुष्य कटि गेल'क विरोधाभास एहि दृश्यक कथात्मक केन्द्र अछि। जीवनकेँ आदर्श प्रतिमामे बदलैत समय असमानता आ विद्रोहक अंश छाँटि देबाक प्रक्रियापर उपन्यास स्वप्नक भीतर आलोचना करैत अछि।

अभियोजनक एक आरोप आ मुकदमाक अनेक ऋण

बटुकनाथक विरुद्ध आरोप-पत्र अनेक अपराधक सूचीसँ सघन एक आरोपमे बदलैत अछि: पेशाक नामपर न्यायसँ विमुखता। एहि एकाग्रतासँ दृश्य अदालतक तर्क-वितर्क नहि रहि चरित्रक नैतिक आत्मसुनवाई बनैत अछि। विधवाक बिकायल गहना, गवाहक मृत्यु, स्थगनक तिथि आ गरीबक प्रतीक्षा दृश्यरूपमे उठैत अछि। सूक्ष्म परिणामक ई शृंखला फाइलक निर्जीव समयकेँ मानवीय क्षतिमे रूपान्तरित करैत अछि।

समूहक 'उपस्थित' स्वर आ प्रतिपक्षी कथन

ठूँठ, बच्चा, बा, मीरा, देविका, आरुणि, सत्यव्रत आ अन्य आवाज स्वप्नमे 'हम उपस्थित छी'क संयुक्त लय बनबैत अछि। औपचारिक बचावक भाषाक संग ई अल्प वाक्य सामूहिक प्रतिकथन रचैत अछि। एतय गवाहीक विविधता महत्वपूर्ण अछि; कोनो एक पात्र सबहक स्थानपर नहि बजैत। पाठक साक्ष्यक परिभाषा नहि, अनुपस्थित आवाजकेँ कथामे आसन भेटबाक संरचनात्मक घटना देखैत अछि।

बाल्यस्मृति : न्यायव्यवहारक पूर्व-इतिहास

बटुकनाथकेँ अपन घरक अलग लोटा, पाठशालाक बाहर बैसल बच्चा आ मातृनिषेध मोन पड़ैत अछि। अदालतक वर्तमानक जड़ि बचपनक सामाजिक अनुशासनमे धँसल देखाओल जाइत अछि। ई पश्चादवलोकन चरित्रक दुष्टता सरल जन्मजात गुण नहि मानैत; ओकर सीखल व्यवहारक ऐतिहासिक पुनर्रचना करैत अछि। मुदा कारण देखाएब क्षमा नहि अछि। अध्याय ओकर वर्तमान पेशागत निर्णयक उत्तरदायित्व यथावत् राखैत अछि।

नामक पाथर लऽ आयल बालिकाक प्रश्न

स्वप्नमे बालिका, जे अनन्या होइयो सकैत छली अथवा हुनकर छाह, न्यासमे बहिष्कृत व्यक्तिक स्थान पूछैत अछि। पात्र-पहिचानक ई धुँधलाहट स्वप्नक विधि सँ मेल खाइत अछि। बालिका वैयक्तिक मनुष्यक बदला नाम-पहरा समूहक सम्मिलित आवाज बनैत छली। बटुकनाथक उत्तरहीनता एहि दृश्यक निर्णय अछि; कथावाचक दण्ड घोषित नहि करैत, सुनबाक असमर्थताकेँ उजागर करैत अछि।

कबड्डीक सीमा आ टूटल साँस

दरबारक छत पर खेलक रेखा चमकैत अछि; बूढ़बा भूत बटुकनाथकेँ सीमा पार करबाक चुनौती दैत छथि। ओकर मुँहसँ पूर्ण 'कबड्डी' नहि निकलैत, साँस अटकि जाइत अछि। ई शारीरिक विफलता वकालतक प्रवाहमय भाषाक विरुद्ध सघन प्रतीक अछि। जे दोसराकेँ खेलसँ बाहर करैत छल, ओ स्वयं आवश्यक लय नहि निभा पबैत अछि। सांसक ई बिम्ब अगिला स्वीकारक दबाव लेल रूपात्मक आधार बनैत अछि।

जागल मसौदा : सुधार वा छद्म-रूपान्तरण?

जागलापर पदनामक ठाम 'अन्तिम श्रोता', कोषक ठाम बच्चा सभक पहरा आ सम्पत्तिक ठाम अविक्रेय स्मृतिक वाक्य देखाइत अछि। मुदा बटुकनाथक पुरान चतुराई नष्ट भेल अछि, एहन कथावाचक नहि कहैत। स्वप्नक पाठपरिवर्तनक बादो व्यवहारिक सुधार अनिश्चित अछि। ई अपूर्ण चरित्र-विकास उपन्यासक नैतिक जटिलता बढ़बैत अछि; पश्चात्तापक कल्पना आ सचमुच उत्तरदायित्व लेबाक काम अलग छथि।

आलमारीक चन्द्रपाल-नोट आ अगिला अपराधी

पुरान फाइल खोलिते 'स्मारक-अनुप्रयोग सुरक्षित' लिखल चन्द्रपालक पर्ची भेटैत अछि। स्वप्नक बाद ई वास्तविक कागज कथा-प्रवाहकेँ ठोस अगिला पात्र धरि लऽ जाइत अछि। ठूँठक हँसी तारक अदृश्य डोरी सँ चन्द्रपालक स्क्रीनमे प्रवेश करैत अछि। बाहरी कथा आ आन्तरिक अनुभवक बीच एहि कड़ीसँ प्रकरण ७४क पूर्वसूचना निर्मित होइत अछि; स्वप्न अलग उपकथा बनि नहि रहैत।

प्रकरण १७५ | मूल अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

परिवेश : ठंढ काँचक महानगरसँ नामक पाथर धरि

बटुकनाथक कोठरीसँ कथा चन्द्रपालक महँग, वातानुकूलित शहर-घरमे प्रवेश करैत अछि। काँचक टेबल, अनेक फोन, विदेशी मदिरा आ सुरक्षा ओकर सामाजिक दूरी बतबैत अछि। मुदा एहि ठंढका भीतर नाकक पसेना आ देहक धड़कन बढ़ैत अछि। क्रमशः पुरान कार सँ गाम धरि यात्रा एहि दूरस्थ चरित्रकेँ भीजल पुआर, माटि आ बच्चासभक मौनक अनुभवमे उतारैत अछि। स्थानक ई रूपान्तरण चरित्र-विकासक बाहरी नाटकीय चित्र अछि।

भीड़सँ व्यक्ति दिस दृष्टि बदलबाक क्रम

चन्द्रपाल अपन व्यवसायमे मनुष्यकेँ प्रति-क्लिक, प्रति-दान आ प्रति-डरक आँकड़ा बनौने अछि। रातिमे मोबाइलक संख्यात्मक पंक्ति मृतक, मजदूर आ परिवारक नाम बनि घुरैत अछि। एहि दृश्यसँ कथा ओकर निगाहक आन्तरिक संकट देखबैत अछि। आँकड़ा गलत होएब मुख्य बात नहि; आँकड़ामे अनुपस्थित व्यक्तिक अस्तित्व कथानकक केन्द्र बनैत अछि। नामक पुनरागमन ओकर अभ्यस्त छद्म-तटस्थताकेँ भंग करैत अछि।

ऐनाक अनेक आँखि : अपराधबोधक संवेदनात्मक विधान

बाथरूमक ऐनामे चन्द्रपाल अपन चेहराक बदला शोषित लोकसभक अनेक आँखि देखैत अछि। ई दृश्य बाहरी दृश्यसत्य रूपेँ प्रमाणित नहि; एकालाप आ भयक भीतरक चमत्कार अछि। बहु-आँखि एक निजी चेहरेकेँ सामूहिक अवलोकनक ठाम बनबैत अछि। दूसराक दृष्टि सँ स्वयं देखब कथानकक नूतन दृष्टिबिन्दु बनैत अछि। एहि बिम्बमे चरित्रक एकाकीपन आ सामाजिक उत्तरदायित्व एकहि क्षणमे टकराइत अछि।

'हम हाथ नहि लगौलहुँ' : दूरीक नैतिक विघटन

चन्द्रपाल अपन प्रत्यक्ष हिंसा नहि कएलाक तर्क दोहरबैत अछि। कथा एहि कथनक बाद भयक रस्सी बान्हनिहारक प्रश्न अनैत अछि। डिजिटल ठगी, भावनात्मक दोहन आ माध्यमक भूमिका केँ घटनात्मक उत्तरदायित्वसँ अलग मानबाक बहाना विघटित होइत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे कथावाचक उपदेशक स्थिर स्थान नहि लैत; अपराधीक भीतर सँ ओकर पुरान आत्मरक्षात्मक वाक्य बारम्बार सुनबैत अछि। एही आवृत्तिक टूटन चरित्र-समयक मोड़ चिन्हित करैत अछि।

निजी भय आ वास्तविक पश्चात्तापक दूरी

कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे अपराधी पहिने अपन धन, पासपोर्ट आ प्रतिष्ठाक हानि देखैत अछि। तेँ चन्द्रपालक आरम्भिक कम्पनकेँ पूर्ण नैतिक सुधार नहि कहि सकैत छी। ई आत्मसमीक्षात्मक दूरी अध्यायक महत्त्वपूर्ण

शक्ति अछि। अपन दोषक आभास आ प्रभावित लोकक क्षतिक समझ बीच समय चाही। कथा रुआँसापनक सम्मोहनसँ बचैत पाठककेँ कठोर, विलम्बित चरित्र-विकासक ओर राखैत अछि।

गामक मौन : भीड़-दण्डक प्रत्याशाक असफलता

चन्द्रपाल सोचैत अछि जे लोक गरियाएत तँ ओ अपन विरुद्ध अत्याचारक कथा बना लेत; मुदा बच्चासभ चुपचाप पहरा दैत अछि। ई धैर्य ओकर तैयार नाटकीय बचाव छीनि लैत अछि। दृश्य अभियुक्तक अपेक्षित हिंसात्मक भिड़न्त टारि सुनबाक सार्वजनिक स्थान रचैत अछि। मौन एतय शून्यता नहि, संवादक शर्त बनैत अछि। गामक नैतिक बल हल्लासँ नहि, तत्काल क्षमा वा प्रतिशोध न देबाक निर्णयसँ प्रकाशित होइत अछि।

'जन्मक नाम कि व्यापारक नाम?' : पहिचानक नाटच

अनन्या चन्द्रपालक परिचय सुनि जन्मक नाम पूछैत छली। 'चन्दू' कहलाक बाद रजिस्टरमे दुनू नाम संग लिखल जाइत अछि। ई घटना अपराधक मुआफी नहि; प्रतिष्ठाक मुखौटा आ बाल्यावस्थाक व्यक्ति बीच फाटल सम्बन्धकेँ देखबैत अछि। नामक सामाजिक बल एतय दोसर बेर बदलैत अछि: पीड़ितक नाम पुनःस्थापित करबाक बाद आरोपीकेँ सेहो अपन दबायल नामसँ सामना करए पड़ैत अछि।

मीराक रोदन-विरोध : भावना सँ सत्यक अन्तर

चन्द्रपालक आँखि भरैत अछि, मुदा मीरा ओकरा चेतबैत छथि जे रोदन पर्याप्त नहि। एहि एक वाक्यमे कथा सजिलै बनि सकैत प्रायश्चित्त-नाटककेँ रोकि दैत अछि। पाठक भावुक क्षण देखैत छथि, मुदा कथाक नैतिक समय ओतय समाप्त नहि होइत। अपूर्ण स्वीकार, दस्तावेजी हिसाब, क्षतिपूर्ति आ सह-अपराधीक नाम एखन बाकी छथि। दयाक अनुभूति आ न्यायिक-सामाजिक जिम्मेदारी अलग-अलग पथ बनैत अछि।

स्वीकारोक्तिक मुख्य वाक्य : चेहरा न देखबाक अपराध

चन्द्रपाल कहैत अछि जे ओ लोककेँ लोक नहि, स्क्रीनक भीड़ बुझैत रहल; शोककेँ सहभागिता आ भयकेँ उत्पाद बनौलक। ओकर विचारमे निजी घृणाक अभाव स्वयं अपराधसँ छूट नहि, किएक तँ उदासीनतामे चेहरा देखबाक मेहनत छोड़ि देल गेल छल। ई स्वीकार चरित्रक पहिल स्पष्ट आत्म-परिभाषा अछि। प्रत्यक्ष संवादक भीतर व्यवसायिक भाषा अपन आलोचना सुनैत अछि। कथा ओहि क्षणकेँ अन्तिम मोक्ष घोषित नहि करैत।

देविकाक हिसाब-प्रश्न आ नापजोखक पुनर्स्थापना

देविका उज्ज्वलक नाम सँ भेल कमाइ पूछैत छथि। चन्द्रपाल जेब सँ हिसाबक कागज निकालैत अछि। देविका तुरन्त पढ़ि नहि लैत छथि, पहिने मृतकक नामक गरिमा कें रकमसँ अलग ठहरबैत छथि। कागजक आवश्यकता अस्वीकार नहि; एकरा नामक समानार्थी बनबासँ रोकल गेल अछि। एहि दृश्यमे निजी अपराधबोध दस्तावेजी अन्वेषणक दिशा पबैत अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई जे प्रमाणक आशय कथात्मक घटना रूपमे बदलैत अछि: प्रश्नक बाद कागज बाहर अबैत अछि।

स्वीकारक सामूहिक ग्रहण आ क्षमाक अनुपस्थिति

उपस्थित लोकक चुप्पी स्वीकारकेँ सार्वजनिक महत्त्व दैत अछि, मुदा कियो तुरन्त क्षमा नहि कहैत। ई संवाद-व्यवस्था पाठकक अपेक्षासँ खेलैत अछि; भावुक अपराधी आ दयालु समुदाय मिलिते कथा सहज निष्कर्ष देबय

सकैत छल। लेखक एहि सरल मोड़केँ जानि-बुझि टारैत छथि। समाधानक स्थगनसँ नैतिक प्रश्न अगिला अध्याय धरि जीवित रहैत अछि।

पत्रक सीमित रूप आ समग्र नेटवर्कक संकेत

चन्द्रपालक पहिल हिसाब केवल एक कागज अछि, सम्पूर्ण आर्थिक जाल नहि। चन्द्रपाल स्वयं अपना भीतर साथीसभक नाम आ भुगतानक रास्ता खोलबाक आवश्यकता बुझैत अछि। ई एक लघु वस्तु द्वारा दीर्घ भावी कथावृत्तक संकेत अछि। पाठककेँ वास्तविक खाताक सत्यापन नहि देखाओल गेल; एतय कागज प्रमाण-कार्यक आरम्भिक सामग्री मात्र अछि। ई सीमा स्वीकारक प्रामाणिकता पर अनिवार्य आलोचनात्मक सावधानी राखैत अछि।

राघवकेँ संदेश आ तकनीकी असम्भवता

रातिमे चन्द्रपाल अपन साथी राघवकेँ परिवर्तनक सूचना पठाबय चाहैत अछि, मुदा केवल ओकर संदेश सम्पर्क-विहीन देखाइत अछि। दोसर फोन चलैत रहबाक तथ्य विचित्रताकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। स्क्रीनक पात-लिपि नाम सुनबाक ठाम कोड नहि पहुँचबाक चेतावनी बनैत अछि। एतय तकनीकी विफलता प्रत्यक्ष जीवनक असम्भव नियम नहि, कथाक नैतिक जादू रूपेँ कार्य करैत अछि। चरित्रक निजी स्वीकार वैश्विक अपराध-जालक सञ्जालपर असर करैत देखाओल गेल अछि।

अगिला राघव-प्रकरणक पूर्वघोषणा

अध्याय चन्द्रपालक स्वीकारक द्वार पर समाप्त होइत अछि, भीतरी दण्ड समाप्त नहि करैत। अगिला कड़ीमे राघवक अलगावक कथा खुलबाक पूर्वसूचना सुस्पष्ट अछि। एक अपराधीक क्रमानुगत चेतना दोसरा अपराधीक काँचक कोठरीमे पहुँचैत अछि। एहि क्रममे उपन्यास पात्रगत केन्द्र बदलैत रहितहुँ साझा नाम-पहरा आ ठूँठक प्रतीक नछोड़ैत अछि। क्रमिक नाटकीय संरचना पाठककेँ अनवरत रहस्यसँ नहि, बदलैत उत्तरदायित्वसँ आगाँ खींचैत अछि।

प्रकरण १७६ | मूल अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

शीर्षकक अन्तर्विरोध : संकेत अछि, पहुँच नहि

राघवक फोनपर पूरा नेटवर्क-चिह्न अछि, डेटा चलैत अछि, मुदा संदेश प्राप्तकर्ताधरि नहि पहुँचैत। एहि दृश्यमे तकनीकी उपलब्धता आ सामाजिक सम्प्रेषणक असमानता मूल द्वन्द्व अछि। शीर्षक 'बिना नेटवर्क' कहितहुँ यन्त्र पूर्ण कार्यरत अछि; अर्थात् नेटवर्कक अर्थ कथाक भीतर नब परिभाषित होइत अछि। राघवक संकट भौतिक दूरसंचारक नहि, सूचना पर गोपनीय नियन्त्रण गुमएबाक कथात्मक रूपक अछि।

मेटाइत सन्देशक छद्म-व्यवसाय

राघव अपूर्ण सत्य, आधा असत्य, कूटनाम आ गायब होइत संदेशक बीच लाभ कमबैत रहल अछि। कथावाचक ओकर पुरान कौशलकेँ भाषिक व्यवहारक रूपमे पुनर्रचित करैत अछि। नामक स्पष्टता आ संकेतक अस्पष्टता

एक-दोसरक विरुद्ध रखल गेल अछि। जखन संदेश उत्पन्ने नहि भऽ सकैत, तखन राघव अपन औजार गुमबाक संग अपन सामाजिक पहचानक संकटमे फँसैत अछि। ई चरित्रक भीतरक निराशा दृश्य-व्यवस्थाक रूप लैत अछि।

चारि विफल संदेश : सञ्जालक विस्तार

बटुकनाथकेँ न्यास रोकबाक, चन्द्रपालकेँ स्वीकार रोकबाक, ब्रूमकेँ जोखिम बुझएबाक आ लाउकेँ नाम पसरबाक सूचना—चारि दिशामे राघवक प्रयास अटकैत अछि। ई एक-एक प्राप्तकर्ताक नाम कथात्मक मानचित्र अछि। कथा एहि क्रमसँ अपराध-जालक क्षैतिज विस्तार देखबैत अछि। अलग-अलग देश, संस्था आ लाभक केन्द्र एकहि व्यक्तिक हाथमे जुड़ैत रहल अछि; विफल सम्प्रेषणसँ वैह सञ्जालक कमजोरी प्रकट होइत अछि।

एकान्त कक्ष आ शहरक यान्त्रिक गूँज

ध्वनिरुद्ध देबाल, महँग परदा, परिशोधित हवा आ अनेक मोबाइलक बीच राघव असगरे अछि। शहरक हजार संकेत ओहि एकाकीपनकेँ कम नहि करैत। भौतिक सुविधा आ सम्बन्धक अनुपस्थितिक विरोधाभास एतय राघवक मनोभूमि बनैत अछि। एसीक एकरस गूँज बन्द बर्तनक भिनभिनाहटि बनि तनाव बढ़बैत अछि। कथन बाहरक शोर घटा कऽ भीतरक प्रश्नक तीव्रता बढ़बैत अछि।

फोनक काँचमे जड़ि आ नामक हरियर पात

बन्द फोनपर कटायल ठूँठ आ पात पर नामक दृश्य अबैत अछि। चमकैत डिजिटल सतह छालक खरखर स्पर्श लैत अछि। वस्तुक ई इन्द्रियगत रूपान्तरण दूर गामक स्मृतिस्थलकेँ शहरक हाथमे पहुँचा दैत अछि। काँचक इजोत आ गाछिक जड़ि विरोधी नहि रहैत; लोकस्मृति डिजिटल विश्वक भीतर प्रतिपक्षी उपस्थिति बनैत अछि। कथा एकरा प्रौद्योगिकीपर सरल निषेधक बजाय तकनीकक मालिकाना प्रश्न बनबैत अछि।

कागचक गुप्त बहीमे प्रतिशतसँ प्रतिश्रुत

राघव जकर निजी हिसाब कागजपर छल, से ओ अपना नियन्त्रणयोग्य मानैत अछि। बहीमे प्रतिशतक शब्द प्रतिश्रुत बनए लगैत अछि। एहि ध्वन्यात्मक बदलासँ मुनाफाक हिस्सेदारी उत्तरदायित्वक वचनमे रूपान्तरित होइत अछि। कथा लिखित खाताक पंक्ति बदलैत देखबैत अछि; वास्तविक वित्तीय लेखाक स्वतन्त्र सत्यापन एखन अनुपस्थित अछि। तेँ आलोचना एहि चमत्कारकेँ नैतिक भाषा-परिवर्तनक दृश्य मानैत अछि, अन्तिम आर्थिक समाधान नहि।

बच्चा सभक 'उपस्थित' लय

चन्ना गाछीमे अनन्या आ बच्चा सभ कबड्डीक साँसक स्थानपर 'उपस्थित' कहैत छथि। एहि उच्चारणक लय राघवक फोनपर दूरसँ असर करैत अछि कि नहि, कथावाचक ओकर यान्त्रिक प्रमाण उपलब्ध नहि करैत। एक ग्राम्य सामूहिक स्वर आ शहरक निजी परदा कथनमे समानान्तर रखल गेल अछि। एही संयोजनसँ दूरीक भाव घटैत अछि, मुदा कारणक अनिश्चितता जादुई यथार्थक रचनात्मक जगह सुरक्षित रखैत अछि।

खाली संदेशमे आत्मरक्षा-वाक्यक टूटन

अज्ञात प्रेषकसँ रिक्त संदेश अबैत अछि। राघव एहि रिक्त स्थानमे अपन पुरान बहाना सुनैत अछि—केवल संदेशवाहक, केवल सलाहकार, लाभ नहि शुल्क। ई शून्यताक साहित्यिक उपयोग अछि; कोनो आरोप लिखल

नहि, मुदा अपराधीक अनुभव भीतर सँ आरोप रचैत अछि। पाठकक नजरि ओकर आन्तरिक फोकलाइज़ेशन सँ जुड़ैत अछि। रिक्त परदा साक्ष्यक स्थूल बही नहि, विवेकक प्रतिध्वनिक पटल बनैत अछि।

उत्तरक स्वतः पलटब : भाषाक स्वायत्तता

राघव पहिचान पूछए वा घुसपैठक शिकायत करए चाहैत अछि; स्क्रीन ओकर प्रश्नकेँ आत्म-प्रश्न बनबैत अछि। संवाद ओकर चाहतासँ स्वतन्त्र चलैत अछि। लेखक एहि युक्तिसँ कथावाचक आ पात्रक भाषाक नियन्त्रण अलग करैत छथि। राघव जे सदा अनकर सन्देशक अर्थ नियन्त्रित करैत रहल, ओ अब अपनहि लिखल वाक्यक अर्थक अधिकार नहि रखैत। ई व्यंग्यक तीक्ष्ण रूप अछि।

'स्मृतिक नेटवर्क'क नक्शा

भोरसँ पहिने सभ फोनपर नदी, पुल, अस्पताल, ठूँठ, अदालत, ऐप आ शहरक कक्ष एक रेखामे जुड़ल देखाइत अछि। ई नब नक्शा भूगोलक प्रामाणिक डिजिटल मानचित्र नहि, कथा-पात्रक दृष्टिमे उभरल नैतिक सम्बन्ध-रेखा अछि। स्थलसभकेँ एकहि धागामे जोड़ि लेखक पहिल अनेक अध्यायक बिखरल घटना पुनःस्मरण करबैत छथि। सञ्जालक रूपक आरो एक बेर बदलिएल: गोपनीय लाभक बाटसँ स्मृतिक पारस्परिक उत्तरदायित्व धरि।

दूर नाम 'लाउ किन-हंग'क उद्घाटन

नक्शामे लाउक नाम चमकैत अछि। ई दृश्य राघवक भितरका नेटवर्ककेँ अन्तरराष्ट्रीय पात्र धरि खोलैत अछि। कथात्मक रोचकता 'अज्ञात विदेशी' खोजबाक नहि, पहिनेसँ लुकायल नाम उच्चारणक साहस देखबाक अछि। राघव जखन बिनु कोड पूरा नाम बाजैत अछि, तखन आन्तरिक अवरोध टूटैत अछि, मुदा अपराधक जाल सम्पूर्ण उजागर नहि भेल। कथावाचक एहि अधूरापनकेँ बचा कऽ अगिला यात्राकेँ सम्भव बनबैत अछि।

भरोसक सम्बन्ध बनाम संकेतक सुविधा

बूढ़बा भूत कहैत छथि जे सत्यकेँ मात्र नेटवर्क नहि, सम्बन्ध चाही। ई कथन कथा भीतर संवादक नियम अछि; एकरा प्राविधिक नीतिक पूर्ण सूत्र मानब पाठककेँ भ्रमित करत। विश्वासक प्रश्न एतय कठिन अछि—केकर संग, कोन क्षतिक बाद, कतेक प्रमाण पर? राघवक अकेलापन ई प्रश्नकेँ सघन करैत अछि। सदाशयी सामूहिक लय मात्रसँ हिसाबक उत्तरदायित्व समाप्त नहि भऽ जाइत।

राघवक आत्म-भाषण : देरित आत्मचेतना

ओ पहिल बेर फोन बिना विचार करैत अछि जे सन्देश नहि जाए तँ भीतर कोन स्वर सुनाइत अछि। एहि बिन्दुपर कथानक रोकाइत अछि आ आन्तरिक प्रश्न कथाक गति वहन करैत अछि। ओ सवालक उत्तर तुरन्त नहि लैत; धीर-धीरे लाउक पूरा नाम बाजैत अछि। गति-नियन्त्रण महत्वपूर्ण अछि: यन्त्रक तेज आवागमनक विरुद्ध आत्मस्वीकृतिक धीमापन। चरित्रक परिवर्तन संकेतित अछि, पूर्ण नहि।

अगिला यात्रा लेल द्वार

अनन्या भोरमे कहैत छली जे दूर नाम हिलल अछि आ आब नेटवर्क नहि, बाट खुलत। कथा राघवक शहर-कक्षसँ लाउक देशान्तर यात्रा दिशि सहज संक्रमण रचैत अछि। एक ठामक नामपहरा दोसर ठामक व्यापारीक स्थितिकेँ

प्रभावित करैत अछि, मुदा प्रभावक साधन अनिश्चित अछि। कथा ई अनिश्चितता बनाए रखि आगामी अध्यायक घुमन्तु स्थानिक विस्तारकेँ कौतूहल दैत अछि।

प्रकरण १७७ | मूल अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

दूर समुद्रसँ गाम धरि कथानकक फैलाव

राघवक मुँहसँ नाम निकलिते कथा हांगकांगक बाइसहम तल्लाक काँचक कार्यालयमे पहुँचैत अछि। स्थानक आकस्मिक विस्तार गढ़ नारिकेलक स्थानीय संघर्षक वैश्विक आर्थिक सम्बन्ध उजागर करैत अछि। जहाज, करार, बीमा, औजार, श्रम, अंग आ डेटा एकहि व्यापारिक प्रवाहमे गनल जाइत अछि। एहि गणनाक लय स्वयं लाउक दृष्टिकोणक अनुकरण करैत अछि। मुदा गामक कटल ठूँठ ओकर नक्शामे अनियन्त्रित दाग बनि उभरैत अछि, जे संख्यात्मक दृष्टिक प्रतिपक्ष रचैत अछि।

परदाक तस्वीर आ नामक उलटल निगाह

लाउ गाछी, नाम-पाथर, रजिस्टर आ चन्द्रपालक छवि अनेक स्क्रीनपर देखैत अछि। प्रारम्भमे ओहि छविसभकेँ निगरानीक सामग्री बुझैत अछि, मुदा शीघ्र ओकरा बुझाइत अछि जे चित्रसभ उलटि ओकरहि पर नजरि रखने अछि। कथनक दृष्टि इहाँ निरीक्षकसँ निरीक्षित व्यक्तिपर मुड़ैत अछि। जकर हाथमे नियन्त्रणक परदा छल, ओकरा स्वयं निगाहक अधीन भऽ जाएबाक अनुभव होइत अछि। ई उलटब नगर-गामक सत्ता-सन्तुलन बदलैत अछि।

सलाहकारक तीन उपाय आ कथाक वर्गभेद

एक सलाहकार प्रतिरोधकेँ क्षणिक भावना कहैत अछि, दोसर दान सँ स्थानीय संस्था कीनबाक सलाह दैत अछि, तेसर डिजिटल अभिलेखक नियन्त्रण माँगैत अछि। तीनू विकल्प शब्दमे भिन्न होइतहुँ स्मृतिपर मालिकाना दावामे एक छथि। लेखक पात्रसभक विचारकेँ बड़का व्याख्यानमे नहि, संक्षिप्त बैठक-वार्तामे रखैत छथि। आर्थिक शक्ति अपना सुविधा लेल वर्गीकरण करैत अछि, मुदा नामक प्रतिरोध कोनो एक श्रेणीमे समाय नहि रहल। एतय कथात्मक संघर्ष दान आ प्रतिरोधक सरल विरोधसँ व्यापक अछि।

गोहि द्वारा अनुबन्ध चिबेबाक स्वप्न

लाउ सपनामे नदीक गोहि द्वारा देह नहि, करार, परिशिष्ट, गुप्त खाता आ रिपोर्ट चिबाओल देखैत अछि। उपन्यासक शीर्षक-पशु एहि ठाम हिंसक प्राणी मात्र नहि; दस्तावेजी गुप्ततासँ खाएबला प्रतिदृष्टि बनैत अछि। गोहि ओकरा अपन नामक जल पूछैत अछि। एतय स्वप्नक प्रतीक व्यापारिक सम्पत्तिसँ व्यक्तिगत पहिचान धरि यात्रा करबैत अछि। एकरा प्रत्यक्ष यथार्थक घटना नहि, लाउक भयक स्वप्न-व्याकरण समझब उचित अछि।

यात्राक सार्वजनिक आ निजी प्रयोजन

सार्वजनिक नाम पुनर्वास-निवेशक समीक्षा, निजी नाम चन्द्रपाल आ राघवक विफलता-जाँच, आ आन्तरिक आवेग चन्ना गाछीमे उपस्थित होएबाक विवशता। कथावाचक लाउक घोषित उद्देश्य आ अनकहल प्रेरणा अलग कऽ देखबैत अछि। ई त्रिस्तरीय कारण-रचना चरित्रकेँ एकरेखीय व्यापारिक खलनायकसँ जटिल बनबैत अछि, मुदा

ओकर शोषणकारी सञ्जालक उत्तरदायित्व कम नहि करैत। यात्रा एक संग रणनीति आ अस्थिर अन्तःकरणक घटना अछि।

बाल्यस्मृतिक बन्दरगाह आ ऋणक पुरान दृश्य

विमानमे लाउकेँ अपन छोट बन्दरगाह, पिताक दुकान, माछक गन्ध आ ऋणमे झुकल पीठ मोन पड़ैत अछि। वर्तमानक आर्थिक साम्राज्यकेँ एक बाल्यकालक अपमानसँ जोड़ल गेल अछि। ई पश्चादवलोकन सामाजिक ऊर्ध्वगमनक इच्छा आ अनकर नाम मेटएबाक क्रियामे फाटल नैतिक सम्बन्ध देखबैत अछि। स्मृति ओकर व्यवसायक मूल प्रेरणा पर प्रकाश फेकैत अछि, मुदा कथावाचक 'एक बेर पीड़ित' भेला सँ 'आब निर्दोष' होएबाक निष्कर्ष नहि दैत।

विमानक ऊँचाइ आ नीचाँक अवशिष्ट आवाज

पृथ्वी सँ उठैत विमानमे लाउकेँ एक क्षण लेल दूरी मुक्तिदायक लगैत अछि। मुदा बादलमे कबड्डीक लय कानमे अबैत अछि। ध्वनि ऊँचाइ आ राष्ट्रसीमाक सुविधा निरर्थक बनबैत अछि। काँचक कार्यालयक ऊँच तल्ला आ विमानक आकाश दोसरक पीड़ा सँ दूर रहबाक प्रयासक दृश्यरूप छथि। कबड्डी एहि दूरीकेँ बीचहि सँ काटैत अछि। ई निरन्तर ध्वन्यात्मक रूपक अध्यायकेँ पछिला ग्राम्य कथासँ जोड़ैत अछि।

अखबारक वृद्ध यात्री : छोट संवादक बड़का प्रभाव

मैथिली अखबार पढ़ैत वृद्ध भारतीय यात्री नाम-उत्सवक तस्वीर लाउकेँ देखबैत छथि। लाउ भाषा नहि बुझैत, पर बच्चासभकेँ चिन्हैत अछि। वृद्धक प्रश्न—सर्वर बन्द भेला पर स्मृति कहाँ रहत—डिजिटल अभिलेखक टिकाऊपनक दावाकेँ चुनौती दैत अछि। संवादक शक्ति एहि बातमे अछि जे ओ ककरो सम्पूर्ण विचारधारा नहि सुनबैत। एक फोटो, भिन्न लिपि आ एक वाक्य विदेशीय पात्रक सुविधाजनक धारणाकेँ हिला दैत अछि।

लिपि आ अनुवादक असमान स्थिति

लाउ मैथिली अक्षरकेँ पानिक लहरि जेकाँ देखैत अछि; अर्थ तत्काल उपलब्ध नहि। वृद्धक मातृभाषा आ लाउक अन्तरराष्ट्रीय व्यापार-भाषाक दूरी कथा भीतर अनुवादक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि। ई असमझ स्वयं दुर्बलता नहि; पर प्रभुत्वशाली पात्र जे स्थानीय नामक भाषा नहि जानैत, ओकरा लाभक भाषासँ बाहर प्रवेश करए पड़ैत अछि। दृश्य एतय अलग भाषिक अनुभवक साझा पाठक बनबैत अछि—तस्वीर देखब, शब्द सुनब आ अर्थक प्रतीक्षा करब।

दोसर स्वप्नमे ठूँठक आन्तरिक मार्ग

लाउ विमानमे फेर सूतैत अछि आ ठूँठक भीतरी वृत्ताकार मार्गमे चलैत अछि। प्रत्येक रेखा पाछाँ जीवन आ बहिष्कारक दृश्यक व्यवस्था अछि। गंगेशक प्रश्न कहि देखाओल आकृति पात्रक विवेकमे जटिलता जोड़ैत अछि, मुदा एहि आलोचनाक केन्द्र स्वप्नक रचनात्मक ढाँचा अछि। पुस्तकक सूक्ष्म पात आ बहीक संख्या परस्पर दृश्य-रूपेँ टकराइत अछि। जीवनीक इतिहासक अतिरिक्त दावा एहि स्वप्नसँ प्रमाणित नहि होइत।

भारतीय धरतीक जल-रेखा : भूगोलक पुनर्दृष्टि

बादलक फाँकिसँ देखाएबला नदी-जाल लाउकेँ भारतक नक्शा केवल बाजार नहि, दीर्घ स्मृति जेकाँ बुझबैत अछि। एहि क्षण पर उपन्यास विशाल देशकेँ सहज सांस्कृतिक एकरूपता नहि देबाक खतरा सेहो उठबैत अछि; कारण नाम भिन्न जाति, श्रम, घाट, बहिष्कार आ कथासँ जुड़ल अछि। लाउक अचानक बदलैत दृष्टि ओकर निजी अनुभव अछि, समग्र समाजक सर्वज्ञ व्याख्या नहि। आलोचना एहि फोकलाइज़ेशनक सीमा राखैत अछि।

पासपोर्टक मोहर बनाम वास्तविक प्रवेश

सीमा-अधिकारी लाउक पासपोर्टपर मोहर लगबैत छथि, मुदा लाउ बुझैत अछि जे गढ़ नारिकेलक बच्चासभक प्रश्नक सामना करब बाँचल अछि। विधिक प्रवेश आ नैतिक उपस्थितिक बीच स्पष्ट भेद बनैत अछि। राज्यक सीमा पार करब एहि कथामे अनिवार्य, पर्याप्त नहि। कागजक स्वीकार आ लोकस्मृतिक प्रश्नक अन्तर मूल उपन्यासक अभिलेखी संघर्षक अन्तरराष्ट्रीय रूप अछि।

हवाई अड्डाक गोहिक प्रतिबिम्ब

काँचमे देखाएबला गोहिक आँखि लाउकेँ नहि खाइत, बस तकैत अछि। एहि दृश्यमे हिंसाक अपेक्षा दृष्टिक भय अधिक तीक्ष्ण अछि। काँच अनेक बेर पहिने कार्यालयक सुविधा छल, आब पारदर्शिताक संकट बनैत अछि। स्वप्नक गोहि अनुबन्ध चिबैत छल; जागल काँचक गोहि शब्दहीन दृष्टिक रूप धारण करैत अछि। पुनरावृत्त छवि कथाक स्थानिक विस्तारकेँ एकहि प्रतीकमालामे बाँधैत अछि।

सीधा गढ़ नारिकेल : नियोजित यात्रा टूटब

सहयोगीक राजधानी बैठकक आग्रह छोड़ि लाउ गाम दिस तत्क्षण चलबाक निर्देश दैत अछि। एतय कथानकक लम्बी अन्तरराष्ट्रीय यात्रा एक छोटी निर्णय-क्रियामे केन्द्रित होइत अछि। दुभाषियाक आश्चर्य लाउक कार्यक्रमक भङ्ग दर्शबैत अछि। मुदा यात्रा-समाप्तिक ई आभास अगले अध्यायमे फेर आगमनक विस्तृत पुनरावृत्तिसँ जुड़त; तेँ अध्याय ७६क अन्तिम प्रवेश आगामी ७७क आरम्भक संग पढ़ब जरूरी अछि।

प्रकरण १७८ | मूल अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

आगमनक पुनरारम्भ आ कालक्रमक समस्या

अध्याय ७६क अन्ते लाउ विमानसँ उतरि दुभाषियाकेँ सीधा गढ़ नारिकेल चलबाक आदेश दैत अछि। अध्याय ७७ फेर विमान उतरबाक, आगमन-पंक्तिक, होटल पहुँचबाक आ निर्णय लेबाक दीर्घ अनुक्रम प्रस्तुत करैत अछि। ई घटना समान समयक पुनर्कथन हो सकैत अछि, मुदा स्पष्ट पुनर्दृष्टि-चिह्न नहि देल गेल। तेँ एकरा अक्षरशः निरन्तर अगिला दिनक घटना मानलासँ समयगत असङ्गति उत्पन्न होइत अछि। आलोचनाकेँ पुनरावृत्ति आ सम्पादकीय असावधानी दुनू सम्भावना खुलल रखबाक चाही।

आँखिक सतत बिम्ब आ असुरक्षित निरीक्षक

७६क काँचमे झपकल गोहिक आँखि एहि अध्यायमे चेहरे-पहिचान यन्त्र, रेलिंग, दुकान आ होटल धरि लाउक संग चलैत अछि। वस्तु बदलैत अछि, दृष्टिक संकेत एक रहल। लेखक एक दृश्यकेँ अनेक शीशाक माध्यमसँ दोहराइ

कथात्मक घेराबन्दी उत्पन्न करैत छथि। लाउ जकरा काल्हि वस्तु निगरानीमे रखने छल, ओ आब हर वस्तुक निगाहसँ ग्रस्त अछि। ई पथभ्रमणक मनोवैज्ञानिक लय अछि।

सीमा-जाँच मशीनक विचित्र झिलमिलाहट

डिजिटल प्रवेश-द्वारपर लाउक चेहराक ठाम क्षणभर गोहिक आँखि उभरैत अछि; अधिकारी एकरा सामान्य प्राविधिक त्रुटि बुझैत छथि। कथा लाउक निजी दृश्य आ अधिकारीक सामान्य प्रतिक्रिया समान दृश्य-समयमे रखैत अछि। एकहि यन्त्रक दू अनुभवक टकराव कथावाचकक विश्वासक सीमा खोलैत अछि। पाठक निश्चय नहि करि सकैत जे आँखि वस्तुनिष्ठ परदापर छल कि लाउक अपराधबोधक अवलोकन।

गन्धक अनुक्रम : वर्गीय दूरीक टूटन

मसाला, डीजल, पसेना, नमी आ माटिक गन्ध लाउक वातानुकूलित अनुभवकेँ काटैत अछि। कथा विदेशीय पात्रक भारत-प्रवेशकेँ केवल पहिचानपत्र आ कूटनीतिक दृश्य नहि बनबैत; देहगत प्रत्यक्ष अनुभवसँ भरैत अछि। बादमे पाँचतारा अतिथिकक्षक शीतलता आ संगमरमर एहि पहिल संवेदनाकेँ फेर रोकबाक प्रयास करैत अछि। संवेदनाक ई द्वन्द्व पूँजीक अभेद्य सुरक्षा-घेराकेँ छिद्रित करैत अछि।

'अनाम ग्रह'क विज्ञापन आ भविष्यक विडम्बना

हवाई अड्डापर पृथ्वीसँ बाहर सुरक्षित भविष्यक होर्डिंग देखाइत अछि। लाउ ओकरा अपनी निवेश-रुचिसँ जोड़ैत अछि, मुदा काँचमे गोहिक आँखि लौटा अबैत अछि। एहि अन्तरालमे उपन्यास गामक लुप्त नामसँ ग्रहान्तरीय बेनाम भविष्यधरि कथानकक परास बढ़बैत अछि। विज्ञापनक असीम सम्भावनाक विरुद्ध धरतीक अधूर न्याय खड़ा होइत अछि। ई भविष्यकल्पना अभी वास्तविक परियोजनाक सम्पूर्ण विवरण नहि, चरित्रक आर्थिक कल्पनाक संकेत अछि।

तीन सह-अपराधीक सन्देश आ पूर्व-स्वीकारक तनाव

अतिथि-कक्षमे बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघवक सन्देश स्मृतिपर पुनः नियन्त्रणक उपाय सुझबैत देखाएल अछि। मुदा अध्याय ७४मे चन्द्रपाल स्वीकार करि चुकल अछि आ ७५मे राघवक संदेश पहुँचब बन्द भेल देखाओल गेल छल। एतय सन्देशक काल-चिह्न स्पष्ट नहि अछि। ई पुरान संदेशक पुनःपठन हो सकैत अछि, नहि तँ चरित्रगत आ कालगत असङ्गति अछि। आलोचना ई टकराव दर्ज करैत अछि; मनमाना कालक्रम गढ़ि समाधान नहि करैत।

पानिक गिलासमे नदीक दृश्य

सुरक्षित, बोतलबन्द पानिमे लाउकेँ नदीक गाढ़-हरियर हलचल देखाइ पड़ैत अछि। पानिक स्वच्छ व्यापारिक वस्तु रूपक भीतर अतीतक जल-स्मृति लौटि अबैत अछि। रूपान्तरणक असल व्याख्या पाठककेँ नहि देल गेल; लाउक अनुभवक माध्यमेँ कथाकार स्थानक स्मृतिक अस्थिरता प्रस्तुत करैत छथि। एहि सूक्ष्म दृश्यसँ ऊँच परियोजनाक वैश्विक चर्चा फेर श्रम, नदी आ गुमनाम देहक स्थानीय प्रश्न धरि पहुँचैत अछि।

सूचीमे नहि भेटल वृद्ध सफाईकर्मी

अतिथिकक्षमे वृद्ध सफाईकर्मी पानि पीबैत नाम सोचबाक बात कहैत छथि, मुदा कर्मचारी-सूची, प्रवेश-पञ्जी आ सुरक्षा-कैमरामे हुनकर कोनो चिन्ह नहि। ई कथाक भीतर पहिचान-अभिलेखक त्रिसूत्रीय विफलता अछि। बेनाम

लोक केवल अनुपस्थित नहि; ओ लाउकेँ प्रत्यक्ष वाक्य देलक। भूत, स्मृति वा सामान्य भ्रम—कथावाचक कोनो एक श्रेणी निश्चित नहि करैत। एही खुलल अवस्थामे पात्रक भय आ पाठकक नैतिक चौकसी बढ़ैत अछि।

कागजी अनुपस्थिति आ अनुभूत उपस्थिति

सफाईकर्मीक चिह्न सुरक्षा-तन्त्रमे नहि रहबाक बादो गिलासक जलतरंग बचल देखाओल जाइत अछि। दृश्य स्मारकक नाम-पाथरसँ डिजिटल प्रवेश-पञ्जीक बीच मूल रूपक दोहरबैत अछि: लिखित सूची कोनो मनुखक सम्पूर्ण जीवन नहि। आलोचना एकरा वास्तविक सुरक्षा-त्रुटिक दस्तावेज नहि, समाजसँ लोप कएल कर्मीक साहित्यिक पुनरुपस्थिति मानैत अछि। सफाईकर्मी बोलबाक अधिकार पबैत छथि, तर मात्र रहस्यरूपमे सीमित रहबाक खतरा सेहो रहैत अछि।

नगरीय दृश्यावलीमे पुल आ नालीक पुनःप्रवेश

कारक खिड़कीसँ मॉल, झोपड़पट्टी, मेट्रो, निर्माणाधीन ढाँचा आ नाली एक संग सरकैत अछि। लाउ प्रत्येक नालीमे नदीक छाह, प्रत्येक पुलक आधारमे गुम मजदूरक स्मृति देखैत अछि। शहरक वास्तुशिल्प ग्राम्य कथाक हिंसासँ अचानक जोड़ल जाइत अछि। ई सन्दर्भस्थापन वैश्विक परियोजनाक हानिकेँ शहरक रोजमर्राक यातायातसँ अलग रहए नहि दैत; दृश्य-संयोजन अध्यायक यथार्थवादी धरातल सुदृढ़ करैत अछि।

होटल-कक्षमे गोहिक छाह

चमकैत होटलमे संगमरमरक शीतलता लाउकेँ विस्मृतिपूर्ण सुरक्षा जेकाँ लगैत अछि। मुदा खिड़कीपर गोहिक छाह ओकरा दिस मुख कऽ उभरैत अछि। दोसर बेर एकान्तकोठरीक वस्तु अपराधबोधक परदा बनैत अछि। काँच आ परदा निजी सुरक्षित सीमा नहि रखि सकैत। उपन्यास सार्वजनिक संघर्षक परिणाम पात्रक नींदमे प्रवेश करा कऽ मानसक समय विस्तृत करैत अछि।

स्वप्नक पासपोर्ट आ मुनाफाक खाता

सपनामे सामान्य आगमन-द्वारपर अधिकारीक बदला बच्चासभ बैसल छथि। पासपोर्टक स्थान पर लाभ-हानिक खाता अछि, जकर पन्ना गोहि चिबैत अछि। ७६क नदी-स्वप्नक एहि प्रतिरूपमे अन्तरराष्ट्रीय आवागमनक औपचारिकता लोकस्मृतिक उपस्थिति-परीक्षामे बदलिएल अछि। लाउकेँ असल नामक प्रश्नक सामना करए पड़ैत अछि। दृश्य पुनरावृत्त होइतहुँ दबाव बढ़बैत अछि, कारण प्रश्न आब भारतक भीतरक सीमापर स्थापित भेल अछि।

प्रतीक्षालयक अनाम निमन्त्रण

भोरक संदेश लाउकेँ पुरान हवाई अड्डा मार्गक खाली प्रतीक्षालय बजबैत अछि। प्रेषकक नाम नहि, मात्र सुनबाक आह्वान अछि। संदेश हटैत नहि—फोन, काँच आ आन्तरिक स्वर तीनू ठाम लौटैत अछि। एहि रूपकसँ कथा सुननाइकेँ साधारण बैठकक सट्टा प्रतिपक्षी नैतिक मांग बनबैत अछि। मुदा अगिला अध्यायमे भेंटक वास्तविक स्थल चन्ना गाछी कहल गेल अछि; स्थान-परिवर्तनक स्पष्ट मध्य-कड़ी एहि अध्यायमे नहि अछि।

सत्यव्रतक आगमनक कथात्मक तैयारी

अध्यायक अन्तमे लाउ बुझैत अछि जे ओ धन वा पदसँ अप्रभावित श्रोता सत्यव्रत सँ भेटत। ई अगिला मौन-संवादक नाटकीय तैयारी अछि। गोहि ओकर देह नहि, सुरक्षा-बोधक पहिल चाम उतारैत अछि—एहि बिम्बमे क्षतिक भय देहहिंसासँ आत्मपरीक्षणक ओर मोड़ल गेल अछि। स्थल आ समयक अस्पष्टताक बावजूद भविष्यक प्रश्न स्पष्ट अछि: सुनबाक वैधता के तय करत, आर्थिक सत्ता कि नामक पहरा?

प्रकरण १७९ | मूल अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

प्रतीक्षालयसँ ठूँठ धरि : अनलिखल स्थल-परिवर्तन

पिछला अध्यायमे लाउकेँ पुरान हवाई अड्डा मार्गक खाली प्रतीक्षालयमे बजाओल गेल छल। एहि अध्यायक आरम्भ कहैत अछि जे संदेशक बाट सोझे चन्ना गाछी धरि गेल, आ सत्यव्रत भेंटक ठाम ठूँठ निर्धारित करैत छथि। ई पुनर्निर्देशन सम्भव अछि, मुदा वास्तविक यात्राक मध्य-क्रिया विस्तृत नहि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ स्थान-बदलावकेँ सहज संक्षेप अथवा अधूरा सेतु दुनू रूपमे देखबाक चाही। ई असङ्गतिकेँ अनदेखल कऽ केवल अखण्ड रैखिकता घोषित करब मूल पाठसँ बाहर जाएब होएत।

अधिकारिक बैठकक त्याग आ 'नामक ठाम'क आग्रह

लाउ प्रेस, निवेशक-भोज आ औपचारिक बैसकी अस्वीकार करैत अछि। सत्यव्रत सेहो दिल्लीक कार्यालय नहि चुनैत छथि; भेंटक लेल ठूँठक सार्वजनिक स्थान आवश्यक बनबैत छथि। एहि स्थान-चयनमे कथात्मक शक्ति-पुनर्वितरण अछि। पूँजीक प्रतिनिधि परिचित दफ्तरक सुविधा छोड़ि पीड़ितक सामुदायिक स्थानमे अबैत अछि। भूमिकाक उलटफेर बिना नारा, केवल बैसबाक ठाम बदलि स्थापित होइत अछि।

सत्यव्रतक घेरासँ बाहरक आसन

सत्यव्रत नाम-पाथरक बीच केन्द्रमे नहि, एक कात रजिस्टर आ पुरान झोरा लऽ बैसल छथि। एहि आसनक शिल्पगत महत्त्व अछि: ओ लोकस्मृतिक नेता वा मालिक नहि बनैत, श्रोता बनैत छथि। छोट 'बैसू'क बाद हुनकर दीर्घ मौन लाउक अपेक्षित प्रश्नोत्तरकेँ स्थगित करैत अछि। पूर्वक अध्यायमे सत्यव्रतक दोसर मौनक विकास एतय व्यवहारिक स्थान पबैत अछि।

नाम-पाठक आवृत्ति आ समयक मंद गति

पहिल दस नाम धरि लाउ केवल सुनैत अछि; एगारहमसँ चौदहम नामपर ओकर भीतर बोर्डरूमक तालिका आ लागतक शब्द लौटैत अछि। नामक क्रमिक गिनती कथाक वास्तविक समयकेँ धीमा करैत अछि। एहि विलम्बमे मौन-संवादक तनाव उत्पन्न होइत अछि। लाउ जखन संख्या गिनबाक अभ्यस्त लयक भीतर प्रत्येक नामक अलग जीवन देखए लगैत अछि, तखन एकहि क्रिया—गिनब—क अर्थ नाटकीय रूपेँ बदलैत अछि।

'उपस्थित'क प्रतिउत्तर : मृतकक सामाजिक पुनरागमन

बच्चा सभ नाम पुकारैत छथि आ लोक 'उपस्थित' उत्तर दैत अछि। प्रशासनिक उपस्थिति-सूचीमे अनुपस्थित लोकक सामाजिक उपस्थितिक ई सामूहिक उद्घोष अछि। शब्दक पुनरावृत्ति अध्यायकेँ गीतात्मक गति दैत अछि। मुदा कथाकार मरणोपरान्त वास्तविक जीवन-प्रत्यावर्तनक प्रमाण नहि दैत; ई स्मृति, गवाही आ समुदायिक सम्बन्धक पुनर्स्थापनक कथा-क्रिया अछि। तेँ दृश्य भावुक पुनर्जीवनक अतिरञ्जना सँ बचि समष्टिगत उत्तरदायित्वक संकेत बनैत अछि।

आरोप नहि, नाम-पाठ : संवादक ढाँचाक उलटफेर

लाउ सोझे आरोपक अपेक्षा करैत अछि, सत्यव्रत कहैत छथि जे ओतय नाम पढ़ल जाइत अछि। विवादक भाषा बदलि जाइत अछि। आरोप आ बचावक तात्कालिक द्वन्द्वक ठाम सुनबाक दीर्घकालीन प्रक्रिया आबैत अछि। एहि मौनक भीतर दोषक प्रश्न मेटाएल नहि; केवल समयक प्राथमिकता बदलल अछि। लेखक प्रत्यक्ष प्रतिद्वन्द्विताक दृश्य टारि नैतिक जिम्मेदारीक भिन्न आ अधिक कठिन नाटक रचैत छथि।

एक श्रोता द्वारा दूसरेक निगाह बदलनाइ

सत्यव्रत लाउक दिस बहुत देर धरि नहि तकैत, स्वयं सुनैत छथि। एहि व्यवहारसँ लाउकेँ अपन कम्पनीक भाषाक निर्बलता समझाइत अछि। श्रोताक उपस्थितिक कारण प्रतिपक्षी आदमी सेहो श्रोता बनए लगैत अछि। दृष्टिक उलटाव व्यक्तिमात्रक भाषणसँ नहि, सामूहिक नाम-पाठक परिस्थितिसँ आबैत अछि। ई कथन-शैली पात्र-विकासकेँ भाषणक त्वरित प्रभावक बदला साझा समयक अनुभवसँ जोड़ैत अछि।

भाषा-पार नामलिपि : द्वैध अभिलेखक प्रयोग

अनन्या लाउकेँ कोयला दऽ अपन लिपिमे नाम लिखबाक अनुमति दैत छली, आ कातमे देवनागरी उच्चारण लिखैत छली। ई अद्भुत लघु दृश्य बहुभाषिक स्मृतिक सम्भावना देखबैत अछि। स्थानीय समुदाय विदेशी व्यक्तिक नाम मेटि नहि दैत, ओकर उच्चारणक सार्वजनिक जिम्मेदारी लैत अछि। एकहि पाथरपर भिन्न लिपिक सह-अस्तित्व सांस्कृतिक समता नहि, बल्कि उपस्थितिक कठोर शर्त पर आधारित नूतन सम्बन्ध बनबैत अछि।

दोषीक उपस्थिति आ क्षमाक दूरी

सत्यव्रत स्पष्ट करैत छथि जे लाउक नाम लिखब क्षमा नहि, केवल उपस्थितिक पहिल अवस्था अछि। ई वाक्य पछिला चन्द्रपाल-स्वीकारक अधूरापनसँ जुड़ैत अछि। दंडक यन्त्रणा नहि, नैतिक क्रम कथा भीतर दृश्यमान अछि: पहिने व्यक्ति सामने आउ, फेर प्रभावितक नाम सुने, फेर लेखा दे। पाथरक भारक जादुई अनुभव एहि क्रमक आन्तरिक घबराहटि बढ़बैत अछि, मुदा उत्तरदायित्वक ठोस काम बाकी रखैत अछि।

दान-प्रतिज्ञाक स्थगन आ बटुकनाथक प्रतिक्रिया

लाउ पहिने नाम सुनबाक कारण दानक प्रतिज्ञा रोकैत अछि। खबर सुनि बटुकनाथक प्रथम सरल मुस्कान कठोर होइत अछि, कारण न्यासक आर्थिक आधार अनिश्चित बनैत अछि। ई दृश्य दू स्थानमे घटैत अछि—ठूँठक मौन आ दूरक परामर्श-दफ्तर। कोनो प्रत्यक्ष भिड़न्त बिना हितक टकराव स्पष्ट होइत अछि। चरित्रक निजी जिज्ञासा संस्था-संचालित अर्थव्यवस्थामे असर करए लागैत अछि।

पुरान विद्यालयक कोठरी : विलाससँ अनिश्चित विराम

बच्चा सभ लाउकेँ ठूँठक भीतर रहबाक अनुमति नहि दैत; गामक बाहर विद्यालयमे स्थान देल जाइत अछि। अटकैत पंखा, झड़ैत चूना, बेंगक स्वर आ खद्दरक खरखराहट ओकर विलासी अनुभवसँ दूर अछि। देहक असुविधा कथात्मक पाठ बनैत अछि, मुदा गरीबीक गौरवगान नहि। सुरक्षा-तर्कसँ छूट चाहनिहार पात्रकेँ स्थानक इतिहासक संग एक राति रहबाक अवसर भेटैत अछि।

'अनाम ग्रह'क स्वप्नमे खाली चेहरा

लाउक सपनामे चमकैत गुंबदक नीचे संख्या अछि, मनुष्यक नाम नहि। चन्ना गाछीक ठूँठ ओहि निर्जीव भविष्यक बीच उगैत अछि आ बच्चा सभक स्पर्शसँ ओकर जेबसँ करार-पत्र खसैत अछि। ई भावी दुनिया वस्तुतः कथित कल्पना अछि; पाठककेँ नव विज्ञानक तथ्य नहि। स्वप्नक अन्तर्मुखी दृश्य ७७क विज्ञापनक भविष्यकल्पनाक विस्तार करैत अछि। अतीतक शोषण सँ अलग भविष्य बेचबाक असम्भवता प्रकट होइत अछि।

तीन दिनक अनुक्रम आ धैर्यक अनुशासन

बच्चा सभक नियम—पहिने सुननाइ, तकर बाद नाम, फेर दस्तावेज—क्रमिक समय-व्यवस्था बनैत अछि। लाउक त्वरित दान आ सौदाक विश्वमे ई मंद गति असहनीय लगैत अछि। कथाकार एहि थमल समयकेँ प्रभावी दण्डक रूपमे देखबैत छथि। मुदा आलोचनाकेँ ई सेहो देखबाक चाही जे नियमक पालनक सम्पूर्ण व्यावहारिक संरचना एखन रेखांकित मात्र अछि; कथा एकर सर्वथा सिद्ध प्रशासनिक व्यवस्था नहि देखौलक अछि।

ब्रूमक दूतक प्रवेश : मौनसँ कागजी संघर्ष धरि

अध्यायक अन्तमे सुनहर किनारीबला दान-पत्र लऽ दूत पहुँचैत अछि। लाउ आ सत्यव्रत दुनू नहि हँसैत; अनन्या खाली पाथर राखि दानक नाम पूछबाक तयारी करैत छली। एतय निष्क्रिय प्रतीक्षाक नाट्य समाप्त होइत अछि आ दस्तावेज-पठनक सार्वजनिक दृश्य खुलैत अछि। चन्ना गाछीक ठूँठ सँ खड़खड़ाहटि उठैत अछि—अगिला प्रकरणक श्रव्य उद्घोष।

प्रकरण १८० | मूल अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

दान-पत्रक दृश्य प्रवेश आ चिक्कन सतह

लाउक मौन-संवादक अगिला भोर सुनहर किनारी, मिलल-जुलल लिपि आ गाढ़ कागजवाला डाक-पोटली गाम पहुँचैत अछि। वस्तुक रूप कथा प्रारम्भे सँ पाठककेँ आकर्षित करैत अछि। चिक्कन मोहर संस्थागत वैधता जेकाँ देखाइत अछि, मुदा शीर्षकक भीतर पुरान ठेकाक छाया अबैत अछि। एहि बाह्य-आभा आ भीतरक आशयक टकराव अध्यायक मूल घटनात्मक गति बनबैत अछि।

पुरान कम्पनीक नव निधि : नामकरणक छद्मकथा

ब्रूमक संस्थाक पुरान नाम अदृश्य अछि; नव नाम 'विश्व-स्मृति पुनर्स्थापन निधि' स्मृतिक रक्षा घोषित करैत अछि। कथावाचक पुलक पाया, मजदूरक हानि, जल, औषधि आ डेटाक पुरान सञ्जालकेँ तुरन्त याद करबैत अछि। नव

संस्थाक भाषा आ पुरान अनुबन्धक सम्बन्ध कथा भीतर प्रश्न बनैत अछि। कम्पनीक ठोस बाह्य इतिहास नहि, उपन्यासमे रचल पूर्ववर्ती घटनाक पुनरावृत्ति एहि आलोचनाक स्रोत अछि।

विकासक उत्साही स्वर आ मृतकक अनुपस्थिति

नगरपालिकाक बाबू आ स्थानीय समर्थक स्मारक, रोजगार आ विश्वस्तरीय पहिचानक सम्भावना देखैत छथि। 'गढ़ नारिकेलक नाम' वारम्बार उच्चरित होइतहुँ गुमनाम मृतकक निजी नाम नहि उच्चरित होइत। यही विरोध कथा भीतर विकासवादी संवादक आलोचना रचैत अछि। लेखक समर्थक लोककेँ केवल दुष्ट नहि कहैत; गरीब गामक वास्तविक सुविधाक कमी स्वयं प्रदर्शित करैत छथि। तेँ विवाद दान लेब या नहि लेबक तात्कालिक चुनावसँ जटिल बनैत अछि।

प्रतिनिधिक अभ्यस्त मैथिली आ प्रदर्शनात्मक करुणा

प्रतिनिधि अभ्यास कएल मैथिलीमे निष्काम दानक कथन करैत अछि। विश्वस्तरीय संग्रहालय आ शोधकक्षक सूची संग 'करुणा'क चमकदार भाषा जोड़ल गेल अछि। ठूँठक भीतर किड़ीक चबनाइ-जेकाँ ध्वनि एहि शब्दक सम्पादन करैत अछि। पात्रक भाषिक प्रस्तुति आ स्थल-ध्वनिक टकराव व्यंग्य बनबैत अछि। ई दृश्य बाहरी भाषाकेँ दोषी नहि, बिना उत्तरदायित्वक करुणात्मक भाषणकेँ अविश्वसनीय ठहरबैत अछि।

देविका-मीराक प्रश्न : सहमतिक नाट्य

देविका दानक बदलामे की लेल जाएत, ई पूछैत छथि; मीरा चित्र, गोपनीयता, कथा उपयोग, अभिलेखक प्रति आ परिवारक अनुमति एक-एक कऽ गनैत छथि। प्रतिनिधिक 'किछु नहि' उत्तरक बाद संचालन-शर्तक स्वीकार ओकर बयानमे दरार खोलैत अछि। संवादक चरणबद्धता महत्त्वपूर्ण अछि: सुरुचिपूर्ण प्रस्तावक मुखौटा एक प्रश्नमे नहि, लगातार पूछल प्रश्नमे उतरैत अछि। एकर कथात्मक विषय संसाधन-साझेदारीक भाषा भीतर अधिकार-हस्तान्तरणक सम्भावना अछि।

अनन्याक हस्ताक्षर-प्रश्न आ समुदायिक अधिकार

दान-पत्रमे स्मृति-सामग्रीक व्याख्या आ उपयोगाधिकार निधिक नियन्त्रणमे रहबाक पंक्ति भेटैत अछि। प्रतिनिधि मालिक 'समुदाय' कहैत अछि, मुदा अनन्या समुदायक हस्ताक्षर माँगैत छली। नामक सामूहिक पहरा आ मालिकानाक वास्तविक सहमति बीच अन्तर एहि प्रश्नसँ स्पष्ट होइत अछि। कथनकेँ आधुनिक विधिक व्याख्या बना देनेक बदला ई देखब जरूरी जे मूल पाठमे एक बालिका कागचक औपचारिक सर्वनामकेँ वास्तविक व्यक्ति-सहमतिक सामने लऽ जाइत अछि।

आरुणिक पुल-ठेका : कथानकक पूर्वऋण

आरुणि मजदूरक सुरक्षाक कागजी प्रावधान आ वास्तविक क्षतिक पुरान विसंगति सामने आनैत अछि। प्रतिनिधि एकरा अलग अनुबन्ध कहि टारए चाहैत अछि। एहि टकरावमे अतीत मुख्य दृश्यपर फेर लौटैत अछि। स्मृति-केन्द्रक प्रस्तावकेँ पुलक मृतकसँ असम्बद्ध बताबय नहि देल गेल। मूल उपन्यासक दीर्घ कथन-समय यहाँ संक्षिप्त संवादमे सघन होइत अछि; पहिलक हानि नवीन दान-परियोजनाक अविभाज्य प्रश्न बनैत अछि।

बाकर गन्ध आ देहगत प्रतिकथन

बा कागचक गन्ध सूँघि बन्द कोठरीक गन्ध कहैत छलीह। इहाँ गन्ध विधिक निष्कर्षक साधनक रूपमे सत्यापित नहि, लोकस्मृतिक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति अछि। बच्चा सभ ई वाक्य पञ्जीमे राखैत अछि। कागज पर लिखल नियमानुकूल शब्दक विरुद्ध शरीरक अनुभवक काव्यमय भाषा उपन्यासमे बारम्बार आबैत अछि। एहि दृश्यसँ पीढ़ीगत श्रवण-स्मृति आ युवा अभिलेखनक सहकार देखाइत अछि।

गरीब गामक आवश्यकता आ दान-विवादक जटिलता

स्मारक-अभिलेख बचाबय पैसा, सड़क, आश्रय आ संरक्षणक आवश्यकता कथा स्वयं स्वीकार करैत अछि। 'अखन पैसा लिअ, शर्त बादमे सुधारब'क स्थानीय प्रस्ताव वास्तविक दुविधा अछि। मीरा पहिल अनुच्छेदमे अधिकार देल गेलापर पछिला मर्यादा टिकबाक कठिनाई बुझबैत छली। एही विरोधसँ अध्याय सपाट धन-विरोधी कथा नहि रहैत; आवश्यकता, नियन्त्रण आ गरिमाक बीच कठिन सामाजिक विकल्प देखबैत अछि।

गोप द्वारा सूक्ष्म अक्षर पढ़नाइ

गोप कुमार साझे सम्प्रेषण-सामग्री पर निधिक प्राथमिक उपयोगाधिकारक धारा पकड़ैत छथि। एहि सूक्ष्म अक्षरपर कथानक जुमैत अछि। सुनहर शीर्षक जे घोषित करैत छल, छोट शर्त ओकर विपरीत कथा कहैत अछि। ई दस्तावेज-पाठक सूक्ष्म दृश्य नामक फोटो, आवाज, चित्र आ कथा पर भविष्यमे अधिकारक सम्भावना उठबैत अछि। लिखित पंक्तिक एक लघु अंश पूरा दान-नाटकक अर्थ बदलैत अछि।

बरखाक बून्द आ दान-पत्रक रूपविघटन

अचानक मोट बून्द पत्रक मोहर पर खसैत अछि आ चमक उतरैत जाइत अछि। भीतर पुरान नील कागजपर मजदूर आवास, सुरक्षा, उपचार आ क्षतिपूर्तिक अनुच्छेद उभरैत छथि। ई कथा भीतर भौतिक रूपान्तरणक जादुई दृश्य अछि; बाहरी जगतमे साधारण कागज एना स्वतः बदलैत अछि, एहन दावा नहि। पानि एतय स्मृतिक सक्रिय कारक बनैत अछि। दान-पत्रक देह वस्तुतः पुरान अपराधक परदा बनल देखाएल गेल अछि।

छविक अनुमति : तमाशासँ समुदायिक अभिलेख धरि

भीजल पत्रक चित्र लेबए देविका यन्त्र उठबैत छली, मुदा मीरा प्रभावित परिवारक अनुमति सुनिश्चित करए कहैत छली। अनुमति भेटलाक बाद फोटो लेल जाइत अछि। एहिमे पहिल अध्यायक पत्रकारक कैमरा आ चन्द्रपालक गोपनीय ध्वनि-रेकार्डक प्रतिपक्ष उपस्थित अछि। यन्त्र एकहि रहि सकैत अछि, मुदा उद्देश्यमूलक नैतिक परिस्थिति बदलैत अछि। छवि स्वयं अपराध वा मुक्ति नहि; एकर कथात्मक अर्थ सहमति आ उपयोगक सम्बन्धसँ तय होइत अछि।

दृश्य प्रमाण आ रहस्यक आलोचनात्मक सीमा

बरखा लागलाक बाद पुरान ठेकाक अक्षर उभरब कथामे उपस्थित लोक देखैत छथि, मुदा प्रतिनिधि पत्र लऽ चलि जाइत अछि। पाठकक हाथमे स्वतन्त्र भौतिक कागज नहि, दृश्य-वर्णन आ समुदायिक फोटो-लेबाक प्रसंग अछि। तें कथा-कला चमत्कारक माध्यमसँ पृष्ठभूमिक अपराध उजागर करैत अछि; आलोचनामे प्रत्यक्ष तथ्यक कानूनी

प्रमाणपत्र बाँटनाइ उचित नहि। यथार्थ आ जादुई यथार्थक मिश्रणक अर्थ सामाजिक क्षतिक स्मरण आ नब प्रश्न खड़ा करब अछि।

बटुकनाथक पुत्रक प्रश्न आ भीजल लिफाफाक अन्तिम चिह्न

अध्यायक उत्तरार्धमे बटुकनाथक घरमे ओकर बेटा लोक-स्मृति न्यासक कागज पढ़ि पूछैत अछि जे ई न्याय बचाबय लेल अछि कि पेशा। पुत्रक एक प्रश्न स्वप्न-दरबारक दोष-श्रृंखलाकेँ घरक अन्तरङ्ग सम्बन्धमे घुसबैत अछि। अगिला अध्याय 'हरिहरनक संतान' लेल ई स्पष्ट बीज-वाक्य अछि। पारिवारिक उत्तराधिकारक प्रश्न आपराधिक ठेका वा दानक विवादसँ अलग नहि: प्रतिष्ठाक वारिस क्या अपराधक साक्षी बनत? एही अनिर्णीत विकल्पपर कथा रुकैत अछि। पत्रक मूल पन्ना प्रतिनिधि लऽ जाइत अछि, मुदा खाली, भीजल लिफाफा बच्चा सभ ठूँठ लग रखैत अछि। दस्तावेजी वस्तुक खाली ढाँचा समग्र प्रकरणक अन्तिम प्रतीक बनैत अछि। उपस्थित लोक दानकेँ केवल जय-पराजयक परिणाम नहि दैत; ओ ओकर अधिकारक शर्तक परीक्षा घोषित करैत अछि। पानिक दाग राति धरि नहि सुखाएब कथात्मक स्मृतिक दीर्घता चिन्हित करैत अछि। ई अन्त घटना बन्द नहि करैत, अगिला पीढ़ीक प्रश्न खोलैत अछि।

प्रकरण १८१ | मूल अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

भीजल दान-पत्रसँ घरक देहरी धरि संक्रमण

पूर्व अध्यायक अन्तमे ब्रूमक दान-पत्रक भीजल कागच पुरान ठेकाक वाक्य प्रकट करैत अछि। तकर बाद कथानक कार्यालयक सार्वजनिक प्रतिस्पर्धा छोड़ि बटुकनाथक निजी बरामदा धरि पहुँचैत अछि। बाहरी अनुबन्धक पर्दाफाशक प्रतिध्वनि घरमे संतानक प्रश्न बनि उतरत। एहि जोड़मे कारणक कठोर यान्त्रिक शृंखला नहि, वस्तु आ प्रश्नक साहचर्यक प्रयोग भेल अछि। परिणामस्वरूप न्याय पर बहस सार्वजनिक मंचसँ परिवारक उत्तराधिकारमे प्रवेश करैत अछि।

बरामदाक स्थापत्य आ अधिकारक क्षीणता

पितरक चित्र, विधि-पुस्तक, सम्मान-पत्र, काँचक आलमारी आ बन्द पंखाक वर्णन बटुकनाथक प्रतिष्ठाक दृश्य-पञ्जी अछि। कोनो अदालतक आधिकारिक सुनवाई एतय नहि होइत, तथापि घरेलू बरामदा अपन वस्तुसभक कारण एक अदालतक नकल बनि जाइत अछि। कथावाचक वस्तुक व्यवस्था पहिने दिखबैत छथि, तखन ओकर भीतर थाकल मनुष्यकेँ। एहि उलटा अनुपातसँ पाठक बुझैत अछि जे संस्थागत आभा एखन पात्रक नैतिक बल नहि जोगा पबैत।

तारिणीक प्रवेश : प्रश्नक स्वतन्त्र स्वर

तारिणी कानून पढ़ैत छलीह; पिता जेकाँ कानूनकेँ पेशागत चालबाजी मानबाक विरुद्ध हुनकर स्थिति शुरूहिसँ रेखांकित अछि। ओ फोनमे चन्ना गाछीक घटनासभ देखने छलीह, मुदा घरक प्रश्न शुरू करबाक पहिने स्क्रीन बन्द करैत छथि। ई छोट क्रिया साक्षात् संवाद आ माध्यमक बीच भेद बनबैत अछि। तारिणी केवल लेखकक मुखपत्र नहि, पिता-पुत्री सम्बन्धक विशिष्ट असुविधा सहित एक स्वतन्त्र कथन-स्वर बनि उठैत छथि।

प्रश्नक आवर्तन : न्याय कि पेशा?

‘अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?’—ई प्रश्न अध्यायक केन्द्रीय धुरी अछि। तारिणी मजदूरक पुल, उज्ज्वलक ठगी, मीराक निजता आ लोक-स्मृति न्यासकेँ एक वाक्यमे जोड़ैत छथि। पूर्वक बिखरल अपराध-क्षेत्र घरक भीतर एक नाटकीय अभियोग बनि अबैत अछि। घटनाक संक्षेप पाठककेँ विगत अनुक्रम मोन पाड़ैत अछि, मुदा ई संक्षेप कौलाजक युक्तिसँ आलोचनात्मक पुनःस्मरण बनैत अछि, नव घटनाक काल्पनिक विस्तार नहि।

द्विखण्डित चेहरा आ सीमित दृष्टिकेन्द्र

काँचक भीतर बटुकनाथ अपन चेहराक दू रूप देखैत छथि—सार्वजनिक सम्मानित वकील आ प्रक्रियाक जाल बुननिहार व्यक्ति। दृष्टि हुनकर अनुभूतिमे केन्द्रित अछि, अतः ई दर्पणक प्रतिबिम्ब नैतिक आत्मविचारक दृश्य अछि, बाहरी प्रमाण नहि। तारिणीक कथन एहि आत्म-दृष्टिक प्रतिपक्ष दैत अछि। एक्कहि दृश्यकेँ भीतरक काँप आ बाहरक प्रश्नसँ देखाओल गेलासँ पाठक पात्रक असुरक्षा बुझैत अछि, मुदा ओकर अपराध स्वतः कम नहि होइत।

गंगेशक जीवनी-स्मृतिक कथा-भीतर प्रयोग

संवादमे गंगेशक जन्मक लोककथा, विवाहक प्रसंग आ विद्वत् प्रतिष्ठाक उल्लेख पात्रसभक स्मृति-राजनीतिक विवादक रूपमे होइत अछि। तारिणी प्रश्न करैत छथि जे सम्मानक सार्वजनिक भाषा असुविधाजनक जीवनक कथाकेँ किएक दबबैत अछि। समीक्षामे एहि उल्लेखकेँ उपन्यासक संवाद आ पात्र-दृष्टि मानल जाएत; कथाक भीतर उच्चरित ऐतिहासिक आरोपकेँ स्वतन्त्र जाँच बिना प्रमाणित इतिहास नहि कहल जा सकैत। आलोचनाक वस्तु संवादक शक्ति आ ओकर विन्यास अछि।

विलम्बक काल-रचना आ पीड़ितक समय

बटुकनाथक कानूनी पेशामे तारीख, स्थगन आ तकनीकी आपत्तिक दोहराव पीड़ितक जीवनक अनेक बरख खाइत रहल। तारिणी ‘सुननाइक दण्ड’ कहि ओहि विलम्बकेँ बटुकनाथक भागमे घुरबैत छथि। कथा एतय कथन-कालक नैतिक उलटफेर करैत अछि: जे व्यक्ति दोसरा प्रतीक्षा थोपैत छल, ओ आब स्वयं सुनबाक दीर्घ प्रतीक्षाक पात्र अछि। ई केवल पश्चात्तापक भाव नहि, काल-नियन्त्रण बदलबाक नाटकीय संकेत अछि।

घरेलू स्वप्न-दरबारक पुनरुत्पत्ति

परिवारक संवादक बीच बरामदाक फर्श ठूँठ बनैत, पुस्तक पात भऽ उड़ैत आ खाली बाल्यकालीन चप्पल न्यायासनपर देखाइत अछि। पूर्व अध्यायक स्वप्न-दरबारक आकृतिसभ नव ठाम लौटैत छथि। मुदा एतय न्यायाधीशक जगह संतानक अनुपस्थित देह-चिह्न अछि। जादुई रूपान्तरण निजी विमर्शक तीव्रता बढ़बैत अछि; कथावाचक ई निश्चित नहि करैत जे परिवर्तित दृश्य सभ पात्रकेँ समान रूपसँ प्रत्यक्ष छल।

उत्तराधिकारक सामूहिक छविसभ

तारिणीक पाछाँ अनेक अपराध-जालसँ जुड़ल परिवारक संतानसभक छाह देखाइत अछि। एक परिवारक प्रश्न बहु-परिवारक दीर्घ उत्तराधिकार-विवाद बनि जाइत अछि। ई दृश्य ठोस सभा नहि, बटुकनाथक भय आ भविष्य-दृष्टिक विस्तारित फलक अछि। बालकसभ धन, उपनाम, प्रतिष्ठा आ झूठक उत्तराधिकार अस्वीकार करबाक

सम्भावना खोलैत छथि। कथाक केन्द्र अपराधी पुरुषक सुधारक दावासँ हटि अगिला पीढ़ीक स्वायत्त निर्णयपर पहुँचैत अछि।

अपराधी आ पिता : नैतिक सम्बन्धक द्वैध

तारिणी पिता पर प्रेमक अधिकार नहि छोड़ैत छथि, मुदा हुनकर मौनक उत्तराधिकारी बनब अस्वीकार करैत छथि। एही भेदसँ दृश्य साधारण पिता-विरोध वा क्षमा-समाप्तिक कथा नहि बनैत। बेटी अभियोगक संग सम्बन्धक शेष स्थान रखैत छथि; पिता एकाएक निर्दोष घोषित नहि होइत छथि। कथनक यथार्थवादी बल एहि अनिर्णीत सम्बन्धमे अछि—घरक प्रेम सार्वजनिक क्षतिक भरपाइ नहि, मुदा कठोर प्रश्न सम्भव करबाक एक स्थल अवश्य अछि।

न्यासक अध्यक्षता सँ लोक-पहराक ओर

बटुकनाथ पहिने ‘लोक-स्मृति न्यास’कें अपन नियन्त्रणमे रखबाक योजना बनौने छलाह। तारिणी ओकर संचालन बच्चा, मजदूर परिवार, स्त्री-सभा आ नाम-पहराक हाथमे देबाक आग्रह करैत छथि। ई वक्तव्य सत्ता-सम्बन्धक स्पष्ट परिवर्तनक प्रस्ताव अछि, तथापि एखन कोनो संस्था वास्तविक रूपेँ हस्तान्तरित नहि भेल। उपन्यास आकांक्षा आ कार्यान्वयनक दूरी बचा रखैत अछि; आलोचना परिवर्तनक भाषणकेँ सम्पन्न सुधार मानि नहि सकैत।

‘स्थगित’ काटल पाँति : दस्तावेजक पुनर्लेखन

भोरमे बटुकनाथ अपन प्रस्ताव ‘स्थगित’ लिखैत छथि, फेर काटि ‘लोक-पहरा समक्ष सुनल जाए’ लिखैत छथि। शब्दक छोट संशोधन दृश्यरूपेँ पैघ अछि: पहिल क्रियामे समय रोकबाक पुरान अधिकार, दोसरमे बाहरी लोकक सुनबाक अधिकार। कागचक पंक्ति संस्थागत व्यवस्था बदललाक पूर्ण प्रमाण नहि, मुदा पात्रक हाथसँ कएल एक नापल नाटकीय कर्म अछि। स्वप्नक बाद जागल लेखन कथाक वास्तविक परिणाम बनैत अछि।

बिनु आलिंगनक अन्त : अपूर्ण परिष्कार

अन्तमे तारिणी पिता संग नाटकीय मेल-मिलाप नहि करैत छथि। सम्मान-पत्रक माला हटबैत हुनकर कथन फेर प्रश्नक पक्षमे अटल रहैत अछि। ई विराम कथाक नैतिक गम्भीरता जोगबैत अछि: दीर्घ अन्याय एक रातिक सजल संवादसँ समाप्त नहि होइत। बटुकनाथक बूढ़ पड़ल देह आ खुलैत भोर विपरीत कालानुभूति रचैत अछि—जीवनक समय घटल, उत्तरदायित्वक समय नव खुलल।

बेटा-पुत्री संकेतक असङ्गति

अध्याय ७९क अन्तमे ‘बेटा’ कागच उठबैत आ प्रश्न करैत देखाओल गेल अछि; अध्याय ८०मे वैह कथागत प्रश्न तारिणी नामक कानून-पढ़ैत पुत्रीक स्वरमे विस्तारित अछि। शीर्षक ‘संतान’ ई भेद खुलल रखैत अछि, मुदा पूर्वरूपक ‘बेटा’ आ अगिला स्पष्ट ‘तारिणी’क बीच कोनो पहचान-संकेत नहि। ई पुनर्वितरण सम्भव साहित्यिक पुनर्केन्द्रीकरण अछि, तथापि पाठ-निरन्तरताक असङ्गति सेहो बनैत अछि। समीक्षा मूलपाठक ई अन्तरक निश्चयात्मक समाधान गढ़ि नहि सकैत।

प्रकरण १८२ | मूल अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

उज्जर पन्नाक चौहद्दी : आत्म-पहिचानक मंच

अध्याय बटुकनाथक परिवारसँ चन्द्रपालक एकान्त कोठरीमे कट लगबैत अछि। उज्जर कागच पर ‘अपन नाम लिखू’ लिखल अछि; आदेशक प्रेषक अनिश्चित राखल गेल। एहि सामान्य कागचकेँ कथा एक छोट मंच बनबैत अछि जाहि पर हस्ताक्षर सम्पत्ति वा पदक पुष्टि नहि, आत्मपहिचानक संकट अछि। शान्त कोठरी आ कागचक खालीपन अपराध-जालक भारी परदासँ शक्तिशाली विरोध बनबैत अछि।

पदवी आ लाभांश : नामक प्रतिस्थापन

चन्द्रपाल निदेशक, सलाहकार, प्रतिनिधि, तकनीकी साझीदार जेकाँ अनेक नामसँ काज केने अछि; तइयो निजी हस्ताक्षरक घड़ी ‘दस प्रतिशत’, ‘आधा लाभ’ आ ‘कमीशन’ उतरैत अछि। शब्दक ई जादुई प्रतिस्थापन कारगर अछि, कारण लाभक भाषा पात्रक आत्म-व्याख्या हड़पि लेने अछि। कोनो साधारण स्मृतिलोप नहि, व्यवसायिक सर्वनामसँ व्यक्तित्वक विस्थापन देखाओल गेल अछि। पुनरावृत्त असफल लेखन कथाक लय बनैत अछि।

कलमक अवज्ञा आ दृष्टिक अस्थिरता

चन्द्रपाल कागच पर मनचाहल नाम उतारि नहि पबैत; ओकरा लागैत अछि जे भीतर कियो अदृश्य लिपिक लाभ-सूची लिखि रहल अछि। कथावाचक एहि दृश्यकेँ चन्द्रपालक अनुभूति सँ खोलैत छथि; पाठक स्पष्ट नहि जनैत जे कागच वास्तवमे बदलैत अछि अथवा अपराधबोध ओकर दृष्टि बदलैत अछि। जादुई यथार्थक एहि दोहो सम्भावनाकेँ खुलल रखनाइ पाठकक सक्रियता बढ़बैत अछि।

माय द्वारा पुकारल नामक स्मृति

बचपनक घर, पुरान तख्ती, माय-पिताक आवाज आ उजासक संकल्प धीरे-धीरे कम्पनीक आँकड़ा सँ बाहर अबैत अछि। पात्रक कथात्मक समय वर्तमानक लिखबाक विफलतासँ अनालेप भूतकालमे उतरैत अछि। माय द्वारा कहल छोट नाम कोनो निर्दोषताक प्रमाण नहि, केवल स्मृतिक जीवित अंश अछि। एहि फ्लैशबैकसँ पाठक अपराधीक मनुष्यत्व देखैत अछि, मुदा पीड़ितक हानिक न्यायिक लेखा मेटैत नहि।

‘चन्दू’ आ ‘चन्नू’ : नामक पाठान्तर

अध्याय ७४मे अनन्याकेँ चन्द्रपाल अपन जन्मक नाम ‘चन्दू’ कहने छल; एहि अध्यायमे मायक पुकार ‘चन्नू’ रूपमे भेटैत अछि। घरेलू सम्बोधनक दू रूप सम्भव छथि, मुदा मूल पाठ एहि भेदक व्याख्या नहि दैत। जखन पूरक नामक अति सूक्ष्म उच्चारणहि कथानकक आधार अछि, तखन पाठान्तर अर्थपूर्ण सम्पादकीय प्रश्न बनैत अछि। समीक्षा एक रूपकेँ दोसरसँ चुपचाप बदलैत नहि।

मेरठक डिग्री आ प्रतिरक्षाक पुरान भाषा

चन्द्रपाल मेरठक डिग्री आ व्यापारक प्रतिष्ठा मोन पाड़ैत अछि; भीतरक अनसुना स्वर पूछैत अछि जे पढ़ाइ आ व्यवसाय ककर सुरक्षाक लेल उपयोग भेल। प्रश्नोत्तरक गति मेजपरक स्थिर देहकेँ नाटकीय तनाव दैत अछि। जे तर्क पात्र दशकोसँ दोसरा सोझाँ राखैत छल, से आब अपन भीतर प्रतिपक्ष बनि पुनः उपस्थित अछि। ई आत्म-संवाद अन्तःस्थानीय आख्यानक एक प्रमुख उपकरण अछि।

श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक गुप्त तह

देविका अनुप्रयोगक पुरान प्रतिलिपिमे नामक पाछाँ दान, संदेश आ श्रद्धाक संग हिस्सेदारीक छाह देखैत छथि। सार्वजनिक दृश्य आ गोपनीय कमाइकेँ एकहि स्क्रीनक दू तहमे विभाजित कएल गेल अछि। मृतकक स्मृतिसँ अनुपस्थित परिवारक अर्थलाभ लऽब एक कथात्मक आरोप अछि; वास्तविक खाताक पूर्ण प्रमाण दृश्य नहि दैत। देविकाक वाक्य अनुभवजन्य व्याख्या अछि, जकर सत्यापन आगामी दस्तावेजी प्रक्रियामे बाँचल अछि।

दूरस्थ समकालिकता : रजिस्टरक स्वतः लेखन

चन्द्रपालक कोठरीमे प्रतिशत लिखब आ दूर चन्ना गाछीक रजिस्टरमे ‘प्रतिशत’ उभरब एकहि कथात्मक क्षणमे देखाओल जाइत अछि। कथावाचक स्थान-सीमा तोड़ि दू दृश्यकेँ समकालिक बनबैत छथि। ई असाधारण समानान्तर सम्पादन दूरस्थ अपराध-जाल आ स्थानिक स्मृति-जालक सम्बन्ध मजबूत करैत अछि, मुदा सूचना वास्तवमे कोन माध्यमसँ पहुँचल, से निश्चय नहि कएल गेल।

बा आ अपराधीक नाम राखबाक कठिन प्रश्न

बच्चा सभ पूछैत अछि जे अपराधीक नाम स्मृति-अभिलेखमे किएक? बा कहैत छथि जे अपराधक नाम क्षमाक लेल नहि, अभिलेखक लेल राखल जाइत अछि। न्याय-आख्यानमे ई महत्त्वपूर्ण सीमा अछि: पीड़ितक केन्द्रीयता राखितहुँ दोषीक पहचान लुप्त नहि कएल जाए। सत्यव्रत एहिमे जिम्मेदारीक पुनरावृत्ति रोकबाक प्रश्न जोड़ैत छथि। दृश्य सभाक मतैक्य नहि, कठिन सुनबाक शिक्षा दिखबैत अछि।

‘च...’ : अपूर्ण लेखनक अन्तिम रूप

अनेक कोशिशक बाद कागच पर पूरा ‘चन्नू’ वा ‘चन्द्रपाल’ नहि उतरैत; अन्तमे ‘च...’ आ ओकर नीचाँ ‘प्रतिशत’ बचैत अछि। कथा समस्या समाधान नहि करैत, दृश्यरूपेँ जमा दैत अछि। नामक पहिल अक्षर आ लाभक पूरा शब्दक अनुपात पात्रक नैतिक असन्तुलन देखबैत अछि। एहि अपूर्णताक कारण अगिला अध्यायक भीतरक गज-ग्राहक प्रतीक पूर्वसँ तैयार होइत अछि।

गीत आ कथाक अन्तिम हस्ताक्षरमे अन्तर

अध्यायान्त लोकगीतमे ‘चन्द्रपाल’ लिखलासँ ‘बत्रा’ अटकबाक पंक्ति अछि; मुख्य आख्यानक अन्तिम उज्जर पृष्ठ पर ‘च...’ मात्र बचैत अछि। ई भिन्न स्तरक पाठ भिन्न मात्रा मे नाम-लेखन मानैत छथि। गीत रूपकात्मक संक्षेप हो सकैत अछि, मुदा दृश्यरूपक सटीक अवस्थानसँ अन्तर बनी रहैत अछि। विश्लेषणमे गीतक सहज सारकेँ मूल दृश्यक हूबहू प्रतिलिपि नहि मानल जाए।

कागचक पात आ काँचपर गजक आँखि

अन्तमे कागच स्वयं मुड़ि पातक रूप लैत अछि आ काँचमे चन्द्रपाल अपन चेहराक बदला गजक आँखि देखैत अछि, जकर पाछाँ गोहिक जबड़ा अछि। पात, काँच आ आँखिक ई वस्तु-श्रृंखला निजी अपराधबोधकेँ पशु-आख्यानक रूप देइत अछि। रूपान्तरण सहज दृश्य नहि, अगिला अध्यायक शीर्षकक पूर्वाभास अछि; कथा भीतरक संघर्षकेँ दृष्टिगोचर करबाक तैयारी करैत अछि।

अपराधबोध, रोदन आ क्षतिपूर्तिक दूरी

चन्द्रपाल रोदन करैत अछि, मुदा ठूँठ मौन रहैत अछि। एहि मौनमे कथानक स्वतः क्षमा नहि दैत; अपराधीक अस्थिर आत्मचिन्तन आ पीड़ितक वास्तविक हकक बीच दूरी बचल अछि। एहिसँ एक सम्भावित भावुक पतन टरल अछि। जँ पाठक पात्रक आँसूकेँ अन्तिम न्याय मानि लेत, तखन दान, ठगी आ अनुप्रयोगक हिसाब ओझराएत; पाठ स्वयं एहि शॉर्टकटसँ बचबैत अछि।

आगत गज-ग्राहक खेलक सीमा

अनन्या अगिला दृश्य ‘भीतरक गज-ग्राह’ होएबाक सूचना दैत छथि। कागचसँ पात, पातसँ आँखि आ आँखिसँ जल-जन्तुक परिवर्तन सीधा अध्यायान्तर पुल अछि। पूर्व कथासभक दृश्य एक पात्रक कोठरीमे सीमित नहि रहत, बल्कि अनेक अपराधी आ साक्षीक भीतरक संरचना बनत—एहन प्रत्याशा जगैत अछि। ई अन्त ‘अधूरा हस्ताक्षर’केँ अगिला सामूहिक रूपकमे विस्थापित करैत अछि।

आरम्भिक लोकगीतक अग्रिम विषयान्तर

एहि अध्यायक आरम्भिक गीत ‘भीतरक पोखरि साफ’ गज-ग्राहक आशा-लय पर आधारित अछि, जखन मुख्य कथा चन्द्रपालक हस्ताक्षरक असफलतापर केन्द्रित अछि। गीत आगामी अध्याय ८२क वस्तु-रूपक पहिने बजा दैत अछि। ई सोद्देश्य पूर्वाभास सेहो पढ़ल जा सकैत अछि; तथापि लगातर अध्यायमे आरम्भिक गीत अगिला विषयसँ मिलबाक प्रवृत्ति देखिते पाठसम्पादनक सरकावक सम्भावना जाँचब आवश्यक अछि।

प्रकरण १८३ | मूल अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

अनेक किनारक एक पोखरि : संरचनात्मक केन्द्रीकरण

हरिहरनक संतान, बत्राक अधूरा नाम, राघवक सन्देश-विघटन आ लाउक काँचमे गोहि देखब—पूर्ववर्ती अलग पात्र-वृत्त एहि अध्यायमे ‘एक पोखरिक चारू किनार’ बनि अबैत अछि। कथावाचक प्रत्यक्ष सामाजिक मिलन बिना रूपकात्मक सह-अस्तित्व स्थापित करैत छथि। एहि ‘भीतरक पोखरि’मे स्थानक दूरी मानसिक संघर्षक समान संरचनामे बदलैत अछि। गज-ग्राहक पुराण-संकेत कथाक घटना नहि, अनेक विरोधक एक दृश्यात्मक मानचित्र बनबाक विधि अछि।

सामूहिक रात्रि-दर्शन आ कथनस्तर

कटल ठूँठक बीच अन्हार गाढ़ होइत अछि आ बच्चा सभ अनेक लोकक भीतरी संघर्ष देखैत अछि। एहि दृश्यकेँ बाहरी प्रेक्षकक साधारण दृश्य मानब कठिन; ई एक सामूहिक कल्पना अथवा जादुई मंचनक रूप अछि। कथावाचक एना दृश्य बदलैत छथि जेना एक पर्दापर क्रमशः विभिन्न अभिनेताक मन खुलैत हो। एहि कथनस्तरक विशेषता ई जे व्यक्ति एक्ला होइतहुँ लोकसामूहिक व्याख्याक भाग बनैत अछि।

गज आ ग्राह : व्यक्ति-विरोधक द्वित्व

गजकेँ मनुष्यक दबाओल सत्य आ ग्राहकेँ लोभ, जाति, पेशागत छल, सांकेतिक मौन आ बेनाम लाभक पकड़ बताओल गेल अछि। ई प्रतीक केवल ‘नीक भीतर, बेजाय बाहर’ एहन सहज द्वैत पर समाप्त नहि होइत; ग्राह

सेहो पात्रक जीवनमे बनल अछि। मनुष्य अपन प्रक्रियासँ ओकरा पोसने अछि। रूपकक आलोचनात्मक शक्ति एहि आन्तरिक सह-अस्तित्वमे अछि, जकर कारण दुष्टता केवल कोनो एक शत्रुक नाशसँ मेटाएब सम्भव नहि।

बटुकनाथक बालपन आ प्रक्रियाक जबड़ा

पहिल दृश्य हरिहरनक कारी कोट आ उज्जर पट्टी सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा छाती भीतर दबायल हाथीक सूँड़ उभरबाक चेष्टा करैत अछि। बालपनक निःशुल्क गरीब-मुवक्किलक प्रसंग ओकर पूर्व सम्भावनाक बिम्ब अछि। ग्राह तारीख, फीस, जातिक गर्व आ अपराधी बचावक प्रपंचसँ बनल अछि। तारिणीक प्रश्न दोहराएब पूर्व अध्यायक मानसिक संघर्षकेँ पुनःउपस्थित करैत अछि, मुदा एहि बेर ओ एक सामान्य कथा नहि, देहधारी टकरावक रूप लैत अछि।

चन्द्रपालक भीतर नाम लिखैत बालक

चन्द्रपालक गज एक छोट बालक अछि जे माटिपर ‘चन्द्र’ लिखैत अछि; ग्राह ओकर लिखनाइ ‘प्रतिशत’, ‘दलाल’ आ ‘बटुआ’मे बदलैत अछि। शब्दक फेरबदल अध्याय ८१क कलम-विघटनक रूपककेँ दोसर मंचपर घनत्व दैत अछि। ई पुनरावृत्ति कथाक दुर्बलता मात्र नहि, क्रमिक बिम्बवृद्धि अछि: पहिने कागचपर विफल नाम, आब समुदाय द्वारा देखल जाति-आर्थिक पकड़। बालकक हानि महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा वास्तविक पीड़ितक नाम साथे रहैत अछि।

राघवक पारदर्शी गज आ आधा वाक्य

राघवक भीतर पहिने गज देखाइये नहि पड़ैत; मेटाइत संकेतक बून्दक बीच एक पातर, पारदर्शी देह प्रकट होइत अछि। ओकर ग्राहक दाँत ‘लिखू नहि, मेटाउ’, ‘सम्बन्ध नहि, सङ्केत’ जेकाँ आज्ञासँ बनल अछि। एहि दृश्यसँ आधुनिक संचारक दुर्बलता नहि, छलपूर्ण अपूर्ण भाषाक युक्ति उजागर होइत अछि। मीराक ‘निजता’ आ सौम्याक ‘साक्षीक चुप्पी’ बीच भेद पात्रक संवादमे सुस्पष्ट होइत अछि।

लाउक धातुक पिंजरा आ स्थानहीन लाभ

लाउक गज बहुत पैघ, मुदा धातुक पिंजरा भीतर बन्द अछि। समुद्र आ काँचक भवन सेहो एक विशाल कठघराक रूप लेइत अछि। लाउक ग्राहक जबड़ा भूगोल-विहीन पूँजीक भाषा बजबैत अछि, जकरा लेल देश, श्रम आ नदीक इतिहास केवल जोखिम अछि। पात्रक भीतर माटि सूँघबाक आकांक्षा उत्पन्न होइत अछि। ई इच्छा सम्पन्न नैतिक परिवर्तन नहि; स्वरूपतः अजनबीक स्थानिक दृश्यसँ प्रभावित भय मिश्रित जिज्ञासा अछि।

ब्रूमक तालि-भूख आ व्याख्यानक कब्जा

ब्रूमक भीतरक गज सभामे ताली खोजैत अछि आ ग्राह चमकदार नैतिक भाषणक भूख बनि उठैत अछि। पीड़ाकेँ उदाहरण, मृतककेँ सैद्धान्तिक मामला आ गामकेँ शोध-प्रकरण बनबैत भाषा एतय स्वयं एक ग्राह अछि। कथा आलोचक, दाता आ कथाकारक दृष्टिक बीच असुविधाजनक समानता खोलैत अछि: जे सुनबाक बदला उदाहरण बनबैत अछि, ओ इतिहासपर कब्जा कऽ सकैत अछि। समीक्षा सेहो एहि जोखिमसँ सतर्क रहबाक चाही।

सत्यव्रतक आत्म-जाँच : साक्षी निष्पक्ष नहि

सत्यव्रत आरम्भमे दर्शक बनि ठाढ़ रहैत छथि, मुदा ठूँठ हुनकरो भीतर न्याय-सुनबाक इच्छा आ पदगत मौनक द्वन्द्व प्रकट करैत अछि। ओ ‘हमरा सेहो छोड़ू नहि’ कहैत छथि। एहि वाक्यसँ साक्षी आ मूल्यांकनकर्ता आलोचनासँ ऊपर नहि रहैत। कथा संस्थागत अधिकारक दृष्टिकेँ पात्र-न्यायक एकमात्र केन्द्र नहि बनबैत; स्वयं देखनिहारक इतिहासकेँ दृश्य बनबैत अछि। ई बहु-दृष्टिकेन्द्रीय संरचनाक सबल क्षण अछि।

नाम-पाठक सामूहिक प्रत्युत्तर

अन्तिम विशाल गज-ग्राह दृश्य एकहि हाथी वा एकहि मगरमच्छक कथा नहि रहैत। अनेक भीतरी गज आ ग्राहक अंग जुड़ैत छथि, फेर बच्चा सभ हर नामपर ‘उपस्थित’ कहैत अछि। एहि आवर्तनसँ अध्यायक गति संवादक पाँति-सरणीसँ सामूहिक ध्वनिक लय बनैत अछि। नाम उच्चारब एक नाटकीय प्रतिरोधक कर्म बनल, मुदा ओकर शक्ति यहाँ प्रतीकात्मक अछि; कोनो अदालतक फैसला वा क्षतिपूर्ति एकर बदला सम्पन्न नहि भेल।

भूतक कथावाचकीय भूमिका : नैतिक जटिलता

बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ दोषीक भीतर सेहो फँसल जीव देखबाक शिक्षा दैत छथि। ओ प्रतिशोध आ न्यायकेँ अलग करैत छथि, तथापि अपराधक हिसाब रखबाक आग्रह करैत छथि। भूतक उपस्थितिसँ लोक-आख्यानक परम्परा आधुनिक डिजिटल-आर्थिक संघर्षमे प्रवेश करैत अछि। एहि पात्रक कथन अधिकारपूर्ण उपदेश बनि पड़बाक जोखिम रखैत अछि, मुदा बच्चा सभक विरोधी प्रश्न ओकरा एकतरफा घोषणासँ बचबैत अछि।

अनिर्णीत मुक्ति : रूपक संयम

अन्तमे ग्राह छूटैत नहि; ओकर पकड़ सार्वजनिक रूपेँ देखाइ देब शुरू होइत अछि। ई अध्यायक निर्णायक चुनाव अछि। यदि गज पूरी तरह मुक्त भऽ जाइत तँ तमाम अपराध-जालक आलोचना चमत्कारी समाधानमे बदलि जाइत। ‘पकड़ देखाइ पड़ब’ सामाजिक संगठित प्रतिरोधक पूर्वशर्त बनल अछि। कथाक मिथकीय विस्तारक बावजूद अन्तमे ई सीमित परिणाम यथार्थवादी नैतिक विश्वसनीयता पुनःस्थापित करैत अछि।

खेले सँ पाठशाला : संरचनात्मक रूपान्तरण

भीतरी गज-ग्राहक सार्वजनिक दृश्य बच्चा सभकेँ कठिन प्रश्न पढ़बैत अछि; अगिला अध्याय एहि नाटककेँ पाठशालाक नियममे परिणत करैत अछि। स्वप्न-जगतक अनुभव सँ सामाजिक संस्थाक रचना तक ई स्थानान्तरण उपन्यासक दीर्घ-आख्यानक महत्त्वपूर्ण चाल अछि। प्रश्न ई रहैत अछि जे जादुई रातिक सामूहिक अनुभवकेँ रोजमर्रा श्रम आ दीर्घकालिक शिक्षामे कतेक टिकाऊ ढंगें बदलल जा सकत। कथा अगिला अध्याय लेल ठीक ई तनाव रखि छोड़ैत अछि।

आरम्भिक लोकगीत आ अगिला शीर्षकक आन्तरिक विस्थापन

अध्याय ८२क पहिल लोकगीत ‘पातक आसनपर पाठशाला’ अछि, मुदा विस्तृत मुख्य कथा भीतरक गज-ग्राहक सामूहिक प्रदर्शनपर केन्द्रित अछि। पाठशालाक वास्तविक निर्माण अध्याय ८३मे होइत अछि। गीतकेँ नियोजित प्राक्कथन मानल जा सकैत अछि; किन्तु ८१–८७मे लगातार अग्रिम विषयक मेल देखाइत अछि। एहि कारण

गीतक स्थानक सम्पादकीय परीक्षण आवश्यक अछि; समीक्षा एकरा बिना सूचना वर्तमान अध्यायक प्रत्यक्ष दृश्य मानि नहि प्रस्तुत करैत।

प्रकरण १८४ | मूल अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

रात्रिक मिथकीय दृश्यसँ भोरक निर्माण-दृश्य

‘खेल जे राति पढ़ाइमे उतरल’—एहि आरम्भिक संकेतसँ भीतरक गज-ग्राहक रात्रि आ पाठशालाक भोर सीधा जुड़ैत अछि। कथाक कालगत छलाँग बहुत छोट अछि, मुदा क्रियाक स्वरूप बदलि गेल: भूत, रूपान्तरण आ मानसक युद्धक स्थानपर बालु साफ करब, पात चुनब, खपड़ा आनब आ मंडप बनब। दीर्घ कथाक गति एतय बाहरी चमत्कारसँ सामुदायिक श्रमक ठोस विवरण दिस आबैत अछि।

विद्यालय बिना भवन : संस्थाक नब परिभाषा

अनन्या पाठशाला कहैत छथि, मुदा सरकारी मान्यता अथवा बेंचक साज-सज्जा नहि खोजैत छथि। पहिल पाठ वर्णमालासँ पहिने नामक सुननाइ अछि। ई कल्पना संस्थाक वैधता अधिकारपत्रक बदला साझा नियममे रखैत अछि। विद्यालय बनब एक घोषणा मात्र नहि; लोक द्वारा चिह्नित स्थान, खुलल भागीदारी आ पुनरावर्तित पाठक कार्यक्रमसँ ओकर अस्तित्व बनैत अछि। समकालीन शिक्षा-विमर्शक तुलना देबाक पहिने समीक्षाकेँ एहि मूल घटनाक विशिष्टता देखबाक चाही।

चारि कोना : नाम, निजता, श्रम, साँस

विद्यालयक माटिक नक्शामे चारि कोना बनैत अछि—नाम, निजता, श्रम आ साँस—आ बीचमे ठूँठ। एहि स्थापत्यसँ कथा अपन विगत बहु-विषयक संघर्षकेँ स्थानिक विन्यास देइत अछि। प्रत्येक कोना एक पुरान कथा-वृत्तक स्मृति रखैत अछि; ठूँठ केन्द्र बनैत अछि, मुदा ओकर ऊपर स्मारकीय मूर्ति नहि। खाली कटोरा नव नामक लेल राखल जाइत अछि। ई शून्य स्थान वर्णनमे भविष्यक नैतिक सम्भावना सुरक्षित करैत अछि।

झड़ल पात चुनबाक पारिस्थितिक अर्थ

बच्चा सभ जीवित नारिकेल पात नहि काटैत; अपने झड़ल पात उठबैत छथि। कटल चन्ना गाछीक इतिहासक बीच ई सूक्ष्म चयन महत्त्वपूर्ण अछि। पुनर्निर्माण फेर एकटा हरियर देहक नाशपर आधारित नहि होइत। माटि, पात आ पाथरक सामग्रीक अपन गन्ध, रुखड़ स्पर्श आ सीमित आयु अछि। उपन्यास पर्यावरणकेँ केवल पुनर्जीवनक घोषणामे नहि, सामग्री चुनबाक नापल क्रियामे सेहो उपस्थित करैत अछि।

उलटल नक्शापर नव योजना : दस्तावेजक पुनरुपयोग

ईरा नगरपालिकाक काटल रेखावला नक्शाक पाछाँक भागपर पाठशालाक पहिल योजना बनबैत छथि। पुरान प्रशासकीय रेखाङ्कनक उलटल पन्ना नव सामुदायिक लेखनक आधार बनैत अछि। एहि दृश्यसँ अभिलेखक विरोध कागच फाड़ि देब नहि रहैत; कागचक उपयोगाधिकार बदलैत अछि। वस्तु एक्के रहितहुँ लिखनिहार आ उद्देश्य बदललासँ सत्ता-सम्बन्ध बदलैत अछि।

अधूर संकेत-पात आ खुलल लेखकीय अधिकार

पातसभपर ‘पुलक पाया’, ‘डिजिटल डेर’, ‘मीराक अनुमति’ जेकाँ पूरा कथा नहि, संकेत लिखल जाइत अछि। प्रत्येकक नीचाँ खाली स्थान भविष्यक श्रोता आ गवाह लेल छोड़ल गेल अछि। एहि खुलल पद्धतिमे कथाकारक पूर्ण नियन्त्रणक सट्टा बहु-लेखकीय सम्भावना उपस्थित अछि। खाली पाँति लोप नहि, अगिला वक्ताक स्थान अछि; तथापि लेखनक वास्तविक निरन्तरता आगूक अध्यायमे प्रमाणित होयत।

चारि आरम्भिक नियम : देह, कागच आ मौन

देविका बिनु अनुमति दुख नहि लिखबाक बात, मीरा देहकेँ तमाशा नहि बनएबाक नियम, गोप कुमार कागचक संग स्वरक आवश्यकता आ सत्यव्रत सुनबाक मौनक मान्यता जोड़ैत छथि। सभक योगदान हुनकर पूर्वकथाक अनुभवसँ उपजैत अछि। नियम लेल बौद्धिक दावाक स्थानपर पात्रक जीवन-स्थितिक आधार उपस्थित अछि। ई विशिष्टता पाठशालाकेँ घोषणापत्रक निर्जीव प्रतिलिपि बनबाक जोखिमसँ बचबैत अछि।

शिक्षकक आपत्ति आ उपस्थिति-पञ्जीक प्रतिलोम

शहरक शिक्षक चारि पाँति लिखि विद्यालय बनबाक दावापर हँसैत छथि। बा भवनक परीक्षामूलक ढाँचा आ मनुष्यक नियममे अन्तर रखैत छथि। महत्त्वपूर्ण अछि जे शिक्षक अपमानित भऽ कथा सँ बाहर नहि जाइत; ओ अपन उपस्थिति-पञ्जी लऽ कऽ घुरि अबैत छथि। एहि छोट कर्ममे प्रतिपक्षी पात्र आत्मसमीक्षाक भाग बनैत अछि। भिन्न मतक परिवर्तन भाषणक विजय नहि, अभिलेख दोबारा पढ़बाक क्रिया अछि।

जाति-आधारित झिझक आ साझा पात

एक चर्मकार बालक पात उठबैत संकोच करैत अछि; ब्राह्मण बालक पहिने पाछाँ हटैत अछि, फेर दुनू एकहि पात पकड़ैत छथि। साझा वस्तु पर दू हाथक पड़ब समाजक दीर्घ विभाजनकेँ क्षणिक दृश्य बनबैत अछि। हरियर रेखाक जादुई चमक एहि स्पर्शकेँ कथा-भीतर प्रत्युत्तर दैत अछि। मुदा एक पातक मिलल हाथसँ जाति-व्यवस्था समाप्त भेल—एहन निश्चय पाठ नहि करैत; ई अगिला शिक्षाक आरम्भ अछि।

‘उगि नहि, जुटि गेल’ : मीराक भाषायी संशोधन

लोक कहैत अछि जे गाछि कटला पर पात ‘उगि’ गेल; मीरा सुधारैत छथि—‘उगि नहि, जुटि गेल।’ एहि शब्द-संशोधनमे अध्यायक कथा-विधान व्यक्त अछि। चमत्कारी स्वयंस्फूर्त पुनर्जन्मक बदला लोकक काम, समय आ सहयोगक दृश्य पाछाँ रखल जाएत। उपन्यासक जादुई यथार्थवादी वातावरण बीच ई छोट यथार्थवादी प्रतिवाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। प्रकृति आ मनुष्यक श्रमक बीच सही सम्बन्ध भाषाक एक क्रियापदमे दर्ज होइत अछि।

खाली कटोराक ध्वनि : घंटीक विकल्प

अनन्या धातुक विद्यालय-घंटी नहि बजबैत, माटिक कटोरा तीन बेर धीरे बजबैत छथि। ध्वनिक हलुकपन पूजा-मन्त्रक गर्जन वा संस्थागत अनुशासनसँ भिन्न शिक्षाक लय बनबैत अछि। ई कटोरा अनुपस्थित नामक प्रतीक्षा सेहो करैत अछि। एक वस्तु दृश्य-शून्यता आ श्रव्य-आह्वान दुनू भूमिकामे उपस्थित अछि। ध्वनिकेँ कथा भीतर स्मृतिपर अधिकारक बजाय सुनबाक समय उद्घाटित करबाक साधन बनाओल गेल अछि।

पाँचम नियम : अनुपस्थित पहिने बजाओल जाए

पाठशाला खुलबाक बाद अनन्या पाँचम नियम जोड़ैत छथि—जे अनुपस्थित अछि, ओकरा पहिने बजाओल जाए। एतय मृतक, लापता, जातिगत बहिष्कृत, डिजिटल ठगीक पीड़ित आ लाजमे नुकाएल लोकक अर्थ एक नामक विस्तारमे समाएत अछि। ‘अनुपस्थित’ शब्द प्रशासनिक सूचीसँ उठि नैतिक अपूर्णताक संकेत बनैत अछि। एहि विस्तारक शक्ति एकर समावेशमे अछि; जोखिम ई जे सभ भिन्न हानिक इतिहास एकहि सामान्य श्रेणीमे समतल भऽ जाय।

नर-भूतक स्थगित खेल आ श्वासक विराम

रात्रिमे कबड्डीक सम्भावना उठैत अछि, मुदा बा बच्चा सभकेँ साँस बचएबाक निर्देश दैत छथि; भूत सभ सेहो खेल नहि करैत। दीर्घ कृतिमे बार-बार लौटैत कबड्डीक लय एहि बेर जानि-बुझि रोकी गेल। ई नकारात्मक घटना कथा-गतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि: श्रमक बाद विश्राम, उत्सवक बाद अनुशासन, आ दृश्यरूपकक बाद अगिला दिनक प्रतीक्षा। अनवरत चमत्कारक थकानसँ उपन्यास बचैत अछि।

‘उ’ अक्षरक अधखुलल आभास

रात्रिक पात-छाह आ कटल ठूँठ मिलि माटिपर अनपहिचान आकृति बनबैत अछि; सत्यव्रतकेँ ओ ‘उ’ जेकाँ लगैत अछि। कथावाचक अक्षरकेँ निश्चित नहि करैत, ओकरा पात्रक अनुमानक रूपमे रखैत छथि। पाठशालाक पहिल पाठ पहिने घटना नहि, उभरैत लिपि बनल। देह, वस्तु आ ध्वनि मिलि अक्षरक जन्मक दृश्य बनबैत छथि; एहि पाठमे ज्ञान निर्मित होइत अछि, थोपल नहि जाइत।

आरम्भिक गीतक विषयगत पूर्वगमन

अध्याय ८३क आरम्भिक गीत ‘उपस्थितिक गीत’ अछि, जे मुख्य कथा मे पाठशालाक निर्माणसँ अगिला अध्याय ८४क पहिल पाठसँ अधिक सोझ जुड़ैत अछि। अध्यायान्तमे ‘पातक आसन’ गीत वर्तमान घटनासँ मिलैत अछि। एहि द्वैध संरचनासँ स्पष्ट होइत अछि जे आरम्भिक आ अन्तिम गीतक कार्य एक नहि। लगातार अगिला विषयक ओर आरम्भिक गीतक सरकाव नियोजित पूर्वाभास या सम्पादकीय विन्यास-दोष, दुनू दृष्टिसँ निरीक्षण योग्य अछि।

प्रकरण १८५ | मूल अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

हाजिरीक शब्दसँ सामाजिक अस्तित्व धरि

पाठशालाक पहिल भोर ‘उपस्थित’ शब्द स्वयं घंटीक काम करैत अछि। बच्चा सभ ने वर्णमाला ने गणना, पहिने नामक संग ठाढ़ रहबाक अभ्यास करैत छथि। सामान्य विद्यालयक दैनिक प्रशासनिक क्रियाकेँ उपन्यास सामाजिक मान्यताक नाटकीय अनुष्ठानमे बदलैत अछि। एकहि शब्दक क्रमशः उच्चारणसँ जकरा सूचीमे अनुपस्थित कएल गेल, ओकरा सार्वजनिक श्रवणमे ठाम भेटैत अछि। ई प्रक्रिया वास्तविक जीवनक संकट तुरन्त समाधान नहि करैत, मुदा कथात्मक दृश्य-पटल बदलि दैत अछि।

सीतामोनि : घरेलू सम्बोधनक भीतर छुपल जीवन

पहिल बच्चा अपन नानीक असल नाम ‘सीतामोनि’ कहैत अछि; घरमे हुनका केवल ‘ओ बुढ़िया’ कहल जाइत छल। सम्बोधनक छोट अन्तर पात्रक सम्पूर्ण सामाजिक हैसियत प्रकट करैत अछि। नाम, उमेर आ रिश्तेदारीक व्याकरणमे जे अस्तित्व मेटल, से बच्चाक स्वरमे पुनः उदित होइत अछि। कथाकार दीर्घ जीवनी नहि सुनबैत; एक उच्चारण आ रजिस्टरक एक पाँतिसँ जीवनक अपमानक परिमाण अनुमान करबाक ठाम छोड़ैत छथि।

भोलाराम : रात्रिक नाम दिनमे अबैत अछि

सोनकि अपन मामा भोलारामक नाम कहैत अछि, जिनकर नदीमे गेलाक कथा घरक भीतर राति कहल जाइत छल, मुदा सार्वजनिक रूपेँ बाहर कमाइ जएबाक कथा चलैत छल। रजिस्टरमे ‘रातिसँ दिनमे उपस्थित’ लिखल जाएब समयक नब सामाजिक अर्थ बनबैत अछि। दिन एतय केवल सूर्योदय नहि, सार्वजनिक कथनक अवसर अछि। नदीक मृत्यु वा लापताक असल परिस्थितिक अनुसन्धान एखन शेष अछि; नाम-पाठ ओहि जाँचक स्थानापन्न नहि बनैत।

मंगलू दास : जातिक हाशियासँ पृष्ठक केन्द्र

चर्मकार पूर्वज मंगलू दासक नाम सुनि किछु बूढ़ लोक असहज होइत छथि। देविका हुनकर नाम रजिस्टरक बीचमे लिखैत छथि—एहि दृश्यगत व्यवस्थामे पृष्ठक केन्द्र श्रमक आधार बनैत अछि। कथा ‘के पहिने’क बहसकेँ पन्नापर ‘कहाँ लिखब’क प्रश्न बनबैत अछि। जातिगत अपमानकेँ केवल उच्च विचारक माध्यमसँ नहि, वास्तविक लिपि-विन्यास बदलि परास्त करबाक क्रिया प्रस्तुत अछि। एहि केन्द्रस्थापनक प्रतीकात्मक सीमा सेहो स्पष्ट अछि: सामाजिक संरचना एखन विद्यमान अछि।

अज्ञात बेटी आ निजी सुरक्षाक सम्बन्ध

एक बच्चा अपन धमकाओल गेल बहिनक नाम नहि बाजि पबैत; मीरा सार्वजनिक लेखनक बदला संकेतात्मक वाक्य प्रस्ताव करैत छथि। ‘एक बेटी—गरिमासहित उपस्थित’ एहन पाँति अछि जे स्मरण करैतहुँ अनावश्यक पहिचान उघारैत नहि। कथानक एहि ठाम ‘सभ नाम बाजू’क पहिले नियमकेँ जटिल बनबैत अछि। नाम-उच्चारणक सामूहिक साहस आ व्यक्तिक अस्वीकारक अधिकार एक्के रजिस्टरमे निवास करैत अछि। ई नैतिक टकरावक शिल्पगत सफलता अछि।

उलटल पाथरक ‘म’ : सम्भावित अर्थक बहुलता

अनन्या खाली पाथर उनटबैत छथि, नीचाँ अधलिखल ‘म’ देखाइत अछि। बच्चा सभ ओकर अर्थ मंगलू, माए अथवा मृतक सँ जोड़ि सकैत अछि। एक दृश्य चिह्नक अनेक पाठ सम्भव रखल गेल अछि। कथन-पद्धति ध्वनि, अनुमान आ पुरान सुनल कथामे भिन्नता देखबैत अछि, मुदा समीक्षाक कार्य एहि शैक्षिक दृश्यकेँ नव्य-न्यायीय तर्क-परीक्षामे बदलनाइ नहि। कथात्मक रूपमे ई नामक अनिश्चितता आ सुनबाक धैर्यक नाटकीय अभ्यास अछि।

शास्त्रीय इतिहासक प्रश्न : पात्रक दावाक मर्यादा

गंगेशक जीवनक विवादित विवरण बालसभा आ पण्डितक संवादमे पुनः अबैत अछि। सौम्या कतोक प्रश्नक उत्तर देबाक बदला ओहि प्रश्नकेँ रजिस्टरमे जीवित रखबाक समर्थन करैत छथि। समीक्षात्मक दृष्टिसँ एहि दृश्यकेँ

उपन्यास-भीतरक इतिहास-बोध आ वर्चस्वक प्रतिरोधक रूपमे पढ़ब उचित अछि। नामोल्लेखित वास्तविक विद्वानसभ पर पात्र द्वारा कएल दावाकेँ मूल कथासँ बाहर सिद्ध तथ्य घोषित करब साहित्यिक पाठसँ आगाँ अनधिकृत छलाँग होएत।

फुलकुमारीक ताबीज : अक्षर विखण्डित, स्वर बचल

बूढ़ स्त्री अपन मायक नाम राखल पुरान ताबीज देखबैत छथि; भीतरक कागच सड़ि चुकल अछि, खोललासँ टूटबाक डर अछि। सौम्या ओकरा जबर्दस्ती नहि खोलैत छथि। स्त्री अपन मायक नाम स्वयं कहैत छथि —‘फुलकुमारी’। लिखित वस्तुक नाश आ मौखिक उत्तराधिकारक बचल स्वर एहि दृश्यकेँ नाजुक बनबैत अछि। ताबीजक स्वतः खुलल सूत जादुई प्रतिक्रिया अछि; ओकर महत्त्व निजी नामक अनुगूँजमे अछि, न अभिलेखक वैज्ञानिक सत्यापनमे।

पण्डितक आपत्ति आ सार्वजनिक उत्तरक क्रम

परम्परागत पण्डित पाठशालाक पाठकेँ शास्त्र-विरुद्ध कहैत छथि; अनन्या आ ईरा प्रश्न करैत छथि जे व्यवस्था जँ नाम खाए तँ ओकर नैतिक स्थान की रहत। एहि संवादमे तर्क वैयक्तिक आचारसँ सामुदायिक वैधता धरि बढ़ैत अछि। मुदा पण्डितक संक्षिप्त विरोध शीघ्र मौन भऽ जाएब एक शिल्पगत सीमा सेहो अछि; जटिल संरचनागत संघर्षक प्रतिपक्ष कथानकमे अपेक्षाकृत सहज पराजित देखाइत अछि। ई भिन्नता आलोचनामे सुरक्षित रखब आवश्यक।

सामूहिक ‘उपस्थित’क अनुष्ठानिक लय

साँझक नाम-पाठमे प्रत्येक नामक बाद एक सामूहिक उत्तर उठैत अछि। दोहराव पाठकक समय लम्बा करैत अछि, जखन घटनाक क्रिया अपेक्षाकृत कम अछि। एहि पुनरुक्तिसँ हाजिरी एक स्थायी स्मृतिअनुष्ठानक रूप ग्रहण करैत अछि। नामक क्रम नित नब जीवन जोड़बाक सम्भावना रखैत अछि। कथाकार ई लयकेँ स्वाभाविक सामूहिक संगीत बनबैत छथि; तथापि सभ लोकक समान उत्साह मानलासँ सामाजिक असहमतिक आयाम कम भऽ सकैत अछि।

स्मृति आ निजताक नब अनुबन्ध

‘निजता काटि कऽ स्मृति नहि बनत’—मीरा एहि अध्यायक महत्त्वपूर्ण प्रतिवचन दैत छथि। पहिने नाम-पाथर मुख्यतः विस्मृतिक विरोधमे छल, आब तकर लेखनक अधिकार शर्तसहित अछि। किछु नाम पूरा, किछु आंशिक, किछु परिवारक अनुमति धरि रोकल जएत। ई औपचारिक छोट व्यवस्था कथा-दर्शनमे ठोस विकास अछि। सामाजिक असहायकत्वक अनेक रूपक बीच लेखक व्यक्तिगत गरिमाक एक स्पष्ट सीमा बनबैत छथि।

बिनु तमाशाक जादुई घटना

फुलकुमारीक ताबीज खुलब, पातक स्वयंस्फूर्त सरसराहटि आ ठूँठक हरियर बिन्दुक कम्पन—ई सभ असामान्य घटना अछि। मुदा बच्चा सभ चमत्कारक घोषणा अथवा मीडिया तमाशा नहि करैत। जादुई यथार्थक ई संयम एक आधारभूत नियमक जकाँ काज करैत अछि: दृश्य श्रवणक विस्तार हो, शोषणक नब प्रदर्शन नहि। कथानक अपनहि चमत्कारपर संयम लगा कऽ आत्मालोचनाक क्षमता दिखबैत अछि।

दिवससँ राति : स्त्री-सभाक कथात्मक आवश्यकता

दिनमे उच्चारित नामक बीच स्त्रीसभकेँ बुझाइत अछि जे कतोक अनुभव केवल रात्रिक सुरक्षित घेरामे कहल जा सकैत अछि। मीरा खाली पन्ना रखैत छथि आ अगिला पाठ स्त्रीसभक द्वारा आयोजित होएबाक संकेत दैत छथि। ई अन्त अपूर्णताक घोषणाक रूपमे सफल अछि: सार्वभौमिक उपस्थितिक दावा महिला अनुभवक निजताक शर्त बिनु अधूर अछि। अगिला अध्याय एही कथात्मक आवश्यकता सँ जन्मैत अछि।

आरम्भिक गीतक स्त्री-मण्डलीक ओर झुकाव

‘पहिल पाठ: उपस्थित’ शीर्षकवाला अध्याय ८४ आरम्भ होइत अछि ‘स्त्री सभक उज्जर पहर’ गीतसँ, जकर मुख्य विषय अध्याय ८५क राति-सभा अछि। अध्यायान्तक सामूहिक उपस्थितिक गीत वर्तमान पाठसँ सम्बन्धित रहल। फलतः आरम्भ आ अन्तक गीत भिन्न समय-संकेत दैत छथि। एहि प्रकारक क्रमिक विषय-सरकाव समग्र गीत-सम्पादनक जाँच लेल एक ठोस पाठ-संकेत अछि; एकरा न त स्वतः भूल कहल जाए, न बिना प्रमाण अभिप्रेत पूर्वाभास।

प्रकरण १८६ | मूल अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

दिनक पाठसँ रातिक स्वायत्त स्थान

स्त्री-सभा दिनक पाठशालाक सरल विस्तार नहि; बैठकक समय, भागीदार आ लेखन-अधिकार नव बनैत अछि। पुरुषक बहस थमिते स्त्रीसभ ठूँठक चारूकात स्वतः एकत्र होइत छथि। ने औपचारिक निमन्त्रण ने अध्यक्षक मंच। एहि अनौपचारिक स्थापनमे घटना-सृजनक अधिकार सभा मे आबएबला स्त्रीसभक हाथ अछि। राति केवल अन्हार नहि, जोखिमसँ किछु बचल गोपनीय स्थानक निर्माणक समय अछि।

देहक गन्ध, ओस आ मौनक संवेदनात्मक रचना

रातिक वर्णनमे ओसक महीन बून्द, बेंगक टेर, पानिक छप्प आ भीजल कपड़ाक उपस्थिति अछि। प्रथागत ‘स्त्री-वेदना’क अमूर्त घोषणा बनएबाक बदला उपन्यास स्त्रीसभक देह-स्थितिक आसपास वातावरण रचैत अछि। स्त्रीसभ मंचपर अभिनय नहि करैत; हाथमे कमीज, पोटली, लाठी, दीया आ पानी लऽ कऽ अबैत छथि। एहन वस्तुसभ वाणी आरम्भसँ पहिने जीवनक असमान भार देखबैत अछि।

मीराक पहिल वचन : सुरक्षा, नहि अधिकार-ग्रहण

मीरा सभा ‘आरम्भ’ नहि, पहिने ओकर रक्षाक नियम दैत छथि। कथन करनिहार अपन कथाक स्वामी रहत; अनुमति बिना किछु लिखल वा देखाओल नहि जाएत; चुप्पी सेहो उपस्थित। एहि क्रियासँ नेत्री बनल पात्र सभाक नामपर दोसर स्त्रीक जीवन हड़पैत नहि। कथन-अधिकारक केन्द्र सामाजिक श्रोता नहि, अनुभव कहनिहारक स्वीकृति बनैत अछि। ई दायित्वक माप कथा-लेखनक पद्धति पर सेहो लागू होइत अछि।

उज्ज्वलक मायक कमीज : वस्तु पहिने बोलैत अछि

उज्ज्वलक माय अपन बेटाक पुरान कमीज ठूँठ लग राखैत छथि। कथावाचक ओकर नोन, पसेनाक स्मृति आ धुलाएल नहि होएबाक स्थिति सँ शोकक पदार्थ बनबैत छथि। मायक कथन डिजिटल ठगीक हिंसाकेँ परिवारक

चुप्पी आ पीड़ितक लाजसँ जोड़ैत अछि। ‘हमहूँ ओकर डर नहि सुनि सकलहुँ’ कहबाक क्षमता आत्म-दोषारोपणक महिमामण्डन नहि, शोकक जटिल आत्मसम्बोधन अछि।

देविकाक कथन : पीड़ितपर थोपल लाजक अर्थ

देविका आर्थिक ठगीक संग पीड़ितकेँ मूर्ख अथवा बदनाम ठहरएबाक सामाजिक चाल खोलैत छथि। डिजिटल अपराधक रूपये-केन्द्रित चर्चा स्त्री-युवकक बोलबाक अधिकारक समस्या बनैत अछि। सभाक भीतर ई द्वितीयक हानि पहिल बेर सामूहिक नाम पबैत अछि। कथाकार ठगक अदृश्य जाल आ पीड़ितक घरमे होइत दृश्य लाजकेँ एकहि वाक्य-क्रममे जोड़ैत छथि। एहि सम्बन्धसँ आरोपक दिशा पीड़ितसँ अपराधी आ मौन सामाजिक वातावरण दिस पलटैत अछि।

‘मुन्नाक घरबाली’ सँ फुलकुमारी : अपना नामक स्वामित्व

पुलमजदूरक विधवा पहिने रजिस्टरमे रिश्ताक नाम ‘मुन्नाक घरबाली’ रूपेँ लिखल गेल छल। रातिक सभामे ओ कहैत छथि—‘हमर नाम फुलकुमारी अछि।’ ई आत्म-परिचय केवल नामक सुधार नहि; श्रमक इतिहासमे स्त्रीक अलग यात्रा जोड़ैत अछि। पुलक पाया लग डूबल मजदूरक कथा संग रोटी लऽ जाएबला पएर आ फाटल एड़ीक श्रम-दृश्य अगिला अध्यायक आधार तैयार करैत अछि।

सौम्याक बन्द नोटबुक : लेखनक आत्मसंयम

सौम्या प्रारम्भमे नोटबुक बन्द रखैत छथि; बादमे केवल ‘देहक प्रमाण’ शीर्ष लिखि पृष्ठ खाली छोड़ैत छथि। लेखक वा शोधार्थीक प्रत्यक्ष अधिकारक ऊपर सूचित सहमतिक सीमा स्थापित होइत अछि। कियो आघातक कथा सुनि लेलाक कारण ओकर पाठ-अधिकार स्वतः प्राप्त नहि करैत। एहिसँ समीक्षा-ग्रन्थ स्वयं सेहो प्रश्नमे पड़ैत अछि: आलोचक जे पुनर्कथन करैत अछि, ओकरा पाठक गरिमा कतेक जोगबैत अछि? मूल घटना एहि आत्मसंयमक महत्त्व बढ़बैत अछि।

ईराक प्रवासी दृष्टि आ स्त्रीक इतिहास

ईरा विदेशमे मिथिलाक चित्र, लोकगीत आ वस्त्र-कला सँ स्त्रीजीवनकेँ चिन्हबाक अपन पुरान ढंगपर प्रश्न करैत छथि। हुनका लेल गामक स्त्री रंगीन प्रतिनिधि नहि, तर्क करनिहार जीवित व्यक्ति बनैत छथि। हुनकर कथन गंगेशक जीवनसँ सम्बन्धित दबाओल स्त्री-स्मृतिक प्रश्न जोड़ैत अछि। आलोचनामे ई दृश्यक ऐतिहासिक आरोपकेँ पात्रक स्मृति-विमर्श रूपमे पढ़ब जरूरी अछि; स्रोतसँ बाहर आरोपक इतिहासकार-जेकाँ प्रमाणीकरण नहि।

जाति, प्रेम आ देहपर पहरा

सरयूक वंशक बूढ़ी स्त्री जाति-व्यवस्थाक जाति-शुद्धिक आग्रहकेँ प्रेम, विवाह आ स्त्रीदेह पर नियन्त्रणसँ जोड़ैत छथि। कथानकक सामाजिक सीमा परिवारसँ व्यापक जातिगत अनुशासन धरि बढ़ैत अछि। रात्रिक सभा एहि कठोर सम्बन्धकेँ प्रत्यक्ष अनुभवक आवाज दैत अछि। मुदा विभिन्न परिवारक हानि एतय छोट कथनोक्तिमे सिमटैत अछि; पाठककेँ बुझबाक चाही जे एक घोषणासँ सभ हिंसाक भिन्न कारण प्रमाणित वा समाप्त नहि होइत।

लाल डोरी : बन्धनक बदलैत अर्थ

मीरा लाल डोरी प्रत्येक स्त्रीकेँ दैत छथि, मुदा डोरी ठूँठपर सार्वजनिक चढ़ावा बनि नहि बान्हल जाइत; कथन करनिहार अपन कलाईमे राखैत छथि। एहि वस्तुकेँ स्वामित्व आ स्मरणक निजी चिह्न बनाओल गेल अछि। डोरीक पुनरावृत्ति कई पूर्ववर्ती सुरक्षा-नियमसँ जुड़ैत अछि, तथापि हाथमे रखबाक शर्त सामूहिक प्रतीककेँ वैयक्तिक अधिकारमे सीमित करैत अछि। रूपकक इएह सूक्ष्म दिशा पितृसत्तात्मक सामुदायिक कब्जा रोकैत अछि।

‘गोपनीय उपस्थित’ : नाम नहि बाजबो अधिकार

एक युवती अपन प्रेमक नाम सार्वजनिक नहि करबाक आग्रह करैत छथि। रजिस्टरमे ‘गोपनीय उपस्थित’ लिखल जाइत अछि। ई छोट वाक्य पहिल दिनक ‘उपस्थित’ नियमक आवश्यक संशोधन अछि। स्मृति-आख्यान जँ प्रत्येकक पहचान खुलासा अनिवार्य मानत तँ हिंसाग्रस्त व्यक्तिक सुरक्षा भङ्ग होएत। एहि दृश्यसँ उपन्यास सामुदायिक सत्यक संग गोपनीयता निभबाक जटिल पद्धति कल्पित करैत अछि, जे भावुक स्मृतिचर्चासँ अधिक परिपक्व कथात्मक निर्माण अछि।

स्त्री भूतसभक घेरा आ स्वीकृत स्थान

रात्रिक अन्तमे पानिक कगारपर स्त्री भूतसभक छाह देखाइत अछि; ओ सभ खेल नहि करैत, मानो सभा-बैसारक गोलाइ नापैत छथि। पूर्वक कबड्डी-भूतक पुरुष-प्रधान प्रतीक एतय स्त्रीक स्थान-संकटसँ फेर प्रश्नित अछि। जादुई दृश्य नारी-अनुभवक इतिहासकेँ दृश्यमान करैत अछि; छाहसभ स्पष्ट पहिचान बिना रहैत छथि, जे विस्मृत नामक कठिनाई स्वयं देखबैत अछि। मुदा रहस्यक मोह स्त्रीसभक प्रत्यक्ष वाक्यसभकेँ ढाँकि नहि दैत।

पाँच ठहराव : नियम, प्रस्ताव आ परिणाम

सभा भोरसँ पहिने पाँच बात स्थिर करैत अछि—कथनक अनुमति, जातिगत हिंसाक प्रश्न, ठगीक लाजक पुनर्निर्देशन, मजदूर संग घरक स्त्रीक नाम, आ निजताक गरिमा। कोनो औपचारिक मतदान वा सरकारी आदेश नहि भेल। ‘ठहरल’ कथन प्रक्रिया-भिन्न सामूहिक सहमतिक क्रिया अछि। आलोचना एहिसँ संस्थागत कानून बनबाक दावा नहि करैत; ई भविष्यक व्यवहारक साझा रूपरेखा अछि, जकर परीक्षा अगिला अध्यायक पएर-अभिलेखमे भेटत।

फाटल एड़ीसँ पुलक कथा दिस गति

फुलकुमारी भोरमे अपन एड़ी देखबैत ‘काल्हि पएर पढ़ू’ कहैत छथि। एहि देहगत संकेतसँ नब अध्यायक विषय निर्गत होइत अछि। सामान्य कथावस्तुक रूपमे पुल पुरान दुर्घटनाक स्थल रहल, मुदा स्त्रीसभाक बाद ओ श्रम-सम्बन्धक व्यापक अभिलेख बनत। स्त्रीस्वरक बाद नब दृश्य शुरू होएब महत्त्वपूर्ण अछि: पुरुष मजदूरक कथा अब केवल पुरुषक नाममे बन्द नहि रहि सकत।

आरम्भिक श्रमगीतक अग्रदृष्टि

अध्याय ८५क आरम्भिक गीत ‘पएरक धूलिसँ बाट’ अछि; ओकर पंक्ति मजदूरक पएरक छाप आ श्रमक मार्गपर केन्द्रित अछि। मुख्य अध्याय स्त्रीसभाक गोपनीय वाणीपर आधारित अछि, जबकि पएर-छापक मुख्य दृश्य ८६मे अबैत अछि। अध्यायान्तक ‘स्त्री सभक राति’ गीत वर्तमान कथाप्रसंगसँ स्पष्ट मिलैत अछि। आरम्भिक गीतक

अगिला-अध्याय समरूपता संयोग मात्र कि व्यवस्थित लग-बदली, एहि प्रश्नक दस्तावेजी संकेत एहि ठाम फेर मजबूत होइत अछि।

प्रकरण १८७ | मूल अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

ठूँठसँ अधबनल पुल धरि दृश्य-स्थानान्तरण

स्त्रीसभाक रात्रिक अन्तमे फाटल एड़ीक प्रश्न उठल; अगिला बिहान बच्चा सभ माटिक कटोरा, काजर, रजिस्टर आ खाली पात लऽ पुल दिस जाइत छथि। कथाक केन्द्र पहिल बेर लम्बा समयक लेल पाठशालाक सुरक्षित घेरासँ दुर्घटनास्थलपर पहुँचैत अछि। एहि स्थल-परिवर्तनसँ ‘उपस्थित’क उच्चारण शारीरिक जीवनक निशान तक विस्तृत होइत अछि। पुलक आधा बनल ढाँचा स्मारक वा विकासक निर्जीव प्रतीक नहि, पुरान श्रमक अटकल अवशेष अछि।

पुलक दू दृश्य : दूरक शोभा, नजदीकक थाकनि

दूरसँ पुल लोहा, सरकारी रंग, सिमेंट आ उद्घाटनक फीताक चमकसँ पहिचानल जाइत अछि; नजदीक पहुँचला पर पाया लग धँसैत माटि आ अदृश्य थाकनि देखाइत अछि। दूरीक बदलाओल अवलोकनक ई युक्ति कथावाचकक कैमरा-जेकाँ गति अछि। पाठककेँ वस्तुक एक रूप आधिकारिक उद्घाटन-चिन्हमे, दोसर रूप मृत श्रमिकक माटिमे देखबाक बाध्यता होइत अछि। स्थानक नाप नैतिक अनुभवक नाप बनैत अछि।

मुन्नाक काकाक पएर-छाप : असाधारण साधारणता

मुन्ना पासवानक काका नाङट पएर पाया लग ठाढ़ भऽ भाईक पसीनाक स्मृति कहैत छथि। हुनकर फाटल तरबा माटिक कटोरामे राखि पातपर छाप लेल जाइत अछि। एतय भूत नहि, एक जीवित देहक करखर स्पर्श कथाक केन्द्र अछि। फोटो वा सरकारी बायोमेट्रिक निशानक बदला सहमतिक पएर-छाप स्मृतिलेखनक विकल्प बनैत अछि। कथावाचक छापक ठंढ आ चट्ट ध्वनिसँ एहि कर्मकेँ संवेदनात्मक गहराइ दैत छथि।

पुरुष मजदूरक संग स्त्रीक अवैतनिक बाट

स्त्रीसभ पहिने पूछैत छथि जे हुनकर पएरक छाप किएक चाही, जखन ओ सभ पुलपर प्रत्यक्ष मजदूरी नहि करैत छलीह। देविकाक प्रश्न—रोटी लऽ जाएबला पएर श्रम नहि?—कार्यस्थलक सीमा विस्तृत करैत अछि। एहि दृश्यसँ घरक भोजन, परिवहन, प्रतीक्षा आ अवैतनिक देखभाल पायाक अर्थव्यवस्थासँ जुड़ैत अछि। स्त्रीसभाक पूर्व रातिक स्वर एखन पुलक ठोस सामग्री बनि रहल अछि।

आरुणिक अभियान्त्रिक दृष्टिक परिवर्तन

आरुणि नक्शा, भार, गहराइ आ सामग्रीक अनुपात नापैत अछि, मुदा एहि दिन पएरक थाकनिक चर्चा करैत अछि। कथाक शक्ति अभियान्त्रिकी ज्ञानकेँ खारिज करबमे नहि, ओकर सीमा चिन्हबमे अछि। तकनीकी सुरक्षा आ श्रमिकक सम्मान दुनू आवश्यक भिन्न स्तर अछि। ‘जे पुल मजदूरक नाम नहि राखै, से अधूरा पुल’—ई कथन स्थापत्यक वास्तविक अपूर्णता आ सामाजिक स्मृतिक अपूर्णता बीच रूपकात्मक सन्धि बनबैत अछि।

छापसभक भिन्न आकार : बहु-देहक दृश्यपञ्जी

बूढ़, बच्चा, स्त्री, पुरुषक छोट-बड़, धूसर-कारी पएर-छाप पातसभपर उभरैत अछि। आँकड़ाक समरूप श्रेणी ‘कार्यबल’क बदला ऐन्द्रिय भिन्नता समक्ष अबैत अछि। पाठक नाम पढ़बाक संग माटि पर पैल-कूद कएल जीवनक आकार देखैत अछि। एहि दृश्यपञ्जीमे भिन्न देहसभ बराबर गरिमा रखैत छथि, मुदा बराबरीक अर्थ सबहक एक अनुभव नहि। एक-एक छाप अलग कथाक सम्भावना अछि।

स्मारक-पट्टिकाक प्रस्ताव आ वस्तु-स्वामित्व

चन्द्रपालक लोक तैयार ‘शहीद श्रमिक स्मृति-देबाल’क पट्टिका लऽ अबैत अछि; नाप, अक्षर आ स्थान पहिनेसँ तय। बच्चा सभ कहैत अछि जे नाम छपब, मुदा पहिने पएर पढ़ब। एहि मुठभेड़मे नामक मुद्रण आ नामक सामाजिक श्रवण बीच सत्तागत अन्तर अछि। बोर्ड लगाबबाक शक्ति प्रायः ठेकेदारक दल लग अछि, नामक अर्थ कहबाक शक्ति पीड़ित परिवार अपना हाथमे राखए चाहैत अछि।

अनुमतिक वाक्य : पएरक छवि ककर?

मीरा स्पष्ट करैत छथि जे पएर-छापक चित्र, कथा वा आँसू परिवारक अनुमति बिना प्रचारमे नहि जएत। प्रत्येक पातक पाछाँ अनुमति-सूचक वाक्य जोड़ल जाइत अछि। एतय पूर्वक स्त्री-सभाक नियम श्रमक वस्तुगत अभिलेख पर लागू होइत अछि। बालकसभ केवल सहानुभूति नहि, उपयोग-अधिकारक व्यवस्था सीखि रहल अछि। कथन-पद्धतिक दृष्टिसँ नैतिक विचार क्रियाक विशिष्ट अनुक्रम—पूछब, छाप लेब, लिखब, जोगाब—मे बदलैत अछि।

‘डेटा नहि, भरोसा’ : अभिलेखक पुनःसीमा

गोप कुमार पएर-छाप देखैत ‘डेटा नहि, भरोसा’ कहैत छथि। ई उक्ति डेटा वा मापनकेँ सर्वथा निरर्थक घोषित नहि करैत; पूर्वक चोरी, बिनु अनुमति चित्रग्रहण आ अनुबन्धीय नियन्त्रणक पृष्ठभूमिमे सन्दर्भित अछि। भरोसा यहाँ केओ व्यक्तिगत भलमनसाहति नहि, स्वीकृति, उद्देश्य आ अभिलेखधारकक उत्तरदायित्वक सम्बन्ध अछि। छोट वाक्यक प्रभाव बृहत्तर डिजिटल कथावृत्तसँ ओकर अनुगूँजक कारण अछि।

कबड्डीक नब सीमा : पएर बनाम कागच

अनन्या माटिपर एक रेखा खींचि एहि पार पएर, ओहि पार कागच रखैत छथि। बच्चा सभ कागचक पट्टिका लऽ पएर-छापक घेरामे घुरबाक खेल खेलैत अछि। ई कबड्डी पूर्वक भूत-खेलसँ परिवर्तित होइत लोक-अभिलेखक नाटकीय अभ्यास बनैत अछि। साँसक समय-सीमा, सीमा पार करब आ लौटब—ई सभ क्रिया दस्तावेजपर श्रमक प्राथमिकताक तात्कालिक प्रदर्शन अछि। खेल नब कानून नहि, मुदा न्यायबोधक देहभाषा बनैत अछि।

सत्यव्रतक पएर-छाप अस्वीकार

सत्यव्रत मेहता अपन जूता खोलि माटिपर पएर रखैत छथि, मुदा अनन्या हुनकर छाप लेब अस्वीकार करैत छथि। ‘अहाँक मौन लिखल जा चुकल’—ई उत्तर साक्षी आ श्रमिकक स्थान भिन्न करैत अछि। सहानुभूति रखब मात्रसँ कोनो पदाधिकारी पीड़ितक अनुभवक अधिकार प्राप्त नहि करैत। दृश्य एहि कारण शक्तिशाली अछि जे ई न्यायप्रिय पात्रकेँ सेहो सामुदायिक सीमासँ बाहर अपवाद नहि बनबैत। सत्ताक पुरान विनय नव केन्द्रत्व कीन नहि सकैत।

दूर चप्पलक ध्वनि : अनुपस्थित देहक लौटब

रातिमे पुलक दिशासँ ककरो नहि रहितहुँ चप्पलक चाल सुनाइत अछि। वाक्य ‘कदाचित हवा’सँ शुरू भऽ स्मृतिक भूतत्वपर खुलल रहैत अछि। भूतक प्रमाणक बदला दृश्य श्रमक नष्ट नामक श्रव्य शेष बनबैत अछि। नाम-पाथर आ पएर-पात संग राखल गेलासँ दस्तावेज अब स्थिर व्यक्ति-सूची नहि, चलल जीवनक चिह्न-संचय बनैत अछि। उपन्यासक श्रवणीय जादुई यथार्थ ई ठाम संयत रूपमे उपस्थित अछि।

पएरक अभिलेख आ सामाजिक क्षतिपूर्तिक अन्तर

नव रजिस्टरक खण्ड ‘पएरक अभिलेख’ कहल गेल; परिवारसभ ‘उपस्थित’क उत्तर दैत छथि। मुदा मजदूरीक अटकल भुक्तान, पायाक सुरक्षा, दुर्घटनाक जाँच वा दोष निर्धारण एतय सम्पन्न नहि होइत। स्मृतिक उपयुक्त भाषा न्यायिक-आर्थिक उपाय लेल आधार बनि सकैत अछि, तकर विकल्प नहि। अध्यायक यथार्थवादी पाठ एहि अन्तरकेँ चिन्हबाक मांग करैत अछि, जेना भावुक छाप-संग्रह सम्पूर्ण श्रमिक-न्यायक समकक्ष नहि मानल जाए।

स्क्रीनक उपवास दिस अन्तिम प्रतिचक्र

अधबनल पुलसँ लौटैत अनन्या अगिला दिन स्क्रीन बन्द राखबाक सूचना दैत छथि। पएर पढ़लाक बाद आँखि आ कान खोलबाक जरूरत केन्द्रीय बनैत अछि। एहि संक्रमणमे देहक अभिलेखसँ दृष्टिक प्रशिक्षणक ओर रेखा चलैत अछि। अध्याय ८६क आरम्भिक गीत ‘परदाक विश्राम, आँखिक उत्सव’ अगिला ८७क घटना अधिक स्पष्ट रूपेँ गबैत अछि। मुख्य अध्यायक अन्तिम ‘मजदूरक पएरक धूलि’ गीत वर्तमान घटनाक संग मेल खाइत अछि; आरम्भिक गीतक अग्रवर्ती स्थिति फेर जाँच योग्य अछि।

प्रकरण १८८ | मूल अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

स्वेच्छाक घोषणा आ ग्रामीण असहमति

बच्चा सभक स्क्रीन-उपवासक प्रस्ताव पर गाम तात्कालिक दू ध्रुवमे बँटि जाइत अछि। दबाइक सम्पर्क, शहरमे रहैत बेटाक सन्देश आ दुकानदारक लेन-देनक प्रश्न उठैत अछि। कथाकार एहि उपयोगसभकेँ अनसुना नहि करैत। बच्चा सभ आपतकालक बाट खुलल राखि उपवासकेँ स्वेच्छिक बनबैत छथि। एहि शर्तक बिना कथा तकनीक-विरोधी आज्ञा बनि पड़ित; व्यवहारिक आपत्ति सुनब उपवासक कथात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

माटिक ‘स्क्रीन-घड़ा’ : उपकरणक अस्थायी पुनर्व्यवस्था

ठूँठ लग माटिक घड़ा राखि मोबाइल वा टैबलेट कपड़ाक थैलीमे जमा कएल जाइत अछि। उपवासक वस्तु-प्रबन्ध सामान्य अछि—कोनो यन्त्र नष्ट नहि, कोनो बाध्यकारी कब्जा नहि। एतय शक्ति नब अधिकारसँ नहि, उपकरण उपयोगक स्थगित समयसँ उत्पन्न होइत अछि। एक दिनक विराम संवेदनात्मक अनुभवक अलग अवकाश बनबैत अछि। कथा तकनीकविहीन भविष्यक घोषणा नहि, तकनीकसँ सम्बन्धक पुनःमोल-तोल करैत अछि।

देविकाक मोबाइल आ व्यक्तिगत शोकक विराम

देविका अपन मोबाइल रखैत काँपैत छथि, कारण उपकरणमे उज्ज्वलक अन्तिम सन्देशक छाह बचल अछि। स्क्रीन एतय केवल लत वा तमाशाक साधन नहि, निजी शोकक भण्डार सेहो अछि। उपवास करब एहि स्मृतिक

अपमान नहि; एक दिन लेल ओकरा पँजरा नहि बनएबाक निर्णय अछि। एक्कहि उपकरणक भीतर सांत्वना, भय आ अपराधक तंतु होइत अछि—एहि जटिलता कारण तकनीकक एकतरफा नैतिक वर्गीकरण टरल अछि।

मीरा, सौम्या आ सत्यव्रतक अलग-अलग विराम

मीरा डिजिटल दृष्टिद्वारा अपन गरिमापर भेल आघात मोन करैत छथि; सौम्या समाचारक परदाक बदला लोकक मुँहसँ सुनबाक निर्णय लैत छथि; सत्यव्रत फोन बजिते बीच सभा छोड़बाक पुरान आदत स्वीकार करैत छथि। तीनू पात्र एक उपवासमे शामिल छथि, मुदा अनुभव भिन्न अछि। बहु-दृष्टिकेन्द्रीय कथन एक सामान्य सार्वजनिक उपायकेँ समान परिणामक दावेँ नहि बेचैत। प्रत्येक पात्रकेँ अपन विगत दृश्यसँ जुड़ल एक अलग कारण देल गेल अछि।

बाक चश्मा : उपवासक असमान वस्तु

बाक लग मोबाइल नहि; ओ अपन चश्मा घड़ाक कात रखैत छथि आ कहैत छथि जे आइ सुनब। ई क्रिया तकनीकक श्रेणी समान नहि, मुदा सुनबाक संकल्पक प्रतीकात्मक विस्तार अछि। समीक्षामे चश्मा आ मोबाइलकेँ समान जोखिमवला यन्त्र कहल नहि जा सकैत। वस्तुक असमानता स्वीकार करिते सेहो ई दृश्य इन्द्रियक बदलैत प्राथमिकताकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। कथा वस्तुक संयोगसँ अनुभूतिक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

सूचनाक घण्टीसँ चूल्हि-इनारक ध्वनि

मोबाइलक टुनटुनाहट बन्द भेला पर मुर्गाक आवाज, करछुलक टकराहट, इनारक रस्सीक चरमराहटि आ बच्चाक हँसी उभरैत अछि। सुनबाक परिवर्तित चयनसँ कथाक ध्वनि-पटल बदलि जाइत अछि। ध्वनि पहिलेओ विद्यमान छल, मुदा पात्रसभक ध्यान ओकरा प्राथमिकता नहि देइत छल। ई ‘आब शुद्ध गाम’क वापसी नहि; इन्द्रियक उपलब्ध समयक पुनर्वितरण अछि। उपन्यास एक सामूहिक क्रियाकेँ पाठकक श्रव्य अनुभूतिमे फेर रचैत अछि।

‘मुँह-पाठ’ : डिजिटल सूचीसँ लोकक कथनधरि

एहि दिन साधारण नाम-पाठक बदला ‘मुँह-पाठ’ होइत अछि। परिवार पुल, बाढ़ि, दबाइ, डिजिटल डर आ छलक पुरान अनुभव अपन स्वरमे कहैत अछि। कथनक स्रोत बहु-वक्तामय अछि; एक सर्वज्ञ रिपोर्टक बदला लघु मौखिक दृश्य जुड़ैत अछि। गामक एकाकीपन डिजिटल धोखाक अवसरक रूपमे उभरैत अछि। कथा कथन-माध्यम बदलि समस्या देखबाक शैली बदलैत अछि—यन्त्र बन्द कएलासँ अलग, मानिसक सुनब नव माध्यम बनैत अछि।

हाथक बही आ उधारक सामाजिक चेहरा

दुकानदार लेन-देन हाथेँ लिखैत छथि, आ कर्जदारक नामक संग विधवाक चावल, आंशिक भुक्तान आ पुरान सम्बन्ध याद होइत अछि। स्क्रीनमे अंक पहिने प्रदर्शित छल; कागच खोललापर सामाजिक कथा उपस्थित होइत अछि। एहि विरोधमे कागचक स्वतः नैतिक श्रेष्ठताक दावा नहि, बल्कि सङ्ख्याक संग सन्दर्भ जोड़बाक अवसर अछि। पूर्वक उपन्यास कागचक छलो देखौने अछि, तेँ एतय ‘कागच सदा सत्य’ निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत।

नब कबड्डी : एक नाम, सामूहिक पूरा कथन

बच्चा सभ रेखा पार करैत नाम बजबैत छथि; जँ एक खेलाड़ी शेष कथा नहि कहि पबैत, दोसर खेलाड़ी ओकरा पूरा करैत अछि। जीत-हारक नियम स्मृतिक सहयोगी शिक्षामे बदलैत अछि। एतय ‘उपस्थित’ ध्वनि तालीक बदला लोक-सहमतिक संकेत बनैत अछि। भूतक पुरान कबड्डी-लय जीवित बच्चासभक खेलमे साकार होइत अछि। स्मृति एक मनुखक साँसपर निर्भर नहि; सामूहिक अनुक्रममे जीवित रहबाक आख्यानात्मक कल्पना उभरैत अछि।

स्त्रीक दृष्टिक अधिकार : बन्द यन्त्र पर्याप्त नहि

मीरा आ स्त्रीसभ स्पष्ट करैत छथि जे मोबाइल बन्द करब पर्याप्त नहि। ककरो दुख, प्रेम, रोदन वा देह देखि लेलासँ ओकरा पर स्वामित्व प्राप्त नहि होइत। एहि कथनसँ उपवासक नैतिक केन्द्र स्क्रीनक अनुपस्थितिसँ दृष्टिक जिम्मेदारी दिस स्थानान्तरित होइत अछि। ई मुख्य विचार कथाक समग्र निजता-वृत्तसँ जुड़ैत अछि; गाममे सेहो बिना मोबाइलक आँखि शोषक बनि सकैत अछि। तकनीक मात्र अपराधक एकमात्र कारण नहि।

क्लिक घटब : प्रतिपक्षीक दूरस्थ दृश्य

गामक अनुप्रयोग-गतिविधि घटलासँ चन्द्रपाल बेचैन होइत अछि; क्लिक आ दानक धारा थमि जाइत अछि। एतय कथावाचक अचानक दूर शहरक आर्थिक नियन्त्रण-वृत्तमे कट लगबैत छथि। ई दृष्य दर्शबैत अछि जे स्थानिक विरामक प्रभाव डिजिटल लाभक मापनमे देखल जा सकैत अछि। मुदा एक दिनक क्लिक-घटबाक अर्थ जाल नष्ट भऽ गेल नहि। राघवक अवरुद्ध संदेशक पूर्व कथावृत्त संकेत देइत अछि जे नियन्त्रणक संकट एखन खुलल अछि।

बाहरी शोध-दृष्टिक ‘डिटॉक्स’ लेबल

ब्रूमक शोधार्थी ‘डिजिटल डिटॉक्स’ कहि अनुभव वर्गीकृत करए चाहैत छथि, मुदा गामक क्रियामे मृतकक नाम, निजता, श्रमिकक देह आ ठगीक भय जुड़ल अछि। एक प्रचलित स्वास्थ्य-शब्द एहि इतिहासक पूरा अर्थ समेटि नहि पबैत। विद्वत् वर्गीकरणक विरुद्ध लोकक जीवन-सन्दर्भक ई टकराव कथा भीतर आलोचकक जिम्मेदारी सेहो बनैत अछि: अवधारणा उपयोगी भऽ सकैत अछि, पर तथ्यसभकेँ ओकर भीतर काटि फिट करब हिंसक पुनर्लेखन होएत।

मोबाइल घुरेबाक नियम आ अपूर्ण क्रान्ति

साँझ थैली खोलल जाइत अछि; यन्त्र लोकसभकेँ वापस देल जाइत अछि, मुदा रातिक नाम-पाठमे बन्द राखब, रोदनक फोटो पर अनुमति, ठगीक संदेश सामूहिक पढ़ब जेकाँ नियम साथे घुरैत अछि। तकनीकक विनाशक बदला उपयोगक सामुदायिक संयम वर्णित अछि। उपवास एक आयोजन रहल; दैनिक प्रयोग कतेक बदलत, से भविष्यक प्रश्न अछि। एहि अनिर्णीत समय-संरचनासँ कथा सस्त तकनीक-विरोधक उपदेश बनबाक जोखिम घटबैत अछि।

अकासक हरियर बिन्दु आ ईराक पत्रक तैयारी

स्क्रीनक बाद खुलल अकासमे सूक्ष्म हरियर बिन्दु देखाइत अछि; कियो तारा, कियो विमान, कियो भ्रम कहैत अछि। व्याख्यात्मक बहुलता बचल अछि। ईरा प्रवासी बच्चासभकेँ पत्र लिखबाक निर्णय करैत छथि; अनुभव फेर

लिखित माध्यम दिस घुरैत अछि। विडम्बना सफल अछि—उपवासक परिणाम पत्रक माध्यमेँ दूरक लोकसँ सम्बन्ध जोड़बाक इच्छा अछि, संचारक सम्पूर्ण अस्वीकार नहि। अगले अध्यायक प्रथम क्रिया एहि निर्णयसँ उगैत अछि।

आरम्भिक पत्रगीतक स्थान आ समग्र निष्कर्ष

अध्याय ८७ आरम्भ होइत अछि ‘परदेस पत्रमे घरक भोर’ गीतसँ, जखन मुख्य कथा स्क्रीनक उपवासपर केन्द्रित अछि। ई गीत अगिला ८८क ‘ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ’ विषयक संग अधिक सोझ मिलैत अछि; अध्यायान्तक ‘परदाक उपवास’ वर्तमान कथा सारबैत अछि। एहि पुनरावर्तित द्वि-गीत-विन्यासक अर्थ तखनहि सुनिश्चित होएत जखन सम्पूर्ण कृतिमे आरम्भिक गीतसभक क्रम जाँचल जएत। एतय समीक्षा अन्तरकेँ दर्ज करैत, अनिश्चितता खुलल रखैत अछि।

प्रकरण १८९ | मूल अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

स्क्रीनक उपवाससँ पत्रक पुनर्जन्म

मूल अध्याय ८७क एक दिनक स्क्रीन-विरामक बाद ८८मे संचारक पुनरारम्भ होइत अछि। ईरा दूरदेशक बच्चासभकेँ पत्र लिखैत छथि; सम्पूर्ण तकनीक त्यागब एहि दृश्यमें समाधान नहि। कथानक उपकरणक नैतिक प्रयोगक प्रश्नपर पहुँचैत अछि: एक्के स्क्रीन ठगीक माध्यम हो सकैत अछि अथवा दूरक परिवारक नाम आ सम्बन्ध घुरा सकैत अछि। अध्यायान्तर संक्रमण प्रतिषेधसँ उत्तरदायी उपयोग दिस अछि। उपवासक परिणाम कथापात्रक जीवनमे एक ठोस लेखकीय कर्म—पत्र लिखब—बनि उतरैत अछि।

ठूँठ, पाथर आ पातक लेखन-मंच

ईरा नारिकेल पात पाठशालाक बरामदामे बैसि चन्ना गाछीक कटल ठूँठ आ नाम-पाथर देखैत छथि। पत्रक पहिल वाक्य पातक नसमे लिखल जाइत अछि; लेखनक भौतिक सतह आ ऐतिहासिक स्मृति एक-दोसरामे मिलैत अछि। पाठक पत्रक विषय मात्र नहि, ओकर लिखएबाक परिस्थिति सेहो देखैत अछि। पात पर कलमक स्पर्श, पाथरक अधूर उच्चारण आ हरियर बिन्दु कथनक संवेदनात्मक विश्वसनीयता बनबैत अछि। भौगोलिक दूरीक विरुद्ध ई स्थानीय वस्तुसभ भाषा-पुलक कार्य करैत अछि।

‘छुट्टीक चित्र नहि’ : प्रवासी दृष्टिक प्रतिवाद

ईराक सम्बोधनमे गामकेँ पर्यटन-चित्र नहि, उत्तरदायित्व कहल गेल अछि। घरक भात, पोखरि, मछरी आ लोकगीतक मोहक चिह्नसँ आगाँ पुलमे दबायल मजदूर, डिजिटल ठगी, स्त्रीक निजता आ अदालतक विलम्बक कथा जोड़ल जाइत अछि। ई वर्णन प्रवासी स्मृति सम्बन्धी सरल नॉस्टैल्जियाकेँ प्रश्नित करैत अछि। कथावाचक वर्तमानक अन्यायकेँ स्मरणक केन्द्रमे आनि अतीतक अलंकारिक तस्वीर छाँटब असम्भव करैत छथि। पाठककेँ गामक सुन्दरता आ ओकर उत्तरदायित्व एक्के दृष्टिमे रखबाक पड़ैत अछि।

उच्चारणक त्रुटि आ सम्बन्धक सम्भावना

अनन्या पूछैत छथि जे विदेशमे जन्मल बच्चा सभ पुरखा नाम लिखि सकत कि नहि। ईरा पूर्ण दक्षताक शर्त नहि, प्रयत्नक अधिकार स्वीकार करैत छथि। ई लघु संवाद विस्थापनक पीढ़ीगत भाषा-विच्छेदकेँ कथात्मक संघर्ष बनबैत अछि। नाम गलत उच्चारित करब अपराधक बराबर नहि, मुदा सुधारबासँ इनकार कएल जाए तँ स्मृतिक दूरी स्थायी भऽ सकैत अछि। पत्र पाठकक सम्मुख सीखएबला उत्तराधिकारक विकल्प रखैत अछि—वंशक सहज मालिक नहि, सम्बन्धक नव विद्यार्थी।

पत्रक भीतर नियमपंक्ति : निर्देश आ कथा

ईरा आगन्तुक बच्चासभकेँ फोटो खिंचबाक पहिने नाम सुनब, अनुसंधानक पहिने मौन रखब आ दानक पहिने ध्यान देबाक आग्रह करैत छथि। एहि स्थानपर कथन प्रत्यक्ष निर्देशात्मक भऽ उठैत अछि। मुदा नियम निर्वातमे नहि आयल: पूर्व अध्यायसभमे स्मृतिक व्यापार, फर्जी श्रद्धांजलि आ बिना अनुमतिक छवि देखाओल जा चुकल अछि। तेँ उपदेशक भाषा पूर्व घटनाक स्मरणसँ अर्थ पबैत अछि। परीक्षणक मुख्य प्रश्न ई अछि जे आगाँ पात्र ई नियमकेँ पालन करैत छथि कि नहि; पत्र लिखि देनाइ परिवर्तनक अन्तिम प्रमाण नहि।

उत्तरक कालगत विराम आ पत्रात्मक गति

पत्र पठेबाक बाद दू दिनक अन्तर पर पहिल उत्तर आबैत अछि। कथा ई अन्तरकेँ विस्तारसँ नहि भरैत; लेखन आ प्रत्युत्तरक बीचक विराम सम्बन्धक वास्तविक दूरीसँ बनल अछि। टोरन्टोक नील, मेलबर्नक बालिका आ दुबईक श्रमिक-सन्तानक छोट उत्तर क्रमशः कथानकमे प्रविष्ट होइत छथि। प्रत्येक उत्तर मूल पत्रक एक अलग संकेत उठबैत अछि: नामक उच्चारण, गामक कठिन सत्य, आ इमारत-निर्माणमे अनाम मजदूर। एहि उत्तरक्रमसँ एकालाप बहुस्वर बनैत अछि; संवादक अधिकार लेखकक हाथसँ पाठक-समान बालकसभ धरि सरकैत अछि।

नीलकंठ, मेलबर्न आ दुबई : स्थानक त्रिकोण

टोरन्टोक बालककेँ दादी ‘नीलकंठ’ कहैत छलीह, मेलबर्नक बालिका ‘झंझट’ सुनितहुँ सीखए चाहैत अछि, दुबईक बच्चा अपन भवन-निर्माता बाबूक अनाम श्रमक प्रश्न करैत अछि। तीनू प्रसंग यात्रावृत्तान्त नहि; समुद्रपार स्मृति केना अलग सामाजिक ठाममे अनुवादित होइत अछि तकर लघु कथाचित्र अछि। दुबईक प्रश्न अध्याय ८६क मजदूरक पाँवक दृश्यकेँ नव वैश्विक सन्दर्भ दैत अछि। ईराक पत्रकेँ उत्तर देनिहार बच्चा ओही गामक स्थिर प्रति नहि बनैत, अपन अनुभवसँ ओकरा बदलैत अछि।

‘दूर उपस्थित’ : अनुपस्थितिक नव श्रेणी

गामक बच्चा सभ दूरक उत्तर लेल एक विशेष पाथर बनबैत छथि—‘दूर उपस्थित’। नाम-पाठक पुरान अनुष्ठान एतय भूगोल पार करैत अछि। प्रत्यक्ष देह बिना सामाजिक उपस्थिति सम्भव मानल जाइत अछि, मुदा एकरा केवल डिजिटल क्लिकसँ परिभाषित नहि कएल गेल। सीखबाक तत्परता, नामक सही उच्चारण आ गवाही सुनबाक आचार एहि उपस्थितिक आधार बनैत अछि। स्मृतिपाथरक वस्तुरूप प्रतीकात्मक अछि, कोनो कानूनी नागरिकता-पत्र नहि। ई सीमाकेँ राखब समीक्षा लेल आवश्यक अछि।

संस्था-हड़पबाक आकांक्षा आ पत्रक स्वामित्व

बटुकनाथक न्यास-जाल प्रवासी बच्चासभक उत्तरकेँ दान, कार्यक्रम आ मंचक अवसर बुझैत अछि। ब्रूमक शोध-दल ओकरा ‘प्रवासी-स्मृति सञ्जाल’ कहबाक चेष्टा करैत अछि। ईरा स्पष्ट करैत छथि जे बाल-सम्बोधन कोनो निधि वा सांस्कृतिक तमाशाक कच्चा माल नहि। मूल संघर्ष एहि शब्दसँ उत्पन्न अछि जे संवादकेँ स्वायत्त राखल जाए कि संस्थागत सम्पत्ति बनाओल जाए। पत्र-संवादक गरिमा तकनीकी माध्यमसँ बेसी ओकर नियन्त्रणक सीमामे अछि; अनुशासनहीन प्रतिलिपि स्वयं दोसर कब्जा बनि सकैत अछि।

सपना आ डिजिटल चमकक सीमित जादू

विदेशक बच्चासभक सपनामे बर्फक नीचाँ गरम माटि, समुद्रक लहरिमे मैथिली अक्षर आ मरुभूमिमे मजदूरक पएरक छाप देखाइत अछि। ई दृश्य पत्रक प्रभावक रूपकात्मक विस्तार अछि। कथावाचक स्पष्ट नहि करैत जे प्रत्येक सपना वस्तुगत अलौकिक सञ्चारक परिणाम अछि। फोनपर क्षणिक ‘उपस्थित’ चिह्न साहित्यिक संगति बनबैत अछि; एहि कल्पनाक महत्व दूरस्थ मनक भीतर गामक प्रश्नक जागरण अछि। सपनाक अन्तिम स्थिर अर्थ ठोकि देनाइ एहि अस्पष्टताकेँ घटा देत।

पत्रक अन्तसँ जन-सुनवाई धरि सेतु

प्रवासी उत्तर गामक बाल रजिस्टरमे प्रश्नक नव पन्ना खोलैत अछि, आ अन्ततः सत्यव्रतक जन-सुनवाईक तिथि निश्चित होइत अछि। घटना-संयोजनमे पत्र एक बाहरी परिशिष्ट नहि, सामाजिक सुनवाईक विस्तारक माध्यम बनल अछि। ‘हम उपस्थित छी, मुदा सीखब बाँकी अछि’ जेकाँ उत्तर नायकत्वक घोषणा नहि, विनम्र भागीदारीक शुरुआत अछि। आगामी सुनवाईमे ई बाहरी आवाज किस प्रकार दर्ज होएत—एहि प्रत्याशापर अध्याय समाप्त होइत अछि। कथा पत्रकेँ अन्तिम फैसला नहि, अगिला सार्वजनिक कथनक आमन्त्रण बनबैत अछि।

पूर्वसूचक लोकगीतक विस्थापित विषय

अध्यायारम्भमे ‘अनसुना स्वरक चौपाल’ शीर्षक लोकगीत अछि, जकर प्रमुख दृश्य गोल सुनवाई आ मंचक ऊँचाई घटायब अछि; मुख्य कथा एहि ठाम विदेशक बच्चासभकेँ पत्र लिखबाक अछि। ठीक अगिला अध्याय ८९ जन-सुनवाई विषयपर केन्द्रित अछि। पूर्व अध्यायसभमे लोकगीत आगाँक कथ्यकेँ पहिने गाबबाक पैटर्न एतय फेर भेटैत अछि। ई जानबूझल पूर्वाभास हो सकैत अछि, अथवा सम्पादनमे गीतक स्थान सरकल हो सकैत अछि। पाठक समक्ष दुनू सम्भावना खुले रहबाक चाही, किएक तँ केवल शीर्षकक साम्यसँ अन्तिम निर्णय सम्भव नहि।

प्रकरण १९० | मूल अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

सरकारी मंचक उलट विन्यास

उपन्यास जन-सुनवाईक परिचित सरकारी दृश्य मोन पाड़ैत अछि—ऊँच मंच, माइक, अधिकारी, पुलिस आ दुइ मिनटमे समेटल गवाही। फेर चन्ना गाछीक ठूँठ लग जमीनपर गोल बैसारक व्यवस्था दिखाओल जाइत अछि। ई मात्र दृश्य-सज्जाक अन्तर नहि: वक्ताक समय, सुननिहारक देह आ अभिलेखक स्वामित्व तीनू बदलैत अछि।

सत्यव्रत स्वयं अध्यक्ष होएबाक दावासँ हटैत छथि, बच्चा सभ लिखबाक अधिकार लैत अछि। कथावाचक स्थानिक उचाइकेँ वैधानिक प्रभुत्वक मूर्त प्रतिमान बना कऽ उलटि दैत छथि।

रजिस्टर, सूखल पात आ खाली कटोरा

गोल बैसारक बीच तीन वस्तु राखल गेल अछि: पुरान रजिस्टर, चन्ना गाछीक पात आ खाली माटिक कटोरा। पहिल लिखल नामक, दोसर पर्यावरण-स्मृतिक आ तेसर न कहि सकल गवाहीक प्रतीक बनैत अछि। कटोराक खालीपन महत्त्वपूर्ण, कारण सभा आरम्भ होइत कालहि अनकहल कथाक लेल ठाम सुरक्षित करैत अछि। ई वस्तु-संयोजन भावात्मक सजावट मात्र नहि, मंचक औपचारिक नियमक स्थानापन्न बनि रहल अछि। किन्तु लिखल पन्ना आ वास्तविक मुकदमा-प्रक्रियाक भिन्नता आलोचनामे सदिखन बचल रहबाक चाही।

प्रथम गवाहीक चुनाव : चर्मकार स्त्री

सुनवाई ईराक पत्र अथवा दूरक राजनैतिक बयानसँ नहि, एक वृद्ध चर्मकार स्त्रीक प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि। स्त्री अपन बेटीकेँ शास्त्र पढ़बाक सामाजिक निषेधक कथा उठबैत छथि। ई शुरुआती आवाज श्रम, लिंग आ जातिक असमान स्थितिकेँ कथाक केन्द्रमे आनैत अछि। कथा गंगेश-सन्दर्भकेँ एहि पात्रक कथित स्मृतिसँ जोड़ैत अछि; ऐतिहासिक जीवनक प्रमाणिकतापर आलोचक फैसला देनाइ एतय आवश्यक नहि। महत्त्वपूर्ण शिल्पगत घटना ई जे उपेक्षित पात्र अपन प्रश्नक सम्पूर्ण अवधि स्वयं नियन्त्रित करैत छथि।

लेखनी रोकबाक क्षण

सत्यव्रत पहिल गवाही सुनिते लिखए लगैत छथि, मुदा अनन्या प्रश्न पूरा होए देबाक लेल हाथ रोकैत छथि। एहि छोट हस्तक्षेपमे लेखन, व्याख्या आ सुननाइक क्रम पुनर्गठित होइत अछि। अधिकारी-आदत पहिल प्रतिक्रिया सँ गवाहीकेँ शब्दबद्ध करए चाहैत अछि; बालिका प्रारम्भमे वक्ताक समय सुरक्षित करैत छथि। दृश्य अन्ततः ‘को लिखत’ सँ आगाँ ‘कखन लिखत’ पूछैत अछि। कथाक सामयिकता एहि टोकबाक उलटफेरमे अछि: मौनक अन्तराल गवाहीक अविच्छिन्न अधिकार बनैत अछि।

दूर जन्मल बालकक नाम : द्वितीय स्तरक गवाही

ईराक पत्रक प्रश्न पुनः सुनवाईमे प्रवेश करैत अछि। विदेशक बच्चाक दादीक नामक उच्चारण आ स्कूलक मानकीकृत वर्तनी बीचको तनाव उठैत अछि। गोप कुमार ‘प्रवासी स्मृति’ जेकाँ श्रेणी सुझबैत छथि, मुदा बा पहिने दादीक नाम लिखबाक आग्रह करैत छथि। ई संवाद अभिलेखकेँ जाति वा प्रशासनिक वर्गीकरणसँ अलग व्यक्तिगत संबोधनक ठाम देबाक प्रयत्न अछि। मूल अध्याय ८८क पत्र अब स्मृति-सामग्री नहि, सार्वजनिक मंचपर सुने जएबाक दावेदार बनल अछि।

‘अस्थायी मजदूर’क स्थायी जलसमाधि

पुल-श्रमिकक परिवारक युवक कहैत अछि जे ओकर पिता कागचपर अस्थायी मजदूर छल, पानिमे स्थायी भऽ गेल। एहि वाक्यमे श्रमक अनुबन्धीय अस्थायित्व आ मृत्युकी अपरिवर्तनीयता विपरीत दिशा धऽ कऽ भेटैत अछि। व्यङ्ग्य-भाषा क्रूर ऐतिहासिक क्षतिक अनुभवकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। लेखक एतय वित्तीय क्षतिपूर्ति वा पुल-

दुर्घटनाक अन्तिम निर्णय नहि देखबैत; परिवारक कथनक शक्ति मुख्य कथा-घटना अछि। एहि स्वरक मंच तक पहुँचब कथानकक उपलब्धि, न्यायिक निपटारा नहि।

फैसला स्थगित करबाक नब अर्थ

सत्यव्रत कहैत छथि जे आइ ओ फैसला नहि देताह; गवाही अपना आकारमे रहत। सामान्य प्रशासनिक कथा मे एहन विराम अकर्मण्यता बनि सकैत छल, मुदा एहि कथा मे पूर्वक जबरदस्तीक विपरीत सुनबाक समय दैबाक सन्दर्भ अछि। तइयो एतय आलोचनात्मक प्रश्न रहैत अछि: अनन्त श्रवण पीड़ितक ठोस अधिकारक निर्णयकेँ टारबाक साधन सेहो नहि बनए। उपन्यास एखन परीक्षणक प्रथम चरणमे अछि। सत्यव्रतक बदलल भूमिका भावी कार्यवाहीक नैतिक दिशा खोलैत अछि, ओकर स्थानापन्न नहि।

राघवक पुरान संदेश : अनुपस्थित पात्रक वाचिक प्रवेश

गोप कुमार राघवक एक पुरान सन्देशक प्रति आनैत छथि, जाहिमे भावना सँ सामग्री, सामग्री सँ निधि आ निधि सँ नियन्त्रणक श्रृंखला अछि। राघव स्वयं सभामे उपस्थित नहि, मुदा ओकर पूर्वलिखित भाषा संवादमे प्रवेश करैत अछि। ई दस्तावेजी उद्धरणक माध्यमसँ अनुपस्थित विरोधीकेँ मंचपर आनबाक कला अछि। कथावाचक चमत्कारी उपस्थिति नहि बनबैत; पुरान लेखन दोसर पात्रक वाचनसँ नव अर्थ पबैत अछि। समाजक स्मृतिपर नियन्त्रणक योजना संक्षिप्त शब्दावलीमे स्पष्ट होइत अछि।

कबड्डी : मौखिक गवाहीक गतिशील रूप

सुनवाईक बीच बच्चा सभ कबड्डीक रेखा खिंचैत अछि। सभाक व्याकुलता विरुद्ध बा खेल रोकबाक बदला ओकरा नाम-पाठक क्रिया बनबैत छथि। प्रत्येक नामक पाथर छूएलापर परिवार ‘उपस्थित’ कहैत अछि। स्थिर गोल बैसार आ चलैत खेलक द्विस्तरीय ताल कथाक गति बदलैत अछि। सुनवाई नहि केवल बोलल शब्द रहैत, साँस, सीमा, पएर आ प्रत्युत्तरक संग देहगत अनुष्ठान बनि जाइत अछि। खेलक सांकेतिक बल रहितहुँ ई वास्तविक राहत वा कानूनी साक्ष्यक पर्याप्तता आपनहि सिद्ध नहि करैत।

मौनक भार आ कटोरा उठेबाक दृश्य

दिनक अन्तमे खाली कटोरा अनेक अनकहल गवाहीक भारसँ उठबामे कठिन देखाओल गेल अछि। वृद्ध चर्मकार स्त्री जाति, लाज, डर आ पद छोड़बाक आग्रह करैत छथि; अनन्याक हाथ लगिते कटोरा उठि जाइत अछि। ई जादुई दृश्य न बोलेल शब्दक कथात्मक वजन रूपायित करैत अछि। दृष्टिकेन्द्रक निर्णायक गति वयस्कक अनुभवसँ बालिकाक क्रिया दिस अछि। वर्णित भौतिक नियम-भंगकेँ यथार्थ सिद्धान्त बनबैत नहि, स्मृतिपर हकक कलात्मक अभिव्यक्ति रूपेँ पढ़नाइ उचित।

नियमक जन्म : सुनवाईसँ लेखन धरि

सुनवाईक पाछाँ बच्चा सभ ‘नामक पहरा लेल नियम चाही’ लिखैत छथि। पहिल नियम नाम नहि मेटाएब; अगिलासभ मौन, देह, निजता, स्क्रीन, जाति आ पीड़ाक तमाशाक विरुद्ध अछि। एहि बिन्दुपर कथावाचक घटना-सुनवाईसँ संस्थागत कथन दिस बढ़ैत छथि। नियम पहिलहिसँ ऊपरसँ बनल ग्रन्थ नहि, अनेक अपूर्ण गवाहीक

उत्तरमे उभरल पाठ अछि। अध्यायक समापन अगिला ‘नामक संविधान’क अनिवार्य प्रस्तावना बनैत अछि; सार्वजनिक दृश्य लेखकीय निरन्तरता पबैत अछि।

गीतक विषय आ अगिला संविधान

अध्याय ८९क आरम्भिक ‘पातक लोक-विधान’ गीत सूखल पातपर संविधान आ प्राकृतिक नियमक छवि बनबैत अछि। मुख्य भाग जन-सुनवाईक दिन पर केन्द्रित अछि, जखन पातपर विधान अध्याय ९०मे विस्तृत होइत अछि। गीत कथापूर्व सारांश जकाँ आगू चलैत अछि। दीर्घ उपन्यासमे गीतक पूर्वसूचक कार्य साहित्यिक रूपेँ सम्भव अछि; मुदा एकर दोहरल क्रम एक सम्पादकीय सरकावक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। समीक्षामे मुख्य घटना, गीत आ अगले अध्यायक सम्बन्ध अलग पाठस्तरक रूपमे राखल गेल अछि।

प्रकरण १९१ | मूल अध्याय ९० — नामक संविधान

जन-सुनवाईक दोसर दिन : कथाक संस्थागत मोड़

सुनवाईक बाद पाठशालामे मास्टर सूखल पात रखैत कहैत छथि जे आइ ‘लिखल जाएत, पढ़ल नहि’। एहि आरम्भमे कक्षा अध्यापनक पुरान पदक्रमसँ सार्वजनिक नियम-निर्माण दिस मुड़ैत अछि। बच्चासभक हँसी व्यवस्था, अदालत आ विद्यालयक आदेशक पुरान अनुभवक कारण अछि। शिक्षक स्पष्ट करैत छथि जे नियम उपरसँ नहि, ठूँठ लग सुरक्षित नामसभसँ निकसत। एतय पाठशाला कथाक नब मंच बनैत अछि, जतय बालक पात्र केवल सुननिहार नहि, रचनात्मक संस्थापक छथि।

‘पहिने अपराध देखू’ : प्रस्तावनाक वैकल्पिक स्वर

बा कहैत छथि जे अपना गौरव मात्र लिखनिहार समाज वंशावली लिखैत अछि, संविधान नहि। एहि कथनसँ सामुदायिक नियमक आरम्भ आत्मप्रशंसासँ नहि, आत्मालोचनासँ होइत अछि। कथा स्मृतिक आदर्शीकृत गामक चित्रमात्र नहि बनबैत; श्रम, निजता, जाति आ ठगीक घाव स्थायी ऐतिहासिक सामग्री बनि रहैत अछि। प्रबोधनात्मक स्वर स्पष्ट अछि, तथापि एकर कारण पूर्व अध्यायसभमे गामक वास्तविक चोटक दृश्य पाठक देख चुकल अछि। एहि अनुभवक बिनु ‘संविधान’ शब्द खोखल नारा बनि सकैत छल।

चौदह नियमक क्रमिक निर्माण

मूल अध्यायमे चौदह क्रमिक नियम संकलित होइत अछि। आरम्भ नाम, निजता, देह आ स्मृति-ठेकासँ; मध्य जातिगत दमन, कागचक सीमा, उपकरणक अधीनता, कबड्डीक संग; अन्तमे अनामक प्राथमिकता, मौनक हिसाब, जल, प्रवासी उत्तरदायित्व, क्षमा आ पीढ़ीगत संरक्षकत्व तक विस्तार करैत अछि। एहि सूचीकेँ केवल घोषणापत्र मानलासँ ओकर कथात्मक काम छूटि जाएत। प्रत्येक नियम पूर्व उपन्यासक घटनाक एक संकुचित स्मृति लऽ कऽ अबैत अछि, तेँ सूची एक प्रकारक अन्तःकथात्मक अनुक्रमणिका बनि जाइत अछि।

नामक अनेक ठाम आ अभिलेखक बहुमाध्यमिता

देविकाक पहिल नियम नामकेँ केवल स्मारकक पैघ अक्षरमे नहि, घरक पुकार, मजदूरी-पुस्तिका, अदालत, अस्पताल, विद्यालय आ पानिक किनारक पाथरमे राखबाक बात करैत अछि। एहि बहुसंख्यक स्थानसँ नामक

संरक्षण कोनो एक संस्थाक एकाधिकारसँ बाहर होइत अछि। लेखक रोजमर्रा दस्तावेज आ निजी सम्बोधनकेँ एक्के कथात्मक स्तरपर रखैत छथि, मुदा प्रत्येकक सामाजिक कार्य भिन्न अछि। रजिस्टरक नामक सच्चाइ कतेक रूपेँ यात्रा करैत अछि, ई उपन्यासक बहु-माध्यमिक आख्यानक केन्द्रीय शर्त अछि।

निजता आ सार्वजनिक स्मृतिक अन्तर्विरोध

मीरा देह, प्रेम, रोदन, पत्र आ मौन पर बिनु अनुमति कब्जाक विरोध करैत छथि। मुदा समग्र समुदाय नाम पढ़ि सार्वजनिक उपस्थिति स्थापित करबाक चेष्टा करैत अछि। एहि दू आकांक्षामे सम्भावित टकराव अछि। कथावाचक एकरा मेटा कऽ सहज सर्वसम्मति नहि दिखबैत; गोपनीय उपस्थितिक पूर्व प्रयोगक स्मरण समीक्षाकेँ करबाक पड़ैत अछि। सुरक्षित स्मृति ओहि ठाम बनत जतय सार्वजनिक नाम-पहरा व्यक्तिक अधिकारक सीमा मानत। नाम बचबैत निजता नष्ट करब स्वयं दोसर हानि होएत।

पानि, माछ आ पुल : मानवेतर सहभागी

एगारहम नियम नदी, पोखरि, नाला, बाढ़ि आ जलसमाधि जेकाँ जल-स्थलकेँ गवाहीक परिसर मानैत अछि। आरुणिक श्रम-केन्द्रित नियम आ पानिक बहाव एक्के सामाजिक-वातावरणीय दृश्य बनबैत अछि। कागचक सीमा नदीक गतिशीलता रोकि नहि सकैत, पुलक निर्माणमे मजदूर आ माछ दुनूक जीवन पढ़बाक माग उठैत अछि। ई प्रकृतिपर स्वामित्वक बनाम प्रकृति-संग जवाबदेहीक कल्पनात्मक संघर्ष अछि। नियम लिखलासँ पानि शान्त नहि होइत—अगिला अध्यायसभक पुनः बाढ़ि एहि सीमा पर व्यावहारिक परीक्षण बनि अबैत अछि।

कबड्डीक साँसक नियम आ अन्तरिक्षक संकेत

आठम नियम ‘साँस टूटए सँ पहिने घुरू, मुदा साथी छोड़ि नहि’ खेलक क्रियाकेँ परदेश, सत्ता, धन आ ग्रहक चमक धरि फैलाबैत अछि। खेलक सीमारेखा अब पृथ्वीसँ बाहरो कल्पित हो सकैत अछि। एहि स्थानपर उपन्यास सूक्ष्म भविष्यसूचना रखैत अछि: आगे ‘अनाम बसाहट’क सौदा आ दोसर ग्रहक आश्वासन कथात्मक संसारमे प्रवेश करैत अछि। ई भविष्यक कथा एखन अनुभव नहि, वाक्यक पूर्वाभास अछि। समीक्षामे भविष्यक कल्पनाकेँ घटित घटना मानब अनुचित होएत।

तेरहम नियम : क्षमाक नियोजित विलम्ब

क्षमा विषयमे बच्चा सभक बीच तत्काल असहमति अछि—कियो दण्ड चाहैत अछि, कियो क्षमा नहि। बा क्षमाकेँ श्रवणक दीर्घ प्रक्रिया कहैत छथि; अन्तमे लाभ छोड़बाक आ सुनबाक श्रमक शर्त लिखल जाइत अछि। ई प्रकरण अदालतक अन्तिम निर्णयक बदला नैतिक उत्तरदायित्वक क्रम बनबैत अछि। भविष्यक बटुकनाथ वा लाउक व्यवहारकेँ एहि नियमसँ पढ़ल जा सकैत अछि। क्षमा एखन कथित मानक अछि, वस्तुगत रूपेँ सम्पन्न मिलाप नहि।

जड़िक मोहर आ माटिक अँगूठाछाप

पातपर नियम लिखलाक बाद मोहरक प्रश्न उठैत अछि। अनन्या ठूँठक सूखल रेशाकेँ पानिमे भिजा पन्नाक कोनामे रखैत छथि; बच्चा सभ माटिसँ अँगूठाछाप दैत अछि। राज्य-मोहरक अनुपस्थितिमे सामुदायिक श्रम आ जीवित स्थल प्रतीकात्मक प्रामाणिकता बनबैत अछि। एकरा वास्तविक संवैधानिक वैधता कहब सम्भव नहि;

पाठक सामने ई लोक-आचारक आत्मघोषणा अछि। अँगूठाछापक माटि-गन्ध, नहक कोर आ रेशाक बिम्ब लेखनकेँ देहधारी दृश्य बनबैत अछि।

खाली पन्नासँ आरम्भ होएबला प्रतिलिपि

देविका चाहैत छथि जे नियमक हरेक नकल खाली पन्नासँ शुरू हो, ताकि नव गाम पहिने अपन छूटल नाम जोड़ि सकए। ई असामान्य रूपक स्थिर संविधानक बदला सहभागी पाठक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि। लिखल ग्रन्थक अन्तमे खुलल ठाम देल गेल; अगिला समुदाय स्वयं अपन कथा लिखत। एहि तकनीककेँ मेटाफिक्शनक सूक्ष्म संकेत मानल जा सकैत अछि, किएक तँ मूल उपन्यासो पाठककेँ तैयार निष्कर्षक बदला सुनबाक रिक्त स्थान दैत अछि।

समूह-नियम आ बलप्रयोगक प्रश्न

चौदह नियमक आकर्षक एकता रहितहुँ एहि प्रयोगमे प्रतिनिधित्वक कठिन प्रश्न बचैत अछि। बच्चा सभ, बा, मीरा, आरुणि, गोप, सत्यव्रत अनेक स्वर दैत छथि; तथापि सभ प्रभावित परिवार स्पष्ट रूपेँ सहभागी छथि कि नहि, पाठ पूर्ण गिनती नहि दैत। राज्यक अधिकार, राहत-वितरण आ उल्लंघनक उत्तरदायित्वक प्रक्रिया सेहो एखन अनिर्णीत अछि। समीक्षामे ई सीमा कमजोरीक सूची बनब मात्र नहि, कथा कियैक आगामी आपदाक कसौटी माँगैत अछि तकर संकेत अछि।

लोकगीतक ‘खाली कुरसी’ आ आगामी अनुपस्थिति

अध्याय ९०क आरम्भिक लोकगीत खाली कुरसीक बीच भरल जनक चेतना गबैत अछि। मुदा मुख्य कथा पातपर नियम लिखबाक अछि। अगिला अध्याय ९१ ‘धूर्त सभक अनुपस्थिति’ मे खाली आसनक रूपक प्रत्यक्ष कथा-घटना बनि उभरैत अछि। लगातार गीतक अगला कथाविषयसँ मेल एतय विशिष्ट अछि। ई दीर्घ रचनामे संगीत द्वारा अध्यायान्तरक चिन्हांकन हो सकैत अछि; अथवा गीत-स्थापनाक सम्पादकीय विस्थापन। दूनू सम्भावनाक परीक्षण आगाँक गीत-समूहक तुलनामे करबाक चाही।

प्रकरण १९२ | मूल अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

‘अभाव’क नाटकीय सामाजिक प्रयोग

नामक संविधानक बाद सभा एहि कठिन प्रश्नपर अबैत अछि जे बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ ब्रूमकेँ बजाओल जाए कि नहि। अनन्या निर्णय करैत छथि जे सभाक केन्द्र पीड़ितक नाम रहत, आरोपित लोक अनुपस्थित रहलो ओकर कर्मक लेखा राखल जाएत। कथानक अनुपस्थितिकेँ शून्य नहि, उपस्थितिक विन्यास बदलबाक सचेत उपाय बनबैत अछि। इहए अध्यायक मूल नाटकीय विरोध अछि: मंच पर शारीरिक देह नहि, मुदा ओकर सामाजिक प्रभावक छाह उपस्थित।

दोषीक प्रदर्शनक लोभसँ दूरी

किछु युवक खुलल आरोप-सुनवाई चाहैत अछि, किछु स्त्रीक चिन्ता अछि जे पीड़ितसभकेँ फेर अपराधीक चेहरा देखबाक दण्ड नहि भेटए। एकर कारण धूर्तसभक न बजाओल जाएब समग्र सामूहिक सहमतिक सहज नतीजा

नहि, विकल्पसभक तनावपूर्ण चुनाव अछि। कथावाचक दण्डक नाटकीय सुख छोड़ि घावक बयानक समय बचबैत छथि। आलोचनामे ई लिखब आवश्यक अछि जे लोक-समारोहमे न बजाएब अदालतक वैधानिक सुनवाईक अधिकार समाप्त करबाक दावा नहि। कथा सांकेतिक केन्द्र-निर्धारण करैत अछि।

सत्यव्रतक न्यायालय-स्मृति

सत्यव्रत परम्परागत ‘राज्य बनाम फलाँ’ जेकाँ मुकदमाक नामकरण मोन पाड़ैत छथि। एहि बेर सभा पीड़ितक नामसँ चलैत अछि। कथा संस्थागत शीर्षक आ सामुदायिक उच्चारणक विपरीत संरचना तैयार करैत अछि। पुरान अधिकार-व्यवस्थामे आरोपित व्यक्ति केसक अनिवार्य मुख्य चेहरा रहैत; एहि दृश्यमें पहिल स्मरण हानि सहनिहारक होइत अछि। सत्यव्रतक नोट लिखब हुनकर बदलैत फोकलाइज़ेशनक निशानी अछि, कोनो वास्तविक न्यायालयक फैसला नहि।

पाँच अनुपस्थित लोकक समानान्तर दृश्य

कथा गढ़ नारिकेलक सभा सँ दूर कट करैत बटुकनाथक कक्ष, चन्द्रपालक अनुप्रयोग, राघवक संकेत, लाउक होटल आ ब्रूमक परामर्श-दल देखबैत अछि। पाँचू अपन-अपन ढंगसँ निमन्त्रण वा नियंत्रणक आशा रखैत अछि; सभाकेँ हुनकाबिनु चलैत देख अस्थिर होइत अछि। ई समानान्तर सम्पादन पाठककेँ एहन सूचना दैत अछि जे सभा भीतरक प्रत्येक पात्रकेँ एक्के क्षण नहि भेटैत। एक स्थलपर कर्मक नाम-पाठ आ दूरस्थ पाँच कोठरीक व्यर्थ प्रतीक्षा मिलि एक विडम्बनापूर्ण संरचना रचैत अछि।

मौनक दो अर्थ : राघव आ पीड़ित

राघव लेल कोनो गुप्त सन्देश नहि पहुँचनाइ सम्पर्कक पराजय अछि। पीड़ित परिवार लेल वैह सार्वजनिक मौन भयावह आँखिसँ मुक्ति पाबबाक अवकाश अछि। कथावाचक एक्के मौनकेँ दू विपरीत अनुभवमे रखैत छथि। एक पातरो मौन अपराधक छिपेबाक तकनीक हो सकैत अछि, दोसर साक्षीक आत्मरक्षा। एहि द्वैतकेँ नहि राखल जाए तँ उपन्यासक निजता-सम्बन्धी जटिलता लुप्त होएत।

कारी किनारक पन्ना : आरोपक पछिला स्थान

रजिस्टरक पाछाँ कारी किनारवाला पृष्ठ खोलल जाइत अछि, जाहिमे ‘जिनका कारण नाम घायल भेल’ लिखल अछि। पहिने व्यक्तिक नाम नहि, कर्मनाम लिखल जाइत अछि: तारीखक भक्षण, देहक सौदा, स्क्रीनक फाँस, दानक मुखौटा, जातिक अहंकार आ स्मृतिक व्यापार। तकर बाद व्यक्तिक नाम छोट अक्षरमे जुड़ैत अछि। कागचक पृष्ठ-क्रम स्वयं नैतिक कथन-क्रम बनैत अछि; कथा प्रकारगत अन्यायकेँ जीवनक एक व्यक्ति सँ पैघ देखबैत अछि।

‘पाप पैघ, पापी छोट’ : सूक्ति आ जोखिम

बा द्वारा कहल पाप बड़का अक्षरमे आ पापी छोट अक्षरमे रखबाक बात दीर्घ-आख्यानक स्मरणीय सूक्ति अछि। ओकर लाभ ई जे व्यवस्था बदलल बिना एक अपराधीकेँ हटेलासँ समस्या नहि मिटत। किन्तु एहि कौशलक जोखिम सेहो अछि: विशिष्ट आरोपीक जिम्मेदारी प्रक्रिया सँ विलीन नहि होबाक चाही। मूल पाठ कर्म आ नाम दुनू लिखबैत अछि, तेँ पूर्ण नाम-लोप नहि होइत। समीक्षामे एहि विरोधक सन्तुलन कएल गेल अछि।

अनुपस्थिति दृश्य बनल : छाहक सरकनाइ

अन्तिम नाम पढ़लाक बाद कारी पृष्ठसँ आरोपीसभक छाह माटि पर रेंगैत अछि। बच्चा सभ नाम-पाथर राखि ओकरा किनार दिस हटबैत अछि। ई चमत्कार बाहरी गवाही नहि, दृश्य-संरचनाक चरम विस्तार अछि: जकरा मंचसँ हटाओल गेल, ओकर शक्ति अवशेषरूपेँ फिर सेहो समाजक बीच घुसबाक चेष्टा करैत अछि। नाम-पाथरक क्रमिक स्थापना दृश्यकेँ सामूहिक क्रिया बनबैत अछि। जादुई रूपक अस्थायी सुरक्षा दिखबैत, अन्तिम विजय नहि।

आत्मप्रस्तुति पर अधिकारक पुनर्वितरण

मीरा पूछैत छथि जे अपराधीसभकेँ न बजाएब कायरता तँ नहि। अनन्या उत्तर दैत छथि जे जरूरी समय नाम लेल जाएत, मुदा आज पीड़ित अपन घाव ककरो आँखिसँ नहि नापत। ई कथन निजताक पूर्व नियमकेँ सीधा सामाजिक अभिनय दैत अछि। पीड़ित अब कैमरा, खाता, मंच, मुकदमेबाज वा सुधारक दानकर्ताक दृष्टिक वस्तु नहि। कथा दर्शकक स्थान फेर तय करैत अछि—ककरा देखल जाए, ककरा देखबाक अधिकार देल जाए।

गाछि कटि गेल, छाह नमहर किएक?

अध्यायक अन्तमे ठूँठक पश्चिमी दिशासँ अस्वाभाविक नमहर छाह पसरैत अछि। बा एकरा अनुपस्थित लोकक छाह कहैत छथि। भौतिक दृष्टिसँ कटल ठूँठ एहन छाह नहि दऽ सकैत, तें घटना जादुई विरोधाभास निर्माण करैत अछि। एकर कथात्मक महत्व सामाजिक बहिष्करणक अवशिष्ट प्रभाव अछि; दृश्य आगामी अध्याय ‘ठूँठक छाँह’केँ प्रश्नरूपेँ प्रस्तावित करैत अछि। कारणक अन्तिम व्याख्या बन्द नहि कएल गेल।

उपसंहारक दोहराव : घाव केन्द्रमे रहत?

चन्ना गाछीक सभा अपराधीक अनुपस्थिति सँ क्षणिक साहस पबैत अछि, मुदा पृष्ठ पर कारी छाह देखेबाक बाद डर पूर्णतः समाप्त नहि। ई एक आवर्तित शिल्प अछि—प्रत्येक समाज-नियमक पाछाँ पुरान सत्ताक नब रूप। कथावाचक नब समाधानक उत्सवक ठीक बाद अनिश्चित छाह प्रवेश करबैत छथि। पाठक आगाँ जनैत चाहैत अछि जे छाह केवल स्मृतिभ्रम अछि अथवा नव वास्तविक संघर्षक संकेत। एही अप्राप्त उत्तरसँ अध्याय-सीमा नाटकीय बनैत अछि।

गीतमे खाली कुरसीक प्रतिध्वनि

अध्याय ९१क अन्तगीत ‘खाली कुरसी बाजै’ स्पष्ट रूपेँ एहि अध्यायक खाली आमन्त्रण आ छाहक घटनाक पुनरावलोकन करैत अछि। मुदा आरम्भिक ‘ठूँठक छाहमे सुनवाई’ अगिला अध्यायक वातावरणकेँ पहिने तैयार करैत अछि। आरम्भिक गीतक अग्रसरण, अन्तगीतक पुनरावलोकन—ई द्विस्तरीय संगीत-रचना पूरे खण्डक तुलनात्मक परीक्षण माँगैत अछि। ई तथ्य स्वयं पाठकेँ मेटा कऽ सुधारेब के कारण नहि, समीक्षा मे चिन्हित संरचनात्मक विशेषता अछि।

प्रकरण १९३ | मूल अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

असामान्य छाहसँ पाठकक प्रवेश

पिछले अध्यायक अन्तमे कटल ठूँठसँ असम्भव लम्बा छाह पसरबाक प्रश्न उठल; एहि अध्यायक शीर्षक ओही प्रश्नकेँ केन्द्र बनबैत अछि। गाछ कटि गेल तखन छाह ककर? कथावाचक पदार्थक सामान्य अनुपात भंग करैत छथि ताकि सामाजिक अनुपस्थितिक भार भौतिक आकारमे देखाइ। पाठक एहि छाहकेँ न केवल दुपहरिया रोशनीक घटना, न केवल भूतिक चमत्कार कहि समाप्त कऽ सकैत अछि। प्रश्नक स्थायित्व अध्यायान्तरक कारण-तन्तु बनैत अछि; एक अज्ञात दृश्य अगिला कथनक दिशा निश्चित करैत अछि।

ठूँठक पारिस्थितिक शरीर आ सामाजिक अवशेष

कटायल गाछीक मूल देह एखन पातक उपस्थिति, जड़िक हरियर बिन्दु, पाथरक नाम आ बच्चा सभक सभा जकाँ अनेक अवशेष सँ बनल अछि। छाह ओकर मूल छाँहक समान नहि—ओ सामूहिक प्रयास, दमनक इतिहास आ न्यायसँ बाहर रहल लोकक संकेत सँ पैघ बनैत अछि। एहि कारण प्रकृति कथामे स्थिर पृष्ठभूमि नहि। ठूँठक अपूर्ण शरीर कथावाचककेँ समयक दू तह—काटबक पहिले आ काटबक बाद—एक्के जमीनपर रखबाक अवसर दैत अछि।

छाहक दर्शन नहि, छाहक प्रसंग

मूल कथामे छाहकेँ देखा जाएबाक अनेक सम्भावना बनैत अछि; लोक ओकर लम्बाई, दिशा आ कारणक प्रश्न करैत अछि। गामक बूढ़ अनुभवी आवाज आ बालकक पहराक दृष्टि तकर अर्थ अलग बनबैत अछि। विश्लेषणमे ई भेद आवश्यक: पात्र द्वारा कहल अर्थ कथावाचक द्वारा प्रमाणित भौतिक नियम नहि। जे वस्तु अनिश्चित छोड़ल गेल अछि, तकरा निश्चित दैवी दण्ड वा केवल मानसिक भ्रम घोषित करब पाठकक सक्रिय भूमिकाकेँ समाप्त करैत अछि। जादुई यथार्थक बल एहि लम्बित व्याख्यामे अछि।

सुनबाक गोल स्थान आ छाहक प्रसार

कथाक पूर्व भागमे सामुदायिक सुनवाई ठूँठक चारूकात गोल बैसारमे घटित होइत छल; छाहक विस्तार ओहि सीमित स्थानकेँ अगिला दृश्यसभ धरि फैला दैत अछि। छाँहक भीतर जे बैसैत अछि ओकर कान पैघ होएबाक शीर्षकवाक्य ई नब सामाजिक अनुपात बतबैत अछि। मंचक ऊँच स्थान नहि, ठूँठक नीच जमीन कथन-सत्ता निर्धारित करैत अछि। एहि स्थानिक रूपान्तरणसँ बहिष्कृतक स्वर, अनाम स्मृति आ खाली आसन परस्पर जुरैत छथि।

नाम-पाथर आ छाहक प्रतिस्पर्धी स्मृति

नाम-पाथर स्थिर, पढ़ल जएबाक वस्तु अछि; छाह अस्थिर आ सरकनिहार। एक स्थायित्व चाहैत अछि, दोसर धुँधलापन। कथावाचक दूनूकेँ एक्के दृश्य-मंडलमे राखि स्मृतिक कठिनाइ बढ़बैत छथि। कागचपर नाम लिखनाइ असल जीवनक पूरा अर्थ रोकि नहि सकैत, आ सामूहिक डर सदिखन पत्थरक घेरा पर रुकि नहि जाइत। छाहक आख्यान स्थिर अभिलेखक पूरक अछि; ओकर काज लिखल इतिहासक बाहर बचल अस्पष्ट प्रभावक स्मरण करब।

पूर्वक आरोपितक छाह आ अदृश्य सत्ता

‘धूर्त सभक अनुपस्थिति’मे पाँच लोककेँ केन्द्रसँ हटाओल गेल छल; आब हुनकर पाछाँ बचल सामाजिक रेखासभ दृश्य बनैत अछि। व्यक्तिक शारीरिक अनुपस्थिति आर्थिक नेटवर्क वा कागजी स्वामित्व समाप्त नहि करैत। एहि शिल्पक माध्यमसँ कथावाचक आरोपितक इतिहासकेँ ओतहि रखैत छथि जतय पीड़ितक नब आवाज अंकुरित भेल अछि। विरोधी ताकत व्यक्तिगत उपस्थिति पर निर्भर नहि; ओ संस्था, स्मृति-नियन्त्रण आ भयक रूपमे बचि रहल अछि। एहि बोधकेँ छाह सघन बना दैत अछि।

‘ठूँठक छाँह’ आ सम्भावित रूपक-संक्रमण

ठूँठ छाहरि देबाक सामान्य क्षमता हेरि चुकल अछि, तइयो लोकक बैठबाक केन्द्र बनि रहल अछि। ई विरोधाभास उपन्यासक पुनरुद्धार-कल्पनाक सूक्ष्म आधार अछि: संसाधनक क्षति भेलो सम्बन्धक नब परिसर बनि सकैत अछि। मुदा साहित्यिक रूपान्तरण वास्तविक पुनर्वनीकरण वा जलरक्षाक विकल्प नहि। कथा जतेक मानवेतर स्वरकेँ बल दैत अछि, ओतेक प्रश्न उठैत अछि जे ठूँठक रक्षा आ गाछीक पुनर्स्थापनक ठोस कर्म कतय धरि बढ़ल।

कथन-कालक ठहराव

पिछला अध्यायसभमे पत्र, जन-सुनवाई, नियम आ बैठक तेज क्रममे भेल। छाहक प्रसंग एहि गतिमे ठहराव बनबैत अछि; लोक देखने चीजक अर्थ पर विचार करैत अछि। जादुई दृश्यक अस्पष्टता भविष्यक संकटक लेल एक लम्बा तनाव रचैत अछि। छोट दृश्य केन्द्रीय रूपक बनि एक अध्यायक समय धऽ लैत अछि। गति घटेबाक ई चुनाव आगामी बाढ़िक तीव्र प्रवेशक विपरीत लय तैयार करैत अछि।

चेतावनी बनाम उपलब्धि

बालकसभक नामक संविधान लिखबाक उत्सवक बाद छाह अटल रहैत अछि। एहि क्रमसँ कथा अपनहि उपलब्धि पर पूर्ण विराम नहि लगबैत। नैतिक नियमक स्थापना आ सामाजिक भयक विच्छेद दू भिन्न घटना छथि; पहिल घटि सकैत अछि जबकि दोसर एखन बाँकी रहए। छाह एहि दूरीक रचनात्मक बिम्ब अछि। विवेचनमे हँसी वा हरियर बिन्दुक कारणेँ जीत घोषित करबाक बदला शेष जोखिमक स्थान चिन्हित कएल जाए।

संतानक पुरान कलम आ अपराधक साधन

बटुकनाथक संतान अपन पिताक याचिकासभ पर प्रयोग भेल पुरान कलम लऽ अबैत अछि। अनन्या पूछैत छथि —‘कलम दोषी अछि कि हाथ?’ अन्ततः कलम नाम-पाथरक समान स्थान नहि, पाछाँ माटि पर रखल जाइत अछि। ई छोट वस्तु-विन्यास व्यक्तिगत कर्म, उपकरण आ सामूहिक स्मरणक अलग श्रेणी बनबैत अछि। कथावाचक कलमकेँ वस्तु रूपेँ दोषमुक्त वा दोषी घोषित नहि करैत; ओकर स्थानक निर्णय स्वयं अनिर्णीत नैतिक प्रश्नकेँ दृश्य दैत अछि।

दूरस्थ छाहक एकाधिक संस्करण

चन्द्रपालक अधूरा नामवाला कागज छाहक बाहरी रेखा पर रखल जाइत अछि; राघवक सन्देशक जगह सूखल पातक छद्म-पंक्ति बनैत अछि; लाउक काँचक कोठरीमे छाह प्रवेश करैत अछि; ब्रूमक लैपटॉप कारी भऽ भीजल

दान-पत्र देखबैत अछि। एहि समानान्तर घटनासभ सँ छाह एक स्थानीय रोशनीक दुर्घटना नहि रहैत, अनेक अपराधी-पात्रक अनुभवमे अलग-अलग आवर्तित संकेत बनैत अछि। मुदा दूरक दृश्यसभक पाछाँ कोनो निश्चित प्राकृतिक कारण मूल पाठ नहि दैत।

छाहक चेतावनी सँ प्रतिलिपिक श्रम

मध्यराति नदीक गन्ध तेज भेलापर अनन्या रजिस्टर बाँधबाक आ नामक पाथरक प्रतिलिपि बनेबाक कहलनि; सत्यव्रत पुरान खाली शपथपत्र दैत छथि, मीरा कपड़ा काटैत छथि, गोप नकल मिलबैत छथि, ईरा विदेशक बच्चा सभ लेल सूची बनबैत छथि। एहि दृश्यसँ जादुई छाहक अनिश्चित पूर्वाभास कागज, कपड़ा आ नामक वास्तविक संरक्षणक श्रममे बदलैत अछि। बादक बाढ़ि-संकटकेँ केवल चमत्कार सँ नहि, सामूहिक आयोजन सँ सामना करबाक पहिल ठोस कार्य एतहि शुरू भऽ गेल अछि।

अगिला बाढ़िक गीत : समयक अग्रसूचना

मूल अध्याय ९२क आरम्भिक लोकगीत ‘बाढ़िक बाद हरियाली’ मचान, बीजक डिब्बा, नाव आ सुरक्षित घरक आग्रह करैत अछि। मुदा मुख्य कथाप्रवाह छाहक अनिश्चिततामे अटकल अछि, आ अगिला अध्याय ९३ ‘पुनः बाढ़ि’मे वास्तविक जल-संकट प्रवेश करैत अछि। गीतक समय भविष्यक आपदा-चक्रकेँ पहिने गाबि रहल अछि। गीत-कथा सम्बन्धमे ई दोहरल विस्थापन महत्त्वपूर्ण पाठ-संगति प्रश्न अछि; एकर मूल्यांकन पूरे गीतक्रमक संग होयबाक चाही।

छाहसँ जलधरि : धारणासँ घटना

छाह जमीन पर पसरैत दृश्य अछि, जबकि अगिला अध्यायमे कमला-बलानक पानि गामक नीचला भागमे पैसि रहल अछि। ई परिवर्तन केवल दृश्य-परिवर्तन नहि; अस्पष्ट भय ठोस आपदा-प्रबन्धनक काममे परिणत होइत अछि। नाम जोगबाक विधानक परीक्षा वास्तविक भीजाइ, विस्थापन आ राहत-संकटमे होएत। एहि बिन्दु पर छाहक आलोचना संकट-पूर्व दृश्यात्मक भूमिका निभबैत अछि—अघटित आशङ्का सँ घटित आपदाक कथात्मक पुल।

व्याख्याक सीमा : घटनाक अप्रमाणित कारण

छाह असम्भव लम्बा किएक देखाइत अछि, एकर कोई एक प्रमाणित बाह्य कारण मूल आख्यान निर्णायक रूपेँ नहि दैत। समीक्षा तेँ परछाहीकेँ विशेष अपराधी-द्वारा भेजल चमत्कार अथवा नदी-बाढ़िक वैज्ञानिक भविष्यवाणी नहि कहैत। एहन दावा मूल पाठक स्तर पार कऽ कल्पना जोड़ि देत। लेखकक शिल्पगत उपलब्धि विभिन्न अर्थसँ भरल दृश्य स्थगित रखबाक क्षमता अछि। एतय पाठकक असहजता स्वयं एक सौन्दर्यात्मक परिणाम बनैत अछि।

प्रकरण १९४ | मूल अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

ऋतु-कालक वापसी आ रैखिक प्रगतिक विघटन

कथा पहिने नामक संविधान आ सामुदायिक पाठशालाक नब चरण देखौने छल; कमला-बलानक पुनः बाढ़ि ई प्रगतिक सरल रेखा तोड़ि दैत अछि। नदी पुरान क्षति दोहरबैत अछि, मुदा पात्रक तैयारी पूर्ववत नहि: आब रजिस्टर, नाम-पाथर, निजताक शपथ आ बचाव-दल सेहो अछि। ई ‘पुनः’ शब्द मात्र प्राकृतिक घटनाक पुनरावृत्ति नहि, पहिले सीखल नियमक परीक्षा अछि। कथनकाल चक्रीय होइतहुँ पात्रक स्मृतिमे रैखिक संचय सम्भव होइत अछि।

गन्धसँ आपदाक आरम्भ

बाढ़ि पहिने पानिक प्रत्यक्ष दृश्य नहि, भीजल कादो, टूटल बाँस, भासैत पात आ गम्भीर आकाशक गन्ध बनि पहुँचैत अछि। ई क्रम संवेदनात्मक पूर्वाभासक उदाहरण अछि; पाठक देहक संकेतसँ संकट बुझैत अछि। बादमे बादर, बरखा, गलीमे पानि, छप्परक ध्वनि आ पोखरिक भरब दृश्य-गति तीव्र करैत अछि। कथावाचक वातावरणक दीर्घ वर्णनकेँ सजावट नहि, आपदाक कालिक तैयारीक रूपमे उपयोग करैत छथि।

नामक वस्तु-भण्डार आ देहक सुरक्षा

बच्चा सभ रजिस्टर, पात, पाथर, लाल डोरी आ मौखिक नाम जोगबाक चिन्ता करैत अछि। कागज भिजबाक खतरा वास्तविक अछि, मुदा सभसँ निर्णायक वाक्य आरुणि दैत अछि—पहिने मनुष्य, फेर दस्तावेज, फेर पाथर। बच्चा सभ जोड़ैत अछि जे नाम मनुष्यक संग जाएत। एहि संवादमे स्मृति-रक्षाक तीव्रता आ जीवित देहक प्राथमिकता बीच सम्भावित तनाव स्पष्ट होइत अछि। ई महत्त्वपूर्ण अछि किएक तँ अनुपस्थितक नाम जोगैत-जोगैत जीवित मनुष्यकेँ जोखिममे पड़नाइ कथाक नैतिक केन्द्रक विरोध होएत।

तीनसँ चार बण्डल : अपूर्ण गवाहीक लेखा

सत्यव्रत नाम, मौन आ अपराधक तीन बण्डल बनबैत छथि; फेर ‘अधूरा सुननाइ’ नामक चारिम बण्डल जोड़ैत छथि। ई छोट संगठनीय बदलाव लिखित आख्यानमे अधूरापनक अलग अस्तित्व स्वीकार करैत अछि। परिपूर्ण सुनवाईक दावे विपरीत अधूरा कथाक संरक्षण एक प्रक्रियात्मक विनम्रता अछि। बाढ़ि जँ सबै पन्ना बहा दैत, तखन अधूरा आवाज पहिले गुम होएत—एहि आशङ्कासँ नब वर्ग जन्मैत अछि। कागचक वस्तुयोजना स्वयं स्मृतिक अपूर्ण संरचनाक संकेत बनल।

देविका आ डिजिटल खतरा : स्क्रीन-विरामक संशोधन

पिछला स्क्रीनक उपवास आपतकालमे उपकरण छोड़बाक पूर्ण व्रत नहि छल। बाढ़िमे देविका आ निशान्त मोबाइलकेँ नियन्त्रित उपयोगक लेल अपनबैत छथि: आवश्यक खबर पठाउ, अफवाह रोकू। चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग फेर बाढ़ि-सहायताक बहाने सक्रिय होइत अछि। एक्के माध्यम सामुदायिक बचाव आ झूठा दानक दुतरफा सम्भावना धरैत अछि। कथानक एतय तकनीक-विरोधी सरलीकरणसँ बचैत अछि; माध्यमक उपयोग-नीति केनिहार पात्रक क्रिया महत्त्व पबैत अछि।

पन्नासँ कण्ठ धरि प्रतिलिपि

गोप कुमार दस्तावेजी प्रतिलिपिक चिन्ता करैत छथि; अनन्या बच्चासभकेँ दस-दस नाम याद करबैत छथि। कागजक नकलक संग मौखिक पुनरावृत्ति स्मृति-सुरक्षाक दोसर विधि बनैत अछि। मूल उपन्यासक लोकगीत, नाम-पाठ आ कबड्डीक साँस एहि संकटमे व्यावहारिक अर्थ पबैत अछि। मुदा स्मरण-शक्ति स्वयं चूक वा विस्मरणसँ मुक्त नहि; कथामे एहि असुरक्षाक सम्भावना राखब उचित। मुखक प्रतिलिपि कागचक पूर्ण प्रतिस्थापन नहि, आपदामे बचेबाक बहुस्तरीय उपाय अछि।

बारहमासक जीवन आ बाढ़ि-दृश्यक ठोस हिंसा

कच्चा घरक छप्पर गरजैत अछि, बछड़ा खोलल जाइत अछि, बूढ़ लोककेँ विद्यालय दिस लए जाइल जाइत अछि, अनाज मचानपर चढ़ाओल जाइत अछि। एहि क्रमसँ जल-विपत्ति केवल सांकेतिक न्याय-दरबार नहि बनैत; श्रम, पशु, भोजन आ वृद्धक तात्कालिक चिन्ता कथात्मक समय लैत अछि। लेखक जादुई हरियर बिन्दु संग ई रोजमर्रा राहत-कर्म रखैत छथि। जँ समीक्षा केवल अलौकिक नाम-पाठ पर रुके, तखन वास्तविक विस्थापनक साहित्यिक घनत्व छूटि जाएत।

जलमे कबड्डी : खेलक कार्यपरिवर्तन

बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ बाढ़िमे साँसक परीक्षा करबाक कहैत छथि; नामक उच्चारण जलमे चलैत कबड्डी बनैत अछि। खेल पहिने स्मृतिक अनुष्ठान छल, आब बचावक कल्पनात्मक रूपक बनैत अछि। सभसँ महत्त्वपूर्ण ई जे लेखक संगठित बचाव-दलकेँ नहि बिसरैत छथि; प्रत्येक दलमे बच्चा, रजिस्टर आ कण्ठस्थ नामक व्यवस्था होइत अछि। तथापि वास्तविक बाढ़ि आ गोहिक सम्भावित जोखिममे बच्चासभक जलमे उतरबकेँ सुरक्षित व्यवहारक अनुकरणीय निर्देश मानब उचित नहि। ई साहित्यक तनावपूर्ण दृश्य अछि।

गोपनीयताक परीक्षा आ राहतक कतार

मीरा जलरोधी थैली आनैत छथि आ विदेशी शोध-सहायिकाकेँ पहिने हाथ सुखाबए, फोटो बादमे करबाक कहैत छथि। आश्रयस्थलमे परिवारकेँ पहिने सुखाओल आ गरम पानि देल जाइत अछि; नाम कहबाक लेल ओकरा बाध्य नहि कएल जाइत। ई घटना नामक संविधानक निजता-नियमकेँ सङ्कटक परिस्थितिमे लागू करैत अछि। संकट-फोटोग्राफीक सम्भावित व्यापार पर नियम वास्तविक पात्रक निर्णय बनैत अछि। कथाक श्रवण-आचार नारा नहि रहि देखभालक क्रममें उतरैत अछि।

मानवेतर आवाज : बाढ़ि घुराएब सेहो

हरियर बिन्दु जलमे झिलमिलाइत अछि आ नदी नाम-जेकाँ तरंग सुनबैत अछि। कथावाचक बाढ़िकेँ केवल विध्वंसक वस्तु नहि देखबैत; नदी पुरान नाम घुरेबाक कल्पनात्मक क्षमता पबैत अछि। एहि दृश्यकेँ ‘नदी वास्तवमे बोलैत अछि’ एहन बाहरी दावा नहि बनाओल जाए। कथक जलक ध्वनि आ सामाजिक स्मरणकेँ एक्के श्रव्य रूपमे जोड़ैत छथि। आपदाक पर्यावरणीय आवाज आ मनुष्यक मृतक-स्मृतिक बीचक सीमारेखा अस्थिर होइत अछि।

आपदामे लाभ-जालक फेर सक्रियता

एक भीत खसैत अछि, दान-सामग्री बहैत अछि, नकली राहत-खाता चमकैत अछि, गुप्त सन्देशमे ‘आपदा अवसर’ लिखल जाइत अछि। चन्द्रपाल, राघव आ ब्रूमक ढाँचासभ संकट-संग पुनरुत्थान करैत अछि। नैतिक नियम लिखलाक बादो आर्थिक छलक गति रुकल नहि; अवसरवाद अपन नब रूप शोधि लैत अछि। एहि कारण कथावस्तुमे बाढ़ि दुष्टक दण्ड नहि, संघर्षक नब परिस्थिति अछि। संकट आपदाग्रस्त लोक आ लाभखोर तन्त्र दुनू लेल अलग अर्थ रखैत अछि।

गोहि पूर्वाभास आ संकट-अन्त

भोरसँ ठीक पहिने पानिमे कारी आकार आ चमकैत आँखि देखाओल जाइत अछि। पहिने लकड़ी जेकाँ देखल आकार धीरे जीवजन्तुक सम्भावना बनि जाइत अछि। लेखक गोहिक उपस्थितिकेँ पूरा प्रत्यक्ष करबाक बदला पाठकक आँखिक भ्रम-संशयक माध्यमसँ लैत छथि। बूढ़बा भूतक ‘आब ओ सभो घुरि रहल अछि’ अगिला अध्याय ‘गोहि सभक वापसी’क संकेत अछि। एतय बाढ़िक कथा अधूर समाप्त होइत, कारण वास्तविक जीव आ स्मृतिप्रतीकक सामना आगामी दृश्यपर टाँगल रहैत अछि।

प्रकरण १९५ | मूल अध्याय १४ — गोहि सभक वापसी

पहिल चिह्न : जलक काटल रेखा

बाढ़िक अन्हारमे गोहि पहिने स्पष्ट देह नहि, पानिमे लम्बा कारी रेखा बनि देखाइत अछि। घाट लग लोकक पिण्डरी पहिने ठंढा हलकोर अनुभव करैत अछि, आँखि बादमे जीवकेँ चिन्हैत अछि। एहि दृश्यसँ देखबाक सामान्य क्रम उलटैत अछि; स्पर्श-दृष्टिकेँ अग्रिम चेतावनी दैत अछि। कथावाचक भयकेँ दाँत-झपटा वा हिंसक दृश्यसँ नहि, धीमा अज्ञात आकृतिसँ रचैत छथि। जीव पहिचानलाक बादहि समूहक प्रतिक्रिया गाढ़ होइत अछि।

गोहि प्राकृतिक जीव आ सांकेतिक ग्राह

मूल कथा गोहिकेँ एक संग नदीक जलचर आ स्मृतिक सीमा-पहरुआ बनबैत अछि। बा स्पष्ट करैत छथि जे नदीक जीवकेँ केवल राक्षस बुझब गलत अछि। मुदा प्राकृतिक मगरमच्छक वास्तविक व्यवहार आ कथाक जादुई ‘नाम घुराएब’ समान तथ्य नहि छथि। आख्यानशास्त्रीय समीक्षा एहि दू तहकेँ अलग रखैत अछि: नदीक जीवक देहसँ भय आ सतर्कता, कथाक रूपकसँ सीमाक प्रश्न। कथात्मक मानवेतर पात्रकेँ न नैतिक अपराधी मानल जाए, न मनुष्यक अन्तिम उद्धारकर्ता।

बच्चासभक दृष्टि : साँस देखू

अनन्या भयक क्षणमे बच्चा सभकेँ ‘साँस देखू’ कहैत छथि। गोहि सभ धीमे गोलाई बनबैत तैरैत अछि, तत्काल आक्रमण नहि करैत। कबड्डीक पुरान साँस-अभ्यास कथानकमे जलजीवक गति पढ़बाक रूपक बनैत अछि। एहि दृश्यसँ बालकसभक सामूहिक फोकलाइज़ेशन आगे अबैत अछि; वैह जीव जकरा वयस्कसभ केवल भयक रूपमे देखैत छथि, बच्चा सभ ओकर गति आ दूरीमे अर्थ खोजैत अछि। ई दृश्य सुरक्षित पशु-संपर्कक वास्तविक मार्गदर्शन नहि, कथा-भितरक संवेदनात्मक दृष्टि-विन्यास अछि।

जड़ि, पाथर आ गोहिक गोल घेरा

सभसँ पैघ गोहि ठूँठक डूबल जड़ि लग रुकैत अछि, आ अनाम नामक पाथर पानिमे तैरि गोहिक नाकक धक्कासँ कगारपर घुरैत अछि। सामान्य भौतिक नियम टूटल अछि, जे अद्भुत दृश्यकेँ स्पष्ट जादुई यथार्थक रूप दैत अछि। पाथरक वापसी मृतकक पहचानक पुनरागमनक कथात्मक रूपक अछि; ई वास्तविक जलविज्ञानक कथन नहि। स्मृतिपाथरक ठोस वजन आ असम्भव तैरनाइ बीचक तनाव दृश्यकेँ तीव्र बनबैत अछि।

बूढ़ मल्लाहक वाचिक स्मृति

एक बूढ़ मल्लाह कहैत छथि जे गोहि बेनाम लाशक चारू कात घूमैत अछि आ नाम देल जाए तँ पानि शान्त होइत अछि। एहि बयानसँ जल-जीवनक लोकअनुभव उपन्यासक सामूहिक स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि। कथावाचक मल्लाहक वाक्यकेँ घटना-बीचक आवाज बनबैत छथि; ओकरा बाह्य वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि घोषित करैत। वाचिक लोककथा केना पीढ़ीगत भयकेँ रूपकात्मक विधि दैत अछि, ई शिल्पगत प्रश्न अछि। गोहि केना देखा जाए—एकर उत्तर कई आवाज सँ बनैत अछि।

सत्यव्रतक रुकि जाएब : भूमिकाक सूक्ष्म परिवर्तन

सत्यव्रत पानिमे आगाँ बढ़ए चाहैत छथि, लोक रोकैत अछि; ओ रुकि जाइत छथि। पहिले ओ अधिकार-नियमक कारण रुकैत छलाह, आब लोकक चेतावनी सुनैत छथि। एहि साधारण कर्मपर लेखक विशेष प्रकाश दैत छथि। बड़ भाषण वा जादुई दण्डक बदला देहक छोट निर्णय पात्रक रूपान्तरणक विश्वसनीय संकेत बनैत अछि। तइयो ई एक क्षणक व्यवहार अछि, हुनकर सम्पूर्ण संस्थागत अतीतक पूर्ण परिष्कार नहि।

दूरस्थ अपराध-जालक एकसाथ प्रतिबिम्ब

लाउक काँचपर पानिक दाग, बटुकनाथक नरम कागच, चन्द्रपालक स्क्रीनमे गोहिनुमा चिह्न, राघवक बदलैत संदेश—चारि दूरस्थ दृश्य घाटक गोहि-गोलाइ सँ जोरल जाइत अछि। एक्के समय अनेक स्थानमे सूचना-प्रभावक आवर्तन कथाक जादुई समानान्तर सम्पादन अछि। पाठक आगाँ पात्रसभक मानसिक दबाव देखैत अछि, मुदा दृश्य वास्तविक इलेक्ट्रॉनिक सञ्चारक नियम नहि समझबैत। ई तकनीक गामक स्मृतिक विरोधमे वैश्विक गठजोड़क विशालता दिखबैत अछि।

गोलाइ दू स्तरपर : जीव आ बच्चा

बाहरी घेरामे गोहि सभ, भीतरी घेरामे बच्चा सभ कबड्डीक लय रखैत अछि। ई दोहरी गोलाई सीमा, संरक्षण आ सम्भावित सामना तीनू अनुभव जोड़ैत अछि। खेलक वृत्त पहिने नाम-पाठक ठाम छल; आब ओ नदीक जीवक तैराकी संग दृश्यात्मक प्रतिरूप बनैत अछि। गोल आकारक बारम्बारता कथावस्तुक अलग स्थलसभकेँ एक विन्यासमे जोड़ेबाक लेखकक शिल्प अछि—वकालती दरबार, पत्रक चक्र, जनसभा, जलरात्रि।

भयमुक्ति आ अतिरोमानीकरणक सीमा

गोहि सभ आक्रमण नहि करैत आ भोर धरि हटि जाइत अछि; लोक पाथर नहि फेकैत, पूजा सेहो नहि करैत, केवल घाट साफ करैत अछि। ई उत्तरदायी सह-अस्तित्वक सांकेतिक दृश्य अछि। किन्तु गोहि प्राकृतिक रूपेँ शक्तिशाली जलचर अछि; कथा-वर्णित व्यवहारकेँ पाठकक वास्तविक सुरक्षा-कर्मक प्रमाण मानब उचित नहि।

आख्यानक मुक्तिपरक दृष्टि आ जैविक जोखिम दुनूक भिन्न स्तर स्वीकार कएल जाए। समीक्षा एहि संयमसँ रूपकक बल बचबैत अछि।

‘सीमा’क नव परिभाषा आ भावी सौदा

अनन्या गोहिकेँ शत्रु नहि, सीमा कहैत छथि। अध्यायक अन्तमे विदेशसँ बाढ़ि-प्रभावित स्मृति-क्षेत्रक ‘जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवास’ परियोजना खरीदबाक सूचना अबैत अछि। सीमाक प्रश्न तुरन्त भूमिक स्वामित्व आ कथाक व्यापारक प्रश्न बनि जाइत अछि। जे जीव अभी रेखा बनबैत देखाओल गेल, ओकर स्मृति सेहो किनबाक प्रयास होएत। ई विरोधाभास आगाँक लाउ-सौदाक प्रवेशद्वार अछि।

सौदाक समाचार आ कथागत वास्तविक दूरी

ईरा खबर पबैत छथि, मुदा एहि क्षण कम्पनीक कागजक सम्पूर्ण शर्त दृश्य नहि भेटैत। लाउ, ब्रूम आ चन्द्रपालक नाम कथावाचक आरोप-जालसँ जोड़ैत छथि; वास्तविक प्रस्तावक विस्तार अगिला अध्यायमे खुलेत। अतः समीक्षामे ९४क अन्तकेँ पूर्ण विक्रय-सम्पादन नहि, व्यापारिक प्रस्तावक पूर्वसूचना कहल जाए। समाचार आगामिक संघर्षक कथात्मक ‘हुक’ अछि, पर सम्पन्न घटना नहि।

गीतक जलरंग आ शीर्षक-विसंगति

अध्यायारम्भक गीत गोहि चिन्हबाक संग नदी बचाबक आग्रह करैत अछि, जे मुख्य दृश्यसँ मिलैत अछि। अध्यायान्त गीत सेहो गोहिक फेर घुरान आ सीमाक संदेशकेँ पुनरावर्तित करैत अछि। तथापि गीतक ‘दिनमे पानि मटियाल, राति कारी तेल’ पंक्ति रंगक घटना विवरण नहि, सांकेतिक वातावरण बनबैत अछि। एहि ठाम आरम्भ–मुख्यकथा–अन्तगीतक सामञ्जस्य पिछले अग्रिम-गीत पैटर्नसँ तुलनात्मक रूपेँ भिन्न अछि; गीत-विन्यासक सम्पूर्ण क्रमक जाँच एतय विशिष्ट होइत अछि।

प्रकरण १९६ | मूल अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

शीर्षकसँ पहिने अपराधीक स्मृति : पाठक्रमक अनपेक्षित प्रवेश

एहि अध्यायक मूल पाठमे ‘लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा’ शीर्षकक बाद सामान्य आरम्भिक सूक्तिसँ पहिने शरणार्थी शिविरक गलत क्रमांक आ बाल्यकालक अपमानक स्मरण अछि। फेर ‘अंतिम सौदामे दाम नहि लिखल जाइ छै—नाम लिखल जाइ छै’ सूक्ति अबैत अछि। ई अनुक्रम सामान्य शीर्षक–सूक्ति–गीत क्रमसँ अलग अछि। स्मृति सीधे शीर्षकक बाद रखब पात्रक अतीतकेँ नैतिक प्रस्तावनाक ठाम दैत अछि; पाठ-रूपक सम्पादकीय असमानता सेहो अछि। एहि विशेष क्रमकेँ मेटा कऽ समतल बनब समीक्षाक काम नहि।

घावक कारण आ दोषक जिम्मेदारी

लाउ अपन बचपनमे शरणार्थी शिविरक सूचिमे गलत क्रमांकसँ पुकारल जएबाक अपमान मोन पाड़ैत अछि। मूल पाठ स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे अतीतक घाव दोसराक नाम छीनबाक चुनावकेँ क्षमा नहि दैत। ई विशिष्ट चरित्रलेखन अपराधीक मनोविज्ञान आ नैतिक उत्तरदायित्व बीच भेद राखैत अछि। पिछला अध्यायसभमे लाउक

काँच, समुद्र, ऊँच भवन आ नामहीन लाभ मुख्य संकेत छल; एखन एक निश्चित बाल्यस्मृति ओकर आन्तरिक प्रेरणा बतबैत अछि, मुदा निर्दोष नायक बनाबैत नहि।

तीन दिनक बाढ़ि आ सौदाक देरी

गोहिक वापसीक बाद बाढ़ि तीन दिन धरि गामक देहरी नापैत रहैत अछि। एहि बीच बच्चा सभ पाथर, पात आ रजिस्टर ऊँच बाँस-मचान पर राखैत अछि। अगिला सौदा दूर भवनमे तैयार होइत अछि; एतय कथावाचक एक स्थानपर समय विस्तार करैत, दोसर स्थानपर योजना-निर्माण समेटैत छथि। ई समानान्तर काल-संयोजन लोकक जीवित संकट आ वैश्विक व्यापारिक तत्परताक अन्तर देखबैत अछि। प्रस्तावक कागज पहुँचबाक पहिने गामक देह पानिसँ जूझि रहल अछि।

सल्लाहकारसभक बहुवाचिक एकार्थता

लाउक कार्यालयमे विधि-विद, दान-परामर्शदाता, सांस्कृतिक मध्यस्थ आ छवि-संशोधक सभ अलग शब्द बोलैत छथि—सहायता, स्मृति कोष, सुरक्षित अभिलेखागार—मुदा सभक साझा लक्ष्य नियन्त्रण अछि। एक्के आशयकेँ अनेक विनम्र संज्ञामे कहबाक युक्ति संवादक विडम्बना बनबैत अछि। पात्रसभक पदनिर्देशन अर्थपूर्ण अछि: उदार प्रयोजनक शब्दावली लाभक संरचनासँ अलग नहि। कथावाचक एहि समान स्वरमे वैश्विक संस्थागत भाषाक बहुरूपी एकरसता देखबैत छथि।

दुहरे पन्नावाला परोपकार

प्रस्ताव बाढ़ि-राहत, विद्यालय, पुल-मरम्मत, स्वास्थ्य, स्त्री-सुरक्षा आ विधवा-सहायताक वादा करैत अछि; सूक्ष्म परिशिष्टमे बाहरी अभिलेख-प्रतिलिपि, विशेषज्ञ समितिक नियंत्रण, बालपहराक स्वयंसेवकीकरण आ स्थल संयुक्त प्रबन्धन लिखल अछि। ई उदार मुख्यपाठ आ अधिकार-हस्तान्तरणक छोट शर्तक द्विपरत दस्तावेजी आख्यान अछि। कहानी कागज फाड़ि नष्ट नहि करैत, ओकर पंक्ति पढ़बैत अछि। संघर्षक स्थल रूपक मात्र नहि, शब्दक अधिकारक ठोस सवाल बनैत अछि।

‘अनाम बसाहट’ : पृथ्वीसँ बाहरक भविष्यक विज्ञापन

प्रस्तावक एक परिशिष्ट पृथ्वीक संकट आ भविष्यक सुरक्षित बसाहटक चर्चा करैत अछि। चुनल प्रतिभाशाली बच्चा, स्वास्थ्यकर्मी, डेटा-कर्मी आ स्मृति-वाहककेँ दूरक बस्तीक वादासँ जोड़ल गेल अछि। ई भविष्य-कल्पना वर्तमानमे सम्पन्न अन्तरिक्ष-यात्रा नहि; विपणनक परियोजनात्मक भाषा अछि। कथा नामक संविधानक ‘साथी छोड़ि नहि’ नियमकेँ एहि नव सौदासँ टकरबैत अछि। पृथ्वी छोड़बाक प्रस्ताव बाढ़ि सँ जूझैत लोकक लेल मुक्ति कि नव चयनात्मक बहिष्कार—ई प्रश्न खुलैत अछि।

नावसँ आयल सौदा-पत्र : वस्तुक नाटकीय यात्रा

प्रस्ताव पहले राघवक अदृश्य सन्देश, बटुकनाथक मोहर, चन्द्रपालक परामर्श, ब्रूमक दान-पंक्ति आ लाउक हस्ताक्षरक रूपेँ देखाओल जाइत अछि। प्लास्टिकमे रखल कागज नावसँ बाढ़िग्रस्त गाम पहुँचैत अछि। लेखक दस्तावेजक आवागमनकेँ स्वायत्त पात्रक प्रवेश जेकाँ मंचित करैत छथि। एक पन्ना दुनियाभरिक गठजोड़क सङ्कुचित देह बनैत अछि, जबकि गामक कादो ओकर सुथरापनक विरोध करैत अछि।

‘पहिने ई कागच सुनत’ : पाठक स्थितिक उलटफेर

अनन्या प्रस्ताव तुरन्त स्वीकार नहि करैत छथि; कागजकेँ मचानक नीचाँ धारक ऊपर राखि सुनबाक विधान आरम्भ करबैत छथि। सत्यव्रत पंक्ति-दर-पंक्ति पढ़ैत छथि, मीरा, देविका आ बा प्रतिक्रिया दैत छथि। ई सार्वजनिक वाचन दस्तावेजक स्वघोषित दानशीलताकेँ प्रश्नक अधीन लैत अछि। कागज आदेश दैत छल, आब ओकरा उत्तरदायित्वक आवाज सुनबाक पड़ैत अछि। लेखक एहि भूमिका-उलटफेरसँ सामुदायिक दृश्यकेँ सक्रिय नाट्य-स्थान बनबैत छथि।

बाल-पहरासँ ‘प्रशिक्षित स्वयंसेवक’ : नामकरणक राजनीति

सौदाक शर्तमे बच्चासभक स्वतन्त्र पहरा ‘प्रशिक्षित स्वयंसेवक’ कहल जाएत। बा चेतबैत छथि जे नाम बदललाक संग पहराक स्वरूप बदलि सकैत अछि। एहि बिन्दुपर भाषा मात्र अलंकार नहि, अधिकार-विन्यासक साधन अछि। पदवी दैब मानो सम्मान हो, मुदा नेतृत्वक स्रोत केँ बाहरी प्रशिक्षणक अधीन कएने बिना संस्था नियन्त्रण सम्भव नहि। लेखक छोट प्रशासकीय पदक भीतर सत्ता-हस्तान्तरणक बड़ी कथा छुपबैत छथि।

मौन नहि, नाम-पाठक उत्तर

अनन्या कागजी उत्तर देबाक बदला नाम-पाठ शुरू करबैत छथि—सरयू, उज्ज्वल, पुलक मजदूर, अस्पतालक स्त्री, स्क्रीनक ठगीसँ क्षतिग्रस्त युवक, अनाम नाम आ दबाओल जीवन-स्मृति। एहि सूचीमे धनक मुद्रा नहि, हानिक व्यक्तित्व केन्द्र होइत अछि। गाम पत्र फेंकैत नहि, जरबैत नहि; सुननाइक दायित्व घुरेबैत अछि। एहि नाटकीय अस्वीकारक महत्त्व स्पष्ट अछि, मुदा प्रस्ताव कानूनी रूपेँ पूर्ण अस्वीकार भेल, ई मूल पाठ नहि कहैत। स्वयं अनन्या रजिस्टरमे एकरा ‘अस्वीकार नहि कहल गेल’ लिखैत छथि।

लाउक प्रतिक्रिया : निर्णयक सीमित हिलोर

दूर कार्यालयमे कागजक कोना भीजल देखाइत अछि; लाउ बुझैत अछि जे लोग मूल्य नहि माँगि रहल अछि। ओ कहैत अछि जे ई सभ अपन पृथ्वी छोड़ए नहि चाहैत। जादुई समकालिकता गामक नाम-पाठ आ लाउक काँच-भवन जोड़ैत अछि। मुदा लाउ पैसा छोड़ि देलक, कम्पनी बन्द कएलक, भूमि अधिकार मानल अथवा क्षतिपूर्ति देलक—एहन कोनो सम्पन्न क्रिया एतय नहि। कथाक चरित्र-विकास आ कानूनी परिणामक बीच स्पष्ट दूरी रखब जरूरी अछि।

बटुकनाथक खाली हाथ आगमन

अन्तिम दृश्य बटुकनाथकेँ बाढ़िक पानिमे टखना धरि ठाढ़ देखबैत अछि। ओ एहि बेर न्यासक कागज, उपाधि वा गाड़ीकेँ अग्रभाग नहि बनबैत; केवल एक राति नाम सुनबाक अनुमति माँगैत अछि। ई विनम्र रूपान्तरण अध्याय ८०मे तारिणीक प्रश्न आ अध्याय ९१मे हुनकर अनुपस्थितिक प्रतीक्षाक अगिला चरण अछि। सार्वजनिक क्षमा वा क्षतिपूर्तिक पूर्णता एखन नहि; अध्याय स्वयं अगिला रातिक ‘बिलम्बसँ आयल क्षमा’क परीक्षा घोषित करैत अछि।

‘अन्तिम’ शीर्षक आ निरन्तर संघर्ष

शीर्षक ‘अंतिम सौदा’ अन्तिमता सूचित करैत अछि, मुदा कथानक प्रस्तावकेँ स्पष्ट स्वीकृत वा अस्वीकृत निर्णयमे बन्द नहि करैत। बरु अगिला अध्यायक लेल बटुकनाथक सुननाइ, लाउक नियन्त्रण आ अनाम बसाहटक योजनाक प्रश्न खुलल अछि। ई ‘अन्तिम’ शब्द व्यापारक चरम आकांक्षा अथवा सांकेतिक आखिरी चाल मानल जा सकैत अछि; वस्तुगत अन्तिम सौदा सम्पन्न भेल एहन निष्कर्ष नहि। अध्यायान्त गीत सेहो ‘देरक क्षमा’क अगिला परीक्षा बतबैत अछि।

आरम्भिक क्षमा-गीत आ उत्तरवर्ती परीक्षा

अध्याय ९५क आरम्भिक लोकगीत ‘देरक क्षमा संग सुधार’ कहल अछि, जखन मुख्य कथाक अधिक भाग लाउक सौदा-पत्र पर अछि आ अन्तमे बटुकनाथ सुननाइक अनुमति माँगैत अछि। गीत अगिला चरणमे क्षमा, सुधार आ क्षतिपूर्तिक प्रश्नक अग्रसूचना देइत अछि। एहि ठाम आरम्भिक गीतक पूर्वगामी समय फेर देखाइत अछि। आलोचनाक निष्कर्ष ई नहि जे गीत निश्चित गलत राखल गेल; बल्कि मुख्य दृश्य आ गीत बीचक समयान्तर पाठकक ध्यान माँगैत अछि, विशेषत: ८८–९५क क्रमिक पैटर्न संग तुलना करैत काल।

प्रकरण १९७ | मूल अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

देर सँ आयल व्यक्ति : अन्तिम सौदाक बादक कालिक अन्तराल

अध्याय ९५क अन्तिम दृश्य बटुकनाथकेँ बाढ़िक पानिमे खाली हाथ ठाढ़ देखबैत अछि; ओ एक राति नाम सुनबाक अवसर माँगैत अछि। अध्याय ९६ कहैत अछि जे शान्तिक तेसर दिन ओ असगरे आयल। एहि दुनू कथनक बीच समयक सीधा सूत्र उपस्थित नहि अछि। कथा एकर स्पष्ट कारण नहि दैत जे पूर्व दृश्य पहिल आगमन छल आ पछिला दृश्य औपचारिक प्रवेश, अथवा वएह क्षण नव समयचिह्नमे दोहराओल गेल। एहि क्रमभेदकेँ चुपचाप मिटाएब अनुचित हएत। कथन-स्तरपर ई एकटा विशिष्ट असमाप्त कालसन्धि अछि: पश्चात्तापक निर्णय पहिने संकेतित होइत अछि, फेर ओकर व्यावहारिक अभ्यास दोसरा दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। पाठकक नैतिक प्रत्याशा—आयल व्यक्ति आब की करत—समयगत अस्पष्टताक बावजूद टिकैत अछि।

सम्मानक बाह्य वेशभूषा उतरनाइ

पुरान बटुकनाथ अदालत, बरामदा, मोट पुस्तक, सहायक आ प्रतिष्ठाक घेरामे देखायल छल। एतय गाड़ीपर झण्डा नहि, संगमे वकील नहि, पएरमे धूलि; कथावाचक केवल वस्त्र-परिवर्तन नहि करैत, दृश्य-सत्ताक भाषा बदलैत अछि। ओ ऊँच बरामदाक पात्रसँ ठूँठक कगारपर बैसनिहार श्रोता बनैत अछि। पाठक ओकर बदलाव देखैत अछि, मुदा पहिरावामे सरलता आधिकारिक निर्दोषताक प्रमाण नहि मानल जाइत। ई दृश्यात्मक न्यूनता पात्रक अहंकारकेँ प्रश्नाधीन करैत अछि, जबकि पूर्वक मुकदमा, मजदूर, स्त्रीक गरिमा आ नामक अपहरणक इतिहास जस्ताक तस्तै रहैत अछि। दृश्य-शिल्पक ई सन्तुलन अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि।

पारिवारिक प्रश्नक स्मरणगत पुनःप्रवेश

अध्याय ८०मे तारिणीक सीधा प्रश्न छल—न्याय बचेलहुँ कि पेशा? एहि अध्यायमे बटुकनाथकेँ परिवारक आँखिक भय फेर सतबैत अछि; ओकरा नातिक प्रश्न सुनाइत अछि जे ओ ककर पक्षमे छल। संतान आ नातिक नामकरण तथा कालिक सम्बन्ध अलग-अलग प्रसंगमे अछि; एहि बेर नातिक प्रश्नकेँ तारिणीक वाक्यक शाब्दिक आवृत्ति मानब ठीक नहि। कथा पीढ़ीक बहुलता द्वारा उत्तराधिकारक संरचनात्मक दबाव बढ़बैत अछि। पारिवारिक सम्बोधन आरोपपत्रसँ बेसी गहींर होइत अछि, किएक तँ पद, वंश आ धनसँ बनल आत्मछविकेँ घरेलू श्रोता अस्वीकार करबाक स्थिति अपनाबैत अछि। मुदा पारिवारिक पछतावा क्षतिपूर्तिक स्थान नहि लैत।

सत्यव्रतक वाक्य : क्षमाक अधिकारक अस्वीकार

बटुकनाथ पहिने सत्यव्रत मेहतासँ कहैत अछि जे ओ क्षमा माँगए आयल अछि। सत्यव्रत उत्तर दैत छथि—हमरा सँ नहि, जेकर नाम पढ़ल जाइत अछि, ओकरा सभसँ। ई छोट संवाद कथाक न्यायाधीशीय केन्द्रकेँ हटबैत अछि। अनुभवी विधिज्ञ सँ निजी क्षमा मँगब साधारणतः अधिकारवान पुरुषक बीच समझौता भऽ सकैत छल; सत्यव्रत अपन मध्यस्थ निर्णायकता वापस करैत छथि। फलस्वरूप अनन्या, बा आ परिवारसभक स्वर अग्रभागमे पहुँचैत अछि। क्षमाक अधिकार एक व्यक्ति अथवा संस्था लग सहजतासँ जमा नहि होइत। कथा एहि अनुशासनकेँ सम्मानजनक भावुक दृश्य बनएबाक बदला असुविधाजनक सामूहिक श्रवणमे रखैत अछि।

अनन्याक प्रश्न : सर्वनामसँ नाम धरि

जखन बटुकनाथ कहैत अछि “हम अपराधी छी”, अनन्या तुरन्त पुछैत छथि—ककरा प्रति? “सभक प्रति” जेकाँ सामान्य वाक्य आलोचनात्मक दृष्टिसँ पर्याप्त नहि। एहि प्रश्नक परिणामेँ बटुकनाथ अपन अपराधक वास्तविक क्रिया चिन्हैत अछि: नामकेँ मनुष्य नहि, मामला बनौनाइ; प्रक्रियासँ अपराध ढाँकनाइ; परम्पराकेँ ढाल बनौनाइ; न्यायकेँ पेशा बनौनाइ। कथाकार नैतिक विशेषणसँ क्रियाक विवरण धरि संवादकेँ बढ़बैत छथि। ई नामकरण अपराधीक नाटकक चरम नहि, स्मृतिकेँ विशेषीकृत करबाक अभ्यास अछि। बालपात्रक एक प्रश्न वयस्कक तैयार माफीकेँ अधिक तथ्यपरक वाक्यमे बदलैत अछि।

तारीखक श्रुतिपरिवर्तन आ प्रक्रियाक हिंसा

सरयू, मुन्ना पासवान, अदृश्य मजदूर, अपमानित स्त्री आ ठगीपीड़ित युवकक नाम सुनैत बटुकनाथकेँ “अगिला तारीख”क पुरान ध्वनि मोन पड़ैत अछि। अदालतक तारीख विधिक उपकरण छल, मुदा नाम-पाठक रात्रिमे ओ स्थगित जीवनक अवधि बनि उभरैत अछि। कथावाचक बहीक संख्यासँ मानवीय नामपर ध्यान सरकबैत कालिक अनुभव बदलैत छथि। बरखक विलम्ब एतय कागजक पंक्ति नहि, व्यक्ति आ परिवारक बाँचल समयक नाश अछि। एहन ध्वन्यात्मक पुनर्सन्दर्भीकरण बिना अदालतक पुरान दृश्य प्रत्यक्ष घुमाओल सेहो ओकर प्रतिफल उपस्थित करैत अछि। मुदा वास्तविक केसक निपटारा एतय नहि देखाओल गेल अछि।

श्रवणक अवधि : दण्ड आ कथन-गति

राति भरि नाम-पाठ चलैत रहैत अछि। कथावाचक प्रत्येक नामक पूर्ण इतिहास फेर नहि दोहरबैत; चुनल नाम आ ओकर प्रतिक्रिया द्वारा बहुल पीड़ाकेँ संक्षिप्त अनुक्रममे समेटैत छथि। ई “रात्रिक सम्पूर्णता” आ “वर्णनक

चयन” बीचक अन्तर अछि। बटुकनाथ आरम्भमे हरेक नामपर तकनीकी सफाइ रचैत अछि, तेसर पहर धरि सफाइ थाकि जाइत अछि, नाम नहि। कथनक गति धीरे-धीरे बदलैत अछि: आरम्भिक आत्मरक्षासँ अविरत श्रवण, फेर आत्मस्वीकृति। एहि क्रमक मूल्य नामक सामूहिक पुनरावृत्तिमे अछि; कोनो चमत्कारी आदेशसँ ओकर अन्तरात्मा तुरन्त शुद्ध नहि होइत।

“उपस्थित”क प्रत्युत्तर आ वक्तृत्वक नियन्त्रण

गोल सभा नाम पढ़ैत अछि, सभ उत्तरमे “उपस्थित” कहैत अछि। बटुकनाथ बहुत देर धरि मुख्य वक्ता नहि बनि पबैत; ओकरा श्रोताक ठाम देल गेल अछि। उपन्यास भरि जे कबड्डी श्वासक अनुशासन आ नामक फेरे रूप बदलबैत आयल, से एहि अध्यायमे स्थिर बैठकीक श्रुतिलय बनैत अछि। संवादक एकपक्षीय अधिकार हटैत अछि, आ अपराधीक भाषणक स्थान सामूहिक पुकार लेइत अछि। एकर अर्थ न्यायालयक औपचारिक समकक्ष बनब नहि; ई कथाजगतक भीतर शब्दक पदानुक्रम उलटबाक दृश्य अछि। पाठक सेहो ओकर भाषण नहि, ओकर सुनबाक कठिनाई पर केन्द्रित रहैत अछि।

बा : दया, स्वीकृति आ क्षमामे भेद

भोरक समय बा बटुकनाथकेँ देखैत छथि, मुदा कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे हुनकर दृष्टिमे सहज दया नहि, कठोर स्वीकृति छल। ई भेद उल्लेखनीय अछि। अपराध स्वीकारबाक आरम्भ स्वीकृत भऽ सकैत अछि, मुदा क्षमा स्वतः देल नहि जाइत। बा पानि देबाक प्रस्ताव, उठि जाएबाक आग्रह आ राति भरि बैसल रहबाक नियमक बीच अनुशासनक केन्द्र छथि। पात्रसभक सहानुभूति एतय साक्ष्यक धुलाई नहि बनैत। एहन अल्प-नाटकीय प्रतिक्रिया उपन्यासक दोसर ठाम दिसल पछतावा-दृश्यसभक तुलनामे अधिक नैतिक धैर्य प्रस्तुत करैत अछि।

क्षमा निर्णय नहि, अभ्यास : खुलल अन्त

अनन्या बटुकनाथकेँ कहैत छथि—“क्षमा निर्णय नहि। अभ्यास अछि। काल्हि फेर नाम पढ़ल जाएत। आउ।” ई उत्तर अध्यायक परम्परागत शिखर-बिन्दु—आँसू, क्षमा आ आलिंगन—जानिबूझि रोकैत अछि। पात्रक नव अवस्था निश्चित सफल उद्धार नहि, नियमित उपस्थितिक दायित्व अछि। एक रातिक अवधि जीवनभरि कएल क्षतिक भरपाइ नहि करैत। शीर्षक “देर-सँ-आयल क्षमा” क्षमाक आगमन सूचित करैत अछि, मुदा मुख्य कथामे क्षमा दान नहि, ओकर कठिन प्रारम्भ उपस्थित अछि। एहि तनावकेँ शीर्षक-घटना विरोधक रूपमे स्पष्ट पढ़नाइ चाही।

बाढ़िक किनार पर प्रायश्चित्तक स्थान

अध्यायक दृश्य-स्थान बाढ़िक पश्चात् भीजल माटि, ठूँठक कगार, मचानक दीपक आ नाम-पाथर अछि। बटुकनाथक निजी आत्मजाँच सार्वजनिक संकटभूमिमे होइत अछि। जलक गन्ध ओकरा विगतसँ जोड़ैत अछि, मुदा नदिकेँ मानवीय न्यायनिर्णायक रूपमे स्थापित नहि कएल गेल अछि। प्रकृतिक पदार्थ यहाँ अनुभूतिक परिप्रेक्ष्य बनैत अछि। बाढ़ि आ कानूनी विलम्बक समय-दुःख एकसंग उपस्थित होएबाक कारण दृश्य व्यक्तिगत आत्मबोधसँ बाहर श्रम, बचाव आ सामुदायिक दायित्व धरि फैलैत अछि।

अध्यायान्तक खाता : बटुकनाथसँ चन्द्रपाल धरि संक्रमण

बटुकनाथक रात्रिक बाद दृश्य चन्द्रपालक खाता-बहीपर कट करैत अछि; क्रेडिट, डेबिट आ प्रतिशतक स्थान “माध्यम” चमकैत अछि, परदा “म्यूल” उत्तर दैत अछि। ई कथाक अन्तिम मोड़ अगिला अध्यायक सूचना सँ बेसी एक नब अपराध-रूपकक उद्घाटन अछि। बटुकनाथक विलम्बित प्रक्रिया आ चन्द्रपालक धन-प्रवाह दुनूमे “हम तँ साधन मात्र छलहुँ” जेकाँ बचाव सम्भव अछि; उपन्यास अगिला प्रकरणमे एहि बचावक समीक्षा करबाक जमीन बनबैत अछि। पात्रक चेतना बदलबाक कथा प्रणालीगत उत्तरदायित्वक प्रश्नसँ कटल नहि रहैत।

लोकगीतक समय-स्थान : खाताक पाठ पहिने किएक?

अध्याय ९६क आरम्भिक लोकगीत “अपन खाता, अपन जीवन” वित्तीय सावधानी, अनजान धन आ पहचानक बात कहैत अछि। मुदा मुख्य घटना बटुकनाथक सुननाइ अछि; खाताक रूपक मुख्य रूपेँ अन्तिम संक्रमण आ अगिला अध्याय ९७मे खुलैत अछि। एतय गीतक विषय घटनासँ एक पग आगाँ चलैत अछि। अन्तगीत देरसँ आयल क्षमा, विलम्बक बही आ अधूरा प्रायश्चित्तकेँ फेर पढ़ैत अछि। प्रारम्भिक अग्रसंकेत आ अन्तक पुनरावलोकनक ई अन्तर पाठक गतिक मूल्यांकन करैत काल महत्त्वपूर्ण अछि।

दृश्यक सीमा : न मुकदमाक निस्तार, न क्षतिपूर्ति

कथाकार बटुकनाथक सुननाइ लेल शक्तिशाली सामूहिक दृश्य बनबैत छथि, मुदा एतय ओ प्रभावित परिवारकेँ धन घुरेबाक, मुकदमा फेर खोलनाइ, लिखित सूची सुधरब वा संस्थागत स्वामित्व छोड़बाक ठोस आदेश पूरा नहि करैत। प्रायश्चित्त पात्रक विश्वसनीय आरम्भ बनि सकैत अछि, परिणामक प्रमाण नहि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ दृश्य-अन्त पर पाठककेँ एहने असमाप्त स्थितिमे छोड़ब उपयुक्त अछि: भोरक उजास राहतक भाव देत, मुदा कथा ओकरा समापन घोषित नहि करैत। आगामी अध्यायमे अपराधक “माध्यम” रूपक एहि अपूर्णताकेँ आर व्यापक करैत अछि।

प्रकरण १९८ | मूल अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

शब्दक प्रविष्टि : “म्यूल अकाउण्ट”क अर्थक विस्तार

अध्यायक शीर्षक वित्तीय अपराधक एक तकनीकी अभिव्यक्तिकेँ चरित्रक आत्मपहिचानमे बदलैत अछि। ‘म्यूल’क सामान्य व्यवस्था धन घुमेबाक लेल उपयोग कएल गेल खाता होइत अछि; कथा ओकरा चन्द्रपालक जीवनक रूपक बनबैत अछि। ओ सोचैत छल जे खाता खोलब ओकर सत्ता अछि, मुदा एक दिन बुझैत अछि जे ओकरो माध्यम जकाँ उपयोग कएल गेल। कथावाचक ई उलटावसँ ओकर आत्मसम्मानक दरार देखबैत छथि, मुदा अघोषित सञ्चालकक उपस्थिति ओकर व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत। “माध्यम” कथन दोषक रेखाकेँ बहुस्तर पर पसारैत अछि; निर्दोषताक प्रमाण नहि बनैत।

पहिल विद्यालय-दिन : नाम बिगाड़बाक अपमानक पूर्वदीप्ति

अध्यायक शीर्षकक पहिने चन्द्रपालकेँ विद्यालयक उपस्थितिमे शिक्षक द्वारा ओकर नाम बिगाड़ि पढ़बाक स्मरण होइत अछि, जइपर कक्षा हँसल छल। एकर बाद मुख्य कथामे ओकर बाल्यकाल, सामाजिक उपहास आ नाम

बड़का अक्षरमे लिखएबाक इच्छा घुरैत अछि। ई पूर्वदीप्ति अपराधीक मानसकेँ एहन वंशरेखा दैत अछि जतय स्वयं अपमानित नामक धारक दोसरक नाम संख्या बनौनिहार बनि गेल। मुदा पाठ स्वयं कहैत अछि जे स्मरण ओकरा निर्दोष नहि बनबैत; ओकर आत्मछलक पर्दा हटबैत अछि। जीवनीगत कारण आ नैतिक सफाइ बीचक सीमा आलोचनात्मक रूपेँ सुरक्षित अछि।

“चन्दू-चन्नू-चन्दू” : पुकारक पाठान्तर

अध्याय ७४मे ओकर घरेलू बालनाम “चन्दू”, ८१मे “चन्नू”, आ ९७मे स्मरणगत पुकारक भिन्न रूप “चन्दू” सहित अन्य सम्बोधन उल्लेखित अछि। इहो सम्भव जे अलग लोक अलग पुकारैत होथि; किन्तु पाठ प्रायः एहि भिन्नताकेँ अलग-अलग सामाजिक सम्बोधनक स्पष्ट सूची रूपेँ नहि बाँधैत। तेँ एकरा सम्पूर्ण निश्चयपूर्वक त्रुटि कहब जल्दबाजी होएत, मुदा स्वयंसिद्ध एकरूपता सेहो मानब नहि चाही। नामक अस्थिरता पर आधारित पात्रक अध्यायमे एहन पाठान्तर अर्थपूर्ण प्रतीक बनि सकैत अछि, अथवा सम्पादकीय संगतिक प्रश्न बनि रहि सकैत अछि।

आत्मसत्ताक पलट : मालिकसँ मार्फत

चन्द्रपालक भीतरक कथा पद, प्रमाणपत्र, सम्पर्क आ साझेदारीक माध्यमसँ उठल प्रभावक वर्णन करैत अछि। जखन ओ अपनाकेँ एक म्यूल खाता बुझैत अछि, ओकर स्थितिक उलटफेर होइत अछि: आदेश देनिहार व्यक्ति आदेश वहन करनिहार उपकरणक अनुभव करैत अछि। मुदा शोषकक स्वयं शोषित अनुभव कएलासँ पीड़ित परिवारक स्थान ओकरा नहि भेटैत। एहि जोखिम पर पाठक सावधान रहबाक चाही: चन्द्रपालक अपमानक अनुभव कथा-पटपर स्वतन्त्र मानस-घटना अछि, पर डिजिटल ठगी आ मृतकक शोक-व्यापारक काज वास्तविक भोगबाला लोकक क्षति अछि।

खाता-जालक नदी : रूपकक क्रमिक फैलाव

खाता, प्रतिशत, कमीशन आ नेटवर्क अध्याय ७४ सँ घुरैत चिह्न छथि। अध्याय ९७मे नेटवर्क नदी बनि जाइत अछि; चन्द्रपाल स्वयं एहि बहावमे माटि जेकाँ अनुभव करैत अछि। पुरान जलसमाधि एतय वित्तीय गतिशीलताक बिम्ब ग्रहण करैत अछि। पानिमे तैरैत खाता, खाता सभक छोट गोहि बनि नाम चिबाएब आ बाढ़िसँ घेरल कोठरी —ई सभ चरित्रक अन्तरदृश्यक घनीभूत रूपान्तरण छथि। ओहि बिम्बसभकेँ वास्तविक बैंक खाताक शाब्दिक घटनासँ अलग राखलासँ आख्यानक जादुई रूपक बचैत अछि।

प्रतिशतक अभिशाप : लेखा आ लेखनक सम्बन्ध

८१मे चन्द्रपालक कलम नामक ठाम “प्रतिशत” लिखैत छल, आ ९७मे ओकरा सभ उपाधि उतरि गेलाक बाद “म्यूल”क ध्वनि भेटैत अछि। दू अध्याय एकहि बीमारीक अलग चरण छथि। पहिल दृश्य पहचान लिखबाक अक्षमता अछि; दोसर अपने अपराधमे निभाओल माध्यमक भूमिका पहचानब अछि। आरम्भमे लेखन बाधित होइत अछि; पछिला चरणमे ओ खाता-बही लऽ सार्वजनिक पहरापर जाएबाक सोचैत अछि। ई हलचल लेखनक उपचारक जादू नहि; केवल ई संकेत जे व्यक्ति आत्मरक्षाक झूठसँ अभिलेखी सामना दिस जा रहल अछि।

मेरठक डिग्री आ सामाजिक अपमानक कथा

चन्द्रपाल अपन सस्त डिग्री आ सामाजिक अवरुद्ध दरबाजासँ पुरान रोषकेँ जोड़ैत अछि। ओ मानैत रहल जे समाज छल करैत अछि, तेँ समाजकेँ ठगब चतुराई अछि। कथावाचक एहि वैधता-निर्माणक तर्कक विकास देखबैत छथि: चालाकी सँ रोजी, रोजीसँ दलाली, दलालीसँ अपराध, अपराधसँ संगठित व्यापार। एहि क्रममे प्रत्येक अगिला डेग विकल्पक रूपमे उपस्थित अछि, अपरिहार्य दैव-विधान नहि। दोषक बीज सामाजिक तिरस्कारमे खोजबाक प्रवृत्ति कथा स्वीकारैत अछि, मुदा भोगल असम्मानकेँ हजारो लोकक शोक बेचबाक छूट नहि बनबैत।

सम्बोधनक पदक्रम : साहेब, सर, दलाल

चन्द्रपालकेँ लोक “बत्रा साहेब”, “सर” कहैत छल, अधिकारी फोन उठबैत छलाह, अपराधी चरण छुबैत छल। एहि सम्बोधनक क्रममे ओकर सामाजिक प्रभाव बनल छल। जखन ओ स्वयं खाता बनि जाइत अछि, ई सम्मानसूचक भाषा शून्य पड़ैत अछि। कथावाचक सम्मानक पतनकेँ बाहरी गिरफ्तारी वा सार्वजनिक भण्डाफोड़सँ नहि, एकान्त आत्मबोधसँ देखबैत छथि। मुदा ई निजी टूटन प्रमाणित सामाजिक परिवर्तन नहि। परदा पर नामक विखण्डन आ समाजमे बाँचल दबदबा दू अलग स्तर छथि; पाठककेँ दुनू एक नहि मानबाक चाही।

मार्फत बनल देह : जादुई लेखाक अर्थ

बाढ़िक पानिमे तैरैत खाता आ “मार्फत” लिखल पानिक वस्तु चन्द्रपालक कोठरी घेरैत अछि। फाइलक तथ्यतन्त्र एतय भौतिक रूप ग्रहण करैत अछि। जे खाते बाहरी दुनियाँमे धनक अदृश्य पथ छल, से भीतर देहक घेराव बनि गेल। ई दृश्य दृष्टिकेन्द्रक निकटता पर आधारित अछि: पाठक चन्द्रपालक भय आ विघटन देखैत अछि; एहि सँ निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत जे सभ बाहरी पात्र पानिमे वास्तवमे तैरैत खाता देखलक। जादुई दृश्य मानसिक अपराध-बोध आ कथावाचकक रूपक-सत्ताक साझा क्षेत्रमे राखल गेल अछि।

राघवकेँ लिखल अधूरा पत्र

चन्द्रपाल राघवक नम्बर खोलि पहिने “खाता बन्द कर” लिखैत अछि, मेटबैत अछि, फेर “ककर खाता छल?” लिखैत अछि, मेटबैत अछि। अन्तिम वाक्य “हम माध्यम छलहुँ, मुदा निर्दोष नहि” एहन अवस्था सूचित करैत अछि जतय भाषा बचावसँ स्वीकार दिस बढ़ैत अछि। संदेश पठाएबाक पहिने स्क्रीन ठमकि जाइत अछि आ अक्षर पात बनि चिपकि जाइत अछि। एहि क्रममे प्रसारण थमब महत्वपूर्ण अछि: सार्वजनिक जिम्मेदारी भेजि देल सन्देश मात्रसँ पूरा नहि होइत; अहाँकेँ ओकर मतलब संग उपस्थित हेबाक पड़त।

अपराधक परत आ अनाम मुख्य मालिक

अध्याय अलग-अलग भूमिकाक नाम लैत अछि—मार्फत धन गुजारनिहार, सूची बदलनिहार, आदेश चलौनिहार आ दूर रहि लाभ लेनिहार। चन्द्रपाल अपनाकेँ केवल मार्फत बताबय चाहैत अछि, मुदा अन्ततः स्वीकारैत अछि जे ओ निर्दोष नहि। एहि स्वीकारक कथागत बल जिम्मेदारीक स्तरसभकेँ अलग राखबमे अछि। तथापि वास्तविक मालिकसभक पहचान, रकमक ठोस बाट, पीड़ितक नामसँ खाता मिलान आ प्रमाणक सार्वजनिक प्रस्तुति अध्यायमे पूरा नहि होइत। कथा म्यूलक रूपक खोलैत अछि, आपराधिक लेखापरीक्षा सम्पूर्ण नहि करैत।

गामक बाट : प्रायश्चित्तक अप्रमाणित संकल्प

भोरमे चन्द्रपाल खाता-बही आ लिखल पन्ना कपड़ामे बाँधैत अछि, नाम-पहराक ठाम जएबाक निर्णय करैत अछि। कथा एहि क्षण ओकरा गाममे पहुँचि वास्तविक पीड़ितक सोझाँ खाता खोलैत नहि देखबैत। अन्तिम प्रस्ताव—पूरा नाम लिखू, मुदा प्रतिशत सेहो लिखू—स्वआरोपक गम्भीर इच्छा अछि। अपन दोष देखाकऽ क्षमा-मुक्ति माँगबाक चालाकी आ साँच खुलासा करबाक कठिन इच्छा बीचक परिणाम अगिला दृश्य पर टिकल रहैत अछि। तें “ओ सभ स्वीकार कऽ लेलक” जेकाँ परिणाम आरोपित करब कथापर बाहरी निष्कर्ष थोपब हएत।

गोलाइ आ नियन्त्रण : बाढ़िक बाह्य पृष्ठभूमि

बाढ़ि गाममे नदीक संकट छल, चन्द्रपालक खिड़कीक पाछाँ सेहो पानि चढ़ैत अछि। बाह्य बाढ़ि आ आर्थिक खाता-बहावक संगति एकटा बहुस्तरीय जलरूपक रचैत अछि। व्यक्तिक खाता बनब, खाता गोहि बनब आ गोहि नाम चिबाएब—चित्रसभक ई तीव्र क्रम उपन्यासक शीर्षकक रूपक विस्तार करैत अछि। तथापि जबरदस्ती जोड़ल प्रतीक-विस्तारक खतरा रहैत अछि: प्रत्येक खाता वास्तवमे जलचर नहि; समानता आलोचनात्मक उपकरण अछि, कथाक भौतिक विधानक अन्तिम निश्चय नहि।

लोकगीत फेर अगिला कथा दिस : सिग्नल-बटगबनी

अध्याय ९७क आरम्भिक लोकगीत “पातपर संदेशक आशा” सिग्नल आ लोप पाबयवला अक्षरक बादलकेँ आशाक अर्थ दैत अछि। मुख्य दृश्य चन्द्रपालक खाताक अछि, जखन अगिला अध्याय ९८ सचमुच राघवक अन्तिम सन्देश पर केन्द्रित अछि। एही से गीत कथाक नजिकक समयमे आरो एक पग आगाँक विषय उठा लैत अछि। अन्तगीत म्यूल बनल जीवन आ अपराधक माध्यमक रूपक समेटैत अछि। प्रकरण ९६क आरम्भिक वित्त-गीत जकाँ एतहु परिशिष्टगीत आ मुख्य कथा अलग कालिक दिशा धारण करैत अछि।

पात्र-विश्लेषणक सीमा : दोषक सौन्दर्यीकरण नहि

चन्द्रपालक बाल्यकाल, अपमान, रोदन, जड़िमे फँसल नाम आ गोहिक स्वप्नक दृश्य पाठककेँ ओकर भीतर लऽ जाइत अछि। ई घनिष्ठ दृष्टिकेन्द्र महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि, मुदा एकर आकर्षण सँ पीड़ितक कथन छाहमे पड़बाक जोखिम अछि। अध्यायक सफल पाठ ओहेत हएत जे अपराधीक मनोविज्ञानक व्याख्या करए, ओकरा पीड़ितक नैतिक बराबरी पर अनायास नहि चढ़ाबए। रजिस्टर, सार्वजनिक खाता आ परिवारक अनुमति सम्बन्धी पुरान अध्यायसभ एहि आलोचनात्मक सीमा राखबाक आधार बनैत अछि।

प्रकरण १९९ | मूल अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

शीर्षकक अन्तिमता आ अध्यायक असमाप्त उत्तर

“राघवक अंतिम संदेश” शीर्षक एक निर्णायक अन्तिम वाक्यक अपेक्षा उत्पन्न करैत अछि। कथा अन्ततः एक पात बनल सन्देश धरि पहुँचैत अछि, मुदा पात पर “सुनबाक ऋण बाँकी अछि” जोड़ि ओकर कथनात्मक अन्तिमताकेँ खोलि दैत अछि। अन्तिम संदेश अपराध-जालक अन्तिम संचार नहि सिद्ध होइत; इहो निश्चय नहि जे

आगाँ कोनो सन्देश नहि आएत। शीर्षक घटना आ कथावाचकक शेष अवकाश बीचक तनाव उपन्यासक आवर्तित तरीका अछि। एहि अध्यायमे अन्तिमता वस्तुक न मेटाएल रहबमे अछि, न कि नैतिक फैसला पूरा भऽ जाएबमे।

माएक मेटल आवाज : निजी पूर्वदीप्तिक नैतिक उलटाव

अध्यायक मुख्य पाठसँ पहिने राघवकेँ अपन माएक अन्तिम आवाजक रिकॉर्डिंग अनजानमे मेटा देबाक पीड़ा मोन पड़ैत अछि। ई आत्मकथात्मक स्फुटन महत्त्वपूर्ण, कारण अपराधी दूसराक सन्देश नष्ट करबाक वेदना अपने जानैत छल। तखनहुँ ओ दोसरक पुकार, अपराधक बाट आ धमकीक संकेत जानिबूझि मेटबैत रहल। स्मृति निजी हानि आ सार्वजनिक दुष्कर्मकेँ एकहि दृश्यगत वस्तु—मेटल सन्देश—द्वारा जोड़ैत अछि। मुदा माएक क्षति ओकर भविष्यक अपराधक अपरिहार्य कारण नहि। ई याद ओकर नैतिक असङ्गतिकेँ अधिक तीक्ष्ण बनबैत अछि।

पाँच यन्त्र आ वितरित सत्ताक कोठरी

राघवक कोठरीमे पाँच चमकैत यन्त्र छथि; सभ पर ताला, समय, छद्म नाम, दान-खाता आ विदेशक सम्पर्क। एहि वस्तु-सूचीसँ कथावाचक डिजिटल सत्ताक कोनो अमूर्त व्याख्या नहि, ओकर भौतिक वातावरण बनबैत छथि। यन्त्रक गर्मी, भनभनाहट आ सन्देश चकरघिन्नी कथात्मक अनुभूति बनैत अछि। बाहर सब किछु व्यवस्थित बुझाइत, भीतर सम्बन्धक अर्थ टूटि रहल अछि। पाँच स्क्रीनक बहुलता व्यक्ति-नियन्त्रणक प्रदर्शन अछि, मुदा पाठक जानैत अछि जे वास्तविक सञ्चार एखन बाधित अछि। दृश्य-विरोध उपकरणक प्रचुरता आ अर्थपूर्ण सुननाइक अभावमे अछि।

कोड-सम्बन्ध आ वास्तविक व्यक्तिक अनुपस्थिति

राघवक सुरक्षित समूहसभमे “दान”, “विरासत”, “सफाई”, “न्यास”, “अभिलेख” आदि नाम अछि। सभ संकेतक पाछाँ असली मनुष्य छथि; मुदा अपराध-जाल हुनका पहिचानक बदला कार्य-श्रेणी बनबैत अछि। एहि रूपकक समानान्तर ९७मे खाता नामक स्थान लैत अछि। कोड कथाक भीतर पात्रसभक दृष्टिकेन्द्र संकुचित करैत अछि—ओ साथी, पीड़ित वा शत्रु नहि देखैत, केवल बाट आ पहुँच देखैत अछि। कथावाचक एहि कृत्रिम नामकरणकेँ सूचीबद्ध कऽ पाठकसँ वास्तविक अनुपस्थित लोकसभकेँ कल्पित करबैत छथि, मुदा सूचीबद्ध शब्दक अस्पष्टता सेहो जानिबूझि बचैत अछि।

बाल्यकालक गुप्त लेख : व्यावसायिक आदतिक बीज

राघवक स्मरणमे नेबोक रससँ लिखल गुप्त लेख, आगिक तापमे प्रकट होएबला अक्षर आ पिताक “रहस्य राखब सीख” सम्बन्धी सलाह अछि। एहि पूर्वदीप्तिसँ पात्रक कूटभाषा-वृत्ति सामाजिक शिक्षा धरि फैलैत अछि। मुदा कथा आवश्यक भेद जोड़ैत अछि: किछु रहस्य मनुष्यक गरिमा बचबैत अछि, किछु अपराधक रक्षा करैत अछि। एकहि तकनीकक दू नैतिक उपयोग सम्भव अछि। अतएव गोपनीयताकेँ अपने आपमे दोषी मानब एतयक रचनात्मक तर्कक सरलीकरण हएत; दोष लोकक नाम लूटएबाक लेल चयनित गोपन-व्यवहारमे अछि।

“सिग्नल” उपनामक स्वतः वापसी

राघव अपन नाम “राघव सोमानी” लिखए चाहैत अछि, मुदा परदापर “राघव सिग्नल सोमानी” उभरैत अछि। ओ उपनाम मेटबैत अछि, फेर अक्षर घुरि अबैत अछि। कथावाचक डिजिटल परिचयक स्वतन्त्र नियंत्रणक भ्रम टूटैत

देखबैत छथि। उपनाम पहिने चातुर्यक पुरस्कार छल, आब अपराधक चिह्न बनि गेल। एतय जादुई वर्तनीक घटना बाहरी नाम-बदलावक कानूनी निषेध नहि; व्यक्तिक मानसिक अस्वीकार आ कथाक भाषिक प्रतिरोधक एक रूप अछि। कथनस्तर अलग राखला पर एहि दृश्यक शक्ति बचैत अछि।

चारि असफल प्रेषण : सम्पर्कक नकारात्मक क्रम

राघव चन्द्रपाल, बटुकनाथ, लाउ आ ब्रूमकेँ अलग-अलग वाक्य पठएबाक प्रयास करैत अछि। प्रत्येक वाक्य अपराध-व्यवस्थाक कोनो एक भाग खोलैत अछि—खाता, अबेर, लाभ, दानक पीछे शव। कियो संदेश पहुँचल नहि देखाओल जाइत। चारि असफल प्रयत्नकेँ कथा पुनरावृत्तिक संरचना बनबैत अछि: अनवरत सञ्चारक आदति विरुद्ध वाक्यक आत्म-सुननाइ। जँ हम एहिमे चारू प्रतिपक्षीकेँ वास्तविक सूचना पहुँचि गेल मानि ली, तँ उपन्यासक मुख्य विरोध नष्ट भऽ जाएत। असफल प्रेषण स्वयं घटना अछि, सफल जानकारी-विनिमय नहि।

मेटल संदेशक पात बननाइ : अभिलेखक जादुई वापसी

एक अन्हार कोठरीक अन्तर्दृश्यमे हजारो मेटल सन्देश पात बनि लटकैत अछि। बादमे राघवक विशेष वाक्य हरियर पात बनि चन्ना ठूँठक कगारपर पहुँचित देखाओल गेल अछि। ई दूटा पात-विधानक सम्बन्ध अछि—पहिल अपराधीक चेतनामे दृश्य, दोसर गाममे बच्चासभ द्वारा देखल वस्तु। कथावाचक डिजिटल संकेतकेँ जैविक पदार्थमे बदलि दैत छथि। ई जादुई यथार्थक घटना कथाजगतक भीतर दत्त अछि; ओकरा पाठकक सामने वास्तविक सर्वर-पुनर्प्राप्ति वा तकनीकी फोरेंसिक प्रतिवेदन घोषित करब त्रुटि हएत।

“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल” : वाक्यक असमाप्त व्याकरण

विशेष संदेश मेटाएल नहि जाइत: “खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।” वाक्यक दू भाग विपरीत समय बतबैत अछि—खाता एखन जारी अछि, मुदा भीतर उद्घाटनक दावा अछि। ई विडम्बना अध्यायक केन्द्र अछि। राघव अपन अन्तरात्माक खुलनाइ कहैत अछि, किन्तु अपराध-जालक आर्थिक ढाँचा बन्द भेल नहि। कथावाचक एहि असमानताकेँ मेटबैत नहि; चन्ना ठूँठक पात पर वाक्य जड़ि जाइत अछि। मनक स्वीकार आ बाह्य अपराध-व्यवस्थाक समाप्तिक बीचक दूरी जतेक स्पष्ट अछि, नैतिक अवलोकन ओतेक कठोर होइत अछि।

देविका–मीरा–बा : व्याख्याक सामूहिक प्रतिवाद

ठूँठपर पात देखलाक बाद बा नामक अदालतक कठोर प्रश्न उठबैत छथि; मीरा कहैत छथि जे स्वीकार बिनु उत्तरदायित्व अधूरा, देविका याद करबैत छथि जे कोडसँ घायल लोकक सोझाँ खोलनाइ कठिन अछि। एक पातक तीन सामाजिक पठन प्रस्तुत कएल जाइत अछि। राघव अपन संदेशमे जे आत्म-उद्घाटनक अर्थ बनौलक, गाम ओकरा एकमेव अर्थ नहि मानैत। कथावाचक तात्कालिक सहानुभूति झट स्वीकार नहि करैत; स्त्री-पात्रसभक भिन्न स्वर स्व-सुधारक घोषणाकेँ कठोर अनुभवसँ जाँचैत अछि।

“प्रतीक्षा” पाथर : स्थगित निर्णायकता

अनन्या पातक नीचाँ पाथर राखि ओकरा “प्रतीक्षा” नाम दैत छथि। पहिने पाथर पर मृतकक नाम राखल जाइत छल; एतय पाथर अपराधीक अधूरी गवाहीक प्रतिक्षाक संकेत बनैत अछि। नाम-पाथरक अर्थ-परिवार एहि घटना सँ विस्तृत होइत अछि, मुदा मृतक आ अपराधीक दर्जा एक नहि भऽ जाइत। समुदाय ओ पातकेँ बीचमे स्वीकारैत

अछि, क्षमाक प्रमाणपत्र नहि बनबैत। एहि वस्तुनाममे भविष्योन्मुख कथा समय जमि गेल अछि—कियो आएत, किछु कहत, तथापि कोन परिणाम प्राप्त होएत से अपूर्ण।

कागच पर सीधा लेखन : कोडक बादक माध्यम

राघव अन्ततः सामान्य कागच पर लिखए बैसैत अछि जे ओकर चुप रहब अपराध छल। कोड, एन्क्रिप्शन आ क्षणिक सन्देशसँ हटि सामान्य कागच पर लेखन दृश्यगत रूपेँ नव चरण अछि। तथापि एहि कागचक प्राप्तकर्ता, सार्वजनिक प्रस्तुति आ स्थायी संग्रहन मुख्य कथामे पूर्ण विस्तारसँ नहि भेटैत। पाठक ई भाव समझैत अछि जे सादा कागज जिम्मेदारीक दिशा खोलैत अछि, मुदा एकरा सार्वजनिक दण्ड वा गवाहीक सिद्धि नहि मानबाक चाही। कथावाचक स्वयं सत्यव्रतक संवादमे एहि अन्थरकेँ व्यक्त करैत छथि।

गवाहीक दुआर : सत्यव्रतक कथन आ आत्मसमावेश

सत्यव्रत पात पढ़ि कहैत छथि—“ई गवाही नहि, गवाहीक दुआर अछि। दुआर खुलल अछि, भीतर चलब शेष अछि।” एतय कथावाचक बिनु बोझिल व्याख्याक छूअल गवाही आ ओकर पूर्वसूचना बीचक भेद दैत छथि। अनन्या पूछैत छथि—गवाही के देत? सत्यव्रत कहैत छथि—जे समयपर नहि बाजल, से पहिने; हमहुँ। एहि “हमहुँ” सँ अध्यायक आखिरी दृष्टिकेन्द्र राघवसँ सत्यव्रत दिस सरकैत अछि। आगाँक अध्याय लेल नब कृत्यक तयारी सीधे संवादसँ होइत अछि, ककरो बाहरी कथावाचकक आदेशसँ नहि।

गीतक “मौनमे उपस्थित जन” आ श्रवणक पूर्वपीठिका

अध्याय ९८क आरम्भिक लोकगीत मौनमे उपस्थित जन, शान्त संगति आ सुरक्षित स्थानक मान गबैत अछि। मुख्य कथामे राघव अपन गुप्त चुप्पी आ मेटनिहार संदेशक अपराधसँ जूझैत अछि। एतय समान शब्द “मौन” दू विपरीत नैतिक अर्थ लैत अछि: पीड़ितक सुरक्षित चुप्पी आ अभियुक्तक साक्ष्य-नाशक चुप्पी। अन्तगीत पातसँ चिपकल अन्तिम सन्देश समेटैत अछि। एहि भेदकेँ जँ अनदेखा कएल जाए, तँ लोकगीतक करुण मौन आ राघवक छल-मौन गलत रूपेँ एके श्रेणीमे पड़ि जाएत।

दूरसँ परिवर्तनक सीमा : कानूनी स्वीकार बनाम पात

राघवक यन्त्र पर संदेश अटकल अछि, गाममे पात पहुँचल अछि, सत्यव्रत ओकरा गवाहीक दुआर कहैत छथि। मुदा एतय कोनो डिजिटल लॉगक सत्यापन, अदालती बयान, हानि-भरपाइ वा प्रभावित लोकक अनुमोदन पूरा नहि भेल। कथानकक नैतिक सत्य आ विधिक दस्तावेजक स्थिति एक नहि। पातक जादुई आगमन पाठकीय प्रभावक केन्द्र बनि सकैत अछि, तखनहुँ सार्वजनिक जिम्मेदारीक जाँच शेष रहैत अछि। ई शेषता उपन्यासकेँ सहज पाप-धुलाई कथा बनबाकसँ बचबैत अछि।

प्रकरण २०० | मूल अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

शीर्षकक सोझापन आ नब आत्मवाचक

पछिला अध्यायसभमे नाम-पाथर, जादुई पात, खाता आ छाह कथाक प्रमुख चिह्न छल; अध्याय ९९ सीधे “सत्यव्रत मेहताक गवाही” शीर्षकसँ आरम्भ होइत अछि। पात्र स्वयं अपन नाम गवाहीक माथ पर लिखैत छथि,

कोनो पदवी नहि। शीर्षक बाहरी श्रोता-प्रतीकसँ पहिल पुरुषक उत्तरदायित्व धरि केन्द्र बदलैत अछि। यद्यपि कथावाचक तृतीयपुरुषमे दृश्य-सज्जा करैत छथि, लिखित गवाहीक अंशमे सत्यव्रतक “हम” स्पष्ट सुनाइत अछि। कथनस्तरक एहि परिवर्तनमे पात्र आ साक्ष्यक दूरी संकुचित होइत अछि, मुदा गवाही स्वतः पूर्ण सार्वजनिक निर्णय नहि बनैत।

तीन बेर मोड़ल पन्ना : भावी लेखनक पूर्वचेष्टा

अध्यायक मुख्य आरम्भसँ पहिने कहल गेल अछि जे सत्यव्रत तीन बेर अपन पन्ना मोड़लनि। हुनका डर छल जे सत्य लिखिते पद, मित्रता आ निर्णयसभक प्रतिष्ठा दरकएत। अनन्याक रजिस्टरमे काटि कऽ सही शब्द लिखबाक अभ्यास हुनका प्रेरित करैत अछि। कागच मोड़बाक तिहरी क्रिया विलम्बित निर्णयक लघु रूपक अछि। एतय पात्रक आत्मसंकोच कथाक गति थामैत अछि, मुदा एही ठहरावसँ आगामी गवाहीक भार बनैत अछि। जँ पहिलहि वाक्यमे ओ निडर स्वीकारोक्ति करैत, तँ एहि कृत्यक नैतिक लागत अप्रत्यक्ष रहि जाइत।

शपथपत्रक बदला सादा कागच

सत्यव्रतक झोरामे पुरान शपथपत्र, नोटबुक आ स्याहीकलम अछि। ओ अपन गवाही लेल बिनु सरकारी शीर्ष आ मोहरक उज्जर पन्ना चुनैत छथि। सरकारी पदक प्रतीकसभ उपस्थित रहितहुँ प्रयोगमे नहि आबैत। ई परिवर्तन लेखकीय सत्ता-बोधक नाटकीय उलटाव अछि—हुनकर पुरान हस्ताक्षर संस्थागत विश्वसनीयता देत छल, मुदा एतय पीड़ितक सोझाँ साधारण मनुष्यक रूपमे बोलब जरूरी अछि। आलोचनाक सीमा ई जे अनौपचारिक पन्ना संहिताबद्ध शपथपत्रक विकल्प स्वतः नहि; ई कथा-नैतिकताक प्रतीकात्मक दस्तावेज अछि।

गवाहीक घटना-श्रृंखला : चारि अभिलेखीय विफलता

सत्यव्रत अपन पत्रमे पुलक मजदूरक नाम सूचीसँ हटाओल जाएब, अस्पतालक साँसक बजार, डिजिटल ठगीसँ उजड़ल घर आ स्त्रीक निजताकेँ चरित्र-आरोपमे बदलल जाएब चिन्हैत छथि। ई चारि प्रसंग उपन्यासक अलग-अलग कथावृत्तक संक्षिप्त प्रत्यावर्तन अछि। कथावाचक पूर्वक सैकड़ों घटनाकेँ एतय फेर विस्तृत दृश्य रूपेँ नहि लिखैत; पात्रक स्वीकृतिक चयनित सूची बनबैत अछि। एहि “सारांशात्मक पुनरागमन” सँ पाठक अलग पथसभक एके निस्तब्ध केन्द्र पहचानैत अछि—पदपर रहल व्यक्तिक समयपर नहि बजब।

प्रक्रिया चलि रहल अछि : कालक दोष

मजदूरक सूची बदलि गेल, सत्यव्रत लिखने छलाह—प्रक्रिया चलि रहल अछि; प्रक्रिया चलैत-चलैत देह सड़ि गेल। एहि विरुद्ध कथनक असल शक्ति समयक नाटकीय तुलना अछि। संस्थागत वर्तमान निरन्तर चलैत अछि, मुदा मनुष्यक जैविक समय समाप्त भऽ जाइत अछि। कथा एहि विषमताकेँ भाषिक समान्तरता द्वारा तीक्ष्ण बनबैत अछि। अदालत अथवा कार्यालयक देरी केवल एक दिनांकित गलती नहि, बाँचल समयक अदृश्य खर्च अछि। सत्यव्रत अपन पूर्वक मौनकेँ घटना बनबैत छथि; मुदा ककर मामला कहिया कानूनी रूपेँ फेर खुलत, से गवाहीमे पूर्ण नहि अछि।

पदक आकार छोट भेनाइ : दृष्टिकेन्द्रक नैतिक गणित

कथा कहैत अछि जे जतेक सत्यव्रत लिखैत गेलाह, हुनकर देह ओतेक छोट देखाइ पड़ल। ई वास्तविक देहक नाप घटबाक कथन नहि, कथावाचक द्वारा दर्शित नाटकीय अनुपात अछि। पहिने न्यायालयमे ओ ठाढ़ होइत तँ सभ चुप भऽ जाइत; एतय बच्चासभक बीच बैसि अपन दोष लिखैत छथि। दृश्यात्मक अनुपात सत्ताक परिवर्तनक अर्थ दैत अछि। पात्र नायक नहि बनैत; उलटे पदक ऊँचाईसँ मनुष्यक समान स्तरपर उतरैत छथि। एहि सौन्दर्यात्मक उलटावक फल ई जे स्वीकारोक्ति प्रशंसात्मक आत्मचरित नहि, कर्तव्यक प्रारम्भ बुझाइत अछि।

बा : देरक गवाही आ बीजक काल

बा कहैत नहि, मुदा हुनकर दृष्टिक वर्णनमे देर सँ फूटल बीजक तुलना अबैत अछि। देर सँ फूटल बीज पैघ उपज नहि देत, मुदा बीजक साँच बचि सकैत अछि। ई बिम्ब बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमाक पूर्व अध्यायसँ जुड़ैत अछि। दुनू ठाम देरी क्षति बढ़बैत अछि, तैओ देरीक बादक परिवर्तनकेँ तुरन्त फेकब आवश्यक नहि। मुदा बीज फल दऽ देलक—एहन कथन एखन असमय हएत। पात्रक भविष्योन्मुख नैतिकता एहि अधूरी खेतीक समयमे स्थापित होइत अछि।

“मौनक जाति-व्यवस्था” : नब पदक कृति

अनन्या “मौनक जाति-व्यवस्था” लिखैत छथि। एहि शब्द-युग्मक भीतर दू अलग सत्ता-रचना एकसंग देखाइत अछि: जन्म-आधारित ऊँच-नीच आ सभामे ककर वाणी सुनल जाए, ककरा दबाओल जाए। ई उपन्यासक सामाजिक अनुभवक सघन नामकरण अछि। तथापि एकरा समाजशास्त्रीय सर्वसामान्य निष्कर्ष कहब नहि; विशिष्ट दृश्यमे सत्यव्रतक मौन आ बूढ़ चर्मकार स्त्रीक पुरान दबल आवाजसँ एकर प्रभाव बनैत अछि। आलोचनात्मक उपयोग तखन सटीक रहत जखन एहि वाक्यक उत्पत्ति बाल-रजिस्टरक खास क्षणसँ जोड़ल जाए।

“बीचमे” : पीड़ित आ मौन लाभार्थीक सहअभिलेखन

जखन गवाहीक पन्नाक स्थानक प्रश्न उठैत अछि, अनन्या स्पष्ट करैत छथि जे ओ सब नामक बाद नहि, सभ नामक बीच रहत। सामाजिक जिम्मेदारीक एतेक सूक्ष्म दृश्य-विधान दुर्लभ अछि। जँ पत्र अन्तमे राखल जाइत, तँ सहानुभूतिक उपसंहार बनि सकैत छल; बीचमे राखला पर पीड़ितक कथा पढ़ैत समय पदधारी मौनक भूमिका सदिखन उपस्थित रहत। वस्तुक स्थान कथा-विचारक हिस्सा बनैत अछि। ई बीचक जगह अपराधीक नामकेँ पीड़ितक ऊपर चढ़बैत नहि; दायित्वक पृष्ठकेँ पीड़ितक गवाहीसँ अविभाजित रखैत अछि।

पाथरक बीच पात : पूर्वक पात्रसभक अनुनाद

सत्यव्रतक पन्ना गोल पाथरक बीच राखल जाइत अछि, हवा ओकरा फड़फड़बैत अछि, फेर ओ स्थिर होइत अछि। आसपास राघवक पात-सन्देश, चन्द्रपालक अधूरा नाम, बटुकनाथक सुननाइक स्मृति आ लाउक भीजल सौदा-पत्र उपस्थित छथि। ई समानान्तर वस्तु-सम्पादन पूर्ववर्ती अध्यायसभकेँ एक दृश्यमे पुनः जुटबैत अछि। उपन्यास अलग-अलग अपराधीर कथा केँ प्रत्यक्ष भेटघाट बिना परस्पर उत्तरदायी बनबैत अछि। कागच, पात, पाथर, जल आ राखक पदार्थगत भिन्नता एहि सभा केँ स्मृतिक बहुवस्तु अभिलेखागार बनबैत अछि।

गज–ग्राहक प्रश्नक नव घुमाव

गवाहीक बाद बूढ़बा भूत गज–ग्राह आख्यान दिस कथाकेँ मोड़ैत छथि। एहि संकेतसँ पाठक बुझैत अछि जे भीतरी सत्य सुनना मात्र पर्याप्त नहि; पकड़क पूरा ढाँचा फेर जाँचब आवश्यक अछि। पूर्व अध्याय ८२मे भीतरक गज–ग्राह सामूहिक दृश्य बनल छल; ९४मे जलक वास्तविक गोहि सीमाक पाठक रूपमे घुरल; आब प्रश्न संस्था आ मौनक जबड़ा धरि पहुँचैत अछि। ई एके प्रतीकक स्थिर अर्थ नहि, प्रसंगानुसार बदलैत कथन-कार्य अछि। कथा प्रतीकक अन्तिम परिभाषा देलासँ बेसी ओकर नब उपयोगक बाट खोलैत अछि।

लेखन आ सुननाइ : पहिल पुरुषक उत्तरदायित्व

सत्यव्रत अपन हाथसँ पन्ना लिखैत छथि, अनन्या ओकरा पढ़ैत छथि, परिवारसभ बीचमे सुनैत छथि। एतय लिखनिहार, पाठक आ प्रभावित लोक एके नहि। तीन भूमिकाक दूरी बचल रहनाइ आख्यानक उपलब्धि अछि। पूर्व न्यायिक जीवनमे अधिकारीक लिखित फैसला कथनक अन्तिम रूप छल; एतय पन्ना सामुदायिक पठन आ प्रश्नक प्रतीक्षामे रहैत अछि। ओ गवाही स्वयं अपन सत्यक अन्तिम निर्णायक नहि। ई संरचना उपन्यासक नाम-पहरा परम्पराकेँ एकपक्षीय अधिकारक स्थान सामूहिक पाठक रूपमे रखैत अछि।

बच्चाक हाथसँ जीत : गीतक भविष्य-ध्वनि

अध्याय ९९क आरम्भिक लोकगीत “बच्चाक हाथसँ जीत” गज–ग्राहक पकड़क बीच नव पीढ़ीक हाथक आशा गबैत अछि। मुख्य घटनाक केन्द्र सत्यव्रतक अपराधस्वीकार अछि; बालपात्रसभ निर्णयक अनुशासन दैत छथि, मुदा कोनो गज–ग्राहक स्पष्ट अन्तिम विजय घटना नहि देखाओल गेल अछि। अतः गीत आशाक भविष्य-ध्वनि बनैत अछि, अध्यायमे सम्पन्न विजयक प्रमाण नहि। अन्तगीत गवाहीक टिकाउ पात आ “उपस्थित” स्वरकेँ पुनरावर्तित करैत अछि। गीतक भावी सफलता आ कथाक वर्तमान अधूरापन साहित्यिक तनाव निर्मित करैत अछि।

अन्तक शिल्प : गवाही रहि गेल, फैसला नहि

कथाक अन्तमे सत्यव्रतक गवाही रजिस्टरक बीचक पन्ना बनि चिपकल रहैत अछि। लोक “उपस्थित” कहैत अछि, ठूँठक हरियर बिन्दु उज्जर बुझाइत अछि। ई जादुई प्रतिक्रिया भावात्मक परिपूर्णताक अनुभूति दैत अछि; तथापि वाक्य “मौन, जे आब सुनबाक दण्डमे बैसल अछि” स्पष्ट करैत अछि जे दण्ड प्रारम्भ अछि, समाप्त नहि। न क्षतिपूर्ति पूरा देखाओल गेल अछि, न संस्थागत सुधारक अन्तिम आदेश। एहन असम्पूर्णता समीक्षा मे दोष वा गुणक एकांगी घोषणा नहि, अगिला कथावृत्त लेल विचारपूर्ण खुलल जगह मानल जा सकैत अछि।

सामूहिक कृति आ सीमा : नायकत्वक पुनर्वितरण

सत्यव्रतक बोलब महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि, मुदा अनन्याक आग्रह, बाक दृष्टि, मीराक निजता-विधान, देविकाक डिजिटल अनुभव आ श्रमिक परिवारक पूर्व गवाही बिना एहि स्वीकारक सन्दर्भ नहि बनैत। कथावाचक पात्रक व्यक्तिगत नैतिक विकासकेँ सामूहिक स्मृतिक प्रक्रिया भीतर राखैत छथि। एतय एक महान पुरुष सभक न्याय देबाक कथा नहि, देखबाक अधिकार पबैत लोकसभक बीच पदधारीक अपन दोष लिखबाक अभ्यास अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ ई अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि; एकर सीमा ई जे पाठक वास्तविक प्रशासनिक परिवर्तनक निष्पादन एखन देखए बाँकी अछि।

अन्तरप्रकरणीय निष्कर्ष : अध्याय ९२-९९

ठूँठक अस्वाभाविक छाँहसँ आरम्भ होइत ई आठ अध्याय पहिने प्राकृतिक चेतावनी, फेर पुनः बाढ़ि, गोहिक घेराव आ लाउक भीजल सौदा-पत्र धरि बढ़ैत अछि। तकर बाद चारि व्यक्तिक भीतरक उत्तरदायित्व अलग-अलग माध्यमेँ खुलैत अछि—बटुकनाथक श्रवण, चन्द्रपालक खाता, राघवक पात-सन्देश आ सत्यव्रतक लिखित गवाही। दृश्य-क्रम भीतरक रूपान्तरणकेँ सामूहिक नाम-पहरासँ काटैत नहि, बल्कि ओकरा परखनिहार समाजक सोझाँ राखैत अछि।

गवाहीक माध्यम बदलैत अछि: नाम-पाथर, रजिस्टर, कण्ठस्थ प्रतिलिपि, बाढ़िक मचान, खाता-बही, नहि मेटाएल अक्षर, पात आ सादा कागच। ई सब वस्तु कथाक भीतर अलग अधिकार सम्बन्ध दैत अछि। बच्चासभ अधिकारक स्वतः उत्तराधिकारी नहि; हुनका सभक खेल, नियम आ प्रश्न ही गवाहीकेँ एकपक्षीय स्वामित्वसँ अलग राखैत अछि। नायकत्वक एककेन्द्रित संरचना एहि प्रकारेँ लगातार अस्थिर बनल रहैत अछि।

कालगत असङ्गति सेहो जाँचबाक चाही। अध्याय ९५क बाढ़ि-रातिमे बटुकनाथक आगमन आ ९६क शान्तिक तेसर दिनक आगमन बीच कथन-सन्धि स्पष्ट नहि। चन्द्रपालक बाल-पुकारक विभिन्न रूप ७४, ८१ आ ९७मे बदलैत अछि। ई अन्तर बिना पाठाधार सुधारि देबाक बदला समीक्षामे अलग दर्ज रहबाक चाही। गीतसभक आरम्भिक स्वर अनेक ठाम आगामी अध्यायक विषय पहिने पकड़ैत अछि—९६मे खाता, ९७मे सिग्नल, ९९मे भावी विजय—जखन मुख्य घटनामे नैतिक फल एखन अनिर्णीत अछि।

बटुकनाथक श्रवण रात्रि पूरा भेल, मुदा अपराधक हर्जाना नहि; चन्द्रपाल खाता बान्हि जएबाक सोचैत अछि, मुदा सार्वजनिक लेखा-उद्घाटन नहि; राघवक वाक्य पात बनल, मुदा प्रमाणित गवाहीक दुआर एखन खुलल मात्र; सत्यव्रतक लेखन टिकि रहल, मुदा संस्थागत सुधारक आदेश नहि। एहि तरहक असमाप्तता पात्रक सजल आत्ममुक्तिसँ बेसी दुःखक वास्तविक अवधि बुझएबामे सहायक अछि। जादुई दृश्यसभ अधिकारक विवादकेँ देखबाक आकार दैत अछि, तकर समाधान स्वयं नहि बनैत।

प्रकरण २०१ | मूल अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

पूर्वगवाहीसँ साझा खेल धरि कथाक मोड़

अध्याय ९९मे सत्यव्रतक लिखित स्वीकार रजिस्टरक बीच राखल गेल छल; अध्याय १०० एहि एकल आत्मकथनकेँ सामूहिक खेलमे बदलैत अछि। स्थान वैह चन्ना गाछीक ठूँठ, नाम-पाथरक घेरा आ बाढ़िपछाति पानि अछि, मुदा घटनाक मुख्य इकाई बदलि जाइत अछि। प्रश्न आब ‘के दोष स्वीकार करलक’ नहि, ‘ककरा पकड़ल गेल, ककरा छोड़ेबाक अधिकार केकर’ होइत अछि। एहि रूपान्तरणमे कथावस्तुक पुनरावृत्ति एकटा नब संयोजन पैदा करैत अछि; लिखित गवाहीक स्थिर पृष्ठ गतिशील साँस आ बालहाथक सामूहिक कृतिसँ जुड़ैत अछि।

गज–ग्राहक अर्थपर बहुकण्ठी अधिकार

बा गज–ग्राहक कथा दोहरएबाक कहैत छथि, मुदा गज आ ग्राहक निश्चित अर्थ स्वयं नहि दैत छथि। आरुणि फँसल व्यक्तिकेँ गज आ पकड़ेबलाकेँ ग्राह कहैत अछि; देविका 'हाथ'मे सुनबाक काज जोड़ैत छथि; मीरा उद्धारक नामपर बलपूर्वक हस्तक्षेपकेँ दोसर ग्राह घोषित करैत छथि। ई बहुवचनात्मक दृश्य महत्वपूर्ण अछि: कथावाचक पहिने सँ सिद्धान्त थोपैत नहि, पात्रक भिन्न अनुभवसँ एक रूपकक अर्थ क्रमशः खुलबैत अछि। एके कथा पीड़ित, श्रोता, गवाह आ सम्भावित उद्धारकक सम्बन्ध पुनर्लिखैत अछि।

उज्ज्वलक माय आ डिजिटल ग्राहक दृश्य

उज्ज्वलक माय अपन पुत्रक डिजिटल फँसावकेँ गजक अवस्थासँ जोड़ैत छथि। बैंक-सन्देश, धमकी, झूठक अदालत आ लाजक भय अलग-अलग घटना नहि रहि ग्राहक लगातार कसैत पकड़ बनैत अछि। माय स्वीकार करैत छथि जे पुकार केँ पहिने लाज वा मूर्खता बुझल गेल; ई आत्मसमालोचन पारिवारिक दृष्टिकेन्द्रकेँ केवल शोकक भावुकतासँ बाहर निकालैत अछि। देविका ओकरा बालशिक्षाक आगामी कामसँ जोड़ैत छथि। उपन्यास एतय विगत घटनाकेँ पुनः कहि, ओकर सार्वजनिक पुनरावृत्ति रोकबाक एक प्रयोगात्मक नियम रचैत अछि।

मजदूरक मृत्यु : जबड़ासँ भाषाक रूपक

पुलक दुर्घटनामे गोहि वास्तविक जैविक भयक संकेत छल, मुदा आरुणि स्पष्ट करैत छथि जे श्रमिकक नामकेँ मजदूरीक अंक, देहकेँ दुर्घटनाक संख्या आ मृत्युकेँ ठेकाक जोखिम बनएब सेहो ग्राहक पकड़ अछि। उपन्यासक ई अत्यन्त सघन वाक्यगत परिवर्तन अछि: भौतिक जबड़ा सँ प्रशासनिक भाषा धरि एके हिंसक क्रियाक रूपक पसरैत अछि। तथापि वास्तविक जीव आ शोषणकारी भाषा केँ पूर्ण समान मानि देब अनुचित होएत; कथा दू स्तरकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि, वस्तुतः एक नहि बनबैत।

मीराक दृष्टिकेन्द्र : उद्धारक हातो प्रश्नक विषय

मीरा निजताक हनन, प्रेमपर सामाजिक पहरा आ ब्लैकमेलक अनुभवसँ गज–ग्राहक पुनर्व्याख्या करैत छथि। हुनकर कथनमे हिंसा केवल अपराधीक हाथ नहि, समाजक ओ दृष्टि सेहो अछि जे पीड़ितकेँ बारम्बार प्रदर्शन बनबैत अछि। 'बिनु अनुमति उद्धार'क आपत्ति अध्यायक संरचनागत रोक अछि: बच्चाक हाथकेँ निस्सन्देह पवित्र घोषित करबाक बदला ओकर अधिकारक सीमा पूछल जाइत अछि। एहि नैतिक अनिश्चिततासँ अध्याय सरल नायक-राक्षस द्विभाजनसँ बाँचि जाइत अछि।

अनन्याक वर्तनी-त्रुटि : सूक्ष्म कृतिसँ बड़ा ढाँचा

अनन्या 'ग्राह' लिखैत पहिने मात्रा गलत करैत छथि; ओ हँसि कऽ काटि सुधारैत छथि। बा ई दृश्य न्यायमे गलती नुकएबाक बदला स्वीकारि सुधारबाक बोधसँ जोड़ैत छथि। एहि छोट घटनाक महत्त्व ओकर तत्काल, देखाएल क्रियामे अछि। जे सिद्धान्त अनेक पात्रक भाषणमे घुमैत छल, से एकटा बालिकाक कलम, गलत मात्रा आ संशोधित शब्दमे साकार होइत अछि। कथावाचक इएह दृश्यसँ आगामी 'नामक ठीक लेखन'क विशाल संघर्षकेँ लघु आकार दैत अछि।

अपराधीक भीतरक गज : करुणा आ उत्तरदायित्वक दूरी

बूढ़बा भूतक कथनसँ बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव आ लाउकेँ क्रमशः भीतरी गजक रूपमे देखाओल जाइत अछि। मुदा ई मानवीकरण क्षमादान नहि अछि: हरिहरन पद छोड़ि ‘बटुक’ बजैत अछि, चन्द्रपाल ‘कमिशन’सँ ‘चन्द्रपाल’ धरि अबैत अछि, राघवक साँस अटकैत अछि आ लाउ नामहीन भविष्यक प्रलोभनमे फँसल रहैत अछि। दृश्य सभ अपराधीक मनोवृत्तिक प्रतीकात्मक उद्घाटन अछि, वास्तविक दण्ड वा क्षतिपूर्ति सम्पन्न होएबाक प्रमाण नहि।

पकड़बाक बदला प्रतीक्षा : बालकक कर्तृत्व

अनन्या ग्राहक छाह लग हाथ बढ़बैत छथि, मुदा ओकरा धरि पकड़बाक बदला ‘पहिने नाम कहू’ कहि प्रतीक्षा करैत छथि। बादमे ‘उपस्थित’क प्रतिउत्तर पर ग्राहक दाँत ढीला पड़ैत अछि। कथा एहि क्षण उद्धारक कल्पनाकेँ जबरन जीतसँ सुननाइमे बदलि दैत अछि। बालिका विश्वक सब समस्या सुलझा देनिहार चमत्कारी शक्ति नहि, प्रश्न पूछबाक स्थितिकेँ बदलनिहार कर्ता बनैत छथि। बालगोलक उत्तर बिना हुनकर एकल आवाज असम्पूर्ण रहितए।

भौतिक सीमा आ आकाशक पूर्वाभास

कबड्डीक रेखा पानि, ठूँठ, नामपाथर आ आकाशधरि क्रमशः विस्तार पबैत अछि। लाउक अनाम ग्रहक सपना ई विस्तारक प्रतिस्पर्धी दिशा अछि: ओकरा लेल पृथ्वी छोड़नाइ इतिहाससँ मुक्तिक कल्पना, बच्चा सभ लेल पार कएलेहुँ नाम संग घुरनाइ प्रतिज्ञा। भोरमे दू हरियर पात आ झुकल पीयर ताराक वर्णन आगामी स्वप्न-अध्यायक पूर्वाभास बनैत अछि। दृश्य बाहरक अन्तरिक्षयात्राक प्रमाण नहि; एक सामूहिक कल्पनात्मक क्षितिजक उद्घाटन अछि।

अध्याय-अन्तक ‘बिज्जीक पहरा’ : रूपकीय परिशिष्ट

मुख्य गज–ग्राहक कथा आ अन्तर्गीतक बाद ‘बिज्जीक पहरा’ शीर्षकसँ एक गद्यांश अबैत अछि, जतय घरेलू साँपसँ बच्चाकेँ बचएबला बिज्जी निरन्तर जागल संरक्षक बनैत अछि। ई क्रमांकित अध्याय १०१ नहि, अध्याय १००क पाछाँ राखल विशेष संक्रमण-पाठ अछि। एहि पाठमे गोहिक भक्षणक बरक्स बिज्जीक पहराक कथन अधिक द्विपक्षीय अछि; पहिले अध्यायमे गोहिक सीमासूचक सकारात्मक रूप जे बनल छल, ओकर तुलना एतय नवसँ प्रश्नाकुल होइत अछि। सम्पादकीय पढ़ाइमे एहि असङ्गतिकेँ अनदेखा नहि करबाक चाही।

प्रकरण २०२ | मूल अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

स्वप्नक प्रवेश-बिन्दु : चमकैत विज्ञापन

आरुणि ठूँठ लग रजिस्टर, फोन आ अधखुलल फाइल बीच बैसल अछि; ‘नव-क्षितिज मानव-निवास’क विज्ञापन देखैत-देखैत ओ निन्ना जाइत अछि। एहि कारण अनाम ग्रहक चित्रक आरम्भिक कथन-स्तर स्पष्ट अछि: ई स्वप्न, कोनो सत्यापित अन्तरिक्ष अभियान नहि। विज्ञापन बाह्य कथामे वास्तविक संकेत अछि, ओकर भीतरक ग्रह

स्वप्न-स्थित वस्तु। एतय कथावाचक तकनीकी प्रचार आ अन्तर्मनाक भयकेँ एक सांध पर राखैत छथि, मुदा दुनू स्तरक अलग अस्तित्व पहचानेबाक संकेत सेहो दैत छथि।

स्वप्नक काल : एक रातिमे सभ पूर्वपीड़ाक संक्षेप

आरुणिक निन्नामे अदालतक तारीख, म्यूल खाता, डूबल देह आ बालकक नाम एकसाथ घुलैत अछि। ई स्वप्न-समय दैनिक घटनाक क्रमबद्ध समयसँ भिन्न अछि: अनेक सामाजिक संकट एके दृश्य-श्रृंखलामे समाहित होइत अछि। उपन्यास संक्षेपणक एहने विधिसँ लम्बा पूर्ववर्ती आख्यानकेँ चमकैत उज्जर ग्रहक विरोधी पटलपर राखैत अछि। छोट अध्याय रहलासँ दृश्य-दर-दृश्यक विश्लेषण लेल कम कच्चा सामग्री अछि, मुदा उच्च सान्द्रताक एक संकेत-कथा बनैत अछि।

दु:खहीन समाजक डरावन रचना

ग्रहपर नदी, श्मशान आ जड़ि नहि; नामक बदला नम्बर आ हानिक स्मृतिक बदला सन्तुष्ट मुस्कान अछि। कथावस्तु सहज आदर्शलोकक उलटा अर्थ पैदा करैत अछि: दु:ख नहि बाँचबाक कीमत ओकर कारणक लेखा मेटाएब अछि। चूँकि स्मृति नहि रहला पर अपराधी सेहो हिसाबसँ मुक्त होइत अछि, स्वप्नक निष्कलुष व्यवस्था एक प्रकारक संस्थागत विस्मृति बुझाइत अछि। ई दृश्य कथाभित्र विचार-प्रयोग अछि, वास्तविक ग्रहक पर्यावरणविज्ञान सम्बन्धी दावा नहि।

बा अनुपस्थित, मुदा स्वर उपस्थित

स्वप्नक भीतर बा देह रूपेँ नहि अबैत छथि; केवल प्रश्न करैत आवाज बनि सुनाइत छथि। ई कथन-तकनीक भिन्न अछि: स्रोत-पात्रक प्रत्यक्ष दृश्य हटि जाइत अछि, ओकर स्मृतिगत वाणी आरुणिक मानसिक मंचपर अधिकार पबैत अछि। अनन्याक तुरन्त प्रश्न—सभ समान छथि कि सभकेँ एकसाथ बेनाम कएल गेल—प्रकाशित मुस्कानक अविश्वास उद्घाटित करैत अछि। पात्रक आवाजसभ स्वप्नक आन्तरिक तर्ककेँ बाधित करैत अछि।

मीरा आ सहमतिक लोप

दीवारपर ‘सांस्कृतिक स्मृति-नमूना’ लिखल देख मीरा अपन लाल डोरी कसैत छथि। हुनकर ‘हम नमूना नहि छी’ स्वप्नमे सेहो कथा पर स्वामित्वक विरोध अछि। ई वस्तु-संकेत पूर्वक स्त्री-सभा आ चित्र-अनुमतिक इतिहासकेँ एक फकरामे उपस्थित करैत अछि। अनाम ग्रहक आश्वासनकेँ प्रश्नाकुल करबाक लेल कथा कोनो अन्तरिक्ष-विज्ञानक चमत्कार नहि, निजताक लोकानुभवक पुनरावृत्ति प्रयोग करैत अछि।

उद्योगपतिक हस्ताक्षर आ आत्मनामक लोप

लाउक काँचक कोठरी आ साफ खाता स्वप्नमे बजारक सुरक्षित स्थल अछि। मुदा हस्ताक्षर करबाक समय ओकर अपना नामक अक्षर मेटि जाइत अछि; चन्द्रपालक प्रतिशत, बटुकनाथक उपाधि आ राघवक सिग्नल बचैत अछि, व्यक्ति नहि। ई प्रतीकात्मक उलटफेर वित्तीय नियन्त्रणक दावा कैँ ओकर भीतरे परास्त करैत अछि। पात्रसभक

निजी स्मृति तक ई लोप पहुँचैत अछि; तथापि ई स्वप्नमे घटित दृश्य अछि, वास्तविक खाता वा पासपोर्ट मेटेबाक दस्तावेजी घटना नहि।

अनन्याक हाथ आ पारगमनक शर्त

आरुणि उठय चाहैत अछि, मुदा पएरक नीचाँ कबड्डीक रेखा चमकैत अछि। अनन्या ओकर हाथ पकड़ि कहैत छथि जे रेखा पार करब, मुदा एकटा नाम संग घुरब। एहि कृत्तिमे आगेक खेलक मूल नियम तैयार होइत अछि। स्वप्न पलायनक आह्वानक बदला परीक्षण बनैत अछि। अध्यायक अन्त कोनो निर्णय घोषित नहि करैत; ओ यात्रा-प्रलोभनक विरुद्ध प्रतिरोधक विधि ठहरबैत अछि।

पूर्वक अनाम आ अगिला अन्तरिक्षक पुनरुक्ति

शीर्षकमे ‘अनाम’ शब्द अपराधसँ पीड़ित लोकक अनुपस्थित नाम आ पृथ्वीबाहरक नामहीन सभ्यता दुनूकेँ जोड़ैत अछि। मुदा एही समानतामे फरक अछि: पहिल अनुपस्थिति हिंसाक परिणाम, दोसर विज्ञापनक लक्ष्य। आख्यान एही भेदक सहारे सुन्दर भविष्यक भाषा भीतर छिपल हिसाब-मेटाएबला इच्छाकेँ खोलैत अछि। अगले अध्यायमे स्वप्न-कबड्डीक धीमा दृश्य एहि प्रस्तावकेँ जाँचक प्रक्रियामे बदलब।

प्रकरण २०३ | मूल अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

देहक ठहराव, चेतनाक यात्रा

अध्याय आरम्भमे स्पष्ट कएल गेल अछि जे बच्चा सभक देह पृथ्वीपर चन्ना ठूँठ लग बैसल अछि; स्वप्नमे केवल छाह ग्रहपर पहुँचैत अछि। एहि वाक्यसँ कथावाचक अन्तरिक्ष-यात्रा आ स्वप्न-यात्राक सीमा निश्चित करैत अछि। उपन्यासक आकाशीय विस्तारकेँ वास्तविक यान-उड़ान बना पढ़ब पाठकेँ अन्य दिशा देत। कथा स्वप्नक भीतर प्रयोगशाला बनाबैत अछि जतय पुरान कबड्डीक नियम नई सामाजिक परिस्थितिमे परखल जाएत।

खेलक साँस : तनावक मापन

अनन्या प्रत्येक रेखापार करनिहारकेँ एकटा विस्मृत नाम खोजि घुरबाक शर्त दैत छथि। खेलक पहिल काज गति बढ़ाएब नहि, साँस सम्हारब अछि। सामान्य कबड्डीमे विरोधीक क्षेत्रमे घुसि सुरक्षित घुरब क्रियाक केन्द्र होइत अछि; एतय ककरो भुलायल नामक संग घुरब घटना-परिणाम बनैत अछि। खेलक शारीरिक लय नामपाठक नैतिक जिम्मेदारीक कथात्मक समय मापैत अछि।

बालिकाक डरक स्पष्ट दृश्य

अनन्याक घुट्ठी काँपैत अछि, कण्ठ सुखाइत अछि। ओ निर्भय महापुरुषक मुखौटा नहि पहिरैत छथि; मायक ‘डर लगए तँ नाम बाजू’ स्मरण करैत ‘उज्ज्वल’ बजैत छथि। अयाचित डर आ जँचि-बुझि अपनायल क्रियाक बीचक अन्तर हुनकर चरित्रकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। अध्याय ई नहि कहैत जे जादुई शक्ति भय मेटा देत; ओ देखबैत अछि जे स्मरणक एक उच्चारित नाम कदम उठएबाक साहस रचैत अछि।

निरनाम पहरुआ आ संख्या-समाज

गुम्बदक पहरुआ सभक चेहरा नहि, छातीपर संख्या अछि। ओ सभ नाम छोड़बाक उपदेश करैत छथि, किएक तँ नामसँ दुःख जन्मैत अछि। मीरा प्रतिपक्ष रखैत छथि: दुःख नामसँ नहि, नामपर हिंसासँ जन्मैत अछि। एहिमे स्पष्ट वादक नाटकीय टकराव अछि, मुदा उपन्यास एकरा केवल भाषण नहि बनबैत: मीराक छवि दीवारपर उभरैत अछि, हुनकर अस्वीकृतिक बाद बुझि जाइत अछि। दृश्य स्वयं विचारक परिणति बनि जाइत अछि।

सत्यव्रतक रेखा : पदसँ अपराधस्वीकार

सत्यव्रत पहिने ‘अधिकारी’, ‘साक्षी’, ‘विधि’ उच्चरित करैत छथि; सीमा नहि खुलैत। अपन देर सँ बाजल स्वीकार कहला पर रेखा सरकैत अछि। एहि जादुई नियमक आधार कानूनी पदक आलोचना मात्र नहि, कथाक पहिले लिखल गवाहीक पुनर्वाचन अछि। अध्याय ९९मे जकर लिखित वाक्य ठाम पाओल छल, से आब स्वप्न-देहक पारी बनेल अछि। कथा एहि तरहेँ लिखित पाठसँ शरीरगत अभिनय धरि आवृत्ति स्थापित करैत अछि।

आरुणिक गन्धहीन माटि

स्वप्नक धूलि सुगन्धहीन आ अत्यन्त साफ अछि। आरुणिक स्मरणमे पुलक पाया, मजदूरक गमछा आ मेटाएल सन्देश फेर जागैत अछि। ई गन्धक अनुपस्थिति निर्णायक बिम्ब अछि: माटिक माटिपन सेहो परस्पर सम्बन्धक इतिहाससँ बनैत अछि। तकनीकी स्वच्छता केँ सम्पूर्ण निर्मलता मानि लेनाइ कथाक आलोचनामे खसरा चूक होएत; एतय निर्मल सतहक भीतर अविस्मृत पीड़ा नहि, पीड़ाक संकेतसँ वञ्चित संरचना अछि।

खेल धीमा होइत अछि, कथा गाढ़

पाठ स्पष्ट करैत अछि जे खेल तेज नहि भेल; प्रत्येक डेगपर प्रश्न, प्रत्येक स्पर्शपर नाम। कथात्मक समयक धीमापन दृश्यकेँ परिणामहीन प्रतीक्षासँ भरैत नहि, उलटे सूक्ष्म निर्णयक क्रम बनबैत अछि। आखिरी फुसफुसाहट ‘उपस्थित’ पर दीवारमे दरार पड़ैत अछि। जीतक घोषणासँ हटि ई क्षण न्यूनतम आवाजक कथा-शक्ति स्वीकार करैत अछि।

जलक गन्ध आ अगिला नामपाठ

दरारसँ पृथ्वीक पानिक गन्ध प्रवेश करैत अछि। पहिने नहि रहल नदीक जैविक स्मृति स्वप्नमे आबि जाइत अछि। एहि अन्तर्मुखी परिदृश्यमे वातावरण पृष्ठभूमि नहि, विस्मृत प्रणालीक व्यवधान अछि। खेल सम्पन्न भेल कहबाक बदला पाठ ‘नाम-पाठ आरम्भ’ कहैत अछि; अतः स्वप्नक उपलब्धि अन्तिम विजय नहि, नव सामूहिक कथनक दुआर खोलब होइत अछि।

प्रकरण २०४ | मूल अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

क्रमांकसभक निर्जीव सभागार

दीवारपर ३०, ३००, ७९१ आ ० लिखल अछि; लोकक कथाक बदला शृंखलाबद्ध संख्या। अनन्या रजिस्टर खोलिते एक-एक नामक संग सम्बन्ध उभरैत अछि—मायक दीप, बच्चाक नाव-सीख, पत्नीकेँ पकड़ल अधूरा मजूरी-पर्चा। एहि रचनामे नाम संख्या मेटबैत नहि, संख्याक पाछाँ अनुभवक परत फेर दृश्य करैत अछि। कथकक कौशल एतए ‘संख्या’क सामान्य निन्दासँ बेसी सम्बन्ध-विन्यासक दृश्य निर्माणमे अछि।

छोट गीत आ दीर्घ अनुभवक विरोध

स्वप्नगीत अत्यन्त छोट अछि, मुदा एक-एक नामसँ माटिक गन्ध आ बन्द दरबाजाक आवाज जागबाक वचन दैत अछि। मुख्य दृश्य एहि वचनकेँ क्रमिक रूपेँ खोलैत अछि। गीतक संक्षिप्तता आ पूर्वक अध्यायसभक लम्बा लोकगीत बीच शैलीगत बदलाव अछि; एहि परिवर्तनकेँ एके छन्दीय नियम मानि मेटा देनाइ अनुचित। कथाक स्वप्नखण्डमे गीत दृश्य आरम्भक कुंजी जेकाँ प्रयुक्त अछि।

मीराक अनुमति सहित स्मृतिलेखन

मीरा जिनकर निजी छवि धमकी बनल हुनका सभक नाम पढ़ैत छथि, मुदा प्रत्येकक संग सहमतिक स्पष्ट शर्त जोड़ैत छथि। एकर फलस्वरूप सभागारक चमक कम, साँस लेबाक हवा बढ़ैत अछि। ई प्रतीक कथा भीतर तकनीकी प्रदर्शनक नियन्त्रण टूटबाक दृश्य रूप होइत अछि। नामक पुनरुत्थान कहियो सभ कथाकेँ निर्बाध सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि बनैत; उपन्यास एहि कठिन भेदकेँ स्वयं अपन मुख्य कृतिमे स्थापित करैत अछि।

बटुकनाथक आत्मरक्षा आ स्वप्न-दरबारक पुनरागमन

बटुकनाथ समक्ष नातिक प्रश्न फेर सुनाइत अछि—न्याय बचेलहुँ कि पेशा। वंश-शास्त्रक उत्तर फाइलक कीड़ा बनि झरैत अछि। जादुई छवि आत्मरक्षाक औपचारिक वाक्यकेँ नष्ट करैत अछि, मुदा ओकर जगह तत्काल पीड़ितक क्षमादान नहि दैत। सम्मान हेराएबाक भय कखनो अपराधक आन्तरिक जड़ि बनि सकैत अछि—ई पात्र-अनुभवक कथात्मक व्याख्या अछि, दोषसँ मुक्तिक तर्क नहि।

चन्द्रपालक स्वनामक घाव आ विरोधाभास

चन्द्रपाल विद्यालयमे अपन नाम गलत पढ़ल गेलाक स्मरण करैत अछि। वही पुरान अपमान होएतो ओ अनगिनत लोकक नामकेँ प्रतिशत बना देने छल। आत्मदया एहि प्रसंगमे नैतिक छुटकारा नहि, पाखण्डक उघार अछि। उपन्यासक युक्ति सशक्त अछि: अतीतमे ककरो पीड़ा भोगल व्यक्तिक बादक शोषण स्वतः न्यायसंगत नहि बनैत। एकटा स्मृतिक्षणसँ पात्रक आत्मकथात्मक सरल समीकरण टूटैत अछि।

राघवक मेटाओल स्वरक वापसी

राघव जते संदेश मेटबैत अछि, सभ दीवारपर फेर उभरैत अछि—स्त्रीक अधूरा वाक्य, मजदूरक सहायता-पुकार, बच्चाक भय। ओ कान बन्द करितो आवाज भीतर सुनैत अछि। एहि पुनरागमनक महत्त्व केवळ चमत्कारक नहि; संचारक प्रविधि ‘नष्ट कए देल’ जे दावाक निर्माण करैत अछि, स्वप्न ओकरा अस्वीकार करैत अछि। दृश्यँ ‘अभिलेख विनाश = उत्तरदायित्व समाप्ति’क मिथ्याकल्पना पर प्रहार करैत अछि।

लाउक स्वच्छ खातापर पानिक दाग

लाउ नामकेँ बजारक बाधा कहैत अछि; अनन्या उत्तरमे नामकेँ हिसाब माँगबाक साधन घोषित करैत छथि। एहि छोट संवादक बाद खातापर पानिक दाग पसरैत अछि। नाम आ हिसाबक अर्थ सामान्य आर्थिक लेखासँ पीड़ितक न्यायिक-सामुदायिक लेखा धरि स्थानान्तरित होइत अछि। मुदा कथाक दृश्य स्वप्नक बीच अछि; वास्तविक कम्पनीक खाता परिवर्तित भेलाक एतय कोनो स्वतन्त्र प्रमाण नहि भेटैत।

अधूरा नामक लेल खाली पन्ना

आरुणि ‘जेकर नाम एखन नहि भेटल’ लिखैत छथि; सभसँ पैघ क्रमांक टूटि जाइत अछि। ई महत्वपूर्ण कृति अछि, किएक तँ नामक अधिकार केवल ज्ञात मृतकधरि सीमित नहि राखल गेल। अनामक लेल पन्ना शेष राखब आगामी शोध आ श्रवणक अनिवार्यता स्वीकार करब अछि। स्वप्नक अन्तमे ग्रह नष्ट नहि होइत, ओकर चमक उतरैत अछि आ साधारण माटि प्रकट होइत अछि; अर्थात् स्मृति वापस आइलासँ संसार समाप्त नहि, संसारक कठिन जीवन शुरू होबाक सम्भावना भेटैत अछि।

प्रकरण २०५ | मूल अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

स्वप्नसँ जागरणक फोकलाइज़ेशन

आरुणि भोरमे जागैत अछि; बुझल फोन, खुजल रजिस्टर आ ठूँठक छाल वास्तविक परिवेशकेँ फेर ठोस बनबैत अछि। अनन्या, मीरा, सत्यव्रत आ बालकसभ संग छथि; मुदा कियो निश्चित नहि करैत जे सभ एके स्वप्न देखने छथि अथवा साझा भय सँ समान कथा रचने। ई अनिर्णय उल्लेखनीय अछि: उपन्यास सामाजिक कल्पनाक सामूहिकता स्वीकार करैत अछि, अलौकिक एकहि घटनाक निर्बाध सत्यापन नहि दैत।

नील धूलिक ‘वास्तविक’ रूप

स्वप्नक अनाम ग्रहमे उज्जर-नील धूलि छल; जागरणमे अनन्याक हथेलीपर पाठशालाक साधारण खड़ियाक रंग अछि। ई प्रतिस्थापन पाठककेँ बाह्य भ्रमक एक सम्भावित स्पष्टीकरण दैत अछि। कथावाचक ‘ग्रहसँ धूलि साथ आनल गेल’ सन अनावश्यक दावा नहि करैत। बालिका स्वयं ‘हम सभ कतहु गेल नहि छलहुँ’ कहि जादुई कथाक सत्यक सीमाकेँ खुलल रखैत छथि।

बाक वाक्य : पृथ्वीए पर डेग

बा कहैत छथि जे मानसिक यात्रा लेल देह चलब आवश्यक नहि, मुदा जागलाक बाद कदम धरतीपर रखबाक पड़ैत अछि। एहि संक्षिप्त वाक्यमे स्वप्नक प्रयोग आ सामाजिक क्रियाक बीच पुल अछि। समीक्षामे एकरा अध्यायक मुख्य क्रियात्मक आदेश मानल जाए सकैत अछि, कारण एहि वाक्यक बाद मीरा अनुमति, सत्यव्रत लिखित परिचय आ आरुणि विज्ञापनक वास्तविक स्रोत पर नव निर्णय करैत छथि।

‘नव-क्षितिज’क खंडन : बाह्य अपराधक खोज

आरुणि स्रोत जाँचि पता लगबैत अछि जे ‘नव-क्षितिज’ वास्तविक ग्रह-योजना नहि, भय, पलायन आ विस्मृति-इच्छाक आँकड़ा संकलित करबाक अपराध-जालक प्रचार-परीक्षण अछि। ब्रूमक नैतिक भाषा, लाउक धन, चन्द्रपालक पंजीयन आ राघवक संदेश-तार एहिमे जुड़ल अछि। एहि खुलासाकेँ उपन्यासक वास्तविक कथानक-प्रगतिक महत्वपूर्ण बिन्दु मानब चाही। पूर्वक आकाशीय दृश्यक अर्थ एखन सामाजिक अभियांत्रणक जालसँ सम्बन्धित भऽ जाइत अछि।

मीराक पुनर्बान्हल लाल डोरी

मीरा अपन लाल डोरी खोलि फेर बान्हैत छथि। बाह्य स्तरपर ई छोट क्रिया अछि, मुदा स्त्री सभक रात्रि-सभा आ अनुमति-विधानक आवर्तित चिन्हकेँ नव सन्धि दैत अछि। स्वप्न हुनकर पहिल चोट नहि मेटौलक; ओ कथा पर स्वामित्वक सीमाकेँ दोबारा उद्घोषित करैत छथि। साहित्यिक रूपकक दृढ़ता एतय ‘घाव घुलि गेल’क बनावटी समाधानसँ बाँचएबामे अछि।

सत्यव्रतक नाम बनाम पद

सत्यव्रत अपन नोटमे विस्मृतिकेँ पुनर्वासक विकल्प नहि मानैत छथि; ‘अधिकारी’क परिचय काटि अपन नाम रखैत छथि। अध्याय ९९मे लिखल गवाही आ स्वप्न १०२मे रेखा पार करबाक शर्त आब दैनन्दिन कागचमे मूर्त होइत अछि। कथानक एके मानवीय परिवर्तनकेँ मौखिक, स्वप्नगत आ लिखित तीन स्तरपर जाँचैत अछि। एहन आवृत्ति चरित्र-परिवर्तनक विश्वास बढ़बैत अछि, मुदा प्रशासनिक सुधार स्वतः सिद्ध नहि करैत।

बच्चा सभक पृथ्वी-चयन

बच्चा सभ लिखैत अछि जे दुःख नहि मेटाएब, दुःखक कारण बदलाएब; पृथ्वी छोड़ि अपराधकेँ निर्दोष नहि करब। वाक्य घोषणात्मक अछि, मुदा ओकर अगला काजक दिशा निर्दिष्ट अछि—काटल नाम पुनर्लिखब, देहक अनुमति सुनब, श्रमक हिसाब खोलब। एहि अध्यायक चयन भावनात्मक गृहप्रेम मात्र नहि; स्वयं निर्माण कएल स्मृति-नियमक कार्यशील विस्तार अछि।

दोषी सभक लेल अनिर्णीत श्रम

बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघव लेल पृथ्वी-चयन क्षमा-पत्र नहि अछि। कथा हुनका सभक अगिला काज—फाइल, खाता, आवाजक वापसी—गणाइत अछि, मुदा पूर्ण निष्पादन नहि देखबैत। उत्तरदायित्व घोषित होएब आ

सामाजिक प्रतिकर पूरा होएब बीचक भेद सुरक्षित राखल गेल अछि। आलोचकक लेल ई अधूरापन उपन्यासक कथाकालक विशेषता अछि, न कोनो तुरन्त बिसरबाक गलती।

भोरक कोंपल : प्रकृतिकेँ परिणाम मानबाक सीमा

अन्तमे कोंपलपर ओस अछि आ अनन्या पृथ्वी चुनबाक कारण लिखैत छथि। कोंपल केवल सजावटी आशा नहि, कटायल गाछक जीवित बचल देह अछि। मुदा हरियर पात उगनाइ बाढ़ि, ठेका आ डिजिटल अपराधक समस्या समाप्त भेला समान नहि। एकर बिम्बात्मक अर्थ भविष्यक सम्भावना अछि; अगले अध्यायमे बीज आ माटिक संघर्ष एहि सम्भावनाकेँ सामाजिक काजक कसौटी पर आनत।

प्रकरण २०६ | मूल अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

आरम्भक स्पर्श : गाछक खुरदुराही आ स्वप्नक धूलि

अनन्या चन्ना ठूँठक भीजल छाल छुबैत छथि; हुनकर हथेलीपर स्वप्नक नील धूलि रहबाक वर्णन, जे माटि पीबि लैत अछि। एहि दृश्यक कथन-सूत्र अध्याय १०४क साधारण खड़िया-स्पष्टीकरणसँ एक तनाव बनबैत अछि। एक ठाम बालिका कहने छथि जे ओ लोक कतहु नहि गेल; एतय धूलि फेर स्वप्नक स्मृति बनि कऽ दृश्य अछि। एकरा भौतिक अन्तरिक्षयात्राक निर्विवाद प्रमाण कहब उचित नहि; स्मृतिगत बिम्ब आ कादोक स्पर्श समवर्ती कथा-स्तरपर रहल अछि।

उज्ज्वलक इजोत आ देविकाक मौन

पानिक सतहपर उज्ज्वलक आत्मा इजोत रूपमे काँपैत बुझाइत अछि; देविका ओकरा नामसँ पुकारएब नहि चाहैत छथि। एहि निर्णयमे शोकक पुनरावृत्त प्रदर्शनक अस्वीकार अछि। ‘किछु उपस्थिति पुकारलासँ फेर दुखमे बान्हि जाए’ जे कथन-अर्थ अछि, से पहिले स्थापित प्रत्येक नाम ऊँच स्वरमे पढ़बाक सामुदायिक नियममे आवश्यक सूक्ष्मता जोड़ैत अछि। नामक अधिकारमे बोलबाक संग नहि बजएबाक अवसर सेहो रहबाक चाही—ई तनाव पात्रक कृतिसँ उजागर अछि।

अखबार आ लोकस्मृतिक दुइ दृष्टिकेन्द्र

शहरक अखबार स्वप्न-कबड्डीकेँ ग्रामीण अन्धविश्वास कहैत अछि, गाम अपन अनुभवकेँ दुसर ढंगसँ बुझैत अछि। उपन्यास दूनू पक्षकेँ एकसमान विश्वसनीय घोषित नहि करैत; बरु बाहरी समाचारक निश्चित निर्णय आ स्थानीय अनुभवक सन्देह-दरजामे फरक देखबैत अछि। कथा-विश्वमे अलौकिक बिम्ब सजीव रहैत अछि, तइयो आलोचनात्मक विवेचनमे एकरा सत्यापित पत्रकारितात्मक तथ्य बनाबय नहि चाही।

बीते अपराधीसभकेँ कामक पुनर्वितरण

बटुकनाथकेँ दबाओल फाइलसँ नाम खोजबाक, चन्द्रपालकेँ लूटल नाम घुरेबाक, राघवकेँ अदृश्य कएल लोकक स्वर देखबाक निर्देश दैत पात्रसभक शक्ति-सम्बन्ध उलट जाइत अछि। पुरान नियंत्रण-कर्ता आब सामुदायिक

पाठक अधीन काज करबाक स्थितिमे छथि। पछतावा सँ श्रम धरि ई मोड़ महत्व रखैत अछि, मुदा भुक्तभोगी केकरो पूर्ण क्षमा देलनि—एहन दृश्य नहि लिखल गेल अछि।

लाउक स्थानक अस्पष्टता

अध्याय साफ कहैत अछि जे लाउ विदेश घुरल कि भारतक होटलमे रहल, निश्चित नहि। एकर महत्त्व अछि, कारण पहिले अध्यायसभमे लाउक विमान, होटल, गाम आगमन आ दूर काँच-भवनक दृश्य एतबा क्रमबद्ध नहि छल। ई निश्चय-अभाव कथावाचकक चेतन सीमाक स्वीकारो भऽ सकैत अछि, अथवा भौगोलिक कालक्रमक सम्पादकीय ढील। समीक्षामे ओकरा काल-स्थानक खुलल प्रश्नरूपेँ चिन्हित करब चाही।

कोंपल चारू कात नव कबड्डी-नियम

पहिले मृतकक नामक घेरा, फेर अपराधीक सुननाइ, फेर स्वप्नक ग्रह आ आब नव कोंपलक चारू कात कबड्डीक सीमा। अनन्या एक-एक साँस धरती, पानि, नाम आ अनाम लेल बाँटैत छथि; साँस टूटएबला बच्चाकेँ बाहर कएल नहि जाएत, ओकरा सुननाइमे बैसाओल जाएत। खेलक दण्ड सुधारात्मक सम्बन्धमे बदलैत अछि। नियमक एहि परिवर्तनसँ बालपाठशालाक कल्पना अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

जीवित गोहि आ रूपकक दोहरा उपस्थिति

पानिमे गोहिक आँखि चमकैत अछि, मुदा पात्रसभ ओकरा केवल हिंसक विरोधी नहि देखैत। बा भूखक नब अर्थ सुझबैत छथि, बच्चा सभ नामक पहरा जारी रखैत अछि। एतय जीवित जलचर आ प्रतीकात्मक ‘गोहि’ दुनू एके पाठमे छथि। वास्तविक जीवक व्यवहारक बारेमे कथा जे मानवीय अर्थ दैत अछि, तकरा नैसर्गिक तथ्य न बना पढ़ब चाही। जीव-जगतक अपनी सीमा आ मानवीय अपराधक संस्था अलग पहिचान रखैत छथि।

पाथरक अलग-अलग स्वर : सामूहिक सहमति

नामपाथर खनखनबैत छथि, मुदा प्रत्येकक स्वर अलग अछि। कथावाचक न्यायालयक हथौड़ा वा मन्दिरक घण्टा कहबाक बदला माटिसँ उठल सहमतिक ध्वनि कहैत छथि। एहि जादुई दृश्य-संगीतमे सर्वसम्मति आ विभिन्न व्यक्ति-स्मृतिक द्वन्द्व सुरक्षित अछि। एकटा मात्र नारा नहि, अनेक ध्वनिक मिलन कथा-समाजक स्वर-विन्यास बनबैत अछि।

पहिल पहरक अन्तिम संशय

सत्यव्रत बच्चा सभक पाछाँ बैसैत छथि; एहि स्थितिकेँ पदक परित्यागसँ अधिक सुननाइ सीखबाक शारीरिक दृश्य मानल जा सकैत अछि। कोंपल, ओस आ नामपाठक बीच कथा पुनर्जन्मक गीत गबैत अछि, मुदा अन्तक पहरा एखन आरम्भ भेल अछि। पृथ्वी ‘नवजात’ बुझनाइ भावुक समाधान नहि; नब शिशुक देखरेख निरन्तर श्रम माँगैत अछि।

प्रकरण २०७ | मूल अध्याय १०६ — बीजक पहरा

नामसँ बीज धरि घटनाक प्रसार

बा बच्चा सभसँ नामक बाद बीजक पहरा रखबाक कहैत छथि। एहि नवीन विषयक आगमन आकस्मिक नहि: विगत अध्यायमे नव कोंपल, धरतीक पहिला पहरा आ अनाम ग्रहक विस्मृति मिलि भविष्यक जीवित स्रोतक प्रश्न तैयार कएने छल। बच्चा सभ पहिने बीजकेँ नन्हि घरेलू वस्तु बुझि हँसैत अछि; बाक एक प्रश्न—बीज नहि बचल तँ आगामी पीढ़ीक मुँहमे शब्द कतयसँ—ओहि हँसीकेँ गम्भीर करैत अछि।

पात्र आ प्राकृतिक वस्तुक सघन नामसूची

नारिकेल-पात पाठशालामे धान, तिल, मड़ुआ, कोदो-कुटकी, मखान, कुसियार, आमक गुठली, कटहलिया, नीम, पीपर आ चन्नाक हरियर नोक राखल जाइत अछि। ई सूची केवल वनस्पति-वैविध्यक सूची नहि; अध्याय एक-एक बीजसँ ऋतु, खेत, भूख, गीत आ रखवालक सम्बन्ध पूछैत अछि। सूचीक विस्तारसँ ‘सुरक्षा’क प्रशासनिक एकवचनक सामने विशिष्ट लोकजीवनक बहुवचन खड़ा होइत अछि।

घरेलू पात्रसभक स्त्री-स्मृति

स्त्रीसभ पीतल कटोरी, हाँड़ी, डिब्बा, पुरान गठरीमे बीज आनैत छथि। कथावाचक एहि पात्रक ध्वनि आ गन्ध अलग करैत छथि, जाहिसँ वस्तु-संसार स्मृतिक वाहक बनैत अछि। बेटी विदाइक बीज, अकालपछाति बचल बीज आ बाढ़िपछाति उगल किस्म एकहि ‘नमूना’ श्रेणीमे सहज नहि समा सकैत। स्त्रीक घरेलू ज्ञान कथा-विश्वमे वैज्ञानिक संरक्षणक विरोध मात्र नहि, अलग अभिलेखी भाषाक निर्माण अछि।

मीराक ‘बीजक निजता’ : विस्तार आ सीमा

मीरा कहैत छथि जे बीजक कथा कहबाक अधिकार स्त्रीसभक अपन अछि; किछु कथा सार्वजनिक, किछु बंद मंडलीमे बचल रहैत अछि। ई पूर्वक देह, फोटो आ प्रेमक अनुमति-विधानक विकास अछि। तथापि बीज स्वयं सहमति देनिहार मानवीय कर्ता नहि; ‘बीजक निजता’ मनुष्यक बीजसम्बन्धी ज्ञान आ परम्पराक नियन्त्रणक साहित्यिक रूपक अछि। एहिमे जीव-जगतक सम्मान आ समुदायक निर्णयक सीमा एकसाथ उपस्थित अछि।

सरकारी जीपक प्रवेश : संरक्षणक दुभाषी भाषा

‘उन्नत बीज-संग्रह आ जलवायु-सुरक्षा प्रकल्प’ लिखल जीप, अधिकारी आ परामर्शदाता गाममे प्रवेश करैत छथि। हुनकर विनम्रता आ टेबलेटपर अंकित ‘व्यावसायिक सम्भावना’क बीच विरोध लुकल अछि। गामक पात्रसभ पहिने बाहरक प्रस्तावकेँ सुनैत छथि, तकर बाद प्रश्न उठबैत छथि। ई सावधानी लेखनक एक उपलब्धि अछि: सारा विज्ञानकेँ स्वतः खलनायक बनबाक बदला खास अनुबंध, नामसँ क्रमांकमे रूपान्तरण आ अधिग्रहणक सम्भावनाक आलोचना होइत अछि।

‘गीत गाबू’ : अधिकारक पात्रता-सूचक दृश्य

बा अधिकारीसँ बीजक गीत, पानिक मात्रा, रोपनक समय आ बिसरायल लोकनाम पूछैत छथि। अधिकारी चुप रहैत अछि। दृश्य केवल विशेषज्ञक उपहास नहि, दू ज्ञान-भाषाक असमान संवाद अछि। उत्तर नहि देब परियोजनाक सीमित स्थानीय जानकारी देखबैत अछि, मुदा एहिसँ समस्त वैज्ञानिक बीज-संग्रह निरर्थक सिद्ध नहि होइत। कथा एक विशिष्ट प्रस्तावक अधूरेपनकेँ मानवीय प्रसंगक लयमे साकार करैत अछि।

डिजिटल अभिलेख : संरक्षण वा अधिग्रहण

गोप कुमार टेबलेटपर कोड, भू-स्थान, परिवार, जाति, उत्पादन, सहनशक्ति आ व्यवसायिक सम्भावना देखैत छथि। सूचना संग्रहित करनाइ स्वयं अपराध नहि; प्रश्न ओकर स्वामित्व, उद्देश्य आ उपयोगपर अछि। एहिमे पूर्वक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक पुनरावृत्ति अछि, मुदा वस्तु मृतकक नामसँ सरकि जीवित बीजक भविष्य बनि गेल अछि। कथनक पुनरागमन विषय बदलैत अछि आ बाजारक एके क्रियाविधि पहिचानबैत अछि।

स्वप्न-धूलिक पुनरागमन

जीप गेलाक बाद कोंपलपर सूक्ष्म उज्जर रेखा भेटैत अछि, जे स्वप्नक धूलिसँ जोड़ल जाइत अछि। ई दृश्य जादुई यथार्थक एक अस्पष्ट संगति बनबैत अछि, डिजिटल जालक प्रमाणपत्र नहि। अनन्या ‘नव-क्षितिज’केँ बीजक आँकड़ा चाही जे सम्भावना कहैत छथि, आ अगले अध्यायमे कागचक सूक्ष्म शर्त एहि आशंकाकेँ कथानक-तथ्यक धरातल देत।

बीजक कंठ आ नब शीर्षक

रातिमे पात्रक भीतरसँ शब्द सुनाइत अछि—क्रमांक नहि, माटि; तिजोरी नहि, ऋतु। एतय मानवीकृत बीज कथावस्तुकेँ आगामी ‘बीजक चोरी’क प्रश्न तक पहुँचबैत अछि। अनन्या नव पन्ना खोलि शीर्षक लिखैत छथि। अध्याय समाधानक बदला खतरा पहिचानबैत समाप्त होइत अछि; यही क्रम अगिला अध्यायक आरम्भकेँ सन्धि दैत अछि।

प्रकरण २०८ | मूल अध्याय १०७ — बीजक चोरी

सम्भावित चोरीक नई परिभाषा

अध्याय आरम्भमे स्पष्ट कएल जाइत अछि जे एक चोरी रातिमे छुपि होइत अछि, दोसर दिनमे कागच आ ‘सुरक्षा’क नामपर। एहि भेदसँ कथानक अपराध-रोमांचक साधारण चोरीक बदला अधिकार-हस्तान्तरणक दीर्घ प्रक्रिया पर केन्द्रित होइत अछि। बीज खेतमे रहलो ओकर नाम, उपयोग आ भविष्यक अधिकार बाहर चलि जाए सकैत अछि—ई अध्यायक मुख्य संघर्ष अछि।

सुरमणी काकीक ‘डूबल-साँस’

सुरमणी काकी पीतल डिब्बीमे बाढ़ि सहनशील ‘डूबल-साँस’ धान राखने छथि। हुनकर मायक कहला अनुसार ई किस्म तीन दिन पानि झेलैत अछि; उपन्यास एहि कथनकेँ पात्रक पारिवारिक स्मृतिक रूपमे दैत अछि, परीक्षणशालाक प्रमाणित गुणक रूपमे नहि। बीजक नाम बाढ़ि, श्वास आ पुरखाक कथा एकत्र करैत अछि। काकीक हाथक स्पर्श, डिब्बीक ठंढ आ स्मृतिपरंपरा दानाक भौतिक-आख्यानिक पहचान रचैत अछि।

शोध-दलक लिखित सूक्ष्म शर्त

अधिकारीक कागचमे ‘देशज बीज-संरक्षण एवं अन्तर-ग्रहीय अनुकूलन अध्ययन’क शीर्षक अछि; छोट अक्षरमे बाह्य आवासीय परियोजनामे उपयोगक सम्भावना पढ़ल जाइत अछि। एहि दृश्यसँ अध्याय १०४क ‘नव-क्षितिज’ प्रचार-परीक्षण आ बीज-संग्रहक अनुबंधक बीच ठोस सम्बन्ध उद्घाटित होइत अछि। ई ठोस कागचक शर्त अछि, जबकि अनाम ग्रहपर स्वप्न-यात्रा कोनो वास्तविक यात्रा नहि छल। दुहूकेँ एक अर्थमे गाढ़ि नहि देबाक चाही।

भाषा-प्राधान्य : ईराक हस्तक्षेप

विदेशी शोधार्थिनी प्रश्न करय लगैत छलीह, मुदा ईरा स्पष्ट करैत छथि जे जकर खेतक बीज अछि, उत्तर पहिने हुनकर मैथिली भाषामे देल जाए। ई अनुवाद रोकबाक आग्रह नहि, वार्ताक केन्द्रक हस्तान्तरण अछि। बाहरी परियोजनाक शब्दावली पहिले निर्णयक ढाँचा रचैत छल; आब स्थानीय कृषकक भाषा ओहि ढाँचाकेँ प्रश्नक विषय बनबैत अछि। एहि पात्र-क्रियासँ भौगोलिक दूरी भाषिक सत्ता-विन्यासक रूप ग्रहण करैत अछि।

‘अनामिकीकरण’ आ स्मृतिक सन्दर्भच्छेदन

मीरा अनुबंधमे बीजक ‘अनामिकीकरण’ पढ़ैत छथि। ओ देखबैत छथि जे खेत, ऋतु, परिवार, स्त्रीक काज आ बाढ़िक स्मरण हटाओल जएत तँ बीज ‘बेनाम माल’ बनि सकैत अछि। एहि कथनमे डिजिटल गुप्तता-सुरक्षाक सदुपयोगक विस्तृत तकनीकी बहस नहि अछि; आलोचनाक लक्ष्य स्थानीय पहचान मेटा व्यावसायिक नियन्त्रणक विशिष्ट प्रस्ताव अछि। आख्यान वस्तुक संख्याकरण आ सम्बन्धक उच्छेदनक बीचक असमानता उजागर करैत अछि।

वैज्ञानिक उत्तर आ अधिकारीक धमकी

अधिकारी क्रमांकक आवश्यकताक तर्क दैत छथि; अनन्या बीजक अंकुर, गन्ध आ ऋतु पूछैत छथि। अधिकारी चुप भेने ‘कानूनी अधिग्रहण’ सम्भव कहैत छथि। ई मोड़ संवादक निर्णायक घटनात्मक केन्द्र अछि: सुरक्षाक विनम्र भाषा सँ अधिकारपूर्वक जबरन अधिग्रहणक सम्भावना तक प्रस्ताव बदलैत अछि। पाठक लेल इएह क्षण परियोजनाक वास्तविक शक्ति-सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

बाक व्यंग्य आ स्त्रीक शरीरक सीमा

बा जमीन, पानि, नामसँ बीज धरि अधिग्रहणक क्रम गनबैत, अगिला गर्भ पर दावा करबाक भयावह सम्भावना पूछैत छथि। एहि वाक्यक अतिशयोक्ति उपन्यासक भीतर चेतावनीक भाषिक साधन अछि; शासन द्वारा कोनो

वास्तविक गर्भ-अधिग्रहणक घटना अध्यायमे नहि घटैत। स्त्रीसभक सामूहिक स्वरक गड़गड़ाहट प्रसंगकेँ बीजक स्वामित्वसँ आगामी पीढ़ीक जीवनाधार धरि विस्तार दैत अछि।

गोल खेलक सीमा आ अधिकारक दृश्य

देविकाक संकेतपर बच्चासभ बीजक पात्र उठाकऽ भागैत नहि; बीचमे राखि चारू कात घेरा बनबैत छथि। अधिकारीक जूता ओहि रेखा लग रुकि जाइत अछि। कथाक ई शारीरिक अवरोध छोट दृश्य होएतो सशक्त अछि: पहिले कबड्डी नामक बचाव छल, आब खेतक जैविक भविष्यक स्वामित्व-प्रश्नपर सामुदायिक वार्ताक सीमा अछि। ई प्रतीकात्मक विजय अछि; कानूनन अधिग्रहणक अन्तिम निष्पत्ति एखन निश्चित नहि।

भीतरक मतभेद : विदेशी शोधार्थिनीक निर्णय

शोधार्थिनीकेँ परियोजनाक पूरा शर्त शायद नहि बुझाओल गेल छल; ओ ‘नमूना’ लेबाक बदला सुननाइमे बैसब चुनैत छथि। एहि परिवर्तनसँ कथा बाहरी सब शोधार्थीकेँ एके लोभी चेहरामे नहि बदलैत। दलक भीतर जानकारीक असमानता आ नैतिक विकल्प उपस्थित अछि। पात्रक निर्णय ओकर निजी क्रियासँ देखाओल गेल अछि, कथावाचकक सामान्य उपदेशसँ मात्र नहि।

‘बीजक गवाही’क सामुदायिक नियम

साँझ धरि बच्चा सभ बीजक नाम, घर, खेत, ऋतु आ कथा स्पष्ट नहि भेने बाह्य संग्रह रोकबाक नियम बनबैत छथि। बीजक साथ भाषा आ सामुदायिक अधिकार बचाएबाक दायित्व जोड़ल जाइत अछि। ई नियम शोधक सर्वथा निषेध नहि करैत; ओकर प्रक्रिया आ स्वामित्वक शर्त तय करैत अछि। कथा एकटा अस्थायी रोकक बाद संस्थागत तर्कक कठिन प्रश्न खोलि छोड़ैत अछि।

माटिक बोलाइ : विजयपछाति अनुत्तरित प्रश्न

मध्यरातिक माटिपात्रसँ ‘हम कतऽ उगब?’ प्रश्न उभरैत अछि। एहि मानवीकरणक सहारे कथावाचक ‘बीज चोरी रोकल’क तत्काल जीत पर ठहरैत नहि। खेत कर्ज, रसायन, बाढ़ि, सूखा आ जातीय बाँटक बीच अछि; सुरक्षित बीज लेल जीबाक जगह कहाँ—ई नव संकट अछि। अन्तिम शीर्षक ‘माटिक मुँह’ अगिला अध्यायक हेतु खोलैत अछि। ई अन्त तत्काल सम्पूर्ण समाधानक बदला समस्याक एक नब गहिराइ स्वीकार करैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : अध्याय १००–१०७

सत्यव्रतक व्यक्तिगत गवाहीक बाद अध्याय १०० गज–ग्राहक कथा पुनः खोलैत अछि। ई पुनरागमन सूचनाक मात्र दुहराव नहि; उज्ज्वलक माय, आरुणि, मीरा आ देविकाक अलग-अलग जीवन-अनुभवसँ एक रूपक बहु-अर्थक बनैत अछि। बालकक हाथ मुक्तिक बाहरी चमत्कार नहि, सुननाइ आ नामक पुनर्स्थापनाक कर्तृत्व बनैत अछि। ‘बिज्जीक पहरा’ शीर्षक अतिरिक्त संक्रमण-पाठ एहि अर्थकेँ फेर जटिल बनबैत अछि।

अध्याय १०१–१०४क गति मुख्य पुस्तकक अन्य भागसँ अलग अछि। छोट स्वप्न-दृश्य, संक्षिप्त स्वप्नगीत, क्रमांकित गुम्बद, एक नामक बदला एक दरार—ई सभ संपीड़ित कल्पनात्मक कथा बनबैत अछि। बाह्य कथामे

प्रचार-विज्ञापन देखनाइ आ जागलापर ओकर स्रोत-जाँच वास्तविक घटना अछि; अनाम ग्रहक काँचक गुम्बद स्वप्नगत विचार-प्रयोग अछि। एहि स्तरभेदकेँ मेटाएब उपन्यासक स्वयं स्थापित सीमाकेँ नष्ट करब होएत।

नाम-पाठ एहि अनुक्रममे केवल मृतकक सूची नहि। आरुणिक खाली पन्ना, मीराक अनुमति, राघवक पुनर्लिखल संदेश, बटुकनाथक फाइल आ चन्द्रपालक प्रतिशत सभ एक सामाजिक अभिलेखक प्रतिस्पर्धी रूप छथि। विस्मृति व्यक्तिगत विश्राम देबाक विज्ञापन बनि अबैत अछि, मुदा जकरा विरुद्ध अपराध भेल अछि, ओकर हिसाब खो जाएबाक खतरासँ जुड़ल अछि।

अध्याय १०५–१०७मे कोंपल, ओस, गोहि, धान, बीजक पात्र आ पीतल डिब्बी कथाक केन्द्र बनैत अछि। भविष्यक प्रश्न पृथ्वी छोड़बाक कल्पनासँ पृथ्वीपर उगबाक जमीन धरि घुरैत अछि। ‘डूबल-साँस’क पारिवारिक स्मृति, सरकारी प्रस्तावक छोट शर्त, बीजक अनामिकीकरण आ बच्चेँ बनाओल गोल पहरा—ई सभ घटना सामाजिक नियन्त्रणक ठोस तरीकासभ खुलबैत अछि।

गीतक स्थानमे परिवर्तनक जाँच जरूरी अछि। १००मे विस्तृत बाल-कबड्डी लोकगीत, १०१–१०४मे छोट स्वप्न-गीत आ जागरणगीत, १०५मे धरतीक सोहर, १०६–१०७मे बीजक लोकभाषा एके रचना भीतर अलग काल-लय बनबैत अछि। एहि भेदकेँ केवल सजावट कहि छोड़ब अनुचित, मुदा हरेक गीत पूर्णतः अध्यायक घटनासँ मेल खाइत अछि एहन अनालोचित दावा सेहो उचित नहि।

एहि आठ अध्यायक अन्तिम उपलब्धि समस्या-समाप्ति नहि। कथामे १०४ पर ‘नव-क्षितिज’ प्रचार-परीक्षणक खुलासा होइत अछि, १०७ पर बाह्य बीज-संग्रह पर अस्थायी समुदाय-नियम बनैत अछि; मुदा धरतीक खेत, अधिग्रहण, ऋण, बाढ़ि, रसायन आ जातीय असमानताक प्रश्न बचल अछि। ‘माटिक मुँह’क आगामी शीर्षक बतबैत अछि जे भविष्य बचएबाक अर्थ केवल बीजकेँ डिब्बामे रखब नहि, ओकरा उगबाक योग्य सामाजिक धरती उपलब्ध करएब सेहो अछि।

पाठाधार

गजेन्द्र ठाकुर, गोहि सभक बीच जलसमाधि, मूल मैथिली त्रयी, अध्याय १००–१०७। उपन्यासमे आयल दार्शनिक प्रसंगसभ एहि आलोचनामे कथात्मक सामग्री थिक; नव्य-न्यायीय प्रमाणपरीक्षा आलोचनाक पद्धति नहि अछि।

प्रकरण २०९ | मूल अध्याय १०८ — माटिक मुँह

नव पहराक आरम्भ आ प्रश्नक उलटफेर

अध्याय १०८क मूल घटना बीज चोरी रोकबाक विजयसँ नहि, ओहिसँ जन्मल एकटा असुविधाजनक प्रश्नसँ चलैत अछि—बचाओल बीज आखिर उगत कतऽ? एहि रचनात्मक उलटफेरसँ पूर्व अध्यायक समापन तत्काल अगिला कथाक संकट बनि जाइत अछि। लेखक रक्षाकेँ उपलब्धि मानि स्थिर नहि होइत छथि; ओ संरक्षण आ जीवनक सम्भावना बीचक अन्तर देखबैत छथि। चन्ना ठूँठक माटिक पात्र सभ अपनहि प्रश्न पूछैत अछि, मुदा ओकर

वास्तविक उत्तर खेत, श्रम आ अधिकारक व्यवस्था सँ सम्बन्धित अछि। निर्जीव माटिक बोलब जादुई यथार्थवादी प्रक्रिया अछि, जकर सामाजिक केन्द्र अत्यन्त ठोस अछि।

आरम्भिक लोकभाषा आ सामूहिक दृश्य

आरम्भिक गद्यक वाक्य माटि जोतनाइ, बेचनाइ, बाँटनाइ आ बन्धक रखनाइकेँ ‘माटिसँ बात’ बुझबाक भ्रम कहैत अछि। एहि सूत्रक बाद कथावाचक अनन्याक रजिस्टर, सुरमणी काकीक हथेली आ ईराक प्रश्नक माध्यमसँ ओ विचार घटनामे बदलैत छथि। पहिने विचार, फेर दृश्य, फेर परीक्षण—ई त्रिस्तरीय क्रम अध्यायकेँ उपदेशमात्र बनबासँ रोकैत अछि। ओकरा मूल कथात्मक शक्ति एहि बातमे अछि जे अनुत्तरित प्रश्न बच्चासभकेँ खेतक नाम पढ़बाक वास्तविक क्रिया करबैत अछि।

खेतक नाम-पाठ: नव भूगोलक अभिलेख

बरगदाही, मुसहरी किनार, उज्जर डिह, कमला पारक चौर, बेलाहीक परती आ बटाई खेतक नाम सभ गनाओल जाइत अछि। एतय स्थानवाचक सूची सजावट नहि, कथनक अभिलेखीय उपकरण अछि। मालिकक नाम, बटैयादारक श्रम, ऋण, मुकदमा आ बाढ़िक तिथि एकहि खेतक अनेक परत बनबैत अछि। पूर्वमे मृतकक नाम-पाठ छल; आब भूमि स्वयं नामहीन होमए सँ बचबाक माँग करैत अछि। नामक अर्थ व्यक्ति सँ भूमि धरि पसरैत अछि, मुदा प्रत्येक भूभागक वास्तविक सम्बन्ध अलग रखल जाइत अछि।

शुद्ध खेतक प्रस्तावमे चरित्र-संघर्ष

हरिहर झा ‘शुद्ध’ ऊपरी खेत देबाक प्रस्ताव रखैत अछि, जकर व्याख्यामे चर्मकार आ दुसाध टोलाक श्रमसँ असम्पर्क गर्वक विषय बनैत अछि। एहि सान प्रसंगमे हिंसा शारीरिक नहि, चयनक भाषामे उपस्थित अछि। मीरा प्रश्न उठबैत छथि, सुरमणी काकी दानाक भूखसँ जातिक अलगावकेँ काटैत छथि, आ अनन्या माटिक पक्षसँ शुद्धताक स्रोत पूछैत अछि। कथा तैयार वैचारिक वक्तव्यक अपेक्षा एक प्रस्तावक भीतर नुकायल मूल्य-व्यवस्थाकेँ खुला करैत अछि। खेत चुनबाक प्रश्न अचानक सामाजिक दृश्यकेँ द्वन्द्व दैत अछि।

धीरमतीक प्रवेश: दृष्टिकेन्द्रक परिवर्तन

जगेसर मोचीक नातिन धीरमती माटिक ढेला लऽ कऽ आगाँ अबैत अछि। ओकर प्रवेशक अर्थ एतबे नहि जे बहिष्कृत टोला कथामे समाविष्ट भेल; ओ जमीनक चुनावक अधिकार स्वयं माँगैत अछि। बाढ़िमे डूबैत आ गर्मीमे फाटैत अपन परतीकेँ ओ प्रयोग लेल प्रस्तुत करैत अछि। कथन ओकर फाटल हथेली, श्रमक रेखा आ उपेक्षित स्थलकेँ एकहि दृश्य-गुच्छमे जोड़ैत अछि। एहन फोकलाइज़ेशनमे उपेक्षित पात्र दयाक विषयसँ निर्णयक सक्रिय स्रोत बनैत अछि।

पाँच माटिक चयन आ बहुकेन्द्रीय संरचना

एक ‘श्रेष्ठ’ खेत चुनबाक बदला पाँच भिन्न स्थल तय होइत अछि—चर्मकार टोलाक परती, मुसहरीक बाढ़ि-धोआ चौर, विधवाक बाड़ी, मजदूरक बटाई भूमि आ ठूँठ लगक सामूहिक क्यारी। दुख, पानि, सहन, श्रम आ स्मृतिक

पाँच नाम देल जाइत अछि। एकल केन्द्रक बदला बहुकेन्द्र स्थापित करब एहि अध्यायक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक निर्णय अछि। भूगोल एतय सामाजिक दावेदारीक तुलनात्मक प्रयोगशाला बनैत अछि, यद्यपि भविष्यक उपजक परिणाम एखन पाठमे सिद्ध नहि कएल गेल अछि।

हथेलीसँ क्यारी धरि पदार्थक यात्रा

सुरमणी काकी पहिल दाना धीरमतीक हाथमे दैत छथि। दानाक चिक्कन सतह आ हथेलीक खरखराहट एकसंग वर्णित होइत अछि; एहि स्पर्शमे अमूर्त समताक अपेक्षा भौतिक सम्पर्क अधिक प्रभावकारी अछि। परतीक सफाईमे पुरान जूताक टुकड़ा स्मरणार्थ बचाओल जाइत अछि; गोबर, राखि, बाढ़िक सिल्ट आ ठूँठक धूलि माटिमे मिलैत अछि। सफाई आ इतिहास मेटनाइ कैं अलग राखबाक आग्रह उपन्यासक अभिलेख-रचनाकैं कृषिक श्रमसँ जोड़ैत अछि।

जुलूसक रूपान्तरण

नकली भूतक व्यावसायिक जुलूसक विपरीत एहिठाम बच्चा, बीजपात्र, स्त्री, मजदूर आ बूढ़ सभक मौन यात्रा अछि। कथाकार एक पुरान प्रदर्शनात्मक उपकरण—जुलूस—कैं बदलल उद्देश्यसहित पुनः प्रयोग करैत छथि। एहि बेर देखने बला दर्शक मात्र नहि रहैत; बाटमे जुड़ि कऽ ओ श्रमिक-समुदायक क्रियामे सहभागी बनैत अछि। ‘माटिक मुँह सुनए’ जाएबाक वाक्य घटनाकैं तीर्थ वा उत्सवक अतिरेकसँ बचेबैत, सुननाइक परीक्षा बनबैत अछि।

गोहि आ नव सीमाक अस्थायी शान्ति

पहिल बीज रोपबाक समय कमला-बलानक पानिमे गोहिक कारी पीठ देखाइ पड़ैत अछि; पाठ स्पष्ट करैत अछि जे ओ देखलक, खएलक नहि। ई लघु क्रिया भयक पुरान सम्बन्धमे नब विराम दैत अछि, मुदा गोहिक प्रकृति स्थायी रूपेँ बदलि गेल से घोषित नहि करैत। जादुई संकेतक मितव्ययी उपयोग एहि ठाम फलदायी अछि: गोहिक निरीक्षण कार्यक सार्वजनिक महत्त्वकैं बढ़बैत अछि, परिणामक गारन्टी नहि बनैत।

समय-रचना: पहरा सँ खेतीक ऋतु

नामक पहरा बहुधा तत्काल स्मरण आ प्रत्येक रात्रिक उपस्थिति सँ जुड़ल छल; बीज रोपलाक बाद समय ऋतु, जल, अंकुर, उर्वरता आ पुनरावृत्त श्रमक बनि जाइत अछि। कथा शोकक समयकैं खेतीक दीर्घ समयसँ जोड़ैत अछि। रोपनी एक दिनमे सम्पन्न भऽ सकैत अछि, मुदा भूमि अधिकार, बटाई, जातिगत घेराबन्दी आ जीवित उपजक परीक्षा वर्षभरि खिचैत अछि। एहि कारण अध्यायक आशावाद सम्पूर्ण समाधान नहि, सामूहिक उत्तरदायित्वक शुरुआत अछि।

संवादक भीतर लेखकीय मर्यादा

गंगेश आ शास्त्रक प्रसंग पात्रसभक भाषा आ प्रश्नक रूपमे अबैत अछि; समीक्षक लेल जरूरी अछि जे ओहि संवादकैं स्वतन्त्र ऐतिहासिक सत्यापनक स्थान पर नहि राखल जाए। आख्यानक दृष्टिसँ हुनकर चर्चा खेतमे जातिगत शुद्धताक दावाकैं प्रश्नित करबाक उपकरण अछि। ओहि तरहेँ ‘बीज जाति नहि पूछैत’ कथन पात्रक

नैतिक हस्तक्षेप अछि, वैज्ञानिक प्रयोगक रिपोर्ट नहि। एहि दुई स्तरकेँ पृथक राखने उपन्यासक आलोचनात्मक शक्ति साफ बुझाइत अछि।

अनिर्णीत प्रश्न आ अगिला जल-अध्याय

पाँच माटि चुनल गेल, दाना बोएल गेल, मुदा जमीनक दीर्घकालीन अधिकार, फसलक वितरण आ उपेक्षित टोला लेल सुनिश्चित संरक्षणक प्रश्न एखन शेष अछि। अध्याय एही अपूर्णतामे प्रभावशाली बनैत अछि। माटिक आवाजक बाद जलक स्मृति उठबाक क्रम प्रकृतिक तत्त्व बदलनाइ भरि नहि; खेतक स्थिर नामसँ जलक चलैत मार्ग दिस दृष्टि घुमब अछि। एहि खुले अन्तसँ अगिला अध्यायक कथात्मक आवश्यकता स्वयं तैयार होइत अछि।

प्रकरण २१० | मूल अध्याय १०९ — जलक स्मृति

भूमिकासँ प्रवाह धरि दृष्टिकेन्द्र

‘माटिक मुँह’मे रोपल बीज आ चिन्हित खेत सँ अगिला कथा पानिक चलैत स्मृतिक दिस सरकैत अछि। भोरमे ठूँठक चारूकात छोट पोखर सभमे तैरैत नामक चित्र आरम्भिक विस्मय अछि। एहि दृश्यक मूल कथात्मक प्रश्न ई नहि जे पानि अलौकिक रूपेँ सच बाजि सकैत अछि कि नहि, अपितु जे स्थिर रजिस्टरक पहुँचसँ बाहर रहल सम्बन्ध केना सुनाओल जाए। पाथर नाम धरैत अछि; पानि ओकर मार्ग। वस्तु आ क्रियाक एहि भेदसँ अध्यायक सम्पूर्ण बनावट खुलैत अछि।

भीजल रजिस्टरक उलट परिणाम

साधारण यथार्थमे पानि स्याही मेटबैत; एहि अध्यायमे रजिस्टर भीजल अछि, मुदा अक्षर नहि बहैत, अधूरा नामक चारूकात जलक गोला बनैत अछि। ई जानबूझि रचल उलटफेर जादुई यथार्थवादक सूक्ष्म केन्द्र अछि। जल भंगुर अभिलेखक विरोधी सँ अधूरा अभिलेखक सहचर बनैत अछि। दृश्य सामाजिक विस्मरणक दबावकेँ प्रतिलोम छवि दैत अछि: जे लिखित कागच नष्ट करबाक औजार बनि सकैत छल, ओहि पानिसँ दबायल नामक नब रेखा निकलैत अछि।

पनिडुब्बीक आगमन आ कथात्मक अधिकार

पनिडुब्बी अर्धजल, अर्धछाहक रूपमे कगार पर बैसैत छथि। हुनकर बोलब नदीक साधारण मानविकीकरणसँ आगाँ जाइत अछि, कारण ओ समुदायकेँ नक्शा बनयबाक निर्देश दैत छथि। ‘नाम’ आ ‘गति’क अन्तर हुनकर भूमिका स्पष्ट करैत अछि। कथाकार मिथकीय पात्रकेँ अन्तिम फैसला सुनाबयवाली सत्ता नहि बनबैत छथि; ओ एक अलग अभिलेखन-पद्धतिक प्रेरक छथि। एहि कारण अनन्या, गोप, ईरा आ स्त्रीसभक सक्रिय श्रम कथा सँ बाहर नहि जाइत।

सरकारी नक्शा बनाम जीवित जल-मार्ग

गोप कुमारक कागचमे नदी सोझ रेखा, पुल कारी धारि आ बस्ती एक रंगीन घेरा अछि। पनिडुब्बीक प्रतिक्रिया ई सरलीकरणपर अछि: ओ चित्र पानि नहि, रंग मात्र अछि। बच्चा सभ नब नक्शामे मजदूरक गुम नामक जगह तरंग, अस्पतालक अभावक जगह सूखल इनार आ डिजिटल ठगीक जगह पानिबला स्क्रीन अंकित करैत अछि। एतय नक्शा दूरी मापबाक साधनसँ सामाजिक हानिक मार्ग पढ़बाक माध्यममे बदलैत अछि।

गन्धक नक्शा: इन्द्रियगत फोकलाइज़ेशन

ईराक प्रवासी बच्चा सम्बन्धी प्रश्न सँ ‘गन्धक नक्शा’क कल्पना जन्मैत अछि। लोक घर, इनार, धानखेत, अस्पतालक नलका आ घाटसँ अलग-अलग पानि लऽ अबैत अछि। लौह, काई, भीजल पुआर आ दवाइघरक गन्ध दृष्टिकेन्द्रकेँ आँखिसँ नाक आ स्मृतिमे स्थानान्तरित करैत अछि। पाठक भूगोल देखैत भरि नहि, ओकरा गन्धक परतद्वारा अनुभव करैत अछि। एहन प्रयोग उपन्यासक पारिस्थितिक आख्यानकेँ दृश्यप्रधान वर्णनसँ बचबैत अछि।

सत्यव्रतक हाथ धोएनाइ

पनिडुब्बी सत्यव्रतकेँ लिखबाक बदला हाथ धोय लेल कहैत छथि। जलमे हुनकर आँगुरपर ‘मौन’, ‘विलम्ब’, ‘साक्षी’ आ ‘ऋण’ जेकाँ अक्षर उठैत अछि। पूर्वमे जे व्यक्ति कागचक अधिकारसँ जुड़ल छल, आब ओकर देह स्वयं किछु समय लेल अभिलेख बनैत अछि। एहि स्पर्शमे दोषक अन्तिम निर्णय नहि, आत्मस्वीकारक नब अनुभव अछि। लिखित बयानक बाद देहगत स्मरण आवश्यक अछि—कथा एहि दोसर माध्यमकेँ महत्त्व दैत अछि।

रोदनक जलमार्ग

उज्ज्वलक इजोत आ ओकर मायक रोदनक प्रसंग डिजिटल मृत्युकेँ नदीक भूगोलसँ जोड़ैत अछि। जे वेदना स्क्रीनक घटना बुझल जाइत छल, से पारिवारिक नोरक माध्यमसँ जल-स्मृतिक हिस्सा बनैत अछि। एतय माध्यमसभक अन्तर मेटि नहि जाइत; स्क्रीनक प्रसार, देहक पीड़ा आ पानिक स्मरण अलग तख्ता रहैत अछि। नामक भावनात्मक यात्रा स्थानक सीमा भंग करैत अछि, किन्तु ओ व्यक्तिक विशिष्ट दुखकेँ अमूर्त बनाबय नहि दैत।

अवहेलित जातिक पएर आ जलसाक्ष्य

बूढ़ चर्मकार अपन पूर्वजक नामक अनुपस्थितिक बात लऽ कऽ अबैत अछि। हुनकर घरवालीक पानि सँ पएर धोयबाक कथन अपमानित श्रमक प्रतीकात्मक प्रतिष्ठा फेर लौटबैत अछि। सरकारी न्यासक ‘सामंजस्य’ शब्दक ठाम क्रिया—लोटा उठायब, पानि ढारब, नामक ठाम बनायब—कथात्मक प्रमाण बनैत अछि। समाजक श्रेणीबद्धता विरुद्ध एहि दृश्यकेँ समारोहक घोषणामात्र बुझब कम हएत; ई पएरक स्थान बदलबाक सामाजिक क्रिया अछि।

वृत्तक विस्तार आ कबड्डीक पुनर्विधान

जलक पोखर सभ संध्याकाल एक-दोसरासँ जुड़ि ठूँठक चारूकात वृत्त बनबैत अछि। एहि वृत्तक कात बच्चा सभ कबड्डी खेलैत अछि, मुदा नाम उठाएब पाथर उठाएब नहि, नामक भार छातीमे लऽ चलब अछि। खेलक नियम स्थिर रूपसँ दुहराएल नहि, विषयानुसार बदलैत अछि। जलक तरलताक अनुरूप कबड्डी सेहो चलैत स्मृति आ साँसक लयक साधन होइत अछि।

बोतलबन्द ‘पवित्र स्मृति जल’क आगमन

अध्यायक अन्तमे बजारक गाड़ी बोतलबन्द श्रद्धाक प्रस्ताव लऽ कऽ अबैत अछि। कथा ठोस अभिलेख बनबैत हुएओ तुरन्त ओकर वस्तुकरणक खतरा खोलि दैत अछि। जलमार्गक सामुदायिक स्मृति जेकर स्वामित्व कोनो एकर नहि, ओकरा बोतल, चित्र आ अनुमति-प्रतीक्षा सँ बाजारक वस्तु बनाओल जा रहल अछि। पनिडुब्बीक कठोर चेहरा एहि संघर्षक संकेत अछि। एहि अन्तमे नाटकीय तान स्पष्ट अछि: पानि स्मृति बोललक; बजार ओकर मुँह बन्द करबाक बाट खोजैत अछि।

जल आ कथनक अस्थिर सम्बन्ध

कथा पानिकेँ सर्वज्ञ अभिलेख नहि बनबैत। पानिक स्वर मल्लाह, स्त्री, बच्चा, गोप, सत्यव्रत आ पनिडुब्बीक भिन्न माध्यमसँ अर्थ पबैत अछि। अनेक चिह्न अपूर्ण छथि; कोनो-बेकोनो नाम धुँधला अछि। एहि अपूर्णतासँ आख्यानक विश्वसनीयता नष्ट नहि होइत, प्रत्युत स्मृतिक स्वभाविक अनिश्चितता दृष्टिगोचर होइत अछि। आलोचनामे एतबे जरूरी जे मिथकीय जलसाक्ष्यकेँ बाहरी विधिक वा वैज्ञानिक दस्तावेजक समान नहि मानल जाए।

अध्यायक संरचनात्मक निष्कर्ष

भूमि पर पाँच क्यारीक ठोस वितरणक बाद जल अध्याय बहाव, मार्ग आ गन्धक अवस्थितिहीन भूगोल खोलैत अछि। माटि स्थिर नामक स्थान दैत; जल नामकेँ संकट आ यात्रा दैत अछि। अगिला आगिक साक्षी अध्यायमे अभिलेखक भौतिक नष्ट होनाइ कथा रूपमे अबैत अछि। एहि तीन अध्यायक सन्धि पर्यावरणीय वस्तुक पुनरावृत्ति नहि, स्मृति सँ संघर्षक तीन अलग विधि—रोपब, बहब आ जरब—बनबैत अछि।

प्रकरण २११ | मूल अध्याय ११० — आगिक साक्षी

राखि आ अक्षरक विरोधाभास

अध्याय ‘आगि बुझि जाइ छै, राख गवाही दै छै’क सूत्रसँ आरम्भ होइत अछि। जलक स्मृतिक बाद कथाकार ध्वंसक एहन माध्यम चुनैत छथि जे कागच मेटबैत अछि आ आहुतिक उजास सेहो दैत अछि। आगिक द्विविध रूप पूर्वसँ चिन्हित अछि—चूल्हि आ संस्कारक खुलल आगि, अभिलेख दबाबयवाली नुकाएल आगि। एहि दोहोकेँ एकहि लपटमे देखब समाजक नैतिक भेद मेटा देत; कथा साधन आ प्रयोजनक अन्तर लगातार जोगबैत अछि।

अभिलेख-घरक अग्निकाण्ड आ कथात्मक तात्कालिकता

रातिमे पुरान कागच-घर सँ धुँआ उठैत अछि; ओतय निविदा, नगरपालिका, श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग, ब्रूमक दान-पत्र आ नाम-पंजीक प्रतिलिपि राखल छल। अलग-अलग संस्थागत मार्गक साक्ष्य एकहि स्थानमे संचित अछि। एहि कारण आगि खाली भवनक जोखिम नहि, अनेक विखण्डित कथाक सम्बन्ध काटबाक प्रयास बनैत अछि। अनन्याक बाल-पहराक ‘पहिने साँस, फेर शब्द’ प्रतिक्रिया संकटमे पूर्वस्थापित अनुशासनक व्यावहारिक परीक्षा अछि।

नियन्त्रित आगि आ साक्ष्य-बचाबक नैतिक द्वन्द्व

आरुणि पानि लऽ आगि बुझाबय बढ़ैत छथि, मुदा मीरा एक क्षण रोकेनाइ चाहैत छथि जे अधजरल कागचक संकेत बचि रहय। देविका आ सौम्या लपट पसारबाक रोकथाम करैत छथि आ बीचक किछु भाग सीमित रूपमे जरैत रहैत अछि। दृश्य स्मृतिरक्षाक नैतिक तनाव खोलैत अछि: तत्काल सुरक्षा आ प्रमाण-संरक्षण सभ समय सहज संगति नहि राखैत। समालोचनामे एहि प्रसंगक जोखिम सेहो स्वीकारब चाही—वास्तविक आगिकाण्डमे जीवन-रक्षाक प्राथमिकता सर्वोच्च होएत। उपन्यास एहि तनावकेँ प्रतीकात्मक दृश्यरूपेँ रचैत अछि।

जरैत पन्नाक गुप्त पाछू-भाग

कथामे ‘अतिक्रमित रिक्त भू-भाग’क सरकारी वाक्यक पाछाँ ‘स्मारक क्षेत्रक भू-मूल्यांकन’क संकेत उजागर होइत अछि। आगि कागचक बाहरी दावाकेँ खाइत अछि, भीतरक लाभक शब्द उघारैत अछि। ई जादुई दृश्य भाषाक आवरण खोलबाक नाटकीय विधि अछि; आगिक तापसँ वास्तविक दस्तावेज स्वतः प्रमाणित भऽ गेल एहन वैज्ञानिक दावा पाठ नहि करैत। रचनात्मक अर्थ एतय प्रक्रियागत भाषाक दोहरा मुख देखाबयमे अछि।

भीतरक चाबी आ आरोपक स्थगन

गोप कुमार पबैत छथि जे दरबाजा जबरदस्ती नहि तोड़ल गेल, भीतरक चाबी सँ खुजल। चाबी अनन्या, देविका आ हेमनारायण लग छल। हेमनारायण अनुपस्थित छथि, किन्तु बच्चा सभ बिना पूरा घटना जाने हुनका तत्काल दोषी नहि ठहरबैत। एहि विलम्बसँ कथा तनाव बढ़बैत अछि आ अपना एखनतक नैतिक नियम—नामपर आरोप लगाबय सँ पहिने सुनब—कठिन परिस्थिति मे निभाबैत अछि। कथावाचक अपराध अनावरणकेँ एकल चमत्कारी निदान नहि बनबैत।

हेमनारायणक स्वीकार आ ऋणक दबाव

पोखरिक कात अचेत भेटल हेमनारायण होशमे बतबैत छथि जे पुत्रक अस्पतालक देनदारीक भयमे चाबी देल गेल। ओ एक कागच लेबाक कल्पना केने छलाह, आगि लगबाबक सूचना नहि छल। घटना व्यक्तिगत जिम्मेदारीकेँ रद्द नहि करैत, मुदा ओकर पाछाँ कर्ज, अस्पतालक अभाव आ दबावक कारण-शृंखला जोड़ैत अछि। पूर्वक म्यूल अकाउण्ट आ ठेकाक कथासँ ई प्रसंग संवाद करैत अछि: माध्यम होयब निर्दोषताक प्रमाण नहि, पर मूल लाभार्थी सँ सम्बन्ध खोजब सेहो आवश्यक अछि।

नाम-पहराक श्रमात्मक दण्ड

बासँ प्रेरित बच्चा सभ हेमनारायणकेँ एक महीना रातिक पहरा आ अधजरल नाम फेर लिखबाक काज दैत अछि। ऋणक प्रश्न सामुदायिक सुननाइमे उठेबाक निर्णय होइत अछि। एहि परिणाममे दण्डक कथा पुरान प्रतिशोधसँ अलग अछि। दोषकेँ स्वीकारि श्रम करब आ शोषणक मूलकारण सार्वजनिक करब दुनू एकसाथ चलैत अछि। तथापि कथा ई नहि कहैत जे एक महीनाक सेवा क्षतिपूर्ति वा औपचारिक न्यायिक प्रक्रियाकेँ पूर्णतः बदलि देलक।

अधजरल नाम सभक अपूर्णता

एक पन्नापर ‘सर...’, ‘उज...’, ‘ना...’ जकाँ अधूरा अक्षर बचैत अछि। कथाकार ई नहि बतबैत जे निश्चित रूपेँ तीनो ककर नाम छल; उज्ज्वलक माय अधजरल चिन्ह सभकेँ समस्त अनामक स्मरणक रूपमे स्वीकारब चाहैत छथि। एहि निर्णयमे अल्प पाठसँ पूरा जीवनी गढ़बाक प्रलोभन रोकी देल गेल अछि। ‘अधजरल नाम सभ’ नामक पाथर अपूर्ण ज्ञानक प्रति आदरक ठोस रूप अछि, जकरा समीक्षा सेहो ओतबे मर्यादासँ पढ़त।

राखिक तीन भाग आ पदार्थक पुनर्निवेश

भोरमे राखि तीन ठाम बाँटल जाइत अछि—नाम-पाथर लग, नव कोंपल लग, आ खाली माटिक कटोरामे। ध्वंससँ बचल पदार्थ पुनः स्मरण, पुनर्जीवन आ सम्भावित गवाहीक स्थान पबैत अछि। एहि त्रिभाजनसँ कथा नष्ट दस्तावेजक दुखकेँ एकटा बहुस्थलीय स्मृति-विधानमे बदलैत अछि। राखिक गरमी आ आँगुरक बीच फिसलैत कणक सूक्ष्म अनुभूति एहि दृश्यकेँ प्रतीकात्मक घोषणासँ बेसी भौतिक बनबैत अछि।

भूतक दोहरा वृत्त

बूढ़बा भूत राखि सँ एक भीतरक आ एक बाहरक वृत्त खिंचैत छथि। पात्रसभ ओकरा गाम आ पृथ्वी जेकाँ पढ़ैत छथि, तेसर सम्भावित वृत्त अनाम ग्रहक दूरस्थ स्वप्नक संकेत अछि। एहि क्रममे स्थानक फैलाव प्रतीकात्मक अछि; ओकरा ठोस भविष्य-यात्राक घोषणा मानब गलत होएत। वृत्तक दृश्य काबड्डीक बहुबेर दोहराएल सीमाक पुनर्निर्माण करैत अछि—रक्षाक परिधि प्रत्येक संकटमे नव अर्थ पबैत अछि।

आगिक बाद वायुक प्रवेश

एक बच्चाक प्रश्न—हवा कखन बाजत—आगिक घटनासँ अगिला अध्यायकेँ जोड़ैत अछि। राखिक महीन धूलि हवा सँ माथपर पहुँचेबाक दृश्य कथात्मक संक्रमण बनैत अछि। पानि सँ आगि, आगि सँ वायु धरि वस्तुक अनुक्रम केवल पंचतत्त्वक नाम गनब नहि; प्रत्येक तत्त्वमे नाम मेटबाक अलग सम्भावना आ बचबाक अलग पद्धति देखाओल जा रहल अछि। एहि क्रमक समग्र परिणाम अगिला अध्यायमे वायु-प्रसारक आचार रूपमे परीक्षण होएत।

साक्ष्यक शिल्प आ सीमित निष्कर्ष

सौम्या राखिमे कम्पनीक आधा चिन्ह, नगरपालिकाक रेखा आ अनुप्रयोगक कोड-सदृश टुकड़ा पबैत छथि। एतय ‘आधा’ आ ‘सदृश’ शब्द महत्त्वपूर्ण अछि—ई पूर्ण अभियोग सिद्ध नहि करैत। कथाकार समस्त संकेत एकहि

राखिमे भेटबैत सम्बन्धक सम्भावना रचैत छथि; औपचारिक सत्यापनक दृश्य शेष रहैत अछि। एहन अनिर्णयकेँ आलोचना यदि निश्चित साजिश-सिद्धि बना देत, तँ उपन्यासक सावधान कथात्मक पद्धति क्षतिग्रस्त होएत।

प्रकरण २१२ | मूल अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

अदृश्य माध्यममे कथा-पुनर्विन्यास

आगिक साक्षी बाद जे धुँआ गामक गल्ली सभमे घूमैत अछि, ओहि सँ ‘वायुक प्रश्न’ शुरू होइत अछि। माटि, जल आ राखि हाथमे अटकि सकैत अछि, मुदा हवा धारण करब कठिन। कथाकार तेँ अभिलेखक भौतिक सीमासँ सूचना, अफवाह आ अपमानक प्रसारक दिशामे दृष्टि घुमबैत छथि। हवाक पूछताछक चित्रक मूल शक्ति अदृश्य व्याप्तिकेँ दृश्य घटनाक क्रममे महसूस कराएब अछि।

धुँआक स्मृतिजनक गन्ध

धुँआ आँखि जराबए बदला लोककेँ चूल्हि, दादीक अँचरा, जलसमाधिक देह, अस्पतालक ऑक्सीजन आ स्क्रीनक नील उजास मोन पाड़ैत अछि। एहि पाँच पृथक स्मृतिक एक गन्धमे घुरबाक रचनात्मक अर्थ अछि—वायु अनेक सामाजिक प्रसंगकेँ जोडैत अछि, मुदा ओ सभक हानि एके नहि। संवेदनात्मक रूपक अलग कथारेखाक बीच पुल बनबैत अछि; व्यक्तिगत स्मृति आ सार्वजनिक प्रदूषण सह-स्थित होइत अछि।

वायु-पहराक नियमसभ

अनन्या आ बालमण्डली अपुष्ट आरोप, स्त्रीक जीवनक अनधिकृत कथा, मृतकक उपहास आ निर्धनक दुखक चटपट हास्य नहि पसारबाक नियम तय करैत अछि। एहि प्रसंगमे वायु सार्वजनिक कथनक रूपक बनैत अछि। नामक संविधानक पहरा डिजिटल स्क्रीनसँ बाहर साधारण चौक, चाह-दुकान आ घरक चुगली धरि जाइत अछि। ई विस्तार उपन्यासक नैतिक प्रश्नकेँ एक खास उपकरणक विरोधसँ निकालि सामाजिक बोलचालक सम्पूर्ण क्षेत्रमे फैला दैत अछि।

चाह-दुकानमे अफवाहक लघु नाट्य

एक लोक नाम-उत्सवक किछु नाम झूठ हेबाक दावा करैत अछि; अनन्या ओकरा स्रोतक प्रश्न पूछैत छथि। प्रमाणक सम्पूर्ण दार्शनिक परीक्षा कएल बिना कथात्मक रूपसँ एतय महत्त्वपूर्ण ई अछि जे विवादक ताप झगड़ासँ श्रवणक प्रक्रियामे बदलि जाइत अछि। चाह-दुकान एक छोट सार्वजनिक मंच बनैत अछि जतय वाक्यक जिम्मेदारी पूछल जाइत अछि। ओतय अफवाह स्वयमेव सत्य वा असत्य घोषित नहि, असत्यापित रूपमे चिन्हित होइत अछि।

अपराधी-कक्ष सभमे वायुक प्रवेश

बटुकनाथक ‘माफ करिअ’ पर राखि ‘पहिने सुनू’क रूपक लिखैत अछि; चन्द्रपालक ठंढा कार्यालयमे ‘नाम छानल नहि जाएत’ उभरैत अछि; राघवक कोड आ गायब संदेश कानक भीतर गूँजैत अछि; लाउक शुद्ध-वायु यन्त्रक

काँचपर ‘उपस्थित’ लिखाइत अछि। एक तत्त्व चारि बंद जगहमे चारि अलग अपराध-आदत खोलैत अछि। बहुस्थलीय सम्पादन दृश्य-क्रमक लय तीव्र करैत अछि।

यान्त्रिक शुद्धताक व्यङ्ग्य

लाउक आयातित शुद्ध-वायु यन्त्र कणक संख्या शून्य देखबैत अछि, मुदा काँचपर एक नामक शब्द उभरैत अछि। वायु तकनीकी रूपेँ शुद्ध घोषित अछि, सामाजिक इतिहाससँ मुक्त नहि। एहि विरोधसँ उपन्यास सुविधा-सुरक्षाक भाषामे लुकायल निर्बाध नियन्त्रणक कल्पनाकेँ प्रश्नित करैत अछि। चन्द्रपालक कार्यालयक वातानुकूलित ठंढ सेहो नैतिक निरपेक्षता देबामे असफल अछि। तकनीकक रूपक सामाजिक जिम्मेदारीक अनुपस्थिति पर आलोचना अछि, न वैज्ञानिक वायु-शुद्धिकरणक असम्भवताक सामान्य निष्कर्ष।

झण्डा आ स्वरक बहुवचन

बच्चा सभ सत्य, नाम, निजता, श्रम, जल, माटि, बीज, अग्नि आ वायुक शब्दवाला छोट कपड़ाक झण्डा बनबैत अछि। कपड़ाक मोटाइ अनुसार फड़फड़ाहटक अलग ध्वनि लेखकीय विशेषता अछि; सामूहिक आवाज एकरूप नहि, बहुस्वर अछि। एहि दृश्यसँ ‘हवा’ अमूर्त तत्त्व नहि, देहक श्रमसँ बनल कपड़ाक कम्पन आ सार्वजनिक संकेत बनैत अछि।

साँसक परीक्षा आ स्वीकारोक्तिक खेल

कबड्डीक रेखा एहि बेर हवा बनबैत अछि। जे बालक पहिने नकली नाम भरबामे शामिल छल, ओकर मुँह सँ खेलमे ‘हम झूठ भरने छलहुँ’ निकलैत अछि। अनुशासनक प्रश्न एतय खेलक लय सँ जुड़ल अछि। बच्चासभ ओकरा तत्काल दण्ड-प्रदर्शनक वस्तु नहि बनबैत; स्वीकारोक्तिक बाद ओ खेलक घेरामे घुरैत अछि। एहि नव नियममे सत्यक उच्चारण गति आ साँसक निरन्तरतासँ जुड़ैत अछि।

हवा आ अनाम ग्रहक विरोधाभास

स्वप्नक गुम्बदमे मशीन सँ वितरित साँसक कल्पना पुनः उठैत अछि। ईरा पूछैत छथि जे जँ साँस भाड़ाक वस्तु भेल तँ शब्द आ स्मृति बचत केना। कथा एहि बिन्दुपर पर्यावरणीय स्वामित्वकेँ संचारक अधिकारसँ जोड़ैत अछि। एतय गुम्बद भविष्यक वास्तविक परियोजनाक सिद्ध तथ्य नहि; पूर्व अध्यायक स्वप्न आ प्रचारक कथारेखामे उभड़ल चेतावनीक प्रतिमा अछि।

नजरि सँ कान धरि परिवर्तन

वायुक प्रश्नमे प्राकृतिक तत्त्व देखबाक अपेक्षा सुनबाक आग्रह अछि। झण्डाक फड़फड़ाहट, बच्चाक काँपैत उच्चारण, धुँआक स्मृतिगन्ध आ खिड़कीक अदृश्य फाँक सभ पाठककेँ एकाधिक संवेदना सँ कथा ग्रहण करबैत अछि। ई संरचना पूर्व अध्यायक आगि देखबाक तीव्र दृश्यसँ एक अस्थायी दूरी बनबैत अछि। कथनक संवेदनात्मक विधान बदलैत रहब उपन्यासक दीर्घ आकारमे लयक विविधता बनाओल राखैत अछि।

वायु-पहराक सीमासभ

अपुष्ट बात नहि फैलाबक नियम आवश्यक अछि, मुदा कोन सूचना जाँचब, के जाँचत, लोकक असहमतिकेँ अफवाहसँ केना अलग राखब—ई प्रश्न अध्यायमे पूर्णरूपेँ तय नहि होइत। सार्वजनिक कथनक उत्तरदायित्व आ अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रताक टकराव एतय निहित अछि। पाठ एक चेतना आरम्भ करैत अछि, सम्पूर्ण संस्थागत समाधान प्रस्तुत नहि करैत। एहि अपूर्णतासँ अगिला आकाशक रिक्ति अध्यायक प्रश्नविशालता स्वाभाविक बनैत अछि।

अन्तिम अनुत्तरित स्वर

रातिमे बच्चा सभ अगरबत्ती नहि जरबैत ताकि हवा अपन गन्धमे रहए। अन्तमे वायु स्वयं पूछैत अछि—साँसक पहरा के करत? प्रश्नक उत्तर घेरा कसि देब मात्र नहि। वायु-पहराक सामाजिक मर्यादा बनि चुकल, मुदा अदृश्य जीवनसंसाधनक वास्तविक नियंत्रणक समस्या शेष अछि। एहि असमापनमे लेखकक प्रश्नप्रधान अनुक्रमक शक्ति अछि: प्रत्येक तत्त्व अपन कथाक केन्द्र खोलैत अछि, नब पहरा-रूपक लऽ अगिला तत्त्व केँ आमन्त्रित करैत अछि।

प्रकरण २१३ | मूल अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

विस्तृत रिक्ति आ नवीन दृश्यपटल

अध्याय ११२ गाछिक कटल डारि सँ आकाशक अंश-अंश दृश्य समाप्त भऽ पूरा आकाश एकबेरमे देखाइ देबाक अनुभवसँ आरम्भ होइत अछि। सामान्यतः खुलल आकाश मुक्ति-छवि अछि, मुदा एतय ओ भार जेकाँ छाती पर उतरैत अछि। लेखक दृश्यपटलकेँ विस्तार दऽ उलटे प्रश्नक गम्भीरता बढ़बैत छथि। जे डारि गामक इतिहासक जख्म छल, ओकर अभाव मनुष्यकेँ नब असीमताक सम्मुख करैत अछि।

दू रिक्तिक भेद

एहि अध्यायक गहींर कथात्मक आविष्कार दू प्रकारक खाली स्थान अछि। सरकारी कागच नामक ठाम क्रमांक, मजदूरक ठाम खाली कोष्ठक आ सत्यक ठाम हटाओल पाँति राखैत अछि—ई निगलबला रिक्ति। अनन्या नाम नहि भेटल लोक लेल खाली जगह छोड़ैत अछि—ई प्रतीक्षाक रिक्ति। देखबामे दुनू खाली, मुदा कथात्मक क्रिया बिल्कुल उलट। ‘अनुपस्थिति’ शब्द एतय एकरूप अर्थसँ छुटि नैतिक रूपसँ विभाजित होइत अछि।

नामक बाद ऊपर तकबाक अनुष्ठान

सभामे निर्णय होइत अछि जे प्रत्येक नाम पढ़लाक बाद क्षणभरि ऊपर तकल जाए—न मन्त्र, न फोटो, न प्रदर्शन। ई देहगत इशारा मौनक भिन्न रूप अछि। माथ उठाएब नामकेँ अनन्त स्थानमे भेजबाक प्रतीकात्मक विधि बनैत अछि; खाली आकाश लापता लोक लेल अस्थायी आसन होइत अछि। अध्यायक पवित्रता कोनो संस्थागत अधिकारसँ नहि, साथ बैसि मौन स्वीकार करब सँ उपजैत अछि।

बूढ़बा भूतक प्रकाश-किनार

बूढ़बा भूत एहि बेर धुँआ नहि, छाह आ उजासक सीमा पर देखाइत छथि। हुनकर आकृति रिक्तिक तात्त्विक विवादकेँ दृश्य किनार पर मूर्त करैत अछि। ओ सत्ता द्वारा बनल रिक्ति आ स्मृति द्वारा बनल ठामक अन्तर समझबैत छथि। जादुई पात्रक कथन सामाजिक नाम-लोपक स्मरण खोलैत अछि; हुनका सर्वज्ञ निरपेक्ष व्याख्याता मानबाक बदला लोकअनुभवक साक्षी रूपमे पढ़ब बेसी उचित अछि।

पटल बदलिते अपराधी सभक असुविधा

चन्द्रपाल आकाशक बिन्दु सभकेँ डेटा रूपमे पकड़ए चाहैत अछि, मुदा स्क्रीन ‘डाउनलोड’क सीमा देखबैत अछि। राघव सन्देशक पहुँचबाक निश्चित प्रमाण पाबि नहि सकैत अछि; लाउक शीशामे मिथिलाक आकाश घुरि अबैत अछि। पृथक्कृत तीन दृश्य एकटा स्पष्ट विरोध रचैत अछि: जे लोक नामकेँ गणना, संचार वा सम्पत्तिमे बदलि नियंत्रणक अभ्यास केलक, ओ सभ एकटा एहन रिक्ति सँ भिड़ैत अछि जकर स्वामी कोनो संस्था नहि।

स्वप्नक कृत्रिम छत आ खुलल पृथ्वी

अनन्याक स्वप्नमे अनाम ग्रहक गुम्बद नील स्क्रीन जेकाँ देखाइत अछि। गढ़ नारिकेलक नाम-पाठक बाद स्वप्नक छत पर धब्बा पड़ैत अछि। ई घटनाकेँ बाह्य खगोलीय प्रमाण नहि मानल जाए: ओ चेतनाक समानान्तर दृश्य अछि। वास्तविक गामक खुलल आकाश आ स्वप्नक नियन्त्रित छतक बीच विरोध उपन्यासक सम्भावित संसारक तुलना करैत अछि। स्मृति हेतु छुटल जगह देबाक प्रश्न एतय दुनू धरि पसारल गेल अछि।

आकाशमे चलैत कबड्डीक पुनर्रचना

बच्चासभ रेखा जमीनपर नहि खिंचैत, गोल बनि ऊपर देखैत अछि। एक बालकक छाह आकाशमे उनटे दौड़ैत देखल जाइत अछि। एहि चमत्कारमे खेलक नियम फेर बदलैत अछि: रोकनिहार प्रतिपक्षी देह नहि, अनसुना नामक रिक्त स्थान अछि। गति सँ अधिक सुननाइ विजयक शर्त बनैत अछि। एहि प्रकार कबड्डीक दीर्घकालिक रूपक अपन आरम्भिक प्रतिस्पर्धा सँ घुरि सामूहिक स्मृति-अभ्यासक अधिक सूक्ष्म अवस्था पबैत अछि।

स्त्रीक अनकहल नामक स्थल

मीरा ऊपरक रिक्त आकाशकेँ ओहि स्त्री सभक जगह मानैत छथि जिनकर कथा घरमे, अदालतमे वा स्क्रीनमे स्थान नहि पेलक। एतय ‘जगह’क अर्थ भौतिक भूभाग नहि, अनकहल कथाक सम्मानजनक प्रतीक्षा अछि। स्त्री सभक फुसफुसाहट आ ताराक सूक्ष्म कम्पन एक लघु जादुई दृश्य बनबैत अछि। ई कथा उजागर करब आ अनधिकृत प्रकाशन बीचक नैतिक अन्तर पुन: बचबैत अछि।

प्रवासक साझा शून्य

ईरा विदेशक बच्चासभकेँ दोसर पत्र लिखैत छथि जे अलग शहरक आकाश एक समान खुलल रिक्तता बनि सकैत अछि। एहि पत्र-सूत्रसँ अध्याय ८८क प्रवासी संवाद स्मरणमे घुरि अबैत अछि। देशान्तरक दूरी अबैक लेल दृश्य-संबन्ध नब माध्यम बनैत अछि, मुदा ई कोनो जादुई संदेश-प्रणालीक स्थायी सिद्धान्त नहि। कथा देखबैत

अछि जे प्रवासी स्मृति केवल पुरान गाँवक चित्र नहि, अपन स्थानसँ नाम सुनबाक सधब अभ्यास सेहो भऽ सकैत अछि।

ओसक बून्दमे उनटल आकाश

ठूँठक नव कोंपलपर एक बून्दमे पूरा आकाशक उनटल प्रतिबिम्ब देखाइत अछि। विराट आ सूक्ष्मक ई सघन संगति अध्यायक दृश्यात्मक शिखर अछि। जे रिक्ति छाती पर बोझ छल, ओ बून्दक भीतर स्पर्शयोग्य निकटता पबैत अछि। एक बून्दसँ पूरा आकाशक प्रतिमा बनलापर लेखक स्थानक मापक उलटैत छथि; स्मृतिक पहुँच भौगोलिक आकारपर निर्भर नहि रहैत।

अन्तिम ढोलक आ ऊर्ध्वाधर संरचना

अध्यायक अन्तमे धरतीक भीतर सँ ढोलकक थाप उठैत अछि, आ बा पातालक उत्तरक सम्भावना कहैत छथि। आकाश दिस उठल दृष्टि जड़ि दिस फेर झुकैत अछि। एहि ऊपर-नीचाँक गति सँ कथा एक द्विदिश संवेदनात्मक यात्रा बनबैत अछि। मुदा अगिला मूल अध्याय ‘शब्दक देह’ अछि; तेँ ढोलक सँ तत्काल पाताल-अध्यायक निश्चित शुरूआत घोषित करब ठीक नहि। पाठक वास्तविक क्रममे ऊर्ध्वाधर संकेत आ शब्दसम्बन्धी नब परीक्षा बीच एक रचनात्मक सरकाव अछि।

रिक्ति पूर्ण समाधान नहि

आकाशपर ककरो अधिकार नहि हेबाक बा-कथन नैतिक आग्रह अछि; आधुनिक संचार, उपग्रह वा संसाधनपर प्रभावक ठोस राजनीति एतय सुलझायल नहि अछि। उपन्यास रिक्त स्थानकेँ अधिकार-विरोधी कल्पनाक रूपमे इस्तेमाल करैत अछि, कानूनी नियमनक समग्र प्रतिरूप नहि। आलोचनात्मक महत्त्व एहि सीमाकेँ स्वीकारि रचनात्मक दृश्य पढ़बामे अछि: खाली जगह स्मृतिक सम्भावना बनि सकैत अछि, मुदा ओकर रक्षा करबाक संस्थागत श्रम एखन बाँकी अछि।

प्रकरण २१४ | मूल अध्याय ११३ — शब्दक देह

आकाशसँ भाषा धरि नब मोड़

असीम आकाशक रिक्ति बाद ‘शब्दक देह’ अध्ययनक परिधिकेँ फेर छोट करैत, कागच पर लिखल पाँच शब्दक लग आनैत अछि। विराट रूपक सँ अक्षर-पाटी धरि ई सरकाव महत्त्वपूर्ण अछि, कारण कथा पूछैत अछि जे ‘उपस्थित’ वा ‘न्याय’ कहला मात्र सँ उपस्थितिक श्रम वा न्यायिक परिणाम स्वतः किएक नहि बनैत। कथाकार शब्दकेँ निराकार घोषणा बनबासँ रोकि ओकरा सामाजिक क्रियाक सम्बन्धसँ जोड़ैत छथि।

झूठक तुरन्त देह, साँचक प्रतीक्षा

आरम्भक कथनमे झूठकेँ फाइल, मोहर, करार, निविदा आ दानपत्रक देह तुरन्त भेटैत अछि; साँचकेँ देह भेटबाक लेल समय, पसीना आ श्रवण चाही। एतय ‘देह’ एक कार्यकारी रूपक अछि। संस्थाक भाषाक बाहरी वैधता आ

पीड़ितक अनुभवक धीमा सार्वजनिक मान्यता बीच समयगत विषमता उजागर होइत अछि। शब्दक शक्तिक परीक्षण शब्दकोशमे नहि, ओकरा धारण करनिहार वस्तु आ कर्ममे कएल जाइत अछि।

पाँच शब्दक कथात्मक प्रयोगशाला

नारिकेल पात पाठशालामे नाम, उपस्थित, न्याय, निजता आ पृथ्वी लिखल गेल अछि। बच्चासभ सँ पूछल जाइत अछि जे प्रत्येक शब्दक देह की होएत। एक बालक नामकेँ पाथर कहैत, दोसर मुँह, तेसर कान, चारिम समय। एकहि शब्दक चारि छविसँ पाठ बहुल अर्थक दृश्य बनबैत अछि। कथाकार पाठशालाकेँ व्याख्यानक एकदिश मंच नहि, प्रश्न-उत्तरक सामूहिक रचना बनबैत छथि।

पाथर, कान, तुलसी, दर्पण आ बीज

पाँच खाली घेरामे क्रमशः पाथर, कानक आकृति, तुलसीक पात, दर्पण आ बीज राखल जाइत अछि। ई वस्तुसभ स्थायी सार्वभौमिक प्रतीक नहि; पात्रक पूर्व अनुभवक संग अर्थ ग्रहण करैत अछि। पाथरपर लिखल नाम उच्चारित नहि भेल तँ स्मारक बनि रहि सकैत; दर्पण ककर हाथमे अछि ताहिसँ निजताक सुरक्षा निर्भर; बीज धरती चुनबाक श्रमक प्रतिनिधि अछि। भिन्न बिम्बक साझा चौपाल उपन्यासक पूर्व कथा-सूत्रकेँ नव अर्थमे समेटैत अछि।

पात्रसभक कथनाधिकार

ईरा पृथ्वीक देह भार उठबैत पएरमे देखैत छथि; मीरा निजताक देह नियंत्रित दर्पणमे; देविका उपस्थितिक देह सुनबाक समयमे; आरुणि न्यायकेँ तुलसीक जीवनगन्ध सँ जोड़ैत छथि; सत्यव्रत पाथर आ आवाज बीच अन्तर बतबैत छथि। एहि क्रममे एक पदक अन्तिम व्याख्या एक अधिकारप्राप्त पात्र नहि दैत। बहुवचनक ई रचना उपन्यासक सामुदायिक स्वरक महत्त्वपूर्ण गुण अछि।

कानूनी देह आ निष्प्राण अर्थ

सत्यव्रतक कथन—धारा, आदेश, निर्णय, शपथपत्रक देह मजबूत भऽ सकैत अछि, मुदा करुणा बिनु मृत—हुनकर पूर्व गवाहीक निरन्तरता अछि। ई नब रूपान्तरण कहनाइ नहि जे कानून अनावश्यक; पाठ स्पष्ट रूपेँ शब्दक कार्यवाहीक कसौटी माँगैत अछि। सिद्धान्तक रचनात्मक महत्त्व अछि जे प्रशासनिक शब्दक सजीव परिणाम दिखबाक चाही, नैतिक मुखौटाक निरन्तरता नहि।

साधारण चाहक अन्तरवेशन

चाहबला कहैत अछि जे चाह सेहो पानि, पात, दूध, आगि, हाथ आ प्रतीक्षा सँ बनैत अछि। एहि लघु हास्यप्रसंगमे व्यापक भाषिक विचार रोजमर्राक श्रम-संबन्धमे उतरि अबैत अछि। महाकाय उपन्यास एहि छोट घटना द्वारा पाठककेँ सतत नारा-सदृश वाक्यक थकानसँ निकालैत अछि। चाय बनब एहि अध्यायमे वस्तुगत सन्दर्भक सहायता सँ ‘शब्दक देह’रूपककेँ घरेलू सुलभता दैत अछि।

कबड्डीक शब्द-संगति

बच्चा सभ एहि बेर केवल ‘कबड्डी’ नहि, ‘नाम’, ‘न्याय’ आ ‘पृथ्वी’ दोहरबैत दौड़ैत अछि। साँस टूटबाक पहिने शब्दक देहसँ जुड़ल एक काज कहबाक नियम बनैत अछि। खेल शब्दज्ञानक परीक्षा नहि; कथन आ कर्म जोड़बाक अभ्यास अछि। एहि नव पारीमे भाषिक नैतिकता देहक गति आ सार्वजनिक उत्तरदेयतासँ एकसाथ जुरैत अछि।

करार शब्दक निर्गुण चमक

अध्यायक अन्तमे एक किरिण खाली घेरामे ‘करार’ उभारैत अछि। अन्य शब्दक आगाँ वस्तु छल; करारक आगाँ मात्र चमक अछि। ई नाटकीय अन्तर सूचित करैत अछि जे बिना दिसैत देहक अनुबन्ध दूसराक देह, जमीन, भविष्य पर कब्जा करबाक क्षमता रखैत अछि। बूढ़बा भूतक ‘करारक पेट तकू’ कथन सान शब्दमे अगिला आर्थिक-प्रशासनिक संघर्षकेँ आमन्त्रित करैत अछि।

अर्थातीत दार्शनिक अनुशासन सँ दूरी

उपन्यासक भीतर शास्त्र-स्मरण आ गंगेशक प्रश्न अबैत अछि, मुदा एहि अध्यायक आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि शब्दक वस्तुकरण, संवादक क्रम, खेलक नियम आ करारक नाटकीय प्रवेशमे अछि। ई दृश्य कोनो एक दार्शनिक सिद्धान्तक पूर्ण प्रमाण नहि। आलोचनाक काज अछि देखब जे कथा अर्थकेँ कथित सत्यसँ समाजक प्रदर्शन धरि केना लऽ जाइत अछि, न शब्दार्थक बाहरी औपचारिक परीक्षण कऽ पात्रक अनुभव दबाएब।

गीत आ मूलकथाक सम्बन्ध

आरम्भक अक्षर-सोहर शब्दक जन्मक उत्सवी स्वर अछि, मुख्य कथा कहैत अछि जे जन्मल शब्दक देह कर्म बिना अधूरा रहैत अछि। एहि द्विस्वरमे उत्सव आ सावधानीक समानान्तरता बनैत अछि। गीत शिल्पतः अध्यायक प्रमुख विषयक आगाँ सेतु बनैत अछि; मुख्य गद्य ओकरा वास्तविक पात्रद्वन्द्वमे जाँचैत अछि। अतः गीतक उपस्थिति सारांश दोहराएब नहि, आवेग आ आलोचनाक दो अलग भाषिक अवस्था अछि।

अगिला अध्यायक अनिवार्य प्रश्न

‘करार’क चमकक बाद ११४मे ‘अर्थक आत्मा’ आ सरकारी ‘उपस्थित अभियान’क प्रसंग आएत। उपन्यास पहिने शब्दकेँ देह देबाक आग्रह करैत अछि, फेर दिखबैत अछि जे देह बचल रहितो अर्थ चोरायल जा सकैत अछि। एहि दो-अध्यायी क्रममे नामक रक्षा अधिक कठिन होइत अछि। लिखल शब्दक पहिचान रक्षासँ अर्थक सामाजिक स्वामित्वक संघर्ष धरि कथा बढ़ैत अछि।

प्रकरण २१५ | मूल अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

अक्षरक शुद्धता आ अर्थक चोरी

‘शब्दक देह’क आगाँ ‘अर्थक आत्मा’ एक सूक्ष्म उलटफेर जोड़ैत अछि। बजारक चौकपर ‘उपस्थित अभियान’क झण्डीमे अक्षर सही, मात्रा सही, रूप आकर्षक अछि, मुदा मृतक परिवारक उत्तरक स्थान पर ई प्रचारक चिन्ह बनि

गेल अछि। एतय अर्थक नाशक लेल शब्द मेटब आवश्यक नहि; शब्दकेँ एक नब व्यवस्था भीतर स्थानान्तरित करब पर्याप्त अछि। रचनाक संघर्ष भाषिक वर्तनी नहि, सम्बोधनक अधिकार आ प्रसंगक स्वामित्व अछि।

झण्डीक भौतिकता

नब कपड़ाक कठोर चटचट ध्वनि आ छपाइक ताजा गन्ध सहित अनन्याक निरीक्षण कथाक आरम्भिक दृश्यकेँ अत्यन्त विशिष्ट बनबैत अछि। हाथ लगैत सही देखाइत अक्षरक भीतर नैतिक शून्यताक अनुभव पाठककेँ ‘छिनल शब्द’क अमूर्त कथनसँ जोड़ि दैत अछि। कागच, टोपी, थैली आ चाह-प्यालापर एक शब्दक दोहराव उपभोक्तावादी प्रसारक दृश्य-सम्पादन अछि; हर पुनरावृत्ति मूल शोकसँ दूरी बढ़बैत अछि।

तीन गोलमे एक शब्दक तीन अर्थ

पाठशालामे ‘उपस्थित’ शब्द तीन स्थल पर राखल जाइत अछि—मृतक परिवारक उत्तर, सरकारी अभियान आ स्वप्नक अनाम ग्रहक देबाल। पहिल स्थानमे नोर, दोसरमे हिसाब, तेसरमे रिक्ति। कथाकार एकहि ध्वन्यात्मक आकृतिक तीन अलग घटनात्मक परिवेश बनबैत छथि। ई तुलनात्मक संयोजन बिनु भारी व्याख्यानक पाठककेँ अर्थक सामाजिक निर्माण देखबैत अछि। पात्रक बोली, विज्ञापन आ स्वप्न अलग कथनस्तर छथि; समीक्षा एहि भेदकेँ सुरक्षित राखैत अछि।

सकारात्मक छविक आवरण

नगरपालिकाक टोपीपर कटल चन्ना ठूँठक बदला पूरा हरियर गाछी, जलसमाधिक बदला उत्सवी हरियाली आ गोहिक अनुपस्थिति देखाओल जाइत अछि। ‘सकारात्मक छवि’ बनएबाक नामपर जख्मक स्थान मेटाओल जा रहल अछि। मीरा अपन देहक इतिहाससँ जोड़ि कहैत छथि जे निजताक उल्लंघनकेँ सेहो कखनो संरक्षण, चुप्पीकेँ मर्यादा कहल गेल छल। एहि आत्मस्मरणसँ दृश्य सरकारी प्रचारक बाहरी आलोचनासँ व्यक्तिगत अपमानक अनुभूति धरि पहुँचैत अछि।

पीड़ितक समयसँ शब्दक मूल्य

‘न्याय’ शब्दक अर्थ सत्यव्रत पीड़ितक समय बचबाक कसौटीपर परखैत छथि। बरखौं स्थगनक बाद न्याय शब्द रहितो ओकर जीवित सार नष्ट भऽ सकैत अछि। एहिठाम नामक संविधानक पुरान अनुभव एक भाषिक परीक्षणक रूप ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर केवल शब्दक बनावट नहि, ओकर समयगत परिणाम लिखैत छथि। न्याय, सुरक्षा, विकास आ विरासतक अर्थ प्रत्येक घायल लोकक अनुभव सँ अलग-अलग उभरैत अछि।

‘अर्थ-परीक्षा’क सामुदायिक रंगमंच

साँझमे पाथरपर विकास, दान, न्याय, सम्मान, सुरक्षा, विरासत आ उपस्थित लिखि लोक अपन अनुभव कहैत अछि। मजदूरक बेटी पुलक पायामे डूबल बापाकेँ मोन पाड़ैत; देविका दानपत्रक व्यावसायिक रूप देखबैत; मीरा सुरक्षा विषयमे चुप रहैत छथि। एहि संवादक रचना पात्रसभकेँ शब्दकोशक उदाहरण नहि, अनुभवक निर्णायक बनबैत अछि। मौनक स्थान सेहो अर्थक परीक्षणमे वैध रहैत अछि।

स्वप्न-ग्रहक अर्थहीन उपस्थिति

रातिक स्वप्नमे यान्त्रिक स्वर ‘सभ उपस्थिति दर्ज’ कहैत अछि, मुदा कियो व्यक्तिगत नामक उत्तर नहि दैत। समान देवनागरी शब्दक पुनरावृत्ति अर्थक प्रचण्ड अभावक प्रतीक बनैत अछि। ई स्वप्न एक बाह्य सभ्यताक प्रमाणिक समाचार नहि; कृत्रिम उपस्थिति आ जीवित सम्बन्धक अन्तरक मानसिक नाट्य अछि। कथा एहि प्रतीकसँ शब्दक निर्यात आ अर्थक विफल हस्तान्तरण देखबैत अछि।

मर्यादा शब्दक वंशगत प्रश्न

बटुकनाथक सन्तान ‘मर्यादा’ लिखि पूछैत अछि जे एकर अर्थ ककरा लग पूछब। मीरा उत्तर दैत छथि—जिनका मर्यादाक नामपर चुप कराओल गेल। एहि छोट दृश्यमे पारिवारिक उत्तराधिकारक भीतर प्रश्न उठबाक घटना महत्त्वपूर्ण अछि। केवल पैतृक भाषाक पालन नव पीढ़ीक निर्णय नहि; ओकरा दबायल जीवनक वाचकसँ सम्बद्ध होयबाक आवश्यकता अछि। एक शब्दक पुनर्पाठ सामाजिक इतिहासक नब प्रवेशद्वार बनैत अछि।

आधिकारिक पुनर्व्याख्याक पर्चा

भीजल सरकारी पर्चामे ‘जलसमाधि’कें ‘जल-धरोहर’, ‘भूत-कबड्डी’कें ‘लोक-नाट्य’, ‘मृतक’कें ‘अतीत-अंश’ आ ‘पीड़ित’कें ‘हितधारक’ लिखबाक प्रस्ताव मिलैत अछि। ई औपचारिक नाम-परिवर्तन कथाक पूर्वक निविदा आ डिजिटल डेटा-संग्रहसँ जुड़ैत अछि। क्रूरता केवल घटना मेटब नहि; ओकरा प्रशासकीय तटस्थताक भाषा सँ निरापद देखायब सेहो अछि। जखन नाम बदलैत अछि, तखन उत्तरदायित्वक स्वर कतेक छोट भऽ सकैत अछि—एहि प्रश्नक दीर्घ आवेग अध्यायमे अछि।

छाँहक वृद्धि आ खतरा-संकेत

पर्चा पढ़ैत काल सूर्य माथ पर रहितो ठूँठक छाँह नमहर होइत अछि। एतय प्रकृतिक प्रतिकूल बिम्ब अर्थक हत्या पर सामुदायिक अनुभवक प्रतिक्रिया बनैत अछि। बूढ़बा भूतक फुसफुसाहट घटनाक जादुई व्याख्या दैत अछि, मुदा वास्तविक सामाजिक खतरा ओहि पर्चाक सूचीमे स्पष्ट अछि। कथा दोनू स्तर जोड़ैत अछि बिना एक कें दोसरक प्रतिलिपि बनेबाक।

अर्थक साझा स्वामित्वक पेचीदगी

व्यापारी पूछैत अछि—एहन नियमसँ नारा बनत केना? नेता साझा शब्दक दावेदारी करैत अछि। बा साझेदारी आ लूट बीच अन्तर रखैत छथि। एतय एक नाजुक प्रश्न शेष रहैत अछि: सार्वजनिक शब्द सभक छी, मुदा पीड़ितक अनुभवक बिना ओकर सन्दर्भ बदलनाइ शोषण बनि सकैत। उपन्यास एहि टकरावकें पूरा वैधानिक सिद्धान्तमे परिवर्तित नहि करैत, लोकचर्चाक तनाव रूपमे राखैत अछि।

कण्ठ धरि अगिला संक्रमण

अन्तमे उखड़ैत छपल अक्षर सभ बच्चाक हथेलीपर रंग छोड़ैत अछि। एहि दृश्यसँ अर्थ-चोरीक बिम्ब पुनः शरीरपर घुरैत अछि। अगिला मूल अध्याय कण्ठक पहरा अछि—अक्षरक पाछाँ आवाजक स्वामित्व प्रश्नरूपेँ उठत। एहि

अनुक्रममे लूटक तकनीक क्रमशः रूप बदलैत अछि: नाम कैँ क्रमांक बनाउ, अर्थ कैँ प्रचार बनाउ, आ ओहि स्वरकैँ रिकॉर्डिंगक अधिकारमे बाँधू। कथात्मक सन्धि स्पष्ट आ असमाप्त अछि।

प्रकरण २१६ | मूल अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

आवाजक देह आ संग्रहक आकर्षण

‘अर्थक आत्मा’क बाद रिकॉर्डिंगक ‘नामक स्वर-संग्रह’ यन्त्र चौपाल लग राखल भेटैत अछि। ओ अपनाकैँ श्रवण-संरक्षणक साधन कहबैत अछि; नाम-पाठ भविष्यमे सुनाओल जा सकत, ई प्रस्ताव सुनबामे उपयोगी लागैत अछि। मुदा कागचक छोट अक्षर संस्थाकैँ ध्वनि-अधिकार देबाक शर्त राखैत अछि। कथाकार सहेजबाक वास्तविक इच्छा आ स्वामित्वक नुकायल दावा बीच नाटकीय द्वन्द्व रचैत छथि। यन्त्र स्वयं सम्पूर्ण खलनायक नहि; अनुबन्धक असमान शर्त ओकर राजनीतिक देह अछि।

पीतर डिब्बाक लोभिल कान

यन्त्रक चमचम मुख आ छोट छेद सभ अनन्याकैँ अन्हार जीवक कान जेकाँ बुझाइत अछि। धूपमे गरम पीतर सतह आ भीतरक यान्त्रिक तापक अन्तर स्पर्शद्वारा उद्घाटित होइत अछि। देहक गरमी आ डिब्बाक गरमी एके नहि—एहि सूक्ष्म संवेदनात्मक विरोधक सहारे जीवित श्रवण आ तकनीकी संग्रहक भिन्नता पाठक अनुभव करैत अछि। ‘लोभक कान’ नाम बादमे देब एहि आरम्भिक दृष्टिबिम्बक कथात्मक परिणति अछि।

नियम-संविदाक असमान भाषा

श्रवण-संरक्षक ‘सामुदायिक हित’ आ ‘सामूहिक सहमति’क शब्द प्रयोग करैत अछि; मीरा आ अनन्या व्यक्तिगत नाम आ आवाजक अधिकार पूछैत छथि। सामूहिक दुखक चित्रणक कारण व्यक्तिगत अनुमतिक सीमा मेटि नहि जाइत। एहि अध्यायमे अधिकारक संघर्ष आँकड़ा, नाम वा चित्र सँ आगाँ कण्ठक नान्हि काँप आ उच्चारणक भिन्नतासँ जुड़ैत अछि। संस्थागत समन्वयक भाषा एतय पीड़ितक स्वीकृतिसँ भिन्न ठहरैत अछि।

उज्ज्वलक मायक धीमा उच्चारण

नाम-पाठक आरम्भमे उज्ज्वलक माय अपन बेटाक नाम धीरे बाजब चुनैत छथि। यन्त्रक सोझाँ बैसबाक दबावक उत्तरमे ओ कहैत छथि—डिब्बा धीरे नहि सुनि सकय तँ डिब्बा बहीर अछि। ई छोट संवाद आवाजक ‘गुणवत्ता’क माप उलटि दैत अछि। कण्ठक असमान मात्रा, स्वरक काँप आ बोलनिहारक निर्णय कथा भीतर महत्त्वपूर्ण; यन्त्रक समान मानक नहि। स्त्रीक प्रत्युत्तर उपहास नहि, स्वामित्वक घोषणा अछि।

दाँत-विहीन वृद्धक टूटा स्वर

दोसरा नाम-पाठमे वृद्धक दाँत कम भेलाक कारण उच्चारण टूटैत अछि। रिकॉर्डिंगक लोक फेर स्पष्ट बाजबाक कहैत अछि; वृद्ध अपन मृतकक नाम यन्त्रक सुविधा लेल बदलनाइ अस्वीकार करैत छथि। कथात्मक दृष्टिसँ ई प्रसंग भाषिक ‘त्रुटि’क मूल्यांकनक शक्ति प्रश्नित करैत अछि। गरिमायुक्त अभिलेख लेल आवाजक असमानता

स्वीकारब आवश्यक अछि; अन्यथा संग्रह पद्धति ओकरा सभकेँ मेटा देत जिनकर कण्ठ पूर्वहिं उम्र वा शोकसँ बदलि गेल।

रोदन जखन नाम बनैत अछि

पुलमे गुम दादाक नाम कहए गेल बालकक गला रुँधि जाइत अछि। यन्त्र स्पष्ट उच्चारण माँगैत अछि; अनन्या रोदनकेँ स्वयं गवाहीक स्वर मानैत छथि। हरियर बिन्दु पर पानिक बून्द आ न बोलि सकल बालकक नोर कथाक सघन भावबिम्ब अछि। एहि दृश्यकेँ तकनीक द्वारा ‘अर्थ नहि पकड़ि सकल’ कहब रूपक अछि; वास्तविक आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे संग्रहक समय बोलनिहार पर साफ उच्चारणक दबाव किएक होए।

भावनात्मक ध्वनिक मूल्य आ बजारक प्रवेश

रोदन रिकॉर्ड करबामे यन्त्रक किरकिराहट आ चन्द्रपालक ‘भावनात्मक ध्वनि मूल्यवान’ टिप्पणी निर्णायक क्षण अछि। जे स्वर नामक सम्बन्धक भीतर रहबाक चाही, से नब बाजारी आँकड़ा बनबाक कगार पर अछि। देविका तुरन्त एहि वाक्यकेँ सार्वजनिक करैत छथि। बालकक आंशिक मौन आ व्यापारीक स्पष्ट लाभबोधक विरोध नाटकीय दृश्यक तनावक मूल अछि।

जीवित कान बनाम स्वामित्ववाला संग्रह

मीरा नामक घरक अनुमति, रोदनहारक अधिकार आ संस्थागत स्वामित्वक अस्वीकारक नियम रखैत छथि। सत्यव्रत जखन हस्तक्षेप करैत छथि, तखन भविष्यक संरक्षणक नाम पर वर्तमानक अधिकार छीननाइ गलत कहैत छथि। एतय गद्य रिकॉर्डिंगकेँ सदा लेल निषिद्ध नहि करैत; ‘सुननाइ पहिने, संग्रह बादमे’क अनुक्रम निर्धारित करैत अछि। उपकरण हटब अस्थायी निर्णय अछि; न्यायपूर्ण अभिलेखनक प्रश्न खुले रहैत अछि।

कण्ठक विविधता आ सामूहिक लय

रातिमे बिनु यन्त्रक लोक निकट-निकट बैसैत छथि। ककरो स्वर काँपैत, ककरो जीह अटकैत, ककरो नोर बीचमे अबैत; तथापि ओ असमान आवाज सभ सँ कबड्डीक साँस-जेकाँ सामूहिक लय बनैत अछि। लेखक एकरूप कोरसक बदला भिन्न कण्ठक सम्बन्ध बनबैत छथि। एहि दृश्यमे समुदायक अर्थ सब एकहि तरह बजब नहि, भिन्नता सहित एक-दोसराकेँ सुनबाक क्षमता अछि।

बा-कथनमे सुननाइक देह

बा कहैत छथि जे डिब्बा सुनि सकैत अछि, मुदा ओकर पेट नहि दुखैत। ई वाक्य शाब्दिक यन्त्र-विवरण नहि; सहानुभूतिपूर्ण सुननाइ आ भण्डारणक नैतिक अन्तरक लघु रूपक अछि। जीवित श्रोता नामक पाछाँ सम्बन्ध, हानि आ दायित्वक भार लैत अछि। सामाजिक ज्ञानक एहि देहगत शर्तकेँ कथाकार वृद्ध स्त्रीक अनुभवसँ उद्घाटित करैत छथि; औपचारिक भाषाक बाहरक प्रज्ञा एक बेर फेर कथनक केन्द्र पबैत अछि।

‘लोभक कान’ नामकरणक उलटफेर

अनन्या यन्त्र हटा देबासँ पहिने ओकरो नाम लिखबैत छथि—‘लोभक कान आयल, सुनब नहि सीखल, घुरल।’ एहि वाक्यसँ नाम-पहराक विधि विरोधी वस्तुपर सेहो लागू होइत अछि। अपराधी वा औजारकेँ केवल अज्ञात खतरा कहि छोड़बाक बदला ओकर प्रयोग आ परिणामक नाम रखल जाइत अछि। ई अभिलेख भविष्य लेल चेतावनी बनैत अछि, तात्कालिक विजयक उत्सव नहि।

सुननाइ, तकनीक आ सम्भावित सहअस्तित्व

उपन्यास तकनीकी स्वर-संरक्षणक आवश्यकता प्रारम्भमे स्वीकार करैत अछि, मुदा अनुचित अधिकार-शर्तक कारण कार्यक्रम रोकैत अछि। एहि भेदकेँ समीक्षा अवश्य सुरक्षित राखत: ध्वनि-अभिलेख स्वयं चोरी नहि, बिनु अनुमति स्वामित्व आ लोभक अधीन भेला पर शोषण बनैत अछि। उचित सहमति, श्रमक दाम, साझा निर्णय आ वापस लेबाक अधिकारक विस्तृत व्यवस्था पाठमे एखन पूर्ण रूपेँ निश्चित नहि। एतय पहरा व्यावहारिक भविष्यक आरम्भ अछि।

‘लेखनी’क अगिला संकेत

अन्तिम पन्नापर ‘लेखनी’ शब्द चमकैत अछि। कथाकार बतबैत छथि जे आवाज कैद नहि भऽ सकल तँ ओकरा रोकबाक लेल भाषा, छपाइ आ पाठपर अगिला दावा आबि सकैत अछि। ई अग्रदर्शन नव संचयी शृंखलाक अन्तकेँ अगिला अध्यायक प्रवेश बनबैत अछि। मिटाओल नाम सँ अर्थ, अर्थ सँ कण्ठ, आ कण्ठ सँ लेखनी धरि दबावक रूप बदलैत जायत; एहि कारण २०९–२१६ समीक्षा-शृंखला पूर्ण विराम नहि, नब प्रश्नक व्यवस्थित आरम्भ पर ठहरैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : माटिसँ कण्ठ धरि

अध्याय १०८–११५क कथाविस्तार एक प्रवाहमान शृंखलाक रूपमे देखाइत अछि। माटि बीजक अधिकार आ भूमि-वितरणक प्रश्न उठबैत अछि; जल नामकेँ स्थिर अभिलेखसँ चलैत मार्गमे बदलैत अछि; आगि दस्तावेज नष्ट करैत हुएओ राखिकेँ साक्षी बनबैत अछि; वायु कथन आ अफवाहक जिम्मेदारी पूछैत अछि; आकाश मेटाओल रिक्ति आ प्रतीक्षारत रिक्ति बीच अन्तर करैत अछि। ई केवल प्रकृतिक पाँच तत्त्वक सजावटी अनुक्रम नहि। प्रत्येक तत्त्व नाम-पहराक एक अलग संस्थागत कमजोरीकेँ सामने आनैत अछि।

एहि क्रमक दोसर चाप अध्याय ११३–११५मे खुलैत अछि। शब्दक देह सँ अर्थक आत्मा आ फेर कण्ठक पहरा धरि कथा पहुँचैत अछि। एके “उपस्थित” शब्द परिवारक उत्तर, सरकारी विज्ञापन आ अनाम ग्रहक स्वप्न-दृश्यमे अलग अर्थ धारण करैत अछि। शब्दक अधिकार कागच पर रहलासँ ओकर अर्थ सुरक्षित नहि रहैत; अर्थ जीवित रहितो आवाजक अभिलेखन अधिकार संस्था द्वारा लूटल जा सकैत अछि। एहि प्रकार माटिसँ आरम्भ भेल अधिकारक प्रश्न कण्ठमे समाप्त नहि, आरो सूक्ष्म रूपमे घुरि अबैत अछि।

फोकलाइज़ेशनक दृष्टिसँ कथाकार एक सर्वज्ञ दृष्टि पर निर्भर नहि रहल छथि। धीरमतीक हथेली, पनिडुब्बीक जलदृष्टि, हेमनारायणक कर्ज-बन्धन, मीरा द्वारा निजताक रक्षा, देविकाक सूचना-सावधानी, सत्यव्रतक लिखित

नियम आ अनन्याक बाल-निर्णय—ई सभ भिन्न मानवीय स्थिति सँ एकहि समुदायकेँ देखबैत अछि। प्राकृतिक पदार्थक आवाज सभकेँ इएह पात्र समाजक व्यवहारमे अनुवाद करैत छथि। एहि कारण जादुई दृश्यसँ सामाजिक कार्यक कारण-शृंखला पूर्णतः ओझराइत नहि अछि।

कबड्डीक आवर्ती छवि एक विशेष संरचनात्मक धागा अछि। पहिने नामक पहरा माटिक रेखामे, फेर जलक वृत्तमे, आगिक राखिक घेरामे, हवाक तानल साँसमे आ आकाशक रिक्त ठाममे प्रवेश करैत अछि। शब्दक देह अध्यायमे पारीक नियम बदलि शब्दक कर्म पूछब बनैत अछि। एहि आवृत्तिक आलोचनात्मक मूल्य ओकर बदलैत नियममे अछि; मात्र शब्दक पुनरावृत्ति कथा-गति समझा नहि सकैत।

आठू अध्यायक परिणाम सीमित आ सशर्त अछि। पाँच खेतमे बीज रोपल गेल, मुदा फसलक स्थायी अधिकार तय नहि; जलक नब नक्शा बनल, मुदा बोतलबन्द श्रद्धाक सौदा शुरू भेल; आगिक दोषक एक कड़ी भेटल, मुदा अपराध-जालक सम्पूर्ण निर्णय शेष; हवाक नियम बनल, मुदा अफवाह आ असहमतिक सीमा शेष; आकाशक रिक्ति खुलल, मुदा ओकर रक्षा अनिश्चित; कण्ठक यन्त्र हटाओल गेल, मुदा न्यायपूर्ण दीर्घकालीन ध्वनि-संग्रहक व्यवस्था बनल नहि। एहि अपूर्णताक कारण कथा अग्रसर रहैत अछि।

मूल पाठमे जे स्वप्नक अनाम ग्रह, गोहिक प्रतीक, बोलैत माटि, जलक अक्षर वा जादुई राखि देखाइत अछि, ओकरा कथात्मक सम्भावना आ प्रतीकात्मक घटना रूपमे पढ़ल गेल अछि। बाह्य ऐतिहासिक तथ्य, वैज्ञानिक अवलोकन वा वास्तविक न्यायिक निर्णयक स्वयंसिद्ध प्रमाण बनाकऽ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। एहि सीमा-सचेत पद्धतिसँ दीर्घ उपन्यासक सामाजिक यथार्थ आ जादुई कथनक भिन्न स्तर स्पष्ट रहैत अछि।

अध्याय ११५क अन्तमे “लेखनी”क संकेत नब दाबक घोषणा बनैत अछि। आवाजपर संस्थागत अधिकारक विवादक बाद छपाइ, पाठ, अभिलेख आ भाषा नियन्त्रणक बाट खुलबाक सम्भावना कथा स्वयं रखैत अछि। तेँ एहि नव संचयी शृंखलाक पहिल खण्ड एक व्यवस्थित संक्रमण पर समाप्त होइत अछि: प्रकृतिक स्मृति सँ भाषिक स्मृति, आ भाषिक स्मृतिसँ लेखनक आगामी संघर्ष धरि।

प्रकरण २१७ | मूल अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

कण्ठ-पहरासँ मौनक पहरा धरि

अध्याय ११५मे कण्ठक अभिलेखन पर संघर्ष भेलाक बाद अध्याय ११६ मौनकेँ कथाक केन्द्रमे अनैत अछि। ई विषयान्तर नहि, पूर्वस्थापित संरक्षणक मर्यादाक कठोर परीक्षा अछि। जे समुदाय ककरो आवाज चोरी होएबासँ बचेबैत अछि, ओकरा एखन ई बुझबाक अछि जे सभकेँ बाजबाक लेल बाध्य करब सेहो अपहरण भऽ सकैत अछि। लेखक एहि संक्रमणकेँ पाठशालाक एक असामान्य निःशब्द दिन द्वारा घटित करैत छथि।

मौनक द्वैधता: अपराध आ अधिकार

आरम्भिक कथावाचकीय स्वर मौनक दू भिन्न सामाजिक अर्थ सामने रखैत अछि। सत्यव्रतक पहिल मौन अन्याय देखितो नहि बोलबाक दोष छल, जबकि पीड़ितक मौन अपन देह आ स्मृतिक सुरक्षाक निर्णय भऽ सकैत अछि।

एहि भेदकेँ केवल नारा नहि बनाओल गेल; सत्यव्रत स्वयं खाली हाथ ठाढ़ भऽ अपन अनुभवसँ ओकर कठिनाई देखबैत छथि। पात्रक पूर्व अपराध एहि नब अवधारणाकेँ नैतिक वजन दैत अछि।

खाली कटोराक दृश्य-विन्यास

देविका पाठशालाक बीचमे एक खाली कटोरा राखैत छथि। कथाकार ओकर भीतर वस्तु नहि, सुनबाक सम्भावना देखबैत छथि। कटोरा अभिनयक एक ठोस केन्द्र बनैत अछि, जकरा दिस प्रत्येक पात्रक नजरि घुरैत अछि। बादमे उज्ज्वलक माय ओहि कटोराकेँ अपन नोरसँ नहि भरैत छथि; हुनकर चुप्पी राखबाक क्रिया नाटकीय प्रतिलोम अछि। रिक्त वस्तु अमूर्त दुःखकेँ प्रदर्शन नहि, गरिमामय उपस्थितिमे बदलैत अछि।

कथाक क्रियात्मक विराम

पहिल दिन शिक्षक, अनन्या आ ईरा सेहो निःशब्द बैसैत छथि। ई ठहराव कथाक गति रोकैत नहि, सुनबाक नवीन शर्त बनबैत अछि। उपन्यासमे पहिने वार्तालाप, घोषणा, दस्तावेज आ लोकगीत प्रचुर रहल; एहि बेर मौनक अवधि पाठककेँ उपस्थित देह, पात, पाथर आ खाली कटोराक सूक्ष्म संकेत पर ध्यान देबए विवश करैत अछि। गति कम कऽ कथा अभिव्यक्तिक क्षेत्र बढ़बैत अछि।

आवाज-संग्रहक अनुबन्ध आ छोट अक्षर

नगरसँ आएल ध्वनि-संग्रह मंडली मौखिक धरोहरक संरक्षणक वचन दैत अछि, मुदा पर्चाक छोट अनुच्छेदमे भविष्यक संवर्धित प्रस्तुति लेल उपयोगक अनुमति नुकायल अछि। ई दस्तावेजी तनाव पूर्वक स्मृति-निविदा आ श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगसँ जुड़ैत अछि। स्वीकृतिक सार्वजनिक भाषा आ नियन्त्रणक सूक्ष्म शर्त बीचक दूरी सामाजिक हिंसाक कथा रचैत अछि। मीरा अनुबन्धक भाषाकेँ कण्ठक देहगत अधिकारसँ टकरबैत छथि।

मीरा द्वारा आवाजक देह रूपमे स्थापना

मीराक प्रश्नमे ध्वनि वस्तुसँ व्यक्ति-सम्बन्धमे स्थानान्तरित होइत अछि। आवाजक नकल बना सकब तकनीकी दक्षता भऽ सकैत अछि, मुदा आवाज पर अधिकार ताहिसँ सिद्ध नहि होइत। हुनकर स्वयं झेलल निजता-हिंसाक प्रसंग एहि हस्तक्षेपकेँ चरित्रसंगत बनबैत अछि। कथाकार मीराक कथनकेँ अनुभवरहित वैचारिक सूत्र नहि रहने दैत छथि; पुरान भयक देहगत स्मृति एकर पाछाँ उपस्थित अछि।

चन्द्रपाल आ राघवक असफल माध्यम

चन्द्रपाल मौनमे सेहो कण्ठक व्यापार देखैत अछि, मुदा अपन गलाक सुखा जाएब ओकर व्यवसायी दृष्टिकेँ बाधित करैत अछि। राघवक उपकरण पर ध्वनि-संग्रहक अवसर देखाइत अछि, पर सन्देश सभ ध्वनिहीन भऽ जाइत अछि। दुनू दृश्य अपराधी-पात्रक भीतर अलग-अलग फोकलाइज़ेशन अछि। कथाकार ओकरा सभकेँ तुरन्त सुधरल घोषित नहि करैत; व्यापारक आदत आ आत्मबोधक टकराहट कायम रखैत छथि।

नब अभिलेखमे जानबूझि रिक्त पन्ना

नाम-पाठक रजिस्टरमे पहिल बेर एहन पन्ना जोड़ल जाइत अछि जाहि पर शीर्षक अछि—जे नहि बाजल, मुदा उपस्थित छल। सामान्य अभिलेख सूचना भरबाक माँग करैत अछि, एतय संरक्षित रिक्ति स्वयं अभिलेखीय निर्णय बनैत अछि। ई रिक्ति अज्ञात व्यक्ति पर अनुमान थोपबाक बदला समय आ अधिकार सुरक्षित रखैत अछि। नामक पहराक पूर्वपरम्परा अपना भीतर अनिश्चितताक ठाम बनाबैत अछि।

नि:शब्द बालिकाक प्रवेश

नकली भूतक जुलूसमे मुखौटा उतारनिहार बालक अपन एहन बहिनकेँ लऽ अबैत अछि जिनकर कण्ठमे जन्मसँ ध्वनि नहि अछि। ओ पात पर रेखा बनाकऽ कटोरामे रखैत छथि। हुनकर परिचय केवल वञ्चनाक चिह्न नहि; हुनकर खेलमे उतरबाक पहल सामूहिक नियम बदलैत अछि। कथाक दृष्टिकेन्द्र बाहरी व्याख्याकारसँ ओहि बालिका दिस सरकैत अछि, जे अपन अभिव्यक्तिक माध्यम स्वयं चुनैत छथि।

ध्वनिविहीन कबड्डीक श्रव्य विरोधाभास

बालिका बिना ‘कबड्डी’ उच्चारण कए खेल शुरू करैत छथि। आश्चर्य ई जे बाहरी वाणी हटितहि पएरक थपथपी, माटिक सरसराहट आ कपड़ाक घर्षण स्पष्ट भऽ उठैत अछि। कथाकार ध्वनिक पूर्ण अभाव नहि, प्रमुख ध्वनिक अनुपस्थितिमे गौण ध्वनिक उद्भव देखबैत छथि। एहि इन्द्रियगत पुनर्विन्याससँ मौन सेहो बहुआयामी श्रवण-अनुभव बनैत अछि। खेल सामूहिक समझक नव व्याकरण रचैत अछि।

मातृशोकक निज समय

उज्ज्वलक माय खाली पन्ना पर हाथ रखैत छथि आ एहन अनुभव व्यक्त करैत छथि जाहिमे बेटा हुनकासँ किछु नहि माँगैत। ई पंक्ति पूर्वक डिजिटल मृत्यु आ स्मृति-पुनरावृत्तिक बीच शोकक स्वतन्त्र क्षण बनबैत अछि। मातृपात्रकेँ सदिखन सार्वजनिक गवाही देबाक आग्रहसँ मुक्त कएल गेल अछि। पाठ एहि क्षणकेँ व्यक्तिगत शोकक निज समय रूपमे सुरक्षित रखैत अछि, समाधान घोषित नहि करैत।

मौनक बिन्दु आ जादुई यथार्थ

खुलल खाली पन्नाक कोनामे दीयाक धुँआ सँ कारी बिन्दु उभरैत अछि। बच्चा सभ ओकरा मौनक बिन्दु कहैत अछि। ई लघु चमत्कारक महत्त्व तकर असामान्य उत्पत्तिसँ कम, सामाजिक अर्थसँ बेसी अछि: जे लिखल नहि गेल, ओकर अवशिष्ट छापो बचाओल जाए। लाउ किन-हंगक स्वप्नमे मौनक वृत्त पहुँचब कथाक निजी दृश्यकेँ दूरस्थ व्यापार-जालसँ जोड़ैत अछि, बिना ओकरा बाह्य तथ्य बनौने।

अगिला ऋणक आरम्भ

मौनक पहरा सफल भेल बुझाइत अछि, मुदा अध्याय एहि सफलता पर स्थिर नहि रहैत। सुनल नाम आ संरक्षणक ऋण अगिला अध्यायक प्रश्न बनबाक तैयारी करैत अछि। एहि संरचनामे प्रत्येक समाधान अपन एकटा

अनुत्तरित दायित्व पैदा करैत अछि। अध्याय ११६क उपलब्धि ई अछि जे स्मृति-रक्षणक पद्धति बोलबाक स्वतन्त्रता जेकाँ नहि बोलबाक स्वतन्त्रताक रक्षा सेहो करबाक क्षमता पबैत अछि।

प्रकरण २१८ | मूल अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

सुनल नामसँ करबाक कार्य धरि

अध्याय ११७ पहिलहि वाक्यसँ सुनल नामकेँ ऋण बनबैत अछि। ऋणक प्रचलित आर्थिक अर्थ गामक महाजन, बटाई, बैंक आ गिरवीक अनुभवसँ जुड़ल अछि; लेखक एही शब्दकेँ पुनर्परिभाषित कऽ स्मरणसँ उपजल उत्तरदायित्व देखबैत छथि। एहि कारण अध्याय केवल स्मृति-गाथा नहि; कथानकमे नाम-पाठक पाछाँ करबाक श्रमक माँग उठैत अछि। एकहि शब्दक अर्थ-स्थानान्तरण कथाक मुख्य गतिशीलता अछि।

भीत पर कोयलासँ लिखल प्रश्न

बच्चा सभ पाठशालाक भीत पर लिखैत अछि जे सुनल नामक ऋण के उठाओत। कोयलाक घर्षण, झड़ैत चुना आ अक्षरक खुरदराहट दृश्यकेँ दार्शनिक घोषणासँ भौतिक क्रियामे बदलैत अछि। प्रश्न भीतक सजावट नहि, सामूहिक कामक निर्देश बनैत अछि। भीत सरकारी अभिलेखक ठाम नहि लैत, मुदा ओकर बाहर अपन प्रश्न लिखबाक स्थानीय अधिकार स्थापित करैत अछि।

घर-घर नाम-खोजक बहुवाचिक रचना

ईराक अभ्यासमे प्रत्येक बच्चा अपन घरसँ एहन नाम अनबाक प्रयास करैत अछि जे अपमानसँ पुकारल जाइत छल वा पूर्णतः दबायल छल। पुरान सन्दूक, बही आ कोठी-तरक खोजक दृश्य सभ स्मृतिक समान्तर घरेलू संग्रहालय बनैत अछि। एकहि कथावाचक सबटा इतिहास नहि सुनबैत; बाल-पात्र सभ अलग सामाजिक दरारक सूचना अनैत अछि। सामूहिक कथनक ई रूप उपन्यासक विस्तृत फलककेँ विश्वसनीय आ बहुध्वनिक बनबैत अछि।

चर्मकारणी नामक अधूरा इतिहास

एक बालक ‘चर्मकारणी’ लिखि आनैत अछि, मुदा स्त्रीक पूरा नाम नहि भेटैत। एहि असमानतामे जातिसूचक चिन्ह बचल अछि, व्यक्ति अदृश्य अछि। कथाकार एहि अनुपस्थितिकेँ सहज अनुमानसँ पूरा नहि करैत; मीरा एक रिक्त ठाम लाल घेरा बनाकऽ सुरक्षित रखैत छथि। स्मृति-ऋणक पहिल कठिन परीक्षा एतहि अछि: अज्ञात स्त्री लेल सहानुभूति व्यक्त करब आसान, हुनकर नाम नहि जानबाक इतिहास स्वीकारब अधिक कठिन।

सम्मान-गाथा आ असुविधाजनक जीवन

गंगेशक विद्वत्ताक गौरव कथामे ओहि स्त्रीक अनुपस्थितिक संग रखल गेल अछि जिनकर परिचय जातिमे सीमित करि देल गेल। बच्चाक प्रश्न शास्त्रीय विवादक फैसला नहि सुनबैत, इतिहासमे ककर नाम सम्हारल गेल आ

ककर नहि—ई चयन सामने रखैत अछि। आलोचनाक स्तर पर एतय महत्त्व वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक प्रमाणीकरणक दावा नहि, स्मृतिक बाचक आ मौन पात्र बीचक असमान सम्बन्धक विन्यास अछि।

गोपक अभिलेख: ऋणक उलटा लेखा

गोप कुमार पुरान खातासभ देखबैत छथि जाहिमे लूटनिहारक स्थान पर पीड़ितक खर्च, मृतकक स्थान पर अनुपस्थिति आ जिम्मेदारीक स्थान पर प्रक्रिया अछि। ई अभिलेखीय विपर्यय उपन्यासक आवर्ती पद्धति अछि। लेखा-बही कथानकमे तटस्थ साक्ष्य नहि रहैत; ओकर वर्गीकरण स्वयं संघर्षक विषय बनैत अछि। पाठक देखैत अछि जे ककरा देनदार कहल जाए, तकरा सामाजिक शक्ति तय करैत अछि।

नामक संग एकटा ठोस काज

बच्चा सभ नाम-पाठक प्रत्येक प्रसंगसँ काज जोड़बाक नियम बनबैत अछि—मजदूर लेल सम्मान आ सुरक्षा, ठगल युवक लेल सूचना-सावधानी, स्त्री लेल निजताक पहरा, जातिसँ दबाओल लोक लेल साझा भोजन, नदीक पीड़ित लेल जलाधिकार। एहि सूचीक विशिष्टता महत्त्वपूर्ण अछि। एकहि सार्वभौमिक फूलमालासँ सभ दुःख पूरा नहि होइत; प्रत्येक कथानक-दुख अपन अलग सामाजिक उत्तर माँगैत अछि। नाम-पाठ सामाजिक क्रियाक योजनाबद्ध शृंखला बनैत अछि।

मुक्ति-योजनाक भाषा द्वारा कथात्मक फन्दा

अपरिचित बाबू ‘स्मृति-ऋण मुक्ति योजना’क पत्र लऽ अबैत अछि। सम्मान-राशिक बदलामे परिवारकेँ आधिकारिक स्मारकक कथा मानबाक शर्त देल जाइत अछि। ई आर्थिक सौदा शोकक स्वतन्त्र स्मरणकेँ नियन्त्रित कथामे बदलबाक प्रयत्न अछि। ‘मुक्ति’ शब्द स्वयं शीर्षकक नैतिक अर्थकेँ उलटबैत अछि: जखन पीड़ितकेँ अपन कथन छोड़बाक मूल्य भेटैत अछि, तखन ऋण उतरैत नहि, ओकर मालिक बदलैत अछि।

बटुकनाथ आ चन्द्रपालक असुविधाजनक स्थिति

बटुकनाथ अपन देर-सँ-आयल क्षमाक बाद बुझैत अछि जे आँसू देला मात्र ऋण नहि उतरैत। चन्द्रपाल लेल दान-पेटी पुरान प्रतिशतक नब रूप भऽ सकैत अछि। राघवक जाल स्मृति-ऋणकेँ छवि आ योजना बनाबय चाहैत अछि। एहि तीनू केन्द्रमे पात्रक रूपान्तरण अन्तिम नहि, संकटग्रस्त अछि। कथाकार दोषीक आत्मस्वीकार आ संस्थागत बदलावक बीचक दूरी कायम रखैत छथि।

मर्यादा कहि प्रश्न रोकबाक कोशिश

चर्मकारणीक रिक्ति गंगेशक कात राखबाक विरोधमे एक वृद्ध ‘मर्यादा’क भाषा अनैत अछि। ओहि प्रसंगमे मर्यादा चर्चा व्यवस्थित करबाक साधन नहि, अदृश्य स्त्रीकेँ फेर कात करबाक आग्रह बनि उभरैत अछि। बाल-पात्रक उत्तरमे गोहिक रूपक नव सामाजिक अर्थ पबैत अछि: जलक जीव देह चिबबैत अछि, जातिगत मर्यादा स्मृति चिबबैत अछि। ई रूपकीय पुनर्वितरण अध्यायक आलोचनात्मक धार अछि।

कबड्डीक रेखा आब उत्तरदायित्वक डोरि

रातिक खेलमे प्रत्येक नामक पाथरसँ सूक्ष्म रेखा खेलाड़ी धरि पहुँचैत अछि। ई जादुई दृश्य ओहि सामुदायिक ऋणकेँ देहपर अनुभव करबैत अछि जकर चर्चा दिन भरि चलल। पहिने कबड्डीक रेखा सीमा निर्धारित करैत छल; एतय ओ सामाजिक सम्बन्धक भार बनैत अछि। खेलक परिचित संरचना कायम रहैत, ओकर नियमक अर्थ बदलैत अछि, जाहिसँ लम्बा आख्यानमे पुनरावृत्ति नब प्रगति बनि सकैत अछि।

पत्रक भीजब आ अनुत्तरित प्रश्न

मध्यराति मुक्ति-योजनाक पत्र नम भऽ मोहर धुँधला करैत अछि, मुदा ‘मुक्ति ककर?’ स्पष्ट बचैत अछि। ई दृश्य प्रशासनिक आश्वासनकेँ अस्थिर बनबैत अछि। कथा एखन कोनो निश्चित न्यायिक परिणाम नहि दैत; लेखकीय प्रश्न आगामी संघर्ष बचा राखैत अछि। एहि अनिर्णयमे अध्याय दिसाबोधक अछि: स्मृतिसँ अनिवार्य रूपेँ करुणा नहि, उत्तरदायी कामक कठिन आरम्भ जन्मैत अछि।

प्रकरण २१९ | मूल अध्याय ११८ — देहक अधिकार

स्मृति-रक्षाक भौतिक मर्यादा

अध्याय ११८ स्मृतिक ऋणक बातकेँ देहक अधिकारसँ बाँधैत अछि। मृत देह, जीवित स्त्री, श्रमिकक औजार, जातिसँ अपमानित हाथ, निजी चित्र आ अस्थिक अंश—ई सभ अलग सम्बन्धक वस्तु छथि, मुदा संग्रहालयी भाषामे एकहिटा ‘संग्रहणीय वस्तु’ बनय लगैत छथि। लेखक एहि सूचीद्वारा संस्थागत दृष्टिक नृशंस समतलीकरण देखबैत छथि। प्रश्न स्वाभाविक रूपसँ उठैत अछि: संरक्षणक सीमा के तय करत?

विरासत-सूचीक विस्मयकारी वर्गीकरण

सूचीमे जड़ि-माटि, बाढ़िक जल-नमूना, कपड़ा, अस्थि-सदृश अंश, स्त्री-संस्मरण आ श्रमिक उपकरण एकठाम अछि। सूची जखन पढ़ल जाइत अछि, प्रत्येक नामक पाछाँ एक अलग गरिमा आ अनुमति प्रश्न खुलैत अछि। ई कागज उपन्यासक प्रमुख विरोधी वस्तु अछि: ओ परस्पर असमान जीवित सम्बन्धकेँ संग्रहणक समान वस्तु मानैत अछि। कथाकार बिनु उपदेश एहि समानकरणक भय दृश्य बनबैत छथि।

मीराक देहगत स्मृति आ भय

मीरा सार्वजनिक रूपेँ अधिकारक बात करैत छथि, मुदा अनजान फोनक घण्टी वा उठल कैमरा देखि हुनकर हाथ ठण्ढा पड़ैत अछि। लेखक हुनका निर्भय प्रतीकमे परिणत नहि करैत छथि; अनुभवक चोट हुनकर शरीरमे शेष रहैत अछि। एहि अन्तरसँ चरित्रक मनोवैज्ञानिक निरन्तरता सुरक्षित अछि। निजताक नियम एतय अनुभवसँ उपजल अछि, अमूर्त आदर्शक घोषणामात्र नहि।

ब्रूमक ‘संरक्षण’ आ देविकाक प्रतिवचन

बाहरी प्रतिनिधि संग्रहकेँ संरक्षणक नाम दैत अछि। देविका ओकर तुलना टिकट लगा कऽ दुख देखाबयवला प्रदर्शनसँ करैत छथि। संवादक संघर्ष शब्दक अर्थ पर अछि, मुदा परिणाम मृतक परिवारक सहमति पर ठाढ़ अछि। कथा आधुनिक तकनीक वा संग्रहणकेँ निरपेक्ष खलनायक नहि बनबैत; अधिकार-रहित संग्रहणकेँ सामाजिक हिंसाक माध्यम बतबैत अछि। एहि भेदकेँ बनौने राखब अध्यायक सन्तुलित पाठ लेल आवश्यक अछि।

आरुणिक पुल-नक्शा आ देहक अनुपस्थिति

आरुणि विरासत-सूचीक भीतर श्रमिक उपकरण देखैत छथि, मुदा श्रमिक परिवारक अनुमति नहि। हुनका पुरान पुलक नाप-जोख मोन पड़ैत अछि जाहिमे देहक अस्तित्व रेखा आ संख्या सँ हटि गेल छल। एगो अभियन्ताक स्मृति एहिठाम दृश्य-केन्द्र बनैत अछि। गद्य अपन पूर्वक पुल-दुर्घटनाक कथावृत्तकेँ वर्तमान संग्रह-प्रस्तावसँ जोड़ैत अछि, जाहिसँ भिन्न दुर्घटना सभ एकहि संरचनात्मक त्रुटिक पुनरावृत्ति देखाइत अछि।

बच्चाक हाथ आ सहमतिक नैतिक रोक

अनन्या बच्चा सभकेँ पहिने अपन हाथ देखबैत छथि। हाथ नाम लिखि सकैत अछि, मुदा वएह हाथ यदि अनुमति बिनु कपड़ा छुअए, फोटो लए वा अस्थि उठाबए तँ पहरुआसँ चोर बनि जाइत अछि। स्पर्शक एहि सूक्ष्म नियमनसँ कथाक नायकत्वक सहज आग्रह पर रोक लगैत अछि। ‘हम बचा रहल छी’ कहब मात्र दोसरा देह पर अधिकार नहि दैत—ई अध्यायक क्रियात्मक निष्कर्ष अछि।

स्त्री-राति-सभाक स्मरण

मीरा स्त्री सभक पूर्व राति-सभाक नियम फेर पढ़ैत छथि। एहि अन्तःकथात्मक पुनर्स्मरणसँ लम्बा उपन्यासक पछिला संघर्ष वर्तमान दृश्यकेँ आधार दैत अछि। कथावाचक स्त्रीक बोलबाक अधिकार आ नहि बोलबाक निर्णय दुनू सुरक्षित रखैत छथि। निजी रोदनक विस्तृत विवरण प्रस्तुत नहि करनाइ सेहो कथात्मक निर्णय अछि: अनुपस्थित वर्णन सम्मानजनक सीमाक रूपमे काम करैत अछि।

चर्मकार टोलामे कैमरा आ वृद्धाक रोक

लोक-संस्कृति दस्तावेज बनाबय आयल बाहरी दलक कैमरा पहिने दुआर, फेर हाथ, औजार आ चेहरासँ गुजरैत अछि। वृद्धा प्रश्न उठबैत छथि जे श्रम देखब आ अपमान बेचब एक बात नहि। दृश्य क्रमिक कैमरा-दृष्टिसँ बनल अछि; प्रत्येक नब फ्रेम संग स्वामित्वक प्रश्न तीक्ष्ण होइत अछि। पात्रक प्रतिरोध आवाजक जोरमे नहि, दृष्टिक स्वीकृतिक शर्तमे अछि।

देह-संहिताक पाँच नियमन

पाठशाला देहधारीक प्रथम अधिकार, मृतकक परिवार-सम्बद्ध गरिमा, जातिगत अपमानक निषेध, शोध-पर्यटनक अनधिकृत दावापर रोक, आ अबोल देहक मौनक सम्मान—एहन नियम लिखैत अछि। एहि विधानक महत्त्व एकर

स्थानीय रचनामे अछि। पात्रसभ कठिन घटनासँ नियम निकालैत छथि; कानूनक तैयार अनुकरण नहि करैत। कोनो नियम सबटा परिस्थिति हल करि देत, एहन दावा कथा नहि करैत।

सत्यव्रतक सीमित सहभागिता

सत्यव्रत मेहता अपन पूर्व कानूनी बहससभ याद करैत छथि जाहिमे देहक भय, श्रम वा अपमान ‘प्रकरण’ बनि गेल छल। ओ नायक जेकाँ नियम सुनाबय नहि उठैत; अनन्याक पन्ना पर सान वाक्य जोड़ैत छथि। हुनकर पाछाँ बैसल स्थिति पूर्व अपराधक स्मरण करबैत अछि। पात्रक परिवर्तन अधिकार केन्द्रीकरणसँ नहि, सुनब सीखबाक आवर्तसँ उभरैत अछि।

वस्तु घर घुरेबाक सांध्य-विधि

जे कपड़ा प्रदर्शनक पेटीमे जएबाक छल, ओकरा धूप देखाकऽ परिवारक घर घुराओल जाइत अछि; जड़ि-माटि अपन ठाम लौटैत अछि। ई उलटी यात्रा संग्रहालयक एकदिशी आवागमनक विरोधी संरचना अछि। कथा वस्तु-प्राप्ति नहि, सम्बन्ध-प्रत्यावर्तनकेँ घटना बनबैत अछि। कपड़ाक गन्ध आ धूपक ताप दृश्यकेँ अमूर्त अधिकारक घोषणासँ मुक्त करैत अछि।

जाति-रजिस्टरक स्वतः खुलल पन्ना

अन्तिम राति तहसीलक पुरान जाति-रजिस्टर अपने-आप खुजैत अछि। ई जादुई संकेतक अर्थ केवल भय उत्पन्न करब नहि। जखन देहक अधिकारक सार्वभौम संहिता बनैत अछि, तखन ओ परम्परागत वर्गीकरणसँ टकराएब निश्चित अछि। कथाकार एहि सम्भावित संघर्षकेँ जीवित वस्तु—पुरान रजिस्टर—द्वारा उद्घाटित करैत छथि। एहि संकेतसँ अगिला अध्यायक जाति-सङ्घर्षक बीज पहिले रोपल जाइत अछि।

प्रकरण २२० | मूल अध्याय ११९ — श्रमक देह

निज देहसँ श्रमिक देह दिस

अध्याय ११८मे देहक निजता आ स्पर्शक मर्यादा बनैत अछि; अध्याय ११९ ओहि विचारकेँ श्रमक काजक ठाम लऽ जाइत अछि। मृतकक नाम बचाएबासँ जीवित मजदूरक मजदूरी, विश्राम, पानि आ सुरक्षा धरि कथा पहुँचैत अछि। परिवर्तन कथात्मक रूपेँ अनिवार्य अछि: यदि देह पर अधिकार अछि, तँ काजक ठाम ओकर श्रम आ स्वास्थ्यक रक्षा बिना ओ अधिकार अपूर्ण रहत।

तीन वस्तुक आरम्भिक संरचना

आरुणिक सोझाँ फाटल मजदूर-जूता, सिमेन्टमे अटकल नह आ संख्या लिखल मजदूरी-पर्ची राखल अछि। एहि वस्तुत्रयमे देहक अनुपस्थिति आ परिश्रमक अवशेष एकसंग दृश्य होइत अछि। प्रत्येक वस्तु अलग इन्द्रिय-सूत्र दैत अछि—जूता स्पर्शक, नह चोटक, पर्ची संस्थागत विस्मृतिक। कथावाचक समग्र श्रमिक इतिहासकेँ किछु ठोस चिह्नमे केन्द्रित करबाक सामर्थ्य देखबैत छथि।

झगरू मिस्त्रीक घरवालीक गवाही

पुलक पाया लग खसल झगरू मिस्त्रीकेँ दुर्घटना-पत्रमे काजसँ अनुपस्थित लिखल गेल। हुनकर घरवालीक वक्तव्य घरेलू श्रमक स्मृतिसँ दफ्तरक अभिलेखकेँ असत्य ठहरबैत अछि। ओ बतबैत छथि जे जकर हाथ घरक चूल्हि धरैत छल ओकरा कागज मृत्युक दिन उपस्थिति सँ वञ्चित कऽ देलक। ई सूक्ष्म विरोधाभास लोकस्मृति आ कार्यालयीय श्रेणीक भिड़न्तकेँ दृश्य रूप दैत अछि।

मस्टर-रोलक अंकीय हिंसा

गोपक फाइलमे पुरुष ४७, स्त्री ९ आ अन्य ३ लिखल अछि, मुदा नामसभ नहि। संख्या बिना नामक श्रमिकेँ मात्र गनती बनबैत अछि। गोपक स्वयं बुझनाइ जे सुरक्षित डेटा अनिवार्य रूपसँ सुरक्षित मनुष्य नहि, हुनकर पात्र-विकासक आवश्यक क्षण अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एतय गद्य प्रत्यक्ष तथ्य-गणना नहि, गिनतीक चयनात्मक भाषाक विरोधाभास पर जोर दैत अछि।

भगेलू पासवानक पुलक दू भूगोल

भगेलू अपन पिताक प्रसंग सुनबैत अछि: सभ मजदूर एकहि पुल बनबैत छल, मुदा जातिक कारण भोजन आ पानिक पाँति अलग छल। पुल सार्वजनिक रूपेँ जोड़बाक स्थापत्य अछि, ओकर निर्माण-स्थल सामाजिक विभाजनक नक्शा। एहि विरोधी स्थानचित्रसँ विकासक भौतिक उपलब्धि आ श्रमिक समाजक अपमान एकसंग देखा पड़ैत अछि। गद्य एहि विरोधकेँ पात्रक गवाहीमे रखैत अछि, निराकार टिप्पणीमे नहि।

अभियन्ता आरुणिक आत्मसंकोच

आरुणि पुरान दुर्घटनाक नक्शा आ श्रमक अवस्थाक कागज सामने देखैत छथि। ओ केवल दोषी ठेकेदार पर आलोचना करि अलग नहि होइत; अपन अभियन्ता-पदक अनुपस्थित नामसभक जिम्मेदारीसँ सामना करैत छथि। एहि कारण हुनकर दृष्टिकेन्द्र प्रायः मौन आ वस्तुपर केन्द्रित अछि। पात्रक क्रियाशीलता जिम्मेदारीक कठिन स्वीकृतिमे देखाइत अछि, तुरन्त उद्धारक चमत्कारमे नहि।

‘अनस्किल्ड’सँ ‘माटि-ज्ञानी’क पुनर्नामकरण

सरकारी वर्गीकरणमे अनस्किल्ड कहल लोकक कौशलकेँ बच्चा सभ माटि-ज्ञानी नाम दैत अछि। श्रमक पेशागत पहचान बदलबाक एहि भाषिक क्रिया सँ कार्य-दक्षताक असमान मूल्यांकन उघड़ैत अछि। मुदा पाठक लेल महत्त्वपूर्ण ई सेहो अछि जे नाम बदललासँ मजदूरी अपने नहि बदलैत। अध्याय एतए भाषिक मरम्मति आ आर्थिक अधिकारकेँ एक-दोसरक पूरक रूपमे रखैत अछि।

नव निर्माणक ठोस शर्त सभ

विरासत-परियोजना स्थानीय रोजगारक प्रस्ताव अनैत अछि। आरुणि नामसहित अनुबन्ध, देविका समयपर मजदूरी, मीरा उपचार आ सत्यव्रत श्रमिक अधिकारक शिलालेखक प्रश्न रखैत छथि। जखन एक प्रस्तावपर अलग

पात्र अलग प्रश्न पुछैत अछि, तखन सभा बहुध्वनिक बनैत अछि। एतय राजकीय योजना एक खलनायकी पंक्ति मात्र नहि; ओकर कार्यान्वयनक विशिष्ट रिक्ति सभ कथानकर्कें संघर्ष दैत अछि।

मजदूर-देह आ म्यूल-अकाउण्टक रूपकीय साम्य

भगेलू श्रमिकक पसीना, देह आ मृत्युकेँ दोसराक लाभक खातासँ जोड़ैत अछि। चन्द्रपालक डिजिटल म्यूल-अकाउण्ट रूपक श्रम-शोषणक देहगत रूपमे फेर प्रयोग होइत अछि। ई रूपकीय समांतरता लम्बा उपन्यासक अलग-अलग कथावृत्तकेँ जोड़ैत अछि, मुदा ठगी आ मजूरी-शोषणकेँ एकहि घटना मानि नष्ट नहि करैत। दुनू ठाम मध्यस्थकेँ बचाकऽ उपजक स्वामित्व अलग करबाक साझा चाल देखाइत अछि।

नामक संग श्रम-पदक सामूहिक पाठ

रातिक नाम-पाठमे प्रत्येक श्रमिकक संग विशिष्ट काज पढ़ल जाइत अछि—पाया ढारनिहार, नाव धकेलनिहार, अक्सिजन सिलिण्डर खिंचनिहार, मृत देह घर पहुँचेनिहार। एहन सूची मृतककेँ केवल मृत्यु-दृश्य सँ परिभाषित होएबासँ बचेबैत अछि। कथा व्यक्तिक उपयोगिता नहि बेचैत; ओ ओकर सामाजिक योगदानकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। श्रमक क्रिया नामक जीवित व्याकरण बनैत अछि।

पएर धोएनाइक दुविधामय अनुष्ठान

अन्तिम दृश्य मे बच्चा सभ मजदूरक फाटल पएर धोबाक लेल पानि अनैत अछि। धूलि आ सिमेन्ट उतरिते चमड़ीपर बरखक दरारक नक्शा खुलैत अछि। पाठ स्पष्ट करैत अछि जे एकरा पूजा नहि कहल गेल। एहि सावधानीक महत्त्व अछि: श्रमक सम्मानकेँ अलौकिक पवित्रता बनाकऽ वास्तविक वेतन आ विश्रामक प्रश्न झाँपल नहि जाए। देहक यथार्थ अनुष्ठानक सजावटी ऊँचाईसँ बचल रहैत अछि।

खाली पाथर आ अदृश्य श्रमक भविष्य

समापनमे एहन श्रमिकक लेल पाथर राखल जाइत अछि जे काज करैत अछि मुदा देखाइ नहि पड़ैत। ई रिक्ति पहिने मौनक पन्ना आ चर्मकारणीक अधूरा नामसँ संवाद करैत अछि। लम्बी कथामे रिक्त स्थान अपन अलग पुनरावर्ती प्रतीक बनि गेल अछि। भविष्यक अध्यायक लेल सामाजिक अदृश्यताक प्रश्न खुला रखैत ई पाथर श्रमिकक सम्पूर्ण सूची बनि गेलाक दावासँ उपन्यासकेँ रोकैत अछि।

प्रकरण २२१ | मूल अध्याय १२० — न्यायक देह

श्रमिक पाथरसँ चलैत प्रश्न

अध्याय १२० पूर्ववर्ती श्रमिक-पाठक पाथर सभक तापसँ आरम्भ होइत अछि। नाम लिखल पाथर गरम, अनाम पाथर ओससँ भीजल—ई दृश्य न्यायकेँ अभिलेखसँ अनुभूतिक माध्यममे फेर रखैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे जकर देह गायब भेल ओकरा लेल न्याय स्वयं कोन रूप धारण करत। अध्यायक उत्तर कागजक तैयार निर्णय नहि, समुदाय द्वारा माटिक देह बनाबबाक सामूहिक प्रक्रिया अछि।

मूर्ति आ देहक विभाजन

आरम्भिक सूत्र मूर्ति द्वारा माँगल पूजाक विपरीत देह द्वारा माँगल उत्तरदायित्व बतबैत अछि। कथाकार एहि भेदकेँ पूरा अध्यायमे निभबैत छथि। कुम्हार बनौने माटिक आकृतिकेँ पूजा-वस्तु बनाबय वला प्रस्ताव आबैत अछि, मुदा ओकरा भीतर सुनबाक कान आ खाली छाती रखल जाइत अछि। एहिसँ स्मारकक स्थिरता आ लोकक जीवित पीड़ाक गतिशीलता बीचक संघर्ष मूर्त रूप पबैत अछि।

बूढ़ मजदूरिनक स्वरक केन्द्र

सभा आरम्भ होइतहि एक बूढ़ मजदूरिन कहैत छथि जे न्यायकेँ पसीनाक गन्ध सहबाक पड़त। कथा हुनकर बोलबकेँ विशिष्ट अधिकार दैत अछि, कारण हुनकर अनुभव बिनु प्रचलित न्याय-भाषा शरीरहीन रहि जाइत। बा ओहि स्वरकेँ दूध, राखि, कादो, रक्त आ नोरक गन्धक श्रृंखलामे विस्तार दैत छथि। इन्द्रियगत बिम्ब सामाजिक सिद्धान्तक स्थानी बनबाक बदला ओकर परीक्षण करैत अछि।

पुलक नक्शाक स्पर्श-द्वारा पुनर्पाठ

आरुणि पुरान पुलक नक्शा धरती पर पसारैत छथि। परिवार सभ ओहि ठाम हाथ राखैत अछि जतय मजदूरक पएर पड़ल छल। ई दृश्य कथनक स्तर बदलैत अछि: एकेक हस्ताक्षरक नकल मानल गेल नक्शा जीवित स्मृतिक स्पर्श-पट बनैत अछि। पएरक अनुपस्थितिकेँ हाथ द्वारा चिन्हब कथाक अभिलेखीय पुनर्स्थापन अछि; कागज नष्ट नहि, ओकर पढ़बाक क्रम बदलल जाइत अछि।

फाइल बन्द करबाक गोपक निर्णय

गोप कुमार भुगतान, दुर्घटना आ बकायाक फाइल खोलैत छथि, मुदा बच्चा सभ पहिने पएर सुनबाक आग्रह करैत अछि। गोपक फाइल बन्द करनाइ ज्ञानक अस्वीकृति नहि; विषयक दृष्टिकेन्द्र बदलबाक स्वीकृति अछि। एहि लघु क्रियामे डेटा-केन्द्रित पात्र अपना अभिलेखक सीमा पहचानैत अछि। कथा दस्तावेजकेँ आवश्यक मानैत हुएओ ओकरा मनुष्यक देहक ऊपर एकमात्र निर्णायक नहि बनबैत।

चींटीक चाल आ अनाम पाथर

‘नाम नहि भेटल’ पाथर पर चींटी अक्षरक बीच घूमि खाली स्थानपर ठहरैत अछि। ई बहुत छोट घटना अछि, मुदा कथाकार ओकरा मार्फत खोजक पैमाना बदलैत छथि। विशाल संस्थागत निर्णयक पाछाँ एक नन्हि जीवक गति सन्देहक केन्द्र बनैत अछि। वास्तविक चींटीक गतिकेँ सर्वज्ञ गवाही घोषित नहि कएल गेल; ओकरा पात्रसभक व्याख्यात्मक आकांक्षाक दृश्य बनाओल गेल अछि।

बहुस्थानीय माटिक एक देह

कुम्हार कमला किनार, पुलक पाया, चन्ना ठूँठ, उज्ज्वलक घर आ पनिडुब्बीक पोखरिसँ माटि अनैत अछि। एहि पाँच स्रोतक संयोजन कथा-वृत्तक अलग पीड़ाकेँ एक मूर्तिमे समेटैत अछि। मुदा एके माटिमे गूँथबासँ विशिष्ट स्थल

मेटैत नहि; प्रत्येक स्रोतक नाम कहल जाइत अछि। संयुक्त प्रतिमा सामूहिकताक बिम्ब होइतहुँ स्थानीय स्मृतिक पृथकता सुरक्षित रखैत अछि।

मजदूरिनक हथेली आ अभियन्ताक सहभागी दोष

स्त्री मजदूर सभ चूड़ी, जरल त्वचा आ फाटल आँगुरसहित माटिमे छाप छोड़ैत छथि। आरुणि अपन अभियन्ता हाथ संकोचवश रोकैत छथि; एक मजदूरिन हुनका कहैत छथि जे गलतीक हाथ बिना सुधार लेल आएल देह टेढ़ रहत। ई सम्वाद दोष-स्वीकारकेँ सक्रिय श्रमक माग बनबैत अछि। अन्तिम आकृतिमे शोषित आ उत्तरदायी पक्षक छाप एक संग अछि, मुदा हुनकर नैतिक स्थिति एक नहि भऽ जाइत।

कान लगबनिहार सत्यव्रत

सत्यव्रत अपन कलमक छाप देबाक इच्छा प्रकट करैत छथि। बा हुनका कान माटि लगाय लेल कहैत छथि। ई क्रिया हुनकर चरित्रक आरो एक उलटफेर अछि: जे व्यक्ति बहुत काल न्याय लिखैत रहल, ओकरा पहिने सुनबाक देहधारी अभ्यास करबाक अछि। कथावाचक क्षमाक औपचारिक घोषणा नहि करैत; नतमस्तक कानक छाप द्वारा पुनः शिक्षा देखबैत छथि।

लिंगविहीन, पदविहीन आकृतिक बनावट

साँझमे बनल माटिक देह न पुरुष अछि, न स्त्री, न देवता, न न्यायाधीश। एक कान धरती पर, हाथ पानिक दिशामे, पएर पुल आ ठूँठक दिशामे, छाती खाली। ई देहक विन्यास कथा-स्थानक नक्शा सेहो अछि। न्यायकेँ एक मुखाकृति वा उच्च आसनमे बन्द नहि राखि संसारक सम्बन्ध सभदिस उन्मुख कएल जाइत अछि। खाली छाती अनाम लोक लेल भविष्यक ठाम अछि।

काँस्य प्रस्ताव आ उपभोगक प्रलोभन

ब्रूमक प्रतिनिधि काँस्य ढलाइ, सुरक्षा-घेरा, प्रकाश आ टिकटयुक्त स्थापना चाहैत अछि। चन्द्रपाल डिजिटल नाम-चढ़ावेबाक सुविधा सोचैत अछि; राघव प्रतिकृति बनाबय चाहैत अछि। तीनू हस्तक्षेप माटिक नमनीय वस्तुकेँ नियंत्रित, बिकाऊ, स्थिर रूप देबाक कोशिश अछि। कथाकार अलग-अलग माध्यमक साझा व्यापारिक दृष्टिकेँ एके दृश्य पर लऽ अबैत छथि; विरोधी जालक अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

खाली पाथरसँ उपजल दरार

आधि राति अज्ञात मजदूरक खाली पाथर आकृतिक छाती पर रखिते माटि फाटैत अछि आ ओसक बून्द निकलैत अछि। कुम्हार दरारकेँ दोष नहि मानैत; भीतरक आवाज बाहर अयबाक बाट कहैत अछि। ई जादुई क्षणक पाठीय काम न्यायकेँ अभेद्य मूर्तिसँ हटाकऽ अपूर्ण आ सुननिहार रूप देब अछि। जँ प्रतिमा एकदम पूर्ण रहैत, तँ अनामक लेल ठाम कहाँ बचैत? प्रश्न दृश्य मे जीवित रहैत अछि।

पहराक हस्तान्तरण आ छाहक अगिला विधान

राति भरि पहरुआ कान माटि लगबैत छथि, एक नाम सुनैत छथि, अगिलाकेँ जगबैत छथि। सुननाइ व्यक्तिक भावना सँ सामूहिक पद्धति बनैत अछि। अन्तमे अनन्या ‘छाहक विधान’ लिखैत छथि, कारण देह बनलाक बाद ओकर पड़ैत छाहक अधिकार सेहो प्रश्न बनेत। शीर्षकक एहि अग्रसंकेतसँ अध्याय सुनिश्चित समाधान नहि, अगिला जटिलताक दुआर दैत अछि।

प्रकरण २२२ । मूल अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

न्यायक देहक पाछूक अदृश्य सलाख

अध्याय १२०क माटिक न्यायक देह बनल, मुदा अध्याय १२१ खुलैतहि देखबैत अछि जे समाजक भीतर जातिक अदृश्य पिंजरा अखनो अखण्ड अछि। ई क्रम रचनात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। न्याय रूप धारण करितहि ओकर सामाजिक कार्यान्वयन रोकबाक व्यवस्था सामने अबैत अछि। कथाकार पाठककेँ पूर्व उपलब्धि पर उत्सव करबाक अवकाश नहि दैत; प्राप्त देहक चारू कात पुरान क़ैदक सलाख देखबैत अछि।

पिंजराक रचना: वस्तु नहि, व्यवहार

पिंजराक डारि कुल, गोत्र, भोजन, रसोइ, स्पर्श, विवाह, श्मशान आ पानिक बँटवारा सँ बनल अछि। इएह वस्तु-व्यवहार सभ कथाक सामाजिक भूगोलकेँ जोड़ैत अछि। लोहाक पिंजरा देखाइत; सामाजिक पिंजरा दैनिक क्रियामे अदृश्य रहैत अछि। कथाकार रूपककेँ ठोस व्यवहारक उदाहरणसँ खोलैत छथि, तेँ ओकर अर्थ अमूर्त उत्पीड़नक सार्वत्रिक बिम्ब पर सीमित नहि रहैत।

वंशावलीक बूढ़ पहरुआ

एक ब्राह्मण परिवारक वृद्ध ताम्रपत्रक प्रतिलिपि, वंशावली आ पीयर पोथी लऽ अबैत छथि। पुरान कागजक गन्ध, पन्नाक कोर आ देहक चलब दृश्यकेँ संग्रहालयी गम्भीरता दैत अछि। मुदा हुनकर प्रश्न नाम लिखबाक अधिकारक सीमा स्थापित करबाक अछि। दस्तावेजी साज-सज्जा हुनकर कथनक सामाजिक शक्ति बढ़बैत अछि; अनन्या सभकेँ ओकर भाषिक अधिकार-स्रोत पर प्रश्न करबाक स्थान दैत छथि।

गंगेशक आवाजक कथात्मक प्रवेश

ठूँठक छाह पोथीपर पसारैत अछि आ एक अनिश्चित आवाज सुनाइ पड़ैत अछि। बा कहैत छथि जे गंगेश आयलाह। एहिठाम पाठ इतिहासक वास्तविक पुनरागमनक दावा नहि करैत; गंगेश कथाविश्वमे स्मृतिजनित आवाज रूपमे प्रवेश करैत छथि। कथावाचक पात्रसभक सुनाइ पड़ल अनुभव रखैत छथि, जाहिसँ मिथकीय उपस्थिति बहुजनक साक्षात्कारी दृश्य बनैत अछि, सत्यापनक बाह्य प्रस्ताव नहि।

विद्वत्ताक मूर्ति आ देहक चुप्पी

ईराक प्रश्न गंगेशक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थसँ शुरू होइत अछि, मुदा बाक उत्तर विचारकक जीवनक दबाओल प्रसंगक दिस जाएत। एहि स्थानान्तरणमे व्यक्तित्वक दूटा रचना भिड़ैत अछि—औपचारिक आदर्शीकरण आ सामाजिक असुविधासहित स्मरण। समीक्षाक केन्द्र ग्रन्थक वास्तविक महत्ता मापब नहि, कथावाचक कोन अंशकेँ बोलए दैत छथि आ कोन अंशक दमनकेँ कथानक बनबैत छथि, से अछि।

चर्मकारणीक अपूर्ण नाम आ कल्पित स्वर

ठूँठक फाँकि सँ झरल माटिमे जूताक छाप जेकाँ आकृति देखाइत अछि। ओकरा चर्मकारणीक पएर समझबाक अनुमान पात्र करैत छथि; ई अनुमान पाठमे अनिर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य नहि। तकर बाद स्त्रीक स्वर श्रम, जूता, मृदंग आ विवाहक विरोधाभास सामने रखैत अछि। ओकर कथात्मक प्रतिफल अदृश्य स्त्रीकेँ केवल महान पुरुषक परिशिष्ट नहि, स्वयं प्रश्न करएवाली उपस्थिति बनाबय अछि।

श्रमक वस्तु आ देहक बहिष्कार

चर्मकारणीक कल्पित स्वर कहैत अछि जे जाहि चमड़ा सँ समाजक जूता आ वाद्य बनैत, ओही श्रमिक देहकेँ स्पर्श-अयोग्य कहल जाइत अछि। ई विरोधाभास अध्याय ११९क श्रमिक-पाठसँ गहींर सम्बन्ध बनबैत अछि। श्रमक वस्तु घर-घर मान्य, श्रमिकक देह वर्जित—एहि विडम्बनाक कथात्मक सामर्थ्य ओकर प्रतिदिन अनुभव होएबामे अछि। जातिक प्रश्न आर्थिक संरचनासँ अलग अलगावमे नहि पढ़ाओल गेल अछि।

नामक लिखनाइ आ आरोपक सावधानी

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क नाम कथा मे प्रश्नक प्रसंग रूपमे अबैत अछि। अनन्या कहैत छथि जे आरोप नहि, प्रश्न लिखैत छी। ई शब्दभेद जरूरी अछि। कथाविश्वक पात्र द्वारा कएल स्मृति-आरोपकेँ स्वतन्त्र ऐतिहासिक निर्णय मानि लेब आलोचनात्मक असावधानी होएत। लेखकक रचना एहि विवादसँ नाम-रक्षा, प्रश्नक अधिकार आ सम्मान-भाषाक छनबाक तन्त्र पर प्रकाश दैत अछि; मूल पाठसँ बाहरक तथ्य-विवाद अपने सिद्ध नहि करैत।

बटुकनाथक संस्थागत भय

बटुकनाथ जीवनक विवाद छोड़ि महान ग्रन्थकेँ आदर्श ग्रन्थ रूपमे देखबाक आग्रह करैत अछि। ओकरा ग्रन्थसँ भय नहि, ग्रन्थ-पूजाक सहारे चलैत सामाजिक अधिकारक क्षरणसँ भय अछि। बादमे ओ जाति-प्रसंग सीमित राखबाक गुप्त पत्र लिखैत अछि। एहि क्रमसँ पात्रक पुरान नियन्त्रण-स्वभाव नब रूपमे घुरैत अछि। क्षमा याचना कएने पात्र पूर्णतः रूपान्तरित भऽ गेल एहन सरल विकास-रेखा लेखक स्वीकार नहि करैत।

स्पर्शक लघु सार्वजनिक प्रयोग

चर्मकार आ कथित ऊँच जातिक हाथ पर एकहि ठूँठ-माटि लगबाक दृश्य कथाक अन्तःस्थ नाटकीय क्षण अछि। कियो शुद्धि नहि करैत; माटिक रंग सभ हथेलीक समान होइत अछि। ई क्रिया भेदक सम्पूर्ण सामाजिक उन्मूलन

घोषित नहि करैत। ओ एकल शरीरक अनुभवसँ स्थापित निषेधक विरुद्ध छोट सार्वजनिक अपवाद गढ़ैत अछि। एहि मितव्ययी विजयक कारण दृश्यक विश्वासनीयता बढ़ैत अछि।

रसोइ आ इनारक बदलैत सीमारेखा

पाठशालाक निर्णयक बाद किछु रसोइक दुआर आ इनारक जगत अधिक खुजैत अछि। कथाकार जाति-व्यवस्थाक अन्त असाधारण उद्घोषसँ नहि देखबैत; घरेलू दुआरक बदलैत व्यवहारक संकेत दैत छथि। एतय स्थानक आकार छोट अछि, मुदा मानव-सम्बन्धक परिणाम पैघ। कगार, जगत आ रसोइ सामाजिक फोकलाइज़ेशनक कसौटी बनैत अछि।

प्रश्नक धूलि आ पवित्रताक उलटफेर

ठूँठसँ उज्जर धूलि बच्चाक माथपर पड़ैत अछि। एकरा धार्मिक चिह्न कहबाक सुलभ व्याख्या अनन्या अस्वीकार करैत छथि आ प्रश्नक धूलि कहैत छथि। ई नामकरण कथाक पूर्ववर्ती शास्त्रीय-प्रतिष्ठाक भाषा बदलैत अछि। अधिकार दैत प्रतीककेँ पूजा नहि, प्रश्नक साधन बनाओल जाइत अछि। जादुई पदार्थक सामाजिक अर्थ पात्रक वाक्यद्वारा तय होइत अछि।

अनिश्चित विजय आ अगिला तनाव

जातिक पिंजरामे दरारक दृश्य सशक्त अछि, मुदा बटुकनाथक गुप्त चिट्ठी सँ बुझाइत अछि जे नियंत्रणकारी व्यवस्था सक्रिय अछि। एहि दोहरा अन्तसँ अध्याय पूर्ण समाधानक भावुकता सँ बचैत अछि। सामूहिक स्पर्शक नन्हि परिवर्तन आ गुप्त संस्थागत प्रतिरोध एकहि कालक्रममे चलैत अछि। लम्बा उपन्यासक कथानक एहि समकालिक विरोधक कारण अगिला चरण लेल आवश्यक तनाव बनौने रखैत अछि।

प्रकरण २२३ | मूल अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

व्यक्तिस्मृति आ जातिक पिंजराक दोहर कालक्रम

अध्याय १२२ जातिक पिंजराक रातिक तुरन्त बाद आरम्भ होइत अछि। सलाख सभ भोरमे मेटाइत नहि, उल्टे धूपमे स्पष्ट होइत अछि। ई कालिक प्रतिलोम अध्यायक रचनात्मक भूमिका निर्धारित करैत अछि: जे परिवर्तन राति सभा मे अनुभूत भेल, से अगिला बिहान समाजक पुरान शब्द सभक सामर्थ्य सँ फेर भिड़ैत अछि। ‘मुक्ति’ एतय एक नाटकीय क्षण होइतहुँ निरन्तर संघर्षक बीच राखल गेल अछि।

चाबी खोजबाक बालप्रश्न

अनन्या पिछला पन्नाक ‘जातिक पिंजरा’ शीर्षकक नीचाँ रिक्त ठाम देखि पूछैत छथि—एकर चाबी केकरा लग अछि? बा माटि पर लकीर खींचैत आ ओहि लकीरक मेटाइत रहबाक दृश्य बारम्बार घटित होइत अछि। ई लय स्थिर समाधान नहि, प्रश्नक दोहर प्रयासक दृश्य-रूप बनबैत अछि। बच्चाक जिज्ञासा कथा गति चलबैत अछि, तैयार व्याख्या नहि।

ठूँठक कारी धूलिसँ अक्षर

कटल चन्ना गाछीक भीतरसँ कारी धूलि उठि बिन्दु, रेखा आ फेर शब्द बनैत अछि। दृश्य धीरे-धीरे ‘प्रमाण’क संकेत गढ़ैत अछि। एहि आकार-परिवर्तनक नाटकीय प्रभाव शब्दक अन्तिम रूपसँ बेसी उत्पत्तिक प्रक्रियामे अछि। जे प्रश्न पहिने सभामे पूछल जाइत छल, आब माटिक पदार्थसँ उभरैत अछि। मुदा प्रकृतिक ई भाषा कथाविश्वक जादुई क्रिया अछि, बाह्य ऐतिहासिक सिद्धि नहि।

दर्पणमे खाली चौकी आ गर्भवती स्त्री

पानिक बूँद छोट दर्पण बनैत अछि, जाहिमे खाली चौकी, बुझल दीया आ गर्भवती स्त्रीक छाह देखाइत अछि। पिताक मृत्युक बहुत बरख बाद जन्मक कथन सेहो लोकस्मृतिक स्वर रूपमे उठैत अछि। एहि दृश्यकेँ जीवनीक प्रमाणित तथ्य कहि पढ़ब पाठक बाहर जाइत। आलोचनात्मक स्तर पर असाधारण जन्म-कथा स्मृति, असम्भवता आ सामाजिक चुप्पीक अस्थिर सम्बन्ध खोलैत अछि।

चर्मकारणी दृश्य आ एको स्त्रीक अनेक कण्ठ

दर्पणमे चर्मकारणी स्त्रीक छाहक चारू कात पण्डित, कुलगुरु आ नामरक्षक उपस्थित होइत छथि। मीरा हुनकर वास्तविक नामक अनुपस्थिति उठबैत छथि। एक जातिसूचक शब्द टूटि अनेक स्त्री-स्वरमे बदलैत अछि। एक पात्र सामूहिक दमनक प्रतीक बनैतहुँ ओकर व्यक्ति-विशिष्ट नामक अभाव समाप्त नहि होइत। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित राखनाइ अध्यायक महत्त्वपूर्ण कथात्मक नैतिकता अछि।

बारह हजार रेखाक अस्थिर गणना

ठूँठमे बारह हजार सूक्ष्म रेखा चमकबाक दृश्य ग्रन्थक महिमाक प्रचलित अंकीय बिम्ब लैत अछि। गोप गनबाक प्रयास करैत छथि, मुदा रेखासभ नजरि ठहरितहि बिसरि जाइत अछि। ई संख्या-स्थिरता पर प्रश्न करबाक जादुई विन्यास अछि। ग्रन्थक मूल्यक नाप पन्नाक संख्या सँ नहि भऽ सकैत—एहि कथावाचकीय आग्रहकेँ दृश्य अनुभव बनाओल गेल अछि।

सम्मानक लेखन आ मौनक दुरुपयोग

कथा कहैत अछि जे विचारकक असुविधाजनक जीवनक प्रसंग सम्मानक मूर्ति बनबैत काल दबाओल जा सकैत अछि। एहि प्रसंगमे ‘सम्मान’ शब्द नकारात्मक कार्य करए लगैत अछि: ओ प्रश्नक स्थान पर चयनित स्मरण दैत अछि। लेखकक लक्ष्य पात्रसभक बुझनाइमे छुपल सामाजिक सम्पादन-प्रक्रियाकेँ उघारब अछि। ऐतिहासिक व्यक्ति सम्बन्धी विवादित दावाकेँ उपन्यासक अन्तर्गत आवाज रूपमे चिह्नित राखब आवश्यक अछि।

सत्यव्रतक बदलैत कथात्मक भूमिका

सत्यव्रत पहिने दस्तावेज खोलेबाक उतावलासँ गोपकेँ रोकैत छथि; बादमे प्रश्नक भाषापर अधिकारक बात करैत छथि। ओ अपन विधिक पदक अधिकार घटा कऽ लोकक सुननाइक कठिनाई मानैत छथि। एहि दृश्यसभक

अन्तःक्रम दर्शबैत अछि जे पात्रक नैतिक परिवर्तन एक वाक्यक पश्चात्ताप नहि, आवर्ती अभ्यास अछि। सम्पूर्ण उपन्यासमे हुनकर पुरान विलम्ब वर्तमान विनम्रताक माप बनल रहैत अछि।

चारि पाथरक क्रम आ स्मृतिक बहुवचन

अन्तिम साँझ ठूँठक चारू कात गंगेशक नाम, चर्मकारणी स्त्रीक नामक प्रतीक्षा, काटल जीवन-सत्य आ प्रश्नक अग्निक अलग-अलग पाथर राखल जाइत अछि। एहि वस्तुगत अनुक्रमसँ गौरव आ अनुपस्थिति एक स्थान पर छथि, मुदा एक-दोसरामे घुलि नहि जाइत। समाधि-जेकाँ एक स्मारक बनबएबासँ अधिक ई प्रश्नक बहुवचन संरक्षित करबाक प्रयास अछि।

विरोधी नेटवर्कक सूचना-प्रबन्धन

लाउक सलाहकार प्रसंगकेँ स्मृति-परियोजनाक जोखिम कहैत अछि; ब्रूमक जाल ओकरा लोककथा बनाकऽ आधिकारिक अभिलेखसँ बाहर रखबाक विचार करैत अछि; चन्द्रपाल विवादकेँ अनुप्रयोगक आकर्षण बनाबय सोचैत अछि। ई तीनू प्रतिक्रिया कथाक भीतर सूचना नियन्त्रणक भिन्न उपाय अछि। लोकक प्रश्नकेँ दबेनाइ आ ओकरा बेचब—दुनू एकहि नियन्त्रण-इच्छाक रूप देखाइत अछि।

कबड्डीमे प्रश्नक ध्वनि

रात्रिक खेलमे बच्चा सभ ‘कबड्डी’क संग ‘प्रमाण’क उच्चारण करैत अछि। खेलक नियम भौतिक रूपेँ बहुत नहि बदलैत, मुदा पार कएल सीमा नाम, स्मृति आ कथा सम्बन्धी प्रश्नक थाम बनैत अछि। एहि पुनरावृत्ति सँ परम्परागत बालखेल ज्ञान-सम्बन्धी सामाजिक असहमतिक मंच बनैत अछि। आलोचकीय ध्यान खेलक कथात्मक रूपान्तरण पर रहबाक चाही, तर्कशास्त्रीय अवधारणाक स्वतन्त्र पाठ पर नहि।

‘मुक्ति’क अधूरा अर्थ

अन्तिम आवाज प्रश्नसँ डेरानिहारकेँ न्यायिक अधिकारी मानबासँ मना करैत अछि। एहि तीक्ष्ण वाक्यसँ अध्यायक शीर्षक ‘मुक्ति’ शाब्दिक बन्धनमुक्ति नहि, प्रश्नक अधिकारक पुनर्स्थापन बनैत अछि। मुदा चर्मकारणी स्त्रीक सम्पूर्ण नाम एखन नहि भेटल, संस्थागत नियन्त्रण सेहो चलि रहल अछि। कथाक मुक्ति जानबूझि सशर्त अछि, जाहिसँ अगिला ‘तत्त्वचिन्तामणिक पात’ आवश्यक बनैत अछि।

प्रकरण २२४ | मूल अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

मूर्त विचारसँ जीवित पातक परिवर्तन

अध्याय १२२ मे गंगेशक स्मृति नब प्रश्नक संग मुक्त होइत देखायल; अध्याय १२३ ओहि प्रश्नक रक्षणकेँ केन्द्र बनबैत अछि। पुस्तकक स्थिर पन्नाक बदला नब उगल हरियर कोंपलक पात दृश्यकेँ चलबैत अछि। ई रूपान्तरण नाजुक अछि: पात सुखि सकैत, खसि सकैत, पुनः उगि सकैत अछि। ग्रन्थक प्रतिष्ठा दीर्घ होइतहुँ ओकर जीवित सामाजिक अर्थ निरन्तर नव-पाठ माँगैत अछि।

कोंपलक अल्प छाह आ भविष्यक पूर्वस्वीकृति

बच्चा सभ एहन नब कोंपलक चारू कात बैसैत अछि जे एखन छाह देबाक लायक नहि। लोक भविष्यक छाहरि स्वीकार कऽ पहिने सँ ओतए एकत्र होइत अछि। एहि मितव्ययी दृश्यसँ कथावाचक भविष्यकेँ सिद्ध उपलब्धि रूपमे नहि, प्रतीक्षारत सार्वजनिक सम्भावना रूपमे रखैत छथि। पुरान कटल गाछीक पराभव आ नब गाछीक अनुपस्थित छाह बीचक विरोध कहानीक समयबोध घन करैत अछि।

पातक अदृश्य लिपि आ श्रवण-दृष्टि

आरुणि नब पात लऽ अबैत छथि; गोप चश्मा लगाकऽ ओकर रेखा पढ़ि नहि सकैत। अनन्या पात कान लगबैत छथि। कथाकार आँखिसँ कान धरि इन्द्रियगत दृष्टिकेन्द्र बदलैत छथि। अदृश्य लिपिकेँ शाब्दिक अक्षरक सफलता नहि, प्रश्न करबाक क्रियासँ पढ़ल जाएत। एहिमे सूक्ष्म जादुई दृश्य साहित्यक भिन्न माध्यम सभक सीमा उजागर करैत अछि।

माटिक चारि गोला: विद्यालयी मंच-रचना

बच्चा सभ माटि पर चारि वृत्त बनबैत अछि आ प्रत्येक वृत्तमे अलग सामाजिक उदाहरण लऽ अबैत अछि। एतय महत्त्व तर्कशास्त्रक तकनीकी विवेचन नहि, कठिन भाषाकेँ खेलक स्थानिक दृश्य बनाबएब अछि। गोला बच्चा सभकेँ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठेबाक मंच दैत अछि, मुदा ओ स्वयं कोनो ऐतिहासिक विवादक अन्तिम फैसला नहि सुनबैत। अध्यायक संरचना प्रश्नोत्तरात्मक अछि, सिद्धान्त-ग्रन्थक व्याख्यापर निर्भर नहि।

जातिक अहंकार आ दिखाई देबला हिंसा

पहिल वृत्तक प्रसंगमे एक बच्चा जातिक प्रत्यक्षता पर प्रश्न उठबैत अछि। मीरा शरीर आ अपमानक परिणामकेँ देखा जाइत बतबैत छथि, मुदा श्रेष्ठताक दावाकेँ बनाओल सामाजिक पिंजरा कहैत छथि। एहि दृश्य सँ कथावाचक अदृश्य सत्ता आ प्रत्यक्ष पीड़ाक सम्बन्ध खोलैत छथि। कथा एक अवधारणाक व्यवस्थित प्रमाणीकरण नहि करैत; पीड़ितक अनुभव पर केन्द्रित सामूहिक बहस देखबैत अछि।

मिटल नामक बारम्बार अन्तर्धान

दोसर गोला पर ईरा निरन्तर अभिलेखसँ हटाओल नामक प्रसंग घुरबैत छथि। हटाओल नामक पुनरावृत्ति दीर्घ उपन्यासक प्रारम्भिक पुल-दुर्घटना, अस्पताल, डिजिटल ठगी, जाति-रजिस्टर आ स्मृति-निविदा सभसँ सम्बन्ध बनबैत अछि। वस्तुसभ अलग अछि, मुदा ‘नाम हटब’ एक कथात्मक क्रिया रूपमे फेर अबैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक आलोचनात्मक प्रभाव परत-दर-परत संरचना बनबमे अछि।

शास्त्रक शब्द आ बाल-विवाद

तेसर वृत्तमे पुरोहितक पोता शास्त्रक वचनक सर्वोच्चताक दावा करैत अछि। मीरा ओकर सोझाँ बैसि देहक अपमानक सन्दर्भ अनैत छथि। चर्चा नाटकीय अछि कारण दू पात्रक सामाजिक स्थान आ अनुभव अलग अछि।

कथाकार विवादक एक पक्षकेँ बिना जवाबक कठपुतली मात्र बनाबएब जोखिम सेहो लैत छथि; तथापि एहि प्रसंगमे बालकक चुप्पी प्रभुत्वक भाषाक सीमाक संकेत बनैत अछि।

चर्मकारणी नामक रिक्ति आ अनसुलझल जिज्ञासा

चारिम वृत्त पर अनन्या अज्ञात चर्मकारणी स्त्रीक पूरा नाम नहि भेटबाक प्रश्न उठबैत छथि। पहिने सँ कथा बारम्बार एहि रिक्तिकेँ सुरक्षित राखि रहल अछि। एतय ओ रिक्ति दार्शनिक उदाहरण मात्र नहि; किसका याद राखल गेल आ किसका कात करि देल गेल—एहि चयनक नैतिक दृश्य बनैत अछि। लेखक नाम स्वयं गढ़ि रिक्ति भरि नहि दैत छथि, जाहिसँ खोजक अधूरापन बना रहैत अछि।

गणनाक अस्थिरता आ ग्रन्थक विराटता

नव पात एक, दू, पचास जेकाँ बढ़ैत देखाइ पड़ैत अछि; गनल पात फेर गनाएल लगैत अछि। ‘बारह हजार’क प्रश्न एहि अस्थिर दृश्यसँ जुड़ैत अछि। संख्या एतय तुलनात्मक गौरवक बिम्ब अछि, शाब्दिक प्रामाण्यक गणित नहि। बा गिनतीसँ अधिक प्रश्नक अर्थ पर बल दैत छथि। एहिसँ पाठककेँ विराटताक अनुभव अतिशयोक्ति आ दृश्य-गतिशीलता दुनू द्वारा भेटैत अछि।

गंगेश अध्ययन परिषद्क द्वारपाल सभ

शहरसँ आएल दू विद्वान लोककथात्मक सामग्रीक नियन्त्रणयुक्त प्रस्तुति आ वैज्ञानिक सम्पादनक माँग करैत छथि। हुनका सभ लग कैमरा, अनुमति-पत्र आ विशिष्ट भाषा अछि। एहि वस्तु-संग्रहसँ संस्थागत विशेषज्ञता कथानकमे दृश्य बनैत अछि। कथा ज्ञानक अध्ययनकेँ अनिवार्यतः नकारैत नहि, ओकरा प्रश्न करबाक स्थानीय अधिकारक ऊपर एकतर्फा स्वामित्व बनबएबाक प्रवृत्तिक प्रतिपक्ष रूपमे देखबैत अछि।

कागचपर खसल पात आ मौन प्रतिवाद

विद्वान सभक कागचपर नब पात निःशब्द खसैत अछि, कागज नम होइत अछि, छपल पाँति धुँधला पड़ैत अछि। एहि मितभाषी जादुई दृश्यमे कोनो बाहरी शक्ति हिंसक फैसला नहि सुनबैत; प्राकृतिक पदार्थ कागजी निश्चिततामे छोट व्यवधान उत्पन्न करैत अछि। पातक ओस आ कागजक स्याहीक मिलन उपन्यासक आवर्ती जल-पत्र रूपककेँ नव रूप दैत अछि।

अनन्याक अन्तिम नियम आ कथा-स्वर

अनन्या लोकक सामने तीन मर्यादा रखैत छथि—शास्त्र मनुष्यसँ ऊपर नहि, अपमानक गवाही नकारब नहि, अनाम स्त्रीक प्रश्न अनिर्वाह्य नहि मानब। सामूहिक ‘उपस्थित’क उत्तर एखन धरि नाम-पाठक रीतिसँ जुड़ल छल; एतय ओ प्रश्नक अधिकारक समवेत स्वीकृति बनैत अछि। एहि रूपान्तरणमे बाल-पाठशालाक आवाज दीर्घ उपन्यासक एक स्थायी कथन-प्रेरक रूपमे उभरैत अछि।

अनाम स्वर आ अन्तक अनिर्णय

अन्तिम रात्रिमे जड़िक भीतरसँ आवाज उठैत अछि, जकर स्रोत स्पष्ट नहि—गंगेश, बूढ़बा भूत वा बच्चा नहि। कदाचित् अनाम चर्मकारणी स्त्रीक स्वर होएबाक संकेत देल जाइत अछि, मुदा कथाकार निश्चित घोषणा नहि करैत। ई अनिश्चितता कथाक नैतिक केन्द्र अछि: जकर नाम नहि भेटल, ओकरा कथाकार सेहो सहज पूर्ण परिचय नहि पहिरबैत। अन्तिम प्रश्न न्यायकेँ अनवरत खोजक कार्य बनौने रखैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : माटिसँ प्रश्नक पात धरि

अध्याय १०८–१२३क संरचनामे पदार्थ सँ आवाज, आवाज सँ मौन, मौन सँ देह, देह सँ श्रम आ श्रम सँ जातिगत सम्बन्धक क्रम बनैत अछि। पहिल आठ अध्यायक माटि, जल, आगि, वायु आ आकाश-सम्बद्ध आख्यान सामाजिक अभिलेखक भिन्न सीमा जाँचैत अछि। तकर बादक आठ अध्याय एही अभिलेखक व्यवहारिक परिणतिकेँ जीवनक अनुत्तरित ऋण, स्पर्शक अनुमति, जीवित मजदूरक विश्राम आ जातिसँ वञ्चित नामक प्रश्नमे बदलैत अछि। वस्तु-स्मृति सँ जीवन-संबन्धक ई गति दू बैचकेँ एक अखण्ड रचनात्मक शृंखलामे बाँधैत अछि।

कथावाचक बारम्बार छोट वस्तुकेँ दृश्य-केन्द्र बनबैत छथि: भीजल रजिस्टर, जड़िक माटि, खाली कटोरा, कोयलासँ लिखल भीत, अनाम चर्मकारणीक रिक्त ठाम, फाटल जूता, नह, मजदूरी-पर्ची, माटिक न्यायक देह, ताम्रपत्र, दर्पण आ नव हरियर पात। प्रत्येक वस्तु एके अर्थ बारम्बार नहि दोहरबैत। खाली पन्ना मौनक रक्षाकें, अनाम पाथर खोजक अनिवार्यताकेँ, आ माटिक देह सुनबाक सार्वजनिक दायित्वकेँ दृश्य रूप दैत अछि। वस्तु चुनबाक एहि विशिष्टतासँ गद्यक विस्तारमे अनुक्रमिक विविधता रहैत अछि।

अनन्या, मीरा, देविका, गोप, आरुणि, सत्यव्रत, बा, सुरमणी काकी, झगरू मिस्त्रीक घरवाली, भगेलू पासवान आ चर्मकारणी स्त्रीक कल्पित स्वर सभ कथाक अलग दृष्टिकेन्द्र बनैत छथि। अनन्याक बाल-प्रश्न नियम बनबैत अछि, मीराक भय निजताक सीमा देखबैत अछि, गोपक डेटा अपूर्ण अभिलेखक बोध करबैत अछि, आरुणिक अभियन्ता-स्मृति सार्वजनिक निर्माणक दोष घुरबैत अछि, आ सत्यव्रतक बारम्बार पाछाँ बैसनाइ अधिकारसँ सुननाइ दिस ओकर अधूरा रूपान्तरण देखबैत अछि। एहि बहुवाचिकतामे एक नायक सम्पूर्ण समस्त कथा निर्णय नहि करैत।

अध्याय ११६क निःशब्द कबड्डी आ अध्याय १२२–१२३क प्रश्न-प्रधान कबड्डी खेलक बदलैत व्याकरण देखबैत अछि। पहिने बोलबाक आवश्यकता हटितहि पएर, माटि आ कपड़ाक ध्वनि सुनल जाइत अछि; पाछाँ खेलक घेरामे नाम, प्रश्न आ उत्तरदायित्वक प्रवेश होइत अछि। ई आवर्तन खेलक सजावट नहि, सामुदायिक सम्बन्धक नव रूप तलाशबाक कथा-प्रक्रिया अछि। कण्ठक आ माटिक रेखा बारम्बार बदलावसँ कथाविकासक अभिन्न उपकरण बनैत अछि।

अध्याय १२१–१२३मे गंगेश, जातिगत स्मृति आ तत्त्वचिन्तामणिक प्रसंग पात्र, लोककथा, जादुई दृश्य आ बाल-पाठशालाक कथ्य रूपमे उपस्थित अछि। एहि प्रसंगसभकेँ मूल उपन्यासक अन्तर्गत कथन-स्तर पर पढ़ल गेल अछि, स्वतन्त्र जीवनी-प्रमाण वा तर्कशास्त्रीय सिद्धान्तक निर्णायक स्थापना मानि नहि। रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क नाम सभ सेहो कथा भीतर उठल प्रश्नक प्रसंग छथि; एहि पाठकेँ वास्तविक इतिहासक

सत्यापित अभियोगक रूपमे पढ़नाइ उचित नहि। कथात्मक लक्ष्य स्मृतिक चयन, अधिकार आ प्रश्नक सार्वजनिक उपलब्धता अछि।

ई खण्ड सम्पूर्ण विजय घोषित नहि करैत। मौनक अधिकार स्वीकार भेल, मुदा आवाजक नकलक व्यापार सम्भव अछि; ऋणसँ काम जोड़ल गेल, मुदा सम्मान-राशिक शर्तक षड्यन्त्र जीवित अछि; देह-संहिता बनल, मुदा जाति-रजिस्टर खुलैत अछि; श्रमिक नाम-पाठ होइत अछि, मुदा स्थायी मजदूरी-सुरक्षा अनिर्णीत अछि; न्यायक माटिक देह बनल, मुदा ओकर प्रतिकृति बेचनिहार सक्रिय छथि; चर्मकारणी स्त्रीक वास्तविक नाम सेहो अप्राप्त अछि। अनसुलझल प्रश्नकेँ पाठ चुपचाप भरि नहि दैत, अगिला कथाक आवश्यकीय केन्द्र बनबैत अछि।

प्रकरण २२५ । मूल अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

पातसँ अग्नि धरि प्रतीकक रूपान्तरण

अध्याय १२३मे तत्त्वचिन्तामणिक पात प्रश्नक अदृश्य लिपि बनल छल; अगिला अध्यायमे ओही पातक रेखा आगिक उजास बनि उठैत अछि। ई दृश्य कोनो नव विवादक आरम्भ मात्र नहि, पूर्वअध्यायक वस्तुकेँ बदलबाक कथा-प्रविधि अछि। पात, धूप, जड़ि, धुँआ आ अग्नि परस्पर जुड़ि एकटा दृश्य-शृंखला बनबैत अछि जाहिमे लिखित ग्रन्थक अधिकार सँ लोक द्वारा पूछल प्रश्नक अधिकार दिस केन्द्र सरकैत अछि। जँ पातक 'प्रमाण' हाथ लगिते 'ककर प्रमाण' बनैत अछि, तँ ई परिवर्तित लिखावट पाठककेँ सूचबैत अछि जे अर्थ कागच पर स्थिर नहि, पाठक आ सामाजिक प्रसंगक संपर्कमे सृजित होइत अछि।

अग्निक चरित्र : दाह नहि, उद्घाटन

शीर्षकक अग्नि दण्डदाताक अग्नि नहि अछि। मूल कथा बारम्बार कहैत अछि जे पात जरे नहि, ओकर अक्षर लाल होइत अछि; बासँ पात छुएला पर धुँआ कारी नहि, उज्जर होइत अछि। एहि दृश्य-विन्यासमे हिंसक शुद्धीकरणक बदला अनदेखल भाग उजागर करबाक प्रकाश प्रधान अछि। आगिक पारम्परिक विनाशकारी रूपकेँ उलटि कथावाचक एक एहन आलोचनात्मक दृश्य गढ़ैत छथि जाहिमे भय उत्पन्न करबाक लक्ष्य मनुष्य नहि, आधा स्मृतिक सुविधा अछि। मुदा पात्रसभक ई रूपक आरम्भमे नैतिक निश्चितता सँ भरल अछि, जाहिसँ पाठक लेल विरोधी पक्षक जटिलता कतहु संक्षिप्त भऽ जाइत अछि।

बाल-दृष्टि द्वारा प्रश्नक पुनर्लेखन

अनन्या 'प्रमाण', 'न्याय' आ 'कुल'क संग 'ककर' जोड़ि प्रश्न बनबैत अछि। ई छोट व्याकरणिक परिवर्तन अध्यायक कथात्मक क्रिया अछि: सामान्य संज्ञाकेँ सामाजिक सम्बन्धमे खींचि आननाइ। बालिकाक फोकस कोनो निष्पक्ष सर्वज्ञ दृष्टिकेन्द्र नहि; ओकर नजरि अदृश्य कएल गेल व्यक्तिपर अटकैत अछि। पाठक तथाकथित महान ग्रन्थक विशालता नहि, ओकरा पढ़बाक सार्वजनिक परिस्थिति देखैत अछि। प्रश्नक अधिकार नहि रहल लोकक उपस्थिति आरम्भिक कथा-रहस्यकेँ बाँकि राखैत अछि आ पाठककेँ अनन्याक अपूर्ण खोजमे सहभागी बनबैत अछि।

गोपक दस्तावेज आ ज्ञानक कटायल किनार

गोप कुमार कागचक सूचना बचौने छथि; एहि अध्यायमे हुनकर स्वीकारोक्ति अछि जे दस्तावेज सम्पूर्ण जीवन नहि पकड़ैत। आख्यान एहि पात्रकेँ पूर्वक तकनीकी दक्षतासँ वञ्चित नहि करैत, बल्कि हुनकर विश्वसनीयतामे आत्मसंशोधनक क्षमता जोड़ैत अछि। आधिकारिक अभिलेख आ मौखिक स्मृति दुनू कथानकमे उपस्थित छथि, मुदा कथावाचक दस्तावेजक निष्कर्षक बदला कटल पाँतिक सम्भावना पर बल दैत छथि। एहि दृश्यकेँ बाह्य इतिहासक सिद्ध आरोप नहि, उपन्यासक भीतर स्मृति-चयनक आलोचना मानि पढ़नाइ आवश्यक अछि; पाठक स्वयं नहि जानैत जे सभ लोककथात्मक प्रसंगक स्वतन्त्र अभिलेख कोन अछि।

सम्मानक माला आ फाँसीक बिम्ब

बाक वाक्यमे फूलक माला फाँसी बनबाक सम्भावना लैत अछि। सांस्कृतिक सम्मानक कोमल वस्तु हिंसक नियन्त्रणक रूपक बनैत अछि; एहि उलटावसँ कथा बिनु प्रत्यक्ष रक्तपातक एक किसिमक स्मृतिहानि देखबैत अछि। मीरा 'सम्मानक नाम पर हत्या' कहैत देहक हत्या आ स्मृतिक हत्या बीच स्पष्ट भेद रखैत छथि। अतः उपन्यासक आरोपक भाषा रूपकात्मक अछि, विधिक प्रमाणित हत्याक प्रतिवेदन नहि। एहि भेदकेँ स्पष्ट राखला पर कथाक नैतिक तीक्ष्णता बनल रहैत अछि आ इतिहासक वास्तविक व्यक्तिसँ सम्बन्धित संकेत सभकेँ असमर्थित बाह्य निष्कर्षमे बदलबाक जोखिम घटैत अछि।

छायारूप सम्पादन आ कथात्मक आरोप

पातपर रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक'क छाह उभरैत अछि; हुनका सभकेँ देहधारी प्रत्यक्ष पात्र नहि, काटि रहल पाठकीय हाथक रूपमे देखाओल गेल अछि। एहि अभिनयमे जीवनीक पाँति हटेबा आ शास्त्रीय गौरवक माला पहिरबेबाक दू क्रिया एक साथ चलैत अछि। स्वप्नसदृश दृश्य पाठककेँ इतिहास-लेखनक छँटनी पर विचार करबैत अछि, मुदा छाया स्वयं वास्तविक सम्पादनक अभिलेख नहि बनि जाइत अछि। बालिकाक प्रतिप्रश्नक बाद छाहक काँपब नाटकीय निर्णायकता दैत अछि; ई कठोर विमर्शक शैली अछि, सत्यापित साहित्येतिहासक पूरा विवेचन नहि।

अनाम चर्मकारणी : रिक्त स्थानक भार

अध्यायक सभसँ शक्तिशाली दृश्य ओ पाथर अछि जाहिपर चर्मकारणी नामक स्त्रीक नाम खोजल जा रहल अछि। कथा ओकर बदला कोनो मनगढ़न्त व्यक्तिनाम नहि भरैत। खोजक खाली जगह कथाक गतीमान पात्र जेकाँ काम करैत अछि; पात्र सभ ओकरा लग घुरैत छथि, प्रश्न बदलैत छथि, आ अगिला घटनाक आशा रचैत छथि। नाम-रिक्ति सामाजिक बहिष्कारक बिम्ब होएबाक संग पाठकीय अनिश्चयक साधन सेहो अछि। अनिश्चितताकेँ जीवित राखब एहि प्रसंगक वास्तविक रचनात्मक उपलब्धि अछि, कारण तत्काल उत्तर देलासँ जटिल इतिहास एकटा सुगम समाधानमे बन्द भऽ जाएत।

जल आ माटिक प्रतिवाद

पोखरिसँ पनिडुब्बीक आवाज, माटिक गन्ध, पाथरक गरमाहट आ सूखल ठूँठक हरियर पात अग्नि-दृश्यक एकांगी कठोरता कम करैत अछि। चारि तत्वक परस्पर हस्तक्षेपसँ कथाविश्वमे कल्पनात्मक गवाहीक क्रम बनैत अछि। जलसमाधि आ गोहि सभक पूर्वक भय एतय जातिसँ मुक्त माटिक बिम्बमे घुरैत अछि। कथावाचक गोहि द्वारा जाति नहि पूछबाक कटु व्यंग्य रचैत छथि; एहि व्यंग्यक प्रभावक केन्द्र प्राकृतिक जीवक नैतिकता नहि, मनुष्य-निर्मित ऊँच-नीचक अमानवीयता अछि।

सत्यव्रतक आसन-परिवर्तन

सत्यव्रत मेहताकेँ बच्चा सभ बीच बैसय कहैत अछि। न्यायालयक अधिकारी रहल व्यक्तिक ई स्थानान्तरण साधारण कुर्सी बदलनाइ नहि, कथा-नियन्त्रणक पुनर्विन्यास अछि। जे पात्र पहिने प्रमाणक सीमा निर्धारित करैत छलाह, से एखन स्वतन्त्र रूपेँ प्रश्न सुनैत आ लिखैत छथि। हुनकर काँपैत हाथ सुधारक प्रक्रिया दर्शबैत अछि, पूर्ण नैतिक मुक्ति नहि। अनन्याक समक्ष कानूनक भाषाक अपर्याप्तता देखाओलासँ पाठकेँ एहन संक्रान्ति भेटैत अछि जाहिमे संस्थाक आवश्यकता समाप्त नहि, ओकर आत्मसमीक्षाक बाध्यता पैदा होइत अछि।

मौखिक वाद-विवादक मध्यस्थता

बा, ईरा, मीरा, गोप, सत्यव्रत आ बच्चा सभक संवाद आपसमे एकहि निष्कर्ष दिस बढ़ैत अछि, मुदा प्रत्येक वक्ताक सामाजिक ठाम पृथक अछि। बाक देहगत अनुभव, ईराक इतिहास-प्रश्न, मीराक स्त्री-अनुभव, गोपक सूचना-सन्देह आ सत्यव्रतक विधिक स्मृति—ई पाँचू आवाज पाठमे एकटा सामुदायिक व्याख्या बनबैत अछि। तथापि विरोधी पात्रसभक तर्क अनेक बेर तुरन्त निरुत्तर भऽ जाइत अछि। एहि कारण बहुवाचिक संरचना भीतर सहमतिक आकर्षण अत्यधिक बलवान अछि, जकर आलोचनात्मक मूल्यांकन करब आवश्यक अछि।

लोकगीत आ कथारम्भक समयभेद

झिझिया-मंगल लयमे दीप घुमेबाक गीत अध्यायक आरम्भमे जे अर्थ प्रस्तावित करैत अछि, कथाक उत्तरभाग ओकरा विशिष्ट नाम-रिक्ति आ सम्पादनक छायादृश्यसँ भरैत अछि। लोकगीत सार्वत्रिक उजासक वचन दैत अछि; मुख्य कथा व्यक्ति-विशेषक असुविधाजनक प्रश्न उठबैत अछि। एहि अन्तरालसँ पाठक आगिक रूपक पहिने ग्रहण करैत अछि आ तकर सामाजिक परिणाम धीरे-धीरे देखैत अछि। गद्य आ गीतक ई दूहरा कथन पूर्ण एकरूप नहि; गीतक आश्वासनक सोझाँ कटल जीवन-प्रसंगक अनिर्णय अन्तिम क्षण धरि टिकैत अछि।

अगिला अध्यायक शीर्षकक वचन आ विचलन

अन्तमे अनन्या 'चर्मकारणीक नाम' शीर्षक लिखैत अछि। पाठक स्वाभाविक रूपेँ अगिला अध्यायमे ओहि नामक प्रत्यक्ष खोज अपेक्षित करैत अछि। मुदा क्रमशः अध्याय १२५ 'निर्णयक धान' बनि खेत दिस मुड़ैत अछि। ई अनुक्रमिक विचलन रचनात्मक दृष्टिसँ स्मृतिक प्रश्नकेँ जीवित श्रम आ रोपनीमे स्थानान्तरित करबाक विधि मानल जा सकैत अछि; संगहि ई स्पष्ट पाठगत असङ्गति अथवा स्थगित वचन सेहो अछि। आलोचना एहिमे सँ कोनो एकमात्र उद्देश्यक दावा नहि करैत। एहि खुलापनसँ कथा-क्रमक वास्तविक असमञ्जस बचल रहैत अछि।

निष्कर्ष : उजासक बाद शेष रहैत रिक्ति

एहि अध्यायक अन्तिम अर्थ न्याय-सिद्धान्तक कोई परिभाषामे नहि, अग्निक वृत्त बीच बचल खाली स्थानमे जमा होइत अछि। पात, छाह, फूल, पाथर आ बालिकाक रजिस्टर सबटा जखन एक स्त्रीक नाम खोजबाक काजमे लगैत अछि, तखन आलोचनात्मक दृष्टि केन्द्रित होइत अछि ककर कथा लिखल गेल आ ककर काटल गेल। अग्नि उत्तर नहि देत; ओ खोजक आवश्यकता उजागर करैत अछि। एहि रूपमे अध्याय उत्तर-प्राप्तिसँ अधिक प्रश्नक सम्प्रेषण आ स्थगनक कथा अछि, जकर तनाव अगिला धान-अनुक्रममे नव वस्तुक माध्यमसँ प्रवेश करैत अछि।

प्रकरण २२६ | मूल अध्याय १२५ — निर्णयक धान

राखिसँ खेत धरि कथाक गतिक्रम

पछिला अध्यायक प्रमाणक अग्नि पछाति ठण्डा भेल राखि सीधे खेतमे अनल जाइत अछि। ई परिवर्तन पुस्तकक अमूर्त बहससँ कृषि-श्रमक दृश्य धरि गति अछि। लेखक अलग नव घटनाक कारण गढ़ि नहि लैत छथि; राखि पहिल दृश्यसँ दोसर दृश्य तक भौतिक सेतु बनैत अछि। आरुणि ओकर विविध रंग देखैत छथि, बा धानक बीआ निकालैत छथि आ बच्चा सभ जाति-रोधित बाट चलैत अछि। एहि क्रममे पुनरावर्तित प्रतीकक रूपान्तरण मुख्य कथात्मक चालन बनैत अछि। न्याय 'निर्णय-पत्र' सँ 'रोपनाइ' बनत कि नहि, पाठक एही प्रयोगक फल प्रतीक्षा करैत अछि।

चर्मकारणी-खोजक कृषि-दिशामे मोड़

अध्याय १२४ अन्तमे प्रत्यक्ष नाम-खोजक घोषणा केलक, मुदा १२५ ओहि घोषणाक तुरन्त उत्तर नहि दैत। कथा चर्मक व्यवसायसँ ऐतिहासिक रूपेँ बहिष्कृत परिवारक खेतमे प्रवेश करैत अछि। एहि मोड़मे खोज समाप्त नहि, रूप बदलब अछि: अनाम स्त्रीक व्यक्तिगत परिचयक बदला श्रम, भूमि आ सामाजिक छुआछूतक सार्वजनिक संरचना सामने अबैत अछि। मुदा शीर्षकक परिवर्तन पाठकक प्रतीक्षाकेँ तोड़ैत सेहो अछि; लेखक जँ एतय काल-संकेत अथवा खोजक स्थगन स्पष्ट करितथि, तखन अनुक्रमिक संयोजन अधिक सहज भऽ सकैत छल।

क्षेत्र-परिवर्तन आ दृष्टिक पुनर्गठन

ठूँठक घेरा सँ खेतक मेड़ धरि सामूहिक यात्रा कथाविश्वक स्थानिक केन्द्र बदलबैत अछि। जड़िक लग देखल जातिगत समस्या खेतक स्वामित्व आ कृषिक श्रममे अनुभव भऽ रहल अछि। चर्मकार परिवारक बूढ़ी अपन स्थानक स्वामिनी छथि; ओ खाली पीड़ितक रूपमे नहि, हर चलबय आ बीआ स्वीकारबय बला सक्रिय पात्र बनैत छथि। एहि दृष्टिसँ भूमिकेँ अभिलेख-रूपी वस्तु नहि, कथाक नव सह-नायक बनाओल गेल अछि। चन्ना ठूँठक स्मृतिसँ बाहर एक जीवित आर्थिक क्षेत्र खुलैत अछि।

बीआ, राखि आ रोपनीक त्रिवेणी

धानक बीआ भविष्यक सम्भावना अछि, राखि पूर्वहिंसाक बचल पदार्थ आ पानि परिवर्तनक साधन। ई तीनू एक साथ रोपल जाइत अछि; कथावाचक कालक तीन सतह—अतीत, वर्तमानक श्रम, आगामी अन्न—एक दृश्य मे

सन्निहित करैत छथि। प्रतीकक ई घनत्व अध्यायक बड़ उपलब्धि अछि। तथापि राखिक वास्तविक भौतिक स्रोत अनेक प्रकारक छविसँ बनल जेकाँ देखाओल गेल अछि; ओकरा प्रयोगशालाक राखि मानल अनावश्यक अछि। कथा ओकरा स्मृतिसँ बनल कल्पनात्मक पदार्थक रूपमे प्रयुक्त करैत अछि।

हर पर हाथ फेरब आ कर्तृत्वक विस्तार

चर्मकारिणी बूढ़ी पहिल धारि, आरुणि दोसर, मीरा तेसर, सत्यव्रत चारिम आ अनन्या पाँचम हर पकड़ैत छथि। एहि क्रममे सामाजिक प्रतिष्ठाक पुरान ऊर्ध्वाधर व्यवस्था क्रमानुसार साझा श्रममे बदलैत अछि। न्याय केवल भाषण देनिहारक नहि; अपने हाथसँ माटि उनटेनिहारक दृश्य होइत अछि। पात्र सभक बारी बदलनाइ कथाक सूक्ष्म रचनात्मक साधन अछि, कारण प्रत्येक नव हाथ पूर्वक सामाजिक दूरीक सीमाकेँ प्रश्न करैत अछि। एक रातिक रोपनी स्थायी सामाजिक बराबरीक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि, मुदा ओ बदलावक दृश्याभ्यास अवश्य अछि।

कबड्डीक रेखा आ मेड़क उनटा अर्थ

पुरान मेड़ जाति-सीमा बनल रहैत अछि; बच्चा सभ ओहि मध्य रेखाकेँ पार करबाक खेल बनबैत अछि। कबड्डीक कार्य एतय मनोरञ्जन नहि, सीमा-संरचनाक पुनःप्रयोग अछि। जे रेखा पहिने रोकैत छल, वही कथानकमे संक्रमणक स्थान बनैत अछि। एहि बदलबाक प्रक्रिया सँ पुरान भूत-कबड्डी आजुक कृषि-घटनासँ जुड़ैत अछि। रेखा मेटा देब पर्याप्त नहि—ओकरा पार करबाक सामाजिक साहस चाही—ई जटिलता खेलक उपस्थिति कें अर्थ दैत अछि।

सत्यव्रतक निर्णय-शब्दक धरतीकरण

सत्यव्रत स्वयं अदालतक निर्णय आ खेतक निर्णय बीच अन्तर अनुभव करैत छथि। हुनकर पहिल प्रशिक्षण लिखित विधिक निर्णय सँ सम्बद्ध छल; एतय उपज, हिस्सा आ सहभोजन निर्णयक सम्भावित फल अछि। एहि दुविधासँ पात्रक व्यक्तित्व बदलैत देखाइत अछि, मुदा कथावाचक हुनका नव कृषक घोषित नहि करैत। चुपचाप हात लगब, बीआ उठेब आ खेतक सम्बन्ध स्वीकारब नैतिक शिक्षा सँ अधिक क्रियात्मक विकास अछि। ताहिसँ अध्याय पूर्वक गवाहीक कथा सँ जीवित उपजीविकाक कथा दिस मोड़ैत अछि।

पनिडुब्बीक झिलमिलाहट आ अनिश्चित साक्षात्कार

खेतक भीतर पानिमे झिलमिलाहट उठैत अछि; ई पनिडुब्बीक उपस्थिति कि प्रकाशक खेल, कथावाचक स्वयं अनिर्णीत रखैत छथि। एहि अनिश्चयमे उपन्यासक जादुई यथार्थ सहज रूपेँ मिलैत अछि। लोक एहि चमककेँ पूर्वक पनिडुब्बीक गवाहीसँ जोड़ैत अछि, मुदा कियो अन्तिम निर्णय नहि देत। एहन नियंत्रित अनिश्चितता पाठकक दृष्टिकेँ घटना आ पात्रक अनुभूतिक बीच राखैत अछि। प्रतीकक अर्थपूर्णता ओकर भौतिक सत्यापन पर निर्भर नहि, ओकरा देखैत लोकक सामूहिक व्यवहार पर निर्भर अछि।

सह-प्रमाणक कथात्मक पद

बूढ़ी चर्मकारिणी, गंगेश आ अनाम स्त्रीक प्रसंगमध्य 'सह-प्रमाण' शब्द उठैत अछि। शास्त्रार्थक तकनीकी निष्कर्षक बदला कथा एहि पदकेँ जीवनक एकाधिक उपस्थिति जोड़बाक भाषिक प्रयत्न बनबैत अछि। जे जीवनक गौरव सार्वजनिक कथा मे आधा छोड़ल गेल, ओकर जोड़ीदार सम्बन्धकेँ दृश्ये उपस्थित करब नैतिक आग्रह बनैत अछि। समीक्षामे एहि पदकेँ कुनै तर्कशास्त्रीय प्रमेयक स्थापना नहि मानल गेल अछि; ई विशिष्ट पात्रक कथन आ उपन्यासक स्मृति-राजनीतिक अभिव्यक्ति अछि।

विद्वानक छाह आ अप्रत्यक्ष विरोध

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक'क नाम फेर प्रश्नक प्रसंगमे अनल जाइत अछि। ई पुनरावर्तन पाठककेँ विगत अध्यायक विवादसँ जोड़ैत अछि। एहि अध्यायमे नामसँ निबटबाक माध्यम मुकदमा नहि, खेतमे श्रमक नैतिक दवाब अछि। कथानक बाह्य व्यक्तिक विरोधी कथ्यक प्रत्यक्ष पुनर्निर्माण नहि करैत; तेँ ई पुनरुक्ति साहित्यिक छाया-संकेत अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक निर्णय नहि। ई अन्तर बुझेने पाठक खेतक सामाजिक रचनामे बनेल सम्बन्धक अर्थ पर केन्द्रित रहि सकैत अछि।

स्क्रीनसँ अनन्य माटि : दृश्य-अनुशासन

देविका रोपनीक चित्र खींचबाक उपकरण निकालि फेर राखि दैत छथि; असली घटना केँ तुरन्त डिजिटल विरासत बनबेबाक इच्छा पर विराम लागैत अछि। चन्द्रपालक ऐप आ लाउक 'फील्ड एसेट' शब्दक तुलना खेतक अपहृत नहि भऽ सकैत संवेदनसँ कएल गेल अछि। एहि कथनमे उपकरणक अस्तित्व स्वयं दोष नहि; दोष उगैत संघर्षकेँ लाभदायी छविमे संकुचित करबाक प्रयास अछि। लेखक ई मूल्यांकन पात्रक निर्णयद्वारा देखबैत छथि, खाली उद्घोषणा द्वारा नहि।

रोपनीसँ कटनी धरि खुलल समय

सन्ध्या धरि हर चलैत अछि आ रातिमे तारा सभ बीआ जेकाँ चमकैत अछि। अनन्या स्पष्ट कहैत अछि जे निर्णयक धानक अन्त कटनी पर होएत। ई वाक्य कथे भीतर भविष्य-समयक अपेक्षा स्थापित करैत अछि। कृषि-चक्रक अवधि संकेतित रहितो अगिला अध्यायमे तत्काल पकल बालि प्रकट होइत अछि—एहि विसंगतिकेँ आगामी पाठमे देखबाक पड़त। वर्तमान अध्याय केवल रोपनाइ सम्पन्न देखबैत अछि; फलनक वास्तविक अन्तराल न समय-उल्लङ्घनसँ चिह्नित अछि, न स्वप्नक नामसँ। एहि कारण लय काव्यात्मक भऽ सकैत अछि, कालरेखा निश्चित नहि।

निष्कर्ष : लिखित निर्णयक स्थलान्तर

'निर्णयक धान'क सफलता एकटा निष्कर्षक घोषणा नहि, कर्तृत्वक वस्तुगत स्थानान्तरण अछि। आगि राखि बनैत अछि; राखि बीआ संग खेतमे पड़ैत अछि; देवाल पर पहिने रोकल हाथ हर पकड़ैत अछि। ई क्रम कथा भीतर बदलावक रूपरेखा गढ़ैत अछि। मुदा अनाम चर्मकारणीक नाम एखन नहि भेटल, जाति-सीमाक वास्तविक

विनाशो निष्पन्न नहि, फसलो नहि उगल। पूर्णता पर बल नहि दऽ कऽ एहि असमाप्तिकेँ देखबाक पर कथा अगिला अन्न-न्याय प्रसंगक आवश्यक पुल बनैत अछि।

प्रकरण २२७ | मूल अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

बालिसँ आरम्भ : कालक झटपट परिवर्तन

'निर्णयक धान'क सन्ध्या-रातिक रोपनी पछाति 'अन्नक न्याय' भोरक बालि झुकबाक दृश्यसँ शुरू होइत अछि। सामान्य कृषिजीवनमे बीआ/रोपनी सँ कटनीक बीच महीना बीतैत अछि; उपन्यास एहि अन्तरालकेँ स्पष्ट नहि करैत। एक सम्भव पाठ ई जे धान न्यायक प्रतीक अछि आ कथा कृषि-चक्रकेँ एक काव्यात्मक क्षणमे समेटि रहल अछि; दोसर सम्भव पाठ कालगत सम्पादन-असङ्गतिक अछि। आलोचनामे दुनू सम्भावना सुरक्षित राखनाइ उचित अछि, कारण पाठ स्पष्ट स्वप्न अथवा दीर्घ कालान्तरक विधान नहि दैत।

मृतक-स्मृतिसँ जीवित पेट धरि कथाधुरी

अन्नक अध्यायमे बच्चा सभ पाथरक नाम-घेरा सँ खेतक दाना धरि पहुँचैत अछि। मृतकक नाम लिखबाक दीर्घ शृंखला एतय जीवित मनुष्यक भोजन-अधिकारक नीतिगत संघर्षमे बदलैत अछि। भुखायल पेटक सामने सभ शास्त्र-अनुष्ठान अधूरा कहबाक कथन पात्रसभक नैतिक स्थिति अछि; कथात्मक महत्व ई जे न्यायकेँ भौतिक परिणतिक कसौटीपर राखल गेल अछि। विगत बाढ़ि, पुल-दुर्घटना आ डिजिटल ठगीक चित्र सभ अन्नक अभावमे फेर स्मरण होइत अछि, जाहिसँ सामाजिक घटनाक शृंखला आओर घनी बनैत अछि।

दया आ हिस्साक संवादात्मक विपरीतता

बा दया ऊपरसँ फेकल भात आ हिस्सा संग बैसि खाएल भात कहैत छथि। एहि तुलनामे सामाजिक पंक्ति आ देहक समान उँचाइक दृश्य उतरैत अछि। दयाक दानदाता ऊपर, भूखल नीचे; हिस्सामे दुनू एकहि स्तरपर। कथावाचक अन्न-वितरणक अमूर्त विवादकेँ पाठकीय अनुभव योग्य करैत छथि। शब्द-भेदक दृश्यात्मक शक्ति एहि बातमे अछि जे पाठक चाहे जे धारणा रखथि, देनिहार आ लेनिहारक स्थिति तुरन्त देख सकैत छथि।

खाली कटोरासँ सार्वजनिक भूखक नामावली

स्त्री सभ माप-बाट, सूप, हाँड़ी आ खाली कटोरा लऽ आबैत छथि। नामक रजिस्टरक पार्श्वमे भूखक अभिलेख नहि होयब नब नैतिक अभाव बनैत अछि। परिचित पुरनका वस्तु सामाजिक अनुसंधानक उपकरण बनैत अछि। अनन्या दानक सूची नहि बनबैत, ओ पोषण-वञ्चनाक कथा सुनबाक मार्ग खोलैत अछि। एहि दृश्यसँ पूर्वक मौन-स्वीकारक नियम नव विषयपर लागू होइत अछि: भोजनक अधिकार लाजक प्रदर्शन नहि, गरिमाक प्रश्न अछि।

लोक-स्मृति न्यासक अन्न-कोष : समान भाषामे असमान लक्ष्य

हरिहरनक दूत अन्न-कोषक प्रस्ताव लैत अछि जाहिमे दाताक नाम शिलापट्टपर चढ़त। शब्दमे सहायता अछि, मुदा स्मृतिकेँ विज्ञापनी सम्मानमे परिवर्तित करबाक सम्भावना पाछाँ लुकल अछि। ई कूट घटना पहिने निविदा, ऐप आ

स्मारकक योजना सँ संरचनात्मक समानता रखैत अछि। बारम्बार 'लोक-स्मृति' शब्द लाभ-प्रस्तावक मुखौटा बनैत देखाओल गेल अछि। एहि आवर्तनमे कथावाचक सजग पाठक तैयार करैत छथि जे आकर्षक कागचक लम्बा विधान पढ़ि ओकरा भीतरक अधिकार-सम्बन्ध चिन्हए।

अंकीय द्वार आ भूखक बहिष्कार

चन्द्रपालक प्रस्तावित डिजिटल अन्न-पास चेहरा, अंगूठा, परिवार-सूची आ दानदाताक विज्ञापन एकत्र करैत अछि। पूर्वक स्क्रीन-ठगी प्रसंग ई नव योजनाकेँ सन्दिग्ध बनबैत अछि; दर्शक लग प्रमाणक पूरा अभियोग नहि, पुरान पात्रक चालि आ नब नियंत्रणक संयोजन अछि। लेखक भूखक समानता पर आधारित वितरण आ व्यक्तिगत डेटा-संग्रहक द्वार बीच तनाव खोलैत छथि। कोनो अदृश्य तकनीक-द्वेष नहि, अधिकारक प्रवेश-शर्त कथा-संघर्षक केन्द्र अछि।

लाउक विदेशी बीआ आ नव सौदाक संकेत

लाउ किन-हंग द्वारा उच्च-उपज बीआक प्रस्ताव कृषि-न्यायक कथामे पूर्वक अनाम ग्रह/नव-क्षितिजक बाजारसँ जोड़ैत अछि। आरुणि बीआक स्मृति पूछैत छथि; सलाहकारक वाणिज्यिक भाषा खेतक सम्बन्धक उत्तर नहि दैत। एहि प्रसंगमे बाहरी बीआक वैज्ञानिक मूल्यांकन विस्तारसँ नहि अछि; कथा ओकरा कथानकमे कॉर्पोरेट नियंत्रणक सम्भावित रूपक बनबैत अछि। तेँ टिप्पणी केवल कथ्यक भाव पर आधारित रहबाक चाही, खेतीक वास्तविक प्रजाति-सुरक्षाक अन्तिम फैसला नहि।

सामूहिक कोठी-बखारी : वस्तु सँ संस्था

स्त्री सभ साझा कोठी-बखारी स्थापित करबाक निर्णय लैत छथि। एतय नामक पहरा पहिल बेर स्थायी वस्तु-प्रबन्धक कल्पना पबैत अछि—धान जमा करब, भूखक सूचना, वितरणक लेखा। स्मृति-स्थलक प्रतीकक उलट कोठी-बखारी दैनिक उपयोगक संस्था बनबाक चाह रखैत अछि। मुदा ओकर वित्तीय टिकाउपन, अधिकार-प्रवेश आ जवाबदेही पूरा तय नहि। कथावाचक उद्घाटनक भव्यता नहि, पहिल दानक नान्हि मुट्ठी देखबैत छथि, जाहिसँ संस्था नवजात आ असुरक्षित अनुभव होइत अछि।

जातिक दुआरपर अन्नक प्रश्न

बूढ़ पण्डित सभ घरक अन्न एकहि कोठीमे रखबाक विचारसँ असहज होइत छथि। पवित्रताक सीमा एहि दृश्य मे चूल्हि आ अन्नक साझेदारी द्वारा परखल जाइत अछि। सामाजिक कथा जे नाम-समानता पहले रचने छल, से भोजनक समय नब प्रतिरोध पबैत अछि। एतय विरोधक स्थान विशेष रूपेँ सूक्ष्म अछि—राशनक वितरण केना होएत ताहिसँ अलग, भोजन मे कौन घरक स्पर्श स्वीकार्य मानल जाएत। बराबरीक वाक्य आ शरीरक व्यवहारक अन्तर कथा केँ आगाँ बढ़बैत अछि।

कबड्डीक बोलीमे 'हिस्सा'क प्रवेश

धानक पातसँ बनल रेखा पर बच्चा सभ 'भूख नहि, हिस्सा' कहैत कबड्डी खेलैत अछि। खेल पहिने नाम-रक्षाक चिन्ह छल; एतय अर्थ अर्थिक वितरण पर केन्द्रित होइत अछि। वाक्यक ताल खेलक साँसक लय पकड़ैत अछि, जाहिसँ शिक्षा आदेश नहि, देहगत अभ्यास बनैत अछि। मुदा खेलमे माटि पर सीमा लाँघब सहज अछि, वास्तविक भूखल परिवारक हिस्सा सुनिश्चित करब कठिन। ई अन्तर आगामी अध्याय मे बारम्बार खुलैत रहत।

मुट्ठी भरि दान आ सांकेतिक बराबरी

उज्ज्वलक माय, मजदूरक बेटा, विधवा आ आन लोक छोट-छोट दाना कोठी-बखारीमे रखैत छथि। कथावाचक संख्यात्मक पैघता सँ अधिक देनिहारक सामाजिक इतिहासपर जोर दैत छथि। आधा कटोरी चिउड़ा सेहो एतय सामुदायिक दायित्वक कथा बनैत अछि। मुदा ई दृश्य दाताक अनिवार्य महिमा पैदा करबाक जोखिम रखैत अछि, खास कऽ जखन गरीब अपन अभावक बीच योगदान करैत छथि। आलोचनामे ई पूछनाइ जरूरी अछि जे हिस्सा देबाक समान अधिकार संग हिस्सा लेबाक सुरक्षित अधिकारो सुनिश्चित भेल अछि कि नहि।

अपूर्ण रेखा आ भोरक अपेक्षा

अध्यायक अन्तमे खाली थारी, सामूहिक कोठी आ अन्नक प्रश्न पूर्ण समाधान नहि बनैत। पात्र सभ अगिला भूखक कथा सुनबाक आवश्यकता अनुभव करैत छथि। अन्नक न्याय शीर्षक सभसँ पैघ सामाजिक प्रतिज्ञा करैत अछि, मुदा तुरन्त सम्पूर्ण वितरण-दशा नहि देखबैत। एहि अवकाशमे अध्याय १२७ 'भूखक नाम'क आगमन सहज होइत अछि: अन्न जमा करब पर्याप्त नहि, भूखल मनुष्यक आवाज सुनबाक अधिकारो चाही। कथाक शक्ति एहि स्थगित परिणतिकेँ मानि लेबामे अछि।

अन्तिम आकलन : प्रतीक आ संस्था बीचक फाँक

रोपल धानसँ बालि, बालिसँ अन्न, अन्नसँ कोठी-बखारी—ई तेज रूपान्तरण कथा केँ गतिक चमक दैत अछि, मुदा कृषि-समय आ व्यवस्थाक दीर्घ श्रमकेँ संक्षिप्त करि दैत अछि। नब सामूहिक संस्था उत्साहजनक लगैत अछि, पर ओकर सामग्री, आवधिक श्रम, अन्नक टिकाउपन आ परिवारक स्वायत्तताक प्रश्न कायम अछि। एहि असमाप्ति केँ पहचानि पाठक आगामी भूखक नामावलीक प्रसंगकेँ उत्सवक पुनरावृत्ति नहि, संस्थाक मानवीय कसौटी मानि सकैत अछि।

प्रकरण २२८ | मूल अध्याय १२७ — भूखक नाम

खाली थारीक कथात्मक ध्वनि

अध्याय १२६मे अन्न-संग्रहक आरम्भक बाद १२७क भोर एक खाली थारीसँ होइत अछि। भरल कोठीक बगलमे खाली धातुपात्रक उपस्थिति एकटा प्रत्यक्ष प्रश्न बनैत अछि। लेखक थारीकेँ बजनिहार पात्र घोषित नहि करैत, ओकर रिक्तिक भारी ध्वनि देखबैत छथि। ई प्रत्ययक उलटाव आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण: जे वस्तुमे

किछु नहि, ओ कथामे सर्वाधिक सामग्री वहन करैत अछि। स्मृति-पाथरक रूपक एतय रोज भोजनक पात्रमे घुरि आबि लोकक वर्तमान विपन्नता दृश्य करैत अछि।

मरल नाम आ जीबैत भूख बीच असमता

कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे मृतकक नाम लिखब कठिन, मुदा जीवित भूखक नाम लिखब अधिक कठिन। मरल व्यक्ति तत्काल सामाजिक प्रतिवाद नहि करैत; भूखल जीवित व्यक्ति अपन लाज, परिवार, प्रतिष्ठा आ असुरक्षाक संग उपस्थित अछि। एहि कारण चरित्रक अधिकार स्वयं कथन-तकनीकक प्रश्न बनैत अछि—ककर नाम प्रकाश करब, ककर गोपनीयता राखब, आ ककर अनुभव ओकर अपन शब्दमे सुनब? पुरान नाम-पाठक विधिकेँ यथावत् दोहराएब एतय अनुपयुक्त होयत, तेँ कथा ओकर नियम बदलैत अछि।

'चूल्हिक उपवास' : लज्जाक रूपक

पहिल स्त्री तीन दिन भातक गन्ध नहि उठबाक कथा कहैत छथि, मुदा बच्चाकेँ उपवास करैत चूल्हिक बात बतौने छलीह। एहि लघु संवादमे भूखक सामाजिक असहजता आ मातृत्वक संरक्षण एक साथ देखाइत अछि। सत्यक प्रत्यक्ष घोषणा नहि, घरक लाज लुकाएबाक उपमा पाठक पर अधिक तीव्र प्रभाव छोड़ैत अछि। अनन्या 'चूल्हिक उपवास'केँ भूखक नाम बनबैत छथि; एहि पुनर्नामकरणमे कठिन वास्तविकता केँ तमाशा बनौने बिना सार्वजनिक अर्थ देबाक प्रयास अछि।

गड़ेरिया आ अन्तरपीढ़ीय स्मृति

दोसर गवाही देनिहार बूढ़ गड़ेरिया अपन गोरू लेल घास राखैत आ स्वयं पानि पीबि सूतैत छथि। ओ गोरू बेचबाक निर्णय केबल बाजारक हिसाब सँ नहि लैत—पिताक स्मृति सँग जुड़ल कर्तव्य बचबैत छथि। कथावाचक भूखक कारण केवल आजुक आमदनीक कमी नहि, पीढ़ीगत स्मृति आ आर्थिक विकल्पक संघर्ष रूपमे देखबैत छथि। ई छोट कथावृत्त मुख्य उपन्यासक मृतक-स्मृतिसँ वर्तमान निर्वाहक दूहरी बाध्यता जोड़ैत अछि।

'छुट्टीक भूख' : विद्यालयकालक उलट दृष्टि

छोट बालक विद्यालयक मध्याह्न भोजनकेँ जीवनक सहारा कहैत अछि आ छुट्टीक दिनक पेटकेँ खाली मैदान कहैत अछि। जकरा सभ लेल छुट्टी आनन्दक समय अछि, ओकरा लेल ई बालकक कथामे संकट अछि। एहि विपरीतार्थ सँ कथा संस्थाक आपूर्तिक निर्भरता बतबैत अछि। गद्य बालकक आर्थिक आँकड़ा नहि पूछैत, ओकर काल-अनुभव देखबैत अछि। समय स्वयं वर्गानुसार अलग अनुभूत होइत अछि; एहि छोट चित्रमे सामाजिक वैषम्यक गहराई बिनु भाषणक खुलि जाइत अछि।

कुलक डर सँ रोकल पेट

जातिक ऊँचता पर गर्व करैत परिवारक वृद्धा भूख रहितो दोसर घरक अन्न नहि लेबय चाहैत छथि। बाहरक नियम देहक जीवित आवश्यकता पर विजय पाबैत अछि। बा पहिने हुनका पानि दैत छथि; ई दृश्य अर्थपूर्ण अछि, कारण सम्मानक प्रश्नक बीच भोजन जबरदस्ती नहि कराओल गेल। कथावाचक सामाजिक बाड़केँ पीड़ितक भीतर

बसल डर रूपमे चित्रित करैत छथि। जाति विरोधक एकहि घोषणासँ भोजन साझा नहि होइत—अनुभवक सतत परिवर्तन आवश्यक अछि।

नामावलीक बहुविध लघुकथात्मकता

'दवाइक बदला भात', 'उधारक नून', 'छुट्टीक भूख', 'कमाइ शहरमे, पेट गाममे' जेकाँ सूत्रवाक्य सभ आत्मनिर्भर लघुकथाक द्वार खोलैत अछि। पूर्ण जीवनक विस्तार नहि देल गेल, मुदा प्रत्येक नामक पाछाँ अलग सामाजिक कारणक अनुमान उत्पन्न होइत अछि। एहि अर्थमे सूची केवल संख्या नहि; कथाक सघन संक्षेप अछि। तथापि अति अधिक पदबंध एक ठाम आएला पर व्यक्ति-विशेषक अन्तर दबि सकैत अछि। पहिल तीन-चारि जीवित गवाही एहि जोखिमकेँ कम करैत अछि।

देविकाक प्रश्न : अभिलेखसँ भोजन तक

देविका पूछैत छथि—नाम लिखलहुँ, मुदा भोजन कखन? ई सीधा प्रश्न अध्यायक निर्णायक मोड़ अछि। पाठशालाक स्मृति-संकलन कहीं मात्र रीतिसँ सन्तुष्ट नहि भऽ जाए, ताहि लेल कथामे कर्तृत्वक माँग अछि। सुननाइ आ भोजनक बीच जे दूरी अछि, से मुकदमे आ निर्णयक बीचक विलम्बक नव रूपक बनैत अछि। एक पात्रक संवाद कथा केँ आत्ममुग्ध अनुष्ठानसँ बहर निकालि उपयोगी चूल्हि दिस धकेलैत अछि।

दानदाताक नाम हटेबाक प्रयोग

साझा कोठी-बखारीमे दाना देनिहारक नाम सार्वजनिक गौरवक पट्टिका पर नहि लिखबाक नियम बनैत अछि। व्यापारी पाँच बोरा दऽ अपन नाम चाहैत छथि, मुदा अनन्या 'पट्टिका भूखक बनत' कहि प्राथमिकताकेँ उलटैत छथि। एहि क्रियामे केन्द्र दानदाताक प्रतिष्ठासँ भोजन-प्राप्तिक अधिकार दिस सरकैत अछि। मुदा दानदाताक नाम नहि लिखनाइ आ आन्तरिक पारदर्शी लेखा नहि रखनाइ दू भिन्न बात अछि; कथा एहि प्रबन्धकीय भेदक पूरा विस्तार नहि करैत। ई ध्यान भविष्यक संस्थागत विश्वसनीयताक लेल जरूरी अछि।

सामूहिक रसोइक समय-गन्ध

साँझक चूल्हि जरैत अछि; बहु दिनक ठंढा माटिक गन्ध पहिल भातक वाष्पसँ मिलैत अछि। इन्द्रियगत विवरण पाठककेँ तत्काल क्रियाक बीच राखैत अछि। एक थारीक अमूर्त घोषणा एतय हाथक काज, साग चुनबाइ, धान धोअनाइ आ पानि आनबाक श्रममे बदलैत अछि। रसोइ पाथरक नाम-घेरा सँ कने दूर राखल गेल, जाहिसँ पूजा आ उपयोगक फाँक कथा स्वयं स्थान-विन्यास द्वारा देखबैत अछि।

एक दाना बचल रहबाक भविष्यसूचकता

सामूहिक भोज पछाति खाली थारीमे एक दाना जानि-बुझि छोड़ल जाइत अछि। कथा एहि छोट चिन्हकेँ पूर्ण समाधान घोषित नहि करबाक स्मारक बनबैत अछि। दाना थारीक बीच सँ हटि उत्तर दिस ठहरैत अछि, जतए पुरान इनार अछि। एहि जादुई-सी हलचलसँ अगिला अध्याय 'प्यासक नाम'क भौगोलिक दिशा निश्चित होइत अछि।

भूखक प्रश्नक उत्तर पहिल भोजन अवश्य अछि, मुदा पियासक संकट अलग रहि जाएब कथा-शृंखलाक नव तनाव सृजित करैत अछि।

अपूर्ण रसोइ आ स्थायित्वक विवेचन

पहिल सामूहिक रसोइ सफल देखाओल गेल अछि, मुदा कोठी-बखारी स्थायी नहि, नामावली अधूरी अछि आ गरीबीक कारण अक्षुण्ण। लेखक अन्तमे एहि अपूर्णताकेँ स्वीकार करैत छथि। ई स्वीकार कथाक विजयोल्लासकेँ रोकैत अछि आ पाठकेँ दीर्घकालिक जिम्मेदारी दिस पठबैत अछि। भूखक नाम लिखनाइ जरूरी, मुदा जिनकर नाम लिखल गेल हुनका नियमित अन्न, सुरक्षित श्रम, जलबाँट आ सम्मानजनक रोजी देबाक काज कथा आगाँ लेल छोड़ि रहल अछि।

निष्कर्ष : नामक अनुष्ठानक क्रियात्मक परीक्षा

अध्याय १२७ नव सामाजिक समस्या जोड़बाक बदला पूर्वक नाम-पहराक पद्धतिकेँ जीवित भूखपर कसैत अछि। मौनक अधिकार, लाजक रक्षा, नामक पुनर्निर्माण आ सामूहिक श्रम—चारि सूत्र भोजनक दृश्य मे मिलैत अछि। कथावाचक एक-एक गवाहीसँ पाठककेँ सम्बन्धक सूक्ष्मता देखबैत छथि; ई चित्रण मात्र उपदेश बनि नहि रहैत, कारण स्त्रीक चूल्हि, बालकक छुट्टी आ वृद्धाक कुल-भय ठोस जीवनक स्थिति छथि। आगामी प्यासक समस्या एहि अनिर्णीत वास्तविकताक स्वाभाविक विस्तार अछि।

प्रकरण २२९ | मूल अध्याय १२८ — प्यासक नाम

भूखक दानासँ इनार धरि दृश्य-स्थानान्तरण

पछिला अध्यायक एक बचल दाना उत्तर दिशामे रुकैत अछि आ एहि अध्यायमे लोक सूखल इनार दिस जाइत अछि। ई लघु चमत्कार कथाक अगिला स्थान चयन करैत अछि। थारीक रिक्तिक बाद कूपक रिक्ति—दूटा अभाव-आकृतिक आवर्तन पाठककेँ बतबैत अछि जे भूख आ प्यास अलग संज्ञा भएनो एकहि सामाजिक बहिष्कारक परस्पर सम्बद्ध अनुभव छथि। कथानक कतहु एक संकट पूरा समाप्त भेलाक घोषणा नहि करैत; उभरैत नब अवरोधक दिशा पहिल वस्तु स्वयं देखबैत अछि। एहि तरहेँ कड़ी-जोड़क काम बालिकाक भाषण नहि, दानाक चालि करैत अछि।

इनारक देहपर लिखल जातिक इतिहास

पुरान इनार केवल जल-स्रोत नहि, जातिसँ रोकेल प्रवेशक भूगोल अछि। वृद्धा अपन मायकेँ पानि भरए नहि देल गेल आ घैल फोड़ल गेलाक कथा कहैत छथि। युवक अपन दादाक अलग लोटाक स्मरण अनैत अछि। ई दू कथावृत्त समयमे भिन्न, मुदा स्थानमे एकत्रित होइत अछि; एकहि इनार पर पीढ़ी-पीढ़ीक रोक दृश्य होइत अछि। कथावाचक लिखित वंशावलीक विपरीत कूपक घाटकेँ देहभोगी इतिहासक अभिलेख बनबैत छथि। स्थानगत पुनरावर्तन कालक लम्बाई अनुभव करबैत अछि।

घैलक फूटब आ नामक अदृश्यता

वृद्धाक मायक घैल फोड़ल जाएब गद्यमे कोनो विशाल सार्वजनिक दण्डक दृश्य नहि, दैनिक अपमानक आघात अछि। प्यास बुझबाक पात्र नष्ट करबक अर्थ मानवीय गरिमाक सम्भावना छीनब। एहि भौतिक दृश्यसँ पाठक ऊपरसँ समान लगैत गामक भीतरक असमान जल-व्यवस्था देखैत अछि। ओतहि दादाक लोटा पर नाम नहि, जातिक निशान रहब व्यक्तिगत परिचयकेँ सामूहिक अपमानमे बदलबाक तकनीक अछि। आब बच्चा सभ नामक पाथर जेकाँ जलपात्रक अर्थ फेर लिखए चाहैत अछि।

एक ही जलक दू विपरीत मार्ग

स्वप्नक अनाम ग्रहमे पानि क्रमांकसँ बाँटल जाइत छल, जबकि पृथ्वी पर जाति पानि रोकैत अछि। ईरा दुनू दृश्य जोड़ैत छथि। कथावाचक एतय काँचक भविष्य आ माटिक वर्तमानक भेद मात्र नहि, दुनू नियन्त्रणक समान संरचना देखबैत छथि। अनाम ग्रहक क्रमांक जे अमूर्त छल, ओकर स्थानीय पूर्वरूप इनार पर अलग लोटा अछि। पूर्वक स्वप्न-प्रसंग नब यथार्थ-दृश्य बुझबाक फ्रेम बनैत अछि; एकरा वास्तविक ग्रह-यात्राक रिपोर्ट मानब पाठक भीतरक आ बाह्य कथा-संसारकेँ मिश्रित करब होयत।

खाली लोटाक ध्वनि आ सामूहिक लय

नाम-पाठक प्रत्येक गवाहीक बाद खाली लोटा टुनकैत अछि। एकहि क्रियाक अनेक स्वर वर्णित अछि: आस्ते ठोकल टुनक आ जोरक झनकार भिन्न भिन्न लगैत अछि। एहि ध्वन्यात्मक आवर्तन सँ कथा एक मूक प्यासकेँ सार्वजनिक सुननाइमे बदलैत अछि। पूर्वक रिक्त थारीक काल्पनिक भारी आवाज एतय सचमुच बजैत धातुपात्र बनैत अछि। आवाजक न्यास कोनो एक नायक नहि सँभालैत; प्रत्येक गवाहीक बाद सामूहिक ध्वनि अलग व्यक्ति द्वारा उठैत अछि।

दानक जल-पृष्ठ आ वितरणक अनिश्चय

चन्द्रपालक अनुप्रयोग 'नामक लेल जल-दान' प्रदर्शित करैत अछि। मुदा किनका पानि भेटत, कोन इनारक मरम्मत होएत, आ किनका प्रवेश मिलत, एहन प्रश्नक उत्तर नहि। कथा एहि सूचना-अभावकेँ आर्थिक अपराधक पूर्वक परिपाटी सँ जोड़ैत अछि। परदापर पानीक दान देखाओल जा सकैत अछि, वास्तविक मटमैला इनार सुधरेब काज मांगैत अछि। एहि विरोधसँ बारम्बार उपस्थित डिजिटल माध्यमक मुद्दा गहिराइत अछि—समस्या स्क्रीनक अस्तित्व नहि, नामक संवेगकेँ असल जल-वितरणक जगह बेचबाक कोशिश अछि।

लाउक जल-रिपोर्ट आ बाजारक अन्तर्यात्रा

लाउ किन-हंगक बन्द कमरामे 'दीर्घकालीन जल-आपूर्ति अधिकार'क शब्द चमकैत अछि आ 'ककर प्यास बेचब?' प्रश्नमे बदलैत अछि। एहि दृश्यमे स्थानीय कूप आ अन्तरराष्ट्रीय व्यावसायिक कागजक दूरी कथावाचक क्षणभरि मे काटैत छथि। लाउक निज फोकसक भीतर स्क्रीन-अक्षर बदलनाइ कल्पनात्मक अन्तर्मनक संकेत अछि; प्रत्यक्ष आर्थिक लेनदेनक पूर्ण विवरण नहि। एहि सीमा केँ मानि पढ़नाइ कथा-विश्वसनीयताक लेल उचित अछि।

श्रमक नायक : इनार साफ करबाक क्रिया

कथा केवल बहस नहि करैत; साँझ धरि इनारक झाड़ी साफ होइत अछि आ डोल पर डोल पानि निकालनाइ चलैत अछि। मटमैला पानिक बाद तुलनात्मक साफ धारि आ पुरनका पाथरक गन्ध भेटैत अछि। समयक क्रम दस, बीस, तीस डोलमे सन्निहित अछि; ई संख्या पात्रक हाथक श्रमक लय बनैत अछि। पहिल डोल ओ वृद्धा उतारैत छथि जिनकर मायकेँ जलसँ वञ्चित कएल गेल छल। एहि कर्तृत्व-समीकरणसँ इतिहासक पीड़ित वंश एहि दृश्य मे नव अधिकारक आरम्भ करैत अछि।

जलक स्वच्छता आ जातिमुक्त प्रवेशक दू भिन्न प्रश्न

इनारसँ मटमैला पानि निकलैत अछि आ बच्चा सभ ओकर धीरे साफ होयबाक उत्सव करैत अछि। मुदा पाठक लेल दू मुद्दा भिन्न अछि: भौतिक जलक पेयता तथा जलपर समान सामाजिक पहुँच। स्वच्छता प्रक्रिया कथामे दृश्य होइत अछि, पर वास्तविक सुरक्षित जलपरीक्षण अथवा रखरखावक व्यवस्था विस्तारसँ नहि। एहि अनिर्णयकेँ आलोचना चुपचाप सफल घोषणा सँ नहि भरैत। प्यासक पहराक मूल्य एहि बातमे अछि जे ओ प्रवेशक अपमान दूर करबाक प्रारम्भ बनैत अछि, पूर्ण जल-प्रबन्धनक निष्पत्ति नहि।

साझा चुल्लू आ अनुष्ठानक नव विन्यास

रातिक सामूहिक जल-पाठमे प्रत्येक लोक डोलसँ एक चुल्लू पानि उठबैत, अपन नाम कहैत आ साझा प्यास स्वीकारैत अछि। कोई ऊँच आसन, पुरोहितक्रम वा मन्त्र नहि अछि। एहि विन्यासमे धार्मिक रीति-जेकाँ सामूहिक पुनरावर्तन अछि, मुदा ओकर केन्द्र सामाजिक सहभागिता अछि। तथापि केवल एक रातिक अभिनय सँ घर-घरक घैलपर पुरान रोक हटि गेल की नहि, कथा सिद्ध नहि करैत। ओहि सन्देहसहित दृश्यकेँ नब व्यवहारक आरम्भ रूपमे पढ़नाइ उचित अछि।

मिथकीय पनिडुब्बी आ जीवित इनारक साँस

साफ होइत कूपसँ ठंढी हवा उठैत अछि, आ लोक कहैत अछि 'इनार साँस लेलक'। ई मानवीकरण अध्यायकेँ जादुई यथार्थक पूर्वक जल-प्रसंगसँ जोड़ैत अछि। लोकक वाक्य बहुधा वास्तविक हवा आ कल्पित जीवित कूपक बीच निश्चय नहि करैत। एहि अनिश्चिततामे जलक पुनरागमनक आनन्द अछि; पाठक पनिडुब्बीक वास्तविक शरीर प्रमाणित नहि करैत, किन्तु सामूहिक अनुभवक अर्थ बूझि सकैत अछि।

राघवक सूचना-नियन्त्रणक विफलता

राघव जल-दृश्यक 'भावनात्मक शक्ति' देखैत अछि आ नियन्त्रणक उपाय सोचैत अछि, मुदा ओकर सन्देश पठाओल नहि जाइत। स्क्रीन पर खाली लोटाक टुनक चिन्ह जेकाँ लौटैत अछि। एहि बिम्बमे समुदाय द्वारा रचल सार्वजनिक ध्वनि गुप्त डिजिटल सञ्चारक भाषाकेँ बाधित करैत अछि। तथापि ई अपराध-जालक पूर्ण नाश नहि; कथे भीतर क्षणिक विघटन अछि। जाल एखन सक्रिय सम्भावना अछि, आ जलक अधिकारक पहरा लगातार चाही।

अगिला नून-प्रसंगक इन्द्रियगत सेतु

प्यासक कथा आँखि आ कानसँ आगाँ स्वादक दिशामे बढ़ैत अछि। इनारक पानि मटमैला होयब, कूपक पुरनका गन्ध आ चुल्लूक स्पर्श सबटा देहकेँ सक्रिय करैत अछि। अध्यायक अन्तमे नदी, पोखरि, घैल, बादल आ नोरक उल्लेख प्यासक अवधारणाकेँ भौतिक जलसँ आगे व्यापक देहगत अनुभव बनबैत अछि। नोरक सम्बन्ध अगिला नून-संवाद लेल आवश्यक सेतु अछि। एहि सन्धि सँ अध्याय १२९ विषयान्तर नहि, स्वाद आ श्रमक क्रमिक प्रवेश बनैत अछि।

प्रकरण २३० | मूल अध्याय १२९ — नूनक शपथ

नामसँ स्वाद धरि साक्षीभावक संक्रमण

अन्न आ पियासक बाद उपन्यास 'नून'केँ केन्द्र बनबैत अछि। वस्तु नगण्य आकारक अछि, मुदा माँक दूध, मजदूरक पसीना, स्त्रीक नोर, मृत देहक अन्तिम गीलापनक संग ओकर अर्थ विस्तार पबैत अछि। एहि बहुल सम्बन्धसँ छोटे स्वादक वस्तु समस्त सामाजिक स्मृतिक बिम्ब बनैत अछि। पाठक नूनकेँ पोषण-विज्ञानक मात्र पदार्थ नहि, पूर्वक श्रम, हानि आ साझेदारीक कहानीक मिलन-बिन्दु रूपमे पबैत अछि। एहि अर्थविस्तारमे गद्यक मुख्य आख्यान-चाल नूनक चारू कात अलग जीवनक रेखा जोड़नाइ अछि।

मिथिलामे समुद्र नहि : स्थानिक विडम्बना

कथावाचक कहैत छथि जे मिथिलामे समुद्र नहि, मुदा प्रत्येक देहमे नून अछि। भूगोलक अनुपस्थिति आ देहगत उपस्थितिक ई विपरीतता पाठकक दृष्टिकेँ देश-सीमासँ मनुष्यक साझा अनुभव दिस अनैत अछि। नूनक कण भौतिक रूपेँ समान होएबाक दावा समाजमे पवित्र-अशुद्ध स्पर्शक भेदक प्रश्न बनैत अछि। कथात्मक प्रभाव ओहि व्यंग्यमे अछि जे एकहि स्वादक वस्तु सामाजिक सम्पर्कक समय अलग 'जाति' पाबैत अछि।

उज्ज्वलक घरक नून आ निजी शोक

देविका उज्ज्वलक घरक पुरान डिब्बीसँ नून आनैत छथि; माय एक परिचित पात्रकेँ फेर देखितहि काँपि जाइत छथि। ई सूक्ष्म क्रिया व्यापक सामुदायिक अध्यायकेँ व्यक्तिगत शोकसँ जोड़ैत अछि। स्वादक बिम्ब जँ केवल सामूहिक समानताक नारा बनि रहैत तँ पात्रक पीड़ाक विशिष्टता हराएत। मायकेँ डिब्बी चिन्हबाक क्षणसँ दैनन्दिन वस्तु शोकक समयसंग्राहक बनैत अछि। पुरान घरक खास वस्तु सामूहिक शपथमे शामिल होइतहुँ अपन निजी भार नहि छोड़ैत।

नूनक जातिहीनता आ पवित्रताक विरोध

मीरा कटोरी सभकेँ जातिअनुसार क्रममे नहि राखैत छथि। कथाकेँ एहि छोटे व्यवस्था-विरोधसँ लय भेटैत अछि: चर्मकारिणीक हाथ, ब्राह्मणक थारी, मजदूरक पसीना आ स्त्रीक नोरक सन्दर्भ एके स्वादमे जुड़ैत अछि। जातिगत भेद स्वयं नूनक गुण नहि, समाजक वितरणक निर्णय बनि देखाइत अछि। बालक सभ नून छुबि ओकर स्वाद एक कहैत अछि; ई देहगत क्षण भाषणक बदला कथाक अन्तर्गत अनुभव बनबैत अछि।

दलित वृद्धाक दोहर अन्याय

दलित वृद्धा कहैत छथि जे हुनकर हाथसँ रान्हल भोजन लोक खाइत छल, मुदा हुनकर घरमे पानि नहि पीबैत छल। कथावाचक भोजनक उपयोग आ मानवीय स्पर्शक निषेध बीच दुरन्त विरोध देखबैत छथि। ई वाक्य कथे भीतर एक तेज व्यक्तिगत गवाही अछि, जकर पाछाँ चर्मकारणी प्रसंगक लम्बा छाह उपस्थित अछि। लेखक एहि विरोधकेँ जाति-तर्कक शास्त्रीय विश्लेषणमे नहि, देहक रोजमर्रा प्रयोगमे खोलैत छथि; एकर प्रभाव ताहि लेल मूर्त अछि।

शपथक वाचिक रचनाक अन्त:क्रिया

स्त्री सभ अपन सरल शपथ बनबैत छथि—खायल नूनक श्रम नहि बिसरब, नोरक मान करब। एहि वाक्यक लय अदालतक शपथ सँ भिन्न अछि। सत्यव्रत कहैत छथि जे सत्य-बचनक औपचारिकता एतय जीवन-व्यवहारक उत्तरदायित्व बनल अछि। कथावाचक शपथक भाषाकेँ खाली घोषणापत्र नहि, देहक स्वादसँ जुड़ल स्मरण-विधि रूपमे बदलैत छथि। मुदा ई शपथक प्रभाव परिवारक दीर्घ व्यवहारमे केना पड़त, तकर वर्णन आगामी अध्यायसभपर छोड़ल गेल अछि।

'स्मृति-नून'क व्यावसायिक अपहरण

व्यापारी चन्ना ठूँठक चित्रसहित 'गढ़ नारिकेल स्मृति-नून' बेचबाक योजना अनैत छथि। एहि दृश्यमे पूर्वक विरासत-परियोजना नव उत्पाद-रूप धरैत अछि। पहिने मृतकक आवाजक संग्रह, फेर स्मृति-दर्शनक टिकट, आब स्वादक पैकेट—बाजार कथा-विश्वक नब-नब इन्द्रिय क्षेत्र अपने नियन्त्रणमे लेबाक कोशिश करैत अछि। लेखक एके शोषणक पद्धतिक पुनरावर्तन दिखबैत छथि, मुदा विविध वस्तु बदलि असल तनाव बनाए रखैत छथि।

राघवक सन्देश आ अदृश्य मध्यस्थ

व्यापारीक पाछाँ राघवक गुप्त सन्देश स्मृतिकेँ उपभोगमे बदलबाक सलाह दैत अछि। एहि प्रसंगमे अपराधी प्रत्यक्ष मंचपर नहि, एक अदृश्य सञ्चार-धागा द्वारा उपस्थित अछि। पाठक वस्तु देखैत अछि, तकर पाछाँक आदेश अलग स्रोतसँ सुनैत अछि। ई दू स्तरीय सूचना-वितरण कथाक षड्यन्त्रपरक आवरणकेँ बनाइत अछि। फेरो व्यापारीक सम्पूर्ण आर्थिक योजना विस्तारसँ नहि देल गेल; ओकर भूमिका वर्तमान दृश्य मे लाभक भाषाक अवतार अछि।

घर-घर नून रखिते नाम बजब

साझा शपथक बाद घरमे भोजन बनैत काल लोक एकटा नाम कहैत अछि। सार्वजनिक समारोह निजी रसोइमे प्रवेश करैत अछि; ई बदलाव कथाक वास्तविक चरम प्रभाव अछि। कटल गाछीक निकट उच्चरित सामूहिक शब्द अब परोसबाक मामूली क्षणमे फेर बाँचैत अछि। यदि नाम-उच्चारण सामुदायिक आदत बनत तँ स्मृति संस्थागत पट्टिकापर निर्भर नहि रहत। मुदा कथावाचक समस्त घरमे ई परिवर्तन पूर्ण आ स्थायी भेल बतबैत नहि; घटनाक वर्तमान रातिक चित्रण प्रमुख अछि।

नव-क्षितिजक स्वाद-नियन्त्रित पोषण

दूर परियोजनाक सूचीमे अन्न, जल, नून आ स्वादक मापन देखाओल गेल अछि। पृथ्वीकेँ छोड़बाक स्वप्नक उज्जर काँचक वातावरण एतय भोजनक नापमे प्रवेश करैत अछि। सामाजिक स्मृति आ सामूहिक स्वाद नहि, नियंत्रित पोषण मुख्य बनि जाइत अछि। स्वप्न-अनुक्रम आ पृथ्वी-भोजन अनुक्रमक तुलना कथाकेँ भावात्मक विस्तार दैत अछि: सुखक नामपर स्मृति-विहीन दक्षता एक तरफ, कठिन सामाजिक सम्बन्ध सहित स्वाद दोसर तरफ।

कबड्डीमे नून आ 'बेनाम'क टोली

बच्चा सभ 'नून' आ 'बेनाम' नामक दू टोली बनबैत अछि। खेलमे प्रतिपक्षीकेँ स्पर्श करबाक क्षण नूनक नाम आ स्मृतिक प्रश्न जुड़ैत अछि। ई पूर्ववर्ती नाम-पहराक नियमक नव इन्द्रियगत संस्करण अछि। खेलक रेखा मनुष्यक स्पर्श पर जातिक भ्रम उद्घाटित करैत अछि; जँ दुनू टीम धरती पर एके पसीना बहबैत अछि तँ स्वादक समानता कथाक देहभाषामे उतरैत अछि। एहि बिम्बक मूल्य ओकर दृश्य-शक्ति अछि, कियो सामाजिक समीकरणक पूर्ण समाधान नहि।

नूनक सूक्ष्मता आ चित्रणक सीमासभ

कतेको संवादमे नून आ नोरक समान स्वाद सामाजिक बराबरीक तर्क बनैत अछि। एहि बिम्बक नैतिक क्षमता बलवान अछि, मुदा देहक रासायनिक समानतासँ जातिगत संस्थाक स्वत: विघटन सिद्ध नहि होइत। उपन्यास एक भावात्मक-साहित्यिक रूपक रचैत अछि, अनुभवजन्य समाजशास्त्रीय प्रमेय नहि। एहि सीमा बुझेने समीक्षा नूनक शपथकेँ सतत श्रम आ सहभोजनक संस्कारक एक हिस्सा मानैत अछि। उपन्यासक सफल रूपक ओहि समय अधिक अर्थपूर्ण होइत अछि जखन अगिला व्यवहारक कथा ओकरा पुष्ट करैत अछि।

निष्कर्ष : स्वादक भीतर जोगाओल इतिहास

शपथक अन्तिम पद कहैत अछि जे नून अपना स्वादे स्मरण करबैत अछि। एहि बदलल रचनामे बीज-जैसाँ सूक्ष्म वस्तुक उपयोग कथा पूरा सामाजिक इतिहास छोट कणमे राखबाक लेल करैत अछि। व्यक्तिगत शोक, जाति-अपमान, श्रमिकक घाम, बाजारक उत्पाद-सूची आ स्वप्नक नियन्त्रित भोजन एक अध्यायमे जुटैत अछि। तकर बाद स्वादक 'न्याय' शब्द अगिला अध्यायक शीर्षक बनैत अछि—स्मरणक शपथक बाद साझा भोजनक वास्तविक अभ्यास करब शेष अछि।

प्रकरण २३१ | मूल अध्याय १३० — स्वादक न्याय

जीह पर न्याय : इन्द्रियगत कथन-प्रविधि

उपन्यासक एहि अध्यायमे विचारक मुख्य माध्यम स्वाद अछि। न्यायालय, रजिस्टर, पाथर आ माटि जेकाँ पूर्वक वस्तुक बदला जीह, गन्ध, चूल्हि आ भातक कौर दृश्यकेँ चलबैत अछि। कथावाचक पाठककेँ भोजनक देहगत अनुभूतिसँ सामाजिक बराबरीक प्रश्न धरि लैत छथि। एहि कारण अध्याय 'खान-पानक वर्णन' नहि; भोजनक

अनुभवक माध्यमसँ स्मृति आ न्यायक कथे-अनुभव बनबैत अछि। स्वाद व्यक्तिक भीतर होइतहुँ सामाजिक निषेधक रेखा सँ नियन्त्रित अछि।

सामूहिक भोजक तैयारी आ गामक बहुवाचिक श्रम

देविका साग चुनैत छथि, मीरा भात धोइत छथि, सौम्या पात बिछबैत छथि, ईरा बच्चाकेँ भोजनक पाँति आ स्मृतिक सम्बन्ध बुझबैत छथि। लेखक प्रत्येक पात्रकेँ अलग काम देकर सामूहिक दृश्य रचैत छथि। एहि कार्य-विभाजनमे गामक स्त्री सभ अग्रिम कार्यकर्त्री छथि, मुदा इएह दृश्य प्रश्न उठबैत अछि जे रसोइक भार फेर स्त्रीक कन्धा पर अधिक अछि कि नहि। कथावाचक श्रमक विस्तारसे दैनिक जीवनक वास्तविक बनावट दिखबैत छथि; आलोचना जँ केवल समानताक नारा देखत तँ भोजनक श्रमक असमानता छूटि जाएत।

बुजुर्गक 'मर्यादा' आ बाक प्रत्यक्ष थारी

एक बुजुर्ग साझा पाँतिक विरोधमे समाजक मर्यादा अनैत छथि। बा हुनका सोझाँ एक थारी राखि प्रश्न वापस दैत छथि। एहि नाटकीय उपकरणमे तर्क-वितर्क भोजनक ठोस वस्तुक सामने होइत अछि; पाठक भाषा आ देहगत आवश्यकता बीच संघर्ष देखैत अछि। बुजुर्गक असहजता पूर्वक जाति-पिंजराक निरन्तरता अछि। तथापि अइ प्रसंगमे सामुदायिक प्रतिरोध तुरन्त समाप्त नहि देखल गेल; आगामी साझा थारी अध्याय एहि अनसुलझल डरकेँ फेर खोलत।

स्मृतिक वस्तुकेँ खाद्य-पैकेट बनाबय चाहनिहार दल

विरासत-परियोजनाक लोक 'स्मृति-नून', 'जलसमाधि साग', 'भूत-कबड्डी चूड़ा'क चमकदार थैली अनैत अछि। ई वस्तु सभ पूर्वक लोककथा, शोक आ खेलकेँ उपभोगक उत्पाद बनबैत अछि। लेखक पैकेटक दृश्य आ सागक वास्तविक श्रमक बीच विरोध रखैत छथि। अनन्या पूछैत छथि—ककर भूख, ककर पसीना, ककर नूनक कथा एहि प्लास्टिक-पन्नीमे अछि? एहि प्रश्नक आवर्तन बजारक नामकरण आ जीवित सामुदायिक अनुभवक बीच दूरी खोलैत अछि।

एक कौर, एक नाम : कथा-संरचनाक लय

भोजन शुरू करबाक समय प्रत्येक कौर सँ पहिने एक मृतक वा बहिष्कृतक नाम उच्चरित होइत अछि। नामक रजिस्टर जीहक लयमे फेर जन्म लैत अछि। उज्ज्वल, अनाम श्रमिक, जलसमाधिमे डूबल देह आ चर्मकारणी जेकाँ संकेत सामान्य भोजनक समय उपस्थित बनैत अछि। एहि विधिमे पाठककेँ नाम-पाठक लम्बा शृंखलाक श्रव्य पुनरावृत्ति भेटैत अछि, मुदा अब ओकर केन्द्र देहकेँ पोसबाक काज अछि। अतीत भोजनक वर्तमानमे प्रविष्ट होइत अछि।

पहिने परोसनिहार स्त्रीक अन्तिम भूख

मीरा देखैत छथि जे बहुत स्त्री सभ पहिने दोसरा केँ परोसैत आ अन्तमे बाँचल हिस्सा खाइत छथि। देविका लिखैत छथि—स्वादक न्याय बिनु परोसबाक न्याय अधूरा। एहि छोटे निरीक्षणसँ कथानकक नैतिक कसौटी सामाजिक

पाँतिसँ घरेलू श्रमपर उतरैत अछि। एक ही परिवारमे महिलाक भोजन-क्रमक असमानता सार्वजनिक जाति-विरोधक संग सहअस्तित्व रखि सकैत अछि। ई प्रसंग अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि, कारण साझा भोजक उत्सवक भीतर नब असमानताकेँ कथा स्वयं चिन्हैत अछि।

सत्यव्रतक पाछाँ बैसनाइ : विनम्रता आ विलम्ब

सत्यव्रत मेहता पाँतिक पाछाँ बैसैत छथि आ पहिने रान्हनिहार तथा वञ्चित लोकक सम्मानक बात करैत छथि। एहि दृश्यमे बारम्बार पाछाँ बैसनाइ पात्रक रूपान्तरणक संकेत बनल अछि। तथापि औपचारिक विनम्रता अकेले अतीतक प्रक्रियागत अपराधक परिपूर्ति नहि। कथावाचक पूर्वक गवाहीकेँ नव भोजनक अभ्याससँ जोड़ैत छथि, जाहिसँ अपन दोष पहिचानल व्यक्तिक परिवर्तन अभ्यासक रूपमे दृश्य होइत अछि; सिद्ध मुक्ति घोषित नहि।

विदेशी बच्चा लेल ईराक पत्रक सीमा

ईरा लोकल भोजक विषयपर विदेशक बच्चा सभकेँ पत्र लिखबाक सोचैत छथि। लेखक एहि माध्यमेँ गामक स्वादकेँ दूरीसँ देखबाक समस्यापर प्रश्न उठबैत छथि। रसोइ-पुस्तक वा सांस्कृतिक उत्सव 'मिथिला स्वाद'क पूर्ण अर्थ नहि दऽ सकैत जँ भोजन पकौनिहार बहिष्कृत हाथ आ सहभोजनक संघर्ष हटाओल गेल हो। ईराक कलम रुकनाइ महत्त्वपूर्ण—सांस्कृतिक अनुवादक सीमा स्वयं पात्र अनुभव करैत छथि। ई मौन सहमतिक नहि, जटिल वास्तविकताकेँ हलुक पर्यटन-वाक्यमे नहि समेटबाक जागरूकता अछि।

गोहि सभक लेल प्रतीकात्मक पाँति

ठूँठक कात गोहि सभक लेल भात, नून, पानि आ खाली स्थानक एक पाँति राखल जाइत अछि; वास्तविक जीवकेँ भोजन करेनाइ कथाक उद्देश्य नहि। बा गोहिकेँ केवल दानवी भूख नहि, भयावह जीवन-प्रश्न रूपमे सोचबाक आग्रह करैत छथि। एहि जादुई-प्रतीकात्मक दृश्यमे जलसमाधिक प्राणघातक स्मृति पालतू कथामे रूपान्तरित नहि होइत, बल्कि हिंसाक अर्थक प्रश्न उठैत अछि। आलोचनामे गोहि सभक ऐतिहासिक भूमिका सुरक्षित राखब आवश्यक अछि—साझा कौरक प्रतीक पुरान मृत्यु मेटा नहि दैत।

माटिमे दबाओल पातक अभिलेख

भोजनपछाति पात सभ नदीक किनार माटिमे दबाओल जाइत अछि। कागचक रजिस्टर आ पातक रजिस्टर बीच स्पष्ट रूपक बनैत अछि: लिखित संस्थागत स्मृति एक ओर, विघटनशील जैविक स्मृति दोसर ओर। बच्चा सभ पातपर छोट-छोट संकेत लिखैत छथि, पूरा नाम नहि। एहि कारण अभिलेखक रूप जानि-बुझि अपूर्ण अछि; ओ वस्तुक जीवनचक्रक भाग बनैत अछि। माटिमे मिलि जाएब अन्तिम विस्मरण नहि, अनिश्चित पुनरुत्पत्तिक सम्भावना सेहो अछि।

गन्धक चिन्ह : स्वादसँ स्मरणक नव माध्यम

मीरा बुझबैत छथि जे स्वाद जीह पर रहैत अछि, मुदा स्मृति गन्धसँ घुरैत अछि। बुझायल गन्धक चिन्ह अगिला आख्यान-इकाइक संकेत बनैत अछि। कथावाचक भोजनक भाप, भिजल पात, श्रमक पसीना आ चूल्हिक सुगन्ध

एक क्रममे जोड़ैत छथि। पहिने 'आवाजक चोरी', 'नूनक स्वाद' जेकाँ केन्द्र छल; एखन गन्ध स्मृतिक नव संवाहक बनैत अछि। बहु-इन्द्रियगत कथा-निरन्तरता एहि अध्यायक प्रमुख संरचनात्मक सन्धान अछि।

भोजनक उत्सवक अनिर्णीत सामाजिक मूल्य

चरित्रसभ सार्वजनिक भोजन करैत छथि, मुदा उत्सवक चित्रण सम्पूर्ण सामाजिक परिणाम मानि नहि पढ़ल जाए। पाँति भीतरक स्त्री-श्रम, बाहरी परियोजनाक टिकट-प्रस्ताव आ बुजुर्गक अविश्वास जेकाँ अवरोध अभी बाँकी छथि। अध्याय छोट समयखंडमे आंशिक सम्बन्ध बना सकबाक क्षमता देखबैत अछि। यथार्थवादी दैनन्दिन पुनरावृत्ति नहि देखाओल गेल; तें ओकरा स्थायी सामाजिक समरसताक प्रमाणक बदला साझा भोजनक सम्भावनापूर्ण प्रयोग मानल जाए।

निष्कर्ष : स्मृतिपत्रसँ भोजपत्र धरि

नामक पहरासँ भोजन-चिन्हधरि कथा एक समान सामाजिक समस्या नब इन्द्रियमे प्रक्षेपित करैत अछि। भातक कौर, पातक नस, चूल्हिक राखि आ गन्धक अवशेष पाठक पर लम्बा असर रखैत अछि। अखन तकक कथा-उपकरण जे वस्तुनिष्ठ नोंद जेकाँ छल से अब स्पर्श, स्वाद आ घ्राणक साझा अनुभव बनैत अछि। लेकिन अगिला अध्याय 'साझा थारी' फेर सहभोजनक विरुद्ध रहि गेल भय खोलैत अछि—एहि पुनरागमनमे अइ अध्यायक आशावादी क्षणक सीमा स्पष्ट होएत।

प्रकरण २३२ | मूल अध्याय १३१ — साझा थारी

समानता-भोजनक दोसर प्रयत्न

अध्याय १३०मे सामूहिक भोजनक दृश्य प्रस्तुत भेलाक बाद १३१ फेर साझा थारीक तैयारी आरम्भ करैत अछि। ई पुनरावर्तन निरर्थक नहि, कारण पछिला भोजनमे मर्यादाक विवाद सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार बदलि नहि सकल। मुदा कथाक क्रममे भोजन-आयोजनक दू घटना किन समय-अन्तर सँ अलग, तकर स्पष्ट संकेत कम अछि। पाठक एकरा नब सामाजिक परीक्षण रूपमे पढ़ि सकैत अछि, संगहि निकटवर्ती घटनाक दोहरावक सम्पादकीय कमजोरी सेहो चिन्हि सकैत अछि। एहि द्वैतकेँ बिना मेटौने कथाविकास देखबाक चाही।

कबड्डीक छूअनाइ आ थारीमे रहनाइ

कथावाचक कहैत छथि जे कबड्डीमे छू कऽ घुरय पड़ैत अछि, थारीमे छू कऽ रहय पड़ैत अछि। ई कथाक अब तक चलैत खेलक व्याकरणपर अत्यन्त सूक्ष्म आत्मटिप्पणी अछि। पहिने रेखा लाँघनाइ साहसक प्रतीक छल; एतय सीमाक पार गेलाक बाद संग बैसि रहबाक क्षमता अधिक कठिन बनैत अछि। सामाजिक सम्बन्धक अवधि खेलक छोट फेरा सँ आगाँ खिंचि दैनिक सहअस्तित्वक आकार लैत अछि। एहि एक वाक्यमे अध्यायक विशिष्ट आख्यानशास्त्रीय योगदान सन्निहित अछि।

गोल पाँति आ ऊँच आसनक निरसन

भोजन लेल नमहर पात बिछैत अछि, मुदा बच्चा सभ सीधा पाँति मेटि गोल घेरा बनबैत छथि। ठूँठ, नामक पाथर आ दीया बीचमे रहैत अछि। ई स्थानिक परिवर्तन बहुत अर्थपूर्ण: अदालतक ऊर्ध्वाधर निर्णय-संरचना आ जातिक ऊँच-नीचक भोज-पाँति दुनूकेँ गोल धरातल चुनौती दैत अछि। देह सभ समान ऊँचाइ पर बैसैत अछि, समाजक उच्चस्थ पदस्थान दृश्यसँ हटैत अछि। तथापि गोल बैसने समस्त शक्ति-अन्तर स्वयमेव समाप्त होइत नहि—अगिला दृश्य एहि सीमा खुला करैत अछि।

वृद्ध ब्राह्मणक अटकल हाथ

पुरनका ब्राह्मण भोजनक पात लग रुकि जाइत छथि, विशेषत: चर्मकार टोलाक युवक दिस देखिते। कथावाचक हुनकर पसीना आ अटकल आँगुर देखबैत छथि। ई वर्णन पात्रकेँ दैत्याकार विरोधी नहि बनबैत; भीतरक अभ्यास, कुल-भय आ वास्तविक भूखक टकराव देखबैत अछि। संग खाएबक सहमति पात्रक सहज भाव नहि, असुविधाजनक निर्णय अछि। अनन्या हुनका मजबूर नहि करैत छथि; भयक नाम पूछैत छथि। एही ठाम कथाक नैतिक आग्रह नाटकीय दण्डसँ भिन्न होइत अछि।

भयक नाम आ भूखक नामक द्विपक्षीय लेखन

अनन्या वृद्धसँ पहिने भयक नाम लिखबैत छथि—'कुल'; फेर भूखक नाम पूछैत छथि। एहि दू प्रश्नक क्रम उपन्यासक रजिस्टरक परिपक्वता दिखबैत अछि। अभिलेख अब केवल पीड़ितक नाम राखैत नहि; अन्याय पुनरुत्पादित करैत भयक नाम सेहो लिखैत अछि। दू पाँति लिखलाक बाद वृद्ध भोजन छुबैत छथि। प्रश्नक पद्धति कथामे बलपूर्वक धर्म-त्यागक घोषणासँ अधिक प्रभावी देखबैत अछि, कारण निर्णय स्वयं पात्रक हाथेँ होइत अछि।

साग आ गुड़ आदान-प्रदानक सूक्ष्म दृश्य

चर्मकार टोलाक युवक अपन मायक बनाओल सागक कोन वृद्ध दिस बढ़बैत अछि; वृद्ध प्रत्युत्तरमे अपन गुड़ बढ़बैत छथि। एहि विनिमयमे भाषण नहि, पदार्थक छोट गति सम्बन्ध बदलैत अछि। स्पर्शक पूर्वक निषेध स्वादक साझा अनुभूतिमे प्रवेश करैत अछि। कथा एहिमे उत्सवी बाजा नहि बजबैत, संकोचक मौन राखैत अछि—जाहिसँ बदलावक क्षण अनायास अधिक विश्वसनीय लगैत अछि। एक कौरक स्वीकार टिकाउ सामाजिक परिवर्तनक पूर्ण गारंटी नहि, मुदा दृश्ये भीतर सम्भावनाक मजबूत कड़ी अछि।

पाँतिसँ बाहर बचल स्त्रीसभक कथा

किछु स्त्री सभ गृहस्थक मर्यादा, ससुर, पति, बेटीक विवाह आ गामक मुँहक डर सँ नहि बैसि सकैत छथि। मीरा हुनकासभक बीच जाइत छथि, मुदा मजबूर नहि करैत। ओ कहैत छथि—नहि बैसि सकल लोकक नामो लिखब, आ रोकनिहारक नाम सेहो। ई लेखकक महत्वपूर्ण निर्णय अछि: साझा थारीक विजयक दृश्य भीतर असफल प्रवेशक दस्तावेजो सुरक्षित राखल जाइत अछि। समारोहक चमकमे बाहरी छाया मेटल नहि जाइत, जाहिसँ कथाक सामाजिक जटिलता बचैत अछि।

'घर', 'लाज', 'भातक बासन'क सूचीक अर्थ

स्त्री सभ नामक बदला रोकक स्रोत कहैत छथि—घर, लाज, बासन, बेटीक विवाह, गामक मुँह। एहि संक्षिप्त सूचीमे व्यक्तिगत विवशता सामाजिक संस्थामे बदलैत अछि। जे कथे पहिले चर्मकारणीक अनुपस्थित नामपर ठहरल छल, ओ आब जीवित स्त्रीसभक अवरुद्ध सहभागिताक कारणक नाम रखैत अछि। कथावाचक एहि रूपमे एक नव अभिलेख बनबैत छथि जकर विषय 'कियो खाएल' मात्र नहि, 'कियो नहि खा सकल' सेहो अछि।

बटुकनाथक विधिक चातुरीक सीमारेखा

बटुकनाथ हरिहरन बुझैत अछि जे एक पातपर दू हाथक मिलनकेँ मुकदमे द्वारा रोकब कठिन। ओकर मनमे अवमानना, अवैध सभा आ अन्य कानूनी वर्गीकरण अबैत अछि, मुदा 'ई तँ बस खाएब अछि' कथात्मक विडम्बना बनैत अछि। जे पात्र कानूनक शब्दकेँ अवरोध बनबैत छल, से एखन शब्दसँ पार मानवीय क्रियाक सामने निरुत्तर अछि। लेखक बहिरागत सत्ता कें प्रत्यक्ष हिंसा कराए बिना ओकर भाषाक सीमा उद्घाटित करैत छथि।

चन्द्रपालक गणनासँ बाल्यकालक स्मृति धरि

चन्द्रपाल सामुदायिक भोजनकेँ दान-रसीदक अवसर मानैत अछि, मुदा स्क्रीनक अंकक बदला सागक बून्द देखाइत अछि। ओकरा विद्यालयक अलग पाँतिक पुरान घटना मोन पड़ैत अछि। एहि बदलावमे चरित्रक अपराधक पृष्ठभूमि मानवीय चोटसँ मिलैत अछि, मुदा कथावाचक आन्तरिक वेदनाकेँ निर्दोषताको प्रमाण नहि बनबैत। पाठक ओकर लोभक निरन्तरता आ पृष्ठभूमिक अपमान एक साथ देखैत अछि। ई द्विस्तरीय फोकस पात्रकेँ एकरंगी खलनायक बनबाक सँ बचबैत अछि।

सत्यव्रतक अन्तिम पाँति आ परिवर्तित भूमिका

सत्यव्रत अन्तिम कात बैसि लिखैत छथि जे कानून पढ़निहार मुँहकेँ भोजनक समानता सीखबाक चाही। एहि छोटे वाक्यमे पात्रक दीर्घ नैतिक यात्रा नवीन दृश्य पाबैत अछि। पहिने 'गवाही' अध्यायमे ओ अपन मौन स्वीकारने छलाह, एखन व्यवहारमे पंक्ति साझा करैत छथि। यद्यपि लिखब हुनकर पुरान स्वभाव अछि, भोजन लेल कलम रखनाइ अधिक निर्णायक अभिनय अछि। कथावाचक अधिकारीक सर्वोच्च आसनक बदला विनम्र संगति दैत छथि।

जादुई उपस्थिति आ भापमे भीजल पाथर

चूड़ा-दहीक गन्ध, भातक भाप आ पाथरपर जमल नमीक दृश्य मृतक-नाम आ जीवित भोजनक बीच असाधारण सम्बन्ध रचैत अछि। जलसमाधिमे गेल लोकक स्वाद फेर आयल जेकाँ सामूहिक अनुभूति उत्पन्न होइत अछि। मुदा ई पात्रसभक संवेदनक कल्पनात्मक रूप अछि; कथे भीतर अलग भौतिक पुनर्जन्मक प्रत्यक्ष दावा नहि। पाथरक गरमाहट देहक ताप समान वर्णित होयब जादुई यथार्थक प्रभाव बनबैत अछि, जाहिसँ मृतक-स्मृति जीवितक संग भोजनक अनुभवमे मिलैत अछि।

बचल कणकेँ माटिमे मिलाएब

भोजनक बाद प्रत्येक पातपर बचल अन्न एकत्रित कऽ माटिमे मिलाओल जाइत अछि। ई क्रिया अन्नक अनादर रोकबाक संग भूमि-जीवनक चक्रक स्मरण करैत अछि। जे व्यक्ति एहि काजमे हाथ लगौलक, ओकर देर धरि हाथ न हटेबाक छोट विवरण घटना केँ नाटकीय नैतिकतासँ परे देहगत अनुभव बनबैत अछि। एहि स्थलपर कथाक आरम्भिक बीज-प्रसंग आ निर्णयक धानक माटि फेर स्मरण होइत अछि। अन्न खेतसँ थारी, थारीसँ माटि धरि घुरैत अछि।

अनसुलझल डरक पंजी आ अगिला क्रम

साझा थारीक प्रसंगमे उपस्थितक संख्यासँ अधिक अनुपस्थितक कारण निर्णायक अछि। अनन्या रजिस्टरमे जे लोक नहि बैसल तकर दुविधा सुरक्षित राखैत छथि; तेँ अध्याय अन्तमे बराबरीक पूर्ण विजय नहि कहैत। गामक निजी जीवनमे प्रतिरोध एखन बाँचल अछि। अगिला 'रसोइक गणराज्य' शीर्षकक अपेक्षा एही अधूरापनसँ जन्मैत अछि—एक दिनक साझा भोजन सँ स्थायी रसोइक व्यवस्था धरि संघर्ष बाँकी अछि।

निष्कर्ष : छू कऽ रहबाक सामर्थ्य

एहि अध्यायक सबसे विशिष्ट सूत्र केवल जाति-विरोधक घोषणा नहि, स्पर्शक बाद संग रहबाक समयगत चुनौती अछि। कबड्डीक छोट छूअनाइ आ साझा थारीक दीर्घ संगति बीच अन्तर सामाजिक आख्यानक नव स्तर खोलैत अछि। वृद्धक अटकल हाथ, युवकक साग, स्त्रीसभक पाँतिबाहरी डर, बटुकनाथक असमर्थ शब्द आ चन्द्रपालक स्मृति—ई सभ दृश्य पूर्ण नैतिक सहमतिक बदला जटिल परिवर्तनक आरम्भ चित्रित करैत अछि। कथाक विस्मृत नामसभक प्रश्न भोजनक वास्तविक नजिकाइमे फेर उपस्थित होइत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : माटि, कण्ठ, स्मृति आ साझाक भोजन

अध्याय १२४–१३१ तीन क्रमिक स्तर बनबैत अछि। पहिल स्तरमे तत्त्वचिन्तामणिक पात सँ प्रमाणक अग्नि, फेर राखि सँ निर्णयक धानक खेत बनैत अछि। दोसर स्तर अन्न, भूख आ प्यासक दैनन्दिन अभावक कथा खोलैत अछि। तेसर स्तर नून, स्वाद आ साझा थारीक माध्यमसँ मानवीय स्पर्श आ जातिगत दूरीक परीक्षा करैत अछि। एहि गति मे शास्त्रीय महिमाक विषय कथाविश्व भीतर केबल संवादक स्रोत रहैत अछि; मुख्य रचनात्मक परिणाम जीवित मनुष्यक भोजन आ सहअस्तित्वक परिस्थितिमे देखाइत अछि।

आठ अध्यायक वस्तु-पद्धति विशेष ध्यान योग्य अछि। पातक लाल रेखा, अग्निक राखि, बीआ, धानक बालि, खाली कटोरा, चूल्हिक धुँआ, इनारक डोल, खाली लोटाक टुनक, नूनक कण, भोजपत्रक पात आ साझा दही-साग—प्रत्येक वस्तु कथाक क्रममे अपना अर्थ विस्तार पबैत अछि। रजिस्टरक सूची एहि सभकेँ जोड़ैत अछि, मुदा सूची नायक नहि बनैत; जिनकर देह, श्रम आ लाज जुड़ल अछि, हुनकर विशिष्ट बोली ओहि वस्तुकेँ अर्थ दैत अछि।

कथन-समय मे दूटा प्रमुख तनाव स्पष्ट अछि। अध्याय १२४क अन्तमे अनाम चर्मकारणीक नाम खोजबाक वचन तुरन्त अध्याय १२५क खेत-प्रसंगमे बदलि जाइत अछि। फेर अध्याय १२५मे रोपल धान अध्याय १२६क अगिला

भोरमे बालि धारण कएने देखाइत अछि, जबकि महीनाक कृषि-कालान्तर चिन्हित नहि अछि। पहिल विचलन अन्वेषणक स्थलान्तर आ दोसर काल-सङ्कुचनक काव्यात्मक प्रयोग बनि सकैत अछि; तथापि मूल पाठ मे निश्चित संकेतक अभावकेँ पाठगत असङ्गति रूपमे सेहो दर्ज करबाक चाही। एहि अस्पष्टताकेँ आलोचना कल्पित घटना जोड़ि नहि सुलझबैत।

लोकगीत आ मुख्य घटनामे घनिष्ठ मुदा हमेशा सम्पूर्ण मेल नहि अछि। रोपनी, कटनी, गज-ग्राहक भूतपूर्व स्मृति, खाली थारी, प्यास, नूनक शपथ, भोजन-सोहर आ सामा-चकेवाक लोकलय पूर्वसँ तय नैतिक क्षितिज देखबैत अछि। मुख्य गद्य एहि क्षितिजमे कतर-ब्योंत करैत बचेबाक असफलता सेहो देखबैत अछि—दानक पट्टिकासँ बाहर भूखल लोक, इनारक असुरक्षित पानि, नहि बैसि सकल स्त्री सभ। तें गीतक उजास आ गद्यक असमाप्ति बीच अन्तर रचनाक महत्त्वपूर्ण द्विस्वर बनैत अछि।

पात्रक क्रियामे अनन्याक प्रश्नबोध, बाक माटि-स्मृति, मीराक देह-स्वायत्तता, देविकाक तुरन्त भोजन-सम्बन्धी माँग, आरुणिक अभियन्ता-अपराधबोध, गोपक अभिलेख-संशय आ सत्यव्रतक पाछाँ बैसनाइ बारम्बार दृश्य होइत अछि। पाठक एक व्यक्तिक निर्णायक आदेश नहि पबैत; बदलावक सम्भावना अलग-अलग लोकक छोट कर्मसँ बनैत देखैत अछि। किन्तु विरोधी पक्ष—दानदाता, नीतिपरियोजना आ जाति-रक्षक पात्र—कतेको प्रसंगमे समान शब्दावलीसँ तुरन्त निरुत्तर होइत छथि; एहि दोहराव सँ बहुवाचिकता भीतर संवादात्मक असन्तुलनक जोखिम रहैत अछि।

साझा थारीक अध्याय एही बैचक निर्णायक खुलल अन्त अछि। चर्मकार टोलाक युवकक साग आ वृद्ध ब्राह्मणक गुड़क छोट आदान-प्रदान परिवर्तनक जीवित क्षण अछि, पर स्त्री सभक घर, विवाह, लाज आ बासनक डर एखन कायम अछि। एहि कारण कथा एक दिनक सहभोजनकेँ पूर्ण मुक्ति मानि नहि थमैत; ओ बचेबाक अवरोध लिखैत अछि। नव रसोइक व्यवस्था आ दैनन्दिन अधिकारक प्रश्न अगिला अध्याय ‘रसोइक गणराज्य’ लेल खुलल रहल अछि।

प्रकरण २३३ | मूल अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

साझा थारीसँ साझा रसोइ धरि कथाक अगिला पारी

मूल अध्याय १३१मे साझा थारीपर एक संग भोजन करबाक अभ्यास जाति-व्यवस्थाक डरकेँ उजागर केने छल। अध्याय १३२ ओहि क्षणकेँ पूर्ण विजय मानि नहि थमैत; लेखक पूछैत छथि जे भोजन एक संग कऽ लेला पर ओकरा पकौनिहार, परोसनिहार आ बासन माजनिहारक श्रम ककर हिस्सामे रहैत अछि। ई उत्तरप्रश्न कथानककेँ प्रतीकात्मक सहभोजनसँ घरेलू सत्ता-संरचनाक भीतर पठबैत अछि। एकर फल ई जे दृश्य बदलैत अछि, मुदा पूर्वअध्यायक संघर्षक सामाजिक कारण निरन्तर उपस्थित रहैत अछि।

रसोइक दुआर : घरक भीतरक लघु-अदालत

कथावाचक पुरान घरक ऊँच ओसार, अलग पानि, मजदूरक भोजन, विधवाक फीका अन्न आ दाइक हाथक रोटीकेँ एकसंग स्मरण करैत छथि। एहि संक्षिप्त सूचीमे भोजन मात्र स्वाद नहि, घरक भीतर चलैत पदानुक्रम

बनैत अछि। ‘अदालत’ बाहरी संस्था रहि नहि जाइत; रसोइ स्वयं ओहि ठाम बनैत अछि जतय छूअनिहार आ नहि छूअनिहारक निर्णय प्रत्येक दिन दोहराओल जाइत अछि। एहि स्थानिक रूपान्तरणसँ उपन्यास बड़का सार्वजनिक प्रकरणकेँ सूक्ष्म घरेलू घटनाक स्तरपर परखैत अछि।

बाक बासन-सूत्र आ नाटकीय प्रत्याशा

बा भोजनक सामूहिकता पर तुरन्त बासन धोबाक प्रसंग उठबैत छथि। एहि कथनक संरचनात्मक महत्त्व बादक अन्तिम दृश्यसँ जुड़ल अछि: पाठक आरम्भे जानि जाइत अछि जे असल परीक्षा भोजनक सुन्दर चित्र नहि, ओकर पाछाँक श्रम हएत। लेखक एहि तरह आरम्भमे एक छोट वस्तु—झूठा बासन—स्थापित कऽ अन्तमे ओकरा निर्णायक दृश्य बनबैत छथि। बासन सामाजिक अधीनताक उपकरण रहल अछि; ओकरा माजनाइ कर्तृत्वक नव विन्यास होइत अछि।

अन्नक कथा : सामग्रीक पुनःमानवीकरण

किसानक बोरा, बाढ़िमे बचाओल चूड़ा आ चर्मकार बस्तीक युवतीक साग एकर बाद क्रमशः सभामे प्रवेश करैत अछि। प्रत्येक वस्तुक संग कहनिहारक स्मृति जोड़ल अछि, जाहिसँ रसोइक सामग्री अभिलेखीय प्रविष्टि मात्र नहि रहैत। बोरा राखलापर धूलिक उठब, चूड़ाक कठिन स्मृति आ सागक बहिष्कृत हाथ एकहि दृश्यकेँ अलग-अलग श्रमकाल दैत अछि। लोकक विशिष्ट अनुभव बिना अन्नक सामूहिकता केवल सजावटी सूची होइत; कथा एहि जोखिमसँ बाँचबाक यत्न करैत अछि।

चर्मकार युवती आ वृद्ध ब्राह्मणक घी

वृद्ध ब्राह्मण अपन घरक घी ओहि कड़ाहीमे देब तय करैत छथि जाहिमे चर्मकार बस्तीक युवतीक साग पकैत अछि। सामाजिक परिवर्तनक ई सूक्ष्म दृश्य उपदेशक लम्बा भाषण नहि, सामग्रीक परस्पर संयोगसँ घटित होइत अछि। घीक कड़ाहीमे पड़ल छन्नाहट सभक मौनक बीच श्रव्य केन्द्र बनैत अछि। वृद्धक स्वरमे विजयक दावा नहि, लाजक स्वीकार अछि; तेँ दृश्य व्यक्तिक परिवर्तनकेँ सम्भावना रूपमे खोलैत अछि, पूरा जातिगत व्यवस्था समाप्त भऽ गेल—एहन दावा नहि करैत।

गन्धक कथात्मक प्रयोग आ स्मृतिक वाहक

धुँआ आ मिश्रित सुगन्ध एहि अध्यायमे दृष्टिसँ अधिक शक्तिशाली संवेदन बनि उठैत अछि। कतेको बस्ती, घर आ हाथक वस्तु एकहि कड़ाहीमे मिलैत अछि, मुदा गन्ध पर ककरो कुलनाम नहि लगि सकैत। कथावाचक एहि अनुभवकेँ सामूहिक न्यायकेँ अनुभव योग्य करबाक माध्यम बनबैत छथि। तथापि गन्धक समता सामाजिक स्वामित्वक समता नहि; मुख्य कथामे श्रम-विभाजनक फेर व्यवस्था करबाक आवश्यकता एहि सांकेतिक समानताक सम्भावित सीमा स्पष्ट करैत अछि।

रसोइक भीतर पुरुष श्रम आ भूमिकाक उलटफेर

स्त्री सभक प्रमुख खाना बनौनिहार भूमिका राखल गेल अछि, मुदा पुरुष पात्रसभकेँ काटब, धोब, पीसब, फूँक देब आ बासन माजनाइक काज बाँटल जाइत अछि। एहि बँटवाराक दृश्य-रचना विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: आरुणि अपन अभियन्ताक अनुभवक समक्ष घरेलू कामकेँ छोट मानबाक आदत पर प्रश्न करैत छथि। यद्यपि श्रम समान बाँटबाक प्रक्रिया एके दिनक सामूहिक आयोजनमे घटैत अछि, कथामे दैनिक अभ्यासक पुनःरचना दिस ई एक उपयोगी आरम्भ अछि। सामाजिक कथन क्रियाक गति सँ बल पबैत अछि।

आँकड़ाक सौन्दर्य आ नामविहीन मिश्रण

पाँच चूल्हि, सात कड़ाही, अलग बस्तीसभक अन्न, विधवाक नून, मुसहर बालकक लकड़ी आ बाहरसँ आयल फल—कथावाचक मात्रा आ स्रोतसहित एक वृहत् सूची बनबैत छथि। एहि गणनाक स्वर स्मारक-अनुप्रयोगक शोषक आँकड़ा-संस्कृतिसँ भिन्न अछि: एतय वस्तु अपन सामाजिक उत्पत्तिक संग बाँचल अछि। मुदा संख्या-प्रधान लय सेहो पाठककेँ एक आदर्श समाहारक दृश्य देखबैत अछि; वास्तविक सहभोजमे बचल असहमति—दू गोटेक दूर बैसनाइ—एहि चित्रक पूर्ण समरसता रोकैत अछि।

पहिल पात अनामक सोझाँ : अनुपस्थित पात्रक स्थान

पहिल भोजन अनाम पाथरक सोझाँ राखल जाइत अछि, जतय खेनिहार देह नहि अछि। ई खाली आसन मृतकक प्रतिनिधित्वक विधि बनैत अछि, मुदा एकरा सहज धार्मिक नैवेद्य मानल पर्याप्त नहि। कथा एतय सामाजिक अभावकेँ सार्वजनिक क्रमक पहिल स्थान दैत अछि; जेकर नाम नष्ट भेल, ओकरा अगुआ आसन देबाक दृश्य-भाषा रचैत अछि। भोजनक भाप आ देहक अनुपस्थितिक अन्तर पाठककेँ चुभैत अछि, कारण अन्न उपस्थित भेलासँ गुमल मनुष्य घुरि नहि अबैत।

सहमतिक मर्यादा : दूर बैसल दू गोटे

जातिगत भयक कारण जे लोक एखनहुँ भोजन नहि करए चाहैत, हुनका जबरदस्ती नहि खुआओल जाइत। एहि संकोचकेँ कथा छिपबैत नहि; ओकरा सभक लेल भयक नाम पूछबाक प्रस्ताव राखैत अछि। रचनात्मक दृष्टिसँ ई अनिवार्य अन्तर अछि: सफल कार्यक्रमक सामाजिक सामूहिकता यदि सभकेँ तुरन्त परिवर्तित मानि लेत, तखन पात्रक मनोविज्ञान खोखर होएत। दू गोटेक दूरी कथा भीतर भविष्यक संघर्षक प्रमाण बनैत अछि, आ अधिकारक अर्थ अनिच्छित सहभागितासँ भिन्न रखैत अछि।

दूरस्थ धूर्त सभक स्वप्न-पट

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार, चन्द्रपालक भोजन-डेलिभरी स्क्रीन आ लाउक पोषक-गोलिकाबला ‘नव-क्षितिज’ रसोइक दृश्यसँ एकदम भिन्न स्थानमे घटैत अछि। एहि समानान्तर कटावसँ सामुदायिक भोजनक नैतिक दबाब पात्र सभक निजी अनुभूतिमे पहुँचैत देखाओल जाइत अछि। मुदा स्वप्न-पटकेँ बाह्य ऐतिहासिक परिवर्तन मानि नहि सकैत; ओ पात्रक भय, लोभ आ स्मृतिक रूपकात्मक प्रक्षेपण अछि। कथा एहि द्विस्थानिक कटावक माध्यमसँ गामक घटनाकेँ दूरक आर्थिक संरचनासँ जोड़ैत अछि।

बासन माजनाइ : सामाजिक परीक्षणक अन्तिम दृश्य

जकरा सदिखन दोसराक झूठा बासन उठएबाक भूमिका देल गेल, हुनका बैसाओल जाइत अछि; प्रतिष्ठाक दावा करनिहार लोककेँ माजनाइक काज भेटैत अछि। आरम्भक बाक वाक्य एतय घटना बनि पूरा होइत अछि। राखिसँ धोल बासनक खरोंच आ पीतरक चमक श्रमक भौतिकता पाठकक समक्ष अनैत अछि। एहि दृश्यसँ अध्याय अपन सर्वाधिक मूर्त परिणाम पबैत अछि: साझा भोजन एक क्षणक उत्सव छल, मुदा साझा सफाइ सम्बन्धक वास्तविक परख बनैत अछि।

नव विधान आ कथात्मक अपूर्णता

रजिस्टरमे जे खाए से पकाबय, जे पकाबय से खाय, आ जे खाय से माजय—एहन नियम स्थापित होइत अछि। एहिमे गणराज्यक शब्द प्रयोग राजनीतिक संविधानक घरेलू रूपान्तरण अछि; तेँ शीर्षक केवल व्यंग्य नहि, प्रयोगात्मक शासनक नाम बनैत अछि। तथापि एक सामूहिक रसोइ दैनिक घरेलू असमानताकेँ कतबा बदलत, पाठ तत्काल नहि बतबैत। अन्तमे खाद्य-स्मृति सँ सार्वजनिक नाट्यरूपक बाट खुलैत अछि, जाहिसँ रसोइक कथा अगिला अभिनय-विवाद लेल सामाजिक देह उपलब्ध करबैत अछि।

प्रकरण २३४ | मूल अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

रसोइक बाद रंगमंचक आकस्मिक विस्तार

अध्याय १३२क चूल्हि, थारी आ बासनक सूक्ष्म घरेलू संसारसँ अगिला अध्याय विदेह नाट्य उत्सवक आमन्त्रण लऽ प्रवेश करैत अछि। एहि परिवर्तनक मुख्य कथात्मक प्रयोजन केवल नव कार्यक्रम आरम्भ करब नहि; पछिला सामाजिक दृश्य सभकेँ सार्वजनिक रूपमे फेर कहबाक संकट उठेनाइ अछि। गाम अपन अनुभव दूसर दर्शक लग कोना पहुँचाओत, आ ई पहुँच पुनः तमाशा नहि बनत—एहि द्वन्द्वक कारण नव स्थान जरूरी होइत अछि। कथावाचक कथा स्वयंकेँ नाटक बनबाक तैयारीमे देखबैत छथि।

आमन्त्रण-पत्र : अवसर आ अधिग्रहणक दूहरा अर्थ

विदेह नाट्य उत्सवक पत्र एक दिस गढ़ नारिकेलक लोकस्मृतिकेँ पैघ श्रवण-क्षेत्र दैत अछि, दोसर दिस बाहरी आयोजकक संस्था, मंच, प्रकाश, टिकट आ प्रस्तुति-नियन्त्रणक सम्भावना खोलैत अछि। एहि दोहरे अर्थक कारण पत्र सामान्य कथात्मक समाचार नहि रहैत; ओ आगामी संघर्षक प्रवेश-द्वार बनैत अछि। पहिने स्मारक-निविदा, ध्वनि-संग्रह आ शोध-दलक प्रसंग रहल; तकर स्मृति पत्र पढ़बाक क्षणमे उपस्थित रहैत अछि। संस्थाक आमन्त्रणकेँ कथा स्वतः निर्दोष मानि नहि लेत।

‘पहिने खेल, मंच बादमे’ : अनन्याक संयोजन-विधि

अनन्या अभिनय लेल पेशेवर रंगकर्मीसभक बदला कबड्डी खेलनिहार सभकेँ प्रस्तावित करैत छथि। एहि चयनमे कथाविश्वक केन्द्रीय प्रतीक अगिला विधामे प्रवेश करैत अछि: साँस सँ संचालित कबड्डी आब कथात्मक

अभिनयक ताल बनत। बाहरी आयोजकक साज-सज्जा आ समयसारिणीक सोझाँ बच्चा सभ शारीरिक अभ्यासकेँ प्राथमिकता दैत अछि। ई निर्णय रंगमंचक रूपकेँ गामक लोक-न्यायसँ जोड़बाक युक्ति अछि, मुदा पेशेवर रंगकर्मक वास्तविक क्षमताक स्वतः नकार नहि।

एक सय बत्तीस अध्यायक स्मरण आ आत्मपरावर्तन

आरुणि एक सय बत्तीस अध्याय केँ मंच पर अनबाक कठिनाई उठबैत छथि; बा कहलनि जे अध्याय आब अंक बनत। ई उपन्यासक अपन पूर्वक्रमकेँ पात्रक बातचीतमे आनबाक स्पष्ट आत्मसन्दर्भी घटना अछि। पात्रसभ मानो अपना कथा रचल जा रहल अछि—ई बात बुझैत, ओकर नाट्य-संस्करण पर बहस करैत छथि। यथार्थवादी कथा-संसारमे ई हस्तक्षेप असामान्य अछि; मुदा विशाल उपन्यासक स्मृति-भारकेँ एक विधासँ दोसर विधामे स्थानान्तरित करबाक घोषणापत्र सेहो अछि।

सारांशक गोहि-बिम्ब : संक्षेपणक अस्वीकार

अनन्या स्पष्ट कहैत छथि जे ई सारांश नहि बनत, कारण सारांश गोहि जेकाँ देह चिबा कऽ अस्थि छोड़ि दैत। एहि वक्तव्यकेँ मात्र सारांश-विरोधी अतिशयोक्ति मानल नहि जा सकैत; ई रचनाक भीतर अपन माध्यम पर टिप्पणी अछि। नाटक छोट समयमे विशाल सामग्री सँ जूझत, मुदा प्रत्येक अंकमे दृश्य, नाम, विराम आ साँस राखबाक शर्त दैत अछि। एहि माध्यम-समस्या सँ कथा चयन, लोप आ नाट्य-गतिक नैतिक प्रश्न सामने आनैत अछि।

बच्चा सभक रिहर्सल : शरीर कथाक लेखन बनैत अछि

खेलाड़ी सभ पुरान अध्यायक नाम बाजि साँस रोकैत, रेखा पार करैत आ रूप बदलैत छथि। कटल गाछीक अदृश्य डारि तरे झुकल देह, गोहिक नाम लैत पानि दिस दौड़ल खेलाड़ी आ ‘गंगेश’ पर रुकल पारी दृश्य सभ कथनकेँ देहगत क्रियामे बदलैत अछि। सभसँ महत्त्वपूर्ण क्षण ओहि डारि तरे झुकब अछि जे एखन अस्तित्वे नहि रखैत; अनुपस्थित वस्तु देहक मुद्रा बनि देखाइत अछि। ई उपन्यासक नाम-अभावक केन्द्रीय रूपकक रंगमंचीय अनुवाद अछि।

स्क्रिप्टसँ पहिने नीयत : अधिकारक प्रश्न

अनन्या मंचनक समय पूछलापर कहैत छथि जे एखन साँस तैयार भऽ रहल अछि। एहि उत्तरमे कार्यक्रम-व्यवस्थाक समय आ पीड़ितक गवाहीक समय एक-दोसरसँ टकरबैत अछि। मीरा अनुमति, देविका अनामक पहिल आसन, ईरा विदेशी दर्शकक सुनबाक दायित्व आ गोप प्रतिलिपि-नियन्त्रणक सीमा स्पष्ट करैत छथि। एहि शर्त सभसँ कलाकारक स्वतन्त्रता नष्ट नहि, बल्कि गवाहीक सम्बन्धमे ओकर उत्तरदायित्व स्थापित होइत अछि।

खलनायकक नकल नहि : बटुकनाथक प्रस्तुति-संकट

बच्चा सभ बटुकनाथक पात्र हँसैत-हँसैत खेलब चाहैत छथि, मुदा अनन्या ओकरा मसखरा बनाओल रोकैत छथि। कारण हँसी जँ अपराधक नैतिक घनत्व खा जाए, तखन दर्शक गम्भीर अन्यायकेँ मनोरञ्जन मानि घर जा सकैत

अछि। अतः कम बाजनिहार शान्त खेलाड़ी चुनल जाइत अछि; ओकर झुकैत आँखि अवमाननाक दृश्य-भाषा बनत। एहि चुनावमे नाट्य-लेखन चरित्रकेँ बाह्य दुष्टता सँ बचाकऽ आन्तरिक संकोचक संकेतमे रचैत अछि।

राघवक दू कलाकार आ विभक्त पात्रत्व

राघवक भूमिका दू गोटे खेलत—एक आवाज बनेत, दोसर गायब होएत। एहि कल्पनामे डिजिटल अपराधक विच्छिन्न आत्मा रंगमंचपर एक देहमे बन्द नहि होइत। संदेश आ मौन, उपस्थिति आ लोप—ई दोहरा रूप कथानकक पहिने देखल तकनीकी युक्तिक नाटकीय समतुल्य अछि। यद्यपि वास्तविक मंचनमे एहि विभक्त भूमिकाक विस्तार अलग रूप लेत कि नहि, ई एखन अनिश्चित अछि; एही कारण अध्याय १३३क योजना आ अध्याय १३४–१३५क पाठ तुलनात्मक पढ़बाक आवश्यकता रहैत अछि।

भाषा-सम्बन्ध : लाउ किन-हंगक अल्पसंवाद

लाउक पात्र मैथिलीमे कोना बाजत—बालक सभक प्रश्न पर बाक उत्तर लोभक बहुभाषिकता पर केन्द्रित अछि। पात्रक चमकैत काँचक कटोरा आ ओकर भीतर नाम पड़ितो सिक्का नहि बजब नाटकीय संकेत बनैत अछि। एहि दृश्य-कल्पनामे विदेशी पूँजीक चित्रण भाषा-भिन्नता सँ अधिक लेखा-नियन्त्रण द्वारा होइत अछि। मुदा विरोधी पात्रक जटिलता एकहि लोभ-रूपकमे समेटि देबाक जोखिम सेहो रहैत; आलोचना एहि सम्भावित सरलीकरणकेँ दर्ज करैत अछि।

सत्यव्रतक मौनक भूमिका आ बाल-निवेदन

सत्यव्रतक पात्र निभेबाक लेल पाछाँ बैसनिहार एक बालक स्वयं हाथ उठबैत अछि, कारण ओ कम बजैत अछि। ई पात्र-चयन नाट्यशिक्षकक नकल-क्षमता नहि, मानवीय चुप्पीक अनुभव पर निर्भर देखाओल जाइत अछि। सत्यव्रतक वास्तविक पछतावा अभिनेता लेल तैयार संवादक बदला सुनबाक शारीरिक भंगिमा बनैत अछि। दर्शकक लेल मंचपर मौन एक रिक्त समय होएत, मुदा मूल उपन्यासक पाठक बुझैत अछि जे एहि मौनक पाछाँ बरखक संस्थागत अपराध-बोध अछि।

पहिल पाँति : प्रतिबिम्बक नाम

अध्यायक अन्तमे नाट्य-पाठक प्रारम्भिक वाक्य गढ़ल जाइत अछि—मंचक बीच पानि रहत आ प्रवेश करनिहार पहिने अपन प्रतिबिम्बक नाम कहत। एहि युक्तिमे नाट्यप्रवेश आत्मपरिचयक परीक्षामे बदलि जाइत अछि। मंचक जल वास्तविक नदीक विकल्प नहि; ओ दर्पण, आत्मपरीक्षा आ पूर्वक जलसमाधिक स्मृति सभ एक संग अछि। एहि नाटकीय वस्तुक कारण अगिला अध्यायमे दृश्य-रचना हेतु एक ठोस केन्द्र उपलब्ध होइत अछि, जे कथाक बहुधा अमूर्त नैतिक वाक्यकेँ दृश्य बनबैत अछि।

काल-योजना आ पूर्वघोषित भविष्य

अध्याय १३३ मे लेखक आगामी नाट्य-पाठ, तकर बाद मंचन, फेर कथा जारी रहबाक क्रम पहिनहि कहल जाइत अछि। एहि पूर्वघोषणासँ अनिश्चित परिणामक रोमांच घटैत, मुदा लेखन-प्रक्रियाक पारदर्शिता बढ़ैत अछि। पाठक

आब घटना घटत कि नहि—एहि प्रश्नसँ अधिक घटना कोना रूपान्तरित होएत—एहि प्रश्न पर केन्द्रित होइत अछि। ई रचनाक आत्मपरावर्तन अछि; तथापि कतेको बेर कथावाचकक अति-स्पष्टीकरण आगाँक अध्यायसभक स्वतः खुलबाक प्रभाव सीमित करैत अछि।

प्रकरण २३५ | मूल अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

तीन दिनक स्थगित ढोल आ लिखबाक साँस

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहटक बाद तीन दिन धरि ढोल नहि बजब एकटा मौन-अन्तराल बनबैत अछि। ई स्थगन तैयारीक समय तऽ अछि, मुदा कथावाचक एकरा पीड़ितक नाम लिखबाक हड़बड़ी सँ बचेबाक पद्धति सेहो बनबैत छथि। खेलाड़ी सभक गोला आ अपन-अपन साँसक आवाज संवादसँ पहिने देहक पाठ आरम्भ करैत अछि। अध्याय १३३क आमन्त्रण-पत्र एतय सामाजिक तनावसँ रचनात्मक श्रममे बदलैत देखाइत अछि।

‘पहरा’ नाटकक नाम आ साँसक केन्द्र

नाटकक नाम ‘पहरा’ आ उपशीर्षक कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ तय होइत अछि। एतय नायक कोनो व्यक्ति नहि, साँस होएत—ई घोषणा कथा-चरित्रक परम्परागत केन्द्रकेँ विस्थापित करैत अछि। साँस जीवनक भौतिक न्यूनतम शर्त अछि, कबड्डीक नियमक आधार अछि आ मृतकक अनुपस्थितिक स्मरण सेहो अछि। एहि त्रिस्तरीय अर्थसँ नाटकक अन्तर्भूत कथा एक धड़कन पर बाँधल जाइत अछि, मुदा एकहि प्रतीकक सर्वत्र प्रयोग भिन्न अनुभवकेँ समान बनाबय सेहो सकैत अछि।

‘दर्शक’क काटल शब्द आ संशोधित वाक्य

ईराक लिखल पहिल पाँतिमे ‘दर्शक’ शब्द रहैत अछि; अनन्या ओकरा काटि ‘साक्षी’ लिखबैत छथि। ई वास्तविक पाठ-संशोधन उपन्यासक भीतर प्रदर्शनक सिद्धान्तक निर्णायक घटना अछि। देखने वाला लोककेँ दायित्व ग्रहण करनिहार लोक बनाबय चाहबाक काम एक शब्द बदलला सँ आरम्भ होइत अछि। लेखक एतय पाठककेँ पूर्ण सिद्धान्त व्याख्यानक बदला लेखनक एक छोट सम्पादकीय कर्म देखबैत छथि, जकरा बादक अध्यायसभमे सार्वजनिक गवाहीक रूपमे परीक्षण भेटत।

पात्र-सूची : व्यक्ति, वस्तु, श्वास आ अनुपस्थिति

नाट्य-पाठमे साँस, ठूँठ, पानि, गोहि, चन्द्रपालक प्रतिशत, राघवक गायब सन्देश, सत्यव्रतक मौन आ मजदूरक पएर समान पात्र-सूचीमे अबैत अछि। एहन सूची उपन्यासक स्वभाविक पात्रत्वकेँ नाटकक विचित्र पात्रत्वमे बदलैत अछि। मुख्य सामाजिक व्यक्ति अपन एकाधिकार गमबैत छथि; वस्तु आ अभाव सेहो कथनक अधिकार पबैत अछि। मुदा सूचीमे जातिक स्थान पर ‘पिंजरा’ रखबाक चुनाव एक महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि—सामाजिक संरचनाकेँ जीवित लोकक अनिवार्य पहचान बनि रहलासँ रोकबाक नाटकीय उपाय।

गोल मैदान, कारी पानि-पट्टी आ खाली पिंजरा

मंचक बीच गोल मैदान, तीनू दिशामे ठूँठ, कारी जल आ रसोइक धुँआ, चौथी दिशामे खाली पिंजरा रखबाक योजना वर्णित अछि। ई स्थलीय रचना उपन्यासक पछिला अध्यायसभक तीन प्रमुख स्थान—जलसमाधि, देह-श्रम आ जातिक सीमा—कें एकसंग रखैत अछि। गोलाकारता दर्शकक केन्द्रीय दृष्टिकें बदलैत अछि; चारू कात सँ दृश्य देखल जाएत। ताहि कारण मंचक नैतिक दावा केवल संवादमे नहि, दृश्य-प्रवेश आ सीट-बँटवारामे सेहो निहित अछि।

नव दृश्यसभक योजना : कथाक चयन-नीति

कटानक बादक बिहान, पीयर सूचना-पत्र, गंगेशक प्रश्न, स्मारक-अनुप्रयोग, नकली भूतक जुलूस, अनाम ग्रह, रसोइक गणराज्य, गज-ग्राह आ फेर पृथ्वी—नव दृश्यक रूपरेखा बनल अछि। प्रत्येक चुनाव उपन्यासक अलग संघर्षक प्रतिनिधि अछि। मुदा ई सूची स्वयं चयनात्मक अछि: बीमारी, नदीक अन्य उपकथा आ अनेक सामान्य पात्रक विस्तृत जीवन मंचक केन्द्र सँ बाहर रहि सकैत अछि। नाट्य-पाठ अपन ‘सारांश नहि’ दावाक बावजूद चयनक अनिवार्यता सँ पूर्ण मुक्त नहि अछि।

पीयर सूचना-पत्र : कागचक अभिनय

सरकारी सूचना-पत्र पक्षी जेकाँ उड़ि मंचपर अबैत अछि, आ बटुकनाथक पात-वकीलसभ ओकर चारू कात घूमैत अछि। कागचक अक्षरमे पसीना आओत, आगि नहि लगत—एहि सूक्ष्म चुनावसँ प्रशासनिक हिंसाक दृश्य सनसनीखेज दहनक बदला श्रम आ भयक शारीरिक अनुभूतिमे बदलैत अछि। पीयर रंग पुरान निविदाक स्मृति उठबैत अछि। नाटकक भीतर कागच स्वयं मंचक जीवित वस्तु बनि, भाषा द्वारा स्थान खाली घोषित करबाक विरुद्ध पाठमे प्रश्न उठबैत अछि।

खाली पिंजरा आ गंगेशक प्रकाश

गंगेशक प्रश्न दृश्यमे जाति लिखल खाली पिंजरा लटकैत अछि; गंगेशक स्थूल मूर्ति मंचपर नहि अनल जाइत। प्रश्न प्रकाश बनि सलाख पर पड़ैत अछि, आ सलाखक छाह अक्षर बनैत अछि। ई मञ्च-कल्पना जीवन-सत्य दबाकऽ महान व्यक्तिक मूर्ति बनाबय बला पूर्वक प्रवृत्तिक प्रतिवाद अछि। मुदा नाटकमे ऐतिहासिक व्यक्ति प्रकाश आ प्रश्न बनिते ओकर व्यक्तिगत जटिलता फेर अमूर्त होएबाक खतरा रहैत। लेखकक चुनाव कलात्मक रूपसँ सार्थक होइतहुँ सम्पूर्ण व्यक्ति-जीवनक विकल्प नहि।

स्मारक-अनुप्रयोग : सिक्काक बदलैत रंग

चन्द्रपालक प्रतिशत चाँदीक सिक्का बनि लुढ़कैत अछि, उज्ज्वलक आत्माक प्रतिवादक बाद कारी भऽ जाइत अछि। ई आर्थिक दलालीक दृश्य रूपान्तरण स्पष्ट अछि; धनकें देह-स्मृतिक सोझाँ प्रत्यक्ष लाज भेटैत अछि। दृश्य अत्यधिक सुगम नैतिक प्रतीक सेहो अछि, कारण कारी पड़ल सिक्का अपराध-जालक समग्र संरचना समझबैत नहि। नाट्यरचनाक सुविधा आ उपन्यासक जटिल विश्लेषणक बीच ई अन्तर नोट कएल जाएबाक चाही।

नकली भूतक जुलूसमे भूमिका टूटब

नाट्य-पाठ नकली भूतक जुलूसक प्रसंगकेँ अभिनेताक अपन पिता-माताक वास्तविक नाम उच्चरित करबाक क्षणमे फेर उपयोग करैत अछि। एतय नाटकक भीतर नाटक तखन टूटैत अछि जखन कलाकार भूमिका छोड़ि अपन उत्तराधिकारक आवाज बनैत अछि। एहि दृश्यमे पुरान घटना केवल दोहरायल नहि; ओ आगाँक दर्शक लेल एहन सीमा रचैत अछि जतय प्रस्तुति अपन कृत्रिमता स्वीकार करैत आ गवाहीक दिशा खोलेत अछि।

अनाम ग्रहक अत्यधिक उजास

स्वप्नक ग्रहक दृश्य पूर्ण अन्हारमे नहि, अत्यधिक सफाइ आ उजासमे रचबाक योजना अछि। एहि उजासमे घर, देह आ श्रम क्रमांक बनैत अछि, जाहिसँ ‘नव-क्षितिज’क भावी प्रचारक आन्तरिक हिंसा प्रकाशित होइत अछि। प्रकाश जे सामान्यतया ज्ञानक संकेत मानल जाइत, एतय स्मृतिहीनताक उपकरण होइत अछि। लेखकक ई उलटफेर रचनात्मक अछि, कारण भय पैदा करबाक लेल गोहिक खुला जबड़ा नहि, निर्दोष देखाइत काँचक व्यवस्था पर्याप्त अछि।

अन्तिम दृश्य ‘फेर पृथ्वी’ आ असमाप्त कथाक सूत्र

नाट्य-पाठ अन्तमे नव चन्ना कोंपल लग फेर पृथ्वी चुनबाक दृश्य अनैत अछि, मुदा ‘कथा समाप्त’ शब्द अस्वीकार कएल जाइत अछि। जकर साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी—बाक एहने सूत्र पर पटाक्षेप नहि होइत। एहि असमाप्त अन्तक कारण मंचन आगामी गवाही लेल खुलल रहैत अछि। तखनहुँ आलोचनाक लेल प्रश्न अछि जे दर्शकक वास्तविक सहभागिताक सीमा कौन तय करत; नाट्य-पाठक हर नियमक पुनःनिर्माण व्यवहारमे देखबाक रहत।

पाठक आगाँ जखन नाट्य-पाठमे फेर फेर परिवर्तन

एहि अध्यायमे स्क्रिप्ट तयर होइत अछि, मुदा एकटा बात विशेष रूपेँ समझबाक चाही: लिखल दृश्यक क्रम आ आगामी वास्तविक मंचनक अनुक्रम अक्षरशः एक नहि रहत। आलोचनात्मक तुलना लेल ई अध्याय आधार-पाठ अछि। जँ लेखक नाट्य-रिहर्सल सँ मंचन धरि नव सम्पादनक सूचना दैतथि तखन परिवर्तन अधिक सहज बुझाइत; एखन तकर कारण खुलल नहि। एहि खाली जगहकेँ पाठक स्वतन्त्र कलात्मक पुनर्गठन सेहो मानि सकैत अछि, आ पूर्वक योजना-संगतिक असङ्गति सेहो।

प्रकरण २३६ | मूल अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

लिखल पाठसँ सार्वजनिक देह धरि

अध्याय १३४मे तैयार ‘पहरा’ नाट्य-पाठ एहि अध्यायमे लोकक सोझाँ खेलेल जाइत अछि। मंचनक पहिल संकट अछि जे लिखल नैतिक कथन जीबैत खेलाड़ी आ दर्शकक बीच प्रभाव पैदा करएत कि नहि। कथाकार एक-एक

दृष्यकेँ वास्तविक दर्शकक प्रतिक्रिया, कलाकारक पसीना आ माटिक धूलिसँ जोड़ैत छथि। तेँ स्क्रिप्टक संरचनाकेँ एकतर्फा पुनरावृत्ति नहि, अभिनय सँ जन्मल दूतरफा अर्थमे बदलबाक दावा कथाक केन्द्रमे अछि।

एक सय बत्तीस अंकक पुरान उत्सव : कालक्रमक असुविधा

आरम्भे विदेह नाट्य उत्सवक ‘पुरनका सभ एक सय बत्तीस अंक’ अलग-अलग मंच पर खेलल गेल रहल—एहन कथन अबैत अछि। मुदा ठीक पूर्वक अध्यायमे नाटकक स्क्रिप्ट एखन तैयार भेने छल, आ अध्याय १३३मे आमन्त्रणक उत्तरमे प्रदर्शनक क्रम भविष्य रूपमे कहल गेल छल। सम्भव अछि ई उत्सवक अलग इतिहास आ उपन्यासक अध्याय-अंकक स्मृति एके वर्णनमे मिलल हो; मुदा पाठ स्पष्ट काल-सेतु नहि दैत। एहि कारण एकरा तथ्य-जाँचसँ मेटाएल गलती नहि, आख्यानकालक अस्थिर संकेत रूपमे दर्ज करब आवश्यक अछि।

मंचक ऊँचाइ अस्वीकार आ गोल मैदान

आयोजकक लाल पर्दा, प्रकाश-मचान, अतिथि-दीर्घा आ प्रायोजक-पट्टिका बच्चा सभ मना करैत छथि। ओकर बदला गोल मैदानमे बीचक कारी कबड्डी रेखा बनल अछि। एहि परिवर्तनेसँ अभिनेता ऊँच आ दर्शक नीच—एहन दूरीक दृश्यभाषा टूटैत अछि। लेखक रंगमंचक स्थापत्यकेँ सामाजिक विचारक साधन बनबैत छथि। मुदा गोल मैदान मात्र सँ सामाजिक शक्ति बराबर नहि भऽ जाइत; वास्तविक समानता अभिनयक बाद दर्शकक बोलबाक अधिकारपर निर्भर करैत अछि।

कबड्डीसँ ‘नाम’ धरि ध्वनिक रूपान्तरण

पहिल खेलाड़ी ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहैत प्रवेश करैत अछि आ स्वर धीरे-धीरे ‘नाम-नाम’ बनैत अछि। एहि ध्वन्यात्मक रूपान्तरणमे खेलक नियम प्रत्यक्ष रूपेँ स्मृति-अनुष्ठान बनैत अछि। आरम्भिक नाम-पाथर पर सभ दिशासँ ‘उपस्थित’ उत्तर अबैत अछि; कथाविश्वक पूर्वक दोहराएल उच्चारण मंचक सामूहिक कोरस बनि उठैत अछि। शब्दक ई परिवर्तन अध्यायक सबसँ प्रभावशाली नाटकीय प्रवेश अछि, कारण व्याख्यान बिना ध्वनिक चरितार्थ होइत अछि।

गोहिक मुखौटाक अभाव आ छाहक प्रयोग

गोहि लेल कोनो वास्तविक पशु वा बनाओटी मुखौटा नहि राखल गेल अछि। एक खेलाड़ी पेटक बल ससरैत अछि, मुदा ओकर छाह गोहि बनैत अछि। दृश्य इएह बतबैत अछि जे कथाक ‘गोहि’ शारीरिक जीवक संग समय, प्रशासन आ विस्मरणक हिंसाक प्रतीक सेहो अछि। मुखौटा देलासँ देखनिहार पशु-आकृतिमे अटकि जाइत; छाह ओकर अर्थ उन्मुक्त रखैत अछि। एहि चुनावमे अल्पसाधनसँ बहुअर्थक मंच-कल्पना भेटैत अछि।

जलक बिना जलसमाधि आ देहक उर्ध्वगति

जलसमाधि दृश्य लेल मैदानमे पानि नहि राखल गेल; खेलाड़ी सभक घुमैत साँस सँ जलक उपस्थितिक अनुभव रचल गेल। ‘डूबल’ पात्र जमीन पर खसबाक बदला उठि नाम-पाथर लग बैसैत अछि। एहि गति-दिशाक उलटफेर मृत्युक प्रदर्शन सँ स्मृतिमे पुनःउपस्थिति दिस संकेत करैत अछि। दृश्य मृत्यु-समाधानक वास्तविकता नहि बतबैत;

ओ दर्शककेँ मृत्यु आ नामक बीच भावनात्मक दूरी सोचबाक अवकाश दैत अछि। अभिनयक ई रूप मूल नदीक भयक सजावटी प्रतिकृति नहि बनैत।

गंगेशक खाली आसन आ असुविधाजनक प्रश्न

गंगेशक दृश्यमे देह वा मूर्ति नहि, खाली आसन आ हथेलीमे तत्त्वचिन्तामणिक पात जेकाँ संकेत अछि। बालिका जन्म, विवाह, जाति आ प्रमाणक प्रश्न उठबैत अछि; चर्मकारिणीक स्वर पाछाँ सँ अबैत अछि। एहि प्रस्तुति-प्रकारमे नाट्य-प्रश्न ऐतिहासिक दावाक सत्यापनक विकल्प नहि, कथाविश्वक विवादित स्मृतिक सार्वजनिक प्रतिध्वनि अछि। दर्शकमे बैसल किछु पण्डितक असहजता नाटकक वास्तविक सामाजिक प्रतिक्रिया बनैत अछि; मुदा ओकरा ककरो ऐतिहासिक दोषक स्वतन्त्र प्रमाण मानल नहि जा सकैत।

बटुकनाथक पात-वकील आ दर्शकक प्रश्न

अभिनयमे बटुकनाथ पोथी खोलैत अछि, मुदा भीतर सँ सूखल पात निकलि दर्शकक कोरामे पड़ैत अछि। प्रत्येक पात न्यासक मालिक, स्मृतिक पहरुआ आ लाभार्थीक प्रश्न उठबैत अछि। दृश्य व्यवस्था द्वारा नामकेँ नियन्त्रित करबाक प्रवृत्तिकेँ एक विनोदी रूप दैत अछि, मुदा एतय कलात्मक व्यंग्य पात्रक आन्तरिक पश्चात्तापकेँ जटिल करैत अछि। पूर्वक स्क्रिप्टमे ओकर शान्त-धीमा अभिनय प्रस्तावित छल; एहि मंचनमे ‘सभसँ चपल बालक’ द्वारा भूमिका निभाओल जाइत अछि—ई स्पष्ट पात्र-निर्देशनक विचलन अछि।

राघवक मौन-सन्देश आ कागचक पात

राघवक दृश्य शब्दविहीन संकेतसभ सँ बनैत अछि; खेलाड़ी सभ संदेश देबाक चेष्टा करैत छथि, मुदा संदेश पात बनि खसैत अछि। डिजिटल साक्ष्यक मेटाएब-व्यापार एहि तरह कागचक दृश्य-रूपमे घुरि अबैत अछि। मूल कथामे राघवक गायब सन्देश आ ठूँठक पातक सम्बन्ध एखन अभिनयक साधन बनल अछि। छवि पुनरावर्तित होएबासँ दर्शकक स्मृति जगैत अछि, मुदा नाटकक भीतर संदेश बुझबाक अधिकार फेर स्थानीय गवाहीक संग जुड़ैत अछि।

लाउ आ ब्रूमक एकसमान उज्जर पोशाक

विदेशी पूँजी आ परामर्शक प्रतिनिधि लाउ किन-हंग आ ब्रूम चमकैत उज्जर कपड़ामे प्रवेश करैत छथि; हुनकर भाषा सुरक्षा, स्वच्छता आ अनाम ग्रहक भविष्यक वचन दैत अछि। अत्यधिक उज्जर वस्त्र अपराधक अन्हारक विपरीत प्रस्तुति-नीति अछि। मुदा दू भिन्न पात्रक समान सज्जा हुनकर अलग आर्थिक आ बौद्धिक रणनीतिकेँ एककृत करैत अछि। एतय प्रतीकक स्पष्टता बढ़ैत, चरित्रक सामाजिक विशिष्टता कने घटैत अछि—ई आलोचनात्मक द्वन्द्व दृश्य पाठमे उपस्थित अछि।

स्क्रिप्ट आ मंचन बीच नव दृश्यक्रमक अन्तर

अध्याय १३४मे लिखल नव दृश्यमे पीयर सूचना-पत्र, नकली भूतक जुलूस, रसोइक गणराज्य, गज-ग्राह आ ‘फेर पृथ्वी’क अलग स्थान छल। वास्तविक मंचनक विवरणमे जलसमाधि, बटुकनाथ, राघव, लाउ, सत्यव्रतक खाली कुर्सी आ अन्तिम सामूहिक कबड्डी नव क्रममे विशेष रूपसँ उभरैत अछि। ई पाठ-भेद कलात्मक पुनर्सम्पादन

सम्भव बनबैत अछि, मुदा लेखक एक स्पष्ट रिहर्सल-सेतु नहि देत। अतः योजना आ निष्पादनक अन्तरकेँ असावधानीसँ एकसमान घोषित करब उचित नहि।

सत्यव्रतक खाली कुर्सी आ प्रतिनिधित्वक विरोधाभास

नाट्य-पाठमे सत्यव्रतक पात्र लेल पाछाँ बैसनिहार बालक हाथ उठौने छल; मंचनमे कहल जाइत अछि जे हुनकर भूमिका कियो नहि निभेलक, बीचमे खाली कुर्सी राखल गेल। एहि अन्तरकेँ मात्र ‘मौन’क उन्नत प्रतीक मानि चुपचाप ढाँपब उचित नहि। खाली कुर्सी अवश्य प्रबल दृश्य अछि—पदक अनुपस्थिति सुनबाक आवश्यकता चिन्हबैत अछि—मुदा पूर्वक पात्र-चयनक कथा एतय स्पष्ट रूपेँ बदलल अछि। एहि असङ्गतिकेँ दर्ज करब उपन्यासक आत्मसमीक्षात्मक नाट्यरचनाकेँ बेसी सावधानीसँ पढ़बाक अवसर दैत अछि।

तालीे रोकब आ अनन्त खेलक सामूहिक अन्त

अन्तिम दृश्य कबड्डीक शुद्ध खेल अछि; प्रत्येक गिरैत खेलाड़ी नाम पबैत अछि आ पूरा मैदान साँसक सामूहिक लय बनैत अछि। आयोजक तालीक माध्यमसँ कार्यक्रम बन्द करब चाहैत अछि, मुदा बच्चा सभ एहि समाप्तिकेँ रोकैत अछि। तालीक जगह अगिला नाम लिखबाक आग्रह देखबैत अछि जे नाटकक अन्तिम लक्ष्य प्रशंसा नहि, गवाहीक अविरल प्रवाह अछि। ई ‘खुलल अन्त’ पाठककेँ मंचसँ सामाजिक जीवनक आगामी अध्याय दिस लऽ जाइत अछि।

मंचनक परिणाम : छूटल नामक नव प्रवेश

प्रदर्शनक बाद वृद्ध, स्त्री, युवक आ प्रवासी अपन-अपन छूटल नाम जोड़ब चाहैत छथि। एहि छोट घटना सँ नाटकक अनिवार्य अपूर्णता सजीव बनैत अछि। जे स्क्रिप्ट पूर्वक अध्यायसभकेँ अन्तिम रूप दैत बुझाइल छल, ओ सार्वजनिक स्मृतिक नब प्रश्नसँ बदलए लगैत अछि। कथाक भीतर ओकर अपन अध्याय-संख्या तक बढ़ैत देखाएब आत्मपरावर्तनक तीक्ष्ण युक्ति अछि। किन्तु खुलल सहभागिताक अगिला प्रश्न—ककर गवाही मंच पर पहुँचत आ ककर नहि—एखन बाँकी रहैत अछि।

प्रकरण २३७ | मूल अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

प्रदर्शनक समाप्ति आ कथाक दोसर आरम्भ

अध्याय १३५क अन्तमे ताली रोकबाक प्रयास रहितो अगिला अध्यायक आरम्भमे वास्तविक तालीक वर्णन अबैत अछि। किछु हाथ बजैत अछि, किछु आधामे रुकैत, किछु आँखि पोंछैत अछि। एहि भिन्न प्रतिक्रियासँ प्रस्तुति समाप्तिक एकल क्षण बहुस्वरक दृश्य बनि जाइत अछि। एहि ठाम पाठ एक हलुक घटनात्मक तनावो छोड़ैत अछि—ताली पर रोक सफल भेल कि आंशिक? अध्याय स्पष्ट उत्तर नहि दैत, मुदा एहि अस्थिरतासँ सार्वजनिक भावना आ नियोजित कला-अनुशासनक अन्तर उभरैत अछि।

सन्नाटा : असफलता नहि, नैतिक अवशेष

आयोजकक धन्यवाद-पत्र पहिल वाक्ये अटकि जाइत अछि। जे साधारण सांस्कृतिक समारोहमे प्रशंसाक औपचारिक भाषण बनित, से एतय छूटल नाम लेल मंच छोड़बाक आह्वानमे बदलैत अछि। एहि परिवर्तनसँ सन्नाटा निष्क्रिय खालीपन नहि, कथात्मक ‘दबाव’क चिह्न बनैत अछि। लेखक बोलेला बादक मौनकेँ पहिल अध्यायक मौनक उत्तराधिकारसँ जोड़ैत छथि; एहि बेर मौनक रक्षा कएल जा रहल अछि, मुदा ओहि मौनक भीतर नव गवाही जन्म लैत अछि।

कलाकारक पसीना आ भूमिकाक बचेबाक असर

गजक भूमिका निभौनिहार बालक अपन हाथकेँ तकैत अछि, जेना ग्राहक पकड़ एखनहुँ रहि गेल हो। मंचपर पसीना सामान्य श्रम अछि, मुदा पात्रक भीतर ओ नाटकीय अपराधबोधक देहगत संकेत होइत अछि। एहि प्रकार अभिनय समाप्त भेला पर कलाकार तुरन्त निजी स्वभावमे घुरि नहि सकैत। पात्र द्वारा भोगल भूमिका ओकर शरीरमे निवास करबाक एहन बिम्ब रचैत अछि, जकर माध्यमसँ नाटकक वास्तविक नैतिक असर दृश्य बनैत अछि।

रजिस्टरक चारू कात दोसर मंचन

एक वृद्धा अपन पतिक नाम नहि आएक बात कहैत छथि, दोसर व्यक्ति अपन भाइक अलग डूबबाक अनुभव, एक स्त्री जीवित बेटीकेँ घर द्वारा बेनाम करबाक पीड़ा। कलाकार सभ भूमिका उतारि बच्चा सभक रजिस्टरक कात बैसि जाइत छथि। ई क्षण ‘नाटकक बादक नाटक’ अछि, मुदा लिखल स्क्रिप्ट ओकरा नियन्त्रित नहि करैत। वास्तविक लोक अपन अनुभव जोड़ब लगैत छथि; एहि प्रकार नाट्य-आख्यानक सीमा जनस्मृतिक अगिला सम्भव पाठसँ खुलैत अछि।

सत्यव्रत आ अपन भूमिका निभौनिहार बालक

सत्यव्रत अपन बाल-अभिनेताकेँ चेतावनी दैत छथि जे पीड़ापर ताली उठलासँ सुननिहारकेँ दोबारा सावधान होएबाक चाही। एहि मुलाकातमे वास्तविक पात्र आ ओकर प्रतिनिधि एकहि दृश्यमे आबि ठाढ़ होइत छथि। रोचक ई अछि जे अध्याय १३५मे हुनकर भूमिका कियो नहि निभौल—एहन वर्णन रहल, मुदा एतय पातर चश्मा लगौने बालक हुनकर भूमिका केने कहल जाइत अछि। एहि विरोधाभासकेँ छिपाएल नहि जाए; ई नाट्य-अन्तरपाठक सम्पादकीय असङ्गति, वा दृश्य-वर्णनक बदलैत फोकसक समस्या बनैत अछि।

चन्द्रपालक टिकट-खिड़की : भीतर-बाहरक सीमा

चन्द्रपाल सभागारक बाहर टिकट-खिड़कीक शीशामे अपन चेहरा देखैत रहैत अछि। भीतर कलाकार ओकरा दलालीक रूपमे देखौने छथि; बाहर ओ अपन अतीतक सूचनासन्देशक ध्वनि सुनैत अछि। ई समानान्तर दृष्टि नाटकक जन-नैतिक प्रभाव दर्शबैत अछि, मुदा अपराधी द्वारा निर्णायक आत्मसुधार सिद्ध नहि करैत। शीशा ओ पात्र लेल आत्म-दर्पण बनैत अछि, जबकि टिकट-खिड़की स्वयं शोषक बाजारक स्मृति सेहो अछि।

न्यासक प्रतिनिधि आ प्रतिलिपिक स्वामित्व

बटुकनाथ मंचनमे उपस्थित नहि, मुदा ओकर प्रतिनिधि स्क्रिप्टक प्रकाशन आ अधिकार अधिग्रहणक सम्भावना लिखैत रहैत अछि। एहि छोट प्रसंगसँ कथा देखबैत अछि जे कला सफल भेलापर ओकरा खरीदि लेबाक संस्था तुरन्त सक्रिय भऽ सकैत अछि। दर्शक द्वारा नव नाम जोड़ल जाएब प्रतिनिधिक मोहर-आधारित अधिकारकेँ कठिन बना दैत अछि। तथापि केवल खुलल स्क्रिप्ट कहि देबासँ लेखकीय, पारिवारिक आ निजी अधिकारक प्रश्न स्वतः सुलझैत नहि; मीरा आगाँ एहि सीमाकेँ स्पष्ट करतीह।

ईराक नदी-जेकाँ लेखकत्वक रूपक

मंचक पाछाँ रंगकर्मीसभ मे बहस उठैत अछि—स्थिर स्क्रिप्ट छापल जाए कि प्रत्येक मंचनमे स्थानीय नाम लेल खुलल ठाम रहय। ईराक नदी-जेकाँ लेखकत्वक कथन व्यक्तिगत स्वामित्वसँ सामूहिक प्रवाह दिस संकेत करैत अछि। नदीक अनेक किनार होइत अछि, मुदा प्रवाह विभाजित नहि—ई कथन उपन्यासक जलक बिम्बक रंगकर्मीय विस्तार अछि। ताहूमे स्थानीय नाम जोड़बाक सम्पादकीय प्रश्न खुलल रहैत अछि: ककर अनुमतिसँ, के लिखत आ के रोकत? रूपक प्रश्न उठबैत अछि, पूरा व्यवस्था नहि।

मीराक सीमा : जनक नाटक, निजी गवाही

मीरा स्पष्ट करैत छथि जे नाटक जनक होइतहुँ व्यक्ति अपन देह, घर आ दुःखक सार्वजनिक प्रदर्शन पर अधिकार राखैत अछि। एहि आवाजबिनु खुलल लेखकत्व नब शोषणमे बदलि सकैत छल। पूर्वक दृष्टिक अधिकार, मौनक उत्तराधिकार आ देह-संहिताक नियम एहि अध्यायमे नाट्य-नीतिक रूपमे घुरैत अछि। कथनक क्रममे मीराक हस्तक्षेप उत्सवक उन्मादकेँ विराम दैत अछि; ई विराम रचनात्मक अछि, कारण पाठ सामूहिक उत्साहक भीतर असहमति आ निजता बचबैत अछि।

मंचक धूलि पर चारिकोना प्रतिज्ञा

अनन्या गोल कबड्डी रेखाक बदला मंचक धूलि पर छोट चौकोर खिंचि एक नब प्रतिज्ञाक ठाम बनबैत छथि। गोल खेल-स्मृति आ चौकोर सार्वजनिक प्रतिबद्धता बीच रूपक बदलैत अछि। खेलाड़ी रेखा पार करैत समय ‘कबड्डी’ नहि, ‘उपस्थित’ कहैत छथि। एहि उच्चारणक स्थानान्तरणसँ नाटकक अनौपचारिक खेल सामुदायिक जवाबदेहीक अभ्यास बनैत अछि। जँ केवल तालीक नैतिक अस्वीकृति रहैत, दृश्य उपदेश बनि जाइत; रेखा पार करबाक कर्म ओकरा देह दैत अछि।

विदेह झण्डा आ शब्दार्थक पुनःआविष्कार

झण्डापर छपल बरख आ क्रमांक चन्द्रमाक इजोतमे धुँधला पड़ैत अछि, ‘विदेह’ शब्द साफ रहि जाइत अछि। बच्चा सभ एकरा देहसँ पलायन नहि, देहक गरिमा धरि घुरबाक यात्रा रूपमे पढ़ैत अछि। नाटकक शीर्षक आ उत्सवक नाम एहि तरह कथा भीतर नव अर्थ पबैत अछि। मुदा ई अर्थ पात्रक व्याख्या अछि; पाठककेँ बाहरी सांस्कृतिक संस्था अथवा इतिहासक निश्चित आधिकारिक अर्थ बुझि एकर उद्धरण करबाक आवश्यकता नहि।

छोट पदचिन्ह आ जादुई दृष्टिक अनिश्चय

खाली मंच पर बच्चा, कलाकार आ बूढ़क नहि बुझाइत एहन पदचिन्ह देखाइ पड़ैत अछि; मृतक सभ शायद नाटक देखए आएल—एहन सम्भावना कथावाचक छोड़ैत छथि। घटना पर पूरा बाह्य सत्यक घोषणा नहि अछि। एहि अनिर्णयमे पूर्वक बूढ़बा भूत आ उज्ज्वलक आत्माक उपस्थितिक काव्यात्मक विस्तार अछि। पाठक मंचक धूलिक बिम्बकेँ स्मृतिक अवशेष रूपमे पढ़ि सकैत अछि, बिना एतय वास्तविक अदृश्य व्यक्तिक शारीरिक आगमन प्रमाणित करबाक दावाक।

स्क्रिप्टसँ बाहर बाँचल अन्तिम पाँति

भोरमे धूलिपर ‘जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू’क पाँति भेटैत अछि। अनन्या एकरा स्क्रिप्टमे नहि, पाछाँ राखबाक निर्णय करैत छथि। ई चुनाव स्वयं लेखकत्व पर टिप्पणी अछि: प्रभावक किछु अंश पाठमे कैद नहि होइत, ओ सामाजिक अनुभवक रूपमे बाँचैत अछि। अध्याय ‘पुरनका १३२ अंक’केँ बीआ कहैत आगाँ बढ़ैत अछि —एहि रूपमे रंगमंच सामाजिक काजक तैयारी अछि, ओकर समापन-बिन्दु नहि।

प्रकरण २३८ | मूल अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

दर्शकसँ साक्षी बनबाक वास्तविक परीक्षा

पिछला अध्यायसभ ‘दर्शक नहि, साक्षी’क भाषा रचने छल; अध्याय १३७मे ई सूत्र स्वयं उपस्थित लोकक चुनाव द्वारा जाँचल जाइत अछि। अनन्या अपन रजिस्टर तुरन्त नहि खोलि पहिने देखब चाहैत छथि जे पैघ लोक स्वयं लिखबाक लाज सहत कि नहि। कथनक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण ठहराव अछि, कारण बच्चा सभक नैतिक अधिकार एक क्षण लेल पाछाँ हटैत अछि। गवाही जबरदस्ती लिखबाक बदला वयस्क पात्रक स्वतन्त्र स्वीकृति सँ आरम्भ होइत अछि।

प्रेक्षागृहक बत्ती आ चेहराक बदलैत फोकस

बत्ती जरलापर लोक अभिनयक समीक्षा नहि, अपन जीवनक प्रश्नमे डूबल देखाइत छथि। ककरो मोबाइल खुजबाक साहस नहि, कियो लगक अपरिचित हाथ पकड़ने अछि। एहि सूक्ष्म दृश्यसभसँ कथावाचक सामूहिक भावनाक भीतर व्यक्तिगत प्रतिक्रिया अलग-अलग देखबैत छथि। एके नाटक देखने लोक सभ एके प्रकारक मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण नहि पबैत—ई भिन्नता दृश्यक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि आ मंचक घोषित सामूहिक एकतालकेँ मानवीय विशेषता दैत अछि।

चुप मुंशीक पीयर सूची

पुलक काजमे मुंशी रहल वृद्ध स्वीकार करैत छथि जे वास्तविक मजदूरक संख्या जानितो कम संख्या फाइलमे जएबाक बेर चुप रहला। जे पीयर कागच बरखों हुनकर जेबीमे नुकाएल छल, ओ एखन लोकक सोझाँ खुलैत अछि। एतय वस्तु मात्र स्मृतिचिह्न नहि; अपराधमे सहभागी रहल व्यक्तिक आत्मस्वीकारकेँ ठोस दस्तावेजी

आधार उपलब्ध करबैत अछि। तथापि गवाही देनाइ कानूनी निर्णायक सत्यापनक समाप्ति नहि; कथा स्वयं ओकरा ‘अपराध स्वीकारल, नाम घुराओल’ रूपमे लिखैत अछि।

औषधि-भण्डारक चाभी आ संस्थागत हिंसा

दवाइ बाँटनिहार स्त्री महामारीक समय गरीबक लेल राखल औषधि निजी नामपर चढ़ाओल जाएबाक स्मृति कहैत छथि आ छोट चाभी दैत छथि। ई चाभी गवाहीक दृश्यगत केन्द्र बनैत अछि—पाठक प्रशासनिक चोरीक अर्थ भौतिक ताला आ कोठरीक रूपमे देखैत अछि। गवाह अपन बेटाक मृत्यु सेहो जोड़ैत छथि; व्यक्तिगत शोक आ पूर्वक चुप्पीक अपराध एकहि देहमे उपस्थित होइत अछि। आलोचना एहि दूटा सम्बन्धकेँ एक सरल प्रायश्चितक कथा नहि बनबैत; दृश्यक नैतिक कठिनाई अलग रहैत अछि।

विज्ञापन लिखनिहार युवकक भाषा-अपराध

डिजिटल ठगीक विज्ञापन-लेखक युवक स्वीकार करैत अछि जे ओ सोझे लूट नहि करैत छल, मुदा बूढ़ लोकक डर बढ़ाबयवला शब्द ओ लिखैत छल। एहि गवाहीमे भाषा द्वारा हिंसामे सहभागी होएबाक प्रश्न उठैत अछि। नाटकक मुख्य विषय नामक सम्मान छल; एखन स्वयं शब्द रचयबला व्यक्ति ओकर शोषक प्रयोग पर अपन भूमिका चिन्हैत अछि। एहि उदाहरणसँ ‘कथन’ एक निष्पक्ष पात्र-संग्रहक साधन नहि रहि, सामाजिक कर्म बनैत अछि।

लघु अपराधसभक संयुक्त गोहि

दर्शकमे कियो विवाह रोकबाक, कियो पीड़ित बेटीपर झूठ कलंकक समय चुप रहबाक, कियो बिचौलिया देखितो हटि जाएबाक बात कहैत अछि। ई छोट आत्मस्वीकारसभ मिलि एक पैघ ‘गोहि’क जबड़ा बनबैत अछि। कथावाचक एतय एकमात्र महाखलनायकक बदला अनेक साधारण लोकक निष्क्रिय सहभागिता द्वारा सामाजिक हिंसा बनबाक प्रक्रिया देखबैत छथि। तथापि सभ अपराध समान परिमाणक नहि; ई कथात्मक गोहि-बिम्ब नैतिक सम्बन्ध देखबैत अछि, दण्डक समानता प्रस्तावित नहि करैत।

बटुकनाथ दर्शक-दीर्घामे : भूमिकाक प्रत्यावर्तन

बटुकनाथ अपन मंचीय चित्रण देखबाक लेल सभामे आयल छथि; दर्शकक वास्तविक गवाही उठैत-उठैत हुनकर कानूनी मुस्कान झड़ि जाइत अछि। रंगमंच पर पात्र रूपमे जिनकर आलोचना भेल, से स्वयं दर्शक बनि अपन सामाजिक परिणाम सुनबाक बाध्यतामे पड़ैत छथि। एहि ‘रोल-रिवर्सल’ सँ कथा एक रोचक नैतिक दर्पण रचैत अछि। मुदा बटुकनाथक मौन तत्काल अपराधबोधक पूरा प्रमाण नहि; पाठककेँ हुनकर पछिला काज देखबाक आवश्यकता रहैत अछि।

सत्यव्रतक कुर्सी आ ‘मुख्य अतिथि’क अस्वीकार

आयोजक सत्यव्रत मेहताकेँ दू शब्द बजबाक निमन्त्रण दैत छथि, मुदा ओ साधारण कुर्सीपर बैसि गवाही सुनैत छथि। ई मुद्रा पुरान विधिक प्रतिष्ठाक मंचीय प्रदर्शन सँ अलग अछि। हुनका अपन पूर्वक मौनक अपराध याद अबैत अछि, तेँ दोसराक आत्मस्वीकार अनिवार्यरूपेँ हुनकर ध्यानक केन्द्र बनैत अछि। नाटकक अभिनयमे हुनकर खाली

कुर्सीक असङ्गतिक बाद एहि वास्तविक चुप्पीक विवरण पात्रक रूपान्तरणपर नया उजास दैत अछि, यद्यपि पाठ दूनू स्तर स्पष्ट समेटैत नहि।

अभिनेता साक्षीक सेवक बनैत अछि

कबड्डी खेलनिहार युवक सभ मंचीय भेष एखनहुँ पहिरने गवाही देनिहारक साँस सम्हारैत, हँसी रोकैत आ नोरमे अटकल शब्दक लेल ठहरैत छथि। रंगकर्मक ई नव कार्य कलाकारकेँ प्रभाव पैदा करनिहारक स्थानसँ दोसराक बोलबाक अवसर रक्षाकरनिहार बनबैत अछि। असल अभिनय इएह अध्यायमे जाँचल जाइत अछि: कथा सँ बढ़ि लोकक गवाही महत्त्वपूर्ण भेलापर अभिनेता अपन केन्द्र छोड़ि सकैत अछि कि नहि। एहि दृश्य द्वारा पूर्वक रिहर्सल वास्तविक सामाजिक व्यवहारक अर्थ पबैत अछि।

पीड़ित आ अपराधीक सीमाक दोहरापन

ईरा नोट करैत छथि जे अपराध स्वीकारनिहारक भीतर कखनो पीड़ित बच्चाक स्वर अबैत अछि, आ पीड़ित अपन चुप्पी लेल स्वयं लाज अनुभव कऽ सकैत अछि। एहि जटिल कथनक अर्थ ई नहि जे अपराधी आ पीड़ित समान रूपेँ दोषी छथि; बल्कि व्यक्तिगत इतिहास एकरेखीय भूमिका द्वारा पूरा नहि बुझाइत। उपन्यासक पूर्वक कतेको प्रतीक अपराधक रूपकेँ एकरूप बनौने छल; एहि अध्यायमे ईराक निरीक्षण ओहि सरलीकरणमे उपयोगी दरार बनबैत अछि।

रजिस्टरक नब अनुच्छेद : गवाहीक स्वामित्व

अनन्या प्रस्तावित करैत छथि जे दर्शकक गवाही आगामी नाट्य-पाठमे जोड़ल जाएत। एहिसँ सामूहिक लेखकत्वक नव सम्भावना जन्मैत अछि, मुदा चन्द्रपालक भावनात्मक आँकड़ा-विक्रय, राघवक डिजिटल जाल आ ब्रूमक अनुदान-मॉडलक जोखिम तुरन्त उभरैत अछि। मीरा स्पष्ट कहैत छथि जे गवाहीक मालिक गवाह छथि, मंच हुनकर सेवक। ई सीमा नाट्यरचनाक नैतिक केन्द्र बनैत अछि; खुलल पन्ना अधिक समावेशी होइतहुँ अधिकार-विहीन सार्वजनिक सम्पत्ति नहि बनि सकैत।

घेराक नब भराइ आ मेटल भेदसभ

रातिक उत्तरार्धमे प्रेक्षागृह मेला, अदालत आ पाठशालाक मिश्रित स्थान बनैत अछि। लोक अपन मौनक नाम लिखबैत छथि; मंचीय ठूँठक प्रतिरूपपर हरियर रेखा चमकैत अछि, आ ‘उपस्थित’ सभ दिशामे घुमैत अछि। ई दृश्य जादुई संकेत द्वारा सामूहिक अनुभूतिक विस्तार रचैत अछि। तथापि अभिनेता, अपराधी, पीड़ित आ दर्शक एक वृत्तमे आबि गेलासँ हुनकर भिन्न नैतिक दायित्व समाप्त नहि होइत; वृत्त स्मरणक समान अवसरक छवि अछि, दोषक एकसमान निर्णय नहि।

अगिला प्रदर्शनक सूचना : खुलल पाठक व्यावहारिक शर्त

उत्सवक फाटकपर बच्चा सभ लिखैत छथि जे अगिला अंकमे दर्शकक गवाही जोडल जाएत, मुदा अनुमति बिना नाम नहि खेलेल जाएत आ मौनकेँ हड़बड़ीमे कण्ठ नहि देल जाएत। एहि घोषणामे नाटकक नब संस्करण-प्रक्रिया

स्पष्ट अछि। गवाहीक संकलन, चयन आ प्रदर्शनक काल एक दूसरसँ अलग रहत—ई महत्वपूर्ण नैतिक अन्तर अछि। नाटकक भीतर नाटक आब भविष्यक निरन्तर पुनर्लेखनक संकेत दैत अछि, जाहिमे हर नब प्रदर्शन नव व्यक्ति आ नव परिप्रेक्ष्य जोड़ी सकत।

प्रकरण २३९ | मूल अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

सभागारक दुआर छोट पड़ब : स्थानक विस्तार

दर्शकक गवाही उठलापछि सभागारक दुआर छोट पड़ि जाइत अछि—एहि वाक्यमे अध्यायक स्थानिक व्याकरण लुकायल अछि। मंचक बाँस, माटि, पाथर आ कलाकारक पसीना भीतर बचल अछि, मुदा कथा लोकक कान्ह पर बैसि बाहर आबि गेल। एहि रूपकक रचनात्मक अर्थ अछि जे कथा-संचरण प्रस्तुतिक यन्त्रसँ बेसी लोकक सम्बन्धपर निर्भर बनैत अछि। कलाकार अब केन्द्र नहि; बाट, सीढ़ी, चाह-दुकान आ बस-अड्डा नव दृश्य-स्थल बनैत अछि।

सभागारक सीढ़ी पर नाटक-अदालतक द्वन्द्व

लोक पूछैत अछि जे ई नाटक छल कि अदालत। कथावाचक दुनू संस्था बीच व्यंग्यपूर्ण अन्तर राखैत छथि: अदालत अभिनय बनि न्याय छिपा सकैत अछि; नाटक न्यायसँ जुड़ि स्मृति जगा सकैत अछि। एहि उलटबैत वाक्यक प्रभाव पूर्वक सत्यव्रत, बटुकनाथ आ नाम-सुनवाईक अध्यायसभ सँ जन्मैत अछि। मुदा सचमुच नाटक अदालतक फैसला बदलि नहि देत; एहि रूपकमे कानूनी निर्णय आ सार्वजनिक नैतिक आह्वानक भिन्न कार्य पहचानब जरूरी अछि।

चाहवला आ उधार-पुस्तकक नब उपयोग

सभागारमे नहि गेल चाहवला लोकक बदलबैत चेहरा देखिकऽ पुछैत अछि जे एतेक चुप्पी किएक। एक स्त्री अपन अभिलेखसँ छूटल भाइक बात कहैत अछि, आ चाहवला उधार-बहीक पृष्ठमे ओकर नाम लिखैत अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छोट दृश्य अछि: बाजारक हिसाबक किताब, जे सामान्यतया कर्ज लिखैत, एखन नाम-गवाहीक अवकाश बनैत अछि। लेखक एहि वस्तु-रूपान्तरणसँ देखबैत छथि जे कथाक नब मंच बनबाक लेल औपचारिक संस्था आवश्यक नहि।

बस-अड्डाक भूत-रंग आ निजी शोक

बस-अड्डापर कलाकारक मुँहपर भूतक चूना एखनहुँ लागल अछि; ओ बाबूक नाम पूरा लिखाए बिना रंग नहि धोएबाक बात कहैत अछि। एहि दृश्ये अभिनयक कृत्रिम रङ वास्तविक पारिवारिक स्मृतिक चिह्न बनि जाइत अछि। यात्री सभ अपन गामक नाम बजब शुरू करैत छथि; यात्रा-स्थल स्वयं स्मरण-स्थल बनैत अछि। मुदा जखन कृत्रिम रङ ‘साँच’क अनिवार्य प्रमाण मानल जाए, तखन सावधानी चाही—रङ भावनाक अभिव्यक्ति अछि, औपचारिक ऐतिहासिक दस्तावेज नहि।

पछिला दरबाजा पर पात्र आ अभिनेताक संयोग

वस्त्र बदलैत कलाकारसभ भूत, पनिडुब्बी, डाइन, मजदूर आ दलालक भूमिका उतारैत छथि। कतेको भूमिकाक पाछाँ अपन दादा-नानीक वास्तविक सामाजिक उपेक्षा देखाइत अछि। एहि ठाम अभिनीत आ जीवित इतिहासक सीमा थोड़े समय लेल धुँधला पड़ैत अछि। कथावाचक एहि धुँधलेपनकेँ केवल रोमांच लेल नहि, पात्र चुनबाक नैतिक कठिनाइ देखेबाक लेल प्रयोग करैत छथि—जे व्यक्ति अभिनय कऽ रहल अछि, ओहि भूमिका सँ ओकर अलग सम्बन्ध होइत सकैत अछि।

सूत्रधारक भारी पाण्डुलिपि : लिखल पाठक बदलैत भार

सूत्रधार सभ पन्ना गनैत अछि, सभ कागच सही अछि, मुदा पाण्डुलिपि भारी बुझाइत अछि। बादमे नब गवाहीक लिखाइ जेकाँ पाँति उभरैत अछि। एहि जादुई-सांकेतिक दृश्यक अर्थ एतबे नहि जे कागच चमत्कारी अछि; ई पाठक अर्थ बदलबाक कथा-युक्ति अछि। एके लिखल संवाद सार्वजनिक अनुभवपछाति अलग भार पबैत अछि। सूत्रधारक हथेलीक अनुभव द्वारा लेखक पाठ-प्रेषणक परम्परागत एकदिशात्मक रूपकेँ प्रश्न करैत छथि।

रजिस्टरक तेसर खाना : कथा कतय जाएत

अनन्या नव पृष्ठमे नाम, ककरा लेल उपस्थित, आ ई कथा अहाँ संग कतय जाएत—तीन प्रश्न लिखैत छथि। तेसर प्रश्न पर लोक अटकि जाइत अछि, कारण गवाही देनाइ आ गवाहीक बाद काम करनाइ अलग बात अछि। घर, अदालत, विद्यालय, मोबाइलक झूठ आ पोतीक जाति-डर जेकाँ उत्तरसभ कथाक भविष्यक स्थल निर्धारित करैत अछि। एहि प्रकार नाट्य-आख्यान एक ऐतिहासिक स्मृति परियोजनासँ व्यवहारक सम्भावित मानचित्रमे बदलैत अछि।

छपाइ बनाम अनुमति : सम्पादकीय तनाव

उत्सवक व्यवस्थापक रातिक भावुक प्रसंग अगिला अंकमे छापब चाहैत छथि। मीरा एतय निजी गवाही बिना अनुमति प्रकाशित नहि करबाक सीमा राखैत छथि। एहि प्रश्नमे उपन्यास अपन प्रकाशनक स्वभाव पर स्वयं विमर्श करैत अछि: जे सुनाओल गेल, से स्वतः छपबाक अधिकार नहि दैत। ‘छपाइ सँ पहिने अनुमति’क आग्रह कागचकेँ सामाजिक दायित्व दैत अछि। मुदा अति-खुलल पाठक लेखकीय श्रेय आ सुरक्षित अभिलेखक व्यवहारिक पद्धति एखनहुँ अस्पष्ट अछि।

लघु-दृश्यक डिजिटल व्यापारक खतरा

दर्शकसभ नाटकक टुकड़ा-टुकड़ा वीडियो बनाबय चाहैत छथि, आ देविका ‘पूरा सन्दर्भ सुनू’क नियम अनैत छथि। चन्द्रपालक अनुप्रयोग पुनः भावुक दृश्यक बजार बनाबय सक्रिय होइत अछि। एहि डिजिटल पुनरावृत्तिसँ कला-कथा आ प्लेटफॉर्म-व्यापारक बीच संघर्ष रूपान्तरित होइत अछि। अब तक स्मृति-सामग्रीक चोरी नाम-चित्रक रूपमे छल; एखन कतरल नाटकीय क्लिपक माध्यमसँ सामूहिक अनुभवक अर्थ फेर छीना जा सकैत अछि।

बटुकनाथक कार्यालय आ अनियन्त्रित गवाही

सचिव ‘नाटक सफल’क खबरि लबैत अछि, मुदा बटुकनाथ दर्शकक संख्या नहि, गवाहीक फैलाव सुनि असहज होइत अछि। भीड़ नियंत्रित भऽ सकैत, गवाही नहि—एहि धारणा कथाक सत्ता-विमर्शक केन्द्र अछि। उच्च पदाधिकारी कार्यक्रमक अनुमति, स्थान वा आयोजन के सीमा तय करि सकैत अछि, मुदा लोकक निजी कण्ठ कतय कथा कहत, ओकर पूर्ण नियन्त्रण सम्भव नहि। एहि पात्रक प्रतिक्रिया तकर संस्थागत भयकेँ ठोस दफ्तर-दृश्य मे देखबैत अछि।

सड़कपर कबड्डी : रंगमंचक धरातलीकरण

भोरमे सभागारक सोझाँ कलाकारसभ फेर कबड्डी खेलैत छथि। दूध लऽ जाइत लोक, अखबार बाँटनिहार, शिक्षिका आ बसक परिचालक पथिक बनि दर्शक होइत छथि। मंचक धूलि, सड़कक कड़ा माटि आ पएरक अलग ध्वनि स्थानिक रूपान्तरणकेँ भौतिक बनबैत अछि। एहि खेलेमे विजेता घोषित नहि; अन्तमे अनन्या मध्यरेखाक माटि रजिस्टरक पृष्ठ बीच राखैत छथि। खेलक माटि सचमुच लेखनक पदार्थ बनि जाइत अछि।

अधूरा प्रकाशनक स्वीकृति

विदेह उत्सवक अगिला अंक लेल की छापल जाए—पाण्डुलिपि, दर्शकक गवाही, नियम कि बाहरक खेल—एहि प्रश्न पर ईरा स्वीकार करैत छथि जे जतबा छपब ततबा छूटत। ई वक्तव्य मूल अध्याय १३३क सारांश-विरोधी कथनसँ सम्बद्ध अछि। मंचक चयन आ छपाइक चयन दुनूमे लोप अवश्यम्भावी अछि; एहि लोपकेँ छिपेबाक बदला स्वीकार करबाक बात नव साहित्यिक विनम्रता अछि। पाठ स्वयं अपन प्रतिनिधित्वक सीमाकेँ सार्वजनिक बनबैत अछि।

विदेशसँ आयल बच्चा सभक पत्र

अन्तमे डाकिया दूरदेशक बच्चा सभक पत्र अनैत अछि; ओ सभ सेहो नाटक खेलब चाहैत छथि, मुदा पहिने नाम सुनबाक वचन दैत छथि। एहि पत्रसँ घरेलू रसोइ सँ शुरू भेल कथाक व्याप्ति समुन्दर पार बढ़ैत अछि। ईराक पहिनेक विदेश-पत्रक स्मृति एतय कारणक सेतु बनैत अछि। मुदा विदेशी नाट्य-प्रयोग एखन घटित नहि भेल—पत्र केवल आगामी सम्भावनाक संकेत अछि। एकरा सम्पन्न अन्तरराष्ट्रीय अभियान मानि लिखब मूल पाठक घटनाक्रमसँ आगाँ निकलनाइ होएत।

प्रकरण २४० | मूल अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

स्थिर मंचसँ चलैत बाटक लय

अध्याय १३८क जुलूस एहि अध्यायमे सार्वजनिक मार्गक नाट्यरूप बनि जाइत अछि। मंचपर कलाकार आ दर्शकक ठाम नियत छल; बाटपर दूधबला, तरकारी बेचयबला, रिक्शा-चालक आ पुलिसक लोक क्षण-क्षण भूमिका बदलैत छथि। एहि गतिशीलता सँ कथनक फोकलाइज़ेशन फैलैत अछि। स्थिर केन्द्रक बदला राहगीरक

रोकल क्षण कथाक नब दृश्य बनैत अछि। एहन रूपान्तरण वास्तवमे लोकनाटकक सामाजिक गतिकेँ कथानकक पद्धति बनबैत अछि।

बाटक समय आ साँसक नाप

कबड्डी खेलनिहार सभ चौक, पुलिया, दवाइ-दुकान आ अदालतक बरामदा कतेक साँसमे पार होइत—एहि अभ्यासमे लगैत छथि। स्थानक नाप भूगोलक मापकसँ नहि, देहक श्वाससँ होइत अछि। ई पूर्वक कबड्डी-नियमक विस्तार अछि, मुदा सार्वजनिक आवागमनकेँ निजी स्मृतिक तालमे बदलैत अछि। पएरक धूलि सँ बनल रेखा तुरन्त मेटय लगैत अछि, जकर फलस्वरूप कथा-स्थान स्थिर स्मारक नहि, अस्थायी आ पुनरावर्तनीय घटना बनैत अछि।

हाटमे खाली कटोरा आ एक शब्दक उद्घाटन

पहिल प्रदर्शन हाटमे घटैत अछि; कलाकार भूत वा गोहिक मुखौटा नहि पहिरैत, साधारण युवक, खाली कटोरा आ पाथरक माध्यमसँ थोड़ ध्वनि रचैत छथि। ‘उपस्थित’ उच्चारलाक बाद माछ काटैत छूरी अटकि जाइत अछि आ मरिचाइ बेचैत बुढ़िया प्रत्युत्तर दैत छथि। एहि क्षण हाट नाटकक सज्जित पृष्ठभूमि नहि, सहभागी बनैत अछि। दृश्य सफलताक कारण मंचक चमक नहि, रोजी-रोटी बीच अचानक सुनबाक घटना अछि।

बस-अड्डा : टिकटबला नाम आ अनाम यात्री

यात्रीसभकेँ बँटल पातपर पुरनका अध्यायक सार-साँस लिखल अछि। कंडक्टर टिकटपर नहि चढ़ल नामक प्रश्न पढ़ैत अछि, आ साधारण बस-यात्रा स्मृतिक चर्चामे बदलैत अछि। एहि छविमे नामावली एक यातायातीय संस्था पर टकरबैत अछि। टिकट पहचानक सीमित प्रमाण अछि; कथा पूछैत अछि जे एहि सीमामे कतेक लोकक जीवन छूटैत अछि। तथापि ‘सार-साँस’क संक्षेपण अनिवार्यरूपेँ मूल विशाल कथाक केवल आंशिक रूप देत—एहि सीमाकेँ लेखकक पहिनेक सारांश-विरोधी कथनसँ तुलना आवश्यक अछि।

अदालतक बरामदा : चुप्पी आ मेटल जीवन

अदालतक बरामदामे खेलाड़ी चिल्ला कऽ प्रदर्शन नहि करैत; ओ सभ बैसि कागच पर किछु शब्द आ खाली पन्ना राखैत छथि। खाली कागचपर पुरान देबालक चूना झरैत अछि, आ ओ धब्बा ‘देबालक उत्तर’ कहल जाइत अछि। एतय भौतिक क्षय आ संस्थागत स्मृति बीच जादुई-सांकेतिक सम्बन्ध बनैत अछि। सत्यव्रत लिखबाक बदला पहिने सुनबाक निर्णय लैत छथि। एहि संयमसँ नाटक न्यायालयक फैसला लेल अति-शीघ्र दावा नहि करैत, प्रश्न पूछबाक स्थान खोलैत अछि।

दवाइ-दुकान : अभिनयसँ स्वीकारक सामाजिक मोड़

दवाइ-दुकानक सोझाँ कलाकार साँस आ खाली शीशीक दृश्य रचैत छथि। दुकानदार भीतर लुकैत छथि, फेर बाहर आबि आपदाक समय कीमत बढ़ेबाक स्वीकार करैत छथि। पहिनेक दर्शक-गवाहीक प्रसंग एतय नब स्थानमे दोहराओल अछि। मुदा व्यक्ति-विशेषक स्वीकारकेँ सामाजिक उपचारक पूरा पर्याय मानब कठिन; आरोप,

सत्यापन आ क्षतिपूर्तिक प्रक्रिया एखन शेष अछि। एहि अधूरेपनमे कथा प्रदर्शनसँ जिम्मेदारी दिस संक्रमण रचैत अछि।

सार्वजनिक मार्गक प्रशासनिक भय

व्यापारी ग्राहक भागबाक, नेता अनुमति-पत्रक आ अधिकारी जन-भावना भड़कबाक बात उठबैत छथि। ई प्रतिरोध अनिवार्यरूपेँ शोषक षड्यन्त्रक समान रूप नहि; किछु प्रश्न सार्वजनिक व्यवस्था सँ जुड़ल होइत सकैत अछि। तथापि मूल कथामे ई आवाजसभ प्रायः लोकक नाम-पाठक सोझाँ प्रतिबन्धक रूपमे उभरैत अछि। बच्चा सभ ‘हम भड़कबैत नहि, नाम पढ़ैत छी’क उत्तर दैत छथि। एहि छोट वाक्यक पुनरावृत्ति नाटकक अहिंसक सार्वजनिक स्वरकेँ स्पष्ट करैत अछि।

बटुकनाथक नियम-फाइल आ बाटक अनिश्चितता

बटुकनाथ ‘सड़क पर नाटक’ सुनि सार्वजनिक मार्ग, शान्ति-भंग आ अनुमति-सम्बन्धी नियम तकैत छथि। ओ पुरान विधिक नियंत्रणद्वारा नव सामाजिक प्रयोग रोकबाक सम्भावना देखैत छथि। मुदा खाली कागचपर ‘उपस्थित’क जादुई लिखाइ कथात्मक रूपेँ हुनकर रणनीतिकेँ बाधित करैत अछि। ई दृश्य संस्थागत भयक प्रभावशाली व्यंग्य अछि, मुदा वास्तविक विधिक विवादक यथार्थवादी प्रक्रिया दृश्य सँ बाहर रहैत अछि; आलोचनामे एहि भेदकेँ राखब उचित अछि।

चन्द्रपालक कैमरा आ पुनः वस्तुकरणक खतरा

बाजारक मंचनकेँ डिजिटल टिकट आ विज्ञापनमे बदलबाक कल्पना करैत चन्द्रपालक लोक हाटमे कैमरा अनैत अछि। मीरा आ स्त्री सभ ओकरा रोकैत छथि। एतय सार्वजनिक बाट-नाटक सेहो निजतासँ मुक्त क्षेत्र नहि; जकर जीवनक गवाही अछि, ओकर अनुमतिक प्रश्न दोहराइत अछि। एहि पुनरावर्तनक कथा-महत्त्व ई जे बाहर निकलल रचना स्वतः शोषणरहित नहि होइत। मंच पर राखल सीमा बाटपर फेर नब परिस्थितिमे परखेबाक आवश्यकता पड़ैत अछि।

राघवक ‘चल’ आ ‘नाटक’क द्विखण्डन

राघव जालमे ‘चल-नाटक’ लिखैत अछि, मुदा सन्देश दू भागमे विभक्त भऽ जाइत अछि—‘चल’ आ ‘नाटक’। ई शब्दक जादुई विखण्डन डिजिटल नियंत्रणक असफलताक दृश्य अछि। समाज जखन केन्द्रीय नेता, खाते वा एकल निर्देशक बिना आवाज उठबैत अछि, तखन अपराधक पुरान नक्शा काम नहि करैत। एकरा वास्तविक सूचना-प्रणालीक तकनीकी खराबी मानल नहि जाए; कथावाचक दमनकारी निगरानीक असहायता प्रतीक रूपेँ रचैत छथि।

विदेह लोकगाथाक लय आ सलहेसक संकेत

अध्यायारम्भक सलहेस-लोकगाथा बाटकेँ रंगमंच बनबाक लय दैत अछि। मुख्य गद्य हाट, बस-अड्डा, अदालत आ दवाइ-दुकानक क्रमसँ एहि गीतक सर्वव्यापक दावाकेँ विशिष्ट सार्वजनिक दृश्यसभमे बदलैत अछि। लोकगाथाक

उल्लेख मिथिलाक नाट्यपरम्परा जोड़बाक काम करैत अछि, मुदा ई कथा स्वयं सलहेसक पूर्ण पुनर्लेखन नहि अछि। लोकगीतक गत्यात्मकता आ सार्वजनिक दृश्यक छोट-छोट विराम साथ मिलि ‘चलैत मंच’क स्वर पैदा करैत अछि।

सामाजिक विकेन्द्रीकरणक सम्भावना आ सीमा

लेखक कहैत छथि जे बिनु एक नेता आ एक मालिकक सामूहिक बोलि नियन्त्रित करब कठिन होइत अछि। एहि विचारक ठोस चित्र हाटमे बुढ़ियाक प्रत्युत्तर, कंडक्टरक पात पढ़ब, औषधि-विक्रेताक स्वीकार आ पथिकसभक रुकबमे भेटैत अछि। मुदा बिनु केन्द्रक संवादमे गवाहीक प्रमाण-रक्षा, निजताक संरक्षण आ दीर्घकालीन संगठन कठिन प्रश्न होइत अछि। रचनाक सकारात्मक सम्भावना एहि शर्तकेँ मिटबैत नहि; संवादक विस्तार एकतरफा संस्थागत उत्तरदायित्वक विकल्प नहि।

बाहरी पत्रसँ बाटक आगामी विस्तार

पिछला अध्यायक अन्तक विदेशसँ आयल पत्रक संकेत एखन बाटक रंगमंचमे सम्भावित अन्तरदेशीय विस्तारक आधार बनि रहल अछि। तथापि मूल अध्याय १३९ मुख्यतः स्थानीय हाट, बस-अड्डा, अदालत आ दवाइ-दुकानक घटना कहैत अछि; दूरदेशक वास्तविक मंचन एखन ओकर केन्द्र नहि। कथा जखन स्थानिक दृश्य बान्हैत अछि, तखन ओकर विस्तारक वचन भविष्यकालमे बाँचल रहैत अछि। एहि संयमक संग अध्याय पथ-नाटककेँ पूर्ण क्रान्तिक समापनक बदला नव सामाजिक श्रवण-विधि रूपमे रखैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : माटिसँ बाटक रंगमंच धरि

अध्याय १३२–१३९क मूल गति एक असाधारण रूपान्तरण होइत अछि: साझा थारीक क्षणिक संगतिसँ रसोइक दैनन्दिन श्रमक गणराज्य, तत्पश्चात् रंगमंचक आमन्त्रण, लिखित नाट्य-पाठ, सार्वजनिक मंचन, तालीक बादक सन्नाटा, दर्शकक गवाही आ अन्ततः चलैत सड़कक रंगमंच। ई आठ अध्याय एकटा सामाजिक दृश्यकेँ अलग माध्यममे बदलैत चलैत अछि। हर नब माध्यम पूर्वक नैतिक प्रश्नकेँ समाप्त नहि, नव संस्थागत सीमा पर परखैत अछि। रसोइमे जाति आ लिंगक असमानता, नाटकमे निजी दुःखक अभिनय-अधिकार, छपाइमे गवाहीक स्वामित्व आ सार्वजनिक बाटपर शान्ति-नियमनक प्रश्न अलग रूपेँ सामने अबैत अछि।

एहि अनुक्रमक मुख्य वस्तुगत धुरी झूठा बासन, रसोइक कड़ाही, अनाम पाथर, अभिनयक माटि, पीयर सूचना-पत्र, खाली पिंजरा, नाटकक पात, टिकट-खिड़की, पीयर पड़ल मुंशीक सूची, औषधि-भण्डारक चाभी, चाह-दुकानक उधार-बही आ बस-अड्डाक पर्ची अछि। ई सभ वस्तु केवल सजावटी रंग-उपकरण नहि: प्रत्येक अपना पहिल सामाजिक उपयोगसँ अलग नब काम पबैत अछि। उधार लिखनिहार पन्ना नाम-स्मरणक पन्ना बनैत अछि, मंचक माटि रजिस्टरक भीतर प्रवेश करैत अछि, आ बासन माजनिहार हाथ प्रतिष्ठाक दावाकेँ चुनौती दैत अछि। एहि भौतिक सेतु सभक कारण रूपकक पुनरावृत्ति कथानकक क्रियामे परिणत होइत अछि।

नाट्य-पाठमे “दर्शक” शब्द काटि “साक्षी” लिखबाक घटना आठू अध्यायक वास्तविक रचनात्मक केन्द्र मानल जा सकैत अछि। एक शब्दक ई सम्पादन अध्याय १३४क भीतर घटैत अछि; अध्याय १३५मे गोल मैदानक चारू

कात बैसल लोक “उपस्थित” बजैत छथि; अध्याय १३६मे प्रस्तुति समाप्त भेने लोक अपना छूटल नाम लबैत छथि; अध्याय १३७मे हुनका सभक स्वतन्त्र अपराध-स्वीकार लिखल जाइत अछि; अध्याय १३८–१३९मे मंचक बाहर अलग संस्था आ बाजारक लोक सहभागिता करैत छथि। एहि क्रममे नाटकक दर्शक केवल काल्पनिक लक्ष्य नहि रहैत, आगामी कथा-निर्माणक पात्र बनैत अछि। तथापि स्वैच्छिक गवाही, सार्वजनिक प्रदर्शन आ प्रमाण-परीक्षाक तीनू अलग अधिकार राखबाक सावधानी पाठ अपन मीराक कण्ठसँ दोहरबैत अछि।

आख्यानसमय आ नाटकीय पाठक संगतिमे किछु महत्त्वपूर्ण प्रश्न शेष रहैत अछि। अध्याय १३३मे आगामी स्क्रिप्ट आ मंचनक क्रम पूर्वघोषित अछि; अध्याय १३४मे नव दृश्यक रूपरेखा निर्दिष्ट होइत अछि; अध्याय १३५क मंचनमे कतेको दृश्य नव क्रममे अबैत अछि। विशेषतः बटुकनाथक लेल शान्त खेलाड़ी चुनबाक बाद मंचनमे चपल बालकक उल्लेख, आ सत्यव्रतक भूमिका लेल बालक चुनल गेलाक बाद खाली कुर्सी तथा आगाँ अध्यायमे फेर बाल-अभिनेता भेटबाक विवरण, क्रमगत विचलन अछि। पुरान एक सय बत्तीस अंक पहिनहिं अलग-अलग मंचपर खेलल गेल—एहन कथन सेहो नाटकक तत्काल लिखबाक क्रमसँ स्पष्ट रूपेँ अलग नहि कएल गेल। एहि सभकेँ जादुई यथार्थक नाम दऽ स्वतः समाधान मानल उचित नहि; कलात्मक पुनर्सम्पादनक सम्भावना आ पाठगत असङ्गति दुनू सम्भावना दर्ज रहबाक चाही।

बहुवाचिकताक दृष्टिसँ अध्याय १३७ विशेष महत्त्व रखैत अछि। पुलक मुंशी, औषधि-वितरणमे सहभागी स्त्री, ठगीक भाषा लिखनिहार युवक, जाति-सम्बन्धी रोकधाममे शामिल सामान्य लोक—ई सभक वक्तव्य सामाजिक अपराधक अनेक स्तर देखबैत अछि। एहि सभमे पीड़ितक उपस्थिति आ अपराधक स्मृति कखनहुँ एक व्यक्तिक भीतर मिश्रित होइत अछि; कथा तकर सरलीकृत नायक-खलनायक विभाजनकेँ चुनौती दैत अछि। मुदा गवाही स्वयं जाँचल तथ्यक अन्तिम निर्णय नहि; लेखकक सामुदायिक भाषामे ई स्वीकारक आरम्भ अछि। दर्शक द्वारा लेखनक अधिकार प्राप्त करब उपयोगी अछि, मुदा हर नब गवाहीक प्रकाशन-अनुमति, सम्बन्धित व्यक्तिक गरिमा आ ऐतिहासिक सन्दर्भक रक्षा आवश्यक बनल रहैत अछि।

अन्तिम दू अध्याय रंगमंचक परिधि स्थिर नहि रखैत। चाह-दुकान, बस-अड्डा, हाट, अदालतक बरामदा आ औषधि-दुकानक साधारण स्थल नाटकक सम्भावित मंच बनैत अछि। एहि नव भूगोलमे खेलाड़ी अनिवार्य कलाकार नहि, बाटक अनाम लोक संग सुनबाक मध्यस्थ छथि। ताहू पर मुख्यकथा एखन दूरदेशक बच्चा सभक आगामी प्रस्तुति मात्र संकेत करैत अछि; ओकरा घटित घटना मानि निष्कर्ष देब उचित नहि। ईरा द्वारा छपाइक अनिवार्य लोप स्वीकार करब, मीरा द्वारा निजी गवाहीक अधिकार रोकब आ अनन्या द्वारा हर नब नामक ठाम खाली राखब एहि नव चलैत कथाक आत्मसीमा निर्धारित करैत अछि।

एहि प्रकार प्रकरण २३३–२४०क निष्कर्ष सम्पूर्ण न्याय स्थापित भेल—एहन घोषणामे नहि, अभिनय आ जीवनक सम्बन्धक नब शर्तमे अछि। साझा भोजनक बाद बासन माजनाइ आवश्यक छल; प्रदर्शनक बाद दर्शकक जीवनमे श्रम आ साहस आवश्यक अछि। जहाँ कथा कहलक जे ताली प्रदर्शनक अन्त अछि, ओतहि अगिला अध्याय वास्तविक ताली आ ओकरा रोकब बीच तनाव देखबैत अछि। ई असंगत भाव-स्पन्दन उपन्यासक दीर्घ संरचनामे कथनक प्रभाव आ घटनाक अवशेष बीच अस्थिर सम्बन्ध उद्घाटित करैत अछि। कबड्डीक रेखा मंचसँ बाटपर घुरैत अछि—नव अध्यायक सम्भावना राखैत, मुदा पहिनेक सम्पूर्ण पीड़ाकेँ समाधान घोषित केने बिना।

प्रकरण २४१ | मूल अध्याय १४० — चल चौपाल

चलैत रंगमंचसँ स्थानहीन सभाक रचना

पछिला अध्यायमे नाटक हाट, बस-अड्डा आ अदालतक बरामदा दिस पसरल छल। अध्याय १४० एहि गतिशीलताकेँ 'चल चौपाल' नाम दऽ ओकर व्यावहारिक नियम बनबैत अछि। एकटा खुलल ठाम, सुननिहार कान आ अधूरा नाम—एतबे तीन वस्तु मंचक स्थान लैत अछि। ई संकुचन केवल संसाधनक अभाव नहि, कथानकक सत्ता-विन्यास बदलबाक साधन अछि: रंगमंचपर दर्शक आगाँ आबैत छल, मुदा चौपालमे सुननिहार स्वयं नव कथा उपस्थित करैत अछि। स्थानक स्थायित्व समाप्त होइतहि नाटक एक स्थानसँ दोसर स्थान धरि गवाहीक निरन्तर यात्रा बनैत अछि।

हार-जीतविहीन कबड्डी : खेलक उद्देश्यक परिवर्तन

खेलाड़ी सभ निर्णय करैत छथि जे प्रत्येक प्रस्तुति-पाछाँ कबड्डी खेलल जाएत, मुदा विजेता वा पराजित घोषित नहि होएत। सीमा पार करब, एक नाम सुनब आ साँस टूटबासँ पहिने घुरब—ई क्रियाक्रम अब खेलक परिणाम नहि, नाम सुनबाक क्षमताकेँ प्रधान बनबैत अछि। पारम्परिक प्रतिस्पर्धाक लय बचल रहैत अछि, पर ओकर अर्थ बदैल जाइत अछि। सीमा-रेखा कानूनक हाशिया, खेतक मेड़ आ कागचक कवरक समकक्ष देखाओल जाइत अछि; पाठक बुझैत अछि जे जकर नाम 'निरस्त' भेल, ओकरा लेल सामाजिक खेल पहिनहि हार निर्धारित कऽ देने छल।

बूढ़बा भूतक 'पढ़ल नहि, खेलल जाए' सूत्र

अध्यायारम्भमे बूढ़बा भूतक पहिनेक वाक्य फेर सुनाइत अछि। ई कथावाचक द्वारा पूर्वक घटनाक स्मरण करएबाक आ नव प्रसंगक उद्देश्य स्पष्ट करबाक युक्ति अछि। नाम-पाठ लिखित अभिलेखक रूपमे आरम्भ भेल, रंगमंचमे आवाज पओलक, आ आब खेलमे देहगत प्रविधि बनैत अछि। एही कारण खेल केवल शिक्षणक रूपक नहि: कलाकारकेँ साँस सँ संघर्ष करबाक पड़ैत अछि, आ सुननिहारकेँ ओकरा नाम दऽ उत्तर देबाक अवसर भेटैत अछि। तथापि खेलक सफलता वास्तविक मुकदमाक निस्तार नहि; कथा एखन संस्थागत चरण दिस आगाँ बढ़बाक तैयारीमे अछि।

कथावाचकक दोहरा बाट-बिम्ब

आरम्भक कथनमे बाटकेँ सभसँ पुरान रंगमंच कहल जाइत अछि; अगिला दृश्य सभमे बाट स्वयं संस्थागत नियन्त्रणक लक्ष्य बनैत अछि। एक दिस लोक चलैत अछि, दोसर दिस प्रशासन मार्ग-अवरोधक भाषा द्वारा ओकर पएर मापय चाहैत अछि। कथावाचक 'पएर नापल जा सकैत अछि, बाट नहि' कहि देह आ समष्टिगत स्मृतिक बीच अन्तर स्थापित करैत छथि। ई बिम्बक पुनरावृत्ति बाटक मुक्तिकेँ सहज विजय नहि बनबैत, किएक तँ अगिला क्षण थानाक कागच आबैत अछि। एहि तरह भाषाक आशावादी विस्तार आ घटनाक विधिक प्रतिबन्ध परस्पर तनावमे रहल अछि।

पहिल बेर देखनिहार बालकक लेखन

अनन्या जखन रजिस्टरमे लिखैत छथि जे कथा बाट सीखि आयल, तखन पहिल बेर प्रदर्शन देखनिहार बालक ओकरा नीचाँ अपन व्याख्या जोड़ैत अछि। ई छोट घटना लेखकीय एकाधिकारक दरार अछि। बच्चा केवल अनुयायी नहि, घटित दृश्य पर अपन वाक्य लिखनिहार सह-व्याख्याता बनैत अछि। ओकर कथन—जीवनकेँ अपन झूठ सुनाबय पर विवश करनाइ—नाटकक लक्ष्यकेँ मंचीय अनुकरणसँ सामाजिक अनावरण दिस घुमबैत अछि। मुदा बच्चाक लिखल वाक्य आलोचनात्मक सूत्र अछि, प्रमाणित ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि; कथावाचक ओकरा तत्काल लोकन्यायक निर्णय बनाकऽ प्रस्तुत नहि करैत।

रात्रिक थकान आ सभाक घरेलूकरण

जुलूस साँझमे घुरैत अछि आ कलाकार सभ थाकल छथि; एहि विश्राममे अभिनयक अत्यधिक उत्तेजना शान्त होइत अछि। गाछीक ठूँठ लग घुरल पएर कथाकेँ ओकर पूर्वक स्थानीय केन्द्रसँ जोड़ैत अछि। बाहरी बाटक अनुभव रजिस्टरक एक पाँतिमे समेटल जाइत अछि, मुदा उहे पाँति अगिला घटनाक द्वार बनैत अछि। बाक प्रश्न —आब जीवनक बारी अछि—घर, रसोइ, कार्यालय आ निन्न धरि नाटककेँ पसारबाक कल्पना करैत अछि। एखन ई सम्भावित विस्तार अछि; आलोचनाकेँ ओकरा सभटा घटि चुकल अनुभव मानि नहि लेबाक चाही।

थानाक मोड़ल कागच : विधिक अवरोधक प्रवेश

दू सिपाही साइकिल पर आबि सभ्यतापूर्वक एक मोड़ल सूचना दैत छथि। पत्रमे 'अनधिकृत मार्ग-अवरोध' आ 'प्रदर्शन-सदृश गतिविधि'क स्पष्टीकरण माँगल गेल अछि। एहि सूचना-प्रवेशक नाटकीयता ओकर सौम्य प्रस्तुतिमे नुकाएल अछि: कियो डाँट नहि, कियो गिरफ्तारी नहि, मुदा प्रशासन कथाकेँ अपन परिभाषामे बाँधबाक आरम्भ कऽ चुकल अछि। अखबारक सनसनी वा हिंसक दमनक दृश्य गढ़बाक बदला लेखक छोट कागचसँ आगामी संघर्ष आरम्भ करैत छथि। ई सूक्ष्म संस्था-वर्णन दीर्घ आख्यानक प्रवाहमे मोड़ बनैत अछि।

पीयर सूचना-पत्रक स्मृतिसँ नव आदेशक तुलना

अनन्या पुलिसक पत्रकेँ ओही ठाम राखैत छथि जतय पहिने पीयर सरकारी सूचना राखल गेल छल। स्थानक ई पुनःप्रयोग पाठककेँ पछिला बेदखली आ सम्पत्तिक विवादक स्मृति घुरा दैत अछि। ठूँठक कगार एक साधारण मेज नहि रहैत; बारम्बार ओतए राखल कागचसँ ओ संस्थागत आदेश आ सामुदायिक प्रतिप्रश्नक साझा रंगमंच बनैत अछि। मुदा पहिनेक पत्र आ वर्तमान मार्ग-अवरोधक सूचना एक्के कानूनी प्रक्रिया नहि; पुनरावृत्ति बिम्बगत अछि, तथ्यगत पहिचान नहि। ई अन्तर समीक्षा लेल जरूरी अछि।

सत्यव्रतक स्थगित उत्तर आ श्वासक विराम

सत्यव्रत मेहता दूरसँ कहलनि जे पत्र काल्हि पढ़ल जाए। हुनकर ई छोट वाक्य पूरे अध्यायक अन्तक दिशा तय करैत अछि। ओ तुरन्त नियम व्याख्या नहि करैत छथि; कथाक समय एक राति लेल स्थगित कऽ दैत छथि। ई विराम पूर्वक दीर्घ मुकदमा-विलम्बसँ अलग अछि, कारण एतय स्थगन लोककेँ तैयार होबाक अवधि देबाक रूपमे

प्रस्तुत अछि। तथापि 'काल्हि' शब्दक विडम्बना तीव्र अछि: उपन्यासमे अदालतक काल्हि बरखों चिबा गेल अछि; आब कथाकेँ देखबाक अछि जे ई नव काल्हि कतेक मानवीय बनत।

कागचक कबड्डी : रूपकसँ प्रक्रियात्मक कथानक धरि

अध्यायक अन्तिम कथन आगाँ 'कागचक कबड्डी'क संकेत दैत अछि। अखन धरि साँस रोकि रेखा पार करनिहार देहक मुकाबिला धूर्त, भूत आ गोहिक रूपकसँ छल; अगिला अध्यायमे नियमक पाँति स्वयं सीमारेखा बनत। एना उपन्यास एके प्रतीककेँ लगातार नव संस्थामे आजमबैत अछि। शिल्पगत लाभ ई जे बहु-अध्यायी आख्यानक अलग प्रकरण एक श्रृंखलामे बन्हैत अछि। सीमा ई जे प्रतीकक पुनरावृत्ति जँ ठोस फाइल आ मनुष्यक भेद नष्ट करय, तँ समीक्षा ओकरा पर्याप्त नहि मानत। एहि अध्यायमे पत्रक विशिष्ट शब्द एहि जोखिमसँ कथाकेँ बचबैत अछि।

आवाजक बहुलता आ निष्कर्षक अपूर्णता

बूढ़बा भूत, बा, अनन्या, नव दर्शक-बालक, सिपाही आ सत्यव्रत—एहि सभक आवाज अलग काम करैत अछि। बूढ़बा सिद्धान्तक लोकस्वर छथि, बा भावी दिशा दैत छथि, अनन्या अभिलेख रखैत छथि, बालक अर्थ जोड़ैत अछि, पुलिस संस्थागत वर्गीकरण करैत अछि, आ सत्यव्रत उत्तरक समय ठहरबैत छथि। कथाक सामूहिकता एही भिन्न भूमिकासँ बनैत अछि। अन्तमे कोनो विधिक फैसला नहि भेल; केवल कागचक भाषा सार्वजनिक सुनवाईक वस्तु बनल। एहि सीमाक स्वीकारसँ अध्यायक आगामी कथा विश्वसनीय बनैत अछि।

प्रकरण २४२ | मूल अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

बरामदाक देहरी : भीतर आ बाहरक मध्यावस्था

अदालतक बरामदा अध्यायक प्रधान पात्र-जेकाँ उपस्थिति पबैत अछि। कथावाचक एकरा केवल भौतिक भवनक भाग नहि, 'भीतर आ बाहरक बीचक अवस्था' कहलनि। मुवक्किल अदालतक भीतर न्याय पाबि नहि सकैत, आ मामला छोड़ि बाहर घुरियो नहि सकैत; फलतः ओकरा प्रतीक्षाक स्थायी देहरी पर राखल जाइत अछि। ई स्थानक मानवीकरण पाठककेँ संस्थागत न्याय-अभावक अनुभव करबैत अछि। बरामदाक पाथर जूता सहैत-सहैत आवाज जमा करैत अछि—ई जादुई यथार्थक बिम्ब प्रतीक्षारत लोकक अनसुनल आवाजक कथात्मक संघनन अछि, आधिकारिक न्यायिक अभिलेख नहि।

तेइस बरखक मुकदमा : कालक देहगत मूल्य

वृद्ध मुवक्किल कहैत छथि जे हुनकर मामला तेइस बरख चलल। एहि ठोस अवधिसँ 'तारीख' अमूर्त प्रशासकीय शब्द नहि रहैत, परिवारक जीवनमे विभाजित अनुभव बनैत अछि। बेटाक जुआनी, बापक आँखि, बेटीकेँ पढ़ाइ आ विवाहक अवधि—सभ एक-एक पर्चीक पाछाँ नुकाएल काल अछि। कथावाचक समयक हानि कें देहक खाइत गोहिसँ जोड़ैत छथि। एही वजहसँ अध्यायक न्यायिक समस्या केवल सुनवाई-प्रक्रिया नहि, कथात्मक समय आ

जीवन-समयक असमान गतिसँ उत्पन्न करुणा बनैत अछि। वृद्धक वास्तविक फैसला एखनहुँ लंबित अछि—ई सीमा बारम्बार चिन्हल जाएबाक चाही।

प्रदर्शनक बाद उठल प्रश्न आ नाटकक सीमाक टूटन

बरामदामे अभिनय होइ चुकल, कलाकार सभ पोशाक खोलि रहल छथि; ठीक तखने वृद्ध मुवक्किल अपन जीवनक कागच ककरा लिखबाक प्रश्न उठबैत छथि। ई दृश्य नाटक-समाप्तिक चिह्नकेँ विफल करैत अछि। कल्पित संवाद सँ अनियोजित श्रोता-स्वर उभरैत अछि, आ कलाकार सभ स्थिर भऽ जाइत छथि। कथा अध्याय १३७क दर्शक-गवाहीक सूत्रकेँ अदालतक स्थानमे नव प्रयोग करैत अछि। पर वृद्धक गवाही एक विशेष जीवनक प्रसंग अछि; नाटकक प्रभावसँ न्यायिक आदेश अपने-आप जन्मल—एहन दावा कथामे नहि अछि।

लिपिकक चाबी आ नौकरी बचएबाक भय

रेकर्ड-घर सँ बाहर आयल लिपिक पहिने अनुशासन भङ्गसँ डरैत अछि, मुदा वृद्धक प्रश्न सुनि ओकर चाबीक झनझनाहट नव अर्थ पबैत अछि। चाबी कोठरी खोलबाक उपकरण रहि कण्ठ बन्द करबाक प्रतीक बनैत अछि। अनन्या लिपिकक नामसँ पहिने ओकर डरक नाम पूछैत छथि, आ उत्तर भेटैत अछि—'नोकरी बचाबयक डर'। एहि क्रममे व्यक्ति सरल खलनायक नहि रहैत: ओ संस्थागत भयक वाहक अछि, तथापि ओकर चुप्पीक उत्तरदायित्व समाप्त नहि होइत। प्रतीक आ चरित्रक जटिलता एहि ठाम एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि।

पुरान अधिवक्ताक कोट : पेशाक आवरण उतारब

बटुकनाथक पुरान शिष्य अपन कारी कोट बरामदाक पाथर पर राखि दैत अछि। कपड़ाक ई उतरनाइ आत्मशुद्धिक तात्कालिक प्रमाण नहि, मुदा पेशागत पहचानक आड़िसँ बाहर आउबाक सार्वजनिक प्रयास अछि। जेब सँ खसल तारीखक पर्ची सभ अदालतक भाषाक मूल हिंसा उजागर करैत अछि। बच्चा सभ पर्ची तत्काल नहि उठबैत; ओ सभ चाहैत अछि जे प्रत्येक तारीख अपन अनुभव सहित पढ़ल जाए। एहि हिचकिसँ सामग्रीक मालिकाना भावना बदैलैत अछि—अधिवक्ता पर्चीक नियन्त्रक नहि, ओकर उत्तरदायी पाठक बनबाक अवसर पबैत अछि।

तारीख-पाठ : कैलेंडरक बदला परिवारक जीवन

एक-एक पर्चीक दिनक संग जमीनक नीलामी, अस्पतालक उपचार, शिक्षा छोड़ब आ चूल्हि नहि जरबाक प्रसंग जोड़ल जाइत अछि। ई अनुस्यूत श्रेणी कथाक महत्त्वपूर्ण अभिलेखीकरण-विधि अछि। मूल न्यायालयक सूचीमे तारीख केवल आगेक सुनवाई बतबैत छल; बच्चा सभ ताहिमे ओहि दिनक मानवीय हानि जोड़ैत अछि। एहि फेरलेखनसँ कथावस्तुक पुरान अवकाश नव घटनात्मक घनत्व पबैत अछि। तथापि सभ पर्ची समान समयपर सत्यापित भऽ गेल हो—ई नहि; पाठ 'तारीख-पाठ'क आरम्भ बतबैत अछि, अन्तिम साक्ष्य-निर्णय नहि।

देविकाक प्रदर्शनसँ पाठ दिस मोड़

देविका कहैत छथि जे एहि बरामदामे नाटक भेल, आब पाठ होएत। एहि वाक्यकेँ अध्यायक द्वितीय मोड़ कहि सकैत छी। अभिनय सहानुभूति जगबैत अछि; पाठ पुनः-पुनः सुनबाक, गलती जाँचबाक आ तारीखक पाछाँ

मनुष्य खोजबाक श्रम माँगैत अछि। बच्चा सभ पाथर पर तारीख लिखि नाम जोड़ैत छथि। पाथर पर लिखनाइ लिखित अदालत आ मौखिक नाम-परम्पराक बीच एक छोट विकल्प अछि। मुदा ई अलग न्यायालय बनि चुकल नहि; एतय लोक अपना प्रतीक्षाक भाषा रचबाक अभ्यास करैत छथि।

निजता आ मंचक सफलता बीच मीराक प्रतिरोध

बरामदाक दृश्य देखिकऽ कैमरा-धारी युवक सभ आगाँ बढ़ैत अछि, मुदा मीरा अनुमति बिनु दुःखक सार्वजनिक प्रदर्शन रोकैत छथि। पिछला नाट्य-अध्यायमे साक्षी बनल दर्शकक अधिकार एतय सीमाबद्ध होइत अछि—देखब, सुनब आ प्रकाशित करब तीनटा अलग क्रिया अछि। ई रोक कथा भीतर स्व-आलोचनाक क्षण अछि, कारण लोकन्यायक उत्साह सेहो पीड़ितक निजी सीमाकेँ लङ्घि सकैत अछि। एहि तरह चरित्र सामाजिक न्यायक पक्षमे होइतहुँ प्रदर्शनकारी हिंसाक जोखिम चिन्हबैत अछि।

नकली भूतक कलाकारक फेर आगमन

पूर्वक नकली भूत-जुलूसक कलाकारसभ एहि बरामदामे आबि बुझैत छथि जे हुनका सभक अभिनय भाड़ापर छल, मुदा कागचक अनिर्णीत कथा वास्तविक भूत जेकाँ पीछा करैत अछि। ई पुनरागमन उपन्यासक दीर्घकालीन पात्रस्मृति सुरक्षित रखैत अछि। जे प्रसंग पहिने छलक आ तमाशाक वस्तु छल, आब ओहि कलाकारक स्वयंका नैतिक परिवर्तनक सामग्री बनैत अछि। बूढ़बा भूतक क्षणिक छाह एहि वाक्यक प्रतिध्वनि अछि; ओकरा तथ्यात्मक अदालती उपस्थिति मानि नहि लेबाक चाही।

सत्यव्रतक पुरान पन्ना : बरामदा अनसुना कान

मध्यराति बाद सत्यव्रत अपन जेबसँ एक पन्ना निकालि अनन्याकेँ दैत छथि, जाहिमे बरामदाकेँ अदालतक अनसुना कान कहल गेल अछि। एहि हस्तान्तरणमे विधिज्ञक व्यक्तिवाचक गवाही बच्चाक सामुदायिक अभिलेखमे प्रवेश करैत अछि। महत्त्व ई नहि जे सत्यव्रत नव फैसला सुनौलनि; ओ सुनबाक असफलता स्वीकार कऽ कानक रूपक दैत छथि। अनन्या ओकरा पूरक वाक्य लिखैत छथि—कान खुलत तँ बरामदा अदालत बनत। ई भविष्य-शर्त अछि, सिद्ध उपलब्धि नहि।

रेकर्ड-घरक फड़फड़ाहट : आगाँक अध्यायक पूर्वाभास

कथा अन्तमे रेकर्ड-घरक पुरान फाइल सभ अपने-आप हिलबाक, धूलिक अक्षर बनबाक संकेत दैत अछि। ई दृश्य न्यायिक रेकर्डक वास्तव स्थिति बदलि गेलाक रिपोर्ट नहि, जादुई यथार्थक नाटकीय पूर्वाभास अछि। बरामदाक सार्वजनिक आवाज भीतर बन्द अभिलेख कें जगेबाक शक्ति रूपमे चित्रित होइत अछि। स्थानगत गति स्पष्ट अछि: बाटसँ बरामदा, बरामदासँ रेकर्ड-घर। एही शृंखलाक कारण अगिला अध्याय नव प्रसंग नहि, पूर्वक प्रश्नक भौतिक तह बनि खुलैत अछि।

प्रकरण २४३ | मूल अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अलमारीमे रोकल समय : वास्तुक काल-बिम्ब

अध्याय १४२क आरम्भमे अलमारीकेँ छोट अन्हार-घर कहल जाइत अछि। बाहर ऋतु, फसल, बालकक वय, परिवारक जीवन बदलैत रहैत अछि, मुदा अलमारी भीतर फाइलक दिन स्थिर अछि। स्थिरता शान्ति नहि, सड़न कहल गेल अछि। एहि विपरीत काल-व्यवस्थासँ अभिलेखक भौतिक स्थान कथा-संरचनाक प्रमुख कारक बनैत अछि। रेकर्ड-घर न्यायालयक 'पेट' रूपेँ सत्यव्रतक दृष्टिमे अबैत अछि; ओतए कागच निर्णय बनत कि विस्मृति—ई प्रश्न पथक गवाहकेँ अब अलमारीक भीतरी अन्हारमे लऽ जाइत अछि।

भिखारी लालक ताला आ भीतरक साँस

चपरासी भिखारी लाल कुण्डी खोलैत कहैत अछि जे ताला पुरान नहि, भीतरक साँस भारी अछि। ओकर ई कथन दफ्तरक निर्जीव वास्तुकेँ जीवित प्रतीक्षाक रूप दैत अछि। जे पात्र पहिने धूलि साफ करबाक निम्नस्थ श्रमिक बुझाइत छल, ओ अभिलेखक सड़ल समयक असल संवेदक बनैत अछि। कथात्मक दृष्टिसँ नामक पहराक अगिला मध्यस्थ कोनो पैघ पदाधिकारी नहि, ताला खोलनिहार व्यक्ति बनैत अछि। भिखारी लालक भाषा अनुभूतिसँ जन्मल अछि; तकरा अलमारीक भौतिक परीक्षणक वैज्ञानिक कथन मानि नहि लेबाक चाही।

धूलिक गन्ध : दृश्यसँ आगाँक अभिलेखीकरण

दरबाजा खुललापर सड़ल गोंद, नमी, स्याही, पसीना आ प्रतीक्षाक गन्ध एक संग उठैत अछि। कथावाचक सूँघबाक अनुभवक माध्यमसँ पुरान कागचक ऐतिहासिक बोझ अनुभव करबैत छथि। एहि ठाम धूलि केवल गन्दगी नहि, अनसुना नामक अवशेष बनैत अछि। मुदा धूलिक रूपकक उपयोगसँ कागचक वास्तविक अक्षर दुर्लक्षित नहि होइत; अनन्या आ मीरा पन्ना फाटबासँ बचब, गिनब आ धीरे पढ़बाक नियम बनबैत छथि। संवेदनात्मक जादुई यथार्थ आ सावधान दस्तावेज-पठन दुनू दृश्य एकहि संग चलैत अछि।

विवाह-पत्रक टुकड़ा : मुकदमाक भीतर सामाजिक क्षति

जमीन-विवादक फाइल भीतर विवाहक निमन्त्रण-पत्रक फाटल टुकड़ा भेटैत अछि। आधिकारिक शीर्षक जमीन पर अछि, मुदा परिवारक भीतर टूटल विवाह ओहि कागचक कोनमे बचल अछि। एहि विरोधसँ कथाकार अभिलेखक घोषित विषय आ जीवनपर ओकर अप्रत्यक्ष प्रभाव बीच अन्तर खोलैत छथि। छोट निमन्त्रण-पत्र कथा भीतर 'वस्तु-साक्षी' अछि, कारण ओ पाठककेँ समझबैत अछि जे मुकदमा सामाजिक समय सेहो चिबबैत अछि। तथापि कागचक टुकड़ा अपने-आप समस्त विवादक न्यायिक निर्णय नहि करैत; ओ अनसुना सम्बन्धक दिशा खोलैत अछि।

'प्राप्त' मोहरक पुनरावृत्ति आ उत्तरक अनुपस्थिति

एक दोसर फाइलमे पाँच बेर आवेदन 'प्राप्त' लिखल भेटैत अछि, मुदा उत्तर एको बेर नहि। कथनक ई दोहराव प्रशासनिक क्रियाक भयावह खोखलापन दिखबैत अछि। कागच स्वीकार कएल गेल—ई रूपमात्रक उपलब्धि

अछि; सुनवाई वा समाधान नहि। भिखारी लालक 'काल्हि आबू' स्मृति एहि दृश्यकेँ मानवीय कालसँ जोड़ैत अछि। अध्याय १४१क तेइस बरखक कथा एहिठाम अनेक छोट-छोट स्थगनमे विभाजित होइत अछि। ई घटनाक्रम नाटकीय नारा सँ नहि, मोहर आ अनुपस्थित आदेशक असमान संख्यासँ उत्पन्न होइत अछि।

लाल सूतक फाइल आ नाम बिगाड़ल छात्र

तेसर अलमारी पाछाँ लाल सूतक गिट्ठीबला फाइलमे एक युवकक दाखिला-पंजीक कुलनाम बदलि देबाक शिकायत भेटैत अछि; परिणामस्वरूप छात्रवृत्ति आ नौकरीक पहचान संकटग्रस्त भेल। लाल सूत पहिनेक चिरईक चोंचबला दृश्यसँ बिम्बगत सम्बन्ध राखैत अछि। मुदा ई दूनू सूतक वास्तविक वस्तु एके अछि—एहन निर्णायक प्रमाण पाठ नहि देत। कथात्मक शक्ति एहिमे अछि जे एक छोट वर्तनी-परिवर्तन जीवनक अनेक दरबाजा बन्द करैत अछि। नाम एतय सौन्दर्यात्मक प्रतीक नहि, शिक्षा आ रोजगारक संस्थागत चाबी अछि।

वृद्धाक गुम पतिक फाइल : क्रमशः विफल खोज

रातिभरि प्रतीक्षा करनिहार वृद्धा पतिक कागच तकैत छथि; वर्ष, संख्या आ नामक अलग-अलग रूप कारण खोज अनेक बेर विफल होइत अछि। पाँचम बेर बोरा उनटायलापर आधा नाम भेटैत अछि। ई क्रम कथाकेँ जाँचक गति दैत अछि, जे केवल भावात्मक गवाही सँ अलग अछि। वृद्धाक कथन—आधा नामो नाम होइत अछि जँ कियो पूरा सुनय—अभिलेखी कमीकेँ मानवीय सम्भावनामे बदलैत अछि। मुदा आधा नाम भेटब पूरा फाइल पुनःप्राप्ति नहि; लेखक एहि असम्पूर्णताकेँ लोप नहि करैत।

'फाइल नहि भेटल तँ मनुष्य समाप्त नहि' : नव रजिस्टर

देविका गुम फाइलक सूची आ अलग मौखिक गवाहीक रजिस्टर बनबाक प्रस्ताव राखैत छथि। एहि क्षण भौतिक अभिलेखक अपूर्णता समाजक अस्मिताकेँ निरस्त नहि करैत—एहन कथात्मक नियम जन्मैत अछि। लिपिकक पेंसिल देनाइ आ नब रजिस्टर खोलबाक हिचक एहि परिवर्तनक सूक्ष्म घटनात्मक चिह्न अछि। कल्पनात्मक पक्षमे फाइल जीवित बनैत अछि, पर व्यावहारिक पक्षमे सूची, प्रतिलिपि आ परिवारक कथन जाँचल जाएत। ई द्विगुण युक्ति अध्यायकेँ केवल चमत्कारिक दस्तावेज-रूपकमे नहि बदलय दैत।

वकीलक श्रम आ क्षमाक सीमा

बटुकनाथक पुरान शिष्य माफी माँगबाक चेष्टा करैत अछि, मुदा मीरा ओकरा फाइल तकबाक वास्तविक श्रम करबाक लेल कहैत छथि। पेशागत अपराधक क्षमा एकटा सार्वजनिक भाषणसँ प्राप्त नहि—ई विषय पूर्वक बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमासँ सम्बन्धित अछि। युवक बिनु शुल्क कागच उठबैत अछि, आ हाथपर धूलि लागैत अछि। एहि दृश्यसँ कृत्यक भौतिकता नैतिक परिष्कारक कसौटी बनैत अछि। तथापि दू-चारि फाइल उठेलासँ विगतक न्यायिक दोष समाप्त नहि मानल गेल अछि।

सत्यव्रतक आदेश आ संस्थागत स्तरक प्रश्न

अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत प्रत्येक फाइलक पुनर्गणना, गुम फाइलक सार्वजनिक सूची आ अस्थायी मौखिक गवाहीक अभिलेख लेल एक छोट आदेश लिखैत छथि। कथाक भीतर ई एक स्पष्ट प्रक्रियात्मक परिवर्तन अछि, किएक तँ पहिने दृश्य सभ सामुदायिक पाठ आ व्यक्तिगत स्वीकृतिपर केन्द्रित छल। मुदा एहि आदेशक विधिक अधिकार, वास्तविक पालन आ बाहरी न्यायालयक परिणाम एखन पाठमे सिद्ध नहि। समीक्षा लेल ई महत्त्वपूर्ण सीमा अछि: साहित्यिक घटनामे आदेश लिखायल, तकरा पूर्ण न्यायिक सुधारक समकक्ष नहि रखल जा सकैत।

अन्हारसँ रद्दी बोराक दिशा

रेकर्ड-घरक अनेक अलमारी खुललाक बादो एक कोन रद्दी बोरा रूपमे शेष रहैत अछि। एही कोनपर अनन्याक पहिल दृष्टि पड़ल छल, आ एहि कारण अगिला अध्याय लेल पूर्वनिर्धारित स्थल मिलैत अछि। काल-संचित अन्हारसँ कथा अब समाज द्वारा फेंकल वस्तुक ठाम प्रवेश करैत अछि। लेखकीय युक्ति वस्तुक श्रेणीक्रम उलटब अछि—कनिष्ठ रद्दीमे सभसँ महत्त्वपूर्ण अवशेष भेटबाक आशा जागैत अछि। कथामे उत्सव नहि, सावधानीक आह्वान रहैत अछि; बच्चा सभ ताली रोकैत छथि, कारण काम एखन आरम्भ भेल अछि।

प्रकरण २४४ | मूल अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

फेंकल पन्नाक पुनर्पाठ आ वस्तुक पदोन्नति

एतय कथानक अदालतक रेकर्ड-घरक रद्दी कहल गेल बोराक भीतर प्रवेश करैत अछि। फाइल सभ सरकारी श्रेणीकरणमे 'अपूर्ण', 'अनुपलब्ध' अथवा 'अस्पष्ट' छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा सामाजिक गवाहीक सम्भावित स्रोत मानि पढ़ैत छथि। 'रद्दी' सँ 'मानव गवाही' धरि वस्तुक पद-परिवर्तन अध्यायक मूल क्रिया अछि। फेंकल कागच बीज-जेकाँ रोपल सम्भावना पबैत अछि; ई रूपक पूर्वक बीज-पहराक अध्यायसँ जोड़ैत अछि, मुदा अभिलेखीय सत्यापने आवश्यक रहैत अछि।

अँगूठाक निशान आ अस्पष्टताक उलटल आरोप

एक पन्ना पर विधवाक काँपैत लिखाइकेँ लाल स्याहीसँ 'अस्पष्ट' कहल गेल अछि। कथावाचक पूछैत छथि जे अस्पष्ट के—दुखक हाथ कि पढ़ब नहि चाहनिहार आँखि? एहि उलट-प्रश्नसँ लेखनक सामाजिक सत्ता उजागर होइत अछि। अँगूठाक निशान शरीरक एक व्यक्तिगत रेखा अछि, मुदा दफ्तर तकरा सुगमतासँ अमान्य करैत अछि। दस्तावेजक स्पष्टता केवल अक्षरक सौन्दर्य नहि, पाठकक सामाजिक तैयारीक प्रश्न बनैत अछि। ताहू पर हर धुँधल दस्तावेज स्वतः सही मानि लेब समीक्षा नहि; कथाक सावधान मिलान-पद्धति अलग आवश्यक अछि।

'हमरा सुनू' : नामसँ पहिने बचल वाक्य

एक कमजोर पन्नामे केवल 'हमरा सुनू' वाक्य आ अँगूठाक निशान बचल अछि; नाम आ पता अधूरा। अनन्या नाम नहि भेटलापर वाक्य बचएबाक निर्णय करैत छथि। ई आख्यानक महत्त्वपूर्ण भाषिक आविष्कार अछि: पहचानक अनुपस्थिति भाषणक शेष अधिकार समाप्त नहि करैत। साधारण प्रथम पुरुषक निवेदन सम्पूर्ण अज्ञात

मनुष्यक सम्भावित उपस्थिति बनैत अछि। मुदा कथावाचक एहि वाक्यकेँ कोनो काल्पनिक विशिष्ट मृतकसँ नहि जोड़ैत; ओकर खुलल ठाम बचबैत अछि। एही असम्भाव्य विशिष्टता सँ बचेबाक प्रवृत्ति आलोचनाक लेल उपयोगी अछि।

भिखारी लालक झाड़ू : सफाइक हिंसाक उलटब

भिखारी लाल अपन झाड़ू देबाल लग राखि कहैत अछि जे धूलि हटबैत-हटबैत शायद अनेक कागचक गवाही सेहो हटबैत रहल। एही क्षण पेशागत श्रमक पुरान अर्थ बदलैत अछि। झाड़ू सफाइक औजार छल; कथा ओकरा अनजाने लोपक सम्भावित माध्यम रूपमे देखबैत अछि। भिखारी लाल स्वयं कार्यालयक ऊँच पदाधिकारी नहि, अतः ओकर अपराध-बोधकेँ संस्था भरिक दोषक सम्पूर्ण भार बनाओल अनुचित हएत। कथामे ओकर स्वीकार, लिपिकक व्यवहार आ ऊपरक आदेश—ई सभ अलग-अलग स्तर पर उपस्थित अछि।

गुम पगडंडी : नक्शाक लोप आ सम्बन्धक विच्छेद

एक पारिवारिक फाइलमे दू भाइ, एक बहिन, पोखरिक किनार आ सरकारी नापीमे हेरायल पगडंडी भेटैत अछि। पगडंडी कागचसँ गायब भेलाक संग बहिनक मायके जाएबाक रस्तो मिटि गेल—ई कथन भौतिक भूगोल आ पारिवारिक सम्बन्धकेँ जोड़ैत अछि। नीलिमा नामक नेनी अलग पन्ना पर पगडंडी बनबैत अछि। ओकर रेखा अधिकृत नक्शाक विकल्प नहि, स्मृतिक आधारपर उठल प्रश्न अछि। मुदा एहि छोटे ड्राइंगसँ स्त्रीक मार्ग-अधिकारक कथा नव केन्द्र प्राप्त करैत अछि।

लाउक फाइल आ 'अप्रासंगिक' शब्दक सत्ता

एक पुरान पत्रमे किछु अभिलेख जानि-बूझि अप्रासंगिक घोषित कएल गेल—एहन संकेत अछि, जाहिसँ लापरवाहीक सङ्ग सम्भावित योजना सेहो सामने अबैत अछि। देविकाक प्रश्न ई कि जकरा जीवन बदलि गेल, ओकर कागच अप्रासंगिक केना? कथावाचक शब्दक प्रशासनिक निर्ममताकेँ पाठकक सामने आनैत छथि। मुदा पत्रसँ सम्पूर्ण षड्यन्त्र सिद्ध भऽ गेल—एहन निश्चय नहि; ओकरा स्रोत, आदेश-शृंखला आ सम्बन्ध जोड़ब शेष अछि। ई भेद कथा भीतरक आगामी अनुसन्धान लेल अनिवार्य अछि।

प्रतिलिपि आ निजताक साझा अनुशासन

प्रत्येक बाँचल पन्नाक नकल बनेबाक बात तय होइत अछि, मुदा मीरा कहैत छथि जे परिवारपर चोट पहुँचएबाक आशङ्कावला नाम बिना अनुमति सार्वजनिक नहि कएल जाए। एहि स्थितिमे अभिलेखी पारदर्शिता आ निजी गरिमाक बीच तनाव उभरैत अछि। कागच बचाएब आ मनुष्यक जीवन खोलि देब एक्के बात नहि। कथा स्वयं एहि भेदक सावधानी राखैत अछि, जकरा आलोचनात्मक विवेचनमे अभिलेखीय नैतिकता कहल जा सकैत अछि। सभटा छपि देब सत्यक पर्याय नहि; वाचिक सन्दर्भ आ व्यक्तिक अधिकार सेहो संरक्षित रहबाक चाही।

'सन लगैत अछि' : समानता आ पुष्टि बीच अन्तर

बूढ़ मुवक्किल एक पन्नाकेँ अपन भाइयोक आवेदन सन कहैत छथि। मीरा तुरन्त स्पष्ट करैत छथि जे सदृश्य गवाहीक आरम्भ अछि, अन्तिम पुष्टि नहि। ई अध्यायक सबसे उपयोगी आत्म-संशोधक क्षणसभमे एक अछि। उपन्यास बारम्बार जादुई संकेत, गन्ध आ आत्मीय स्मृति आनैत अछि, मुदा एहि दृश्यमे आवेगकेँ ठोस दस्तावेजी मिलानसँ अलग राखैत अछि। लोकक शोकक सम्मान करब आ असत्य निश्चितता आरोपित नहि करब—दुनू एकसंग सम्भव अछि, ई दृश्य देखबैत अछि।

फाइलक जीवित-मृत श्रेणी : अभिलेखक रूपकीय मानवता

बच्चा सभ फाइलकेँ जीवित, मृत, अधमरी, चोरी भऽ सकैत वा सावधानीसँ छूबब योग्य वर्गमे बाँटैत छथि। ई कानूनक आधिकारिक वर्गीकरण नहि, भावात्मक-सामुदायिक अनुक्रम अछि। फाइल जीवित तखन जे कियो ओकर निर्णयक प्रतीक्षामे एखनहुँ साँस लैत अछि। कथावाचक वस्तुक अवस्था आ मनुष्यक अवस्थाकेँ परस्पर जोड़ैत छथि, जाहिसँ दीर्घ पाठमे अभिलेख स्वयं पात्र-जेकाँ विकसित होइत अछि। एहि वर्गीकरणक भावात्मक शक्ति अछि, पर कागचक वास्तविक अवस्था आ कानूनी प्रक्रिया फेर अलग जाँचबाक चाही।

खाली बोरा : चेतावनी, संग्रहालय नहि

पन्ना बाहर निकालला पाछाँ खाली बोराकेँ उनटा राखि लिखल जाइत अछि जे एतय गवाही दबाओल गेल छल। देविका स्पष्ट करैत छथि जे बोरा सजावटी संग्रहालयक वस्तु नहि, चेतावनी रूपेँ बचल रहत। एहि निर्णयसँ स्मृतिक बजार-बनबाक पहिनेक समस्या फेर स्मरण होइत अछि। वस्तुकेँ रक्षक-प्रतीक बनौल गेल, मुदा ओकर प्रदर्शनसँ लगैत लाभ अथवा पूजा पर रोक लगाओल गेल। कथा एतय पुरान वस्तुक विनियोजन नहि, ओकर सामाजिक असफलताक स्मरण करए चाहैत अछि।

दोहराएल अन्तक संरचनात्मक असङ्गति

मूल अध्यायक अन्तभागमे रद्दी बोरा खाली भेल, राति पड़ल आ अनन्याक रजिस्टर खुजल रहल—एहन समापनक बाद फेर 'राति उतरल', रेकर्ड-घर बन्द भेल आ बूढ़ मुवक्किलकेँ प्रति पढ़ल गेल—एहन दोसर समापन-जेकाँ अनुक्रम भेटैत अछि। ई सम्भवतः समयक जादुई वृत्त अथवा सम्पादकीय पुनरावृत्ति हो; पाठ स्वयं दूनू घटना अलग रातिक अछि—एहन स्पष्ट संकेत नहि दैत। अतः एहि असङ्गतिकेँ पक्का कलात्मक योजना कहि भरि देब उचित नहि। तथापि दुनू अन्तक साझा केन्द्र 'कागचक भीतरक मनुष्य बाहर आबि रहल' थिक, जे अगिला नाम-यात्राक बिम्ब तैयार करैत अछि।

पृष्ठसँ देहरी दिस संक्रमण

बोराक पन्ना बरामदामे आनल गेलाक बाद परिवारक अनुपस्थिति आ नामक घुरबाक आवश्यकता प्रमुख बनैत अछि। एतय 'गवाही' रेकर्ड-घरक भीतर सीमित नहि रहि सकैत; ओकरा घरक व्यक्तिसँ मिलाएब पड़त। अगिला अध्याय नामक यात्रा एहि अधूरा काजकेँ उठबैत अछि। कहानीक निरन्तरता कोनो कृत्रिम रहस्य नहि, एकटा

व्यावहारिक अभावसँ उपजैत अछि—नाम बचल, मुदा व्यक्ति वा परिवार धरि पहुँचब शेष। एहिसँ पूर्वक रद्दी-रूपक ठोस सामाजिक कार्रवाईक दिशा पबैत अछि।

प्रकरण २४५ | मूल अध्याय १४४ — नामक यात्रा

अलमारीसँ देहरी धरि नामक वस्तुगत विस्थापन

'रेकर्ड-घर' आ 'रद्दी बोरा'मे बचल नाम आब पाथर, सीढ़ी, फाटक आ गामक बाट पकड़ैत अछि। कथावाचक अक्षरक मानवीकरण करैत छथि—जेना नाम फाइल छोड़ि अपने घर तकबाक लेल चलि पड़ल हो। मुदा वास्तविक घटनाक तहमे बच्चा सभ नामक सूची बनबैत, पुरान पता मिलबैत आ परिजन खोजैत छथि। ई दुहरा कथन पुस्तकक जादुई यथार्थक मुख्य उपाय अछि: अक्षरक स्वायत्त यात्रा संवेदनात्मक रूपक अछि, आ मानवीय टोलीक चलब सामाजिक काम। दुनू तह एक-दोसराकेँ बदलैत अछि, पर एक-दोसरामे विलीन नहि।

नामक तीन भाग आ अनुपस्थितिक क्रम

नाम सभ तीन समूहमे बाँटल जाइत अछि—जीवित लोक जिनकर अनुमति भेटि सकैत अछि, मृतक जिनकर परिजन खोजल जायत, आ जेकर घर-वंश-अवस्थिति धुँधला गेल अछि। एहि क्रममे स्मृति केवल नोंध नहि, सम्पर्कक व्यवस्था बनैत अछि। तीसरा समूहकेँ चन्ना गाछीक छाँहमे ठाम देबाक निर्णय महत्त्वपूर्ण अछि, कारण कथा सभटा नामक घर-भेटबाक सुखान्त कल्पित नहि करैत। जकरा देहरी नहि भेटत, ओकरो स्थान अछि—ई शर्त दीर्घकालिक शोकक सच्चाइ बचबैत अछि।

मीरा आ देविकाक धीमा पएर : गवाहीक गतिक नैतिकता

नामक समाचार घर धरि पहुँचबैत काल भीड़ नहि जुटाओल जाए, आ दुआर पर धीरे पएर राखल जाए—एहन नियम मीरा आ देविका बनबैत छथि। जे नाटक मंच पर भीड़क स्वरमे सफल छल, ओहि कथाकेँ घरमे प्रवेश करबाक लेल अपन आवाज घटाएब पड़ैत अछि। एहि ध्वनि-परिवर्तनमे कथा समयानुकूल अपन भाषाक संयम देखबैत अछि। शोकक निजी आँगन रंगमंचक विस्तार नहि; ओ एक अलग अधिकारक क्षेत्र अछि। अनुमति लेल पढ़ल नाम पुनःमानवीकरण करैत अछि, बिनु अनुमतिक घोषणा फेर तमाशा बनि सकैत अछि।

खाता-संख्या सँ नाविकक स्मृति धरि रास्ताक निर्माण

जसोदा देवीक फाइलमे गामक आधा नाम मेटायल अछि, मुदा खेतक खाता-संख्या बचल। भिखारी लाल नीलामीक कागच सम्झैत अछि, बूढ़ मुवक्किल पुरान हाट आ पीपर लगक बाट बतबैत छथि, नाविक मेड़पर बैसनिहार स्त्रीक कथा स्मरण करैत अछि। एहि अनेक छोट सूचनाक मिलनसँ खोज-यात्रा बनैत अछि। लेखक एक व्यक्ति द्वारा सब बुझि लेबाक सर्वज्ञता नहि दैत; संस्थागत कागच, लोकभूगोल आ प्रत्यक्ष गवाहक संयुक्त सहायतासँ पात्र सभ आगाँ बढ़ैत छथि। एतय कथावाचकक बहुवाचिक युक्ति घटनाक वास्तविक क्रममे बदलैत अछि।

नदी पार करनाइ : कागचक सीमासँ जीवनक कछेर

जसोदाक गाम दिस जाइत समय आधा पक्का सड़क, पुरान ढहल पुल, कटायल तट आ नावक भीजल पेंदीक गन्ध विस्तारसँ वर्णित अछि। एहि भौतिक यात्रा बिनु 'नाम घर पहुँचायल' नैतिक उपदेश मात्र रहित। नदी पार करबाक श्रम कथात्मक दूरीक माप बनैत अछि: अदालतक फाइलमे नाम एक पाँतिमे छल, ओकर घर तकबाक लेल नदी, थकान आ पुरान स्थान-ज्ञान चाही। पूर्वक जलसमाधि-प्रसंगक पानि एतय भयक मात्र वस्तु नहि, एक खोएल सम्बन्ध घुरेबाक कठिन मार्ग बनैत अछि।

जसोदा स्वयं अनुपस्थित, भतीजी साक्षी

खोजल गेल जसोदा देवी जीवित नहि भेटैत छथि; हुनकर भतीजी, जे आब नानी भऽ गेल छथि, दुआर पर छथि। ई पीढ़ीगत विलम्ब आरम्भक 'तेइस बरख'क समय-क्षतिसँ मेल खाइत अछि। नाम सुनितहि भतीजीक प्रश्न उठैत अछि—ओ नाम एखनहुँ जीवित अछि? एहि प्रश्नक भीतर प्रशासनिक सूची आ परिवारक स्मृति बीच दूरी तीव्र होइत अछि। कथा जसोदाकेँ जीवित पात्र बनाकऽ वापस नहि आनैत; हुनकर नाम परिजनक कण्ठमे पुनः उपस्थित करैत अछि। 'जीवित स्मृति' आ 'जीवित व्यक्ति'क भेद स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

कब्जाधारी पक्षक उत्तर आ आरोपक सीमा

जसोदाक पूर्व खेतपर आब ईंटक छोट गोदाम अछि; ओकर देखरेख करनिहार पुरुष पुरान मामला उठेबाक अर्थ पूछैत अछि। भिखारी लाल कागचक गलत हाथमे रहबाक परिणामक स्मरण करैत अछि। मुदा देविका ओ पुरुषपर तत्काल दोषारोपण नहि लिखैत छथि; केवल दर्ज करैत छथि जे कब्जाधारी पक्ष प्रश्न टारबाक प्रयास करलक। ई आत्मसीमा समीक्षाक दृष्टिसँ निर्णायक अछि। गामक क्रोध आ कागचक इतिहास कथामे छथि, मुदा आरोपक निश्चितता बिना अतिरिक्त साक्ष्य घोषित नहि कएल गेल अछि। एही संयमसँ पात्रक नैतिक श्रम विश्वसनीय बनैत अछि।

खेतक माटि नहि उठब : दृश्य-दोहनक प्रतिरोध

दल जसोदाक घर आ पूर्व खेतपर पहुँचि चित्र नहि लैत, माटि तक नहि उठबैत; परिजनक सहमति सँ मौखिक स्मृति लिखैत अछि। एहि असाधारण संयमक महत्त्व अछि: उपन्यासक अनेक पहिलुका अध्यायमे गाछी, पोखरि वा धूलिक स्पर्श स्मृतिक प्रमुख वाहक छल; एतय स्पर्श स्वयं सीमित कएल जाइत अछि। जे वस्तु पीड़ितक सम्बन्धसँ भरल अछि, ओकरा हरदम उठाकऽ लऽ जाएब उचित नहि। ई बदलाव सामुदायिक शोधक नीयत पर कथा द्वारा लगाया गेल आलोचनात्मक पहरा अछि।

लिपिकक सीमित सार्वजनिक अधिकार

लिपिक कहैत अछि जे प्रत्येक निजी फाइलक नकल देब सम्भव नहि, मुदा सार्वजनिक अभिलेखक सूची बनि सकैत अछि। एहि कथनसँ नामक यात्रा संस्थागत बाधा स्वीकार करैत अछि। लोकन्यायक इच्छामे सम्पूर्ण सरकारी रेकर्ड स्वतः सार्वजनिक सम्पत्ति बनि गेल—एहन सरल निष्कर्ष एहि ठाम नहि अछि। देविका ओकरा

अधिकार शब्दक उचित प्रयोग कहैत छथि। कथा प्रक्रियाकेँ हमेशा शत्रु नहि देखैत; जखन प्रक्रिया व्यक्ति आ निजता सुरक्षित करैत अछि, तखन ओकरा सामुदायिक कार्यमे उपयोगी मानैत अछि।

तीन प्रतिक सम्भावना आ दोहरा पहरा

एक दल घर धरि जाइत अछि, अनन्या-मीरा सूची सम्हारि अदालतमे रहैत छथि, सत्यव्रत रेकर्ड-घरक सुरक्षा पर ध्यान दैत छथि। एहि स्थान-विभाजनसँ कथानक एकल नायकक अभियान नहि रहैत। घरमे गवाही प्राप्त करब, अदालतमे दस्तावेजक अखण्डता बचाएब आ प्रकाशनक मर्यादा राखब—तीनू कार्य एकहि समय होइत अछि। लेखक अनेक स्थलक परस्पर निर्भरता देखबैत छथि; तकरा अलग-अलग समयक स्वायत्त घटनाक्रम बुझबामे कथा सूत्रक सम्बन्ध छुटि जाएत।

यात्राक उपलब्धि आ स्थगित वास्तविक समाधान

दिनक अन्तमे जसोदाक भतीजीक अनुमति, मौखिक कथन आ खेतक वर्तमान अवस्थाक टीप अदालत घुरैत अछि। ई फाइलक सामाजिक पूर्णताक आरम्भ अछि; खेतक मालिकाना फेर बदलि गेल, क्षतिपूर्ति भेटल वा न्यायिक आदेश जारी भेल—एहन परिणाम अध्याय नहि देखबैत। अनन्याक 'मृत प्रकरण नहि' कथन स्मृतिक पुनर्जीवनक भाषिक घोषणा अछि। ई सूक्ष्म सीमा दीर्घ आख्यानक विश्वसनीयता लेल महत्त्वपूर्ण अछि: न्याय दिशामे यात्रा आ न्याय प्राप्ति दूनू अलग चरण छथि।

अगिला डरक पूर्वाभास

नाम घर धरि पहुँचब आरम्भ होतहि कागच दबेनिहार व्यवस्था अपना अन्हारक सुरक्षा खोबए लगैत अछि। अध्यायक अन्तक संकेत अगिला 'डरक पहिल दरार'सँ जुड़ैत अछि। कथावाचक एहि बिन्दुपर बाहरी संघर्षक नब मुकाम खोलैत छथि: एखन संघर्ष केवल पीड़ितक अनुपस्थिति विरुद्ध नहि, ओकरा लाभान्वित करनिहार लोकक भय विरुद्ध सेहो अछि। नामक धीमा व्यक्तिगत उच्चारण आपराधिक जाल लेल सार्वजनिक खतरा बनैत अछि—ई उलटफेर कथाक अगिला दृश्यसभक कारण बनैत अछि।

प्रकरण २४६ | मूल अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

आरोपित सत्ता भीतर भयक केन्द्रक परिवर्तन

रेकर्ड-घरक नाम सूची बनि गेला पाछाँ कथावाचक निगाह अपराधी-पक्षक कोठरी सभपर घुमबैत छथि। चन्द्रपालक चाहक प्याला काँपैत अछि; राघवक हँसी अधबीचमे रुकैत अछि; लाउ अपन पुरान हस्ताक्षरक पर्ची देखैत अछि; बटुकनाथक उत्तराधिकारी सभ चित्र आ दान-पत्र सँ प्रतिष्ठा बचबैत छथि। एक घटना अनेक स्थानमे एक्के भाव जगबैत अछि, मुदा भावक भाषा अलग अछि। एहि समानान्तर दृश्यक्रमसँ भयक सामाजिक भूगोल बनैत अछि। कथा अपराधी-तन्त्रकेँ एकल दानव नहि, परस्पर जुड़ल अनेक हितक समूह रूपेँ रचैत अछि।

'दरार'क क्रमिकता आ तात्कालिक विजयक अस्वीकार

शीर्षक कहैत अछि—डर एक बेरमे नहि टूटैत, पहिने पातर दरार पड़ैत अछि। कथावाचक एहि रूपककेँ घटनामे उतारैत छथि। लोकक नाम तीन अलग प्रति बनि घुरैत अछि, पर न अदालतक अन्तिम निर्णय भेल अछि, न जालक समूल विनाश। डरक पहिल अस्थिरता एतबे अछि जे प्रत्येक पक्ष आब दस्तावेजकेँ निर्जीव मानि नहि सकैत। एही असम्पूर्ण अवस्थाकेँ घटना-परिणाम मानल जाए, पूर्ण न्याय विजय नहि।

भिन्न-भिन्न घरमे भयक अलग व्याकरण

एके खबर चन्द्रपाल लग आर्थिक असुरक्षा, राघव लग नेटवर्कक विफलता, लाउ लग नकली हस्ताक्षरक डर, आ उत्तराधिकारी सभ लग प्रतिष्ठाक संकट बनैत अछि। कथावाचक जाहि तरह एकहि कारणक अनेक भाषा सुनबैत छथि, से उपन्यासक बहुपात्रीय संरचना सँ मेल खाइत अछि। विशेषतः बटुकनाथक हवेलीमे ओकर स्वयं उपस्थित नहि होएबाक उल्लेख, पिछला अध्याय सभमे ओकर विभिन्न अवस्थासँ तुलना माँगैत अछि। ई नामक सामाजिक सत्ता आ देहक अनुपस्थितिक भेद सेहो हो सकैत अछि; मुदा घटनाक निरन्तर समय-स्थान पूर्ण स्पष्ट नहि, तेँ समीक्षा एकरा प्रश्न रूपमे रखैत अछि।

तीन प्रतिलिपि : कागचक शरीरक वितरित सुरक्षा

रेकर्ड-घर, बरामदा आ अनन्याक टोली—तीन ठाम नामक प्रतिलिपि राखबाक कथन भयक परिवर्तन लेल केन्द्रीय अछि। कागच एक अलमारीमे रहितहि नष्ट कएल जा सकैत छल; अनेक ठाम रहिते ओकर नियन्त्रण कठिन होइत अछि। एहि कथात्मक व्यवस्थासँ पाठककेँ कारण भेटैत अछि जे चन्द्रपालक लोक किएक डेराइत अछि। पर प्रतिक अनेकता अपने सत्यक शुद्धता सुनिश्चित नहि करैत; आगाँ जाँच, स्रोत-मिलान आ अनुमति एखनहुँ आवश्यक अछि। भौतिक सुरक्षा आ तथ्यगत विश्वसनीयता बीच ई भेद कहानीक अगिला संकटक तैयारी करैत अछि।

लिपिकक 'कर्मचारीक मौनक बयान'

अधिकारी बिनु अनुमतिक फाइल देखाओल पर झिड़कैत छथि, मुदा लिपिक छोट पर्ची निकालि अपन मौनक बयान देबाक निर्णय करैत अछि। एतय भयक पहिल वास्तविक दरार व्यक्ति-आधारित अछि। लिपिक अपन पूर्वक चुप्पी स्वीकारैत अछि, जकरा एखन धरि रेकर्ड-घरक अन्हार संरक्षित कऽ रखने छल। कथावाचक ओकर काँपैत हाथ आ स्थिर स्वरक विरोधाभाससँ साहसकेँ अतिनायकत्वसँ बचबैत छथि। ओकर जोखिम वास्तविक अछि, आ ओकर बयान फाइलक निस्तार नहि, जाँचक नव द्वार अछि।

भिखारी लालक झाड़ूसँ बयान धरि रूपान्तरण

चपरासी भिखारी लाल पुरान कागचकेँ रद्दी कहबाक अपन आदत स्वीकार करैत अछि। ई छोट स्वीकृति पूर्वक रद्दी बोरा अध्यायक प्रत्यक्ष प्रतिफल अछि। कचहरीक नीच पदपर रहनिहार पात्रक कथन 'रद्दी नहि छल' सार्वजनिक नैतिक वजन पबैत अछि। कथा ओकरा सम्पूर्ण दोषी बनबैत नहि, मुदा अनजान सहयोगक उत्तरदायित्व बुझबैत

अछि। श्रमिक पात्रक नैतिक विकास एहि प्रकारेँ राजकीय पदसँ नहि, अपन काजक अर्थ नवसँ देखबाक सामर्थ्यसँ विकसित होइत अछि।

सत्यव्रत आ अधिकारीक प्रक्रिया-विवाद

अधिकारीक कथन अछि जे पाठक प्रक्रिया बाधित भऽ रहल अछि; सत्यव्रत उत्तर दैत छथि जे प्रक्रिया कैँ ओकर मनुष्य घुराओल जा रहल अछि। एहि संवादमे उपन्यासक प्राचीन 'कानून बनाम न्याय' तनाव नव स्थिति पबैत अछि। सत्यव्रत आब केवल आत्मग्लानिक पात्र नहि, लोकक नाम पढ़बाक काममे अपारदर्शी संस्थागत व्यवहारपर प्रश्न उठेनिहार सहभागी छथि। तथापि ई संवाद विधिक अन्तिम निर्णय नहि; स्थानीय कोठरीक सत्ता-सङ्घर्षक एक क्षण अछि। एहि सीमा सँ रचनात्मक परिणामक सही परिमाण बुझाइत अछि।

पीढ़ीगत गवाही : बूढ़ मुवक्किल आ पोता

बूढ़ मुवक्किलक नामक पर्ची पोताक हाथधरि पहुँचैत अछि, आ पोता पूछैत अछि जे ई नाम दादाक अछि कि नहि। वृद्धक उत्तर मुकदमाकेँ केवल जमीनक नहि, परिवारक प्रतीक्षाक कहानी बनबैत अछि। एतय फाइलक मृत्यु-समय भविष्यक पीढ़ीक जीवन-स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि। एक घरमे न्यायिक तारीखक जीवित असर पाठक आँखि देखैत अछि; अन्यत्र स्थित धूर्त सभक भयक समानान्तर घटनाक्रम एतए ठोस मानवीय कारण पबैत अछि।

अफवाहक गोहि आ तथ्यक सावधानी

भूत-अदालत, श्राप पढ़निहार बच्चा, लिपिकक नौकरी जाएबाक आशंका आ छापक समाचार गाममे पसरैत अछि। कथावाचक अफवाहकेँ 'कान चाहनिहार गोहि' कहैत छथि। ई उपन्यासक शीर्षक-बिम्बक नब विस्तार अछि: गोहि आब जलक जीव मात्र नहि, अप्रमाणित भाषाक भूख बनैत अछि। आरुणि संकेतक अर्थ जल्दबाजीमे नहि खोलबाक नियम लिखैत छथि। एहि सावधानीक कारण कथा स्वयं अपन जादुई घटनासभकेँ स्वतः बाहरी सत्यक घोषणा नहि करैत; लोकक व्याख्या आ घटित घटना अलग देखाओल जाइत अछि।

गुप्त बैसकी आ वृद्ध अधिवक्ताक असहमति

चन्द्रपाल, राघवक सलाहकार, बटुकनाथक प्रतिनिधि आ वकील लोक सूचीकेँ अवैध कहल जाए कि लिपिक पर दबाब डालल जाए—एहि पर विचार करैत छथि। एहि बीच वृद्ध अधिवक्ता पूछैत छथि जे ताला बदललापर नाम कतय बन्द कएल जायत। ई प्रश्न जालक भीतरसँ उठैत अछि; अतः 'डरक पहिल दरार'क शीर्षकक सबसँ स्पष्ट घटनात्मक पुष्टि एही ठाम भेटैत अछि। मुदा वृद्धक एक वाक्यसँ जाल टूटि गेल नहि—ई केवल साझा रणनीतिक भरोसामे पहिल अन्तर अछि।

डरक दैहिक रूप आ कथात्मक संक्रामकता

काँपैत प्याला, सुखाइत गला, उतरल मुस्कान, चाबी थमकब आ सभाक ठंढ हवा—ई सूक्ष्म वस्तु-क्रिया डरकेँ अमूर्त विचारसँ देहक अनुभूतिमे बदलैत अछि। भिन्न पात्रक चेहरा अपन विशिष्ट व्यवसाय-भाषाक संग डरक अलग छवि बनबैत अछि। जखन लोकक सूची नब प्रतिलिपिमे चलैत अछि, तखन डर स्वयं 'नाव', 'आगि',

'दरार' जेकाँ रूप बदलैत अछि। एहि दृश्यसँ लेखकीय समानान्तर सम्पादनक क्षमता देखाइत अछि; एके कथनक पुनरावृत्ति नहि, घटनाक असरक बहुदिशात्मक प्रस्तुति अछि।

आगाँ मोहरक दाग दिस कथाक निश्चय

गुप्त बैठकमे ताला बदलबाक आशंका, नामकेँ अवैध ठहरायबाक योजना आ दस्तावेजक भूमिकासँ अगिला अध्याय अनिवार्य बनैत अछि। डरक स्रोत बुझबाक लेल आब फाइलक लाल मोहर, ओकर तारीख आ उसको चलौनिहार हाथ देखब आवश्यक हएत। एहि तरह अध्याय भयक मनोवैज्ञानिक स्वरूपक बाद ठोस अभिलेखीय चिह्नक ठाम आगाँ बढ़ैत अछि। समीक्षामे पहिल दरारक शाब्दिक रूपक आ मोहरक वस्तुगत दाग दूनू मिलि एक खोजक क्रम बनबैत अछि।

प्रकरण २४७ | मूल अध्याय १४६ — मुहरक दाग

गोल स्याहीक निशान : संस्थाक दैहिक हस्ताक्षर

अध्याय १४६ मोहरकेँ निर्जीव गोल आकृतिसँ मनुष्यक देहपर लगल दाग बनबैत अछि। आवेदन 'सत्यापित' वा 'अस्वीकृत' होइतहि परिवारक जीवन बदलैत अछि; अतः वस्तुक अर्थ केवल स्याहीक कारीगरी नहि। कथावाचक मोहरक गोलाई आ अँगूठाक रेखा बीच प्रतिस्पर्धा चित्रित करैत छथि। एक मनुष्य अपन शरीरक निशान देलक, पर ऊपरक दफ्तरक चिन्ह ओकरा दबा देलक—ई बिम्ब सम्पूर्ण दस्तावेज-व्यवस्थाक सत्ता-सम्बन्धकेँ एक पन्नामे देखबैत अछि।

बबूलक सीमा आ नापी-पुस्तकक रेखा

पहिल फाइलमे खेतक सीमाना दादाक रोपल बबूलसँ चिन्हित छल, मुदा सरकारी नापीमे बबूल हटि केवल बदलल रेखा बचल। छोट प्राकृतिक वस्तु आ आधिकारिक आरेखक अन्तर खेत, घर आ भोजनक सम्बन्धक बदलनाइ समझबैत अछि। 'सत्यापित' मोहर लागल रहबक कारण झूठक सामाजिक जीवन समाप्त नहि, व्यवस्थित भऽ गेल। कथावाचक एहि वस्तु-विरोधसँ मूल उपन्यासक पोखरि, खेत आ पुलक भूगोल फेर स्मरण करबैत छथि। मुदा बबूलक याद अकेला कानूनी स्वामित्वक अन्तिम निर्णय नहि—ई जाँच योग्य विसंगतिक संकेत अछि।

सुरमणी अथवा सुरमुनि : अक्षरक अस्थिर पहिचान

एक कागचपर स्त्रीक नाम आधा पढ़ल जाइत अछि—'सुरमणी' कि 'सुरमुनि', स्पष्ट नहि। एहि अस्पष्टताक अन्तर्गत 'हाजिरी देल', 'अर्जदार अनुपस्थित' आ 'दस्तावेज अपर्याप्त' जेकाँ परस्पर विसंगत टिप्पणी भेटैत अछि। लेखकीय युक्ति दस्तावेजी भाषा कैं स्थिर सत्यक आसनसँ उतारब अछि। नामक वर्तनीक अनिश्चयक कारणेँ एहि पात्रकेँ पहिलुक सुरमणी काकी अथवा अगिला सुरमणी देवीकेँ स्वतः एके व्यक्ति मानि समेटि देब उचित नहि; पाठगत पहिचान अतिरिक्त जाँच माँगैत अछि।

'ऊपर देलहुँ' : अदृश्य आदेश-शृंखला

चन्द्रपालक पुरान मुंशी स्वीकार करैत अछि जे ओ फाइल गुम नहि केलक, 'ऊपर' दऽ देने छल, पर फेर घुरल नहि। एहि 'ऊपर' शब्दक अज्ञात कर्तृत्व कथा भीतर विशिष्ट तनाव उत्पन्न करैत अछि। अधिकारी, अधिवक्ता, मुखिया, महाजन आ दलाल—अनेक सम्भावित चेहरा उठैत अछि, मुदा निश्चित व्यक्ति तत्काल स्थापित नहि। एहि अस्पष्ट सर्वनामक कारण पाठक खोजक अगिला चरण दिस धकेलाइत अछि। केवल 'ऊपर' कहलासँ ककरो दोष सिद्ध मानब अर्थक अनधिकृत छलाँग हएत।

मोहरक ढेरी : बारम्बार बनैत अन्यायक क्रम

हाजिरी, अनुपस्थिति, सत्यापन, अस्वीकृति, स्थगन आ गुम अभिलेखक ढेरी बनैत अछि। बच्चा सभ देखैत अछि जे अन्याय एक हिंसक क्षणमे मात्र नहि, छोटे-छोटे प्रशासकीय क्रियाक जोड़सँ बनैत अछि। नाम बिगाड़ू, तारीख बदलू, नकल रोकू, फेर अपूर्ण कहल जाउ—ई अनुक्रम कथानकमे कारण-परिणामक स्पष्ट संरचना दैत अछि। एही कारण उपन्यासक अपराध केवल लोभक अमूर्त प्रतीक नहि, प्रक्रिया-आधारित सत्ताक दैनिक पुनरावृत्ति बनि उठैत अछि।

पुरान मोहर : वस्तुक सेवानिवृत्ति आ दोषक निरन्तरता

दराजमे तीन घिसल मोहर पड़ल छथि—ककर दाँत टूटल, ककर काठ सड़ल, ककर अक्षर आधा मेटायल। लिपिक कहैत अछि जे ई सभ उपयोगमे नहि, मुदा अनन्या पूछैत छथि जे ताहिसँ लिखल गेल निर्णयक जिम्मेदारी सेहो समाप्त भऽ गेल कि नहि। एहि संवादमे इतिहासक काल पर तीव्र प्रश्न उठैत अछि: औजारक उपयोग समाप्त होइत अछि, ओकर प्रभाव परिवारक जीवनमे जारी रहैत अछि। ई भौतिक वस्तुक आयु आ सामाजिक हानिक आयु बीचक अन्तर दीर्घ आख्यानक कालबोधकेँ गहिर करैत अछि।

सूचीमे 'ब.ह.' : संकेत आ प्रमाण बीच दूरी

मुंशीक भीतरक जेबसँ निकलल मोड़ल कागचमे नाम, रकम, फाइल संख्या आ 'ब.ह.' संक्षेप भेटैत अछि। पात्र सभ एकरा बटुकनाथ हरिहरनक दिशामे संकेत रूपेँ देखैत छथि। मुदा पूरा नाम अथवा दस्तखतक अचूक मिलान एखन नहि भेटल; तेँ संक्षेप स्वयं पूर्ण अपराध-सिद्धि नहि अछि। कथानकक कौशल ई जे दू अक्षर सन्देहक घनत्व बढ़बैत अछि, जबकि न्यायिक सावधानी ओकर अर्थ खुलबाक प्रतीक्षा करैत अछि। एहि तनावेँ अगिला अनुसन्धानक स्वाभाविक आवश्यकता बनैत अछि।

लाल स्याहीक रंग-बदल आ जादुई संकेत

टूटा खिड़कीसँ पड़ल उजासमे लाल मोहर कारी बुझाइत अछि, चन्ना ठूँठक पाथरपर लाल धब्बा देखाइत अछि—स्याही कि माटि, स्पष्ट नहि। एहि विवरणमे दृश्यात्मक अस्थिरता नाटकीय अर्थ बनबैत अछि। मीरा अपराधक कारण रंग बदलल कहैत छथि, मुदा आलोचनात्मक पाठककेँ कथात्मक रूपक आ भौतिक निष्कर्ष अलग रखबाक चाही। खिड़कीक उजास, धूलिक परत आ पात्रक भयक दृष्टिसँ रंगक अनुभव अर्थवान होइत अछि; ताहिसँ स्वतः नब बाहरी प्रमाण नहि जन्मैत।

'ब.ह.' आ अफवाहक समानान्तर प्रसार

रेकर्ड-घर भीतर संक्षेप भेटैत अछि, बाहर बरामदामे बटुकनाथक नाम उभरबाक फुसफुसाहट, चन्द्रपालक बन्द दरबाजा आ राघवक पलायनक अफवाह पसरैत अछि। लेखकीय समानान्तर संयोजन दिखबैत अछि जे जाँचक एक अस्पष्ट सामग्री लोकक मुँहमे कतेक जल्दी निश्चित आरोप बनि सकैत अछि। कथावाचक स्वयं संकेत करैत छथि जे अफवाहमे सत्यक मात्रा स्पष्ट नहि। एहि आत्मस्वीकारकेँ समीक्षा विशेष महत्त्व देत, कारण नाम-पहरा यदि स्वयं अफवाहक गोहि बनि जाए, तँ ओकर नैतिक आधार टूटत।

सुरक्षित प्रति आ धूलि नष्ट नहि करबाक आग्रह

अनन्या मूल पन्नाकेँ लाल कपड़ामे लपेटैत छथि, ओकरा पर हाथक छाप आ समयक धूलि बचएबाक बात करैत छथि। ई दृश्य दस्तावेजक भौतिक अखण्डताक प्रति संवेदनशीलता देखबैत अछि। प्रतिलिपि बनाओल आवश्यक, मुदा मूल कागचक चिह्न सुरक्षित रखब सेहो कथाक विषय बनैत अछि। वस्तुगत चिह्न एहि ठाम इतिहासक सम्भावित स्रोत अछि; तकरा केवल भावात्मक स्मारक बनाकऽ राखब नहि, सावधान तुलना करबाक सामग्री मानल गेल अछि।

चाबी न उठेनाइ : जिम्मेदारीक सामूहिक वितरण

भिखारी लाल अपन चाबी अनन्याक सोझाँ राखि कहैत अछि जे ताला खोलि सकैत अछि, पर अकेले पहरा नहि देब। अनन्या चाबी उठा नहि लैत छथि; ओ कहैत छथि चाबी ओकर हाथमे रहय, पर आब हाथ अकेल नहि रहत। ई चरित्रगत सूक्ष्म निर्णय अछि। सामुदायिक अभियान सरकारी कर्मचारिक सम्पूर्ण अधिकार अपन हाथमे केन्द्रित नहि करैत, बल्कि ओकरा जिम्मेदारीक जालमे जोड़बाक प्रयत्न करैत अछि। एकर सीमा सेहो अछि: वास्तविक अभिलेखक वैधानिक स्वामित्व आ प्रक्रिया आगे अलग सवाल बनी रहत।

दागसँ घर-घरक दस्तकक पूर्वाभास

मोहरक बीस पन्नाक सूची बनैत अछि, अनेक नाम धूलिसँ बाहर उठैत अछि, आ अन्तमे स्याहीक सूखल डिब्बाक चूर्ण पसरैत अछि। कथा सूक्ष्म प्रश्न उठबैत अछि—मोहर चलेनिहार हाथ कोन? अध्याय १४६ तकर अन्तिम उत्तर नहि दैत; ओकर चिह्न सभ व्यवस्थित करैत अछि। आगामी अध्यायमे एहि नामक वास्तविक घर खोजबाक दिशा अनिवार्य बनैत अछि। एहि तरह 'मोहरक दाग' एक तात्कालिक चरम क्षण नहि, विशाल संस्थागत जालक मध्यवर्ती खोजक निर्णायक कड़ी अछि।

प्रकरण २४८ | मूल अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

आदेशक भाषा सँ विनतीक भाषा धरि

अध्याय १४७मे बच्चा सभ फाइलक नकल नेने घर-घर जाइत छथि, मुदा दुआर पर 'हाजिर होउ' नहि कहैत। बन्द दुआर पर छोड़ल पर्ची कहैत अछि—जखन अहाँ चाहब, तखन हम सुनबाक लेल आबि सकैत छी। एहि भाषिक परिवर्तनमे उपन्यासक मुख्य सामाजिक प्रयोग अछि। अदालतक पुरान पत्र लोककेँ आदेश देत, पर नव नाम-

यात्राक पत्र मनुष्यक स्वीकृति माँगैत अछि। कथानकक मूल परिवर्तन संस्था समाप्त करब नहि, ओकरा मानवीय सम्बन्धक भिन्न व्याकरणमे लिखबाक प्रयास अछि।

सुरमणी देवीक आवेदन आ दोसरक लिखल दुःख

पहिल घर सुरमणी देवीक अछि; वृद्धाक आँखि आ कानक क्षमता कम भऽ गेल, पर नाम सुनितहि ओ जागि उठैत छथि। ओ कहैत छथि जे आवेदन स्वयं नहि लिखने रहथि, पटवारीक लड़का लिखने छल; ओकर लिखाइमे हुनकर रोदन कतय छल? आरुणि एहि अन्तरकेँ 'लेखक दोसर, दुःख पहिल जनक' रूपमे दर्ज करैत छथि। एहि वाक्यमे कथावाचकीय प्रतिनिधित्वक मूल संकट अछि: कागच पर शब्द लिखनिहार आ अनुभव भोगनिहारक आवाज अलग अछि। समीक्षा एहि अन्तरकेँ उपन्यासक अपन कथा-कहबाक पद्धतिपर सेहो लागू करैत अछि।

पीतलक डिब्बा : बीजसँ जमीनक इतिहास जोड़ब

सुरमणी देवीक पोती पीतलक डिब्बामे दू बीज, टूटल चूड़ी आ खेतक माटिक ढेला देखबैत अछि। एहि वस्तुसभसँ परिवारक अनेक समय-तह एकत्र होइत अछि—खेती, स्त्रीक जीवन, बिछोह आ स्मृति। वस्तुक सुगन्ध आधिकारिक नापी-पुस्तकक समान कानूनी दर्जा नहि पबैत, मुदा आँगनक भीतर जमीनक अर्थ बतबैत अछि। पहिनेक बीज-संग्रहक अध्यायसँ ई वस्तुगत पुनरावृत्ति सम्पूर्ण उपन्यासक बड़का संरचनामे सम्बन्ध बनबैत अछि।

रामेश्वरक पुरान कैलेंडर : परिवारक ठमकल घड़ी

रामेश्वर साह आब जीवित नहि; हुनकर घरमे बारह वर्ष पुरान कैलेंडर ओहने अटकल अछि जे वर्ष ओ अन्तिम बेर अदालत गेल रहथि। रेकर्ड-घरक सूची आ भीतक तिथि अलग भेटैत अछि, मुदा परिवारक अनुभवमे दूनू बीचक वर्ष एके दीर्घ प्रतीक्षा बनि गेल। ई विसंगति काल-गणनाक स्वाभाविक स्रोत-परीक्षाक प्रश्न उठबैत अछि। कथावाचक एकर प्रतीकात्मक अर्थ ठमकल समय रूपमे देखबैत छथि; समीक्षा एहि कालिक अन्तरकेँ स्वयं सुलझल तथ्य नहि कहत।

भिखारी लालक क्षमा आ पुतोहुक उत्तर

रामेश्वरक पुतोहु भिखारी लालक सम्भावित पुरान तारीख-पर्ची देबाक क्षमायाचना पर तुरन्त माफी नहि दैत छथि। ओ केवल कहैत छथि—बुझि गेलहुँ तँ लिखू। एतय क्षमाक नैतिकता पूर्वक बटुकनाथक रातिक प्रसंगसँ जुड़ैत अछि: भावुक स्वीकार ठोस कामक विकल्प नहि। भिखारी लाल कापीमे तारीखक पर्ची घरक भूख बनि सकबाक बात लिखैत अछि। ओकर परिवर्तनक प्रमाण आँसु नहि, अनुभवक नब भाषा आ अगिलाक श्रम अछि।

फुलकुमारीक 'अधूरा प्रमाण' आ अधूरा पेट

छात्रवृत्ति रुकलाक कागच पर 'अधूरा प्रमाण' लिखल अछि, मुदा फुलकुमारीक माय कहैत छथि जे प्रमाण नहि, पेट अधूरा छल; फलतः बेटी पढ़ाइ छोड़लक। ई छोट संवाद दस्तावेजक अधिकृत कारण आ पीड़ित परिवारक जीवनगत कारणक अलगाव प्रकट करैत अछि। अनन्या लिखबाक अनुमति माँगैत छथि; माय दया नहि,

अधिकारक रूपमे बेटीकेँ लिखबाक शर्त रखैत छथि। सामाजिक कथनक केन्द्र दाताक उदारता नहि, खोएल शिक्षा-अधिकार अछि।

बन्द दुआर : मौनक स्वतन्त्र उत्तर

किछु घर दुआर खोलैत अछि, किछु भीतरसँ कुण्डी लगबैत अछि। टोली एहन घरपर जोर नहि दैत, छोट पर्ची छोड़ैत आगाँ बढ़ैत अछि। ई कथा भीतर मीराक पहिनेक मौन-अधिकारक अभ्यासक ठोस विस्तार अछि। बन्द दुआरक मौन सम्मानित अछि; मुदा डर पैदा करनिहारक भूमिका अलग प्रश्न अछि। एहि भेदसँ उपन्यास निजी अस्वीकारकेँ सामूहिक अभियानक विफलता नहि मानैत। ओ लोकक निर्णयक स्वायत्तता बचाकऽ सहायता उपलब्ध रखबाक प्रयोग करैत अछि।

मुरारी फोटोकॉपीवालाक अतिरिक्त प्रति

पुरान फोटोकॉपीवाला मुरारी बकाया पाइ कारण अपन लग रोकल किछु प्रति घुरा दैत अछि। किछु पन्नामे मूल फाइलसँ अधिक पूर्ण बयान, नक्शाक किनार आ स्त्रीक अन्तिम पाँति भेटैत अछि। एहि घटनाक विडम्बना तीव्र अछि: आर्थिक स्वार्थसँ रोकल प्रति एखन सत्य खोजबाक सहायक बनैत अछि। देविका स्पष्ट करैत छथि जे कागच उपयोगी भेलासँ ओकरा रोकबाक गलती समाप्त नहि होइत। घटना व्यक्ति-मनोविज्ञानक सरलीकरण रोकैत अछि—दोषी व्यवहारक भीतर एखन उपयोगी साक्ष्य बचल भऽ सकैत अछि।

खाली दीपक विधान : जकर अनुमति नहि

राति चन्ना गाछी लग केवल अनुमतिप्राप्त नाम पढ़ल जाइत अछि; जकर परिजन अनुमति नहि देलक, तकरा लेल बाती आ लौ बिनु खाली दीप राखल गेल। एहि दृश्य-रचनामे अनुपस्थितिक स्थान निश्चित अछि, मुदा ओकर आवाज छीनल नहि गेल। जादुई यथार्थक ठूँठ आ कोंपल लग ई छोट चिह्न उपन्यासक निजताक विचारकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि। दीपक नहि जरब भी एक निर्णय अछि—ई आदर्श दृश्य दृश्यात्मक अस्वीकृतिक मर्यादा सिखबैत अछि।

झूठक मिलावट : अपराधक नव रणनीतिक मोड़

चन्द्रपालक लोक निर्णय करैत छथि जे घर-घरक अभियान रोकब कठिन अछि, तें नकली पीड़ित, गलत कागच आ सही नामक संग झूठा आरोप मिलाओल जाए। एहि घटनाक महत्त्व भविष्यक संघर्षक स्पष्ट कारण प्रस्तुत करब अछि। पहिने अपराधी सभ कागच दबौलक; आब ओ प्रमाण-जालकेँ दूषित करबाक योजना बना रहल अछि। नामक मात्रा बढ़ला सँ स्वतः सत्यक शक्ति नहि बढ़त—एहि नब जोखिमक कारण कथानक भावनात्मक पुनर्स्मरणसँ सत्यापनक जटिल प्रक्रियामे प्रवेश करैत अछि।

मीराक पाँच नियम आ धीमा न्याय

मीरा प्रत्येक कथन दू बेर सुनब, कागचक प्रति अलग राखब, आरोप आ अनुभवक भाषा अलग चिन्हब, भीड़मे दोषी घोषित नहि करब, तथा झूठक आशङ्कापर जाँच करबाक नियम दैत छथि। ई नियम उपन्यासक वाचिक

संसारमे एक नब शिल्पगत आत्म-नियन्त्रण रचैत अछि। बूढ़ मुवक्किल सावधान करैत छथि जे जाँच एतेक धीमा नहि बनय जाहिमे फेर पीढ़ी बीति जाए। एही संवादमे सावधानी आ कार्य-गतिसँ जुड़ल वास्तविक तनाव अछि; एकरा अद्भुत समाधान नहि, दीर्घकालीन संघर्षक अर्हता मानल जाएबाक चाही।

अन्तक संकेत : सत्यक पोशाक पहिरल झूठ

अध्यायक अन्तमे अनन्या पहिल दिनक सूचीमे सुरमणीक माटि, रामेश्वरक कैलेंडर, फुलकुमारीक पेट, बन्द दुआर, मुरारीक प्रति आ मिलावट करबाक आसन्न चाल लिखैत छथि। एहिसँ पाठक समझैत अछि जे कथाक अगिला मोड़ प्रमाणक मात्रा नहि, तकर शुद्धता पर हएत। गोहिक जलमे सरकबाक हलुक ध्वनि एहि आगामी षड्यन्त्रक रूपक बनैत अछि। समापन न्याय प्राप्तिक उत्सव नहि; सत्यक वेश धारण करैत असत्यसँ सावधान रहबाक आग्रह अछि। एहि नब संकटसँ अध्याय १४८ दिस कथानकक स्वाभाविक पुल तैयार होइत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : माटिसँ घर-घरक दस्तक धरि

प्रकरण २४१–२४८क कथात्मक गति उपन्यासक एक निर्णायक स्थानान्तरण दिखबैत अछि: विदेह नाट्य उत्सवक बाद चलैत चौपाल संस्थागत कचहरीक बरामदामे पहुँचैत अछि; ओतयसँ रेकर्ड-घर, रद्दी बोरा, गुम नामक देहरी, कार्यालयक भय, मोहरक दाग आ अन्ततः घर-घरक स्वीकृतिपूर्ण दस्तक धरि कथा पहुँचैत अछि। ई क्रम केवल सामाजिक विचारक सूची नहि, कारण-परिणामसँ जुड़ल घटना-श्रृंखला अछि। नाटकक दर्शकक गवाही जखन अदालती कागचसँ भेटैत अछि, तखन लेखक देखबैत छथि जे सार्वजनिक स्मृतिकेँ जीवित रखबाक लेल फाइलक अन्हारमे उतरब, क्षतिग्रस्त पन्ना सँ संघर्ष करब आ परिवारक दुआर पर अनुमति माँगब आवश्यक अछि।

आठ अध्यायक प्रमुख भौतिक वस्तु क्रमशः साइकिलपर आयल मोड़ल सूचना, बरामदाक जूता-सहल पाथर, पुरान चाबी, अलमारीक धूलि, विवाह-पत्रक टुकड़ा, छात्रक बिगाड़ल कुलनाम, लाल सूतक गिट्ठी, रद्दी बोरा, अँगूठाक निशान, नावक भीजल पेंदी, जसोदाक भतीजीक आँगन, तीन सुरक्षित प्रतिलिपि, घिसल मोहर, सूखल स्याही, पीतलक डिब्बा, पुरान कैलेंडर, बन्द दुआर आ अतिरिक्त फोटोकॉपी अछि। एहि वस्तुसभक बीच लेखनक निरन्तरता यांत्रिक नहि; प्रत्येक वस्तु अपना पहिल व्यवहारसँ अलग भूमिका पबैत अछि। टिकट वा सूचना शासनक माध्यम रहैत अछि, पर्ची मानवीय कालक अभिलेख बनैत अछि, आ रद्दी समाजक दबायल स्मृतिक सम्भावित साक्षी बनि उठैत अछि।

समयक संरचना एहि खण्डक सर्वाधिक तीक्ष्ण आयाम अछि। वृद्ध मुवक्किलक तेइस बरखक मुकदमा, बारह बरख पुरान कैलेंडर, बारम्बार लगाओल प्राप्त-मोहर आ एको आदेशक नहि भेटब—ई सभ घटनासँ संस्थागत समयक जीवन-विरोधी गति देखाइत अछि। अदालतक भीतर फाइलक तारीख आगाँ बढ़ैत अछि, मुदा परिवारक भीतर एक वर्ष ठमकि जाइत अछि अथवा पूरा पीढ़ी बीति जाइत अछि। लेखक एही असमानताकेँ गोहिक चिबानबला बिम्बसँ जोड़ैत छथि। तथापि पत्रक अलग तिथि आ मौखिक स्मृतिक अलग तिथि तुरन्त एक साबित नहि; वास्तविक पुष्टि अगिला जाँचक काज अछि।

वक्ता-विन्यासमे परिवर्तन सेहो स्पष्ट अछि। अध्याय १४०क नाम-खेलपर अनन्या रजिस्टर पकड़ने छथि; १४१मे वृद्ध मुवक्किल आ लिपिक बोलैत छथि; १४२–१४३मे भिखारी लाल, विधवा, मीरा, देविका, अधिवक्ता आ

फाइलक अवशेष आवाज पबैत अछि; १४४मे जसोदाक भतीजी नामक पाछाँक परिवारक समय बतबैत छथि; १४५–१४६मे अपराध-जालक कोठरी सभक भय आ मुंशीक हिचक समानान्तर खुलैत अछि; १४७मे सुरमणी देवी, रामेश्वरक पुतोहु आ फुलकुमारीक माय घटना पर अपन अधिकारक शर्त लगबैत छथि। एही प्रकार सर्वज्ञ कथनक भीतर अनेक पात्र अपन-अपन ज्ञानक सीमा सहित आवाज पबैत अछि।

कथा स्वयं भावनात्मक गवाही आ तथ्यगत सत्यापनक अन्तर बारम्बार बचबैत अछि। जसोदाक खेतपर वर्तमान गोदाम देखल गेलासँ ओकरा सब दोषी सिद्ध नहि मानल जाइत; पन्ना अपन भाइयोक सन बुझलासँ पहिचान सिद्ध नहि; मुंशीक “ऊपर देलहुँ”सँ आदेश देनिहारक नाम स्पष्ट नहि; “ब.ह.” सँ पूरा व्यक्ति निश्चित नहि; लाल धब्बा स्याही अछि कि माटि—ई अस्पष्ट रहैत अछि। मीरा आरोप आ अनुभव अलग राखबाक नियम दैत छथि। ई स्व-आलोचनात्मक अनुशासन दीर्घ उपन्यासक जादुई रूपककेँ निरन्तर सम्भावनात्मक धरातल दैत अछि। जे संकेतक अनिश्चय राखल गेल अछि, तकरा आलोचने निर्णायक बना देब पाठक संग अन्याय हएत।

जादुई यथार्थक घटनासभकेँ सेहो अलग तहमे पढ़बाक आवश्यकता अछि। पाथर भीतर साँस जमा होइत बुझाइत अछि; रेकर्ड-घरक धूलि अक्षर बनैत अछि; नाम कागच छोड़ि अपन घर दिस चलैत बुझाइत अछि; चन्ना गाछीक छाह अदालतमे पहुँचैत अछि; मोहरक दाग रंग बदलैत अछि। एहन क्षण सभ कथावाचकक सामाजिक अनुभवकेँ दृश्य आ श्रव्य रूपमे तीव्र करैत अछि, मुदा उपन्यासक घटनात्मक तहमे परिवार तकबाक लेल नाव चढ़ल लोक, रेकर्ड पुनर्गणना करनिहार कर्मचारी आ प्रति बनाबय लागल बच्चा सभ सेहो छथि। चमत्कारी रूपक एहि मानवीय श्रमकेँ प्रतिस्थापित नहि करैत।

दूटा विशिष्ट पाठगत प्रश्न खुलल रहैत अछि। रद्दी बोराक अध्यायमे समाप्तिक बाद फेर एक दोसर राति-जेकाँ समापन अबैत अछि, जाहिमे रेकर्ड-घर बन्द भेल आ बूढ़ मुवक्किलक आवेदन पुनः पढ़ल गेल। एकर कालक्रम स्पष्ट अलग नहि कएल गेल, तें कलात्मक वृत्त आ सम्पादकीय पुनरावृत्ति दुनूक सम्भावना राखल जाए। बटुकनाथक हवेलीमे स्वयं अनुपस्थित होएबाक उल्लेख आ भिखारी लालक चपरासी तथा अस्थायी लिपिकक बदलैत परिचय सेहो पूर्वक अध्यायक संग सावधानीपूर्वक मिलाएबाक माँग करैत अछि। एहि सूक्ष्म भेदकेँ बिनु परीक्षण स्वाभाविक जादुई यथार्थ कहि देब समीक्षा नहि।

एहि खण्डक अन्त न्यायिक विजय नहि, एक कठिन नव संकटक निर्माण अछि। घर-घरक दस्तकमे अनुमतिसँ पढ़ल बयान, बन्द दुआर लेल खाली दीप, मुरारीक बचाओल अतिरिक्त प्रति आ भिखारी लालक लिखल पछतावा समाजक नामक रक्षा करैत अछि। मुदा चन्द्रपालक दल झूठा पीड़ित आ गलत कागच सही नामक संग मिलाओल निर्णय करैत अछि। अतः अगिला अध्यायक बुनियादी प्रश्न अब ई नहि जे दबाओल सत्य बाहर आबि सकैत अछि कि नहि; प्रश्न ई अछि जे बाहर आएल अनेक आवाजमे आरोप, अनुभव, स्रोत आ प्रलोभनक भेद केना चिन्हल जाए। एहि असमाप्त स्थितिमे कथाक विश्वसनीय दीर्घता बनैत अछि।

प्रकरण २४९ । मूल अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

घर-दस्तकसँ कागचक परीक्षण धरि कथात्मक मोड़

पछिला अध्यायक अन्तमे गलत आरोप आ बनाओल बयान सत्यक सूचीमे मिलाबयबाक षड्यन्त्र रचल गेल छल। अध्याय १४८ ओही चेतावनीकेँ वास्तविक दृश्य बनबैत अछि। चन्ना ठूँठ लग बैसल बच्चा सभ अब केवल नाम लिखनिहार नहि, कथनक स्रोत आ कागचक देह जाँचनिहार भऽ जाइत छथि। घटनाक क्रममे विरोधी पक्षक चालसँ अभियानक पद्धति बदलैत अछि; ई केवल उपदेशात्मक अध्याय नहि, उत्पन्न संकटसँ बदलल सामुदायिक व्यवहारक अध्याय अछि। कथावाचक संवेदनाकेँ परखनाइ सँ अलग नहि करैत, मुदा जाँचक प्रत्येक उपायक सीमा खुलल राखैत छथि।

भोला मण्डल नामक आवरण आ भीखन साहक स्वीकार

सबेरक पहिल आगन्तुक अपना नाम भोला मण्डल कहैत अछि। पुरान गमछा, गठरी आ काँपैत आवाज ओकर पीड़ित-भूमिकाक बाहरी सामग्री अछि। माटिक गन्ध, पहिल तारीखक दिनक घरेलू स्मृति आ फाइलक मोड़सँ पूछल प्रश्न पर ओकर कथा डगमगाए लगैत अछि। अन्तमे ओ भीखन साह रूपमे अपन परिचय आ राघवक लोकक कहने दू सय रुपैयाक लालच स्वीकार करैत अछि। एहि कथनसँ कथा झूठक सामाजिक उत्पादन देखबैत अछि: नकली कथावाचक स्वयं निर्धन अछि, मुदा ओकर निर्धनता बनाओल आरोपक परिणामकेँ निरस्त नहि करैत।

दु:खक टूटल लय आ कथनक अतिसरलता

भोला कहलाइत व्यक्तिक जवाब सहज, तैयार आ सामान्य अछि; जगमायक वाक्यक बीच लम्बा विराम अछि। लेखक एहि लय-भेदसँ दुनू व्यक्तिक स्थिति नाटकीय करैत छथि। मुदा आलोचनामे ई भेद सार्वभौमिक कसौटी नहि बनि सकैत: साँच कहनिहार सेहो धैर्यसँ स्पष्ट बाजि सकैत अछि, आ झूठ बाजनिहार सहजहि काँपि सकैत अछि। कथावस्तुमे आवाजक लय कागचक मोड़, अभिलेख-संख्या, घरेलू विवरण आ अलग पूछताछक संग पढ़ल गेल अछि; एही संयुक्त रचनासँ असल तनाव उत्पन्न होइत अछि। अकेला भाव-मुद्रा दोष-निर्णयक स्थायी आधार नहि अछि।

कागचक देह : नब मोड़ आ बनाओल पुरानपन

देविका कागचक मोड़, धूलिक परत आ स्याहीक चमक देखैत छथि। झूठा पन्ना पुरान देखय लेल सजाओल अछि, मुदा ओकर नब मोड़ आ ताजा नील रंग असङ्गत लगैत अछि। एहि दृश्यसँ उपन्यास अभिलेखकेँ अमूर्त तथ्य नहि, हाथमे छुबय योग्य वस्तु बनबैत अछि। जखन फाइलकेँ शरीर-जेकाँ पढ़ल जाइत अछि, तखन पात्र सभ निरीक्षणक अनुभव बाँटि सकैत छथि। तथापि केवल दृश्य-चिह्नसँ कागचक तिथि सुनिश्चित नहि भेल; पाठ सावधानीक कारण दैत अछि, प्रयोगशालाक पुष्टि नहि।

जगमायाक रसीद आ 'हरिमोहन/मोहन'क दू नाम

दोसर आगन्तुक जगमाया छथि। ओ हरिमोहन झाक रसीद लैत छथि, मुदा घरक भीतर पतिक नाम 'मोहन' छल—ई छोट सम्बन्धात्मक सूचना कानूनी अभिलेख आ घरेलू भाषाक बीच अन्तर देखबैत अछि। दू पूड़ी, अचार आ दवाइक डिब्बाक स्मरण अदालती यात्राकेँ परिवारक दिनचर्यामे उतारि दैत अछि। रसीदक तेल-दाग आ अभिलेख-संख्याक मिलान कथाकेँ खोजक दिशा दैत अछि; लिपिक मुख्य फाइलक गायब किनारसँ सम्भावित सम्बन्ध देखैत अछि। मूल रसीदक सम्पूर्ण प्रमाण-निर्णय तत्काल नहि होइत, तकर सुरक्षित प्रतिलिपिक व्यवस्था शुरू होइत अछि।

जगमायाक मूल प्रति पर स्वामित्व

राति अन्तमे जगमाया अपन रसीद पहरुआ सभक लग छोड़य चाहैत छथि। मीरा मूल रसीद हुनकहि हाथमे राखि प्रतिलिपि बनाबय चाहैत छथि। एहि क्षुद्र जेकाँ लगैत निर्णयसँ स्मृति बचाबनिहार दल नब अभिलेखक मालिक बनबासँ बँचैत अछि। मूल वस्तु आ ओकर प्रतीकात्मक गरिमा परिवार लग रहबाक अधिकार पबैत अछि, जबकि सामुदायिक जाँचक लेल प्रति उपलब्ध होइत अछि। एहि ठाम कथावाचक देखबैत छथि जे विश्वासक अर्थ सबूत छीनि लेब नहि, सीमित स्वीकृति पर सम्बन्ध बनब अछि।

तीन युवकक एके लिखाइ : सामूहिक निर्माणक संकेत

दोपहर बाद तीन युवक अलग-अलग कथा लैत छथि, मुदा लिखाइ एकहि हाथक अछि आ अनेक वाक्य पुनरावृत्त होइत अछि। हुनका सभकेँ अलग बैसा कऽ घरक दिशा, पिता-स्वर आ कागच राखबाक ठामक विषयमे प्रश्न कएल जाइत अछि। प्रश्नक प्रभाव झूठक सम्भावित स्रोतकेँ समूहक सामूहिक अभ्यासमे देखब अछि। एक बालक एक युवककेँ पिछली राति राघवक ओसार पर देखबाक बात कहैत अछि; मीरा तुरन्त बालककेँ भीड़सँ अलग सुरक्षित करैत छथि। स्रोत पहिचान आ स्रोतक रक्षा एतय एकहि घटनामे जुड़ैत अछि।

स्वीकृत, अधूरा आ सन्देहास्पद : अभिलेखक तीन तह

साँझ धरि कागच तीन ढेरीमे बँटैत अछि—स्वीकृत कथन, अधूरा कथन आ मिलावट-सन्देह। ई वर्गीकरण कथाक नब संगठनात्मक युक्ति अछि। पहिने नाम सुनि रजिस्टरमे लिखब प्रधान छल; आब कथाक भीतर सत्य दाबि देब अथवा अतिशीघ्र स्वीकार कऽ लेब दूनू जोखिम बनि उठल अछि। 'मिलावट-सन्देह' नाम देब महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एहि पन्ना सभकेँ अन्तिम झूठ घोषित कऽ नहि फेकल गेल। प्रत्येक पन्ना आगामी सम्बन्ध-जाँचक लेल सुरक्षित अछि।

मुरारीक खरोंच : अपराध आ प्रतिरोधक धूसर सीमा

फोटोकॉपीवाला मुरारी स्वीकार करैत अछि जे दबावमे तीनटा झूठा प्रति बनौलक, मुदा प्रत्येकमे छोट खरोंच छोड़ने छल। एहि चरित्रमे अपराधक स्वीकार आ पकड़ा जाएबाक दबी इच्छा एक संग देखाइत अछि। कथावाचक ओकरा निर्दोष नायक नहि बनबैत; मीरा अपराध अलग दर्ज करैत छथि, संकेत अलग। एही जटिलतासँ सरल

उज्जर-कारी पात्र-विभाजन टूटैत अछि। जे मनुष्य झूठक औजार रहल, ओहि औजारमे ओ अवांछित पहचानक बिन्दु सेहो छोड़ि सकैत अछि—ई बात कथामे नैतिक असुविधा रचैत अछि।

मिलावट-सन्देहक बक्सा : अगिला जाल-खोजक द्वार

रातिमे सन्देहास्पद कागच अलग बक्सामे राखल जाइत अछि। भौतिक बक्सा कथात्मक मध्यवर्ती वस्तु बनैत अछि: झूठ फेकल नहि गेल, मुदा सत्यक संग मिलल सेहो नहि। एहि एक ठाम पर स्रोत, सन्देह, बयान आ विरोधी पक्षक योजना जमा होइत अछि। बक्साक उपस्थितिसँ अगिला अध्याय 'जालक नक्शा'क रूपमे खुलबाक परिस्थिति बनैत अछि। एकर चिह्न राजनीतिक नारा नहि, परीक्षणक अधूरा काज अछि।

बूढ़बा भूतक छाह आ निर्णयक स्थगन

ठूँठ लग उठल उज्जर धुँआ वा कारी छाहक अर्थ पर अलग-अलग देखनिहार अलग बात करैत छथि। आरुणि 'अदृश्य संकेत'क उपस्थितिक उल्लेख करैत निर्णय स्थगित रखैत छथि। जादुई यथार्थक ई क्षण कथानकक चमत्कारी तहकेँ बचबैतहुँ प्रमाणक अन्तिम शब्द नहि बनैत। अलौकिक इशारा पात्रक भय आ स्मृतिक रूपक रूपेँ कार्य करैत अछि; कागचक तीन ढेर वास्तविक जाँचक अगला चरण सूचित करैत अछि। प्रतीक आ संस्थागत प्रक्रिया बीचक ई दूरी समीक्षा लेल निर्णायक अछि।

प्रकरण २५० | मूल अध्याय १४९ — जालक नक्शा

एकल छलसँ बहुकेन्द्रीय षड्यन्त्र धरि

अध्याय १४८मे मिलावट करबाक कोशिश व्यक्ति आ कागचक स्तरपर देखायल छल; अध्याय १४९ ओ प्रयासकेँ अनेक ठामक बीचक सम्बन्ध बनाकऽ पढ़ैत अछि। लाल धागासँ बान्हल बक्सा, नकली कागचक मोड़, मुरारीक खरोंच आ ओसारक धुआँ—सभ मिलि जालक रेखा बनैत अछि। कथानकक केन्द्र आब 'के झूठ बजलक'सँ 'कागच कतयसँ चलल' दिस सरकैत अछि। ई परिवर्तन सामाजिक अपराधक एकटा पदानुक्रम नहि, आवागमनक परस्पर निर्भर व्यवस्था देखबैत अछि।

दू निर्माणस्थल : कागचक मोड़ आ कोनाक चिन्ह

भीखनक पन्ना आ तीन युवकक प्रतिलिपि मिलौलापर भिन्न बनाबटक चिन्ह भेटैत अछि। किछु कागच पर समान मोड़ आ कोनाक कटनाइ अछि, किछु पर अलग खरोंच। एतयसँ बच्चा सभकेँ बुझाइत अछि जे झूठ एक्के ठाम नहि गढ़ल गेल। एहि बारीक भौतिक भेदसँ उपन्यास 'जाल' शब्दकेँ केवल वैश्विक रूपक रहय नहि दैत। जालक किनारा पर कागचक कारीगरीक स्थानीय ठाम देखाइत अछि। ताहू पर सटीक निर्माण-कक्ष एखन जाँचबाक शेष अछि।

अगरबत्ती आ कार्यालयक गन्ध : संवेदी नक्शा

देविका किछु पन्ना पर अगरबत्तीक सुगन्ध देखैत छथि। लिपिक कहैत अछि जे राघवक ओसार पर साँझक समय एहन धुआँ उठैत अछि। गन्ध एहि ठाम सम्भावित आवागमनक संकेत बनैत अछि; दृश्य-अवलोकनमे नहि भेटल सम्बन्ध नाकक स्मृतिसँ जागैत अछि। मुदा एक गन्ध केवल एक ओसारक विशिष्ट पहिचान नहि। कथावाचक एकरा अन्य मिलानक संग रखैत छथि; आलोचनामे एही सहअस्तित्व देखब जरूरी अछि, ताकि जादुई संवेदी कौशलकेँ अपरिवर्तनीय भौतिक निश्चय नहि मानल जाए।

जगमायाक थैली : प्रतिकथाक पारिवारिक प्रमाण

जगमाया हरिमोहनक दवाइक पर्ची, मनीआर्डरक आधा टुकड़ा आ पीयर फोटो अनैत छथि। नकली बयानक अभ्यासबला कागचक समकक्ष ई वस्तु सभ एक परिवारक पुरान जीवन-सङ्गति देखबैत अछि। फोटोमे बरामदाक बैठकी, गमछाक मिलान आ रसीदक तेल-दाग बीच सम्बन्ध कथाक दावाकेँ घनत्व दैत अछि। एही दृश्यसँ महिला केवल पीड़ितक परिचय नहि, सह-अन्वेषक बनैत छथि। हुनकर निजी थैली जालक सार्वजनिक नक्शा पर महत्त्वपूर्ण किनारा जोड़ैत अछि।

तीन गोला : राघव, मुरारी आ रेकर्ड-घर

ठूँठक छाह तर कोयलासँ तीन गोला खिंचल जाइत अछि—राघवक ओसार, मुरारीक दोकान आ अदालतक रेकर्ड-घर। रेखा पर 'धुआँ', 'खरोंच', 'चाबी', 'नकली मोहर' आ 'भाड़ाक गवाही' लिखल जाइत अछि। ई दृश्य उपन्यासक दृष्टिगत शिल्पक उदाहरण अछि: पाठक फैलल वृत्तान्तकेँ एकहि माटिक नक्शापर देखैत अछि। मुदा गोला अपराध-निर्णय नहि, प्रारम्भिक सम्बन्ध-सूत्र अछि। नक्शामे दोसर ठामबला जानकारी जुड़ैत-जुड़ैत ओकर आकार बदलैत अछि।

कैलाश प्रसाद : 'लिपिक'सँ नामधारी गवाह

लिपिक अपन नाम कैलाश प्रसाद कहैत अछि आ किछु फाइल अस्थायी रूपेँ हटाएबाक व्यवहार स्वीकार करैत अछि। एहि नामोल्लेखसँ एक पद-चिह्नित सामान्य पात्र व्यक्तिगत उत्तरदायित्वक कथामे प्रवेश करैत अछि। ओकर भूमिका दोषक स्वतः सम्पूर्ण स्वीकार नहि; ओ अपन नौकरीक भय आ दर्ज कएल कार्रवाईक सीमा सहित बजैत अछि। नाम लिखनाइ एतय आत्मसमर्पण आ आरम्भिक विश्वास, दुनूक सम्मिश्रण अछि। गामक बच्चा सभकेँ एक नब सहायक भेटैत अछि, मुदा ओकर पुरान मौनक हिसाब बन्द नहि होइत।

लकड़ीक पटरा तर दबायल फाइल

कैलाशक स्मृतिसँ रेकर्ड-घरक एक ढीला पटरा उठाओल जाइत अछि, जाहि नीचाँ तीन पातर फाइल, रसीद-बहीक दू पन्ना आ अधूरा सूचीपत्र भेटैत अछि। आश्रमक पुरान मोहर आ अदालतक संख्या एकही कागचपर देखाइ पड़ैत अछि। ई खोज सामान्य षड्यन्त्र-संकेतसँ अधिक ठोस कथात्मक उपलब्धि अछि: भौतिक ठाम, वस्तु आ संलग्न चिह्न भेटैत अछि। तथापि 'मोहर' उपस्थित भेला मात्रसँ ओकर उपयोगक आदेश देनिहार व्यक्ति निश्चित नहि भऽ जाइत; नक्शा केन्द्रीय शङ्काकेँ तेज करैत अछि।

भिखारी लालक चाबी : निष्क्रिय मध्यस्थताक प्रश्न

भिखारी लाल कहैत अछि जे कागच बाहर जायत तँ चाबी सेहो उत्तरदायी अछि। ओ चाबी घुमौनिहार कर्मचारीक रूपमे अपन पुरान सीमित भूमिका देखबैत अछि। कैलाश आ भिखारी लालक संवादमे 'देखल नहि' बनाम 'तोर चाबी ओतय घुमल'क तनाव अछि। एहि वार्ता सँ कथावस्तु नायक-खलनायकक सीधा रेखा छोड़ि प्रशासनक छोट पदसभक नैतिक जटिलता लिखैत अछि। उत्तरदायित्वक विस्तार बिनु असल आदेशदाता तक पहुँचना सम्भव नहि, मुदा छोट पद पर सम्पूर्ण दोष लादब सेहो अनुचित होएत।

भीखनक टूटल कथन आ मुरारीक सूक्ष्म खरोंच

नकली भोला बनि आयल भीखनक बादक वास्तविक स्वीकार कँपैत आवाजमे निकलैत अछि; मुरारी अपन छोड़ेने चिन्हक पद्धति देखबैत अछि। ई दुनू पुनःप्रवेश कथानकक अतीतकेँ नब सूचना द्वारा संशोधित करैत अछि। पहिने झूठक साधन जेकाँ चिन्हल गेल लोकसभक कथन आब जालक मार्ग बतबैत अछि। एही नवीनीकरणसँ दीर्घ कथा मे पात्रक स्थिति स्थिर नहि रहैत। तथापि कँपैत बोलब आ खरोंचक भावात्मक अर्थक संग वास्तविक प्रति-मिलान जारी रहबाक चाही।

नक्शाक विस्तार आ ठूँठक छाहक छोट पड़ब

साँझ धरि माटिक नक्शा एतेक पसरैत अछि जे ठूँठक छाह छोट पड़ि जाइत अछि। ई भौतिक दृश्य कथाक पैमाना बदलबाक रूपक अछि: स्थानीय गाछीक स्मृति संस्थागत आ आर्थिक ठाम धरि फैलल अछि। सत्यव्रत अपन शीर्षक फेर-फेर बदलि अन्ततः प्रथम प्रतिलिपि नाम रखैत छथि, जाहिसँ जाँचक अधिकार सामुदायिक हातमे रहैत अछि। 'प्रथम' विशेषण मुख्य अछि; कथालेखक स्वयं नक्शाकेँ संशोधनशील कहैत अछि।

अगिला प्रवेश : मोहरक रबरसँ हत्था धरि

राघवक भय बढ़ैत अछि जे जुलूसक नाम-पाठ आब कागचक रूपमे ओकर दुआर पहुँचत। आब कागच बनावनिहार ठामक संग मुहरक भौतिक इतिहास तकबाक आवश्यकता अछि। एकर कारणे अगिला अध्याय 'मुहरक छाया' स्थापित होइत अछि। जालक नक्शा पर्याप्त अन्त नहि, खोजक अगिला प्रश्न उत्पन्न करनिहार शिल्प अछि—जे अधिकारक मोहर चलैत छल, ओ मोहरक काठ, रबर आ हाथक यात्रा कतऽ भेल? एही असमाप्त रेखासँ घटनात्मक तात्कालिकता बनैत अछि।

प्रकरण २५१ | मूल अध्याय १५० — मुहरक छाया

गुम रबर आ बचल हत्थाक वस्तु-नाट्य

जालक नक्शापर आश्रम, ओसार, अदालत आ दफ्तरक रेखा बनलाक बाद कथा एक छोट वस्तु दिस ध्यान केन्द्रित करैत अछि—मोहर। रबर मेटा जाए, मुदा काठक हत्था रहि जाए, ई कथन सामग्रीक टिकाउपन आ अधिकारक दीर्घ प्रभावकेँ संग जोड़ैत अछि। अध्यायमे मोहर स्वयं नहि बजैत; ओकर पुरान उपयोगक स्मृति, रद्दी-

विक्रेताक कथन आ परिवारक कागच ओकरा अर्थ दैत अछि। ठोस अवशेषक माध्यमसँ उपन्यास विशाल जालकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि।

नक्शा सँ आश्रमक रद्दी-दुकान धरि जांच

आश्रमक दान-पुस्तिका कतय गेल, ई प्रश्नक उत्तर खोजैत मीरा, अनन्या, भिखारी लाल आ मुरारी छेदीक रद्दी-दोकान दिस जाइत छथि। यात्रा छोट दूरीक अछि, मुदा सामाजिक रूपसँ निर्णायक—जकरा सभ कागच नष्ट करनिहार निम्न श्रम बुझल जाइत, ओकरा आब स्मृतिक सम्भावित पहरुआ बनाओल जाइत अछि। छेदीक बयानसँ लाल सूत, कागचक बोरा आ भारी धातु-टुकड़ाक आवागमनक कथा खुलैत अछि। एतय संस्थागत इतिहासक एक हिस्साक साक्षी बाहरी किनारक व्यक्ति बनैत अछि।

नागपंचमीक मौसम : तारीखक वैकल्पिक स्मृति

रद्दी-कागच चुननिहार छेदी सटीक तारीख नहि, नागपंचमीक आसपासक मौसम मोन राखैत अछि। पुरान अदालत-मोहर खोयबाक सूचना ओही अवधिसँ मिलबाक सम्भावना देखल जाइत अछि। घटना लोक-स्मृति आ कार्यालयक कैलेंडरक दुइ पृथक समय-पद्धति सामने अनैत अछि। कथावाचक सटीक मिलान घोषित नहि करैत; 'नजदीक आ गेल'क संकेत दैत अछि। एहि अर्धनिश्चित काल-बोधमे सावधानी आवश्यक अछि, कारण लोक-ऋतु मार्ग देखबैत अछि, अन्तिम तिथि-प्रमाण नहि।

'सिक्का' नामक घुमन्तू धातु-कीनार

छेदी भारी धातु-टुकड़ा एक घुमन्तू खरीदारकेँ बेचबाक बात कहैत अछि, जे दरभंगाक बजार दिस जाइत छल आ 'सिक्का' नामसँ परिचित छल। एहि उल्लेखसँ मोहरक सम्भावित भौतिक यात्रा कागचक सीमा छोड़ि कबाड़क आर्थिक परिपथमे प्रवेश करैत अछि। खरीदारक असली नाम तत्काल उपलब्ध नहि, तेँ खोज लोक-उपनामक अनिश्चितताक संग चलैत अछि। शिल्पगत लाभ ई जे एक वस्तुक इतिहास अनेक छोट व्यवसाय आ अस्थायी ठाममे वितरित अछि।

'भा... ला...' आ भानु लालक सम्भावना

भेटल अवशेषपर अधूरा अक्षर देखिकऽ भिखारी लाल पुरान मोहर-बनौनिहार भानु लालकेँ स्मरण करैत अछि। एकाधिक नामक ध्वनि-समीपता कारण भ्रम होएबाक सम्भावना अछि; कथावस्तु उपनाम आ अधूरा अक्षरक माध्यमसँ पाठककेँ निश्चित परिणामसँ रोकैत अछि। भिखारी लाल अपन नामसँ एही चिन्हक अन्तर स्पष्ट करबाक प्रयास करैत अछि। एहि प्रसंगमे अधूरा अक्षर केवल रहस्य-रोमाञ्च नहि, पहिचानक अनिश्चित स्थितिक कलात्मक रूप अछि।

दान-पुस्तिकामे 'समझौता-सेवा'क विचित्र पद

सुरमणी देवीक परिवारक प्रविष्टि पर 'समझौता-सेवा' लिखल भेटैत अछि। कैलाश प्रसाद संकेत करैत अछि जे अदालतक प्रचलित भाषा एहि प्रकार नहि। आश्रमक दान-भाषा आ मुकदमे-संलग्न घटना एकहि पन्नापर आबैत

अछि। शब्दक ई मिश्रण कथाक संस्थागत सीमा धुँधला करैत अछि: जकरा सेवा कहल गेल, ओकरा सम्भावित दावा-निरोधक प्रक्रिया रूपमे बुझबाक आवश्यकता उठैत अछि। मुदा सेवा-पद स्वयं सम्पूर्ण अपराधक स्वयंसिद्ध घोषणा नहि; अगिला बही-तुलना आवश्यक अछि।

सुरमणी देवीक खाली लोटा : प्यास आ मोहरक युति

सुरमणी देवी खबर सुनि पानि लेबाक बाट छोड़ि अपन परिवारक नाम तकबाक लेल पहुँचैत छथि। हुनका हाथक खाली लोटा पहिनेक प्यासक अध्यायसभकेँ नब दस्तावेजी खोजसँ जोड़ैत अछि। खाली पात्र आ अर्ध-पठनीय मोहर एकसंग राखलासँ कथावाचक बतबैत छथि जे जमीन आ अधिकारक कागच अन्ततः पियासल देह धरि पहुँचैत अछि। पहिने जकरा भूख-प्यासक सामाजिक पहरा कहल गेल, एखन ओ कागचक शृंखलामे जीवित मनुष्यक पहचान बनैत अछि।

दस्तावेजक पाछाँ आदमी खोजबाक संक्रमण

मोहरक हत्था आ बहीक चिह्न भेटलाक बाद केवल वस्तुक तुलना पर्याप्त नहि रहैत। ककर हथेली हत्था पकड़ैत छल, कोन दफ्तर ई मोहर पहुँचैत छल, आ कोन आश्रम बही रखैत छल—ई प्रश्न उभरैत अछि। कथावाचक वस्तु-कथा सँ मानव-पात्रक प्रवेश लेल मंच तैयार करैत छथि। अगिला अध्यायक 'मुहर चलौनिहार हाथ' शीर्षक एही परिवर्तनक संकेत अछि: पदार्थक स्मृति अपन वाहकक नाम माँगैत अछि।

छेदी आ मुरारी : 'रद्दी'क अर्थक उलटब

एक रद्दी-विक्रेता पुरान कागचक आवागमन बतबैत अछि, दोसर प्रति बनौनिहार मुरारी अपन खरोंचसँ झूठक चिन्ह दैत अछि। दुनू पात्र न्यायालयक नियमित अधिकारी नहि छथि, मुदा न्यायिक कागचक जीवनीमे हुनकर छोट व्यवसाय आवश्यक अछि। उपन्यास सामाजिक किनारक श्रमकेँ कथाक स्रोत बनबैत अछि। तथापि दुनू ब्यक्तिक पुरान आर्थिक हित रहल अछि; किछु कहि देलासँ हुनकर कथन स्वतः निर्दोष नहि भऽ जाइत।

मोहरक गोलाई आ बन्द निर्णयक छवि

मोहरक गोल घेरा अर्जीक भीतर 'सत्यापित' वा 'अस्वीकृत' लिखबाक शक्ति रखैत अछि। गोलाई केवल मुद्रांकनक रूप नहि, सामाजिक सीमांकनक प्रतिरूप बनैत अछि। कबड्डीक रेखामे नाम सुनि पार होएबाक सम्भावना छल; मोहरक वृत्तमे बाहर रहि गेल नाम प्रशासनिक शब्दसँ वञ्चित भऽ सकैत अछि। ई रूपकीय तुलना उपन्यासक प्रारम्भिक खेल-प्रतीककेँ जाँचक नव चरणमे घुरा दैत अछि। मुदा वास्तविक मोहरक विभिन्न अर्थ अलग पन्नाक सन्दर्भसँ जाँचबाक पड़त।

छायाक अर्थ : निष्कर्ष नहि, हाथक तैयारी

अध्याय १५० मोहरक इतिहासपर उजास फेंकैत अछि, मुदा कागचपर के हस्ताक्षर देलक, कोन मौखिक निर्देश आयल आ किनकर लाभ भेल—ई प्रश्न एखन शेष अछि। एही कारण 'छाया' शीर्षक उचित अछि: वस्तुक प्रभाव

देखाइत अछि, किन्तु सम्पूर्ण कारक-शृंखला पर्दाक पाछाँ। कागचक भौतिक अवशेष अगिला मानवीय स्वीकारक प्रस्तावना बनैत अछि। एतय कथा बिना पूर्ण उत्तर देने जाँचक तनाव बचाकऽ राखैत अछि।

प्रकरण २५२ । मूल अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

भानु लालक हत्थासँ रमेशक पारिवारिक स्मृति

हत्था भेटलाक बाद रमेश मुहरिया अपन पिता भानु लालक नाम आ पुरान बोध लैत अछि। पिता ओकरा मोहर चलाबय सिखौने छलाह, मुदा मोहरक विषयमे प्रश्न नहि करबाक भय सेहो छोड़ि गेलाह। एहि पितृ-उत्तराधिकारमे व्यवसाय केवल शिल्प नहि, आत्मरक्षाक मौन बनैत अछि। रमेशक राहत आ भय एकहि देहमे उपस्थित अछि—पिताक नाम अब सार्वजनिक प्रश्नसँ जुड़ल, मुदा नब पीढ़ीक कर्तव्य सेहो खुलेल। कथा पीढ़ीगत उत्तरदायित्वकेँ अपराधक सहज हस्तान्तरण नहि मानैत; प्रश्न पूछबाक अवसर बनबैत अछि।

काठक दाना आ स्याहीक कण : अदृश्य श्रमक छाप

अनन्या हत्थाक गोलाई, आरुणि तलपर कारी स्याहीक कण, आ देविका काठक पसीनासँ घिसल दाना देखैत छथि। तीन पात्रक सूक्ष्म अवलोकन अलग-अलग इन्द्रियगत दृष्टि प्रदान करैत अछि। वस्तुक शरीर अनेक पुरान हाथक सम्भावना रखैत अछि, मुदा कोन हाथ कतय लागल, ई तुलना बिनु निश्चित नहि। एही अवशेष-वर्णनसँ अपराधक अमूर्त रूपक उपयोग-इतिहासक शोध-वस्तु बनैत अछि। मोहरक रबर हटि गेलाक बादो काठक स्मृति रहबाक विचार उपन्यासक वस्तु-कथनक केन्द्र अछि।

भिखारी लालक पुरान वाक्य 'हम बस पहुँचा देलहुँ'

भिखारी लाल स्वीकार करैत अछि जे मोहर लागल कागच बिनु पढ़ने पहुँचबैत छल। हुनका लग नौकरीक छोट काम छल; मुदा जकरा ओ ढोइत छल, से ककरो घर उजाड़बाक पत्र भऽ सकैत छल। ओ अपन पूर्वक निश्चिन्तता पर प्रश्न उठबैत अछि। एहि दृश्यमे कार्यालयक पदक्रमक छोट कर्मचारी दूषित प्रणालीक सहायक जेकाँ उभरैत अछि। तथापि ओकर पश्चात्तापसँ ऊपरक आदेशक कर्ता स्वतः चिन्हल नहि पड़ैत; व्यक्तिगत भूमिका आ संरचनागत जालक खोज दुनू संग चलैत अछि।

हरिचरणक अनुपस्थिति आ आश्रमक तयार जवाब

हरिचरणक कठोर सन्देश पहुँचि चुकल अछि, मुदा ओ स्वयं पहिने नहि अबैत। आश्रमक दू नवयुवक दान-पुस्तिकाक प्रति नेने तैयार वाक्य बजैत छथि—लोककल्याण, सुविधा, सेवा। घटनामे प्रतिनिधि आ अनुपस्थित नेता बीचक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। नवयुवक अपन शिक्षित शब्द-समूहक बाहर सवालक उत्तर नहि दऽ पबैत; 'सुविधा ककर?' पूछलापर हुनकर भाषा अटकि जाइत अछि। उपन्यास राजनीतिक-धार्मिक संस्थाक छविक रक्षा लेल प्रशिक्षित मुखौटा-स्वर देखबैत अछि, सम्पूर्ण व्यक्तिगत दोष नहि।

मोहनक पत्र आ सुरमणीक लोटा

जगमाया मोहनक अधूरा पत्र लैत छथि, जाहिमे मोहर लागलाक बाद अपनहि जमीनपर पराया भऽ जेबाक अनुभव व्यक्त अछि। सुरमणी देवी ओहि पत्रक लग खाली लोटा रखैत छथि। वस्तु-योजनामे लिखित अधिकार-वञ्चना आ जलक अभाव एक रूपकीय रेखामे मिलैत अछि। ई संयोजन पछिला प्यासक प्रकरणकेँ संस्थागत जालक खोज सँ जोड़ैत अछि। पत्रक अधूरापन तकर मूल्य घटबैत नहि, मुदा हर कथनक समय आ मूल स्वरूपक पुष्टि शेष रहैत अछि।

'अ', 'च', 'र', 'आ' : कोड आ अनुमानक अन्तर

भानु लालक रजिस्टरमे चारि अक्षर भेटैत अछि। भिखारी लाल सम्भावित अर्थ सुझबैत अछि—अदालत, चन्द्रपाल, राघव आ आश्रम। बच्चा सभ चकित भऽ जाइत छथि, पर मीरा सीधा अपराध-सिद्धि नहि मानैत। ई क्षण जाँचक आत्मनियन्त्रणक कसौटी अछि। अक्षरक सम्भावित विस्तार घटनाक दिशामे उपयोगी अछि; तकरा वैकल्पिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि। कथा एहि भेदकेँ बारीक बनाकऽ पाठककेँ अगिला तिथि-मिलानक प्रतीक्षा करबैत अछि।

तीन तिथिक मिलान : खोजक बढ़ल घनत्व

अलग दल अदालतक दिन, चन्द्रपालक दफ्तरक अर्जी, राघवक ओसारक भेटघाटक तिथि मिलबैत अछि। किछु दिन मेल खाइत अछि, जाहिसँ चारि अक्षरक व्याख्या अधिक सम्भाव्य लगैत अछि। मुदा तिथि एके होएब आदेशक स्रोतक पूर्ण पहचान नहि; कथावाचक जाँचकेँ एही अपर्याप्ततासँ आगाँ बढ़बैत छथि। जखन प्रमाणक अंश बढ़ैत अछि, तखन कथानक अटकलपर टिकल नहि रहैत, अधिकाधिक ठोस क्रिया—मिलान, खोज, प्रतिलिपि—दिस बढ़ैत अछि।

रामलखन सहाय : दौड़ब नहि, सुनबाक विकल्प

कानपर पुरान कटाक निशानबला छाताधारी व्यक्तिक पहिचान रामलखन सहाय रूपमे उभरैत अछि। ओकरा खोजबाक क्रममा बच्चा सभ भागि धयबाक हिंसक दृश्य नहि बनबैत; मीरा पहिनहि सावधानी सिखौने छथि। रामलखन कहैत अछि—ओ बस कागच पहुँचाबैत छल। भिखारी लाल तुरन्त एहि बचाव-वाक्यकेँ अपन पुरान कथनसँ मिलबैत अछि। एही समानतासँ कथाक दू मध्यस्थक दर्पण बनैत अछि: एक सार्वजनिक दफ्तरक कर्मचारी, दोसर निजी जालक वाहक।

खाली कागचपर पहिने मोहर : प्रक्रिया उलटबाक दावा

रामलखन स्वीकार करैत अछि जे कतिपय समय खाली पन्ना पर पहिने मोहर लगैत, बादमे शब्द भरल जाइत। पुरान तारीखपर नव प्रति बनबाक आ दान-पुस्तिकाक संग अदालती नकल राखबाक प्रसंग सेहो उठैत अछि। ई कथन कथानकक जालकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि, मुदा रामलखनक बयान एखन आंशिक अछि। लेखक पाठककेँ साजिशक दिशा देखबैत छथि, बिना सभ भूमिका भरि देने। रामलखनक 'सभ करैत छल' वाक्य सामूहिक दोषक बचाव-भाषा सेहो भऽ सकैत अछि।

हरिचरणक सामने रामलखनक दृष्टि

हरिचरण आश्रमक अपमानक आरोप लैत पहुँचैत अछि। रामलखन ओकरा दिस जेना तकैत अछि, मीरा ओ दृष्टि 'पारस्परिक परिचयक संकेत' रूपमे लिखैत छथि। दृष्टि घटनामे नाटकीय तनाव बनबैत अछि, मुदा शाब्दिक स्वीकार वा प्रमाणित आदेश नहि। एहि एक वाक्यक माध्यमसँ उपन्यास कथावाचक आ जाँचनिहार दुनूकेँ अपनी सीमा मोन पाड़बैत अछि। मूल अध्यायक रिक्त लोटामे वर्षा-बिनु नमी भेटबाक कारण सेहो अनिश्चित दर्ज कएल जाइत अछि—दृश्य उभरैत अछि, निर्णय नहि।

काठक हत्थासँ आदेशक स्रोत धरि

अध्यायक अन्तमे मीरा हाथ आ आदेशक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। भानु लालक मोहर, रमेशक स्मृति, रामलखनक आधा बयान, हरिचरणक रक्षात्मक भाषा आ कोड-वाला पन्ना एक जालक दिशा देखबैत अछि। मुदा मोहर चलौनिहार देहक पाछाँ निर्देश देनिहार भूमिका खुलल नहि। अनन्या अगिला दिन आदेश लिखबाक सङ्कल्प करैत छथि। ई समापन अनुसन्धानक कारणात्मक क्रम सुरक्षित रखैत अछि; पाठक जतेक जानकारी पबैत अछि, ओतेक नव प्रश्न सेहो पबैत अछि।

प्रकरण २५३ | मूल अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

'ऊपर' नामक अदृश्य पात्र

अध्याय १५२क केन्द्र कोनो एक अपराधीक प्रवेश नहि, 'ऊपर' कहि बचबाक प्रचलित भाषा अछि। रामलखनक पहिनेक उत्तर—हम बस कागच पहुँचबैत छलहुँ—आ अधिक ऊँच निर्देश सभक उल्लेख आदेशक स्रोतकेँ अनाम रखैत छल। मीरा ध्यान व्यक्ति पर धावा नहि, वाक्यक आवागमन पर केन्द्रित करैत छथि। एहि उपायसँ कथा पदानुक्रमकेँ भाषिक जाल बनाकऽ देखबैत अछि। 'ऊपर' एक निश्चित व्यक्ति नहि, जवाबदेही पाछाँ ठेलबाक अनेक ठामक साझा नाम बनैत अछि।

हस्ताक्षरहीन पर्ची : निर्णय पहिने, कागच बादमे

भिखारी लालक पुरान बक्सामे लाल किनारबला पर्ची सभ भेटैत अछि—फाइल रोकू, नकल देरी करू, मूल नहि भेटल लिखू। ककरो हस्ताक्षर स्पष्ट नहि। रामलखन कहैत अछि जे ई सीधा आदेश नहि, निर्णयक स्मरण मात्र छल। एहि रूपमे संस्थागत भाषा घटनाक क्रम उनटबैत अछि: पहिने बैसकीमे निर्णय, पाछाँ आधिकारिक फाइलमे तकर रूप। कथावस्तु लेल ई महत्त्वपूर्ण खोज अछि, मुदा पर्चीक लेखनकर्ता आ एकेक क्रियाक परिणामक सम्बन्ध एखन अलग सत्यापन चाहैत अछि।

महावीर पाठकक प्रवेश : मध्यस्थ लेखकक इतिहास

रामलखन महावीर पाठकक नाम लैत अछि। उपन्यासक भीतर लोक हुनका बटुकनाथक समयक शास्त्र-पाठी, आश्रमक हिसाब-सलाहकार आ चन्द्रपालक जमीन-कागचक सम्भावित लेखक रूपमे चिन्हैत अछि। एहि परिचयसँ पूर्वक दान, न्याय आ अर्थक जालमे एक एहन पात्र आबैत अछि जे पृष्ठक भाषा बनाओल सम्भव बनबैत

छल। ओ स्वयं महान खलनायकक बनावटी प्रवेश नहि, पुरान वाक्य आ पदक बीच थाकल मध्यस्थक रूपमे उपस्थित अछि।

महावीरक घरमे प्रश्न आ निजी सामग्रीक सीमा

मीरा महावीरक घर पहुँचि निजी कागच आ सार्वजनिक जीवनसँ जुड़ल प्रविष्टि अलग करबाक बात करैत छथि। महावीर पहिने प्रतिरोध करैत छथि; अन्ततः लिखित सहमति संग सीमित बही देखबय दैत छथि। खोजक उत्साहमे अधिकार बलपूर्वक छीनि लेबाक लेल कथावाचक अनुमति नहि दैत। एहि छोटे अनुशासनमे उपन्यासक नाम-पहरा अपनहि व्यवहार पर लागू होइत अछि। सम्बन्ध जतेक कठिन, निजताक सीमा ओतेक आवश्यक।

गाछीक टुकड़ा आ 'लोकहितक वाक्य'

बहीक एक प्रविष्टिमे गाछीक टुकड़ा पर प्रत्यक्ष दावा कठिन होएबाक उल्लेख अछि; धार्मिक उपयोगक स्मरण जगाबय आ पुरान नामक प्रति विलम्बित करबाक वाक्य सेहो भेटैत अछि। एहि विवरणमे चन्ना गाछीक भूमि-विवादक भाषा रचनाक प्रक्रिया दिखाइत अछि। 'लोकहित' शब्द कथा भीतर अपने सत्प्रयोजन नहि रहैत; ओ ककर पक्षमे आ कोन प्रभाव लेल इस्तेमाल भेल, ई प्रश्न बनैत अछि। बहीक पन्ना अपराधक दिशामे महत्त्वपूर्ण पाठ-चिह्न अछि, मुदा लेखक एकरा न्यायिक अन्तिम निर्णय नहि बनबैत।

सेवा-विचार बहि : एके भाषा, अलग काम

आश्रमक बहीमे झगड़ा शान्त करब, पारिवारिक मेल, दानक प्रेरणा आ साधु-सन्तक मार्गदर्शन जेकाँ पदसभ अछि। किनारक नील स्याहीक अंक भानु लालक रजिस्टरक संख्यासँ साम्य देखबैत अछि। एहि समानान्तरता सँ धार्मिक आश्वासन आ व्यावहारिक कागच-व्यवस्था बीच सम्भावित सम्बन्ध खुलैत अछि। कथावाचक 'सेवा'क शब्दार्थ पर नहि अटकैत; सेवा-कथनक पाछाँ केकर आवाज दबाओल गेल, ई प्रश्न आगाँ अनैत अछि। एतय भाषा अपन सामाजिक उपयोगसँ परखल जाइत अछि।

बही पढ़ल गेल रातिक सामूहिक स्मरण

रामलखन कहैत अछि जे एक प्रविष्टि बादमे चन्द्रपालक दफ्तरमे पढ़ल गेल, राघव सेहो उपस्थित छल। ई स्मरण बहीक शब्द आ बाहरक सभा बीच पुल बनबैत अछि। महावीरक असहज दृष्टि एहि साक्षी-संघर्षकेँ नाटकीय करैत अछि। मुदा एक रातिक उपस्थितिक उल्लेख आ हस्ताक्षरबला निर्देश अलग स्तरक तथ्य छथि। अध्यायकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि जे लोकक स्मरण, बहीक पन्ना आ तिथिक सम्बन्ध धीरे-धीरे जाँचल जाइत अछि।

'स्वेच्छा' बीचक मुख्य शब्द

महावीरक गद्दाक भीतर राखल एक पन्ना पर अदालत, दफ्तर, ओसार आ आश्रमक बीच बाण खिंचल अछि; बीचमे 'स्वेच्छा' शब्द लिखल अछि। ई वस्तु-संयोजन अध्यायक नाटकीय केन्द्र अछि। बाहरी रूपेँ स्वेच्छा सहमतिक नाम, मुदा दबाओल परिस्थिति मे सएह शब्द डरकेँ ढाँपबाक उपकरण बनि सकैत अछि। कथा पहिनेक

देह-अधिकार आ सहमतिक अध्यायसभसँ एहि पदकेँ जोड़ैत अछि। लिखल स्वेच्छा आ जीवित मनुष्यक इच्छा बीचक खाई अगिलाक खोजक हेतु बनैत अछि।

महावीरक आत्मरक्षा : लोकहितक आरम्भ, नियन्त्रित नहि रहल जाल

महावीर कहैत छथि जे पहिने गरीब लोकक मुकदमा शान्त करबाक उद्देश्य छल, बादमे अनेक हाथ जुड़ि गेल आ ओ रोकि नहि सकलाह। सुरमणी देवी एहि आत्मरक्षापर प्रश्न करैत छथि—जे रोकि नहि सकल, तकर नाम किएक बचल? एहिठाम कथावस्तु सदाशयता कथनसँ परिणामक हिसाब मागैत अछि। महावीरक थकान सहानुभूति उत्पन्न करैत अछि, मुदा एकरा दोषमुक्तिक प्रमाण नहि बनाओल गेल अछि। पात्रक भीतर स्वीकार आ बचाव सँग-सँग चलैत अछि।

मूल प्रति घरमे, प्रतिलिपि लोक-पाठ लेल

महावीरक बहीक मूल पत्र हुनकर घरमे सीमित रूपसँ सुरक्षित रहैत अछि आ सार्वजनिक अध्ययन लेल प्रतिलिपि बनैत अछि। एही व्यवहारसँ मीरा पुनः सिद्ध करैत छथि जे अनुचित नियन्त्रणक जाँच करैत अभियान अपने बलपूर्वक मूल वस्तु छीनि नहि सकैत। पाठक लेल ई नैतिक आदर्श मात्र नहि, कथा भीतर नब स्रोत प्राप्त करबाक व्यावहारिक शर्त अछि। जँ स्रोतक मालिक पर भरोस नहि रहत, नव सामग्रीक आवागमन बन्द भऽ सकैत अछि।

आदेशक भाषा एक प्रकारक कथावाचक

'फाइल रोकू', 'लोकहित', 'सेवा', 'ऊपरक सहमति', 'स्वेच्छा'—ई पदसभ घटनाक अलग क्रिया स्वयं नहि करैत, मुदा पात्रक निर्णय-परिस्थिति रचैत अछि। उपन्यास एहि अनाम निर्देशकेँ छुपल कथावाचक-जेकाँ देखबैत अछि: ओ जीवनक कथा कागच पर ककर रूपमे लिखाएत, तय करय चाहैत अछि। समुदाय ओ वाक्यसभकेँ पुनः पढ़ि ओकर बनावटक इतिहास लिखबाक प्रयास करैत अछि। भाषिक अधिकारक एहि संघर्षसँ उपन्यासक विशाल अभिलेखी आख्यानमे नव गहराइ आबैत अछि।

प्रकरण २५४ | मूल अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

खाली खूँटी : अनुपस्थित नामक दृश्य-विन्यास

महावीरक बहीमे जतेक नामक ठाम संकेत अछि, अनन्या ठूँठ लग ततेक खाली खूँटी गाड़ैत छथि। 'दक्षिणक किसान', 'नदी पारक विधवा' जेकाँ परिचय पर्चीपर टाँगल जाइत अछि। ई दृश्य अध्यायक शिल्पगत केन्द्र अछि: नामक अभावकेँ मेटाकऽ बनावटी नाम रखबाक बदला रिक्ति सार्वजनिक देखनाइ बनैत अछि। पहरुआ अपन अज्ञान स्वीकार करैत अछि। खाली खूँटी लोककेँ नब कथा बनाबय नहि, गुम व्यक्ति खोजबाक प्रेरणा दैत अछि।

नकल-रजिस्टरक बचल क्रमांक

फाइलक बाहरी पन्ना बदलल जा सकैत अछि, मुदा भीतरक नकल-रजिस्टरमे पुरान अंक रहि सकैत अछि। भिखारी लाल एहि छोटे अभिलेखी अवशेषसँ खोजक दिशा दैत अछि। कथावाचक 'क्रमांकक हड्डी'क बिम्ब अनैत अछि, जाहिसँ संख्या जड़ प्रशासनिक चिह्नसँ मनुष्यक गुम देहक शेष ठाँव बनि उठैत अछि। मुदा क्रमांक अपने मनुष्यक सम्पूर्ण जीवनी नहि। ओ केवल पुरान नाम धरि पहुँचबाक बाट खोलैत अछि।

रामपरीक्षित पासवान आ देवनक स्मरण

बूढ़ रामपरीक्षित पासवान अपन काका देवन पासवानक नामक स्मरण लैत छथि। सुनल बातकेँ बच्चा सभ पहिल कोठरीमे रखैत अछि, दोसर कोठरी 'प्रमाण प्रतीक्षा' नामसँ खुजल राखैत अछि। एहि व्यवस्था सँ मुखर साक्षीक आत्मीय बल आ अभिलेखक पुष्टि बीच बराबर जगह भेटैत अछि। व्यक्ति प्रतीक्षामे अछि, मुदा रिक्ति मिटाओल नहि गेल। कथावाचक एना शोकक गहनताकेँ जाँचक धीरजसँ जोड़ैत अछि।

फूलमती, फुलकुमारी, फूलकली : नामक धुंधलापन

पुरान नकलक अक्षरमे फूलमती कि फुलकुमारी स्पष्ट नहि; दोसर संकेतपर फूलकली देवीक नाम उभरैत अछि। लेखक समान ध्वनिबला स्त्री-नाम सभक बीच भ्रमक जोखिम देखबैत छथि। गलत पढ़ल अक्षर ककरो असल जीवनक स्थान पर दोसर जीवन धरि सकैत अछि। मीरा परिवारक खोज, पुरान दाई, नाविक आ गामक स्मृति जुड़बाक आग्रह करैत छथि। एही कारण अध्याय केवल 'नाम भेटल'क उत्सव नहि, नामकेँ व्यक्तिक परिवारक संग सुनिश्चित करबाक श्रम अछि।

कमलाक पोटली आ नानीक स्वेच्छाक प्रश्न

नदीक पारक विधवाक कथासँ कमला अपन नानीक पोटली आ माटिक डल्ला लैत अछि। सुरमणी देवी प्रश्न करैत छथि—भूखल, डरायल वा अकेली विधवासँ लेल गेल अँगूठा 'अपन इच्छा' कहि केना मानल जाए? ई वाक्य बहीक 'स्वेच्छा' शब्दकेँ देहगत परिस्थिति लौटबैत अछि। कागचपर सरस सहमतिक भाषा आ मानवक असमान शक्ति बीचक अन्तर कथावस्तुक प्रमुख तनाव होइत अछि। तथापि कोन पन्नापर ककर हस्ताक्षर अछि, तकर खोज अभी जारी अछि।

'ब' अक्षर : बटुकनाथक नामक पूर्वाभास

भानु लालक कोड-रजिस्टरमे लाल धब्बाक भीतर 'ब' अक्षर भेटैत अछि। देविका बटुकनाथक सम्भावना कहैत छथि, मुदा ई अक्षर अपने तकर पूरा नाम नहि। महावीर पाठक विरोध करैत छथि जे बाबा पर अनुमान नहि लादल जाए। एहि प्रतिरोधसँ अन्तर्निहित सत्ता-सम्बन्धक तनाव बढ़ैत अछि। लेखक पाठककेँ संकेतक मोह दैतहुँ आरोपीक नामक पुष्टि आगाँक वचन-परीक्षापर छोड़ैत छथि। अक्षर एहि ठाम रहस्यक तकनीक अछि, निर्णय-पत्र नहि।

'बाबाक वचन बादमे पढ़ब' : स्थगित आदेशक रहस्य

प्रतिलिपिक एक किनार पर लिखल पाँति ‘बाबाक वचन बादमे पढ़ब’ भेटैत अछि। एहि छोटे निर्देशसँ पात्र सभकेँ बुझाइत अछि जे कागचपर लिखल आदेशसँ बाहर मौखिक आदेशक एक दोसर परत अछि। शब्द 'बाबा'क धार्मिक, पारिवारिक आ संस्थागत अनेक अर्थ भऽ सकैत अछि। कथा एहि बहुअर्थकताकेँ बनाए रखैत अगिला अध्यायक केन्द्र तैयार करैत अछि। कोनो निश्चित उद्धृत आदेश एखन नाम-बद्ध नहि, तेँ समीक्षा एहि वाक्यक भूमिका स्रोतक द्वार रूपमे देखैत अछि।

मोहनक पत्र आ दबायल निर्णयक शृंखला

जगमाया मोहनक पत्र सँ गाछीक नाम पर बाजनिहार सभक गुम नामक पाँति देखबैत छथि। बहीक किनार आ मोहनक पत्र बीच एक विषयगत सम्बन्ध उभरैत अछि—मौखिक निर्देश देनिहारक नाम लिखल नहि। ई परस्पर सन्दर्भ सम्भावना बढ़बैत अछि, मुदा प्रत्येक पन्नाक लेखकत्व आ तिथि अलग निर्धारित करब बाकी अछि। लेखक एहि जोड़ीसँ गवाहक अनुभवकेँ संस्थागत लेखनक गुम ठाम पर रखैत छथि।

दू पीढ़ीक माटि आ खाली ठूँठक स्थान

रामपरीक्षित देवनक नामक स्मरण लैत छथि; कमला नानीक माटि लैत अछि। ठूँठक जड़ि लग लाठी आ माटिक डल्ला भेटैत अछि। एही दृश्यमें अलग सामाजिक जीवनक पीढ़ीगत बिछोह एक लोक-ठाम पर एकत्र होइत अछि। चन्ना गाछी न्यायालय नहि, मुदा कागचसँ बाहर गवाहक सम्बन्धक केन्द्र बनैत अछि। जादुई जड़ि मनुष्यक वास्तविक खोजक विकल्प नहि; ओ खोजक समय-सीमा समेटबला जीवित बिम्ब अछि।

छोट सूची, विशाल शेषकार्य

साँझ धरि दक्षिणक किसान लेल देवन, विधवा लेल फूलकली, पुरान मुकदमा लेल अज्ञात, गाछीक टुकड़ा लेल बाबाक वचन आ मन्दिर-बाड़ी लग जमीन लेल खोज शेष लिखल जाइत अछि। सूचीमे 'प्रमाण प्रतीक्षा', 'प्राथमिक नाम' आ 'अन्वेषण बाकी' जेकाँ शब्द प्रमुख छथि। एहि अपूर्ण पदसभसँ कथाक सत्यनिष्ठ गति बनैत अछि। अनेक अध्यायक बादो खोज बन्द नहि भेल; उल्टे स्पष्ट अज्ञानक नक्शा बनल अछि।

दबाओल नामक स्थान पर आत्मरक्षात्मक श्रद्धा

महावीर कहैत छथि जे बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए। अनन्या पुछैत छथि—बाबा देवता छलाह वा जवाबदेह नहि रहय चाहैत छलाह? एहि टकरावमे मौखिक अधिकारक पुरान पवित्रता प्रश्नक सोझाँ आबि ठाढ़ होइत अछि। कथानक श्रद्धा बनाम अविश्वासक सरल द्वन्द्व नहि रचैत; ओ पुछैत अछि जे अनलिखल शब्दक प्रभाव अगर जमीन आ मनुष्यपर पड़ल, तकर जवाबदेही कोना चिन्हल जाए।

प्रकरण २५५ | मूल अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अलिखित श्रद्धासँ प्रश्नयोग्य वचन धरि

अध्याय १५३क अन्तमे बाबाक वचन लिखल नहि जाएबाक कथन छल। अध्याय १५४ एकर अर्थ विस्तारि देखबैत अछि। 'बाबा' लोकक भरोसक सम्बोधन अछि, मुदा ओही भरोसक आड़िमे मौखिक निर्णय चलैत रहल हो, ई सम्भावना प्रश्नक वस्तु बनैत अछि। सत्यव्रत नोट करैत छथि जे जे वचन लिखल नहि, ओकरा खोजबाक विधि अलग चाही। लेखक श्रद्धाकेँ अमूर्त खलनायक बनबैत नहि; विश्वासक अधिकार आ तकर दुरुपयोगक अन्तर दृश्य आ संवाद सँ खोलैत छथि।

महावीरक चार बही, आसन-कपड़ा आ घंटीक डोरी

महावीर पुरान घरक बचल वस्तु लैत छथि—चार बहीक प्रतिलिपि, आसनक कपड़ा आ पीतल घंटीक टूटी डोरी। एहि संग्रहमे धार्मिक वातावरणक ध्वनि, देहक बैठकी आ कार्यालयक भाषा एक संग उपस्थित होइत अछि। वस्तु सभ ककरो दोष सिद्ध करैत नहि, मुदा भिन्न तरहक स्मरणक ठाम निर्धारित करैत अछि। मीरा वस्तुकेँ पूजा अथवा अपमान नहि, अध्ययनक विषय बनबैत छथि। एहि दृष्टिसँ पाठक देखैत अछि जे सत्ता अनेक बेर विधिवत् आदेश-पत्रसँ नहि, रोजक आसन आ बैठकीक नित्य व्यवहारसँ बनैत अछि।

'ऊपरक सहमति' आ भूमिका-वाचक पद

बहीमे बाबा, ऊपर, लोकहित आ सेवा जेकाँ शब्द परस्पर मिलैत भेटैत अछि। मीरा एहि शब्दसभक एक वृत्त बनबैत छथि। वृत्त अपराधक निश्चय नहि, बोलचालक नियमित ढाँचा देखबैत अछि: जे वाक्य अधिकृत नाम नहि लैत, ओहो लोककेँ काम करबाबय सकैत अछि। हरिचरण शब्दक वृत्तसँ अपराध सिद्ध नहि होएबाक आपत्ति उठबैत अछि; अनन्या स्पष्ट करैत छथि जे निर्णय अदालतक कार्य अछि, ओ सभ भाषाक आवागमन पढ़ि रहल छथि। एहि उत्तरसँ कथाक नैतिक सीमा स्पष्ट रहैत अछि।

शारदा झाक रसोई-स्मरण

शारदा झा घरक रसोईपाछाँ रातिक बैठकी आ संकेतमे बजल कथन सभ याद करैत छथि। ओकरा सभक भाषा घरक श्रमक बीच सुनल गेल छल, अधिकारिक बैठकक कागच पर नहि। एही स्त्री-स्मरणसँ पुरान निर्णय-प्रक्रियाक एक छुपल प्रवेशद्वार खुलैत अछि। सुनब, परोसब आ भीतर-बाहर जएबाक दैनन्दिन स्थिति हुनका विशिष्ट साक्षी बनबैत अछि। तथापि स्मरणक कालिक दूरी कारण हुनकर कथन अन्य पन्नाक संग मिलान चाहैत अछि।

'बाबा' बटुकनाथक सम्बोधन छल, आदेशक लेखकत्व अलग

शारदा स्पष्ट करैत छथि जे बटुकनाथ हरिहरन केँ बाबा कहल जाइत छल। मीरा एकरा स्मरण-आधारित सम्बोधन रूपमे लिखैत छथि, मुदा प्रत्यक्ष हस्ताक्षर एखन नहि भेटबाक बात अलग दर्ज करैत छथि। एहि भेदसँ नाम-पहिचान आ विशिष्ट आदेशक कर्तृत्व अलग रहल अछि। समीक्षा लेल ई सावधानी अनिवार्य अछि, कारण दीर्घ

कथामे बटुकनाथक पुरान सार्वजनिक उपस्थिति आ पछिलका आश्रम-व्यवहारक कालक्रम अलग-अलग स्तर राखैत अछि।

भानु लालक पर्ची : तिथि बदलबाक कथन

रामलखन भानु लालसँ भेटल तेल-दागबला पुरान पर्ची देखबैत अछि, जाहिमे दान-पत्रक तारीख पहिल मासमे रखबाक मौखिक निर्देशक उल्लेख अछि। ओ कहैत अछि जे स्वयं तिथि नहि बदललक। कथानक एहि स्वीकारक भीतर अपराधक सम्भावित कार्य-शृंखला बनबैत अछि, मुदा निर्देश-प्राप्ति आ वास्तविक तिथि-परिवर्तन एके घटना नहि। कमलाक प्रश्न—तिथि बदलला सँ की बदलैत—पर आरुणि अधिकार-सम्बन्धी समयक अर्थ देखबैत अछि। समय एहि ठाम निरपेक्ष अंक नहि, देहक आवाजपर नियन्त्रण बनैत अछि।

दानक उजास आ कागचक अन्हारक सह-अस्तित्व

महावीर बटुकनाथक पोखरि-सफाई, पाठशाला आ विवाह-सहायताक कार्य याद करैत छथि। सुरमणी स्पष्ट करैत छथि जे सार्वजनिक भलाईक कामसँ ककरो कागचक अनियमितता माफ नहि होइत। एहि संवादमे चरित्र एकरेखीय भऽ नहि जाइत। संस्था वास्तवमे किछु सेवा करि सकैत अछि, आ ओही संस्था सँग विवादित पन्नाक जाल जुड़ल भऽ सकैत अछि। कथावस्तु समीक्षा सँ माँग करैत अछि जे एही असुविधाजनक सहअस्तित्वकेँ सुरक्षित राखल जाए।

'सेवा दऽ शान्त करू' : दयाक राजनीतिक प्रयोग

शारदा एक पुरान कथन याद करैत छथि—जे नाम बहुत रोअय, ओकरा सेवा दऽ शान्त करू। चाउर, दवा वा पूजा भेटलाक बाद दावा वा जमीनक कागच घुरा देल गेल कि नहि, ई अलग प्रश्न अछि। देविका आ आरुणि एही अन्तरकेँ प्रतिकार आ शमनक शब्दमे चिन्हबैत छथि। लोकहितक पवित्र व्यवहार सम्भावित मौन-व्यवस्था बनि सकैत अछि; कथावाचक एकरा बादक सेवा-खाताक जाँचसँ जोड़ि अगिला अध्यायक आवश्यकता बनबैत अछि।

आसनक कपड़ा : अधिकारक ठोस स्थान

पुरान आसनक कपड़ामे धूप, घी, पसीना आ स्याहीक गन्ध सार्थे भेटैत अछि। लेखक एहि मिश्रित गन्धसँ पूजा आ कार्यालयक प्रभाव एकहि स्थानपर उपस्थित देखबैत छथि। मीरा आसनक न अपमान करैत छथि, न धार्मिक अधिकार स्वीकार करैत; ओ जाँचबाक ठाम रूपमे राखैत छथि। ई निर्णय बतबैत अछि जे वस्तुक प्रतीकात्मक प्रभाव बहुत होएब ओकरा प्रमाणित इतिहासक विकल्प नहि बनबैत। स्थानक जीवन-वृत्तान्त जाँचक अलग कड़ी अछि।

वचन-मानचित्रक नब रचना

बच्चा सभ केन्द्रमे बाबा/बटुकनाथक स्मरणाधारित स्थान रखैत छथि; चारू दिशामे पर्ची, शारदाक रसोई-स्मरण, महावीरक बही, फूलकली आ देवनक कथा, मोहनक पत्र जेकाँ स्रोत जोड़ैत छथि। एहि मानचित्रमे व्यक्ति केवल

शीर्ष नाम नहि, अनेक पन्ना आ पीड़ितक जीवनक बीच विवादित मध्यस्थ अछि। मानचित्रक उपयोग पाठककेँ विशिष्ट कथनक स्रोत देखब अछि; ओ सबूतक पूर्ण गणना नहि। किछु रेखा स्पष्ट, किछु शेष अछि।

अगिला कड़ी : सेवाक आर्थिक विवरण

दिनक अन्तमे 'बाबा' शब्दक अर्थ बटुकनाथक स्मरणसँ जुड़ल, मुदा आदेशक अन्तिम लेखकत्व अधूरा अछि। एहि स्थितिमे कथा प्रश्न उठबैत अछि जे सेवा देबाक नाम पर ककरा की भेटल, आ तकर बदला ककर आवाज दबाओल गेल। अगिला अध्यायक 'सेवाक खाता' एही कारण विकसित होइत अछि। अनलिखल वचनक अगिला प्रमाण सम्भावित खर्च, भोजन, ऋण आ सहायता-वितरणक सूचीमे खोजल जाएत। कथानकक अनुक्रम आ स्थानीय अर्थव्यवस्था एतय एकदोसरा सँ जुड़ैत अछि।

प्रकरण २५६ | मूल अध्याय १५५ — सेवाक खाता

'वचनक बाद परिणाम' : अध्यायक लेखकीय सूत्र

अनन्या अध्यायक आरम्भमे बही पर 'वचनक बाद परिणाम' लिखैत छथि। एहि सूत्रसँ आलोचनात्मक ध्यान बटुकनाथक सम्बोधन, आसन आ मौखिक आदेशसँ हटि प्रभावित परिवारक रोजमर्रा जीवन दिस घूमैत अछि। प्रश्न केवल ई नहि रहल जे बाबा कहैत छलाह, बल्कि हुनकर आसनसँ निकसल सेवा-वाक्य ककर घरमे कोन व्यवहार बनल। कथानकक ई बदलाव राजनीतिक-सांस्कृतिक प्रसंगकेँ ठोस आर्थिक प्रविष्टि आ जीवित स्मरणक समीप लबैत अछि।

महावीरक सेवा-व्ययक बही

बहीमे फूलकलीक नामपर धान, देवनक परिवार लेल चिकित्सा, दक्षिण टोलाक कीर्तन-भोज, विधवाक कपड़ा आ बटेसरक ब्याज-स्थगनक उल्लेख भेटैत अछि। ई प्रविष्टि सभक विवरण अध्यायक विशिष्ट घटनात्मक सामग्री अछि। दान सचमुच कखन आ कोना पहुँचत, ई अलग जाँचक विषय अछि; मुदा नाम आ सहायता एकही सूचीक भीतर देखाइत अछि। कथावाचक तकर सम्बन्ध विवादित जमीन आ मुकदमे-सँ जोड़ि सम्भावित मौनक संरचना पढ़बाक अवसर दैत छथि।

देल गेल वस्तु आ लेल गेल अधिकार बीच अनुपस्थिति

कमला पूछैत अछि जे नानीक नाम पर धान लिखल अछि, पर जमीनक नाम कतय? एकर उत्तर बहीक मौनमे अछि। मददक माप स्पष्ट, प्रभावित परिवारक दावाक हानि अस्पष्ट। अनन्या एहि एकपक्षीय विवरणकेँ सार्वजनिक करैत छथि। कथा आर्थिक पुस्तिकाक भाषा आ पीड़ित परिवारक समय बीचक अन्तर देखबैत अछि; एक मुट्ठी अन्नक दर्ज विवरण अनेक बरखक जमीनहारा पीड़ाकेँ पूरा नहि वर्णन करैत। तथापि कोन विशिष्ट दान जमीनक बदला छल, तकर प्रमाण-शृंखला पूर्ण नहि।

रामलखनक व्याख्या : सहायता सँ झगड़ा नहिएँ करबाक उपदेश

रामलखन कहैत अछि जे जकरा मुकदमे वा दावाक कारण विवाद उठबाक डर होइत, ओकर नामक सोझाँ सहायता-विवरण राखल जाइत। बादमे कहल जाइत जे आश्रम मदद केलक, आब झगड़ा करब ठीक नहि। एहि बयानसँ सेवा केवल उदारता नहि, सम्भावित सामाजिक अनुशासनक साधन बनि उठैत अछि। रामलखन स्वयं पूर्वक जालक मध्यस्थ रहल अछि; तें ओकर कथन उपयोगी साक्षी अछि, स्वतः निष्पक्ष अन्तिम तथ्य नहि। कथा एहि आंशिक विश्वासक कठिनाइकेँ लुकबैत नहि।

देवनक इलाज आ ओही मासक कथित उपस्थिति

रामपरीक्षित देवनक पुरान कथन याद करैत छथि जे ओ अदालतमे उपस्थित नहि छलाह। बहीमे चिकित्सा-सहायताक तिथि ओहि मासक अछि जाहिमे विवादित उपस्थिति दर्ज भेल। दू समयरेखाक मिलन शङ्काकेँ गम्भीर बनबैत अछि, मुदा केवल मास एक होयब झूठा हाजिरीक विशिष्ट कर्ता सुनिश्चित नहि करैत। कथावाचक नब सामग्री जोड़ैत अछि, अन्तिम फैसला नहि। समीक्षामे एहि कालिक निकटताक अलग महत्त्व अछि, कारण पूरा शृंखला तारीख बदलनाइक प्रश्नक चारूकात घुमि रहल अछि।

दक्षिण टोलाक तीन स्वर : साझा स्मृति नहि, बहुवचन

कैलाश मंडल, सकुनी खातुन आ हरिबल्लभ दास अपन परिवारक सहायता-पाछाँ पंचायतमे मौन रहबाक दबावक बात करैत छथि। एके घटनाक 'अधिकृत' विवरणक बदला तीन अलग धार्मिक-सामाजिक अनुभव उपस्थित छथि। विशेष रूपसँ सकुनी अपन मायक अँगूठा भोजक उपस्थिति कहि कागचपर लेल जाएबाक प्रसंग अनैत छथि। एहि बिम्बसँ फाइलक अँगूठाक निशान फेर जीवित देहक संवेदनशील सीमा बनैत अछि। पात्र सभक सामूहिक उपस्थिति कथा भीतर गवाहीक विस्तार करैत अछि, मुदा प्रत्येक कथनक अलग जाँचक आवश्यकता रखैत अछि।

भोज-सूची आ 'चन्ना सेवा-संकीर्तन'

शारदा पुरान भोजक सूची अनैत छथि, जकरा 'चन्ना सेवा-संकीर्तन' कहल गेल छल। उल्लेखनीय ई जे सूचीमे विवादित जमीन वा दावासँ जुड़ल परिवार बेसी देखाइत छथि। कीर्तनक सामूहिक धार्मिक रूप आ सम्भावित दावा-शमनक निजी उद्देश्य बीच तनाव जन्मैत अछि। पुरान भोजक दृश्य पहिलुक साझा थारी आ रसोइक गणराज्यक अध्यायसभक उलटा प्रतिबिम्ब बनैत अछि: ओतय भोजन समानताक आशा छल, एतय भोजनकेँ चुप्पी खरीदबाक साधन बनाओल गेल होएबाक प्रश्न उठैत अछि।

'मौन-भोज' : भोजनक आख्यानगत उलटब

महावीरक बहीक अन्तिम पन्ना पर 'बाबाक प्रसाद: मौन-भोज' लिखल भेटैत अछि। तिथि फूलकलीक दान-पत्रक सप्ताहसँ जुड़ल अछि। शारदा कहैत छथि जे भोजमे पुरान बात बिसरि नव आरम्भ करबाक आग्रह छल। सुरमणी एहि विस्मृतिक शर्तपर प्रश्न करैत छथि: जकर घर गेल, ओकरा बिसरबाक उपदेश किएक? ई दृश्य लेखकक

पहिनेक नूनक शपथ आ साझा अन्नक प्रतिकेँ नब राजनीतिक अर्थ दैत अछि। जे भोजन मुक्ति देबाक छल, ओहि भोजनसँ सम्भावित चुप्पी लागू कएल गेल।

मौनक कारणसूची : भयक समाजशास्त्रीय देह

अनन्या मौनक आगाँ कारणक स्तम्भ जोड़ैत छथि—भूख, दवा, बेटी, नौकरी, प्रतिष्ठा, जाति, धर्म आ ऋण। एहि सूचीसँ कथा चुप्पीकेँ केवल कायरताक सरल नाम नहि दैत। गवाहक देह जखन अपन जीवन बचाबय लेल सहमति जतबैत अछि, तखन ओकर वाणीमे सत्ता-असमानता समाहित रहैत अछि। मुदा कारण बुझि लेब पुरान गलत कामकेँ स्वतः निर्दोष नहि करैत। ई द्वैत चरित्रसभक नैतिक जटिलताकेँ सहेजैत अछि।

आधा उठल हाथ : सहमतिक अनिश्चित दृश्य

सार्वजनिक शपथक समय किछु हाथ पूरा उठैत, किछु आधा, किछु नहि। लेखक एहि भंगिमाकेँ 'आधा उठल हाथ'क अर्थ-सङ्कट बनबैत छथि। सामुदायिक उत्साहक बीच व्यक्तिगत भय पूर्ण समाप्त नहि भेल; जाहि लोग पर ऋण आ सामाजिक दबावक इतिहास अछि, ओकरा लेल तुरन्त सर्वसम्मति कठिन अछि। एही कारण मंचीय प्रतिज्ञा अन्तिम सामाजिक परिवर्तनक प्रमाण नहि। देहक छोट मुद्रा कथा भीतर अपूर्ण न्यायक अधिक विश्वसनीय चिन्ह बनैत अछि।

हरिचरणक प्रतिवाद आ सार्वजनिक भलाईक प्रश्न

हरिचरण दान, दवा आ कीर्तनक जाँचकेँ आश्रमक अपमान कहैत अछि। सत्यव्रत उत्तर दैत छथि जे जाँचक कारण शुद्ध काम नष्ट नहि होइत; दूषित सम्बन्ध देखाइ पड़ि सकैत अछि। एहि संवादक महत्त्व सेवा-कार्यक सम्पूर्ण निषेध नहि, सेवा-पाछाँ बान्हल सामाजिक शर्त खोजब अछि। उपन्यास एकरेखीय 'दान दुष्ट अछि'क निष्कर्ष नहि देत; ओ पूछैत अछि जे सहायता पाबनिहारकेँ अपन दावा छोड़बाक दबाव देल गेल कि नहि।

रामपरीक्षितक 'शपथ नहि, खोज'क आग्रह

देवनक भतीजा रामपरीक्षित प्रतिशोधक शपथ नहि लेब, खोज जारी रखबाक आग्रह करैत छथि। एहि वाक्यसँ भावात्मक चरम दृश्य जाँचक अपूर्ण यथार्थ धरि घुरैत अछि। शपथ तत्काल नैतिक निस्तार देबय चाहैत अछि; खोजक लेल समय, त्रुटि, पुनःमिलान आ असुविधाजनक उत्तर सहबाक पड़ैत अछि। अध्यायक अन्तिम प्रभाव ताही कारण नारा नहि, श्रमशील उत्तरदायित्वक भाव अछि।

निष्कर्ष स्थगित : सेवाक खाता सँ दानक ऋण दिस

मीरा स्पष्ट रूपेँ कहैत छथि जे सेवाक बही सम्भावित मौन-व्यवस्था सेहो रहल, मुदा किछु तिथि, किछु स्मरण आ अधूरा पन्ना एखन जाँचबाक बाकी अछि। एहि ईमानदार स्थगनसँ अध्यायक शीर्षक वास्तविक कथात्मक अर्थ पबैत अछि। सेवा आ मौनक हिसाब एकटा संदेहास्पद परस्पर-सम्बन्धमे देखाइत अछि, पर सम्पूर्ण न्यायिक परिणाम नहि निकलल। 'दानक ऋण' दिस अगिला मोड़ स्वाभाविक अछि—जखन सहायता आ अधिकारक बीच ऋण बनाओल जाइत अछि, तखन ओकर हिसाब कोन नियमसँ चुकत?

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : मिलावटसँ सेवाक खाता धरि

प्रकरण २४९–२५६क कथात्मक प्रवाह आठटा ठोस मोड़ सँ बनैत अछि। घर-घरक दस्तकपर नकली पीड़ितक प्रवेश मिलावटक संकट उजागर करैत अछि; जालक नक्शा कागच बनाओनिहार केन्द्रसभक सम्बन्ध देखबैत अछि; मोहरक छाया हत्था आ कारीगरीक इतिहास तकैत अछि; मुहर चलौनिहार हाथक अध्याय मध्यस्थक बयान अनैत अछि; आदेशक स्रोत अनलिखल निर्देशक भाषा खोजैत अछि; संकेतक पाछाँ नाम गुम व्यक्तिक अंश चिन्हैत अछि; बाबाक वचन धार्मिक सम्बोधनक जिम्मेदारी पूछैत अछि; सेवाक खाता अन्न, दवा, भोज आ मौनक सम्भावित लेनदेन तक पहुँचैत अछि। एहि क्रममे कथाक प्रश्न 'नाम कोना बचत?' सँ 'साँचक नामक संग झूठ कोना प्रवेश करैत अछि?' आ अन्ततः 'सहायता कखनो मौनक सौदा बनैत अछि?' धरि बढ़ैत अछि।

मुख्य वस्तुसभक कथात्मक यात्रा विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। नकली पुरान कागचक नब मोड़, जगमायाक तेल-दागबला रसीद, मुरारीक प्रति-खरोंच, लाल धागाक बक्सा, माटिपर खिंचल तीन-पाँच गोला, भिखारी लालक चाबी, छेदीक कबाड़, मोहरक बचल हत्था, मोहनक अधूरा पत्र, भानु लालक कोड-रजिस्टर, महावीरक बही, आसनक कपड़ा, देवनक पुरान मुकदमा, फूलकलीक माटिक पोटली, शारदाक भोज-सूची आ मौन-भोजक प्रविष्टि—ई सभ अलग-अलग जीवनक वस्तु छथि। लेखक एकटा पैघ अदृश्य जालकेँ एही छोटे दृश्यमान चिह्नसभसँ रचैत छथि। वस्तुक पुनरावृत्ति नब जानकारी जोड़ैत अछि; एही कारण पूर्वक घटना प्रत्येक अध्यायमे फेर पढ़ल जाइत अछि।

वक्ता-विन्यास दू विपरीत दिशा देखबैत अछि। भीखन साह, तीन तैयार बयानबला युवक, मुरारी आ रामलखनक कथनमे झूठ, भय, लोभ आ अधूरा स्वीकार एक संग उठैत अछि। जगमाया, सुरमणी, रामपरीक्षित, कमला, सकुनी खातुन आ शारदाक कथन परिवारक स्मृति, खाना, जमीन आ देहक अनुभव जोड़ैत अछि। कैलाश, भिखारी लाल आ महावीर मध्यस्थ अधिकारी अथवा अभिलेखी लेखकक रूपमे अपन अंश खोलैत छथि। एहि बहुवाचिकता सँ कोनो एक सर्वज्ञ प्रवक्ता सम्पूर्ण निर्णय स्वतः नहि दैत। अनन्या रजिस्टर रखैत छथि, मीरा प्रक्रिया आ अनुमति सँ सीमा निर्धारण करैत छथि, आरुणि वस्तुक तुलना करैत छथि, देविका सामुदायिक अर्थ बुझबैत छथि, आ सत्यव्रत अनेक बेर अन्तिम दावाकेँ स्थगित रखैत छथि।

एहि खण्डमे न्यायिक समय, घरक समय आ स्मरणक समय अलग-अलग गति सँ चलैत अछि। पुरान रसीदक तिथि, नागपंचमीक मौसम, भानु लालक कोड-रजिस्टर, तिथि-पलटबला तेल-दागयुक्त पर्ची, देवनक सहायता आ कथित हाजिरीक एके मास, फूलकलीक दान-पत्रक सप्ताह आ मौन-भोजक प्रविष्टि—सभ दिनांक-समीपता उत्पन्न करैत अछि। मुदा तिथिक नजदीकी घटना-कारणक अन्तिम प्रमाण नहि। एहि भेदसँ उपन्यासक कालरचना विश्वसनीय बनबाक अवसर पबैत अछि: अतीतक पन्ना वर्तमानक देहरीपर फेर खुलैत अछि, मुदा प्रत्येक समय-रेखा अपन स्रोत सहित जाँचबाक पड़ैत अछि।

अनेक चिह्नक अनिश्चितता साहित्यिक रचना भीतर सुरक्षित अछि। भोला कहलाइत व्यक्तिक बनाओल नाम बादमे भीखन साह रूपमे बदलैत अछि; जगमायाक रसीदक मुख्य फाइलसँ सम्बन्ध सम्भाव्य अछि; अगरबत्तीक गन्ध राघवक ओसारक दिशामे संकेत दैत अछि; कोड “अ/च/र/आ/ब”क सम्भावित विस्तार स्वयं निष्कर्ष

नहि; रामलखन हरिचरणक दिशामे तकैत अछि, पर दृष्टि हस्ताक्षर नहि; शारदाक कथन बाबा-बटुकनाथक सम्बोधन जोड़ैत अछि, मुदा विशिष्ट आदेशक लेखकत्व एखन अनिश्चित अछि। मीरा प्रायः “सन्देह”, “स्मरण”, “प्राथमिक नाम” आ “जाँच” जेकाँ शब्द अलग रखैत छथि। समीक्षामे एहि अनिश्चयकेँ मिटा देब कथाक केन्द्रबिन्दुकेँ नष्ट करब हएत।

जादुई यथार्थक तह सेहो निरन्तर उपस्थित अछि। ठूँठक भीतर उठल छाह, खाली लोटामे अनपेक्षित नमी, कागचक मोड़मे जमा स्मृति, काठक हत्थामे बचल हाथक छाप आ दरारमे उतरैत उजास सामाजिक अनुभवकेँ इन्द्रियगम्य करैत अछि। तथापि पात्र सभ 'कारण अनिश्चित' लिखबाक अभ्यास अपनाबैत छथि। ई आत्म-नियन्त्रण साहित्यिक रूपकक सौन्दर्य घटबैत नहि; एकर बिपरीत अलौकिक प्रतीक आ वास्तविक श्रम—तिथि-मिलान, प्रति, परिवारक अनुमति, पुराने वस्तुक संरक्षण—दुनूकेँ स्वतन्त्र उपस्थिति दैत अछि। कथा चमत्कारक नामपर बिना जाँच सार्वजनिक आरोप तय नहि करैत।

पूर्वक अध्यायसभक सामूहिक भोजन, साझा थारी, नूनक शपथ आ रसोइक गणराज्य एहि नव खण्डमे एक असुविधाजनक प्रतिरूप पबैत अछि। ओतय भोजन जातिगत बाँट तोड़बाक आ जीवनक पोषणक विधान छल; एतय महावीरक सेवा-व्यय, चन्ना सेवा-संकीर्तन आ “मौन-भोज”क उल्लेख खाद्य-सहायताकेँ दावा कमजोर करबाक साधन बनाओल गेल होएबाक शङ्का उत्पन्न करैत अछि। एही उलटबासँ प्रतीकक यांत्रिक पुनरावृत्ति नहि, नैतिक द्वन्द्व जन्मैत अछि। एक्के अन्न मुक्तियो दे सकैत अछि आ सामाजिक ऋणक माध्यमे चुप्पियो मँगि सकैत अछि—कथा एहि कठिन द्वित्वकेँ जाँचक केन्द्र बनबैत अछि।

एहि खण्डक अन्तमे न्यायिक परिणामक स्थान पर एक संशोधनशील खोज-व्यवस्था अछि। भानु लालक हत्था, रामलखनक आंशिक बयान, महावीरक बही, शारदाक स्मरण आ प्रभावित परिवारक आवाज मिलि सेवा आ मौनक सम्भावित सम्बन्धक रूप उघाड़ैत अछि। मुदा पात्र सभ दानकेँ स्वतः अपराध नहि कहैत, कियो भीड़मे दोषी घोषित नहि करैत, आ मौनक कारण बुझि ओकरा स्वयं निर्दोष ठहराबैत नहि। रामपरीक्षितक “शपथ नहि, खोज”क आग्रह एहि खण्डक सारथि अछि। अगिला अध्याय “दानक ऋण” दिस कथानक एहि संशयक संग बढ़त: सहायता ग्रहण करनिहारपर समाजक ऋण जँ लादल गेल, तँ ओकर न्यायसङ्गत सीमा आ मुक्तिक उपाय की हएत?

प्रकरण २५७ | मूल अध्याय १५६ — दानक ऋण

आधा उठल हाथक पुनर्पाठ : रूपकसँ कथात्मक कारण धरि

पछिला अध्याय ‘सेवाक खाता’क अन्तमे सार्वजनिक प्रतिज्ञाक समय आधा उठल हाथ सभ एक अनिर्णीत दृश्य छोड़ने छल। वर्तमान अध्याय ओहि रुकी गेल भंगिमाकेँ पात्रक निजी जीवनसँ जोड़ैत अछि। मीरा पूर्ण हाथ उठौनिहारकेँ नायक आ आधा हाथ उठौनिहारकेँ कायर घोषित नहि करैत छथि; ओ पूछैत छथि जे करुणा, कृतज्ञता, भय आ हितक दबाव कोना एकहि देहमे बसैत अछि। एहि तरहेँ एक क्षणक शारीरिक मुद्रा पूर्ण

अध्यायक कथानकीय केन्द्र बनैत अछि। पहिने प्रश्न छल—कियो प्रतिज्ञा अधूरा किएक रखलक; आब प्रश्न भेल—प्रतिज्ञा पूरा करबाक सामाजिक मूल्य ककरा लेल कतेक अछि।

कैलाश मंडलक चिकित्सकीय स्मृति आ ऋणक विस्तार

कैलाश अपन पिताकेँ भेटल दवाइक वास्तविक उपयोग अस्वीकार नहि करैत अछि। दवाइसँ जीवन किछु मास बढ़बाक तथ्य ओ स्वीकार करैत अछि, मुदा बादमे आश्रमक लोक ओहि सहायता केँ भूमिक प्रश्न उठेबाक विरुद्ध नैतिक ऋण बना देलक। एहि दू समयक समास अध्यायक शिल्प अछि: बीमारीक रातिमे सहायता आ वर्षों बादक दाबी—दुनूकेँ एकहि वाक्यमे बाँधि दबाव उत्पन्न कएल गेल। लेखक कैलाशक थरथरायल हातसँ सामाजिक स्मृतिक दीर्घ असर देखबैत छथि। देल वस्तुक तत्काल लाभ आ ओकर नामपर वसूला गेल मौनक अवधि अलग कएलासँ पात्रक असमर्थता बुझाइत अछि।

सकुनी खातुनक माय : भूख आ निर्णयक विच्छेद

सकुनीक कथामे अनाजक बोरा दानक घटना अछि; असली मोड़ पंचायतमे मायकेँ जमीनक विषयपर चुप कराओल जाइनाइ अछि। ‘गरीबकेँ दान, निर्णय दोसराक हाथ’—ई संरचना रसोइक गणराज्य आ अन्नक न्याय अध्यायक उलटल प्रतिबिम्ब अछि। ओतय अन्न सार्वजनिक हिस्सेदारी खोलैत छल, एतय अन्नक स्मरण मताधिकार बन्द करबामे इस्तेमाल भेल। सकुनीक धीमा स्वरकेँ कथावाचक कमजोरी नहि, दीर्घ दबावक जमा भेल लय रूपमे सुनैत छथि। पाठक देखैत अछि जे मौन केवल बोलबाक असमर्थता नहि, कखनो निर्णय-स्थानसँ व्यवस्थित निष्कासन अछि।

हरिबल्लभक मंजीरा : भक्ति, दक्षिणा आ उत्तराधिकार

हरिबल्लभक पिता कीर्तनमे मंजीरा बजबैत छलाह आ ओहि दक्षिणासँ परिवार चलैत छल। एहि इतिहासक कारण आश्रमपर प्रश्न करब पिता आ भक्तिक अपमान बुझाइत रहल। सत्यव्रत ‘भक्तिक दाग’ आ ‘दक्षिणाक उपयोग’ अलग करबाक आग्रह करैत छथि। जखन एक वाद्यक ध्वनि पारिवारिक कर्तव्य, अन्नोपार्जन आ श्रद्धाक समवर्ती वाहक बनैत अछि, तखन पात्रक नैतिक पसोपेश सरल आरोपसँ बाहर चलि जाइत अछि। कथा एहि सूक्ष्मताक माध्यमसँ पूजा आ संस्थागत लाभक एकरूपता तोड़ैत अछि; मंजीरा दोषक वस्तु नहि, ओकर नामपर रचल मौनक जाल प्रश्नक विषय अछि।

रामलखनक आधा स्वीकार : औजार बनल, मुदा चललो

रामलखन अपना केँ अपराधमे सम्मिलित मानैत अछि, संगहि अपन परिवारक भूख आ बेटीक असुरक्षाक चर्चा करैत अछि। भिखारी लाल ओकरा याद करबैत अछि जे औजार बनबक संग ओ स्वयं चलल सेहो। ई छोट संवाद उपन्यासक चरित्र-विन्यासमे निर्णायक अछि, कारण ओ पीड़ित-अपराधीक कठोर सीमा पर मानवीय दबाव देखबैत अछि। ‘बंधायल अपराध’ आ ‘स्वीकार सहित संलग्नता’ जेकाँ रजिस्टर-बद्ध पद साहित्यिक रूपेँ जटिल चरित्रक वर्गीकरण छथि; ई कानूनी छूटक आदेश नहि। रामलखनक ‘हँ’ आत्ममुक्तिक अन्तिम क्षण नहि, आगाँ उत्तरदायित्व वहबाक आरम्भ अछि।

हरिचरणक सरल तर्क आ मीरा द्वारा विवरणक प्रत्युत्तर

हरिचरण दान पाबनिहार आ दान देनिहारकेँ एक उलटल तराजूमे राखैत अछि: जे खयलक से दोषी, जे देलक से पुण्यवान। एहि घन आरोपक तात्कालिक प्रभाव भीड़पर पड़ैत अछि, कारण एक वाक्य अनेक वर्षक सम्बन्ध सरल बना दैत अछि। सत्यव्रत आ मीरा एही सरलताकेँ तोड़ैत छथि—भूखमे भोजन ग्रहण करब आ भूखक लाभ उठाकऽ दाबी दबाएब अलग कर्म। मीरा ‘तराजू’क बदला ‘विवरण’ चुनैत छथि। कथावस्तुमे न्याय-वितण्डा लेल आकर्षक संक्षिप्त वाक्य आ धीर, व्यक्तिनिष्ठ विवरणक द्वन्द्व एहि पात्र-विपक्षसँ रचल अछि।

कमलाक माटिक डल्ला : जमीन देहक छाँह

कमला फूलकलीक माटिक डल्ला हाथमे लऽ पूछैत अछि जे सेवाक खातामे नानीक जमीनक उल्लेख किएक नहि। महावीर मानैत छथि जे गरीबक जमीनक प्रश्न लोभ बुझल जाइत छल, दानक स्मरण पुण्य। कमलाक छोट प्रश्न वृद्ध विद्वानक सम्पूर्ण मूल्य-भाषाकेँ उलटि दैत अछि। माटिक डल्ला केवल घरक अवशेष नहि, देहक गरिमा आ बसोबासक टिकाऊ आधार बनैत अछि। अस्थायी दानक थारी आ स्थायी खेतक छाँहबीच अनुपातक बोध एही वस्तुसँ उत्पन्न होइत अछि। एहि दृश्यमे बच्चा ज्ञानक ग्रहणकर्ता नहि, आलोचनात्मक कथा-प्रेरक छथि।

‘ऋण-साक्षी’ रजिस्टर : कथनक नव उपविभाग

आधा उठल हाथसभकेँ मीरा अलग रजिस्टरमे रखबैत छथि। चारि प्रश्न—की भेटल, कहिया भेटल, बादमे की रोकल गेल आ रोकबाक भाषा की छल—आख्यानक जाँचक लय निर्धारित करैत अछि। वस्तुक आगमन, समय, परिणाम आ वाक्य एकहि नामक चारू कात जुड़ि जाइत अछि। पूर्वक सेवा-खाताक एकतरफा देने-दृष्टिक समकक्ष ई रजिस्टर लेनिहारक अनुभव रखैत अछि। ‘लाज करू’, ‘कृतज्ञ रहू’, ‘बाबाक मान राखू’ जेकाँ दोहराएल वाक्य व्यक्तिगत टोकाटाकीसँ ऊपर सामूहिक दमनक भाषिक नमूना बनैत अछि। कथा अपन पाठक केँ रजिस्टरक आकारमे अन्तरदृष्टि उपलब्ध करबैत अछि।

निर्मला कुम्हारिनक उनटा ऋण : श्रमक अप्रत्याशित दिशा

निर्मला घड़ा आपूर्ति करैत छलीह आ बदलामे अनाज पबैत छलीह; तथापि कागचक प्रश्न पर हुनकर परिवारकेँ सेवा करनिहारक मर्यादा याद दिआयल गेल। कथाक सर्वोत्तम उलटब एतय अछि—जे घड़ा दैत अछि, ओकरा ऋणी कहाओल जाइत अछि, जे घड़ा लैत अछि ओ कृपादाता बनैत अछि। निर्मलाक माटिसँ सनल हाथ पूर्वक श्रमक देह अध्यायसँ अदृश्य सम्बन्ध जोड़ैत अछि। ‘उनटा ऋण’ स्तम्भ उपन्यासक अभिलेखी भाषामे नया दिशासूचक बनैत अछि: गणनाक अधिकार ककरा अछि, एहि प्रश्नक उत्तर बदललाक बिना सहायता न्याय नहि बनि सकैत।

रङ्गीन गठरी आ बन्द लोहेक संदूक : वस्तुक पूर्वाभास

सेवा-खाता, भोज-सूची, भानु लालक पर्ची आ मौन-भोजक प्रविष्टि अलग कपड़ामे सुरक्षित छथि। लाल, पीयर, उज्जर आ धूसर रङ्ग दस्तावेजक कथात्मक अलगाव देखबैत अछि; उज्जर कपड़ा अपने निष्पाप होएबाक प्रमाण नहि। एही बीच बन्द लोहेक संदूकक उल्लेख आगामी अध्यायक रहस्य-बीज रखैत अछि। लेखक समाधान देबासँ

पहिने बतबैत छथि जे खुलि चुकल खाताक बाहर एक भारी वस्तु एखन शेष अछि। ई दहलीज-रचना पाठकक जिज्ञासा बढ़बैत अछि, मुदा संदूक भीतरक सामग्री अनुमानसँ भरि देबाक अनुमति नहि दैत।

मूल्यांकन : दानक कथा आ दानक उपयोग अलग

अध्याय दानक सम्पूर्ण निन्दा नहि करैत; कैलाशक पिता जीवित रहलाह, अनाज सँ भूख मिटल, दक्षिणासँ घर चलल—ई लाभ वास्तविक अछि। समस्याक उद्भव तखन होइत अछि जखन उपकारक स्मृतिसँ अधिकारक प्रश्न बन्द कराओल जाइत अछि। पात्रसभक अलग धर्म, पेशा, जाति आ पीढ़ीक अनुभव एकही अवधारणाक अलग-थलग किनारा जोड़ैत अछि। उत्तरार्धक लोहेक संदूक एही नैतिक अनुसन्धानकेँ अगिला ठोस सामग्री देबाक वचन अछि। एहि तरह अध्याय एक रूपकक प्रचार नहि, आधा उठल हातसँ शुरू भऽ व्यवहार, भाषा आ वस्तुक बहुस्तरीय खोज बनैत अछि।

प्रकरण २५८ | मूल अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

ऊपरी कोठरीक प्रवेश : घरक भीतर अभिलेखीय भौगोलिकता

महावीर पाठक अपन घरक ऊपरी कोठरी दिस बढ़ैत छथि। सीढ़ीक धूलि, मकड़ीक जाल, पूजाक पुरान सामग्री आ फाटल गद्दी एक एहन स्थान रचैत अछि जतय कुल-गौरवक वस्तु गवाहीक सामग्री ढाँपि रहल अछि। पछिला अध्यायक रंगीन गठरी सार्वजनिक छल; एहि अध्यायक संदूक निजी घरक अन्तरालमे बन्द अछि। कथास्थानक ई परिवर्तन अधिकारक अन्तःपुर धरि पहुँचबाक संरचना अछि। नाटकीय बाहरी भिडन्तक बदला कथा ताला खोलबाक लम्बा, सावधान प्रक्रिया पर टिकैत अछि, जाहिसँ रहस्यक समाधान शारीरिक अनुभव बने लगैत अछि।

कुंजी पूजा-घरमे : पवित्रताक ओहार

संदूकक कुंजी पूजा-घरमे राखल रहबाक उल्लेख कथा केँ एक विडम्बनात्मक रूप देत अछि। पवित्रताक स्थूल वस्तु आ दस्तावेजक सम्भावित दुरुपयोग एकही घरमे सह-अस्तित्व रखैत अछि। मुदा कथावाचक पूजा-घर केँ स्वतः अपराधक स्थान घोषित नहि करैत; वस्तु तक पहुँचनाइ पर जे अधिकार-नियन्त्रण छल, से प्रश्नक केन्द्र अछि। कुंजी केवल ताला खोलैत नहि, एहि घरमे केकर पहुँच छल आ कोन बात ककरा सँ छिपाओल गेल, ओ पूछैत अछि। महावीर स्वयं गुप्त सामग्रीक पूर्ण अर्थ नहि जनैत होथि—ई अनभिज्ञता सेहो कथाक तनाव अछि।

ताला खोलबासँ पहिने ओकर छाप : घटनाक गतिपर नियन्त्रण

भिखारी लाल जखन जाम भेल ताला खोलबाक लेल तेल माँगैत अछि, सुरमणी देवी पहिने ताला आ धूलिक चिह्न सुरक्षित करबाक आग्रह करैत छथि। एहि क्रियामे लेखक अनुसन्धानक उतावलापन रोकैत छथि। खोला गेल संदूकक भीतरक सामग्री जतेक महत्त्वपूर्ण, ओकर बाहरी अवस्था सेहो घटना-सम्बन्धक सूचना बनैत अछि। दरबाजा, उपस्थित लोकक नाम, कुंजीक स्थिति आ कपड़ाक परत लिखल जाए लगैत अछि। कथा गति धीमा करैत अछि, मुदा एहि विलम्बसँ विश्वसनीयता उत्पन्न होइत अछि; पहिने वस्तु लेल भागयवला पात्र आब वस्तुक प्रसंग सेहो रक्षित करैत अछि।

मंजीरा, पूजा-पात्र आ परिवारक स्मृति

संदूकक ऊपर राखल टूटल मंजीरा हरिबल्लभक पिता आ कीर्तनक स्मृतिकेँ पुनः अनैत अछि। अध्याय १५६मे जे वाद्य दक्षिणा आ कृतज्ञताक बीच अटकल छल, से एहि कोठरीमे चुप्पीक पदार्थ बनि पड़ल अछि। वस्तुक ई पुनरागमन केवल सजावट नहि; पाठक बूझैत अछि जे एकही परिवारक श्रद्धा सार्वजनिक सेवाक खातासँ कोना जुड़ल। दृश्य वस्तु-समूहक भावात्मक घनत्व बढ़बैत अछि, मुदा वाद्य अपने आरोपित अपराधक सामग्री नहि। ई अन्तर स्थापित करब समीक्षाक जरूरी मर्यादा अछि।

भोजन-वितरण बहीक ‘वचन’ स्तम्भ

संदूकक पहिल बही भोजन-वितरणक अछि, मुदा सामान्य वस्तु-सूचीक अतिरिक्त ‘वचन’ नामक स्तम्भ रखैत अछि। कतहु बाबाक मान राखबाक, कतहु भूमि-विवाद नहि उठेबाक, कतहु सहमति देबाक उल्लेख अछि। ई दृश्य सेवा-खाताक पूर्वक सन्देह केँ अधिक विशिष्ट भाषा दैत अछि। सहायता आ मौनक सम्भावित सम्बन्ध आब अनुमानक बाहरी वृत्त नहि, बहीक एक भीतरका स्तम्भ बनैत अछि। तथापि प्रत्येक प्रविष्टि केकर आदेश पर लिखायल, के सहमति देलक आ कोन परिस्थितिमे—ई प्रश्न बिना जाँच खुलल नहि।

पतली ‘सहमति’ कापी : आकार आ प्रभावक विरोध

मोट सेवा-खाताक बाद पतली कारी जिल्दबला सहमति-कापी भेटैत अछि। नाटकीय प्रभाव एहि असमानतासँ उत्पन्न होइत अछि: जाहि वस्तु पर बाहरी प्रतिष्ठाक भार छल ओ मोट अछि, मुदा अधिकारक वास्तविक फेरबदल सम्भव करबला कथन छोट कापीमे। ‘गवाह उपस्थित’, अँगूठा, टेढ़ा हस्ताक्षर आ पुनरावृत्त गवाहक नाम सभ पाठकक ध्यान स्थूल संस्कारसँ दस्तोवेजक आवर्ती विन्यास दिस घुरबैत अछि। पतली कापी अगिला अध्यायक केन्द्र बनेत—वस्तु कथात्मक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि, ओकर समाधान नहि।

गवाहक नामक पुनरावृत्ति : आवर्तनसँ सन्देह

सहमतिक अनेक पन्नामे हरिचरण, रामलखन, लाउक मुनीम वा चन्द्रपालक लोक बार-बार गवाह रूपमे उपस्थित छथि। आवर्तन एक प्रकारक कथात्मक संकेत अछि। अलग परिवार, अलग सहायता आ अलग समयक घटनाक बावजूद गवाही देनिहारक समूह छोट रहनाइ कथा में एक गुप्त व्यवस्था दिस संकेत करैत अछि। मुदा पुनरावृत्ति मात्रसँ हर विशिष्ट पन्नाक जालसाजी स्वतः सिद्ध नहि। पात्रसभ एहि संकेतकेँ आगामी मिलानक आधार बनबैत छथि। लेखक एक निश्चयात्मक उद्घाटनक बदला तुलनात्मक प्रश्नक शृंखला तैयार करैत छथि।

अँगूठा-पैड आ देहक छाप

सूखल स्याहीक डल्ला, दू पुरान अँगूठा-पैड आ कपासक टुकड़ा भेटलाक बाद आरुणि पूछैत अछि जे पैड ककर हाथमे रहैत छल। एहि प्रश्नक अन्तर्ध्वनि देहक अधिकारपर टिकैत अछि: अंगूठा जकर देहक चिन्ह अछि, ओ चिन्ह कागच पर कोन परिस्थिति मे लगाओल गेल? वस्तु-सूची थरथरायल या बनाओल सहमतिक चर्चाकेँ स्पर्श, दबाव आ उपकरणक ठोस स्थिति धरि अनैत अछि। पैड भेटब अपने नकली छापक अन्तिम पुष्टि नहि, मुदा शारीरिक सहमतिक पुनर्निर्माण लेल आवश्यक प्रसंग बनैत अछि।

फूलकलीक शरण आ सीमा-विवादक स्थगन

फूलकली देवीक प्रविष्टिमे अस्थायी शरणक बदला सीमा-विवाद स्थगित होएबाक कथन भेटैत अछि। एहि एक पाँतिमे आपदाक रातिक सुरक्षा आ दीर्घकालीन भूमि-अधिकार एक अनुचित समीकरणमे बन्हैत अछि। मीरा कागचक वाक्य बार-बार पढ़ैत छथि, कारण ‘शरण’ शब्द मानवीय राहत दैत अछि, ‘सीमा-स्थगन’ ओकर मूल्य माँगैत अछि। जे परिवार बरखाक रातिमे छत खोजैत छल, ताहिसँ स्थायी फैसला लेल गेल होएबाक आशङ्का कथा खोलैत अछि। निष्कर्ष लेल परिवारक जीवित स्मृति तथा परिस्थितिक मिलान जरूरी रहत—एहिसँ अगिला अध्यायक आधार बनैत अछि।

बटुकनाथक हस्ताक्षर नहि, अधिकार-चिह्न

एक नक्शाक कोनामे सामान्य हस्ताक्षर नहि, त्रिशूल-सदृश तीन रेखाक चिन्ह अछि; सेवा-खाताक अनेक पन्नामे सेहो एहि चिह्नक पुनरावृत्ति अछि। भानु लाल कहैत अछि जे बाबा सीधा हस्ताक्षर कम करैत छलाह। एहि विवरणमे व्यक्तिक नामसँ अधिक शक्तिक छापकेँ मान्यता भेटबाक ढाँचा खुलैत अछि। वाचिक आदेश आ प्रतीकात्मक हस्ताक्षरक सम्बन्ध साहित्यिक रूपेँ भयङ्कर अछि, कारण दायित्वक नाम धुँधला होइत अछि, प्रभाव दृश्यमान रहैत अछि। मुदा चिन्हक पहिचान आ प्रत्येक दस्तावेजक लेखकत्व अलग तहमे जाँचबाक बात मीरा स्पष्ट रखैत छथि।

महावीरक अनभिज्ञता आ हरिचरणक प्रतिरोध

महावीर परिवारक गौरवक भीतरक सामग्री देखिकऽ टूटैत छथि; हरिचरण उलटे ‘गवाह रहब अपराध नहि’ कहि तत्काल बचाव करैत अछि। दुई पात्रक ई विपरीत प्रतिक्रिया पाठकक लेल खुलल प्रश्न रखैत अछि—अनभिज्ञता कतेक वास्तविक आ कतेक सुविधाजनक छल? संदूकमे भेटल वस्तु दूनूक स्मृतिकेँ फेर अर्थ दैत अछि, मुदा कथावाचक महावीरक पश्चात्तापकेँ निर्दोषताक प्रमाण नहि मानैत। ‘सहमति बनबेनाइ’ आ ‘समझेनाइ’ बीचक विभाजन अध्यायक घटनासँ स्वाभाविक रूपेँ उभरैत अछि। कोठरी खाली भेलो गामक समक्ष सुनवाईक काज शेष रहैत अछि।

प्रकरण २५९ । मूल अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

सहमति एक तथ्य नहि, अनुभवसँ टकराएल कथन

राति भरि सुरक्षित राखल सहमति-कापी अगिला बिहान परिवारक स्वरक सोझाँ खुजल जाइत अछि। मीरा जनसभा मे नाम पढ़बाक हड़बड़ी रोकैत छथि; पहिने परिवारसँ अलग गवाही, तखन दस्तावेजक मिलान, तकर बाद त्रुटि-सूची आ सामूहिक सुनवाई। एहि क्रमसँ कथावाचक आधिकारिक दस्तावेजक एकल स्वरपर मानवीय अनुभवक बहुवचन रखैत छथि। ‘स्वेच्छा’ जेकाँ सजिलो लिखल शब्द असल घटनाक वर्षा, रोग, भूख आ भयक सन्दर्भमे बारम्बार असङ्गत देखाइ पड़ैत अछि। मुख्य नाटकीयता अदालतक निर्णयमे नहि, कागचक छोट पाँति पर परिवारक लम्बा उत्तरमे अछि।

रामपरीक बयान : बीमारीक राति आ अँगूठाक दबाव

कैलाशक बड़की बहिन रामपरी कहैत छथि जे पिताकेँ दवा भेटल छल, मुदा ओहि राति भूमि-विवादक चर्चा नहि भेल। आश्रमक लोक बाबाक कृपा लिखबाक आग्रह करैत हाथ पकड़ि अँगूठा लगौने छलाह। सहमति-कापीमे एहि घटना लग ‘स्वेच्छा मौन’ लिखल अछि। वार्ताक द्विविधा तीक्ष्ण अछि—परिवार दवा पाबि प्रसन्न छल, मुदा इलाजक राति जमीन छोड़बाक स्वतन्त्र निर्णयक प्रसंग कतहु नहि। लेखक सामान्य नैतिक उद्गारक बदला एक विशिष्ट रात्रिक घटना आ कागचक स्थायी वाक्यक बीच दूरी स्थापित करैत छथि।

सकुनीक पुरान लोटा आ पंचायत-वचन

सकुनी अपन माय केर पुरान लोटा आ अनाजक फाटल थैला लैत छथि। राहतक वस्तु आ पंचायतमे बोलबाक बन्दिशक स्मृति एक संग आएलापर कापीक ‘पंचायत-वचन’ पदक अर्थ बदलि जाइत अछि। सकुनीक माय चुप रहलीह; कागच ओकरा वचन बना देलक। ई रूपान्तरण कथनक जबरदस्ती अछि, जाहिमे व्यक्ति जे नहि कहल, ओकरा लिखित कथन बना देल गेल। पुरान लोटा तथाकथित सहमतिक खण्डन स्वयं नहि करैत, मुदा ओहि चुप्पीक जीवित सन्दर्भ सुरक्षित रखैत अछि। लेखक पीड़ितक घरेलू वस्तुकेँ सामूहिक स्मृतिक पुनर्पाठमे शामिल करैत छथि।

फूलकलीक कम्बल : शरणसँ सीमाक कागच धरि

कमला नानीक शरणक रातिक पुरान कम्बल लैत छथि। शारदा झाक स्मरणमे ओ राति बरखाक छल, छप्पर टूटल, परिवार आश्रमक बरामदामे बसल, भूमि-विवादक कोनो चर्चा नहि। दोसर दिन राहतक हिसाब बुझि कागच लऽ जाओल गेल, मुदा सहमति-कापीमे सीमा-विवाद स्थगन लिखायल अछि। कम्बलक गरमी आ खेतक ठंढकक अन्तर अत्यन्त प्रभावकारी दृश्यात्मक विरोध अछि। नाटकीय गहराइ एतय भेटैत अछि जे बचावक लेल देल छाँह अधिकारक पाछाँ पड़ल छाँह बनि गेल।

हरिबल्लभक मंजीरा आ गवाहक बनाओल उपस्थिति

हरिबल्लभक पिता कीर्तनमे गेबा गेलाह, जमीनक विषयपर गवाही देबा नहि। सहमति-कापीमे ‘कीर्तन-दक्षिणा, उपस्थिति-सम्मति’ लिखल भेटैत अछि। ‘नाम पढ़ि सकैत छलाह, चाल नहि’—एहि विचारमे अक्षर-ज्ञान आ कागचक उपयोग-ज्ञान अलग होइत अछि। लेखक संगीतकारक उपस्थिति कैं व्यवस्था द्वारा प्रशासनिक गवाहीमे बदलबाक दुरुपयोग दिखबैत छथि। मंजीराक ताल, जे पूर्वक अध्यायमे भक्ति आ घरक जीवनक संकेत छल, आब लेखकीय सामग्री बदलि देबाक नाटकीय पृष्ठभूमि बनैत अछि। कलाकारक उपस्थिति ओकर अलग अधिकारक सहमति नहि।

रामलखनक ‘समझेबा’क भूमिका : विश्वासक वाक्य

कापीमे रामलखनक नाम कखनो गवाह, कखनो समझेनिहार रूपमे अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे लोकक आँखिमे डर देखितहुँ ‘डरू नहि, अँगूठा लगाउ’ कहैत रहल। एहि व्यवहारक महत्त्व ई अछि जे दबाव प्रत्येक बेर प्रत्यक्ष धमकी नहि; भरोसाक मधुर भाषा सेहो भय घेरि सकैत अछि। रामलखन ऊपरक नाम पूर्ण नहि कहि पबैत

अछि, मुदा हरिचरण, मुनीम आ आश्रमक चिट्ठीक मार्ग बतबैत अछि। अस्फुट स्वीकार कथानककेँ नैतिक जटिलता दैत अछि—ओ दूत सेहो, दबावक सहभागी सेहो।

दस्तावेजक मिलान आ गवाहीक श्रेणी

दुपहर धरि अठारह नामक मिलानमे पाठ पाँच दबाबबला, तीन चुप्पी केँ वचन बनाओल, दू अस्थायी सहायता सँ स्थायी दावाबला, चार पुनरावृत्त गवाहबला, एक मृतक नाम आ तीन अधूरा गवाही—एहन विभाजन प्रस्तुत करैत अछि। एतय संख्या सूचना देबाक संग आख्यानक नब अवस्था बतबैत अछि। कथा अलग-अलग आँखिमे देखल दुःखकेँ एक साझा प्रक्रिया मे राखैत अछि, मुदा प्रत्येक वर्गक भीतर पृथक् व्यक्ति छथि। वर्गीकरण निष्कर्षक शुरुआत मात्र अछि; मरण-तिथिक विसंगति अगिला अध्यायक भीषण केन्द्र तैयार करैत अछि।

दृश्य-अन्तर्ध्वनि आ मीराक तीन भेद

मृतकक नाम सुनिते ठूँठक छालपर उज्जर रेखा देखबाक लोक-विश्वास उठैत अछि। मीरा ओकरा रोकैत नहि, मुदा देखल बात, मानल बात आ कागचक बात अलग दर्ज करबैत छथि। एहि व्यवस्था सँ जादुई यथार्थवादक छवि संरक्षित रहैत अछि, संगहि सार्वजनिक आरोपक निर्णय चमत्कारपर निर्भर नहि होइत। पाठक एक संवेदी संकेतक भावात्मक प्रभाव अनुभव करैत अछि, मुदा त्योहारक सामूहिक विस्मयकेँ साक्ष्यक अन्तिम दर्जा नहि भेटैत। ई द्विस्तरीय आख्यान-स्वर उपन्यासक महत्त्वपूर्ण तकनीक अछि।

अधूरा मिलानक समापन : मृतकक नामक नब जोखिम

अठारह प्रविष्टिक जाँचक बादो सत्य सम्पूर्ण घोषित नहि होइत। कुछ गवाही अधूरी रहल, किछु परिवारक मनोवृत्ति बदलल, महावीर अपन घरक कागचक प्रति सार्वजनिक राखबाक बात मानैत छथि। अन्तिम निर्णायक घटना मृतकक नाम पर सहमतिक लेखनक सम्भावना अछि। ई कथात्मक उच्चता केवल सनसनी नहि; सहमति शब्दक मूल तर्क उलटि जाइत अछि जखन देह स्वयं उपलब्ध नहि। अगिला प्रकरणमे कालक्रम, हस्ताक्षरक ढङ्ग आ नकल-अधिकार-चिह्नक रूपमध्य एहि विसंगतिक विस्तृत परीक्षण होइत अछि।

प्रकरण २६० | मूल अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

मृत्यु-पछाति सहमतिक विरोधाभास आ भयङ्कर कथा-सूत्र

अध्याय १५८क एक विसंगत प्रविष्टि आब अलग जाँच बनैत अछि। जगदीश महतोक सहमति-तिथि आ मृत्यु-रजिस्टरक तिथि बीच बीस दिनक अन्तर कथा उघारैत अछि। लेखक जीवनक अन्त आ कागचक कृत्रिम उपस्थिति भिड़ा दैत छथि। मृत व्यक्ति पर सहमति लिखनाइ आत्माक पुनर्जीवन नहि, सामाजिक अधिकारक मृत्यु-बादो चलल दुरुपयोग बनि उठैत अछि। जतय पूर्वक अध्यायसभ गुम नाम घुराबय चाहैत छल, एतय अपराधी मृतकक नाम अनधिकृत रूपेँ ‘जीबैत’ बनबैत अछि। ई उलटब उपन्यासक शीर्षक आ जलसमाधिसँ गहींर सम्बन्ध रखैत अछि।

परमानन्दक स्मृति आ चारि समय-चिह्न

जगदीशक पितरक मृत्युक घटना परमानन्दक स्मृति, मृत्यु-रजिस्टर, श्राद्धक समय आ पड़ोसीक कथन मिलिते अधिक ठोस बनैत अछि। मीरा एक स्मृति पर तात्कालिक अन्तिम निर्णय नहि बनबैत छथि; ओ चारि स्वतन्त्र समय-चिह्न जोड़ि देखैत छथि। एही कथन-रचनामे थरथरायल स्मृति आ दर्ज तिथि अलग स्रोत होइत अछि। पाठककेँ व्यक्तिगत शोकक सत्यक नैतिक बल भेटैत अछि, संगहि कालक्रमक तथ्यगत परीक्षणक आवश्यकता सेहो। उपन्यास एहि दू प्रकारक पाठ-अनुभव एक संग रखैत अछि।

सोना झाक अनुपस्थिति : देहक भौगोलिक दूरी

सहमति-कापी सोना झाकेँ आश्रममे उपस्थित कहैत अछि, मुदा पुत्र हरिनारायणक पत्र हुनका काशीमे पएरक घावसँ असमर्थ बतबैत अछि। घरसँ दूर शहरक पत्र आ गामक कापीक समान तिथि साहित्यिक प्रतिघात रचैत अछि। व्यक्ति जीवित छथि, मुदा हुनकर देह एक ठाम; दस्तावेज हुनका दोसर ठाम खड़ा करैत अछि। एहि विरुद्ध उपस्थितिसँ नामक दुरुपयोग बिना मृत्यु केर सेहो सम्भव अछि—लेखक मृतक-सहमतिक शीर्षककेँ व्यापक नकली उपस्थिति धरि विस्तृत करैत छथि।

रुक्मिणी देवीक हस्ताक्षर : लिखाइकेँ देह रूपमे पढ़ब

रुक्मिणी देवी पढ़ल-लिखल छलीह, हुनकर परिचित गोलाईदार लिखाइ अछि; सहमति-कापीक कठोर रेखा ताहिसँ मेल नहि खाइत। भतीजी शारदा असली पुरान चिट्ठी लैत छथि। काँचक तख्ती पर दुनू हस्ताक्षरक दृश्य-मिलान लेखककेँ हस्ताक्षरक देह, आदत आ वेगक वर्णन करबाक अवसर दैत अछि। मुदा ‘पुरुष-हाथक’ जेकाँ उपन्यासक अनुमान कैँ अन्तिम हस्तलिपि-विज्ञान न मानब उचित अछि; ठोस तुलना प्रमाण-पथ खोलैत अछि, व्यक्तिगत शैलीक केवल सामान्यीकरण दोष-निर्णय नहि।

अधिकार-सूचना पोथीक कटायल पृष्ठ

महावीरक घरसँ आनल बक्सामे दान-रजिस्टर, सेवा-खाता आ ‘अधिकार-सूचना’ पोथी भेटैत अछि। पोथीमे पहिल पृष्ठ पर बटुकनाथ, दोसरपर हरिचरणक लिखाइ, तेसर पर मुनीमक हिसाब; तकर बादक पृष्ठ कटायल। एहि रिक्त स्थानक नाटकीयता महत्त्वपूर्ण अछि—अधूरा पोथी स्वयं अलग ‘अनुपस्थित’ पात्र बनैत अछि। कथावाचक खालीपन कैँ जालसाजीक सम्भावित स्थल कहैत छथि, मुदा गायब पृष्ठ पर की छल, से बिना भेटने भरि नहि दैत। पाठककेँ रिक्तिक अर्थ अनुभव होइत अछि, निश्चित सामग्री नहि।

मोहरक तीन रूप : दान, सेवा, अधिकार

देविका एकहने चिह्न सहमति-कापी, सेवा-खाता आ अधिकार-सूचना पोथीमे देखैत छथि। दानक करुणा, सेवाक ऋण आ अधिकारक दबाव—ई तीन तह एक दृश्य-प्रतीकमे समेटैत अछि। चिह्नक पुनरावृत्ति कथाक विस्तृत सामाजिक सम्बन्धकेँ एक वस्तुक चित्रमे रचैत अछि। जकरा विश्वासक छाप मानल जाइत छल, से अधिकार-हस्तान्तरणक औजार सेहो भऽ सकैत अछि। एही द्वैधताक कारण मोहर साधारण खलनायकक सजावट नहि; भाषा, संस्था आ स्वीकृतिक सम्बन्धक केन्द्रीय कथात्मक वस्तु अछि।

‘छाह मोहर’ आ नकलक जन्मचिह्न

भानु लालक थैलीसँ नकल-मोहरक अभ्यास-छाप आ लोहेक छाप भेटैत अछि; अर्धचन्द्रक एक कोना अल्प टेढ़ अछि। किछु मृतक-सहमति पन्ना पर ताहि टेढ़ कोनाक साम्य देखायल। लेखक ‘लगभग एकसमान’क भीतरक धोखाकेँ सूक्ष्म दृश्य बनबैत छथि। अलग-अलग छाप राखि जाँच करबाक पात्रक काज सामग्री-प्रधान रोमांच उत्पन्न करैत अछि। मुदा समान चिह्न ककर हाथेँ कखन लगायल गेल, ई प्रश्न शेष अछि। मीरा एकरा नकल-चिह्नक सम्भावना कहैत छथि, पूर्ण आपराधिक निष्कर्ष नहि।

गोदाम धरि सूतक रेखा : लाभक दृश्य-मानचित्र

मृत वा अनुपस्थित नामक जमीन-पत्रक बादक क्रेता चन्द्रपालक भानिज, मुनीमक साला आ लाउक साझीदारक रूपमे उभरैत छथि। आरुणि लाल सूत तानैत छथि आ सभ रेखा पुरान गोदामक दिशामे मिलैत अछि। एहि सूतक चित्रात्मक शिल्पसँ वितरित अभिलेख एक बिन्दु पर केन्द्रित होइत अछि। चन्द्रपालक प्रत्यक्ष हस्ताक्षर नहि भेटल, मुदा लाभक यात्रा ओकर व्यापारी-क्षेत्रक ओर मोड़ लैत अछि। वस्तुगत नक्शा कथाक रोमांच तेज करैत अछि, न्यायिक निष्कर्ष थमाएल रखैत अछि।

नौ पन्नाक सूची आ बहुविध त्रुटि

नौटा मृतक-सहमति पन्नाक बीच तीन नकलचिह्न, दू असम्भव तिथि, दू अनुपस्थित देह, एक झूठा गवाह आ एक कटल कागचक अवशेष—एहन श्रेणीबद्ध सूची बनैत अछि। एतय पाठक अपराधक एकहि पद्धति नहि, अनेक सम्भावित उपकरण देखैत अछि। एहि विविधतासँ कथानक योजना संगठित बुझाइत अछि, किन्तु प्रत्येक पन्नाक कारण अलग जाँचबाक पड़त। संख्या कहानीक भयकेँ ठोस आकार दैत अछि; पूर्ण दोषनिश्चयक तत्काल विकल्प नहि।

भानु लालक उपस्थितिक पूर्ववर्ती वर्णनसँ विरोध

एहि अध्यायमे भानु लाल स्वयं पुरान थैली लऽ कऽ अबैत आ नकल-छापक विषयमे बजैत छथि। मुदा पिछला क्रमक किछु अध्यायमे भानु लालक पुत्र रमेश मुहरियाक बयान एहि प्रकारेँ अछि जेना पिता पुरान समयक व्यक्ति छथि, जिनकर बचल रजिस्टर आ मोहर-पदार्थ उपलब्ध अछि। वर्तमान प्रत्यक्ष उपस्थिति आ पूर्ववर्ती परोक्ष स्मृति बीच मृत्यु/जीवित-अवस्थाक स्पष्ट समय-संक्रमण पाठ नहि दैत। एकरा प्रतीकात्मक भूत-प्रवेश स्वतः मानि लेब अनुचित; समीक्षामे ई व्यक्तिकालगत रचनात्मक असङ्गति रूपेँ दर्ज हएत, मूल कथा बदलल नहि जाएत।

निष्कर्ष : मृतकक अनुपस्थिति अपन अधिकार वापस माँगैत अछि

मृतकक नाम नकली कागचमे उपस्थित बनाएब मृत्यु परोक्ष रूपेँ चोरबाक कृत्य अछि। अध्यायक समापनमे गाम आपात विजय घोषित नहि करैत; कापीक सामग्री लाभक सम्भावित बाट सूचित करैत अछि। सत्यक कथा एतय दस्तावेज नष्ट करबाक बदला दस्तावेजकेँ फेर सही व्यक्ति आ सही समयसँ जोड़बाक प्रयास अछि। एहि नैतिक तथा शिल्पगत आधार पर अगिला अध्याय गोदाममे प्रवेश करैत अछि, जतय नकली मोहरक सम्भावित उत्पादन, लेन-देन आ निर्देशबला सामान खोजल जाएत।

प्रकरण २६१ | मूल अध्याय १६० — गोदामक छाया

गामक नक्शासँ गोदामक वास्तविक देहरी धरि

मृतक-सहमतिक पन्ना आ जमीन-कीनपत्रक रेखा पुरान गोदामक दिशामे मिलैत छल। अध्याय १६० एहि दृश्य-नक्शाकेँ पात्रक वास्तविक यात्रा बनबैत अछि। मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका, सत्यव्रत, भिखारी लाल, रामलखन आ आन गवाह गोदाम दिस बढ़ैत छथि। एहि चलनमे उपन्यासक घटनाक दिशा बदलैत अछि—ठूँठ लग अभिलेख देखबाक बाद आब विरोधी पक्षक सम्भावित सामग्री-केन्द्रक दुआर खोला जाइत अछि। मुदा मीरा आगूहि भीड़-हिंसाकेँ रोकैत छथि। रोमांचक स्थलपर पहुँचबाक गति आ सावधानीक विराम एक संग चलैत अछि।

गोदामक चाबी आ धीरूक बयान

गोदामक रखवार धीरू कहैत अछि जे लाउ मालिक चाबी रखनाइ कहने छलाह आ माल चन्द्रपालक बताओल गेल छल। चाबी-शृंखला कथाक पहिल विशिष्ट सम्बन्ध बनैत अछि: वस्तु कोन ठाम, ककर भरोसामे, आ ककर नामपर राखल छल। एही छोट बातचीतक महत्त्व अछि जे चन्द्रपाल एखन स्वयं उपस्थित नहि, मुदा दोसरा व्यक्तिक शब्दमे ओकर व्यावसायिक ‘छाह’ ठोस होइत अछि। धीरूक कथन गवाही अछि; तकर सत्यापनक हेतु भीतर भेटल बही, नक्शा आ आवागमनक अन्य सामग्री अलग देखल जाइत अछि।

देबालक नक्शा आ पूर्वक लाल सूत

गोदामक देबालपर खेत-सीमा अनेक रङ्गमे खिंचल भेटैत अछि; चिह्न, बिन्दु आ क्रॉस लग अछि। आरुणि ठूँठक तरे बनाओल लाल-सूतक नक्शासँ ओकर तुलना करैत छथि। ई दृश्य ‘पहिने कल्पित सम्बन्ध, बादमे ठोस स्थानिक मिलान’क कथा-प्रविधि अछि। पाठक एक चरण पहिनेका मानचित्रकेँ नव दृष्टिसँ फेर पढ़ैत अछि। एके चिह्न पर मिलैत रेखा सम्बन्ध मजबूत करैत अछि, मुदा नक्शा ककर द्वारा बनल आ कखन, ई विवेचनक शेष प्रश्न अछि।

गोदामक बहीमे ‘छाह मोहर’

गोदामक बहीक भीतर ‘छाह मोहर’क उल्लेख नकल-अधिकार चिह्नक पूर्वसन्देहकेँ प्रचलित व्यवसायिक भाषा बनि देखबैत अछि। पृष्ठ-संख्या, तिथि, नाम आ टिप्पणी अलग नोंदबाक प्रक्रिया एहि वस्तु-खोजक कथात्मक लय होइत अछि। छाहक रूपक आब केवल भूत वा स्मृतिक छवि नहि रहल; ओ मोहरक बनाओल प्रतिरूप आ लाभ-व्यवस्थाक प्राविधिक शब्द बनैत अछि। एही अर्थ-विस्तारसँ उपन्यासक जादुई प्रतीक आ बाजारक कपट एके शब्दक भीतर भेटैत अछि।

‘बूढ़’, ‘विधवा’, ‘मृत’ : शिकारक वर्गीकरण

गोदाममे भेटल पट्टी आ सामग्रीपर किछु लोकक पूरा नाम नहि, केवल ‘बूढ़’, ‘विधवा’, ‘दूर’, ‘बीमार’ जेकाँ चिन्ह अछि। ई श्रेणीकरण कथा कैँ डिजिटल ठगीक पुरान सूत्रसँ जोड़ैत अछि: अपराधी व्यक्ति कैँ पहिने ओकर कमजोरीक एक शब्दमे बदलैत अछि। गामक रजिस्टर व्यक्ति कैँ पूरा नाम दऽ अधिकार घुरबैत छल; गोदामक

सूची व्यक्ति कैं एक जोखिमपूर्ण श्रेणीमे घटा दैत अछि। दुनू अभिलेखी भाषाक ई प्रत्यक्ष विरोध उपन्यासक नैतिक तथा शिल्पगत केन्द्रीय उपलब्धि अछि।

कोटक जेबमे ‘मौखिक निर्देश’

गोदामक पाछाँक कोठरीमे टाँगल कोटक जेब सँ कागच भेटैत अछि—चन्द्रपाल बाबूक मौखिक निर्देश बताओल पन्ना बाहर नहि जाए, नीचे लाउक छोट हस्ताक्षर। एही वस्तुसँ मौखिक निर्देश आ लिखित सन्दर्भक परस्पर विरोध उभरैत अछि। जे आदेश कागच पर नहि रखबाक भनल गेल, ओ अब कागचक रूपमे सुरक्षित अछि। कथाक विडम्बना तीक्ष्ण अछि। तथापि पर्चीक सामग्री, हस्ताक्षर आ तिथिक मेल कथावस्तुमे जाँचक स्तर पर अछि; एकरा तत्क्षण पूर्ण दोषनिश्चयक बराबर नहि रखबाक चाही।

गोदाम भीतर हँसी, बाहर रोदन : दृष्टिकोणक विभाजन

धीरू कहैत अछि जे भीतरक बैठकीमे दान, ऋण, सीमा आ ‘मध्यस्थ खर्च’क चर्चा होइत आ हँसी उठैत; बाहर लोक कानैत छल। एहि दू ठामक ध्वनिक विरोध लेखकक समाज-स्थानिक आलोचना अछि। भितरका समृद्ध गुप्त व्यवहार आ बाहरक असुरक्षित प्रतीक्षा बीच दीवार दृश्यमान रहलो अपन पारस्परिक सम्बन्ध छिपबैत अछि। गोदाम ‘अपराधक कान’ बनबाक रूपक सत्यव्रतक स्वीकारोक्तिमे उभरैत अछि। ओ पुरान न्यायक बरामदामे जे नहि सुनलाह, से कथाक पात्रात्मक आत्मपरीक्षा बनि घुरैत अछि।

असली, नकल आ मृतक-पन्नाक छापक त्रिकोण

गोदाममे प्राप्त छापकैं असल अधिकार-चिह्न आ पूर्वक मृतक-पन्नासँ तुलना करबाक दृश्य लम्बा जाँचक परिणति अछि। तीन छापक सूक्ष्म बिन्दु, अर्धचन्द्रक कोना आ दबाव देखल जाइत अछि। एतय लेखक यान्त्रिक वस्तुकैं कथानकीय ‘पात्र’क दर्जा दैत छथि: भेद बहुत छोट, प्रभाव अनेक खेत आ घर पर पैघ। मुदा भौतिक समानताक आधार पर अपराधक लाभार्थी धरि पहुँचब अलग चरण अछि। मीरा एहि कारणेँ उद्घाटन सीमित राखैत छथि—मिलान योग्य सामग्री भेटल, अन्तिम घोषणा नहि।

सत्यव्रतक काँप आ महावीरक सार्वजनिक लेखा

सत्यव्रत गोदामक दृश्यसँ अपन पुरान सुननाइ-असमर्थता याद करैत छथि। हुनकर काँप भावुक प्रधानता नहि, सहभागी मौनक स्मृति अछि। महावीर अपन घरक अधिकार-चिह्नक सार्वजनिक लेखा बनएबाक घोषणा करैत छथि। दूनू वृद्ध पात्रक क्रिया अलग अछि—एक पुरान न्यायिक मौनक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत छथि, दोसर कुल-चिह्नक निजी नियन्त्रण छोड़ैत छथि। मुदा एहि पश्चात्ताप सभसँ पुरान क्षति स्वतः भरि नहि जाइत; वस्तु सुरक्षित राखब आ आगामी जाँच निरन्तर चाही।

गोदामक पछाति चन्द्रपालक अनुपस्थिति

गोदाम खुजलाक बाद गाममे चन्द्रपालक नाम पुनः बाजल जाइत अछि, मुदा ओ प्रत्यक्ष सामने नहि अबैत। कथा लाभक रेखा, रखवारक कथन, लाउक हस्ताक्षर आ गोदामक वस्तुक माध्यमेँ एक अनुपस्थित प्रभावशाली पात्रक

देह रचैत अछि। एहि दूरक उपस्थिति लेखकक विलम्बित उद्घाटनक नीति अछि। तथापि पूर्ण अनामत्व नहि—नाम अब सार्वजनिक प्रश्न भऽ गेल अछि। आगामी अध्यायमे फोनक धमकी एहि प्रश्नकेँ नव माध्यममे बदलत; दफ्तरक कागच सँ निजी कान धरि भय पहुँचत।

प्रकरण २६२ | मूल अध्याय १६१ — फोनक कैद

गोदामक तालासँ आवाजक तालाक रूपान्तरण

गोदामक लोहेक ताला खोलल गेलाक बाद अध्याय १६१मे बूढ़ मुवक्किल पुरान बटनबला फोन नेने ठूँठ लग पहुँचैत अछि। ओ कहैत अछि जे फोनमे ओकरा कैद कऽ लेल गेल। भौतिक बन्दीकरणक बिम्ब नव संचार-माध्यममे परिवर्तित भऽ जाइत अछि। मोहर आ फाइलक सत्ता आब कानक भीतर बाजैत अछि। कथानकक विस्तार सेहो घुरैत अछि—सामुदायिक स्थलपर आयोजित खोजक विरुद्ध एकाकी व्यक्ति कैं रातिमे डराओल जाइत अछि। लेखक अपराधक केन्द्र गोदामसँ घरक भीतरक फोन धरि नब रूपमे आनि दैत छथि।

अधिकारक आवाज : नकली सरकारी वाक्य

फोनक अपरिचित स्वर अपना कैं जाँच, अदालत अथवा सुरक्षासँ जुड़ल बताबैत अछि। ओ सुरक्षित खाता, घर सीलबन्द होएब, बेटाक गिरफ्तारी आ नाम सार्वजनिक होएबाक धमकी दैत अछि। एहि संवादक बनावट महत्त्वपूर्ण अछि: धमकी शब्दावलि अधिकारक आवरण पहिरने अछि। अपराधी स्वयं नहि आएल, ओकर बनाओल आवाज लोकक विवेक पर संस्थागत मोहर लगबैत अछि। बूढ़ मुवक्किल नाम आ मुकदमा-संख्या सुनि विश्वास करैत अछि, कारण ओकरा ओ सूचना गोपनीय बुझाइत अछि। वस्तुतः सूचना स्रोतक सम्भावित रिसावहि कथा खोलैत अछि।

आधा रकम गेल : विलम्बित बचावक असुविधा

बूढ़क पोता बतबैत अछि जे रकमक आधा हिस्सा पहिनहि पठाओल जा चुकल अछि; शेष पठेबा सँ पहिने ओ रोकलक। एहि विवरणसँ कथा गलत-सहीक सस्ता समाधान नहि दैत। समुदाय भयक वाक्य खोलि पढ़य लगैत अछि, मुदा क्षति पहिनहि भऽ चुकल अछि। पोताक भूमिका पीढ़ीगत संवादक रूपमे उभरैत अछि; युवा सदस्य तकनीकी उपकरण मात्र नहि, भयक समय अकेल छोड़ल वृद्धक सहायक बनैत अछि। आंशिक बचावक एहि स्थिति मे अपराधक प्रभाव आ सामूहिक चेतनाक आरम्भ समानान्तर चलैत अछि।

फाइलक भीतरक संख्या फोनपर : अभिलेख-रिसावक प्रश्न

धमकी देनिहार स्वर बूढ़ मुवक्किलक मुकदमा-संख्या आ रद्दी-बोरा सम्बन्धी सूचना जनैत अछि। सत्यव्रत आ भिखारी लाल एकरा रेकर्ड-घरक सम्भावित रिसावसँ जोड़ैत छथि। एहि ठाम कथा नया शृंखला बनबैत अछि—फाइलक गोपनीय सामग्री → फोनक विश्वासनीयता → बैंकक रकम। मुदा वास्तविक रिसावक मार्ग एखन तय नहि; संदिग्ध पहुँच रखनिहार सभक तुलना शेष अछि। आधिकारिक सूचना अपराधक वाक्यमे प्रवेश कयलक, एकर कथात्मक भय एहि सम्भावनासँ बढ़ैत अछि।

‘ककरो नहि कहू’ : एकान्तक निर्देशन

फोनबला केवल रकम नहि माँगैत, बूढ़केँ एकान्तमे रखबाक आदेशो दैत अछि। ‘ककरो नहि कहू’ एक विशिष्ट कथन-तकनीक अछि: पहिले सम्बन्ध काटू, फेर भय बढ़ाउ, तकर बाद ‘सुरक्षित’ हस्तान्तरणक भाषा चलाउ। सामूहिक नाम-पहरा अभियानक उलटा ई गोपनीय निर्देश व्यक्ति केँ शून्य साक्षी बनाबय चाहैत अछि। मीरा एहि उलटबेँ अध्यायक नागरिक प्रतिक्रिया गढ़ैत छथि—डरक आवाज दोसर कान धरि पहुँचत। लेखक एक तकनीकी अपराध केँ सामाजिक एकाकीपनक संरचना रूपमे पढ़नाइ सम्भव बनबैत छथि।

बटनबला पुरान फोन : वस्तुक चयन

नवीनतम चमकैत स्क्रीनक बदला लेखक बूढ़क घिसल बटनबला फोन देखबैत छथि। एहि चयनसँ पात्रक साधन-सङ्कट, पीढ़ीगत दूरी आ आवाजपर विश्वासक परिस्थिति एक संग देखाइत अछि। झूठक जाल केवल नब तकनीकक दृश्यातिशय पर निर्भर नहि; पुरान फोनक साधारण रिङ्गो लोककेँ डराकेँ मालक माध्यम बनि सकैत अछि। फोन बूढ़क देहक काँप लऽ कऽ ठूँठ लग अबैत अछि। ई वस्तु अगिला अध्यायक समूह-पाठ लेल सामूहिक मेज पर रखल जाएत।

गोहि रूपकक नव वासस्थान

पूर्वक अध्यायमे गोहि पानि, रद्दी-बोरा, मोहर आ गोदामक अन्हारमे प्रतीकात्मक रूपेँ उपस्थित छल। एहि अध्यायमे गोहि फोनक आवाजक फान्द बनि जाइत अछि। ई रूपकक केवल नाम-स्थानान्तरण नहि; गोहिक शिकार करबाक ‘अकेल करब’ पद्धति आ ठगीक गोपनीयता समान कथा-कार्य करैत अछि। डिजिटल छलक सामाजिक जड़ि बतबैत काल लेखक जीववैज्ञानिक गोहिक वास्तविक आचरणक दावाकेँ प्रधान नहि बनबैत, ओकरा भयङ्कर भक्षणक साहित्यिक प्रतीक रूपमे रखैत छथि।

बूढक लाज आ कथावाचकक सहानुभूति

रकम गेलाक बाद बूढ़ मुवक्किल पहिने बोलबाक साहस नहि करैत; पोता ओकरा स्थानपर उत्तर दैत अछि। उपन्यास दयापात्रता रचैत अछि, मुदा पात्रकेँ निरीह वस्तु नहि बनबैत—ओ स्वयं फोनक कैदक भाषा दैत अछि। एहि स्वनामकरणमे पीड़ितक व्यक्तित्वक गरिमा अछि। समूहक प्रतिक्रिया दण्डात्मक उपहास नहि, अपराधक वाक्य खोलबाक तैयारी अछि। कथा ठगक तन्त्रकेँ जाँचबाक संग पीड़ितक लाजकेँ अपराधक मौन-सहायक बनबासँ रोकैत अछि।

अन्तिम दृश्य : व्यक्तिगत डर सँ सामूहिक पाठ धरि

अध्यायक समापन फोनक धमकीक तकनीक खोलि पढ़बाक आगामी सभा दिस जाइत अछि। बूढ़क काँपैत हाथ एकटा नब पाठशालाक सामग्री बनि उठैत अछि। एतय तत्काल ठगक गिरफ्तारी वा गुम रकमक वापसी नहि भेल; घटनाक उपलब्धि अछि जे एक व्यक्तिक अनकहल भय सामाजिक प्रश्न बनल। लेखक एहि अधूरे उत्तरसँ पाठककेँ अगिला अध्याय ‘आवाजक मोहर’क ओर बढ़बैत छथि, जतय अधिकारक स्वरक नकलकेँ स्वयं सामूहिक पाठरूपेँ सुनल जाएत।

प्रकरण २६३ | मूल अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

स्वरक अधिकार : कागचक मोहरक समान्तर

अध्यायक आरम्भमे मीरा बुझबैत छथि जे आवाज सेहो कागचक मोहर जेकाँ अधिकारक स्वीकृति माँगैत अछि। ‘हम अदालतसँ’, ‘हम बैंकसँ’, ‘हम थाना सँ’—एहन वाक्य सुननिहारक विवेकपर पहिलेहि प्रभाव डालैत अछि। कथा एहि सत्ता-नाटककेँ ‘भरोसाक नकल’ कहि चिन्हबैत अछि। पिछले अध्यायमे ध्वनि एकाकी भय उत्पन्न केने छल; एतय ध्वनिक टुकड़ा अलग-अलग लोकक सामने पुनः बजाओल जाएत। एही स्थलान्तरणसँ सुननाइ निष्क्रिय स्वीकारसँ सक्रिय आलोचनात्मक क्रिया बनैत अछि।

अनेक फोनक एक चाल : बहुवचन आवाज आ एकरूप पटकथा

बच्चा सभ अलग घरक फोन-सूचना एक रजिस्टरमे जोड़ैत अछि। संख्या, समय, बाजल नाम, माँगल रकम, डरक वाक्य आ जवाबक स्तम्भ बनैत अछि। बिजली विभाग, बैंक, थाना आ अदालतक आवाज भिन्न लागैत अछि, मुदा क्रम—विश्वास, धमकी, जल्दबाजी, अलगाव—एके सन अछि। एहि दोहरावसँ उपन्यास नकली आवाजकेँ एक संगठित पटकथाक रूप दैत अछि। प्रत्येक पीड़ित अनुभव निजी, लेकिन वाक्यरचना सामूहिक; एहि द्वित्वसँ पाठक व्यक्तिगत लाजक बजाय घातक साजिशक पद्धति देखैत अछि।

मधुकरक प्रवेश-पुस्तक : तीनटा नामक आड़ि

रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकमे मधुकर तीन बेर अलग सम्बन्धक सहारे प्रवेश केने अछि—लाउक सिफारिश, हरिचरणक कागच आ चन्द्रपालक प्रतिनिधिक रूपमे। एतय एक व्यक्ति अनेक पात्रत्व धारण करैत अछि। उपन्यासक रंगमंचीय अध्यायसभमे अभिनय सत्यक गवाही लेल छल; अपराधीक एहि बहुरूपियापनमे अभिनय निजी लाभक शिकार बनाबैत अछि। तीन प्रवेशक तिथिक पुनर्मिलान कथा केँ नाट्य-भाषासँ संस्थागत आवागमनक ठोस अभिलेख धरि लैत अछि। मुदा प्रवेशक रिकॉर्ड अपराधक प्रत्येक काल्पनिक क्रिया अपने सिद्ध नहि करैत।

सकुनीक आँखि आ सीमित देखल बात

सकुनी मधुकरक भाड़ाक कोठरीक कात हरिचरणक लोककेँ कागचक थैली संग देखबाक कथन करैत छथि। मीरा तुरन्त आदेश दैत छथि जे केवल देखल बात लिखू, निष्कर्ष नहि। ई क्षण पात्रक विश्वासनीयता कम नहि, बढ़बैत अछि; जे अपनी दृष्टिक सीमा जनैत अछि, ओकर कथन पाठक लेल अधिक स्पष्ट रहैत अछि। कथावाचक सकुनीकेँ चुप कराओल स्त्रीसँ अब सावधान सक्रिय पर्यवेक्षक बनबैत छथि। देखनाइकेँ सार्वजनिक कहनाइमे बदलितहुँ ओ बचल प्रश्नक स्थान सुरक्षित रखैत छथि।

भाड़ाक कोठरीक कैलेंडर : तिथिसँ शिकारक सूची

मधुकरक कोठरीमे तीन लाल गोला-बला कैलेंडरक तिथि प्रवेश-पुस्तकसँ मेल खाइत अछि। नीचाँ लिखल ‘बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता’क चारि पद मानवीय विवरणक भयानक घटाओल रूप अछि। जँ गामक रजिस्टर नाम आ

परिवार घुरबैत अछि, तखन ठगीक कोठरी पात्र कैं शिकारक कमजोर बिन्दु सभमे बाँटैत अछि। एहि विपरीत अभिलेखी क्रिया सँ उपन्यास ‘नामक पहरा’क सामाजिक आवश्यकता प्रभावी ढङ्गेँ देखबैत अछि।

रिकॉर्डरमे अभ्यासक आवाज : रंगमंचक विपरीत प्रयोग

खाटक नीचाँ पाओल सस्ता रिकॉर्डरमे जाँच शाखा, सुरक्षित खाता आ गिरफ्तारीक डरबला अभ्यासक ध्वनि अछि। अलग-अलग आवाज एकहि वाक्यक अनुशासनमे बजैत अछि। देविका एकरा अभिनयक दुरुपयोग कहैत छथि। कथा अपन पूर्वक ‘विदेह नाट्य उत्सव’मे अपनायल साक्षी-बनबला अभिनय आ एहि छल-बनबला अभिनयक भीषण समानता देखबैत अछि। अभिनय तकनीक स्वयं नैतिक नहि; ओ कोन जीवनक रक्षा करैत वा कोन जीवनक भय बेचैत, एहि प्रश्नपर एकर अर्थ निर्भर अछि।

रकमक तीन हस्तान्तरण आ ‘एम. प्रसाद’क नाम

बैंकसँ सूचना अबैत अछि जे बूढ़ मुवक्किलक आधा रकम तीन छोटे हस्तान्तरणमे टूटि गेल। एक चिन्ह नकली, दोसर मृत व्यक्तिक नामपर, तेसर ‘एम. प्रसाद सेवा केन्द्र’क रूपमे भेटैत अछि। एहि घटनासँ गोदामक मृतक-सहमति आ फोनक ठगी एक दोसराक कथा-माध्यम सँ जुड़ि जाइत अछि। मुदा ‘एम’ अक्षर मधुकरक नामक अन्तिम पुष्टि नहि, सम्भावित आवागमनक प्रश्न अछि। लेखक अर्थक फिसलन सँ रोमांच रचैत छथि; सावधानीक आवश्यकता एतेक बढ़ैत अछि जे एक अक्षरक मोहमध्ये न्याय न हेरा जाए।

हरिचरणक धीमा फोन : सुनल शब्द आ अनिर्णीत स्रोत

सकुनी हरिचरणकेँ भीड़सँ हटि कोनो धीमा फोनपर ‘कागच हटाउ’ कहैत सुनैत छथि। ओ अफवाहक रूपमे सभामे चिचिआइत नहि; मीराकेँ निजी रूपेँ अपन सुनल बात दैत छथि। रजिस्टरमे ‘सकुनीक सुनल’ रूपेँ एहि कथनक स्रोत चिह्नित अछि। ई उल्लेख अगिला अध्यायक रहस्य-उत्प्रेरक अछि, मुदा कागच कोन, के हटाओत, उद्देश्य की —किछु स्पष्ट नहि। सही आख्यानशास्त्रीय पठनमे संवादक नाटकीय धमक आ अनिश्चित तथ्यगत सीमा दुनू अलग राखल जाए।

भयक सार्वजनिक पाठ : कानक साझेदारी

रातिमे बूढ़ लोक स्वयं धमकीक वाक्य पढ़ैत छथि, बच्चा सभ प्रत्येकक चाल—समय-दबाव, एकलापन, अधिकारीक अभिनय, बदनामी आ ‘सुरक्षित’ रकमक माँग—खोलैत अछि। जे स्वर काल्हि अकेला कानमे निर्णायक लागल छल, ओ लोकसमूहमे एक साधारण तैयार पटकथा रूपमे पहिचानल जाइत अछि। कथाक रूप स्वयं उपचार-प्रक्रिया बनैत अछि: पुनरुक्ति डर बढ़बय लेल नहि, डरक बनावट खोलय लेल प्रयोग होइत अछि। दर्शकक सामूहिक श्रवण कथा-विश्वमे सक्रिय नागरिक अभ्यास बनैत अछि।

दू संदिग्ध भविष्य : मधुकर अनुपस्थित, कागच हटेबाक आदेश

अध्यायक अन्त धरि मधुकर भेटल नहि, हरिचरणक सम्बन्ध अनिश्चित, चन्द्रपालक नाम परोक्ष, आ ‘कागच हटाउ’क लक्ष्य अज्ञात। तथापि चार अलग ठाम प्रतिलिपि सुरक्षित करबाक निर्णय एहि भयक प्रतिकार बनैत

अछि। ई समापन पूर्ण रहस्योद्घाटन नहि, जोखिम पहिचानिकेँ बाद स्रोत बचाबक व्यवस्था अछि। कथावाचक उत्तेजना आ संयम दूनूक एक साथ रखैत छथि, जाहिसँ अगिला अध्याय दस्तावेजक हटायल निशान खोजबाक स्वाभाविक कारण पबैत अछि।

प्रकरण २६४ | मूल अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

‘कागच हटाउ’सँ रेकर्ड-घरक भोर धरि

सकुनीक सुनल अधूरा निर्देश पिछला अध्यायक अन्तमे रहस्य छोड़ैत अछि। अध्याय १६३ भोरक रेकर्ड-घरमे ओहि निर्देशक सम्भावित परिणाम खोजैत अछि। कथावाचक चिरईक पाँख, अलमारीक धूरि आ एक खुलल ठामक विवरणसँ पाठककेँ घटनाक पाछाँ छूटल दृश्यतत्त्व देखबैत छथि। समयक ई निकटता—रातिक शब्द आ भोरक खाली जगह—कथानकीय तनाव बनबैत अछि, मुदा कोन व्यक्ति कखन भीतर घुसल से स्वतः स्पष्ट नहि। कथा पहिने निशान देखैत अछि, पाछाँ उत्तर खोजैत अछि।

सत्रह नम्बर अलमारी : धूरिक पदचिह्न

अलमारीक सोझाँ धूरिमे नांगट पएर वा नरम चप्पलक सन निशान देखाइत अछि। अनन्या एखनहि पहिल अनुमानक आगाँ प्रश्नचिन्ह लगबैत छथि, मीराक निर्देशन अनुसार। एहि सूक्ष्म विरामक महत्त्व अछि: दृश्य सामग्री वर्णन योग्य अछि, मुदा निष्कर्ष अनेक भऽ सकैत अछि। धूरि रूपकमे ‘पुरान मुंशी’ बनैत अछि, मुदा रजिस्टरमे ओ निश्चयात्मक गवाह बनि कोनो व्यक्तिक नाम नहि लिखबबैत। जादुई रूपक आ सावधान अवलोकन साथ चलैत अछि।

खाली शेल्फक नाप : अनुपस्थित वस्तुक देह

एक फाइल गुम भेटलाक बाद बच्चा सभ खाली स्थानक लम्बाइ-चौड़ाइ, डोरीक रङ्ग आ गोंदक सूखल टुकड़ा नोंदैत अछि। वस्तुक अभाव स्वयं दृश्य-व्यवस्था बनैत अछि। पहिने उपन्यास अनाम मनुष्यक नामक अभावकेँ पाथर आ खाली पन्नासँ देखबैत छल; एतय अनुपस्थित फाइलक स्थान प्रश्न करैत अछि। समान रूपकक ई वापसी नब कार्य करैत अछि—काव्यात्मक शोकसँ निरीक्षणक संयम धरि। नाप तथ्यक सम्पूर्ण उत्तर नहि, गायब वस्तुक सम्भावित आकार मात्र अछि।

परमानन्दक बयान : कर्मचारीक उपस्थितिसँ दोषक सीमांकन

नब लिपिक परमानन्दक नाम उठिते पुरान लिपिकक चेहरा बदलैत अछि। परमानन्द स्वीकार करैत अछि जे ऊपरक आदेश कहिकऽ ओकरा दरबाजा खोलबाओल गेल; आदेश हरिचरणक लोकक माध्यमसँ, फोनपर चन्द्रपालक दफ्तरक नामसँ आबि सकैत छल। ओकरा एक थैली देल गेल, मुदा भीतरकी सामग्री ओ देखल नहि। एहि स्वीकारमे काजक जिम्मेदारी आ जानकारीक सीमा दूनू अछि। ओ गलत पहुँच सुगम बनौने होएबाक बात लुकबैत नहि, मुदा गुम फाइल स्वयं देखबाक दावी सेहो नहि करैत। पाठककेँ सम्पूर्ण जालसँ अलग एक अधूरा मध्यस्थक अनुभव भेटैत अछि।

कार्बनक पाछुक छाप : दाबक लिखित स्मृति

सत्रह नम्बर अलमारीक पाछाँ अटकल कार्बनक कागचपर ‘मृतक प्रमाण-पत्र संलग्न’, ‘उत्तराधिकारी अनुपस्थित’, ‘बन्धक पुनर्सत्यापन’क उलटल-अधूरा चिह्न भेटैत अछि। कार्बन स्वयं मूल अक्षर नहि लिखैत; ओ दोसर पन्नाक दाब सँ छाप ग्रहण करैत अछि। एहि भौतिक विशेषताकेँ लेखक नैतिक रूपक बनबैत छथि—शोषित व्यक्तिक देह दबाव सहि ओकर इतिहास रखैत अछि। गायब मूलक बदला कार्बन सब सत्य नहि बता सकैत, मुदा प्रश्नक वास्तविक दिशाक बचेबाक साधन अछि।

जीवित नागेश्वरक ‘मृतक प्रमाण-पत्र’

धुँधला कार्बनसँ नागेश्वर झाक नाम उभरिते बूढ़ मुवक्किल कहैत अछि जे ओ व्यक्ति जीवित, मुदा बीमार छथि। सत्यव्रत सावधान करैत छथि जे जीवित व्यक्ति केँ मृत लिखलाक बाद भूमि, उत्तराधिकार आ बैंकक रास्ता बदलि सकैत अछि। एहि दृश्यसँ अध्याय १५९क मृतकसँ सहमति-लेनिहार चाल उलटि जाइत अछि—एतय जीवितकेँ मृत बनाबय चाहल गेल। कथा मृत्यु आ जीवनक लिखित अदला-बदलीकेँ सम्पत्ति-हस्तान्तरणक भयक संग जोड़ैत अछि। अन्तिम पुष्टि लेल नागेश्वरक घरक गवाही आवश्यक अछि।

नागेश्वरक घरक यात्रा : कागचक प्रतिरोधक देह

सकुनी नागेश्वरक घर पहुँचैत छथि। खाटपर अस्वस्थ वृद्ध अपन नाम सुनैत जीवित होएबाक सरल दावा करैत छथि। हुनकर साँस, पत्नी केर बचाओल कागच आ पातक स्मरण एक घरक अति-साधारण, किन्तु निर्णायक दृश्य बनबैत अछि। फाइलमे मृतक शब्दक विपरीत खाटपर जीवित मनुष्यक शारीरिक उपस्थिति कथावस्तुक चरम विरोध अछि। मुदा बीमारीक देहकेँ सार्वजनिक तमाशा बनबाक अनुमति नहि; घरक नाजुक निजतामे सुनल बात पात्र सभ सावधानीसँ वापस लैत छथि।

‘एम. प्रसाद सेवा’ : अर्थक नान्हि-नान्हि कटान

कार्बनमे ‘एम. प्रसाद सेवा’ नाम उभरैत अछि। बादक जानकारीमे ई स्थानीय खाता नहि, बाहरी भुगतान-सुविधासँ जुड़ल बताओल गेल अछि, जाहि मार्फत छोट-छोट रकम कई बेर बाहर जाइत अछि। लेखक एकहि समय दस्तावेजी जाल आ फोनक डरक कथा सँ आर्थिक कटानक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। गोहिक भक्षण एतय एक बेरक हिंस्र दाँत नहि, हर बेर थोड़ेक काटब बनैत अछि। नामकेँ मधुकर अथवा अन्य व्यक्तिसँ स्वतः जोड़ि देब उचित नहि, कारण पूरा खाता-स्वामी एखन निश्चित नहि।

हरिचरणक अनुपस्थिति : लिखल तथ्य आ बाजल अफवाह

हरिचरण एहि दिन सभामे उपस्थित नहि। गामक लोक किएक नहि आयल—क्रोध, डर वा दोसर काज—अनेक गप्प चलबैत अछि। मीरा कोनो कारण दर्ज नहि करैत, केवल ‘हरिचरण अनुपस्थित’ लिखबैत छथि। एहि छोट वाक्यसँ उपन्यास सामुदायिक कथनक मर्यादा स्थापित करैत अछि: नाम आ अभाव एक तथ्य, अभावक अर्थ अलग व्याख्या। पहिले ‘कागच हटाउ’ कहिते सुनल व्यक्ति पर घन शङ्का अछि, मुदा अनुपस्थितिक कारण आरो अनुमान बढ़ा कऽ जोड़ल नहि जाएत।

गोहि, कार्बन आ काटल कागचक एक दृश्य

अन्तिम पहरमे नदीक किनार गोहि आधा जल आ आधा कादोमे देखाइत अछि। ओकर चमड़ापर कागचक फाटल रेखासँ मिलैत धार पड़ल बुझाइत अछि। ई जादुई दृश्य कार्बन, गुम पन्ना आ जीवन-चोरीक कथाकेँ उपन्यासक मूल जल-प्रतीकमे फेर जोड़ैत अछि। गोहि सचमुच कागच खौलक—एहन तथ्य लेखक स्थापित नहि करैत; पात्रक उपमा द्वारा नामक न मिटएबला सम्भावना अनुभव होइत अछि। स्रोत-सुरक्षा आ प्रकृतिक भयानकता एही प्रतीकमे समवर्ती होइत अछि।

अन्तर्वर्ती निष्कर्ष : गायब पन्नाक पाछाँ नव व्यक्ति

अध्यायक अन्तमे हटायल कागचक सब सामग्री वापस नहि भेटैत, नागेश्वर झाक कथन, कार्बनक छाप, परमानन्दक अधूरा स्वीकार आ बाहरी भुगतानक सूचना मात्र जोड़ल जाइत अछि। एतय लेखक प्रत्येक खोजक बाद एक नब व्यक्तिक देहरी खोलैत छथि। अनाम फाइलक स्तर पर जे विवाद छल, ओ जीवित वृद्धक नामसँ आब तात्कालिक बनि उठैत अछि। एहिसँ उपन्यास अपन प्रदीर्घ अभिलेखी अंशकेँ निष्क्रिय कागच-संग्रह नहि बनबैत; प्रत्येक कागच अन्ततः देहक अधिकार आ घरक जोखिम धरि पहुँचैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : दानक ऋणसँ हटायल कागज धरि

समीक्षा प्रकरण २५७–२६४ मे दानक स्मृति देखि सजीव व्यक्तिक नकली मृतक-प्रमाणपत्र धरि कथाक एक गहींर कारणात्मक रेखा बनैत अछि। पहिने दानक नैतिक ऋण हाथ आधा उठबैत अछि; लोहेक संदूक एहि मौनक लिखित व्यवस्था खोलैत अछि; सहमति-कापी मानवीय जीवनक संग मिलाओल जाइत अछि; मृतकक नामपर सहमतिक झूठ उजागर होइत अछि। तकर बाद गोदाम लाभक सम्भावित मार्ग देखबैत अछि, फोनक नकली अधिकार-स्वर वृद्धक खाता धरि पहुँचैत अछि, आवाजक मोहर सामूहिक कानमे टूटैत अछि, आ रेकर्ड-घर सँ हटायल पन्नाक पाछुक कार्बन नब गवाही अनैत अछि। एही क्रममे कथा ‘लेखल वाक्य’क मालिकक प्रश्नसँ ‘बाजल वाक्य’क मालिकक प्रश्न धरि जाइत अछि।

आठू अध्यायमे वस्तुक क्रम एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि। आधा उठल हाथ, निर्मलाक घड़ा, कीर्तनक मंजीरा, पूजाघरक कुंजी, लोहेक संदूक, अँगूठा-पैड, कमलाक कम्बल, अधिकार-सूचनाक कटल पन्ना, मोहरक अर्धचन्द्र, गोदामक लाल सूत, पुरान बटनबला फोन, भाड़ाक कोठरीक कैलेंडर, रिकॉर्डर, सत्रह नम्बर अलमारी आ कार्बनक कारी छाप—सभटा कथाक क्रमिक वाहक छथि। लेखक अमूर्त शोषणकेँ ई छोटे छुबय योग्य वस्तु सभमे उतारैत छथि। प्रत्येक नव वस्तु पुरान वस्तुक कथा पुनः पढ़बैत अछि। मंजीरा भक्ति मात्र नहि रहल; कपड़ामे लपेटल बही सेवा मात्र नहि रहल; फोन सूचना मात्र नहि रहल। वस्तुक अर्थ परिवर्तित होनाइ एहि खण्डक शिल्पगत प्रधान शक्ति अछि।

पात्र-विन्यासमे पीड़ित आ मध्यस्थक स्वर अलग-अलग काज करैत अछि। कैलाश, सकुनी, हरिबल्लभ, रामपरी, कमला, जगमाया, सुरमणी, नागेश्वर आ बूढ़ मुवक्किल अपन घरेलू स्मृतिसँ अभिलेखक एकतरफा कथनकेँ जाँचैत छथि। रामलखन, भिखारी लाल, महावीर, भानु लाल, कैलाश प्रसाद, धीरू आ परमानन्दक कथन प्रशासनिक मध्यस्थताक अनेक अवस्था देखबैत अछि। मीरा सार्वजनिक आरोपक हड़बड़ी रोकैत छथि; अनन्या

जाँचक रजिस्टर रखैत छथि; देविका अर्थ आ भाषाक पुनर्पाठ करैत छथि; आरुणि वस्तु आ तिथिक तुलना करैत छथि; सत्यव्रत पुरान मौन आ वर्तमान जिम्मेदारी बीच अटकल छथि। एहि बहुवाचिकतामे कोनो एक पात्र सर्वज्ञ न्यायक अन्तिम आसन नहि पबैत।

अध्यायसभक समय-व्यवस्था प्रतीक्षासँ अपराधक तिथि धरि बदलैत अछि। बीमारीक राति आ बादक भूमि-दाबी, वर्षाक राति आ स्थगित सीमा, सहमति-तिथि आ मृत्यु-तिथि, काशीमे रहबाक पत्र आ आश्रमक कथित उपस्थिति, गोदामक रातिक बैठकी आ बैंकक तीन छोटे हस्तान्तरण—ई समयक विसंगत परत छथि। एहि ठाम साहित्यिक सस्पेन्सक स्रोत तत्काल ‘अपराधी कौन’ नहि, ‘दू पन्नाक समय एक संग कोना सम्भव?’ अछि। मृतककेँ जीवित सहमति देनिहार बनाओल जाइत अछि; जीवित नागेश्वरकेँ मृतक प्रमाणपत्रक अधीन रखबाक योजना मिलैत अछि। एहि परस्पर उनटबमे नाम आ देहक सम्बन्ध उपन्यासक मूल त्रासदीक नव रूप लैत अछि।

नव संचार-घटना पूर्वक विदेह नाट्य उत्सवसँ एक महत्त्वपूर्ण प्रतिध्वनि बनबैत अछि। ओतय कबड्डी खेलनिहार सभ अभिनय द्वारा दबायल कथा सार्वजनिक सुनय लायक बनौने छल; एतय मधुकरक कोठरीमे रिकार्डर आ फोनपर सरकारी आवाजक अभ्यास कऽ लोककेँ एकाकी डराओल जाइत अछि। अभिनयक तकनीक समान भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर सम्बन्ध भिन्न अछि—ककर सहमति, ककर दाम, ककर मौन? एहि उलटबासँ लेखक नाटकक शिल्पकेँ नैतिक निर्दोषता प्रदान नहि करैत, ओकर उपयोगक प्रसंग सँ ओकर अर्थ निकालैत छथि। रजिस्टरमे डरक वाक्य अलग करबाक सामूहिक पाठ अभिनयक छलक विरुद्ध एक प्रकारक प्रत्यभिनय अछि।

स्रोत-अनिश्चितताक मर्यादा एहि खण्डक महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि। पुरान कागचपर नब मोड़, सहमति-कापीक चिह्न, असम्भव तिथि, उपस्थितिक विरोध, मोहरक टेढ़ कोना, गोदाममे भेटल पर्ची, सकुनीक सुनल ‘कागच हटाउ’, सत्रह नम्बर अलमारीक धूरि-निशान, परमानन्दक बयान आ ‘एम. प्रसाद’क उल्लेख अलग-अलग दर्ज कएल गेल अछि। संकेत प्राप्ति, परिवारक स्मृति, तिथि-मिलान आ अन्तिम अपराध-निर्धारणकेँ लेखकक पात्रसभ अनेक बेर अलग रखैत छथि। एहि कारण कथा न्यायिक रोमांच बनैतहुँ बिना जाँच सजाक घोषणासँ बचबाक प्रयास करैत अछि। मुदा एहि अनुशासनक बीच जे कखनो भाव-मुद्रा वा गन्धकेँ सुनिश्चित सत्यक निकट राखल जाइत अछि, ओ शिल्पक आलोचनात्मक जोखिम सेहो अछि।

भानु लालक चरित्र-कालमे एक उल्लेखनीय अन्तर्विरोध अछि। पिछला क्रममे रमेश मुहरियाक पिता भानु लालक बचल सामग्री आ परम्परा वर्णित अछि, जे पाठककेँ पिता बीतल समयमे रहबाक अनुभूति दैत अछि। एहि बैचमे भानु लाल स्वयं थैली लऽ कऽ अबैत आ नकल-मोहरक उपयोगक चर्चा करैत छथि। मूल कथा स्पष्ट कऽ नहि बतबैत जे ई प्रत्यक्ष जीवनक घटना, स्मृति-चित्र कि अलौकिक उपस्थिति अछि। तेँ ई पाठगत असङ्गति चिन्हित होएबाक चाही; कोनो काल्पनिक मृत्यु अथवा पुनर्जीवन जोड़ि पाठकेँ कृत्रिम रूपेँ सुसंगत बनाओल नहि जेत। पाठकीय विश्वासक लेल कालिक अवस्थाक ई अस्पष्टता महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि खण्डक अन्तिम उपलब्धि न चन्द्रपालक गिरफ्तारी अछि, न मृतकक सम्पत्ति वापस भेटब, न बूढ़ मुवक्किलक रकमक पूर्ण वापसी। उपलब्धि अछि जे दस्तावेज आ आवाजक अलग-अलग छल-प्रणाली सम्बन्धित रूपमे देखाइ पड़ल; स्रोत सुरक्षित राखबाक चारि ठामक व्यवस्था आरम्भ भेल; आ जीवित नागेश्वरक

देह कागचक ‘मृतक’ शब्दकेँ खुल्लमखुल्ला चुनौती देलक। जादुई गोहिक जल-छवि एहि अधूरा न्यायकेँ समापनक भ्रम नहि दैत। कथा बतबैत अछि जे मनुष्यक नाम वापस आनब समय, अनुमति, परिवारक स्मृति, संवेदनशील पाठ आ जवाबदेहीक लगातार श्रम माँगैत अछि। अगिला अध्यायसभ एहि अबाध जाँचक परिणाम आ नब प्रतिरोध देखेबाक सम्भावना खोलैत छथि।

प्रकरण २६५ | मूल अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

‘१७/सी’क प्रत्यागमन : अनुपस्थित पन्नासँ संरचनात्मक सूत्र धरि

पछिला अध्यायक सत्रह नम्बर अलमारी, हटायल कागच आ कार्बनक उनटा छाप एहि अध्यायक आरम्भमे ‘१७/सी’ नामक संक्षिप्त सूत्रमे जुटैत अछि। ई संख्या स्वयं समाधान नहि, अनेक घटनाक बीच सम्भावित सम्बन्ध देखेबाक सूचक बनैत अछि। अनन्या रातिभरि ओकरा मोनमे रखने छथि, जेना कागचक एक छोट चिह्न कथानकक अगिला दुआर खोलैत हो। लेखक रहस्यक गति कोनो अचानक अपराधी-प्रवेशसँ नहि, पहिनहिक दृश्यसभक नव संयोजनसँ बनबैत छथि। पाठककेँ स्मृति सक्रिय करय पड़ैत अछि, कारण प्रत्येक पिछला दृश्य एखन पुनः अर्थ पाबैत अछि।

क्रमसँ बजैत जाल : सत्यव्रतक पाँच वस्तु

सत्यव्रत परमानन्दक बयान, अलमारीक खाली स्थान, कार्बनक ‘मृतक प्रमाण-पत्र’, ‘एम. प्रसाद सेवा’ आ ‘१७/सी’ केँ क्रममे रखैत छथि। पाँच वस्तु पाँच तरहक भाषा रखैत अछि—मौखिक स्वीकार, वस्तुगत अभाव, लिखित छाप, संस्थाक नाम आ संख्याक संकेत। एहि भिन्नता सँ उपन्यासक अभिलेखी आख्यान बहुस्तरीय होइत अछि। एकटा वस्तु दोसराक स्वतः प्रमाण नहि, मुदा क्रमबद्ध रखलापर प्रश्नक नब आकार उभरैत अछि। कथा पाठककेँ घटनाक निर्णय नहि, सम्बन्धक सम्भावना देखबैत अछि।

अलमारीक ‘सी’ आ सी-कक्षक द्वैध

अदालतक भितरी अभिलेख-विभाजनमे सी खण्ड विवादित उत्तराधिकार आ बन्धकसँ सम्बन्धित कहल गेल; परमानन्द फोनपर ‘सी खण्ड’ सुनबाक स्मृति दैत अछि। तकर बाद चन्द्रपालक दफ्तरमे सी-कक्ष सेहो भेटैत अछि। एके अक्षर दफ्तरक भीतर-बाहर दोसर-दोसर ठाम प्रयोग होएबाक कारण कथा सन्देहक पुल बनबैत अछि। अक्षरक पुनरावृत्ति अर्थपूर्ण अछि, मुदा दूनू सी एके व्यवस्था छिकै—ई निष्कर्ष एखन अति शीघ्र होएत। कथावाचक अनन्या आ आरुणिक दू सम्भावना रखि ‘भीतरक जानकारी’क स्रोत अनिश्चित राखैत छथि।

परमानन्दक काँपैत हथेली : भयक फोकलाइजेशन

परमानन्दकेँ डाँटि नहि, बैसौला पर ओकर बयान आरो स्पष्ट होइत अछि। भारी फोनक स्वर, पाछाँक फुसफुसाहट आ थैलीक निर्देश ओकर स्मृतिमे टुकड़ा-टुकड़ा अछि। पाठक जालक पूर्ण योजना सर्वज्ञ दृष्टिसँ नहि, एक भयभीत अधीनस्थ कर्मचारीक सीमित श्रवणसँ बुझैत अछि। एहि सीमित दृष्टिक कारण चुप्पी अनिवार्य रूपेँ दोषक स्वीकार

नहि बनैत। पात्रक काँपन रूपकीय भय आ स्मृतिक अविश्वसनीयता दुनू उठबैत अछि; मीरा बयानक पाछाँ निश्चित अपराधी जोड़बाक हड़बड़ी रोकैत छथि।

सेवा-सूचीक भाषा : दाँतक शिष्ट आवरण

चन्द्रपालक दफ्तरक नामपट्ट चमकैत अछि, भीतर पेंशन, बैंक-सुविधा, उत्तराधिकार आ भूमि-अभिलेखक सहायता लिखल अछि। भौतिक दृश्य साधारण सेवा-कार्यालयक अछि, मुदा पूर्वक वृद्ध-पीड़ित सूची देखल पाठक एही शब्दसभमे सम्भावित शिकारक रास्ता पढ़ैत अछि। लेखक विरोधाभासी दृश्य रचैत छथि—बाहर रंग उतरैत फाटक, भीतर चमकदार वचन। एहि वर्णनमे अपराध सिद्ध नहि, सेवा-भाषाक दुरुपयोगक आशंका पाठकीय तनावक स्रोत अछि। सामाजिक विश्वासक शब्द कैसे कथाक भयावह वस्तु बनैत अछि, से ई दृश्य देखबैत अछि।

नागेश्वरक रसीद : घरक देह आ दफ्तरक मोहर

नागेश्वर झाक घरवाली पठाओल पुरान रसीदपर ‘चन्द्रपाल परामर्श केन्द्र’क छाप भेटैत अछि। जकरा कागचमे मृत बनाओल जा सकैत छल, ताहि जीवित व्यक्तिक घरसँ आयल रसीद दफ्तरक सम्भावित सम्पर्क देखबैत अछि। एतय घरक स्मृति न्यायालयक कार्बनक विरुद्ध नहि, ओकर पूरक रास्ता बनैत अछि। तथापि रसीदकेँ लेन-देनक अन्तिम अपराध-प्रमाण मानल नहि जा सकैत; एहि सीमा पर मीरा आ सत्यव्रतक व्यवहार कथा-विन्यासक सावधानी सुरक्षित रखैत अछि।

‘एम. प्रसाद सेवा’क लिफाफा : ठामक रहस्य

दफ्तरक सी-कक्षक दराजमे ‘एम. प्रसाद सेवा’ छपल खाली लिफाफा भेटैत अछि। पहिनेक बाहरी भुगतानक नाम आब भौतिक कागचक रूपमे देखाइत अछि। एक नामक ई पुनरागमन कथामे प्रत्यावर्तनक शिल्प अछि: डिजिटल खाताक संकेत कागचक लिफाफा बनि फेर उपस्थित होइत अछि। नौकर ‘बाहरी एजेंसी’ कहि बचब चाहैत अछि, मुदा प्रश्न उठैत अछि जे ओकर सामग्री भितरी दराजमे किएक। शब्द आ स्थानक ई असङ्गति पाठककेँ सहजी पहिचानसँ बचा कऽ जाँचक बाट पर रखैत अछि।

नहि छुअल कम्प्यूटर : रोमहर्ष आ संयमक टकराहट

सी-कक्षक कम्प्यूटरक अधूरा पृष्ठ देखल जाइत अछि, मुदा बिना विधिसम्मत अधिकार ओकरा छूअल नहि जाइत। तीव्र रहस्यक क्षणमे कथा जानि-बूझि क्रिया रोकैत अछि। अपराधक साहित्यिक जाँचमे एहन विराम असामान्य नाटकीय प्रभाव रखैत अछि—उत्तर आँखिक सोझाँ छहो तखन साक्ष्यक हिफाजत जरूरी। तकर विपरीत कार्यालयक प्रवेशक अनुमति आ औपचारिक प्रक्रियाक विवरण सम्पूर्ण स्पष्ट नहि कएल गेल अछि; एही अस्पष्टता पर पाठकीय आलोचना सम्भव अछि। सावधानीक आदर्श आ घटनाक व्यवस्थागत यथार्थ हर ठाम समान विस्तार पाबैत नहि।

शिकारक नक्सा : वर्गीकरणक हिंसा

देबाल पर बूढ़ दम्पती, बाहर बेटा, बन्धक भूमि, पेंशन खाता आदिक रंगीन चिह्न भेटैत अछि। ई नक्शा भूगोलक नहि, मानवीय असुरक्षाक सम्भावित वितरणक अछि। अध्याय १६२क मधुकरक कोठरीक ‘बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता’क वाक्य एतय चित्ररूपमे घुरैत अछि। पूर्वक संक्षिप्त लिखित सूत्र आब दृश्य-रूपक बनैत अछि। सुरमणीक दृष्टि एहि वर्गीकरणकेँ सेवा नहि, शिकारक खेत मानैत अछि। पात्र-दृष्टि आ कथावाचकक सम्बन्ध एतय एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि, मुदा व्यक्तिगत दोषनिर्णय एखन बाकी अछि।

छायाक पेटक असम्पूर्ण उद्घाटन

अध्यायक नाम चन्द्रपालक छायाक पेट कहैत अछि, मुदा अन्तमे सम्पूर्ण मालिकाना वा आदेशदाता उजागर नहि होइत। सी-कक्ष, लिफाफा, रसीद आ आन्तरिक ज्ञानक संकेत जुड़ैत अछि; चन्द्रपाल स्वयं उपस्थित नहि। एही अनुपस्थितिमे गोहिक रूपक नब काज करैत अछि—जालक मुँह अनेक अछि, पेट सम्भावित केन्द्र। आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे ‘पेट कहियो दू ठाम नहि’ सन कथावाचकीय सामान्यीकरण जटिल जालक बहुकेन्द्रिकताकेँ कम तँ नहि करैत? अध्याय अपनहि घटनासँ एहि निश्चित कथनकेँ आंशिक चुनौती दैत अछि।

प्रकरण २६६ | मूल अध्याय १६५ — छायाक देह

छायासँ देह धरि : कथाक खोज-रूपक

पछिला अध्यायमे सेवा-दफ्तरक सी-कक्ष देखल गेल; वर्तमान अध्याय पूछैत अछि—जकर छाह एतबा पसरल अछि, ओकर वस्तुगत देह कतय? एहि प्रश्नसँ कथा व्यक्तिक चेहरा ताकबाक अपेक्षा वस्तु, ढुलाइ, पेटी, ताला आ गोदामक रस्ता खोजैत अछि। छाह-दृष्टिकेँ भौतिक नक्शामे बदलब एहि खण्डक केन्द्रीय प्रविधि अछि। अपराधक अमूर्त जालकेँ देह कहला सँ ओकर ‘अस्थि’ कागच आ ‘साँस’ डर रूपमे रचल जाइत अछि, मुदा ई काव्यात्मक विस्तार तथ्यक स्थान नहि लैत।

‘१७/सी’ आ ‘सी-१७’ : उनटाएल क्रमक कथा

सी-कक्षक पाछुआरी भागमे सी-१७ लिखल पेटी देखल जाइत अछि, जकर क्रम ‘१७/सी’सँ उनटा अछि। लेखक छोट संकेतक क्रम-परिवर्तनकेँ रहस्यक सूक्ष्म नाटकीय घटना बनबैत छथि। एही अन्तरकेँ तुरन्त मालिकाना-प्रमाण मानबाक बजाय चिह्न-पद्धतिक सम्भावित समानता मानब अपेक्षित अछि। कथामे ‘अपराध संख्या उनटा दैत अछि’ सन सूक्ति प्रभावी अछि, मुदा उलटल क्रम स्वयं अपराधक सुनिश्चित लक्षण नहि। वस्तुगत समानता आ कथावाचकक नैतिक व्याख्या बीच ई दूरी लेखकक अभिप्रेत सस्पेन्सक सीमा देखबैत अछि।

पुरान गलीक भूगोल : दफ्तरक दृश्यसँ अन्हार रास्ता

दफ्तरक चमकदार सेवा-सूची पाछाँ सँकड़, सीलनदार गली आ जंग लागल लोहाक दरबाजा भेटैत अछि। भीतरक सीलन, रोशनदानक कबूतर-पाँख आ काठक पेटी सभक दृश्य सेवाक बाहरी मुखौटा सँ अलग संसार रचैत अछि। स्थानक बदलाव औपचारिकता सँ गुप्त ढुलाइक दिशामे संक्रमण बनैत अछि। ई दृश्य संयोजन पाठकमे अनुमान

जगबैत अछि, मुदा गलीक जीर्णता स्वयं अपराधिकता साबित नहि करैत; ताहि लेल रसीद, ढुलाइ आ नामक दोसर संकेत आवश्यक बनैत अछि।

परमानन्दक खाली लिफाफा : भारक विडम्बना

परमानन्द स्मरण करैत अछि जे भीतरसँ ‘खाली’ बुझाएवला लिफाफाक वजन पर जोर देल जाइत छल। सुरमणी ओकरा अदृश्य घूसक रूपक बनबैत छथि। एहि वाक्यमे शाब्दिक रिक्तता आ नैतिक भारक टकराहट अछि। साहित्यिक अर्थमे खाली लिफाफा एतय पूर्ण वस्तु बनैत अछि—जकर भीतरक गुप्त सामग्री पाठक नहि देखैत, मुदा ओहि अनदेखलाक कारण कथाक कल्पनात्मक तनाव बढ़ैत अछि। वास्तविक घूस भेटल अछि एहन निष्कर्ष नहि, एक पात्रक अर्थ-निर्माण अछि।

रोशनदानक दृश्यक सीमित विश्वसनीयता

दरबाजा तुरन्त खोलबाक कानूनी अधिकार नहि भेटलापर टोली रोशनदानसँ भीतर झाँकैत अछि, पेटी सभक रंग आ कोड देखैत अछि। मीरा ताला तोड़बाक विरुद्ध रहैत छथि। एहि दृश्यसँ गति कम होइत अछि, मुदा दृष्य-प्रमाणक सीमा सेहो दृढ़ होइत अछि—कुण्डी बाहरे बन्द, अन्दरक ध्वनि अस्पष्ट, पेटी देखल, वस्तुक सामग्री अज्ञात। आलोचककेँ एतय आन्तरिक दृश्यकेँ पूर्ण तलाशीकेँ समकक्ष नहि मानबाक चाही। नाटकीय रहस्य वस्तुक अनछुअल स्थितिसँ उपजैत अछि।

दरबाजाक बाहर नाम-पाठ : स्थानक पुनरुपयोग

बन्द गोदामक सोझाँ नाम आ तारीख पढ़बाक आयोजन अदालती बरामदाक पूर्वक सुननाइ याद करबैत अछि। कथा बारम्बार संस्थागत बन्द दुआरकेँ जनसुननाइक बाहरी वृत्तमे बदलैत अछि। एहि दोहरावक लाभ ई जे लोकक आवाज डरक ठाम नहि छोड़ैत; सीमा ई जे बाहरी पाठक वास्तविक दुआर खुलब तुरन्त सम्भव नहि। यथार्थवादी समयक कठिनाई जतेक अछि, रूपकक तात्कालिक नैतिक अर्थ सेहो ओतबे पैघ। लेखक एहि अन्तरकेँ पाठक पर छोड़ैत छथि।

ढुलाइ रसीद आ धरनी महतोक नाम

मधुकरक कोठरीसँ भेटल फाटल ढुलाइ-रसीद चारि पेटीक रातिक आवागमन आ ‘सी गोदाम’क उल्लेख करैत अछि। परमानन्द दफ्तरक सी-कक्ष आ बाहरक गोदामक अलग नाम बतबैत अछि; धरनी महतोक नाम सम्भावित ढुलाइवाला रूपमे अबैत अछि। ई कथाक कारण-श्रृंखलामे निर्णायक मोड़ अछि, कारण ध्वनिसँ हटि कागचपर परिवहनक सम्भावित रस्ता भेटैत अछि। तथापि धरनी स्वयं एहि क्षण बयान नहि दैत; ओकरा भीड़मे दोषी घोषित नहि कएल जाइत।

तौल-काँटा आ ‘मूल प्रति सुरक्षित’

पुरान काँटाक पाट तर भेटल छोट पर्चीपर मूल प्रति सुरक्षित रहबाक कथन अछि। वस्तु-सम्पर्कक ई क्षण पाठककेँ राहत दैत अछि—गायब मूल कागच शायद नष्ट नहि भेल। मुदा कथावाचक एहि आशाकेँ सम्भावना रूपेँ रखैत

छथि। कागचकेँ कियो, कोन सन्दर्भमे, कहिया लिखलक—ई विवरण एखन भेटल नहि। जाँचक शिल्प एतय वस्तुकेँ चमत्कारी चाबी बनबासँ रोकैत अछि, भले रचनाक भावधारा तुरन्त आशा दिस झुकैत हो।

तेतरि घाटक सूत्र : नदीक पुनरागमन

बूढ़ मल्लाह रातिमे पेटी ढोअबाक सम्भावित बाट बतबैत अछि आ तेतरि घाट लगक पुरान कोठी-बखारीक उल्लेख करैत अछि। एहि मोड़पर उपन्यासक लम्बा कार्यालयी आख्यान फेर नदीक भूगोलमे घुरैत अछि। गोहि, पानि, घाट, नाव आ कादोक पहिनेक बिम्ब सभ कागचक ढुलाइक नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। नदीक गोहिक इशाराकेँ मीरा साक्ष्य-रजिस्टरमे नहि, मल्लाहक कथनकेँ मात्र दर्ज करैत छथि। जादुई दृश्य आ पात्रक व्यावहारिक निर्णय अलग राखब एहि अध्यायक सन्तुलन अछि।

बन्द दरबाजासँ अगिला भोर : स्थगित उत्कर्ष

अध्याय अन्तमे राति जाँच दल पठेनाइ रोकैत अछि; उजासमे घाट जएबाक निश्चय होइत अछि। ई स्थगन केवल रोमांच लम्बेबाक युक्ति नहि, अपूर्ण जानकारी आ सुरक्षाक विषय सेहो अछि। सूचनामे सी-१७ पेटी देखल गेल, ढुलाइ रसीद भेटल आ धरनीक नाम आएल—एतबे सार्वजनिक कएल जाइत अछि। एहि सीमित घोषणाक अर्थ अछि जे कथावाचक नब खोजकेँ विजयघोष नहि बनबैत। अगिला अध्यायक सम्भावित कोठार-वर्णन एही संयमसँ कारणात्मक रूपेँ निकलैत अछि।

प्रकरण २६७ | मूल अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

शीर्षकक इमली घाट आ मुख्य कथाक तेतरि घाट : स्थलनामक असङ्गति

अध्यायक शीर्षक ‘इमली घाटक कोठार’ अछि, मुदा गद्य-अंशमे टोली तेतरि घाट दिस बढ़ैत अछि, पुरान तेतरि गाछ देखैत अछि आ तेतरि घाटक कोठी-बखारीमे प्रवेश करैत अछि। ई मामूली वर्तनीक फेरबदल नहि; इमली आ तेतरि दू भिन्न नाम, जखन कि कथा दुनूकेँ एक स्थान होएबाक कारण स्पष्ट नहि करैत। सम्भव अछि जे स्थानीय गाछक एक नाम आ घाट-नामक दोसर चलन हो; मुदा मूल पाठ एहि सम्भावना पर कोनो कथात्मक स्पष्टीकरण नहि दैत। एहि कारण समीक्षा स्थलनामक असङ्गतिकेँ चिन्हैत अछि, ओकरा मनमाफिक एकरूप बनाकऽ मूल पाठक आन्तरिक समस्या नहि मेटबैत। रहस्य-आख्यानमे स्थानक सूक्ष्म सटीकता महत्त्वपूर्ण होइत अछि, कारण साक्ष्यक आवागमन भूगोल पर निर्भर करैत अछि।

रातिक स्थगनसँ भोरक जाँच : कालिक कारण-सम्बन्ध

पछिला अध्यायमे मीरा रातिक उतावली रोकि उजासमे घाट जएबाक निश्चय करैत छथि। एहि अध्यायक भोर ओही निर्णयक परिणाम अछि; एहि कारण क्रियाक देरी केवल पाठककेँ उत्सुक राखबाक छल नहि। तेतरि घाट धरि जएबाक बाटमे गाड़ीक पहिया, पएरक निशान, भारी पेटी घिसिटबाक रेखा आ नावक सम्भावित मार्ग देखाएल अछि। कथावाचक अन्हारमे जादुई गोहिक संकेतसँ खोज नहि चलबबैत; मल्लाहक स्मरण आ धरातलीय

चिन्ह कथानकक दिशा तय करैत अछि। तथापि नमी आ पदचिह्नसँ तिथिक परिशुद्ध अनुमान पात्रकेँ नहि भेटैत। एहि सीमित अवलोकनमे समयक अनुशासन आ अनिश्चितताक स्वीकृति एक संग अछि।

नोनक पोटली : लोकानुभवक व्यावहारिक बिम्ब

सुरमणी देवी नोनक पोटली नेने अबैत छथि; नदीक नमी आ कागचक क्षयक स्मरण ओहि छोट वस्तु द्वारा उपस्थित होइत अछि। पात्रक लोकानुभवकेँ कथावाचक औपचारिक वैज्ञानिक जाँचक बराबर घोषित नहि करैत; मीरा ओकरा आधा लोक-ज्ञान आ आधा सावधानी मानैत छथि। एहि भेदक कारण नोन उपन्यासमे वातावरणक स्वाद आ स्थानीय स्मृतिक वाहक बनैत अछि, कोनो निश्चित फॉरेन्सिक यन्त्र नहि। बूढ़ मल्लाहक पानिक ज्ञान, सुरमणीक नमी-स्मरण आ बच्चाक लिखित नाप—ई सभ मिलि निरीक्षणक बहु-सांस्कृतिक दृश्य रचैत अछि। कथामे देहक अनुभव जाँचक आरम्भ बनैत अछि, अन्तिम सत्य नहि।

‘सी-१७’ पेटी : पुनरुक्त संकेतसँ वस्तुगत उपस्थिति

चन्द्रपालक सी-कक्षक रोशनदानसँ देखल गेल पेटीक संकेत एहि घाटपर प्रत्यक्ष पेटी बनि अबैत अछि। जंग लागल सतह, ताजा कपड़ाक पट्टी, सूखल कादो आ कागचक रेशा—ई चारु दृश्य विवरण पाठककेँ अनुमानक विरुद्ध ठोस वस्तुक सान्निध्य दैत अछि। अनन्या पेटी उठेबासँ पहिने ओकर परिवेशक नोंद करैत छथि। रहस्यक कथन-प्रविधि एतय छोट कोडकेँ धीरे-धीरे अभिज्ञेय वस्तु बनबैत अछि; मुदा कोड भेटलासँ पेटीक सभ पन्ना स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत। पेटीक पुनरागमन पूर्वक अध्यायक स्मृतिक भुगतान अछि—पाठक पहिने जकर प्रतीक्षा केने छल, ओ आब देखैत अछि।

अभिलेखक परत : मूल प्रति, नकल आ अभ्यास-पन्ना

पेटीक भीतर नागेश्वर झाक बन्धक-संबन्धी सामग्री, धरनी महतोक बयानक मसौदा आ विधवा-सम्बन्धी सहमति-पत्र भेटैत अछि। सत्यव्रत स्पष्ट कहैत छथि जे उपलब्ध वस्तु सभ असली मूल प्रति नहि, मूल धरि पहुँचबाक सम्भावित दुआर छथि। एही वाक्य पर आख्यानक विश्वसनीयता टिकैत अछि: हर भेटल फाइल ‘अन्तिम खोज’ नहि बनैत, बरु मूल–नकल–मसौदा–अभ्यासक भिन्न चरण चिन्हैत अछि। समाजक स्मृतिमे जे कागच गुम छल, ओकर एक रूप वापस भेटल; पर देह आ दाबी पर पड़ल हानि एखन क्षतिपूर्तिसँ दूर अछि। लेखकक अभिलेखी संसारमे वस्तुक भौतिक उपलब्धि न्यायिक परिणति नहि।

नामक गलत वर्तनी आ देहक स्मृति

दू वृद्ध स्त्री सहमति-पत्र देखिकऽ एक अपन अँगूठा नहि होएबाक बात कहैत छथि, दोसर नामक वर्तनी बिगड़बाक। एहि प्रतिक्रिया सँ पाठक बूझैत अछि जे नाम केवल प्रशासनिक अक्षर-क्रम नहि, घरक भाषा आ व्यक्ति-परिचयक जीवित रूप अछि। ‘गलत वर्तनी’केँ पात्र नकली निकटताक संकेत मानैत छथि; मुदा आलोचनात्मक सीमा ई जे प्रत्येक लिखित त्रुटि जालसाजी नहि होइत। अध्यायमे नाम-बिगाड़क शङ्का अन्य सहमति-सम्बन्धी सामग्रीक संग जोड़ल अछि; अकेले वर्तनीक अन्तर दोषनिर्णायक प्रमाण नहि। लेखक घरेलू उच्चारण आ अभिलेखी लेखनक बीचक दूरीकेँ नाटकीय बनबैत छथि।

पाँच लाल बही : क्रमिक उद्घाटनक संरचना

देबालक भितरी लोहाक डिब्बासँ पाँच लाल बही निकलैत अछि। पहिलमे नाम–रकम, दोसरमे फोन–डर–अलगाव, तेसरमे कूट संकेत, चारिममे ‘मृत तैयार’, पाँचममे ‘नब ध्वनि सूची’ आ ‘अगिला खेप: नदी पार’क सूचना अछि। लेखक एकेक बही खोलैत अपराधक कथित क्षेत्र बढ़बैत छथि—धन, मनोवैज्ञानिक दबाव, कोड, देहक कागजी मृत्यु आ ध्वनिक सम्भावित अगिला हमला। ई ‘क्रमश: खुलैत पेटी’क स्थापत्य कथा-गतिमे आरोह उत्पन्न करैत अछि। मुदा बहीक भीतर लिखल प्रत्येक पदक लेखकत्व आ उपयोग अलग जाँचक विषय रहैत अछि; बही सभकेँ स्वयं बोलैत निर्भ्रान्त साक्षी मानल नहि जा सकैत।

‘मृत तैयार’ : भविष्यकालक हिंस्र लिपि

चारिम बहीक ‘मृत तैयार’ दू शब्द कथाक सभसँ भयावह लघु-वाक्य बनैत अछि। नागेश्वर झा जीवित छथि, तथापि हुनका सन लोकक मृत्यु लिखित रूपमे पूर्वनिर्धारित करबाक सम्भावना उभरैत अछि। अध्याय १५९ मे मरि चुकल लोकसँ सहमति लिखाओल गेल छल; एहि ठाम जीवित व्यक्तिक भविष्यक मृत्यु अभिलेखमे सजाओल जा रहल अछि। दुनू उलटबाक शिल्प एकटा पैघ त्रासदी रचैत अछि—कागचक समय जैविक समयसँ स्वतन्त्र घोषित करबाक प्रयास। गोहिक भक्षणक रूपक रक्तपात बिनु अक्षरक माध्यमसँ जीवन छीनबाक अर्थ पबैत अछि।

व्यक्तिक कमजोरी नहि, परिस्थितिक नाप

प्लास्टिकक डिब्बामे वृद्धक कागच, फोनक परचा आ ‘अकेला’, ‘बेटा बाहर’, ‘डर जल्दी’ जेकाँ श्रेणी भेटैत अछि। आरुणि एकरा बूढ़ लोकक कमजोरीक सूची बुझैत अछि; मीरा तुरन्त ‘कमजोरी’क बदला ‘परिस्थिति’ शब्द चुनैत छथि। एहि छोट शब्द-परिवर्तनमे उपन्यासक कथात्मक दृष्टिक नवीनीकरण अछि। अपराधी शिकार चुनबाक लेल सामाजिक अकेलापन नापैत अछि; समुदाय ओही परिस्थितिक वर्णन पीड़ितक दोष बनय नहि दैत। एहन फोकलाइजेशन सामाजिक समस्या केँ व्यक्ति-कर्मक असफलतासँ अलग करैत अछि। कागचक श्रेणी सभ एके रहैत अछि, मुदा ओकर पाठक बदलिते अर्थ बदलि जाइत अछि।

आवाजक रिकार्डर : अगिला कथामुखक पूर्वाभास

गोदामक सामग्रीमे भेटल आवाज रिकार्ड करबाक उपकरण आ ‘ककरो नहि कहू’ प्रकारक अभ्यास-वाक्य पूर्वक फोनक कैद प्रकरणसँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। कथावस्तु एखन खेतक मोहर जालसाजीसँ ध्वनि-नकलक जाल धरि फैलैत अछि। ई फैलाव लेखकक बहुमाध्यमी आख्यान-दृष्टि देखबैत अछि: कागच पर दबाव, फोनपर अनुकृत आवाज, आ बजारमे उपलब्ध निजी सूचना—तीनू एकहि सामाजिक डरक अलग वाहक। ‘नब ध्वनि सूची’ लिखल पन्ना पाठककेँ अगिला नदी-पारक यात्राक संरचनात्मक कारण दैत अछि। कथामे स्थान-परिवर्तन आकस्मिक नहि, पन्नाक अन्तिम पाँति सँ निकलैत अछि।

हरिचरणक विलम्बित आपत्ति आ सीलबन्द समापन

पेटी खुललाक बाद हरिचरण गैरकानूनी तलाशी कहैत छथि। अनन्या ओकर आपत्तिक समय दर्ज करैत छथि; मीराक दृष्टि नामक संग घटनाक कालक्रमकेँ बाँधि रखैत अछि। तथापि पात्रसभक उपस्थिति मात्रसँ तलाशी विधिसम्मत सिद्ध भऽ गेल—ई निष्कर्ष मूल कथाक विवरणसँ नहि निकलैत; औपचारिक अनुमति वा आदेशक सम्पूर्ण शृंखला पाठमे खुलल नहि। एहि बिन्दु पर कथाक नैतिक अनुशासन आ कानूनी यथार्थबीच विवेचनक दूरी अछि। कोठी-बखारीक सील आ सार्वजनिक सूची नाटकीय समाधान छथि, अन्तिम सजाक संकेत नहि। बचल प्रश्न नदी पारक अगिला आवाज-उद्यमकेँ लऽ कऽ अछि।

जल-रूपकक सीमित विजय

चन्ना गाछी, नदी, तेतरि घाट, कोठार आ गोहि फेर एक दृश्यशृंखलामे अँटैत अछि। पुरान अन्नक भण्डारमे दस्तावेज आ डिजिटल डरक सामग्री भेटब जल-संस्कृतिक आर्थिक जीवनक उलटल रूप अछि। कोठार खुललाक बाद लोक हल्ला नहि करैत; पेटी नपैत आ सूची बनबैत अछि। गोहि एखन विलुप्त नहि, आ पीड़ितक कागजक न्यायिक स्थिति स्वतः सुधरल नहि। एहि प्रकार अध्याय भावनात्मक राहत दैतहुँ अन्तर्वर्ती जीतक मर्यादा राखैत अछि। मूल स्थलनामक असङ्गतिक बावजूद वस्तु–घाट–आवाजक कारणात्मक चाल अगिला अध्याय खोलि दैत अछि।

प्रकरण २६८ | मूल अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

नदी-पारक यात्रा : भूगोलसँ श्रव्य अतिक्रमण धरि

पछिला अध्यायक पाँचम लाल बहीमे ‘अगिला खेप: नदी पार’ लिखल अछि। एहि अध्यायमे टोली नाव पर चढ़ैत अछि; भौगोलिक सीमा पार करबाक समय अनचिन्ह फोन ओकरा सभक बीच पैसि जाइत अछि। भौतिक नावक धीमा गति आ फोनक तत्काल पहुँचक विपरीतता कथाक विशेष शिल्प अछि। नदीक धार एक गामकेँ दोसरसँ अलग करैत अछि, मुदा नकली अधिकारीक आवाज बीचमे कोनो सीमा नहि मानैत। जल-बिम्ब एहि बेर प्राकृतिक स्मृतिक बदला संचारक सीमाहीन जोखिमक माप बनैत अछि।

नावमे फोन : नियन्त्रणक प्रयासकेँ सार्वजनिक प्रयोग बनायब

आरुणिक फोनपर ‘नाम जाँचमे अछि’ आ ‘ककरो नहि कहू’ सुनाइत अछि; मीरा कॉल काटबाकेँ बदला स्पीकरपर सुनबाक संकेत करैत छथि। अपराधीक अभिप्राय एक व्यक्ति अलग कऽ डरबेनाइ अछि; सामूहिक सुननाइ ओहि अभिप्रायकेँ तुरन्त निष्फल करबाक कथा-क्रिया बनैत अछि। सत्यव्रत समय टिपैत छथि, देविका वाक्यक्रम लिखैत छथि, आरुणि प्रश्न करैत अछि। एतय कथा निजी दहशतकेँ साझा विश्लेषणक प्रयोगशाला बनबैत अछि। तथापि एक फोनक सार्वजनिक सुननाइ सम्पूर्ण तकनीकी स्रोत चिन्हारबाक बराबर नहि—रहस्यक अगिला चरण आवश्यक रहैत अछि।

‘लोकेशन देखाइत अछि’ : सर्वज्ञ आवाजक विफल अभिनय

कॉल करनिहार आरुणिक नावमे होएबाक कथनकेँ झूठ कहि ‘लोकेशन’ देखबाक दावी करैत अछि। भिखारी लालक धार-दृष्टि एहि सर्वज्ञताकेँ शिथिल करैत अछि। ई संवाद अपराधक अभिनयक एक विशिष्ट केन्द्र प्रकट करैत अछि—आवाज जकरा विषयमे जानकारी नहि, ओकरो जानबाक दम्भ करैत अछि। आरुणिक पिताक नाम पूछलापर उतरले चुप्पी एहि दम्भक सीमा देखबैत अछि। लेखक पूर्ण तकनीकी रहस्य खोलेबासँ पहिने भाषा पर रोक लगाबैत छथि; अज्ञानक क्षण कथामे अपराधीक मुखौटा ढीला करैत अछि।

मधुकान्त आ कमला : घरेलू सुनबाक अलग स्मृति

नदी पारक मधुकान्त झा आ कमला देवीक घरमे नकली बेटाक फोनक दुख अबैत अछि। कमला लेल बेटाक नाम आ आवाज तात्कालिक विश्वासक कारण छल; मधुकान्तक स्मरणमे असल बेटा बीच-बीचमे हँसैत, साँस बदलैत बाजैत अछि। कथावाचक एहि सूक्ष्म पारिवारिक लयकेँ भावात्मक चिन्ह बनबैत अछि। मुदा साँसक पहिचान तकनीकी ध्वनि-परीक्षाक अन्तिम परिणाम नहि; ई पिताक सुनल अनुभव अछि। एहि अन्तरक रक्षा करिते पाठक पात्रक अनुभवक गरिमा स्वीकार सकैत अछि, बिना मशीन-जनित आवाज पर असम्भव सुनिश्चितता थोपने।

फोनक ‘डिजिटल कैद’ : घरक रूपान्तरण

कमला देवीकेँ दू घण्टा फोन कान लगौने रहबाक धमकी देल गेल छल। तुलसी चौरा, बरामदा आ परिचित आँगन उपस्थित रहितहुँ घर जेल सन अनुभव होइत अछि। लेखक स्थानकेँ शारीरिक रूपेँ बन्द नहि करैत; आदेशक ध्वनि मनोवैज्ञानिक देबाल उठा दैत अछि। ‘कैद’क रूपक भौतिक ताला बिनु भयक नियन्त्रणकेँ दृश्य बनबैत अछि। कथा एतय आधुनिक संचारकेँ स्वतः दुष्ट नहि कहैत; विश्वासक नकल आ अलगावक भाषा जखन फोनपर चढ़ैत अछि तखन परिचित घर अपरिचित बनैत अछि।

पाइक तीन हस्तान्तरण : घटनाक आर्थिक लय

कमलाक घरसँ रकम पहिने छोट, फेर मध्यम, फेर जमा पूँजीक रूपमे गेल। एहि तीन-चरणी क्रमसँ कथावाचक शिकारक आर्थिक क्षति कैँ नाटकक तीन प्रहार जेकाँ प्रस्तुत करैत छथि। पहिल सफल हस्तान्तरण बादक सन्देह कम करैत अछि—ई पात्रसभक व्याख्या अछि। एतय राशि सभक सार्वजनिकीकरण नहि करब पूर्वक निजता-नियमसँ सुसंगत अछि। परिवारक हानि वास्तविक अछि, मुदा बैंकक पैसा घुरि आएल वा अपराधी पकड़ा गेल—एहन पूर्ण समाधान अध्याय नहि दैत। कथा अपन आर्थिक त्रासदीक व्याकरण मात्र खोलैत अछि।

नवलक तीन बचाव : अज्ञान, सीमित भूमिका, दूरी

बरामदा लग भेटल युवक नवल पहिने ‘किछु नहि पता’, फेर ‘केवल नम्बर’, आ अन्तमे ‘आवाज नहि बनबैत’ कहैत अछि। एकहि पात्रक बदलैत बचाव लेखकक अप्रत्यक्ष चरित्र-चित्रणक प्रविधि अछि। स्वीकारक प्रत्येक स्तर पर ओ अपन जिम्मेदारी छोट करय चाहैत अछि, मुदा सूचना उपलब्ध करेनाइ जालक जरूरी काज बनैत अछि। मीरा तुरन्त पूर्ण दोष-निर्णय नहि सुनबैत; उत्तर बदलनाइ कथनक अविश्वसनीयता चिन्हैत अछि। एहि सूक्ष्म भेदसँ पाठक बुझैत अछि जे अपराधकेँ केवल फोनक गला बनौनिहार धरि सीमित करब पर्याप्त नहि।

जनसेवा केन्द्रक कम्प्यूटर : सूचनाक सामाजिक देह

नदी पारक केन्द्रमे आधारक छाहप्रति, पेंशन संख्या, प्रवासी परिजनक विवरण आ मोबाइल-सम्पर्क एकत्र भेटैत अछि। अपराधी एहि जानकारीकेँ ‘डेटा’ कहि अपन भूमिका निर्जीव बनाबय चाहैत अछि; सत्यव्रत परिवारक साँस कहि ओकर सामाजिक देह घुरबैत छथि। ई केवल नीतिगत घोषणा नहि, कथात्मक नाम-परिवर्तन अछि। जे स्त्री पहिने ‘कमला देवी’ छल, अपराधीक सूचीमे ‘माय कानत’ बनि जाइत अछि; जे बेटा परदेशमे अछि, ओ रकम निकलबाक दबाव-बिन्दु बनैत अछि। व्यक्ति-स्मृतिसँ शिकार-वर्गीकरण धरि ई अनुवाद उपन्यासक प्रमुख भयावह युक्ति अछि।

रिकार्डर आ कागजपर अभ्यास-वाक्य : अभिनयक दू मुख

जनसेवा केन्द्रमे माइक्रोफोन लग राखल पन्ना, अलग-अलग अधिकारी आ बेटाक आवाजक नमूना आ डरवला वाक्य देखाइत अछि। पूर्वक नाटक–कबड्डी सामाजिक छल उघारबाक लेल आवाज बनौने छल; एतय प्रदर्शनक तकनीक आवाज कैँ छलक औजार बनबैत अछि। एक्के ‘अभिनय’ नैतिक रूपेँ स्वतः उज्जर नहि, ओकर प्रयोजन आ श्रोता-सहमति सँ अर्थ लैत अछि। कमला जखन अपन सुनल वाक्य पन्नापर देखैत छथि तखन श्रव्य आ लिखित संसार एक-दोसराकेँ पुष्टि करैत देखाइत अछि, मुदा वास्तविक आवाजक स्रोत पूर्णतः चिन्हित एखन नहि।

नव आगन्तुकक अधिकार आ निजताक मर्यादा

मीरा कमला सँ तुरन्त सार्वजनिक बयान नहि लेती; पानि दऽ मात्र इच्छित बात सुनैत छथि। पीड़ितक कथनक पूरा अधिकार हुनकाहि हाथमे राखबाक निश्चय पूर्वक नाम-वापसी अध्यायक प्रतिध्वनि अछि। ई दृश्य कथानकक गति क्षणभरि रोकैत अछि, मुदा रुकावट रचनाक नैतिक विधि बनैत अछि। लेखक जखन पात्रकेँ बयान देबाक अधिकार दैत छथि तखन ओ मात्र कथापात्र नहि, कथाक सीमा तय करनिहार सहभागी बनैत अछि। तथापि कोठरीक सील आ वस्तु सुरक्षित रखबाक प्रशासनिक विवरण सीमित अछि; संवेदनात्मक मर्यादा आ औपचारिक न्यायिक प्रक्रिया अलग स्तर छथि।

‘असली गला दूर’ : आंशिक परिणामक समापन

अध्यायक अन्तमे जनसेवा केन्द्र सील होइत अछि आ नवलक सूचनाक भूमिका स्पष्ट होइत अछि, मुदा आवाज बनौनिहारक नाम शहरमे खोजबाक शेष अछि। कमलाक बेटाक असल फोन आयलाक बाद पात्रसभ असली स्नेह आ नकली भयक वाक्य-लयक अन्तर अनुभव करैत छथि। ठूँठ लग भूतक चमकैत कान आ नदीक फेन एहि अधूरा विजयकेँ जादुई छवि दैत अछि; ओ कथनक सत्यक वैज्ञानिक पुष्टि नहि। ‘नदी पारक आवाज पकड़ायल, असली गला दूर’—ई द्वित्व अगले अध्यायक कारण बनैत अछि। नदीक नब भूगोल एखन शहरक आवाज-दरबाजा खोलबाक छौड़ि अछि।

प्रकरण २६९ | मूल अध्याय १६८ — शहरक गला

‘गला शहरक, नाम गामक’ : शिकारक सूचना-यात्रा

नदी पारक युवक नरेश बतबैत अछि जे पुरान रजिस्टर स्कैन करबाक बहाने बाहरी लोक सम्पर्क-सूची लऽ गेल। कथा एतय गला बनौनिहार तकनीकक खोजकेँ स्थगित कऽ पहिने नामक आवागमनक इतिहास पूछैत अछि। गामक वृद्धक कर्ज, पेंशन, मुकदमा, परिवार आ प्रवासक सूचना शहरक दलाल धरि केना पहुँचलक—ई कारणात्मक प्रश्न नब अध्यायक ढाँचा बनैत अछि। लेखक चोरल आवाजकेँ चोरल सम्बन्ध-सूचनासँ जोड़ैत छथि, जाहिसँ फोनक अपराध पैघ संस्थागत सन्दर्भ पबैत अछि। गाम आ शहर विरोधी दृश्य मात्र नहि; एकर बीच लगातार चलैत कागच कथा-स्थानकेँ जोड़ैत अछि।

बस अड्डाक शोर : ध्वनिक फोकलाइजेशन

गामक एक फुसफुसाहट सुनएबला वातावरणक बाद शहरक हॉर्न, हाक, मोबाइल आ लाउडस्पीकरक कोलाहल आरुणिक कान पर प्रहार करैत अछि। कथावाचक शहरकेँ दृश्य-चित्रक बदला आवाजक घनत्व द्वारा चिन्हैत अछि। नकली गला नुकाएबाक ‘परदा’ शोर बनैत अछि—एहि सूत्रक सौन्दर्य अछि जे अपराधक साधन ओही श्रव्य माध्यममे लुकैत अछि जाहिसँ ओकर शक्ति अछि। मुदा शहरक सभ शोर अपराधक कारण नहि; ई पात्रक अनुभव आ कथानकक प्रतीकात्मक विस्तार अछि। एहन सीमाक बोध कथाक सामाजिक विश्वसनीयता सुरक्षित रखैत अछि।

‘एम. सर्विसेज’सँ ‘मित्र डेटा समाधान’ : नाम बदलबाक शिल्प

नरेशक पुरान पर्चीपर लिखल कार्यालयक पता पर पहुँचला पर नया नामपट्ट भेटैत अछि। युवक पुरान संस्था बन्द भेल कहैत अछि, मुदा गली आ कमरा परिचित रहलाक कारण प्रश्न उठैत अछि। एकहि ठाम दू नामक रूपान्तरण कथाक आवर्ती ‘नाम काटब–नाम बदलब’ रूपकक आधुनिक व्यावसायिक रूप अछि। तथापि कार्यालय बदलबा मात्र सँ अपराधक निरन्तरता निर्विवाद प्रमाणित नहि। पात्रसभ पर्ची, उपस्थिति आ सामग्रिक निकटतासँ शङ्का बढ़बैत छथि। एहि सशर्त सम्बन्धक कारण रहस्य नाटकीय रहैत अछि, दण्ड-विधानक निष्कर्ष बनि पूर्वनिर्धारित नहि।

रिकार्डक आवाज आ जीवित धमकी : मिश्रित श्रव्य अभिनय

भितरी कोठरीसँ सुनल घन आवाज बूढ़ मुवक्किलकेँ पहिने फोनक स्मरण दिआबैत अछि। देविका अभिनयक अभ्याससँ कहल भाषा आ रिकार्डक लय अलग सुनैत छथि। एहि ठाम स्रोतक बहुवचन उत्पन्न होइत अछि—एक आवाज हरेक क्षण एक देहसँ नहि निकलैत, किछु टुकड़ा रिकार्ड आ किछु जीवित मनुष्यक उच्चारण भऽ सकैत अछि। कथावाचक एहि मिश्रणकेँ आवाज-जालक विशेषता बनबैत छथि। बूढ़क ‘साँस चिन्हू’ सन आग्रह भावात्मक स्मृति अछि, पर विशुद्ध ध्वनि-विशेषज्ञताक निर्णायक जाँच नहि। सुनबाक अलग योग्यता कथाक बहुवाचिकता बढ़बैत अछि।

‘सी-ग्रुप : ग्रामीण वृद्ध’ : कोडक नया शरीर

शहरक डिब्बापर ‘सी-ग्रुप’ पढ़ल जाइत अछि। एहि अंग्रेजी अक्षरक पुनरागमन सँ रेकर्ड-घरक ‘सी खण्ड’, दफ्तरक ‘सी-कक्ष’, घाटपर ‘सी-१७’ आ शहरक ‘सी-ग्रुप’ पाठकक स्मृतिमे जुड़ैत अछि। लेखक कोडक प्रत्यावर्तन सँ लम्बा उपन्यासक अलग-अलग स्थानमे एक प्रकारक एकता उत्पन्न करैत छथि। मुदा समान ‘सी’ सभ ठाम एकहि आन्तरिक नामकरण-संहिता छिकै—ई अंश स्पष्ट नहि। समीक्षा एहि संकेतकेँ स्मृति-संयोजनक उपकरण मानैत अछि, अदृश्य एककर्ता सिद्ध करबाक पूर्ण आधार नहि।

स्क्रीन नहि छुअबाक विराम : कथनक आत्मसंयम

युवक कम्प्यूटर बन्द करय चाहैत अछि, मुदा आरुणि बिना अनुमति निजी सूचीक फोटो नहि खींचैत। मीरा गवाह आ विधिक प्रक्रिया मांगैत छथि, सत्यव्रत स्थानीय अधिवक्ताकेँ खबरि करैत छथि। स्क्रीन खोलल रहितहुँ तुरन्त जानकार बनबाक जिज्ञासा पर रोक—ई वर्तमान खण्डक महत्त्वपूर्ण कथन-योजना अछि। पाठक पन्नाक सम्पूर्ण नाम पढ़ि नहि पाबैत, किन्तु अध्याय एही न्यूनतामे पीड़ितक निजी जीवनक सुरक्षा स्थापैत अछि। न्यायिक रोमांचक गतिकेँ टोकब यहाँ साहित्यिक युक्ति सेहो अछि।

दू रजिस्टरक मात्र उपस्थिति : स्थगित पाठकत्व

मेजक नीचाँ ‘आवाज-बैच ३’ आ ‘ग्राम कथा संकेत’ नामक दू रजिस्टर देखाइत अछि, मुदा टोली हुनका तत्काल खोलि नहि पढ़ैत। एहि दृश्यमे वस्तुक नाम कथाक भविष्य बनैत अछि—वाचक पाठकेँ उत्तरक आशा दैत छथि, किन्तु उपादानक अनुचित अधिग्रहण नहि। नामक भितरी अर्थ अज्ञात रहने रोमहर्ष बढ़ैत अछि। ‘ग्राम कथा संकेत’ सन शब्द उपन्यासक अपन कथा-विश्वकेँ अपराधीक सूचीक भाषा सँ टकरबैत अछि, मानो जीवित गामक गप्प कियो गुप्त संकेतमे बदलि रहल हो। वस्तुक अनछुअल अवस्था साहित्यिक निलम्बन बनैत अछि।

जप्ती आ पुलिसक अनिच्छा : संस्थागत दृश्य

शहरक पुलिस पहिने घटना साधारण साइबर मामला कहल चाहैत अछि। सत्यव्रत तेतरि घाट, लाल बही, नदी पारक केन्द्र, एम. सर्विसेज आ सी-ग्रुपक क्रम सुनबैत छथि। ई क्रम-उच्चारण कथामे विविक्त घटनाकेँ एक संरचनात्मक कथा बनबैत अछि; श्रोता संस्था अपन श्रेणी बदलबाक दबाव अनुभव करैत अछि। पुलिसक आगमन आ जप्ती उपन्यासमे वास्तविक कार्रवाईक आरम्भ अछि, अपराध-निर्णयक अन्त नहि। दस्तावेजी कड़ीक विस्तृत सुरक्षित हस्तान्तरण पाठमे पूरा नहि वर्णित; एही संस्थागत सङ्कुचन पर आलोचनात्मक टिप्पणी आवश्यक अछि।

‘चन्द्र २’ : सम्पूर्ण नामक बदला खुलल किवाड़

कम्प्यूटरक खुलल पन्नापर ‘चन्द्र २: पुरान फाइल सक्रिय’ पढ़ल जाइत अछि। चन्द्रपालक पूरा नाम नहि लिखल, मुदा पाठकक पहिनेक ज्ञान तुरन्त ओकर छाह आनैत अछि। एहि स्मृति-प्रलोभनकेँ लेखक अध्यायक अन्तिम रहस्य बनबैत छथि: कोड नामक अंश छैक कि कोनो स्वतन्त्र व्यावसायिक पहचान? निश्चित नहि। ‘शहरमे गला

भेटल, देह आधा भेटल’ पात्रक कथन स्वयं जाँचक सीमाकेँ स्वीकार करैत अछि। सी-ग्रुपक कागच आ चन्द्र २क पंक्ति रोमहर्षक संसाधन छथि, अन्तिम अभियोग नहि।

गोहि : शहरक मुँह आ गामक पूछार

अध्यायक अन्तमे गोहि नदीमे एना देखाइत अछि जे ओकर मुँह शहर दिस, पूछार गामक कादोमे, बीचक देह जलमे डूबल। ई छवि समूचा खण्डक भौगोलिक रूपक अछि: शोषणक सूचना गामसँ निकलैत अछि, आवाज शहरमे बनैत अछि, आ जालक देह दूनू ठाम बीच फैलल अछि। जादुई रूपसँ पाठक कथाक अस्पष्ट सीमा एक क्षणमे देखैत अछि। तथापि गोहि स्वयं अपराध-जालक भौतिक नक्शा प्रदान नहि करैत; लोक-दृष्टिक प्रतीकक रूपमे ओकर उपयोग अछि। शहरक अपूर्ण अनुसन्धान फेर नामक अगिला प्रश्न उठबैत अछि।

संक्रमणक सफलता आ सीमितता

अध्याय १६८ मे नदी पारक सूचना-चोरी, शहरक ठाम बदलल नाम, आवाजक नकली अभ्यास आ पुलिसक प्रारम्भिक जप्ती एक सङ्गठित क्रम बनैत अछि। लेखक बहुस्थानिक कथा चलाबय सफल होइत छथि, मुदा अनेक स्तरक सरकारी व्यवस्था, निजी कार्यालय आ गामक स्वैच्छिक पहरुआ एक-दोसरासँ तुरन्त पहुँचैत छथि —एहि सघन गतिसँ यथार्थवादी समय कभी-कभी संकुचित बुझाइत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ ई सिनेमा-जेकाँ अनुक्रम रहस्यक लाभ, प्रक्रियागत विस्तारक सीमा दुनू देखबैत अछि। कथा चन्द्र २क रहस्य खुलने समाप्त नहि, नब भ्रमक ठाम पर आगू बढ़ैत अछि।

प्रकरण २७० | मूल अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

नाममे जुड़ल अंक : चिन्हारिक विभाजन

‘चन्द्र २’क पंक्ति पूर्वक अध्यायक अन्तमे रहस्य रूपेँ छोड़ल गेल छल। वर्तमान अध्याय चन्द्र-नामक अंश आ दू अंककेँ जाँचक आधार बनबैत अछि। नामक आंशिक परिचय पाठककेँ चन्द्रपालक पूर्वक राजनीतिक-सामाजिक प्रतिष्ठा मोन पाड़ैत अछि, मुदा मीरा तुरन्त कोडकेँ एक व्यक्तिक दोष-घोषणा बनबासँ रोकैत छथि। अंक नामक वाचकता घटबैत अछि आ बचावक रास्तो खोलैत अछि। एहि तरह उपन्यास पुरान नामक प्रतिष्ठा, व्यावसायिक संकेत आ छद्म व्यक्ति-निर्माणक संधिस्थल पर कथात्मक अनिश्चय रचैत अछि।

सेवा कार्यालयक भीतरी दृश्य : दयाक भाषा बनल कारोबार

पुरान तरकारी-मण्डीक पाछाँ ‘चन्द्र सेवा कार्यालय’मे पेंशन, बीमा, राशन आ कागचक सहायता लेल वृद्ध लोकक भीड़ अछि। नामपट्टक भाषामे सामान्य सेवा अछि, पर काउंटरपर ‘विडियो सत्यापन’, ‘जल्दी’, ‘ककरो नहि कहब’क वाक्य अभावक भय उठबैत अछि। लेखक एहि सार्वजनिक स्थलकेँ हिंसक अड्डा जेकाँ पहिलहि नहि चिन्हबैत; ओकर साधारण दिनचर्या देखबैत छथि। कथाक भयक स्रोत सामान्य प्रक्रिया आ अपराधक आवाजबीचक समानता अछि। पेंशन-फारमक आवश्यकताकेँ पात्रक आपराधिक श्रेणी बनाओल बिना, एहि स्थितिक शोषणक सम्भावना देखल जा सकैत अछि।

भावनात्मक संकेतक खाँचा : गुप्त पाठकक उघाड़

कार्यालयक फाइलमे वृद्ध व्यक्ति ककर नामसँ डरैत, ककर बेटा बाहर, केकर मुकदमा पुरान—एहन निजी अनुभूतिक वर्गीकरण अछि। जे बात परिवारक घेरामे सम्बन्धक स्मृति छल, से ‘भावनात्मक संकेत’ नामक व्यापारिक कोठरी बनि गेल। ई दृश्य अध्याय १६४क दीबालपर बनल ‘शिकारक नक्शा’क शहरी-लिखित स्वरूप अछि। लेखक तथ्यात्मक सूचना एकत्र करबाक प्रक्रियाक परे पाठकीय हिंसा देखबैत छथि: कियो मनुष्यकेँ केवल एहि लेल पढ़ैत अछि जे ओकर भयक वाक्य पूर्वे तैयार कऽ सके। नामक सामाजिकता एहि ठाम विपरीत अर्थ पबैत अछि।

चन्द्रमोहनक असमय प्रतिक्रिया : संवादमे स्वयं उघार

काउंटरपर बैसल चन्द्रमोहन अपना पर ‘चन्द्र २’क शङ्का उचित नहि कहैत अछि, जखन मीरा कथित रूपेँ ओ नाम उच्चरिते नहि केने छली। सत्यव्रत एहि भाषिक असमयताकेँ पकड़ैत छथि। रहस्य-आख्यानक लोकप्रिय उपकरण अछि जे व्यक्ति अपन हड़बड़ीमे पहिले प्रश्नक उत्तर दऽ बैसैत अछि। एहि क्षणमे पाठककेँ तीव्र सन्तोष भेटैत अछि, पर कथात्मक आलोचनामे ई स्वतः अपराध-स्वीकार नहि: पहिने कोनो माध्यमे नाम सुनल होयबाक सम्भावनाकेँ अध्याय काटि नहि दैत। संवादक प्रभाव आ यथार्थक निष्कर्ष अलग कऽ देखब आवश्यक अछि।

दराजक फोन आ ‘चन्द्र १’ : दूसरा दरबाजा

कार्यालयक मोबाइल सम्पर्कमे सी-ग्रुप, मधुकर, नरेश आ ‘चन्द्र १’ देखाइत अछि। ‘चन्द्र २’क पाछाँ ‘चन्द्र १’क उपस्थिति एक व्यक्तिक बदलि पैघ शृंखलाक संकेत दैत अछि। लेखक अंकक क्रमसँ संरचनात्मक ऊँच-नीच बनबैत छथि, मुदा ई शृंखला अपराधक वास्तविक अधिकारी-मानचित्र सिद्ध नहि करैत। प्रत्येक नाम पाठकक ध्यानक आगाँ एक अनदेखल व्यक्ति वा भूमिका रखैत अछि। कथामे सूचना स्वयं कथा-प्रवाह बनि गेल अछि—फोनमे संग्रहित शब्द अगिला अध्यायक शीर्षकक बीज अछि।

‘पुरान विश्वासक नाम प्रयोग’ : पितृ-स्वरक पूर्वच्छाया

पिछला कोठरीक पन्नापर ‘बटुक बाबू’, ‘पण्डितजी’, ‘चन्द्रपाल काका’, ‘अदालत बाबू’ जेकाँ सम्बोधन अभ्यास-सूचीक रूपमे देखाइत अछि। एहि ठाम व्यक्तिक नाम असल व्यक्तिक उपस्थिति सिद्ध नहि, विश्वासक तैयार भाषा बनैत अछि। ककरो काका कहब, बाबू कहब अथवा सरकारी पद उच्चारण करब श्रोता कैं पहिनेक सामाजिक अनुशासनमे लौटा सकैत अछि। लेखक पुरान मान-पदक दू अर्थ देखबैत छथि—समुदायमे परिचय आ अपराधमे नकलक सामग्री। एहि कारण ‘चन्द्र १’क खोज पहिने व्यक्ति जेकाँ लगैतहुँ धीरे-धीरे भाषिक मुखौटा दिस मुड़ैत अछि।

‘पुरान देरीक नब लूट’ : कालिक ब्याजक शिल्प

चन्द्रमोहनक कार्यालयमे पुरान मुकदमा, असुरक्षित भूमि आ परदेशी परिजनक सूची पाठककेँ बरामदाक तेइस बरखक प्रतीक्षा मोन दिआबैत अछि। एक पुरान संस्थागत समय एखन फोनक तुरन्त धमकीक रूपमे वापसी करैत अछि। अदालतमे वर्ष-दर-वर्ष चलल केसक भय पाँच मिनटमे रकम माँगबाक शक्ति बनैत अछि—एहि कालिक

सङ्कुचनमे उपन्यासक व्यंग्य अछि। ‘ठग समय पर पहुँचैत अछि’क अर्थ नैतिक तुलना अछि, वास्तविक न्यायालयक प्रत्येक मामलेक निष्कर्ष नहि। देरी आ हड़बड़ीक विपरीत लय कथा-गतिको दिशानिर्देश दैत अछि।

‘हम अकेला नहि’ : संलग्नताक भाषा

चन्द्रमोहन सन्देह बढ़लापर कहैत अछि जे ‘ऊपर’ सँ सूची आबैत छल, ओ केवल मिलान करैत छल। पूर्वक लिपिक, रामलखन, भिखारी लाल आ नवलक कथनमे सेहो ‘हम केवल’क अनेक रूप भेटैत अछि। एहि दोहरावक कारण उपन्यास व्यक्तिक चरित्र-रचनासँ संस्थागत भूमिकाक आलोचना दिस बढ़ैत अछि। प्रत्येक मध्यस्थ अपन कर्मक एक छोट अंश स्वीकार करैत अछि, पर परिणामक मालिक बनबासँ बचैत अछि। कथावाचक ई शृंखला सहानुभूतिक प्रार्थना नहि बनबैत; जालक बहुजन-निर्माणक अन्तर्वस्तु बनबैत अछि।

सीलबन्द बही आ सार्वजनिक आश्वासन

पुरान भरोसा-सूची देखलाक बाद मीरा बहीकेँ सील करबैत छथि आ निजी नामक पाठ अनुमति बिना नहि करैत छथि। कार्यालयक बोर्ड नहि उतारल गेल, किन्तु जाँचाधीन सूचना सटाओल गेल। एहि दृश्यसँ कथाक ‘खोलबाक’ इच्छा आ ‘नष्ट नहि करबाक’ मर्यादा संग-साथ देखाइत अछि। भीड़क तात्कालिक नामकरण रोकबाक निर्णय उपन्यासक सुननाइ-शृंखलासँ सुसंगत अछि। मुदा अधिकारिक सीलक प्रक्रिया आ गवाहक हस्तान्तरणक विस्तार सीमित; नाटकीय गति ओहि विवरणपर बेसी समय नहि देत।

दोषी उघारबाक मोह आ आलोचनात्मक सन्देह

चन्द्रमोहनक असमय वाक्य, फोनमे चन्द्र १, अपन सन्दर्भक पन्ना आ अन्ततः ‘ऊपर’क उल्लेख रहस्यक अनेक दरबाजा एक्कहि दृश्यमे खोलैत अछि। पाठक जल्दी कोनो पैघ पात्रक नाम सुनबाक इच्छुक होइत अछि। कथा स्वयं चेतावनी दैत अछि जे पुरान नाम आ नब हाथ एके नहि होइत। एहि सावधानीक बावजूद दृश्य-रचना कतेको ठाम अपेक्षाकृत सहज स्वीकारोक्ति पर निर्भर अछि; कठोर अनुसन्धानक समयक तुलनामे पात्रक भाषिक कमजोरी असाधारण गति सँ जाल खोलैत अछि। ई गति रहस्यक आकर्षण बढ़बैत अछि, मुदा कथाविश्वक प्रक्रियागत विश्वसनीयता पर प्रश्न राखैत अछि।

‘चन्द्र १’क पुकार : प्रसंगान्तक प्रश्न

अध्यायक अन्त चन्द्रमोहन द्वारा धीमे कहल ‘चन्द्र १’पर टिकैत अछि। लेखक चन्द्र २क दरबाजा खोलि ओकर पाछाँ पहिल दरबाजा राखि दैत छथि। ई अनन्त पहरुआक रूपक नहि, विशेष कारणात्मक प्रतीक्षा अछि: पहिले फोनक गला पकडल, फेर जालक काउंटर देखल, आब आवाजक अधिकारमूलक मुखौटा खोजबाक रहि गेल। चन्द्रपाल स्वयं एखन दृश्यपर नहि; नामक प्रतिष्ठा अपराधक संसाधन भऽ सकबाक सम्भावना मात्र स्पष्ट अछि। अगिला अध्याय यही प्रतीक्षाकेँ रूप देत।

प्रकरण २७१ | मूल अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

‘चन्द्र १’सँ ‘पितृ-स्वर’ : नामक विखण्डन

चन्द्र दूक दरबज्जाक अन्तमे ‘चन्द्र १’ एक व्यक्ति वा पैघ अधिकारीक नाम जेकाँ बुझाएल छल। वर्तमान अध्यायमे बहीक ‘चन्द्र १: पितृ-स्वर’ पंक्ति एहि अपेक्षाकेँ बदलि दैत अछि। चन्द्र १ सम्भवतः निरपेक्ष एक व्यक्तिक परिचय नहि, पिता, काका, गुरु आ सरकारी अधिकारीक नामपर भरोसा जगाबयवला आवाजक शैली अछि। लेखक रहस्यक उत्तर बनाकऽ नब रहस्य दैत छथि—छलिया पहिने कल्पित ‘असली चन्द्र’ खोजबैत अछि, फेर सामाजिक अधिकारक स्मृतिक आवाज उघाड़ैत अछि। एहि परिवर्तनमे नामक स्थिरता टूटैत अछि; पाठक ककरा ताकय, एहि प्रश्नसँ आवाज कोना बनल, एहि प्रश्न धरि पहुँचैत अछि।

‘न्याय-प्रतीक्षारत परिवार’ : लक्ष्यक कालिक चयन

पुरान भरोसा-सूचीक पहिल छननी न्यायालयक प्रतीक्षारत परिवार कहल गेल अछि। पात्रक पुरान मुकदमा कथाक स्मृति बनैत अछि; अपराधी एहि स्मृतिकेँ विकल्पहि दबाव बनबैत अछि। अदालतक बरामदामे वर्षक प्रतीक्षा देखल पाठक बुझैत अछि जे नकली अधिकारीक शब्द एहन घरमे किएक तुरन्त भय जगबैत अछि। लेखक अन्यायक दीर्घकालकेँ फोनक क्षणिक तात्कालिकता संग जोड़ैत छथि। एतय समयक दुनू गति—धीर न्याय आ तेज ठगी—एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि।

कमरा सात : लेखनक पुरान कारीगरी आ नब ध्वनि

शहरक पुरान टाइपिंग गलीमे मोहर बनौनिहार, फोटोकॉपी-दोकान, कम्प्यूटर आ टाइपराइटरक एक संग उपस्थिति देखाइत अछि। मोहनलाल झाक कमरा सातमे टाइपिंग आ आवाज-रिकार्डिंगक यन्त्र साथ रखने अछि। लेखक सञ्चारक तकनीकी इतिहास एक छोट कोठरीमे दृश्य बनबैत छथि—पुरान फारम लिखबाक कारीगरी अब आवाजक नकली वाक्य बनबैत अछि। एहि मिश्रणसँ अपराध नब तकनीक मात्रक चमत्कार नहि रहैत; पुरान अभिलेखी भाषा तकर कच्चा माल बनैत अछि। स्थानक दृश्य कथा-वस्तुक नैतिक संशोधन बनैत अछि।

‘हम तँ केवल लिखि दैत छी’ : सृजनकर्ता आ उपयोगक दूरी

मोहनलाल झा अपना कैं फोन नहि करनिहार, केवल डरक स्क्रिप्ट लिखनिहार कहैत छथि। हुनकर बचाव पूर्वक नवलक ‘केवल नम्बर’, रामलखनक ‘सन्देश पहुँचबैत’ आ लिपिकक ‘ऊपर देल’सँग प्रतिध्वनित अछि। ई पुनरुक्ति लेखकक चरित्रमण्डलमे जिम्मेदारीक टुकड़ा-टुकड़ा बँटबाक प्रविधि अछि। कियो अपन कला आ परिणामबीच परदा टाँगय चाहैत अछि, पर लिखल वाक्यक मार कमलाक जीवनमे पहुँचि चुकल अछि। एहि कारण रचनाक कार्य आ ओकर उपयोगक नैतिक दूरी पर पाठक विचार करैत अछि।

मायक मोनपर दबावक पाँच चरण : वाक्यरचनाक अपराध

मोहनलालक मेजपर भेटल पन्नामे अकेला करब, पुरान केस स्मरण कराएब, पुत्रक नाम लएब, अधिकारक आवाज प्रयोग करब आ तुरन्त धन माँगब—एहन क्रम लिखल अछि। लेखक एक भावात्मक दुर्घटनाकेँ अपराधीक

तकनीकी पाठ्यक्रममे बदलबैत छथि। नैरेटोलॉजीक स्तरपर ई भीतरक ‘स्क्रिप्ट’ छथि, जिनकर अनुरूप पूर्वक कमला देवीक फोनक घटना घटल छल। पाठक पहिले घटनाक पीड़ा देखैत अछि, पछाति ओकर रचना-नक्शा; एहि उलटल जानकारी-वितरण सँ पूर्वक दृश्य नब अर्थ पबैत अछि।

पिता आ अधिकारी नामक पेन-ड्राइव : परिचित आवाजक अपरिचित जीवन

दू पेन-ड्राइव ‘पिता’ आ ‘अधिकारी’ नामे भेटैत अछि। एहि शीर्षकमे व्यक्तिक नाम हटि सम्बन्ध आ पदक श्रेणी बचैत अछि। जकर आवाज घरमे आश्वासन देबाक लेल छल, से नकली प्रयोगमे धमकी बनि जाइत अछि। कथामे पिता-स्वर जीवनक एक वास्तविक सम्बन्धो अछि आ अपराधक एक छद्म औजारो; दूनूकेँ एकरूप कएलासँ उपन्यासक व्यथा कमजोर पड़त। ‘पितृ-स्वर’क कथात्मक प्रभाव ओकर विश्वास-जागबैत स्मृतिक दुरुपयोगमे अछि, पिता नामक सम्पूर्ण सामाजिक सम्बन्धक निन्दामे नहि।

चन्द्रपालक पुरान भाषण : प्रतिष्ठाक ध्वनिक अवशेष

लाल फाइलमे पुरान जनसभासँ काटल चन्द्रपालक भाषणक अंश देखल जाइत अछि। ध्वनिक स्रोत रूपमे चन्द्रपालक नाम उपस्थित अछि, मुदा एतय ओ स्वयं फोनपर ठगी कएलनि—एहन दृश्य नहि भेटैत। प्रतिष्ठा, पुरान आदत आ सामूहिक पहिचानक कारण नाम आवाजक नकली मुद्रा बनि गेल होएबाक कथन उभरैत अछि। लेखक वर्तमान अपराधक तकनीककेँ पूर्वक सत्ताशाली चरित्रक सार्वजनिक स्मृतिसँ जोड़ैत छथि। एही ठाम व्यक्तिक प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व आ नामक परोक्ष दुरुपयोग अलग राखब आलोचनात्मक आवश्यकता अछि।

स्वरक स्वामित्व : सुनबाक अधिकार ककरा?

मोहनलालक लिखल पन्ना, रिकार्डक नमूना, कटि गेल भाषण आ कमलाक पारिवारिक लय—सभ मिलि आवाजक लेखकत्वक प्रश्न उठबैत अछि। लिखल बात, बाजल बात, रिकॉर्ड कएल अंश आ सुननिहारक अनुभव अलग-अलग मालिकाना रखैत अछि। अपराधी एहि अलगावकेँ अपन व्यापारक लाभ बनबैत अछि: जकर स्वर नहि, ओकर अधिकार-स्वर रचबाक; जकर घर नहि, ओकरा पर परिवारक नाम सँ धमकी देबाक। कथानक एहि विभाजनकेँ ‘कागचक मोहर’सँ ‘आवाजक मोहर’ धरि लऽ गेल अछि। एही बिन्दुपर उपन्यासक लम्बा दस्तावेजी खण्ड सामाजिक श्रवणक आलोचना बनैत अछि।

मोहनलालक स्वीकारक गति : नैतिक असर आ यथार्थवादी समस्या

कमलाक बयान सुनबिते मोहनलालक कठोरता टूटैत अछि आ ओ किछु मध्यस्थक नाम लैत छथि। ई क्षण भावात्मक रूपेँ असरदार अछि—स्वयं बनाओल भयक शब्द पीड़ितक देहमे की केलक, से सुनि लेखक पात्र केँ जवाबदेह बनबैत छथि। मुदा अपराध-व्यवसायमे लम्बा समय सँ संलग्न व्यक्ति एक-दू संवादमे विस्तृत जानकारी दऽ देत, ई गति आलोचनात्मक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। पात्रक अन्तःपरिवर्तनक पूर्वाभास सीमित रहलापर स्वीकारोक्तिक नाटकीय तीव्रता यथार्थवादी विश्वसनीयता सँ थोड़ेक आगाँ निकलि जाइत अछि। पाठ एहि तनावकेँ सुलझबैत नहि।

दू चानक जल-प्रतिबिम्ब : नामक फूटल देह

अन्तमे गोहि चन्द्रमाक प्रतिबिम्ब काटैत अछि; पानि पर एक क्षण दू चान देखाइत अछि। ‘चन्द्र १’ आ ‘चन्द्र २’क दोहराओल नाम नदीक प्रकाशमे दृश्य रूप लैत अछि। ई जादुई प्रतिमा तथ्यक सूची नहि; मिथकीय प्राकृतिक संसार कथाक भाषिक विभाजनकेँ अपन देह दैत अछि। चान फूटि फेर जुड़ैत अछि, जखन कि अपराध-जालक पहिला घेरा खुलि गेलो सम्पूर्ण सामाजिक राति शेष अछि। प्रतीकक ई अपूर्णता अध्यायक शीर्षकक ‘खोल’ शब्दसँ जुड़ैत अछि—ऊपरी आवरण हटला बाद सम्पूर्ण केन्द्र एखन अनाम।

पहिल वृत्तक बन्द होनाइ : संरचनात्मक उपलब्धि

अध्यायक अन्त कहैत अछि जे डिजिटल डरक पहिल पैघ वृत्त बन्द भेल। चन्द्र २ कार्यालय, चन्द्र १ अधिकारक मिश्रित मुखौटा, मोहनलालक कमरा आ मधुकरक छाह एक क्रममे पढ़ल गेल। मुदा ई ‘बन्द’ अपराधक कानूनी अन्त नहि; रहस्यक एक व्याख्यात्मक स्तर तक पहुँचबाक क्षण अछि। कतेको नाम एखन अनिश्चित, कतेको रकम वापस नहि, कतेको परिवारक भय बचल। कथावाचक ध्वनि-नाटकक उजागर युक्ति सँ सामूहिक सुनबाक आगामी दृश्य तैयार करैत छथि। एहि सीमित वृत्तान्तीय विरामक कारण अगिला अदृश्य अदालत नव शुरुआत रूपमे उपस्थित होएत।

प्रकरण २७२ | मूल अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

देबालविहीन अदालत : मंचनक स्थान सँ सामूहिक कान

विदेह नाट्य उत्सव, चल चौपाल आ बरामदाक तारीख-पाठक बाद चन्ना गाछी लग अदृश्य अदालत बनैत अछि। एहि ठाम सरकारी मोहर नहि, कुर्सी वा न्यायाधीशक ऊँच आसन नहि। मीरा आरम्भहि मे स्पष्ट करैत छथि जे कोनो सरकारी फैसला नहि सुनाओल जाएत; भय, स्मृति आ अनुभवकेँ सामूहिक सुननाइ भेटत। एहि कारण अदालत शब्द एतय विधिक संस्थाक प्रतिरूप नहि, सुननाइ लेल सामाजिक स्थानक रूपक बनैत अछि। कथानककेँ पूर्ण दण्डक जल्दबाजीसँ बचायब एहि दृश्यक नैतिक आधार अछि।

नाम-डर-गवाहीक तीन पाथर : प्रतीकात्मक संस्थापन

अनन्या ठूँठक जड़ि लग लाल सूतक घेरा बनबैत छथि आ भीतर नाम, डर आ गवाही नामक तीन पाथर रखैत छथि। लिखित कानूनक कक्षमे टेबुल–फाइलक ठोस अनुशासन होइत अछि; एहि घेरामे माटि, पाथर, धागा आ श्रवणसँ व्यवस्था बनैत अछि। वस्तु तीनू केवल सजावट नहि—बोलयबला व्यक्ति पहिने स्वयंकेँ रखैत अछि, बादमे भयक सीमा समझैत अछि, तखन अनुभवकेँ शब्द दैत अछि। ई क्रम पात्रक शरीरकेँ अभिलेखक आरम्भ-बिन्दु बनबैत अछि। मुदा पाथरक जादुई शक्ति प्रमाणित नहि; समुदाय ओकरा अपन बनाओल नियमक आधार मानैत अछि।

कमला देवीक फोन : निजी अपमानसँ सार्वजनिक कथन धरि

कमला अपन मोबाइल आँचरमे लपेटने अबैत छथि, जेना उपकरण दूखक जीवित रूप हो। ओ बतबैत छथि जे बेटाक रक्षा करबाक नामपर मौन माँगल गेल छल। एतय घटनाक पुनर्कथन मात्र नहि—पात्र अपन पहिनेक निर्णयक अर्थ बदलैत छथि। प्रारम्भमे ‘ककरो नहि कहू’ हुनका परिवार बचाबक उपाय लगल; सार्वजनिक सुननाइमे ओ शोषणक विधि रूपेँ बुझाइत अछि। कम्पैत स्वरक एहन परिवर्तन पाठकीय सहानुभूतिक साथ चरित्रक चेतनाक यात्रा रचैत अछि। मुदा धन वापस भेटल अछि एहन अन्त घोषित नहि।

लक्ष्मण यादवक सिकुड़ैत खेत : नक्शाक विपरीत देह

लक्ष्मणक कहब अछि जे फाइलमे खेतक आकार छोट होइत गेल, मुदा लगानक रसीद ओही रहि गेल। एहि विरोधाभासमे जमीनक नापक लिखित परिवर्तन आ देहक श्रमक सतत अनुभव साथ उपस्थित अछि। सत्यव्रत भूमि-विवादकेँ देहक सीमांकनक रूपमे पढ़बाक आग्रह करैत छथि। पूर्वक खेत-रोपनी, बीजक चोरी आ जलक बहावक कथावृत्त एहि एक किसानक आवाजमे घुरैत अछि। कागचक गणना जखन माटिक अनुभवसँ अलग होइत अछि, तखन स्थल स्वयं स्मृतिक विरोधी दस्तावेज बनि उठैत अछि।

परदेशी पुत्रक दूरी : अपराधक बीचक खाली ठाम

एक युवा प्रवासी कहैत अछि जे घरमे ओकर वास्तविक फोन कम पहुँचैत छल, ठगक आवाज अधिक। एहि कथनसँ अपराधीक सफलता खाली तकनीकी कौशलपर निर्भर नहि बुझाइत; परिवारक बीच बनल दूरी सेहो कथात्मक भूमिका ग्रहण करैत अछि। तथापि प्रवासी बेटा परिवारक दूराव कारण अपराधक दोषी बनि जाए—एहन सरल नैतिक निष्कर्ष लेखकक दृश्यक जटिलताकेँ घटाएत। स्नेहक अनुपस्थितिक बीच नकल प्रवेश करब एहि अध्यायक शोकात्मक सूत्र अछि। आवाजक असली लय सामाजिक सम्बन्धक सतत व्यवहार सँ बनैत अछि।

शिवनारायण मिश्रक उलटा नमूना : भाषा लेल जिम्मेदारी

बूढ़ मोहरनवीस शिवनारायण स्वीकार करैत छथि जे डरबेनिहार नमूना-पत्र लिखबामे काज कएने छथि। मीरा हुनका तत्काल दण्ड नहि, आगू की करबाक प्रश्न करैत छथि। ओ बचाव-पत्र बनायब चाहैत छथि, जाहिमे फोनपर दबाव भेटलाक बाद लोक अपन भाषा मे उत्तर भेटा सकय। एहि कथामे लेखनक कौशल पहिने शोषणक कच्चा माल छल, आब प्रतिरोधक शिक्षा बनबाक सम्भावना देखबैत अछि। मुदा प्रतिपूरणक वचन पूर्वक क्षतिक स्वतः क्षमा नहि; पात्रक आगामी कर्मक परीक्षा बाकी अछि। नाटकीय समाधानक असम्पूर्णता आवश्यक अछि।

अनाम स्त्रीक संरक्षित गवाही : मौनक सेहो अधिकार

कर्ज आ पतिक मृत्यु बाद हस्ताक्षरक दबाव सहनिहार स्त्री अपन नाम सार्वजनिक नहि चाहैत छथि। मीरा कैमरा रोकैत छथि, नामक जगह ‘देहरी पर दबाव’ लिखबबैत छथि। एहि क्षणमे अदृश्य अदालतक असली मर्यादा प्रकट होइत अछि—जे मंच प्रत्येक पीड़ितकेँ नाम कहबाक बाध्य करय, ओ नब हिंसा बनि सकैत अछि। सार्वजनिक कथा पीड़ितक सहमतिसँ बनबाक चाही। पूर्वक नाम-बचाओ अभियानकेँ ई दृश्य आन्तरिक सुधार दैत अछि: नाम बाँचेनाइ आ नाम उघारेनाइ एके बात नहि।

लाल, पीयर, कारी धागा : देखल, सुनल, डरक वर्गीकरण

सायंकाल गवाही तीन धागामे बाँटल जाइत अछि—लाल प्रत्यक्ष देखल, पीयर सुनल, कारी भय वा अनुमान। ठूँठ पर पीयर बेसी आ कारी सभसँ बेसी भेटैत अछि। एहि दृश्यसँ लेखक समुदायक स्मृतिमे वास्तविक जानकारी, परस्पर सुनल खबरि आ असुरक्षाक अनुपातक दृश्य प्रतिमा बनबैत छथि। धागा सभ कथाक भीतर सूचनाक अलग स्तर चिन्हैत अछि, फॉरेन्सिक प्रमाणक सरकारी प्रमाणपत्र नहि बनैत। लोकक नजरिमे गोहिक आकृति जखन डरक दाँत जेकाँ होइत अछि, तखन एहि अलगावक आवश्यकता आरो स्पष्ट बुझाइत अछि।

भूतक घेरा : अलौकिक उपस्थिति आ लोक-दृष्टि

कारी भूत लाल सूतक सीमा पार करय चाहैत, उज्जर प्रेत ओकरा रोकैत बुझाइत छथि। चिरई पीयर धागा कारीक बीच अटका दैत अछि; जलमे गोहि स्थिर अछि। कथावाचक पाठककेँ निश्चित भौतिक जादू सिद्ध करबाक बाध्यता नहि दैत। ई दृश्य सामूहिक नैतिक संघर्षक नाटकीय छाया बनैत अछि—एकान्तक डर आ साझा सुननाइक साहसक द्वन्द्व। रजिस्टरमे लोकक देखल चिह्न, प्रतीक आ लिखित कथन अलग राखब पूर्वक अनुशासनक निरन्तरता अछि।

सत्यव्रतक स्थान-बदल : न्यायाधीशसँ श्रोता

सत्यव्रत आरम्भमे घेराक बाहर बैसल छथि, मोहर नहि लगबैत आ कागच नहि बाँटैत। बादमे ओ भीतर आबि समुदायक दोहराओल भयकेँ सुननाइक प्रारम्भ मानैत छथि। ई परिवर्तन न्यायालयक अधिकारीक सहज लोकनायक बनि जाएब मात्र नहि; ओकर पुरान मौन आ देरिसँ आयल उत्तरदायित्व पाठकक स्मृतिमे रहैत अछि। भिखारी लाल पुरान चाबी लाल सूतमे बाँधि ठूँठ पर लटकबैत अछि; ताला खोलबाक औजार सुनबाक प्रतीक बनैत अछि। एही दोहरी रूपान्तरणमे संस्था भीतरक पात्र सभ अपन भूमिका पुनर्लेखन करैत छथि, पर कानूनक वास्तविक आसन अदृश्य अदालतकेँ हस्तान्तरित नहि होइत।

अन्तिम लेखा : फैसला नहि, भयक व्याकरण

रातिक अन्तमे सत्यव्रत लिखैत छथि जे अदृश्य अदालतक पहिल दिन कोनो फैसला नहि, मुदा भयक व्याकरण खुलल। एही वाक्यसँ अध्यायक शीर्षकक सम्भावित गलत व्याख्या रुकैत अछि। गवाहीक धागासँ कियो जेल नहि जाइत, बैंक-रकम स्वतः वापस नहि अबैत, जमीनक नापो तुरन्त सुधरैत नहि। समुदाय एकान्त, अधिकार-स्वर, हड़बड़ी आ मौनक घेरा चिन्हैत अछि; ई भविष्यक प्रतिरोधक भाषा बनैत अछि। उपन्यास घटना-वृत्तान्तकेँ पूर्ण न्याय-प्राप्तिक कथा घोषित करबाक बदला सामाजिक श्रवणक प्रारम्भ बनबैत अछि।

मधुकरक छाह आ अनिश्चित अगिला बाट

सुननाइक बीच मधुकरक पहिनेक सर्वे, पंचायतक कागच आ चन्द्रपालक लोकसँ जुड़ल रहबाक गप्प उठैत अछि। मीरा देखल, सुनल आ मात्र डरक कथन अलग करबैत छथि; एकरस आरोपक बाढ़ि रोकबाक एहि नियम पर अध्याय समाप्त दिशामे बढ़ैत अछि। चन्द्र १क मिश्रित आवाजक मुखौटा खुलितहुँ मधुकरक वास्तविक भूमिका

अनिश्चित अछि। ठूँठक तीन धागा अधूरा जालक दृश्य-रूप बनैत अछि। एही कारण अदृश्य अदालत एक बन्द परिणाम नहि, अगिला अन्वेषणक नैतिक शर्त बनि रहैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : छायाक पेटसँ अदृश्य अदालत धरि

अध्याय १६४–१७१क अन्तर्वर्ती शृंखला मूलतः जालक देह भेटबाक यात्रासँ ध्वनिक मुखौटा खोलबाक यात्रा अछि। रेकर्ड-घरक सत्रह नम्बर अलमारीमे भेटल ‘१७/सी’ पहिने चन्द्रपालक सेवा-दफ्तरक सी-कक्ष धरि पहुँचैत अछि, फेर सी-१७ लिखल पेटी आ तेतरि घाटक कोठी-बखारीक सामग्री बनैत अछि। पाँच लाल बही कागचक नकल, नकली मृत्यु, भुगतान आ आवाजक अभ्यासक आपसी निकटता देखबैत अछि। नदी पारक जनसेवा केन्द्र गामक परिवारक नाम शहरक दलाल धरि पहुँचबाक बाट खोलैत अछि; शहरक रिकार्डिंग-कक्ष आ चन्द्र सेवा कार्यालय विश्वासक आवाज कैं व्यापार बना देबाक सम्भावित क्रम देखबैत अछि। अन्तमे चन्ना गाछी लग गवाहीक घेरा एहि यात्रा कैं सामाजिक सुननाइमे फेर लऽ अबैत अछि। एही गति मे रहस्यक प्रत्येक उत्तर अर्को स्रोत खोलैत अछि, मुदा सभ उत्तर अन्तिम निर्णय नहि।

स्थानक रचना विशेष अर्थपूर्ण अछि। रेकर्ड-घरक अन्हार, चन्द्रपालक सी-कक्ष, पिछुआरी गलीक रोशनदान, सी-१७ पेटी, नदीक तेतरि घाट, नावक बीच, नदी पारक साइबर-दोकान, शहरक बस अड्डा, टाइपिंग गल्लीक कमरा सात आ चन्ना गाछीक ठूँठ—ई सभ केवल घटनास्थल नहि। प्रत्येक ठामकैं अलग सुनबाक नियम अछि। बन्द अलमारीमे कागच शब्द लिखैत अछि; नावपर फोन सार्वजनिक स्पीकर बनैत अछि; शहरक शोर नकली आवाजक परदा बनैत अछि; ठूँठ लग प्रत्यक्ष देखल, सुनल आ डरक बात रंगीन धागासँ अलग राखल जाइत अछि। एही संरचनाक सीमा सेहो अछि: अध्याय १६६क शीर्षक ‘इमली घाटक कोठार’ अछि, मुदा मुख्य घटनास्थल लगातार तेतरि घाट कहल गेल। मूल पाठ एहि दू नामक सम्बन्ध स्पष्ट नहि करैत, तें समीक्षा एकरा स्थलनामक असङ्गतिक रूपमे चिन्हैत अछि।

समयक भिन्न गति एहि खण्डक रोमहर्षक मुख्य कारीगरी अछि। राति सत्रह नम्बरक अलमारीक खाली ठाम मिलैत अछि, भोर ‘१७/सी’क रस्ता खुलैत अछि; कोठार अन्हारमे नहिये तोड़ल जाइत, उजासमे देखल जाइत अछि। दूसरी तरफ अदालतमे बरखोंक प्रतीक्षाक परिवारकैं फोनपर ‘अखने’ जवाब देबाक धमकी देल जाइत अछि। दीर्घ न्यायिक ठहराव आ तुरन्त भयक आदेश एकहि सामाजिक जालक विपरीत समय छथि। तीन छोट आर्थिक हस्तान्तरण एक परिवारक हानि चरण-दर-चरण बनबैत अछि; पाँच बहीक क्रम एक संस्था-जालक सम्भावित विस्तार बतबैत अछि। लेखक समयक एहि टकराहटसँ घटनाकैं तीक्ष्ण बनबैत छथि, भले कानूनी जप्ती, सील अथवा डिजिटल सामग्रीक हस्तान्तरणक विस्तृत समयक्रम किछु ठाम संकुचित रहैत हो।

पात्रक दृष्टिमे पूर्ण ज्ञानक अभाव सुरक्षित अछि। परमानन्दक स्मृति केवल फोनक आधा निर्देश दैत अछि; नागेश्वरक रसीद दफ्तरसँ सम्पर्क सुझबैत अछि; बूढ़ मल्लाह नाव आ पेटी ढुलाइक कथन दैत अछि; नवल अपन भूमिका घटबैत-घटबैत बदलैत अछि; नरेश पुरान स्कैनक कथा कहैत अछि; चन्द्रमोहन ‘ऊपर’ सँ सूची आयबाक बात स्वीकारैत अछि; मोहनलाल झा आवाजक पाँति लिखबाक स्वीकार करैत छथि। एहि बहु-पात्रक कथन एक-दोसराकैं आवश्यके नहि निरस्त वा पुष्ट करैत; आंशिक ज्ञान मिलिकऽ नब प्रश्न रचैत अछि। मीरा सेहो अनेक बेर

निष्कर्ष स्थगित रखैत छथि। तथापि कुछ स्वीकारोक्ति घटना-पछाति अत्यन्त शीघ्र घटैत अछि; अपराध-जालक अनेक मध्यस्थ एके दिन भावुक बयान देबाक कारण कथात्मक वेग त्वरित होइत अछि, जकर यथार्थवादी सीमा आलोचनाक विषय अछि।

चिह्नक प्रत्यावर्तन कथा-बुनोटक एक खास गुण अछि। सत्रह नम्बर, सी खण्ड, सी-कक्ष, सी-१७, सी-ग्रुप, ‘चन्द्र २’ आ ‘चन्द्र १’—ई सभ पाठककेँ पुरान पन्ना मोन पाड़ैत अछि। प्रत्येक चिह्नक अर्थ एके नहि, मुदा पुनरागमन कारणात्मक मिलानक अपेक्षा उत्पन्न करैत अछि। ‘चन्द्र १’ प्रारम्भमे एक शीर्ष व्यक्ति होएबाक सन्देह जगबैत अछि, पछाति ‘पितृ-स्वर’क मिश्रित अधिकार-मुखौटा रूपमे खुलैत अछि। पुरान जनसभाक भाषण, पिता-अधिकारी नामक पेन-ड्राइव आ माताक मनपर दबावक स्क्रिप्ट बतबैत अछि जे झूठ केवल व्यक्तिक नाम नहि, सामाजिक विश्वसनीयताक लय चोरैत अछि। स्वरक असल मालिक, आवाज बनौनिहार, बोलनिहार आ सुननिहार —चारूकेँ अलग राखब एहि श्रव्य आख्यानक उचित पठन अछि।

जादुई चित्र पुनः नदीक मूल संसारसँ सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। सी-१७ पेटीक प्रश्नक बीच गोहि घाट दिस तकैत अछि; नकली फोनक बाद नदीक फेन साँस जेकाँ उठैत अछि; शहरक जालक अन्तमे गोहिक मुँह शहर आ पूछार गामक कादोमे देखाइत अछि; ‘चन्द्र १’ आ ‘चन्द्र २’क बाद चन्द्रमाक प्रतिबिम्ब दुइ भाग भऽ फेर जुड़ैत अछि। चन्ना गाछीक अदृश्य अदालतमे भूत सभ सुनबाक विरोधी अर्थक अभिनय करैत बुझाइत छथि। एहन चित्र सभ तथ्यक फॉरेन्सिक विवरण नहि, कथावाचक आ लोकक अनुभवक काव्यात्मक देह छथि। मीरा लोकविश्वासक संकेतकेँ साक्ष्य-रजिस्टरसँ पृथक राखैत छथि; एहि कारण जादुई कथा सामाजिक अभिलेखक स्थान पर जबरदस्ती नहि बैसैत।

अन्तिम अध्याय १७१ मे समस्त शृंखला राज्यक अदालत बनि पूर्ण नहि होइत; ओकर बदला नाम, डर आ गवाहीक पाथर सभ पर सुननाइ आरम्भ होइत अछि। कमला देवी अपन डर सार्वजनिक कऽ ओकर अर्थ बदलैत छथि; लक्ष्मण यादव खेतक नक्शा आ देहक सीमा जोड़ैत छथि; प्रवासी पुत्र घरक दूरी पर विचार करैत अछि; शिवनारायण मिश्र भयक लिखल नमूनाकेँ बचाव-पत्रमे बदलबाक वचन दैत छथि; एक अनाम स्त्री अपन नाम रोकबाक अधिकार पबैत छथि। लाल प्रत्यक्ष-दर्शन, पीयर सुनल गवाही आ कारी भयक धागा सामाजिक अभिलेखक सीमाबोध अछि। इयादि रखबाक चाही जे कोनो नाम स्वतः निर्दोष वा दोषी घोषित नहि भेल, नहि बैंकक सम्पूर्ण रकम घुरल, नहि सारे जमीन-विवादक निवारण भेल। कथा पूर्ण न्यायिक विजयक बदला व्यक्तिगत मौन तोड़बाक आ सामूहिक उत्तरदायित्व बढ़ेबाक असम्पूर्ण किन्तु आवश्यक प्रक्रिया प्रस्तुत करैत अछि।

एहि बैचमे अखन प्रमुख प्रश्न अधूरा अछि: चन्द्रपालक वास्तविक प्रत्यक्ष भूमिका कोन सीमा धरि प्रमाणित होएत; मधुकरक सूचना-आवागमनक पूरा स्वरूप की अछि; फाइलक मूल प्रति, अभ्यास-पत्र आ कार्बनक छाप सभक विश्वसनीय संरक्षण कोना होएत; आ पीड़ितक नाम सुरक्षित रखिते अपराधक संरचना सार्वजनिक केना पढ़ल जाएत? एहि प्रश्नसभक कारण अदृश्य अदालत अन्त नहि, आगामी अध्यायक नैतिक आरम्भ अछि। उपन्यासक दीर्घ आख्यानक महत्त्व एहि ठाम छैक जे प्रत्येक ‘खोलल’ वस्तुक पाछाँ एकटा नव सम्बन्ध खुलैत अछि, मुदा ओकरा सर्वज्ञ विजयघोष बनाकऽ पाठक सँ विश्वास नहि मँगल जाइत।

प्रकरण २७३ | मूल अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

तीन रंगक व्यवस्था : गवाहीक दृश्य-व्याकरण

पिछला अध्यायमे चन्ना गाछी लग भयक सार्वजनिक उच्चारण शुरू भेल छल; एहि अध्यायमे ओकरा पढ़बाक पद्धति आकार पबैत अछि। अनन्या लाल, पीयर आ कारी धागाक गिट्ठी अलग-अलग टोकरीमे राखैत छथि। लाल प्रत्यक्ष देखल दृश्य वा वस्तुसँ जुड़ैत अछि, पीयर दोसराक माध्यमसँ सुनल कथनसँ, कारी व्यक्तिगत अथवा सामुदायिक डरसँ। रंग केवल सजावट नहि, कथाक भीतर ज्ञानक दूरी मापबाक भौतिक साधन बनैत अछि। पाठक सेहो एहि रंगक अनुकूल प्रत्येक वक्ताक विश्वसनीयताक सीमा समझए लगैत छथि। एहि प्रकार लोक-अभिलेखक निर्माण स्वयं उपन्यासक कथन-विधिक प्रतिरूप बनि जाइत अछि।

गीतक हरियर आ कथाक कारी : चिह्नक आन्तरिक असङ्गति

अध्यायारम्भक लोकगीतक प्रारम्भिक आह्वानमे लाल–पीयर–हरियर धागाक उल्लेख अछि, मुदा अध्यायक आरम्भिक विवेचन आ मुख्य घटनामे तेसर रंग लगातार कारी अछि। हरियर आशा, पुनरुत्थान अथवा जीवित जड़िक बिम्ब भऽ सकैत अछि; कारी भय आ अनिश्चितताक चिह्न बनि स्थापित अछि। मूल पाठ दुनू रंगक परस्पर विनिमय अथवा क्रमिक परिवर्तनक स्पष्ट घटना नहि दैत। तेँ समीक्षामे एकरा प्रतीकात्मक उत्क्रमणक निर्विवाद प्रमाण मानब उचित नहि; ई गीत आ कथा-विन्यासबीचक दर्ज करबाक योग्य रंगगत असङ्गति अछि। एहि अस्थिरताक बावजूद मुख्य गवाही-वर्गीकरण सुव्यवस्थित रहैत अछि।

लक्ष्मण यादवक लाल गिट्ठी : देखल कागचो अन्तर्विरोधी

लक्ष्मण यादव खेतक नाप, पुरान खेसरा, रसीद आ नव सीमांकनक पन्ना संग लैत छथि। सभटा प्रत्यक्ष वस्तु छथि, मुदा एक पन्ना नदी दिस भूमि बढ़बैत अछि, दोसर सड़क दिस घटबैत अछि आ तेसर नामक अक्षर काटैत अछि। एहि दृश्यसँ लाल रंगक अर्थ अन्तिम सत्य नहि, प्रत्यक्ष निरीक्षणक आरम्भ बनैत अछि। लेखक देखबैत छथि जे आँखिसँ देखल कागच सेहो आपसमे झगड़ा करैत अछि। आरुणि आ सत्यव्रत पन्ना सभकेँ आमने-सोझाँ रखबाक कारण दैत छथि; जमीनक भौतिक इतिहास आ दस्तावेजक पाठ बीचक अन्तर कथाक नब तनाव बनैत अछि।

अस्पताल आ बिक्रीक एक तिथि : समयक द्वन्द्व

अपन नाम सार्वजनिक नहि करय चाहनिहार वृद्ध स्त्रीक अंगूठासँ घरक आधा हिस्सा बेचायल देखाओल गेल अछि; स्त्री कहैत छथि जे ओहि दिन ओ अस्पतालमे छलीह। देविका अस्पतालक पर्ची आ बिक्रीक कागच दुनू देखैत छथि, तिथि एके अछि मुदा समय अलग। कथा एतय एक दृश्यगत विसंगतिकेँ सम्भावित छलक सन्दर्भ बनबैत अछि, दण्डादेश नहि। स्त्रीक नामक गोपनीयता ओहि कथात्मक अनुशासनकेँ दृढ़ करैत अछि जाहिमे व्यक्तिक गरिमा कागचक प्रमाण खोजबाक लेल बलि नहि चढ़ैत। जादुई भूतक क्षणिक हस्तक्षेप एहि पीड़ाकेँ दृश्य करैत अछि, मुदा तिथिक मिलान अपने प्रमाणक श्रम रहैत अछि।

पीयर गिट्ठी : सुनेल बातक कथन-मध्यस्थ

मधुकर बाबूक पुरान सर्वे, चन्द्रपालक लोकक साथ आ पंचायतक बक्सामे सम्भावित हस्ताक्षरक बारेमे अनेक लोक बाजैत छथि। मीराक प्रश्न—कियो स्वयं देखलक कि दोसरसँ सुनलक, कखन सुनलक, कहनिहार जीवित अछि कि नहि—पीयर गिट्ठीकेँ आकार दैत अछि। प्रश्न करब गवाहक अपमान नहि, ओकर कथनक स्रोत स्पष्ट करब अछि। एहि आवर्ती प्रश्न-विन्याससँ लोकक बोलब तत्काल सामूहिक क्रोधक सामग्री बनबाक बदला क्रमबद्ध खोजक सम्भावना पबैत अछि। बहुस्वरक अनुभव एकरूप सत्य नहि, परस्पर जाँच योग्य अलग-अलग कथन बनि रहल अछि।

शिवनारायणक बचाव-पत्र : लिखल भयक प्रतिलेखन

मोहरनवीस शिवनारायण मिश्र पुरान डर उत्पन्न करनिहार नमूना-पत्रक संग स्वयं रचल बचाव-पत्र लैत छथि। एकहि लेखनक कौशल पहिने ठगीक भाषाकेँ बल देने छल, आब लोककेँ एकान्त, रकमक हड़बड़ी आ नकली पुलिस-स्वर चिन्हबाक शिक्षा दैत अछि। एहि पात्रक परिवर्तनमे तात्कालिक प्रायश्चित्तक पूर्णता नहि, लेखकीय श्रमक दिशा-बदल अछि। कमला देवी परिवारक असली गुप्त संकेतक विचार जोड़ैत छथि; ओकरा तकनीकी अचूक उपाय बनाकऽ नहि, पात्रक पारिवारिक विवेकक प्रस्ताव रूपमे पढ़ब चाही। कथा एहि ठाम पीड़ितकेँ ज्ञान-उत्पादक बनबैत अछि।

कारी गिट्ठी : ऐतिहासिक डरक शरीर

एक युवक स्वीकारैत अछि जे ओकरा फोन नहि आयल, तथापि थाना शब्द सुनिते देह काँपैत अछि। एहि स्वीकारसँ कारी धागा झूठक पर्याय नहि रहि जाइत अछि। ओकर भीतर संस्थागत अपमान आ पीढ़ीक स्मृतिक सञ्चय अछि। सत्यव्रत अपन बरामदाक परिचित शब्द—तारीख, जमानत, वारंट—मोन करैत छथि आ बुझैत छथि जे वही भाषा गरीबक कानमे धमकी भऽ गेल होइ। लेखक व्यक्तिगत मनोविज्ञानकेँ दीर्घ सामाजिक समयसँ जोड़ैत छथि। जँ समीक्षा डरकेँ प्रत्यक्ष घटनाक बराबर प्रमाण मानि लैत, तँ ई सूक्ष्म रचना नष्ट भऽ जाइत; डरक सत्य अनुभूतिक स्तर पर अछि।

फुलेसरक प्रश्न : निर्धारित विषयक सीमा भंग

बालक फुलेसर पूछैत अछि जे मजदूरीक डर आ पढ़ाइक धमकी कोन रंगक गिट्ठी अछि। डिजिटल ठगी आ जमीन-जालसाजीक बीच ई अप्रत्याशित प्रश्न कथा द्वारा अपन तय कएल विषयक सीमाकेँ खोलैत अछि। देविका कारी आ लाल दुनू रंगक सम्भावना बतबैत छथि; वर्गीकरण उपयोगी अछि, मुदा मनुष्यक समस्त जीवन ओकरा भीतर सरलतासँ नहि अँटैत। नेनाक प्रवेश उपन्यासक केन्द्रकेँ अपराध-जालसँ सामान्य सामाजिक भय धरि विस्तृत करैत अछि। एहि क्षणमे लाल–पीयर–कारी पद्धति स्वयं प्रश्नाधीन होइत अछि, आ ई आत्मसंशोधन ओकर ताकत अछि।

रामकेवलक पंजी : कथात्मक मोड़क पहिल ठोस सूत्र

साँझ लग वृद्ध पंचायत-सेवक रामकेवल पासवान पन्द्रह बरख पुरान पंजी लैत छथि, जाहिमे ‘मधुकर मिश्र, विशेष सर्वे सहायक’ लिखल अछि। पहिने मधुकरक नाम फोन, कोठरी, अफवाह आ सम्भावित सर्वे-स्मृति मार्फत घूमैत रहल; आब लेख्य तिथि आ भूमिकाक पहिल एकसंग रूप देखाइत अछि। मूल पंजीक प्राप्ति मधुकरक समस्त अपराध सिद्ध नहि करैत, मुदा पूर्वक छिड़िआयल कथनक केन्द्र स्थिर करैत अछि। मीरा पंजीकेँ तुरन्त सार्वजनिक निर्णयक पाथर नहि बनबैत; सुरक्षित प्रति आ रामकेवलक अलग कथन माँगैत छथि। एहि रोकमे घटनाक विश्वसनीय गति अछि।

गिट्ठी खोलबाक गति : अध्यायक अपूर्ण समाप्ति

अध्याय लाल गिट्ठी भारी बनब, चिरईक चोंचसँ धागा खसब आ गोहिक अस्थिर जलचाल सन बिम्बसँ अगिला ‘पंजीक पहरा’ दिस बढ़ैत अछि। ई चित्रण तथ्य-सूची नहि, धीमा कथात्मक सङ्क्रमण अछि। गीत, तीन टोकरी, प्रश्नोत्तर, अस्पतालक पर्ची आ सर्वे-पंजी अनेक वस्तु एके अध्यायमे जमा होइत अछि; तथापि पूर्ण न्यायिक निवारण नहि होइत। लेखकक दीर्घ आख्यानक पद्धति प्रत्येक दिनक सुननाइकेँ समापन नहि, अगिला दिवसक उत्तरदायित्व बनबैत अछि। पात्रसभकेँ सत्यक अधीर उपभोक्ता नहि, धीमा संरक्षक बनबाक अभ्यास देल जाइत अछि।

प्रकरण २७४ | मूल अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

पन्द्रह बरखक छलाँग : ऐतिहासिक समयक पुनःप्रवेश

रामकेवलक पन्द्रह बरख पुरान हस्ताक्षरवला सर्वे-पंजी वर्तमान डिजिटल धमकीक जालमे अतीतकेँ अकस्मात् उपस्थित करैत अछि। कथावाचक अतीतमे पूरा दृश्य-पुनराभिनय नहि करैत, एक पीयर पन्नाक माध्यमसँ वर्त्तमानकेँ पीछे मुड़बाक लेल बाध्य करैत छथि। ‘मधुकर मिश्र, विशेष सर्वे सहायक’क नाम दुबारा पढ़ब वर्तमान ‘मधुकर बाबू’क लोकस्मृतिसँ जुड़ैत अछि, पर एक नामक मिलान पूरा कार्य-प्रणालीक स्वतः पुष्टि नहि। ई काल-विन्यास उपन्यासक लम्बा फैलावकेँ एक दस्तावेजी गाँठमे संकुचित करैत अछि आ पाठकसँ तुलना-कर्म माँगैत अछि।

पंजीक भौतिक अस्तित्व : झोरासँ सामूहिक पाथर धरि

रामकेवल पंजीकेँ कपड़ाक थैलीमे सुरक्षित नेने अबैत छथि। पुरान तेलक दाग, उधड़ल धागा आ भीतरी पीयर पन्ना कागचकेँ अमूर्त सूचना नहि रहए दैत अछि। चन्ना गाछी लग ओकरा धरती छूआ कऽ पाथरपर राखब लगभग अनुष्ठानिक कृत्य अछि, मुदा मीरा एहि अनुष्ठानकेँ तत्काल सूची, प्रतिलिपि आ पहरामे बदलैत छथि। लेखक एक तरफ ग्रामीण श्रद्धाक मुद्रा रखैत छथि, दोसर तरफ प्रमाणक सामुदायिक संरक्षणक श्रम। वस्तुक देह आ ओकर पाठ-इतिहासक ई समन्वय पुरान नामक पुनरागमनकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

‘विशेष ध्यान’ : शुभ प्रशासनिक वाक्यक भयावह रूपान्तरण

पंजीमे वृद्ध, विधवा, परदेशी परिजन, मुकदमेबाज आ कर्जदार परिवारक लग ‘विशेष ध्यान’ लिखल अछि। रामकेवलक स्मृतिमे ई सूची सरकारी सुविधा पहुँचेबाक नामपर बनल छल। पछिला फोन-जालक पात्रसभ देखैत छथि जे एही वर्गक लोक लक्ष्य बनि रहल छथि। शब्दक कथात्मक रूपान्तरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: सेवा-सूचक पद बादमे शिकारक सम्भावित संकेत बनैत अछि। लेखक एहि शब्दकेँ एके घटना-क्रममे दू विपरीत अर्थ दैत छथि, मुदा सूची बनलाक बादकेँ सभ अपराध एकरे आधार पर भेल—ई आरोप एखन अनुसन्धानक प्रश्न अछि।

लोक-पाठ आ निजताक दोहरा दायित्व

रामकेवल डिजिटल फोटो लऽ सार्वजनिक होयबाक डर व्यक्त करैत छथि। नीलमणि पासवर्डसँ सुरक्षित स्कैन, बिनु व्हाट्सएप साझा करबाक आश्वासन दैत अछि; आरुणि प्रत्येक प्रतिलिपि पर अलग निशान प्रस्तावित करैत अछि। उपन्यास एहि ठाम ‘सत्य सार्वजनिक हो’क सीधा नारा नहि देइत, सत्य सार्वजनिक करबाक पद्धतिक समस्या रचैत अछि। मूलक रक्षा, स्वामिक सहमति आ नियंत्रित प्रति—ई सभ कथाक भीतर नयका क्रियापद बनैत अछि। एही दृश्यसँ नामक पहरुआ सभ दर्शक सँ अभिलेखक कारीगर बनैत छथि।

ध्रुवेशक विनम्र आगमन : धमकीक मृदु वाक्य

चन्द्रपालक लोक ध्रुवेश सुन्दर कपड़ा आ शिष्ट भाषा लऽ पंजी पंचायत कार्यालयमे जमा करबाक प्रस्ताव दैत अछि। ओकर वाक्य सामाजिक शान्तिक पक्षमे अछि, मुदा रसीद, कारण, अनुमति आ निरीक्षणक प्रश्नपर ओकर उत्तर नहि भेटैत। एतय कथावाचक प्रत्यक्ष हिंसा देखाएबाकेँ बदला विनम्रताक आड़िमे वस्तु-अधिकार लऽ लेबाक नाटकीयता रचैत छथि। ध्रुवेशक नब भूमिका पुरान सेवा–मौन विरोधकेँ लौटबैत अछि। तथापि ओकर मनक अन्तिम अभिप्राय पाठककेँ अन्य पात्रक दृष्टिसँ भेटैत अछि; बिना वैधानिक जाँच ओकर दोषक पूरा विवरण निर्णीत नहि।

तीन ठामक पहरा : सामुदायिक समयक रचना

ध्रुवेशक ‘रातिमे कागच बचा कऽ राखू’ कहबाक बाद कथा रातिक पहरा बनबैत अछि। मूल पंजी देविकाक भीतरी कोठरीमे मीरा आ रामकेवलक संग; एक प्रति सत्यव्रतक सीलबन्द लिफाफामे; दोसर नीलमणिक बिनु-जाल कम्प्यूटरमे; सार बच्चा सभक रजिस्टरमे राखबाक योजना अछि। ई व्यवस्थामे स्थानक बहुलता सुरक्षा बनैत अछि। पूर्वमे कागच एक कार्यालयक ताला भीतर लुकैत छल; आब कई घरक अलग-अलग दृष्टि ओकरा संभालैत अछि। ओही कागचकेँ निजी स्वामित्वसँ सामुदायिक उत्तरदायित्व धरि लऽ आबबाक घटना कहल जा सकैत अछि।

बच्चा सभक पहरा : खेल आ जोखिमक सीमा

फुलेसर आ दोसर नेना सभकेँ देविकाक आँगन लग खेलक बहाने राखल जाइत अछि, ताकि भयक भार हुनका सभ पर नहि पड़य। ई दृश्य मनोरंजक सामुदायिक साहस आ बालकक जोखिमक बीच तनाव खोलैत अछि।

कथावाचक बच्चाक उपस्थिति गवाहीक भविष्य कहैत छथि, मुदा मीराक सावधानी देखबैत अछि जे बचाव-अभियानमे बच्चाकेँ अपराधीक प्रत्यक्ष सामना देब उचित नहि। एहन नैतिक तनावकेँ सजावटी वीरताक रूपमे पढ़ब गलत होएत। घटनाक अन्तमेँ नेनाक श्रम सम्मानित अछि, तथापि वयस्क जिम्मेदारीक प्रश्न खुलल रहैत अछि।

अर्द्धरात्रिक छाया : रोमांच आ प्रामाणिकताक अन्तर

रातिक पहरा, हिलैत पात, देविकाक भीतरी कोठरी आ दरबाजाक पाछाँ छाया पाठकमे आशंका जगबैत अछि। एहिठाम दीर्घ उपन्यास खोजक विधिक संग रहस्यक वातावरण जोड़ैत अछि। छाया देखलासँ व्यक्ति निश्चित नहि, किन्तु कागच लऽ लेबाक सम्भावित जोखिम तत्काल अनुभव बनैत अछि। चन्ना गाछीक गोहि आ भूतक छवि एहिठाम तथ्यगत साक्षी नहि, रात्रि-अनुभवक काव्यात्मक प्रतिरूप अछि। कथा जतबा रोमांच उत्पन्न करैत अछि, ओकर नैतिक परीक्षा ओतबे अछि—अनुमानकेँ रजिस्टरक सत्य नहि बनायब।

नामक स्वामित्वक राजनीति : ‘हमर अधिकार’क जन्म

ध्रुवेश जखन गामक लोकसँ पुछैत अछि जे हुनकरा कागच राखबाक अधिकार की, अनन्या जवाबमे पन्नापर लिखल देह, जमीन, अँगूठा आ प्रतीक्षाक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। एहि संवादमे अधिकार अदालतक पदसँ नहि, अभिलेखमे उपस्थित मनुष्यक अनुभवसँ उठैत अछि। ई न्यायिक अधिकारक वैधानिक व्याख्या नहि; पात्रसभक सामूहिक आत्मपहिचानक घोषणात्मक क्षण अछि। लेखक एहि स्वरकेँ रोमांचक चरम बनबैत छथि, पर तात्कालिक टकरावक परिणाम पंजीक बहुस्थानीय सुरक्षा बनैत अछि, दण्ड अथवा हिंसा नहि।

पंजीक बचनाइ : जीतक सीमित कथा

अध्यायक अन्तमे पंजीक मूल आर सुरक्षित प्रतिलिपि बचाबाक प्रबन्ध प्रधान घटना अछि। मधुकरक पुरान सर्वे आ आजुक ठगीक बीच कालक्रमक सम्बन्ध जाँचक लेल तैयार अछि, मुदा निष्कर्ष एखन खुलल नहि। पुरान सर्वे-पंजी ‘सहायता’क नामपर बनल छल वा अपराधक आरम्भसँ—एहि प्रश्नमे सावधानी अनिवार्य अछि। लेखक कागच पाबएबाक क्षणकेँ तुरन्त फतह नहि बनबैत; ओकर सुरक्षा, स्वामिक भरोसा आ रातिक समयक भय पाठकक ध्यानमे राखैत छथि। एही अनुशासनसँ ‘पंजीक पहरा’ पूर्वक ‘गाँठक पढ़नाइ’क संग सार्थक जुड़ैत अछि।

प्रकरण २७५ | मूल अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

अदृश्य अदालतक दोसर स्थापत्य : दस पाथरक भाषा

चन्ना गाछी लग गोल घेरेमे नाम, देह, जल, जमीन, कागच, डर, मौन, प्रतीक्षा, फाँस आ स्मृतिक दस पाथर रखल जाइत अछि। औपचारिक न्यायालयक धाराक स्थानपर ई पाथर नब सामाजिक प्रश्नक मार्गदर्शक बनैत अछि। कथावाचक एकटा खुलल स्थानकेँ क्रमबद्ध सुननाइमे बदलैत छथि; कोनो सरकारी मोहर अथवा न्यायाधीशक

आसन नहि। एहि परिवर्तनमे पुरान पाथर प्रतीकात्मक संस्थान बनैत अछि। तथापि ‘अदृश्य अदालत’ वास्तविक न्यायालयक प्रतिस्थापन नहि, ओकर गूँज आ आलोचनात्मक समकक्ष अछि।

सोना : ‘अनुपस्थित’ शब्दक देहगत प्रतिवाद

सोना बतबैत छथि जे ओ प्रत्येक तारीख पर अदालत पहुँचल छलीह, मुदा फाइलमे ‘हाजिर नहि’ लिखल गेल। ओकर धूपसँ झुलसल हाथ आ धानक पानिसँ फाटल त्वचा फाइलक शब्दक सामने उपस्थित होइत अछि। लेखक एहि विरोधकेँ मुकदमा जीतबाक घोषणा नहि बनबैत; कागजी अनुपस्थिति आ देहक वास्तविक यात्राक अन्तर देखबैत छथि। मीराक ‘देहक उपस्थिति’ लिखब श्रेणी-परिवर्तन अछि। शब्द एक संस्था भीतर अर्थ पाबैत छल; आब स्त्री अपन अनुभवसँ ओकर पुनर्नामकरण करैत छथि।

भोलारामक तेइस बरख : फाइलक समय बनाम जीवनक समय

वृद्ध मुवक्किल भोलाराम मुकदमाक वर्षसभकेँ बेटाक पढ़ाइ, पुतोहुक मृत्यु, खेतक बन्धक आ अपन लाठी धरबाक समयसँ मिलाकऽ सुनबैत छथि। ई कालक्रम न्यायालयक तिथि-सूचीकेँ जीवन-वृत्तान्तमे बदलैत अछि। जे अदालतक लेल स्थगन मात्र छल, से परिवारक लेल पीढ़ीक क्षय बनल। अध्याय एहि दृश्यसँ दीर्घ प्रतीक्षाक मानवीय लागत देखबैत अछि; ‘फैसला देह पर लिखल’क बिम्ब विधिक निर्णय नहि, विलम्बक अनुभवात्मक उपमा अछि। एहि समय-विन्यासमे संक्षिप्त गवाही पूरा परिवारक इतिहासक घनीभूत संस्करण बनैत अछि।

‘मौन काकी’ : गलत नामक आवर्ती चोट

पतिक मृत्युक बाद चुप रहनिहार स्त्री अपन जमीन, ऋण आ मुआवजाक तीन कागचमे नाम गलत लिखल जाएबाक घटना सुनबैत छथि। कथा एहि स्त्रीक सही नाम उच्चारित करबाक क्षणकेँ एक सार्वजनिक पुनर्प्राप्ति बनबैत अछि। छोट मात्राक भूल प्रशासनक दृष्टिसँ गौण देखाइत अछि, मुदा परिवारक सम्पत्ति आ पहिचानक डोरि कमजोर करैत अछि। कागच सुधारल गेल अथवा न्यायिक आदेश आयल—ई अध्याय नहि कहैत। मुदा सामूहिक सही नाम दोहराएब पाठकीय स्तरपर एक नैतिक सुधारक दृश्य रचैत अछि। ई नाम-केन्द्रित शिल्प उपन्यासक दूर-दूरक अध्यायसभकेँ जोड़ैत अछि।

लिपिक रामबल्लभ : भयक स्वीकृति आ कथनक प्रवेश

रेकर्ड-घरक रामबल्लभ अपन निजी नोटबुक अदृश्य अदालतक पाथर पर राखैत छथि। गुम फाइल कतय राखल गेल, ककर निर्देश पर रोकल गेल—एहन आंशिक विवरण हुनका लग अछि। मीरा पहिने नाम लिखबाक अनुमति पूछैत छथि; लिपिक अपन डर सेहो दर्ज करबाक शर्त रखैत छथि। एहि संवादमे पात्र विरोधी प्रणालीक सम्पूर्ण शत्रु नहि, भीतर फँसल अधूरा साक्षी बनैत छथि। स्वीकारोक्ति प्रारम्भ अछि, मूल सामग्रीक सत्यापन एखन शेष। कथावाचक मनुष्यकेँ एक दोष-सूचीमे घटेबाक बदला पछतावा, भय आ उत्तरदायित्वक त्रिकोणमे राखैत छथि।

अनाम आपत्तिक मंचन : अधिकारक स्वरक परीक्षा

हरिहरनक पुरान घरसँ जुड़ल चन्द्रपालक एक परिचित लोक सभा पर कानूनी मूल्यक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा अपन नाम कहबाक बेलामे चुप रहैत अछि। एतय सार्वजनिक प्रश्न आ व्यक्तिगत नामक निषेध एक नाटकीय विरोधाभास बनैत अछि। मीरा भीड़कें गारि अथवा हिंसासँ रोकि ‘अनाम आपत्ति’ लिखबैत छथि। एही लिखनाइमे विरोधीक आवाज सेहो कथाक दस्तावेज बनैत अछि। उपन्यास केवल समर्थक कथन सुनबाक घेरा नहि गढ़ैत; विरोधीकें सेहो बोलबाक स्थान देबाक आग्रह करैत अछि, भले ओकर पक्ष कमजोर देखाइ।

जादुई श्रोता : जीवित आ मृतकक सामूहिक सभा

बूढ़बा भूत, उज्जर प्रेत आ कारी भूतक क्षणिक उपस्थिति चन्ना गाछीक सभाकें केवल भौतिक श्रोता-समूह नहि रहए दैत अछि। कियो हवा पर लिखैत बुझाइत अछि, कियो पाथर लग ठमकि जाइत अछि। कथावाचक निश्चित नहि करैत जे सभ पात्र एके दृश्य देखैत छथि; जादुई लोक सामाजिक स्मृतिक रूपक बनैत अछि। मृत नामक पुनरुच्चारण मीराक रजिस्टरमे लिखल ठोस गतिविधिसँ जुड़ल अछि; भूत ओकर स्थान नहि लैत। एहि परतदार कथनसँ उपन्यासक जादुई यथार्थ आ अभिलेखीय संसार एक-दोसराकें प्रश्न करैत रहैत अछि।

कथानकक आत्मपुनरावृत्ति : पुरान ‘अदृश्य अदालत’सँ नब चौखट

अध्याय १७१मे पहिने ‘चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत’क पहिल दिन, तीन पाथर आ तीन रंगक धागा वर्णित छल; अध्याय १७४ फेर गोल घेरा, नामक पाथर, सुननाइ आ फैसला-विहीन सभा विस्तारसँ रचैत अछि। नब अध्यायमे दस पाथर आ रामबल्लभक नोटबुकक प्रवेश अछि, तैं ओकर कार्य अलग सेहो अछि। मुदा समान उद्घोषणा, सामूहिक सुननाइ आ गैर-राजकीय अदालतक सूत्र बारम्बार लौटैत अछि। एकरा पद्धतिगत आवर्तनक कलात्मक लाभ संग दृश्य-पुनरावृत्तिक सम्भावित बोझ दुनू रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

नोटबुकक पहिल पन्ना : अन्तिम क्षणक रहस्य-विस्तार

अध्यायक अन्तमे रातिक हवासँ रामबल्लभक नोटबुकक पहिल पन्ना खुलैत अछि; बटुकनाथ हरिहरनक वास्तविक मोहरबाहकक संकेत पाठककें अगिला अध्याय दिस लऽ जाइत अछि। जे सभा पीड़ितक नाम-सुधारक उद्देश्यसँ आरम्भ भेल, ओकरा भीतरसँ एक नब मध्यस्थ व्यक्तिक जीवन उभरैत अछि। ई सम्पर्क दृश्य-सञ्चालनक दृष्टिसँ कुशल अछि; नवीन अध्याय केवल अगिला विषय नहि, पछिला अध्यायक वस्तुसँ जन्मैत अछि। मुदा मोहरबाहकक नामक उल्लेख मात्र सँ ओकर अपराधक मनशा सिद्ध नहि। लेखकक अन्त्य-रहस्य यही दूरी सुरक्षित राखैत अछि।

सुननाइ, दण्ड नहि : समापनक नैतिक समय

दिनक अन्तमे अनन्या कार्यवाहीकें ‘समाप्त’ वा ‘स्थगित’क औपचारिक शब्दमे बाँधबाक बदला लोकस्मृतिमे सुरक्षित सुननाइ कहैत छथि। एहि वाक्यमे राज्यक देरीक विरोध अछि, मुदा तुरन्त आत्मघोषित न्यायाधीश बनबाक मोह नहि। भोलाराम, सोना आ ‘मौन काकी’ हलुक होइत छथि; हुनकर वास्तविक मुकदमा, जमीन आ

अभिलेखक समस्या खुलले रहैत अछि। कथा भावनात्मक परितोष आ संस्थागत समाधानक अन्तर रखैत अछि। अही अन्तरक कारण पाथर ‘नाम’क पहरुआ अछि, न्यायालयक अन्तिम मोहर नहि।

प्रकरण २७६ | मूल अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

दीनबंधु झाक प्रवेश : वस्तुक पाछाँ मनुष्य

रामबल्लभक नोटबुकमे ‘दीनबंधु झा, मोहरबाहक’ पढ़ल जाइत अछि। एहिसँ पहिने मोहर जालसाजीक चिह्न छल; आब ओकरा ढोनिहार व्यक्तिक जीवन, श्रम आ सम्भावित भूमिका कथामे प्रवेश करैत अछि। दीनबंधु अधिकारी नहि, सरकारी चपरासी नहि, मुदा कई फाइलक बीच चलनिहार मध्यस्थ बताओल जाइत छथि। लेखक एही उपेक्षित कार्य-वर्गकेँ रहस्यक केन्द्र लऽ अबैत छथि। पहिल सुननाइमे कियो कहैत अछि ओ मरि गेलाह, दोसर कहैत बेटी लग छथि; एहि विरोधसँ लोकस्मृतिक अपूर्णता उद्घाटित होइत अछि।

शशिभूषणक प्रतिरोध : पितृस्मृतिक अधिकार

दीनबंधुक पुत्र शशिभूषण जखन पिताक नाम सुनैत अछि, ओ बचावक मुद्रामे पहुँचैत अछि। ओकर डर अछि जे गरीब मोहरबाहककेँ पूरा अपराधक एकमात्र दोषी बना देल जाएत। मीरा नामक पाछाँ काम देखबाक बात कहैत छथि, शशिभूषणक शोककेँ दोसर अभियोगक साधन नहि बनबैत। क्रमशः पुत्र पिताक बचल मोहर-पैड, पीतलक छाप आ डायरी खोलैत अछि। एहि परिवर्तनक केन्द्र भावुक समर्पण नहि, अंशतः शर्तयुक्त सत्यक स्वीकृति अछि —पिताक दोष जतेक अछि ओतेक, आ उपयोग कएल गेल श्रम जतेक अछि ओतेक।

घिसल मोहरक देह : आधा अक्षरक अर्थ

‘हरिहरन सेवा निकेतन’क आधा घिसल अक्षरवाली पीतलक मोहर वस्तुकेँ पुनः कथक बनबैत अछि। लाल मोमक कण, धातुक पुरान गन्ध आ बण्डलक कपड़ा इतिहासक इन्द्रियग्राह्य पक्ष खोलैत अछि। रामकेवलक पंजीपर देखल अधछाप आ दीनबंधुक धातुक छापक बीच सम्भावित सम्बन्ध पढ़ल जाइत अछि। तथापि आकारक मिलानक अर्थ वस्तुक स्रोत-सम्बन्धक संकेत अछि, पूर्ण अपराध-स्थापन नहि। वस्तु-वर्णनक सूक्ष्मताक कारण पाठक गवाहीक श्रम देखैत अछि; ओ केवल ‘मोहर भेटल’क सरलीकृत निष्कर्ष पर नहि पहुँचैत।

डायरीक संक्षिप्ताक्षर : अनेक अर्थक द्वार

दीनबंधुक डायरीमे ‘लाल’, ‘कारी’, ‘तीन प्रति’, ‘राति’, ‘बी. ह.’ आ ‘च. पा.’ जेकाँ संकेत छथि। भीड़ तुरन्त बटुकनाथ आ चन्द्रपाल नाम जोड़ए चाहैत अछि, मुदा अनन्या एहन अनुमान रोकैत छथि। संक्षिप्ताक्षर कथानकमे अत्यन्त प्रभावी रहस्य-उपकरण अछि, कारण ओ परिचित नामक आधा रूप जेकाँ पाठककेँ ललचबैत अछि। ओही समय ई अर्थक अनुशासनक परीक्षा सेहो अछि। लेखक सन्देहक आकर्षण उत्पन्न करैत छथि आ मीरा द्वारा ओकर सीमाबोध स्थापित करैत छथि।

रामकेवलक पंजीसँ तिथि-मिलान : सम्बन्धक प्रारम्भ

दीनबंधुक डायरीक कतेको तिथि पुरान सर्वे-पंजीक सप्ताहसँ लगैत अछि। ‘विशेष ध्यान’ लिखल पन्ना आ ‘तीन प्रति’ नोटक बीच सम्भावित श्रृंखला उठैत अछि। एहि तिथि-मिलानमे कथाक पाठक वस्तुक संरचनात्मक निकटता देखैत अछि, मुदा लिखल शब्दक अर्थ निर्धारण कठिन रहैत अछि। ‘लाल’ मोम, कपड़ा, निशान अथवा कोनो आन वस्तु होय सकैत अछि। समीक्षा जँ एक अर्थ मनगढन्त रूपेँ चुनि लए, तँ मूल पाठक खुलल प्रश्न समाप्त भऽ जायत। एतय कारणक सम्भावना महत्वपूर्ण अछि, सिद्ध कारण नहि।

शशिभूषणक स्वेच्छिक सहयोग : दोषक वंशानुक्रम पर रोक

ध्रुवेश पिता-अपमानक भय देखाकऽ शशिभूषणकेँ पुरान वस्तु बेचि देबाक संकेत दैत अछि। पुत्रक दुविधा स्वाभाविक अछि—पिताक जीवनी उजागर होयत तँ परिवारक मान घटत। मीरा सत्य नुकौनाइ आ सत्य खुलबाक दुःखक बीच भेद रखैत छथि। फलतः शशिभूषण मोहर जाँच लेल दैत अछि, मुदा झूठा दोष नलेखबाक आग्रह रखैत अछि। एहि दृश्यसँ उपन्यास व्यक्ति आ वंशक बीच नैतिक दूरी स्थापित करैत अछि; एक व्यक्तिक भूमिकाक सवाल पुत्रक नाम पर स्वतः अपराध नहि बनैत।

ध्रुवेशक जूताक निशान : साक्ष्य-रूपकक विडम्बना

ध्रुवेश विदा भेलाक बाद माटिमे ओकर जूताक निशान देखल जाइत अछि। सोना पूछैत अछि ईहो दर्ज होयत कि नहि। आरुणि निशानकेँ रोमांचक आरोपक बदला ओकर उपस्थितिक समय लिखबाक बात कहैत अछि। जूताक छाप दृश्य-माध्यमसँ तत्काल आरोपक प्रलोभन दैत अछि; समय-लेखन ओकरा घटनाक क्रममे मात्र रखैत अछि। ई छोट संवाद पूरे बैचक कथन-नैतिकता संक्षेपमे व्यक्त करैत अछि—हर चिह्नक अर्थ प्रमाणक समान नहि, आ अभिलेख वस्तुक आकर्षणसँ बेसी प्रसंगक सावधानी माँगैत अछि।

‘मोहर’क अलग पाथर : विश्वासक संस्थानीकरण

अनन्या नामक पाथरक कातमे ‘मोहर’क अलग पाथर रखैत अछि। ई व्यवस्था बतबैत अछि जे व्यक्तिक नाम आ संस्थाक चिह्न दुनू एके नहि। जँ नकल मोहरक कारण अनेक लोकक नाम नष्ट भेल, तँ मोहर स्वयं सामाजिक भरोसाक उपकरण भऽ उभरैत अछि। अध्याय एक श्रमिक-मध्यस्थक खोजसँ अवधारणात्मक विभाजन तक पहुँचैत अछि। एहन प्रतीक-स्थापन अध्यायक अन्तिम शान्त चित्रकेँ व्यापक अर्थ दैत अछि: दोष केवल व्यक्ति पर नहि, चिह्नकेँ निर्भ्रान्त अधिकार माननिहार व्यवस्था पर सेहो प्रश्न अछि।

‘अन्तिम सूची’ : वस्तुसँ अगिला मंचक सृजन

रातिमे दीनबंधुक डायरीक एक पन्ना खुलैत अछि आ ‘अन्तिम सूची’ शब्द देखाइत अछि, जाहिक तिथि सेवा-समारोहक सप्ताहसँ मिलैत अछि। ई संकेत नामक अभिलेखकेँ सार्वजनिक समारोहक रंगमंच धरि लऽ जाएवला कथा-कारण बनैत अछि। लेखक एक छोट पन्नाकेँ अगिला अध्यायक स्थल-परिवर्तनक कुंजी करैत छथि। ‘अन्तिम’ शब्द स्वयं विडम्बनात्मक अछि—जतय जाँच शुरू भेल, ओतय सूची अपन नामे अन्तिम कहैत अछि। एहि विरोधाभासमे छिपल शक्ति अगिला अध्यायमे उजास आ अन्हारक दृश्य-योजना तैयार करैत अछि।

प्रकरण २७७ | मूल अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

मंच आ पर्दाक द्वि-कथा : उजासक छल

सेवा-समारोहक पन्द्रह बरख पुरान दृश्य पछिला अध्यायक ‘अन्तिम सूची’सँ पुनः उभरैत अछि। मंचपर माला, भजन, अनाज, सहायता आ सार्वजनिक नाम-पाठ; पर्दाक पाछाँ प्रतिलिपि, मोहर आ पन्ना बदलबाक सम्भावना। लेखक सामाजिक उत्सवक चमककेँ दमनक छिपल तकनीकक संग टकरबैत छथि। ई विरोध सामाजिक कपटक सामान्य टिप्पणी नहि रहैत, कागच आ फोटोसँ पुनर्निर्मित विशिष्ट दृश्य बनैत अछि। सार्वजनिक वाचन आ निजी अभिलेखक अलग समय कथा भीतर द्वैध रचैत अछि।

‘लाभार्थी’, ‘विशेष’, ‘रोकू’ : सूचीभाषाक नाटकीयता

दीनबंधुक डायरीमे पाओल शब्द—‘लाभार्थी’, ‘प्रार्थी’, ‘विशेष’, ‘रोकू’, ‘दू प्रति’, ‘मंच’—अलग पढ़लापर निर्दोष लगि सकैत अछि। संग-संग पढ़ला पर ओ लोकक हानि धरि पहुँचनिहार सम्भावित क्रमक संकेत दैत अछि। लेखक प्रत्येक शब्दक स्थिर अर्थ नहि बतबैत; ओकरा घटना-सम्बन्धक सापेक्ष रखैत छथि। विशेष महत्त्व ‘मंच’ आ ‘दू प्रति’क नजदीकीमे अछि—जे नाम सार्वजनिक रूपेँ पढ़ल गेल, ओकर दोसर निजी संस्करण तैयार भेल कि नहि, से जाँचक मूल प्रश्न बनैत अछि।

भोलारामक ताली : उत्सवक स्मृति बदलनाइ

वृद्ध भोलाराम स्वीकारैत छथि जे सेवा-समारोहमे सभक संग ताली बजौने छलाह। एखन हुनका अपन हथेलीक पुरान ध्वनि पछतावाक रूपमे सुनाइत अछि। एतय कथा वर्तमान जाँचक प्रकाशमे अतीतक भावनात्मक अर्थ बदलैत अछि। जे क्षण पहिले आभारक प्रतीक छल, वही प्रश्नहीन विश्वासक असहज स्मृति बनैत अछि। भोलारामक ताली बजेनाइ स्वयं दोषक स्वीकार नहि; ओ सूचनाक अभावमे विश्वास केनिहार लोकक अनुभव अछि। एहि भेदसँ पात्रक करुणा आ आलोचना दुनू बचैत अछि।

कमलाक पदक आ फोटो : दृश्य-अभिलेखक मिलान

नकली पदक, लाल किनारीक प्रमाण-पत्र आ दू पुरान फोटो पाबि समारोहक पुनर्निर्माण आगाँ बढ़ैत अछि। फोटोमे बटुकनाथ माला पहिरने छथि, लोकक पाँति, अस्थायी मेज, मोहरक डिब्बा आ ‘अन्तिम सूची’क सम्भावित पुलिन्दा देखाइत अछि। नीलमणि छवि बिना चमकक सुरक्षित करैत अछि। एहि दृश्यसँ फोटो एक भावुक स्मारकसँ वस्तुगत जाँचक सामग्री बनैत अछि। मुदा धुँधल अक्षरक रूप पहिचान पूर्ण निश्चित नहि; प्रकाशक कोण आ पुरान छविक क्षति मूल सीमाक हिस्सा अछि।

रामबल्लभक पृष्ठ-बदलावक स्मृति : कालक्रमक महत्त्व

लिपिक रामबल्लभ स्मरण करैत छथि जे अस्थायी मेज पर अँगूठा लेलाक बाद दोसर पन्ना जोड़ल जाइत छल। मीरा एकरा सुनिते चन्द्रपाल आ दीनबंधुक नाम सुनि भीड़केँ निष्कर्षसँ रोकैत छथि। लेखक एहि स्मृतिकेँ वस्तुक संग राखबाक बाट बनबैत छथि: समारोहक तिथि, फोटो, चादर आ बचल डायरीक मिलान। मौखिक स्मरण बिना

बाहरी पुष्टिक पूर्ण प्रमाण नहि; मुदा मंच-पठनक समय आ बादमे पन्ना बदलल जाएबाक दावीक बीच कथा-समयक सम्भावित छल केन्द्रित होइत अछि।

चादरक मोमदाग : मंचक त्वचा बनल वस्तु

भिखारी लाल अभिलेख-घरक पुरान बोरामे सेवा-समारोहक लाल किनारीक मटमैला चादर चिन्हबाक बात कहैत अछि। वस्तु भेटला पर मोमक गोल दाग, कारी स्याही आ अँगुरीक निशान प्रकट होइत अछि। लेखक आवाजहीन वस्तुकेँ ‘मंचक त्वचा’ जेकाँ कथन-भूमिका दैत छथि। मंचक उजास भीतर दबायल कागच-परिवर्तनक सम्भावना कपड़ाक सतह पर टिकि जाइत अछि। किन्तु दागक रासायनिक अथवा औपचारिक मिलान पाठमे पूर्ण नहि; चादरक मिलब कथात्मक स्मृतिक मजबूत सूत्र अछि, अन्तिम फॉरेन्सिक निष्कर्ष नहि।

स्त्री-पाँतिक अलग भूमिका : सहायता आ सहमतिक फाँक

भोलारामक पत्नी शान्ति कहैत छथि जे स्त्रीसभ अलग पाँतिमे ‘महिला सहायता योजना’क नामपर ठाढ़ छल, नाम-पाठ, फोटो आ अँगूठाक प्रक्रिया भेल, मुदा बादमे कागच घर नहि भेटल। कथा एहि स्थल-विभाजनकेँ लिङ्गगत असमानताक दृश्य बनबैत अछि। स्त्रीक सुनल घोषणा, अँगूठाक शारीरिक क्रिया आ अभिलेखक बादक भाषा एके अनुभव नहि। लेखक ‘अँगूठा लगाओल’ कहबाक सरलताक भीतर समझक अभाव आ प्रतिलिपि नहि देबाक घटना खोलैत छथि। शान्ति स्वयं स्मृतिक अधिकारिणी बनैत छथि, भीड़क पीड़ित नमूना मात्र नहि।

‘मूल बदलू’क पर्ची : नाटकीय उत्कर्षक मर्यादा

शशिभूषण दीनबंधुक मोहर-डिब्बाक तलीसँ ‘मंच-पठनक बाद मूल बदलू’ लिखल छोट पर्ची लैत अछि। ई वाक्य सम्भावित छलक उद्देश्य अत्यन्त स्पष्ट करैत अछि। मुदा ‘बी. ह.’ संक्षेपक अर्थ, निर्देश लिखनिहार आ क्रियान्वयनक विस्तृत श्रृंखला एखन स्थापित नहि। सत्यव्रत एही कारण नाम पर तुरन्त अन्तिम आरोप नहि करैत छथि। अध्यायक रोमहर्ष ‘मूल बदलू’क छोट वाक्यसँ बनैत अछि; समीक्षा ओकर नाटकीय तीक्ष्णताकेँ स्वीकारैतहुँ अस्पष्ट आदेश-स्रोतकेँ सुरक्षित रखैत अछि।

घर-घरक मिलान दिस पुल : घटना नहि, पद्धतिक अन्त

अध्याय समारोहक नाम, दीनबंधुक सूची, पंजीक विशेष ध्यान, स्त्री-पाँतिक स्मृति, फोटो आ चादरक मोमदाग मिलाबबाक निर्देशपर ठहरैत अछि। जे उत्सव एक दिनमे सम्पन्न कहल गेल छल, ओकर सामाजिक असर अनेक बरख बाद प्रत्येक घरमे फेर पढ़ल जाएत। ई संरचना नाटकक मंचसँ घरेलू दुआर धरि संक्रमण अछि। मंचक सार्वजनिक चमकक सत्य घरक निजी कागचसँ मिलाएब जरूरी बनैत अछि। एहि प्रकार अध्याय पारम्परिक फ्लैशबैक नहि, विभिन्न वस्तु आ श्रोताक माध्यमसँ अतीतक बहु-संस्करणीय पुनर्पाठ अछि।

समारोहक असङ्गत समय : स्मृतिसँ निर्णयक दूरी

समारोहक फोटो, डायरी आ आजुक लोकस्मृति सब पन्द्रह बरखक एक प्रकरण दिस इशारा करैत अछि, मुदा कतेको पात्रक स्मरण एकरूप नहि। मंचपर पढ़ल नाम आ बादक दस्तावेजक तारीख अलग स्तरक वस्तु छथि; दिन-समानता अथवा साप्ताहिक निकटता सम्पूर्ण प्रक्रिया सिद्ध नहि करैत। लेखक नाटकीय मिलानसँ रहस्यक धागा मजबूत करैत छथि, पर घटना-सूचीमे औपचारिक निर्णय नहि। एहि सूक्ष्म दूरीकेँ समीक्षा स्पष्ट राखैत अछि, जँ नहि तँ उपन्यासक आलोचना स्वयं ओही जल्दीक शिकार हएत जकर विरुद्ध मीरा पूरा खण्डमे सावधान करैत छथि।

प्रकरण २७८ | मूल अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

घर-घर यात्रा : मंचसँ देहरी धरि स्थानान्तरण

समारोहक सार्वजनिक दृश्यक बाद कथा टोलीसभकेँ अलग-अलग घर पठबैत अछि। मंचपर सामूहिक नाम-पाठ छल; घरमे प्रत्येक परिवारक कागच, पोटली, डिब्बा, फोटो आ दुःख अलग कथन मांगैत अछि। ई स्थानान्तरण दीर्घ उपन्यासक महत्त्वपूर्ण शिल्प अछि—एक सामूहिक रहस्य घरेलू दृष्टिबिन्दुसभमे टूटैत अछि। मीराक आदेश कि मूल मालिकक हाथमे रहत, जाँच लेल अनुमति-युक्त प्रति बनत, कथाकारकेँ व्यक्तिक निजी कथा बिना अधिग्रहण पढ़बाक नैतिक मार्ग प्रदान करैत अछि।

शान्तिक पीयर कागच : ‘सहायता कहल, सहमति लिखल’

भोलारामक घरमे शान्ति पुरान प्रमाण-पत्र आ ‘स्वेच्छा सहमति’ लिखल कागच देखबैत छथि, मुदा हुनकर स्मृतिमे मंचपर ‘कमजोर परिवारक सहायता’ घोषणा भेल छल। एउटहि दिन दू भाषाक अन्तर आरम्भिक मिलान बनैत अछि। शान्तिक हाथक काँपनाइ आ मीराक पहिने पढ़ि सुनायब कथा-गतिक विशिष्ट क्षण अछि। लेखक कागजी वाक्यक अधिकारकेँ पीड़ितक श्रव्य स्मृतिसँ प्रश्न करबैत छथि। मुदा मूल कागचक प्रामाणिकता अथवा नवीनीकरणक पूर्ण विवरण एखन बाकी अछि।

सुभद्राक कागच : अनुपस्थित प्रवासी पुत्रक छाया

बूढ़ी सुभद्रा झाक आँखि कमजोर अछि, बेटा परदेशमे; समारोहक बाद कागच समिति लग राखल गेल। घरमे बचल दस्तावेजपर बन्धकक भाषा आ दीनबंधुक मोहर मिलैत अछि। एतय अनुपस्थित बेटा कागजी असुरक्षाक चरित्र-स्थितिक अंग बनैत अछि। लेखक ग्रामीण परिवारक दूरावक तन्तुकेँ पुरान बन्धक-व्यवस्था आ नब फोन-जालक बीच जोड़ैत छथि। ‘काज बनि गेल’ कहनिहार मध्यस्थक सहज वाक्य नागरिकक दस्तावेजी स्वामित्व छीनबाक सम्भावना छिपबैत अछि; ई अस्पष्टता कथाक मुख्य तनाव अछि।

चमरूक चार नाम : एक देहक अभिलेखी विखण्डन

चमरू महतो समारोहमे ‘चमरू’, पदक पर ‘चन्दू’, पंजीमे ‘चन्द्रमोहन’ आ बन्धक-पत्रमे ‘चमरू उर्फ चन्द्रमोहन’ बनि जाइत छथि। एकहि व्यक्तिक चार नामक प्रस्तुति उपन्यासक नामक राजनीति केँ दृश्य बनबैत अछि। चमरू

अपन देह एके होएबाक बात कहैत छथि, मुदा कागच हुनका चार टुकड़ा बना देने अछि। ई क्षण वास्तविक बहु-नामक प्रशासनिक असरक जटिलता बतबैत अछि, पर सभ प्रविष्टि निश्चित छलसँ बनल अछि—ई निष्कर्ष लेल प्रत्येक कागचक स्रोत जाँच आवश्यक अछि।

सात घरक तीन टोली : समष्टि आ विशिष्टताक सन्तुलन

दुपहर धरि तीन टोली सात घर पहुँचैत अछि। सहायता दान बनल, छात्रवृत्ति अधिकार-त्याग बनल आ इलाज ऋण-सहमति बनल—एहन समान प्रक्रिया अलग घरमे अलग रूप धारण करैत अछि। सूचीबद्ध वर्णन कथाक गतिक तीव्र करैत अछि, मुदा स्त्रीक व्यक्तिगत स्मृतिक विस्तार घटा देबाक जोखिम सेहो अछि। लेखक शान्ति, सुभद्रा आ चमरूक विस्तृत दृश्यक बाद सात घरक सामान्य रूप दैत छथि। एहि लयक लाभ अपराध-पद्धतिक फैलाव देखबाएब अछि; सीमा ई जे सभ परिवार बराबर गहिराई नहि पबैत।

रागिनी देवी : पतिक दोष आ डरक दू लेखा

दीनबंधुक विधवा रागिनी देवी स्वीकारैत छथि जे पति सभ किछु नहि बुझैत छलाह—एहन पूर्ण निर्दोषीकरण गलत होएत। हुनकरा एक फाटल पन्ना भेटल जाहिमे घरसँ कागच लऽ मूल ऊपर राखबाक निर्देश अछि; नीचाँ हस्ताक्षर अधूरा अछि। रागिनी पुत्र शशिभूषणकेँ पिताक दोष जतेक अछि ओतेक लिखबाक कहैत छथि। कथा एहि पात्रकेँ अपराधीक पत्नी सन एकाङ्गी चिह्न नहि बनबैत; ओ स्मृतिक सूक्ष्म संरक्षिका बनैत छथि। अधूरा ‘चं...’ स्वतः पूरा नाम नहि; एहि खुलापनमे समालोचनाक जिम्मेदारी अछि।

ललितक फाटल पोस्टर : सार्वजनिक संरक्षणक निजी कब्जा

पुरान स्वयंसेवक ललित घरक दुआर पहिने बन्द करैत अछि, बादमे सेवा-समारोहक फाटल पोस्टर देखबैत अछि। ‘सम्पूर्ण अभिलेख आयोजन समितिक पास सुरक्षित रहत’ वाक्य सार्वजनिक भलाइक घोषणाक रूपमे लिखल छल, मुदा घरक मूल कागच जमाकरणक सामाजिक परिणाम होय सकैत अछि। ललित चन्द्रपालक निर्देश-स्मृति दैत अछि। एहि दृश्यमे पोस्टर छोट वस्तु रहितहुँ लोकक विश्वासक व्यापक कब्जाक भाषा उघारैत अछि। कथा एक सरकारी आदेश नहि, सामाजिक बहानाक वाक्य पकड़ैत अछि; जे अस्पष्ट स्रोतक श्रेणीमे रहबाक चाही।

बीचमे खाली स्थान : अनुपस्थित मनुष्यक संरचना

चन्ना गाछी लग दिनक कागच, पदक, पोटली आ गवाही गोल घेरामे राखल जाइत अछि; अनन्या बीचमे खाली ठाम छोड़ैत छथि। बादमे चमरूकेँ ओहि स्थान पर बैसाओल जाइत अछि आ चार नाम चारूकात राखल जाइत अछि। लेखक खाली स्थानकेँ वस्तु बनाकऽ अभिलेखक अनुपस्थित ‘मनुष्य’ घुरबैत छथि। ई दृश्य नाटकक स्टेज-ब्लॉकिंग जेकाँ रचल अछि, मुदा एतय अभिनय नहि, प्रभावित व्यक्तिक उपस्थिति अर्थ पैदा करैत अछि। पाथर आ चादरक पुरान प्रतीक सामाजिक देहक सामने फेर परिभाषित होइत अछि।

‘ऊपरक कोठरी’क पूर्वसंकेत : स्थानक ऊर्ध्व दिशा

रामबल्लभ संकेत दैत छथि जे घरसँ लएल मूल कागच पुरान अदालतक ऊपरक कोठरीमे रहि सकैत अछि, जाहिक चाबी चन्द्रपालक लोक लग छल। घर-घर यात्रा गामक क्षैतिज फैलाव छल; अगिला अध्याय ऊर्ध्व चढ़ाइ बनैत अछि। ई स्थान-विन्यास संयोग नहि: दुआर-दुआर बिखरल वस्तुसभ अन्ततः बन्द ऊपरी अभिलेखमे मिलबाक सम्भावना पबैत अछि। तथापि लिपिकक कथन स्वतः खोजक परिणाम नहि; कोठरीक भीतर की भेटत, ई अगिला अध्यायक घटनाक विषय अछि।

समापनक मर्यादा : मालिकक हाथमे मूल घुरब

दिनक अन्तमे घर-घर भेटल कागच मालिकक हाथमे वापस राखि केवल अनुमति-युक्त प्रति आ विवरण सुरक्षित रखल जाइत अछि। ई प्रक्रिया अध्यायक मानवीय निष्कर्ष अछि, कानूनी निर्णय नहि। मीराक सामूहिक सूची एक पक्ष पर अछि, शान्तिक काँपैत हाथमे राखल कागच दोसर पर। लेखक न्याय-अभियानक प्रतिष्ठाकेँ पीड़ितक स्वामित्व पर निर्भर देखबैत छथि। अगिला ‘ऊपरक कोठरी’क रोमांचक संकेत एहि सन्तुलनकेँ नहि मेटैत; कागचक उपयोग ककरा लेल, ई प्रश्न नब स्थानमे सेहो संग जाएत।

प्रकरण २७९ | मूल अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

ऊर्ध्व यात्रा : बरामदाक प्रतीक्षासँ बन्द भण्डार धरि

पुरान अदालतक सीढ़ी चढ़ब केवल एक नव कक्ष भेटब नहि; नीचाँ खुले बरामदाक सार्वजनिक देरीसँ ऊपर बन्द अन्हारक सम्भावित कारण धरि यात्रा अछि। भिखारी लालक कमरक चाबीक गुच्छामे ऊपरक कोठरीक चाबी नहि अछि। जे चाबी रोज झनझनाइत छल, ओ प्रशासनक सामान्यता देखबैत छल; जे चाबी गायब अछि, ओ छिपल पहुँचक चिह्न बनैत अछि। स्थानक ऊर्ध्व विन्यास सत्ता आ सूचना-नियन्त्रणक परत देखबैत अछि।

ताला आ पंच-साक्षी : खोजक नाटकीय मर्यादा

टोली कोठरीक बन्द दरबाजा तोड़बाक पहिने अदालतक कर्मचारी, ग्रामीण स्त्री आ बच्चाक प्रतिनिधि सहित साक्षी बनबैत अछि; चोटक समय दर्ज होइत अछि। नाटक जेकाँ प्रत्येक चोट पर धूलि, मकड़ी आ जंगक प्रतिक्रिया वर्णित अछि। एहि सजीव क्रमसँ पाठक खुलबाक उत्तेजना अनुभव करैत छथि, मुदा मीरा कहैत छथि कोठरी खोलब आ कोठरी लूटब अलग अछि। एतय उल्लेखनीय सीमा सेहो अछि—साक्षीक उपस्थिति मात्रसँ सरकारी कक्षक ताला तोड़बाक सम्पूर्ण वैधानिक प्राधिकरण सिद्ध नहि; कथाक नैतिक आ कानूनी प्रक्रियात्मक स्तर अलग छथि।

तीन मोहरवला दरबाजा : सरकारी आ निजी चिह्नक समीपता

दरबाजापर न्यायालय, तहसील आ निजी सेवा-समितिक पुरान निशान संग देखाइत अछि। निजी समितिक मोहर सरकारी चिह्नक कातमे किएक? ई भौतिक समीपता कथा भीतर संस्थागत सीमा मेटबक दृश्य बनैत अछि। भिखारी लाल ‘सहायता’क नाम पर समिति प्रवेश केने छल—एहन स्मृति दैत अछि। लेखक चिह्नक स्थानगत

संगति सँ शङ्का पैदा करैत छथि; सीधे प्रमाणित मिलीभगत घोषित नहि। एही प्रकार उपन्यासक दृश्य-वस्तु पाठककेँ एक प्रशासनिक प्रश्न पूछबाक लेल मजबूर करैत अछि।

‘मूल प्रतिलिपि’ : शब्दक आत्मविरोध

भीतरक रैकपर ‘समारोह अभिलेख’ आ ‘मूल प्रतिलिपि’ जेकाँ पर्ची भेटैत अछि। अनन्या पूछैत छथि जे मूल आ प्रतिलिपि एकसंग कोना? एहि छोट शब्दगत विरोधाभासमे पूरा जालसाजीक सम्भावित भाषा-संरचना दबल अछि। मूलकेँ प्रति आ प्रतिकेँ मूल बनायब सामाजिक स्मृति पर नियन्त्रणक रूपक भऽ उठैत अछि। मुदा शब्दक असामान्य योग स्वयं अपराधक पूर्ण सिद्धि नहि; अगिला बक्सामे पन्नाक वास्तविक अन्तर देखलापर ओकर अर्थ तीव्र होइत अछि। कथा पहिने भाषाक विस्थापन, फेर वस्तुक विस्थापन क्रममे चलैत अछि।

अलग कागचसँ जोड़ल ‘अधिकार हस्तान्तरण’

पहिल बक्सामे सेवा-निकेतनक मोहरवला आवेदनक संग अलग स्याही आ कागच पर अधिकार-हस्तान्तरणक पन्ना जोड़ल देखाइत अछि। अँगूठाक दाग मिलबैत कागच बदलनाइ कथाक सबसे ठोस वस्तुगत तनावसभमे एक अछि। लेखक अँगूठा देनिहार व्यक्तिक शरीरकेँ बादक व्याख्यासँ अलग करैत छथि। एक ठाम सहायताक सहमति दोसर ठाम सम्पत्तिक त्याग बनैत अछि। ई दृश्य पूर्वक ‘मंचक उजास’क शङ्काकेँ नया सामग्री दैत अछि, मुदा किस दस्तावेज पर ककर आदेश छल, से अगिला जाँचक प्रश्न रहैत अछि।

फोटो-संख्या आ गवाहीक त्रिकोण

समारोहक एक फोटोमे कमला देवीक हाथमे ‘सहायता स्वीकृति’ लिखल पन्ना देखाइत अछि; सम्बन्धित फाइलमे ‘अधिकार-त्याग’क भाषा अछि। सोना, नीलमणि आ अनन्या फोटो क्रमांक, फाइल क्रमांक आ घरक गवाही अलग-अलग क्रममे नोट करैत छथि। एहि तीन-खाना मिलानसँ उपन्यास चित्रकेँ भावनात्मक स्मारक नहि, पाठ-तुलनाक क्रियाशील साधन बनबैत अछि। फोटो वस्तुक एक क्षण देखबैत अछि; फाइल लेखनक दोसर अवस्था; परिवारक आवाज अर्थक तेसर तह। तीनू सदिखन मेल खाएत, ई पूर्वकल्पना आलोचनामे नहि होबाक चाही।

स्त्रीक आवेदनक अलग गट्ठर : वर्गीकरणक हिंसा

लाल सूतसँ बान्हल गट्ठरमे विधवा, पति अनुपस्थित, पुत्र परदेश आ अशिक्षित सन टिप्पणी सहित स्त्रीक आवेदन अलग राखल अछि। अपराधी एकरा सुविधाक श्रेणी कहि सकैत छल, मुदा कथा एहि नामसभक संग असगरपन, जानकारीक कमी आ शोषणक सम्भावना देखबैत अछि। मीराक ‘बुझा देल गेल’ लिखल पन्नापर प्रश्न—के, कोन भाषामे बुझेलक?—अभिलेखीय स्वरक अपहरणकेँ केन्द्रित करैत अछि। मैथिलीमे बोलनिहार स्त्रीक कथन कठोर प्रशासनिक वाक्य बनि गेल; ई केवल भाषिक अनुवाद नहि, कथात्मक अधिकारक स्थानान्तरण अछि।

कोड-रजिस्टर : नामक एक अक्षरमे सङ्कुचन

विशेष सुरक्षित अभिलेखक रजिस्टरमे क-१, उ-१, वि-३ आ च-समूह सन कोड छथि। सहायक पर्ची द्वारा कमला, उज्ज्वला, विधवा समूह आ चमरूक श्रेणी खुलैत अछि। एतय व्यक्तिक पूर्ण नाम व्यवस्थाक लाभ-गणनाकेँ सुगम

बनावेवला अक्षरमे सिकुड़ैत अछि। लेखक कोडकेँ रहस्यक उपकरण मात्र नहि रखैत; व्यक्तिसँ दूर कएल गेल श्रेणीकारणक आलोचना बनबैत छथि। पहिले पंजीमे ‘विशेष ध्यान’ छल, आब ऊपरक कोठरीमे व्यक्ति स्वयं संक्षिप्त अक्षर; एहि दोहरावमे कथाक सामाजिक अर्थ गाढ़ होइत अछि।

तीन मोहर आ खाली रबर : बदलैत अधिकारक उपकरण

कोठरीमे सेवा-निकेतनक मोहर, तहसीलक नकली-सन चिह्न आ नाम बदलबाक लेल खाली रबर भेटैत अछि। एहि तीन उपकरणमे घोषित सेवा, आधिकारिक रूपक नकल आ नामक अस्थिरता भौतिक रूपमे उपस्थित होइत अछि। घटना अत्यन्त सशक्त प्रतीक रचैत अछि, किन्तु बिना औपचारिक वस्तु-परीक्षण हर छाप आ वास्तविक सरकारी रेकर्डक सम्बन्ध अनुमानक सीमा रखैत अछि। कथामे बच्चा सभ जे सूची बनबैत अछि, ओ एहि सीमाबोधक उपाय अछि। एहि दृश्यसँ अगिला अध्यायक ‘मुहरक पगचिन्ह’क ठोस कारण निकलैत अछि।

धूलि, खिड़की आ उजास : जादुई दृश्य, नब दफ्तरक बाट

कोठरीक खिड़की खुजलापर पुरबा धूलिक परदा उठबैत अछि; उज्जर प्रेत धूलिमे ‘ऊपर भेजू’क छाप पढ़बैत बुझाइत छथि। जादुई दृश्य कथा भीतर दबायल नामक रूपक अछि, वास्तविक दस्तावेजक सिद्ध स्रोत नहि। एहि क्षणक बाद पात्र तहसील, बैंक, शहरक निबन्धन-कार्यालय दिस अगिला मार्ग बुझैत छथि। एहि तरह अन्हार एक कमरामे समाप्त नहि; ओकर विस्तार विभिन्न संस्थाक रस्तामे देखाइत अछि। दृश्यात्मक रहस्यक समापन कारणात्मक नब यात्रा बनैत अछि।

प्रकरण २८० | मूल अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

छापक यात्रा : तीन संस्थाक अनुक्रम

‘ऊपरक कोठरी’मे भेटल सेवा-निकेतन, तहसील-जेकाँ नकली छाप आ खाली रबरक उपकरण एहि अध्यायमे तहसील, निबन्धन कार्यालय आ बैंकक अभिलेख धरि कथाकेँ लऽ जाइत अछि। लेखक मुहरक पगचिन्हकेँ एक वास्तविक रेखा नहि, अलग-अलग प्रविष्टिक क्रमिक मेल बनबैत छथि। नाम, तिथि, फोटो, ऋण आ खाताक परस्पर सम्बन्धक कारण अपराध केवल एक फाइलक धोखा नहि देखाइत। तथापि तिथि-मेल आ रकमक आवागमन अन्तिम दायित्व-निर्णय नहि; कथाक अन्वेषणकारी स्वर एतय सेहो बनल रहैत अछि।

तहसीलक बरामदा : निरन्तर प्रतीक्षाक नब स्थल

अदालतक बरामदा पछिला अनेक अध्यायमे प्रतीक्षाक प्रतीक छल; तहसीलक बरामदामे फेर ‘पाछाँ आउ’क अदृश्य पट्टी, भीजल फाइल आ लोकक थाकल देह भेटैत अछि। लेखक स्थान बदलबैतहुँ संस्थागत समयक एकरूप पीड़ा देखबैत छथि। भिखारी लाल पहिने चपरासीक रूपमे एहन ठाम पैसैत छल, आब साक्षीक रूपमे प्रवेश करैत अछि। चरित्रक एहि छोट स्थितिपरिवर्तनक कारण एके दरबाजा दोसर दृष्टि पबैत अछि। नामक पहरुआ सभक सामूहिक उपस्थितिक बावजूद भीतर केवल सीमित टोली रखल गेल अछि, जे अनुशासनक निरन्तरता अछि।

कमलाक एक दिन, दू कथा : घोषणासँ रजिस्टर धरि

तहसीलक भूमि-हस्तान्तरण रजिस्टरमे कमला देवीक नामसँ ‘स्वेच्छा अधिकार-त्याग’ लिखल अछि; समारोहक फोटोमे एके तिथि पर सहायता स्वीकृति देखाइत अछि। ई दोहराओल तिथिक माध्यमसँ कथावाचक एक दिनक भीतर दू समानान्तर सार्वजनिक आ निजी कथा स्थापित करैत छथि। प्रभावित स्त्री अपन समझल वाक्य कहैत छथि, रजिस्टर दोसर अर्थ दैत अछि। मीराक प्रश्न ‘रजिस्टरमे आवाज कतय’ एही भाषा-विरोधक केन्द्र अछि। तहसील प्रतिलिपिक अर्जीक रसीद घटनाक भावनात्मक क्रोधकेँ अनुसरण योग्य प्रक्रिया बनबैत अछि।

खाली हस्ताक्षर आ च-समूह : गैरहाजिर व्यक्तिक लेखा

उज्ज्वलाक परिवारक प्रविष्टिमे ‘विशेष सत्यापन’ लिखल अछि, मुदा हस्ताक्षर खाली; चमरूक अलग-अलग नाम ‘च-समूह’ कोडमे समेटल अछि। पहिल घटना अधिकारीक अनुपस्थित उत्तरदायित्व, दोसर व्यक्तिक अनुपस्थित नामक चित्र रचैत अछि। लेखक दुइ तरहक शून्य एकहि रजिस्टरमे रखैत छथि—हस्ताक्षर छोड़ल अधिकारीक जगह आ पूर्ण नाम खोने गरीबक जगह। एहि विरोधसँ कागच भीतर सत्ता आ पीड़ितक असमान उपस्थिति प्रकट होइत अछि। खाली हस्ताक्षर किएक, से प्रश्न खुलल अछि; समालोचना निश्चित कारण नहि गढ़ैत।

निबन्धनक फोटो : दृश्य आ सहमतिक भेद

शहरक निबन्धन कार्यालयमे प्रभावित स्त्रीक आधा झुकल चेहरा आ कातसँ कान्ह दबौनिहार हाथक फोटो देखाइत अछि। मीरा एकरा दबावक देह-भाषा पढ़ैत छथि। ई अर्थ गम्भीर अछि, मुदा फोटो एक क्षणक स्थिर दृष्टि छैक; ओकर आधार पर समस्त सहमतिक परिस्थिति स्वतः स्थापित नहि भऽ जाइत। कथा दृश्य-भाषाकेँ बाकी दस्तावेज, घरक बयान आ अस्पतालक तिथिसँ मिलबैत अछि। समीक्षामे एहिठाम भावनात्मक नैतिक अर्थ आ औपचारिक तथ्यगत निष्कर्षक दूरी बचाएब आवश्यक अछि।

एक देह, दू ठाम : अस्पताल आ हस्तान्तरणक तिथि

एक अभिलेखपर अधिकार-पत्रक तिथि ओहि दिनक बताओल अछि जखन शान्ति अस्पतालमे भर्ती छलीह। देविका प्रश्न करैत छथि जे एक देह एके दिन अलग ठाम कोना उपस्थित? एहि काल-विरोधसँ लेखक नकली सहमति अथवा गलत अभिलेखनक सम्भावना तीव्र करैत छथि। किन्तु तारीखक समानता, समयक विवरण आ व्यक्ति-पहिचानक थप जाँच आवश्यक अछि। कथा एही कारण प्रमाणक आवेदन आ प्रति-संग्रहक श्रम वर्णित करैत अछि। पाठककेँ घबराहटक नाटकीयता भेटैत अछि, मुदा जल्द निष्कर्ष पर पहुँचबाक अनुमति नहि।

बैंकक तीन धारा : धनक पगचिन्ह

भूमि-हस्तान्तरणक पाछाँ ऋण, ऋणसँ बकाया आ बैंकक खाता-हस्तान्तरणक क्रम भेटैत अछि। रकम तीन दिशामे—सेवा-निकेतन, निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता आ ‘हरिहर कल्याण ट्रस्ट’—गएबाक विवरण पात्रसभ पढ़ैत छथि। बटुकनाथक नाम सीधा नहि, मुदा सेवा-संस्थाक नामसँ निकटता अछि। एहि रेखाक विशेष साहित्यिक अर्थ एहि मे अछि जे धनीक अधिकारक छाया केवल मोहरमे नहि, धनक यात्रामे सेहो खोजल जाइत अछि। स्रोत-जाँच बिना खाताक नामकेँ दोषक अन्तिम फैसला मानब आलोचनात्मक त्रुटि हएत।

‘भरोसा बेचैत छल’ : अदृश्य अर्थव्यवस्थाक वाक्य

तहसीलक बूढ़ बाबू स्मरण करैत छथि जे किछु अधिकारी पन्ना पढ़ैत छल, किछु भरोसा करैत छल, किछु भरोसा बेचैत छल। ई त्रि-विभाजन संस्थागत कर्मक तीन अलग नैतिक अवस्थाकेँ एक वाक्यमे रखैत अछि। उपन्यास एहि वाक्यकेँ अनेकार्थी सूत्र बनबैत अछि: भरोसा मानवीय सम्बन्धक पूँजी अछि, मुदा बिना जाँच ओकर बिक्री सम्भव। तथापि बूढ़ बाबूक कथन व्यक्तिगत स्मृति अछि; संस्थागत सभ सदस्यक समरूप दोष सिद्ध नहि। लेखक पात्रक वाक्यक चोटसे पाठककेँ व्यवस्था पर प्रश्न करबैत छथि।

मोहरक प्रकाश-यात्रा : नक्शा आ दीप

साँझ चन्ना गाछी लग सेवा-समारोहसँ तहसील, निबन्धन, बैंक आ ट्रस्ट खाता धरि रेखा खिंचल जाइत अछि; प्रत्येक मोड़पर छोट दीप राखल जाइत अछि। वस्तु-सूची एहि क्षण दृश्य नक्शा बनैत अछि। उज्जर प्रेत, कारी भूत आ बच्चा सभ बीच बैठैत छथि; जादुई दृश्य अन्वेषणक नैतिक आन्दोलनकेँ काव्यात्मक आकार दैत अछि। ई रेखा एक सम्भावित संरचनाक मानचित्र अछि, औपचारिक दोषनिर्णय नहि। कहानीक रोहक तनाव एतय अछि जे जे संस्था सेवा घोषित करैत छल, ओकर पगचिन्ह पीड़ितक धन आ भूमि धरि पहुँचि सकैत अछि।

आठ अध्यायक सङ्क्रमण : गाँठसँ पगचिन्ह धरि

अध्याय १७२मे तीन रंगक गिट्ठी सावधानीसँ पढ़ल गेल; १७३मे सर्वे-पंजी सुरक्षित भेल; १७४मे अदृश्य अदालत नब सुननाइक घेरा बनौलक; १७५मे दीनबंधुक मोहरक माध्यमसँ श्रमिक-मध्यस्थक नाम आएल; १७६मे सेवा-समारोहक उजासक पाछाँ अभिलेख बदलनाइक सम्भावना खुलल; १७७मे कागच घर-घर मिलायल गेल; १७८मे ऊपरक कोठरीक वस्तु सामूहिक सूची बनल; १७९मे मोहरक पग तहसील, निबन्धन आ बैंक धरि पढ़ल गेल। ई शृंखला ‘सत्य भेटल’क सरल कथा नहि, स्रोत, प्रतिलिपि, स्मृति, संस्था आ पीड़ितक स्वामित्वकेँ जोड़बाक क्रमबद्ध आख्यान अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : गिट्ठीसँ मोहरक पगचिन्ह धरि

अध्याय १७२–१७९क कथा तीन रंगक गिट्ठीसँ आरम्भ भऽ संस्थागत मोहरक पगचिन्ह पर ठहरैत अछि। एहि क्रमक पहिल महत्त्वपूर्ण बात अछि जे प्रत्यक्ष देखल, दोसरासँ सुनल आ भीतर धेने डरक भेद लोक-अभिलेखक दृश्य-व्याकरण बनैत अछि। मीराक संयम, अनन्याक वर्गीकरण, आरुणिक प्रश्न, देविकाक व्याख्या, रामकेवलक पुरान पंजी, दीनबंधुक मोहर आ ग्रामीण परिवारक पोटली सभ अलग-अलग ज्ञानक वाहक छथि। लेखक एहि वाहकसभकेँ एकमात्र सर्वज्ञ सत्यमे तत्क्षण नहि समेटैत। श्रव्य गवाहीसँ लिखित पंजी धरि, पंजीसँ मोहर धरि, मोहरसँ समारोहक फोटो धरि आ ओतयसँ तहसील, निबन्धन कार्यालय आ बैंक धरि जाँच बढ़ैत अछि। एहि गतिसँ घटनाक सान्द्रता आ दीर्घ उपन्यासक कारणात्मक सम्बन्ध दुनू बनैत अछि।

कथाक स्थल-व्यवस्था अब विशेष रूपसँ पठनीय अछि। चन्ना गाछीक ठूँठ सार्वजनिक सुननाइक मूल केन्द्र अछि; रामकेवलक घर आ देविकाक कोठरी अभिलेखक सुरक्षित स्थान; सेवा-समारोहक मंच सार्वजनिक घोषणाक स्थल; अनेक घर निजी स्मृतिक केन्द्र; अदालतक ऊपरक कोठरी दबायल कागचक भण्डार; तहसील आ

निबन्धन-कार्यालय भाषाक आधिकारिक परिवर्तनक क्षेत्र; बैंक धनक आवागमनक सूत्र। एहि स्थानसभक बीच कागच, फोटो, सूत, पाथर, चादर, मोहर आ रसीद चलैत छथि। स्थानक यात्रा पात्रकेँ सशक्त बनबैत अछि, मुदा हर स्थल पर प्रमाणक स्वरूप बदलैत अछि। चन्ना गाछीपर सुनल कथन जे अछि, तहसीलमे प्रविष्टि ओहि स्वरूपमे नहि मिलैत; लेखक एकहि भिन्नताकेँ कथा-गतिक उत्प्रेरक बनबैत छथि।

समयक स्तर तीन भागमे खुलैत अछि। पन्द्रह बरख पुरान सर्वे आ सेवा-समारोह अतीतक केन्द्र छथि; वर्तमानक चन्ना गाछी, घर-घरक यात्रा आ ऊपरक कोठरीक खोज कथानकक अग्रगामी समय; तेइस बरखक मुकदमा, वयोवृद्धक देह आ परिवारक पीढ़ीगत क्षति दीर्घ अनुभवात्मक समय। लेखक एक पुरान पन्नाक तिथिकेँ परिवारक वर्तमान दुर्दशासँ भिड़बैत छथि। एहि कारण ‘एक दिन, दू कथा’ केवल शब्दगत अन्तर नहि, एक ऐतिहासिक विभाजन अछि—सार्वजनिक सहायता आ सम्भावित निजी अधिकार-हस्तान्तरणक समकालीनता। मुदा तिथि एके भेने घटना स्वयं समान नहि; फोटो, हस्ताक्षर, गवाही आ लेख्य सामग्रीक अतिरिक्त मिलान आवश्यक अछि। ई सावधानी उपन्यासक अपन कथन-पद्धतिक मूल मूल्य बनैत अछि।

कथा-चरित्रक दृष्टिमे परिवर्तन स्पष्ट अछि। रामकेवल पासवान पन्द्रह बरख पुरान पंजीकेँ जीवित रखनिहार स्थानीय इतिहासक संरक्षक छथि। शिवनारायण मिश्र अपन लिखल डरवला पाँतिक उनटा बचाव-पत्र रचबाक प्रयास करैत छथि। लिपिक रामबल्लभ डर सहित अपन नोटबुक प्रस्तुत करैत छथि। दीनबंधु झाक पुत्र शशिभूषण पिता-अपमानक सम्भावना आ सत्य-खोजक इच्छा बीच अटकल अछि; विधवा रागिनी देवी पतिक दोषकेँ सम्पूर्ण मेटबाक मोहसँ बचैत छथि। शान्ति, सुभद्रा, सोना, ‘मौन काकी’ आ चमरू महतो अपन अनुभवसँ अभिलेखक नियत अर्थ प्रश्नाधीन करैत छथि। एहि पात्रसभक कारण लेखक अन्यायकेँ केवल विरोधी पुरुषक योजना नहि, अनेक परिवारक अलग जीवनक संकट बनबैत छथि।

आवर्ती चिह्नक प्रयोग एहि खण्डक सौन्दर्य आ सीमा दुनू अछि। लाल, पीयर आ कारी धागा, नामक पाथर, बन्द बक्सा, घिसल मोहर, आधा हस्ताक्षर, लाल किनारीक चादर, काटल पन्ना आ मोहरक पैघ नक्शा—ई सभ पूर्वक घटनाक स्मृति जीवित रखैत अछि। किन्तु अध्याय १७२क आरम्भिक गीतमे लाल–पीयर–हरियर आ मुख्य कथामे लाल–पीयर–कारी रंगक असङ्गति अछि; लेखक हरियरसँ कारीमे रूपान्तरणक पृथक घटना नहि दैत। अदृश्य अदालतक सभा अध्याय १७१ आ १७४मे किछु समान संरचना सहित फेर अबैत अछि। एहि दोहरावमे सामुदायिक अभ्यासनक उद्देश्य रहि सकैत अछि, मुदा दृश्य-आवर्तनक सम्पादकीय प्रश्न सेहो उठैत अछि। समालोचना एकर सम्भावित अर्थक संग वास्तविक पाठगत अन्तर दर्ज करैत अछि।

जादुई यथार्थक परत चन्ना गाछीक ठूँठ, पाथर, चिरई, गोहि आ कारी-उज्जर भूतक माध्यमसँ लौटैत अछि। एहि अलौकिक उपस्थिति सभकेँ दस्तावेज पर प्रमाणित हस्ताक्षरक बराबर पढ़ल नहि जा सकैत। लोकक अनुभवक नैतिक तीव्रता दृश्य बनबैत क्षण छथि। भूत कखनो दाग पर झुकैत, कखनो कागच लग ठमकैत, कखनो जीवितक नाम-सुधारक श्रोता बनैत बुझाइत छथि। एहि कल्पनात्मक परतसँ अभिलेखी श्रमक लम्बा विवरण जड़ नहि बनैत; मुदा पाठककेँ अर्थक श्रेणी अलग रखबाक आवश्यकता सदिखन रहैत अछि। मूल कथा स्वयं कतेको ठाम लोकक देखल, सुनल आ मानल बात अलग लिखबाक अनुशासन प्रस्तुत करैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय निर्णायक परिवर्तन अछि—सत्यक ‘रक्षा’ आ सत्यक ‘उपयोग’ बीचक भेद। पीड़ितक मूल दस्तावेज मालिकक हाथमे घुरब, डिजिटल प्रति नियंत्रित रखब, फोटो बिना अनुमति साझा नहि करब, रागिनी देवीक अपूर्ण पन्ना पर नामक अनुमान नहि लगायब, सरकारक कार्यालयमे प्रमाणित प्रति माँगब आ बैंकक वित्तीय क्रमकेँ सार्वजनिक अपमानक बदला संरचनात्मक प्रश्न बनायब—ई सभ घटना कथाक नैतिक वास्तु रचैत अछि। तथापि सार्वजनिक साक्षीक सामने बन्द सरकारी कोठरीक ताला तोड़बाक दृश्य औपचारिक वैधानिक अनुमति-प्रक्रियाक पूरा विवरण नहि दैत। कथा अपन नैतिक अधिकारकेँ कथात्मक उत्कर्ष बनबैत अछि, मुदा समीक्षा ओकरा वर्तमान कानूनक स्वतः पूर्ण प्रक्रियात्मक प्रमाण नहि कहैत।

अध्याय १७९क अन्तमे तहसील, निबन्धन, बैंक आ ट्रस्टक सम्भावित आर्थिक प्रवाहक नक्शा दीपक संग पाथर पर उभरैत अछि। कथा एखन चन्द्रपाल वा आन कोनो व्यक्तिक पूर्ण न्यायिक दोष सिद्ध कऽ समाप्त नहि भेल। एक घरक सहायता-स्वीकृति कहाँ अधिकार-त्याग बनल, कतय नकल मोहर लगल, ककर निर्देश पर मूल बदलल, ककरा लाभक हिस्सा भेटल, आ पीड़ितक नामक वास्तविक स्वामित्व केना घुरत—ई सभ प्रश्न एखन खुलल अछि। एहि असमाप्ति मे दीर्घ कथा अपन ऊर्जा रखैत अछि। गिट्ठी पढ़नाइ, पंजी बचेनाइ, मोहर खोलब आ धनक पगचिन्ह देखब—ई चरणसभ न्यायिक विजयक चित्र नहि, न्याय दिस चलैत समाजक कठिन आत्म-पुनर्गठनक आख्यान छथि।

प्रकरण २८१ | मूल अध्याय १८० — शहरक खाता

शहरक खाताक प्रवेश : नक्शासँ आर्थिक घटनाक्रम

मूल अध्याय १७९मे मोहरक पगचिन्ह तहसील, निबन्धन आ बैंक धरि पहुँचने छल। अध्याय १८० एहि स्थानिक नक्शाकेँ पैसाक प्रवाहमे फेरैत अछि। चन्ना गाछीक पाथरपर बनल रेखा शहरक सिद्धि परामर्श सेवाक मेज पर आनल जाइत अछि। कथनक हेतु एकटा नया अपराध अलग सँ खोलब नहि, पहिनेसँ देखल भूमि-हस्तान्तरणक सामाजिक परिणामक अर्थ निकालब अछि। शहरक दृश्य गामक वृत्तसँ अलग संसार बनि नहि ठाढ़ होइत; ओ गामक हटाओल खेत, विश्वास आ अधिकारक आर्थिक अनुवाद बनैत अछि। एहि निरन्तरतासँ दीर्घ उपन्यासमे क्रमिक अन्वेषणक ठोस गति बनैत अछि।

काँचक कार्यालय बनाम माटिक पगचिन्ह

सिद्धि परामर्श सेवाक चमकैत रेलिंग, काँचक दरबाजा, शीतल हवा आ सुगन्धित भीतरी संसारक प्रतिपक्षमे शान्तिक चादरक कोर पर लागल खेतक माटि अछि। कथाकार केवल धनी-गरीबक सजावट नहि करैत छथि; ओ दू भिन्न अभिलेखी भाषाकेँ एक दृश्य-फलकपर रखैत छथि। खातामे जमीन ‘रकम’ बनि गेल, मुदा शान्तिक स्मृतिमे ओहि खेतक तिथि एखनहुँ जीवनक घाटा अछि। कार्यालयक सफाइ नैतिक निष्कलुषताक आश्वासन नहि दैत। बाहरी धूलिक अनुपस्थिति भीतरक आर्थिक दागकेँ ओझर करबाक कथात्मक व्यंग्य रचैत अछि।

गोवर्धन सहाय आ ‘केवल’क व्याकरण

लेखाकार गोवर्धन सहाय अपन भूमिका केवल कागच व्यवस्थित करब धरि सीमित करबाक कोशिश करैत अछि। कथामे ‘केवल’ शब्द बेर-बेर उभरैत आत्मरक्षाक वाक्य-भङ्गिमा अछि। अनन्या एहि भाषाकेँ चिन्हि लैत छथि; पाठक सेहो एखन समझैत अछि जे पाप आ उत्तरदायित्वक बँटवारा कतेको छोट कर्म-पदक भीतर नुकाइ सकैत अछि। गोवर्धनक भय, लिफाफा बाहर निकालब आ नाम सार्वजनिक नहि करबाक प्रार्थना ओकरा एकरेखीय दुष्ट पात्र होमयसँ रोकैत अछि। स्वीकारोक्ति जाँचक द्वार खोलैत अछि, मुदा पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण नहि बनैत।

दानक उज्जर उद्देश्य आ धनक कारी रस्ता

हरिहर कल्याण ट्रस्टक उद्देश्य-पत्रमे विधवा-पुनर्वास, छात्रवृत्ति, आपदा-सहायता जेकाँ प्रकाशमान शब्द अछि। तकर अगिला पन्नासभमे भूमि-हस्तान्तरणसँ निकसल रकम निर्माण-सामग्री आपूर्ति, निकेतन आ अनाम खाताक घुमावदार बाटे दान धरि पहुँचैत देखाओल गेल अछि। कथा एतय प्रशासनिक शब्दकेँ ओकर लेनदेनसँ टकरबैत अछि। देविकाक निष्कर्ष—जिनकासँ लेल गेल, तिनके नामपर दान—मात्र नैतिक सूत्र नहि; ई कथात्मक उलटाव अछि, जाहिमे कथित उपकारी वास्तवमे सम्भावित लाभग्राही बनैत अछि। यथार्थक जाँच कागचक घोषित उद्देश्यसँ आगाँ ओकर सञ्चालनमे पहुँचैत अछि।

‘रा.चं.ल.’ : खाली संक्षेपक उत्पादक अनिश्चितता

विशेष प्रशासनिक सहयोगक खर्चक समक्ष तीन अक्षर ‘रा.चं.ल.’ भेटैत अछि। आरुणि राघव, चन्द्रपाल आ लाउक सम्भावित नाम सोचैत अछि, मुदा मीरा अनुमानकेँ प्रमाणक रजिस्टरसँ अलग रखबैत छथि। ई छोट रोक कथाक अन्वेषणात्मक नैतिकता बनैत अछि। रहस्य-उपन्यासक रूढ़िपरक सूत्रमे संकेत भेटिते दोषी घोषित भऽ जाइत; एतय संकेत पाठकक प्रतीक्षाकेँ बढ़बैत अछि। कथाकार पाठकेँ अन्तिम निष्कर्षक कृत्रिम सुखसँ वञ्चित करैत छथि, कारण अभिलेखमे लिखल संक्षेप आ वास्तविक व्यक्ति बीचक दूरी एखन तक सुरक्षित अछि।

शान्तिक चादर : वस्तु-स्मृतिक प्रतिलोम

शान्ति समारोहमे भेटल पुरान चादर शहर धरि नेने जाइत छथि। पहिने ई चादर दान-समारोहक चिह्न छल, आब जाँचक मेज लग उपस्थिति दर्ज करबैत अछि। लोकगीतमे चादरकेँ मौन ढाकबाक बदला जनसभाक आसन बनाओल गेल अछि; गद्य एहि परिवर्तनक मूर्त रूप शान्तिक हाथ आ चादरक माटि सँ बनबैत अछि। वस्तुक अर्थ पात्रक अनुभवसँ फेर लिखाइत अछि। एहि प्रक्रिया मे स्त्रीक घरेलू वस्तु बहीखाताक निराकार अङ्क सभकेँ देह आ नैतिक ताप प्रदान करैत अछि।

अनन्याक फोनपर तस्वीर : दस्तावेजसँ अंकीय धमकी धरि

लेखाकारक लिफाफामे भेटल नम्बर आ शहरक बैंक-बाहर खिंचल अनन्याक तस्वीर संग धमकी-सन्देश नव घटनाक सिरा बनैत अछि। एहि प्रवेशक समय-व्यवस्था महत्त्वपूर्ण अछि: खाताक जाँच चलैत रहिते ओकर उत्तरमे निगरानीक प्रतिक्रिया आबैत अछि। अपराध एतय निष्क्रिय इतिहास नहि; अपन जाँच देखि रहल वर्तमान शक्ति अछि। देविका फोनक दृश्यकेँ भयक बदला सम्भावित साक्ष्य बनाबैत छथि; समय, नम्बर, चित्र आ शब्द लिखल

जाइत अछि। कथन-गति एहि क्षण अभिलेखीय अन्वेषणसँ तत्काल जोखिमक दृश्य दिस मुड़ैत अछि, मुदा हिंसात्मक टकरावमे नहि बहकैत।

साइबर शाखाक पुरान थकान : संस्थागत स्थानक पुनरावृत्ति

साइबर शाखामे ‘ओटीपी नहि बताउ’ जेकाँ आधुनिक चेतावनी अछि, मुदा भीतर बैसल कर्मचारीक थाकल भाव तहसील आ अदालतक बरामदाक स्मृति जगबैत अछि। ई स्थानान्तर केवल नवीन तकनीकक प्रदर्शन नहि। कथाकार देखबैत छथि जे नब कार्यालयो पुरान उदासीन भाषा अपनाबि सकैत अछि, जखन अधिकारी धमकीकेँ सामान्य कहि टारए चाहैत अछि। अनन्याक प्रश्न एहि कथित सामान्यताक आवरण फाड़ैत अछि। संस्थाक परिवर्तन ओकर उपकरणसँ नहि, पीड़ितक विशिष्ट बात सुनबाक क्षमतासँ चिन्हाइत अछि।

अंकीय गोहिक रूपक : पुरान जीवक नव भूख

नदीक गोहि पहिने देहपर चोट करनिहार जीव छल, फेर कागचमे जमीन खाइनिहार रूपक बनल, आ आब फोनक भीतर प्रतिष्ठा, चेहरा आ आवाज खाइनिहार अंकीय आकृति बनैत अछि। कथा एहि विस्तारकेँ कहियो वास्तविक प्राणी द्वारा अंकीय अपराध कएल गेल तथ्य नहि कहैत; ई सामाजिक शिकारीपनक सतत बिम्ब अछि। समय, उपकरण आ नम्बरक पगचिन्ह सेहो गोहिक पैरिक रूपकमे पढ़ल जाइत अछि। एहि रूपकक उपलब्धि अछि जे लोक-स्मृति आ तकनीकी ठगी एकहि साहित्यिक अनुभूतिक क्षितिजमे रहैत अछि, मुदा तथ्य आ प्रतीकक वर्ग अलग रहैत अछि।

निजता आ दृश्यता : समीक्षात्मक तनाव

मीरा ट्रस्टक सार्वजनिक खाताक समीक्षा करैत छथि, मुदा पीड़ितक अँगूठा, चेहरा आ व्यक्तिगत दुखकेँ सार्वजनिक तमाशा नहि बनबय चाहैत छथि। एहि द्वैध निर्णयक भीतर आख्यानक प्रमुख तनाव अछि: सत्यक सामाजिक प्रसार आवश्यक, मुदा सत्यक प्रकाशमे प्रभावित व्यक्तिक पुनः अपमान अनुचित। गोवर्धनक भय, अनन्याक तस्वीर आ शान्तिक चादर एहि सीमारेखाकेँ अलग-अलग रूपमे स्पर्श करैत अछि। कथा निजताकेँ जाँचक अवरोध नहि, ओकर नैतिक शर्त बनबैत अछि; ताहि कारण सभ जानकारी पाठकक सोझाँ अनियन्त्रित रूपेँ नहि खोलल जाइत।

खाताक अपूर्ण निष्कर्ष : अगिला अध्यायक बाट

अध्याय ट्रस्टक सम्पूर्ण धन-प्रवाह, ‘रा.चं.ल.’क अर्थ वा धमकी देनिहारक निश्चित पहिचानपर अन्तिम निर्णय नहि दैत। एक कार्यालय, एक नम्बर, एक सन्देश, आ पुरान भूमि-हस्तान्तरणक श्रृंखला बाँचि रहैत अछि। एहन अपूर्णता घटनाकेँ लम्बेनिहार अनावश्यक भराव नहि, क्रमिक अन्वेषणक शिल्प अछि। खाताक रेखा अगिला ‘सिमक छाया’ अध्याय लेल नब प्रश्न छोड़ैत अछि: कागचक नाम फोनक भीतर कोना चलि गेल? जखन एक अध्यायक वस्तु दोसर अध्यायक प्रारम्भिक चिह्न बनैत अछि, तखन महाउपन्यासक दीर्घता स्मृतिसँ जुड़ैत अछि।

प्रकरण २८२ | मूल अध्याय १८१ — सिमक छाया

फोनक नम्बर : बदलैत परिचयक स्थिर चाल

शहरक खाताक बाद कथा खातामे भेटल मोबाइल नम्बरक यात्रा पकड़ैत अछि। साइबर शाखाक सूचनामे तीन मासमे सात बेर नाम-पता बदलल गेलाक उल्लेख अछि, मुदा बस-ठाढ़ीक आरम्भिक सम्बन्धक संकेत बचल रहैत अछि। एतय नम्बर व्यक्ति नहि, व्यक्ति धरि जएबाक परिवर्तनीय मार्ग अछि। कथाकार मोबाइलक तकनीकी स्वरूपकेँ स्वयं अपराधक अन्तिम व्याख्या नहि बनबैत छथि; ओ देखबैत छथि जे अलग-अलग परिचय अपनबैत एके पद्धति केना जीवित रहैत अछि। सिमक छाया दृश्यहीन सत्ता बनैत अछि, जकर अस्तित्व कागच, बही, फोटो आ उपस्थित मनुष्यक बीच टुकड़ा-टुकड़ा देखाइत अछि।

माधव संचार सेवाक सूक्ष्म दृश्य-सज्जा

बस-ठाढ़ीक छोट दुकानमे टूटल स्क्रीन, चार्जरक तार, पानक डिब्बा, पुरान बही आ नील बोर्डक विवरण अछि। ई ठोस वस्तु सभ ‘अंकीय’ अपराधक अभौतिक छवि केँ जमीनी बनबैत अछि। ग्राहकक प्रपत्रक संग्रह, अँगूठा लगेनाइ, सिम सक्रिय करब आ फोन लौटेबाक व्यवस्था जखन एक स्थानमे भेटैत अछि, तखन पाठक देखैत अछि जे विशाल धमकी-जाल नान्हि दैनिक सेवाक माध्यमसँ चलि सकैत अछि। कथनमे स्थान छोट अछि, ओकर सम्भावित परिणाम बहुत पैघ। एहि विरोधसँ दृश्यकेँ भयक विश्वसनीय आकार भेटैत अछि।

माधवक स्वीकार : अज्ञानक आड़ि आ जिम्मेदारीक सीमा

माधव कहैत अछि जे हरिहर सेवा केन्द्रक लोक कागच नेने आयल छल, आ ओकरा ई कल्याणकारी शिविर लगल। कथाकार ओकर रोदन आ स्वीकारकेँ दर्ज करैत छथि, मुदा ओकर बातसँ समस्त उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत। मीरा अज्ञान आ सत्यक उद्घाटन बीचक भेद राखैत छथि। एहि पात्रक माध्यमसँ उपन्यास संस्थागत छलक निम्नस्तरीय सहायकक जटिल स्थान देखबैत अछि: ओकर हाथसँ काम भेल, मुदा पूरा जालक दिशा ओ जानैत छल कि नहि, से स्पष्ट जाँच बाकी अछि।

लाल बक्सा आ नेनाक अनपेक्षित उद्घाटन

माधवक भतिजाक सहज प्रश्नसँ टेबलक नीचाँक लाल बक्सा बाहर अबैत अछि। कथनक ई मोड़ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतय रहस्य कोनो विशेषज्ञक कठिन व्याख्यासँ नहि, बालकक प्रतिदिनक देखल वस्तुसँ खुलैत अछि। बक्सामे खाली सिम-लिफाफा, कतरन आ रमरतिया देवीक पुरान फोटो भेटैत अछि। बाल-दृष्टि सामाजिक जाँचक सक्रिय भागीदार बनैत अछि। मुदा बक्सा भेटलासँ ओकर प्रत्येक कागचक अपराध-संबन्ध स्वतः सिद्ध नहि; लेखक प्रमाणक क्रम आगाँ बढ़बैत छथि।

मृत रमरतिया देवीक नाम : समयक असम्भव संगति

रमरतिया देवी दू वर्ष पहिने मरि गेल छलीह, तथापि हुनकर फोटो सिम-वितरणक कागचमे भेटैत अछि। एतय अतीतक मृत्यु वर्तमानक अंकीय सक्रियतासँ टकराइत अछि। ‘मृत नामसँ जीवित धमकी’क सूत्र केवल

चमत्कारपूर्ण बिम्ब नहि; ई पहिने मूल उपन्यासमे विकसित ‘मृतकक सहमति’ प्रसंगक पुनर्रचना अछि। एहि समानान्तरसँ कागजी जालसाजी आ फोन-ठगी एके बुनियादी अपहरणक दू रूप बनैत अछि। जकर देह एखन नहि, ओकर नामक उपयोग पुनः कएल जा सकैत अछि; शोकक गरिमा आर्थिक साधन बनि जाइत अछि।

बिशम्भरक प्रवेश : दर्पक रक्षात्मक अभिनय

बिशम्भर दू युवक संग मोटरसाइकिलपर पहुँचैत अछि, लाल बक्साकेँ देखैत अछि आ जाँचकेँ छोट बात कहि उपहास करैत अछि। वाक्यक हलकापन ओकर दृश्यगत बेचैनीक प्रतिपक्षमे ठाढ़ अछि। ओ विडियो बनबय लगैत अछि, मुदा देविका स्थान, समय, उपस्थिति आ मोटरसाइकिलक विवरण सार्वजनिक रूपेँ पढ़य लगैत छथि। एहि क्षणक नाटकीय तन्त्र भिड़न्त नहि, परस्पर दृष्टिक बदलनाइ अछि। जे लोक दोसराकेँ कैमरा द्वारा डराबय चाहैत छल, से स्वयं समयबद्ध वर्णनक विषय बनि जाइत अछि।

हस्ताक्षर-जेकाँ रेखा : समानता आ पहिचानक दूरी

माधवक बहीमे बिशम्भरक हस्ताक्षर-जेकाँ टेढ़ रेखा अछि, मुदा बिशम्भर अपन हस्ताक्षर मानैत नहि। एहि विवादमे कथाकार मिलैत आकृतिकेँ तुरन्त अन्तिम पहिचान नहि बनबैत छथि। रेखा जाँचक संकेत अछि, न्यायिक निष्कर्ष नहि। ई दूरी राखब जरूरी अछि, कारण समीक्षाक काम शङ्कार्केँ प्रमाण बनाबय नहि, शङ्कासँ कथा कोन बाट पकड़ैत अछि से देखब अछि। आक्रोशित भीड़ लग एहि ठहरावसँ कहानीक तात्कालिक गति थमैत अछि, मुदा नैतिक तनाव अधिक तीव्र होइत अछि।

क्रमबद्ध लोक-पंक्ति : भीड़क विकल्प

भीड़ एकत्र भेलाक बाद मीरा दू पाँतिमे नाम, अँगूठाक तिथि, ककर कहबपर सिम लेल गेल, आ फोन भेटल कि नहि—ई प्रश्न सभक क्रम बनबैत छथि। एतय ‘लोक’ भीड़ नहि रहि वक्ता-व्यक्ति बनैत अछि। आठ नामक विवरणमे मृत, बीमार, परदेशी आ वृद्धक परस्पर फरक स्थिति अछि; एक सामूहिक अपराध-चित्र बनैतो प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट रहैत अछि। घटना-घनत्व केवल नामक संख्या नहि, गवाहीक व्यवस्थापनसँ उत्पन्न भऽ रहल अछि।

प्रमाणक स्वामित्व : लाल बक्सा दुकानमे

मीरा लाल बक्सा छीनि नहि लैत छथि; मूल माधवक दुकानमे सुरक्षित राखि सूची, चित्र आ गवाहक हस्ताक्षर बनाओल जाइत अछि। कथाक नैतिक पद्धति एतय मूर्त स्वरूप लैत अछि। जे अभियान नामक चोरीक विरुद्ध अछि, ओ यदि सामग्री मनमाना उठा लए, तँ स्वयं अपराधीक चाल दोहराओत। एहि कारण मूल वस्तु आ ओकर दस्तावेजी प्रति बीचक सम्बन्ध कथा बारम्बार स्पष्ट करैत अछि। एहि धीमा क्रियासँ तात्कालिक रोमांच कम होइत अछि, मुदा विश्वसनीयताक तर्क बलवान होइत अछि।

दादीक फोटोसँ पोताक स्वर धरि

रमरतिया देवीक फोटो देखलाक बाद हुनकर पोताक प्रतिवाद कथा कें अंकीय पहचानसँ पारिवारिक स्मृतिमे घुरबैत अछि। फोटो एक समय सरकारी सुविधा-चित्रक दाबी करैत छल, आब मृत्यु-पछाति नामक उपयोगक संकेत बनैत अछि। पोताक आवाज एहि वस्तुक अर्थ बदलैत अछि। मूल उपन्यासमे नातिक पीढ़ी केवल पीड़ितक प्रतिनिधि नहि; ओ अतीतक अपमानकें आजुक सार्वजनिक प्रश्न बनबैत अछि। वंश-स्मृति जाँचक पृष्ठभूमि बनैत अछि, स्वतः सर्वज्ञ कथावाचक नहि।

सिमक छाहसँ सेवा-केन्द्र धरि : संक्रमण

अन्तिम हिस्सामे हरिहर सेवा केन्द्रक पंजी, शिविरक फोटो, फोन-वितरणक सूची आ धमकीमे प्रयोग भेल नम्बर मिलाबयक निर्णय होइत अछि। सिमक छाया एखन देह नहि पबैत, मुदा संस्थागत ठाम चिन्हल जा रहल अछि। ध्रुवेशक हवेली दिशि ढोलकक आवाज सुनल जाइत अछि; कथामे एही आवाजक अपराधसँ सम्बन्ध किछु लोकक व्याख्या अछि, पुष्ट तथ्य नहि। एहन ध्वन्यात्मक आशंका पाठककें अगिला ‘हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा’ दिस पठबैत अछि। अध्याय प्रश्न छोड़ैत अछि, फर्जी समाधान नहि।

प्रकरण २८३ | मूल अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

कल्याणक मुखौटा : दिनक सेवा, रातिक हिसाब

शीर्षक सेवा-केन्द्रक दुआरकें दू भिन्न समयक सन्धिस्थल बनबैत अछि। दिनमे पेंशन, फोन, लाभुक-पंजी आ जनसेवाक दावा; रातिमे सिम, फोन-वापसी, खाताक संदिग्ध उपयोग आ अज्ञात नम्बरक सम्भावित जाल। कथाकार अपन आलोचना केवल ‘सेवा’ शब्दक विरोधमे नहि करैत, ओकर संस्थागत उपयोगक द्वैधतामे रखैत छथि। जे परिसर लोककें सहायता लेल आकर्षित करैत अछि, वैह विश्वासक असावधान संग्रहकें सम्भव बनबैत अछि। ई द्वन्द्व स्थानक व्यङ्ग्यात्मक चरित्र तैयार करैत अछि।

नरहरी काकाक चाबी : साधारण पहरुआक असाधारण भूमिका

सेवा-केन्द्रक पुरान चाबी रखनिहार नरहरी काका जाँचक क्रममे महत्त्वपूर्ण बनैत छथि। ऊँच पदक अभावक बावजूद हुनकर स्थान-स्मृति, वस्तु-परिचय आ उपकरणक ध्वनिक अनुभव बादमे निर्णायक संकेत प्रदान करैत अछि। चाबी केवल दरबाजा खुजबाक साधन नहि; कथा देखबैत अछि जे भवनक रोजमर्रा देखभाल करनिहार व्यक्ति ओकर दबल इतिहासक जीवित भण्डार सेहो भऽ सकैत अछि। पहिने भिखारी लालक चपरासी-दृष्टि जेकाँ, एतय नरहरीक परिचय निम्न-पदक श्रमकें गवाहीक केन्द्रमे आनैत अछि।

दुआरपर भीड़ आ प्रश्नक अनुशासन

नाम-सूची खुलिते वृद्ध, स्त्री आ मजदूर सभ अलग-अलग शिकायत सुनबय लगैत छथि। कथा सहज उत्तेजनाक अवसर बनबैत अछि, मुदा मीरा नाम-पुष्टि, लाभ भेटल कि नहि, अँगूठा पढ़ि लेल गेल कि नहि, आ फोन वापस भेटल कि नहि—ई अलग-अलग श्रेणी बनबैत छथि। एहन वर्गीकरणसँ भीड़क अनिश्चित शोर विशिष्ट कथनमे

बदलैत अछि। एकहि शिविरक भीतर विभिन्न प्रकारक सम्भावित अनियमितता देखाओल जाइत अछि। एतय संख्या आ श्रेणी मानव अनुभवकेँ मिटबैत नहि, ओकर अन्तर्विरोध स्पष्ट करैत अछि।

दस्तावेजक भाषा आ अँगूठाक देह

केन्द्रक प्रपत्रमे छपल आधुनिक शब्द पीड़ितक घरेलू भाषासँ मेल नहि खाइत अछि। लोक स्वीकारैत छथि जे हुनका फोटो वा पेंशनक नामपर अँगूठा लगवाओल गेल, मुदा बादमे फोन-वितरण अथवा बैंक-सेवाक भिन्न अर्थ निकलल। एहि अन्तरमे कथाकार लिखल ‘सहमति’ आ अनुभवगत समझ बीचक दूरी देखबैत छथि। अँगूठा देहक चिन्ह अछि, मुदा कागजक सन्दर्भ बदलिते ओ देहसँ स्वतन्त्र अधिकार बनि काज करय लगैत अछि। उपन्यास एहि असङ्गत लगामक आलोचना करैत अछि।

बिशम्भरक दरबजापर उपस्थिति : भयक दृश्य-नियन्त्रण

पहिने सिम-दुकानमे देखाओल बिशम्भर एहि संस्थाक कथा सँ जुड़ैत रहैत अछि। ओकर उपस्थिति, सहायक सभक हड़बड़ी आ सन्दिग्ध कागचक रक्षा—ई सभ कथा मे कड़ीक भूमिका निभबैत अछि। मुदा बिशम्भरक उपस्थितिसँ प्रत्येक अनियमितताक निर्देश ओही देलक एहन निर्णय नहि बनैत। मीरा कोनो आपराधिक परिणाम घोषित करबाक बदला वस्तुक स्थान, पंजीक तिथि आ गवाहक कथनकेँ क्रम दैत छथि। एहि ठहरावमे सामाजिक रहस्यक नैतिक शक्ति अछि।

फोन देबाक फोटो आ फोन वापस लेबाक अनुभव

केन्द्रक जनसेवा शिविरमे फोन हाथमे दऽ चित्र खींचबाक आ बादमे फोन वापस लऽ लेबाक कथन सामने अबैत अछि। फोटोमे ‘लाभ भेटल’ दृश्य स्थिर अछि, मुदा व्यक्तिक अनुभवमे वस्तु बचल नहि। कथा एतय छवि आ घटना बीचक दूरी पर प्रहार करैत अछि। प्रचार-चित्र एक क्षण देखबैत अछि; वास्तविक लाभ टिकब कि नहि, से चित्रसँ बाहरक समयमे निर्धारित होइत अछि। ई अन्तर नाटकक मंच आ मंच-पाछुक काजक पुरान शृंखला केँ अंकीय रूपमे फेर गढ़ैत अछि।

रमरतियाक अनुपस्थिति : कथा-उपस्थितिक पुनर्निर्माण

मृत रमरतिया देवी स्वयं केन्द्रमे जाँचक समय उपस्थित नहि भऽ सकैत छथि। मुदा हुनकर फोटो, सिम पंजी, पोता दीपकक स्मृति आ शेष फोन-संबन्धी सामग्री हुनकर अनुपस्थित देहक चारूकात नब कथन बनबैत अछि। कथाकार मृतककेँ अद्भुत ढंगसँ शारीरिक रूपेँ घुरा नहि दैत; ओ नामक निरन्तर उपयोगक विडम्बना देखबैत छथि। जादुई बिम्बक उपस्थिति एतय सामाजिक अपमानक भावात्मक प्रतिध्वनि अछि, सत्यापनक विकल्प नहि।

पेन-ड्राइवक अवतरण : वस्तु-सूत्रक अगिला सोपान

केन्द्रक भीतर ‘शिविर फोटो’ लिखल पेन-ड्राइव भेटैत अछि। मीरा ओकरा तुरन्त खोलबाक लोभ रोकैत छथि आ समय, गवाह आ प्रतिलिपि-प्रक्रियाक आवश्यकता देखबैत छथि। ई वस्तु कथानकमे ‘बन्द संदूक’क अंकीय उत्तराधिकारी बनैत अछि। पिछला अध्यायसभमे लोहेक पेटी, रद्दी बोरा आ सहमति-कापी रहस्य समेटने छल;

आब छोट उपकरणमे अनेक चित्र आ ध्वनि समेटल सम्भावना अछि। कथात्मक पैमाना घटैत अछि, भीतरक जानकारी विस्तार पबैत अछि।

अनुमतिक मर्यादा : अंकीय जाँचक मानवीय अनुशासन

पेन-ड्राइव, फोटो, लाभुकक परिचय आ प्रतिलिपि रखबाक बातमे कथा बारम्बार बतबैत अछि जे सबूतक देखनाइ आ सबूतक प्रचार अलग काज अछि। मीरा ककरो निजी पीड़ा भीड़मे खुलि जाए, एकरा रोकैत छथि। ई पुनरावृत्ति लेखकक जिद अछि, यद्यपि अध्यायगत तनावकेँ क्षण भरि धीमा करैत अछि। चूँकि जालसाज लोक पहिनेहि व्यक्तिक तस्वीर आ नाम बिना बुझौने उपयोग कएने अछि, जाँचक नैतिक भिन्नता सामग्रीक नियन्त्रणमे प्रकट होइत अछि।

जाँचक प्रगति : दरबाजा खुलल, चेहरा बन्द

अन्तिम सार्वजनिक सभामे पंजीक सूची, फोन-वापसीक रसीदक प्रति आ सीलबन्द पेन-ड्राइवक विवरण चन्ना गाछी लग राखल जाइत अछि। संस्था दिस पहुँचब कथाक उपलब्धि अछि, मुदा ओकर भीतरक व्यक्तिगत भूमिका आ डेटा-प्रवाह एखन आंशिक। एहि अधूरापनकेँ मूल पाठ स्वयं चिन्हित करैत अछि। पाठक पहिने ‘दुआर खुलल’क प्रतीकात्मक प्रसन्नता अनुभव करैत अछि, फेर बुझैत अछि जे बन्द उपकरणक भीतरक सामग्री अगिला अध्यायक वस्तु बनत। एना उपन्यास वस्तुसँ वस्तु धरि स्मृतिक अनुक्रम टिकौने रखैत अछि।

लोकगीतक भोर आ गद्यक सन्ध्या

आरम्भिक लोकगीत सेवा-दुआर भोरमे खोलबाक आ जन-बोलीक चाबीसँ ताला हटेबाक आग्रह करैत अछि। मुख्य कथा जाँचक दिन भरि चलैत साँझक सील आ रातिक सभामे पहुँचैत अछि। गीतक कल्पित सामूहिक उजास आ गद्यक सावधान अपूर्ण खुलासाक बीच सूक्ष्म दूरी अछि। लेखक विजयगीतक सोझ निष्कर्ष पर नहिरुकैत; तथ्यक सूची बनब तखनहि सार्थक जब ओकरा अगिला सामग्रीसँ मिलाओल जाए। एहि विरोधसँ शैलीक घोषणात्मकता आ घटनाक अनिश्चितता परस्पर परीक्षा लैत अछि।

प्रकरण २८४ | मूल अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

पेन-ड्राइवक सील : डिजिटल अभिलेखक देह

अध्याय केन्द्रक छोट पेन-ड्राइवसँ शुरू होइत अछि। ओ उपकरण केवल अंकीय संग्रह नहि, सीलबन्द भौतिक वस्तु सेहो अछि, जाहिपर ओस पड़ैत अछि आ जकरा खोलबाक पहिने गवाहक उपस्थिति आवश्यक कहल जाइत अछि। एहि दृश्यसँ लेखक आधुनिक डेटा केँ पुराने बही-संदूकक वस्तुगत परम्परामे रखैत छथि। वैज्ञानिक पदावलीक प्रदर्शनसँ बेसी महत्त्व एहि बातक अछि जे सामग्रीक क्रम बिगड़लासँ कथा कथित सत्यक भरोसा नष्ट भऽ सकैत अछि। विनीत झाक प्रतिलिपि बनौनाइ खुलासाक पहिल घटना बनैत अछि।

फोल्डरक नाम : अपराधक स्वयम्-रचित अनुक्रम

‘शिविर फोटो’, ‘दस्तावेज’, ‘लाभुक सूची’, ‘वापसी फोन’ आ ‘विशेष’—ई फोल्डरनाम कथाक भीतर एकटा लघु अनुक्रम जेकाँ काज करैत अछि। क्रमशः सामूहिक प्रदर्शन, व्यक्ति-परिचय, वस्तुक वापसी आ गुप्त स्वरक जाल खुलैत अछि। ‘विशेष’ शब्द प्रशासनिक साधारणताक भीतर अपराधक सम्भावित गाढ़ परत राखैत अछि। पाठक अगिला फोल्डरपर उत्सुक रहैत अछि, मुदा प्रत्येक फोल्डरक सामग्री आ प्रभावित व्यक्तिक कथन अलग-अलग स्तरपर रहैत अछि। ई संरचना अध्यायकेँ खण्डित होमयसँ बचबैत अछि।

रमरतियाक चित्र : केन्द्र आ किनारक राजनीति

सेवा-शिविरक चित्रमे बैनर, मुस्कान आ सामूहिक लाभक आयोजन देखाइत अछि; देविका किनार पर ठाढ़ बिशम्भरकेँ देखैत छथि। रमरतिया देवीक आँखि कैमरा दिस नहि, कागच दिस अछि। एहि विरोधसँ फोटोक दृश्य-राजनीति खुलैत अछि: आयोजक जे केन्द्रमे देखाबय चाहैत अछि, वास्तविक असहजता कखनो किनारमे लिखल रहैत अछि। रमरतियाक हाथमे फोन पकड़ेबाक अनभ्यस्त मुद्रा सरकारी उपलब्धिक बनाओल छविक प्रतिवाद अछि। फोटो स्वतः निर्णायक दोषारोपण नहि, मुदा गवाहीक प्रश्न बनबैत अछि।

चित्रक समय-मोहर : तीन अभिलेखक मिलन

आरुणि फोटो खींचबाक समय, माधवक सिम-सक्रियताक बही आ बैंक-संदेशक पहिल प्रविष्टि एकहि तिथि लग मिलबैत अछि। कथाकार एहि त्रिकोणकेँ जाँचक महत्त्वपूर्ण उन्नति बनबैत छथि। एक तस्वीर अलग सँ अर्थहीन भऽ सकैत अछि; तीन भिन्न अभिलेख एकहि समय पर ठाढ़ होइत प्रश्न प्रखर बनैत अछि। ताहि पर भी तिथि-मिलान अपराधक प्रत्येक हिस्सा स्वतः प्रमाणित नहि करैत। ई बोध मीरा आ सत्यव्रतक सावधान प्रतिक्रियामे सुरक्षित अछि।

फोन-वापसीक विडियो : प्रचारक समय बनाम वस्तुक समय

लाभुकक हाथमे फोनक सार्वजनिक फोटो खिंचल, तकर बाद फोन केन्द्रक कर्मचारीक हाथमे घुरबाक विडियो भेटैत अछि। कथात्मक अर्थमे ई दू फ्रेमक बीचक अन्तर पूरा सार्वजनिक योजना पर प्रश्न उठा दैत अछि। पहिल फ्रेम ‘देना’क घोषणात्मक क्षण, दोसर ‘ले लेना’क अनौपचारिक क्षण अछि। दृश्यगत अनुक्रम किछु लोकक मौखिक शिकायतकेँ नया सन्दर्भ दैत अछि। मीरा विडियो रोकि देखबाक अनुमति आ प्रसारणक सीमा निर्धारित करैत छथि, जाहिसँ दृश्य-शक्ति पीड़ित पर फेर कब्जा नहि करय।

एके लिखावट : अंकीय फारममे मानवीय हाथ

स्कैन कएल प्रपत्रमे समान टिक-चिह्न, लिखावट आ गलती भेटैत अछि; विधवा-लाभमे गलत वैवाहिक स्थिति, पेंशनमे बालकक फोटो आ छात्रवृत्तिमे किसानक खाता सन विसंगति उपस्थित अछि। ई विवरण प्रशासनिक असावधानी आ सम्भावित प्रणालीबद्ध छल बीचक प्रश्न जन्मबैत अछि। लेखक मशीनक ठंडी प्रतिकृति भीतर मनुष्यक हाथक जल्दबाजी देखबैत छथि। विनीत कहैत छथि जे मूल पन्ना भेटला पर लिखावट-जाँच होएत। एहि शर्तसँ कथा अनुमानक रोमांच आ भौतिक सत्यापनक आवश्यकता दुनू राखैत अछि।

सोमरी काकीक रोदन : रिकार्डक भीतर पीड़ा

‘विशेष’ फोल्डरक ध्वनि-सन्देशमे सोमरी काकीक डरल स्वर सुनल जाइत अछि। तकनीकी विश्लेषणक वस्तु अचानक जीवित स्त्रीक दुःखमे बदलि जाइत अछि। जे ध्वनि-टुकड़ा अपराधी लेल डर-उत्पादनक उपकरण छल, सामूहिक सभामे ओ पीड़ितक आघातक संकेत बनैत अछि। मीरा तुरन्त भीड़ पठेबाक बदला दू स्त्रीकेँ अनुमति माँगबाक लेल पठबैत छथि। एतय कथाकार सुननाइक राजनीति स्पष्ट करैत छथि: साक्ष्य पाबलासँ ककरो पीड़ा पर अधिकार प्राप्त नहि होइत।

धुँधला चेहरा, स्पष्ट हाथ : पहिचानक अनिश्चित चित्र

विडियोमे चेहरा साफ नहि, मुदा कारी धागावला कलाई, लम्बा नह आ अँगूठीक कातक घाव देखाइत अछि। पुरान सभा-फोटोमे ध्रुवेशक सहायकक हाथसँ मिलैत चिन्ह पाठकक ध्यान आकर्षित करैत अछि। ई चेहराक अनुपस्थिति आ हाथक दृश्यता बीचक अद्भुत उलटाव अछि। उपन्यास नामक बदला कर्मक अवयवकेँ कथात्मक केन्द्र बनबैत अछि। तथापि समान कलाई वा घावसँ अन्तिम कानूनी पहिचान सिद्ध भेल मानब अतिरिक्त निष्कर्ष होएत; पाठककेँ संदेहक स्तरपर रुकब जरूरी अछि।

हँसी आ पंखाक चरमराहट : दृश्यसँ बाहरक ध्वनि

सोमरी काकी धमकीक पाछाँ दबायल हँसी स्मरण करैत छथि; नरहरी काका सेवा-केन्द्रक पंखाक अलग चरमराहट चिन्हैत छथि। एहि सूक्ष्म ध्वनि सभसँ जाँच आँखिक सीमा पार करैत कानक संसारमे पहुँचैत अछि। ध्वनि अब कथानकक स्वतन्त्र वस्तु बनैत अछि। फोटो रूप बतबैत अछि, हँसीक लय ककरो आदत आ ठामक सम्भावना। मुदा लेखक एहि पहिचान सभकेँ एकमे मिलाकऽ निश्चित मुखौटा नहि उतारैत; ओ पृष्ठभूमिक आवाजकेँ अगिला घटनाक संकेत बनबैत छथि।

दीपकक मौन : विरासत बनाम तमाशा

पोता दीपक अपन दादी रमरतियाक फोटो देखिते दूर हटि जाइत अछि; बादमे ओ कहैत अछि जे आज दादीक चेहरा नहि, नामक चोरी देखलक। ई प्रतिक्रिया अध्यायकेँ प्राविधिक अन्वेषणक ठंढापनसँ बचबैत अछि। परिवारक दुख देखबासँ दर्शकक आनन्द नहि, पीढ़ीगत लाज आ रोष उत्पन्न होइत अछि। मीरा एहि रोषकेँ अनुशासित सम्बल दैत छथि। बच्चाक उपस्थिति एहि खण्डमे बारम्बार दिखबैत अछि जे कथा-निरन्तरता केवल अपराधक खोज नहि, लोक-स्मृतिक उत्तराधिकार सेहो अछि।

अन्तमे अधखुलल चेहरा : रहस्यक नैतिक स्थगन

अध्याय हाथ, हँसी, पंखा, तिथि आ पीड़ितक स्वरकेँ एकहि खोजक रेखापर राखि समाप्त होइत अछि। पूरा चेहरा नहि भेटैत, मुदा अगिला अध्यायक शीर्षक ‘आवाजक नकाब’ उद्घाटित होइत अछि। ई अन्त्य अध्यायकेँ बिना निष्कर्षक छोड़नाइ नहि, सटीक अपूर्णतामे रोकनाइ अछि। कथाक गति एक वस्तुसँ नब प्रश्न निकालैत चलैत अछि। डिजिटल सन्दूक खुललाक बादो पात्र सभ संयमक आग्रह नहि छोड़ैत; रहस्यक नैतिक स्थगन ई खण्डक मुख्य रचनात्मक उपलब्धि अछि।

प्रकरण २८५ | मूल अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

कानक पुनःप्रवेश : दृश्य-साक्ष्यसँ ध्वनि-दृष्टि धरि

अध्याय १८३मे चित्र, अङ्गुलीक निशान आ उपकरणक समयक भूमिका बेसी छल; १८४मे पात्र सभ ध्वनिक लय, साँस, हँसी आ पंखाक तीन अटकाव सुनैत छथि। एतय कथाकार गवाहीक इन्द्रिय-क्षेत्र बदलैत छथि। फोन-धमकीक शब्द हिन्दीमे रहितो उच्चारणक स्थानीय चाल अन्वेषणक आधार बनैत अछि। मुदा विनीत झाक सावधानी—कान भावुक, यन्त्र त्रुटिपूर्ण—कथात्मक रोमांचकेँ नियन्त्रणमे रखैत अछि। एही कारण आवाजक मिलान जाँचक दिशा बनैत अछि, तुरन्त व्यक्तिक निश्चित पहिचान नहि। सुननाइ स्वयं साहित्यिक क्रिया बनैत अछि।

‘री-चेक’क अभ्यास : अपराधक नाटचशाला

पेन-ड्राइवक ‘री-चेक’ सामग्रीमे पुलिस-अधिकारी, बैंक-जाँच आ गिरफ्तारी-सूचक वाक्य अनेक स्वरमे बोलल गेल अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ ‘ठगी’ कोई एक फोन नहि रहि एकटा प्रशिक्षित प्रदर्शन बनैत अछि। पूर्वक विदेह नाट्य उत्सवमे अभिनय जेना दर्शककेँ साक्षी बनबैत छल, एतय अभिनेता-जेकाँ आवाज लोककेँ एकाकी आज्ञापालक बनबैत अछि। एही उलट सम्बन्धमे उपन्यास अपन व्यापक रंगमंचीय रूपक फेर सक्रिय करैत अछि। भूमिका बदलैत अछि, अभिनयक नैतिक अभिप्राय उलटैत अछि।

‘हम लाभ पाबि गेलहुँ’ : बोलबाओल सहमतिक ध्वनि

सोमरी काकी कहैत छथि जे सेवा-शिविरमे हुनका तीन बेर ‘हम लाभ पाबि गेलहुँ’ बोलाओल गेल, जखन हुनकर वास्तविक अवस्था ओहि वाक्यक अनुरूप नहि छल। ई छोट वाक्य कागजपर झूठी सहमति लिखबाक पुरान चालक ध्वन्यात्मक संस्करण बनैत अछि। एहि ध्वनिक भीतर देह, इच्छा आ कथित उपलब्धिक सम्बन्ध काटल गेल अछि। लेखक देखबैत छथि जे व्यक्तिक अपन स्वर सेहो ओकर अर्थसँ अलग कऽ बाजारक सम्पत्ति बनाओल जा सकैत अछि। एही सूक्ष्म हिंसासँ अंकीय प्रसंग पुरान जमीन-जालसाजीसँ जुड़ैत अछि।

सेवा-समारोहक पुरान विडियो : कालक वापसी

देविका कैं पुरान उत्सवक विडियो मोन पड़ैत अछि, जतय मंचक किनारपर युवक लाभुक सभकेँ फोटो आ अँगूठाक क्रम बतबैत छल। एखन वैह नमूना नकली फोनक शब्द-विरामसँ तुलना लेल आनल जाइत अछि। एतय भूतकालक एक सार्वजनिक प्रदर्शन वर्तमान अन्वेषणमे पुनः सक्रिय होइत अछि। पुरान दृश्यक अर्थ बदललासँ स्मृतिमे नब अन्तर्दृष्टि अबैत अछि। मगर ‘पहिने’ शब्दक समान बोली-आदत अन्तिम पहिचान नहि, मात्र खोजक सूत्र अछि; सत्यव्रत एहि संशोधनकेँ स्पष्ट रूपेँ जोड़ैत छथि।

नरहरीक पंखा : वस्तु-ध्वनिक लोकज्ञान

नरहरी काका सेवा केन्द्रक पुरान पंखाक घुर्र-घुर्र-खट लय चिन्हैत छथि आ बतबैत छथि जे ओकर एक पंखुरी टेढ़ छल। ई विवरण महत्वपूर्ण अछि: साधारण रखरखावक स्थानीय स्मृति अंकीय ध्वनि-विश्लेषणमे प्रवेश करैत

अछि। तकनीकी अधिकारी विनीत झा आ नरहरीक अनुभव परस्पर प्रतिस्पर्धी नहि, पूरक श्रवण-शक्ति बनैत अछि। पंखा केवल वातावरणक सजावट नहि; ओकर अटकैत स्वर कथाक कथित अपराध-स्थानक बीच सम्भावित रस्ता बनैत अछि। एकरा आधुनिक प्रयोगशालाक पूर्ण प्रमाण मानब नहि, मुदा कथात्मक संकेतक सूक्ष्मता अवश्य बुझब आवश्यक अछि।

बिशम्भरक ‘सर’ : एकाक्षरी मौनक नाटकीय प्रभाव

भीड़क पाछाँ ठाढ़ बिशम्भरक फोनक भीतरसँ ‘सर’ शब्द निकलैत अछि। ई एकटा छोट ध्वनि मात्र अछि, मुदा पाठक ओकरा पाछाँ व्यापक अधिकार-व्यवस्थाक आभास पबैत अछि। पात्रक भय, फोन काटबाक हड़बड़ी आ नहि पढ़ल नम्बर मिलि कऽ अनिश्चितता बढ़बैत अछि। कथाकार एकाक्षरी संकेतकेँ लम्बा अपराध-स्वीकारोक्ति जेकाँ प्रस्तुत नहि करैत। विनीत समय लिखैत छथि, निष्कर्ष नहि। एही नियंत्रित मौनमे रहस्यक दृश्य अधिक कारगर बनैत अछि।

पंखाक सम्भावित यात्रा : ध्वनिक चलायमान वास्तु

नरहरीक कथन अनुसार पुरान पंखा शहर दिस गेल हो सकैत अछि; सत्यव्रत सेवा-शिविर, स्वर-नमूना, फोन-वापसी आ शहरक धमकी-कमरा बीच रेखा खींचैत छथि। कथाकार एकटा ध्वनिकेँ स्थानक नक्शा बनाबय लेल प्रयोग करैत छथि। सामान्यतया दस्तावेज वा यात्री स्थानसँ स्थान जाइत अछि; एतय ध्वनि ओकर यात्राक कथा कहैत अछि। मुदा पंखाक अदलाबदल पुष्ट वस्तुगत शृंखला रूपमे पूर्ण नहि खुलल। समीक्षा लेल ई सम्भावित मार्ग आ सत्यापित घटना बीचक अन्तर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

स्त्री-स्वरक अनुमति : पीड़ितक कथन-अधिकार

धमकीक रिकार्डमे नाम सुनि उपस्थित स्त्री सभ आक्रोशित छथि, मुदा विनीत आ मीरा हुनका फेर आवाज रिकॉर्ड करब लेल बाध्य नहि करैत छथि। ‘स्वर-गवाही’ पन्ना केवल इच्छुक व्यक्तिक कथनसँ बनैत अछि। एहि दृश्यसँ कथा अपन पूर्वक निजता-नियमकेँ नव इन्द्रियपर लागू करैत अछि: चेहरा जेकाँ आवाजो ककरो व्यक्तिगत सम्पत्ति अछि। लेखकक फोकस केवल ठगक तकनीक खोलब नहि, पीड़ितक कथनक स्वामित्व पुनः स्थापित करब अछि।

बिशम्भरक आधा स्वीकार : अपराधक परतदार भूमिका

राति बिशम्भर मानैत अछि जे ओ नम्बर जोड़ैत, फोन उठबैत आ शहरिया ‘मास्टर’क कहबपर कखनो अपन स्वरक अभ्यास करैत छल। ई स्वीकार तंत्रक भीतर ओकर सक्रिय भूमिका दर्शबैत अछि, मुदा ‘मास्टर’क असल नाम, आदेशक सम्पूर्ण क्रम वा वित्तीय हिस्सेदारी तकरा सँ स्पष्ट नहि भऽ जाइत। पात्रक कथनमे आत्मरक्षा आ अपराध-संबन्धक संकेत एक संग अछि। भीड़ उफनैत अछि, मीरा रोकैत छथि। एहि टकरावमे उपन्यास स्वीकारोक्तिक नाटक आ न्याय-प्रक्रियाक क्रम बीचक सीमारेखा देखबैत अछि।

कारी भूत आ मशीनी डाइन : लोक-कल्पनाक नव भाषान्तरण

बूढ़बा भूत लोकक पुरान डाइन-कथाक स्वर-बदलबाक चालकेँ मशीनसँ बनल नकली आवाजक संग जोड़ैत छथि। ई तुलना तकनीकी परिघटनाकेँ अलौकिक तथ्य कहबाक प्रयत्न नहि, लोक-आख्यानक भाषामे आधुनिक भयक रूपान्तरण अछि। कारी भूत आ उज्जर प्रेत जेकाँ रूपक एतहु नैतिक विरोधक दृश्य सजैत छथि। कथा एहि बिम्बक सहारे पुरान श्रोता-समुदायकेँ नब खतरा समझेबाक सामूहिक कल्पना उपलब्ध करबैत अछि। मुदा रजिस्टरक तिथि आ आवाजक पहिचान अलग जाँचक धरातल पर रहैत अछि।

‘मास्टर’क प्रथम नाम : अगिला कक्ष दिस प्रस्थान

अध्यायक अन्तिम उपलब्धि आवाजक पूरा नकाब उतरब नहि, ‘मास्टर’ शब्दक प्रथम स्पष्ट आगमन अछि। बिशम्भरक कारी धागावला हाथ, पंखाक ध्वनि, अभ्यासक पर्ची आ शहरिया व्यक्तिक हँसी सब मिलि अज्ञात संचालकक रूपरेखा बनबैत अछि। अनन्या अगिला पन्नाक शीर्षक ‘मास्टरक कमरा’ लिखैत छथि। एहि शीर्षक-हस्तान्तरणमे महाउपन्यासक श्रृंखलाबद्ध आख्यानक लय सुरक्षित अछि। अगिला घटना कथित अपराधीक गिरफ्तारी नहि, ओकर प्रयोगक भौतिक ठाम खोजब होएत—ई भेद स्पष्ट रखबाक जरूरत अछि।

प्रकरण २८६ | मूल अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

चरमराहटक पीछा : दफ्तरसँ स्टेशनक पाछाँ

‘मास्टर’ शब्दक बाद टोली शहरक रेल-पटरी लग कमरा खोजैत अछि। अध्यायक प्रवेशमे पंखाक घुर्र-घुर्र-खट लय चन्ना गाछीक स्मृतिसँ शहरक प्रत्यक्ष स्थल धरि तानल जाइत अछि। एहि ध्वनि-सूत्रक सहारे लेखक स्थानिक दूरी घटबैत छथि: नदी, बस, बजार आ स्टेशन सब एउटहि खोजक भूगोल बनैत अछि। पंखाक आवाज कथाक मार्गनिर्देशक भऽ रहल अछि, मुदा ध्वनि सुनब स्वयं कोनो व्यक्ति पकड़ेबाक बराबर नहि; मूल पाठ लगातार संकेत आ अन्तिम पहिचानक दूरी राखैत अछि।

कमराक वस्तु : भयक उत्पादन-स्थल

स्टेशन-पाछाँक कमरामे पर्ची, रिकार्डर, स्वरक अभ्यास आ फोन-संबन्धी सामग्रीक भेटब अध्यायकेँ शिकार-सूचीक कथासँ भय बनाबयवाला कारखानाक कथा बनबैत अछि। इहाँ व्यक्तिक आवाजकेँ पिता, अधिकारी, बैंक आ पुलिसक वेशभूषामे फेर तैयार करबाक प्रयासक विवरण अछि। कथानकक वास्तविक भयानकता स्क्रीन नहि, मानवीय विश्वासक पुनःउपयोगमे अछि। कमरा यंत्र-संग्रहालय नहि, सम्बन्धक अनधिकृत सम्पादनक ठाम बनैत अछि। लेखकक तकनीकी वर्णन पात्रक पीड़ा सँ अलग नहि होइत।

‘माधवेश’ कि ‘मधवेश’ : नामक एक मात्रा

कोठरीसँ उभरैत ‘माधवेश’ आ ‘मधवेश’ रूपक अन्तर अध्यायक उल्लेखनीय नामगत अस्थिरता अछि। कथाकार एक मात्रा-परिवर्तनकेँ पंजी, भाड़ा-बही आ यात्रा-कागच बीच पहिचान लुकाबयक सम्भावना रूपमे देखबैत छथि। तथापि प्रत्येक भिन्न वर्तनी अपनहि मे षड्यंत्रक प्रमाण नहि; मैथिली-हिन्दी लिप्यन्तरण वा प्रशासनिक भूल सेहो

सम्भव अछि। समीक्षा एहि विकल्पकेँ सुरक्षित रखैत देखबैत अछि जे कथा पात्रक नामक अनेक रूपकेँ अन्वेषणक सस्पेन्स बनबैत अछि, बिना पहिनेहि सबटा समान व्यक्ति मानने।

स्टेशनक ध्वनि : गतिशील समयक संरचना

रेलक सीटी, पटरीक कम्पन आ कमराक पंखाक आवाज कथामे घड़ीक दोसर रूप अछि। रेल गुजरबाक क्षणमे कमरा काँपैत अछि; तत्समय नान्हि वस्तु आ पर्चीक स्थिति अलग अनुभव होइत अछि। लेखक ‘कहाँ?’क प्रश्नक संग ‘कहिया?’क प्रश्न चलबैत छथि। ककरो भाड़ा-बहीमे नाम, कोनो रातिक तिथि आ यात्रीक स्मृति जखन संग राखल जाइत अछि, तखन समय स्वयं कथात्मक दृश्य बनैत अछि। एहि ध्वन्यात्मक संयोजनसँ पाठकक गति तेज होइत अछि, मुदा प्रमाणक अन्तिम मिलान एखन जरूरी अछि।

बिशम्भरक उपस्थितिसँ अनुपस्थित मास्टर धरि

बिशम्भर रास्ता, कमरा आ उपकरणक ब्योरा दैत अछि, मुदा मास्टर स्वतः एहि क्षण पूरा सामने नहि अबैत। ओकरा देल आधा सूचना विश्वसनीयता आ आत्मरक्षाक मिश्रण अछि। कथाकार दृश्यकेँ सरल गिरफ्तारिक चरमोत्कर्षमे नहि बदलैत; ओ कोठरीक बचे वस्तु, पुरान पंजी आ निकसल छाहक पाछाँ चलैत अछि। अनुपस्थित व्यक्ति वस्तुक माध्यमसँ अधिक उपस्थित होइत अछि। एहि विरोधाभाससँ अध्यायक शीर्षक प्रभावी होइत अछि: ‘मास्टरक कमरा’ भेटल, ‘मास्टर’ एखन धुआँ।

पंखाक आवाजक पुनःसुननाइ : गवाहीक अनावश्यक निश्चिततासँ बचाव

नरहरी जकर पंखाक विशेष चाल चिन्हैत छथि, ओहि ध्वनिक तुलना फोन-रिकार्डसँ होइत अछि। एतय लेखक अनुभवी कान आ मशीनक सुननाइकेँ संग रखैत छथि। मुदा ध्वनिक समानताक अलग-अलग सम्भावित स्रोत हो सकैत अछि; उचित समीक्षा पंखाकेँ निर्णायक वैधानिक पहिचान नहि, कथावस्तुमे दीर्घकालीन प्रतिध्वनिक सूत्र मानैत अछि। कथाकार धीरे-धीरे विश्वसनीयता अर्जित करबाक शिल्प रचैत छथि: पहिने पंखा सुनल, फेर ओकर यात्रा सम्भावित, फेर कोठरीपर प्रश्न, आ तकर बाद नामक वर्तनीक खोज।

नकली अधिकारक नाट्य : मास्टर नामक विडम्बना

‘मास्टर’ सामान्य समाजमे शिक्षक, ज्ञानदाता वा अभ्यास करबेनिहारक सम्मानसूचक पहचान अछि। एहि कथामे वैह शब्द भयक वाक्य रटेबाक संचालक लेल प्रयुक्त होइत अछि। नामक अर्थ-उलटाव अध्यायक व्यङ्ग्यक केन्द्र अछि। अपराध-प्रशिक्षक जेना विद्यालयक अनुशासनसँ स्वरक लय बनबैत अछि, मुदा ओकर पाठ पीड़ितक विवेक बन्द करबाक लेल अछि। पूर्वक नाट्य उत्सवमे मंचनक उद्देश्य गवाहीक अधिकार जगाबब छल; एतय अभ्यासक प्रयोजन आवाजक अधिकार चोरब अछि। एहि विपरीततासँ कथा अपन दीर्घ आन्तरिक प्रतिध्वनि जोड़ैत अछि।

उपकरण आ कागचक दोहरा रस्ता

कमरा आवाजक प्रयोग बनबैत अछि, मुदा ओकर सम्बन्ध सिम-पंजी, ट्रस्टक खाता आ दफ्तरक पुरान कागचसँ अलग नहि। ई प्रसंग अभिनव साइबर घटना प्रस्तुत करैत रूपेँ शुरू होइतो व्यवस्थागत स्मृतिक धरातलपर टिकैत

अछि। कथाकार एके अपराधीकेँ केवल इलेक्ट्रॉनिक कौशलमे सीमित नहि रखैत; भूमिका, संसाधन, पुरान समाजिक पदानुक्रम आ डरक सन्दर्भ सबटा महत्त्वपूर्ण अछि। कमरा तकनीकी अलगावक स्थल नहि, अनेक माध्यमक भेट-ठाम अछि।

मास्टरक अनुपस्थिति : कथा-समयक खिंचाव

कमरा भेटिते पाठक आशा करैत अछि जे अपराधीक पूरा चेहरा तत्काल खुलि जायत। मुदा कथा नामक उलझन, भाड़ा-रजिस्टर आ बाहरी यात्राक सूत्र बढ़बैत अछि। ई स्थगन रहस्यक सम्यक् रणनीति भऽ सकैत अछि, जँ बादक अध्यायमे स्पष्ट विवरण भेटए। एहि खण्डमे एतबा निश्चित अछि जे ‘मास्टर’ भूमिकाक नाम बनल अछि; कौन व्यक्ति, कोना नियुक्त, आ कतेक अपराधक जिम्मेवार—ई प्रश्न अलग रहैत अछि। समीक्षाक भूमिका एहि तीनू प्रश्नकेँ एकहि नाममे सम्मिलित कऽ नकली निष्कर्ष नहि बनेनाइ अछि।

रेल-पटरीसँ गाम घुरब : केन्द्रक पुनर्स्थापना

शहरक खोजक बाद कथन पुनः चन्ना गाछीक स्मृति आ लोक-पाठ धरि घुरैत अछि। ई आवर्तक संरचना उपन्यासक विशेषता अछि: प्रत्येक बाहरी खोज अन्ततः समुदायक साझा रजिस्टरमे प्रवेश करैत अछि। एना शहर जाँचक एकल स्वामित्व नहि पबैत; गाम निष्कर्षक नैतिक श्रोता रहैत अछि। बाहरी कमरा घटनाक भौतिक ठाम, चन्ना गाछी ओकर समालोचनात्मक पाठशाला बनैत अछि। एहि दोहराबमे स्थानक स्थायित्व संग-संग घटनाक विस्तार बनल रहैत अछि।

अगिला नामक पहिचान : अधखुलल ठामसँ जीवनी धरि

अध्याय अन्ततः ‘मास्टर’क प्रयुक्त नाम-रूप पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। केवल धमकीक पद्धति नहि, ओ व्यक्ति कोन सामाजिक स्मृतिसँ निकलल आ अपन नाम किएक बदललक—ई नब प्रश्न उभरैत अछि। अगिला ‘मधवेशक असली नाम’ एहि कारण एकटा स्वाभाविक संक्रमण अछि। कथा पात्रक जीवनी आ अपराधक यान्त्रिकीकेँ मिलाबयक तयारी करैत अछि। नाम-अन्वेषण स्वीकारोक्तिक अन्तिम ताला नहि; जीवनीसँ विवेक, सामाजिक लाज आ अवसरक ऐतिहासिक परत जुड़बाक सम्भावना अछि।

प्रकरण २८७ | मूल अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

एक नामक चारि रूप : पहिचानक कथात्मक क्रम

पुरान विद्यालयक नामावली, नाटकक दिनक छवि, छात्रवृत्ति-प्रपत्र, भाड़ा-रजिस्टर आ लोकक स्मृति जोड़ि एक क्रम उभरैत अछि—मधुकर माधव मिश्र, माधवेश, मधवेश, मास्टर। एहि क्रममे नाम पहचानक स्थिर प्रमाण नहि, समयसँ बदलैत सामाजिक भूमिका बनैत अछि। गामक नेना, शहरक प्रवासी, तकनीकी प्रशिक्षक आ कथित अपराध-जालक कलाकार—ई चारि छवि एक व्यक्ति सँ सम्बन्धित हो सकबाक आधार बनैत अछि। कथाकार नामकेँ केवल रहस्य-सूत्र नहि, जीवनीक खण्डित अनुक्रम बनबैत छथि।

विद्यालयक पंजी : शहरक मुखौटाक पूर्वकथा

कथामे नगरक अपराधक पछुअाति विद्यालयक पुरान नामावली आ छात्रवृत्तिक पन्ना पढ़ल जाइत अछि। ई समय-परिवर्तन अपराधीक आरम्भिक जीवन पर प्रकाश देबाक प्रयत्न अछि। पन्द्रह बरख पुरान सर्वे-पंजी जेकाँ, विद्यालयक कागच फेर अतीतकेँ वर्तमानमे लौटबैत अछि। मुदा बचपनक स्वर-अनुकरणक प्रतिभा स्वतः भावी अपराधक भविष्यवाणी नहि; कथा ओकर सम्भावित दुरुपयोगक ऐतिहासिक बाट खोजैत अछि। अध्ययनक लेल प्रतिभा, अवसर आ बादक निर्णय बीचक भेद राखब आवश्यक अछि।

नाटकक पुरान फोटो : कला आ छलक अन्तर

बाल्यावस्थामे मंचपर आवाज बदलबाक अभ्यासक वर्णन आधुनिक धमकीक नकल-स्वरसँ स्मृतिगत सम्बन्ध बनबैत अछि। एहि जोड़िमे पुरान विदेह नाट्य उत्सवक आलोचनात्मक अर्थ फेर लौटैत अछि। कला मनुष्यक अनुभूतिक विस्तार करबैत अछि, मुदा वैह कौशल जँ भय बेचबाक पद्धतिमे लगाओल जाय, तँ ओकर अभिप्राय उलटि जाइत अछि। कथाकार अभिनयकेँ मूलतः अपराधी नहि मानैत; ओ दर्शकक सहमति आ प्रदर्शनक उद्देश्यक आधारपर नैतिक अर्थ निर्धारित करैत छथि। बालकक कला आ वयस्कक छलबीच एक सोझ नियतिवादी रेखा खींचब अनुचित होएत।

कातकी स्त्रीक स्मृति : अनौपचारिक इतिहासक स्रोत

गामक पड़ोसिनक कथन, माताक पुरान व्यवहार आ देबालपर कोयलासँ लिखल आधा वाक्य विद्यालयक दस्तावेजकेँ भावनात्मक गहराइ दैत अछि। पात्रक सामाजिक इतिहास केवल सरकारी रिकॉर्डसँ नहि, घरक मौन, पड़ोसिक गवाही आ लाजसँ सेहो बनैत अछि। कथाकार छोट साक्षीकेँ महत्त्व दैत छथि। मुदा कोयलासँ लिखल वाक्यक लेखकक सम्बन्ध स्वयं अनिश्चित रहल अछि; ई वस्तु अभियुक्तक भावी मनोविज्ञानक निर्णायक प्रमाण नहि, लोकस्मृतिक व्यंजना बनैत अछि।

‘आवाज बेचब नहि’ : मातृस्वरक प्रतिलोम

पुरान देबालपर बचल ‘आवाज बेचब नहि’ लिखावट कथाक अनोखा नैतिक प्रतिरूप अछि। अपराध-जालमे जकर तकनीक आवाजक व्यापार अछि, ओकर आरम्भिक स्मृतिमे आवाजक अविक्रेयता लिखल भेटैत अछि। ई विरोधाभास पात्रकेँ सरलीकृत राक्षसी छविसँ अलग करैत अछि। आवाजक कौशल समाजक बीच पहचानक साधन छल, बादमे ओ अवैध आयक साधन बनल—एहना कथा सम्भावित परिवर्तनक करुण रेखा उभारैत अछि। मुदा लिखावट ककर, ई अपुष्ट; लेखक ई अनिश्चितता छोड़ि पाठकसँ विचार करबबैत छथि।

बिशम्भरक कथन : आत्म-नाम बदलबाक इच्छा

बिशम्भर कहैत अछि जे मास्टर अपन पुरान ‘मधुकर’ नामसँ गरीबी, गाम आ माताक स्मृति जुड़ल बुझैत छल, जबकि ‘मधवेश’ ओकरा शहरक प्रतिष्ठित विश्वासक वेश दैत छल। एहि कथनमे नाम-परिवर्तन सामाजिक लाजक भाषिक अभिनय बनैत अछि। पर बिशम्भर स्वयं अधूरा स्वीकार देनिहार सम्बद्ध पात्र अछि; ताहि कारण ओकर

व्याख्या एक कथन-स्रोत अछि, लेखकक सर्वज्ञ अन्तिम निर्णय नहि। ई भेद राखबासँ व्यक्तिगत लाजक कथा अपराधक सम्पूर्ण जिम्मेदारीकेँ ढाँपि नहि दैत।

‘मधुकर’ आ मधुमक्खीक ध्वनि : प्रतीकक जन्म

मधुकर नामसँ मधुमक्खीक भनभनाहट, मधु आ जहरक रूपक उभरैत अछि। गाछीक सन्ध्याक चित्रमे अदृश्य मधुमक्खी सभक चर्चा पात्रक लोक-कल्पना जेकाँ चलैत अछि। ‘मधु’ मीठ सामाजिक भरोसा, ‘जहर’ ओकर शोषक उपयोगक दोहरा अर्थ ग्रहण करैत अछि। कथाकार वास्तविक मधुमक्खीपालनक घटना नहि कहैत; ओ नामक ध्वनिसँ अगिला ‘छत्ताक भीतरक रानी’ शीर्षक तैयार करैत छथि। ई ध्वन्यात्मक संक्रमण श्रृंखलाबद्ध महाकथामे नब प्रतीक-परिवार बनबैत अछि।

पुष्टि शेष : जीवनीक अधूरा मानचित्र

विनीतक बनाओल रेखामे मास्टर, हरिहर सेवा केन्द्र, ध्रुवेशक जाल, स्टेशनक कमरा आ सिम–ट्रस्टक सम्बन्ध क्रमबद्ध अछि, मुदा महेश्वरक भूमिका, बैंकक धन-प्रवाह आ यात्रा-संबन्धक पुष्टिक कमी सेहो लिखल गेल अछि। ई स्पष्ट अपूर्णता महत्त्वपूर्ण अछि। ‘असली नाम’ शीर्षकक बावजूद अध्याय अन्तिम अभियोग नहि बनबैत; केवल पहिचानक मजबूत सम्भावना रचैत अछि। न्यायिक निश्चय आ साहित्यिक रहस्य-उद्घाटन अलग स्तर पर स्थित अछि।

दीपकक प्रश्न : अपराधक भूमिकानाम बनाम व्यक्तिनाम

दीपक पूछैत अछि जे जँ व्यक्ति मधुकर अछि, तँ ओकरा मास्टर किएक कहब। मीराक उत्तरमे सरकारी पहिचान, लोकस्मृतिमे प्रचलित नाम आ अपराधक भूमिका अलग रखबाक आग्रह अछि। एतय बच्चाक सहज प्रश्न कथात्मक शास्त्र बनि जाइत अछि: नाम केवल एक ध्वनि नहि; समाजक अनेक सन्दर्भमे ओकर अर्थ बदलैत अछि। कथाकार एकल सर्वज्ञ नाम देबासँ बचैत पात्रक विविध सम्बन्धकेँ सुरक्षित करैत छथि। एहि बहुनामक अर्थ राजनीतिक सेहो अछि, कारण नामक परिवर्तन उत्तरदायित्वक ठाम बदलि सकैत अछि।

मधुकरक अनुपस्थिति : जीवनी उपलब्ध, व्यक्ति अनदेखल

विद्यालयक कागच, फोटो आ भाड़ा-पंजीक संगति उभरला परो मधुकर अपन सम्पूर्ण प्रत्यक्ष उपस्थिति नहि दैत। कथाक केन्द्रमे अनुपस्थित देह आ उपस्थित अभिलेखक द्वन्द्व बचल अछि। अतीतक नेना, वर्तमानक मास्टर आ सम्भावित संचालकक मध्य दूरी पाठककेँ याद दिलबैत अछि जे व्यक्ति अनेक कथनक जोड़सँ निर्मित अछि। कहानी एखन अपराधक आर्थिक शिखर धरि नहि पहुँचल। ई अपूर्ण जीवन-वृत्त अगिला अध्यायक प्रश्न बनैत अछि—जहरक मधु कतय जमा होइत अछि?

अगिला छत्ता : व्यक्तिगत पहचानसँ संरचनात्मक शक्ति

अध्यायक अन्तमे बूढ़बा भूत एक मधुमक्खी पकड़ेने पूर्ण जाल नहि रुकबाक रूपक दैत छथि। एहि भाषामे व्यक्तिक पकड़ेबाक इच्छा आ संस्थागत जालक व्यापकता बीचक तनाव व्यक्त अछि। ‘छत्ताक भीतरक रानी’

अगिला शीर्षक बनब उपन्यासक नब केन्द्र खोलैत अछि: मास्टर जे स्वर बनबैत छल, तकर लाभ कतय आ ककर नामपर पहुँचैत अछि? एना व्यक्तिनामसँ वित्तीय आवरणक जांच दिस कथा स्वाभाविक रूपेँ मुड़ैत अछि।

प्रकरण २८८ | मूल अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

मधुमक्खीक छत्ता : नामक भ्रामक स्त्रीरूप

‘रानी’ शब्द सहज रूपमे कोनो स्त्रीक व्यक्तिगत अपराधी पहिचानक आशा जगा सकैत अछि। मीरा अध्यायक आरम्भमे स्पष्ट करैत छथि जे एहन अनुमानक आधारपर कोनो स्त्री पर आरोप नहि लगाओल जाएत। एहि रोकसँ कथाकार प्रतीक आ वास्तविक पात्र बीचक भेद सुरक्षित करैत छथि। मधुकरक मधु, छत्ताक धन आ रानीक आदेश—ई रूपक कथामे आर्थिक नियन्त्रणक प्रश्न उभारैत अछि, मुदा ‘रानी’ स्वयं एक व्यक्तिक नाम सिद्ध नहि। ई सूक्ष्म अन्तर आख्यानक नैतिक आधार बनैत अछि।

‘फूल-मधु-रानी’ : अपराधक स्वलिखित संरचना

मास्टरक उपकरणसँ भेटल सारणीमे ‘फूल’क पाँतिमे सिम, आवाज, फोटो आ लाभुक; ‘मधु’मे रकम आ कटौती; ‘रानी’मे अनेक कोड आ न्यासक संकेत अछि। ई तीन खण्ड लेखकक बनाओल उपमा मात्र नहि, कथाविश्वक भीतर भेटल नामाङ्कन अछि। कथा इहो देखबैत अछि जे अपराधी अपन क्रियाक लेल सौन्दर्यपूर्ण रूपक लेबैत अछि। ‘फूल’ पीड़ितक नामक स्रोत बनैत अछि, ‘मधु’ निकासल धन, आ ‘रानी’ धनक आवरण—प्रत्येक सुंदर शब्दक पाछाँ हिंसक उपयोग नुकायल रहैत अछि।

छोट रकमसँ पैघ जमाव : आर्थिक समयक आरोह

अंकीय अपराध शाखाक अधिकारी छोट हस्तान्तरणसभक बाद एके दिन पैघ रकम जमा होयबाक क्रम देखबैत छथि। ई ग्राफ-विहीन आर्थिक आरोह कथाक चरम बिन्दु रचैत अछि। रकमक मात्रा काव्यात्मक छत्ता-रूपकेँ भौतिक भार प्रदान करैत अछि। तहियो रकमक धार देखब आ ओकर अन्तिम स्वामी चिन्हब अलग बात अछि। कथाकार पहिने धनक आवागमन, फेर खाताधारकक पहिचान, तकर बाद आदेशक नामक खोज रखैत छथि; एही क्रममे वित्तीय रहस्य दीर्घ उपन्यासक विस्तार ग्रहण करैत अछि।

रानी देवीक घर : बैंकक छविसँ जीवित मनुष्य धरि

हरिपुर कटानक बहत्तर बरखक रानी देवीक नाम खाते पर भेटैत अछि। भीड़क पहिल प्रतिक्रिया संदिग्ध अछि, मुदा टोली हुनकर घर पहुँचि अन्न सुखबैत वृद्धाक प्रत्यक्ष जीवन देखैत अछि। बहीक खाताधारक आ रेतपर बसल दवाईक खाली पन्नीवाली स्त्रीबीच दूरी नाटकीय अछि। ई दृश्य संख्या-आधारित संशयकेँ देहक वस्तुस्थितिसँ टकरबैत अछि। रानीक अँगूठाक रूप आ खाताक छापक अन्तर तखन वास्तविक प्रश्न बनैत अछि। वृद्धाकेँ अपराधिनी घोषित कऽ देनाइ कथा स्वयं रोकैत अछि।

‘यन्त्र खराब’ कहि अंगूठाक तीन बेर उपयोग

रानी देवीक पोता कहैत अछि जे सेवा केन्द्रमे दादीक हाथ तीन बेर शीशाक पट्टीपर लगाओल गेल, कारण यन्त्र खराब बताओल गेल छल। ई कथन तकनीकी सहायता आ जैविक पहचानक सम्भावित दुरुपयोग बीचक क्रूर भेद देखबैत अछि। कथाकार बालकक स्मृतिसँ घटनाकेँ खोलैत छथि, यन्त्रक वास्तविक तकनीकी विवरण पूर्ण प्रमाणित रूपमे नहि दैत। एहि सावधानीक बावजूद दृश्यक सामाजिक अर्थ तीक्ष्ण अछि: बूढ़ स्त्री अपन नामक प्राविधिक उपयोगपर नियन्त्रण नहि राखि सकलीह।

रानी कुमारी आ कागजी समिति : एक नामक अनेक देह

‘रानी’क दोसर ठाम रानी कुमारी छथि, जे परदेश गेल छलीह; तेसर ठाम ‘रानी महिला सहायता समिति’ अछि, जकर कार्यालयक वास्तविक उपस्थिति संदिग्ध। तीनू नाम जोड़िते लेखक देखबैत छथि जे एक शब्दक आड़िमे अलग-अलग कागजी अस्तित्व चलि सकैत अछि। ‘रानी’का रूपकेँ एक अनाम स्त्री अपराधी घोषित करब असम्भव भऽ जाइत अछि। इहाँ कथात्मक मोड़ अपराधक व्यक्तिकेँ नहि, स्त्रीनामक संस्थागत उपयोगकेँ केन्द्र बनबैत अछि।

बिशम्भरक वाक्य आ महेश्वरनाथ सेवक

बिशम्भर कहैत अछि जे ‘रानी’ नाम मास्टर नहि, ऊपरक महेश्वर बाबूक निर्देशसँ आयल। समिति-पंजीक छविमे ‘महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक’क नाम आ नील मोहरक उल्लेख भेटैत अछि। एहि दू स्रोतक जोड़ पूर्वक अनिश्चित ‘महेश्वर’क दिशा अधिक स्पष्ट करैत अछि। मुदा बिशम्भरक कथन आ पंजीक पद-नामसँ समस्त आर्थिक अपराधक नियन्त्रण महेश्वरनाथ पर अन्तिम रूपेँ सिद्ध नहि होइत। लेखकक समयबद्ध उद्घाटन अपन नब शिखर बनबैत अछि, तइयो जाँचक रिक्ति सुरक्षित रहैत अछि।

स्त्रीनामक औजार बनबाक संरचनात्मक आलोचना

कथामे नाम चोरब पहिने मृतकक कागच आ फोनक सिममे छल; आब वृद्धा, परदेशी युवती आ महिलासमितिक आवरणमे पहुँचैत अछि। स्त्रीक मान, साक्षरता आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ अपराधी सुरक्षित ढाल बुझैत अछि—एहन कथन बिशम्भरक मार्फत उभरैत अछि। ई लैंगिक शोषणक अलग प्रविधि अछि: स्त्रीकेँ पाछाँ रखि ओकर नाम आगे चलाओल। मीरा नाम-साफ करबाक सूची बनबैत छथि, जाहिसँ जाँच स्वयं गलत दोषारोपणक अगिला हिंसा नहि बनय।

अपराधी पकड़ब आ निर्दोषक नाम बचब : कथाक दू समय

रानी देवीक पोता दादीक नाम साफ करबाक आग्रह करैत अछि। एहि माँगसँ कथा दण्डक भविष्यकाल आ सम्मानक वर्तमानकाल अलग करैत अछि। अपराधक असल सञ्चालक पकड़ायब देरी भऽ सकैत अछि, मुदा निर्दोषक नामपर लागल शङ्काक सामाजिक मूल्य तत्क्षण चुकाएब पड़ैत अछि। ‘नाम-शुद्धि सूची’क प्रवेश एहि कारण नब कथात्मक संस्था बनैत अछि। चन्ना गाछीक अदालत फैसला नहि सुनाबितो पीड़ितक पहिचान पुनःस्थापित करबाक सार्वजनिक क्रिया करैत अछि।

कारी-उज्जर प्रेत आ छत्ताक बिम्ब : कल्पना आ जाँचक सहअस्तित्व

रातिक गाछीमे कारी भूत, उज्जर प्रेत आ भनभनाहटक वर्णन अपराधक नैतिक अन्हारकेँ दृश्य बनबैत अछि। मुदा तकर लग राखल रानीक खाता, पोताक बयान, अंगूठाक तुलना आ समिति-पंजी एहन भौतिक सामग्री अछि, जे कथाक जाँच-पथ पर भिन्न श्रेणीक तथ्य अछि। जादुई यथार्थवाद एतय प्रमाण नहि जोड़ैत; ओ पीढ़ीगत भय आ स्मृतिक अनुभूति गाढ़ करैत अछि। एहि भेदसँ उपन्यासक अलौकिकता ओकर सामाजिक यथार्थकेँ विस्थापित नहि करैत।

‘महेश्वरक मोहर’ दिस अगिला संक्रमण

अध्यायक अन्तमे मधुकरक स्वर-निर्माण, ध्रुवेशक सेवा-जाल, रानी-खाता आ महेश्वरनाथक मोहर एक सशर्त सम्बन्धमे राखल जाइत अछि। अनन्या अगिला पन्ना ‘महेश्वरक मोहर’ नामे खोलैत छथि। ई शीर्षक पाठककेँ संकेत दैत अछि जे आर्थिक छत्ताक भीतरक वास्तविक निर्णय-श्रृंखला एखन शेष अछि। कथा कोनो काल्पनिक निश्चय द्वारा ‘रानी’क पहेलीक अन्त नहि बनबैत; ओ अनेक स्त्री-नामकेँ निर्दोषताक सम्भावना संग सुरक्षित करैत अगिला हस्ताक्षर आ आदेशक स्रोत खोजबाक बाट चुनैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : शहरक खातासँ छत्ताक भीतरक रानी धरि

शहरक खातासँ छत्ताक भीतरक रानी धरि आठ अध्यायक प्रवाह एके समयमे स्थानक विस्तार आ प्रमाणक सूक्ष्मीकरण करैत अछि। चन्ना गाछीक माटिक रेखा शहरक लेखाकारक खातामे पबैत अछि; खाताक नम्बर बस-ठाढ़ीक सिम-दुकान लग पहुँचैत अछि; सिम-सूची हरिहर सेवा केन्द्रक पेन-ड्राइवक बाट खोलैत अछि। तकर बाद चित्रसँ आवाज, आवाजसँ पंखा, पंखासँ स्टेशनक कमरा, कमरासँ बहुनाम आ अन्ततः बहुनामसँ आर्थिक छत्ता धरि कथा क्रमशः बढ़ैत अछि। प्रत्येक अध्याय एक वस्तु अगिला अध्यायक हाथमे दैत समाप्त होइत अछि। एहि वस्तु-अनुक्रमक बलपर दीर्घ आख्यानक विस्तार टिकल अछि; एकदम नव घटना उत्पन्न करबाक बदला पूर्ववत् घटना क्रमशः नब माध्यममे प्रत्यक्ष होइत अछि।

समयक उपयोग सेहो बहुपरत अछि। शहरक खातामे जमीनक तिथि ट्रस्टक रकमसँ टकराइत अछि; सिमक प्रपत्र वर्तमान धमकीकेँ मृत रमरतिया देवीक पुरान तस्वीरसँ जोड़ैत अछि; सेवा-शिविरक फोटो आ बैंकक संदेशक समय-मोहर मिलैत अछि; मास्टरक विद्यालय-नामावली अपराधक कथित वर्तमानकेँ बाल्यकाल धरि घुरबैत अछि। एहि प्रतिगामी आन्दोलनमे मूल उपन्यासक समय केवल क्रमबद्ध दिन-राति नहि रहि स्मृतिक पुनर्पाठ बनैत अछि। जे वस्तु पहिने ‘दान’क चिन्ह छल, से जाँचक दौरान ‘अधिकारक सम्भावित अपहरण’क चिन्ह बनैत अछि। लेखक घटनाक पुनरावृत्ति मात्र नहि करैत; ओ ओकरा पढ़बाक काल बदलैत छथि।

कथन-दृष्टिक वितरण एहि खण्डक विशेषता अछि। शान्ति शहरक खातामे खेतक माटि लैत छथि; अनन्या नम्बर, तिथि आ गवाहक भाषा लिखैत छथि; आरुणि चिह्नक बीचक रिक्ति पर प्रश्न करैत अछि; देविका फोटो आ आवाजक प्रदर्शनात्मक गुण देखैत छथि; मीरा अनुमान आ सिद्ध कथन बीच मर्यादा राखैत छथि; सत्यव्रत पुरान बरामदाक थकानसँ आधुनिक अभिलेखक विवेक धरि बढ़ैत छथि। नरहरीक पंखाक स्मृति आ माधवक भतिजाक

सहज प्रश्न विशेषज्ञ-ज्ञानक एकाधिकार तोड़ैत अछि। कथनक अधिकार कोनो एक सर्वज्ञ नायकमे केन्द्रित नहि, परस्पर जाँच करनिहार सामाजिक स्वरसभमे वितरित अछि।

अंकीय ठगीक प्रस्तुति एतय विशेष रूपसँ नाट्यशास्त्रीय अर्थ राखैत अछि, मुदा समीक्षा विशुद्ध आख्यानशास्त्रीय धरातलपर रहैत अछि। फोनपर पुलिस, बैंक वा बेटाक स्वर बनौनाइ भूमिकाक अभिनय अछि; ‘री-चेक’क अभ्यास निर्देशित संवाद अछि; झूठी सहायता-तस्वीर दर्शक लेल बनाओल मंच अछि। एहि अभिनयक समक्ष पुरान विदेह नाट्य उत्सवक स्मृति प्रतिपक्ष रचैत अछि—ओतय दर्शक साक्षी बनय चाहैत छल, एतय पीड़ितक स्वतन्त्र निर्णय बन्द कएल जाइत अछि। ई विपरीतता कथामे आत्म-सन्दर्भक रूप बनैत अछि; कोनो पात्रक वास्तविक अपराधक निष्कर्ष केवल अभिनयक समानतासँ नहि निकलैत।

आठ अध्यायमे वस्तु-रूपकक शृंखला उल्लेखनीय अछि। शान्तिक चादर ट्रस्टक लेखाक ठंढापनकेँ देह दैत अछि; लाल सिम-बक्सा मृतकक चोराओल नाम रखैत अछि; पेन-ड्राइव डिजिटल संदूक अछि; पंखाक चरमराहट ध्वनिक पगचिन्ह अछि; विद्यालयक पंजी ‘मास्टर’क सम्भावित पुरान देह देखबैत अछि; मधुमक्खीक छत्ता लाभक जटिल संग्रहक बिम्ब अछि। गोहि, कारी भूत आ उज्जर प्रेत एहि वस्तुगत संसारक कातमे कल्पनाक नैतिक प्रतिध्वनि बनि रहैत छथि। कविता आ दृश्य ई अपराधक मानसिक ताप बढ़बैत अछि, मुदा भौतिक तथ्यक पुष्टि लेल पात्र सभ अलग रजिस्टर आ दस्तावेज पढ़ैत छथि।

एहि खण्डमे अनिश्चितता संरचनात्मक ढंगसँ सुरक्षित अछि। ‘रा.चं.ल.’क पूरा अर्थ नहि खुलल, बिशम्भरक हस्ताक्षर-जेकाँ रेखा मात्र शङ्का अछि, हाथक घाव आ पंखाक आवाज भौतिक मिलानक संकेत छथि, ‘माधवेश/मधवेश’क नामगत रूपान्तर पहिचानक प्रश्न अछि। अध्याय १८६ ‘मधुकर माधव मिश्र’क सशक्त जीवनीगत सम्बन्ध प्रस्तुत करैत अछि, मुदा महेश्वर, ट्रस्ट आ धन-प्रवाहक शेष पुष्टिक आवश्यकता लिखैत अछि। अध्याय १८७ ‘रानी’ नामकेँ एक स्त्री अपराधी बनाबयक सहज प्रवृत्तिक प्रतिकार करैत अछि। रानी देवी, रानी कुमारी आ कागजी समितिक कथामे निर्दोष नामक सफाइ स्वयं आलोचनात्मक उपलब्धि बनैत अछि।

अन्तिम प्रभाव न्यायिक विजयक घोषणासँ बेसी कथात्मक जिम्मेदारीक विकास अछि। जाँचक दौरान पीड़ितक तस्वीर बिनु अनुमति नहि पसारब, आवाजक नमूना पुनः रिकॉर्ड करबाक बाध्यता नहि बनाबब, मूल अभिलेख सुरक्षित राखब, आ सुनल–देखल–सम्भावित कथन अलग करब—ई सभ केवल पात्रक नैतिक भाषण नहि, घटनाक चाल निर्धारित करनिहार रचनात्मक नियम अछि। अध्याय १८७क ‘महेश्वरक मोहर’ दिस मुड़नाइ दर्शबैत अछि जे छत्ताक रानी अन्तिम व्यक्ति नहि; छत्ता बनौनिहारक हाथक खोज शेष अछि। एहि अर्थमे खण्ड समापनक बदला जिम्मेदार अपूर्णता प्राप्त करैत अछि।

प्रकरण २८९ | मूल अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

नील घावक रूपक आ अध्यायक प्रवेश

अध्याय १८७मे ‘रानी’ नामक बहुस्तरीय खातासभ स्त्रीक वास्तविक दोष नहि, ओकर पहिचानक दुरुपयोगक सम्भावना खोलने छल। अध्याय १८८ एहि अन्वेषणकेँ महेश्वरनाथ सेवकक नील गोल मुहर धरि लऽ जाइत अछि।

कथाकार कागचक देह पर छापकेँ ‘घाव’ बनबैत छथि; एतय दस्तावेज निर्जीव पृष्ठ नहि, इतिहासक मार सहैत शरीर अछि। एहि रूपकक सफलता एतबे नहि जे ओ क्रोध जगबैत अछि, बल्कि ई जे एकहि चिन्ह लगल तीन पृथक् कागचक कथात्मक सम्बन्ध पाठकक सोझाँ राखैत अछि।

तीन कागचक संयुक्त दृश्य

सत्यव्रत मेहता रानी महिला सहायता समितिक अनुमोदन, हरिहर सेवा केन्द्रक प्रशिक्षण-प्रमाणपत्र आ सामूहिक बैंक खाताक परिचय-पत्र एके पाथर पर राखैत छथि। कथाक कैमरा कोनो एक व्यक्तिक चेहरापर नहि, तीनू दस्तावेजक समान मुहर पर स्थिर होइत अछि। एकहि गोलाईक भीतर ‘महेश्वरनाथ’, ‘महेश्वर नाथ’ आ ‘म. न. सेवक’क भिन्न लिखाबट देखाओल गेल अछि। ई दृश्य दृष्यमान साम्यसँ कथा आगाँ बढ़बैत अछि, मुदा मूल मुहर, नकल साँचा अथवा बादमे फेर बनल छाप—ई विकल्प खुलल राखैत अछि।

महेसरसँ महेश्वर धरि बहुनाम

नरहरी काकाक स्मृतिमे महेश्वर बालपनमे ‘महेसर’ छल, फेर ‘महेश्वर’, ‘महेश्वरनाथ’ आ अन्ततः ‘सेवक’क उपाधि ग्रहण केलक। अनन्या एहि नामसभकेँ विकास वा परदाक प्रश्नक रूपमे पञ्जीबद्ध करैत अछि। नामक क्रम आत्म-निर्माणक सामाजिक कथा सेहो बनि सकैत अछि आ अधिकार-छलावरणक औजार सेहो; मूल पाठ कोनो एक अर्थकेँ तुरन्त निर्णायक नहि बनबैत। पूर्वक अध्यायमे मधुकरक ‘मधवेश’ नाम बदलनाइ आ एहि नाम-परिवर्तनमे साम्य अछि, मुदा पात्रसभक उद्देश्य एक जेकाँ मानि लेब समीक्षात्मक सरलीकरण हएत।

बजरंग मुद्राकारक शिल्प-दृष्टि

बजरंग मुद्राकार कथामे केन्द्रीय अधिकारी नहि, पुरान बाजारक एक वृद्ध कारीगर छथि। हुनकर हाथ काँपैत अछि, मुदा अक्षरक कटाई देखबाक अभ्यास टिकायल अछि; ई शारीरिक दुर्बलता आ शिल्पगत दृष्टिक प्रतिपक्ष अछि। ओ मुहरकेँ हाथक बनल नहि, यन्त्रक साँचा बतबैत छथि आ स्टेशन-पाछाँक गलीक सम्भावित उत्पादन-स्थल दिस संकेत करैत छथि। हुनकर स्मृति स्रोतक मान पबैत अछि, तथापि ध्रुव कि ध्रुवेशक ‘चेला’ होयबाक स्मृति अस्पष्ट अछि। उपन्यास हुनकर कारीगरीकेँ प्रश्न उठेबाक साधन बनबैत अछि, न्यायिक निष्कर्ष नहि।

बिल संख्या आ वस्तुक पुनरावृत्ति

विनीत झा जे बिल-क्रम ४४६, ४४७, ४४८क उल्लेख अनैत छथि, ओ अध्यायक रोमांचक गतिकेँ संख्याक ठोस अनुशासन दैत अछि। गोल, छोट आ समिति-मुहर एकहि दिन बनल होयबाक संकेत दृश्य-पुनरावृत्तिकेँ व्यवहारिक लेनदेनसँ जोड़ैत अछि। मुदा ग्राहक नाम ‘सेवा केन्द्र’ अछि, भुगतान नकद; अतः एहि बिलसँ महेश्वर वा ध्रुवेशक आदेश अपने-आप सिद्ध नहि होइत। संख्या ओ कथात्मक पायदान अछि जाहिसँ पुरान आवाज-अनुकरणक गली आ वर्तमान बैंक-दस्तावेजक बीच सम्भावित बाट बनैत अछि।

कागजक समय उलटनाइ

बैंक-परिचयक मुहरक तिथि अनुमोदन-पत्रसँ पाँच दिन पहिने देखाओल जाइत अछि। ई अध्यायक असल कालगत असङ्गति नहि, कथाक भीतर देखायल दस्तावेजी असम्भवता अछि, जे स्वयं पात्रसभक जाँचक कारण बनैत अछि। लेखक समयक सीध रेखाकेँ उनटाकऽ देखबैत छथि: पहिने लाभ अथवा खाता, बादमे अधिकारक कागच। एहन ‘पश्चात्-वैधीकरण’क सम्भावना सँ पाठक बुझैत अछि जे अपराधक नाटकमे वाक्यक बाद क्रिया नहि, क्रियाक बाद वाक्य बनाओल जाइत अछि। तथापि तिथि-पत्रक सत्यापन आवश्यक रहैत अछि।

स्त्री-गवाही आ नामक मर्यादा

तीन गामक स्त्रीसभ समितिमे अपन नाम, राशनक अंगूठा, पेंशन-सुधारक बहाना आ बेटी लेल छात्रवृत्तिक फोटो सँ सम्बन्धित अनुभव बजैत छथि। कथाकार एकर उपयोग महेश्वरकेँ तुरन्त दोषी घोषित करबाक लेल नहि करैत; मीरा अलग परिवारक अलग कागच सुरक्षित रखैत छथि। रानी देवीक नाम पहिनहिसँ आर्थिक आवरण बनल छल, आब एहि गवाहीसँ नील छाप स्त्रीक रोजमर्रा आशा सँ जुड़ैत अछि। स्त्रीसभ कथाक वस्तु नहि, सहमतिक मूल अर्थ जाँचनिहार वाचक बनैत छथि।

कुंजी-रक्षकक अनपेक्षित परिचय

हरिहर सेवा केन्द्रक पुरान दान-पुस्तिकामे महेश्वरनाथक परिचय ‘कोषाध्यक्ष’ नहि, ‘कुंजी-रक्षक’ रूपमे आयल अछि। ई छोट पदनाम पाठकक अपेक्षा बदलैत अछि: संदेह अब खाता लिखनिहारसँ वस्तु आ खाली पत्र-मस्तक रखनिहार धरि सरकैत अछि। नरहरीक स्मृतिमे संस्थाक लोहाँक पेटी, पहिनेसँ हस्ताक्षरित खाली प्रमाणपत्र आ बादमे भरल नामक व्यवस्था उभरैत अछि। कथाक कारण-क्रममे ई पूर्वसूचनाक तत्त्व अछि—जकर वस्तुगत परीक्षण अगिला अध्यायक कार्य बनैत अछि।

नील स्याहीक दोसर जीवन

बजरंग मुद्राकारक कथन जे विशेष नील स्याही फोटोमे साफ देखेबाक लेल मँगाओल जाइत छल, भौतिक छापकेँ अंकीय छविसँ जोड़ैत अछि। मोहर केवल मूल कागचपर नहि, फोनक स्क्रीनमे देखायल कथित आदेशपर सेहो प्रभाव उत्पन्न कऽ सकैत अछि। दीपक अपन दादीक फोनक आदेश ओहि मुहरसँ जुड़ल छल कि नहि पूछैत अछि, मुदा विनीतक सम्भावना आ मीराक ‘मिलान शेष’ बीचक अन्तर कथनक विश्वसनीयता बचबैत अछि। एहि ठाम माध्यम बदलैत अछि; छापसँ उत्पन्न डरक सामाजिक सूत्र वैह रहैत अछि।

गदाधरक कुंजी आ नैतिक मोड़

पुरान चौकीदार गदाधर लाठी टेकैत आबि भण्डार-घरक लोहाँक पेटी अखनहुँ रहल बतबैत छथि आ जङ लागल कुंजी सार्वजनिक पाथरपर राखैत छथि। जे व्यक्ति एखन धरि स्मृति नहि रहबाक बात कहैत रहल, ओ स्वयं वस्तु प्रस्तुत करैत अछि; ई कथात्मक स्वीकारोक्ति नाटकीय ऊँच स्वरमे नहि, नान्हि धातुक भारमे घटैत अछि। भूतसभक कुंजी दिस झुकब लोकविश्वासक दृश्य अछि, मुदा वास्तविक निर्णय पंचायत, पुलिस, बैंक-प्रतिनिधि आ स्त्री-समितिक उपस्थिति सुनिश्चित करबाक अछि। चमत्कार प्रक्रियाकेँ बदलैत नहि।

अन्तिम प्रश्न आ अध्यायान्तरक सन्धि

अध्यायक अन्त लोहाँक पेटी खुलबासँ पहिने भऽ जाइत अछि। तीन रूपक—नील घाव, हरियर पात आ जङ लागल कुंजी—पाठककेँ छापक इतिहासक भीतर उतरबाक प्रत्याशा दैत अछि। ‘महेश्वर’क नाम पूर्वक सर्वे-पंजीमे दर्ज महेश्वर मिश्र नामसँ मिलैत-जुलैत रहितो एके व्यक्ति होयबाक पुष्टि एतय नहि अछि; महेश्वरनाथ सेवकक समिति-भूमिका पृथक् जाँच चाहैत अछि। एहि अनिश्चिततासँ सुरक्षित राखब उपन्यासक पात्र-गठन आ स्रोत-संघर्ष दुनूक न्यायोचित पाठ हएत।

प्रकरण २९० | मूल अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

भोरक सार्वजनिक उद्घाटन

गदाधरक कुंजी पर रातिभरि टिकल दृष्टि अगिला भोर भण्डार-घरक खोलाइमे बदलैत अछि। कथा तुरन्त विजयक उद्घोष नहि करैत; पंचायत, पुलिस, बैंक प्रतिनिधि, स्त्री-समिति आ बच्चासभक उपस्थितिसँ देखबाक क्रम बनैत अछि। तहसँ तह खोलब अध्यायक कथा-विन्यास सेहो अछि: दरबाजा, बोरा, पेटी, नारिकेल पात, खाली पत्र-मस्तक, कार्बन, मुहर, जाली अंगूठा, पंजी। वस्तु-उद्घाटनक ई क्रम रहस्यकेँ नाटक बनाए रखैत अछि, मुदा प्रत्येक नब वस्तु पर अलग व्याख्यात्मक सावधानी लगैत अछि।

भण्डार-घरक गन्धक कथात्मक काम

दरबाजा खुजिते सिमेन्टक बोरा, चूहाक बीट, नमी, तेल आ स्याहीक गन्ध एक संग बाहर अबैत अछि। कथाकार एतय दृष्टिक संग घ्राणेन्द्रियकेँ जोड़ि अतीतक सड़ल संस्थागत देह रचैत छथि। ‘सेवा’ लिखल पेटीपर ‘वा’ लगभग मिटल होयब केवल सौन्दर्य नहि; सेवा-भाषाक अधूरापनक दृश्य-संकेत अछि। मुदा सड़ल गन्ध स्वयं अपराधक प्रमाण नहि। ओ वाचकक संवेदना बनबैत अछि, जखन कि भीतर भेटल पन्ना वास्तविक घटनात्मक जाँचकेँ सम्भव बनबैत अछि।

नारिकेल पातक उलटल पवित्रता

पेटीक पहिल तहमे कागचसँ पहिने सूखल नारिकेल पात भेटैत अछि, जाहिपर हल्दीक पियर दाग बचल अछि। नरहरी पुरान दान-पत्रक उपर शुभ पात राखबाक रीति मोन करैत छथि। ई धार्मिक वस्तु अपराधक कारण नहि; ओकर उपयोगक परिवेश प्रश्नक केन्द्र अछि। उपन्यास लोक-विश्वासक वस्तुकेँ एकतरफा दोषी ठहरौने बिनु देखबैत अछि जे ‘शुभ’क आवरण तर खाली कागच आ अनधिकृत मुहर रहि सकैत अछि। जादुई वातावरणक भीतर वस्तुक नैतिक दोहरापन एहि दृश्यकेँ गहिर बनबैत अछि।

रिक्त पत्र-मस्तक आ पूर्वक स्वीकृति

पेटीमे पहिनेसँ हस्ताक्षर अथवा मुहरित मुदा नाम वा तिथि बादमे भरबाक योग्य पत्र-मस्तक भेटैत अछि। एतय रिक्तता स्वयं योजनाक भाग बनि उभरैत अछि; कागचक खाली ठाम ओहि व्यक्ति लेल खुलल रहैत अछि जकर स्वीकृति बादमे गढ़ल जा सकैत अछि। ई पूर्वक ‘अस्थायी सहायता’ सँ ‘स्थायी त्याग’ बनाओल फाइलसभक

संरचनात्मक पुनरावृत्ति अछि। अध्याय एहि सम्भावित तकनीकक वस्तु प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कोन पन्नापर कोन हस्ताक्षर के देना, ओकर पृथक् जाँच आवश्यक रहैत अछि।

कार्बनक प्रति-संसार

नील-काला प्रतिलिपि-पत्र उठबैत बच्चासभक हथेली पर स्याही लगैत अछि। प्रतिलिपिक सुविधा आ प्रतिलिपिक छल—दुनू सम्भावना एकहि वस्तुमे छथि। गदाधरक प्रश्न जे ‘असल कोन, प्रति कोन’ पारम्परिक अभिलेखक सीढ़ीकेँ उलटि दैत अछि। कथाकार एतय दस्तावेजक अनेक संस्करणकेँ केवल तकनीकी समस्या नहि, कथकक अनेक समानान्तर संस्करणक रूपमे पढ़ैबैत छथि। जेना पाठक मूल/नकलक भेद खोजैत अछि, पात्रसभ सेहो इतिहासक मूल वाक्य खोजैत छथि।

बिसेसर पासवानक अधूर पन्ना

पीयर थैलीमे मजदूर-दावा आ गड्गा-पुलक पुरान दुर्घटना-सहायता पन्नासभ भेटैत अछि। बिसेसर पासवानक अधूर नामक आगाँ ‘मृत्यु’क स्थानपर ‘अनुपस्थिति’ लिखल अछि। एहि एक शब्दक अन्तरसँ मुख्य उपन्यासक जलसमाधि-वृत्त वर्तमान ठगीक कोठरीमे फेर प्रवेश करैत अछि। जे मजदूर देह गमौलनि, हुनकर नाम अभिलेखमे जीवित अनुपस्थितिक दर्जा पबैत अछि। अतः ई अध्याय नब साइबर-अपराधमे पुरान आपदाकेँ जोड़ैत अछि; किन्तु ओहि प्रविष्टिक मूल लेखक, लाभार्थी आ कारण एखन उजागर नहि।

मुहर-बक्सा आ जाली अंगूठा

तीन मुहर-बक्सा—महेश्वरनाथ, रानी महिला सहायता समिति आ ‘म.न.से.’—संग रबरक कृत्रिम अंगूठा-पैड भेटैत अछि। एहि दृश्यमें संस्थागत अधिकारक चिह्न आ व्यक्ति-देहक चिह्न समान गोपनीय संग्रहमे राखल अछि। उपन्यासक नैतिक प्रश्न तकरा पर केन्द्रित अछि: छाप साफ होब स्वेच्छाक वैधता नहि। तेल लगाकऽ अंगूठा लेबाक गदाधरक कथन असल अनुभव आ बनाओल सहमति बीचक दरार दिखबैत अछि। रबरक टुकड़ा भेटलासँ सभ अंगूठा नकली सिद्ध नहि होइत; मिलान तखनहि सम्भव जखन मूलपत्र उपलब्ध हो।

नील पंजीक भय-खाना

पेटीक नील पंजीमे रमरतिया, सोमरी आ रामसागर जेकाँ नामक संग अकेलापन, परदेशी सन्तान, बैंक, फोन, गिरफ्तारीक डर आ आवाजक अभ्यासक संकेत लिखल देखाओल जाइत अछि। ई सूची अपन लाभार्थीक सेवा नहि, हुनकर डरक उपयोग करबाक पद्धतिक दस्तावेज बनैत अछि। वाचक केन्द्रीय घटना दैत छथि—लोकक सम्बन्धको गणना-योग्य लक्ष्य बनाओल जा सकैत अछि। मुदा पीड़ितक निजी नाम बाहर नहि पढ़ल जाए, ई मीराक रोक लोक-जाँचकेँ पीड़ाक दोसर व्यापार बनबासँ बचेबैत अछि।

बटुकनाथ स्मृति-कोषक परत

मुड़ल पन्नापर ‘बटुकनाथ हरिहरन स्मृति-कोष’ संग खाली प्रमाणपत्र, मुहरित आदेश, आवाज-सूची आ सक्रिय खाताक संख्या लिखल अछि। मृत संस्थापकक प्रतिष्ठा जीवित अभिलेखी जालमे पुनः प्रयुक्त होयबाक संकेत

एतयसँ तीव्र होइत अछि। तथापि संख्या ओहि पंजीमे दर्ज दावा अछि; ओ सभटा वस्तुक स्वतन्त्र सत्यापन नहि। महेश्वर, ध्रुवेश आ मधुकरक नाम अलग छोट पाँतिमे भेटब कथाक जासूसी उत्कर्ष अछि, मुदा भूमिका-कथन आ आपराधिक दायित्व बीचक अन्तर केल जएबाक चाही।

पेटीक शब्द-रूपक आ कानूनी पूरा नाम

आरुणि ‘एल.पी.’ कैं ‘लूटल चिन्हारि’ आ अनन्या ‘नुकायल पीड़ा’ बुझबाक काव्यात्मक खेल करैत छथि, मुदा मीरा अधिकृत सूचीमे पूरा ‘लोहाँक पेटी’ लिखबाक कहैत छथि। एहि क्षणमे उपन्यास अपन भाषिक पद्धतिक सीमा स्वयं चिन्हैत अछि। रूपक पाठकक अर्थ खोलैत अछि; अधिकृत विवरण वस्तुक एकरूप पहिचान बचबैत अछि। ई द्विस्वर दीर्घ आख्यानकैं घोषणामात्रसँ बचेबैत अछि, कारण साहित्यिक व्याख्या आ विधिसम्मत नोट दुनू अपन अलग काज करैत अछि।

सील भेल पेटी आ नब प्रश्न

साँझ धरि पेटीक वस्तुसभ क्रमांकित होइत अछि, फेर पुलिसक निगरानीमे मुहरबन्द रखल जाइत अछि। पेटी भौतिक रूपसँ खुलल, मुदा कथा बन्द नहि भेल; ओकर भीतरक नील पंजीक प्रत्येक स्तम्भ अगिला अध्यायक कथा बनबाक प्रतीक्षा करैत अछि। शीर्षकक जङ लागल लोहाँ अन्तमे डरक स्थायित्व नहि, पहरा बदलनाइक सूचक बनैत अछि। बिसेसरक अधूर नामक वापसी उपन्यासक आरम्भिक दुर्घटना आ वर्तमान आर्थिक अपराधकैं एकहि ध्वनिमे जोड़ैत अछि—ई क्रम आकस्मिक स्मरण नहि, दीर्घकालिक संरचनागत बुनावट अछि।

प्रकरण २९१ | मूल अध्याय १९० — नील पंजी

पंजीक रंग आ नब कथात्मक भाषा

लोहाँक पेटीसँ भेटल नील पंजी एहि अध्यायमे स्वयं प्रमुख पात्र-जेकाँ बनैत अछि। कथाकार रंगक सहारे भय, सेवा, अनुशासन आ अभिलेखी कब्जाक अनेक स्तर एकठाम अनैत छथि। नील छाप पहिने मुहरक घाव छल, आब पन्नाक सम्पूर्ण शिरा बनैत अछि। पंजीक ‘सेवा-सूची: विशेष संरक्षण’ शीर्षक आ भीतरक भय-स्तम्भ बीचक विरोध थीक एही कथात्मक स्थितिक केन्द्र। शब्द सभ उपकारक अछि, मुदा ओकर व्यवस्था पाठककैं शिकारक नाप बुझा रहल अछि।

सात स्तम्भक मानवीय विघटन

नाम, सम्बन्ध, भय, आवाज, खाता, हिस्सा आ स्थितिक खाना मिलि मनुष्यकैं सम्बन्ध-सहित वस्तु बनबैत अछि। उपन्यासक आलोचना ई नहि जे पंजी बनौनाइ अपनेमे अन्याय; प्रश्न अछि जे पञ्जीकरणक उद्देश्य केकर लाभ लेल बदलि गेल। जे परिवारक सहायताक विवरण छल, से कोना दहशत बेचनिहारक लक्ष्य-सूची बनल—ई जाँचक असल धुरी। वाचक एके वस्तुक सामाजिक अर्थक क्रमिक परिवर्तन देखबैत छथि, जाहिसँ कतेको दशकक समय एक पन्नाक भीतर संकुचित भऽ जाएत अछि।

रानी-नामक अनिश्चित दोषारोपण

नील पंजीमे ‘रानी’ खाताक संकेत, महिला-नाम, जाली अंगूठाक क्रमांक आ ‘समझायल’, ‘डरायल’, ‘फेर फोन’ जेकाँ टिप्पणीक उपस्थिति रहैत अछि। मीरा स्पष्ट करैत छथि जे नामपर खाता भेटब स्त्रीकेँ संदिग्ध ठहराबय पर्याप्त नहि। एहि पाठगत सावधानीक कारण अध्याय १८७क रानी-खण्ड अपन नैतिक निरन्तरता पबैत अछि। लोकस्मृति स्त्रीकेँ अपराधीक रूपमे पक्की कथा बना सकैत छल; कथा तकरा उलटा स्त्रीक नामपर अपराधक पद्धति पढ़बाक अभ्यास करबैत अछि।

दुमड़ल नक्शा आ भूमिकाक लेखन

पंजीक बीचक तहमे हरिहर सेवा केन्द्र, महेश्वरक न्यास, रानी खाता, सिम, बैंक शाखा, अभ्यास-कमरा आ शहरक कोठरी जोड़ैत नील रेखा अछि। मधुकरक आगाँ ‘स्वर’, ध्रुवेशक आगाँ ‘निर्देश’ आ महेश्वरक आगाँ ‘आशीर्वाद/मुहर’ लिखल भेटैत अछि। ई नक्शा घटनाक स्थानिक पुनःसंयोजन करैत अछि। मुदा प्रत्येक शब्द पंजीक अपना निर्माता द्वारा देल भूमिका-लेबल सेहो भऽ सकैत अछि। आलोचनाकेँ ई देखब आवश्यक अछि जे पात्रसभ ओहि लेबलक सत्यता जाँचबाक प्रयत्न करैत छथि, न कि अन्हरहुकेँ स्वीकार।

‘अभ्यास’ खण्डक नाटकीय उलटाव

पंजीमे फोनक वाक्य, ककर आवाजमे ममता जगाओल जाए, कखन गिरफ्तारीक धमकी देल जाए, ‘तुरन्त’ शब्द कखन बजल जाए—एहन अभ्यासक निर्देश भेटैत अछि। पूर्वक ‘विदेह नाट्य उत्सव’मे अभिनय सार्वजनिक सत्यक साक्षात्कार बनल छल; एतय अभिनय निजी ठगीक छद्म अधिकार अछि। समान कथन-तकनीक, पर नैतिक दिशा उलटी। एहि अन्तर्नाटकीय सम्बन्धसँ उपन्यास मानवक स्वरकेँ कतेक अलग लक्ष्य लेल प्रशिक्षित कएल जा सकैत अछि, तकर भयावह बोध बनबैत अछि।

हिस्सेदारीक अंक आ मुहरक अनुपस्थिति

पंजीक वित्तीय हिस्सामे पाँच आ बारह प्रतिशत, ‘विशेष’ भुगतान, नकदक मार्ग आ सेवा-दानक फेरबदल लिखल अछि। ध्रुवेशक आद्याक्षर भेटैत अछि, महेश्वरक व्यक्तिगत मुहर एहि पन्नापर प्रत्यक्ष नहि। ई उपस्थिति-अनुपस्थितिक अनुपात कथकक संयत रहस्य-निर्माण अछि। प्रत्येक पन्ना सम्पूर्ण अपराधक छवि नहि, केवल संचालनक एक अंश दैत अछि। मीरा एकर नैतिक शृंखला सेहो पढ़ैत छथि—केओ डर बनौलक, केओ खाता घुमौलक, केओ सेवा शब्दक भरोसा बेचलक—मुदा निष्कर्षक लेल लेखा-स्रोत अपेक्षित अछि।

गदाधरक व्यक्तित्वक बदलैत केन्द्र

गदाधर आरम्भमे पेटीक कुंजी-रक्षक आ हिचकिचेनिहार वृद्ध चौकीदार छलाह; एतय ओ बतबैत छथि जे पंजी पहिने वास्तविक लाभार्थीक सूची छल, बादमे ध्रुवेशक कालमे अंकीय लक्ष्य-सूची बनल। मीरा हुनकर अपन देखल बात आ दोसरा सँ सुनल बात अलग कराबैत छथि। एहि शैलीमे चरित्रक नैतिक जागरण अनपेक्षित अछि: ओ अपराधक सम्भावित दर्शकसँ जाँचक सीमित साक्षी बनैत छथि। कथावाचक हुनका नायक घोषित नहि करैत; हुनकर भय, चुप्पी आ नव कथन एके पृष्ठपर रहैत अछि।

नन्द आरुणिक नामसँ पुरान नदी घुरब

नील पंजीमे ‘नन्द आरुणि’क नाम संग अभियन्ता, रिपोर्ट, मजदूर-सूची, वंश-सम्बन्ध आ ‘सावधान’ लिखल भेटैत अछि। आरुणि अपन पिता अथवा पारिवारिक स्मृतिक सूत्र देखैत स्तब्ध होइत अछि। ‘डायरी’, ‘गमछा’, ‘बा’ जेकाँ लघु संकेत गङ्गा-पुलक जलसमाधि-स्मृतिसँ पुनः सम्बद्ध होइत अछि। ई पुनरागमन दीर्घ उपन्यासमे नब साइबर-ठगी कैँ पहिनेक त्रासदीसँ जोड़ैत अछि। मुदा पंजीक लेखन मात्रसँ नन्दक रिपोर्टक हरणक सम्पूर्ण कारण अथवा दोषी निर्धारित नहि होइत।

‘इनारबाली’क अपमान-नाम

हुलासीक सम्भावित संकेत ‘इनारबाली’क रूपमे भेटैत अछि; पात्रसभ एकरा असल नामक विकल्प नहि, अपमानजनक संक्षेप बुझैत छथि। मीरा असल नाम भेटलापर बदलबाक प्रस्ताव रखैत छथि। एहि दृश्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे नामक लोप मात्र शारीरिक मृत्यु नहि, प्रशासनिक वर्गीकरण आ सामाजिक उपहाससँ सेहो घटैत अछि। कथाक पूर्ववर्ती चर्मकारणी, विधवा, मजदूर आ नामविहीन लोकसभक स्मृति एहि एक संकेतक पाछाँ उपस्थित अछि। अनन्या नाम-रक्षकक भूमिका एही ठाम नब नीतिगत अर्थ पबैत अछि।

अदृश्य कुर्सीक पूर्वसूचना

पंजीक आवरण सँ खसल पातर पन्नापर आदेश ‘कुर्सीसँ पूछने बिना पन्ना नहि खुले’ रहैत अछि; हस्ताक्षरक जगह दू वृत्त आ तिरछी रेखा। ओहिसँ उच्च आदेशक देह एक खाली कुर्सी बनि कथामे प्रवेश करैत अछि। कार्यालयक ऊपरक कमरा दृश्यतः एखन बन्द अछि, मुदा ओहि कुर्सीक पीठ खिड़कीसँ देखाइत अछि। ई स्पष्ट पूर्वसूचना आगाँक अध्यायकेँ अस्वाभाविक छलाँग होयबासँ बचबैत अछि। वस्तु व्यक्ति-उपस्थितिक स्थान लेइत अछि, मुदा वस्तु स्वयं अपराधी नहि होइत।

मूल पन्नापर क्रोध नहि चढ़ेनाइ

अनन्या पीड़ित, साक्षी आ संदिग्ध लेल तीन रंगक अलग सूची बनबैत अछि, मुदा मूल पन्ना जसक तस सुरक्षित रहैत अछि। पूर्वक चन्ना गाछीक लाल-पीयर-कारी धागाक संग एकर पद्धतिगत साम्य अछि, तथापि रंगसभक अर्थ एतय बदलि गेल अछि; एकरा सीधा वैह वर्गीकरण कहि देब गलत हएत। मीरा प्रतिलिपि आ मूलक भेद, निजता आ अनुमानक अलग स्थानक रक्षा करैत छथि। एहि अनुशासनक कारण नील पंजी अपराधक सभटा नतीजा नहि, प्रश्न व्यवस्थित करबाक विश्वासयोग्य वस्तु बनि उठैत अछि।

प्रकरण २९२ | मूल अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

खाली कुर्सीक शासन

नील पंजीक गुप्त निर्देश ‘कुर्सीसँ पूछू’ अगिला अध्यायमे हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कमराक कुर्सी बनि देखाइत अछि। कथाकार व्यक्ति कैँ दृश्यसँ हटाकऽ ओकर नामपर चलनिहार आदेशकेँ भौतिक आसनमे रूपान्तरित करैत छथि। कुर्सी खाली अछि कि एखनहि उपयोगमे छल, ई प्रश्न देबालक धूलि, गद्दाक घिसावट, घण्टी आ फोनक

निशानसँ उठैत अछि। ई कथात्मक अनुपस्थिति केवल रहस्य बढ़ेबाक तरकीब नहि; संस्था कतेक बेर अधिकारीक प्रत्यक्ष उपस्थितिक बिना सेहो भय उत्पन्न करैत अछि, तकर रूपक अछि।

ऊपरक कमराक सीढ़ी

टोली जखन सीढ़ी चढ़ैत अछि, कथाकार पायदानक धूलि, पीक, जूताक घिसावट आ झरल चूनाकेँ अलग-अलग दृश्य दैत छथि। प्रत्येक पायदान एक काल-स्तरजेकाँ बनैत अछि। नीचाँ प्रतीक्षारत गरीब लोक, ऊपर निषिद्ध कमरा—ई स्थानिक ऊर्ध्वता सामाजिक अधिकारक ऊर्ध्वता बनि रहल अछि। भिखारी लालक पुरान चाबीवाला शरीर आ गदाधरक झाड़ू लगाबय वाला भूमिका एहि विभाजनकेँ नजदीकसँ देखबैत अछि। तथापि पायदानक चिन्हसँ कोन व्यक्ति कखन आयल, एकर निश्चित कालक्रम नहि बनैत।

सूचीबद्ध करबाक कथात्मक धीमापन

मीरा कमरा खुजबाक पहिने धूलि, वस्तु, तार, दराज, निशान आ पएरक सम्भावित चिह्न गनबाक नियम बनबैत छथि। रहस्यक चरम दृश्य पर ई नापजोख पाठकक अधीरता रोकैत अछि। उपन्यासक आख्यान-गति एतय जासूसी-रोमांच आ अभिलेखीय सावधानीक द्वन्द्वसँ बनैत अछि। अनन्या आ आरुणि नायकत्वक अर्थ दुआर तोड़ब नहि, दुआर खुललाक परिस्थिति दर्ज करब बुझैत छथि। साक्ष्यक क्रम स्वयं दृश्य-क्रम बनि जाइत अछि।

घण्टीक आदेश आ गदाधर

कुर्सीक मेजपर घण्टी, टूटल चार्जर आ मुहरक डिब्बा भेटैत अछि। गदाधर बतबैत छथि जे घण्टी बजिते ओ चाह, पानि, संचिका वा लोक ऊपर पठबैत छलाह। छोट धातुक ध्वनि सेवा, नियंत्रण आ चुप्पीक जाल जोड़ैत अछि; आदेश देनिहारक मुख नहियो देखल गेल हो तँ आदेशक असर नीचाँ घटैत रहल। जे गदाधर स्वयंकेँ केवल चौकीदार कहैत छथि, हुनकर प्रत्यक्ष अनुभव संस्थागत भूमिकाक महत्त्वपूर्ण स्रोत बनैत अछि। मुदा घण्टीक चलबासँ ध्रुवेशक व्यक्तिगत प्रत्यक्ष भागीदारी स्वतः सिद्ध नहि।

दराजक भय-वाक्य

पहिल दराजमे ‘माय असगर—आवाज नरम’ जेकाँ निर्देश आ बैंक खाताक अन्तिम अंक भेटैत अछि। नील पंजीमे लिखल ‘माय असगर’ आब कार्यकारी कोठरीक पर्ची बनि लौटैत अछि। एना कथाकार लिखित योजना आ वास्तविक अभ्यासक मध्य जोड़क दृश्य रचैत छथि। एक वृद्ध मायक पारिवारिक स्थिति प्रशासनिक जानकारीसँ हरण कऽ अभिनयक निर्देशमे बदलल जाइत अछि। पूर्वक डिजिटल अरेस्टक अध्यायसभक ध्वनि एहि पर्चीक एके वाक्यमे संघनित होइत अछि।

बन्द यन्त्र आ खाली बयान-पत्र

दोसर दराजक ध्वनि-अभिलेखककेँ विनीत झा तुरन्त नहि चलबैत छथि; तेसर दराजक गुप्त तहमे कोनापर नील बिन्दुवाला रिक्त बयान-पत्र भेटैत अछि। ई दू वस्तु अर्थपूर्ण विरोध बनबैत अछि—एकमे आवाज बन्द अछि, दोसरमे आवाज लिखबाक खाली ठाम पहिनेसँ तैयार। सम्भव अछि जँ खाली बयान-पत्रक सहायतासँ पूर्वनिर्धारित

स्वीकृति बनैत रहल हो, मुदा मूल पाठ एखन ओकर प्रत्येक व्यवहारक पुष्टि नहि करैत। कथाकार एहि उधारक कथनक भीतरी अन्हारक बिम्ब प्रभावी रूपसँ बनबैत छथि।

मार्ग-नक्शा आ अनुशासन

देबालपर विकास-योजनाजेकाँ टँगल नक्शा असलमे गढ़ नारिकेल, स्टेशन, बैंक, फोन-दोकान आ हरिहर सेवा केन्द्र जोड़ैत अछि। सेवा-नक्शा आ शिकार-नक्शा बीचक अन्तर अध्यायक एक सशक्त दृश्य-विरोध अछि। पात्रसभ नक्शाक रेखा गनैत छथि, मुदा ओकरा अपराधक पूर्ण खातापुस्तक नहि मानैत। पाछाँक खिड़कीसँ देखाइत चन्ना गाछीक ऊपरी पात एहि कार्यालयकेँ गामक सार्वजनिक सुननाइ-दृश्यसँ जोड़ैत अछि। सामाजिक दूरी दृश्यतः छोट, सत्ता-दूरी बहुत पैघ अछि।

कुर्सीक नीचाँ नन्दक प्रतिवेदन

गद्दाक नीचाँ ‘ध्रु.’ लिखल लिफाफामे नन्द आरुणिक फाटल प्रतिवेदनक अंश भेटैत अछि—‘मृत्यु-सूची अपूर्ण। नामक सत्यापन आवश्यक।’ ई अंश वर्तमान डिजिटल डरक अन्वेषणकेँ आरम्भिक पुल-दुर्घटनाक दबल इतिहास धरि लऽ अबैत अछि। आरुणिक कम्पनाइ केवल जासूसी खोजक उत्तेजना नहि, पितृ-स्मृतिक व्यक्तिगत आघात अछि। ‘ध्रु.’ सँ ध्रुवेश निश्चित नहि, आ अंशकेँ कुर्सीक नीचाँ के राखलक स्पष्ट नहि। एहि अपूर्णतामे कथाक गम्भीरता टिकैत अछि।

नील धागा आ माटिक स्थानिक स्मृति

कुर्सीक पहियासँ नील धागा आ सूखल माटि भेटैत अछि। गदाधर माटिक रंग चन्ना गाछी लगक माटिसँ मिलैत बतबैत छथि, मुदा माटि-साम्य आगमनक वास्तविक मार्गक अन्तिम प्रमाण नहि। भौतिक पदार्थ कथामे फेर सामाजिक स्मृतिक वाहक बनैत अछि: नदीक कादो, पुरान लोहेक ताला आ कार्यालयक पहिया एक-दोसरासँ संवाद करैत छथि। लोक-विश्वासमे गाछी अपराधी दिस देखैत अछि, अभिलेखीय तहमे धागा जाँचयोग्य नमूना बनैत अछि।

पूजाक माला आ दमनक कक्ष

कुर्सीक पाछाँ सूखल माला आ अगरबत्तीक राख रखल अछि; गदाधर प्रत्येक अमावस्याक दिन धूप देबाक पुरान नियम बतबैत छथि। ई सामग्री बटुकनाथक दान-समारोहक पूर्वक परम्परा स्मरण करबैत अछि। कथाकार धार्मिक संस्कारक वस्तुसभकेँ स्वयं हिंसक नहि कहैत; ओ देखबैत छथि जे शासनक कोठरीमे पूजा-सज्जा अधीनता केँ पवित्र नियमितता देबैत रहल हो सकैत अछि। एहि बिम्बमे सेवा-संस्था आ निजी नियंत्रणक सीमा धुँधली होइत अछि।

कुर्सी नहि उठल, घेरा खिंचल

साँझ कुर्सी जथावत राखि ओकर चारूकात पीयर रेखा, फोटो, सूची आ मुहरबन्द कमरा बनाओल जाइत अछि। भयक केन्द्रकेँ लूटि नहि, पहरा दऽ चिन्हित करब ई दृश्य-निष्कर्ष अछि। चन्ना गाछी लग कुर्सी स्वयं नहि, ओकर

धूलिक गोल घेरा उतारल जाइत अछि; एहि चयनसँ वस्तु आ वस्तुक कथा बीचक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। अगिला अध्यायमे बन्द ध्वनि-अभिलेखक खुजबाक सम्भावना कथा कैं आवाजक नब तहमे लऽ जाइत अछि, मुदा ध्रुवेशक व्यक्तिगत जिम्मेदारी एखन जाँचाधीन अछि।

प्रकरण २९३ | मूल अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

बन्द यन्त्रसँ खुलैत कथा

ध्रुवेशक कुर्सीक दराजसँ भेटल बन्द रेकॉर्डर अध्याय १९२मे कथाक नब केन्द्र बनैत अछि। पाछाँ नदी, गाछी आ पोखरिक ध्वनि जेकाँ लगनिहार वातावरणक भीतर अनसुनी रेकॉर्ड कएल आवाजक प्रतीक्षा बनैत अछि। शीर्षकक विरोधाभास अर्थपूर्ण अछि—यन्त्र बन्द, मुदा ओकर भीतरक आवाज सामाजिक रूपसँ अत्यन्त मुखर। कथाकार भौतिक वस्तुक स्थिरता आ सम्भावित श्रव्य विस्फोटक मध्य विराम बनबैत छथि। ई विराम जासूसी-उत्कण्ठाकेँ तीव्र करैत अछि, मुदा तुरन्त बजाएबासँ रोकैत नैतिक प्रश्न सेहो सामने अनैत अछि।

अभयक आगमन आ विशेषज्ञक मर्यादा

विनीत झाक संग ध्वनि-अभिलेखपरीक्षक अभय अबैत अछि। ओकर जूता उतारबाक व्यवहार धरि सामान्य चमत्कार नहि; धूलि उपकरणमे नहि जाय, ई उपयोगितावादी कारण अछि। मीरा धूलिक पुरान अभिलेखी अर्थ मोन करबैत छथि। विशेषज्ञक वैज्ञानिक प्रक्रिया आ गामक वस्तु-स्मृति एतय प्रतिद्वन्द्वी नहि, संवादशील दृष्टि बनैत अछि। अभय स्मृति-पत्रकक प्रतिलिपि पहिले बनबैत अछि, मूल सुरक्षित रखैत अछि; ई दृश्य साहित्यिक रोमांचक बीच सत्यक सूक्ष्म संरक्षक नियम रचैत अछि।

संचिकाक नाममे भयक व्याकरण

स्मृति-पत्रकमे ‘नरम_माय’, ‘कानून_डर’, ‘बेटा_बाहर’, ‘स्वीकार’, ‘कुर्सी_राति’, ‘नन्द_सूची’ आ ‘नया_पंजी’ नामक संचिका भेटैत अछि। ई नाम केवल फाइलक तकनीकी शीर्षक नहि; पञ्जीकृत लोकक परिस्थिति सँ लिखल नाटकक दृश्य-शीर्षक जेकाँ छथि। पहिने नील पंजीक स्तम्भ छल, आब वैह श्रेणी आवाजमे अभिनय करबाक अभ्यास बनि गेल। कथाकार लिखित आदेश आ ध्वनि-घटना बीचक यात्रा एके मेज पर देखबैत छथि, जाहिसँ अनेक अध्यायक दुरन्त सामग्री एक क्रममे मिलैत अछि।

नरम मायक छद्म-संवेदना

‘नरम_माय’ संचिकामे मीठ आवाज सेवा केन्द्रसँ विशेष सहायता देबाक आश्वासन दैत अछि, जखनकि पाछाँक फुसफुसाहट ‘धमकी नहि, ममता’क निर्देश दैत अछि। ई दृश्य मनोवैज्ञानिक हिंसाक सूक्ष्म रूप देखबैत अछि: डर करुणाक अभिनय करैत प्रवेश करैत अछि। वास्तविक माय, वृद्धा आ परदेशी बेटाक सम्बन्धक भाषा अपराधीक स्क्रिप्टमे उधार लेल जाइत अछि। पृष्ठभूमिक दोसर पुरुषक स्वर अलग स्तर बनबैत अछि, मुदा ओ स्वर केकर, एकर ठोस पहिचान एखन नहि।

कानूनक स्वरक अपहरण

‘कानून_डर’मे शासकीय हिन्दी, टूटल अंग्रेजी आ गिरफ्तारीक धमकीक मिश्रण अछि। सत्यव्रत एकरा राज्यक भाषा चोरल गेल कहैत छथि। ई भूमिका उपन्यासक पहिनेक अदालतक बरामदा, स्थगित तारीख आ गरीबक पुरान भयक स्मृति पुनः उभारैत अछि। कथाकार एके उच्चारणकेँ दू संस्थामे चलैत देखबैत छथि—वास्तविक न्यायालयक आधिकारिक ढाँचा आ ठगक नकली मंच। भाषा एतय निरपेक्ष साधन नहि; ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा ओकर सुननिहारकेँ कैद करि सकैत अछि।

बिसेसरक नाम आ पुरान समयक प्रवेश

रेकॉर्डरक एक अंशमे ‘बिसेसरक प्रकरण पुरान अछि’ कहि ओकरा नहि खोलबाक निर्देश सुनाइत अछि। बिसेसर पासवानक अधूर नाम लोहाँक पेटीमे भेटल छल; आब ओ नाम बन्द स्वरक भीतर सेहो उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धसँ गङ्गा-पुलक जलसमाधि डिजिटल ठगीक अध्यायक बीच अनिवार्य अतीत बनि घुरैत अछि। मुदा रेकॉर्ड भेला मात्रसँ ई नहि ठहरैत जे ध्वनि बजौनिहार स्वयं बिसेसरक मूल मृत्यु-प्रकरणक दोषी छल। कथात्मक सम्बन्ध आ आपराधिक जिम्मेदारी अलग स्तरपर छथि।

नन्द सूची आ सम्पादित आवाज

‘नन्द_सूची’ संचिकामे कोनो व्यक्ति नन्द आरुणिक फाटल प्रतिवेदनक शब्द पढ़ैत अछि—मृत्यु-सूची अपूर्ण, सुरक्षा-बेल्ट, अनुपस्थित नाम—आ पाछाँसँ ओकर अंश काटबाक निर्देश अबैत अछि। लिखित प्रतिवेदनक विकृतिकेँ ध्वनि-सम्पादनक रूपमे देखबैत ई दृश्य दीर्घ आख्यानक एक महत्त्वपूर्ण स्व-प्रतिबिम्ब अछि। जे इतिहास कागचमे काटल गेल छल, ओकर आवाज सेहो काटबाक प्रयास होइत अछि। सुनल वाक्य प्रामाणिक मूल प्रतिवेदन नहि; ओकर तुलना बचल मूल अंशसँ होयबाक आवश्यकता अछि।

‘स्वीकार’ संचिकाक हिंसक संवाद

स्त्रीक रुदनक पाछाँ मधुकर-सन स्वर ओकरा स्वेच्छासँ कागच देबाक वाक्य बजबाक दबाव दैत अछि। कथा नकल आवाज आ मजबूरीमे उच्चरित ‘सहमति’क मध्य क्रूर सम्बन्ध देखबैत अछि। एक व्यक्तिक चुप्पी अथवा गलत वाक्यक सहमतिपत्र बनि जाएब जे पूर्वक अध्यायसभमे लिखित समस्या छल, से आब रेकॉर्ड भेल संवाद बनैत अछि। गदाधर आवाज मधुकर जेकाँ चिन्हैत छथि, मुदा अभय आ विनीत आवाजक कानूनी पहिचानक लेल स्रोत, नमूना आ समयक मिलान आवश्यक बतबैत छथि।

कुर्सी रातिक शब्दहीनता

‘कुर्सी_राति’ संचिकामे कुर्सीक घर्षण, पंखाक घरघराहट, मोबाइलक कम्पन, कागच आ साँस सुनाइत अछि। स्पष्ट शब्दक अभाव कथा कैं शून्य नहि बनबैत; ओ ध्वनिक पदार्थक नब रूप अनैत अछि। फुसफुसाहट सँ ‘नव नाम अलग’ जेकाँ वाक्य उभरैत अछि, जे नील पंजीक अन्तिम निर्देशसँ मिलि सकैत अछि। एतय ध्वनिका दृश्यसँ अधिक सटीक कहल नहि जाए; श्रवणक सीमितता आ मशीनक खरखराहट दूना अनिश्चितता पैदा करैत अछि।

बच्चासभ पर पहुँचैत खतरा

‘नया_पंजी’ संचिकामे नाम हटेबाक, बाजनिहारकेँ विवादित बनबाक आ बच्चा सभ पर नजरि रखबाक कथन भेटैत अछि। नामक पहरुआ अनन्या आ आरुणिक सार्वजनिक काज आब निजी सुरक्षा-संकट बनैत अछि। मीरा साहस आ बेपरवाही अलग राखैत छथि। ई दृश्य बाल पात्रकेँ केवल नैतिक आदर्श नहि, जोखिमभरा संसारमे स्थित देह बनबैत अछि। कथाकार आत्मबलक महिमामण्डनक स्थानपर सामूहिक पहरा आ प्रतिलिपिक सुरक्षा आवश्यक बतबैत छथि।

खाली कटोरी आ आवाजक अनिर्णीत चेहरा

रेकॉर्डर मूल उपकरण सहित सुरक्षित रहैत अछि; चन्ना गाछी पर ओहि दिन ओकर बदलामे खाली माटिक कटोरी राखल जाइत अछि। कटोरी आवाज लेल स्थानक रूपक अछि—जकर भौतिक आकार नहि, मुदा जकर परिणाम शरीर पर पड़ैत अछि। अध्यायक अन्त मधुकर, ध्रुवेश आ सम्भावित पृष्ठभूमि-स्वरक पूर्ण पहिचान नहि करैत। खाली कटोरीक दृश्य एहि अपूर्णताकेँ सौन्दर्य दैत अछि; अगिला अध्यायमे आवाजक नमूना आ चेहरा-खोजब स्वाभाविक कथात्मक आवश्यकता बनि उठैत अछि।

प्रकरण २९४ | मूल अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

कानक विश्वास आ कानूनक ऐना

‘बन्द रेकॉर्डरक स्वर’क पाछाँ ‘आवाजक चेहरा’ शीर्षक स्वयं एक रूपकात्मक असम्भवता रचैत अछि। श्रव्य वस्तुकेँ दृश्य पहिचान देबाक इच्छा जासूसी कथाक प्रेरणा अछि। मीरा आरम्भमे चेतावनी दैत छथि जे परिचित-सन लगैत आवाजसँ केओ दोषी नहि ठहराएत; समय, ठाम, उपकरण, नमूना आ साक्षी जोड़ब पड़त। एहि प्रकार कथा लोकक तुरन्त चिन्हबाक आकांक्षा आ जाँचक धीरे बनबाक समयक बीच तनाव रचैत अछि। चेहरा एखन प्रतीक, न्यायिक पहिचान नहि।

मधुकरक नियन्त्रित पाँच वाक्य

मधुकरकेँ अलग कमरामे पानि देल जाएत आ पाँच वाक्य पढ़ाओल जाइत अछि। ‘फोन बन्द नहि करब’ अथवा ‘जे कहल जाए वैह कहब’ जेकाँ वाक्य पर हुनकर कण्ठ रुकैत अछि। कथाकार शरीरक असहज प्रतिक्रियाकेँ पठनीय संकेत बनबैत छथि, मुदा घबड़ाहट स्वयं दोषक न्यायिक प्रमाण नहि। मीरा हुनका वाक्य पूरा पढ़बाक कहैत छथि। ई दृश्य आरोपी पात्रकेँ आब शुद्ध अन्हारक प्रतिमा नहि रखैत; ओकरा दबाव सहनिहार, प्रश्नक उत्तर देनिहार मनुष्य बनाओल जाइत अछि।

ध्रुवेशक सार्वजनिक भाषणक बरामदगी

सेवा केन्द्रक पुरान डिस्कमे पहिने भजन, फेर उद्घाटनक दृश्य भेटैत अछि; मंचपर ध्रुवेश गरीबक पीड़ा अपन पीड़ा बतबैत अछि। कथाकार पहिने लोकक तालीक स्मृति उठबैत छथि, फेर वैह सार्वजनिक वाक्यकेँ बन्द रेकॉर्डरक निर्देशन लग राखैत छथि। एके व्यक्तिक चित्र आ आवाज अलग मंचपर अलग आशय लैत अछि। उद्घाटनक सेवा-

भाषा अपनहि बलसँ झूठ प्रमाणित नहि होइत; ओकरा ओहि ध्वनि-निर्देशक संग जाँचल जाइत अछि जे ‘पहिने विश्वास, फेर भय’क चाल बतबैत अछि।

उच्चारणक नान्हि चिन्ह

अनन्या ‘र’क पहिने खँखार, ‘स’क सीटी, साँसक विराम आ वाक्यक अन्तक उत्सर्जन टिपैत अछि। एहन सूक्ष्म विवरण पानि, पात आ भूतक पैघ रूपकक संग सूक्ष्म श्रव्य यथार्थक सन्तुलन बनबैत अछि। अभयक ध्वनि-रेखा आ बालकक कान एक-दोसराक प्रतिपक्ष नहि; दुनू मिलानक अलग स्रोत छथि। तथापि उपन्यास स्वयं स्वीकारैत अछि जे आवाजो अभ्याससँ बदलैत अछि। एहि कऽ श्रव्य समानता सम्भावित दलील अछि, पूर्ण पहिचान नहि।

‘पहिने विश्वास, फेर भय’क पुनरागमन

रेकॉर्डरमे मधुकरक निर्देश आ ध्रुवेशक सार्वजनिक भाषणक मध्य ‘पहिने विश्वास’ वाक्यक पुनरावृत्ति भेटैत अछि। कथावाचक एकहि वाक्यकेँ दू नैतिक संसारमे रखैत छथि—मंचपर सेवा आ बन्द कमरामे भयक आर्थिक उपयोग। ई अन्तर्वाक्यीयता उपन्यासक दीर्घ प्रसरणकेँ एक केन्द्रीय ध्वनि दैत अछि। पाठक बुझैत अछि जे अपराधी नई भाषा आविष्कार नहि करैत; ओ पहिनेसँ स्वीकारल सेवा-भाषाकेँ नव क्रममे सजाकऽ भयक व्यापार बनबैत अछि।

मधुकरक लिखित कथन आ सीमा

मधुकर कथन दैत अछि जे कतेको निर्देशन ध्रुवेशक फोनपर आयल, कतेको बेर महेश्वरक माध्यमसँ पर्ची पहुँचल, आ पृष्ठभूमिमे अनजान स्वर रहैत छल। ई कड़ी कथा आगाँ बढ़बैत अछि, मुदा मधुकर स्वयं सम्भावित संलिप्त व्यक्ति अछि; ओकर बयानकेँ स्वयंसिद्ध निष्पक्ष इतिहास मानब कठिन हएत। मीरा हस्ताक्षर लेल ओकर हाथ पकड़ि नहि दैत छथि; स्वीकृतिक क्रिया तकर अपन रहबाक चाही। अतीतमे बनाओल मजबूरीक सहमति विरुद्ध ई वर्तमान दृश्यक नैतिक उत्तर अछि।

विशेषज्ञक प्रतिवेदनक असमाप्त भाषा

अभय रेकॉर्डरक अंश, उद्घाटन-भाषण, बैंक-सभा आ मधुकरक नमूनाक ध्वनि-लक्षण तुलनीय बतबैत अछि, मुदा अन्तिम वैज्ञानिक मत विशेषज्ञ प्रयोगशालासँ अपेक्षित रखैत अछि। ई वाक्य कथनक ऊँच क्षण पर संयम लऽ अबैत अछि। सामाजिक गवाह चाहैत अछि जे चेहरा आब तुरन्त खुलि जाय; तकनीकी पाठक कहैत अछि जे साम्य निर्णायक नहि। एहि असहमतिकेँ कथा दबबैत नहि, ओकरे आधार पर अन्वेषण जारी रखैत अछि।

नामक बदला छोट दीप

डरायल वृद्धाक नाम सार्वजनिक करबाक ठाम अनन्या पन्नापर छोट दीप बनबैत अछि। नाम-सुरक्षाक ई दृश्य लम्बा समयसँ चलि रहल ‘नामक पहरुआ’ सूत्रक एक महत्त्वपूर्ण संशोधन अछि: नाम बचेनाइ सभसमय नाम खुल्ला पढ़नाइ नहि। कखनो नाम-गोपन अपने ओकर सम्मानक रक्षा अछि। अति-सार्वजनिकता सेहो अपमानक

दोसर रूप भऽ सकैत अछि। लोकस्मृति आ गोपनीयता बीचक एहि नैतिक चयनसँ उपन्यासक सामूहिकता एकल भीड़क भाषा नहि बनैत।

ध्रुवेशक चित्रक कारी धब्बा

सेवा केन्द्रक देबालपर ध्रुवेशक एक पुरान चित्र भेटैत अछि, जकर काँधक कात कारी धब्बा अनन्याकेँ चन्ना गाछीक पातजेकाँ बुझाइत अछि। अभय एकर अर्थक लेल अलग दृश्य-परीक्षण माँगैत अछि। एतय जादुई यथार्थक दृष्टि फोटोपर चढ़ैत अछि, मुदा फोटो-साक्ष्यक सीमा सेहो चिन्हित रहैत अछि। गाछीक उपस्थिति पाठकक अनुभवमे तात्त्विक छवि अछि; मोहरबन्द चित्रक तकनीकी व्याख्या तकरा सँ अलग स्तरपर करबाक चाही।

लोक-प्रेतक स्वर आ चोरी कएल आवाज

बूढ़बा भूत हेरायल नाम आ चोराओल कण्ठक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। कारी-उज्जर प्रेत, लोथक आध मुँह आ चन्ना गाछीक लोकध्वनि अध्यायक एक दोसर आख्यान-स्तर बनबैत अछि। ई लोक-जीव सभ जाँचक न्यायिक गवाह नहि, सामाजिक चोटक भावात्मक प्रतिध्वनि छथि। उपन्यास एकहि आवाजक चोरीकेँ तकनीकक फोल्डरमे आ लोकक भूतक स्मृतिमे एक साथ रखैत अछि। एहि सहअस्तित्वसँ जादुई यथार्थ साक्ष्यक विकल्प नहि, पीड़ाक अर्थ-विस्तार बनैत अछि।

चेहराक अपूर्णता आ समनक पूर्वसूचना

अध्यायक अन्तमे ‘चेहरा पूरा नहि देखाइ देलक’ मुदा ‘साँसक दरबाजा भेटल’क धारणा बचैत अछि। अनन्या अगिला पन्नापर चेहराकेँ समन पठेबाक संकेत लिखैत अछि। कथाकार ध्वनि-साम्य, मधुकरक बयान आ पुरान डिस्कक खोजक बादो निर्णायक विजय घोषित नहि करैत; कथा औपचारिक उत्तर-प्रक्रिया दिस मुड़ैत अछि। एहि स्थगनमे उपन्यासक नैतिक तर्क अछि—जाँचक उपलब्धि आरोपीक उपस्थिति माँगैत अछि, दोषसिद्धि घोषित नहि करैत।

प्रकरण २९५ | मूल अध्याय १९४ — साँसक समन

समन शब्दक उलटल दिशा

उपन्यासक पूर्वक अदालतक बरामदा-वृत्तमे ‘समन’ शब्द गरीब मुवक्किल लेल भीषण डरक स्मृति छल। अध्याय १९४ ओहि शब्दक दिशा उलटबैत अछि: एहि बेर पीड़ित नहि, आदेश देनिहारक सम्भावित छाह बुलाओल जा रहल अछि। मीरा स्पष्ट करैत छथि जे समन दण्ड नहि, उत्तर देबाक प्रक्रिया अछि। एकहि संस्था-शब्दक अर्थ पात्रक सामाजिक स्थिति बदलिते बदलैत अछि। ई शब्द-परिवर्तन अध्यायक कथन-शास्त्रीय केन्द्र; समनक वाक्य न्यायिक सूचना रहितो प्रतीकात्मक सामाजिक उलटाव बनि उठैत अछि।

अभयक सशर्त ध्वनि-साम्य

ध्वनि-अभिलेखक, ध्रुवेशक उद्घाटन-भाषण आ मधुकरक नमूनाक तुलना पर अभय साम्यक बात कहैत अछि, मुदा नियन्त्रणमे लेल विधिक नमूनाक आवश्यकता बतबैत अछि। लोकसभ ‘पर्याप्त’ सुनिते गिरफ्तारी अपेक्षा करैत अछि, ‘निर्णायक नहि’ सुनिते निराश होइत अछि। कथाकार जन-इच्छाक तीव्र गति आ वैज्ञानिक मापक धीम गति एकसाथ देखबैत छथि। एहि विचलनसँ उपन्यास साक्ष्यक सरल विजयकथा नहि बनैत।

फाटकपर सेवाक चमक

ध्रुवेशक घर ऊँच फाटक, कैमरा, टाइल, फव्वारा आ गरीब-सेवाक मुस्कुराइत विज्ञापनसँ सजल अछि। ई भौतिक वातावरण पीड़ितक धूलिमय घरसभक विपरीत आर्थिक शक्ति देखबैत अछि। जखन समन विज्ञापन-पट्टक नीचाँ चस्पा होइत अछि, सार्वजनिक सेवाक दृश्य आ व्यक्तिगत जवाबदेहीक लिखित माग एकहि फ्रेममे अबैत अछि। कथाक दृश्यात्मक व्यंग्य एतय तीक्ष्ण अछि; पोस्टरक मुस्कान उत्तरक अभावकेँ आर बेसी पठनीय बनबैत अछि।

शीतांशुक मुलायम प्रतिरोध

प्रहरी आ शीतांशु समनक प्रति लेबाक विषयमे ‘बाबू बाहर छथि’, ‘सूचना नहि अछि’ आ ‘हम मना नहि करैत’ जेकाँ वाक्य बोलैत छथि। कथाकार प्रतिरोधक रूप ऊँच धमकीक बदला विनम्र प्रशासनिक टालमटोलमे देखबैत छथि। समय लिखल, साक्षी, फोटो आ चस्पाक क्रम एहि मुलायम नकारक विरुद्ध कथात्मक प्रतिरोध बनैत अछि। कागच फाटकपर लगल, मुदा ध्रुवेश व्यक्तिगत रूपसँ प्राप्त केलक, एहन घोषणा नहि होइत; एहि भेदक लिखनाइ समीक्षा लेल सेहो आवश्यक अछि।

समन चस्पा होब बनाम समन पाबब

आरुणि विशेष रूपसँ दर्ज करैत अछि जे समन ‘देल गेल’क दावा आ ‘देखल गेल’क वास्तविक घटना अलग छथि। फाटकपर चस्पा, भीतर बजल फोन आ प्रबन्धकक अनुश्रवण तीन स्वतन्त्र विवरण छथि। लेखक बच्चाक दृष्टिसँ विधिक कथनक छोट किन्तु निर्णायक अन्तर खोलैत छथि। उपन्यासक नाम-पहरुआ आब केवल नामक सही वर्तनी नहि, क्रियाक सही काल आ सम्पन्नताक वास्तविक सीमा लिखब सीखि रहल अछि।

अनुपस्थित ध्रुवेशक बहुविध कथा

गाममे ध्रुवेश भागि गेल, बीमार अछि अथवा षड्यन्त्रक शिकार अछि—एहन परस्पर विरोधी आवाज उठैत अछि। मीरा प्रत्येक दावाक स्रोत खोजबाक आग्रह करैत छथि। एहि दृश्यसँ सर्वज्ञ कथावाचकक भीतर सेहो समुदाय अनेक अपूर्ण कथा बनबैत अछि। आलोचनाक आवश्यकता अछि जे अफवाहक अस्तित्वकेँ तथ्यक अस्तित्व नहि मानल जाय। आरोपीक अनुपस्थिति रहस्य-निर्माणक साधन अछि, पर स्वतः पलायन अथवा अपराधक प्रमाण नहि।

नियन्त्रित वाक्य आ पात्रक अधिकार

ध्रुवेशक सम्भावित विधिक स्वर-नमूनाक लेल ‘सेवा डरक व्यापार नहि’ तथा ‘पहिने विश्वास बनाउ’ जेकाँ वाक्य चुनल जाएत। सामान्य भाषण आ भयक स्क्रिप्टक वाक्य एकहि परीक्षण-परिसरमे पहुँचैत अछि। ई अध्याय अभिनय-निरपेक्ष स्वरक सम्भावना पर प्रश्न उठबैत अछि: जखन अपराधक भाषा स्वयं अभ्यासित अछि, तखन असली आवाजक चिन्हारि केना होएत? कथाकार परीक्षणक योजना देखबैत छथि, परीक्षण सम्पन्न भेलाक अथवा परिणाम भेटलाक दावा नहि करैत।

समनक सार आ समुदायक अधीरता

लोकसभक बीच व्यक्तिगत समनक प्रतिलिपि बाँटल नहि जाएत; ओकर सार मात्र पढ़ल जाइत अछि। मीरा सार्वजनिक उत्तरदायित्व आ व्यक्तिगत प्रक्रिया-गोपनीयताक सीमा राखैत छथि। आरोपी दोषी सिद्ध नहि, मुदा उत्तर देबाक बुलाहट अछि। एहि सन्तुलनसँ सामूहिक अदृश्य अदालत विधिक न्यायकेँ प्रतिस्थापित नहि, समाजक स्मृतिक माध्यमसँ ओकरा प्रश्न आ सहारा दैत अछि। जनता बदला चाहैत अछि; कथा ओकरा पञ्जीबद्ध प्रमाणसँ काम करबाक सीख दैत अछि।

बैंकक नाड़ी आ आवाजक साँस

विनीत झा बैंककेँ संदिग्ध खाताक निगरानी आ मोट निकासीक विषयमे सूचना पठबैत छथि। एहि बिन्दुपर ‘साँस’क प्रतीक धनक ‘नाड़ी’सँ जुड़ैत अछि। अपराधक अंकीय आवाज हवा मे मुक्त नहि, लेनदेनक व्यवस्था सँ पोषित होइत अछि। कथा भौतिक शरीरक शब्द, प्रौद्योगिकीक संकेत आ वित्तीय हिसाबक रेखा एकहि लयमे रखैत अछि। किन्तु निगरानीक सूचना आ वास्तविक खाता-निरोध अलग घटना छथि; अगिला अध्याय ओहि अन्तरकेँ परिणाममे बदलत।

मृतकसभक लोक-समन

चन्ना गाछी लग बिसेसर पासवान, नन्द आरुणि, छोटू आ अनाम भयग्रस्त स्त्रीक नाम पुकारल जाइत अछि, प्रत्येक नामक बाद हवा खाली छोड़ल जाइत अछि। ई दृश्य न्यायालयक विधिक समन नहि, स्मृतिक लोक-नाटकीय प्रतिरूप अछि। पात झरब, कुकुरक भुकब, पोखरिक लहरि—ई प्रकृतिक प्रतिक्रियासभ मृतकक प्रत्यक्ष उत्तर घोषित नहि करैत; सामाजिक शून्यकेँ संवेदनात्मक रूप दैत अछि। एहि बहुध्वन्यात्मक दृश्यसँ कथा पुरान जलसमाधि आ वर्तमान समनक सेतु बनबैत अछि।

मोहन पासवानक सीमित स्वीकार

शीतांशुक पुरान सहायक मोहन पासवान दू सीलबन्द लिफाफा पहुँचेबाक बात कहैत अछि—एक ध्रुवेशक घर, दोसर बैंकक पाछाँ गली। ओ भीतर की छल, नहि देखल। एहि कथनसँ लिफाफाक आवागमनक सम्भावित शृंखला खुलैत अछि, मुदा सामग्रीक अर्थ अज्ञात अछि। ‘रसीद नहि, मोन नहि’ जेकाँ निर्देश संस्थागत विस्मरणक नाटक अछि। अगिला अध्यायक ‘रोकल खाता’क पूर्वसूचना एकर भितरे अछि, मुदा ई स्वीकारोक्ति स्वयं ककरो अन्तिम आर्थिक दायित्व स्थापित नहि करैत।

प्रकरण २९६ | मूल अध्याय १९५ — रोकल खाता

भोरक कतार आ रोकक द्विविध अर्थ

खाता रोकबाक समाचारसँ अध्याय आरम्भ होइत अछि, मुदा बैंकक शटर आधा उठितहि बाहर पेंशन लेबय आयल वृद्धा, मजदूर, छात्र आ भयग्रस्त स्त्रीक कतार देखाइत अछि। पाठक तुरन्त बुझैत अछि जे आर्थिक अपराधक धारा रोकबाक निर्णय प्रभावित परिवारक जीवित जरूरत सेहो छूबैत अछि। कथाकार ‘रोक’केँ केवल दण्डक विजय नहि, अनिच्छित सामाजिक क्षतिक सम्भावना सहित प्रस्तुत करैत छथि। ई दृश्य उपन्यासक नैतिक अर्थकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि।

खाता-मिलानक बहुस्रोतीय अनुशासन

विनीत झा आदेश दैत छथि जे नामक समानताक आधारपर कोनो खाता नहि रोकल जाए; स्रोत, प्रवाह, लाभुक, हस्ताक्षर आ फोनक सूत्र जाँचल जाए। बैंक-प्रबन्धक मनोज मिश्रक रोजमर्रा कागजी संसार आ चन्ना गाछीक लोक-रजिस्टर एकहि पटलपर अबैत अछि। कथाकार प्रत्येक रोक-आदेशक पाछाँ नब प्रमाणक माँग बनबैत छथि। जे नील पञ्जी पहिने अपराधक औजार छल, तकरा प्रतिलिपि आब अपराध रोकबाक शृंखलामे प्रश्नक स्रोत बनि रहल अछि।

सेवा कोषक उज्जर शीर्षक

‘हरिहर सेवा केन्द्र सहायता कोष’क उद्देश्य वृद्ध-सेवा, छात्रवृत्ति आ आपदा-सहायता अछि, मुदा छोटे-छोटे जमा बाद एकहि दिनक भारी निकासी आ अस्पष्ट ‘विशेष सेवा’ खर्च देखाओल जाइत अछि। शब्द आ लेनदेनक विरोध उपन्यासक पुरान ‘दानक ऋण’ रेखाकेँ आर्थिक वृत्तमे रूपान्तरित करैत अछि। मीरा प्रश्न करैत छथि—विशेष सेवा केकर? ई प्रश्न केवल लेखाक अंक नहि, सहायता कथनक नैतिक सम्बोधन सेहो माँगैत अछि।

मधुकर-सम्बद्ध खाताक गोल धारा

मधुकरक परिवारक नामपर खाता कम रकम मुदा बारम्बार जमा-निकासी देखबैत अछि। वृद्धक खातासँ निकसल राशि मध्यस्थ खाता हुँदै नकद बनबाक वर्णन अपराधक प्रवाहक कथात्मक नक्शा रचैत अछि। आवाज बनौनिहारक सम्भावित वित्तीय लाभ एहि दृश्य सँ प्रश्न बनैत अछि। मुदा खाताक नामपर सभ परिवार-सदस्यक दोष मानि लेब मूल पाठक सावधानी विरुद्ध हएत। शाखाक मुद्रित पर्ची आ प्रत्यक्ष लाभार्थी अलग मिलान माँगैत अछि।

सुरजमुखी देवीक पूरा नाम

पञ्जीमे ‘सुरजा देवी’ लिखल रहैत अछि, मुदा स्त्री स्वयं अपन पूरा नाम ‘सुरजमुखी’ बतबैत छथि। कथाकार छोट नाम कैँ बैंकक संख्या-जगतमे मनुष्यक अस्तित्व घटेबाक रूपमे देखबैत छथि। अनन्या पूरा नाम लिखैत अछि, जखनकि सुरजमुखी अपन बेटाकेँ जेलसँ बचेबाक नकली धमकीक कथा कहैत छथि। ई छोट सम्बोधन-

संशोधन विशाल वित्तीय जाँचक बीच पीड़ितक स्वयं बोलबाक अधिकार पुनर्स्थापित करैत अछि। नाम-सुरक्षा एहि प्रसंगमे केन्द्रीय आख्यान-क्रिया अछि।

पाँच खाता रोकल, बाकी जाँचमे

अध्यायमे पाँच खातापर रोक, दू खातापर आंशिक जाँच, तीन पर निगरानी आ ध्रुवेशक निजी शोध-न्यासक एक विवादित खाताक उल्लेख भेटैत अछि। एहि संख्यात्मक भेदकेँ एकहि ‘सभ खाता जब्त’ जेकाँ उपसंहारमे मिलाबब गलत हएत। कथा वित्तीय अन्वेषणक बीच अन्तरिम परिणाम देखबैत अछि, अन्तिम वसूली नहि। यैह सूक्ष्मता दीर्घ कथाक विश्वसनीय समय-रचना अछि: निर्णय एकरेखा नहि, अनेक अलग अवस्था मे विकसित होइत अछि।

रोकक बादक फोनक बहुवचन

खाता रोकलाक समाचार पसरिते अलग-अलग स्वर आवैत अछि—सेवा बाधित होयबाक दुहाइ, धर्मार्थ कोषक विरोध, मधुकरक काँपैत अनुरोध आ बच्चासभकेँ लक्ष्य करैत अज्ञात धमकी। एतय आवाजक पूर्वक अभ्यास-प्रकरणसभकेँ कथाकार आर्थिक परिणामक संग जोड़ैत छथि। धनक बाट बन्द भेलाक बाद सार्वजनिक भाषाक सुर बदलैत अछि। मुदा फोनपर के बाजल अथवा कोन निर्देशन-शृंखला छल, सभक स्वतन्त्र पुष्टि अपेक्षित अछि; कथाक बहुस्वर अपराधीक अन्तिम एकवचन नहिएँ बनैत।

मनोज मिश्रक कथन आ ‘ऊपर’ शब्द

बैंक-प्रबन्धक मनोज मिश्र पुरान भारी निकासीक समय ‘ऊपरसँ’ फोन आबयबाक बात स्वीकारैत छथि। ‘ऊपर’ शब्द पहिने कुर्सीक कमरा, मुहरबाहकक आदेश आ अदालती कागचमे आलोच्य रहल; आब बैंकक भीतर उभरैत अछि। ई पुनरावृत्ति राजनीतिक-संस्थागत पदानुक्रमक भाषा पर व्यंग्य अछि। तथापि ‘ध्रुवेश निर्देश’ प्रचलित उल्लेख रहितो प्रबन्धकक पूरा प्रत्यक्ष प्रमाण नहि; सत्यव्रत एहि अन्तरकेँ जाँचबाक योग्य लिखैत छथि।

नन्दक प्रतिवेदनक नामपर भुगतान

नकद-निकासीक एक पर्चीपर ‘नन्द आरुणि प्रतिवेदन-सहायता’ लिखल भेटैत अछि। वर्तमान खाताक जाँच अचानक पुरान गङ्गा-पुल दुर्घटना, नन्दक अपूर्ण रिपोर्ट आ आरुणिक पारिवारिक स्मृतिक भीतर उतरैत अछि। आरुणिक हाथ काँपनाइ कथानकक सबसँ गहिर व्यक्तिगत क्षणसभमे एक अछि। पाइ आ मृत स्मृतिक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि, मुदा ककरा पैसा भेटल, प्रतिवेदन कोना उपयोग भेल, ई अनिश्चित। नामक वापसी कथात्मक न्याय अछि, आर्थिक न्याय एखन असमाप्त।

वसूल राशि बनाम पीड़ितक पुनर्भरण

लोकसभ रोकल रकम कतेक घुरत पूछैत छथि; मीरा स्पष्ट करैत छथि जे रोक आ पीड़ितक खातेँ वसूल राशि वापस देब अलग विधिक अवस्था छथि। सुरजमुखी कहिया पाइ भेटत पूछैत छथि, मुदा मीरा निश्चित तिथि नहि बेचैत। एहि स्वरमे उपन्यासक भावात्मक ईमानदारी अछि: चन्ना गाछीक सार्वजनिक सुननाइ बिना परिणामक

चमत्कारक आश्वासन नहि दैत। मीरा अपराधक खाता आ पीड़ितक दावा-पञ्जी अलग रखबाक निर्णय दैत छथि; वित्तीय नाटक मानवीय आशापर हावी नहि होइत।

जलसमाधिक पुनरर्थीकरण

अन्तिम रातिमे गोहि, पनिडुब्बी, बूढ़बा भूत आ हुलासी नामक स्मृति-घेर बनबैत छथि। जलसमाधि आब केवल पानिमे देह डूबबाक नाम नहि, विस्मृतिमे नाम डूबबाक रूपक बनैत अछि। बिसेसरक पुल-दुर्घटना, नन्दक रिपोर्ट, सुरजमुखीक रकम आ वृद्धाक चोरायल आवाज एकहि व्यापक हरण-क्रियाक अलग रूप छथि। तथापि भौतिक मृत्यु आ आर्थिक क्षतिक वास्तविक अन्तर बचल रहबाक चाही; ई प्रतीकात्मक साम्य दुखसभकेँ समान घटना घोषित करबाक अनुमति नहि दैत।

अन्तिम खाताक छाह आ अगिला जल-दिशा

ध्रुवेशक शोध-न्यासक दू अतिरिक्त खाता, ‘लोक-स्मृति-संरक्षण’क व्यंग्यपूर्ण उद्देश्य आ मशीनक अनुत्तरित फोन अगिला खण्डक रहस्य बनैत अछि। एक ठाम खाताक प्रवाह रोकोल गेल, दोसर ठाम नामक विस्मृति बेचनिहार नव वित्तीय मार्गक संकेत अबैत अछि। अनन्या ‘जलसमाधिक अर्थ’ लिखि बही खोलैत अछि। ई उपसंहार अन्तिम जीतक घोषणा नहि; आरम्भिक जल-दुर्घटनाक दिशामे फेर मुड़बाक संरचनात्मक सेतु अछि। आठ अध्यायक बाद कथा पुरान घाव दिस नब प्रमाणक संग घुरैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : महेश्वरक मुहरसँ रोकल खाता धरि

मूल अध्याय १८८–१९५क क्रम एक विशिष्ट आख्यानात्मक परिभ्रमण बनबैत अछि। आरम्भमे ‘महेश्वरक मुहर’क नील छाप तीन कागचपर देखाइत अछि; तकरा पाछाँ लोहाँक पेटी खुजैत अछि, नील पंजी नामक वर्गीकरण देखबैत अछि, ध्रुवेशक कुर्सी अनुपस्थित आदेशक स्थल बनैत अछि, बन्द रेकॉर्डरक स्वर सुनाइत अछि, ध्वनिक तुलनासँ चेहराक प्रश्न उठैत अछि, समनक माध्यमसँ उत्तर माँगल जाइत अछि आ अन्तिमे खाताक प्रवाह पर अन्तरिम रोक लगैत अछि। ई क्रम दस्तावेज, वस्तु, चित्र, स्वर, न्यायिक भाषा आ वित्तीय अभिलेखक बदलैत माध्यमक सहारे बनल अछि; एक माध्यमक कमी अगिला माध्यमक खोज प्रेरित करैत अछि।

पहिल तीन अध्यायमे ‘सेवा’ शब्दक पुनरावृत्ति कथाक रचनात्मक व्यंग्य अछि। रानी महिला सहायता समिति, हरिहर सेवा केन्द्र, स्मृति-कोष, लाभार्थी-पंजी आ विशेष संरक्षण—ई सभ नाम सार्वजनिक उपकारक प्रतीक बनैत छथि, मुदा भीतर खाली पत्र-मस्तक, असहमतिक सम्भावना, जाली अंगूठा आ भयक लक्ष्य-सूची भेटैत अछि। तथापि उपन्यास प्रत्यक्ष संस्थागत दोषक मूल्यांकन सँ पहिने प्रत्येक मोहरक उत्पादन, तिथि, प्रयोग आ पन्नाक स्रोत अलग रखबाक नियम दैत अछि। एहि कारण कथा नैतिक आक्रोशक धारा रहितो आरोपक सरल सार-सूची नहि बनैत।

पुरान पुलक आपदा एहि भागमे पुनः जीवित होइत अछि। लोहाँक पेटीमे बिसेसर पासवानक अधूर दावापत्र ‘अनुपस्थिति’क रूपमे भेटैत अछि; नील पंजीमे नन्द आरुणिक नाम आ मजदूर-सूची; ध्रुवेशक कुर्सीक गद्दाक नीचाँ नन्दक फाटल रिपोर्ट; रेकॉर्डरमे बिसेसरक प्रकरण नहि खोलबाक वाक्य आ नन्दक सूची काटबाक निर्देश;

रोकल खातामे नन्दक प्रतिवेदन-सहायताक भुगतान। वस्तु बदलैत अछि, मुदा अधूर मृत्यु-गणना आ नामक हरणक मूल प्रश्न टिकायल रहैत अछि। ई दुहराव यन्त्रणा होएबाक बदला दीर्घ कथाक कालान्तरगत एकता बनबैत अछि—मूल दुर्घटना नव आर्थिक अपराधक भीतर पुनः पाठ्य होइत अछि।

रचनाक ध्वनि-विन्यास विशेष स्मरणीय अछि। कुर्सीक घण्टी, पंखाक चरमराहट, ‘नरम_माय’क नकल ममता, ‘कानून_डर’क शासकीय शब्द, ‘नन्द_सूची’क पढाइ, कुर्सी रातिक घर्षण आ ‘पहिने विश्वास, फेर भय’क दोहराव—ई सभ संग मिलि अपराधक अभिनयक श्रव्य वास्तुकला बनबैत अछि। मुदा विशेषज्ञ अभय आ विनीत बारम्बार कहैत छथि जे ध्वनि-साम्य निर्णायक पहिचान नहि; विशेषज्ञ प्रयोगशाला, विधिक नमूना, समय, साक्षी आ वस्तुक संरक्षण अपेक्षित अछि। एहि मर्यादाक उपस्थितिसँ नाटकीय उत्कण्ठा कमजोर नहि, बेसी विश्वसनीय बनैत अछि।

पात्र-दृष्टिमे लोकक कान आ संस्थाक पंजी निरन्तर टकराइत अछि। वृद्ध कारीगर बजरंग मुहरक कटाई चिन्हैत छथि; नरहरी पुरान नामक रूप मोन करैत छथि; गदाधर कुंजी आ घण्टीक चुप अनुभव बतबैत छथि; आरुणि अपन पितृ-स्मृतिसँ काँपैत अछि; अनन्या सूक्ष्म वाक्य आ नाम लिखैत अछि; सोमरी, सुरजमुखी आ आन स्त्रीसभ अपन दबावक शर्त बजैत छथि; अभय आ विनीत उपकरणक सीमा बतबैत छथि; मीरा बयानक निजी मर्यादा बनबैत छथि। ई बहुकेन्द्रीय ज्ञान-रचना सभसँ ऊपर एक सर्वज्ञ निर्णायक वाचककेँ स्थापित नहि करैत; कथाक सत्य विभिन्न अपूर्ण स्थानसँ धीरे-धीरे बनैत अछि।

एकटा विशिष्ट नामगत सावधानी राखबाक आवश्यकता अछि। पूर्ववर्ती विद्यालयक नामावलीमे मधुकर माधव मिश्रक पिता महेश्वर मिश्रक उल्लेख छल, जखनकि वर्तमान भागमे ‘महेश्वरनाथ सेवक’, ‘महेसर’, ‘म. न. सेवक’ आ संस्था-सम्बद्ध कुंजी-रक्षक उभरैत अछि। प्रस्तुत अंश एतय सभ नाम अनिवार्यतः एके व्यक्तिक अछि, से अन्तिम निष्कर्ष नहि दैत। एकर संग ध्रुवेशक कुर्सीक प्रयोग, ‘ध्रु.’ संकेत, आवाजक समानता आ खाली आदेश-पत्र सेहो स्रोताधारित अनुमानक पृथक् स्तर छथि। ई अनिश्चिततासभ साहित्यिक असङ्गति होयबाक सम्भावना सहित विश्लेषणयोग्य छथि; बिनु पुष्टिक कथा पूर्ण प्रमाणित अपराध-इतिहास नहि बनाओल जाए।

जादुई यथार्थक प्रभाव दृश्य-चिह्न आ प्रकृति-प्रतिक्रियामे वितरित अछि। नील मोहरक छाह गाछीक पातपर पड़ैत अछि; जङ लागल कुंजी साँस लैत बुझाइत अछि; भूतसभ अधछापक पास घुमैत छथि; खाली माटिक कटोरी आवाजक आकार बनैत अछि; बिसेसरक पुरान जलसमाधि बैंकक खातामे प्रतिध्वनित होइत अछि; पनिडुब्बी ओसक बून्द पन्नापर रखैत अछि। ई लोक-प्रतीकसभ आर्थिक, कागजी आ ध्वनिक हिंसाक भावात्मक व्याकरण बनबैत छथि, मुदा मुहरक मूल, ध्वनि-अभिलेख अथवा बैंकक लेनदेनक वास्तविक परीक्षणक विकल्प नहि होइत।

प्रकरण २९६ ‘रोकल खाता’ एहि आठ अध्यायक नाटकीय शिखर अछि, मुदा एकर परिणाम अन्तरिम अछि। पाँच खाताक वास्तविक रोक, दू खाताक जाँच, तीनक निगरानी, विवादित न्यासक वित्तीय मार्ग आ पीड़ितक पृथक् दावा-पंजी—ई सभ चरण अलग-अलग छथि। मीरा सुरजमुखीकेँ रकम घुरबाक कल्पित तिथि नहि दैत; रोकल धनक बाद विधिक प्रक्रिया, वास्तविक लाभुकक चिन्हारि आ क्षतिक पुनर्भरण बाकी अछि। उपन्यास एतय जलसमाधिक अर्थ देह डूबबासँ नामक विस्मृति धरि विस्तृत करैत अछि। एहि पुनरर्थीकरणक कारण अन्तिम पाँच

अध्यायक दिशामे कथाक प्रवेश केवल आपराधिक जालक समापन नहि, अधूरी स्मृतिक पुनर्प्राप्तिक प्रश्न बनैत अछि।

प्रकरण २९७ | मूल अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

शीर्षकक अन्तिम पुनर्पाठ आ अर्थक परिवर्तन

अध्याय १९६ कथाक नामकेँ पुनः पुछैत आरम्भ होइत अछि। ‘जलसमाधि’ पहिने नदी, गोहि, छपाक आ गुम भेल देहक भय जगबैत छल; एतय मीरा ओकरा नामक विलोपन, अभिलेखक झूठ, स्त्रीक दबाओल स्वर, जमीनक बेदखली आ अंकीय ठगीक संग पढ़ैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे वास्तविक जल-मृत्यु प्रतीकमे विलीन भऽ गेल; उलटे वास्तविक मृत्यु कथाक सभ अन्य क्षतिक मानदण्ड बनैत अछि। शीर्षकक अर्थक विस्तार उपन्यासक आख्यानात्मक समापनक मुख्य क्रिया अछि—आरम्भिक प्रश्नक उत्तर देब, मुदा उत्तरकेँ एकरेखीय नहि बनाउ।

त्रिजलक कटोरा: कथावस्तुक संक्षिप्त प्रतिरूप

आरुणिक खाली लोटा आ फकीरा साहनीक बेटाक काँसक कटोरा एहि अध्यायक केन्द्रमे अछि। इनार, कमला-बलान आ गंगाक जल अलग-अलग भौगोलिक दृश्य अछि, मुदा तीनू बून्द एक पात्रमे पड़िते घरक भीतर दबल मृत्यु, नदीक कटल जमीन आ पुलक मजदूरक अनुपस्थिति एके स्मृति-सम्पर्कमे अबैत अछि। कथावाचक एतय महावृत्तान्तकेँ एक छोट वस्तुमे संकुचित करैत अछि। कटोरा कथाक सारांश नहि, स्थानसभक परस्पर सम्बन्धक भौतिक उपस्थिति अछि; ताहि कारण जलक प्रत्येक बून्दक संग एक अलग इतिहास उच्चरित होइत अछि।

फकीरा साहनीक बेटा: पीढ़ीगत साक्षीक प्रवेश

फकीरा साहनीक बेटा स्वयं बूढ़ भऽ गेल छथि। एहि बारीक विवरणसँ मूल आपदाक बाद बीतल समय केवल तिथि नहि रहि जीवनक देहपर अंकित होइत अछि। पिताक कथन पुत्रक हाथमे रखल कटोरासँ फेर उच्चरित होइत अछि। पूर्ववर्ती साक्षी अनुपस्थित रहलो पर ओकर कथनक वस्तु-वाहक उपस्थित अछि। एतय कथन-प्राधिकार कोनो सर्वज्ञ आदेशसँ नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्मरणक हस्तान्तरणसँ बनैत अछि। मल्लाहक वंश गामक स्मृतिमे मात्र नावक काम नहि, गुम नामकेँ पुकारबाक दायित्व सेहो वहन करैत अछि।

नन्द आरुणिक दैनन्दिनी आ लौटैत मूल वाक्य

सत्यव्रत मेहताक हाथमे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि अछि; ओहिसँ ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’क मूल सूत्र पुनः उभरैत अछि। कथावाचक बीतल आपदाकेँ नब घटनाक रूपमे दोहरबैत नहि; लिखल पन्नाक पुनर्पाठ बनबैत अछि। ई पुनरावृत्ति स्मृतिसँ सम्बन्धित अध्यायसभकेँ परस्पर जोड़ैत अछि। मुदा ध्यान देबाक अछि जे हाथमे प्रतिलिपि अछि, मूल दैनन्दिनी नहि—अभिलेखक प्रामाणिकता एहि ठामो मध्यस्थित अछि। कृति अपन अन्तमे सेहो प्रत्यक्ष भेंटक सरल दाबी नहि करैत, लिखित साक्षीक मार्ग देखबैत अछि।

‘छपाक’ सँ ‘रोकल खाता’ धरि रेखा: समयक वलय

आरुणि पाथरपर पहिल छोर ‘छपाक’, दोसर ‘रोकल खाता’ आ बीचमे ‘नाम’ लिखैत अछि। एहि दृश्यसँ लम्बा उपन्यास स्वयं अपन कालक्रमक मानचित्र बना लैत अछि। पहिल आपदाक ध्वनि आ हालक बैंकिंग प्रतिबन्ध परस्पर दूरक घटना बुझाइत अछि, मुदा नामक उच्छेदक प्रक्रिया हुनका जोड़ैत अछि। ई वृत्ताकार कथन नहि जे प्रारम्भे घुरि अपरिवर्तित रहि जाय; हर फेरामे एक नव दस्तावेज, एक नव आवाज, एक नव सम्बन्ध जुड़ैत अछि। आख्यानक अनुक्रमक गुणात्मक परिवर्तनकेँ पाथरक सरल रेखा दृष्टिगोचर बनबैत अछि।

स्त्रीक कण्ठक दोसर रेखा आ घरेलू जलसमाधि

आरम्भिक जल-रूपक एक सीमा धरि पुरुष मजदूरक दुर्घटनापर केन्द्रित बुझाइ सकैत छल। मीरा ‘लाज’ सँ ‘गवाही’ धरि ‘स्त्रीक कण्ठ’ लिखि पाठक केँ स्मरण करबैत छथि जे जलसमाधि घरक भीतर सेहो होइत छल। अँचरामे दबल रोदन, शरणक कागच, विधवाक अंगूठा आ बदनामीक भय एहि पुनरर्थीकरणक आधार बनैत अछि। एहि हस्तक्षेपसँ अन्तिम सामुदायिक दृश्य केवल पुरुष श्रमिक-स्मारक नहि बनि रहैत; उपन्यासक स्त्री-दृष्टिकेँ समापनक अर्थ-निर्धारणमे सक्रिय स्थान भेटैत अछि।

ध्वनि आ साँसक तेसर रेखा: आधुनिक गोहिक देह

देविका ‘आवाज’ सँ ‘चेहरा’ धरि ‘साँस’ लिखैत अछि। नदीक गोहि आ फोनक धमकीक बीच जे प्रतीकात्मक दूरी आरम्भमे पैघ छल, ओ एहि पाथरपर कम होइत अछि। नकली अधिकारीक भाषा, जाली आदेश आ चोरी कएल पारिवारिक स्वर नामक अन्त:सम्बन्धक हनन करैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे अध्याय तकनीककेँ स्वयं राक्षस घोषित नहि करैत; अपराधीक शब्द-प्रयोग आ पीड़ितक एकाकीपनकेँ मुख्य राखैत अछि। ‘गोहि’क परिवर्तित अवतारक कथा एहि तरह जल-संसारसँ अंकीय-संसार धरि फैलैत अछि, मूल आपदाकेँ विसरल बिना।

पुष्ट नामक सार्वजनिक पाठ आ तमाशाक निषेध

बिसेसर पासवान, सलामत अंसारी आ अन्य नामसभ कटोराक कात पढ़ल जाइत अछि। मुदा मीरा ध्रुवेशक तात्कालिक फैसला सुनएबाक माँगकेँ रोकैत छथि। ओहि रोकमे अध्यायक नैतिक कथन-प्रविधि अछि: मृतकक नाम-उद्धार, वर्तमान अभियुक्तक दोष-निर्णय आ लोकक सामूहिक शोक तीन अलग क्रिया छथि। सार्वजनिक नाम-पाठक भावनात्मक ऊँचाईक अवसर पर कथा न्यायिक निष्कर्ष नहि गढ़ैत। एहि संयमसँ अन्तिम संस्कार-जेकाँ दृश्य बदला अथवा राजनीतिक जयघोषमे बदलनासँ बचैत अछि, आ शोकक अपन औचित्य सुरक्षित रहैत अछि।

भूतक वृत्त आ देखनिहारक अनिश्चितता

कारी भूत, उज्जर प्रेत आ बूढ़बा भूत कटोराक चारू कात आ गाछीक छाहमे उपस्थित बुझाइत छथि। ओ सभकेँ शाब्दिक साक्षी बनाकऽ दस्तावेजक स्थान नहि देल गेल अछि; ओ स्मृति, अपराधबोध आ संरक्षणक दृश्यात्मक रूप छथि। पानि अचानक उज्जर बुझाएब अथवा पात हिलब कथा-संसारक जादुई यथार्थकेँ अन्तिम बेर सघन

करैत अछि। तथापि मीरा आ बच्चासभक रजिस्टर ठोस वस्तु, अनुमति, दिन-समय आ नामक भेद बनौने रखैत अछि। कल्पना आ अभिलेखक सह-अस्तित्वे एहि आख्यानक विशेषता अछि, कोनो एकरे दोसरपर विजय नहि।

विधिक परिभाषा आ सामुदायिक अर्थक अलग धरातल

विनीत झा जलसमाधिक लिखित विस्तृत अर्थ दैत छथि: मृत्यु, स्मृति, चिन्हारि, आर्थिक स्वायत्तता आ आवाजक संगठित दमन। ई उपन्यासक भीतरक एक पात्रक कथन अछि, सार्वभौम विधिक परिभाषा नहि। कथामे ओकर काज सामुदायिक अनुभवकेँ नब भाषा देनाइ अछि; वास्तविक अभियोजनक आधार अलग साक्ष्य रहत। एहि भेदकेँ आख्यान स्वयं मानैत अछि जखन मीरा परिवारक शोक आ ध्रुवेशक आपराधिक सुनवाई अलग राखैत छथि। विचारक कथात्मक सम्प्रेषण आ संस्थागत निर्णयक सन्धि एतय स्पष्ट देखाइत अछि।

‘जल-उद्घाटन’क प्रस्ताव आ भाषिक उलटफेर

साँझक कटोरामे मटमैला जलक उज्जर बुझाएब ‘जल-उद्घाटन’क नब नाम जन्मबैत अछि। जलसमाधिसँ जल-उद्घाटन धरि ई शब्दगत यात्रा समग्र कथाक भाव-परिवर्तन बनैत अछि। ई चमत्कारी पुनर्जीवनक घोषणा नहि; जे देह घुरि नहि सकत ओकर नाम फेर उच्चरित होयत, ई विश्वासक रूप अछि। नामक प्रतिलिपि आ परिवारक अनुमति एही उपमानकेँ जमीन दैत अछि। एहि कारण शब्दक उलटफेर केवल कवितामय सजावट नहि, सामुदायिक स्मृति-प्रक्रियाक संक्षिप्त संकल्प बनैत अछि।

शान्त अन्त, नब शीर्षक आ क्रमशः खुलैत निष्कर्ष

अध्यायक अन्तमे केओ गिरफ्तारी अथवा विजयक योजना नहि बजैत। अनन्या कहैत अछि कथा आरम्भ धरि घुरल; सत्यव्रत ओकरा आरम्भकेँ न्याय धरि अनबाक रूपमे देखैत छथि। दू कथनक अन्तरमे अन्तिम भागक काल-दृष्टि अछि: घटना अतीतमे रहलो वर्तमानमे अर्थ प्राप्त करैत अछि। कटोरा गाछीक जड़ि लग छोड़ल गेल अछि, तकर आगाँ ‘ऊपर उठल नाम’ लिखल नव पन्ना खुजैत अछि। कथावाचक पूर्ण विराम नहि, एक प्रश्नसँ दोसर प्रश्न धरि बढ़ैत नव क्रम अपनबैत अछि; उपसंहारक पहिल अध्याय आगाँक आवश्यक क्रिया निर्धारित कऽ समाप्त होइत अछि।

प्रकरण २९८ | मूल अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

स्थिर जलसँ अस्थिर किनार धरि दृष्टि-स्थानान्तरण

अध्याय १९७क आरम्भमे कटोराक पानि स्थिर अछि, मुदा नाम ऊपर उठिते किनारक लोकसभक स्मृति आ सामाजिक स्थिति बदलैत अछि। कथावाचक जलमे नाटकीय भँवर उत्पन्न करबाक बदला गामक प्रतिक्रिया पर दृष्टिकेन्द्र राखैत अछि। ‘ऊपर उठनाइ’ देहक पुनर्जीवन नहि, अभिलेखमे उपस्थितिक पुनर्स्थापन अछि। एहि कारण दृश्य आरम्भमे भौतिक शान्ति आ भीतरक उथल-पुथलकेँ आमने-सामने राखैत अछि। समापन-समीक्षा लेल ई भेद निर्णायक अछि, कारण कथाक वास्तविक वस्तु गुम नामक सामाजिक भाग्य अछि, पानिक बाहरी गतिकी मात्र नहि।

अनुमति-पहिने पाठ: स्मृति-सुनवाईक नैतिक ढाँचा

मीरा घोषणा करैत छथि जे परिवारक अनुमतिसँ नाम सार्वजनिक होयत, आ जे परिवार चुप रहब चुनत ओकर अधिकार सुरक्षित रहत। कथा शोकक्रेँ भीड़क देखबाक वस्तु बनबाक खतरा पहिचानैत अछि। एतय वर्णनकर्ता भावनात्मक दृश्यक सम्भावना जानि-बुझि सीमित करैत अछि: प्रत्येक आँसू दर्शक लेल उपलब्ध नहि। एहन कथात्मक संयम उपन्यासक पूर्ववर्ती नाट्य-प्रकरणसभसँ सम्बन्ध रखैत अछि, जतय ‘दर्शक’ क्रेँ ‘साक्षी’ बनबाक प्रश्न छल। नाम-पाठक सभामे श्रोताक अधिकारसँ बेसी परिवारक स्वामित्व प्राथमिक बनैत अछि।

भीजल पात आ अक्षरक विखण्डन

कटोरा लग राखल पातसभ पर ओस पड़िते किछु अक्षर गाढ़, किछु फिक्का आ किछु टुकड़ा-टुकड़ा भऽ गेल अछि। एक ठाम ‘छो’ आ दोसर ठाम ‘टू’ बचल अछि। ई साधारण दृश्य वस्तुक नाजुकता आ स्मृतिक अस्थिरता एक संग देखबैत अछि। कथामे नामक पुनरुत्थान तत्काल पूर्ण लिखावटसँ नहि, विखण्डित अक्षरक्रेँ परिवारक अनुभवसँ जोड़बाक श्रमसँ सम्भव बनैत अछि। अनन्याक पेंसिल आ सत्यव्रतक पुरान पुल-पंजी एहि अधूरापनक्रेँ वास्तविक कार्यकारी समस्या बनबैत अछि, केवल करुण उपमा नहि।

फूलकलीक कथन आ छोटूक नामक पहिल पुनर्रचना

फूलकली आगाँ आबि पुलक मजदूरक पंजी आ अपन स्मृतिक बीच बाँचल पुत्रक्रेँ चिन्हबैत छथि। पाठमे ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ नाम लिखल जाइत अछि, संगमे ‘मृत/गुम’ आ ‘अनुपस्थित’क अलग-अलग अभिलेखी स्थितिसभक अन्तर उभरैत अछि। एहि दृश्यक केन्द्रीय शक्ति मृतकक जीवनक पूरा वृत्तान्त नहि, मायक मुँहसँ उच्चरित नामक औचित्य अछि। गामक पुरान भाषामे ‘अनुपस्थित’ प्रशासनिक सुविधा छल; एतय वैह शब्द मातृत्वक अँचरपर चोट बनि पड़ैत अछि। नाम-पाठ एहन झूठक भाषा खोलबैत अछि जकर एकरूप दस्तावेजी निराकरण एखन बाकिये अछि।

मायाक स्मृति बनाम मुद्रित अनुपस्थिति

सत्यव्रत पुरान पुल-निर्माणक प्रतिलिपि देखबैत छथि, मुदा फूलकलीक देह आ कण्ठ ओहि कागचक कातमे अपना क्रेँ साक्षी बनबैत अछि। कथनक दृष्टि एहि ठाम प्रशासनिक केन्द्रसँ घरक देहरी दिस खसैत अछि। कागचमे ‘अनुपस्थित’ अथवा अस्पष्ट मजदूर-स्थिति जे नीरस शब्द छल, मायक वाचनमे ओ जिनगीक ऐतिहासिक गुमशुदगी बनैत अछि। एहि उलटफेरसँ पाठक समझैत अछि जे उपन्यास प्रमाणक विरोध नहि करैत; ओ प्रमाणक निर्माणमे आवाजक्रेँ निष्कासित करबाक विरोध करैत अछि। प्रतिलिपि आ स्मृति एक-दोसराक विकल्प नहि, कठिन मिलानक आवश्यक अंग छथि।

विभिन्न मृतकक पितृनाम आ अभिलेखक असमानता

बिसेसर पासवानक नाम पहिनेसँ उपस्थित रहितहुँ पिताक नाम दू पंजीमे अलग लिखल भेटैत अछि। ई प्रसंग देखबैत अछि जे एकटा नाम भेटि जाएब सत्यापनक अन्त नहि। समापनक भावावेगक्रेँ कथावाचक एहन सूक्ष्म अभिलेखी अड़चनसँ रोकैत अछि। परिवारक कथन आ दस्तावेजक भेद अलग लिखल जाइत अछि, जइसे अन्तिम

नाम-पाठ स्वयं संशोधनयोग्य हो। ई शिल्प पाठककेँ आसान पुनर्मिलनक मिथकसँ दूर लऽ जाइत अछि; स्मृतिक पुनर्स्थापन निरन्तर पाठ-संशोधनक दायित्व बनैत अछि।

सुरजमुखी देवी: नाम-उद्धार मृत्यु धरि सीमित नहि

सुरजमुखी अपन नाम ऊपर उठएबाक माँग करैत छथि, यद्यपि हुनक कथा मृत्यु नहि, खातामे बदनामी आ चोरीक आरोपसँ जुड़ल अछि। एहि प्रवेशसँ ‘डूबल नाम’क अर्थ सामाजिक मृत्यु धरि फैलैत अछि। जीवित व्यक्ति सेहो दुसराक खाता, जाली हस्ताक्षर अथवा अफवाहमे लुप्त भऽ सकैत अछि। कथावाचक मृतकक स्मृति-कथा केँ आर्थिक चरित्रहत्या सँ जोड़बैत अछि, मुदा दुनू एके नहि कहैत। एतय तुलनाक शक्ति समानता घोषित करबामे नहि, सार्वजनिक नाम आ निजी अस्मिताक परस्पर निर्भरता देखबामे अछि।

पुष्ट नामक थारी आ प्रतीक्षा-टोकरी

आरुणि एक थारी पुष्ट नामक पात लेल रखैत अछि, आ बाँसक अलग टोकरी अपुष्ट नाम लेल। देविका टोकरीपर लाल सूत बाँधैत छथि। ई दू वस्तु कथाक जाँच-पद्धतिक अत्यन्त ठोस दृश्य छथि। थारी अन्तिम घोषणाक वस्तु नहि, वर्तमान जाँचसँ पुष्ट उपस्थितिक सामयिक लेखा अछि; प्रतीक्षा-टोकरी अधूर प्रमाणकेँ रद्दीमे फेंकबासँ बचबैत अछि। कथा यहाँ स्वीकार करैत अछि जे सभ प्रश्नक उत्तर एके दिन नहि भेटत। अनिश्चितताकेँ व्यवस्थित सुरक्षित रखनाइ उपन्यासक न्याय-दृष्टिक नाटकीय रूप बनैत अछि।

पानिक चमक आ चमत्कार लिखबाक प्रलोभन

नाम पढ़लाक बाद कटोराक सतहपर बून्द, हलुक उजास आ क्षणिक तरंग देखाइत अछि। आरुणिकेँ ओकरा चमत्कार लिखबाक लोभ होइत अछि, मुदा लेखनक दायित्व एहि लोभकेँ रोकैत अछि। ई प्रसंग जादुई यथार्थक आत्म-समीक्षा जेकाँ अछि। लोक-दृष्टि लेल जल मृतकक उत्तर दे सकैत अछि; सार्वजनिक पंजी लेल पहिने ओ दृश्य एखन केवल देखल घटना अछि। कथाक भीतर रजिस्टरक ई संयम कल्पनाकेँ नकारैत नहि, बल्कि ओकरा गलत दस्तावेज बनबासँ बचबैत अछि।

ध्रुवेशक घरक हलचल आ कथनक सीमित दृष्टि

नाम-पाठक बीच खबर भेटैत अछि जे ध्रुवेशक घरमे बेचैनी अछि, वकील सार्वजनिक सुनवाईपर आपत्ति करैत छथि, आ ऊपरक खिड़कीमे छाह दौड़ैत देखल गेल। कियो कहैत कागच बाँधल जा रहल, कियो कहैत फोन बदलायल जा रहल। कथावाचक एहि सुनी-सुनायल सम्भावनासभकेँ अन्तिम तथ्य नहि बनबैत। अभय पीछा नहि, दूरीसँ निगरानीक निर्देश दैत अछि। नामक नागरिक पुनर्पाठ आ अभियुक्तक सम्भावित पलायन एके समयमे चलैत अछि, मुदा कथा शोर आ निश्चितता चुनबाक बदला अपूर्ण जानकारीक तनाव सुरक्षित रखैत अछि।

शिवलाल/शिवनाथ नामक वास्तविक पाठगत अन्तर्विरोध

एहि अध्यायमे फूलकलीक पुत्रक नाम ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ पंजीमे लिखल अछि। मुदा अध्याय १९९ ‘संदूकक भीतरक बिहान’मे एक पुरान मजदूरी पन्नासँ ‘शिवनाथ सदा’ केँ छोटूक पुष्ट असली नाम घोषित कएल जाएत।

दुनू नाम एके पात्रक विकल्प, नाम-परिवर्तनक इतिहास, वा पृथक् मनुष्यक संकेत छथि—एहि विषयमे मूल कथा कोनो स्पष्ट मध्यवर्ती स्पष्टीकरण नहि दैत। अन्तिम पाँच अध्यायक निकट पाठमे ई एक वास्तविक नामगत असङ्गति अछि; एकरा प्रतीकक नामपर स्वतः संगत सिद्ध करब स्रोत-पाठक प्रति अन्याय होयत।

नाम ऊपर उठबाक बाद अगिला नैतिक प्रश्न

अध्यायक अन्तमे पुष्ट नाम, प्रतीक्षारत नाम, माटि, कटोरा आ छायाग्रस्त घर एकठाम देखाइत अछि। फूलकलीक ‘नाम माटिपर टिकाउ’क आग्रह शीर्षकक जल-रूपकक्रेँ धरती दिस मोड़ैत अछि। ताहिसँ अगिला प्रकरण ‘अपराधीक धरती’क तैयारी होइत अछि। पुनर्प्राप्त नाम आब केवल उच्चारण नहि, भौतिक जगतमे अधिकारक दाबी बनबाक चाही। कथन-शिल्प एना एक अध्यायक भावात्मक शिखरक्रेँ दोसरा अध्यायक साक्ष्य-संकलनमे बदलैत अछि, जाहिसँ समापन सतत गतिशील रहैत अछि।

प्रकरण २९९ | मूल अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

कच्चा बाटक साक्ष्य आ स्थल-परिवर्तन

ध्रुवेशक गाड़ी पाछाँक फाटकसँ कच्चा बाट पकड़ैत अछि, आ खरिहानी धारक नमीमे चक्का धँसि जाइत अछि। कथाक निर्णायक स्थल अदालतक बरामदा अथवा बैंक नहि, माटिक नमहर पाँत बनि जाइत अछि। ई बाहरी वातावरणक संयोगो अछि आ पूरे उपन्यासक ‘धरती पढ़नाइ’क पुनरावृत्तियो। डामरक सड़क पर गुम भऽ सकनिहार निशान कच्चा माटि बचा लैत अछि। कथावाचक स्थलक्रेँ निष्प्राण पृष्ठभूमि नहि रहने दैत; मुदा धरती पर भेटल चिह्नक सामाजिक अर्थ उपस्थित लोकक सावधान लेखनसँ बनैत अछि, कोनो अद्भुत स्वतः न्यायसँ नहि।

लोहेक संदूकक गतिशीलता आ दृश्य-रोमांच

पिछला अध्यायसभमे संदूकक भीतरक सामग्री अभीष्ट छल; एहि अध्यायमे ओकरा लऽ जएबाक प्रयास स्वयं घटना बनैत अछि। गाड़ी अटकब, तीन लोकक संदूक उतारबाक कोशिश, ध्रुवेशक उतावलापन आ रातिक इंजिनक आवाज दृश्यक्रेँ तीव्र गति दैत अछि। मुदा पाठ एतेक पर सीमित नहि: वस्तुक पहिचान, गाड़ीक नम्बर, स्थान आ समय लिखबाक क्रम रोमांच पर विराम लगबैत अछि। एकर कारण कथा पाठकक्रेँ केवल ‘पकड़ा गेल’क तुष्टि नहि दैत; ओ घटनाक्रेँ सार्वजनिक रूपेँ कहबाक योग्य बना रहल कथात्मक श्रमक चित्रण करैत अछि।

अभयक संवाद आ संस्थागत विलम्बक पुनरागमन

अभय रात्रि-दलक्रेँ फोन कऽ सूचना दैत अछि; आरम्भिक उत्तर ‘भोरमे देखल जाएत’ प्रकारक टालमटोल अछि। एतय न्यायिक विलम्बक पुरान धुरी आपदाक अन्तिम रातिमे फेर लौटैत अछि। अन्तर एतबे जे आब गामक लोक दृश्य सुरक्षित राखि प्रश्न पुछबाक काज करैत अछि। अन्ततः चौकीक दू कर्मचारी पहुँचैत छथि। ताहिसँ संस्थाक्रेँ पूर्णतः खलनायक अथवा तुरन्त उद्धारकर्ता कहबाक सरलता टूटैत अछि; ओकरा उदासीनता, सावधानी आ सहयोगक बदलैत अवस्थामे देखाओल गेल अछि।

बच्चासभक दूरी आ कथनक दृष्टिक अनुशासन

अनन्या दूरीसँ संदूक, व्यक्ति-संख्या आ रातिक पहर लिखैत अछि; आरुणि चक्काक निशान नापैत अछि। अभय ‘जतेक देखल, ओतेक लिखल’क सीमा स्थापित करैत अछि। एहि पंक्तिसँ कथक-दृष्टिक महत्वपूर्ण परिवर्तन स्पष्ट अछि। पहिने बच्चासभ गोहि, भूत, पानि आ मानवीय पीड़ाक विस्मयक श्रोता छल; आब ओ सभ अपना देखने दृश्यक सत्य-सीमा स्वीकार करबाक अभ्यास कएने अछि। कथन-प्राधिकार एतय उम्र अथवा पदसँ नहि, देखल-कहल भेद राखबाक क्षमतासँ बनैत अछि।

ध्रुवेशक शरीरसँ उतरैत प्रतिष्ठाक आवरण

दूरसँ गाड़ी लग ठाढ़ ध्रुवेश आब सेवा-निकेतनक मंचक सभ्य व्यक्ति नहि, उतावला आ फँसल मनुष्य बुझाइत अछि। शालक अभाव, संदूकक धातु-ध्वनि आ माटिमे अटकल जूता सामाजिक व्यक्तित्वक आवरण उतरबाक दृश्य-संकेत छथि। कथावाचक ओकरा निश्चित दोषी रूपमे न्यायालयसँ पहिने घोषित नहि करैत। जूता आ नंग पएरक दृश्य एक साहित्यिक विडम्बना जरूर बनैत अछि, मुदा मीरा भीड़केँ उपहाससँ रोकैत छथि। अपराध-विमर्शक मध्यमे मनुष्यक अपमानक अस्वीकार ई खण्डक प्रमुख नैतिक तनाव अछि।

सुरजमुखी देवीक उपस्थिति: दाग लागल नामक निगरानी

सुरजमुखी संदूक खोलबाक उत्सव माँगैत नहि; ओ चाहैत छथि जे यदि हुनकर बदनामीक कागच ओहिमे अछि तँ पेटी आँखिक सोझाँ हेराए नहि। हुनकर कथनमे प्रतिशोधसँ बेसी स्मृतिक असुरक्षा प्रकट होइत अछि। एहि संक्षिप्त प्रवेशसँ पाठक समझैत अछि जे अभिलेखक चोरी वस्तु हेराएब मात्र नहि, व्यक्तिक पहिचान फेर सँ छीनि लेबाक खतरा अछि। महिलाक दृष्टि पकड़ेबाक दृश्यकेँ केन्द्रीय अधिकार-प्रश्न बनबैत अछि: साक्ष्य ककरा हानि पहुँचौलक, आ ओकर रक्षामे ककर अधिकार अछि?

जब्ती-पञ्चनामा: नाटकीय उघाड़ि देबाक प्रतिरोध

रातिक भीड़ तुरन्त संदूक खोलएबाक माँग करैत अछि; ध्रुवेश तलाशी-अधिपत्रक बात करैत अछि; विनीत सरकारी मुहर, सूची आ आवश्यक प्रक्रिया पूरा करबाक दिशा दैत छथि। कथा सहज चमत्कारक तरह पेटी खोलि सभ रहस्य उजागर करबाक अवसर ठुकरबैत अछि। ई विलम्ब सामान्य कागजी अड़चन नहि, नैतिक रचनात्मक विकल्प अछि। कथनक उत्कण्ठा संदूकक भीतरक रहस्यसँ बनल अछि, मुदा उचित साक्ष्य-सुरक्षा लेल ओकर तत्काल समाधान रोकल गेल अछि। पाठकक अधीरताकेँ सेहो पात्रसभक अनुशासनक कसौटीपर राखल जाइत अछि।

माटिक नाप आ देहक पगचिन्ह

ध्रुवेशक जूता माटिमे अटकैत अछि, एड़ी आ पंजाक चिह्न देखाइ पड़ैत अछि; अनन्या दूरी, दिशा, स्थान लिखैत अछि। पगचिन्हक साहित्यिक प्रतिमा अपराधक देह धरतीपर उतरबाक अनुभूति दैत अछि। मुदा यथार्थ जाँचक स्तरपर एखन ई मात्र भौतिक निशान अछि, स्वतः अपराधक निर्णायक प्रमाण नहि। एहि दोहरी स्थितिकेँ कथा

लगभग एके दृश्यमें धारण करैत अछि: लोकानुभवमे धरती ‘बोलैत’ अछि, रजिस्टरमे ओ नाप, समय आ स्थिति बनैत अछि। एहि भेदसँ साहित्यिक गहनता घटैत नहि, बढ़ैत अछि।

कारी भूत आ उज्जर प्रेतक परिधि-उपस्थिति

खरिहानी धारक अन्हारमे कारी भूत गोल ठाढ़ जेकाँ, उज्जर प्रेत सरकण्डाक उजास जेकाँ, आ बूढ़बा भूत ध्रुवेशक कानमे पुरान अपराधक स्मरण जेकाँ उपस्थित छथि। दृश्य असली भय, लोकविश्वास आ जादुई यथार्थक एक मिश्रित स्तर बनबैत अछि। तथापि चौकीक कर्मचारीक सूची, अभयक माटि-नमूना आ अनन्याक लेखन दोसर स्वतन्त्र स्तर अछि। मूल पाठ दुनूकेँ समान विधान मानि नहि चलैत; भूतक दृश्य कथाक अन्तःकरणक भाषा बनैत अछि, जब्ती-पत्र सरकारी क्रियाक भाषा।

संदूकक स्थानान्तरण, किन्तु निष्कर्षक स्थगन

सन्दूक चौकीक गाड़ीपर चढ़ि जाइत अछि, मुदा खुलैत नहि। ध्रुवेश ठाढ़ रहि जाइत अछि, लोकसभ कच्चा बाटक निशान सुरक्षित रखैत छथि, आ सार्वजनिक निर्णय टलैत अछि। एहि अध्यायक कथात्मक समाप्ति ‘अपराध सिद्ध’ नहि, ‘भागैत वस्तु सुरक्षित’ अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि, कारण अगिला अध्यायमे संदूकक वस्तु खुलबाक आधार यही प्रक्रियात्मक सुरक्षासँ बनैत अछि। घटनाक आरम्भिक हड़बड़ी आ अन्तिम संयमक बीच लेखकीय लय परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

फूलकलीक माटि आ नामक भौतिक पुनर्स्थापन

फूलकली खरिहानीक माटि उठबैत छथि; बादमे छोटूक पातक कात माटिक बिन्दु रखैत छथि। एतय जल-रूपक धरतीमे जड़ि पकड़ैत अछि। बच्चाक नाम जलसँ ऊपर उठल मात्र नहि, अपन गामक माटि पर जगह पाबय लागल अछि। तथापि एहि संस्कारसँ प्रशासनिक प्रतिवेदन स्वतः बदलि नहि जाइत। कथा भावनात्मक पुनर्स्थापन आ कानूनक परिणाममे दूरी मानैत अछि; एहि दूरिकेँ स्मरण करैत हरेक छोट प्रतीक सामूहिक दायित्वक संकेत बनैत अछि।

जूताक अन्तिम छवि आ अगिला ‘बिहान’क पूर्वाभास

अध्याय ध्रुवेशक माटिमे अटकल जूतापर जमल ओसक दृश्यसँ समाप्त होइत अछि। केओ ओकरा तुरन्त निकालैत नहि; भोरक उजास ओहिपर पड़ैत अछि। एतय दण्डक बाहरी तमाशा नहि, लज्जा आ प्रमाणक गाढ़ अन्तराल अछि। ‘संदूकक भीतरक बिहान’ शीर्षक एहि अन्तक पाछाँ घोषित होइत अछि, जाहिसँ कथा एक रातिक सार्वजनिक दृश्यसँ अगिला दिनक निरीक्षण-कोठरीमे प्रवेश करैत अछि। रातिसँ भोर धरि समय-गति आख्यानमे नैतिक परिवर्तनक संरचनात्मक समकक्ष बनैत अछि।

प्रकरण ३०० | मूल अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

सन्दूक खुलबाक दृश्य: सस्पेन्सक सावधान समाधान

अध्याय १९८मे सरकारी मुहरमे रोकल संदूक अगिला भोर चौकीक छोट कोठरीमे खोलल जाइत अछि। कथावाचक एतय हथियार, धनक ढेरी अथवा अपराधीक गिरफ्तारीक दृश्य-आकर्षण नहि चुनैत; मोहर कटबाक धीमा खुरचन, सीलनक गन्ध आ वस्तुक क्रमिक सूची प्रस्तुत करैत अछि। एहि ढंगसँ कथाक सस्पेन्स जबाबदेहीक श्रममे बदलैत अछि। पाठकक ‘भीतर की अछि’ प्रश्नक उत्तर एकटा वस्तु नहि, कपड़ा, मजदूरी-पंजी, नकली अँगूठा, खाता-सूची, इलेक्ट्रॉनिक यन्त्र आ रिक्त उत्तराधिकारी ठामक बहुस्तरीय संरचना रूपमे भेटैत अछि।

साक्षीसभक व्यवस्था आ कोठरीक सामूहिक दृष्टि

तहसीलक कर्मचारी, अभय, मीरा, सत्यव्रत, बच्चासभ, फूलकली, गदाधर, बैंकक प्रतिनिधि आ रानी-खातामे फँसल दू स्त्री—एहि विविध उपस्थितिसँ कोठरी ककरो व्यक्तिगत विजयोत्सव नहि रहैत। दृश्यकेँ विभिन्न सामाजिक अनुभव पढ़ैत अछि: कर्मचारी लिखित सूची चाहैत छथि, फूलकली नाम, स्त्रीसभ अपन चोरायल पहिचान, बच्चा वस्तुक क्रम। कथावाचक एकहि वस्तुपर अनेक दृष्टिकेन्द्र रखैत अछि। एतय उपन्यासक बहुस्वर समापनक ठीक पूर्व दृश्य-व्यवस्थाक रूप लैत अछि, केवल सिद्धान्तक कथन नहि।

गमछा, पात आ मजदूरी-पन्ना: आरम्भक वस्तु घुरैत अछि

संदूकक ऊपरक तहमे पुरान गमछा, नारिकेलक पात, फाटल कागच आ लाल धागाक पोटली भेटैत अछि। ई वस्तु सभ उपन्यासक आरम्भिक छपाक, नदी आ मजदूर-स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। फाटल गमछाक गन्ध, भीजल नामक पत्र आ बच्चाक माँक काँपल हाथ अपन-अपन कालखंडकेँ एक कोठरीमे उपस्थित करैत अछि। चमत्कारक बदला वस्तुक पुनर्भेंट आख्यानक वलय बनबैत अछि। गमछा न त केवल शोकचिन्ह अछि, न स्वतः निर्णायक प्रमाण; ओकर अर्थ अन्य कागच आ गवाहीक संग बनेबाक अछि।

‘शिवनाथ सदा’क उद्घाटन आ नामगत असङ्गति

पोटलीक मजदूरी-पन्ना पर ‘शिवनाथ सदा, वयस सोलह’ पढ़ल जाइत अछि, आ अनन्या छोटूक असली नाम ‘शिवनाथ सदा’ पुष्ट लिखैत अछि। मुदा अध्याय १९७मे वैह फूलकलीक पुत्र ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ रूपमे नामांकित भेल छल। उपन्यास एहि दू नामक बीच पुनर्नामकरण, गलती-सुधार, दू अलग व्यक्तिक पहचान, वा कोनो संस्थागत परिवर्तनक स्पष्ट कड़ी नहि दैत। विशेष विडम्बना ई जे नामक शुद्ध लेखाक नैतिक आग्रह करैत अन्तिम खण्डमे स्वयं प्रमुख नामक अस्थिरता रहि गेल अछि। स्रोत-निष्ठ आलोचना एकरा न त मेटा सकैत अछि, न काल्पनिक विवरणसँ पूर्ण करि सकैत अछि।

नन्द आरुणिक दैनन्दिनी आ मूल/प्रतिलिपिक रिक्ति

‘जलसमाधि—पुरान’ संचिकामे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि भेटैत अछि, मुदा मूल दैनन्दिनी ककरा लग गेल से स्पष्ट नहि। कथक एतय दस्तावेजी पुनर्प्राप्तिक विजयकेँ अपूर्णताक संग रखैत अछि। हस्ताक्षरवाली प्रति स्मृतिक महत्त्वपूर्ण सूत्र बनैत अछि, मुदा मूलक अनुपस्थिति जाँचक सीमाकेँ हटबैत नहि। जे उपन्यास भरि प्रतिलिपि, जाली मोहर आ बदलल पन्नाक जाल रहैत आएल, ओकर अन्तमे मूल-अभावक एहि उल्लेखकेँ मामूली नहि कहि सकैत। कथामे रिक्त स्थान सुरक्षित रखबाक आवश्यक्ता एक बेर फेर उभरैत अछि।

मृतक मजदूर आ ‘योग्यता’क शीतल शब्द

बिसेसर पासवान, सलामत अंसारी, रजनू मंडल आ अन्य मजदूरक नामक आगाँ क्षतिपूर्तिक ‘योग्यता’बला टिक-चिह्न भेटैत अछि। देविकाक प्रतिक्रिया प्रशासनिक शब्दक निर्दयताकेँ उजागर करैत अछि: मृत्यु एक अनुभव छल, पात्रता दोसर संस्था बनाओल श्रेणी। आख्यानक मूल समाज-संघर्ष एतय बारम्बारक एक शैलीगत युक्तिसँ तीक्ष्ण होइत अछि—ठंढा दफ्तरी शब्दक लग जीवितक चोटिल स्वर। कथा केवल अधिकारियोंक भाषा खारिज नहि करैत; ओकरा मानवीय परिणामक सोझाँ पढ़बय चाहैत अछि।

रानी खाता आ स्त्रीक चोरायल अंगूठा

रानी-खाता संचिकामे बीससँ बेसी स्त्री-नाम, समान चित्र, अनेक खाता आ नकली अंगूठाक सम्भावित नमूना भेटैत अछि। उपस्थित दू स्त्री अपन स्थिति देखबाक अधिकार रखैत छथि। मुख्य प्रसंग स्त्रीकेँ अपराधी बनबयक नहि, ओहि संस्थागत प्रक्रियाक अछि जे हुनकर नाम, फोटो आ अंगूठाकेँ बारम्बार उपयोग करैत छल। हुलासीक हाथविहीन छाहरि जाली अंगूठा लगल दस्तावेजक कात आनि कऽ जादुई यथार्थकेँ तीक्ष्ण व्यंग्यमे बदलैत अछि। हाथक अनुपस्थिति आ अंगूठाक नकल बीचक टकराव कथाक नैतिक संवेदनाकेँ रूपात्मक गहनता दैत अछि।

अंकीय आदेशक संचिका: भाषासँ भय उत्पन्न करबाक उद्योग

फोन-पटकथा, जाली पुलिस-चिह्न, अदालतक सूचना-पत्र, मैथिली–हिन्दी–अंग्रेजीक मिश्रित धमकी आ सिमक यन्त्रसभ लोहेक संदूकमे साथ भेटैत अछि। एतय ‘डिजिटल’ कियो अस्पष्ट बाहरी चमत्कार नहि रहैत; ओकर कारीगरी बहुभाषी वाक्य, उपकरण, नम्बर आ धनक आवागमनमे देखाइत अछि। कथावाचक दर्शबैत अछि जे संस्थाक अधिकारक नकल करबाक मूल साधन भाषा अछि, आ भाषा पीड़ितक जीवनपर वास्तविक प्रभाव छोड़ि सकैत अछि। ताहि कारण स्वरक विश्लेषण आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो आवश्यक अछि—कोन व्यक्ति ककर स्वरमे बाजि रहल अछि?

ध्रुवेशक स्वर आ उत्तर देबाक अधिकार

पुरान ध्वनि-अभिलेखकमे मधुकरक स्वरक बाद कोनो भारी स्वर सुनाइत अछि; ध्रुवेश ओ आवाज अपन नहि मानैत अछि। सत्यव्रत आ अभय निर्णयकेँ उचित तकनीकी जाँच धरि स्थगित रखैत छथि, ध्रुवेशक पक्ष दर्ज करैत छथि। एहि ठाम पाठ भावावेगक बावजूद प्रतिपक्षक कथन-अधिकारकेँ नहि हटबैत। साहित्यक भीतर ई महत्त्वपूर्ण

रचनात्मक संयम अछि: खलपात्र जेकाँ प्रस्तुत मनुष्य सेहो कथनक अन्तिम दरबाजा बन्द होएबासँ पहिने बोलबाक ठाम पबैत अछि। ई स्थान न्यायिक दोषमुक्तिक प्रमाण नहि, निष्पक्ष कथनक आवश्यकता अछि।

नक्शाक वृत्त आ चन्ना गाछीक केन्द्र

तलक थैलीमे पुल-स्थल सँ हरिहर सेवा केन्द्र, बैंक, शहरक खाता आ गामधरि धनक मार्ग बनाओल नक्शा भेटैत अछि; बीचमे ‘चन्ना’ लिखल छोट गोला अछि। कर्मचारी लेल ओ स्थान-सूचक अछि, गामक लोक लेल सुननिहार गाछी। एकहि शब्दक सरकारी अर्थ आ सामुदायिक अर्थक टकराव समग्र उपन्यासक स्थान-रचना समझबैत अछि। ‘चन्ना’ अपराधक नक्शामे केन्द्र अथवा लक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा लोकक स्मृतिमे ओ जाँच आ संरक्षणक केन्द्र सेहो अछि। एहि दोहरे अर्थक कारण स्थान कथाक सक्रिय पात्र-जेकाँ प्रतीत होइत अछि।

‘भविष्य उत्तराधिकारी’क रिक्त स्थान

संदूकक एक पन्नापर पुरान सत्ता-नामसभक पाछाँ ‘भविष्य उत्तराधिकारी’ खाली छोड़ल भेटैत अछि। अनन्या ओकर प्रतिलिपिपर ‘रिक्त ठाम लोकसमक्ष’ लिखैत अछि। ई रिक्ति उपन्यासक भविष्य-दृष्टि बनैत अछि: अपराध एखन खुलल अछि, मुदा फेर जन्म लऽ सकैत अछि। कथावाचक अपराधीक अगिला नाम बना कऽ देबाक लालचसँ बचैत अछि। रिक्त ठाम कथाक अपूर्णता नहि मात्र, नागरिक सतर्कताक कार्य-क्षेत्र अछि। यद्यपि प्रतिलिपिपर लिखल वाक्यक अर्थ प्रतीकात्मक अछि, मूल कागच सुरक्षित रखबाक व्यवहारक संग ओकर अन्तर स्पष्ट राखल गेल अछि।

रिक्त संदूक: वस्तुक समाप्ति आ जिम्मेदारीक आरम्भ

सभ वस्तु अलग-अलग मुहरबन्द पैकेटमे जा रहल अछि, आ रिक्त संदूक उनटा राखल जाइत अछि। एक समय ओ वस्तु सामुदायिक भयक पेट छल; आब ओकर भीतरक अन्हार सूची, प्रतिलिपि, अदालत आ घरक अलग-अलग बाट पर निकलि गेल। दृश्य विजयघोष नहि करैत, जिम्मेदारीक वितरण देखबैत अछि। फूलकली छोटूक मायसँ नाम-पुष्ट मृतकक माय बनैत छथि, मुदा एहि पुनर्नामकरणक भावनात्मक प्रभाव जतेक ठोस अछि ततेकहि नामगत असङ्गति पाठमे बचल अछि। अन्तिम दृश्य गाछीकेँ स्मारक कि जीवित पहरुआ बनायब—एहि नब विकल्पपर रुकैत अछि।

प्रकरण ३०१ | मूल अध्याय २०० — नामक पहरुआ

अन्तिम अध्यायमे अनन्त प्रश्नक स्थापना

‘नामक पहरुआ’ स्वयं ‘अन्तिम अध्याय’ कहैत आरम्भ होइत अछि, मुदा मीरा तुरन्त कहैत छथि जे ई अन्त नहि। एहि दोहरी घोषणासँ उपन्यास अपन कथात्मक सीमा आ सामाजिक दायित्वक बीच अन्तर स्थापित करैत अछि। लेखक अध्याय २०० पर पुस्तकक घटनाक्रम रोकैत छथि, पर नामक पहरा भविष्य धरि विस्तारित करैत छथि। एहि शिल्पमे खुल्ला अन्त कोनो छूटल कथानकक विकल्प नहि; ओ जानी-बुझी नागरिक उत्तरदायित्वक

उत्तराधिकार बनैत अछि। ताहिसँ उपन्यास पूर्णता आ निरन्तरताक दुइ विरुद्ध अर्थकेँ एकहि समापनमे धारण करैत अछि।

प्रारम्भिक शीर्षकक पुनर्पाठ आ आत्मसन्दर्भी रचना

अनन्या पंजीक पहिल पन्नापर ‘चन्ना गाछीक कबड्डी’ पुनः लिखैत अछि, आ आरुणि ‘दहिन कातक गाम’ जोड़ैत अछि। बादमे अनेक अध्यायक शीर्षक क्रमसँ पढ़ल जाइत अछि। कथा अपनहि लिखल ग्रन्थक अभिलेख बनैत अछि; पात्र सभ शीर्षक-पाठक माध्यमसँ अतीतकेँ फेर कथा बनबैत छथि। ई आत्मसन्दर्भी विन्यास आत्मप्रशंसा नहि, स्मरणक सामूहिक अभ्यास अछि। पाठक केँ संकेत भेटैत अछि जे उपन्यासक वास्तविक ‘अनुक्रम’ समय-रेखा मात्र नहि, जनअनुभवक पुनः उच्चारणक प्रक्रिया अछि।

शिवनाथक पन्ना आ मातृत्वक पुनरागमन

फूलकली शिवनाथक प्रतिलिपि राखैत छथि आ ओकरा मृत्युपत्र नहि, घर-घुरबाक पन्ना कहैत छथि। ई भावात्मक कथन देहक पुनरागमनक दाबी नहि, नामक सामाजिक वापसीक अभिव्यक्ति अछि। मुदा समीक्षात्मक पाठकेँ अध्याय १९७क ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ आ अध्याय १९९क ‘शिवनाथ सदा’क अनिर्णीत अन्तर एतयो स्मरण रखबाक चाही। अन्तिम अध्याय पहिनुक नामक संशोधन स्पष्ट नहि करैत, बादक नामकेँ स्वीकार कऽ आगाँ बढ़ैत अछि। एहि असङ्गतिक आलोचनात्मक उल्लेखे उपन्यासक नाम-शुद्धिक आग्रहकेँ गंभीरतापूर्वक लेबाक चिह्न अछि।

विधिक प्रतिलिपि आ लोक-स्मृतिक प्रतिलिपि

चौकीसँ संदूकक वस्तु अदालत, विभाग, जाँच आ अभिलेखागार दिस जएबाक सूचना अबैत अछि। मीरा कहैत छथि सरकारी बाट चलत आ समुदायक स्मृतिक बाट सेहो चलत। सत्यव्रत दुहरी अपूर्णता चिन्हैत छथि—केवल अदालतक कागच बचल तँ जीवनक नाम दबि सकैत अछि; केवल गामक नाम बचल आ दोषी कानूनसँ बचि गेल तँ न्याय अधूर रहत। एहि दू व्यवस्थाक सम्बन्ध उपन्यासक अन्तिम वैचारिक समन्वय अछि। कथावाचक न्यायालयकेँ नकारैत नहि आ लोकसभा केँ न्यायाधीश बनबैत नहि; दुनू स्तरकेँ एक-दोसराक असफलता देखबाक दायित्व दैत अछि।

कबड्डीक नब नियम: प्रतिस्पर्धासँ स्मरण धरि

नेनासभ चन्ना गाछीक छाहमे फेर गोल घेरा बनबैत अछि। जकरा सीमा पार करबाक अछि, ओकरा एक नाम लऽ कऽ घुरबाक; जे नाम बिसरि जाए, ओकरा खेलसँ बाहर नहि कएल जाएत, सीखबाक दोसर अवसर भेटत। ई आरम्भिक कबड्डीक पुनर्रचना अछि। पहिने सीमा लाँघब देहक चपलता आ हार-जीतक प्रश्न छल; अन्तमे ओ नैतिक स्मरणक परीक्षा बनैत अछि। नियमक परिवर्तन कथाक समग्र विकास एक सान लोकखेलमे दृष्टिगोचर करैत अछि। सामुदायिक खेल आख्यानक आधारभूत रूपकसँ सामाजिक अभ्यास बनैत अछि।

मौनक नामावली: बाहरी अपराधसँ भीतरक सहभागिता

अभय पूछैत अछि जे अपराधीक नाम अदालतमे जाएत, मुदा अपन भीतरक मौनक नाम कतय राखब? एहि प्रश्न पर ‘डर’, ‘लाभ’, ‘दिखावा’, तिथिक अन्धविश्वास आ कागच नपढ़बाक आदतक सूची बनैत अछि। ई मोड़ अन्तिम अध्यायकेँ केवल खलनायक पराजयक घोषणासँ बचबैत अछि। बाहरक बटुकनाथ, चन्द्रपाल, ध्रुवेश अथवा मधवेश पर आरोप देखब एक काज छल; समाजक लाज, जाति, सुविधा आ स्वार्थक स्वीकृति दोसर। अन्तिम समापन पीड़ित-समुदायकेँ त्रुटिहीन नायक नहि बनबैत—ई आत्मालोचनक अवसरक कथा अछि।

स्मारक बनाम पहरुआक मूलभूत विकल्प

कियो गाछी लग रंगीन फाटक बनाबय चाहैत अछि, कियो पैघ नामक शिलापट्ट; मीरा आ अनन्या रोकैत छथि। पैघ नामक पाछाँ छोट नाम दबि सकैत अछि, आ फाटक जीवित बाट बन्द कऽ सकैत अछि। छोट-छोट माटिक पट्टिका आ अधूर नाम लेल रिक्त ठामक निर्णय स्मारकक केन्द्रीय नायकवादकेँ विखण्डित करैत अछि। कथावाचक स्मरणकेँ पत्थरक स्थिर वस्तु नहि, संशोधनयोग्य नागरिक व्यवहार बनबैत अछि। गाछीक भविष्य अलंकरणमे नहि, प्रश्न पूछब, सुनब, लिखब आ नब नाम स्वीकार करबाक क्षमता मे अछि।

रिक्त पट्टिका आ अजन्मा नामक भविष्य

बूढ़बा भूत एक रिक्त पट्टिका पर ‘जे नाम एखन जन्मल नै’ जेकाँ अक्षर लिखैत बुझाइत छथि। ई दृश्य जादुई यथार्थक अन्तिम महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। मृतकक स्मृति कैँ सहेजबाक दायित्व भविष्यक अज्ञात मनुष्य धरि बढ़ैत अछि। भूतक हस्तक्षेप एतय नब न्यायादेश नहि; भविष्यक दावेदारक लेल जगह बचाउबाक कल्पनात्मक भाषा अछि। खुल्ला पट्टिका कथाक नैतिक समयकेँ अन्तिम तिथि सँ आगाँ लऽ जाइत अछि। ई स्थायी समाधानक आश्वासनक बदला निरन्तर उपलब्ध रहबाक संकल्पक रूप अछि।

जलक कटोरा एक हाथसँ दोसर हाथ धरि

अन्तिम दृश्यसभमे मीरा कटोरा खाली नहि करैत छथि; ओ अनन्याक हाथमे, अनन्या आरुणिकेँ आ आरुणि एक छोट बच्चाकेँ सौँपैत अछि। जलक भार भौतिक अछि—ठंढ धातु, काँपैत बून्द, नन्ह हाथक झुकनाइ—आ ओकर सांकेतिक भार स्मृतिक सतत दायित्व अछि। ई उत्तराधिकार पारिवारिक पद अथवा सम्पत्तिसँ नहि, सार्वजनिक नाम-रक्षाक अभ्याससँ बनैत अछि। उपन्यास अन्तमे ककरो एक नेता, लेखक अथवा अधिकारीक हाथमे अर्थ बन्द नहि करैत; ओकरा अगिला पीढ़ीक अनिश्चित, कापैत किन्तु सक्रिय हाथमे राखैत अछि।

भूतक डण्डा माटिपर आ जीवितक निर्णय-अधिकार

बूढ़बा भूत निर्णायकक डण्डा माटिपर राखैत छथि आ निर्णय जीवित लोककेँ सौँपबाक संकेत दैत छथि। कथा भरि भूतसभ स्मृतिसँ न्याय माँगैत, कखनो कबड्डीमे, कखनो जलमे, कखनो कागचक कात उपस्थित रहलाह। अन्तमे हुनकर पाछाँ हटब असाधारण दृश्यात्मक अर्थ रखैत अछि: मृतक अपना पीड़ाकेँ जीवितसभक हाथमे सौँपि दैत छथि। जादुई उपस्थितिक ई क्रमिक अवसान चमत्कारक विजय नहि, मानव-उत्तरदायित्वक स्थापना बनैत अछि। सूखल ठूँठक नव हरियर बिन्दु आशाक अत्यन्त संयत प्रतीक बनैत अछि।

नारी स्वर, समवेत रुदन आ गीतमे रूपान्तर

फूलकली अन्तमे खुलि कऽ कानैत छथि; स्त्रीसभक अलग-अलग हानि एक संग जल-जेकाँ बहैत अछि। देविका ओहि अनुभवकेँ गीत बनबैत छथि जाहिमे खेत, नदी, अदालत, मोबाइल आ गाछीक ध्वनिसभ मिलैत अछि। कथाक आरम्भक लोकगीत-प्रयोग एतय अन्तिम स्वर-समुच्चयमे घुरैत अछि। एहन गीत व्यक्तिक करुणा नष्ट नहि करैत; कियो बेटा हेरौलनि, कियो खेत, कियो गरिमा, एहि भिन्नता बाँचल रहैत अछि। सामूहिक स्वर एकरूपता नहि, भिन्न दुखसभकेँ साथ सुनबामे सक्षम स्थान बनबाक संकेत अछि।

अपराधक अनिर्णीत परिणाम आ समापनक विश्वसनीय सीमा

अध्याय २०० स्पष्ट करैत अछि जे कागच अदालत जाएत, खाता जाँचल जाएत, किछु आरोपी भागि सकैत अछि, किछु पकड़ाएत। एकरो भीतर कोनो एक अन्तिम दोषसिद्धि अथवा सम्पूर्ण धन-वापसीक घोषणा नहि अछि। ‘पहरा’ शब्दक सार्थकता एहि अधूरापनमे अछि: हर परिणाम पहिनहि मिलि गेल रहित तँ जीवित नागरिक पहराक आवश्यकता कहाँ रहित? कथावाचक कानूनी उत्कण्ठाकेँ समाप्त करबाक बदला समाजक चिरस्थायी सावधानीक कथा चुनैत अछि। एहि दृष्टिसँ खुल्ला अन्त वास्तविक कथानकक अन्तर्गत औचित्य रखैत अछि, यद्यपि किछु विशिष्ट नामगत असङ्गति एकरा स्वतः माफ नहि करैत।

‘कथा रुकै छै, समाप्त नै’ आ उपसंहारक संरचना

अन्तिम कथन ‘हम छी’क सामूहिक उच्चारण आ लोकगीतक आवृत्तिमे समाप्ति पबैत अछि; तकर बाद मूल पाण्डुलिपिमे ‘पोथीक अन्तिम स्वर’ आ परिशिष्टसभक स्वतन्त्र सामग्री सेहो अछि। तेँ मुख्य अध्याय २००क आख्यानात्मक समापन, गीतात्मक परिशिष्ट-स्वर आ विस्तृत परिशिष्ट—ई तीनूकेँ एकहि घटनात्मक अध्याय बुझब उचित नहि। कृति स्वयं आख्यान सँ अभिलेख, अभिलेख सँ पाठ आ पाठ सँ भविष्यक प्रतिज्ञा धरि गमन करैत अछि। अन्तमे गोहि पूर्ण नष्ट नहि; ओकर विरोधमे नाम पुकारब आ साक्ष्य सुरक्षित राखब समाजक नब विधि बनैत अछि।

अन्तरप्रकरणीय विवेचन : जलसमाधिक अर्थसँ नामक पहरुआ धरि

मूल अध्याय १९६–२००क आख्यानात्मक क्रम एक नियोजित अन्त्यवृत्त बनबैत अछि: ‘जलसमाधिक अर्थ’ शीर्षकक बहुअर्थ खोलैत अछि; ‘ऊपर उठल नाम’ एहि अर्थकेँ परिवारक पुनः उच्चारणमे राखैत अछि; ‘अपराधीक धरती’ नाम-उद्धारक बाद भागैत वस्तु आ पगचिन्हक भौतिक दृश्य दैत अछि; ‘संदूकक भीतरक बिहान’ अलग-अलग कालखण्डक वस्तुकेँ एक संचयमे उपस्थित करैत अछि; आ ‘नामक पहरुआ’ समग्र सामग्रीकेँ जीवित समुदायक उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि। ई पाँच अध्याय केवल केसक समाधान नहि, कथानकक मूल रूपकसभक पुनर्पाठ छथि। जल, माटि, गमछा, पंजी, मोहर, फोन, कटोरा आ गाछी—सभ अपन पहिनुका अर्थ सहित फेर अबैत अछि, मुदा आगाँक सामाजिक अर्थ सेहो ग्रहण करैत अछि।

समयक दृष्टिसँ अन्तिम खण्ड रेखीय जाँच आ चक्रीय स्मृति दुनूकेँ साथ रखैत अछि। ध्रुवेशक गाड़ी रातिमे कच्चा बाटपर धँसैत अछि, चौकीक कर्मचारी अबैत छथि, जब्ती-पञ्चनामा बनैत अछि, अगिला भोर सन्दूक खुलैत अछि

—ई घटनासभ कारण-क्रममे जुड़ल छथि। दोसर दिस पानिक कटोरामे तीन जलक मिलन, नन्द आरुणिक पुरान पंक्ति, प्रारम्भिक छपाक आ चन्ना गाछीक कबड्डी पिछला अनेक अध्यायकेँ फेर वर्तमानमे आनि दैत अछि। उपन्यासक अन्त हिनका एक-दोसराक विरोधी नहि बनबैत: तत्काल घटना निरन्तर चलैत रहैत अछि, स्मृति घटना लेल अर्थक क्षितिज बनबैत अछि।

कथन-दृष्टि पर ध्यान दी तँ अनन्या आ आरुणि अन्तमे मात्र बालपात्र नहि रहैत छथि। अनन्या लिखित नाम, पुष्ट-अपूर्ण पन्ना, समय आ प्रतिलिपिक पहरुआ छथि; आरुणि प्रश्न, नाप, रेखांकन आ प्रतीकक आलोचनात्मक पाठ करैत अछि। मीरा सार्वजनिक संवेदनाक गति सीमित करैत छथि, सत्यव्रत सरकारी कागचक भाषा आ जीवितक भाषाक समन्वय खोजैत छथि, विनीत इलेक्ट्रॉनिक सामग्रीक वास्तविक सीमा बतबैत छथि, फूलकली नाम-पत्रक भावनात्मक अर्थ प्रकट करैत छथि। एको दृष्टि अपने पूर्ण नहि अछि। अन्तिम सत्य अनेक सामाजिक स्थानक अपूर्ण ज्ञानकेँ जिम्मेदार ढंगसँ मिलाबयसँ बनैत अछि।

अन्तिम पाँच अध्यायमे जादुई यथार्थ अपन निर्णायक रूपमे आएल अछि। कारी भूत आ उज्जर प्रेत कटोराक जलमे अथवा खरिहानीक सरकण्डामे उपस्थित बुझाइत छथि; पनिडुब्बी जलक नमी बनि अबैत छथि; बूढ़बा भूत ‘निर्णायकक डण्डा’ माटिपर राखैत छथि; सूखल ठूँठमे हरियर बिन्दु फूटैत अछि। ई दृश्यसभ सरकारी प्रमाणक विकल्प नहि छथि। हुनकर भूमिका ऐतिहासिक अघात, मृतकक अविरत उपस्थिति आ जीवितक नैतिक सावधानीकेँ अनुभूतिगम्य बनबेनाइ अछि। कृति जखन एहि प्रतीकसभक बीच मूल कागच, हस्ताक्षर, जब्ती-सूची आ परिवारक अनुमति अलग रखैत अछि, तखन कल्पना आ दस्तावेजक बीच विशिष्ट सन्तुलन सम्भव होइत अछि।

भाषाक वस्तुकरण अन्तिमे उलटल जाइत अछि। पहिने ‘अनुपस्थित’, ‘योग्यता’, ‘सहमति’, ‘विशेष’, ‘सेवा’ आ ‘उत्तराधिकारी’क शब्दसभ दुर्बल मनुष्यकेँ बिना पढ़ल अथवा बिना बोलल कागचमे बाँधि दैत छल। अन्तिम प्रकरणसभमे वैह लेखन-प्रक्रिया ‘नाम-शुद्धि’, ‘प्रतीक्षा-टोकरी’, ‘मौनक नामावली’, ‘रिक्त ठाम लोकसमक्ष’ आ ‘नामक पहरा’क रूप लैत अछि। कागच स्वयं शत्रु नहि; ओकरा लिखनिहारक उत्तरदायित्व, पाठकक प्रश्न आ परिवारक सहमति महत्वपूर्ण अछि। एहि भाषिक परिवर्तनसँ उपन्यास अपन मर्म केवल तर्कवाक्य नहि, सार्वजनिक व्यवहारक रूपमे दैत अछि।

एकटा वास्तविक पाठगत असङ्गति स्पष्ट अछि। मूल अध्याय १९७मे फूलकलीक पुत्रक नाम ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ लिखल जाइत अछि, जखनकि अध्याय १९९मे पुरान मजदूरी-पन्ना ‘शिवनाथ सदा’क नाम दैत अछि आ ओकरा छोटूक ‘पुष्ट’ असली नाम कहल गेल अछि। अध्याय २०० बादक नाम स्वीकार करैत अछि, मुदा दू नामक सम्बन्धक निर्णायक व्याख्या नहि दैत। नाम-शुद्धिक केन्द्रीय आग्रहक सन्दर्भमे एहि त्रुटि अथवा अनिर्णीत नाम-परिवर्तनक महत्त्व सामान्यसँ बेसी अछि। समीक्षा एकरा मेटैत नहि, कारण असङ्गति विश्लेषणक विषय अछि; लेखकक इच्छित पाठमे संशोधन करब आलोचकक कर्तव्य नहि।

आन अधूरापन दू प्रकारक अछि। मूल दैनन्दिनीक स्थान एखन स्पष्ट नहि, अनेक वित्तीय आ ध्वनिक सूत्रक विधिक पुष्टि बाकी अछि, दोषसिद्धि, रकम-वापसी आ भविष्यक उत्तराधिकारीक प्रश्न अनिर्णीत अछि—ई कथाक

घोषित अपूर्णतासभ छथि। तकर विपरीत शिवलाल/शिवनाथक नामगत भेद पाठमे बिना स्पष्ट पुलक छोड़ल गेल अछि—ई रचनात्मक असङ्गतिक सम्भावना रखैत अछि। दुनूकेँ एके ‘खुल्ला अन्त’क नाम देब उचित नहि। समापनक आलोचनात्मक महत्त्व एहि भेदमे अछि: जे प्रश्न कथा स्वयं खोलि रखैत अछि तकर अर्थ अलग, आ जे तथ्य बिना स्पष्टीकरणक परस्पर बदलैत अछि तकर सम्पादकीय-अन्तर्विरोध अलग।

अन्ततः ‘नामक पहरुआ’ कृतिमे न्यायिक निर्णयक स्थान नहि लैत, अपितु याद रखबाक सामुदायिक क्षमता स्थापित करैत अछि। अदालतक कागच अदालतमे चलत, जाँचक यन्त्र सुरक्षित रहत, घावक गवाही परिवारक अनुमतिसँ पढ़ल जाएत, आ गाछी लग बच्चासभ हर बरख शीर्षकसभ पुनः उच्चारत। कटोरा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि जखन पहुँचैत अछि तखन मूल उपन्यासक संघर्ष पन्नाक सीमा पार करैत अछि। कृति देहक वास्तविक अनुत्तरित क्षति लेल कोनो चमत्कारी प्रतिदान नहि दैत; जे बाँचि सकैत अछि—नाम, सम्बोधन, चेतावनी, प्रश्न, सार्वजनिक पहरा—ओकरे भविष्यक हाथमे सौंपैत अछि।

समग्र आख्यानशास्त्रीय निष्कर्ष : स्मृति आ जीवित पहरा

सम्पूर्ण कथा–आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकनक अन्तिम आधार ई अछि जे ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क कथाविश्व एके प्रकारक गोहि अथवा एके भौतिक जल-स्थलमे सीमित नहि रहैत। गामक नदी, पोखरि, पुल, खेत, जातिगत बस्ती, स्त्रीक देहरी, अदालतक बरामदा, तहसीलक रजिस्टर, बैंकक खाता, शहरक डेटा-कक्ष आ मोबाइलक आवाज एक-दोसराक भीतर प्रवेश करैत अछि। ई पैघ विस्तार मात्र घटनाक जोड़ नहि। प्रत्येक नब संस्थागत स्थान पुरान आघातकेँ एक नब नाम दैत अछि—मृत्युक पाछाँ अनुपस्थिति, सहायताक पाछाँ सहमति, परोपकारक पाछाँ लाभ, अधिकारक पाछाँ भय। एहि बदलैत माध्यमसभकेँ जोड़बाक निरन्तर युक्ति ‘नाम’ अछि।

आरम्भक जल-छपाक आ अन्तिम कटोराक बीच वस्तुसभ कथात्मक स्मृतिक काज करैत छथि। गमछा देहक अनुपस्थितिक चिन्ह अछि; पात नामक अस्थिर लेखा; मोहर संस्थाक अनुकरणीय अधिकार; चाबी पहुँचक असमानता; धूरि हटायल पन्नाक बचल दबाव; पेन-ड्राइव आवाजक चोरी; कटोरा तीन जलधाराक इतिहासक संगम; रिक्त पट्टिका भविष्यक नामक लेल जगह। एहि वस्तु-शृंखलासँ विस्तृत आख्यानकेँ देह भेटैत अछि। एतेक पात्र आ घटनाक बीच पाठक बारम्बार चिन्हल वस्तुसँ स्मृतिक पाछाँक द्वार खोलैत अछि।

कथनक संरचनामे सामुदायिक सभा, मंचन, लोकगीत, गवाही, दस्तावेज-पाठ, यात्रा आ बालकसभक प्रश्न बारम्बार प्रवेश करैत अछि। एकर लाभ अछि जे वाचकक एकान्त निर्णय समाजक अनेक स्वरसँ प्रश्नित होइत अछि। मीरा, सुरमणी देवी, देविका, अनन्या, आरुणि, सत्यव्रत, भिखारी लाल, फूलकली, मल्लाह, स्त्रीसभ आ अनाम गवाह अपन-अपन सीमित अनुभवसँ कथाक अर्थ गढ़ैत छथि। कमजोर पहलू सेहो एहि व्यवस्थामे अछि: अनेक अध्यायक आरम्भमे नैतिक सूत्र-वाक्य, लोकगीत, दृश्य, जाँचक निष्कर्ष आ अगिला अध्यायक संकेतक समान क्रम पुनः आबैत अछि। पुनरावृत्ति कखनहुँ संरचनात्मक लय बनैत अछि, कखनहुँ भिन्न पात्रक अनिश्चितता छोट करबाक खतरा उत्पन्न करैत अछि।

बहुस्तरीय समय एहि कृतिक मुख्य आख्यानात्मक बल अछि। तीस बरख पहिनुक पुल-दुर्घटना, पन्द्रह बरखक सर्वे-पंजी, कतेको अदालत-तिथि, नब डिजिटल ठगी आ राति-भोरक क्रमबद्ध जाँच एकहि वर्तमानमे आनि राखल

जाइत अछि। समय केवल कालक्रमक सूची नहि; देहक वृद्धावस्था, गाछीक ठूँठ, क्षतिपूर्तिक प्रतीक्षा, पनिडुब्बीक लोककथा आ पन्नाक धुँधल स्याही ओहि समयकेँ अनुभूतिगम्य बनबैत अछि। मुदा दीर्घकालीन कथामे पात्रसभक वयस, पीढ़ीगत स्थान आ एक घटना-सँ दोसर घटना धरि बीतल समयक संगति पुनः सम्पादकीय परीक्षणक योग्य रहैत अछि।

असङ्गति-विमर्श एहि समीक्षा लेल विशेष महत्त्व रखैत अछि। कथाक भीतर किछु असङ्गति जानि-बुझि देखाओल गेल अछि—कागचमे ‘अनुपस्थित’ मुदा देहक उपस्थितिक गवाही; मंचपर सहायता मुदा बादक अधिकार-त्याग; सरकारी मोहरक नकली प्रति; नकल आवाजमे असली सम्बन्धक भय; एक लोकक अनेक जाली नाम। ई अन्तर्विरोध कथा उत्पन्न करबाक विधि छथि। एकर विपरीत अलग-अलग अध्यायमे बिना कारण बदलल नाम, अथवा एके पात्रक इतिहासक असंगत ब्यौरा, सम्पादकीय जाँचक विषय छथि। विशेषतः अन्तिम खण्डक ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ आ ‘शिवनाथ सदा’क भेद केन्द्रीय ‘नामक पहरा’क अवधारणासँ सीधे जुड़ैत अछि; ओकरा प्रतीक कहि टारि नहि सकैत। आलोचनाक काम लेखकक पाठ बदलनाइ नहि, कथन-जनित अर्थ आ पाठगत असङ्गतिक बीच रेखा स्पष्ट करनाइ अछि।

जादुई यथार्थ एतय भूत-प्रेतक दृश्यसभसँ बेसी कार्य करैत अछि। मृतक वर्तमानक किनारपर ठाढ़ रहलाह, किन्तु पीड़ितक स्वीकृति, अभियुक्तक उत्तर, कागचक संरक्षण आ सार्वजनिक सुनवाईक मर्यादा जीवित पात्रसभक हाथमे रहल। बूढ़बा भूत अन्तमे निर्णायकक डण्डा रखि देलनि—ई इशारा दृश्य-चमत्कारसँ नागरिक उत्तरदायित्व धरि कृतिक अन्तिम संक्रमण बनैत अछि। मृतक स्वतः न्याय नहि देताह, मुदा जीवितसभक विस्मरणकेँ असुविधाजनक बनौने रखताह। एही अन्तर्ध्वनिमे गोहिक अनेक रूप आपसमे जुड़ैत अछि।

स्त्री-दृष्टिक योगदान मात्र पीड़ितक करुणा नहि। शरण, दवा, अनाज, ऋण, अंगूठा, स्त्री-पाँति, नाम-विकृति, फोन-धमकी, निजता आ लोक-पाठ—प्रत्येक स्थानपर स्त्री पात्र प्रतिकारक पद्धति गढ़ैत छथि। मीरा हिंसक तात्कालिक निर्णय रोकैत छथि; सुरमणी देवी नामक गरिमा सुरक्षित रखैत छथि; देविका मंचक अभिनय आ अपराधक अभिनयक अन्तर पढ़ैत छथि; फूलकली अनुपस्थित नामकेँ घर-घुरबाक अर्थ दैत छथि। तथापि महिला पात्रसभक बोलबाक मात्रा, वास्तविक निर्णयाधिकार आ सामाजिक परिणाम प्रत्येक अध्यायमे समान गहराइ पाबैत अछि कि नहि, से विस्तृत अगिला संस्करणक सम्पादकीय सर्वेक्षणक विषय रहि सकैत अछि।

कृति सरकारी कानून आ लोक-अदालतक बीच ‘एकर स्थानपर दोसर’क सरल विकल्प नहि दैत। अधिकतर दृश्यसभमे चन्ना गाछी सुनबाक, प्रश्न करबाक आ दस्तावेज सुरक्षित करबाक स्थान अछि; दोषसिद्धि आ दण्डक अधिकार सरकारी प्रक्रियामे बचल रहैत अछि। एहि कारण अन्तिम समापनमे न्यायिक कार्यवाही अनिर्णीत रहब केवल कथात्मक कमी नहि, लोकस्मृतिक सीमा स्वीकार करबाक संकेत सेहो अछि। तथापि जे विशिष्ट केसक परिणाम नहि देखाओल गेल, तकरा ‘पूर्ण न्याय’ कहबाक आधार नहि बनैत। समीक्षाक निष्कर्ष सामाजिक पहरा प्राप्त भेल, कानूनी प्रतिकारक अनेक चरण बाकी रहल—एहि स्पष्ट भेदक संग होबाक चाही।

कथाक अन्तिम उपलब्धि ‘नामक पहरा’क रूपमे देखाइत अछि: बोलबाक अधिकार संग चुप रहबाक अधिकार, पुष्ट नामक थारी संग अपुष्ट नामक प्रतीक्षा-टोकरी, प्राप्त प्रमाण संग ओकर सीमाक लेखा, मृतकक स्मरण संग

अजन्मा व्यक्तिक रिक्त पट्टिका। ई चारि युग्म उपन्यासक वैचारिक जटिलतार्कें समेटैत छथि। अन्तिम गीतमे ‘हम छी’ वाक्य केवल अस्तित्वक भावुक प्रतिज्ञा नहि; ओहि वाक्यकेँ प्रतिदिन सार्वजनिक व्यवहारमे प्रमाण, सावधानी, परस्पर सहयोग आ स्मृतिसँग बाँधि रखबाक नब कार्यादेश अछि। कथा पन्नापर रुकैत अछि; नाम पुकारबाक दायित्व जीवितक हाथमे चलैत रहैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर, गोहि सभक बीच जलसमाधि, सम्पूर्ण त्रयी, मूल मैथिली पाण्डुलिपि, अध्याय १०८–२००।

अन्तिम आलोचनात्मक अध्याय : असङ्गति आख्यान-विधि कोना बनैत अछि

असङ्गति कैँ अध्ययनक विषय बनौनाइ

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क आख्यान अनेक कथा-काल, पीढ़ी, टोल, जलाशय, न्यायालय, लोकोत्सव, कागच आ अंकीय उपकरणकेँ एके विशाल रचना-क्षेत्रमे राखैत अछि। एतेक विस्तारमे पाठककेँ जँ एके घटनाक दूटा संस्करण, एके नामक अनेक लिखावट, अथवा एकहि प्रतीकक भिन्न-भिन्न अर्थ भेटैत अछि, तँ सभ अन्तरकेँ एके प्रकारक 'भूल' मानि लेब आलोचनात्मक रूपेँ अशुद्ध होएत। कथाक पात्र जानि-बुझि झूठ बाजि सकैत अछि; कथावाचक एक पात्रक सीमित जानकारी अपनाकऽ बादमे ओकरा उलटि सकैत छथि; अभिलेख स्वयं कूटकर्मसँ बदलल जा सकैत अछि; आ पाण्डुलिपिक लेखनमे अनायास स्थूल त्रुटि सेहो रहि सकैत अछि। एहि चारि स्थितिक बीच भेद करब एहि उपन्यासक विश्वसनीय मूल्यांकनक पहिल शर्त अछि।

असङ्गति आख्यान-पद्धति तखन बनैत अछि जखन ओकर पुनरागमन कथाक ध्यान, दृष्टिकेन्द्र, नैतिक दाँव अथवा पाठकीय क्रियाकेँ सचमुच बदलैत अछि। केवल नामक मेल नहि होएब पर्याप्त नहि। जँ दुइ रूपक विरोधसँ पाठककेँ अलग स्रोत देखय, पात्रक विश्वसनीयता तौलय, वा कथाक भीतर सत्यक निर्माण-प्रक्रिया बुझय पड़ैत अछि, तखन ई अन्तर पाठकीय श्रमक संगठन करैत अछि। मुदा जँ कोनो अन्तर कथामे मान्यता, प्रश्न वा परिणाम बिनु रहि जाइत अछि, ओकरा स्वतः आधुनिक प्रयोग कहि निर्दोष घोषित नहि करबाक चाही।

कथा-वस्तु आ कथन-विन्यासक दू पृथक् धरातल

एक धरातलपर कथित घटना अछि—बाढ़ि, गाछ, खेत, खोआएल नाम, नाटक, सहमति-कापी, अदालतक तारीख, फोनक धमकी, सेवा-समारोह आ नदीक घाट। दोसर धरातलपर एहि घटनाकेँ कहबाक व्यवस्था अछि—कथावाचकक क्रम, लोकगीतक पूर्वसंकेत, बालकसभक रजिस्टर, नाटकक भीतर दोसर नाटक, ककरो देल बयान, पुरान कागचक पुनर्पाठ, आ जादुई दृश्यक बीच हठात् प्रकट सामाजिक यथार्थ। कथावस्तुमे भिन्न तिथि वा नामक उल्लेख कथा-जगतक विवाद होएब सम्भव अछि; कथन-विन्यासमे ओकर उपस्थिति कोन दृष्टिसँ पाठक देखैत अछि, से निर्णायक भऽ जाइत अछि।

आख्यानशास्त्रक शब्दमे घटनाक क्रम आ ओकर प्रस्तुतिक क्रम समान होएबाक बाध्यता नहि। पूर्वदृष्टि, पश्चस्मरण, दृश्य-विस्तार, सारांश, विराम आ पुनर्कथन एकहि जीवनक अनेक कथात्मक आकार बनबैत अछि। एहि रचनामे पुरान सर्वे-पंजीक पन्द्रह बरख आ फोनक हालक एक घण्टा एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि। पूर्वक

सूचना देर सँ भेटैत अछि, तखन वर्तमान घटना फेर अलग रोशनीमे पढ़ल जाइत अछि। ई कालगत अनैक्य कथाक प्रबल पद्धति अछि; मुदा प्रत्यक्ष तिथि-विरोधकेँ हर समय कालभङ्गक औचित्य दऽ नहि सकैत छी।

अभिलेख आ जीवनक बीच संरचनात्मक विरोध

उपन्यासक एक प्रधान आख्यान-यन्त्र अछि—अभिलेखमे मनुष्यकेँ जकरा कहि लिखल गेल, जीबैत मनुष्य ओकरा प्रतिवाद करैत अछि। सोना कागचमे अनुपस्थित होइतो तारीखपर अपन देहसँ उपस्थित रहबाक कथा सुनबैत छथि; मृतक नामक सहमति लिखल जाइत अछि; जीवित नागेश्वर झाक लेल मृतक प्रमाण-पत्रक संकेत भेटैत अछि; शरण, औषधि, अनाज आ छात्रवृत्तिक कागच भूमिक अधिकार-त्याग वा मौन-सहमति बनि जाइत अछि। ई भिन्नता पाठक-संयोग नहि, उपन्यासक घटनात्मक केन्द्र अछि।

अभिलेखक आधिकारिक रूप आ पात्रक अनुभवक बीच जे फाँक अछि, ओ कथानक आगाँ बढ़बैत अछि। पहिने रजिस्टरक एक पन्ना संदेह जगबैत अछि; तकर बाद घरक पुरान फोटो, साक्षीक स्मृति, तिथि, मोहर, कार्बन-छाप, बैंक-पर्ची आ शब्दक अलग मिलान होइत अछि। एहि श्रेणीमे भिन्नता स्वयं खोजक कारण अछि। कथावाचक अधिकारपूर्ण रजिस्टरक निर्णायक घोषणाकेँ स्थगित राखि अनेक सान-सान आवाजकेँ कथनक केन्द्रमे अनैत छथि। अतः 'कागच सत्य' बनाम 'देह सत्य'क असङ्गति कथा-विश्वक रचित द्वन्द्व अछि, सम्पादनक मामूली चूक नहि।

बहुकण्ठी गवाही आ सीमित दृष्टिकेन्द्र

मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका, सुरमणी देवी, सत्यव्रत मेहता, रामबल्लभ, भिखारी लाल, कमला आ अन्य पात्र एके घटनाकेँ अलग बिन्दुसँ देखैत छथि। कियो तारीख पढ़ैत अछि, कियो स्वरसँ भय चिन्हैत अछि, कियो खेतक मेड़ देखैत अछि, कियो शरीरक थरथराहट। कथावाचक जखन एहि सीमित ज्ञान सभकेँ क्रमशः सामने अनैत छथि, तखन पाठक एकटा सर्वज्ञ अन्तिम वाक्यक बदला अनेक अपूर्ण कथनक मध्य अर्थ गढ़ैत अछि। एहि बहुदृष्टिकेन्द्रित विन्यासमे असमान कथन बुनियादी शर्त अछि।

मुदा बहुकण्ठी कथन अर्थात् सभ आवाज समान रूपेँ यथार्थ स्थापित करैत अछि, ई नहि। उपन्यासक लोक-अभिलेख बारम्बार 'देखल', 'सुनल' आ 'अनुमान' अलग करैत अछि। अध्याय १७१–१७२मे लाल, पीयर आ कारी धागाक विभाजन एहि कथनगत दूरीक दृश्यात्मक रूप अछि। प्रत्यक्ष अनुभवक सीमा, दोसरक कहल बातक मध्यस्थता आ मनक भयक ऐतिहासिकता—तीनू अलग राखि पाठककेँ निष्कर्ष पर पहुँचेबाक जिम्मेदारी देल जाइत अछि। एहि तरह असङ्गति अनिर्णय मात्र नहि; क्रमबद्ध श्रवणक विधि बनैत अछि।

नाटकक भीतर नाटक : सत्यक दोसर मंच

अध्याय १३३–१३७क विदेह नाट्य उत्सवमे प्रदर्शन केवळ समाजक चित्र नहि, कथाक भीतर एकटा नव कथन-स्तर बनैत अछि। नाट्य-पाठमे दर्शककेँ 'साक्षी' मानबाक आग्रह अछि; मंचनक बाद ताली आ मौनक अनुभव गामक वास्तविक लोकसभकेँ अपन गवाही देबाक बाट खोलैत अछि। नाटकक 'अभिनीत' दुख आ दर्शकक 'जीबैत' दुख एके नहि; हुनका बीच दूरी रहिते पात्रक अनुभवक सामाजिक अर्थ खुलैत अछि।

नाट्य-पाठमे दृश्यसभक प्रस्तावित क्रम आ वास्तविक मंचनक विवरण पूर्णतः एकरूप नहि भेटैत अछि। एहि अन्तरकेँ आलोचना दू स्तरपर पढ़ैत अछि। पहिल—पाठ आ मंचक अलग माध्यम कथात्मक पुनर्संयोजन सम्भव बनबैत अछि; दोसर—जतए पाठ स्वयं परिवर्तनक कारण नहि बतबैत अछि, ओतए दृश्यक्रमक वास्तविक सम्पादकीय असङ्गतिक सम्भावना बचि जाइत अछि। अभिनेता सत्यव्रत आ कथा-जगतक सत्यव्रतक भेदो सावधानी माँगैत अछि। ई मतभेदकेँ बिनु पाठ-साक्ष्य 'नियोजित नाटकीय विखण्डन' घोषित कऽ देब नाटकक शक्ति नहि बढ़ाओत, बल्कि आलोचनाक विश्वसनीयता घटाओत।

आवृत्ति : दुहराव नहि, बदलैत परिणाम

उपन्यासमे चन्ना गाछी लग बारम्बार सभा होइत अछि, फेर नाम पढ़ल जाइत अछि, फेर गवाही सुरक्षित कएल जाइत अछि। रसोइ आ साझा थारीक दृश्य सेहो समीपवर्ती अध्यायसभमे घुरैत अछि। आवृत्तिक आख्यानात्मक प्रश्न ई अछि जे दोसर बेर उएह क्रिया घटला पर स्थिति बदलल कि नहि। जँ पहिल सामूहिक भोजन भिन्न जातिक लोक केँ एक ठाम बैसएबाक परीक्षा अछि आ अगिला भोजन साझा श्रम वा परिवारक सीमाकेँ प्रश्न करैत अछि, तखन एकहि भौतिक क्रिया अलग नैतिक घटना बनैत अछि। जँ नब दृश्य पहिनुका प्रसंगसँ भिन्न परिणाम नहि देत, तखन पुनरावृत्तिक शिथिलता सेहो दर्ज करबाक चाही।

अध्याय १२५–१२६मे रात्रिक धान-रोपनीक पाछाँ अगिला भोर पकल धानक झलक सुस्पष्ट समयान्तराल बिना देखाओल जाइत अछि। जादुई यथार्थ अथवा आख्यानकालक संपीड़नक सम्भावना अछि, विशेषतः रचनामे माटि आ बीजक रूपकात्मक क्रिया बारम्बार घटैत अछि। मुदा कृषिक वास्तविक कालक्रमसँ विचलनक कारण कथावाचक स्पष्ट करैत छथि कि नहि, ई पाठगत प्रश्न बचि जाइत अछि। एकरा अनायास चमत्कार वा स्पष्ट छपाइ-त्रुटि, दू मे सँ कोनो एक ठाम जबर्दस्ती राखब अनुचित होएत।

वस्तु-कथा : मोहर, चादर, धूरि, कार्बन आ फोन

कथाक अनेक वस्तु साधारण क्रियाक बाद दोसर पात्रक हाथमे नव अर्थ लैत अछि। चादर पहिने सेवा-समारोहक पुरस्कार अछि, बादमे ओहि सभाक मञ्च आ निजी अधिकारक सम्बन्ध जाँचबाक पदार्थ बनैत अछि। मोहर वैधताक छाप छली, फेर नकली वैधता बनबाक सम्भावना उघड़ैत अछि। अदालतक धूरि फालतू पदार्थ नहि रहि छेड़छाड़क संकेतक रूपेँ देखाओल जाइत अछि। कार्बनक पाछूक छाप हटल पन्नाक स्मृति बनैत अछि। फोन परिवारक सम्पर्कक साधनसँ अदृश्य कैदक प्रेक्षण-कक्ष बनैत अछि।

एहि वस्तुक अर्थ-परिवर्तनमे पाठकक नजरि सेहो प्रशिक्षित होइत अछि। आरम्भमे जे प्रतीक बुझाइत छल, बादमे ठोस वस्तु प्रमाणक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि; जे केवल प्रमाण बुझाइत छल, ओकर भीतर नैतिक हिंसाक प्रतीक भेटैत अछि। कथावाचक एहिसँ सामाजिक आलोचनाकेँ निबन्ध-जेकाँ अलग नहि राखैत, बल्कि पात्रसभक उठेनाइ, देखनाइ, सहेजनाइ आ पढ़नाइमे पिरोइत छथि। ई वस्तु-क्रम पुनरावृत्ति आ असङ्गति सँ बनेल कथात्मक पद्धतिक प्रधान उपलब्धि अछि।

नामक बहुरूप आ चिन्हारिक राजनीति

‘मधुकर माधव मिश्र’, ‘माधवेश’, ‘मधवेश’ आ ‘मास्टर’क श्रृंखला अध्ययन योग्य अछि। नामक बदलनाइ एक पात्रक निज सामाजिक अतीत, शहरमे अपनाओल पहचान आ अपराधमे निभाओल भूमिकाकेँ अलग करैत अछि। एक नामसँ शैशवक लाज जुड़ैत अछि, दोसरसँ बाजारक नब विश्वसनीयता, तेसरसँ अभिनयक पेशेवर भूमिका। एहि बहुरूपता कथानकक अन्वेषणक क्रममे खुलैत अछि; ई केवल वर्तनीक लघु अन्तर नहि।

एहिसँ भिन्न उदाहरण अध्याय १९७ आ १९९क छोटूक नाम अछि। पहिल ठाम ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ आ बादमे पन्नाक आधारपर ‘शिवनाथ सदा’ भेटैत अछि। मूल पाठ एहि दुइ नामक सम्बन्धक ठोस व्याख्या नहि दैत; एतय स्वतः कहि देब जे ई एके व्यक्तिक गुप्त नाम छल, कल्पित सेतु जोड़ब होएत। एहि प्रकारक असङ्गति आलोचनामे स्पष्ट चिह्नित रहबाक चाही, आ प्रामाणिक लेखक-पाठक मिलान भेटला पर नामक एकरूपता वा स्पष्टीकरण सम्पादनक विषय बनि सकैत अछि। पुनर्रचित कथा तथ्यसँ ई अन्तर भरि देब साहित्यिक समीक्षा नहि।

रूपकीय भूगोलक सीमासभ

गामक नदी, पोखरि, कगार, तेतरि घाट, गाछीक ठूँठ आ अदालतक बरामदा उपन्यासमे अपन-अपन प्रतीकात्मक कार्य करैत अछि। पानिमे गोहि देखाबाक दृश्य आ मोबाइलक काँचमे गोहिक रूपक एकहि भक्षक सत्ताक भिन्न अवतार बनबैत अछि। स्थलान्तरक सहारे उपन्यास बतबैत अछि जे अन्याय केवल जलमे नहि, सेवाक कार्यालय, कागचक भाषा, बैंकक गल्ली आ आवाजक अभिनयमे सेहो जीवित रहि सकैत अछि।

तथापि अध्याय १६६क शीर्षक ‘इमली घाटक कोठार’ अछि, जखनकि कथाक भीतर तेतरि घाटक कोठी-बखारीक सतत उल्लेख अछि। कथानकमे दुइ पृथक् घाट अथवा एकहि घाटक दू नामक स्पष्ट स्थापना नहि होएब सँ ई वास्तविक स्थाननामक असङ्गति बनैत अछि। जँ आलोचना एकरा बहुभूगोलक योजनाबद्ध तकनीक मानि लेत, तँ ठोस वर्णनक सीमा ओकरा समर्थन नहि करैत। ठीक एतय आख्यानात्मक रूपक आ सम्पादनयोग्य निर्देशाङ्ककक भेद आवश्यक अछि।

रंगक संकेत आ ओकर आत्मविरोध

गवाहीक तीन धागा—लाल, पीयर आ कारी—कथाभागमे दृष्ट, श्रुत आ आशङ्कितक क्रम स्थापित करैत अछि। मुदा अध्याय १७२क प्रारम्भिक गीतमे लाल-पीयरक संग हरियर धागाक उल्लेख अछि। लोकगीतक रंग-व्यञ्जना आ न्याय-सभाक वर्गीकरण दू सांस्कृतिक स्तर होएबाक सम्भावना रहैत अछि, किन्तु पाठ एहि विशेष स्थानपर हरियरसँ कारीक परिवर्तनक कारण नहि खोलैत अछि। तेँ गीतक प्रतीकात्मक स्वतन्त्रता एकटा सम्भाव्य व्याख्या अछि, निश्चित समाधान नहि।

रंगक ई अन्तर एक उपयोगी आलोचनात्मक कसौटी सेहो दैत अछि। जँ लोकगीत कारी भयकेँ हरियर स्मृतिक जीवन-रंगमे बदलबाक आह्वान करैत हो, तँ पाठमे ओकर समर्थनकारी घटना चाही; जँ एहन कड़ी अनुपस्थित अछि, तँ सम्पादकीय असामञ्जस्य बचि जाइत अछि। पाठक बहुस्तरीय कलाकृति देखय, मुदा प्रमाणहीन अर्थ आरोपित करबाक अधिकार आलोचककेँ नहि। ई संयम स्वयं आख्यानशास्त्रक जीवन्त व्यवहार अछि।

अलौकिक दृष्टि आ अपूर्ण निर्णायकता

बूढ़बा भूत, कारी भूत, उज्जर प्रेत, पनिडुब्बी, चिरई आ गोहि कथाविश्वमे अनेक बार उपस्थित होइत छथि। कखनो हुनकर छाह पात्रसभकेँ देखाइत अछि, कखनो केवल सामूहिक कल्पना अथवा लोकविश्वासक रूपमे रहि जाइत अछि। एहि दृष्टि-भेदसँ उपन्यास यथार्थ आ कल्पनाक एकमात्र सीमा निर्धारित नहि करैत। अलौकिक उपस्थिति जाँचक अन्तिम आदेश देबाक बदला स्मृतिक दीर्घता, मृतकक अनुपस्थित अधिकार आ समुदायक नैतिक भयकेँ दृश्यत्व दैत अछि।

जादुई यथार्थक सफल क्षण ओ अछि जतय अलौकिक संकेत पात्रकेँ व्यावहारिक काजसँ मुक्त नहि करैत। मीरा बारम्बार लोकदृष्टि आ लिखित प्रमाण अलग राखैत छथि; गोहिक इशारासँ अपराधी घोषित नहि कएल जाइत; परिवारक स्वीकृति, नामक लिखित तुलना आ सुरक्षित अभिलेखक शर्त अपन स्थानपर रहैत अछि। एहि द्वैतमे कथाक जादू मानवीय न्यायप्रक्रियाक प्रतिपक्ष नहि, ओकर स्मृतिजन्य अनुगूँज बनैत अछि।

कथनक नैतिकता : ककरो दुःख तमाशा नहि

उपन्यासमे गवाहीक सार्वजनिकता आ व्यक्तिक निजताक बीच बारम्बार तनाव उठैत अछि। शरण लेल स्त्री, मोबाइल पर ठगल वृद्धा, नकली हस्ताक्षरक शिकार विधवा, मृतकक नामपर चलल खाता—सभक कथा सार्वजनिक जाँच लेल जरूरी होइतो निजी दुखक विवरण स्वतः सार्वजनिक सामग्री नहि बनैत। मीरा द्वारा स्वीकृति मँगब, नाम गोपनीय रखब आ केवल अपराध-पद्धति सुनाओल, एहि रचनामे कथनक नैतिक मर्यादा बनैत अछि।

आख्यानक दृष्टिसँ ई रोक महत्त्वपूर्ण अछि। कथावाचकक सम्भावित सर्वज्ञता पात्रक निजी जीवनपर असीम अधिकार नहि बनैत। किछु बात नहि कहल जाएब सेहो अर्थपूर्ण कथात्मक घटना अछि—पर ओकर अर्थ पात्रक स्वायत्तताक कारण अछि, सूचना-बाधाक कारण नहि। नब पाठककेँ जँ कोनो कथा अपूर्ण बुझाइत अछि, तँ प्रश्न उठत जे ई लेखकीय विलम्ब अछि, पीड़ितक चुनल मौन अछि, अथवा निष्कर्षक लागि स्रोत अभाव। एहि भेदक बिना मौनकेँ कमजोर कथा अथवा पूर्ण सत्य, दुनू कहब असावधान होएत।

समापनक असङ्गति : फैसला नहि, पहराक आरम्भ

अन्तिम अध्यायसभ ‘जलसमाधि’क अर्थकेँ भौतिक डूबनाइ सँ सामाजिक विस्मरण धरि पसारैत अछि। कटोरामे तीन नदीक जल, बचाओल आ अपुष्ट नामक अलग व्यवस्था, संदूकक विधिसम्मत जाँच, आ गाछी पर नामक पहरुआक स्थापन—ई सभ एक एहन अन्त्य बनबैत अछि जतए कथा अपन पूर्ण विजय घोषित नहि करैत। अनेक दोषसिद्धि, रकम-वापसी, अपराध-शृंखलाक अन्तिम नियन्त्रण आ भविष्यक सामाजिक मरम्मति अनिर्णीत अछि। एहिमे अनिर्णय कथानकक नैतिक रणनीति अछि, कारण सत्यक रक्षा एक बारक उत्सव नहि, दीर्घ श्रम अछि।

मुदा ई खुलल अन्त अपनहि सभ अपूर्णताकेँ सार्थक कऽ नहि दैत। ककरा की भेल, कोन फाइल विधिक रूपेँ कखन स्वीकारल गेल, अथवा दू नामक सम्बन्ध की अछि—एहन तथ्यगत प्रश्न सभ स्वयंसिद्ध कथात्मक अस्पष्टता नहि। रचना जखन ठोस परिणाम नहि दैत, तखन आलोचक ओकर सीमा कहत; जखन प्रश्न खुला

राखिकऽ सक्रिय स्मृति, अधिकार आ भविष्यक कर्तव्य रचैत अछि, तखन ओ खुलल अन्त्यक कलात्मक उपलब्धि स्वीकारत।

अन्तिम निर्णय : असङ्गति, विधि आ सावधान पाठक

एहि उपन्यासक प्रबलतम आख्यानगत मौलिकता असङ्गत स्वरसभकेँ मिटाएबाक बदला हुनकर परस्पर जाँच करबाक सार्वजनिक कथा गढ़बमे अछि। रजिस्टर आ देह, मंच आ जीवन, पुरान पंजी आ नब सिम, असली परिवारक स्वर आ नकली अधिकारीक ध्वनि, लोकदृष्टि आ लिखित सत्यापन—ई सभ विरोध रचनाकेँ अगिला घटना दिस धकेलैत अछि। पाठक स्वयं नाम, समय, साक्ष्य आ दृष्टिकेन्द्रक अन्तर पढ़ैत अछि; तेँ कथा-प्रवाहक सहभागिता मात्र भावानुभूति नहि, आलोचनात्मक वाचन बनैत अछि।

तकर सीमा अछि जे सघन पुनरावृत्ति, एक-दो ठामक अनिर्दिष्ट दृश्यक्रम, ऋतुक छलाँग, रंगक फेरबदल, घाट-नाम आ छोटूक नामजेकाँ सूक्ष्म तथ्यगत विसंगति अनिवार्यतः कथाशिल्पक सचेत रूप नहि सिद्ध होइत। ओकरा चिह्नित करब लेखकक विरोध नहि, पाठक प्रति न्याय अछि। उचित प्रकाशन-सम्पादन एहन बिन्दु पर मूल पाठक पाठान्तर जाँचि सकैत अछि; मुदा आलोचनाक पाठकेँ चुपचाप सुधारि कल्पित कारण जोड़बाक आवश्यकता नहि।

अन्ततः 'असङ्गति' एहि कृतिमे एकहिसँग दू वस्तु अछि—जीबैत समाजक असमान आख्यानसभक रचनात्मक सहस्थिति, आ पैघ कृतिक भीतर बचल किछु वास्तविक पाठगत असमानता। पहिल वस्तु सामाजिक ज्ञानक बहुवचन बनबैत अछि; दोसर सम्पादकीय सावधानी माँगैत अछि। दुनूकेँ अलग राखिते बुझाइत अछि जे “गोहि सभक बीच जलसमाधि” अपन पाठककेँ अन्तिम उत्तर थम्हा नहि दैत; ओ ओकरा नामक पहरुआ बनबाक अभ्यास देइत अछि। जे कथा अपनहि कथन-शर्त पाठकसँ जाँचबैत अछि, से स्मृतिक विषय मात्र नहि, स्मृति रचबाक विधि सेहो बनैत अछि।

उपसंहार : नामक पहरुआक कार्य अधूरा नहि, निरन्तर अछि

कथा एतय एही अर्थमे पूर्ण होइत अछि जे ओ अपन अन्तिम सत्यक स्वामित्व पाठककेँ नहि सौंपैत; ओकरा सावधान सुनबाक, नाम ठीक रखबाक, अपूर्णताकेँ मानबाक आ प्रमाण तथा संवेदनाक बीच आवश्यक दूरी बुझबाक क्षमता दैत अछि। कथाक असङ्गति जँ समाजक अलग-अलग गवाही के बीच उठैत अछि, तँ ओ आख्यानक रचनात्मक शक्ति अछि; जँ ओ पाठक ठोस नाम, स्थान वा तिथि पर अनिर्दिष्ट विरोध रूपेँ रहि जाइत अछि, तँ ओकरा पहचानब आलोचनाक कर्तव्य अछि। एहि दुनू कार्यक संयुक्त सम्पन्नता ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क विशाल कथाजगतकेँ साहित्यिक रूपेँ उत्तरदायी ढङ्गसँ पढ़बाक मार्ग खोलैत अछि।

खण्ड ३ | आख्यानक अन्तर्मन

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : सम्पूर्ण २१६ अध्यायक कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

आलोचनात्मक ग्रन्थ : कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक — सम्पूर्ण कथा–आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

आधार–ग्रन्थ : कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली उपन्यास]। मूल रचनाकार : गजेन्द्र ठाकुर। मूल कृतिक प्रथम संस्करण : २०१९।

भाषा : मैथिली। आकार : ६ × ९ इञ्च। विषय : कथा–विन्यास, कथनकाल, दृष्टिकेन्द्र, बहुस्वरता, अन्तर्पाठ, स्मृति, श्रम आ आख्यानगत असङ्गति।

एहि आलोचनात्मक संस्करणमे उपन्यासक सभ २१६ अध्यायक पाठ–विवेचन, पर्वगत संयुक्त समीक्षासभ आ अन्तमे असङ्गतिक आख्यानशास्त्रीय अर्थपर स्वतंत्र निष्कर्ष समाविष्ट अछि।

आलोचनात्मक प्रवेश : कृति, प्रमाण आ पद्धति

“कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क कथा एकटा असम्भव बुझाएवला, मुदा अभिलेखीय व्यवस्थाक भीतर सम्भव भऽ उठल स्थितिसँ शुरू होइत अछि : जीवित स्त्री सरितार्कें मृत्यु-सूचना भेटैत अछि। एकरा केवल रहस्यक आरम्भ मानल जाए तँ उपन्यासक पहिल चारि अध्यायक वास्तविक आलोचनात्मक सम्भावना कमि जाएत। प्रश्न ई नहि मात्र जे गलत सूचना के पठौलक; प्रश्न ई सेहो जे जीवित मनुष्यक ज्ञान, देह, श्रम, स्मृति आ परिजनक सम्बन्धक आगाँ प्रशासनक लिखल वाक्य कतेक अधिकार प्राप्त करैत अछि। रसोइक आगि, दरबज्जाक पानि, रेलक सिटी, गेटक पर्ची, नाविकक बाँस आ घाटक कपड़ा—ई सभ कथा-संसारक वस्तु अछि, मुदा एक-एक वस्तु प्रमाण तथा सामाजिक समयक विशिष्ट सीमा सेहो निर्धारित करैत अछि।

पहिल चारि अध्यायमे कथा अपन आकार क्रमशः बढ़बैत अछि। पहिलमे रसोइ आ परिवारक बीच जीवन-अभिलेखक टक्कर अछि। दोसरमे सत्ताइस नामक निजी पन्ना दस्तावेजक सार्वजनिक उपयोग आ व्यक्तिगत सुरक्षाक नैतिक विवाद बनैत अछि। तेसरमे फकीराक रोजी-रोटी आ सार्वजनिक मार्गक व्यवस्था स्वतंत्र घटनाधारा बनैत अछि। चारिममे प्राचीन सत्यवती–देवव्रतक कालधारा तथा आधुनिक तिलवाह घाट एक अध्यायक भीतर क्रमशः आबैत अछि। एहि क्रमकेँ केवल ‘छोट कथा सँ पैघ कथा’ कहब पर्याप्त नहि; प्रत्येक विस्तार पूर्ववर्ती साक्ष्यक स्वरूप बदलैत अछि। घरेलू गवाहीसँ सार्वजनिक पर्ची धरि आ ओतयसँ नदीक भौतिक माप धरि प्रमाणक आधार निरन्तर कठिन होइत जाइत अछि।

एहि अध्ययनमे ‘कथा’ सँ अभिप्राय पात्रसभक जीवनमे घटित स्थितिक अनुमानित क्रम, आ ‘कथन’ सँ अभिप्राय ओ घटनाक पाठमे देल प्रस्तुति-क्रम, अवधि, स्वर आ दृष्टिकेन्द्र अछि। पूर्वदीप्ति, अग्रसंकेत, दृश्य, सारांश आ कथन-अवकाशक परीक्षण एतए जेरार जेनेट द्वारा विकसित आख्यानकालक प्रश्नसँ प्रेरित अछि, मुदा उपन्यासमे अनुपस्थित तकनीकक उपस्थिति मानि नहि लेल जाएत। बाख्तिनक संवादिता-मूलक दृष्टिसँ एक समाजक अनेक आवाजक सम्बन्ध परखल जाएत; एकाधिक संवाद भेला मात्रसँ कलात्मक बहुस्वरता सिद्ध नहि होइत। बूथक पाठकीय विश्वास आ कथकक विश्वसनीयता सम्बन्धी विवेचनसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे पाठक ककरा कतेक जल्दी मानय। भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनि, औचित्य आ रसक चिन्ता पाठकक अर्थनिर्माण आ भावानुभवक संगी अछि, यद्यपि एहि अध्यायसभमे सर्वत्र प्रत्यक्ष शास्त्रविवाद नहि अछि।

कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्धकेँ आधुनिक प्रपत्रपर केवल संस्कृत नाम चिपकाबय लेल नहि आनल गेल अछि। प्रत्यक्ष अनुभव, परक कथन, अभिलेखक उत्पत्ति, अनुमानक शर्त, अनुपलब्धिक सीमा आ संशय—ई सभ पाठभितर जतेक अलग-अलग स्थिति बनेल अछि, ततेककेँ पहिने चिन्हल जाएत। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि एतए पूर्वनिर्णीत इतिहासादेश नहि, बल्कि प्रश्नक पद्धति अछि : सरकारी पंजीक बाहर ककर श्रम, ककर यात्रा, ककर गीत, ककर मौन बचल अछि; आ निजी स्मृति वा लोकक गवाहीकेँ स्वयं आलोचनात्मक जाँचसँ मुक्त कियैक नहि राखल जाए? प्राचीन महाभारतक पुनर्लेखन सेहो मूल कथा आ आधुनिक आख्यानक बीच नैतिक संवाद अछि, शाब्दिक पुनर्जन्मक सिद्धान्त नहि।

अध्याय १ — मृतकक रसोइ

जीवित देह आ मृतक-पंजीक पहिल टक्कर

अध्यायक आरम्भ कथात्मक प्रतिपक्षकेँ एक्के वाक्यमे ठाढ़ कऽ दैत अछि : सरिताक मृत्यु-सूचना पहुँचैत अछि तखन ओ अपन सत्रह बरख पहिने मृत पतिक औषधिपर्ची चाउरक डिब्बामे खोजि रहल छथि। एहि वाक्यमे तीन काल खोंसल अछि—पतिक वास्तविक मृत्यु सत्रह वर्ष पहिने, पतिक नामपर दवा वितरणक काल्हिक अभिलेख, आ सरिताक दू दिन पहिने घोषित मृत्यु। कथावाचक पहिलेसँ कोनो दोषी चुनि नहि दैत; पाठककेँ असंगत तिथि आ जीवित व्यक्तिक उपस्थितिसँ समस्या समझबाक पड़ैत अछि। ई विरोधाभास रोमांचक जरूर अछि, मुदा उपन्यासक वास्तविक कथात्मक चाल एकरा रहस्यक तात्कालिक समाधानसँ हटा कऽ व्यवस्थागत प्रमाण-परीक्षामे बदलब अछि।

चूल्हिपर उफनैत भातक संग ई उद्घाटन अर्थपूर्ण विरोध रचैत अछि। सरिता खबर सुनिते पहिने आँच घटबैत छथि, पानि चढ़बैत छथि, बिट्टूकेँ स्कूल जेबाक लेल कहैत छथि। औपचारिक सूचना जे हुनक जीवन समाप्त घोषित करैत अछि, तकर सम्मुख दैनिक क्रिया बिना कोनो मंचीय उद्घोषणा चलैत रहैत अछि। मुदा ‘भात रान्हब’ मात्रक आधारपर जैविक जीवित रहबाक सरकारी प्रमाण सिद्ध नहि भेल—ई भेद स्वयं नैराक संवादमे साफ अछि। तेँ रसोइक अर्थ केवल जीवनक ‘प्रतीक’ कहि स्थिर करब त्रुटिपूर्ण हएत। ई घरक समय-सारणी, श्रमक मात्रा, सम्बन्धक पारस्परिक दायित्व आ संस्थागत तात्कालिकताक प्रतिरोधक मूर्त ठाम अछि।

घटना-पञ्जी : कोन स्थिति सचमुच बदलल?

पहिल परिवर्तन मृत्यु-सूचनाक प्राप्ति अछि, मृत्यु नहि। दोसर परिवर्तन पतिक नामपर ताजा औषधि-वितरण पर्चीक प्राप्ति अछि, जे आरम्भिक शंकाकेँ दू भिन्न अभिलेखीय समस्यामे बाँटैत अछि। तेसर परिवर्तन नैराक सुधार-प्रक्रिया आरम्भ करब अछि : आवेदन-पृष्ठमे बेटी विकल्प नहि, ‘अधिकृत प्रतिनिधि’ विकल्पक बाद मृत व्यक्तिक सहमति माँगल जाइत अछि। चारिम परिवर्तन फकीराक प्रवेश-पास बन्द होएबाक स्वतंत्र गवाहीक आगमन अछि। पाँचम परिवर्तन नैराक तीन अलग साक्ष्य-समूह बनायब अछि—माइक जीवित उपस्थिति, मृत पतिक दवा-प्राप्ति, फकीराक गेट-विवाद। छठम परिवर्तन आवेदनक प्राप्ति-सूचना अछि, किन्तु सरिताक स्थितिक सरकारी सुधार नहि। अन्ततः सरिताक ‘हमर नाम अकेले नहि फँसल छै’ कथन अगिला अध्यायक सूचनात्मक शृंखला खोलैत अछि। एहि सभकेँ एक्के कारणक घटनाक्रम कहब एखन असिद्ध अछि।

एहि घटनाक्रममे ‘आवेदन प्राप्त’ आ ‘जीवित प्रमाणित’क दूरी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। अनेक रहस्य-कथामे नायकक पहिल सफल आवेदनकेँ समाधानक लक्षण बनाओल जाइत अछि; एतए प्रशासनिक स्वीकार्यताक पहिल पायदान मात्र प्राप्त भेल। फकीराक मामिलामे सेहो गेट बन्द होएबाक कारण अनिश्चित छैक। अध्याय स्वयं ‘संयोग भऽ सकैत छल, साजिश सेहो’ कहि अनुमानक द्वार खोलैत अछि, मुदा ओहि द्वारसँ निष्कर्ष नहि निकालैत। एतए कथाक बल अपराधी पहचानबाक जल्दबाजीमे नहि, प्रश्नसभकेँ एक-दोसरासँ अलग रखबाक अभ्यासमे अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्र आ ज्ञानक व्यवस्था

कथावाचक तृतीयपुरुष अछि; ओकरा कथाभितर पात्रक रूपमे उपस्थित करबाक कोनो प्रमाण नहि भेटैत। ओ सरिताक स्मृति आ नैराक आन्तरिक प्रतिक्रिया दूनूक लग पहुँचैत अछि। उदाहरणार्थ, सरिताक सत्रह वर्षक वैधव्यक भीतर पेंशन, जमीन आ राशनक लेल मृत्यु-पत्रक पुनः उपयोगक इतिहास कथनमे संक्षेपित अछि; नैराक ठेका-कार्य आ माइक सुरक्षा सम्बन्धी असमंजस सेहो कथावाचक बतबैत अछि। एहिसँ एकटा स्थायी आ सर्वज्ञ दृष्टिकेन्द्रक दावा करबाक बजाय दृश्यानुसार बदलैत निकटता कहब उचित अछि। घटना अधिकतर एके दिनक भोरसँ दुपहरि धरि आगाँ बढ़ैत अछि; पतिक मृत्यु सम्बन्धी सङ्क्षिप्त पूर्वदीप्ति एकर सामाजिक वजन बढ़बैत अछि। रेलक ध्वनि, चूल्हाक आगि आ समयसीमावला सुधार-पृष्ठ वर्तमानकेँ बारंबार फेर स्थापित करैत अछि।

कथावाचकक एक महत्त्वपूर्ण औचित्य ई अछि जे ओ पात्रक ज्ञानक सीमा सिद्ध करैत छथि। नैरा जलजमाव देखैत छथि, मुदा तुरन्त निकास बन्द होएबाक ‘कारण’ नहि बनबैत छथि। ओ फकीराक गेट-पास आ माइक मृत्यु-सूचनाक बीच एके प्रणाली देखैत छलीह, किन्तु एके गलत कार्यकारणक निष्कर्ष नहि निकालैत छथि। काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ एकर ध्वनि उपदेशसँ आगाँ जाय सकैत अछि : जे माटि गील देखाइत अछि, ओकर अदेखल कारण एक दिनक आँखिसँ नहि मिलैत। तइयो पाठककेँ ई सावधानी अनेक ठाम सीधे कहल जाइत अछि, जेकर नाटकीय प्रभाव पर बादमे प्रश्न उठयत।

प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान : आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ सीमित संवाद

नैरा अपन नोटबुकमे देखल बातक आगाँ ‘प्रत्यक्ष’ आ फोनमे भेटल बातक आगाँ ‘प्राप्त सूचना’ लिखैत छथि। ई उपन्यासक भीतर प्रमाण-वर्गीकरणक सभसँ स्पष्ट क्रिया अछि। प्रत्यक्षक पक्ष ई अछि जे नैरा माइक समक्ष उपस्थित छथि; प्राप्त सूचनाक पक्ष ई अछि जे एक सेवाक डिजिटल पाठ मृत्युक दावा करैत अछि। दूटा विपरीत वाक्य एखन धरि स्वतः एक-दोसराकेँ निरस्त नहि करैत, किएक तँ दूनूक ज्ञान-उत्पत्तिक स्थिति भिन्न अछि। मृत पतिक नामपर दवा वितरित भेला सँ ई अनुमान तर्कसंगत बनैत अछि जे अभिलेखमे कोनो अनियमितता जाँचल जाओ; मुदा ‘फलाँ व्यक्ति जालसाजी कएलक’ एहन निष्कर्ष निकालबाक हेतु एखन नहि अछि। अनुपलब्ध नाम वा अधूरा पृष्ठ व्यक्तिगत अस्तित्वक अभावक प्रमाण नहि थिक।

आख्यानगत पदावलीमे पक्ष, साध्य, हेतु आ व्याप्ति जेकाँ उपकरणकेँ एतए पूर्ण औपचारिक अनुमान-रचना मानि प्रस्तुत नहि कएल जा सकैत अछि; उपन्यास एखन कोनो शास्त्रीय पंचावयव-वाक्य नहि गढ़ैत। मुदा ओ प्रमाणसँ अधिक निष्कर्ष निकालबाक दोष देखबैत अछि। ‘दवा प्राप्त’ लिखल अछि, किन्तु प्राप्तकर्ता अज्ञात; ‘मृत्यु’ दर्ज अछि, किन्तु जीवित देह सोझाँ अछि; ‘अधिकृत प्रतिनिधि’ उपस्थित अछि, मुदा बेटीक सम्बन्ध लेल सरकारी खाना नहि। एहि विषमतामे तर्क जीवनक विरोधी नहि, जीवनकेँ गलत श्रेणीमे घुसेड़बाक विरुद्ध विवेक बनैत अछि।

स्त्रीक श्रम, निजता आ अभिलेखक राजनीति

प्रपत्रमे ‘पति, पुत्र, अधिकृत प्रतिनिधि’ विकल्पक भीतर बेटीक नामक अभाव उपन्यासक सामाजिक आलोचनाक सटीक बिन्दु अछि। नैरा तकनीकी कौशलसँ आवेदन भरि सकैत छथि, मुदा बेटीक रूपमे हुनकर

सम्बन्ध प्रणालीमे प्राथमिक श्रेणी नहि पबैत। सरिता पढ़ि सकैत छथि, अपना जीवनक बारेमे निर्णय लऽ सकैत छथि, मुदा जकरा प्रणाली मृत कहि देने अछि तकर सहमति माँगबाक विरोधाभास सोझाँ अछि। ई केवल तकनीकी त्रुटिक व्यंग्य नहि; जीवनक नागरिक दर्जा आ पारिवारिक अधिकारक बीच असमान भाषिक वर्गीकरणक नाटकीय दृश्य अछि।

निजता सम्बन्धी बहस सेहो सरिताक सक्रिय निर्णयसँ चलैत अछि। ओ मूल कागद अपन लग रखबाक, नकल बनायबाक, घरक पता सर्वत्र नहि पठएबाक आ ‘सुधारब’ तथा ‘सभकेँ देखाएब’क अन्तर बुझएबाक आग्रह करैत छथि। एहि ठाम सरिता सूचनाक निष्क्रिय स्रोत नहि, ज्ञान-प्रसारक सीमा निर्धारित करनिहार पात्र छथि। नैराक व्यवसाय पुरान अभिलेख खोलब अछि; माइक जीवन सिखबैत अछि जे किछु नामक रक्षा करबाक अर्थ तात्कालिक प्रकाशन रोकब सेहो भऽ सकैत अछि। ई भेद उपन्यासक विदेह-समानान्तर इतिहास सम्बन्धी सम्भावनाक मूल नैतिक अङ्कुर अछि : दबल इतिहासक पुनर्पाठ ओकर स्रोत-पात्रक सहमति नष्ट कऽ कयल नहि जाए।

भाषिक शिल्प, रस-ध्वनि आ प्रथम अध्यायक सीमा

संवाद छोट, प्रत्युत्तर तीक्ष्ण आ घरेलू कामक संग घुलल अछि। ‘मरबाक खबर भातक प्रतीक्षा कऽ सकैत छै’ जेकाँ कथन मृत्यु-परिस्थितिक बीच हास्य आ नैतिक आग्रह दुनू उत्पन्न करैत अछि। फकीराक भात खयबाक प्रश्न करुणा नहि, पंजीक मृत्युक विरोधाभास पर एकटा लोक-तर्क रचैत अछि। पीतरक डिब्बामे पीयर फूलक पाकुड़ी पुरान शोककेँ बिना विस्तार-व्याख्याक अनुभव करबैत अछि; ई वस्तु मृत पतिक सम्बन्धक स्मृतिमे पाठकक प्रवेश करबैत अछि। एतए करुण आ हास्य एक-दोसराकेँ रद्द नहि करैत; एकर सहअस्तित्व जीवनक असंगत लेखाजोखाक अर्थ खोलैत अछि।

तथापि आलोचनात्मक सीमा स्पष्ट अछि। नैरा आ सरिता, आरम्भे सँ, अनुमान आ प्रमाणक अनुकरणीय भेद बारंबार स्पष्ट करैत छथि। ई कौशल पात्रक पेशा आ जीवनानुभवसँ कारणसहित जुड़ल छैक, मुदा पाठककेँ प्रत्येक विवादक ‘सही पद्धति’ साथहि भेटला सँ कथाक अनिश्चितता कमि सकैत अछि। फकीराक संवाद सेहो प्रायः सटीक नैतिक-सूत्रक आकार लऽ लैत अछि; सजीव व्यक्तित्व आ विचारक प्रस्तुति बीच तनाव रहैत अछि। एकर दोष निर्णायक कहल जाय, ताहिसँ पहिने अगिला अध्यायमे पात्र असहमति, भूल आ अपूर्ण निर्णयमे कतेक उघड़ैत छथि, से देखब आवश्यक अछि। पहिल अध्यायक उपलब्धि एतबे निश्चित अछि जे रहस्यक आवरणमे नागरिक अस्तित्व आ अभिलेखक जिम्मेवारीक ठोस कथा आरम्भ भेल अछि, समाधान नहि।

अध्याय २ — सत्ताइस नाम

अभिलेखक नैतिक स्वामित्व आ मौनक अधिकार

दोसरे भोर चाउरक स्थानपर कागद सुखेबाक दृश्य एहि अध्यायक प्रथम महत्त्वपूर्ण रूपान्तरण अछि। पहिल अध्यायमे रसोइ अभिलेखक विपरीत घरेलू जीवनक जगह छल; दोसरमे कागद स्वयं रसोइमे सुरक्षा पबैत अछि। सरिता पुरान अखबार बिछा, चारू कोनपर पीतरक बाटी राखि, भीजल पन्ना सुखबैत छथि। ई धीमा क्रिया कथाक

गति रोकैत नहि; अगिला रहस्यक पाठकीय अधीरताकेँ एक मनुष्यक जिम्मेदारीक समयमे प्रवेश करबैत अछि। नाम पढ़बासँ पहिने पन्ना बचेनाइ आवश्यक अछि।

पन्नामे सत्ताइस व्यक्तिनाम, अलग स्याही, भिन्न तिथि आ संकेत, काटल रेखा तथा बन्द अन्तिम तह अछि। मुदा सरिता तुरन्त सूचीक एकरे अर्थक प्रतिरोध करैत छथि। सभ मृत नहि छथि; सभक कागद गलत नहि अछि; किछुक नाम सही अछि मुदा सम्बन्ध गलत, किछु अपन नाम बदलने छथि, किछुक नाम बिना सहमति लिखल गेल। एहि भेदकेँ न्यायोचित रूपसँ स्वीकार कएल बिना सूचीकेँ ‘मृतकक पंजी’, ‘अपराधीसभक नाम’ वा एकटा रहस्य-खोलबाक निश्चित चाभी मानब गलत हएत। शीर्षकमे गनल सत्ताइस संख्या घटनाक अन्तिम गन्तव्य नहि; नाम, काम, सुधार आ अनिश्चितताक विविधता अछि।

घटना-पञ्जी : लुकाओल नामसँ सार्वजनिक धमकी धरि

पहिल घटना सरिताक हाथक लिखल पन्नाक उद्घाटन अछि, जतय छब्बीस नाम देखबाक अनुमति भेटैत अछि, एकटा बन्द रहैत अछि। दोसर घटना गोपनीयताक निर्णयक स्वयं सरिताद्वारा लिखित अभिलेखन अछि; नाम नहि खोलबाक कारण बेटीक मनमानी नहि, स्रोतक इच्छा होएत, ई स्पष्ट भेल। तेसर घटना संकेतक फोन-मरम्मति आ तस्वीरक निजी अधिकारवला प्रसंग अछि, जाहिसँ नकल बनायब आ सीमित प्रकाशनक व्यावहारिक अन्तर नव आधार पबैत अछि। चारिम घटना छब्बीस नामक प्रतिलिपि बनब, सत्ताइसमी जगह खाली छोड़ब आ साक्ष्यक प्रकृति लिखब अछि। पाँचम घटना अज्ञात पुरुष-स्वरक फोनक धमकी अछि। छठम घटना नैराक फैसला अछि जे धमकीक शब्द अलग लिखि पुलिसकेँ बताओत, जाँच जारी राखत, मुदा बिना अनुमति पन्ना प्रकाशित नहि करत। एतए पुलिसमे वास्तविक सूचना दर्ज भऽ गेल, एहन घटना अध्यायमे नहि घटैत; निर्णय आ सम्पन्न क्रियामे भेद राखब जरूरी अछि।

धमकीक पछिला वाक्यमे चूल्हा बन्द करबाक बात आबैत अछि। पहिल अध्यायक भात एतए स्पष्ट जीविकात्मक जोखिम बनि उठैत अछि। मुदा धमकीदाता कियो अछि, की ओकरा बन्द तहक नाम मालूम अछि, ओ केना पन्नाक सूचना पेलक—ई सभ अज्ञात अछि। कथा अस्पष्टता रचैत अछि, मुदा ओकर परखक लेल पर्याप्त तथ्य एखन नहि दैत। नैरा समय, अङ्क आ सुनल वाक्य लिखैत छथि; स्वरक पहिचान नहि गढ़ैत छथि। ई अनुशासन कथा-रहस्यकेँ नैतिक रूपसँ नियंत्रित करैत अछि।

कथन-स्वर, अवधि आ विरामक भूमिका

दोसरे अध्यायमे प्रारम्भसँ मध्यधरि समयक प्रसार सूक्ष्म छैक। चाय बनबाक देरि, भीजल लकड़ी, पन्नाक तह खोलबाक स्वीकृति, तीन दिनक प्रवेश-रसीदक स्मरण, दुपहरिक भोजन आ संकेतक छोट मरम्मति—ई सभ घड़ीक जड़ि नहि, निर्णयक पूर्वशर्त अछि। सरिता रहस्य जल्दी नहि खोलैत छथि; कथा सेहो ओकरा खोलेबाक अधिकार अपने हाथमे नहि लैत। पाठकक जिज्ञासा आ पात्रक असहमतिक बीच जे विलम्ब बनैत अछि, ओ सतही रोमांचक विलम्ब नहि, कथात्मक नैतिकता बनबाक सम्भावना अछि। मुदा कथक पात्रक मनक सार बारंबार स्वयं व्याख्यायित करैत छथि—जैना माइक द्वारा बेटीसँ अविश्वास सहबाक निर्णय—तेँ पाठकक स्वतंत्र अनुमानक जगह कतहु संकुचित होइत अछि।

स्मृतिक उपयोग सावधान अछि। पुरान बहिमे बचपनक लाल फूलक प्रसंगक बीच सरिता कहैत छथि जे सभ पुरान चिह्न रहस्य नहि होइत। उपन्यास अपने स्थापित रहस्य-शिल्पक अतिरेकपर व्यंग्य करैत अछि। जँ प्रत्येक फूल, दाग, बूंद वा ध्वनिकेँ गुप्त संकेत मानल जाए तँ साधारण जीवनक सामान्यता समाप्त भऽ जाएत। एहि छोट घरेलू हँसीसँ कथाक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि। ई आत्म-संयम साहित्यिक उपलब्धि अछि, खास कऽ तखन जखन एक अध्यायक शीर्षकेँ ‘सत्ताइस नाम’ जेकाँ रहस्यमय संख्याक आकर्षण भेटल अछि।

प्रमाण, गोपनीयता आ नैतिक प्रतिपक्ष

सरिताक बन्द तहक आदेश प्रारम्भमे नैराक अभिलेखीय पेशाक विरुद्ध लगैत अछि। नैरा मूलकेँ देखब बिना सत्यापन कठिन मानैत छथि। सरिताक उत्तर—छब्बीस नामसँ शुरू कर—पूर्ण जाँचक निषेध नहि, चरणबद्ध जाँचक नैतिक सीमा अछि। महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तखन अछि जखन नैरा माइक लिखित अनुमति लेल कहैत छथि आ सरिता स्वयं गोपनीयताक निर्णय तिथिसहित लिखैत छथि। एहि क्रियासँ स्रोतक इच्छा, प्रतिकर्ताक जिम्मेदारी आ भविष्यक पुनरीक्षण तीन अलग विषय बनि जाइत अछि। नकल कियो बनौलक, की नुकाओल गेल, ओ केकर निर्देशपर—ई सभ दर्ज कएल जा सकैत अछि, नाम प्रकाशित कएने बिना।

ई निर्णय निरपेक्ष नीतिसूत्र नहि रहैत। सरिता स्वयं पूछैत छथि जे जँ बन्द नामक कारण निर्दोषपर आरोप लागल तँ की? एतए उपन्यास निजताकेँ अनन्तकालिक धर्म बनायबाक खतरा पहिचानैत अछि। एक कात व्यक्तिक सुरक्षा, दोसर कात प्रतिवादीक न्याय : ई द्वन्द्व कथा-नैतिकताक वास्तविक केन्द्र अछि। नैराक अस्थायी उत्तर—नुकसानक संकेत भेटत तँ पहिने माइक जानकारी, बिना प्रमाण दोषारोपण नहि—निष्पक्ष आ पूर्ण समाधान नहि; ई प्रक्रिया-नैतिकताक प्रस्ताव अछि। दोष तथा अधिकारक अन्तिम निश्चय भविष्यक घटना पर निर्भर छैक।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ एकर सीमित सम्बन्ध ज्ञानक अवच्छेद आ प्रमाण-सीमासँ बनैत अछि। ‘नामक पाँतपर काटल रेखा’ देखल गेल; मुदा ओकर अर्थ ‘सुधार पूरा’ नहि, बल्कि विवादास्पद। ‘प्रवेश रसीद’ प्रवेशक प्रमाण छैक, सुनवाईक सफलता नहि। ‘एके वर्तनी’ एके व्यक्ति छैक, ई साक्ष्य बिना सिद्ध नहि। एहि तरह दस्तावेजक विषय-वस्तु तथा ओकरा सँ उपजल अनुमानक सीमा अलग-अलग चिन्हल गेल अछि। कथात्मक दृष्टिसँ एहि भेदक लाभ ई जे विस्फोटक रहस्यक बजाय कईटा अधूरा, भिन्न आकारक मानवीय कार्यक सूची बनैत अछि।

संकेतक प्रसंग : तकनीक, निजता आ अगिला पीढ़ी

सोलह बरखक संकेत पुरान मोबाइलक बटन बदलैत अछि; अपन कौशलक सीमा सेहो बतबैत अछि जे बटन बदललासँ खोएल तस्वीर नहि घुरत। विद्यालयक समूह-तस्वीरमे किताबक पछिलका नम्बर सार्वजनिक भेला पर ओकर विरोध कागदक निजी-अधिकारक बहसकेँ मात्र वयस्कक विषय नहि रहय दैत। ‘सभ पठा रहल छै’ तर्ककेँ ओ पर्याप्त औचित्य नहि मानैत। फोटो खींचबाक पहिने निजी भाग ढाँपबाक सलाह सामाजिक व्यवहारक व्यावहारिक अङ्ग अछि। एकर संग बालकक स्वतन्त्र शिक्षार्थी-स्वर उभरैत अछि; कथा एतय तकनीकक अधिकार केवल नैराक विशेषज्ञतामे सीमित नहि रखैत।

मुदा एहि दृश्यक आलोचनात्मक जोखिम सेहो अछि। संकेत जेना ठीक ओहि क्षण पहुँचैत अछि जखन गोपनीय नकलक नीति परिभाषित भऽ रहल अछि, आ ओकर संवाद एतबा सुव्यवस्थित अछि जे शिक्षात्मक उदाहरणक

उद्देश्य पात्रक स्वतःस्फूर्त उपस्थितिपर भारी पड़ि सकैत अछि। पात्रक किशोर अनुभवक अलग भाव-जगत सघन रूपमे एतए नहि खुलैत; ओकर तकनीकी बुद्धि कथानकक नैतिक निष्कर्षक समर्थन करैत अछि। आगामी अध्यायमे संकेतक अन्य इच्छा, भूल, प्रतिवाद वा स्वतन्त्र कथा भेटत कि नहि, से एकटा उचित मूल्यांकन-प्रश्न रहत।

जलजमाव, घरक आगि आ अध्यायक मूल्यांकन

दीबालक कात ठाढ़ पानि आ पानिमे बच्चाक कागदक नाव देखैत नैरा निकासक सम्भावना सोचैत छथि, मुदा कारणक निश्चित निर्णय नहि लैत। जलक दिशा भौतिक जाँचक आह्वान अछि, चिह्नित आपदाक पूर्वघोषणा सिद्ध नहि। अन्तिम दृश्य घरक चूल्हा फेर जलब आ सुरक्षित पन्नाक बीच अटकल अछि। धमकी जीवन-यापनपर सीधा आक्रमणक भाषा बनि गेलाक बादो परिवार भोजनक काम बंद नहि करैत। एहि प्रकार पहिल अध्यायक रसोइक प्रतिरोध दोसरमे निजता-संरक्षित सार्वजनिक कार्यक कठिन शुरुआत बनैत अछि।

अध्यायक विशेष उपलब्धि अज्ञात सत्ताइसमी नामकेँ उत्सुकताक वस्तु बनाकऽ भी एतबे न कहब जे गोपनीयता अपने आपमे निर्दोष अछि। अनसुलझल नैतिक प्रश्न, खुलल प्रतिलिपिक सत्यापन, धमकीक स्वतंत्र स्वरूप आ माइक वास्तविक भय—ई सभ कथाकेँ अगिला अध्यायक लेल आवश्यक ऊर्जासँ भरैत अछि। सीमा ई अछि जे अनेक पात्र अपन पद्धतिगत सावधानी लगभग समान स्पष्टतासँ व्यक्त करैत छथि; एखन कृतिमे संवादक भिन्न भिन्न राग आ असुविधाजनक चुप्पीक मात्रा आरो बढ़बाक सम्भावना अछि।

अध्याय ३ — चौकक समय

नागरिक परिचय, गतिशीलता आ समयक असमान वितरण

पहिल दू अध्यायमे सरिताक परिवार केन्द्र छल, फकीरा आगन्तुक रहथि। तेसर अध्यायमे कथन हुनकर चौक, कमाइ, यात्राक मार्ग आ अलग पहचानक भीतर प्रवेश करैत अछि। पहिल दृश्य मे चायवला तेसर बेर केतली उतारैत अछि, मुदा फकीराक गिलास उठल नहि। रेलक बादक कथित निःशब्दता भीतर सँ टोकरीक बेँत, कीचड़मे पहिया आ दूधक डिब्बाक आवाजक रूपमे सुनाए लगैत अछि। दृष्टि-प्रधान नगर-वर्णनक बदला ध्वनिक सहारे श्रमक मानचित्र खुलैत अछि। ई केवल फकीराक निजी अनुभूतिक नकल नहि; कथावाचक चौकक अदृश्य श्रमकेँ आवाजक माध्यमसँ पाठक लग अनैत छथि।

फकीराक कमाइक तीन स्रोत—यात्रीकेँ समय आ बाट बतायब, पोटली उठेनाइक मेहनताना, आ कखनहुँ माँगल सहायता—कथामे जानिबूझि अलग राखल गेल अछि। भीखकेँ अपमान मानबाक कोनो पूर्वनिर्धारित मध्यमवर्गीय नैतिकता एतए नहि थोपाल गेल; मुदा श्रमक बदला भेटल धनकेँ दया कहि हटेनाइक सेहो अस्वीकार अछि। एहि भेदक कारण फकीराक पेशागत पहिचान रूढ़ ‘भिखारी पात्र’क एकरे छविमे समा नहि सकैत। चौकक दिनक तालिका हुनकर काजक वस्तुगत उपलब्धि अछि : भोरक गाड़ी, बजारक बस, नाव आ अस्पतालक गाड़ीक समय लिखब सार्वजनिक सेवा अछि, जकर अनौपचारिकता ओकर सामाजिक उपयोग समाप्त नहि करैत।

घटना-पञ्जी : ‘मरल’ शब्दक स्रोतक क्रमिक स्पष्टता

पहिल घटना सेवा-द्वारक बन्द रहब आ फेर पाँतिमे जएबाक आवश्यकता अछि। दोसर घटना पहरेदार द्वारा बिना रसीद ‘सुविधा-शुल्क’ माँगब अछि; एहि माँगकेँ तुरन्त भ्रष्टाचारक सिद्ध अपराध कहब पात्र स्वयं टारैत छथि। तेसर परिवर्तन खिड़कीपर मूल यात्रा-अनुमतिक निष्क्रियता तथा सम्बद्ध जीवन-खातामे ‘मृत’ स्थिति लिखल अछि, ई सुनल जानकारीक लिखित पर्ची प्राप्त होयब अछि। चौठम घटना वैकल्पिक नदी-बाटक वास्तविक दूरी, प्रतीक्षा आ जोखिम अनुभव करब अछि। पाँचम घटना हीरा मलाह द्वारा केवल देखल यात्रासभक गवाही देबाक सहमति तथा मापल जल-गहिराइक आधारपर नावक भार घटायब अछि। छठम घटना नैराक संग मिलि चारि भिन्न प्रसंगक लिखित शिकायत तथा अस्थायी जाँच-पर्ची प्राप्त करब अछि। सातम परिवर्तन चौकक सार्वजनिक तालिकामे सावधान यात्रा-सूचना जोड़ब अछि। एहि सबक अन्तमे फकीराक मृत-स्थिति सुधरल नहि, मुदा सुनवाईक तिथि आ अधिकारीक नाम प्राप्त भेल अछि।

विशेष ध्यान देबाक अछि जे अध्याय १ मे फकीराकेँ केवल पास बन्द भेल अछि, ई मालूम छल। अध्याय ३ मे खिड़कीक कर्मचारी जीवन-खातामे मृत लिखल होएबाक स्पष्ट आधार बतबैत अछि। ई नवल तथ्य अछि; पिछला अस्पष्ट गेट-विवादपर पाठकक ज्ञान वास्तविक रूपसँ बढ़ैत अछि। तइयो सरिताक मृत्युपत्र आ फकीराक यात्रा-पंजीक अङ्क भिन्न अछि, दुनूक घटनाकेँ एक्के षड्यन्त्रक परिणाम मानबाक आधार एखन नहि। नैराक नोट एहि असिद्ध सम्बन्धकेँ साफ राखैत अछि। आरो महत्त्वपूर्ण : ‘मृत’ शब्दक स्रोत फकीराक अपना आँखिसँ पढ़ल नहि, कर्मचारीक वाचन आ पश्चात् देल पर्ची अछि। गवाहीक माध्यम बदलला सँ विश्वासक प्रकृति बदलैत अछि; पात्र एकरे अचूक प्रत्यक्ष मानि नहि लैत।

समयक आख्यानशास्त्र : घड़ी, पयर, भाड़ा आ प्रतीक्षा

अध्यायक शीर्षक ‘चौकक समय’ कोनो निरपेक्ष घड़ीक गणना नहि थिक। फकीराक लेल दुपहरिया गाड़ी छुटब पाँच सिक्का नुकसानक सम्भावना, लम्बा घुमाव घुटनाक पीड़ा, वृद्धा लेल औषधि देरी स्वास्थ्यक जोखिम, माछ बेचयवाली लेल नावक प्रतीक्षा बजार-दाम कमि जेबाक कारण अछि। समान एक घंटा सामाजिक देहसभमे असमान परिणाम लैत अछि। कथाक समय-परिमाण मात्र भोर-दुपहरि-साँझक क्रममे नहि, प्रत्येक पेशाक गतिक दबावमे व्यवस्थित अछि। फकीराक प्रश्न—घूमिकऽ जाएबामे कतेक समय लगत—कर्मचारीक ‘मालूम नहि’सँ टकरा कऽ ‘वैकल्पिक मार्ग’क प्रशासनिक अर्थकेँ खोलि दैत अछि। उपलब्धता आ समान उपयोगिता दू भिन्न स्थिति छथि।

जेनेट प्रेरित कथन-अवधि परीक्षणमे अध्याय अनेक छोट दृश्यपर आधारित अछि—चाय-दुकान, पहरेदार, खिड़की, नाव-घाट, शिकायत-केन्द्र। कालिक घाटा आ घुटना-दुखाइ संक्षिप्त पूर्वदीप्ति रूपमे आबैत अछि; निरन्तर संवादक बीच दिनक गति बारंबार रुकैत अछि। एहि विरामसभमे कथा ‘किछु नहि घटल’ एहन नहि। पैसेक रसीद माँगब, नाम पढ़ि सुनाबय कहल, नावक बोझ घटेबाक निर्णय—प्रत्येक अनुवर्ती क्रियाक शर्त बदलैत अछि। एहि कारण घटनात्मक घनत्वकेँ केवल ‘मृत’ शब्दक एक बेर प्रकट होयब गनि नहि निर्धारण करब चाही।

दृष्टिकेन्द्रण आ देहगत ज्ञान : सुनब आ मापब

फकीराक छड़ी, आवाजसँ स्थानक पहचान, चायक गिलासक गरमी आ नावक चिक्कन लकड़ी कथामे देहगत ज्ञानक माध्यम छथि। परन्तु कथावाचक हुनका सर्वज्ञ श्रवण-नायक नहि बनबैत। फकीरा अपन श्रवणसँ कर्मचारीक कथन सुनैत छथि, लिखित प्रति सेहो माँगैत छथि; नावक सुरक्षित थाहक अधिकार हीरा मलाहक प्रयोगधर्मी माप लग अछि। हीरा बाँस तीन ठाम डुबबैत छथि, बदलल धारे कारण नावक भार घटबैत छथि, आ पुरान रंगक चिह्नकेँ काल्हि फेर मिलौने छथि। एहि दृश्यक ज्ञान-व्यवस्थामे प्रत्यक्ष केवल आँखिक विषय नहि, प्रशिक्षणप्राप्त शरीर आ संशोधित उपकरणक संयुक्त परख अछि। हीराक ‘पुरान रहलासँ सही नहि’ उत्तर परम्परा आ वर्तमान परीक्षणक बीच रोचक आलोचनात्मक अन्तर स्थापित करैत अछि।

फकीरा स्वयं कहैत छथि जे हुनका देखाओल स्क्रीन ओ पढ़ि नहि सकैत छथि; पढ़ि सुनाओल बात हुनका सुनल प्रमाणक स्थिति रखैत अछि। एहि विधानमे ज्ञानक अन्तरक सटीक आत्मस्वीकार अछि। यात्रीकेँ घाटक बाट बुझबैत फकीरा स्वयं आन देहक स्थिति—भीजल सीढ़ी, हाथ पकड़ि उतरब—सँ सीखबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। तेँ उपन्यास दृष्टि आ श्रवणक सरल प्रतिस्पर्धा नहि बनबैत; एक व्यक्तिक देहगत दक्षता दोसर व्यक्तिक अनुभवसँ निरन्तर संशोधित होइत अछि।

प्रमाण-नैतिकता, सहमति आ साझा गवाही

हीराक प्रस्ताव बहुत महत्त्वपूर्ण अछि : ओ फकीराक ओहि यात्राक गवाही देता जखन-जखन स्वयं देखलनि, नहि देखल दिनक शपथ नहि। एहि कथनमे अनुभवलोकक सीमा स्वयं साक्षी द्वारा निश्चित अछि। फकीराक शिकायतमे सेहो पहरेदारक माँग आ पहरेदारक संभावित मंशा अलग राखल जाइत अछि। पर्चीपर ‘मूल प्रविष्टिक सत्यापन शेष’ रहनाइ राज्य-अभिलेखक भीतर स्वयं अनिश्चिततक लिखित स्वीकृति अछि। न्यायिक वा दार्शनिक रूपसँ ई अन्तिम प्रमाण नहि; मुदा बिना सत्यापनक निश्चित आरोपसँ अलग एकटा उत्तरदायी सार्वजनिक अभिलेख अछि।

पात्रसभक सम्बन्धमे सेहो सामूहिकता सरल नायकत्व नहि बनैत। हीरा नावक समय दर्ज करबाक वचन दैत छथि, बजारक दाम निश्चित करबाक नहि; फकीरा घाटपर प्रतीक्षारत लोककेँ साझा हिसाब रखबाक सुझाव दैत छथि, मुदा सुरक्षित नाव-जाँचक समय घटायबाक नहि। प्रत्येक पात्र अपन दक्षता आ अधिकार-सीमासँ काम करैत अछि। एहि रूपमे विदेह समानान्तर इतिहासक उपयोगी दृष्टि एकरे उपजैत अछि : सार्वजनिक इतिहास केवल पंजीमे उल्लिखित मालिक आ कर्मचारीक नहि, बल्कि यात्रीक छुटल कमाइ, नाविकक माप, वृद्धाक दवाइ आ देहक जोखिमक सेहो अछि। तथापि एकर संकलन अनन्त सहानुभूतिक घोषणा नहि; प्रश्न आ जाँचक कार्य अछि।

कथात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायक अन्तमे फकीरा चायक दाम चुकबैत छथि आ गाड़ीक तालिका सीधा करैत छथि। ‘मृत लिखबाक रसीद’ आ जीवित रहबाक लगातार भाड़ा—ई विरोधाभास कथाक प्रारम्भिक सूत्रकेँ घरेलू स्तरसँ नागरिक गतिशीलताक ठोस धरातलपर अनैत अछि। ओ सुधरल अभिलेखक प्रतीक्षा करैत रहबाक कारण अपन रोजी छोड़बाक निर्णय नहि लैत छथि। कथन फकीराकेँ निष्क्रिय करुण-पात्र नहि बनबैत; हुनक श्रम, हास्य, दरद, तर्क आ सीमित सफलता सभ संग रखैत अछि।

सीमा ई जे घटनाक बीच पात्रसभ अत्यन्त उच्च स्तरक प्रमाण-सावधानी लगातार पालन करैत छथि। कर्मचारी अन्ततः लिखित पर्ची दैत अछि, नाविक अपन अवलोकनक सीमा बतबैत अछि, फकीरा आरोप रोकैत छथि, नैरा सम्पर्क असिद्ध लिखैत छथि। ई अनुशासन कथामे इच्छित प्रतिमान निर्माण करैत अछि; मुदा वास्तविक सामाजिक हिंसा, अधीरता आ भ्रमक अव्यवस्थित उपस्थिति कम होयबाक जोखिमो उत्पन्न करैत अछि। एतए आलोचकीय निष्कर्ष ‘अविश्वसनीय’ कहि देब नहि, बल्कि ई अछि जे मानवीय विरोधाभासक जतेक जगह समाजक सुविचारित तर्क-पद्धतिकेँ देल गेल अछि, ततेक अनपेक्षित आ अपूर्ण प्रतिक्रिया लेल सेहो देब अपेक्षित रहत।

अध्याय ४ — नदीक पहिल घर

द्विकालीन अन्तर्पाठ : सत्यवतीक नावसँ तिलवाह घाट धरि

चारिम अध्याय पहिल बेर स्पष्ट रूपसँ प्राचीन हस्तिनापुरक समयमे प्रवेश करैत अछि। यमुनाक घाटपर सत्यवती माछक टोकरि खोलि जाँचैत छथि; ऊपरसँ ताजा देखाइत ढेरीक नीचाँ दूटा माछ बिगड़ल भेटैत अछि। दृश्य उपन्यासक प्रमाण-चिन्ताकेँ प्राचीन आख्यानमे रोपैत अछि। कच्चा माछक दाम ओकर वास्तविक स्थितिसँ तय होयबाक चाही, केवल चमकसँ नहि—ई श्रमिक घरक व्यावहारिक नियम, कोनो शास्त्रीय सूत्रक उद्धरण नहि अछि। सत्यवतीक पिता जालक मरम्मति, नाविकक हिस्सा, ढुलाई आ अन्नक गिनती करैत छथि; सत्यवती भाइ द्वारा कएल श्रमक हिस्साक नाम सुरक्षित राखबाक आग्रह करैत छथि। प्राचीन महाकाव्यीय कथा एतए राजा–वंशक उत्कर्षसँ पहिने नदीक अर्थव्यवस्था आ घरेलू देयक दृश्य बनैत अछि।

सत्यवती–शान्तनु सम्बन्धक परिचित कथानक एहि रूपान्तरणमे आकर्षण, विवाहक शर्त, पुत्राधिकार आ अपमानक प्रश्नसँ खुलैत अछि। सत्यवती राजघरानामे प्रवेशकेँ स्वतः मुक्ति नहि मानैत छथि। पिता बेटीकेँ पुरस्कारक वस्तु नहि मानैत, तथापि राजसत्ताक निकटता हुनकर निर्णयमे भारी अछि। सत्यवतीक प्रश्न अछि जे विवाहक बाद नाविक-घरक पुरान परिचयकेँ नुकेनाइ पड़त कि नहि, ओकर सन्तानक अधिकारक सौदा हुनक सहमति बिना होयत कि नहि, आ नावक श्रमिकसभक कमाइक भाग ककर हिसाबमे रहत। एहि शर्तसभसँ प्राचीन पात्रक आन्तरिक जटिलता उभरैत अछि; हुनका केवल वंश-राजनीतिक उपायक रूपमे नहि पढ़ल जा सकैत।

घटना-पञ्जी आ कालधाराक स्पष्ट सीमा

प्राचीन क्रममे पहिल घटना सत्यवतीक श्रम-जाँच आ जालक काजक नामांकन अछि। दोसर घटना विवाह-प्रस्तावक अर्थपर पिता-पुत्रीक असहमतिक विस्तार अछि। तेसर घटना देवव्रतक आगमन तथा उत्तराधिकारक शर्त हुनका सोझाँ राखल जाएब अछि। चारिम घटना सत्यवतीक प्रत्यक्ष मांग अछि—अपन वाणी लेल स्थान, सन्तानक भविष्य पर छल नहि, आ नदीक परिवारक अपमान नहि। एहिठाम आवश्यक सीमा ई अछि : अध्याय देवव्रतक आगाँ होमयवला कठोर प्रतिज्ञाक फलित संकेत दैत अछि, मुदा एहि खण्डमे ओ प्रतिज्ञा विधिवत् उच्चारित कएल गेल, एहन घटना पाठमे नहि अछि। भविष्यक जानकारी कथावाचकक अग्रसंकेत अछि, सम्पन्न वर्तमान घटना नहि।

आधुनिक क्रम स्पष्ट स्थान-काल-सूचनासँ शुरू होइत अछि—विदेहपुर, आषाढ़ २०३९। नैरा फकीराक वैकल्पिक बाटक समय आ व्यवहारिक उपयोग मापय घाटपर जाइत छथि। उर्मिला अस्पतालक धोनाइ, कपड़ाक अलग-अलग सफाई, ऊपर गाड़ीधरि लऽ जेबाक अतिरिक्त समय आ मजदूरीक अभावक बात कहैत छथि। सार्वजनिक फोटो खींचबाक प्रसंगमे रोगीक नाम ढँपबाक आवश्यकता सोझाँ अबैत अछि। अमीना भोजनक खाता आ हसनक श्रम-दाम अलग लिखैत छथि; जुबैदा भीजल माटि सम करैत छथि। वार्षिक घाट-आदरक सूचना अधिकार–समयक प्रश्नमे बदलैत अछि; चेतन आ देव गीतक प्रस्तुति तथा ओकर बजार-उपयोग अलग राखैत छथि। फूलचन तात्कालिक सुरक्षित पथ बनबैत छथि, मुदा ओकरा भूमि-स्वामित्व नहि कहैत। बीना अपन दुकानक कमाइ आ पैतृक पूँजी अलग लिखैत छथि; नाहिद अपन परिवारक कागद देखायबासँ परहेज करैत छथि। अन्ततः नैरा उपस्थित घेराव, अपुष्ट मालिकाना आ बाधित सार्वजनिक पहुँचकेँ तीन अलग अभिलेखीय स्थिति बनबैत छथि।

आधुनिक खण्डक अन्तिम परिवर्तन केवल ‘घाटक नाप’ पूरा होयब नहि अछि। नैरा बुझैत छथि जे पक्का सीढ़ी वा खाली जमीनक नक्शा वास्तविक उपयोगक पर्याप्त विवरण नहि। ओ सरिताक लग घुरि कहैत छथि जे सबहक पानि आ सबहक बाट एक नहि। सरिताक प्रश्न—जमीनक माप के करत—अगिला सामूहिक विवादक आधार बनैत अछि। नदीक धार पुरान बाट नहि खोलैत; ओहि तरह नैराक कागद बनलासँ भौतिक निकास अपने आप नहि खुलैत। ज्ञान आ क्रियान्वयनक भिन्न स्तर एतय कथा-विषय बनल अछि।

द्विकालीन संरचनाक कथा-आख्यानशास्त्र

प्राचीन आ आधुनिक भागक बीच कोनो पात्रक पुनर्जन्म, स्मृति-सञ्चार वा अदृश्य चमत्कार प्रस्तुत नहि अछि। कथावाचक एक कालधारासँ दोसरमे स्थान-कालक स्पष्ट परिवर्तन करैत छथि। दूनू कालधाराकेँ जोड़निहार सूत्र वंश-नाम मात्र नहि, नदी, श्रमक लेखा, स्त्रीक सहमति, सार्वजनिक बाट आ अधिकारक माप अछि। सत्यवतीक पिता नाव चलौनिहारक हिस्साक हिसाब रखैत छथि; आधुनिक उर्मिला धोनाइक अतिरिक्त ढुलाई समयक मजदूरीक दावा करैत छथि। सत्यवती श्रमक नाम रेकॉर्ड करबाक आग्रह करैत छथि; अमीना भोजनक मूल्य आ सामान उठेनाइक श्रम अलग लिखैत छथि। तुलना एतबे अर्थपूर्ण अछि जे परिस्थितिसभ अलग रहितहुँ ‘ककर काम गनल जाए’ प्रश्न समान रूपसँ उठैत अछि। एहि सादृश्यकेँ इतिहासक समानता वा निरन्तरता मानब चाही, एहन कोनो अनिवार्यता नहि।

समय-निर्देशनक एक महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य ई अछि जे प्राचीन प्रसंग भावी देवव्रत-प्रतिज्ञाक परिणामक सामान्य दिशा बतबैत अछि, आधुनिक प्रसंग एक ठोस वर्ष—२०३९—दैत अछि। एहि मिलानसँ आलोचककेँ दू अलग कथन-सम्बन्ध परखबाक सुविधा अछि : प्राचीन खण्डमे पाठकक महाकाव्यीय पूर्वज्ञानसँ तनाव उत्पन्न होइत अछि; आधुनिक खण्डमे पहिल तीन अध्यायक अनुत्तरित प्रश्न घेरेदार स्थान-सम्पर्क प्राप्त करैत अछि। सत्यवतीक कथा भविष्यसूचक नैतिक प्रतिध्वनि हो सकैत अछि, मुदा उपन्यासक आधुनिक घटनाक कारण नहि। एहि बीच अनावश्यक कार्यकारण स्थापित करब अन्तर्पाठीयता आ घटनात्मक अन्वेषण दूनूक हानि करत।

नदीक भौतिकता : भूगोल केवल प्रतीक नहि

घाटपर पक्का सीढ़ी अछि, मुदा उर्मिला ओतय धोनाइ नहि कऽ सकैत छथि; जतय काज करैत छथि ओतए गाड़ी नहि उतरैत। सार्वजनिक कहल स्थलपर उपभोगक समय, पेशाक साधन, देहक भार, निजीक जोखिम आ सामूहिक नियम अलग-अलग अछि। कागजपर छोट दूरी व्यवहारमे असम्भव हो सकैत अछि। 'वैकल्पिक पहुँच'क शाब्दिक विधान आ 'वास्तविक पहुँच'क शारीरिक लागतक अन्तर फकीराक रेल-गेटवला प्रसंगसँ ई अध्याय पुनः जुड़ैत अछि। तथापि लेखक स्वयं सावधान करैत छथि जे रेल-द्वार आ नदी-घाट एक संस्था नहि; समान आंशिक समस्या देखिकऽ दूनू मामिलाक कारण एक नहि ठहराओल जाए। ई स्थल-सापेक्ष विवेक पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

नदीक धारकेँ केवल नारी-अस्मिता वा सामूहिक स्मृतिक रूपक मानब पढ़बाक सहज किन्तु अधूरा रस्ता हएत। बदलल घाट, भीजल माटि, चादरक ढुलाई, नाविकक सुरक्षा, जालक क्षति, बालकक उतरबाक जोखिम—ई सभ भौतिक परिस्थिति कथा-निर्णय निर्धारित करैत अछि। नदी कथासंसारक सक्रिय पर्यावरणीय शर्त अछि, मनुष्यक वाणीकेँ रूपकमे पिघलाबयवला सौन्दर्य-सामग्री मात्र नहि। नैराक नाप पानि नहि हटबैत; कागदक ज्ञान आ धरातलक परिवर्तनक बीच एहन दूरी कथाक संरचनात्मक यथार्थबोध स्थापित करैत अछि।

स्त्री-स्वर, श्रम-मूल्य आ निजताक अलग-अलग निर्णय

चारिम अध्याय स्त्रीकेँ एकरूप 'पीड़िता' बना कऽ नहि रखैत। सत्यवतीक प्रश्न वंश आ विवाहक भीतर अपन बोलबाक अधिकार अछि। उर्मिलाक प्रश्न कपड़ाक अतिरिक्त श्रमसमय आ घाटक उपयोग अछि। अमीनाक निर्णय हसनक मेहनताना भोजन-बिलसँ अलग लिखब अछि; बीना कमाइ आ पारिवारिक पूँजीक लेखा अलग करैत छथि; नाहिद अपन निजी कागदकेँ तत्काल जाँचकर्ताक सोझाँ नहि खोलैत छथि। एहि पात्रसभक सामाजिक जीवनक लक्ष्य एक नहि; हुनकर हकक प्रकार, अर्थव्यवस्था आ निर्णयक समय अलग-अलग अछि। उपन्यासक व्यापक सामाजिक समावेशनक दावाक आलोचनात्मक परीक्षण एहि अंशसँ आरम्भ हो सकैत अछि, पूर्ण सिद्धान्त एतबे सँ नहि।

सहमतिक प्रश्न तीन ठाम प्रभावकारी ढंगसँ लौटैत अछि। उर्मिला अस्पतालक रोगीक नामवला कपड़ाक फोटो नहि खींचय दैत छथि। देव गीत सुनबाक आ गीतक रिकॉर्ड बेचबाक अधिकार अलग रखैत छथि। नाहिद व्यक्तिगत थैली नैराकेँ नहि देखबैत छथि, आ नैरा ओकरा प्राप्त करबाक चेष्टा नहि करैत। एतए सामुदायिक इतिहासक संकलनक सीमा उघड़ैत अछि : श्रमक सार्वजनिक मान्यता आवश्यक अछि, मुदा सार्वजनिक मान्यताक नामपर व्यक्तिगत सूचना, रचना वा कागदक अनधिकृत उपभोग न्यायसंगत नहि बनि जाइत।

अन्तर्पाठीय औचित्य आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

सत्यवतीक पुनर्स्थापन एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रयोग अछि : राजवंशक निर्णायक प्रसंग नदीक टोकरी, जालक गाँठ आ मजदूरीक हिसाबसँ आरम्भ होइत अछि। महाकाव्यीय पात्रकेँ अत्यन्त आधुनिक भाषामे अधिकार व्यक्त करैत देखला पर अनैतिहासिकता सम्बन्धी प्रश्न अवश्य उठैत अछि। कृति स्वयं 'प्राचीन कालक आधुनिक पुनर्पाठ' होएबाक कारण एहन रूपान्तरणक अधिकार रखैत अछि, मुदा कलात्मक यथार्थक प्रश्न एतबे सँ समाप्त

नहि होइत। सत्यवतीक संवाद अनेक ठाम आधुनिक अधिकार-भाषाक समरूप लगैत अछि; ओकर प्राचीन कालक अन्य सामाजिक-संवेदनात्मक संरचनासँ तनाव कतेक सर्जनात्मक रूप लैत अछि, आगाँक शास्त्रीय प्रसंगसभमे देखबाक पड़त।

आधुनिक खण्डमे एक्के दुपहरक घाटपर धोनिहारिन, भोजन-व्यापारी, वंशगायक, गीतकार, किसान, दुकानदार आ पैतृक जमीनसँ जुड़ल स्त्रीक अनेक प्रसंग अति घन रूपमे आबैत अछि। एहि बहुलतासँ सामाजिक दृश्य व्यापक होइत अछि; मुदा पाठकीय सम्बन्ध प्रत्येक पात्रसँ गहिर होयबाक पहिने अगिला पेशागत उदाहरण प्रवेश कऽ जाइत अछि। एतए ‘समाजक पूर्ण उपस्थिति’ आ ‘पात्रक कलात्मक गहिराइ’क बीच सम्भावित तनाव अछि। चारिम अध्यायक आलोचनात्मक सफलताक निर्णय एहि पर निर्भर करैत अछि जे बादक काण्डसभमे ई पात्र अपन स्वतंत्र निर्णय, गलती, परिवर्तित सम्बन्ध आ कथागत परिणाम पबैत छथि वा केवल सामाजिक प्रविष्टि बनि रहैत छथि। पहिल चारि अध्याय ई प्रश्न उठेबाक पर्याप्त साक्ष्य दैत अछि; एकर निर्णायक उत्तर नहि।

आदि-पर्वक पहिल चारि अध्यायक तुलनात्मक निष्कर्ष

अभिलेखसँ स्थलधरि : एकटा विकसित होइत अनुसन्धान-पथ

अध्याय १ जीवित सरिताक सरकारी मृत्यु-दर्जक विरोधाभाससँ शुरू होइत अछि। अध्याय २ निजी नाम-पन्नाक संरक्षण आ खुलासाक नैतिक सीमा निश्चित करैत अछि। अध्याय ३ फकीराक ‘मृत’ दर्ज स्थिति आ रोजीक बाधाकेँ ठोस यात्रा-समयमे बदलैत अछि। अध्याय ४ यमुनाक प्राचीन नाव तथा तिलवाहक आधुनिक घाटसँ बतबैत अछि जे कागदक माप आ जीवनक उपयोग-शर्त एक नहि। ई क्रम घटना-रहस्यक केवल विस्तार नहि; ज्ञानक अधिकारक चारि जाँच-स्तर रचैत अछि—व्यक्तिक जीवित उपस्थिति, नामक सहमति, सार्वजनिक आवागमन, आ श्रम-स्थानक भौतिक व्यवस्था। प्रत्येक स्तर पर पहिले प्राप्त सूचना अपूर्ण सिद्ध होइत अछि, किन्तु निरर्थक नहि।

कथाक प्रमुख आवर्ती वस्तुसभकेँ एखन ‘प्रतीक-तन्त्र’ कहि पूर्ण निश्चित नहि कएल जाए। भात, हाँड़ी, औषधिपर्ची, फोन, रसीद, रेल-सिटी, छड़ी, नाव, बाँस, घेराव, कपड़ा आ पुरान बही अलग-अलग अध्यायमे व्यावहारिक काम करैत अछि। पुनरावृत्तिक अर्थ तखने बनेत जखन एक वस्तु नवल पात्र, नवल संकट वा नवल निर्णयक बीच परिवर्तित भूमिका निभाओत। उदाहरणार्थ भात पहिल अध्यायमे माइक जीवनक तत्काल दायित्व अछि; दोसरमे धमकीक चूल्हा-बन्द प्रसंगसँ जीविकाक जोखिम बनैत अछि; चारिममे साझा भोजनक बिना फोटोवला क्षण श्रम-मूल्य आ परस्पर देनदारीक मानवीय विस्तार दैत अछि। एतए वास्तविक आवर्तन अछि, मुदा सभ भातक उल्लेख एकरे प्रतीक नहि।

विश्वसनीयता आ आलोचनाक दोसर पक्ष

पहिल चारि अध्यायक अनुकूल पक्ष साक्ष्यक सीमासँ उपजल कथा-शक्ति अछि। सरिता, नैरा, फकीरा, हीरा, उर्मिला आ सत्यवती अपन-अपन निर्णयक अधिकार माँगैत छथि। नावक भार घटेबाक निर्णय, पन्ना बन्द रखबाक तिथि, आवेदनक प्राप्ति-पर्ची आ घाटपर अतिरिक्त श्रमक नाप वास्तविक स्थिति बदलैत अछि। एहि कारण

उपन्यासक दार्शनिक प्रवृत्ति केवल व्याख्यान-रूप नहि रहि सामाजिक अभ्यासक रूप धारण करबाक सम्भावना रखैत अछि।

प्रतिकूल पक्ष सेहो शुरू सँ उपस्थित अछि। पात्रसभक सावधानी प्रायः एकरे मानक शब्दावलीमे व्यक्त होइत अछि—‘देखल अलग’, ‘सुनल अलग’, ‘सहमति’, ‘बिना प्रमाण आरोप नहि’। पात्रभेदक तुलनामे नैतिक-प्रक्रियाक स्पष्टता कतहु बेसी पड़ैत अछि। घाटपर एके क्रममे अनेक पेशाक आगमन परिचयात्मक समग्रता देइत अछि, मुदा आकस्मिक जीवन-संघर्षक अस्त-व्यस्तता कम करि सकैत अछि। आलोचनाक आगामी चरणमे खास जाँच ई रहत जे कथावाचक अपन शिक्षात्मक अनुशासनक प्रतिपक्षमे पात्रक विरोध, अज्ञान, छल, असहमति, भूल आ परिवर्तनकेँ कतेक स्वतंत्र स्थान दैत छथि। एतए उपलब्ध पाठसँ समग्र २१६ अध्यायक विजय वा विफलताक निर्णय निकालब अकाल निष्कर्ष हएत।

पहिल चारि अध्यायक अन्तमे उठल आगामी परीक्षण-प्रश्न

अध्याय ५ — जनकक माप

स्थान–काल : मिथिलाक जनककालक राजगृह, तकर बाद विदेहपुरक बरकी पोखरि आ अघटक बाट, आषाढ़ २०३९। मुख्य समस्या : स्वामित्वक नाप, मार्गक उपयोग आ श्रमक वास्तविक लागतकेँ की एकरे रेखासँ व्यक्त कएल जा सकैत अछि?

घटनाक वास्तविक क्रम : नापल रेखाक दू भिन्न संसार

अध्याय राजगृहक पछिला अँगनामे नव निर्माणक नींवसँ खुलैत अछि। भीजल खूँटा, नापबाक डोरी आ गड़हीमे जमा पानि निर्माणक व्यावहारिक परिस्थिति उपस्थित करैत अछि। सीता बगैचाक बाट जाइत काल पुरान पयरबाट घेराएब देखैत छथि। प्रधान निर्माणकर्ता राज्यक स्वामित्व बतबैत छथि; छोट शिल्पी मालिनसभक इनारधरि जाएबला बाट बन्द होएबाक सूचना दैत अछि। सीता ओकरा फेर बजबाक अवसर दैत छथि; शिल्पी बकाया मजदूरी आ निर्णयक बाहर रहबाक स्थिति खोलैत अछि। जनकक आगमनक बाद सीताक प्रश्न भूमि-दान आ पहिनेसँ उपलब्ध उपयोग-अधिकार धरि पहुँचैत अछि। जनक दोसर डोरीसँ पयरबाट नापबाक आ दानसँ पहिने खेतक उपयोग पूछबाक आदेश दैत छथि। ई निर्णय दानक अन्तिम मंजूरी नहि; विवाद सुनबाक पद्धतिमे आरम्भिक संशोधन अछि। बुजुर्ग पाथर-छाँटनिहार स्त्री दरारवला पाथर चिन्हैत छथि; सामग्री अलग राखल जाइत अछि, मुदा घाटाक लेखा बाकी रहैत अछि। मजदूरीक बही खोलबाक दिन ठहरैत अछि, तत्काल भुगतान नहि होइत।

अठारहम पाठांशमे कथन स्पष्ट काल–स्थान-परिवर्तन करैत अछि—“विदेहपुर, आषाढ़ २०३९।” बरकी पोखरिक पयरबाटपर चूनक प्रस्तावित दू रेखा अछि, अन्तिम अधिग्रहण नहि। किरण राउतक बटाइ खेती, बीहनक खेप आ ठेलाक अतिरिक्त फेर, रतन भुइयाँक पुरान ठेकाक बिल आ अनिश्चित ऋण, उर्मिलाक कपड़ाक गाड़ीक मोड़—तीन अलग प्रकारक उपयोग आ हानिक साक्ष्य अबैत अछि। नैरा स्वयं नगरक अधिकृत सर्वेक्षक होएबाक दावा नहि करैत छथि। सर्वेक्षक पहुँचलापर जलनिकासक सँकर गड्ढा नक्शामे अनुपस्थित निकलैत अछि, आ आरम्भिक

खूँटा गलत कात लगल भेटैत अछि। खूँटा सुधरैत अछि, पुरान चून-रेखापर क्रॉस पड़ैत अछि। मुदा किरणक बटाइ, रतनक देनदारी आ भूमि-दखल—तीनू विवाद अनिर्णीत रहैत अछि।

अन्तिम चरणमे विद्यालयक लोकपाठ, जनककालक काव्यनाम, बच्चाक प्रश्न आ सरिताक घरेलू बही कथाकेँ पुनः घरेलू कक्षमे अनैत अछि। नैरा ‘त्रियुगा’ आ ‘लक्ष्मणा’क काव्यप्रयोगकेँ आधुनिक तिलवाहक भूगोलसँ अलग रखैत छथि। घरमे सरिता सार्वजनिक नापसँ अगिला प्रश्न उठा दैत छथि—‘घरक पुरान पहाड़ा’मे कतेक नाम परिवारक आ कतेक कामक? सत्ताइस नामक निजी पन्ना एखन नहि खुलैत; दोसर बही अगले दिन उजासमे देखबाक सहमति होइत अछि। एहि प्रकार अध्यायक समाधान स्थलपर एक तकनीकी भूलक सुधार अछि, आ ओकर कथात्मक फल नव अभिलेख-परीक्षाक द्वार।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्र आ द्विकालीन अन्तर्पाठ

अध्यायक पहिल सत्रह पाठांश प्राचीन मिथिला-कालमे, शेष सत्ताइस आधुनिक विदेहपुरमे अछि। ई संख्या केवल पाठ-पाठांशक क्रम अछि; कथा-समयक समान अनुपात नहि। प्राचीन खण्डक कालावधि एक निर्माण-निरीक्षणक प्रसंगक भीतर सीमित बुझाइत अछि। आधुनिक खण्ड भोरक नापसँ रातिक रसोइ धरि एक दिनक बहुस्थलीय गति देखबैत अछि। सत्रहमसँ अठारहम पाठांशमे सामान्य ‘फ्लैशबैक’क वापसी नहि, भिन्न कथा-संसारक कालधाराक स्पष्ट कटाव अछि। प्राचीन प्रसंग आधुनिक नाप-दलक ऐतिहासिक कारण नहि; ओकरा अर्थ-सापेक्ष समांतर मानब अधिक युक्तिसंगत अछि।

कथक तृतीय पुरुषमे रहि परिस्थिति आ पात्रक मनोवृत्तिक किछु सीमा खोलैत छथि। प्राचीन सत्रमे सीताक प्रश्न आ जनकक प्रतिक्रिया केन्द्रमे अछि; आधुनिक सत्रमे नैराक देखल-सुनल, लिखल भेद आ संकोच ज्ञानक मुख्य छन्नी बनैत अछि। मुदा कथा सर्वत्र ‘नैरा जे देखलीह तकर प्रत्यक्ष प्रतिलिपि’ नहि : पाठ किरणक बेटीक पेंसिल, रतनक पुरान वर्षाक स्मरण आ शिक्षकक बच्चासँ संवाद सेहो स्वतंत्र वाचिक स्पन्दनसँ दैत अछि। एकर अर्थ तृतीय-पुरुष कथनक भीतर चलायमान आंशिक दृष्टिकेन्द्रण अछि; सर्वज्ञता आ पूर्ण अन्तर्मन-प्रवेश निरन्तर रूपसँ प्रमाणित नहि।

महाभारत–रामायणक संयुक्त ढाँचा एतए महाकाव्यीय पात्रक पुनर्जन्म नहि गढ़ैत। सीता-जनक संवादक आधुनिक प्रश्न भूमि-दानक उदारता आ उपयोगकर्ताक पूर्व-अधिकार बीचक तनाव अछि। आधुनिक किरणक ‘सुविधा ककर, खर्च ककर?’ प्रश्न प्राचीन सीताक ‘छोड़बाक भार के उठाओत?’क नैतिक प्रतिध्वनि अछि, शब्दशः एकरूपता नहि। प्राचीन जनकक आदेश आ आधुनिक सर्वेक्षकक संशोधन तखन तुलना योग्य होइत अछि जखन हम सीमासभ याद राखी : पहिल व्यवस्थामे राजाक वचन निर्णायक प्रशासनिक आरम्भ अछि; आधुनिक व्यवस्थामे अधिकृत नाप, रसीद, प्रस्ताव आ बहुपक्षीय दावा पृथक प्रक्रिया अछि। दूनूकेँ ‘समान न्यायिक प्रणाली’ कहब अनैतिहासिक होएत।

प्रमाण-परीक्षा : स्वामित्व, उपयोग, ऋण आ सहमतिक अवच्छेद

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ एहि अध्यायक तर्कक मूल परीक्षण ‘कुन बात ककर प्रमाण?’ अछि। नाप-फीता आ चूनक रेखा सम्भावित चौड़ाइ आ सीमांकनक निरीक्षण करैत अछि, उपयोगकर्ताक वास्तविक लागत स्वतः नहि।

किरणक बही खेतीक लागत आ बटाइक हिसाबक दस्तावेज अछि; ओ जमीनक मालिकाना प्रमाण नहि। रतनक दू बिलमे सामग्री-गिनती, देय-रकम, छाप आ अस्पष्ट हस्ताक्षर अछि; ‘ऋणक रकम लिखल’ सँ ‘ऋण वास्तवमे लेल गेल’ निष्कर्ष काढ़ब तर्कदोष होएत। नैराक वाक्य—‘सुनब हमर हाथमे नहि’—जाँच-सहायता आ संस्थागत फैसला बीचक कार्य-सीमा स्पष्ट करैत अछि।

सर्वेक्षकक पहिल खूँटा गलत स्थापित भेला पर देखल रेखाक सुधार एहन पाठ-क्षण अछि जतय प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण आ पूर्व-दस्तावेजक दावाक संशोधन संग-संग होइत अछि। कागज सही देखाइत रहल, मुदा आरम्भ-बिन्दुक दोष एकर प्रयोज्यता घटा देने छल। एहि स्थितिक तर्क-पञ्जी तीन खण्डमे अछि : सही फीता, गलत प्रारम्भ-बिन्दु, सुधरल खूँटा। अतः ‘साधन सही, एहन कारणेँ परिणाम सही’ निष्कर्ष बाधित अछि। तथापि सुधरल सीमा अपनहि बलपर दखल वा कर्जक विवाद सुलझबैत नहि। एकटा त्रुटिक खण्डन सम्पूर्ण प्रशासनिक न्यायक सिद्धि नहि—ई उपन्यासक महत्त्वपूर्ण ज्ञानात्मक संयम अछि।

किरण अपन पूरा घरक ऋण-खाता खुलेबाक बदला रकम ढाँकिकऽ नकल देबाक शर्त रखैत छथि। रतन दू भिन्न बिलक एक तस्वीर खींचबाक प्रयास रोकैत छथि, कारण संग-संग फोटो लोककेँ गलत स्वीकृतिक अर्थ दऽ सकैत अछि। एतय ‘दस्तावेज उपलब्ध’ आ ‘दस्तावेज प्रसारक अनुमति’ दू पृथक प्रश्न छथि। जे व्यक्ति अपन पन्ना देखबैत अछि, ओ ओकर प्रत्येक प्रयोगपर सहमत छथि—एहन अनुमान अनुचित। एहि सीमाकेँ नैरा अपन कामक अङ्ग बनबैत छथि।

काल-स्थान आ सामाजिक भार : रेखाक संख्यासँ आगाँ

राजगृहक नींव, पोखरिक मोड़, जलनिकासक गड्ढा, उर्मिलाक ठेला आ विद्यालयक ओसारा—अलग-अलग स्थल अछि, किन्तु सभ जगह ‘बाट’ केवल ज्यामितीय रेखा नहि। पयरबाटपर मालिनक घड़ा, बीहनक चारि बोरा, धोएनिहारिनक कपड़ा आ बच्चाक विद्यालय-आवागमन अलग गति, जोखिम आ लागत जोड़ैत अछि। केवल चौड़ाइ आ दूरीक आँकड़ा जीवनक सम्पूर्ण माप नहि। किरणक बच्चीक चौकोर खेतक चित्र एहि तनावकेँ हास्य आ शैक्षिक सम्भावना दैत अछि; ओ हमर गणितक विरोध नहि, ओकर सीमाक पहिचान अछि।

सामाजिक समुदायसभक अनेक नाम—बेला तुरहा, हेमा देव, रचना धिमाल, भाट-गीतक प्रस्ताव, करुण दमाईक बाजा—सर्वेक्षणक कागदमे अबैत अछि। यथार्थतः ई सभक पूरा जीवन-आख्यान नहि; किछु एखन पर्चीक उपस्थिति मात्र अछि। हिनका समान प्रकारक ‘पीड़ित’ मानेब समीक्षाक त्रुटि होएत। बाजाक मरम्मति आ प्रस्तुतिक मानदेय, ध्वनि-अभिलेखनक अनुमति, पाठशालाक नामावली आ बजारक साप्ताहिक शुल्क अलग आर्थिक-नैतिक सम्बन्ध रखैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक आलोचनात्मक दृष्टि एतए ई प्रश्न उठबैत अछि जे सार्वजनिक विकासक दस्तावेजमे गुम श्रम आ उपयोगकेँ केना दर्ज कएल जाए, मुदा सभ पर्चीकेँ समान सम्पत्ति-दावा कहि नहि सकैत अछि।

उपलब्धि, भाषा आ असुविधाजनक प्रतिपक्ष

अध्यायक प्रभावी रचनात्मक निर्णय नाप-सुधारकेँ सीमित परिणाम रूपमे देखाएब अछि। बदलल खूँटा वास्तविक भौतिक घटना अछि—उर्मिलाक ठेला घुमबाक जगह पहिने भेटल, सर्वेक्षक फेर रेखा सुधारल। मुदा ओहि क्षणक

बाद समाजक विवादसभ यथावत् अछि। कथा असम्भव त्वरित न्याय घोषित नहि करैत। राजगृहक बुजुर्ग पाथर-छाँटनिहार स्त्रीक अनुभवसँ खराब सामग्री हटब आ तकर भुक्तानीक प्रश्न बचि रहब सेहो वस्तु-ज्ञान आ आर्थिक दायित्वक द्वैतकेँ जीवित रखैत अछि।

सीमाक पहिल बिन्दु : जनककालीन पात्रक संवादमे आधुनिक प्रशासनिक न्याय-प्रश्नक भाषिक स्वर बहुत स्पष्ट सुनाइत अछि। नवपाठक लेल ई आलोचनात्मक पारदर्शिता उपयोगी, मुदा प्राचीन कालक संवेदनात्मक दूरी कम कऽ दैत अछि। दोसर सीमा : आधुनिक खण्डमे एके दिन अनेक व्यवसाय-समुदायक पर्ची उल्लेखित होएतहुँ हुनकर पारस्परिक संघर्ष वा निजी देहगत जीवन अद्यापि पूर्ण विकसित नहि। तेसर सीमा : ‘ई प्रमाण, ओ प्रमाण नहि’क अनुशासन बारम्बार कथावाचकक व्याख्यात्मक वाक्यमे आबैत अछि; किछु ठाम दृश्य स्वयं निर्णय करए दैत तँ ध्वनि आ पाठकीय सक्रियता बढ़ि सकैत छल। तथापि किरणक हास्य, उर्मिलाक गतिशील ठेला आ सरिताक सिलौटक घरेलू आवाज समीक्षात्मक शब्दावलीक कड़ाइकेँ जीवनक ताप दैत अछि।

अध्याय-निष्कर्ष। ‘जनकक माप’केँ भूमि-अधिग्रहणक निर्णयकथा नहि, सीमांकन-साधनक प्रमाणिक सीमाक कथा पढ़ब उचित अछि। रेखा सुधरल, जीवनक सभ बकाया नहि। जनककालसँ २०३९ धरि अन्तर्पाठक सार ई अछि जे स्वामित्वक दावाक सँग उपयोगक देहगत अनुभव सुनबाक आवश्यकता कखनो खत्म नहि होइत; मुदा ओकर संस्थागत रूप समान नहि रहैत।

अध्याय ६ — घरक पहाड़ा

स्थान–काल : सरिताक घरसँ राजइनार आ विद्यालयक ओसारा धरि, पछिला अध्यायक अगिला भोरसँ साँझ धरि। मुख्य समस्या : बहीक लेखा, लेखनक तिथि, मौखिक स्मृति आ निजी पन्नाक अनुमति एकरे ‘अभिलेख’ शब्दमे कोना अलग कएल जाए?

घरक बही खुलबाक घटना : वस्तुक इतिहास आ लिखबाक इतिहास अलग

अध्याय ५क अन्तमे सरिता उजासमे बही देखएबाक प्रस्ताव देने छलीह; अध्याय ६ ओ वचन पूरा करैत अछि। चूल्हापर भात चढ़बाक पहिने चौकीक नीचाँसँ बस्ता निकलैत अछि। सरिता ओकर गँठरीक धागा नहि काटि धीरे खसकबैत छथि। एहि वस्तुवत् सावधानीक अर्थ दस्तावेजक केवल पुरानपनक आदर नहि : स्वामित्व आ सन्दर्भ नष्ट नहि करबाक घरेलू पद्धति सेहो अछि। जिल्दमे ‘घरक पहाड़ा’, चाउर-तेल-नून-दवा-बाटभाड़ाक खाना, आ पाछाँ पुरान विद्यालयक अपूर्ण मुहर—पुरान कागदक पुनरुपयोगक स्पष्ट चिन्ह अछि। सरिता बुझबैत छथि जे मुहर पुरान रहलासँ पछिला लिखाइ ओहि दिनक सिद्ध नहि होइत।

२०२७ लिखल एक पन्ना, लाल ‘उधार’ आ नील ‘चुकता’, २०३८क इनार-मरम्मतिक रसीद, आ राजइनारक खर्चक पाँति एकही बहीमे भेटैत अछि। मुदा कलमक रंगक अनुक्रम लेखनकालक निश्चय नहि करैत। सरिता कहैत छथि जे कखनो नील कलम सुखि गेलापर लालसँ नव रकम लिखल गेल। इनारक ईंट आ पानि खींचबाक डोरी लेल घरसँ खर्च भेल, मुदा ओ रकम वापस भेटल कि नहि—खाली खाना एकर उत्तर नहि दैत। घरेलू सहायताक वास्तविक खर्च आ सार्वजनिक हिसाबक देनदारी एक नहि।

सरिता दू पन्नाक सीमित प्रतिलिपिक अनुमति दैत छथि, समस्त बहीक नहि। एक महत्त्वपूर्ण नव तथ्य एतए सत्ताइस नामक पन्ना सम्बन्धमे अबैत अछि : ओ एके बैठकमे लिखि समाप्त भेल सूची नहि छल। सरिता कखनहु सुनल नाम लिखलनि, कखनहु पुरान बात सुधरलनि; चारि ठाम दोसर स्याहीक अर्थ के लिखलक आ कखन, से एखन अज्ञात। नैरा एहि मौखिक साक्ष्यक आजुक तिथि दर्ज करैत छथि, मुदा प्रतिलिपि आ मूल तथा सरिताक स्मृति तीनूकेँ एक बनबैत नहि।

दोसरा घटनाक गुच्छ राजइनारपर घटैत अछि। ढील जंगला आ घिसल ईंटक भौतिक जोखिम ललित मल्लिक देखैत छथि; पद्मा सावधानीक सूचना स्थान-सापेक्ष पढ़ाइत अछि कि नहि, से परखैत छथि। सुधा राय सार्वजनिक छज्जा लेल खर्च आ भूमि-दानक प्रस्ताव दैत छथि, मुदा कागदक नव रेखा दू किरायेदार परिवारक पहुँचमे बाधा बनैत अछि। उपयोगक सुनवाईक प्रस्ताव उठैत अछि, दान एखन स्थगित निर्णय अछि। मरम्मतिक अलग बिल, गीत-बाजाक मानदेय, सामान आपूर्तिक रसीद, विवाह-सामग्रीक अग्रिम आ निजी चिट्ठीक लिफाफा—सार्वजनिक खाता खोलबाक सम्भावना बढ़बैत अछि, मुदा सामग्रीक मालिक आ उद्देश्य अलग राखल जाइत अछि। ढील जंगला कात अस्थायी रस्सी लगैत अछि; ई अन्तिम मरम्मति नहि।

साँझ धरि सरिताक पुरान खर्चक प्रतिक पुनः विशेष प्रयोजनक अनुमति माँगबाक निर्णय भेल अछि। सरिता नैराक नोटमे ‘भुगतान अपुष्ट’केँ ‘वापसी अपुष्ट’ करबैत छथि। अन्तिम दृश्य पुरान चौकीक धुँधला वर्ष-अङ्क, विद्यालयक बच्चाक दादा-दादीक भिन्न कथा, आ घरक हाँड़ीमे एक मुट्ठी अतिरिक्त चाउर राखबाक सरल प्रतीक्षासँ जुड़ैत अछि। ई अतिरिक्त थारी अगिला अध्यायक शकुन्तला आ नतिनीक आगमनक पूर्वतैयारी अछि; एकरा पाछाँसँ बनाओल रहस्यक नाटकीय प्रमाण नहि मानब।

लेखनकाल, अभिलेखकाल आ कथनकालक त्रिस्तरीय परीक्षा

एहि अध्यायमे एक पुरान विद्यालय-मुहरवला पन्ना, २०२७क हिसाब, २०३८क मरम्मति-रसीद आ २०३९क वर्तमान पठन-सत्र एकठाम अछि। समयक एहन सहवासकेँ ‘अनिवार्य पूर्वदीप्ति’ कहि छोड़ेब गलत : पूर्वक घटना कथक द्वारा दृश्यरूपेँ पुनः अभिनीत नहि होइत; वर्तमान पात्र पुरान पन्नाकेँ पढ़ि ओकर कालक्रमक युक्तिपरीक्षा करैत छथि। एतए अतीत प्रत्यक्ष कथा-दृश्य नहि, दस्तावेज–स्मृतिक विषय सेहो अछि। कालक कमसँ कम चारि स्तर अलग अछि—कागद बनबाक समय, पाँति लिखबाक समय, घटना/खर्च होएबाक समय, आ २०३९मे ओकर पढ़ल जाएबाक समय। ई स्तर एक-दोसरसँ अनिवार्य रूपसँ नहि मिलैत।

कथनक गतिक हिसाबेँ घरक बहीक पन्ना-उलटब विस्तारपूर्ण दृश्य अछि; राजइनारक अनेक पेशागत पर्ची अपेक्षाकृत तीव्र क्रममे अबैत अछि; साँझक रसोइ फेर धीमा होइत अछि। तेँ एहि अध्यायक अवधि-विन्यास आरम्भ आ अन्तमे घरेलू विरामद्वारा मध्यक सार्वजनिक भागक जटिलताकेँ सँभालैत अछि। कथावाचक मुख्यतः नैरा आ सरिताक आस-पास ज्ञान बाँटैत छथि; सुधाक संकोच, पद्माक निर्णय आ ललितक नाप-संयम सेहो दृश्यसँ पढ़ल जाइत अछि। सर्वत्र समस्त पात्रक अन्तरमन खोलि देब कथनक उद्देश्य नहि। एतए नैराक लिखल संशोधन चरित्र-विकासक कार्यकारी चिन्ह अछि : ओ केवल जानकारी जमा नहि करैत छथि; अपन पहिल शब्द बदलैत छथि।

कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्ध : रङ्गक असिद्ध तिथि आ खाली खानाक असिद्ध ऋण

कलमक रङ्गसँ तिथि स्थिर करबाक प्रयासमे अनुमानक अव्याप्ति पकड़मे अबैत अछि। अलग रङ्ग अलग दिनमे, आ एक रङ्ग अनेक दिनमे प्रयुक्त भऽ सकैत अछि; रङ्ग आ तिथि बीच निश्चित व्याप्ति नहि। ओहिना सरिताक पुरान रसीदमे खर्च दर्ज अछि, पर वापसीक खाना खाली। ई शून्यता न ‘रकम चुकता भेल’ सिद्ध करैत, न ‘अवश्य बकाया अछि’। सरिताक ‘वापसी अपुष्ट’ संशोधन एहि कारण उल्लेखनीय अछि जे अध्ययनक पदावली स्वयं घटनाक ज्ञान-सीमा बदलि सकैत अछि।

मालिकक सीमित अनुमति एतए साधारण गोपनीयता-घोषणा नहि। सरिता कहैत छथि : अमुक दू पन्ना देखाओ, अमुक प्रयोजन लेल देखाओ, समस्त घरक औषधि-भोजनक हिसाब नहि। नैरा मूल बही वापस करैत छथि। राजइनारमे ललित फेर विशेष उपयोगक अनुमति माँगैत छथि, अर्थात् पहिल नकलक स्वीकृति प्रत्येक भावी उपयोगक स्वतः अनुमति नहि। एहन व्यवहार कथामे ज्ञानक नैतिक प्राप्ति-प्रक्रिया बनैत अछि। एक निजी पन्नाक प्रामाण्य, ओकर सार्वजनिक उपयुक्तता आ ओकर प्रसारक स्वीकृति तीन भिन्न परीक्षण छथि।

इनारक पानि चमकैत देखाइत अछि, मुदा चमकसँ पीबाक योग्यता सिद्ध नहि; ललित सुरक्षित नाप बिना गहराइ बतबासँ रुकैत छथि; अस्थायी रस्सीक अर्थ मरम्मति पूरा नहि। ई तीन सूक्ष्म उदाहरण एके शास्त्रीय पदक नारा नहि, व्यावहारिक ज्ञान-संयमक तीन अलग प्रसंग छथि—गुणदर्शन, परिमाण, आ कामक अवस्था। नातिक प्यास भुजाबय लेल पानीक उपलब्धता आवश्यक, मुदा बालिकाकेँ ढील जंगला कातसँ हटाएब तत्काल भौतिक उत्तरदायित्व अछि। दृश्य अध्यायक दार्शनिकता आ सांसारिक तात्कालिकताकेँ एकठाम रखैत अछि।

दान आ स्वत्व : प्राचीन जनकसँ आधुनिक सुधा धरि

पाँचम अध्यायमे सीता पूछने छलीह जे दानसँ पुरान उपयोगकर्ताक हक कतय जाएत। छठम अध्यायमे सुधा राय छज्जाक खर्च देबाक प्रस्ताव रखैत छथि, मुदा कागदक रेखा किरायेदार परिवारक इनारधरि जाएबला बाट काटैत अछि। सुधाक उदारता सहज खलनायकी नहि; हुनक खर्च देबाक इच्छा वास्तविक अछि। किरायेदारक श्रम आ घड़ाक भारो वास्तविक अछि। पद्मा गड्ढा आ टूटल ईंटक मार्ग देखबैत छथि, जेकरा ‘दोसर बाट’ कहब कागदपर आसान, व्यवहारमे कठिन। सुनवाईक तिथि प्रस्तावित होइत अछि; उदारता निजी स्वामित्वक चुनौतीकेँ निरर्थक नहि बनबैत। एहि दुई अध्यायक क्रममे महाकाव्यीय अन्तर्पाठ आधुनिक सामाजिक लेनदेनक पुनर्परीक्षा बनि उठैत अछि।

एहि प्रसंगमे भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्यक प्रश्न उभरैत अछि : दान-धर्मक भावक प्रशंसा हुनकर फलित व्यवहारसँ निरपेक्ष कए नहि की जा सकैत अछि। समाजक सामान्य ‘दानवीर’ विशेषणकेँ आलोचना रोकि राखैत अछि जखन धरातलक उपयोगक प्रमाण नहि जुटल। मुदा ई कथासाहित्यक नीति आ शास्त्रीय दान-विचारक सम्पूर्ण समतुल्यता नहि। पाठ स्वयं दान स्थगित रखैत अछि, तेँ आलोचककेँ अन्तिम न्यायादेश देबाक अधिकार नहि।

श्रमक पर्ची, बहुस्वरता आ बाल-साक्ष्य

राजइनारक खाता-कक्षमे नावक काठ, इनारक जंगला, बाजाक मरम्मति, लोकगीतक मानदेय, विवाह-सामग्री, दुकानदारक सामान आ घरक औषधि—सबकेँ एक सामूहिक लागत मानि देबामे कतेक विकृति अछि से प्रदर्शित होइत अछि। पद्मा ‘लोकसहयोग’क नामपर कलाकारकेँ बिना दाम नचबय-गबाबय देबाक प्रवृत्ति रोकैत छथि; लक्ष्मी कठबनियाक सामानक बिलकेँ समिति-ऋणक अगाँ लगाओल गलती अलग करैत छथि; शान्ति बारीक अग्रिमक हिसाब सार्वजनिक चन्दा सँ अलग राखैत छथि। एहिमे सामाजिक वर्गक मात्र सजावट नहि, लेखाक वर्गीकरणक ठोस सवाल अछि। तथापि फूलमती, रमेश, लक्ष्मी आ शान्तिक एहि अध्यायमे उपलब्ध व्यक्तिगत जीवन-गहिराइ अलग-अलग सीमित अछि।

बालिकाक प्यास आ विद्यालयक चौकी दूटा अलग भावात्मक धुरी प्रदान करैत अछि। पहिल प्रसंग लागतक विस्तृत खाता बीच तत्काल देहगत जरूरत फेर स्थापित करैत अछि। दोसर प्रसंग—पुरान चौकी ककर बनौने, अङ्क की अछि—निष्कर्ष रोकि अगिला अध्यायक स्मृतिक शृंखला तैयार करैत अछि। बच्चासभक ‘दादा सदिखन एक कथा कहैत छथि’ आ ‘दादी अलग कहैत छथि’ विवादसँ प्रश्न उठैत अछि : पुनरावृत्त स्मृति सत्यक पर्याप्त प्रमाण कि नहि? उपन्यास मतभिन्नताकेँ झूठक तुरन्त दोष नहि दैत। ई भविष्यक बहुपीढ़ी कथनक लेल सार्थक प्रवेश अछि।

भाषिक शिल्प, उपलब्धि आ सीमाक परीक्षण

‘घरक पहाड़ा’ शीर्षक केवल गणितक अभ्यास नहि, घरक आय-व्यय, शैक्षिक कागद, स्मृति आ कथनक गिनतीक मिश्र रूप अछि। ‘कलमक रंग घड़ी नहि होइत छै’ जेकाँ सरिताक वाक्य तर्ककेँ घरेलू बिम्बसँ स्थापित करैत अछि; एतए दार्शनिक पारिभाषिक पदक बोझ आवश्यक नहि। अन्तमे बाँचल चाउर, अतिरिक्त अतिथिक थारी आ सरिताक ‘दू जनेक भातमे एक मुट्ठी आरो’ कथाक भावात्मक संस्पर्श बढ़बैत अछि। भातक हिसाब साधारण आय-व्यय मात्र नहि, भविष्यक सहभोजक सम्भावना सेहो।

किन्तु अध्यायक मध्यभागमे अनेक बिल-पर्चीक क्रमिक प्रवेश पाठकीय समयकेँ प्रशासनिक सूची जकाँ बना सकैत अछि। प्रत्येक कागद नीक श्रेणी-विभाजनक शिक्षा दैत अछि, मुदा सभ पात्रक मनोवैज्ञानिक जोखिम समान गहिराइ नहि पबैत। दोसर प्रश्न—लगभग प्रत्येक पात्र प्रमाणक त्रुटि अत्यन्त सजग रूपसँ पहचानैत अछि; मानवीय भूल, स्वार्थ, भ्रम अथवा आधा-अधूरा संघर्ष कम अवकाश पबैत अछि। ई आरम्भिक मूल्याङ्कन बादक अध्यायसभमे बदलबो सकैत अछि। सुधाक हिचक, सरिताक अपूर्ण स्मृति आ बच्चाक तात्कालिक प्यास एहि शिक्षापरक एकरूपताकेँ आंशिक रूपसँ तोड़ैत अछि।

अध्याय-निष्कर्ष। एतए घरेलू अभिलेख इतिहासक छोट संस्करण नहि, इतिहासक अनिश्चितता सँ संघर्ष करबाक सक्रिय माध्यम अछि। बहीक पन्ना खुलेल, मुदा सभ पन्ना नहि; खर्च सिद्ध भेल, मुदा वापसी नहि; इनारक खतरा रोकल गेल, मुदा मरम्मति पूरा नहि। एहि अपूर्णताक स्पष्ट रखनाइ अध्यायक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

अध्याय ७ — पाँच पीढ़ीक चौकी

स्थान–काल : सरिताक घरक साँझ, शकुन्तलाक कुम्हरौटिसँ आगमन; घरक भीतर उपस्थित पाँच समय-खण्ड —१९४२, १९७४, १९९३, २००८ आ २०२७—आ अलग स्मृतिरूपमे १९३९क पोखरि-उराहि। मुख्य समस्या : परिवारक इतिहासकेँ स्वामित्वक एक नामक रूपमे लिखब, कि पीढ़ी, श्रम, स्मरण आ अनुपस्थितिक विभिन्न अधिकारसँ जोड़ब?

मूल घटना-पञ्जी : पाँच समयक लेखा आ एक अपूर्ण प्रश्न

छठम अध्यायक अन्तक अतिरिक्त चाउर एहि अध्यायमे आगन्तुकक भोजन बनैत अछि। शकुन्तला कुम्हरौटिसँ माटिक दू नमूना, पुरान कागद आ अपन नतिनीकेँ लऽ कऽ सरिताक घर अबैत छथि। नतिनीकेँ विद्यालयसँ पाँच पीढ़ीक घरपर लिखबाक काज देल गेल अछि। ओ पाँच नाम लिखि सकैत अछि, मुदा पुरान विद्यालयक चौकी ककर बनाओल—से नहि जनैत। नैराक लग चौकीक पायामे धुँधला अंकक केवल रेखाचित्र अछि। शकुन्तला अपन बाबूसँ सुनल कथन सुनबैत छथि जे चौकी माटिक बासनक बदला काठक मजदूरसँ बनाओल गेल छल; ओ अपन साक्ष्यक प्रकार स्वयं सीमित करैत छथि—बाबूक कहल बात सुनल अछि, मूल खाता देखल नहि।

भोजनक बाद सरिता अलग गँठरी खोलैत छथि; ई छठम अध्यायक ‘घरक पहाड़ा’ बही नहि। पहिल पन्नापर १९४२ लिखल, मुदा ओकर भीतरक पूर्वपीढ़ी-कथा सरिताक नानीक मौखिक कथनसँ बादमे उतारल गेल अछि। १९३९क पोखरि-उराहिक कथा नानीसँ सुनल स्मृतिक आधारपर बताओल जाइत अछि। उराहिमे माटि निकालब, पानि ढोएब, रान्हब, घायल हाथक सेवा—बहुविध काज भेल; मुदा श्रमपञ्जीमे भात पकौनिहार स्त्रीक समय लोप भऽ गेल छल। एक स्त्री खर्चक बही आनिकऽ लोककेँ बुझौने छलीह जे रसोइ सेहो सामूहिक निर्माणक आवश्यक श्रम अछि। हुनकर नाम सरिताकेँ याद नहि; कृति नाम कल्पित कऽ भरैत नहि।

शकुन्तला लाल आ धूसर माटिक नमूना देखबैत छथि, मुदा चाकपर परीक्षण बिना उपयोगिता तय नहि करैत छथि। माटिस्थलधरि पुरान पगडंडी निर्माण-घेरावसँ सँकर भेल अछि, ढुलाई महँग भेल, बासनक बकाया बाकी, आ नतिनीक पढ़ाइक प्रवेश-खर्च अटकल। शकुन्तला पूरा भूमि अपन कहि दावा नहि करैत छथि; पुरान पहुँचक जाँच आ सुनवाई चाहैत छथि। नतिनी माटिक काम सीखबाक संग विद्यालय जा सकबाक इच्छा प्रकट करैत अछि, आ शकुन्तला हुनका भविष्यक व्यवसाय स्वतन्त्र चुनबाक वचन दैत छथि।

तकर बाद १९७४क घर-स्थानान्तरण आ असमान शिक्षापहुँच, १९९३क प्रवासी पत्र आ अनिश्चित प्राप्ति, २००८क विद्यालय-फीस आ अपूर्ण पुस्तक-वितरण, तथा २०२७क संकेतक बालचित्र क्रमसँ पढ़ल जाइत अछि। प्रत्येक बिन्दुपर एहन विवरण भेटैत अछि जे कियो सहज मिथक बनाय चाहत तँ रोकब आवश्यक : ‘घर पहुँचल’ खाली अछि, तेँ व्यक्ति लापता घोषित नहि; पुस्तक पहुँचलाक हस्ताक्षर नहि, तेँ वितरण सिद्ध नहि; चित्रक खाली स्थान फाटल कागदक परिणामो भऽ सकैत अछि, तेँ गुम व्यक्तिक नाम अनुमानसँ नहि जोड़ब।

आगाँ माटि, ढुलाई, महाजन-बिल, विवाह-पंजी, गीत-मानदेय आ गोदाम-सूचनाक भिन्न कागद आबैत अछि। नतिनी अन्ततः पाँच तिथि लिखि पाँच घरक चित्र बनबैत अछि आ प्रश्न उठबैत अछि—“ई पाँच घर एके घर

अछि?” सरिता कहैत छथि जे जमीन, कोठरी, लोक आ संग खएबाक व्यवस्था बदलैत रहैत अछि। नतिनी १९३९क उराहिक वृत्तान्तकेँ ‘सुनेल’ रूपमे अलग लिखबाक स्वीकार करैत अछि। शकुन्तला लिखित निवेदनमे पुरान पहुँच-जाँच चाहबाक, पूर्ण पैतृक स्वामित्वक दावा नहि करबाक निर्णय करैत छथि। अन्तिम दृश्य सरिता द्वारा रामवतीक सीमातीर्थ-डाक-मुहरवला निजी पत्र अलग रखब आ बिना अनुमति नहि खोलबाक वचनसँ अगिला अध्याय तैयार करैत अछि।

कथाक्रम आ कथनक्रम : पाँच दृश्य-काल नहि, पाँच पठन-काल

‘पाँच पीढ़ीक चौकी’ शीर्षकसँ पाँच पीढ़ीक पूर्ण जीवनी अथवा पाँच पूर्ण पूर्वदीप्ति दृश्यक अपेक्षा हो सकैत अछि। मूल पाठ एहन रचना नहि करैत। मुख्य वर्तमान कथा एक साँझक सहभोज आ कागद-पठनक अछि। १९४२, १९७४, १९९३, २००८ आ २०२७क घटनाकेँ पात्र पुरान पन्ना, हस्ताक्षर, बच्चाक चित्र, पारिवारिक स्मृति आ पत्रक माध्यमसँ पुनर्स्मरण करैत छथि। पुरान समयक प्रत्यक्ष कथाकारक ‘हम एखन १९७४मे छी’ प्रकारक दृश्य-प्रवेश नहि। एहि कारण जेनेट-प्रेरित आख्यानकालक विश्लेषणमे समय-निर्देश, स्मृतिप्रस्तुति आ पूर्ण दृश्य-पूर्वदीप्ति बीच भेद राखब जरूरी अछि।

‘१९४२’क पन्ना स्वयं १९४२क आँखिदेखल वृत्तान्त नहि, कारण सरिता बतबैत छथि जे नानीक कहल घटना बादमे लिखल। १९३९क उराहि सेहो सुनल तिथि अछि, एखन स्वतंत्र अभिलेखसँ मिलान बाँकी अछि। एहि दोसर पंक्ति जोड़ला सँ कालक्रम सरल बनबक बदला अधिक दुरूह होइत अछि। दस्तावेजक भौतिक आयु, लिखनिहारक काल, कथित घटनाक काल आ बच्चाक आजुक पाठ—चारि स्तर आलोचनाक विषय होइत अछि। एतए ‘अतीत’ समयक एकरूप ठोस कोठा नहि; परिवारक बहु-कथित परिकल्पना अछि, जकर सीमा जाँचल जा सकैत अछि।

वर्तमान कथाक अवधि भोजन आरम्भ, कागद-पठन, बरखा आ अतिथिक विदाइ धरि अछि। अध्यायक अन्तमे भातक बचल अंश आ मिरचाइक पसन्दपर संकेतक प्रश्न आरम्भक सहभोजकेँ पुनरावृत्त करैत अछि। ई एकरे दृश्यक शाब्दिक पुनर्लेखन नहि, अर्थगत घेरा अछि : पहिने घरक भीतर अनेक अलग रसना छल, अन्तमे नतिनीक पसन्द पूछल जाएत। एहि छोट आवर्तनसँ ‘घर’ नामक सामूहिकता व्यक्तिक विकल्प मिटौने बिना बनैत अछि।

स्मृतिप्रमाण : अनुपस्थित नामकेँ मेटबो नहि, गढ़बो नहि

उराहिक रसोइक नाम अज्ञात अछि। आलोचनाक दू सहज जोखिम अछि : पहिल, नाम नहि भेटलासँ ओकर कामकेँ महत्वहीन कहब; दोसर, नैतिक सहानुभूतिसँ नाम कल्पि नव ऐतिहासिक तथ्य बना देब। सरिताक वाक्य एहि दूनू स्थिति सँ बचैत अछि। ओ श्रमक सामाजिक सत्यक मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत करैत छथि, मुदा व्यक्तिविशेषक नामक रिक्तिक सीमा स्वीकार करैत छथि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिमे ई अत्यन्त सार्थक प्रक्रिया अछि : उपेक्षित श्रमकेँ इतिहासमे उपस्थित करब जरूरी, मुदा अनुपस्थित अभिलेखकेँ मनगढ़न्त विवरणसँ भरब समानान्तर इतिहासक प्रामाणिकता नष्ट करत।

पुरान चौकीपर खुँजल अंकक अपठनीयता, शकुन्तलाक बाबूक मौखिक कथन, नतिनीक चित्र, संकेतक फाटल कागद, ‘घर पहुँचल’क रिक्त खाना आ पुस्तक-वितरणक खाली हस्ताक्षर—साक्ष्यक सभ रूप एक समान नहि।

काठक अङ्क समयक दृश्य-चिह्न भऽ सकैत अछि, मुदा बनौनिहारक निश्चित नाम नहि। चिट्ठीक पहुँचलाक सूचना नहि भेटलासँ प्रवासीक सम्बन्ध-विच्छेद सिद्ध नहि। संकेतक चित्रक खाली स्थानसँ ‘लोप पाओल व्यक्ति’क दावा तँ विशेष रूपसँ असावधान होएत, कारण चित्रकार स्वयं कागद फाटल रहबाक सम्भावना रखैत अछि। एहि प्रसंगसभमे अनुचित ‘अनुमान’ रोकबाक काज कथा स्वयं करैत अछि।

एहि अध्यायमे प्रमाणक प्रश्न किछु दूर विधिक वाद-विवादसँ बाहर आबैत अछि : घरेक भोजनक स्वाद, नानीक बोलि, परीक्षाक दिनक नल टूटबाक सच्चाइ, पारिवारिक हँसी—ई सभ जीवनक अर्थबोध लेल पर्याप्त भऽ सकैत अछि, मुदा अदालतक अभिलेखक स्थानपर नहि राखल जा सकैत अछि। जखन सरिता कहैत छथि जे नल सचमुच टूटल छल, मुदा ‘कतेक बेर केकरा पक्षमे सच बाजल गेल’ दोसर पहाड़ा अछि, तखन प्रत्यक्ष तथ्यक सत्य आ कथनक प्रयोजन दू स्तरपर खुलैत अछि। सत्यक उपस्थितियेँ कथनक सम्पूर्ण निष्पक्षता नहि प्रमाणित करैत।

स्त्री-श्रम, पीढ़ीगत स्वायत्तता आ घरक बहुवचन

एहि अध्यायक पहिल ‘मुद्दा’ विद्यालयक प्रश्न ‘घर ककर?’ अछि। ओ प्रश्न स्वामित्वक नाम माँगए चाहैत अछि, मुदा उत्तर भोजन पकौनिहार, माटिक बासन बनौनिहार, दूर कमाइ लेल गेल सदस्य, रातिमे पढ़निहार बच्चा, घरेलू खर्च वहन करनिहार स्त्री आ भिन्न तरहक परिवारजनक रूपमे फैलैत अछि। घर ‘ककर कागजपर’ आ ‘ककर जीवनसँ’—दू प्रश्नकेँ अलग नहियेँ, पर एकरूपो नहि कएल जा सकैत अछि। नतिनी पाँच चौकोर घरक चित्र बनबैत अछि; ओकर मध्यक संशय ‘एके घर’ कथाक मूल विचारक दृश्यात्मक रूपक अछि।

शकुन्तलाक नतिनी माटिक बासनक कला सीखबाक इच्छा बतबैत अछि, मुदा विद्यालयो जाएब चाहैत अछि। शकुन्तला स्पष्ट करैत छथि जे बच्ची पारिवारिक पेशा नहि चुनत तँ पढ़ाइ बन्द नहि होएत। एहि कथनमे जाति-पेशा-वंशक नियतिवादसँ असहमतिक स्वर अछि; तथापि बासनक बकाया आ विद्यालयक प्रवेश-खर्चक आर्थिक कठिनाइ हटि नहि जाइत। ‘विकल्पक अधिकार’ आ ‘विकल्पक भौतिक सम्भावना’क अन्तर एहिठाम प्रभावी अछि। शकुन्तलाक आश्वासन सुन्दर अछि, मुदा पर्याप्त संसाधनक अनुपस्थितिमे ओकर व्यवहारिक जोखिम कृति लुकबैत नहि।

१९७४क घरक भीतर रातिमे अक्षर सीखबाक स्थिति आ २००८क परीक्षाक दिन बासन धोएनाइ छोड़बाक छोट संघर्ष स्त्रीशिक्षाक पूर्ण इतिहास नहि, मुदा घरक श्रम-विभाजनक मार्मिक प्रमाण छथि। नैराक स्मृति आ सरिताक स्वीकार ‘त्यागमयी माइक’ एकरूप प्रतिमा नहि बनबैत; माए-बेटीक बीच हँसी, शंका आ सहयोग राखैत अछि। नानीक १९३९क उराहिमे रसोइक अवैतनिक श्रम आ आजुक शकुन्तलाक बासनक बकाया—दूर-दूरक कालघटनाक बीच एक व्याख्यात्मक सम्बन्ध बनैत अछि : श्रमक गिनतीक अभाव पीढ़ीगत अवरोध बनि सकैत अछि। ई कारण-सम्बन्धक सामुदायिक परिकल्पना अछि; एहि पन्ना मात्रसँ कोनो एक परिवारक अनवरत शोषणक वंशानुक्रम ‘सिद्ध’ नहि।

पार्श्व-पर्चीक उपयोग : समुदाय-इतिहास बनाम सूचीकरण

अमृता चौहानक माटिस्थल-दावा आ गोमती बेलदारक ढुलाईक घण्टा एक गँठरीमे बान्हल रहितहुँ एक पक्षक प्रमाण नहि। महेन्द्र महासेठक पुरान नपना आ बिनोद जायसवालक खरीदीक रसीद अलग मालिक, तिथि आ देय दर्शबैत अछि। नीलिमा नुराङ मातृनामक पंजी-संशोधन चाहैत छथि; हमीदा मिरियासीन गीतक उपयोगपर अनुमति आ मानदेयक अधिकार रखैत छथि; शशि माहुरीक गोदाम-सूचना भीतर राखल सामानक निर्णायक विवरण नहि दैत। हर पर्ची समुदाय आ श्रमक अलग अनुशासन प्रस्तुत करैत अछि।

मुदा ई ठाम एहि कृतिक रूपगत कठिनाइ सेहो उघड़ैत अछि। एक साँझक भोजन-सभा भीतर अनेक पेशागत पर्चीक आविर्भाव ‘समाजक सम्पूर्ण उपस्थिति’क महत्त्वाकांक्षा प्रमाणित करैत, मुदा कतहु कथानकक सहज संयोगकेँ योजनाबद्ध सूचीमे बदलैत अछि। नीलिमा, हमीदा अथवा शशिक सम्भावित स्वतन्त्र कथा एखन संक्षिप्त बयान बनि रहैत अछि; पाठक हुनकर बोलीक नैसर्गिक आरोह-अवरोह पर्याप्त नहि सुनि पबैत। कृतिक ई सीमा ओकर सामाजिक समावेशनक विपरीत नहि, बल्कि समावेशनकेँ कलात्मक चरित्र-संरचनामे रूपान्तरित करबाक अपूर्ण चुनौती अछि।

भाषिक रूप, रस आ अन्तिम निर्णय

अध्यायक पहिल गद्यसँ अन्त धरि वस्तुसभ स्पर्शनीय अछि : माटिक ढक्कन, भीजल कापी, लपेटल पन्ना, चूल्हाक आँच, लाल आ धूसर माटि, टूटल काठक चौकी। पाठक ई वस्तुकेँ रूपक बुझबाक पहिने पात्रक जीवनमे उपयोगी रूपमे देखैत अछि। सहभोजक पाँच अलग स्वाद ‘घरक पाँच टुकड़ा’ बनबाक शकुन्तलाक हँसी सँ विनोद-भाव उत्पन्न होइत अछि। बरखाक खाली जगह आ नतिनीक अधूरा उत्तर करुणा होइन, जिम्मेदार जिज्ञासाक स्वर बनैत अछि। एहिसँ अध्यायक भाव-आलम्बनक विविधता बढ़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई रहत जे अनेक पात्र बारम्बार अत्यन्त सुगठित प्रमाण-सावधानीक वाक्य बजैत छथि। मौखिक पारिवारिक कथा सामान्यतः विस्मरण, भ्रम, असमर्थता आ आपसी तिक्ततासँ भरल रहैत अछि; एतय अनेक स्त्री तुरन्त स्पष्ट करैत छथि जे केहन प्रमाण स्वीकार्य नहि। किछु ठाम एहि अनुशासनसँ पात्रसभक पृथक भाषिक व्यक्तित्व कम विकसित लगैत अछि। मुदा नतिनीक चित्र, संकेतक लजाएब आ सरिता-नैराक नलवला प्रसंग एहि औपचारिकताकेँ कम करैत अछि।

अध्याय-निष्कर्ष। शीर्षकक ‘पाँच पीढ़ी’ अभिलेखीय निश्चितताक पाँच सीढ़ी नहि; परिवारक इतिहासक पाँच अलग अपूर्ण प्रवेश-द्वार अछि। चौकीक लेखक/निर्माता नहि निश्चित भेल, १९३९क स्मृति नहि प्रमाणित भेल, शकुन्तलाक पहुँच-दावा सुनवाईक पथपर गेल, आ एक निजी पत्र सुरक्षित अपन मालकिनक प्रतीक्षामे रहल। जीवनक इतिहास प्रश्न लिखबाक कला बनैत अछि, रिक्ति मिटा देबाक अधिकार नहि।

अध्याय ८ — सीमातीर्थक चिट्ठी

स्थान–काल : सरिताक घर, विदेहपुरसँ मखानिया डबराक यात्रा, डबराक श्रम-स्थल आ घरवापसी; रामवतीक पत्रक कारण सीमातीर्थक पुरान पारिवारिक–प्रवासी सम्बन्ध कथामे प्रवेश करैत अछि। मुख्य समस्या : नामक

अभिलेखीय भिन्नता, जलकरक श्रम, निजी चिट्ठीक स्वामित्व आ जलमार्गक अनिश्चितता कोन प्रकारक ज्ञान-सङ्कट बनबैत अछि?

एकहि यात्रामे दू स्वतंत्र कार्यधारा

अध्यायक आरम्भ सरिताक घरमे भीजल लिफाफाक संरक्षणसँ होइत अछि। पत्र रामवती खत्वेक अछि; ओ पहिने सरिताक लग रखि देने छलीह। सरिता पत्र खोलने नहि छलीह, नैरा संकेतकेँ ओकर फोटो लेबासँ रोकैत छथि। उद्देश्य मालिककेँ पत्र वापस देब अछि, ओकर गुप्त सामग्रीक खुलासा करब नहि। गाड़ी मखानिया डबरा दिस बढ़ैत अछि; बाटमे देवकी पालक ऊन-ढुलाई, फूलो चौरसियाक पानक खेत, सूरज चौधरीक ताड़गाछक दिहाड़ी आ नन्दिनी भंडारीक नर्सरीक बाँस-नलिकाक प्रसंग भेटैत अछि। समान बाटक साझा जोखिम रहितहुँ चारू आर्थिक दावा एक नहि।

डबरापर रमणी बिन्द पुरान मौसमक सुखाएल गूड़ी आ नव बीहनक अन्तर देखबैत छथि। पानिमे बीहन, गूड़ी चुनब, सुखाएब आ फोड़ब—काजक अलग चरण छथि। जलकर-खातामे स्त्रीसभक काम ‘परिवारक सहायता’ लिखि शून्य गनल गेल अछि। रमणी कामक समय, उपस्थितिक सहमतिपूर्ण नाम आ निजता चाहनिहार स्त्रीक अलग रसीद प्रस्तुत करैत छथि। पट्टाक स्वामित्व बदलबाक माँग नहि; वर्तमान श्रमक मूल्य आ दर लेखा मे स्पष्ट करबाक आग्रह अछि। मुनीम तत्काल भुगतान नहि करैत, मुदा अलग दर आ उपस्थितिक प्रति देबाक लिखित स्वीकृति दैत अछि। आधा छप्पर स्त्रीसभक विश्राम आ भीजल कपड़ा बदलबाक लेल खाली कराओल जाइत अछि। ई दूटा वास्तविक तात्कालिक परिवर्तन छथि—एक अभिलेखीय, दोसर शारीरिक।

मध्यान्हमे रामवती अपन पत्र प्राप्त करैत छथि। ओ पहिने लिफाफा के देखलक से पुछैत छथि; तकर बाद एकान्तमे स्वयं खोलि पढ़ैत छथि। पुरान मायके-सम्बन्ध, विवाह-पंजीमे अपन नामक भिन्न रूप आ कमाइ-पठौनिहार कागदमे प्रमाणक माँग—तीन स्तरक विवाद उघड़ैत अछि। रामवती पूरा पत्रक प्रति नहि दैत छथि; एक आवश्यक सूचना कहबाक निर्णय लैत छथि। घरक भीतरक सम्बोधनकेँ प्रशासनिक नाममे गलत अनुवाद कए देने सँ मायकेक व्यक्ति ससुरालक सदस्य बुझाएल छल। रामवती दूनू पक्षक पृथक गवाही लऽ संशोधन करबाक योजना रखैत छथि; नैरा ओकर निजी पत्रक सम्पूर्ण अभिलेखीकरण नहि करैत छथि।

एहि बीच नसीमा–रफीकक प्रवासी कमाइ, अमीर कुल्हैयाक शुल्क-जोड़क अन्तर, सुगनीक कोसी-बाढ़ि-स्मृति, कमला जैनक अग्रिमक शर्त आ मखानक बजार-दरक प्रश्न उठैत अछि। अमीरक हिसाबमे पठाओल रकम आ प्राप्त रकमक जोड़ नहि मिलैत; दलालकेँ तत्काल चोर नहि कहल जाइत। सुगनीक कोसी वा कोसिका-स्मृतिकेँ वर्तमान डबराक जलमाप नहि मानल जाइत। रमणी मखानक अलग दाम, सुरक्षा आ लिखित दर लेल आगाँक वार्ता खुलल रखैत छथि। अन्तमे सार्वजनिक फलकपर कुल श्रमिक, घण्टा आ देय चढ़ैत अछि, निजी नाम सुरक्षित रहैत अछि। गीतक नाम गायिकाक अनुमतिसँ अलग पन्नापर दर्ज होइत अछि; नैरा रिकॉर्ड नहि करैत छथि।

घरवापसीसँ पहिने रमणी जलक आवकक बताओल दिशा आ आजुक वास्तविक नाप बीचक भेद उठबैत छथि। तारा आ अदिति अगिला दिन जाँच करए आओतीह—ई सम्भावित कार्यक्रम अछि, एखन सम्पन्न जलपरीक्षा

नहि। रामवतीक पत्र अपन स्वामिनीक लग पहुँचल अछि, मुदा नाम-संशोधन पूरा नहि; श्रमक पन्ना बनेल अछि, भुगतान नहि; अमीरक शुल्क-हिसाब सेहो अप्रमाणित अछि। कथा घर लौटि भात आ मिरचाइक साधारण पसन्दपर विरमैत अछि।

पत्रक यात्रा : कथानकक गुप्त सूचना नहि, स्वामित्वक मर्यादा

साधारण रहस्यकथामे पुरान चिट्ठी हाथ लागलासँ पात्र ओकरा खोलि निषिद्ध सत्य पढ़ैत, आ घटनाक नाटकीय शृंखला तीव्र होइत। एहि अध्यायमे उलट प्रक्रिया अछि : पात्र पत्र नहि खोलैत, नकल नहि बनबैत, मालिककेँ खोजि लौटबैत छथि। रहस्यक साहित्यिक ऊर्जा जिज्ञासाक निषेध नहि, जिज्ञासापर स्वैच्छिक संयमसँ बनैत अछि। रामवतीक पहिल प्रश्न—पत्र ककरा देखल गेल—कथानकक नैतिक केन्द्र अछि। निजी वस्तु सार्वजनिक अनुसन्धानक स्वतः सम्पत्ति नहि बनैत।

रामवती पुरान पत्र एकान्तमे पढ़ैत छथि। पाठक ओ पत्रक शब्दशः सामग्री नहि देखैत; रामवती जे अंश साझा करैत छथि, ज्ञान ओतबे धरि सीमित रहैत अछि। ई जानि-बुझिकऽ बनाओल कथात्मक अल्पसूचना अछि। एकरा कथावाचकक असमर्थता नहि, पात्रक सूचना-अधिकार द्वारा निर्धारित सीमा मानब उपयुक्त। मुदा प्रश्न बचैत अछि : कृति एहन संयम बारम्बार दोहराबैत काल पात्रक भीतरी द्वन्द्व, निजी स्मृतिक अनपेक्षित पीड़ा आ सम्बन्धक जटिल ध्वनिकेँ कतहु कम तँ नहि करैत? रामवतीक उत्तरमे मायके आ ससुराल दूनूकेँ एकरूप निन्दासँ बचेनाइ आ अपन नामक निर्णय अपन हाथमे रखनाइ एहि प्रश्नकेँ आंशिक जटिलता दैत अछि।

अनुवादक त्रुटिक प्रसंग भाषिक आख्यानशास्त्र लेल खास महत्त्वपूर्ण अछि। परिवारक सम्बोधनक दू भाषामे अलग अर्थ भेला कारण रिश्ता गलत पढ़ल गेल। एतए अनुवाद केवल भाषा-परिवर्तन नहि, सम्बन्धक संस्था-सापेक्ष वर्गीकरण अछि। रामवती गलत अनुवादक पीड़ित मात्र नहि; ओ ककर गवाही लेल जाए, ककरा कतेक कहब आ ककर नाम सार्वजनिक नहि करब, ई निर्णय स्वयं करैत छथि। मातृनामक स्मृति आ विवाह-पंजीक दस्तावेजक बीच द्वन्द्वकेँ आधुनिक लैंगिक स्वायत्तताक प्रश्नक रूपमे पढ़ि सकैत छी, मुदा पाठ ‘एक नाम सब जगह एक करैत दूनू परिवारक विवाद समाप्त’ एहन समाधान नहि दैत।

मखानक तकनीक आ श्रम : ‘उपज’क भीतर लुकल अनेक क्रिया

मखानिया डबरा प्राकृतिक दृश्य-मात्र नहि। काँट, दलदल, पगडंडी, गूड़ीक पुरान–नव खेप, चुनबाक समय, सुखाएबाक अवधि, आगिक ताप आ फोड़ाइक कौशल—ई सभ कथा-भूगोलकेँ श्रम-विभाजनद्वारा निर्मित करैत अछि। रमणी स्पष्ट करैत छथि जे नव बीहन एखन पानिमे अछि; ओकरा आजु फोड़ल खेप कहब बजारक दाम आ दिहाड़ी दूनू विषयमे असत्य होएत। ई वस्तुगत प्रक्रिया सामाजिक अर्थशास्त्रक प्रमाण बनैत अछि। पानिक भीतरक श्रम आ आगि लगक श्रम ‘मखान’ नामक एक उत्पादमे मिलेबाक पहिने अलग समय आ जोखिम माँगैत अछि।

जलकरक रजिस्टरमे ‘परिवारक सहायता’क शून्य संख्या वस्तुतः उपस्थित श्रम आ अभिलेखीय अदृश्यताक टक्कर अछि। रमणीक प्रतिवाद सम्पत्तिक पट्टा तुरन्त छीनबाक नहि, काजक पहिचान आ देय अलग पाँतिमे लिखबाक अछि। एहि निर्णयमे नारीवादी श्रम-अध्ययन आ विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण प्रश्न साझा

होइत अछि : जे काम उपजक उत्पादन सम्भव बनबैत अछि, ओकर पहचान मालिकाना कागद सँ स्वतन्त्र रूपेँ कोना संरक्षित हो? एहि प्रसंगमे स्त्रीसभक स्वयं लिखल उपस्थितिक पन्ना लोकसाक्ष्य अछि, मुदा ओहि पन्नाक कानूनी स्थिति अथवा भुगतानक अन्तिम सफलता पाठसँ एखन सिद्ध नहि।

निजी रसीद आ सार्वजनिक फलकक विभाजन विशिष्ट अछि। स्त्री अपन व्यक्तिगत नाम लोकमे टँगबय नहि चाहैत छथि, तैयो हुनकर कुल काज-घण्टा आ देय सार्वजनिक हिसाबमे उभरैत अछि। नाम छिपेबाक अनुमति अवैतनिकता कायम रखबाक बहाना नहि बनय—रमणीक पद्धति एहि सम्भावित विरोधकेँ व्यावहारिक रूपेँ सँभालैत अछि। ई केवल ‘स्त्री अधिकार’क नारा नहि : लिखित स्वीकृति, देयक सार्वजनिक संख्या, छप्पर खाली करेनाइ आ विश्रामक व्यवस्था पात्रक ठोस उपलब्धि अछि। भुगतानक अनुपस्थिति आ दर-संशोधनक अधूरापन बराबर स्पष्ट रहैत अछि।

जल, भूगोल आ अलग स्मृतिक अनुशासन

अध्यायक बाटमे ऊन, पान, ताड़ आ नर्सरीक श्रम भेटैत अछि। ई सभ जलवायु-व्यवहारसँ सम्बन्धित रहितहुँ अलग उत्पादक सम्बन्ध अछि। देवकीक ‘भाड़ा हमर, बाट सभक’ वाक्य साझा भूगोल आ व्यक्तिगत व्ययक तनाव सघन करैत अछि। डबराक जल-प्रबन्धमे नन्दिनीक नलिकाक वर्तमान माप बरखा बदलला पर फेर जाँचबाक शर्त अछि; फूलोक खेतक खर्च डबराक मजदूरपर नहि थोपल जाए; पशु-बाट अलग राखल जाए। एहन निर्णय नदी–पोखरि–आजीविकाक पर्यावरणीय अन्तर्सम्बन्ध देखबैत अछि, मुदा सभकेँ अविभाज्य ‘समुदाय’ कहलासँ लागतक विषमता मेटि जाएत।

कोसी वा कोसिका नामक पुरान बाढ़ि-स्मृति डबराक आजुक जलस्तर नहि। कथात्मक विन्यासमे एहि अध्यायक प्रारम्भिक प्रविधि-सङ्केत ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ अछि, मुदा मूल अध्यायमे पाँचम अध्यायक जनककाल जकाँ पूर्ण स्वतन्त्र महाकाव्यीय दृश्य-काल उपस्थित नहि। एतए अतीत चिट्ठी, पारिवारिक स्मृति आ पुरान आपदा-पन्नाक माध्यमसँ अबैत अछि। एहि भेदकेँ स्वीकार करब आवश्यक अछि। नाम-सादृश्य अथवा दुःख-सादृश्यसँ नदीक एकता, स्थल-समानता, काल-समानता वा साझा अपराधक निष्कर्ष नहि निकलैत। रमणीक अन्तिम प्रश्न सेहो भविष्यक जलमापक अनुसन्धानेक प्रारम्भ अछि; कृति नहि कहैत जे जलक रहस्य प्रमाणित भऽ गेल।

स्वर, अवकाश आ भावात्मक प्रतिविम्ब

अध्यायक संवादमे रमणीक दृढ़ता, मुनीमक प्रक्रियागत बाधा, रामवतीक सीमित प्रकटीकरण, अमीरक आर्थिक चिन्ता, सरिताक घरेलू हँसी आ गायिकाक धुन-विषयक स्वामित्व अलग स्वर बनबाक सम्भावना रखैत अछि। खास बात : मुनीम मात्र दमनकारी अधिकारीक रूपमे निर्मित नहि; ओ ऊपरक खाता बिना राशि निकालबाक संस्थागत सीमा बतबैत अछि। ओकरा नैतिक निर्दोष घोषित करबो गलत, तुरन्त खलनायक बनबो। रमणी ओकर सीमा स्वीकार करैत, मुदा लिखित दर-दस्तावेज लेल दाब बनबैत छथि। एहि तनावमे वास्तविक वाद-विवाद अछि।

हाथक काँट, भीजल कपड़ा, पानिसँ घेरल दलदल आ आगिपर तापल गूड़ी कथाकेँ देहगत यथार्थ दैत अछि। ओहि बीच गीतक सुर बिसरब, सरिताक ताल चूकब, हँसी आ युवतीक परीक्षा-बाद अभ्यास तय होएब—कथा आर्थिक विवादसँ मानवीय अवकाशमे सरकैत अछि। एहि अवकाशकेँ ‘मुख्य कथासँ भटकल’ कहब उचित नहि; मजदूर

स्त्रीक जीवन काज-घण्टा धरि सीमित नहि, स्मृति, गीत आ शिक्षाक पसन्द सेहो अछि। मुदा गीतक पन्नाकेँ श्रम-खाता सँ अलग राखब भाषिक–सांस्कृतिक स्वामित्वक दोसर आवश्यक भेद अछि।

अन्तिम दृश्य घरक भोजनक प्रश्नपर लौटैत अछि। चौठमसँ आठम अध्याय धरि कथा बेर-बेर विशाल सामाजिक श्रमसँ घरेलू रसोइमे अबैत अछि। एखन एहि आवृत्तिक कलात्मक औचित्य एतबे अछि जे घरक भोजनको सार्वभौम निरपेक्ष श्रम नहि; व्यक्तिगत पसन्द पूछबाक सम्बन्धमूलक घटना अछि। सरिता संकेतक मिरचाइक इच्छा बुझबैत नहि, पूछबाक कहैत छथि; ई सातम अध्यायक अन्तिम विनोदक फेर आह्वान अछि।

अनुकूल आ प्रतिकूल पाठ-साक्ष्य

एहि अध्यायक सबसँ स्पष्ट सफलता वास्तविक सूक्ष्म परिणामक वितरण अछि। पत्र स्वामिनीक हाथ पहुँचल; रमणीक श्रमपञ्जीमे लिखित प्रगति भेल; स्त्रीसभकेँ विश्राम-ठाम भेटल; सार्वजनिक फलकपर कामक संख्या चढ़ल; अन्तिम जलप्रश्न अनुत्तरित रहि जाँचक दिशा बनल। प्रत्येक उपलब्धि अलग पूर्णताक स्तरपर अछि। कृति ‘नाम सुधरल’, ‘मजदूरी देल गेल’ अथवा ‘जलमार्गक दोष भेटल’ एहन असमर्थित त्वरित निष्कर्ष नहि काढ़ैत।

मुदा नामित पेशा, खेत, उपज, पत्र, अलग नदी आ व्यापार-शर्तक क्रमिक संकेन्द्रण मध्यभागमे पाठकीय गहिराइ पर दबाव डालैत अछि। अनेक प्रसंग अत्यन्त सावधानीपूर्ण परिभाषासँ तुरन्त समाप्त होइत अछि, जे कठोर आलोचनामे शिक्षापरक विन्यासक अति कहल जा सकैत अछि। गीतवाला दृश्य एहि तनावकेँ किछु खोलैत अछि, कारण पात्रसभ एतए हँसैत, चूकैत, सीखैत आ अपन उपस्थिति-समयक स्वतंत्र चुनाव करैत छथि। रमणीक श्रम-दरक अगिला परिणाम, रामवतीक नाम-संशोधन, अमीरक शुल्क-विवाद आ जल-परीक्षाक अन्तिम साक्ष्य आगामी अध्यायमे मिलान योग्य रहल। एखन हुनकर सफलता निश्चित मानब अप्रासंगिक होएत।

अध्याय-निष्कर्ष। ‘सीमातीर्थक चिट्ठी’क वास्तविक केन्द्रीय घटना पत्र खोलब नहि, पत्र सही व्यक्ति धरि पहुँचेनाइ अछि। समानांतर श्रम-कथा मखानक उत्पादनक भीतर अदृश्य स्त्री-समयकेँ लेखनीय बनबैत अछि। दू कार्यधारा निजी सहमति आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक विरोध नहि, ओकर पृथक उपयुक्त प्रक्रियाक परीक्षण करैत अछि।

अध्याय ५–८ : तुलनात्मक आख्यानशास्त्रीय निष्कर्ष

नाप, बही, चौकी आ पत्र : चारि वस्तु, चारि प्रश्न

पाँचम अध्याय चूनक रेखा सुधारैत अछि, छठम घरक बहीक समयगत गलत अनुमान सुधारैत अछि, सातम परिवारक पाँच समय-खण्डक एकरे घर-संस्करण बनायबाक प्रवृत्ति रोकैत अछि, आठम निजी पत्रक मालिकी आ उत्पादनक स्त्री-श्रमक अभिलेखीकरण अलग करैत अछि। ई क्रम बाह्य स्थानसँ घरेलू इतिहास, फेर पत्र-मार्ग आ जल-उत्पादन धरि जाइत अछि। एहि चारि वस्तुक कार्य समान नहि : नाप-पत्र सार्वजनिक प्रस्तावक साधन, घरेलू बही सीमित परिवारिक प्रमाण, चौकी आ कागद परिवार-स्मृतिक प्रश्न, पत्र निजी सम्बन्धक वाहक। एहिसभपर

‘दस्तावेजक राजनीति’ एक सामान्य पद राखि देब पर्याप्त नहि; प्रत्येकक प्रमाण्य, प्रयोजन, स्वामित्व आ निर्णय-अधिकार अलग अछि।

पाँचम अध्यायमे सर्वेक्षकक गलत आरम्भ-बिन्दु सुधरल; मुदा अधिकार-अभियोग अनिर्णीत रहल। छठममे भुगतान शब्द ‘वापसी’मे बदलबेला शाब्दिक-सटीकता बढ़ल, मुदा रकमक अन्तिम लेखा नहि। सातममे नतिनी ‘सुनेल’ शीर्षक जोड़ि १९३९क अनिश्चित स्मृतिक स्रोत-भेद मानलनि, मुदा चौकीक निर्माताक नाम नहि भेटल। आठममे पत्र लौटबाक निश्चित कार्य समाप्त भेल, मुदा रामवतीक कानूनी नाम-सम्बन्धक विवाद जारी रहल। एहि कारण उपन्यासक आरम्भक घटनाक घनत्व बम, रहस्योद्घाटन आ दण्डक संख्या सँ नहि, ‘कुन वस्तुक स्थिति वास्तवमे बदलल’ प्रश्नसँ जाँचब अधिक उपयुक्त अछि।

दिनक क्रम आ अतीतक अनेक उपयोग

मूल आधुनिक कथा अध्याय ५ मे प्रस्तावित रेखाक नापसँ घरक बही खोलबाक वचन धरि पहुँचैत अछि। अध्याय ६ अगिला भोर बही खोलैत अछि; ओकर साँझ अतिरिक्त अतिथिक थारी राखल जाइत अछि। अध्याय ७ ओ अतिथिक आगमनसँ शुरू भऽ चिट्ठी अलग रखैत अछि। अध्याय ८ अगिला भोर चिट्ठी लौटेबाक यात्रा प्रारम्भ करैत अछि। एहि जोड़मे दृश्यमान काल-निरन्तरता अछि। मुदा एकरे बीच प्राचीन जनककाल (अ.५), पुरान घरेलू बहीक असमकालिक लेखन (अ.६), १९३९ आ पाँच अन्य तिथिक सुनेल/लिखल स्मृति (अ.७), सीमातीर्थक पुरान पत्र आ कोसी-बाढ़ि-स्मृति (अ.८) अलग-अलग भूतकालक पद्धति बनबैत अछि। सभकेँ एक्के ‘पूर्वदीप्ति’ पदमे समेटलासँ कथन-प्रविधिक सारभेद हराएत।

स्त्रीक प्रमाण-अधिकार आ श्रम-अधिकारक क्रम

सीता पुरान बाट नापबाक आग्रह करैत छथि; नैरा सुनल गवाही आ अधिकृत नापक सीमा अलग रखैत छथि; सरिता अपन घरेलू बहीक दू पन्ना देखेबाक स्वीकृति दैत छथि; शकुन्तला पूर्ण सम्पत्ति-दावा नहि गढ़ि पुरान पहुँचक सुनवाई माँगैत छथि; रामवती अपन पत्र स्वयं खोलैत छथि; रमणी स्त्रीसभक घण्टा शून्य लिखबाक विरोध करैत छथि। एहि सभ प्रसंगकेँ एकरे ‘नारी-जागरण’क स्थिर रूपमे पढ़लासँ विशिष्ट सामाजिक फरक हराएत। कियो भूमि-पहुँच चाहैत अछि, कियो रसीदक सही अर्थ, कियो पत्रक निजता, कियो श्रम-दर। प्रत्येकक साधन आ जोखिम अलग। एहि पृथकता केँ बनौने राखब नारीवादी आलोचनाक आवश्यक शर्त अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र, न्याय-विवेचन आ आलोचनात्मक मर्यादा

ध्वनिक दृष्टिसँ सुधारल रेखा, चाउरक मुट्ठी, अपठनीय चौकी आ पत्रक सुरक्षित वापसी अव्यक्त सामाजिक अर्थ उत्पन्न करैत अछि; मुदा एकर व्याख्या मूल वस्तुक व्यवहारसँ आरम्भ हो। औचित्यक दृष्टिसँ राजा/दानदाता/समितिक उदार कथनक सामाजिक फलित उपयोग जाँचब जरूरी। रसक दृष्टिसँ केवल करुणा नहि—किरणक खेतक हास्य, शकुन्तलाक सहभोज, नतिनीक प्रश्न, रमणीक गीत आ सरिताक ताल-भूल—अनेक भाव एकरूप नीतिपाठकेँ विघटित करैत अछि। आख्यानगत प्रश्न होइत अछि : प्रमाण प्रस्तुत करनिहार के, साबित करबाक विषय की, सम्बन्धक व्याप्ति कतबा, आ कोन प्रतिकूल साक्ष्य हमरा निष्कर्ष रोकैत अछि? मूल

पाठ एहि प्रश्नक बहुल उदाहरण दैत अछि। मुदा एतय मूल भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणिक स्वतन्त्र शास्त्रीय अंश प्रत्यक्ष दृश्यरूपेँ नहि उद्धृत; तेँ हुनकर विशिष्ट सूत्रक सम्पूर्ण दार्शनिक व्याख्या थोपब उचित नहि।

सीमाक संयुक्त परीक्षण

चारू अध्यायमे लेखकक सामाजिक प्रमाण-सावधानी अत्यन्त सुसंगत अछि। एही गुणमे जोखिम सेहो अछि : अनेक समुदाय, पेशा आ पीढ़ीक व्यक्तिसभ एकरे अभिलेखीय स्पष्टता सँ बोलि उठैत छथि। किछु ठाम कथाक अनपेक्षित नैतिक जटिलता, पात्रक भ्रम, अविश्वसनीय कथन, आपसी कड़वाहट अथवा अव्यक्त भाव जल्दी व्यवस्थित पर्चीमे बदलि जाइत अछि। पाँचम अध्यायक सर्वेक्षक, छठमक पद्मा, सातमक शकुन्तला आ आठमक रमणी अपन कार्यदक्षतासँ कथा आगाँ बढ़बैत छथि; मुदा हुनकर व्यक्तिगत मतभेदक दीर्घ सामाजिक फल एखन प्रतीक्षित अछि। ई आलोचना एहि चारि अध्यायक सीमा पर आधारित अछि; पछिला अध्यायसभक सम्भावित विकासक बारेमे एखन अन्तिम राय नहि।

आगामी मूल-पाठ परीक्षणक ठोस प्रश्न

अध्याय ९ सँ पहिने एखन पाँच प्रश्न खुलेल : मखानिया डबराक आवक-जलक वास्तविक बाट ककरा द्वारा आ कोन दिन मापल जाएत? रामवतीक दू नामक संशोधन लेल दूनू पक्षक गवाही भेटत कि नहि? रमणीक उपस्थिति आ दरक लिखित स्वीकृति वास्तविक भुगतानमे कोना बदलब? शकुन्तलाक माटिस्थल-पहुँच सम्बन्धी सुनवाईक निर्णय होएत कि नहि? सरिताक सत्ताइस नामक पन्नामे चारि अलग स्याहीवला नामक तिथि आ लेखनकर्ता कोना जाँचल जाएत? ई सभ अनिर्णीत अनुसन्धान-बिन्दु छथि; उत्तरोत्तर उपन्यासक मूल पाठ पढ़ि प्रमाणित कएल जाएत, एतए अपनहु बनाओल उत्तर नहि।

अध्याय ९ — बन्द बाहा

माटिक भीतरक मुहाना : आरम्भक दृश्य आ प्रश्नक नवनिर्धारण

पहिल पाठांशमे तारा मल्लिक घासमे बाँसक छड़ी धँसौलनि। ओकरा नरम माटि पाछाँ ईंटक कठोर किनारा भेटैत अछि। ई दृश्य केवल पुरातात्त्विक खोजक दृश्य नहि : पोखरिक ठाढ़ पानि आ बन्द मुँहथरिक सम्भावनाक बीच ज्ञानक पद्धति निर्धारित करबाक आरम्भ अछि। ललितक प्रश्न—नक्शामे बाट अछि की नहि—पर तारा नक्शाक रेखा आ वास्तविक ईंटक भेद स्पष्ट करैत छथि। एतए पुरान अभिलेख माटिक जाँच लेल संकेत दैत अछि, स्वयं जमीनक पूरी स्थिति नहि। तारा तत्काल भीतर उतरि सफाई करबाक उत्साह रोकैत छथि, किएक तँ पुरान ईंटक ऊपरक भार आ गहिराइक ज्ञान एखन नहि। एहि निर्णयक संग पाठककेँ एक तरहक उलटा रोमांच भेटैत अछि : उद्घाटन खोजनिहारक वीरतामे नहि, असुरक्षित हस्तक्षेप रोकबामे अछि।

गोदामक नव पलस्तर आ सिमेन्टक पट्टी किछु शंका उत्पन्न करैत अछि, मुदा ओकरा अतिक्रमणक प्रत्यक्ष सबूत मानि नहि लेल गेल अछि। श्याम मल्लिकक पुरान रेखाचित्र, अदितिक प्रारम्भिक मरम्मति-पर्ची आ स्थलपर

भेटल अधधँसल मुँहथरि तीन पृथक ज्ञान-स्रोत छथि। पुरान रेखाचित्र स्वयं तारा ‘जमीनक मालिकाना नहि’ कहि सीमित करैत छथि; अदिति आरम्भिक प्रस्ताव स्थल देखबाक पहिने बनाओल स्वीकार करैत छथि; पुरान ईंट गोदामक नीचाँ धरि पूरा मार्ग प्रमाणित नहि करैत। एहि तीनू सीमा सँ उपन्यास ‘अतीत भेटल, तेँ वर्तमानक विवाद समाप्त’ प्रकारक सरल कथा बनबाक जोखिमसँ बाँचैत अछि। अदिति अपन प्रस्ताव वापस लऽ शंका छिपबैत नहि छथि; ओ नवा प्रश्न लिखबाक अनुमति खोलैत छथि।

घटना-पञ्जी : भेटल वस्तुसँ पुनर्जाँचक सरकारी प्रविष्टि धरि

अध्यायक प्रत्यक्ष घटना-शृंखला कमसँ कम छह निर्णायक मोड़मे पढ़ल जा सकैत अछि। प्रथम, तारा ईंटक किनारा आ पुरान मुँहथरिक सम्भावित स्थान भेटैत छथि। द्वितीय, गोदामक दीवाल आ उपलब्ध नक्शाक बीच माप-अन्तरक प्रश्न उठैत अछि; प्रारम्भिक छोट मरम्मतिक प्रस्ताव पर्याप्त नहि बुझाइत अछि। तृतीय, उर्मिला रजक आ मत्स्यकाजक पक्ष सार्वजनिक घाटपर अलग-अलग उपयोग-अधिकार रेखांकित करैत छथि; उर्मिलाक कपड़ा-ढुलाईक वास्तविक अतिरिक्त लागत पर्चीमे अबैत अछि। चतुर्थ, ललितक लकड़ी, श्यामक बाँस-बिनौट, भोजन बनौनिहारक श्रम, कादो ढोएनिहार आ खेत-निकासक अलग-अलग देय चर्चामे आबैत अछि। पाँचम, असुरक्षित मुँह खोलबाक उत्साह रोकि बाँसक घेराबन्दी आ प्रारम्भिक पहुँच-व्यवस्था तय होइत अछि। छठम, अदिति पुरान प्रविष्टिक बगलमे तिथि सहित पुनर्जाँचक नवा निरीक्षण-टिप्पणी जोड़ैत छथि। एहि अन्तिम काजक बाद बाहा एखन बन्दे अछि; केवल जाँचक औपचारिक दुआर खुलल अछि।

एतए दू नकारात्मक तथ्य घटना-पञ्जीक केन्द्रमे रखबाक चाही : नव भराइ नहि हटाओल गेल, आ पानि ओहि दिन नहि घटल। काज रोकब स्वयं शून्य परिणाम नहि, किएक तँ गोदामक नींव, माटि खसबाक सम्भावना आ नीचाँक घरमे पानि जएबाक जोखिम एखन मापल नहि गेल अछि। ‘काज शुरू नहि भेल’ आ ‘काजक पहिल सुरक्षित शर्त निश्चित भेल’ एक समान वाक्य नहि। तारा–अदितिक हस्तक्षेप असुरक्षित खुदाइ टारैत अछि, मजदूरीक अलग पर्ची बनबैत अछि आ सार्वजनिक निरीक्षणमे निशान दर्ज करबैत अछि। मुदा भुगतान, स्वामित्व-विवाद, जलनिकासक संरचना आ उर्मिलाक बकाया सभ अपूर्ण रहैत अछि। एहि अपूर्णताकेँ आख्यानक प्रभावपूर्ण समाप्ति मानब उचित, नहि कि समग्र उपलब्धिक अतिशयोक्ति।

काल-विन्यास, दृष्टिकेन्द्रण आ श्रमक देखाइ

कथाक मुख्य वर्तमान एकटा बरसाती दिनक भोरसँ साँझ धरि पसरल अछि। ‘पिछला महीना’क शिकायत, पुरान उराहि-दिनक अधूरा मजदूरी-हिसाब, श्यामक स्मृति आ अदितिक पूर्वप्रतिवेदन एहि वर्तमानमे छोट-छोट पूर्वसूचना रूपेँ समाहित छथि। कथावाचक तारा आ अदितिक परीक्षणक लग बेसी रहैत छथि; बीच-बीचमे उर्मिलाक गट्ठर, हीराक बाँस, ललितक रसीद आ पाछाँक टोलाक स्त्रीसभक चोटिल चूल्हा-पास समय लऽ दृश्य बदलैत अछि। ई दृश्य-क्रम मूल जलसमस्याकेँ प्रशासनक एकटा फाइलसँ बहु-परिश्रमी सार्वजनिक काल-स्थानमे बदलब अछि।

एकर विशिष्ट शिल्प उर्मिलाक प्रयोगात्मक प्रदर्शनमे अछि। प्रारम्भिक पयरबाटक चित्र खींचल अछि, मुदा चौड़ाइ नहि; उर्मिला कपड़ाक गट्ठर दू हाथे उठा कऽ देखबैत छथि जे नापल बाट वास्तविक कार्य-देह लेल पर्याप्त नहि। एतए परम्परागत ‘प्रत्यक्ष’ केवल अभियन्ताक दृश्य नहि : उपयोगकर्ता अपन शरीर आ वस्तुक संग रेखाक

पर्याप्तता जाँचैत छथि। हीरा पानिक माथपर घुमैत पातसँ धारक अनुमान असिद्ध बतबैत छथि, मुदा बाँसक गहिराइ मापब अपन अनुभवी तकनीक रूपेँ प्रस्तुत करैत छथि। ई श्रमजीवी ज्ञानकेँ अन्धविश्वास वा अमोघ सत्यक दुन्नू छोरसँ बचेनिहार दृश्य अछि।

जलनिकासक अनेक अधिकार : आख्यानशास्त्र आ सामाजिक इतिहास

बाहा सार्वजनिक निकासक साधन अछि की सिंचाइ लेल सेहो प्रयुक्त; मत्स्यपट्टाक सीमा धोनाइपर लागू होइत अछि की नहि; उराहिमे उठाओल कादोक ढेरी ककर दुआरपर राखल जा सकैत अछि—ई प्रश्न परस्पर सम्बन्धित होइतहुँ अलग-अलग ‘विषय’ आ ‘अधिकार’ रखैत अछि। दलील ‘मत्स्यपट्टा अछि, तेँ घाटपर सभ अधिकार ओकरा हाथ’ एक अवैध विस्तार होयत। एहि अर्थमे आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ अनुप्रेरित विवेचनमे पक्ष-निर्धारण महत्त्वपूर्ण अछि : एक प्रत्यक्ष उपयोगक प्रमाणसँ असम्बद्ध अधिकारक निष्कर्ष नहि निकालब। तारा एके रेखामे सार्वजनिक निकास आ निजी सिंचाइक अधिकार नहि निबटबैत छथि; अदिति बिन माप जलनिकास खोलबाक कथन नहि दैत छथि।

समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ श्रमक अदृश्य आयाम ई अध्यायक पैघ उपलब्धि अछि। आधा कएल पोखरि-उराहि ‘सामूहिक पुण्य’ कहि सकब, मुदा रुखसानाक भोजनक रसीद दान बनि बिलायल भेल, ललितक माप-औजार मुफ्त मानल गेल, पाछाँक टोलाक स्त्रीसभक दुआरपर कादो छोड़ा देल गेल—तखन सामूहिकता असमान खर्च पर टिकैत अछि। उपन्यास ई सभ गिनब शुरू करैत अछि। अतिक्रमणक शंका उठबैत काल ओहि सम्भावनासँ प्रभावित परिवारक असमर्थ सहमतिकेँ सेहो दस्तावेजीय महत्त्व देबाक आग्रह अछि। परञ्च, एतए आदिवासी, वंचित, स्त्री वा श्रमिकक प्रकट होएबाक मात्र संख्या हुनका कथाभीतर समुचित स्वर देबाक प्रमाण नहि; अनेक पात्र एक-दू वाक्यक पश्चात् ओझल भऽ जाइत छथि। ई चयन सम्पूर्ण ग्रन्थमे जाँचबाक प्रश्न अछि।

साहित्यिक उपलब्धि, काव्यशास्त्रीय सङ्केत आ प्रतिकूल प्रमाण

अध्यायक शीर्षक ‘बन्द बाहा’ प्रथमतः जलनिकासक भौतिक बन्दी बतबैत अछि, अन्तमे जाँचक संस्थागत बन्दी टूटबाक अपेक्षा जगा दैत अछि। नैराक उत्तर—बाहा नहि, जाँचबाक बाट खुलल—अध्यायक केन्द्रित अर्थ-परिवर्तन अछि। एहि स्तरपर वक्रोक्तिक सम्भावना प्रत्यक्ष अछि : ‘खुलब’ क्रिया विषय बदलिते अर्थ बदलैत अछि। पानिक वास्तविक ठहराव आ कागदक अग्रगति एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि, परस्पर असमान गति छथि। ई कथात्मक औचित्य मुख्य कथा—सरिताक मृत्यु-घोषणा—सँ जुड़ैत अछि, कारण ओहिमे सेहो प्राप्त आवेदन आ सुधरल जीवन-अभिलेख अलग छथि।

सीमा ई जे प्रत्येक पात्र लगभग एकरे पद्धतिसँ ‘जे देखल नहि से प्रमाण नहि’क सावधानी कहैत अछि। वस्तुक निरीक्षण, संशोधनक तिथि, अपूर्ण अनुमति आ प्राप्ति-पर्चीक आवर्तन तथ्यगत अनुशासन गढ़ैत अछि; मुदा उत्तर लगातार व्याख्यात्मक बनला सँ दृश्यात्मक तनाव कतहु-कतहु घटैत अछि। गोदामक कर्मचारी बिना प्रमाण दोषी नहि बनैत—ई नैतिक बल अछि—मुदा संस्था-पक्षक प्रतिरोध, लाभ-हितक छिपल संघर्ष आ वास्तविक निर्णायक राजनीतिक लागत एखन पूर्ण नाटकीय रूप नहि पाबि सकल अछि। अध्यायक सफलताक दावा ताहि लेल अन्तिम समाधानमे नहि, जाँचक विषय स्पष्ट करब आ जोखिमक देहगत लागत सोझाँ अनबामे राखब चाही।

अध्याय १० — नामक छाँह

पुरनाधार : स्थानक नाम आ स्थानक इतिहासक अस्थिर सम्बन्ध

पूर्व अध्यायक पीयर घेराबन्दी भीजल अवस्थामे एतए फेर अबैत अछि। ई छोट पुनरावर्तन कालिक निरन्तरता स्थापित करैत अछि : काल्हि लिखल ‘पुनर्जाँच’क बाद आइ यथार्थ नाप करबाक पहिल शर्त तय होइत अछि। गोदामक भीतरी परिसरक लिखित अनुमति एखन नहि, तँ पात्रसभ घेराक बाहरे रहैत छथि। पुरनाधार नाम कखनो नदीक पुरान बिछान, कखनो बेकार धरती, कखनो बरखामे भरि उठएवला निम्न भागक अर्थ दैत आएल अछि। एक शब्दक बचल रहब कोनो एक सतत भूगोलक प्रमाण नहि; उपन्यास एहि साधारण-से तथ्यकेँ सम्पूर्ण अध्यायक बौद्धिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

सुशीला महतो बीहन आ माटिक संग एहि वादमे प्रवेश करैत छथि। हुनकर प्रश्न नहर खोलबाक ‘पक्ष’ अथवा ‘विरोध’क सामान्य मुद्रा नहि; एक स्थिति मे बीहन डूबत, दोसरमे क्यारी सूखत। खेतक परिवारक हाथे माटि छुअब आ विद्यालय-पढ़ल बेटीक लिखित वर्षवार हिसाब दूनू मिलि एक पुनरावलोकनीय ज्ञान बनैत अछि। ई प्रत्यक्ष तथा लिपिबद्ध समयक द्वन्द्व नहि, सुधारयोग्य साझेदारी अछि। रतन वनपरक बाबूक हाथक नक्शा दोसरा दिशासँ अतीत खोलैत अछि; रतन स्वयं ओहि नक्शाकेँ अधिकारक निर्णायक प्रति घोषित नहि करैत छथि। हुनकर पूर्वजक नाम समाजक स्मृतिमे अछि, किन्तु नक्शाक मूल अनुपस्थित अछि।

घटनात्मक क्रम : पुरान पटरी, निजी विस्मय आ अपूर्ण जाँच

अध्यायक वस्तुगत मोड़ स्पष्ट छथि : घेराबन्दीक निरीक्षणक पुनरारम्भ; गोदाम-भीतर प्रवेशक अनुमति नहि भेटल; सुशीलाक कृषि-चिन्ता आ रतनक असत्यापित पुरान नक्शाक प्रस्तुति; कूड़ाक ढेरीसँ ‘पुरनाधार’ लिखल पटरीक प्राप्ति; पटरी हटेलाक बाद दीवालपर एक क्षण पुरान छाँह बचल जकाँ नैराक निजी अनुभव; असमान तल पर बाँस धँसबाक कारण नाप सचेत रूपसँ सशर्त लिखब; सुशीलाक बेटी द्वारा बनाओल खेतक नक्शाक नकल; रतन–सुशीलाक हितक असहमति; अन्ततः तीन प्रपत्रक अलग संचयन आ नैराक निजी कापीमे अनुभवक सीमित लेखन। गोदामक स्वीकृति-नक्शा माँगल गेल अछि, प्राप्त नहि; पटरीक मूल स्थान सेहो अज्ञात।

नैराक छाँह-अनुभव कथामे महत्त्वपूर्ण भंगिमा लऽ अबैत अछि। गोदामक कर्मचारी काठक पटरी स्थानान्तरित करैत अछि; नैरा किछु क्षण पुरान दीवालपर ओकर छाँह बचल जकाँ देखैत छथि। कथावाचक एहन अद्भुत घटना बाहरी सत्य रूपेँ प्रमाणित नहि करैत। बदलैत घाम, उड़ैत धूलि, आँखिक थकान अथवा समयक छोट विलम्ब—सभ सम्भावना नैराक चेतनाभीतर खुलल रहैत अछि। दोसर साक्षी अज्ञात, प्रयोग दोहराओल नहि गेल, आ नैरा निजी कापीमे स्पष्ट लिखैत छथि जे ई न्यायिक तथ्य-जाँचक प्रमाण नहि। तेँ एकरा निश्चित जादुई नियम अथवा भ्रमक अन्तिम रोग-निदान दूनूमे बदलनाइ मूल पाठक विरुद्ध हएत।

कथा-आख्यानशास्त्रीय विचलन : बाह्य प्रकाश आ भीतरी समय

नवम अध्यायक प्रत्यक्ष खतरा स्पष्ट भौतिक छल; दसमा मे क्षणिक काल-विलम्बक अनुभूति कथाक यथार्थवादकेँ अस्थिर बनबैत अछि। एतए मुख्य अंतर ‘अद्भुत’ आ ‘असत्य’क बीच नहि, बल्कि कथावाचक द्वारा अनुमोदित

बाह्य घटना आ पात्रक निजी अनुभवक बीच अछि। तृतीयपुरुष कथन नैराक विस्मय, संकोच आ आत्म-संशय लग आबि जाइत अछि, मुदा हुनकर अनुभवकेँ सर्वसाधारणक अनुभव नहि बनबैत। ई सीमित अन्तर्दृष्टिकेन्द्रणक उपयोग अछि। छाँह पुरान नामक समयसँ रूपक-संबन्ध जगबैत अछि : पटरी स्थान बदलि गेल, नामक छाप कने देर फेर पुरान ठाम ठाढ़ रहि गेल जकाँ। मुदा रूपकक प्रभाव भौतिक प्रमाणक जगह नहि लैत।

मायासदृश भाव उत्पन्न भेला परो अध्याय ‘विश्वसनीय’ बनबाक लेल अनुभवकेँ पात्रक निजी पन्नामे बन्द नहि करैत; ओ सार्वजनिक आ निजी स्मृतिक दुई भिन्न पठन-पद्धति बनबैत अछि। नैरा तारा सँ केवल पलस्तरक फोटो लेबाक कहैत छथि, निजी छाँहक कथन नहि। घरमे सरिताकेँ सेहो ओ बात नहि कहैत छथि। ई मौन भयजनित गुप्त षड्यन्त्र नहि : प्रमाणक भिन्न दर्जा आ अनिश्चित अनुभवक सामाजिक मूल्यांकनक आशंका अछि। पाठक नैरासँ बेसी नहि जानैत जे दीवालक छाँह सचमुच विलम्बित छल की नहि। एहिसँ ज्ञानक सीमा कथानकक अनुभूतिक रूप लेत अछि; केवल पात्रक उपदेश नहि बनि रहैत।

रतन-सुशीला विवाद : पुरनका इतिहासक नामपर वर्तमान फसल नहि मेटब

रतनक पुरान नक्शा आ सुशीलाक मौसमी खेतीक प्रमाण परस्पर सीधा निरस्त करब सम्भव नहि। रतन हुनकर मातामहीक पयरबाटक इतिहास देखय चाहैत छथि; सुशीला वर्तमान बीहनक जोखिम देखबैत छथि। एतए स्थानक एकहि पट्टीक अलग-अलग कालमे अलग उपयोग रहि सकैत अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ संवाद करबाक उपयुक्त प्रश्न ई अछि जे ‘पूर्वकालमे जलमार्ग’ कथनक विषय-वस्तु आ ‘वर्तमानमे फसलक अधिकार’ कथनक विषय-वस्तु एक नहि। समय, क्षेत्र आ प्रमाणक अभिप्राय चिन्हने बिना ‘जँ नदी छल तँ खेत नहि’ जेकाँ एकरेखीय अनुमानक व्याप्ति सिद्ध नहि होइत। सुशीलाक वाक्य—पुरान बातक कारण आइ हमर धान नहि मेटाउ—ई दार्शनिक भेदकेँ देहगत नोक दैत अछि।

रानी हलालखोरक टोली बिना पूरा सुरक्षासामग्री काँच आ काँटदार तार हटबैत अछि; गोमती बेलदारक दिनक रसीदमे खेप-संख्या अस्पष्ट अछि; सूरज गंगोताक आवेदन पुरनका कटान आ जीवित ऋणक भिन्न समय देखबैत अछि। ई उल्लेख उपन्यासक समानान्तर इतिहासक व्यापक आकांक्षा सूचित करैत अछि, मुदा एहि तीनू व्यक्तिक अन्तर्मन एतए विस्तृत कथन-अवकाश नहि पबैत। निरन्तर ‘नव नाम + एक आवेदन’क युक्ति सामाजिक उपस्थिति सुनिश्चित करबाक संग चरित्र-विकासक क्षिप्रता घटा सकैत अछि। अध्यायक आलोचना मे हुनकर उपस्थिति नकारल नहि जाए, मुदा क्षणिक विवरणकेँ विकसित स्वायत्त कथा नहि घोषित कएल जाए।

नामक प्रतीक, भाषा आ सीमाक परीक्षण

काठक पटरीपर लिखल ‘पुरनाधार’ स्मृतिक पदार्थगत अवशेष अछि; ऊ सीमा-स्तम्भ नहि, आ सूचनापट रहबाक सम्भावना सेहो अछि। नैरा पटरी भेटबाक ठाम, पुरान लेखन आ अज्ञात स्रोत अलग लिखैत छथि। नामक छाँहक दुहरे अर्थ—पुरान भूगोलक नाम एवं असाधारण छायिक अनुभव—शीर्षककेँ अध्यायक एकीकृत रूपक बनबैत अछि। एहि कलात्मक प्रभावक साथेँ घरेलू रातिक अचार, रोटी आ संकेतक फोनक चर्चा स्मृतिमे दुनियादारीक हलुक आवाज जोड़ैत अछि। पाठकीय भावानुभव केवल रहस्य अथवा करुणामे सीमित नहि रहैत।

एहि अध्यायक महत्त्वपूर्ण लाभ ई जे पूर्ववर्ती प्रमाण-कथाकेँ एक सूक्ष्म अविश्वसनीय अनुभवसँ रचनात्मक चुनौती भेटैत अछि। तइयो ई निजी घटना लगभग पूरा अलग तहमे रखल गेल अछि, तकर तात्कालिक सामाजिक परिणाम नगण्य अछि। एकरा जानिबूझि बनल अनिर्णय मानल जा सकैत अछि; मुदा दीर्घ उपन्यासमे एहन प्रसंग जेना फेर लौटैत अछि, ओहिपर निर्भर करैत अछि जे ई केन्द्रीय कथात्मक संवेदनशीलता बनत की केवल अद्भुत सजावट। एहि एक अध्यायक आधारपर अन्तिम फैसला अनुचित होयत।

अध्याय ११ — अपन फोन अपन शर्त

संकेतक चित्र : स्वामित्व, सहमति आ अर्थ-प्रयोगक दूरी

अध्यायक आरम्भ संकेतक फोनक पर्दापर लाल रेखा, दू आदमीक पीठ आ रसीदक अस्पष्ट कोना एकठाम देखबैत अछि। चित्र पैघ करिते रंग स्पष्ट होइत अछि, मुदा रसीदक लिखावट धुँधला जाइत अछि। ई सूक्ष्म डिजिटल विवरण कथाक मूल प्रमाण-प्रश्नकेँ दृश्य रूप देत अछि : दृश्य पैघ भेलासँ सभ तथ्य स्पष्ट नहि होइत। संकेत स्वयं फोटो खींचने अछि, मुदा जे लोकक पीठ अथवा कागद अनायास ओहि फ्रेममे आबि गेल, हुनकर अधिकार तस्वीरक निर्माताक अधिकारमे पूर्ण रूपसँ समा नहि जाइत। नैरा ‘चेहरा नहि देखाइत, तेँ अनुमति अनावश्यक’ तर्क अस्वीकार करैत छथि, मुदा फोन अपन हाथमे सेहो नहि लैत छथि। संकेत मूल अपन लग राखब, आवश्यक स्थलचिह्न मात्र देखाएब आ सार्वजनिक समूहमे नहि पठएब तय करैत अछि।

तारा जखन तस्वीरक उपयोगक उद्देश्य—स्थलक चिह्न जाँचब, सार्वजनिक प्रदर्शन नहि—स्पष्ट करैत छथि, तखन संकेत ओकरा देखाबैत अछि। समय उपलब्ध अछि, दूरीक स्मृति नहि; तारा दूरी कल्पनासँ नहि भरैत छथि। गोदामक कर्मी लाल निशानक अनेक सम्भावित उपयोग बतबैत अछि, मुदा ओ विशेष निशान के लगा देलक से नहि जनैत। कर्मीक कपड़ाक रंग फोटोसँ मिलितहुँ ओही व्यक्ति फोटोमे अछि, एहन पहिचान घोषित नहि कएल जाइत। रसीदक कोना ककरो देय अथवा कमाइक कागद भऽ सकैत अछि, एहिसँ संकेतक प्रारम्भिक जिज्ञासा सहमतिक नैतिक प्रश्नमे बदलैत अछि।

घटना-पञ्जी : एकटा फोटोक परिभाषा बदलबाक कथा

प्रथम निर्णायक स्थिति : संकेत तस्वीर राखबाक आ उपयोगक लिखित सीमा चाहबाक निर्णय करैत अछि। दोसर : तारा फोटो देखिते स्रोत-समय आ मूल नाप जाँचैत छथि; रंगक निशान एखन अतिक्रमण वा जल-बाधाक प्रमाण नहि। तेसर : पछियारी चौरक बैठकमे सुशीला मौसमी जलफैलाव आ खेतीक जोखिम देखबैत छथि। चारिम : घास ढोएनिहार कन्यासभक बरसाती घुमाव, रमेशक तरकारीक बेड़, देवकीक पशुबाट आ माछक मौसमी उपयोग एक नक्शामे अलग चिन्हित होइत अछि। पाँचम : मजदूरी, गीत, भोजन आ सहभागी कार्यक शर्त लिखित होइत अछि; ‘मदद’ कहल स्त्रीक श्रम मजदूरीमे बदलैत अछि। छठम : समूहमे मूल फोटो साझा करबाक दबाव संकेत अस्वीकार करैत अछि, तारा अपन निरमानवीय स्थलरेखाचित्र सार्वजनिक करैत छथि। सातम : मूल फोटो संकेतक फोनमे सुरक्षित रहब आ सार्वजनिक प्रति नहि देब लिखित सहमतिमे परिणत होइत अछि; चौरक प्रथम मौसमी नक्शा अगिला परीक्षण लेल तैयार होइत अछि।

ई घटना-पञ्जीमे ‘सहमति’ एक बेरक सार्वभौमिक अनुमति नहि; विशेष व्यक्ति, विशेष सामग्री, उद्देश्य, प्रति आ प्रसारक सीमा द्वारा चिन्हित अधिकार अछि। मूल फोटो संकेतक फोनमे रहैत अछि; स्थल-नक्शा तारा सार्वजनिक करैत छथि। बाहाक अवरोधक प्रश्न एखन खुलल अछि। वर्णनक उपसंहारमे संकेत फोनक चित्रक नीचे ‘चिन्हक प्रयोजन अज्ञात’ आ दूसर व्यक्तिक सहमति शेष लिखैत अछि। एहि क्रियाक महत्त्व तकनीकक सदुपयोगक एक सरल नसीहतसँ बेसी अछि : बाल-पात्र अपन वस्तुक उपयोगक नियम स्वयं तय करबाक सामर्थ्य प्राप्त करैत अछि।

मौसमी चौर : एक भूखण्डक भीतर समयक अनेक अधिकार

पछियारी चौरक शिल्पगत विशेषता अछि जे ‘खाली ठाम’ कहल जमीन अलग-अलग ऋतुमे अलग उपयोग रखैत अछि। सुखल मौसमक पशुबाट, वर्षाक चाँचर, मौसमी माछक उपयोग, धानक बेरा, तरकारीक बेड़ आ घास ढोएनिहारक लम्बा घुमाव एक ‘स्थिर’ मानचित्रसँ समाहित नहि होइत। सुशीलाक पहिल आग्रह रेखाक रंगसँ पहिने रेखाक नाम लिखबाक अछि। शब्दक निश्चित अर्थ आ मौसमी उद्देश्य बिना रंग दृश्य-सुविधा मात्र बनि जाइत अछि, ज्ञान नहि। नपाइक संग पयरक समय दर्ज होयब, विशेषतः घास लऽ चलनिहार कन्याकेँ देरि होयबाक सन्दर्भ, स्थलकेँ सामाजिक काल-स्थान बनबैत अछि।

नगरक मुद्रित नक्शामे चौरक बीचक हिस्सा सफेद अछि, जखन लोकक रेखामे अनेक जीविका अछि। लेखक खाली रंगकेँ अधिकारक अभावक समतुल्य नहि बनबैत, मुदा लोकक नक्शाकेँ अभियान्त्रिक मापनक पूरक, विकल्प नहि मानैत। एहि दोहरी मर्यादामे उपन्यासक ज्ञान-राजनीति रूप लेत अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ कथनक ‘अवच्छेद’—स्थानक खण्ड, ऋतु, उपयोगक प्रकार, कर्ताक अधिकार आ स्रोत—स्पष्ट नहि रहला पर भ्रम उत्पन्न होएत। यद्यपि उपन्यास औपचारिक शास्त्रीय वाद नहि रचैत, एक नक्शामे सफेद देखल स्थानक भीतर लोक-जीवनक समय-सारिणी स्थापित करब प्रमाण-विवेचनक उपयोगी कथात्मक रूप अछि।

सामूहिक श्रमक अर्थ : उपस्थितिसँ निर्णय-अधिकार धरि

बीहन–पानि साझेदारीक बैठकमे काज जाति अथवा घरक हिसाबसँ बाँटल नहि जाइत; लोक अपन देहगत क्षमता, इच्छा आ कौशलक अनुसार काम चुनैत छथि। नाम लिखनिहार युवक द्वारा एक स्त्रीक दिनभरक काम ‘मदद’ बनाओल गेल; सुशीलाक आपत्तिपर ओकर घण्टा आ मजदूरी दर्ज होइत अछि। ई छोट संशोधनक आधार पर लोक-सम्मानक प्रश्न उभरैत अछि : जे काज फल देत, ओ श्रमक वस्तुगत मूल्यक संग लिखल जाए। गीत गेनिहारक पारिश्रमिक तथा गाबबाक अनुमति सेहो मजदूरीक समान नैतिक सावधानी माँगैत अछि, यद्यपि गीतक कलात्मक स्वायत्तता बजार-दरमे पूर्णतः समा नहि जाइत।

रेणु गोंढ़ी, आशा भूमिज, बिनु दराई, हीरा मेचे, तुलसी दोनवार, किरण आ नदीक अलग नामसम्बन्धी पर्चीसभ उपन्यासक सामाजिक विस्तारक सङ्केत छथि। एहिमे लेखक किछु अस्थायी सामग्रीकेँ ‘सभ एके समस्या’ कहि भ्रामक ढंगसँ नहि जोड़ैत। दू भाषाक पर्चीक अनुवाद एखन अप्रमाणित रहैत अछि; बूढ़ी गंडक आ अधवाराक दस्तावेजी नाम तिलवाहक शाखा सिद्ध नहि करैत। ई भाषिक-भौगोलिक सावधानी महत्त्वपूर्ण अछि। तइयो बहुत नाम एकहि बैठकमे शीघ्र प्रवेश करैत छथि; पाठक हुनका सभक निजी संघर्षक सूक्ष्मता पकड़बाक पहिने अगिला

कागदपर पहुँचि सकैत अछि। सामाजिक समावेश आ चरित्रगत स्मरणीयता बीचक तनाव एहि संरचनाक वास्तविक सीमा अछि।

कथनकाल, बाल-दृष्टि आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

भोरमे फोटो पोछबासँ राति फेर ओही फोटोकेँ निजी टिप्पणीसहित बन्द करबा धरि कथन एक दिनक परिधिमे अछि। प्रारम्भ आ अन्त एकहि वस्तुपर लौटैत अछि, मुदा ओकर नैतिक दर्जा बदलि जाइत अछि। पहिने लाल चिह्न कौतूहल छल; अन्तमे प्रयोजन अज्ञात मानि लिखल विशेष दृश्य-सामग्री अछि। चौरक दृश्य ओहि घरेलू–डिजिटल सूत्रकेँ व्यापक समाजमे खोलैत अछि। संकेतक बाल-पात्रत्व एतए नैतिक अपरिपक्वता नहि, विवाद करबाक आ शर्त बनएबाक शिक्षा रूपमे उभरैत अछि। नैरा ओकरा निर्देश दैत छथि, मुदा फोन छीनि नहि लैत छथि; सार्वजनिक सभामे ओ संकेतक बदला उत्तर सेहो नहि दैत छथि। एहि संयममे पात्र-विकासक वास्तविक नाटकीय बदलाव अछि।

कमजोरी ई जे अनेको लोक असाधारण तीव्रतासँ विचारपूर्वक सहमत भऽ जाइत छथि। सार्वजनिक छवि पाबएबाक दबाव जरूर देखाइत अछि, परन्तु मूल फोटो जबरन फैलाबएबाक धमकी, राजनीतिक दुष्प्रयोग अथवा श्रम-मान्यता सम्बन्धी दीर्घ विवाद एखन पर्याप्त रूपेँ विकसित नहि भेल। लेखकक उद्देश्य विशिष्ट सहमतिक आदर्श दिखाएब हो, तैयो कथा-जगतक प्रतिरोधक गहनता सीमित भऽ सकैत अछि। भाषामे ‘नहि जनैत छी’क प्रामाणिक सौन्दर्य अछि, मुदा ओकर लगातार पुनरावर्तन अगिला अध्यायसभमे कलात्मक भिन्नता माँगत।

अध्याय १२ — घाटक पाछाँ शहर

रमणीक जलकर-पट्टा : नामसँ आगाँ अधिकारक पूरा वाक्य

आरम्भमे रमणी बिन्द रातिक ओससँ भीजल जाल पसारैत छथि; घाटक साँकर सीढ़ी पर माछक टोकरी रखबाक मनाही अछि, मुदा मनाही लागू करनिहारक नाम स्पष्ट नहि। हुनकर जलकर-पट्टाक नकलमे पहिल पन्नापर पुरुषक नाम, दोसर पन्ना अधूरा अछि। मूल संकट माछक संख्या नहि : पट्टाक अवधि, जल-सीमा, प्रवेश, देय, ठेकेदारक हिस्सा आ स्त्रीक नामक सम्पूर्ण शर्त कतय अछि? नावक बाट आ माछक सीमा भिन्न होएबाक हीराक टिप्पणी एहि अधिकार-बहुलताकेँ पहिल दृश्यहि स्थापित करैत अछि। कागदक आधा पन्ना एतए ‘किछु नहि भेटल’क सहज रूपक नहि, कानूनी उपयोगक अपूर्ण दस्तावेज अछि।

पछिला चारि अध्यायक निशान-संग्रह एहि अध्यायमे खुला लेखापाठ बनि जाइत अछि। नगरक मुद्रित नक्शा आ लोकक बनाओल नक्शा एकहि अनुपातक नहि; तारा पहिने निर्माण-वर्ष आ मापन-अनुपात लिखैत छथि। गोदामक बाहाक रेखा पोखरिक सीमा, निकासक सुविधा वा राजस्व भूखण्ड—ककरा सूचित करैत अछि, ई भेद अदितिसँ स्पष्ट कएल जाइत अछि। नगर सम्पदा शाखाक अभिलेख आ राजस्व कार्यालयक मूल प्रविष्टि अलग-अलग मँगएबाक आवश्यकता पक्का होइत अछि। ई मामिला ‘सफेद नक्शामे लोकक बाट अछि, तेँ कब्जा सिद्ध’क एकपक्षीय निष्कर्षसँ बाँचैत अछि।

घटना-पञ्जी : आवेदनक प्राप्ति धरि, समाधान नहि

पहिल घटना रमणीक अपूर्ण पट्टापर आपत्ति, दोसर सार्वजनिक आ सामुदायिक नक्शाक असंगत उपयोगबोधक मिलान, तेसर सूरजक कटान-ग्रस्त खेतक ऋणप्रमाणक पृथक प्रविष्टि, चारिम सुगनीक सर्वेक्षणमे श्रमिक सहभागी रहबाक आ ममताक सुरक्षा-सामग्रीक लिखित माँग, पाँचम खुला लेखापाठमे जलपंजी पढ़ब आ सत्ताइस व्यक्तिक निजी नामपंजी नहि पढ़बाक निर्णय, छठम सम्पदा–राजस्वक दू भिन्न फाइल मँगएबाक औपचारिक प्राप्ति, सातम रमणीक सम्पूर्ण पट्टा-परिशिष्टक माँग आ नव रोक/शुल्क लेल कारण-सहित आदेश देखयबाक शर्त, आठम श्रमिक टोलीक खुला बैठकक तिथि आ ममताक सुरक्षा-पर्ची पहिल एजेण्डा बनब, नवम लोकक प्रमाणित पयरबाट बिना सुनवाई बन्द नहि करबाक आ बिन माप/जोखिमजाँच नवा निकासी-काज नहि करबाक अन्तरिम लिखित व्यवस्था अछि। एहि सभक बाद न पट्टा हाथमे भेटल, न बकाया ऋणक निर्णय भेल, न जमिनक स्वामित्व सिद्ध भेल।

एहि क्रमकेँ ‘सभा सफल भेल’ अथवा ‘नगर न्याय मिलि गेल’ कहि समाप्त कएल नहि जा सकैत। सत्यापित उपलब्धि प्राप्ति-अङ्क, जाँचक पृथक विषय, प्रयोग-प्रतिबन्धक अस्थायी शर्त आ अगिला सुनवाईक ठोस कारण अछि। रमणीकेँ सम्पूर्ण पट्टा देबाक तिथि अगिला दिन बताओल गेल, पर अध्यायक भीतर ओकर प्राप्ति नहि देखाओल गेल अछि। तुलसी लुप्त खेतक ऋणक कागद घरे लऽ जाइत छथि; ‘दावा शेष’ लिखल जाइत अछि, ‘भूमि खाली’ नहि। सुगनीक टोली चुनबाक बैठक निश्चित अछि, टोली एखन गठन नहि भेल। एतए प्रक्रिया केवल कथानक खींचबाक उपाय नहि, अधिकारक अधूरे उपलब्धि-पायदानसभकेँ रेखांकित करबाक उपाय अछि।

सार्वजनिकता आ निजता : दू पंजी, दू नैतिक नियम

अध्यायक सर्वाधिक तीक्ष्ण प्रसंगमे नैरा जलपंजीक सार्वजनिक खर्च, पोखरि आ स्थलनाम पढ़ैत छथि, मुदा निजी पत्ता आ उपचारक विवरण छोड़ैत छथि। एहि समय एक युवक सरिताक सत्ताइस नामक सूची सेहो पढ़बाक आग्रह करैत अछि। नैरा ओकरा अस्वीकार करैत छथि : सार्वजनिक जल-लेखा जाँचबाक अधिकार आ संवेदनशील जीवित व्यक्तिक नाम खुलबायबाक अधिकार समान नहि। एके मंच, एके मेज अथवा ‘पारदर्शिता’ शब्द निजी सुरक्षाकेँ निलम्बित नहि करैत। दोसर अध्यायक गोपनीयता-प्रश्न एतए सार्वजनिक मञ्चक वास्तविक संघर्ष बनि फिर अबैत अछि। एहि पुनरागमनमे कथात्मक औचित्य अछि, कारण पहिले जे घरभितर निर्णय छल, आब जनसभाक प्रत्यक्ष दबावमे ओकर परीक्षा होइत अछि।

आख्यानशास्त्र सम्बन्धी उपयुक्त विवेचन एतए ‘समान कागद’ नामक असिद्ध सामान्यीकरणक विरोध अछि : जलपंजी सार्वजनिक व्ययक लेखा, नामपंजी निजी व्यक्तिक सुरक्षासंवेदी विवरण। दुनू लिखित होएबाक कारण दुनू पर एक प्रकाशित करबाक नियम लागू नहि होइत। कथनक विषय, प्रयोजन, प्रामाणिकता, अधिकार-पात्र आ अभिलेख-स्रोत अलग चिन्हित होएबाक चाही। विदेह समानान्तर इतिहासक विमर्शमे ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण : वंचितक इतिहासकेँ अभिलेखमे आनि राखबाक अर्थ ओकर निजतापर कब्जा कऽ लेब नहि थिक। समानान्तर इतिहासक संस्थानकेँ सेहो स्रोत-व्यक्तिक आत्मनिर्णयक समक्ष जिम्मेवार रहबाक पड़ैत अछि।

ऋतु, नदी आ शहर : सार्वजनिक काल-स्थानक निर्माण

घाट, पोखरि, चौर, नगर पुस्तकालयक आँगन, ओसारा आ गोदाम-पाछाँवला भूखण्ड एक नवा शहरी विस्तार बनबैत अछि। शहर एतए केवल पैघ मकानक भूगोल नहि; माप-अनुपात, ऋण, पट्टा, भाड़ा, सुरक्षा-सामग्री, पुस्तकालय, गीतक पारिश्रमिक आ बच्चाक खेलक जोड़ अछि। ‘खाली भूमि’क सफेद रंगकेँ लोकक तीन पीढ़ीक पदचिह्न चुनौती दैत अछि, मुदा नवा रेखाक दावाक तिथियो अलग जाँचल जाएत। सूरजक पुरान खेतक सीमा नदीक आजुक कटानरेखाक स्थान नहि लेत; ऋण चुकएबाक समय नदीक भूगोलक स्वाभाविक समयसँ भिन्न अछि। एहि काल-असमानताक कारण एके सम्पत्तिक ‘पहिने छल’, ‘आइ नहि’ आ ‘कागदपर एखन बकाया’ तीन अलग सत्य-स्थिति बनैत अछि।

ममता हरिक सुरक्षा-पर्ची कथाक नैतिक केन्द्रकेँ भौतिक देहक लग आनैत अछि। खाली दस्ताना-जूताक खाना ‘काम भेल’क सरकारी प्रविष्टिक वास्तविक लागत देखबैत अछि। सुगनी सर्वेक्षणमे उपस्थित रहबाक चाहना मात्र नहि, दल चुनबाक खुला बैठकक निर्णयाधिकार माँगैत छथि। रमणी माछक अधिकारक पूरा परिशिष्ट माँगैत छथि। एहि त्रयीमे स्त्री-श्रमक प्रतिनिधित्व तीन स्तर पर उभरैत अछि : शारीरिक जोखिम, सामूहिक नेतृत्व आ संसाधन-संबन्धी विधिसम्मत प्रवेश। एकरा ‘सभ स्त्री सशक्त भऽ गेलीह’ कहि साधारणीकरण करब घातक हएत—प्रत्येकक माँगक प्राप्ति-स्तर अलग अछि।

फागुनक नियमित लोकपाठ आ बरखामे आयोजित विशेष बैठकक भेद कथा-समयक विश्वसनीयता बनबैत अछि। करीम डफालीक ढोलक आ बालिकासभक दू पाँति गीत सांस्कृतिक स्मृति जोड़ैत अछि, मुदा कलाकारक श्रमकेँ निःशुल्क उत्सवक सामग्री नहि मानल जाइत। बच्चासभक काठक नावक खेल दस्तावेजीय तर्कक मध्य एक छोट लय-परिवर्तन अछि। नावक जीत–हार पर बाल-प्रतिक्रिया सार्वजनिक सुनवाईक भारी स्वरकेँ हलुक करैत अछि; ओ खेलकेँ जलकर-पट्टाक ‘सीधा रूपक’ करि देब अनावश्यक होयत। ई दृश्य कथाजगतक बच्चाकेँ तत्क्षणक आनन्दक स्वतंत्र काल दैत अछि।

रचनात्मक उपलब्धि आ सम्भावित संरचनात्मक सीमा

अध्यायक अन्तमे रमणीक पास पूरा पट्टा नहि, प्राप्ति-अङ्क अछि; सुगनीक पास औजार नहि, अगिला बैठक अछि; तुलसीक पास खेत नहि, दावाक सुरक्षित प्रविष्टि अछि। एहन नकारात्मक–सकारात्मक संयुक्त अन्त उपन्यासक अधिकार-राजनीतिकेँ भावुक विजयोत्सवसँ बाँचबैत अछि। ‘घाटक पाछाँ शहर’ शीर्षक भूगोल आ संस्था दूनूकेँ उलटैत अछि : घाटक लोक शहरक परिधि पर नहि, शहरक सार्वजनिक कागदक अर्थकेँ पुनःनिर्धारित करनिहार पक्ष रूपेँ उपस्थित छथि। कथाक अन्त ‘नाव’ आ ‘बच्चाक खेल’क संग खुलल भविष्य रखैत अछि।

मुदा एके दिनमे अनेक समुदाय, दस्तावेज, रसीद, आपत्ति, गीत आ निर्णयक सङ्ग्रह पाठकक अनुभवक अनुपातमे सघन अछि। ओ दृश्य कतहु सामाजिक उपन्यासक नाटकीय विस्तार, कतहु नीति-प्रशिक्षणक प्रत्यक्ष अभिलेख बुझाइत अछि। विभिन्न आवाजक भाषिक भिन्नता पर्याप्त गहन अछि की नहि, तकर जाँच पूर्ण उपन्यासक आगाँक अध्यायमे आवश्यक हएत; अनेक पात्र विवाद प्रस्तुत करैत अछि आ तुरन्त सावधान निष्कर्ष

मानि लैत अछि। जँ सभ पात्र सदा समान प्रमाण-सावधानी बोलथि तँ कथित बहुस्वरता तात्त्विक मतभेदक बराबर नहि ठहरत। एहि आलोचनात्मक आशंकाकेँ लेखकक सामाजिक उद्देश्यक कारण दबाओल नहि जा सकैत।

आदि-पर्व / बालकाण्ड : अध्याय ९–१२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय निष्कर्ष

‘मुँह भेटल’सँ ‘दू फाइल माँगल’ धरि

चारू अध्यायक क्रममे उपलब्धिक वास्तविक स्तर बढ़ैत अछि, मुदा समाधानक दावा नहि बढ़ैत। नवम अध्यायमे मुँहथरिक चिन्ह भेटैत अछि आ असुरक्षित खुदाइ टरैत अछि। दसममे नामलिखल पटरी तथा घरेलू–कृषि नक्शा भेटैत अछि, मुदा सीमा तय नहि। एगारहममे सार्वजनिक नक्शाक उपयोगी ऋतु-परिवर्तनक बोध विकसित होइत अछि आ फोटो अपन स्रोतक स्वत्वमे रहैत अछि। बारहममे दू स्वतंत्र सरकारी फाइलक औपचारिक माँग उठैत अछि आ जाँचधरिक सार्वजनिक बाट पर अन्तरिम सुरक्षा-शर्त लिखल जाइत अछि। एहि धुरीमे एकटा स्वतन्त्र कथात्मक निर्माण अछि : प्रश्नक गुणवत्ताक वृद्धि, न कि समाधानक नाटकीय घोषणा।

आदि-पर्वक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे ई क्रम प्राचीन वंशोत्पत्तिक विषयकेँ आधुनिक नगरक अधिकारोत्पत्ति रूपेँ खोलैत अछि। मुदा एहि चारू अध्यायमे अलग सँ प्राचीन जनक, सत्यवती अथवा कुरुवंशक समयमे घटित दृश्य नहि अछि। पूर्वआख्यानक कतिपय प्रविष्टिमे ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ संभावित सङ्केत रूपमे अछि; एतए ओकर प्रत्यक्ष कथात्मक प्रमाण मुख्यतः पूर्व अध्यायक स्मृति आ समग्र रचना-संयोजन अछि, नवम आ एगारहममे स्वतंत्र पौराणिक कालधारा प्रस्तुत नहि। महाकाव्यक शीर्षक आ पर्व-विन्यास आलोचनाक प्रश्न खोलैत अछि, पर प्रत्येक अध्यायमे महाभारतक समरूप घटना घटित भऽ रहल अछि, एहन दावा कएल नहि जाएत।

प्रमाण-विषयक अनुक्रम : चारि वस्तुक चारि सीमा

नवम अध्यायक ईंटक चिन्ह स्थलक निरीक्षणक कारण दैत अछि, गोदामक अपराध सिद्ध नहि करैत। दसम अध्यायक काठक पटरी भूगोलक स्मृतिक एक भौतिक अवशेष अछि, सीमा-स्तम्भ नहि; छाँह निजी अनुभव अछि, दफ्तरक तथ्य नहि। एगारहम अध्यायक डिजिटल तस्वीर दृश्य-स्थानक साक्ष्य बनबाक सम्भावना रखैत अछि, मुदा रंगक प्रयोजन, व्यक्तिक पहिचान आ सार्वजनिक प्रसारक अनुमति अलग-अलग अनिश्चित छथि। बारहम अध्यायक सरकारी प्राप्ति-अङ्क आवेदनक औपचारिक उपस्थिति सिद्ध करैत अछि, माँगल पट्टा-परिशिष्ट अथवा अधिकार-निर्णयक प्राप्ति नहि। वस्तुक प्रकार बदलिते प्रमेय आ प्रमाणक सीमा बदलैत अछि; एहि भेदसँ पाठक अनुमानक अनुशासन सीखैत अछि।

दृष्टिकेन्द्र आ कथनक लयक साझा परीक्षण

नवम अध्याय तारा–अदितिक निरीक्षणक आसपास अनेक श्रमजीवी दृश्य जोड़ैत अछि; दसम नैराक निजी चेतनामे अद्भुत क्षण खोलैत अछि; एगारहम संकेतक उम्र, चित्र आ सहमतिक स्वत्वक बीच अन्तरङ्ग गति पबैत अछि; बारहम सार्वजनिक सभाक बहुसंवादी विस्तारमे फैलि जाइत अछि। कथन-लय एतए निरीक्षण → अनुभव

→ सीमित व्यक्तिगत निर्णय → सार्वजनिक श्रवणक क्रम बनबैत अछि। ई क्रम सभ भागमे एके समय नहि चलैत; प्रत्यक्ष वर्तमान दिनसभक जोड़ अछि आ बीचमे पुरान बही, अभिलेख, ऋतु-स्मृति आ आपत्ति-पर्चीक उपकाल प्रवेश करैत अछि। बाल-दृष्टि आ श्रमिकदेहक ज्ञान ‘विशेषज्ञक विरुद्ध सब ठीक’ नहि कहैत, बल्कि विशेषज्ञताक एकाधिकारकेँ स्थितिसापेक्ष परखैत अछि।

एहि खण्डमे रस-ध्वनिक परीक्षण करिते घरक भात–अचारक हँसी, बच्चाक कंचा आ नावक खेल, नैराक क्षणिक संकोच, ममताक खाली सुरक्षासामग्री आ रमणीक अपूर्ण पट्टा एकरस भाव-संयोजन नहि बनबैत। पृष्ठभूमिमे श्रमक दरद अछि, बीचमे अपन वस्तुपर शर्त लगाबय सकबाक दृढ़ता, आ बीच-बीचमे सहज विनोद। चरित्रसभकेँ केवल करुणाक पात्र मानल नहि गेल अछि। तथापि अति-सचेत प्रश्नोत्तर कथाकेँ शिक्षात्मक पदावलीक ओर झुका सकैत अछि; सर्जनात्मक असहमतिपर अंकुशक आशंका खुलल अछि।

अध्याय १-१२ क प्रारम्भिक समग्र मूल्यांकन

पहिल बारह अध्यायमे ‘मृतकक रसोइ’सँ नगरक सार्वजनिक नक्शा धरि कथा-क्षेत्रक फैलाव सावधानीसँ तैयार भेल अछि। जीवित स्त्रीक मृत्युसूचना, सत्ताइस नामक निजता, फकीराक समय, सत्यवतीक जलसम्बन्धी पुरातन दृश्य, जनकक भूमि-माप, घरेलू बही, पाँच पीढ़ीक चौकी, सीमातीर्थक पत्र, बन्द बाहा, नामक छाँह, संकेतक चित्र आ नगरक लेखापाठ वस्तुक एक प्रवाह बनबैत अछि। एहि प्रवाहक मूल आलोचनात्मक सूत्र ई अछि : लिखल नाम, देखल पदार्थ, सुनल कथन, अनुभवल स्मृति आ प्राप्त आवेदन अपन-अपन प्रमाण-सीमा रखैत अछि। जँ लेखक एहि सीमाकेँ सामाजिक न्यायसँ जोड़ैत छथि, तखन प्रमाण केवल न्यायालयक शब्द नहि, घरक रसोइ, नदीक घाट, विद्यालयक नक्शा आ श्रमक देयक प्रश्न बनैत अछि।

मुदा पहिल बारह अध्यायक अध्ययनसँ सम्पूर्ण २१६-अध्याय उपन्यासक गुणवत्ता-निर्णय नहि देल जा सकैत। एखन मुख्य शंका अछि—बहुल पात्रक उल्लेख कतेक पूर्ण जीवनक चरित्र-विकास बनत; प्रमाणक पद्धति कतय मानवीय विसंगति आ अनियन्त्रित हिंसासँ टकराओत; महाकाव्यीय तथा दार्शनिक कालधारा आरम्भक सामाजिक प्रश्नकेँ कतेक रूपान्तरित करत; आ पाठककेँ निरन्तर अपूर्ण निर्णय भेटला पर कथात्मक आवेग कोना बचत। ई सभ आगाँक अध्याय-विश्लेषण लेल प्रश्न अछि, पूर्वनिर्णीत दोष अथवा उपलब्धि नहि।

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड

अध्याय १३ — बजाओल गेल मृतका

मञ्चक पट्टी आ जीवित देह : प्रश्नक सार्वजनिक पुनरावर्तन

अध्यायक भोर सहायता-वितरण सभाक मञ्चपर सरिताक नामक उलटल पट्टीसँ होइत अछि। सरिता मञ्चपर नाम बदलि कऽ देखबाक आग्रह नहि करैत छथि; ओ चाहैत छथि जे हुनकर नाम हुनके मुँहसँ सुनल जाए। बाँसक ढील खूँटी, काम करैत युवकक छिलल हथेली आ सरिताक पानिक लोटा एहि आरम्भकेँ केवल सरकारी तमाशाक दृश्य नहि बनए दैत अछि। ओ एक जीवित देह छथि, जे दोसर घायल देहकेँ पानि दैत अछि; एही जीवनक बीच

ओकर नाम मृतक-सहायताक पट्टी बनि टाँगल अछि। ई दृश्य कथाक आरम्भिक रसोइक प्रश्नकेँ निजी स्थानसँ सार्वजनिक उच्चारण धरि लऽ जाइत अछि।

सरिता संग तीन अलग कागद आनैत छथि : अपन मृत्यु-सूचनाक प्रति, जीवित उपस्थिति दर्ज करएबाक पुरान आवेदन आ सत्रह वर्ष पहिने मृत पतिक नामपर उठाओल गेल औषधिपर्चीक नकल। सत्ताइस नामक मूल पन्ना घरमे सुरक्षित अछि। ई चयन स्वतः आख्यानात्मक घटना अछि : जतय अधिकतम कागद देखाएब सनसनाहट बढ़ा सकैत छल, ओतय पात्र अनावश्यक संवेदनशील सूचना सार्वजनिक नहि करैत। ओ घाटसम्बन्धी दू सम्पत्ति-फाइलक प्राप्ति-अङ्क आ एहि सहायता-सूचीक विवादकेँ सेहो अलग रखैत छथि। तेरहम अध्याय नव रहस्य गढ़बाक बजाय पहिने उठल अनेक प्रश्नमे सँ एक प्रश्नकेँ सार्वजनिक मंचक केन्द्रमे अनैत अछि।

घटना-पञ्जी : अपमान, प्रतिरोध आ अपूर्ण अभिलेख-सुधार

पहिल महत्त्वपूर्ण स्थिति पूर्वक गलत मृत्यु-प्रविष्टिक आधारपर सार्वजनिक लाभ-वितरण सूची बनबाक अछि। दोसर स्थिति रमा कर्णक डेस्कपर अनौपचारिक आदेश द्वारा सरिताक स्थिति चुपचाप बदलबाक प्रयत्न अछि; रमा लिखित आदेश आ हस्ताक्षर माँगि ओ प्रक्रिया रोकैत छथि। तेसर, रमा पुरान प्रविष्टि काटबाक अधिकार अपन नहि मानि, नव विवादक पृथक पंजीमे आवेदन दर्ज कऽ प्राप्ति-पर्ची दैत छथि। एहि बिन्दु पर सरिताक पहचान दफ्तरमे सही भऽ चुकल नहि; केवल औपचारिक आपत्ति स्वीकार भेल अछि।

कथाक निर्णायक दृश्य तखन बनैत अछि जखन माइक ‘दिवंगता सरिता दासक परिवार’क प्रतिनिधिकेँ बोलबैत अछि। नैरा माएक हाथ पकड़बाक चेष्टा करैत छथि, मुदा सरिता स्वयं सीढ़ी चढ़बाक निर्णय लैत छथि। संचालक हुनका आश्रित बुझि लिफाफा बढ़बैत अछि; सरिता लिफाफा नहि लैत छथि आ कहैत छथि जे मृत कहल गेल व्यक्ति ओ स्वयं छथि। एहि क्रममे सहायता प्राप्त करबाक दावाक विरोध नहि, गलत मृत्यु-स्थिति सार्वजनिक रूपसँ उच्चारित करबाक विरोध अछि। सरिता कहलनि जे त्रुटिक सुधारक प्रक्रिया लिखल जाए आ सहायता-योग्यताक वास्तविक जाँच सेहो हो। जीवनक दावा आ आर्थिक अधिकारक जाँचकेँ मिलाएब नहि, अलग-अलग सक्षम करब हुनकर उद्देश्य अछि।

चौथ परिवर्तन अधिकारीक घोषणा अछि : मृत्यु-स्थिति त्रुटिपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा ओतहि पूर्ण सत्यापन सम्भव नहि; भुगतान पहचान-जाँचक बिना नहि होएत। ओ घोषणा-पट्टी हटएबाक निर्देश दैत अछि, पुरान सूची सुधारबाक अन्तिम आदेश नहि। पाँचम परिवर्तन नैरा आ रमाक प्रयाससँ सरिताक कथन ‘विवादित मृत्यु-स्थिति—स्वयं उपस्थित व्यक्तिक बयान’ रूपमे लिखाएब अछि। दुपहर धरि बयानक दू प्रति बनैत अछि, हस्ताक्षर होइत अछि आ प्राप्ति-सुरक्षा बनैत अछि। एकर बादो मृत्यु-प्रविष्टि रद्द नहि भेल अछि, औषधि-वितरणक शिकायत स्वतंत्र जाँचमे अछि। अध्यायक अन्तमे रुहानीकेँ प्रतिनिधिक कुर्सीपर बजाबयवला अगिला सभाक सूचना भेटबाक संकेत अछि, जाहिमे मताधिकारक खाना रिक्त रहबाक जानकारी पाठककेँ भेटैत अछि, रुहानीकेँ एखन नहि। एहि अन्तिम सूचना सँ अगिला अध्यायक कारणात्मक प्रवेश तैयार होइत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्र आ सूचना-नियन्त्रण

वर्तमान घटनाधारा भोरक मञ्च-तैयारीसँ साँझक रसोइ धरि एक दिनमे चलैत अछि। भोरमे छिलल हथेलीक सेवा आ साँझमे चाउर धोबाक क्रिया बीचक अन्तरालमे अधिकतर सभा, डेस्क आ माइकक दृश्यात्मक अवधि अछि। सत्रह बरख पुरान पतिक मृत्यु वर्तमान बयानमे लौटैत अछि; ओकरा अलग विस्तारपूर्ण पूर्वदीप्ति नहि, प्रमाणक वर्तमान सम्बन्धक रूपमे पढ़बाक चाही। कथावाचक तृतीयपुरुष रहि सरिताक असहमति, नैराक प्रतीक्षा आ रमाक लेखकीय अनुशासनक निकट जा सकैत छथि; ओतबे नहि, अन्तिम पाठांशमे रुहानीक अज्ञानक बाहरक सूचना सेहो पाठककेँ दैत छथि। ई पात्रक सीमित बोध आ कथावाचकक व्यापक जानकारीक सटीक अन्तर अछि।

मञ्चक पट्टी ओहिना उलटल अछि जेना संस्थागत वाक्य निजी जीवनकेँ उलटा पढ़ि लेत। ओकरा खोलबाक क्षणमे व्यंग्य नाटकीय बनैत अछि; मुदा सरिताक आरोहण, ढील सीढ़ी आ दुखैत पयर कथा पुनः शरीरक जोखिममे लऽ आबैत अछि। माइक आवाज बढ़बैत अछि, सत्यापन नहि। सार्वजनिक घोषणा एक प्रकारक व्यापक प्रसार अछि, पर सत्य-निर्णयक प्रमाण नहि। एही दृष्टिसँ पात्रक प्रत्यक्ष उपस्थितिकेँ ‘सरकारी स्थिति अपने आप बदलि गेल’ मानब उचित नहि। सरिता पन्ना पढ़ि स्वयं एहि सीमाकेँ मानैत छथि।

अनेक नामक अलग-अलग समस्या : सामूहिकता बिना एकरूपता

सावित्री सरदारक दू गामक ठेगाना बाढ़िक बादक स्थानान्तरणसँ बदलल; वर्तमान पता ठीक करबाक सम्भावना पुरान बकाया-सहायताक निपटान नहि अछि। निरंजन किसानक नामक ‘किसान’ पदकेँ कार्यालय पेशा बुझि बैंकसम्बन्धी विवरण बिगाड़लक; नाम, व्यवसाय आ खाता एके खानामे समा नहि सकैत। अरुण बरनवाल माला आ दानदाताक माइक-सम्मान छोड़ि करक बकाया चुकएबाक हिसाब प्राथमिकता दैत छथि। चाय अननिहार युवती मुफ्त सार्वजनिक सेवाक नामपर दूध, चीनी आ ढोएबाक श्रम अदृश्य करबाक विरोध करैत अछि। चारू प्रसंग सरिताक मृत्युक दावाक समान अपराध नहि छथि; ओ देखबैत छथि जे नाम, राहत, लेखा आ श्रमक भिन्न-भिन्न असंगति सार्वजनिक सभाक भीतर सह-अस्तित्व रखैत अछि।

सावित्री आ निरंजनक अलग-अलग प्राप्ति-अङ्क कहानीकेँ ‘एक नायिका सभक दुःख सुलझा देलीह’ सन प्रकारक केन्द्रीयकरणसँ बाँचबैत अछि। सरिता अनकर आवेदनक कालावधि नहि गढ़ैत छथि, केवल अपन अनुभवसँ प्राप्ति-पर्ची सुरक्षित रखबाक सावधानी कहैत छथि। एहि क्षण स्त्री-पात्र प्रतीक नहि, अपन सीमित ज्ञान स्वीकार करनिहार समकक्ष व्यक्ति अछि। बच्चाक छोट स्पर्श, चायक चिरल कप आ साझा हँसी सार्वजनिक अपमानक बीच सहज दैनिक जीवन जोड़ैत अछि। मुदा अनेक सामाजिक अतिकथाक द्रुत आगमनमुळे सावित्री, निरंजन आ अरुणक निजी अन्तर्द्वन्द्व सीमित ठाम पबैत अछि; सामाजिक बहुलता आ व्यक्तिगत कथाविस्तारक तनाव एतए निश्चित रूपेँ देखाइत अछि।

अनुमति, प्रमाण आ भारतीय आलोचनात्मक पठन

संकेत कैमरा नहि चलबैत, सरिताक इशाराक बाद केवल माइकपर कहल वाक्य नोट करैत अछि। सार्वजनिक सभाक अर्थ सभ निजी पर्चीक प्रकाशन नहि; देहक प्रत्यक्ष दृश्य, वचनक लिखित प्रति आ अनुज्ञात चलचित्रक तीन दर्जा अछि। रमाक डाक-अङ्क आवेदन प्राप्त भेलाक प्रमाण अछि, सुधार भेला अथवा औषधि-प्राप्तिक

अनियमितता सिद्ध भेला क प्रमाण नहि। अधिकारीक कथन ‘त्रुटि भऽ सकैत अछि’ सम्भावनाक स्वीकार अछि, निर्णीत तथ्य नहि। आख्यानशास्त्र प्रेरित परीक्षणक मूल प्रश्न अछि : लिखित पन्नाक स्रोत के, ओकरा की सिद्ध करबाक सामर्थ्य अछि, आ कोन साध्य एखन शेष? एहि स्थितिमे एक पंजीक अभाव आन दोषक स्वतः सिद्धि नहि।

रसगत दृष्टिसँ अपमानक करुण प्रसंगक भीतर सरिताक हँसी आ चूल्हाक स्मृति ओकरा निष्क्रिय शोकक पात्र नहि बनबैत। ‘नाम सुनब’ आ ‘ठीक लिखब’क अन्तर भाषा-ध्वनिक रूपमे रहि जाइत अछि; कविता जकाँ घोषित रूपक रचने बिना माइक, पट्टी, लोटा आ रसोइ सामाजिक न्यायक असमान माध्यम बनैत अछि। अध्यायक कलात्मक बल एहि प्रत्यक्ष दृश्य आ औपचारिक सुधार बीचक दूरी अछि। सीमा ई जे अनेक पात्र लगातार सटीक अभिलेखीय सावधानी बोलैत छथि; एहि कारण संवाद कखनो नैतिक-प्रशिक्षणक पाठमे बदलबाक जोखिम उठबैत अछि। तथापि माइकपर मृत कहल सरिताक अपन पयरसँ चढ़ब, आ लिखित बयानकेँ स्वयं पढ़ि स्वीकार करब, कथाकेँ अमूर्त तर्क नहि रहए दैत।

अध्याय १४ — प्रतिनिधिक कुर्सी

आमन्त्रण आ मताधिकार : दृश्यसम्मानक सामाजिक छलना

रुहानी लेल राखल नीला कपड़ावाली कुर्सीक पाछाँ ‘समुदाय प्रतिनिधि’ लिखल अछि, मुदा नगर समितिक हरियर जिल्दमे अठारह मताधिकार-प्राप्त सदस्यक बीच हुनकर नाम नहि। दुआरक प्रवेश-पंजी ‘पुरुष’, ‘महिला’ आ ‘विशेष अतिथि’क तीन पूर्वनिर्धारित खाना देत अछि; ई वर्गीकरण स्वयं रुहानीक सदस्यता-प्रश्नक उत्तर नहि। ओ सम्मानक समक्ष मूल नियम माँगैत छथि आ बुझैत छथि जे समिति राहत, आश्रय, घाट-पहुँच आ जलनिकासपर सिफारिश करैत अछि; ओकर मत स्वयं सरकारी आदेश नहि, मुदा अनुदान आ प्राथमिकताकेँ प्रभावित करैत अछि। तेँ मतदानक बाहर राखब एक सजावटी अपमान मात्र नहि, निर्णयक पूर्वपायदानसँ बाहर राखबाक ठोस व्यवस्था अछि।

कथाक सूक्ष्म व्यंग्य ई अछि जे सर्वाधिक दृश्य कुर्सी वास्तवमे अधिकारहीन अछि। रुहानी माला स्वीकार करि युवककेँ धन्यवाद दैत छथि, मुदा नील कुर्सीपर बैसबाक बदला खुला बेंच चुनैत छथि। माला नहि लेबाक नाटक बनएबाक बजाय माला हाथमे लऽ टेबुलपर राखब व्यक्तिक श्रम आ संस्थाक छलनामे भेद करैत अछि। युवक आदेशपर माला दऽ रहल छल; निर्णयक अधिकार ओकरो नहि। कथावाचक एकटा सम्पूर्ण समुदाय बनाम सभ दोसर व्यक्ति सन कठोर सरलीकरण नहि करैत, संस्था भीतर दायित्वक सीढ़ी देखबैत छथि।

घटना-पञ्जी : नियमक पाठसँ कार्यसूचीक नवा प्रविष्टि धरि

पहिल परिवर्तन रुहानीक प्रश्नक कारण प्रवेश-सम्मान आ मतदान-पंजीक विभाजन स्पष्ट होएब। दोसर परिवर्तन औपचारिक सभा प्रारम्भ होइते राहत आश्रयक प्राथमिकतापर स्थायी सदस्यसभक मतदान अछि। रुहानी विचार रखैत छथि, पर हुनकर हाथ मतमे नहि गनल जाइत। तेसर परिवर्तन ओ आपत्ति प्रस्तुत करब छथि जे जकर रहबा, इलाज आ यातायातपर निर्णय होएत, ओकरा सदस्य चुनबाक प्रक्रिया किएक नहि? चौथ परिवर्तन सचिव द्वारा

हुनकर लिखित प्रस्तावकेँ ‘सुझाव’ मात्र लिखलाक विरोध अछि—ओ सदस्यता आ मताधिकारक प्रस्तावकेँ रोगीक निजी सूचीक खुला प्रसार-विरोधसँ अलग दर्ज करबबैत छथि।

पाँचम परिवर्तन नियम समीक्षा लेल अगिला सार्वजनिक बैठकक कार्यसूचीमे प्रस्ताव रखबाक सदस्यसभक सहमति अछि। ई आजुक मताधिकारक प्राप्ति नहि; आश्रयक रोगी-सूचीक सुरक्षा-प्रश्न सेहो सम्बन्धित सेवाकर्मी आ लेखाकारक जाँचमे पठाओल गेल, अन्तिम नियम बनल नहि। प्राप्ति-अङ्क सहित कार्यवृत्तक प्रति माँगल गेल अछि। अन्तमे चम्पाक निजी वचनक सीमा रुहानी स्वीकार करैत छथि : अगिला बैठकमे चम्पा अनुपस्थित रहथि तँ हुनकर नामसँ सहमति भरल नहि जाए। बाह्य संस्था आ आश्रयक भीतर प्रतिनिधित्वक समस्या एक-दोसराकेँ नैतिक रूपेँ परखैत अछि।

केन्द्रित चेतना, काल-सम्बन्ध आ संवादक संगठन

अध्याय एक दिनक भोरसँ साँझ धरि सामुदायिक भवन, आँगन, खुला बेंच आ घरवापसीक बाटमे चलैत अछि। तेरहम अध्यायक पछिला दिनक सभाक कारण रुहानी अपन निमन्त्रण प्राप्त कएने छथि; नैरा सेहो सरिताक बयानक स्थिति पुछबाक लेल आवैत छथि। कथावाचक मुख्यतः रुहानीक आन्तरिक विचारक निकट रहैत छथि, मुदा चम्पाक खर्च, बसन्तीक श्रम आ नैराक लिखित सावधानीकेँ अलग प्रसंगक अधिकार दैत छथि। एहि दृष्टिसँ ‘समुदाय’ एक अज्ञेय सामूहिक मन नहि, अलग व्यक्तिक रुचि आ तात्कालिक बाधाक समूह बनैत अछि।

अध्यायक संवादप्रधानता मात्र अङ्कीय अनुपातसँ सिद्ध नहि करबाक चाही। महत्त्व ई अछि जे प्रत्येक विवादक भाषिक प्रतिरोध कोन कर्म करैत अछि : रुहानी नियम-पुस्तिका पढ़ैत छथि, चम्पा सूचनाक गोपनीय सीमा निश्चित करैत छथि, बसन्ती अपन सामुदायिक नामक सही पंजीकरण माँगैत छथि, आ शबनम गलत पदाधिकारक अनुमानकेँ लौटा दैत छथि। एहि चारि आवाजक वस्तुगत प्रयोजन अलग अछि। मुदा किछु वाक्य, विशेषतः ‘सम्मान’क स्थानपर ‘अधिकार’क प्रतिपक्ष, समय-समय पर सुगठित निबन्धीय वाक्य जकाँ सुनाइत अछि। जँ सभ पात्रक शब्दावली समान रूपेँ सटीक बनि जाए, तँ बहुध्वनिताक स्थानपर लेखकक मानक विचार फैलि सकैत अछि।

बसन्ती, शबनम, नीरज : नाम आ पदक असमान स्रोत

बसन्ती अपन विक्रेता-पंजीमे ‘पान सवासी पनर’ लिखबबैत छथि, किएक तँ पुराने सरकारी पर्याय हुनकर पारिवारिक आत्मपरिचयसँ मेल नहि खाइत। ओ पुरान शब्द हटाकऽ स्रोत नष्ट करबाक नहि, भिन्न प्रविष्टिक मिलान रखबाक आग्रह करैत छथि। कारण स्पष्ट अछि—पछिला हाट-शुल्कक रसीद आ नव पंजीक नाम जोड़ल जाओ, तखन जीविका आ अभिलेखक निरन्तरता देखल जाएत। ई श्रमक समय-सन्दर्भ सहित आत्मनामकरणक प्रश्न अछि : बाजारक पात छोड़ि नामक सुधार लेल समय निकालब सेहो आर्थिक लागत अछि।

शबनम मलिककेँ पारिवारिक उपनामक कारण कार्यालयक अधिकृत प्रतिनिधि बुझि संवेदनशील फाइल थमएबाक चेष्टा होइत अछि; ओ अधिकृत डेस्क दिस पठबैत छथि। नीरज पंडा मृतक परिवारक सहायता-राशि आ स्वेच्छाक अनुष्ठान-दक्षिणा मिलएबाक अस्वीकार करैत छथि। ई प्रसंग सभ किसी जाति, धर्म वा पेशाकेँ आदर्श नैतिक वर्ग सिद्ध नहि करैत। उलटे एके समाजमे पेशागत श्रम, धार्मिक स्वेच्छा, अभिलेखीय अधिकार आ ध्वन्यात्मक नामक

स्वतंत्र भेद दर्शबैत अछि। सहायतालाभ अधिकारक जाँचक आधारपर, श्रद्धानुष्ठान व्यक्तिगत इच्छा आ सामर्थ्यक आधारपर। समान कार्यक्रमक आयोजन दूनूकेँ एक धनराशि नहि बना सकैत।

चम्पाक स्वतन्त्र अनुमति : प्रतिनिधित्वक भीतरक प्रतिपक्ष

अध्याय जँ केवल रुहानीकेँ अन्यायक विरुद्ध सदैव सही नेता बनबैत, तखन ओकर गहराइ घटि जाएत। चम्पा स्वयं आश्रयक सहारा लैत छथि, तथापि हुनकर उपचार-सम्बन्धी निजता पर रुहानीक सामुदायिक प्रतिनिधित्व स्वतः अनुमति नहि। ‘इलाज लेल आवश्यक सूचना’ आ ‘सभाक दर्शककेँ सूचना’क बीच भेद चम्पा स्थापित करैत छथि। पुआक थारी लग हुनकर मजाक रुहानीकेँ याद करबैत अछि जे आश्रयक भीतर सेहो कखनो ओ दूसराक तर्फसँ जल्दी निर्णय लेबैत छलीह। चम्पाक अन्तिम आग्रह—अनुपस्थित रहला पर हुनकर नामसँ सहमति नहि—एहि अध्यायक छोट, किन्तु वास्तविक नैतिक मोड़ अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय औचित्यक प्रश्न एतए स्पष्ट अछि : माला, नीली कुर्सी, हरियर पंजी, पुआक थारी आ चम्पाक घड़ी एके ‘अधिकार’क घोषणात्मक प्रतीक नहि; पात्रक समय, देह, उत्सव आ श्रमक असमान प्रयोजन अछि। कुर्सी दृश्यसम्मानक वस्तु, हरियर जिल्द विधिसम्मत मताधिकारक साधन, घड़ी उपचारक भाड़ा आ रोजीक बाधा। एहन वस्तु-सम्बन्ध पात्रक कथनक व्यावहारिक कारण बनबैत अछि। सीमा ई जे कएक दफ्तरी प्रश्नक समाधान अगिला कार्यसूचीक वादापर समाप्त होइत अछि; यदि एहन ढाँचा लगातार दोहराएल जाए तँ कथा-तनाव प्रक्रियागत पुनरावृत्तिमे घटि सकैत अछि। एखन, मुदा, रुहानीक अपन आश्रयमे सेहो सहमति माँगबाक परिवर्तन कथानककेँ संस्थाक बाहर विस्तार दैत अछि।

अध्याय १५ — द्रौपदीक प्रश्न

कथाक दू काल : दाँवक सभा आ आधुनिक अधिकारक कार्यालय

अध्याय हस्तिनापुरक सभागृहमे पासाक क्षीण आवाजसँ आरम्भ होइत अछि। चमकैत फर्श, ऊँच आसन आ लोकक भारी साँस राजसभाक तनाव गढ़ैत अछि; जुएमे युधिष्ठिर अपन राज्य आ भायसभ गमौने छथि। शकुनि आगाँ दाँव बढ़बैत अछि आ द्रौपदीक अनुपस्थितिमे हुनकर जीवन दाँवक वस्तु घोषित होइत अछि। द्रौपदी दूत लग मूल प्रश्न रखैत छथि—राजा स्वयंकेँ हारबाक पहिने हुनका दाँव पर लगौलनि कि बादमे? एहि प्रश्नक केन्द्र जुएक ‘नियम’ नहि मात्र, पराजित व्यक्तिक बाँचल अधिकार आ एक स्वतन्त्र व्यक्तिक सहमति अछि। प्राचीन कालधारा एतए कल्पित आधुनिक पुनर्जन्म नहि, मूल महाकाव्यीय संकटकेँ आधुनिक अर्थ-सन्दर्भमे पुनःविचार करबाक कथात्मक उपकरण अछि।

सातम पाठांशसँ विदेहपुरक साँझ प्रवेश करैत अछि। नैरा सरिताक जीवित उपस्थिति सम्बन्धी प्राप्ति आ रुहानीक सदस्यता-प्रस्तावक प्राप्ति एक मेजपर राखैत छथि। एक पन्ना ‘बात सुनल गेल’क साक्ष्य, दोसर ‘निर्णयमे मत पाबय’क माँग—दूनू पर छाप अछि, मुदा बराबर अधिकार नहि। ई संक्रमण द्रौपदी आ सरिताक ‘समान कथा’ कहि तय नहि करैत; राजसभाक दाँव आ आधुनिक सरकारी फाइलक ऐतिहासिक, संस्थागत भिन्नता अक्षुण्ण रहैत अछि। पाठक स्वयं प्रश्न करैत अछि : निर्णयक विषय बनल व्यक्तिक स्वीकृति कतेक मान्य?

घटना-पञ्जी : प्रश्नक पुनरावर्तनसँ नव सुनवाई धरि

प्राचीन घटनाधारामे युधिष्ठिरक हार, द्रौपदीकेँ दूत पठाओल जाएब, द्रौपदीक प्रतिप्रश्न, दूतक उत्तरहीन वापसी, सभामे भीष्म आ विदुरक अलग प्रतिक्रिया, द्रौपदीक अनिच्छित सार्वजनिक उपस्थिति आ अपमानक प्रयास निर्णायक क्षण छथि। पन्द्रहम अध्याय एकर निबटान नहि देखबैत; विकर्ण प्रश्न सुनि उठबाक ठीक पहिने रुकैत अछि, जाहिसँ सोलहम अध्यायक प्राचीन निर्णय-दृश्य आगाँ बढ़ैत अछि। कथाक क्रम एतए पुनर्पाठक प्रभावक लेल रोकेल गेल अछि : भाषाक उत्तर नपाओल प्रश्न अगिला अध्यायक विरोधक कारण बनैत अछि।

आधुनिक समयमे अनिता चौपाल अपन गलत सामाजिक वर्गीकरणक आवेदन लऽ नैराक घर पहुँचैत छथि; सलमा शेख अस्पतालमे वृद्ध रोगीक पहिचान-जाँच कारण भेल उपचार-विलम्बक साक्ष्य रखैत छथि। नैरा अनिताक निजी वंश-विवरण सार्वजनिक नहि करैत छथि, सलमाक उपचार-विलम्ब आ अनिताक वर्गीकरणकेँ अलग कागदमे लिखैत छथि। संकेत फोटो खींचबाक इच्छा व्यक्त करिते अनिताक असहजता देखि फोन नीचाँ करैत अछि। ई छोट दृश्य पितृसत्तात्मक अनुमति-हीन ‘दाँव’क प्रश्नकेँ वर्तमान जीवनमे अनुज्ञा आ निजताक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि; मुदा फोटो नहि खिंचब तात्कालिक नैतिक निर्णय अछि, दर्ज शिकायतक अन्तिम समाधान नहि।

सलमा दोसर भोर अस्पताल रजिस्टरमे रोगीक प्रवेश-समय भेटब आ उपचार-आरम्भक समय रिक्त रहबाक प्रश्न उठबैत छथि। अनिरुद्ध लिखित घटनावृत्त मँगबैत छथि, अन्तिम विभागीय दोष-निर्णय नहि दैत छथि। सलमा अपन नाम स्वयं देबाक निर्णय लैत छथि; रोगीक व्यक्तिगत नाम जनतासमक्ष नहि अनैत छथि। अनिता कार्यालयमे मूल स्रोत-पत्रक नकल अनुपलब्ध होएबाक जानकारी प्राप्त कऽ अधिकारीसँ लिखित स्पष्टीकरण माँगैत छथि; ओ निजी विवरण खुला सभामे पढ़बाबय लेल तैयार नहि। कथाक अन्तमे सलमाक प्राप्ति आ अनिताक स्रोत-पत्रक माँग अलग सुरक्षित रहैत अछि। द्रौपदीक प्रश्नक आधुनिक ‘फल’ कोनो चमत्कारी न्याय नहि, बल्कि दुइटा स्त्रीक उत्तर माँगबाक विशिष्ट अधिकारक प्रकट व्यवहार अछि।

कथनकाल, अवधि आ दृष्टिकेन्द्रणक कार्य

एहि अध्यायक कथन-क्रम सरल रेखा नहि अछि। प्राचीन सभा सँ आधुनिक साँझ (७–१५), पुनः प्राचीन दृश्य (१६–१९), आधुनिक अस्पताल आ कार्यालयक दोसर भोर (२०–३०), पुनः हस्तिनापुर (३१–३३), आ अन्तिम आधुनिक राति (३४–३६) धरि कथावाचक स्थान-काल बदलैत छथि। दूनू कालक बीच शाब्दिक यात्रा नहि; समान सामाजिक प्रश्नक कारण दृश्य-प्रतिस्थापन अछि। कथनक अवधि सेहो भिन्न : पासाक एक क्षण तथा दूतक प्रश्नक काल विस्तृत, आधुनिक कार्यालयक अनेक प्रक्रियात्मक घण्टा संक्षेपित। एहि असमान गति सँ द्रौपदीक प्रश्न पाठकक मनमे सभ आधुनिक दृश्यक मध्य खुलल रहैत अछि।

कथावाचक हस्तिनापुरमे विदुरक आशंका, भीष्मक दुविधा आ विकर्णक उठैत साहस देखबैत छथि; आधुनिक दृश्य नैराक विचार, सलमाक रोजगारसंबन्धी जोखिम, अनिताक निजताक डर आ सरिताक थकानक निकट अछि। एतए स्थिर ‘एक स्त्रीक दृष्टिकोण’क बदला दृश्यअनुसार बदलैत चेतना अछि। द्रौपदी कथा भीतर वस्तु नहि बनबाक प्रतिवाद करैत छथि; अनिता विवरणक स्रोत माँगैत छथि; सलमा उपचारक प्रक्रियाक विलम्ब लिखबबैत छथि। ई स्त्रीसभक परस्पर ऐतिहासिक समरूपता नहि, अधिकार-विवादक भिन्न भाषा छथि।

आख्यानशास्त्र : ‘जितल दाँव’ की स्वतः वैध स्वामित्व अछि?

द्रौपदीक प्रश्नमे न्याय-व्यवस्थाक स्वीकृत खेलक परिणामसँ नैतिक वैधताक निष्कर्ष फँसैत अछि। युधिष्ठिरक हारक बाद द्रौपदीपर स्वत्व स्वतः स्थानान्तरित भेल—एहि अनुमानमे मुख्य हेतुक व्याप्ति असिद्ध अछि : जुएमे घोषित दाँव मात्रसँ स्वतन्त्र व्यक्तिक सहमति समाप्त होएत, ई सम्बन्ध स्थापित नहि। प्राचीन राजधर्मक ऐतिहासिक विवादकेँ आजुक आधुनिक कानूनक एक वाक्यमे बदलि देब शास्त्रीय व्याख्या नहि होयत; तथापि उपन्यास स्वयं ई तर्क-परेशानीक कथात्मक पुनर्निर्माण करैत अछि। भीष्मक मौनक कारण ‘न्याय प्रमाणित’ नहि; विदुरक आपत्ति सेहो अकेले संस्थागत फैसला बनि नहि जाइत।

आधुनिक प्रमाण-परीक्षा फराक अछि। अनिताक नामक आगाँ गलत सामाजिक वर्गीकृत प्रविष्टि स्रोत-पत्रक बिनु अविश्वसनीय बनैत अछि; ‘पंजीमे लिखल अछि’ केवल प्रविष्टिक अस्तित्व देखबैत अछि, ओकर सत्य नहि। सलमाक रजिस्टरमे उपचार समयक रिक्त स्थान विलम्बक सम्भावित समस्या उठबैत अछि, मुदा केवल खाली पाँति देखिकऽ निश्चित चिकित्सकीय अपराध सिद्ध नहि। एतए सलमा क्रमक लिखित जाँच माँगैत छथि, रोगीक पहचान सार्वजनिक नहि करैत। लिखित, प्रत्यक्ष, सुनल आ अनुमानित कथनक ई पृथक्करण ‘प्रमाण’क नैतिक उपयोग अछि, दार्शनिक सूत्रक अभिनय नहि।

स्त्रीस्वरक अधिकार आ अनपेक्षित नाटकीय प्रतिरोध

सलमा कहैत छथि जे बयानमे हुनकर नाम राखल जाए—अर्थात् ‘निजता’क सार्वभौम नियम हुनकर आत्मनामकरणक स्वतन्त्रता हरण नहि करय। अनिता अपन नाम खुला सभामे प्रचारित नहि करबाक निर्णय करैत छथि। एक पात्रकेँ नाम देखबेबाक इच्छा अछि, दोसरकेँ सीमित करबाक; स्त्री-अधिकारक एक जड़ सूत्रक बजाय एहि विपरीत इच्छाक सम्मान उपन्यासक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। रुहानीक आश्रयमे चम्पा हुनक सही मौनक प्रशंसा करैत छथि, किएक तँ अनिताक शिकायतपर रुहानी अनुमति बिना प्रतिनिधि बनि उपस्थित नहि भेलीह। एहि आत्मसंयमक दृश्यसँ चौदहम अध्यायक नेता-पात्रक आन्तरिक परिवर्तनक संकेत भेटैत अछि।

द्रौपदीक सभागृहक दीपक आ विदेहपुरक बरकी पोखरिक लहरैत बत्ती दृश्यात्मक सम्बद्धता रचैत अछि; मुदा प्रकाशक टुटबकेँ प्रत्यक्ष शकुन मानल नहि गेल। काव्यशास्त्रीय ध्वनिक बिन्दु ई अछि जे सत्यक प्रकाश उपलब्ध रहितहुँ सामूहिक दृष्टि ओकर प्रश्नसँ हटि सकैत अछि। द्रौपदीक अपमान आ उपचार-विलम्बमे करुणा आ रोषक सम्भावना अछि, किन्तु रुखसानाक बैंगन-विनोद, संकेतक फोटो-प्रश्न आ चाउरक घरेलू समय भावक एकरेखीय प्रवाह रोकैत अछि। दृश्यसभक ई वैषम्य रचना लेल लाभकारी अछि।

अन्तर्पाठीय उपलब्धि आ सीमा

पन्द्रहम अध्यायक महत्त्व ई नहि जे ओ द्रौपदीकेँ आधुनिक पात्रक एक नाम देलक। ओ प्राचीन सभाक मुख्य प्रश्न आधुनिक प्रपत्रक विभिन्न विवादसँ जोड़ि देखबैत अछि, जखन कि प्रत्येक प्रकरणक ठोस कारण अलग राखैत अछि। मुदा प्रभावक एक सीमा सेहो : द्रौपदीक प्रश्नक धार सँ समकालीन पात्रसभक सटीक नैतिक भाषा आरो परिष्कृत बुझाइत अछि, जाहिसँ मनोवैज्ञानिक स्वाभाविकता आ विचारक अत्यधिक सुगठनक बीच अन्तर बढ़ि सकैत अछि। अनिताक प्रश्न, सलमाक आग्रह आ नैराक उत्तर सभ त्रुटि-प्रमाणक बारेमे लगभग आदर्श सावधानी

रखैत छथि। ई एक सुसंगत रचनात्मक नीति अछि, मुदा बहुस्वरक प्रमाण केवल एहि सुसंगति सँ नहि भेटैत; पात्रसभक असंगति, भूल, सामाजिक भय आ संस्थागत बाधाकेँ बराबर पाठकेंद्रमे रखबाक आवश्यकता अछि। सोलहम अध्यायमे विकर्णक सीमित प्रभाव एहि जोखिमक कठोर परीक्षा बनैत अछि।

अध्याय १६ — विकर्णक बादक मौन

विरोधक उच्चारण आ निर्णयक अपरिवर्तन

अध्यायक पहिल दृश्य हस्तिनापुरमे विकर्णक गरम काठक आसनसँ उठबाक अछि। द्रौपदीक प्रश्नक उत्तर देबाक बदला सभासद वयस, पद आ आपसी सम्बन्ध ताकैत छथि। विकर्ण अपना भायसभसँ अनुमति नहि माँगि ठाढ़ होइत अछि आ द्रौपदीक सहमति तथा युधिष्ठिरक हारल अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। ओकरा विरोध सुनि कर्ण खेलक घोषित परिणामक पक्षमे प्रत्युत्तर दैत छथि, मुदा सहमति सम्बन्धी मूल कठिनाई नहि सुलझबैत। विकर्णक विरोध दर्ज भेलाक बादो दाँवक मुख्य निर्णय अक्षुण्ण रहैत अछि। इएह अध्यायक केन्द्रीय विरोधाभास—न्यायक पक्षमे कहल वाक्य इतिहासमे बचि सकैत अछि, संस्थागत अन्याय ओही क्षण रुकि जाए से आवश्यक नहि।

एहि प्रसंगक मनोवैज्ञानिक जटिलता कर्ण आ विकर्णक विपरीत प्रतिक्रिया सँ बनैत अछि। कर्णक पुरान अपमानक स्मृति हुनकर आक्रामक पक्षधरता सन्दर्भित करैत अछि, नैतिक मुक्तिपत्र नहि दैत। विकर्ण अपन भाईक विरोध करबाक सम्भावित पारिवारिक मूल्य बुझैत अछि; ओकर साहसकेँ पौराणिक विजयोत्सव नहि बनाओल गेल अछि। द्रौपदी सेहो केवल एक पुरुषक समर्थन पाबि तत्काल सान्त्वना नहि पबैत छथि। प्रश्न सभासँ उत्तर माँगैत अछि; व्यक्तिगत सहानुभूति आ सामूहिक न्याय दूनू भिन्न।

आधुनिक घटना-पञ्जी : कार्यवृत्तक सुधार, अधिकारक नहि

विदेहपुरमे पछिला सभाक मसौदा पढ़बाक समय रुहानी पुछैत छथि जे हुनकर नाम ‘आमन्त्रित’मे अछि, ‘मताधिकार-प्राप्त सदस्य’मे नहि; तखन कार्यवृत्तक ‘सर्वसम्मति’ कथनमे एहि भेदकेँ कोना दर्शाओल जाए? अमला सर्बरिया अनेक कार्यालयमे अपन समुदायनामक तीन तरहक गलत वर्तनी आ गलत मिलानक कारण पृथक परिवारसभक आवेदन दोहराओल पंजी मानि लौटाओल जेबाक प्रमाण दैत छथि। सकीब अबदल सार्वजनिक चन्दा-बही आ निजी ढुलाईक बही अलग देखबैत छथि; केवल सार्वजनिक खर्चक प्रासंगिक रसीद खोलबाक तैयार छथि, पूरा घरेलू खाता नहि। एहि तीनू विवादमे लिखित रूपक प्रामाणिकता आ सार्वजनिक अधिकारक सीमा मूल मुद्दा अछि।

अमलाक नामक सही रूप आवेदनपर दर्ज होइत अछि, मुदा पुरान सरकारी पंजी सुधरल नहि। सकीब सार्वजनिक चन्दा-बहीक प्रति जमा करैत छथि, मुदा विवादास्पद ढुलाई-भाड़ाक अन्तिम स्वीकृति नहि भेटल। रुहानी कार्यवृत्तमे सदस्यक मत, आमन्त्रितक आपत्ति, उपस्थित सदस्यक मौन आ मतदान-अधिकारक अभाव चारि अलग स्थिति रूपमे लिखबबैत छथि। नबका मसौदामे ‘उपस्थित, परन्तु अभिमत व्यक्त नहि कएल’ लिखल जाइत अछि। एहि नवा प्रविष्टिसँ विगतक मतदान नहि बदलैत अछि; सदस्यता-नियमो एखन विचाराधीन अछि।

घटना-पञ्जीक सटीक निष्कर्ष निर्णय बदलल नहि, बल्कि बादमे गलत सर्वसम्मति घोषित करबाक विरुद्ध प्रतिपरीक्षण-साक्ष्य बचल।

नैरा अनिता चौपालक निजी प्रकरण सभामे नहि खोलैत छथि। ओ बुझैत छथि जे अनिताक गलत सामाजिक वर्गीकरण आ अमलाक वर्तनी/दोहराओल पंजीक समस्या एक नहि। सरिताक मृत्यु-स्थिति सेहो एहि समितिक मतदानक विषय नहि। अध्यायक समाप्ति धरि तीन अलग घरमे अलग प्रयोजनक पन्ना पहुँचबाक तैयारी अछि—रुहानीक कार्यवृत्त, अमलाक नाम-सुधार आवेदन, सकीबक चन्दा-प्राप्ति। कोनो पात्र पूर्ण अधिकार प्राप्त कऽ घर नहि जाइत, मुदा तिनू अपन-अपन अपूर्ण दावाक जाँचयोग्य चिन्ह रखैत अछि।

मौन एकटा क्रिया अछि कि क्रियाक अनुपस्थिति?

शीर्षकक ‘विकर्णक बादक मौन’ केवल सभाक भावुक निःशब्दता नहि। मुख्य प्रश्न ई अछि जे मौनक शाब्दिक अर्थ कौन तय करैत अछि। द्रौपदीक सम्मुख भीष्मक चुप्पी, कर्णक प्रतिवादक बाद सभासदक जोखिमपूर्ण चुप्पी, युधिष्ठिरक झुकल मुख आ दरबारीक लिखल मुख्य निर्णय—एके नैतिक अर्थ नहि रखैत। रुहानी सेहो पूछैत छथि जे ‘मत नहि देल’क अर्थ ‘पक्षमे मत’ कोना भऽ जाए? सचिवक नवा वर्गीकरण मौनकेँ स्वीकृति नहि, अभिमत-अप्रकाशक घटना रूपमे बचबैत अछि। ई उपन्यासक कथात्मक व्याख्या अछि; सभ ऐतिहासिक वा विधिक सन्दर्भमे मौनक एक सार्वत्रिक नियम घोषित करब आवश्यक नहि।

कथन-कालक दृष्टिसँ अध्याय तीन बेर हस्तिनापुर लग लौटैत अछि : आरम्भमे विकर्णक वचन, मध्यभागमे ओकर परिणामक चिन्ता आ द्रौपदीक उत्तरहीन प्रश्न (२१–२३), आ अन्तिम भाव-प्रत्यावर्तनमे सभाक अँधेरा (३३)। विदेहपुरक बहु-पाठांशीय बैठकी वर्तमान एहि प्राचीन प्रतिरोधकेँ संस्थागत रूपमे परखैत अछि। दृश्य-प्रतिस्थापनक केन्द्र विजयक समानता नहि; ‘कहल गेल’ आ ‘प्रभाव पड़ल’ बीचक दू समय अछि। विकर्णक प्रश्न तत्काल न्याय नहि देत; रुहानीक आपत्ति एखन मताधिकार नहि देत। दुनू घटनाक प्रतिनिधित्व भिन्न युग, भिन्न संस्था आ भिन्न देयक बावजूद साझा प्रश्न उठबैत अछि—असहमतिक अभिलेखक बिना निर्णयक इतिहास केना झूठा सर्वसम्मति बनि सकैत अछि?

समुदायनाम, चन्दा आ श्रम : प्रतिपक्षी प्रमाणक तीन रूप

अमलाक तीन कार्यालयक नाम-वर्तनीक असंगति केवल वर्णलेखनक त्रुटि नहि रहल; ओकरा कारण अलग-अलग परिवारक अस्तित्व एके पंजीमे विलीन मानल गेल। ‘एक शब्द ठीक करू’क संग ‘सभ घरक अलग नम्बर बचाउ’क माँग अहाँकीअक जीवनी-प्रमाणक आलोचना अछि। मोबाइलमे चिन्ह सुधारलासँ पुरान अस्वीकृति-पत्रक दोष स्वतः नहि हटत। नाम सुधरबाक लागतमे आवागमन, नकल आ कामक छुट्टी सेहो शामिल अछि। औपचारिक समानता कम-से-कम एतेक माँगैत अछि जे एक समुदाय नामक सही वर्तनी ओकर सभ सदस्यक भिन्न व्यक्तित्व नष्ट नहि करए।

सकीबक चन्दा-बही सार्वजनिक खर्चक जाँच योग्य बनैत अछि; निजी बही निरपेक्ष सार्वजनिक सम्पत्ति नहि बनैत। जँ हुनकर ढुलाईक गाड़ी सामुदायिक काममे लागल तँ दर, अनुमोदन आ रसीद स्वतंत्र रूपमे देखाओल जाए; जँ ओ चन्दा बिना निजी लाभ लैत छथि तकर जाँच आवश्यक, मुदा सम्भावना अपने-आप अपराधक प्रमाण नहि।

बाहा-मुँहथरिक पुरान निरीक्षण एखन अधूरा अछि, सुरक्षित नाप बिना खुदाइ नहि भेल; तेँ तैयारीक रकम आ सम्पन्न सफाइक भुगतान अलग अछि। ई प्रसंग नागरिक सार्वजनिकताक संग श्रमिकक आर्थिक आत्मरक्षाक सीमासमूह बनबैत अछि।

चम्पाक थाकल देह ओसारक चौकीपर बैसैत अछि, सभा-मञ्चपर नहि; ओ मसौदाक पूरा पाठमे अपन राय देबाक इच्छा रखैत छथि। रुहानीक ‘प्रतिनिधि’ बनबाक सीमा फेर प्रत्यक्ष सोझाँ अबैत अछि। अमला आ सकीबक बीच भीजल रसीद, नकलक खर्च आ अपन दामसँ किनल सत्तूक ठोंगाक संवाद कथामे श्रमक समय आ रोजमर्राक हँसी बचबैत अछि। सैद्धान्तिक विरोध एतए रोटी, पानि आ यात्रा-विलम्बसँ अलग नहि अछि; ई एक महत्त्वपूर्ण कलात्मक औचित्य अछि।

प्रमाणशास्त्रीय उपलब्धि, शिल्पक सम्भावित जोखिम आ अन्तक ध्वनि

आख्यानशास्त्र दृष्टिसँ ‘सभ उपस्थित छलाह’सँ ‘सभ सहमत छलाह’ निष्कर्ष निकालब असिद्ध सामान्यीकरण अछि। उपस्थित व्यक्तिक अभिमत, अभिमत व्यक्त करबाक अवसर, विधिसम्मत मतदान-अधिकार आ वास्तवमे देल मत अलग-अलग विषय छथि। एक अतिरिक्त वर्ग-भेद एकर उचित अनुमानमे हेतुक स्पष्टता आनैत अछि, मुदा ई अधिकारीय पञ्जीक पूर्ण निष्पक्षता सेहो स्वतः सिद्ध नहि करैत। कथाकारक उपलब्धि एतए प्रतिरोधकेँ लिखित, जाँचयोग्य, संशोधनीय तथ्य बनएब अछि—व्यक्तिगत भलमनसाहत मानि छोड़ब नहि।

ई अध्याय आधुनिक कार्यवृत्तसँ प्राचीन सभालेखक मिलान करैत अछि : दरबारक लेखनिहार जीतक मुख्य पन्ना नहि बदलैत, केवल किनारपर विरोध दर्ज करैत अछि; विदेहपुरक सचिव निर्णय अपरिवर्तित राखि असहमतिमे सही अलग पाँति दैत अछि। एकर नाटकीय प्रभाव सूक्ष्म अछि। मुदा एहि सूक्ष्मताक सीमा सेहो अछि : तर्क–प्रतितर्कक सिलसिला बारंबार ‘कहल/सुनल/निर्णीत’क आदर्श वर्गीकरण पर आबि ठहरैत अछि। पाठककेँ सघन संस्थागत विवाद भेटैत अछि, पर आन्दोलनक अनिश्चित भीड़, अप्रत्याशित व्यक्तिगत विफलता आ बोलबामे अक्षम पात्रक दृष्टि कम फैलि पबैत अछि। ई आलोचनात्मक प्रश्न उपन्यासक आगाँक विस्तारमे जाँचल जाएत; एखन अध्ययन केवल सोलहम अध्यायक साक्ष्य धरि सीमित अछि।

अन्तिम चूल्हिक गरम राख पुरान उद्घाटनक रसोइकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि। सरिताक परिवारक मृत्यु-प्रविष्टि एखन नहि बदलल; रुहानीक मताधिकार एखन नहि भेटल; अमलाक मूल सरकारी पंजी एखन नहि सुधरल। मुदा जे ‘चुप’ छल तकरा स्वीकृति लिखि देबाक बाट कनेक कठिन बनल अछि। ध्वनिक स्तरपर राखक शेष गरमी ई बतबैत अछि जे आगिक देखाइब बन्द होएब आ ओकर तापक अन्त एक नहि। ई रूपकीय सम्भावना पाठसँ उत्पन्न अछि, निश्चित अगिला घटनाक भविष्यवाणी नहि।

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १३–१६ क संयुक्त विवेचन

चारि अलग संस्थागत दूरी

तेरहम अध्यायमे जीवित व्यक्तिक सार्वजनिक उच्चारण आ मृत्यु-पंजीक वास्तविक संशोधन बीच दूरी अछि। चौदहममे प्रतिनिधिक नाम-पट्टी आ मत देबाक नियमक बीच। पन्द्रहममे द्रौपदीक प्रश्न आ सभाक उत्तरदायित्व, अनिताक गलत वर्गीकरण आ स्रोत-पत्र, सलमाक रोगी-प्रवेश आ उपचार-समयक बीच। सोलहममे दर्ज असहमति आ मुख्य निर्णय बदलबाक शक्ति बीच। एहि चारि दूरीकेँ एक नाटकीय सूत्रमे समेटब सम्भव अछि—‘आवाज सुनल गेल’क बादो ‘अधिकार बदलल’क अलग प्रक्रिया आवश्यक अछि—मुदा प्रत्येकक प्रमाण-वस्तु, पात्र आ प्रशासनिक परिणाम अलग रखना आलोचनाक मूल अनुशासन अछि।

कथाक विस्तारित कालिक स्वरूप सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। सरिताक सहायता-सूचीक सभा आ रुहानीक अगिला दिनक समितिसँ पन्द्रहम अध्यायक हस्तिनापुरक प्रवेश धरि कथन-क्रम एकसमान नहि रहैत। पन्द्रहममे प्राचीन जुएक दृश्य, आधुनिक घर/अस्पताल/कार्यालय आ फेर प्राचीन सभा; सोलहममे विकर्णक विरोध आ आधुनिक संशोधित कार्यवृत्त एक-दोसराकेँ काटि-जोड़ि चलैत अछि। एहि द्विकालीन पुनर्विन्याससँ महाभारत केवल अध्यायक ऊपर लिखल शीर्षक नहि रहैत, बल्कि वर्तमानक दायित्व-प्रश्नकेँ आलोचनात्मक दूरी प्रदान करैत अछि। तथापि रामायणक अयोध्याकाण्ड एहि चारि अध्यायमे मुख्यतः व्यापक काण्ड-विन्यासक हिस्सा अछि; विशिष्ट कैकेयी अथवा भरत कथा-दृश्यक प्रत्यक्ष पाठ एखन अध्याय १७ आ आगाँ प्रतीक्षित अछि। शीर्षक-सादृश्यकेँ साक्ष्य मानि ‘रामायणक पूरा अन्तर्पाठ सिद्ध’ कहब गलत होयत।

पाठ-प्रमाणक पायदान आ पात्रक जटिलता

घटना-पञ्जी चारि अलग स्तर स्पष्ट करैत अछि : सरिताक हस्ताक्षरित प्रतिवाद, रुहानीक सदस्यता-संशोधन प्रस्ताव, सलमा/अनिताक पृथक जाँच-प्राप्ति, आ कार्यवृत्तमे सदस्य/आमन्त्रित/मौनक अलग प्रविष्टि। एहिमे एकोटा स्वतः पुरान अधिकारगत गलती समाप्त नहि करैत। प्रत्यक्ष उपस्थिति, शाब्दिक घोषणा, नकल-रसीद, आवश्यक नियम आ अन्तिम आदेश—सभकेँ प्रमाणक बराबर दर्जा देल जाए तँ उपन्यासक अपन कथाकर्म बिघड़त। ई भेद आख्यानशास्त्र प्रेरित आलोचनाक महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि, मुदा पात्रक अनुभवकेँ शुष्क वर्गीकरणमे पिरोय देब सेहो अनुचित हएत। नामक उच्चारणमे लाज, वयसक थकान, उपचारक भय, कामक भाड़ा आ भोजक समय एहि प्रमाणक सामाजिक लागत छथि।

नारीवादी आख्यानशास्त्रमे रुहानीक नेतृत्व चम्पाक निजी स्वीकृतिक कारण परीक्षणमे अबैत अछि; अनिता निजता चाहैत छथि, सलमा अपन नामसँ शिकायत; द्रौपदी एकला समर्थकक सांत्वनासँ आगाँ सभाक उत्तर माँगैत छथि; सरिता बेटीक प्रतिनिधित्वक बदला स्वयं मंचपर चढ़ैत छथि। ई अन्तर पाठमे स्त्री-पात्रकेँ मात्र एक ‘दुःखित समुदाय’क रूपमे नबाँधबाक ठोस उपलब्धि अछि। दोसर कात बहुल सामाजिक नामक शीघ्र प्रवेश कथा-केन्द्रक विस्तार करैत अछि, किन्तु अपन-अपन लम्बा जीवनक स्वतन्त्र कथानक तुरन्त उपलब्ध नहि करैत। आलोचकक

प्रश्न रहत : ई नामसभ अगिला अध्यायमे निर्णय, पछतावा, बदलाव आ असहमतिक रूपमे फेर जीवित होइत छथि कि एक-एक प्रसंगक उदाहरण मात्र रहि जाइत छथि?

मूल्यांकन : उपलब्धि आ पुनरावृत्तिक खतरा

सभा-पर्वक आरम्भक सर्वोत्तम संरचनात्मक निर्णय ई अछि जे सरिताक सार्वजनिक उपस्थिति, रुहानीक नियम-पठन आ विकर्णक नैतिक उच्चारणक बादो विजयोत्सव नहि मनाओल गेल। पात्रसभ प्राप्ति-पर्ची, मसौदा, सुरक्षित प्रति आ अगिला कार्यसूची लऽ घुरैत छथि—अधिकार एखन निरन्तर संघर्षक विषय अछि। प्राचीन कथाक द्रौपदी–विकर्ण प्रसंग एहि सामाजिक प्रक्रियाक ई ध्वनि गाढ़ करैत अछि जे चुप्पीकेँ ‘अनुमति’ लिखि देब सेहो सत्ता-कर्म अछि।

मुख्य खतरा आरो स्पष्ट भऽ रहल अछि : बहुत पात्र तुरन्त स्रोत माँगैत, सहमति अलग करैत, निजी विवरण रोकैत आ निर्णय-पायदान चिन्हैत छथि। एहन सावधानी कथा-विश्वक नैतिक स्थिरता बनबैत अछि, मुदा सभ चरित्रक वाणीमे एके तर्क-पद्धतिक अधिकता बहुस्वरताकेँ कम करि सकैत अछि। दोसर खतरा, प्रत्येक औपचारिक विवादक अन्त अगिला बैठक/प्राप्ति-अङ्क पर रहला सँ घटनागत पुनरावर्तनक अनुभूति होएब। एहि आरोपकेँ पूरा उपन्यासपर फैलायब उचित नहि, किन्तु पहिल सोलह अध्यायक प्रत्यक्ष अध्ययनमे ई प्रश्न उचित अछि। सामाजिक परिणामक धीमी गति आ कथात्मक गति एक वस्तु नहि : पहिल वास्तविकताक सम्मान राखैत दोसर कलात्मक कसौटी पर स्वतंत्र जाँचल जाएत।

अध्याय १७ — कैकेयीक देय

महलक चाभी, वृद्ध सेविका आ वचनक व्यय : आरम्भिक दृश्य

अध्यायक आरम्भ अयोध्याक अभिषेक-पूर्व रातिसँ होइत अछि। पहरक घण्टी, फूलक टोकरी, कलश आ धोएल आसन राजसत्ताक दृश्यात्मक तैयारी छथि, मुदा दृष्टिकेन्द्र राजसभाक औपचारिक वक्तव्यपर नहि, मन्थराक हाथमे बन्हल तीन चाभीपर टिकैत अछि। भण्डार, सेविकासभक ओसार आ उपचार-सामग्रीक पेटीक चाभी प्रशासनिक अधिकारक सूक्ष्म रूप छथि। चाभीक भार लोहाक नहि, उत्तराधिकार बदललाक बाद ककर नाम आ आजीविका सुरक्षित रहत—एहि अनिश्चितताक अछि। आरम्भक सेविका द्वारा फूलक गिनती पूछल आ मन्थराक ‘गननिहारक नाम’ सम्बन्धी उत्तर श्रमक सामाजिक दृश्यता तथा राजकीय परिवर्तनक असमान परिणाम एक संग स्थापित करैत अछि।

कैकेयीक पुरान घायल कलाईक पट्टा राजाक प्राण बचएबाक कालक चिह्न अछि। ओहि अतीतक वचन केवल पुरस्कार नहि, भविष्यक लेल स्थगित दायित्व बनल रहल। मन्थरा नब व्यवस्था-सूचीमे सेविकाक नाम कटबाक आशंका कहैत छथि, मुदा हुनका लग लिखल सरकारी सूची नहि अछि; कपड़ाक गाँठक क्रमसँ ओ लोकक नाम स्मरण करैत छथि। कैकेयी हुनका ‘सुनल’ आ ‘देखल’क भेद पुछैत छथि। एहि प्रश्नसँ पाठककेँ मन्थराक चिन्ता पूरा असत्य मानबाक आधारो नहि भेटैत, पूरा प्रमाणित मानबाक आधारो नहि भेटैत। खास बात ई जे मन्थरा भरतक भविष्य आ अपन वृद्धावस्थाक भयकेँ सेविकासभक हितक पाछाँ नुका नहि दैत छथि। अपन हितक स्पष्ट

स्वीकार हुनक चरित्रकेँ केवल षड्यन्त्रक कठपुतलीसँ अधिक जटिल बनबैत अछि; तथापि स्वार्थ स्वीकार कएलाक कारण हुनक उपाय नैतिक रूपसँ निर्दोष नहि बनि जाइत।

प्रतिज्ञासँ वनवास धरि : घटना-पञ्जी आ कारणक भेद

पहिल ठोस परिवर्तन अभिषेक-तैयारीक बीच सेविका-स्थानान्तरणक अनिश्चित सूचना पहुँचनाइ अछि। दोसर परिवर्तन मन्थराद्वारा अपन मिश्रित भय—सेविकाक देय, भरतक भविष्य, अपन वृद्धावस्था—खोलि कहनाइ। तेसर परिवर्तन कैकेयीक रामक प्रति स्नेह आ भरतक अनुपस्थितिक बावजूद पुरान वर प्रयोग करबाक सम्भावना पर विचार करनाइ। चारिम निर्णायक घटना दशरथक सोझाँ दू वरक माँग अछि : भरतक राज्याभिषेक आ रामक चौदह वर्षक वनवास। पाँचम परिवर्तन कैकेयीक हानिक स्वीकार अछि—ओ वर वापस नहि लैत छथि, मुदा निर्णयकेँ अहानिकर कहलासँ इन्कार करैत छथि। ई घटना-श्रृंखला ‘सेविकाक सुरक्षा लेल रामकेँ वन पठाएल गेल’ एहन सरलीकृत औचित्य नहि स्थापित करैत। सेविकाक वास्तविक चिन्ता सँ वनवासक आवश्यक सम्बन्ध कदापि सिद्ध नहि भेल; स्वयं कैकेयी सेहो एकर निर्विवाद आवश्यकता नहि कहि सकैत छथि।

कथात्मक दृष्टिसँ कैकेयीक चयनमे तीन पृथक स्थिति छैक : पुरान वचन पर अधिकार, अधिकारक प्रयोगक राजनीतिक परिणाम आ परिणामक नैतिक उत्तरदायित्व। दशरथक वचन देबाक दिनक उदारता आ वचन पूरा करबाक दिनक अपरिमेय मूल्य बीच कालिक दूरी अछि। कैकेयी वचनक अधिकारपोषण करैत छथि, मुदा ओकर बोझ राम, भरत, कौसल्या, नागरिक तथा अन्य लोकपर पड़त—ई कथनमे स्वीकार करैत छथि। ‘देनिहार’ आ ‘भार उठौनिहार’क अन्तर अध्यायक अन्तिम आधुनिक दृश्य धरि जाएत। अधिकारक वैध मूल आ ओकर विशिष्ट उपयोगक औचित्य एक नहि : ई अध्यायक मूल तर्कक रूपमे देखाइत अछि, ओकरा रामायणक निर्विवाद मूल मतक रूपमे प्रस्तुत करब उचित नहि।

मन्थराक कथनसीमा सेहो देखबाक चाही। ओ दरबज्जाक बाहर ठाढ़ रहि भीतरी वाक्यसभक केवल आंशिक ध्वनि सुनैत छथि आ आधा आवाजसँ पूर्ण अर्थ बनएबाक जोखिम नहि लैत छथि। एहि क्षण पात्र स्वयं कथन-ज्ञानक सीमा मानैत अछि। कथावाचक पाठककेँ भीतरी संवाद सुनबैत छथि, मुदा मन्थराकेँ नहि; एहि असमान वितरणसँ पाठक पात्रसँ अधिक जानैत अछि। ई प्रतिबन्धित श्रवणक सूक्ष्म विन्यास अछि, ‘सभ पात्र एक्के प्रमाण जानैत छथि’ एहन सामूहिक सर्वज्ञता नहि।

असद सैयदक विद्यालय : सार्वजनिक वचनक स्रोत-समीक्षा

बीसम पाठांशपर कथा आधुनिक विदेहपुरमे कटैत अछि। विद्यालयक सूचना-पट्टपर समितिक ‘सर्वसम्मति’ आ ‘स्वीकृत’ छापल अछि, जखन कि पछिला कार्यवृत्तमे रुहानीक असहमति आ मताधिकारक अन्तर दर्ज भऽ चुकल अछि। असद सैयद सूचना उतारैत छथि, मुदा फाड़ि फेँकैत नहि। ओ सूचना जारी करनिहार, जारी करबाक तिथि आ विद्यालयद्वारा सम्भव सत्यापन अलग लिखैत छथि। विद्यालयक दीवारपर बाहरी कथन चिपकएलाक कारण विद्यालय स्वयं समितिक निर्णयकर्ता नहि बनैत; तथापि विद्यालयक सार्वजनिक प्रतिष्ठा ओहि कथनकेँ विश्वसनीयता दऽ सकैत अछि। एहि दोहरा जोखिमक कारण असद स्रोतक चिह्न, संस्करणक अन्तर आ सुधारक प्रक्रिया चाहैत छथि।

नैरा तीन अपूर्णताक स्पष्ट पृथक्करण करैत छथि : रुहानीक आपत्ति दर्ज, मताधिकार अनिर्णीत; अमलाक नाम-सुधार आवेदन स्वीकार, पुरान मूल पंजी असंशोधित; सरिताक जीवित बयान दर्ज, मृत्युप्रविष्टि एखन कायम। एहि अन्तरकेँ असद विद्यार्थी आ अभिभावक लेल समझनायोग्य बनायब चाहैत छथि। प्रस्तावित सूचना-पट्टपर समितिसँ आएल वाक्यक स्रोत अलग चिन्हित कएल जाएत आ सही कार्यवृत्त उपलब्ध भेलापर ओकर प्रति सेहो टाँगल जाएत। मुदा एखन केवल सही कार्यवृत्तक प्रमाणित प्रति लेल आवेदनक प्राप्ति-अङ्क भेटैत अछि। ‘नव पन्ना लागल’ वा ‘विद्यालये पुरान निर्णय पलटि देलक’ एहन परिणाम एहि अध्यायमे नहि घटल।

असद अपन जेबसँ नकल आ गोंदक खर्चक दू रसीद दैत छथि। कथाक दस्तावेज-केन्द्रित नैतिकता एहि छोट नगद खर्चक कारण मूर्त बनैत अछि : सार्वजनिक सत्यापन नि:श्रम आदर्शक काज नहि, ओकर समय आ लागत ककरो देह आ जेबपर पड़ैत अछि। ओ सुधार-अनुरोधपर अपन हस्ताक्षर चाहैत छथि, मुदा सूचना रचनिहारक समस्त दोष विद्यालयपर लेने सहमत नहि। एकर अन्तर्सम्बन्ध कैकेयीक स्थगित वचनक ‘देय’सँ बनैत अछि—कियो वचन दैत अछि, अन्य लोक खर्च उठबैत अछि; किन्तु दूनू प्रसंगक दण्ड आ दायित्व समान नहि छथि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ अन्तर्पाठीय औचित्य

प्राचीन अयोध्याक रातिक विस्तार आ आधुनिक विद्यालयक दिनभरि चलैत प्रक्रिया क्रमश: विन्यस्त अछि; अन्तमे अयोध्याक भोर (३४) आ विदेहपुरक राति (३५) दुइ कालधाराकेँ एक-दोसराक आगाँ लऽ अबैत अछि। ई समानान्तर काल ‘कैकेयी = आधुनिक फलाँ स्त्री’क स्थिर रूपक नहि रचैत। असद राजकीय वर नहि माँगैत छथि; ओ प्रसारित वाक्यक स्रोत जाँचैत छथि। नैरा राजा नहि, अनिश्चित सरकारी प्रक्रियाक आवेदनकर्ता छथि। साझा संरचना अधिकार-वचन आ वास्तविक परिणाम बीचक अन्तर अछि; ऐतिहासिक संस्थासभक समानता नहि। अयोध्याक भीतरी कक्षक घुटन, विद्यालयक कागद-दीवाल, रसोइक भात आ उर्मिलाक रात्रि-ढुलाईक बीच कथा लोकक पैघ निर्णय आ सामान्य जीवनक लगन काज एक संग रखैत अछि।

कथावाचक अनेक पात्रक आन्तरिक आशंका देखबैत छथि : मन्थराक स्वार्थक स्वीकार, कैकेयीक अनिश्चित कारण, असदक सार्वजनिक वाक्यप्रतिक सावधानी, नैराक क्रमांक लिखबाक क्रिया। दृष्टिकेन्द्रण स्थिर व्यक्ति पर नहि, प्रसंगक अनुसार स्थानान्तरित होइत अछि। फेरो कथा प्रमाणक सीमा लिखि स्पष्ट करबाक शैली अपनबैत अछि—‘समिति एखन अनुमति नहि देलक’, ‘मूल सरकारी पंजी नहि सुधरल’—जाहिसँ पाठकक गलत निष्कर्ष रुकैत अछि। एकर लाभ इतिहासक बारीकी अछि; सीमा ई जे पात्रक जटिल अनुभव कतहु तर्कक पाठांशमे बहि जाइत अछि। विशेषत: कैकेयीक मनोगत दुविधा असाधारण स्पष्ट भाषा पबैत अछि। एहन स्पष्टता उपन्यासक आत्मसमीक्षात्मक प्रकल्प लेल उपयोगी, मुदा भय, आवेग आ भूलक अप्रत्याशित असंगतिक स्वाभाविक विस्तार कम कऽ सकैत अछि।

आख्यानशास्त्र, ध्वनि आ आलोचनात्मक निर्णय

‘सर्वसम्मति’क विज्ञप्ति सँ ‘समस्त उपस्थित व्यक्ति विधिसम्मत रूपेँ सहमत छलाह’ एहन अनुमान अनुचित, किएक तँ सदस्यता, सहभागिता, चुप्पी, आपत्ति आ मत देबाक अधिकारक भिन्नता पहिनेसँ सिद्ध अछि। विद्यालयक मुहर समितिक निर्णयक प्रामाण्य स्वत: नहि बढ़बैत। एतए शाब्द-प्रमाणक वक्ता, कथनक प्रसंग आ

प्राधिकरण जाँचयोग्य बनैत अछि। कैकेयीक प्रसंगमे एक पुरान प्रतिज्ञाक अस्तित्व एक तथ्य, ओकर एक विशेष प्रयोग आवश्यक आ न्यायसंगत होएब पृथक साध्य अछि। मन्थराक सेविका-विस्थापन आशंका सचमुच जाँचयोग्य भय भऽ सकैत अछि; ओहिसँ ‘रामक वनवास बिना सुरक्षा सम्भव नहि’क अविनाभाव सिद्ध नहि होइत।

शिल्पमे चाभी, पट्टा, कापीक दू पाँति, सूचना-पट्ट आ रसीद अलग प्रतीक-समूह बनैत छथि। अन्तिम दृश्य मे उर्मिला बिना रातिक अतिरिक्त घण्टा लिखौने गट्ठर चढ़एबाक अस्वीकार करैत छथि; एहि छोट आर्थिक असहमतिक वजन कैकेयीक महत्तर हानिक संग तुलना कएने बिना बुझल जा सकैत अछि। इएह अध्यायक सुचिन्तित उपलब्धि अछि—देयक पैघ राजकीय भाषा लोकक सूक्ष्म श्रमिक हिसाबमे उतरैत अछि। प्रमुख सीमा : विरोधी राजनीतिक विकल्पसभक कार्यकारी परीक्षण सीमित रहैत अछि; कैकेयीक निर्णयक त्रासद परिणाम रूपरेखा बनेलाक बादो राजकीय परामर्शक बहु-स्वरित प्रतिरोध खुलि नहि पबैत। अगिला अध्याय घरमे रहि गेल श्रमकेँ स्वतंत्र समय देत, मुदा ताहिसँ एहिठामक राजकीय निर्णय निर्दोष नहि बनि जाएत।

अध्याय १८ — उर्मिलाक राति

पुरान अयोध्यामे ‘पाछाँ बचल’ जीवनक कथात्मक केन्द्र

अध्याय अयोध्याक राजमहलमे पानि भरबाक घड़ाक आवाजसँ आरम्भ होइत अछि। रामक वनगमनक प्रख्यात घटनाक पाछाँ लघु दिनचर्या—कौसल्याक औषधि, सुमित्राक सहारा, वृद्ध सेविकाक विश्राम—आगाँ आबि जाइत अछि। लक्ष्मणक यात्रा लेल एक पेटी भरि सकैत अछि, मुदा पाछाँ रहि गेल घरक काजक दोसर पेटीक ‘मालिक’ कियो बनए नहि चाहैत। ई द्विपेटी-विन्यास सरल रूपक मात्र नहि, कथात्मक भार-वितरणक प्रश्न अछि : वीरक प्रस्थानक निर्णय सार्वजनिक नैतिक प्रतिष्ठा पबैत अछि, देखभालक समय अनाम रहि सकैत अछि। उर्मिला लक्ष्मणक वनगमनक आवश्यकता नकारैत नहि; ओ पुछैत छथि जे एतय ककर आवश्यकता बाँचि रहत।

श्रुतकीर्तिक भुजल अन्न आ गुड़ वाला विनोद, माण्डवीक घर-प्रशासनक सीमा, वृद्ध सेविकाक राति ठीकसँ नहि देखबाक कठिनाई आ सुमित्राक सहभागी निर्णय उर्मिलाक भूमिका केवल परित्यक्त पत्नी नहि रहए दैत अछि। ‘हमरा निद्राक वर नहि चाही। हमर हिस्साक राति चाही’—ई वाक्य ओहि कथाभेदक केन्द्र अछि। एकरा लोकप्रिय निद्रा-विनिमयक कथा-संस्करणक स्थापित घटना नहि मानल जाए; एहि उपन्यासक उर्मिला विश्रामक भौतिक अधिकार चाहैत छथि। माण्डवीक प्रश्न—कामक जिम्मा देल जाए तखन निर्णयाधिकार कतेक—उर्मिलाक गणनाक संस्थागत पक्ष खोलैत अछि। सुमित्रा अपन सेवा सम्बन्धी निर्णयक सहभागी बनैत छथि; वृद्ध माए मात्र सेवाक निष्क्रिय पात्र नहि।

लक्ष्मण ‘सभ ठीक कऽ देब’ सन असत्य आश्वासन नहि दैत छथि। उर्मिला सेहो केवल रोषक पात्र नहि; हुनकर क्रोध, प्रेम, व्यवस्था आ व्यक्तिगत आनन्द अलग-अलग रहैत अछि। अध्यायक अन्तिम प्राचीन प्रत्यावर्तनमे ओ सखीकेँ गीत, फूल आ अपन हाथक छोट वस्त्र सीबाक आनन्द कहैत छथि। जतए नायिकाकेँ अनिवार्य त्यागक मूर्ति बनायब सम्भव छल, ओतए कथा ओकर निजी रुचिक अवशिष्ट अधिकार चिन्हैत अछि। मुदा एहि प्राचीन

परिवारक संवाद अनेक बेर समकालीन श्रम-अधिकारक स्वच्छ पदावली लग पहुँचि जाइत अछि; एकर ऐतिहासिक दूरी कथात्मक पुनर्रचनाक शर्त मानि पढ़ब चाही, मूल प्राचीन स्रोतक शब्दशः संवाद नहि।

विदेहपुरक रात्रि-ढुलाई : वास्तवमे की बदलल?

आधुनिक दृश्य पाठांश ११ सँ आरम्भ होइत अछि। अस्पतालक कपड़ा ढोएबाक गाड़ी आयल, मुदा पत्रमे केवल ‘दिनक ढुलाई’ लिखल अछि। उर्मिला रातिक अतिरिक्त घण्टा आ तीन प्रकारक कपड़ाक पृथक गिनतीक शर्त रखैत छथि। नैरा कागद पढ़बामे सहायता करैत छथि, मुदा उर्मिलाक शर्त हुनकर बदलामे नहि कहैत छथि। उर्मिला अपन निजी मजदूरी-रजिस्टर खोलि समय, गट्ठर, पहुँचबाक समय आ ‘भुगतान शेष’क अलग पाँति बनबैत छथि। गाड़ीक चालक सेहो अपन समय लिखबाक आग्रह करैत अछि; उर्मिला ओहिपर सहमत छथि, मुदा ओकर समयकेँ अपन नामपर जोड़बाक नहि। एहि दृश्यक श्रमिक न्याय एक पक्षक बिनमूल्य नैतिक विजय नहि, सबहक कामक भिन्न मापकेँ स्वीकार करब अछि।

अस्पतालक रात्रि-द्वार फोनपर कपड़ा-प्राप्तिक रसीद आ गिनती दर्ज करबाक सहमति दैत अछि, मेहनतानाक स्वीकृति ठेकेदारक जिम्मा कहैत अछि। अस्पताल पहुँचल्यापर बदलल संग्रह-स्थानक सूचना धुलाईघरमे नहि भेजल गेल छल; देरीक सम्भावित दोष फेर श्रमिकपर पड़ि सकैत छल। उर्मिला प्रत्यक्ष हस्तान्तरणक समय लिखबबैत छथि, मुदा भुगतानक घर खाली रहने पर अंगूठा नहि लगबैत छथि। अन्ततः ‘भुगतान अनिर्णीत’ लिखि प्राप्तिपत्रक नकल लैत छथि। कपड़ा पहुँचल; रातिक समय दर्ज भेल; भुगतान नहि भेटल। एहि तीन फलित अवस्थाकेँ एक सफलता-पदमे समेटब मूल पाठमे उपस्थित संघर्षक अवमूल्यन हएत।

उर्मिलाक शरीर एहि लेखाक वास्तविक आधार अछि—दुखैत बाँहि, माथक पसीना, अधूरी निद्रा, उशर पानि, रोटी आ बचल तरकारी। ओकरा केवल प्रमाण-पत्रक प्रतीक बनबैत कथा अपूर्ण रहितय; सरिताद्वारा गरम पानि देब, गाड़ीपर गट्ठर चढ़एबाक प्रत्यक्ष बोझ आ अन्तमे ‘सुतब’क घोषित इच्छा प्रमाणित करैत अछि जे कागदक नैतिकता देहक विश्रामक विकल्प नहि। एही कारण अन्तिम भोरमे नैरा माइक मृत्यु-प्रविष्टि आ सत्ताइस नामक कापी नहि खोलैत छथि। मुख्य रहस्यक अनावश्यक उन्नति रोकेबाक एहि निर्णयसँ गौण देखाएवला श्रम-कथाकेँ अपन निर्णायक समापन मिलैत अछि।

सरस्वती ठाकुरक हुनर, बेटी आ कामक सूक्ष्म अर्थव्यवस्था

अस्पतालक बाहर सरस्वती ठाकुर रोगीक परिजन आ परिचरसभक केश-सज्जा, कटाइ आ देखभालक छोट पेशा करैत छथि। हुनक झोरामे कंघी, केंची, साफ पट्टी, सूत आ रसीद अछि। कैंची चलएबाक दू क्षणक दाम बनबैत ग्राहक तैयारी, सफाइ, आसन आ पानि जुटएबाक समय अकसर नहि गनैत। सरस्वतीक व्यवहार उर्मिलाक गट्ठर-गिनतीसँ संरचनात्मक समानता बनबैत अछि : पेशाक दृश्य ‘अन्तिम काम’ आ ओकर अदृश्य तैयारीक खर्च अलग छथि। मुदा हुनकर पेशागत साक्ष्य उर्मिलाक अस्पताल-खाताक प्रति नहि, अपन शुल्क-रसीद अछि।

सरस्वतीक बेटी प्रशिक्षणक कक्षमे जाएबाक इच्छा बतबैत अछि। माए फीस आ यात्राक हिसाब जाँचबाक कहैत छथि, मुदा बेटीकेँ मातृ-पेशामे स्थिर करबाक आदेश नहि दैत। ‘ककरो बाल छोट करए जानब जीवन भर सभक सपना काटबाक अधिकार नहि दैत अछि’ सन कथन पीढ़ीगत पेशाक अनिवार्य उत्तराधिकारपर हलुक, तिक्त

व्यंग्य अछि। बेटी अन्हार सड़क-बत्तीमे पढ़बाक प्रयास करैत अछि, किएक तँ घरक काम लगला बाद ओकर समय घटत। एहि ठाम श्रम-अधिकार मात्र आजुक मजदूरी नहि; अगिला पीढ़ीक अध्ययन-समयक वितरण सेहो अछि। सरस्वतीक काजक स्थानीय मान्यता आ बेटीक विकल्प दुनू महत्त्वपूर्ण, एकटा दोसराक अवमूल्यन नहि।

चम्पाक अस्पताल-द्वारपर छोट उपस्थिति आगामी अध्यायक नैतिक सीमाकेँ अग्रसारित करैत अछि। ओ रोगिणीक परिजनक निजता देखैत छथि आ कहैत छथि जे सभ खबर सभकेँ देबाक नहि होइत। उर्मिला उत्तर दैत छथि—अपन बात केखन कहब, चम्पा स्वयं तय करतीह। ई अनिवार्य रूपसँ अग्रदीप्ति अर्थात् भविष्यक स्पष्ट भविष्यवाणी नहि; अगिला अध्यायमे निजी सन्देश सार्वजनिक भेलाक बाद पाठक एहि क्षणकेँ नवा अर्थसँ पढ़ि सकैत अछि। सूक्ष्म पूर्वसङ्केत आ निर्णीत पूर्वज्ञानक एहि अन्तरकेँ राखब जरूरी अछि।

कथनकाल, अवधि, दृष्टिकेन्द्र आ रस

कथा अयोध्याक प्रस्थान-पूर्व भोरसँ दिन धरि चलैत आधुनिक रात्रिक श्रम-परिणाममे प्रवेश करैत अछि (११–२७), फेर प्राचीन साँझक छोट पुनरागमन (२८–२९) आ आधुनिक भोरक निद्रामे (३०–३१) समाप्त होइत अछि। कथन-समयक ई टुकड़ा-टुकड़ा लय वास्तविक घण्टाक सममित व्यवस्था नहि, विश्रामक अधिकार पर बनल सर्जनात्मक अवधि अछि। उर्मिलाक रजिस्टरमे लिखल समय आ कथाक पाठमे अनुभवल समय अलग : देरी जँ कागदपर एक पाँति अछि, शरीरक लेल ओ रात्रिक विस्तृत अनुभव होइत अछि। एहि फर्कसँ कथनकाल जीवनक समयक वर्गीकरणपर आलोचना करैत अछि।

तृतीयपुरुष कथावाचक उर्मिलाक पुरान चिन्ता, आधुनिक श्रमक देहगत कष्ट आ सरस्वतीक बेटीसम्बन्धी विकल्पसभक निकट जाइत छथि; आन्तरिक फोकस एके व्यक्ति लग स्थिर नहि। करुणाक संग हास्यक संयोजन—श्रुतकीर्तिक गुड़, सरिताक ‘बारात’ वाला रोटी, ‘सुतब’क अन्तिम उत्तर—अविराम विलापसँ बचबैत अछि। ध्वनि एतय अनुपस्थित नायकक आरोप नहि, उपस्थित श्रमिकक बँटल समयक पहचान अछि। तथापि महलक स्त्रीसभक बीच अत्यधिक व्यवस्थित श्रम-विभाजनक संवाद आधुनिक सामाजिक नीति-पाठांश जकाँ सुनाइ सकैत अछि। शास्त्रीय अन्तर्पाठक जीवित वर्तमानकरण आ अनैतिहासिक सरलीकरणक सम्भावना दुनू एतय अछि; समीक्षा दूनूकेँ एक संग दर्ज करैत अछि।

प्रमाण-विवेचन, उपलब्धि आ असम्पन्नता

प्राप्ति-रसीद कपड़ा पहुँचनाइ सिद्ध करैत अछि; मजदूरीक अनुमोदन नहि। निजी श्रमिक-रजिस्टर समयक दावाक सहाय साक्ष्य अछि, ठेकेदारक आधिकारिक भुगतान-पुष्टि नहि। दिनक छापल पत्रसँ रातिक काम नहि मेटि सकैत, मुदा अतिरिक्त मेहनतानाक मात्रा केवल नैतिक आग्रहसँ सुनिश्चित सेहो नहि। एहि प्रमाण-अनुशासनक कारण उर्मिलाक जीत सीमित, वास्तविक आ भविष्यत् पुनरीक्षणयोग्य अछि। देहक निद्रा तात्कालिक उपलब्धि अछि, आर्थिक भुगतान भविष्यक खुलल प्रश्न।

कलात्मक उपलब्धि ई जे पौराणिक ‘घरे रहि गेल पत्नी’क लघु उपकथाकेँ स्वावलम्बी नैतिक कथा-संसार भेटैत अछि। सरस्वतीक पेशा, बेटी आ अस्पतालक व्यवस्थाक कारण आधुनिक उर्मिला केवल पुरान उर्मिलाक सादृश्य नहि। कमजोरीक सम्भावना एकदम स्पष्ट अछि : रामायणक घरेलू पात्र सभ लगभग सिद्धान्त-वाक्यक कुशल

वक्ता बनैत छथि; संकटमे चुप रहबाक, गलत निर्णय लेबाक वा उपलब्ध श्रम-संबंधक भीतर स्वार्थी प्रतिरोधक स्थान अपेक्षाकृत कम। मुदा उर्मिलाक अन्तिम निद्रा ई गद्य-वाचालताक विपरीत शान्त, नाटकीय समाधान अछि। एहि निद्राकेँ सम्पूर्ण श्रमिक मुक्ति नहि, एक रातिक स्वतन्त्र फल मानल जाए।

अध्याय १९ — चम्पाक सन्देश

निजी इच्छा सँ सभाक अनुचित प्रदर्शन धरि

अध्याय चम्पाक अत्यल्प विश्राम, माइक उपचारक दवाई, भाड़ा आ कामक समयक लेखासँ शुरू होइत अछि। एहि भौतिक दायित्वक बाद फोनमे लिखल अवकाशक निजी सन्देश अबैत अछि : प्रिय व्यक्तिक संग हाट घुमब, गरम जलेबी खाएब, बिना पहरा बैसब। कथावाचक एहि इच्छाकेँ आचरणक लज्जास्पद रहस्यक रूप नहि दैत; ओ चम्पाक अपन कमाइक समयसँ निकालल भावी आनन्द अछि। रुहानी उपचारक निजतासम्बन्धी पूर्व-आपत्तिक प्राप्तिपत्र दैत छथि; चम्पा स्पष्ट करैत छथि जे प्राप्ति भेलासँ माँग मानल गेल नहि। रुखसानाक भातमे नोन अपन थारीमे बढ़एबाक छोट संवाद निजी विकल्प आ सामूहिक नियमक एक सहज व्यावहारिक रूपक बनैत अछि, यद्यपि एकर अर्थ अवश्य अध्यायक नाटकसँ बनैत अछि।

सार्वजनिक खर्चक समीक्षा-सभामे सहायता आवेदन आ सार्वजनिक बजट एके मेजपर अछि। चम्पा माइक निजी उपचारपत्र नहि लऽ केवल यातायात-भाड़ाक प्राप्ति आनैत छथि। सभापतिक हाथमे एक अनजान व्यक्ति छाँटल निजी सन्देश पहुँचा दैत अछि। बीचक पाँति हटाएल; प्राप्तकर्ता नाम अपूर्ण छापल; इच्छा-सूचक सन्देशकेँ सहायता-दुरुपयोगक संकेत बनाकऽ पढ़ल जाइत अछि। एहि क्षण कथा आघातकेँ केवल सभाक हँसीसँ नहि, चम्पाक देहमे ठंडा पड़ब आ कन्हा जकड़बाक संवेदनासँ प्रस्तुत करैत अछि। सार्वजनिक अपमानक कारण सरकारी दवाईक खर्चमे अनियमितता सिद्ध नहि भेल, केवल निजी वाणी अनधिकृत रूपेँ मंचपर अएल।

घटना-पञ्जी : कोन रोकल गेल, कोन नहि

पहिल परिवर्तन अनधिकृत छाँटल सन्देशक सार्वजनिक पाठ शुरू भेनाइ अछि। दोसर चम्पाक स्वयं ठाढ़ भऽ पाठ रोकबाक माँग; सभापतिक पहिल अस्वीकार। तेसर रुहानीक सहायक हस्तक्षेप आ चम्पाक अपन निजी इच्छा तथा सहायता-शर्तकेँ अलग करैत स्पष्ट कथन। चारिम चम्पाक तीन माँगवला हस्ताक्षरित आवेदन—आगाँक पाठ/वितरण रोकल जाए, उपलब्ध प्रति नष्ट नहि कऽ जाँच लेल सुरक्षित राखल जाए, कार्यवृत्तमे असहमतिक अभाव नहि बल्कि प्रत्यक्ष असहमति लिखल जाए। पाँचम प्रक्रिया-परिवर्तन आवेदनक प्राप्ति, ओहि बैठकमे आगाँक पाठ बन्द, मेजपर बचल प्रतिक सीलबन्द राखब, नकल-पञ्जीक क्रमांक जमा। मुदा सभ लोकसँ पूर्व वितरित प्रति घुरि आयल नहि सिद्ध; मूल सन्देश कोना लीक भेल, के सम्पादन कएलक, कोन व्यक्तिसँ मंच धरि पहुँचल—ई सभ अपूर्ण।

चम्पा चोरिएको प्रति तुरन्त फाड़ि नष्ट करबाक बदला जाँचक लेल संरक्षित करबाक माँग करैत छथि। एहि चयनमे प्रतिकूल वस्तुकेँ प्रमाण बनबाक सम्भावना छैक। मुदा प्रचार-प्रति लिफाफामे राखबाक प्रशासनिक कदम स्वयमेव गोपनीयता बहाल नहि करैत—अनेक फोन आ नकलक प्रसार चलि चुकल होय सकैत अछि। नैरा मंचपर पढ़ल

पन्नाक अंश सुनैत छथि, मूल फोन-सन्देश नहि देखैत। चम्पा तुलनात्मक जाँच लेल अपन चुन्नल अंश अधिकृत जाँचकर्ता धरि देबाक सम्भावना रखैत छथि, सम्पूर्ण निजी बातचीत मित्रकेँ सेहो देखएबाक बाध्यता स्वीकार नहि करैत छथि। एहि ठाम अधिकारक वास्तविक फल मूल फोनक सार्वजनिक अधिग्रहण नहि, साक्ष्य साझा करबाक सीमा स्वयं चुनब अछि।

रहीनाक नकल-पञ्जी, करीमक ढोलक आ स्रोतक अपूर्ण शृंखला

करीम डफालीकेँ चम्पाक सन्देशक पाँतिक आधारपर चुनावी प्रचारगीत लिखबाक प्रस्ताव देल जाइत अछि। ओ पुरान राजनीतिक गीत गबैत छथि, मुदा चम्पाक निजी कथनकेँ व्यंग्यक माल बनएब अस्वीकार करैत छथि। ‘ढोलक नहि बाजत’क निर्णय गीतक सामूहिक अधिकार समाप्त नहि करैत; विषय, पारिश्रमिक आ सहमतिक भिन्नता स्थापित करैत अछि। प्रस्तावक पर्ची करीम सुरक्षित रखैत छथि, मुदा चम्पाक अनुमति बिना ओकर नामपर अपन अभियान नहि चलबैत। हुनका ढोलक-किराया नहि भेटल—नैतिक सही निर्णयक आर्थिक नुकसान सेहो लेखामे रहैत अछि। एहि कारण करीमक पात्र आदर्शवादी निर्जीव चिह्न नहि, श्रमिक संगीतकारक विशिष्ट सीमा पबैत अछि।

रहीना ठकुराई नकल आ जिल्दक छोट व्यवसाय करैत छथि। हुनकर रजिस्टर नकल बनबाक समय, पन्ना-संख्या आ क्रमांक देखबैत अछि; ओ कागदक वास्तविक उत्पत्ति आ अपराधी-पहिचानक सर्वज्ञ साक्षी नहि। सभाघरमे घुमैत पन्नाक आकार अपने कामक कागद जकाँ बुझाएलहुँ ओ समान आकारसँ समान मूल सिद्ध नहि करैत छथि। प्राप्तकर्ताक निजी पता बिना अधिकृत प्रक्रिया नहि खोलबाक निर्णय आ जाँचमे प्रासंगिक रजिस्टर प्रस्तुत करबाक तैयारी हुनकर व्यापारक सीमा सुरक्षित करैत अछि। विशेष अर्थ ई जे पुनर्मुद्रण-कर्मी सामग्रीक सत्यक मालिक नहि, मुदा उत्पादनक गनतीक उत्तरदायी छथि। ई एकटा सूक्ष्म दस्तावेजी नैतिकता अछि, जकरा अभिलेखीय ‘सत्य’क एक सरल सूत्रमे समेटब उचित नहि।

करीमक न-बजाओल ढोलक आ रहीनाक सुरक्षित रजिस्टर अभिव्यक्तिक दू तरहक संयम बनैत अछि। एकटा निजी कथाक अपमानजनक पुनरावृत्ति बन्द करैत अछि; दोसर कागदक उत्पत्ति जाँचबाक लेल आवश्यक अङ्क सुरक्षित करैत अछि। दुनू पात्र चम्पाक प्रतिनिधित्व पर कब्जा नहि करैत। ई चम्पाक मुख्य पात्र-स्वाधीनताक संग तालमेल राखैत अछि, मुदा ध्यान रहे जे करीमक प्रस्ताव देनिहार अनाम युवकसभक राजनीतिक प्रेरणा कथनमे अधूरी अछि; प्रचारक स्रोतक बारेमे आरोप कल्पित कएल जाएब अनुचित।

प्रमाण, सहमति आ कथनाधिकारक संकीर्ण सीमा

आख्यानशास्त्र-संगत विश्लेषणमे मंचपर पढ़ल मुद्रित प्रति एक वस्तु, मूल फोनक सन्देश दोसर, ओ सन्देशक काटि-छाँटि बनल रूपक उत्पत्ति तेसर, ओकर सार्वजनिक पाठक अनुमति चारिम प्रश्न। ‘सन्देश मूल रूपेँ लिखल गेल’ सँ ‘सभामे पढ़बाक अनुमति छल’ नहि निकलैत; ‘जलेबी खएबाक इच्छा’ सँ ‘उपचारक सरकारी खर्चक दुरुपयोग’क अविनाभाव सेहो नहि अछि। दर्शकक बहुमत ककरो निजी सन्देशक मालिकाना उत्पन्न नहि करैत। तथापि एहि घटनाक पूर्ण विधिक निर्णय ककरा विरुद्ध, कोन धारामे, एखन सिद्ध अछि एहन दावा कथा नहि

करैत। कबीर केवल सम्भावित शिकायतक प्रक्रिया बुझबैत छथि; चम्पा ‘विधिक उपचारक अधिकार सुरक्षित’ लिखबैत छथि।

कथाक नैतिक महत्त्व चम्पाक अपन लिखित निवेदन स्वयं पढ़बाक क्षणमे अछि। रुहानी एकर साक्षी, स्वतः प्रतिनिधि नहि। सभाक भीतर निजी जीवनक अधिकार बचबैत चम्पा अपन प्रिय व्यक्तिक संग अगिला वार्तालापक समय सेहो स्वयं चुनैत छथि : ओ पूरा चोटक कथा तत्काल फोनपर नहि लिखबैत। एकटा अनधिकृत प्रकाशनक प्रतिरोधक बादो अपन प्रियजनसँ संवादक इच्छा बचल—ई अपमानक एकरेखीय जीवन-परिभाषाकेँ रोकैत अछि। सरिता नैराकेँ खाली सूचना-घर अनुमानसँ नहि भरबाक चेतावनी दैत छथि; नैरा पञ्जीमे ‘मूल अज्ञात’ आ ‘प्रतिरोध प्राप्त’ लिखि दोषी-पहिचानक पाँति खाली राखैत छथि। एतए रिक्त स्थान अलंकारिक रहस्य नहि, ज्ञानक प्रमाणित सीमा अछि।

कथन-लय, भाषिक विरोधाभास आ आलोचनात्मक सीमा

कथन-संयोजन एक भोरक निजी सन्देशसँ सामुदायिक सभा, बाहरी नकलकोठरी, आश्रय आ घरक राति धरि जाइत अछि; बीच-बीचमे पाठक चम्पाक देहगत कष्ट आ ओकर अपमानक सामाजिक प्रतिध्वनि अनुभव करैत अछि। ‘जलेबी’क शब्द एक बेर निजी आनन्द, दोसर बेर हँसीक औजार, तेसर बेर रुखसानाक सान्त्वनात्मक भोजन-भविष्य बनैत अछि। एही आवर्तनसँ शब्दक अर्थ प्रसङ्गानुसार सरकैत अछि; ध्वन्यात्मक प्रभाव एकरेखीय प्रतीकवादसँ अधिक जटिल अछि। करुणा, रोष आ हास्यक क्रम पाठककेँ पीड़ितकेँ केवल पीड़ाक जड़ व्यक्तित्व मानबाक विरुद्ध रखैत अछि।

उपलब्धि : महिला-पात्रक सार्वजनिक कथनाधिकार, ज्ञानक जाँच आ लोकसंगीत/प्रतिलिपि-श्रमक स्वतन्त्र भूमिका एक घटनामे समाहित, बिना स्रोत-पहिचान घड़ने। सीमा : अत्यन्त संवेदनशील सभामे एकाधिक पात्र तुरन्त स्पष्ट, व्यवस्थित नीतिशब्दावलीमे उत्तर दैत छथि; अपमानजनक हँसीक समाजमनोविज्ञान, निरुत्तर चम्पाक दीर्घ मानसिक समय आ सभापतिक सत्ता-आधार अपेक्षाकृत कम विकसित अछि। सभापतिक अन्तिम रोक सीमित प्रशासनिक कदम अछि; ओकरा नैतिक रूपान्तरणक निर्णायक प्रमाण मानब गलत। एहि अध्यायक आख्यानक सफलता ठीक एहि अपूर्णताक उद्घाटनमे अछि : निजी सन्देशक मूल स्रोत एखन अज्ञात, चम्पाक निजी जीवन एखन हुनकर अपन।

अध्याय २० — जल्दी प्रकाशन

सुधारक इच्छासँ क्षतिकारक निर्णय धरि : कथानकक मोड़

बीसम अध्याय नैराकेँ नैतिकदृष्ट्या सुरक्षित केन्द्रक रूपमे नहि राखैत। चम्पाक सभा-बाद ओकर मनमे अन्याय रोकबाक जल्दी अछि, आ बन्द बाहाक जोखिम दूर करबाक जनहितक तात्कालिकता सेहो। महेश मंडल पहिने गोदामक प्रवेशसमय दर्ज करबाक अस्थायी काज करैत छलाह। ओ वाहनक समय आ बाट देखलनि; सामानक भीतरक वस्तु, अपराध अथवा उद्देश्य नहि देखलनि। हुनकर मौखिक पुनरुक्ति एहि साक्ष्य-सीमाकेँ आरम्भे स्पष्ट

करैत अछि। महेश खुला छाजनमे भेटबाक स्थान चुनैत छथि आ अपन परिवार, विशेषतः बेटीक विद्यालय-पथ सुरक्षित होएबाक पूर्वशर्त रखैत छथि।

महेशक पत्रक सहमति सीमित छल : गोदामक पाछाँक बाटक सामान्य निरीक्षण लेल समितिकेँ सूचना देल जा सकैत अछि; सार्वजनिक गवाहीक विवरण, पहिचान खोलएवला कार्य-समय वा परिवारक स्थान सुरक्षा होएबाधरि नहि। नैरा पहिल अनुमति-वाक्य पर ठहरैत छथि, अन्तिम निषेध-वाक्य पढ़ितो पर्याप्त महत्व नहि दैत। सहयोगी एतए उचित सावधानी सुचित करैत छथि—पहिने केवल सार्वजनिक नक्शाक असंगति आ स्थल-जाँचक माँग छापू। नैरा अधिकारीक विलम्बक आशंकासँ समय आ पेशागत पहचानक संकेत जोड़ि पोस्ट करैत छथि। एहि निर्णयक नैतिक गम्भीरता केन्द्रीय नायिकाक अज्ञान नहि, ज्ञात शर्तक अवहेलना अछि।

प्रकाशित वाक्यमे महेशक नाम नहि, मुदा ‘पश्चिमी गोदामक पाछाँ’, ‘मरम्मति-काम’ आ ‘पूर्व कर्मी’क संयोजन परिचित परिवेशमे स्रोत पहिचानबाक बाट दैत अछि। एकर दोसर-स्तरीय प्रसारमे ‘पूर्व कर्मी’क अर्थ ‘भेद खोलएवला आदमी’ बनबाक डर देखाइत अछि। नैरा तात्कालिक आरोप रोकबाक प्रयास करैत छथि, मुदा एक मूल पोस्टक प्रतिलिपि, स्क्रीनशॉट आ मौखिक विस्तार ओतय चलि चुकल अछि। के वास्तवमे महेशकेँ पहिचानलक अथवा शारीरिक क्षति पहुँचौलक, एहि सबहक निश्चित निष्कर्ष अध्याय नहि दैत; किन्तु महेशक पुरान परिचितक फोन, घरक बाटक जोखिम आ तत्कालिक सुरक्षा-भय प्रत्यक्ष कथित प्रतिक्रिया अछि। ‘नाम नहि छापल’ एतए पर्याप्त गोपनीयताक प्रमाण नहि।

घटना-पञ्जी : वास्तविक परिवर्तनक पाँच अलग स्तर

(१) महेशक लिखित, शर्तयुक्त जानकारी नैराकेँ भेटैत अछि। (२) नैरा अपर्याप्त अनुमति पर पहिचानसँ सम्बन्धित विवरण नगरक डिजिटल समूहमे प्रकाशित करैत छथि—ई सम्पन्न क्रिया अछि, केवल विचार नहि। (३) महेश फोनपर जोखिम कहैत छथि; नैरा गलती स्वीकार करैत छथि। (४) नैरा पोस्ट हटबैत, सुधार दैत आ मूल मसौदा–प्रकाशित प्रति–सुधार–अनुमति अलग सुरक्षित करैत छथि; मुदा पुरान स्क्रीनशॉट आ लोकस्मृति मेटि नहि सकैत। (५) महेशक परिवार वैकल्पिक सुरक्षित यात्रा आ निवासपर विचार आरम्भ करैत अछि, कबीर सम्भावित प्रक्रिया बतबैत छथि; आधिकारिक सुरक्षा एखन पुष्ट नहि। बाहाक पुनर्मापक अगिला बैठकमे रखबाक सूचना अलग सरकारी घटनाक्रम अछि; ओकर कारण नैराक पोस्ट छल से दस्तावेज नहि कहैत। एहि पाँच स्तरकेँ ‘पोस्ट हटाएलाक बाद मामला सुलझल’ या ‘पोस्टसँ अधिकारी जागल’ कहि एक काजमे समेटब गलत।

महेश नैराकेँ पहिने किछु दिन अपन घर नहि आबबाक कहैत छथि, जाहिसँ परिवारक संकट पुनः नैराक अपराधबोधकेँ ढाढ़स देबाक सामाजिक दायित्वमे नहि बदलए। नैरा एहि मनाहीक पालन करैत छथि। महेशक पत्नी घर छोड़बाक सम्भावित व्यवस्थाकेँ सहमतिक सरल प्रमाण नहि मानैत छथि; ओ बतबैत छथि जे घर छोड़ब सहज नहि। बेटी, पत्नी आ महेश मिलि सम्भावित बाटक सूची बनबैत छथि। एहि छोट परिवारीय बैठकमे संकटग्रस्तक कथनाधिकार बरकरार अछि। ‘रक्षा’ नायकद्वारा बाहरसँ उपहारक वस्तु नहि, प्रभावित परिवारक निर्णय सहित अधूरा काम अछि।

चन्द्रा बादीक पारिश्रमिक : प्रकाशनदोषक समानान्तर अर्थव्यवस्था

चन्द्रा बादी तीन गीत आ अभ्यासक समयवला लिखित अनुबन्ध लऽ अपन मेहनतानाक माँग करैत छथि। कार्यालय हुनका ‘मेहमान’ कहि भुगतान-नियमसँ बाहर राखबाक प्रयास करैत अछि। अनुबन्धमे अभ्यासक समय अछि, यात्रा-भाड़ाक घर खाली; वाद्यक पेटी फाटल छैक आ सहगायिका ओकर पट्टा सिअए मे सहयोग करैत छथि। ई वस्तुगत विस्तार देखबैत अछि जे गीतक सार्वजनिक आनन्दक पहिने सामग्री, यात्रा, समय आ मरम्मतिक श्रम अछि। चन्द्राक कथन—कला बेचब, देहक इतिहास नहि—चम्पाक प्रसंगसँ साझा निजता-विचार रखैत अछि, मुदा चन्द्राक श्रम-सम्बन्धी आर्थिक दावा अलग अछि।

नैराक पोस्ट हटाओल गेलापर दू आदमी चन्द्रासँ महेशक गुप्त ठाम पुछैत अछि, किएक तँ ओ गाम-गाम यात्रा करैत छथि। चन्द्रा स्पष्ट करैत छथि जे पेशागत आवागमन गुप्त निगरानीक लाइसेंस नहि। कार्यालये पूरा पैसा नहि देने, मुदा बकाया स्वीकार कऽ लिखित प्राप्ति देने अछि। चन्द्रा रसीदक दू नकल सुरक्षित करैत छथि; एहिमे आर्थिक फल सीमित छैक। नैरा एहि दृश्यसँ महेशक शर्तक अर्थ पुनः बुझैत छथि : मजदूरक अनुमति अथवा कलाकारक अनुबन्ध अधूरा पढ़ि ओकरा पर अपन मनक निर्णय थोपब दू भिन्न, मुदा तुलनीय प्रकारक अतिक्रमण अछि। तुलना कारणात्मक समानता नहि; ई शर्तक स्वामित्वक सामान्य प्रश्न अछि।

अनुमान, अज्ञात जोखिम आ प्रमाणक विधिसंगत स्तर

महेश देखलनि जे विशेष समयमे वाहन गेल; ‘वाहन गेल’ सँ ‘भितर गैरकानूनी सामान छल’क अनुमान अनिवार्य नहि। नगरक दू नक्शामे बाटक अन्तर पहिनेसँ जाँचक माँग छल; ताहिसँ गोदामक सभ कर्मचारी अपराधी नहि बनैत। महेश स्वयं एहि सीमापर जोर दैत छथि। नैराक डिजिटल प्रकाशन सम्बन्धी दोष तथ्य मात्र असत्य होएब नहि; सत्याभासित अंशक संयोगसँ असुरक्षित पहिचान बनि जाएब सेहो अछि। आख्यानगत पद्धतिमे पक्ष, हेतु आ उपाधिक भेद बुझबाक लेल ई प्रसंग फलदायी अछि : वाहनक समय-प्रविष्टि अन्य हेतु-जाँचक प्रारम्भिक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, पर अपराधक हेतु सिद्ध नहि करैत।

अदितिक कार्यालयक पुनर्मापक-सम्बन्धी सूचना भिन्न मूल आवेदनसभ—गोमतीक स्थल-अनुरोध, ताराक चिह्न आ हीराक जलमाप—क बाद आबैत अछि। सूचना नैराक पोस्टकेँ कारण नहि ठहरबैत। तेँ ‘जोखिम उठाओल आवश्यक छल, किएक तँ प्रशासन हिलल’ इएह परिणामवादक प्रमेय उपन्यास स्वयं रोकैत अछि। यहाँ एकदम महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष अछि : सार्वजनिक निकासक सुरक्षा सामूहिक हित, साक्षीक परिवारक जोखिम व्यक्तिगत हानि; दूटा वास्तविक चिन्ता छथि, मुदा पहिलक आवश्यकता दोसरक असहमतिकेँ शून्य नहि करैत। नैराक त्रुटि ई नैतिक द्वन्द्वक कठिन पक्ष चुनबाक असम्भवता नहि, शर्त-भंग कऽ तकर बाद ओकर औचित्य अनुमानसँ साबित करबाक प्रयास छल।

पद्माक आगमन आगामी ऑडियो-जाँच लेल आधार राखैत अछि। चम्पाक सभामे माइक बन्द होएबाक समय, कोन आवाज केकर, आ महेशक कथनक काटल अंश—ई सभ मूल समयक्रम बिना तय नहि भऽ सकैत, ओ कहैत छथि। लेखनक आख्यानशास्त्रीय अर्थ यहाँ द्विगुण : मूल सन्देशक क्रम काटलासँ चम्पाक अर्थ बदलल, आ नैराक पोस्टमे सशर्त सूचनाक निर्णायक वाक्य काटलासँ महेशक सुरक्षा बदलल। मुदा पद्माक जाँच एखन सम्पन्न

नहि, केवल आमन्त्रण आ सावधान प्रस्ताव अछि। भविष्यक पूर्ण श्रव्य-सत्यापनक दावा एहि अध्यायसँ नहि बनैत।

कथन-समय, दृष्टिकेन्द्रण आ डिजिटल पुनरावृत्ति

आरम्भमे ‘भोर’, ‘दुपहरि’, ‘साँझ’, ‘राति’क क्रम नैराक निर्णयकेँ एक दिनमे सघन बनबैत अछि। पोस्ट करबाक क्षण एकबारिक घटना, मुदा ओकर प्रतिलिपिक प्रसार पुनरावृत्ति आ अनिश्चित भविष्यक समय खोलैत अछि। डिजिटल सन्देश कतेक बेर साझा भेल, पाठ नहि गनैत; एक चिह्नित मूल पाठसँ अनेक वितरित रूप सम्भव भेनाइ कथनक आवृत्तिक सामाजिक पक्ष अछि। नैरा एक मूल पोस्ट मेटा सकैत छथि, पाठकक स्मृति आ अन्य फोनक स्क्रीनशॉट नहि। कथा समयक एहि अपरिवर्तनीयता द्वारा शीघ्र प्रकाशनक दायित्व मूर्त करैत अछि।

कथावाचक प्रारम्भमे नैराक आतुर अनुमानकेँ भीतरसँ देखबैत छथि, तकर बाद महेशक भय, पत्नीक घरेलू असुरक्षा, चन्द्राक आर्थिक अधिकार, संकेतक प्रश्न आ पद्माक जाँचक सीमा अलग-अलग स्थानमे रचैत छथि। केन्द्रित चेतना नैराक अपराधबोधमे सदा बन्द नहि रहैत। विशेषतः महेशक पत्नी आ संकेत नैराकेँ नैतिक कथावाचक बनबाक एकाधिकार नहि दैत। ‘अहाँ हमरसँ तस्वीरक अनुमति पुछैत छी, महेशक संग ओ नियम किएक नहि?’—संकेतक प्रश्न एहि अध्यायक आत्मालोचनात्मक मोड़ अछि। पहिले अध्यायसभक तुलनामे नैराक गलती नायिका-विकासक वास्तविक प्रतिकूल घटना अछि; पात्र केवल दोष जाँचनिहार नहि, दोषक कारण सेहो बनल।

चन्द्राक वाद्यक अधूरा सुर आ नैराक छाँटल वाक्यक सम्बन्ध अध्यायक अन्तिम ध्वनि रचैत अछि। आधा पाँति हटाओल अथवा सुरक आगाँ-पाछाँक साँस काटल गेलापर तात्पर्य बदलि जाएत; जाहि तरह दस्तावेजक एक शर्त हटाओलासँ सहमतिक अर्थ बदलल। बाहा-सँ बहैत पतली धार वास्तविक भौतिक संकटक स्मरण दैत अछि : सुरक्षित जलमाप चाही, मुदा ताहि लेल ककरो घर असुरक्षित करब जरूरी नहि। यद्यपि ई अन्तिम वाक्य कथाक प्रत्यक्ष नैतिक व्याख्या सेहो अछि; प्रतीकक खुलापन आ नीतिक स्पष्ट घोषणा बीच तनाव देखाइत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि, आलोचनात्मक आपत्ति आ सीमित निष्कर्ष

ई अध्याय पहिल उन्नीस अध्यायक नियमित नैतिक सावधानीकेँ स्वयं परीक्षणमे लगबैत अछि। नैरा बारंबार स्रोत, प्राप्ति, सहमति आ प्रकाशनक सीमा सीखि चुकलीह; एतए ओ अनुपालन नहि कऽ त्रुटि करैत छथि। एहि कारण चरित्र-विकासमे वास्तविक प्रतिकूलता प्रवेश करैत अछि। महेशक स्वाधीन कथन, पत्नी-बेटीक अलग जोखिम आ चन्द्राक अपन अनुबन्धपर अधिकारक कारण एक नायिकाक पछतावा सभक कथा नहि निगलैत। मुदा पाठककेँ नायकक भूल ‘सीख’ मे बदलबाक गति कनेक तेज लगि सकैत अछि : महेशक जीवनमे सम्भावित दीर्घ परिणाम एखन अनिश्चित, जबकि नैराक आत्मस्वीकृति एके दिनमे स्पष्ट भऽ जाइत अछि। जँ आगाँक अध्यायमे प्रत्यक्ष जोखिम, विश्वासक पुनर्निर्माण आ प्रभावित परिवारक भिन्न प्रतिक्रिया विस्तृत नहि भेटत तँ एहि गम्भीर त्रुटिक नाटकीय भार घटि सकैत अछि। एखन एहन भविष्य-निर्णय नहि, आलोचनात्मक जाँच-प्रश्न मात्र राखल जा सकैत अछि।

अन्य सीमा दस्तावेजक अन्तिम पाँति, डिजिटल पहचानक संकेत आ नैतिक निष्कर्षक अत्यन्त व्यवस्थित मिलान अछि। ई वैचारिक स्पष्टता उपयोगी, मुदा प्रसारित डिजिटल गपक अनियन्त्रित समाजमनोविज्ञान, स्थानीय अधिकारक दबाव आ नैराक प्रथम त्रुटिक अनपेक्षित आत्मतर्कक आरो विस्तार सम्भव छल। तथापि अध्यायक निर्णायक उपलब्धि दुर्लभ अछि : लोकहितक नामपर रचल प्रकाशनकेँ आलोचना नकारात्मक साक्ष्यक सोझाँ जाँचैत अछि; ‘हमर उद्देश्य नीक छल’ कहि दोष मेटाबय नहि दैत। सुधारपत्र छपल, स्रोत-सुरक्षा एखन अनिर्णीत, पोस्टक प्रसार पूर्ण वापस नहि भेल—इएह वास्तविक अन्त अछि।

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १७–२० क तुलनात्मक आख्यानशास्त्रीय विवेचन

अधिकारक वचन, निर्णयक भार आ चूकक समय

कैकेयीक पुरान वरक प्रयोग, उर्मिलाक लिखित रात्रि-घण्टा, चम्पाक निजी सन्देशक अनधिकृत पाठ आ महेशक शर्तयुक्त पत्रक उल्लङ्घन—ई चारि अलग-अलग प्रमाण-स्थितिक घटना छथि। पहिलमे वचनदाता आ परिणाम-वहनकर्ता अलग; दोसरमे श्रमक प्रत्यक्ष घण्टा आ भुगतान-स्वीकृति अलग; तेसरमे सन्देशक सत्यता आ ओकर सार्वजनिक पाठक अनुमति अलग; चारिममे सामान्य निरीक्षणक सहमति आ पहचानयोग्य साक्ष्य प्रकाशित करबाक अनुमति अलग। ‘किछु लिखल अछि’ सँ ‘सभ उपयोगक अधिकार भेटल’ एहन छलाँग चारू ठाम आलोचनाक केन्द्र बनैत अछि। मुदा एहि समानतासँ चारू घटना कानूनन अथवा नैतिक परिणाममे समान नहि होइत। रामक वनवास, उर्मिलाक बकाया, चम्पाक अपमान आ महेशक सुरक्षा प्रतिकूलताक अलग-अलग स्तर छथि।

कथनक स्वर आ प्राचीन-आधुनिक वितरण

सत्रहम अध्याय अयोध्यासँ विद्यालय आ फेर अयोध्या–विदेहपुर प्रत्यावर्तन रचैत अछि; अठारहम अध्याय अयोध्या–अस्पताल–अयोध्या–अस्पतालक दूधारी कालसंयोजन बनबैत अछि। उन्नीसम आ बीसम अध्यायमे स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि; अयोध्याकाण्डक महाविन्यास नैतिक प्रश्नक पृष्ठभूमि रहैत अछि। एहि रूपमे महाकाव्यक अन्तरपाठ घनत्व-भेद सहित चलैत अछि, एक नियमक यान्त्रिक अनुपालन नहि। कैकेयी, मन्थरा, उर्मिला, श्रुतकीर्ति, माण्डवी, सुमित्रा आ लक्ष्मणक संवाद आधुनिक वैचारिक शब्दावलीक समीप आबैत अछि; ई पुनर्लेखनक घोषित चुनाव अछि, ऐतिहासिक वाङ्मयक प्रत्यक्ष अनुवाद नहि।

सामाजिक श्रमक स्वतन्त्र उपकथा आ ओकरा प्रति आलोचनात्मक सावधानी

मन्थराक चाभी सम्हारब, असदक सूचना-नकलक दाम, उर्मिलाक धुलल कपड़ाक घण्टा, सरस्वतीक केशसज्जाक सामग्री, करीमक ढोलक-पारिश्रमिक, रहीनाक नकल-काम आ चन्द्राक गायन-अनुबन्ध—ई सभ पेशा ‘समाजक सूची’ मात्र नहि छथि। जखन ओ अपन दाम, तैयारी, साक्ष्य आ निर्णयक अंश स्वतन्त्र रूपेँ राखैत छथि, तखन उपकथाक कथात्मक अस्तित्व बनैत अछि। मुदा अधिकांश पात्र जल्दी-जल्दी उपयुक्त नीतिवाक्य

बोलैत छथि; किछु सामाजिक पात्रक निजी असंगति, मोह, भय आ भिन्न भाषिक स्तरक पर्याप्त विस्तार एखन नहि भेल। एके अधिकृत नैतिक शब्दावली समस्त पात्रक स्वतन्त्र आवाजक विकल्प बनि जाए तँ बहुस्वरताक दावा दुर्बल पड़त। एतए कलाकार, श्रमिक आ प्रतिलिपिकारक कथोपकथन के कतेक अवसर भेटल, ई वास्तविक प्रश्न अछि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ सामाजिक प्रमा धरि

वचनक अस्तित्व प्रयोजनक औचित्य नहि; प्राप्ति-रसीद भुगतान नहि; मूल निजी सन्देशक सत्यता सार्वजनिक पाठक अनुमति नहि; वाहनक देखल समय अवैध मालक प्रमाण नहि; सरकारी पुनर्मापकक आगामी सूचना नैराक जोखिमपूर्ण लेखनक सफलता नहि। एहि पाँच भेदकेँ कथाप्रमाणक क्रममे देखब बेशी उचित अछि। आख्यानगत सिद्धान्तक पूर्ण औपचारिक अनुमानक अप्रमाणित दावा कएने बिना उपन्यासक प्रमाण-वस्तुक आधारपर हेतुक अपर्याप्तता, सन्दर्भ-सीमा आ अननुमेय निष्कर्ष पहिचानल जाएत। विशेषतः बीसम अध्यायक नैराक गलती प्रमाण-पद्धतिपर ओकर अधिकार समाप्त नहि करैत, मुदा प्रमाणक नैतिक वितरणक जिम्मेदारी ओकरा स्वयं पर लागू करैत अछि।

कथा-विकासक स्पष्ट परिणाम आ अगिला जाँचक प्रश्न

अध्याय १७क अन्तमे विद्यालयक सही कार्यवृत्त लेल प्राप्ति-अङ्क भेटल, मूल अन्याय कायम; अध्याय १८मे कपड़ा पहुँचि गेल आ रातिक श्रम दर्ज भेल, पैसा शेष; अध्याय १९मे निजी सन्देशक ओहि दिनक पाठ रोकल गेल, प्रति सुरक्षित रहल, स्रोत अज्ञात; अध्याय २०मे नैराक गलत प्रकाशन हटाओल आ सुधार कएल गेल, महेशक सुरक्षा अनिर्णीत। एहि सभमे संस्थागत ‘प्राप्ति’ आ वास्तविक ‘परिणाम’क दूरी कथा बारंबार लौटा रहल अछि। ई आवर्तनक लाभ कथानकक वास्तविक प्रशासनिक समयक विश्वासनीयता अछि; जोखिम एहि बातक जे प्रत्येक अध्याय एकरे प्रकारक सावधानी–रसीद–अपूर्णता सूत्र पर समाप्त भेला सँ नाटकीय लय एकरस भऽ सकैत अछि। बीसम अध्यायक नैराक क्रियात्मक विफलता एहि एकरसताकेँ महत्त्वपूर्ण चुनौती दैत अछि। भविष्यक अध्ययनमे जाँचल जाए जे प्रतिकूल निर्णयक दीर्घ परिणाम पात्रसम्बन्ध, आवास, सामुदायिक भरोसा आ जलनिकासक कारण-क्रममे वस्तुतः कतेक प्रवेश करैत अछि।

अध्याय २१ — ककर आवाज

श्रवणक भौतिक विन्यास आ उद्घाटनक नैतिक प्रस्ताव

अध्यायक पहिल दृश्य सामुदायिक भवनक पश्चिमी कोठरीक अछि। पङ्खाक घरघराहट, ध्वनि-यन्त्रक लाल बत्ती, खिड़कीक किवाड़ आ कुर्सीक दिशा केवल सजावटी वस्तु नहि रहैत। पद्मा पहिने आसन एना घुमबैत छथि जे वक्ताक मुहँ प्रकाशमे रहए; हुनकर आग्रह अछि जे होंठ पढ़निहार आ संकेतक माध्यमसँ प्रश्न करनिहार सेहो उत्तरक भागी बनथि। एहि सूक्ष्म व्यवस्थासँ अध्याय ‘आवाज’केँ केवल कानसँ सुनाइ देनिहार ध्वनि नहि, पहुँच, अनुवाद, दृश्यता आ प्रतिक्रिया-सक्षम सार्वजनिक स्थितिक रूपमे परिभाषित करैत अछि। कथाक पहिल परिवर्तने

भौतिक अछि : मेजक पाछाँ बैठल विशेषज्ञ सार्वजनिक व्यवहारक केन्द्र नहि बनैत छथि; बोलनिहार आ सुननिहारक बीचक अवरोध हटल जाइत अछि।

एहि दृश्यसँ तुरन्त पहिने-पाछाँ लोकपाठ–खुला खाता–गीतक वार्षिक आयोजनक तैयारी चलि रहल अछि। रुखसानाक चूल्हासँ धुँआ निकलबाक बाट, हमीदाक गीतक बही, मजदूरीक बकाया आ जलपंजी एकटा साझा सार्वजनिक स्थानमे आबैत अछि। आयोजित 'सांस्कृतिक' कार्यक्रम आ अभिलेखीय जाँच दुनू एक-दोसरासँ अलग रखने नहि जा सकैत : जे मंचपर मनोरंजनक श्रेय पबैत अछि, ओहि मंचसँ परिश्रमक हिसाब सेहो पढ़बाक अछि। ई अध्यायक काल–स्थानक निर्णायक विशेषता अछि। मुदा आयोजनक पहिने घुमैत दू छोट ऑडियो लोकक पूर्वनिर्णय बना चुकल अछि; सभक लग मूल ध्वनि-पाठ नहि रहितहुँ सभ 'पूरा निर्णय' सुना रहल अछि। आरम्भक तनाव एतय अछि : एक अवयवक प्रसार कथाक पूर्ण कारण-क्रमपर कब्जा कऽ रहल अछि।

नैरा अपन पिछला प्रकाशनमे महेशक अनुमति-शर्त तोड़बाक बात स्वयं स्वीकारैत छथि। पद्माक उत्तर—नैराक अपराधबोध सेहो प्रमाण नहि—चरित्र-विकासक उपलब्धि आ आलोचनात्मक अनुशासन दुनू स्थापित करैत अछि। पछतावा पीड़ितक आवाजक स्थान नहि लऽ सकैत। नैरा कापीमे 'कथन, अनुमान, अनुमति' तीन कोष्ठक बनबैत छथि आ पहिने सँ ककरो नाम नहि लिखैत छथि। एहि भौतिक लेखन-चेष्टामे बीसम अध्यायक गलत प्रकाशनक फल कथा-व्यवहारमे रूपान्तरित भेल अछि; केवल आत्मशिक्षापर नैतिक भाषण नहि। तथापि भविष्यमे ओ सीमा निभौतीह कि नहि, ई एहि एक दृश्यसँ निर्णीत नहि।

काटल वाक्यसँ उलटल अर्थ : पहिल ऑडियोक घटना-पञ्जी

घटनाक पहिल क्रम एहि प्रकारेँ स्थापित होइत अछि : (१) सचिव दू फोन आ स्मृति-पत्रक अनैत अछि; (२) घूमैत टुकड़ामे 'सभक सामने पढ़ू' आ 'चम्पाक निजी बात' जोड़ल सुनाइत अछि; (३) समाज एहि जोड़केँ रुहानीक निजी संदेश पढ़बाक आदेश मानि चुकल अछि; (४) पद्मा पूछैत छथि जे ई दू अंश एक्के वाक्य थिक की नहि; (५) सभापतिक सीमित अनुमतिक बाद कार्यालयक मूल ध्वनि-फाइल कार्यालयक यन्त्रपरहि चलाओल जाइत अछि। एहि क्रममे श्रव्य सामग्रीक धारक, ओकरा देखबाक अनुमति आ सार्वजनिक रूपेँ बाँटबाक अधिकार अलग-अलग अवस्था छथि। यन्त्र कार्यालयक अछि, एतेकसँ रेकॉर्ड स्वतः निर्दोष नहि ठहरैत; ओकर उत्पत्ति आ कार्यवृत्तसँ मिलानक आवश्यकता पद्मा स्वयं स्वीकारैत छथि।

मूल फाइलमे रुहानी पहिने निजी कागद उठेबाक 'नियम' सार्वजनिक पढ़बाक माँग करैत छथि; फेर स्पष्ट कहैत छथि जे चम्पाक 'निजी बात' सार्वजनिक नहि पढ़ल जाय। घूमैत अंशमे पहिल वाक्यक आरम्भ आ दोसर वाक्यक निषेध कटि गेल अछि। फलतः जकरा मूल कथनमे निजताक रक्षा भेटैत अछि, ओहि कथनक सम्पादित टुकड़ा निजता-भङ्गक समर्थन बनि जाइत अछि। ई सामान्य सारांशक अभाव नहि, अर्थ-संरचनाक विलोम अछि। रुहानीक चेहरापर थकान आ चम्पाक बन्द हाथ खुलब दृश्यकेँ पीड़ितक देहगत प्रतिक्रियासँ जोड़ैत अछि; किन्तु देहगत प्रतिक्रिया कटल ध्वनिक तकनीकी प्रमाण नहि, ओकर नैतिक प्रभावक दृश्य अछि।

मूल रेकॉर्डमे माइकसँ कर्मचारी दूर होएबाक कारण लगभग आधा मिनटक धुँधल विराम अछि। पद्मा ओहि शून्यकेँ कागदपर चिह्नित रखैत छथि; गुम अंशक शब्द कल्पित नहि भरैत छथि। सचिवक कार्यवृत्तमे नियम पढ़बाक माँग

आ चम्पाक निजी पाठ रोकबाक आपत्ति अलग दर्ज अछि, मुदा पेंसिलसँ काटल एक शब्दक कारण स्वयं सचिवकेँ याद नहि। ई दूनू अपूर्णता लुकेबाक बदला अभिलेखक सीमा बनि उभरैत अछि। एकटा विशिष्ट आरोप उपलब्ध मिलानसँ असंगत सिद्ध होइत अछि; एहिसँ सम्पादकक पहिचान, उद्देश्य अथवा सम्पूर्ण रेकॉर्डक अखण्डता प्रमाणित नहि होइत। पद्मा नैराक जल्दबाजी रोकि केवल विशिष्ट आरोप स्थगित करबाक संयत कथन स्वीकारैत छथि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ श्रव्य प्रमाण आ असिद्ध कर्ता

एहि प्रसंगमे प्रत्यक्षक साधन कानक संग-संग यन्त्र, सन्दर्भ, लिखित कार्यवृत्त, समयक्रम आ वक्ताक उत्तर अछि। कटि-जुड़ल टुकड़ा सुनल गेल—ई श्रव्य प्रत्यक्षक विषय; ओकरा ‘रुहानी चम्पाक निजी बात सार्वजनिक कराबय चाहैत छलीह’ निष्कर्षमे बदलब अनुमानक अवस्था; एहि अनुमानक हेतु वाक्यक पूरा क्रम हटला सँ बाधित होइत अछि। ‘कण्ठ समान लगल’ आ ‘अर्थ एक्के अछि’ दूटा अलग दावा छथि। मूल कार्यालय फाइलक उपलब्ध क्रम विशेष आरोपक विरुद्ध महत्त्वपूर्ण प्रतिकूल साक्ष्य अछि, मुदा एहि फाइलक बाहरी उत्पत्ति, पूर्णता आ अखण्डता स्वतन्त्र जाँचक विषय रहैत अछि। मूल पाठ स्वयं एहि सावधानीक आग्रह करैत अछि; तेँ एकरा आख्यानगत सम्पूर्ण औपचारिक प्रमेय सिद्ध भऽ गेल कहब अनुचित हएत। ई कथामे हेतुक सीमा आ बाधक साक्ष्यक व्यावहारिक परीक्षा अछि।

दोसर ऑडियोक महेशक आवाज सभा-रेकार्डसँ मेल नहि खाइत, कारण महेश ओहि सभामे मंचपर बजल नहि छलाह। ‘रातिक गाड़ी सभ अवैध’ सन जोड़ल सार्वजनिक व्याख्या पहिल ऑडियोक जाँचसँ प्रमाणित नहि भऽ सकैत। पद्मा एहि पृथक्करणकेँ स्पष्ट करैत छथि; नैरा महेशक सुरक्षा-शर्तक कारण दोसर अंशक प्रकाशन रोकैत छथि। एहि ठाम ‘नहि लिखब’ एकटा नकारात्मक, मुदा वास्तविक नैतिक क्रिया अछि। रुहानीक प्रतिवाद सेहो महत्त्वपूर्ण—सभ ठाम मौन रहब समाधान नहि, मौनक अधिकार ककरा अछि से पूछल जाय। परिणामतः कथा एक सार्वभौम चुप्पी-विधान नहि बनबैत; व्यक्तिक चयन आ लोकहितक प्रमाण-सन्तुलन खोजैत अछि।

सांस्कृतिक श्रम, गीतक अर्थ आ अभिलेखक सार्वजनिकता

हमीदा मिरियासीनकेँ चम्पाक अपमानपर हँसी उठबय लेल लोकगीतक दू पाँति बदलबाक आग्रह भेटैत अछि। ओ गीत नहि गाबथि तँ ‘गामक गीत’ रोकेबाक आरोप; गाबथि तँ अपमानमे भागीदार। एके संग हुनकर पूर्वनिश्चित मेहनताना ‘परम्परागत सेवा’क नामपर आधा घटाओल गेल अछि। चम्पा अपन अपमानक विरुद्ध बोलैत हमीदाक आजीविका बन्द करबाक अनुमति नहि चाहैत छथि। एहि त्रिकोणमे ‘ककर आवाज’ प्रश्नकेँ तीन अलग अधिकारक रूप भेटैत अछि—गायिकाक शब्द-चयन, अपमानित व्यक्तिक निजता, श्रमिकक पारिश्रमिक। पद्मा भुगतान आ प्रयोगक अनुमति अलग मानब आवश्यक बतबैत छथि।

मञ्चपर जलकरक अधूरा पट्टा, चन्द्राक पारिश्रमिक, रुखसानाक पाक-श्रम आ पद्माक सांकेतिक सम्प्रेषणक मानदेय एकहि खुला खाताक विभिन्न खाना बनैत अछि। पद्माक सेवा लेल मद दर्ज भेल, नगद भुगतान एखन नहि। एकर विशेष महत्त्व अछि : दृष्टि अथवा श्रवणसम्बन्धी भिन्नता रखनिहार लोकक सहभागिता निःशुल्क ‘सद्भावना’क भरोसे छोड़ब नहि, ताहि लेल श्रमसम्बन्धी अवसंरचना चाही। खुला सार्वजनिक आसनमे केवल

स्वीकृत कार्यवृत्तक अंश पढ़ल गेल; निजी मूल ध्वनिफाइल सभकेँ नहि सुनाओल गेल। सार्वजनिक जाँचक प्रक्रियागत स्पष्टीकरण आ निजी स्रोतक पुनः उल्लङ्घनक अन्तर कायम रहैत अछि।

हमीदाक विदाईगीत पहिने चलैत उपहासक स्थान लेइत अछि। गीतमे ‘घुरबाक बाट’क अर्थ बेटीकेँ निष्कासनक वस्तु नहि, इच्छानुसार लौटबाक अधिकारसँ जोड़ैत अछि। बूढ़ी स्त्रीक विवाहकालीन तामक लोटा मंचपर अयनाइ व्यक्तिगत स्मृति आ सार्वजनिक कला बीच नव सम्बन्ध रचैत अछि, मुदा ओकरा प्रतीक बनाकऽ वस्तु छीनल नहि जाइत; लोटा ओहि स्त्रीकेँ लौटा देल जाइत अछि। संकेतक स्वतः-पाठ-यन्त्र गलत शब्द लिखैत अछि, हमीदा स्वयं सुधारैत छथि। ई यांत्रिक प्रतिलिपि आ जीवित भाषिक अधिकारक भेदक मनोहर ठोस उदाहरण अछि। मुदा गीतमे नैतिक तात्पर्य प्रायः प्रत्यक्ष वाक्यसँ खोलल जाइत अछि, जाहिसँ पाठकीय अर्थ-निर्माणक अवकाश किछु घटैत अछि।

समय-क्रम, दृष्टिकेन्द्रण आ फलित निर्णय

भोरक जाँच, दुपहरिक लोकपाठ, दोपहरि पछिला पर्चा, साँझक घरवापसी आ दोसरा दिनक सूचना-पट्ट—एहि कालक्रममे एकटा अफवाहक वेगक विरुद्ध जाँचक तुलनात्मक धीमापन रचल गेल अछि। कथावाचक पद्माक विशेषज्ञता, नैराक आत्मसंशय, चम्पाक अपमान-स्मृति, रुहानीक व्यथित निजता, हमीदाक पेशागत विवेक आ संकेतक तकनीकी भागीदारी बीच केन्द्र बदलैत छथि। एके चेतनाक विजयक उपन्यास नहि बनबाक सम्भावना एतय प्रबल होइत अछि। खास कऽ चम्पा कहैत छथि जे गलत पाँति काटल जा सकैत अछि, मुदा सुनल अपमान देहसँ ओहिना नहि निकलैत—ई रचनाक सामाजिक स्मृतिक अनवरत आयाम अछि।

हमीदा–चन्द्राक देयक पृथक खाना बनल, पूर्ण नगद नहि भेटल; महेशक सम्बन्धमे नव खुलासा नहि; चम्पाक इलाजक खर्च बाँकी। तत्पश्चात् सूचना-पट्टपर ठेकाक भुगतान रोकबाक नव आदेश लगैत अछि, जाहिसँ अगिला अध्यायक कारण-प्रश्न खुलैत अछि। साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे प्रामाण्यक सीमा विशिष्ट दृश्यसँ सिखाओल गेल अछि, बिना अपराधी गढ़ने। दुर्बलता ई जे पद्मा, रुहानी, चम्पा आ हमीदा कतेको बेर आश्चर्यजनक रूपेँ एक्के सुस्पष्ट नैतिक पदावलीमे बजैत छथि; स्थानीय भाषा, संकोच, अस्थिरता आ व्यक्तिक अपूर्ण आत्मव्याख्याक अधिक विविधता रहितथि तँ संवादिताक जटिलता आर बढ़ि सकैत छल। तइयो ध्वनि-संशोधनक नकारात्मक प्रमाण आ श्रमिक गीतक स्वामित्वक संयुक्त प्रस्तुति अध्यायकेँ विशिष्ट बनबैत अछि।

अध्याय २२ — घरक आदेश

सूचना-पट्टसँ निजी घर धरि : आदेशक तीन पृथक परिधि

पिछला अध्यायक अन्तिम सूचना पहिल दृश्य बनैत अछि। नैराक अभिलेख-ठेकाक भुगतान रोकल गेल अछि आ नव सामग्री सौंपब सेहो रोकल गेल; आदेशमे हुनकर विशेष दोष नहि लिखल। कार्यालयक बाबूसँ ओ दूटा अलग प्रमाण माँगैत छथि—पहिने कएल कामक समय, आ जमा सामग्रीक रसीद। बाबू पूर्ण प्रशासनिक समाधान नहि दैत, मुदा अर्जीक एक प्रतिपर प्राप्ति-मोहर लगबैत अछि। नैरा अपन माथे ‘प्रतिशोध’क निष्कर्ष नहि थोपैत छथि।

महेशक शर्त-भङ्गक बाद हुनकर विश्वसनीयतापर सार्वजनिक विवाद अछि, मुदा आदेशक कारण एखन असिद्ध। एहि दृश्यसँ कथा तत्काल दण्ड–प्रतिशोधक सोझ रेखा नहि बनबैत।

चम्पाक किरायाक कोठरीपर तीन दिनमे खाली करबाक नोटिस अछि; भवन-सुरक्षाक छाप-समान चिह्न रहितहुँ जारीकर्ता अधिकारीक स्पष्ट नाम नहि। मकान मालिक मरम्मतिक खतरा कहैत अछि; चम्पा वास्तविक सीलन वा दरार नकारैत नहि, मुदा भवन-सुरक्षाक निरीक्षण आ किरायेदारकेँ बिना प्रक्रिया हटेबाक निर्णय एक नहि मानैत छथि। रुहानी अस्थायी आश्रयक खाट देब चाहैत छथि; चम्पा सहायता ग्रहणक सम्भावना रखैत छथि, मुदा कोठरी छोड़बाक निर्णय अपने पास रखैत छथि। प्राचीन अयोध्याकाण्डमे घरसँ निकलब आ आदेश मानब जकरा व्यापक संरचनागत प्रतिध्वनि कहि सकैत छी, एतय ओकर आधुनिक रूप स्पष्ट अछि; मुदा एहि अध्यायमे कोनो स्वतंत्र अयोध्या-दृश्य नहि अछि। राम–सीताक निष्कासनकेँ चम्पाक बेदखलीक प्रत्यक्ष कथानक-समता कहब प्रमाणरहित होएत।

तेसर स्तर गौरी कपरियाक घुमन्तु समूहक बसेराक अछि। बाट साफ करबाक नामपर मौखिक हटेबाक सूचना आयल अछि, किन्तु समूहक सभ परिवार एक ठाम रहब चाहैत नहि। गौरी अपन कापीमे तिरपाल-मरम्मतिक समय आ देय रखैत छथि, मुदा व्यक्तिगत यात्रा-बाट आ बच्चासभक निजी ठाम सार्वजनिक नहि करय चाहैत छथि। हुनकर मूल प्रतिवाद—चलैत रहबाकेँ ‘ठाम नहि रहब’ मानब भूल—स्थिर घरक स्वामित्व-केंद्रित अवधारणाक विस्तार करैत अछि। एहि तीन स्तरक बीच समान शब्द ‘आदेश’ अछि, समान अधिकार-स्रोत वा परिणाम नहि। ई भेद आलोचनाक अनिवार्य आधार अछि।

वास्तविक घटना-पञ्जी : निर्णय रोकब सेहो घटना

कथानकक क्रम एकाधिक समकालिक संकटसँ बनैत अछि। आश्रयक खाते पर बिजली, पानि, भोजन आ सहायता-वितरणक नवा लाल रेखा अछि। बैठकमे चम्पा अपन उपचारक निजी कागद आश्रयक सामूहिक खाता संग जोड़बाक विरोध करैत छथि; रुखसाना ‘दानक चाउर’ आ रान्हबाक मजदूरीक अन्तर माँगैत छथि; गौरी घुमन्तु परिवारसभक सामूहिक परामर्शक शर्त रखैत छथि। रुहानी पहिने लोकक नामपर हस्ताक्षर कऽ निर्णय अपन हाथमे लेबाक प्रवृत्तिक आत्मपरीक्षण करैत छथि। एकटा कार्यदल बनैत अछि, मुदा चम्पा, रुखसाना, गौरी आ आश्रयक पुरान सदस्य सभक भूमिका पृथक तय होइत अछि। नैरा अपन ठेका रोकल रहबाक कारण सरकारी प्रतिवेदन लिखबाक अधिकार नहि दाबैत छथि; निजी रूपेँ पढ़बामे सहयोग करबाक सीमा लिखाबैत छथि।

कबीर मूल आदेशक प्रति माँगबाक, तत्काल भौतिक खतरा होए तँ निरीक्षण कराबबाक आ दखलसम्बन्धी विवादकेँ सुरक्षा-विवादसँ अलग रखबाक सलाह दैत छथि। ओ लिखित आपत्ति आवश्यक कहैत छथि, मुदा ओकरा राति धरि रहबाक सुरक्षा-गारंटी नहि घोषित करैत छथि। नगर कार्यालयमे चम्पाकेँ पता चलैत अछि जे नोटिस भवन-मालिकक पत्रक आधारपर बनल; सत्यापित निरीक्षणक प्रति खिड़कीपर उपलब्ध नहि। चम्पा ‘प्रतिवेदन एखन प्राप्त नहि’ लिखाकऽ प्राप्ति लैत छथि। एहि क्षण बेदखली आदेश निरस्त नहि होइत, केवल ओकर आधार पर प्रश्नक अभिलेख बनैत अछि। गौरीक समूह साझा आपत्ति दाखिल करैत अछि, व्यक्तिगत मार्ग

नहि; रुखसाना पकाबयक श्रमक अलग प्रतिफल लेल विवरण जमा करैत छथि। तीनू प्राप्ति अलग-अलग रजिस्टरमे दर्ज होइत अछि।

तकर बादो चम्पाक कोठरीपर नोटिस, दीवालमे दरार, आश्रयक खाट आ ताला रहैत अछि। गौरीक समूहक स्थायी बसेराक अधिकार सिद्ध नहि; रुखसानाक पैसा नहि मिलल; नैराक ठेका बहाल नहि भेल। किंतु पाठांश २९–३१मे स्पष्ट परिणाम अछि : चम्पाक सामान स्वतः नहि हटत, खाट विकल्प रहत, समूह अपन यात्रा स्वयं चुनत, भोजनक देय आगामी खातामे रहत। निर्णयक हकक रक्षा भौतिक समाधानसँ आगाँ नहि बढ़ि गेल अछि; दुनू एक संग अपूर्ण छथि। अध्यायक अन्तिम प्रश्न ‘ऊपर के, आदेश कोन, आ निर्णय लेबाक अधिकार ककर?’ समस्त घटनाक प्रमाण-सीमित निष्कर्ष थिक।

वस्तु, श्रम आ जातीय-सामाजिक आवाजक वितरण

चम्पाक नीला परदा आ लोहेक सन्दूक निजी ठामक पहचान बनैत अछि; गौरीक तिरपाल दैहिक सुरक्षा आ चलैत पेशाक संसाधन दुनू अछि। गौरी चम्पाक परदा छोट दाम लऽ सिअैत छथि। एहि लेनदेनमे चम्पा सहायता मात्र पौनिहार नहि, ग्राहक; गौरी दयाक पात्र नहि, विशिष्ट कौशलधारी श्रमिक। ‘तिरपालक सिलाइ आ परदाक सिलाइ अलग’ जेकाँ मितव्ययी वाक्य भिन्न श्रमक वास्तविक तकनीकी ज्ञान रखैत अछि। समूहक बच्ची बचल तिरपालसँ छोट पवनचक्की बनबैत अछि; कथावाचक ओकरा तुरन्त विस्थापनक उद्घोषक रूपमे अर्थ नहि थोपैत। अध्यायमे दुर्लभ कलात्मक संयमक एक उदाहरण ई अछि : क्षणिक खेलक अस्तित्व संकट-रूपक बनेबाक विवशतासँ मुक्त रहैत अछि।

रुखसानाक कथन घरेलू श्रमक आर्थिक अदृश्यताकेँ स्पष्ट करैत अछि—भोजन पौनिहारसँ ओ धन नहि माँगैत छथि; संस्था जखन अपन लेखामे पकाबयक श्रम शून्य लिखैत अछि तखन ओकर प्रश्न उठबैत छथि। ई श्रम-अधिकारक तर्क वाचिक रूपमे सशक्त अछि, मुदा लेखकीय सावधानीक संग एक सीमा सेहो स्पष्ट अछि : रुखसानाक आर्थिक प्रश्न तत्काल प्राप्ति-मोहरपर टिकैत अछि; व्यक्तिगत जीवनक अन्य असंगत इच्छा, भय अथवा मोलभावक स्वर हेतु किछु अधिक दृश्य उपयोगी होइत। गौरीक नाम-वर्तनी अपन मुँहसँ बतायब, सार्वजनिक विवरणक सीमित सहमति आ दलक भिन्न इच्छाक स्वीकार—एहि कारण एक बाहरी पर्यवेक्षकक सर्वज्ञ ‘समुदाय-प्रतिनिधि’क आरोप हुनका पर नहि ठहरैत।

दृष्टिकेन्द्रण, कालिक आवर्तन आ न्यायक प्रमाण-विधान

‘भोर’ कार्यालय, तत्पश्चात् चम्पाक गली, आश्रयक बैठक, दुपहरिक सलाह, साँझसँ पहिने नगर कार्यालय, रातिक घर आ दोसर दिस बाबूक रजिस्टर—ई क्रम एक दिनक प्रशासनिक तीव्रता बनबैत अछि। कथा नैराक अज्ञान स्वीकारबासँ शुरू भऽ चम्पाक निजी निर्णय, गौरीक श्रम, रुखसानाक हिसाब आ कार्यालयी रजिस्टरक बाहरी दृष्टि धरि पसरैत अछि। अन्तमे शहरक दोसर कातक बाबू विजयसूचक नायक नहि; ओ पन्ना अलग-अलग क्रममे रखैत अछि। एहि तरह कथावाचक निर्णय-दावा घटा कऽ अभिलेखीय बहुवचन बढ़बैत छथि।

आख्यानगत उपयोग एतय विशेषत: नकारात्मक सीमा-निर्धारणमे अछि : अधिकारीक नामबिनु मोहर-समान चिह्न वास्तविक निरीक्षणक प्रमाण नहि; कर्मचारीक मौखिक कथन आदेशक लिखित प्रति नहि; अर्जीक प्राप्ति

बेदखली-निरस्तीकरण नहि; घुमन्तु परिवारक सूचीमे नाम नहिबाक आधारपर वास्तविक उपस्थिति नकारल नहि जा सकैत; दानसँ अनल वस्तु स्वयंसेवी पाक-श्रम सिद्ध नहि करैत। ई उदाहरणसभ विचारक स्तरपर एकरूप नहि : किछु स्रोत-समीक्षा, किछु अधिकार-सम्बन्ध, किछु कारणात्मक अनुमान छथि। सभकेँ एक्के सूत्र ‘प्रमाण’ कहि मिलाबयक बदला अलग-अलग प्रमाण-विषयक रूपमे पढ़ब अध्यायक उपलब्धिक उचित मूल्यांकन हएत।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : अधूरा परिणामक साहित्यिक लागत

‘घरक आदेश’ पूर्ण समाधानक अस्वीकारसँ यथार्थपरक सामाजिक समय रचैत अछि। घायल घरमे एक राति सुरक्षित रहबाक आवश्यकता आ कानूनी दस्तावेजक दीर्घ प्रक्रिया एक-दोसराकेँ हटबैत नहि। चम्पाक कोठरीक ताला एखन हुनक हाथमे अछि, मुदा तीन दिनक समय अगिला अध्यायक वास्तविक संकट बनि सकैत अछि—एहि संभावना मात्रक जाँच एतय ठिक अछि; समापनक दावा एखन नहि। कमजोर पक्ष इहो अछि जे लगभग प्रत्येक सार्वजनिक टकराव असाधारण द्रुततासँ सटीक ‘दू अलग बात’ वाक्यमे बदलि जाइत अछि। ई विचार-स्पष्टता कतेको स्थलपर चरित्रक निजी हिचक, असंगत सामाजिक राग आ दफ्तरक प्रतिरोधक अनिश्चित लम्बाइ कम कऽ दैत अछि। तथापि गौरी–चम्पाक मरम्मति-लेनदेन, पवनचक्कीक अनर्थोपदेशित दृश्य आ सरिताक ताला-सम्बन्धी छोट प्रश्न अध्यायकेँ केवल दस्तावेज-सूची बनबासँ बचबैत अछि।

अध्याय २३ — भरतक अस्वीकार

अयोध्याक दीया : शासनक वैधता आ दिनचर्याक तुरन्त आवश्यकता

अध्याय पाछाँक आधुनिक दृश्यसँ हटि राजभवनक प्राचीन कालधारामे प्रवेश करैत अछि। दीपकक बढ़ल बत्ती काटबाक आदेश देबामे सेवक झिझकैत अछि : राजमृत्यु आ उत्तराधिकारक बीच छोट दैनिक क्रिया सेहो अधिकारहीन बनल अछि। भरत स्वयं बत्ती नीचा करैत छथि। ई आरम्भिक दृश्य सम्पूर्ण अध्यायक सङ्कुचित कथा-सूत्र अछि—जे संस्थागत आसन अनिर्णीत, ताहि बीच धुँआ, आगि, अन्न आ पशुक चारा नहि ठाढ़ रहि सकैत। रूपात्मक संयोजनमे दीयाक अनियन्त्रित लौ आ राजनीतिक वैधताक अनिर्णीतता एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि, मुदा पात्रक एक छोट दक्ष क्रियासँ राजकीय संकट दूर नहि होइत।

दशरथक मृत्युसमाचार भरतकेँ भेटल अछि, मुदा शब्दरूप खबर आ अनुभवक शोक अलग बताओल गेल अछि। कैकेयी टूटल कंगनक कुंडी जोड़बामे असफल छथि; भरत पूछैत छथि जे राज्यक वर हुनकर नामपर किएक माँगल गेल जखन ओ स्वयं राज्य नहि माँगने छलाह। कैकेयीक उत्तर प्रेमक नाममे लुकाएल डर स्वीकारैत अछि, नैतिक क्षमादान नहि। ‘खाली आसन’क प्रश्नसँ राजनीतिक लाभक नामपर आनक अधिकार छीनबाक विरोध उभरैत अछि। कंगन-जोड़बाक असफल क्रिया सत्ता-हस्तान्तरणक नैतिक दरारक प्रतीक भऽ सकैत अछि; तथापि ई प्रत्यक्ष पात्र-अवस्था सेहो अछि, केवल दार्शनिक चिह्न नहि।

अस्वीकारक भीतर सकारात्मक शासन : कारणात्मक घटना-पञ्जी

सभा-गृहमे मन्त्री, पुरोहित, अन्नागारक रखबार आ घुड़सालक अधिकारी अलग-अलग संकट लऽ उपस्थित छथि। अन्न-वितरण दू दिनसँ रोकल अछि; पशुक चारा घटैत अछि। भरत राजचिह्न स्पर्श नहि करैत, जेठ भ्राताक राज्याधिकार अपन नामपर नहि लिखबाक घोषणा करैत छथि; मुदा एकरे संग अन्नागार खोलबाक, बाट सम्हारबाक आ वेतन रोकल नहि जाएबाक प्रस्ताव रखैत छथि। एतय अस्वीकार ‘हम नहि’ पर समाप्त नहि; अस्थायी उत्तरदायित्वक सटीक क्षेत्र बनबैत अछि। अपन नाम लिखबाक, विवादित पदक असहमति सेहो दर्ज करबाक आग्रह राज्यक प्रतिनिधिक वैधता आ कामक कार्य-कारणक बीच भेद अछि।

भरत सार्वजनिक सेवा—अन्न, रोगी, सुरक्षा—आ अपरिवर्तनीय अथवा स्वार्थसङ्कटपूर्ण निर्णय—भूमिदान, उत्तराधिकारक नवल घोषणा, निजी पुरस्कार—क सीमा अलग लेखबैत छथि। मन्त्री शासन दुर्बल होएबाक आशंका रखैत छथि। भरत ओकरा हटाएबाक बदला उत्तर दैत छथि जे अधिकारक भरोसाकेँ अपन सम्पत्ति बनौलासँ शासन सरल होएत, मुदा मूल वचनक नैतिक अर्थ नष्ट भऽ जाएत। ई वास्तविक विरोध सहित संवाद अछि; तथापि मन्त्रीक तर्कक स्वतन्त्र विस्तार सीमित अछि, जकर कारण पुनर्लेखनमे भरतक नैतिक स्थिति आरम्भसँ लगभग अविवाद्य बुझाइत अछि।

भोजनक साँझ कथाकेँ प्रशासनिक सारणीसँ पारिवारिक व्यवहारमे अनैत अछि। शत्रुघ्नक बाल्यकालक घी-चोरीक हँसी, कौसल्याक प्रश्न, उर्मिलाक सेविकासभक थारी आ भरतक अनुपस्थितिमे रोजक देयक व्यवस्थाक चर्चा एक विशिष्ट मानवीय विराम बनबैत अछि। कैकेयीक मौन उपस्थितिकेँ प्रतिदिनक देखभाल संग रखल गेल अछि—घरक एक भोजन न्यायिक क्षमादान नहि बनैत, मुदा राति पार करबाक सामर्थ्य दैत अछि। उर्मिलाक प्रश्न ‘घरमे जे रहताह, हुनकर काजक फैसला के करत?’ नायकक वनगमनकेँ घरपर शेष श्रमक दृष्टिसँ फेर लिखैत अछि।

प्राचीनसँ आधुनिक : रुहानीक सीमित हस्ताक्षर

नवम पाठांशसँ विदेहपुरक समान ऋतु उपस्थित होइत अछि। रुखसानाक चूल्हा, आश्रयक पवनचक्की आ नगर-कार्यालयक रखरखाव-पत्र राजभवनक दीयाक आधुनिक प्रतिस्वर थिक। रुहानीकेँ ‘अधिकृत सम्पर्क-व्यक्ति’ बनबाक प्रस्ताव मिलैत अछि, संगहि स्थायी भवन-हस्तान्तरणक विवरण भरबाक दोसर पत्र। सचिव रखरखाव आ राशनक सुविधा लेल दुनूपर एक बेर हस्ताक्षर चाहैत अछि। रुहानी दुनू पत्र अलग मेजपर राखैत छथि : दैनन्दिन व्यवस्था जारी रखब आ घरक मालिक बनब एक निर्णय नहि। प्राचीन भरतक पदनाम-सीमा आ आधुनिक रुहानीक हस्ताक्षर-सीमा बीच वास्तविक क्रियात्मक समरूपता एहि अलग कएल दस्तावेजमे अछि; दूनू पात्र समान मनोवैज्ञानिक जीवनी वा पुनर्जन्म नहि छथि।

चम्पा आश्रयक खाट चुनबाक सम्भावना रखैत छथि, मुदा अपन किरायाक कोठरी छोड़बाक अर्थ नहि; पंजीमे इलाजक निजी विवरणवला खाना खाली रखैत छथि। रुखसाना दानक चाउर, इन्धन आ पाक-श्रम पृथक दर्ज करैत छथि। कबीर कानूनी निष्कर्षक निश्चितता नहि दैत, मूल भवन-शर्त आ सामूहिक सहमति जाँचबाक कहैत छथि। एहि तरह भरतक सीमित शासनक तर्क आर्थिक आ निवासीय निर्णयक सूक्ष्म पदसभमे विस्तार पबैत

अछि। अयोध्याक राजकीय प्रसंग आधुनिक प्रशासनक सर्वप्रकार सन्दर्भपर स्वतः लागू नहि; रूपकक सार्थकता एतबे धरि अछि जतय एकत्रित अधिकारकेँ विभाजित, शर्तयुक्त आ उत्तरदायी बनाओल जाइत अछि।

चलैत रोजी : हसन, जुबैदा आ हीरावतीक पृथक कथावृत्त

हसन आ जुबैदा बस-अड्डाक पुरान ठाम घेरल गेलाक कारण आश्रय लग आबैत छथि। पुरान शुल्क-रसीदमे ओहि दिन ठाम उपयोगक प्रमाण अछि, स्थायी पट्टा नहि। जुबैदा एहि भेदकेँ छिपाबैत नहि; हुनकर अपीलक उद्देश्य रोज बैसबाक निश्चित घड़ी, सुनवाई, उचित सूचना आ वैकल्पिक ठामक हिसाब बनैत अछि। हसन घाटपर अमीनासँ भेटल मजदूरी-पर्ची अड्डाक स्थायी हकक प्रमाण बनबय चाहैत छथि; जुबैदा बतबैत छथि जे ई नव आजीविकाक आयक तुलनामे काज आएत, अड्डाक स्वामित्व सिद्ध नहि करत। ई संवाद भिन्न दस्तावेजक क्षेत्र-सीमा परस्पर पात्रक माध्यमसँ स्थापित करैत अछि।

हीरावती कुररियार चटाईक मरम्मति लेल आयल छथि; हुनकासँ बिन दाम दिनभरि चौकी करबाक अपेक्षा राखल जाइत अछि। ओ श्रमक तकनीकी भेद आ दामक पृथक्करण माँगैत छथि। तीनू मिलि डगमग बेंच स्थिर करैत छथि—काज सफल, मुदा रोजगार-व्यवस्थाक विवाद अनसुलझल। एक छोट कौशल-परीक्षा सामाजिक जटिलताकेँ समाप्त नहि, स्पष्ट करैत अछि। हीरावती अपन नामक वर्तनी, काज पूरा करबाक तिथि आ प्रति लेल अधिकार राखैत छथि; फोन नहिबाक कारण प्रति पौनिहारक अधिकार कम नहि। आश्रयक ओसारमे मरम्मतिक सीमित समय देबाक प्रस्ताव भेल, स्थायी बाजारक स्थान नहि। एहि विभाजनसँ पेशागत पात्रसभक कथावृत्त सूचीसँ आगाँ बढ़ैत अछि : हुनका सभक काममे सामग्री, समय, हस्ताक्षर आ आयक जोखिम अछि।

द्विकालीन संरचना, कथनक आवाज आ दार्शनिक परीक्षण

एहि अध्यायमे स्वतंत्र अयोध्या-दृश्य प्रारम्भिक आठ पाठांशमे अछि, आधुनिक कथा नवमसँ अन्त धरि बढ़ैत अछि। एकर अर्थ केवल ‘पुरान कहानीक बाद आधुनिक उपदेश’ नहि। प्राचीन दृश्य भोजनक श्रमक प्रश्न आधुनिक आश्रयक भोजन-लेखा खोलैत अछि; अन्नागारक रोकल दान आधुनिक राशन–मरम्मतिक प्राप्ति-विवादसँ जुड़ैत अछि। मुदा पूर्वकालीन पात्रसभ अत्यन्त आधुनिक सहमति, अभिलेख आ वितरण-नीतिक शब्दावलीमे बजैत छथि। ई घोषित पुनर्पाठक औजार भऽ सकैत अछि, ऐतिहासिक संवादक प्रामाणिक पुनरुत्पादन नहि; वैचारिक स्पष्टताक मूल्य प्राचीन वाचिक भिन्नताक ह्रासो अछि।

सम्बन्धित प्रमाण-विचारक चारि भेद अछि : ‘सम्पर्क-व्यक्ति’क नाम स्थायी स्वामित्व नहि; शुल्क-रसीद स्थायी बजार-पट्टा नहि; एक आश्रयमे राति रहबाक पंजी निजी उपचारक सम्पूर्ण प्रकटीकरण नहि; मरम्मतिक अर्जीक प्राप्ति पूर्ण हस्तान्तरणक स्वीकृति नहि। आख्यानगत भाषामे इएह हेतु-सीमाक परीक्षण थिक, पर शास्त्रीय ग्रन्थक औपचारिक प्रस्तावना, व्याप्ति आ सम्पूर्ण तर्कपद्धति एतय प्रत्यक्ष उद्धृत नहि। संस्थागत नामक अवच्छेदक बदललासँ अधिकृत निर्णयक क्षेत्र बदलबाक प्रश्न उठैत अछि—एकरा विश्लेषणक अवधारणात्मक अनुरूपता कहब उचित, उपन्यासमे शाब्दिक शास्त्रीय सूत्र प्रस्तुत अछि कहब नहि।

अन्तिम फल : सीमित सहमति, अपूर्ण स्वामित्व

रुहानी खुला असहमति सहित सीमित रखरखाव-अनुरोध जमा करैत छथि; कार्यालय ओहि अनुरोधक प्राप्ति दैत अछि, स्थायी हस्तान्तरण अलग रहैत अछि। हसनक हाथमे पुरान रसीद आ नव अपीलक प्राप्ति अछि; हीरावतीक मरम्मतिक देय तय भऽ रहल अछि; चम्पाक कोठरीक प्रश्न खुला अछि। नैरा अन्तमे कापीमे तीन सीमाबद्ध निर्णय लिखैत छथि। ई अध्याय भरतक औपचारिक राज्यत्यागकेँ आश्रयक अनुमति, बाजारक शुल्क आ निजी कागदक अधिकारक रूपमे पुनर्लेखित करैत अछि। एकर उपलब्धि एतय अछि जे ‘ना’ कहबक फल काम ठप्प करब नहि, उत्तरदायित्वक अधिकारक्षेत्र स्पष्ट करब बनैत अछि। एकर सीमा ई जे लगभग प्रत्येक जटिल अवस्थाक शीघ्र उपयुक्त विधिक वाक्यमे निरूपण कथा-जीवनक अनियमित बाधा कम देखबैत अछि। तथापि अन्तिम बाल्टी आ छप्परक पानीक बून्द स्मरण करबैत अछि जे सिद्धान्त ठोस मरम्मतिक विकल्प नहि : आजु बाल्टी राखब, भोरमे नल ठीक करब—समय-अनुशासनक यही भौतिक कसौटी अगिला अध्याय खोलत।

अध्याय २४ — बाहरक ओसार

चौखटक दरार : नीतिक सीमासँ भौतिक संकट धरि

अध्याय भोरमे सरिताक ओसारक भरल बाल्टी आ काठक चौखटक नव दरारसँ शुरू होइत अछि। संकेत अपन हाथसँ सहारा बनबय चाहैत अछि; सरिता मिस्त्रीक जाँच बिना जोखिम नहि लएब चाहैत छथि। मायक सावधानी केवल युवा कौशलक निषेध नहि, हाथ–देहक सुरक्षाक मूल्य अछि। नैराक अभिलेख-ठेका रोकल गेलाक बाद घरक मरम्मतिक अर्थव्यवस्था बिगड़ल; सरिता सिलाइक जमा धन देबाक तैयार छथि, मुदा सड़ल काठ बदलल धरि ओसारमे रहब खतरनाक अछि। पहिल अध्यायक रसोइक स्थायित्व आब घरक संरचनागत अस्थिरतासँ टकराइत अछि। सामर्थ्यक माप एतय चूल्हा जरब मात्र नहि, सुरक्षित चौखट, कारीगरक पारिश्रमिक, अस्थायी कमरा आ वस्तु उठेबाक वास्तविक श्रम सेहो अछि।

एकर समानान्तर चम्पाक तीन दिनक नोटिसक अवधि समाप्त भेल; मकानमालिकक आदमी कुलूप लऽ दरबज्जापर आबि गेल अछि। चम्पा मायक सूजल घुटना आ उपचारक आवश्यकता देखैत असुरक्षित घरमे राति नहि रहबाक निर्णय करैत छथि, मुदा सामानक सूची, चाभीक प्राप्ति आ जमा रकमक विवाद सुरक्षित रखैत छथि। ई बाहर निकलब न तँ निर्विरोध बेदखली-स्वीकृति, न पूर्ण अधिकार-विजय। चम्पा अपना मायक वस्तु तीन अलग लिफाफामे रखैत छथि—किरायाक रसीद, उपचारक पर्ची आ निजी चिट्ठी। पिछले निजी-सन्देश लीक होएबाक आघात एहि गोपन-संगठनक क्रियामे जीवित अछि; कथावाचक ओकरा केवल भूतकालक सूचना नहि बनबैत छथि।

तीन परिवार, तीन असमान कारण : घटनाक विस्तृत पञ्जी

अध्यायक संरचनात्मक केन्द्र पाठांश ११मे कथावाचक स्वयं स्पष्ट करैत छथि : चम्पा कोठरीक विवाद आ मायक स्वास्थ्यक कारण, बदरी अपूर्ण पुनर्वासक कारण, सरिता घरक मरम्मति आ सुरक्षाक कारण अस्थायी रूपेँ हटैत छथि। ई एके राजनीतिक आदेशक तीन ‘उदाहरण’ नहि। बदरीक नोनफर परिवारकेँ नव बसावटमे एक कोना

देबाक पर्ची भेटल, मुदा पीबाक पानि, शौच, आवागमन आ भाड़ाक खर्च अनिर्दिष्ट अछि। बदरी प्राप्ति देने छथि, स्थायी पुनर्वास स्वीकार नहि; हुनकर पत्नी सामानक संग बाल-बच्चाक औषधि, औजार, बकरीक रस्सी आ गाड़ीभाड़ाक प्रश्न अलग रखैत छथि। निर्णय ककरो एक पुरुष-हस्ताक्षरक नतीजा बनि नहि सकैत।

मालती कोचे नव बसावटक पहिलेसँ निवासी छथि; ओ नव परिवारक आगमनपर स्वागत आ जल-अभावक चिन्ता एक संग व्यक्त करैत छथि। साझा नल, पाँक भरल बाट आ रातिक कटान एहन जोखिम छथि जे नक्शामे केवल ‘वैकल्पिक आश्रय’ लिखलासँ नहि मिटैत। मालती अपन टोलाक सहमति बिना नलपर ताला नहि लगएब चाहैत छथि, मुदा नव लोककेँ दीन बनाकऽ पानि माँगब सेहो नहि चाहैत छथि। ओ व्यक्तिगत आतिथ्यक दू गिलास पानि दैत छथि आ स्पष्ट कहैत छथि जे ई स्थायी व्यवस्था नहि। लेखक विस्थापितक दुखक संग पहिनेसँ बसेल समुदायपर पड़निहार अतिरिक्त भारकेँ सेहो कथा-वस्तु बनबैत छथि। एहि बिन्दुपर ‘सबकेँ बसाउ’ आ ‘पानी कतयसँ आबत’क बीच भौतिक प्रशासनिक अन्तर साहित्यिक रूपमे विश्वसनीय बनैत अछि।

सरिताक परिवार रेलचौकक छोट कमरामे दू दिनक लेल जा रहल अछि; ई घरक अन्तिम परित्याग नहि। चौखटक अस्थायी टेक स्थायी सुरक्षा प्रमाणित नहि, मिस्त्रीक पर्चीमे दरारक लम्बाइ, भीजल काठ, छप्पर हटेबाक आवश्यकता आ पुनःनिरीक्षणक तिथि लिखल अछि। तुलसीक देखभालक प्रश्न घरक भावनात्मक निरन्तरता अछि, मुदा सरिता संकेतकेँ असुरक्षित भीतर नहि घुसबाक शर्त रखैत छथि; पड़ोसी बाहरी गमला सम्हारबाक ठाम दैत छथि। ई छोट क्रियासँ घरक ‘स्मृति’ बचबैत देहक सुरक्षा कुर्बान करबाक अतिनाटकीयता टारल गेल अछि।

मूल सत्ताइस नामक पन्ना : देह, अभिलेख आ स्वामित्व

अध्यायक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नैतिक मोड़ पाठांश १७–१९मे अछि। छप्पर बदलबाक जोखिमसँ सरिताक निजी सन्दूकमे रखल मूल नाम-पन्ना सुरक्षित करबाक प्रश्न उठैत अछि। नैरा लिफाफा देबाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा सरिता मूल पन्ना स्वयं अपन हाथमे रखबाक निर्णय लैत छथि। संकेत पन्नाक फोटो नहि खींचैत, केवल कपड़ाक पोटरी छोट बक्सामे समाएत कि नहि तकर आकार मापैत अछि। सरिता चाभी अपन साड़ीक आँचरमे बान्हैत छथि। पहिल अध्यायक मृत्युसूचना आ दोसर अध्यायक सत्ताइस नामक सूची एखन शारीरिक विस्थापनक बीच दस्तावेजीय स्वामित्वक नवा अवस्था पबैत अछि : घर बदलैत अछि, मूल प्रमाणक संरक्षक बदलैत नहि।

ई दृश्य महेशक सशर्त गवाहीक त्रुटिसँ नैराक सीखक परीक्षण सेहो करैत अछि। नैरा मूल कागदक अधिकार नहीं माँगैत छथि, जाँच लेल उपलब्ध अन्य प्रतिक स्थितिकेँ अलग दर्ज करबाक स्वीकार करैत छथि। सरिता एक नाम पढ़बाक पुरान मनाही स्मरण करबैत छथि; नैरा ओकर उल्लङ्घन नहि करबाक कहैत छथि। मुदा 'एक नाम'क पहचान वा ओकरा सँ जुड़ल कथाक रहस्य एहि अध्यायमे उघारल नहि गेल अछि। घटनाक महत्त्व खुलासा नहि, खुलासा करबाक अधिकारक शर्त अछि। एहि स्थानपर आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ जुड़े प्रमाण-विवेचनकेँ आधुनिक गोपनीयताक कानूनी समानार्थक नहि बनाओल जाय : दस्तावेज सत्य-जाँचक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर वैध सार्वजनिक उपयोग अलग नैतिक प्रश्न अछि।

द्विकालीन प्रत्यावर्तन : भरतक यात्रा आ ओसारपर बचल श्रम

तेइसम अध्यायक अयोध्या-दृश्य चौबीसहमक पाठांश २३–२४मे फेर अबैत अछि। भरत राम लग जएबाक तैयारी करैत छथि; शत्रुघ्न अन्न आ मजदूरीक पाँति पूछैत छथि। ‘भूख ककरो नामक प्रतीक्षा नहि करत’क आग्रह राजनीतिक पदनामक स्थगनक बीच रोजक श्रमक अविरामता चिन्हित करैत अछि। कैकेयीक देल ऊनी ओढ़ना भरत स्वीकार करैत छथि, मुदा ई स्वीकृति अन्यायक सम्पूर्ण क्षमा नहि। उर्मिला घरमे रहनिहार सेविकासभक भोजनक देय अलग रखबैत छथि। एहि तरह महाकाव्यीय प्रस्थान केवल वीरक यात्रा नहि, पाछाँ रहल घरक भुगतान, भोजन आ देखभालक कथा सेहो होइत अछि।

पुरान राजभवनक बाहरी ओसार आ सरिताक घरक भीजल ओसारक अन्तरमध्य सम्बन्ध पहिचानल जा सकैत अछि : दूनू ठाम प्रस्थानसँ बेसी महत्त्व राखैत अछि जे के रहत, भोजन कोना बनत, वस्तु के सम्हारत। मुदा कथा एहि दू स्तरकेँ एके ऐतिहासिक घटनाक पुनरावृत्ति नहि बनबैत; अयोध्याक प्रस्थान राजनीतिक–वंशगत वैधतासँ चलैत, विदेहपुरक अस्थायी विस्थापन मरम्मति, भाड़ा, रोगी देखभाल, पाइप आ प्रमाण-स्वामित्वसँ। एहि अलग कारणसभक भेद राखब अन्तर्पाठीय आलोचनाक प्राथमिक शर्त अछि।

थारी, कटोरी, ताला : कथाक वस्तुगत निरन्तरता

नव किरायाक कमरामे सरिता भात बनबैत छथि; नवा डिब्बा आ नवा पानीक गिलाससँ बीच पुरान पित्तरि कटोरी संग आयल अछि। कटोरी घर नहि, मापनक व्यवहार संग लऽ जाइत अछि; ‘पेटक हिसाब’क स्थायित्व भौतिक स्थान बदललाक बादो जीवित अछि। चम्पाक मायक खाट, बदरीक छूटल घैल, सरिताक तुलसी, नाम-पन्नाक लकड़ीक बक्सा आ नैराक तीन अलग फाइल सामूहिक विस्थापनक सूची नहि, अलग-अलग देह–श्रम–स्मृतिक विशिष्ट मूल्य छथि। चम्पा गमला उठा लैत छथि; बदरीक पत्नी अन्हारमे छूटल घैल अनबाक जोखिम टारैत छथि; सरिता बक्साक ताला छू कऽ देखैत छथि। एहि क्रियासभमे पात्रक निर्णय वस्तुक स्वरूप बदललाक बगैर ओकर सामाजिक अर्थ बदलैत अछि।

साँझमे तीनू परिवारक अलग स्थिति अछि : चम्पाक कोठरीक ताला लगि चुकल, जमा रकम अटकल; बदरी अस्थायी तिरपाल खड़ा कएलनि, स्थायी पानि नहि; सरिताक घरमरम्मति अपूर्ण, रेलचौकमे बसनाइ अस्थायी। नैरा तीनू संकट अलग-अलग फाइलमे रखैत छथि आ निजी नामपंजीसँ जोड़ैत नहि। अन्तिम रेल-सीटी एक नवा यात्राधाराक संकेत दैत अछि; अपूर्णता पूर्ण पराजय नहि, मुदा सुखान्त सेहो नहि। एहि अर्थमे अध्याय कथा-भूगोलकेँ ओसारसँ रेलचौक धरि ठेलैत अछि आ अगिला वन-पर्वक आवागमन–शरण विषयक उद्घाटन लेल घटनात्मक आधार बनबैत अछि।

आघात, दृष्टिकेन्द्रण आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

कथनकेँ एका परिवारक अन्तरंग स्थायित्वपर केन्द्रित कएलासँ कथा बहुत तेज भावुक होइत, मुदा लेखक चम्पाक माय, बदरीक पत्नी, मालती, रुखसाना, मिस्त्री आ संकेतक पृथक आवश्यकताक सहायतासँ बहुकेन्द्रित दृष्टि रचैत छथि। सुरक्षा-निर्णय आ अधिकार-निर्णय अलग रखबाक काज सतत होइत अछि। ‘घर’ स्वामित्वक कागद, सहवासक अवधि, पानीक बाट, भोजन बनबाक सम्भावना आ अपन कागदपर अधिकार—सभसँ निर्मित

अछि। विशिष्ट सामाजिक घनत्व एहि वस्तुगत परस्परावलम्बनसँ आबैत अछि, यांत्रिक परिवर्तन-सङ्केतक संख्यासँ नहि।

दुर्बलता ई अछि जे चम्पाक बेदखली, बदरीक नव बसावट आ सरिताक अस्थायी प्रस्थान—तीन गम्भीर संकट—एकहि अध्यायमे निपटैत समय बहुते पात्र अत्यन्त स्पष्ट, संयत आ विधिसंगत भाषा बजैत छथि। बेदखलीक मनोवैज्ञानिक टूटन, नव स्थानपर भेदभावक आशंका, खराब पानीसँ रोगक भय, भाड़ा भरबाक दीर्घ आर्थिक दवाब आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक अवकाश सीमित अछि। लेखकक संयम एक पैघ गुण : ओ भौतिक संकटकेँ करुणाक प्रदर्शन नहि बनबैत छथि; मुदा एही संयमक अति संकटसँ उपजल अव्यवस्थित मानवीय प्रतिक्रियाकेँ अल्पावकाश दैत अछि। अध्यायक अन्तिम सत्य पर्याप्त कठोर अछि—तीनू परिवार सुरक्षित बनबाक कोशिश करैत छथि, मुदा एकर प्रमाण पूर्ण पुनर्वास वा घर-अधिकारक विजय नहि।

सभा-पर्व / अयोध्याकाण्ड : अध्याय १३–२४ क सम्पूर्ण पर्ववार कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

द्वादश अध्यायक कथाक्रम : अपमानसँ आवास-प्रस्थान धरि

सभा-पर्वक बारह अध्याय क्रमशः ‘बजाओल गेल मृतका’, ‘प्रतिनिधिक कुर्सी’, ‘द्रौपदीक प्रश्न’, ‘विकर्णक बादक मौन’, ‘कैकेयीक देय’, ‘उर्मिलाक राति’, ‘चम्पाक सन्देश’, ‘जल्दी प्रकाशन’, ‘ककर आवाज’, ‘घरक आदेश’, ‘भरतक अस्वीकार’ आ ‘बाहरक ओसार’ छथि। एहि क्रमकेँ मात्र बारह नैतिक विवादक क्रम कहब अपर्याप्त अछि। आरम्भमे सरिताक सार्वजनिक बयान आ मृत्यु-प्रविष्टिक असंशोधित रहब, रुहानीक प्रतिनिधित्वक वाद-विवाद, द्रौपदीक वचनाधिकार आ विकर्णक असहमतिक अभिलेख एकटा सार्वजनिक मंचक आन्तरिक शक्ति-वितरण रचैत अछि। मध्यक्रममे कैकेयीक वचन, उर्मिलाक रात्रि-श्रम, चम्पाक निजी सन्देश आ नैराक जल्दबाजी सार्वजनिक निर्णय आ देहगत जोखिम बीच टकराव बढ़बैत अछि। अन्तिम चारि अध्यायमे ऑडियोक सत्यापन, ठेका–घरक आदेश, भरतक सीमित अधिकार आ तीन परिवारक विस्थापन नैतिक कथनकेँ ठोस घर–भोजन–आवासक दायरेमे उतरैत अछि। (मूल अध्याय १३–२४)

संरचनात्मक परिणति एतय अछि : ‘सभा’क बीच उठल आवाज अन्ततः ओसार, कोठरी, चाभी, किरायाक रसीद आ छप्परक टेकमे फलित होइत अछि। न्याय केवल सभा-गृहमे घोषित वाक्य नहि; ओकर परिणामक माप राति कोन शरीर कतय सूतत, कोन श्रमिककेँ दाम भेटत, कोन अभिलेख ककर हाथमे रहत, इहो अछि। एहि रूपमे सभा-पर्व अयोध्याकाण्डक वनप्रस्थानसँ जुड़बाक एक व्यावहारिक कथा-पुल बनबैत अछि।

ककर आवाजक अधिकार : प्रतिनिधित्व आ अपमानक विभिन्न रूप

द्रौपदी–विकर्णक प्राचीन प्रश्नक कथा-धारा सार्वजनिक अपमानक प्रतिपक्ष रचैत अछि; चम्पाक निजी सन्देश आ रुहानीक प्रतिनिधित्व आधुनिक समरूप प्रश्न उठबैत अछि। मुदा द्रौपदीक राजसभा, रुहानीक समिति आ चम्पाक निजी आघात एक-दोसराक पूर्ण प्रतिस्थापन नहि। एकमात्र ‘स्त्रीक आवाज’ नामक अमूर्त कोटिमे सम्मिलित करला सँ श्रमक प्राप्ति, सार्वजनिक पद, निजताक उल्लङ्घन, श्रव्य सम्पादन आ निवासक अलग कारणसभ गुम

भऽ जाएत। विशेषतः अध्याय २१मे हमीदाक गीतक मेहनताना आ पद्माक संप्रेषण-मानदेय ई बात देखबैत अछि जे बोलबाक अधिकार केवल माइक भेटब नहि; श्रमक दाम आ प्रश्नक उत्तर भेटबाक अवसंरचना सेहो अछि। (अ.१५–१६, १९–२२)

पर्वमे नैरा केवल सत्य उद्घाटन करनिहार नायिका नहि। बीसम अध्यायमे हुनकर सशर्त सूचना असावधानीसँ प्रकाशित होइत अछि; एकविंशमे हुनका सार्वजनिक कहबाक अधिकार स्वयं सीमित करबाक पड़ैत अछि। एहि प्रतिकूल मोड़सँ उपन्यासक नैतिक व्यवस्था आत्मालोचना सक्षम देखाइत अछि। मुदा अधिकांश सहायक पात्र अत्यन्त स्पष्ट विधिक–नैतिक विवेक व्यक्त करैत छथि; हुनकर असमान अनुभवक बानी कखनो एकरूप होएबाक जोखिम सँ जूझैत अछि। तें बहुस्वरताक दावा सहभागीक संख्या मात्रसँ सिद्ध नहि, वाचिक स्वायत्तता आ असहमत स्थितिक दीर्घ परिणामसँ जाँचल जाए।

अयोध्याकाण्डक महाकाव्यीय सम्बन्ध : समानता संग भिन्नताक अनुशासन

कैकेयीक डरसँ उपजल राजकीय वर, उर्मिलाक ओझराएल श्रम, भरतक सत्ताग्रहण अस्वीकार आ राजभवनमे प्रस्थानक तैयारी आधुनिक कथाक सम्बन्धक किछु निश्चित केन्द्र छथि। लेखक पुरान नामक समानता मात्र नहि करैत; भरतक नैतिक अस्वीकारकेँ रुहानीक सीमित स्वीकृति, उर्मिलाक सेविकासभक देयकेँ रुखसानाक पकाबयक दाम, तथा अयोध्याक प्रस्थानकेँ चम्पा–बदरी–सरिताक असमान विस्थापनक बीच राखैत छथि। तथापि प्राचीन पात्रसभ आधुनिक संहिताक पदावलीमे बात करैत छथि, जे वैचारिक पुनरुपयोग लेल उपयुक्त रहितहुँ कालविशेषक वाचिक भिन्नताकेँ कखनो न्यून करैत अछि। ई महाकाव्यीय आलोक नहि, पाठक प्राचीन स्रोतक काल्पनिक पुनर्रचना थिक; शास्त्रीय रामायणक मूल वचनक प्रत्यक्ष उद्धरण मानब नहि चाही।

प्रमाण, अनुमति आ परिणाम : तीन भिन्न क्रम

एहि पर्वमे लिखल कागदकेँ बारंबार तीन अलग स्तरमे पढ़ल गेल अछि। प्रथम, प्रमाण : कोन घटना वा कथनक पर्याप्त आधार अछि? द्वितीय, अनुमति : ई साक्ष्य ककरा देखाएब अथवा सार्वजनिक करबाक वैध–नैतिक अधिकार अछि? तृतीय, फल : प्राप्ति, जाँच आ पत्राचारसँ ककरो वास्तविक नुकसान घटल कि नहि? ‘मूल ऑडियो’ एक विशिष्ट आरोपक प्रतिकूल साक्ष्य भऽ सकैत अछि, ओकर सार्वजनिक बाँटब आवश्यक नहि; चम्पाक नोटिसपर प्राप्ति सच्चा अभिलेख अछि, बेदखलीक अन्तिम निरस्तीकरण नहि; रुहानीक मरम्मतिक अनुमति सम्पत्ति-हस्तान्तरण नहि; नैराक ठेका रोकला पर प्रतिशोधक उद्देश्य अनुमान मात्र। ई सम्बन्धसभमे आख्यानगत हेत्वाभास, अवच्छेदक, उपाधि आदि पद उपयोगी आलोचनात्मक उपकरण होएब सम्भव अछि, मुदा साहित्यिक विश्लेषणकेँ शास्त्रीय सूत्रक अप्रमाणित प्रत्यक्ष प्रयोगक घोषणा नहि बनाओल जाय।

घटना-घनत्व आ अध्यायान्तक आवर्तन : उपलब्धि तथा आपत्ति

आख्यानक ‘परिवर्तन-सङ्केत’ प्रति हजार शब्द आ संवादयुक्त पाठांशक अनुपात स्वचालित मापन छथि। एहि पर्वक वास्तविक कथाविकास ओहि संख्यासँ नहि, अलग-अलग परिणामसँ देखाइत अछि : आरोप स्थगित, लीककर्ता अज्ञात; तीन दिनक नोटिस प्रश्नांकित, कोठरी खाली; आश्रयक मरम्मतिक प्राप्ति, स्वामित्व अनिर्णीत;

ठेका बन्द, कामक रसीद माँगल; एक परिवार खाटपर, एक तिरपालमे, एक रेलचौकक अस्थायी कमरामे। ई भिन्न अवस्था घटनाक वास्तविक परिवर्तन अछि, मात्र संकेत-शब्दक उपस्थिति नहि।

तथापि पर्वभरि अनेक अध्यायक अन्त ‘रसीद भेटल, हक एखन बाँकी’ प्रकारक वाक्य-विन्यासक समीप पहुँचैत अछि। प्रशासनिक अवरोधक ई आवर्तन सामाजिक यथार्थक सत्यक निकट अछि, किन्तु कथा-लयकेँ यन्त्रवत करबाक खतरो राखैत अछि। बीसम अध्यायक नैराक गलती, एकविंशक ध्वनि-अर्थक उलटब, तेइसमक बेंच-मरम्मतिक हँसी आ चौबीसहमक घरछोड़ाइ एहि एकरसताकेँ तोड़ैत अछि। कृति एखन आठारह पर्वक सम्पूर्ण पाठ नहि, केवल सभा-पर्वक अन्त धरि देखल गेल हिस्सापर ई निर्णय सीमित अछि; आगामी वन-पर्वमे एहि अनिर्णीत वस्तु–साक्ष्य आ बेघराइ कतेक कारणात्मक भार लैत अछि, एकर जाँच बाकी अछि।

रस, ध्वनि, औचित्य आ विमर्शक निष्कर्ष

अपमानक करुणा, अभिलेख-भङ्गक रोष, भरतक वचनक संयम, रुखसानाक पाक-श्रमक दृढ़ता आ अस्थायी घरमे भातक घरेलू शान्ति—ई सभ विशिष्ट प्रसंगसँ संवेदना पैदा होइत अछि; सभकेँ एकटा निश्चित रसक सिद्ध निष्पत्ति कहि देब उचित नहि। दीपकक बत्ती, हमीदाक तामक लोटा, चम्पाक नीला परदा, गौरीक तिरपाल, हीरावतीक बेंच आ सरिताक पित्तरि कटोरी ध्वनिसम्भावना रखैत अछि, मुदा कखनो लेखक अर्थकेँ पात्रक स्पष्ट घोषणासँ तुरन्त तय करैत छथि। अलङ्कारिक इशाराक खुलापन आ वैचारिक सीखक निश्चितता बीच तनाव एहि पर्वक शिल्पगत केन्द्रीय गुण-दोष अछि।

पर्वगत निष्कर्ष। सभा-पर्व / अयोध्याकाण्डक कथात्मक सफलता सार्वजनिक न्यायकेँ घरक सूक्ष्म आवश्यकता धरि अनबाक अछि। सत्ता-वितरणक रूप—कुर्सी, माइक, मूल फाइल, शुल्क, चाभी, दरार आ थारी—कथाक संसाधन बनैत अछि। कमजोरी पात्रसभक नैतिक आवाजमे सजातीयता, किछु विवादक शीघ्र विधिक विभाजन आ प्राप्ति-पत्रक आवृत्ति अछि। अन्तिम अध्याय विजयी वापसी नहि, शर्तयुक्त प्रस्थान पर समाप्त होइत अछि; फलस्वरूप अगिला वन-पर्वक आरम्भक आवश्यकताक ठोस आधार उपस्थित अछि। उपन्यासक सम्पूर्ण २१६ अध्यायक निर्णायक समग्र मूल्यांकन एहि एक पर्वसँ घोषित नहि कएल जा सकैत।

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड

अध्याय २५ — रेलमे खाली जगह

रेलक पहिने नलक आवाज : घटनाक वास्तविक आरम्भ

वन-पर्वक उद्घाटन जंगलक वृक्षसँ नहि, अस्थायी किरायाक कोठरीमे पानिक खाली बाल्टीसँ होइत अछि। सरिता नल खोलैत छथि; दू बेर हवाक आवाज आ तेसर बेर पातर धार। संकेतकेँ ओ समय लिखबाक कहैत छथि। एहि उद्घाटनमे सभा-पर्वक अन्तिम विस्थापनक सीधा फल अछि : आवास बदलल, मुदा सुरक्षित पानि, भोजन आ घरेलू कार्यक भरोसा एखन स्थापित नहि। नैराक कापीमे काल्हिक तीन परिवारक अपूर्ण काज अछि; एतय

सरकारी शिकायत आगाँ बढ़ेबाक इच्छा घरेलू जलप्रबन्धसँ काटि कऽ देखाओल नहि गेल अछि। कथाक पहिल घटना नल चलब मात्र नहि, चूल्हा चलायबाक समयक नवल माप आरम्भ होएब अछि।

स्टेशनक भोर फकीराक जीविकाक समय अछि। नैरा कार्यालयक नौ बजे खुलबाक घड़ी देखैत छथि; फकीरा भोरक गाड़ी छोड़लासँ अपन पहिल कमाइ हराएब कहैत छथि। प्रशासनक समय आ श्रमिकक समयक ई असमानता अध्यायक मूल कथानक-प्रेरक विरोध अछि। नैरा संग चलबाक प्रस्ताव दैत छथि, मुदा फकीरा साफ करैत छथि जे यात्रिकेँ बाट हुनका स्वयं बतायब अछि, नैरा हुनकर प्रतिनिधिक अधिकार नहि लऽ सकैत छथि। सहयोगक अर्थ प्रतिनिधिकरूपेँ कब्जा नहि; ई भेद नैराक पूर्व प्रकाशन-त्रुटिसँ जुड़ल विकसित सीखक परीक्षणो अछि।

स्टेशनक चारि अर्थव्यवस्था : तथ्य-पञ्जी आ निर्णय

स्टेशनपर पहिल सहायक वृत्त सोना कठौतियाक बाँसक ढाँचा ढोएबाक काज अछि। ठेला कीचड़मे फँसैत अछि; फकीरा नालीक सुरक्षित कात शब्दसँ चिन्हैत छथि; सोना देहक बल लगबैत छथि। एक दानी-मण्डली अपन पर्चामे ढुलाईकेँ ‘समाजसेवा’ लिखबाक चाहैत अछि, जबकि ठेलावालाक दू दिनक बकाया अछि। सोना मालक गिनतीक प्रति ठेलावालाकेँ दैत छथि आ तस्वीरसँ पहिने भाड़ाक प्राप्ति तथा वास्तविक कर्ताक अनुमति चाहैत छथि। छोट घटनामे श्रमक स्वामित्व, दृश्यताक आकर्षण आ प्रचारक वैधताक टक्कर अछि। ठेला चलल कहि भाड़ा चुकल सिद्ध नहि होइत; दानी-मण्डलीक आदमी उत्तर नहि दैत।

दोसर वृत्त हरिचरण पासवानक छोट मालवाहक गाड़ी अछि। रातिमे रोगी ढोएबाक बाद भोरमे फेर काज, चालकक विश्राम, पेट्रोलक खर्च आ यात्राक समयक बही—ई सभ श्रमक कालिक मापनक विषय छथि। नैरा गोदामक यात्रासँ अपराधक सम्बन्ध पूछबाक बाटपर बढ़ैत छथि, मुदा महेशक अघिल घटना स्मरण कऽ रुकि जाइत छथि। हरिचरण नमूना रसीदमे निजी ग्राहकक नाम ढाँकि कऽ भाड़ा आ चालकक मजदूरीक पृथक प्रविष्टि देखबैत छथि। ‘गोदाम लग चलब’ सँ ‘गोदामक भीतरक वस्तुक अपराधमे भाग’क अनुमान अनधिकृत छल; नैरा ओकरा एहि अध्यायमे प्रकाशित नहि करैत छथि। गाड़ीक पाछाँ खाली स्ट्रेचर उर्मिलाक अस्पताल-श्रमक स्मरण अनैत अछि, मुदा ई स्मरण नव अपराध-साक्ष्य नहि।

तेसर वृत्त शिव धाँड़ीक भुगतान रोकल जाएब अछि : दू पर्चीपर नामक अन्तिम अक्षर अलग रहबाक कारण हस्ताक्षर-मिलान अटकैत अछि। शिव अपन कामक टिकट देखबैत छथि आ नाम-शुद्धिक संग दिनक संख्या बचायबाक माँग करैत छथि। ओ नैराक निजी कापीमे अपन नाम चढ़एब अनुमति नहि दैत छथि; कर्मचारीक समक्ष लिखल आवेदनक प्राप्ति लऽ घर लऽ जाइत छथि। चौथ वृत्त लक्ष्मी झाँगड़क पुरान श्रम-अनुबन्धक नकल अछि। हुनका मूलक संरक्षक नहि मालूम; ओ पुरान परिवारिक देय आ घरक ऋणकेँ एके दावा बनायब अस्वीकार करैत छथि। शिवक प्राप्ति भुगतान नहि, लक्ष्मीक नकल मूल-सिद्धि नहि—अध्याय ई सीमा सटीक रखैत अछि।

जावेद कलन्दरक कागजक पुतरीक प्रदर्शन वृत्त ई अर्थव्यवस्थाक एकटा जरूरी प्रतिपक्ष अछि। ओ जीवित पशु संग प्रदर्शन छोड़ि देने छथि, मुदा नव जीविकाक लेल सार्वजनिक चौकक निश्चित स्थान, भाड़ा आ प्रदर्शनक समय चाही। स्टेशन-पहरेदार भीड़ रोकबाक प्रश्न उठबैत अछि; जावेद माप-खूँटा देखबाक माँग करैत छथि। फकीरा

अपन आनन्द लेल लोकधुन गबैत छथि आ ओकर पर्ची बनबाक अस्वीकृति दैत छथि। लेखक एहि प्रसंगसँ ‘सभ श्रमकेँ मूल्य’ आ ‘सभ सृजनकेँ तुरन्त दामक पर्ची’ बीच भेद बनबैत छथि। स्वेच्छापूर्वक गाओल गीत स्वतः बेदाम श्रमक अनुबन्ध नहि; मुदा गीत गबयवला अपन निजी आनन्दकेँ अभिलेख बनाबय लेल बाध्य सेहो नहि।

अफवाहक विस्फोट : प्रत्यक्षक सीमा आ गलत आरोपक परिणाम

मध्याह्नक निर्णायक व्यवधान एक बच्चाक ‘चोरी’क अफवाह अछि। भीड़मे एक स्त्री बच्चाकेँ लऽ जाइत छथि; युवक तस्वीर पठायबाक चाहैत अछि। फकीरा कियो प्रत्यक्ष चोरि देखलक की नहि से पूछैत छथि। सूचना-खिड़कीपर यात्रापत्र आ परस्पर बातचीतसँ बच्चा परिवारक सदस्यक संग यात्रा कऽ रहल छल, भीड़मे अलग पड़ल वृद्ध सम्बन्धी भेटबाक समस्या छल, ई स्पष्ट होइत अछि। कर्मचारी गलत अफवाहक उल्लेख करैत अछि। एक विशिष्ट आरोप एहि जाँचमे खण्डित भेल; एतयसँ नगरक दोसर हराएल बच्चासभक प्रश्न सेहो निपटि गेल, ई निष्कर्ष कथासँ नहि निकलैत।

एहि प्रसंगमे तीन प्रमाण-स्तर अलग छथि : भीड़ देखलक स्त्रीक हाथमे बच्चा; युवक अनुमान कएलक जे चोरी भेल; जाँचमे भेटल परिवारिक यात्रा-सम्बन्ध। पहिल प्रत्यक्ष दृश्य दोसरा अपराध-साध्यकेँ सिद्ध करबाक पर्याप्त हेतु नहि। आख्यानगत भाषामे एतय कथित हेतु आ साध्यक अव्याप्ति जाँचल जा सकैत अछि; मुदा उपन्यास स्वयं औपचारिक पंचावयव अनुमान नहि रखैत। नैरा फोटो प्रसार रोकबाक आग्रह करैत छथि, मुदा युवक अपूर्ण तस्वीर मेटेबाक लेल तैयार नहि। फलतः अफवाहक जाँचक परिणाम स्पष्ट भेला पर डिजिटल प्रतिक अगिला प्रसारक जोखिम अपूर्ण रहैत अछि। बच्चाक सुरक्षा-प्रविष्टि आ फकीराक बन्द सेवा-द्वारक शिकायत अलग राखबाक फकीराक आग्रह विशेष अर्थपूर्ण अछि।

सुनवाईक घड़ी : प्रशासनिक समयक पुनर्संयोजन

फकीरा भोरक सिक्का, चायक दाम आ दुपहरिया गाड़ी फेर गनैत छथि। ओ शिकायतक जाँच चाहैत छथि, मुदा जाँच करबामे अपन कमाइक अवैतनिक त्याग नहि। नैरा क्षतिपूर्ति दऽ कृपाक सम्बन्ध बनायबाक तत्काल प्रस्ताव दबा दैत छथि; ओ कार्यालयमे स्थिति बुझबाक आ आवेदकक सहमतिसँ सुनवाईक समय बदलबाक निवेदन करबाक बाट चुनैत छथि। पंजीमे शिकायत जीवित अछि, नाम-मिलानक जाँच बाकी अछि, मृत लिखल प्रविष्टि एखन नहि सुधरल। कर्मचारी अगिला सप्ताह दुपहर बादक समय प्रस्तावित करैत अछि; अन्तिम पुष्टि फकीराक हस्ताक्षरपर निर्भर अछि। एहि ठाम ‘प्रस्तावित सुनवाई’क अर्थ ‘सुनवाई सम्पन्न’ नहि, ‘मृत्यु-प्रविष्टि सुधार’ तँ कदापि नहि।

फकीरा अपन प्रस्तावित समयकेँ नावक अनिश्चित समयसँ मिलबैत छथि। घड़ी आ रेल-तालिकाक संख्यासँ अधिक जटिल यात्राक वास्तविक समय अछि : वर्षामे नावक चलब, नदीपारक प्रतीक्षा, दिहाड़ीक घाटा। फकीरा हीरासँ स्वयं पूछबाक निर्णय लैत छथि; नैरा हुनकर बदला बयान नहि देबाक पुनर्वचन दैत छथि। अध्याय २६क नाव-वृत्त एहि कारण बिना आकस्मिक छलाँगक आरम्भ होइत अछि।

कथन-प्रविधि, ज्ञान-वितरण आ आलोचनात्मक निर्णय

तृतीयपुरुष कथावाचकक दृष्टि नैराक अन्तरंग पछतावा आ सरिताक घरक चिन्तापर अबैत अछि, मुदा स्टेशनक अनेक पात्र अपन प्रत्यक्ष वाणी सँ निर्णयक सीमारेखा खींचैत छथि। अध्यायमे फकीरा ‘देख नहि सकब’क कारण सर्वथा अज्ञानी नहि; आवाज, पयर, थैली आ गाड़ीक लयसँ सामाजिक समय बुझैत छथि। तखनहुँ हुनकर जाँच लेल पढ़ि सुनाओल पर्ची चाही, आ नावक समय हीरासँ मिलेनाइ जरूरी अछि। देहगत ज्ञानकेँ सर्वज्ञता नहि बनाओल गेल अछि। स्थलक स्तरपर रेलचौक, प्लेटफॉर्म, सूचना-खिड़की, ठेलाक नाली, किरायाक घरक नल—ई सभ एकटा समयबद्ध नगर-मानचित्र रचैत अछि; प्रत्येक ठाम ‘खाली जगह’क अर्थ भिन्न अछि : बिना कमाइक भोर, बिना नामक मजदूरी-पाँति, निर्दोषक विरुद्ध भरल अफवाह आ बालकक बनाओल दुपहरिया समयक खाली खाना।

अन्तमे संकेतक कापीमे ‘दुपहरक गाड़ी’ लेल अलग घर बनैत अछि। एहि चित्रमय निष्कर्षमे बच्चा प्रशासनक घड़ी, फकीराक कमाइ आ मायकेँ भोजन पकायबाक समय एके कालक्रममे नहि दबायब सीखैत अछि। शीर्षक ‘रेलमे खाली जगह’क अर्थ केवल डिब्बाक खाली सीट नहि, समय आ प्रतिनिधित्वक उपलब्ध स्थान बनैत अछि। उपलब्धि—कथा सामाजिक सहायताक नायकत्वक स्थानपर सहमति-आधारित सहयोगकेँ दृश्यमान बनबैत अछि। सीमा—एकहि भोरमे सोना, हरिचरण, शिव, लक्ष्मी, जावेद आ बाल-अफवाहक अनेक प्रसंग प्रायः समान नैतिक स्पष्टतासँ समाधानक उचित भाषा भेटा लैत अछि; असम्बद्ध मनःस्थितिक टकराहट आ वास्तविक प्रक्रियागत विलम्बक संवेदनात्मक विस्तार कम अछि। तथापि मुख्य विवाद—फकीराक मृत प्रविष्टि—अनसुलझल रखबाक निर्णय आसान शिक्षात्मक सुखान्तक जोखिम घटबैत अछि।

अध्याय २६ — गुहक तट

पटरा, पानि आ पार : भौतिक स्थलसँ कथाक गति

पचीसम अध्यायमे प्राप्त सुनवाईक प्रस्ताव-पर्ची एहि अध्यायक आरम्भक सीधा कारण अछि। फकीरा नदीपार करबाक नावक समय जानब चाहैत छथि, किएक तँ दुपहरक प्रस्तावित सुनवाईक संग यात्राक वास्तविक सम्भावना मिलबाक अछि। नैरा संग चलैत छथि, मुदा खाँचवला बाटपर फकीरा अपन पयर स्वयं राखबाक निर्णय रखैत छथि; नैरा केवल जोखिम बतबैत छथि। तिलवाहपर नाव देखबाक पहिने भीजल पटरा, जकड़ल लोहेक जोड़ आ बढ़ल जलस्तर देखाओल जाइत अछि। नदी एकटा उपमान मात्र नहि, भार, समय, श्रम आ शारीरिक सुरक्षाक बाधा अछि।

हीरा नावक भार आ पानीक रेखा मापैत छथि; मधु केवट भाड़ा आ यात्राक बही देखैत छथि। मधु स्पष्ट कहैत छथि जे नदी पार करब आ अन्तरराष्ट्रीय सीमा पार करब दू अलग यात्रा छथि। एहि एक वाक्यसँ सीमातीर्थक पहिनुका प्रसंगसभकेँ भौगोलिक कल्पनासँ बचाओल गेल अछि : नदीपारक नाविक सीमा-चौकीक कागदक स्वतः अधिकारी नहि। घाटक पाछाँ बिना हस्ताक्षरक पर्ची नाविकसमुदायक निःशुल्क सेवा ‘आदेश’ कहैत अछि; हीरा

स्मरण करबैत छथि जे बैठकमे तकरा प्रस्ताव कहल गेल छल। प्रस्तावक आदेश रूपमे प्रचार स्वयं जाँचक घटना अछि; लेखक पर्ची लगौनिहारक पहचान तय नहि करैत।

गुहक प्राचीन कालधारा : मित्रता आ नाविकक स्वतन्त्र विवेक

अध्याय आठम पाठांशमे गङ्गाक प्राचीन तटपर लौटैत अछि। गुह राम, सीता आ लक्ष्मणकेँ पहचानैत छथि, मुदा अभिवादनक बाद पहिने नावक भीजल पटरा, जाल सुखेनिहार समुदाय आ उतारबाक सुरक्षाक प्रश्न उठबैत छथि। लक्ष्मणक यात्राक जल्दीक विरुद्ध गुह सुरक्षित बाटक आग्रह करैत छथि; सीता तैरब नहि जननिहारक सहायता कोन प्रकारेँ भेटत पूछैत छथि। गुह हाथ पकड़बाक पहिने अनुमति लेबाक नियम रखैत छथि; लक्ष्मण हथियारक अलग रखबाक शर्त मानैत छथि। राजकुमारक आगमन तटवासी श्रमिकक दिनक अन्य कार्य समाप्त नहि करैत अछि।

गुह अतिथिक नावभाड़ा अपन अन्नसँ देबाक बात करैत छथि, मुदा भविष्यमे हर यात्रिकेँ निःशुल्क पार कराएबक वचन नहि दैत। ई अतिथिसत्कार आ पेशागत श्रमक बीच सूक्ष्म अन्तर अछि। जँ अतिथिसेवा नाविकक अवैतनिक श्रमपर निर्भर रहितय तँ मित्रता असमान देनदारी बनि जाइत। गङ्गाक कालधारामे भोजन बनबैत लोक, जाल उठबैत लोक आ नाव खेबहैत लोक सभीक नियत काज चलैत रहैत अछि। प्राचीन कथाखण्ड एहि आधुनिक निःशुल्क पर्चीक नैतिक प्रतिलोम उपलब्ध करबैत अछि, मुदा गुहकेँ मधु अथवा हीराक शाब्दिक आधुनिक प्रतिरूप कहब गलत होयत। मूलक शास्त्रीय रामकथासँ ई काल्पनिक संवादक अक्षरशः ऐतिहासिक उद्धरणो नहि मानल जाए।

नावक क्षमता आ अपुष्ट ‘आपदा-सामग्री’ : कारण-कार्य

आधुनिक कालधारामे निजी दूकानक बन्द पैकेटवाला बोरा ‘आपदा-सामग्री’ लिखाऽ मुफ्त स्थान माँगैत अछि। मधु नाम-मिलानक प्रश्न उठबैत छथि; हीरा दू बोरा कम भेलापर दू यात्रिकेँ सुरक्षित जगह भेटबाक भार-सीमा स्पष्ट करैत छथि। कागदक शीर्षक वास्तविक वस्तुक पहचानक पर्याप्त प्रमाण नहि, आ नावक क्षमता नीतिक उदार भाषासँ बढ़ैत नहि। दुकानदार मजदूरकेँ डाँटैत अछि, मधु मालिकसँ स्वयं विवाद करबाक आग्रह करैत छथि। एहि छोट दृश्यक कारणक्रम—गलत वर्गीकरण → भारक टक्कर → श्रमिकपर अनुचित दोष → वर्गीकरण सुधारबाक माँग—पाठमे ठोस अछि। मुदा बोरा पूर्ण आधिकारिक रूपेँ धोखाधड़ी सिद्ध भेल, एहन न्यायिक निष्कर्ष कृति नहि दैत।

लखन सतारक रात्रिकालीन पटरा-मरम्मति ठेकाक बहीमे ‘सामूहिक सेवा’ बनि गेल अछि। लखन अपन संगक दू श्रमिकक घंटे अलग लिखैत छथि; ओ अपना अकेलक प्राप्तिक बदला तीनूकेँ हिस्सेदारी चाहैत छथि। नन्दू नट आ हरि नटुवाक अलग नाट्यसमूह प्रस्तुति लेल मंचक ठाम नापैत अछि, मुदा बच्चाक स्कूलक समय छोड़बाक शर्त रखैत अछि। प्रशासनक ‘मुफ्त नाव’क तर्क ‘मुफ्त तमाशा’ धरि पसारबाक प्रयत्नक विरोध ओ सभ करैत अछि। ई पुनरावृत्ति केवल एक विचारक दुहराइ नहि; नाव, शारीरिक मरम्मति आ सांस्कृतिक श्रमक भिन्न आर्थिक तंत्रकेँ सार्वजनिक ‘सेवा’क एके श्रेणीमे कैद करबाक आलोचना अछि।

रीता एक्का अपन नाम दोसर व्यक्तिक ऋण-पाँतिसँ जुड़ल देखैत छथि। ओ बिना मूल अनुबन्ध हस्ताक्षर नहि करैत छथि; नैरा हुनकर नामक निजी विवरण लिखबाक बजाय ऋणपंजीमे नाम-मिलानक आवेदन-व्यवस्था नहि होयबाक सार्वजनिक तथ्य दर्ज करैत छथि। रमणी बिन्द बरकी पोखरिक माछक पट्टा नदीक समस्त घाटपर हकक प्रमाण नहि मानैत छथि; रेणु घाटपर आवागमन आ कपड़ा धोएबाक अलग समयक माँग रखैत छथि। एहि तीन दावा—ऋण, जलकर, सामान्य आवागमन—कोनो एक कथाक अनिवार्य उपदृश्य नहि, अलग अधिकार-क्षेत्र छथि। एकर संग नावक भार-सीमाक अधिकार सेहो अलग रहैत अछि।

नदीक दू नाम आ भौगोलिक अनुमानक निषेध

रेणुक मायकेक पुरान पत्रमे ‘बागमती’ आ दोसर नकलमे ‘बंगमत्ती’ लिखल अछि। रेणु स्वयं स्पष्ट करैत छथि जे ई पुरान पत्रक जलउपयोगक प्रसंग अछि, तिलवाहक भौतिक प्रवाहक माप नहि। नैरा नक्शापर नव संगम नहि खींचैत छथि। एतय पाठ अपन भूगोलक सम्बन्धमे ऐतिहासिक नाम-पाठ आ वास्तविक नदी-जालक बीच प्रमाणक अन्तर बचबैत अछि। आख्यानगत दृष्टिएँ पाठभेदक प्रत्यक्ष साक्ष्यसँ भौगोलिक संगम अनुमान करबाक हेतु उपलब्ध नहि; नाम-सादृश्य व्याप्ति नहि अछि। एहि सावधानीमे उपन्यासक बौद्धिक उपलब्धि अछि, यद्यपि नदीनामक ई सावधानीपूर्ण स्पष्टोक्ति किछु क्षण कथाक स्वाभाविक प्रवाह रोकि अध्ययन-टिप्पणी जकाँ सुनाइत अछि।

पहिल चक्कर : सफल घटना आ अनिर्णीत नीति

पटरा कसबाक बाद हीरा खाली नावमे भार राखबाक ठाम जाँचैत छथि; मधु रस्सी खींचि देखैत छथि; पहिल चक्कर चारि यात्री आ दू छोट गठरीक सीमा मे शुरू होइत अछि। फकीरा अपन गति सँ नावमे बैसैत छथि; नैरा बिना आवश्यकताक पार नहि जाइत छथि। ‘नाव चलल’ ई ठोस, सत्यापित कथात्मक सफलता अछि। परन्तु ओहि दिनक जाँच कालिहक जलस्तरपर सुरक्षा-प्रमाण नहि; हीरा अगिला जाँचक समय लिखैत छथि। मधु आपात रोगी लेल सहायता-कोष सँ खर्च देबाक प्रस्ताव रखैत छथि, आदेश नहि। नाविकक मजदूरी सरकारी सहायताक नामपर स्वतः माफ नहि भेल।

रीताकेँ मूल ऋण-अनुबन्धक माँगक प्राप्ति भेटैत अछि, समाधान नहि; लखनक दलकेँ दिहाड़ीक अलग प्राप्ति, पूर्ण भुगतान नहि; नन्दू–हरिक मंचक पूरा अनुबन्ध बाकी। एहि असम्पन्नताक बीच चित्र बनबैत संकेत नाविकक बैठबाक ठाम पहिल बेर जोड़ैत अछि। बच्चाक चित्र ‘यात्री सभ’क अमूर्त बहुलताकेँ नाविकक श्रमसहित पूर्ण करबाक चेष्टा अछि। अध्यायक अन्तिम भोजनमे सरिता, नैरा आ संकेतक बीच अहसास अछि जे सुरक्षित पार उतरब अनेक शर्तक संयुक्त फल, एक नायकक परोपकार नहि।

द्विकालीन कथनक प्रयोजन आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

कथन गुहक गङ्गा आ विदेहपुरक तिलवाहक बीच दू बेर क्रॉस-कट करैत अछि। प्राचीन कालधारामे गुहक मित्रता, नाविकक भोजन आ जालक बाट; आधुनिकमे मधुक बही, हीराक माप, लखनक मजदूरी आ फकीराक यात्रा। दूनू समयकेँ जोड़निहार वस्तु नाव होइतहुँ दूनू कालक सामाजिक नियम समरूप नहि। कथा भक्तिपरक आदरक

पूर्ववत् वातावरणकेँ श्रमिकक स्वनिर्णयक प्रश्नद्वारा विचलित करैत अछि। गुह प्राचीन कथा-भित्र सेहो परिचालन-ज्ञानक अधिकारी छथि। रसक स्तरपर अतिथि-मित्रताक अनुराग आ दुर्घटनाक आशंका एक संग चलैत अछि; नैतिक व्यञ्जना सुरक्षित सहयोगक शर्तसँ बनैत अछि।

सीमा ई अछि जे प्राचीन पात्रसभ बहुते स्पष्ट आधुनिक सहमति आ पारिश्रमिक-शब्दावलीमे बात करैत छथि; एहिसँ महाकाव्यीय कालक अन्तर्विरोधक जटिलता कम भऽ सकैत अछि। आधुनिक वृत्तमे सेहो अनेक आवेदन, प्राप्ति आ नियम-वर्गीकरण एकहि दिनमे सुसंगत ढंगसँ आगाँ बढ़ैत अछि, जे संस्थागत अवरोधक दीर्घ अनुभवकेँ छोट करैत अछि। मुदा लेखक समाधान असम्भव गति सँ नहि दैत : पर्चीक पद ‘आदेश’ सँ ‘प्रस्ताव’ धरि सुधारल, नाव एक चक्कर चलल, ऋण आ मजदूरी एखन निर्णीत नहि। अतएव अध्यायकेँ प्रशासनिक प्रचार नहि, श्रम-मूल्य आ ज्ञान-सीमाक कथा मानब अधिक न्यायोचित अछि।

अध्याय २७ — शबरीक भोर

प्रतीक्षाक समयक भीतर चलैत भोजन : आरम्भक पुनर्निर्माण

अध्याय प्राचीन दण्डकारण्यक एक चूल्हासँ शुरू होइत अछि। शबरी भिजल लकड़ी आ भीतरसँ सुखायल काठ अलग राखैत छथि; आश्रमक लोक पानि अनैत, पात सिअैत, रोगी लेल लेप बनबैत अछि। अतिथि एखन नहि अएलाह, मुदा काज पहिनेसँ चलि रहल अछि। ई आरम्भ परम्परागत शबरी-कथाक अतिथि-आगमनपर केन्द्रित दृष्टिकेँ प्रस्थान-बिन्दु नहि बनाकऽ भोजनक पूर्वश्रमपर टिकबैत अछि। मतङ्गक स्मृति आदरणीय रहलोपर चूल्हा सुलगेबाक लेल सूखल इन्धन आवश्यक अछि—स्मृतिक सांस्कृतिक महत्त्व आ देहक भौतिक आवश्यकताक द्वन्द्व एहि अध्यायक मुख्य व्यञ्जना बनैत अछि।

शबरीक प्रतीक्षाकेँ कथा निष्क्रिय भक्तिभावमे सीमित नहि करैत। करुणाक माय घायल छथि; करुणा समयपर लेप पहुँचायब चाहैत छथि। शबरी हुनका अतिथिक प्रतीक्षाक कारण अपन घरेलू कर्तव्य छोड़बाक दबाव नहि दैत छथि। शबरीकेँ पुरान फल-वितरणक अन्याय याद अबैत अछि—आगन्तुक लेल उत्तम फल राखल गेल, श्रमिक स्त्रीसभकेँ खसल फल। ओ प्रश्न उठौने छलीह; तत्काल परिवर्तन नहि भेल, मुदा समयसँ भोजन-वितरणक क्रम बदलल। ई स्मृति सीधा पूर्वदीप्ति अछि : वर्तमान भोजनक निर्णयक कारण पुरान विमर्शमे अछि। शबरीक श्रम-नीति अचानक सर्वज्ञ सत्य जकाँ नहि उतरैत, एक कालक्रमिक असहमति आ आंशिक सुधारक फल अछि।

राम आ लक्ष्मण अएबाक सूचना पर शबरी फलवाली टोकरी लऽ नहि दौड़ैत छथि। पहिने करुणाक मायक औषधि, फेर आश्रमक दिनचर्याक भोजन, तकर बाद आगन्तुकक परस। ई क्रम महाकाव्यीय अतिथिक अवमूल्यन नहि, प्राथमिकताक पुनर्वितरण अछि। मृगा कहैत छथि जे फल ओ चुनैत छथि, मुदा कथा कहबाक समय आनक नाम अबैत अछि; शबरी हुनका अपन बात स्वयं कहबाक प्रेरणा दैत छथि। एहिमे श्रमक दृश्यता कथनाधिकारसँ जुड़ैत अछि : जे काज करैत अछि, ओ अपन अनुभवक वक्ता सेहो बनबाक चाही।

आगन्तुकक संवाद : भोजन, बाट आ स्वायत्त गवाही

राम–लक्ष्मणक आगमनपर शबरी जलस्रोतक बाट बतबैत छथि, मुदा वर्षामे खसल गाछक कारण पुरान छोट बाट बन्द रहबाक सूचना सेहो दैत छथि। अतिथिक प्रश्नक उत्तर स्थान-विशेषक जाँचल ज्ञान अछि; वनकेँ केवल आध्यात्मिक एकान्तक रूपमे नहि देखाओल गेल। भोजनक प्रस्तावमे शबरी रोगीक लेल बचाओल फल अलग रखैत छथि—‘उपलब्ध’ वस्तु सभटा अतिथिक अधिकृत भोजन नहि। रामक नजर फल-पात्रक पाछाँ काम करनिहार हाथक तरफ घुमैत अछि। मृगा अपन नाम स्वयं कहैत छथि, दलदली छोट बाटक जोखिम बतबैत छथि; हुनकर नाम केवल श्रम-सूचीमे जोड़ल नहि, निर्णायक मार्ग-ज्ञानक स्रोत बनैत अछि।

रामकेँ शबरी स्पष्ट कहैत छथि जे आगन्तुक चलि गेलाक बादो चूल्हा जरत, आ सेवा करनिहारकेँ विश्रामक समय चाही। करुणा अपना मायक लग विदा होइत छथि; हुनका रोकेबाक कोनो कथा-सिद्धान्त लागू नहि कएल गेल। मृगाकेँ साँझक चूल्हासँ छुट्टी देबाक निर्णय शबरी स्वयं लैत छथि। एहि प्राचीन दृश्यसभमे कथा ‘सेवा’क नैतिक प्रशंसा सँ आगाँ बढ़ि सेवाक वितरण, असमान अपेक्षा, आरोग्य आ विश्रामक राजनीतिक प्रश्न खोलैत अछि। मुदा ई संवाद मूल रामायणक अक्षरशः ऐतिहासिक पाठ नहि, उपन्यासक कल्पित महाकाव्यीय कालधाराक वाणी अछि; आलोचना एकर आधुनिक पुनर्व्याख्यात्मक उद्देश्य चिन्हित करैत अछि, प्राचीन ग्रन्थक शाब्दिक साक्ष्य नहि बनबैत।

आधुनिक सामूहिक रसोइ : ‘निःशुल्क’क दू पृथक अर्थ

तेरहम पाठांशमे कथन विदेहपुरक रेलचौकक सामुदायिक रसोइमे अबैत अछि। सरिता अनाजक हिसाब देखबाक लेल अबैत छथि; भात, दाल, गरम पानि आ औषधिपट्टीक सामान साझा बरामदामे राखल अछि। उर्मिलाक पठाओल साफ कपड़ाक स्वतंत्र उपयोग रोगीक कपड़ा आ रसोइक कपड़ा अलग राखबाक व्यावहारिक नियम स्मरण करबैत अछि। उर्मिलाक बकाया मजदूरी एखन नहि भेटल, मुदा हुनकर अनुपस्थित श्रमज्ञान संस्था भीतर व्यवहारिक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। कथन एक पात्रक बिना प्रत्यक्ष उपस्थितिक सेहो परिणाम देखबैत अछि; अनुपस्थिति केवल नाम-स्मरण नहि।

तख्तीपर ‘सामूहिक भोजन, सेवा निःशुल्क’ लिखल अछि। ई वाक्य दुहरे अर्थक क्षेत्र खोलैत अछि : भोजन ग्रहण करनिहार लेल निःशुल्क अधिकार आ भोजन बनौनिहार, ढोएनिहार, पटरा ठीक करनिहारक अवैतनिक श्रम। मीरा बंजाराक ठेलामे आटा, नून आ लकड़ी अलग बँधल अछि; सात बोरा लिखल पर्चीक तुलनामे पाँच बोरा देखिते दू बोरा ‘गायब’क आरोप उठैत अछि। सरिता पहिने भुखाएल वृद्धाकेँ रोटी देबाक कहैत छथि। कथाक गति एतय गनतीक विवाद पूर्ण होएब धरि जीवन-कार्य रोकैत नहि।

केदार बौरीक ओसारा-मरम्मतिक मजदूरी ‘सेवा’ कहि अटकल अछि; रामूक भीजल समय-पर्चीक बगलमे व्यवस्थापकक फारममे ‘सेवक’ शीर्षक अछि, ‘मजदूर’ नहि। पूनम चिड़ीमारक उपनाम देखिकऽ व्यवस्थापक हुनका पैतृक चिड़ै पकड़बाक पेशामे स्थिर करबाक चाहैत अछि, जबकि ओ आब अनाज ढाँपबाक जाल-वस्त्र सिबैत छथि आ बच्चाकेँ विद्यालय पठबैत छथि। एहि प्रकरणसभमे जाति–समुदायक उपनाम, आजुक पेशा, श्रमक

करार आ जन्मसँ जोड़ल रूढ़ धारणा अलग प्रमाण-विषय छथि। उपन्यास सामुदायिक परिचय मेटबाक आग्रह नहि करैत; पुरान पेशागत कथा सँ वर्तमान जीविका स्वतः सिद्ध करबाक तर्कक प्रतिरोध करैत अछि।

पूनमक बेटी ‘निःशुल्क’ लिखबाक विधि सीखैत पुछैत अछि; उत्तरमे ओ बुझैत अछि जे ग्रहणकर्ता लेल दाम शून्य भऽ सकैत अछि, उत्पादकक मेहनत शून्य नहि। एहि छोट पाठशालामे अक्षर-शिक्षा आ अर्थ-शिक्षा एक भऽ जाइत अछि। ई अध्यायक भाषिक शिल्पक सूक्ष्म उपलब्धि अछि : नैतिक अर्थ बच्चीक एकटा शब्दक प्रश्नसँ प्रकट होइत अछि, व्याख्यानक रूपमे केवल कथावाचकक मुँहसँ नहि। तथापि स्त्रीसभक उत्तर अत्यन्त सटीक नीति-वाक्य जकाँ बनल अछि; सामाजिक संघर्षक स्वाभाविक असमंजस एतय सीमित भऽ सकैत अछि।

सात बोरा : मूल गनती, स्थल-विभाजन आ दोष-संशोधन

शान्ति बोटे नावसँ उतरि जानकारी दैत छथि जे दू बोरा नदीक दोसर तटपर वितरण-स्थानमे छल, पाँच विदेहपुरक रसोइमे। प्रारम्भिक सूची सातू बोरा एक्के बेर एक स्थानमे पहुँचल मानि लेने छल। मीरा अपन ठेलासँ पहुँचल मालक जिम्मेवारी स्वीकारैत छथि; शान्ति अपन नावक उतारभाड़ाक पर्ची सँ सामानक वास्तविक स्थान अलग करैत छथि। नैरा निजी यात्रिकक नामसँ बिनु सम्बन्धक माल-प्रविष्टि जाँचबाक आग्रह करैत छथि। उपलब्ध प्रविष्टिसभ मिललापर चोरीक अफवाह असत्य साबित होइत अछि; व्यवस्थापक सार्वजनिक तख्तीपर ‘गणनामे भूल’ लिखि सुधार करैत अछि। ई सुधार ‘मीरा निर्दोष’ कहि अपुष्ट आरोप छोड़ि देबाक बदला जाँचक वस्तुगत आधार सोझाँ रखैत अछि।

एहि ठाम आख्यानगत अनुरूपता सावधानीसँ समझब उचित अछि। सात बोराक प्रारम्भिक एक-स्थान अनुमान गलत पक्ष-निर्धारण पर टिकल छल; पाँच बोराक प्रत्यक्ष गनती सँ दू बोराक चोरी सिद्ध नहि होइत, किएक तँ मालक वितरण-स्थान द्वि-स्थानीय छल। स्थान बदललासँ संख्याक कुल योग नहि बदलैत। नकल, प्राप्ति आ नावक पर्ची एकत्र जाँचला पर गलत अनुमानक उपाधि उजागर होइत अछि। मुदा एहि जाँचक सफलतासँ रसोइक सभ आर्थिक प्रश्न समाधान नहि भेल : केदारक चारि दिनक बकाया आ आजुक घंटाक भुगतान बाकी अछि; ओकर मजदूरी लेल नव शीर्षक खोलल मात्र एक प्राथमिक मान्यता अछि। लेखक मिथ्या आरोपक सुधार आ श्रमिक न्यायकेँ पृथक परिणाम बनबैत छथि।

आधा थारी, पूरा अधिकार : देहक सार्वभौमिकता

फकीरा चूल्हाक कात पहुँचैत अपन बाट स्वयं चलबाक सुविधा आ भोजनक मात्रा स्वयं चुनबाक आग्रह करैत छथि। व्यवस्थापकक प्रस्ताव—आधा थारी लेने व्यक्तिक नामपछाँ लाल निशान, जइ सँ अगिला बेर पूरा अनाज नहि भेटए—सरिता रोकैत छथि। ग्रहणक परिमाणक गणना आवश्यक भऽ सकैत अछि; मुदा भोजनक ओहि क्षणक मात्रा देखि व्यक्तिक भविष्यक अधिकार आधा करब अनुचित निष्कर्ष। फकीराक देह, भूख आ पसंदक अन्तिम निर्णायक अधिकार हुनक अपन अछि। वितरणक अंकगणित आ मानवीय गरिमाक अन्तर एक नीतिगत ध्वनि उत्पन्न करैत अछि; ई कोनो औपचारिक न्यायसूत्रक कथात्मक उद्धरण नहि, पात्रक संवादक सम्बन्धसँ निकलल विवेचन अछि।

रसोइ रोज चलत की नहि, निश्चित उत्तर नहि भेटैत अछि। वार्षिक सामुदायिक हिसाबक प्रस्ताव उठैत अछि, मुदा केदार दैनिक बकाया वार्षिक आयोजन धरि रोकबाक असहमति प्रकट करैत छथि। लकड़ी अनबाक पुरान बाट बन्द होएबाक चर्चा, वनरक्षाक नियम आ ई नियमक बीच चूल्हा चलेबाक आवश्यकता अगिला अध्यायक स्पष्ट कारण-सूत्र अछि। मीरा अपन छोट बहिनक अलग हाट-बाटक इच्छा तुरन्त कुचलैत नहि, दू दिन खर्चक खाता देखिकऽ निर्णय करबाक कहैत छथि; सहमति बनल नहि, अपमानजनक अस्वीकृतियो नहि। अन्तमे शबरी आ मृगा बचल फल बाँटैत छथि। द्विकालीन चूल्हा एकरूप नहि : दण्डकारण्यक आश्रममे ओहि राति कियो भूखले नहि सूतबाक कथन अछि, विदेहपुरमे रसोइक स्थायी भविष्य अनिश्चित अछि। एहि अन्तरकेँ एकरे अन्तिम सुखान्त मानब पाठविरोधी हएत।

कथन-स्तर, रस आ संरचनात्मक आपत्ति

एहि अध्यायक प्राचीन कालधारा आरम्भमे बारह पाठांश धरि चलैत अछि, आधुनिक वृत्तक बाइस पाठांश पाछाँ फेर अन्तिम दृश्य शबरीक अछि। ई क्रम ‘प्राचीन से आधुनिक’क एकदिश यात्रा नहि, वस्तु-आवर्तनसँ सम्पन्न द्विस्तरीय कथन अछि। सूखल लकड़ी, भात, फल, थारी, रोगी लेल राखल भोजन, मृगाक नाम आ पूनमक पेशा—वस्तु सभ अलग कालमे भिन्न दावाक संग अबैत छथि। करुण रसक सम्भावना भूख, बकाया आ वंचित श्रममे अछि; हास्यक सानो आधार बच्चीक प्रश्न आ फकीराक आधा भातक वाक्यमे भेटैत अछि; मुख्य व्यञ्जना एतय निःशुल्क वितरण आ सम्मानित श्रमक सहअस्तित्व अछि।

महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई जे कथावाचक ‘शबरीक सेवा’केँ एक महान् भक्तिक प्रतीक बनाकऽ बाकी श्रमिककेँ अदृश्य नहि करैत, बल्कि करुणा आ मृगाक विशिष्ट हस्तक्षेप सुरक्षित करैत अछि। आधुनिक खण्डमे मीरा, शान्ति, केदार, पूनम, उर्मिला आ फकीराक योगदान एकर संवादात्मक समकक्ष रचैत अछि। सीमा द्विविध अछि : प्राचीन संवादसभ आधुनिक अधिकार-चर्चाक अनुशासित भाषा बेसी बजैत छथि; आधुनिक रसोइमे गनतीक नाटकीय आरोप, परीक्षण आ सार्वजनिक सुधार अपेक्षाकृत शीघ्र पूरा होइत अछि। एकर परिणामस्वरूप अफवाहक दीर्घ सामाजिक क्षतिक अनुभव कम देखाइत अछि। तथापि केदारक भुगतान आ भोजन-वितरणक निरन्तरताक अपूर्णता अध्यायकेँ केवल शिक्षात्मक उदाहरण नहि बनए दैत।

अध्याय २८ — हिडिम्बाक सन्धि

हिंसाक पश्चात् जीवन : प्राचीन वनपड़ावक आरम्भ

अध्याय दण्डकारण्यसँ दूर पाण्डवक वनयात्राक पड़ावमे खुलैत अछि। हिडिम्बा टूटल बाँस जमा करैत छथि; परसुक झगड़ाक चिन्ह छालपर अछि; हिडिम्बक मृत्यु भऽ चुकल। मुदा हिडिम्बाक जीवन एतयसँ ‘भीमक प्रेम’क एकरे प्रयोजनमे सिमटि नहि जाइत। बच्चासभक कन्द आनबाक बाट, गाभिन हरिणक पथ, भीजल माटिक चाल—ई सभ वनक स्थायी जिम्मेवारी छथि। भीम बाँस उठबैत छथि, हिडिम्बा ओकरा कतय राखब तकर निर्देश दैत छथि। शारीरिक बल आ स्थानीय पर्यावरण-ज्ञानक अन्तर संवादसँ निकलैत अछि; भीमक बल हिडिम्बाक अधिकारकेँ निष्प्रभावित नहि करैत।

हिडिम्बा भाइकेँ बिसरैत नहि, तकर हिंसाक आदेश सेहो स्वीकार नहि करैत। ई शोक–प्रेमक सजिलो द्वन्द्व नहि; व्यक्ति अपन रिश्तेदारक मृत्युक स्मृतिक संग ओकर अन्यायक प्रतिरोध कायम रखैत अछि। भीम ‘हमरा संग चलब?’ पूछैत छथि, हिडिम्बा सम्बन्धक आधार बदलैत छथि—अपन वनमे रहैत ककरा संग कोन सम्बन्ध सम्भव? कुन्ती समक्ष हुनकर शर्त अछि : वन छोड़बाक बाध्यता नहि, सन्तानक पालन आ नाममे माताक वचन, बच्चाकेँ जन्मे सँ वंशक सैन्यदायित्वमे नहि ढकेलब। एहि प्रकारेँ विवाहक प्रश्न ‘नायिका नायकक संग कतय जाएत’ सँ बदलि स्थान, संतान, समय आ स्वायत्तताक सहमति बनैत अछि।

भीम भाइसभक यात्रा छोड़ि नहि सकबाक कठिनाइ स्वीकारैत छथि। हिडिम्बा ओहि वचनकेँ महत्व दैत छथि जे निभाओल जा सकए। हिडिम्बाक समुदायमे एक वृद्ध स्त्री सुनि कऽ छालपर तीन स्मृतिचिन्ह बनबैत छथि—रहबाक सहमति, विदाक सच्चाइ आ बच्चाक अपन भविष्य। ई शास्त्रीय राजकीय दस्तावेज नहि, समुदाय-समक्ष राखल स्मृतिरूप साक्ष्य अछि। हिडिम्बा स्पष्ट करैत छथि जे सन्तानक रक्त जन्मक कर नहि; भविष्यमे संकट पड़ला पर बालकक स्वतंत्र वचन चाही। एहि वाक्यमे घटोत्कचक भावी महाभारतीय बलिदानक सम्भावित अन्तरपाठीय पूर्वाभास पहिचानल जा सकैत अछि, मुदा एहि अध्यायमे घटोत्कचक जन्म, अगिला युद्ध अथवा ओकर मृत्यु घटित भेल, एहन दावा नहि बनैत।

वर्षा २०३९ : नवा फाटक, मेटल पदनाम आ प्रवेशक संकट

नवम पाठांश आधुनिक ‘विदेहपुर, वर्षा २०३९’क स्पष्ट काल-सूचना दैत अछि। पिछिला अध्यायक लकड़ीक बाटबन्दी-विमर्शक उत्तर भोरमे फाटकपर लगल पर्ची देत—वनकिनाराक मार्ग बन्द। तारीख पढ़ाइत अछि, मुदा जारी करनिहारक पदनाम वर्षाक छींटासँ मेटल अछि। रामू खाली ठेला लऽ ठाढ़; मीराक बहिनक झोरामे खाली टोकरी अछि। ई दृश्य देखबैत अछि जे प्रतिबन्धक सूचना दैनिक कामक अवसर उत्पन्न होएबाक पहिने ओकरा रोकि सकैत अछि। मुदा पदनाम मेटल अछि, तेँ निषेधक स्रोत अपने-आपमे निश्चित नहि।

बटोही धामी मधुक पात्र लऽ राखल छत्ता जाँचबाक चाहैत छथि, छत्ता काटबाक तत्काल उद्देश्य नहि। पहरेदारक हाथमे दू दिनक ड्यूटी-पर्ची अछि, मुख्य प्रतिबन्ध जारी करबाक अधिकार नहि। देवकी पाल बकरीसभक लेल मौसमी सुरक्षित चरागाहक बाट चाहैत छथि; पछिला नालामे वर्षाक पानि अछि। देवकीक कागदमे ‘खैरी’ नाम अछि, मुदा ओ स्वयं नहि जनैत छथि जे एकर तिलवाहसँ कोनो भौगोलिक सम्बन्ध अछि की नहि। तारा दस्तावेजक उपयोग पुरान पहुँच-प्रथा बुझबाक धरि सीमित रखैत छथि, वर्तमान नदीक नवा नाम बनएबाक लेल नहि। पशुबाटक ऐतिहासिक नकल आ वर्तमान नालाक भौतिक जोखिम एकमे एक प्रमाण नहि।

तुलसी ताजपुरियाक मालवाहक गाड़ी बाट बन्द भेला सँ नगरक विद्यालय-गल्लीमे घुमए पड़त; रोजी लालबेगीक कचरा-छँटाइक नियमित कामक मार्ग अटकल अछि। अस्थायी पंजी भरनिहार युवक रोजीक उपनामसँ धर्म आ पेशा अनुमान कऽ एकटा खानामे भरि दैत अछि। रोजी एकर खण्डन करैत छथि : वर्तमान काज, धार्मिक परिचय आ उपनाम एकरे वस्तु नहि। युवक लिखल अनुमान काटि पृथक जानकारी दर्ज करैत अछि। सामाजिक वर्गीकरणक ई छोट प्रशासनिक क्रिया कथामे हिंसक अपशब्द बिना सेहो पहिचान-मिटाएबाक खतरा बतबैत

अछि। मंगरी गोराइतक बन्द कारखानाक बकाया अलग अछि; पहरेदारक हाथमे तकर वेतनपंजी नहि, तेँ मंगरी पहरेदारकेँ कारखानाक मालिकक अपराधी घोषित नहि करैत छथि।

माँगक पृथक्करण : साझा आवेदनक वास्तविक प्रक्रिया

नैरा बटोहीक नक्शा देखबाक पहिने अनुमति माँगैत छथि; बटोही छत्ताक ठीक स्थान गुप्त रखबाक शर्त दैत छथि, जे भीड़ आ मधुमक्खी दुनूक सुरक्षा सँ जुड़ल अछि। गोमती नालाक ढलान मापे बिना कारण निश्चित नहि करैत छथि; तारा फाटक, नाला आ पगडंडी अलग चिन्हित करैत छथि। अदितिक नामपर आदेश कल्पनासँ नहि जोड़ल गेल अछि। एतय ‘कियो देखल’, ‘कियो नकलमे पढ़ल’ आ ‘कोन अधिकारी आदेश देलक’क तीन प्रमाण-क्षेत्र अलग रहैत अछि। गोपनीयता केवल व्यक्ति-केंद्रित नहि, नाजुक पारिस्थितिक वस्तु—मधुमक्खीक छत्ता—क रक्षाक विषय सेहो बनैत अछि।

भीड़मे ताला तोड़बाक प्रस्ताव उठैत अछि; बटोही आ मंगरी एहिमे असहमति दैत छथि, किएक तँ ताला फोड़लासँ न वनाधिकार तय होयत न बकाया मजदूरी। मीरा अलग काजसभकेँ एक आवेदनमे विनष्ट नहि कऽ अलग पाँति बनबैत छथि—मधु, पशुबाट, ढुलाई, नियमित कचरा-कार्य, कारखानाक बकाया आ केदारक मरम्मति-बकाया। मंगरी पुरान पहचान-पत्र प्रवेश-पास नहि होयबाक बात स्वीकारैत छथि। पहरेदारीक ठेका-पत्रमे गोदाम-रक्षाक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा सार्वजनिक पगडंडी बन्द करबाक स्वतन्त्र आदेश एहि फाइलमे देखाओल नहि गेल। एहि अभावसँ पूर्ण कानूनी खुलापन सिद्ध नहि; केवल ‘वन विभागक अन्तिम निषेध’क दावाक आधार कमजोर होइत अछि।

तुलसी अनाज समयपर पहुँचएबाक लेल दोसर बाट चुनैत छथि आ बढ़ल भाड़ाक लागत अलग लिखैत छथि। रहीना ठकुराई पुरान वेतनपंजीक अक्षरक नकल करबाक क्षमता स्वीकारैत छथि, मुदा अपूर्ण मोहरक अधिकार कोन कार्यालयक से मूल बिना नहि कहैत छथि। मंगरी दलक प्रत्येक मजदूरक दिनक हिसाब अलग करबाक निर्णय लैत छथि। दुपहर पाछाँ अधिकारीक एक कर्मचारी स्पष्ट करैत छथि जे गोदाम-रक्षा आ साझा पगडंडीक कानूनी स्थिति अलग जाँचल जायत; एखन केवल नाप-जाँचक निरीक्षण-दल लेल सीमित प्रवेश, आम आवागमन बन्दे। तीन दिनक भीतर सम्बन्धित कागदक प्रति देबाक निवेदन प्राप्त होइत अछि, उत्तरक प्रतिज्ञा नहि। एहि प्रक्रियामे फाटक तत्काल नहि खुलैत।

छालक तीन चिन्ह आ चारि आवेदन : अन्तर्पाठीय रचनाक सीमा

प्राचीन कथा हिडिम्बा–भीमक सम्बन्धक सहमति, वन-निवास आ भावी सन्तानक अधिकार तीन चिन्हमे संकलित करैत अछि। आधुनिक कथा मीराक चारि प्रतिमे अलग अधिकार-प्राप्तकर्ता बनबैत अछि—कार्यालय, बाट उपयोग करनिहार, मजदूरीक दावा आ सुनवाईमे उपस्थित नहि भऽ सकनिहार लोक। ई संख्यात्मक समानता-शिकारक आधार नहि; वास्तवमे तीन प्राचीन चिन्ह आ चारि आधुनिक प्रति भिन्न सामाजिक कार्य करैत छथि। समानता ‘वचन ककरा पर लागू’ आ ‘अनुपस्थित व्यक्तिक अधिकार केना सुरक्षित’क प्रश्नमे अछि। हिडिम्बाक बच्चा अपन भविष्यक सहमतिक अधिकार राखैत अछि; आधुनिक आवेदनमे अनुपस्थित कामगारक प्रति हुनकर भागीदारी बचबैत अछि। मुदा एकरे संस्थागत प्रक्रिया वा ऐतिहासिक निरन्तरता मानल नहि जा सकैत।

आधुनिक दृश्य बीचमे प्राचीन वनपड़ाव फेर अबैत अछि। भीम हिडिम्बाक मन बदललापर बोलबाक शर्त स्वीकारैत छथि; हिडिम्बा चुप्पीकेँ स्थायी वचन नहि मानैत छथि। भाईक हिंसाक आदेशक अस्वीकार संग ओकर स्मृति राखब, वनक बाट सामुदायिक रखब, अपन घरक सीमा स्वयं निश्चित करब—ई सभ आधुनिक फाटकक विवाद लेल एक नैतिक प्रतिप्रश्न बनैत अछि। मुदा आधुनिक फाटकपर पंजी, ठेकापत्र, कानूनी स्थिति आ सरकारी प्राप्ति चाही; प्राचीन निजी सहमति तकरा स्वतः प्रतिस्थापित नहि करैत। एहि भिन्नतामे उपन्यासक द्विकालीन प्रयोगक वास्तविक बौद्धिक सम्भावना अछि।

अन्तिम स्थिति : फाटक बन्द, सम्बन्ध खुलल

सायंकाल देवकी गहिर नालामे बकरी नहि उतारैत छथि; बटोही छत्ता नहि देखि सकल; रोजीक रोजी-बाटक स्थायी अनुमति नहि भेटल; मंगरीक बकाया देय जारी अछि; केदारक मजदूरी एखन नहि चुकल। तुलसी अनाज पहुँचा देलनि, मुदा बढ़ल परिवहन-लागतक प्रश्न खुला अछि। नैरा सरिताकेँ बतबैत छथि जे बाट एखन नहि खुलल, मूल आदेशक प्रति माँगबाक प्रक्रिया भेटल। अन्तिम दृश्य देवकीक छोट बकरीक दोरी चबब आ काल्हि फेर जुटबाक कथन अछि। एतय ‘सन्धि’ कोनो समाधान-पत्रपर एकमुश्त हस्ताक्षर नहि, अलग उद्देश्यवला लोकक सशर्त अस्थायी सहकार्यक कथा अछि।

कथनक एक सीमा प्रारम्भिक प्राचीन हिडिम्बा-सम्वादक अत्यधिक आधुनिक समझौता-शब्दावली अछि। ओकर संवाद स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व आ बाल-अधिकारक आजुक धारणा स्पष्ट रूपसँ व्यक्त करैत अछि; ई उत्तरमहाकाव्यीय पुनर्पाठक लक्ष्य साधैत अछि, मुदा ऐतिहासिक पात्रभाषाक दूरी घटबैत अछि। आधुनिक फाटकपर अनेक सामाजिक समूह क्रमशः उपस्थित भऽ अपन परिचयक सही वर्गीकरण समझबैत अछि; ई अनुक्रम प्रतिनिधित्वक विस्तार देइतहुँ किछु जगह पेशा-सूचीक व्यवस्थित प्रदर्शन जकाँ लगैत अछि। तथापि सूची रूपक विरुद्ध पात्रक विशिष्ट लागतसभ—मधुक छत्ता, पशुक जल-सुरक्षा, विद्यालयक गलीक परिवहन-जोखिम, मोहरक असिद्धि—कथा मे वास्तविक बाधा बनि प्रवेश करैत अछि। सबसँ महत्त्वपूर्ण ई जे लेखक फाटक खुलेबाक अप्रमाणित विजय नहि लिखैत; निश्चित प्राप्ति, अपूर्ण आदेश-जाँच आ अगिला भोरक असुरक्षित श्रमक बीच अध्याय समाप्त करैत छथि।

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २५–२८ क तुलनात्मक विवेचन

सभा-पर्वसँ वन-पर्व : विस्थापनक बादक अर्थव्यवस्था

चौबीसहम अध्यायक अन्तमे चम्पा, बदरी आ सरिताक अलग-अलग अस्थायी विस्थापन छैक। पचीसम अध्याय सरिताक किरायाक कोठरीक पानिसँ खुलैत अछि; छब्बीसम फकीराक प्रस्तावित सुनवाईक यात्राक व्यवहारिक सम्भावना लेल नावक समय खोजैत अछि; सत्ताइसम नाव-पारक पूर्वप्रसंगसँ सामुदायिक रसोइक वितरण-विवाद धरि पहुँचैत अछि; अठाइसम रसोइक लकड़ीक बाटक चर्चासँ वनमार्गक फाटकक संकट धरि। एहि क्रममे प्रत्येक नवा अध्यायक मूल कारण पिछिल अध्यायक कोनो अपूर्ण अवस्था अछि। रेल, नाव, रसोइ आ वनमार्ग ‘स्थान बदलल’ मात्र नहि—जीविका, भोजन, सुरक्षा आ अधिकारक कारणात्मक श्रृंखला छथि। (मूल अ.२४–२८)

काल-रचना, दृष्टिकेन्द्र आ अन्तरपाठक तीन अलग रूप

पचीसम अध्याय आधुनिक रेलचौकक एक दिनक बहुस्तरीय समयपर केन्द्रित अछि : भोरक गाड़ी, नौ बजे कार्यालय, दुपहरक प्रस्तावित सुनवाई, साँझक चूल्हा। छब्बीसममे आधुनिक तिलवाह आ प्राचीन गङ्गाक गुह-दृश्य परस्पर अबैत अछि। सत्ताइसम प्राचीन शबरीक भोरसँ आधुनिक रसोइ आ फेर प्राचीन साँझ धरि अर्धवृत्ताकार रचना अछि। अठाइसम प्राचीन हिडिम्बाक सम्बन्ध-विवादसँ ‘विदेहपुर, वर्षा २०३९’क फाटक आ फेर प्राचीन संवादक प्रत्यावर्तन करैत अछि। अतः ‘वन-पर्व द्विकालीन अछि’ कहनाइ सामान्य सत्य भऽ सकैत अछि, मुदा चारू अध्यायक समय-विन्यास एकरूप नहि। (अ.२५–२८, सम्बन्धित उद्घाटन आ समापन)

दृष्टिकेन्द्र सेहो एक व्यक्तिमे स्थिर नहि। नैरा प्रमुख आवर्ती निरीक्षिका छथि, मुदा फकीरा अपन कमाइक घड़ी, मधु नावक भाड़ा, गुह तटक सुरक्षा, शबरी चूल्हाक वितरण, मीरा मालक स्थान, हिडिम्बा वनक स्थानीय ज्ञान आ रोजी अपन सामाजिक परिचयक निर्णयक अधिकारी छथि। ई बहुकेन्द्रणक महत्त्व प्रत्येक पात्रक भाषिक स्वायत्तता पूर्णरूपेँ स्वतः सिद्ध करब नहि; अनेक पात्रक संवाद एके नैतिक स्पष्टताक लयमे अछि। तेँ बहुपात्रता आ बहुस्वरता बराबर नहि। उपन्यासक उपलब्धि सामाजिक ज्ञानक अनेक स्थान देखायब अछि; ओकर सम्भावित सीमा भिन्न पात्रक वास्तविक भाषिक असहमतिक अपेक्षाकृत संकुचित अन्तराल अछि।

प्रमाणक तीन गति आ सामाजिक श्रमक नैतिकता

चारू अध्यायमे प्रमाणक अलग अवस्था अछि। पचीसममे फकीराक शिकायत जिअत अछि, सुनवाई बदलबाक प्रस्ताव अछि, सुधार नहि। छब्बीसममे नाव चलल अछि, पर्चीक निःशुल्क ‘आदेश’क वैधता स्थापित नहि। सत्ताइसममे सात बोराक गणनाक त्रुटि सुधरल अछि, केदारक वेतन नहि चुकल। अठाइसममे फाटकक आदेशक मूल स्रोत जाँचबाक प्राप्ति अछि, आम प्रवेश नहि खुलल। एहि चारि घटनात्मक परिणामक भेद पाठक-परीक्षणक कसौटी थिक : आवेदन, प्रस्ताव, जाँच, भौतिक प्रयोग, सार्वजनिक सुधार आ अन्तिम न्याय अलग-अलग चरण छथि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ भिजल पटरा, खाली बाल्टी, सूखैत लकड़ी, फाटकक गाँठ आ नावक बैठबाक खाली स्थानक पुनरागमन प्रतीकात्मक व्यञ्जना रचैत अछि। करुणाक कारण भूख आ अपमान अछि, मुदा पात्रसभक सूक्ष्म हास्य एक-रस पीड़ा-सञ्चयन रोकैत अछि। औचित्यक प्रश्न एतए मुख्यतः पात्रक निर्णयक भौतिक कारणसँ जुड़ल अछि—नावक भारक सीमा, घाटक भाड़ा, भोजनक मात्रा आ वनक आवागमनक जोखिम। प्रमाण-विवेचनमे प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान आ अभावक भेद उपयुक्त विश्लेषणक उपकरण छथि; एहि कथा-प्रसंगसभकेँ आख्यानगत मौलिक शास्त्रीय सूत्रक वास्तविक पाठ कहि प्रस्तुत करब अनुचित।

अन्तरिम आलोचनात्मक निर्णय आ आगाँक जाँच

वन-पर्वक पहिल चारि अध्यायक प्रधान उपलब्धि महाकाव्यीय वनवासकेँ आधुनिक निर्वासनक मात्र भावुक समानार्थक नहि बनाकऽ जीविकाक समय, स्थानीय ज्ञान, स्त्री-श्रम, श्रम-मूल्य, समुदाय-विशेषक स्वायत्त निर्णय आ पारिस्थितिक उत्तरदायित्वक जटिल कथा बनायब अछि। तथापि अधिकांश प्रसंगमे कथन नैतिक रूपसँ सचेत पात्रकेँ उपयुक्त भाषिक समाधान दए दैत अछि; अनियमित टकराहट, दीर्घ प्रशासकीय निष्क्रियता, अपमानक

निजी आघात आ जटिल सामाजिक विभाजनक गहिर अवकाश अपेक्षाकृत कम अछि। ई अन्तरिम निष्कर्ष मात्र अध्याय २५–२८ लेल अछि, सम्पूर्ण वन-पर्व (२५–३६) लेल अन्तिम फैसला नहि। अगिला क्रम अध्याय २९ — ‘बच्चा चोर’मे एहि चारि अध्यायक बाल-अफवाह आ जनसमूहक प्रमाण-दावाक परिणाम फेर जाँचब अपेक्षित अछि; मूल अ.२९ देखल बिना ओकर घटना अथवा समाधान एतय घोषित नहि कएल गेल अछि।

अध्याय २९ — बच्चा चोर

भोरक स्क्रीनमे पिछिला साँझ : उद्घाटनक कालिक कपट

अध्यायक आरम्भ वनफाटकक भीजल दृश्य रेलचौकक मोबाइलपर पसारलासँ होइत अछि। वीडियोमे जानकीक पीठ, बच्चाक एकटा हाथ, बाँसक फाटक आ ‘पकड़ू’ आवाजक किछु क्षण अछि; तकर बाद आरोपित शीर्षक ‘आइ भोर बच्चा चोर पकड़ायल’ आबैत अछि। कथाक पहिल समस्या तस्वीरक मिथ्यात्व नहि, दृश्य आ शीर्षकक समय-सन्दर्भक असमानता अछि। फकीराक प्रश्न—‘आइ भोर के रिकॉर्ड कएलक?’—साथे प्रस्तुतिकरण आ घटनाक वास्तविक समयक भेद स्पष्ट करैत अछि। युवकक ‘आइए भेजल गेल’ उत्तर रिकॉर्डिंगक तिथि सिद्ध नहि करैत। पाठक शुरूहेसँ दृश्य-प्रमाणक अन्तराल बुझैत छथि, मुदा समूहमे वीडियो आगाँ पठाओल जा चुकल रहैत अछि। ई आरम्भ अफवाहक कथन-गति कें सामाजिक घटना बनबैत अछि : दू फोनक बीच प्रतिलिपि पसारबाक समय वास्तविक जाँचक समयसँ छोट अछि।

जानकीक देहगत प्रतिक्रिया एही सार्वजनिक अपवादक निकट परिणाम अछि। ओ अपन दलक भीजल चदरि सुखबैत छथि, मुदा एक अजनबी माय हुनका देखि बेटीक हाथ टानि लैत अछि। जानकीक पीठपर देखाओल अधूरा दृश्य एखन हुनका सोझाँ लोकक व्यवहार बदलि रहल अछि। वृद्धा सरयूक प्रश्न—‘हमरो मुँहपर ताला लगा दियौ?’—उपस्थित-अनुपस्थितक तनाव पैदा करैत अछि : दृश्य देखबाक अधिकार समुदायसँ छीनि लेल गेल, मुदा ओकरा चुप रहबाक भार देल जा रहल अछि। प्राचीन महाकाव्यक वनक तुलनामे ई आधुनिक ‘वन’ अनियन्त्रित प्रकृति मात्र नहि, डिजिटल प्रसारक मार्फत बनल सामाजिक बहिष्कारक स्थल अछि।

घटना-पञ्जी : दू आरोप नहि, दू भिन्न समस्याक वास्तविक शृंखला

पहिल शृंखला जानकीक दलपर लगल वायरल आरोपक जाँच अछि। नैरा हुनकासँ विवरण माँगैत छथि, मुदा जानकी बालकक चेहरा फेर सार्वजनिक नहि करबाक पूर्वशर्त दैत छथि। महेशक गवाही समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक नैराक पुरान गलती एतय क्रियात्मक स्मृति बनैत अछि। नैरा फोनक बदला कापी निकालैत छथि, बिना अनुमतिक नाम नहि देबाक उत्तर दैत छथि, आ जानकी केवल तीन बात दर्ज करबबैत छथि—फाटक लग उपस्थित रहल; एक बालक अपन माय संग छल; हुनकर सोझाँ अपहरण नहि भेल। भीड़ ‘पकड़ू’ ककरा कहलक, ताहिपर ओ अपूर्ण सुनबाक स्वीकार करैत छथि। एहि स्वीकारमे साक्षी अपन ज्ञानक सीमाकेँ संस्थागत ताकत बनबैत छथि, सर्वज्ञता नहि।

दोसरा पाँतिमे विद्यालयक अस्थायी शिक्षिका मीरा मंडलक उपस्थिति-पंजी अछि। तीन बच्चाक कक्षामे नहि अएबक कारण अभिभावकसभक डर अछि। मीरा स्पष्ट करैत छथि जे रजिस्टर पढ़ाइ रुकबाक प्रमाण दैत अछि,

अपहरणक अपराधी नहि बतबैत। एक बालक कालहि कक्षामे छल ई बात वीडियोमे ओकर पहिचान सिद्ध नहि करैत; उपस्थितिक काल-सीमा एक देहक पूरा दिनक गतिपथ नहि। नैरा विद्यालयक सभ बच्चाक सूचीक तस्वीर नहि लैत छथि, केवल समयक लिखित आधार चाहैत छथि। ई कम जानकारीबद्ध निस्संगता नहि, बालकक पहचान सुरक्षित राखैत प्रासंगिक प्रमाण चुनबाक पद्धति अछि।

तेसर प्रमाण दुर्गा दनुवारक बाँस-ढुलाई रसीद अछि। भीड़ हुनकर बाँसक बाटकेँ ‘बच्चाक मामला’सँ गौण करए चाहैत अछि। दुर्गा तिथि आ गाँठक संख्या देखबैत छथि, किन्तु पूरा दृश्य नहि देखने स्पष्ट स्वीकार करैत छथि। फाटकक पहरेदार सेहो कोनो बालककेँ हिरासतमे नहिं लेने कहैत अछि; ओकर भीजल ड्यूटी-पर्ची गाड़ी प्रवेश-निषेधक समय बतबैत अछि, मुदा नामसहित अनौपचारिक नकल देबाक ओ अधिकारी नहि मानैत। दुर्गाक श्रम-बही आ पहरेदारक पर्ची घटनाक समय आ स्थानक परिधि बनबैत अछि, पूर्ण अपराध-विवरण नहि।

चारिम जाँच मूल रिकॉर्डिंग धरि पहुँचैत अछि। प्रसारित फोनमे फाइल ‘भेटबाक’ समय छल; रचबाक समय नहि। मूल रिकॉर्ड करनिहार युवकक मित्र सोझाँ अबैत अछि, मुदा बालकक चेहरा खुलबाक जोखिमपर जानकी नियंत्रित प्रदर्शन आ प्रति नहि बाँटबाक शर्त रखैत छथि। नैरा तकनीकी विशेषज्ञ बनबाक अभिनय नहि करैत छथि; फाइलक तिथि, दृश्यक्रम आ स्वामित्वक कथन अलग पाँतिमे लिखैत छथि। मूल दृश्यमे फाटकक सूचना, तुलसीक अनाज-गाड़ी आ दुर्गाक बाँस-ढुलाई मीरा सँ भेटल भोजन-पंजीक समयसँ जुड़ैत अछि। पिछिला साँझकेँ ‘आइ भोर’ कहल गेल—ई सन्दर्भ-विकृति प्रमाणित होइत अछि; झूठ शीर्षक के जोड़लक से प्रमाणित नहि।

एहि जाँचक बीच नव, स्वतन्त्र घटना घटैत अछि। लता अपन आठ वर्षक बेटा मिथुनकेँ हाटसँ हराएल बतबैत छथि। एखन घटना ‘बच्चा चोरीक वायरल आरोप’ नहि, ‘एक बालकक वास्तविक गुमशुदगीक सूचना’ अछि। मिथुनक नील कुरता, लाल रङ छोड़निहार गमछा, टूटल चप्पलक फीता; तेल-दोकानपर मामाक तीन मिनट बाहर ठाढ़ रखब; सम्भावित उत्तर गली; रेलक सम्भावना—ई सभ अलग-अलग कथनक सन्देह-सूत्र छथि। सबीना मीरशिकारक झोरा देखि भीड़ हुनकापर शंका करैत अछि, मुदा सुई-डोरी हुनकर जाल आ टोकरी मरम्मतिक जीविकासँ जुड़ल अछि। सबीना हराएल बालकक खोजमे सहयोग दैत छथि, अपन समुदायक नामपर अपराध स्वीकार नहि करैत।

मिथुनक सम्भावित चप्पल-फीता उठबाक बाद सेहो ओकरा ‘बच्चाक सिद्ध वस्तु’ नहि कहल जाइत अछि; नैरा ‘सम्भावित वस्तु’ लिखैत छथि। लता आ जानकी सहायता-कक्ष पहुँचलापर कर्मचारी गुमशुदगीक अलग सूचना-पत्र, समय आ क्रमांक दैत अछि। खोजक सम्भावित बाट जाँचबाक बात कहल जाइत अछि, मुदा मिथुन नहि भेटैत। जानकीक दलपर आरोप स्वतः एहि नवा सूचनामे शामिल नहि होइत। दोसर आवेदनमे वायरल दृश्यक गलत काल-सन्दर्भ सुधारबाक माँग अछि। जानकी स्वयं ‘सभ लोक झूठ बाजल’ जकाँ अति-विस्तृत भाषा हटबबैत छथि; साक्ष्य जतेक कहैत अछि, वाक्य सेहो ओतबे कहबाक निर्देश दैत छथि।

प्रमाण-विवेचन : प्रत्यक्ष, समय, व्याप्ति आ सामाजिक पूर्वग्रह

एतय आख्यानगत प्रमाण-परीक्षा केवल ‘कागद बेशी अछि’ कहनाइ नहि। पक्ष (जानकीक दलक आरोपित संलग्नता), साध्य (विशिष्ट बच्चाक चोरी), आ प्रस्तुत हेतु (अधूरा वीडियोमे बच्चाक हाथ आ ‘पकड़ू’ आवाज)क

बीच आवश्यक व्याप्ति नहि देखाओल गेल अछि। ई हेतु भीड़, फाटक-विवाद, भय आ अलग प्रसंगमे समान रूपसँ भेटि सकैत अछि; तें यथाप्रस्तुत अपराध-अनुमान अनैकान्तिक अछि। मूल वीडियो एक ऐतिहासिक दृश्यक समय मिलबैत अछि; ओ समस्त दलक जीवन-आचरण पर अंतिम प्रमाणपत्र नहि। दोसर दिस मिथुनक नहि भेटब बच्चाचोरीक निराधार दल-आरोपकेँ वैध नहि बनबैत। दू मामला मिलाओला पर साक्ष्यक दू भिन्न पक्ष एक-दोसरामे गुँथा जाएत। एहि भेदक दृश्यात्मक परिणति अन्तिम दू लिफाफामे होइत अछि।

दुर्गा, मीरा, फकीरा आ सबीनाक ज्ञानस्रोत भिन्न छथि। दुर्गा अपन गाड़ीक समय जानैत छथि, फकीरा स्टेशनक घण्टी आ कमाइक लय, मीरा विद्यालयक पंजी, सबीना कारीगरक सामग्री। कोनो एकटा स्रोत मिथुनक देहक वर्तमान ठिकाना नहि बतबैत। उपन्यासक उपलब्धि ई सामूहिक प्रमाण-वितरण अछि; सीमित अवगमक स्वीकारक कारणसँ पात्रसभक वाणी महत्त्व पबैत अछि। अनुपलब्धि वा ‘हम नहि देखलहुँ’सँ ‘एहन घटना होइए नहि सकैत’ निष्कर्ष काढ़ब सेहो अनुचित; लेखक बारम्बार जाँचक प्रश्न खुला राखैत छथि।

सामाजिक दृष्टि : खोजक अधिकार आ आरोपित समुदायक जीवन

जानकीक घुमन्तु दलक बच्चासभक फोटो सार्वजनिक नहेनाइ निजताक मात्र विधान नहि, प्रत्यक्ष सामाजिक सुरक्षा अछि। भीड़क प्रश्न—बच्चाकेँ सोझाँ आनू—बालकक देहकेँ आरोपक प्रतिवादक प्रदर्शनी बनबैत अछि। जानकी एहि माँगकेँ अस्वीकार कऽ खोजमे सहयोग दैत छथि। एहि ठाम स्त्रीक अधिकार केवल ‘सहानुभूति पाबब’ नहि, सत्यापनक प्रक्रिया चुनबाक अधिकार अछि। लता अपन वास्तविक बेटाक खोज लेल बेचैन छथि; हुनकर चिन्ताक हानि दूर करबाक नामपर जानकीक दलक मानवीय अधिकार छीनेबाक निर्णय नैतिक रूपसँ उचित नहि।

दुर्गाक बाँस, सबीनाक आधा मजदूरी, मीरा द्वारा अपन कमाइसँ कक्षा-सामग्री किनब आ सरयूक खिचड़ी—ई चारि श्रम-वृत्त कथाक कारणात्मक अङ्ग छथि। भीड़ द्वारा ‘बाँस बादमे’ कहनाइ सामाजिक संकटमे जीविका गौण करबाक प्रतिक्रिया देखबैत अछि; मुदा दुर्गाक ढुलाई-समय स्वयं प्रमाण बनैत अछि। सबीना निःशुल्क सहायता देलाक बाद अपन कामक दाम नहि छोड़ैत छथि। एतय सहयोग आ अवैतनिक सेवा एक नहि; उपन्यास श्रमिक-पात्रकेँ कर्तव्यक उपदेशक पुतला बनएबासँ किछु अंश धरि बचबैत अछि। तथापि एकहि दिन अनेक लोक अपन प्रमाण-सीमा असाधारण स्पष्टतासँ व्याख्या करैत छथि, जे गद्यक व्यवहारिकता आ शास्त्रार्थक शिल्पक बीच तनाव बनबैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, अवधि आ अन्तक करुण ध्वनि

तृतीयपुरुष कथनक प्रमुख निरीक्षण नैराक पछतावा आ जानकीक असुरक्षाक कात अछि, मुदा लताक बेबसी कथा-केन्द्रकेँ अपवाद-जाँचसँ वास्तविक खोजक दिशामे घुमा दैत अछि। रेलचौक, वनफाटक, हाट, उतर गली, सहायता-कक्ष आ सरिताक रसोइ एक दिनक क्रममे अबैत अछि। छोट-छोट संवादक माध्यमसँ ‘देखल’, ‘पठाओल’, ‘दर्ज’, ‘खोजब’क क्रियागत काल-भेद बनैत अछि। किछु विवरण जकाँ चप्पलक फीता केवल सम्भावना अछि; ओकर पुनरागमन भविष्यक जाँचक अपेक्षा जगबैत अछि, सिद्ध परिणाम नहि।

अन्तिम दृश्य लिफाफाक संरचनात्मक जोड़ी सँ आरम्भिक एक वायरल शीर्षकक प्रतिवाद करैत अछि। एक लिफाफामे गलत आरोपक सन्दर्भ-सुधार, दोसरमे मिथुनक खोजक सूचना; मूल ‘सत्ताइस नाम’क पन्ना अपन पृथक सुरक्षित ठामपर अछि। बाहर बच्चासभ खिचड़ी खा सुतैत अछि, लताक घरमे मिथुन लेल थारी ढाकल अछि। भातक ई बिम्ब पहिल अध्यायक रसोइक जीवन-प्रमाणसँ जुड़ैत अछि : कागदक आवश्यकताक संग देहक भूख आ अनुपस्थितिक कष्ट एखनहुँ चलैत अछि। करुण रस अनुपस्थित बालकक थारीसँ उपजैत अछि; ओकर समाधानक स्थानपर खोजक अगिला भोर अछि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा। मुख्य उपलब्धि अफवाहक सन्दर्भ-सुधारकेँ वास्तविक बालक-खोजसँ निश्चयपूर्वक अलग राखब, आ जाति/समुदायक आधारपर दोषारोपण रोकब अछि। एक सीमा ई जे जाँचमे सम्मिलित सभ सकारात्मक पात्र लगभग एकहि प्रमाण-सावधानीक शब्दभण्डारमे बोलैत छथि; सत्य-संशोधनक पद्धति स्पष्ट बनैत अछि, मुदा भयभीत भीड़क मानसक जटिलता अपेक्षाकृत कम विकसित होइत अछि। दोसर सीमा दिन भरिक अनेक बाट-जाँचक यथार्थ प्रशासनिक समय संक्षिप्त दृश्यसभमे समेटल अछि। ई दोषक प्रत्युत्तर ई अछि जे लेखक एहन जल्दीक बादो मिथुन भेटबाक झूठ विजय नहि बनबैत। अध्यायक निष्कर्ष दोसर दिनक खोज आ सामाजिक भरोसाक अपूर्ण पुनर्रचनामे अछि, ‘चोर पकड़ाएल’मे नहि।

अध्याय ३० — अहल्याक आवाज

खाली थारी आ लाल घेरा : दू असमान पीड़ाक आघात

एहि अध्यायक प्रथम दृश्य मिथुन लेल लताक ढाकल भात पर भोरक धूप अछि। थारी धोबासँ लताक असमर्थता हराएल बालकक उपस्थित स्मृति कैँ मूर्त करैत अछि। ओ खोजक लोककेँ घरमे नहि, हाट दिस पठएबाक कहैत छथि। एहि वाक्यमे उपन्यास प्रशासनिक संवेदनाक एक सीमा नाटकीय रूपमे देखबैत अछि : कर्तव्यक नामपर परिवारक दहलीजपर उपस्थिति खोजक विकल्प नहि। नैरा दू पृथक आवेदन लबैत छथि, मुदा लता केवल गुमशुदगीक कागदक समय देखैत छथि। ‘खोज पहिने भेल’ आ ‘आधिकारिक सूचना-पत्रक समय’ एक नहि—नैरा अन्तर नहि मेटाबएब स्वीकार करैत छथि।

हाटक भित्तिपर धुँधला तस्वीरपर लाल घेरा अछि; आदमी आ दू बच्चाक अधूरा देह, सरकारी मुहर नहि, मुदा ‘सावधान’क आभास अछि। ‘कंजर’ समुदाय-संकेतक रूपमे आरोपक स्थान घेरैत अछि। लोक प्रशासनक सूचना मानि रहल अछि, जबकि लिखित स्रोतक प्रामाण्य नहि। नैरा फोन उठबैत रुकि जाइत छथि—आरोप जाँचबाक लेल ओकर पुनर्प्रसारण ककरो निजी चेहराक नवा हानि भऽ सकैत अछि। ओ पहिने पाठ कापीमे उतारैत छथि। ई दृश्य अध्याय २०क महेश-प्रकाशन त्रुटिक प्रभावक क्रमिक विकास अछि : पछतावा एखन पत्रकारिताक प्रक्रिया बदलि रहल अछि।

मोहन ठेलाक पहिया सुधारैत अछि; भीड़ ओकरा सामाजिक परिचयसँ पहिने ‘सन्दिग्ध’ मानैत अछि। मोहनक तीनटा पर्ची ठेलाक कामक तिथि आ स्थान बतबैत अछि; नैरा स्वयं स्पष्ट करैत छथि जे पर्ची ठेलाक काजक प्रमाण, हर बालकक पूरे दिनक यात्राक प्रमाण नहि। मोहनक ‘हमर ठेला बुझाइत अछि’ कहनाइ सीमित पहचान

अछि, अपराधक स्वीकृति नहि। कथाक एक अनोखा गुण एहि ठाम आरोपित व्यक्तिकेँ अपना दोषहिनताक नाटकीय सर्वशक्तिमान दावा नहि करबाएब अछि। ओकर अधिकार एतबे जे जकर आधारपर आरोप बनल, ओ आधारक समय आ मूल स्रोत जाँचल जाए।

साजिदक रिकॉर्डिंग : रचना, उपयोग-अनुमति आ संशोधित सन्दर्भ

साजिद नट नाटकक रंगीन कपड़ा आ कैमरा लऽ हाटपर अबैत अछि। ओ देखैत अछि जे मंच-अभ्यासक पुरान रिकॉर्डिंगक अंश ओकर नाम बिना पसारल अछि। मुदा ओ मूल फाइल तुरन्त सार्वजनिक नहि करैत : बच्चासभक अभिभावकक अनुमति अभ्यास आ मंच लेल छल, बाजारमे अनियन्त्रित पुनर्प्रसारण लेल नहि। नैरा लिखित उद्देश्य आ नियन्त्रित प्रदर्शनक शर्त मानैत छथि। साजिदक आयोजन-रसीदमे जगह, शुल्क आ विद्यालयक समय अछि; मोहनक ठेला वास्तवमे नाटकक सामान ढोएबाक लेल भाड़ापर लेल गेल छल। तइयो एकटा रसीदक आधारपर फोटो ठीक कोन दिनक अछि, से तुरन्त निर्णीत नहि; बादमे मूल रिकॉर्डिंग आ कक्षाक हाजिरी मिलाकऽ निर्णय पुख्ता होइत अछि।

नियन्त्रित प्रदर्शनक दृश्य कथाक मुख्य घटनात्मक मोड़ अछि। मूल रिकॉर्डिंगमे मंचक बाँस-फाटक, लाल परदा, मोहनक ठेला आ अभिनय करैत बच्चासभ छथि। ई दृश्य जानकीक दलक वनफाटक-वायरल वीडियोसँ दोसर रिकॉर्डिंग अछि; मिथुनक गुमशुदगी सेहो एक अलग दिनक घटना। मीरा कक्षा-हाजिरी आ साजिदक आयोजन-रसीदक काल-मिलान करैत छथि। एही प्रमाणसँ ‘मंचक फोटो’क मिथुनक अपहरणसँ प्रत्यक्ष सम्बन्धक दावा टूटैत अछि। लाल घेरा बनाओनिहार अज्ञात रहैत अछि। अतिरेकसँ ‘मोहन सभ अपराधसँ निर्दोष सिद्ध’ कहबाक बदला ओ स्वयं लिखबबैत अछि जे ‘एहि तस्वीरसँ आरोप नहि बनैत’। नैराक सचेत संक्षेप एहि अध्यायक नैतिक विजय अछि।

हाटक दुकानदारक सहमति सँ गलत फोटो हटाओल जाइत अछि। ओकर स्थानपर लताक अनुमति सँ खोजक सामान्य सम्पर्क-स्थान आ समय लगाओल जाइत अछि, बिना सन्देहास्पद चेहराक। ई कार्य वास्तविक रूपसँ सम्पन्न अछि; तइयो पुरान फोटो कतेक फोनमे बचल, समुदायपर कलङ्कक पूरा प्रभाव मिटल की नहि, आ दोषी शीर्षक-निर्माता भेटल की नहि—तीनू प्रश्न खुलल छथि। साजिदक कलाकार-श्रमक भुगतान सेहो बाकी अछि; आयोजक वायरल प्रसारकेँ भुगतान टारबाक बहाना बनबैत अछि। साजिद रिकॉर्डिंगक उपयोग-अधिकार आ श्रमक दाम अलग प्रश्न मानैत अछि। कथामे सुधारक सामाजिक लागत केवल मान-सम्मान नहि, बकाया रुपैयाक रूपमे सेहो प्रवेश करैत अछि।

अहल्याक प्राचीन कालधारा : उद्धारक कथा विरुद्ध सुनबाक अधिकार

आधुनिक दृश्य बीच नैराकेँ सरिताक सुनाओल अहल्याक कथा स्मरण होइत अछि। तकर बाद उपन्यास स्वतंत्र प्राचीन आश्रम-दृश्य रचैत अछि। अहल्या गोबर-माटिसँ लिपल चौकी पोंछैत छथि; हुनका आश्रमक ऋतु, जल, भोजन आ समिधाक व्यवस्था ज्ञात अछि। एक अतिथिक आगमनक बाद हुनका विषयमे अलग-अलग आरोप अछि—भेष, पहिचान, गौतमक कोप। कथा एतय एकसार दोषनिर्णय परोसैत नहि; अहल्या स्वयं अपन स्मृतिमे

भय, भ्रम आ अनिश्चितताक भेद स्वीकार करैत छथि। उपन्यासक एहि अहल्याकेँ मूल रामायणक शाब्दिक आवाज कहि देब अनुचित; ई लेखकक उत्तरकालीन कल्पनात्मक पुनर्पाठ अछि।

अहल्याकेँ ‘शिला’ वा ‘पापिनी’ कहि देबाक प्रभाव ई अछि जे हुनकर भोजन, श्रम, भय आ आत्मकथन अनावश्यक मानल जाइत अछि। राम–लक्ष्मण आएलापर बाहरी लोक तुरन्त ‘उद्धार भेल’ कहैत छथि। मुदा अहल्या स्वयं रामसँ पुछैत छथि जे हुनकर विषयमे फैलाओल कथाकेँ बिना सुनने सत्य मानि लेल गेल अछि की। राम ‘हम सुनबाक लेल ठाढ़ छी’ कहैत छथि; एहि पुनर्पाठमे स्पर्शक क्षणक बजाय उत्तर देबाक अधिकार कथा-क्रम बदलैत अछि। वृद्धा आश्रमक इनार आ पानिक दोरी सम्हारबाक अहल्याक कामक साक्षी छथि। एहि स्थानीय श्रम-स्मृति सँ अहल्याक जीवन एक आरोपक आख्यानमे सीमित नहि रहैत।

‘उद्धार’क अर्थ लेखक एकतरफा मान्यता सँ संवादात्मक स्वीकृतिक दिस घुमा दैत छथि। मुदा ई प्राचीन दृश्य आधुनिक न्यायिक सुनवाईक ऐतिहासिक प्रमाण नहि। रामक मौन, अहल्याक प्रश्न आ वृद्धाक स्थानीय ज्ञान—ई सभ उपन्यासक कल्पित कथा-संसारक क्रिया छथि, शास्त्रीय मूल ग्रन्थक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि। दृश्य राजनीतिक-नैतिक प्रतीकक रूपमे शक्तिशाली अछि, किन्तु मूल परम्पराक विविध पाठ-संस्करण अलग जाँचब अपेक्षित हएत। उपन्यास ओ पाठान्तरक अकादमिक सम्पूर्णता प्रस्तुत नहि करैत; आलोचना सेहो तकर दावा नहि करैत।

कथनसमय, दृष्टिकेन्द्रण आ आवाजक परस्पर क्रिया

अध्याय समकालीन एक खोज-दिन सँ प्राचीन आश्रमक विस्तृत काल-परिवर्तन करैत अछि, फेर हाटपर लौटैत अछि। अहल्याक प्रसंग लघु उपदेशक फुटनोट नहि : सामाजिक आरोपितक बजाय स्वयं प्रश्न करनिहार स्त्रीक दृष्टि कथा-स्थितिक बदलैत अछि। आधुनिकतामे लता बालकक खोजक केन्द्र बनि पुछैत छथि, मोहन गलत प्रमाणक सीमा निश्चित करैत अछि, साजिद रिकॉर्डिंगक मालिक होइतो बालकक निजता मानैत अछि, जानकी दलक सुरक्षा प्रश्न उठबैत छथि। एहि विभिन्न आवाजसभक बीच एक सूत्र अछि—दोसरक अनुमानक भीतर व्यक्ति अपना जीवनक कथनाधिकार कतेक राखि सकैत अछि। मुदा अहल्या, मोहन वा लताकेँ एक-दोसराक ऐतिहासिक प्रतिरूप मानब पाठक जटिलता घटाएत।

अन्तरपाठक संरचनात्मक लाभक संग ओकर खतरा सेहो अछि। प्राचीन अहल्या बहुत आधुनिक प्रमाण-सावधानी आ आत्मप्रतिनिधित्वक वाणी बाजैत छथि। एहि रूपेँ परम्परागत मौनक प्रतिकार तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा प्राचीन दृश्य आजुक भाषिक-नैतिक अपेक्षा अनुसार अत्यन्त व्यवस्थित प्रतीत भऽ सकैत अछि। समकालीन पात्रसभ सेहो अति शीघ्र सही सीमित वाक्य पर पहुँचैत छथि; मिथुनक खोजमे डर आ असहमत स्थानसभक अनिश्चितता अधिक विस्तार माँगि सकैत छल। उपन्यास ई आलोचनात्मक सम्भावना कम करैत अछि तखन जखन गलत पोस्टर उतरि गेलाक बादो लताक प्रतीक्षा जारी रखैत अछि।

सार्वजनिक सुधारक फल आ अन्तिम थारीक ध्वनि

उतर गलीक पानिवाला कहैत अछि जे नील कुरतावला बालक आइ बिहान गेल छल, काल्हि नहि; चप्पलक फीता नहि देखल। समयक एक भ्रम सुधरल; मिथुनक वर्तमान स्थान नहि भेटल। लता मोहनसँ अपन घरक लोकक गलत व्यवहार लेल माफी माँगैत छथि। मोहन कहैत अछि बेटा भेटए तखन बात करब, मुदा लता स्पष्ट करैत छथि

जे मिथुनक प्रतीक्षामे मोहनपर भेल अन्यायकेँ अनिश्चित कालधरि लंबित नहि रखल जा सकैत। एहि वाक्यमे सम्बन्ध-सुधार आ बालकक खोज समानान्तर, परस्पर अप्रतिस्थापनीय कार्य बनैत छथि।

अन्तिम थारी फेर लताक घरमे ढाकल जाइत अछि; ओकर स्थिति दहलीजसँ रसोइक भीतर सरकैत अछि। गलत लाल घेरा हटि गेल, मुदा गोंदक निशान रहि गेल अछि। खाली थारी आ पोस्टरक गोंद—दू वस्तु स्मृतिक अलग रूप : पहिल अनुपस्थितक प्रतीक्षा, दोसर सामाजिक अपमानक अवशेष। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ई वस्तु-व्यञ्जना करुण अनुभवकेँ निष्कर्षक भाषणसँ अधिक टिकाऊ बनबैत अछि। मैथिली उपन्यासक उपलब्धि एतय प्रमाणक सीमित संशोधनक संग मानविक अनुपस्थितिक असमाधेयता जिअत रखब अछि। अध्याय ३०क सिद्ध परिणाम गलत तस्वीरक हटब आ विशिष्ट आरोपक आधारक खण्डन अछि; मिथुनक वापसी नहि।

अध्याय ३१ — एकलव्यक सीख

लाल घेराक पछिला भोर : चौखट जे बाहरक संसार देखबैत अछि

तीसम अध्यायक गलत तस्वीर उतरलाक बादक भोर साजिद अपन कैमरा नहि, काठक खाली चौखट लऽ अबैत अछि। शीर्षकक ‘सीख’ आरम्भमे धनुर्विद्याक नव अभ्यास नहि, छविक सीमाबारे बालकसभक दृश्य-अभ्यास अछि। साजिद चौखटक भीतर बिरसीकेँ आ बाहर जतनकेँ रखिकऽ पुछैत अछि जे तस्वीरमे के छूटि जाएत। बालकसभ ‘जतन’ कहैत अछि; रेवा ओकरा बनाओल डलियाक कारीगरक अनुपस्थिति जोड़ैत छथि। एक चित्रक सीमा एक देहक बाहरी स्थान सँ आगाँ श्रमक अदृश्य कारणक प्रश्न बनि जाइत अछि। कैमरा बन्द रखबाक निर्णय याद करब आवश्यक : नवा शिक्षाक आरम्भ बिना अनुमति नव रिकॉर्डिंग बनेबासँ नहि, देखबाक अनुशासन सँ होइत अछि।

अस्थायी ओसारक कक्षा विद्यालयक वैधानिक दाखिलाक पर्याय नहि। मीरा नामक आगाँ चिन्ह लगबैत छथि, मुदा उपस्थिति आ नामांकनक अन्तर स्पष्ट राखैत छथि। रेवा गुलगुलिया अपन बच्चा बिरसी आ जतन लऽ पहुँचैत छथि; डेराक स्थायी ठेगाना नहि। हुनका लग सामूहिक अस्थायी बसेराक सूची आ पूर्वस्थलक पाठबैसारक उपस्थिति-पर्ची अछि। मीरा कक्षामे बसब दैत छथि, किन्तु स्थायी पताक औपचारिक प्रश्न शेष रहबाक बात बतबैत छथि। ‘झूठक घर नम्बर’ नहि भरबाक रेवाक निर्णय एहि प्रसंगक केन्द्रीय नैतिक घटना अछि : अधिकारक बाट खोलबाक लेल मिथ्या प्रमाण बनएबाकेँ अनिवार्य नहि मानल जाएत।

चन्दा मुण्डाक प्रवेश कथाक दोसर शृंखला खोलैत अछि। निर्माणकाजक हुनकर हाजिरी दोसर-दोसर रूपमे दर्ज अछि—एक ठाम ‘चन्दा’, दोसर ठाम मजदूर-क्रमांक। दू पर्ची, रस्सीक गाँठ, मापफीता, पेंच आ आपूर्ति-रसीद हुनकर काजक प्रमाण छथि, मुदा ठेकेदार लग मूल हाजिरी बचल अछि। ओ मजदूरीक बकाया-जाँच चाहैत छथि आ घर लौटबाक निर्णय स्वयं रखय चाहैत छथि। नैरा अनुमति बिना पर्चीक फोटो नहि खींचैत; मूल दस्तावेज चन्दा लग रहत, प्रति मात्र निर्धारित आवेदन लेल बनत—ई लिखैत छथि। एतय अध्याय २०क नैराक गलतीक पुनर्स्मरण मात्र नहि, व्यवहारक प्रामाणिक रूपान्तरण अछि।

घटना-पञ्जी : सामग्रीक मरम्मति सँ प्रशिक्षणक मूल्य धरि

काठक चौखटक एक पेंच ढील अछि। चन्दा जोखिम देखिकऽ सही औजारसँ ओकर जोड़ कसैत छथि, फेर हिलाकऽ जाँचैत छथि। मुदा अध्यायक अन्त धरि नव पेंचक आवश्यकता शेष रहैत अछि; दिनक आरम्भमे साधारण सुधार भेल, सम्पूर्ण मरम्मति नहि। ई सूक्ष्म अन्तर उपन्यासक सामयिक ईमानदारीक उदाहरण अछि। मोहन अपन ठेलाक भाड़ा जोड़ैत अछि, साजिद अभिनयक प्रशिक्षण, चन्दा औजारक सुरक्षा। मीरा पुछैत छथि—सीखेनिहारक दिनक भोजन आ सीखौनिहारक समयक मूल्य कोन बहीमे चढ़त? एहि प्रश्नसँ वनक एकलव्य-दृश्यक प्रवेश कारणात्मक रूपसँ जुड़ैत अछि।

एकलव्यक प्राचीन दृश्य गुरु-दक्षिणाक प्रसिद्ध क्षणपर समाप्त नहि। उपन्यास कल्पना करैत अछि जे अँगूठा देलाक बाद एकलव्य धनुषक डोरी पकड़बाक प्रयास करैत छथि, घावक दैनिक असमर्थता अनुभव करैत छथि, आ नव शिष्य हुनकासँ ‘आब की सिखाएब?’ पूछैत अछि। कथा पहिने गुरुभक्तिक प्रतिमा नहि रचैत, शारीरिक क्षतिक यथार्थ रखैत अछि—डोरी फिसलब, बाण दूर गिरब, काठक चोट। एकलव्य स्वयं क्षति छिपबैत नहि आ एकरा महान बलिदानक उपदेशमे गला नहि दैत। ‘जे कौशल घटल अछि, से घटल’क स्वीकार नायकक दैवी पुनर्स्थापनाक विरुद्ध अछि।

डोरी बनौनिहार वृद्धा प्राचीन कालधाराक प्रमुख आलोचनात्मक आवाज छथि। हुनकर प्रश्न—सीखनिहारक घर की खायत—प्रशिक्षकक प्रतिष्ठासँ जीवन-व्यवस्थाक दिस मोड़ैत अछि। एकलव्य बाँसक सीध, डोरीक तान, लक्ष्यक पाछाँ जीवक उपस्थिति आ गलतीक पहिचान सिखबैत छथि। कथामे बाण फेर पहिनुक जकाँ चलए लागल, एहन चमत्कार नहि; विद्यार्थीक कौशल नव कार्यमे अनुकूलित होइत अछि। भोजनक भाग, सामग्रीक साझा भण्डार, डोरी बनौनिहारक मजदूरी आ शिक्षकक समयक दाम अलग हिसाब बनैत अछि। बादमे शिष्यक पहिल कमाइ शिकारक विजय नहि, डोरी बनबएबाक दाम अछि; गुरुकेँ दाम दैत समय ओ ‘नामक दाम’ आ ‘सिखाओल समयक दाम’ अलग करैत अछि। एहि कथारूपमे गुरु-दक्षिणा एकमात्र नैतिक श्रेणी नहि रहैत; श्रमक न्यायसंगत प्रतिफल महत्त्व पबैत अछि।

एहि प्रसंगकेँ महाभारतक एकलव्यक अज्ञात ऐतिहासिक उत्तरजीवनक दस्तावेज नहि मानब। ई उपन्यासकारक उत्तरकथा-कल्पना अछि, जकरा आधुनिक विद्यालय, श्रम आ अपाङ्गता-संबन्धी नैतिक प्रश्नक दृष्टिसँ रचल गेल अछि। समीक्षक लेल आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे मिथकीय घटना रूपान्तरित भेलाक बाद शारीरिक नुकसानीक स्थायित्व बचैत अछि की नहि। पाठमे बचैत अछि : मीरा बच्चासभकेँ स्पष्ट कहैत छथि जे कथामे एकलव्यक हाथ पहिनुक सन नहि भेल; नव काम आ नव शिष्य भेटल मात्र। एहि असम्पूर्णता सँ प्रेरणादायी आख्यानक कृत्रिम चमत्कार किछु हद धरि रुकैत अछि।

आधुनिक शिक्षाक प्रवेश : अस्थायी हाजिरी, औपचारिक अधिकार आ पंजीक सीमा

पुरान कथासँ घुरिते बिरसीक प्रश्न निशाना फेर लगबाक अछि, मुदा आधुनिक निर्णायक प्रश्न बच्चासभक औपचारिक नामांकनक। मीरा स्थायी पताक शर्तवाली सूची लऽ अबैत छथि; मौखिक अधिकारीक कथनकेँ

अन्तिम कानूनी नियम नहि मानैत छथि। हुनका लेल दू आवेदन बनैत अछि—अस्थायी उपस्थितिक व्यवस्था आ स्थायी पता बिना विद्यालय-नामांकनक लिखित प्रक्रिया। एतए लिखित उत्तर माँगब सरकारक नियम बदलल गेल, एहन घटना नहि; प्रशासनिक प्रक्रिया मात्र आरम्भ भेल। रेवाक गतिशील डेरा आ स्थिर विद्यालयी खानाक असङ्गति शहरी निर्धनताक विशिष्ट काल-स्थान रचैत अछि। बच्चाक नाम स्थिर, घरक ठाम बदलैत; राज्यक पंजी स्थिर पताक अपेक्षा करैत।

जतनक उलटल ‘ज’क दृश्य भावुक निरीक्षण सँ अधिक अछि। बिरसी ओकर लिखावट खींचय चाहैत छथि; रेवा रोकैत छथि। मीरा सही अक्षर कातमे लिखैत छथि, पहिल अक्षर मेटबैत नहि। बच्चाक पहिल त्रुटि ओकर सीखबाक ऐतिहासिक क्रमक चिह्न बनैत अछि। एहि वस्तु-बिम्बक तुलना एकलव्यक चोटसँ सावधानीसँ करबाक अछि : दुनू ‘गलती’ नहि; एक सीखबाक सामान्य पड़ाव, दोसर दण्डसँ उपजल स्थायी देहगत क्षति। साहित्यिक सम्बन्ध अधूरा अवस्था कें स्वीकार करब अछि, वास्तविक कारणक समानता नहि। जतनक पन्ना वयस्क संसारक प्रवेशपत्र नहि, मुदा ओकरा मिटाएब शिक्षा-प्रक्रियाक स्मृति नष्ट करब हएत।

चन्दाक प्रशिक्षणमे कौशलक जीवनोपयोगी सीमा स्पष्ट बनैत अछि। ओ बालकसभकें ऊँच मचानक भार सम्हारबाक गाँठ सिखेबासँ अस्वीकार करैत छथि; केवल बोझरहित अभ्यासक अनुमति दैत छथि। मीरा एक घण्टाक प्रशिक्षणक देय बहीमे लिखैत छथि। किछु लोक ‘दू गाँठ’ लेल दाम पर आपत्ति करैत अछि; रेवा हुनका स्वयं गाँठ कसबाक कहैत छथि; गाँठ खुलि गेलापर प्रशिक्षणक विशेष कौशल दृश्य होइत अछि। मोहन छोट अग्रिम योगदान दैत अछि, सामूहिक कोषसँ शेष राशि जाँचबाक अछि। एहिसँ ‘देय पहिने निर्धारित’ भेल, ‘पूर्ण भुगतान भऽ गेल’ सिद्ध नहि। चन्दाक मजदूरीक कटौतीक कारण खाली अछि; ओकर बकाया अंतिम लेखा एखन नहि निकालल गेल।

द्विकालीन कथन, स्त्री-ज्ञान आ नैतिक शिल्प

अध्यायक प्राचीन दृश्य आधुनिक चौखटक शिक्षक-प्रश्न सँ खुलैत अछि, फेर आधुनिकतामे लौटनाइ मीराक बालक-उत्तर सँ चिह्नित अछि। कथनक मुख्य स्वर तृतीयपुरुष अछि; नैराक दोष-स्मृति महत्त्वपूर्ण रहितहुँ कक्षाक दृष्टिकेन्द्र एकलव्य, मीरा, रेवा, चन्दा, साजिद आ बालकसभमे वितरित अछि। शास्त्रीय एकलव्यक पक्षमे ‘न्याय’ केवल पूर्वघटित अपमानक शोक नहि, क्षतिक बादक शिक्षा-व्यवस्था कोना बनत तकर अनिश्चित प्रश्न अछि। आधुनिक प्रशिक्षणमे चाहक, शिक्षण-पद्धति, सुरक्षा, समय, भुगतान आ छविक सहमति अलग विषय बनैत अछि। ई पारस्परिक रचना कथासँ विचार निकालैत अछि, विचारक लेल केवल उदाहरण खोजैत नहि।

नैरा अन्तमे चारि पृथक अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि : चन्दाक मजदूरी आ घर-वापसी आवेदन; रेवाक बालकसभक विद्यालय सम्बन्धी पत्र; मिथुनक अलग गुमशुदगीक फाइल; आ सरिताक संरक्षित सत्ताइस नाम। ‘सभ कागद एक समस्या’ मानबासँ भिन्न व्यक्तिक इच्छा, दोषक आरोप आ अधिकारक दावा एके भाषिक वर्गमे समा जाएत। स्रोतक प्रासंगिकताक प्रश्न आख्यानशास्त्रपरक परीक्षण लेल उपयुक्त अछि : एक आवेदनक हेतुक विस्तार दोसर आवेदकक साध्यधरि स्वतः नहि होइत।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा। अध्याय बालशिक्षाक औपचारिक प्रवेश आ अस्थायी अभ्यास, गुरु-प्रतिष्ठा आ प्रशिक्षणक मूल्य, दृश्य-साक्ष्य आ निजी सहमतिक चारि अन्तर उजागर करैत अछि। स्त्रीपात्र रेवा आ चन्दा सहायक उदाहरण नहि, अपना जीवनक निर्णयक अधिकारी छथि। मुदा पाठमे प्राचीन एकलव्यक बहुते संवाद आधुनिक श्रम-अनुबंधक पद्धति कने अधिक सुव्यवस्थित कहैत अछि; ई उत्तरमहाकाव्यीय पुनर्पाठक जानल-बूझल शिल्प छैक, तथापि काल-भाषाक अन्तर घटैत अछि। एके दिन कैमरा-शिक्षा, पंजी-विवाद, मजदूरी-आवेदन आ रस्सी-प्रशिक्षण सबटा नैतिक रूपसँ सुस्पष्ट क्षणक शृंखला बनैत अछि; पात्रक भीतरी अनिश्चितताक ठहराव अपेक्षाकृत कम अछि। अन्तमे जतनक उलटल ‘ज’ आ रातिक अज्ञात डेरा-बदलावक बीच पाठ आश्वासनक बदला शिक्षाक अनिश्चित निरन्तरता रखैत अछि।

अध्याय ३२ — अथातो ककर

प्रश्नक पहिल अक्षर : त्रुटि, योग्यता आ बहिष्कारक अन्तर

अध्याय जतनक उलटल ‘ज’ सँ खुलैत अछि। मीरा सही अक्षर लिखि पहिल चिन्ह मेटबैत नहि आ कहैत छथि जे गलती देखाएब आ लिखनिहारकेँ बाहर कऽ देब समान नहि। एहि बाल-प्रसंगसँ शीर्षकक ‘ककर’ प्रश्न केवल दार्शनिक विषयक नाम नहि रहैत; जिज्ञासाक अधिकृत कर्ता के—ई आधुनिक संस्थागत शर्तक आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि। बिरसी घरक चित्र बनबैत छथि, जकर ठाम बदलि सकैत अछि मुदा कागदपर ओकर कल्पनात्मक निवास सुरक्षित अछि। ठेगानाक अनिश्चितता कक्षा-उपस्थिति रोकैत नहि, तथापि विद्यालयक स्थायी पंजीक व्यावहारिक विवाद अबैत अछि।

विद्यालयक लिपिक मोहरवला लिखित उत्तर दैत अछि : स्थायी पता सत्यापन शेष, कक्षा-सहभागितापर अन्तिम आदेश नहि। ई न औपचारिक नामांकन अछि, न लिखित निष्कासन। रेवा तत्काल प्रश्न करैत छथि जे बच्चासभ एखन कतय पढ़त। मीरा अस्थायी कक्षा जारी रखबाक आ प्रधानसँ अगिला बात करबाक कहैत छथि। एहि आरम्भक प्रमाणगत सटीकता बादक ब्रह्मजिज्ञासा-विवेचन लेल आधार बनैत अछि : ‘उत्तर शेष’क अर्थ ‘योग्यता खण्डित’ नहि। एक पत्रक प्रक्रियागत विरामक आधारपर बच्चाक सीखबाक इच्छा निरर्थक घोषित करब अव्याप्त निष्कर्ष हएत।

दोसरा पाँतिमे मैथिली मिश्रक सार्वजनिक पाठबैसार अछि। आमन्त्रणपत्रमे हुनकर नामक आगाँ केवल ‘आदरणीया’, ईशानक नामक संग सम्पादकीय आ विद्वत् परिचय दर्ज अछि। मैथिलीकेँ सम्मान शब्दसँ नहि, कामक प्रकार आ श्रेयक असमान लेखनसँ आपत्ति अछि। हरिमोहन पाठक अध्ययनक तैयारी, पाठान्तर आ व्याकरणक अनुशासनपर बल दैत छथि। मैथिली अनुशासनक आवश्यकता अस्वीकार नहि करैत; प्रश्न करैत छथि जे प्रथम अभ्यासक द्वार बन्द रखिकऽ पिछाँक अयोग्यता केना आरोपित करब उचित। एहि प्रतिपक्षमे ‘सभकेँ बिना प्रशिक्षण विशेष पोथी दऽ दिअ’ बनाम ‘अभ्यासक पहुँच खोलू’क भेद निर्मित होइत अछि।

पाठशालाक काजसूचीमे प्रतिलिपि, सफाइ, आसन, कागद-मरम्मति आ पाठक समय दर्ज अछि, भुगतान केवल प्रतिलिपिक आगाँ। मैथिली पुछैत छथि जे अन्य कार्य स्वेच्छाक योगदान अछि की देय श्रम; जँ स्वेच्छाक अछि तँ

सहमति कहाँ। एहि प्रश्नसँ शिक्षा आ श्रेय केवल ‘ज्ञानक अमूर्त अधिकार’ नहि, संस्था चलबामे श्रमिकक भौतिक योगदानक विषय बनैत अछि। रेवाक बच्चासभ पाठशालामे ‘आरम्भिक अक्षर पढ़बाक स्थान’ माँगैत अछि; विद्यालयक औपचारिक आवेदन अलग अछि। हरिमोहन पहिने दू स्थितिकेँ गड्डमड्ड करैत छथि, फेर भेद बुझि आपत्ति बदलैत छथि। पुरान पोथीक नाजुकता मानल जाइत अछि; बच्चाकेँ सुरक्षित अभ्यासपत्र देबाक विकल्प पछि उभरैत अछि।

मृणाल, लोहना आ वाचस्पति : प्राचीन कालधाराक भौतिक ज्ञान

तेरहम पाठांश सँ कथा प्राचीन मिथिलाक दोसर कालमे प्रवेश करैत अछि। मृणाल भीजल कागद सुखाबैत छथि; लोहना हुनका सीधा धूपसँ बचि छाँहक हावामे रखबाक व्यवहारिक कारण बतबैत अछि। मृणाल पोथी गनबाक, धूलि झाड़बाक आ अक्षर बचएबाक श्रम करैत छथि, मुदा पाठशालाक प्रश्न पुछबाक अधिकारसँ स्वयंकेँ दूर देखैत छथि। लोहना अपना कागदक दाम आ काजक समय पुछैत छथि; मृणाल पढ़बाक बाट चाहैत छथि। ई प्राचीन दृश्य भामतीक दार्शनिक परम्पराक आधुनिक कल्पनात्मक आख्यान-विस्तार अछि, वाचस्पति मिश्रक जीवनक प्रमाणित ऐतिहासिक दृश्य अथवा मूल ग्रन्थक उद्धरण नहि।

वाचस्पति ब्रह्मसूत्रक प्रारम्भिक ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’ पर बोलैत छथि। शिष्यसभ ‘अथ’ आ ‘अतः’क क्रम, प्रयोजन आ पात्रताक विविध प्रश्न उठबैत अछि। मृणाल सभ सूत्रक अर्थ नहि बुझैत छथि, मुदा ‘जिज्ञासा’ पद सुनि प्रश्न करैत छथि—जँ पहिने सँ शास्त्र सीखने व्यक्ति आ प्रारम्भिक अक्षर जोड़निहारक स्तर अलग अछि, तँ जिज्ञासा धरि पहुँचबाक क्रम कोना बनत? एक शिष्य अध्ययनक योग्यता आवश्यक कहैत अछि, दोसर परम्परागत क्रम; मृणाल तैयारीक विरोध नहि, तैयारी सीखबाक अवसरक माँग करैत छथि। हुनकर तर्क ई अछि जे प्रशिक्षणक बाट बन्द कऽ तकर अभावकेँ स्थायी अयोग्यताक प्रमाण बनाबब आत्म-पूरक संस्थागत वृत्त बनबैत अछि।

वाचस्पति मृणालक अनुभवकेँ सूत्रक सिद्धान्तक तात्कालिक निर्णायक प्रमाण नहि मानैत छथि। ओ पहिने उदाहरणक लागू होएबाक सीमा जाँचबाक कहैत छथि। रस्सीकेँ सर्प बुझबाक दृष्टान्तक सम्मुख मृणाल भीजल कागदक अक्षर पसारि जाएबाक प्रश्न रखैत छथि : ओहि प्रसंगमे देखनिहारक भ्रम अछि, वस्तुक अवस्था बदलल अछि, कि पाठकक अपूर्ण तैयारी? गुरु भेद स्वीकार करैत छथि—रस्सीक भ्रम आ कागदक वस्तुगत परिवर्तन एक नहि। पाठ-आलोचनाक ई सटीक मोड़ अछि। ‘जिज्ञासा’क अधिकारक सामाजिक प्रश्न आ ‘ज्ञानोत्पत्तिक कारण’क दार्शनिक प्रश्न जखन अलग-अलग पहिचानल जाइत अछि, तखन उपमा औपचारिक प्रदर्शनीक स्थानपर तर्क-परिवर्तनक कारण बनैत अछि।

अठारहम पाठांशक प्रश्नकेँ वाचस्पति सुनैत छथि, मुदा मृणाल ‘ब्रह्मसूत्रक सम्पूर्ण अर्थ बुझि गेलीह’ एहन निष्कर्ष पाठ नहि दैत। एक मुहूर्त पढ़बाक लेल कागद सुखेबाक श्रमक समय पुनर्बंटबाक आवश्यकता सोझाँ अबैत अछि। लोहना अगिला दिन सहायककेँ खबर देबाक विचार रखैत छथि, जाहिसँ मृणालक पढ़बाक समय दोसर अवैतनिक श्रमिकपर नहि थोपाल जाए। ‘बैसबाक अनुमति’ आ ‘अक्षर सीखबाक निश्चित समय’ दू अलग उपलब्धि छथि। एतय शास्त्रार्थक वास्तविक सामाजिक लागत पाठक आशयक संग चलैत अछि।

वर्तमान पाठशालाक शास्त्रार्थ : सूत्र आ नीति के अलग रखब

आधुनिक दृश्य फेर खुलिते मैथिली स्पष्ट करैत छथि जे ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’ सरकारी विद्यालयक प्रवेश-नियम नहि, आ शास्त्रीय सूत्रसँ आजुक शिक्षानीतिक प्रत्यक्ष कानूनी निष्कर्ष निकालब अनुचित। हरिमोहन बोर्डपर दू खाना खींचैत छथि—‘शास्त्रक विवेचन’ आ ‘आजुक प्रवेश-विवाद’। पहिलमे पाठ, पूर्वपक्ष आ उत्तर; दोसरमे सामग्री, आरम्भिक कक्षा, प्रशिक्षक, समय आ शुल्क। ई अध्यायक विचारगत सर्वोत्तम अनुशासन अछि : अन्तर्पाठीयता विचारक प्रतिध्वनि बनैत अछि, अधिकारिक विधिक स्रोत नहि। जतनक ‘हम कोन खानामे छी?’ प्रश्न एक बच्चाक साधारण जिज्ञासासँ एहि वर्गीकरणक निहित शक्ति खोलि दैत अछि।

चन्दा मुण्डा भारी औजारसँ पहिने हलुक प्रशिक्षणक उदाहरण दैत छथि। ई उदाहरण सभकेँ पुरान पोथी सीधे छुआबाक आदेश नहि; पाठक सुरक्षा आ अभ्यासक उपलब्धताक बीच अनुपात खोजैत अछि। हरिमोहन सुरक्षित अभ्यासपत्रक प्रस्ताव रखैत छथि। बच्चासभक कागदक गलती हुनकर सीखबाक अधिकार नष्ट नहि करैत, मुदा पोथीक नाजुकता कोनो भेदभावक झूठ बहाना सेहो नहि होएबाक चाही। ई द्विपक्षीय सावधानी अहल्या आ एकलव्यक पूर्व अध्यायसभक तुलनामे एतय अधिक तर्क-प्रक्रियागत रूप पबैत अछि।

मैथिली दू प्रतिलिपि देखबैत छथि : एकमे किनारक टिप्पणी अछि, दोसरमे कटि गेल। केवल लेखकक हस्ताक्षर पाठान्तरक कारणक पर्याप्त प्रमाण नहि; मूल मिलान आवश्यक। प्रतिलिपिकार, जाँचनिहार आ टिप्पणी देनिहारक नाम, काजक प्रकार आ तिथि अलग नोंदबाक माँग करैत छथि। हरिमोहन मूल तर्क आ प्रति-जाँचक भिन्न प्रकृति मानैत छथि, मैथिली भिन्नताक स्वीकार करैत योगदान मेटायब अस्वीकार करैत छथि। ई बहस सरल सामूहिक ‘सभकेँ समान लेखक मानू’क निष्कर्ष पर नहि पहुँचैत; योगदानक विशिष्टता प्रमाणसहित निर्धारित करबाक आग्रह अछि। ईशान पुरान पाण्डुलिपिक तिथि जाँचबाक उत्तरदायित्व लैत छथि।

नैरा उपस्थिति आ प्रकाशित प्रतिलिपिक सहमति अलग रखबाक सुझाव दैत छथि। विशेषतः बच्चाक कक्षामे हाजिरीक अर्थ ओकर तस्वीर प्रकाशित करबाक स्वीकृति नहि। ई सलाह गद्यक दीर्घ निरन्तरताक प्रमाण : महेशक गोपनीय बयान असावधानीसँ प्रकाशित करबाक दोष एखन पाठशालाक नियमपर आलोचनात्मक प्रभाव दैत अछि। मुदा नैरा नवा संस्थाक सर्वाधिकारी नहि बनैत छथि; प्रस्ताव हरिमोहन आ परिचालकसभक प्रक्रियामे प्रवेश करैत अछि। एहि वितरण सँ कथाक निर्णयक शक्ति किछु हद धरि बहुकेन्द्रित होइत अछि।

निर्णय-पञ्जी : कोन परिवर्तन सत्यापित, कोन शेष?

बैसारक अन्तिम तीन निर्णय स्पष्ट छथि : आरम्भिक अभ्यासपत्र बँटत; बच्चासभक अस्थायी उपस्थितिक अलग पंजी रहत; औपचारिक विद्यालय-प्रवेश लेल विद्यालयक लिखित उत्तर शेष रहत। चन्दाकेँ भविष्यक व्यवहारिक कक्षा लेल बजाओल जाए तँ प्रशिक्षण-देय पहिने निश्चित करबाक सहमति अछि। हरिमोहन प्रस्तावपर हस्ताक्षर करैत छथि। योगदान-पञ्जीक अलग बही खुलैत अछि—पाठ-संशोधन, प्रतिलिपि, भाषिक तुलना, उदाहरण आ अन्तिम स्वीकृतिक खाली खाना बनैत अछि। नाम तत्काल भरल नहि; मिलानक बाद भरबाक निर्णय अछि। मैथिलीक व्यक्तिगत श्रेयक अन्तिम फैसला नहिं भेल; विवाद लिखल प्रश्न बनल अछि। एहि भेदसभकेँ कथा-परिणामक विभिन्न स्तर रूपमे गनब उचित, सबकेँ एकमुश्त ‘सुधार सम्पन्न’ कहब अनुचित।

हरिमोहन बिरसीकेँ एकटा हलुक अभ्यास-पोथी दैत छथि; डेरा बदललासँ किताब लौटेबाक ठाम बदलि सकैत अछि, तेँ निश्चित तिथि थोपबाकेँ टारैत छथि। जतन अपन पहिल उलटल ‘ज’ आ नव सही ‘ज’ दूनू बचबैत अछि। एहि सहज क्रियामे शिक्षाक समय-क्रम, विद्यार्थी द्वारा अपन त्रुटिक अभिलेख-रक्षा आ अनिश्चित आवासक भीतर ज्ञानक चलायमानता मिलैत अछि। मुदा शिक्षाक वास्तविक अन्तर सिरिफ द्वि-अक्षरक प्रदर्शन नहि; विद्यालयक कागदमे ‘उत्तर शेष’ अबिते पाठीय उन्नति आ वैधानिक अनुमतिक दूरी स्पष्ट रहैत अछि।

काल-स्तर, प्रमाणव्यवस्था आ कला-विवेचन

अध्याय आधुनिक भोरक अक्षर-अभ्याससँ सार्वजनिक पाठशाला पहुँचैत अछि, प्राचीन मिथिलाक मृणाल–वाचस्पति-दृश्य खोलैत अछि, फेर वर्तमान शास्त्रार्थक परिणाम देखबैत अछि; अन्तिम भागमे पुरान ओसारक मृणालक काजक कने स्मृति फेर लौटैत अछि। ई सममित क्रम केवल पौराणिक बिम्ब-सज्जा नहि, दोसर कालधारामे उठाओल प्रश्नक वर्तमान प्रतिवाद जाँचबाक रचना अछि। तृतीयपुरुष वाचकक ज्ञान मैथिलीक श्रेयक उपेक्षा, रेवाक पतेक अनिश्चितता, मृणालक सीमित पाठज्ञान आ हरिमोहनक संकोचक बीच बँटैत अछि। कोनो पात्र पूर्ण शास्त्रीय वा संस्थागत समाधान एकटा दृश्यामे नहिं दैत।

भारतीय काव्यशास्त्रीय औचित्यक दृष्टिसँ भीजल पन्ना, रस्सी–सर्पक दृष्टान्त, चूनक अक्षर आ पाण्डुलिपिक किनार-विलुप्त टिप्पणी भिन्न स्तरपर ज्ञान-प्रवेश आ ज्ञान-हानिक रूपक छथि। मुदा पन्नाक स्याही पसरब वस्तु-परिवर्तन अछि, रस्सीक सर्प-बोध भ्रान्त अनुभूति; लेखक स्वयं एहि भेदकेँ पाठमे स्पष्ट रखैत अछि। आख्यानगत परीक्षणक लेल ‘प्रमाणपत्र नहि’ सँ ‘योग्यता नहि’क अनुमान अवैध होइबाक सम्भावना अछि; मुदा एहि आलोचनाक शास्त्रीय उपकरणकेँ वाचस्पतिक मूल व्याख्याक उद्धृत सूत्र नहि बनाओल जाए। उपन्यासमधील छल, भ्रम, उपाधि, पहुँच आ श्रेयक समस्या दार्शनिक प्रत्यालोचनाक विषय छथि, शास्त्रीय मूल अर्थक सरलीकृत प्रतिस्थापन नहि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा। अध्यायक प्रबल उपलब्धि ब्रह्मजिज्ञासाक दार्शनिक प्रश्न, आधुनिक प्रारम्भिक शिक्षाक अधिकार आ पाण्डुलिपिक योगदान-विवादकेँ एक प्रमाण-शासनमे मिलाएबासँ पहिने प्रत्येकक सीमा रेखांकित करब अछि। मृणाल अपन जीवनक अनुभवसँ खराब उपमाक भेद देखबैत छथि; मैथिली स्वयं श्रेयक अन्तिम निर्णय माँगबाक बदला मिलानयोग्य पञ्जी चाहैत छथि; हरिमोहन अभ्यासपत्र स्वीकार करैतहुँ मूल पोथीक संरक्षणक प्रश्न बचबैत छथि। एक सीमा एहि प्राचीन कक्षाक शास्त्रार्थमे आधुनिक संस्थागत समानाधिकारेक शब्दावली अति स्पष्ट रूपेँ सुनाएब अछि, जाहिसँ इतिहासक भिन्न परिस्थिति धुँधला सकैत अछि। दोसर सीमा अन्तिम बैसारमे अनेक सुव्यवस्थित लिखित निर्णय एकत्र होइत अछि; यथार्थ संस्थागत प्रतिरोधक समय अपेक्षाकृत कम अछि। तथापि तीनटा अन्तिम पंजी—‘अस्थायी उपस्थिति’, ‘उत्तर शेष’, ‘आरम्भिक पाठ’—एक-दोसराक स्थान नहिं लेबाक कारण अध्याय आश्वासनक बनावटी समाधानसँ बचैत अछि।

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २९–३२ क तुलनात्मक आलोचना

दू दिनक भीड़सँ दू कालक पाठशाला धरि कारणात्मक क्रम

अध्याय २९क फाटक-वायरल वीडियो अठाइसम अध्यायक वनमार्ग-विवादसँ जन्मैत अछि। ओकरा सन्दर्भसहित जाँचला पर जानकीक दलक एक अप्रमाणित आरोप कमजोर होइत अछि, मुदा मिथुनक गुमशुदगी नव वास्तविक संकटक रूपमे प्रवेश करैत अछि। अध्याय ३० एहि संकटपर हाटक लाल घेरावला गलत मंच-फोटो जोड़ैत अछि; साजिदक मूल अभ्यास-रिकॉर्डिंग सँ मोहनक विशिष्ट तस्वीर-आधारित आरोपक आधार टूटैत अछि। साजिदक एही अनुभवक कारण एकतीसम अध्यायमे ‘फ्रेमक भीतर/बाहर’क शिक्षण-अभ्यास शुरू होइत अछि। ओहि कक्षामे रेवाक बच्चासभ आ चन्दाक मजदूरी-विवाद प्रवेश करैत छथि; बत्तिसम अध्यायमे औपचारिक नामांकनक लिखित उत्तर आ सार्वजनिक शास्त्रार्थक प्रश्न एहि पूर्व घटनासँ कारणतः निकलैत अछि। कथा एक सामाजिक विषय-कोशक असम्बद्ध प्रविष्टि नहि रहैत; एक अपूर्ण परिणाम अगिला प्रसंगक आरम्भक आधार बनैत अछि। मुदा प्रत्येक नव पात्रक तत्काल उपयुक्त नैतिक प्रश्न उपस्थित करबाक नियमितता ग्रन्थक संभावित रचनात्मक यांत्रिकताक सङ्केतो अछि। (मूल अ.२८–३२)

समय-भेद, द्विकालीनता आ दोहराओलक कार्य

अध्याय २९क काल लगभग एक आधुनिक जाँच-दिन अछि; आरम्भमे ‘आइ भोर’क शीर्षक वास्तविक ‘काल्हिक साँझ’क घटनाकेँ विकृत करैत अछि। अध्याय ३० वर्तमान खोजक समयसँ अहल्याक विस्तृत प्राचीन आश्रम-कालमे प्रवेश करैत अछि आ फेर वर्तमान हाटपर लौटैत अछि। अध्याय ३१ आधुनिक अस्थायी ओसार–एकलव्यक कल्पित उत्तरजीवन–ओसारक फेर आधुनिक पाठक त्रिभागी प्रवाह अछि। अध्याय ३२ आधुनिक कक्षा–प्राचीन मिथिलाक वाचस्पति-मृणाल शास्त्रार्थ–आधुनिक पाठशाला–प्राचीन ओसारक संक्षिप्त प्रत्यावर्तनक अधिक जटिल आवृत्ति रचैत अछि। एहि भिन्न कालविन्यासकेँ ‘चारू अध्याय द्विकालीन’ कहि एकेरूप करब त्रुटिपूर्ण; उनतीसम मूलतः एक आधुनिक दिनक अफवाह-जाँच अछि। (अ.२९–३२)

आवर्ती वस्तु-संकेत गुणातीत समानार्थक नहि। गलत वीडियो, लाल घेरावला पोस्टर, खाली कैमरा-चौखट, पहिल उलटल ‘ज’ आ दू प्रतिलिपिक भिन्न किनार—ई सभ देखबाक आ लिखबाक सीमा दर्शबैत अछि, मुदा ककरो कानूनी परिणाम समान नहि। मिथुनक ढाकल थारी ओकर अनुपस्थितिक अनुभूति दैत अछि; पोस्टरक गोंदक निशान कलङ्कक अवशेष; जतनक गलती बचल पन्ना सीखबाक इतिहास; मृणालक भीजल पत्र ज्ञान-संरक्षणक वस्तुगत कठिनाइ। साहित्यिक गुण एहि अलग-अलग सामग्रीकेँ प्रतीक बनबैतहुँ ओकर भौतिक विशिष्टता नहि मेटब अछि।

आख्यानगत प्रमाण आ महाकाव्यीय अन्तर्पाठक सीमा

दू गलत सार्वजनिक आरोपमे आवश्यक जाँचक एक साझा पद्धति अछि : कोण कथन करैत अछि, ओकर दृश्य कखन बनल, मूल प्रति ककर लग अछि, व्याप्ति कोन अछि, व्यक्ति वा समुदाय-विशेषक दोषक अनुमानमे कतेक

अन्तर अछि। तथापि दुर्गाक ढुलाई-रसीद वा साजिदक कार्यक्रम-रसीद स्वयं पूर्ण घटना-संसारक निश्चयक उपकरण नहि। अध्याय २९–३०क स्पष्ट सुधार ‘एहि सामग्रीसँ चोरी सिद्ध नहि’ अथवा ‘एहि फोटोसँ मोहनक अपराध नहि’ धरि सीमित अछि; एकरासँ मिथुनक खोज समाप्त नहि। अध्याय ३१–३२मे प्रमाणक प्रश्न नव रूप लैत अछि : अस्थायी हाजिरी बनाम विधिवत् नामांकन, कामक पर्ची बनाम कटौतीक अन्तिम दायित्व, पुरान पाठक श्रेय बनाम सत्यापित योगदान-पञ्जी।

अहल्या, एकलव्य आ वाचस्पति-मृणालक दृश्य उपन्यासक कल्पनात्मक पुनर्लेखन छथि। अहल्याक ‘उद्धार’क बाद सुनबाक अधिकार, एकलव्यक अँगूठा देलाक बाद जीविकाक व्यवस्था आ मृणालक अक्षर-अभ्यासक अधिकार—तीनू प्राचीन पात्रसभकेँ आधुनिक समस्याक हूबहू प्रतिरूप नहि बनबैत। समानता नैतिक प्रश्नक स्वरूपमे अछि; ग्रन्थ, काल आ ऐतिहासिक प्रमाणक धरातल अलग। भामती-सम्बन्धी ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’क मूल दार्शनिक प्रयोजन आधुनिक विद्यालयक प्रवेश-नियम नहि; उपन्यास स्वयं ई अन्तर बतबैत अछि। एहि स्पष्ट सीमाङ्कनसँ अन्तरपाठीयता औचित्य पबैत अछि, हालाँकि प्राचीन पात्रक आधुनिक संस्थागत शब्दप्रयोग कथनक कलात्मक चुनौती बनल रहैत अछि।

स्त्रीक वाणी, समुदायक नाम आ श्रमक व्यावहारिक अर्थ

जानकीक दलक आरोपित बालकक चेहरा लुकाएबाक अधिकार, लताक वास्तविक खोज-चिन्ता, सबीनाक जातिसँ अपराध न मानबाक आग्रह, रेवाक झूठ पता न भरबाक दृढ़ता, चन्दाक प्रशिक्षणक जोखिम आ दाम तय करबाक क्षमता, मैथिलीक श्रेयक प्रमाण माँगब, मृणालक समय-सम्बद्ध अध्ययनक इच्छा—ई सभ अलग क्रियात्मक अधिकार छथि। स्त्रीपात्रक संख्या मात्रसँ बहुस्वरता सिद्ध नहि; हुनकर अलग हित आ असहमति महत्त्वपूर्ण अछि। लता फोटो हटबैक संग मिथुनक खोज जारी चाहैत छथि; जानकीक प्राथमिकता अपन दलक निर्दोष बच्चासभक चेहरा सुरक्षित राखब; चन्दा अपन घर घुरबाक निर्णय पर पकड़ राखैत छथि। ई अलगाव गद्यक नैतिक मर्म अछि। (अ.२९–३२)

श्रमक प्रश्न सेहो हरेक ठाम एके आर्थिक श्रेणी नहि। दुर्गाक ढुलाईक पर्ची समय-साक्ष्य अछि, सबीनाक आधा दाम बाँकी अछि, साजिदक रिकॉर्डिंगक उपयोग-अनुमति आ आयोजनक मेहनताना दू विवाद छथि, चन्दाक प्रशिक्षणक देय पहिने तय कएल गेल अछि मुदा ठेकेदारक बकाया निर्णीत नहि; मृणालक अध्ययनक समय लोहना आ सहायकक अतिरिक्त श्रम संग मिलाबबाक अछि। बिनु एहि विशिष्ट भेदक ‘उपन्यासमे श्रमक महिमा’ कहब केवल प्रशंसाक सूत्र हएत, घटनात्मक आलोचना नहि।

अन्तरिम मूल्यांकन आ आगामी पाठक सीमा

एहि चारि अध्यायक उल्लेखनीय उपलब्धि अतिशयोक्तिपूर्ण उद्धारक कथनक विरुद्ध छोट, सत्यापित, आंशिक परिवर्तन रखब अछि : मिथुन हराएल अछि, आरोपक एक आधार सुधरल अछि; गलत पोस्टर हटि गेल, अपमानक निशान बचल अछि; रेवाक बच्चासभ पढ़ैत अछि, औपचारिक नामांकन नहि भेल; चन्दाक समयक देय तय होइत अछि, मूल बकाया नहि चुकल; योगदान-पञ्जी खुलल, अंतिम श्रेय नहि निर्धारित। एहिसँ कथानकक नैतिक तर्क परिणामक सीमासँ नियंत्रित होइत अछि। कथाशिल्पक सम्भावित दोष—प्रमाण-विभाजनक बारम्बार

कथन, पात्रसभक प्रायः समानरूप नैतिक परिपक्व वाणी, आ घटनाक अत्यन्त सुव्यवस्थित अर्जित निष्कर्ष—साक्ष्यसहित उल्लेखनीय अछि। किछु प्रतीक आ अपूर्ण निर्णयक पुनरागमन कलात्मक एकता बनबैत अछि, मुदा पुनरावृत्ति अर्थक वृद्धि न करए तँ उपदेशात्मकता बनबाक जोखिम अछि। वन-पर्वक अध्याय २५–३२ धरि एहि विवेचनक सीमा अछि; शेष अध्याय ३३–३६क पाठ बिना पूरा पर्वक अन्तिम मूल्यांकन नहि देल जा सकैत।

अध्याय ३३ — दीपक आ कागद

कागद बनबाक समय : शास्त्रक दृश्य आ कारीगरक अदृश्य समय

अध्याय मृणालक अध्ययनक प्रश्नसँ नहि, लोहना द्वारा दू थारीमे पानि नापबासँ आरम्भ होइत अछि। एक थारीक निर्मल पानि आ दोसरक तन्तु-मिश्रित पानि दू भिन्न निर्माण-अवस्था देखबैत अछि। मृणाल पहिने पिसल रेशा हाथसँ ठीक करए चाहैत छथि; लोहना बुझबैत अछि जे भीजल रेशाकेँ जबरदस्ती दबेलासँ गाँठ पड़त। हाथक अधीर हस्तक्षेपक बदला चौखट झुकब, पानिक धार देखब आ रेशाकेँ सम रूपेँ पसरब—ई प्रक्रियात्मक ज्ञान मृणाल सीखैत छथि। कथावस्तुमे ई शिक्षण-अवसर अनायास प्रतीक नहि; कागदक निर्माण बिना ग्रन्थक प्रतिलिपि सम्भव नहि, मुदा परम्परागत शास्त्र-कथामे एहि श्रमक अपना समय प्रायः देखाओल नहि जाइत। प्रारम्भिक दृश्य शास्त्रार्थक अधिकार कागद बनौनिहार हाथधरि विस्तार करैत अछि।

दीपकक रातिक बाद भामती धुआँ लागल पन्ना, खाली तेलक कटोरी आ आँखिक जलन देखैत छथि। शिष्यक ‘शास्त्रक सेवा’क पुण्य-वचनक उत्तरमे ओ धार्मिक सेवाक सामान्य नैतिकताकेँ खर्च, स्वास्थ्य आ विश्रामक पृथक हिसाबसँ बाधित करैत छथि। तत्काल चारि पन्ना तैयार भेल, मुदा दूटा फेर सुखाओल जाएत; ई संख्यात्मक दृश्य प्रगतिकेँ लागतक बिना देखबाक प्रलोभन पर प्रश्न अछि। भामतीक तीन पाँति—बनाओल, बिगड़ल, बचल पन्ना—मे लोहना चारिम ‘काजमे लागल समय’ जोड़ैत अछि। एहि छोट जोड़सँ दृष्टिकेन्द्र बदलैत अछि : पुस्तकक उपलब्ध भौतिक प्रतिक संग पुस्तक निर्माणक मानवीय अवधि दिस कथा घुरैत अछि। भामतीक आवाज अनुशासनात्मक गृह-प्रबन्धक, लोहना कारीगर आ वाचस्पति पाठ-निर्णायक छथि; तीनूक स्थिति एक नहि।

लोहना फाटल छन्नी देखाकऽ सामग्रीक खर्च आ पहिनुका मजदूरीक बकाया अलग करैत अछि। वाचस्पति तुरन्त भुगतान पूर्ण कएलनि एहन दृश्य नहि; बाजार-दिन धरि छोट पन्ना बनबाक व्यावहारिक सीमा स्वीकार होइत अछि। बादमे लोहना आधा मजदूरी भेटबाक आ शेष लेल अनाजक मापसहित तिथि लिखएबाक आग्रह करैत अछि। विशेष अर्थपूर्ण परिवर्तन ‘सहायता’ शब्द हटाकऽ ‘शेष देय’ लिखबाएब अछि। शब्द-परिवर्तन केवल व्याकरण नहि; दानदाता–प्राप्तकर्ताक सम्बन्धकेँ ठेका–कर्मकर्ताक देयमे परिवर्तित करबाक प्रयास अछि। वाचस्पति चिन्ह दैत छथि, मुदा लोहना स्वयं पाँति पढ़ि सुनबाक आग्रह करैत अछि। दस्तावेजक प्रामाण्य एतय हस्ताक्षरक उपस्थितिसँ आगाँ पढ़ि बुझल सामग्री आ संशोधन-अधिकारपर निर्भर बनैत अछि।

‘कृतसारा’क अपूर्ण पाँति : पाठालोचन आ ज्ञानक सीमा

मृणाल नव प्रतिमे ‘कृतसारा’ देखैत छथि। आसपासक शब्द कटि गेल अछि; कियो जल-सन्दर्भ देखिकऽ ओकरा नदीक नाम कहैत अछि। मृणाल प्रश्न उठबैत छथि जे भीजल पन्नाक उपस्थितिसँ ओहिपर लिखल शब्दक अर्थ ‘नदी’ स्वतः नहि होइत। वाचस्पति तत्काल समाधान नहि दैत छथि; दोसर मूल प्रति भेटलापर मिलान करबाक निर्णय होइत अछि। भामती पन्नाक कात विशेष चिह्न रखैत छथि। ई अध्याय-विशेषमे पाठ-समीक्षाक एक महत्त्वपूर्ण दृश्य अछि : मूल अपूर्ण, प्रतिलिपि अपूर्ण आ अर्थ अनिर्णीत—तीनू स्थितिकेँ ‘विद्वानक अन्तिम निर्णय’ कहि बंद नहि कएल गेल।

लोहना द्वारा जमीनक माप अलग देखबाक उत्तर उल्लेखनीय अछि। कविताक अपूर्ण पद ककरो घाटक स्वामित्व वा भूगोलक निश्चित प्रमाण नहि भऽ सकैत। आख्यानगत भाषामे एतय आश्रय-वस्तु, शब्दक तात्पर्य आ दावाक साध्य अलग पहिचानल जाएत : ‘जलक शब्दक उपस्थित’ सँ ‘अमुक निश्चित नदी’क सिद्धि लेल पर्याप्त आधार नहि; आ ‘अमुक नदी’ सँ ‘घाटक जमीनक अधिकार’ तऽ आरो स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि। ई आलोचकक अवधारणात्मक पुनर्विवेचन अछि, उपन्यासमे लिखल शास्त्रीय सूत्रक हूबहू पाठ नहि। एहि दृश्यसँ सिद्ध अछि जे अध्यायक ज्ञान-दर्शन केवल वेदान्तक उच्च पदावलीमे सीमित नहि, पाठकीय गलत अनुमानक सजीव जाँच सेहो अछि।

सोमरी हेम्ब्रम : अनुवाद, सहमति आ अनुबन्धक असमान सत्ता

आधुनिक विदेहपुरमे पानि टपकैत टिनक छप्पर, भीजल अभ्यासपत्र आ अधूरा मरम्मति-देय पहिले प्रस्तुत होइत अछि। एहि भौतिक समस्याक बीच सोमरी हेम्ब्रम अपन कामक पर्ची, आधा अनुवादित अनुबन्ध आ रसीदसहित प्रवेश करैत छथि। हुनक समस्या ‘अशिक्षित श्रमिककेँ कागद पढ़ा देब’ मात्र नहि। कागदमे दैनिक दाम, निवास बदलबाक शर्त आ बीचमे काम छोड़लापर कटौती लिखल अछि; बरखाक कारण काम बन्द भेलापर भुगतानक परिणाम अस्पष्ट। सोमरी एही अस्पष्टतापर अँगूठा देबासँ इनकार करैत छथि। एहि तरहेँ कथामे साक्षरताक औपचारिक उपलब्धि आ सहमतिक वास्तविक वैधता बीच निर्णायक अन्तर अछि।

मीरा शब्द सरल मैथिलीमे बुझबैत छथि, मुदा सोमरी दोसर प्रश्न उठबैत छथि : दलक सभ लोक मैथिली नहि बुझैत; मातृभाषामे बुझौनिहारक श्रमक दाम के देत? सोमरी अन्य श्रमिकक प्रतिनिधित्व अपन आप स्वीकार नहि करैत छथि। आवेदनमे चारि प्रश्न स्पष्ट होइत अछि—दैनिक दाम, बरखाक समयक गणना, निवास बदलबाक शर्त आ भाषिक समझक अधिकार। दूनू प्रति बनल; मुदा एहि प्राप्तिक अर्थ अनुबन्ध बदलि गेल नहि। सोमरी ठेकाक मुन्शीक सन्देश देखैतहुँ तुरन्त हँकार नहि दैत छथि। एक पात्रक आत्मनिर्णय हुनक भयक अभावसँ नहि, काम छूटबाक जोखिम बुझैत निर्णय लेबाक स्थितिसँ विकसित होइत अछि।

सोमरी गील छप्परपर चढ़बाक इच्छासँ ईशानकेँ रोकैत छथि : काजक उत्साह सुरक्षा-व्यवस्थाक विकल्प नहि। एहि क्षण सोमरीकेँ केवल संविदाक पीड़ित पात्र बनाओल नहि गेल; हुनकर निर्माण-ज्ञान दोसरक तात्कालिक व्यवहार बदलबैत अछि। मुदा मरम्मति तत्क्षण सम्पन्न नहि होइत। साँझ धरि तिरपालसँ अस्थायी सुरक्षा आ

अगिला दिन सुरक्षित पहुँचक समय लिखल जाइत अछि। ई कथानकक प्रत्यक्ष फल अछि : जोखिमक पहिचान, तुरन्त जोखिमपूर्ण काम रोकब, अस्थायी संरक्षण; पक्का छप्परक दावा नहि।

कथनकाल, बालदृष्टि आ दीपकक नैतिक अर्थ

अध्यायमे प्राचीन ओसारक भोर सँ विदेहपुरक भोर, फेर दुनू कालक अपराह्न आ साँझक आवर्तन अछि। तृतीयपुरुष कथावाचक समय-स्थानक दूरी स्पष्ट करैत अछि; भामती–मृणाल–लोहना, फेर सोमरी–मैथिली–मीरा–सरिताक अनुभवक बीच दृष्टिकेन्द्र घुमैत अछि। कथा मे कोनो प्राचीन पात्र आधुनिक विद्यालयमे प्रत्यक्ष प्रवेश नहि करैत; वस्तु-सादृश्य, श्रमक असमानता आ पन्नाक संरक्षण दुनू कालकेँ विचारक स्तरपर जोड़ैत अछि। दोसर कालधाराक दृश्य आधुनिक कार्यसूचीक सीधा ऐतिहासिक प्रमाण नहि : ई एक रचित सम्भाषण अछि।

शिष्य परिवारक बच्ची पुछैत अछि जे दीपकक उजियार समाप्त भेलापर धुआँ कतय जाइत अछि। भामती बाहर, पन्ना आ साँसक भीतर—तीन ठामक उत्तर दैत छथि; फेर दीपक कम जरएबाक सुझाव चर्चाक विषय बनैत अछि। रातिमे नकल कम करबाक वाचस्पतिक वचन प्रतीकात्मक त्याग मात्र नहि, अध्ययनक अवधि आ आँखिक विश्राम बदलबाक निर्णय अछि। आधुनिक पक्षमे बिरसी–जतनक भीजल अभ्यासपत्र, छोट कापीक गलती आ भोजनक थारी बतबैत अछि जे पन्नाक संरक्षण भविष्यक सीखबाक अवसरसँ जुड़ल अछि। अन्तिम समानान्तर दृश्य—सरिताक ढाकल दीपक आ भामतीक काटल बाती—पुनरावर्तनक औचित्य राखैत अछि, मुदा दुनू पात्रक सामाजिक अवस्था एके सन नहि।

उपलब्धि आ सीमा। कृतिक बल शास्त्र-निर्माणक अदृश्य अर्थव्यवस्थाकेँ वस्तु, मजदूरी, विश्राम आ भाषिक सहमतिक ठोस विवादमे खोलब अछि। भामती अपन दीपक-वाली लोककथा केँ ‘कथा’ कहि पहचानैत छथि; ओ अपन आँखिक श्रमकेँ ऐतिहासिक रूपसँ स्वतः प्रमाणित करबाक आग्रह नहि करैत छथि। ई आत्म-सीमाङ्कन महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि प्राचीन शिष्यक तुरन्त समझदार प्रतिवाद, आधुनिक श्रमिकक सुचिन्तित नीति-वाक्य आ अन्तिम पञ्जीक सुव्यवस्थित बनावट अनेक ठाम लेखकक नैतिक नियोजनक उपस्थिति सुनबैत अछि। एक दिनमे श्रमक सभ नाजुक भेदक यथार्थ बहस आ छोट समाधानक सघनता कतहु दृश्यकेँ अतिप्रशिक्षणात्मक बना सकैत अछि। एहि दोषक उल्लेख आलोचनात्मक छनि; तथापि बकाया देय, अस्पष्ट अनुबन्ध आ असुरक्षित छप्परक वास्तविक अपूर्णता दृश्यकेँ सस्ता आदर्शवादी समापनसँ बचबैत अछि।

अध्याय ३४ — अनदेखल कारण

इतिहासक तख्ती : छपाइक त्रुटि आ मूल अभिलेखीय विलोपन

आरम्भमे हेमा देव विद्यालयक भिजल प्रदर्शनीक तख्ती नापैत छथि। विदेहपुरक स्थापना, सड़क आ पोखरि-उराहिक चित्रक नीचाँ दस पुरुषक नाम अछि, स्त्रीसभक लेल एक सामूहिक पाँति। हेमाक प्रश्न ‘स्त्रीगणक नाम कोन पन्नापर अछि?’ पाठककेँ तुरन्त अभिलेखक देखाइत वस्तु आ अदृश्य श्रमक भेदमे रखैत अछि। मुदा पाठ स्वयं पहिल आक्रोशकेँ पूर्ण निष्कर्ष नहि मानैत। १९३९क पोखरि-उराहिसँ जुड़ल फोटो-नकल पारिवारिक संरक्षित प्रति अछि, मूल सरकारी पंजी नहि; फाटल किनारपर चारि सम्भावित नाम-चिन्हक साक्ष्य-मान एकसमान नहि।

हेमा प्रमाणित पूरा नाम, अपूर्ण नाम आ नाम-विहीन श्रम अलग स्तम्भमे राखैत छथि। ऐतिहासिक अन्यायक अनुभूतिकेँ निश्चित अक्षर-पहिचानक दावा बनाओलासँ कथावाचक रोकैत अछि।

नसीमा शेरशाहबादीक प्रवेशसँ अभिलेख-विवाद नव भौतिक दिशा पबैत अछि। पन्नाक पाछाँ पट्टी लगेनाइ, नमी सँ बचाएब, वास्तविक तख्तीक चौड़ाइ नापब आ काटल किनार देखब—एहि कारीगरीसँ स्पष्ट होइत अछि जे किछु अन्तिम अक्षर छपाइमे कटि गेल। मुदा नसीमा सटीक सीमा बतबैत छथि : जे नाम मूल सूचीमे शुरूए सँ लिखल नहि गेल, ओकर विलोपनक कारण काटल किनार नहि कहि सकैत। हेमा अपन पहिल सर्वसमावेशी आरोप संशोधित करैत छथि। एतय पूर्वधारणा बदलनाइ कथात्मक घटना अछि, मात्र ‘समीक्षा करब उचित’क वाक्य नहि। मुद्रणदोष आ पञ्जीगत बहिष्कारक दुई अलग कारण इतिहासलेखनक नव प्रश्न खोलैत अछि।

एहि प्रमाणभेदकेँ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ देखला पर ‘अनाम स्त्री-श्रम’ मात्र करुण प्रतीक नहि, अभिलेखक निर्माण-प्रक्रियामे दर्ज होएबाक असमान अधिकार अछि। भोजन बनौनिहार, कादो ढोएनिहार आ घाट चिन्हनिहारक श्रम परिवारक प्रति वा मौखिक स्मृतिसँ खोजल जा सकैत अछि; मुदा साक्ष्य-संकटकेँ मनगढ़न्त नामसँ भरल नहि जा सकैत। सरिता स्पष्ट करैत छथि जे पुरनका श्रम भेल होएबाक मान्यता आ विशिष्ट व्यक्तिक नाम जानबाक प्रमाण अलग बात अछि। एहि वृत्तान्तमे इतिहासक नैतिक पुनर्स्थापन आ अभिलेखीय सत्यापन परस्पर विरोधी नहि, एक-दोसराकेँ सावधान करैत अछि।

उदयन-मीमांसक शास्त्रार्थ : अदृश्य आ असिद्धक विभेद

उदयनक प्राचीन कालधारामे एक मीमांसक पूर्वपक्ष कर्मफल, अपूर्व वा अदृष्टक पर्याप्तता प्रश्न करैत अछि। हुनक आपत्ति ई नहि जे अदृश्य वस्तुक अस्तित्व स्वतः निषेधित अछि, बल्कि ई जे कर्म आ फल बीच विलम्बक व्याख्या करबाक लेल अतिरिक्त चेतन कारण अनिवार्य कोना भेल। छात्र ‘अदृश्य अर्थात् असिद्ध’क जल्दबाजी करैत अछि; उदयन रोकैत छथि। अनदेखल वस्तु आ प्रमाण-विहीन दावा अलग समस्या अछि; अनुमानक लेल सम्बन्ध, परीक्षण-क्षेत्र आ प्रतिपक्षक पर्याप्त व्याख्याक प्रश्न रहैत अछि।

भीतरक पानि दृष्टिगोचर नहि रहितहुँ घटक भारसँ अनुमान करबाक उदाहरण पर अतिथि ओकर जाँचयोग्यता देखबैत छथि। कर्मफल-विलम्बक व्याप्ति घटक भारक अनुभवसँ स्वतः सिद्ध नहि। वृद्ध कुम्हार फूटल घटक अनेक सम्भावित कारण—रेत, आँच, सुखेबाक समय—गनबैत अछि। उदयन ओकरा शास्त्रीय परिकल्पनाक सिद्ध प्रमाण नहि बनबैत छथि; बहु-कारणक सावधानी धरि सीमित रखैत छथि। उपन्यास ई ठाम अनुभवजन्य तकनीकी ज्ञानक सम्मान करैत अछि, मुदा घरेलू उदाहरणसँ दार्शनिक निष्कर्षक अनधिकृत छलाङ नहि लगबैत। तत्त्वक तर्कसंगति आ उदाहरणक सीमाक एहि पृथक्करणमे अध्यायक शक्ति अछि।

शिष्यक एक संक्षिप्त प्रति अतिथिक पाँच प्रश्न तीनमे बदलैत अछि। उदयन ओकरा ‘संक्षेप’क बदला ‘अपूर्ण’ कहबैत छथि। बादमे शास्त्रार्थक नियम बनैत अछि जे प्रतिपक्षक तर्क पहिने ओकरा स्वीकार्य रूपमे दोहराओल जाए, तकर बाद आपत्ति रखल जाए। अतिथि ‘अनिवार्य’ आ ‘पर्याप्त’ शब्द सुधरबैत छथि; उत्तर ओहि दिन निश्चित नहि होइत। एतय पाठ-प्रति तैयार करब सेहो ज्ञानक न्यायसंगत वितरण अछि—दूसरक विचार संक्षिप्त कऽ दूषित रूपमे प्रस्तुत करब शास्त्रार्थक सफलता नहि। उदयनक कथा समकालीन तर्क-नैतिकताक रचनात्मक

उदाहरण अछि; उपन्यासक संवादकेँ उदयनक मूल न्यायकुसुमाञ्जलिक प्रमाणित ऐतिहासिक संवाद नहि मानल जाए।

श्रमक रसीद, अस्थायी पट्टी आ सार्वजनिक नामक अनुमति

नसीमा अपन नामक वर्तनी स्वयं ठहरबैत छथि; साधन, सामग्री, कामक समय आ किराया अलग कऽ रसीद बनबैत छथि। हुनकर स्पष्ट वाक्य जे ई ‘मदद’ नहि, ‘काम’ अछि, अध्याय ३३क लोहना-संशोधनसँ कारणात्मक प्रतिध्वनि रखैत अछि, मुदा दुनू पेशा आ परिवेश भिन्न। रसीदपर भुगतानक दिन लिखल अछि; सम्पूर्ण राशि तुरन्त देल गेल नहि। बच्चाक प्रथम अभ्यासपत्र पट्टी लगाकऽ बचएबाक पहिने मायक अनुमति लेबाक प्रसंग दस्तावेजक मालिकानाक व्यापक प्रश्न उठबैत अछि। कारीगरक श्रेय, शिशुक लिखावट आ सार्वजनिक इतिहासक मरम्मति एकहि दृश्यामे उपस्थित अछि; ई त्रिभेदकेँ बिना मेटने आलोचना करब आवश्यक अछि।

हेमाक संशोधित इतिहास-पाठ समितिमे विचारार्थ जाएत; ओ स्वयं पुरान तख्ती हटाकऽ नव प्रमाणित इतिहास घोषित नहि करैत छथि। नसीमा अस्थायी पट्टी लगबैत छथि जे नामावली अपूर्ण स्रोतपर आधारित अछि आ जाँच जारी अछि। ‘अपूर्ण’ शब्द एतय ज्ञानक अभावक सार्वजनिक स्वीकृति अछि, पराजय नहि। सरिताक सत्ताइस नामक गोपनीय पंजीकेँ सार्वजनिक इतिहासक सामग्री न बनएबाक नैराक आग्रह सन्दर्भीय अधिकार-भेद स्पष्ट करैत अछि—उपेक्षित ऐतिहासिक श्रमक परिचय देबाक नैतिक इच्छा जीवित व्यक्तिक सुरक्षा-संबन्धी निजी अभिलेख खोलबाक स्वतः अनुमति नहि दैत।

अवधि, दृष्टिकेन्द्र आ असमान रूपक

अध्यायक आधुनिक काल मुख्यतः एक दिनक कक्षा, मरम्मति आ प्रस्तावक समय अछि। प्राचीन शास्त्रार्थक भोर, दुपहरि आ राति आधुनिक घटनासँग क्रमशः जोडल गेल अछि। ई समकालिकता भौतिक इतिहासक समान समय नहि, सम्पादित कथनक लय अछि। प्राचीन घटक नमी, आधुनिक तख्तीक कटल कोना, बाँसक सूतक गाँठ आ पानिसँ बिगड़ल नकल—सबटा वस्तु पाठककेँ देखबाक सीमा बुझबैत अछि। मुदा घट-कारणक अनुमान आ स्त्री-नामक ऐतिहासिक बहिष्कार समान स्तरक तथ्य नहि; उपन्यासक समस्त ‘अनदेखल कारण’क छत्रमे ओहि भेद परत-दर-परत राखल गेल अछि।

तृतीयपुरुषक कथनमे हेमा अपन प्रारम्भिक निर्णय संशोधित करैत छथि; नसीमा भौतिक साक्ष्यक विशिष्टज्ञक रूपमे प्रवेश करैत छथि; उदयन पूर्वपक्ष सुनबाक अभ्यास सिखबैत छथि; मीरा बच्चासभकेँ चित्रक अपूर्णतापर प्रश्न करबैत छथि; सरिता मौखिक स्मृतिक प्रकार बतबैत छथि। प्रश्न-जवाबक बहुलता बहुस्वरताक सम्भावना अछि, मुदा वास्तविक बहुस्वरता असहमतिक अन्तिम परिणाममे देखल जाए : पुरान शिक्षक हेमाक नये इतिहासपर आपत्ति करैत छथि; प्रबन्ध समितिक स्वीकृति बाँकी अछि; मीमांसकक प्रश्न अखण्ड अछि। ई असहमति अन्तिम निर्णयमे विसर्जित नहि भेल अछि।

उपलब्धि आ सीमा। एक तख्तीक कटल नाम, एक स्त्रीक मूल सूचीमे अनुपस्थिति, एक कुम्हारक बहु-कारणक ज्ञान आ शास्त्रीय ‘अनिवार्यता’क विवाद—एहि सभकेँ अलग प्रमाण-स्थितिमे देखब अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि। सीमाक रूपमे प्राचीन वाद-विवादक नैतिक शर्त आ आधुनिक विद्यालयक संशोधन-नियम बहुत साफ

ढङ्गसँ परस्पर साज-सँजौने प्रतीत होइत अछि; कखनहुँ पात्रक बोली स्वाभाविक अनिश्चिततासँ अधिक आलोचकक व्यवस्थित शब्दावली जकाँ लगैत अछि। मुदा हेमाक पहिल आरोपक वास्तविक संशोधन आ उदयनक असम्पन्न उत्तर कथानककेँ केवल विचारक चित्रमाला होयबासँ बचबैत अछि।

अध्याय ३५ — गवयक पहिचान

लाल प्रश्नचिह्न : खोजक आशा आ व्यक्तिक सुरक्षा

विद्यालयक ओसारमे नव चिपकाओल कागदपर बस-अड्डा आ पछियारी गलीक दू धुँधल छवि अछि। आधा-आधा चेहरा, गमछाक छाया आ लाल स्याहीक प्रश्न—‘एक्के आदमी?’—कातमे मिथुनक खोजक उल्लेख जोड़ल गेल। शीर्षकमे ‘गवय’क शास्त्रीय उदाहरण रहितहुँ आरम्भिक कथा वास्तविक हराएल बच्चाक माँ लताक चिन्तासँ संचालित अछि। मीरा फोटोकेँ प्रथमदृष्ट्या आरोप बनएबासँ रोकैत छथि; नैरा सामुदायिक खोज-पंजी आ औपचारिक शिकायतक भिन्न कार्यसम्बन्ध पहिचानैत छथि। मूल शिकायत लताक हाथमे अछि; नैराक स्वैच्छिक सहयोग-पञ्जी ककरो दोष निश्चित करबाक न्यायिक उपकरण नहि।

प्रथम छविमे चायक दूकानक आधा फट्टा, दोसरमे छाया-ढाकल चेहरा; फोटो आननिहारक नाम नहि, स्रोत केवल ‘देखल गेल’। एहि अज्ञात कथनकर्ताक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि। कियो ‘देखल’ कहैत अछि तँ साक्षी के? छवि खींचबाक समय, कैमरा, कटल फ्रेम आ उपलब्ध मूल प्रति के?—जवाब शून्य अछि। नैराक पुरान प्रकाशन-त्रुटिक स्मृति एहि प्रश्नक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि बनैत अछि। पूर्वक गलत शीघ्र-निश्चयक पुनरावृत्ति रोकबाक प्रयत्न हुनकर पात्र-विकासक एक ठोस बिन्दु अछि, यद्यपि अनुभव नैराकेँ स्वतः निष्पक्ष सर्वज्ञ नहि बनबैत।

लता जे पुत्रक खोजमे थाकल छथि, हुनक आवाजक जाँच एतय कसौटी अछि। नैराक सावधानी प्रारम्भमे हुनका आशा काटल जकाँ लगैत छनि। बादमे ओ स्वयं मूल छवि सुरक्षित राखि ‘सन्दिग्ध’ हटएबाक आ वास्तविक देखनिहार भेटला पर पृथक बयान लेबाक आग्रह करैत छथि। लताक एहि निर्णयसँ ‘पीड़ितक इच्छा’ आ ‘आरोपितक अधिकार’ शून्य-योग विरोधी नहि रहैत : खोज जारी रहैत अछि, सार्वजनिक आरोप सीमित होइत अछि। मूल छवि सुरक्षित लिफाफामे रखल, सार्वजनिक नोटिस पर चेहरा नहि लगाओल, सुधारक प्रति औपचारिक जाँचक अधिकारीकेँ देबाक लेल लताक सहमति भेटल—एतबे कथामे सम्पन्न अछि। मिथुन भेटि गेल, फोटोमे व्यक्ति पहिचानल गेल अथवा दोष सिद्ध भेल, एहन कोनो परिणाम नहि।

उपमानक गवय : शब्दार्थ-बोध आ व्यक्ति-परिचयक पृथक्करण

मीरा बच्चासभकेँ प्राचीन उपमान-विवेचनक उदाहरण दैत छथि : गायसँ मिलैत गवयक वर्णन सुनब आ बादमे अपरिचित पशु देखिकऽ शब्दक अर्थ-बोध करब। ओ स्पष्ट करैत छथि जे गाय आ गवय एके प्राणी नहि; आ एहि प्रक्रियासँ दू मनुष्यक एके व्यक्ति होएबाक दावा आरो कठिन अछि। हरिमोहन फट्टापर ‘शब्द–वस्तुक सम्बन्ध’ आ ‘व्यक्तिक पहिचान’क दू कोटि बनबैत छथि। एहिमे शास्त्रीय तत्त्वक लक्ष्य सही ठाम सीमित रखल गेल : ‘गवय’ शब्दक अर्थ जानब, फोटो देखिकऽ अपराधी ठहराएब नहि।

गड्गेशक कालधारामे शिक्षक सुनल विवरण, देखल वस्तु आ शब्दार्थ सम्बन्धक क्रम अलग-अलग स्पष्ट करैत छथि। वस्तुक वर्ग आ एक विशिष्ट व्यक्तिक पहिचान भिन्न प्रश्न छथि। एहि रचित शास्त्रार्थकेँ तत्त्वचिन्तामणिक प्रमाणित मूल ऐतिहासिक संवाद कहब अनुचित हएत; उपन्यासक प्रयोग एक दार्शनिक विभेदकेँ आधुनिक सामाजिक जाँचक सीमाक भीतर रखैत अछि। पात्र स्वयं कहैत अछि जे गवय-उदाहरणक प्रयोजन चोर पकड़ब नहि। एहि आत्म-सीमाङ्कनसँ दार्शनिक अन्तरपाठक सम्भावित दुरुपयोग कम होइत अछि; तथापि शास्त्रीय उपमानक जटिल विवाद एहि संक्षिप्त शिक्षणमात्रसँ समाप्त मानब नहि।

राजो भोगता दू समान देखाइत काठ-पट्टी द्वारा एके वस्तु होएबाक भ्रमक व्यावहारिक प्रतिवाद करैत छथि। दुकानदारक ‘ओ काठ अछि, मनुष्य नहि’क उत्तर स्वीकार करैत राजो मनुष्यक विषयमे अधिक सावधानीक आवश्यकता बतबैत छथि। पहिनुका भामतीक पुस्तक-पन्ना आ नसीमाक कटल तख्तीक बाद ई दृश्य तेसर भौतिक हस्तक्षेप अछि; विशेषज्ञता दार्शनिक पदावली मात्र नहि, दैनिक वस्तु परिचयक कारीगरीमे सेहो अछि। मुदा काठक उपमा स्वयं दोषी–निर्दोषक पूर्ण नैतिक सिद्धान्त नहि; ओ तर्कक गलत छलाङ रोकबाक शिक्षण-अवसर मात्र अछि।

दू पता, एक व्यक्ति : राजोक मजदूरी आ रेवाक विद्यालय-प्रवेश

राजो भोगताक पुरान ग्राम-निवासक प्रमाण आ नव किराया-रसीद दू ठाम देखबैत अछि। कार्यालयक आवेदनमे ई भिन्नता सहायता रोकबाक आशंकाक कारण बनल। राजो कागद देखएबाक पहिने उद्देश्य लिखबाक कहैत छथि; ई सहमति महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पहिने हुनकर प्रति ककर फोन धरि पहुँचल से अनिश्चित रहल छल। कार्यालयमे ढुलाई-मजदूरीक रसीदक अङ्क सहायता-आवेदनसँ गलत जोड़ल गेल। प्रधान दुनू खाता अलग करबाक गलती स्वीकार करैत छथि; भुगतान-विभागकेँ मजदूरीक स्वतंत्र जाँचक निर्देश दैत छथि। सहायता-पात्रताक नियम निर्णयाधीन रहल, मजदूरी हाथमे नहि अएल। एतय दूटा समान/भिन्न पताक समस्या आ दूटा अलग आर्थिक अधिकारक समस्या एके पात्रक जीवनमे प्रतिच्छेद करैत अछि; किन्तु समाधान समान नहि।

रेवाक प्रश्न जखन उठैत अछि तँ बच्चाक अस्थायी हाजिरीक कापी आ विद्यालयक औपचारिक नामांकनक पंजी अलग रहैत अछि। रेवा मिथ्या स्थायी पता लिखबासँ इनकार करैत छथि; प्रधान अस्थायी कक्षा-उपस्थिति आ नामांकन-निर्णय अलग रखबाक लिखित आदेश दैत छथि। एहि आदेशसँ बच्चाक शिक्षा-प्रवेशक अन्तिम अधिकार कार्यान्वित भऽ गेल नहि; वैकल्पिक पता-सत्यापन अगिला बैसारक विषय अछि। रेवाक अन्तिम प्रश्न—अगिला दिन कक्षा कतय होयत—बच्चाक शैक्षणिक अधिकारकेँ कागदक वर्गीकरणसँ उठाकऽ वास्तविक समय–स्थानक अनिश्चिततामे रखैत अछि। ई प्रश्न अगिला अध्याय ‘बाहरक पाठशाला’क कथात्मक बीज बनैत अछि।

विरोधी दृष्टिसभ, अवधि आ वस्तुक अवशिष्ट अर्थ

अध्यायक आधुनिक काल एक शिक्षण-दिन आ कार्यालयक बैठकक भीतर सघन अछि; गड्गेशक प्राचीन काल अल्प अन्तरालक शास्त्रार्थ। तृतीयपुरुषक कथन अलग चेतनामे प्रसृत होइत अछि : लताक बेचैनी, नैराक पूर्वदोषक स्मृति, रेवाक श्रान्त प्रश्न, राजोक आर्थिक तर्क, मीरा–हरिमोहनक शिक्षण-अभ्यास, साजिदक डिजिटल स्रोत-जाँच। सभटा आवाज एके निष्कर्षपर नहिं पहुँचैत : दुकानदार सदिच्छा बतबैत छथि, मुदा मूल फोटो नहि

देखलनि; लता दोषी खोजबाक भावनात्मक तात्कालिकता राखैत छथि; नैरा आरोप सीमित करबाक आग्रह करैत छथि। सुधारक बाद सेहो लताक अनिश्चय शेष अछि।

‘गवय’ कहबाक समय जतनक ‘गवैया’ उच्चारण शास्त्रीय शिक्षणमे हलुक हास्य लबैत अछि। ई छोट स्वर-फेर महत्त्वपूर्ण : बच्चा पाठक निष्क्रिय पात्र नहि; शब्दकेँ अपन श्रवण-अनुभवसँ बदलि रहल अछि। आरम्भक लाल छवि आ अन्तक दू तख्तीक छाँह कथाक परिधि बनैत अछि। नैरा बाहरी छाँहक समानताकेँ प्रमाण नहि मानैत छथि। अन्तिम तीन श्रेणी—सादृश्य देखल, पहिचान अप्रमाणित, अपराध असिद्ध—नैतिक लेखाजोखा अछि, खोज-फल नहि। बच्चासभक नाम आरोपक कागदमे नहि, पढ़बाक कापीमे रहब एक सांकेतिक राहत अछि; सार्वजनिक आशंका हटतहुँ वास्तविक गुमशुदगीक पीड़ा अक्षुण्ण अछि।

उपलब्धि आ सीमा। एहि अध्यायक विशिष्टता उपमानशास्त्रकेँ आधुनिक डिजिटल दृश्य-साक्ष्यक अनावश्यक निर्णायक अधिकारक विरुद्ध रखब अछि, बिना ‘सब छवि निरर्थक’ कहने। दू पताक दस्तावेज-बाधा एहि समानता-विवादक सामाजिक विस्तार अछि, मुदा राजोक मजदूरीक रसीद आ लताक खोजसूचना परस्पर बदलि सकबाक वस्तु नहि। सीमाक रूपमे प्रमाणक तीन पाँतिक निष्कर्ष कक्षा, कार्यालय आ नैराक कापीमे अत्यन्त योजनाबद्ध ढङ्गसँ स्पष्ट होइत अछि; कखनो-कखनो पात्रक तुरन्त नैतिक स्फूर्ति साधारण मनोवैज्ञानिक उलझनकेँ कम ठाम दैत अछि। तथापि लताक आहत प्रतिवाद, राजोक भुगतानक प्रतीक्षा आ अनिर्णीत नामांकन दृश्यकेँ निष्कर्षक प्रशासकीय प्रसारमात्र होयबासँ बचबैत अछि।

अध्याय ३६ — बाहरक पाठशाला

धँसल ईंट आ नामांकनक शेष प्रश्न : स्थानक कथा

जतनक कापी तीन ईंटक अस्थायी चबूतरासँ फिसलि भीजल माटिमे पड़ैत अछि। ई छोट घटना ‘बाहरक पाठशाला’क समस्त भौतिक तर्क उद्घाटित करैत अछि : शिक्षाक पन्ना अछि, शिक्षक अछि, बच्चा अछि, मुदा स्थिर मेज, सूखल जमीन आ सुरक्षित आवागमन अपूर्ण अछि। पछिला अध्यायक प्रधान-पत्र नगरमे घुमन्तु शिक्षणक बाट, भाषा-सहायता, सुरक्षा आ खर्चक प्रस्ताव माँगैत अछि; ओ औपचारिक नामांकनक निर्णय नहि। रेवा स्पष्ट करैत छथि जे छात्रसभक रोजक बाट उनकासभसँ पुछने बिना तय कएल जाए तँ पुरान बहिष्कार नव रूपमे लौटत। एहि अध्यायमे कथाक केन्द्र प्रमाणक शब्दार्थसँ प्रमाणक व्यवहार्य परिवहन-संरचना दिस बदलैत अछि।

पद्मा अपन दू भूमिका—कक्षा-सहायता आ बैठकीक भाषा बुझौनाइ—अलग समय आ पारिश्रमिकसहित लिखएबाक कहैत छथि। संकेत फूटल स्क्रीनवला फोन आ पुरान स्पीकर आनैत अछि, मुदा तेज आवाजसँ कठिनाइ होएबला बच्ची फट्टाक चिह्न चाहैत छथि; बच्चीक पसिन्न देखिकऽ स्पीकर थैलामे राखल जाइत अछि। तकनीकी सहायता एतय ‘सभकेँ एके यन्त्रसँ सुनबाउ’ नहि; उपयोगकर्ताक पसिन्न आ क्षमता अनुसार माध्यम बदलनाइ अछि। पद्मा बच्चीक इशारा अर्थवान बनबैतहुँ पहिने स्वयं बच्चीसँ पुष्टि करैत छथि। जखन सहयोगी आवाजक प्रतिनिधि बनैत अछि, तखन ओ प्रतिनिधित्वक स्वामित्व नहि पबैत।

राजइनार : बाटक नक्शा नहि, असमान देहक बाधा

राजइनार लग झुकल खूँटा, ढील जंगला आ पानिक प्रश्न एकठाम जड़ैत अछि। ललित स्पष्ट करैत छथि जे रस्सी फेर कसब स्थायी मरम्मति नहि। मदनक गाड़ी रोगी-ढुलाई आ बालकसभक नियमित आवागमन दुनू लेल एक समय उपलब्ध नहि भऽ सकैत; भाड़ा घटाओल जा सकैत अछि, तेल आ चालकक मजदूरी मेटा नहि सकैत। पद्मा रंगक संकेतक संग शब्द आ आकृतिक माँग करैत छथि; अलग दृश्य-समझक लोकसँ एके लाल/नील अर्थ अपेक्षित नहि। एहि विवरणसभसँ ‘सुरक्षित रास्ता’क अमूर्त वाक्य कतेको परस्पर आश्रित श्रम, समय आ संवेदी आवश्यकतामे विभाजित होइत अछि।

जतन, रेवा आ मदनक अलग-अलग हाथक वस्तु—कापी, पानिक बरतन, वाहनक चाबी—बाटक अलग उद्देश्य सूचित करैत अछि। जतन कागदक नाव आ पानीक बीचक खेलमे नव मार्ग खोजैत अछि; पद्मा ओकरा याद करबैत छथि जे पैदल नहि चलि सकनिहार बच्चा लेल सेहो बाट चाही। ई अध्यायक सशक्त दृश्य अछि : विद्यालयक नक्शा एक तीरक रेखाचित्र नहि, विभिन्न देह आ कामक कठिनाइपर निर्भर साझा रचना बनैत अछि। कागदक नाव पूर्ववर्ती नदी-कथाक स्मृति जगबैत अछि, मुदा ओ वास्तविक परिवहन-अवसंरचना नहि; बिरसीक उत्तर ‘सूखल बाट’ खोजबाक व्यवहार्यता लौटबैत अछि।

ललित बाँसक अस्थायी अवरोध बनबैत छथि, लिखित–चित्रात्मक चेतावनी जोड़ैत छथि आ सामग्री तथा श्रमक अलग रसीद बनबैत छथि। इनारक पानि पिबए योग्य अछि की नहि, से जंगला-जाँचसँ सिद्ध नहि; जमीनक स्वामित्वक प्रश्नो अलग। अतः अध्यायक फल अस्थायी सुरक्षा-प्रबन्ध अछि, न पूर्ण मरम्मति, न जल-गुणवत्ताक प्रमाण, न सीमाक कानूनी निर्णय। ई तीनू अपूर्णताकेँ एक श्रेणीमे डालि ‘विद्यालयक समस्या हल’ कहब मूल पाठक विपरीत हएत।

सरस्वतीक बेटी, प्रतिमाक नकल आ पेशागत स्वायत्तता

सरस्वती ठाकुर अपन कंघी-कैंचीसँ रोजीरोटी कमबैत छथि; हुनकर बेटी उपकरणक तार सम्हारबाक शिक्षा चाहैत छथि। विद्यालय कर्मचारी मातृव्यवसायकेँ पुत्रीक नियति मानब सहज बुझैत अछि। सरस्वती अपन व्यवसायकेँ तुच्छ नहि कहैत छथि; ओ बेटीकेँ अपन रुचिक शिक्षा चुनबाक अधिकार चाहैत छथि। रातिक अनिश्चित कामक समय बदललासँ आय घटबाक जोखिम उठबैत ओ प्रशिक्षणक सूचना जुटएबाक निर्णय करैत छथि; फीस एखन नहि जुटल। ई ‘व्यवसायसँ मुक्ति’क सरल कथा नहि, माँक श्रम-अधिकार आ बेटीक भविष्यक भिन्न इच्छा बीचक संयोजन अछि। संकेत बच्चीकेँ चलैत उपकरण हाथ नहि लगबैत अछि; विद्युत्-सुरक्षा सीखनाइ प्रशिक्षणक पहिल वास्तविक अवस्था बनैत अछि।

प्रतिमा राजवंशी अपन परिवारक पुरान दान-स्मृति, नकल-बही आ नक्शा आनैत छथि। सीमा-नापमे पुरान चिन्ह आ वर्तमान मार्गक पूर्ण मेल नहि। ओ भू-अधिकारक अन्तिम दावा न करैत विद्यालयक प्रवेश-बाटक घेराबन्दी रोकबाक आग्रह करैत छथि, जाधरि मूल आदेश आ सही नाप प्राप्त नहि होए। हुनकर एक महत्त्वपूर्ण कथन ई जे सार्वजनिक भूमि सिद्ध भेल तँ अनुमति संस्थागत विद्यालयक होएत, दानक परिवारक मनमानी नहि। एहि तरहें

निजी वंश-स्मृतिक अधिकार स्वयं सीमित होइत अछि। मुदा राजइनारक किछु खूँटा निजी जमीनपर सेहो भऽ सकैत अछि—ई वैकल्पिक सम्भावना नैराक लेखामे सुरक्षित रहल अछि।

कार्यवृत्तक बहुस्तर : अनुमति, निजता, भुगतान आ भोजन

अस्थायी पाठशालाक समिति-कार्यवृत्त एकटा विशिष्ट आख्यान-विधि बनैत अछि। पद्मा अपन सुनबाक/बुझएबाक सेवाक सीमा लिखबैत छथि; बच्चा आ परिवारक गोपनीय पहिचान सार्वजनिक करबाक अधिकार स्वयं नहि लैत छथि। संकेत विद्यालयक कामक प्रमाणक रूपमे निजी चेहरा देखाएबाक अनिवार्यता अस्वीकार करैत अछि। नैरा तीन अलग पञ्जी पहिचानैत छथि—पाठ, इनारक मरम्मति आ यात्राक सूची—आ तिनकर सूचना-उद्देश्यक अनुसार पहुँच आ गोपनीयता सीमित करबाक कहैत छथि। मिथुनक खोजक कागद अलग रहैत अछि; सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्ना एतय नहि अनल जाइत अछि। एहिमे पूर्ववर्ती अध्यायसभक अभिलेख-नैतिकता व्यवहारिक प्रशासनिक नियम बनैत अछि।

प्रधानक उत्तर अस्थायी ओसारक पढ़ाइ बाधित नहि करबाक सूचना दैत अछि, मुदा नगरमे फेर घुमबाक नव अनुमतिक लेल अभिभावकक समझल सहमति, सुरक्षित मार्ग आ खर्च-प्रस्ताव औपचारिक रूपमे जमा करबाक निर्देश अछि। केवल हस्ताक्षर पर्याप्त नहि; पद्मा प्रत्येक परिवारक भाषामे बुझल सहमति चाहैत छथि। मदनक रोगी-वाहनक समय विद्यालयक खातामे चुपचाप जोड़ल नहि जाएत। अन्ततः घुमन्तु पाठशालाक प्रस्ताव तैयार अछि, अनुमति पूर्ण नहि; यात्रा-तिथि तय नहि; विद्यालय-नामांकन अलग शेष। एहि ‘अधूरा’ अवस्थामे लेखक संकल्पकेँ उपलब्धि कहबाक प्रलोभन नियंत्रित करैत छथि।

रुखसानाक सामूहिक भोजनक प्रसंग पहिल ‘मृतकक रसोइ’सँ छोट, मुदा महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध रखैत अछि। भोजन आवश्यक अछि, किन्तु अनाजक मूल्यक संग रान्हनिहारक समय लिखल जाए। उर्मिला थाकल देहसँ पानि भरि रुखसानाकेँ सहारा दैत छथि; लेखाक बहस ‘भात खाएब पहिने’ कहि स्थगित करैत छथि, समाप्त नहि। ललितक बचल काठक मूल्य शून्य लिखाइत अछि, भविष्यक पक्का बेञ्च बनौनिहार श्रम शून्य नहि। ई दूटा सूक्ष्म आर्थिक अन्तर उपन्यासमे श्रमकेँ प्रतीकात्मक सम्मान मात्र नहि, व्यवहारक देय बनबैत अछि।

कथनकाल, सहभागी दृष्टि आ रचनात्मक सीमा

अध्याय एक आधुनिक दिनक भोरसँ राति धरि चलैत अछि; एतय स्वतंत्र प्राचीन काल-दृश्य नहि। अरण्यकाण्डक पहिनुका अहल्या–एकलव्य प्रसंगसँ अन्तर ई अछि जे ‘बाहरक पाठशाला’ अपन कालविन्यास पूर्णतः समकालीन सामूहिक निर्णयमे रखैत अछि। तृतीयपुरुष वाचक वस्तु-केंद्रित दृश्यसँ बहु-पात्रीय बैठकमे प्रवेश करैत अछि। बच्चीक मूक/संकेतात्मक भागीदारी, रेवाक स्थान-संबन्धी आग्रह, मदनक सेवा-समय, सरस्वतीक बेटीक पेशागत रुचि, प्रतिमाक पारिवारिक दावाक सीमा आ ललितक सुरक्षा-जाँच—एहि सभक अपना-अपना अभाव आ जिम्मेदारी अछि। एतय ‘समूह’ समान आवाजक एकटा भीड़ नहि।

आलोचनात्मक आपत्ति सेहो अछि। एकहि बैठकीमे विद्यालय, श्रम, व्यावसायिक चयन, पानि, बाट, अभिगम्यता, निजी सूचना आ भोजनक समस्या अत्यन्त व्यवस्थित क्रममे आबैत अछि। किछु पात्र लगभग प्रत्येक आपत्तिक तुरन्त नीक वर्गीकरण करि दैत छथि; एहि कारण औपन्यासिक दृश्य कखनो-कखनो कार्यशालाक कार्यवृत्त जकाँ

लगैत अछि। मुदा कापीक धँसल ईंट, स्पीकर अस्वीकार करैत बच्ची, मदनक असमर्थ समय-सारणी, फीसक अभाव आ अवरोध-पछिला अन्हार लऽ कऽ कथा जीवनक अप्रबन्धनीय भाग सेहो रखैत अछि। आखिरी निर्णय ‘कियो एकटा लोक चुपचाप बच्चासभक बदला फैसला नहि करत’ एक वैधानिक-नैतिक नियमक आरम्भ अछि, पूर्ण उपलब्धि नहि।

वन-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय २५–३६ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

वनक पुनर्परिभाषा : निष्कासन नहि, अस्थायी पहुँचक समाज

एहि बारह अध्यायक वन-पर्वमे ‘वन’ केवल वृक्षक भौगोलिक परिसर नहि। रेलक खाली जगह, नावक तट, अस्थायी ओसार, वनमार्गक प्रवेश, हाट, विद्यालयक दरबज्जा, भीजल छप्पर आ राजइनारक गली—ई सभ स्थान नागरिक अधिकारक अस्थिर सीमा बनैत अछि। अध्याय २५ मे फकीराक जीविकाक समय कार्यालयक सुनवाई-सारिणीसँ टकराइत अछि; अध्याय २६ मे गुहक नाव-कथा आधुनिक नाविकक मजदूरी आ सुरक्षाक भेद स्पष्ट करैत अछि; अध्याय २७क शबरी-पुनर्पाठ भोजनक संग स्त्रीक श्रम देखबैत अछि; अध्याय २८क हिडिम्बा प्रसंग सहमति आ वनमार्गक प्रवेशक मुद्दा खोलैत अछि। अध्याय २९–३० मे अफवाहक छवि आ मिथुनक वास्तविक गुमशुदगी एक-दोसराक स्थान लेबाक खतरा बनैत अछि; अध्याय ३१–३२ मे घायल एकलव्य आ मृणालक जिज्ञासाक माध्यमसँ सीखबाक अधिकार प्रश्नित होइत अछि; अध्याय ३३–३६ मे स्वयं पाठ-निर्माण, इतिहासक सम्पादन, शब्दार्थ आ विद्यालयक वास्तविक यात्रा केन्द्रमे आबैत अछि। ई क्रम वनसँ ‘नागरिक जीवनक बाहर’ रखल लोकक अलग-अलग प्रवेश-शर्तक रूपरेखा बनबैत अछि। (मूल अ.२५–३६)

आख्यानक कारण-सम्बन्धक कसौटीपर ई बारह प्रसंग एक समान सफल नहि। बच्चा-चोरीक अप्रमाणित वीडियोसँ साजिदक दृश्य-पाठ, ताहिसँ विद्यालयक फट्टापर देखबाक त्रुटिक अभ्यास, फेर भिजल पुस्तक आ इतिहासक अपूर्ण प्रदर्शन, अन्ततः दुई समान फोटो-प्रसंग—एहि अनुक्रममे सुस्पष्ट वैचारिक आ वस्तुगत निरन्तरता अछि। रेवाक बच्चाक अस्थायी शिक्षासँ औपचारिक नामांकनक व्यावहारिक प्रश्न अगिला चरणमे पुनः उठैत अछि; अध्याय ३५क ‘कक्षा काल्हि कतय’ सीधे अध्याय ३६क नगर-फेर योजनामे रूपान्तरित होइत अछि। मुदा गुह, शबरी, हिडिम्बा आ एकलव्यक कालधारा एके घटनात्मक कारण-जालक अविच्छिन्न श्रृंखला नहि : हुनकर सम्बन्ध आधुनिक संकटसँ तुलनात्मक, विषयगत आ कथन-सम्पादकीय स्तरपर अछि। एहि भेदक बिना ‘सभ पात्र परस्पर साक्षात् जुड़ल’ कहब अनुचित हएत।

तीन काल-प्रणाली आ कथा-वाचनक भिन्न उपकरण

पहिल समय रोजक भोर–दुपहरि–साँझक समय अछि, जाहिमे हाजिरी, बाट, भोजन, मजदूरी आ कागदक संरक्षण घटैत अछि। दोसर समय कार्यालय, ठेका, विद्यालय-प्रवेश आ मरम्मतिक प्रत्याशित समय—‘अगिला बैठक’, ‘बाजारक दिन’, ‘जाँचधरि’, ‘बाकी भुगतान’—अछि; ई भविष्यक प्रशासनिक अनिश्चितता कथाक आवृत्त तनाव बनेल रखैत अछि। तेसर समय कल्पनात्मक प्राचीन कालधारा अछि : गुह, शबरी, हिडिम्बा, अहल्या, एकलव्य,

वाचस्पति–मृणाल, भामती, उदयन आ गङ्गेशक संवाद। प्रत्येक अध्याय एही तीनू स्तरकेँ समान अनुपातमे नहि दैत। अध्याय २९ मुख्यतः समकालीन जाँच अछि; अध्याय ३२ आ ३३ विस्तृत द्विकालीनता रखैत अछि; अध्याय ३६ पूर्ण आधुनिक सामूहिक प्रक्रियामे स्थित अछि। अतः ‘वन-पर्व निरन्तर समान द्विकालीन दृश्यपर चलैत अछि’ ई वर्णन गलत।

कथनकालक अवधि सेहो बदलैत अछि। अफवाहक सार्वजनिक समय तेज—छवि कटब, साझा होएब, आरोप बनब—मुदा वास्तविक व्यक्ति-पहिचानक सत्यापन धीमा। विद्यालयक अस्थायी पाठ रोज चलैत अछि, औपचारिक आदेश पाछाँ अछि। भीजल पन्ना सुखएबाक समय प्रकृति निर्धारित करैत अछि; शास्त्रार्थमे उत्तर अगिला दिन धरि बचैत अछि; भामतीक दीपकक समय शरीरक विश्रामक प्रश्न उठबैत अछि। ई असमान अवधि कथाक राजनीतिक अर्थ रखैत अछि : त्वरित गलत घोषणा आ विलम्बित न्याय या भुक्तानीक बीच फरक कथ्यसँ बेसी रचनागत लय बनैत अछि। तथापि बहुत अध्याय ‘लिखित प्रश्न’, ‘उत्तर शेष’, ‘अगिला बैठक’ पर समाप्त होएबाक कारण चरमबिन्दुक नाटकीय प्रभाव कखनो पतला पड़ैत अछि। ई कलात्मक सीमा के साक्ष्यसहित देखब जरूरी अछि।

प्रमाण-शासन : चारि भिन्न भूल आ चारि भिन्न सुधार

वन-पर्वक प्रमाणक समस्या एकटा शब्दक व्याप्ति नहि। प्रथम, झूठ वा असमर्थित सार्वजनिक आरोप : बच्चा-चोरीक वीडियो आ मोहनक लाल-घेरावला छवि—मूल सन्दर्भ/स्रोत जाँचला पर विशिष्ट आरोपक आधार बदलैत अछि, बच्चाक खोज अलग रहैत अछि। द्वितीय, पाठमे रिक्ति : ‘कृतसारा’क अपूर्ण पाँति अर्थनिर्णय रोकैत अछि; मूल प्रति वा सन्दर्भ चाही। तृतीय, इतिहासक लेखा : तख्तीक कटल अक्षर आ मूल पंजीक अनाम स्त्री-श्रमक समस्या अलग साक्ष्य माँगैत अछि। चतुर्थ, दार्शनिक अनुमानक सीमा : उदयनक शास्त्रार्थमे अदृष्टक पर्याप्तता/चेतन कारणक अनिवार्यता प्रश्न अछि; गवयक उपमानमे शब्दार्थ-बोध आ विशिष्ट व्यक्तिक पहिचान अलग। ‘अनदेखल’ आ ‘एक्के सन देखल’ परस्पर प्रतिलोम प्रतीत होइतहुँ प्रमाणक अलग प्रक्रिया छथि। (अ.२९–३०, ३३–३५)

आख्यानगत आलोचनात्मक उपकरण एहि भेदकेँ स्पष्ट करबाक लेल उपयोगी अछि : कथनकर्ताक विश्वसनीयता, विषयक अवच्छेद, हेतु आ साध्यक सम्बन्ध, अनुपस्थित प्रमाणक निष्कर्ष-सीमा, विपरीत पक्षक यथार्थ पुनर्प्रस्तुति। मुदा एहि उपकरणक आधुनिक उपयोगकेँ प्राचीन ग्रन्थक अक्षरशः मत अथवा कथामे घटल घटना समान मानब नहि। उदाहरणतः एक छविसँ विशिष्ट अपराधक निष्कर्ष असिद्ध होएब आ ईश्वरक पक्षमे दार्शनिक अनुमानक प्रश्न दुनू ‘प्रमाण’क अन्तर्गत रहितहुँ प्रमाणक्षेत्र, साक्षी आ सत्यापनक शर्त भिन्न अछि। एहि विभेदक पालन करब पाठमे दार्शनिक विश्लेषण आरोपबाक बदला पाठसँ प्रश्न उठएबाक बाट अछि।

पात्र-विकास आ बहुस्वरताक प्रमाण

वन-पर्वक स्त्रीक स्वतंत्र निर्णय एकर प्रमुख उपलब्धि अछि, मुदा ‘सभ स्त्री प्रतिरोधक एके प्रतीक’ नहि। रेवा बच्चाक झूठ पता भरबाक अस्वीकार करैत छथि; चन्दा प्रशिक्षणक जोखिम आ देय ठहरबैत छथि; मीरा अस्थायी कक्षाकेँ औपचारिक नामांकन नहि कहैत छथि; सोमरी दलक लोकक बदला अपन अधिकारक सीमा स्पष्ट करैत

छथि; हेमा पहिल आरोप संशोधित करैत छथि; नसीमा कटल अक्षरक भौतिक सीमा बतबैत छथि; राजो मजदूरी आ सहायता-रसीद अलग करबबैत छथि; लता आरोप-सुधारक सहमति दैतहुँ गुमशुदगीक खोज छोड़ैत नहि; सरस्वती बेटीक रुचिक लेल अपन कामक समय बदलबाक निर्णय करैत छथि; प्रतिमा वंश-स्मृतिक सम्भावित दावाकेँ सार्वजनिक उपयोगक नियमसँ सीमित करैत छथि। एहि सभक निर्णय समान सामाजिक परिणाम नहि दैत, न समान जोखिम। (अ.२९–३६)

बालक जतन आ बिरसीक लिखबाक गलती, हँसी, प्रश्न आ बाटक चित्र कथनकेँ वयस्कक संवाद-सारांशसँ बाहर लऽ जाइत अछि। जतनक उलटल ‘ज’ मेटाओल नहि जाइत; बिरसीक ‘ब’ पन्नामे रहबाक अधिकार अछि; एक बच्ची तेज आवाजक स्थानपर चित्रक माध्यम चुनैत अछि। एहिमे बालकक सीखबाक प्रक्रिया स्वयं ज्ञानक स्रोत बनैत अछि। मुदा सर्वाधिक प्रभावशाली परीक्षा केवल बच्चाक उपस्थिति नहि, हुनकर प्रश्नसँ कार्यविधि वास्तवमे बदलल की नहि से अछि : आवाज न बजेनाइ, नवल मार्ग जोड़नाइ, मूल चित्रक उपयोग-अनुमति पूछनाइ—ई ठोस परिवर्तन बहुस्वरताकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

पारिस्थितिकी, श्रम आ वस्तुक अर्थ

पानि एहि पर्वमे दृश्य-सज्जा नहि। बाहाक अवरोध, नावक क्षमता, भीजल ओसार, टिनक छप्पर, कागदक रेशा, राजइनारक उपयोग-अनिश्चितता आ बाढ़मे बदलैत गलिक बाट कथानकक कारणात्मक पर्यावरण छथि। मुदा ‘पानि’ हर प्रश्नक एके रूपक नहि : कतहु जल-प्रवाह, कतहु नमीसँ नष्ट अभिलेख, कतहु सुरक्षित पेयजल, कतहु आवागमनक बाधा। पर्यावरणीय आख्यानशास्त्र लेल ई वस्तुगत अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। जलसमस्या कतहु प्रशासनिक लापरवाहीक पक्का अपराध सिद्ध करैत अछि एहन निष्कर्ष केवल वातावरणक वर्णनसँ नहि निकलैत। जोखिमक रिपोर्ट, माप, मरम्मति-रसीद आ वास्तविक दायित्व अलग शोध-विषय छथि।

श्रमक अर्थ भोजन, प्रतिलिपि, कागद निर्माण, छप्पर, नाव, विद्यालयक सामग्री, अनुवाद, संकेतमाध्यम आ परिवहनमे बदलैत अछि। आधा मजदूरी भेटब आ बाकी अनाज-देय, भुगतानक तिथि मात्र लिखल जाएब, प्रशिक्षणक पारिश्रमिक पहिने निश्चित होएब, बचल काठक सामग्री-मूल्य शून्य रहितहुँ भविष्यक बेञ्चक श्रम अलग होएब—ई सभ संख्यात्मक भेद साहित्यिक दृष्टिसँ सार्थक छथि। लेखक श्रमकेँ केवल ‘गरिमामय’ कहि प्रशंसित नहि करैत, श्रमिकक प्राप्ति-रसीद आ समयक दामक विवादमय बनबैत छथि। किन्तु एहि पद्धतिक पुनरावृत्ति सेहो अछि : प्रत्येक नव पात्रक तुरन्त लिखित देय-निर्धारण कथाक सहज प्रवाहमे यान्त्रिक अनुशासन आनि सकैत अछि।

आलोचनात्मक प्रतिपक्ष आ वन-पर्वक वास्तविक निष्कर्ष

पर्वक मूल उपलब्धि बाहर रखल लोकक अनुभवकेँ प्रशासनक आधिकारिक वर्गीकरणसँ टकराएब मात्र नहि, ओ वर्गीकरणक त्रुटि सुधारलापर कोन प्रश्न शेष रहैत अछि से देखाएब अछि। गलत आरोप सुधरल, मुदा बच्चा नहि भेटल; प्रशिक्षण शुरू भेल, नामांकन नहि; मजदूरीक दामक पाँति लिखल गेल, पूर्ण भुगतान नहि; इतिहासक तख्तीपर चेतावनी जुड़ल, अन्तिम नामावली नहि; फोटोमे पहचान अप्रमाणित रहल, खोज जारी; बाहरी ओसारपर

पढ़ाइ जारी रहबाक अनुमति अछि, घुमन्तु फेर एखन प्रस्ताव मात्र अछि। एहि अधूरा परिणामक श्रृंखला कथाक नैतिक विश्वसनीयता बनबैत अछि।

संगहि दूटा महत्त्वपूर्ण शिल्पगत सीमा अछि। पहिल, पात्र अनेक बेर जटिल प्रश्नमे असामान्य रूपसँ सटीक सिद्धान्तीय भेद तत्काल बोलि दैत छथि; स्थानीय संवादक वर्गीय, पीढ़ीय आ भावनात्मक अन्तर किछु प्रसंगमे कम सुनाइत अछि। दोसर, घटना–अर्थ–पञ्जी–अपूर्ण फलित अवस्थाक पुनरावृत्त गढ़न कथाक लय अनुमानित करबैत अछि। एहि दोषकेँ केवल ‘शिक्षाप्रद रचना’क गुण कहि हटाएब निष्पक्ष आलोचना नहि। मुदा लताक तिक्तता, रेवाक थकान, सोमरीक नौकरी गुमाबाक भय, बच्चाक चंचलता आ मजदूरीक अपूर्ण भुगतान एहन विरोधी जीवन-साक्ष्य छथि जे अतिव्यवस्थित बौद्धिक कार्यक्रमकेँ सर्वथा निष्कण्टक नहि होए दैत।

वन-पर्वक समाप्ति कोनो एक विजय-दृश्य नहि, साझा निर्णय-व्यवस्थाक स्थापना दिस छोट आंदोलन अछि। प्रथम अध्याय ‘मृतकक रसोइ’मे जीवित व्यक्तिक ऊपर मृत्युसूचनाक दस्तावेजी आक्रमण छल; एहि बारहम वन-अध्यायक अन्तमे बच्चाक नन्हा आवाज ओहि दस्तावेजीय अधिकारक शर्तक पुनर्निर्माण करैत अछि—बिना बुझने कियो ओकरा बदला निर्णय नहि लेत। महाभारतक वन-पर्व आ रामायणक अरण्यकाण्डसँ एकर सम्बन्ध कथात्मक यात्रा, बहिष्कार, श्रम आ ज्ञानक प्रश्नमे अछि; आधुनिक पात्रसभकेँ पुरनका पात्रसभक जातीय वा ऐतिहासिक हूबहू समकक्ष ठहराएब पाठक मंशाकेँ विकृत करत।

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड

अध्याय ३७ — रान्हनिहारक नाम

भीजल ईंटक आरम्भ : भोजनक स्थान शिक्षाक स्थानसँ टकराइत अछि

अध्याय बरखाक बाद विद्यालयक ओसारपर रुखसानाक प्रवेशसँ खुलैत अछि। हुनकर पहिल क्रिया चूल्हि जराएब नहि, भीजल ईंटक चूल्हि हटाएब अछि। धुआँ आ कादो सँ बच्चासभक कापी सुरक्षित रखबाक प्रश्न हुनका रसोइक ‘सहायिका’क अपेक्षा स्थानक तकनीकी निर्णायक बनबैत अछि। मीरा दू दिनक भोजनक विचार लऽ अबैत छथि, मुदा रुखसाना तुरन्त तीनटा प्रश्न उठबैत छथि : बच्चा कतेक, रान्हनिहार के, दाम के देत। ‘अनाज दान’ आ ‘भोजन तैयार’ बीच श्रमक जे चरण छिपल अछि, आरम्भिक दृश्य ओकरे खोलैत अछि। विद्यालयक बाहरी ओसारमे पढ़ाइ चालू रहितहुँ घुमन्तु पाठशालाक अन्तिम अनुमति आ औपचारिक नामांकन एखन नहि अछि; एहि अपूर्णतासँ भोजनक तात्कालिक व्यवस्था आ शिक्षा-अधिकारक दीर्घकालिक अनिश्चितता संग-संग चलैत अछि।

रेवा अपन पुत्र जतनक पढ़ाइ बाधित नहि करबाक शर्तपर एक घड़ी सहयोगक सम्भावना कहैत छथि। कर्मचारी ‘घरक माएसभ’क निःशुल्क उपलब्धता कल्पैत अछि; रुखसाना ओकर रजिस्टर बनएबाक सशुल्क समयक उदाहरणसँ असमान मूल्याङ्कन देखबैत छथि। एतय तर्कक बल भावुक स्त्री-महिमामे नहि, तुलनीय श्रम-स्थितिक प्रश्नमे अछि। रेवा स्वयं निर्णय लेल सक्षम छथि—एक घड़ी स्वैच्छिक परोसब, अगिला दिन स्थायी सेविका न कहल जाएब। सेवा करबाक स्वतन्त्रता आ सेवा नहि करबाक स्वतन्त्रता दुनू सुरक्षित राखब अध्यायक

मूल नैतिक सीमा अछि। ‘स्वेच्छा’केँ सार्वजनिक मुफ्त-श्रमक स्थायी स्रोत मानब, रुखसानाक दृष्टिमे, दानक नामपर अघोषित अनुबन्ध बनायब होइत।

तीन शीर्षकक पन्ना : श्रम-विभाजनक पाठकीय देखाइ

वार्षिक साझा रसोइ–मेहनताना दिवसक पहिने फट्टापर तीन शीर्षक लिखल जाइत अछि—सामग्री, भुजाइ एवं तैयारी, रसोइ एवं परोसबाक श्रम। कथा एक साधारण सूचीकेँ क्रियात्मक संरचना दैत अछि : प्रत्येक आगन्तुक अपन काम ओहि सूचीक भीतर कतय राखत, से बातचीतक परिणाम बदलैत अछि। रघु साहु कनसारक आगि, भुजाइक समय आ ढुलाईक दामकेँ कच्चा अनाजक मालिकानासँ अलग करैत छथि। चन्द्रिका राय तैयार भोजनक दरमे सामग्री, दुकान बन्द रहबाक अवसर-हानि आ लाभक वैधताक प्रश्न उठबैत छथि। नसीम इदरीसी सिलल कपड़ाक थैलीक संख्या, सिलाइ-समय आ उपयोगक निर्देश लिखैत छथि, मुदा बच्चाक नाम सार्वजनिक थैलीपर सिअबाक आग्रह नकारैत छथि। एतय कागदक बहुलता लेखकीय सजावट नहि; हर पेशाक अभिलेखीय इकाई अलग अछि।

दुर्गा गंगाईक मखान-मिश्रणक व्यापारमे कम दामक पहिल खेप भविष्यक सम्भावित ग्राहक तकबाक उपाय अछि; एकरा निःशुल्क दान मानला पर छोट विक्रेताक विपणन-अधिकार अदृश्य भऽ जाएत। हुनकर पुरान पन्नामे भेटल ‘गहुमा’क ऐतिहासिक अर्थ अस्पष्ट अछि। नैराक फोटो लेबाक अनुमतिक प्रश्नपर दुर्गा पहिने बिक्रीक हिसाब चाहैत छथि। ई प्रसंग कथाक दस्तावेज-रुचिक भीतर एक प्रतिरोध अछि : शोधक उत्सुकता छोट व्यापारक तत्कालिक आर्थिक आवश्यकता पर स्वतः अग्राधिकार नहि पबैत। पुरान नाम भेटल, मुदा ओकर स्थान वा नदीसँ निश्चित सम्बन्ध सिद्ध नहि भेल। एहन नकारात्मक सीमा इतिहास-विवेचनक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

फरीदा कुरैशी ढक्कनदार बर्तन, तराजू आ आपूर्तिक लिखित दर लैत छथि। हुनकर घरक मांस-बिक्री व्यवसाय देखिकऽ उठल बहिष्कारक संकेत पर ओ माप, स्वच्छता आ जाँचक समान कसौटी माँगैत छथि। पुरान स्वास्थ्य-जाँचक रसीद देखाओल गेल, मुदा ओकरा सभ सम्भावित आरोपक अन्तिम निराकरण नहि कहल गेल। फरीदा निरीक्षण माँगबाक विकल्प खुल्ला रखैत छथि। कथानक एहि बिन्दुपर पेशागत पूर्वग्रहक प्रतिवाद करैत अछि, किन्तु तुरन्त सामाजिक सद्भावक सुखान्त नहि रचैत। रघु, चन्द्रिका, नसीम, दुर्गा आ फरीदाक संवाद पाँच स्वतंत्र व्यवसायिक हित उद्घाटित करैत अछि; ‘समुदाय’क एक ही सामूहिक आवाज ओ सभपर थोपल नहि गेल अछि।

बल्लवक भानसघर : गुप्त परिचय आ सार्वजनिक श्रेयक असमान तर्क

प्राचीन विराटनगरमे भीम ‘बल्लव’ नामसँ भानसघरमे प्रवेश करैत छथि। हुनकर शारीरिक बल आ भोजन-पकबाक ज्ञान अलग बताओल गेल अछि : मसालाक नापक प्रश्नपर ओ अनुभवी धान-कुटनिहार स्त्रीसँ सीखैत छथि। नाममात्र ‘बलवान रसोइया’क चरित्र एतय प्राविधिक सुनबाक क्षमतासँ विस्तृत होइत अछि। राजकीय बहीमे बल्लवक नाम आबि जाइत अछि, मुदा धान चुननिहार, लकड़ी सुखौनिहार आ ज्वाला राखनिहारक नाम ‘भानसघरक लोक’मे समेटल अछि। बल्लव एहि प्रश्नपर बल दैत छथि जे भोजन कम पड़ला पर दोष व्यक्ति पर चढ़त, सफल भेलापर श्रेय ककरा भेटत। हुनकर निर्णय तात्कालिक राजकीय श्रम-न्याय नहि : बहीमे वास्तविक काजक अलग-अलग सूची बनबएबाक आरम्भ अछि।

अन्तर्पाठीयता एहि ठाम विशेष सावधानी चाहैत अछि। बल्लवक छद्मनाम स्वयं आ परिवारक सुरक्षित अज्ञातवास लेल आवश्यक अछि; आधुनिक रुखसानाक नाम भुगतानक सार्वजनिक मान्यता लेल। दुनू ‘नाम’ एक अर्थ नहि रखैत। बल्लवक छिपल व्यक्तित्वकेँ सबहक नाम सार्वजनिक करबाक नीतिसँ बदलि देब ओकर जीवन-सङ्कट नष्ट करब होएत। संगहि रुखसाना, नसीम आ रेवा सेहो प्रत्येक पहचान सर्वत्र प्रकाशित करएबाक आग्रह नहि करैत छथि : बच्चाक विद्यालयक नाम थैलीपर नहि, निजी सूचीमे; स्वैच्छिक एक घड़ीक सेवा स्थायी नियुक्तिमे नहि। उपन्यास नामक अधिकारकेँ ‘कखन, कोना आ कोन प्रयोजनसँ नाम लिखल जाए’क सन्दर्भगत व्यवस्था बनबैत अछि। विराटनगरक दृश्य उपन्यासक पुनर्रचना अछि, महाभारतक ऐतिहासिक घटनाक शाब्दिक दस्तावेज नहि।

अनाजक परिमाण, जलक परीक्षण आ श्रमशील देहक समय

दोपहर धरि चाउरक पूर्ति आ जलावनक अभावसँ भोजन-योजना बदलैत अछि। रुखसाना दुई दिनक प्रस्तावकेँ पहिल दिनक सुनिश्चित भोजन आ दोसर दिनक शर्तसहित व्यवस्थामे रूपान्तरित करैत छथि। ई कथा-घटना निर्णयक वास्तविक परिवर्तन अछि; ‘दू दिन भोजन बनल’ एहन निष्कर्ष गलत। उर्मिला राजइनारक अपरीक्षित पानिक बदला उपयोग योग्य दोसर आपूर्ति-बिन्दुसँ घैल अनैत छथि। हुनकर ढुलाईक समयकेँ अस्पतालक पुरान कपड़ा-ढुलाई बकायासँ अलग लिखल गेल। एहि तीन सम्बन्धमे तीन भिन्न जोखिम अछि—कच्चा सामग्रीक अभाव, अपरीक्षित पानिक स्वास्थ्य-जोखिम, आ एक मजदूरक अलग दिनक बकाया वर्तमान श्रममे लुप्त होएब।

रुखसानाक हाथक फोका, चन्द्रिकाक बन्द दुकान आ विश्राम-समयक बाँटवारा समयकेँ केवल घड़ीक संख्या नहि रखैत; देहक क्षमता आ अवसरक हानि बनबैत अछि। चन्द्रिका आधा घड़ी परोसबाक भार लैत छथि, मुदा ओ सहयोग वर्तमान दिनक अस्थायी समायोजन अछि। जे वृद्ध दानदाता अपन नाम सबसँ ऊपर देखबए चाहैत छथि, हुनकर दानक वजन मेटाओल नहि जाइत; कागदमे ‘चाउर’ लिखि श्रेयक विषय स्पष्ट कएल जाइत अछि। दानक अपमान नहि, श्रमक अपहरण नहि—ई द्वितीय विकल्प कथाक नैतिक परिणाम बनैत अछि। भोजन सफलतापूर्वक बाँटल गेल, बच्चासभ खएल, मुदा औपचारिक नामांकन आ आगामी दिनक बजट बाँकी रहल।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ मूल्याङ्कन

आधुनिक कथा भोरक भीजल चूल्हिसँ साँझक हिसाब-प्रतिलिपि धरि चलैत अछि; प्राचीन कथा बल्लवक पहिल दिन आ रातिक अनुभवक संग अन्तःस्थापित अछि। एहि द्विकालीन संयोजनक आधार समान तारीख नहि, काजक दृश्य-सादृश्य आ नामक सामाजिक कार्य अछि। तृतीयपुरुषक कथन मुख्यतः रुखसानाक अनुभूतिक लग रहैत अछि, मुदा रघु, चन्द्रिका, दुर्गा, फरीदा, रेवा आ बल्लवक प्रश्नसभकेँ पृथक हित दैत अछि। बच्चासभक ‘चुटकी ककर?’क हँसी नाप-जाँचक विचारकेँ भाषणक अपेक्षा दृश्यात्मक बनबैत अछि। भातक नोनक साधारण संवेदना, कपड़ाक थैली, भीजल ईंट आ गरम घैल कथा-भाषाक भौतिक आधार छथि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ एहि खण्डमे ‘दानमे अनाज प्राप्त अछि’ ई हेतु मात्रसँ ‘निःशुल्क भोजन-व्यवस्था सुनिश्चित अछि’ निष्कर्ष नहि निकलैत; ईंधन, पानि, श्रम, पात्र, समय आ निरन्तर भुगतान सभ आवश्यक उपाधि-जाँचक विषय छथि। एहि अर्थमे कच्चा सामग्रीक उपलब्धता पूर्ण सेवाक पर्याप्त कारण नहि। कथाक

उपलब्धि ई अछि जे दस्तावेजक पृथक्करणक परिणाम वास्तविक कार्यक्रम बदलैत अछि। सीमा ई जे अनेक पेशाक प्रतिनिधि बहुत सजग, प्रमाणपरक संवादमे क्रमशः प्रवेश करैत छथि; एहि समुच्चयक नियोजन कखनहुँ पेशा-पञ्जीक क्रमबद्ध प्रदर्शन जकाँ भासि सकैत अछि। रुखसानाक देहगत थकान, चन्द्रिकाक लाभक प्रश्न आ दुर्गाक अपन व्यापारक तात्कालिक आग्रह एहि नियोजित रूपकेँ जीवनक घर्षण दैत अछि। समाप्तिमे रुखसाना भविष्यक अपन दुकान आ कखनो दर्शक बनबाक इच्छा रखैत छथि; न दुकान खुलल अछि, न राजइनारक जाँच पूरा भेल।

अध्याय ३८ — बृहन्नलाक कक्षा

रसोइसँ दर्शकक आसन धरि : पात्रक भूमिकाक परिवर्तन

रुखसाना दोसर भोर घरमे रसीद सुखबैत छथि, भोजन बनएबाक बदला चाह पीबैत छथि, आ रुहानीक नृत्यकक्षा देखबाक निर्णय लैत छथि। पिछला अध्यायक श्रम-सूचीक तुरन्त फल ई नहि जे हुनकर समस्त बकाया भेटल; फल ई जे ओ अपन एक दिनक समयक उपयोग स्वयं चुनैत छथि। मीरा हुनका रसोइक सम्भावित कामक विषयमे पुछए लगैत छथि, मुदा रुहानी हुनकर नाम दर्शकमे लिखए कहैत छथि। दर्शक बनब एतय आलस्य नहि, समाज द्वारा एके व्यक्तिक ऊपर सदा परोसबाक जिम्मेदारी नहि थोपबाक विकल्प अछि। जतनक पयर कापीपर पड़लासँ उठल घबराहट पर रुहानी ‘परीक्षा’क दबाव घटबैत छथि; बच्चाक देहक गति कैँ सीखबाक विषय बनबैत छथि, असफलताक अङ्क नहि।

एहि अध्यायक दृश्यमे ताल, पयरक ठाम, जमीनक पट्टी, बाँहक गति आ दर्शकक तालीक बारम्बार वर्णन अछि। पहिल दृष्टिमे ई नृत्यक रंगीन मध्यविराम बुझि पड़ि सकैत अछि; मुदा कक्षा ककरा कतेक समय, कोन नाम आ कोन शर्तपर भेटत—ई प्रश्न निर्णय करैत अछि। रुखसानाक ताली अध्यायक अन्तिम भागमे पुनः अबैत अछि, जखन जतन पट्टी उठा कऽ अपना स्थान फेर चिन्हैत अछि। ई आरम्भक झिझक आ अन्तक स्वसुधारक लघु पात्र-वक्र अछि; जतन पैघ सार्वजनिक मंच जीतलक, एहन किछु नहि देखाओल गेल।

अर्जुनक बृहन्नला आ रुहानीक अपना परिचय : असमानी अन्तर्पाठ

विराटराजक राजभवनमे अर्जुन बृहन्नलाक नामसँ राजकुमारी उत्तराकेँ नृत्य-गीत सिखबैत छथि; कारण अज्ञातवासक वचन आ सुरक्षाक आवश्यकता अछि। ओ उत्तराक देहक गति सुधरबाक नामपर बलपूर्वक हाथ नहि पकड़ैत छथि; दृष्टि आ तालक माध्यमसँ निर्देश दैत छथि। उत्तराक ‘बाहर अहाँ ककर लोक?’क प्रश्नपर ओ सम्पूर्ण झूठ नव रचबाक बदला अपन उत्तरक प्रतिज्ञागत सीमा मानैत छथि। कक्षाक भीतर अपूर्ण उत्तर शिक्षणक नैतिक भरोसाकेँ पूर्णतः नष्ट नहि करैत, मुदा शिष्यक असन्तोष शेष रखैत अछि। एहि प्राचीन कालधारामे छद्म, मौन आ अधिकार जटिल अछि।

विदेहपुरमे अनुदानक लेल छापल फट्टाक शीर्षक ‘बृहन्नलाक नाच: विशेष हिजड़ा प्रस्तुति’ अछि। एहि वाक्यक विवाद मूल उपन्यासक अत्यन्त स्पष्ट अन्तर्पाठीय परीक्षा अछि। रुहानी कहैत छथि जे अर्जुनक अज्ञातवासक भेष आ हुनकर अपन सामाजिक–व्यक्तिगत स्वपरिचय तुलनीय नहि। पुरान कथाक लोकप्रियता आधुनिक व्यक्तिक

जीवनकेँ ‘भेष’ वा प्रदर्शनक वस्तु मानबाक अनुमति नहि दैत। रुहानी फट्टा तुरन्त फाड़ि कर्मचारीक अपमान नहि करैत छथि; लेखनक अनुमति-शृंखला आ लिखित संशोधन माँगैत छथि। पद्मा फट्टाक शीर्षकक साक्ष्य सुरक्षित रखैत छथि, बच्चासभक छवि नहि। कथा एहि प्रकार पौराणिक तुलना केँ स्वयं प्रश्नांकित करैत अछि—ई ‘मिथकक पुनरावृत्ति’ नहि, मिथकीय समानताक अनुपयुक्त प्रयोगक आलोचना अछि।

प्राचीन बृहन्नलाक संकट—परिचय उजागर भेलासँ अज्ञातवास भङ्ग होयबाक जोखिम—आ रुहानीक संकट—अपने स्वीकृत पहिचानकेँ संस्था द्वारा बिकाउ विज्ञापन बनाओल जाएब—दूनू सामाजिक रूपसँ भिन्न। दुनूकेँ ‘एकरूप पीड़ा’ मानला पर कथाक नीतिगत भेद मेटि जाइत। रुहानी स्वयं कक्षामे बच्चासभकेँ ई अन्तर फेर कहैत छथि; बिरसीक ‘नाटकमे ककर बनब?’क प्रश्न पर उत्तर ‘पहिने कथा पढ़ब’ अछि। पात्रक स्वतन्त्र अनुभवक आरक्षण एतय अन्तरपाठीय शिल्पक उपलब्धि अछि। तथापि एहि भेदकेँ पात्र दू बेर अतिशय स्पष्ट पदमे व्यक्त करैत छथि; आलोचनात्मक पाठकक लेल ई पुनरुक्ति अर्थपूर्ण चेतावनी सेहो, किछु अंशमे उपदेशात्मक विस्तार सेहो बुझि सकैत अछि।

दुलारीक राशन-पर्ची : हस्ताक्षरक असिद्ध सहमति

रुहानीक कक्षा सँ पृथक दुलारी राजवार राशन-सहायताक शिविरक सूचना सुनि अबैत छथि। सामूहिक सहमति-पत्रक अन्तिम पाँतिमे प्राप्त राहतकेँ निजी ऋणक समायोजन मानबाक शर्त लिखल अछि। ‘सभ दस्तखत करैत अछि’ कर्मचारीक आग्रह वैयक्तिक सहमतिक प्रमाण नहि। दुलारी कागद पढ़ैत छथि, पाँतिक अर्थ पद्मा सँ स्पष्ट करबैत छथि, हस्ताक्षर नहि करैत छथि, आ लिखित प्रति लैत छथि। बादमे कर्मचारीक नोटमे राशन-प्राप्तिक अधिकार छोड़ल नहि गेल अछि, ऋण अलग निर्णयक विषय अछि। तथापि एहि दिन राहत वितरित नहि भेल। ‘अस्वीकृत अनुबन्ध’ आ ‘प्राप्त अधिकार’क अन्तर कथा निरन्तर स्पष्ट रखैत अछि।

दुलारी वापस घूमि तीन दिनक बचल अन्न आ चारि जनक घरक गणना अधिकारीकेँ सुनबैत छथि। कर्मचारी आवेदनमे ई परिस्थिति जोड़बाक लेल तैयार होइत अछि, वितरणक वचन नहि दैत। कथनक समय एतय किछु क्षण लेल स्थिर भऽ जाइत अछि : सहायता नहिं भेटबाक जोखिम संख्या मे प्रकट होइत अछि। दुलारीक एहन गणना करुणाक प्रतीक मात्र नहि, अभिलेखमे तात्कालिक भूखक मात्रा रखबाक प्रयास अछि। एतय अधिकारक भाषा रुखसानाक खाद्य-हिसाबसँ जुड़ैत अछि, मुदा एक ओर भोजनक सामुदायिक आयोजन, दोसर ओर राज्यसँ राशनक अपेक्षित वितरण अछि; दुनूकेँ समान प्रशासनिक प्रक्रिया मानब गलत।

कक्षाक खर्च, अपन पेशाक चुनाव आ प्रशिक्षणक आधार

भोला यादव दूधक आपूर्तिक पिछला उधारी आ वर्तमान कक्षाक दाम अलग चाहैत छथि; भुगतानक तिथि लिखल गेल, पैसा हाथमे पहुँचल नहि। फूलमती तियर अपन माछ पकड़बाक जालकेँ बच्चासभक सजावट बनएबाक अनुमति नहि दैत छथि, कारण ओकर गाँठ देह फँसा सकैत अछि; ओ अलग छाँह-जालीक नमूना आ दर दैत छथि। दूनू प्रसंगमे कारीगरीक विशेषज्ञता ‘जनसाधारणक हस्तकला’क एक नारा नहि; भौतिक वस्तुक उपयुक्त उपयोग तय करबाक अधिकार अछि। फूलमतीक साझाक माछ-जालक पुरान लेखा अधूरा रहैत अछि, आ कक्षाक नव मजदूरीक लेखा स्वतंत्र।

फरीद चिक पारिवारिक मांस-विक्रय व्यवसायक संग विद्यालयक ताल-शिक्षा अपन समयमे राखबाक कोशिश करैत अछि। परिवारक सभ सदस्य सहमत नहि छथि; ओ प्रत्यक्ष विरोधक झूठ कथा नहि बनबैत, अपन समय-पञ्जी बनबैत अछि। रुहानी ‘हर पाछाँ पड़ल ताल गलत’ नहि मानैत छथि, बच्चाक चालक अनुसार ताल बदलबाक बात करैत छथि। प्राचीन उत्तराक पाठक लग एक परिचारिकाक कन्या सिखएबाक प्रश्न सेहो उठैत अछि; तत्क्षण प्रवेश नहि देल गेल, अतिरिक्त समय आ गुरु-दायित्वक अनुरोध उठल। दूनू समयधारामे शिक्षाक न्याय एक घड़ी, एक प्रशिक्षक आ सुरक्षित वस्तुक वास्तविक लागतमे बँधल अछि।

साँझमे मीरा नसीमक सिलाइ, पार्वतीक सूत आ पवित्राक गँथाइ अलग मदमे रखबाक प्रस्ताव पढ़ैत छथि। ओ सभ कारीगर एखन कक्षा पहुँचल नहि छलीह, तें एहि अध्यायमे हुनकर दर वा सहमति स्वीकृत मानब गलत हएत। फट्टाक नाम बदलि ‘साझा ताल आ नृत्यक कक्षा’ भेल, मुदा छवि, आवाज आ नाम प्रकाशनक लेल अलग-अलग परिवार तथा बच्चाक सहमति आवश्यक मानल गेल। सार्वजनिक खर्च-सूची आ निजी सहमति-पत्रक पृथक्करण प्रशासनिक सुधार अछि; नियमित धन, मंचक अनुमति आ घुमन्तु विद्यालयक औपचारिक नामांकन एखन बाँकी।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्र आ उपलब्धि-सीमा

कथा दोसर भोरसँ साँझ धरि कक्षाक समयमे चलैत अछि; विराटनगरक पहिल आ दोसर अभ्यास-दिवस बीच-बीचमे जोड़ल गेल अछि। आधुनिक सभाक जीवंत गति, प्राचीन राजकक्षाक धीमा अभ्यास आ दुलारीक कागद पढ़बाक विराम अलग-अलग अवधि उत्पन्न करैत अछि। तृतीयपुरुष कथावाचक रुहानीक निर्णयकेँ प्रधान स्थान दैत अछि, मुदा कर्मचारीक कार्य-सीमा, दुलारीक अन्न-चिन्ता, फरीदक पेशागत संघर्ष आ रुखसानाक विश्रामक आकाङ्क्षा एकसमान आवाजमे निस्तारित नहि करैत। पद्माक फट्टा-छायाचित्र केवल शब्दक प्रमाण, बच्चाक छवि नहि; ई प्रमाणक विषय-सीमाङ्कनक सुन्दर उदाहरण अछि।

अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे महाभारतक पात्र ‘बृहन्नला’क नाम लऽ कऽ आधुनिक रुहानीक सामाजिक पहिचानकेँ कथा स्वतः वैध नहि ठहरबैत। अतिव्याप्त पौराणिक उपमा पर स्वयं पात्र आपत्ति करैत अछि। सीमा ई जे निजी सहमति, रसीद, भुगतान, पेशाक अधिकार आ शिल्पक दर्जेपर लगभग प्रत्येक विवादक उत्तर तत्काल अलग पन्ना बनबाक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि; कथा-व्यवहार कखनहुँ शासन-सुधारक कार्यशाला जकाँ लगैत अछि। मुदा दुलारीक भूखक तात्कालिकता, रुखसानाक फोका आ फरीदक पारिवारिक असहमति एहिमे असिद्ध, सामाजिक रूपसँ कठिन पक्ष बचौने रखैत अछि।

अध्याय ३९ — ताँतीक देय

तानीक ध्वनि आ एक वस्तुमे अनेक हाथ

पार्वती ताँतीक आँगनमे भोरक करघा, भीजल सूत आ घसाइत ढरकीसँ अध्याय खुलैत अछि। ई ध्वनि केवल वातावरण नहि; वस्तुक दशा बूझबाक श्रमिक-ज्ञानक प्रत्यक्ष मार्ग अछि। पार्वती तेलक बून्द सँ दोष सुधरैत छथि; विद्यालयमे कपड़ा देखाबय पहिने लागतक चिन्ता करैत छथि। पागक एक थानमे हुनकर बुनाइ आ पवित्रा पटवाक

किनार-गँथाइ छैक। ककरो दृष्टिमे ‘एक कपड़ा’, मुदा श्रमक समय आ ऋणक दू घर। एहि प्रथम भेदक बिना सम्पूर्ण अध्यायक आर्थिक विवादक अर्थ नहि खुलत। पवित्रा गाँठक बचल समयक मूल्य समझबैत छथि; श्रम बचबाक अर्थ मजदूरीक पाँति मेट जाएब नहि।

यूसुफ अंसारीक करघाक पुर्जाक थैली आ फोनसँ कपड़ा बेचबाक बेटाक प्रस्ताव बजारक नव साधनकेँ जोड़ैत अछि। पार्वती हुनकर वाक्यक उत्तरमे बुनाइ आ डिजिटल बिक्रीक पृथक कौशल चिन्हैत छथि। यूसुफक बेटा दोसर इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षण चुनब चाहैत अछि; घरेलू मरम्मतिक दबाव एखन मौजूद अछि। दिनक बीच यूसुफ फोनपर बेटाकेँ प्रशिक्षण छोड़ि तुरन्त घर नहि एबाक निर्णय सुनबैत छथि; ई संवाद छोट परिवर्तन अछि, घरे सभ समस्या समाप्त भेलाक घोषणा नहि। पार्वतीक सासु घरक मर्दक नामपर दाम चढ़बाक पुरान चलन याद करैत छथि; वृद्ध स्त्रीक सौन्दर्य-इच्छा सेहो जीवित अछि—रङ्गीन किनार ओ अपन काँधपर राखि दर्पण देखैत छथि। पीढ़ीगत स्मृति अर्थव्यवस्थाक आँकड़ा मात्र नहि बनैत।

‘पूर्ण पैकेज’क हिसाब : अनुदानक सरलता आ श्रमक अपवर्जन

विद्यालयक दरपत्रमे सूत, बुनाइ, रङ्ग, किनार, सिलाइ आ सजावट एके ‘नृत्य-पोशाक पूर्ण पैकेज’क अन्तर्गत अछि। कर्मचारीक पक्ष संस्थागत सुविधा—एक बिलसँ अनुदान प्रक्रिया सहज—अछि। पार्वती आ पवित्राक प्रतिपक्ष अछि जे एक पाँतिक नामपर भुगतान भेलासँ अलग-अलग उत्पादकक देय कतय जाएत। सोनमती तुरी चौखटाक भाड़ा माँगैत छथि; रुचि धारिकार रंगीन पट्टीक नमूनाक बिना अनुमति बाहरी नकल पर रोक चाहैत छथि। ई मात्र ‘सभकेँ श्रेय दिअ’क नैतिक निवेदन नहि : ककर सूत, ककर बनावट, ककर उपकरण, ककर नकल-अधिकार आ ककर देय—ई आर्थिक अनुबन्धक अलग-अलग विषय छथि।

समीक्षा लेल निर्णायक परिवर्तन उन्नैसम आ बीसम पाठांशमे अछि। कर्मचारीक एक पाँति पाँच मदमे बदलैत अछि : यूसुफक सूत, पार्वतीक बुनाइ, पवित्राक गँथाइ, सोनमतीक चौखटाक भाड़ा आ रुचिक नमूनाक प्रयोग। मीरा बजटक स्वीकृतिमे देरि होएबाक वास्तविक चिन्ता रखैत छथि। पार्वती केवल नमूना बनायबाक अल्प अग्रिम-कार्य मानैत छथि—कतेक समय, कतेक देय, तकर सीमा पहिने लिखल जाय; पूरा थानक आदेश अलग। एहि सहमतिकेँ ‘पाँचो उत्पादकक समस्त दाम स्वीकृत’ बुझब भ्रामक होएत; अन्तिम पन्नामे सभ दर मंजूर नहि छल। सुधारक प्रमाण नवा दरपत्र अछि, सम्पूर्ण भुगतानक रसीद नहि।

बच्चाक सुरक्षा, सीमित आदेश आ कपड़ाक उपयोग-विवेक

कमलेश खटिकक लाल पट्टा देखि कियो पहिले विवादित खेपक अनुमान उठबैत अछि। हुनकर खरीद-बिल वस्तुक संख्या देखबैत अछि, मुदा ई बच्चाक देहपर उपयोग योग्य अछि कि नहि, आदेशमे नाप अछि कि नहि, ई अलग जाँचक विषय। फरीद पट्टा बाँहपर रखिते कड़ा निशान पड़ैत अछि; रुहानी बच्चाक कमरक सुरक्षा-जोखिम देखबैत छथि। बाजारक एक दुकानदारक नाम अस्पतालक पुरान तौल-पर्चीमे भेटलासँ दुनू वस्तु एके गलत खेपक सिद्ध प्रमाण नहि बनैत। नैरा स्पष्ट कहैत छथि जे आदेशक माप, वस्तुक उपयोग आ रसीदक तिथि अलग जाँचल जाय। कमलेशक सामुदायिक पहिचानकेँ आरोपक हेतु नहि बनाओल गेल अछि; हुनकर वस्तुक उपयोग-परीक्षा शेष रहल।

ई प्रसंग कथाक प्रमाण-विवेचनमे महत्त्वपूर्ण अछि। लाल रङ्गक समानता, व्यापारिक नामक समानता आ सामग्रीक एके आपूर्ति-शृंखला—तीनू अलग साध्य छथि। पहिल दू दृश्य संकेत सँ तेसर निष्कर्ष निकालब अव्याप्त अनुमान होएत। एहि ठाम दोषीक शीघ्र पहिचानक कथा नहि, अप्रमाणित आरोप रोकबाक कथा होइत अछि। नैरा स्वयं फोटो खींचबाक अनुमति माँगैत छथि; कमलेश मना करैत छथि; ओ स्वीकार करैत छथि। अध्याय २०क अनधिकृत डिजिटल प्रकाशनक बाद ई पात्रक व्यवहारी परिवर्तनक साक्ष्य अछि। मुदा नैरा सर्वदा सही निर्णय लेल छथि, एहन सामान्यीकरण एहि एक प्रसंगसँ नहि होइत।

रुचिक पट्टीकेँ अभिभावक खींचि सुरक्षा देखैत छथि; ओ सुंदर लगब आ देहपर सुरक्षित रहबाक अन्तर सीखैत छथि। रुहानी चाहैत छथि जे बच्चाक नाचमे कपड़ा फँसए नहि; पवित्रा गाँठक परिमाण लिखैत छथि; सोनमतीक चौखटा देह पर लपेटने बिना रङ्ग देखबाक साधन बनैत अछि। भीजल छप्परसँ नमूना बचएबाक दृश्य पर्यावरणीय बाधा सेहो अछि : डिजाइनक सुन्दरता जतेक जरूरी, ओहि ठाम स्थानक संरचनात्मक सुरक्षा सेहो। जल-भय विराट-पर्वक ‘कारीगरी’ कथाक बाहरक प्रसंग नहि, सामग्रीक टिकाउपनक शर्त बनैत अछि।

उत्पादकक स्वायत्तता, ऋण आ दृश्यात्मक विश्राम

सोनमती बाहरी व्यापार-प्रदर्शनी आ विद्यालयक उपयोग लेल पृथक अनुमति माँगैत छथि; रुचि नमूनापर पहचानक चिह्न सिअैत छथि। ई आधुनिक बौद्धिक सम्पत्ति कानूनक पूर्ण न्यायिक स्थापना नहि, बल्कि नकल आ प्रदर्शनक अनुमतिक अन्तरक कथात्मक आग्रह अछि। यूसुफ त्रुटिपूर्ण थानक दोष ढाँकबाक बदला नमूनामे चिन्हित करबाक प्रस्ताव मानैत छथि; व्यापारिक पारदर्शिताक ई दृश्य ‘कारीगरक छवि’क अनिवार्य गौरवगान नहि, गुणनियन्त्रणक जोखिम स्वीकार करब अछि। पुरान व्यापारीक देय आ बेटाक प्रशिक्षण-शुल्क एखन अलग गृहस्थी-हिसाबक समस्या छथि। अग्रिम रकमक आशासँ पूर्व-ऋण स्वतः चुकल नहि।

रुखसाना फेर रंग देखबाक दर्शक बनैत छथि। बिरसी नीला धागा ‘आकाश जकाँ ठंढा’ आ हरियर किनार ‘खेत जकाँ गरम’ कहैत छथि; ई बालिका अपन संवेदनाक आधारपर रङ्गक अर्थ रचैत अछि। जाति, धर्म वा सामाजिक देहक स्थिर प्रतीक-नियतिसँ रङ्ग मुक्त होइत अछि। कथाक एहन इन्द्रिय-आधारित अंश साहित्यिक रूपसँ विशेष सफल अछि, कारण मजदूरीक संख्या सँ बाहर बच्चाक सौन्दर्य-अनुभूति उपस्थित अछि। पार्वती–पवित्राक अन्तिम संवादमे अलग दामक अर्थ अलग स्नेह नहि—‘जोड़ल’ श्रम आ मिटाएल नामक बीच अन्तर अछि। अँगुरीमे सूतक फाँस आ सखीक अनल गुड़क पुरिया श्रमक समकालीन कठिनता आ आपसी देखभालकेँ बिना आदर्शीकरण जोड़ैत अछि।

कथनशिल्प, प्रमाण आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

अध्यायक आधुनिक समय भोरक करघासँ साँझक नव दरपत्र धरि व्यवस्थित अछि; स्वतंत्र प्राचीन विराटनगर-दृश्य एतय नहि अछि, जखन कि पर्वक नाम महाभारतक छद्म-परिवेशक स्मरण करबैत अछि। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण : पौराणिक पर्वक अन्तर्गत होएबासँ प्रत्येक अध्यायमे स्वतंत्र द्विकालीन दृश्य होयब आवश्यक नहि। तृतीयपुरुषक कथन पार्वतीक तकनीकी सुनाइ सँ आरम्भ होइत अछि आ विद्यालयक बहु-विक्रेता विवाद दिस फैलैत अछि।

करघाक चोट, सूतक नमी, गाँठ, रङ्गक स्पर्श आ छप्परक बून्द कथात्मक वस्तुक श्रृंखला बनबैत अछि। ‘नाम’क प्रश्न आब श्रमक समेकित लागत, डिजाइनक अनुमति आ सुरक्षा-जाँचक बहुस्तरीय विषय बनि गेल अछि।

प्रमुख उपलब्धि कथा-संसारमे मूल्यक अलग मद लिखला पर वास्तविक बजट संघर्ष उपजाएब अछि; मजदूरी माँगबक बाद सभ सहज सहमत नहि होइत। प्रमुख सीमा ई जे एके दिन अनेक नव कारीगर प्रतिनिधि क्रमशः स्पष्ट नैतिक तर्कक संग प्रवेश करैत छथि; पेशागत बहुलता दृश्यात्मक प्रदर्शनीक रूप धऽ सकैत अछि। पात्रक वितण्डा बहुत बेर विवेकपूर्ण निर्णयमे जल्दी पहुँचैत अछि, जखन कि वास्तविक सामाजिक-अर्थिक संघर्ष लम्बा चलैत अछि। मुदा मीराक बजट-चिन्ता, कमलेशक असुरक्षित सामग्री, यूसुफक घरेलू ऋण आ अकार्यकारी छप्पर एहि प्रक्रियाकेँ पूर्ण सुधारक कल्पित उपलब्धि बनबासँ रोकैत अछि। अन्तिम शब्दमे कपड़ाक धागा काटल नहि गेल—अगिला अध्यायमे धोनाइ, पंजी आ अस्पतालक पुरान देय खुलबाक कारणात्मक सूत्र तैयार अछि।

अध्याय ४० — कपड़ा पंजी

घाटक माटि आ उर्मिलाक दू बही : पञ्जीबद्ध समयक आरम्भ

अध्याय भोरमे घाटपर उर्मिलाक हाथसँ पाट जाँचब, लादी राखब आ भीजल पन्नाक गिनती सँ खुलैत अछि। अस्पतालक कागद तेल लागल आवरणमे अलग, अपन मजदूरीक कागद दोसर गठरीमे अछि। एहि भौतिक पृथक्करणक महत्व आगाँ स्पष्ट होइत अछि : रोगीक उपचारसँ सम्बद्ध निजी विवरण आ मजदूरक वास्तविक कार्य-घड़ी एके सार्वजनिक प्रमाण नहि। पिछला अध्यायक पार्वती–पवित्राक अलग दरक चर्चा उर्मिला सुनने छलीह, मुदा ओ पहिने स्पष्ट करैत छथि जे विद्यालयक नृत्य-पोशाकक धोनाइ आ अस्पतालक कपड़ाक देय अलग विषय अछि। कथाक निरन्तरताक अर्थ बहीसभक मिलान नहि, एक काजक अवधारणा दोसर क्षेत्रमे परीक्षण अछि।

बरकी पोखरिक घाटमे स्नानक सीढ़ी, कपड़ा-पाट आ हाथगाड़ीक अघट अलग काम करैत छथि। गोदामक जाली आ पेटी सँ आवागमन अवरुद्ध भेल अछि। रेणुक नाप आ झंडा टाँगबाक प्रस्तावबीच उर्मिलाक आग्रह पहिने पयरक बाट आ पाटक पहुँच सुनिश्चित करब अछि। सफाइ-दिवसक उत्सव, उत्सवक तस्वीर आ घाटक दैनिक उपयोग परस्पर समार्थक नहि। चम्पा अपन मायक उपचारक साफ चादर लऽ कऽ जाइत समय चेहरा आ चादर एक तस्वीरमे नहिं रखबाक अधिकार जतबैत छथि। सार्वजनिक स्थानक उपस्थितिसँ चिकित्सकीय निजताक सार्वजनिक प्रकाशनक स्वीकृति स्वतः नहि निकलैत।

जाल, ईंट, सूप आ वस्तुक व्यवहारिक ज्ञान

सरोज खरकौट पुरान-जर्जर आ नव धागाक जालक नमूना लैत छथि। सफाइमे माछ-जालक गाँठ कचरा बुझि फेकि नहि देबाक चेतावनीक पाछाँ मरम्मतिक मजदूरीक प्रश्न अछि; नव जालक धागाक दर लिखल, गाँठ बाँधबाक घड़ी पहिने खाली रहल। उर्मिलाक प्रेरणासँ समय तत्काल लिखल गेल, मुदा हिस्साक अन्तिम निर्णय जाल बनौनिहार सभक बिना नहि भेल। गीता कोरी अपन सीमापार गेल कपड़ाक अपूर्ण भुगतानक कथा उठबैत

छथि; अस्पतालक चादरसँ मिलैत धूसर रङ्ग मात्रसँ एके आपूर्ति-खेप सिद्ध नहि होइत। अलग पेशाक वस्तु व्यवहारिक अनुभव दैत अछि, मुदा अनुभवक समानता श्रृंखला-सम्बन्धक निर्णायक प्रमाण नहि।

नूरजहाँ ईटफरोश अपन गदहाकेँ पानि पिआबि घाटक फिसलनक परिस्थिति जाँचैत छथि; भारी ईंट उतारब घाटक टूटल किनार लेल जोखिम अछि। माधुरी दांगीक टोली अनाज छानबाक श्रमकेँ सामग्रीक लागतसँ अलग लिखए चाहैत अछि। घाटक सामूहिक सफाइमे देह, पशु, जलनिकास, गाड़ी आ भोजनक परस्पर निर्भरता दिखाइत अछि। एतय पर्यावरणीय आख्यानशास्त्र केवल पानिक बिम्ब पढ़ब नहि; टूटल पाट, जलनिकासक दिशा, जालक गाँठ आ पशुक बोझक कारणात्मक सीमा पढ़ब अछि। नूरजहाँक गाड़ी आउत कि नहि, जालक खूँटा कतय, भोजन के छानलक—ई सूक्ष्म विवरण सभ सामाजिक जीवनक पृथक ‘सुरक्षा-माप’ बनबैत अछि।

सात पैंतालीस, आठ बीस आ नौ बजे : उलटि गेल कालक्रमक प्रमाण-परीक्षा

अध्यायक निर्णायक घटना तीन पंजीक समय-असङ्गति अछि। उर्मिलाक घाट-पंजीमे चौदह गट्ठरक उठान आठ बजि बीस मिनट; अस्पतालक आपूर्ति-कक्षक नकलमे सात बजि पैंतालीस मिनटपर ‘प्राप्त’; द्वार-पंजीमे हाथगाड़ीक प्रवेश नौ बजिक बाद अंकित अछि। प्रारम्भिक दोहराक क्रममे ‘प्राप्त’ समय वास्तविक उठानसँ पहिने लिखल अछि। मुदा एकर व्याख्या एक नहि : अग्रिम खुलल पर्ची, पुरान खेप, गलत प्रविष्टि वा अन्य प्रक्रिया जेकाँ सम्भावना जाँचयोग्य रहैत अछि। अनिरुद्ध आपूर्ति-पन्नाक सुधारक जाँच आदेश दैत छथि; तत्काल ककरो दोषी नहि ठहरबैत छथि। तेसर द्वार-पंजीमे चालकक हस्ताक्षर अस्पष्ट अछि, तेँ ओ गाड़ी उर्मिलाक छल, से अलग सत्यापन चाहैत अछि।

आख्यानगत अनुशासनमे एहि ठाम पक्ष : निर्दिष्ट दिनक अस्पताल-पंजीक प्रविष्टि; साध्य : वास्तविक कपड़ा-प्राप्तिक समय; हेतु : पंजीमे छपल ‘प्राप्त’ समय; सम्भावित उपाधि : पर्ची पहिनेसँ खुलबाक चलन, खेप बदलल, वा अलग वस्तुक विवरण। उर्मिलाक प्रत्यक्ष घड़ी-पठन हुनकर उठान-समयक साक्ष्य अछि, मुदा अस्पतालमे कियो लिखलक तकर प्रत्यक्ष साक्षी नहि। अस्पतालक नकलक शब्द-प्रमाण व्यवहार-प्रक्रिया स्पष्ट भेलापर मूल्याङ्कित होएत। ‘आठ बीसपर घाटसँ निकसल गाड़ी सात पैंतालीसपर ओहि गट्ठरक संग अस्पताल पहुँचल’ एहन साधारण कालक्रम सम्भव नहि; मुदा असम्भव प्रस्तुत क्रमसँ अवश्य जालसाजी भेल, ई निष्कर्ष सेहो एखन अनधिकृत। ई कथाक सर्वाधिक सूक्ष्म प्रमाण-अध्ययनक स्थल अछि।

उर्मिलाक मजदूरीक पाँतिमे तीस-पैंतीस मिनट घटल अछि; ओ पुछैत छथि कोन प्रक्रियासँ ई कटौती भेल। एतय साक्ष्यक सामाजिक दाँव स्पष्ट अछि : प्रतिवेदनक कालक्रम केवल बौद्धिक पहेली नहि, मजदूरक वास्तविक वेतनक आधार अछि। दोसर पन्नामे थैली गनबाक, अलग कपड़ा पाटपर धोनबाक, विशिष्ट कपड़ा प्रतीक्षा करबाक आ गाड़ी धरि लादबाक समय दर्ज अछि, मुदा भुगतानपत्रमे केवल प्रति गट्ठर धोनाइ। घटनात्मक उपलब्धि पन्नाक भाषा बदलबाक दिशा मे अछि, सम्पूर्ण बकाया चुकबाक परिणाममे नहि।

रोगीक निजता आ शोधक दृष्टिक सीमाङ्कन

नैरा उर्मिलाक पंजी माँगत छथि, उर्मिला पहिने उद्देश्य पुछैत छथि : मरीजक नाम, मजदूरक नाम आ थैलीक तिथि अलग जानकारी अछि। अनिरुद्ध अस्पतालक प्रमाणित नकलमे रोगीक परिचय ढाँकि दैत छथि। चम्पा पूछि सकैत

छथि जे समयक उलटाव उपचार पर असर कएलक की नहि; उपलब्ध सार्वजनिक प्रतिमे अतिरिक्त चादरक माँग अछि, मुदा माँग ककरा लेल आ कहिया पूरा भेल, एतए सिद्ध नहि। चिकित्सकीय हानिक दावाकेँ अपूर्ण अभिलेखसँ निश्चित आरोप बनायब अनुचित हएत। रोगीक सुरक्षा आ मजदूरक वेतन-जाँच एक-दोसराक शत्रु नहि : आवश्यक समय-प्रमाण सार्वजनिक कएल जा सकैत अछि, निजी उपचार-दस्तावेज सुरक्षित रहैत।

संकेत फोटो खींचबाक पहिने अनुमति पुछैत अछि; उर्मिला शर्त रखैत छथि—चम्पा नहि, रोगीक थैलीक चिह्न नहि, आ फोटो लेल काम रोकला पर समयक हिसाब सेहो। ई शर्त दृश्य-साक्ष्यक नैतिक निर्माणक उदाहरण अछि। ‘काजक हाथ’क तस्वीर सुन्दर लागब एकटा बात, काजक पहिचानयोग्य वस्तु आ प्रभावित व्यक्तिक अधिकार दोसर बात। चित्रकारक स्वतन्त्रता आ चित्रित श्रमिकक समय-दावाक तकरारक समाधान केवल ‘मुँह नहि देखायब’ नहि। कथामे सूचना-नियन्त्रण एकेक व्यक्ति द्वारा बातचीतसँ तय होइत अछि।

तीन निर्णय आ आगामी बरही-अध्यायक हेतु

बैठकक बाद तीन लिखित निर्णय बनैत अछि : घाटसँ उठान आ अस्पतालमे वास्तविक प्रवेशक समय अलग खाना; मजदूरक प्रतीक्षा तथा विशेष पृथक्करण-श्रमक अलग गणना; आ फोटो वा निजी कपड़ा-पंजीक प्रकाशन लेल अनुमति। वेतनक नव दर तय नहि भेल। घाटपर गाड़ी लेल अस्थायी बाटक जिम्मेदारी दर्ज भेल, मुदा जाँच बिना भारी पक्का मरम्मति शुरू नहि भेल। उर्मिलाक दू घंटाक मजदूरी एखनहुँ बाँकी अछि; समयक उलटावक कारणक जाँच प्रारम्भिक अछि। एहि निर्दिष्ट अपूर्णता बुझने बिना ‘पंजी-सुधारसँ न्याय मिलल’ कहल निबन्धक नैतिक प्रश्नकेँ छोट करब होएत।

अन्तिम पाठांशसँ ठीक पहिने उर्मिला एक पुरान मरम्मति-बिलक नकल नैराकेँ देखबैत छथि। घाटसँ अस्पताल कपड़ा लादबाक काठक उतार-पट्टा ‘नव बनल’ लिखल अछि, मुदा ललित बरहीक हस्ताक्षरक स्थान खाली अछि। एखन ई नकलसँ भुगतानक वास्तविक स्वीकृति, काठक पट्टा किने बनौलक अथवा त्रुटिक अपराध-स्वरूप निश्चित नहि। मुदा एक ठोस नव जाँच-प्रश्न उठल : वस्तु बनल छल कि कागदमे दर्ज मात्र, आ ककर हस्ताक्षर अपेक्षित छल? ई अगिला अध्याय ‘बरहीक हस्ताक्षर’ लेल प्रामाणिक कारणात्मक संक्रमण अछि; शीर्षकक अनुमानसँ अगिला अध्यायक घटना पूरा करबाक औचित्य नहि।

काल-स्थान, भाषा आ साहित्यिक निर्णय

कथानकक दिन भोरक कपड़ा-पाटसँ साँझक पंजी सँभारबाक समय धरि फैलल अछि। जखन ‘सात पैंतालीस’ आ ‘आठ बीस’क संख्या आएत अछि, तखन कथनकाल स्वयं जाँचक विषय बनैत अछि : कथावाचकक प्रस्तुतिक क्रम आ कपड़ाक वास्तविक भौतिक आवागमनक क्रम परस्पर बदलाओल नहि जा सकैत। तीनटा अभिलेखक समय-रेखा पाठककेँ प्रमाण व्यवस्थित करबाक श्रम करबैत अछि। दृष्टिकेन्द्र उर्मिलाक प्रत्यक्ष कार्यानुभवक लग स्थिर रहैत अछि, मुदा नैरा कागदक सम्भावित अर्थ जाँचैत छथि, अनिरुद्ध संस्थागत सुधारक सीमा बतबैत छथि, चम्पा निजताक भय रखैत छथि आ नूरजहाँ–सरोज–माधुरी वस्तुक व्यवहारिक सुरक्षा देखबैत छथि। एहि बहु-स्थिति सँ अभिलेख केवल ‘सरकारी झूठ’ विरुद्ध ‘लोकक सत्य’क सरल द्वन्द्व नहि बनैत।

अध्यायक उपलब्धि कालक्रमक विसंगतिक मापनकेँ वेतनकटौती, निजता आ भौतिक यातायातक प्रश्नसँ जोड़ब अछि। सफाइ-दिवसक दृश्य उत्सव आ सेवा बीच अन्तर सुरक्षित रखैत अछि; ककरो देवता बनाओल नहि गेल अछि। सीमाक रूपमे बैठक द्वारा तीन नियमक सुव्यवस्थित संकलन नीतिपत्र जकाँ लगैत अछि; कथात्मक तनावक परिवर्तनक स्थानपर लिखित निर्णयक क्रम अधिक होएबाक जोखिम अछि। मुदा अस्पतालक दू विरोधी समय, अस्पष्ट हस्ताक्षर आ उर्मिलाक हाथमे सुरक्षित अपूर्ण बही पाठकक अगिला प्रश्न जीवित रखैत अछि।

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ३७–४० क संयुक्त आलोचना

श्रमक पृथक्करण सँ अधिकारक निरन्तरता

एहि चारि अध्यायक क्रम एक वस्तुसँ दोसर वस्तुक साधारण संक्रमण नहि। पहिने भोजनक कच्चा माल, तैयारी, रान्हब आ परोसब अलग; तकर बाद नृत्यक प्रशिक्षक, बच्चाक स्वीकृति, दृश्य-प्रकाशन आ सामग्री अलग; तकर बाद सूत–बुनाइ–किनार–चौखटा–नमूनाक पाँच मद अलग; अन्तमे घाट सँ अस्पताल धरि गट्ठरक उठान, पहुँच, प्रतीक्षा आ धोनाइ अलग। हर विभाजन नवा तथ्य दैत अछि, मुदा हर विभाजनक सामाजिक उद्देश्य एक नहि। श्रमिकक मान्यता, बच्चाक सुरक्षा, व्यावसायिक डिजाइनक अनुमति आ मजदूरीक जाँच—चारि पृथक अधिकार-सरणी छथि। एहि कारण चारू अध्यायक पञ्जीपद्धति एकरूप भाषिक युक्ति होयबाक बादो परिणाम-संरचनामे भिन्न अछि।

पहिल अध्यायमे समुदाय भोजन पबैत अछि; दोसरमे नृत्यक साझा कक्षा चलैत अछि; तेसरमे अलग दरपत्र बनैत अछि; चारिमे अस्पताल-पंजीक जाँचक आदेश अबैत अछि। एहि परिणामसभकेँ प्रगतिक चारि बराबर सीढ़ी मानब त्रुटि हएत : भोजन देहपर तत्काल प्रभाव करैत अछि, कक्षा अस्थायी रूपसँ घटित होइत अछि, दरपत्र अर्थिक वचनक प्रारूप अछि, जाँचक आदेश सत्य-अन्वेषणक आरम्भ। दस्तावेजक निर्माण आ अधिकारक क्रियान्वयन बीच दूरी चारू ठाम अलग-अगल मापबाक अछि। कथाक महत्त्वपूर्ण क्षमता एहि दूरीकेँ मिटाएब नहि, एतबे प्रमाणक आधारपर रोकि देब अछि।

महाभारतक विराट-पर्वक नाम : छद्मपरिचय आ आधुनिक दृश्यता

सैंतीसम अध्यायक बल्लव-भीम आ अड़तीसम अध्यायक बृहन्नला-अर्जुनक प्राचीन दृश्य दू प्रकारक शर्त प्रस्तुत करैत अछि : अपन असली नाम नबोलेबाक सुरक्षित बाध्यता, आ अन्य श्रमिकक नाम सार्वजनिक मान्यता देबाक नैतिक आवश्यकता। आधुनिक कथामे रुखसानाक मजदूरीक सार्वजनिक उल्लेख चाही, मुदा बच्चाक थैलीपर निजीकृत नाम नहि; रुहानीक अपन पहिचान स्वीकृत अछि, मुदा ओकरा बृहन्नलाक छद्मक बाजारु प्रतिरूप नहि बनाओल जाउ; कमलेशक बिल सत्यापित हो, मुदा बिना सहमतिक कैमरा नहि; उर्मिलाक समयक प्रमाण जाँचल जाए, मुदा रोगीक नाम नहि। कथाक ‘विराट’ रूप एहि प्रकार दृश्य–अदृश्य होएबाक अधिकारक जटिल क्षेत्र अछि, न केवल प्राचीन कथा-सज्जा। उनचालीसम आ चालीसम अध्यायमे अलग प्राचीन दृश्य नहियो रहितहुँ एहि समस्या-सरणीक कथात्मक विस्तार चलैत रहैत अछि।

कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्ध : उपाधि, अवच्छेद आ विरोधी नकल

चारि विशिष्ट असिद्ध अनुमान चिन्हित होइत छथि। दानक चाउर भेटल = दू दिन भोजन निश्चित; फट्टापर लोकप्रिय पौराणिक शब्द = रुहानीक अपन परिचयक वैध नाम; लाल पट्टी आ एके दुकानदारक नाम = अस्पतालक अपराधी खेप; आपूर्ति-कक्षक ‘प्राप्त’ समय = कपड़ाक वास्तविक शारीरिक आगमन। प्रत्येक सम्बन्धमे साध्यकेँ अलग करब, हेतु सीमित करब आ सम्भावित उपाधि देखब जरूरी अछि। एहि आलोचनात्मक विधिसँ उपन्यासक दस्तावेजीय कथनकेँ स्वतः प्रामाणिक वा स्वतः मिथ्या घोषित करबाक आवश्यकता नहि। गवाहीक कर्ता, कागदक उद्देश्य, समयक अवच्छेद, वैध स्वीकृति आ भौतिक परीक्षण अलग स्तर छथि। आख्यानशास्त्र मूल शास्त्रक शब्दावली एतय आलोचनात्मक उपकरण अछि; आधुनिक विद्यालय–अस्पताल प्रशासनक शाब्दिक शास्त्रीय प्रतिरूप नहि।

बहुस्वरता, देह आ जल : प्रस्तुतीकरणक शिल्पगत सीमा

रुखसाना, रुहानी, पार्वती आ उर्मिला चारू केन्द्रित पात्र पुरुषार्थक आदर्श प्रतिमा मात्र नहि। रुखसानाक विश्रामक इच्छा स्वयं मनोरंजनक अधिकार; रुहानीक शिक्षा-प्रक्रिया अपन पहिचान पर नियंत्रण; पार्वतीक व्यापारिक दाम आ सौन्दर्य-अनुभव; उर्मिलाक तिथि-समयक जिद वेतनक व्यावहारिक प्रश्न अछि। हरेक स्त्री अपन भावनात्मक स्थिति, पेशा आ निर्णयक अलग आयाम रखैत छथि। बालक जतन–बिरसीक पयर, ताल आ रङ्गक टिप्पणी भावनात्मक प्रत्युत्तर आ शिक्षाक भिन्न गति देखबैत अछि। पुरुष पात्र सेहो एके विपक्ष नहि : रघु श्रमक दाम चाहैत छथि, भोला उधारी, यूसुफ परिवारक परिवर्तनक भय, कमलेश बिना प्रमाणक आरोपक प्रतिवाद करैत छथि। एहि विविधताकेँ स्वतन्त्र वाणी द्वारा पाठमे उपस्थित करबाक आलोचना जरूरी अछि, मुदा भिन्न व्यवसायक उपस्थिति भरिसँ पूर्ण बहुस्वरता सिद्ध नहि होइत।

चारू अध्यायमे बहुत पात्र व्यवस्थित रूपसँ रसीद, पाठांश, समय-सूची आ लिखित शर्तक भाषा बोलैत छथि। एहिसँ सामाजिक जटिलता स्पष्ट होइत अछि, मुदा वास्तविक बोलचालक असमाप्तता, अस्पष्ट लाभ-संघर्ष, प्रशासनिक ठहराव आ कखनो अनपेक्षित भूल कम देखाइत अछि। काव्यात्मक दृश्यक घनत्व—भीजल चूल्हि, हाथक फोका, बिरसीक रङ्ग, करघाक ध्वनि, घाटक कादो—एहि तर्कप्रधान शैलीकेँ सन्तुलित करैत अछि। जल एहि भागमे केवल प्रलयक पूर्वाभास नहि; ई चूल्हिक सुरक्षा, कपड़ाक गुणवत्ता, विद्यालयक छप्पर, घाटक पहुँच आ अस्पतालक परिवहनक दैनिक भौतिक शर्त अछि। एहि कारण सामाजिक इतिहासक ‘समानान्तर’ दृष्टिकेँ आधुनिक श्रमिकक नाम आ देयक बहीपर आधारित रखब उचित अछि, कोनो अप्रमाणित गौरव-इतिहास रचब नहि।

अन्तरिम निष्कर्ष आ अगिला शोध-बिन्दु

विराट-पर्वक आरम्भ ‘कामक नाम लिखब’क अभियानकेँ ‘नाम लिखला पर कोन अधिकार वास्तवमे बदलब?’क प्रश्नमे परिवर्तित करैत अछि। चारि अध्यायमे समान धारणा अभिलेखीय उत्तरदायित्व अछि, मुदा समाधानक गति असमान। भोजन एक दिन चलल, कक्षाक परिचय सुधरल, नमूनाक दर अलग भेल, उलटल समयक जाँच आरम्भ भेल। शेष तथ्य—दूसर दिनक बजट, मंचक अनुमति, पूरा दामक स्वीकृति, अस्पतालक वास्तविक प्राप्ति-समय

आ मजदूरीक बकाया—असम्पन्न छथि। अगिला अध्याय ४१ ‘बरहीक हस्ताक्षर’क वास्तविक पाठ पढ़लाक बादे उतार-पट्टाक विवादक परिणाम लिखल जाए। एहि अन्तरिम समीक्षामे अगिला अध्यायक अनुमानकेँ घटना मानल नहि गेल अछि।

अध्याय ४१ — बरहीक हस्ताक्षर

बिलक शब्द आ काठक वस्तु : कथानकक पहिल विरोध

अध्याय भोरक कार्यशालामे ललित विश्वकर्माक भीजल कागदसँ खुलैत अछि। कागद अस्पतालसँ घाट धरि कपड़ा पहुँचएबाक काठक उतार-पट्टाक मरम्मति-बिल अछि; खाली स्वीकृति-खानामे लाल निशान ‘हस्ताक्षर एतय’ आदेश दैत अछि। कथावाचक ललितक रन्दा, आरी, सूखैत काठ आ हाथक पुरान चोटक विवरण दैत छथि। ई सजावट नहि : पाठक पहिल दृश्यहिसँ दू अलग प्रमाण-पद्धति देखैत अछि—दस्तावेजपर ‘नव पट्टा’ लिखल अछि, वस्तुपर पुरान फाट आ ऊपरसँ नव रङ्गक लेप देखाइत अछि। ललितक हस्ताक्षर केवल अपन नाम नहि, वस्तुक सुरक्षाक सार्वजनिक आश्वासन बनि सकैत अछि। आरम्भक कथात्मक तनाव तेँ अपराधी के, एहिमे नहि; कारीगर अपन प्रत्यक्ष ज्ञानक सीमा पार कऽ कोन कथन करबाक दबावमे छथि, एहिमे अछि।

उर्मिला अपन पयर दू बेर फिसलबाक अनुभव सुनबैत छथि; ललित काठक भीतरी फाट देखैत छथि; नैरा अस्पतालक कपड़ा-पंजीक दू विरोधी समय लैत छथि। तीनू साक्ष्य एकरूप नहि : देहगत अनुभव फिसलनक जोखिम दर्शबैत अछि, काठक निरीक्षण आंशिक मरम्मतिक चिन्ह दैत अछि, समय-पंजी वस्तु-आवागमनक कथित क्षणबारे प्रश्न उठबैत अछि। ललित स्पष्ट करैत छथि जे पट्टा बनल होथि तँ ओहि घड़ी कपड़ा ओकरा पार गेल, ई सिद्ध नहि होइत। एतय हेतु–साध्यक असम्बद्ध छलाँग रोकल गेल अछि। नैराक कापीमे बिल, वस्तुगत काम आ भार-परीक्षाकेँ तीन शीर्षकमे बाँटब एहि ज्ञानक सीमाक मूर्त रूप अछि। एकर महत्त्व अध्याय ४०क अस्पताल-पंजीसँ निरन्तरता राखबमे अछि; नव शिल्पदृश्य पुरान रहस्यक नकली समाधान नहि दैत।

सार्वजनिक सुरक्षाक विशेषाधिकार नहि, कारीगरक सीमित अधिकार

नगरक ठेका-प्रतिनिधि ललितकेँ मजदूरसभक अटकल भुगतानक हवाला दैत हस्ताक्षर करबाक आग्रह करैत छथि। ललित बिलक भाषा परखैत कहैत छथि जे सामग्रीक रसीद, लगाओल काठ आ प्रमाणित भार एक नहि। कर्मचारीक उत्तर ‘कामक भाषा एहनहि चलैत अछि’ कथामे संस्थागत युक्तिक एक रूप अछि : कागदक सुविधा वस्तुक वास्तविक अवस्था पर प्रधान होयत। मुदा ललित एतय स्वयं सभ विशेषज्ञता पर दावा नहि करैत छथि। पारो पत्थरकट्टा भीजल नीचाँक माटिक अलग जोखिम देखबैत छथि, मुदा पूरा भार-संरचनाक प्रमाणपत्र देबाक अधिकार नहि लेतीह। सलीम नालबन्द हाथगाड़ीक नट कसैत छथि, मुदा गाड़ी खाली रहबाक जाँच आ भारी बोझ लादबाक सुरक्षा अलग मानैत छथि। एक कार्यस्थलपर अलग-अलग ‘ज्ञात’ वस्तुक ई वितरण उपन्यासक तत्त्वचिन्तामणि-सम्बद्ध प्रमाणचिन्तन लेल ठोस पाठ-सामग्री अछि।

अध्यायक पच्चीसम पाठांशमे ललित दोषारोपणसँ सेहो बचैत छथि। पुरान पट्टाक वर्तमान दशा सँ ई नहि निकलैत जे ठेकादार निश्चित रूपसँ चोरी कएलक; दोसर ठाम तैयार सामग्री, प्रयोगक वास्तविक स्थान आ मूल फाइलक

जाँच एखन शेष अछि। एहि संयममे कारीगरक ‘सही नहि देब’ नकारात्मक क्रिया मात्र नहि : ई अपन साक्ष्यक क्षेत्र सीमित राखबाक सकारात्मक नैतिक निर्णय अछि। तखन ई निर्णयक भार उधार, मजदूरी आ घरक खर्चक रूपमे हुनकर निज जीवनपर पड़ैत अछि। जँ कथा ललितकेँ केवल निष्कलङ्क नायक बनबैत, तखन ठेका छिनबाक बाद हुनकर पुरान औजार बेचबाक मनक गणना, युवकक मजदूरीक चिन्ता आ साँझक चुप्पी अनावश्यक होइत। एहि वैयक्तिक मूल्यक उपस्थितिसँ प्रतिरोध जीवित दृश्य बनैत अछि।

पाँच आर्थिक हितक अन्तर : ‘सभ श्रमिक’ एक पात्र नहि

उमा राजधोब, पारो पत्थरकट्टा, सलीम नालबन्द, गुरमीत कौर आ रुखसाना सभ एक स्थानपर भेटैत छथि, मुदा सभक माँग एकटा सामूहिक घोषणामे समा नहि जाइत। उमाक निजी ग्राहकक कपड़ा अस्पतालक अनुबन्धक वस्तु नहि; हुनका घाटक समय आ रसीदमे स्वतन्त्र नाम चाही। हुनकर ग्राहकक निजी नाम नैरा अपन कापीमे नहि लिखैत छथि। उमाक सहकारी धुलाईक निर्णय स्थगित अछि, किएक तँ ग्राहकक अनुमति शेष अछि। पारो अपन नमूना-काटबाक देय चाहैत छथि, मुदा अविश्वसनीय जमीनक पूरा भार अपन माथे नहि लेतीह। सलीम पारम्परिक नालबन्दीसँ नव वाहन-पुर्जाक प्रशिक्षणक सम्भावना सोचैत छथि; प्रशिक्षण लेल निर्णय एखन नहि भेल। गुरमीत सामुदायिक भोजनमे दान आ रान्हनिहारक सशुल्क श्रम अलग लिखैत छथि। एतय पेशागत इतिहासक समानान्तर दृष्टि नामक सूचीसँ ऊपर उठि कार्य, अधिकार आ अनिश्चित परिणामक विस्तृत स्थिति देखबैत अछि।

उमाक कथन—घाटक काज एके दलक नाम चढ़ला पर दोसरक ग्राहकक देय गुम होएत—अध्याय ३९क ‘पूर्ण पैकेज’ दरपत्रक सङ्कटसँ सादृश्य रखैत अछि। मुदा ई एकही विवाद नहि : ओतय निर्मित कपड़ाक विभिन्न क्रियाक मूल्य छल, एतय स्थानक उपयोगक समय आ निजी ग्राहकक हिसाब अछि। गुरमीतक भोजनक गीत प्रसंगे उत्सवक साझापनक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा उमा गाबैतहुँ ग्राहकक वस्तु गनब नहि छोड़ैत छथि। ई छोट दृश्य श्रमकेँ उत्सवमे विलीन नहि करैत। उलटे गीत आ लेखाक सह-अस्तित्व सामुदायिकता बनबाक कठिन व्यावहारिक नियम बतबैत अछि। आयोजक ‘नाव–औजार परख’मे मालिकक नाम, जाँचक दिन, प्रमाणित तथ्य आ अनजाँचल सीमा लिखबाक निर्णय करैत छथि; कार्यक्रमक प्रदर्शनकेँ सरकारी भार-परीक्षाक समकक्ष मानबाक निषेध स्वयं हीरा करैत छथि। एतय उत्सव ज्ञानक लोकप्रिय माध्यम अछि, तकनीकी प्रमाणक प्रतिस्थापक नहि।

हस्ताक्षरक विभाजन : निर्णय, परिणाम आ काल

ललित अन्ततः निरीक्षण-पर्चीपर तीन शर्त लिखि सही करैत छथि : पुरान पट्टा आंशिक मरम्मतिवला अछि; खाली अथवा हलुक गाड़ीक अस्थायी वैकल्पिक बाट चिन्हित कएल जा सकैत अछि; नव चढ़ान वा भारी गाड़ीक क्षमता लेल पृथक तकनीकी परीक्षण चाही। भुगतान-स्वीकृतिक मूल बिलपर हस्ताक्षर नहि होइत। एतय ‘अस्वीकृति’क संग ‘कतेक सीमामे काज सम्भव’क प्रायोगिक प्रस्ताव जोड़ल अछि। मुदा अगिला आदेश तत्काल ठेका ललितसँ वापस लऽ दोसर कारीगरक नियुक्तिक बाट खोलैत अछि; पुरान बकाया फेर परीक्षणाधीन। बिना सही देलाक ‘जीत’मे तात्कालिक जीविका-हानि ओझराओल नहि गेल। नैराक आदेशक प्रति बचायब भविष्यमुखी कदम अछि, जीतेल अपील नहि।

कथनकाल एक दिनक भोरसँ साँझ धरि चलैत अछि; गुरु हरिकिशुनक स्मृति आ नावक पछिला वर्षक रस्सी-परीक्षाक उल्लेख छोट पूर्वदीप्ति बनैत अछि। ई स्मृति-सूत्र वस्तुक पुनः-परीक्षणक आवश्यकता व्याख्यायित करैत अछि; कोनो स्वतन्त्र प्राचीन महाभारतीय दृश्य एहि अध्यायमे नहि अछि। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ संकेत एतय कथक स्वतंत्र पौराणिक समय-दृश्यक पुष्ट प्रमाण नहि। अध्याय ३७–३८ जेकाँ स्पष्ट बल्लव वा बृहन्नला-दृश्य अनुपस्थित अछि। विराट-पर्वक पौराणिक छद्म एतय केवल संरचनात्मक प्रतिध्वनि देबाक सम्भावना रखैत अछि—कागदमे ‘नव’ कहल काठ आ वस्तुतः पुरान काठ, मुदा एहि रूपककेँ कथाभीतर घोषित मिथकीय घटना नहि बनाओल जाए।

प्रत्यक्ष, अनुमान आ नैतिक मूल्याङ्कन

आख्यानगत शब्दावलीमे मूल निरीक्षणक विषय ‘एहि ठाम देखल पट्टाक दशा’ अछि। ‘एहि बिलक आधारपर सुरक्षित भारी वाहन चलि सकैत अछि’ एक व्यापक साध्य अछि, जकर हेतु पर्याप्त नहि। रङ्गक नव लेप, सामग्रीक रसीद वा घटकक एकाकी सुधार सम्पूर्ण संरचनाक भार-सुरक्षा सुनिश्चित करबाक व्याप्ति नहि दैत; नीचाँक भीजल माटि, पानिक स्तर, नावक बाट आ गाड़ीक अवस्था अनिवार्य उपाधि-जाँचक विषय छथि। तदपि शास्त्रीय उपाधि शब्दक उपयोग एहि आधुनिक अभियान्त्रिक जाँचक शाब्दिक समानार्थ नहि; आलोचक लेल ओ तर्कक संरचनात्मक अनुपयुक्त विस्तार चिन्हबाक सहायक उपमा मात्र।

अध्यायक विशेष साहित्यिक उपलब्धि ई जे हस्ताक्षरक महत्त्व झूठक विरुद्ध वक्तव्य देबामे नहि, देह-जोखिम आ रोजीक मूल्यक टकरावमे अछि। भीजल पट्टाक फाट, ललितक हाथक चोट, पारोक झुकैत पत्थर आ थारीपर ठण्डा होइत भात विचारकेँ ठोस संवेद्य रूप दैत अछि। सीमा ई जे जतेक कारीगर अबैत छथि, सभ लगभग एक समान असाधारण प्रमाण-सावधानीक भाषा बजैत छथि; किछु पाठकक लेल ई प्राकृतिक बहुस्वरतासँ बेसी अनुशासित कार्यशालाक प्रभाव देत। ठेका छिनबाक वास्तविक क्षति, उमाक अनिश्चित ग्राहक-व्यवस्था आ गुरमीतक हास्य एहि एकरूपताकेँ अंशतः तोड़ैत अछि। अन्तक माटि–शकुन्तला–बच्चीक कापी अगिला अध्यायक प्रवेश-बिन्दु अछि, वर्तमान काठक संकटक समाधान नहि।

अध्याय ४२ — माटिक भविष्य

दू डल्लाक स्पर्श : रङ्गक समानता आ पदार्थक अन्तर

भोरमे शकुन्तला पंडित चाकक कात दू डल्ला माटि रखैत छथि—एक चिक्कन, दोसर किरकिर। हुनकर नतिनी रङ्गक समानता देखैत अछि, मुदा शकुन्तला पानिक सहनशीलता, सुखबामे सिकुड़न आ आबामे टिकबाक कसौटी कहैत छथि। उपन्यासक प्रमाण-विमर्श एहि दृश्यसँ विशिष्ट रूपमे विस्तृत होइत अछि : वस्तुक बाहरी समानता पर्याप्त परिचय नहि, काज-विशेषमे ओकर आचरण देखब आवश्यक। बच्ची आधा बनल कटोरीक टेढ़ किनार देखैत अछि, आ शकुन्तला गलती देखबाक अवसर दैत छथि। शिल्पज्ञान एतय विरासतमे देल निश्चित आज्ञा नहि, परीक्षण करबाक स्वाधीनता अछि। ई आरम्भ अध्याय ४१क झुकैत पत्थरक नमूनासँ जुड़ैत अछि;

तथापि कुम्हरौटिक बासनक माटि आ घाटक भार-वहन करनिहार भरावक माटि समान कार्यवाला पदार्थ नहि। ललित स्वयं एहि भेदक पहिल स्वीकार करैत छथि।

नतिनीक नवल विद्यालय-वेश, नसीमक सिलल कुर्तीक पैघ बाँह आ चाकपर माटि लगबाक आशंका घरेलू यथार्थक छोट दृश्य अछि। बच्ची कहैत अछि जे ओ चाक सेहो जानब चाहैत अछि, मुदा जीवन-भरि केवल ओही काजमे रहब कहने नहि अछि। अध्यायक अन्त धरि ई वाक्य नायिकाक आत्मनिर्णयक आरम्भिक बीज बनैत अछि। रचनात्मकता एहि ठाम ई अछि जे शिक्षा-पेशा द्वन्द्व बाहरसँ थोपल ‘पारम्परिक बनाम आधुनिक’ द्वैत नहि : शकुन्तला स्वयं अनुभवी कारीगर छथि, ओ काजक कौशल बचबए चाहैत छथि, मुदा नतिनीक भविष्य पहिनेसँ निर्धारित नहि करए चाहैत छथि। औजारक तिरस्कार नहि, पेशागत नियतिक अस्वीकृति—ई महीन अन्तर कथाक सामाजिक अर्थकेँ दृढ़ बनबैत अछि।

माटिस्थलक फाटक : रोकक कारण आ ओकर व्यापकता

कुम्हरौटिक पगडण्डी पर ‘सुरक्षा कारणसँ प्रवेश निषिद्ध’क पट्टी लागल अछि। पिछला बरखामे माटि धँसल छल —शकुन्तला ई जोखिम स्वयं देखलने छलीह। ओ निषेधक समस्त कारण मनगढ़न्त कहि नहि दैत छथि; प्रश्न ई अछि जे असुरक्षित कातसँ अलग सुरक्षित मानल जा सकनिहार बाटकेँ सेहो के बन्द केलक आ ककर आदेशपर। तख्तीपर तिथि अछि, आदेश देनिहारक नाम स्पष्ट नहि; एहि अधूरा अभिलेखक आधारपर पूर्ण अधिकार-निर्णय सम्भव नहि। तारा मल्लिक घेराक लम्बाइ, पानिक चिन्ह आ खननक ठाम नापैत छथि; मालिकाना, माटिक गुण वा धँसबाक भविष्यक गारंटी नहि दैत छथि। कथन स्थलक भौतिकता आ प्रशासनिक अधिकारक प्रश्न अलग रखैत अछि।

निरु कुमालक साझे आबा चलएबाक प्रस्ताव सेहो सामूहिकता बनाम निजी उत्तरदायित्वक परीक्षा अछि। आपूर्तिदाताक कागदमे सभ कारीगरकेँ एक दोसराक अनदेखल ऋणक पूर्ण जिम्मेदार बनाओल जा रहल अछि। निरु साझाक इन्धन आ दिनक हिसाब स्वीकार करब चाहैत छथि, मुदा अगोचर कर्ज अपन नामपर नहि। शकुन्तला निरुकेँ अपन माटिक नमूनापर अलग नाम लिखबाक कहैत छथि आ सामूहिक शर्त पहिने कारीगरसभक अपन भाषा मे तय करबाक आग्रह करैत छथि। ललित लिखनिहारक सहायता देबाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा शकुन्तला तुरन्त निर्णयक वाणी दोसराक हाथमे नहि सौंपैत छथि। एहि छोट प्रतिरोधसँ ‘लेखनमे सहयोग’ आ ‘नीति निर्धारणक अधिकार’क भेद उजागर होइत अछि।

माटिक रसीद, बासनक देय आ चारि भिन्न दावाक रचना

शकुन्तलाक पुरान बहीमे चारि खेप बासन, एक मरम्मतिक आदेश आ दू प्राप्ति-पर्ची छथि; दू पर्ची माल उठाओल जाएबाक स्वीकृति छथि, भुगतानक प्रमाण नहि। नगर आयोजनमे बासन गनल गेल, मुदा देय शेष रहल। फाटक बन्द करबाक प्रसंग उठि गेलापर ‘पुरान दाम आधामे चुकता’ मानबाक प्रस्ताव हुनकर सोझाँ अछि। ई आर्थिक विवाद माटिक नमूनासँ स्वतः हल नहि होइत; पूर्ववर्ती देयक उत्पत्ति ओतए तैयार वस्तु आ श्रममे अछि। कमलेश दबगरक दोकानक किराया आ ग्राहकक मरम्मति-बकाया दो अलग खाता छथि। ओ किरायाक प्रस्ताव सार्वजनिक

समिति लग रखब चाहैत छथि, मुदा ग्राहकक निजी वस्तु आ नाम नहि। दुकान बन्द भऽ गेल, एहन घटना नहि; अगिला महीनाक किराया एखन अनिर्णीत।

सड़कक भराव लेल आ बासनक बनावट लेल उपयोग होइवला सामग्री दुनूकेँ ‘माटि’ कहल जाइत अछि; मुदा भरावक अनुमान-पर्ची आ बासनक खेप-रसीद अलग दायित्व देखबैत अछि। एक युवक सम्भावित चोरीक आरोप करैत अछि; नैरा एतय ओकरा अपराध-प्रमाण मानबासँ रोकैत छथि। प्रारम्भिक निरीक्षणसँ केवल ई देखाइत अछि जे शब्दक समानतासँ दू भुगतान-शृंखला एक मानबाक दावा समर्थित नहि। मूल प्रवेश-आदेश, वास्तविक ढुलाई-पर्ची आ सुरक्षित बाटक अलग निरीक्षण आवश्यक अछि। निरुक प्रस्तावक फल अधिकारी द्वारा स्थायी खोलब नहि; कारीगर, अभियन्ता आ नगर प्रतिनिधि संग स्थल-दर्शनक आवेदन स्वीकार करब, तथा आदेशक मूल प्रति मँगएबाक वचन अछि। शकुन्तला प्राप्ति-अङ्क उतारैत छथि। प्राप्ति-अङ्क न्यायिक स्वीकृति नहि, याचना दाखिल भेलाक सीमित प्रमाण अछि।

अधिकारी सभ बकाया एक ‘समझौता रकम’मे समाप्त करबाक बात कहैत छथि; शकुन्तला चारि खेपक दाम, मरम्मतिक मजदूरी आ बन्द बाटसँ गमाओल कार्य-दिनक अन्तर बतबैत छथि। कम रकम लेब आ समस्त देय चुकता मानब एक नहि। हुनकर हस्ताक्षर नहि करबाक निर्णय अध्याय ४१क ललितक निर्णयसँ संरचनात्मक सादृश्य रखैत अछि, मुदा वस्तु भिन्न : ललित भविष्यमे असुरक्षित भारी वाहन लेल तकनीकी स्वीकृति नहि दैत छथि; शकुन्तला अतीतक विशिष्ट देय मेटबएवला आर्थिक अनुबन्ध नहि स्वीकारैत छथि। दुनू निर्णय लेल ‘अस्वीकृति’ शब्द समान अछि, मुदा कानूनी–आर्थिक परिणाम एक नहि।

अमीना, विभा आ घरक श्रम : छोट कारोबारक स्वतन्त्रता

अमीना भठियाराक भोजन-व्यवसाय एकरा दोसर कथात्मक धरातल दैत अछि। निरीक्षण लेल आएल वर्दीधारी कर्मचारी भोजनक भुगतान बादमे ‘सार्वजनिक सेवा’क नामपर करबाक कहैत छथि। अमीना रसीद आ निश्चित तिथि माँगैत छथि : ओ भूखल लोककेँ खुअबामे रुचि रखैत छथि, मुदा दान करबाक निर्णयक अधिकार अपन मानैत छथि। एक कर्मचारीक चिड़चिड़ाहट आ दोसरक भुगतानक रसीद जारी करबाक सहमति छोट दृश्य-परिवर्तन अछि। उधर विभा अग्रहरी मजदूरसभक प्राथमिक उपचार-सामग्रीक मात्रा, खरीद-दाम, बिक्री-दाम आ सम्भावित निःशुल्क वितरण अलग लिखैत छथि; ओ स्वयं उपचारक चिकित्सकीय निदान देबाक दावा नहि करैत छथि। दवा, दान आ बिक्रीक अलग अधिकार एहि प्रकार प्रत्यक्ष अछि।

अमीनाक गरम दाल लेल शकुन्तलाक परीक्षणाधीन बासन खरीदबाक जिज्ञासापर शकुन्तला कहैत छथि जे आगिमे पाकब, पानि धरब आ टिकाऊपन जाँचब शेष अछि। अमीना नमूना वापस रखि दैत छथि। एहि क्षणमे बासन बनौनिहारक श्रममूल्य आ भोजन बेचएवालीक उपभोक्ता-सुरक्षा एक-दोसराक विरोधी नहि : वैज्ञानिक परीक्षण पूरा नहि भेल वस्तुकेँ ‘रोजगारक समर्थन’क नामपर तुरन्त बेचब उचित नहि। एहि दैनन्दिन क्रियासँ अध्यायक ज्ञानमीमांसक विचार अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। कमलेशक ग्राहक-गोपनीयता, निरुक ऋण-अस्वीकृति, अमीनाक बिल आ विभाक औषधि-सीमा एक सामूहिक नैतिक नारा नहि, छोट-छोट स्वतन्त्र कारोबारी विकल्प छथि।

नतिनीक शिक्षाक प्रश्न : परम्पराक ध्वनि आ भविष्यमुखी कथन

विद्यालयक प्रवेश-पर्ची पर शकुन्तला अभिभावकक सही करैत छथि। बच्ची पुछैत अछि जे ओ माटिक नाप, पानिक बाट आ पुलक काम सीखि सकैत अछि की। ललित कौशल-साझा करबाक बात करैत छथि, मुदा सुरक्षित पुलक निर्णायक परीक्षण प्रशिक्षित विशेषज्ञक क्षेत्र मानैत छथि। बच्ची चिन्तित अछि जे जँ ओ दोसर पेशा चुनत तँ दादीक चाक के घुमाओत। शकुन्तला एहि प्रश्नक आर्थिक कठिनाइ नहि मेटैत छथि : हुनकर हाथ दुखाइत अछि, परिवार बच्चीक सहायतापर निर्भर भऽ सकैत अछि। ओ कम काम लेब, अतिरिक्त श्रमिक राखब अथवा नवल तरीका सीखब जेकाँ कठिन सम्भावना खुला रखैत छथि। एकर महत्त्व ई नहि जे घरक संसाधन स्वतः उपलब्ध भऽ गेल; महत्त्व ई जे बच्चीक इच्छा परिवारक निर्धनताक नामपर तुरन्त बन्द नहि भेल।

अन्तिम चित्रमे चाकक वृत्त, कुम्हरौटिक पगडंडी आ विद्यालयक चौखट बच्ची अपन कापीक तीन पन्नापर बनबैत अछि। एके हाथ, तीन भिन्न बाट—ई चित्रक अनुरचना अध्यायक आरम्भक दू डल्लासँ गाढ़ सम्बन्ध रखैत अछि। माटिक पदार्थक भिन्न प्रयोग जकाँ एक मनुष्यक अनेक सम्भावित जीवन-पथ छथि; मुदा उपमा पूर्ण दार्शनिक समानता नहि, शिल्पभाषाक खुलल ध्वनि अछि। रसक दृष्टिसँ वृद्ध कारीगरक चिन्ता, नतिनीक उत्साह आ आर्थिक अनिश्चयक मिश्रण केवल विजयक उत्साह पैदा नहि करैत; करुणा, वात्सल्य आ सम्भावनाक सामञ्जस्य अछि। अन्तमे माटि भीजल अछि, बकाया नहि भेटल, फाटक बन्द अछि आ शिक्षा-खर्च शेष। कथा भविष्यक प्रश्नकेँ सार्थक बनबैत अछि, भविष्यक समाधान नहि घोषित करैत।

कथनकाल, प्रमाण-विभाग आ सीमाक विवेचन

ई आधुनिक समयधाराक एक भोरसँ राति धरि चलैत अध्याय अछि। पिछला सावनक माटि ढोएबाक स्मृति आ शकुन्तलाक पिता सँ चाक सीखबाक बालस्मृति सीमित पूर्वदीप्ति छथि। स्वतंत्र जनककाल अथवा अन्य प्राचीन कालधाराक दृश्य नहि; आख्यानक संकेत ‘दस्तावेज–गवाही · जल–स्थान बिम्ब · श्रम–समाज’ एतय वास्तविक पाठमे मुख्य रूपेँ पुष्ट अछि। दृष्टिकेन्द्र शकुन्तलाक स्पर्श, घरक बकाया आ नतिनीक प्रश्नक लग अछि; नैरा एतय प्रत्येक तथ्यक स्वामिनी नहि, कागद विभाजित करएवाली सहायक छथि। ताराक मापन स्वयं प्रमाण-सीमा घोषित करैत अछि।

अनुमानक दृष्टिसँ रङ्ग-सादृश्य सँ पदार्थक समान गुण निष्कर्ष निकालब अप्रमाणित अछि। ‘माटि’ एक शब्दसँ निर्माण-भराव, बासनक कच्चा पदार्थ आ जमीनक स्वामित्व एक नहि भऽ जाइत। प्रवेशक खतरा साँच होएब सम्पूर्ण बाट बन्द राखबाक हर शर्तक अनिवार्यता सिद्ध नहि करैत; एकरा लेल स्थान–समय–अधिकारक अतिरिक्त तथ्य चाही। अध्यायक उपलब्धि ई जे शिल्पक स्पर्शज्ञानकेँ विज्ञान-विरोधी लोकज्ञान नहि बनाओल गेल, न तकनीकी परीक्षणक एकमात्र पर्याप्त स्रोत। सीमा ई जे लगभग प्रत्येक सहायक पात्र लिखित श्रेणी-निर्धारणक लेल तत्पर रहैत अछि; कखनहुँ प्रशासनिक शिक्षा-आख्यान कथा-विवरण पर हावी होएबाक जोखिम अछि। तथापि बच्चीक पैघ बाँह, अधबनल कटोरी, शकुन्तलाक दुखैत हाथ आ अमीनाक भोजनक समय एहि अमूर्त विभाजनकेँ अनुभूतिपरक घनत्व दैत अछि।

अध्याय ४३ — कसेरा आ सोनार

धातुक खनखनाहट : मरम्मति, नवल वस्तु आ दामक सीमा

मीना साहक पीतलक पुरान बासनपर पड़ैत हथौड़ीक तीन चोटसँ अध्याय खुलैत अछि। पहिल दुइ चोटक ध्वनि आ तेसरपर फाटल जोड़क थरथराहट मीनाक स्पर्श–श्रवणक संयुक्त विशेषज्ञता बतबैत अछि। अस्पतालक पुरान बासनकेँ नव कामक उपयुक्त पात्र बनएबाक आदेश अछि; मीना कहैत छथि जे मरम्मतिक दाम लेतीह, नव बासनक नहि। वस्तु पुरान अछि, उपयोग बदलैत अछि, मुदा मूल्यांकनक आधार प्रयोगक नव नाम मात्र नहि। एहि भौतिक आरम्भमे विराट-पर्वक अज्ञातवास-सन्दर्भक शाब्दिक पात्र नहि, पर ‘नाम–काम–वस्तु’क असमानता ठोस कथात्मक रूप पबैत अछि। नवल कहल गेल मरम्मतिक वस्तुक पूर्ण सुरक्षा सेहो एखन परीक्षणाधीन अछि : राति ओ बासनमे पानि भरि जाँच कए बिना ग्राहककेँ नहि लौटा सकैत छथि। एहि आरम्भ-अन्तक घेरा शिल्प-उत्तरदायित्वकेँ दृश्य रूप दैत अछि।

उर्मिलाक अस्पतालक कपड़ा-पंजीमे गाड़ी पहुँचबाक समय आ सामान उठएबाक समय उलट-पुलट अछि। मीना दू पीतलक पात्र मरम्मति कएने छथि, मुदा अस्पतालक चालानमे एक समय ‘तीन मरम्मति’ बुझाइत छल। नैरा कपड़ा, बासन आ इलाजक अलग-अलग लेखा एके अपराधक सिद्धि नहि मानैत छथि। अगिला जाँचमे तेसर चिन्हक अभिप्राय मरम्मतिक संख्या नहि, मजदूरीक अलग कर-खाना निकलैत अछि—ई वास्तविक त्रुटि-संशोधन अछि। मुदा चालानमे दर्ज चारि वस्तुक प्राप्ति आ वास्तविक उपयोगक अन्तर शेष अछि। एहि बिन्दुपर कथाक सत्य-वितरण महत्त्वपूर्ण : एक गलत आरोप दूर भेलासँ सम्पूर्ण अनियमितता झूठ नहि, आ एक शेष विसंगतिसँ संशोधित गलत आरोप फेर सिद्ध नहि। मीनाक उपलब्ध प्रत्यक्ष ज्ञान दू वस्तुक आगमन, मरम्मति आ वापसी धरि अछि।

कमला सोनारक ‘घरक मुखिया’ : स्वामित्वक शाब्दिक विलोपन

कमला ठाकुर सोनारक दोकानमे वृद्धा आ युवक गिरवी राखल बालाक मालिकानापर अलग दावा करैत छथि। युवक पिता द्वारा व्यापार लेल उठाओल ऋणक प्रसंग रखैत अछि, वृद्धा बाला मायकेसँ भेटल व्यक्तिगत सम्पत्ति बतबैत छथि। पंजीमे वजन, धातु-परीक्षण, हस्ताक्षर आ ऋणदाताक अलग खाना रहितहुँ पुरान स्वामित्व-स्थानपर ‘घरक मुखिया’ लिखल अछि। एक अभिलेखीय वाक्य घरेलू सत्ता कैं कानूनी वास्तविकता जकाँ प्रस्तुत करैत अछि। वृद्धाक कथन—घरक मुखिया के छल, तकर बदला बाला के अपने जमा कएलक—नाम लिखबाक अभावकेँ केवल वर्तनीक भूल नहि, सम्पत्ति-अधिकारक प्रश्न बनबैत अछि। कमला दूनू पक्षकेँ अलग सुनैत छथि; जोर सँ बाजब प्रमाणक अग्राधिकार नहि।

बालाक भीतरक असमान टेढ़ फूल वृद्धाक स्मृति जागबैत अछि। वस्तुपर बचे निशानक कथात्मक प्रभाव पैघ अछि : ई दृश्य भावात्मक पहिचान दैत अछि, जकरा वृद्धा अपन शरीरक इतिहाससँ जोड़ैत छथि। मुदा कमला ओ निशानक आधारपर तुरन्त स्वामित्व घोषित नहि करैत छथि; पुरान जमा-पर्ची, साक्षी आ ऋणक अलग लाभ-प्राप्तिक जाँच चाहैत छथि। बादमे एक साक्षी कहैत छथि जे वृद्धा स्वयं बाला उतारने छलीह, मुदा रसीद परिवारक

पुरुषक नामपर लिखल गेल। कमला पुरान लेखा अपन बलपर बदलि नहि सकैत छथि; स्त्रीक दावा संलग्न करैत छथि। वृद्धा अपन नामक पूरक प्रति प्राप्त करैत छथि, सम्पत्ति-विवादक अन्तिम निस्तारण नहि। एतय मीनाक गलत संख्या-सुधार आ कमलाक शेष स्वामित्व-दावा दू भिन्न निर्णय-दशा छथि।

यथार्थपरक आलोचनामे ईहो जाँचब चाही जे असमान फूलक स्मृति मात्रक भावुकता यदि पूरा मालिकाना सिद्ध करितैक तँ वृद्धाक अनुभवकेँ प्रमाणक शास्त्रीय भेदसँ बाहर विशेषाधिकार भेटितैक। कथा एहन साधारण समाधानसँ बचैत अछि। वस्तु-चिह्न ‘पहिचानमे सहायक’ अछि; ककरा कहिया सम्पत्ति मिलल, गिरवी देबाक अधिकार केकरा छल, ऋण कोन शर्तपर बनल—ई प्रश्न अलग उत्तर चाहैत छथि। कमलाक पात्र तत्पर आदर्श न्यायाधीश नहि, व्यवसायिक अभिलेखक सीमित संरक्षक छथि। पात्रक विश्वसनीयता एहि घोषित सीमामे अछि।

शिल्प, डिजाइन आ श्रेयक पाँच पृथक दाबी

रेखा साहु लहेरी चूड़ीक नव नदी-घुमाववला डिजाइन बनबैत छथि। ग्राहक ई नमूना मशीनवला दोकानकेँ देबाक योजना करैत अछि, मुदा डिजाइनक दाम अलग नहि गनैत। रेखा निर्माणक लागतसँ अलग नाप–रूपरेखाक अनुमति आ मूल्य माँगैत छथि। उषा राम बाजाक चाम आ जूताक नवल जोड़ लेल मजदूरीक स्वतंत्र पर्ची चाहैत छथि : गायकक मेहनाना आ ढोलकक मरम्मतिक देय एक नहि। बिन्देश्वरी साहुक पुरान घानीक बिक्रीक प्रश्नमे भौतिक उपकरण, ऋणक भुगतान, परिवारक स्मृति आ नव व्यवसाय आरम्भ करबाक लागत अलग छथि। गोमती मजदूरसमूहक ढुलाई-काजमे भीजल चूनक बोरा उठेबाक बढ़ल परिश्रमक दाम प्रश्न उठैत अछि। ई चारि दृश्य ‘वस्तु बनौनिहारकेँ नाम दिअ’क एके सन्देश नहि; प्रतिलिपि-अधिकार, मरम्मति-मजदूरी, सम्पत्ति-विनिमय आ श्रमसमयक मापनक स्वतंत्र अर्थतन्त्र छथि।

रेखा आ कमलाक टेढ़ फूलपर वार्ता विशेष सूक्ष्म अछि। बनावटमे असमानता कला-कौशलक दोषे होएत एहन नहि; ग्राहकक हाथपर खुरदुर किनार घसत तँ ओकरा सुधारब आवश्यक। पहिल अवस्थामे टेढ़ फूल निजी स्मृतिक संकेत अछि, दोसरमे चूड़ीक खुरदुर कोना उपयोगक जोखिम। ‘सुन्दर’ आ ‘सुरक्षित’क भेद एहि दृश्यसँ प्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। वृद्धा स्वयं रेखाक चूड़ी पहिरबाक सुविधा पूछैत छथि आ रेखा साँचपर फेर जाँच करैत छथि। पारस्परिक परीक्षण भाषिक शिक्षणक बदला क्रियामे घटैत अछि। उषाक जूताक नवल जोड़ सम्बन्धी डिजाइन-रसीद सेहो पेशाक श्रेय विवादमे आंशिक आधार अछि; नकलक अन्तिम न्यायिक निर्णय एखन नहि।

बिन्देश्वरीक घानी बेचबाक विचारक संग बुजुर्ग स्त्रीक दीपक-स्मृति आ पुरान माप-पात्र बचबएबाक आग्रह जुड़ैत अछि। वस्तु बेचि परिवारक ऋण चुकाएब आ पुरान कौशल-स्मृति बचाएब एक-दोसराक अनिवार्य निषेध नहि। घरक बातचीतक अन्तमे माप-पात्र, तख्ती आ पुरान बही राखबाक प्रस्ताव मानल गेल, मुदा घानी बेबाक निर्णायक हस्ताक्षर नहि भेल; खरीदारक नवल मूल्यांकन दू दिन बाद अपेक्षित अछि। एहि अधूरा समझौताक अर्थ सामाजिक परिवर्तनक लागत स्वीकारब अछि। नयी तेल-दोकानक सम्भावना सफल व्यवसाय भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि। घरक स्त्रीक स्मृतिसँ आधुनिक आर्थिक विवेकक संघर्ष एकमात्र ‘नव पीढ़ी बनाम पुरान’ नहि, किएक तँ बिन्देश्वरी स्वयं स्मृतिसँ आबद्ध छथि।

सीप, चून आ अज्ञात चौथ वस्तु : साक्ष्यक समय-स्थान

अस्पतालक गोदाममे गोमतीक मजदूर-दल कहैत अछि जे ओ सभ ‘चून’ लिखल बोरा ढोने छलाह; भीतर वास्तवमे कोन पदार्थ छल, केकरा लग छल आ कतय लगल, से हुनकर प्रत्यक्ष अनुभव नहि। गोदामक चालानपर ‘सामग्री प्राप्त’क मोहर अछि, मुदा ‘उपयोग स्थल’ खाली अछि। मीना दू पीतलक वस्तुक मरम्मति जानैत छथि; तीसरा चिन्ह कर-खाना निकलल; चतुर्थ अज्ञात टुकड़ाक प्रश्न खुलल। नैरा वस्तुक प्राप्तिक क्षण आ ओकर प्रयोगक ठाम दू अलग जाँच-विषय लिखैत छथि। एहि क्रममे मजदूरसभक गवाही सामग्रीक सम्पूर्ण स्वरूप तय नहि करैत; मुदा ढुलाईक दिन, परिश्रम आ भुगतानक देयक स्वतंत्र प्रमाण अवश्य दैत अछि।

ई आख्यानशास्त्रीय क्षण असाधारण अछि, किएक तँ गोमतीक स्वर केवल जाँच-दल लेल सूचना-स्रोत नहि रहैत। ओ भीजल बोरा उठएबाक बढ़ल श्रमक बकाया सोझाँ रखैत छथि। अपराधक खोज समाप्त अथवा स्थगित भेला पर श्रमक देय समाप्त नहि होइत। बहीमे बनल अलग मजदूरी-खाना ‘विदेह समानान्तर इतिहास’क उपयोगी व्याख्यात्मक बिन्दु अछि : प्रमुख आधिकारिक वस्तु-पंजीक संग अल्पदृश्य श्रमिकक स्वतन्त्र आर्थिक इतिहास लिखल जा सकैत अछि। मुदा एहिसँ उपन्यासक कल्पित दृश्य ऐतिहासिक अभिलेखक वास्तविक सत्यापन नहि बनि जाइत। साहित्य सामाजिक अनुपस्थितिक प्रश्न उद्घाटित करैत अछि; बाहरक इतिहास-लेखनकेँ स्वतंत्र स्रोत चाही।

बहुकेन्द्रित आख्यानक शक्ति आ समुच्चयक जोखिम

कथन आधुनिक एक दिनक भोरसँ राति धरि चलैत अछि। मीना–उर्मिलाक अस्पताल-प्रसंग, कमलाक स्वामित्व-विवाद, रेखाक रूपरेखा, उषाक चाम-जूता, बिन्देश्वरीक घानी आ गोमतीक गोदाम-श्रम एक-दोसराक संग समकालीन अथवा दिनक विविध क्षणमे रखल गेल अछि। तृतीयपुरुष कथावाचक पात्रसभक सामाजिक परिस्थिति बतबैत छथि, पर सभक मनोभाव समान विस्तारमे नहि खोलैत। मीना आ कमलाक काजक विस्तृत दृश्यकेँ प्राथमिक स्थान भेटैत अछि; बिन्देश्वरीक परिवारक संवाद स्मृति-आवेग खोलैत अछि; गोमतीक छोट गवाही सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण द्वार अछि। ई केवल एक ‘नायिका’क अन्तर्मनमे घटल कथानक नहि, वस्तु आ खाता द्वारा एकत्रित बहुकेन्द्रित बजारक आख्यान अछि।

चालानक चारि वस्तुक प्रश्न अध्यायक आरम्भसँ अन्त धरि थामल अछि, मुदा बीचमे पाँच पेशागत कथावृत्त आबैत अछि। एहि समृद्धिक संग संकटक संभावना अछि : पात्रक परिचय आ हक-दावाक क्रम कखनो १५७ व्यवसाय-सूचीक सफल प्रतिनिधित्वक प्रदर्शनी बनि सकैत अछि। नैरा, मीना, कमला, उषा, रेखा आ गोमती सभसँ लगभग एके प्रमाण-विभाजनक भाषिक सूत्र निकलैत अछि। यद्यपि जीवन-विशिष्ट स्मृति—बाला भीतरक टेढ़ फूल, घानी लग दीप, खुरदुर चूड़ीक किनार, भीजल बोरा—एहि सूत्रक यांत्रिकता कम करैत अछि। कथा पाठकक ध्यान केन्द्रीय अस्पताल-विसंगतिसँ बँटबैत अछि, जे बहुस्वरताक लाभ सेहो अछि, गति-बाधाक सम्भावित स्रोत सेहो।

आख्यानगत प्रमाण-दृष्टिसँ ‘तीन समान आकारक चिन्ह’ सँ ‘तीन मरम्मति’क निष्कर्ष गलत ठहरल; संकेतक वर्गीकरणक भ्रम हटला पर सही पाठ भेटल। ‘सामग्री प्राप्त’क मोहर ‘सामग्री निर्दिष्ट ठामपर उपयोग भेल’क

निर्णायक प्रमाण नहि; बीचक सम्पूर्ण कार्य-शृंखला अलग ज्ञातव्य। वृद्धाक टेढ़ फूल वस्तुक पहिचानमे सहायक, मालिकाना अधिकारक पूर्ण हेतु नहि। एकहि अध्यायमे संख्या-पाठ, वस्तु-स्थान आ स्वामित्वक तीन अलग प्रमाण-सङ्कट छथि। एहि विविधताकेँ ‘दस्तावेज बनाम लोक’क सपाट द्वन्द्व नहि बनायब उचित। कथाक उपलब्धि सुधारल त्रुटि आ बचल अनिश्चितताकेँ एक संग रखब अछि; सीमा सभ पात्रक एकसमान वाद-विवाद-निपुणताक सम्भावित अप्राकृतिक विस्तार।

अध्याय ४४ — लोहारक औजार

भट्ठीक पातर पटरी आ डरक डिजिटल शीर्षक

हरिनारायण शर्माक भट्ठीक पीयर आगि, निहाइपर पातर पटरीक खाँज आ अजितक कापीमे नाप—अध्यायक आरम्भ कारीगरीक प्रत्यक्ष प्रक्रिया अछि। मोबाइलपर फैलल चित्र एहि प्रक्रियाक अधिकांश सन्दर्भ काटि दैत अछि। फोटोमे छड़ आ टेढ़ आकारक लोहेक पात बचैत अछि, शीर्षक बनैत अछि—अस्पतालक गोदाम लग हथियार बनबाक सुराग। वास्तविक कार्यशालामे चारि अलग वस्तु छथि : पानीक निकास-जाली खोलबाक हुक, हाथगाड़ीक धुरीक कील, करघाक कसनी आ नावक रस्सी टिकेबाक छल्ला। चित्रक काटल सीमा वस्तुक वास्तविक उपयोगक व्याख्या बदलैत अछि। अध्याय २९क ‘बच्चा चोर’ अफवाह आ २०क असमय प्रकाशनसँ एहि दृश्यक सम्बन्ध अछि, मुदा एतय आरोपित बच्चा-गुमशुदगी नहि, सामान्य धातु-औजारकेँ हिंसक वस्तु घोषित करबाक संचारगत घटना अछि।

हरिनारायण शस्त्रक दोसर सम्भावित उपयोगकेँ सर्वथा असम्भव नहि कहैत छथि। प्रहरी पुछैत छथि जे एक औजारक अन्य उपयोग भऽ सकैत अछि की; ओ उत्तर दैत छथि जे सम्भावना आ एहि ठाम वास्तविक काजक प्रमाण अलग छथि। ई महत्त्वपूर्ण : आलोचनामे साधारण औजारक ‘निष्कलङ्क’ स्वरूप सिद्ध करबाक चेष्टा नहि, देल आरोपक पुष्टिक स्तर जाँचल जाए। जँ कोनो वस्तु एक सन्दर्भमे हिंसक रूपेँ उपयोगी होइ सकैत अछि, तँ ताहिसँ कारीगर द्वारा ओहि क्षण हिंसाक लेल निर्माण कएल गेल निष्कर्ष नहि निकलैत। प्रमाण-प्रश्न वस्तुक नाप, ग्राहकक आदेश, पुर्जाक देखल उपयोग आ वास्तविक निर्माण-परिस्थिति धरि सीमित अछि। लोहाक प्रकृतिमे नैतिक दोष/गुण चिपका देब एतय कथाक तर्कविरुद्ध होएत।

अजितक दृष्टि आ नैराक पूर्वत्रुटि : निकट आ दूर दृष्टिकेन्द्र

अजित अपन पिताक प्रतिष्ठापर आघात देखिकऽ फोटो पठौनिहारकेँ तुरन्त दोषी ठहराबए चाहैत अछि। हरिनारायण ओकरा रोकैत छथि : जे गलती हुनका प्रति भेल, ओही अनुमानक आधारपर दोसरापर आरोप लगायब नहि। ई पिता–पुत्रक छोट दृश्य अध्यायक नीतिक स्थान मनुष्यमे रखैत अछि। अजितक कापीमे वास्तविक माप लिखब केवल प्रशासनिक प्रतिवाद नहि, उभरैत शिल्पी द्वारा अपन आँखि प्रशिक्षित करबाक काम अछि। कथावाचक ओकर क्रोधक पूर्ण आन्तरिक विश्लेषण नहि दैत, मुदा स्थिर हाथ, फुलाओल मुँह आ मौन प्रश्नसँ निकट दृष्टिकेन्द्रण उत्पन्न करैत छथि।

नैरा अपन महेशक गवाही असमय प्रकाशित करबाक पुरान गलती याद करैत छथि। ओ एखन सार्वजनिक कथन तीन श्रेणीमे सीमित रखैत छथि—चित्रमे जे देखाइत अछि, कार्यशालामे जे प्रत्यक्ष जाँचल गेल, आ शेष प्रश्न। एक संग ओ दुनू जोखिम देखैत छथि : गलत आरोप फैलायब आ वास्तविक चिन्हक सम्भावित जाँच रोकि देब। एहि अर्थमे नैरा पूर्ण विश्वसनीय सर्वज्ञ न्यायाधीश नहि; पूर्वत्रुटि-स्मृतिक कारण अपन वक्तव्यक अधिकार सीमित करए सीखने व्यक्ति छथि। कथनक प्रगति क्रियात्मक अछि—ओ निरीक्षण-प्रतिक शब्दपर आपत्ति करैत छथि, ‘बरामद’क स्थानपर ‘निरीक्षित’ शब्द लिखबबैत छथि। जब्ती नहि भेल वस्तुकेँ बरामद कहब भविष्यक पाठक वा कार्यालयक गलत निष्कर्षक आधार बनि सकैत छल।

इरफानक धुरी आ ब्रेक : विशेषज्ञता-सङ्कटकेँ नायकीय न बनाउ

इरफान खान वाहन-मरम्मतिक काज लेल घिसल बुसिंग लऽ कऽ अबैत छथि। हुनकर आदेश-पर्चीमे गाड़ीक धुरी, तिथि आ पुरान पुर्जाक चिन्ह छथि। ग्राहकक एक यात्रीगाड़ी मजदूर आ रोगी ढोएत; ब्रेकक आवाजक शिकायत लिखलासँ ग्राहकक अनुबन्ध टूटबाक जोखिम अछि। इरफान खराबी दोसर बेर देखबाक आवश्यकता स्वीकारैत छथि, मुदा पहिने देखल घिसाइ छिपायब नहि चाहैत छथि। एहि निर्णयक संरचना ललितक प्रसंगसँ मिलैत अछि—आयक भय आ जाँचक सत्य—तथापि घटना अलग। ललितक ठेका वास्तविक रूपेँ वापस लेल गेल; इरफानक ग्राहक खिसकि सकैत छथि, ई सम्भावना अछि, सम्पन्न घटना नहि।

इरफान पुलिसकेँ पुर्जाक प्रदर्शित उपयोग देखबैत छथि, किन्तु दोसर कार्यशालामे बदलल भागपर गवाही नहि दैत छथि। नैरा हुनकर ‘देखल, कएल, सुनल’ तीन शब्द लिखैत छथि। ई श्रेणीकरण शब्द-प्रमाणक स्रोतक स्थिति बुझबए मदद करैत अछि : अपन आँखिसँ देखल निरीक्षण, अपन हाथसँ कएल कार्य आ दोसरसँ सुनल विवरण एके स्तरक साक्ष्य नहि। मुदा ईहो सरल सूत्र अन्तिम सत्य नहि, किएक तँ देखल वस्तुक अर्थ सन्दर्भपर निर्भर अछि, तकनीकी परीक्षणक विधि चाही, आ कारीगरक स्मृति त्रुटिहीन नहि। ई आलोचनात्मक शर्त उपन्यासक व्यावहारिक विवेकक संग जोड़ब आवश्यक अछि।

फरजाना, रेखा आ शारदा : औजारक तस्वीरसँ बाजारक अधिकार धरि

फरजाना चूड़ीहार हाथक लाहक कड़ा, शीशाक चूड़ी आ मशीनसँ बनल सामान अलग बतैत छथि। हुनकर रङ्ग-मिश्रण आ हाथक घुमाव रेखा साहुक नव डिजाइनक सरासर नकल नहि; ओ अपन शिल्पक विशिष्ट खर्च आ टिकाउपन खोलैत छथि। ग्राहकक सोझाँ औजारक सादृश्य आ उद्देश्यक अन्तर देखबैत छथि। ओहिमे बनाओल फोटो पर ‘हथियार’क सामान्यीकरणक प्रतिवाद निहित अछि—चिमटा, कसनी, गरम लाहक पकड़ आ काठक साँचक काज अलग। हुनकर भतीजी अपन पैसासँ धूसर-हरियर कड़ा चुनैत अछि; फरजाना तय छूट रसीदमे लिखैत छथि, मनमानी ‘दान’ नहि कहैत। एहि घरेलू हलुक हँसीक दृश्यसँ डरग्रस्त बाजारमे जीवनक निजी रुचि बचैत अछि।

शारदा कसौधनक पुरान गिरवी-बहीमे दोहराओल ब्याज, स्त्रीक नामक बदला ‘परिवार’ लिखल प्रविष्टि आ वस्तु छुड़एबाक अस्पष्ट भुगतान देखाइत अछि। ई कमला सोनारक स्वामित्व-विवादसँ जुड़ल अछि, मुदा कमला वृद्धाक निजी दावाक कागद बिना अनुमतिक शारदाकेँ नहि देखबैत छथि। शारदा अपन दुकानमे मूलधन, ब्याज आ

स्वामित्वक अलग खाना प्रस्तावित करैत छथि; पारिवारिक बैसारमे भाय एक दोहराओल ब्याज-संशोधन मानैत छथि। सम्पूर्ण पुरान खाता खुलल अथवा सभ गिरवी मुक्त भेल नहि। एहि सीमित परिवर्तनक महत्त्व एतबे जे आर्थिक गोपनीयताक परम्परागत निषेध पहिल बेर टूटैत अछि, भले पूर्ण प्रणाली न बदलल हो।

फरजानाक बच्चासभकेँ ठंढा साँच आ सुरक्षित नमूनासँ कारीगरी देखेबाक प्रस्ताव ‘ज्ञान बाँटब’क संग बाल-सुरक्षा जोड़ैत अछि। रेखा प्रशिक्षणक वास्तविक दाम स्मरण करबैत छथि। ई प्रसंग अध्याय ३१क एकलव्यक शिक्षा-अधिकार, ३६क घुमन्तु पाठशाला आ ३८क रुहानीक कक्षासँ दूरक सम्बन्ध बनबैत अछि। कारीगरी सीखब आ प्रशिक्षकक मुफ्त श्रम काढ़ि लेब भिन्न बात। नवल पाठशाला एतय प्रारम्भ भऽ गेल, एहन किछु नहि; योजना आ नीति-विवेकक स्तर पर दृश्य अछि।

निरीक्षणक निर्णय आ तकर सामाजिक लागत

प्रहरी आ नगर-दल चारि औजारक नाप, ग्राहकक आदेश आ प्रत्यक्ष प्रयोग देखैत अछि। ‘हथियार बनैत अछि’क विशेष आरोपक समर्थनमे कार्यशालासँ ताहि दिन कोनो वस्तुगत प्रमाण नहि भेटैत; संशोधित निरीक्षण-पर्चीमे वस्तु ‘निरीक्षित’ लिखल जाइत अछि। बाहरी खेप वा स्वतंत्र शिकायतक पृथक जाँच खुला रहैत अछि। नगर सूचना-पटपर आरोप पुष्टि नहि भेलाक संशोधन चढ़ैत अछि, मुदा नन्दलाल अपन खेतक फालक आदेश तुरन्त पुनः नहि देलक, आ सार्वजनिक माफी सेहो नहि भेटल। एहि असमान काल-गतिक महत्त्व अछि : प्रतिवादक सही पर्ची एक दिनमे बनि सकैत अछि, विश्वासक आर्थिक पुनर्निर्माण तुरन्त नहि होइत।

कथाकार हानिक स्तरकेँ साधारण मानहानि-नैतिकता पर नहि रोकैत छथि; ग्राहकक डर, कार्यशालाक अनिश्चित आमदनी आ अजितक पिताप्रति चिन्ता कथा मे रहने दैत छथि। मुदा हानि मापबाक नामपर निश्चित कारोबारिक घाटाक आँकड़ा उपलब्ध नहि, तें आलोचककेँ कतेक रुपया गमल, एहन मनगढ़न्त परिमाण नहि जोड़बाक अछि। नगर सूचना-पट सार्वजनिक अभिलेखीय संशोधन अछि, सोशल-मीडियाक सभ मूल प्रतिलिपि हटि गेलाक प्रमाण नहि। ई सीमाङ्कन कथा आरम्भक डिजिटल फोटो आ अन्तक स्थानीय सूचना बीच संचारक असमान विस्तार देखबैत अछि।

आगि, लोहा आ झुनझुनाक अधूरापन

भट्ठीक दिन राति धरि पुगैत अछि। अजित लोहेक बेकार टुकड़ासँ छोट झुनझुना बनबैत अछि; तीनमे सँ दू टुकड़ा बजैत अछि, तेसर नहि। ओ दूरी बदलैत अछि आ तीनू अलग स्वर पबैत अछि, मुदा एक किनार एखन खुरदुर अछि; पिता कहैत छथि जे ओकरा घसब शेष। आरम्भमे फोटो पर लोहेक ‘नोक’ भय पैदा कएलक; अन्तमे लोहेक नोक घसि बच्चाक हाथ सुरक्षित राखबाक काम बचल अछि। ई आरम्भ–अन्तक पुनरावर्तन विरोधाभासी अर्थ दैत अछि : एके पदार्थक सामाजिक नाम हिंसा होइ सकैत अछि, मुदा शिल्पक वास्तविक उपयोग संगीतक सृष्टि करए लगैत अछि। ई वस्तुकेँ स्वाभाविक रूपेँ पवित्र घोषित नहि करैत; पूरा करबाक, परखबाक आ सुरक्षित बनायबाक सतत प्रक्रिया पर बल दैत अछि।

कथा-काल एक दिनक भोरसँ राति धरि मुख्यतः रेखीय अछि। पहिनुक मोबाइल-प्रसारण, महेशक साक्षी-प्रकाशन आ ललितक खोएल ठेकाक स्मृति कथ्यगत पूर्वसूचना छथि। स्वतंत्र मिथकीय पात्र-काल एहि अध्यायमे

उपस्थित नहि; विराट-पर्वक छद्मक संरचनात्मक नामक संग डिजिटल छविक छल-प्रभावक तुलना सम्भव अछि, मुदा एहि तुलनाक प्रमाण पाठमे स्वीकृत कथात्मक समानता नहि। कथावाचक तृतीयपुरुषमे कार्यशालाक दृश्य खुलैत छथि, फेर नैरा, इरफान, फरजाना आ शारदाक अलग व्यापार-स्थानक बीच स्थानान्तर करैत छथि। एतेक विविध दृष्टि सँ सामूहिकता बनैत अछि, किन्तु चरित्रसभक ‘पहिने नाप–रसीद–अलग जाँच’क समान सूक्ष्म कथन-आदत पुनरावृत्तिक खतरा पैदा करैत अछि।

प्रमाण-विवेचनक उपलब्धि ई जे सम्भाव्य अन्य उपयोग आ सिद्ध वर्तमान उद्देश्य अलग रहल; निरीक्षण आ जब्ती अलग रहल; अफवाहक सुधार आ क्षतिक क्षतिपूर्ति अलग रहल; ऋणक मूलधन आ ब्याज अलग रहल। ई बारम्बार भेद कथाक अनिवार्य नैतिक विषय छथि, मुदा उपन्यास पाठकपर भरोसा करिते किछु भेद दृश्य द्वारा प्रकट कऽ सकैत छल, बारम्बार पात्रक मुखसँ घोषणा करब जरूरी नहि। दूसरी ओर अजितक झुनझुना, फरजानाक छूटवाली रसीद, इरफानक बुसिंग आ भट्ठीक ताप एहि बौद्धिक योजनाकेँ पदार्थ, समय आ देहक अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि। अन्तिम कारीगरी ‘सम्पन्न’ नहि—अधूरा किनार घसब शेष अछि; ई नैतिक रूपसँ खुलल कथाविकासक सटीक लघु-बिम्ब अछि।

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ४१–४४ क संयुक्त आलोचना

चारि आरम्भ, चारि परीक्षण-वस्तु, चारि असम्पन्न परिणाम

एहि चारि अध्यायक संरचना एक अंशमे योजनाबद्ध अछि : भोरमे कारीगर अपन वस्तु छूइत छथि; कोनो सार्वजनिक कागद अथवा आरोप वस्तुक अर्थ बदलबए लगैत अछि; अनेक समुदाय-व्यक्ति भेटैत छथि; संध्या धरि आंशिक संशोधन होइत अछि। ई आवर्तन वस्तुगत प्रमाणक विषयकेँ प्रखर करैत अछि। तथापि घटनात्मक विशिष्टता ओकरा यांत्रिक श्रृंखलामे पूर्ण विलीन नहि होमए दैत। अध्याय ४१क केन्द्र काठक उतार-पट्टाक अप्रमाणित भार-सुरक्षा अछि; ४२मे माटिस्थलक अवरोध आ बासनक बकाया; ४३मे धातुक मरम्मति, गिरवी सम्पत्ति आ चारि वस्तुक चालान; ४४मे औजारक छवि, निरीक्षणक शब्द आ प्रतिष्ठाक हानि। पहिलमे ठेका वास्तविक रूपसँ खसैत अछि, दोसरमे प्रवेशक निवेदन स्वीकार होइत अछि, तेसरमे एक गलत पढ़ाइ सुधरैत अछि, चारिममे सार्वजनिक आरोपक निरीक्षणाधारित प्रतिवाद जारी होइत अछि। एहि परिणामकेँ ‘सभ विवादक समाधान’ कहल जाए तँ आख्यानक नकारात्मक साक्ष्य मेटि जेत।

काल-स्थान आ दृष्टिकेन्द्रण : विराट-पर्वक आधुनिक कार्यशाला

चारू अध्यायमे वर्तमान समयक भोर–दुपहर–साँझ/रातिक वृत्त प्रधान अछि। काठक भीजल फाट, चाकक चिक्कन माटि, पीतलक थरथराहट आ लोहेक निहाइक चोट—चारि आरम्भ मे पदार्थक भिन्न अनुभूति अछि। एहि दृश्य-बोधसँ कथावाचक प्रत्येक पेशाक विशिष्टता स्थापित करबाक प्रयत्न करैत छथि। ओकर बाद नैरा अनेक स्थलमे घुमैत संयुक्त प्रमाण-सम्पर्कक वाहक बनैत छथि; मुदा ओ अपन पहिनुक प्रकाशन-त्रुटिक स्मृति आ सीमित नकल रखबाक निर्णय द्वारा सर्वज्ञ केन्द्र बनबासँ बचैत छथि। ललितक आर्थिक चिन्ता, शकुन्तलाक दुखैत हाथ, मीनाक जोड-काजक समय आ हरिनारायणक ग्राहक खोएबाक चिन्ता अलग निजी दृष्टिकेन्द्र उत्पन्न करैत

अछि। चारू अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे प्राचीन मिथकीय दृश्य नहि रहितहुँ महाकाव्य-संरचनाक भीतर आधुनिक शिल्पसभक दैनिक महानता अन्वेषित होइत अछि; पौराणिक पात्रक प्रत्यक्ष प्रवेश नभेलो पर ‘ककर नाम ककर काजक प्रतीक बनत’क प्रश्न जीवित अछि।

प्रमाणक वर्गीकरण आ आख्यानशास्त्र : अतिदावाक निषेध

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ ‘नव रंगक लेप’ सँ सम्पूर्ण नव सुरक्षित पट्टा, ‘माटि’ शब्दसँ समान पदार्थ, ‘तीन चिन्ह’ सँ तीन मरम्मति आ ‘छड़ जकाँ आकार’ सँ हथियारक निर्माण—चारू अनुमानमे मध्यवर्ती सिद्धि आवश्यक अछि। उपाधि-जाँचक आधुनिक दृष्टान्तरूपेँ सामग्रीक प्रयोग-स्थान, जलस्तर, वास्तविक वस्तु-परीक्षण, मूल प्रारूप आ ग्राहकक आदेश निर्णायक छथि। तथापि ई साहित्यिक उपमान आधुनिक तकनीकी प्रयोगशालाक मानकक स्थान नहि लैत। तत्त्वचिन्तामणिक प्रमाण-विभागसँ तुलना करिते मूल शास्त्रीय पदक प्रयोगक ऐतिहासिक सन्दर्भ अलग जाँचबाक अछि; उपन्यासक संवाद शास्त्रक प्रामाणिक उद्धरण नहि। न्यायकुसुमाञ्जलिक अदृष्ट-कारण प्रश्नकेँ सेहो प्रत्येक अनदेखल बिलक रहस्यसँ सरासर समरूप नहि मानब उचित। एहि चारि अध्यायमे ‘अदृष्ट’ सामान्य भाषामे अनदेखल वस्तु-विवरण होइत अछि, दर्शनमे ओकर तकनीकी अर्थ स्वतन्त्र।

विदेह समानान्तर इतिहास : श्रमिकक आवाज आ सूचीगत जोखिम

उमा, पारो, सलीम, शकुन्तला, निरु, कमलेश, अमीना, विभा, मीना, कमला, रेखा, उषा, बिन्देश्वरी, गोमती, इरफान, फरजाना, शारदा आ हरिनारायणक वृत्तान्त अलग समुदाय-इतिहासक स्रोतभूत प्रश्न उद्घाटित करैत अछि : मजदूरी ककर नाम, वस्तु ककर हाथ, डिजाइन ककर, गिरवी सम्पत्ति ककर, मरम्मतिक समय ककर, सार्वजनिक संशोधनक लाभ ककर। ई साहित्यिक दृश्य समाजक अनुल्लिखित परिश्रमक सम्भावित इतिहास देखबैत अछि, मुदा वास्तविक इतिहासक प्रतिस्थापन नहि। प्रत्येक पात्रक पेशा, समाज आ स्वयं निर्णयक भेद राखल जाय; जाति/समुदायक नामसँ स्वतः कौशल वा नैतिकता निष्कर्ष नहि निकालब। लेखकक १५७ व्यवसाय–समुदाय-विन्यासक महत्त्व विशाल श्रमिक-जगत बनबएबाक लक्ष्य अछि; सीमा ई जे दृश्यसभ क्रमशः व्यवसाय-प्रदर्शन आ स्वीकृति-पत्रक पाठ बनि सकैत अछि। एहि जोखिमक परीक्षण लेल आगाँक अध्यायमे पात्रसभक अप्रत्याशित परिवर्तन, स्वार्थ-संघर्ष, विफलता आ दीर्घ स्मृतिसम्बन्ध देखब आवश्यक रहत।

साहित्यिक उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आगाँक प्रश्न

एहि खण्डक कलात्मक सामर्थ्य वस्तु-विशेषक इन्द्रियगत चित्र, आर्थिक परिणामक असमानता आ अधूरा निर्णयक पुनरावर्तनमे अछि। ललितक ठेका नहि बचैत; शकुन्तलाक नतिनीक भविष्यमे खर्चक प्रश्न शेष; मीनाक चतुर्थ सामग्रीक खोज बाँकी; हरिनारायणक ग्राहकक विश्वास तुरन्त घुरि नहि अबैत। कथाक नैतिक उपलब्धि ई जे ‘जाँच’केँ केवल दोषी धरणाक मशीन नहि, निर्दोषक आरोप हटएबाक, श्रमिकक दाम चिन्हबाक आ वस्तुक सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करबाक प्रक्रिया बनाओल गेल अछि। मुदा एहि संकल्पनाक स्पष्ट घोषणासभ लगातार अबैत रहला सँ गद्यक स्वाभाविक बहुस्वरता घटबाक आशङ्का अछि; नैरा आ विभिन्न पेशाक पात्रक भाषा अनेक ठाम समान रूपेँ विधिक–प्रमाणिक भऽ जाइत अछि। विरोधी कर्मचारी/ग्राहकक आकाङ्क्षा, आर्थिक

बाध्यता आ मानवीय जटिलताक किछु रूप अछि, मुदा अक्सर ओ मुख्य पात्रक सही पृथक्करण प्रतिपादन करएबाक अवसर बनि जाइत छथि। एहि सम्भावित उपदेशात्मकताकेँ नकारि देब निष्पक्ष आलोचना नहि होयत।

एहि चारू अध्यायक अन्तर्मुखी बिम्ब क्रमशः ललितक माटि दिस दृष्टि, नतिनीक तीन बाटक रेखा, मीनाक पानि-जाँच शेष बासन आ अजितक घसबाक बाकी झुनझुना अछि। एहि वस्तु-परिणामसभमे ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क आधारभूत संघर्ष सघन बनैत अछि : वचन देबाक समय के कतेक जनैत अछि, ककर लागत लगैत अछि, आ अपूर्ण ज्ञानमे जिम्मेदार निर्णय सम्भव अछि की। समस्त समाधानक दावा नहि, कार्य जारी रहबाक संरचना विराट-पर्वक ई मध्यांश आगामी औजार, सामग्री आ भू-अधिकारक अध्यायसभ लेल खोलैत अछि।

अध्याय ४५ — जोलहाक खेप

खटालक भीजल बाट : दृश्यसँ श्रम-वितरणक आरम्भ

अध्याय सुकठीक खटालक छप्परसँ टपकैत पानि आ विनोद केवर्तक माछबजारसँ खुलैत अछि। विनोद ढकनीमे जमल पानि माछक टोकरापर नहि, नालीक कातक भाँड़मे गिरबैत छथि; अगिला क्षणे बाजारमे छोट विक्रेताकेँ भेटैत फिसलनवला बाट आ दोसर ठाम ठाढ़ भारी गाड़ीक सुविधा बीच अन्तर उठैत अछि। ई जल-दृश्य केवल सांकेतिक सजावट नहि। बाजारक भौतिक विन्यास ककरा किराया देबाक बादो सूखल ठाम भेटत, ककर सामान खराब होएत आ ककर श्रम-दिन घटत, से प्रभावित करैत अछि। विनोदक किराया आ पयर राखबाक जगह एक-दोसरसँ अलग माँग होइत अछि। एहि प्रकार ‘घाट’क समस्या नदीक पानिसँ आगाँ बजारक निकास, चक्का आ पाट धरि विस्तार पबैत अछि।

यूसुफ अंसारीक प्रवेश दृश्य-वस्तुक बदलल अर्थ लऽ अबैत अछि। दू कपड़ाक गाँठपर एक्के दुकानक छाप अछि, मुदा पहिल गाँठक करघा-निर्मित धागा, जोड़ आ किनार यूसुफक परिचित श्रमक चिह्न छथि; दोसरक बनावट अनचिन्हार अछि। ताहि दोसर गाँठपर अस्पतालक उपयोग लेल स्वीकृतिक लेबल छपल अछि। लेबल पढ़बाक घटना आ कपड़ा छूबाक घटना कथामे भिन्न ज्ञान-क्षण बनैत अछि। यूसुफ थान फाड़ि निर्णायक परीक्षा कएलाक दावा नहि करैत छथि; ओ नमूना-स्तरक अन्तर देखैत छथि आ बिक्री रोकैत छथि। एहि सीमित कार्यमे कथाक आरम्भिक नाटकीयता अछि : अधिक दामक प्रलोभन आ तत्काल उधारी, दोसर कात वस्तुक निर्माण तथा चिकित्सालय-स्वीकृतिक अप्रमाणित दावा।

दू गाँठ, तीन अभिलेख : स्वामित्व, निर्माण आ अनुमोदनक अन्तर

व्यापारीक प्रतिनिधि दूनू गाँठक कुल बिल आ दुकानक छाप देखबैत छथि, मुदा ताहिपर यूसुफक हस्ताक्षर नहि। बिल ‘ई नामसँ माल चलल’ कहबाक दस्तावेज भऽ सकैत अछि, ‘ई माल ई कारीगर बुनलनि’ कहबाक पर्याप्त प्रमाण नहि। अस्पतालक ‘स्वीकृति’ तखन आओर अलग परीक्षण माँगैत अछि : उपयोग-वर्ग, खरीद-पञ्जी, गुणवत्ता-साक्ष्य आ अधिकृत स्वीकारकर्ता। यूसुफ पहिल थानक आदेश, असली नमूना आ प्राप्ति-पर्ची अलग रखैत छथि; दोसर गाँठपर लाल डोरीसँ बिक्री स्थगन चिह्न लगबैत छथि। एहि निर्णयसँ सामग्री जब्त नहि भेल, न अदालत निर्माताक निर्धारण कएलक; केवल गलत दावाक आधारपर ओकर व्यापारिक गति रोकल गेल।

नैराक आगमन कथामे साक्ष्य-सम्पादकक भूमिका निभबैत अछि। ओ फोटो स्वामिक अनुमतिसँ लैत छथि, निर्माणक दावा आ लेबलक दृश्य-वर्णन अलग करैत छथि, अस्पतालक मूल खरीद-पञ्जीक अपेक्षा राखैत छथि। साझा गाड़ीक संख्या अस्पतालक किछु पर्चीमे भेटितहुँ ओ प्रत्येक बोरा एके मूलसँ आयल अथवा अस्पतालक हराएल माल एतए भेटल, एहन निष्कर्ष नहि निकालैत छथि। एहि क्षणमे कथाकार प्रमाण-श्रृंखलाकेँ लदान, उतार, प्राप्ति आ उपयोगमे विभक्त करैत छथि। समान वाहन-संख्या कारणात्मक सम्बन्ध खोजबाक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा दोषी व्यक्ति निर्धारित करबाक स्वतन्त्र आधार नहि।

आख्यानगत उपकरणसँ कहब तँ ‘दुकानक छाप’ हेतु आ ‘यूसुफक निर्माण’ साध्य मानलापर आवश्यक अविनाभाव-सम्बन्ध अनुपस्थित अछि। एक्के व्यापारी भिन्न निर्माताक कपड़ा अपन छापमे पठा सकैत अछि; साझा वाहन भिन्न व्यापारीक माल ढोइ सकैत अछि। ई वैकल्पिक सम्भावना केवल अस्पष्ट शंका नहि, कथामे दोसर गाँठक भिन्न वस्तुगत बनावट आ अलग लदानक माँगसँ पोषित अछि। मुदा मूल तत्त्वचिन्तामणिक शास्त्रीय अनुमान-प्रक्रिया आ आधुनिक कपड़ा-परीक्षण एकहि विधि छथि, एहन दावा असंगत हएत। आलोचकीय तुलना तर्कक सीमा चिन्हबाक उपकरण अछि, प्रयोगशालाक प्रमाणीकरणक स्थानापन्न नहि।

विनोद, रमणी, सुमन आ मीना : बहुस्वरक आर्थिक धरातल

अध्यायक नाम जोलहाक खेप अछि, मुदा पहिल दृष्टि विनोदक माछबजारपर टिकैत अछि। विनोदक बहिमे माछक खरीद, नावसँ उतराइ, टोकरा ढुलाई आ खराब भेल मालक अलग गणना अछि। मुनीमक पञ्जीमे हुनकर जेकाँ विक्रेता ‘छिटपुट’ श्रेणीमे अछि; विनोद व्यक्ति-विशिष्ट नामसँ स्थान-आवेदन देबाक तिथि लैत छथि। ई दृश्य अनाम श्रमक इतिहासक एकटा प्रमाण-सङ्कट उद्घाटित करैत अछि : जे श्रमिकक व्यय अलग गनल नहि जाए, ओकर हानिक सार्वजनिक गणना सेहो ओझल रहत। मुदा पञ्जीमे नाम आएब पक्की छाँह भेटि जेबाक समान नहि; निर्णय अगिला सुनवाइ धरि स्थगित अछि।

माछ–मखान श्रम-मेलामे रमणी मल्लाह मखानक चुनब, सुखाएब, फोड़ब आ बाजार पहुँचाएबक मूल्य अलग चाहैत छथि। यूसुफ सूतक खर्च आ तानीक समय, विनोद माछक मूल्य आ खराब भेल माल, ढोएनिहार अलग भाड़ा—सभ एके ‘स्थानीय सामान’ दरक विरोध करैत छथि। समिति चारि मद बनबैत अछि, मुदा दर स्वीकृत नहि करैत। ई निर्णय कथामे वास्तविक घटना अछि, किन्तु आंशिक : एकीकृत दरक बदला विभाजित दर-विचारक संस्थागत प्रवेश भेल। सामाजिक बहुलता एहि ठाम समुदायसभक केवल उपस्थिति नहि, मूल्यनिर्धारणक भिन्न तर्कक टकरावमे अछि।

सुमन टिकुलहार अपन रंगीन नमूनाक उपयोगक दाम आ साँचक व्यापक नकल-अधिकार अलग लिखैत छथि। मीना सार्की पट्टाक भाड़ा, बाँधबाक श्रम आ प्रतीक्षाक समय अलग पर्चीमे राखैत छथि। सुमनक रंग-चिह्न आ मीनाक चर्म-पट्टा भिन्न पदार्थ, भिन्न जोखिम आ भिन्न बौद्धिक अथवा भौतिक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। मीना दोसर अप्रमाणित गाँठ बाँधबाक जिम्मेदारी स्पष्ट भेल बिना नहि लेतीह; दिनक अन्त धरि हुनकर प्रतीक्षाक आधा देय बाकी रहैत अछि। एहि दुविधासँ ‘सभ श्रमिक अधिकारवादी’क समान वाक्यक बदला अंशतः अलग आर्थिक संघर्ष देखाइत अछि। तथापि चारि कारीगर एके दिन एतेक व्यवस्थित लागत-श्रेणी बोलैत भेटब कथाक

योजनागत रचनाकेँ दृश्यसँ ऊपर उठा दैत अछि; ई संभावित उपदेशात्मक एकरूपता समीक्षाक प्रतिपक्षमे दर्ज होएबाक चाही।

गृह-काल आ पीढ़ीगत असहमति : पेशाक नामक पाछाँ व्यक्ति

यूसुफक बेटा इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षण लैत अछि आ फोटो-संग नमूना-संख्या मिलान करबाक प्रस्ताव दैत अछि। पिता फोटोसँ धागाक स्पर्श नहि भेटबाक आपत्ति करैत छथि; बेटा स्पर्शक ज्ञान नकारैत नहि, दृश्य-प्रमाणक संग नमूना-पञ्जी जोड़ब चाहैत अछि। एहि संवादमे डिजिटल आ देहगत ज्ञानकेँ सरल विरोधी बनायब टारल गेल अछि। रातिमे पिता दू अलग आर्थिक पन्ना खोलैत छथि—असली थानक मजदूरी आ रोकल खेपक खर्च—तकर अतिरिक्त बेटाक प्रशिक्षण-शुल्कक तिथि। एहि त्रि-पञ्जीमे श्रमक सत्य, व्यापारिक घाटा आ भविष्यमुखी पारिवारिक देय एक संग जुड़ैत अछि। बेटा सहयोग करब चाहैत अछि, पूरा दिन करघापर बसि पेशा दोहराएब नहि। पिता एहि अधिकारकेँ कष्टसँ स्वीकारैत छथि।

अध्यायक मुख्य काल भोरसँ राति धरि रेखीय अछि; पात्रक पिछिला साँझक बातचीत, उधारी आ पुरान आदेश संक्षिप्त पूर्वदीप्ति बनैत अछि। कथावाचक व्यापक तृतीय पुरुषमे रहितहुँ क्रमशः विनोदक खर्च-चिन्ता आ यूसुफक सूतक ज्ञान, शर्म आ घरेलू दबाव लग जाइत छथि। एकटा स्पष्ट पौराणिक विराट-दृश्य नहि अछि; ‘छद्म’क संरचनात्मक प्रश्न एक्के छाप लगल दू वस्तुक असमान पहिचानमे आबैत अछि। एहि रूपककेँ कथामे उपस्थित मिथकीय दृश्यक नाम नहि देल जाए। अन्तक मौन करघा पराजय आ नैतिक विजय दूनूकेँ अधूरा राखैत अछि : गलत लेबलवला वस्तु बिकायल नहि, मुदा घाटा घटल नहि; छोट विक्रेताक नाम चढ़ल, मुदा स्थान-वितरण सुधरल नहि। एहि अनिर्णीत द्वित्वमे अध्यायक साहित्यिक सार्थकता अछि।

अध्याय ४६ — धोबि रंगरेज धुनिया

एक पाटपर चारि चौकोर : व्यवस्थित देखबाक कथा

उर्मिला रजकक भीजल चादरसँ कथा खुलैत अछि। भीतरक सिलाइ सूखल नहि तँ अस्पतालमे कपड़ा गन्हाएत—ई श्रमक एहन अनुभव अछि जे प्राप्ति-पञ्जीक केवल समय-अङ्कसँ पकड़ल नहि जाए। ओ धोएल चादर आ जकर गिनती नहि मिलल एहन कपड़ा अलग टोकरीमे रखैत छथि। तखन रेणु एके गाड़ीसँ आयल सभ कपड़ा अस्पतालक हराएल माल मानल जाएबाक अफवाह सुनबैत छथि। उर्मिलाक प्रश्न ई अछि जे देखल वस्तु पर गवाही के देत। धोनाइ, रंगाइ आ रुइ धुनबाक श्रमक दायरा समान नहि। नैरा सार्वजनिक कमरामे धोनाइ, रंगाइ, धुनाइ आ ढुलाईक चारि अलग खाना बनबैत छथि; ई चाकक रेखा स्वतः स्वामित्व-निर्णय नहि, अलग साक्ष्य रखबाक सुविधा मात्र अछि।

रहीम मंसूरीक कपास-धुनबाक पर्ची सात गद्दा फेर फुलाएब, दू नव गद्दाक रुइ आ तीन ग्राहक द्वारा लौटाओल खोलक भेद रखैत अछि। महेन्द्र गाड़ीवान चारि बोरा ढोएनाइ स्वीकारैत अछि। सातटा काज आ चारि ढोएल बोरा विरोधी संख्या नहि : तीन ग्राहक सामान स्वयं लऽ गेलाह। एतय कथक एक वास्तविक संख्यात्मक असंगतिक प्रकट समाधान दैत छथि—जाहिमे फेरो प्रत्येक गद्दाक सामग्रीक चोरी-अचोरी पूर्ण रूपसँ सिद्ध नहि भेल।

सकीनाक दू रंग-पर्ची एक थान पर ग्राहकक बदलल आदेश बतबैत अछि, दोसर कपड़ाक खेप नहि। एहि भिन्नतासँ उत्पादनक कुल श्रम, परिवहनक वस्तु-संख्या आ ग्राहकक आदेश-संख्या अलग-अलग गणनीय बनैत अछि।

पनसारीक ‘उज्जर सामग्री’ आ गाड़ीवानक धुँधल समय

हरीश पनसारी अपन व्यापारक सीमा पहिनहिसँ घोषित करैत छथि : ओ धोनाइ, रंगाइ अथवा गद्दा सिअबाक विशेषज्ञ नहि। हुनकर बहीमे नून, अजवाइन, छाल, साबुनक सामग्री आ पैकिंग-पत्र अछि। ‘उज्जर सामग्री’ लिखलासँ कोनो पदार्थ अस्पतालक कपड़ा साफ करबाक चिकित्सकीय स्वीकृत पाउडर होइत नहि; रंग अथवा बाहरी रूप उपयोगक पर्याप्त प्रमाण नहि। एक पैकेटक बाहरी लेबल आ भीतरी पन्नाक नाम नहि मिललापर हरीश ओकर बिक्री रोकैत छथि, मूल खरीद-बिल जाँचब चाहैत छथि। मुदा ई नव पैकेट ओ स्वयं ओहि दिन लऽ कऽ आएल छथि; काल्हिक साझा गाड़ीक खेपक हिस्सा घोषित नहि करैत। एहन सूक्ष्म भेद सत्यक प्रति जिम्मेदारी अछि, अपराधक रोमांच बढ़एबाक चाल नहि।

महेन्द्रक गाड़ी चारि ठाम रुकल—धुनियाक आँगन, रंगरेजक गली, अस्पतालक पिछिला माल-उतराइ आ खटाल—मुदा दू समय-अङ्क भीजल पर्चीमे धुँधल छथि। पानि लागब त्रुटिक सम्भाव्य कारण अछि, सभ विसंगतिक सम्पूर्ण व्याख्या नहि। उर्मिलाक कपड़ा-पञ्जीमे प्राप्ति-समय धोनाइ समाप्त भेलासँ पहिने लिखल अछि; लिपिक ‘आदेश-समय’ लिखि देल गेल होएबाक सम्भावना दैत छथि। उर्मिला तखन वास्तविक श्रमघड़ी आ आदेशक समय अलग करबाक माँग करैत छथि। मूल अस्पताल-पञ्जी बिना संशोधनक मुहर नहि लगैत। असिद्धताक एहि प्रसंगमे पात्रसभ प्रमाण ‘बुझैत’ मात्र नहि; हुनकर रोजी आ रोगीक बिछाओनक वास्तविक पहुँच समयक गलत कोडिंगसँ प्रभावित होइत अछि।

बच्चाक तस्वीर : पुरान अफवाहक पुनरागमन आ सहमतिक सीमा

फाटक आ खटालक विवादक बीच एक धुँधल तस्वीर देखाइत अछि, जाहिमे गाड़ीक पाछू एक छोट आकृति अछि। युवक ओकरा ‘बच्चा उठाओल गेल’क प्रमाण कहैत अछि; वास्तविक दृश्य मे बच्चा सड़कक कात अपन खड़ामक फीता बाँधि रहल छल। बच्चाक माए गवाही देबाक लेल उपस्थित छथि, मुदा बच्चाक चेहरा सार्वजनिक पटपर नहि चाहैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ संभावित बाल-सुरक्षा सम्बन्धी प्रश्न नकारल गेल। अर्थ ई अछि जे फोटो, समय, व्यक्ति, सम्बन्ध आ अनुमति बिना सार्वजनिक अपहरण-आरोप लगेनाइ नव हानि उत्पन्न करैत अछि। पूर्व अध्याय २९–३० मे झूठ आरोपक प्रसंग रहलो पर एहि नव फोटोक तथ्य अलग जाँचबाक अछि। मिथुनक वास्तविक खोजक प्रश्नसँ सेहो एहि अनाम छविक सिद्ध सम्बन्ध नहि बनल।

नैराक सूचना-नीति एतय दोहरी अछि। ककरो वास्तविक बच्चा हराएल होए तँ जिम्मेदार कार्यालय लग सुरक्षित जानकारी पहुँचेबाक बाट खुलल रहत; मुदा बजारक सार्वजनिक पटपर रोगीक नाम, ग्राहकक घर अथवा बच्चाक चेहरा नहि। महेन्द्र निर्दोषताक पूर्ण प्रमाणपत्र माँगैत अछि, नैरा स्वयंकेँ न्यायाधीश घोषित करबाक बदला उपस्थित पर्ची-आधारित मिलान दैत छथि। लेखनक एहिमे नैतिक सफलता अछि जे ‘सन्देह’ शब्दक सार्वजनिक मूल्य निजी नुकसान रूपमे देखाइत अछि। साहित्यिक सीमा ई जे गलती-सुधारक भाषिक अनुशासन एतेक बार

आवर्तित होइत अछि जे किछु संवाद पात्रक भिन्न स्वरसँ बेसी लेखकक विचार-पद्धतिक समान तरङ्ग लगि सकैत अछि।

सार्वजनिक सूचना-पटक छोट वाक्य : अधिकार आ प्रचारक टकराव

सचिव छोट खर्चमे लिखबाक लेल ‘साझा गाड़ीमे सन्दिग्ध माल’ प्रस्ताव करैत अछि। रहीमक रुइ, सकीनाक रंग आ उर्मिलाक चादर एहि एक वाक्यक निहितार्थसँ सामूहिक शंकाक विषय बनि सकैत छथि। सुधारल छोट सूचनामे वाहन-संख्या मात्रसँ स्रोत अथवा अपराध निश्चित नहि, सम्बन्धित पर्ची देबाक बाट खुलल—एहि प्रकार लिखल जाइत अछि। ई सामुदायिक वैधानिक अन्तिम निर्णय नहि, सूचना-प्रसारक एक न्यूनतम अनुशासन अछि। ओकर फल वास्तविक अछि : आडम्बरपूर्ण निर्णय बिना जनताकेँ प्रक्रिया बताओल जाइत अछि; मुदा अस्पतालक गुम सामग्री आ व्यापारीक गलत लेबलक स्रोत एखन खोजाधीन अछि।

अध्यायक अन्त फाटकक सँकर बाटसँ दोसर जाँचक दरबज्जा खोलैत अछि। रेणु बतबैत छथि जे जाली आधा हटैतहुँ माटि दबि रहल अछि। उर्मिला वस्तुक स्वामित्व आ पयर-बाटक व्यावहारिक पहुँच अलग करैत छथि। नैरा रातिमे चारि पृथक विषय लिखैत छथि—मूल नाम-पञ्जी, बच्चाक अफवाह, अस्पतालक वस्तु-पञ्जी आ जलपट्टाक पहुँच—आ अगिला भोर हीरा–तारासँ नापब कहैत छथि। एहि योजनाक संग अध्याय ४७क भौतिक कार्यक कारणात्मक सम्बन्ध स्पष्ट अछि; ‘एहि सभ रहस्य एक अपराधक सूत्र छथि’ एहन निष्कर्ष मूल पाठ नहि देत।

काल-विन्यास, स्वर आ अन्तक घर

भोरक घाटक चादरसँ रातिक रहीमक घर धरि रेखीय वर्तमान समय अछि। उर्मिलाक मायक बीमारीक दिन छोट स्मृतिक प्रवेश अछि, जकर उद्देश्य रोगीक निजी इतिहास सार्वजनिक करब नहि, चादरक श्रम-समयक नैतिक महत्त्व बुझाएब अछि। कथावाचक तृतीय-पुरुष छथि, ध्यान उर्मिला, रहीम, सकीना, महेन्द्र आ नैराक अलग सामाजिक अवस्थामे सरकैत अछि; तथापि मूल विसंगति-विवेचनक मंच नैराक पाट रहैत अछि। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’क प्राथमिक सङ्केतकेँ एहि अध्यायक स्वतंत्र प्राचीन महाभारतीय दृश्यक प्रमाण नहि मानल जाए : पूरा मूल अध्यायमे ओहन दृश्य अनुपस्थित अछि। अन्तमे रहीम बेटीकेँ धुनल रुइक छोट सुरक्षित टुकड़ा खेल लेल दैत छथि। कपासक स्पर्श, श्वासमे उठैत धूर आ बच्चाक खेल, अपराध-प्रचारक बीच श्रमक सामान्य जीवन फेर सोझाँ आनैत अछि। कथाक मानवीय गरमी एहि अस्थायी अवकाशमे अछि; फाटकक समस्या एखन नहि मेटल।

अध्याय ४७ — फाटकक माप

बाँसक लग्गी आ डोरीक तीन नाप : स्थान स्वयं घटना बनैत अछि

अध्याय हीरा सहनीक लग्गी सँ आरम्भ होइत अछि : पानिक तल कठोर बुझाइतहुँ लग्गी कादोमे आओर धँसैत अछि। ताहिसँ मूल प्रश्न निकलैत अछि जे नाप ककरा आधार मानि करब—पानिक सतह, लोहाक खम्भा, ढलल

माटि अथवा सुरक्षित चक्का चलबाक धरती। नगर अभियन्ता अदितिक नकलमे बाहरी चौड़ाइ अछि, मुदा आधार-बिन्दुक अर्थ स्पष्ट नहि। तारा बिनौट तीन परिस्थिति अलग करबबैत छथि; उर्मिला खाली हाथगाड़ी धकेलि देखबैत छथि जे पहिल चक्का पार भेलापर दोसर ढलानपर खसए लगैत अछि। भारी रोगी-कपड़ा संग ई प्रयोग करब उचित नहि। एतय भौतिक जगत कथा-घटनाक प्रेरक शक्ति अछि : फाटकक रूपक नहि, ओकर वास्तविक सँकरता आवागमन, मजदूरी, माल-अवरोध आ जोखिम उत्पन्न करैत अछि।

हिराक अनुभव आ अदितिक अभियान्त्रिक अधिकार परस्पर बदलि लेबाक वस्तु नहि। हीरा कहैत छथि जे नाव, पैदल व्यक्ति, हाथगाड़ी आ मोटरक सुरक्षा लेल एक अङ्क पर्याप्त नहि; अदिति स्वीकारैत छथि जे पुरान मूल प्रतिवेदनक शेष पृष्ठ देखब आवश्यक अछि। ताराक नापमे पानिक स्तर, घड़ी आ धरातल जोड़ल जाइत अछि। तीनू निरीक्षकक सीमाक सार्वजनिक स्वीकृति कथाक ज्ञानमीमांसक कसौटी मजबूत करैत अछि। मुदा निरीक्षण-प्रक्रियाक विस्तृत संवाद कथानकक नाटकीय गतिमे विराम सेहो दैत अछि; हर अङ्क पाठक लेल अर्थपूर्ण होए ताहि हेतु उर्मिलाक फिसलैत गाड़ी आ रोगीक कपड़ा-देरि जेकाँ जीवित परिणाम अनिवार्य भऽ उठैत अछि।

करेहक चिह्न, कंकड़क नाम आ पुरान गवाहीक स्तर

सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि ‘कंकड़’ कहल सूखल रेखाकेँ अपन मालिकक पुरखाक उपयोगक आधारपर निजी जल-मार्गक प्रमाण बनाबऽ चाहैत अछि। तारा धरतीक तहमे पुरान जल-लीक देखैत छथि, मुदा नाम सुनिते वर्तमान भूमि-सीमा तय नहि करैत छथि। श्यामक नकलमे ‘करेह’ शब्द आ पुरान दू निशान छथि; ताराक दादी एहि चिन्हकेँ चिन्हैत छलीह, मुदा पत्थर मूल ठामपर अछि अथवा सारल गेल, ई असिद्ध अछि। एहि दृश्य मे लोकस्मृति संशोधनयोग्य साक्ष्य बनैत अछि : ओकरा मूर्ख अन्धविश्वास कहि खारिज नहि कएल गेल अछि, न सम्पूर्ण सीमा-सत्यक मानक बना देल गेल।

दादीक स्मृतिमे बचल चिन्ह, स्थलपर भेटल ईंट, पुरान कागद आ आजुक नाप चारि अलग स्रोत छथि। इनकर सहसम्बन्ध जाँचब सकैत अछि, मुदा अपन-अपन समय, स्थान आ सामग्री-गत निरन्तरता बिना एकर्केँ दोसरक स्थानपर नहि राखल जाए। ई भेद विदेह समानान्तर इतिहासक आलोचनात्मक सम्भावना खोलैत अछि—दू महिला राति धरि पुरान बाट खोजलीह, हुनकर श्रमक समयक देय बनबाक चाही। ओ जाँच अन्ततः गलत सिद्ध भऽ सकैत अछि, मुदा जाँच करबाक श्रम मुफ्त नहि होइत। ई कलात्मक रूपसँ उल्लेखनीय निर्णय अछि : उपेक्षित मौखिक इतिहासकेँ प्रतिष्ठा देबाक लेल ओकरा त्रुटिहीन मानबाक आवश्यकता नहि। तारा मजदूरक भुगतान आ पत्थरक निर्णायक वैधानिक मूल्य अलग रखैत छथि।

छरकीक दोसर कात : पर्यावरणीय कारण-जालक नैतिक भार

बान्हक एक दिशाक भरल माटि बस्तीकेँ ऊँच पानिसँ रक्षा करैत अछि, मुदा दोसर दिस खेत आ घरक निकास ऊपर उठि कऽ पानि अटकबैत अछि। एहि दोहरा परिणामसँ ‘बान्ह बनल = सुरक्षा’क सोझ कारण-कार्य असिद्ध होइत अछि। हीरा छायासँ ढलान देखैत छथि, मुदा छाया पानिक प्रवाहक गतिक नाप नहि; अदिति बिना विस्तृत जाँच छरकी काटबाक निर्णय नहि लेतीह। कथाकार सुरक्षा आ पर्यावरणक प्रश्नकेँ एक समुदाय बनाम दोसर समुदायक नैतिक दोषमे नहि समेटैत छथि। बस्ती-रक्षा आ परकजल-हानि समकालिक भऽ सकैत अछि; एतए

बाहाक मुँह, पुरान पगडण्डी, खेतक निकास आ नाव उतारबाक कात एक संयुक्त जल-स्थानिक व्यवस्था बनबैत अछि।

बालक माटिपर नदीक रेखा बनबैत अछि; दादी खुरपीसँ ओकरा घर बचबाक हिसाबे मोड़ैत छथि। ई दृश्य कथात्मक ध्वनि उत्पन्न करैत अछि—एकरे नदी लकीर खेलमे स्वतन्त्र, धरतीपर आर्थिक-जीवनक प्रश्न अछि। मुदा एहि खेलसँ वास्तविक जलनिकास सिद्ध नहि होइत; रचना अपने भौतिक नापक आवश्यकता पुनः स्थापित करैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रमे स्थानकेँ निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहि, समय-निर्भर अवस्थावाला क्रियाशील तन्त्र मानि पढ़ब एतय उपयोगी अछि। पुरान नकलमे सिधा किनार, स्थानीय उपयोगमे तीन मोड़; मानचित्रक ‘किछु नहि देखेनाइ’ आ मैदानक ‘किछु नहि होएब’ समान नहि।

सभ मौसमक क्षमता-पत्र : सहमति आ नकारात्मक निर्णयक घटना

समितिक सदस्य तैयार प्रमाणपत्र प्रस्तुत करैत अछि जाहिमे ‘सब मौसम’ सुरक्षित गाड़ी आ नाव-उपकरणक यातायात लिखल अछि। हीरा खाली गाड़ी आधा बाट धरि घुमौने छथि; अधिकतम बरखा, नावक भार आ पयरक जाँच नहि भेल। ओ हस्ताक्षर करबाक अस्वीकार करैत छथि। ई अध्याय ४१क ललितक अस्वीकृतिसँ मिलैत अछि, मुदा वस्तु-विशिष्ट अन्तर अछि : ललित काठक पट्टाक भारी भार-वहनक प्रमाण नहि दैत छलाह; हीरा बहु-मौसमी फाटक-परिवहनक सार्वभौम क्षमता नहि प्रमाणित करैत छथि। दुनू प्रसंगमे अपूर्ण निरीक्षण सँ सम्पूर्ण सुरक्षा घोषित नहि करबाक बुद्धि अछि।

उर्मिला केवल ‘रोक’सँ सन्तुष्ट नहि : रोगीक कपड़ा कतेक बाटसँ जाएत आ अतिरिक्त हाथ-ढुलाईक मजदूरी के देत, से पुछैत छथि। हीरा पैदल मार्गक सीमा स्पष्ट करैत छथि; अदिति अलग वैकल्पिक निरीक्षण-दल नियुक्त करैत छथि; आवश्यक कपड़ा दू भागमे सुरक्षित बाहरी मोड़ धरि पहुँचाबबाक अस्थायी व्यवस्था बनैत अछि। फाटक नहि खुलल, कागदक ‘सब मौसम’ नहि मानल गेल, मुदा तत्काल आवश्यक काज पूर्ण रूपसँ त्यागल सेहो नहि गेल। एहि यथार्थपरक मध्यम परिणाममे पात्रक क्षमता द्योतित अछि। सुरक्षा-संकटक नैतिक समाधान केवल निषेध नहि, सीमित विकल्पक श्रम-मूल्यक प्रावधान अछि।

सामग्रीक बिल, स्थानीय पुकारनाम आ अध्यायक सीमान्त

माधव रोनियार जाँच लेल खड़िया आ कागदक खोल दैत छथि, चूनक दू बोरा बिना निश्चित प्रयोजन नहि छोड़ैत छथि। उपयोग नहि भेल दू पैकेटक मूल्य बिलसँ घटाएल जाइत अछि। ई छोट व्यापारिक दृश्य सार्वजनिक धनक त्रुटि आ नदीपर अनावश्यक सामग्री छिड़कबाक जोखिम दूनू देखबैत अछि। पहिनुक अस्पताल-खरीदसँ फाटक-जाँचक खरीद भिन्न आदेश अछि; समान दोकानदार बिना अधिक साक्ष्य अपराध-सूत्र नहि बनैत।

श्यामक लग भेटल पुरान मजदूरी-सूचीमे नामक बदला ‘लाल टोपी’, ‘छोट नाव’ जेकाँ पुकारनाम छथि। सहायक एकरा झूठा नाम मानि सभ रसीद सन्दिग्ध कहब चाहैत छथि; तारा कामक पुकारनाम, व्यक्ति-नाम आ फर्जी हस्ताक्षरक अन्तर घोषित करैत छथि। नैरा आरोपक बदला मूल पंजी माँगैत छथि। ई प्रसंग अध्याय ४८क कथा-कारण अछि : खण्ड-समापन असम्पन्न तर्क-सूत्र आगाँ भेजैत अछि, फाटकक समस्या बिसरा कऽ असम्बद्ध नव प्रसंग नहि खोलैत।

कथाक समय भोरक जाँचसँ रातिक कापी धरि चलैत अछि। मूल पुरान प्रतिवेदन आ दादीक लोकस्मृति पूर्वकालक अवशेष रूपमे प्रवेश करैत अछि, मुदा स्वतन्त्र पौराणिक कालखण्ड एहि अध्यायमे नहि अछि। दृष्टिकेन्द्रण हीराक देहगत ज्ञान, ताराक स्थानीय माप, अदितिक कार्यालयक उत्तरदायित्व आ उर्मिलाक आवागमन-वेदना बीच बदलैत अछि। अन्तक पातक छोट घूमब आ नावक वास्तविक भारक अन्तर पाठककेँ स्वतन्त्र सोचबाक अवकाश दैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे प्रत्येक पात्रक ‘अतिदावा नहि करब’क शिक्षा पुनः प्रायः एकहि शुद्ध स्वरमे सुनाइत अछि; तदपि पानीक धार, फाटकक ढलान, धँसल माटि आ खोएल आमदनी दृश्यकेँ शास्त्रीय उदाहरण भरि बनबासँ बचबैत अछि।

अध्याय ४८ — छद्मक तीन कारण

‘लाल टोपी’क दू दिनक देय : छद्मनामक पहिल नैतिक परीक्षा

श्याम मल्लिकक हाथमे पुरान मजदूरी-सूची अछि; ‘लाल टोपी’क आगाँ दू दिनक काज आ देय लिखल, मुदा भुगतानक हस्ताक्षर अनुपस्थित। पुरान ठेकेदारक बक्सासँ भेटल ई नकल मूल नाम-पञ्जी नहि। कार्यालयक सहायक सार्वजनिक फलकपर सूचीक फोटो लगाओब चाहैत अछि, जाहिसँ लोक अपन नाम चिन्हि पहुँचत; तारा आ नैरा निजी पहिचानक जोखिमक प्रश्न उठबैत छथि। ककरा देय मिलबाक चाही, ई जाँचब आ ककर वास्तविक घर-पता सर्वसाधारणकेँ बतायब—दूनू निर्णयक अधिकार अलग अछि। एतय तेसर पाठांश धरि कथक रहस्यकेँ अपराधी-पहिचानक पहेली नहि, देय आ सुरक्षाक संयुक्त अपूर्णताक रूपमे स्थापित करैत छथि।

सूचीमे पूरा नाम, पुकारनाम, बादमे जोड़ल स्याही आ खाली खानाक भिन्नता देखल जाइत अछि। ई वस्तुगत असंगति ऐतिहासिक संशोधन, लेखकीय भूल, लुकाओल पहिचान वा छल—अनेक सम्भावना राखैत अछि। पाठक पुरान कथा-रहस्यक अपेक्षा करि सकैत अछि, मुदा नैरा ‘पहिने जाँच’क प्रक्रिया अपनबैत छथि। ई घटना-संरचनामे कथन-विलम्ब अछि : जानकारी उपलब्ध करबाओल जाइत अछि, निर्णय स्थगित। विलम्ब कथाक नैतिक उपलब्धि सेहो अछि, कारण एके पन्नाक जल्दी प्रकाशन मजदूरक सुरक्षाकेँ हानि पहुँचा सकैत अछि। मुदा लगातार स्थगन थ्रिल अथवा क्रियात्मक ऊर्जाकेँ कमजोर करैत अछि कि नहि, ई प्रश्न युक्तिसंगत अछि।

नजीर आ सुमित्रा : श्रम-चिह्न, निजी नाम आ सामग्रीक स्वामित्व

नजीर सिकिलगर नावक रस्सी कसबाक कुंडी, छेनी आ धातुक औजारक मरम्मतिक पर्ची देखबैत छथि। हुनकर ग्राहकक घरक पूरा नाम सार्वजनिक रसीदपर नहि; ‘नाववाला’ जेकाँ काज-आधारित चिन्ह अछि। नगरक सहायक ओकरा हथियार-सन्देहक पुराने अफवाहसँ जोड़ए लगैत अछि। हीरा वास्तविक कुंडी रस्सीमे बैसाकऽ पुरान ढील आ नव ठीक भेल पकड़क अन्तर देखबैत छथि। धारदार आकारक आधारपर उद्देश्य अथवा अपराध तय नहि होइत। नजीरक असली आर्थिक कठिनाइ ई अछि जे सरकारी सवाल-जवाबमे दिन बीतलापर वस्तु मरम्मति अधूरा रहत आ मजदूरी घटत। ई पारिश्रमिकक प्रश्न कथामे प्रमाण-जाँचक प्रत्यक्ष आर्थिक लागत जोड़ैत अछि।

सुमित्रा कामी धातुक जोड़पर अपन तीन-कोना चिन्ह ठोकने छथि। ई चिन्ह ‘नाम लुकब’ नहि, निज बनाओल नमूनाक कारीगरी-पहिचान अछि। अगिला ठेकादार नमूना देखि मालिकाना-श्रेय अपन नामपर लऽ नहि लियए,

ताहि लेल ओ मूल रेखाचित्र अपन लग रखैत छथि; कार्यालय नमूना-प्राप्ति आ परतौनीक शर्त लिखैत अछि। एहि स्थिति मे सुमित्रा स्वयं सार्वजनिक रूपसँ नाम राखब चाहैत छथि—जखनकि सुरक्षित रहबाक लेल कियो दोसर मजदूर वास्तविक परिचय सीमित राखब चाहैत अछि। दुनूकेँ ‘गोपनीयता’क एक टोकरीमे राखब गलत हएत। पहिचानक निर्णयक अधिकार व्यक्ति-विशिष्ट अछि, आ नमूना जाँच लेल जमा भेलासँ अन्तिम डिजाइन-अधिकार स्वतः हस्तान्तरित नहि होइत।

‘मोती’क पेन्सिल, सुरक्षित पत्र आ भुगतानक दू मुहर

भंडारक भीजल मूल बक्सा बिना सुरक्षा-पद्धति खींचल नहि गेल। बाहर भेटल दोसर प्रति पर ‘लाल टोपी’क कात पेन्सिलसँ ‘मोती’ लिखल अछि; व्यक्ति, नाव अथवा बादक टिप्पणी—कोनो परिचय प्रमाणित नहि। कागदक रंग, लिपि आ स्रोत नोट कएल जाइत अछि। एक अलग पत्रमे मजदूरी माँगनिहार महिला सार्वजनिक रूपसँ घरक नाम नहि कहल जाएबाक आग्रह करैत छथि; हिनका पहिने खोजबैत हंगामा भेल छल आ बच्चासहित सुरक्षित ठाम रहबाक आवश्यकता छल। नैरा पत्रक ठेकाना नहि नकल करैत छथि। ई कृति निजता-सम्बन्धी नैतिकता पर केवल भाषण नहि दैत : खतरनाक लेखन-क्रियाकेँ घटनाक बीच वास्तविक रूपसँ रोकैत अछि।

अगिला भुगतान-प्रति मे समान तिथिपर ‘लाल टोपी’ आ ‘मोती’ लग अलग रकम भेटैत अछि; मुदा एकपर ‘भुगतान शेष’ आ दोसरपर ‘अग्रिम जारी’क मुहर अछि। समान तिथि आ मिलैत नामकेँ दुहर भुगतान कहबाक लेल भुगतान-वास्तविकता, हस्तान्तरित व्यक्ति, मूल मुहर-पञ्जी आ काजक हाजिरीक मिलान आवश्यक अछि। एतय कथाकार सम्भाव्य जालसाजीक प्रश्न खारिज नहि करैत छथि; केवल उपलब्ध प्रमाणसँ अपराध निश्चित नहि करैत। एहिमे आख्यानगत पक्ष–साध्य–हेतु जाँच अपन यथोचित आलोचनात्मक उपयोग पबैत अछि : दू नाम आ दू रकम देखनाइ प्रत्यक्ष दत्तांश अछि, एक व्यक्ति द्वारा दू बेर अवैध भुगतान प्राप्ति अलग साध्य अछि, जकर सिद्धि नहि भेल।

विराटनगरक सैरन्ध्री : प्राचीन दृश्यक वास्तविक अन्तर्पाठ

पन्द्रहम पाठांशमे स्वतंत्र प्राचीन कालखण्ड खुलैत अछि। विराटनगरमे सैरन्ध्री नामसँ काज करैत द्रौपदी एक परिचारिकासँ कहैत छथि जे पहिचान ककरा कतेक खोलब, ई स्वयं चुनब आवश्यक अछि, कारण अज्ञातवासक अवधि भंग भेलापर परिवारक सुरक्षा संकटमे पड़ि सकैत अछि। एहि कल्पनात्मक दृश्यकेँ महाभारतक मूल श्लोकक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि, उपन्यासकारक आधुनिक भाषा मे रचल अन्तर्पाठ मानब उचित अछि। कथा प्राचीनक सुरक्षा-छद्मक संग आधुनिक महिला मजदूरक गोपनीय पता जोड़ैत अछि; मुदा द्रौपदी आ नाम नहि खोलब चाहनिहार आधुनिक महिला एके व्यक्ति अथवा एके जीवन-परिस्थिति नहि। दुन्नूक समय, सत्ताक व्यवस्था आ जोखिम भिन्न छथि।

एहि दृश्यसँ विराट-पर्वक शीर्षक विशिष्ट कथात्मक अर्थ पबैत अछि। पहिनुक किछु अध्यायमे छद्म संरचनात्मक उपमा मात्र रहैत छल; एतय मूल कथानक भितर काल-परिवर्तन घटना घटैत अछि। दू कालधाराक अन्तर जोगेने तुलना करब आवश्यक : सैरन्ध्रीक सेवा-नाम सुरक्षाक उपाय अछि, नजीरक ‘नाववाला’ जीविकाक पुकारनाम अछि, सुमित्राक तीन-कोना चिन्ह कारीगरी-श्रेयक प्रमाण अछि, लिखबाक भूलसँ नामक स्वरूप फेर बदलि सकैत

अछि, आ सम्भाव्य ठगी लेल पृथक साक्ष्य चाही। ई भिन्नता पाठककेँ बाह्य नामक निश्चितता पर अविश्वास आ स्वयं व्यक्ति-निर्णयक सम्मानक एक संग अभ्यास करबबैत अछि।

तीन कारण आ पाँच नियम : वर्गीकरणक साहित्यिक शक्ति आ सीमा

अध्यायक शीर्षक तीन कारणक निर्देश करैत अछि : सुरक्षा लेल छद्म, जीविका-संबद्ध प्रचलित नाम आ छलक सम्भावना। मुदा नैरा-पञ्जीक पाँच व्यवस्थामे स्वयं चुन्नल सार्वजनिक नाम आ भाषा-लिपिक लिखत-दोष सेहो सम्मिलित छथि। श्याम प्रश्न करैत छथि जे पाँच नियम बनल तँ तीन कारण किएक; नैरा निर्णयक तीन मुख्य आशंका आ अभिलेख सम्हारबाक पाँच जाँच-विधिक भेद करैत छथि। एतय वर्गीकरण घटनाक स्थान नहि लेत, घटना-परीक्षाक व्याकरण बनबैत अछि। बच्चाक ‘छोट नाव’ लिखल चित्रक अन्तिम दृश्य व्यक्ति-नाम आ नावक नाम अलग राखबाक अनुभवकेँ घरेलू स्तर पर फेर सुनबैत अछि।

ई वर्गीकरणक एक सीमा सेहो अछि। ‘तीन कारण’क अन्तर्गत सामाजिक स्वनामकरण, भाषिक त्रुटि आ कामक पुकारनामक अनेक अनुभव परस्पर ओवरलैप करैत छथि; नैरा स्वयं पाँच नियमक माध्यमसँ ओकरा खोलैत छथि। आलोचककेँ एहि जटिलताकेँ सम्पूर्ण तर्कशास्त्रीय अन्तिम सूची नहि मानबाक चाही। एकर उपयोगिता फर्जी मजदूरी रोकबाक नामपर असुरक्षित महिला अथवा सामान्य कारीगरक निजता भङ्ग नहि होए, एहि व्यावहारिक नियमनमे अछि। सार्वजनिक नाम बनाम आन्तरिक भुगतान-मिलानक समस्या सामूहिक प्रशासनिक संरचना माँगैत अछि; एक संवेदनशील लेखनकर्ता मात्रसँ सम्पूर्ण समाधान सम्भव नहि।

अपूर्ण जाँचक मूल्य : अगिला पर्वक पूरक-सूत्र

नगरक सदस्य मूल पञ्जी भेटबा धरि फाटकक सभ काम रोकब चाहैत छथि; हीरा असुरक्षित भार-वहनपर रोक आ सुरक्षित सीमाक आवश्यक रखरखाव अलग रखैत छथि। तारा नवा निरीक्षण-दलक आगमनसँ पहिने मजदूरीक लिखित शर्त चाहैत छथि। कार्यालय आंशिक स्वीकृति दैत अछि, मुदा रोकल पुरान देय, मूल नाम-पञ्जीक सुरक्षित जाँच आ नमूनाक अन्तिम अधिकार एखन नहि मेटल। अध्यायक अन्तमे नैराक तेसर ‘मूल देखबाक माँग’क संग कार्यालयसँ प्राप्ति-दिन तय होइत अछि। ई प्रशासनिक समयक वास्तविक परिमार्जन अछि, मूल अभिलेख हाथमे प्राप्त भेलाक घटना नहि।

कथनकाल श्यामक भोरक सूचीसँ नैराक रातिक लेखन धरि रेखीय, बीचमे विराटनगरक सैरन्ध्रीक स्वतंत्र काल-प्रवेश अछि। तृतीय पुरुष कथावाचक कथाबाह्य आवाजेँ दृश्य बदलैत छथि, ध्यान श्यामक असमर्थता, ताराक मजदूरी-न्याय, नैराक अभिलेखीय सावधानी आ कारीगरक देहगत विशेषज्ञता बीच घूमैत अछि। एतय ‘छद्म’ रहस्य उपन्यासक नाम-पञ्जी केन्द्रित बृहत्तर संरचनासँ जुड़ैत अछि, मुदा फाटकक ‘लाल टोपी’ सूची आ सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्नाक सिद्ध सम्बन्ध नहि; नैरा जानि-बुझि फाइल अलग रखैत छथि। एहि सावधानीसँ पाठकक अत्यधिक षड्यन्त्र-आकाङ्क्षा नियंत्रित होइत अछि। साहित्यिक सीमा पुनः एतबे जे अधिकांश पात्र असाधारण रूपेँ तर्क-संयमी छथि; नजीरक अधूरा काज, ताराक अटकल मजदूरी आ श्यामक बेटाक नाव-चित्र एहि एकरूपता मे मानवीय जीवनक प्रतिवाद जोड़ैत अछि।

विराट-पर्व / अरण्यकाण्ड : अध्याय ३७–४८ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

कथात्मक प्रस्थान : छद्म-पात्रसँ प्रमाणक कार्यशाला धरि

विराट-पर्वक बारह अध्यायमे पहिल रसोइ (३७) आ बृहन्नलाक कक्षा (३८) महाभारतीय नामक पुनर्रचनासँ श्रम आ स्वपरिचयक प्रश्न खोलैत अछि। ताँतीक दरपत्र (३९), कपड़ा-पञ्जी (४०), ललितक काठक पट्टा (४१), शकुन्तलाक माटिस्थल (४२), मीनाक धातु-चालान (४३), हरिनारायणक औजार (४४) क्रमशः अनुभवजन्य वस्तु आ पंजीक असमान प्रमाण-क्षेत्र देखबैत अछि। अन्तिम चारिमे साझा गाड़ीक लेबल (४५–४६), फाटकक मापन (४७) आ कामक पुकारनाम (४८) एतेक परस्पर जुड़ि जाइत अछि जे एकटा सामान्य पञ्जीमे सभकेँ अपराधक निदान मानबाक मोह उपजैत अछि। उपन्यास अपन पात्रसभसँ एहि मोहक प्रतिरोध करबबैत अछि।

एहि संरचनाक महत्त्व ई नहि जे प्रत्येक अध्याय स्वतंत्र पेशाक परिचय देत। श्रेष्ठ ठाममे वस्तु पात्रक इच्छा आ निर्णय बदलैत अछि—यूसुफ दूना दाम छोड़ि बिक्री रोकैत छथि; उर्मिला गाड़ीक देरीक संग अपन पैदल श्रमक अतिरिक्त घंटा लिखबबैत छथि; हीरा ‘सब मौसम’ सुरक्षा-पत्र अस्वीकारि सीमित वैकल्पिक पहुँचक उपाय सुझबैत छथि; नैरा असुरक्षित महिलाक पता सुरक्षित राखैत छथि। ई घटना छथि, केवल नैतिक सूत्र नहि। मुदा ‘अलग-अलग मद लिखू’क शैलीक वारम्बारता आठसँ अधिक कारीगरक दृश्यसभमे योजनागत एकरूपता उत्पन्न करैत अछि। जीवित पात्रक आकांक्षा आ आन्तरिक टकराव एहन पुनरावृत्ति भंग करैत अछि; यूसुफ–बेटाक पेशा-विवाद आ शकुन्तला–नतिनीक भविष्यक असहमति विशेष उपयोगी उदाहरण छथि।

एक कथनकाल नहि, अनेक समयक कीमत

चारू नव अध्याय मुख्यतः एक-एक दिनक भोर, दुपहर, साँझ आ राति मे समय बितबैत अछि। किन्तु श्रमक समय समान नहि—यूसुफक रोकल व्यापारक प्रतीक्षा, महेन्द्रक ग्राहक खोनाइ, उर्मिलाक रोगी-कपड़ा पहुँचेबाक तात्कालिकता, कारीगरक बेकार गेल निरीक्षण-घड़ी आ सैरन्ध्रीक अज्ञातवासक प्राचीन समय भिन्न समयानुभव बनबैत अछि। कथनक गति गवाही आ दस्तावेजक चर्चा मे मन्द, जबकि छोट बाल-दृश्य, औजारक प्रयोग आ फाटकक चक्का फिसलबामे तीव्र अछि। ‘समय’ एहि उपन्यासमे केवल कालक्रम नहि, देय, जोखिम आ सहमतिक मात्रा अछि।

स्पष्ट पौराणिक दृश्य पहिलक बल्लव–बृहन्नला प्रसंगमे आ अन्तिम सैरन्ध्री दृश्य मे अछि। अध्याय ४५–४७ मे स्वतन्त्र पौराणिक पात्र-दृश्य नहि भेटैत अछि; ताहि ठाम विराटक ‘छद्म’ संरचनात्मक रूपसँ काम करैत अछि। एहि भेद बिना ७ काण्ड आ १८ पर्वक मानचित्र पाठपर बाहरसँ थोपल यान्त्रिक समानता बनि जायत। अरण्यकाण्डक विस्थापन, असुरक्षित पहुँच आ अनिश्चित अधिकार संग विराटक अज्ञातवास-दृष्टि एक सम्मिलित बहुस्तरीय अनुभव बनैत अछि, मुदा मूल रामायणक घटना-दर-घटना पुनर्कथन नहि।

आख्यानशास्त्र, भारतीय काव्यशास्त्र आ विदेह समानान्तर इतिहास

अध्याय ४५–४८ मे अनेक असिद्ध अनुमान पाठक देखैत अछि : छापसँ निर्माता; वाहन-संख्यासँ चोरी; उज्जर सामग्रीसँ चिकित्सालयक पाउडर; लोहेक खम्भाक चौड़ाइसँ सभ ऋतुक सुरक्षित पथ; पुकारनामसँ जालसाजी; दू रकमसँ दुहर भुगतान। प्रत्येकमे मध्यवर्ती साक्ष्य अथवा प्रतिपक्षी सम्भावना चाही। एहि दृष्टिसँ पक्ष, हेतु, साध्य आ उपाधि-विवेचन उपयोगी आलोचनात्मक अनुशासन अछि। मुदा आधुनिक अनुबन्ध, रोगीक गोपनीयता आ अभियान्त्रिक सुरक्षा शास्त्रीय न्याय-ग्रन्थक सटीक प्रत्यक्ष उदाहरण नहि; तत्त्वचिन्तामणिक दार्शनिक अभिप्राय आ उपन्यासक सामाजिक अनुप्रयोग पृथक राखल जाए।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ नामक ध्वनि विस्तृत अछि। छाप, सेवा-नाम, पुकारनाम, औजारपर शिल्पी-चिह्न आ बच्चाक नावक नाम सामाजिक-संकेत मात्र नहि; व्यक्तिक श्रेय, सुरक्षा, स्मृति आ दावे-देयक सीमार्केँ अर्थ दैत अछि। यूसुफक मौन करघा, रहीमक बेटी लेल साफ कपास, पत्ताक धीमा घुमाव आ श्यामक बेटाक नाव-चित्र संवेद्य बिम्बक रूपमे विश्लेषणक कठोरता नरम करैत अछि। करुणा आ उत्साहक बीच आर्थिक अनिश्चितताक स्थायित्व रहैत अछि; सरल सुखान्त रस बनेबाक प्रयास नहि। ‘विदेह समानान्तर इतिहास’क दृष्टि उपयोगी तखन अछि जखन छोट पेशाक लोक अपन समय, स्वनामकरण आ सूक्ष्म अर्थ-व्यवस्थाक प्राथमिक स्रोत बनैत छथि, न मात्र लोक-संस्कृतिक सूचीमे नाम।

समग्र उपलब्धि आ शेष आलोचनात्मक प्रश्न

विराट-पर्वक एक बड़ उपलब्धि ई जे पेशागत शिल्पक ज्ञानकेँ प्रशासनक सुधारक सहायक रूपमे देखबैतहुँ ओ ज्ञानक सीमाक सम्मान करैत अछि। कुम्हारक माटि-परीक्षण अभियान्त्रिक भारपरीक्षा नहि; नाविकक लग्गी बाँधक परम सुरक्षा-प्रमाण नहि; दस्तावेजक नकल मूल कागद नहि; श्रम-पहिचान सार्वजनिक अपराधसूची नहि। एहि अनुशासनमे व्यक्तिक स्वायत्तता, श्रमक दाम, बालकक गोपनीयता आ पर्यावरणक जोखिम सँ जुड़ल नैतिक महत्त्व अछि।

तथापि आलोचनाकेँ तीन विरोधी प्रश्न खुला रखबाक अछि। पहिल, कतेक पात्र सचमुच अलग निर्णय, गलती, आवाज आ प्रतिरोध-विधि पबैत छथि, आ कतेक बेर लेखकक प्रमाण-नैतिकता हिनकर मुखसँ समान रूपेँ बजैत अछि? दोसर, बारम्बार अपूर्ण प्रशासनिक निष्कर्ष कथानकक यथार्थ जोगबैत अछि कि पाठकीय गति अत्यधिक मन्द करैत अछि? तेसर, कारीगरक अनुभव ज्ञानक उत्पादक मानल गेलो पर अन्तिम वैधानिक अधिकार संस्थाक लग रहैत अछि—ई असमानता कत्ते कथा द्वारा प्रश्नांकित, कत्ते सहज मानल गेल? अगिला उद्योग-पर्वमे सहयोग आ सन्धिक प्रश्नक संग एहि तीनू परीक्षणकेँ आगाँ लऽ जएबाक चाही।

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड

अध्याय ४९ — सहयोगक दाम

आरम्भक परिवर्तित ध्वनि : हथौड़ीक बदला बाँसक छाल

अध्यायक पहिल पाठांश फाटकक निकट हथौड़ीक अपेक्षित आवाजकेँ हटाकऽ बाँसक छाल उतारबाक ध्वनि रखैत अछि। ई परिवर्तन आडम्बरहीन मुदा कथात्मक रूपसँ अर्थवान् अछि : अधूरा निर्माण आ अटकल प्रमाणनक बीच तत्काल काज स्थायी पुल बनायब नहि, खतरनाक जगह चिन्हब अछि। श्याम मल्लिकक बाँस एखन एक ग्राहकक नावक डाँड़ बनबाक छल; नगरक निमन्त्रण हुनकर घरक कमाइ सँ समय काटैत अछि। मूल मजदूरी-पञ्जी भेटबा धरि नियमित नाप रोकबाक कार्यालयी सन्देशमे उपस्थिति समय अछि, मुदा देय नहि। तेँ आरम्भिक द्वन्द्व ‘सार्वजनिक हित बनाम निजी स्वार्थ’ नहि, सार्वजनिक हितक लागत ककरा घरसँ वसूलल जाए—ई अछि। कथावाचक वस्तु, समय आ उधारीक ब्योरा देबाक बादे नैतिक विरोध उपस्थित करैत छथि; एहि क्रमसँ पाठककेँ श्रमिकक निर्णयक आर्थिक कारण भेटैत अछि।

नगरक ‘स्वैच्छिक स्थानीय सहयोग’ प्रारूपमे नमूना आ सूचना ‘सार्वजनिक उपयोग’ लेल उपलब्ध करबाक पाँति अछि। तारा एकर सम्भावित स्वत्व-हस्तान्तरण पर आपत्ति करैत छथि, अदिति स्वीकार करैत छथि जे ई सुरक्षा-जाँच लेल आनल पुरान प्रारूप अछि, नक्शाक मालिक बदलए लेल नहि। मुदा तारा व्यक्ति-विशेषक नीक उद्देश्यक बदला लिखित पाँतिक प्रभाव देखैत छथि। एतय कथनक केन्द्र ‘अदिति की सोचैत छथि’ सँ ‘जे पन्नापर सही होयत, ओकर अधिकार-फल की’ धरि सरकैत अछि। आधुनिक दस्तावेजी आख्यानमे ई महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि। श्यामक तीन गाँठवला बाँसक छोट मॉडल चक्काक फिसलन देखबैत अछि, भार-वहन करबाक पुल नहि। सहायककेँ नमूना उठए नहि देब प्रतिरोधक एकटा दृश्य अछि, मुदा ई तकनीकी सुरक्षा-ज्ञानक सीमा सेहो घोषित करैत अछि।

प्रत्यक्ष घटना-पञ्जी आ फलित अवस्था

पहिल स्थिति : नगर स्थानीय लोककेँ खतरनाक फाटकपर बजाबैत अछि, मुदा काज आ पारिश्रमिक अस्पष्ट अछि। पहिल व्यवधान : पार्वती ताँती आ पवित्रा पटवाक बुनाइ–गँथाइकेँ एक्के ‘कपड़ाक फीता’ कहि खरीद-पत्र बनेबाक प्रयास होइत अछि; अलग घरक श्रम एक मदमे मेटय सकैत अछि। दोसर व्यवधान : श्यामक पूर्वजक निकास-रेखा कार्यालयी नकलक सम्भावित वस्तु बनैत अछि, मुदा पारिवारिक स्मृति तकनीकी नक्शाक निर्णायक प्रमाण नहि। तेसर परिवर्तन : तारा वस्तु, कारीगर, समय/दाम आ उपयोग-सीमाक चारि स्तम्भ बनबैत छथि; अदिति सीमित आपात मदसँ अलग-अलग नामपर अग्रिमसहित अस्थायी आदेश स्वीकृत करैत छथि। फल : पार्वती आ पवित्राक खाता मे रकम पहुँचेबाक सन्देश भेटैत अछि; श्यामक लेल स्थानान्तरणक पुष्टि भेटितहुँ प्राप्ति जाँच बाकी अछि; ताराक पहिल बकाया तखनहुँ अनिर्णीत अछि। अस्थायी लाल-पीयर चेतावनी-पट्टी जमीनपर लगैत अछि, स्थायी मरम्मति वा भार-क्षमता प्रमाणन नहि होइत।

एहि पञ्जीक एकटा महत्त्वपूर्ण सीमा अछि। अदितिक आपात अधिकार सीमित अछि; ओ पूरा जलनिकास ठेका स्वीकृत नहि करैत छथि, अतिरिक्त नाप लेल अलग प्रशासकीय स्वीकृति माँगैत छथि। तेँ ‘सहयोगक दाम मिलि

गेल’ कहबो पूरा सत्य नहि : किछु अग्रिम पहुँचल, एकटा स्थानान्तरण जाँच शेष, पुरान बकाया शेष, आ स्थायी श्रेय-पञ्जीक प्रक्रिया अधूरी। एहि प्रकारक ‘आंशिक समाधान’ पाठक स्थितिमे मापल जा सकैत अछि, केवल लेखकक घोषणा नहि।

श्रमक अनेकता, नामक अधिकार आ पारस्परिक निर्भरता

पार्वतीक तीन थान आ पवित्राक आठ गुँथल पट्टी एक्के सुरक्षा-व्यवस्थामे उपयोगी अछि, तथापि निर्मिति एक नहि। ‘बुनाइ’ आ ‘गँथाइ’ अलग पर्चीपर लिखायब ई कथा-कर्मक भौतिक विवरणसँ उठल आर्थिक तर्क अछि। पार्वतीक वचन—अलग भुगतानक अर्थ अलगाव नहि—सहकारिताक आलोचनात्मक परिभाषा बनैत अछि। सामूहिक उपादेयता आ व्यक्तिगत श्रेय एक-दोसराक शत्रु नहि। हीराक जलमार्ग-जाँच, श्यामक बाँस-मॉडल आ ताराक स्थानीय नाप सेहो पृथक श्रम; एकटा प्रपत्रमे सभ नाम जोड़लासँ तकनीकी प्रमाणन स्वतः पैदा नहि होइत।

पात्रसभक दृष्टिकेन्द्र मुख्यतः तारा आ श्यामक व्यावहारिक चिन्ता सँ चलैत अछि, मुदा पार्वती, पवित्रा, हीरा आ अदिति अपन पृथक आर्थिक आ प्रशासनिक सीमा बजैत छथि। कथावाचकक बाह्य प्रस्तुति सँ श्यामक ग्राहक खोनाइक पाछाँक रोष, अदितिक अधिकार-सीमा आ पट्टाक प्रतिनिधिक असहमति एक्के सामाजिक दृश्य मे रहैत अछि। एहि अर्थमे ‘बहुस्वरता’क दावा सोचि कऽ करबाक अछि : दृष्टिकोण अनेक छथि, मुदा प्रत्येक पात्र अपन पूर्ण स्वायत्त वैचारिक भाषा विकसित करैत अछि की नहि, से सभ पर्वक तुलना बिना निर्णीत नहि।

किष्किन्धाक पूर्वकथा : सुग्रीवक भय आ वचनक सीमा

प्राचीन कालधारा पाठांश १२–१३ मे प्रवेश करैत अछि। सुग्रीव ऋष्यमूक पर राम–लक्ष्मणकेँ पहिने शत्रुक सम्भावना सँ देखैत छथि; हनुमान सुनबाक मध्यस्थ बनैत छथि। रामक खोज आ सुग्रीवक निर्वासन एके समस्या नहि, केवल सम्भावित गठबन्धनक आधार अछि। आगिक साक्षी वा अन्तिम निष्ठाक पहिने दूनू पक्ष अपन आवश्यकता आ सीमा स्पष्ट करय चाहैत छथि। ई दृश्य अध्याय ४९ क स्थानीय करारक यांत्रिक प्रतिबिम्ब नहि; एहि सादृश्यक महत्त्व **असमतुल्य शक्तिसँ सहयोग लेल करार करबाक शर्त** अछि। प्राचीन राजनीति आ आधुनिक श्रमव्यवस्था अलग ऐतिहासिक स्तर पर छथि, तैँ पौराणिक निर्णयकेँ आधुनिक नगरपालिका नियमक शब्दशः प्रमाण नहि मानल जाए।

प्रमाण-व्यवस्था, भाषा आ निष्पक्ष मूल्यांकन

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ पुरान बाँस-रेखा स्मृतिजन्य अनुसंधानक विषय बतबैत अछि, स्थलाधिकार वा तकनीकी नक्शाक सिद्ध प्रमाण नहि; अस्थायी चेतावनी खतराक सङ्केत अछि, कानूनी सीमा-परिवर्तन नहि; ‘स्थानान्तरणक निर्देश’ लाभार्थीक बैंकमे रकम पहुँचलाक प्रत्यक्ष अनुभूति नहि। पुरान मजदूरी-पञ्जीक ‘छोट नाव’ पुकारनामसँ बच्चा-अपहरणक आरोप निकालबाक प्रयास नैरा रोकैत छथि। एक कथन-विषयसँ असम्बद्ध साध्य निकालबाक दोष एतय कागदक साथे उजागर होइत अछि। पंजी, प्राप्ति, भुगतान आ आपत्ति—ई सभ अलग ज्ञान-प्रकार अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय विवेचनमे ‘बाँसक छाल’क श्रमध्वनि, पीयर–लाल पट्टीक चेतावनी आ श्यामक बेटाकेँ देल चारि चौकोर खाँचा अगिला पीढ़ीक पाठक-निर्माणक सम्भावना उद्घाटित करैत अछि। सुरक्षा-चिन्हकेँ बालक खेलक रंग बुझैत अछि; पार्वती ओकर प्रयोजन बुझबैत छथि। एहि जगह दृश्य अपन उपयोगितावादी कथनसँ आगाँ भाषिक अर्थ-सुधारक कार्य करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे बहुतो पात्र लगभग एके क्षणमे प्रपत्रक उपयुक्त श्रेणी बनबैत छथि; ई कथात्मक दक्षता सामाजिक मोलभावक वास्तविक थकानकेँ छोट कऽ सकैत अछि। तथापि श्यामक ग्राहक छूटब, परिवारक उधारी आ पुरान बकायाक निरन्तरता एहि सुविधाजनक समाधानकेँ आंशिक रूपसँ प्रतिरोध करैत अछि। अन्तिम पाठांशमे तीन असहमत पक्षक नाम बचल रहब सरलीकृत विजयक बदला खुलल संघर्षक प्रमाण अछि।

अध्याय ५० — सुग्रीवक भय

सुरक्षा-व्यवस्थाक अनपेक्षित परिणाम : पट्टी लगल, बाट बदलल

अध्याय ४९क अस्थायी चेतावनीक अगिला दिन कहानी फाटकक ओस-भीजल पट्टी आ उमा राजधोबक तीन चादरसँ आरम्भ होइत अछि। पहिल अध्यायमे खतरा चिन्हल छल; आब चिन्ह लगला बाद लोक असुरक्षित दोसर पगडंडी पकड़ैत अछि। तारा स्पष्ट करैत छथि जे लोकक चलबाक दिशा बदलल, खतरा समाप्त नहि भेल। ई सीधा कारणात्मक सम्बन्ध उद्योग-पर्वक कथानककेँ अगिला स्तर पर लऽ जाइत अछि : सार्वजनिक आदेशक **अनपेक्षित दुष्परिणाम**। पट्टाक प्रतिनिधिक खेत-बाटक भय केवल प्रतिगामी जिद नहि; अस्थायी चिन्ह भविष्यक स्थायी अधिकार-निर्णय बनि जाएबाक चिन्ता अछि। अदिति तकनीकी अवधि आ कानूनी प्रभाव अलग रखैत छथि।

धोनाइक श्रमक संसार एहि संकटकेँ नव दृष्टिसँ देखबैत अछि। उमाक तीन ग्राहक अन्यत्र चलि जाएबाक डर, साझा छाँहक उपयोगक सम्भावना आ सरायक एकतर्फा दर—ई फाटकक जल-सुरक्षासँ सीधा जुड़ल आर्थिक स्थितिसभ अछि। कपड़ा सुखेबाक भौतिक स्थान पर हुनकर स्वायत्तता निर्भर अछि। उर्मिला अपन सुरक्षित चबूतरा साझा करबाक प्रस्ताव दैत छथि, मुदा उमाक ग्राहक वा स्वतंत्र मोल अपन अधीन नहि लैत छथि। साझेदारी आ अधीनता बीचक ई अन्तर कथाक अर्थगत केन्द्र अछि।

उमा, उर्मिला आ शान्ति : तीन तरहेँ सहयोगक वास्तविक लागत

उमा तीन शर्त राखैत छथि—प्रत्येक घरक कपड़ा अलग क्रमाङ्क, प्रत्येक कारीगरक दाम स्वतंत्र, आ साझा छाँह-पानि-रास्ताक खर्च पृथक; उर्मिला असुरक्षित पानिक जाँच-खर्च चौठ विषय जोड़ैत छथि। सरायक आदमी सभ धोनाइ एक नामपर लेबाक प्रस्ताव दैत अछि आ आधा दामक दबाव बनबैत अछि। उमा अपन बेटीकेँ पढ़एबाक आर्थिक चिन्ता रहितहुँ ओ शर्त अस्वीकार करैत छथि। परिणाम वीरताक निरापद विजय नहि : सरायक काम प्रतिस्पर्धी धोबि लग चलि जाइत अछि। तेँ प्रतिरोधक कीमत पाठमे नामसहित दर्ज अछि। बादमे उर्मिला संग साझा छाँहक अस्थायी समय-सारणी बनेबाक सम्भावना रहैत अछि; अस्पतालक करार, उमाक ग्राहक आ निजी मजदूरी हस्तान्तरित नहि होइत।

शान्ति बारी विवाह-सामग्रीक शिल्पी छथि। हुनक भीजल पेटी, तोरण, छाल आ सूतक दाम समयसँ बनल वस्तुकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। बिना अग्रिम सामान माँगनिहार परिवारसँ ओ लागतक आधा अग्रिम आ शेष हस्तान्तरणक दिन निश्चित करैत छथि; आर्थिक रूपसँ असमर्थ परिवारक सहायता लेल अलग स्वैच्छिक कोषक विकल्प दैत छथि। एकटा परिवार रसीद सहित साझा तोरणक किराया जमा करैत अछि; सभ प्रस्ताव स्वीकृत भेल एहन नहि। ‘दान’ आ ‘मजदूरी’क पृथक्करण उमा–उर्मिलाक ‘साझा सुविधा’ आ ‘निजी ग्राहक’क अन्तरसँ समांतर अछि, मुदा दूनू घटनाक व्यावसायिक वस्तु, जोखिम आ फल भिन्न अछि।

फूलो चौरसियाक ‘खिरोइ’ लिखल पुरान परिवार-पत्र तेसर, विशेष प्रमाण-संकट खोलैत अछि। परिवार-पत्रमे नाम आ दू पुरान खर्च-अङ्क अछि; आजुक जलनिकासक प्रत्यक्ष लाभ, भू-नाप वा वर्तमान फाटकसँ संगम स्वयं ताहि कागदसँ सिद्ध नहि। फूलो दावाक आधारपर बढ़ल देय पर आपत्ति करैत छथि; पट्टाक प्रतिनिधि लिखित आपत्ति लेबाक सहमति दैत अछि, पूरा खर्च-निर्णय नहि बदलैत। अध्यायक अन्तमे तारा स्पष्ट कहैत छथि जे उमाक घाटा दर्ज, शान्तिक एक रसीद, फूलोक सुनवाई—तीनूकेँ एके उपलब्धि नहि कहल जाए। ई अन्तर आलोचकीय परीक्षणक प्रमुख आधार अछि।

द्विकालीन आख्यानमे सुग्रीव : भयक स्वीकार, पक्ष-निर्णयक स्थगन

किष्किन्धाक प्राचीन दृश्य पाठांश १७–२० मे अछि। सुग्रीव वालीक सम्भावित दूतक भयमे राम–लक्ष्मणक बलकेँ परखैत छथि। गुफाक द्वार, रक्त, भ्राताक मृत्यु अनुमान आ वालीक क्रोध—ई सभ सुग्रीव अपन पक्षक स्मृति रूपेँ कहैत छथि। कथाकार ओहि स्मृतिते निर्णायक न्यायिक सत्यक मुहर नहि लगबैत छथि। सुग्रीव राज-पुनर्प्राप्तिक संग सम्भावित नवा शासनमे बचल लोकक अधिकारक प्रश्न सेहो उठबैत छथि। विशेष प्रश्न—दू विपरीत भ्रातृ-कथा भेटला पर रामक बाण केकर वचन मानत—‘मित्रता’क शक्ति-सन्तुलन पर सन्देह बनबैत अछि।

एहि दृश्य आ उमाक विरोधक बीच परोक्ष सम्बन्ध अछि : शक्तिशाली सहायक आ कमजोर आवेदकक गठबन्धनमे मात्र मौखिक आश्वासन पर्याप्त अछि की? एकटा स्थितिमे राजसत्ता आ प्राणक भय, दोसरमे ग्राहक-निर्भरता आ जीविकाक संकट। दूनूकेँ समान करब सामाजिक स्तरक भेद मिटायब होयत; मुदा सहमतिक शर्त आ भय बजबाक अधिकारक तुलना फलदायी अछि। पाठ रामक कथनद्वारा संघर्ष एखन पूर्ण तय नहि करैत; एही कारण सुग्रीवक शंका कथानकमे बचि रहैत अछि।

समय, दृष्टिकेन्द्र आ प्रमाणक स्तरीकरण

अध्याय वर्तमान भोरक चादर सुखेबासँ दुपहरक साझा वार्ता, साँझक ग्राहक-हानि आ रातिक नाप-बही धरि चलैत अछि। बीचमे प्राचीन किष्किन्धाक अलग समय-रेखा प्रवेश करैत अछि। एहि संक्रमणमे आधुनिक कथाक गतिरोध एकटा महाकाव्यीय विकल्पक माध्यमसँ विचारणीय बनैत अछि, मुदा ओ प्राचीन प्रसंग आधुनिक घटना घटेबाक कारण नहि। कथन मुख्यतः बाह्य वर्णनक भीतर उमाक आर्थिक असुरक्षा, ताराक प्रपत्र-जाँच आ सुग्रीवक भयक सीमित आन्तरिक अनुभव देइत अछि। क्रमशः अलग पात्रक अनुभव पाठक जानैत अछि; एकटा सर्वज्ञ कार्यालयी ‘अन्तिम निष्कर्ष’ नहि देल जाइत।

आख्यानगत भेद : चेतावनीक फलक प्रत्यक्ष जोखिमक सीमा बतबैत अछि, भूमि-अधिकारक स्थायी न्यायिक घोषणा नहि; ‘खिरोइ’ नामक ऐतिहासिक लेख वर्तमान जलनिकासक लाभ सिद्ध नहि; ‘छोट नाव’ पुकारनाम व्यक्तिगत पहिचान वा बालक-अपहरणक प्रमाण नहि; धोनाइ ‘संयुक्त हस्तान्तरण’ लिखल सूचनापट वास्तविक करार-हस्तान्तरणक प्रमाण नहि। नैरा परिवार-पत्रक सार्वजनिक उतार आ निजी ऋण-विवरणक पाँति अलग रखैत छथि। प्रमाणक **प्रसंग-अवच्छेद** एहि तरह कथा-क्रियामे उपयोजित अछि, खालि दार्शनिक पदावलीमे नहि।

साहित्यिक उपलब्धि आ प्रतिपक्ष

तीन चादरपर उमाक अपन बहियाक क्रमाङ्क, शान्तिक भीजल विवाह-पेटी, फूलोक खिरोइवला तह आ पट्टाक पीयर चिन्ह—ई वस्तुसभ इतिहास, जीविका आ सार्वजनिक सुरक्षा अलग-अलगरूपेँ मूर्त करैत अछि। उमाक बेटी हिसाब पढ़ैत अछि, मुदा माए हुनका धोनाइ-पेशा अपनाबए लेल बाध्य नहि करैत छथि; पीढ़ीक अधिकारक ई सूक्ष्म दृश्य श्रमक गरिमा आ पेशागत अनिवार्यता बीचक अन्तरक मूल्यवान् संकेत अछि। शान्तिक तोरण लेल बेटीकेँ रंग चुनबाक अवसर श्रमिकक देय समाप्त नहि करैत।

सीमा : कतिपय औपचारिक आपत्ति एक बैठकसँ दोसरा बैठकमे व्यवस्थित कागद रूपेँ बदलि जाइत अछि, जे वास्तविक सामाजिक मोलभावक दीर्घ असफलता सँ अधिक सुव्यवस्थित बुझा सकैत अछि। मुदा सरायक काज सचमुच खोनाइ आ फूलोक खर्चक अनिर्णय कथा बचा लैत अछि। ‘सुग्रीवक भय’क साहित्यिक उपलब्धि डरकेँ न नैतिक दोष, न अन्तिम सत्य बनायब अछि; भय सुनल जाए, तँ ककर पक्षक प्रमाण पर निर्णय होयत, ई प्रश्न शेष रहैत अछि।

अध्याय ५१ — ताराक गणना

तीन डोरी, तीन तथ्य : गणनाक आरम्भिक निषेध

अध्यायक आरम्भमे तारा बिनौट एक्के फाटकक तीन नाप लैत छथि—खम्भाक दूरी, लोकक चलबाक पटरी, आ वर्षामे कटि गेल जमीन। ‘तीनूकेँ एक्के अङ्कमे जोड़ब तँ आदमी खसत, कागद नहि’ कथन संख्याक विरोध नहि; अनुचित संकलनक विरोध अछि। आकृति, प्रयोग आ जोखिमक अलग-अलग मापकेँ एक विन्दुपर घटेबासँ भ्रम उत्पन्न होइत अछि। एतय तारा अभियन्ता अदितिक ज्ञानक विकल्प बनबाक दावा नहि करैत छथि; जे देखल आ सुनल, ओकर स्थानीय उत्तरदायित्व अपन नामसँ लिखब चाहैत छथि। उपन्यास एहि अन्तरमे ज्ञानक लोकतान्त्रिक वितरणक एकटा ठोस मॉडल रखैत अछि : स्थानीय अनुभवक मूल्य तकनीकी योग्यता मिटाए बिना मानल जाए।

नगरक पर्चीमे स्थानीय सुझावक श्रेय मात्र कार्यालयी सहायकसभकेँ देने छल। तारा ओ पर्ची फाड़ैत नहि; लाल पेन्सिलसँ प्रश्नचिह्न लगबैत छथि। ई छोट अभिनय सत्यापनक प्रच्छन्न रूपक अछि : अभिलेखक हेरफेरक विरोध, मुदा मूल साक्ष्य नष्ट नहि। एही समय रुचि धारिकार बाँसक दोहरा घूमवाला चेतावनी-नमूना अनैत छथि। कार्यालयक अपन आविष्कारक छाप हुनकर बुनौटजेकाँ अछि; तस्वीरमे देखायब आ पुनरुत्पादनक अधिकार एक

नहि। अदिति प्रारूपक छपाइ रोकैत छथि, फोटो लेल जाएबाक सहमति जाँचबाक कहैत छथि, सार्वजनिक प्रदर्शन आ व्यावसायिक नकलक अलग अनुमति माँगैत छथि। ई जाँच आरम्भ अछि, डिजाइन-स्वामित्वक अन्तिम न्यायिक फैसला नहि।

रुचिक बेटी छबीली नव रंग आ नमूनाक प्रश्न उठबैत अछि। माए बच्चीकेँ सीखबाक अधिकार दैत छथि, तथापि पूर्वनिर्मित बनावटक श्रेय रङ्ग बदलने स्वतः बदलत नहि, से चेतबैत छथि। पीढ़ीक नवाचारकेँ पारिवारिक शिल्पक एकाधिकारमे बन्द करबाक बदला रचनात्मक अनुशासनक तर्क एतय देखाइत अछि। विधानक अधिकार-विवाद अवश्य अछि; मुदा कथाक विशिष्टता नव उत्पादक कल्पना आ श्रम-श्रेयक द्विपक्षीय शिक्षामे अछि।

सकीबक दू बहिया आ अपूर्ण रसीद : संशयक उचित परिधि

सकीब अबदलक सार्वजनिक बाहा-सफाइ चन्दाक रसीद आ निजी ढुलाईक बहिया अलग अछि। एक्के नाम दू खातामे भेटितहुँ एक्के रकम वा एक्के प्रयोजन सिद्ध नहि। प्रतिनिधि एक ‘भोजन’ मदक अपूर्ण प्राप्ति देखिकऽ सम्पूर्ण चन्दा चोरी भेल एहन आशंका व्यक्त करैत अछि। तारा उचित सीमांकन करैत छथि : खर्चक एक पाँतिक प्रमाण अपूर्ण अछि, एतयसँ समस्त सार्वजनिक कोषक अपहरण सिद्ध नहि। सकीब स्वीकार करैत छथि जे लिखित रसीद नहि लेने छला; दोकानदारक पुरान सामग्री-पन्नामे भोजनक वस्तु भेटल, मुदा भुगतानक दिनक प्रमाण पर्याप्त नहि। हुनकर निर्णय कागद गढ़ब नहि, ‘पुष्टि शेष’ लिखब अछि। ई आत्मस्वीकृति पात्रक नैतिक विकासक दृश्य बनैत अछि; हुनका निर्दोष वा दोषी घोषित नहि कएल गेल अछि।

ई घटना आख्यानगत ‘साध्य–हेतु’ विमर्शक उपयोगी आख्यानात्मक परीक्षा अछि। एक मदक अभिलेख-अभाव सम्पूर्ण सार्वजनिक चन्दा अपहरणक हेतु नहि बनि सकैत, जखन कि आवश्यक व्याप्ति स्थापित नहि। तथापि असिद्ध व्यापक आरोपक अर्थ स्थानीय त्रुटिक उन्मुक्ति नहि : रसीद-अभाव जाँचक वैध विषय रहैत अछि। सकीब निजी ढुलाईक पूरा पारिवारिक बहिया सार्वजनिक नहि करैत छथि; नैरा सार्वजनिक धनसँ सम्बन्धित पाँतिक सीमित निरीक्षण स्वीकार करैत छथि। ई गोपनीयता बनाम उत्तरदायित्वक कार्यकारी समाधानक प्रस्ताव अछि, पूरा जाँचक अन्तिम परिणाम नहि।

‘छोट नाव’ पुकारनामक पुनरागमन एकटा पुरान कथासूत्रकेँ वर्तमान चन्दा-बहससँ जोड़ैत अछि। नैरा व्यक्तिक पुकारनाम, दाता आ माल-ढोएनिहारक भूमिकाकेँ अलग करैत छथि। समान शब्द रूपी ‘नाम’ व्यक्ति-पहिचान सिद्ध नहि; तिथि, मूल भुगतान-पत्र आ प्रसंग आवश्यक अछि। बच्चा हरएबाक अफवाह फेर एहि पञ्जीसँ अलग राखल गेल अछि। एहि तरह उपन्यास एकहि सम्भावित अपराधक सस्तो ‘बड़ खुलासा’ टारैत अछि, यद्यपि पाठकीय उत्सुकता जोगबैत अछि।

प्राचीन तारा आ वाली : परामर्शक वाणी, निष्फल चेतावनी

अध्याय ५१ मे स्पष्ट द्विकालीन प्रवेश पाठांश १४–१८ आ फेर २८–३० पर अछि। प्राचीन तारा वालीकेँ सुग्रीवक नवा आत्मविश्वासक सम्भावित कारण बुझबैत छथि : राम–लक्ष्मणक सहायता सुग्रीवक बल-सन्तुलन बदलि सकैत अछि। अङ्गदक लेल चिन्ता, जनपदक शान्ति आ पतिक सुरक्षा—तीनू हित परस्पर समान नहि; तारा अपन वाक्यमे एहि विरोधकेँ व्यक्त करैत छथि। वाली हुनकर परामर्श नहि मानैत छथि। परामर्शक सत्यता कथामे

तत्काल जीत नहि पाबैत; वाली रणस्थल जाइत छथि आ बाणसँ खसैत छथि। एकर बाद तारा शोक आ क्रोधकेँ संग राखि अङ्गदक न्यायिक प्रश्न सुनबाक आग्रह करैत छथि।

अध्यायक नाम ‘ताराक गणना’ आधुनिक तारा बिनौट आ प्राचीन तारा बीच दृष्टिगत सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा ई दू कालधाराक **दू अलग व्यक्तित्व** अछि। आधुनिक तारा नाप-डोरी, सार्वजनिक धन आ सुनवाईक गणना करैत छथि; प्राचीन तारा सम्भावित युद्ध, गृहसभक विश्वास आ पुत्रक भविष्यक मूल्य गनैत छथि। समानता ‘स्त्री सदिखन दूरदर्शी’ जेकाँ सत्तही कथनमे नहि, बल्कि अनिश्चित परिस्थितिमे बहुविध हित एक संग देखबाक बौद्धिक क्रियामे अछि। भिन्नता सेहो अर्थवान् : आधुनिक तारा अपन पर्चा सुधारबैत छथि, प्राचीन ताराक उपदेश वालीक निर्णय नहि बदलैत। एहि असफलता सँ ज्ञानक उपलब्धि आ निर्णयक नियन्त्रण बीचक दूरी खुलैत अछि।

वालीक मृत्यु पर प्राचीन तारा ‘हम पहिने कहने छलहुँ’ प्रकारक आत्मप्रशंसा नहि करैत छथि। ई विन्यास शोकक औचित्य बनबैत अछि; करुणा आ नीति-विवेक एक्के दृश्य मे रहैत अछि। अङ्गद अपन पिताक मृत्युक कारण आ नवा राजमे स्थान पर प्रश्न करैत अछि, तारा ओकरा चुप नहि करैत छथि। प्राचीन घटनाक ई पुनर्लेखन उपन्यासक आधुनिक सुनवाई-सिद्धान्तक सहयोगी रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि; तथापि एकरा मूल रामायणक शाब्दिक प्रमाण वा ऐतिहासिक प्रतिवेदन मानब पद्धतिगत भूल होयत।

घटना-फल आ कथनक नैतिक असमानता

आधुनिक दृश्यसभक कारण-पञ्जी क्रमशः : (क) असमान नाप आ अनाम स्थानीय श्रेयक विरोध, (ख) रुचिक नमूना-नकलक प्रस्ताव रोकब, (ग) सकीबक अपूर्ण ‘भोजन’ रसीदक सीमित जाँच, (घ) फूलोक खेत आ पट्टाक गाड़ी-बाटक अलग आपत्ति, (ङ) अगिला भुगतान-शर्तवाला परामर्श-पत्र, आ (च) अस्थायी सुरक्षा परीक्षण लेल रुचिक दू सप्ताहक सीमित सहमति। फलित अवस्थामे फूलो सुनवाइक दिन पबैत छथि, पट्टाक आपत्ति तिथि सहित दर्ज अछि, रुचि बड़ उत्पादनादेशपर सही नहि करैत छथि, सकीब भोजन-मदक सत्यापन शेष रखैत छथि। तकनीकी प्रमाणनक सभ प्रश्नो अधूरे अछि।

एहि अवस्थासभमे उपलब्धिक आकार अलग-अलग अछि। छपाइ रोकब आ सीमित परीक्षण स्वीकृत करब तत्काल उपयोगी हस्तक्षेप; परिशिष्ट भुगतान आ अपर्याप्त चन्दा-प्रमाण दीर्घ जाँचक विषय; भूमि-लाभ आ हानिक गणना निर्णयक क्रम एखन पूरा नहि। आलोचना जँ सभकेँ ‘न्याय स्थापित’ कहि जोड़त तँ पाठक घटनात्मक विश्वसनीयता नष्ट होयत। कथाकार स्वयं अन्तिम बहीमे ‘जेकर हितक गणना, ओकर सुनवाईक अधिकार’ लिखबैत छथि आ अगिला युवकक आवाज लेल खाली जगह छोड़ैत छथि। ई रिक्त स्थान अगले अध्यायक नाटकीय प्रवेशक तैयारी अछि, पूर्वनिर्णीत उपसंहार नहि।

भाषा-शिल्प, उपलब्धि आ सीमा

डोरीक तीन उपयोग, लाल पेन्सिलक प्रश्नचिह्न, डलियाक दोहरा घुमाव, भोजन-रसीदक खाली पाँति आ खाली रखल सुनवाई-स्थान—ई सभ अलग दृश्य वस्तुसभ प्रमाणक दार्शनिक भेदकेँ मूर्त करैत अछि। तारा आ श्यामक घरघुरा संवाद सार्वजनिक श्रमक दरपत्रसँ घरेलू निःशुल्क श्रमक प्रश्नमे फेर मोड़ अनैत अछि : अपन घरक

देखभाल केकर बहीमे गनल जायत? ई प्रश्न उपयोगी आत्मालोचना अछि, कारण सभ श्रमकेँ सरकारी बिलमे बदलि देब नैतिक समानताक पूर्ण उपाय नहि।

एहि अध्यायक शिल्पगत एक सीमा अनिवार्यतया देखबाक अछि : लेखक बारम्बार पात्रसभकेँ ‘अलग-अलग काज’, ‘अलग-अलग प्रमाण’, ‘अलग-अलग अधिकार’ कहबैत छथि। ई विवेचनक शुद्धता देइतहुँ आवाजसभक वाक्य-विन्यासमे समानता बढ़ेबाक जोखिम रखैत अछि। मुदा वालीक निर्णयपर ताराक नियन्त्रणक अभाव, सकीबक अपूर्ण रसीद आ रुचिक बड़ अनुबन्ध अस्वीकारब पाठक खुले परिणाम दैत अछि; एतय नैतिक विधानक पूर्ण सफलताक समरूपता टूटैत अछि।

अध्याय ५२ — अङ्गदक कल्हि

घर, मंच आ पाठशाला : ‘घुमन्तु’ नामक भीतर भिन्न जीवन

अध्याय ५२क भोरमे नन्दू नट मंचक बाँस उखाड़ैत छथि, आ हुनकर बेटी झिलमिल पूछैत छथि जे पढ़बाक छाँह कतय रहत। एक्के बाँस जीवनक तीन अवयव जोड़ैत अछि : प्रस्तुति-श्रम, अस्थायी बसेरा आ विद्यालयक अभ्यास। नगरक लाल खड़िया-पर्ची ‘बाट खाली करू’ कहैत अछि, मुदा दूरी, अवधि वा अनुमति स्पष्ट नहि। गौरी कपरिया भीजल तिरपाल आ पुरान मरम्मति-रसीदक संग आपत्ति करैत छथि। हुनकर कथन—चलैत छी, मुदा हवा नहि छी—घुमन्तु जीवनकेँ निर्वासित निराकारता बनएबाक विरुद्ध वस्तुगत उत्तर अछि। रसीद भूमि-स्वामित्वक प्रमाण नहि, मुदा परिवारक वस्तु, खर्च आ श्रमक अस्तित्वक प्रमाण अछि।

अदिति स्पष्ट करैत छथि जे सँकर भागक जोखिम-जाँचक माँग भेल अछि, पूरा पथार तत्काल खाली करबाक लिखित आदेश हुनकर नहि। गौरी खतरनाक भागसँ हटबाक सहमति दैत छथि, मुदा सुरक्षित वैकल्पिक कात आ लिखित कारण माँगैत छथि। ई विरोध ‘सुरक्षा बनाम अधिकार’क सरल जोड़ी नहि : गौरी जोखिम अस्वीकार नहि करैत छथि, बल्कि जोखिमक नामपर व्यापक, अप्रमाणित बेदखलीसँ बचैत छथि। पूर्वअध्यायक अस्थायी चेतावनीक आगाँ विस्तार कऽ देल जाएबाक खतरा एकर कारणात्मक पृष्ठभूमि अछि।

रेवा गुलगुलिया, जानकीक दल आ गौरीक समूह एकसमान घुमन्तु ‘समुदाय’क बिना-भेद प्रतिनिधि नहि। रेवाक पुत्र जतनक पाठशालाक निरन्तरता, जानकीक दलक वृद्धा सरयूक स्वास्थ्य आ गौरीक परिवारक छप्पर अलग-अलग बाधा अछि। छोट कार्यदलमे समूह-चुनल प्रतिनिधि, अलग आवेदनक प्रतिनिधि आ स्थानीय निवासी सम्मिलित होइत छथि। समूहक समस्त यात्रा-स्थान सार्वजनिक नक्शामे नहि देल जायत; विवादित सुरक्षित मार्ग आ सम्पर्कक आवश्यक विवरण धरि अभिलेख सीमित रहत। एतय विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि उपयोगी बनैत अछि : नीति-निर्माणमे ‘घुमन्तु’ सामूहिक नामक भीतर दबि गेल व्यक्तिक वस्तु, आवाज आ अनुमति पुनः दृश्य होइत अछि।

झिलमिलक समय : कला छोड़ब नहि, रात्रि-श्रम घटायब

माछ–मखान श्रम-मेलाक प्रदर्शनक पर्चीमे बच्चासभक पूरा साँझ उपस्थिति अनिवार्य आ दलक मजदूरी आधा करबाक प्रस्ताव छल। नन्दूकेँ भाड़ा आ कॉपीक दाम चाही; मैना आ झिलमिल विद्यालयक अगिला भोर परीक्षा देखैत छथि। बच्ची स्वयं कहैत छथि जे ढोलक-गीत छोड़ब नहि चाहैत छथि, मुदा विद्यालय पहिने जाएब आ अपन मनसँ गीत गाएब चाहैत छथि। एहि निर्णयकेँ बालकक इच्छा बनाम अभिभावकक लोभक सस्तो द्वन्द्व बनायब अनुचित : नन्दूक आर्थिक बाधा वास्तविक अछि, बच्चीक स्वायत्त समय सेहो।

विद्यालयक मीरा मंडल घुमन्तु पाठशालाक उपस्थिति देखबैत छथि, मुदा ओकरा औपचारिक नामांकनक प्रमाण नहि मानैत छथि। मधु घाटसमितिक दू घण्टाक सम्भावित सुरक्षित मंचक प्रस्ताव अनैत छथि; अदिति भारी मंच आ विद्युत् तारक अलग जाँचक आवश्यकता कहैत छथि। आयोजकक अपेक्षित दर्शक आ दाम घटैत अछि। नन्दू दू घण्टाक श्रम, बाँस-भाड़ा आ ढोलक-मरम्मतिक मद लिखबैत छथि; झिलमिल पहिल गीतमे भाग लेबाक आ समयपर लौटबाक शर्त स्वयं व्यक्त करैत छथि। एक सप्ताहक सशर्त अनुमति **प्रस्तावित** अछि; स्थायी कार्यक्रम-स्थान मंजूर भऽ गेल एहन नहि। नन्दूक घटल आमदनी परीक्षा–स्वायत्तताक वास्तविक लागत बनैत अछि। अन्तमे मैना स्पष्ट करैत छथि जे किताबक दाम लेल बच्चीकेँ राति भरि मंचपर नहि राखल जाएत, आवश्यक भेल तँ आन काज खोजल जायत।

कथा-शिल्पमे झिलमिलक पुस्तकपर ‘समान’ आ ‘असमान’ आ अन्तिम पन्नाक ‘हम गीतो सीखब आ हिसाबो’ शैक्षणिक अमूर्तन नहि, वास्तविक समय-बाँटक सङ्घर्षक भाषिक प्रतिध्वनि अछि। एतय पाठशाला मंचक विरोधी संस्थान नहि; सभ शर्त उचित हो तँ कला आ शिक्षा दुनू जीवित रहि सकैत अछि। तथापि कार्यक्रमक सशर्त समाधान बच्चाक औपचारिक नामांकनक प्रश्न नहि सुलझबैत—ई अध्यायक बाह्य सफलता आ शेष संकटक साफ अन्तर अछि।

साजिदक कैमरा : अनुमति, बाजार आ अपूर्ण डिजिटल अनुबन्ध

साजिद नटक पुरान अभिनय-दृश्य नगर-प्रचारमे जोड़बाक प्रस्ताव एक युवक रखैत अछि; बच्चासभक चेहरा सेहो प्रचारमे देबाक विचार अछि। पुरान दृश्य बजारमे घुमि चुकल अछि, मुदा एहि प्रसारसँ सार्वकालिक व्यावसायिक उपयोगक सहमति सिद्ध नहि। साजिद मिथुनक खोजक गलत सन्दर्भमे अपन कटि गेल दृश्य उपयोग होएबाक पूर्वानुभव याद करैत अछि। ओ वर्तमान सार्वजनिक सुरक्षा-प्रचार, कलाकृति आ बच्चाक गोपनीयता तीनूकेँ अलग करैत अछि। ‘मूल फाइल देब’क बदला उद्देश्य, अवधि आ उपयोग-सीमा लिखबैत अछि।

नगर-प्रचारक युवक एकमुश्त भुगतान देबाक प्रस्ताव करैत अछि, जकर बाद असीमित पुनर्प्रसारक अधिकार चाहैत अछि। साजिद अस्वीकार करैत अछि आ दू विकल्प देइत अछि : कलाकारसभक अलग अनुमति सहित सीमित प्रचार-अंश, अथवा नवा रिकॉर्डिंगक निश्चित शुल्क। बच्चाक अभ्यास-फाइल, गलत सन्दर्भवाला पुरान दृश्य आ मूल रिकॉर्डिंग वर्तमान सौदासँ बाहर रहैत अछि। युवक स्वतः मोबाइलसँ वीडियो खींचबाक बात कहैत अछि; साजिद दर्शकक सूचित सहमति आ कलाकारक प्रदर्शन-अधिकार अलग पृष्ठभूमि बतबैत अछि। झिलमिल हाथक ढोलक-दृश्यक विकल्प पूछैत अछि, किन्तु कैमरा ओहि क्षण चालू नहि होइत। तेँ ‘बालकक तस्वीर

सुरक्षित भऽ गेल’क अतिशय निष्कर्ष नहि, केवल एक विशिष्ट शूटिंगक स्थगन आ अनुबन्धक अपूर्णता सिद्ध अछि।

नव संचार माध्यमक कथात्मक महत्त्व एतय दोहरी गति मे अछि : दृश्य तुरन्त सार्वजनिक भऽ सकैत अछि, मुदा न्यायोचित सहमति धीमे, पक्षविशेष आ काल-सीमित अछि। मिथुनक गुमशुदगीक पुरान अफवाहकेँ एहि मंच-प्रसंगसँ जोड़ि नव आरोप घोषित नहि करबाक नैराक अन्तिम निर्णय प्रमाणक पुनरावर्ती नैतिक अनुशासन देखबैत अछि।

अङ्गदक कल्हि : उत्तराधिकारक बदला प्रश्न करबाक अधिकार

प्राचीन किष्किन्धाक दृश्य अध्याय ५२क पाठांश ११–१५ आ २८–२९ मे अछि। वालीक मृत्यु भेलाक बाद अङ्गद माए तारासँ पुछैत अछि जे पिता मारनिहारक मित्रता ओकर रक्षा केना करत। तारा शोक, राज-परिवर्तन आ बालकक जीवनकेँ एके कथा नहि बनबैत छथि। ‘पुत्र होएब दोषक उत्तराधिकार नहि, स्मृतिक सम्बन्ध अछि’क भाव स्पष्ट होइत अछि। हनुमान सुग्रीवक सहायक रहलहुँ अङ्गदक प्रश्न सुनबाक अनुमति माँगैत छथि। अङ्गदक पहिल प्रश्न स्वयं राज-पद नहि, वालीक पक्षक सैनिकसभक घरमे अन्न पहुँचेबाक अछि। सुग्रीव राजक काज सिखएबाक स्थानक आश्वासन दैत छथि, मुदा अङ्गद ओकरा वंशजन्य अनिवार्य वफादारीक परीक्षा मानए नहि चाहैत। दूतक वचन सिखबाक इच्छा पर हनुमान सम्मानजनक उत्तर दैत छथि।

अध्यायक उत्तरार्धमे अङ्गद हारल पक्षक सैनिकपर ‘शत्रु’क स्थायी छाप अस्वीकार करैत अछि; सुग्रीव आहत परिवारक गणना आ सहायता देबाक प्रतिज्ञा करैत छथि। प्रतिज्ञा तत्काल वास्तविक वितरणक प्रमाण नहि—अङ्गदक प्रश्न आगाँक राज्य-नीतिक परीक्षा बनैत अछि। प्राचीन समयक शोकक दृश्य आधुनिक गौरीक परिवार अथवा नन्दूक बच्चीकेँ पौराणिक पात्रक ‘आधुनिक पुनर्जन्म’ नहि बनबैत। तुलनाक विश्वसनीय आधार ई अछि जे कम शक्तिवला बच्चा वा विस्थापित समूहक प्रश्नकेँ उत्तराधिकार, राज्य आ आर्थिक बाध्यता निस्तब्ध नहि करय। अङ्गदक गदा सँ हाथ हटाएब, झिलमिलक पुस्तक पकड़ब—दूनू दृश्य हिंसात्मक वा श्रमगत नियतिक अनिवार्यता पर प्रश्न खोलैत अछि, मुदा भिन्न काल आ प्रसंग बचाए रखैत अछि।

पाँच परतवला घटना-पञ्जी : समाधानक सही सीमा

(१) लाल निशानक अनिर्दिष्ट आदेश पर गौरी–तारा–अदिति आपत्ति उठबैत छथि; खतरनाक पटरीपर रात्रि न रहबाक सहमति अछि, मुदा पूरा बेदखली-आदेशक आधार अनिश्चित। (२) नन्दू–मैना–झिलमिल विद्यालयक समयक पक्षमे छोट प्रस्तुति चुनैत छथि; अपेक्षित कमाइ घटैत अछि। (३) साजिद असीमित डिजिटल उपयोग अस्वीकार कऽ सीमित विकल्प रखैत अछि; अन्तिम वीडियो-अनुबन्ध शेष। (४) रेवा, जानकी, गौरी, चम्पा आ स्थानीय सदस्य अस्थायी बसेराक अलग आवश्यकतासभ रखैत छथि; अगिला भोर निरीक्षणक प्राप्ति भेटैत अछि, वैकल्पिक पथार तकनीकी रूपसँ सुरक्षित प्रमाणित नहि भेल। (५) राति गौरीक दू परिवार खतरनाक पटरीसँ सुरक्षित कात हटैत छथि, नन्दू कार्यक्रम-बाँस लगानेसँ पहिने अनुमति पर्चीक प्रतीक्षा स्वीकारैत छथि, नैरा तीन अलग लिफाफामे काजक सन्धिसभ सुरक्षित रखैत छथि।

अन्तिम तीन लिफाफा कथानकक नैतिक संरचना अछि : मंचक श्रमसमय, डिजिटल अधिकारक अपूर्ण मसौदा, आ अस्थायी बसेराक आपत्ति। तीनूकेँ एक कागदमे जोड़बाक अर्थ कोनो वास्तविक समस्या समाधान नहि। गौरीक तिरपालक रसीद स्वामित्व नहि; मीरा मंडलक हाजिरी विद्यालय-नामांकन नहि; एक सप्ताहक सशर्त कार्यक्रम प्रस्ताव स्थायी मंच नहि; परिवारक अस्थायी हटब पुनर्वास नहि। एहि भेदसँ पाठकीय अपेक्षा नियन्त्रणमे रहैत अछि।

दृष्टिकेन्द्र, करुणा आ आलोचनात्मक आपत्ति

अध्याय भोरसँ राति धरि सामूहिक स्तरपर बढ़ैत अछि, बीचमे अङ्गदक शोकक प्राचीन काल प्रवेश करैत अछि। आधुनिक दृश्यसभक दृष्टिकेन्द्र नन्दूक जीविकाक गणना, झिलमिलक पाठ-समय, गौरीक आश्रय आ साजिदक कैमरा-सीमा बीच आवागमन करैत अछि। करुणा केवल पीड़ित परिवारक दैन्य बतबासँ नहि, परिवारक मना करबाक शक्ति आ भिन्न आन्तरिक मत देखेबासँ उत्पन्न होइत अछि। ‘चलैत छी, मुदा हवा नहि छी’ कहनिहार गौरी अपन गतिशील जीवनकेँ परित्याग करबाक वचन नहि दैत छथि; ओ सुरक्षित राह आ सुनवाई माँगैत छथि। झिलमिल अपन कला बचाए रखैत शिक्षा चुनैत छथि। अङ्गद पिताकेँ स्मरण करैत नवा शासनसँ प्रश्न करैत अछि। तीनू आवाजक प्रयोजन समान नहि, स्वायत्त अधिकारक आग्रह समान प्रकारक अछि।

कलात्मक सीमा ई अछि जे सभा बारम्बार आदर्श प्रक्रियात्मक भाषा बोलैत अछि—सीमित अनुमति, अलग रसीद, पृथक उद्देश्य। किछु ठाम पात्रक मुहावराक बीचक सामाजिक विषमता एहि रूपरेखामे दबि सकैत अछि। कथा एहि जोखिमक प्रतिवादमे नन्दूक घटल आमदनी, गौरीक दोसर रातिक अनिश्चितता, साजिदक अस्वीकृत प्रस्ताव आ अङ्गदक निरन्तर शोकक दृश्य रखैत अछि। अन्तिम ढोलकक थाप ‘आरम्भ’ अछि, आदेश नहि —ई वाक्य फलित अवस्था खुलल राखैत अछि।

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ४९-५२ क संयुक्त आलोचना

कथा-गतिक वास्तविक परिवर्तन

विराट-पर्वमे कारीगरक वस्तु, श्रेय आ पेशागत पहचान बचएबाक संघर्ष प्रमुख छल। उद्योग-पर्वक पहिल चारि अध्यायमे ओहि संरक्षणकेँ सामूहिक करार आ संभावित असमान गठबन्धनक प्रश्नमे बदलल गेल अछि। अध्याय ४९क सीमित आपात आदेश अध्याय ५०मे लोकक आवाजाही बदलैत अछि; अध्याय ५०क लाभ-हानि विभाजन अध्याय ५१मे ताराक तीन खण्डक नाप आ सुनवाईक अधिकार बनैत अछि; अध्याय ५१क खाली रहि गेल युवा-आवाज अध्याय ५२मे अङ्गद आ झिलमिलक स्वयं प्रश्नमे दृश्य बनैत अछि। ई चारि अध्याय केवल पेशाक चारि स्वतंत्र परिचय नहि, स्पष्ट कारणात्मक निरन्तरता रखैत अछि।

कथनकाल, दोसर कालधारा आ केन्द्रित चेतना

चारू आधुनिक अध्याय भोर–दुपहर–साँझ–रातिक संक्षिप्त काल-चक्र सँ चलैत अछि। प्राचीन दृश्य ४९, ५० (१७–२०), ५१ (१४–१८, २८–३०) आ ५२ (११–१५, २८–२९) पर स्पष्ट रूपेँ उपस्थित अछि। महाकाव्यीय समय आधुनिक दृश्यकेँ ‘व्याख्या’ दैत अछि, ओकरा भौतिक कारण नहि बनैत। सुग्रीवक अनिश्चित मित्रता, प्राचीन ताराक निष्फल चेतावनी आ अङ्गदक प्रश्न एहि क्रममे समझौता–निर्णय–उत्तरदायित्वक तीन कालगत चरण बनबैत अछि। स्थानीय तारा बिनौटकेँ प्राचीन ताराक पुनर्जन्म मानबाक कोनो पाठ-आधार नहि। कथावाचक विभिन्न पात्रक मनोभाव, वस्तुक समय आ लिखित सीमाकेँ परतदार रूपेँ रखैत छथि; ई बहुकेंद्रित कथन अछि, किंतु प्रत्येक कालमे सर्वज्ञ सत्यक निर्बाध वितरण नहि।

आख्यानशास्त्र, विदेह-दृष्टि आ भारतीय काव्यशास्त्र

ई खण्डमे अनेक सम्भावित हेत्वाभास अछि : सुरक्षा-चिन्हसँ स्थायी स्वामित्व; पुरान नामसँ आजुक लाभ-क्षेत्र; एक खर्च-पाँतिक कमी सँ समग्र चन्दा-अपहरण; एक तस्वीरसँ शिल्पक सम्पूर्ण स्वत्व-हस्तान्तरण; एक अस्थायी आवेदनसँ स्थायी बेदखलीक आदेश; पाठशालाक हाजिरीसँ औपचारिक नामांकन। पात्रसभ एहि सम्बन्धक व्याप्ति जाँचैत छथि। प्रमेयक ई अनुशासन साहित्यक भीतर जीवनक व्यावहारिक ज्ञान अछि, दार्शनिक नाम सजावट नहि। तथापि काव्यशास्त्रीय स्तरपर ‘रंगक पट्टी’, ‘छाल’, ‘चादर’, ‘नाप-डोरी’, ‘गदा’, ‘ढोलक’ आ ‘तीन लिफाफा’ लक्षणा–ध्वनिक अनेक अवसर रचैत अछि—सुरक्षा, स्मृति, स्वत्व आ बचल भविष्यक। उपयुक्त दृश्यक करुणा आ विरोध केवल उपदेशक वाक्यसँ नहि, वस्तुक पुनरावर्तनसँ जन्मैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ कारीगरक नाम, कतरायल मजदूरी, घुमन्तु परिवारक सुरक्षित सम्पर्क, बच्चाक विद्यालय-समय, महिला-शिल्पक श्रेय आ अल्पदर्शित चन्दाक अपूर्ण पन्ना राजकीय सारांशक बाहरक अनुभव बचबैत अछि। मुदा ‘समानान्तर’क अर्थ राज्यक सभ अभिलेख असत्य घोषित करब नहि : अदितिक सीमित तकनीकी स्वीकृति आ नैराक प्रमाण-सुरक्षा कथामे आवश्यक अछि। आलोचनाकेँ एहि सहयोग–विरोधक जटिलता बुझबाक चाही।

उपलब्धि, आंशिक असफलता आ अगिला अनुसन्धान

चारू अध्यायक मुख्य उपलब्धि अछि जे सहयोगक नैतिकता **ककर श्रम, ककर जोखिम, ककर आवाज आ ककर निर्णय**क ठोस प्रश्न बनैत अछि। एकर सीमा पात्रसभक भाषामे प्रशासनिक विधिक अत्यधिक समानता, बारम्बार त्रि-चतुष्खण्डी पञ्जी बनबाक पुनरावृत्ति आ किछु विरोधी प्रतिनिधिक मनोविज्ञानक अपेक्षाकृत सीमित चित्रणमे अछि। एखन विपरीत दृष्टिसँ जाँचब आवश्यक अछि : पट्टाक प्रतिनिधिक भयक कतेक भाग वैध आर्थिक असुरक्षा, कतेक भाग विशेषाधिकार? स्थानीय स्वत्वक दावा कतय सामूहिक ज्ञान-साझाकरणकेँ रोकि सकैत अछि? झिलमिलक पठन-अधिकारक बाद हुनकर औपचारिक विद्यालयी स्थिति की होइत अछि? योजना अगिला अध्याय लेल प्रश्न सुझाबैत अछि, उत्तर केवल मूल कथा देत। एखन ४९–५२क सीमा पर पहिल मित्रता न पूर्ण सफल, न विफल : लोक अपन-अपन शर्त लिखि पाबि रहल छथि, मुदा सार्वजनिक जल–हितक स्थायी निर्णय शेष अछि।

अध्याय ५३ — रुहानीक चाभी

चाभी एकटा साधन, स्वत्वक प्रमाण नहि

अध्याय जंग लगल ताला आ एक दोसरासँ देखबामे मिलैत दू चाभीसँ खुलैत अछि। फाटकक चाभी आ भण्डारघरक चाभी अलग उपयोगक वस्तु छथि; एकरे एकटा सार्वभौम अधिकार मानि लेब दुर्घटनाक कारण बनि सकैत अछि। रुहानी पहिनहि स्पष्ट करैत छथि जे दरबज्जा खोलेबाक काज हुनका भवनक मालिक नहि बनबैत। एहि पहिल दृश्यसँ आश्रयक सत्ता-संरचनापर आलोचना शुरू होइत अछि : दक्षता आ संरक्षण जे व्यक्तिक लग केन्द्रित रहैत अछि, ओहि व्यक्तिक व्यक्तिगत थकान आ दूसर लोकक निर्भरता दुनू बढ़बैत अछि। ‘घरक आदेश’ पूछल जेबाक बारम्बारता सत्ता-निमंत्रणक भाषा थिक; पात्र स्वयं एहि अघोषित प्रमुखताकेँ अस्वीकार करैत अछि।

चाभीक पहिल संकेत केवल वस्तुगत नहि। कथामे ककरो निजी कोठरी, ककरो आगि-पानि सुरक्षा, ककरो रसोइक पहुँच, ककरो राहत-विवरण—सभकेँ एकहि ‘आश्रय’ नामक अन्तर्गत रखबाक खतरा अछि। वस्तु-सादृश्यसँ अधिकार-सादृश्य सिद्ध नहि होइत। आख्यानगत पक्ष–साध्य भेदक उपयोग करब तँ ‘रुहानी लग फाटकक चाभी अछि’ ई देखल तथ्य; ‘रुहानी सभ रहनिहारक निजी जीवनपर निर्णय देबाक अधिकारी छथि’ ई बिना अन्य हेतु ठहराएल असिद्ध निष्कर्ष। कहानी एहि सम्भावित छलाङकेँ व्यक्ति-द्वेषक बदला सीमाबद्ध करारसँ रोकैत अछि।

स्त्रीक निर्णयक अनेक रूप : चम्पा आ मंजरी

चम्पाक मायकेँ औषधि आ देखभालक आवश्यकता अछि, मुदा वृद्धा स्वयं बहिनक घर जाएबाक निर्णय सुनबैत छथि। चम्पा दू दिनक नदी-यात्रा चाहैत छथि। ‘माय सहमत छथि?’—रुहानीक प्रश्न अपन नैतिक महत्त्व रखैत अछि : बेटी द्वारा देखभाल करब आ बेटीकेँ स्थायी सेविका मानि लेब समान घटना नहि। वृद्धाक औषधि-पर्ची परिवारक स्वास्थ्य-सहायताक आवश्यक विवरण भऽ सकैत अछि, मुदा चम्पाक निजी यात्रा-स्थानक सार्वजनिक निगरानीक साधन नहि। अही ठाम स्त्रीक विश्रामकेँ करुणाक पुरस्कार नहि, आत्मनिर्णयक सामान्य अधिकार बनाओल गेल अछि। एकटा थाकल देखभालकर्ताक अल्प छुट्टी कथा-कर्म बनैत अछि, किएक तँ ई आश्रयक पुरान निर्भरता सचमुच बदलैत अछि।

मंजरीक प्रसंगमे अधिकार आ अनिश्चितता आरू पैघ अछि। आठ मास आश्रयमे रहला बाद ओ सहेली संग भाड़ाक घर लेबाक सोच बनौने छथि। हाथमे पुरान पाँच सौक नोट, किरायाक पर्ची आ सिलाइक टोकरी अछि। ओ निर्णय लेल अनुमति नहि, अपन निर्णयक अधिकार माँगैत छथि। दोसर तरफ रुखसानाकेँ आशंका अछि जे एक रहनिहार घटला पर आश्रयक अनुदान कम भऽ जाएत। उपन्यास एहि प्रश्नसँ मुँह नहि मोड़ैत। संस्था जँ पोषणक नामपर आश्रित लोकक संख्याकेँ बनौने राखबाक हित विकसित करए, तखन ओकर सहानुभूतिक भीतर बन्दीकरणक सम्भावना उपजैत अछि। रुहानी सहायता-पत्रक शर्त जाँचबाक बात मानैत छथि, मुदा मंजरीक जीवनकेँ ‘राशनक संख्या’ नहि बनाबैत।

मंजरीक नवा घरक जलशुल्क लिखित नहि छल; ओ स्वयं मकान-मालिकसँ पुछि ओकरा किरायाक पर्चीमे लिखबबैत छथि। अग्रिम पूर्णरूपेँ घटि नहि गेल, मुदा जल-दायित्व स्पष्ट भेल आ सोमदिन जायब निश्चित भेल। ओ अपन पुरान खाटक अविलम्ब पुनर्बंटवारा रोकैत छथि, ताकि कक्षाक मरम्मति आ जरूरतक समीक्षा हो। ई निर्णय सफल पलायनक रूमानी आख्यान नहि : भाड़ा, अग्रिम, पानि आ सम्भावित वापसीक नियम शेष वास्तविक अड़चन छथि। अध्यायक अन्तिम कप, जे मंजरी अगिला घरमे लऽ जाएब चाहैत छथि, साधारण वस्तुक माध्यमसँ व्यक्तित्वक निरन्तरता देखबैत अछि। आश्रय छोड़बाक अर्थ अपन लघु सम्पत्ति वा स्मृति परित्याग नहि।

प्रत्यक्ष घटना-पञ्जी : सभा, करार आ सीमित फल

आरम्भिक स्थिति—रुहानीक हाथमे केन्द्रीय चाभी अछि, चम्पा आ मंजरी अपन स्वतन्त्र निर्णयक दहलीजपर छथि। पहिल कारणात्मक परिवर्तन—रुखसाना आ जुबैदाक संग सामूहिक बैठकमे मुख्य फाटकक दू अतिरिक्त प्रति, आपात सम्पर्क आ लिखित जिम्मेदारी बाँटबाक निर्णय होइत अछि; निजी कोठरीक ताला खोलबाक एकाधिकार ककरो नहि भेटैत। दोसर बाधा—हीरावती कुररियारक चटाई बुनबाक सुरक्षित बजार-ठाम बिना स्थल-माप ‘अतिक्रमण’ कहल जाएबाक जोखिममे अछि। तारा खतरा-चिन्हल पटरी आ वास्तविक बुनाइ-स्थान अलग बतबैत छथि; निरीक्षण-सुनवाई आ समयक पारिश्रमिकक माँग दर्ज होइत अछि, स्थानाधिकार तत्काल स्वीकृत नहि। तेसर परिवर्तन—हरि नटुवा बेटा अंशुक विद्यालय-समय लेल रातिभरि कार्यक्रमक बदला पहिल दू घण्टा स्वीकारैत छथि। जावेद कलन्दर पशु-प्रदर्शन छोड़ि परछाईं-कला लेल संशोधित कार्यक्रमक करार प्राप्त करैत छथि। चन्द्रा बादी अपन मंचीय परिचय, फोटो, वीडियो, गीत आ बकायाक अलग अनुमति माँगैत छथि; छपाइ बदलबाक आग्रह केवल पेंसिलक सुधार नहि। चौथ परिवर्तन—कार्यालय आश्रयवासीसभक समस्त निजी ठेकाना आ चाभीधारककेँ एक सूचीमे माँगैत अछि; रुहानी–रुखसाना सुरक्षा-विवरण अलग देबाक प्रस्ताव रखैत छथि, नैरा पुरान मजदूरीक गल्ली-नामसँ आजुक निवास-सिद्धि निकालबाक विरोध करैत छथि। फल—सार्वजनिक भवन-सुरक्षा जानकारी प्रस्तावित, निजी विवरणक अतिरिक्त माँग जाँचाधीन; राहतक अन्तिम निर्णय नहि। अन्तिम दिनमे चाभी-साझेदारी व्यवहारमे आजमाओल गेल, कार्यक्रमक पहिल किस्त भेटल, बचल पारिश्रमिकक तिथि दर्ज भेल, मंजरीक स्थानान्तरण-प्रक्रिया आगाँ बढ़ल।

एहि पञ्जीसँ वास्तविक घटनात्मक घनत्वक एक मूल्यांकन सम्भव अछि : अध्यायमे नवा व्यक्ति आ कागदक संख्या बहुत अछि, मुदा ‘नाम लिखल’क प्रत्येक क्रियाकेँ स्वतंत्र कथात्मक विजय मानब गलत। केन्द्रित परिवर्तन तीन स्तरपर अछि—व्यक्तिगत निर्णयक स्वीकृति, कार्यक्रमक सीमित आर्थिक करार, आ संस्थागत शक्तिक आंशिक विकेन्द्रीकरण। हीरावतीक ठामक हक, चन्द्राक पुरान बकाया आ आश्रयक सहायता-निर्णय एखन अनिर्णीत छथि।

श्रम, पहचान आ मिथ्या दृश्य : कथन-तकनीक

हरि अपन कमाइ घटबैत छथि, मुदा पुत्रक समयकेँ पिताक कला-उद्यमक मुफ्त श्रम नहि बनबैत। जावेद पुरान पेशा बदलबामे असुरक्षित छथि; पशु-विहीन तमाशाकेँ ‘कम टिकट’क सम्भावना रहैतहुँ ओ मानैत छथि। परछाईं-चिड़ै जे परदापर बनिकऽ लुप्त होइत अछि, ओ दृश्य-वक्रोक्ति समान अछि : चिड़ै बान्हल नहि, कलाकारक

निर्माणद्वारा उपस्थित अछि। दर्शकक चकित होएब आ प्रदर्शनमे सचमुच पशु होएब दू भिन्न बात। कथाक भीतर ई दृश्य ज्ञानमीमांसाक छोट अभ्यास सेहो अछि—प्रतिभासकेँ उपस्थिति नहि मानू। चन्द्रा अपन जातिसँ स्वतः निर्धारित पेशा आ देहक उपलब्धता स्वीकार नहि करैत छथि; लोकगीतक पन्ना आ अधूरा भुगतान हुनकर कलाक भाषा एवं आर्थिक इतिहास दुनू बचबैत अछि।

कथावाचक व्यक्तिगत अन्तर्मनक लम्बा स्वगतक बदला वार्तालाप, लघु वस्तु आ करारपर अर्थ बनबैत छथि। दृष्टिकेन्द्र रुहानी, मंजरी, चम्पा, हरि आ चन्द्रा बीच सरकैत अछि, मुदा वर्तमान अतीतमे कोनो स्वतंत्र महाकाव्यीय दृश्य नहि घुसैत। एतेक स्पष्ट सीमाकेँ आख्यानक ‘संवादप्रधान’ संकेतसँ आगाँ वास्तविक कथन-विन्यास समझबाक चाही। भोरक जंग लगल ताला सँ रातिक खाली कप धरि दैनिक काल-विस्तार अछि; बीचक ‘अगिला भोर’ समयक एकटा छोट छलाङ सेहो अछि। कोठरीक निजी सीमा आ सार्वजनिक फाटकक कार्य-सीमा कथाक स्थानिक रूपक बनैत अछि।

उपलब्धि आ प्रतिपक्ष

एहि अध्यायक सर्वाधिक समर्थ दृश्य अन्तिम खाली कप अछि। आधिकारिक अधिकार-भाषाकेँ न दोहराइयो, मंजरीक अपन कपक स्वत्व पाठककेँ अनुभव होइत अछि। हीरावतीक बुनाइ-स्थानपर अधिकार असम्पन्न रखब कथामे संस्थागत जटिलता बचबैत अछि। आलोचनात्मक आपत्ति ई जे एके दिन आश्रय, शिल्प-बजार, सांस्कृतिक कार्यक्रम आ कार्यालयी विवरणक अनेक विवाद असाधारण दक्षतासँ उचित श्रेणी पबैत अछि; किछु पात्र अपन विशिष्ट मुहावरा छोड़ि समान अधिकारपरक वाक्य-बनावट अपनबैत देखाइत छथि। फेरो हरिक घटल पारिश्रमिक, चन्द्राक बचल बकाया आ मंजरीक घटल नहि अग्रिम एहि सजल समाधानक प्रतिपक्ष बनैत अछि। अन्तिम अर्थ—साझा फाटक खुलब व्यक्तिगत कोठरी पर मालिकाना नहि—शीर्षकक चाभी-बिम्बकेँ कथनक समर्पित रूप दैत अछि।

अध्याय ५४ — अनुष्ठान बिना प्रधान

खाली नामवाली तख्ती : ‘प्रधान’क उत्पत्ति केना होइत अछि?

पिछला अध्यायक चाभी-विकेन्द्रीकरणक बाद अगिला भोर भण्डारघरक बाहर नव तख्ती देखल जाइत अछि—राहत वितरण लेल ‘मुख्य संयोजक’क स्वीकृति अनिवार्य, मुदा नामक ठाम खाली। ई कथात्मक असंगति उद्देश्यपूर्ण अछि। तख्ती पहिने अधिकारक आवश्यकता घोषित करैत अछि, तखन पात्रकेँ ओहि रिक्त आसन भरबाक निर्देश दैत अछि। रुखसाना तीन अलग स्रोतक चाउर—राहत, मजदूरीक विनिमय आ बालकक भोजनक दान—एक शब्दमे समा जेबाक विरोध करैत छथि। रुहानी तख्ती तुरन्त फाड़ि नहि दैत छथि; ओकरा प्रश्न-वस्तु बनाकऽ दीवारसँ टिकबैत छथि। अनधिकृत आदेशक जाँच दस्ता मिटेबासँ नहि, ओकर स्रोत, प्रयोजन आ प्रभाव पूछबासँ होएत—ई कथाक कार्य-विधि अछि।

दुलारी राजवारक राहतक चाउरकेँ सहकारी ऋण छोड़बाक हस्ताक्षरसँ जोड़बाक प्रयास सहायता आ दायित्वक दू अलग सम्बन्धकेँ एकमे बदलैत अछि। गुरमीत कौरक दानदाता नाम-पट्टी चाहैत छथि, मुदा रकमक प्रयोग आ

कलाकारक देय अलग देखेबाक आवश्यकता अछि। दुर्गा दनुवार वनसँ बाँस आनबाक पगडंडी, पुरान बचल लट्ठी, नव कटाइक अनुमति आ सुरक्षा-रेलिङक भार-क्षमता अलग-अलग लिखाएब चाहैत छथि। माधुरी दांगी घरेलू मखान-छँटाइ आ साग-सुखबैत स्त्रीक समयकेँ निःशुल्क 'घरेलू सहयोग' कहब अस्वीकार करैत छथि। एहि चारि समाज-स्थितिमे एकटा प्रधान नियुक्त कए देब सामाजिक विषय-सूचीकेँ सरल करैत अछि, मुदा अधिकार-सूचीकेँ अपूर्ण करि दैत अछि।

कारणात्मक घटनाक्रम आ निश्चित परिणाम

पहिल दृश्य—भोजन वितरण एक अनिर्धारित 'मुख्य संयोजक'क स्वीकृतिपर रोकबाक सम्भावना जगैत अछि। दोसर दृश्य—उदयन आ मीमांसक अतिथिक शास्त्रार्थमे यज्ञ, विधि-वाक्य, अपूर्व, अदृष्ट, प्रामाण्य आ सर्वज्ञ नियन्ताक आवश्यकता पर पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष शुरू होइत अछि। तेसर दृश्य—आधुनिक आँगनमे बालकक तत्काल भूख देखिकऽ रुखसाना–गुरमीत उपलब्ध स्वीकृत सामग्री अलग करैत छथि; दू सदस्य प्राप्ति राखि आजुक भोजन चालू करैत छथि, ऋण-त्यागक शर्त नहि मानैत। चारिम दृश्य—दुर्गाक बचल बाँसक सीमित अस्थायी उपयोग अनुमति भेटैत अछि; नव काटबाक नक्शा आ पूर्ण भार-सुरक्षा प्रमाणन शेष रहैत अछि। पाँचम दृश्य—माधुरी स्त्री आ पुरुषक काज-घण्टा अलग दर्ज करैत छथि; बेसी नमकवला नमूना संशोधित होइत अछि आ छोट परीक्षण-खेपक आदेश बनैत अछि, पैघ खरीद नहि। छठम दृश्य—दानदाताक मजदूरी घटेबाक शर्तपर उत्तर शेष, तें विवादित धन खर्च भेल नहि मानल जाइत। सातम दृश्य—पुरान 'मुख्य संयोजक' तख्तीक बदला कामवार सम्पर्क-सूची बनैत अछि; कार्यालय नियमित स्वीकृति एखन नहि दैत। आठम दृश्य—दुलारी ऋण-त्यागक रिक्त हस्ताक्षर अस्वीकार करैत छथि, राहतक सुनवाई लेल अपन नाम लिखबैत छथि। अफवाहक पर्चापर पुरान गाड़ी-अङ्कक सादृश्य भेलहुँ चालक वा मजदूरपर नव आरोप नहि लगैत। अन्तिम स्थिति—आजुक भोजन भेटल, ऋण-विवाद खुलल, बाँसक नव कटाइ खुलल नहि, परीक्षण-खेप सीमित, दानदाता उत्तरहीन आ मूल शास्त्रार्थ अनिर्णीत रहैत अछि।

ई क्रम प्रदर्शन करैत अछि जे संकट-अवस्था आ दार्शनिक वितर्कक बीच कथा 'विलम्ब'क अनुभव पर भी निर्भर अछि। प्राचीन तर्कक लम्बा मध्यांशक बाद आधुनिक बालकक भूखाक उल्लेख विचारक काल आ देहक समयक तीक्ष्ण अन्तर रचैत अछि। कागद-सुधार आवश्यक अछि, मुदा भोजन रोकि देबाक पर्याप्त कारण नहि। पाठककेँ एकरे प्रशासन-समर्थन वा प्रशासन-विरोधमे सरल कऽ नहि पढ़बाक चाही।

उदयन–मीमांसक शास्त्रार्थ : असिद्ध उपमानक स्वीकार

मूल अध्यायक पाठांश ८ स्पष्ट बतबैत अछि जे प्राचीन मिथिलाक काल आधुनिक विदेहपुरक संग समान नहि। मीमांसक अतिथि यज्ञमे मानव कर्ता नहि होएबाक दावी नहि करैत; हुनकर आपत्ति धर्मफल आ वाक्य-प्रामाण्य लेल एक अतिरिक्त सर्वज्ञ प्रमुखक आवश्यकता पर अछि। उदयन शिष्यक जल्दबाजी रोकैत छथि : 'अदृष्ट देखाइत नहि, तें असार' प्रकारक तर्क अधूरा अछि, किएक तँ न्यायपक्ष सेहो अदृष्टक चर्चा करैत अछि। ई प्रसंग दार्शनिक मतक निष्पक्ष पुनर्निर्माणक एकटा साहित्यिक प्रयास अछि। विपक्षी मतकेँ हास्यास्पद बनाकऽ हराएब नहि, ओकर सबल रूप रखबाक शर्त सेहो ओहि दृश्य मे अछि।

अतिथि सर्वज्ञ वक्ताक स्वतन्त्र प्रमाण, वेदसँ वक्ताक परिचय सिद्ध करबाक पारस्परिक आश्रय, आ अनादि परम्पराक समक्ष ‘पहिल शिक्षक’क आवश्यकता पूछैत छथि। शिष्य सोमेशक घण्टी-दृष्टान्त—घण्टी बजए लेल हाथ चाही, अतः अनुष्ठान लेल ईश्वर चाही—पर तत्काल आपत्ति उठैत अछि : घण्टीक देखल ध्वनि-कारणसँ धर्मफल आ जगतव्यवस्थाक अदृश्य कारण धरि व्याप्ति स्वतः नहि बनैत। ई वास्तविक हेत्वाभास-परीक्षण अछि, अलंकारिक उपमा मात्र नहि। उदयन आत्मतः आ परतः प्रामाण्यक विरोध अलग सुनैत छथि; ई मतभेदसँ ईश्वर सिद्ध नहि भेल, से हुनकर ‘अपूर्ण’ दर्ज करब मूल दृश्य मे महत्त्वपूर्ण अछि। सृष्टि–प्रलय स्वीकार करबाक पूर्वधारणा स्वयं विवादित रहला पर ‘नव आरम्भमे सर्वज्ञ शिक्षक’क अनुमान सर्वसम्मत आधार नहि।

न्यायकुसुमाञ्जलिक द्वितीय स्तबकक प्रश्न आ आधुनिक ‘प्रधान’क पदक बीच कवि कल्पनात्मक साम्य बनबैत छथि : अतिरिक्त नियन्ता अनिवार्य अछि की नहि। तथापि दार्शनिक सर्वज्ञ ईश्वरक सिद्धान्तक तुलना रसोइक निर्वाचित सम्पर्ककर्ताक आवश्यकता सँ श्रेणीगत रूपसँ भिन्न अछि। लेखकीय पाठ एहि भेदक सुरक्षा स्वयं दैत अछि—प्राचीन प्रश्न जगत्, धर्म-वचन आ ज्ञानक आधारक अछि, आधुनिक प्रश्न वितरण, मजदूरी आ संस्थागत अधिकारक। एक कालक उत्तर दोसर कालक नगरपालिका आदेश नहि। शास्त्रीय ग्रन्थक वाक्य-सन्दर्भ अलग सँ बिना मूल स्रोत देखल उद्धृत नहि कएल जा सकैत; एहि समीक्षामे केवल उपन्यासक दृश्यपर तर्क होइत अछि।

प्रमाणक समाज : रिक्त हस्ताक्षर, दोषपूर्ण नमूना आ वास्तविक भूख

दुलारीक पर्चीपर ‘स्वेच्छासँ देय छोड़ल’ वाक्य लिखल रहब वाक्यक अस्तित्वक प्रमाण अछि; दुलारीक सहमतिक नहि, किएक तँ हुनकर हस्ताक्षर नहि। एहिमे लिखित शब्दकेँ प्रमाण-प्रकार अनुसार पढ़बाक समुचित विवेक अछि। बाँसक मोटाइ मात्रसँ रेलिङक भार-सुरक्षा नहि, बन्धन आ परीक्षण सेहो चाही। नमक बेसी भेल नमूना रद्द/सुधार योग्य अछि; एकरा स्त्रीक कौशल निरर्थक ठहराओब सामान्यीकरण-दोष। अफवाहक दू कागदपर समान अंकसँ समान गाड़ी, समान यात्री, समान अपराधक अनुमान कएक स्तरक असिद्ध व्याप्ति बना दैत अछि। एतय कारण–कार्य विवेचन व्यावहारिक अधिकार-सुरक्षामे रूपान्तरित होइत अछि।

तथापि प्रमाणक क्रम अनन्त स्थगन नहि बनल अछि। बालकसभकेँ आजुक भोजन देबाक निर्णय तत्काल होइत अछि। एहि ठाम कर्तव्य आ हिसाबक नैतिक समन्वय अछि : गवाही-आधारित समयक बाद लागत सार्वजनिक बहीमे जोड़ल जाएत। ‘राशन–ऋण’क विवाद निजी दानसँ झाँपल नहि गेल अछि। दुर्गा काजक सही सीमा लिखबबैत छथि, मुदा स्वयं स्थानीय पर्यावरणीय जवाबदेही स्वीकार करैत छथि। माधुरी खराब स्वादक दोष मानैत छथि, मुदा ओकर प्रतिफल मजदूरक स्वीकृत देय काटब नहि होएबाक प्रस्ताव रखैत छथि। एहि कारण उपन्यास प्रतिरोधकेँ केवल निषेधक रूप नहि, वैकल्पिक संस्थागत विन्यासक अभ्यास बनबैत अछि।

कथनरचना, कलात्मक शक्ति आ सीमा

कथात्मक काल भोरसँ साँझ धरि फैलैत अछि, बीचमे प्राचीन शास्त्रार्थक स्वतंत्र काल-खण्ड अछि। कथावाचक परम्परा/आधुनिकताक दूनू भाषाकेँ स्वतंत्र राखैत छथि : ताड़पत्रक संवादमे ‘प्रामाण्य’, ‘अपूर्व’ आ ‘सृष्टि-प्रलय’क पद; रसोइमे ‘अनुदान’, ‘मजदूरी’, ‘चाउर’, ‘बाँसक मोटाइ’क शब्द। ‘एके तख्ती’क दृश्य उपन्यासक संस्थागत वक्रोक्ति रचैत अछि—जाहिमे नाम नहि लिखल, मुदा आदेश सम्पूर्ण अछि। मध्यक दार्शनिक

वाक्यसंख्या बहुत रहला पर रुखसानाक भाँड़ धोएबाक समयक टिप्पणी ‘आजु भोजन बचल, मुदा कागद बढ़ि गेल’ ई विमर्शकेँ पुनः देहगत दिनचर्यामे लौटा दैत अछि।

एकटा आलोचनात्मक सीमा अछि : अनेक समुदाय आ श्रम-वृत्त एकहि छोट आँगनमे लगातार प्रवेश करैत अछि, प्रत्येक अपन अधिकारक उपयुक्त स्पष्ट कथन करैत अछि। सामाजिक जीवनमे एतेक सुसंगत श्रेणीकरण दुर्लभ अछि; कथा कखनो योजनाबद्ध उदाहरण-पुस्तक समान देखाइत अछि। तइयो नमकक दोष, दानदाताक अनुत्तरित पत्र, दुलारीक जारी भय आ नगरक अनमिलल स्वीकृति एहि आदर्श प्रक्रियाकेँ दरार दैत अछि। अध्यायक निष्कर्ष ‘प्रधान नहि चाही’क शाब्दिक घोषणा नहि : सम्पर्कक भूमिकासभ आवश्यक छथि, मुदा कार्यविशेष आ अस्वीकृतिक सीमा सहित। एहि पाठमे प्रधानताक अनिवार्यता नहि, **असीमित प्रधानताक वैधता** प्रश्नाधीन अछि।

अध्याय ५५ — हराएल बच्चाक माए

मिथुनक अनुपस्थिति : कथनक केन्द्र ‘खोज’ नहि, खोजैत रहनिहारक समय

अध्याय लताक घरक चूल्हिक कात पसारल तीन पुरान टिकटसँ शुरू होइत अछि। एक टिकटक स्टेशन-मुहर बाँचल, दोसरक भाड़ा पसीनामे धुँधल, तेसर आधा फाटल अछि। घटना-व्यवस्था एतय उलटल अछि : मिथुनक हराएबाक मुख्य घटना ई अध्यायक कालमे नहि घटैत, ओ पहिनहि घटि चुकल अछि; तथापि ओकर अनिश्चित परिणाम प्रत्येक वस्तुक अर्थ बदलि रहल अछि। खाली पन्ना पर खोजक खर्च आ समय नहि लिखल गेल—ई विवरण लताक दुःखकेँ अमूर्त करुणा नहि बनबैत, श्रमक अपमानित समय बनबैत अछि। कापीमे ‘अन्तिम बेर देखल’ आ ‘सूचना देबाक समय’ आछिपि गेल, मुदा ताहि बीचक दौड़धूप, भोजनक अनिश्चितता, मजदूरी-हानि आ रातिक जागरण कोन कागदमे जाए? प्रश्न कथानकक काल-अन्तरालकेँ सामाजिक दृश्य बनबैत अछि।

नैरा पहिल बयान फेर दुहरएबाक दबाव नहि दैत छथि; जे छूटल अछि ओ लताक अपन शब्दमे जोड़बाक अनुमति माँगैत छथि। लता बच्चाक हराएबाक समय आ घरक अन्न घटबाक समयकेँ दू भिन्न सत्य कहैत छथि। ई आख्यानक केन्द्रीय अन्तःकालिक उपलब्धि अछि : दुःखक समय शासकीय सूचना-मुहरक समयसँ एक नहि। कथावाचक लताक व्यक्तिगत चेतना कतहु सर्वज्ञ घोषणासँ बदलैत नहि; ओकर सीमित स्मृति, बचल टिकट आ कार्य-वृत्तक द्वन्द्वसँ समयक परत बनबैत छथि।

घटना-पञ्जी : गुमशुदगीक साक्ष्य आ गलत आरोप रोकबाक क्रिया

आरम्भिक अवस्था—आठ वर्षक मिथुन एखन नहि भेटल; लताक पुरान बयानमे घटनाक समय अछि, मुदा खोजमे लागल समय आ खर्च सम्पूर्ण नहि। पहिल हस्तक्षेप—लताक छोट भाइ अपन अपराधबोध बतबैत अछि; लता ओकरा जे देखल–नहि देखल, ओकर पृथक बयान देबाक निर्देश दैत छथि। दोसर क्रिया—नील कुरता, रङ छोड़एबला लाल गमछा आ टूटल चप्पलक फीता खोज-विवरण बनैत अछि; पाँचटा मिलैत चप्पल देखाओल जा चुकल अछि, जे पहिचानक पर्याप्त पुष्टि नहि। तेसर परिवर्तन—आँगनक खड़ियाक चारि लकीर पर लता खोजक दिन-क्रम बनबैत छथि; चौकीक मुहरयुक्त समय आ हाटक अनुमानित घड़ीक प्रमाणस्तर अलग राखल जाइत

अछि। चौथ समस्या—भोला यादवक चारि दिनक दूध-वितरणमे दू दिनक रसीद पुष्ट, दू दिनक प्राप्ति जाँचाधीन; एकरा बच्चा-चोरीक अफवाहक कारण-शृंखलामे नहि जोड़ल जाइत। पाँचम परिवर्तन—पूनम चिड़ीमार अपन पारिवारिक पेशा-स्मृति आ आजुक बोरा-ढकन सिबबाक रोजी अलग रखैत छथि; उपनामक आधारपर आरोप अस्वीकार कएल जाइत। छठम बाधा—अफवाहक पुरान पर्चापर नव गाड़ी-नम्बर आ समय जोड़ि मिथुनक खोजकेँ नव आरोप दिस मोड़बाक प्रयास होइत अछि; मूल पावतीमे फिर्ती-समय नहि, पुरान अंकक वर्ष अपूर्ण, तेँ ‘अप्रमाणित सूचना’ दर्ज होइत अछि आ सार्वजनिक प्रसार रोकल जाइत अछि। सातम घटना—अरुण बरनवाल दान-प्रचार आ कर-बकाया अलग रखैत छथि; करक निश्चित देय चुकबैत छथि, बाकी पुरान आकलनक प्रश्न जाँच लेल छोड़ैत छथि। आठम—लताक चारि दिनक खोज-पञ्जीमे टिकटसहित खर्च, बयान-आधारित समय आ अनुमानित छूटल मजदूरी तीन अलग पाँतिमे दर्ज होइत अछि; तेल-दोकानदारक सिमित गवाही जोड़ल जाइत अछि। फल—पूनमक पहिल खेप स्वीकार, भोला के दू दिनक दाम भेटल, लताकेँ अगिला खोज-दिवसक सम्पर्क-सूची देबाक आश्वासन भेटल; मिथुनक ठामक कोनो नव पुष्ट सूचना नहि।

एहि घटनासभक कथानक-क्रम गुमशुदगीक ‘रहस्य खुलबाक’ दृश्यक क्रम नहि। ई भ्रमक सम्भावनासभकेँ कतरि वास्तविक खोजक बाट बचएबाक क्रिया अछि। लता जे पूछैत छथि—सूचना ककर आँखिसँ देखल, समय कोन मुहरसँ सिद्ध, पर्चा केकर मूल—ओहीमे हुनकर पात्र-विकास अछि। आरम्भमे प्रत्येक लाल सूत वा चप्पलसँ लताक साँस तेज होइत अछि; बादमे ओ बिना ठोस समय–ठामक पुष्टि नदीक किनार रातिभरि दौड़बाक अस्वीकार करैत छथि। ई दुःखक क्षय नहि, दुःखक भीतर निर्णय-क्षमताक परिवर्तन अछि।

प्रामाण्यक अनुशासन : स्मृति, गवाही, अनुमान आ सार्वजनिक आरोप

लताक छोट भाइ तेल-दोकानमे गेल छल, एहि बातक पुष्टि दोकानदार करैत अछि; मुदा ओहि घड़ी मिथुन कतय छल, ओकर निश्चित स्मृति ओकरा नहि। न्यायीय दृष्टिसँ आंशिक साक्ष्यक पूर्ण साध्यपर विस्तार अनुचित अछि। गाड़ी-पावतीपर वितरणक तिथि अछि, फिरती घड़ीक ठाम खाली; दू कागदमे समान अङ्क भेटला पर ‘एक्के वाहन’ सेहो सिद्ध नहि, ‘ओहि वाहनमे मिथुन छल’ तऽ आरू दूरक दावा। लाल सूत बहुत गमछामे रहैत अछि, तेँ पूनमक सीबन आ मिथुनक वस्त्रमे रङक सादृश्य किसी विशिष्ट अपराध-संबन्धक व्याप्ति नहि बनबैत। ई दृश्यसभमे कथाक औपचारिक तर्क ‘आरोप रोकू’क उपदेश नहि, एक-एक प्रमाणक अनिवार्य सापेक्षता अछि।

पूनम अपन दादीसँ सुनल चिड़ी-पकड़बाक पद्धति, पक्षीक मौसमी बाट आ पेशा छोड़बाक पारिवारिक इतिहास एक बहीमे लिखैत छथि; आइक ढकनक नाप आ मजदूरी दोसर पन्नामे। एहि विभाजनक विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ महत्त्व अछि। वंचित वा घुमन्तु समुदाय अपन अतीतक कथाकार भऽ सकैत अछि; ओकर समुदायनाम संस्थाक अपराध-संदेहक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। जीविका बदललासँ इतिहास मेटैत नहि, आ इतिहासक नामसँ वर्तमान श्रमक पहचान चोरायल नहि जाए। भोला यादवक बेटी भोजन माँगनिहारकेँ पानि देबाक बात सुनैत अछि, मुदा उधारक सही हिसाब बचेनाइ सेहो सीखैत अछि। सहानुभूति आ गणना विरोधी नैतिक पदार्थ नहि।

अरुणक प्रसंग सेहो एही प्रमाण-दृष्टिक सहायक, तथापि दोसर सामाजिक स्तरपर अछि। दान-कोषक रंगीन बैनर कर-बकायाक आधिकारिक समाप्तिक प्रमाण नहि। ओ बैनर तह कऽ वास्तविक कर-जमा पावती लैत छथि; प्रचार पर खर्च भेल पैसा राहतक खर्च नहि बतबैत छथि। मदनक रोगी-वाहन गुमशुदा बच्चाक अफवाहक पाछाँ मोड़बाक प्रस्ताव सेहो नहि स्वीकारल गेल अछि। लताक खोजक सचाइ रोगीक उपचार-अधिकारकेँ रद्द नहि करैत। ई क्रम सामाजिक संकटसभकेँ प्रतियोगी करुणा बनबैत रोकैत अछि।

समय, दृष्टिकेन्द्रण आ लघु वस्तुक सौन्दर्य

दृश्य भोरक टिकटसँ शुरू भऽ दिनक सहायता-कक्ष, दूध-वितरण, हाट आ घरेलू राति धरि बढ़ैत अछि। एकाधिक ठामक समानान्तर क्रिया एकटा व्यापक सामाजिक परिवेश दैत अछि, मुदा केन्द्रित भाव लताक असह्य अनिश्चिततासँ हटैत नहि। कथावाचक जखन सड़ल तरकारीक खर्च, भोला के दूधक बाकी आ रुखसानाक रसोइ-लागत जोड़ैत छथि, ओतए करुणा संस्थागत अंकगणितमे अनूदित होइत अछि। ई केवल रीतिगत ब्यौरा नहि; खोजमे बितल मजदूरिनीक समय अदृश्य रहि जाए, एहि व्यावहारिक जोखिमक प्रतिवाद अछि।

सर्वाधिक सशक्त सौन्दर्यात्मक द्विस्वर मिथुनक छोट माटिक घोड़ाक प्रसंगमे अछि। घोड़ाक एक कान टूटल; बालक एकर आगाँक भाग नील आ पाछाँक भाग हरियर रंगने छल। लताकेँ मिथुनक चप्पलक फीता सम्बन्धी मजाक याद पड़ैत अछि। ई स्मृति जाँचक वस्तु बनैत नहि, घरेलू आत्मीयताक अवशिष्ट अनुभव बनैत अछि। थारी सेहो गुमशुदगीक पीड़ाकेँ पार करबाक रूपक बनैत अछि—लता ओकरा भातसँ भरैत छथि, मुदा दरबज्जापर नहि रखैत; अन्ततः अपने लेल भात निकालैत छथि। चमत्कारिक वापसी घटल नहि, तथापि आत्म-उपेक्षाक बीच जीवनक छोट प्रतिरोध घटैत अछि। करुणरसक प्रभाव एतय घटनाक सनसनीसँ नहि, क्रिया–विराम–स्मृतिक लघु आवर्तनसँ जन्मैत अछि।

पहिल मिथुन-खोज अध्यायसभक सम्बन्धमे पचपनम अध्यायक एक उल्लेखनीय परिवर्तन अछि : आरोप-संशोधनक बाहरी लड़ाइ आब लताक अपन ज्ञानविन्यास बनैत अछि। नैरा सहायता दैत छथि, किंतु लताक आवाज ओकरा प्रतिस्थापित नहि करैत। कथन-स्वरक ई सीमित परिवर्तन अध्यायक नारीवादी आख्यान-पाठक सम्भावना खोलैत अछि—जाँचक विषय बनाओल माय स्वयं प्रमाणक कथन-विधि निश्चित करैत छथि।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : जोखिम आ उपलब्धि

अध्यायक उपलब्धि अछि पीड़िताक अस्पष्ट कथनकेँ अपर्याप्त कहि हटेबाक बदला ‘अनुमान’, ‘स्मृति’ आ ‘प्रत्यक्ष पुष्टि’क स्पष्ट चिह्न देब। बच्चा हराएल अछि, कथा ओकर अन्त किछु लोकपर आरोप लगा कऽ नहि गढ़ैत। पक्ष-पात्रसभक अल्पमात्र क्रिया—भोला के छोट भुगतान, पूनमक स्वीकृत खेप, अरुणक करपावती—दुःखक पाछाँ चलैत आर्थिक जगतकेँ बचबैत अछि। तथापि किछु दृश्यमे लता, नैरा, पूनम, भोला, अरुण आ रुखसाना लगभग समान सुव्यवस्थित प्रमाण-भाषा बजैत छथि; वास्तविक शोकक असम्बद्ध, विरोधी आ अर्थहीन आवेग कम स्थान पबैत अछि। अनगिनत छिटकल सूचक-वस्तु पढ़ैत पाठककेँ प्रमुख खोज-क्रमसँ दृष्टि हटबाक जोखिम सेहो अछि। कथा एकर प्रतिपूरण मिट्टीक घोड़ा, थारी आ भोजनक अव्याख्येय विरामसँ करैत अछि।

अन्तिम स्थिति निर्णायक रहैत अछि : मिथुन नहि भेटल, खोजक प्रत्यक्ष योजना बनल; ई दू सत्यकेँ एक-दोसरक विरुद्ध नहि रखबाक अछि।

अध्याय ५६ — दानक दवाइ

उपचारक कृतज्ञता आ जाँचक अधिकार : नैतिक द्वन्द्वक आरम्भ

जमुना देवीक शरीरक सानो क्रियासँ अध्याय खुलैत अछि : खाटसँ उतरि पएर धरतीपर टिकाब, चप्पल अपने पहिरब। पूर्वक कठिन रोग-अवस्थाक पाछाँ ई क्रिया उपचारक अनुभवगत फल अछि, अस्पतालक खाता-संख्या नहि। कंचन औषधिपर्ची, टिकट आ दू पुरान फोटो लऽ आयल छथि; माय मदद करनिहार लोककेँ कृतज्ञतासँ याद करबाक विरोध नहि करैत छथि, मुदा कहैत छथि जे सिर निहुराबासँ अस्पतालक कागद बदलि नहि जायत। बीमारीक पहिल उपचार, बाहरी जाँच, औषधि-भुगतान आ सहायता-कोषक योगदान एक लोकक चमत्कार रूपमे नहि घटाओल गेल अछि। उपन्यास एहि ठाम कृतज्ञता बनाम अधिकारक सस्ते द्वैतसँ बचैत अछि : उपचारसँ लाभ भेल, आ एहि लाभसँ अस्पतालक औषधि-भण्डार तथा वाहन-भाड़ाक परीक्षण रद्द नहि होइत।

अस्पतालक बाहर साझा रसोइ–मेहनताना दिवसक बैठक चलैत अछि। जमुना अपन पएरसँ अएबाक आनन्द व्यक्त करैत छथि, मुदा हुनका मचिया देब, हवा चाहब, हलुक भोजन खायब—सभ स्वयं चुनल साधारण इच्छा अछि। एहि सूक्ष्म देहगत केन्द्रणक कारण जाँच आ लेखाक विशाल सार्वजनिक प्रसंग एकटा विशिष्ट रोगिणीक जीवनसँ कटि नहि जाइत। कथावाचक चिकित्साक प्रभावक सर्वज्ञ दावाक बदला क्रियाशील शरीरक सीमित अनुभव सोझाँ रखैत छथि।

काजक आर्थिक लेखा : रघु, चन्द्रिका आ गुरमीत

रघु साहुक कनसारसँ आयल भुजल चना ‘दान’क एक मदमे लिखबाक प्रयास होइत अछि; रघु सामग्री, भुजाइ आ श्रमक मूल्य अलग देखबैत छथि। ओ पर्ची फाड़ि नहि दैत छथि, लाल कलमसँ वर्गीकरण बदलैत छथि—विरोधक भाषा एतय नकारात्मक क्रोधसँ अधिक आर्थिक विश्लेषण अछि। चन्द्रिका राय हलुक गुड़क पुआ बनबैत छथि, ग्राहक घटल छथि, अतः सामूहिक रसोइक आदेश हुनका वास्तविक आय देब सकैत अछि। ओ बच्चाक पुआ आ रोगीक भात–दलिया अलग मानैत छथि; अनुदानकेँ व्यापारीक लाभ नहि बनबैत। गुरमीत तीन खाता अलग रखैत छथि—खरीदल वस्तु, अनुदान-वस्तु आ मजदूरी/उचित लाभ। चन्द्रिका वास्तविक सत्तरटा पुआ बनौने छथि, दोसरा समूहक काज हुनकर संख्या बनि नहि जाइत। कथा यथार्थ आर्थिक पारदर्शिताक सूक्ष्म स्थल बनाबैत अछि : खरीदारक कृतज्ञता वास्तविक लागत मेटेबाक छूट नहि।

रघु सँ दोसर खेप उधारमे माँगबाक समय भुगतानक अनिश्चितता पुनः उपस्थित अछि। जमुना हस्तक्षेप करैत छथि—हुनकर बाँचबाक नामपर रघु अपन कनसार बन्द नहि करथि। चन्द्रिका एहिमे सामान्य नियमक रूप देखैत छथि : कोष दवाइ चुकबैत अछि, रसोइ अन्न देत अछि, मुदा दुई ठामक श्रमिकक दाम पाछाँ ढकेलल जाए तँ सहायताक लागत अदृश्य रहि जाइत। ई आर्थिक विमर्श मैथिली ग्रामीण/अर्धशहरी श्रमक आत्मभाषाक रूपमे

पठनीय अछि, मुदा किछु ठाम कथावाचकक सूत्रबद्ध विचार पात्रसभक तत्कालिक बोलीपर भारी सेहो पड़ैत अछि।

औषधि-सहायता, निरीक्षण आ प्रमाणक पृथक्करण

अस्पतालक कर्मचारी कहैत छथि जे निरीक्षण-दल अगिला सप्ताह दवाइ-भण्डार आ गाड़ीक वास्तविक यात्रा-व्यय जाँचत; किछु लोक सहायता-कोषक योगदानक मान पहिने स्वीकार करबए चाहैत अछि। जमुना पुछैत छथि जे हुनकर धन्यवादक दिन आ निरीक्षणक प्रक्रिया एक-दोसरसँ किएक बाँधल जाए। ओ स्वयं आर्थिक सहायता भेटबाक पुष्टि करैत छथि, मुदा रोगक व्यक्तिगत विवरणकेँ भीड़मे नहि पढ़बैत, केवल तिथि, देयक मद आ रकमक सीमित प्रति साझा करबाक सहमति दैत छथि। चिकित्सकीय गोपनीयता आ सार्वजनिक लेखा-पारदर्शिता अलग उपयोग-क्षेत्र अछि—ई अध्यायक प्रमुख प्रमाण-विषय।

देवव्रत स्वयं सार्वजनिक बैठकमे नहि छथि। हुनकर कार्यालयक सहायक सहायता-कोषक नाम खराब भेलासँ गरीब रोगीक दवाइ बन्द भऽ सकबाक आशंका व्यक्त करैत अछि। एहि मौखिक वचनकेँ देवव्रतक लिखित आदेश मानल नहि गेल। साँझमे दू-पृष्ठीय आर्थिक स्वीकृति-पत्र आबैत अछि; स्वीकृत सहायता-सीमा आ वास्तविक प्राप्त सहायता देखाओल गेल अछि, मुदा ई दस्तावेज अस्पताल, गोदाम आ गाड़ीक सम्पूर्ण हिसाबकेँ स्वतः निर्दोष घोषित नहि करैत। जमुना सहायकसँ सीधा पुछैत छथि—ओ कार्यालयक लिखित निर्देश कहैत अछि कि अपन आशंका। उत्तरक एहि सीमा-बोधमे उपन्यासक प्रमाणशास्त्रीय उपलब्धि अछि : ‘रोगी बचलीह’ सँ ‘प्रत्येक बिल सही अछि’क निष्कर्ष नहि; ‘एक जाँच जरूरी अछि’ सँ ‘सम्पूर्ण सहायता झूठ अछि’क निष्कर्ष सेहो नहि।

निरीक्षण-दलक अदिति जाँचक मद अलग करैत छथि—गाड़ीक स्वीकृत भाड़ा, वास्तविक यात्रा, दवाइक प्राप्त मात्रा आ अस्पताल-भण्डारसँ निकास। एहि विवरणमे लेखक दोषी सिद्ध कऽ देबाक प्रलोभनसँ दूर छथि। एके परिवहन-पत्र वा स्रोत-नम्बर मिथुनक खोज आ फाटकक मजदूरी पंजीसँ सादृश्य देखेलाक कारण स्वतः अपराध-जाल बनि नहि जाइत। नैरा तीन स्वतंत्र शीर्षक बनबैत छथि—मिथुनक खोज, दवा–परिवहनक लेखा, फाटक–जलपट्टाक सार्वजनिक बाट; असिद्ध मिलानकेँ ‘अप्रमाणित’ कहि सीमित करैत छथि। तीन राजनीतिक-सामाजिक संकटक एकहि कारण-शृंखला गढ़बाक बदला कथा असम्बद्ध प्रमाणक मर्यादा बचबैत अछि।

प्रत्यक्ष घटना-पञ्जी : लोकक अपन निर्णय आ बाँचल अनिश्चितता

आरम्भ—जमुना उपचारोत्तर सीमित स्वायत्त चलन-क्षमता पाबि सार्वजनिक बैठकमे पहुँचैत छथि। पहिल विवाद—रघु, चन्द्रिका आ गुरमीत दान, कच्चा सामग्री, श्रम आ उचित लाभक तीन अलग लेखा बनबैत छथि। दोसर विवाद—जमुना सहायता-कोषक योगदान स्वीकार करैतहुँ गोदाम आ वाहनक जाँच जारी रखबाक अधिकार बचबैत छथि; निजी रोग-विवरणक प्रकाशन सीमित करैत छथि। तेसर प्रसंग—सूरज चौधरी ताड़गाछक पात आ रसक पारिवारिक काममे जोखिम, चढ़ाइ, कटाइ, स्वच्छता आ पैकिंगक पृथक समय गनैत छथि; पितासँ पहिल लिखित आंशिक सहमति भेटैत अछि, पेयक व्यवसायी सफलता घोषित नहि। चौथ प्रसंग—बेला तुरहाक माछ-पसार पर सड़क-विस्तारक लाल चिन्ह अछि; पुरान नियमित व्यवसाय प्रमाणित भेलहुँ भूमि-स्वामित्व नहि; विद्यालयक लग आ पीपरक कातक दू सम्भावित ठामक नाप-तुलना माँगल जाइत अछि, अन्तिम पुनर्वास-स्थान

नहि भेटल। पाँचम प्रसंग—कमला जैन अनाज-दान आ दुकानी रसीदकेँ अपन व्यक्तिगत अनुष्ठानक निर्णयसँ अलग रखैत छथि; परिवारक आन्तरिक विवाद सार्वजनिक माइकपर नहि सुलझैत। छठम—दवाइक वास्तविक सहायता-सीमा सम्बन्धी कार्यालयी पत्र अबैत अछि, निरीक्षणक मद शेष। सातम—आजुक स्वीकृत भोजन परोसल जाइत अछि; अगिला तीन दिनक सार्वजनिक स्वीकृति नहि। परिणाम—सूरजक पिताक सशर्त स्वीकृति, बेलाक वैकल्पिक स्थल-जाँच, कमलाक सीमाबद्ध पारिवारिक निर्णय, जमुनाक स्पष्ट लिखित कृतज्ञता आ जाँचक आग्रह।

एहि सूचीमे एको प्रसंग ‘दवा-घोटाला सिद्ध भेल’ वा ‘बेलाकेँ ठाम मिलि गेल’ कहबाक अधिकार नहि दैत। न जमुनाक लाभ काल्पनिक अछि, न अगिला तीन दिनक रसोइक अनुमति पक्की। तारा अन्तिम दृश्य मे बेलाक वैकल्पिक बजार-ठामक नक्शा देखैत छथि; खेतिहर श्रमिक पानि निकासक रेखा पूछैत अछि। एहि खुलल पर्यावरणीय प्रश्नक कारण उद्योग-पर्वक सामाजिक करार अटल निष्कर्ष नहि बनैत।

देह, व्यापार, पंथ आ जल-स्थान : बहुस्वरताक सीमित उपलब्धि

सूरजक पिताक गाछ चढ़बाक अनुभवक जोखिम-दाम अलग लिखाओल गेल; ई पीढ़ीगत पेशागत परिवर्तनक पारम्परिक ‘आधुनिकता बनाम अतीत’ युद्ध नहि। सूरज ताड़गाछ छोड़ैत नहि, बल्कि काजक चरण-चरणक मूल्य माँगैत छथि। माता कच्चा पूँजीक अभाव याद करबैत छथि; परिवारक व्यवहारिक असहमति एखन शेष। बेला अपन माछ-पसारक नियमितताक प्रमाण पेश करैत छथि, मुदा ओ जमीनक मालिकाना साबित नहि करैत; राजकीय मापन-रेखा, बरखाक जलनिकास आ ग्राहकक पहुँच हुनकर जीविकाक वास्तविक शर्त छथि। कमला अनाजक व्यापारक लेखाकेँ व्यक्तिगत धार्मिक व्रतक स्वतन्त्र निर्णयसँ अलग रखैत छथि; ओ धार्मिक परम्पराकेँ उपहास नहि करैत, न व्यापारक हिसाबकेँ धार्मिक नियमनक अधीन करैत। एहि भिन्न भूमिकासभक समानता केबल प्रतिरोधमे नहि, अपन विशेष सन्दर्भमे निर्णय करबाक क्षमतामे अछि।

कथात्मक दृष्टिकेन्द्रण जमुनाक शरीरसँ गुरमीतक खाता, सूरजक पारिवारिक तनाव, बेलाक लाल चिन्ह आ कमलाक घरभितरक असहमति दिस घूमैत अछि। एकटा दिनक भोर–साँझ-राति-घरवापसीक विस्तार अछि, बीचमे उपचारक पूर्वस्मृति कथाक पूर्वदीप्ति रचैत अछि। जमुनाक नाती अधपकल पुआ लऽ अबैत अछि; ओ बालकक रान्हबाक उत्साह बचबैत छथि, मुदा आधपकल भोजन खाएबासँ मना करैत छथि। एहि लघु हास्यक मानवीय प्रभाव ‘स्वास्थ्य प्राप्त’क घोषणा सँ बेसी अछि—रोगोत्तर सावधानी आ प्रेम एकहि क्षणमे उपस्थित अछि। घरमे जमुनाक ‘दुपहरक दवाइ समयपर खा लेब’क स्मरण शरीरक स्वाधीनता पूर्ण निराधार मुक्ति नहि, अपन देखभालक व्यावहारिक अनुशासन अछि।

दानक ध्वनि, कलात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

‘दानक दवाइ’क शीर्षकमे कृतज्ञताक कोमलता आ प्रभुत्वक जोखिम एकसाथ सुनाइत अछि। दवाइक शीशीपर पड़ल भोरक ओस आ बादमे जमुनाक पुआपर हँसब एहि तनावकेँ मानवीय ठाम दैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुणा आ शान्ति–हास्यक लघु संचरण घटैत अछि; मुख्य ध्वनि ई जे व्यक्तिक बाँचब ककरो महिमा-प्रचारक सम्पत्ति नहि। रघुक लाल कलम, बेलाक लाल सड़क-चिन्ह आ सहायता-पत्रक दू पृष्ठ

समान रंग अथवा कागद रहितहुँ अलग अर्थ-व्यवस्था छथि—आलोचककेँ सभकेँ एक प्रतीकमे पिघला देबाक आवश्यकता नहि।

सीमा अछि पात्रसभक बारम्बार ‘अलग मद’क सिद्धान्त प्रस्तुत करब। कथानकमे दू-दुइ वाक्यक अन्तर पर खाता-विभाजनक पुनरावृत्ति कखनो पाठककेँ आलोचनात्मक निबन्ध पढ़बाक अनुभूति दैत अछि। असहमति व्यक्त करनिहार सहायक, जेठ वा कर्मचारीक अन्तर्मन अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि; तेँ बहुस्वरता विषयगत रूपेँ अछि, पूर्ण वैचारिक स्वातंत्र्यक रूपमे सर्वत्र नहि। मुदा जमुनाक रुग्ण देह, कंचनक भय, सूरजक माएक पूँजी-चिन्ता, बेलाक नव बजारमे ग्राहक भेटबाक आशंका आ रसोइक अगिला तीन दिनक अनिश्चितता एहि विवेकपूर्ण प्रस्तावसभकेँ वास्तविक जमीन दैत अछि। अन्तिम पाठमे सत्य आ आभारक दोसर रूप देखाइत अछि : मदद लेल धन्यवाद लिखब शक्य अछि, ओकर जाँचक अधिकार त्यागने बिना।

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ५३–५६ क संयुक्त मूल्यांकन

अधिकारक केन्द्रसँ अलग-अलग कार्यक क्षेत्र धरि

अध्याय ५३ मे चाभी वितरित होइत अछि : सार्वजनिक फाटकक सुरक्षा साझा, निजी कोठरीक सीमा सुरक्षित। अध्याय ५४ मे ‘मुख्य संयोजक’ तख्तीक बदला कार्यवार सम्पर्क-सूची लिखल जाइत अछि। अध्याय ५५ मे खोज-पञ्जी माँ स्वयं अपन अनुभवक भेदसँ बदलैत छथि; अफवाहक सामूहिक उत्साहक बदला सीमित व्यक्तिगत साक्ष्य प्रधान होइत अछि। अध्याय ५६ मे दवाइक स्वीकृत सहायता, गोदाम-जाँच आ चिकित्सकीय गोपनीयता अलग-अलग अधिकारक क्षेत्र बनैत अछि। एहि क्रममे ‘प्रधान’क विमर्श चारि स्तरपर चलैत अछि—ताला, वितरण-हस्ताक्षर, साक्ष्यक वाचक आ दानदाताक नैतिक प्राधिकार। मूल कारणात्मक सम्बन्ध सर्वत्र एक नहि : चाभी-वितरण अगिला अध्यायक तख्तीक समस्याकेँ रोशन करैत अछि; लताक खोजक पर्चा बादक दवा-अभिलेखसँ एके अंकक भ्रम रोकबाक पृष्ठभूमि दैत अछि। एहि दुइ स्तरकेँ आलोचनामे पृथक राखबाक चाही।

रामायण–महाभारत आ दार्शनिक अन्तर्पाठक स्थान

पाँचम पर्व समग्र रूपेँ किष्किन्धाकाण्डक असमान गठबन्धनक समस्या उठबैत अछि। अध्याय ५३ आ ५५ मे स्पष्ट स्वतंत्र रामायण-कालक दृश्य नहि; ओहिठाम आश्रय आ खोजक आधुनिक लोकक स्वायत्तता प्रमुख अछि। अध्याय ५४ मे स्वतंत्र उदयन–मीमांसक प्राचीन तर्ककाल अछि, जे न्यायकुसुमाञ्जलिक विवादपर संवाद बनबैत अछि; एकरा सुग्रीवक राजसभा अथवा महाभारतक पर्व-घटना मानब पाठविरुद्ध होएत। अध्याय ५६ मे कथनक मध्य देहगत उपचार, श्रम आ जाँचक प्रसंग छथि; महाकाव्यीय प्रतिरूपक उपस्थिति सिद्ध करबाक लेल केवल आख्यानक द्विकालीन-सङ्केत पर्याप्त नहि। एहि चारि अध्यायमे महाकाव्यीय पर्वक संरचनात्मक नाम आ पृथक स्पष्ट कथादृश्यक प्रमाणक अन्तर रखब शोधक ईमानदारी अछि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ एहि खण्डक प्रमुख अभ्यास अछि साधन–साध्यक वैध सम्बन्ध जाँचब : साझा चाभीसँ निजी स्वत्व नहि; राहतक ऋण-पर्चीसँ दुलारीक सहमति नहि; लाल सूतसँ बच्चा-अपहरणक दोषी नहि; स्वीकृत

दवाइसँ सम्पूर्ण परिवहन-लेखाक निर्दोषता नहि। मुदा प्रत्येक स्थलपर मानव कर्ताक निर्णय आवश्यक अछि; तें ‘प्रमाण-जाँच’ कें करुणाहीन स्थगन नहि बनाओल गेल। बालककें समयपर भोजन देब, जमुनाकें देखभाल भेटब, लताकें सीमित व्यावहारिक खोज-योजना बनब—ई सभ प्रत्यक्ष क्रियाक मांग छथि।

श्रमक स्थानीय इतिहास आ जीविकाक अलग आकार

हीरावती कुररियारक चटाई, हरि नटुवाक ढोलक, जावेद कलन्दरक छायाकला, चन्द्रा बादीक गीत, दुर्गा दनुवारक बाँसज्ञान, माधुरी दांगीक मखान-प्रक्रिया, पूनम चिड़ीमारक आधुनिक सिलाइ, भोला यादवक दूध, रघु साहुक कनसार, चन्द्रिकाक मिठाइ, सूरजक ताड़गाछ आ बेला तुरहाक पसार—ई विभिन्न आर्थिक गतिविधिक नाम एक शब्द ‘हाशियाक समुदाय’मे समाहित करब उचित नहि। हर पेशाक भौतिक जोखिम, दामक निकास, लैंगिक सत्ता आ कार्यालयी प्रमाण भिन्न अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि हुनकर लोकज्ञान आ श्रमकें संस्थाक आधिकारिक सारणीक बाहरी ‘उपकार’ नहि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक सामग्री मानैत अछि। तथापि औपचारिक अधिकार निर्णयक किछु शर्त केवल लोकस्मृतिसँ पूरा नहि होइत; ताराक स्थल-माप, अदितिक निरीक्षण, हस्ताक्षर आ वास्तविक प्राप्तिक जाँच सेहो जरूरी अछि।

उपलब्धि, पुनरावृत्ति आ आगाँक शोध-प्रश्न

समग्र कलात्मक उपलब्धि अछि छोटे वस्तुक माध्यमसँ सत्ता-विमर्श : रुहानीक ताला, लताक फाटल टिकट, दुलारीक रिक्त हस्ताक्षर, जमुनाक पर्ची। ई वस्तुसभ कथात्मक दृश्यक भीतर अर्थ पबैत छथि, केवल घोषणापत्रक उदाहरण नहि। करुणाक दृश्यसभ—चम्पाक चुनेल छुट्टी, मंजरीक कप, लताक माटिक घोड़ा आ जमुनाक नातिक पुआ—आर्थिक पञ्जी-विवेचनक कठोरताकें मानवीय विराम दैत अछि। कथानकक सीमा एहि बातमे अछि जे अत्यधिक पात्र एक-एक नवा प्रपत्र वा सही विभाजन प्रस्तुत करैत अछि; चरित्रक विशिष्ट शब्द-संसारक स्थान सामूहिक तर्कक व्यवस्थित भाषा लऽ लेबाक जोखिम रखैत अछि। आगामी अध्यायसभमे ई जाँच आवश्यक अछि जे अस्थायी चाभी-विकेन्द्रीकरण व्यवहारमे टिकैत अछि की नहि, दुलारीक ऋण-त्यागक दबावक संस्थागत समाधान भेटैत अछि की नहि, मिथुनक खोजमे स्वतंत्र प्रत्यक्ष साक्ष्य प्राप्त होइत अछि की नहि, आ जमुनाक सहयोग-कोषक कागद वास्तविक वाहन-लेखा-संशोधन बनैत अछि की नहि। एहि प्रश्नसभक उत्तर वर्तमान चारि अध्यायक नामपर कल्पित नहि कएल जा सकैत।

अध्याय ५७ — जनक आ जनपद

मेड़क धँसल बाँस : प्रत्यक्ष ज्ञान आ नाप-पत्रक दूरी

अध्याय खेतक मेड़पर बाँसक डण्डा धँसबासँ आरम्भ होइत अछि। ई केवल दृश्य-निर्माण नहि, कागदमे खींचल समतल रेखा आ भीतरक चिकनी माटिक प्रतिरोधक मूर्त टक्कर अछि। तारा बिनौटक स्थलगत नापक विरुद्ध रमेश कोनो अमूर्त ‘लोकज्ञान’क महिमा नहि गबैत छथि; ओ चाहैत छथि जे अधिकारी जमीनपर उतरि पयरक जोखिम बुझथि। तारा हुनकर काज छोड़बाक दू घण्टा लिखैत छथि, मुदा ओही संग स्पष्ट करैत छथि जे श्रमक

भुगतान-प्राप्ति भूमि-अधिकारक अन्तिम निर्णय नहि। एहि कथनमे कथाक प्रमाण-विधान एकदम सूक्ष्म अछि : तथ्य एकटा होइत अछि, ओकरासँ सिद्ध अधिकार दोसरे प्रकारक प्रश्न। नाप-पुस्तक आवश्यक अछि, किन्तु जमीनक सम्पूर्ण अनुभवक बदला नहि।

धनी राजभरक पुरान सिंचाइ-नाला खेत-मालिकक माटिक ढेरीसँ बन्द भेल, जाहिसँ किरायाक खेत आ दोसर घरक आँगन दूनू प्रभावित होइत अछि। धनीक मुँहसँ मालिकाना आ उपयोगक अधिकार बीच संघर्ष सुनाइत अछि। एहि ठाम उपन्यास राज्य-विरोध वा निजी स्वामित्व-विरोधक सरल वाक्य नहि देत : पछिला दृश्य मे धनी स्वयं खेत-मालिकक मेड़ टूटबाक भय स्वीकार करैत छथि आ देखरेखमे अस्थायी खोलाइक पक्ष लैत छथि। तें आरम्भिक विरोध ‘मालिक बनाम मजदूर’मे सीमित नहि रहैत; साझा जल-प्रणालीमे अलग-अलग नुकसानक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनैत अछि।

सुशीला महतोक बीज-परीक्षणमे दू खेत-टुकड़ीक आठ-आठ पाँति, भिन्न जल-ठहराव आ पाँच-सात पाँतिमे बालि भरबाक दर्ज परिणाम अछि। सुशीला विज्ञापनक ‘सभ परिस्थिति’ दावाकेँ प्रश्न करैत छथि, मुदा अपन दू टुकड़ीक तुलनाकेँ सर्वत्र लागू वैज्ञानिक निष्कर्ष घोषित नहि करैत छथि। कम्पनीक महेन्द्र तैयारीक भिन्नता उठबैत अछि; नव प्रशिक्षु पवन सुखेबाक अवधि पुछैत अछि। तीनू वक्तव्यक वैचारिक स्थान अलग अछि। महेन्द्र ‘सभ परिस्थिति’ शब्द घेरैत अछि, परन्तु सुधारक वचन नहि दैत; पवन अपन कापी बचबैत अछि। कहानी आधिकारिक विज्ञापन असिद्ध ठहरल कथन-परिणाम धरि पहुँचैत अछि, कम्पनी पर दोषसिद्धि अथवा मुआवजा-सम्मति धरि नहि।

प्राचीन जनकक राजसभा : ज्ञानक शास्त्रार्थ आ खेतक अवरुद्ध प्रश्न

पाठांश ८–१० मे प्राचीन मिथिलाक स्वतंत्र कालधारा खुलैत अछि। ज्ञान-बहसक सभामे खेतसँ आएल मजदूर हलक फालपर लागल माटि देखबैत छथि। जनक समारोहक अनुशासन तोड़ि हुनका सुनैत छथि; ‘राजक कहने की पानिक बाट बदलि जाएत?’ प्रश्न राजकीय घोषणाक सीमा बतबैत अछि। एक विदुषी ‘जानबाक कसौटी’ पूछैत छथि, पण्डित आत्मा-असङ्गताक विमर्श खोलैत छथि, मुदा मजदूरक अपन खेतपर अधिकार राजसभामे नहि पुछल जाइत। एहि दृश्यकेँ प्राचीन जनकक शासन-व्यवस्थाक ऐतिहासिक रिपोर्ट मानब भूल होएत। ई लेखकक काल्पनिक शास्त्रार्थ-रचना अछि, जकर माध्यमे राजर्षिक प्रसिद्ध ज्ञान आ अज्ञात श्रमिकक अनुभव बीच असमाप्त संवाद देखाओल गेल अछि।

द्विकालीन संरचनाक प्रभाव केवल नाम-साम्य नहि। प्राचीन फाल आ आधुनिक डण्डा—दूनू धरतीक भीतरक सूचना देबाक साधन छथि; प्राचीन राजपंजी आ आधुनिक नाप-पंजी—दूनू असहमति दर्ज करबाक आ अधिकार छिपेबाक सम्भावना रखैत अछि। मुदा जनकक सभामे स्वयं राजा स्थल-जाँचक निर्देश दैत छथि, आधुनिक सभामे अनेक हितधारी परस्पर निर्णयक सीमा बाँटैत छथि। ई भिन्नता सामूहिक प्रमाण-निर्माणक दीर्घ राजनीतिक परिवर्तनक कल्पनात्मक रूप अछि, इतिहासपर निर्धारित प्रगति-निर्णय नहि। जनककालक दृश्य दोसर बेर पाठांश २७ मे फेर अबैत अछि, जखन दुई परिवार विपरीत नाला-निर्णय चाहैत छथि। एहि पुनरागमनसँ आरम्भक ‘ज्ञान’ उत्तर-सम्पन्न उपदेशक बदला खुलल प्रश्न बनैत अछि।

पट्टा, जाल, नर्सरी आ सारङ्गी : स्वीकृतिक एकरूपता नहि

मीना थारूक परिवारमे अग्रिम उपचार-खर्चक दबाव आ दीर्घ कृषि-पट्टाक अनिश्चित शर्त एकसाथ अछि। पिताक बीमारीक उपयोग कऽ मौन सहमति बनब जाए, एकर विरोधमे मीना लिखित आपत्ति दैत छथि; ओ कागद फाड़ैत नहि, आ बाबूक इलाज रोकबाक पक्षमे सेहो नहि। माएक प्रश्न—नाला सुधरला पर घरमे पानि घुसब नहि, ई के लिखत—पर कथा तुरन्त हल नहि दैत। ओ पिता-पुत्रीक वार्ता कैं आगाँक दोसर पन्ना पढ़बाक वचनपर राखैत अछि। मीना जमीन ‘बचा लेलीह’ अथवा पट्टा कानूनी रूपसँ खारिज भेल, एहन घोषणा मूल पाठमे नहि अछि।

फूलमती तियरक जालपर पन्द्रह पुरान गाँठक निसान श्रमक स्मृति अछि; एकर आधारपर ओ बिक्री-मूल्य आ पछिला मरम्मतिक खर्च अलग माँगैत छथि। चारि नामसँ नव जाल-समूहक पंजी शुरू होइत अछि, पुरान साझेदारक विवाद समाप्त नहि। नन्दिनीक नर्सरीक ‘पुरैनि’ जलखातामे स्रोतक पुरान स्थानीय नाम अछि, वर्तमान नदीक प्रमाणित संगम-नक्शा नहि। सुशीलाक लागत-आपत्तिक उत्तरमे नन्दिनी दोसर दिन पानिक माप देखेबाक वचन दैत छथि, मूल्य घटाएब स्वीकार नहि करैत छथि। देव गाइनेक पुरान धुन, निज प्रस्तुति आ नव अन्तरा बीच भेद उभरैत अछि; सीमित प्रस्तुति-प्रस्ताव अन्तिम अनुबन्ध नहि बनैत। एहि समूहक वस्तुसभक रूप अलग अछि, तथापि कथा प्रत्येक ठाम ‘उपयोग’ कैं ‘अनन्त स्वत्व’ बनि जाएबासँ रोकैत अछि।

घटनापञ्जी, कथनकाल आ दृष्टिकेन्द्रण

आरम्भिक स्थिति : जमीनक वास्तविक जल-चाल नापक कागदसँ नहि मिलैत, श्रमिकक समय, खेतक फसल आ विज्ञापनक दावा विवादग्रस्त छथि। पहिल कथा-विचलन : प्राचीन जनक-राजसभा ज्ञानक आधिकारिक व्यवस्था कैं खेतक प्रश्नसँ बाधित देखबैत अछि। दोसर संघर्षसमूह : मीनाक पट्टा, फूलमतीक जाल, नन्दिनीक लागत आ देवक प्रस्तुति अलग प्रतिवाद बनैत अछि। सामूहिक बैठक : तारा नक्शा, बीज-परीक्षण, पट्टा आ सार्वजनिक निकासकैं एक संयुक्त निर्णयमे गड्डमड्ड होएबासँ रोकैत छथि; स्थायी सार्वजनिक बाटक अधिकार बादक सुनवाइपर छोड़ल जाइत अछि। अन्तिम स्थिति : धनीकैं दू परिवारक उपस्थितिमे घास हटेबाक सीमित अनुमति आ लिखित श्रम-देय भेटैत अछि; मीनाक पारिवारिक वार्ता खुलैत अछि; जल-हानिक सूची नव पन्नामे चढ़ैत अछि।

कथनकाल भोरक मेड़सँ रातिक वर्षा धरि फैलैत अछि, बीचमे प्राचीन मिथिलाक दृश्य—अर्थात् आधुनिक पात्रक साधारण पूर्वस्मृति नहि, अलग कथा-काल—अछि। कथावाचक तृतीयपुरुषमे अनेक हितधारीक दृश्य देखबैत छथि; तारा महत्त्वपूर्ण सम्पर्क-बिन्दु छथि, मुदा पाठक मीनाक पिताक चिन्ता, सुशीलाक बेटा विनयक उत्सुकता, फूलमतीक शिक्षण आ देव–रागिनीक बहस सेहो पढ़ैत अछि। विनयक माटिक ढेला ऊपर सँ सूखि भीतर नम रहब एकटा दृश्यध्वनि बनैत अछि : सतहक शुष्कता अन्तर्जल-स्थिति नहि बतबैत। ई अनुभूति सम्पूर्ण अध्यायक अनुमान-विरोधी आग्रहकैं निबन्धसँ कथा बनबैत अछि।

आख्यानगत परीक्षण आ कलात्मक प्रतिपक्ष

‘बाँस धँसल’ प्रत्यक्ष घटना; ‘एतय भूमिगत जलधारक एक निर्धारित कारण अछि’ पूर्ण निष्कर्ष नहि। सुशीलाक परीक्षणक पक्ष दुई खेत-टुकड़ी छथि; ‘सभ परिस्थिति मे निश्चित उपज’ व्यापक साध्य लेल ओतबा दृष्टान्त

अपर्याप्त। ‘पुरैनि’ नामक नर्सरी-अभिलेखसँ दूर नदीक संगम सिद्ध करब शब्दसादृश्य-जन्य हेत्वाभास होएत। फूलमतीक गाँठक चिह्न श्रम-योगदानक साक्ष्य अछि, मुदा पुरान बिक्री-करारक संपूर्ण कानूनी निर्णायक प्रमाण नहि। एहि भेदसभमे आख्यानगत प्रमाण-अनुशासनक उपयोग सार्थक अछि; उपन्यास कोनो वास्तविक अदालतक निष्कर्ष नहि सुनबैत।

कलात्मक उपलब्धि माटिक फाल, लोटा, गाँठ, भीजल खाता, सारङ्गी आ बीजक ढेला-जेकाँ वस्तुक जीवनसँ ज्ञान-विवाद उत्पन्न करब अछि। आलोचनात्मक सीमा सेहो स्पष्ट : किसान, कर्मचारी, शिल्पी, कलाकार आ बच्चासभ असाधारण स्पष्टतासँ ‘एक अधिकारसँ दोसर अधिकार नहि’ बुझबैत छथि; अनेक कथा-रेखा मे ‘अलग पाँति लिखू’ एकहि समाधान-भाषा बनि जाइत अछि। जीवनक अनगढ़ भावनात्मक प्रतिरोध कम स्थान पबैत अछि। तइयो मीनाक पिता चुप रहैत छथि, महेन्द्र संशोधनक वचन नहि दैत आ नन्दिनी मूल्य घटएब मानैत नहि—एहि अनिर्णयसभसँ पाठ पूर्ण उपदेशमे समा नहि जाइत।

अध्याय ५८ — कारणक जाल

स्थिर देखाइत जलक भीतर अनेक धार

मखानिया डबराक स्थिर लगैत पानि भीतरसँ उलटा पात घुमबैत अछि। ई उद्घाटन ‘कारणक जाल’ शीर्षकक भौतिक रूप अछि। रमणी बिन्दक बाँस-छड़ कादो, सड़ल पात आ बोरीक धागा लऽ निकलैत अछि, मुदा ई वस्तुसभ तत्काल एक दोषी व्यक्ति चिन्हित नहि करैत। रमणीक मूल प्रश्न मखानक बीहन रोपबाक समय, चौरक खेतक जल-स्थिति आ खोलाइक सुरक्षा-सूचनाक पृथक अभिलेख अछि। हीराक सुझावपर तारा भोर, दोपहर आ वर्षाक बादक नापक समय चिन्हित करबैत छथि। नक्शाक सीधा बाहा धरतीपर मुड़ल अछि; काटिकऽ सीधा केलासँ फूलोक पानखेतमे धार जाएब सम्भव अछि। एहि कारणेँ कथा भौतिक परिवर्तनक पूर्वानुमान, हितधारीक गवाही आ वास्तविक काजक निर्णयक अन्तर लगातार बनौने रखैत अछि।

फूलो चौरसिया नव बाँधक माटि अपन पानक जड़पर लागबाक भय बतबैत छथि; कर्मचारीक ‘सभकेँ त्याग’ सूत्रक उत्तरमे ओ पूछैत छथि ‘त्याग के करत’। रमेश तरकारीक फसल बदलि सकबाक लेल पूर्वसूचना आ सम्भावित क्षतिपूर्तिक प्रश्न उठबैत छथि। देवकी पाल पशु घुरेबाक ऊँच बाटमे हाटक तेज गाड़ी आ आयक विलम्ब देखैत छथि; नीरजक प्रश्न देरीक खर्चक गणनाकेँ घरेलू अर्थ दैत अछि। बटोही धामी मधु-संग्रह, गाछक सुरक्षा आ गैरकानूनी शिकारमे भेद करैत छथि; सबीना मीरशिकार जातिनामक आधारपर तस्करी वा प्रतिबन्धित शिकारक अनुमान अस्वीकार करैत छथि। एहि समुदायसभकेँ एक अमूर्त ‘पर्यावरण-समर्थक’ शिविरमे राखब पाठक मतभिन्नताकेँ मेटा देत।

बीहन, ऋण, पारिश्रमिक : लाभक एक गलत गणना

मखानक बीहन, पात चुनब आ सुखायल मखान फोड़ब अलग-अलग श्रम-क्रम अछि। डबराक पट्टापर एक नाम रहलासँ सभ श्रमिकक पूरा लाभ ओकरा भेटल, एहन मान्यता महिलासभक फोका लागल हथेलीक दृश्यसँ टूटैत अछि। पारस लाल बीहनक अग्रिमक आधारपर कटौती उचित कहैत अछि; रमणी तीन अलग खाता—बीहन खर्च,

डबराक पट्टा आ महिला-श्रमिकक अग्रिम—देखेबाक माँग करैत छथि। पारस मूल हिसाब स्पष्ट नहि करैत, मालिकक आगमन धरि टारैत अछि। तें ‘ऋण गलत सिद्ध भेल’क अन्तिम फैसला नहि, बल्कि अलग देय आ अदत्त श्रमक पहिचान कथाक तत्काल उपलब्धि अछि। महिलासभ अपने प्राप्त रकमक तिथि नकल करैत छथि; ई व्यक्तिगत प्रमाण-निर्माण सामूहिक विवादक नवा चरण अछि।

नन्दिनी अपन चारि दिनक नर्सरी-मापकेँ पूरा चौरक जलप्रवाह मानबाक अस्वीकार करैत छथि। जयराम एहि मर्यादित जलमापक आधारपर भूमि-भरपाईक दर घटेबाक प्रस्ताव करैत अछि; नन्दिनी कहैत छथि माप साझा करब जमीन बेचबाक सहमति नहि। सरोज खरकौटक ‘बलथी’ जाल सीबनिहार टोलीक स्थानीय नाम अछि, पानिक निकास नहि; सुशीलाक ‘बड़दरी’ खेतक टुकड़ीक ठामनाम अछि, प्रमाणित नदी नहि। एहि भाषिक स्थलपर कृति शब्दक बहुअर्थता कैं यथार्थ प्रमाण-संकट बनबैत अछि। शब्द एक रहबाक कारण referent एक घोषित करब आख्यानगत ‘अवच्छेदक’क सूक्ष्म समस्या पर उपयोगी साहित्यिक ध्यान अछि।

मौसमी काल : एकहि ठामक बदलैत उपयोग

पछियारी चौर वर्षामे माछ आ पशुचरनक, पानि उतरला पर धान आ तरकारीक ठाम बनैत अछि। एहि ऋतु-परिवर्तनकेँ अनदेखा कऽ ‘आजुक जल’सँ स्थायी जल-अधिकार निर्धारित करब कालिक भूल होएत। रमणीक पुरान नावनिशान पिछला बरखाक स्थिति बतबैत अछि, वर्तमान जलकर-पट्टाक स्वतः प्रमाण नहि। महिला पट्टेदारक नाम जोड़बाक आवेदन एखन स्वीकार नहि भेल; तारा पुरान पन्नाक ‘स्थायी जलरेखा’ कथनक संग सुधार-टिप्पणी जोड़ैत छथि, मूल रेखा मेटि इतिहास साफ नहि करैत। ई संशोधनक महत्त्व अछि—पुरान त्रुटि आ नव ज्ञान दुनू पठनीय बनैत अछि।

फूलो, रमेश आ देवकीक प्रस्तावसभमे एकहि निर्णयक समय-सीमा अलग-अलग अछि : पानमे एक रातिक क्षति, तरकारीमे पाँच दिनक रोपनी, ऊनक हाटमे दू घण्टाक सुरक्षित मार्ग। बटोहीक मधुबाटपर मधुमक्खीक नव छत्ता तात्कालिक जैविक जोखिम बनैत अछि; मंजू सहायिका संग स्थल देखिकऽ उत्तरक सूखल मेड़सँ सशर्त पहुँचक प्रस्ताव बनैत अछि। एतय पर्यावरण केवल प्रतीक नहि, अलग गति-वाला जीवित तन्त्र अछि। कथात्मक समय आ पर्यावरणीय समयक एहि असमानता बिना बाहा खोलबाक नीतिगत प्रश्न पूरा बुझल नहि जा सकैत।

घटना-पञ्जी : निरीक्षणक विस्तार, निर्णयक स्थगन

आरम्भिक स्थिति—पानिक बहाव आ मखानक रोपनीक पर्याप्त संयुक्त माप नहि, पुरान नक्शा स्थलसँ भिन्न। पहिल विवाद-समूह—पान, तरकारी, पशु, मधु आ जालक अलग क्षति तथा सामाजिक पूर्वग्रह। दोसर साक्ष्य-समूह—मखानक श्रम–ऋण, नर्सरीक माप, पुरान नावक स्मृति आ दू स्थानीय नामक गलत अर्थ। तेसर प्रक्रिया—मौसमी प्रस्ताव, सशर्त पशु/मधुबाट, दाम देल जा सकबाक पुरान रसीद आ उत्सवक बदला सार्वजनिक नाप। चौथा निर्णायक परिणाम—पैघ कटान रोकल गेल; सुरक्षित माप, अलग सुनवाइ, चेतावनी आ श्रम-पञ्जीक शर्त लिखल गेल; केवल छोट नापक मुँहसँ अस्थायी कचरा हटेबाक अनुमति भेटल। अन्तमे दूसरे पारक समिति संयुक्त निरीक्षण चाहैत पत्र पठबैत अछि, मुदा घरक नामक सीमित प्रसार माँगैत अछि।

ई घटना-पञ्जी बतबैत अछि जे अध्याय ‘बाहा खोलल गेल’ पर समाप्त नहि। उलटे पाँच शर्तक बादो ‘आज खोलबाक अनुमति’ पाँति खाली रहैत अछि। तीन लाभ-श्रृंखला—जलरोक, घाट-शुल्क, उत्पादन-ऋण—क आरम्भिक सुराग भेटैत अछि, मुदा नैरा एक अपराधी वा एक इरादाक निष्कर्ष अस्वीकार करैत छथि। पुरान अस्पताल-गाड़ी आ मिथुनक गुमशुदगीकेँ जोड़बाक अपुष्ट अफवाह समय, वाहन-संख्या वा प्रत्यक्ष साक्षी बिना वापस लौटा देल जाइत अछि। आरोपक ई असिद्धता कथा-कौशलक महत्त्वपूर्ण निषेधात्मक घटना अछि : पाठक अकारण रहस्य-सुगमता सँ बचैत अछि।

कथन-विन्यास, प्रमाण आ सीमाक परीक्षण

भोरसँ राति धरि वर्तमान समयक पृष्ठभूमिमे संभावित बरखा, आगामी सूखा, नर्सरीक पिछला चारि दिन आ पुरान नावनिशानक स्मृति—चारि समय-मान संग चलैत अछि। एहि अध्यायमे स्वतंत्र प्राचीन शास्त्रार्थ-दृश्य नहि; आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’क आरम्भिक सङ्केतकेँ पाठक दृश्यगत तथ्य नहि बनाओल जाए। शास्त्रीय अर्थमे कारणक जालक परीक्षण—पक्ष, हेतु, व्याप्ति आ उपाधिक विवेक—आधुनिक नाप आ अफवाहमे अछि। ‘पारसक खाता अपूर्ण’सँ ‘पारस अपराधी’क व्याप्ति नहि, ‘पुरान नदीक नाम’सँ ‘आजुक निकास’क सम्बन्ध नहि। तेँ अनुमान जिम्मेदार बनेबाक लेल उपाधि आ व्यावहारिक विरुद्ध-प्रमाण खोजब पड़त।

कलात्मक बल अछि पाँच-पक्षीय जल-संघर्षक भीतर विशिष्ट देहक समय देखेबाक : देवकी–नीरजक ऊन, महिलासभक मखान-फोका, सबीनाक सुई, बटोहीक मधु-पात्र, कंचनक घूमैत कागदक नाव। नावकेँ धक्का देलासँ असल बन्द मुँह नहि खुलत—ई बच्चीक प्रश्न कथाक कारणात्मक ध्वनि व्यवस्थित करैत अछि। सीमा अछि विशाल पेशागत उपस्थिति केँ एके दिनक बैठकमे समाहित करबाक कृत्रिमता; तारा–नैरा सभ विवादक तुरन्त सुव्यवस्थित वर्गीकरण करैत छथि। तथापि पारसक उधार, घाट-शुल्कक मूल आदेश, पट्टाक नाम आ परतीक चेतावनी अनिर्णीत अछि; तेँ प्रक्रिया ‘सर्वसमाधान’ नहि बनैत।

अध्याय ५९ — दूतक शर्त

‘सीमित प्रसार’ : पत्रक दू पन्ना आ कथन-अधिकार

अध्याय ५८क अन्तमे आएल सीलबन्द पत्र अध्याय ५९क कारणात्मक आरम्भ बनैत अछि। तारा भीजल लिफाफा सम्हारैत छथि; दोसर पारक समिति ‘सीमित प्रसार’ लिखने अछि। नैरा सार्वजनिक संयुक्त निरीक्षणक आग्रह आ निजी घर–परिवारक सूची अलग रखैत छथि। एहि क्रियामे कथावाचकक एक सूक्ष्म प्रश्न उभरैत अछि : जे लोक जलक सार्वजनिक नाप माँगैत अछि, ओकरा अपन भयक निजी विवरण प्रकाशित करबाक अनिवार्य दायित्व अछि की? जयरामक दृष्टिमे पारदर्शिता सम्पूर्ण प्रतिक खुलल प्रसार अछि; नैरा पारदर्शिता, प्रतिनिधित्वक सीमा आ सूचनाक सुरक्षित उपयोगमे भेद करैत छथि। पत्रक सार्वजनिक अंश साझा होएत; गोपनीय अंशक अनुमति एखन भेटल नहि।

हीरा नावक भार-मापक अपूर्ण रहबाक कारण यात्राक क्षमता निश्चित नहि बतबैत छथि। ओ जलमापन रिपोर्ट केँ यात्रीक सुरक्षाक प्रमाण नहि मानैत। श्याम मल्लिकक स्मरणमे दूसरे पारक परिवारक तत्काल प्रश्न नेनासभक

भागबाक बाट अछि। एतय प्रशासनिक ‘संयुक्त निरीक्षण’क उद्देश्य जल-सूचना मात्र नहि, संकटपूर्व चेतावनी अछि। नाविकक मजदूरी, भार-सुरक्षा आ परतीक विलम्बक अलग गणना बतबैत अछि जे खबर पहुँचबक नैतिकता बिना दूतक देहक सुरक्षा आ श्रमक सम्मान अधूरी अछि।

हनुमानक द्विकालीन दूतकथा : चिन्ह, सन्देश आ उत्तर

पाँचम पाठांशसँ पुरान समुद्रक कात खोजी-दल, अङ्गद, जाम्बवान, हनुमान आ रामक मुद्रिकाक स्वतंत्र पौराणिक कालधारा खुलैत अछि; सत्रहम पाठांशमे ई काल फेर आबैत अछि। मुद्रिका दूतक पहचानमे सहायक चिन्ह अछि, सीताक उत्तर वा सहमति स्वयं नहि। कथाक महत्त्वपूर्ण पुनर्व्याख्या ई अछि जे समुद्र पार पहुँचबाक क्षमता आ खबर बुझि घुरबाक कर्तव्य अलग। जाम्बवान सामर्थ्यक स्मरण करबैत छथि, मुदा यशक लालच मात्र नहि। एहि दृश्यकेँ मूल रामायणक सर्वत्र प्रमाणित एकमात्र पाठ नहि, उपन्यासक कल्पनात्मक महाकाव्य-पुनर्पाठ मानल जाउ। आधुनिक समितिक अधिकार-सीमा आ प्राचीन दूतक नैतिक साम्य लेखक द्वारा निर्मित अछि, कानूनी समतुल्यता नहि।

‘मुद्रिका अछि’सँ ‘दूतक हर कथन स्वीकार्य’ सिद्ध नहि। आधुनिक पत्रक हस्ताक्षर अछि, मुदा निजी पन्ना प्रकाशित करबाक स्वत्व ताहिसँ नहि निकलैत। प्राचीन दूतक कथामे सीताक वास्तविक प्रत्युत्तरक प्रतीक्षा, आधुनिक यात्रामे शबनमक सदस्यसभसँ स्वीकृति लेबाक प्रतीक्षा—दूनू ‘दूत’केँ स्वतन्त्र निर्णायकक आसनसँ हटबैत अछि। तें किष्किन्धाकाण्डक साहस-प्रवृत्ति एतय उदार, परिमित आ प्रत्युत्तर-सुननिहार सन्देश-वहनमे बदलैत अछि।

नमूना-स्वामित्व आ लोकगीतक अनुवाद : प्रतिनिधित्वक अनेक तह

रेखा साहु लहेरीक लाहक नाप आ मशीन-परीक्षणक प्रस्तावमे एक नमूनाक फोटोसँ असंख्य नकल बनबाक खतरा अछि। तीन मासक सीमित परीक्षण, नमूना-शुल्कक अग्रिम आ मूल बही रेखाक लग रहबाक शर्त लिखल जाइत अछि; ई अंतिम व्यापक उत्पादन-अनुज्ञप्ति नहि। सुमन टिकुलहारक काठक फलकक खरीद ओकर निशानक हजार पोस्टरपर छपबाक अधिकार नहि दैत। सरोज खरकौट जालक धागा, सिलाइक घण्टा आ जलमे उतारबाक जोखिम अलग दर्ज करैत छथि; पाँच सदस्यक परीक्षण-सहमतिक बीच दू सदस्यक असहमति बचैत अछि। एकटा जालक बिक्री-हिसाबक सरलताक लेल महिला श्रमिकक नाम अदृश्य बनाओब अशोभनीय अछि।

मालती कोचे सामूहिक नलमे पानिक घटैत धार सँ दूसरा पारक पत्रमे अपन बस्तीक हित जोड़बैत छथि। फूलमती पमरिया अपमानकारी गीत-पाँति हटाकऽ अपन स्वर सँ नव पंक्ति चुनैत छथि; आयोजक संग मानदेय, संगत आ तर्जुमाक श्रेय अलग माँगैत छथि। पद्मा ‘सीमा’ शब्दक खेतक मेड़, प्रशासनिक सीमा आ प्रेम-वियोगक रूप अलग खोलैत छथि। दुर्गा दनुवारक गीतमे ‘लखनदेइ’ लोकनाम/काव्यपद अछि, आजुक जलमापक नदी-संगम नहि। एकर आलोचनात्मक औचित्य अछि—लोकस्मृतिक महत्त्व राखि ओकर भौगोलिक प्रमाणिकताक सीमा मानब। परम्पराक संरक्षणक अर्थ स्त्रीक अपमानकारी बोलकेँ बिना विकल्प दोहराएब नहि होइत।

दूतक प्रत्यक्ष घटना-पञ्जी आ असम्पन्न अधिकार

आरम्भिक अवस्था : दुसरे पारक सदस्यसभ निरीक्षण चाहैत छथि, मुदा निजी ठेकाना गोपनीय रखबाक शर्त अछि; नाव-पथ आ भारक सुरक्षा अपूर्ण। मध्य-विस्तार : प्राचीन दूत-दृश्य, शिल्पक उपयोग-करार, जालक पूँजी–मजदूरी-विभाजन, मालतीक पानि आ फूलमतीक तर्जुमाक विवाद। यात्रा-पूर्व बाधा : पूर्ण नक्शा बनाम अनुवादित सारपर फोनक सहमति स्थगित अछि; मूल नामपंजीबिना समान उपनामक दू व्यक्तिक एक पहिचान बनब रोकल जाइत अछि; मिथुनक गुमशुदगीक अफवाह अलग जाँचमे रहैत अछि। बैठक : नलक ‘बेर’ शब्दक अर्थ-पुनःपरीक्षण, अग्रिम चेतावनीक सम्भावना, सार्वजनिक नाप/निजी अभिलेखक प्रसार आ जिम्मेदारीक विभाजन। परिणति : छोट निरीक्षण-दल पठाएबाक बात स्वीकार, निजी सूचीक उपयोग लेल सदस्यसभक अनुमति माँगबाक वचन; मुदा खुला पहुँचक अर्थ आ रमेशक क्षतिपूर्ति असमाधित।

‘एक दिन पूर्वसूचना’क माँगकेँ हीरा तकनीकी रूपसँ सभ आकस्मिक बरखामे निभएबाक निश्चयात्मक वचन नहि दैत। एहि संवादमे कथा तत्काल सुखद सहमतिसँ बचैत अछि। दूतक व्यावहारिक उपलब्धि दुई ठाम अछि : सार्वजनिक आग्रह प्रमाणित नकलमे बचल, निजी सूची बन्द पन्नामे रहल। जयराम धुँधल फोटो मेटि दैत अछि, मुदा डिजिटल प्रसारक सभ सम्भावित जोखिम दूर भऽ गेल, एहन दावा नहि। मिथुनक मूल खोज-दस्तावेज अपूर्ण अछि, जलपट्टा अलग सुनवाइमे अछि, शिल्पक व्यापक बाजार-अनुज्ञप्ति स्थगित अछि। अखन कोनो जल-सन्धि बनल नहि।

दृष्टिकेन्द्रण, भाषिक अर्थ आ कथा-सीमा

दृष्टिकेन्द्र तारा–नैरा, शबनम, मालती, शिल्पकारसभ, पद्मा आ फूलमती बीच घूमैत अछि। कथावाचक तृतीयपुरुषमे बाहरी क्रिया आ कनेक व्यक्तिगत अनुभूति दैत अछि; फूलमतीक गीतक बखत पद्मा अनुवादक कापी बन्द रखैत छथि —सभ बात तुरन्त व्याख्या करब जरूरी नहि, ई कथावस्तु भाषाक अपन स्वतन्त्र संगीतक पक्षमे क्षणिक विराम दैत अछि। एहि विरामक बाद मालती घरक नल-पाँतिक समय लिखैत छथि, तेँ गीतक स्मृति प्रतिदिनक श्रमसँ अलग साहित्यिक सजावट नहि रहैत।

आख्यानगत अर्थमे समान उपनामसँ समान व्यक्ति सिद्ध नहि, तेसर लोकक अफवाहसँ अपराधक प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि, आ बोलीक एक शब्दक अर्थ बिना वाक्यक सन्दर्भ निश्चित नहि। शाब्दबोधक दृष्टिसँ वक्ता, प्रसंग, तात्पर्य आ उपयोग-सीमा प्रश्न बनैत अछि। कलात्मक बल अछि दूत-यात्राक भौतिक दूरी केँ भाषिक तथा नैतिक दूरी बनायब। सीमा ई जे एके यात्रा मे नमूना-डिजाइन, गीत, मजदूरी, जलमाप, बालकक खोज आ नाव-रसीदक असाधारण व्यापक सूची एकत्र होइत अछि; अनेक पात्र एकहने स्पष्ट ‘अनुमति’क व्याख्या दैत छथि। तइयो फूलमतीक गीत आ मालतीक बच्चीक लेल छोट मीठा अध्यायकेँ केवल करार-शिक्षणक रूपमे सिमटबासँ रोकैत अछि।

अध्याय ६० — पहिल सन्धि टूटल

भीजल रेखाक अस्थिरता : एक शब्द, अनेक प्रवेश

भीजल बाँसक फलकपर कोइलाक रेखा पसरि गेल अछि। पिछिला दिन ओ रेखा घाटाक चौड़ाइ बुझबैत छल; आइ ओकर किनार अस्पष्ट अछि। स्थलमाप, प्रतिनिधिक अधिकार आ लिखित अनुमति तीनूकेँ ई दृश्य समवेत प्रश्न करैत अछि। जयराम ‘निरीक्षण’ शीघ्र पूरा करबाक लेल निजी मेड़मे निर्बाध प्रवेश चाहैत अछि; शबनम खातून पूछैत छथि जे बिना पूर्वसहमति एहन नाप बादमे के मानत। रमेशक खेतक भिण्डी आ खाली क्षतिपूर्ति-पाँति प्रवेशकेँ अमूर्त सार्वजनिक कल्याणक वाक्यसँ बाहर आनैत अछि। हीरा दू डोरीसँ पुरान सार्वजनिक पगडण्डी आ रमेशक निजी खेतक प्रस्तावित जाँच-पथ अलग देखबैत छथि : दूरसँ दृश्य-जाँच आ खेतमे खूँटा गाड़ब समान क्रिया नहि।

जगदीश झाक रोगी पुतोहुक लेल औषधि-पथ तुरन्त आवश्यक अछि। रमेश ओकर विरोध नहि करैत छथि; ओ रोगीक आपत्कालीन बाटक नामपर निजी खेतमे स्थायी गाड़ीपथ बिना क्षतिपूर्ति थोपबाक विरोध करैत छथि। एतय एउ एक शब्द—‘खुला पहुँच’—क तात्पर्य तीन ठाम बदलैत अछि : पुरान सार्वजनिक बाटक उपयोग, निजी खेतमे निरीक्षणक प्रवेश आ जीवनरक्षक आकस्मिक आवागमन। शब्दक साधारण उच्चारणक समानता वास्तविक दायित्वक समानता सिद्ध नहि करैत। विधिक सहायकक ‘निर्बाध प्रवेश’ प्रस्तावमे आपातक परिभाषा, सहमति आ हानिक भुगतान अनिर्दिष्ट छूटैत अछि; दस्तखत ‘पहिने’ करबाक दबावपर प्रस्ताव बिना सही रहि जाइत अछि।

मंचक श्रम : उत्सव आ सन्धिक दू अलग लेखा

बरखाक बैठकक बीच फागुनक लोकपाठ–खुला खाता–गीत वार्षिक आयोजनक पञ्जी देखाओल जाइत अछि। रशीद भाटक गीतमे दादीक चारि पाँति आ हुनकर नवा तीन पाँतिक लेखकीय योगदान अलग अछि; एक पाँति मंचपर पढ़बाक सहमति पूर्ण रेकॉर्डिंगक प्रसार-अधिकार नहि। रमेश घासीक बाजा ‘लोकसेवा’क शून्य पाँतिसँ बाहर आबि रिहर्सल, यात्रा आ प्रस्तुति-देय माँगैत अछि; करुण दमाई मरम्मति-अवधि आ बाजा बजाएबाक अवधि अलग करैत छथि। फरजाना चूड़ीहार हाथसँ बनल लाह, शीशाक आ मशीनक चूड़ीक लागत आ जोखिम स्पष्ट करैत छथि। आयोजनक खाता खुललाक अर्थ जल-सन्धि स्वीकृत नहि; मुदा साझा निर्णय सार्वजनिक मंचपर पढ़बाओल जाए तँ मंच बनाबयवाला हाथक मूल्य सेहो इतिहासमे बचबाक चाही।

ई सांस्कृतिक उपकथा कथानकक मुख्य कारण-रेखासँ दूर जा सकैत छल; नैरा ओकर सम्बन्ध सुस्पष्ट करैत छथि—‘सन्धि’ आ ‘सन्धिक सार्वजनिक पाठ’ अलग कार्य छथि। एतय विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक उपयोग प्रमाणक स्थानीय आधारपर सम्भव अछि : पुरान गीतकेँ अनाम ‘लोक’क नामसँ निगलि जाएब, मजदूरक मंचसंगतकेँ मुफ्त मानब, महिलाक मरम्मति-समय बिलायल करब—ई सभ आधिकारिक इतिहास-निर्माणक छँटनीकेँ उजागर करैत अछि। मुदा कृति एहि भूमिकासँ जल-सन्धिक वास्तविक कानून बनएबाक दावा नहि करैत।

हनुमानक मुद्रिका आ प्रतिनिधिक सीमा

पाठांश १३ मे प्राचीन किष्किन्धाक अलग कथा-काल फेर अबैत अछि : हनुमानक सामर्थ्य, रामक मुद्रिका आ सीताक उत्तर सुनबाक उत्तरदायित्व। ई अध्याय ५९क दूतकथाक पुनरावर्तन अछि, नवा समुद्रपार घटना नहि। मुद्रिका दूतक पहिचान देत, सीताक इच्छा समाप्त नहि करैत। आधुनिक शबनमक समिति अपन सदस्यक गोप्य नाम सभकेँ खोलि देबाक अधिकार नहि रखैत; दावेदारक व्यक्तिगत पहचान अधिकृत सुनवाइमे जाँचल जा सकैत अछि, सार्वजनिक मंचपर नहि। एहि सम्बन्धमे महाकाव्यीय अन्तर्पाठक औचित्य अछि : प्रतिनिधित्वक अर्थ ककरो जीवनक समस्त सम्पत्ति अपन नाम लिखि लेब नहि। तथापि पौराणिक रचनाक सीता–हनुमान सम्बन्ध आ आधुनिक दुई समितिक वार्ताकेँ न्याय-वैधानिक दृष्टिसँ एकरूप मानब अनुपयुक्त अछि।

हीराक पैमानामे पुरान रङ्गक दाग आ अस्पष्ट तारीख अधिकतम धारक क्षमता सिद्ध नहि करैत। ‘अधूरा माप’क अर्थ ‘किछु सुरक्षा-काज कखनहुँ नहि’ सेहो नहि; सुरक्षित किनारसँ कचरा हटेबाक सम्भावना बनल रहैत अछि। आधुनिक दूतक शर्त एतय तकनीकी, भाषिक आ नैतिक त्रिकोणमे आबि ठाढ़ होइत अछि : नापक सीमा, स्थानीय भाषामे बुझायल पूर्वसूचना आ सहमतिक वास्तविक मात्रा।

निर्णायक घटना-पञ्जी : असफल वार्ता आ पाँच सम्भावित शर्त

आरम्भिक अवस्था—दू समिति सार्वजनिक निरीक्षण चाहैत छथि, मुदा निजी खेतक अनुमति, फसलक क्षति आ रोगी-पथक अर्थ अलग अछि। पहिल अवरोध—‘निर्बाध प्रवेश’क अस्पष्ट प्रस्तावपर सही नहि होइत। मध्यक्षेत्र—सार्वजनिक आयोजनक श्रम-देय आ प्राचीन दूत-संवाद विवादक नैतिक पृष्ठभूमि खोलैत अछि। निर्णायक वार्ता—नगर सार्वजनिक पगडण्डी आ नव जाँच-पथ दूनूकेँ एकहि अधिकारमे जोड़ए चाहैत अछि; दूसरे पारक बहुमत निजी मेड़पर पूर्वसहमति माँगैत अछि; रमेश लिखित हानि-मूल्यांकन, जगदीश रोगी-पथ माँगैत छथि। सचिवाक गननामे पाँच सदस्य व्यापक प्रवेश-वाक्यक विरुद्ध, तीन शर्तसहित विचार लेल तैयार छथि; ई सर्वसम्मति नहि।

नैरा नवा शीर्षक ‘पहिल सन्धि असफल: परीक्षण लेल सहमतिक सम्भावित पाँच शर्त’ लिखैत छथि। पहिल—सार्वजनिक पगडण्डी, निजी मेड़ आ रोगीक आपात बाट अलग; प्रवेशमे सूचना आ सहमतिक भेद। दोसर—बरखा-सूखा माप, सुरक्षित पैमाना, तकनीकी परीक्षण आ सुधारक बाट। तेसर—नियत जल-छोड़ाइ पर पूर्वचेतावनी आ आकस्मिक संकट पर पृथक तुरन्त सूचना, स्थानीय भाषाक पहुँच। चारिम—फसल, स्त्रीक निराइ-मजदूरी, पशुबाट, नर्सरी, माछ-मखान सहित अलग हानि-आकलन आ सुनवाइ। पाँचम—निरीक्षण, ढुलाई, शिल्प, अनुवाद आ सुरक्षा-काजक सार्वजनिक खर्च, निजी नामक सीमित प्रसार आ मूल दस्तावेजक सुरक्षा। एहि पाँचटा विषयपर विचारक प्रति प्राप्त कएल गेल; सन्धिपर कियो हस्ताक्षर नहि कएलक।

जयराम समाचारमे ‘खुला बाट स्वीकृत’ लिखेबाक प्रयास करैत अछि, शबनम स्वयं ओकरा काटैत छथि। बाहरी भीड़ रमेशकेँ रोगीक बाट रोकनिहार आ शबनमकेँ किछु लुकौनिहार कहैत अछि; जगदीश आ नैरा आरोपक अर्थ सुधारैत छथि। एहि सुधारक परिणाम दुनू पक्षक प्रतिष्ठाक बचाव अछि, जल-सन्धिक सफलता नहि। कालान्तरमे फागुनक वार्षिक आयोजनमे पाँच शर्त सार्वजनिक पढ़ल जाइत अछि। बीचक माससभमे सार्वजनिक पगडण्डीक सीमित मरम्मति भेल अछि; निजी खेतक खुला प्रवेशक विवाद पूर्ववत् अछि। रमेश आ हुनकर पत्नी निश्चित

किनारपर एक सप्ताह लेल माटि रखबाक शर्तसहित अनुमति दैत छथि; इएह सम्पूर्ण खेत-पथक स्थायी स्वीकृति नहि। प्रेसनोट स्पष्ट ‘पहिल वार्ता असफल’ कहैत अछि।

कथनकाल, स्त्रीक स्वतन्त्र सही आ साहित्यिक मूल्यांकन

एहि अध्यायक कालक्रम सीधे एके दिनमे बन्द नहि। पहिल भोरक वार्ता आ ओकर असफल परिणामक बाद पाठांश २४ मे ‘एहि वर्षक फागुन धरि’ कहि महीनाक अन्तराल लोपित होइत अछि। ई कथनकालक महत्त्वपूर्ण दीर्घ लोप अछि, जेकर भीतर छोट पगडण्डी-मरम्मतिक परिणाम बताओल जाइत अछि; मुदा कोनो बनल जल-सन्धि नहि। आरम्भक भीजल कोइला-रेखा सँ फागुनक सुखल धुरि धरि ऋतु-परिवर्तन कथा-विन्यासक परीक्षणीय तथ्य अछि। शीर्षकक ‘टूटल’ शब्द एतय पहिने सफल भऽ सम्पन्न सन्धि बादमे रद्द भेबाक अर्थ नहि : पहिल वार्तामे प्रस्तावित सन्धि पर सहमति बनि नहि सकल, से मूल पाठक सही सीमित अर्थ अछि।

रमेशक पत्नी ‘बाजारक आजुक भाव’ आ फसलमे लगाओल स्त्री-मजदूरीक बीच मूल्याङ्कनक प्रश्न उठबैत छथि। सार्वजनिक रजिस्टरमे ‘हानि शून्य’क अर्थ दावाक अनुपस्थिति नहि, अद्यावधि भुगतान शून्य; हुनकर आपत्तिपर दावा आ भुगतानक अलग पाँति बनैत अछि। सीमित माटि-भण्डारणक शर्तपर पत्नी आ रमेश दूनूक अलग हस्ताक्षर छथि। स्त्रीक कथन एतय केवल परिवार-समर्थनक भाव-प्रदर्शन नहि, वास्तविक निर्णय-शर्तक निर्माण अछि। फागुनक मेलेमे फरजाना प्रचारमंचपर नाचबाक आग्रह अस्वीकार करैत छथि आ दाम स्पष्ट रखैत अपन व्यापार चुनैत छथि; साझा उत्सवमे प्रत्येक स्त्रीकेँ सांस्कृतिक प्रतिनिधि बनबाक बाध्यता नहि।

आख्यानगत विवेचनमे ‘पत्र प्राप्त’सँ ‘सन्धि स्वीकृत’क अनुमान असिद्ध; ‘हानिक भुगतान शून्य’सँ ‘हानि शून्य’क निष्कर्ष अर्थ-भ्रम; ‘आपातकाल’ शब्दसँ सर्वत्र निर्बाध प्रवेशक व्याप्ति स्थापित नहि। पारदर्शी प्रपत्र एतय कारणात्मक घटनाक उपकरण अछि : एक गलत वाक्य हस्ताक्षरित भेलासँ वास्तविक भूमि-क्रिया बदलि सकैत छल। कलात्मक उपलब्धि अछि भीजल कोइला-रेखा, भिण्डीक टोकरी, मरम्मति-कसल बाजा, चूड़ीक तीन रूप आ अन्तिम नावक दृश्यद्वारा कठोर सार्वजनिक बहसकेँ सजीव राखब। सीमासभ सेहो अछि : पात्र अक्सर लगभग प्रशिक्षण-पुस्तिकाक शुद्धतासँ प्रमाण, अनुमति आ ऋण-पाँति अलग करैत छथि; प्रतिपक्षक भितरी जटिलता कम उद्घाटित होइत अछि। तथापि जयरामक ‘सफल’ समाचारक दबाव, पुलियाक अपेक्षा राखनिहार सदस्यसभक हड़बड़ी आ रमेशक पत्नीकेँ बेटी लेल दवा खरीदबाक व्यग्रता एहि प्रक्रियाक पाछाँ वास्तविक मानवीय दाँव देखबैत अछि।

उद्योग-पर्व / किष्किन्धाकाण्ड : अध्याय ४९–६० क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

सहयोगक प्रस्तावसँ असफल सन्धि धरि कारणात्मक प्रस्थान

पाँचम पर्वक पहिल चरण (४९–५२) सहयोगक दाम, सुग्रीवक भय, ताराक गणना आ अङ्गदक असहमतिक माध्यमे साझेदारीक असमान शर्त देखबैत अछि। मध्य चरण (५३–५६) रुहानीक चाभी, प्रधान-विहीन सामूहिक काज, मिथुनक खोज आ दानक दवाइ द्वारा संस्थागत जिम्मेदारीक सीमा विकसित करैत अछि। अन्तिम चारि

अध्याय (५७–६०) एहि सूक्ष्म अधिकार-विभाजनकेँ खेत, चौर, जलसमिति, दूत-यात्रा आ सार्वजनिक सन्धि-वार्तामे व्यापक करैत अछि। मूल कारणात्मक यात्रा—‘हम सभ मिलि काज करब’ सँ ‘ककर काजक दाम, ककर स्वीकृति, ककर जोखिम’ धरि, अन्ततः ‘एकरे सहमतिक नामपर परस्पर असमान दायित्व नहि थोपब’ धरि—ठीक चिन्हित भऽ सकैत अछि।

किन्तु ई पर्व एकटा सफल सार्वजनिक सन्धिक कथापर बन्द नहि होइत। अध्याय ६०क पाँच शर्त अगिला कार्यविधिक विषय छथि, पूर्ण निष्पादित अनुबन्ध नहि। एहि अपूर्णताक औचित्य उद्योग-पर्वक स्वभावसँ मेल खाइत अछि : युद्ध वा आपदापूर्व गठबन्धनक शर्त, सामर्थ्यक असमानता आ दूतक जोखिम खुलि कऽ प्रकट होइत अछि। रामायणक किष्किन्धाकाण्ड संग साम्य सहयोग आ खोजक कठिनाईमे अछि, परन्तु आधुनिक पात्रसभक जातीय, पेशागत आ व्यक्तिगत जीवनकेँ प्राचीन पात्रक पुनर्जन्म-तालिका बनाओल नहि जा सकैत। पाँचम पर्वक अन्तमे आगामी भीष्म-पर्वक गड्गाक शर्तक संकेत अछि—वचनक अनकहल पक्षक कीमत आगाँ परीक्षण लेल बचल अछि।

महाकाव्य, दर्शन आ प्रमाणक सम्बन्धक मर्यादा

अध्याय ५७क जनक-काल, ५९क हनुमान-दूतकथा आ ६०क संक्षिप्त हनुमान-प्रत्यावर्तन स्पष्ट द्विकालीन कथा-घटक छथि; अध्याय ५८ मे एहन स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि अछि। ‘दू काल’ कहि सभ चारू अध्यायकेँ एक्के प्रविधिमे रखब गलत। अध्याय ५४क उदयन–मीमांसक शास्त्रार्थ पाँचम पर्वक दार्शनिक केन्द्र अछि; अन्तिम चारि अध्यायमे व्यवस्थित शास्त्रार्थक बदला प्रमाण-श्रेणी, शाब्दबोध आ तात्पर्यक व्यावहारिक प्रश्न खुलैत अछि। भामतीक अध्यास-विमर्शक संग ‘प्रपत्रकेँ मनुष्य मानि लेब’क सम्भावित आलोचनात्मक संगति अछि, मुदा ककरो पात्रक मुखसँ मूल भामतीक विशिष्ट सूत्र नहि बोलाओल गेल तँ एकरा प्रत्यक्ष पाठोद्धरण नहि कहल जाए। तत्त्वचिन्तामणिक प्रमाणपद्धतिक संग उन्मुखता आलोचकक तुलनात्मक उपकरण अछि, स्वयं एहि चारू अध्यायक शास्त्रीय सिद्धान्त-घोषणा नहि।

आख्यानगत उपयोगमे चारि परीक्षण महत्वपूर्ण छथि। प्रथम, प्रत्यक्ष भौतिक सङ्केतक सीमा—धँसल डण्डा वा पुरान नावनिशानसँ स्वतः भूमि-अधिकार नहि। द्वितीय, अनुमानक उपाधि—बीजक दू खेतक परिणामसँ समस्त भूमि लेल निश्चित उपज नहि। तृतीय, शब्दक तात्पर्य—‘खुला’, ‘बेर’, ‘बड़दरी’, ‘बलथी’ पदक अर्थ वक्ता आ प्रसंगपर निर्भर। चतुर्थ, अभाव वा अनुपलब्धि—सार्वजनिक सूचीमे ककरो नाम नहि भेटलासँ ओकर अस्तित्व, अधिकार वा असहमति नकारल नहि जा सकैत। एहि विश्लेषणमे शास्त्रीय शब्दक अनुमानित प्रयोग स्पष्ट रखबाक चाही, आख्यानगतेँ आजुक सरकारी प्रपत्रक विधिक अधिकार-निर्धारक संहिता मानल नहि जाए।

सामाजिक-पर्यावरणीय आख्यान आ वार्षिक आयोजन

रमणी बिन्दक मखान, फूलमती तियरक जाल, धनीक सिंचाइ, रमेशक तरकारी, फूलोक पान, देवकीक पशुपालन, बटोहीक मधु, सबीनाक मरम्मति, नन्दिनीक नर्सरी, सुशीलाक बीज, देव–रागिनीक संगीत, रेखा–सुमनक डिजाइन, सरोजक जाल-श्रम, मालतीक नल आ रशीद–रमेश घासी–करुण–फरजानाक सांस्कृतिक व्यापार अपन-अपन अलग भौतिक समय आ आर्थिक मूल्य रखैत अछि। ‘सभ जाति–समुदाय’क नाम मात्र जोड़ब

पर्याप्त नहि; प्रत्येक श्रम-वृत्तक कारणात्मक प्रभाव, पारिश्रमिक आ अस्वीकृतिक अधिकार देखाएब अपेक्षित। अन्तिम चारि अध्याय एहि मापदण्डपर अनेक ठाम सफल छथि, मुदा कतेको पात्र केवल एक स्पष्ट प्रतिवादक बाद पृष्ठसँ ओझल सेहो होइत छथि। एहि कारण पात्रक दीर्घ अन्तर्मन-विकासक दावा केवल एहि खण्डसँ नहि बनत।

बाहा-मुँह खोलाइक उत्सवमे ध्वजा-सँ पहिने नाप-पंजी खोलल जाइत अछि, आ फागुनक लोकपाठमे असफल सन्धिक पाँच शर्त सार्वजनिक पढ़ल जाइत अछि। ई वार्षिक-सामुदायिक आवर्तन आस्तिक अनुष्ठानक स्थिर पुनरावृत्ति नहि, जिम्मेदारीक बदलैत सार्वजनिक प्रदर्शन अछि। समयक दीर्घ लोपसँ लोकपाठक बीचक माससभ सीधे नहि सुनाओल गेल; एहि कालिक संक्षेपक लाभ मुख्य संघर्षपर केन्द्र रहब अछि, सीमा ई जे असफल सन्धिपर घर-घर दीर्घ सामाजिक प्रतिक्रिया पाठककेँ पर्याप्त नहि देखाइत। उपन्यास जखन ‘कागदमे नाम’क नैतिकता बारंबार समझबैत अछि, तखन ओकरा भावनात्मक असर देखाबय लेल किछु आरू मौन, विलम्ब आ अनिश्चित व्यवहारक अवकाश लाभदायक होइत।

समग्र उपलब्धि, प्रतिपक्ष आ अगिला पर्वक प्रश्न

पाँचम पर्वक उपलब्धि सफल गठबन्धनक उत्सव नहि, सहमति बनबाक कठिन शर्तकेँ कथात्मक बनाओब अछि। ‘सन्धि टूटल’क अन्तमे कियो जीतक प्रमाणपत्र नहि लऽ जाइत; दोसर पार शबनम नावमे पाँच शर्त रखैत छथि, रमेशक घरमे बच्चाक थारी रहैत अछि, सार्वजनिक पगडण्डी आ निजी मेड़ अलग मुद्दा रहैत अछि। एहन अपूर्ण परिणति कथा-दृष्टिसँ संगत अछि। प्रतिपक्ष ई जे श्रम, स्वामित्व आ सूचना-वितरणक लगभग प्रत्येक विवादक समाधान ‘अलग पाँति’, ‘लिखित आपत्ति’, ‘सहमति’क पुनरावृत्तिमे भेटैत अछि; कलात्मक विविधता घटबाक सम्भावना रहैत अछि। मुदा कोनो पर्ची अपने-आप पानि नहि हटबैत, ककरो पेट नहि भरैत, आ जकर क्षति होएत ओकरा उत्तर नहि देत—ई भौतिक अपूर्णता एहि आदर्श प्रक्रियाकेँ आलोचनात्मक रखैत अछि।

अगिला भीष्म-पर्वमे गङ्गा, वचन, अस्पताल, चेतावनी आ दृष्टिक दूरीक प्रसंग खुलबाक अछि। उद्योग-पर्वक एहि असफल सन्धिसँ अबैत प्रमुख शोध-प्रश्न अछि : लिखल शर्त चेतावनीक समयपर वास्तविक रक्षा कऽ सकत की, आ जकर जीवनपर संकट पहिने पड़त ओकरा सुनबाक व्यवस्था प्रभावी रहत की? उत्तर अगिला पाठसँ मात्र निकलब; वर्तमान अध्याय ४९–६० ओहि परिणामकेँ सिद्ध नहि करैत।

भीष्म-पर्व / सुन्दरकाण्ड

अध्याय ६१ — गङ्गाक शर्त

नदीक कात आरम्भ भेल शर्त आ कथाक सूचना-विभाजन

हस्तिनापुरसँ दूर नदीक मोड़पर भीजल बालुकामे बनल पदचिह्नसँ अध्याय आरम्भ होइत अछि। पानिक पतली धार ओहि चिह्नमे आबि फेर घुरैत अछि। अस्थायी पदचिह्न आ आवर्ती नदीक गति—दुइ समय-व्यवस्था एहि प्रथम दृश्यैं संग आनि दैत अछि। शान्तनु गङ्गासँ नाम पुछैत छथि, आ गङ्गा प्रश्न करैत छथि जे नाम कहलासँ की

व्यक्तिक सभ बात बुझि जाएत। कथावस्तुक सूक्ष्म उद्घाटन एतय अछि : परिचय देब, परिचय जानब आ परिचयसँ सत्यक पूर्ण अधिकार पाबि जाएब समान बात नहि। विवाह अथवा संग-जीवनक पहिने गङ्गा प्रश्न नहि करबाक शर्त रखैत छथि; शान्तनुक आरम्भिक आकर्षण एहि शर्तक भविष्यगत दामक समुचित अनुमान नहि करैत। गङ्गा-प्रसंगमे शर्तक शब्दक विन्यास कथा-पाठक लेल पूर्ण रूपसँ खुलैत अछि, मुदा ओकर कारण तत्काल नहि खुलैत; एहि कारण पाठकक ज्ञान, राजाक ज्ञान आ गङ्गाक ज्ञान तीन स्तरपर चलैत अछि।

महलक भोजन, दासीक काज, सूतिका-घरक कपड़ा आ राजाक स्पर्शक सूक्ष्म दृश्य शर्तकेँ केवल देवकथा नहि बनबैत। पहिल सन्तानक जन्मक बाद गङ्गाक नदी दिस जाएब आ बच्चाक आवाज बन्द भऽ जाएब शान्तनुक स्मृतिमे भय बनि रहैत अछि। फेर दोसरा बालकक जन्मक समय दीप कम जरैत अछि; तेसरसँ सातम बच्चाधरि राजकार्यक दिनचर्या चालू रहैत अछि, मुदा पिताक समय स्पर्शक किछु दिन आ खाली सूतिका-घरक रातिमे बँटि जाइत अछि। एहि संक्षिप्त काल-विस्तारमे कथा अनेक जन्म-मृत्युक वर्षसभकेँ किछु पाठांशमे समेटैत अछि; तथापि दूधक बासन, वस्त्रक संदूक आ नवजातक अँगुरक सजीव ब्योरा कथनक सारांशक भीतर दृश्यात्मक विराम बनबैत अछि। घटनाक संख्या गनलासँ अलग, एतय घटनाक अनुभूत अवधि बुझब जरूरी अछि।

दसम पाठांशमे कथावाचक गङ्गाक गोपनीय वसु–शापक कथा पाठककेँ बतबैत छथि, जकरा शान्तनु एखन नहि जनैत छथि। ई आख्यानमे निर्णायक सूचना-असममिति अछि। गङ्गाक मतमे अल्प मनुष्यजीवन शाप-मुक्तिक साधन छल, मुदा कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे प्रत्येक बालकक अलग मुख आ माताक खाली अँगुर छल। दार्शनिक अथवा पौराणिक औचित्य देहगत हानि मेटा नहि सकैत। ‘दिव्य कारण’ सुनिते शिशु-मृत्युक सम्पूर्ण नैतिक प्रश्न हल भऽ गेल, एहन पाठ एतय अनुचित होएत। गङ्गाक स्वयं स्वीकृत भार आ राजा द्वारा सहल मौनक भार भिन्न छथि। कथामे गङ्गाक अपराधक कोनो आधुनिक न्यायिक निर्णय नहि अछि; आलोचनाकेँ पौराणिक कथित कर्म-विधान आ आधुनिक नैतिक विचारक दूरी साफ रखबाक अछि।

आठम शिशु : वचन-भङ्ग की उत्तरदायित्वक आरम्भ?

आठम सन्तानक जन्मपर शान्तनु नवजातक धड़कन कान लग सुनैत छथि। गङ्गा तट दिस बढ़ैत छथि आ राजा पहिल बेर स्पष्ट रोकैत छथि—‘बस। एहि बालककेँ नहि’। एतय बाह्य घटना वचन-भङ्ग अछि; भीतरी घटना पिताक मौनक नैतिक मूल्यांकनमे परिवर्तन। गङ्गा स्वयं कहैत छथि जे शान्तनुकेँ प्रश्न करबाक अधिकार छल, ओ अपन सहमतिक शर्तक बदलामे छोड़ि देने छलाह; आब निर्णय बदललनि। ई कथन अधिकार आ सहमतिक स्थिरता पर प्रश्न उठबैत अछि : कोनो एक बेर देल सहमति सदैव अपरिवर्तनीय होएत की, विशेषतः जखन अपरिचित तेसर व्यक्तिक जीवन प्रभावित होइत हो? उपन्यास एहि प्रश्नकेँ एक वाक्यक नीति-मूलक निर्णयमे सीमित नहि करैत; शिशुक जीवित देह, शान्तनुक देर सँ देल प्रतिवाद आ गङ्गाक थकान एकसाथ रखैत अछि।

गङ्गा वसु-शापक रहस्य खोलैत छथि, मुदा मृत शिशुसभक दुःखकेँ शास्त्रीय मुक्तिक शब्दसँ शून्य नहि मानैत। आठम शिशु देवव्रतक शिक्षा-यात्रा हुनकर हाथमे रहत आ शान्तनु वियोग सहताह। तेँ परिणाम ‘राजा जीतलाह, शर्त हारल’ जेकाँ रेखीय नहि। आठमक प्राण बचल, पिता–माताक संग निरन्तर जीवन नहि बनल; गङ्गा सात शिशुक स्मृति लऽ चलैत छथि, राजा पुत्रसँ अलग रहैत छथि। बहुत वर्षक लोपक बाद युवक देवव्रत नदीक एक

धार बाणसँ रोकबाक अभ्यास करैत देखा पड़ैत छथि; गङ्गा हुनका पिताक लग अनैत छथि। ओहि भेटमे शान्तनु जे देखलनि से कहबाक, जे नहि बुझलनि ओकरा ज्ञान कहि नहि प्रस्तुत करबाक वचन दैत छथि। दृश्य शास्त्रीय सर्वज्ञताक अपेक्षा अनुभवक सीमा-स्वीकारकेँ नैतिक गुण बनबैत अछि।

राजमहलक द्वारपर देवव्रतक प्रश्न—नियम बनैत काल जकरा नहि पुछल गेल, ओकर बाट कतए—आगाँ भीष्मक प्रतिज्ञा आ अम्बाक कथाक हेतु रूपमे काम करैत अछि। ई शाब्दिक भविष्यवाणी नहि, कारणात्मक पूर्वतैयारी अछि। पहिने शान्तनु स्वयं शर्तक कारण नहि पूछलनि; पछाति पुत्र पूछैत छथि जे नियम-निर्माणमे कोना भाग लेब। जँ अगिला अध्यायमे ओहे पुत्र आनक जीवनपर प्रभावी अटल प्रतिज्ञा लैत छथि तँ पहिल अध्यायक सीखक परीक्षा बनैत अछि। एतय वचनक पुनरावृत्ति अर्थक पुनरावृत्ति नहि; परिस्थिति बदलैत अछि, तकर नैतिक क्षेत्र बदलैत अछि।

विदेहपुर : ‘मिठुआ’क पर्ची आ मिथुनक खोजमे असिद्ध समानता

इक्कीसम पाठांशमे कथा प्राचीन नदीसँ विदेहपुरक समकालीन फाइल-कक्षमे प्रवेश करैत अछि। उद्योग-पर्वमे टूटल सन्धिक पाँच शर्त एक कात अछि, दोसर कात मजदूरी-पंजी, नाव-भाड़ाक भीजल पर्ची आ घाटपर काज कएनिहार वृद्धक बयान। पहिलमे ‘मिठुआ’, दोसरमे ‘मि.’ आ तेसरमे सुनल ‘मिठू’ अछि; एहि तीनूक सादृश्यसँ लताक हराएल बेटा मिथुनक पहिचान सिद्ध नहि। महेशक कथन जे नाम नहि जोड़ब, नैराक अनुमति लऽ निजी प्रतिमे देखेनाइ आ लताक आग्रह जे ककरो दोसरक बच्चाकेँ मिथुन कहि नहि लाओल जाए—एहि क्रमसँ जाँचक नैतिक आधार स्थापित होइत अछि। लताक आशा प्रमाणक सीमा बुझबाक शत्रु नहि बनैत; ओ स्वयं प्रतिकूल सम्भावनासँ मुँह नहि मोड़ैत छथि।

अदिति अस्पतालक सामग्री-अभिलेख अलग लिफाफामे लऽ अबैत छथि आ ओकरा खोजक कागदमे नहि मिलबैत छथि। नैरा तीन श्रेणी लिखैत छथि : प्रत्यक्ष देखल अक्षर, सम्भावित नाम/स्वर-सादृश्य, आ व्यक्तिक पहचान सम्बन्धी अप्रमाणित अनुमान। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ ई प्रत्यक्ष आ अनुमानक भेदक कथा-व्यवहार अछि : ‘मि.’ देखल गेल, ‘मिथुन’ सिद्ध नहि; ककरो ‘मिठू’ बजबैत सुनल गेल, किन्तु चेहरा देखल नहि गेल। प्रमाणक आश्रय-वस्तु, सन्दर्भ, काल आ वैकल्पिक सम्भावना अलग खोजल जएबाक चाही। पुरान बयानक मूल मालिकक हस्ताक्षर अनुपस्थित अछि; ई प्रमाणक प्रामाण्य जाँचक कारण अछि, स्वयं झूठक अंतिम निर्णय नहि।

तारा सार्वजनिक सन्धि-पन्नामे निजी नाम जोड़बाक प्रस्ताव रखैत छथि, नैरा प्रकाशन-अनुमतिक अभाव देखबैत छथि; मुदा तारा न्यायोचित प्रतिप्रश्न करैत छथि जे नामक गोपनीयता मजदूरीक बकाया दबेबाक औजार नहि बनय। समाधान रूपमे सार्वजनिक नामक बदला दावाक क्रमाङ्क, रकम आ प्रत्युत्तर-तिथि मूल दावेदार धरि पहुँचएबाक व्यवस्था शुरू होइत अछि। लताकेँ मूल फोटो नहि, लिखित विवरण आ सुधार योग्य प्रश्न-सूची देल जाइत अछि; नाव-पर्चीक तिथि जाँचबाक आग्रह पठाओल जाइत अछि। खोज चलि रहल अछि; मिथुन भेटल नहि; ‘मिठुआ’क व्यक्तिपरिचय निश्चित नहि। एहि अनिर्णीत निष्कर्षपर कथाक सत्य-निष्ठा निर्भर अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, जल-बिम्ब आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

अध्यायक कुल २९ पाठांशमे पहिल बीस पाठांश आ पछिला दू प्राचीन कालधारामे, आधुनिक पाठांश २१–२६ आ अन्तिम २९ मे रहैत अछि। ई परम्परागत पूर्वदीप्ति नहि; कथावाचक दू कालक स्वतंत्र दृश्य-निर्माण करैत छथि। शान्तनुक भय, गङ्गाक गोपनीय अनुभूति, देवव्रतक जिज्ञासा आ लताक दुःख-पूरित सावधानीक बीच दृष्टिकेन्द्र बदलैत अछि। वसु-शापक कथन पाठककेँ राजासँ पहिने कारण दैत अछि; आधुनिक पर्चीक कक्षमे पाठककेँ पात्रसभक संग असिद्ध सूचना भेटैत अछि। एहि सूचना-वितरणक भिन्नता महत्त्वपूर्ण शिल्प-सफलता अछि। रसदृष्टिसँ करुणक सम्भावना शिशुक खाली पल्ला आ मिथुनक माटिक घोड़ा सँ उत्पन्न होइत अछि, किन्तु ई वस्तु स्वयं भावक प्रमाण अछि, कोनो आधिकारिक भाव-सूची नहि। नदीक उफान, बालुकाक चिह्न आ भीजल पर्ची एक आवर्ती छवि बनैत अछि—रेखा बनैत अछि, मुदा ओकर स्थायित्व अप्रमाणित रहैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि। सात जन्मक हानिक मनोवैज्ञानिक क्रम अत्यन्त संक्षेपमे अएला सँ गङ्गाक प्रत्येक निर्णयक अनुभूत जटिलता एक ठाम संयुक्त भऽ जाइत अछि। द्विकालीन जोड़ प्राचीन शर्त आ आधुनिक साक्ष्यकेँ असाधारण स्पष्ट अवधारणात्मक समतामे रखैत अछि; नैराक तीन व्यवस्थित शीर्षक कथाक स्वाभाविक अनगढ़पन घटा सकैत अछि। तथापि शान्तनु–गङ्गाक अलग दुःख, लताक असहमत आशा आ तारा द्वारा गोपनीयतापर उठाओल श्रमक प्रतिप्रश्न एहि खण्डकेँ एकरेखा नैतिक उपदेश बनबासँ रोकैत अछि। अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि शर्तक औचित्य नहि, ओकर परिणामक साक्ष्य के कथा-निर्णयक केन्द्र बनायब।

अध्याय ६२ — भीष्मक प्रतिज्ञा

मौनक कारण पर अनुमान आ प्रतिज्ञाक असममित मूल्य

राजमहलक आँगनमे छिलल अँगुरपर पट्टी बान्हि धनुकक डोरी खोलैत देवव्रतक दृश्यसँ अध्याय आरम्भ होइत अछि। अगिला घटनाक स्रोत कौनो दिव्य घोषणा नहि, पिता शान्तनुक भोजन नहिं छुएबाक अनुभूति आ सारथि सँ पुछल गेल प्रश्न अछि। सारथि सत्यवतीक संग राजाक भेटक बात कहैत अछि। एहि ठाम देवव्रत चिन्ता करैत छथि, मुदा एखन कारणक सम्पूर्ण सत्य हुनका लग नहि अछि। शान्तनुक मौन देखिकऽ पिताक अपूर्ण विवाह-इच्छाक अनुमान बनैत अछि; एहि अनुमानक आधारपर देवव्रत सत्यवतीक परिवार लग जाइत छथि। कथा स्वयं दसमा पाठांशमे राजाक मुँहसँ प्रतिप्रश्न करबबैत अछि—यदि अनुमान गलत छल तखन? ई क्षण प्रतिज्ञाक महिमामण्डन पर कठोर आत्मालोचना अछि। कारणक अपर्याप्त जाँचपर देल अपरिवर्तनीय उत्तर अगिला पीढ़ीक संकट बनि सकैत अछि।

घाटपर सत्यवती अपन छोट भाइक घायल अँगुरीपर पट्टी बाँधैत छथि, पिता दिनक लेनदेनक गोटी गनैत छथि। महाकाव्यक राजवंशीय प्रश्न श्रमिक परिवारक ठोस देह आ अर्थव्यवस्थामे प्रवेश करैत अछि। सत्यवतीक पिता भावी सन्तानक उत्तराधिकार चाहैत छथि; देवव्रत पहिने सिंहासन छोड़बाक सार्वजनिक घोषणा करैत छथि। मुदा पिता संभावित भावी देवव्रत-पुत्रक दावा उठबैत छथि। पहिल शर्त व्यक्तिगत पद-त्याग छल, दोसर पीढ़ीक उत्तराधिकारक जोखिम अलग। देवव्रत आजीवन ब्रह्मचर्य आ सन्तान-त्यागक प्रतिज्ञा लैत छथि। शपथक

विस्तारक ई कारणात्मक क्रम नीकसँ पकड़ल जरूरी अछि; ई केवल 'पितृभक्ति'क एक क्षण नहि, भविष्यक अनिश्चितता दूर करबाक नामपर जीवनक अनेक सम्भावना बन्द करबाक निर्णय अछि।

पुरान आख्यानक पुष्पवृष्टि आ 'भीष्म' नामकरणक संग लेखक घाटपर सत्यवतीक भाइक घायल अँगुर आ हुनकर सम्भावित निःसन्तान भविष्यकेँ संग देखबैत छथि। दिव्य प्रशंसा, राजपुरोहितक लिखित यश आ व्यक्तिगत दाम तीनू भिन्न नजरि छथि। सत्यवती भीष्मसँ स्पष्ट पुछैत छथि जे प्रतिज्ञा हुनकर माँगक नामपर देल गेल की देवव्रतक अपने विवेकसँ; भीष्म अपन निर्णयक भार स्वयं स्वीकारैत छथि। सत्यवती ताहि त्यागकेँ अपन विवाहक 'मूल्य' बनएबाक मना करैत छथि, कारण भविष्यमें ओहि त्यागक ऋण हुनका आ सन्तानक विरोधमे सामाजिक अस्त्र बनि सकैत अछि। ई स्त्रीक निष्क्रिय लाभार्थी होएबाक स्थापित भूमिका तोड़ैत अछि। घाटपर नाव आ जालक बकाया सेहो हुनका स्मरण अछि; रानी भेला सँ अपन मूल परिवारक वास्तविक मजदूरीक हिसाब मेटाएल नहि मानैत छथि।

राजामे पिता–पुत्रक संवाद निर्णयक दोसर परीक्षा अछि। शान्तनु प्रतिज्ञा माँगने नहि छलाह; भीष्म अनुमानक आधार स्वीकार करैत छथि, आ तकर बादो निर्णय अपन कहि निभाएब चाहैत छथि। इच्छामृत्युक वरदान भेटबाक बाद भीष्म कहैत छथि जे मरबाक घड़ी चुनब जीवनक प्रत्येक दिनक चुनाव नहि। तेँ पुरस्कारक रूपमे भेटल वरदान स्वतन्त्रताक पूर्ण पुनर्स्थापन नहि। काल-व्यवस्थामे मृत्यु-समयपर नियन्त्रण आ जीवनक वैवाहिक/पारिवारिक सम्भावना बीच भेदक ई टिप्पणी सूक्ष्म अछि। ओहि वरदानकेँ आलोचना शास्त्रीय अथवा ऐतिहासिक तथ्यरूपेँ नहि, उपन्यासक पुनर्गठित महाभारतीय आख्यानरूपेँ पढ़ैत अछि।

सत्यवतीक श्रम-अभिमान आ राजकीय अधिकारक पुनर्विभाजन

सत्यवती महलमे पहुँचलाक बाद स्वयं कुआँसँ जल निकालए चाहैत छथि, मुदा परिचारिका दण्डक डर सुनबैत छथि। रानीक पद हुनकर अपन हाथक अधिकारकेँ बढ़ेबाक बदला सीमित करैत अछि; दोसरा दिस परिचारिकाक भय स्त्री-से-स्त्री उत्पीड़नक सरल कहानी नहि, दण्ड-संरचनाक सूचना अछि। सत्यवती पुछैत छथि जे कतेक नियम लिखल अछि आ कतेक भयक कारण मानल जाइत अछि। बगैचाक संवादमे ओ कहैत छथि जे हुनकर निर्णयक न्याय भीष्मक त्यागक हिसाबसँ नहि, अपन काजक आधारपर होय। एहि स्वरमे राजपरिवारक भीतर स्त्रीक स्वत्व आ पुरान नदी-पेशाक स्मृति एकठाम अछि। लेखक आधुनिक रुहानी अथवा तारा सँ सत्यवतीक जैविक समानता स्थापित नहि करैत; जतेक अन्तर्पाठ अछि, से अधिकारक भाषा आ श्रमक दृश्यक बीच अछि।

समयक दीर्घ लोपक माध्यमे चित्राङ्गद आ विचित्रवीर्यक जन्म, बाल्य-खेल, शान्तनुक मृत्यु, पहिल राजाक अभिषेक, चित्राङ्गदक गन्धर्वसँ युद्धमे मृत्यु आ नवयुवक विचित्रवीर्यक राजारोहण एक क्रम बनैत अछि। कागदक छोट नाव आ टूटल काठक धनुक स्मृतिवस्तु छथि : बालसुलभ वस्तु राजकीय उत्तराधिकारक अमूर्त शब्दकेँ घरक देहगत समयमे अनैत अछि। भीष्म एक दिस राजमुकुट स्वयं आगाँ बढ़बैत छथि, दोसर दिस राजकीय मुहरक उपयोग पर उत्तरदायित्वक लेखा माँगैत छथि। एहि कारण सत्ता-त्याग 'सत्तासँ सम्पूर्ण अनुपस्थिति' नहि। संरक्षण, शिक्षण आ प्रशासनिक देखरेखक माध्यमे ओ राज्य-निर्णयमे उपस्थित रहैत छथि। आलोचनाकेँ ई विरोध स्पष्ट करबाक अछि : सिंहासन नहि लेनाइ आ राजकीय प्रभाव नहि रखनाइ एक बात नहि।

सत्यवतीक शेष प्रश्न अछि—विचित्रवीर्यक विवाहक निर्णयमे ओकर भावी पत्नीकेँ के पुछत? भीष्मक उत्तर पहिने ‘ओकर इच्छा’ समझब अछि; सत्यवती स्पष्ट करैत छथि जे जिनकासँ विवाह होएत हुनकर इच्छा सेहो। अगिला काशी-यात्राक समाचार पर मन्त्री सभ पैघ वंशीय लाभ गनैत छथि, मुदा राजकुमारीसभक सहमतिक प्रश्नक तत्काल उत्तर नहि दे पबैत छथि। सत्यवती अगिला घरेलू संवादमे भीष्मसँ पुछैत छथि जे अपन प्रतिज्ञा निभबैत दोसरक चुनबाक अधिकार सुनि सकब की। एहि प्रश्नक उत्तर बिना रथ तैयार होइत अछि। ई अध्याय अगिला ‘अम्बाक समय’क ठोस कारण-सूत्र गढ़ैत अछि। दोसर अध्यायक हिंसाक परिणाम एकटा अचानक मोड़ नहि, भीष्मक पूर्वक सुनल चेतावनीक विफल व्यावहारिकता बनैत अछि।

आधुनिक सन्धि : ‘पहिने बाट खोलू’क असमान जोखिम

विदेहपुरक आधुनिक दृश्य एक नव कागदसँ प्रवेश करैत अछि : दोसर पारक पक्ष कहैत अछि जे पहिने फाटकक बाट खोलल जाए, क्षतिपूर्ति आ सुरक्षा-परीक्षण पछाति तय हो। तारा–नैरा एहि एकतरफा प्रस्तावमे रमेशक खेतक असहमति खोजैत छथि; ओ एखन मूल पन्नामे अछि। अमूर्त ‘भरोसा’क शर्त लोकक अलग क्षति बाँटबैत अछि, अतएव पक्षसभक जोखिम समान नहि। महेश ‘मिठुआ’ पंजीक स्रोत-पत्र लैत छथि, मुदा पहिचान आ लिखावट जाँचबाक अनुमति सीमित अछि। तारा श्रम-देयक क्रमाङ्क, रकम आ सुनवाईक तिथि मूल दावेदार धरि पहुँचबाबए चाहैत छथि; निजी नाम प्रकाशित करब ओकर अनिवार्य शर्त नहि। लताकेँ बताओल जाइत अछि जे पंजीक स्रोत भेटल, मिथुनक पहिचान नहि; ओ विश्वासक बलपर ककरो दोसरक बच्चाकेँ पकड़बाक अस्वीकार करैत छथि। अन्तिम परिणाम : सुरक्षा-परीक्षण आ क्षतिपूर्तिक संवादसँ पहिने एकतरफा बाट खोलबाक अनुमति नहि भेटल। ई ‘सन्धि स्वीकृत’ नहि, प्रस्तावक सशर्त प्रतिषेध अछि।

कथनकालमे प्राचीन राजकथा बहुत वर्ष लाँघैत अछि, आधुनिक खण्ड पत्र आवागमनक सीमित दिनमे चलैत अछि। कथावाचक तृतीयपुरुषमे देवव्रतक विवशता, सत्यवतीक संदेह आ नैराक नीतिगत सावधानी बीच घूमैत छथि। महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक बल अछि शास्त्रीय प्रतिज्ञाकेँ पूर्ण सद्गुण घोषित नहि करब; आलोचनात्मक सीमा अछि जे अनेक प्राचीन पात्र अत्यधिक स्पष्ट आधुनिक अनुज्ञप्ति-नियमक भाषा बोलैत छथि। एहि अनाकालिकता (anachronism) केँ त्रुटि वा सर्जनात्मक विकल्प मानबाक निर्णय दृश्यसँ होएत : सत्यवतीक इनार-विवाद सहज जीवन-दृश्य बनैत अछि, जबकि किछु राजसभाक संवाद आधुनिक संस्थागत सुनवाईक अनुकरण जेकाँ सुनाइत अछि। एहि दू अनुभवक भेद लेखनक मूल्यांकनमे अनिवार्य अछि।

आख्यानगत परीक्षण : हेतुक अपूर्णता आ वचनक तात्पर्य

‘पिता भोजन नहि करैत छथि’ प्रत्यक्ष अनुभव अछि; ‘हमर युवराज-पद कारणेँ पिता दुखी छथि’ अनुमान अछि; बिना विकल्प हटौने अटल ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा अपनाइ लेब अनुपयुक्त व्यापकताक समाधान बनैत अछि। ‘सभासद भीष्मक प्रशंसा करैत छथि’सँ ‘सत्यवतीक भविष्यक हर असहमति अनुचित’ सिद्ध नहि। ‘सामूहिक समितिक अनुमोदन’सँ ‘रमेशक निजी खेतमे प्रवेशक स्वीकृति’क व्याप्ति नहि। शास्त्रीय पक्ष–हेतु–साध्यक भाषामे ई भिन्न अनुमानपर समान आपत्ति अछि : उपाधि, विपरीत साक्ष्य आ प्रभावित व्यक्तिक अधिकार अनपरीक्षित अछि। भामतीक अध्यास-विमर्शक संग कथा पढ़ब सम्भव अछि जखन वचनकेँ व्यक्तिक सम्पूर्ण निष्ठा अथवा बलिदानकेँ

स्त्रीक सम्पूर्ण मूल्य मानि लेबाक प्रवृत्ति उठैत अछि; मुदा उपन्यास एतय भामतीक दार्शनिक सूत्रक स्वतंत्र शास्त्रार्थ नहि दैत। एहन सम्बन्ध आलोचनात्मक अर्थ-निर्माण अछि, मूल शास्त्रक उद्धरण नहि।

अध्यायक उपलब्धि केवल ‘भीष्म महान छथि’ वा ‘भीष्म गलत छथि’ नहि। वचनक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, ताहिसँ जन्मल असमान सामाजिक मूल्य, भविष्यक अनिश्चितता आ आन लोकक सहमतिक दायरा प्रश्न बनैत अछि। दृश्यात्मक दृष्टिसँ छिलल अँगुर, नावक गोटी, कुआँक डोल, कागदी नाव आ टूटल धनुक एहि विवादकेँ मानवीय पैमाना दैत अछि। आरम्भक धनुक-डोरी आ अन्तक तैयार रथ कथनक आसन्न अनिष्टक गति बढ़बैत अछि, मुदा पाठककेँ अगिला अध्यायक परिणाम एखन नहि देखबाओल जाइत। एहि अपूर्णतामे अध्यायक कथाविन्यासक प्रभाव अछि।

अध्याय ६३ — अम्बाक समय

स्वयंवरक मंच आ पसन्दक अनुपस्थित संरक्षा

काशी-महलक तीन पित्तरि थारी आ अम्बाक अपन फूलक गन्ध बदलनाइ अध्यायक आरम्भ अछि। फूल बदलबाक छोट इच्छा स्वीकार्य अछि, मुदा स्वयंवरक वास्तविक पूर्वनिर्णय कहबाक अधिकृत समय कतय—पुरोहितक निर्धारित क्रम एहि प्रश्नक साफ उत्तर नहि दैत। एतय रसात्मक वस्तु आ संस्थागत शिल्पक विरोध स्पष्ट अछि : समारोह बाह्य रूपसँ ‘स्वयं’ वर चुनबाक अधिकार देखबैत अछि, मुदा सेना, ध्वज आ राजकीय सम्बन्ध ओकर वास्तविकता बदलि दैत अछि। अम्बाक मन शाल्वक आसन खोजैत अछि; अम्बिका–अम्बालिकाक अलग भयक दृश्य अछि। भीष्म विचित्रवीर्यक नामपर तीनू बहिनकेँ रथमे लऽ जाइत छथि; शाल्व प्रतिरोध करैत हारैत छथि। अम्बा रथसँ प्रतिवाद करैत छथि जे ओ अपन निर्णय देबाक लेल आएल छलीह, दोसरक निर्णय सुनबाक लेल नहि। एहि वाक्यक महत्त्व एतेक जे कथानक-अभिकर्ता अम्बा केवल अगिला दरबारमे नहि बनैत छथि; आरम्भिक हिंसाक समये हुनकर विरोध उपस्थित अछि।

हस्तिनापुर पहुँचि अम्बा सत्यवतीसँ एकान्त भेट माँगैत छथि, शाल्वकेँ पूर्वस्वीकृत पसन्द कहैत छथि; भीष्म ई तथ्य नहि जनबाक बात मानैत छथि। ‘नहि जनब’क अर्थ निर्देश देबाक अधिकार अपने आप सुरक्षित रहब नहि; अम्बाक प्रतिप्रश्न एहि निर्णयक ज्ञानगत त्रुटिक नाम लेत। भीष्म हुनका शाल्वक लग घुरबाक अनुमति दैत छथि, मुदा शाल्व हारक ‘अपमान’क कारण विवाह अस्वीकार करैत छथि। एहि ठाम दू स्वतंत्र कारण अछि : भीष्मक अपहरण आ शाल्वक पछिला अस्वीकार। शाल्वक रण-पराजय अम्बाक सहमति बनि गेल, एहन युक्ति अम्बा स्पष्ट अस्वीकार करैत छथि। पराजित राजा अपन सामाजिक प्रतिष्ठाक रक्षा चुनैत छथि, हुनकर पूर्व वरणक स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छाकेँ अस्वीकार करैत छथि। कथा तीनू घटनाकेँ ‘अम्बाक असफल प्रेम’मे समेटबाक विरोध करैत अछि।

फेर हस्तिनापुरक सभा मे अम्बा विचित्रवीर्य आ भीष्मक समक्ष प्रश्न करैत छथि : जखन हुनकर जीवनक दिशा आन निर्णयसँ बदलल तखन ओकरा दुरुस्त करबाक उत्तरदायित्व केकर? भीष्म अपन ब्रह्मचर्यक प्रतिज्ञाकेँ कारण रूपेँ रखैत छथि; अम्बा कहैत छथि जे ओ केवल भीष्मसँ विवाह नहि माँगि रहल छथि, ताहिसँ पैघ प्रश्न

उत्तरदायित्वक अछि। पुरोहितक आश्रय, दान, संरक्षणक प्रस्ताव भोजन-सुरक्षा दे सकैत अछि, मुदा उठल आपत्तिक न्यायिक निपटान नहि। सत्यवती अम्बाक अपन इच्छा पुछैत छथि आ बयानक प्रति उपलब्ध करबबैत छथि; ओ एहि सीमित काजकेँ अन्तिम न्याय नहि कहैत। एहि कारण नारीवादी आख्यान-पठन केवल ‘स्त्रीकेँ बोलबाक अवसर भेटल’ पर रुके नहि; बोलेलाक बाद अधिकारजन्य परिणाम भेटल की नहि, सेहो जाँचय।

तीन गाँठ : स्मृतिक सूक्ष्म अभिलेख आ कारणक पृथक्करण

राजद्वार छोड़ि अम्बा अनेक आश्रम, राजसभा आ यात्रामे अपन कथा फेर-फेर कहैत छथि। समाज कखनो हुनका प्रेममे हारल स्त्री, कखनो हठी राजकुमारी बनबैत अछि। वृद्ध तपस्विनी हुनकासँ पहिल दिन, शाल्वसँ पहिल संवाद आ स्वयंवरक दिन अलग दर्ज करबबैत छथि, तीन गाँठक पट्टा बनबबैत छथि—पहिल अपन पसन्द, दोसर बलपूर्वक लऽ जाएब, तेसर शाल्वक अस्वीकार। वस्तुक रूप सरल, पद्धतिक अर्थ गम्भीर : असमान समयक तीन घटना अलग नहि राखब तँ अलग-अलग अभिकर्ताक उत्तरदायित्व अदृश्य भऽ जायत। ई आधुनिक पुलिस-पत्र अथवा ऐतिहासिक मौलिक अभिलेख नहि, पौराणिक कालधाराभीतर उपन्यासक निर्मित स्मृतिपट्ट अछि; तखनहुँ विदेहपुरक तीन अपूर्ण पर्चीक संग एक तुलना सम्भव बनैत अछि। एक दिस तीन गाँठ तीन पृथक निश्चित अनुभवकेँ जोड़ैत अछि; दोसर दिस ‘मिठुआ’क तीन वाचन एक अपरिचित व्यक्तिक निश्चित पहिचान नहि दैत। दुनूमे ‘तीन’ समान होइतहुँ प्रमाणगत काम अलग अछि।

होत्रवाहनक शरणमे अम्बाकेँ अपन नामक पर्याप्तता भेटैत अछि; वृद्ध नाना परशुरामक मध्यस्थता सुझबैत छथि, मुदा जीतक आश्वासन नहि दैत। परशुराम अम्बाक कथा सुनैत छथि, जाँच करैत छथि, आ भीष्मकेँ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छथि। अम्बा शाल्वकेँ बाध्य कऽ विवाह करएबाक समाधान अस्वीकार करैत छथि; ओ अपन नामपर बिनु अनुमतिक समझौता सेहो नहि चाहैत। गुरु–शिष्यक शस्त्रसंघर्षक वर्णन अनेक दिनमे फैलैत अछि, परन्तु अन्तमे भीष्म जीवित, प्रतिज्ञा अपरिवर्तित आ अम्बाक न्याय अनिर्णीत रहैत अछि। गुरु द्वारा सुनल जाएब अम्बाक लेल महत्वहीन नहि, मुदा युद्ध करबाक सामर्थ्य आ न्याय उपलब्ध कराबएबाक सामर्थ्य एक नहि। एहि असफलता सँ अध्याय प्रतिशोध-कथाक सरल वीररसक बदला दीर्घ प्रतीक्षाक करुण आ विमर्शक आधार बनबैत अछि।

पर्वतप्रदेशमे तपस्या आ शिवक वरदानक प्रसंग पौराणिक कालक विश्वास-जगतमे राखल गेल अछि। अम्बा स्वयं भविष्यजन्मक वरकेँ तत्काल न्याय-प्राप्ति नहि मानैत छथि; दोसर जीवनक काल आवश्यक होएब पहिल जीवनक संस्थागत संकुचनक भीषण चिह्न अछि। अन्तिम पट्टा वृद्ध तपस्विनीकेँ देबाक समय ओ कहैत छथि जे हुनकर जीवन केवल ककरो मराएबाक तैयारी नहि छल; हुनकर अपन इच्छाक समय छल, जे छीनल गेल आ प्रश्न करैत फेर प्राप्त कएल गेल। एतय कथाकार अम्बाकेँ शिखण्डीक आगमनक केवल उपोद्घात बनएबासँ बचाबैत छथि। आगामी अध्याय शिखण्डीक स्वतंत्र जीवन-परीक्षा बनत; अम्बाक दुःखक सम्पूर्ण अर्थ ओकर आगमनमे विलीन नहि भऽ सकैत।

विदेहपुरक समानान्तर प्रतिपक्ष : मिथुनक असिद्ध नाम आ लताक सहमति

आधुनिक प्रसंगमे ‘मिठुआ’क पर्चीक धुँधल लिखावट कियो ‘मिथुआ’ पढ़ैत अछि; नामक अनेक सम्भव पाठ अछि, मुदा नाव-भाड़ाक तिथि, उमेर आ मूल खाता एखन अपूर्ण। लता मिथुनक पुरान कपड़ाक गाँठ लऽ अबैत छथि, प्रश्न करैत छथि जे तीन लोक तीन पाठ पढ़ैत अछि तँ बेटा कतए; नैरा निश्चित उत्तर नहि दे पबैत छथि। लता अपन खोज बन्द नहि करबाक संग ककरो दोसर बच्चाकेँ दुःखक आधारपर पकड़ि नहि अनबाक निर्णय पुनः कहैत छथि। ई निर्णय स्त्रीक सक्रिय विवेकक अछि; ओ केवल करुण-रसक वस्तु नहि। तारा फाटक-सन्धिक पन्नामे प्रभावित व्यक्तिक स्वीकृतिसम्बन्धी पाँति स्पष्ट करैत छथि; एहि संशोधनकेँ नव छठम शर्तक नाम नहि देल गेल, पाँचू शर्तक निहित अर्थमे सहमतिक स्थान स्पष्ट होइत अछि। उपन्यास स्वयं कहैत अछि जे इतिहासक अम्बा आ आजुक लता एक-दोसरक साक्षी नहि छलीह; एतय समानता व्यक्तिक जीवनपर अनुपस्थितिक अवस्था मे दोसरक अन्तिम निर्णय लिखि देबाक जोखिमक अछि।

अध्यायक कालिक निर्माण अत्यन्त विशेष अछि। प्राचीन कथामे स्वयंवरक एक दिनसँ वर्षौंक यात्रा, गुरु–शिष्यक दीर्घ युद्ध, तपस्या आ जीवनक अन्तिम प्रश्न धरि संक्षिप्त काल-लोप अछि; आधुनिक कथामे एके कागदक सम्भव पाठ पर किछु भेटक विस्तार अछि। कथानकक गति विपरीत : प्राचीन महाविस्तार संक्षिप्त, आधुनिक कागदक छोट निरीक्षण विस्तृत। पाठकक प्रतीक्षा दूनू कालमे अलग फलित होइत अछि—अम्बाक न्याय नहि भेटैत, लताक बेटा नहि भेटैत। एहि संगति केँ समान पीड़ा-परिमाण कहब अनुचित; अम्बाक अपहरण आ मिथुनक गुमशुदगी कारण, समुदाय, काल आ अभिकर्ता सभमे भिन्न अछि।

न्याय, रस, दृष्टिकेन्द्रण आ रचनागत सीमा

अम्बाक दृश्यकालमे केन्द्रित चेतना मुख्यतः अम्बाक आसक्ति, भय, अपमान, प्रतिरोध आ प्रश्नक विकासपर अछि, यद्यपि शाल्व, सत्यवती, भीष्म आ परशुरामक प्रतिक्रिया सेहो देखा पड़ैत अछि। तीन गाँठ तीनटा काव्यात्मक ध्वनिपर आधारित नहि, घटनात्मक वर्गीकरणक प्रभावशाली प्रतिमा अछि। रसदृष्टिसँ आरम्भक विवाह-उत्सवक अपेक्षा युद्धक भीषणता, फेर करुण आ अन्तमे अपूर्ण प्रतिरोधक मिश्रित अनुभूति अछि; लेखक कोनो एक रसकेँ सम्पूर्ण घटनाक अन्तिम अर्थ नहि बनबैत। औचित्य-परीक्षा भिन्न परिणाम देखबैत अछि : सत्यवतीक सीमित सहायता कथामे उचित आ अपूर्ण, परशुरामक युद्ध प्रभावशाली आ फलहीन, भीष्मक वचन दृढ़ आ अपर्याप्त।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ प्रेरित परीक्षणमे शाल्वक ‘भीष्म युद्ध जीतलाह’ हेतु अम्बाक सहमति सिद्ध करबाक लेल असङ्गत अछि; ‘भीष्म ब्रह्मचारी छथि’ हेतु हुनकर आंशिक उत्तरदायित्व मेटबैत नहि; ‘गुरु युद्ध करैत छथि’ हेतु न्याय-फल सिद्ध करबाक व्यापक व्याप्ति नहि। आधुनिक सन्दर्भमे ‘मिठुआ/मिथुआ’ ध्वनिसादृश्यक आधारपर मिथुनक पहिचान ठोकबाक प्रयास उपाधिसँ घेरल अविश्वसनीय अनुमान अछि। ई विश्लेषण वास्तविक आख्यानशास्त्र ग्रन्थक प्रत्यक्ष उद्धरणक दावा नहि; कथागत परिस्थिति पर प्रमाण-पद्धतिक अनुप्रयोग अछि।

कलात्मक उपलब्धि छैक जे अम्बाक इच्छा शुरुआतमे शाल्वक संग जीवनसँ आरम्भ भऽ अन्तमे अपन जीवनक कहानी ककर लिखत, एहि पैघ प्रश्न धरि बदलैत अछि; ओ अपन कथाक अर्थ स्वयं सुधारैत छथि। सीमा अछि जे

तपस्विनी, होत्रवाहन, परशुराम आ सत्यवतीक संवाद अनेक बेर आधुनिक सहमति-न्यायक स्पष्ट विधान जेकाँ लगैत अछि, प्राचीन कालक अन्तर्विरोधक स्वतन्त्र भाषिक बनावट कम रहि सकैत अछि। एके ‘प्रश्न सुनल गेल मुदा न्याय नहि’ भाव बारम्बार अएबाक कारण गतिक शिथिलताक सम्भावना अछि; मुदा अम्बाक यात्राक वास्तविक थकान आ तीन गाँठक आवर्ती अर्थ एहि पुनरावृत्तिक आंशिक कलात्मक औचित्य सिद्ध करैत अछि।

अध्याय ६४ — शिखण्डीक निर्णय

बाणक मरम्मति आ स्वपरिचयक अधिकार : लघु वस्तुसँ महाकाव्य धरि

अध्यायक आरम्भ शस्त्रागारमे टूटल बाणक अग्रभाग लऽ ठाढ़ शिखण्डीसँ होइत अछि। हुनकर प्रश्न—धार बचल अछि तँ नव डाँड़ किएक नहि—युद्धक विजयक चमकसँ अलग कारीगरक निरीक्षण, साधनक मरम्मति आ परीक्षाक कथा बनबैत अछि। शिखण्डीक जन्मक विषय राजपरिवार बाहरी जगतकेँ जे रूपमे जनबैत अछि आ महलक भीतर जे बात दबैत अछि, दुनूकेँ कथावाचक स्पष्ट अलग रखैत छथि। प्रशिक्षणमे पराजयक उत्तर ओ अपन अभ्यासक त्रुटिसँ दैत छथि, आ माता समक्ष कहैत छथि जे सभ हुनका की बजाउत से हुनकर हाथमे पूर्ण नहि, मुदा की सिखब से किछु हुनकर हाथमे अछि। ई आरम्भ एहन ‘पूर्वनिर्धारित प्रतिशोधी’ पात्र नहि गढ़ैत, जकर जीवनक पहिल अर्थ जन्म-पहिचानक विवाद मात्र हो। मरम्मति, अभ्यास, घावक मरहम आ निर्णायक प्रश्न—ई सभ शिखण्डीक निजी कथा-समय बनबैत अछि।

राजपरिवार शिवक वरदानक कथासँ सन्तानक राजनीतिक प्रयोजन निकालैत अछि; शिखण्डी पुछैत छथि जे जन्म यदि पुरान अन्यायक उत्तर अछि तँ अपन दिन कोन। एहि प्रश्नसँ अम्बाक पूर्वकथाक सीमाबोध बनैत अछि। अम्बाक दुःखक इतिहास शिखण्डीक अगिला जीवनक पूर्ण पाठ्यादेश नहि। नायकक आत्मबोध केवल देहक वर्णन नहि, स्वयं निर्णयक इतिहासमे अछि। कालक्रम एहि अध्यायमे बाल्य, विवाह, यक्ष-भेट, युद्धपूर्व सम्बन्ध आ भीष्म-पतन धरि बहुत पैघ विस्तार लैत अछि; लेखक संक्षिप्त दृश्यसमूह चुनि पात्रक अलग-अलग स्वायत्तता-परीक्षा दिखबैत छथि।

राजकीय गुप्तता, विवाहक असमानता आ स्थूणाकर्णक स्वतन्त्र इच्छा

दशार्णक राजकुमारीसँ विवाहक प्रस्तावमे शिखण्डी पहिने पूछैत छथि जे हुनका हुनकर जीवनक विषयमे की कहल गेल। विवाहक बाद राजकुमारी अपन असूचित निर्णयक प्रश्न उठबैत छथि, आ राजकीय प्रतिष्ठाक रक्षा लेल युद्धक तैयारी होइत अछि। ई संघर्षकेँ केवल शिखण्डीक ‘समस्या’ कहब अनुचित; राज्य गुप्तता रखैत अछि, विवाह करनिहार स्त्रीक जानकारी सीमित करैत अछि, आ पछाति निज राजकीय अपमानक युद्ध-सामग्री बनबैत अछि। शिखण्डीक व्यक्तिगत संकट आ राजकुमारीक असहमति विरोधी पक्ष होएब जरूरी नहि; दुनूक अधिकार पर राजकीय निर्णयक अलग दबाव अछि। शिखण्डी राज्य-आदेशसँ बाहर बन दिस जाइत छथि, जतए स्थूणाकर्ण यक्ष भेटैत छथि।

पुरान आख्यानक स्त्री–पुरुष अवस्थाक विनिमय उपन्यासमे केवल अद्भुत चमत्कार नहि। स्थूणाकर्णक स्पष्ट स्वीकृति, सीमित काल लेल देल वचन आ शिखण्डीक वापसीक दायित्व विस्तारसँ वर्णित अछि। कुबेरक शापक

कारण विनिमय स्थिर रहबाक कथा एक प्राचीन पाठरूपेँ अबैत अछि; ओकर दाम यक्षक देह आ जीवनपर अलग पड़ैत अछि। एहि स्थिति पर 'शिखण्डीक विजय' नामक सरल निष्कर्ष यक्षक अनिच्छित दीर्घ परिवर्तनकेँ अदृश्य बना देत। शिखण्डी स्वयं हुनकर समाचार लेबाक बात कहैत छथि। ई कथात्मक जोड़ लिंग-परिवर्तनक पौराणिक प्रसंगकेँ आधुनिक चिकित्सकीय अथवा समकालीन लैंगिक अनुभवक सार्वभौम रूपक बनएबाक अनुमति नहि दैत। शिखण्डीक जीवन, स्थूणाकर्णक शर्त आ दशार्णराजक पुत्रीक सहमति स्वतंत्र प्रश्न छथि।

राजकीय परीक्षणक बाद युद्धक तत्काल भय घटैत अछि, मुदा राजकुमारीक पहिने भेल आपत्तिक समाधान स्वयं नहि होइत। शिखण्डी हुनका इच्छानुसार घुरबाक विकल्प दैत छथि; राजकुमारी किछु दिन अपन लोकक संग रहबाक निर्णय लैत छथि। हुनकर पत्रमे एकान्त, समय आ अपन निर्णयक अधिकार मांगल गेल अछि। राजपरिवारक सन्धि हेब विवाहजीवनक बाध्यकारी अनुमति नहि। ई तर्क अध्याय ६२ क सत्यवतीक चेतावनीक एक जटिल परिणाम अछि, मुदा कथावाचक ऐतिहासिक सत्यापनक दावा नहि करैत—ई पुनर्रचित महाभारतीय कालधारा अछि।

रुहानीक अस्वीकार : पौराणिक समतुल्यताक आलोचना कथा-भीतर

विदेहपुरक पहिल दृश्य विद्यालयक नाटकक पर्ची अछि—'रुहानीक जीवन: आजुक शिखण्डी'। रुहानी आपत्ति करैत छथि जे अम्बाक कथा, शिखण्डीक कथा आ हुनकर आधुनिक जीवन तीन अलग जीवन अछि; सहज दर्शकीय 'उदाहरण' बनएबाक लेल तीनूक अविचारित एकीकरण अनुचित। आयोजक नव शीर्षक लएबाक वचन दैत अछि, मुदा अभ्यासक अनुमति एखन नहि भेटैत। पछाति पर्ची बदलिए 'शिखण्डी: अपन वचन, अपन युद्ध' बनैत अछि; तखनहुँ शिक्षक रुहानीकेँ आधुनिक रूप कहबाक आग्रह करैत अछि, जकरा ओ फेर अस्वीकार करैत छथि। अतएव शीर्षक-सुधार आ वास्तविक प्रतिनिधित्व-सहमति अलग परिणाम छथि। रुहानी प्रदर्शनक भाषा आ बच्चासभक सहमति जाँचि सकबाक बात स्वीकारैत छथि, अपन निजी जीवनकेँ पात्रक प्रमाण बनएबाक नहि।

नाटकक अभ्यासमे बच्चाक प्रश्न उठैत अछि जे शिखण्डी केवल आगाँ ठाढ़ छलाह की अपन सक्रिय निर्णय लेने छलाह; रुहानी ओहि प्रश्नकेँ दबेबाक बदला भूमिका, निर्णय आ परिणामक अलग सूची बनबाबैत छथि। रोचक ई जे उपन्यास स्वयं अपन अन्तर्पाठीय आलोचनाक सम्भावित दोषपर टिप्पणी करैत अछि। जँ आलोचक आधुनिक रुहानीकेँ 'आजुक शिखण्डी' कहि सहज अभिप्रेत रूपक बना देत, तँ पाठ-भीतर रुहानीक स्पष्ट अस्वीकारकेँ उल्लङ्घन करत। ई आत्मालोचनात्मक संवाद आख्यानक सारणीक 'सम्बन्ध' शब्दक सीमा स्पष्ट करैत अछि : अन्तर्पाठीय प्रतिध्वनि जीवनक जैविक/नैतिक समतुल्यता नहि। कथानक-अध्ययनक दृष्टिसँ ई पात्रक कथनाधिकार बचएबाक प्रासङ्गिक उपलब्धि अछि।

भीष्मक पतन : रणक अनेक अभिकर्ता आ परिणामक अपूर्णता

युद्धपूर्व शिखण्डी सेनाक भोजन, घायलक निकासी, रथ, घोड़ा आ बाणक हिसाब अपन जिम्मेदारी मानैत छथि; 'अम्बाक बदला'क एकमात्र आकृति बनब अस्वीकार करैत छथि। अर्जुन हुनकर संग रणनीति पर सहमति करैत छथि, मुदा अपन बाणक उत्तरदायित्व स्वयं स्वीकारैत छथि। भीष्म शिखण्डीपर अस्त्र नहि उठेबाक निर्णय अपन पुरान धारणाक आधारपर कायम रखैत छथि। एहि त्रिकोणमे रणनीति, व्यक्तिक वर्तमान क्षमता आ अटल पुरान

वचन अलग उद्देश्य छथि। दशम दिन शिखण्डी आगाँ बढ़ैत छथि, बाण चलबैत छथि, भीष्म प्रतिरोध नहि करैत छथि; अर्जुनक बाण निर्णायक चोट दैत अछि आ भीष्म शरशय्यापर गिरैत छथि। कथनक घटना-पञ्जी ई चार कारण-कर्तव्य अलग राखैत अछि, तें शिखण्डी एकल ‘हत्यारा’ अथवा निरर्थक ‘ढाल’—दुनू संक्षेप गलत होएत।

युद्धक्षेत्रमे सैनिकसभ अलग-अलग एकनामी विजय-घोषणा करबाक चेष्टा करैत छथि; शिखण्डी आग्रह करैत छथि जे जे देखल गेल से लिखल जाए : ओ स्वयं रथसँ आगाँ बढ़लाह आ बाण चलौलनि, भीष्म हुनका शस्त्र नहि चलौलनि, अर्जुनक बाण भीष्मकेँ गिरौलक। भीष्म शरशय्यापर जीवित छथि; ‘भीष्म मरि गेलाह’ एहि अध्यायक गलत निष्कर्ष होएत। शिखण्डी घायल सैनिकक नाम आ घोड़ाक काजक लेखा रखबैत छथि; भीष्मक पतनकेँ अम्बाक जीवनक पूर्ण न्याय कहलासँ अस्वीकार करैत छथि। रणक गाथा परिणामक सर्वसमाधान नहि; शरशय्याक जीवित समय आ आगामी युद्ध बचल अछि। ई अध्याय भीष्मक इच्छामृत्यु-विषयक पूर्ववार्ता (अध्याय ६२) केँ दूरसँ फेर अर्थ दैत अछि।

अस्पतालक पुरान पाँख : प्राप्ति-पत्र, प्रयोग-स्थल आ सुरक्षा

आधुनिक खण्डमे राघव सिंह काठक नमूना, जंग लागल कब्जा आ तीन प्राप्ति-पर्ची लऽ अबैत छथि। हुनकर फर्मक गोदाममे सामग्री पहुँचबाक रसीद अछि, कुन कोठरीमे ओकर प्रयोग भेल से प्रमाणित नहि। ललित बरही नमूनाक भीजल/सुखल अवस्थाक भार-क्षमताक भेद बतबैत छथि; राघव प्रयोगशालाक प्रमाण देबाक वचन दैत छथि, मुदा छोट टुकड़ासँ पूरा पाँखक छतक सुरक्षा घोषित नहि करैत। अदिति नमूना-बैगपर स्रोत, तिथि आ प्राप्तकर्ताक हस्ताक्षर अलग रखबबैत छथि। एहि ठाम भौतिक प्रमाणक अनुक्रम अछि : सामग्री आपूर्ति → स्थानपर स्थापन → परिस्थिति-विशेष भार-सहनशीलता → रोगीक सुरक्षा। पहिल तथ्य सिद्ध होएबाक अर्थ चारू स्वतः सिद्ध भऽ जाएब नहि।

गोदामक नवयुवक किछु देखल/सुनल होएबाक सङ्केत दैत अछि, मुदा एखन प्रत्यक्ष बयान पूरा नहि दैत। नैरा समय आ ठाम अपन शब्दमे लिखबाक तथा प्रत्यक्ष आ परोक्ष सूचना अलग रखबाक सुझाव दैत छथि; राघव ओकरा अनुमानसँ रिक्त ठाम नहि भरबाक कहैत छथि। साँझ राघव फर्मक मुहर केवल प्राप्ति-पत्रक तथ्यपर लगबैत छथि, प्रयोग-स्थानक अनिश्चित पाँतिपर नहि। अदिति रोगी हटएबाक सम्भावित सुरक्षा-व्यवस्था आ औजार-सूची जाँचबाक आवश्यकता बतबैत छथि। अन्तिम पाठांशमे राघवक भतीजा पुरान बहीक एक तिथि आ दोसर पन्नाक हस्ताक्षरक विरोध बतबैत अछि; राघव मूल रजिस्टर अगिला दिन देखएबाक बात कहैत छथि। हस्ताक्षर जाली सिद्ध भेल, छत असुरक्षित प्रमाणित भेल, अथवा सामग्री गलत कोठरीमे लगल—एहि तीनूमे सँ कोनो निष्कर्ष एखन उपन्यास नहि दैत। अनिश्चितता दर्ज कएल गेल अछि; निर्णायक निरीक्षण शेष अछि।

‘मिठुआ’क पर्ची सेहो एखन मिथुनक प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि बनल। तीन अलग सम्भावित पाठ, नाव-भाड़ाक अपूर्ण तिथि आ वृद्धक सुनल बयानक सम्हार पूर्वाध्यायक खोजक निरन्तरता अछि। एतय आधुनिक पंजीक उदाहरण युद्धक इतिहासक सशर्त तुलनासँ जुड़ैत अछि : घटनामे कएक व्यक्ति योगदान करैत छथि, कागदमे एक नाम अंकित भए गेलासँ दोसरक निर्णय अथवा श्रम मेटा देब असत्य होएत। मुदा युद्धक बाण आ अस्पतालक कब्जाक

साक्ष्य समान प्रकृतिक नहि—एक जगह कथावाचक निर्मित युद्ध-दृश्य देत छथि, दोसर जगह पात्रसभ अपूर्ण कागद जाँचैत छथि। ई अन्तर संग राखलासँ मात्र तुलना उपयोगी बनैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, अस्वाभाविकता आ निष्पक्ष मूल्यांकन

२९ पाठांशक अध्यायमे शिखण्डीक बाल्यसँ कुरुक्षेत्रक दशम दिन धरि दीर्घ कथा-सारांश, बीच-बीचमे विस्तृत दृश्य, आ विदेहपुरक नाटक तथा अस्पताल-जाँचक छोट समकालिक अनुक्रम अछि। कथावाचक शिखण्डी, विवाहिता राजकुमारी, स्थूणाकर्ण, रुहानी, राघव, अदिति आ भतीजाक सीमित अनुभूति अलग दैत छथि। पौराणिक स्त्री–पुरुष अवस्थाक विनिमय, कुबेरक शाप आदि आधुनिक भौतिक-विज्ञानक प्रत्यक्ष प्रमाणक रूपेँ नहि, कथासंसारक पुरान अलौकिक नियमक रूपेँ अबैत अछि। उत्तरशास्त्रीय ‘अस्वाभाविक आख्यान’क उपकरण एतय शर्तसहित उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ई विश्लेषणक हेतु कथा-भितरक मानल नियम आ आधुनिक यथार्थक नियमक अन्तर प्रकट करबाक चाही; केवल असम्भव दृश्य देखिकऽ ‘भ्रम’ घोषित करब दुराग्रह होएत।

दृश्यक मुख्य ध्वनि 'अपन कर्मक नाम' अछि : टूटल बाणक मरम्मति, स्थूणाकर्णक स्वीकृति, दशार्णराजक पुत्रीक पत्र, अर्जुनक अलग बाण, रूहनिक अपन परिचय आ राघवक सीमित मुहर। ई विविधता महाभारतीय वीरगाथाकेँ व्यक्तिक स्वयं-कथन आ सामूहिक उत्तरदायित्वक संरचनामे फेर लिखैत अछि। दू सीमा अवश्य अछि। पहिल, कथा पात्रसभकेँ बारम्बार अत्यन्त स्पष्ट सहमति-नियमक आधुनिक शब्द दैत अछि; पाञ्चाल–हस्तिनापुरक ऐतिहासिक/पौराणिक भाषिक दूरी कम भऽ सकैत अछि। दोसर, युद्धक पैघ घटनाक गति किछु पाठांशमे संकुचित भऽ गेलासँ शिखण्डीक वास्तविक संग्रामक जटिलता आ अन्य सैनिकक स्वतन्त्र चेतना अपेक्षाकृत अल्प स्थान पबैत अछि। तथापि घायल घोड़ा, सारथी, सैनिकक नाम आ स्थूणाकर्णक अपन हानि कथा-विन्यासक एकनाम वीर-इतिहासक विकल्प बनैत अछि।

भीष्म-पर्वक पहिल चारि अध्याय : तुलनात्मक आलोचनात्मक निष्कर्ष

वचन–सहमति–परिणामक त्रिसम्बन्ध

अध्याय ६१ मे शान्तनु गङ्गाक शर्त स्वीकारैत छथि, बिना पूरा परिणाम जानने; आठम शिशु पर प्रश्न करबाक साहस हुनकर चुप्पीक मूल्य फेर बदलैत अछि। अध्याय ६२ मे देवव्रत पिताक मौनक अनिश्चित कारणक अनुमानसँ अटल प्रतिज्ञा करैत छथि; सत्यवती अपन विवाहक मूल्यक रूपमे त्यागक ऋण-लेखन अस्वीकार करैत छथि। अध्याय ६३ मे भीष्मक प्रतिज्ञा अम्बाक उत्तरदायित्व सम्बन्धी प्रश्नक पर्याप्त उत्तर नहि बनैत; अम्बा तीन घटना आ अनेक निर्णयक दाम अलग रखैत छथि। अध्याय ६४ मे शिखण्डी स्थूणाकर्णक शर्त, दशार्णराजक पुत्रीक इच्छा, अर्जुनक अलग रण-कर्म आ रुहानीक अलग जीवनक दायरा मानबाक आग्रह करैत छथि। क्रममे शर्तक प्रारम्भिक नियम निजी जीवनक अन्ततः अपर्याप्त आश्वासन बनैत अछि; अन्तिम नैतिक कसौटी शब्दक दृढ़ता नहि, प्रभावित व्यक्तिसभक स्वतन्त्र निर्णय आ परिणामक वास्तविक वितरण अछि।

कथनकाल आ दृष्टिकेन्द्रक वितरित तन्त्र

गङ्गा-प्रसंगमे अनेक जन्म आ एक युवक धरि समय-लोप, भीष्म-प्रतिज्ञामे कएक राजपीढ़ीक सघन सारांश, अम्बामे जीवनभरि न्याय-अन्वेषण आ शिखण्डीमे बाल्यसँ दशम युद्ध-दिन धरि काल-विस्तार अछि। आधुनिक विदेहपुरक रेखा कम कालमे फाइल, भेट आ सम्भावित निरीक्षणक ढीठ प्रतीक्षा बनैत अछि। एहि प्रतिकूल गतिमे एक संरचनात्मक तनाव अछि : प्राचीन जीवनक दशक झटपट कथनमे, आधुनिक एक प्राप्ति-पत्रक अस्पष्ट शब्दपर धीमा जाँच। ई गतिक तुलना उपन्यासक महाकाव्यीय विस्तार आ सामाजिक-प्रमाणिक विस्तारक दुई अलग स्रोत चिन्हित करैत अछि। मुदा अति बार प्रयोगसँ 'नव कागद → अलग पाँति → शेष प्रश्न'क दोहराव गति-मन्द करबाक जोखिम बनैत अछि; अध्याय ६३ क अम्बाक गाँठ आ ६४ क टूटल बाण एहि प्रक्रियाक धुनकेँ मानवीय गति दैत अछि।

कथावाचक कोणो एक पात्रक निजी ज्ञानमे स्थायी बन्द नहि छथि। अध्याय ६१ मे पाठक गङ्गाक शाप-वृत्तान्त राजा सँ पहिने जनैत अछि, आधुनिक खोजमे पाठक सेहो सुनिश्चित पहिचानसँ वञ्चित अछि। अध्याय ६२ मे राजकुमारक आन्तरिक अनुमानक उत्तर स्वयं राजा प्रश्नरूपेँ देत छथि। अध्याय ६३ मे अम्बाक लम्बा चलैत अनुभव कारणात् कथाक मुख्य दृष्टिकेन्द्र बनैत अछि; अध्याय ६४ मे शिखण्डीक स्वायत्तता बहुत स्पष्ट, मुदा स्थूणाकर्ण आ राजकुमारीक विकल्प सेहो अलग दृश्य पबैत अछि। एहि वितरित दृष्टिसँ आख्यानक नैतिक स्वर एक-पुरुषीय राजगाथासँ अलग बनैत अछि। फेरो कथावाचक कखनो-कखनो पूर्वनिर्णीत अवधारणा बुझएबाक लेल पात्रसभक वाक्य अत्यन्त सुव्यवस्थित बनबैत छथि—एकरा आंशिक उपदेशात्मकता कहब न्यायोचित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र, आख्यानशास्त्र आ विदेह समानान्तर इतिहासक उपयोग-सीमा

करुण-रसक सम्भावना गङ्गाक खाली पल्ला, शान्तनुक स्पर्श, अम्बाक दीर्घ यात्रा आ लताक कपड़ाक गाँठमे बिखरल अछि; वीरक गति शिखण्डीक निर्णय आ भीष्मक रण-कौशलमे; अद्भुतक क्षेत्र वसु-शाप, पुष्पवृष्टि आ स्थूणाकर्णक पौराणिक विनिमयमे। मुदा रस-चिह्न पहिचानल मात्र पाठक मूल्यांकन नहि। ध्वनि कहए चाहैत अछि जे छूटल नाम, टूटल धनुक, भीजल पर्ची आ यक्षक देहक ऋण कथाक प्रत्यक्ष घटना सँ बाहर व्यापक जीवन-प्रश्नक संकेत करैत अछि। औचित्यक दृष्टिसँ समकालीन नियमक शब्द प्राचीन पात्रक मुखमे कतेक स्वाभाविक, एहि प्रश्नपर सहमतिक सरल प्रशंसा नहि, कठोर साहित्यिक निर्णय आवश्यक अछि।

आख्यानगत विवेचनमे सहमति, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, प्रत्यक्ष आ शाब्दबोधकेँ एतय आलोचनात्मक उपकरण रूपेँ बरतल गेल अछि; वास्तविक तत्त्वचिन्तामणि अथवा न्यायकुसुमाञ्जलिक मूल श्लोक-समान वाक्य पात्रक संवादसँ कल्पित नहि कएल गेल अछि। ‘मिठुआ’क पठन-सादृश्यसँ मिथुनक पहिचान निष्कर्षित नहि; ‘राघवक सामग्री पहुँचल’सँ अस्पतालक छत सुरक्षित सिद्ध नहि; ‘भीष्मक वचन अटल’सँ अम्बाक इच्छाक स्थान समाप्त नहि; ‘शिखण्डी युद्धस्थलपर उपस्थित’सँ अर्जुनक बाणक तथ्य मेटि नहि जाइत। उदाहरणसभक प्रमाण-प्रकार अलग अछि, मुदा विधिक सतर्कता एक—साध्यसँ बड़ हेतुकेँ कृत्रिम रूपसँ नहि पसारब। भामतीक अध्यासक

रूपक कखनो कखनो नाम/व्यक्ति आ वचन/न्यायक भ्रम बुझएबामे उपयोगी अछि; एहन रूपकक्रेँ शाङ्कर-वेदान्तक पूरा तत्त्वार्थक समतुल्य सिद्धान्त घोषित नहि कएल जा सकैत।

विदेह समानान्तर इतिहासक पद्धतिसँ राजवंश आ युद्धक आधिकारिक स्मृति संग दासी, धाय, नाविकक भाइक घायल अँगुर, स्त्रीक पट्टा, लोहारक बाण, घोड़ाक सेवा, अस्पतालक मालवाहक आ मजदूरी-देयकेँ पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा समानान्तर इतिहासक अर्थ पौराणिक कल्पनाक प्रत्येक वाक्यकेँ प्राचीन समाजक ऐतिहासिक अभिलेख मानब नहि। लेखक द्वारा पुनर्लिखल महाकाव्यीय दृश्य सामाजिक कल्पनाशक्ति आ आलोचनात्मक प्रस्तावक साक्ष्य छथि; आधुनिक विदेहपुरक कागद कथासंसारक दस्तावेज छथि; बाह्य सामाजिक इतिहासक स्वतन्त्र सत्यापन दोसर शोधक कार्य अछि। एहि तीन स्तरक भेद सुरक्षित राखल जाए।

आगाँक कथा लेल प्रमाण-निरन्तरता

चारू अध्यायक अन्तधरि पक्का परिणाम एहि क्रममे छथि : देवव्रतक प्रतिज्ञा घोषित भेल; अम्बाक स्वतन्त्र न्याय-अन्वेषण असम्पन्न रहल; शिखण्डी रणनीतिक युद्धमे भाग लेलनि, अर्जुनक बाण भीष्मकेँ शरशय्यापर पहुँचेने अछि, भीष्म जीवित छथि; आधुनिक फाटक पूर्ण खुलल नहि, रमेशक असहमति बचल अछि; ‘मिठुआ’क नामक संग मिथुनक पहिचान सिद्ध नहि; अस्पतालक सामानक पहुँचबाक पर्ची भेटल मुदा प्रयोग-स्थान आ छतक भार-सुरक्षा अप्रमाणित; राघवक भतीजा मूल रजिस्टर अगिला दिन अनबाक प्रस्ताव रखैत अछि। एहि सत्यापन-बिन्दुसभकेँ अध्याय ६५ सँ आगाँ स्थायी कथा-निरन्तरताक पञ्जीमे राखल आवश्यक अछि। यांत्रिक परिवर्तन-सङ्केत एहि परिणामसभक स्थान नहि लऽ सकैत।

अध्याय ६५ — अस्पतालक पुरान पाँख

कटोरीमे टपकैत पानि : घटनाक आकार आ कारणक अनिश्चितता

अध्याय पुरान अस्पताल-पाँखक छतसँ टपकैत एकटा छोट बूँदसँ शुरू होइत अछि। सफाइ करनिहार स्त्री कटोरी रखि काजपर बढ़ि जाइत छथि; सलमा पिच्छर होएबाक खतरा देखिकऽ पीयर सुरक्षा-चिह्न लगबैत छथि। बाह्य घटनाक परिमाण मामूली बुझाइत अछि, मुदा कटोरी भरबाक क्रम चिकित्सकीय व्यवस्था, मजदूरी, भवनक इतिहास आ नगर-प्रशासनक उत्तरदायित्वकेँ एक ठाम अनैत अछि। छत भीजल अछि; रिसावक स्रोत पाइप, जोड़ अथवा बाहरी जलनिकासमे कोन, से ज्ञात नहि। ‘पानि टपकैत अछि’ प्रत्यक्ष, ‘फलाँ पाइप दोषी’ अनुमान—ई भेद प्रथम पाठांशे स्थापित अछि। रचनाक कौशल ई जे नाटकीय भवन-पतन देखेनाइ बिना पाठककेँ एक वास्तविक तात्कालिक जोखिमक भीतर पहुँचा दैत अछि। कटोरीक पहिल आ अन्तिम उपस्थिति एक घेरदार वस्तु-बिम्ब बनबैत अछि, मुदा अन्तिम बेर सेहो रिसावक कारण निश्चित नहि होइत। आरम्भिक चिह्न पाठकक भय जगबैत अछि; पुनरागमन संस्था द्वारा जोखिमक सीमित नियन्त्रण आ शेष अपूर्णताक स्मरण करबैत अछि।

शीतल देवीक उपचारक नली, सूजल पएर आ चलबाक इच्छा रोगीक आत्मनिर्णय आ शरीरक चिकित्सकीय सीमा बीच वास्तविक तनाव बनबैत अछि। ‘हम चलि सकैत छी’ कहब व्यक्तिगत इच्छा अछि, सुरक्षित स्थानान्तरणक प्रमाण नहि। अनिरुद्ध अस्पतालक नक्शामे चौड़ी देखाओल पश्चिमी सीढ़ीक आधा हिस्सा औषधि-पेटीक कोठरी

बनि गेल देखैत छथि; बारह खाट गनबाक संग-संग उपकरण, लगातार उपचार आ दू कर्मचारीक सहायता चाहनिहार व्यक्तिक अलग सूची बनबैत छथि। स्थल-नक्शा, वर्तमान भौतिक बाट आ उपचारक आवश्यकता तीन समानान्तर पञ्जी बनैत अछि। खाली कोठरी उपलब्ध होएब चिकित्सा-स्थान उपलब्ध होएबाक पर्याय नहि। सलमा दू श्वास-सहायता चाहनिहार रोगी, एक चलैत उपचारमे वृद्ध आ बच्चाक मायकेँ संग रखबाक चाहक अलग विवरण बन्द चिकित्सकीय पन्नामे राखैत छथि। एहि गुप्त आ सार्वजनिक सूचीक भेद रोगीक पहचानक अधिकारक रक्षा करैत अछि, अस्पतालक उत्तरदायित्व मेटबैत नहि।

सामग्रीक प्रमाण-शृंखला आ श्रमक देहगत ज्ञान

पाँचम पाठांशमे अदिति स्वयं अपन पुरान ‘सीमित मरम्मतिक दोष’क अनुमान छोट बुझैत छथि, मुदा पुरान पाँति मेटबाक बदला तिथि-सहित संशोधन लिखबाक निर्णय लैत छथि। विज्ञानक विश्वसनीयता एतय पहिल अनुमान कहियो गलत नहि होएबमे नहि, गलतीक इतिहास खुला रखबाक प्रविधिमे अछि। राघवक भतीजा अपन आँखिसँ नहि देखने सामग्री-व्यवहारपर हस्ताक्षर करबासँ डरैत अछि; राघव स्वयं फर्मक हित लेल मनगढ़न्त देखल बात कहबासँ रोकैत छथि। किन्तु युवकक सुरक्षित पूर्ण बयान एखन सुनिश्चित नहि भेल; ओकर मौनकेँ दोष-स्वीकृति मानब असङ्गत होएत। मीना साहक दू पात्रक मरम्मति, गोदामक प्राप्ति-मोहर आ ‘काम समाप्त’ लिखल अधिकारी-पत्र तीन भिन्न प्रमाण-वस्तु छथि। तेसर पर्चीमे उपयोग-स्थल रिक्त अछि; वस्तु प्राप्त भेल, वस्तु लगाओल गेल, आ भवन सुरक्षित भऽ गेल—एहि तीन प्रतिज्ञामे कोनो स्वतः व्याप्ति नहि। एतय उपन्यासक प्रमाण-पद्धति ठोस आ दृश्यक वस्तुसँ निकलैत अछि; शास्त्रीय पदवली उपरि सँ आरोपित करबाक आवश्यकता नहि।

गोमती बोरा उठेलाक देहगत अनुभव मानैत छथि, मुदा भीतर चून अथवा दोसर मिश्रण छल, आ बोरा कतए उपयोग भेल, ई नहि जनैत छथि। हुनकर पिठ्ठी वजनक साक्षी अछि, निर्माण-सामग्रीक रासायनिक गुणवत्ताक नहि। ललित बरहीक उतार-पट्टा आँखिसँ देखि भार-सुरक्षाक प्रमाणपत्र देबासँ अस्वीकार करब एकटा सक्रिय पेशागत नैतिक निर्णय अछि; एहि निर्णयक आर्थिक दाम पहिने ठेका छूटबाक रूपमे ओ चुकौने छथि। खाली खाट पुरान सीढ़ीक कोनामे अटकैत अछि —ई स्थल-परीक्षण अछि, मुदा रोगी, उपकरण आ कर्मचारिसहित पूर्ण निकासक सफल अभ्यास नहि। एहि दृश्यसभमे कारीगरक सावधानी प्रशासनिक विशेषज्ञताक विरोधी नहि, ओकर अनिवार्य सहयोगी बनैत अछि। कथनकालक दृष्टिसँ चारि वर्ष पुरान बिल, पुरान बोरा, पहिने अवरुद्ध उतार-पट्टा आ वर्तमान निकासी एके ठाम अबैत अछि; ई समय-धारासभ कागदक माध्यमसँ उपस्थित छथि, स्वतंत्र प्राचीन महाकाव्यीय दृश्य एहि अध्यायमे नहि अछि। कथात्मक विन्यासमे ‘द्विकालीन’ सङ्केतकेँ एतय शाब्दिक अर्थमे लागू करब अनुचित होएत।

धुलाईक नाली, हाथधोअन, छतसँ टपकैत पानि आ बाहरी गड्ढाक चारि सम्भव स्रोत कारणक जाल बनबैत अछि। मीना पूर्वजसँ सुनल सीप–चूनक स्मृतिपर भरोसा करैत छथि, मुदा पदार्थ-परीक्षणक ठाम लोकस्मृति नहि देबाक आग्रह करैत छथि। अदितिक स्वतंत्र प्रयोगशाला आवेदन एहि स्थानपर उपन्यासक अनुमान-विवेककेँ संस्थागत काजमे बदलैत अछि। तारा आ हीराक जलनाप सेहो दीवारक सम्पूर्ण दोष सिद्ध नहि करैत। नदी आ अस्पताल

केवल प्रतीकात्मक समानता नहि; जलनिकासक भौतिक सम्बन्ध जाँचक विषय अछि। जल–पर्यावरणीय आख्यानशास्त्र लेल ई जरूरी भेद अछि : पानि कथाक दृश्य-सज्जा नहि, उपचार, सुरक्षित बाट, मजदूरी आ इमारतक जोखिम प्रभावित करैत सक्रिय परिस्थिति अछि; तथापि प्रमाणित कारण बननेसँ पहिने ओकरा दोषी घोषित नहि कएल गेल।

रोगीक स्थानान्तरण : अपूर्ण सफलता आ श्रमक पुनर्वितरण

जमुना देवी अपन जीवन बचौने अस्पतालक प्रति कृतज्ञता मानैत छथि, मुदा पुरान दीवारक जाँच आ शीतलक सुरक्षा सेहो माँगैत छथि। सेवा प्राप्त करब आलोचना करबाक अधिकार समाप्त नहि करैत। नगरबैठकमे ‘सभ रोगी स्थानान्तरित’ लिखि ताला लगा देबाक प्रस्ताव भाषिक आदेश आ वास्तविक उपचार बीचक फाँक उजागर करैत अछि। अनिरुद्ध तीन श्रेणी तैयार करबैत छथि—एखन कम जोखिममे रहि सकनिहार, प्रशिक्षित व्यवस्था भेटिते हटाओल जाएबला, आ तत्काल प्राथमिकता चाहनिहार। सार्वजनिक सूचना मे संख्या आ व्यवस्था; निजी फाइलमे नाम। एहि वर्गीकरणकेँ अन्तिम चिकित्सकीय निर्णयक जगह सामान्य नीतिसूची नहि बुझबाक चाही : प्रत्येक खाटक चिकित्सकीय स्थिति समीक्षा मागैत अछि।

शीतलकेँ नव पाँखमे उपकरण आ प्रशिक्षित दल उपलब्ध भेलापर स्थानान्तरित कएल जाइत अछि, हुनकर प्रश्न सुनल जाइत अछि, हस्तान्तरण दर्ज होइत अछि। ई अध्यायक सिद्ध सकारात्मक परिणाम अछि। मुदा शेष वृद्ध रोगीक विकल्प एखन अपूर्ण; अस्थायी निगरानी आ आपात योजना राखि तुरन्त हटेबाक आग्रह रोकल गेल। ‘एक रोगी हटलीह’सँ ‘सम्पूर्ण पाँख खाली’ निष्कर्ष नहि। उर्मिलाक विशेष कपड़ा घुमाउल अतिरिक्त दू चक्कर सुरक्षाक अव्यक्त खर्च प्रकट करैत अछि। ‘आपदाक समय सहयोग’ कहलासँ हुनकर अतिरिक्त घड़ी निःशुल्क नहि भऽ जाइत। सलमा ढुलाईक समय आदेशमे जोड़ैत छथि, मुदा भुगतानक अन्तिम निपटान नहि भेल। मीनाक देयक अलग प्राप्ति-पत्र भेटैत अछि; भुगतान एखन बाकी अछि। एहि ठाम विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि अत्यन्त प्रासंगिक : अस्पतालक आधिकारिक ‘मरम्मति’ कथा जँ मजदूर-पीठ, धुलाई-घण्टा, कपड़ाक जोखिम आ कारीगरक अनुपस्थित हस्ताक्षरक बिना लिखल जाए तँ अधूरी रहत।

आख्यान-विन्यास, रस आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायकेँ चारि क्रममे पढ़ि सकैत छी : पहिल दृश्य जोखिमक पहिचान, सामग्री आ निकासक अनेक साक्ष्यक टकराव (६–२०), शीतलक वास्तविक स्थानान्तरण आ मजदूरीक पुनर्गणना (२१–२४), तथा संशोधित प्रतिवेदन आ शेष रोगीक असम्पन्न सुरक्षा (२५–३०)। कथा मुख्यतः एक दिनक दृश्यकालमे चलैत अछि; पुरान बिल आ काजक पर्चीसँ पूर्वकाल दस्तावेजी पुनरागमन रूपमे उपस्थित होइत अछि। दृष्टिकेन्द्र सलमाक संवेदनशील परिचर्या, अदितिक परीक्षण-विवेक, अनिरुद्धक उपचार-जोखिम, उर्मिलाक मजदूरी आ मीनाक पेशागत बचाव बीच सरकैत अछि। सर्वज्ञ कथावाचक अनेक लोकक सीमा सूचित करैत छथि, मुदा एकमे सँ ककरो पूर्ण समाधान दैत नहि। करुणक केन्द्र खाटपर बैसल शीतल आ वृद्ध रोगी छथि; शान्त अनुशासनक भाव कटोरी, पीयर निशान आ सुरक्षित हस्तान्तरणमे।

उपलब्धि ई अछि जे ‘निरीक्षण’ स्वयं कथात्मक कर्म बनैत अछि। सीमा सेहो स्पष्ट अछि : धेरै पात्र अलग-अलग वाक्यमे प्रत्यक्ष–अनुमान–पुष्टिक एक्के सिद्धान्त समझबैत छथि, ताहिसँ संवाद कखनहुँ स्वाभाविक मनोवेगक बदला तकनीकी सुनवाई जेकाँ लगैत अछि। मीना, गोमती, ललित, तारा, अदिति आ नैराक प्रमाण-विभाजक भाषा मे पर्याप्त साम्यता अछि; पात्रक व्यवसाय बिम्ब अलग अछि, मुदा वाणी आ वैचारिक गठनक अन्तर आओर पैघ भऽ सकित। तथापि उर्मिलाक भोजन-विराम, शीतलक चप्पल आ जमुनाक दवाइ धारणात्मक गद्यकेँ जीवनक असुविधासँ बाँधने रखैत अछि। आलोचनात्मक निष्कर्ष : अस्पतालक सुरक्षा-व्यवस्था आरम्भ भेल, एकटा सुरक्षित स्थानान्तरण सम्पन्न भेल, विस्तृत जाँच आवश्यक घोषित भेल; निर्माण-दोषक अन्तिम कारण, शेष रोगीक पूर्ण निकासी आ श्रमिकक बकाया-संशोधन नहि सम्पन्न भेल।

अध्याय ६६ — कृष्ण अर्जुनक विराम

आदेशक कागदसँ कुरुक्षेत्रक प्राचीन विराम धरि : कथनकालक पुनर्विन्यास

अध्यायक पहिल दृश्य भोर साढ़े पाँच बजे अस्पतालक पीयर चेतावनी-पट्टी आ उर्मिलाक रोकल कपड़ा-गाड़ी अछि। चौकीदार ‘तुरन्त पूर्ण खाली’ लिखल पन्ना देखबैत अछि, जखन कि अनिरुद्धक पछिला रातिक चिकित्सकीय निर्णयमे किछु स्थानान्तरण प्रशिक्षित टोली आ उपकरणक उपलब्धतापर निर्भर छल। एहि विसंगतिक कारण नैराक पहिल प्रश्न अछि : कथनक आदेश सचमुच घटल घटना कैँ कहल करैत अछि की ओकरा घटि गेल घोषित करैत अछि? कर्मचारी मुहर लगौने विवाद समाप्त चाहैत अछि, मुदा जोखिम स्वीकार कएने बिना झूठ ‘पूर्णता’ स्वीकार नहि कएल जा सकैत। एतय कागदक वाक्य कालक वास्तविक अवस्थासँ आगाँ दौड़ैत अछि। यही क्षणपर कथाकार अचानक काल-स्तर बदलैत छथि : कुरुक्षेत्रमे युद्ध आरम्भ होएबाक भोर, अर्जुन दुनू सेनाक बीच रथ रोकबैत छथि। पाठक पहिनुक अध्यायमे भीष्मक पतन देखि चुकल होएत, मुदा एतय कथा युद्धक आरम्भक क्षणमे लौटैत अछि। उपन्यास स्वयं एहि काल-विलोमकेँ चिह्नित करैत अछि; तेँ एकरा अवधानभ्रंश नहि, सुविचारित पुनःस्थितिकरण मानल जाएब चाही।

अर्जुन पहिने ध्वज देखैत छथि, फेर ओहि ध्वजक नीचाँ भीष्म, द्रोण, भाइ-बन्धु आ अनाम युवा सैनिकक देह। ध्वज राजकीय पक्षक चिह्न अछि; ओहिसँ नीचाँक देह युद्धक दाम। एक अनाम सारथीक घोड़ा सहलाएब कथाक दृष्टिकेन्द्रकेँ नायकसँ गैरनायक धरि पसारैत अछि। कृष्णक संग संवादमे करुणा बनाम निष्क्रियता, देह–आत्माक विचार बनाम घायलक कराह, निष्काम कर्म बनाम परिणामक उत्तरदायित्व, स्वधर्म बनाम विवेकहीन भूमिका क्रमशः उठैत अछि। उपन्यास एहि प्रसंगकेँ गीता अथवा महाभारतक संस्कृत पाठक अक्षरशः अनुवादक रूपमे नहि, आधुनिक नैतिक चिन्ताक लेल पुनर्रचित काल्पनिक शास्त्रीय दृश्य रूपमे बरतैत अछि। तेँ कृष्ण–अर्जुनक संवादक शब्दकेँ मूल गीता सँ उद्धृत प्रत्यक्ष शास्त्रीय वचन मानब पाठालोचनात्मक भूल होएत।

कर्तव्य, करुणा आ परिणाम : दार्शनिक पुनर्पाठक उपलब्धि

अर्जुनक संकोचकेँ केवल भीष्मसँ व्यक्तिगत भय कहि नहि बुझाओल गेल; गुरु, पितामह, युद्धोत्तर परिवार आ सभ पक्षक मृतकक प्रश्न हुनकर अनुभवमे अछि। कृष्ण कहैत छथि जे करुणा जँ निर्णयक समस्त क्रिया रोकि

दैत अछि तँ भविष्य दोसर अनियन्त्रित शक्तिक हाथमे जाएत; अर्जुन प्रतिप्रश्न करैत छथि जे ‘फलसँ अनासक्ति’ परिणामक दायित्वसँ छुट्टी बनि सकैत अछि की। कृष्ण एहि सम्भावनाकेँ स्पष्ट अस्वीकार करैत छथि। उपन्यासक नैतिक केन्द्र एतय ‘कर्तव्य कर, फल जे हो’क सरल सूत्र नहि, निर्णयक दायित्व सहित सक्रियता अछि। एहि रूपान्तरणपर एक आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि : प्राचीन गीता-तर्कक विषम दार्शनिक आयाम आधुनिक प्रशासनिक उत्तरदायित्वक भाषामे अत्यधिक समेटल जा रहल अछि की? लेखक स्वयं आत्मा–देह, मोह–विवेक, स्वभाव–भूमिका आ निष्काम कर्मक बीच एहि असहमतिकेँ जीवित रखबाक प्रयास करैत छथि। मुदा कृष्णक आधुनिक उत्तरदायित्व-वाक्यसभकी शास्त्रीय मूल-परम्पराक सूक्ष्म भेदक अलग परीक्षण बाकी रहत; उपन्यास स्वयं ओकर अंतिम शास्त्रीय व्याख्या नहि।

अर्जुन शिखण्डीक स्वतंत्र मतकेँ सेहो याद करैत छथि; कृष्ण ओहि योद्धाक प्रतिनिधि बनबाक दावा नहि करैत। ई छोट क्षण भीष्म-पर्वक पछिला अध्यायसँ संवाद बनबैत अछि। जे शिखण्डी अपन कर्मक नाम पर स्वत्व रखबाक आग्रह कएने छथि, हुनकर जगह अर्जुन अथवा कृष्ण बोलि नहि सकैत। अर्जुन धनुक उठेनाइकेँ वीर-घोषणासँ पहिने परिणामक सम्भावित गलतीसहित जिम्मेदारी मानैत छथि। मुदा पाठककेँ ध्यान रखबाक अछि : एहि अध्यायमे कुरुक्षेत्रक युद्धक सम्पूर्ण हिंसा उचित सिद्ध कएल गेल, एहन दावा नहि अछि। कथन विन्यास प्रश्नक तर्क प्रस्तुत करैत अछि; इतिहासक अपराजेय सिद्धान्त नहि।

अस्पतालक निर्णयमे धर्मक ‘टुकड़ा’ नीतिक प्रमाण नहि

समकालीन विदेहपुरमे एक युवक मोबाइलपर युद्धक वाक्य देखबैत रोगीकेँ बलपूर्वक हटाएबाक समर्थन करैत अछि। नैरा शास्त्रीय उद्धरणक ‘टुकड़ा’ आ अस्पतालक अधिकारपूर्ण आदेशक बीच अपर्याप्त हेतु देखबैत छथि। अनिरुद्ध खतरा छोट नहि कहैत छथि, मुदा उपकरण काटि रोगी धकेलबाक विरोध करैत छथि; सलमा प्रशिक्षित आपात निकासी आ विरोध-दमनक बल अलग करैत छथि। तीन दस्तावेज—दृश्य जोखिम, रोगी-स्थानान्तरणक चिकित्सकीय सूची, आ अधिकारीक अधिकार —एके मुहरसँ प्रमाणित नहि कएल जा सकैत। अन्ततः ‘पूर्ण खाली’ आदेश फेर लिखल जाइत अछि : तत्काल जोखिमवला भागमे प्रवेश सीमित, उपचार सुनिश्चित कऽ चरणबद्ध स्थानान्तरण, प्रशिक्षित टोली, परिवारकेँ सूचना, आपत्तिक नामित अधिकारी। ‘बलपूर्वक’ पद हटैत अछि; ई निश्चित, मापल प्रशासनिक परिवर्तन अछि। तथापि अस्पताल रातोरात सुरक्षित भेल नहि, शेष रोगीसभक चिकित्सकीय स्थानान्तरण चलि रहल अछि। एहि भेदकेँ कथानकक वास्तविक फलित अवस्था मानब चाही।

नव पात्र देवी गोंडक प्रवेश एहि व्यापक तर्ककेँ घर आ संस्थाक छोट स्तरपर परखैत अछि। पहिल प्रशिक्षण-दिन हुनकर नाम तैनाती-पंजीमे नहि भेटला सँ प्रवेश रुकैत अछि; केन्द्रक मुहर आ प्रशिक्षकक उपस्थिति जाँचि हुनका निरीक्षण-आधारित साफ सामग्री गनबाक काज भेटैत अछि। देवी स्पष्ट करैत छथि जे ओ चिकित्सक नहि, प्रशिक्षणमे छथि; ई आत्मसीमा-स्वीकार रोगीक परिवारकेँ गलत भरोसासँ बचबैत अछि। बारह पट्टी-पैकेट, दू सीलबन्द डिब्बा आ तीन घण्टाक अभ्यासक रसीद हिनकर सीखल काजक प्रमाण अछि; अतिरिक्त ढुलाईक भुगतान स्वीकृति अलग। परिवारमे मायकेँ देखभालक व्यवस्था आ भाइकेँ समय बाँटबाक प्रस्ताव तत्काल पूर्ण

समानता नहि देत, मुदा देवी प्रशिक्षण छोड़बाक कागदपर हस्ताक्षर नहि करैत छथि। एतय स्त्रीक कर्मस्वातन्त्र्य अर्जुनक युद्ध-निर्णयक प्रतिरूप नहि, अपन विशिष्ट आर्थिक–पारिवारिक संघर्ष अछि।

मिथुनक खोजक ‘मिठुआ’ पर्ची, अपूर्ण भाड़ा-तिथि आ वृद्धक सुनल आवाज फेर अबैत अछि। नैरा तीनू स्रोतक मिलान बिना एक बच्चाक उपस्थिति घोषित नहि करैत छथि; लता खोजक आवश्यक जानकारी सार्वजनिक होएबाक अनुमति दैत छथि, मुदा निजी भावुक वाक्य प्रकाशित नहि होएत। दूर घाटसँ लोहेक दू चोट सुनाइत अछि; महेशक फाटक-सम्बन्धी अनुमान नैरा बिना स्रोत देखल दर्ज नहि करैत। ई अन्तिम श्रवण-अनिश्चितता अगिला अध्यायक कारणात्मक सूत्र अछि : कथाक एक खण्ड अस्पतालक झूठ आदेशक सुधारमे बन्द होइत अछि, दोसर खण्ड सुनल आवाजक गलत निश्चितता जाँचबाक लेल खुलैत अछि।

कथन-आवृत्ति, रस आ असहमतिक कलात्मक मूल्य

अध्यायमे तीन स्पष्ट काल-संगठन छथि : भोरक अस्पताल (१–२), प्राचीन युद्धपूर्व दीर्घ दृश्य (३–१४), फेर आधुनिक भोर–दोपहर–साँझ–राति (१५–३२)। प्राचीन भाग मे तर्कसंगत संवादक कारण दृश्यकाल विस्तृत भऽ जाइत अछि; आधुनिक भागमे बैठकक निर्णय, देवीक प्रशिक्षण, घरक विवाद आ मिथुनक खोजक मध्यम अवधि अछि। करुणा आ वीरता एक-दोसराक विरोधी रस नहि बनैत; अर्जुनक ढील डोरी आ वृद्ध रोगीक डरल आवाज दूनू विवेकपूर्ण काजक आवश्यकता बनबैत अछि। कथनक प्रमुख उपलब्धि—निर्णय नहि लेब सेहो परिणाम उपजबैत अछि, मुदा निर्णय लेबासँ पहिने प्रभावित लोकक जीवन गणना चाही। आलोचनात्मक सीमा—कृष्ण, नैरा, अनिरुद्ध आ देवीक तर्क अत्यन्त व्यवस्थित, कोनो-कोनो ठाम आधुनिक नीति-दस्तावेजक समान स्पष्ट सुनाइत अछि; नैतिक जटिलताक संघर्ष संवादमे समाधानपूर्वक सजि जाइत अछि। तथापि देवीक माय, शीतलक बिछौना, पत्थर रखि देने युवक आ टनकारक असिद्ध स्रोत कथामे बाधा, थकान आ देहक वास्तविकता बनाए रखैत अछि।

अध्याय ६७ — दूरक देखाइ

जे सुनल गेल, ओकरा ‘देखल’ कहबाक संस्थागत हिंसा

रेलचौकक चायदोकानमे भोरक पहिल केतली आ फकीराक भीजल छड़ीक नोकसँ अध्याय आरम्भ होइत अछि। फकीरा एक वाक्यमे अध्यायक मुख्य समस्या निर्धारित करैत छथि : ‘दिसमे रहब आ घटनाकेँ देखब’ समान नहि। पछिला राति हुनका दू दूरस्थ लोहेक टनकार सुनाइत अछि; महेशक फाटकक ताला सम्बन्धी अनुमान स्रोत-निश्चितता नहि छल। मुदा सार्वजनिक सूचनामे फकीराक नाम सँ ‘दू व्यक्ति फाटक तोड़ैत देखल गेल’ लिखल गेल अछि। घटनात्मक परिवर्तन दूरक आवाज नहि, आवाजकेँ दृश्य-गवाही बना देबाक अभिलेखीय प्रक्रिया अछि। ई केवल शब्द-संशोधन नहि; सम्भावित अज्ञात अपराधीपर सार्वजनिक आरोप आ एक श्रमिक गवाहक विश्वसनीयताक प्रश्न एही फेरबदलसँ उठैत अछि। फकीरा पर्चीक मूल प्रति अपन लग राखैत छथि, नैराकेँ संख्या आ मुहर लिखबाक अनुमति दैत छथि। ई छोट सहमति हुनकर पुरान यात्रा-पास सम्बन्धी प्रशासनिक अनुभवसँ निकसल अछि : कागदक आधिकारिक संग्रह स्वयं सुरक्षित वापसीक गारंटी नहि।

फकीरा अपन रात्रिक बाट, ढील ईंट, छड़ीक नोकक हाथसँ अनुभवल कम्पन आ दूरक टनकार तीन अनुभूतिक स्थिति बनबैत छथि—श्रवण, स्पर्श, अनुमान। हवा दिसक स्मृति आवाजक दिशाक निश्चित माप नहि, अन्हार बाटक निजी दूरी फीता सँ नपल दूरी नहि। एहि भेदमे आख्यानगत प्रत्यक्षक ‘इन्द्रिय-सम्पर्क’क सामान्य आलोचनात्मक अनुप्रयोग सम्भव अछि, मुदा स्रोत गवाहीक बाहरी सत्यापन बिना ककरो अनुमानक प्रामाण्य निष्कर्ष नहि। फकीराक अन्धत्व अथवा देखबाक भौतिक सीमा सम्बन्धी किछु वर्णनक आधारपर हुनका सर्वज्ञ श्रवणशक्ति प्रदान करबो अनुचित। ओ अपन कानक जानकारीक सीमा स्वयं कहैत छथि; हुनकर उत्कृष्टता अलौकिक ज्ञानेन्द्रिय नहि, स्रोतक अनुशासन अछि।

ध्वनि-परीक्षण, स्थलनाप आ पञ्जीक चारि घर

गलीमे सुरक्षित पहुँच पहिने सुनिश्चित कएल जाइत अछि। तारा पटरीक दूरी बुझबैत छथि, फकीरा अपन गति स्वयं रखैत छथि; गवाहक पहुँचेबाक सुविधा ‘उपकार’ नहि, जाँचक सम्भावना सुनिश्चित करबाक शर्त बनैत अछि। अदिति पुरान दरारक फोटो देखिकऽ पुछैत छथि जे आवाज सुनल रातिक दिनए दरार बनल, से कोन प्रमाणसँ निश्चित?। सुरक्षा-सहायक लोहेक पटरीपर जानि-बुझि दू चोट मारिकऽ फकीरासँ आवाजक मिलान चाहैत अछि; फकीरा निकट आ दूरक आवाजक अन्तर बतबैत तुरन्त पहिचान अस्वीकार करैत छथि। अनियोजित प्रदर्शन जँ गवाहक पूर्वस्मृतिमे अपेक्षित उत्तर भरि दैत अछि, तँ ओ परीक्षण नहि, साक्ष्य-दूषण होएत। अदितिक आपत्ति एहि पद्धतिक कथा-रूप अछि। गलीक ढील लोहेक पट्टी, राघवक पुरान चालान आ मीनाक अलग धातुपात्रक विवरणसँ एक कथानक-कल्पना बनैत अछि, मुदा तीनूकेँ एके वस्तु मानबाक स्वतंत्र आधार नहि। सुनल दू आवाज आ बाहरी दरारक कारणक्रम जाँचाधीन रहैत अछि।

चौकीदारक घरक समीपक स्त्री सेहो टनकार सुनने छथि, मुदा झरत पानि आ बच्चाकेँ सुतबैत समयक कारण अन्तराल ठीक नहि जनैत छथि; सार्वजनिक सूचनामे हुनकर पूरा घरक नाम नहि चाहैत छथि। दू गवाहक अनिश्चित अनुभव परस्पर सहयोग करि सकैत अछि, मुदा एक-दोसराक रिक्त विवरण स्वतः पूरैत नहि। कर्मचारीक प्रारूपमे ‘देखल’ लेल घर अछि, ‘सुनल’ लेल नहि; फकीरा फॉर्मक कमीकेँ अपन अनुभवक कमी मानब अस्वीकार करैत छथि। हुनकर माँगक बाद नव बयानमे चारि स्पष्ट खण्ड बनैत अछि—सुनल, छूल, बादमे दोसरसँ सुनल, अनुमान। एहि व्यवस्था सँ पाठक देखैत अछि जे कथन स्वयं प्रमाणक श्रेणी निर्माण करैत अछि। जँ जाँच-पत्रक रूप गलत अछि, तँ ओ वास्तविक गवाहीकेँ प्रशासनिक झूठ बनबए सकैत अछि। आधुनिक आख्यानमे फॉर्म भाषिक सत्ताक उपकरण अछि, निष्पक्ष खाली कोठरी नहि।

सुधारक वास्तविक फल, अधूरा नागरिक अधिकार आ आर्थिक समय

फकीराक यात्रा-पासमे गलत मृत्यु-प्रविष्टि एखन सुधारल नहि। एक कर्मचारी संकेत दैत अछि जे गवाहीपर विवाद केलासँ पासक सुधार प्रभावित भऽ सकैत; फकीरा दू अलग अधिकार-प्रक्रिया गड्डमड्ड करबाक अस्वीकार करैत छथि। धमकीक उद्देश्य निर्णीत नहि—नैरा शब्द दर्ज करैत छथि, मंशा सम्बन्धी आरोप बिना अतिरिक्त प्रमाण नहि जोड़ैत। मूल रजिस्टरमे ‘राति, दू आवाज’ पाछाँ ‘दू आदमी, फाटक’ जुड़ल अछि; लिखावट अलग देखाइत अछि, मुदा जोड़निहार आ आदेश देनिहार कियो सिद्ध नहि। अगिला दिन पंजी संग संशोधन आयल—पूर्व सार्वजनिक

विवरण गवाहक कथनसँ मेल नहि खाइत; दृश्य-गवाही सम्बन्धी दावा वापस। एहि अध्यायक सिद्ध प्रशासनिक उपलब्धि फकीराक झूठ दृश्य-गवाहीक सुधार अछि; रातुक आवाजक कारण, सम्भावित अपराधी, यात्रा-पासक सुधार आ उपस्थिति-भत्ताक भुगतान एखन अनिर्णीत। सुधारक ऐतिहासिक मूल पन्ना सुरक्षित रखबाक निर्णय दोषक इतिहास मेटबाक बदला ओकर जिम्मेदारी देखाबैत अछि।

फकीरा भोरसँ साँझ धरि गवाह बनि बैसल रहिते अपन पोटरी पहुँचाबऽ वला कमाइ छोड़ि नहि सकैत। हुनकर दोसर माँग—सुनवाईक समय पहिने निर्धारित, निजी निवासक विवरण सार्वजनिक नहि, यात्रा-खर्चक लिखित भत्ता —प्रमाण-उत्पादनक लुकाएल लागत देखबैत अछि। भत्ता-पर्चा बनैत अछि, भुगतान स्वीकृत नहि। तेँ उपन्यासक ‘वाणी देब’ मात्र नैतिक आजादी नहि; सुनल जाएबाक लेल समय, यात्रा, रोजी, प्रतिष्ठा आ सुरक्षित पहुँच चाही। मजदूरक धार्मिक–सामाजिक वर्गीकरणक सन्दर्भमे फकीरा उत्तर दैत छथि जे पंजीमे कियो हुनका ‘साई फकीर’, कियो ‘दीवान मदार’ कहि सकैत अछि, मुदा एतेक शब्द हुनकर पूरा परिचय नहि। ऐतिहासिक समुदाय-नामक प्रासंगिकता अस्वीकार कएल नहि गेल; नामकेँ व्यक्तिक सम्पूर्णता मानबाक अहंकार चुनौती पबैत अछि। एहि ठाम विदेह समानान्तर इतिहासक पठनक वास्तविक आधार आधिकारिक लेखाक कात रहल गवाहक अपना मोल निर्धारणक स्वर अछि।

दूरक आवाजक आवर्तन : रस, समय आ विश्वसनीयताक प्रश्न

अध्यायमे पछिला रातिक दू टनकार तीन रूपमे फेर अबैत अछि : फकीराक स्मृतिबयान, नकली निकटस्थ प्रयोग आ अस्पतालक स्ट्रेचरक पहियासँ उठल दू अलग आवाज। एके सङ्ख्याक आवाजक स्रोत भिन्न होइत अछि। अन्तमे फकीरा फेर अनेक दूरक टनकार सुनैत छथि, मुदा अन्दाजक पहरा देबाक बदला अपन जीवनक बाट पकड़ैत छथि। एहि आवृत्तिक प्रयोजन ‘फाटक टूटल’क रहस्यकेँ अनिवार्य अपराध-कथाक सनसनी नहि बनबैत; स्मृति, पर्ची आ बाह्य घटनाक विच्छेद दिखबैत अछि। सरिताक दालक कटोरी, बच्चाक पाठ आ कमाइक सिक्का भीतरी करुणा उत्पन्न करैत अछि, मुदा फकीरा केवल पीड़ित पात्र नहि; हँसी, मोलभाव आ सटीक प्रतिवाद हुनकर स्वतन्त्र व्यक्तित्व बनबैत अछि। कथावाचक फकीराक आन्तरिक मर्यादासँ गवाहीक सार्वजनिक विकृतिक आलोचना करैत छथि; नायराक सहयोगी भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा सुधारक मुख्य आग्रह फकीराक अपने अछि।

सीमा अछि जे साक्ष्यक चारि घर अत्यन्त शैक्षणिक स्पष्टता सँ व्यवस्थित होइत अछि; वास्तविक बोलचालमे ई शब्द-विभाजन अधिक गुँथल रहि सकैत। एकटा आन सीमा—कथा कान, स्पर्श आ अनुमानक रूपकेँ अनेक दृश्यसँ दोहरबैत अछि, ताहिसँ गति मंद पड़बाक सम्भावना अछि। मुदा यात्री-रोजीक समय, अस्पतालक स्ट्रेचर आ सरिताक घरेलू संवाद एहि शिक्षात्मक आवर्तनकेँ जीवनक बहुस्वरता दैत अछि। फकीराक मृत्यु-पंजी सुधरबाक शेष प्रश्न अध्यायक समापनपर फेर खुलैत अछि; एकटा सत्यापित कागद दोसर अन्याय अपने नहि सुधारैत।

अध्याय ६८ — चेतावनीक प्रति

मूल चेतावनी आ संक्षिप्त सारांशक पाठान्तर

अदिति पुरान फाइलक लाल सूतक गाँठ टूटलापर ओकरा अलग कागदपर रखैत छथि, पन्ना गनैत छथि, आ फेर मूल प्रति देखैत छथि। एहि आरम्भमे भौतिक संग्रह-विधि स्वयं घटनात्मक क्रिया अछि : पुरान कागद केवल सूचना नहि, ओकर संरक्षण आ क्रम सूचना ककर जिम्मा छल तकर निशान रहि सकैत अछि। फाइलमे तीन पन्ना भेटैत अछि—अदितिक हस्ताक्षरवला निरीक्षण, कार्यालयक सारांश, आ अनिश्चित स्रोतवाली संशोधित प्रति। मूल निरीक्षणमे ‘बरखाक बाद अनिवार्य पुनर्निरीक्षण’ लिखल अछि, सारांशमे एहि शर्तक स्थानपर सामान्य मरम्मतिक सुझाव लिखल अछि। शब्दक सानो लोप जोखिमक भविष्य-कालक कर्तव्य मेटा दैत अछि। पाठकक दृष्टिसँ एहि अध्यायक निर्णायक ‘घटना’ कोनो दीवाल गिरब नहि, बल्कि निष्क्रिय वर्णनमे बदलल सक्रिय चेतावनी अछि।

दू तिथिक बीच प्राप्ति-क्रमक अङ्क बिलायल अछि, सारांश के बनौलक से ज्ञात नहि। अदिति पहिल निरीक्षणमे ‘छोट’ दरार कहबाक अपना मापक अपर्याप्तता मानैत छथि, कारण पूरा उपकरण उपलब्ध नहि छल; पुनर्निरीक्षण लिखने रहितहुँ बादक पूरा परीक्षणक प्रमाण माँगबाक काज पर्याप्त कठोरतासँ नहि भेल, ई आत्मालोचना सेहो करैत छथि। एहन आत्मालोचना अपराधक तात्कालिक आत्मस्वीकृति नहि, अपूर्ण पेशागत दायित्वक सचेत समीक्षा अछि। अस्पतालक पुरान उतार-पट्टाक मरम्मति-पर्ची आ अदितिक आधार–जलजमाव चेतावनी अलग कागद छथि। पुनर्निरीक्षणक खाली हस्ताक्षर-खानासँ जाँच कहियो नहि भेल, से सिद्ध नहि; कागद नहिएँ भेटब संस्थागत खोजक उचित प्रश्न अछि। आख्यानगत निषेध-विचारक सामान्य रूपमे ‘प्रमाण नहिएँ भेटल’ आ ‘वस्तु घटबे नहि कएल’क अन्तर एहि घटनासँ निकासल जा सकैत अछि; उपन्यास आख्यानगत मूल ग्रन्थसँ एहन वाक्यक शाब्दिक उद्धरण नहि करैत।

पुरनाधारक भू-दृश्य : तीन प्रश्न आ तीन प्रमाण-पद्धति

अदितिक फाइलक अनुसरण करैत तारा, नैरा आ रतन वनपर पुरनाधारक घेराक बाहर पहुँचैत छथि। गोदामक सीमा विवादित रहला सँ तारा खूँटा गाड़बाक बदला अस्थायी निशान राखबाक निर्णय लैत छथि। रतन अपन बाबूक कागदमे ‘जीबछक पुरान बाट’ देखबैत छथि; बाल्यस्मृति सँ बरखा पाछाँ ठाढ़ पानिक अवस्था कहैत छथि, मुदा एहीसँ वर्तमान नदीक सम्पूर्ण प्रवाह सिद्ध नहि करैत। गोदामक मुनीम मजदूरक बोरा, भाड़ा आ रोजीक प्रश्न उठबैत अछि; रतन जलमार्गक जाँचक संग एहि रोजीकेँ गणनामे लेबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। कथाक संघर्ष ‘पुरान जलसत्य’ बनाम ‘नव लुटेरा’क सरल द्वैत नहि, जमीनक इतिहास आ वर्तमान श्रमक परस्पर निर्भरता अछि।

तारा तीन प्रश्न पृथक् करैत छथि : पुरान जलनिकासी कतए छल; आजुक माटि–पानिक वास्तविक स्थिति की; वर्तमान स्वामित्वक राजस्व-अभिलेखमे की। पहिल प्रश्नसँ स्मृति आ पुरान नक्शा, दोसरसँ तकनीकी नाप, तेसरसँ मान्य अभिलेख सम्बन्धित अछि; प्रमाणक विधान परस्पर प्रतिस्थापनीय नहि। रतनक बाबूक पुरान गाँठबला डोरी स्थानीय इतिहासक सामग्री अछि, मानकीकृत मापक उपकरण नहि। मूल कागद हुनक लग रहैत

अछि, सीमित फोटोमे निजी खेतनाम छाँटल जाइत अछि; लेखन-पढ़नमे सहायता देनिहार युवतीक छूटल सिलाइ-घण्टाक देय सेहो पहिचानल गेल। एहि दृश्यकेँ प्रमाणक समान्तर इतिहास कहबाक ठोस आधार अछि : पिताक स्थानीय डोरी, वृद्धक अनुभूत बाट आ स्त्रीक पाठकीय श्रम राजस्व–अभियान्त्रिक फाइलक पूर्वसाक्ष्य बनैत अछि, मुदा कानूनी निर्णयक स्वतः विकल्प नहि।

स्थल-परीक्षण, अनिश्चित जलकारण आ ऐतिहासिक ऋण

गोदामक देबाल स्वयं हिलल होएबाक सम्भावनासँ माप सार्वजनिक पथक स्थिर पाथरसँ शुरू होइत अछि; नरम कादो धरि गहिराइ आ कठोर तह धरि गहिराइ अलग नपल जाइत अछि। प्रयोगशालाक क्रमांक आ नमूना-संग्रह-विधि तय नहि भेलासँ तत्काल नमूना उठेनाइ रोकल जाइत अछि। ई देरी यान्त्रिक नौकरशाही मात्र नहि; गलत संग्रहक कारण बादमे प्रमाण नष्ट होयबाक जोखिम अछि। गोदामक प्रतिनिधि आ स्थानीय बाट जाननिहार गवाहक उपस्थिति मानल जाइत अछि, मुदा तकनीकी नमूना प्रशिक्षित दल लेल छोड़ल गेल। वृद्ध रतन काँट आ तारक कारण पुरान बाटसँ भीतर नहि जाइत छथि; स्मृतिगत स्वामित्व-बोध वर्तमान भौतिक सुरक्षाक छुट नहि दैत। मजदूरक दस वर्षक ‘नदी नहि देखल’ अनुभव, रतनक एतयसँ पुरान बाल्यस्मृति परस्पर असत्य घोषित नहि : दूनूक अवलोकनकाल भिन्न। काल–स्थान विश्लेषणमे भिन्न लम्बाईक अनुभवकेँ एकरे ‘अछि/नहि’ प्रश्नमे ठेलि देब बुनियादी त्रुटि होएत।

सूरज गंगोताक ऋण-पत्रपर ‘धेमुड़ा’ नाम अबैत अछि, मुदा ओकरा ‘जीबछ’क पुरान रेखासँ जोड़ि एक नदीक भौगोलिक संगम घोषित नहि कएल जाइत। खेत नष्ट भेला पर ऋण किएक बचल, ई बेटाक नैतिक–आर्थिक प्रश्न स्वतंत्र दावा अछि; मूल ऋण-पञ्जी एखन माँगबाक अछि। कथन-विन्यासमे जलधारा आ कर्जा एक आन्तरिक सम्बन्धक सम्भावना खोलैत अछि—बाढ़क पुरान स्मृति सामाजिक देयक कालकेँ लम्बा करैत अछि—मुदा भूगोलक तथ्य बिना ऋणमुक्तिक कानून निश्चित नहि। अस्पतालक गलियारामे पानिक गन्ध बढ़बाक सूचना एहि भू-परीक्षणकेँ तात्कालिक रोगी-सुरक्षासँ जोड़ैत अछि; निरीक्षण-दल आ उपचार-दल अलग भूमिका निभबैत छथि। साझा भू-ऊँचाइक नाप प्रस्तावित होइत अछि, गोदामक जलभराइ अस्पतालक क्षतिक सिद्ध कारण एखन नहि।

चेतावनीक भाषा, ज्ञानक स्तर आ उपन्यासक नैतिक शिल्प

उपअभियन्ता अदितिसँ पुरान ‘छोट दरार’क शब्द पर प्रश्न करैत छथि; अदिति फेर चेतावनीक वास्तविक मूल वाक्य दिखबैत छथि। नैरा समाचारमे ‘पुरान लापरवाही प्रमाणित’ कहबाक अस्वीकार करैत तीन श्रेणी अलग करैत छथि : मूल चेतावनी लिखल गेल, सारांशमे आवश्यक भाग छूटल, पुनर्निरीक्षणक फल खोजबाक अछि। ई तीनू सँ दोष, मंशा आ हानिक पूर्ण कारणक्रम स्थापित नहि। रातिमे अदिति देखैत छथि जे प्रारम्भिक गणनाक ‘स्थानीय अनुमान’ बादक सारांशमे ‘मापल’ बनि गेल अछि। यहाँ पाठान्तर दू स्तरपर अछि : चेतावनीक कर्तव्य हटेनाइ आ अनुमानकेँ नापल तथ्य बनायब। मूल कागद आ संशोधन दुनू सुरक्षित रखबाक निर्णय पाठालोचनक आभ्यन्तर पद्धति बनैत अछि—काटि देने त्रुटि नहि सुधरत, इतिहास मेटत।

सुरक्षा-दलक प्रारूपमे ‘गोदामक अवैध भराइ अस्पतालक क्षतिक कारण’ लिखल रहैत अछि; नैरा ओकरा ‘सम्भावित सम्बन्ध जाँचाधीन’ बनबैत छथि, संगहि असुरक्षित पट्टीमे नहि जेबाक तात्कालिक सार्वजनिक चेतावनी स्पष्ट देबाक पक्षमे छथि। एतय सावधानी आ अनिश्चितता परस्पर विरोधी नहि : कारण अप्रमाणित रहितहुँ जोखिमसँ बचेबाक काम तुरन्त सम्भव अछि। एहि अध्यायक दार्शनिक मूल्य आख्यानगत प्रमाणभेद, उपाधि आ अनुपलब्धिक परीक्षणसँ सम्बन्धित अछि, मुदा उपन्यासक स्वयं प्रमाण–पञ्जीकेँ शास्त्रग्रन्थक वैधानिक उदाहरण मानब नहि। रतनक अस्पष्ट खेतनाम पर प्रश्नचिह्न जीवित उत्तराधिकारीक इतिहास गलत तय होएबासँ बचबैत अछि; नामक अनिश्चितता ककरो अधिकार नष्ट करबाक अवसर नहि। रतनक माय द्वारा बीहन, माप-डोरी, दवाइ आ पाठक तख्ती अलग ऊपर राखबाक स्मृति एहि पूरे आख्यानक लघु प्रतिमा अछि—बचाव एके तरीका सँ नहि, वस्तुक प्रकृति अनुसार। सरिताक चाउरक एक दाना आ ओकर पाछाँ छिपल खेत-ऋण, पानि, रान्हनिहारक समय प्रथम अध्यायक रसोइ-प्रसंगक अन्तरपाठीय प्रत्यावर्तन बनैत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण, उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक आरम्भ फाइलक संरक्षणसँ, मध्य गोदामक वर्तमान माप आ पुरान स्मृतिसँ, अन्त संशोधित चेतावनी आ स्थिर माप-बिन्दुसँ बनैत अछि। अतीत अलग स्मृति–नक्शा–फाइलक सहारे वर्तमानमे प्रवेश करैत अछि; एतय स्वतंत्र प्राचीन राजसभा अथवा युद्ध-दृश्य नहि। मुख्य कथनकाल एक दिन आ अगिला भोर धरि पसारल अछि, किन्तु भवनक मौसमपूर्व निरीक्षण, रतनक बाल्यकाल आ पुरान ऋणक कालभेद एक ठाम जोड़ल जाइत अछि। दृष्टिकेन्द्र अदितिक आत्मालोचना, ताराक माप-अनुशासन, रतनक स्मृतिगत सीमा, मुनीमक मजदूरी-चिन्ता आ नैराक सार्वजनिक भाषाक बीच घूमैत अछि। विशेष रूपसँ गोदामक कर्मचारीक डर आ रतनक प्रत्युत्तर देखबैत अछि जे कथनकार एक पक्षक सरल विजय-दृश्य बनबासँ बचैत छथि।

एहि अध्यायक कलात्मक उपलब्धि ‘पुनर्निरीक्षण’केँ सूक्ष्म रहस्य-उद्घाटन बनायब अछि। पारम्परिक जासूसीक विपरीत एतय एक अपराधी पकड़ल नहि जाइत; दस्तावेजक कड़ी, गवाहक अनुमति, वर्तमान नाप आ लोकक रोजी मिलि जाँचक विधि बनबैत अछि। सीमा ई जे अदिति, तारा, नैरा आ रतनक संवाद बारम्बार एके प्रमाण-सीमा दोहरबैत अछि; नाटकीय टकराव कखनो प्रशासनिक बैठकक टंकित कार्यवृत्त-जेकाँ भऽ जाइत अछि। तथापि लाल सूतक गाँठ, पुरान माप-डोरी, काँटमे अटकल धोती, युवतीक सीएल थैली आ चाउरक दाना एतेक अमूर्त प्रमाण-विवेचनकेँ दृश्यात्मक जीवन दैत अछि। अन्तिम प्राप्त परिणाम—पहिल स्थिर माप-बिन्दु निश्चित, जाँचक नमूना-विधि तैयार, मूल चेतावनी–सारांशक अन्तर दर्ज, असुरक्षित पट्टी लेल सावधानी जारी—अछि; पुरान नदीक सही दिशा, भूअधिकारक निर्णय, चेतावनीक लोपक उत्तरदायी आ अस्पतालक सम्पूर्ण कारणक्रम एखन प्रमाणित नहि। नैराक निजी ‘विचित्र छाँह’क पन्ना सरकारी फाइलमे नहि जोड़ब ज्ञानक सार्वजनिक आ व्यक्तिगत स्तरकेँ अलग राखैत अध्याय बन्द करैत अछि।

भीष्म-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ६५–६८ क तुलनात्मक आलोचना

कटोरी, पट्टी, टनकार आ लाल सूत : चारि साक्ष्य-वस्तुक कथावृत्त

अध्याय ६५ मे छतक बूँद आ कटोरी प्रत्यक्ष जोखिमक प्रवेश-बिन्दु छथि; अध्याय ६६ मे पीयर पट्टी आ ‘पूर्ण खाली’ आदेशक मूलभूत अन्तर संस्थागत कर्तव्यक संकट; अध्याय ६७ मे दू दूरक टनकारकेँ दू व्यक्ति देखबाक गवाही बना देबाक विकृति; अध्याय ६८ मे मूल चेतावनीक अनिवार्य पुनर्निरीक्षण सारांशसँ गायब। वस्तुक श्रृंखला केवल काव्यात्मक पुनरावर्तन नहि, कारणात्मक कथा अछि : ६५ क अपूर्ण रोगी-निकास ६६ क आदेशक सुधारकेँ आवश्यक बनबैत अछि; ६६ क अनिश्चित टनकार ६७ मे गवाहक सार्वजनिक विकृतिक कारण बनैत अछि; ६७ क संशोधित गवाही ६८ क मूल चेतावनी आ भू-परीक्षणकेँ फेर अलग करबाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि। एहि सम्बन्धक बावजूद दू आवाज पुरान दीवालक दरार उत्पन्न कएलक, ई सिद्ध नहि; अस्पताल आ गोदामक पानिक सम्भावित सम्बन्ध पूर्णतया जाँचाधीन अछि।

द्विकालीन आख्यानक वास्तविक सीमा

अध्याय ६६ मे कुरुक्षेत्रक युद्धपूर्व समयक स्वतंत्र कथा-प्रवेश अछि, जकर प्रस्तुतिक क्रम पहिने वर्णित भीष्म-पतनसँ पछाड़ि फेर युद्धक आरम्भमे जाएत। एहि विचलनक काव्यात्मक काज परिणाम जानल पाठककेँ निर्णयसँ पहिनुक प्रश्न फेर सुनबाब अछि। अध्याय ६५, ६७ आ ६८ मे एहि प्रकारक स्वतंत्र पौराणिक दृश्य नहि; ओहिमे अतीत अस्पतालक मरम्मति-पर्ची, श्रवण-गवाही, ऋण-पत्र, स्थानीय नक्शा आ स्मृतिसँ पुनर्गठित होइत अछि। तेँ चारू अध्यायक ‘द्विकालीन’ एके यांत्रिक वर्गीकरण देब उचित नहि। सुन्दरकाण्डक व्यापक संरचना एखन चलि रहल अछि; एहि चारूकेँ सम्पूर्ण सुन्दरकाण्डक अन्तिम कथासार मानब सेहो भूल होएत।

प्रमाण-नैतिकता, श्रम आ कथनक अर्थ

सुरक्षित चिकित्सकीय स्थानान्तरण, प्रतिनिधित्वहीन रोगीक आवाज, प्रशिक्षणक भुगतान, गवाहक यात्रा-समय, स्थानीय डोरीक बौद्धिक श्रेय आ पुरान ऋणक वर्तमान बोझ—ई सभक संग प्रमाणक प्रश्न जुड़ैत अछि। कथाक वास्तविक उपलब्धि ‘सही जानब’केँ व्यक्तिक निजी बुद्धिक चमत्कार नहि, बहुल श्रमिक आ सामाजिक सहयोगक परिणाम बनायब अछि। आख्यानगत भाषामे आधार-वस्तु, पक्ष, हेतु, उपाधि, अनुमान आ अनुपलब्धि जाँचल जा सकैत अछि; मुदा उपन्यासक घटनासँ शास्त्रीय सिद्धान्तक सर्वमान्य प्रमेय स्वतः सिद्ध नहि होइत। भारतीय काव्यशास्त्रमे करुणक अनुभव शीतल, वृद्ध रोगी, फकीरा आ लता बीच वितरित अछि; वीर्य अथवा सक्रिय धैर्य देवीक प्रशिक्षण-निर्णय आ अदितिक सार्वजनिक आत्मसंशोधनमे। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिमे अधिकारीक संक्षिप्त सारांशक विरुद्ध मजदूर–नर्स–कारीगर–वृद्ध–स्थानीय स्त्रीक सूक्ष्म अभिलेख उभरैत अछि।

निष्पक्ष आलोचनात्मक प्रतिपक्ष आ आगाँक खुलल प्रश्न

विशेष उपलब्धि अछि जे घटना-पहचान, जोखिमक सावधानी आ अपराधक प्रमाण तीन अलग निर्णय रहैत अछि; पात्रसभ पहिने गलत जानकारी दैत नहि, तर नवा जानकारीपर पुरान वाक्य सुधारैत छथि। तथापि पाठकीय स्तरपर एहि चारू अध्यायमे ‘एखन सिद्ध नहि’, ‘अलग पञ्जी’ आ ‘पुनः जाँच’क पर्याप्त पुनरावृत्ति अछि। ओ वास्तविक जाँचक धीमापनक कलात्मक अनुकृति अवश्य, मुदा अनेक पात्रक समान विवेचनात्मक वाणी आ नाटकीय उत्कर्षक स्थगन सम्भावित कमजोरी। अध्याय ६६ क प्राचीन संवाद एहि गति-विन्यासकेँ किछु क्षण बदलबैत अछि, मुदा ओहो आधुनिक नैतिक बोधक अत्यन्त स्पष्ट भाषामे प्रस्तुत होइत अछि। आगामी अध्यायसभमे एतय शुरू भेल फाइलक जाँच वास्तवमे कोन प्रतिकूल साक्ष्य स्वीकार करैत अछि, गवाहक श्रमक पारिश्रमिक भेटैत अछि की नहि, आ भवन–जलनिकासी क कारणक्रम कोना स्पष्ट होइत अछि—ई प्रश्न खुलल राखल गेल अछि। एखन धरि सुरक्षित निष्कर्ष: एक रोगीक नियोजित स्थानान्तरण भेल; चरणबद्ध आदेश संशोधित भेल; फकीराक झूठ दृश्य-गवाही वापस लेल गेल; पुरान चेतावनीक मूल–सारांश अन्तर दर्ज भेल; अन्तिम निर्माण-दोष, सम्भावित अपराधी, भूअधिकार आ मिथुनक ठेगानाक निर्णय नहि भेल।

अध्याय ६९ — अनुपस्थितिक अर्थ

खाली घरक बहुवचन : घटनाक आरम्भ आ प्रामाण्यक प्रश्न

पुरनाधारक गोदाममे बोरा सरकबाक सक्रिय श्रम आ कार्यालयक प्राप्ति-पञ्जीमे खाली हस्ताक्षरक घर—एहि द्वन्द्वसँ अध्याय शुरू होइत अछि। अदितिक चेतावनी-पत्रक तिथि, संख्या आ मुहर उपस्थित छथि; पुनर्निरीक्षण कएनिहारक हस्ताक्षर अनुपस्थित अछि। पहिल दृष्टिमे पाठककेँ लगि सकैत अछि जे निष्प्रभावी अफसरशाहीक सहज प्रमाण भेटि गेल। मुदा अदिति 'हस्ताक्षर नहि' सँ तुरन्त 'निरीक्षण नहि भेल' अथवा 'निरीक्षण भेल आ कियो जानि-बुझि नाम दबौलक'—दुनू निष्कर्ष रोकैत छथि। एहि रोकमे अध्यायक आख्यानात्मक गति अछि : अनिर्णीत रिक्तता कथाकेँ ठाढ़ करैत अछि, मुदा ओकर भरपाई अनुमानसँ नहि, नव कागद, व्यक्तिक पहुँच आ स्थल-पुस्तिकाक जाँचसँ होएत। एकटा खाली खाना स्वयं दृश्य वस्तु अछि; ओकर कारण दृश्य नहि। कथाकार ई व्यतिक्रम बारम्बार प्रयोग करैत छथि, कारण पात्रक इच्छा शीघ्र निर्णय लेबाक अछि, मुदा कथाक विवेक ओहि इच्छाक मूल्य पुछैत अछि।

अध्यायमे कमसँ कम तीन अलग अनुपस्थिति सक्रिय बनैत अछि : चेतावनीक पुनर्निरीक्षण-पंजीक छूटल सही, सूरज गंगोताक चालू लाभार्थी-सूचीमे नामक अभाव, आ कटानसँ घटल खेत-उपजक परिणाम ऋणक देयमे अनुपस्थित रहब। तिनूकेँ एके निरन्तरता मे देखब तखन सम्भव होइत अछि जखन हुनकर अलग प्रशासनिक स्रोत सुरक्षित राखल जाए। सूरजक पुरान खाता, गिरवी बीज–सिँचाइ ऋण, नष्ट अथवा घटल खेत आ नवा राहत-प्रविष्टि बीच सादृश्य अछि, समानता नहि। सहायकक तर्क—सूचीमे नाम नहि, तेँ आवेदनक हक कोना—पात्रक अभावकेँ वस्तुक अभाव बना दैत अछि। नैरा सूचीक निर्माण-वर्ष, नामक वर्तनी आ पुरान खाता सँ चालू सूचीक

सम्बन्ध पूछैत छथि। एतय प्रतिरोध भुगतान अनिवार्य करबाक आदेश नहि; आवेदन सुनबाक योग्यताकेँ पहिने अस्वीकार नहि करबाक माँग अछि। ई सीमित सफलता उपन्यासक विश्वाससँ बेसी प्रमाणनिष्ठ अछि।

तारा पुरान स्थलरेखा आ अदितिक वर्तमान नील बिन्दु देखबैत छथि। दू रेखाक बीच रिक्त स्थान ककरो मनसँ भरि देबाक नहि। एहि जल–भू-दृश्य मे 'धेमुड़ा'क नाम अथवा पुरनाधारक पट्टीक पुरान पहचान स्वतः वर्तमान सम्पत्ति-अधिकार नहि सिद्ध करैत। उपन्यासक सामाजिक–पर्यावरणीय दृष्टि एतय सांकेतिक नदी-प्रेम नहि, मापनक विधि आ भूमिधारकक जीवनोपर दाबी करैत अछि। सूरजक खेतक कटान ऋणशास्त्रक गणनामे बिलायल अछि, मुदा जमीनक भौतिक क्षय अनुपस्थित नहि। कथाक पहिल महत्त्वपूर्ण मोड़ ई जे दस्तावेजी शून्य धरतीक शून्य नहि; मुदा धरतीक पीड़ा मात्रसँ ऋण-संशोधन स्वतः विधिक निर्णय सेहो नहि।

उदयनक शास्त्रार्थ : अनुपलब्धि सँ अनस्तित्व धरि अवैध छलाँग

नवम पाठांशमे कथा आधुनिक कार्यालयसँ पुरातन मिथिलाक उपवनमे खुलैत अछि। उदयन आ प्रतिपक्षीक वादमे ईश्वरक प्रत्यक्ष अनुपलब्धि, अनुमानक हेतु आ अभावज्ञानक उचित स्थिति पृथक् परखल जाइत अछि। प्रतिपक्षी खाली तेलक पात्र लऽ निषेधक उदाहरण दैत छथि; उदयन पात्रक वर्तमान रिक्ततताकेँ मानैत छथि, मुदा ओकरा सम्पूर्ण नगरमे तेलक अभाव अथवा भूतकालमे कहियो तेल नहि छल, तकर निष्कर्ष नहि मानैत। ई विमर्शक दार्शनिक मूल्य साधारण नारा 'नहि देखल मतलब नहि अछि' मे नहि; वस्तु, अपेक्षित उपलब्धता आ प्रत्यक्षक उचित शर्त निर्धारित करबमे अछि। उदयनक उत्तरमे अनुमान आ अनुपलब्धिक विरोधी परम्परासभक पूरा शास्त्रीय इतिहास समाहित नहि; ई रचनात्मक शास्त्रार्थ अछि, न्यायकुसुमाञ्जलिक प्रमाणित शाब्दिक उद्धरण नहि।

चौदहम पाठांशमे आधुनिक कथा स्पष्ट रूपसँ कहैत अछि जे शास्त्रार्थ सूरजक ऋण-पर्चीक प्रमाण नहि छल। एहि स्वयंसावधान वाक्यसँ रचनाकार प्राचीन विचारकेँ आधुनिक न्यायिक निर्णयक स्थानापन्न बनएबासँ बचैत छथि। शास्त्रक प्रश्न एकटा विचार-विधि देबैत अछि : उचित परिस्थितिमे उपलब्ध वस्तु नहि भेटल तँ अभावक सीमित ज्ञान सम्भव; अनुचित क्षेत्रमे नदेखलासँ अनस्तित्वक सिद्धि नहि। एहि कसौटीपर कार्यालयक सहायकक तर्क, निरीक्षण-पंजीक पन्ना आ फगुनीक नामरहित श्रम फेरसँ पढ़बाक बाट खुलैत अछि। आख्यानगत भाषा उपयोगी अछि, मुदा उपन्यास अपन पात्रसभसँ पूर्ण पाँच-अवयवी अनुमान कहलाबैत नहि; ई प्रश्न प्रमाणक वैध सीमा सम्बन्धी अछि।

शास्त्रार्थ आ वर्तमान संवादक भिन्न आवाजो ध्यानयोग्य अछि। प्राचीन विद्वान हेतु–प्रतिहेतुक संग बहस करैत छथि; कनकलता, सूरज आ फगुनी ऋण, आय, दण्ड आ श्रमक श्रेणी पर बात करैत छथि। जँ समीक्षक दुनूक समान तार्किक शैलीकेँ 'सभ पात्र एक्के भाषा बोलैत छथि' कहि सरलीकृत करथि, तँ दुनू स्तरक सामाजिक प्रयोजन छूटि जाएत। तथापि कथोपकथनक असाधारण सुव्यवस्थित स्वर पाठककेँ ई प्रश्न अवश्य करबैत अछि जे श्रमिक परिवारक वास्तविक असमंजस अनेक बेर इतबा विधिपरक वाक्यमे बदलि किएक जाइत अछि। दार्शनिक अवधारणाक सुविधा कखनहुँ चरित्रक भाषिक विशिष्टताकेँ दबा सकैत अछि; ई अध्यायक कलात्मक सीमा मानल जएबाक चाही।

तीन देयक पाँति, फगुनीक श्रम आ जीवनक काल

कनकलता मूलधन, पहिने जुड़ल ब्याज आ कटानक बादक विलम्ब-दण्ड अलग करैत छथि। ऋण एकटा अखण्ड नैतिक अपराध नहि; ओकर घटकक उत्पत्ति, परिशोधन आ नियमक काल अलग अछि। सूरजक प्रश्न ऋण सम्पूर्ण माफ करबाक अप्रमाणित दावा नहि; पहिले चुकाओल रकम दोबारा शेष नहि बने, आ उपज नष्ट भेलाक बादक किस्त सम्भव श्रम–आयक आधारपर देखल जाए। सहकारीक लिखित उत्तरमे नव विलम्ब-दण्ड अस्थायी रूपसँ रोकबाक प्रस्ताव समितिक सम्मुख अछि; वास्तविक माफी अथवा वसूली रोकबाक पूर्ण आदेश नहि। पुनर्गठनक प्राथमिक विचार स्वीकृत अछि, किन्तु कटान-माप आ पुरान भुगतान-रसीद जाँचाधीन रहैत अछि। एतय प्रस्ताव, विचार, स्वीकृति आ कार्यान्वयनक फरक कथानकक वास्तविक घटना-मूल्य निर्धारित करैत अछि।

सूरज आ हरिहरक पीपल-छाँहक संवाद प्रशासनिक समय आ पीढ़ीक समयक संघर्ष अछि। बेटा दिल्ली जाएबाक सोचैत अछि, पिता जमीन–ऋणक सुनवाई नहि छोड़बाक। एतय शहर-गमनकेँ कायरता अथवा खेतकेँ शाश्वत पहचान मानि चित्रित नहि कएल गेल; हरिहरक स्वनिर्णयक अधिकार बचल अछि। एकतीसम पाठांशमे लाल माटिक खाली डिब्बी देल जाएब स्मृति अथवा भविष्यक प्रतीक अछि, जमीनवापसीक प्रमाण नहि। हरिहर एखन शहर नहि जाएबाक, पहिने माय–बाबूक सुनवाईमे जायबाक निर्णय लैत अछि; ओकर स्थायी जीवन-मार्ग निर्धारित नहि भेल। ई खुलल विकल्प पात्र-विकासक महत्त्वपूर्ण सर्जनात्मक उपलब्धि अछि।

फगुनी पहिने घरक भोजनमे प्रवेश करैत छथि, फेर अपन रोपनी, निराइ आ बाँधक कात भोजन लऽ जाएबाक श्रम-समयक छोट कापी खोलैत छथि। जमीनक औपचारिक मालिकाना नहि रहलासँ श्रमक अस्तित्व अस्वीकार नहि होइत। ऋणक बहीमे केबल सूरजक नाम आ फगुनीक श्रम-कापीमे असंख्य दिवस—ई तुलना विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक ठोस सामग्री अछि। किन्तु कनकलता फगुनीक कापी कैँ स्वचालित ऋण-मुक्तिक दस्तावेज नहि मानैत छथि; प्रभावित परिवारक आय आ क्षतिक विवरणमे संलग्न करबाक अनुमति दैत छथि। स्त्रीक श्रम दृश्य होएब सामाजिक उपलब्धि अछि, स्वीकृत मुआवजा भेटि गेल—एहन दावा नहि। किसानक अभिलेख आ स्त्रीक गैर-औपचारिक गणना बीच एहि दूरीसँ उपन्यास इतिहासक 'बाहर' रहनिहार श्रमकेँ शास्त्रीय विचारक संग जीवित अर्थ प्रदान करैत अछि।

अनुपस्थित पन्नासँ मुद्रित समाचार : समाप्ति नहि, जोखिमक विस्तार

आगन्तुक-पंजीमे निरीक्षण-दिनसँ मेल खाइत संख्या भेटल, मुदा नाम आ उद्देश्यक अगिला पन्ना उपलब्ध नहि। बादमे पेटी खुललहुँ पन्ना नहि भेटैत; पुरान मरम्मति-प्रभागकेँ देल गेलाक संकेत अछि, नष्ट भेलाक प्रमाण नहि। अदितिक आग्रह—पेटीमे नहि भेटल, तेँ नष्ट भेल नहि मानू—प्रमाणक नकारात्मक सीमाक सुन्दर नाट्यरूप अछि। एहि अन्तरक सामाजिक मूल्य अछि : एक कर्मचारीक अवहेला आ संभावित जानि-बुझि लोप बीच सार्वजनिक आरोपक महत्त्वपूर्ण भेद। किछु अनुपस्थितिक खोज संख्या आरम्भ करब वास्तविक काज अछि, अन्तिम उत्तर नहि।

अध्यायक अन्तिम चारि पाठांशमे सामान्य कार्यालयी 'खाली घर' परिवारक पहिचान-खतरामे बदलैत अछि। महेश एकटा समाचार-मसौदा वापस मँगबैत छथि, कारण ओहिमे पूरा नाम नहि रहितो ठेकाना आ पारिवारिक

सम्बन्धसँ साक्षी चिन्हाएल जा सकैत अछि। नैरा संशोधित प्रकाशित प्रतिक पुष्टि माँगैत छथि; मौखिक आश्वासन पर्याप्त नहि। मुद्रण बन्द भऽ गेल आ सुधार सम्भव नहि—ई सन्देश महेशकेँ रात्रिमे भेटैत अछि। एही क्षण दस्तावेजक अनुपस्थित प्रमाण आ सार्वजनिक पहचानक अत्यधिक उपस्थित संकेत कथा-वक्रक दू सिरा बनैत अछि। खाली हस्ताक्षर पन्ना जोखिमक पहिल रूप छल; आब छपल कागदक अपरिवर्तनीय वितरण दोसर। महेश लेखैत छथि जे परिवारसँ गोपनीय सम्पर्क आवश्यक—एहि आत्म-सचेतनासँ जोखिम टरल नहि। अन्तिम दृश्य मेजक दीपक, दू कागद आ नहि उठल फोनसँ बनैत अछि; जे अगिला अध्यायमे घरक अन्हार आ हमलामे रूपान्तरित होएत।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ अध्याय ६९ क उपलब्धि 'अभाव'केँ एकरेखीय दार्शनिक उपदेश बनबासँ रोकब अछि : एक रिक्त सही, एक अनुपस्थित नाम, एक कटान, एक अव्यक्त स्त्री-श्रम आ एक अधूरा सुधारक आग्रह अलग कारणात्मक पथ छथि। सीमा ई जे किछु कार्यालय-सम्वाद अत्यन्त नियमानुसार सुगठित अछि, तथा कनकलताक सुनवाईक समापन अपेक्षाकृत सहज जनाइत अछि। तथापि ऋणक निर्णय अधूरा आ मुद्रित खतराक तत्कालता पाठककेँ प्रतिपक्ष सहित आगाँ बढ़बैत अछि।

अध्याय ७० — महेशक राति

पहचानक अनाम प्रकाशन : सार्वजनिकता आ जोखिमक अप्रत्यक्ष वाक्य

महेशक दुआरपर भीजल अखबार, बेटी द्वारा सुखाओल विद्यालयक जूता आ पत्नी द्वारा उठाओल समाचार एक संग घरक साधारण श्रम आ सार्वजनिक हिंसाक सम्भावनाकेँ आनैत अछि। समाचारमे महेशक नाम नहि, मुदा गोदामक पुरान काज, रेल-पारक ठाम आ परिवारक बाटक सङ्केत चिन्हाएल जा सकैत अछि। अखबारक प्राधिकार एतय तथ्यक पूर्णता नहि, पाठकक अनुमान जगबैत पहिचानक प्रसार अछि। पूर्ण नाम हटाओल तकर अर्थ गोपनीयता बचल, ई उपन्यास अस्वीकार करैत अछि। बेटीकेँ हाट लग किछु लोक पिताक विषयमे पुछने अछि, मुदा ओ लोक अखबारसँ निर्देशित छलाह कि अन्य जानकारीसँ—एखन सिद्ध नहि। ओ जे कहैत अछि ओकरा सुननाइ आवश्यक, मुदा डरक सङ्केतकेँ साक्षी-परिचयक निर्णायक प्रमाण बना देब अनुचित।

सम्पादक अनलाइन प्रति बदलबाक आश्वासन दैत अछि, मुदा वितरित छपल अङ्क वापस नहि आएत। डिजिटल संशोधन आ भौतिक प्रसारक समय अलग अछि। नैरा अपन पछिल नागरिक-पत्रक मूल पोस्ट, हटाओल गेलाक घड़ी, महेशक सीमित अनुमति आ नव मुद्रित समाचार चारि पृथक स्रोत रूपमे राखैत छथि। ओ अपन प्रारम्भिक प्रकाशनक उत्तरदायित्व स्वीकारबाक दिस बढ़ैत छथि; किन्तु एतहि सभ समाचार-सम्बन्धी व्यक्ति एके अपराधक सहभागी सिद्ध भेल छथि—एहन बात मूल पाठ नहि कहैत। सम्पादकीय कक्षमे 'पहिचान अस्पष्ट' जेकाँ शीर्षक सुधारक बदला लोककेँ पहिचान-शिकारक न्योता दऽ सकैत अछि। एहि सूक्ष्म भाषिक आलोचनासँ समाचार लिखबाक कला प्रति कथा सजग अछि : अभावक घोषणा स्वयं अधिक खोजक उकसाहट बनि सकैत अछि।

परिवारक घरेलू समय आ सुरक्षा-प्रक्रियाक अलग-अलग अवस्था

महेशक पत्नी विधिक सहायता-कक्षमे बेटीकेँ चाही किताब, औषधि, काजक बाट, पानि आ अस्थायी निवासक सूची राखैत छथि। ई सूची पति–साक्षीक महत्त्वकेँ छोट नहि करैत, मुदा परिवारक यथार्थक केन्द्र 'गवाहीक उपयोगिता'सँ 'जीबाक आवश्यक समय' पर अनैत अछि। विद्यालयकेँ सीमित निर्देश देल गेल अछि जे बच्चीकेँ अभिभावकक लिखित अनुमति बिना अन्य व्यक्तिक संग नहि पठाओल जाए। ई सुरक्षाक छोट पूरा कएल गेल निर्णय अछि। मुदा पत्नी आ बेटी लेल गोपनीय निवासक स्वीकृति नहि; रात्रिकालीन व्यक्तिगत प्रहरीक लिखित आदेश नहि। आवेदनक प्राप्ति-अङ्क, गश्त बढ़ेबाक प्रस्ताव आ प्रत्यक्ष सुरक्षा नियुक्ति तीन भिन्न प्रशासनिक अवस्थासभ छथि। कथा पाठकक ध्यान एहि क्रमपर बनौने राखैत अछि, कारण अगिला हमलाक स्थितिमे एही अभावक अर्थ तीव्र होयत।

महेशक पत्नी सार्वजनिक परिचयक संकेत रोकबाक स्पष्ट लिखित माँग नैरा धरि पठबैत छथि। नैरा ओकरा फोनसँ फेर ‘सहमत’ करएबाक प्रयास नहि करैत, कबीरकेँ प्रक्रिया सम्बन्धी सूचना मात्र दैत छथि। परिवारक स्वायत्तता एतय नायिकाक पश्चात्तापक नाटकीय प्रदर्शनक साधन नहि। पति पत्नी आ बेटीक जीवनक निर्णय हुनके सभक अधिकार अछि; साक्षीक सार्वजनिक मर्यादा ओकर निजी घरक पानिक लोटा आ विद्यालयक बोतल धरि फैलेल अछि। महेश स्वयं दिनक समापन पर एहि अधिकारकेँ मानैत छथि। एतय नारीवादी आख्यानशास्त्रक मुख्य प्रश्न ई नहि जे पत्नी साहसी छथि कि नहि, बल्कि ओ कथा-क्रियाक निर्णयकर्ता छथि कि केवल घायल पुरुषक सहायक। उपलब्ध दृश्य दोसर विकल्प अस्वीकार करैत अछि।

सामानक हस्ताक्षर, साक्षीक दबाव आ अपराधक अनिश्चित प्रेरक

राघव सिंहक भतीजा सामग्री आयलाक तिथि लिखबाक अपन प्रत्यक्ष काज मानैत अछि; दोसर पन्नापर ओकर नामसँ लिखल हस्ताक्षर अपन नहि बुझैत अछि। ओ सामग्री पहुँचब आ सामग्री लगल अथवा भवन सुरक्षित भेलाकेँ एके उत्तर नहि बनबैत। राघव ठेका बचएबाक कारणेँ भतीजासँ झूठ कहब नहि चाहैत छथि। विधिक सहायता-कक्षमे युवक अपन बयानक स्वामी रहबाक आग्रह करैत अछि; काकाक उपस्थितिमे बोलत, मुदा अपन जवाब स्वयं देत। एहि दृश्यसँ युवाक निज-प्रामाण्य आ पारिवारिक सम्बन्धक अन्तर्विरोध व्यक्त होइत अछि। भतीजाक कहबासँ नवा खेप बन्द होएबाक फोन धमकी भेटैत अछि; लिखित रूपमे आगामी माल-आदेश स्थगित होइत अछि। मुदा स्थगनक वास्तविक प्रेरक अपराध-षड्यन्त्र सिद्ध नहि। सम्बन्ध जाँचक मुद्दा अछि, निष्कर्ष नहि।

अदिति चारि मदक प्राप्ति, मीनाक मरम्मति-पर्ची आ ललितक अस्वीकृत भार-प्रमाणनक भिन्नता स्पष्ट करैत छथि। एतय शिल्पी, अभियन्ता, ठेकेदार आ पारिवारिक गवाह सभक ज्ञानक्षेत्र अलग अछि। अभियोगक एकरेखीय कथा बनबासँ बचब महत्त्वपूर्ण, तथापि एहि प्रमाण-भेदक पुनरावृत्ति एखन पाठकीय गति धीमी करबाक जोखिम लैत अछि। भतीजाक बयानक नैतिक दबाव पाठक स्वतः महसूस करैत अछि; लगातार 'एक प्रमाण दोसर नहि' कहल जाएब कतहु-कतहु रचनाकारक भाषण जकाँ सुनाइत अछि। एहि कलात्मक सीमाक बावजूद युवकक ठेका-ह्रासक भय आ राघवक असहज सहयोग चरित्र-ध्वनिकेँ पूर्ण अभिलेखीय व्याख्यान बनबासँ बचबैत अछि।

अनाम नम्बर सँ महेशकेँ घरक विचार करबाक धमकी भेटैत अछि। फोनक वास्तविक प्रेषक ज्ञात नहि। एतय सुरक्षा-माँग विशिष्ट हत्या-भविष्यवाणी नहि, प्रत्यक्ष धमकी आ पहिचान-प्रसारक संग विवेकसंगत सावधानी अछि। आख्यान पाठककेँ सम्भावित षड्यन्त्रक अनुमान करए दैत अछि, मुदा सर्वज्ञ कथावाचक द्वारा अपराधीक नाम नहि खोलेल जाएब रहस्य-निर्माणक संग प्रमाण-निष्ठा सेहो अछि। जँ समीक्षक 'ठेका स्थगित कएनिहार अपराधी छल' अथवा 'प्रकाशित खबरमे परिवारक नाम छल' लिखथि, तँ दुनू दावा मूल गद्यसँ आगाँ निकलि जाएत।

रातिक हमला : दृश्य-अवधि, सीमित प्रत्यक्ष आ कर्तव्यक दाम

एक्कैसम पाठांशमे महेशक घरक दूधक लोटा, विद्यालयक बोतल आ दवाइक पोटलीक संग्रह, रोजमर्रा जीवनक लय स्थापित करैत अछि। ओहि परिचित लयकेँ रातिक खटखटाहट तोड़ैत अछि। महेश दरबज्जा नहि खोलैत; बाहरसँ 'पुरान गोदामक हिसाब'क आवाज अबैत अछि। ई वाक्य हमलावरक घोषित बहाना/उच्चरित शब्द अछि, वास्तविक उद्देश्यक सिद्ध प्रत्यक्ष नहि। जोरक ठोकरसँ काठ फाटैत अछि, भारी वस्तुसँ काँच टूटैत अछि, आ महेशक बायाँ बाँहमे काँचक चोट होइत अछि। हमलावर कतबा छला, ककर चेहरा छल, मोटरसाइकिल ककर छल—कोनो प्रत्यक्षदर्शीक पूर्ण पहिचान नहि। लेखक लोकक दौड़, पत्नी द्वारा बेटीकेँ सुरक्षित करब, घाव बाँधब आ पड़ोसिनक गुप्त सहायता-कॉलकेँ लम्ब दृश्यकालमे बिछबैत छथि। एहि जगह दस्तावेजी सारांशक बदला देह, ध्वनि आ शारीरिक प्रतिक्रियाक अनुक्रमक तीव्रता भेटैत अछि।

अस्पतालमे सलमाक सहायता आ चिकित्सकक परीक्षण एक महत्त्वपूर्ण कालिक सीमा तय करैत अछि : एहि अध्यायमे महेश जीवित छथि; काँचक चोटक जाँच–उपचार चलैत अछि, तत्काल प्राणघातक स्थिति दर्ज नहि। आक्रमणक बादक संवादमे महेश स्वयं आक्रमणकारीक पहिचान नहि करबाक कहैत छथि। पत्नी सुरक्षा-सूचीक तात्कालिकता दोहरबैत छथि; कबीर लिखित प्रतिक आग्रह आ सम्भावित आश्रयक गोपनीय सम्पर्क शुरू करैत छथि, मुदा नियमित सुरक्षाक आदेश अथवा शरणक पूर्ण सहमति नहि भेटल। राति पार भेला पर केवल तत्काल गश्तक निवेदन स्वीकार भेल; सुरक्षा-संकट समाप्त नहि भेल। कथा हमर भावनात्मक आशा—अस्पताल पहुँचला पर नायक बचि गेल—केँ एखन पूरा आश्वस्त नहि करैत।

नदीक चित्र आ आघात-पहिने परिवारक प्रत्याशा

बेटीक नदीक चित्र पहिल बेर एहि अध्यायमे संकटसँ अलग कल्पनाशील वस्तु रूपेँ प्रमुख होइत अछि। बच्ची नदीकेँ बाट आ पुल दुनू मानैत अछि; रोज विद्यालय जेबाक सुरक्षित मार्गक ओकर इच्छा बाल-संज्ञानक अपूर्ण, मुदा सटीक अभिव्यक्ति अछि। कागद अस्पताल धरि जाएत, बरामदामे मुड़त आ अगिला अध्यायमे स्मृतिवस्तु बनत। एतय नदी नक्षेपर मापल जलधारा नहि, बच्चीक दृष्टिसँ भय आ भविष्यक बीच अपन चलबाक अधिकार अछि। महेशक हाथमे ई चित्र देखब अस्पतालक आँसू-उत्पादनक सजावटी उपाय नहि, कारण चित्र पर चित्रक स्वामित्व बच्चीक अछि। महेशक पत्नी बेटीकेँ सच कहबाक अवसर दैत छथि; बच्चाकेँ चुप कराएब पिता बचएबाक एकमात्र उपक्रम नहि।

अध्यायक आरम्भ भोरक अखबारसँ, मध्य समाचारदफ्तर आ सुरक्षा-आवेदनक घड़ीसँ, अन्त रात्रिक हमला–अस्पतालसँ बनैत अछि। दिन-रातिक घटैत अवधि तनाव बढ़बैत अछि; हर कागद अपना प्रशासनिक घड़ी पर चलैत अछि, हमलावरक आगमन ओहिसँ स्वतंत्र। कथाकारक पात्र-केंद्र नैरा, महेश, पत्नी, भतीजा आ कबीर बीच घूमैत अछि, मुदा आक्रमणकारीक अन्तर्मन रहस्य राखैत अछि। ई चयन अपराध-प्रेरक सिद्ध करबाक सहज सर्वज्ञता अस्वीकार करैत अछि। साहित्यिक उपलब्धि संकटसँ पूर्वक घरेलू संसारक घनत्व अछि; सम्भावित सीमा ई जे कथा बारम्बार सरकारी आदेशक स्थिति विस्तृत ढंगसँ दोहरबैत अछि। तथापि अन्तमे पत्नी प्रहरीक नाम नहि, अगिला भेटक समय लिखैत छथि : संकटमे जीवन 'पूर्ण सुरक्षा'क नारेसँ नहि, अगिला घड़ीक निर्णयसँ चलैत अछि।

अध्याय ७१ — मृत्यु आ दस्तावेज

कल्हुक घाव आ आजुक प्रहार : मृत्यु-घटनाक कारणात्मक सीमा

अध्याय सातितक भोर अस्पतालक बरामदामे महेशक पत्नीक हाथमे घावक पट्टीक तिथिसँ शुरू होइत अछि। महेश एक हाथसँ कुरता पहिरबाक कोशिश करैत छथि, बेटी बटन लगा दैत अछि। एहि छोट देहगत सहायतामे कथा पहिल आक्रमणक परिणामकेँ मानवीय बनबैत अछि, मुदा पहिलक काँचक घाव आ बादक मृत्युक कारणकेँ गड्डमड्ड नहि करैत। चिकित्सकीय मुक्तिक प्रक्रिया चलैत अछि, परिवारकेँ सार्वजनिक द्वारसँ बाहर कोना सुरक्षित जाएब तकर स्पष्ट लिखित व्यवस्था नहि। पत्नी चिकित्सा, हमलाक शिकायत आ गोपनीय निवासक तीन फाइल अलग करैत छथि। एहि वर्गीकरणसँ कथा देखबैत अछि जे एकहि घायल देहपर अस्पतालक, पुलिसक आ सुरक्षा-प्रशासनक अधिकार भिन्न-भिन्न समयमे लागू होइत अछि। महेश अपन पुरान साक्षी-बयान अधिकृत अधिकारी धरि पहुँचेबाक व्यवस्था पक्का करब चाहैत छथि। हुनकर वाक्य एखनहुँ सामग्री प्राप्ति देखबाक सीमित ज्ञानपर आधारित अछि; सामग्री कतए लगल, से ओ स्वयं नहि देखने। एहि आत्मसीमा-स्वीकारक कारण हुनकर मृत्यु बादहिक अभियोगक भावनात्मक साक्ष्य बनलहुँ वस्तुगत दोषक पूर्ण प्रमाण नहि बनैत।

अस्थायी निवासक अनुमति दोपहरक कात भेटैत अछि; सुरक्षित गाड़ी अस्पतालक पाछाँक बन्द बरामदापर पहुँचबाक व्यवस्था होइत अछि। ई उपन्यासक करुण विडम्बना अछि : कागदपर सुरक्षा-प्रक्रिया किछु आगाँ बढ़ल, मुदा परिवारक सुरक्षित निकास एखन पूरा नहि भेल। घायल आवेदकक हस्ताक्षरक पहचान लेल कार्यालयक कर्मचारी महेशक प्रत्यक्ष उपस्थिति माँगैत अछि; कबीर अधिकारीकेँ खाट लग एबाक विकल्प रखैत छथि, मुदा भेट तत्काल होएबाक दबाव बनल रहैत अछि। एहि निर्णयक मूल्यांकन सावधानीसँ आवश्यक अछि। कथा एहि प्रक्रिया-संबन्धी दबाव आ हमलाक स्थानक अनुक्रम देखबैत अछि, मुदा कोन कर्मचारी जानि-बुझि हमलाक अनुकूल स्थिति रचलक, से कतहु प्रमाणित नहि। अधिकारीक असावधानी अथवा कार्यालयक कठोरता लेल आलोचनात्मक प्रश्न उठि सकैत अछि; हत्या-षड्यन्त्रमे प्रत्यक्ष सहभागिताक दावा पाठक बना नहि सकैत।

सातम–आठम पाठांशमे समय अचानक घन होइत अछि। आधा अन्हार गलियारा, काठक पेटी, पुरान खाट, धुलाईक ड्रम, बन्द कार्यालयक दुआर आ पाछाँक सँकर प्रवेश—ई सभ स्थान-विन्यास हमला घटबाक भौतिक

परिस्थिति बनबैत अछि। दू व्यक्ति प्रवेश करैत अछि; एक महेशक नाम पुकारैत, धक्का दैत अछि; दोसरक हाथमे लोहेक भारी वस्तु देखल जाइत अछि। प्रहारक ध्वनि उठैत अछि आ महेश खसि पड़ैत छथि। कबीर सहायता माँगबाक निर्णय लैत छथि; हमलावरक पाछाँ दौड़बाक बदला घायल महेश लग रहैत छथि। एहि क्षण पात्रक नैतिकता वीरगतिक अनावश्यक पीछा नहि, तत्काल उपचारक साधन सक्रिय करब अछि। कबीर दू आकृति देखैत छथि, ककरो स्पष्ट चेहरा नहि। आरम्भसँ स्थापित ज्ञान-सीमा सबसँ अधिक निर्णायक एतय बनैत अछि : भीषण हत्याक घटना सिद्ध, मुदा हत्याराक पहिचान नहि।

चिकित्सकक काज, खाटक परिवर्तन, औषधि आ पत्नी द्वारा घड़ीक काँट देखबाक क्रम घन दृश्य-अवधिमे चलैत अछि। पहिल बाँहक पट्टी एखनहुँ महेशक शरीरपर अछि, मुदा मृत्युक चिकित्सकीय संकट माथपर दोसर प्रहारसँ बनल अछि। साँझ चिकित्सक मृत्यु दर्ज करबाक समय बतबैत छथि। घटनात्मक पञ्जीमे ई निर्णायक परिवर्तन अछि—अध्याय ७० क जीवित घायल महेश अध्याय ७१ मे मृत। मृत्यु-पञ्जीक तिथि आ कारणक चिकित्सकीय सूचना जरूरी अछि, मुदा वास्तविक प्रहारक विस्तृत परीक्षण, शव-परीक्षण आ आपराधिक जाँच अलग प्रक्रिया छथि। महेशक हत्याकेँ अस्पतालक पुरान भवन-दोषक स्वतः परिणाम मानब असत्य होएत; हमलावरक शारीरिक हिंसा प्राथमिक घटना अछि, जकरा प्रेरक आ योजनाकारक खोज एखन बाकी।

मृतकक परिवारक दृष्टि : पत्नी आ बेटी कथाक केन्द्र

मृत्यु-घटनापर कथा पत्नीकेँ केवल शोकक दृश्य-वस्तु नहि बनबैत। ओ आवश्यक फोन, बच्चीक सुरक्षित ठाम आ उपचारक उपलब्ध जानकारीक बीच निर्णय लैत छथि। बेटीकेँ पिताक बचबाक झूठ आश्वासन नहि देल जाइत; माय स्पष्ट कहैत छथि जे बाबूजी आब नहि घुरताह। बच्ची पिताकेँ किछु घण्टा पहिने कुरताक बटन लगौने छल—ओहि स्मृतिक छोट वाक्य शोकक सभसँ तीक्ष्ण साहित्यिक स्रोत अछि। एहि जगह पूर्वक अनेक अभिलेखीय विवरणक तुलना मे देहक अन्तरंग स्पर्श सहज, अव्याख्यायित रहि सकैत छल। कथाकार एहि क्षण बच्चीकेँ रोएबाक स्वातन्त्र्य दैत छथि; माय हुनका चुप होबाक आदेश नहि दैत छथि। रस-शास्त्रक दृष्टिसँ करुण रसक सम्भावना उपस्थित अछि, मुदा पाठकक संवेदना दृश्य-स्थितिसँ उत्पन्न होइत अछि, केवल 'करुण' कहि देबाक घोषणा सँ नहि।

महेशक मृत्यु पछाति नैराक ग्लानि कथा-नैतिकताक दोसर केन्द्र अछि। ओ अपन पुरान नागरिक-पत्रमे गोदाम, पदनाम आ पारिवारिक बाटक इशारा एकठाम रखबाक भूल मानैत छथि। अखबारक सम्पादक लोकहितक उद्देश्यक नामपर सामूहिक सफाइ सुझबैत अछि; नैरा अपराध आ प्रकाशन-त्रुटिक भेद लिखबाक निर्णय लैत छथि। ई भेद अत्यन्त जरूरी : हत्या करबाक दायित्व अपराधीक अछि; अनुचित पहिचान-सङ्केत प्रकाशित करबाक सम्पादकीय जिम्मेदारी स्वतंत्र अछि। कथामे नैराक असावधानी आ हत्याक मध्य प्रत्यक्ष सिद्ध अपराध-कारणक एकरेखीय तर्क नहि। ओ अपन गलती स्वीकार करैत छथि, मुदा अनजान व्यक्तिक विरुद्ध हत्या-कमानक दावा नहि करैत। सार्वजनिक क्षमा देबाक सटीक सीमा पाठककेँ सजग करैत अछि : नैतिक उत्तरदायित्व स्वीकारब स्वयं आपराधिक दोषी ठहरब नहि।

एहि आत्मालोचना मे एक सम्भावित सीमा सेहो अछि। नैराक विवेचन अतिशय व्यवस्थित, मानो अभियोगक तीन अलग श्रेणी पाठकक सम्मुख पहिनहिसँ तैयार अछि। किछु पाठक अपेक्षा करताह जे शोकक अवस्थामे हुनकर भाषा टूटय, अहङ्कार अथवा आत्मरक्षाक अव्यवस्थित स्पन्दन अधिक देखायल जाए। उपन्यास हुनकर भावनाकेँ पूर्ण निराकार नहि करैत—प्रकाशित प्रति खोलब, घर नहि जाएब आ क्षमा-माँग लिखबाक समयक विराम ओकर संकेत अछि—मुदा नैराक वाक्य शास्त्रीय प्रमाण-पद्धतिक अनुशासित भाषा बने रहैत अछि। ई आलोचनात्मक प्रश्न पात्रक उपलब्धि घटबैत नहि; बल्कि रचनाक दार्शनिक उद्देश्य आ भावात्मक प्रत्यक्षता बीचक अनुपात जाँचैत अछि।

तीन साक्ष्यस्थल आ पेशागत मृत्युकर्मक अर्थ

कबीर घटनास्थलपर दू आकृति देखलाक पुष्टि करैत छथि, मुदा कपड़ाक लाल रंगक स्मृति काटि देबैत छथि। अधिकारी ड्यूटी-पंजी, पाछाँक द्वार आ कैमरा जाँचबाक सूची बनबैत छथि; कैमरा चलल छल कि नहि—एखन अज्ञात। पहिल हमलाक घरक फाटल दरबज्जा, दोसर हमलाक अस्पताल-गलियारा आ पुरान गोदामक सामग्री-पंजी तीन स्वतंत्र साक्ष्यस्थल छथि। ई स्थलविशेषता कथनशास्त्रीय 'आख्यान-स्थान' मात्र नहि, आपराधिक कारण-निर्माणपर रोकक कार्य करैत अछि। नजिक समय अथवा साझ गोदाम-शब्दसँ अपराधी समान सिद्ध नहि। राघव भतीजाक बयान लेल वकीलक माध्यमसँ समय चाहैत छथि, ओकरा जबरन मौन नहि करबैत; भतीजा डरैत अछि, मुदा बयान नहि देने लोक स्वयं दोषी ठहरैत नहि।

शवगृहक बाहर शशिभूषण महापात्रक प्रवेश विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर हाथमे बाँस, सफेद कपड़ा, सूत आ मजदूरीक खाता अछि। ओ सरकारी मृत्यु-पत्रक लेखक नहि; शोकक बीच आवश्यक श्रम–सामग्रीक व्यवसायी छथि। हुनकर दू लागत-पन्नामे सामग्री आ अपन मेहनताना अलग अछि। मृत्यु-पश्चात् देहक देखभालक काजकेँ 'पुण्य'क नामपर बिना पारिश्रमिकक अदृश्य श्रम बना देबाक प्रवृत्तिक प्रतिरोध एतय सम्भव अछि। शशिभूषण अग्रिम आ शेष देयक सही हिसाब रखैत छथि, अनावश्यक अनुष्ठान थोपैत नहि। एहि प्रसंगमे विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि श्रमिकक नाम आ पारिश्रमिककेँ महाकाव्यीय वीर-शोकक पाछाँ नहि छिपबाक आग्रह करैत अछि। मृतकक मर्यादा आ जीवित मजदूरक अधिकार परस्पर विरोधी नहि। तथापि लेखक शोक-मध्य नवीन पात्रक व्यवसाय-विवरण एतेक स्पष्ट करैत छथि जे किछु पाठककेँ दुःखक प्रवाह क्षणभरि थमल बुझा सकैत अछि। ई व्यावसायिक विस्तार कथाक घोषित सामाजिक व्यापकता साधैत अछि, मुदा संवेदनात्मक लयपर ओकर लागत सेहो अछि।

पत्नी ककरा कागद देब आ ककरा नहि, तकर निर्णय स्वयं लैत छथि। महेशक बयानक मूल प्रति अधिकृत सीलमे अछि, सार्वजनिक नकलमे निजी ठेकाना हटेबाक आवेदन अछि। हत्या-जाँचक लिखित प्राप्ति भेटैत अछि, मुदा अपराधीक पहिचान, सम्भावित ठेका-सम्बन्ध आ नियमित सुरक्षा-कर्मी आदेश एखन शेष। पुरान घरमे कपड़ा आ किताब लएबाक पड़ोसिनकेँ सीमित चाभी देल जाइत अछि। एहि सीमा-निर्धारणमे स्त्रीक आत्मनिर्णय स्पष्ट अछि; मृत पति आ राज्यक बीच पत्नी स्वयं कानूनी आवाज बनैत छथि। ओ घर फेर घुरताह की नहि, एहि प्रश्नक उत्तर टारैत छथि—ई अनिर्णय कमजोरी नहि, जबरन निवास-निर्णय सँ आत्मरक्षा अछि।

चित्रक अमुहरित स्मृति : अभिलेखसँ बाहरक सत्य

अध्यायक अन्तमे बेटी द्वारा बनाओल नदीक चित्र, जकर पाछाँ महेशक छोट निजी पाँति अछि, कोनो सरकारी मुहरक बगैर रहैत अछि। एहि चित्रक साहित्यिक मूल्य असाधारण अछि। हत्या-जाँचक फाइल महेशक मृत्यु-समय, घटनास्थल आ प्रहारक अनुमान संरक्षित करैत; बेटीकेँ पिताक संग अनुभूत जीवनक पूरा अर्थ ओ फाइल नहि दऽ सकैत। चित्र न त चिकित्सकीय साक्ष्य अछि, न अभियोगक प्रत्यक्ष प्रमाण; तइयो ओकर यथार्थता व्यक्ति–स्मृति आ सम्बन्धक क्षेत्रमे स्थापित अछि। ई भेद आख्यानगत प्रमाणपद्धतिक अनुचित विस्तार नहि, प्रमाणक क्षेत्र-विशेषक आलोचनात्मक समझ अछि। निजी स्मृति आपराधिक न्यायसँ ऊपर नहि; मुदा न्यायिक दस्तावेज निजी जीवनक सम्पूर्ण अर्थक उत्तराधिकारी सेहो नहि।

एहि अध्यायक मूल उपलब्धि शोककेँ सस्ता प्रायश्चित्तक भावनात्मक युक्तिमे बदलबासँ बचब अछि। नैरा गलती मानैत छथि, मुदा मरल महेश फेर नहि जिअैत; सुरक्षा माँग स्वीकार भेलहुँ हर ठाम उचित व्यवस्था भेल नहि; शशिभूषणक बिल नैतिक गुणक घोषणासँ बकाया नहि मिटैत। तुलना करैत देखल जाए तँ पहिल अध्यायमे जीवित सरितासँ मृत कहल गेल छल, एतय वास्तविक मृतक महेशक मृत्यु चिकित्सकीय रूपमे दर्ज होइत अछि। ई छाया-संवाद कृतिगत महत्त्व रखैत अछि, मुदा दुनूकेँ समान घटना अथवा एके संस्थागत त्रुटि मानब भूल। महेशक मृत्यु आधिकारिक कागदक केवल गलत नाम नहि, अपरिवर्तनीय जीवित देहक क्षति अछि। एहि अर्थमे भीष्म-पर्वक दीर्घ नैतिक तैयारी एतय असह्य, मूर्त त्रासदी प्राप्त करैत अछि।

अध्याय ७२ — संजयक दूरी

दू आकृति आ एक प्रहार : कथनक शाब्दिक निर्णय

महेशक मृत्यु-परीक्षणक प्रारम्भिक सूची, घटनास्थलक नक्शा आ कबीरक बयान—तीनटा पन्ना अध्याय ७२ क आरम्भमे मेजपर रखल अछि। लिखित पन्नामे 'दू आक्रमणकारीकेँ प्रहार करैत देखल'क अर्थ बनल अछि; कबीरक प्रत्यक्ष अनुभव एहन नहि छल। ओ दू आकृति देखलनि, एक प्रहारक क्षण आ महेशक खसब देखलनि; दोसर व्यक्ति प्रहार कएलक कि नहि—अज्ञात। कर्मचारीक संक्षेपण अज्ञात क्रियाकेँ सिद्ध घटना बना देने अछि। ओहि वाक्यक सुधार छोट सम्पादकीय परिवर्तन नहि, सम्भावित अभियोगक सीमा सुधरब अछि। पुरान पन्ना फाड़ल नहि गेल; संशोधनक संग जोड़ल गेल। एहि द्वि-पत्र व्यवस्था मे साक्ष्यक ऐतिहासिक शृंखला सुरक्षित रहैत अछि। समालोचक लेल इएह आवश्यक पाठ-दृष्टि : कोनो कथनक कम शब्द होएब अधिक सत्य नहि, आ व्यवस्थित सारांश सेहो मूल गवाहीसँ भिन्न दावा उत्पन्न करि सकैत अछि।

कबीरक प्रतिवाद अध्याय ६७ मे फकीराक 'सुनल' कैं 'देखल' बना देबाक प्रशासनिक भूलक संग कथात्मक अनुक्रम रचैत अछि। फकीरा आवाज सुनने छलाह, कागद हुनका दू व्यक्ति देखबाक साक्षी बना देलक; कबीर दू आकृति देखने छलाह, अभिलेख हुनका दुनूक प्रहार देखबाक साक्षी बनबैत अछि। ई आवर्तन मात्र विषयगत पुनरावृत्ति नहि, साक्षीक भिन्न इन्द्रियानुभव आ अपराधक भिन्न स्तरपर परीक्षण अछि। तथापि कथा फेर एक बेर

स्पष्ट चारि श्रेणी—प्राप्ति, प्रत्यक्ष, अनुमान, गोपनीय सूचना—सभकेँ अलग रखबाक उपदेशो देइत अछि; तेँ कलात्मक प्रभाव आ पद्धतिक पुनरावृत्ति दुनू दर्ज कएल जएबाक चाही।

संजयक दिव्यदृष्टि आ सीमित ज्ञान : द्विकालीन कथनक परीक्षा

पाँचम पाठांशमे आधुनिक जाँचसँ बहुत पुरान हस्तिनापुरक सभागृहमे प्रवेश होइत अछि। धृतराष्ट्र भीष्मक विषयमे पुछैत छथि; संजय उत्तर दैत छथि जे भीष्म शरशय्यापर छथि, प्राण एखन बाकी अछि। व्यासक वरदानसँ संजय दूरक युद्ध-दृश्य ग्रहण करैत छथि—ई महाकाव्यीय काल्पनिक ज्ञान-व्यवस्था अछि, आधुनिक विधिक साक्षीक सामान्य प्रत्यक्ष नहि। उपन्यास एकर चमत्कारिकता अस्वीकार नहि करैत, मुदा दैवी दृष्टि पबितहुँ मनक अज्ञात कारण आ भविष्यक सम्पूर्ण निर्णायक अर्थ अपनासँ जोड़बाक अधिकार संजयकेँ नहि दैत। संजय घटना आ अभिप्रायक भेद स्वयं कहैत छथि। ई दृष्टिसँ अध्याय मे प्राचीन असाधारण दृष्टि आ समकालीन सीमित मानवीय गवाहीक साम्य केवल नैतिक आत्मसंयममे अछि, इन्द्रिय-प्रमाणक स्वरूपमे नहि।

धृतराष्ट्रक कथन-स्थिति अलग अछि : ओ दृश्य नहि देखैत छथि, संजयसँ सुनैत छथि, फेर अपन मनमे दृश्य रचैत छथि। राजा ककर शंख ककर आदेश, ककर सैनिक ककर भय सँ युद्ध करैत अछि—एहि सम्बन्धमे उत्तर चाहैत छथि। संजय प्रत्येक सैनिककेँ दुर्योधनक इच्छाक स्वेच्छिक प्रतिनिधि नहि मानैत छथि; सेनामे श्रम, जीविका, भय आ राजकीय कर्तव्यक भिन्न कारण छथि। एहि क्षण युद्ध-वृत्तान्त केवल राजवंशक पराजय–विजयक सारांश नहि रहैत, युद्धक बोझ वहन करनिहार अनाम देहसभक इतिहास बनैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि लेल ई महत्त्वपूर्ण, मुदा आलोचककेँ ई नहि कहल उचित जे उपन्यास ओहि अनाम सैनिकसभक वास्तविक नाम, वंश आ स्वतंत्र कथा एतए सम्पूर्ण रूपसँ प्रस्तुत कऽ देने अछि। उल्टे संजय अनाम व्यक्ति लेल मनगढ़न्त जीवनी बनबासँ अस्वीकार करैत छथि। प्रतिनिधित्वक ई नैतिक संयम महाकाव्यीय व्यापकताक सीमा सेहो चिन्हित करैत अछि।

अध्यायक प्राचीन दृश्य युद्धक प्रथम दिवस, अर्जुन–कृष्णक संवाद आ दशम दिवसक भीष्म-पतनकेँ संजयक कथामे समेटैत अछि। ई अनेक दिनक कथाक सारांश एक सभागृहक कथनसमयमे संकुचित होइत अछि। पछिला अध्याय ६६ मे युद्धपूर्व अर्जुनक संवाद विस्तारसँ प्रस्तुत छल; एतय ओ संवाद संजयक माध्यमसँ पुनर्कथित होइत अछि। आख्या-स्तरक ई अन्तर महत्त्वपूर्ण : पहिने पाठक प्राचीन दृश्य 'घटैत' देखैत छल, एतय संजय ओहि घटनाक वृत्तान्त धृतराष्ट्रकेँ दैत छथि। भीष्मक पतन आ मृत्यु एतयो अलग अछि। संजय शिखण्डीक सक्रिय रथ-उपस्थितिकेँ निष्क्रिय ढाल नहि बनबैत, अर्जुनक बाणक भूमिका सेहो स्पष्ट करैत छथि। धृतराष्ट्रक शोकसँ राजकीय निर्णयक जिम्मेदारी स्वतः मेटि नहि जाइत।

धृतराष्ट्रक भीतर बनल कल्पित चित्र आ संजयक उपलब्ध दूर-दृष्टि अलग छथि। राजा अन्ततः संजयसँ कहैत छथि जे जँ कतहु नहि जनैत, तँ सेहो कहथि। ई राजकीय सुनवाईक परिवर्तन अछि : श्रोता पूर्ण निश्चय चाहबाक बदला अनिश्चिततासँ सहबाक अनुमति दैत अछि। संजयक बोलि अखण्ड सर्वज्ञता नहि, एकटा जिम्मेदार कथन-क्रिया बनैत अछि। तथापि प्राचीन कालधाराक पात्रसभ बहुधा आधुनिक स्रोत-नैतिकताक भाषामे बोलैत छथि। एहि भाषिक समकालिकीकरणसँ रचनाक बौद्धिक सम्बन्ध स्पष्ट होइत, मुदा महाभारतक मूल आख्यानक शैली–

सम्प्रदायगत भिन्नता ओझराएबाक जोखिम सेहो अछि। एहि खण्डक आलोचनात्मक सीमा एतय चिन्हित अछि : पुनर्रचित संजय ऐतिहासिक संस्कृत ग्रन्थक शब्दशः संजय नहि।

आधुनिक जाँचमे चारि काल आ ज्ञानक स्रोत

आधुनिक विदेहपुर लौटला पर नैरा महेशक बयानक प्राप्ति-पर्ची, कबीरक संशोधित बयान आ अस्पतालक समय-पंजी अलग रखैत छथि। प्राप्ति-पर्ची बयान जमा भेलाक प्रमाण, बयानक प्रत्येक आरोपक सत्यापन नहि। प्रवेश–निकासक पन्नासभ उलटा राखल रहला सँ कागदक क्रम बदलैत अछि, दर्ज समय स्वयं नहि। दू अलग घड़ीक पाँच मिनटक अन्तर सत्यापित बिना अपराधक छूटल समय बनि सकैत नहि। एतय कथनकाल—घटना घटबाक समय, अभिलेख लिखबाक समय, नकल बनबाक समय आ पाठमे प्रस्तुतिक समय—चारि स्तरमे बाँटल जा सकैत अछि। कथा विशेष रूपसँ जाँचक घड़ीक शुद्धिकरणपर बल दैत अछि; एहि संग गवाहीक विश्वसनीयता केवल स्मरण-शक्ति नहि, बाह्य अभिलेखक समयव्यवस्था सँ जुड़ैत अछि।

घटनास्थलक नक्शामे अधिकारी गोदाम दिस भागबाक सम्भावित तीर बनबैत अछि; कबीर ओकरा अपन प्रत्यक्ष बयानक भाग नहि मानैत। तीर मेटाओल नहि जाइत, 'जाँचक अनुमान' कहि अलग चिह्नित होइत अछि। ई दृश्य पात्रसभक भाषा-संशोधनकेँ दृश्य-विन्यासक संशोधन बनबैत अछि : एक रंगक रेखा दू प्रकारक प्रमा नहि। भतीजा अपन सामग्री-प्राप्ति हस्ताक्षर मानैत अछि, भवनक सुरक्षित उपयोगक परीक्षण नहि; अधिकृत बयान देबाक तैयारी होइत अछि, मुदा मूल सामग्री-पर्ची पहिने देखबाक शर्त अछि। एहि घटनासभक परिणाम तथ्यक पुष्टिक लेल नव बाट अछि, हत्या-षड्यन्त्रक पूर्ण उद्घाटन नहि।

नैराक सम्पादक 'प्रत्यक्षदर्शीसँ खुलल चेहरा' जेकाँ शीर्षक सुझबैत अछि; नैरा ओकरा अस्वीकार करैत छथि, कारण कोनो चेहरा पहिचानल नहि गेल। बादक समाचारमे हत्या, चलैत जाँच आ कबीरक संशोधित बयानक अस्तित्व प्रकाशित होइत अछि, मुदा अपराधीक नाम आ आदेशक स्रोत नहि गढ़ल जाइत। अध्याय ७१ क क्षमा-माँग एतय व्यवहारिक सम्पादकीय सुधार बनि रहल अछि। लेखकक नैतिक परिवर्तन केवल पछतावाक भाषण रहितहुँ पर्याप्त नहि; अगिला वाक्य आ शीर्षकक अनुशासनमे ओकर कसौटी अछि। एतय नैराक चरित्र-विकास कहला-पश्चात् भिन्न निर्णय लेल ठोस पाठ-साक्ष्य भेटैत अछि।

मिथुनक खोज, सीमातीर्थक दूतपत्र आ बच्चीक निजी स्मृति

लताक हाथमे 'मिठुआ' नामक नकल, अपूर्ण नाव-भाड़ा आ वृद्धक सुनल बयान अछि। महेशक हत्या-जाँचक शोकसँ दूर ई दोसर कथासूत्रक पुनरागमन अछि। मूल कृति एक व्यक्ति-कथा सम्पूर्ण करिते अन्य पात्रक अधिकारक काल-धारा नहि बन्द करैत। लता लाल धागाक सादृश्यकेँ मिथुनक पहिचानक पूर्ण प्रमाण नहि मानैत छथि; मूल पर्ची ककर लग अछि आ यात्रा-तिथि के देखलक, से प्रश्न लिखैत छथि। एतय मातृत्व अन्ध अनुमानक प्रतीक नहि, सतर्क खोजक सक्रिय ज्ञान-प्रक्रिया अछि। बच्चा एखन भेटल नहि; खोजक सम्भावित दिशा मात्र पुष्टिक प्रतीक्षामे अछि।

तारा, पद्मा आ जलसमितिक दूतपत्रक प्रसंग भीष्म-पर्वसँ द्रोण-पर्वक संक्रमण-धागा अछि। सीमा-यात्रामे मजदूरक नाम अनुमति बिना नहि छापबाक, स्रोतभाषा आ अनुवादक प्रति अलग रखबाक, नावक भाड़ा आ भाषा-

सहायताक मजदूरी निश्चित करबाक प्रश्न उठैत अछि। महेशक असुरक्षित प्रकाशनक विपत्ति पश्चात् दूसर यात्राक आरम्भमे सहमतिक सावधानी बढ़ि गेल—ई कारणात्मक नैतिक विकास देखाइत अछि; मुदा यात्रा सम्पन्न अथवा सीमा-समझौता सम्पन्न, एहन दावा नहि। कथा एक निर्णायक मृत्युसँ दोसर लंबित सामाजिक जीवनदिशि मुड़ैत अछि।

महेशक बेटी नवा निवासमे अपन नदीक चित्र किताबक बीच रखैत अछि; मायक पुछलापर एकर स्वामित्व स्वयं घोषित करैत अछि। पिता-शोकक अधिकार ओकरा हर बारि सार्वजनिक पत्रक सामग्री बनएबाक नहि। जँ संजयक कथनक मर्यादा 'जे नहि जनैत छी, नहि कहब', तँ बच्चीक स्थिति सँ ओकर अगिला नैतिक रूप निकलैत अछि : 'जे ककर निजी स्मृति अछि, ओकरा ककरो दोसरक इच्छासँ नहि कहब'। ई दूनू विधान अलग छथि—एकटा ज्ञानक सीमा, दोसरटा सहमतिक सीमा—मुदा उपन्यास हुनका संवादमे अनैत अछि। करुणा एहि नन्ही निजी निर्णयमे अछि, शोककेँ विराट आख्यानक सजावटी अन्त बना देबमे नहि।

भीष्म-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ६१–७२ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्रतिज्ञासँ हत्या-जाँच धरि : बारह अध्यायक घटना-रेखा

भीष्म-पर्वक पहिल चारि अध्यायमे शान्तनु–गङ्गाक शर्त, देवव्रतक प्रतिज्ञा, अम्बाक न्याय-अन्वेषण आ शिखण्डीक स्वनिर्णयक कथा उठैत अछि। बादक अध्याय ६५–६८ मे अस्पतालक पुरान पाँख, युद्धपूर्व अर्जुन–कृष्णक नैतिक संवाद, फकीराक सीमित श्रवण-बयान आ अदितिक चेतावनी-पत्रक मूल–सारांशक पाठान्तर आबैत अछि। अन्तिम चारि अध्यायमे पंजीक रिक्त स्थान, महेशक गुप्त पहिचानक अप्रत्यक्ष प्रकाशन, घरपर प्रहार, अस्पतालमे हत्या, कबीरक प्रत्यक्ष बयानक सुधार आ संजयक राजसभाक वृत्तान्त एक भयावह, मुदा बहुसूत्री परिणाम उत्पन्न करैत अछि। एहि क्रममे कमसँ कम तीन निर्णायक अवस्था बदलैत अछि—महेशक असुरक्षित प्रकाशन वास्तविक पारिवारिक धमकीक बीच पहुँचैत अछि; महेश घायल जीवितसँ मृतक बनैत छथि; मृत्युपछि गवाही आ प्रकाशनक शब्दसभ फेर लिखल जाइत अछि। दोसर अनेक क्रिया आंशिक अछि : निरीक्षण-पंजीक छूटल पन्ना नहि भेटल, हत्याराक पहिचान सिद्ध नहि, नियमित सुरक्षा-स्वीकृति नहि, मिथुनक ठाम नहि भेटल, सीमातीर्थक यात्रा एखन बाकी। एहि असम्पन्नता केँ कथाक कमी कहबाक पहिने ओकर कारणात्मक कार्य देखबाक चाही।

शास्त्रीय अन्तर्पाठक उपलब्धि आ सीमा

भीष्मक प्रतिज्ञा, अम्बाक असहमति, शिखण्डीक निर्णय, अर्जुनक युद्धपूर्व संकोच आ संजयक वर्णन एकरेखीय आदर्श-पात्र रूपमे आधुनिक लोकपर नहि चढ़ल। भीष्मक वचनक दृढ़ता महेशक गवाहीक दृढ़तासँ अलग ऐतिहासिक आ नैतिक परिस्थिति अछि; अम्बाक असहमति पत्नी–बेटीक सहमतिक अधिकारक शाब्दिक स्रोत नहि। शिखण्डीक युद्धभूमिक सक्रियता अध्याय ७२ मे संजयक कथावाचनमे पुनः स्थापित होइत अछि। उदयनक अनुपलब्धि-वाद (अध्याय ६९) आ संजयक ज्ञान-सीमा (अध्याय ७२) दर्शन आ कथनक एक साझा

आलोचनात्मक सूत्र प्रदान करैत अछि, मुदा न्यायकुसुमाञ्जलिक मूल शास्त्रीय अनुमान आधुनिक पुलिस-अनुसन्धानक विधि नहि। कथाक सफलता एहि सीमासभक सजग उपस्थितिमे अछि; संभावित दुर्बलता प्राचीन पात्रक अत्यन्त आधुनिक उत्तरदायित्वपरक वाक्यक शैली अछि, जइमे कालधाराक भाषिक भिन्नता कतहु कम भऽ जाइत अछि।

रामायणक सुन्दरकाण्ड शीर्षक भीष्म-पर्वक बारह अध्यायपर लागू अछि; मुदा एहि अन्तिम खण्डमे रामायणक कोनो स्वतंत्र हनुमान–लंका दृश्य प्रमुख कथात्मक आधार नहि। तें अध्याय ६९–७२ मे सुन्दरकाण्डक सीधा घटना-समतुल्य जोड़ि देब आधारहीन होयत। एहिठाम काण्डक संरचनात्मक स्थान दूरक साक्ष्य अनबाक, जोखिम लाँघबाक आ सन्देशक उत्तरदायित्वक व्यापक पाठन-प्रस्ताव देबैत अछि; प्रत्यक्ष प्रसंगक मिलान हर अध्यायमे स्वतः सिद्ध नहि। एहि संकोचक कारण मात्र शीर्षक-सादृश्यकेँ अन्तर्पाठीय विश्लेषण मानबाक दोष घटैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, कथनकाल आ साक्ष्यक संरचना

पर्वक कालव्यवस्था असाधारण रूपसँ पुनरावर्ती अछि : आधुनिक अस्पतालक वर्तमानसँ महाभारतक अतीत, फेर आधुनिक कार्यालय, गोदाम, घर आ हत्या-जाँच। अध्याय ६६ मे युद्धक आरम्भ दिस पूर्वकालीन लौटान; ७२ मे संजय द्वारा ओही युद्धक पुनर्कथन—एक घटना-कक्षाक भिन्न कथनस्तर। आधुनिक कथामे पति, पत्नी, बेटी, नैरा, अदिति, कबीर, फकीरा आ भतीजाक स्थानीय ज्ञान अछि; कोनो एक पात्रक कथन सम्पूर्ण जाँचक पूर्ण निश्चय नहि। तृतीयपुरुष कथावाचक घटनासभक दृश्य जोड़ि पाठककेँ पात्रसँ अधिक क्रम-सूचना देइत छथि, मुदा अज्ञात अपराधीक मनक नाम जादुई सर्वज्ञतासँ नहि खोलैत। एहि अर्थमे ज्ञानक वितरण नैतिक औचित्य बनैत अछि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ प्रेरित वैचारिक विन्यासक एक पद्धतिगत लाभ अछि : 'प्राप्ति-सही' सँ 'सम्पन्न निरीक्षण', 'दू आकृति' सँ 'दू प्रहार', 'शब्द सुनल' सँ 'देखल', 'प्रकाशित पहिचान' सँ 'निश्चित हत्याराक आदेश'—ई अनुचित छलाँगसभ सोझाँ अबैत अछि। मुदा दार्शनिक कसौटी कखनो कथाकारक प्रिय शैक्षणिक मुद्रा बनैत अछि; चारि कागदक अलग पाँति, समयक अलग पाँति, स्वीकृत आ अस्वीकृत पाँति बारम्बार उपस्थित होइत अछि। एहि आवर्तनकेँ एकरे सुखद 'बहुस्वरता' नहि मानबाक चाही; ई कथाक गति कखनो रोकेबाक जोखिम अछि। तइयो वास्तविक हिंसाक घड़ी आ शोकक बादक बच्चीक चित्र एहि अमूर्त भाषाकेँ देहगत संसारमे फेर धरि दैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास, श्रम आ शोकक राजनीति

पर्वक इतिहास केवल राजकीय वीर आ प्रशासनिक अधिकारीक नहि। सफाइकर्मी सलमा, गोमतीक बोरा-श्रम, ललितक भार-सुरक्षा, फगुनीक रोपनीक गणना, शशिभूषणक मृत्युपश्चात् पारिश्रमिक, पड़ोसिनक गोपनीय सहायता, पत्नी द्वारा निवासक निर्णय, बेटी द्वारा स्मृतिचित्रक स्वत्व—ई सभ राजनीतिक वा इतिहास-लेखनक मुख्य कथासँ बाहर छोड़ल जाइत पात्रक सक्रिय जीवन अछि। उपन्यास एहि श्रमक नाम आ मूल्य सार्वजनिक कथा-विश्वमे लिखैत अछि। मुदा केवल अनेक पेशाक नाम दर्ज होयब पर्याप्त चरित्र-गहनता नहि; पाठक जानए

चाहताह जे निर्णय, आघात आ दीर्घ सम्बन्धक प्रभाव भविष्यक अध्यायमे कतेक विकसित होइत अछि। एहि सम्भावित सूचीकरण-दोषक परीक्षण आगामी पर्वमे सेहो आवश्यक अछि।

भीष्म-पर्वक निष्कर्ष विजयोत्सव नहि। महेशक हत्या एक पात्रक अपरिवर्तनीय मृत्यु अछि; पत्नी आ बेटीकेँ जीबाक व्यवस्था, सुरक्षा आ आत्मनिर्णय चाही। नैराक सार्वजनिक स्वीकार सत्यापन-त्रुटिक नैतिक आरम्भ अछि, हत्याक सम्पूर्ण न्याय नहि। कबीरक संशोधित बयान अभियोगक शुद्धि अछि, अपराधीक पहिचान नहि। संजयक 'सभ नहि जनैत'क मर्यादा आ बच्चीक चित्र अपन किताबमे रखबाक निर्णय एहिसभ बीच मानवीय कथन-अधिकारक दू अलग सीमा बचबैत अछि। अगिला द्रोण-पर्वमे मूल प्रश्न ई रहत : जखन प्राण नहि लौटि सकैत, तखन प्रमाण, न्याय, साक्षी-सुरक्षा आ स्मृतिसँ सामाजिक जीवनक कतेक सच्चा पुनर्निर्माण सम्भव? ई प्रश्नक उत्तर समीक्षा पूर्वनिर्णीत रूपसँ नहि देत; मूल अध्यायक घटनापर अगिला क्रममे जाँचत।

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड

अध्याय ७३ — सीमातीर्थक उतराइ

नावक तख्ता : यात्राक पहिने श्रम आ सुरक्षाक कथा

अध्यायक आरम्भ यात्रीदलसँ नहि, मधु केवटक काम करैत हाथसँ होइत अछि। भोरमे भीजल नावक तख्ताक महीन चिरा जाँचब, लोहाक काँटी खींचब आ भारक स्थान बदलबाक निर्णय कथेत्तर तकनीकी विवरण नहि। एहि क्रियासँ कथा तय करैत अछि जे सीमातीर्थ धरि पहुँचबाक मुख्य पात्र केवल कागद लऽ चलनिहार तारा, पद्मा आ लता नहि, बल्कि नदीक जोखिम जाननिहार नाविक सेहो छथि। मधु नावक भाड़ा, सामानक भार, उतारबाक घण्टा आ प्रतीक्षा-दामकेँ अलग-अलग बहीमे राखैत छथि। जनहितक भ्रमणक नामपर निःशुल्क भाड़ा माँगनिहार कर्मचारीक पर्चीपर हस्ताक्षर नहि रहब स्वयं जनहितक आधिकारिक आदेश नहि सिद्ध करैत। कर्मचारी अपूर्ण प्रस्ताव वापस लैत अछि; मधुक श्रम बिना मूल्य सार्वजनिक सम्पत्ति नहि बनैत।

एहि आरम्भक घटनात्मक अनुक्रम स्पष्ट अछि : नावक चिरा भेटब → भार-जाँचक आवश्यकता → अतिरिक्त लोहेक औजार उतरब → रसीद दऽ जिम्मेदार लोक लग राखब → पहिल पड़ावपर सुरक्षित उतरब। तारा नक्शा आ असफल सन्धि-पत्र लऽ चलैत छथि, मुदा ओ नावक भार मापबाक विशेषज्ञ नहि; मधु तकनीकी अधिकार रखैत छथि। एहि सीमाक सम्मान सामूहिक निर्णयक नैतिक आधार अछि। यात्रा तुरन्त आरम्भ नहि होइत; सुरक्षा लेल देरी वास्तविक घटना अछि। जँ समीक्षक एकरा ‘सुरक्षित नाव-सेवाक पूर्ण सरकारी मंजूरी’ कहथि तँ मूल दृश्यक सूक्ष्मता नष्ट भऽ जाएत। नाव चलल, अग्रिम भाड़ा देल गेल, प्रतीक्षाक सम्भावित अतिरिक्त देय खुलल रहल—इएह सत्यापित परिणाम अछि।

शान्ति बोटेक दू बोराक भाड़ा-विवाद ई शुरुआती न्याय-प्रश्नकेँ दोसर कोणसँ खोलैत अछि। उतारघरक मेजपर एक बोरा ग्रहण लिखल अछि, जखन ओ दू बोरा पहुँचौने छथि। मधु शान्तिक दावाक उल्लेख करैत छथि, मुदा अपन बहीमे भुगतान सम्पन्न नहि लिखैत छथि। नावक गीला डोरीसँ बनल हथेलीक लाल निशान गवाहीक स्वाभाविक वस्तु अछि, मुदा बकाया रकमक आधिकारिक प्रमाणक स्थान नहि लैत। विदेह समानान्तर इतिहासक

दृष्टिसँ एहन लोकक दैनिक मजदूरीक सूक्ष्म अभिलेख राजकीय महाआख्यानसँ बाहर रहल जीवनक मूल्य देखबैत अछि। विशेष बात ई जे शान्ति यात्रीदलसँ स्वतन्त्र छथि : हुनक अगिला दिनक कमाइ, परिवारक खेप आ अपन पर्ची कथानकमे अपन कारणात्मक जीवन रखैत अछि।

यात्रा, भाषिक मध्यस्थता आ लताक निर्णयाधिकार

तारा तीन झोरा, पद्मा मूल भाषाक प्रश्न आ लता अपन निजी कापी लऽ चलैत छथि। लताक प्रश्न ‘मिठुआ’ नामक मूल पंजीक रखवाला के अछि—ई अछि, मिथुन भेटि गेलाह—ई नहि। पद्मा नामक सादृश्यसँ व्यक्ति-पहिचान सिद्ध नहि होएबाक बात कहैत छथि, मुदा लता अपन मातृत्वकेँ लगातार अविवेकी जल्दबाजीक आरोपसँ बचबैत छथि। एहि संवादमे पात्रक विकास केवल आशा सँ संशय धरि नहि, सहयोगक भूमिका पुनर्निर्धारित करब धरि पहुँचैत अछि। पद्माक अधिकार भाषाक अर्थ बुझाएब अछि; ककर उत्तर स्वीकार कएल जाए, ई लताक अधिकार। एही भेदक पुनरावृत्ति बादमे जल-समितिक सभामे अनुवादक आ स्थानीय स्त्रीक सम्बन्धमे भेटैत अछि।

परतीतटक उतरघरपर ‘गंडक’ आ ‘गंडकी’ लिखल फलक, आ दोसर ठाम ‘गोही’ लिखल पुरान भाड़ा-पथ रोमांचकारी नवा भौगोलिक खोज नहि बनैत। शान्ति सावधान करैत छथि जे कार्यालयक बुझाइ, पुरान पर्चीक लेखन आ वास्तविक धारक स्थान अलग स्रोत छथि। पद्मा दुनू नाम नोट करैत छथि, मुदा दू नदी अथवा एक नदीक निश्चित पहिचान घोषित नहि करैत। एतय स्थान केवल दृश्यात्मक पृष्ठभूमि नहि : गलत नामसँ मजदूरी, भाड़ा, ठेकाना आ प्रवेशक विवाद उत्पन्न भऽ सकैत अछि। एहि कारण नदीक भूगोलकेँ सांकेतिक ‘मातृभूमि’ बना देबासँ बेसी उचित नदी-संबन्धी नामक स्रोत-इतिहासक परीक्षण अछि।

सीमातीर्थक बाजारमे कुमुदी अपन सेवा दू बैठक धरि सीमित करैत छथि, आ बाट देखाएब, पक्षसभक बात सुनब तथा लिखित अनुवादकेँ अलग-अलग श्रम मानबैत छथि। तारा पहिने दर बेसी बुझैत छथि, मुदा कुमुदीक प्रश्न ओकर खाँचा बदलैत अछि। लता आग्रह करैत छथि जे प्रश्न अनुवाद होइते छोट नहि कएल जाए; कुमुदी मूल शब्दक असहमति खाली स्थानमे दर्ज करबाक शर्त मानैत छथि। एतय बहुभाषिकता सजावट नहि, ज्ञानक वितरणक संघर्ष अछि। दू भाषामे वाक्य बोलब मात्र पुनरावृत्ति नहि, गलत अर्थ सँ बनैत भविष्यक भौतिक क्षति रोकबाक श्रम अछि। तथापि कुमुदीक अनुवाद स्वयं प्रतिनिधित्व नहि; स्थानीय स्त्री अपन भाषा चुनैत छथि। एहि तर्कक बल ई जे आवाज आ आवाज पहुँचएबाक माध्यमक स्वामित्व अलग रहैत अछि।

कारीगरीक अनुबन्ध : छोट सन्धिक ठोस परिणाम

सोनमती तुरीक बाँसक चौखटा, निरु कुमालक बासन, मीरा बंजाराक ठेला आ मीना सार्कीक चर्म-पट्टा अलग-अलग पेशागत कथावृत्त छथि। व्यापारी बीस वस्तुक एकरूप आदेश आ एक नामक एक बिल चाहैत अछि; सोनमती पहिल पाँच नमूनाक दाम, संशोधित डिजाइनक अतिरिक्त श्रम आ अस्वीकृत खेपक वापसी-भाड़ा अलग करैत छथि। निरु साझा भट्ठी उपयोग मानैत छथि, मुदा अनदेखल सामूहिक ऋण नहि; मीरा अपन बहिनक ठेलाकेँ एके व्यापारिक चिन्हक अधीन नहि रखैत छथि; मीना भीजल पट्टाक भार-परीक्षण बिना सुरक्षित ढुलाईक दावा

नहि करैत छथि। ई निर्णय सभ समृद्धि अथवा अन्तिम बाजार-विजय नहि, जोखिमकेँ स्पष्ट सीमामे बाँधबाक प्राथमिक उपलब्धि छथि।

एहि चारि पेशाक परस्पर सम्बन्धमे कलात्मक सफलता अछि : सामग्री, परिवहन, डिजाइन आ भुगतान एक-दोसरपर निर्भर छथि, मुदा न एक व्यापारीक नेतृत्वमे सभ गुम भऽ जाइत अछि, न सभ बेरोजगार लोककेँ सामूहिक नैतिक प्रतीक बनाओल गेल अछि। मीना नमूनाक तस्वीर आ नव डिजाइनपर व्यापारीक सम्पूर्ण अधिकारक पाँति काटैत छथि; सोनमती नव पट्टाक प्रयोग-पर्चीमे दुन्नूक नाम राखबाक सहमति दैत छथि। श्रमक अधिकार केवल नकद मजदूरी नहि; नमूना, बौद्धिक योगदान, खराब मालक जोखिम आ काम बदलबाक क्षमता सेहो अछि। मुदा व्यापारी पैघ सौदा एखन मानि नहि लेलक, निरुक पाँच बासनक छोट निजी देय व्यवस्था बनल, सोनमतीक पहिल पाँच चौखटाक अग्रिम भेटल। ई सीमित फलित अवस्था पाठमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

जल-समितिक सभा : साक्षात्कार आ सन्धि बीचक अन्तर

जल-समितिक घरमे पुरान बाहाक हाथक बनाओल रेखा टाँगल अछि, मुदा स्थानीय स्त्री अपन नाप-डोरी लऽ कहैत छथि जे निजी देखल जल-चढ़ाव गवाही अछि, पूर्ण माप नहि। तारा विदेहपुरक नक्शाकेँ प्रमाणक श्रेष्ठता नहि दैत छथि। लता ‘मिठुआ’ लिखल नकलक रखवालाक प्रश्न सभामे रखैत छथि; वृद्ध कर्मचारी पर्ची स्वयं देखनेक बात कहैत छथि, किन्तु ‘मिठुआ’ बच्चा छल कि वयस्क—ई सुनल जानकारी अछि। लता स्वयं पक्का पता भेटबाक जल्दबाजी रोकैत छथि। तय केवल मूल अभिलेख देखबाक आधिकारिक समय होइत अछि; मूल प्रति भेटबे करत, एकर गारण्टी नहि। एहि क्षण खोज प्रगतिशील अछि कारण प्रश्न जाँचयोग्य बनल, नहि कि उत्तर तैयार भऽ गेल।

तारा पाँच असफल सन्धि-शर्त—चेतावनीक समय, निकासी खुललापर दायित्व, मुआवजा, पहुँच आ शिकायतक उत्तर—फेर पढ़ैत छथि। सचिव आजुक बैठकमे सहमति चाहैत अछि, मुदा स्थानीय परिवार खेत देखलाक पहिने हस्ताक्षर नहि करब चाहैत अछि। तारा स्पष्ट करैत छथि जे ई भेट ‘साक्षात्कार’ छल, ‘सन्धि’ नहि। कथेत्तर दृष्टिसँ ई प्रक्रिया-भेद लगि सकैत अछि; मुदा कथा-संरचनामे ई भविष्यक संघर्षक मूल खूँटा अछि। सनद नहि बनल, स्थानीय गवाही भेटल, अनुवादकक पारिश्रमिकपर आपत्ति दर्ज भेल मुदा सभा रोकल नहि गेल, आ परीक्षणक नव बाट खोलल गेल—ई वास्तविक परिणति अछि।

अध्यायक समय-रचना भोरक नाव-जाँच सँ मध्याह्नक शिल्प-आँगन आ सभा, फेर साँझक ओसार धरि चलैत अछि। दृष्टिकेन्द्र तारा, लता, मधु, शान्ति, कुमुदी आ कारीगरिनसभमे सरकैत अछि। अन्तिम कापीमे तीन पाँति—नामक नकल, पर्ची देखनेक बयान आ मूल अभिलेख देखबाक समय—रहैत अछि; ‘मिथुन भेटल’ नहि। एहि अन्तक संयम अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि अछि। ताहि संग एक सीमा सेहो अछि : प्रायः प्रत्येक संवाद पूर्वनिर्धारित लेखापरीक्षाक बौद्धिक सूत्रमे पहुँचैत अछि। नाविक, व्यापारी, दुभाषिया आ बालकक माय सभ पर्याप्त स्पष्ट, विधिपरक प्रतिवाद करैत छथि; ई वैचारिक औचित्य कथाक आकस्मिकता आ भाषिक भिन्नता कखनो कम कऽ सकैत अछि। मुदा नावक किरिच, चिखुरमे चप्पल, शान्तिक भोजन आ भाड़ाक भौतिक घड़ी ई जोखिमकेँ आंशिक रूपसँ संतुलित करैत अछि।

अध्याय ७४ — द्रोणक देय

खाली अन्नक मटकीसँ राजसभाक अपमान धरि

अध्याय ७४ भोरमे शान्ति बोटेक नाव-भाड़ा प्राप्ति सम्बन्धी असम्पन्न आवेदनसँ आरम्भ होइत अछि; तुरन्त बाद कथन प्राचीन कुरुकुलक घरमे प्रवेश करैत अछि। कृपीक अन्न-मटकीमे दू मुट्ठी दाना, अश्वत्थामाक अपूर्ण दूध-इच्छा आ द्रोणक निर्धनता—ई वस्तुसभ शिक्षकक ‘देय’ प्रश्नक सामाजिक आधार बनबैत अछि। द्रोणक विद्या मूल्यवान अछि, मुदा हुनकर आशा जे द्रुपदक सहपाठी-वचनसँ घरक अर्थसंकट दूर होएत, ओकर प्रमाण स्वतंत्ररूपेँ जाँचबाक आवश्यक अछि। कृपीक प्रश्न राजकीय कोष, मित्रक स्नेह आ निजी वचनकेँ एक ठाम नहि मिलबैत। शिक्षाक प्रतिदानक नैतिक माँग आरम्भसँ ही सार्वजनिक शक्ति-संबन्धसँ जटिल होइत अछि।

द्रुपद सभामे द्रोणकेँ चिन्हैत छथि, मुदा बचपनक निकटताकेँ वर्तमान राजाधिकारक बराबरी नहि मानैत; ओ सार्वजनिक अपमान करैत छथि। सभाक बाद द्रुपद स्वयं बुझैत छथि जे राजकीय भूमि बाँटबाक पुरान अतिउत्साही आश्वासन प्रजाक सम्पत्ति हस्तान्तरणक वैध आदेश नहि, मुदा ताहिसँ अतिथिक अपमान उचित नहि। एहि द्विपक्षीय आलोचनासँ उपन्यास द्रोणकेँ केवल पीड़ित महापुरुष आ द्रुपदकेँ केवल दुष्ट राजा बनबाक सरल विकल्प अस्वीकार करैत अछि। द्रुपदक राजधर्मक तर्कमे वैध सीमा अछि, व्यवहारमे अन्याय अछि; द्रोणक अपमान वास्तविक अछि, मुदा ओकर प्रतिशोध सभ विद्यार्थीक उत्तरदायित्व बनि नहि सकैत। कृप एहि निर्णायक सीमा पर बारम्बार प्रश्न करैत छथि।

विद्या प्रदर्शनक दृश्य द्रोणक प्रशिक्षक-रूपक क्षमता स्वीकार करैत अछि। ओ श्वास-नियन्त्रण, धनुक पकड़बाक मुद्रा, कमजोर विद्यार्थीक दोसर अवसर सिखबैत छथि। एहि निपुणताकेँ खारिज करब उपन्यासक उद्देश्य नहि। मुद्दा ई जे एक लोक कुशल शिक्षक रहितहुँ अपन निजी लज्जाकेँ विद्यार्थीक भविष्यक युद्धमे रूपान्तरित करबाक जोखिम लऽ सकैत छथि। अश्वत्थामा पुछैत छथि जे जकरा प्रवेशे नहि भेटत, ओकर योग्यता के देखत। ई प्रश्न अगिला अध्याय ७६ क एकलव्य-सूत्रक पूर्वपीठिका बनैत अछि। कथा द्रोणक निर्णयसँ पहिनहिसँ शिक्षा-प्रवेशक असमानता देखबैत अछि; एहि ठाम प्रतिगामी परिणाम सिद्ध भेलाक दामपर मनगढ़न्त घटना जोड़बाक आवश्यकता नहि।

शान्तिक बकाया आ श्रमिकक चलबाक अधिकार

आधुनिक कालधारामे शान्ति दू खिड़कीक अलग उत्तर सुनैत छथि : नाव चलएबाक अनुमति जल-समितिक विषय अछि, भाड़ा व्यापारीक। उतारघरक मोहर सामान पहुँचलाक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, भुगतानक प्रमाण नहि। अधिकारी अन्तमे मानैत अछि जे दू बोरा घाट-पंजीमे चढ़ल, मुदा व्यापारीक भुगतान-खातामे एक प्राप्ति मात्र अछि; अंतरिम प्राप्ति-पत्र दावाक सत्यापन शेष बतबैत अछि। ई एकटा सकारात्मक साक्ष्य-प्रगति अछि, रकम प्राप्ति नहि। शान्ति बकायाक फाइल आ आगाँक पारगमन अनुमतिक आवेदन अलग रखैत छथि। हुनकर जीवनक प्रश्न ईहो अछि जे जाँच पूरा होइते धरि नाव चलब बन्द कएल जाए की नहि। संघर्षक समय ‘केखन पैसा भेटत’ जतेक अछि, ‘ककर निर्णयसँ हमर काम रुकत’ ओतेक अछि।

आशा भूमिज खननक्षेत्रसँ विस्थापित परिवारसभक आवास, गाड़ी, औषधि, बन्द रोजी आ विद्यालय छूटबाक दिन अलग गणना करैत छथि। वृद्ध प्रत्यक्ष देखल गाड़ीकेँ गवाही दैत छथि, सभ घरक भीतरक सम्पत्तिक नहि; आशा परिवारक कथन, रसीद आ देखल तथ्यक स्रोत-सीमा अलग चिह्नित करैत छथि। किछु दिनक ठहराव-रकम अन्तरिम रूपमे मानल गेल; स्थायी क्षतिपूर्तिक हिसाब शेष। एहि दृश्यसँ बेघर लोक केवल विस्थापनक परिमाणात्मक संख्या नहि रहैत, हरेक परिवारक समय, किताब, श्रम आ अस्थायी आवासक विशिष्ट जीवन बनैत अछि। तथापि अधिकारीक कागदपूर्णता आ आशाक त्रुटिरहित विवेकक चित्रण कखनो अत्यधिक सुगठित प्रतीत होइत अछि; कथा वास्तविक जाँचक अपूर्णता राखैत एहि सीमाकेँ किछु कम करैत अछि।

चन्दा मुण्डाक समक्ष ठेकेदारक स्वीकृति बिना घर घुरबाक प्रमाण नहि देबाक छपल प्रारूप उपस्थित अछि। ओ काम छोड़बाक सूचना, बकाया मजदूरीक दावा आ यात्रा-पहिचान—तीन अलग आवेदन बनबैत छथि। कागदपर ‘सभ भुगतान प्राप्त’ लिखल रहला पर बिनु पढ़ने हस्ताक्षर करनिहार साथीकेँ रोकबाक बदला, ओ शब्दक अर्थ सुनबैत छथि। पाठांश २४ धरि छुट्टीक दिन आ सुनवाईक प्राप्ति-अंकक राह बनैत अछि, किन्तु बकाया भुगतान आ अगिला भोरक यात्रा निश्चित नहि। श्रमिकक शरीर, श्रमिकक देय आ श्रमिकक गतिशीलता अलग-अलग अधिकार छथि—इएह अध्यायक आधुनिक ‘देय’ सूत्रक मूल विस्तार अछि।

परिचयक अलग खाना आ सीमातीर्थक बहुभाषिक अभिलेख

रफीक अपन सुरजापुरी बोलीक पहचान आ समुदाय-संबन्धी परिचयकेँ एक डिजिटल खानामे मिला देबाक विरोध करैत छथि। भाषाक परिचय स्वयं जातिक नाम नहि; कार्यालयक कोठरीक अल्पता व्यक्तिक बहुस्तरीय इतिहासक अभाव नहि। कुमुदी मूल आवेदनक भाषिक रूप आ प्रशासनिक अनुवादक प्रयोजन भिन्न राखैत छथि। अधिकारी आपत्तिक लिखित प्राप्ति देलक, फाराम तत्काल नहि बदलल। ई निर्णय छोट अछि, मुदा अनुमानकेँ तथ्य बनएबाक संस्थागत दबावपर ठोस रोक अछि। नसीमा शेरशाहबादीक ‘मेची’ लिखल यात्रा-पर्चीपर मोहर अस्पष्ट अछि; परिवारक नामक त्रुटि सुधारबाक माँग सँ पूरा यात्रा-मार्गक निश्चित मानचित्र नहि बनैत। मैत्रीक ‘परोला’ सम्बन्धी पाठभेदो, बिना तिथि आ जारी करनिहारक विवरणक, वर्तमान मार्गक अन्तिम प्रमाण नहि।

एहि भिन्न नामसभक सामाजिक मूल्य अछि। रफीकक बोलीक स्वायत्तता, नसीमाक बेटी द्वारा अपन नामक दू लिखन-रूप, मैत्रीक परिवहन-पत्र—तीनू स्थानमे कार्यालय सामान्यीकरण चाहैत अछि; पात्रसभ स्रोतक प्रकार पूछैत छथि। ‘एक्के रूपमे लिखू’ प्रशासनिक सुविधा भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा व्यक्ति, जाति, भाषा आ स्थल-इतिहासक अन्तिम प्रमाण बनाओल जाए तँ गलत पहिचानक जोखिम होइत अछि। कथामे कुमुदी भाषा-सहायता करैत छथि, मुदा कार्यालयक कोड स्वयं बदलबाक अधिकार नहि मानैत छथि। अनुवादकक ज्ञान आ निर्णय-शक्तिक ई स्पष्ट सीमा कथाक प्रमाण-नीतिक महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि।

गुरु-दक्षिणाक खुलल खाना : द्विकालीन व्यतिरेक

अन्तिम प्राचीन प्रसंगमे कृप शिक्षाशालाक प्रशिक्षण-सूचीमे प्रतिदानक खाली खाना देखैत छथि। द्रोण शिक्षा पूर्ण भेलापर दक्षिणा माँगबाक अधिकारक बात करैत छथि; कृप पूछैत छथि जे शिष्यकेँ जोखिमक सीमा पहिनहिसँ बुझबाक अधिकार किएक नहि। एहि प्रश्नकेँ कथाक आधुनिक प्रसंगसँ तुलना कएलापर शान्तिक प्रतीक्षा-दाम,

चन्दाक बकाया, आशाक अन्तरिम क्षतिपूर्ति आ कुमुदीक अनुवाद-मूल्य एक वैचारिक समूह बनैत अछि, मुदा ओ सभ एक्के करार अथवा एके ऐतिहासिक घटना नहि। द्रोणक प्रतिशोधक इच्छा एखन शिक्षाशालाक देयखानामे अनिर्णीत प्रश्न अछि; विद्यार्थीसँ द्रुपद-विजयक कार्य एहि अध्यायमे सम्पन्न मानि लेब तथ्य-विरुद्ध होएत।

अध्यायक काल-व्यवस्था दोनू दिशामे चलैत अछि : आधुनिक भोर सँ प्राचीन परिवार आ राजसभा, आधुनिक कार्यालय–बाजारक लम्ब क्रम, फेर प्राचीन साँझक प्रशिक्षण आ अन्ततः लताक अभिलेखघर दिस तकब। एहिमे पूर्वदीप्ति मात्र नहि, अलग कथा-संसारक कथनात्मक समांतरता अछि। लता मूल बही देखबाक समय भेटने छथि, मिथुनक नव प्रत्यक्ष प्रमाण नहि; शान्तिक दावाक प्राप्ति, सत्यापन शेष; आशाक परिवारसभकेँ अन्तरिम राहत, पूर्ण क्षतिपूर्ति नहि; चन्दा घर घुरबाक प्रक्रिया बनौने छथि, मजदूरी प्राप्त नहि। ई अपूर्णतासभ कथानकक कमजोरी अनिवार्य रूपेँ नहि, किएक तँ अधिकारक माँग पूर्ण परिणामसँ पहिने लोकक निर्णय-क्षमता बदलैत अछि। सीमा ई जे अध्यायक एके दिनमे नव पात्र आ पेशागत विवादक तीव्र जमघट पात्रक स्वतन्त्र गहराइकेँ कखनो संक्षिप्त घोषणाक स्तरपर रखि सकैत अछि।

अध्याय ७५ — एक्के आखिरी अंक

‘७’क आकर्षण आ अनुचित एकीकरणक कथा

रेलचौकक पुरान गोदाममे नैरा तीन कागदक ढेरी धूरिसँ बचबैत छथि—महेशक हत्या-संबन्धी अधिकृत पत्रक सार्वजनिक, निजी विवरण मेटाओल प्रति, सीमातीर्थक परिवहन-पर्ची, आ विद्यालय–श्रम आवेदन। तीनू प्रकारक पन्नाक अन्तिम अङ्क ‘७’ कबीरकेँ एक रहस्यक संकेत लगैत अछि। नैराक पहिल प्रतिरोध ई जे समान अङ्क समान खाता नहि। कथा इएह समय पाठकक अपराध-संयोगक जिज्ञासा आ तथ्याधारित अनुशासनमे टकराव उत्पन्न करैत अछि। महेशक हत्या सत्यापित घटना अछि; एहन हत्या भेलाक कारण हर नवा संकेतकेँ एके अपराध-श्रृंखलाक अवयव बना देब आकर्षक अछि, किन्तु प्रमाण नहि। अध्यायक शीर्षक अभेद्यता नहि, एकीकरणक भ्रमपर आलोचनात्मक टिप्पणी अछि।

राजो भोगताक पताक अन्तिम कोड, शिव धाँड़ीक हाजिरी-टोकन आ प्रस्तावित लेनदेनक स्लिपमे अन्तिम अङ्क सात तीन अलग प्रशासकीय वस्तु छथि। कबीर एक क्षण सभकेँ जोड़बाक उत्सुकता देखबैत छथि; नैरा मूल बही, प्राप्तिक समय, प्रयोजन आ धारकक परिचय पूछैत छथि। साझा फोन-सूची बनौनिहार मूल लेखासँ नहि, साझा चित्रसँ सूचना लेने अछि। तखन ई चित्रसभक सूची अछि, अपराधक स्रोत-सम्बन्धक प्रमाण नहि। महेशक हत्याक प्रयोजन, अपराधीक पहिचान आ अभिलेखीय सम्बन्ध—तीन प्रश्नकेँ अलग रखबाक नैराक आग्रह पूर्वक अनियन्त्रित प्रकाशनक अनुभवसँ अर्जित आत्मालोचनात्मक परिवर्तन अछि।

आख्यानगत प्रेरित परीक्षणमे पक्ष निर्धारित कएल जाए तँ ‘तीनू कागद एके प्रकरणसँ सम्बन्धित छथि’ साध्य होएत; ‘अन्तिम अंक सात’ प्रस्तावित हेतु। मुदा ई अङ्क विभिन्न कोड-व्यवस्था, पृष्ठसंख्या आ टोकनमे दोहरैत अछि, अतः अपेक्षित अविनाभाव स्थापित नहि; अनैकान्तिक हेतु जेकाँ ई अपराध-संयोग सिद्ध करबाक लेल अपर्याप्त अछि। ई समीक्षकक विश्लेषणात्मक तुलना अछि, मूल उपन्यासमे औपचारिक आख्यानगत अनुमानक

पूर्ण प्रस्तुति नहि। कथा बारम्बार सादृश्यक मोह रोकैत अछि, मुदा प्रश्न करबाक अधिकार नहि हटबैत। नैरा चारि खाली परीक्षण-खाना राखैत छथि : मूल बही, हस्तलिपि, प्रविष्टिक समय आ ककरा लाभ। ई अनुसंधान-सूची कोनो अपराधी नाम नहि दैत, केवल जाँचक आगामी पद्धति निर्दिष्ट करैत अछि।

राजोक स्कूल, शिवक तीन दिन आ एकर पृथक् फलित अवस्था

राजो अपन पुरान ग्राम-पता आ वर्तमान किराया-पर्ची लऽ विद्यालय-सहायताक समस्या रखैत छथि। एकेक अंतिम कोडमे दू परिवारक आवेदन गड्डमड्ड भेलाक कारण हुनकर बच्चीकेँ सहायता सँ हटाओल जा रहल अछि। ओ ठेकानाक निरन्तरता दावा नहि करैत, नव निवासक वास्तविक दस्तावेज देबैत छथि। विद्यालय अन्तमे एक सप्ताहक पुस्तक-उपयोगक अस्थायी व्यवस्था आ निवास-जाँचक तिथि दैत अछि। ई केवल प्रतीकात्मक जीत नहि; बच्चीक पढ़ाइमे अवरोधक तत्काल जोखिम किछु घटैत अछि। मुदा पूरा सहायता स्वीकृति एखन नहि भेटल। राजो अपन बेटीकेँ अपराध-जाँचक कागदमे घसीटबाक स्पष्ट विरोध करैत छथि; एहि कारण मिथ्या ‘सात नम्बरक जाल’ जाँच-मात्र नहि, नागरिक अधिकारक प्रत्यक्ष जोखिम अछि।

शिवक पाँच हाजिरी-पर्चीमे धाँड़ी, धाँडि आ शिव लिखबाक अन्तर अछि। कामक तिथि आ बोराक संख्या मिलैत अछि, मुदा डिजिटल भुगतान नामभेदसँ रोकल गेल। मूल ठेका-खाता भेटलापर तीन दिनक सत्यापित मजदूरी जारी होइत अछि, शेष दू दिनक हाजिरीक मिलान बाकी रहैत अछि। शिव स्पष्ट करैत छथि जे नामक शुद्धि जरूरी अछि, मुदा वास्तविक माँग कामक दाम अछि। एतय घटनात्मक परिणाम सटीक अछि : तीन दिनक मजदूरी भेटल, दू दिनक शेष दावाक जाँच शेष, नामक अन्तर जानि-बुझि बदलबा वा मानवीय त्रुटि होएबाक कारण अनिर्णीत। एहि त्रुटिक आधारपर महेशक हत्याक वही अपराधी सिद्ध करबाक कोनो स्रोत नहि।

एहि दू पात्रक बगलमे रचना धिमालक प्रवासी बच्चासभक मातृभाषा-कक्षा अछि। तिलयुगा/तिलयुगबा लिखल पंजी आ कथागत तिलवाहक नाम ध्वनि मिलैतहुँ भूगोलक एकरूपता सिद्ध नहि करैत। रचना पाठ्यपुस्तकक एकरूपता चुनौती देबाक बदला घरक बोलीमे अन्तराल-पूरक पढ़ाइ प्रस्तावित करैत छथि। विद्यालय खाली कोठरी सप्ताहमे दू दिन आ परीक्षण-पारिश्रमिकक प्रस्ताव देलक, स्थायी स्वीकृति शेष। तेसर परिवार बच्चाक घरक बोलीपर उपहासक भय बतबैत अछि; रचना बच्चाक भाषिक स्वायत्तताक लेल चित्र आ गिनतीसँ आरम्भ होइवला पद्धति बनबैत छथि। एकदम सहज बहुभाषिक उत्सवक बदला लाज, असमानता आ शिक्षाक निरन्तरताक यथार्थ उपस्थित अछि।

औषधि : शब्दक अर्थ आ वस्तुक भौतिक यात्रा

सीमातीर्थक औषधि-परिवहन पर्चीमे मूल भाषाक ‘प्रस्थान लेल छोड़ल’ बात हिन्दी अनुवादमे ‘प्राप्त’ भऽ गेल अछि। कम्प्यूटर सातपर समाप्त क्रमाङ्ककेँ ‘पूर्ण’ देखबैत अछि, मुदा अस्पतालक भण्डारपाल बक्सा नहि, केवल सूचना भेटबाक बात कहैत अछि। मैत्री श्रेष्ठ परिवहनक तीन अवस्था—जारी होएब, गाड़ी प्रस्थान करब आ भण्डारमे वास्तविक प्राप्ति—अलग दर्ज करैत छथि। कुमुदी मूल वाक्य सुधारैत छथि, अनुवादक रूपमे नाम आ पारिश्रमिक पबैत छथि, मुदा एहि भाषिक सुधारसँ वास्तविक भण्डार-प्राप्ति सिद्ध नहि होइत। पुनः साँझमे

औषधि-बक्सा पहुँचैत अछि, सील मिलैत अछि, मुदा ताप-संरक्षणक एक पर्ची अस्पष्ट रहैत अछि; उपयोग-योग्यता चिकित्सकीय परीक्षणपर छोड़ल जाइत अछि।

ई प्रसंग अध्यायक सर्वाधिक ठोस ज्ञानमीमांसात्मक उपलब्धि अछि। कंप्यूटरीकृत ‘पूर्ण’ स्थिति, भाषाक ‘प्राप्त’ शब्द, वास्तविक बक्साक उपलब्धि आ चिकित्सकीय उपयोग-योग्यता चारि अलग प्रतिज्ञप्ति छथि। एतय प्रत्यक्ष, शब्दजन्य सूचना आ संस्थागत अभिलेख परस्पर उपयोगी छथि, मुदा एक दोसरक स्थान नहि लैत। गलत अनुवाद कियो अपराधक उद्देश्यसँ कएलक, से सिद्ध नहि; तइयो ओकर व्यावहारिक प्रभाव अस्पतालक दवाइक समयमे पड़ल। एहि ठाम पाठक बुझैत छथि जे प्रमाण-विवेक केवल शास्त्रार्थक बौद्धिक अभ्यास नहि, रोगीक शरीरक आवश्यकता अछि। मैत्रीक आग्रह पर नैरा अपन अनुसन्धान लेल औषधिक आवश्यक काम नहि रोकबैत छथि। एके घड़ीमे अन्वेषण आ उपचारक प्राथमिकता अलग होयबाक ई निर्णय पात्रक नैतिक विकासक सशक्त सूचक अछि।

संख्या, निजता आ कथनकालक समापन

अमीर कुल्हैयाक सोझाँ दलाल तीन परिवारक रकम एक निजी मध्यस्थक हाथमे एक कोडसँ पठेबाक प्रस्ताव रखैत अछि। ओ प्राप्तकर्ताक स्वतंत्र सहमति, शुल्क, विनिमय-दर आ विफल लेनदेनक वापसीक लिखित व्यवस्था माँगैत छथि। परिवारसभ अधिकृत पृथक् भुगतान-पथ चुनैत अछि। एतय सात अङ्क फेर उपस्थित अछि, मुदा धनक प्राप्ति-प्रक्रियाक सुरक्षा मुख्य प्रश्न बनैत अछि, महेशक हत्या नहि। कबीर अन्ततः ‘सात नम्बरक जाल’ नामक संभावित सार्वजनिक सूची सीमित करैत छथि, निजी पता हटबैत छथि, आ मूल कागदक मालिकक अनुमति दर्ज करैत छथि। एहि निर्णयमे जाँचक अवसर छोड़ब नहि; सार्वजनिक आरोपक अग्निकुण्डमे अपुष्ट सम्बन्ध नहि देबाक अर्जित संयम अछि।

लता ‘मिठुआ’ लिखल मूल पन्नाक शीर्षक नावसामान रहबाक कारण मिथुन-पहिचानक अनुमान कमजोर मानैत छथि। ओ खोज बन्द नहि करैत, पर्चीक लेखक आ वैध नकलक प्रश्न आगाँ रखैत छथि। अध्यायक भोर धूरि उड़ैत ढेरी आ ढीला कीलसँ शुरू होइत अछि, अन्तमे कबीर कील कसैत छथि। बाहरी खिड़कीक दुरुस्ती आ भीतरी सूचीमे असिद्ध सम्बन्ध हटएब एकटा सूक्ष्म रचनात्मक समानान्तर अछि; मुदा ई महेशक हत्या सुलझि गेलाक रूपक नहि। कथा रेलक स्वर जारी राखैत अछि, मानव-कार्यसभ स्वतंत्र चलैत रहैत छथि। आलोचनात्मक सीमा ई जे स्रोतभेदक कथन राजो, शिव, मैत्री, अमीर, लता आ नैरा सभक मुखसँ असाधारण स्पष्टता सहित बारम्बार अबैत अछि। एकहि बौद्धिक सूत्रक बहुत अनुप्रयोग पाठकेँ शिक्षण-पुस्तिका जकाँ अनुभूत करा सकैत अछि। तथापि अलग-अलग आंशिक परिणाम, बच्चेकेँ पुस्तक, मजदूरकेँ तीन दिनक दाम आ रोगीक वास्तविक औषधि-बक्सा एहि सूत्रकेँ मानवीय भौतिकता दैत अछि।

अध्याय ७६ — एकलव्यक बाद

विद्यालयक फाटक आ दू परिचय-पत्रक सामाजिक काल

अध्यायक पहिल दृश्य विद्यालयक देबाललग गाड़ल नव लोहेक डंडाक अछि। प्रतिमा राजवंशी पुरान दानपत्रक प्रति लऽ ठाढ़ छथि, मुदा ओकरा पूर्ण निजी अथवा सार्वजनिक भू-अधिकारक फैसला नहि मानैत छथि। प्रधानाध्यापक लिखित निजी निर्माण-स्वीकृति नहि देनेक बात कहैत छथि; मूल नापी-पंजीक जाँच शेष। राजो बच्चीक सहायता-प्रकरण आ विद्यालय धरि पहुँचबाक पैदल बाटकेँ दू अलग आवेदनमे रखबाक समर्थन करैत छथि। एतय शिक्षाक अधिकार केवल कक्षाक भीतर पाठ्यपुस्तक नहि; विद्यालय धरि सुरक्षित चलबाक बाट आ खुलल भूमिक निरन्तरतासँ सेहो जुड़ल अछि। रचना घरक बोली आ विद्यालयक शब्द बच्चीक नाव-चित्रपर अलग लिखैत छथि; ई भाषिक बहुलता स्थान-अधिकारक संवेदनशील पक्ष बनैत अछि, मुदा बच्चाक शब्द स्वयं भूमि-सीमाक कानूनी माप नहि।

रामवती खत्वेक पुरान निवास आ विवाहक बादक नाम अलग-अलग दस्तावेजमे भेटैत अछि। कार्यालय एकटा ‘गलत’ चुनबाक आग्रह करैत अछि, मुदा रामवतीक पहिनुक खेत-मजदूरी आ नव निवास दुनू वास्तविक जीवनक अलग काल छथि। पुरान परिचय मेटब पुरान मजदूरीक दावाकेँ झूठ बनबैत; नव परिचय मेटब बेटीकेँ विद्यालयमे माँक वर्तमान सम्बन्धसँ वंचित कऽ सकैत अछि। कुमुदी ‘वापसी’ आ ‘नव प्रवास’क अनुवाद-विसंगति स्पष्ट करैत छथि। रामवती अपन काजक पहिचान, वर्तमान निवास आ मजदूरीक दावा—तीन पृथक पाँति बनबैत छथि। सरिता द्वारा सँभालि राखल पुरान चिट्ठी हुनक अनुमति सँ घुरैत अछि; सरिता रखवालीक कारण अर्थ-स्वामित्व अपन नहि मानैत छथि। कार्यालय आवेदन स्वीकार करैत अछि, मूल जारी-पंजी मँगाओल जाएत; दुनू परिचयक अन्तिम विधिक मिलान एखन नहि।

एहि प्रसंगक कथनकाल एक दिनक सीमा भीतर कएक वर्षक स्त्री-श्रमक इतिहास लऽ अनैत अछि। रामवतीक रोपनी, जाड़क कपड़ा-मरम्मति, सरिताक घरमे किछु दिन ठहरब आ वर्तमान सीमातीर्थ-आवेदन एक व्यक्ति-जीवनक बहुकालिकता प्रकट करैत अछि। कथा प्रशासनक ‘एक नाम चुनू’ कथनक विरुद्ध स्मृतिक निरन्तरता राखैत अछि, मुदा स्मृति मात्रसँ अन्तिम विधिक प्रमाण बना नहि दैत। एहिमे नारीवादी आ नैतिक आख्यानशास्त्रक संयुक्त लाभ अछि : स्त्री अपन पुरान देह-श्रमक स्वामिनी छथि, मुदा तकर प्रमाण जुटेबाक सामाजिक दायित्व सँ ओ मुक्त घोषित नहि।

अँगूठाक बादक एकलव्य : घावसँ शिक्षाक पुनर्संरचना

आधुनिक कार्यालयक बीच नवम पाठांशमे प्राचीन वनक एकलव्य अँगूठाक पुरान घाव सहित लौटैत अछि। एहि पुनर्पाठक निर्णायक निर्णय ई जे ओ क्षतिपूर्ति पाबि कऽ शक्तिशाली योद्धा रूपमे पुनः प्रतिष्ठित मात्र नहि होइत; बालिका झुमकीकेँ धनुष देबाक पहिने पूछैत अछि जे सीखबाक इच्छा ककर। माय पठौने छथि, मुदा झुमकी स्वयं सीखब चाहैत अछि। कौशलक विषय जंगलक बाट, सुरक्षित गाँठ, छाल-पात्र, श्रवण आ वस्तुक माप अछि। गुरु-

शिष्य सम्बन्ध एकपक्षीय आज्ञा नहि, शिक्षार्थीक चयनक आधारपर बनैत अछि। ई मूल महाभारतक प्रसंगक प्रमाणित आगेक इतिहास नहि, उपन्यासक स्वतन्त्र कल्पनात्मक विस्तार अछि।

वृद्धा डोरीकारिणीक आपत्ति पुनर्रचित एकलव्यकेँ सेहो नैतिक परीक्षा देबैत अछि। साझा भण्डारमे डोरी देनिहारक नाम आ दाम छूटल अछि; नव विद्यार्थी बढ़ल, मुदा सामग्रीक श्रम अदृश्य भऽ रहल अछि। एकलव्य तुरन्त मुक्त शिक्षा घोषित नहि करैत, शिक्षाक समय, डोरीक लागत आ अनाजक अभावक यथार्थ स्वीकार करैत अछि। झुमकीक माय सामग्री नहि दऽ सकथि तँ ज्ञानक विनिमयक अन्य रूप सम्भव—मुदा एकर सहमति मायसँ पूछल जएत। बाँसक महीन फाट नहि देखलाक गलतीक बाद झुमकीकेँ बहिष्कृत नहि कएल जाइत; टुटल सामग्रीक दाम शिक्षणक खर्चमे राखल जाइत अछि। एहि दृश्यसँ विगत गुरु-दक्षिणाक हिंसा आ भावी शिक्षणक सहमति बीच स्पष्ट नाटकीय अन्तर बनैत अछि।

एकलव्यक आत्मकथनमे सर्वाधिक तीक्ष्ण क्षण ई जे ओ द्रोणकेँ गुरु मानने छल, मुदा द्रोणक मान्यता आ अपन स्वीकार एक नहि। ई वाक्य गुरु-शिष्यक नामक पारस्परिकताक प्रश्न उठबैत अछि। झुमकी अपन नाम स्वयं छाल-बहीमे लिखैत अछि; वृद्धा सामग्रीक हिसाब लिखैत छथि। ज्ञानक अधिकारकेँ केवल शिक्षकक आसनसँ नहि, शिष्यक नामक उपस्थितिसँ सेहो मान्यता भेटैत अछि। रातिक अभ्यासमे झुमकी मायक लौटबाक बाटक संकेत चिन्हैत अछि; पाठक जिज्ञासा तीरक लक्ष्यसँ घरक सुरक्षित आगि धरि घूमि जाएत। एतय कौशलक मूल्य हानि पहुँचएबाक क्षमता नहि, जीवन सुरक्षित रखबाक सम्बन्ध अछि। एकर करुण-ध्वनि अँगूठाक स्थायी घावसँ उपजैत अछि; तथापि पुरान हिंसाक परिणाम एक दिनक नवा कक्षासँ पूर्ण भरि गेल, एहन सरल सुखान्त नहि।

रुपया, अनुवाद आ निर्णयमे स्त्रीक नाम

बिनु दराईक सातम धन-खाम घरेलू श्रम आ प्रवासी कमाइक वितरणक प्रश्न खोलैत अछि। घरक छत, ससुरक औषधि आ बिनुक सम्भावित बचतक विषय अछि, मुदा प्राप्तकर्ता-खानामे पुरुष अभिभावकक नाम अछि। बिनु सम्पूर्ण पारिवारिक आय अपन नामे माँगत नहि; जकरा लेल पत्नी आ पति सहमत भेल छथि, ताहि अंशक स्पष्ट निर्णयाधिकार चाहैत छथि। अमीर कुल्हैया लिखित संयुक्त निर्देशक सुझाव दैत छथि, मुदा अनुपस्थित पतिक सहमति स्वतः लिखैत नहि छथि। सासुक ‘घरक धन’ तर्ककेँ बिनु पूर्ण अस्वीकार नहि करैत, घरमे ककर श्रम आ ककर निर्णय, ई प्रश्न जोड़ैत छथि। अन्तमे अगिला प्रेषणपर स्पष्ट निर्देश माँगबाक पारिवारिक चर्चा तय अछि, पुरान खर्चक विवाद शेष। ‘फरियानी’ लिखल प्रवास-पत्रक नामसँ निश्चित आधुनिक मार्ग घोषित नहि कएल जाइत; इतिहासक सङ्केत आ भौगोलिक प्रमाण अलग छथि।

सोमरी हेम्ब्रमक श्रम-अनुबन्ध मे ‘अनुशासन-भङ्ग’क मजदूरी-कटौतीक पाँति अनुवादसँ छूटल अछि; आवास आ दुर्घटना-चिकित्साक जिम्मेवारी सेहो अस्पष्ट। हुनका श्रमिक दल अनुवाद करएबाक प्रतिनिधित्व देने अछि, सभक बदला हस्ताक्षर करबाक अधिकार नहि। कुमुदी अपना सन्थाली-ज्ञानक सीमा स्वीकार करैत छथि, तेँ प्रशिक्षित भाषिक सहयोगी आ दलक पढ़ल सदस्यक सहायताक निर्णय होइत अछि। एक युवक ऋणक दबावसँ शीघ्र काम लेबाक दिशि झुकैत अछि, दोसर सदस्यसभ भाषा-जाँच धरि ठहरैत छथि। सोमरी सभकेँ एक निर्णय लेल बाध्य

नहि करैत छथि। एहि चरित्रक शक्ति ‘हम सभक उद्धार करब’क नायकत्वमे नहि, ककरो असहमति अपन नामसँ दर्ज करबाक व्यवस्था बनएबामे अछि।

मैत्रीक ‘ललबगेया’ लिखल पुरान परिवहन-पत्र मे अनुवादकक श्रेय आ शुल्कक प्रश्न उठैत अछि। नामक लिखित रूप, दूरीक इकाइ आ सामानक प्रकृति अलग सत्यापन-विषय छथि; एहि पाठसँ वर्तमान सड़कक निश्चित मार्ग अथवा दवाइक ताप-योग्यता नहि सिद्ध होइत। प्रतिमाक विद्यालय-जमीनक उत्तरमे मूल नापी-पंजी मँगाओल गेल, निजी निर्माण विद्यालय द्वारा स्वीकृत नहि, आ अस्थायी पैदल बाट खुलल रखबाक जिम्मा स्वीकारल गेल। ई पूर्ण भूमि-विजय नहि; जाँच धरि बच्चाक पहुँच बचबैत छोट निर्णय अछि। एहि भिन्न कथासूत्रक संगतिमे अध्यायक वास्तविक सूत्र ‘जे शर्त लिखल, ओकरा बदलबाक अवसर ककरा’ अछि।

अन्तर्पाठीय सफलताक संग कथात्मक सीमा

अन्तिम पाठांशसभमे नैरा रामवतीक स्वीकारल आवेदन, बिनुक आगामी धन-निर्देश, सोमरीक अनुवाद-परीक्षा आ प्रतिमाक मूल नापी-पंजीकेँ अलग सूचना रूपमे पबैत छथि। ओ एहि सबकेँ महेशक हत्या-जाँचक एके कड़ी घोषित नहि करैत; हत्या सम्बन्धी चारि खाली स्रोत-खाना एखन खाली अछि। सरिता स्पष्ट करैत छथि जे एकलव्यक चोट बुझलासँ रामवतीक दस्तावेज स्वतः तय नहि होइत। ई उपन्यासक अन्तर्पाठीय अनुशासनक अत्यन्त सटीक स्वीकृति अछि : पुराकथा प्रश्न देखबाक दृष्टि दैत अछि, आधुनिक प्रमाणक स्थान नहि लैत।

प्राचीन एकलव्यक छाल-बहीमे झुमकीक पहिल चिन्ह आ वर्तमान रामवतीक दू परिचय-पत्रक अलग आवरण, बिनुक बचतक कापी, सोमरीक सामूहिक भाषा-बैठक आ प्रतिमाक सार्वजनिक बाट —एहि सबमे ‘नाम लिखबाक अधिकार’ एक आवर्ती वस्तु बनैत अछि। कथनकाल आधुनिक भोर, प्राचीन वनक शैक्षणिक दिन, आधुनिक साँझ आ रातिक छोट समाचारक बीच घूमैत अछि। दृष्टिकेन्द्र प्रतिमा, रामवती, एकलव्य, झुमकी, बिनु, सोमरी आ नैरा बीच वितरित अछि। एतेक पात्रक एके अध्यायमे आगमन सामाजिक व्यापकता दैत अछि, मुदा प्रत्येक पात्रक मनोवैज्ञानिक गहराइ लेल अपेक्षित दृश्य-अवधि कखनो छोट पड़ी सकैत अछि। तर्क-वाक्यक असामान्य स्पष्टता सेहो संवादक प्राकृतिक संकोचकेँ कम करैत अछि। तथापि झुमकीक टुटल बाँस, सोमरीक बच्चाक सीलवला सूत आ बिनुक सासुक धान सुखेबाक घरेलू श्रम वैचारिक सूत्रकेँ देहधारी बनबैत अछि।

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७३–७६ क संयुक्त आलोचना

घटनात्मक क्रम आ असम्पन्न निर्णयसभक मानचित्र

पहिल चारि अध्यायक घटनात्मक विन्यास सीधा आरोह नहि। अध्याय ७३ मे यात्रा-सुरक्षाक निर्णय, अनुवादकक द्विबैठकीय करार, कारीगरक परीक्षण-खेप आ ‘मिठुआ’क मूल बही देखबाक समय निश्चित होइत अछि; जल-समितिक सन्धि नहि होइत। अध्याय ७४ मे शान्तिक दू बोरा सम्बन्धी दावाक प्राप्ति, आशाक अन्तरिम ठहराव-सहायता, चन्दाक पृथक् प्रस्थान आ मजदूरी-आवेदन, रफीकक भाषिक आपत्तिक प्राप्ति होइत अछि; बकाया, स्थायी पुनर्वास आ फाराम-संशोधन शेष। अध्याय ७५ मे शिवक तीन दिनक मजदूरी जारी होइत, राजोक बच्चीकेँ सप्ताहभर पुस्तकक अस्थायी पहुँच भेटैत, औषधि-बक्सा पहुँचैत मुदा ताप-योग्यता जाँचाधीन रहैत, आ अङ्क-

संयोगक अपराध-दावा अपुष्ट ठहरैत अछि। अध्याय ७६ मे रामवतीक दस्तावेजी आवेदन स्वीकारल, प्रतिमाक स्कूल-भूमिक मूल पंजी मँगाओल, बिनुक धन-सहमतिक नवा प्रक्रिया आ सोमरीक भाषिक अनुवाद-सत्र निश्चित होइत अछि; एकलव्यक नव कक्षाक प्रयोग शुरू होइत अछि। एहि सूचीमे ‘प्राप्ति’, ‘जाँच’, ‘अन्तरिम स्वीकृति’, ‘भुगतान’ आ ‘पूर्ण निर्णय’क अलग स्तर राखब अनिवार्य अछि।

द्रोण, एकलव्य आ अधिकारक पुनर्पाठ

द्रोणक निर्धनता सत्य अछि; द्रुपदक अपमान वास्तविक अछि; मुदा शिक्षाक दक्षिणाकेँ गुरु-अपमानक प्रतिशोधक असीमित साधन बनबैत कखन न्यायसङ्गतता टूटैत अछि, ई उपन्यासक प्रश्न अछि। एकलव्यक अँगूठाक बाद झुमकीक नव पाठशाला एहि प्रश्नक आलोचनात्मक उत्तरक एक सम्भावना अछि—प्रवेशमे शिष्यक इच्छा, सामग्रीक मूल्य, अपूर्ण कौशलक पुनर्शिक्षा आ गुरु–शिष्य नामक पारस्परिक स्वीकार। ई अन्तर्पाठ मूल महाभारतक कथात्मक श्रेणीकेँ बदलैत अछि, मूल ग्रन्थक सटीक ऐतिहासिक घटना विस्तारक दावा नहि करैत। आधुनिक नाविक, दुभाषिया, श्रमिक, विद्यालयक बच्चा आ शिल्पकारक कथा एहि प्राचीन सूत्रकेँ विशिष्ट देह, समय आ दाम दैत अछि। रामायणक ‘सुन्दरकाण्ड’ यहाँ व्यापक संरचनात्मक काण्ड-संकेत अछि; एहि चारि अध्यायमे हनुमानक स्वतंत्र प्राचीन दृश्यकेँ प्रमुख घटना कहब पाठसँ समर्थित नहि।

आख्यानगत विवेक, कथा-समय आ बहुस्वरताक सीमा

‘मिठुआ’ लिखल सामान-बहीसँ मिथुनक पहिचान, समान अङ्क ‘७’ सँ समान अपराध, नावक मोहरसँ पूरा भुगतान, जारी दवा-सन्देशसँ चिकित्सकीय प्राप्ति, दानपत्रक प्रतिलिपिसँ विद्यालय-भूमिक अन्तिम सीमा, अथवा पुरान विवाहपूर्व नामसँ वर्तमान श्रमक अस्वीकार—प्रत्येक असिद्ध छलाँग एक प्रकारक अपर्याप्त हेतु-प्रयोग अछि। मुदा सभ प्रमाण एके श्रेणीक नहि : कतहु शब्दक अर्थ अनिश्चित, कतहु प्रत्यक्ष सीमित, कतहु स्रोत-सम्बन्ध कटि गेल, कतहु कानूनी निर्णय लंबित। एतय आख्यानगत पदावली समीक्षकक विश्लेषण-पद्धति अछि; मूल शास्त्रीय ग्रन्थक विस्तृत सूत्र प्रत्येक संवादमे प्रत्यक्ष उपस्थित नहि। एहि धागासँ कथाक बहुस्वरता सम्भव बनैत अछि, कारण स्थानीय नाविकक प्रामाणिक ज्ञान, अनुवादकक भाषा-ज्ञान, मायक निजी अनुभव आ चिकित्सकक विशेषज्ञता अलग-अलग क्षेत्रमे अधिकार पबैत अछि।

तथापि कलाकारक दृष्टिसँ एक कठोर आपत्ति उठैत अछि। अनेक पात्र जखन प्रत्येक विवादमे सही प्रमाण-श्रेणी आ आदर्श नैतिक सीमा सुस्पष्ट शब्दमे कहैत छथि, तँ आवाजसभक सामाजिक विविधता वैचारिक एकरूपतासँ आच्छादित भऽ सकैत अछि। अलग पेशाक विस्तृत उपस्थिति अपने-आप बाख्तिनीय बहुस्वरताक पूर्ण प्रमाण नहि। वास्तविक बहुस्वरता तखन सिद्ध होएत जखन पात्रसभक परस्पर असहमत मूल्य, आपत्ति आ परिणाम कथाकारक अन्तिम सही उत्तरसँ बाहर सेहो टिकैत रहथि। सोनमतीक देरिसँ कमाइ, निरुक ऋणक डर, सोमरीक ऋणी युवकक शीघ्र काम चुनबाक जोखिम, राजोक बच्चीकेँ पुस्तकक तात्कालिक आवश्यकता आ लताक निरन्तर खोज एहि सम्भावनाकेँ बचबैत अछि। कथाक सर्वाधिक सफल दृश्य ओहि ठाम छथि जतय वस्तु—नावक दरार, डोरी, रसीद, बक्साक सील, टूटल बाँस—तर्कसँ पहिने सोझाँ अबैत अछि।

उपलब्धि, आलोचनात्मक प्रतिपक्ष आ अगिला प्रश्न

चारू अध्याय मिलि द्रोण-पर्वक प्रथम रूपकेँ युद्धक गुरु-आदेशसँ जीवनक प्रवेश-शर्त धरि विस्तारित करैत अछि। महेशक मृत्यु पछाति जाँच एखन खुलल अछि, मुदा सभ परिवारक दिन हत्या-प्रकरणक उपकथा बनि नहि गेल। एहि विस्तारमे कृतिक सामाजिक शक्ति अछि। एक सीमा ई जे प्राचीन आ आधुनिक हर क्रमक जोड़ प्रायः दार्शनिक रूपसँ अति-पारदर्शी अछि, तकर फलस्वरूप कथात्मक अनिश्चितताक सहज तनाव कखनो कम होइत अछि। तथापि लताक ‘मिठुआ’ बहीक अस्पष्टता, द्रोणक असम्पन्न दक्षिणा-विवाद, औषधिक ताप-परीक्षण, रामवतीक मूल जारी-पंजी आ शिवक दू दिनक बकाया पर्याप्त खुलल प्रश्न रखैत अछि। अगिला अध्यायसभक समीक्षामे ई देखबाक रहत जे एहि खुलल प्रश्नसभक कारणात्मक निरन्तरता पात्रक जीवनमे विकसित होइत अछि कि केवल नव फाइल-प्राप्ति बनि रहैत अछि।

अध्याय ७७ — त्रिजटाक सन्देश

अशोकवाटिकाक सुनल वाक्य : समाचार, आशंका आ कथनक विश्वसनीयता

अध्याय प्राचीन लंकाक अशोकवाटिकामे सीताक अँगुरीमे फाटैत पात आ दोसर पातक मजबूत नससँ आरम्भ होइत अछि। ई केवल करुण वातावरणक सजावट नहि। पातक नाजुकता आ बचल डोरीक बीच भेद ठीक ओहि प्रकारक अछि जेना युद्धक विषयमे अनिश्चित कानाफूसी आ प्रमाणित समाचारक अन्तर। पहरेदारक एक अस्पष्ट वाक्य दोसरक मुँहमे निश्चय बनि जाइत अछि। कथनक मूल घटना रणभूमिमे कोन परिणाम भेल—ई नहि; अनिश्चित सूचना कोना निर्णायक भाषामे बदलैत अछि—ई अछि। सीता ‘के देखलक’ आ ‘द्वारक लोक ककर मुँहसँ सुनलक’ पूछैत छथि। प्रश्नक क्रम स्वयं समाचारक स्रोत-श्रृंखला खोजैत अछि; पहरेदारिनी साक्ष्य दऽ नहि सकैत अछि। कथा पाठकसँ सेहो कोनो सर्वज्ञ युद्ध-परिणाम नहि बाँटैत, तें पाठकीय ज्ञान सीताक असुरक्षासँ नैतिक रूपमे जुड़ैत अछि, मुदा ओकरा बराबर नहि होइत।

त्रिजटा कहैत छथि जे राजभवनमे दू सेवक युद्धक समाचारपर बहस करैत सुनलनि; हुनका लग लिखित पत्र अथवा रणभूमि देखनिहारक प्रत्यक्ष बयान नहि छल। ई आत्मसीमांकन हुनकर कथनक प्रामाणिकताकेँ कमजोर नहि, बल्कि अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि : ओ सुनेल सूचना आ देखल अवस्थाकेँ मिलबैत नहि छथि। सीताक प्रश्न ‘एतेक अनिश्चित छी तखन कहए किएक एलीह’ एकटा वास्तविक प्रतिपक्ष उपस्थित करैत अछि। केवल सावधान सूचना देब सेहो बन्दी स्त्रीक पीड़ाक कारण बनि सकैत अछि। त्रिजटा प्रत्युत्तरमे बतबैत छथि जे पहरेदारिनीक असिद्ध निश्चितताकेँ चुनौती देब जरूरी छल। एहि प्रकार सत्यक नैतिकता ‘सभ किछु नहि कहब’ अथवा ‘जे सुनल सब कहि देब’क बीच चुननिहार सरल उपदेश नहि, बरु गलत निश्चितताक सम्भावित हानि आ समाचारक सीमित उपयोगक बीच निर्णय अछि।

ढोलक ध्वनि सुनैत त्रिजटा स्पष्ट करैत छथि जे आवाज मात्रसँ जीत, हार अथवा शोक तय नहि होइत। सीता बतबैत छथि जे वाटिकाक धरती, वृक्ष आ त्रिजटाक मुख हुनकर प्रत्यक्ष अनुभव अछि, प्रियक दशा नहि। कथक दृष्टिकेन्द्र सीताक भयक भीतर पहुँचैत अछि, मुदा भयकेँ युद्धक तथ्य घोषित नहि करैत। जौक माड़ पीबबाक छोट

क्रिया एहि प्रसंगक महत्त्वपूर्ण ‘देहगत घटना’ अछि : सीता अनिश्चित समाचारक कारण अपन देहक रक्षा छोड़ैत नहि छथि। त्रिजटाक गीत सेहो भविष्यवाणी नहि; सहचर्यक भावात्मक माध्यम अछि। एहि दृश्यपर करुण रस आ सख्यभावक आंशिक प्रभावक चर्चा उचित अछि; गीतसँ सत्यापन सम्पन्न भऽ गेल, से मानब भारतीय काव्यशास्त्रक रसकेँ प्रमाणक स्थान देब होएत।

घटना-पञ्जी आ द्विकालीन कथन-विन्यास

प्राचीन स्तरक घटना-पञ्जी सीमित मुदा स्पष्ट अछि : अस्पष्ट युद्धकथन पहरेदारिनी द्वारा निश्चित बनब → सीता स्रोत पूछैत छथि → त्रिजटा अपन श्रवण-साक्ष्यक सीमा बतबैत छथि → कोनो लिखित आदेश नहि पहुँचेबाक तथ्य भेटैत अछि → सीता निर्णय स्थगित करैत छथि → त्रिजटा सत्यापनक असफल सम्भावना सेहो स्वीकारैत छथि। एतय ‘निर्णय स्थगित’ निष्क्रियता नहि, अनिश्चित सूचना अनुकूल अपन स्वायत्तता बचेनाइ अछि। फाटल पातसँ कपड़ा जोड़बाक निर्णय आ अन्तमे सूतक गाँठ छूबब एकटा वस्तुगत आवर्तन बनबैत अछि। गाँठ टिकैत अछि, मुदा सीता निश्चिन्त नहि : देह आ वस्तुक काज जारी रहलासँ संसारक संकट समाप्त नहि होइत। अन्तिम अशोकवाटिका-वापसी पूर्ण वृत्ताकार समाप्ति नहि, वर्तमान घटनाक नैतिक प्रश्नकेँ पुरान दृश्यपर पुनः खोलब अछि।

नवम पाठांशमे कथा समकालीन विदेहपुर पहुँचैत अछि आ अठाइसहममे फेर प्राचीन वाटिकामे घुरैत अछि। एहि आवागमनमे प्राचीन काल ‘इतिहासक प्रमाण’ नहि, आधुनिक प्रमाण-विवादक विचारात्मक प्रतिध्वनि अछि। आधुनिक क्रममे अमलाक नाम-संशोधन अर्जीसँ तीन परिवारक अलग लाभ प्रभावित भऽ रहल अछि; हीराक हस्ताक्षरित पन्नाक अर्थ विवादित अछि; नसीमाक बेटीकेँ अन्तरिम कक्षा-अनुमति भेटैत अछि; रफीकक नदी-नामक दू रूप आ बिनुक आय-पत्रक ‘सीर’ स्वतंत्र संदर्भमे अछि। घटनाक बीच कोनो एकल अपराध-कारण स्थापित नहि। ई बहुप्रसंगी संरचना पाठककेँ एक प्रश्नक अनेक सामाजिक परिणति देखबैत अछि—कियो ‘बुझल’ कहलासँ ओकर सहमति स्थापित भऽ जाइत अछि की?—मुदा भिन्न पात्रक केस-फाइल अपन-अपन सीमा रखैत अछि।

अमलाक सुधार-अर्जी : सामूहिकताक भीतर अलग व्यक्ति

अमला सर्बरिया लाल सूतक गाँठमे तीन आवेदन अलग आवरणमे रखैत छथि। गलत नाम-संयोजनसँ विद्यालय-सहायता रुकब, श्रम-पंजीक पुनःसत्यापन आ पुरान प्राप्ति-अङ्क गुम होएब—तीनू अलग प्रशासनिक क्षति अछि। कर्मचारीक ‘एक ठाम मानकीकरण’क प्रस्ताव कार्य-सुविधा जकाँ लगैत अछि, मुदा अमला पूछैत छथि जे त्रुटि सुधरत की मनुष्य बदलि देल जाएत। सामूहिक निवेदनमे निजी पारिवारिक विवरण नहि, मूल हस्तलिखित प्रतिक मुद्रित सूचीसँ मिलान, संशोधनक लिखित कारण आ पुरान तिथिक निरन्तरता माँगल गेल अछि। एतय तिथि केवल गणना नहि : फेर नव अर्जीक नामपर बितल समय शून्य करब प्रशासनिक हिंसाक एक रूप अछि।

वार्ड-प्रतिनिधि सभक बदला हस्ताक्षर करबाक प्रस्ताव करैत छथि; अमला छायाप्रति बनबए तथा संग चलबाक सहयोग स्वीकारैत छथि, मुदा निर्णयाधिकार नहि छोड़ैत छथि। कथाक उपलब्धि सामूहिक संगठनकेँ नकारब नहि, ओकर भीतर स्वयं-अभिव्यक्तिक अधिकार सुरक्षित राखब अछि। वास्तविक परिणाम मूल सूची खोजबाक

लिखित आदेश आ तीन परिवारक प्राप्ति-क्रमक अस्थायी सुरक्षा अछि; नामसभ पूर्णतः सुधरि गेल, एहन निष्कर्ष नहि। पाठांश २६ मे अमला घरक चूल्हि सम्हारैत फोनपर कहैत छथि जे कार्यालय पहिने उपलब्ध प्रतिक मिलान करय; आवश्यक गवाही लेल मात्र परिवारकेँ निश्चित तिथिपर बोलाओल जाए। सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ एहि बातक अर्थ पैघ अछि : प्रतीक्षा, यातायात, कातल काज आ घरक ईन्धन सभ प्रशासनिक भूलक असल लागत छथि। तथापि अध्यायमे तीनू परिवारक स्वतन्त्र प्रथमपुरुष स्वर सीमित अछि; अमलाक प्रतिनिधिक विवेक अनेक जीवनक विस्तृत अनुभवकेँ संक्षेपमे लऽ अनैत अछि—ई सम्भावित कलात्मक संकुचन अछि।

हीराक हस्ताक्षर, नसीमाक बोली आ ज्ञानक वितरण

हीरा मेचे अपन हस्ताक्षरक भौतिक उपस्थिति स्वीकारैत छथि, मुदा ‘दीर्घकालिक उपयोगपर आपत्ति नहि’ लिखल शर्त वास्तवमे हुनका सुनाएल गेल छल की नहि, से नहि जनैत छथि। एके तिथिक दू पाठांश एकहि अर्थक स्वीकृति नहि। पहिल वाक्य अस्थायी मार्ग-परीक्षणक, दोसर भविष्यक स्थायी अधिकारक प्रश्न अछि। ‘हस्ताक्षर अछि’ प्रत्यक्ष पठन, मुदा ‘पूरा अर्थ बुझल गेल’ साध्यक लेल अनुवाद, पढ़ि सुनएबाक प्रक्रिया आ प्रत्यक्ष सहमतिक स्वतंत्र हेतु चाही। आख्यानगत प्रेरित भाषामे हस्ताक्षरकेँ पर्याप्त हेतु मानबामे उपाधि छूटैत अछि। पुनःसुनवाई धरि कार्यान्वयन रोकबाक आग्रह स्वीकार होइत अछि; पुरान अनुबन्ध निरस्त नहि। हीरा नव वापसी-फॉर्म सेहो बिना अर्थ बुझने हस्ताक्षर नहि करैत—पात्र कागदविरोधी नहि, अनर्थक सहमतिविरोधी छथि।

नसीमा शेरशाहबादीक बेटी अपन बोलीपर उपहासक भय लऽ विद्यालय जाइत अछि। नसीमा नामक स्थानीय उच्चारण आ सरकारी लेखनक भेद दिखबैत छथि, मुदा आवश्यक स्थानान्तरण प्रमाणपत्र एखन नहि पहुँचल। बच्चीकेँ एक सप्ताहक अन्तरिम कक्षा-अनुमति भेटैत अछि; अन्तिम प्रवेश अधरमे। भाषा-परिहासक शिकायत अलग दर्ज होइत अछि, मुदा दोषी बच्चाक नाम बिना जाँच प्रकाशित नहि। नसीमा ग्रन्थालयक जिल्द-मरम्मतिक कारीगर छथि; ओ अपन प्रौढ़-पढ़ाइक फॉर्म सेहो माँगैत छथि। एहि सूक्ष्म चयनसँ उपन्यास श्रम-निपुणताकेँ औपचारिक साक्षरताक बराबर नहि मानैत, मुदा दूनूक बीच सामाजिक सम्मानक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। बच्चीक स्वयं अपन नाम लिखब आकस्मिक भावुक अलंकार नहि; नामक उच्चारण आ लेखनपर ककर अधिकार अछि, तकर दृश्यात्मक उत्तर अछि।

नदी-नाम, आय-पत्र आ आलोचनात्मक सीमांकन

रफीकक श्रवण-रूप ‘सउरा’ आ पुरान सरकारी पन्नाक ‘सौरा’ समान ध्वनि होएबक कारण एक नदीक निर्णायक भूगोल नहि सिद्ध करैत। कबीर मसौदामे ‘सिद्ध मिलान’ हटाकऽ ‘पाठभेदक जाँच’ लिखैत छथि। बिनु दराईक ‘सीर’ लिखल प्रवासी कमाइक पन्नामे ठामक सम्भावित नाम अछि; ओकर मानचित्र अनुपस्थित अछि। बिनु स्पष्ट करैत छथि जे नाम सुधरलासँ रोकल रकम अपने-आप नहि भेटत। एहि दू प्रसंगमे पाठमिलान आ अधिकार-वितरणक बीच कथाकार नेरुक भेद राखैत छथि। अनुवादकक नाम आ मेहनताना दर्ज होएब महत्वपूर्ण अछि, कारण ज्ञान-निर्माणक श्रम अनाम नहि रहय।

अध्यायक समापनमे नैरा पाँच भिन्न प्रकरणक सूची बनबैत छथि, आ महेशक हत्या-जाँचक फाइल अलग बन्द रहैत अछि; एहि दिन हत्या सम्बन्धी कोनो नव प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि भेटैत। ई नकारात्मक साक्ष्य कथाक संयमक

नमूना अछि। मुदा विस्तृत आलोचनामे एक सीमा स्वीकारब आवश्यक : निरन्तर लगभग सभ पात्र अद्भुत विधिपरक स्पष्टतासँ ‘जे देखल से देखल’, ‘जे सुनल से सुनल’क सूत्र व्यक्त करैत छथि। लेखनक नैतिक दृढ़ता एहि पुनरावृत्तिसँ उभरैत अछि, मुदा बोलेबाक स्वाभाविकता, पात्रानुसार भाषिक विविधता आ आकस्मिक विस्मय कम भऽ सकैत अछि। प्राचीन पात, अमलाक चूल्हि, हीराक धूरि-भरल मापन-दोरी, नसीमाक सुई आ बिनुक आलू छिलैत सासु ई शुष्कताकेँ मांसल जीवन-दृश्यमे बदलैत छथि। उपलब्धि एतय निरन्तर प्रश्न कएलाक अधिकार अछि; सीमा ई जे प्रश्नसभक उत्तर बहुधा कथानकसँ पहिने सिद्धान्तक रूपमे सुसंगठित भऽ जाइत अछि।

अध्याय ७८ — मन्दोदरीक घर

राजगृहक काँस-पात्र आ सार्वजनिक भूखक आन्तरिक भूगोल

प्रथम दृश्य लंकाक राजगृहमे चिरा पड़ल काँस-पात्र आ चाउरक मापसँ बनैत अछि। युद्धक बाहरी घटना आ भोजनक आन्तरिक वितरण एकरे घरक दू कालिक लय छथि। मन्दोदरीक प्रश्न संसाधन कतेक अछि मात्र नहि; कटौती ककर थारीसँ शुरू होइत अछि आ ककरा अनुपस्थित बही-पाँतिमे मेटा देल जाइत अछि, ई अछि। राजपरिवारक भोजन यथावत्, बाहरी सेवकसभक नामक सोझाँ रिक्तता सामाजिक श्रेणीक दृश्य रूपक होइत अछि। मन्दोदरी पहिने अपन थालीक हिस्सा देखबाक कहैत छथि, मुदा ई व्यक्तिगत दया मात्र नहि; वितरणक विधि सार्वजनिक करबाक आरम्भिक आग्रह अछि। घायल पहरेदारक पत्नीकेँ उपचारक प्राप्ति-चिह्न देबाक निर्देश राजाज्ञा आ वास्तविक दरबज्जाक व्यवहारक बीचक दूरी उजागर करैत अछि। आदेशक क्रियान्वयन देखनिहार स्त्रीकेँ उपन्यासक राजकीय इतिहासमे प्रवेश भेटैत अछि।

त्रिजटा मन्दोदरीक समक्ष अशोकवाटिकाक अनिश्चित युद्धकथन फेर सुनबैत छथि। मुदा मन्दोदरीक प्रश्न ‘सीताकेँ कोन समाचार?’ सँ विस्तार पाबि युद्धकेँ सामाजिक आरोपमे बदलैत अछि। राजगृहक युवती बन्दी सीताकेँ संकट बढ़ेनिहार पक्षक स्त्री कहैत अछि; मन्दोदरी उत्तर दैत छथि जे बलपूर्वक आनल स्त्रीपर रावणक निर्णयक दोष नहि दऽ सकैत। ई आख्यानक नैतिक मोड़ अछि : निकटतम पारिवारिक निष्ठा स्वतः राजकीय कर्मक समर्थन नहि। युवतीक भय वास्तविक रहैत अछि; ओकरा तुरन्त वैचारिक सहमति मे बदलब कथा नहि करैत। मन्दोदरी युद्धपर प्रश्न कएलाक कारण सेवककेँ सन्देहास्पद लिखबाक प्रस्ताव अस्वीकारैत छथि। ‘प्रश्न अधिक करैत अछि’ अपराधक प्रमाण नहि—ई मूल नियम अखिल कथाक आधुनिक अभिलेखीय हिंसाक संग जोडैत अछि।

मन्दोदरी रावणकेँ सीता लौटएबाक आ सैनिकक परिवारकेँ भयक दण्ड नहि देबाक आग्रह करैत छथि; रावण अस्वीकारि चलि जाइत छथि। ई स्त्रीस्वरक सफल प्रदर्शन अछि, राजकीय नीतिक विजय नहि। कथावाचक हुनकर सीमित शक्ति स्पष्ट करैत अछि—औषधि, भोजन आ विश्राम बदलि सकैत छथि, युद्धक निर्णय नहि। वृद्ध भोजन-वितरणकर्त्री आ घायल सैनिकक घरमे सन्देश देनिहार स्त्रीकेँ अलग हिसाबक जिम्मेवारी देब देवी-चरित्रक ‘करुणा’क परम्परागत महिमा-गानसँ आगाँ अछि। त्रिजटाकेँ रोटी दैत मन्दोदरी उपकारक प्रचार नहि करबाक कहैत छथि। एहि नकारात्मक निर्देशमे उपकारक सत्ता ककर कथा अपन नामपर लिखब चाहैत अछि, तकर प्रश्न

उठैत अछि। तथापि मन्दोदरीक चरित्र अतिशय न्यायोचित वक्तव्यसभक केन्द्र बनि जाइत अछि; हुनकर भीतरी सम्भावित द्वन्द्व, राजघरक दबावक मनोवैज्ञानिक दीर्घता आ भोजन बाँटनिहारक स्वतन्त्र स्वर अपेक्षाकृत कम विस्तार पबैत अछि।

आधुनिक विद्यालयक गलत सूचना : संशोधनक घटना-पञ्जी

दशम पाठांशमे प्राचीन राजगृहक आवर्त आधुनिक विद्यालयक काँचक सूचना-पट्ट बनि जाइत अछि। असद सैयद देखैत छथि जे हराएल बच्चाक सुरक्षा सम्बन्धी पहिल सार्वजनिक सूचनामे ‘संदिग्ध घुमन्तू दल’क आरोपात्मक पाँति बादमे जोड़ल गेल; ओकर स्रोत, तिथि आ प्राप्ति-अङ्क अनुपस्थित अछि। एहि वाक्यक कारण मोहन कंजरक ग्राहक घटैत छथि; बच्चाक लग ठेला नहि अनबाक चेतावनी भेटैत अछि। सूचना-प्रसारण एतय केवल मानसिक पूर्वग्रह नहि, बाजारमे कमाइक प्रत्यक्ष हानि उत्पन्न करैत अछि। मोहन कियो सम्पूर्ण दिनक ‘निर्दोषता प्रमाणपत्र’ प्रस्तुत नहि करैत; पहियाक पुर्जाक दुकानसँ जे खरीद आ भुगतानक रसीद भेटि सकैत अछि, ओतबे माँगैत अछि।

साजिद नटक मूल अभिनय-अभ्यास फाइलमे बच्चासभक मुँह सार्वजनिक नहि करबाक शर्त अछि। लताकेँ ‘मिठुआ’ लिखल नावघरक शीर्षक भेटल अछि, मुदा ओकरा मिथुनक व्यक्तिनाम बनाओल नहि गेल। प्रधानाध्यापिका मूल सूचना-बहीक मिलान करैत छथि; विवादित पन्नामे ‘स्थानीय स्रोत’क पहिचान नहि भेटैत अछि। एतय घटनात्मक क्रम अछि : अनधिकृत आरोप-वाक्यक खोज → मूल अभिलेखक मिलान → गलत पन्ना हटेबाक निर्णय → सार्वजनिक संशोधित बयानक निर्माण → फोनमे पुरान वीडियो बचल रहबाक स्वीकार। ‘गलत पन्ना हटाएब’ आ ‘पसरल आरोपक सामाजिक असर मेटा देब’ दू भिन्न परिणाम छथि। असदक आग्रह जे गलत सार्वजनिक कथनक सार्वजनिक संशोधन सेहो आवश्यक अछि, उपन्यासक नैतिक केन्द्र बनैत अछि।

एक अभिभावक ‘बच्चा हराइत अछि, अहाँ शब्द सुधारैत छी’ कहि विरोध करैत छथि। एहि प्रतिपक्षकेँ गंभीरता सँ पढ़बाक चाही; बच्चाक खोजक तात्कालिकता वास्तविक अछि। असद आ लता बतबैत छथि जे असिद्ध समुदाय-आरोप खोजकेँ गलत बाट लऽ जाएत। अभिभावकक अनजान आवाजवला ऑडियो ‘गवाही’ नहि, जाँच लेल अलग सूचना बनैत अछि। मोहन प्रधानाध्यापिकाक ‘निर्दोष’ लिखबाक प्रस्ताव सेहो सीमित करैत छथि — उपलब्ध आरोपक आधार गलत साबित होएब ओकर समस्त जीवनक अन्वेषण समाप्त होएब नहि। ई कठोर सावधानी समकालीन सूचना-नैतिकताक कलात्मक रूप अछि, मुदा सामाजिक कार्यकर्ताक संवाद जेकाँ बनि जाएबाक जोखिम एहि दृश्यपर सेहो उपस्थित अछि। कथा रोजीक दुःख आ गलत सूचनाक पुनरुत्पादनक ठोस विवरणसँ ओकरा संतुलित करैत अछि।

माछ, करघा, माँस-दोकान आ साझा आरोपक राजनीति

दुपहरक बाजारमे कमलेश खटिकक लाल पट्टीवला मंच-सामानक रंगक आधारपर ओकरा संदिग्ध खेपसँ जोड़बाक प्रयत्न होइत अछि। कमलेश अपन खरीद-बिल आ विद्यालयक उपयोग-पर्ची अलग करैत छथि; पाँच गज किनल कपड़ामे चारि गज मंचपर लगल, एक गज किनार मोड़ल गेल। मीरा जे देखलीह, ओहिसँ बेसी गवाही नहि दैत छथि। कारीगरक नाप-बही सँ उपयोगक भेद पुष्ट होइत अछि, मुदा रंगक स्रोत अथवा अन्यत्रक मालक असल

मालिक नहि। समितिमे सामूहिक आरोप हटेबाक प्रस्ताव उठैत अछि, अन्तिम हस्ताक्षर शेष। ‘खटिक सभ’ कहि समुदायपर आरोप लगेनाइ विशिष्ट वस्तुक जाँचक स्थान लेब अछि; कथा ओकरा पद्धतिगत रूपसँ खोलैत अछि।

मीरा बंजाराक बहिन परिवहन-साझेदारीसँ बाहरो अपन समय आ ग्राहकीय अधिकार रखैत छथि। ‘सुपैन’ पुरान कापीमे यात्रा-पड़ाव अथवा ग्राहक-चिह्न भऽ सकैत अछि; एहि आधारपर नदीक मानचित्र बनाओल नहि जाएत। साझा चूल्हि आ स्वतंत्र व्यापारिक खाता संग-संग रहैत अछि। एतय सामूहिक जीवनकेँ एकमात्र आर्थिक स्वामित्वक समतुल्य मानबाक गलती रोकल गेल अछि। रामवती खत्वेक दू परिचय-पत्रक मूल प्रति कार्यालयसँ घुरैत अछि, मुदा प्रशासनिक एकीकरण शेष रहैत अछि; ‘साँती’ शब्दक भूगोल पुष्टि नहि होइते स्वतः नदीक सुधार नहि कएल गेल। हुनकर निजी चिट्ठी गुप्त रहैत अछि। एहि तीन प्रसंगक मूल सम्बन्ध अछि : नामक समानता, रंगक समानता अथवा साझा यात्रा-साधन एकरे आपराधिक अथवा स्वत्वगत सम्बन्ध नहि बनबैत।

एहि अध्यायमे विदेह समानान्तर इतिहासक सम्भावित स्वरूप राज-युद्धक इतिहाससँ बाहर देखल जा सकैत अछि : मोहनक पहिया, कमलेशक नाप, मीराक परिवहन, रामवतीक मूल कागद सभ जीवनक साक्ष्य बनैत अछि। मुदा ‘समानान्तर’ केवल नामावलिक विस्तार नहि; पात्र अपन निर्णय बदलैत छथि अथवा सत्ता तकरा स्वीकार/टारैत अछि की, ई प्रश्न निर्णायक अछि। मोहनक ग्राहक एखन वापस नहि अएलाह, कमलेशक प्रस्ताव शेष, बहिन अपन अलग भाड़ा लिखौलीह, रामवतीक मूल कागद वापस भेटल—ई भिन्न स्तरक परिणाम छथि। एकटा समग्र नैतिक विजय घोषित करब एतय अनुचित।

द्विकालीनता, पाठकीय गति आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

प्राचीन लंका सँ आधुनिक विद्यालयक बदलाओ बिना ऐतिहासिक कारण–कार्य सम्बन्धक अछि; ओ विचारक समानतर रचना अछि। मन्दोदरीक भोजन-बही आ विद्यालयक गलत आरोप-पत्र अलग अभिलेख छथि। दूनू प्रसंगमे राजकीय अथवा संस्थागत कथनकेँ जकर जीवनपर परिणाम पड़ैत अछि, ओ स्त्री आ वंचित लोक प्रतिप्रश्न करैत छथि; मुदा ई सामान्यता दुनू कालक भिन्न हिंसा मेटा नहि सकैत। आधुनिक खण्डमे मोहन, लता, कमलेश, मीरा, रामवतीसभक दृष्टिकेन्द्रण घनघोर रूपेँ बदलैत अछि; कथावाचक सामान्यतः बाह्य दृश्य आ संवादसँ ज्ञान सीमित करैत अछि। रावणक मनक अन्तिम कारण वा वायरल पाँति जोड़निहारक पहिचान पाठक नहि जनैत।

अध्यायक अन्तमे विद्यालयक नव बयान लगैत अछि, पुरान गलत प्रति नष्ट नहि, अभिलेखीय साक्ष्य रूपेँ सुरक्षित राखल जाइत अछि। ई महत्त्वपूर्ण रूपान्तरण अछि : भूल सुधारबाक अर्थ भूलक इतिहास मेटाएब नहि। लता मिथुनक खोजक अलग दिन–अधिकारीक विवरण चाहैत छथि, अपना बेटाक नाम प्रचारक प्रतीक नहि बनएबाक कहैत छथि। कलात्मक सीमा पुनः उपस्थित अछि : राजगृहक अनाज, विद्यालयक नोटिस, मंचक नाप, परिवहन, दू परिचयपत्र—लगातार अनेक जाँच-प्रकरणक कारण केन्द्रित मन्दोदरी-आख्यानक तीव्रता बिखरि सकैत अछि। ई बिखराव जँ ‘बहुस्वरता’क नामपर अन्ध प्रशंसा पाबय तँ गलती होएत; किछु जीवनक अनिश्चितता अधिक जटिल, किछु दस्तावेजी प्रक्रिया कम नाटकीय अछि। तथापि गलत सार्वजनिक वाक्यक सुधार आ बच्चाक जारी खोजकेँ संग धरि राखबाक कथा-संयम एहि अध्यायक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

अध्याय ७९ — चेहराक समानता

भीजल दरी आ दू काटल चित्र : अफवाहक दृश्य-व्याकरण

अध्याय सरयू द्वारा रेलपुलक नीचाँ भीजल दरी झारबाक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। पानि, दरी आ माटिक घुलल धार भूगोलक केवल रंग नहि; आवासक अस्थिरता, बारम्बार भीजब आ दैनिक पुनर्निर्माणक भौतिक परिस्थिति छथि। ओहि समय नतिनी फोनपर दू काटल स्त्री-मुख देखबैत अछि, जकर नीचाँ बच्चा उठाएबासँ सम्बन्धित भयकारी वाक्य लिखल अछि। पहिल चित्र वनफाटकक पुरान दृश्यसँ, दोसर मालगाड़ीक पाछाँक अनिश्चित दृश्यमे सँ कटल अछि; दोसरमे बच्चा छल कि बोरा, साफ नहि। मूल कथात्मक व्यवधान ककरो अपहरणक प्रत्यक्ष दृश्य नहि—दू असम्बद्ध दृश्यकेँ एके भयात्मक वाक्यक अन्तर्गत सार्वजनिक आरोप बनाओल जाएब अछि। सरयूक नतिनीक प्रश्न ‘ई हमरो दादीक फोटो अछि?’ सामाजिक हिंसाकेँ घरक निजतामे पहुँचा दैत अछि।

जानकी फोन छीनबाक प्रस्ताव रोकैत छथि; प्रतिलिपि पहिने पसरि चुकल अछि। नैरा दूनू स्त्रीक सहमतिक सीमा अलग पूछैत छथि : सरयू चेहरा वा घरक चिन्ह प्रकाशित नहि कराबए चाहैत छथि; जानकी नव फोटो नहि, सार्वजनिक बैठकमे उत्तर, आ मिथुन-खोजक फाइलक पृथक्करण चाहैत छथि। एहि दृश्यमे स्त्रीक प्रतिनिधित्व एक सामूहिक घोषणापत्र नहि : सरयू, जानकी, नतिनी आ बादक माल उतारनिहार स्त्री सभ अलग अधिकारक स्वामी छथि। फोटो-पहुँचबाक डिजिटल समयकेँ ओकर बनबाक समय मानि नहि लेल जाएब कथनकालक सूक्ष्म उपलब्धि अछि। वायरल प्रसारक वर्तमान आ रिकॉर्ड भेल घटनाक अतीत एक-दोसरामे छलाङ नहि मारि सकैत।

साजिद नट अपन अभिनय-अभ्यासक मूल कार्ड आनैत छथि; वनफाटकक दोसर मूल फोन हुनका लग नहि, ओकर धारक युवक लग अछि। युवक पुरान अखण्ड दृश्य देखबैत अछि—भीजल फाटक, दुर्गाक बाँसक गाँठ, तुलसीक अनाजक गाड़ी आ जानकीक दू परिवार। ओहिमे बच्चा पकड़बाक दृश्य नहि। मुदा कटल चित्रक गलत शीर्षक कियो जोड़लक, तकर उत्तर एखन नहि भेटैत। जाँचक नैतिकता युवककेँ रिकॉर्डिंगक निर्माता भेला कारण सम्पादित आरोपक अपराधी घोषित नहि करबमे अछि। एतय मूल दृश्य, कटल फ्रेम, शीर्षक आ पुनर्प्रसार चारि भिन्न आख्यानस्तर बनि जाइत अछि। औपचारिक अर्थमे ई मेटाआख्यान नहि, मुदा दृश्य-उत्पादनक प्रक्रिया कथाभीतर आलोचनात्मक विषय बनैत अछि।

उपमानक सीमा आ स्वतन्त्र पहिचानक प्रमाण

एक व्यक्ति सरयू-जकाँ मुख देखिकऽ एके व्यक्ति मानबाक आग्रह करैत अछि; मीरा मंडल पहिचानक लक्षण—आँचल, नाकक कोण, देहक झुकाव—क उचितता प्रश्न करैत छथि। पूर्ववर्ती एकलव्य/गवय प्रसंगसँ जुड़ल उपमान-विचार एतय रोचक मोड़ लैत अछि : सादृश्य अपरिचित वस्तु बुझबाक एक बाट हो सकैत अछि, मुदा दू स्त्रीक व्यक्तित्वक निर्णायक तादात्म्य नहि। न्याय-विवेचनक कसौटीपर पक्ष ‘दोसर चित्रक स्त्री सरयू छथि’ आ साध्य ‘एके व्यक्ति’ अछि; ‘दृश्य-सादृश्य’ हेतु पर्याप्त नहि, किएक तँ समान गमछा, धुँधल फोकस, अधूर समय आ भिन्न स्थल सम्भव उपाधि छथि। तिथि, स्थान, अखण्ड क्रम आ स्वतन्त्र गवाहीक संयुक्त परीक्षण आवश्यक

अछि। एहि कसौटीक प्रयोगकेँ शास्त्रीय तत्त्वचिन्तामणिक अक्षरशः संवाद बनाओल उचित नहि; उपन्यास आधुनिक दृश्य-प्रमाणमे तर्क-पद्धतिक रचनात्मक उपयोग करैत अछि।

पद्मा दोसरा चित्रक स्रोत तकैत छथि, मुदा निजी फोनक सम्पूर्ण सामग्री खोलबाक अधिकार अपने हाथमे नहि लैत छथि। पुरान ढुलाई-आँगनक स्त्रीक पहिचान हुनकर सहमति बिना सार्वजनिक नहि कएल गेल; ओ नामित अधिकारीकेँ स्वयं बयान देबाक इच्छुक छथि। अखण्ड मूल दृश्य मे टोकरि उतारब, बोरा मोड़ब आ माथक पसीना पोंछबाक श्रमक क्रिया अछि। ओकर तिथिक मिलान मुनीमक कथन मात्रसँ नहि, स्थापना-रसीद, मजदूरिनक भाड़ा-पर्ची आ रिकॉर्डक क्रमसँ होइत अछि। तेँ दोसर चित्र वनफाटकक दृश्य नहि आ ओकरा बालक-अपहरण कहल जाएब असिद्ध अछि। मुदा दू चेहरा जोड़निहारक असल साधन अथवा व्यक्ति अभियो अज्ञात अछि। ‘गलत पहिचान’क प्रमाण आ ‘गलत आरोपक निर्माता’क पहचान भिन्न अनुसंधानक लक्ष्य छथि।

सरयू पुछैत छथि जे नतिनी विद्यालय कखन घुरत। ई प्रश्न जाँचक तर्कसंगत उपलब्धिक सीमा देखबैत अछि : मूल दृश्य भेटलासँ बच्चीक डर तुरन्त समाप्त नहि। मीरा अगिला कक्षाक समय बतबैत छथि, परिवार सुरक्षित बाट चुनत। सामाजिक कथाक कारण–कार्य केवल ‘फोटो गलत सिद्ध’पर समाप्त नहि; सम्मान-हानि आ शिक्षा-प्रवेशक दीर्घ परिणाम अपन जीवन रखैत अछि। अध्यायक अन्तमे नतिनी पुछैत अछि—दादीक मुँह आब दादीक भेल? सरयू कहैत छथि जे ओकर मुख कहियो दोसराक नहि भेल; गलती कागदपर नाम रखने लोकक छल। ई भावात्मक उत्तर रूपकात्मक अछि, विधिक घोषणा नहि। व्यक्तिक आत्मपहिचान आ समाजक आरोपित पहिचान बीचक अन्तर एक छोट घरेलू संवादमे निहित अछि।

माछक पाट, वस्त्रक बकाया आ निरीक्षणक नीति

ग्यारहम पाठांशसँ कथा माछबजारक ठेकाक नवा विवादमे बढ़ैत अछि। विनोद केवर्त छोट विक्रेताक ‘छिटपुट शुल्क’क पाँति पर प्रश्न करैत छथि; फूलमती तियर माछक खरीद-दाम, जाल बनबाक मजदूरी आ दू युवतीक सफाइ–बिक्रीक श्रम अलग करैत छथि। अंशकालिक विक्रेताक लेल तीन पाट सप्ताहभरि परीक्षणरूपमे चिन्हित करबाक प्रस्ताव स्वीकार होइत अछि; नाप, सफाइ आ शुल्कक अन्तिम स्वीकृति शेष। ‘पाट भेटल’ आ ‘स्थायी बाजार-अधिकार स्थापित’क बीच भेद समग्र समीक्षामे अनिवार्य अछि। ठेकेदारक नाली-मरम्मतिक खर्च देखाओल गेल, मुदा छोट विक्रेताक दैनिक शुल्क कता गेल—ई प्रश्न असम्पन्न रहैत। सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ ‘बाजार’ मात्र महाजनक ठेका नहि, आंशिक समयमे माछ बेचनिहार स्त्रीक घरक भोजनक समय सेहो अछि।

गीता कोरी आ सीमापारक सरस्वती कपड़ाक थानक नाप, बुनकरक सहमति बिना लगल कम्पनी-छाप, अग्रिम सूतक खर्च आ अलग मजदूरीक बकाया जाँचैत छथि। सरस्वतीक फोनपर प्राप्त रसीदक हस्ताक्षर एखन सत्यापित नहि; तीन पक्ष हिसाबक प्रति देबाक तिथिपर सहमत, रकम प्राप्त नहि। यूसुफक लाल डोरीवला गाँठकेँ गीता रंग-समानताक कारण अपना कम्पनीक माल नहि मानैत। ई स्वत्व-संयम बादक अध्याय ८० क फलित अवस्थाक तैयारी अछि। गीता श्रमक स्वायत्तता रखैत छथि, मुदा हुनकर आर्थिक बाध्यता अथवा सीमापारक करारक विस्तृत कानून पाठमे उपलब्ध नहि; बाहरी विधिक निष्कर्ष गढ़ब अनुचित होएत।

फरीदा कुरैशीक माँस-दोकानपर समुदाय-आधारित बहिष्कारक विरुद्ध नियमित स्वास्थ्य-निरीक्षण एहि अध्यायक सामाजिक प्रतिपक्षकेँ जटिल बनबैत अछि। फरीदा प्रत्येक आलोचनाकेँ पूर्वग्रह कहि नहि टारैत छथि; सफाइक एक पट्टी बदलबाक वास्तविक आवश्यकता मानि तुरन्त सुधारैत छथि। नमूनाक परीक्षण-उत्तर शेष अछि, आ बहिष्कार पर्ची हटेबाक अध्यक्षक हस्ताक्षर सेहो शेष। एतय निष्पक्ष समीक्षा ई देखत जे जाति–धर्मपर आधारित सामूहिक बहिष्कार अनुचित होइतहुँ व्यक्तिगत खाद्य-सुरक्षा जाँच आवश्यक अछि। निरीक्षकक सीमित प्रतिवेदन नहि निर्दोषताक अन्तिम प्रमाण, नहि अपमानजनक सामूहिक निर्णयक औचित्य। एहि स्तरपर कथाक नैतिकता यांत्रिक खलनायक–नायक विभाजनसँ बचैत अछि।

सार्वजनिक खण्डन, शोकक निजी समय आ शिल्पगत समीक्षा

सार्वजनिक सुनवाईमे दू मूल चित्रक अलग स्रोत स्पष्ट कएल गेल अछि; उपलब्ध दृश्यसभ मिथुनक उपस्थितिक अथवा बच्चा लऽ जाएबाक प्रमाण नहि छथि। जानकी ‘भ्रम भऽ सकैत अछि’ जकाँ अस्पष्ट वाक्य नहि, अपन दलपर चित्राधारित आरोपक स्पष्ट वापसी माँगैत छथि। विद्यालय, असद आ बाजार-प्रतिनिधि साझा खण्डन तैयार करैत छथि; जानकी पाठ सुनि सही करैत छथि, मुदा सम्पूर्ण दलक नाम प्रकाशित करबाक अनुमति नहि दैत छथि। ई अध्यायक निर्णायक सम्पन्न घटना अछि। मिथुनक खोजक स्वतन्त्र जाँच-तिथि निश्चित होइत अछि, बच्चा भेटैत नहि। सरयूक बजारक प्रतिष्ठा तत्काल लौटैत नहि। नैरा तीन फाइल अलग रखैत छथि—गलत सामूहिक आरोप, मिथुनक गुमशुदगी, आ विविध बाजार-देय। साझा गाड़ी सम्भावित अनुसंधानक प्रश्न मात्र अछि, समान अपराधक प्रमाण नहि।

अध्यायक समय भोरक दरीसँ रातिक भोजन धरि एक दिनक रूपमे व्यवस्थित अछि, मुदा अनेक पुरान दृश्य, कागद आ भविष्यक सुनवाई ओहि दिनमे प्रवेश करैत अछि। एकर कथात्मक घनत्व ३१ पाठांशमे सात-आठ उपप्रकरणक कारण पैघ लगैत अछि; ई पाठमे घटनात्मक मोड़क गुणवत्ता सँ मापबाक चाही, आख्यानक १०.८ परिवर्तन-संकेत/हजारसँ नहि। दृष्टिकेन्द्र सरयू–जानकी–नैरा सँ विनोद, गीता आ फरीदा धरि ससरैत अछि। लाभ ई जे आरोपक सामाजिक मूल्य व्यापक रूपसँ देखल जाइत अछि; सीमा ई जे किछु मजदूरक भाषिक पहिचान सभ एके सुविचारित प्रमाण-व्याकरणमे बदलैत अछि। तथापि भीजल दरी, बर्फक पानि, माप-डोरी, माँस-दोकानक सफाइ आ नतिनीक प्रश्न अध्यायकेँ अनुप्रयुक्त न्याय-व्याख्यानक बजाय जीवित कथासंसार बनएबाक साधन छथि।

अध्याय ८० — बुनकरक दोसर खाता

दू बहीक निर्माण : वास्तविक माल आ आरोपित मालक पृथक्करण

यूसुफ अंसारी भोरमे करघाक टूटल सूत जोड़ैत छथि। नखसँ दबाओल सूतक गाँठ श्रमिकक अनुभवी प्रत्यक्षज्ञानक दृश्य अछि; ग्राहकक सफेद थान आ लाल डोरीवला विवादित दोसर गाँठ एके बहीमे गड्डमड्ड भेलासँ हुनकर बजारक विश्वास डगमगा रहल अछि। यूसुफ पहिल खातामे थानक नाप, सूतक उधारी, मजदूरी; दोसरमे रोकल खेप, दुकानक छाप, आरोप आ जाँचक खर्च रखैत छथि। एहि ‘दोसर खाता’केँ छल अथवा लुकाओल

व्यापार नहि, प्रमाण-संबन्धी श्रेणी-भेदक रचनात्मक वस्तु रूपमे पढ़बाक चाही। दू पन्ना शारीरिक रूपसँ सटि सकैत अछि; ताहिसँ दुनूक मालिकाना समान नहि बनैत। हुनकर बेटा फोटोमे बुनोटक जोड़ आ तिथि राखबाक सुझाव दैत अछि, यूसुफ ओकरा सहायक प्रमाण मानैत छथि, करघाक स्पर्शक सम्पूर्ण प्रतिस्थापन नहि।

उर्मिला रजक एके गाड़ीपर धोनाइ आ संदिग्ध कपड़ा चढ़बाक कारण अपन काम अपराध घोषित नहि करएबाक माँग करैत छथि। महेन्द्र गाड़ीवान अपन गाड़ीक प्रवेश-पंजी देखबैत छथि, मुदा प्रत्येक बोझक उत्पत्ति नहि जनैत। मालघरमे स्वामित्व, ढुलाई आ शिकायत लेल अलग मेज लगब भौतिक रूपसँ कथाक पद्धतिक प्रदर्शन अछि। इएह स्थलपर उपन्यास निर्णायक प्रश्न उठा दैत अछि—जे कागद एके गाड़ी-संबन्ध देखबैत अछि, से कोन बिन्दुपर मालक मालिकाना अथवा अपराधक अनिवार्य प्रमाण बनबैत अछि? उत्तर नहि : गाड़ी एके भेलासँ वस्तु, व्यक्ति आ नीयत एक नहि। एहि अध्यायमे प्रमाण-विभाग केवल लिखित उपदेश नहि, माल खोलबाक अनुमति, मजदूरीक कटौती आ वस्तुक बिक्री-रोकक ठोस परिणाम उत्पन्न करैत अछि।

पहिल गाँठ अधिकृत उपस्थितिमे खोलल जाइत अछि। यूसुफ अपन बुनोटक माटि-रंगक जोड़ पहिचानैत छथि; ग्राहकक मूल आदेशमे घरक पर्दा लेल कपड़ा अछि, अस्पतालक स्वीकृति नहि। ग्राहक आदेश, अग्रिम आ प्रयोजनक गवाही दैत अछि, मुदा बुनोटक सूक्ष्म जोड़ स्वयं नहि चिन्हैत। ई भिन्न विशेषज्ञता परस्पर पूरक अछि। दोसर गाँठपर अस्पतालक नामसँ स्वीकृतिक दावा अछि, मुदा प्रस्तुत अस्पताल-पंजीमे ओहि अवधि आ पत्र-संख्याक स्वीकृति नहि। कर्मचारी साफ कहैत छथि जे रिकॉर्डमे स्वीकृति नहि भेटलासँ कोन छापने अछि अथवा भीतरक वस्तु की अछि, से सिद्ध नहि। शेखरक कथित फोन-आदेशक नाम आ प्रमाण अपूर्ण। दोसर गाँठ बिक्री लेल एखन रोकल जाइत अछि—अप्रमाणित स्वीकृतिक नामपर वितरणक कारण—यूसुफक चोरी सिद्ध भेला कारण नहि।

घटना-पञ्जी : रोक, संशोधन आ सीमित मुक्ति

मुख्य घटनाक्रम एहि प्रकार विकसित होइत अछि : ग्राहक पहिल थान लौटएबाक भय व्यक्त करैत अछि → यूसुफ दू मालखाता अलग करैत छथि → उपस्थितिमे पहिल थानक मूल आदेश आ बुनोट मिलैत अछि → दोसरा गाँठक कथित अस्पताल-स्वीकृतिक अभाव पंजीमे भेटैत अछि → दोसरक सील, वजन आ बयान दर्ज होइत अछि → पहिल थानक मुक्ति सम्बन्धी पन्ना बनैत अछि, मुदा गलतीसँ ‘सभ सामान मुक्त’ छपैत अछि → यूसुफ ई गलत सार्वत्रिक वाक्य हटबबैत छथि → केवल पहिल थान मुक्त होइत अछि, दोसरक रोक जारी रहैत अछि। मूल कथाक निर्णायक सफलता ‘सभ आरोप हटि गेल’ नहि, गलत सामूहिक निर्णयक स्थानपर वस्तुविशेषक लिखित न्यायिक–प्रशासनिक सीमा तय होएब अछि। ग्राहक अपन घरक पर्दाक नाप लैत छथि; वस्तु अपन वास्तविक उपयोग धरि पहुँचैत अछि। ई फलित अवस्था यूसुफक देहगत श्रमकेँ अमूर्त फाइलसँ वापस घरक वस्तु बनबैत अछि।

महेन्द्र साझा गाड़ीक कारण अलग रसीद बनबैत काल लगल समयक मजदूरी कटबाक डर रखैत छथि। विनोद हुनका प्रतीक्षा, ठहराव आ गाड़ी-मालिकक आदेश अलग लिखबाक सलाह दैत छथि; मजदूरीक दावा स्वतंत्र रहैत अछि। एहि बिन्दुपर कथाकार समाधानक मोल सेहो देखबैत छथि : जाँचक नवा पद्धति स्वयं श्रमिकपर अतिरिक्त

खर्च थोपि सकैत अछि। यूसुफ पहिल थानक वास्तविक ढुलाई दाम देबाक इच्छुक छथि, मुदा दोसरक रोकेबाक खर्च अन्यायसँ हुनका माथ पर नहि चाहैत छथि। दोषक वर्गीकरण लेल प्रशासनिक समय लगैत अछि, जबकि भूखक समय रोकि नहि सकैत। एहि दूनू समयक टक्कर बिना कथा असम्पूर्ण रहितय।

रहीम, सकीना आ श्रमक स्वतन्त्र प्रत्यय

रहीम मंसूरीक सात गद्दाक पंजी आ चारि बोरा धुनल रुइक विवाद यूसुफक वस्त्रकथासँ जुड़ैत अछि, मुदा दोसर अपराध-प्रकरण नहि घोषित होइत। रहीम ग्राहकक अनुमति बिना गद्दा खोलबाक विरोध करैत छथि, वस्तुक स्वत्वक सीमा बचबैत छथि। आरोपक तारीख आ ढुलाईक समय अलग जाँचक प्रश्न छथि। हुनकर अपील स्वीकार होइत अछि; आरोप हटबाक अन्तिम आदेश नहि। पत्नीक नवा आदेश स्वीकार करबाक निर्णय, अलग लदान-पर्चीक खर्चमे अपन नामक माँग, महिला-श्रमकेँ परिवारक गौण सहायता नहि मानएबाक स्पष्ट प्रतिवाद अछि। पति अपीलमे हुनकर नाम जोड़ैत छथि—ई चरित्रक छोट मुदा प्रमाणित परिवर्तन अछि।

सकीना रंगरेजक पहिल नील आ बदलल हरियर-बैंगनी रंगक थान श्रमक ‘एक वस्तु, दू बेर काम’क समस्या खोलैत अछि। ग्राहकक लिखल बदलाव-पर्चीमे अँगूठाक छाप संदिग्ध; सकीना मौखिक माँग सुननेक गवाही दैत छथि, मुदा ग्राहककेँ फेर पुष्टि लेल बजबैत छथि। ग्राहक नव रंगक आंशिक मजदूरी देबाक आ शेष परीक्षणक तिथि तय करैत अछि। पुरान उधारी माफ नहि, बदलल रंगक पूरा देय भेटल नहि; टिकाउपनक ऋतु-परीक्षण सेहो बाकी। एतय लेखा-पद्धति जीवित बातचीतक परिणाम अछि। स्वतंत्र गवाहीक उपलब्धिसँ ग्राहकरूप विरोधी पात्र तत्काल अन्यायी घोषित नहि; ओकर रंग फीका पड़बाक भयक सेहो अनुभवात्मक आधार अछि, यद्यपि पूरा परीक्षण नहि। एहि सूक्ष्म प्रतिपक्षसँ कथा शुद्ध उपदेशसँ थोड़ा दूर होइत अछि।

माछबजारमे विनोद आ फूलमती तीन अंशकालिक पाटक नवा माप लैत छथि; बर्फक पानि, बरसातक पानि आ निकासी-गादक कारण एकहि ठाम अलग-अलग अछि। छोट माप नदीक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी नहि खोलि सकैत। एक सप्ताहक अस्थायी पाट चालू रहैत अछि, छाँह आ सफाइ पर अन्तिम अधिकार शेष। लकड़ीक पटरा उठेनिहार लखन सतार, चन्द्रू आ बेलाकेँ ठेकेदारक बिलमे मजदूरी लिखल रहितहुँ हुनकर पंजीमे ‘सामुदायिक निःशुल्क सेवा’ दर्ज अछि। बेला अपन कामक समय आ काजक मात्रा अलग गनबाक कहैत छथि; ‘लखनक साथिन’ कहि नाम हटबए नहि दैत छथि। मूल मजदूरी-पंजी मँगबाओल गेल, भुगतान नहि। एहि दुनू उपकथामे ‘समुदाय’ शब्दक उपयोग आर्थिक असमानता ढकबाक सत्ता-वाचक साधन भऽ सकैत अछि; उपन्यास एहि शब्दक भीतर अलग नफा, श्रम आ जोखिम खोलैत अछि।

कथा-समय, वस्तु-संवेदना, प्रमाण आ अन्तिम खुलल प्रश्न

दिनक आखिरी भागमे यूसुफ पहिल थान ग्राहक लग पहुँचबैत छथि; बेटा ग्राहकक निजी नामक सार्वजनिक प्रसार रोकैत अछि। बेटाक प्रशिक्षण-शुल्क, सूतक उधारी आ घाटा एखन बाकी, दोसर गाँठक पहचान आ शेखरक बयान अपूर्ण अछि। अंतिम दृश्य लताक घरमे मिथुनक कुरताक स्मृति आ नैराक अलग रखल हत्या-जाँचक फाइल धरि पहुँचैत अछि। मालक ढुलाईपथ आ गुमशुदगीक पुरान पर्चीक किछु ठहराव नाम मिललासँ अनुसंधानक सम्भावित प्रश्न उठैत अछि, अपहरणक सिद्ध सम्बन्ध नहि। महेशक हत्या-जाँचक दस्तावेजमे एहि व्यापारिक सुनवाईक दिन

कोनो नव नाम नहि भेटैत। ई संयम विशेष महत्त्वपूर्ण अछि : दीर्घ उपन्यासक अनेक कथासूत्रकेँ जबरदस्ती एक ‘महाषड्यन्त्र’मे जोड़ल जाएबाक सहज आकर्षण कथाकार रोकैत छथि।

शिल्पगत दृष्टिसँ करघाक स्पर्श, माटि-रंगक जोड़, लाल डोरी, भीजल ढुलाई-पर्ची, बर्फक पानि आ पटरा लादबाक देहगत निशान कथा–संसारक सघनता बढ़बैत अछि। प्रायः प्रत्येक पदार्थ दू स्तरपर सक्रिय अछि : दृश्य वस्तु आ साक्ष्यक सम्भावित साधन। दृश्य-विस्तारक कारण दैनन्दिन सामाजिक इतिहासक पैघ विस्तार सम्भव भेल अछि। फेर एक कमी स्वीकारब आवश्यक अछि : पाठांश ४–२५ क लम्ब सुनवाई-माला उपन्यासकेँ केस-नोटक क्रम बना सकैत अछि; पात्रसभ बहुधा तकनीकी भेद अत्यन्त सम्यक् शब्दमे बुझबैत छथि। एहन विवेचन कारण–कार्यक बौद्धिक स्पष्टता बढ़बैत अछि, मुदा दुविधा, मौन आ आकस्मिक मानवीय असंगतिक सम्भावना घटा सकैत अछि। अन्तिम पारिवारिक खिड़की, ग्राहकक पर्दा, रहीमक पत्नीक स्वर आ बेलाक असहमति एहि संरचनात्मक कठोरताकेँ मुलायम करैत अछि। मुख्य साहित्यिक उपलब्धि ई नहि जे अपराध समाधान भऽ गेल, बल्कि ई जे गलत सामूहिक आरोपक भीतर दबाओल विशिष्ट वस्तु, श्रम आ लोक फेर स्वतंत्र कथा बनि सकल।

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७७–८० क संयुक्त आलोचना

चारि अध्यायक घटनात्मक मानचित्र

अध्याय ७७ मे त्रिजटा सुनल युद्धसमाचारकेँ निर्णायक सत्य नहि कहैत छथि; अमलाक तीन परिवारक पुरान प्राप्ति-क्रम अस्थायी सुरक्षित होइत अछि; हीराक विवादित सहमतिक कार्यान्वयन पुनःसुनवाई धरि रोकबाक आग्रह स्वीकार होइत अछि; नसीमाक बेटी अन्तरिम रूपेँ कक्षामे बैसबाक अनुमति पबैत अछि; नदीक नामसभ सत्यापनाधीन रहैत अछि। अध्याय ७८ मे मन्दोदरी रावणकेँ सीता लौटएबाक असफल आग्रह करैत छथि; आधुनिक विद्यालय गलत सामूहिक आरोपक सार्वजनिक सुधार करैत अछि, मुदा मिथुन नहि भेटैत; कमलेशक पर्चीक प्रस्ताव आ रामवतीक पहिचान-संशोधन आंशिक अवस्था मे रहैत अछि। अध्याय ७९ मे दू मूल चित्र अलग दृश्यक निकलैत अछि आ जानकीक दलपर वायरल चित्राधारित आरोपक स्पष्ट लिखित वापसी होइत अछि; सम्पादकक पहिचान अज्ञात, सरयूक जीविका प्रभावित। अध्याय ८० मे यूसुफक ग्राहक-विशिष्ट थान मुक्त होइत अछि; संदिग्ध दोसर गाँठ रोकल रहैत अछि, आ रहीम–सकीना–माछबजार–लखनक अलग देयसभक अंशतः प्रक्रिया आगाँ बढ़ैत अछि। ई चारि घटनात्मक परिणतिसभक समान नैतिक सूत्र अछि, मुदा समान कानूनी अथवा तथ्यात्मक स्थिति नहि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ अन्तर्पाठीयता

प्राचीन लंकाक अशोकवाटिका–राजगृहक समय पहिल दू अध्यायक आरम्भमे अछि; तकर बाद कथावाचक आधुनिक विदेहपुरक विस्तृत समकालीन शाखा पकड़ैत अछि। अध्याय ७७ अन्तमे पुनः अशोकवाटिका घुरैत अछि; ७८ आधुनिक विद्यालयक अभिलेखपर समाप्त होइत अछि। ७९–८० मूलतः आधुनिक बहुसूत्रीय कथा छथि; पौराणिक समानता जबरदस्ती स्थापित नहि कएल जा सकैत। पुरान सीता, त्रिजटा आ मन्दोदरीक कथन-विवेक आ आधुनिक स्त्रीसभक अभिलेखीय अधिकार बीच अन्तर्पाठीय प्रतिध्वनि अछि, वंशानुगत पुनर्जन्म

अथवा इतिहासक प्रत्यक्ष समानता नहि। स्त्रीक सम्मति, घरक अन्न-वितरण, युद्धक भय आ सीमित राज्याधिकार प्राचीन प्रसंगमे खास महत्व रखैत अछि; आधुनिक श्रम आ जातीय पूर्वग्रहक सटीक सामाजिक परिस्थिति हुनका सभक स्वतंत्र इतिहास अछि।

विस्तृत सामयिकता एके दिनक भोर–साँझक बाह्य क्रममे पुरान आवेदन, छूटल मजदूरी, वायरल क्लिपक अज्ञात उत्पादनकाल आ अगिला सुनवाईक प्रस्तावकेँ घोलैत अछि। एतय अग्रदीप्ति निरन्तर सूचनाक स्थगनक रूपमे अछि, मुदा ‘हर प्रतीक्षा अग्रदीप्ति’ कहब अनुचित होयत। कथा-स्वर सामान्यतः तृतीयपुरुष; आन्तरिक चिन्ता सीता, मन्दोदरी, सरयू, यूसुफ सहित अनेक पात्रमे अलग मात्रामे पहुँचैत अछि। स्थिर एकल नायकक बदला परिवर्तनीय दृष्टिकेन्द्र अछि। ई बहुकेन्द्रण पाठकीय जिम्मेदारी बढ़बैत अछि—कथावाचकक सर्वज्ञता जतेक कथित अछि, ततेक मात्र प्रमाण निस्सन्देह नहि।

रस, प्रमाण, समालोचनात्मक उपलब्धि आ प्रतिवाद

करुण रस सीताक अपुष्ट भय, मन्दोदरीक युद्धक दुविधा, सरयूक नतिनीक अपमान आ लताक अधूर खोजमे उभरैत अछि; वीर अथवा शान्त रसक असावधान वर्गीकरणेँ स्त्रीसभक धैर्यक जटिलता घटि सकैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रमे ध्वनिक दृष्टिसँ सूतक गाँठ, काँस-पात्र, भीजल दरी आ करघाक दू खाता प्रत्यक्ष अर्थक अतिरिक्त सामाजिक स्मृति–अधिकारक व्यञ्जना रचैत अछि। मुदा ‘रस’ सभ प्रशासनिक जाँचक स्वतन्त्र प्रमाण नहि; नाटकीय प्रभाव आ वास्तवमे भेल स्थितिबदल अलग मापन छथि। आख्यानगत कसौटीपर श्रवण आ प्रत्यक्ष, सादृश्य आ तादात्म्य, प्राप्ति आ वास्तविक देय, हस्ताक्षर आ बुझल सहमति—प्रत्येकमे प्रमाणक योग्य क्षेत्र निर्धारित कएल जा रहल अछि। एहि तर्कसभकेँ शास्त्रीय मूल ग्रन्थक मनगढ़न्त सूत्र अथवा पात्रक न्यायिक निर्णय नहि मानबाक चाही।

एहि चारू अध्यायक नैतिक उपलब्धि प्रश्नक अधिकारक सामाजिक विस्तार अछि : त्रिजटा अपुष्ट बातकेँ निश्चय नहि बनबैत छथि, मन्दोदरी आदेशमे वंचित लोकक देह देखैत छथि, जानकी अपमानजनक सामूहिक दावाक स्पष्ट खण्डन चाहैत छथि, यूसुफ निर्दोष थानक बिक्री लेल वस्तुविशेषक निर्णय माँगैत छथि। तथापि आलोचनात्मक प्रतिपक्ष बलवान अछि। दस्तावेज-विधि, सहमति आ प्रपत्रक स्पष्ट व्याकरण अनेक पात्रक संवादमे लगभग समान रूपसँ लौटैत अछि; उपन्यासक दीर्घ आकारमे एहि पुनरावृत्तिक घनत्व शिल्पगत थकान बढ़ा सकैत अछि। द्वितीयतः बड्डु उपकथा एक दिनक सीमामे क्रमशः प्रस्तुति पाबैत अछि, जाहिसँ घटनाक आकस्मिकता सभाबद्ध सुनवाई-जकाँ लगि सकैत अछि। तृतीयतः प्रशासनिक प्रगति पर तुलनात्मक बेसी ध्यान देलासँ कतिपय पात्रक निजी असन्तुलन आ मौन कम देखाइत अछि। एखन धरि निष्कर्ष ई नहि जे उपन्यास असफल, अथवा ई सभ मात्र त्रुटि; बल्कि दीर्घ कथा अपन नैतिक पद्धति आ कथात्मक जीवनक विविधता बीच बराबर मोल-भाव करैत अछि। अगिला अध्याय ८१ — ‘बच्चाक दोसर ठाम’ एही असम्पन्न खोज आ प्रमाण-विषयक विवादक नवा परीक्षण होयत—एतय ओ अध्यायक वास्तविक घटनाक दावा नहि कएल जा रहल अछि।

अध्याय ८१ — बच्चाक दोसर ठाम

बस-अड्डाक मेज : रहस्यक अति-पठनसँ इनकार

अध्याय बस-अड्डाक चायवलाक असमतल टेबुलक पाया नीचाँ दबाओल भीजल पर्चीसँ आरम्भ होइत अछि। पर्चीपर ‘अगिला पड़ाव’क आधा मिटाएल शब्द नैराक दृष्टि आकर्षित करैत अछि, मुदा ओ एकरा सुराग घोषित नहि करैत छथि। उपन्यासक एखन धरि विकसित अभिलेखीय रहस्यक बीच ई आरम्भिक निषेध महत्त्वपूर्ण अछि : पाठक जे कागद देखैत अछि, ओकर प्रत्येक अक्षर कथात्मक पहेली नहि। चायवला ओहि पन्नाकेँ मेज समतल करबाक वस्तु बनौने अछि। एकहि वस्तु व्यवसायिक उपयोग आ सम्भावित जाँचक आकृष्टि दुनू पैदा करैत अछि, मुदा सामग्रीक अस्पष्टता ओकर प्रमाणिक उपयोग निर्धारित नहि करैत। कच्चा दूधक गन्ध, धूरि आ बसक चक्का नीचाँ जमा पानि दृश्यकेँ केवल प्रतीकात्मक नहि, सामाजिक आवागमनक मूर्त काल-स्थान बनबैत अछि।

लता कमलीक संग पहुँचैत छथि। मिथुनक नीला कुरताक नाप तखनहुँ परिवारक स्मृतिमे सुरक्षित अछि, मुदा सहायता-कक्षक सूचना स्पष्ट कहैत अछि जे दोसर बच्चाक प्रकरणमे भेटल सम्पर्क-ठामसँ मिथुनक अवस्थिति सिद्ध नहि भेल। एतय कथा एकटा सहज रहस्योपन्यासीय प्रलोभनक सोझाँ रुकैत अछि। समान बस-अड्डा, दलालक सुनल नाम आ बिलायल बच्चा मिलि पाठककेँ एक स्रोत खोजबाक चाह जगबैत अछि; नैरा ‘भेटबाक अर्थ आरोप लगायब नहि’ कहि एहि सम्भावित छलाँगकेँ रोकैत छथि। ई कथन केवल नैतिक उपदेश नहि, आगामी अनुसन्धानक कथन-व्यवस्थाक शर्त बनैत अछि। कथावाचक एखन नहि जनबैत जे मिथुन कतय अछि; पाठक सेहो लताक इच्छाक कारण ओहि रिक्त स्थान भरबाक अधिकार नहि पबैत।

एहि आरम्भक कला परखैत एक सीमा सेहो चिन्हित होइत अछि। प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कागदक लग पात्र तुरन्त ओकर प्रमाण-सीमा स्पष्ट करैत छथि; फलतः रहस्यक स्वाभाविक अनिर्णय कखनो-कखनो प्रमाणशास्त्रीय प्रशिक्षण जकाँ सुनाइत अछि। मुदा बस-अड्डाक पर्ची, चायवलाक हाथक क्रिया आ लताक नीला कुरताक स्मृति एहि सैद्धान्तिक सघनताकेँ स्थूल वस्तु आ शारीरिक बेचैनीमे फेर घुरबैत अछि। ई अध्यायक सफल प्रथम लय अछि।

गुंजा आ चमेली : बाल-सुरक्षाक वास्तविक घटना-पञ्जी

चमेली अपन बारह वर्षक बेटी गुंजाक खोजमे अएलीह। गुंजा ग्यारह दिन पहिने घरसँ निकलल छलीह; पढ़ाइक संग काजक अवसरक आश्वासन देल गेल छल, मुदा अभिभावकक लिखित अनुमति नहि। गुंजाक स्थान सिउनाइ-कक्षमे भेटल, सुरक्षित घर-वापसीक औपचारिक प्रक्रिया शेष अछि। यहीं पहिल वास्तविक घटनात्मक परिवर्तन अछि : केवल अफवाह अथवा अनुमान नहि, विशिष्ट बच्चीक स्थिति सम्बन्धी दस्तावेजी कड़ी भेटैत अछि। कक्षक प्रवेश-बही, बस-अड्डाक दू प्राप्ति-पर्ची आ गुंजाक संरक्षित कथनक तिथि मेल खाइत अछि। बच्चीकेँ व्यक्तिनामसँ हटाकऽ ‘नव सहायिका’ लिखल गेल; ई नाम-प्रतिस्थापन मानवीय जीवनकेँ उत्पादनक श्रेणीमे बदलएबाक संकेत अछि। मुदा मूल हस्ताक्षरक प्रमाणिक जाँच एखन बाकी अछि; अपराधक प्रत्येक व्यक्तिगत भूमिका सिद्ध नहि।

लता प्रश्न करैत छथि जे ‘तस्करी सिद्ध भऽ गेल?’ अधिकारी उत्तरमे पहिल पुष्ट स्थानान्तरण-क्रम, घर घुरबाक रोक, जाँच शुरू होएब आ अदालतमे भविष्यक दोषसिद्धिक बीच अन्तर करैत छथि। एहि कथनकेँ जसकातस विधिक निष्कर्ष नहि बनाबक चाही; ई उपन्यासक पात्रक स्तरपर जाँचक वर्तमान स्थिति अछि। गुंजाक कथा मिथुनक कथा नहि : दू प्राप्ति-पर्चीमे मिथुनक नाम अनुपस्थित अछि। ई अनुपस्थिति ‘मिथुन कतहु नहि’क प्रमाण नहि, केवल एहि दू पर्चीमे मिथुन नहिक सीमित तथ्य अछि। एहि नकारात्मक सीमांकनक कारण अध्याय अपन शीर्षकक ‘दोसर’ शब्दकेँ सामाजिक अस्मिताक रक्षा बनबैत अछि। एक बच्चीक पीड़ाकेँ दोसर बच्चाक खोजक उपकरण बनायब मानवीय उपयोगितावादक नवा रूप होएत।

गुंजाक स्कूल-कापीमे नीला धागासँ सिउल फूल, ओकर सिलाइ सीखबाक इच्छा, विद्यालय नहि छोड़बाक निर्णय आ परिचित शिक्षिकासँ भेटबाक आग्रह विशिष्ट चरित्र-वाणी बनैत अछि। बच्चीक काज सीखबाक अभिरुचि आ श्रम लेल बन्द राखल जाएब परस्पर विरोधी नहि, अलग अधिकार-विषय छथि। कथा श्रमक समस्त अभ्यासकेँ अपराध नहि मानैत; परिस्थितिगत स्वातन्त्र्य, शिक्षा आ घरसँ सम्पर्कक बाधाकेँ निर्णायक करैत अछि। गुंजाक बयान सार्वजनिक मेजपर नहि पढ़ल जाइत, आ चिट्ठीक केवल अनुमतिप्राप्त अंश माएक सोझाँ अबैत अछि। स्त्री-मातृत्वक प्रेम बच्चीक निजता मेटा नहि दैत। इएह अध्यायक नारीवादी आ बाल-अधिकारपरक उपलब्धि अछि।

बच्चीक बयानमे ओकर घरक ठिकानावाली चिट्ठी छीनि लेबाक आरोप अछि, जकर जाँच आवश्यक अछि। कार्यशालामे भेटल दोसर दू किशोरक स्थिति अलग जाँचमे अछि। सामूहिक ‘उद्धार’क एक संख्या बनाय देबाक प्रस्ताव अस्वीकार होइत अछि। एतय प्रतिपक्ष विचारणीय अछि : प्रशासनिक प्रक्रिया बच्चाक संरक्षणक लेल आवश्यक रहितहुँ देरीक कारणो बनि सकैत अछि। चमेली ‘कखन घर अओतीह’ पूछैत छथि; उत्तर तत्काल पुनर्मिलन नहि। यदि समीक्षा केवल गोपनीयताक सफलता कहत तँ माएक अनिद्रा आ बच्चीक वास्तविक पुनर्वासक अनिर्णय अदृश्य भऽ जायत। पाठ ई विरोध बचा राखैत अछि।

स्मृतिक दूषण, किरायेदारीक रजिस्टर आ अनुमानक उपाधि

अड्डाक पूर्वी गलीमे कथित सम्पर्क-कार्यालयक नाम-पट्टी हटि चुकल अछि; गोंदक निशान, फाड़ल नकद-रसीद आ धुँधल फोन-अङ्क भेटैत अछि। किरायेदार दू दिन पहिने चलि गेल, ई मालिकक कथन अछि; ओकर जिम्मेदारी अथवा गुमशुदा बच्चाक संग प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि। नैरा वैध जाँच लेल मूल किराया-रजिस्टरक आवेदन करैत छथि। लता कुर्सी छूबैत पूछैत छथि—मिथुन एतय बैसल होएत? नैरा उत्तर नहि गढ़ैत छथि, कमली समान कुर्सीक आधारपर अलग बच्चाक यात्राकेँ एक करबाक विरोध करैत छथि। करुण रसक सम्भावित चरम बिन्दु अनुमानपर संयमित होइत अछि; दुःखकेँ असत्यक लाइसेंस नहि बनाओल गेल।

बस-कर्मचारी पहिने मंगल, फेर बुधक साँझक स्मृति कहैत अछि; गुंजाक विवरण सुनलाक बाद अपन देखल दृश्य ताहिसँ जोड़ए लगैत अछि। बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता ओकरा पहिल देखल तथ्य आ बादमे सुनल विवरण अलग रखबाक कहैत छथि। आधुनिक संज्ञानात्मक आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ ई स्मृति-स्रोतक दूषणक दृश्य अछि : वर्तमान प्रश्न अतीतक प्रत्यक्ष स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि। बयानक अन्तिम वर्गीकरण ‘संभावित दृश्य, तिथि

अनिश्चित’ अछि। ई निष्कर्ष अधिकारीक अज्ञान नहि, साक्ष्यक वर्गीकरणक परिपक्वता अछि। सैद्धान्तिक रूपमे एके फोटो अथवा समान नाम पर्याप्त हेतु नहि; समय-क्रम, स्थान आ स्वाधीन पुष्टिक उपाधि हटाओल आवश्यक।

अधिकृत निरीक्षणमे भाड़ा-रजिस्टर आ गुंजाक पहिल पर्चीमे एक सम्पर्क-नामक लिखावट समान बुझाइत अछि, मुदा समान हस्तलेखसँ समान व्यक्ति अन्ततः प्रमाणित नहि। तथापि एकहि सम्पर्क-ठामसँ दू मूल पर्ची जारी होएबाक पुष्ट कड़ी जाँचक वास्तविक प्रगति अछि। एतय प्रमाणिक प्रगतिक अर्थ ‘सभ आरोपी भेटल’ नहि, बल्कि जाँच लेल काज करए योग्य विशिष्ट कड़ी हाथ लगब अछि। आख्यानगत भाषामे साध्य—फलाँ व्यक्तिक आपराधिक संलिप्तता—क हेतु केवल लिखावट-सादृश्य कमजोर अछि; सभ मूल हस्ताक्षर, दूरभाष आ स्वतंत्र बयान मिललापर मात्र दावाक सीमा बढ़त। उपन्यास एहिमे न्यायिक निर्णयक कल्पना नहि जोड़ैत।

मजदूरीक देय, दुर्गाक पहिल खेप आ कथात्मक समानान्तर

दशम पाठांशसँ केदार बौरी, फुलवा, जुगल आ शम्भूक राहत-ओसारा मरम्मतिक देयक कथा प्रवेश करैत अछि। बाढ़क समय ‘सेवा’ कहि मजदूरी रोकबाक विवादमे समय-पर्ची, निर्धारित दरक मौखिक साक्ष्य आ अनुपस्थित पंजी महत्व रखैत अछि। केदार मजदूरीक कागद लऽ ठाढ़ होएबकेँ अपराधक कतार नहि मानैत छथि। मुनीम छोट एकमुष्ट रकम देबाक प्रस्ताव रखैत अछि; जुगलक घरक दवाइक तत्काल आवश्यकता ताहि प्रस्तावकेँ आकर्षक बनबैत अछि। फुलवा प्रश्न करैत छथि—एकमुश्त रकम ककर कतेक देय समेटत, आ बाँकी दावा समाप्त होएत की? अन्तमे प्राप्ति-पंजीमे सामूहिक दावा दर्ज होइत अछि; रकमक प्रस्ताव भुगतान नहि मानल जाइत, आ जुगलक अग्रिमक अलग माँग होइत अछि। पात्रसभक भीतरक असहमति न्यायसंगत अछि, निजी कष्टकेँ सामूहिक प्रस्ताव चुप कराएब नहि।

दुर्गा गंगाई अपन मखान–चिउड़ाक उत्पादक उधारीक सीमा स्वयं तय करैत छथि, रुखसानाक भोजन-टोली संग स्वाद, भिजबाक अवधि आ वजनक अलग परीक्षण करैत छथि। तीन पुड़ियाक बिकाइ, पहिल खेपक आधा भाग बिकब, अग्रिम साफ देखब आ अगिला खेपक स्वाद तय नहि होएब—ई ठोस लघु-बाजारक घटना छथि; दुर्गाक व्यापार पूर्ण सफल भऽ गेल, से नहि। एहि व्यापारी प्रसंगकेँ अपहरण-जाँचक समान ‘प्रमाणक केस’ कहि छोट करब अशुद्ध होएत। एहि ठाम खाद्य-स्वाद, सूखल–भीजल थैली, खरीददारक रुचि आ स्त्रीक मूल्य-निर्णय वास्तविक आर्थिक कथनक सामग्री छथि। रुखसानाक किशोरी सहकर्मीक अस्पष्ट दृश्य-स्मृतिसँ सेहो अपुष्ट बच्चा-खोजक चेतावनी फेर उठैत अछि। तीन कथाधारा बस-अड्डामे भेटैत छथि, मुदा एक-दोसराक अपराध-सिद्धिक साधन नहि बनैत।

अनजान नम्बर सँ ‘नदीपार भेटि जायत, पहिने किराया पठाउ’ सन्देश अबैत अछि; नाम, समय वा प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। लता तत्काल रुपैया नहि पठेबाक निर्णय स्वयं करैत छथि, सन्देश आधिकारिक जाँच लेल सुरक्षित करबैत छथि। कथावाचक हुनकर निर्णयकेँ वीरगाथा नहि बनबैत; बेटाक खोजमे अधीर माएक शारीरिक आकर्षण आ कमलीक संयत उपस्थिति संग अछि। रातिमे मिथुनक थारी धोएब आ भोजनक जगह नीला कपड़ा राखब करुण रसक एक विशेष अभिव्यक्ति अछि। प्रतीक्षा समाप्त नहि; मुदा प्रतिदिन थारीमे ढाकि भोजन रखबाक

प्रतीकात्मक कैदसँ लता स्वयंकेँ थोड़े स्वतंत्र करैत छथि। गुंजाक सुरक्षित देखरेख, मजदूरक दर्ज दावा, दुर्गाक सीमित बिक्री आ मिथुनक अनुपस्थितिक समानान्तर समापन मुख्य उपकथासभकेँ अलग परिणाम देइत अछि।

कथन-व्यवस्था आ कलात्मक सीमाक समग्र जाँच

अध्यायक घटनाक्रम मोटामोटी भोर–दुपहर–साँझ–राति क्रममे चलैत अछि। कथा बारम्बार अड्डा, गली, कार्यालय, भोजन-ठेला आ घर बीच केन्द्र बदलैत अछि; प्रमुख केन्द्रित चेतना लताक अधीर प्रश्नसँ चमेलीक अधिकार, केदारक लेखा आ दुर्गाक बाजारबुद्धि धरि फैलैत अछि। तृतीयपुरुष कथावाचकक उपलब्ध सूचना पात्रसभक कथनसँ बेसी व्यवस्थित अछि, मुदा अपराधी अथवा मिथुनक ठामपर सर्वज्ञ निष्कर्ष नहि दैत। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’क संकेतक विपरीत, एहि अध्यायमे स्वतंत्र महाकाव्यीय दृश्य नहि; आधुनिक कालक भीतर अलग मानवीय समयरेखा छथि। साक्ष्यपर आधारित एहि संशोधनकेँ महत्वपूर्ण मानबाक चाही।

कलात्मक शक्ति विशिष्ट वस्तु आ अप्राप्त परिणामक संयोजन अछि : स्कूल-कापी, काठक कुर्सी, अधमिटल नम्बर, थारी, मजदूरीक पर्ची आ चिउड़ाक सुगन्ध। सीमा एहि बातमे अछि जे अधिकारी, नैरा, केदार, दुर्गा आ बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता लगभग समान रूपेँ प्रमाण-अनुशासित सूत्र कहैत छथि। विभिन्न पात्रक सामाजिक बोलीक स्वतन्त्र लय कखनो नीति-प्रशिक्षणक वाणीमे समा जाइत अछि। तथापि जुगलक दवाइक हड़बड़ी, चमेलीक अनिद्रा आ लताक थारी-विधान एहि समतलताकेँ चुनौती दैत अछि। अध्यायक आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि एक बच्चीक निश्चित पीड़ाकेँ दोसरक अनिश्चित भविष्यक उत्तर नहि बनएब अछि।

अध्याय ८२ — मैथिलीक पन्ना

पुरान पेटी आ लेखकत्वक पुनर्परीक्षा

अध्याय मैथिलीक दराजमे राखल लकड़ीक पेटी आ दू तहमे सुरक्षित पन्नासँ खुलैत अछि—एक ईशानक साफ अक्षरवला मूल पाठ, दोसर मैथिलीक नीला स्याहीवला संशोधन। पृष्ठक नखमे अटकैत रेशा, सूखल कपड़ा आ झरोखाक हवा पाठककेँ बतबैत अछि जे ज्ञानक इतिहास नाजुक भौतिक वस्तुमे बचल अछि। सरिता भोजन राखिकऽ पन्ना नहि छूबैत छथि, मुदा कागदकेँ खराब नहि होएबाक वास्ते उजियार आ हवादार ठामक व्यावहारिक जानकारी दैत छथि। ई प्रथम क्षणमे विद्वत्ता आ घरेलू देखरेखक सम्बन्ध स्थापित होइत अछि; लेखकत्वक श्रेय-विवाद आरम्भ भेबासँ पहिने श्रमक भौतिक आधार उपस्थित अछि।

पेटीसँ खसल अपूर्ण तिथिवाली चिट्ठीकेँ मैथिली तुरन्त पुस्तकक प्रमाण नहि मानैत छथि। ओ अपन स्मृतिक सूक्ष्मता स्वीकारैतहुँ तिथिक अनिश्चितता सेहो चिह्नित करैत छथि। ईशान प्रारम्भिक मसौदाकेँ अपन कहैत छथि; मैथिली ओकर संशोधित प्रति सोझाँ राखि, संशोधनकेँ ‘मसौदाक किनार’ मात्र मानबाक विरोध करैत छथि। एहि दृश्यमे प्रश्न ई नहि जे पुस्तकक प्रत्येक वाक्य ककर अछि, बल्कि विशेष पूर्वपक्षीय आपत्ति आ ओकर परिणामस्वरूप तर्क-संशोधनक श्रेय कोना पहिचानल जायत। मैथिली समान परिणामसँ समान कारणक निर्णयक आपत्तिक बात उठबैत छथि। एहन संशोधन केवल लिपिकीय शुद्धि नहि; अनुमानक हेतु-साध्य सम्बन्धक वैचारिक समीक्षा अछि। तथापि ई पाठमे स्वतः सहलेखनक अन्तिम हुकुम नहि।

हरिमोहन हस्तलिखित पन्नाक अस्तित्व आ लेखकीय सहभागिताक प्रश्न अलग रखैत छथि; लिखावट, तिथि, मसौदा-क्रम आ प्रत्यक्ष पाठ-साक्ष्य सभ आवश्यक। भिन्न स्याहीक रंग अलग कालक निर्णायक प्रमाण नहि। मैथिली अपन पक्षक कमजोर तिथि स्वयं लुकबैत नहि छथि। ई आत्मालोचन कौशल रूपमे पात्र-विकासक वास्तविक बिन्दु अछि : ओ जकरा विरुद्ध अन्याय कहैत छथि, तकरा परास्त करबाक लेल स्वयं साक्ष्यक सीमा तोड़ैत नहि छथि। ईशानक मूल तर्कक अस्तित्व सुरक्षित अछि, मुदा संशोधनक इतिहास साझा जाँच चाहैत अछि। एहि दुविधाकेँ एक सार्वजनिक ‘नाम जोड़ू/नहि जोड़ू’ विकल्पमे समेटनाइ पाठक प्रति अन्याय होएत।

फरीदक समय-बँटवारा : शिक्षाक सामाजिक मूल्य

अष्टम पाठांशमे फरीद चिक प्रवेश-अर्जीक संग दोकानक सप्ताहिक हिसाब लऽ पहुँचैत अछि। ई ‘उपकथा’ मुख्य लेखकत्व-विवादसँ विच्छिन्न नहि, मुदा ओकर प्रतिलिपि नहि। फरीद अपन पिताक छँटनाइ–बिक्रीक पारिवारिक धन्धामे जिम्मेदारी आ विद्यालयक सन्ध्याकालीन पाठ तथा ताल-शिक्षणक इच्छा बीच समय-विभाजन करैत अछि। परिवारक खर्चसँ दूर पलाएब ओकर निर्णय नहि; दू घड़ीक शिक्षाकेँ एक नागरिक अधिकारक रूपमे व्यवस्थित करब अछि। विद्यालयक आवेदन, दोकानक खाता, शिक्षण-पारिश्रमिक आ पारिवारिक देय चारि अलग लेजर छथि। श्रम-अधिकार आ शिक्षा-अधिकार परस्पर विरोधी रूपमे प्रस्तुत होएतहुँ सरलीकृत समाधान नहि भेटैत।

पिताक प्रतिप्रश्न ‘अतिरिक्त मजदूरक दाम ककर लाभसँ निकलब?’ समाजिक यथार्थक कठिन बिन्दु अछि। फरीद अपन वास्तविक बिक्री-दिनक खाता देखबैत अछि; जइ दिन ओ काज नहि कएलक तइ दिनक पैसा अपन नामपर नहि जोड़लक। खाली खाना विश्वसनीयताक एक दृश्य साक्ष्य बनैत अछि। पिता समयक सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर करैत छथि, विद्यालयक अन्तिम प्रवेशपत्रपर नहि। प्रारम्भिक घरेलू सहमति आ विद्यालयक औपचारिक स्वीकृति भिन्न अवस्था छथि। एहि रूपेँ उपन्यास ‘शिक्षा भेटल’क भावुक परिणतिक बदला समय-सारणी, आवक आ सामूहिक श्रम-वितरणक वास्तविक गणित देखबैत अछि। फरीदक ताल-शिक्षणक बचत पुस्तक किनबाक साधन बनैत अछि; घरेलू देय अपन ठाम रहैत अछि।

श्रेयक श्रेणी : मूल तर्क, प्रश्न, उदाहरण, प्रतिलिपि

हरिमोहन मूल तर्क, संशोधनक प्रस्ताव आ सम्पादन/प्रतिलिपिक तीन आरम्भिक श्रेणी बनबैत छथि। ईशान अपन मूल विवेचनक लेखकत्व मानैत छथि; मैथिलीक प्रश्नक बाद उदाहरणक रूप बदलल, आ किछु नव निष्कर्ष धरि दूनू चर्चा कएलनि। एहि स्वीकारसँ संशोधनक सहभागिता स्थापित होएबाक बाट खुलैत अछि, मुदा कतबा सहलेखन भऽ गेल एकरा लेल विशिष्ट पृष्ठ-समीक्षा जरूरी अछि। मैथिली प्रारम्भिक सार्वजनिक उल्लेख चाहैत छथि आ अन्तिम प्रमाणन बादमे; ईशान संशोधनक इतिहास कैँ लिखित रूपमे राखब स्वीकारैत छथि। एहि घटनात्मक परिवर्तनक तुलनामे आरोप–प्रतिआरोप कम, दस्तावेजी प्रक्रिया बेसी बढ़ैत अछि।

एक समय मैथिली नैरासँ निजी जन्म-अभिलेखक चर्चा नहि उठबैत छथि; कबीरक सम्भावित जन्म-समाचार आ सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्नाकेँ लेखकत्व-विवादक उदाहरण बनबासँ रोकैत छथि। ई सूक्ष्म नैतिक सीमांकन महत्त्वपूर्ण अछि। निजी जीवनी, साहित्यिक संशोधनक सार्वजनिक श्रेय आ अपूर्ण बाल-खोज तीन

भिन्न प्रकृतिक कागद छथि। संशोधनक पक्षमे निजी सूचना खोलबाक दबाव ‘सत्यक लेल सब’क सर्वाधिकारवादी वृत्ति बनि सकैत अछि। मैथिली अपन अधिकारक पक्ष रखितहुँ दोसरक निजी अभिलेख सुरक्षित राखैत छथि। एतय नारीवादी आख्यानशास्त्रक अर्थ स्त्रीक नाम जोड़बाक मात्र नहि, निजता आ सार्वजनिक सृजनक बीच निर्णयाधिकार पहिचानब अछि।

मूल पन्नाक बाहरी चिन्ह, चयनित प्रतिक संख्या, अभिरक्षाक स्थान, निरीक्षक आ नकलक अनुमति लिखल छोट पंजी तैयार होइत अछि। मैथिलीक हस्तलिखित संशोधन प्रस्तुत भेल, सहभागिताक परीक्षा जारी—ई वास्तविक संस्थागत उपलब्धि अछि। मुदा सार्वजनिक पुस्तकपर नव नाम छापबाक आदेश नहि बनल। एहि सूक्ष्म फलित अवस्थाकेँ बिना काटि आलोचना करबाक चाही। कथा छोट लिखित स्वीकारकेँ सम्पूर्ण न्यायक विकल्प नहि बनबैत। ईशान पन्ना सार्वजनिक जाँच लेल देबाक तैयार छथि; मैथिली पन्नाक ऐतिहासिक दायित्वक समीक्षा चाहैत छथि; दुनू स्थिति एक गतिशील तनाव रचैत अछि।

काल-रचना, दृष्टिकेन्द्रण आ असम्पन्न सुनवाई

अध्यायक समय भोरक पेटी-खोलासँ रातिक पन्ना समेटब धरि फैलैत अछि। कथा अल्पांश पुरान पाण्डुलिपिक कालमे स्मृति द्वारा घुरैत अछि; पृथक महाभारतीय कालधारा प्रस्तुत नहि। भिन्न स्याही, अपूर्ण तिथि आ छपल संस्करणक भौतिक अन्तर पूर्वदीप्तिक प्रमाण-वस्तु छथि, प्रत्यक्ष अतीत-दृश्य नहि। एतय ‘द्विकालीन’ कहलासँ बेसी सटीक ‘वर्तमान जाँच द्वारा अतीतक पुनर्निर्माण’ अछि। दृष्टिकेन्द्रण मैथिलीक पन्ना पढ़बाक इच्छासँ ईशानक असुविधा, फरीदक आर्थिक जिम्मेदारी आ सरिताक समय-नियन्त्रण दिस सरकैत अछि। कथावाचक सबहक भीतरी विचारक पूर्ण अधिकार लेबासँ परहेज करैत अछि—अन्तमे सरिताकेँ मैथिलीक उत्तरसँ राहत भेटल की नहि, मैथिली जानि नहि सकैत छथि।

कलात्मक दृष्टिसँ दराज, स्याही, गमछा, टेबलक नाजुक पन्ना आ रोटी-बासनक आवाज ज्ञानक शारीरिक अवस्थिति बनबैत अछि। विशेषतः अन्तिम दृश्य—मैथिली बिहानक बासन धएबाक प्रस्ताव करैत छथि, सरिता बिहान किछु पन्ना देखेबाक उत्तर दैत छथि —अपन पन्ना सार्वजनिक करबाक दाबीकेँ दोसरक श्रम सुनबाक नैतिक दायित्वसँ जोड़ैत अछि। ई भावात्मक परिवर्तन वाचाल क्षमायाचनासँ बेसी प्रामाणिक अछि। सीमाक रूपमे हरेक पात्र क्रमवार ‘मूल–संशोधन–प्रतिलिपि’क वर्गीकरण करैत देखाइत अछि; वास्तविक घरेलू मतभेदक अनियोजित तीव्रता कम भऽ सकैत अछि। तथापि ई वर्गीकरण एतय कथानकक केन्द्रित अन्वेषण अछि, दूरक सहायक उदाहरण नहि; तेँ पुनरावृत्ति यथेष्ट सन्दर्भ प्राप्त करैत अछि।

अध्याय ८३ — सरिताक मेहनत

चूल्हि आ नीला कापी : समयक दोहरी लेखा

अध्याय सरिताक चूल्हिसँ लुढ़कल अधजरल कोयला आ ओहिसँ बचाओल नीला कापीक दृश्यसँ शुरू होइत अछि। पहिल पन्नापर चाउर–तेल–मसुरिक हिसाब, सातम पर अचानक प्रश्न–उत्तरक गद्य : घरेलू निर्वाह आ दार्शनिक पाठ एके हाथक अक्षरमे उपस्थित छथि। ई समान कागद मे दुनू श्रमक सहस्थिति अछि, समान प्रकारक

लेखकत्वक सिद्धि नहि। सरिता पहिले भात उतारैत छथि, हाथ धोइत छथि, तखन कापी खोलैत छथि। वस्तुगत क्रम महत्त्वपूर्ण अछि—रसोइक श्रमकेँ 'ज्ञानक सहायक' कहि बिलायल करबाक बदला ओकरा विशिष्ट समय आ देहक काज सहित देखाओल गेल अछि। मैथिली ढक्कन पकड़ि गरम वाफसँ हाथ बचबैत छथि; नवा श्रम-संबन्ध सहज हँसीक माध्यमसँ बनैत अछि।

सातम पन्नापर 'कारण'क ठाम बादमे 'हेतु' लिखल अछि; शब्द बदलल ककर व्याख्यासँ, तकरा लेल आन पन्नाक आवश्यकता अछि। सरिता धानक मौसम याद करैत छथि, मुदा मौसमक स्मृतिकेँ कागदक निश्चित तिथि नहि कहैत छथि। भीजल पन्ना सुखाएब, दुबारा नकल बनाओब आ अक्षरक अर्थ पूछि लिखब वास्तविक प्रतिलिपि-श्रम अछि। कतिपय अक्षर ओ स्वयं बुझि सुधारने, कतिपय मैथिली अथवा ईशानसँ पूछने—एहि मिश्रित स्रोतक ईमानदार वर्णनमे 'लिखल हाथ' आ 'विचारक रचनाकार'क भेद निकलैत अछि। एतय सरिताक चरित्र पारम्परिक त्यागमयी गृहिणी नहि; ओ अपन कामक प्रकार, तिथि आ श्रेयक सीमा परिभाषित करनिहारी विवेचिका छथि।

छपल पुस्तकक 'घरक सहयोग' पाँति सरिताक दिन, भोजन-सामग्री, रात्रिक प्रतिलिपि आ उदाहरणक स्रोत समेटि नहि सकैत। मुदा ओ अपना लेल पुस्तकक सर्वसमावेशक लेखकत्व नहि माँगैत छथि। हुनकर आग्रह —'नाम जरूरी अछि, मुदा पहिने काज सुनू'—समानान्तर इतिहासक पद्धतिक मुख्य आलोचनात्मक कसौटी बनैत अछि। केवल विस्मृत नाम जोड़ि देब पर्याप्त नहि; जे व्यक्ति कोन कार्य कएलक, ककर अनुरोधपर, कतेक समय आ कोन दाममे, से जाँचल चाही। एतय दलित, स्त्री अथवा श्रमिकक 'प्रतिनिधिक' नाम दऽ समस्त अनुभव भरबाक सतही इतिहासविधि सँ उपन्यास बचैत अछि।

स्रोतक तीन रूप आ श्रमक तीन रूप

सरिता पोखरिक पानि-माप, गोदामक तौल आ घाटपर देय चुकौतीक तीन उदाहरण अलग करैत छथि—पहिल प्रत्यक्ष देखल, दोसर रुखसानासँ सुनल, तेसर नकलक स्रोत जेकर मूल ओ नहि देखलनि। पूर्ववर्ती शिक्षा-विवादमे एहि सभकेँ सामान्य 'लोकक व्यवहार' कहि पाठमे लऽ गेल गेल छल। सरिता एहि समानीकरणपर आपत्ति उठौने छलीह, मुदा हुनकर प्रश्न पुस्तकक पाँतिमे स्थान नहि पओलक। मैथिली स्वीकारैत छथि जे तत्काल 'काम चलत' कहि स्रोतक प्रश्न टारने रहथि। एहि क्षणमे मैथिलीक आत्मालोचना अपन लेखकीय श्रेयक दाबीसँ नैतिक रूपेँ जुड़ैत अछि; एक स्त्रीक मान्यता केँ दोसर स्त्रीक अनाम श्रमक मूल्यपर बनाउ कोनो न्याय नहि।

समान तौलवला दू बोरा भिन्न भौतिक इतिहासक भऽ सकैत अछि—एक भिजल, दोसर सुखल। सरिताक प्रत्यक्ष हाट-अनुभव अनुमानी हेतुकेँ शर्तसहित सोचबाक लेल प्रेरित करैत अछि। मुदा कथन स्वतः स्थापित नहि करैत जे पुस्तकक पूरा संशोधित सिद्धान्त सरिता लिखलीह। प्रश्नक उद्गम, सूत्रक भाषा आ छपल संस्करणक पाठ-क्रम अलग जाँचक विषय छथि। ई भेद आख्यानगत तर्कक सार्थक सामाजिक उपयोग अछि : समान फलसँ एके कारणक अनिवार्य अनुमान तखन धरि नहि, जखन धरि अन्य कारणक सम्भावना निवारित नहि। दार्शनिक कथानकक सफलता एहि दृश्यमे अछि जे प्रत्यक्ष ज्ञान परिवारक 'नीचाँ' मानल जाएबाला श्रमसँ आबि गुरुक सूत्रक दोष पकड़ैत अछि।

हरिमोहन सोझाँ सरिता तीन दस्तावेजी वर्ग रखैत छथि—नकलक पन्ना, भोजन–कपड़ाक खर्च-पंजी आ उदाहरणक स्रोत-सूची। नकल/लेखन, खर्च/श्रम आ अनुभव/ज्ञान तीन अलग योगदान छथि। आगाँ कार्यपंजीमे रसोइक दिवस, ज्ञात प्रतिलिपि-पृष्ठ, संशोधन-सुझाव, उदाहरणक स्रोत आ निरीक्षण-अनुमतिक अलग खाना बनैत अछि। दू दिनक स्वेच्छा साझा भोजन आ तीन दिनक माँगल गेल नकल-श्रम अलग रखल जाइत अछि। ई समयक नैतिक लेखा अछि; ‘निःशुल्क’क अर्थ हर कार्य लेल समान नहि। सरिता बिना हिसाबक तत्काल पैसा देबाक प्रस्ताव रोकैत छथि, कारण ताहिसँ देयक पूर्ण समापनक गलत कथा बनि सकैत अछि। पारिश्रमिकक अधिकार आ तर्कक स्रोताधिकार दुनू मोल-तोलक एक वस्तु नहि।

लक्ष्मी झाँगड़क स्वतंत्र अभिलेखीय अधिकार

आठम पाठांशमे लक्ष्मी झाँगड़ श्रम-अनुबन्धक नकल लऽ पहुँचैत छथि। ओ साफ कहैत छथि जे निजी पन्नाक फोटो नहि बनत, आवेदनक प्रति चाही, दादाक सम्पूर्ण जीवनक कथा नहि। पुरान अनुबन्धमे मौसम, रहबाक ठाम आ अग्रिम अनाजक हिसाब अलग अछि; ‘परिवारक कर्ज’ कहल जा रहल रकम लेल व्यक्तिगत स्वीकृत हस्ताक्षर स्पष्ट नहि। एक पन्नामे पूर्वजक नाम आ दोसरा पन्नामे ‘परिवार’ शब्द भेटलासँ स्वतः देनदार व्यक्ति समान नहि। लक्ष्मी बिना मूल पंजी मिलाए ‘सिद्ध बकाया’ नहि लिखब चाहैत छथि। ई सूक्ष्मता वंशगत श्रमक समानान्तर इतिहास लिखबाक पद्धतिगत आधार अछि : समूहक पहचान व्यक्तिक स्वीकृति, ठेकाक अवधि आ देयक विशेषता मेटा नहि सकैत।

मैथिली लक्ष्मीक प्रति अपन दर्शनक उदाहरण रूपमे देखबाक आग्रह करैत छथि; लक्ष्मी अस्वीकारैत छथि। ‘हमर दादाक मजदूरी अहाँक दर्शनक उदाहरण नहि’—ई छोट प्रतिवाद दार्शनिक कथा आ सामाजिक यथार्थक सत्ता-संबन्ध उजागर करैत अछि। उपेक्षित व्यक्ति केवल ‘उदाहरणक खनि’ नहि, प्रमाणक उपयोगपर निर्णय करनिहार अछि। मैथिली अपन प्रश्नक असावधानी स्वीकारि सामान्य पद्धति सीखबाक सीमित आग्रह रखैत छथि। एहि घटनामे दोसर व्यक्तिक अधिकार सुनबाक पात्र-विकास प्रत्यक्ष अछि। लक्ष्मी मूल कागद डाकमे नहि पठबैत, प्रकाशित कार्यालय-संख्या फोनपर पुष्टि करैत, आवश्यक नकल आ भविष्यक निरीक्षण-समय अलग रखैत छथि। उपन्यास आवेदन देलाक बाद श्रमिकक रकम भेटल, एहन दावा नहि करैत; आर्थिक संघर्ष एखन अनिर्णीत अछि।

एहि अन्तर्कथाक सम्भावित सीमा सेहो अछि। मैथिलीक लेखन-विवाद, सरिताक प्रतिलिपि-श्रम आ लक्ष्मीक पुरखाक देय—तीनू दृश्य अत्यन्त सार्थक, मुदा सभ पात्र लगभग समान पद्धतिगत स्पष्टतासँ निजी उदाहरण अस्वीकारैत छथि। समाजक शक्ति-असमता, भय, हड़बड़ी आ अपमान कखनो सुगठित तर्कक भीतर सिमटि जाइत अछि। तथापि लक्ष्मीक भाड़ा नहि, समय माँगब आ सरिताक अपने सिलाइ-कामक घड़ीसँ समय मिलान करब ज्ञान-निर्माणक आर्थिक लागतकेँ दृश्य बनबैत अछि।

मौनक पुनर्पाठ आ शिक्षित स्त्रीक आत्मालोचना

पुरान धन्यवाद-पाँतिक पाठसभामे मैथिली ‘घरक लोकक सहयोग’ कहने रहथि; सरिता पिछला पाँतिमे बैसल छलीह, विरोध नहि कएने छलीह। मैथिली एहि चुप्पीक जिम्मेवारी अपन हिस्सामे स्वीकारैत छथि। सरिता स्पष्ट कहैत छथि जे तखन भोजनक दामक हिसाब लेल बैसब आवश्यक छल; मंचपर बैसल लोककेँ असुविधा देबाक

क्षमता हुनका समान नहि छल। एतय ‘मौन’कें ‘सहमति’ माननिहार तर्कक उपाधि उजागर होइत अछि। अधिकारहीन परिस्थितिमे न बोलब स्वीकारक पर्याप्त हेतु नहि। मुदा सरिता ईहो अस्वीकारैत छथि जे ओ तखन औपचारिक श्रेयक माँग कएने रहथि; झूठा प्रतिरोधक कथा बना देब सेहो अनुचित। एके समयक दू स्वतंत्र स्मृति हरिमोहन अलग लिखैत छथि। आधुनिक नारीवादी आख्यानशास्त्रक लेल ई अत्यन्त सूक्ष्म क्षण अछि—पीड़ित स्त्रीक वर्तमान वाणी अपन अतीतक कथनकें उद्धारात्मक कल्पनासँ फेर लिखबाक अनुमति नहि दैत।

ईशान सरिताक नकलक चारि पन्ना पहिचानैत छथि, मुदा कापी अपन दिस खींचि नहि लैत; अनुमति-सीमा पूछैत छथि। पूर्वक गुरु-केन्द्रित ज्ञान-सत्ता कोनो नाटकीय आत्मसमर्पणमे नहि, छोट व्यवहारगत बदलावमे दरकैत अछि। नैराक सत्ताइस नामक मूल पन्ना अलग सुरक्षित रहैत अछि, मिथुनक खोजक फाइल सेहो मिश्रित नहि कएल गेल। भोजनक बाद मैथिली रोटी बेलबाक असफल प्रयास करैत छथि; गोल रोटीक ‘नक्शा’ भूमि-अधिकारक प्रमाण नहि बनैत, सरिता हँसिकऽ कहैत छथि। इएह हास्य अध्यायक घनघोर वर्गीकृत संवादकें जीवित नाटकीयता देइत अछि। मूल तर्क, श्रम-अधिकार आ प्रत्यक्ष अनुभवक भेद भूख, स्वाद आ देहक संग पुनः जुड़ैत अछि।

परिणाम : श्रमक सार्वजनिक पञ्जी, न कि अन्तिम श्रेय-वितरण

अध्यायक अन्तिम स्थितिमे सरिताक नीला कापी सुरक्षित बक्सामे घुरैत अछि; मैथिली अगिला बेर रोटी बनएबाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा सरिता हुनका पूछैत छथि—हमरा खाएब पसंद अछि की नहि?। ई ‘पसन्द’क प्रश्न समस्त अध्यायक सहमति-परीक्षाक साधारण घरेलू रूप अछि। तीन दिनक नकल-देय एखन पूर्ण भुगतान नहि; उदाहरणक स्रोत-श्रेय अंतिम नहि; मैथिलीक हस्तलेखक दावा सेहो अलग प्रक्रियामे चलि रहल अछि। एकरा ‘सरिता सहलेखिका घोषित’ अथवा ‘ईशान सब स्वीकार कएने’ कहब मूल पाठक विरुद्ध होएत।

अध्यायक कथनकाल एक दिनक भोर सँ राति धरि अछि, मुदा पुरान धान-मौसम, बाढ़मे भीजल पन्ना आ पूर्वक सभाक स्मृति कथनमे लौटैत अछि। वास्तविक अतीत पाठककें प्रत्यक्ष दृश्यरूपमे नहि देल जाइत; स्मृति, पन्ना आ स्वतंत्र बयानसँ पुनर्निर्माण होइत अछि। सरिताक केन्द्रित चेतनाक सक्रियता एतय पहिले सँ बेसी अछि; ओ केवल दुःखक पात्र नहि, प्रमाण-श्रेणी बनएनिहारी आ समय देबाक शर्त तय करनिहारी छथि। कलात्मक उपलब्धि घरेलू कामक दृश्यसँ ज्ञान-अधिकारक आलोचना निकालब अछि। सीमा पंजी, श्रेणी आ सावधानीक पुनः पुनरावृत्ति अछि; मुदा ई पुनरावृत्ति सरिताक हँसी, उबलैत पानि आ श्रमक थकानसँ बीच-बीचमे टूटैत अछि।

अध्याय ८४ — गुरुक स्वीकार

मूल सूत्रक अधिकार आ संशोधनक ऐतिहासिक दायित्व

अध्याय ईशानक अँगुरीपर पुस्तकक जिल्दसँ लागल नीला रंगसँ शुरू होइत अछि। स्याही जिल्द बनबैत पसरल अथवा बादमे भीजल हाथसँ लागल—दुनूमे सँ कारण निश्चित नहि। एहि अस्पष्ट चिन्हक समानान्तर तीन गठरी छथि : ईशानक मूल हस्तलिखित विवेचन, दू छपल संस्करण आ विद्यार्थीसभक प्रश्नक उत्तरमे बनल सूचना-पत्र। आरम्भक रंगक प्रश्न पछिला अध्यायसभक प्रमाणशास्त्रीय अनुशासनक आवर्तन अछि; मुदा एहि बेर ईशान स्वयं

अपन नामक इतिहास परखैत छथि। प्रारम्भिक तर्कक प्रतिज्ञा–हेतु–उदाहरण हुनकर हाथक अछि; मैथिलीक किनारी-प्रश्न ‘समान चिन्हसँ एक कारण किएक?’ बादक संशोधनमे भूमिका निभबैत अछि। ओ स्वयं अपन मूल योगदान नहि त्यागैत, मुदा संशोधनक इतिहासकेँ एक नाममे समाप्त सेहो नहि करैत छथि।

हरिमोहन साफ करैत छथि जे ई पाठशालाक समीक्षा अदालतक फैसला नहि। मूल तर्कक लिखावट, मैथिलीक प्रश्न आ छपल संस्करणक अन्तर अलग साक्ष्य छथि। ईशान विद्यार्थीसभ लग पूर्वक वाद याद करैत छथि, मुदा प्रकाशन-पृष्ठपर संशोधनक सम्पूर्ण इतिहास अनुपस्थित रहबाक जिम्मेवारी स्वीकारैत छथि। एहि वचनमे द्रोण-पर्वक विशिष्ट व्यंजना अछि। गुरु होएबाक अर्थ तर्कक मूल सृष्टि कएलाक कारण शिष्य अथवा घरेलू सहकर्मीक संशोधनाधिकार शून्य नहि; तहिना गुरुक दोष मानलासँ हुनकर सभ सूत्र असत्य नहि। दोसर संस्करणमे समान तौलसँ समान स्रोत मानबाक पूर्वक संकेत संशोधित अछि, मुदा संशोधनक ठीक तिथि छपाइत वर्षसँ निर्धारित नहि। एहि अनिश्चितता रचयिता आ आलोचक दुनूकेँ अधीर अन्तिम निर्णयसँ रोकैत अछि।

सरिता पहिल ग्राहकक सिलाइक काम छोड़ि सीमित समय लेल अबैत छथि। ‘सुनबाक समय’ आ ‘अपन पुस्तक बचेबाक लेल हमरा पन्ना लिअब’क बीच प्रश्न उठबैत छथि। ईशान ‘घरक सहयोग’क अस्पष्ट धन्यवादमे प्रतिलिपि, रसोइ आ स्रोत-श्रमक विलय करबाक भूल स्वीकारैत छथि। मुदा सरिता खाली पश्चात्तापक बदला लिखित विवरण चाहैत छथि। हरिमोहन मूल लेखन, संशोधन, प्रतिलिपि, प्रत्यक्ष उदाहरण, सुनेल उदाहरण आ सामग्री-व्यवस्थाक अलग खानासहित वर्गीकरण करैत छथि। ई श्रेणी शास्त्रीय प्रमाणक यांत्रिक अनुकरण नहि, सार्वजनिक श्रेय आ मजदूरीक अलग वस्तुगत नियमन अछि।

मंगरीक मजदूरी : गुरुक तर्कक सामाजिक परीक्षा

एकादश पाठांशमे मंगरी गोराइत बंद कारखानाक सात श्रमिकक देय-सूची लऽ पहुँचैत छथि। नव फाटकक कारण पुरान कामक बाट बन्द अछि; प्रेमा, भोलू, सरोजसभक कार्यावधि अलग, सातम सदस्य बीमारीक कारण उपस्थित नहि। मंगरी प्रतिनिधि छथि, सभ सदस्यक स्वामिनीक रूपमे नहि। नकल बनएबाक सहमति सभक अलग दर्ज कएल जाइत अछि। ई स्त्रीक सामूहिक नेतृत्वक जीवित रूप अछि : प्रतिनिधित्व श्रमिकक स्वतन्त्र दावा रद्द नहि करैत। श्रमिक-इतिहासक लेखनमे सामूहिकता आ व्यक्ति दुनूक आवश्यकता अछि।

कारखानाक ‘समूह भुगतान’ लिखल रसीदमे प्राप्तकर्ता बैंक खाता रिक्त अछि। पहरेदार मालिक द्वारा पूरा भुगतान भऽ चुकबाक सुनल समाचार कहैत अछि, मुदा प्रमाण नाहिं। हरिमोहन केवल लिखल कागदक अस्तित्व सिद्ध मानैत छथि; वास्तविक भुगतान आ अधिकारित स्रोतक जाँच अलग। ईशान प्रत्यक्ष–श्रवण–उपमानक अन्तर स्पष्ट करैत छथि, फेर मंगरी हुनका रोकैत छथि—अहाँ भेद बुझा सकैत छी, हमर मजदूरीक दाम नहि तय करब। एहि रोकमे दर्शनक सामाजिक औचित्यक सीमा व्यक्त अछि। गुरु प्रमाणक परीक्षण सिखा सकैत छथि; जीविकाक अनुभव आ पारिश्रमिकक निर्णय सम्बन्धित श्रमिकक हक छथि। ईशानक मौन एतय अध्याय १६ जकाँ संस्थागत दबावक मौन नहि, ज्ञानक सीमा स्वीकारबाक अभ्यास अछि।

मंगरी आवेदन तीन हिस्सामे बाँटैत छथि : कारखाना बन्दी धरि बकाया, बन्दीक बाद सफाइ–ढुलाई, आ स्वयं खरीदल सुरक्षा-सामग्रीक खर्च। कार्यालय दू आवेदन लेल प्राप्ति-अङ्क दैत अछि, तेसर लेल अलग क्रम माँगैत

अछि; बीमार सदस्यक दाबी ओकर अनुमति बिना सम्मिलित नहि। दस्तानाक खरीद-पर्ची वस्तु किनलाक प्रमाण, मालिकक आदेशक प्रमाण नहि। संघर्ष समाप्त नहि; मजदूरी नहि भेटल, नव फाटक प्रवेश नहि खोललक, कारखाना नहि चलल। मुदा देय सार्वजनिक उत्तरदायित्वक पञ्जीमे प्रवेश करैत अछि। एहि अंशक वास्तविक घटनात्मक घनत्व ‘प्राप्ति-क्रमाङ्क’क एक परिवर्तन मात्र नहि; सात श्रमिकक अलग समय, अनुपस्थित सदस्यक सहमति आ सुरक्षा-खर्चक नव वर्गीकरण कथानकक सामाजिक अवस्था बदलैत अछि।

सार्वजनिक वक्तव्य : गलती स्वीकारबाक सीमित उपलब्धि

मैथिली अपन योगदान-सूचीक अपूर्णता देखैत छथि; ईशान तत्काल लिखैत छथि जे संशोधित उदाहरणक प्रश्न मैथिली उठौने छलीह, मूल तर्क हुनकर, पन्नाक मिलान जारी। हरिमोहन एहि सार्वजनिक उल्लेखकेँ अन्तिम श्रेय-निर्णय नहि कहैत छथि। ईशान अनाम घरेलू श्रमकेँ ‘श्रेयहरण’क समस्या मानैत छथि, मुदा सरिताकेँ अनिच्छित सहलेखिका बनाय प्रशंसात्मक ‘साज’ नहि बनएबाक कहैत छथि। सरिता कमाएल दाम, खोएल समय आ प्रत्यक्ष उदाहरणक तीन प्रश्न अलग रखैत छथि। एहि परिवर्तित संवादक मर्म अछि—दोष मानब जरूरी, मुदा प्रतिकारक स्वरूप प्रभावित व्यक्तिक सहमति बिना निर्धारित नहि होएत।

उदय गुरुक सार्वजनिक गलतीसँ विद्यार्थीक विश्वास घटबाक आशंका उठबैत अछि। ईशान स्पष्ट कहैत छथि जे गुरुक आचरणक दोषसँ अनुमानक सूत्र स्वतः गलत नहि, आ सूत्रक ज्ञानसँ गुरुक आचरण स्वतः निर्दोष नहि। एतय ज्ञानक प्रामाण्य आ जाननिहारक नैतिकता पृथक परीक्षण चाहैत अछि। ई आलोचनात्मक भेद उपन्यासक दार्शनिक जीवन्ततात प्रमुख उदाहरण अछि। दार्शनिक अधिकारक मान्यता नष्ट करब नहि, ओकरा अप्रश्ननीय निजी सत्ता बनबासँ रोकब मूल उद्देश्य अछि। एहि क्षणमे भारतीय न्याय-विवेचनक नीतिगत सार्थकता भेटैत अछि, मुदा उपन्यासक ई वाक्यकेँ तत्त्वचिन्तामणि अथवा न्यायकुसुमाञ्जलिक शाब्दिक सूत्र कहल नहि जा सकैत।

ईशान सूचना-पटपर प्रारम्भिक पत्र लगा दैत छथि; अपना नाम हटौलनि नहि, मैथिलीक योगदानक उल्लेख करैत छथि, सरिताक श्रम अलग लिखैत छथि, आपत्ति देबाक समय आ स्रोत-जाँचक अगिला अवसर घोषित करैत छथि। छात्र पृष्ठ-अन्तर देखबाक अनुमति माँगैत अछि। मुदा छपल पुस्तकक नव संस्करण एखन प्रकाशित नहि; अंतिम सहलेखन-निर्णय नहि; देयक भुगतान नहि। ‘शब्दक स्वीकृति, देयक भुगतान आ लेखकीय न्याय अलग चरण’—ई पात्रक कथन अध्यायक निष्पक्ष फलित-अवस्था परिभाषित करैत अछि। श्रीगुरुक नैतिक विजयक उत्सव कहि एकरा समाप्त करब अनुचित होएत। सार्वजनिक आत्मसमीक्षा प्रारम्भिक अछि; संस्थागत सुधार प्रक्रिया-आधारित अछि।

भोजनक बादक पाठ : दृश्यक अवधि आ भावात्मक समाधानक सीमा

साँझक कक्षामे भिजल–सुखल अनाजक समान तौलवला उदाहरण फेर अबैत अछि, मुदा ईशान ओकर प्रत्यक्ष लोकस्रोत एखन जाँचमे रहबाक कारण शिक्षणमे काल्पनिक परीक्षण-वाक्य घोषित करैत छथि। ई कथन लेखकत्वक पृष्ठ-समीक्षाक भीतर सीमित नहि; अध्यापन-पद्धति बदलैत अछि। विद्यार्थी फरीद पूछैत अछि जे मूल अनुभवक धारक उपस्थित नहि तखन उदाहरण प्रयोग कएल जा सकैत अछि की? उत्तरमे काल्पनिक परीक्षण आ प्रत्यक्ष देखल घटनाक स्पष्ट भेद भेटैत अछि। ज्ञानक नैतिक स्रोत-निर्देश व्यावहारिक शिक्षणक नियम बनएबाक

प्रयास अछि। तकर उत्तरक सामाजिक परीक्षा विद्यार्थीसभ अगिला समयमे कतेक करैत छथि, से कथा एखन नहि देखबैत; तें बदलावक परिणाम प्रारम्भिक मानब उचित।

घरक रसोइमे मैथिली रोटी बेलैत छथि, ईशान सरिताक निर्देशपर पानि अनैत छथि। एहि छोट काजसभसँ पुरान देय चुकता नहि; मुदा देहगत कामक अनुभवबिना श्रमक नीतिपर वक्तव्य देबाक सीमा दृश्य होइत अछि। सरिता ‘अमूल्य सहयोग’क बदला तीन दिनक प्रतिलिपि-श्रम, भोजन-व्यवस्था आ उदाहरण-स्रोतक विशिष्ट उल्लेख लिखबैत छथि। ‘अमूल्य’ शब्द मूल्यक सम्मान जकाँ सुनाइत अछि, मुदा व्यवहारमे देयक दाम मेटा सकैत अछि। श्रमक मूल्यक ई वक्रोक्ति प्रशंसाक शब्दावलीक भीतर छिपल हिंसाकेँ उजागर करैत अछि। ईशान वाक्य बदलैत छथि; असल रकम आ स्रोतक अन्तिम प्रमाण शेष।

अन्तिम दृश्य ईशान मूल बही थैलीमे रखैत छथि; पहिल पन्नाक तर्क हुनकर, दोसर पन्नाक संशोधनक ऐतिहासिक दायित्व साझा परीक्षणक अधीन, अनाम धन्यवादक पुनर्वाचन आवश्यक। दीपक बुझैत अछि, किन्तु पत्रक दोसर प्रति भोरक प्रकाशमे देखाइत राखल जाइत अछि। वस्तुगत आवर्तन सुन्दर अछि : अध्याय ३३ क दीपक–कागदक अन्तर्पाठ आब अध्याय ८४ मे गुरुक स्वीकृतिक खुलल प्रकाश बनैत अछि। तथापि एतय उपदेशात्मक स्पष्टताक खतरा रहैत अछि—प्रायः हर संवाद ठीक मापल निष्कर्ष घोषित करैत अछि। मंगरीक गमछाक भीजल माटि, सरिताक सुईक डिब्बी आ छात्रक असुविधाजनक प्रश्न एहिसँ पात्रसभकेँ जीवित बनबैत अछि। द्रोण-पर्वक समापन विजयक शंखध्वनि नहि, सार्वजनिक प्रश्नक टिकाऊ समय अछि।

द्रोण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ७३–८४ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

संरचना : यात्रा-पहिचान सँ गुरु-स्वीकृति धरि

द्रोण-पर्वक बारह अध्याय तीन कथात्मक क्रममे बँटल अछि। अध्याय ७३–७६ मे सीमातीर्थक उतराइ, द्रोणक देय, ‘७’ अंकक भ्रामक समानता आ एकलव्यक शिक्षणक अधिकारसँ स्रोत–स्वामित्वक प्रश्न आरम्भ होइत अछि। अध्याय ७७–८० मे त्रिजटाक श्रवण-संदेश, मन्दोदरीक वितरण-बही, चेहराक गलत डिजिटल समानता आ यूसुफक बुनकर-खाता सार्वजनिक ज्ञानक अपूर्णता खोलैत अछि। अन्तिम ८१–८४ मे गुंजाक बच्चा-श्रम-प्रकरण, मैथिलीक हस्तलिखित संशोधन, सरिताक श्रम-समय आ ईशानक सार्वजनिक स्वीकार एहि प्रश्नकेँ निर्णयक संस्थागत रूप दैत अछि। कथा एतय अपराध सुलझा देने अथवा ‘गुरु पूर्णतः सुधरि गेल’क कथा नहि; अलग-अलग प्रकारक साक्ष्य आ अधिकारक मर्यादाक अनुशासन अछि।

अध्याय ८१–८४ मे क्रमशः २८, २८, २७ आ २७ गैर-रिक्त मूल पाठांश छथि—कुल ११०। पूर्वआख्यानक शब्द-एकक अनुमान क्रमशः २,६५२; २,७३५; २,५६२; २,६१८ अछि; ई गणना विशेष युनिकोड-पद्धतिपर आधारित अछि, सामान्य रिक्तस्थान-संख्याक बराबर नहि। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’क टैग अध्याय ८१ लेल यथास्थिति सत्यापित नहि भेल; एहि अंतिम चारिमे स्वतंत्र प्राचीन महाकाव्यीय दृश्य नहि। एतय महाकाव्य-चेतना

द्रोण/एकलव्यक पूर्वपर्वीय स्मृति आ शिक्षक–शिष्य सम्बन्धक पुनर्विचारमार्फत काम करैत अछि। ई सम्पादकीय तथ्य ‘समान शीर्षक = समान दृश्य’क गलत आलोचनात्मक पद्धति सँ बचबैत अछि।

महाभारत-रामायणक स्वर आ नाटकीय विरोध

द्रोणक गुरु-दक्षिणा, एकलव्यक स्वतन्त्र शिक्षण आ आधुनिक ईशानक सार्वजनिक आत्मालोचना एक व्यंजनात्मक समूह बनबैत अछि। द्रोण-पर्वक संरचनात्मक नाम आधुनिक शिक्षाक अधिकारपर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ईशानकेँ द्रोणक ‘पुनर्जन्म’ मानब गलती होएत। द्रोणक वैयक्तिक अभिमान, एकलव्यक दैहिक क्षति आ ईशानक लेखकीय श्रेय-विवादक भौतिक परिस्थिति अलग छथि। सम्बन्ध नैतिक प्रतिवादक अछि : गुरु प्रति आदर ज्ञानक स्वतंत्र परीक्षण वा शिष्यक भागीदारीक स्थान नहि लेत। सुन्दरकाण्डक नामक संग एहि खण्डक सम्बन्ध पहिने शुरू भेल दूत–साक्ष्य–सीमा पार करबाक कथा-सूत्रमे अछि; अध्याय ७७ क त्रिजटा–सीता संवादक स्वतंत्र लंका-दृश्य प्रत्यक्ष उपलब्ध अछि, जबकि ८१–८४ मे ओ कालधारा अनुपस्थित अछि। अतः रामायणक सात-काण्डीय मानचित्र संरचनात्मक परापाठ अछि, प्रत्येक अध्यायक दृश्य-शास्त्रीय अनिवार्यता नहि।

भारतीय काव्यशास्त्रक स्तरपर करुण रस लता–चमेली–गुंजाक अधूरी घर-वापसी, सरिताक अदृश्य श्रम आ मंगरीक बकाया मजदूरीमे अलग-अलग आकार लैत अछि। हास्यक सीमित झलक रोटी बेलबाक दृश्य, कागदक ‘नक्शा’ आ ढक्कन धेने मैथिलीक अँगुरी जलबाक प्रसंगमे ज्ञानक उपदेशात्मकता तोड़ैत अछि। ध्वनिक स्तरपर पन्नाक खाली खाना केवल अनुपस्थिति नहि, निर्णय-स्थगन आ अधिकारक अटकल समयक संकेत अछि। तथापि ई सबको ‘एके करुण-ध्वनि’ कहब चूक होएत : गुंजाक भय, फरीदक शिक्षा-इच्छा आ ईशानक संकोच भिन्न अनुभूति छथि।

प्रमाणशास्त्रीय योगदान आ ओकर सीमा

पर्वक प्रमुख ज्ञानात्मक उपलब्धि वस्तु–अर्थ–अधिकारक त्रि-भेद अछि। हस्ताक्षरवला पर्ची अस्तित्वमे अछि, मुदा हस्ताक्षरक प्रामाण्य आ उद्देश्य जाँच चाहैत; विद्यालयक सूचना-पट्टपर शब्द छपल अछि, मुदा सोशल आरोपक सत्यता नहि; छपल दर्शनग्रन्थमे ईशानक नाम अछि, मुदा ककर प्रश्नसँ उदाहरण बदलल से नाममात्रसँ ज्ञात नहि; समूह-भुगतानक रसीद अछि, मुदा प्रत्येक श्रमिकक वास्तविक देय-प्राप्ति नहि। आख्यानशास्त्र प्रेरित व्याप्ति, उपाधि, प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमानक भेद एतय कलात्मक रूपसँ सामाजिक सत्ताक आलोचना बनैत अछि। एकर दार्शनिक विधिक मूल शास्त्रमे यथावत् रूपान्तरण कएल गेल अछि, एहन दावा करब उचित नहि; पाठ अपन आधुनिक कथा-प्रश्न अनुसार सिद्धान्तक उपयोग करैत अछि।

पद्धतिक सीमा ई जे अनेक अलग पात्र लगभग सर्वदा प्रमाण-विषयक सूक्ष्मता स्पष्ट भाषामे कहैत छथि। वास्तविक जीवनमे अधिकारी, बच्चा, मजदूर, गुरु आ व्यापारीक वाणी एतेक समरूप नहि। एहि पुनरावृत्तिक प्रभाव दुहरा अछि : एक दिस पाठककेँ निश्चय-भ्रमसँ बचबैत अछि, दोसर दिस सामाजिक स्वरक भिन्नता आ पात्रक मनोवैज्ञानिक असंगतिक ध्वनि सपाट करैत अछि। गहन आलोचनाक लेल ई दोष परीक्षणीय अछि, मात्र ‘शुद्ध तर्कपूर्ण शैली’ कहि प्रशंसित नहि कएल जाए। उपन्यास जखन लताक थारी, गुंजाक स्कूलक कापी, दुर्गाक

सौंठ, मैथिलीक गरम ढक्कन आ मंगरीक फाटल दस्ताना देखबैत अछि, तखन भाषा पुनः मानवीय अनुभवमे डूबैत अछि।

समानान्तर इतिहास : श्रमक नाम आ समयक कीमत

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ एहि पर्वमे राजसत्ता अथवा केवल महापुरुषक विचार नहि, जीवनक कम चर्चित साधन कथाक केन्द्र बनैत छथि—नाविक, बच्चा, दर्जिन, बुनकर, कार्यालयक प्रतिलिपिकार, धुलाईक मजदूर, राहत-निर्माता, घुमन्तु शिक्षक आ घरेलू रान्हनिहार। मुदा मात्र पेशाक सूची सामाजिक समावेशनक प्रमाण नहि। निर्णायक प्रश्न अछि : जुगलक तत्काल अग्रिमक अधिकार केना अलग दर्ज भेल? गुंजा अपन निजी बयानपर निर्णय केना रखैत अछि? मैथिली अपन पृष्ठवार संशोधनकेँ कोन मर्यादामे सार्वजनिक करैत छथि? सरिता अनाम ‘अमूल्य’क बदला काजक वास्तविक समय माँगैत छथि की? मंगरी सात सदस्यक प्रतिनिधित्व बिना सभक नामक विलय केना करैत छथि? एहि प्रश्नसभक रूपमे उपन्यासक समानान्तर इतिहास कार्यरत अछि।

पर्वक दीर्घ सामाजिक यथार्थ एहि बातमे अछि जे कार्यालयक प्राप्ति-अङ्क समाधान नहि; सुरक्षित देखरेख घर-वापसी नहि; निजी स्वीकार सार्वजनिक श्रेय-वितरण नहि; शुरुआती अग्रिमक प्रस्ताव भुगतान नहि। कथा संस्थागत दीर्घ समयकेँ असुविधाजनक रूपमे सहेजैत अछि। तथापि बारहम अध्याय धरि लगातार अनेको अपूर्ण सुनवाईक क्रम पाठकीय गतिकेँ थका सकैत अछि। नाटकीय तीव्रताक आलोचना करैत श्रमिकक दीर्घ प्रतीक्षाकेँ ‘अनावश्यक विस्तार’ कहि खारिज करब सेहो गलत; दुनू स्तर अलग रखबाक आवश्यकता अछि।

निष्कर्ष : नैतिक समापन नहि, उत्तरदायित्वक आरम्भ

अध्याय ८४ मे ईशानक सूचना-पटपर लगाओल प्रारम्भिक पत्र द्रोण-पर्वक एक मापल समापन प्रदान करैत अछि। ओ मूल लेखनक दावासँ पाछाँ नहि हटैत, मैथिलीक विशिष्ट प्रश्नक नाम स्वीकारैत, सरिताक नकल–रसोइ–स्रोतक भेद सार्वजनिक करैत, आ बाकी निर्णय जाँच लेल छोड़ैत छथि। एहि सीमित स्वीकृतिक संग गुंजाक घर-वापसी, मिथुनक खोज, जुगलक अग्रिम, मंगरीक मजदूरी आ मैथिलीक अन्तिम श्रेय-निर्णय सभ अनिर्णीत छथि। महाकाव्यीय विस्तारक वास्तविक कसौटी एतय विजयक आकार नहि, उत्तरदायित्वक अधूरी सूची अछि। अगिला कर्ण-पर्वक जन्म–पहिचान आ स्वत्वक प्रश्न एहि द्रोण-पर्वक अपूर्ण साक्ष्य-संसारपर उभरेत—ई संभावित पाठ-मार्ग अछि; अगिला अध्यायक वास्तविक पाठ देखे बिना ओकर विशिष्ट परिणाम एतय निश्चित नहि कएल गेल अछि।

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड

अध्याय ८५ — राधाक श्रम

राधाक ओसार : श्रमक स्थल, नामक पूर्वगाथा

अध्याय हस्तिनापुरक बाहरी बस्तीमे राधाक हाथसँ शुरू होइत अछि। ओ रथक पहियापर पट्टी लगएबाक लेल भीजल कपड़ा काटैत, सुखबैत, फेर नापैत छथि। ई दृश्य कर्णक वीरत्व वा जन्म-गोपनक प्रसिद्ध सन्दर्भसँ प्रारम्भ नहि होइत। कथावाचक महाकाव्यीय पुरुषचरित्रक उद्गममे स्त्रीक माप, सूत, समय आ रोजीकेँ स्थापित करैत अछि। अधिरथक रथ काल्हि खराब रास्तापर हिचकोला खा रहल छल; पट्टीक कसावट न भेल तँ घोड़ाक श्रम बढ़त आ भाड़ा हाथसँ जाएत। एतय रथ प्रतीक जरूर अछि, मुदा ओकर पहिल अर्थ परिवहनक भौतिक औजार अछि। ‘जन्मसँ कर्ण के छथि’ पूछबाक पूर्व ‘ककर श्रमसँ कर्णक घर चलैत अछि’ कथाक वास्तविक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

कर्णक धनुष-डोरीसँ चिराएल हाथक उपचार राधा करैत छथि। हुनकर प्रश्न तकनीकक अछि, जाति-आधारित निषेधक नहि। कर्ण बजारक अपमानजनक टिप्पणी माएक सोझाँ नहि कहल चाहैत छथि, मुदा राधा मौनक संवेदनात्मक अर्थ बुझैत छथि। एतय दृष्टिकेन्द्रण बाह्य क्रिया सँ कर्णक दबाओल अनुभूति दिस सरकैत अछि; कथावाचक कर्णक सम्पूर्ण भविष्य बतबैत नहि, केवल तत्काल आहत स्वाभिमान देखबैत अछि। अधिरथ गरम धातुक घेरा उठबासँ रोकैत छथि : जीविकाक रथक सँ अधिक व्यापक कर्णक हाथक सम्भावना छैक। एहि तरह पालनकर्ता दूनूक क्रिया बालकक देहक सुरक्षा आ भावी स्वायत्ततासँ सम्बद्ध अछि। आधुनिक विमर्शमे पालनक मूल्य ‘जन्मक विकल्प’ नहि, निजमे एक स्वतंत्र सम्बन्ध होइत अछि; उपन्यास एहि सूक्ष्म भेदकेँ घरेलू क्रियामे मूर्त करैत अछि।

घरक बही : निःशुल्क स्त्री-श्रमक अर्थशास्त्र

अधिरथक आधा मजदूरी भेटल अछि। राधा रथक सामग्री लेल अपन धानक हिस्सा बेचने छथि; ओ जौ, तेल आ डोरीक सूतक लागत अलग दर्ज करब चाहैत छथि। ई क्षण केवल आत्मसम्मानक संवाद नहि, लेखाक संस्थापन अछि। घरक सामान्य व्यय अथवा पत्नीकेँ देल ‘मदद’ बनि आर्थिक योगदान अदृश्य भऽ सकैत छल। राधा खर्चक वस्तु, स्रोत आ लाभार्थी अलग करैत छथि। धैरि नामक वृद्ध सिलाइ-कर्मिणीक अनुभव पहिल पट्टीक माप बदलैत अछि; राधा संशोधनकेँ पहिल मापक झूठ नहि, नव गतिशील जानकारीक परिणाम कहैत छथि। धैरिक दाम तत्काल देल गेल—मैत्रीक सम्बन्ध श्रमिकक पारिश्रमिक मेटएबाक अधिकार नहि। धैरि अपन पसिनसँ नाप लेबाक अधिकार अन्तिम दृश्य धरि बनौने रखैत छथि। एहि आन्तरिक आवर्तनसँ शिल्पक निर्णयाधिकार प्रारम्भ आ समापनकेँ बाँधैत अछि।

सन्देशवाहक अधिरथकेँ राजकीय सवारी लेल बोलाबैत अछि, मुदा प्रतीक्षा, भोजन आ सामग्रीक स्पष्ट भुगतान नहि बतबैत। राधा ठेका निश्चित भेल घोषित नहि करैत छथि; ओ ओहि अदृश्य लागतकेँ प्रश्नक रूपमे लिखवा दैत छथि। महाकाव्यीय राजसत्ता परिश्रम पाबैत अछि, मुदा श्रमिकक समय स्वयंसिद्ध रूपेँ अधिग्रहण करबाक अधिकार नहि। एहि दृश्यकेँ विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ पढ़ला पर इतिहासक ‘वीर’ रथक पाछाँ रथ-

निर्माण, पशु-आहार, सूत, स्त्रीक बीज-अनाज आ अस्थायी मजदूरी देखाइत अछि। तथापि आलोचनामे एक सावधानी अनिवार्य : उपन्यास राधाक व्यय-लेखा लिखबैत अछि, प्राचीन हस्तिनापुरक अर्थव्यवस्थाक प्रामाणिक ऐतिहासिक खाता उपलब्ध नहि करबैत। ई रचनात्मक पुनर्संयोजन अछि, अभिलेखागारसँ सत्यापित आर्थिक इतिहास नहि।

जन्मक प्रश्न : दू सत्यक सह-अस्तित्व

कर्ण पूछैत छथि जे अपन जन्मक कथा ओ कतेक दूर धरि जनैत छथि। राधाक उत्तर अपन प्रथम पालन-दिनक अनुभवपर टिकल अछि; ताहिसँ पहिनुक अज्ञात जीवन ओ स्वयं भरि नहि दैत छथि। ई नैतिक रूपेँ प्रखर दृश्य अछि। जन्मक पूर्वेतिहासक अपूर्णता स्वीकारलासँ राधाक पालनक सत्य कम नहि होइत; तहिना पालनक सघनता अज्ञात जैविक तथ्यक स्थानापन्न बनि नहि सकैत। आख्यानगत भाषा मे कहि सकैत छी जे पालनक प्रत्यक्ष अनुभव जन्म-सूचनाक अलग विषयक प्रमाण अछि। एक साध्यक पक्षे प्रयुक्त हेतुकेँ दोसर साध्यक पूर्ण सिद्धि मानब अनुपयुक्त हएत। उपन्यास एहि सूक्ष्म विवेचनकेँ शास्त्रीय पदक लम्बा प्रदर्शनक बदला एक माएक सम्यक उत्तरमे परिणत करैत अछि।

अपूर्ण लोकगीतक प्रसंग एहि प्रमाण-व्यवस्थाक मानवीय प्रतिपक्ष अछि। राधा गीतक शेष पाँति भूलि गेलीह, धैरि दोसर रूप सुनबैत छथि; दुनू ‘एके प्रामाणिक पाठ’क विवाद करब उचित नहि बुझैत छथि। किन्तु एहि खुलापनकेँ जन्मक रिकॉर्डक इच्छित फेरबदल लेल छूट मानब गलत होएत। लोकगीतक रूपान्तर आ व्यक्तिक अधिकारसम्बन्धी कागद अलग विधाक वस्तु छथि। आख्यान मे लयक ई नरमी उपयोगी अछि : निरन्तर प्रश्नोत्तरक बीच साझा हँसी, भूख आ चूल्हा पात्रसभकेँ केवल न्याय-दर्शनक प्रवक्ता बनबाक सँ रोकैत अछि।

विदेहपुर २०३९ : एकीकृत देयक विरुद्ध तीन पृथक संघर्ष

नवम पाठांश पर कथावाचक प्राचीन ओसारसँ विदेहपुर, २०३९ क अनाज-गोदामपर पहुँचैत अछि। ई चिह्नित काल-स्थान परिवर्तन द्विकालीन आख्यानक ठोस प्रमाण अछि, केवल महाकाव्यीय नामक प्रतिध्वनि नहि। किरण राउतक पट्टामे मालिकक नाम, मुदा बीहनक उधारी आ ढुलाईक खर्च हुनकर हिस्सामे जोड़ल गेल अछि। बेटी रेखा तीन स्तम्भ बनबैत अछि, मुदा अपना हाथसँ लिखल हिसाबकेँ स्वतः अधिकृत सही कहब अस्वीकारैत अछि। पिता बच्चीकेँ अनजान ऋणक साक्षी बनेबासँ रोकैत छथि। एहि प्रसंगमे गणनाक ज्ञान आ ऋण-स्वीकृतिक अधिकार अलग छैक। तौल-पर्ची माल पहुँचबाक वजन बतबैत अछि; बटाइक हिस्सा वा बीहन-ऋणक वैधता नहि। विवादित कटौती अलग लिफाफामे गेल; निर्विवाद बोरा उठेबाक बाट खुलल। ऋणमाफी नहि भेल, मुदा धानक नाश टारबाक तत्काल उपलब्धि भेल।

रतन भुइयाँक ठेका-पर्चीमे मजदूरी आ ठेकेदारक औजार एक संग छपल छैक; कारिन्दा नामक पुनरावृत्तिकेँ ऋणक एकता कहैत अछि। रतन अपन अलग खरीदैल हथौड़ी आ ठेकेदारक बेलचाक भेद रखैत छथि। मूल स्वीकृति-पत्र माँगल गेल, कर्ज माफ नहि। लक्ष्मी कठबनियाक दुकानमे सामानक बिक्री-रसीदक नीचाँ ‘समिति ऋणक संयुक्त जिम्मेदार’ जोड़ल गेल अछि। ओ सदस्यता, आपूर्ति आ देनदारीक तीन श्रेणी अलग करैत छथि। तीनू पात्र अनाम सामूहिक ‘शोषित’क एक प्रतिनिधि नहि; धन, औजार, पारिवारिक भूमि आ बिक्रीक स्वामित्वक

अलग प्रश्न लऽ कथा-स्थानमे अबैत छथि। कबीर अपन सहायता-कक्षमे मंगरीक व्यक्तिगत श्रम-आवेदन बिना अनुमति एहि विवादमे नहि खोलैत, आ तीनू लेल अलग कार्यालयी मार्ग सुझबैत छथि। एहि दृश्यसँ सामाजिक न्याय शब्द नहि, प्रमाण आ प्रतिनिधित्वक व्यवहार बनैत अछि।

कबीरक स्मृति : पालनक नैतिक सततता

साँझ कबीर सरितासँ पूछैत छथि जे जँ पालनक इतिहास कम कागदमे भेटैत अछि तँ ओ जीवन कम वास्तविक भऽ जाइत अछि की। सरिता स्मृति बनाम कागदक सरल द्वन्द्व बनाबसँ इन्कार करैत छथि। स्मृति भौतिक अनुभव सँ उपजैत अछि—भीजल बस्ता, सुखाओल कापी, धानक गन्ध—मुदा ओकर तिथि आ कर्ताक प्रश्न फेर पूछल जा सकैत अछि। सरिता कबीरकेँ स्मृति सुधरलासँ स्नेह कम नहि होयबाक आश्वासन दैत छथि। सुभद्राक सम्भावित जन्मक सूचना आ पालन करनिहारीक निजताकेँ सार्वजनिक सभामे उद्घाटित करबाक अधिकार कबीरकेँ अपन इच्छासँ नहि भेटत। एतय कर्णक राधासँ प्रश्न आ कबीरक सरितासँ प्रश्न समानता आ अन्तर दुनू रखैत अछि : दू पुत्र जन्मक अज्ञात सन्दर्भ चाहैत छथि, मुदा हुनकर परिवारिक स्थिति, भाषा आ अभिलेखक प्रकृति भिन्न छथि। एक पात्र दोसरक पुनर्जन्म नहि।

तेइसम सँ पचीसम पाठांशमे कथन फेर हस्तिनापुर लौटैत अछि : पहियाक पट्टी जाँचल, घरक लेखामे राधाक जौक दाम जोडल गेल, कर्ण खाएलाक बाद अभ्यासक तैयारी करैत छथि। छब्बीसम–सत्ताइसममे आधुनिक कागदक तीन अलग आगाँक अवस्था आ कबीरक खाली नाम-स्थान देखाओल गेल अछि। एहि क्रमक दृश्य-सन्धि एक कालधारा दोसराकेँ प्रमाणित नहि करैत; ओ पाठकसँ तुलनात्मक निर्णय माँगैत अछि। अन्तमे कबीर खाली स्थान स्वयं नहि भरैत छथि। ई स्थगन कर्ण-पर्वक आरम्भक कलात्मक उत्तर अछि : अज्ञात जन्मक समाधानक प्रतीक्षा सँ बेसी महत्त्वपूर्ण अन्यथा सिद्ध पालनक जीवनक सम्मान अछि।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : शक्ति आ कथनगत सीमा

एहि अध्यायक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि श्रमकेँ भावुक रूपक नहि, मापन-योग्य काज बनाओल अछि। धैरिक सिलाइ, राधाक धान, किरणक तौल, रतनक औजार, लक्ष्मीक आपूर्ति आ कबीरक घरेलू स्मृति अलग-अलग सामाजिक सम्बन्धक अर्थ बनबैत अछि। दृष्टिकेन्द्रण राधा सँ कर्ण, किरण सँ रेखा, रतन सँ लक्ष्मी आ कबीर सँ सरिता दिस बदलैत अछि, मुदा कथावाचक ककरो निजी अज्ञात तथ्यक सर्वज्ञ घोषणा नहि करैत। कथा-विन्यासक सीमा ई अछि जे अनेक पात्र ‘दू कागद एक नहि’, ‘बिना मूल निर्णय नहि’ जेकाँ स्पष्ट वाक्य दोहरबैत छथि। कतेको विवादक समाधान तुरन्त पृथक लिफाफा वा नव आवेदनक रूपमे एबाक कारण जीवनक अव्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित सुनाइत अछि। तथापि मूल घटना-अनन्तर एखन बकाया शेष अछि; एहि असम्पन्न परिणामसँ सरल नैतिक विजयक दोष घटैत अछि। कुल मिला कऽ राधाक ओसार आ कबीरक खाली पन्नाक सममिति कर्ण-पर्वक प्रश्नकेँ सशक्त आरम्भ दैत अछि।

अध्याय ८६ — मूल पन्ना

पीतरक डिब्बा : देखबाक अधिकार, रखबाक अधिकार

अध्याय सरिताक पीतरक डिब्बाक पुरान सूत, सुखाएल फूल आ कागदसँ आरम्भ होइत अछि। वस्तुक नाजुक अवस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि : पन्नाक मूलत्त्व केवल नाम-सूची नहि, ओकर मोड़, लिखावट, संशोधन आ लेखकक अभिरक्षाक इतिहाससँ बनैत अछि। नैरा फोन बन्द कऽ राखैत छथि, सरिता पहिल दू तह खोलैत छथि, अन्तिम मोड़ ढाँपल रहैत अछि। मूल निरीक्षणक सहमति मूलक हस्तान्तरण नहि; निरीक्षण प्रकाशन नहि; आ माएक मौन सूचनाक अभाव नहि, इच्छित सीमा अछि। एहि अर्थमे आरम्भिक निषेध स्वयं महत्त्वपूर्ण घटना अछि—नैराकेँ किछु वास्तविक ज्ञान भेटत, मुदा सर्वाधिकार नहि।

दू खुलल तहक छब्बीस नाम पुरान प्रतिसँ संख्यामे मिलैत अछि। तेसर पाँतिक एक अक्षर प्रतिमे अधिक निश्चित बनि गेल; नैरा प्रश्नचिह्न जोड़ैत छथि, कल्पित पूरा नाम नहि। चारि दोसर स्याहीवला नामक विषयमे सरिता एके कारणक अनुमान अस्वीकारैत छथि। एक नाम सुधार-अर्जीसँ, दोसर ककरो परिवार-नामक गलत पन्नामे गेलाक प्रसंगसँ जुड़ल; बाँकी दू अलग परिस्थिति रहल। भिन्न स्याही देखल जा सकैत अछि, ओकर तिथि वा कारण स्वयंसिद्ध नहि। नैराक पुरान अनुमानक काटल पाँति आत्मालोचनात्मक पात्र-विकासक प्रत्यक्ष बिन्दु अछि। अभिलेखीय अनुसन्धानमे उपलब्ध तथ्यक संशोधन जेना सत्याग्रहक हिस्सा होइत अछि, तहिना कथामे ओकरा अपराध-रहस्यक सस्ता नाटकीय खुलासाक बदला अपन अभिप्राय जाँचबाक अवसर बनाओल गेल अछि।

पुरान प्रवेश-रसीद पर समय आ क्रमाङ्क अछि, सुनवाईक फैसला नहि। रसीदक क्रम आ नामक सूची मिललासँ निवेदन स्वीकार भेल सिद्ध नहि होइत। सरिता कहैत छथि जे ओ नामसभ अपराधी पकड़बाक लेल नहि, बीचमे अटकि गेल लोकक कामक लेखा लेल लिखने रहथि। ई उद्देश्य सूचीकेँ आधिकारिक ‘संदिग्ध व्यक्तिक रजिस्टर’ बनाओलासँ रोकैत अछि। तहक भीतरक सत्ताइसम प्रविष्टि अन्त धरि नहि खुलैत अछि; उपन्यासक शीर्षकीय संख्या पाठककेँ अधीर करैत अछि, मुदा कथावस्तु ओकर अधीरताकेँ कागदक स्वामिनीक अधिकारसँ मापैत अछि।

मूल-प्रति-कार्यालय : तीन अलग उत्पत्ति-शृंखला

सरिताक हातसँ लिखल मूल घरमे अछि; नैराक नकल ओकर एक आंशिक प्रतिरूप; कार्यालयक सीलबला चलैत प्रति अपन अलग पंजी-प्रक्रियाक उत्पादन। सरिता खुले छब्बीस नाम, तहक दशा, निरीक्षण-तिथि आ ढाँपल स्थानक नकलमे उल्लेखक अनुमति दैत छथि, मूल डिब्बासँ बाहर नहि। एहि घटना केँ ‘मूल प्राप्त भेल आ पूरा खुलि गेल’ लिखब पाठविरुद्ध हएत। नैराक सीख तीन भागमे अछि : एक अक्षरक प्रतिलिपि-त्रुटि, चारि स्याहीवला नामक कारणपर गलत सामान्यीकरण, आ मूल देखबाक सीमित सहमति। वस्तुक भौतिक अस्तित्व, लेखकक कथन, नकलक अशुद्धि आ कार्यालयक प्रविष्टि अलग प्रमाणस्रोत छथि। आख्यानगत पक्ष–हेतु–साध्यक भेदक आलोचनात्मक उपयोग एतय समुचित अछि : ‘ई अक्षर अलग’ देखला पर ‘ई व्यक्ति अपराधी’ साध्य नहि निकलैत; समान स्याही वा मुहरक सर्वव्यापी सम्बन्धक पूर्वानुमान असिद्ध अछि।

उपन्यासक एक विशिष्ट उपलब्धि अछि जे नकलक निरीक्षणमे एक सहयोगी दोसराक अधिकार बान्हि नहि दैत। नैरा लेखकीय प्रतिक अपूर्णता लिखैत छथि, सरिता अपन किएल पुरान संशोधनक तिथि अज्ञात होएब स्वीकारैत छथि। ई आत्मस्वीकृति 'अभिलेखक मूल' कें सर्वथा त्रुटिरहित वस्तु मानबाक प्रवृत्ति तोड़ैत अछि। मूलमे लेखकक हाथक संशोधन अछि, मुदा ओकर समयक प्रश्न खुलल अछि। आलोचनामे स्रोत-प्रामाणिकता आ कथन-यथार्थता एक वस्तु नहि मानल चाही : 'कोन व्यक्ति लिखलक' उत्तर भेटला पर सेहो 'केखन आ किएक लिखलक' जाँच बाकी रहैत अछि।

बरकी पोखरि : स्त्रीक जलकर आ आवागमन

पाँचम सँ तेरहम पाठांश धरि रमणी बिन्द, तारा मल्लिक, उर्मिला, अदिति आ रेणु गोंढ़ीक प्रसंग विकसित होइत अछि। रमणी अपन मायकेक 'गाँगी' लिखल पत्र लऽ अबैत छथि, मुदा स्वयं कहैत छथि जे ई मातृपरिवारक जीवनक साक्ष्य अछि, नदी-सीमा प्रमाणित करबाक नक्शा नहि। रेणुक 'धौरी' स्थाननामक पुरान पत्रक स्थिति सेहो समान रूपसँ सीमित अछि : ओ नामक स्मृति अछि, नक्शात्मक प्रवाहक प्रमाण नहि। एहि द्वयकेँ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ पढ़ब सार्थक अछि—मूल राजस्व पंजीक बाहर जनजीवनक पत्र, स्त्रीक मौखिक स्मृति आ नाम-प्रयोग इतिहासक प्रश्न खोलैत अछि; मुदा स्थानीय स्मृतिक सम्मान ओकरा अचूक भूगोल बना देब नहि।

तारा पोखरिक तीन ठाम कादोक गहिराइ नापैत छथि; अदिति ताहि ठामक निरीक्षण लिखैत छथि, सम्पूर्ण पोखरिक औसत नहि। ठेकेदारक पट्टा देखाकऽ आगाँ चालीस हाथ बन्द करबाक प्रयास, उर्मिलाक कपड़ा लऽ उतरबाक साँकर बाट, पुरान खूँटाक अस्थिरता आ कादोक फिसलन मिलि भौतिक काल-स्थान बनबैत अछि। ई केवल पर्यावरणीय बिम्ब नहि; घाटक ढाँचाक विशिष्ट दशा पात्रक निर्णय प्रेरित करैत अछि। रमणी पूछैत छथि—माछ पकड़बाक पट्टा लोकक पैदल उतरबाक अधिकार स्वतः कोना रोकत? तारा सीधी निरीक्षण-रेखाकेँ विधिक सीमा बनाबसँ रोकैत छथि। एतय 'नाप' आ 'अधिकार'क गैर-समानता कथाक प्रबल चिन्तन अछि।

रेणु अपन घेरल बाटक अपील रमणीक साझी जलकर-पट्टा मे विलय होएब नहि चाहैत छथि। दुनूक शिकायत एके पोखरिक होइतहुँ व्यक्तिक हित अलग अछि : सार्वजनिक पहुँच बनाम माछ-श्रममे स्त्रीक साझेदारी। उर्मिलाक देहपर भीजल गट्ठरक भार एहि ठाम सामाजिक अर्थ जोड़ैत अछि; जलकरक सीमा केवल नक्शाक रेखा नहि, श्रमिकक आवागमनक व्यावहारिक अवरोध बनैत अछि। तुरन्त नाप-समयक रस्सी हटेबाक निर्णय, कपड़ा-पाटक बाट खुलल रखब आ मूल पट्टा-परिशिष्टक प्रतीक्षा—ई वास्तविक सीमित उपलब्धि अछि। पूरा पट्टा अमान्य घोषित नहि भेल; रमणीक नाम अधिकारपत्रमे एखन जोड़ल नहि गेल।

रमा कर्णक कार्यालय : जाली सहमतिक प्रतिरोध

चौदहम पाठांशमे रमा कर्णक कार्यालयी दृश्य आरम्भ होइत अछि। 'परिवारक सहमति अछि' लिखि पंजी जल्द पूरा करबाक मौखिक आग्रह रमा अस्वीकारैत छथि, कारण वास्तविक हस्ताक्षर एखन नहि भेटल। एहि छोट अस्वीकृतिमे प्रमाणक प्रशासनिक राजनीति ठोस रूप पबैत अछि। रमा कार्यालयक दू स्तम्भ—'अनुज्ञप्ति' आ 'परिवार प्रतिनिधि'—क मूल सन्दर्भ माँगैत छथि। कम्प्युटरक सीलबला प्रति सार्वजनिक अधिकारक अन्तिम

स्वरूप नहि; मूल आदेश, परिशिष्ट आ व्यक्तिक स्वीकृति देखबाक आवश्यकता बनल अछि। पाँच बदलल परिचय एतय पहिल स्पष्ट प्रशासनिक रूपमे अबैत अछि; रमा ओहि अन्तरकेँ पाँच अपराध नहि, पाँच सत्यापन-योग्य भिन्नता कहैत छथि।

रोजी लालबेगीक धर्मक आत्मपरिचयकेँ पेशाक ठेका सँ अनुमानल गेल अछि। ओ स्वयं घोषणाक अधिकार चाहैत छथि; आवेदनक प्राप्ति भेटल, तुरन्त मूल प्रविष्टि बदलल नहि। रीता एक्काक पुरान गवाहीकेँ अन्य व्यक्तिक ऋणक जमानत बनाओल गेल अछि; नामक एक अक्षर अथवा सम्बन्धक मिलान ऋण-स्वीकृतिक हस्ताक्षर नहि। रमा प्रस्तुत नकलकेँ ‘दावेदार द्वारा प्रस्तुत प्रति’ कहैत छथि, सत्यापित अनुबन्ध नहि। यथार्थ सामाजिक हानि—बकाया वेतन रोकबाक भय, अनुचित वसूली—विवरण सहित अछि, मुदा राहतक अन्तिम निर्णय नहि। एहि तथ्यक सीमाबद्धता उपन्यासक महत्त्वपूर्ण शिल्पगत गुण अछि।

माता-पुत्री संवाद आ समयक नैतिकता

नैरा माइक लग केवल खाली तुलना-फार्म लऽ घुरैत छथि। ककरो सुरक्षा लेल नाम बदलल गेल होए, कियो परिवर्तनसँ अनभिज्ञ होए, अथवा कियो जबरदस्ती सहने होए—तीन सम्भावना अलग भेटक भाषा माँगैत अछि। सरिता नव मिलान-पत्रपर स्वयं लिखैत छथि जे निजी मूल निरीक्षण लेल देखाओल गेल, पूर्ण प्रकाशन लेल अनुमति नहि। ई लिखित सीमा कथानकक अन्तिम वस्तुगत घटना अछि। अन्तिम दृश्य मे रमणी बेटीकेँ जालक नाप सिखबैत छथि; नाउँ अधिकारपत्रमे जोड़बाक आवेदन एखन उत्तरक प्रतीक्षामे अछि। सीखब जीवनक रोक नहि, आ कागदक प्रतीक्षा न्याय सिद्धि नहि।

अध्यायक कालविन्यास भोरक मूल-निरीक्षणसँ दुपहरिक जलमापन आ कार्यालयक बातचीत होइत रातिक निजी लिखावटधरि चलैत अछि; कियो स्वतंत्र प्राचीन महाकाव्यीय दृश्य नहि अछि। ‘मूल पन्ना’क कथनशिल्प बहुकेन्द्रित होते हुए सरिता–नैराक सीमित ज्ञानक आधार नहि छोड़ैत। एक सीमा एतय फेरो देखाइत अछि : बहुत घटना कागदक ‘मूल/नकल/आवेदन’ वर्गीकरणमे समेटल जाइत अछि, फलतः स्थल पर कादो, नदीक गन्ध आ भीजल श्रमिकक समय अपेक्षाकृत कम विस्तार पबैत अछि। तथापि दस्तावेजक वस्तु-सिद्धि आ निजता–अधिकारक सचेत मौनक संयोजन एहि अध्यायकेँ विशिष्ट बनबैत अछि।

अध्याय ८७ — पाँच बदलल परिचय

पाँच थैलीक बिम्ब : गोपनीयता आ व्यवसायिक पारिश्रमिक

अध्याय नसीम इदरीसीक सिलाइक दुकानमे पाँच उज्जर थैलीसँ शुरू होइत अछि। अस्तरक रंग भीतरक कागद अलग चिन्हबैत अछि, व्यक्तिक नाम नहि। बाहर एक युवक पाँच परिवर्तित प्रविष्टिक कटिंग देखाकऽ ‘छद्मनामक गिरोह’क आरोपक साक्ष्य माँगैत अछि। नसीम सही तर्क दैत छथि : एके सूचीमे पाँच नामक अन्तर भेटला पर पाँचो लोक एक संग अपराध करैत छथि, ई सिद्ध नहि। कपड़ा सीबनिहारक मापबही, समितिक निजी कागद आ सार्वजनिक हाजिरी तीन भिन्न अभिलेख छथि। एहि क्रममे शिल्पक पुख्ता व्यापारिक शर्त बनैत अछि—गोपनीयता केवल दान नहि, समय, सामग्री, मजदूरी आ सही अभिरक्षासहित एक सेवा अछि।

नैरा सँ नसीम पाँच थैलीक कपड़ा, अस्तर, धागा आ सिलाइक बिल अलग लिखैत छथि; जाँच-समितिक लिखित स्वीकृति चाहैत छथि। खर्चक सार्वजनिक हिसाबमे थैलीक संख्या रहत, ओकर भीतरक नाम नहि। एतय अति-सामान्य वाक्य ‘पारदर्शिता बनाम गोपनीयता’ एक व्यवहारिक विभाजन पबैत अछि। कोषक खर्च जाँच सकैत छी, मुदा ग्राहकक बीमारी, घर-पता, कपड़ाक निजी माप सार्वजनिक नहि। एकर अगिला प्रतिफल विनीता केशरवानीक हस्तक्षेपक बाद भुगतान-पर्चीमे देखाइत अछि। रोजगारक स्वायत्तता आ व्यक्ति-अधिकारक सन्धि ई अध्यायक सामाजिक शिल्प अछि।

पाँच सन्दर्भ : भिन्न कारणक भिन्न प्रमाण

सुगंधा पहिल भेटमे कहैत छथि जे ओ अपन चालू नामसँ काम करैत छथि, पुरान घरक ठेगाना प्रकाशित भेल तँ खतरा रहत। ओ अनुभव कहैत छथि, मुदा भयक बयानकेँ स्वतः जाँच-सिद्ध अपराध कहि नहि लिखब चाहैत। हुनकर उद्देश्य चालू नामपर मजदूरी निरन्तरता आ सीमित अधिकृत सत्यापन अछि। नैरा हुनका उपस्थित भेलामात्रसँ प्रकाशन-सहमति मानैत नहि छथि। नसीम थैलीमे कागद रखैत छथि, सार्वजनिक टिप्पणीमे पुरान नाम नहि। एहि पहिल स्वरमे ‘नाम बदलल’ सुरक्षा आ जीविकाक एक अधिकार-आधारित रणनीति अछि।

जहीरक कथा भिन्न अछि। बिचौलिया हुनकर जानकारीबिनु दोसर नामसँ हाजिरी चढ़ौलक—एहन हुनकर गवाही अछि। दू ढुलाई-पर्ची आ सहकर्मीक तीन नाम श्रमक देयक जाँच लेल उपलब्ध; बिचौलियाक मूल बही एखन देखल नहि गेल। अतः जबरन परिवर्तनक दावाक परीक्षण आवश्यक अछि। जहीर निजी सहकर्मीक ठेगाना प्रकाशित करबासँ रोकैत छथि, मुदा बकाया छोड़ब तैयार नहि। सुगंधाक स्वनिर्णीत नाम-परिवर्तन आ जहीरक अनधिकृत हाजिरी-परिवर्तन कें एक समाधान देनाइ विरोधाभासी होएत। कथा एहि विभाजनकेँ व्यक्तिक संवादक भीतर स्थापित करैत अछि।

देवकीक मुद्दा जन्मक अभिभावक-निबन्धन आ सम्पर्क-पता अलग करबाक अछि। ओ माएक नाम सम्पर्क-व्यक्तिक रूपमे लिखब चाहैत छथि; पितृवंशक इतिहास झूठा मिटाब नहि। कार्यालयी प्रश्नमे ‘पिता बदलल’ लिखबाक सुधार कएल गेल, आ हुनकर नवा बयानपर स्वयं हस्ताक्षर भेल। ई लघु लेखकीय घटना पितृसत्तात्मक अभिलेखक आलोचना बनैत अछि : परिवारक पुरुषक नाम सदिखन पत्र पहुँचबाक सुरक्षित पता नहि। एतय लेखकीय रूपसँ सटीक बात ई जे सामाजिक सम्बन्ध बदलल नहि, कार्यालयक उपलब्ध संचार-अधिकारक दावा अलग भेल।

मंगला कार्यशालामे भेटैत छथि। राहत-शिविरमे सुरक्षाक कारण दोसर नाम लिखल गेल, मुदा दू नामक कागद दुइ बेर राहत पाओलक साक्ष्य नहि। एक पर्ची उपस्थितिक, दोसर वास्तविक वितरणक; भुगतान एक बेर भेटल—ई मंगला प्रस्तुत दस्तावेजक आधारपर कहैत छथि, अन्तिम सरकारी लेखामिलान शेष अछि। ओ मूल कागद अपन लोखंडी सन्दूकमे सुरक्षित रखैत छथि; सार्वजनिक सफाइ चाहैत छथि, निजी कथा सँ बाजार भरब नहि। एतय राहतक कालिक परत महत्त्वपूर्ण अछि : पुरान दुर्योगक तिथि आ वर्तमान सार्वजनिक आरोपक तिथि भिन्न अछि। नामक संरक्षण जे पहिने सहायता करएवाला कहल गेल, बादमे संदिग्ध लाभक आरोपक आधार बनि सकैत अछि।

कमली फोनपर पाँचम स्वर बनैत छथि। चिकित्सकीय राहत लेल अस्थायी नाम देल गेल छल; एक नामक दवाइ-पंजी आ दोसर नामक सहायता-पत्रक कारण हुनका दोसर व्यक्तिक इलाज लेबाक आरोप लागल। ओ दवाइक मात्रा आ दिनक गोपनीय जाँच लेल तैयार छथि, परन्तु बीमारीक विवरण बाजारमे प्रसारित नहि हो। सार्वजनिक सुधारपत्रमे पुरान नाम पुनः छपि जायत की, एकर लिखित उत्तर भेटल नहि; तें ओ अपन फोनक कथनकेँ पूर्ण सरकारी बयान मानबासँ रोकैत छथि। पाँचम थैली खाली रहैत अछि। ई ‘खाली’ न कोनो अकर्मण्यता, न आरोपीक अनुपस्थिति; सूचनाक अभिरक्षाक परिभाषा एखन तय नहि भेल—ई सच्चा घटनात्मक परिणाम अछि।

भिन्न प्रमाणक अर्थ : सरकारी परिवर्तन-अधिकार एखन अस्पष्ट

तीन व्यक्ति पठन-कक्षमे, मंगला कार्यशालामे, कमली फोनपर बोलैत छथि। संवादक स्थान स्वयं सहमतिक हिस्सा अछि। समान प्रश्न-पत्र सभपर थोपल नहि गेल; प्रश्नक शब्द, मूल रखबाक ठाम आ सार्वजनिक सारक सीमा व्यक्तिक इच्छासँ बनल। किन्तु एहि पाँच व्यक्तिक कथन मात्रसँ नगरक सरकारी पाँचो परिवर्तित प्रविष्टिक वैधानिक क्रम प्रमाणित नहि होइत। रमा मूल प्रविष्टि, परिवर्तन करनिहार अधिकारीक अधिकार आ सूचित करबाक प्रक्रिया अलग जाँचब चाहैत छथि। ‘सुरक्षा कारणेँ सीमित प्रसार’ लिखल आवरण-पत्र प्रस्तावक प्रमाण भऽ सकैत अछि; पाँच हस्ताक्षरित आदेशक बदला नहि। आख्यानक ‘परिवर्तन-सङ्केत’ एहि ठाम अपराध-संख्या वा दार्शनिक उपलब्धिक सर्वेक्षण बनाओलासँ बचब आवश्यक अछि।

लाल कतरन लऽ घुमैत युवक सुधार-सन्देश भेजैत अछि, मुदा पुरान कतरनक दू प्रति घूमि रहल। डिजिटल पुनरावृत्ति आ सुधारक विषम गति एहि कालखण्डक खास कथन-समस्या अछि। एक मुँहसँ कहि देल सही बात तुरन्त पुरान गलत बातकेँ मेटा नहि दैत। नसीमक ओ बयान—कपड़ाक दामक रसीद सार्वजनिक भऽ सकैत अछि, ग्राहकक माप नहि—एक औपचारिक ‘सूचनाधिकार’ विवादक मानवीय संक्षेप अछि। रमा आ नसीम दुनू संस्थागत सत्ता/व्यवसायिक जिम्मेवारीसँ बोलैत छथि, मुदा व्यक्ति अपन ककरो कथाक स्वामी नहि बनि जाइत छथि।

सावित्री, विनीता आ बहिर्वृत्तक दोसर प्रश्न

सावित्री सरदारक बाढ़-पश्चात् गाम बदलल; वर्तमान ठेगाना आ पुरान राहतदावाक तिथि अलग रहबाक चाही। स्थानान्तर व्यक्ति-विलय नहि। उपस्थितिक पर्चीकेँ वितरणक रसीद मानेब अनुचित। विनीता केशरवानीक पारिवारिक कारोबारक दुहरी उधारीमे एके रकम दू बहीमे चढ़ल देखा जाइत अछि। हिसाबक अन्तिम मिलान बाकी, मुदा दोहरावक जाँच लिखित रूपसँ स्वीकारल गेल। ई प्रसंग पाँच व्यक्तिक परिचय-विवादक सूचीमे नव ‘छठम’ अपराध नहि, बल्कि नाम–देयक समान पद्धतिगत समस्याक भिन्न सामाजिक क्षेत्र अछि। कथावाचक एतय अनेक नागरिकक एकही नगर-स्थानमे प्रवेश करबैत अछि—एकर लाभ सामाजिक व्यापकता, सम्भावित सीमा चरित्रक क्रमागत ‘प्रकरण’ बनि जेबाक खतरा।

अन्तिम संवादमे नैरा कबीरकेँ उत्तर नहि, उत्तर देबाक ढंगक सीमा भेटबाक बात कहैत छथि। सरिता आग्रह करैत छथि जे व्यक्ति जे नहि कहलनि, ओकरा सार्वजनिक सारमे ‘शून्य’ नहि मानल जाए। एतय मौनक अर्थ साक्ष्यक अभाव, बोलबाक अनिच्छा, भीति वा अस्वीकृति—इनमे किएक कोनो एक—हुनकर अनुमति बिना तय नहि।

आख्यान-पद्धतिक उच्च उपलब्धि ई अछि जे वाचक अपनी जानकारीक सीमा स्वीकारैत अछि। भाषा-सौन्दर्य कारीगरक सूत, बेलपत्रक डाँठ, साइकिलक ढीला पेच आ आटाक पिठार जकाँ वस्तुसँ फूटैत अछि। सीमा फेर वही : पात्रसभक अत्यन्त सुसंगत प्रक्रिया-भाषा वास्तविक सत्ता-संघर्षक अव्यवस्थित स्वरकेँ कखनो एकरूप करि दैत अछि। तथापि पाँच व्यक्ति पाँच अलग ‘जीवन-श्रेणी’ बनबाक विरोध करैत छथि, से अध्यायक निष्पक्ष उपलब्धि अछि।

अध्याय ८८ — चौदह विसंगति

अंकक गणना आ अर्थक गणना : चौदह ‘लोक’ नहि

अध्याय नगर कार्यालयक भीजल जूता, माटिक निशान आ अधजल आवरण-पत्र सँ शुरू होइत अछि। रमा प्रश्न करैत छथि : चौदह लोक, चौदह नाम अथवा चौदह गलती? नैरा चौदह सादा पर्ची उठा कऽ कहैत छथि जे ई चौदह जाँच-प्रकरण छथि। एहि आरम्भमे कथन स्वयं अपन शीर्षकक अतिपाठक विरोध करैत अछि। महाकाव्यीय युद्धक गिनती प्रायः सेनाक संख्या आ हानिक परिमाण चाहैत अछि; एतय संख्या व्यक्तिक दोष निर्धारित नहि करैत, जाँचक काम बाँटबाक कार्यालयी साधन अछि। एकसाथ हरेक प्रश्न सुलझेबाक देवशंकरक प्रस्ताव रमा रोकैत छथि—जीवित व्यक्तिक गलत मृत्यु-प्रविष्टि आ ककरो सुरक्षित घरपता अलग समस्या छथि। संख्यात्मक समता कारणात्मक अथवा न्यायिक समता नहि।

नैरा चारि ढेरी बनबैत छथि : लिखावट आ मिलान, वर्गीकरण आ अधिकार, लेनदेन आ हाजिरी, पहुँच आ संरक्षण; रमा विवादित तथ्य लेल पाँचम खाली पृष्ठ रखैत छथि। ई एक कथा-आन्तरिक ‘अन्वेषण-पद्धति’ अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे वर्गीकरण खुद एक अस्थायी व्यवस्था, अन्तिम निर्णय नहि। एक क्षण रमा चारि+तीन+चारि+दू गनि तेरह पबैत छथि; जलपट्टा-परिशिष्ट आ सार्वजनिक पहुँचक भेद चौदहम पर्ची बनैत अछि। एक साझा फाइलक भीतर दू स्वतंत्र आवेदन अछि। ई गणनाक क्रिया कथा-घटना अछि; पाठक देखैत अछि जे सूची बनाओल, काटल, फेर व्यवस्थित कएल जा रहल अछि—जणु तैयार प्रशासनिक सत्य स्वर्गसँ नहि उतरैत।

जलपट्टा : पहुँच, हिस्सेदारी आ सुरक्षा

रेणु गोंढ़ी सार्वजनिक बाट रोकबाक अपील लऽ अबैत छथि; रमणी बिन्द जलकरमे स्त्रीक साझी भागीदारीक प्रश्न लऽ। लाल नक्शा-रेखा, पट्टाक अधूर सार, सुरक्षा-रस्सी आ अनधिकृत प्रवेशक बादमे बनल पत्र—ई सभ भिन्न स्रोत आ तिथि छथि। रेणु पूछैत छथि जे सुरक्षा-रस्सीक अवधि आ सुरक्षित विकल्प कतय लिखल अछि; रमणी माछ-जालक हक कहि रेणुक चलबाक बाट अपने नाम नहि करब चाहैत छथि। एकरा पर्यावरणीय आख्यानक दृष्टिसँ पढ़ला पर जलक भौतिक जोखिम आ जलीय जीविका एकसाथ रहैत अछि। घाटक पहुँच सार्वजनिक होएबाक माँगक अर्थ असुरक्षित कीचड़मे जकरा-तकरा उतारि देब नहि। पात्रसभ स्वयं बच्चासभकेँ सुरक्षित पयरबाट देखबैत छथि। नैतिक अधिकार आ जोखिम-न्यूनकरण एक-दोसरक प्रतिपक्ष नहि, परस्पर जरूरी शर्त छथि।

मूल जलपट्टा, हस्ताक्षर, नक्शा-परिशिष्ट आ नवीकरणक पन्ना माँगल गेल अछि; नकल शुल्क जमा कएल जाएत। रमा रेणु आ रमणीक दू अलग आवेदनक प्राप्ति दैत छथि। एखन न निजी घेराव अवैध सिद्ध भेल, न जलकरक स्त्री-भागीदारीक दावा स्वीकृत। पट्टाधारीक कथित प्रतिनिधि आधा फोटो देखाबैत अछि—शुल्कक अङ्क स्पष्ट, सीमा-परिशिष्ट कटल। रमणी आधा फोटो पर दावा बनाबसँ इनकार करैत छथि। ई कथा ‘स्थान’केँ दृश्यचित्र नहि, अधिकारक क्रियाशील सम्बन्ध बनबैत अछि। अन्तिम दृश्य मे रमणी बेटीकेँ पयरक अधिकार लिखब एखन शेष होएबाक बात कहैत छथि; अध्यायक आरम्भक माटि अन्तमे जालक गाँठ आ रस्सीक हिलइत सिरामे पुनः आबैत अछि।

सामाजिक वर्गीकरण : विवरण, आरोप आ स्वघोषणाक भेद

अनिता चौपालक मूल आवेदन आ कार्यालयक सामाजिक-श्रेणी प्रविष्टिमे विरोध पुष्ट अछि, मुदा बादक डिजिटल परिवर्तन के भरलक से अज्ञात। कर्मचारी परिवारक दोसर व्यक्तिक श्रेणी देखाकऽ अनिताक सत्य ठहरएबाक प्रयास करैत अछि; ओ व्यक्तिगत मूल आवेदनक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। छात्रवृत्ति-संबन्धी समयक हानि आसन्न अछि, मुदा अस्थायी ‘विवादाधीन वर्गीकरण’ पर्ची अन्तिम प्रमाणपत्र नहि। बादमे आपत्तिक प्राप्तिपर ‘असत्य जाति बताओल’ लिखल भेटला पर अनिता शब्द बदलवैत छथि : ‘आवेदिकाक मूल विवरण आ कार्यालयक प्रविष्टिमे विरोध; कारण अज्ञात’। ई एक निर्णायक भाषिक घटना अछि। शब्दक रूपान्तरणकेँ मात्र सजावटी सम्पादन कहब गलत; आरोपक विषय स्वयं व्यक्तिसँ संस्थागत जाँच दिस सरकैत अछि।

निरंजन किसानक पारिवारिक नामक एक अंश डिजिटल प्रपत्रमे पेशाक खाने सरकि गेल। ओ सचमुच खेती करैत छथि, मुदा परिवारनाम आ पेशाक वर्ग भिन्न। बैंक-लिंक खाता रोकल गेल अछि; नगर कार्यालय बैंकक आर्थिक निर्णय देबाक अधिकारी नहि। अधिकृत नाम-मिलानक पत्र बनल, रोकल अनुदान भेटल नहि। रोजी लालबेगीक धर्मक अनुमान सफाइ-पेशासँ कएल गेल; स्वघोषणाक अधिकार अलग अछि। एहि तीनू प्रकरणकेँ ‘नामक गलत वर्तनी’क सामान्य सुधारमे समेटनाइ व्यक्ति, समुदाय आ प्रशासनक बीचक सामाजिक भेद मेटा देब हएत। आख्यानगत रूपकमे कहब तँ समान रूपेँ भरल फार्म एके साध्यक हेतु नहि; प्रत्येक खाना अलग अवच्छेदक-सम्बन्ध रखैत अछि। उपन्यासक वैचारिक सफलता यही श्रेणीगत सावधानी अछि।

उधारी, हाजिरी, दवाइ : एके मद नहि

चौदह प्रकरणक लेनदेनवाली ढेरीमे जहीरक हाजिरी, विनीता केशरवानीक दुहरी उधारी, रीता एक्काक गवाहीकेँ ऋण-जमानत बनाओल आरोप आ कमलीक संरक्षित चिकित्सा-पंजी अछि। चारू ठाम वित्तीय अथवा लाभ-संबन्धी असर अछि, किन्तु प्रमाणिक पद्धति अलग। जहीर लेल मालिकक मूल सूची आ दिनवारी श्रम; विनीता लेल दोहरी बहीक वास्तविक रकम; रीता लेल मूल अनुबन्ध आ हस्ताक्षर; कमली लेल निजतासुरक्षित अधिकृत चिकित्सकीय मिलान। औषधि लेल स्वीकृत गोपनीय जाँच जनसभा मे रोगक इतिहास खोलबाक आदेश नहि। नाम बदललासँ अपन भत्ता दोबारा भेटल सिद्ध नहि; गवाहीक पन्नापर नाम रहला सँ ऋण-स्वीकृति सिद्ध नहि।

नैरा समय-संवेदनशील हानि नामक अतिरिक्त स्तम्भ जोड़ैत छथि। रेणु लेल आगाँ बढ़ैत पानि, अनिता लेल छात्रवृत्तिक अन्तिम समय, निरंजन लेल बीहन अनुदानक तिथि अलग। ई अत्यन्त अर्थवान कथन-उपकरण अछि।

संस्थागत समय निरपेक्ष घड़ीक क्रम नहि; देरी व्यक्ति-विशेषक देह, शिक्षा आ जीविकापर अलग हानि बनैत अछि। कथाक पूर्ववर्ती भीष्म-पर्वमे चेतावनीक प्रति गुम वा अधूरी होएबाक संकट, एहि अध्यायमे समयपर उत्तर भेटबाक प्रश्नसँ नैतिक रूपेँ जोड़ैत अछि। मुदा एतय कोनो वास्तविक हानि-अनुपातक गणना मूल पाठमे उपस्थित नहि; आलोचककेँ प्रसंग-निर्मित तात्कालिकता आ मापनक अभाव दुनू स्पष्ट करबाक अछि।

पर्चीक सीमा, सार्वजनिक सार आ डिजिटल अफवाह

रमा चौदह प्रकरणक शीर्षक सार्वजनिक प्रतिमे ‘दोषी व्यक्तिक सूची नहि’ लिखब तय करैत छथि। युवकक सूचना-समूहमे लाल कतरन ‘चौदह दोषी नाम’ बनि घूमए लगल छैक; नैरा ओहि गलत समानता सुधारैत छथि। ई अध्याय ८७ क डिजिटल प्रसारक कथा-जालकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। पाँच बदलबा परिचय आ चौदह विसंगति एक्के संख्या-श्रेणी नहि; सरिताक छब्बीस खुलल नाम आ संरक्षित सत्ताइसम नाम कार्यालयक सभ सूचीमे घुसि नहि गेल अछि। मूल पाठक ई स्पष्ट कथन आलोचनाक केन्द्रमे रहबाक चाही, कारण शीर्षकसभक अङ्क पाठककेँ झूठा ‘पूर्ण गणित’ बनएबाक लेल आमन्त्रित करैत अछि। नैरा प्रकाशन-सीमाक भीतर सुधार दैत छथि; इतर व्यक्तिक बीमारी, बस्ती वा हस्ताक्षर सार्वजनिक नहि करैत छथि।

एक विद्यालयक माएक प्रश्न ‘नामक गलती’क जीवनसम्बन्धी चोट देखबैत अछि : बादमे सुधार भेला पर छूटल महिनाक पढ़ाइ के लौटाओत? नैरा एहि अनुभूत हानिकेँ चौदह सरकारी प्रकरणमे बिना जाँच पन्द्रहम मामला बना नहि दैत छथि। ई कथात्मक निषेध सार्वजनिक इतिहासक सुनबाक अधिकार बढ़बैत अछि, जखन आधिकारिक नमूना-निर्माणक अतिरेक रोकैत अछि। तथापि लगातार एक कार्यालयमे विभिन्न जीवनक प्रसंग आ निस्पत्ति-रहित आवेदन कथाक नाटकीय गति मन्द करैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ भिन्न स्वरक ई भीड़ व्यापक समाजक चित्र तऽ प्रस्तुत करैत अछि, मुदा अनेक पात्रक निजी आन्तरिक द्वन्द्व छोट संवाद धरि सीमित राखैत अछि। एहि सीमाकेँ उपलब्धिक संग स्पष्ट स्वीकारब चाहिए।

धूसर मृत्यु-फोल्डर : अगिला कथासूत्रक नियंत्रित पूर्वाभास

अट्ठाइसम पाठांशमे रमा पुरान मृत्यु-सूचनाक आवरणमे ‘मृत’ प्रविष्टिक संग सक्रिय लेनदेनक पर्ची देखैत छथि। लाभार्थी अस्पष्ट अछि। रमा एहि नव सामग्रीकेँ चौदह प्रकरणक बीच नहि घुसबैत; अलग धूसर फोल्डरमे मूल स्रोत आ तिथि जाँचबाक टिप्पणी रखैत छथि। एतय सत्यापित तथ्य सीमित अछि : मृत्यु-सूचना आ लेनदेन-पर्चीक असंगति भेटल। एकरा आधारपर मृत व्यक्ति जीवित सिद्ध, हत्या साबित, अथवा लाभ उठबनिहारक पहिचान ज्ञात—एहन कोनो निष्कर्ष निस्सार हएत। नव फोल्डर कर्ण-पर्वक अगिला अध्यायक प्रश्नक पूर्वाभास अछि; ई जाँच शुरू होएबाक संकेत, अपराधक निर्णय नहि।

अन्तिम पाठांशमे रमणी जालक गाँठ ढीला करैत छथि; बेटी नाउँ लिखबाक प्रश्न करैत अछि। रस्सी काटि देब सहज, बाटक हक लिखब कठिन। उपन्यास ई दृश्य द्वारा नियमक नकारात्मक रूप—‘ई गलत’—सँ आगाँ सकारात्मक निर्माण—‘केखन, ककर पहुँच, कोन सुरक्षा, केकर श्रेय’—धरि पहुँचेबाक माँग करैत अछि। भीजल जूताक माटि सँ जालक हिलैत रस्सी धरि दृश्यात्मक वक्र पूर्ण होइत अछि, मुदा अधिकारक विवाद पूर्ण नहि

होइत। ई संरचनात्मक अपूर्णता अर्थपूर्ण अछि : कर्ण-पर्वक पहिल चारि अध्याय अपराधी-उद्घाटनक बदला ज्ञानक नैतिक सीमा स्थापित करैत अछि।

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८५–८८ क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन

कथा-कथनक क्रम आ द्विकालीनता

चारू अध्याय एकरेखीय रहस्य-समाधान नहि, ज्ञानक सीमा निर्धारित करैत प्रवाह रचैत अछि। ८५ मे प्राचीन राधा–कर्ण–अधिरथक ओसार, आधुनिक विदेहपुर आ फेर प्राचीन दृश्यक स्पष्ट क्रम अछि। ८६–८८ आधुनिक कथाधारामे लिखित अतीत, स्मृति आ वर्तमान जाँचक माध्यमसँ अतीतक चर्चा करैत अछि; स्वतन्त्र हस्तिनापुरक प्राचीन दृश्य फेर नहि। एतय पूर्वआख्यानक ८७–८८ लेल देल ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ सङ्केतकेँ अक्षरशः स्वीकृत संरचनागत तथ्य मानब उपयुक्त नहि; ओकर वास्तविक कालिक निर्माण मुख्यतः पुरान अभिलेखक वर्तमानमे पुनरपठन अछि। ई भेद आख्यानशास्त्रीय काल-विश्लेषणक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। अतीतक पत्र वा पन्ना स्वतः अतीत-दृश्यक कथा-स्तर नहि होइत।

आन्तरिक क्रम सेहो सुसंगत अछि : ८५ मे जन्म आ पालनक दुई अलग सत्य, ८६ मे मूल आ प्रतिक भौतिक तथा अधिकारगत भेद, ८७ मे समान ‘बदलल नाम’क पाँच सामाजिक कारण, आ ८८ मे विसंगतिक चौदह अनुप्रयोग। संख्या बढ़ैत अछि, मुदा ‘वास्तविक घटनाक संख्या’ स्वतः नहि बढ़ैत। ८५ क दाम जोड़बाक घटना आ ८८ क आयोगीय जाँच अलग प्रकारक परिवर्तन छथि। ८८ क धूसर मृत्यु-फोल्डर नव कथावृत्त खोलैत अछि; पहिल चारि अध्याय मिलि अगिल साक्ष्यक मानसिक अनुशासन बनबैत अछि। एहि क्रममे पाठकक आरम्भिक उत्सुकता ‘रहस्य की?’ सँ ‘जखन जतेक सत्य, तखन कतेक कहबाक अधिकार?’ दिस स्थानान्तरित होइत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, वाणी आ प्रमाणक बहुविधता

८५ मे राधाक घरेलू श्रम आ कर्णक आहत इच्छा; ८६ मे सरिता–नैराक संयुक्त निरीक्षणक सीमा; ८७ मे पाँच व्यक्तिक अलग भेटक माध्यम; ८८ मे रमा–नैराक जाँच-कार्य आ पोखरिक माछ-जालक देहगत अनुभव—ई सभ कथनक केन्द्र बदलैत अछि। प्रत्येक पात्र ‘असत्य नहि कहू’ भरि नहि, अपन बोलबाक अधिकृत स्थिति निर्दिष्ट करैत छथि। सहमति, आश्रय, मजदूरी, ऋण, धर्म, सामाजिक श्रेणी, बाढ़क पता आ चिकित्सा-गोपनीयता सभकेँ एक शब्द ‘पहिचान’मे घटा देब जइ तरह गलत अछि, तहिना प्रत्यक्ष, शब्द-साक्ष्य, लेखा, अनुमिति आ निजी अनुभवकेँ एक समान प्रमाणश्रेणी मानब अनुचित। उपन्यासक बल एहि विस्तृत ज्ञान-असमानताकेँ स्वीकार करैत अछि; कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्ध एहि अलग विषय-सीमाकेँ स्पष्ट करबाक विश्लेषणात्मक भाषा दैत अछि।

महाकाव्यीय प्रतिध्वनि, भारतीय काव्यशास्त्र आ इतिहास-दृष्टि

कर्णक जन्मपर परिचित सार्वजनिक प्रश्नकेँ राधाक श्रम आ पालनक सत्यसँ विस्तारित कएल गेल अछि। एहि महाकाव्यीय कल्पनात्मक प्रसंगकेँ मूल महाभारतक प्रत्यक्ष पाठोक्ति कहब उचित नहि। करुण रसक सम्भावना माएक मौन आ कबीरक खाली नाम-स्थानमे अछि; शान्तक स्पर्श राधा–धैरिक लोकगीत आ संझुक भोजनमे; वीभत्स वा वीरक कृत्रिम घोषणा न करब उचित। ध्वनि तखन सशक्त होइत अछि जखन कापीक नमी, सिलाइक सूत, पीतरक डिब्बा आ बाँसक जाल स्वयं अभिप्राय खोलैत अछि; प्रत्यक्ष उपदेश अधिक भेला पर ध्वनि घटैत अछि। औचित्यक कसौटीपर व्यक्तिगत बयानकेँ कानूनी फैसला न मानबाक प्रवृत्ति नीक; मुदा हर पात्र एके जकाँ अत्यन्त क्रमबद्ध प्रमाण-भाषामे बोलै लगला पर भाषिक भिन्नता कम होइत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टि एतय सूचीमे अधिकाधिक जाति अथवा समुदाय नाम जोड़बाक यन्त्र नहि। राधाक धान, धैरिक सिलाइ, किरणक बटाइ, रमणीक जलकर, रोजीक आत्मपरिचय, जहीरक ढुलाई आ कमलीक उपचार-पर्ची अलग प्रकारक श्रम, अनुभव आ अधिकार छथि। उपन्यासक सामाजिक व्यापकता वास्तवमे तखन रचनात्मक बनैत अछि जखन व्यक्ति अपन प्रसंगक सार्वजनिक उपयोगपर सहमति वा असहमति दैत छथि। समस्या तखन उठैत अछि जखन अनेक विषय छोट दफ्तर-दृश्यमे महज उदाहरण बनि जाइत अछि; एहि प्रतिपक्षकेँ ग्रन्थक अन्तिम मूल्यांकनमे फेर जाँचब आवश्यक अछि।

उपलब्धि, सीमा आ अगिला आलोचनात्मक प्रश्न

एहि चारू अध्यायक मुख्य उपलब्धि कथित प्रमाणक सामाजिक उत्पादनक विवेचन अछि। ‘मूल पन्ना’ भौतिक मूल होइतहुँ निर्विवाद ज्ञान नहि; ‘पाँच बदलल परिचय’क पाँच लोकक इच्छा एक नहि; ‘चौदह विसंगति’क चौदह जाँच-प्रकरण दोषी व्यक्तिक गिनती नहि। कर्ण–राधाक पालनक जीवित सम्बन्ध जीववैज्ञानिक जन्मक निष्कर्षसँ स्वतन्त्र अछि। सीमा ई जे अनेक पात्र एकहि प्रकारक चेतावनी-भाषा दोहरबैत छथि, आ सामाजिक हानि कखनो-कखनो निस्तारित न भेल कार्यालयी आवेदनक रूपमे अधिक देर टिकैत अछि। तहिना प्रक्रियागत नैतिकता स्वतः घटनाक मानवीय तीव्रताक विकल्प नहि। तथापि जे ठाम कथा वस्तुक गन्ध, स्पर्श आ पारिवारिक स्मृतिक भीतर प्रवेश करैत अछि, ओतय ई सीमा आंशिक रूपसँ टूटैत अछि।

अगिला परीक्षणक केन्द्र अध्याय ८९ क ‘चारि जीवित चारि मृत’ शीर्षकसँ स्वतः सिद्ध निष्कर्ष बनाओल नहि, बल्कि ८८ क धूसर फोल्डरक वास्तविक स्रोत, अलग मृत्यु-प्रविष्टि, लेनदेनक लाभार्थी आ सम्भावित फर्जीवाड़ाक तथ्य-स्थिति होएत। घटना, अपराध आ पीड़ितक पहचान स्वतंत्र जाँचक बादे लिखल जायत। यही अनुशासन कर्ण-पर्वक पहिल चारि अध्यायक आलोचनात्मक निष्कर्ष अछि।

अध्याय ८९ — चारि जीवित चारि मृत

नील आ गेरुआ : वर्गीकरण एक नैतिक घटना

नगर कार्यालयक खिड़की खुलबाक पहिनहि रमा कर्ण दू ढक्कनमे नील आ गेरुआ पर्ची अलग करैत छथि। वस्तुक ई छोट सजावट वास्तवमे आख्यानक प्रमाण-व्यवस्थाक नाटक अछि। नीलक शीर्षक ‘मृत घोषित, स्वयं जीवित’;

गेरुआक शीर्षक ‘मृत्यु पुष्ट, खाता चालू’। एहि द्विभाजनक बिना कथा ‘आठ मृत व्यक्ति पुनः कमाइ करैत छथि’ सन सनसनी बनि सकैत छल। रमा आ नैरा पहिने कोन बात सिद्ध करबाक अछि, तकर पक्ष अलग करैत छथि। चारि जीवित व्यक्तिक अस्तित्व आ हुनका मृत घोषित करबाक कार्यालयी त्रुटि एक प्रश्न; चारि वास्तविक दिवंगतक नामपर चलैत लेखा-देनदारीक कारण आ वास्तविक प्राप्तकर्ता दोसर। शीर्षक बदलला सँ जीवितक अपमान आ मृतकक परिवारपर आरोप एक्के बेर सृजित होएत। एहिठाम वर्गीकरण सूचनाक सुविधा मात्र नहि; अन्याय रोकबाक पहिल क्रिया थिक।

नील ढेरीक पहिल प्रकरण सरिताक सार्वजनिक उपस्थिति आ आपत्तिक प्राप्ति-पत्रसँ जुड़ैत अछि। दोसर फकीराक रोकल रेल-पास आ दिनक कमाइसँ। तेसर राहत बस्तीक स्त्री उपचारक दू तिथि-वला रसीद आ अपन बयान लऽ अएलीह, मुदा सार्वजनिक नाम देबाक अनुमति नहि देलीह। चारिम बस-अड्डाक गठरी ढोएनिहार युवक अपन मृत घोषित भेलाक बादक मजदूरी-रसीद देखबैत अछि, तथापि सार्वजनिक अड्डाक ठाम गुप्त राखबाक माँग करैत अछि। ई चारू जीवित व्यक्ति एक-दोसराक प्रतिलिपि नहि। सरिताक साक्ष्य सार्वजनिक सभा आ निजी कामक देयमे फैसल; फकीराक प्रश्न सेवा-पासमे; तेसर स्त्रीक दवाई आ सम्मानसँ; युवकक पुरान मजदूरी तथा ठेकेदारक दबावसँ। ‘जिअल छी’ प्रमाणित करबाक अधिकारीक प्रक्रिया लेल जरूरी भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक जीवित व्यक्तिक संपूर्ण जीवन खुला प्रदर्शन नहि बनि सकैत। तेसर स्त्रीक सिलाइक समय आ युवकक पुरान मजूरी ‘जीवित’ श्रेणीक भीतर वर्गीय अन्तर देखबैत अछि।

गेरुआ ढेरी एकदम अलग तरहक तार्किक अनुशासन माँगैत अछि। सरिताक मृत पतिक सत्रह बरख पुरान मृत्यु-पत्रक सोझाँ नव औषधि-पर्ची अबैत अछि; दवाक निर्गमन आ प्राप्तकर्ता कियो एक तथ्य नहि, किएक तँ उठौनिहारक हस्ताक्षर प्रति मे अनुपस्थित अछि। दोसर दिवंगत मजदूरक बचत-खातासँ ब्याज कटैत रहब मशीनक स्थायी आदेशसँ सम्भव; ताहिसँ मानवद्वारा धन उठाओल गेल सिद्ध नहि। तेसर मृतकक माछ-पट्टा पर परिवार पुरान देय जमा करबाक दावा करैत अछि; चौथमे गिरवी-वस्तुक शुल्क अछि, मुदा वस्तु ककरा भेटल तकर रसीद नदारद। चारू सक्रिय प्रविष्टि चारि भिन्न कारण-श्रृंखला सम्भव करैत अछि। ‘खाता चलैत अछि’ कथनकेँ ‘मृत व्यक्ति छल करैत छथि’ बनाओल हेतु–साध्यक भ्रम हएत। उपन्यास एहि भ्रमपर रंगीन नाटकीय उद्घाटन नहि, अपेक्षित मूल-बही, स्वीकृति आ हस्ताक्षरक सूची रखैत अछि।

‘आठ अपराध’क सरल गणितक अस्वीकार

सातम पाठांशमे देवशंकर ‘आठ अपराध?’ पूछैत अछि। नैराक उत्तर ‘आठ सवालक आठ जाँच-पथ’ कर्ण-पर्वक केन्द्रीय शास्त्रीय सावधानीक भाषिक रूप अछि। पाठक केँ संख्या मिलि गेल; मुदा संख्या स्वयं अपराधक स्वरूप, मनसाय आ व्यक्ति नहि बता सकैत। आख्यानगत विवेचनमे आठ अभिलेखक अस्तित्व पक्ष-विभागक आरम्भ अछि; दोषसिद्धि साध्य अछि; बीचक वैध हेतु, पक्षधर्मता आ उचित व्याप्ति एखन जाँचबाक अछि। देहक उपस्थिति, पछिला कामक रसीद आ अधिकारीक स्वीकार अलग-अलग प्रमाण देत, तें व्यक्ति-विशेषक मूल प्रविष्टि रद्द करबाक आदेश स्वतः जारी नहि भऽ सकैत। एहि अर्थमे उपन्यास एकरे संग प्रशासनक सावधानी आ

प्रशासनक धीमा अन्यायक द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि : पर्याप्त प्रश्न उठलाक बादो चारि जीवितक मृत्यु-चिह्न औपचारिक रूपसँ एखन हटायल नहि गेल।

इजोत ढेरीक कोनपर बढ़ैत अछि, मुदा बीचक खाली ठाम चौड़ा बनल रहैत अछि। ई दृष्टि-बिम्ब अत्यन्त सार्थक : प्रकाश जानकारी बढ़ा सकैत अछि, किन्तु ज्ञानक अन्तर आ प्रमाणक असमानता समाप्त नहि करैत। आरम्भिक दृश्यसँ अन्तिम पच्चीसम पाठांश धरि कार्यालयक दू पत्राचार अलग बनैत अछि—नील लेल जीवित व्यक्ति, गलत मृत्यु-प्रविष्टिक इतिहास, सेवा पुनः चालू करबाक सम्भावित अन्तरिम उपाय; गेरुआ लेल मृत्यु-पुष्टि, लेनदेनक स्रोत, लाभार्थी, उत्तराधिकारी। एहि समापनमे व्यवस्थित काजक वास्तविक प्रगति अछि, फैसला नहि। नील-गेरुआ फाइलक रूपक सरकारी रङ्गक स्वाभाविक सत्य नहि; कथावाचक जानि-बुझि सरल दृश्य-विभाजन बनबैत अछि, जाहिसँ पाठक संस्थागत वर्गीकरणक नैतिक नतीजा देखय। आलोचनात्मक प्रश्न एतय बचैत अछि जे ई अत्यन्त साफ द्विभाजन जीवनक जटिलताकेँ सरलीकृत करैत अछि की; तथापि उपन्यासक भीतर प्रत्येक समूहक चारि पर्ची एक-दोसरसँ फरक रहलासँ ओकर कठोरता टूटैत अछि।

सार्वजनिक परोपकार, निजी स्वनाम आ गिरवी : समूह-दृश्यक कारण

आठ प्रकरणक बीच सुधा राय विद्यालयक छज्जा लेल दानक घोषणा स्थगित करैत छथि, किएक तँ किरायेदार परिवारक सँकरा दैनिक बाट दानक प्रस्तावित रेखामे पड़ैत अछि। एहि दृश्यसँ प्रशासनिक प्रमाणक नीतिक तेसर क्षेत्र खुलैत अछि : सार्वजनिक भलाईक उद्देश्य सामुदायिक उपयोगाधिकारक पूर्वानुमान नहि बनि सकैत। किरायेदार स्त्री बीमार सासु लेल खटिया निकालबाक भौतिक आवश्यकता सोझाँ रखैत अछि; अगिला नापमे बच्चाक खेलौना-पहियाक अटकब मात्र एक संकेत बनैत अछि, खटियाक पूरा नाप नहि। सुधा दानक घोषणा संशोधित करैत छथि, निष्फल भेल मजदूरक दिनक दिहाड़ी दैत छथि, मुदा बिना काजक पूरा निर्माण-बिल नहि। ई सूक्ष्म भेद उपकारक महिमामण्डनक बदलामे जवाबदेही बनबैत अछि। किरायेदार स्त्री पति बिना अपन वचन रखि सकैत छथि; ताहिसँ स्त्रीक साक्षी-अधिकार सार्वजनिक दानपत्रक भीतर प्रवेश करैत अछि।

बसन्ती पानक आत्मपरिचय कैँ कार्यालय एकाधिक जाति-पदक ‘सुविधाजनक पर्याय’ बनबैत अछि। बसन्ती स्वयं कहल नाम आ सरकारी वर्गीकरणक दू अलग खाना माँगैत छथि। प्राप्ति मे पहिल पंक्ति दर्ज भेल, मुदा अन्तिम प्रमाणपत्र एखन बदलल नहि। एतय जाति-नामक ऐतिहासिक बोझकेँ केवल आरक्षण अथवा प्रशासनिक कोडक प्रश्न बना देब अनुचित; पात्रक जीवित भाषा आ निज नामक अधिकार संस्थाक लेखाक संग संघर्षरत अछि। शारदा कसौधनक गिरवी-दोकानमे तीन खाता अलग करब आ दुहरायल ब्याज नगद वापस देब तत्काल सत्यापित सुधार अछि, मुदा दू बाँकी गिरवी आ मालिकाना-विवाद अनिर्णीत। नाहिद मोगलक मातृपक्षक पत्र आ ‘लिवरी’ नदीक शब्दक प्रसंग स्रोतक उपयोग-सीमा फेर दृढ़ करैत अछि : मातृपरिवारक भूमि-सहमति पर दावा सम्भव, वर्तमान नदीक प्रमाणित सीमा केवल पुरान नामसँ नहि निकलैत। नाहिद नकल देबाक अनुमति रोकैत छथि; एहि गोपनीयताकेँ धोखाक प्रमाण मानल नहि गेल।

चारि छोट प्रसंग शीर्षकक मृत्यु-पञ्जीसँ भिन्न दिशा लैतहुँ एक मुख्य सम्बन्ध रखैत अछि : संसाधन देब अथवा लेबासँ पहिने लाभार्थी, मालिक, दावेदार आ बोलबाक पात्रता अलग करब। सुधाक दान, बसन्तीक नाम, शारदाक

ब्याज, नाहिदक पत्र—सभमे कियो दोसरक अधिकारक स्थानपर स्वयं साक्षी बनि जाय चाहैत अछि। तथापि आलोचनात्मक सीमाक दृष्टिसँ आठ मूल पर्ची सँ ई चारि उपकथाक तेज बदलाब पाठकीय भावावेशकेँ बारम्बार विभाजित करैत अछि। केवल एक संक्रमणपर रुकि सामाजिक निष्कर्ष सुनएबाक झुकाव अध्यायक गति धीमा करैत अछि; पात्रसभक आर्थिक परिस्थिति दृश्य दैत छैक, मुदा कतेक वाक्य सुनवाईक व्यवहार-निर्देश सन लगैत अछि।

हाथसँ दोहराओल ‘मृत’ : जाँचक वास्तविक मोड़

उन्नीसम पाठांशमे सरिताक पहिल आपत्तिक बाद ‘मृत’ चिह्न फेर हाथसँ चुनल गेल होएबाक अद्यतन इतिहास भेटैत अछि। ई पूर्वक सामान्य त्रुटिसँ अधिक महत्त्वपूर्ण नव साक्ष्य अछि। कम्प्युटरक कार्यवृत्त हाथसँ कएल क्रिया देखबैत अछि; ओहिसँ खास व्यक्तिक नाम, आदेश देनिहार अथवा मनसाय सिद्ध नहि। देवशंकर तुरन्त षड्यंत्र समझैत अछि, नैरा अनुमानक सीमा रोकैत छथि। रमा मूल डिजिटल परिवर्तन-अभिलेख संरक्षित करबाक निर्देश दैत छथि। एकरा वास्तविक कथात्मक मोड़ कहल जा सकैत अछि : प्रशासनिक लापरवाहीक अलावा सम्भावित सचेत छेड़छाड़क प्रश्न खुलल, मुदा ‘अपराधी पकड़ायल’ कथन असत्य रहत। बीसम पाठांशमे संवाददाता आठ ‘मृत’क सनसनी बनबैत छथि, रमा सार्वजनिक सारमे गलत समाहार सुधारैत छथि। ज्ञानक सार्वजनिक प्रचार स्वयं अन्वेषणक हिस्सा बनल अछि; माध्यमक गति प्रमाणक गति सँ तेज अछि।

राति सरिताक रसोइमे हुनकर पतिक मृत्यु-सत्यकेँ फेर जीवित घोषित नहि करबाक आग्रह पहिल अध्यायक ‘मृतकक रसोइ’क दीर्घ प्रतिध्वनि अछि। मृत पति, जीवित सरिता, औषधि-वितरण आ विधवा-अधिकार एक-दोसरमे गड्डमड्ड भेल तँ दोहरी हिंसा हएत। कबीर सुभद्रासँ भेटबाक पहिने कथा कहबाक अधिकारबारे पुछैत छथि; एहि तरहे अध्याय ८९ सँ ९० क संक्रमण कार्यालयी फाइलक संख्या द्वारा नहि, घरेलू प्रश्न द्वारा तैयार होइत अछि। समापनमे रमा फाइल बाँधैत छथि; कार्यालय लोकक समयक हिसाब देब सीखत कि नहि, से आगाँक प्रश्न अछि। अध्यायक उल्लेखनीय उपलब्धि प्रश्नक संख्याकेँ दोषीक संख्यासँ अलग रखब अछि। मुख्य सीमा ई जे ‘प्रमाण नहि, आरोप नहि’क स्पष्ट पुनरुक्ति कखनहुँ पाठकक स्वतन्त्र अनुमान लेल जगह घटबैत अछि; मुदा हानि वास्तविक रहलासँ ई सावधानी खाली सिद्धान्त नहि बनैत।

अध्याय ९० — सुभद्राक शर्त

सन्दूक, कुरसी आ वार्तालाप समय

सुभद्रा सन्दूकक कुण्डीमे तेल दैत छथि, ढक्कन उठबैत छथि, मुदा भीतरक सूती थैली खोलबाक बदला दू कुरसी पोंछैत छथि। एहि क्रममे आख्यानक संक्षिप्त प्रतीक-व्यवस्था देखाइत अछि। बन्द सन्दूक अज्ञात जन्मकथाक आमन्त्रण जरूर अछि; कुरसी ओकर आलोचनात्मक संशोधन—वस्तु पहिने नहि, दुनू व्यक्तिक संवादक परिस्थिति पहिने। सुभद्रा लिखैत छथि ‘बात करबाक शर्त’; लिखित शब्द हुनकर आवाज स्थिर करैत अछि। कथा-अधिकारक ई आरम्भ स्त्रीकेँ केवल पुरान रहस्यक रक्षक अथवा अन्तिम उद्घाटनक उपकरण नहि रहए दैत। हुनका लग कहबाक समय, कहबाक मात्रा, अनक नामक सुरक्षा आ बादमे फेर बात शुरू करबाक नियन्त्रण अछि।

कबीर हाथमे उपहार अथवा पुस्तक बिना, अपन कापी आ पानिक बोतल लऽ पहुँचैत छथि। अति भावुक मिलनक दृश्यक बदला ई सामान्य वस्तुसभ भेटक असममित अधिकार-संबन्धकेँ सन्तुलित करैत अछि : प्रश्न करनिहारक इच्छा वास्तविक अछि, मुदा उत्तर देनिहारपर ऋण नहि चढ़ि गेल।

सुभद्राक चारि शर्त स्पष्ट अछि—बिना अनुमति रिकॉर्डिंग नहि; नाम, ठेगाना, जन्मतिथि वा पत्रक फोटो साझा नहि; कोन बिन्दुपर विराम हो, तकर नियन्त्रण सुभद्राक; प्रश्नक अधिकारसँ स्वतः प्रकाशन-अधिकार नहि। कबीर तुरन्त आपत्ति करैत छथि जे अपन स्मृति लिखब सेहो रुकत की। सुभद्रा अपन कथनक गोपनीयता आ कबीरक स्वतन्त्र स्मृति अलग करैत छथि। ई असहमति खास महत्त्वपूर्ण : हुनकर शर्त एकतरफा मौनक कानूनी कवच नहि, जकर सीमा परखल जा सकैत अछि। नैरा बादमे ‘वैधानिक प्रमाण माँगल गेल तँ अलग परामर्श’ जोड़बाक सुझाव दैत छथि, आ सुभद्रा स्वयं अपन लिखल पन्नामे ओकरा स्वीकार करैत छथि। निजता सत्य-निषेधक असीम अधिकार नहि; सार्वजनिक अथवा विधिक माँगक विशिष्ट प्रक्रिया सेहो अछि। उपन्यास विवाद कैँ नारी-अधिकार बनाम सत्यक सरल विरोध नहि बनबैत।

जैविक प्रश्न आ पालनक स्मृतिक सहस्थिति

कबीर कहैत छथि जे जन्मक रिक्तता जानबाक इच्छा अछि, मुदा पालन करनिहार घरक जीवनकेँ काटि नहि सकैत छथि। ई ‘राधाक श्रम’ (अध्याय ८५) सँ भिन्न कालखण्डमे उभरल प्रतिध्वनि अछि। प्राचीन राधा–कर्णक प्रसंगमे पालनक प्रत्यक्ष समय आ जन्मक अज्ञात पूर्वेतिहास अलग छल; आधुनिक कबीरक प्रश्नक केन्द्र पुरान कागद, साझा स्मृति आ जीवित सुभद्राक सुरक्षा अछि। एकरे आधारे ‘कबीर कर्ण छथि’ एहन जातीय अथवा पुनर्जन्म-समानता घोषित करब पाठविरुद्ध हएत। अन्तरपाठीय समानता मुद्दाक अछि : एक नाम पूर्वजीवनक सूचना देत, मुदा पालनक दीर्घ जीवन छोट नहि करि सकत।

कबीर पूछैत छथि—जँ सुभद्राक कहनामे किछु तथ्य भेटल तँ सत्यापन केना सम्भव ? उत्तरक शर्त अछि जे ककरो दोसर जीवित व्यक्तिक घरपर बिना जानकारी अचानक नहि पहुँचब। एहि ठाम नैतिक आख्यानशास्त्रक एक कठिन भेद उभरैत अछि : जानबाक अधिकारक उपाय दूसराक जीवनमे अनिच्छित हस्तक्षेप बनि सकैत अछि। सुभद्रा अपन कथा कहबाक उपयुक्त समयमे मौन धारण करैत छथि, मुदा कबीरक बेचैनीकेँ मिथ्या नहि कहैत छथि। अठारहम पाठांशमे ओ स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर पुरान एकाकीपन कबीरकेँ चुप करएबाक अधिकार नहि दैत, तहिना कबीरक वर्तमान अधीरता हुनकर देहक इतिहासपर आदेश नहि बनि सकैत। पात्रक नैतिक जटिलता एहि द्विपक्षीय अस्वीकारमे अछि। मात्र ‘निजताक संरक्षण’ लिखि एकरा सरल करब अध्यायक भावात्मक घनत्व घटाएत।

सुभद्रा सन्दूकक भीतरी पत्र नहि खोलैत छथि। ओ केवल दराजसँ आधा लिखल नाम आ धब्बाधारी तारीखवला आवरण देखबैत छथि। कबीर ओकरा हाथेँ नहि छूबैत। आवरणपर एक नाम लिखल होएब, भेजबाक पर्चीक अस्तित्व, घरक वास्तविक पहिचान, आ सुभद्राक सम्भावित भविष्यक बयान—चारि अलग प्रमाण-स्तर। सुभद्रा स्वयं कहैत छथि जे पुरान पत्रक पूरा अर्थ एखन नहि ज्ञात। ई ‘रहस्यक झलक’ रचबाक परिचित रोमांच-युक्ति जरूर अछि, मुदा वस्तुक अनिश्चितता विशेष रूपसँ चिह्नित अछि; पाठककेँ आधा नामसँ पूरा व्यक्ति बनएबाक

प्रलोभनपर नियन्त्रण रखबाक पड़ैत अछि। बीसम पाठांशमे सुभद्रा पूछैत छथि जे कागदक खाली स्थान लेखकक अज्ञानसँ बनल कि लिखबा नहि देल गेल; दुनू लेल अलग प्रमाण चाही। कारणक ई द्विभाजन व्यक्तिक दोष-निर्माणसँ पहिने संस्थागत शक्ति सम्भावनाकेँ खोलैत अछि।

कड़ाक मालिकाना, विवाह-पंजी आ नदीक स्मृति

छठम पाठांशसँ अध्यायक क्षेत्र सुभद्राक आन्तरिक स्मृतिसँ अन्य स्त्रीक वर्तमान अधिकारदावा दिस फैलैत अछि। कमला ठाकुरक दोकानमे वृद्धा पुरान कड़ा लऽ अबैत छथि, युवक परिवारक ऋणक खाता। धातुक टेढ़ फूल वस्तुक अभिज्ञानक उपयोगी चिन्ह अछि; स्वामित्वक अन्तिम प्रमाण नहि। कमला वस्तुक मालिकाना आ ऋणक दायित्वक दू पर्ची अलग करैत छथि। वृद्धाक दावा लिखल गेल, कड़ाक बिक्री अस्थायी रोकल गेल, किन्तु वस्तु वृद्धाक हाथमे वापस नहि देल गेल आ युवकक ऋण रद्द नहि भेल। कमलाक कथन जे धातुक मिलावट आ मालिकक अधिकार एक वस्तु नहि, हस्तशिल्पक स्वतन्त्र ज्ञान-सीमा देखबैत अछि। शिल्पक वास्तविक योग्यता विधिक-उत्तराधिकारक सर्वज्ञता नहि दैत। तथापि आभूषण बनौनिहार कमला केवल विशेषज्ञ टिप्पणी नहि करैत छथि; दुकानक चाबी, रखवारी आ ग्राहकक कागदक प्रयोगपर निर्णय स्वयं लैत छथि। एहि निर्णयमे हुनकर पेशागत आत्मनिर्भरता कथा बनैत अछि।

नीलिमा नुराङक विवाह-प्रतिमे मायकेक स्त्रीक नाम स्याहीक दागसँ मेटा गेल, पिता आ पतिक परिचय बचल। नीलिमा ‘नब नाम जोड़ब’ नहि, मूल पंजीमे पहिने सँ रहनिहार मातृनामक पुनर्स्थापन माँगैत छथि। निमन्त्रणपत्र, मातृहस्ताक्षरवला निजी पत्र आ सरकारी मूल पंजी तीनू अलग साक्ष्यक प्रकार छथि। मूल बँधल पंजी निकालबाक अनुमति एखन प्रक्रियाधीन अछि; सुधारक आदेश नहि भेटल। एहि प्रकरणमे विवाह-पंजीक भाषा स्त्रीक जीवनक दू वंश-सन्दर्भकेँ असमान रूपसँ देखबैत अछि। एकरा केवल ‘स्त्री शिक्षा’ अथवा ‘नामक गलती’क सामान्य टिप्पणीमे समेटब अनुचित। ‘नीमा’ स्थाननाम विवाह-पत्रमे देखबासँ नदीक निश्चित मानचित्र तय नहि होइत। मातृनाम आ मातृगामक भू-स्मृति दुनू इतिहासक स्रोत छथि, मुदा स्रोतक अधिकार-क्षेत्र समान नहि।

तुलसी दोनवारक दू गामक भूमि-पत्र आ ‘बलान’ तथा ‘भुतहीबलान’क अलग शीर्षक एहि परीक्षणकेँ स्थलपर लऽ जाइत अछि। तारा मल्लिक बालूघाटपर वर्तमान सतह नापैत छथि; पुरान खेतक कटान, ऋण आ वर्तमान दखलक प्रश्न अलग रखैत छथि। गाड़ीक भारसँ नम बालूक खतरा, किशोर मजदूरक आधा भाड़ा कटबाक भय आ तुलसीक स्वयं डोरी थामब—ई भौतिक क्रियासभ कथा कैँ मेजपर सीमित नहि रखैत। किशोरक सुरक्षा लेल काम रोकब आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा रोकल समयक भाड़ा के देत—ई अलग प्रश्न अछि। नदी-पत्रक दू नामकेँ एक धारा बनएबाक त्वरित कार्यालयी प्रस्ताव तुलसी रोकैत छथि; नब सीमा-जाँचक तारीख मात्र भेटैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ नदी एतय पृष्ठभूमि नहि, ऋण, आवागमन आ शरीरक जोखिमक सक्रिय कारण अछि। परम्परागत स्मृतिक मान सँगहि नक्शात्मक दावाक सीमा स्वीकारल गेल अछि।

‘समय देब’ बनाम ‘उत्तर देब’ : कथन-कालक पुनर्संगठन

सत्रहम सँ एकैसम पाठांश धरि सुभद्रा–कबीरक दोसर बैठक कथा कैँ फेर मुख्य केंद्र पर अनैत अछि। कबीर प्रश्नक क्रम ‘नाम’, ‘समय’, ‘ककरा बतायब’ लिखैत छथि; सुभद्रा एक्के समयमे तीनू प्रश्न नहि सुलझबैत।

एकर मतलब कथा केवल नामक उत्तर विलम्बित नहि करैत, स्वयं उत्तरक प्रस्तुतिक काल बाँटैत अछि। पाठकीय प्रत्याशा रहस्य-उद्घाटनक निकट पहुँचि फेर रोकल जाइत अछि। मुदा रोकावट लेखकीय हठ सँ नहि, पात्रक अधिकार आ प्रमाणक सुरक्षा सँ उत्पन्न अछि। कबीरक थकान सुनल जाइत अछि; सुभद्राक थकान सेहो दृश्य बनैत अछि। नैरा सहमतिक पन्नाक नकल दैत छथि, निजी जन्म-सूचना नहि उतारैत; एहि प्रकार पत्रकार पात्र ज्ञानक स्वामित्वक प्रलोभनक प्रतिरोध करैत अछि। नव सम्बन्ध ‘पर्याप्त उत्तर’क रूपमे नहि, ‘पर्याप्त शुरुआत’क रूपमे स्वीकारल गेल अछि।

अन्तिम पाँच पाठांशमे कथा तीन अलग घरक कागद, पुस्तक-दोकानक खसकैत बेंच, सम्भावित कोठरीक ताख आ चाय उबालबाक दैनिक दृश्यसँ बनैत अछि। ई अन्त केवल रहस्यक बादक सौम्य विराम नहि। कबीर आ नैरा दू पुस्तक लेल अलग स्थानक बात करैत छथि, साझी किताब लेल ककर नाम लिखब प्रश्न उठैत अछि। नाम न लिखि पहिने किताब राखबाक कबीरक उत्तर एतय स्मृतिक अधिकारसँ सार्वजनिक उपयोग दिस छोट परिवर्तन अछि। पूर्ववर्ती कर्णक जन्मक अज्ञात कथा, राधाक घरेलू श्रम, सुभद्राक मर्यादा आ कबीरक अपन जीवनक पुस्तकसभ एक सन्दर्भमे आबैत अछि। एकर कलात्मक उपलब्धि ई अछि जे अन्तिम दृश्य अपन स्थिरता कागदक समाधानसँ नहि, साझा घरेलू क्रियासँ पबैत अछि।

प्रतिकूल पक्ष सेहो अछि। कमला, नीलिमा आ तुलसीक क्रमागत कानूनी-सामाजिक प्रकरणसभ विस्तृत मुख्य अन्तरंग संवादकेँ बारम्बार रोकैत अछि। अधिकांश पात्र निर्णय देबाक पहिने लिखित प्रक्रिया, अलग फाइल अथवा सहमति-स्तरक भाषा चुनैत छथि; एहि सँ अनेक आवाज अत्यन्त सुशिक्षित, एक्के प्रकारक सावधानीसँ भासि सकैत अछि। तथापि सुभद्राक चुप्पी, कबीरक असन्तोष आ तुलसीक भीजल बालूवला जूता एहि नियामक भाषाकेँ देह आ अनुभवक विविधतासँ काटि देबासँ बचबैत अछि। एहि अध्यायक सीमा आ उपलब्धि एके ठाम अछि : उत्तर विलम्बित भेला सँ लय शिथिल होइत अछि, मुदा पात्रक स्वायत्तता वास्तविक कथा-बल पबैत अछि।

अध्याय ९१ — सुविधाजनक त्रुटि

रसोइक दुआर पर ‘स्थिति बन्द’ : जीवित देहक आर्थिक विस्थापन

अध्याय सरिताक भोरक रसोइसँ शुरू होइत अछि। पुरान रसीद टाटपर पसारल छथि; राति पानि छिटकल, मुदा कागद एखन सुरक्षित अछि। सरिता अपन जीवित होएबाक निवेदन आ तीन मासक नकल-काजक बकाया अलग लिफाफामे रखैत छथि। ई भिन्नता ‘चारि जीवित चारि मृत’क द्विविभाजनकेँ नब आर्थिक परिणाम दैत अछि। गलत मृत्यु-चिह्न केवल पहिचानक प्रतीकात्मक चोट नहि, श्रमक मानदेय रोकबाक प्रशासनिक आधार बनल अछि। मुदा मृत्यु-चिह्न आ बकाया-राशिक बीचक कारणात्मक आदेश जाँचब एखन आवश्यक अछि। सरिता अपन हाथक सुपुर्दगी-रसीद, पन्ना-गणनाक पुरान बही आ सरकारी स्थिति-पत्र अलग रखैत छथि। व्यक्तिगत लेखा आ सरकारी छापक परस्पर सम्बन्ध प्रश्नक विषय अछि, कियो एक आरम्भसँ अन्तिम निर्णायक नहि।

तेसर पाठांश मूल कथा-सूत्रक एक खास भेद सुरक्षित करैत अछि : नगर पुस्तकालयक बाढ़सँ बाँचल कागद पढ़बाक योग्य बनएबाक सरिताक तीन मासक प्रतिलिपि-श्रम, ईशानक दर्शन-पाण्डुलिपिक तीन दिनक प्रतिलिपि-

काजसँ अलग अछि। ई दूनू परियोजना गड्डमड्ड करैत आलोचना लिखल जाए तँ श्रमक अवधि, वस्तु आ पारिश्रमिकक विशिष्ट प्रमाण नष्ट भऽ जाएत। सरिता तीन मास मे पुरान पन्नाक जल-दागक भीतर लिखावट पुनः उतारैत, दोसर लोकसँ किछु पाँति सत्यापित करबैत छथि; एहि विवरणसँ ‘नकल’ यांत्रिक टाइपिंग नहि, पाठक संरक्षणक विशिष्ट दक्षता भऽ उठैत अछि। पुस्तकालयक स्मृतिक अभिलेख बचेबाक लेल स्त्रीक श्रम लागल, मुदा अभिलेखीय व्यवस्थे हुनका मृत चिह्नित कऽ श्रमक मूल्य अस्वीकारलक—ई आन्तरिक विडम्बना अध्यायक बलवान विचार अछि।

पाँचम पाठांशमे लेखा-कक्षक बही तीन किश्तक स्वीकृति देखबैत अछि; भुगतानक खानामे सरिताक नामक सोझाँ ‘स्थिति बन्द’। बगलक कागदमे ‘अपूर्ण नकल-सम्पादन बाह्य सेवाक माध्यमसँ पूर्ण’ लिखल, आ रकम गिरिधारी साहक संस्थाक ठेकामे जोड़ल। एतय पहिल बेर लाभक नब दिशा प्रत्यक्ष होइत अछि। मुदा केवल बिलमे रकम जोड़लासँ बैंकमे धन पहुँचल सिद्ध नहि; छठम–आठम पाठांश एहि अन्तरक जाँच बढ़बैत अछि। सरिताक अन्तिम सुपुर्दगीक बादक कार्यादेशमे ‘अवशिष्ट कार्य’ लिखल अछि, पन्नाक विशिष्ट सीमा नहि। संस्थाक जमल प्रति आ सरिताक सुरक्षित प्रति मे एके नीली स्याहीक टेढ़ निशान अछि—प्रतिलिपिक वस्तुगत निरन्तरताक मजबूत सङ्केत, मुदा चोरीक अन्तिम फैसला नहि। एके पन्नाक नव जिल्द बनब एक तरहक सेवा भऽ सकैत अछि; लिखल अक्षरक मूल पारिश्रमिक दोबारा ककरो संस्थाकेँ देब अलग प्रश्न अछि। उपन्यास एहि भेद केँ चिह्नित करबाक कारणेँ ‘ठेकेदारक लाभ’ आ ‘ठेकेदारक दोष’केँ एक गणना नहि बनबैत।

समयक नजदीकी, लाभक स्वीकृति आ आरोपक उपयुक्त सीमा

दसम पाठांशक बैंक पुष्टि दू बाह्य किश्त गिरिधारीक संस्थाक घोषित खातामे जमा भेल बतबैत अछि। तेसर किश्त स्वीकृत छल, मुदा ओकर निकासी रोकबाक सम्भावना रहल। एहि भुगतान-तिथिक किछु दिन पहिने सरिताक मृत्यु-स्थिति फेर हाथसँ चुनल गेल। नैरा दू तिथि एक कात रखैत छथि, बीचमे तीर नहि बनबैत। एहि दृश्यपर आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ विशेष ध्यान अपेक्षित अछि : कागदपर दू घटना देखाइत अछि, मुदा एक दोसराक कारण कहबाक लेल तेसर कड़ी—आदेश, प्रवेश-अधिकार, उद्देश्यमूलक निर्देश—चाही। समयक समीपता व्याप्ति नहि। ई आख्यानगत अनुमानक उचित अनुशासनक आधुनिक उदाहरण बनैत अछि, मुदा मूल दार्शनिक ग्रन्थक प्रत्यक्ष सिद्धान्त-उद्धरण नहि। कथा अपन आधुनिक प्रमाणगत परिस्थिति प्रस्तुत करैत अछि; आलोचना शास्त्रक साधनसँ ओकरा विवेचित करैत अछि।

गिरिधारी संस्थाकेँ भेटल दू किश्त स्वीकारैत छथि, छँटाई, जिल्द, ढुलाई आ मजदूरीमे लागल खर्च अलग बतबैत छथि; बचल राशि व्यवसायिक आमदनी अछि। ओ मृत चिह्न बदलने नहि छी कहैत छथि। एकटा पक्षक बयान आत्मरक्षात्मक होइतहुँ स्वतः झूठ नहि; हुनकर घबराहट अथवा चुप्पी अपराधक प्रमाण नहि। सरिता एतय विशिष्ट श्रम-तर्क प्रस्तुत करैत छथि : गिरिधारीक संस्थाक पुनःबाँधबाक श्रमक दाम, सरिताक पहिने लिखल अक्षरक मानदेयकेँ निरस्त नहि करैत। ई अपन दाबी केँ दूसराक श्रमक विरोधमे स्थापित नहि करैत। बीसम पाठांशमे गिरिधारीक दू वास्तविक श्रमिकक मजदूरी अटकबाक सम्भावनापर सरिता स्वयं ध्यान दैत छथि। हुनकर आग्रह —विवादित लाभक जाँच हो, मुदा जे सचमुच कागद छाँटलक तकर हाजिरी आ मजदूरी न कटय—वर्गीय न्यायकेँ

व्यक्ति-दोषक सरल सूत्रसँ बाहर लैत अछि। ठेका-लाभक आलोचना संस्थामे काज करनिहार गरीब मजदूरपर क्षतिपूर्ति थोपए नहि सकैत।

एकैसम पाठांशमे रमा अपन अधिकार-सीमा स्वीकार करैत छथि। ओ न्यायालय अथवा उच्च अधिकारीक बदला रकम जब्त अथवा दोषसिद्धि नहि करि सकैत। ओ प्रस्ताव बनबैत छथि : सरिताक मानदेय पुनर्गणना, तेसर किश्तक वस्तुगत जाँचधरि रोक, पहिल दू किश्तक पन्नावार मिलान, श्रमिकक वास्तविक मजदूरीक रसीद सुरक्षित रखब, डिजिटल मृत्यु-परिवर्तनक मूल इतिहास मँगाएब। गिरिधारीक लिखित आपत्ति सेहो संलग्न होइत अछि। ई प्रक्रियाक अनेक स्वर स्वयं कथा-अर्थ रखैत अछि : आरोप लगौनिहार आ आरोपित व्यक्ति दुनूक बयान रिकॉर्ड मे रहय; निर्णयक चरणक क्रम छलांग लगा कऽ नहि काटल जाए। एखन सुनवाई तय भेल, दोषक फैसला नहि।

तेइसम पाठांशमे मृत्यु-चिह्न फेर चुननिहार साझा टर्मिनलक ‘उपयोगकर्ता-कक्ष’क सङ्केत भेटैत अछि, व्यक्तिगत लॉगिन आ आदेश-श्रृंखला अधूरी अछि। ई नव सूचना पहिल अध्यायक अनाम त्रुटिक स्थिति सँ आगाँक वास्तविक प्रगति अछि। क्रियाक समय पहिचानल गेल, मुदा व्यक्ति आ आशय नहि। पाठक जँ साझा टर्मिनलक तकनीकी परिस्थिति बिसरि सीधे एक कर्मचारी चुनैत छथि तँ उपन्यासक प्रमाण-नीति तोड़ैत छथि। तें शीर्षक ‘सुविधाजनक त्रुटि’ न्यायिक निर्णय नहि, विवेचन-प्रेरक आलोचनात्मक प्रश्न अछि : त्रुटिसँ ककर सुविधा बनल, ककर श्रम मेटल, आ कोन आदेश एकरा सम्भव कएल? उत्तर आंशिकरूपेँ भेटल अछि, शेष जाँच-अधीन।

वंशगान, मातृपरिवारक पत्र आ स्रोतक स्वामित्व

बारहम पाठांशसँ चेतन भट, नाहिद मोगल आ अनुपमा सेनक कथासूत्र प्रवेश करैत अछि। चेतन वंशगानक पारिश्रमिकमे भेटल एक पुरान कागदमे सरितासँ मिलैत नाम देखैत छथि। नामक साम्यता, स्रोतक तिथि फाटल रहब आ दाताक अधिकार अस्पष्ट होएब कारणेँ कागद वर्तमान मृत्यु-जाँचक प्रमाण नहि। चेतन कागदक उपहार, धरोहर, श्रमक दाम आ निजी जीवनक सार्वजनिक उपयोगक अलग शर्त माँगबाक निर्णय लैत छथि। एहि प्रसंगमे वंशगानक मौखिक इतिहास महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा मौखिक परम्पराक सम्मानसँ विशिष्ट कागदक नकल अधिकार स्वतः भेटैत नहि। सरिताक प्रतिलिपि-कार्यक केन्द्रिय प्रश्न—दूसराक लिखल पंक्तिक श्रेय—चेतनक गानमे नव रूप लैत अछि। दूनूक श्रम मौलिक होइतहुँ स्रोतक मूल लेखक वा पारिवारिक स्वामीक अधिकार शेष रहि सकैत अछि।

नाहिदक मायपक्षक जमीन गिरवी रखबाक प्रस्तावमे ‘परिवारक सहमति’ लिखल, हस्ताक्षर नहि। नाहिद ऋणक वास्तविक चिन्ता अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ हिस्सा-स्वामित्व, ऋण-हिसाब आ सहमतिक दस्तावेज अलग पढ़बाक अधिकार चाहैत छथि। ‘लिवरी’ पुरान नाम पन्नामे अछि, वर्तमान नदीक सीमांकनक पर्याप्त साक्ष्य नहि। अनुपमा सेनक बंगाली चिट्ठीमे मैथिली शब्द लिखल होएब सँ पूरा पत्र सार्वजनिक इतिहास-सम्पत्ति नहि बनि जाइत। अनुपमा केवल पुरान पुस्तक-व्ययक दू पाँति निजी नाम ढाँपि अनुमति दैत छथि; चेतन अपन पर्ची एखन नहि छोड़ैत। एहि तरह अनुमति सभ या किछु नहिक कठोर द्वैत नहि; सामग्री, स्रोत आ उद्देश्यक अनुसार अलग सम्भव अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक पद्धतिसँ ई उपकथा प्रासङ्गिक : लोकगीत, स्त्रीक पत्र, गामक नाम

आ पुस्तक-प्रति आधिकारिक इतिहासक बाहरक साक्ष्य उपलब्ध करबैत अछि, मुदा ओहि साक्ष्यक मालिकक निजता आ शिल्प-स्वत्व मिटा देबाक अधिकार इतिहासकारकेँ नहि।

पाठक लेल असुविधाजनक प्रश्न ई अछि जे तीनू सहायक प्रसंग सरिताक ठेका-जाँचसँ प्रत्यक्ष कारणात्मक रूपमे कतेक जुड़ैत अछि। अनुपमाक पत्रमे वर्तमान मृत्यु-प्रविष्टिक नाम नहि; चेतनक पर्ची अप्रमाणित; नाहिदक ऋण-विवाद स्वतंत्र। तेँ एहन दावा अनुचित जे सभ दस्तावेज एके गुप्त जालक हिस्सा सिद्ध भऽ रहल अछि। वास्तविक सम्बन्ध प्रमाणक उपयोग-अधिकार, श्रमक लेखा आ मानवीय सहमतिक वैचारिक समांतरता अछि। एहि अध्यायक सम्भावित शिल्पगत सीमा एहि समांतरताक अत्यधिक योजनाबद्धता : प्रत्येक नव पात्र मूल/प्रति/अनुमति अलग करैत छथि; अन्तर-विषयक समृद्धि होइतहुँ कथनस्वरमे कुछु एकरूपता आबि सकैत अछि। मुदा चेतनक गान नहि सुनएबाक अनिच्छा, अनुपमाक कागदसँ उठैत कपूरक गन्ध आ नाहिदक मायसँ पुरान ऋतु पुछब पाठककेँ फाइलक भाषा सँ बाहर व्यक्तिगत अनुभवक स्मरण करबैत अछि।

आरोपक लेखन : सरिताक स्वरसँ संस्थागत शक्ति धरि

सत्ताइसम पाठांशमे एक युवक सरिताक ठेका-विवादकेँ जानकीक पुरान गलत आरोप, गुंजाक अनधिकृत स्थानान्तरण आ मिथुनक खोजसँ जोड़ि एक ‘सम्पूर्ण जाल’ बनाबए चाहैत अछि। नैरा ई मिश्रण रोकैत छथि। एहि छोट प्रसंगक अर्थ अगिला अध्याय ९२ क प्रवेश-द्वार बनब अछि : अपूर्ण अनुसन्धानकेँ सनसनीमे बदलला सँ अनजान लोक फेर दोषी घोषित होएत। अठाइसम पाठांशमे सरिता स्वयं लिखित आरोप बनबैत छथि—बकाया रोकल गेल; बाह्य संस्थाकेँ दू किश्त भुगतान भेल; चिह्न बदलनिहारक व्यक्ति आ आदेश-स्रोत एखन अप्रमाणित। आरोपक एहि रूपमे तथ्य, सम्भावित कारण-सम्बन्ध आ अनिश्चितता एके वाक्यमे स्पष्ट रहल अछि। सरिता चुप नहि; मुदा आरोपकेँ प्रमाणक सीमासँ बाहर नहि लऽ जाइत छथि। ई पात्रक गतिशीलता अछि : पहिल अध्यायमे मृत घोषित जीवित स्त्री, एतय अपन श्रमक अधिकार आ संस्थाक लाभक प्रश्न लिखित रूपमे खुद उठबैत छथि।

अन्तिम कार्यालय-दृश्य मे अधिकारी कथाकेँ ‘केवल लेखा-त्रुटि’ कहि निपटेबाक सम्भावना अछि; ठेकेदार वैध कामपर भुगतान रोकबाक विरोध करि सकैत अछि। दुनूक सुनवाई बचल अछि। एतय उपन्यास नैतिक ध्रुवीकरणक बजाय भविष्यक न्याय-प्रक्रियाक वास्तविक असमापन चुनैत अछि। साहित्यिक रूपेँ अध्यायक प्रबल उपलब्धि एहि कारण-सम्बन्धक क्रमिक निर्माणमे अछि : प्रथम भुगतान-निरोध, अस्पष्ट ‘अवशिष्ट कार्य’, वस्तुक पाठान्तर, बैंकक दू वास्तविक किश्त, उपयोगकर्ता-कक्षक अपूर्ण इतिहास। सीमाक रूपमे देखल जाए तँ जाँचक प्रत्येक मोड़पर पात्रसभ लगभग विधिशास्त्रीय शुद्धतासँ आपत्ति लिखैत छथि; घटनाक भय आ क्रोध दीर्घ संवादमे नियंत्रित भेल रहैत अछि। तथापि सरिताक रोटी गरम करब, बच्चाकेँ टुकड़ा देब, आ ‘नाम ठीक भेल?’ प्रश्नपर अपूर्ण उत्तर सामाजिक हानिक देहगत यथार्थ बचबैत अछि। त्रुटिक लाभ स्पष्ट भेलासँ पूर्ण साजिश सिद्ध नहि, मुदा अन्यायक ठोस स्वरूप आब अस्वीकार करब कठिन अछि।

अध्याय ९२ — आरोपक भङ्ग

बाँसक चटाई आ दोहरायल आरोप : न्यायक आर्थिक काल

जानकी टूटल बाँसक चटाई सुधारैत छथि; छपल पर्ची बेरामे फँसल अछि, जाहिपर दू कटल चेहरासँ बच्चा-चोरीक आरोप बनाओल गेल। ओ पर्ची फाड़ैत नहि, छपाइक दिन आ दोकानदारक निशान देखिकऽ प्रमाणक वस्तु रूपमे सुरक्षित रखैत छथि। एहिमे उपन्यासक नैतिक विवादक एक आवश्यक भौतिक आयाम अछि। आरोप पूर्वमे सार्वजनिक रूपसँ सुधारल गेल रहितहुँ फेर छपल; कथात्मक समयमे झूठ मात्र अतीतक अपराध नहि, पुनः उत्पादित वर्तमान घटना अछि। सरयू अपन बिक्रीक बाट बदलि देने छथि; हुनकर नतिनीक सोझाँ ग्राहकक अपमानजनक प्रश्न अबैत अछि। एहि विवरणसँ ‘बदनामी’ अमूर्त प्रतिष्ठा हानि नहि रहैत—बिक्री घटब, बालिकाक स्मृतिमे आरोप प्रवेश करब, रोजी लेल दोसर बाट चुनब ओकर काल-स्थानिक प्रभाव अछि। जानकीक प्रश्न ‘झूठक दाम के चुकाओत?’ कथाक आर्थिक आ नैतिक दूनू धागा एकत्र करैत अछि।

महतो छापाखानाक मालिक पुरान सुधार-पत्रक बादो नव आरोप छापने रहथि; हुनकर स्पष्टीकरण जे भयक शीर्षक सहज अछि, सुधारक भाषा कठिन। ई बाजारक भाषिक अर्थशास्त्रक कठोर टिप्पणी अछि : सनसनी शीघ्र बिकैत अछि, सावधानी कथनक गति घटबैत अछि। मुदा जानकी महतोक पूरा निजी ग्राहक-बही बजारमे खोलबाक माँग नहि करैत छथि। नैरा निर्दिष्ट तिथि-सीमाक आदेश-पर्ची आ भुगतान-रसीद संरक्षित करबाक लिखित निवेदन दैत छथि। ई प्रतिरोधक अर्थ स्पष्ट अछि—गलत प्रचारक विरुद्ध उठल अधिकार कोनो अन्य व्यक्तिक सूचना-अधिकारक सर्वथा नाशक साधन नहि बनय। प्राप्तिक नकल जानकी अपन झोरामे रखैत छथि। एखन आदेश-बहीक परीक्षण वा छापाखानाक दोषक अन्तिम निर्णय भेल नहि, मुदा प्रमाण मेटएबाक जोखिम विरुद्ध पहिल संस्थागत कार्रवाई भेल।

खण्डित आरोप, अवशिष्ट जाँच : तीन बच्चाक कथासूत्रक कठोर पृथक्करण

विद्यालयक बैठकमे असद सैयद पुरान सुधार-पत्र अनैत छथि; साजिद नट तीन अलग मूल दृश्य—नाटकक अभ्यास, वनफाटक आ सुकठीक ढुलाई-आँगन—क विवरण अलग-अलग रखैत अछि। कटल चित्रमे एके दृश्य बुझाओल गेल रहए, जबकि मूल दृश्य अलग दिन, अलग ठामक। जोड़ल चित्रक तकनीकी निर्माता एखन अज्ञात अछि; तथापि जानकीक दल द्वारा बच्चा लऽ जेबाक जो आरोप एहि दृश्यसभपर आधारित छल, ओकर तथ्यगत आधार खण्डित भऽ चुकल। एहि ठाम ‘आरोपक भङ्ग’ शीर्षकक सीमित, पर ठोस अर्थ अछि। झूठ आरोप कैं ‘अब किछु नहि कहि सकैत छी’ कहि शून्य नहि करबाक चाही—मुख्य आधार गलत सिद्ध भेल। दोसर दिस, कटल चित्र को बनौलक, छपबाक नव आदेश के देलक, क्षतिक दाम कतेक—ई प्रश्न अनुत्तरित अछि।

छठम पाठांशक अभिभावक पूछैत छथि जे तखन बच्चा हराएल सेहो झूठ की। जानकी तीन वस्तु स्पष्ट करैत छथि : लताक बेटा मिथुन वास्तवमे हराएल अछि; चमेलीक बेटी गुंजाकैं बिना अनुमतिक श्रमस्थल धरि पहुँचएबाक साक्ष्य भेटल अछि; जानकीक दलकैं कटल दृश्यसँ बच्चा-चोर कहब गलत। एहि त्रिविभाजनकैं आलोचनामे अक्षुण्ण राखब अनिवार्य। पहिल प्रकरण लुप्त व्यक्तिक खोज, दोसर अनधिकृत श्रम-स्थानान्तरणक अनुसन्धान,

तेसर गलत आरोपक सार्वजनिक निरसन। एकटा सफल सुधार बाकी दू संघर्षक समाधान नहि। लता स्वयं पुछैत छथि जे हुनकर बेटाक निजी फाइल सुधार-पत्रमे किएक आएत; नैरा नाम, कपड़ा आ खोजक निजी सूत्र नहि छापबाक आश्वासन दैत छथि। एतय शोकक निजता आ आरोपितक प्रतिष्ठा एक-दोसरक प्रतिद्वन्द्वी नहि, एके सभामे सुरक्षाक अलग अधिकार छथि।

बाजार-समितिक सदस्य जानकीक दलक सभ सदस्यक फोटोसहित ‘चरित्र-प्रमाण’ माँगैत अछि। सरयू स्पष्ट प्रतिवाद करैत छथि जे बदनामी लेल छपल मुँह फेर निर्दोष साबित होएबाक मञ्चपर प्रदर्शित किएक हो। हिंसाक दृश्य-प्रणाली कैं सुधारक दृश्य-प्रणाली बनबैतहुँ व्यक्ति-सहमति बिसरि जेब दोसर चोट हएत। समितिक संशोधित प्रस्तावमे गलत पर्ची हटाउब, सुधार लगाउब, आर्थिक क्षतिक आवेदन अलग दाखिल करब आ पहचानक अनावश्यक प्रकाशन रोकब सम्मिलित अछि। न्याय एतय ‘दोष न लागल’क घोषणासँ बेसी वितरणक सुधारक क्रिया अछि : झूठ जेतय पहुँचल, सुधार सेहो ओहि स्तरक दृश्यतामे पहुँचे। मुदा निर्णयक कार्यान्वयन अगिला दिनक प्रश्न अछि; केवल प्रस्तावपास भेला सँ पूरा बाजार तुरन्त बदलि नहि गेल।

गुंजाक स्वतंत्र आवाज : बाल-सुरक्षा आ श्रमक अवैध अधिग्रहण

चमेली अपन बेटी गुंजाकैं सार्वजनिक उद्धार-प्रदर्शनमे नहि रखए चाहैत छथि। बच्चीक सुरक्षित सम्पर्कक पहिल अनुमति भेटल, मुदा घर-वापसीक प्रक्रिया पूर्ण नहि। बाल-सुरक्षा अधिकारीक कक्षमे पिछला किरायाक कार्यालयक रजिस्टर, पहिल परिवहन-पर्ची आ सिउनाइ-कक्षक प्राप्ति-बहीक क्रम, तिथि आ सम्पर्क-सङ्केत मिलैत अछि। एतयसँ कार्यालयसँ सिलाइ-कक्ष धरि मध्यस्थ-मार्गक अस्तित्व केवल अफवाह नहि रहल। मुदा कोन व्यक्तिक केहन आशय छल, कियो छल-कपट केलक की, बच्चीकैं के रोकलक—ई व्यक्ति-विशेषक आपराधिक प्रश्न एखन अलग जाँचमे अछि। ‘दलाल पकड़ाएल’क कर्मचारीक जल्दबाजी वरिष्ठ अधिकारी रोकैत छथि। एहि प्रसंगमे अभिलेखक अन्तरसम्बन्ध वास्तविक कथात्मक सूचना बढ़बैत अछि; फेरो दोषक उत्तर समयपूर्व नहि निकलैत।

गुंजाक संरक्षित बयान बाजारक सभाक सामग्री नहि बनल। कार्यकर्ता हुनकर अनुमति सँ बस एतबे बतबैत छथि जे ओ फेर कक्षामे जाएब चाहैत अछि, सिलाइकैं पूर्णतः त्याग नहि करैत, आ अर्जित मजदूरीक हिसाब चाहैत अछि। चमेलीक उत्तर गहन अछि—गुंजा जँ स्वेच्छासँ सुई उठाएत तँ ओकरा अपराधक निशान मत मानू। एतय अवैध बाल-श्रम-स्थानान्तरण आ शिल्प-सीखबाक इच्छाक भेद राखल गेल। बच्ची मात्र वयस्कक न्यायसंग्रामक वस्तु नहि; हुनकर शिक्षा, स्वेच्छा, श्रमक बकाया आ जीवनक आगाँक रुचि पृथक चिन्ता छथि। तथापि कथावाचक गुंजाकैं सीधे दीर्घ प्रथमपुरुष वाणी नहि देलक; हुनकर इच्छा कार्यकर्ताक माध्यमसँ पाठकधरि पहुँचैत अछि। सुरक्षा दृष्टिसँ ई मध्यस्थता उचित भऽ सकैत अछि, मुदा नारीवादी/बाल-कथन-अधिकारक आलोचनामे प्रश्न रहैत अछि जे बालिकाक स्वतन्त्र कथात्मक आवाज एखन कतेक सुनाइत अछि। कथानक भितर निजताक रक्षा आ कलात्मक रूपमे प्रत्यक्ष कथनक अभावक बीच ई तनाव बचल अछि।

लता अधिकारीक समक्ष गुंजाक बस-अड्डा-समय आ मिथुनक हाटक समयक सीमित सम्भावित मेल सुनैत छथि; मिथुन ओहि ठाम छल, एहन प्रत्यक्ष चिन्ह नहि। ओ गुंजाक कागदसँ अपन बेटाक कथा बनेबाक बजाय तेलदोकान

आ टूटल फीताक अलग मूल गवाही पुनर्जाँच माँगैत छथि। दुःखसँ प्रेरित अनुमानक एहि सचेत प्रतिरोधमे लताक पात्र-विकास देखाइत अछि। अनेक अभिभावकक कथा समान भावनामे बान्हल जा सकैत अछि, मुदा दस्तावेजक अलग उत्पत्ति आ स्थलकाल नहि मेटाएल चाही। लताक प्रक्रिया पाठकक अपन रोमांचकारी ‘सभ एक जाल’ पढ़बाक अभिलाषा कें प्रतिप्रश्न दैत अछि।

सिकिलगर, कलार आ औषधि-वितरण : आरोपक फैलैत सामाजिक व्यास

तेरहम सँ पन्द्रहम पाठांशमे नजीर सिकिलगर सामान्य कृषि-औजारक मरम्मति करैत छथि। हुनकर दोकानपर ‘हथियार बनबैत अछि’ लिखल गेल; कारण एक अनाम खेपमे ‘लोहेक मरम्मति’क चर्चा। निरीक्षकक सामनें नजीर हँसिया, कुदाल आ रसोइक धातुक पाटक मरम्मतिक दिन, माप आ भुगतानवला रसीद देखबैत छथि। ‘लोहेक कौशल हथियार बनाबए सकैत अछि’क सम्भावना सँ ‘एहि खेपक दोषी नजीर’क निष्कर्ष नहि निकलैत। निरीक्षणमे आरोपक समर्थन करनिहार वस्तु जब्त नहि भेल; अनाम खेपक मूल लदान-पत्रक प्रश्न खुलल अछि। प्रशिक्षु बटेसर ग्राहकक पूरा घरक फोटो बाँटबाक बदला ग्राहक-अनुमति लऽ पहचान-चिह्न झाँपैत अछि। एहि प्रकार व्यावसायिक प्रतिष्ठा, गोपनीयता आ मजदूरी तीनू क्रियात्मक परिणाम अछि—सैद्धान्तिक उदाहरण मात्र नहि।

बीना कलारक पैतृक सम्पत्तिक हिस्सा आ अपन दोकानक कमाइक पूँजी अलग अछि। भायक दावा जे ओ दोकान चलबैत छथि, तें पैतृक हिस्सा नहि चाही, निजी उद्यमक आधार पर पारिवारिक अधिकारक निरसन करबाक प्रयत्न अछि। बीना घरक चिकित्सकीय खर्चक वैध प्रश्न स्वीकारैत छथि, मुदा मूल रसीद, बाँटल देनदारी आ स्वामित्व-पत्र माँगैत छथि। दोसर ठाम थोक व्यापारी तीन बरखक एकाधिकार लेल अग्रिम प्रस्ताव दैत अछि; बीना अपन खरीदक स्वतन्त्रता गिरवी नहि रखैत छथि, भले नव दोकानक उद्घाटन देरि हो। महिला उद्यमक स्वायत्तता एतय केवल इच्छा नहि; अल्पकालिक लाभ छोड़बाक वास्तविक लागत सहित निर्णीत विकल्प अछि। ई कर्ण-पर्वक पूर्व ‘राधाक श्रम’क दीर्घ प्रतिध्वनि अछि, मुदा दुई स्त्रीक समय, संस्था आ आर्थिक साधन भिन्न छथि।

विभा अग्रहरीक औषधि-वितरणमे मूल्य, ढुलाई, चालकक मजदूरी आ रोगीक भुगतान-क्षमता भिड़ैत अछि। शंका उठल एक बक्साक बाहरी लेबल भीतरक वितरक-पर्चीसँ मेल नहि खाइत; ओ बक्सा रोकि प्रमाण सुरक्षित राखल गेल, शेष वैध खेप चिकित्सकक लिखित प्राथमिकताक अनुसार बाँटल गेल। एहिठाम सहायता आ आयक यथार्थ अलग नहि—विभा लाभक एक हिस्सा छोड़बाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा लागत लुकबैत नहि। सहायक समान लेबलसँ औषधि-खेपकें बच्चा-स्थानान्तरणक अपराध सँ जोड़ि देब चाहैत अछि, विभा मूल लदान-पत्र माँगैत छथि। अनियमित बक्सा जाँच-अधीन अछि, वैध औषधि रोकल नहि गेल। एक संशय अनेक संस्थामे फैलि कऽ कतेक लोकक नियमित काज थमा सकैत अछि, ई कथा चिकित्सकीय समयक विरुद्ध निरूपित करैत अछि।

घोषणा, कार्यवाही आ बाजारक अपूर्ण सुधार

तेइसम सँ छब्बीसम पाठांश मे सार्वजनिक बैठकक वास्तविक निर्णय आयल अछि। महतो सुधारक सूचना भेटलाक बादो जाँचबिना आरोपवला पर्ची पुनः छपने होएब स्वीकार करैत छथि; छपल प्रतिक संख्या आ वितरण-

स्थलक सूची देबाक समय लैत छथि। जानकी केवल माफी नहि, जतय बदनाम कएल गेल ओतहि सुधार माँगैत छथि। समिति सार्वजनिक प्रदर्शन रोकबाक तथा समतुल्य दृश्यतामे सुधार लगएबाक निर्देश अपन अधिकार-सीमामे जारी करैत अछि। आर्थिक क्षतिक आवेदन स्वीकार भेल, रकमक निर्धारण नहि; बाल-सुरक्षा जाँचक मूल साक्ष्य अलग सुरक्षित रखबाक आदेश; प्रेसक ग्राहकक दायित्वपर सुनवाई शेष। ई बहुस्तरीय निर्णयक परिणाम देखब जरूरी : आरोपक भङ्ग सम्पन्न, पूर्ण आर्थिक प्रतिपूर्ति नहि; मध्यस्थ-मार्गक प्रमाण मिलल, अपराधी पहिचानक अन्तिम न्याय नहि।

सत्ताइसम पाठांशमे सरयू फेर बाजारमे दरी बेचैत छथि; एक ग्राहक वस्तुक गाँठ आ कीमतक आधारपर खरीदैत अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत अछि—एकटा बिक्री सम्मानक समग्र वापसी नहि। ई नगण्य बुझाइत घटनाक वास्तविक घनत्व बेसी अछि : आरोपित स्त्री अपन वस्तुक मूल्यपर बातचीत पुनः शुरू करि सकलीह। बाजारक सामाजिक दृष्टि एखन पूर्ण बदलिए नहि, मुदा बिक्रीक सामान्य क्रिया हुनकर कथात्मक अस्तित्वक केन्द्र फेर बनैत अछि। अठाइसम पाठांशमे नजीरक दिहाड़ी-काज, बीनाक पैतृक कागदक प्रतीक्षा आ विभाक वैध दवा-प्राप्ति अलग परिणाममे चलैत अछि। नवम अध्यायक समान, तीनू पात्र ‘निर्दोष’ घोषित भेलाक दृश्यबाजीक बाद निष्क्रिय प्रतीक नहि बनैत; ओ अपन कारोबारक अनिर्णीत निर्णयसभक संग जीवित रहैत छथि।

अन्तिम पाठांश एक अतिरिक्त स्रोत-संयोग देखबैत अछि : गुंजाक मध्यस्थ-मार्गक दू चरण अभिलेखसहित जुड़ि गेल, मुदा एक ढुलाई-क्रमाङ्क औषधि-वितरणक रोकल बक्सा आ अनाम ‘लोहेक मरम्मति’वला पन्नामे तुलना लेल उठल। नैरा समान अंकक कात तुरन्त व्यक्तिक नाम नहि लिखैत छथि; मूल लदान-अभिलेख आ वैध मालिकक रसीद माँगैत छथि। एतय पाठकक भविष्य-आशा तीव्र होइत अछि; एकटा जालक सम्भावना कथानकमे वास्तविक शोधप्रश्न बनि सकैत अछि। मुदा समान अङ्क कारणक पर्याप्त व्याप्ति नहि। पूर्व अध्याय ७५ मे समान ‘७’क गलत नतीजासँ जे सावधानी आयल छल, ओकर नव अनुशासन ई। पिछला गलत आरोपक सुधारो एही पाठकेँ अनिवार्य बनबैत अछि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ असुविधाजनक प्रतिपक्ष

अध्यायक शक्ति अनेको ‘आरोप’केँ एके नैतिक अर्थमे नहि राखब अछि : जानकीपर दृश्य-छेड़छाड़सँ बनल आरोप तथ्यगत रूपसँ खण्डित; गुंजाक स्थानान्तरणक अभिलेखीय श्रृंखला पुष्ट, आपराधिक दायित्व शेष; नजीरक कौशलपर आधारित आरोप अप्रमाणित; औषधि-बक्साक वास्तविक लेबल-असङ्गति पुष्टि पाबि जाँच-अधीन; बीनाक पैतृक हिस्सा आर्थिक मतभेदसँ दबि सकैत अछि। एहि अनेक रूपक बीच पाठककेँ ‘गलत आरोप’ आ ‘वास्तविक अनियमितता’ दुनू देखबाक अभ्यास भेटैत अछि। तइयो आठमे सँ ककरो निन्दा पूर्णतः मेटि गेल एहन दावी उपन्यास नहि करैत।

एक वास्तविक कलात्मक सीमा ई अछि जे जानकीक मुख्य संघर्षक बीच नजीर, बीना आ विभाक तीन उपकथा क्रमशः स्वतंत्र ‘प्रमाणक सही उपयोग’क पाठ बनि अबैत अछि। अत्यधिक समान नैतिक वाक्य-विन्यास पाठकक भावात्मक डुबकी तोड़ि सकैत अछि; अलग पात्रसभक बोलीमे अधिक व्यक्तिगतरूप भिन्नता सम्भव छल। नजीरक लोहेक ठकठक, बीनाक गल्लाक हिसाब, विभाक गोदामक मुहर, सरयूक दरीक गाँठ—ई वस्तुगत

विवरण शास्त्रीय शिक्षाक ऊपरी एकरूपता कम करैत अछि। सबसँ महत्त्वपूर्ण सीमा ई जे सार्वजनिक सुधारक लिखित आदेश आ बजारमे ओकर वास्तविक पालन एखन समान नहि; अगिला अध्यायसभमे एहिक व्यावहारिक प्रभाव नहि देखाओल गेल तँ अहाँक सन्देह आलोचनात्मक रूपसँ बचल रहत। तथापि सरयूक छोट बिक्री आ जानकीक प्राप्ति-पत्र एहि बिन्दुपर वास्तविक, सीमित कथा-फल उपलब्ध करबैत अछि।

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८९–९२ क संयुक्त मूल्यांकन

घटनाक क्रम : वर्गीकरण सँ परिणाम धरि

चारू अध्यायक घटना-धुरी एक परस्पर निर्भर, मुदा असमान क्रम बनबैत अछि। अध्याय ८९ मे रमा चारि जीवितक झूठ मृत्यु आ चारि दिवंगतक सक्रिय खाताक जाँच अलग करैत छथि; सरिताक फेर हाथसँ चुनल ‘मृत’ चिह्न डिजिटल इतिहासक नव संकेत बनैत अछि। अध्याय ९० एहि अभिलेखीय अन्वेषणसँ प्रत्यक्ष सम्बन्धित कागदक परिणाम नहि दैत, बल्कि कबीर–सुभद्राक गोपनीय भेटमे ज्ञान पाबबाक नैतिक शर्त स्थापित करैत अछि। अध्याय ९१ मे सरिताक गलत मृत-स्थिति आ बकाया श्रमक लाभान्वित ठेका बीच प्रमाणिक कड़ि क्रमशः खुलैत अछि—दू किश्तक बैंक पुष्टि होइत अछि, मनसाय आ डिजिटल उपयोगकर्ता अनिश्चित। अध्याय ९२ मे जानकीक गलत सार्वजनिक आरोपक आधारक खण्डन सामाजिक-अर्थगत नतीजा पबैत अछि, किन्तु गुंजाक वास्तविक अनधिकृत स्थानान्तरण आ मिथुनक स्वतंत्र खोज जारी अछि। एहि क्रममे ‘नाम’क प्रश्न धीर-धीरे ‘काज, लाभ, दृश्यता आ उत्तरदायित्व’क प्रश्न बनैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रणक फेरबदल सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ८९ क आरम्भमे रमाक संस्थागत मेज, पाछाँ सुधा–बसन्ती–शारदा–नाहिदक क्षेत्र, अन्तमे सरिताक रसोइ। ९० मे सुभद्राक आन्तरिक समयसँ कबीरक अधीरता, मध्यस्थ नैरा आ अन्य स्त्रीक सम्पत्ति-अधिकार, अन्तमे सामूहिक किताबक खाली ताख। ९१ मे सरिता–गिरिधारीक प्रतिपक्षी कथन आ रमाक सीमित अधिकारी-दृष्टि; ९२ मे जानकी–सरयूक व्यावसायिक हानि, बाल-सुरक्षा जाँचक गोपनीयता आ नजीर–बीना–विभाक समानान्तर श्रम। ई सर्वज्ञ कथावाचकक निर्बाध सर्वदृष्टि नहि; अनेक दृश्यसँ जानकारी देल जाइत अछि, तथापि व्यक्ति-विशेषक अज्ञात आशयक घोषणा रोकल गेल अछि। कथा पाठककेँ शोधकर्ताक काम दैत अछि, अदालतक सजाय देबाक कुर्सी नहि।

चारि स्रोत-सम्बन्ध आ प्रमाणक तात्पर्य

एहि चतुष्कमे प्रमाणक चारि गुणात्मक अवस्था स्पष्ट अछि : (१) प्रत्यक्ष उपस्थिति आ प्रमाणित मृत्यु जेकाँ मूल स्थिति; (२) कागदक अभिरक्षा, मूल–नकल आ व्यक्ति-अनुमति; (३) भुगतान, समय-लॉग आ संस्थागत लाभक कारणात्मक सम्भावना; (४) सार्वजनिक आरोपक तथ्यगत निरसन तथा स्वतंत्र अपराध-जाँचक आवश्यक अधिकार। आख्यानगत पक्ष–साध्य–हेतु, सव्यभिचार अथवा असिद्ध कारणक विवेचन एहि ठाम विधि रूपमे उपयोगी, मुदा शास्त्रीय प्रमाणक नाम लिखि सरकारी विधिक अंतिम फैसला घोषित करब नहि। भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्यक दृष्टिसँ एक प्रश्न उठैत अछि जे प्रमाण-विवेचनक बारम्बार व्याख्या पात्रस्वर कैँ शुष्क करैत अछि की। उत्तर मिश्रित अछि : कहीं पात्र न्यायशास्त्रीय तर्क बहुत सफाइ सँ बजैत छथि, मुदा सुभद्राक

सन्दूक बन्द रखब, सरिताक रोटी, नाहिदक पत्र, जानकीक चटाई आ सरयूक दरी कथाक रसात्मक देह बनौने रखैत अछि। करुणा, नैतिक रोष, आशंका आ राहतक छोट अनुभव इहे वस्तुसभसँ उभरैत अछि।

अन्तर्पाठक दृष्टिसँ कर्ण-पर्वक राधा–कर्ण सम्बन्ध ‘पालनक सत्य बनाम जन्मक पूर्वेतिहास’क नैतिक आधार पूर्वे देलक। अध्याय ९० ओहि प्रश्नकेँ कबीर–सुभद्राक वर्तमान अधिकारमे परिवर्तित करैत अछि। मुदा ८९, ९१ आ ९२ मे कोनो स्वतंत्र प्राचीन महाभारत दृश्य नहिओ रहने ‘कर्ण’ पर्वक सम्बन्ध टूटैत नहि, किएक तँ नामक सार्वजनिक सामाजिक अर्थ, व्यक्तिक अभिज्ञान आ जन्म-उपाधिसँ बाहर श्रमक मूल्य नव रूपमे चलैत अछि। एकरे संग ऐतिहासिक समानता बनाम कथात्मक पुनरुपयोगक सीमा बनौने राखब चाही।

शिल्पगत उपलब्धि आ समग्र शंका

चारू अध्यायक एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि असम्पन्न परिणामकेँ स्पष्ट रूपसँ अंकित करब अछि। चारि जीवितक मृत्यु-प्रविष्टि एखन औपचारिक रूपसँ सुधरल नहि; सुभद्राक पत्र पूर्ण खुलल नहि; सरिताक मानदेय भेटल नहि आ डिजिटल दोषी पहिचानल नहि; मिथुन नहि भेटल आ गुंजाक घर-वापसी पूर्ण नहि; जानकीक क्षतिपूर्ति तय नहि। एकरा ‘प्रगति नहि भेल’ सेहो नहि कहि सकैत—बैंकक दू किश्तक प्रमाण, मूल संवाद-सहमति, छपाइ-आदेशक संरक्षण, मध्यस्थ-मार्गक प्रमाण आ सुधार-पत्रक सार्वजनिक निर्णय वास्तविक परिवर्तन छथि। कथात्मक घनत्व ई परिवर्तनक महत्त्व सँ आँकल जाय, आख्यानक प्रति हजार शब्दक यांत्रिक सङ्केतसँ नहि।

पुनरावृत्तिक खतरा सेहो गम्भीर अछि। मूल/नकल, नाम/अधिकार, आवेदन/फैसला, समान अङ्क/अलग कारण जेकाँ भेद अनेक अध्यायमे बारम्बार आलोचनात्मक वाक्य रूपमे उभरैत अछि। दीर्घ उपन्यासक २१६ अध्यायक स्तरपर ई पद्धतिगत कठोरता कथन-लयकेँ भारी बना सकैत अछि। तकर उचित आलोचनात्मक कसौटी मात्र ‘दोहराओल अछि’ नहि, बल्कि प्रत्येक नब आवर्तनमे कोन परिणाम बदलल से पूछब हएत। एहि चतुष्कमे बैंकक वास्तविक भुगतान, सुभद्राक लिखित सहमति, सामाजिक पर्ची पर सुधार-निर्देश, आ गुंजाक मध्यस्थ-मार्गक दस्तावेजी स्थापना नब परिणाम छथि; तेँ सर्वथा स्थिर पुनरुक्ति कहल उचित नहि। तथापि पात्रसभक भाषा आ सुनवाई-रचनाक विविधता भविष्यक पर्वसभमे फेर जाँचबाक विषय रहत।

अध्याय ९३ — खेपक सम्बन्ध

अस्पतालक ओसारा : आवश्यक सेवा आ संदिग्ध वस्तुक दू समय

आरम्भक दृश्य अस्पतालक पछिला बरामदामे माधव रोनियारक तीन वापस पठाओल पेटी सँ बनैत अछि। पेटीक बाहरी औषधि-पर्ची, भीतरी वितरकक मुहर आ मूल वितरण-दस्तावेजक असमानता एहि वस्तुकेँ संदिग्ध बनबैत अछि; तकनीकी परीक्षण बिना ‘नकली दवा’ सिद्ध नहि करैत। माधव बिना देखल मालक वापसीपर हस्ताक्षर नहि करैत छथि; विभा अग्रहरी रोगीकेँ मान्य भण्डारसँ दवा उपलब्ध करबाक आग्रह करैत छथि। एहि दू प्रतिक्रियामे एकहि संकटक दू समय अछि। प्रशासनिक समय निरीक्षण, प्रतिलिपि आ प्रयोगशाला-परीक्षणक प्रतीक्षा माँगैत अछि; रोगीक देह आजुक औषधिक प्रतीक्षा नहि कऽ सकैत। कथा दूनूकेँ एक-दोसराक विरोधी बनबैत नहि, बल्कि जाँचक अधीन माल रोकि मान्य भण्डारसँ तत्काल सेवा चलबैत अछि। परिचारिकाक पाँच रोगीक

नामरहित आवश्यकता वस्तु-प्रमाणक विषयकेँ वास्तविक जीवनरक्षासँ जोड़ैत अछि; पाठक लेल ‘जाँच’ मात्र कागदी विलम्ब नहि रहि जाइत।

पन्द्रहम पाठांशमे फार्मासिस्टक स्वीकारोक्ति जे बाहरी लेबल नहि मिलल, तेँ वितरण रोकल गेल, ‘लेबल-विसंगति’ आ ‘दवाक गुण-दोष’क पृथक कथन-श्रेणी बनबैत अछि। वैध वस्तुक प्रमाण अभाव आ वस्तु अवैध होएबाक प्रत्यक्ष सकारात्मक साक्ष्य समान नहि। माधवक लागतक त्रिभाजन—मूल खरीद, ढुलाई, वापसी—ओकर निर्णयकेँ नि:स्वार्थ उदारताक निराकार कथा नहि बनए दैत; आर्थिक हानि वास्तविक अछि। तथापि ओ रोगीक देहपर लागत थोपब अस्वीकारैत छथि। वृद्धाक पोता लेल अविलम्ब दवा माँगबाक प्रसंग एहि नैतिक निर्णयक दोसर परीक्षा थिक। वृद्धा केँ औषधि देबाक वास्तविक वैकल्पिक प्रक्रिया बताओल जाइत अछि, झूठ आश्वासन नहि। एहिठाम करुण रस मात्र पात्रक सहानुभूतिसँ नहि, संसाधन-वितरणक विशिष्ट व्यवस्थासँ सघन होइत अछि। एकर सीमा ई जे पाँचू रोगीक अलग उपचार-अवस्था दृश्य नहि बनैत; ओ सामूहिक आवश्यकता रूपमे रहि जाइत छथि।

सामानक समान अङ्क : संबंधक सकारात्मक प्रमाण, अपराधक निषेधात्मक सीमा

रमाक कक्षमे तीन थैलीक पृथक्करण दृश्य-विन्यासक मूल नाभि अछि : अस्पतालक औषधि-पत्र, यूसुफ अंसारीक कपड़ागाँठक रसीद आ पुलिस द्वारा सील कएल अनधिकृत हथियार-संबन्धी धातुक पाटक जब्ती-सूची। तेसर पेटीक बरामदगी पुलिसक प्रारम्भिक लिखित निरीक्षणमे दर्ज अछि, यद्यपि धातुक तकनीकी वर्गीकरण आ स्रोतक अन्तिम जाँच शेष अछि। एहि वास्तविक बरामदगीकेँ कहानी मेटबैत नहि; मुदा दू आन वैध व्यापारिक खेपकेँ बरामदगीक संग घोलि आरोप बनाबय सेहो नहि दैत। मध्यस्थ बुकिङ-खिड़कीक साझा अङ्क, प्राप्ति-मुहर आ शुल्क-जमा एकटा ठोस संस्थागत सम्बन्धक दिशा देखबैत अछि। गाड़ीवान महेन्द्रक व्याख्या अनुसार अङ्क गाड़ीक स्वामित्वक नहि, बुकिङ-खिड़कीक; ओहि कार्यालयमे अलग पालिमे कर्मचारी आबि सकैत छलाह। अतः ‘साझा खिड़की’ साध्यक लेल पर्याप्त हेतु होइतो ‘साझा अपराधी’क साध्य लेल पर्याप्त नहि।

इहाँ आख्यानगत पक्ष–हेतु–साध्यक प्रश्न कथाक भीतर लगभग प्रयोगशालाक अनुशासन बनि अबैत अछि। पक्ष यदि तीन ढुलाई-पत्रक संस्थागत सम्पर्क अछि, मूल बही, प्राप्ति-मुहर, गेटक समय आ बैंक जमा तकर हेतु बनि सकैत अछि। मुदा एक मालिक, एक आपराधिक उद्देश्य अथवा एक हिंसक आदेशक सम्बन्ध सिद्ध करबाक लेल आदेशकर्ता, वस्तुक अभिन्नता आ विशिष्ट नियन्त्रणक साक्ष्य जरूरी। तेँ एके वजनवला धातुक पेटी आ औषधि-पेटी सँ एके स्वामित्व निष्कर्षित करबाक सहायकक जल्दबाजी नैरा रोकैत छथि। ‘पाँच सेरक कुदाल’ आ समान वजनक बीज-बोराक तुलना साधारण कारीगरक उदाहरण अछि : सदृश परिमाण वस्तुगत तादात्म्य नहि। एकर शास्त्रीय उपयोग आलोचकक व्याख्या अछि; पात्र स्वयं औपचारिक न्यायसूत्रक भाष्य नहि दैत।

अठारहम पाठांशमे समान कार्यालयक क्रमागत बही-पन्ना, बैंक-जमा आ गेट-पंजी मिलिते बुकिङ-मध्यस्थक उपयोगक वास्तविक पुष्टिक एक स्तर भेटैत अछि। तकर बाद रमा गलत प्रेस-वाक्य हटबैत छथि—अस्पतालक दवा आ हथियार ‘एके गिरोहक’ कहबाक प्रमाण एखन नहि। ई केवल पत्रकारिताक सावधानी नहि; कथा अपने

रहस्यक सनसनीपूर्ण समाधानक अवसर अस्वीकारैत अछि। प्रतिकूल पक्ष ई जे समान तर्कक 'संबंध बनाम दोष' भेद अलग-अलग संवादमे बारम्बार स्पष्ट कएल गेल अछि; पाठकक स्वायत्त अर्थनिर्माणिक अवकाश किछु घटैत अछि। तथापि एकर उपयोगिता यूसुफ, हरिनारायण आ माधवक तत्काल आजीविकापर असर देखला सँ स्पष्ट होइत अछि।

एके खिड़की, अनेक जीविका : सामूहिक सन्देहक वर्गीय मूल्य

हरिनारायणक सामान्य हुक, गाड़ी-धुरीक कील आ करघा-पकड़ कसनी औजारक उपयोगक प्रत्यक्ष ज्ञान प्रस्तुत करैत अछि। पूर्वनिरीक्षणमे हुनकर चारि औजार देखल गेल, एकोटा जब्त नहि; पुलिसक पेटीपर हुनकर मुहर वा निर्गमन-पर्ची नहि भेटल। तइयो नन्दलालक हलक फाल उठाओल नहि जाएब देखबैत अछि जे निर्दोषताक कागदी आधार मिलने ग्राहकक भरोसा आपहि वापस नहि अबैत। अजितक नन्हा झुनझुना अपराध-रहस्यक सार्वजनिक तमाशाक वस्तु बनेबासँ बचल रहैत अछि; ओ चुपचाप प्रशिक्षणक काजमे लगैत अछि। पिता–पुत्रक ई छोट मौन प्रतिरोध कथा कैं कार्यालयक बहससँ बाहर आनि सामाजिक अपमानक दीर्घ अवशेष देखबैत अछि।

यूसुफक पहिल वैध बुनल थान बिक्रीक लेल मुक्त अछि; लाल डोरीवला दोसर गाँठक अस्वीकृत स्वीकृति-पट्टी पर जाँच जारी। यदि आलोचना 'यूसुफक सभ माल मुक्त' कहत तँ सामाजिक परिणामक तथ्य बिगड़त। हुनकर सूतक उधारी आ मायक रात्रिक श्रमक दृश्य सेहो साक्ष्यक देरीक आर्थिक मूल्य बतबैत अछि। माधवक दवा-वापसी अपन अलग खर्चक विवाद थिक; यूसुफक कारीगरी-वस्तु आ हथियार-सामग्रीक पुलिस-बरामदगी एके कथानक जालमे आओतहुँ वस्तुगत रूपमे अलग। महेन्द्र गाड़ीवान आ महेन्द्र महासेठक समान नाम फेर एहि उपन्यासक व्यापक 'नाम बनाम व्यक्ति'क संकट आनि दैत अछि। महासेठक पूर्ण ग्राहक-बही जब्त करबाक प्रस्ताव पर सीमित तिथिक प्रमाणित नकल तय होइत अछि; जाँचक अधिकार आ व्यापारक निजी विवरणक अधिकारक बीच सीमा बनैत अछि। बिनोदक छोट व्यापारक रसीद स्वयं ओकरा दोषी नहि, साझा कार्यालयक समय सत्यापनक स्वतन्त्र मानक प्रदान करैत अछि।

एहि बहुपात्र विन्यासक कथन-स्वर मुख्यतः तृतीयपुरुषक नियंत्रित बाह्य दृश्यसँ बनैत अछि; नैरा पाठकक लेल सूचना-विभाजनक केन्द्र छथि, मुदा ओ सर्वज्ञ निर्णायक नहि। अस्पताल, कार्यालय, गाड़ीवानक बही, करघा, दोकान आ घुरबाक बाटमे क्रमागत दृश्य बदलैत अछि। मुख्य काल एक दिनक भोरसँ राति धरि संकुचित अछि; पुरान प्राप्ति-पंजी, बीतल निरीक्षण आ पूर्वघटनाक उल्लेख पूर्वदीप्तिक काज करैत अछि। कबीर–नैराक अन्तिम संवाद जन्म-प्रश्नकैं अगिला अध्यायक लेल परिपक्व करैत अछि। एतय संरचनात्मक संक्रमण सार्थक : 'किछु संबंधक सत्य' खोजल गेल, मुदा ककरो जीवनक कथाक स्वामित्व कागद पबैतहि पत्रकारकैं नहि भेटैत।

उपलब्धि आ प्रतिपक्षी निष्कर्ष

अध्यायक वास्तविक उपलब्धि साझा बुकिङ-व्यवस्थाक पुष्ट सम्बन्ध, गलत महासेठ-आरोपक भाषा-सुधार, वैध खेपक अनावश्यक रोक हटेबाक लिखित दिशा, असमान लेबलवला दवाक तकनीकी परीक्षण आ मान्य औषधिक वैकल्पिक व्यवस्था अछि। न त हथियार-संबन्धी सामग्रीक अन्तिम स्रोत भेटल, न एके आपराधिक समूह सिद्ध भेल, न माधवकैं वापसीक सम्पूर्ण रकम देल गेल, न यूसुफक दोसर गाँठ मुक्त भेल। एहि असम्पन्नता कथा कैं

वास्तविक संस्थागत काल दैत अछि। तथापि अध्याय अत्यधिक अलग-अलग रसीद, छोट व्यापार-प्रकरण आ नैतिक रूपेँ सावधान उत्तरसभसँ भरल अछि। एहि संचयनमे एक समान प्रमाण-भाषा पात्रस्वरक आन्तरिक वैविध्य दबा सकैत अछि। अस्पतालक फिनाइलक गन्ध, धातुक कसनी, सूतक उधारी आ वृद्धाक दवाइ-संकट एहि जोखिमकेँ कम करैत अछि। उपन्यास अपराधक रहस्य परिश्रमक दुनियामे रखैत अछि; एहि अर्थमे ‘खेपक सम्बन्ध’ वस्तुक सम्बन्धसँ मनुष्यक अनधिकृत अपराधीकरणतकक मार्ग रोकबाक कला थिक।

अध्याय ९४ — पालकक अधिकार

जन्मक प्रत्यक्ष कथन आ पालनक अनुभवक स्वतंत्र सत्य

‘पालकक अधिकार’क आरम्भ कबीरक पालन करनिहारी मायक आँगनमे दीप राखबाक चौकीक मापसँ होइत अछि। माय चिरल दीया फेंकबाक बदला फूल राखबाक लेल बचबैत छथि। टूटल वस्तुक नब उपयोगक ई दृश्य कोनो भव्य प्रतीक-घोषणा नहि; अपन घरक श्रम, संरक्षण आ पुनर्विन्यासक व्यवहार अछि। कबीरक स्कूल-फीसक पुरान रसीद आ ज्वरमे पुरस्कार लऽ घर अएबाक स्मृति रेखांकित करैत अछि जे दस्तावेज विशिष्ट दिनक चिह्न दैत अछि, मुदा देखभालक भोगल इतिहास कागदक बराबर नहि। मायक तिथि-स्मृति केवल सही अंकक कारण नहि; बालकक बीमार देह, श्रम आ चिन्ताक कारण अर्थवान अछि। एहि भूमिका बिना सुभद्राक अगिला कथन ‘सही जन्मदात्री भेटलीह’ सन नाटकीय प्रतिस्थापन बनि जाइत।

सुभद्रा चारि लिखित शर्तक उपस्थितिमे कबीरकेँ स्वयं जन्म देने होएबाक प्रत्यक्ष कथन दैत छथि। ई पाठमे वास्तवमे भेल उद्घाटन अछि; ओकरा अनिश्चित अनुमान कहि कमजोर करब अनुचित। मुदा सुभद्रा अपने गवाहीक सीमा स्पष्ट करैत छथि : अपन देहक अनुभव हुनकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि; पठाओल पत्रक प्राप्ति, सभ पक्षक भूमिका, सरकारी जन्म-पंजी आ पालक परिवारकेँ तखन की बुझाओल गेल छल—ई अलग ज्ञान-क्षेत्र छथि। ओ ‘हम जानैत छी’क संग ‘हम नहि देखलहुँ’ कहैत छथि। सुभद्राक एहि स्वसीमांकनसँ चरित्र एकटा अपराध-संकेत लुकौनिहारी पहेली मात्र नहि रहि जाइत; ओ अपन अतीतक नैतिक दायित्व स्वीकार करनिहारी, मुदा सभ घटना नहि जननिहारी व्यक्ति बनैत छथि।

कबीर तुरन्त ‘माय’ नहि बजैत छथि, सुभद्रा ओ संबोधनक माँग नहि करैत छथि। ‘सत्य सुनना’ आ ‘रिश्ता अपनाबय’क काल इहाँ पृथक अछि। जीवित देहक गवाही कबीरक आत्मबोध बदलैत अछि, मुदा अपन पालन करनिहारी मायक प्रेम आ सम्भावित उत्तराधिकारक प्रश्न घटबैत नहि। कबीर कहैत छथि जे अपन पालक घरक नाम पुरान दस्तावेजमे सँ स्वयं नहि मिटाएताह। एहि वाक्यक फल केवल भावनात्मक आश्वासन नहि; भविष्यक कानूनी परीक्षणक स्वतंत्र दावा सेहो बनैत अछि। मूल उपन्यास कोनो खास उत्तराधिकार-कानूनक अन्तिम व्याख्या एहि दृश्यसँ स्थापित नहि करैत; पालक घरक इच्छा, पुराने दस्तावेज आ लागू वैधानिक अधिकार अलग परीक्षणक विषय रहैत अछि।

कागदक दू प्रत्यक्षता : सुभद्रा आ पालन करनिहारी मायक ज्ञान-सीमा

सुभद्रा सूती थैलीसँ पुरान पत्रक पूर्ण मूल नहि, नाम-पता ढाँकल प्रति देखबैत छथि। धब्बा भेल तिथि आ पर्चीक प्राप्ति-चिह्न एखन पत्र सही व्यक्तिकेँ पहुँचल सिद्ध नहि करैत। कबीर मोबाइलसँ फोटो नहि खींचैत छथि; स्वतंत्र जाँच लेल अनुमत भागक स्रोत लिखैत छथि। एहि छोट क्रियामे नायकक चरित्र-विकास अछि : जन्मक रहस्य खोजबाक अधिकार ककरो निजी पत्र चोरेबाक अधिकार नहि बनैत। सुभद्रा हुनका पालक परिवारकेँ अपन शब्दमे जन्मसम्बन्धी सूचना कहबाक अनुमति दैत छथि, मुदा निजी पत्रक प्रतिक सार्वजनिक प्रसारपर नब सहमति आवश्यक रखैत छथि। समाचारक अधिकार, पारिवारिक संवादक अधिकार आ मूल दस्तावेजक अधिकारक तीन सीमा एकहि हस्ताक्षरमे भिन्न रूपेँ रखल गेल अछि।

पालन करनिहारी माय कबीरक आगमनक दिन, प्रथम महीनाक औषधि-रसीद आ लाल किनारक रुमालक इतिहास कहैत छथि। ओ जन्मक दिनक प्रत्यक्ष साक्षी नहि; ओहि बातकेँ स्पष्ट स्वीकारैत छथि। एतय दू मायक गवाही परस्पर निषेधात्मक नहि। सुभद्रा जन्म देबाक अनुभवक गवाह; पालक माय शिक्षा, बीमारी, घरक श्रम आ दिन-रातिक पालनक गवाह। एक गवाहक क्षेत्र विस्तार कऽ दोसरक क्षेत्र मिटबैत नहि। ई उपन्यासक भारतीय महाकाव्यीय कर्ण-सम्बन्धक महत्त्वपूर्ण नवपाठ अछि : राधा–कर्णक पालन-सम्बन्धक छाँह रहितहुँ आधुनिक कबीरक कहानी महाकाव्यक पात्रक पुनर्जन्म नहि, अपन अधिकारक आधुनिक व्याख्या अछि। कर्णक सार्वजनिक जन्मस्वीकृति आ सामाजिक स्थिति विषयक विवादक प्रतिध्वनि भेटैत अछि; कबीरक अपन कानूनी दस्तावेजक नियत परिणाम महाभारतसँ स्वतः निर्धारित नहि।

इहाँ कथनकाल रोचक ढङ्गसँ वितरित अछि। दिनक वर्तमान क्रियामे अनिश्चित वर्षक भोगल स्मृति क्रमशः अबैत अछि—स्कूलक पुरस्कार, बीमार बच्चाक कापी सुखेनिहार राति, आगमनक पहिल महिना, सुभद्राक कठिन समय। पूर्वदीप्ति विस्तृत सुसज्जित दृश्य बनिकऽ नहि, छोट प्रत्यक्ष स्मृति आ वस्तुक उल्लेखसँ बनैत अछि। एहिसँ मुख्य कथा गति विराम पबैत अछि, मुदा भावात्मक भार गहिर होइत अछि। पाठक जन्म-प्रश्नक ‘पूरा उत्तर’ नहि पबैत, तथापि सुभद्राक सत्य-वचन आ कबीरक दोसर घरक स्वत्वक स्वीकृति एक वास्तविक घटनात्मक प्रगति अछि। अन्तक दीया-फूलक दृश्य प्रारम्भिक चिरल दीयाकेँ पुनः उपयोगमे आनैत अछि। वृत्ताकारता केवल आश्वासन नहि; कबीरक प्रश्न शेष अछि, घरमे स्थान बचल अछि।

वाहनक सुरक्षा, व्यवसाय-परिवर्तन आ सामग्री-वापसी : पालनक समानान्तर श्रमनीति

अध्यायक मध्यभागमे इरफान खानक वाहन-कार्यशालाक ब्रेक-जाँच प्रवेश करैत अछि। यात्रीगाड़ीक घिसल बुसिंग आ असुरक्षित ब्रेकक प्रत्यक्ष दृश्य, ग्राहकक मौखिक ‘पुनः परीक्षण’ कहि छोड़बाक दबाव आ इरफानक लिखित अस्वीकार—ई सभ व्यवसायिक न्यायक स्पष्ट घटनासूत्र। रोगी अस्पताल पहुँचबाक आर्थिक दबाव वास्तविक अछि, मुदा असुरक्षित गाड़ी चलबैत सेवाक नामपर जोखिम बढ़ब। इरफान दोषक कारण पहिनुक मरम्मतकार जानि-बुझि बनौलक, से नहि कहैत छथि; केवल स्वयं खोलि देखल भौतिक दशा लिखैत छथि।

हुनकर शागिर्दक मजदूरीक प्रश्न एहि निर्णयक लागत बतबैत अछि। कथा पात्रक ईमानदारीकेँ तत्काल आर्थिक पुरस्कार नहि दैत : ग्राहक दोसर कारीगर दिस जा सकैत अछि।

सलीम नालबन्दक प्रसंग परम्परागत पेशाक परिवर्तनक कथा बनैत अछि। घोड़ाक नाल बनाबयक उपकरण आ मोटर-ब्रेकक प्रशिक्षण-कापी एकहि पेटीमे रहैत अछि; पुरान कौशल नष्ट नहि, ओकर सीमांकन आ विस्तार होइत अछि। सलीम लिखित प्रशिक्षण-समय, सुरक्षा, भत्ता आ योग्यता-परीक्षाक शर्त माँगैत छथि। नव पेशामे प्रवेशक अर्थ बिना वेतनक अनिश्चित शागिर्दी स्वीकारब नहि। पिताक अथवा वृद्ध परिवारक मौन अनिश्चित सहमति, वर्गीय जीवनक वास्तविक चिन्ता बचबैत अछि। कथाक एहि उपप्रसंगमे पालनक अर्थ केवल बच्चेकेँ पालब नहि; सामाजिक रूपसँ जीविका पालेबाक हेतु जोखिमक सही शिक्षा देब सेहो अछि। मुदा ई समानता आलोचकक रूपक-पठन अछि; कथा एक औपचारिक ‘पालक-तत्त्व’क दार्शनिक घोषणाक रूपमे प्रस्तुत नहि करैत।

हरीश पनसारीक तीन गठरीमे बाहरी प्रसिद्ध चिन्ह आ भीतर असंगत सामग्रीक नाम ग्राहक-अधिकारक तेसर विस्तार अछि। हरीश संदिग्ध खेपक बिक्री रोकैत, पहिने किननिहारकेँ प्रतिफल अथवा प्रमाणित विकल्प दैत आ थोक वितरकसँ अपन दावा अलग रखैत छथि। केवल छपल नामक प्रतिष्ठासँ वस्तुक सत्यता प्रमाणित नहि; सतर्कताक अर्थ सभ ग्राहकपर शंका थोपब सेहो नहि। आठ पैकेटक वास्तविक वापसी उपन्यासमे छोट सिद्ध परिणाम अछि, सम्पूर्ण बाजार-समस्या समाधान नहि। बिना बिलक ग्राहकक उधारबही आ पैकेटक चिन्हक तुलनासँ वैध दावेदारक बाट खुलैत अछि। कथा बारम्बार श्रम-रक्षा, जीवन-रक्षा आ प्रमाण-रक्षा एक संग रखैत अछि।

कथन-शिल्पक शक्ति आ अप्रिय प्रश्न

एहि अध्यायमे मुख्य पात्र कबीरक आन्तरिक रूपान्तरण घटनाक संख्या सँ नहि, संवेदनाक तराजूसँ पकडल जाइत अछि। सुभद्राक वास्तविक जन्म-कथन, पालक परिवारसँ निजी वार्ता, अलग अधिकारक दस्तावेजी फोल्डर आ ओहि रातिक दीप-विन्यास एक ठोस निर्णय-क्रम बनबैत अछि। सीमित तृतीयपुरुष कथावाचक कबीरक दृष्टिकेन्द्रण लग बेसी ठहरैत छथि; सुभद्राक वाणी ओकरा चुनौती दैत अछि। अन्य दृश्यसभ—इरफान, सलीम, हरीश—केँ प्रमुख सम्बन्धक सहायक नैतिक प्रतिध्वनि रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि तखन प्रश्न उठैत अछि : कबीरक आन्तरिक रूपसँ गहिर दृश्य बीच अचानक तीन व्यावसायिक प्रकरण रखला सँ भाव-क्रम टूटैत अछि की? हँ, किछु ठाम भावात्मक एकाग्रता फैलि जाइत अछि। एहि फैलावक तर्क ओतबहि मजबूत होइत अछि जेतय असुरक्षित वाहन, प्रशिक्षणक लागत आ खराब खेपक वापसी जीविकाक दृश्यक कारण बनैत अछि; केवल ‘सभठाम सही सीमा’क पाठ बनि रहला पर तर्कात्मक दोहराव बढ़ैत अछि।

कबीरक पालनक अधिकारको अंतिम कानूनी निर्णय नहि भेटल अछि; सुभद्राक पत्रक मूल एखन परीक्षित नहि; पालन-घरक वारिसक नब प्रविष्टि कएल नहि गेल; इरफानक गाड़ी सुरक्षित घोषित नहि भेल; हरीशक समस्त पैकेट घुरल नहि। मुदा सुभद्राक निजी प्रत्यक्ष कथन आब कथामे देल गेल अछि, कबीर ओकरा सुनलनि, मायक अपन पालनक स्वायत्त गवाही कएलनि—ई तीन निश्चित घटना उपन्यासक नाम-विवादकेँ दयालु, मुदा कदापि

सरल नहि, सामाजिक सत्य बनबैत अछि। एहि कारण अध्यायक शीर्षक ‘पालकक अधिकार’ जन्मदात्रीक अस्वीकार नहि, अधिकारक प्रतिस्पर्धाकेँ प्रमाण आ सहमतिक न्यायसंगत साझीदारीमे बदलबाक प्रस्ताव अछि।

अध्याय ९५ — हत्याक आदेश

अपराधक शीर्षक आ प्रमाणक अधिकार-क्षेत्र

‘हत्याक आदेश’ शीर्षक पाठककेँ तत्काल एक निश्चित अपराध-निर्देशक आशा दैत अछि। मुदा अध्यायक आरम्भ शशि माहुरीक मसाला-गोदाम आ भाड़ापर देल अलग कोठरीक दू चाभीसँ होइत अछि। चाभी दूनू कक्षक भौतिक पहुँचक संकेत अछि, अपराधक साझेदारीक स्वतः प्रमाण नहि। किरायेदारकेँ माल राखबाक सीमित अधिकार छल; शशि बिना अनुमति दोसरकेँ कोठरी सौंपबाक मनाही-वला अनुबन्ध, अपन पूर्वआपत्ति आ प्राप्ति-अङ्क देखबैत छथि। तेँ स्थानक मालिकाना, किरायेदारी, उपयोगकर्ता आ प्रवेश-नियन्त्रणक चार पद अलग रहैत अछि। पिछला प्रवेश-द्वारक सम्भावित उपयोग, चौकीदारक रात्रि-हाजिरी आ उतारल सूचना-पट्टीक कील नव वस्तुगत प्रश्न खोलैत अछि, मुदा कीलक चारि छेदसँ पट्टी उतारबाक तिथि निश्चित नहि होइत। कथन-रचना पाठकक मनमे दोषी भेटबाक हड़बड़ी बनबैत आ ओकरा तुरन्त ठहरबैत अछि।

रमाक मेजपर तीन फोल्डर —महेशक हमला एवं मृत्यु, गोदाम–ढुलाई, देवव्रतक कार्यालयी निर्देश—अध्यायक प्रमाण-विभागक स्पष्ट स्थापना अछि। एहि ठाम ‘तीन फोल्डर’ मात्र अनुक्रमक सुविधा नहि, कारणात्मक प्रश्नक अलग-अलग अधिकार-क्षेत्र अछि। पुलिस महेशक हत्या स्थापित आपराधिक घटना मानैत अछि; कोन व्यक्ति प्रत्यक्ष प्रहार केलक, तकर पहिचान एवं भूमिकाक जाँच बाकी अछि। मध्यस्थ शेखरक कार्यालयसँ ‘महेशक बयान रोकबाक परिणाम सुनिश्चित हो’ लिखल टिप्पणी भेटैत अछि। ई लक्ष्यक भयावह संकेत अछि, मुदा ओकरा देवव्रतक हस्ताक्षरित स्पष्ट हत्या-आदेश मानि लिखब स्रोत-विरुद्ध हएत। देवव्रतक कार्यालयक सामग्री-पंजी अनधिकृत हाथमे नहि जएबाक निर्देश अलग अछि। ओहि निर्देशकेँ एक मध्यस्थ हिंसा लेल अनुमोदन बुझलक की, अथवा ऊपरसँ स्पष्ट हिंसक सहमति भेटल की, एहि दू सम्भावनाक प्रमाण अलग चाही।

एहि भेदमे आख्यानगत हेतु–व्याप्ति–उपाधि विवेचनक उपयोग अनुशासित रूपसँ कएल जा सकैत अछि। ‘कार्यालयसँ निर्देश निकलल’ आ ‘हिंसा भेल’ दूटा तथ्यक समकालिकता अपराध-सहमतिक अनिवार्य व्याप्ति नहि। बीचमे आदेशक भाषा, प्राप्तकर्ताक अर्थग्रहण, बादक मौखिक सम्पर्क, रकमक वास्तविक प्राप्तकर्ता आ हिंसक काजक निर्णय-अधिकार चाही। किन्तु एहि सावधानीक नामपर शेखरक रात्रिक प्रवेश-अनुमति, दबाव-संबन्धी खर्च, धमकीक बयान आ फोन-सन्देशक साक्ष्यकेँ सामान्य अनिश्चिततामे उड़ा देब सेहो अनुचित। उपन्यास निश्चित आ अनिश्चितक द्वन्द्वमात्र नहि, साक्ष्यक क्रमिक भार प्रस्तुत करैत अछि।

‘रातुक दबाव’ : साक्ष्यक सघनता, परस्पर पुष्टिक आवश्यकता

शेखरक कार्यालयसँ भेटल अलग खर्च-पर्चीमे दू किश्तक रकम आ ‘रातुक दबाव’ मद अछि; बैंक-निकासीक राशिसँ मेल भेटैत अछि, मुदा प्राप्तकर्ता-खाताक पूरा पुष्टि बाँकी। तिथि महेशक पहिल हमला आ बादक घातक हमलाक लग अछि। ई समय-सन्निकटता संदेह बढ़बैत अछि, परिणाम निश्चित नहि। गोदामक पिछला कक्षमे तार

आ ‘पाछाँक द्वार’ लिखल रसीद भेटैत अछि, मुदा तारकेँ हत्या-हथियार घोषित नहि कएल गेल। पूर्व चालक शेखरक मुँहसँ महेशक बचि कऽ बयान नहि देबाक धमकी सुनबाक प्रत्यक्ष श्रवण-गवाही दैत अछि, जबकि फोनमे अभिलेखित आवाज-सन्देशक समय, अविच्छिन्नता आ वक्ताक पहिचान स्वतंत्र तकनीकी मिलान माँगैत अछि। ई गवाहीक साक्ष्य-स्वरूप परतदार अछि : चालकक ‘हम सुनलहुँ’ प्रत्यक्ष श्रवणक दावा, रिकॉर्डिङक ध्वनि तकनीकी वस्तु, शेखरक वक्तृत्व-पहिचान अलग अनुमान।

अगिला पाठांशमे शेखरद्वारा पिछला गोदामसँ दू व्यक्तिक रात्रिक आवागमन स्वीकृति, गेट-समय आ भुगतानक कड़ी एक-दोसराकेँ बल दैत अछि। एहि स्तरपर शेखर मात्र निष्प्रभावी मुनीम छथि, एहन पूर्वरक्षात्मक कथा कमजोर पड़ैत अछि; रात्रिक संचालनमे हुनकर वास्तविक भूमिका जाँचक ठोस विषय बनैत अछि। मुदा वीडियोमे दू व्यक्तिक निर्णायक चेहरा-पहिचान नहि भेल अछि; हत्या-स्थलपर कियो प्रहार केलक से निश्चित नहि। पाठ एहिठाम टेढ़ अछि : असामान्य नियोजनक प्रमाण घन होइत अछि, मनसाय आ अन्तिम कर्ताक साक्ष्य अधूरा। एहन स्थितिमे सत्यक नैतिक जिम्मेदारीक अर्थ केवल आरोपीक निन्दा नहि, दोषसिद्धि लेल टिकाउ प्रक्रियाक निर्माण थिक। रमा शेखरक वकीलसहित बयान देबाक आग्रहकेँ अपराध-स्वीकार नहि मानैत छथि। अपूर्ण साक्ष्यक बीच प्रक्रियात्मक अधिकारक संरक्षण अनुसन्धानक विरोध नहि, ओकर भरोसेक शर्त बनैत अछि।

एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष ई जे कथाक साक्ष्यसभ अत्यन्त सुव्यवस्थित श्रेणीमे उपस्थित अछि। खर्च-पर्ची, बैंक-निकासी, गेट-हाजिरी, रात्रि-प्रवेश, चालकक बयान, डिजिटल फाइल—ई जाल कथा-निर्माणक कौशल देखबैत अछि; मुदा हर चरणपर पात्रसभ अपन सीमा लगभग अनुकरणीय रूपसँ स्पष्ट करैत छथि। वास्तविक जाँचक उलझन, त्रुटि, हितसङ्घर्ष आ पक्षधरता कतेक गहिर अछि, से आगूक अध्यायमे जाँचल जाय। केवल कथावाचकक सुचारू श्रेणीकरणसँ न्यायसंगत परिणाम सुनिश्चित नहि। एहि आलोचनात्मक प्रश्नक बावजूद शेखरकेँ तात्कालिक दोषी घोषित नहि करब कथा केँ कमजोर नहि, अधिक उत्तरदायी बनबैत अछि।

महेशक पत्नी आ बेटी : शोकक अधिकार, अनावश्यक साक्ष्यक निषेध

महेशक पत्नी जाँचक कक्षमे प्रवेश करिते पहिल प्रश्न करैत छथि—घरक बाहर सुरक्षा के देत, बेटी विद्यालय कोना जाएत। हुनका लेल हत्या-जाँचक समाचार मात्र प्रकरण नहि; अगिला दिनक सुरक्षित दिनचर्या अछि। पहिने आश्वासन भेटलाक बादो हमला भेल छल, तें एहि बेर सुरक्षा-कर्मीक वास्तविक उपस्थितिक नाम आ आपात सम्पर्कक लिखित समय चाहैत छथि। पति सँ अन्तिम बातचीतक बारे ओ जे स्वयं सुनलनि ओतबे कहैत छथि; ‘देवव्रत हमरा मरबाओत’ एहन वाक्य महेशक मुँहसँ नहि सुनल होने स्पष्ट करैत छथि। विधवाक शोककेँ ककरो आरोपक असत्य पुष्टिक साधन बनाएब ओ स्वीकार नहि करैत छथि। एहि एक बिन्दुपर स्त्रीस्वरक दृढ़ता न्यायालयी दस्तावेजक अतिरिक्त नैतिक शक्ति पबैत अछि।

बेटीक प्रश्न—डरौनिहार लोक पकड़ल गेल की—आ मायक उत्तर स्थगित न्याय आ निश्चित मृत्युक समयभेदक अत्यन्त प्रभावकारी दृश्य अछि। दोषी सिद्ध होएबाक लेल प्रतीक्षा अछि; बाबूजी फेर नहि घुरताह, एहि तथ्य लेल प्रतीक्षा नहि। बालिका फेर अपन गणितक अपूर्ण प्रश्न पूरा करैत अछि। एतय करुण-रस कथावस्तुक मृत्युसँ मात्र नहि, साधारण गणित पढ़बाक जीवित आवश्यकताक बगलमे अटल हानिक उपस्थिति सँ उभरैत अछि। नाटकक

दुर्घटना आ दैनिक जीवनक निरन्तरता एकहि पाठांशमे रहैत अछि। नैरा समाचारक प्रति दैत छथि तँ पत्नी केवल घरक वर्तमान दिशा आ बच्चीक विद्यालयक पहिचान हटबैत छथि। ई सम्पूर्ण समाचारक सम्पादकीय अनुमोदन नहि; निजी सुरक्षाक सीमित सहमति थिक। कथा पीड़िताक अधिकारक सम्मान ओकरा सर्वज्ञ अपराध-साक्षी बनबौने बिना करैत अछि।

उपनाम, दानक प्रतिष्ठा आ अलग जीविकाक अवरोध

शबनम मलिकक पारिवारिक नामक उपयोग कऽ कियो सेवाकक्षमे फाइल-प्रवेशक अनुमति माँगने छल। शबनम लिखित आवेदन नहि देनिहारक रूपमे आपत्ति करैत छथि; कर्मचारी प्रतिष्ठित उपनाम देखिकऽ प्रशासनिक प्राधिकार अनुमान कएने छल। आरोपक आधार ई नहि जे शबनम अपराधी छथि; प्रमाणित गलती ई जे फाइल-प्रवेशक अधिकार व्यक्तिक लिखित अधिकृतिकरण बिना देल गेल। सार्वजनिक संशोधनमे गलतीक प्रकार दर्ज होइत अछि, मुदा कियो कोन कागद देखलक आ किछु हटेलक की—ई अलग जाँच। एहि छोट प्रकरणमे कर्ण-पर्वक पहिनुक नाम-सादृश्यक प्रश्न पुनः संस्थागत रूप पबैत अछि : कुलनाम शक्ति-सूचक भऽ सकैत अछि, मुदा कानूनी सहमति वा पहिचानक पर्याप्त प्रमाण नहि।

देवव्रतक सहायता-कोषसँ जमुनाक वास्तविक दवा आ गाड़ीभाड़ा देल गेल छल। अनिरुद्ध उपचारक वास्तविक लाभ स्वीकारैत छथि, मुदा परोपकारसँ जाँचक सवाल बन्द नहि करैत। एहि द्वन्द्वमे कथा परोपकारक कुल निरसन नहि करैत; सार्वजनिक सहायता, सामग्री-नियन्त्रण आ हिंसाक सम्भावित संकेतक प्रशासनिक खाते अलग रखैत अछि। गोदामक मालिक शशि सेहो किरायेदारक सम्भावित अपराधक सम्पूर्ण भार अपन मसाला-मजदूरपर नहि दैत। रोकल कोठरीक जाँच चलितहुँ अन्य सुरक्षित गोदामक गठरी निकालबाक मार्ग राखल गेल; पार्वतीक चारि दिनक मजदूरीक प्रश्न शशि अलग पूरा करैत छथि। एतय साक्ष्यक कठोरता श्रमिकक आजीविका समाप्त करबाक एकमात्र उपाय नहि बनैत।

अन्तिम पत्रकारिता-सम्पादन अध्यायक शीर्षकक विवेचन करैत अछि। नैरा पहिने ‘हत्याक आदेश खुलल’ लिखैत छथि, फेर अधिक प्रमाण-संगत ‘हत्याक आदेशक तीन प्रश्न’ चुनैत छथि। ई आत्मसुधार कृति भीतर सम्पादकीय नैतिकताक दृश्य अछि। तथापि संपादकक व्यावहारिक प्रश्न—एतेक जटिल शीर्षक के पढ़त—सही आलोचनात्मक चुनौती अछि : जनसाधारण धरि सटीक, किन्तु बोधगम्य सूचना कोना पहुँचत? अध्याय पूर्ण विधिक जाँचक विकल्प नहि, उत्तरदायी सार्वजनिक कथनक अनिवार्यता रूपमे समाप्त होइत अछि। अन्तिम सीलबन्द पन्ना सरिताक सत्ताइस नामक निजी मूल नहि, पुरान भुगतान-सारिणीक एक नकल अछि। एक प्राप्ति-अङ्कक आंशिक मेल अलग जाँचक विषय; एतय मुख्य अपराध-जाँचकेँ सत्ताइस व्यक्तिक समस्त जीवनक अन्तिम परिभाषा नहि बनबाओल गेल अछि।

उपलब्धि, सीमा आ अध्यायगत निर्णय

अध्याय ९५ मे महेशक हत्या स्थापित अछि; शेखरक मध्यस्थ-व्यवस्थाक साक्ष्यक भार बढ़ैत अछि; देवव्रतक स्पष्ट लिखित हत्या-आदेश उपलब्ध नहि; अन्य मौखिक सम्पर्क आ निर्णायक भूमिकाक अनुसन्धान बाकी अछि। सुरक्षा-व्यवस्था, व्यक्तिगत अनुमति आ रोजीरक्षक उपाय किछु स्तरपर लिखल गेल अछि, मुदा पीड़ित परिवारक

भय पूर्ण समाप्त नहि। कथन-काल भोरक गोदामसँ रातुक समाचार धरि फैलैत, विगत हमला आ मृत्युक बहीक पूर्वदीप्ति सहित अनेक स्तर बनबैत अछि। कथावाचक नैराक मनमे जाँहि सूचनाक अनुमान जगबैत छथि, ताहिपर रमाक अलग प्रशासनिक भाषा आ महेशक पत्नीक देहगत वर्तमान अंकुश लगबैत अछि। काव्यगत दृष्टिसँ छल्लावला चाभी, ठाढ़ देबालक उज्जर चौकोन आ बेटी द्वारा पूरा कएल गणितक प्रश्नतीन वस्तु कथा कैं मानवीय धरातल देबैत अछि। कमजोर पक्ष जाँचक प्रक्रिया-केंद्रित घना संवादक पुनरावृत्ति, जाहिसँ अपराधक भय किछु समय कार्यालयी फोल्डरक भाषा भीतर दबि जाइत अछि। तथापि महेशक परिवारक दृष्टिसँ ‘आदेश’क सम्भावना जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ओतबे जीवनक अगिला दिनक सुरक्षा। एहि दू आशयक बीच तनाव अध्यायक वास्तविक साहित्यिक उपलब्धि अछि।

अध्याय ९६ — सत्ताइसक मिलान

पीतरक डिब्बा आ तीन मेज : अन्तिम खुलासा नहि, नियंत्रित सत्यापन

सरिता पीतरक डिब्बा खोलबाक पहिने धूरि पोंछि रहल छथि; दुआरपर बरखाक बादक बूँद, घरमे चाउरक भाप आ संकेतक किताब उपन्यासक आरम्भिक घरेलू कालस्थानकैं फेर उपस्थित करैत अछि। पहिल अध्यायमे सरिताक मृत्युसूचना आ रसोइक विरोधाभास छल; एहि ठाम ओ अपने पन्नाक उपयोगक शर्त निर्धारित करैत छथि। संकेतकैं कागदक रक्षक बनाओल नहि, पाठशाला पठाओल जाइत अछि। एहि निर्णयमे एक महत्त्वपूर्ण पीढ़ीगत सीमा अछि : संस्थागत अन्यायक विरोधमे बालकक अपना सीखबाक जीवनकैं नष्ट करब न्यायसंगत नहि। उपन्यास पीतरक डिब्बाकैं असामान्य गुप्तधनक प्रतीक बनेबासँ बचबैत, घरेलू गोपनीयता, कागदी संरक्षण आ निर्णयक स्वामित्वक केन्द्र बनबैत अछि।

नगर अभिलेखक कक्षमे रमा तीन मेज अलग रखबैत छथि : सरिताक निजी हस्तलिखित सूची, सरकारी प्रति एवं भुगतान-सारिणी, तथा सहमति आ परीक्षण-फल। एहि स्थानिक विन्याससँ तीन प्रकारक प्राधिकरण बनैत अछि। सरिताक ‘मूल’ हुनकर अपन मूल लिखावट अछि, सरकारी मूल प्रविष्टि नहि—ई स्वयं सरिताक स्पष्ट स्पष्टीकरण अछि। चारि स्याही आ फेर-फेर कएल संशोधन एकहि रातिक गढ़ल कथा सिद्ध नहि करैत; तकर निश्चित तिथि सेहो तय नहि। एतय मूल-अधिकार वस्तुक तिथि, लेखकक स्मृति आ सरकारी प्रति-स्रोतक समन्वित, किंतु सावधान परीक्षण माँगैत अछि। सरिताक पन्नामे प्रत्यक्ष देखल, सुनल आ अपना अनुमानसँ लिखल बात मेशान रहल; ओ स्वयं एही मिश्रणकैं चिन्हैत छथि। एकर कारण हुनकर गवाहीक मान घटैत नहि; उलटे ओ सर्वज्ञ दावा छोड़ैत छथि।

एहि अध्यायमे ‘मिलान’ शब्दक अर्थ नियत रखना अत्यन्त आवश्यक अछि। सत्ताइस आवश्यक पाँतिक प्रविष्टि-सम्बन्ध, उपलब्ध गवाही आ उपलब्ध लेनदेनक स्थिति जाँचल गेल; एतबे एक निश्चित कथात्मक परिणाम। किन्तु सत्ताइस व्यक्तिक जीवनक समस्त रहस्य खोलल नहि गेल, सभ बकाया चुकल नहि, सभ गलत सरकारी स्थिति सुधरल नहि, प्रत्येक व्यक्तिक असली पुरान नाम प्रकाशित नहि भेल। ओतबे नहि, एक सत्ताइसम पाँतिक पहचान सम्बन्धित व्यक्तिक चुनल प्रतिनिधिक माध्यमसँ रमा आ सरिताक सीमित उपस्थितिमे सत्यापित होइत अछि;

नैरा स्वेच्छासँ कक्ष छोड़ि दैत छथि। ई ‘कथाक केन्द्रिय रहस्यक खुलासा’क पारम्परिक अपेक्षाकेँ उलटबैत अछि : पाठक संख्या पूरा होएबाक विश्वास पबैत अछि, मुदा किसी व्यक्तिक सुरक्षाकेँ दाँव पर लगाकऽ निज नाम नहि पबैत। जानकारीक सीमा लेखकक कमी नहि, पात्रक निर्धारित अनुमति बनैत अछि।

रहीनाक गवाही : लिखित प्रतिलिपिक श्रम, परिवारक दबाव आ शेष रिक्त स्थान

रहीना ठकुराई एहि अध्यायक स्वतन्त्र केन्द्रक रूपमे अबैत छथि। नकल-काजक नीली स्याही अँगुरीपर अछि; भोर घरमे भात परोसि, अपन बेटीक जिम्मेदारी देखि, पाछाँ कार्यालयक जाँच लेल निकललीह। पितियौत भाय परिवारक नाम खराब होएबाक डर देखबैत छथि; रहीना ई तर्ककेँ स्वतः सत्यक रोक नहि मानैत छथि। ओ समय पर बयान देबाक आग्रह करैत छथि, किएक तँ साँझक मजदूरीक काज छुटबाक खतरा अछि। एतय स्त्रीस्वर केवल अधिकारवादी वाक्य नहि; समयक लागत सहित व्यक्त श्रमक निर्णय अछि। परिवारक ‘प्रतिष्ठा’ आ स्त्रीक ‘प्रत्यक्ष देखल प्रति’क स्रोत-प्राधिकार अलग राखब विदेह समानान्तर इतिहासक उपेक्षित प्रतिलिपिकारिणीक दृष्टिसँ विशेष सार्थक अछि।

रहीना तीन बरख पहिने कएल प्रतिलिपि-काजक मजदूरी-रसीद लऽ अबैत छथि। पाँच पाँतिमे नामक बदला परिचय-संशोधनक संकेत आ एक पाँतिक कात ‘प्रकाशन नहि’क चेतावनी हुनका नकलमे छल; बादक छपल प्रतिमे ओ शब्द नहि। मुदा कियो जानबूझि मेटलक, ई ओ जानैत नहि। कार्यालयक प्राप्ति-अङ्क आ समय-मिलान हुनकर नकलक काज सत्यापित करैत अछि, मूल आदेश-स्तम्भ खाली अछि। गवाहीक यथार्थता रिक्त स्थान भरेबाक कल्पना नहि, रिक्ततार्केँ स्पष्ट करबाक क्षमता मे देखाइत अछि। रहीना अपन नाम आ अपना देखल प्रतिक काज प्रकाशित होए दैत छथि; बेटी कोन विद्यालयमे पढ़ैत अछि अथवा घरक पुरुषक पहचान छापबाक अनुमति नहि। स्त्रीक सार्वजनिक वाणी आ घरक निजी सुरक्षाक स्वत्व एक-दोसराक विरोधी नहि।

‘घुरि आएल’ लिखल सरिताक दू शब्दक आशय कियो रोजगारमे घुरि आबब बुझने छल; सम्बन्धित स्त्री बतबैत छथि जे बाढ़क बाद राहत कार्यालयमे दोसर बेर उपस्थित भेल छलीह। अधिकारीक ‘पहिल दावा रद्द’क त्वरित निष्कर्ष स्त्रीक प्रतिवादसँ सुधरैत अछि। मूल पंक्तिक शब्दार्थ गवाहक अनुभवबिना निर्णायक नहि : ई तत्त्वचिन्तामणिक शाब्दबोध/तात्पर्यक आधुनिक विवेचन लेल उपयुक्त उदाहरण अछि, किन्तु मूल शास्त्रीय ग्रन्थक विशिष्ट सूत्रक कथन हमरा एतय कल्पित नहि करबाक अछि। एकहि लेखनीक अस्पष्टता दूटा भुगतान-अधिकारक कालक्रम बदलि सकैत अछि। शून्य रकमक अर्थ ‘काज नहि’ नहि, ‘ओहि पंजीमे भुगतान नहि देखल’। एकरे कारण सामाजिक इतिहास बनएबाक समय सरकारी बहीक मौनकेँ लोकक निष्क्रियताक प्रमाण नहि मानब चाही।

अंकक अवैध जोड़ आ चौदह अलग विवादक लगातार सीमा

एहि अध्यायमे एक लिपिक पाँच परिचय, चौदह विसंगति आ आठ मृत्यु-सम्बन्धी प्रकरण जोड़ि सत्ताइस बनबैत चाहैत अछि। रमा मना करैत छथि। ई संख्या-परीक्षण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण : तीनू समूह अलग अभिलेख-प्रणालीक प्रश्न छथि; किछु व्यक्ति एकाधिक विवादमे भऽ सकैत छथि, किछु सत्ताइस मूल पाँतिमे कदाचित नहि।

५+१४+८=२७ अंकगणितीय कथन सही होइतो ओकर आधारपर ‘एके सत्ताइस व्यक्ति’क कथन असिद्ध। आख्यानगत पक्षनिर्देशमे समूहक व्यक्तिक पहिचान आवश्यक; केवल समूहक आकार बराबर रहब गुणधर्मक समानता नहि। एहि प्रसंगमे उपन्यास अपन पहिनुक जटिल घटनाक गणितीय रहस्यभेदनक आसान बाट स्वयं बन्द करैत अछि।

शेखरक मध्यस्थक हत्या-जाँचक प्राप्ति-अङ्क आ पुरान भुगतान-सारिणीक एक क्रमक मेल सेहो ‘एके काज’ नहि सिद्ध करैत। मूल बहीमे एक ठाम गट्ठर ढुलाईक भाड़ा, दोसरमे प्रतिलिपि-पुस्तिका जाँचक शुल्क; तिथि आ रकम अलग। अतः अंकक समान प्रारूप कार्यालयी पद्धतिक फल भऽ सकैत अछि। सरिताक अपन रोकल प्रतिलिपि-मानदेय पर गिरिधारीक दू पुष्ट किश्तक सम्बन्ध सेहो मूल सुपुर्दगी-पन्नाक पूरा मिलान माँगैत अछि। औपचारिक सूची-मिलानक सफलता हुनकर बकाया स्वतः भुगतान नहि करैत। प्रसंग-सम्पर्कक एहि जालमे कर्ण-पर्वक पहिल ‘राधाक श्रम’सँ आरम्भ भेल श्रेय-अधिकार, ‘मूल पन्ना’क निजी लिखावट, ‘पाँच बदलल परिचय’, ‘चौदह विसंगति’, ‘चारि जीवित चारि मृत’, ‘सुविधाजनक त्रुटि’ आ ‘हत्याक आदेश’क प्रश्न एक-दोसराकेँ छूएत अछि, मुदा विलीन नहि होइत।

सुमित्रा कामीक धातुक जोड़क मौलिक खाका आ नव ठेकाक खाली निर्माता-खाना एहि अध्यायक शिल्प-नैतिकता जोड़ैत अछि। साधारण समकोण ककरो निजी सम्पत्ति नहि; विशिष्ट खाँजक नाप, नमूना परीक्षण, खाका-निर्माण आ प्रशिक्षणक श्रेय अलग दावा अछि। तकनीकी सुरक्षा-परीक्षण पूरा होए धरि नव जोड़क उपयोग रोकल गेल, मुदा सुमित्राक नामक दावाक अभिलेखीकरण तुरन्त, पारिश्रमिकक निर्णय अलग सुनवाईमे। छोटलालक घिसबाक मजदूरीक खाता सुमित्रा अपन नाममे जोड़ैत नहि। ई दृश्य कर्ण-पर्वक पैतृक नामक बहससँ आनि उत्पादक श्रमक वास्तविक स्वामित्व पर खत्म करैत अछि। रहीना आ सुमित्राक संक्षिप्त संवाद प्रतिलिपिक स्याही आ लोहेक खाँजक बीच श्रमक अभिलेखीय समानता बनबैत अछि, मुदा दुनू व्यवसायक विशिष्ट बाजार-आधार मेटबैत नहि।

कथनकाल, निजी पाठक आ समापनक अपूर्ण भविष्य

‘सत्ताइसक मिलान’क दिनभरिक प्रक्रिया घरक भातसँ शुरु होइत, अभिलेख-कक्षक तीन मेज पर विस्तृत होइत, फेर घरक चूल्हा आ समाचारक रात्रिक पाँतिमे समटैत अछि। कथनक दृष्टिकेन्द्र सरिता–रमा–नैराक बीच घुमैत अछि; नैराक अनिश्चित सूचना-इच्छा सरिताक अनुमति आ रमाक संस्थागत जिम्मेदारीसँ अनुशासित होइत अछि। सत्ताइसम व्यक्तिक सीमित सत्यापनक समय नैराक सचमुच बाहर चलि जएब दृष्टिकेन्द्रणक नकारात्मक घटना थिक : पाठक कथावाचकक उपलब्ध कैमरा भितरे रहितो सूचना नहि पबैत, किएक तँ दृश्य नैतिक रूपेँ बन्द कएल गेल अछि। ई औपचारिक साहित्यिक चयन पात्रक गोपनीयताकेँ कथन-स्तरपर फलित करैत अछि।

एहि शिल्पमे सीमासभो अछि। मुख्य सूची-मिलानक दृश्य लगातार लिखित निष्कर्ष आ नैतिक सावधानीमे घटैत अछि; सत्ताइसक अनेक व्यक्तिक व्यक्तिगत आवाज पाठक धरि नहि पहुँचैत। संख्याक सम्पूर्ण मिलान विश्वास योग्य बनएबाक लेल लेखक पात्रसभक प्रक्रियागत ईमानदारीपर बेसी निर्भर रहैत छथि। पाठकीय जिज्ञासा—किछु अज्ञात व्यक्तिक जटिल जीवनक विशिष्ट परिणाम जानब—अपूर्ण रहि जाइत अछि। मुदा ई अपूर्णता आ

संभावित कथा-दुर्बलता एके नहि : पाठकक जानबाक इच्छा बनाम व्यक्तिक अनुमति एहि अध्यायक मूल नैतिक संघर्ष अछि। आवश्यकता केवल ई जे आगूक पर्वमे बंद रहल साक्ष्यक उचित सामाजिक परिणाम देखाओल जाए, नहि तँ अत्यधिक ‘अलग जाँच’क विधान कथाक भावात्मक प्रगतिक पुनरावृत्ति बनि सकैत अछि।

अन्तमे अनिरुद्धक अस्पतालक दवा, गाड़ी आ जलनिकासी संकट, सुमित्राक असुरक्षित फाटक-काज रोकबाक आग्रह, सरिताक एखन धरि अमल नहि भेल मृत्यु-सुधार, शेखर–देवव्रतक लम्बित जाँच आ मिथुनक स्वतंत्र खोज स्पष्ट करैत अछि जे एक सूचीक मिलानसँ सामाजिक संसारक विसंगति समाप्त नहि। सरिता पीतरक मूल सूची घर वापस लैत छथि; निरीक्षणक सीलबन्द विवरण कार्यालयमे रहैत अछि। ई वस्तुक दू स्थान ज्ञान-अधिकारक दू क्षेत्र सुरक्षित करैत अछि। चाउरक बासन फेर आँचपर; संकेत पाठशालासँ घुरि कठिन शब्द लिखैत अछि; कबीर काठक ताखक पर्ची लऽ अबैत छथि। घरेलू दिनचर्या एक बेर फेर सरकारी कागदक विजय अथवा पराजयसँ पैघ जीवन बनैत अछि। निश्चित निष्कर्ष एतबे : सत्ताइस प्रविष्टिक आवश्यक सम्बन्धक मिलान पूर्ण भेल; व्यक्ति-सहमति बिना निजी नाम सार्वजनिक नहि भेल। एकरा २१६ अध्यायक समग्र उत्तर अथवा सम्पूर्ण न्याय घोषित करब गलत हएत।

कर्ण-पर्व / सुन्दरकाण्ड : अध्याय ८५–९६ क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

कर्ण-पर्वक बारह अध्याय जन्म, पालन, श्रेय, सामाजिक पहिचान, सरकारी प्रविष्टि आ अपराध-जाँचक छओ आन्तरिक उपधारामे चलैत अछि। अध्याय ८५–८८ राधाक पालन-श्रम, सरिताक निजी मूल पन्ना, पाँच बदलल परिचय आ चौदह प्रशासनिक विसंगति खोलैत अछि। ८९–९२ चारि जीवितक गलत मृत्यु-चिह्न, चारि दिवंगतक सक्रिय खाता, सुभद्राक कथनक मर्यादा, सरिताक बकाया एवं जानकीपर लगाओल आरोपक खण्डन लैत अछि। ९३–९६ मालखेपक वास्तविक मध्यस्थ सम्बन्ध, जन्मदात्री आ पालन करनिहारी मायक पृथक सत्य, महेशक हत्या-जाँचक परतदार साक्ष्य आ सत्ताइस पाँतिक सीमित मिलानपर पहुँचैत अछि। क्रम पृष्ठपर एकहि महान ‘षड्यन्त्र’क सरलीकृत उद्घाटन नहि; अनेक व्यक्तिक जीवनपर भिन्न प्रभाववला प्रमाण-व्यवस्था अछि। आख्यानक कुल ३१,७८३ शब्द-एककक पर्व-संख्या पाठगणनाक परिमाण अछि, वास्तविक घटना-घनत्वक सूचक नहि।

महाभारतक कर्णक जन्म–पालन–सामाजिक पहिचानक संकट आधुनिक कबीर–सुभद्रा–पालन करनिहारी मायक संवादमे प्रतिबिम्बित होइत अछि। मुदा जन्मक रहस्यक प्रकाशन सँ किस तरहक स्वीकृति आ उत्तराधिकार भेटत, आधुनिक पात्र अपन वर्तमान सम्बन्ध आ दस्तावेजी अधिकारक अनुरूप चुनैत छथि। एकर भीतर ‘कुण्ती’ वा ‘राधा’क पौराणिक भूमिका ककरो आधुनिक पात्रपर जड़ बराबरीसँ चढ़ा देब उपन्यासक बहुकालीन शिल्पक विरुद्ध होयत। रामायणक सुन्दरकाण्डसँ एहिठाम ‘सन्देश पहुँचब’ आ ‘विश्वसनीय साक्ष्य लऽ घुरब’क नैतिक प्रश्नक संवाद छैक; हर आधुनिक खेप, पत्र, फोल्डर वा दूतकेँ हनुमानक सीधा अवतार मानल नहि जा सकैत। उपन्यासक परापाठमे तीन दार्शनिक परम्परा जाँहि ठाम स्पष्ट देखाएल अछि, ओतबे सम्बन्ध स्वीकारब

आवश्यक। आख्यानगत प्रमाण-विभागक विश्लेषण आलोचकक जाँचक औजार अछि; प्रत्येक पात्रक व्यवहारकेँ शास्त्रक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि बना देब।

कथनकालक दृष्टिसँ ई पर्व बहुत अंशमे भोरसँ रातिक दैनिक लघुकाल आ बहुत वर्षक अग्रज अभिलेखक परस्पर अन्तराघातसँ बनैत अछि। वस्तु-अवधान—पीतरक डिब्बा, कर्णक पालनक स्मृति, अलग रङ्गक पत्र, औषधि-पेटी, गोदामक चाभी, मुहर, बैंक-जमा, धातुक मूल खाका—कथा-समयक मूर्त गवाह बनैत अछि। सरिताक रोजमर्राक रसोइ सामाजिक उपेक्षा आ स्वयं-अधिकारक स्थायी सन्दर्भ-बिन्दु अछि; कबीरक मायक चौकी आ दीया एक निजी सम्बन्धक अनिर्वचनीय जीवन सुरक्षित रखैत अछि। विभिन्न पात्रक दृष्टि आवर्तनसँ सामाजिक विस्तार भेटैत अछि, किन्तु महत्त्वपूर्ण कथात्मक भाव-केंद्र अनेक व्यावसायिक उपकथाक भीड़मे दबि सकैत अछि।

कर्ण-पर्वक सर्वाधिक ठोस उपलब्धि निष्कर्षक प्रकार अलग बनायब थिक। जानकीपर पूर्व आरोपक आधार खण्डित भेल, एहि लेल मिथुन भेटल नहि; सुभद्रा जन्मदात्री होएबाक प्रत्यक्ष कथन देलीह, एहि लेल सरकारी जन्मपंजीक पूर्ण प्रमाण स्वतः नहि; शेखरक दबाव आ रात्रिक प्रवेशक अनेक कड़ी भेटल, एहि लेल देवव्रतक हत्या-आदेश प्रमाणित नहि; सत्ताइस प्रविष्टिक मिलान पूरा भेल, एहि लेल सभ भुगतान सुधरल नहि। सामाजिक–नैतिक आलोचनाक दृष्टिसँ ई न्याय आ ज्ञानक अनुपात बनाबयक कठिन साहित्यिक प्रयास अछि। एहि संग कमीसब देखल चाही : एकहि प्रकारक साक्ष्य-विभाजन पात्रसभक संवादमे बारम्बार दोहराएल अछि; कतहु नाटकक परस्पर असंगत इच्छा कानूनी सावधानीक समान शब्दावलीमे समटि जाइत अछि; सामाजिक दबावक प्रशासनिक प्रभाव बहुधा ‘अगिला सुनवाई’क रूपमे स्थगित रहैत अछि। भविष्यक मूल्यांकनमे जाँचना पड़त जे एहि विलम्बक फल आपदा, मृत्यु, न्याय आ पुनर्वासक पछिला पर्वसभमे कतेक प्रभावी रूपेँ आबैत अछि।

पर्व ८५–९६ क निर्णायक अपूर्णता एहि कारण कम महत्वक नहि : कर्ण-पर्व व्यक्तिगत जन्म-सत्य सँ सामूहिक अभिलेखीय न्याय धरि यात्रा करैत अछि, मुदा व्यक्तिक निजताकेँ सत्यक शत्रु नहि मानैत। एक सूची पर अधिकारीक प्राप्ति-मोहर, एक मायक निजी गवाही, एक कारीगरक अपन हतक खाका, एक मृतकक विधवाक सीमित सहमति—ई सभ न्याय बुझबाक अलग-अलग स्थान अछि। एहि स्थलसभक समान गरिमा रखबाक कारणेँ उपन्यास आधुनिक महाकाव्यक एक नैतिक सम्भावना विकसित करैत अछि। एहि सम्भावनाक अन्तिम कलात्मक सफलताक निर्णय मात्र कर्ण-पर्वमे नहि, अगिला शल्य–सौप्तिक–स्त्री आ उत्तरकाण्डक परिणाम देखिकऽ देब उचित हएत।

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड

अध्याय ९७ — शल्यक निष्ठा

आतिथ्य-ऋणक छद्म : वचनक उत्पत्ति आ स्वातन्त्र्य

अध्याय प्राचीन मद्रदेशक रथसँ खुलैत अछि। शल्य केवल उच्च कुलक सेनानी नहि, घोड़ाक सेवक, रसोइया, अन्नक गाड़ी आ पैदल सैनिकक श्रमसँ चलैत दलक नायक छथि। रातिक ओससँ फूलल चमड़ा, धुरीमे तेल आ सेवकसभक थाकल देह युद्धक राजनीतिक घोषणासँ पहिने अबैत अछि। एहि क्रमक आलोचनात्मक अर्थ अछि : राजाक वचनक फल ककर देहपर पड़त, से कथा तत्क्षण दृश्य करैत अछि। स्वागतक भव्यता देखिकऽ वृद्ध सेवक युधिष्ठिरक नाम अनुमान करैत अछि, मुदा स्वागतकर्ता अपन पहिचान नहि खोलैत। तकर बाद शल्य अज्ञात ‘आतिथ्यदाता’क युक्तिसंगत माँग पूरा करबाक वचन दैत छथि, आ दुर्योधन सोझाँ अबैत छथि। मूल कथागत जाल एहि विलम्बित नाम-प्रकटनमे अछि, केवल आखिरी क्षणक आश्चर्य उत्पन्न करबामे नहि।

शल्य दुर्योधनसँ स्पष्ट कहैत छथि जे भोजनक ऋण आ छलसँ चुनाओल युद्धपक्ष एक नहि। तथापि ओ वचनकेँ सम्पूर्ण निरस्त घोषित नहि करैत छथि; अपन निर्णयक हिस्सा स्वीकारि सैन्यपक्ष बदलैत छथि। ई नैतिक रूपसँ कठिन संयोजन अछि : छल वस्तुतः स्वागतकर्ताक छल, मुदा दोसर पक्षक संग जएबाक क्रियाक उत्तरदायित्व शल्यक अपन। भागिने नकुल–सहदेवकेँ अलग-अलग पत्र पठेबाक प्रसंगमे ‘बाध्य’ कहलासँ अपन चुनाव छिपि जाएत, एहन स्वीकार हुनकर आत्मालोचनाक नाभि बनैत अछि। पात्रकेँ निष्कलङ्क प्रतिरोधक मूर्ति नहि बनाओल गेल अछि; निष्ठाक संग अपराधजनक संरचनामे सहभागिताक प्रश्न सेहो बनल अछि।

आख्यानगत भाषामे ‘अतिथिसत्कार भेल’ प्रत्यक्ष घटनाक पक्ष अछि; ‘एहि सत्कारसँ सभ सैनिक युद्धमे स्वेच्छासँ सम्मिलित भेलाह’ अलग साध्य अछि। भोजनक प्राप्ति-चिह्न प्रमुखक मोहरसँ सामूहिक रूपेँ बनल अछि, व्यक्तिगत सैनिकक सहमति नहिओ भऽ सकैत अछि। अतः सत्कार–सैन्यसहमतिक कल्पित व्याप्ति उपाधियुक्त अछि। शल्यक खर्च-बही माँगब दर्शनक पदक अलङ्कार नहि, सामूहिक स्वेच्छाक दावाक भौतिक परीक्षण अछि। रसोइमे मद्रसँ अनल अन्न आ स्वागतमे भेटल भोजन अलग गनब राजनीतिक पक्ष-परिवर्तन आ सम्पत्ति-हस्तान्तरणक स्वतन्त्रता सिद्ध करैत अछि। तथापि पाठ ई नहि बतबैत जे सभ सेवककेँ बादमे स्वतन्त्र निर्णयक संस्थागत साधन कतेक भेटल; राजाक विवेकपर हुनकर भविष्य निर्भर रहब एहि दृश्यक सीमा अछि।

अस्पतालक पाँच वस्तु आ एक रोगीक वास्तविक बाट

आधुनिक कालधाराक प्रवेश तेइसम नहि, तेरहम पाठांशमे भोरक अस्पताल-दृश्यसँ होइत अछि। अनिरुद्ध बिगड़ल स्ट्रेचर-चक्का आ फाटल फर्श देखैत छथि; सत्ताइस पाँतिक मिलान पूरा भेला परो फर्श नहि सुधरल। ई वाक्य-सम्बन्ध पूर्वपर्वक अभिलेखीय उपलब्धिक समक्ष तुरन्त भौतिक असम्पन्नता रखैत अछि। अस्पतालक फाटकपर तारा आ हीरा दू जलमापकक शून्य-बिन्दु अलग करैत छथि : सरकारी नाप आ गामक पुरान चिन्ह बिना जाँच एक नहि। तत्काल रोगी-पहुँच आ स्थायी जलनिकासी अलग प्रश्न छथि। पाँच वस्तु—गोदामक चाबी-पेटी, गाड़ी-पर्ची, जलमापकक प्रति, रसोइक खर्च-बही आ सार्वजनिक प्रति-नियम—मेजपर स्थापित कएल जाइत अछि।

वस्तुसभक ई संयोजन एहि अध्यायक कथात्मक ‘सभा’ अछि : सभ पक्षक संकट एक-दोसराकेँ छूबैत अछि, मुदा अलग प्रमाण आ अधिकार माँगैत अछि।

पहिल सन्धिमे ‘निजी मेड़मे निर्बाध प्रवेश’पर सहमति टूटल छल। नव अधिकारी प्रस्तावमे ‘सर्वसम्मत सुविधा’ लिखि देब चाहैत अछि, जखन शबनम सभाक मत एखन भेल नहि से याद दिअबैत छथि। सूचना, प्रस्ताव आ वास्तविक सहमति बीचक अन्तर रमा कर्ण आ रमेशक पत्नीक प्रतिवादमे आरो तीक्ष्ण होइत अछि। रमेशक पत्नी रोगीकेँ नहि रोकैत छथि; ओ अनधिकृत निजी खेत-कटानक बाद क्षतिपूर्तिक प्रश्न उठबैत छथि। एतय स्त्रीक श्रमदागवाली हथेली विवरण मात्र नहि : जलप्रवाहक माप आ खेतक बीहनक नाशक सम्भावना एक्के स्थलमे अलग अनुभवक ‘प्रत्यक्ष’ अछि।

रुहानी भोजनक अनाज, जलावन, बासन धोब, ढुलाई आ विशेष भोजनक खर्च अलग करैत छथि। स्वेच्छासँ दू बासन भात भेजब आ पचास जनाक प्रतिदिन निःशुल्क रसोइ चलब एक नहि। सुमित्राक नव धातु-नमूना अपन डिजाइन होइतहुँ चिकित्सकीय उपयोग लेल अनपरीक्षित अछि; इरफान खराब धुरीपर केवल नब चक्का लगा देनेकेँ सुरक्षा नहि कहैत छथि। लेखक एहि दृश्यमे ‘नीक उद्देश्य’सँ उत्पन्न सम्भावित हेत्वाभास रोकैत छथि : उदारता, कारीगरीक स्वामित्व वा तत्कालिकता, एतबा मात्र सुरक्षा-सिद्धान्त नहि।

चौबीसम पाठांशमे जगदीश झाक पुतोहु अपन उपचार, नामक गोपनीयता आ जाँचल मार्ग चुनबाक सम्बन्धमे स्वयं कहैत छथि। चारि वाहक—दू घाट-मजदूर आ दू प्रशिक्षित सहायक—क संग एक सफल स्थानान्तरण होइत अछि; निजी मेड़ नहि काटल जाइत। एहि एकल घटनाक तात्पर्य जतेक ठोस, सीमा ततेक स्पष्ट : चारि वाहकक दर लिखल गेल, पर पूरा सड़क, नाली अथवा गोदामक औषधि-संकट हल नहि भेल। शबनम अन्तमे ‘सर्वसम्मत’ काटि ‘विवादित प्रस्ताव’ लिखबैत छथि; हीराक हस्ताक्षर पगडण्डीक एक निरीक्षित खण्ड धरि सीमित रहैत अछि। नैराक बदलल शीर्षक ‘एक रोगीक बाट खुलल, पाँच शर्त एखन परीक्षणमे’ समाचारक कथनकर्त्ता द्वारा अपन अति-विस्तृत साध्यक संशोधन अछि। ई सूक्ष्म आत्मसंशोधन आरम्भिक शल्य-दृश्यक वचन-दायित्वसँ अर्थ-संवाद बनबैत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ उपलब्धि-सीमा

प्राचीन कथा रातिक विश्रामसँ भोरक पक्ष-निर्णय धरि चलैत अछि; आधुनिक दृश्य भोरक खराब चक्का, दोपहरिक बैठक, एक रोगीक स्थानान्तरण आ साँझक शीर्षक-संशोधनक क्रममे। दुनू कालखंड स्वतंत्र दृश्य छथि; कोनो पात्रक पुनर्जन्म अथवा समतुल्य वंश-सूत्र नहि। शल्यक भीतरक सङ्कोच सर्वज्ञ कथावाचक मार्फत देखाइत अछि; आधुनिक भागमे नैरा, तारा, रुहानी, रमेशक पत्नी आ रोगीक वाणी पात्रगत दृष्टिकेन्द्र बँटबैत अछि। ई बहुकेंद्रितता जखन जाँचक कागद धरि पहुँचैत अछि, तखन कखनो पात्रक व्यक्तिगत चेतना संस्था-विवरणमे दबैत अछि।

अध्यायक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि ‘वचनक सीमा’केँ दृश्य, भोजन, खर्च-बही, नाप, हस्ताक्षर आ शरीरक वास्तविक वहनसँ जोड़ब अछि। मुदा आलोचनात्मक आपत्ति ई जे अस्पतालक बैठकमे लगभग प्रत्येक पात्र सुस्पष्ट प्रमाण-भेदक भाषामे बोलैत अछि। परिणामस्वरूप किछु वाक्य वास्तविक दबावक अनिश्चितता सँ बेसी परिष्कृत कानूनी

तर्क जकाँ सुनाइत अछि। विखण्डित नदी-मार्ग आ बन्द गोदामक समक्ष एक रोगीक पार होएब भावनात्मक केन्द्र देइत अछि, तथापि ओकरा चारिकात बारम्बार शर्त-व्याख्या तनावक स्वाभाविक गति धीमी कऽ सकैत अछि।

अध्याय ९८ — विभीषणक बाट

राजकीय असहमति : भ्रातृत्व, शरण आ घरक श्रम

लंकाक पुरान कालधारा पानिक घैल आ बालकक ‘सुरक्षित के कहत?’ प्रश्नसँ खुलैत अछि। युद्धक उन्मादक पहिने परिवारक सुरक्षित आवागमन आ परिचारकक घटैत चाउर कथामे अबैत अछि। पहरेदार द्वारा सुनाओल राजकोष बन्द होएबाक धमकीक स्रोत अप्रमाणित अछि; मुदा ओ सुनल धमकीसँ परिवारमे उत्पन्न भय वास्तविक अछि। ई अन्तर श्रवण-प्रमाणक त्रुटि मात्र नहि, सामाजिक भयक कथात्मक उत्पत्तिक शास्त्र अछि। विभीषण सीताक जबरन बन्दीकरणक विरोध राजसभामे अपन नामसँ करैत छथि, अनाम सैनिकक नाम उद्घाटित कऽ नहि। सभामे शत्रुक संख्या निश्चित कहनिहार अधिकारीक स्रोत पुछब आ स्त्रीक सहमति पर रावणसँ उत्तर माँगब एक-दोसराक पूरक होइत अछि : अप्रमाणित युद्ध-सूचना आ अप्रमाणित राजकीय औचित्य दूनू चुनौती पबैत अछि।

विभीषणक एक महत्त्वपूर्ण आत्म-सीमा पत्नी द्वारा चिन्हित होइत अछि। ओ घर छोड़बाक निर्णय लेने छथि, मुदा पत्नी, बालक आ सेवकक जीवनपर ओकर परिणामसभक पूर्ण नियन्त्रण हुनकर नहि। पत्नी घरक घैल भरबाक आ परिवारक रहबाक निर्णयमे अपन अधिकारक बात करैत छथि। मूल वेतन-बही परिवार लग छोड़ि, केवल आवश्यक यात्रापत्र लऽ जाएब अपन दायित्वक विभाजन अछि। विभीषण लंकाक गोपनीय जनपथ अथवा निर्दोष सेवकक नाम शरणक दामपर नहि बेचैत छथि। एहि ठाम महाकाव्यीय ‘पक्ष-परिवर्तन’क पुनर्पाठ खास अछि : नैतिक असहमतिक प्रमाण सार्वजनिक वचन अछि, पर ककरो निजी माहिती सार्वजनिक करबाक अधिकार नहि।

रामक शिविरमे सुग्रीव सहित सैन्यदल आशंका प्रकट करैत अछि। राम प्राणरक्षाक आश्रय स्वीकार करैत छथि, मुदा अन्तरंग सैन्ययोजनापर पहुँच आ शरणक अधिकार दू अलग रखैत छथि। विभीषण सीताक स्थान विषयक अपन देखल आ सुनल सूचना पृथक करैत छथि; शिविरकेँ अपन निष्ठाक पूर्वनिर्णीत परीक्षा करब कहि नहि ठानैत छथि। एतय ‘शरण’ तत्काल संरक्षणक नैतिक व्यवस्था अछि, ‘विश्वासक सम्पूर्ण प्रमाणपत्र’ नहि। तथापि ई रामायणक समसामयिक कल्पनात्मक व्याख्या थिक; मूल प्राचीन स्रोतक अक्षरशः प्रस्तुति होएबाक दावा समीक्षामे उचित नहि।

चालकक हड़ताल : अधिकारक स्थगन नहि, सीमित जीवनरक्षा

आधुनिक भाग विदेहपुर, २०३९ मे अस्पतालक पाछाँक फाटकपर तुलसीक गाड़ी-जाँचसँ शुरू होइत अछि। तीन मासक जोखिम-भत्ता, रातिक फेरा आ खराब पुलियाक मरम्मतिक बोझक कारण चालकसभक हड़ताल अछि। ओकरा केवल ‘सेवाक विरुद्ध स्वार्थ’ मानल जायत तँ मूल पाठक वास्तविक तथ्य विकृत होयत। अस्पतालमे रोगी स्थानान्तरणक वास्तविक आवश्यकता अछि, मुदा ओकर अनिश्चित संख्या आ भिन्न चिकित्सकीय

अवस्थाक कारण अनिरुद्ध प्रमाणित आपात माँग अलग करैत छथि। हीरा–ताराक जलमाप एखन भारी वाहन लेल सुनिश्चित नहि; रमेशक पत्नी माप देखबाक अनुमति दैत छथि, निजी मेड़पर प्रवेशक नहि।

पारो चालकनी अपन रातिक दुइ चिकित्सकीय फेराक बकाया देखबैत छथि; अतिरिक्त भुगतान मालवाहकक खातामे पड़ल छल। एहि स्त्रीक बयान दुर्घटनाक सामान्य भयसँ अलग वेतनक वास्तविक स्वरूप खोलैत अछि। गाड़ीक ब्रेक दोष देखिकऽ इरफान दूरयात्रा रोकैत छथि; स्वस्थ छोट वाहन लेल स्ट्रेचर-अनुकूलता प्रशिक्षित कर्मचारी जाँचताह। रुहानी भोजनक स्वेच्छिक दान आ रान्हनिहारक भुगतान अलग रखैत छथि। बहु-श्रमक्षेत्र एकठाम जोडबाक एहि प्रविधिसँ कृति ‘आपदा’क एकसूत्री वीरकथा नहि, आपसी आश्रय आ अलग देयक जाल बनबैत अछि।

तुलसीक तीन लिखित शर्त—केवल प्रमाणित रोगी/स्वीकृत जीवनरक्षक खेप, स्वीकृत चालक–सुरक्षित गाड़ी–भुगतान, आ निजी जमीन लेल पृथक सहमति—कालि्ह भोर छह सँ दुपहर बारह धरि परीक्षणक सीमित योजना बनैत अछि। दू चालक मना करैत छथि, तीन राजी होइत छथि; फेर गाड़ी-जाँचमे एक वाहन अनुपयुक्त निकलैत अछि, तें अन्तिम उपलब्धता दू गाड़ी रहैत अछि। ई घटनाक क्रम गणनात्मक रूपसँ जरूरी अछि। ‘तीन चालक राजी’ आ ‘तीन गाड़ी चलत’ एक कथन नहि। अन्तमे हड़ताल कायम, रोगी लेल सीमित गाड़ी उपलब्ध; पुरान बकाया, गोदामक सील आ मुख्य नालीक अवरोध कायम अछि। नैरा अपन गलत शीर्षक ‘हड़ताल टूटल’ काटि सुधार करैत छथि। एहि दृश्यसँ उपन्यास सूचना-नैतिकताकेँ कथावस्तुक भीतरक सक्रिय क्रिया बनबैत अछि।

प्रमाण, कालप्रवाह आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

प्राचीन कालधारा घर–सभा–निष्कासन–समुद्रतट–शरणक स्पष्ट क्रममे अछि; आधुनिक धारा भोरक वाहन-जाँचसँ अगिला भोरक सूचीधरि एक सीमित प्रशासनिक दिन/रात्रि बनबैत अछि। प्राचीन कालमे विभीषणक चरित्रगत द्वन्द्व भीतर सँ देखाओल जाइत अछि; आधुनिक भागमे तुलसी, जमीर, पारो, रमेशक पत्नी आ अनिरुद्धक अलग प्रत्यक्ष हितक कथनसम्पर्क अछि। ‘आश्रय’ आ ‘सुरक्षित आपात अपवाद’क सादृश्य निष्ठापर प्रश्नक स्तरमे अछि, पात्र-समानता अथवा ऐतिहासिक कारणमे नहि।

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ ‘प्राप्ति-पर्ची देखल’ मात्र भुगतान भेलाक प्रमाण नहि, ‘मापक नक्शा’ निजी प्रवेशक अनुमति नहि, आ ‘गाड़ी उपलब्ध’ रोगीकेँ बाहर पठेबाक चिकित्सकीय उपयुक्तता नहि। कथामे एहन अपवादक सीमा वस्तुगत साक्ष्यसँ स्पष्ट होइत अछि। साहित्यिक उपलब्धि ई जे शरण दयालुता अछि, मुदा दयालुताक शर्तमे आनक अधिकार हरण आवश्यक नहि। सीमा ई जे आधुनिक बैठक क्रमशः लिखित उपधारा बनि जाइत अछि; संवादमे अनेक पात्र अचूक सैद्धान्तिक भाषा बोलैत छथि, जकरा कारण अस्थिर हड़तालक आन्तरिक भय, क्रोध आ असमान सौदेबाजी कखनो कम देखाइत अछि। अन्तक तुलसीक बेटी आ टूटल छाताक छोट दृश्य एहि औपचारिक प्रवाहकेँ फेर घरेलू समयमे उतारैत अछि।

अध्याय ९९ — कुम्भकर्णक जागब

निद्रासँ युद्धधरि : गलत कारण जानितहुँ सहभागिता

कुम्भकर्णक जागरणमे प्रथम संकेत गर्जन नहि, खाँसी अछि। परिचारिकाक फोका, मशालक धुआँ, थाकल सेवक आ आधा खाली पानिक घैल महाबलीक प्रसिद्ध देहकेँ सेवाधीन शरीरक जालमे रखैत अछि। अपन भोजनसँ पहिने जगबेनिहारक भोजन देबाक आग्रह राजकीय शौर्यक पूर्वमे घरेलू श्रमक नैतिकता दैत अछि। एक वृद्ध परिचारिकाक ‘हमसभ आब सुति सकब?’ प्रश्न अन्तमे लौटैत अछि, जाहिसँ महायुद्धक विराट समय कर्मकारक विश्रामक समयसँ टकराइत अछि।

कुम्भकर्ण विभीषणकेँ ‘भ्रातृद्रोही’ कहल देल समाचार स्वीकार नहि करैत छथि; सीताक बन्दीकरण, सभामे विवाद आ विभीषणक प्रत्यक्ष कथनक स्रोत अलग पुछैत छथि। मन्दोदरी घायल घरसभक अपूर्ण सूची दैत छथि—जकर घर पहुँचब बन्द, ओकर सूचना अनुपस्थित। कुम्भकर्ण एहि अभावकेँ ‘ओहि घरमे केओ नहि’क प्रमाण नहि बनबैत छथि। युद्धनक्शापर छोट गाम मेटि देनिहार सेनानायककेँ वास्तविक निवासी जाँचबाक कहब मानचित्रक शून्य आ जीवनक शून्यक बीचक गम्भीर अन्तर अछि।

रावणसँ कुम्भकर्ण स्पष्ट कहलनि जे सीताकेँ बिना सहमतिक राखब अन्याय अछि। मुदा नगरक कमजोर लोकक रक्षा लेल ओ युद्धमे जाइबाक निर्णय लैत छथि, घायल, शस्त्र छोड़ल आ घरक लोकपर प्रहार नकरबाक आत्म-सीमा रखैत। ई शल्य आ विभीषण दूनू सँ भिन्न निर्णय अछि। शल्य छलयुक्त आतिथ्य-ऋणक बावजूद युद्धपक्ष बदलैत छथि; विभीषण अन्यायक कारणसँ राजघर छोड़ैत छथि; कुम्भकर्ण कारणकेँ गलत मानितहुँ राजकीय सैन्ययात्रामे प्रवेश करैत छथि। अपन नैतिक प्रतिबन्धक घोषणा युद्धक हिंसाक वास्तविक परिणाम रोकत, एकर गारंटी पाठ नहि देइत। आख्यानक उपलब्धि ई जे गलत कारणक युद्धमे ‘रक्षात्मक उद्देश्य’ कहि सहभागिताकेँ निर्दोष घोषित नहि कएल गेल।

कमलेशक मरम्मति आ देवीक प्रशिक्षण : दू स्वतन्त्र स्वायत्तता

आधुनिक खण्ड विदेहपुर, २०३९ क बरसाती गल्ली आ कमलेश दबगरक मरम्मति-दोकानसँ शुरू होइत अछि। तीन गुना किराया अथवा सात दिनमे किवाड़ खाली करबाक नव पर्चीपर कमलेश तुरन्त हस्ताक्षर नहि करैत छथि। ओ किराया, मरम्मति, ग्राहकक बकाया आ निजी सामानक विवरण अलग खाता बनबैत छथि। सामुदायिक चबूतरापर नगरक नालीक प्रस्तावित मरम्मतिकेँ पूर्ण कहि शुल्क वसूलबाक प्रयासक दोष तिथि-मिलानसँ पुष्ट होइत अछि, मुदा निजी मूल किराया आ मकान-मालिकक अधिकार-विवाद निर्णयधरि नहि पहुँचल। ई प्रमाण-सीमाक स्पष्ट प्रस्तुति अछि : झूठ शुल्कक एक आधार टूटल, सम्पूर्ण किरायाक मामला नहि जीतल गेल।

देवी गोंडक प्रशिक्षण-पंजीमे तीन पहर ‘अनुपस्थित’ लिखल अछि; हुनका लग बसभाड़ाक पर्ची, प्रशिक्षण-उपस्थिति आ अस्पतालक सामग्री-प्राप्ति नम्बर अछि। अधिकारी हुनकर मायक अस्वस्थता देखाकऽ प्रशिक्षण छोड़बाक सुझाव दैत अछि, मुदा कोनो चिकित्सकीय आदेश वा प्रशिक्षण-समाप्तिक आधार नहि। घरेलू भागमे माय अपन दवा समयपर भेटबाक वास्तविक समस्या उठबैत छथि; एहि व्यावहारिक जरूरतकेँ केवल ‘स्त्रीक

स्वतंत्रता’क उद्घोषसँ नहि मेटाओल गेल। देवी, माय आ भाइ भुगतानयुक्त देखभालक समय बाँटबाक योजना बनबैत छथि, आ माय अपन चिकित्सा-पर्ची सम्हारबाक अधिकारो रखैत छथि। दोसर दिस, सलमाक निरीक्षणमे देवी अठारहक बदला सत्रह पट्टी गनैत कमी दर्ज करैत छथि; आपातकालक नामपर गलत संख्या नहि लिखैत। प्रशिक्षणक दौरान रोगीक सहमति पुछब आ गलतीक लाल चिह्नकेँ सीखबाक प्रमाण मानब पात्र-विकासक सकारात्मक दृश्य अछि।

कमलेश आ देवीक संयोग एक्के औचित्यक ढाँचा नहि। कमलेशक निजी किराया–सार्वजनिक बाट–कारीगरीक स्वामित्व त्रिकोण अछि; देवीक प्रशिक्षण–घरक देखभाल–रोगीक सहमति दोसर त्रिकोण। अस्पतालक निकासी लेल कमलेशक दुकानक पट्टी अस्थायी उपयोग करबाक प्रस्तावपर माप, समय आ पारिश्रमिकक सैद्धान्तिक सहमति भेटैत अछि, स्थायी बेदखली नहि। देवीक तीन गलत अनुपस्थिति-पहरक पुनर्जाँच स्वीकार होइत अछि; सुधारल पंजी वा प्रशिक्षण-भत्ताक भुगतान एखन नहि। कथा छोट सफलता आ मुख्य अनिर्णयक अनुपात बनौने राखैत अछि।

घैलक रिसाव : रूपकक अर्थ आ कलात्मक जोखिम

अन्तिम दृश्य कमलेशक आधा जोड़ल घैलमे पानि भरबाक परीक्षण अछि; एक बूँद टपकैत अछि, तें ओ घैल ग्राहककेँ नहि दैत, पुनः जाँच करैत छथि। ई केवल ‘अपूर्ण सुधार’क वाचिक प्रतीक नहि; मरम्मति-कौशलक आन्तरिक माप अछि। जतेक सुधार भेल ओ देखाइत अछि, आ जतेक दुरुस्त होएब बाँकी ओ सेहो हाथमे पकड़ल जा सकैत अछि। विद्यालयक लाल चिन्हक ‘नाम कटब’ आ ‘सीखबाक त्रुटि’ बीच मायक प्रश्न एहि प्रमाणशील प्रतीकसँ संवाद बनबैत अछि। जलनिकासीक पानि एखन अटकल अछि; घैलक छोट रिसाव सार्वजनिक अवरोधकेँ सस्ता रूपक बनाकऽ समाप्त नहि करैत।

रचनात्मक सीमाक प्रश्न : प्राचीन कुम्भकर्णक परिचारिका, मन्दोदरी, युद्धगाम आ सैनिक परिवारक विवरण व्यापक नैतिक पुनर्पाठ करैत अछि, मुदा अनेक उपवाक्य आधुनिक ‘सुरक्षा-प्रशासन’क शैलीमे व्यवस्थित लगैत अछि। आधुनिक भागमे देवी आ कमलेशक सुस्पष्ट लेखा-विभाजन उपलब्धि होइतहुँ शास्त्रीय द्वन्द्वक ऊर्जा किछु धीमी करैत अछि। तइयो युद्धमे जएबाक दोषस्वीकार आ अधूरा घैलक पुनर्परीक्षण पाठककेँ ‘कर्मक सफलता’क जगह ‘कर्मक जवाबदेही’क प्रश्नमे रोकैत अछि। रचनाक कर्ण-पर्वसँ शल्य-पर्व धरि संक्रमणमे ई अर्थगत फेरबदल महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय १०० — दूसर समझौता

पहिल असफल सन्धिक दस्तावेज जकरा नव पन्ना मेटि नहि सकैत

ई अध्याय स्वतंत्र प्राचीन दृश्यसँ नहि, नगर कार्यालयक भोरक पाँच भीजल कागदसँ खुलैत अछि। उर्मिला धुँधल समय फेर मूल पंजीसँ उतारैत छथि। प्रारम्भिक दृश्य संवेदनात्मक अछि—टपकैत छप्पर, दहीक खाली कुल्हड़, चिक्कट पात—मुदा ओकर कथात्मक काम मूल सूचना बचबाएब अछि। पहिल असफल बैठकक आपत्ति-पन्ना

रमा फाड़ए नहि दैत छथि। नव समझौता पहिल विवादक उत्तर भऽ सकैत अछि, इतिहास-मोचन नहि। नैराक प्रारम्भिक नोट ‘दूसर बैठक, पहिल आपत्ति सुरक्षित’ कथनक आन्तरिक सम्पादकीय अनुशासन अछि।

देवव्रत कार्यालयक सहायता-राशि नब सन्धिक उपलब्धि बनए चाहैत छथि; अनिरुद्ध अलग सहायता-रसीद आ वास्तविक रोगी-बाटक उत्तरदायित्व अलग रखैत छथि। एहि भेदमे लेखाक विलोपन नहि, प्रसंगक सीमांकन अछि। गाड़ीक पहिल मसौदामे ‘आवश्यकता पड़लापर उपलब्ध’क अस्पष्ट वचन अछि; जमीर ‘आवश्यकता के तय करत, वाहन कतेक, चालकक विश्राम कतय?’ पुछैत अछि। अन्तिम प्रस्ताव चिकित्सकक प्रमाणित माँग, सुरक्षित उपलब्ध वाहन, सहमत चालक, विलम्बक वास्तविक समय, जोखिमभत्ता आ अलग बकाया-पंजीक रूप लैत अछि। अतः समझौताक भाषा सेवा उपलब्ध करएबाक परिस्थितिक शर्त निर्दिष्ट करैत अछि, सर्वकालिक वाहन-गारंटी नहि।

नाली, गोदाम, रसोइ आ प्रति : पाँचू शर्तक भिन्न प्रमाण

दूसर शर्तमे अभियन्ता निजी मेड़ काटिकऽ सस्तो निकासी चाहैत अछि। रमेशक पत्नी अपन खेतक कटानक लागत आ अनुमति पुछैत छथि; अभियन्ताक लग आपात प्रवेशक लिखित आधार नहि। सार्वजनिक नालीक भीतर छोट अवरोध हटेबाक माप सम्भव अछि, मुख्य दीवालक संरचनात्मक सुधार शेष। पारो पत्थरकट्टा पत्थर काटबाक काज स्वीकार करैत छथि, मुदा भितरी माटिक भार-प्रमाणपत्र अभियन्ताक दायित्व ठहरबैत छथि। सुरक्षा-आपत्ति दर्ज भेलापर काम रोकबाक अधिकार हुनका अनुबन्धमे भेटैत अछि। ई केवल अधिकार-कथन नहि, अप्रमाणित कार्य-भार अस्वीकार करबाक जीवन्त श्रमिक निर्णय अछि।

तेसर शर्तमे गोदामक दू सूची अछि : स्वीकृत उपचार-सामग्री आ असमान लेबलक कारण रोकेल खेप। एके ‘आपदा-मुक्ति’क मुहरसँ दूनूकेँ मुक्त करबाक प्रस्ताव रमा काटैत छथि; मजदूर प्रतिनिधि भीतरक गिनती, फेर सील आ भुगतानक मद जोड़बैत अछि। ई लघु विवरण मुख्य कथासूत्र महेशक हत्या-जाँचसँ गड्डमड्ड नहि करबाक सेहो सावधानी अछि। नव समझौतामे देवव्रतक हस्ताक्षर हुनका पुरान हिंसा-संबन्धी जाँचसँ निर्दोष सिद्ध नहि करैत; हुनकर मौनकेँ दोषस्वीकार सेहो नहि मानल गेल।

चौठ शर्त रुहानीक दू डिब्बासँ मापल जाइत अछि—आजुक पकल भात आ काँच दाल। अनाज-दान, खरिद आ मजदूरी तीन अलग स्तम्भ बनैत अछि। भोजनक सार्वजनिक फोटो लेल परिवारक अनुमति नहि, एहन प्रतिवाद कथाक निजता-सूत्रकेँ नब प्रसंगमे लबैत अछि। सोना कठौतियाक पुरान ठेला-बकाया आ नब बाँस-पाट ढुलाईक भाड़ा अलग अछि; प्राप्ति-दावा दर्ज भेला पर भुगतान भऽ गेल, एहन पाठ नहि कहैत। ‘बेढ़ी’ नामक पुरान ढुलाई-ठामकेँ नदीक प्रत्यक्ष संगम नहि मानबाक सोना–ताराक सावधानी प्रामाणिक भूगोल आ अभिलेखीय नामक अन्तर सुरक्षित रखैत अछि।

पाँचम शर्तमे ‘सभ पक्ष सहमत’क सरकारी प्रारूपक सोझाँ सार्वजनिक प्रति, हस्ताक्षर–आपत्ति सहित अधिकृत प्रति आ गोपनीय निजी परिशिष्टक व्यवस्था बनैत अछि। बादमे ‘निजी सम्पत्तिक उपयोगक अनुमति निहित’ वाक्य रमेशक पत्नी पढ़ि हटबबैत छथि। कोनो व्यक्तिक सभामे उपस्थित रहब, सार्वजनिक सर्वेक्षण देखबाक इच्छा आ निजी भूमि उपभोगक स्वीकृति तीन अलग कथन-अवस्था छथि। अन्तिम समझौतेमे रोगी-गाड़ी,

सार्वजनिक नालीक चिन्हित काज, जाँचल गोदाम-सामग्री, रसोइक अनाज/मजदूरी आ सार्वजनिक आपत्ति-पञ्जीक पाँच शीर्षक सीमित जिम्मेवारीसहित दर्ज होइत अछि। ‘निर्धारित सीमामे दोसर कार्य-समझौता’ शीर्षक एतय निर्णयक यथार्थता अछि, विजयक बड़बोली घोषणा नहि।

समय, दृष्टिकेन्द्रण आ आपदा-कथाक अपूर्ण उपलब्धि

पूरा अध्याय एक दिनक कार्यालयी समयक भीतर बुनल अछि—भोरक भीजल मूल, दिनक पाँच वार्ता, सही, साँझक आरम्भिक नालीक काम, आ रातिक दू प्रति सुरक्षित रखबाक क्रिया। एहि क्रममे ‘दूसर समझौता’ घटना अछि, किन्तु जलनिकासी सुधरि गेल से घटना नहि। नालीक छोट काम शुरू भेल; भारी पट्टा नहि लागल, जलस्तर यथावत्, अस्पतालक भीतरी रिसावक जाँच शेष। दू गाड़ी ठाढ़ छथि, मुदा प्रत्येक रोगीक चिकित्सकीय आवश्यकता अलग निर्धारित होयत। गोदामक जाँचाधीन खेप सीलमे अछि; पुरान ठेलाभाड़ा आ हड़तालक बकाया पूर्ण चुकता नहि।

कथावाचकक दृष्टि शबनम, रमा, तुलसी, रुहानी, रमेशक पत्नी, पारो, सोना आ उर्मिलाक बोलबामे वितरित अछि। उच्च पदस्थ अधिकारीक ‘एक हस्ताक्षर’क समक्ष अनेक लघु हस्ताक्षरक सीमा उपन्यासक बहुस्वरताक संरचना बनैत अछि। मुदा सभ आवाज एकदम समान स्वतन्त्रता लैत अछि से नहि : सभाक निर्णायक पंक्ति घुमि-फिरि रमा आ शबनमक दस्तावेजी भाषामे स्थिर होइत अछि। सामान्य कामगारक वैकल्पिक अस्पष्ट, हिचकैत अथवा भावविह्वल वाणीकेँ एहन सुगठित समिति-वाक्य ढाँकैत अछि की नहि, से आलोचनाक प्रश्न रहत।

आख्यानशास्त्रमे ‘हस्ताक्षर भेल’ हेतु धरि अछि; ‘सम्पूर्ण सहमति’ साध्य एहि हेतु सँ अव्याप्त, कारण प्रत्येक सही सीमित पन्ना वा अपवादपर अछि। शास्त्रीय शब्दानुशासन अन्ध उपमान नहि बनय : प्रक्रिया-विवेचन पाठमे अछि, तकरा आख्यानगत प्रमाण-परम्परासँ आलोचक तुलनात्मक रूपमे पढ़ैत अछि। अंतिम दृश्यमे उर्मिला–नैराक अगिला वर्षक उराहि पर्वक बारेमे हँसी आ अपन लेल छुट्टीक बात सार्वजनिक सेवा बीच व्यक्तिगत विश्रामक आग्रही समय बनबैत अछि। ठंढा चायक एक घूँट नैतिक भाषणक बाहरक सहज जीवन अछि। शान्त, तटस्थ निष्कर्ष—समझौता पानिक ऊपर बनल पुल नहि, काल्हि जाँचि सकनिहार वचन—मूलक अन्तिम वाक्यक आशयसँ मेल खाइत अछि।

एहि अध्यायक उपलब्धि बाढ़/युद्धक विशाल सङ्कटकेँ अनेको सीमित, निरीक्षणयोग्य क्रियामे विभक्त करब अछि। मुदा कथा-पाठक लेल जोखिम सेहो अछि : लगातार पाँच शर्त, एतेक प्रतिनिधि, अनगिनत रसीद आ परिशिष्टक क्रम संवेदनात्मक आवेगकेँ सूची-जेकाँ बना सकैत अछि। शल्य-पर्वक नामसँ युद्धक तीव्रता चाहनिहार पाठककेँ एतय कार्यालयी सावधानीक दीर्घ अन्तराल भेटत। तकर औचित्य एखन सम्पूर्ण युद्धकाण्डमे आपदा-परिणामक अगिला अध्यायसभ पढ़िकऽ मूल्याङ्कित होएत; एहि एकटा समझौतासँ समग्र कथात्मक विजय घोषित करब समयपूर्व होयत।

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ९७–१०० क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन

तीन प्राचीन चुनाव आ एक आधुनिक बहुपक्षीय व्यवस्था

पहिल तीन अध्याय स्वतन्त्र प्राचीन दृश्यसँ शुरू होइत अछि। शल्य ९७ मे प्रतारणा अनुभवलाक बावजूद वचनक भार स्वयं लैत छथि; विभीषण ९८ मे सीताक अनैच्छिक बन्दीकरणक विरोधमे घर आ राज्य छोड़ि शरण माँगैत छथि; कुम्भकर्ण ९९ मे सीताक प्रति अन्याय स्वीकार करितहुँ लंकाक रक्षकसभक संग युद्धमे जाइबाक निर्णय लैत छथि। एकर अर्थ एक्के नैतिक सूत्रक पुनरावृत्ति नहि। तीनू पात्र निज निर्णयक दाम बुझैत छथि, आ दूनू पक्षमे निर्दोषक श्रमक प्रश्न बचल रहैत अछि। अध्याय १०० मे स्वतंत्र पुरातन दृश्य नहि; प्राचीन निर्णयरूपक नीतिगत प्रतिध्वनि आधुनिक बहुपक्षीय दस्तावेजक पाँच शर्तमे पढ़ल जा सकैत अछि। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ सङ्केतक प्रयोग १०० लेल केवल विषयगत अछि, दृश्यगत नहि।

कथा-समय, स्थान आ वस्तुक पारस्परिक अर्थ

कथनक्रममे ९७ क प्राचीन यात्रापथ–आतिथ्य शिविर, ९८ क लंका–समुद्र–रामशिविर आ ९९ क निद्रा–दरबार–युद्धक प्रस्थान तीक्ष्ण समय-सङ्कट स्थापित करैत अछि। आधुनिक प्रसंगमे पाँच शर्तक सीमित अस्पताल-मार्ग, हड़तालक परीक्षण-फेरा, कमलेशक अस्थायी पट्टी, देवीक प्रशिक्षण आ १०० क दोसर बैठक क्रमशः विस्तार पबैत अछि। आरम्भिक इतिहासमे पारिवारिक घरक घैल, भोजनक बही आ रक्तसम्बन्धक ऋण अछि; वर्तमानमे चक्का, जलडण्डा, श्रम-रसीद आ कार्यालयक मूल/प्रतिलिपि। प्राचीन आ आधुनिक वस्तु शाब्दिक समरूप नहि; वस्तुसभक माध्यमसँ ‘ककर हित लुकल अछि’ ई प्रश्न युग बदललापरो कार्यशील रहैत अछि।

तीनटा कालिक स्तर उल्लेखनीय अछि—तात्कालिक रोगीक जीवनसमय, मजदूरक पाछाँक बकाया/पारिवारिक इतिहास, आ अगिला मौसमक जलनिकासी–परीक्षण। एक सफल स्ट्रेचर-स्थानान्तरण, दू गाड़ीक सीमित परिचालन, तीन अनुपस्थित प्रशिक्षण-पहरक पुनर्जाँच आ पाँच शीर्षकक समझौता समान मापक ‘उपलब्धि’ नहि। अध्यायवार घटनात्मक घनत्वक वास्तविक परीक्षणमे प्रत्येक घटनाक स्थिति-परिवर्तन अलग गनबाक चाही, संवादक प्रतिशत वा परिवर्तन-शब्दक आवृत्ति आधार नहि।

प्रमाण-विवेचन, सामाजिक इतिहास आ असमान कथनाधिकार

प्रमाण-विषयक केन्द्रीय भेद चारू अध्यायमे क्रमशः विकसित अछि : ९७ मे आतिथ्य-प्राप्ति बनाम सैन्यसहमति; ९८ मे शरण बनाम सैन्य-विश्वास आ आपात फेराक सहमति बनाम हड़ताल समाप्त; ९९ मे प्रस्तावित नाली-मरम्मति बनाम सम्पन्न काम आ प्रशिक्षणक गलती बनाम अयोग्यता; १०० मे हस्ताक्षर बनाम सर्वसमिति आ निरीक्षित माल बनाम सम्पूर्ण गोदाम-सील मुक्ति। एतय आख्यानगत पक्ष–हेतु–व्याप्ति–उपाधि समीक्षात्मक युक्ति बनैत अछि। कतेक ठाम अनुमानक असिद्ध उपाधि बताओल गेल अछि, कतेक ठाम प्रत्यक्ष परीक्षणक अभाव स्वीकार। शास्त्रीय प्रमाणशास्त्रक एहन अनुप्रयोग आधुनिक प्रशासनिक विधिक समकक्ष होएबाक दावा नहि करैत; ई पाठक तर्कक आन्तरिक अनुशासन बुझबाक उपकरण अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ कथा ‘मुख्य सन्धि’क भीतर लुका गेल रान्हनिहार, चालकनी, खेतमे बीहन राखनिहारी स्त्री, पत्थरकट्टा, दबगर, गोदाम-मजदूर, प्रशिक्षणार्थी आ घाटवाहककेँ नाम आ देय सहित उपस्थित करैत अछि। मुदा प्रत्यक्ष सभा-भागीदारी होइतहुँ सबक मत अन्तिम भाषामे समान प्रभाव रखैत अछि की नहि, ई प्रश्न खुलल अछि। प्राचीन राजपुरुषक व्यापक नैतिक स्पष्टता आ आधुनिक श्रमिकक लगभग विधिसम्मत वक्तव्य बीच शैलीगत दूरी सँ कखनो पाठमे एउ लोकक अनुभवक स्थानपर आलोचकक इच्छित सिद्धान्त बेसी सुनाइत अछि।

अन्तरिम उपलब्धि, आपत्ति आ आगाँक अनुसन्धान

चतुष्कक ठोस उपलब्धि ई जे शक्ति, संकट, करुणा आ निष्ठा—चारूकेँ बिना शर्त जिम्मेदारी मुक्त नहि मानल गेल। एक रोगी बचि गेल, तैं मुख्य नाली नहि खुलल; चालक सहमत भेलाह, तैं हड़ताल नहि टूटल; कमलेशक शुल्क-दावा चुनौती पेलक, तैं दोकानक अधिकार अन्तिम रूपसँ सुरक्षित नहि; पाँच शर्तपर कार्य-समझौता भेल, तैं महेशक हत्या-जाँच नहि समाप्त भेल। ई अनिर्णय नाटकीय कमजोरी हो सकैत अछि जँ अगिला प्रसंगमे पुनः-पुनः ओही तर्क बिना नब क्रियात्मक परिवर्तनक लौटत। मुदा एतय किछु वास्तविक छोट परिणाम—स्ट्रेचर पार, दू वाहन, प्रशिक्षण-पुनर्जाँच, लिखित आपत्ति, सीमित सार्वजनिक नालीक काम—भेटैत अछि, तें सम्पूर्ण खण्डकेँ केवल घोषणात्मक नहि कहल जा सकैत।

अगिला अध्यायसभ पढ़बाक समय परीक्षण करब आवश्यक अछि : दोसर समझौताक सीमित घड़ीक बाद गाड़ी कतेक चलेल गेल; नालीक वास्तविक पानि-स्तर बदलल की; रोकल औषधि अलग परीक्षणसँ मुक्त भेल की; श्रमिकसभक बकाया देयपर भुगतानक क्रम की भेल; आ महेशक हत्या-जाँचमे नवीन स्वतंत्र प्रमाण भेटल की नहि। एहि प्रश्नसभक उत्तर अध्याय ९७–१०० मे उपलब्ध नहि अछि। शोधपरक आलोचनामे अनुमानकेँ कथा-घटना बना देब एतहि सर्वाधिक अनुचित होयत।

अध्याय १०१ — रोगीक समय

समयक बहुवचन : एक अस्पताल, अनेक घड़ी

“रोगीक समय”क आरम्भ भोर पाँच बजि बयालीस मिनट पर धुलाईघरक पीतलक कटोरीमे खसल तेसर बूँदसँ होइत अछि। ई बूँद आरम्भिक दृश्यकेँ केवल बरसातक रूपक नहि बनबैत; साफ चादरकेँ सुरक्षित रखबाक उर्मिलाक तुरन्त क्रिया, भीतरी छतक चुआन आ बाहरी नालीक अवरुद्ध बहाव—तीनू ठोस तथ्य स्थापित करैत अछि। उर्मिला पहिल पन्नापर ‘बाहरक बहाव’ आ ‘भीतरक चुआन’ अलग शीर्षक रखैत छथि। ई अध्यायक आरम्भिक ज्ञानात्मक प्रतिज्ञा अछि : एक्के दृश्य-प्रभावसँ एक्के कारणक निष्कर्ष नहि। अस्पतालक परिसर रोगीकेँ उपचार देबाक स्थल रहितहुँ जोखिम पैदा करनिहार भौतिक संरचना बनि उठैत अछि। भौतिक स्थानक एहि सक्रियताकेँ पर्यावरणीय आख्यानक महत्त्वपूर्ण लक्षण मानल जा सकैत अछि, मुदा एतबे सँ बाढ़ि वा मरम्मतिक सम्पूर्ण कारण ज्ञात नहि होइत।

अगिला पाठांशमे तीनटा घड़ी तीन अलग समय देखबैत अछि—देबालक घड़ी पाँच मिनट पाछाँ, नर्सिंग-कक्षक घड़ी दू मिनट आगाँ, आ मोबाइल-समयसँ मिलानक प्रयास। कथनमे एखन ५:४२ क उद्घाटन अछि, मुदा चिकित्सा-प्रशासनमे समय प्रामाणिक बनबाक आधार स्वयं विवादित अछि। अनिरुद्ध देवालक त्रुटि दर्ज करबैत छथि; एक घड़ी ठीक करब पुरान गवाहीक समयकेँ अपने-आप नहि सुधारैत। एहि सूक्ष्म भेदमे कालानुक्रम केवल कथावाचकक तकनीक नहि, न्यायसंगत दायित्व निर्धारणक भौतिक पूर्वशर्त बनैत अछि। तीन घड़ीक समस्या ओहि पाठक लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे गाड़ी बेरपर नहि अएलाक कारण रोगीक हानि भेला-जेकाँ एकरेखीय निष्कर्ष जल्दी निकालए चाहैत हो।

घटनाक पहिल निर्णायक विभाजन तीन रोगीक चिकित्सकीय अवस्थासँ अबैत अछि : सरस्वती देवीक अस्थिर श्वास, रेहानाक घायल पयर, आ तेसर रोगीक दोसर केन्द्रमे चिकित्सकीय रूपसँ तय स्थानान्तरण। ‘गाड़ी उपलब्ध’ समान ‘सभ रोगीकेँ पठेबाक चाही’ नहि। अनिरुद्धक चिकित्सकीय विवेक रोगीक देहक अवस्था, गन्तव्यक तैयारी आ चलैत उपचारक निरन्तरताकेँ वाहनक उपलब्धतासँ ऊपर रखैत अछि। एहि निर्णयक आलोचना केवल ‘धीमी नौकरशाही’ कहि नहि कएल जा सकैत, कारण पाठ स्वयं तत्काल उपचार आ अनावश्यक स्थानान्तरणक बीच जाँचक आधार दैत अछि। तइयो कथा चिकित्सा-नैतिकताक सर्वज्ञ निर्णायक नहि बनैत : सरस्वतीक अवस्थाक चिकित्सकीय विवरण सीमित अछि आ पाठककेँ निर्णायक रोग-इतिहास नहि भेटैत।

चालक, विद्यालय, धुलाई आ सहमतिक समानान्तर समय

अध्याय ५–९ मे कथानक प्रतीक्षाक भीतर क्रियाशील होइत अछि। तुलसीक दू वाहनक बाहर मदन राउतक विद्यालय-वाहन अएतहि ‘तेसर रोगी-वाहन’क भ्रम उपजैत अछि। मदन एही स्वचालित अर्थान्तरणकेँ अस्वीकार करैत छथि। सात बच्चा विद्यालयक नियत मोड़पर छथि; गाड़ीमे बेञ्च मोड़ब चिकित्सकीय उपयुक्तता अथवा बालसुरक्षाक विकल्प नहि। प्रधानाध्यापिकाक दू शिक्षक पठेबाक, विद्यालय-फेरा पूरा करबाक, आ अस्पतालक संभावित फेराक खर्च पृथक लिखबाक व्यवस्था एक वास्तविक सामूहिक निर्णय अछि। ई केवल ‘समय नष्ट’ नहि : आपदा-समय विद्यालयक बालकक जीवनक घड़ीकेँ अस्पतालक गाड़ी निगलि नहि सकैत। मुदा अध्याय समस्त वैकल्पिक वाहनक स्थायी व्यवस्था सिद्ध नहि करैत; दोसर दिनक दुविधा पुनः खुलैत अछि।

हरिचरण पासवानक खाली गाड़ीमे टूटी कुण्डी अछि। ओ गम्भीर रोगी लऽ जाएब अस्वीकारैत छथि, मुदा जाँचल सामग्री आ परिवारक सामान ढोएबाक सशर्त भूमिका लेब चाहैत छथि। बहीमे पेट्रोल, सफाइ, चालकक हाजिरी आ रोकल समय अलग स्तम्भमे लिखल अछि। युवा चालक ‘खाली’ लिखल पाली स्वयं सुधारैत अछि, आ हरिचरण आधा भाड़ाक प्रस्तावक उत्तरमे अपन लाभ घटेबाक स्वतंत्रता तथा चालकक पारिश्रमिक काटबाक अन्याय अलग करैत छथि। एतय बहुस्वरता मात्र अनेक संवादक संख्या नहि; अलग पेशागत हित आ अलग जोखिम-उत्तरदायित्वक कारण संवादमे प्रत्यक्ष संघर्ष अछि। चालकक डर, विश्राम आ वास्तविक श्रममूल्यकेँ कथा रोगीक जीवनक विरोधी पक्ष बनबैत नहि, उपचार-व्यवस्थाक शर्त बनबैत अछि।

उर्मिला धोल आ उपयोग-कएल कपड़ाक थैली रंगीन डोरीसँ अलग चिन्हित करैत छथि। प्रशिक्षुक गलती रोकल गेल, मुदा गलतीकेँ ओकर थकानसँ सर्वथा विच्छिन्न नहि कएल गेल। सात धोल चादर, पाँच साफ खोल आ चारि उपयोग-थैलीक गणना, तथा दू भीजल चादरकेँ उपलब्ध साफ सामग्रीमे नहि जोड़ब, अस्पतालक ‘अदृश्य’ घरेलू पेशागत श्रमकेँ चिकित्सकीय सुरक्षाक प्रत्यक्ष शर्त बनबैत अछि। अस्पतालक ई वस्तुगणना पाठमे अतिसूक्ष्म लगि सकैत अछि; तथापि तत्काल जोखिम—दू श्रेणीक सामग्रीक अनधिकृत मिश्रण—एहि विवरणकेँ कारणात्मक औचित्य दैत अछि। एतय मात्र ‘समान महिलाक परिश्रम’ नहि, तकनीकी कौशल आ त्रुटि-रोकथामक अनिवार्य ज्ञान उपस्थित अछि।

सलमा शेखक अस्थायी सेवा-डेस्कपर रेहानाक पहिचान-अङ्क मेल नहि खाइत अछि। सलमा उपचार आ पहचान-संशोधनकेँ दू अलग प्रक्रिया बनबैत छथि; गोपनीय अस्थायी पर्ची दैत छथि, बिल-विभागक मौखिक स्वीकृतिक बदला लिखित उत्तर माँगैत छथि, आ अपन अस्थायी नियुक्तिक रोजगार-जोखिम सेहो बुझैत छथि। इएह नैतिक निर्णय अगिला दृश्यसँ वैधता पबैत अछि : रेहानाक जाँच दस बजि छत्तीस मिनटपर पूरा होइत अछि, उपचार ओतहि सम्भव अछि, स्थानान्तरणक आवश्यकता नहि, मुदा पहचान-त्रुटिक पुरान प्रविष्टि हटाओल नहि गेल। ‘चिकित्सा भेल’ आ ‘अभिलेख स्थायी रूपसँ सुधारल’ दुई अलग परिणाम छथि। सलमाक साहसक नाटकीय पुरस्कार नहि, अगिला पाली लेल लिखित निर्देशक सीमित संस्थागत स्वीकृति भेटैत अछि।

बाइस मिनट, मृत्यु आ दायित्वक अनिर्णीत कारण-शृंखला

गाड़ी आठ बजि उनसठ मिनटपर फाटकमे घुसैत अछि, अस्थायी गिट्टी खसैत अछि, जमीर गाड़ी रोकैत अछि, आ नौ बजि बारह मिनटपर सुरक्षित पट्टासँ चक्का पार होइत अछि। निर्धारित प्रवेश आठ बजि पचास मिनट छल; वास्तविक प्रवेश नौ बजि बारह। अतः देरी **बाइस मिनट** अछि। कथाक विशेष उपलब्धि ई जे उर्मिला ‘एक्कैस’क गलत अन्तर तुरन्त सुधारैत छथि : समयलेखनक एक मिनटो एतय मनमाना नहि। मुदा निर्धारित प्रवेश आ वास्तविक प्रवेशक अन्तरकेँ चिकित्सकीय मृत्युक निर्णायक कारण मानबाक लेल रोगीक अवस्था, आवश्यक उपचार, प्रयोज्य गाड़ी आ चिकित्सकीय निर्णयक विशिष्ट सम्बन्ध चाही। ई आवश्यक कारण-पुल मूल पाठमे निर्णायक रूपसँ उपलब्ध नहि अछि।

सरस्वती देवीकेँ अस्थिर हालतमे स्थानान्तरण नहि देल गेल; चिकित्साकर्मी स्थानीय उपचार जारी रखैत छथि। नौ बजि अठारह मिनटपर तेसर रोगीक स्थानान्तरण होइत अछि; दस बजि चौदह मिनटपर सरस्वतीक मृत्यु प्रमाणित होइत अछि। एहि तीन समयक क्रम घटना-पञ्जीक आधार अछि, अनुमानक विकल्प नहि। गाड़ी देरिसँ पहुँचल—ई प्रमाणित; सरस्वतीक मृत्यु भेल—ई प्रमाणित; **देरीक कारणेँ मृत्यु भेल**—ई निष्कर्ष असिद्ध। कथावाचक शैलजाक पीड़ा आ अस्पतालक सम्भावित लापरवाहीक प्रश्नकेँ मेटैत नहि, मुदा वैज्ञानिक निष्कर्षक रूपमे आगू नहि बढ़बैत। असिद्ध कारण-सम्बन्धकेँ अनिर्णीत राखब एतय कायरता नहि, नैतिक नियंत्रण अछि।

शैलजा ‘चप्पल खोजए लगलीह’, जबकि चप्पल हुनकर पयरमे छल। ई शोकक अतिसूक्ष्म दृश्य तिथिसहित पञ्जीसभक कठोर अनुक्रमक बीच देहगत विस्थापनक क्षण बनैत अछि। फोनपर हुनकर कथन—“अन्तमे हुनकर हाथ गरम छल” —अन्तिम व्यक्तित्व-स्मृति अछि, चिकित्सकीय अन्तिम वचन नहि। कथावाचक एतय शैलजाक

अनुभूत समयकेँ संस्थागत समयक सम्मुख रखैत अछि। आघातक अभिव्यक्ति सँ कोनो निश्चित मानसिक चिकित्सकीय निदान निकालब नहि चाही; पाठक लेल पर्याप्त ई जे मृत्यु-अनुभव गवाहीक घड़ीसँ व्यापक अछि। शैलजा जतेक सच देखलनि, ओतबे कहैत छथि; जे अस्पतालक आश्वासन सुनलनि, ओकर स्रोत शोधबाक माँग अलग राखैत छथि।

अध्याय २४ मे गन्तव्य केन्द्रक प्राप्ति-गणनामे तीन कपड़ाक खोल बनाम दू लिखल खोलक भेद भेटैत अछि; तेसर खोल बिछौनाक नीचाँ भेटल। फाटकपर ‘पहुँचल’ आ कक्षमे ‘सुपुर्द’क चारि मिनटक अन्तर अलग दर्ज होइत अछि। ई सुधारसभ मापन-शृंखलाक पारदर्शिता दैत अछि, मुदा सफल स्थानान्तरणकेँ सरस्वतीक मृत्युकेँ धुँधला करबाक साधन नहि बनने दैत। हरिचरणक जोखिम-भत्ता खाली रहबाक शिकायत, मदनक सात बच्चाक पहुँचलाक पञ्जी, सलमाक लिखित आपत्ति आ उर्मिलाक दूटा अलग जल-सुरक्षा पन्ना अन्तमे एकसाथ आबैत अछि। अनेक कथा-रेखाक इएह मिलान अध्यायक संगठनगत केन्द्र अछि।

कथावाचक, प्रमाण-परीक्षा आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायमे तात्कालिक समय-चिह्नक घनत्व असाधारण अछि : ५:४२, ७:२७, ८:५६, ८:५९, ९:१२, ९:१८, ९:३६, १०:०७, १०:१४। मुदा समयक ई तीव्र सूक्ष्मांकन ‘बहुत घटना भेल’ कहबाक यांत्रिक प्रमाण नहि। मुख्य घटनात्मक परिवर्तन स्पष्ट छथि : गाड़ीक पात्रता पृथक कएल गेल; विद्यालयक बालकक व्यवस्था भेल; रेहानाक उपचारक प्राथमिकता सुरक्षित भेल; एक रोगी स्थानान्तरित भेल; सरस्वतीक मृत्यु भेल; लिखित शिकायत आ निर्देशक मार्ग खुलल। पृष्ठभूमिमे प्रतीक्षा, संवाद, विश्राम आ दोहराओल सत्यापन कथनक अवधि बढ़बैत अछि। समान क्षणमे अलग संस्थाक उत्तरदायित्व देखेबाक एहन संयोजन पाठकेँ यथार्थवादी बनबैत अछि, मुदा विस्तृत मिनटवार विवरणक कारण शैलजाक शोक अपेक्षाकृत कम पृष्ठ-स्थान पाबैत अछि—ई कलात्मक अनुपातक वैध आपत्ति अछि।

दृष्टिकेन्द्रण बाह्य निरीक्षण, उर्मिलाक कर्म-सजगता, मदनक बाल-सुरक्षा, सलमाक रोजगार-सङ्कट आ शैलजाक अनुभूत क्षतिक बीच सरकैत अछि। कथावाचकक जानकारी विस्तृत अछि, मुदा पात्रसभक अपूर्ण ज्ञानकेँ मिटाए बिना प्रस्तुत होइत अछि। आख्यानगत परिभाषामे देरीक प्रत्यक्ष-माप, चिकित्सकीय मृत्यु-प्रमाण, संभावित कारणक अनुमान आ शैलजाक श्रुत आश्वासन—चारि अलग ज्ञानाधार छथि। ‘देरी भेल’ हेतु सँ ‘देरी मृत्युकारण’ साध्यक व्याप्ति एतय सिद्ध नहि; रोगीक हालत, उपचार-योग्यता आ अन्य कारण सम्भावित उपाधि छथि। ई विश्लेषण साहित्यिक दृश्यपर औपचारिक न्यायशास्त्रीय फैसला थोपब नहि, बल्कि पात्रसभ द्वारा अपनाओल प्रमाण-सावधानीक भाषा स्पष्ट करब अछि।

शोक-करुण रसक प्रमुख बिन्दु शैलजाक हाथक स्मृति आ चप्पलक दृश्य अछि; अनिरुद्ध–सलमा–उर्मिलाक कर्तव्यगत प्रवाह वीरभावक सार्वजनिक उद्घोष बनबाक बदला शांत श्रमक रूप लैत अछि। कटोरीक अन्तिम दृश्य संरचनागत आवर्तन अछि : भोरक खाली कटोरी आधासँ बेसी भरल, पानि उझलाक बादो नव बूँद खसैत अछि। सुधारक अधूरापन एतय प्रतीक मात्र नहि, वास्तविक भीतरी चुआनक पृष्ठभूमिपर अर्थवान अछि। तइयो आलोचनात्मक प्रश्न रहैत अछि जे मृत्यु-सन्निकट कथाक अन्तमे प्रशासनिक पन्नाक विस्तार पाठकीय करुणाक

अवधि कम करैत अछि कि नहि। एहि अध्यायक उपलब्धि ‘समय’कें एकरेखीय घड़ीक बदला रोगी, परिवार, मजदूर, विद्यालय, चिकित्सक आ सार्वजनिक सेवाक असमान, परस्पर प्रभावित अधिकारक रूपमे उद्घाटित करब अछि।

अध्याय १०२ — मरम्मतिक तह

माटिक परत आ दस्तावेजक परत : प्रारम्भिक प्रत्यक्ष प्रमाण

“मरम्मतिक तह” अध्याय १०१ क बादक भोरमे गोमती बेलदारक फावड़ासँ खुलैत अछि। नालीक कात पातर सीमेण्ट खुरचला पर पीयर माटिक धारी आ भीजल संरचना प्रकट होइत अछि। ऊपर समतल पाट देखाइत छल, मुदा अङुरी लगबिते छर्रा झरैत अछि। ई दर्शनीय अन्तर—ऊपर ‘पूरा’ देखाइत मरम्मति, भीतर असुरक्षित परत—कथाक वास्तविक रहस्य अछि; एकरा काल्पनिक अपराधी पहिनेसँ उपस्थित मानि पढ़ब अनुचित। गोमती टोकरी उठौनिहार दू मजदूरकें रोकैत छथि आ कहलनि जे हुनका जे पाट ढलबाओल गेल, ओकर नीचाँक ईंटक जाँचक सूचना नहि छल। पहिल घटना निरीक्षण नहि, निरीक्षणक फलस्वरूप मजदूरक सुरक्षित क्रियाक अवरोध अछि। तारा रस्सीसँ जोखिम-सीमा घेरैत छथि; अस्पतालक पुरान पाँख आ कालिह्क सरस्वती-मृत्यु एहि दृश्यकें भावात्मक स्मृति प्रदान करैत अछि।

अदिति सोझाँ अधिकारीक ‘छेद भरि देल जाए’ प्रस्तावपर गोमती ‘बन्द कएल पुरान बहावक मुँह’क सम्भावना उठबैत छथि। गोमतीक अनुभव महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओथि ‘बाहा पूर्ण रूपेँ अवरुद्ध छल, अमुक व्यक्ति बन्द कएलक’क अन्तिम प्रमाण नहि। अदिति पुरान चूना आ नव सीमेण्टवाली ईंट उठेबाक स्थल, समय आ व्यक्ति दर्ज करैत छथि। वस्तुकें पंजीमे राखबाक ई कार्य प्रमाणक अनुक्रियाशीलता स्थापित करैत अछि; वस्तुक उपस्थिति आ ओकर अपराध-सिद्धि एक नहि। अध्याय १०१ क बाइस मिनटक विलम्ब पुनः उल्लेखित अछि, मुदा गोमतीक माटि-साक्ष्यसँ सरस्वतीक मृत्युकारण सिद्ध नहि कएल गेल। कथानक अतीतक सत्यापन आ वर्तमानक जोखिम-बचावकें संयुक्त रखैत अछि, परस्पर बदलबैत नहि।

अलग दावाक एकहि धरती : गोमती, अमृता आ फूलचन

गोमतीक पुरान मजदूरी-पंजीमे नोनथराक ढूहसँ आठ खेप माटि आ गोदामक पाछाँक भराइक अलग भुगतान दर्ज अछि। ओ स्वीकारैत छथि जे अपन ढोएल माटि आ श्रमक घण्टा हुनकर प्रत्यक्ष ज्ञानक विषय थिक। किन्तु नदेखाओल नक्शा, अज्ञात आदेश अथवा बन्द बाहाक सम्पूर्ण संरचनात्मक जिम्मेदारी हुनका माथ लादल जा सकैत नहि। ठेकेदारक युवक श्रमक वास्तविक निष्पादनकें व्यवस्थापक जिम्मेदारीक समतुल्य बनए चाहैत अछि; गोमती एहि गलत अनुमानक प्रतिवाद करैत छथि। एहिसँ उपन्यास श्रमिककें निश्चेष्ट पीड़ित नहि, प्रमाणक सीमा निर्धारित करनिहारी ज्ञाता रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

अमृता चौहानक नोनथराक सामूहिक माटि-बिक्री मुहर जमीनक स्वामित्व सिद्ध करबाक दस्तावेज नहि; ओ स्पष्ट एहि सीमा सहित पुरान भूमि-सुधारक वचन आ राजस्व-पत्रक कड़ी खोजैत छथि। गोमतीक मजदूरी-दावाकें अमृताक भूमि-दावा संग एकहि ‘माटिक काज’ कहि संयुक्त करबाक ठेकेदारक प्रस्ताव वर्गीय सरलीकरणक

उदाहरण अछि। दुनू स्त्री सँग गवाही देबाक निर्णय लैत छथि, मुदा एक-दोसराक देय वा अधिकारक बदला नहि। तारा बनाओल दू स्तम्भ—‘भूमि-दावा’ आ ‘मजदूरी-दावा’—संवादितामे फरकक भौतिक रूप अछि। जाति-समुदायक नामक उपयोग मात्र समावेशक अलङ्कार नहि; दावाक विधिक विषय अलग करबाक आवश्यक शर्त बनैत अछि।

फूलचन लोधक पुनर्वासक अठारह धूर जमीनक प्रस्ताव सतही क्षेत्रफलक समानता आ जीवनोपयोगक समानताक भेद खोलैत अछि। सुखल ऊपरक सतहक नीचाँ चिपचिपा परत, बरखा-बाद धानक सम्भावना आ जाड़क सिंचाइक अनिश्चितता—ई विवरण प्रशासनिक ‘बराबर धूर’क सरल गणनाकेँ चुनौती दैत अछि। फूलचन दू नमूना, बीहन, खाद, मजदूरी, उराहि आ बजार धरि ढुलाईक खर्च प्रस्तुत करैत छथि। ओ असुरक्षित मूल ठाम छोड़बाक विरोध नहि, अपरीक्षित विकल्प स्वीकार करबाक विरोध करैत छथि। ई उत्तर-आपदा पुनर्वासक कथा अछि, मुदा एहि अध्यायमे पुनर्वासक अन्तिम स्वीकृति अथवा जमीनक स्वामित्व-बदली नहि होइत। भूमि-अधिकारक अतीत, खेतीक वर्तमान उपयोग आ मजदूरीक देय तीनू प्रश्न अलग रहैत अछि।

सामुदायिक बाहा-दिन : अनुष्ठानक उत्सव आ अविचारित जोखिम

वार्षिक बाहा-मुँह खोलाइक दिन लोक ढोल, ध्वजा, माछक जाल आ सुरक्षित कातक चिह्न लऽ जुटैत अछि। कथा उत्सवकेँ अनावश्यक कहि नकारैत नहि; जीविकाक साझा स्मृति, स्थानीय जल-ज्ञान आ श्रमक सार्वजनिक दृश्यता प्रदान करैत अछि। मुदा एक बुजुर्ग रातिहि पाँख काटबाक सुझाव दैत छथि, गोमती अस्पतालक गाड़ी, लोहेक पाइप, अज्ञात भराइ आ मजदूरक गहिर जोखिम देखाकऽ अस्वीकारैत छथि। बुजुर्गक पुरखा-ज्ञान मिथ्या नहि; बदलल आधारभूत संरचना आ वर्तमान जोखिम अलग अछि। एहि बिन्दुपर परम्परा आ आधुनिक परीक्षणक सरल विरोध नहि, ज्ञानक काल-स्थानिक उपयुक्तताक प्रश्न अछि।

तारा तीन ठाम बाँस गारि पानिक गहिराइ आ स्तरक उतार-चढ़ाव देखैत छथि। बरखा बन्द भेलो पर तीनू ठाम समान कमी नहि। ओ लिखैत छथि जे प्रवाहक दिशा देखल गेल, पूर्ण कारण नापबाक शेष। हीरा, रमणी आ फूलमतीक माछ–जाल–घाटसम्बन्धी स्थानज्ञान अस्पतालक निकासक प्रवाहमे योग दैत अछि, मुदा अलग उपयोगक व्यावहारिक हित नहि मिटबैत। एक किशोरी पुरान आ नव ईंटक वर्ष कतेक निश्चित भऽ सकैत अछि, से पुछैत अछि; गोमती आँखिसँ परत भिन्नता देखबाक आ ठीक तिथि निर्धारित करबाक अलग साधन बतबैत छथि। प्रश्न पूछनिहार बालिकाक एहि उपस्थिति सँग लोक-ज्ञानकेँ असीम प्रामाण्य नहि, परीक्षणयोग्य योग्यता भेटैत अछि।

‘पर्याप्त’ शब्दक वापसी : दायित्वक वास्तविक मोड़

अध्यायक मध्यभागक निर्णायक घटना अदितिक पहिल निरीक्षण-पत्रक पुनर्पाठ अछि। पहिने ‘छोट मरम्मति पर्याप्त’ कहल गेल छल; नव स्थल-साक्ष्यक आधारपर अदिति ई दावा स्पष्ट रूपेँ वापस लैत छथि—‘दावा वापस; संरचनात्मक आ जलनिकासी परीक्षण आवश्यक।’ ओ पहिल तिथि, तात्कालिक सीमित निरीक्षण आ बादक संशोधन तीनू देखबैत छथि। पहिल प्रति फाड़ि देबाक प्रस्ताव अस्वीकार करब संस्थागत स्मृतिक महत्त्वपूर्ण घटना

अछि। ‘पहिने के गलती कएल’क नैतिक प्रश्न आ ‘आब सुरक्षित आदेश की’क व्यावहारिक प्रश्न एकत्र चलैत अछि; पूर्वदोषक संशोधन नै वर्तमान जोखिममे असावधानीक अनुमति अछि, नै दोषी पहिचानक तुरन्त फैसला।

ठेकाक बिलमे ‘सस्ता भराव, तात्कालिक पक्का पाट’, स्थल-स्वीकृतिक बादक तारीख, आ भुगतानक तेसर तारीख भेटैत अछि। ‘काम’, ‘स्वीकृति’, ‘भुगतान’क समय-अन्तर अपने भ्रष्टाचारक प्रमाण नहि, यद्यपि जाँचक स्पष्ट कारण अछि। दू महीनाक फाइल-देरीमे मूल परिशिष्ट नजुड़ल छल, मुदा अदिति कोनो विशिष्ट व्यक्तिक जानि-बुझि कएल विलम्ब सिद्ध नहि मानैत छथि। ‘बरुणा’ आ ‘बरुणे’क ध्वनि-सादृश्य स्थलपरिचयक स्वतः समानता सिद्ध नहि करैत। दू मजदूरक स्मृति–विरोध सेहो एक कथामे समेटि समाप्त नहि कएल गेल। एहि अनेक अधूरे प्रमाणक कारण अध्याय पाठकेँ जाँच प्रक्रियाक भीतर रखैत अछि; तथापि सन्देहक श्रृंखला एकटा कथानक-विलम्ब सेहो उत्पन्न करैत अछि।

एक महिला मजदूरक आधा पारिश्रमिक ‘सहायक श्रम’क कम दरमे दर्ज अछि। अदिति मरम्मतिक गुणवत्ताक प्रश्नसँ ओकर सही मजदूरी अलग करबैत छथि। ई दृश्य महत्त्वपूर्ण अछि : असुरक्षित कामक ठेका दोषपूर्ण निकललाक कारण मजदूरक कएल कामक उचित देय अपने शून्य नहि भऽ जाए। अध्याय २६ मे नियंत्रित बाहरी सफाइ, नमूना आ सुरक्षित पैदल निरीक्षणकेँ मात्र स्वीकृति; भारी मशीन आ बन्द मुँहथरिक खोदाइ निषिद्ध; गोमतीकेँ आदेशक प्रतिलिपि दऽ ‘ना’ कहबाक लिखित आधार देल गेल। ई वास्तविक संस्थागत सुधार अछि, जकरा ‘सम्पूर्ण नाली मरम्मति’ कहब पाठविरुद्ध होयत।

शिल्प, कालिक पुनरागमन आ कलात्मक सीमाक मूल्यांकन

एहि अध्यायमे सरस्वतीक मृत्यु पूर्वघटनाक रूपमे पुनः अबैत अछि। शैलजा अस्पतालक विलम्ब-समयकेँ मायक मृत्युकारण मानल जाए कि नहि, एहि प्रश्नपर स्वयं स्पष्ट उत्तर चाहैत छथि। ई आवर्तन मात्र स्मरण नहि; अध्याय १०१ क चिकित्सकीय समयक जाँचकेँ संरचनात्मक दोषक अगिला फाइलमे अनिश्चित स्थान दैत अछि। कथाक वर्तमान दिनमे निरीक्षण, नमूना, दावाक विभाजन आ आदेश-संशोधन घटैत अछि; पुरान भराइ, भूमि-वचन आ दू महीनाक प्रशासनिक फाइल-देरी पूर्वदीप्तिक सामग्री प्रदान करैत अछि। कथावाचक सर्वत्र विस्तृत, मुदा ‘कोन कारण कतेक जिम्मेवार’क सर्वज्ञ घोषणा नहि करैत।

‘तह’क रूपक अर्थ-समृद्ध अछि—सीमेण्ट/माटि, मजदूरी/भूमि, निरीक्षण/प्रतिवेदन, उत्सव/जोखिम आ शोक/चिकित्सकीय प्रमाण। मुदा रूपकक शक्ति अतिसरलीकरणक कारण नहि बनय : माटिक दखल, भूमि-दावा, अस्पतालक मृत्यु आ मजदूरक देयक विधिक स्थिति एक्के अर्थक चारि नाम नहि। भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्यक कसौटीपर गोमतीक फावड़ा रोकबाक क्रिया, किशोरीक ईंट-प्रश्न आ अदितिक संशोधन सहज कथाक्रमसँ उभरैत अछि; अधूरे कागदक दार्शनिक प्रतिध्वनि संकेत रूपेँ बनैत अछि। कमजोरी ई जे अमृता, फूलचन, गोमती, तारा, हीरा, अदिति, शैलजा आ अनेक विभागीय अधिकारीक वितरित तर्क एकहि अध्यायमे अत्यधिक सुसंगठित लागैत अछि; पात्रसभक सामाजिक भाषाभेद कखनो प्रशासकीय शब्दावलीक साम्यसँ दबैत अछि। तइयो निर्णायक उपलब्धि अछिः पुरान गलत निष्कर्ष वापस लऽ कऽ मूल प्रति बचाओल गेल, मजदूरक सुरक्षित असहमति संरक्षित भेल, आ पूर्ण मरम्मति सिद्ध नहि कएल गेल।

अध्याय १०३ — सकारात्मक युक्ति

सफाइक कामक दू सीमा : ‘ऊपरक बाट’ आ ‘भीतरक नाली’

अध्याय १०३ क पहिल दृश्य रानी हलालखोरक झाड़ूक डाँटासँ हटाओल काँचक नोक, पुरान औषधि-शीशी आ किशोर प्रशिक्षुक घिसल चप्पलक माध्यमसँ बनैत अछि। नगरक सफाइ-ठेकेदार दू मजदूरकेँ अपरिचित गहिराइक बन्द नालीमे उतारए चाहैत अछि, जखनकि काल्हिक आदेश भारी औजार आ प्रवेशक अनुमति रोकने छल। रानी बाहरी सूखल बाटक काँच उठाएब आ अज्ञात जल-मुँहक भीतर गाद निकालब दू अलग कार्य घोषित करैत छथि। इएह अध्यायक पहिल सकारात्मक युक्ति अछि : मात्र ‘नहि उतरब’ कहब नहि, सुरक्षित कामक निर्दिष्ट क्षेत्र आ असुरक्षित कामक परीक्षा-आवश्यकता अलग निर्धारित करब। एहि क्रियाक परिणाम तुरन्त व्यवहारपर पड़ैत अछि—प्रशिक्षु दूर हटैत अछि, मजदूरक देहक जोखिम दृश्य होइत अछि।

ठेकेदारक ‘बाहा-मुँह खोलाइक शेष सफाइ’ पर्ची भाषिक छल अथवा भ्रामक संक्षेपक सम्भावना रखैत अछि : काल्हिक स्वीकृत बाहरी घास-सफाइकेँ आजुक अस्वीकृत भीतरी प्रवेशक निरन्तरता रूपमे पेश कएल जा रहल अछि। मुदा ठेकेदारक मानसिक कपटक अन्तिम प्रमाण केवल एहि शीर्षकसँ नहि निकलैत। रानीक पाँच दिनक पुरान मजदूरीक देय अलग अछि; जोखिम-अस्वीकृति पुरान पारिश्रमिक हरणक वैध साधन नहि। ई दू प्रश्न अलग रखनेँ मजदूरक सुरक्षा आ जीविकाक द्वन्द्व वास्तविक बनैत अछि। केवल ‘सुरक्षा पहिने’क औपचारिक कथनसँ श्रमिकक आजुक भातक स्रोत नहि सुनिश्चित होइत; अध्याय एहि शर्तकेँ अनिर्णीत छोड़ैत अछि।

ममता हरि नगरक स्थायी टोलीसँ छथि, रानी ठेकेदारक अधीन। दुनूक वेतन, रोजगार-सङ्कट आ अनुशासनगत जोखिम भिन्न अछि। ममताक रजिस्टरमे दस्ताना, सुरक्षित जूता आ बन्द नालीक वातावरण-जाँचक प्राप्ति खाली अछि। गोदाममे दस्तानाक फोटो देखाबैब वास्तविक सुपुर्दगी, सही नाप, प्रशिक्षण वा विषम वातावरणक अन्वेषणक विकल्प नहि। रानी अपन टोलीक सभ सदस्यक स्वतंत्र भय सुनबाक आग्रह करैत छथि। प्रतिनिधि-स्वरक ई सीमा महत्त्वपूर्ण अछि : रानी ‘दल लेल’ बोलैत छथि, मुदा साथीसभक व्यक्तिगत सहमति अपने नाम नहि बनबैत। सामाजिक समुदाय एकरूप समूह नहि, अलग रोजगार आ देहगत भयवला व्यक्तिसभक निकटता अछि।

उदयन-मीमांसक शास्त्रार्थ : सकारात्मक अनुमान आ प्रतिपक्षक भार

आधुनिक फाटकक दृश्यसँ प्राचीन मिथिलाक अध्ययन-आँगनमे स्पष्ट कालधारा-परिवर्तन पाठांश ५ मे होइत अछि। भीजल माटिक दीपपात्रक दरारसँ उदयनक मीमांसक अतिथिक सकारात्मक ईश्वरानुमान विषयक बहस खुलैत अछि। आरम्भक माटि-पात्रकेँ स्वयं ब्रह्माण्डक निर्णायक प्रमाण कहब उदयन रोकैत छथि। हुनकर पक्षमे जड़ पदार्थसभक संयोजन, प्रयोजन आ ज्ञानक आधारसँ चेतन अधिष्ठाताक अनुमान उठैत अछि। मुदा प्रतिपक्ष कार्य–कर्तृ सम्बन्धक सीमित प्रत्यक्ष उदाहरणक विश्वपर विस्तार, देहहीन कर्ताक क्रियाक्षमता आ सर्वज्ञताक प्रमाणपर प्रश्न करैत अछि। एहि शास्त्रार्थमे विरोधी विद्वान केवल पराजय लेल बनाओल पुतला नहि; मीमांसक अपन नियम, अदृष्ट, कर्म आ अपौरुषेय ज्ञानसम्बन्धी विरोधक सकारात्मक कारण प्रस्तुत करैत छथि।

उदयन शिष्यकेँ विरोधी मत कमजोर बनाकऽ उत्तर देबाक प्रवृत्तिसँ रोकैत छथि। ‘आवश्यकता सिद्ध करबाक भार हमर पक्षपर अछि’क अर्थ तर्कक विनम्र आत्मानुशासन अछि, न कि पक्षत्याग। घटना-सूचीमे एहि दृश्यक महत्त्व दर्शनक निष्कर्ष घोषित होएब नहि; शास्त्रार्थक प्रक्रिया बदलनाइ अछि। प्रतिपक्षक मत शिष्यक ताड़पत्रमे अलग दर्ज होइत अछि; अगिला बैसार लेल प्रति छोड़ल जाइत अछि। अध्यायक शीर्षक ‘सकारात्मक युक्ति’ एकसूत्री ईश्वर-प्रमाणक उद्घोष नहि, प्रतिज्ञा, हेतु, व्याप्ति, पक्षविरोध आ अनुपस्थित प्रमाणक भार सहित शास्त्रीय संवादक स्थिति अछि।

कारीगर स्त्रीक प्रवेश दार्शनिक उदाहरणकेँ सामाजिक जमीन दैत अछि। ओ भीजल पात्र छाँहमे रखबाक व्यावहारिक कारण बतबैत छथि; उदयन स्पष्ट करैत छथि जे एहि विशिष्ट पात्रक सुखेबाक विधिसँ विश्वक परम कारण सिद्ध नहि होइत। ई संवाद विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ श्रमिक स्त्रीक स्थानीय ज्ञानकेँ अधिकार देबाक एक अवसर अछि। मुदा आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि : स्त्रीक पहचान, रोजी, भट्ठीक खर्च आ अपना कथन-परम्पराक चर्चा संक्षिप्त अछि; हुनकर हस्तक्षेप विद्वानक पाठक उपयोगी उदाहरण बनि रहबाक खतरा राखैत अछि। उपन्यास हुनकर कौशलकेँ सम्मान दैत अछि, मुदा ओ शास्त्रार्थक पूर्ण सह-निर्णायक बनैत छथि कि नहि, से प्रश्न खुलल अछि।

छोट शिष्यक ‘मोदक देखिकऽ ओकरा खाएवाला किएक नहि अनुमान करब’ प्रश्न पाठक लेल दार्शनिक लाघवक दृश्य बनैत अछि। पक्ष बदललासँ हेतु बदलैत अछि; वस्तुक अस्तित्व खाएल जाएबाक प्रमाण नहि। ई तर्क आधुनिक सफाइ-बैठकमे लौटैत अछि : बाहरी सफाइक प्राप्ति ‘बन्द नाली सुरक्षित’क प्रमाण नहि, सुरक्षा-सामग्रीक फोटो ‘सुरक्षा-साधन कर्मचारीकेँ भेटल’क प्रमाण नहि, नगरक आदेश ‘ठेकाक पुरान मजदूरी चुकता’क प्रमाण नहि। तथापि प्राचीन दर्शन आ आधुनिक श्रम-सङ्घर्षक बीच ई सम्बन्ध आलोचनात्मक उपमा अछि, ऐतिहासिक कारण-शृंखला नहि।

जोखिम-अस्वीकृतिक सक्रिय परिणाम आ अनिर्णीत मजदूरी

आधुनिक कथा पाठांश १६ मे घुरैत अछि। रानी छओ साथीसभक राय अलग-अलग लैत छथि; कियो भविष्यक ठेका गुमएबाक भय कहैत अछि, कियो श्वासक कठिनाई, प्रशिक्षु भीतरक पानि छुअबो नहि चाहैत। परिणाम : अज्ञात गहिराइ आ बिना परीक्षणक बन्द नालीमे प्रवेश अस्वीकार, बाहरी सुरक्षित सफाइक सशर्त स्वीकृति। ई ‘काम बन्द’ नहि; कामक उपयुक्तता पुनर्परिभाषित भऽ रहल अछि। पुरान रसीदमे चारि दिनक सही आ उपकरण ‘देल’ लिखल दावाक विरुद्ध प्राप्ति-हस्ताक्षरक अभाव सम्भावित वित्तीय प्रश्न खोलैत अछि; ओहिमे वस्तु वास्तविक रूपसँ चोरी भेल अथवा अमुक व्यक्ति दोषी, से सिद्ध नहि।

अदिति तीन अलग जिम्मेदारी पढ़ैत छथि—अस्थायी पैदल मार्ग, सीमित रोगी-वाहनक बाट आ मूल निकासक संरचनात्मक जाँच। सुरक्षित निरीक्षण बिनु भीतर प्रवेश नहि। रमणी बिन्द काल्हिक बाहरी घास हटेबाक वास्तविक उपलब्धि याद करबैत छथि आ रानीपर ‘उत्सव असफल’क दोष थोपबाक प्रतिवाद करैत छथि। एतय लोकसाक्षी रानीक सभ निर्णयक प्रतिनिधि नहि बनैत; ओ विशिष्ट काजक सीमित पुष्टि दैत छथि। दुपहर धरि

बाहरी सूखल पट्टी कचरा हटाएब, काँचवला सीमा घेरब, अस्पतालक रोगी-वाहनकेँ दोसर सुरक्षित पट्टीसँ चलाएब —ई सभ वास्तविक परिणाम छथि, मुदा बन्द निकास खोलल नहि गेल।

दोपहरक बैसारमे ठेकेदार ‘काज स्थगित’ लिखि सभ मजदूरी बादमे देखबाक प्रस्ताव दैत अछि। रानी ‘बाद’क अनिश्चितता स्वीकार नहि करैत छथि; जोखिम प्रवेश रोकनाइ, सुरक्षित घण्टा, बकाया मजदूरी, उपकरण-व्यय आ निष्पक्ष जाँचक पृथक माँग रखैत छथि। नगर अधिकारी आजुक असुरक्षित प्रवेश रोकबाक लिखित आदेश आ मजदूरी-दावाक प्राप्ति दर्ज करैत छथि। पूर्ण देय-भुगतान नहि होइत, मुदा बलपूर्वक प्रवेशक तत्काल बाट बन्द होइत अछि। ई सकारात्मक घटना एतबहि सीमित अछि। आख्यानगत दृष्टिसँ ‘लिखित रोक-आदेश’ सुरक्षा-संबन्धी निर्णयक प्रमाण अछि, स्थायी रोजगार-सुरक्षा अथवा पूरा वेतन भेटबाक नहि। एहि असमापनमे श्रमसङ्घर्षक वास्तविक कठिनाई सुरक्षित अछि।

नैरा सार्वजनिक स्थान-जोखिम आ निजी मजदूरी/नामक दू प्रति बनौलीह। रानी अपन मूल कापी लग रखब चाहैत छथि आ प्रतिलिपिक सार्वजनिक वितरणपर सशर्त नियन्त्रण चाहैत छथि। ई कथनाधिकारक बिन्दु अछि, मुदा लेखा-रक्षा आ सार्वजनिक हितक बीच सम्भावित भविष्यक विवाद सेहो। ममताक बेटी भोजन लऽ आएल दृश्य छोट पर उल्लेखनीय अछि : रजिस्टरक वस्तु-सूची आ घरेलू टिफिनक देयक अंतर, बेटीकेँ पढ़ाइ जारी रखबाक आग्रह, तथा रानीक साझा अचारक साधारण क्षण श्रमिक पात्रसभकेँ ‘सुरक्षा नीति’क वाचक मात्र नहि रहने दैत अछि। तइयो एहि संवेदनात्मक दृश्यक मात्रा अपेक्षाकृत कम; अधिकांश कथा तर्कपूर्ण कार्यालयी संवादमे जाइत अछि।

दर्शनक अनुप्रयोगक सीमा आ साहित्यिक प्रतिपक्ष

एहि अध्यायमे प्राचीन दृश्य लगभग पाठांश ५–१५ धरि स्वतंत्र कथा-स्थान बनबैत अछि, आधुनिक दृश्य १–४ आ १६–२९ मे बहैत अछि। कथा-क्रमक ई मध्यस्थ अन्तर्पाठ आधुनिक बाधाक बीच दार्शनिक जिज्ञासाक अवधि बढ़बैत अछि। उदयन–मीमांसक विवादक दार्शनिक प्रस्तुति परखैत समय उपन्यासक कल्पित संवाद आ शास्त्रक वास्तविक मूल वक्तव्य अलग रखब आवश्यक अछि। आलोचनाकेँ ई कथन नहि करबाक चाही जे एहि कल्पित दृश्यसँ न्यायकुसुमाञ्जलिक तात्त्विक निष्कर्ष ऐतिहासिक रूपसँ सिद्ध भऽ गेल। मूल ग्रन्थक पाँच स्तबकक अन्तर्पाठ उपन्यासक संरचनात्मक चयन अछि; एतय सकारात्मक अनुमानेक प्रतिपक्षी समीक्षा खुलल छैक।

‘सकारात्मक युक्ति’क दोसर अर्थ श्रमिकक सक्रिय प्रतिप्रस्ताव अछि—जोखिमपूर्ण काम नहि, सुरक्षित काम हँ; मनमाना नाम-प्रकाशन नहि, अधिकारयुक्त प्रति हँ; सर्वथा प्रतीक्षा नहि, जाँच सहित सीमित सेवा हँ। ई सैद्धान्तिक समानता प्रभावी अछि, मुदा सावधान रहब जरूरी : न्यायशास्त्रक ईश्वरानुमान आ श्रमिकक तत्काल सुरक्षा-दावा एक्के प्रकारक ‘साध्य’ नहि। प्राचीन तर्कक उच्च अमूर्तता आधुनिक देहगत जोखिमक तत्कालता कम करबाक खतरा राखैत अछि। अध्यायक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई जे शास्त्रार्थक दुनू पक्ष मजबूत छोड़ल गेल आ सफाइकर्मीक असहमति संस्थागत आदेशमे आंशिक रूपसँ फलित भेल। साहित्यिक सीमा ई जे आधुनिक पात्र लगातार उत्तम प्रमाण-भाषामे बोलैत छथि, जाहिसँ जोखिम, देरी, क्रोध आ श्रमिक-भीतरक मतभिन्नता कखनो उपदेशात्मक सुसंगतिक अधीन भऽ सकैत अछि।

अध्याय १०४ — शक्तिक प्रश्न

पशुक खुरसँ नगरक नाप धरि : शक्तिक देहगत आधार

“शक्तिक प्रश्न” अध्याय नूरजहाँ ईंटफरोशक गदहाक अगिला खुरमे चिपकल गील माटिसँ खुलैत अछि। नूरजहाँ पशुक खुरक दरार देखिकऽ गाड़ी रोकैत छथि; मुंशी ईंट उतारबाक आदेश दैत अछि, मुदा पर्चीमे सुखल पट्टीपर ढुलाई लिखल छल। एहि उद्घाटनक ‘शक्ति’ चमत्कारिक अदृश्य क्षमता नहि, पशुक थाकल देह, मालक भार, बाटक सतह आ श्रमिक स्त्रीक निर्णयशक्ति सभ अछि। ईंट फाटकपर पहुँचि गेल, मुदा सामानक वास्तविक सुपुर्दगी, पशुक सुरक्षित श्रम आ उतारबाक ठाम सुनिश्चित नहि। परिवहनक ई अल्पदृश्य पाछाँक पुल-प्रश्नक भौतिक प्रस्तावना बनैत अछि।

सुगनी सदाय अपन टोलीक हाजिरी लऽ अबैत छथि, मुदा स्थानीय जलनिकासी-नक्शामे हुनकर मुहल्लाक आँगनसभ ‘खाली’ छूटल अछि। ओ नगरक नाली धरि पहुँचबाक पहिने घरमे अटकल पानिक साक्ष्य चाहैत छथि। एक घरमे बच्चाक किताब बाँसक मचानपर अछि, दोसरमे वृद्धा चलि नहि सकैत छथि। सुगनी दू अलग समस्या एके सार्वत्रिक वाक्यमे नहि ढालैत छथि। ‘घरक हानि’ आ ‘नगरक प्रस्तावित काम’क पन्ना पृथक बनैत अछि। मुंशीक एकमुष्ट टोली-मजदूरीक बदला स्त्री-पुरुष प्रत्येकक कार्यसमय दर्ज करबाक आग्रह, तथा जोखिम-सर्वेक्षणकेँ सशुल्क काम मानबाक माँग—समुदाय-नेतृत्वकेँ आर्थिक निर्णयमे बदलैत अछि। ई नेतृत्व दूसराक बोलबाक अधिकार हरपब नहि चाहैत; बादमे निरक्षर साथीकेँ पूरा पाठ सुनाकऽ अँगूठाक निशान देबाक अनुमति देल जाइत अछि।

नूरजहाँ तीन श्रेणी बनबैत छथि—ईंटक व्यापारी-दाम, अपन ढुलाईक मेहनताना, आ पशुक उपचार–चारा–विश्रामक खर्च। एहि अलगावमे ‘पशु अहाँक अछि’ कहि जोखिमक समस्त लागत स्त्रीपर डालबाक ठेकेदारक सुविधा उजागर होइत अछि। मुदा नूरजहाँ नगरसँ प्रत्येक पशु-उपचारक बिल तत्काल वसूल भेल, एहन दावा नहि करैत छथि। अन्ततः ओ उपचार स्वयं दैत छथि, पुरान ढुलाईक आंशिक भुगतान-स्वीकृति भेटैत अछि, अतिरिक्त चक्करक सुनवाईक दिन तय होइत अछि। एहि परिणामक सचेत सीमांकनक बिना अध्यायकेँ ‘पशुश्रमक सम्पूर्ण आर्थिक मुक्ति’क कथा बनबैत आलोचना मनगढ़न्त होएत।

गङ्गेश–मीमांसक संवाद : शक्ति, प्रतिबन्धक आ लाघव

स्वतंत्र प्राचीन कालधारा पाठांश ७ मे गङ्गेश उपाध्यायक अध्ययन-कक्षसँ आरम्भ होइत अछि। भीजल लकड़ीक नहि जरब शिष्यकेँ दाहक शक्तिक प्रश्नधरि लऽ जाइत अछि। मीमांसक अतिथि वस्तुक सामर्थ्य, विशेष प्रतिबन्धक, मणि अथवा मन्त्रक उदाहरण दैत छथि; गङ्गेश कारण-समूहक पर्याप्तता, बाधाक अभाव आ अतिरिक्त अदृश्य सत्ता मानबाक आवश्यकता परखैत छथि। ई विवाद दुइ सिद्धान्तक नाटकीय मुठभेड़ अछि, कोनो एक परम्पराक उपहास नहि। ‘अग्नि अछि, तखन दाह किएक नहि’ प्रश्नक उत्तर लेल लकड़ीक भीजल अवस्था, अग्निक दूरी, संयोग आ सम्भावित प्रतिबन्धकक जाँच आवश्यक छैक; मात्र अग्निक उपस्थिति आगिक कारण-सम्पूर्णता नहि। गङ्गेश ‘दोष’ शब्दकेँ नैतिक आरोपसँ अलग रखैत छथि।

मीमांसकक शक्तिसिद्धान्तकेँ ‘अनावश्यक रहस्यवाद’ कहि खारिज करब पाठविरुद्ध। अतिथि तर्क दैत छथि जे नियमित सामर्थ्यक पद कारण-संबन्धक व्याख्या करैत अछि; हर असफलताक बाद ‘अज्ञात बाधा’ जोड़ैत रहबो प्रश्नास्पद अछि। गङ्गेश पक्षमे लाघवक अनुशासन दैत छथि : जतेक ज्ञात कारण आ बाधाक अभावसँ घटनाक स्पष्टीकरण सम्भव अछि, ततेकहि अतिरिक्त अदृश्य सत्ता मानबाक औचित्य परखू। पाठांश १२ मे अप्रत्यक्ष अथवा अन्हारमे नहि देखल मणिक ‘अनुपलब्धि’केँ वस्तुक ‘अभाव’क बराबर नहि मानल गेल अछि। ई आख्यानगत प्रामाण्य-परीक्षा आधुनिक बन्द निकासमे नदेखल जोखिमक प्रसंगसँ प्रतिध्वनित होइत अछि; मुदा शास्त्रार्थक अध्यायोत्तर व्यावहारिक निर्णय शास्त्रीय मतक तात्त्विक विजय सिद्ध नहि करैत।

पाठांश १३–१५ मे चर्चा जगत्क कार्यत्व आ बुद्धिमान कर्ताक अनुमानधरि बढ़ैत अछि। गङ्गेश स्वयं हेतु, उदाहरणक व्याप्यता, देहहीन कर्ता, कर्ताक संख्या, ज्ञान–इच्छा–प्रयत्न आ निर्णायक निष्कर्षक सीमा पर प्रश्न रखैत छथि। ई संवाद पात्रक कल्पित दार्शनिक कालधारा अछि; एकरा तत्त्वचिन्तामणि अथवा अन्य मूल शास्त्रक शब्दशः ऐतिहासिक प्रतिलिपि नहि मानब। कथावाचक स्वयं ‘ककरो बादक ग्रन्थक शब्द ओहि कक्षामे कहल नहि गेल’ लिखि कालभ्रमक विरुद्ध सावधानी बरतैत अछि। विद्यार्थीनीक भीजल अन्नक प्रश्न ज्ञानक व्यवहारिक कसौटी प्रस्तुत करैत अछि। गङ्गेश कहैत छथि जे विश्व-कर्ताक तर्क आजुक अन्न सुखेबाक तात्कालिक विधि नहि, यद्यपि ‘कथन ककर, प्रमाण की, सीमा कतय’क अनुशासन सामायिक। एतय दर्शन व्यावहारिक जीवनक विकल्प बनबाक बदला परीक्षणक एक पद्धति बनैत अछि।

सुगनीक स्थानीय माप : ‘खाली’ नक्शाक राजनीतिक अर्थ

आधुनिक कथाधारा पाठांश १६ सँ घुरैत अछि। अदिति सम्भावित प्रवाहक दू तीर खिंचैत छथि—अस्पतालक निकास आ सुगनीक मुहल्लासँ उतरैत पानि। सुगनी तीरक बीच रहैत घरसभकेँ अदृश्य बनाओलाक विरोध करैत छथि। ओ अपन टोलीसँ पुरान गाद-चिह्न, पानिक अवधि, तिथिसहित चित्र आ अलग गृह-साक्ष्य जुटबैत छथि। अभियन्ताक सहायक लोक-मापकेँ तुरन्त सरकारी अन्तिम प्रमाण मानबासँ इन्कार करैत अछि; सुगनी सेहो ओहि मापक अंतिमता नहि माँगैत छथि। हुनकर दावा सीमित अछि : मुहल्लाक अनुभवल जलस्तर मेटि नहि देल जाए। एहि रूपमे स्थानीय ज्ञान राज्य-स्रोतक प्रतिद्वन्द्वी सर्वज्ञता नहि, प्रमाण-सङ्ग्रहक अधिकार अछि।

नगरक अस्थायी खूँटा जमीन-स्वामित्वक सीमा बुझि खिसकए लगल युवककेँ तारा रोकैत छथि। जोखिम दूरीक चिह्न आ भूमि-अधिकारक रेखामे गलत समानता तत्काल सुधारल जाइत अछि। फोटोमे दिनक समय, चिह्नपर क्रमाङ्क आ युवकक सहायक-मापक मजदूरी एतय तीन वास्तविक सूक्ष्म सुधार छथि। एक वृद्धा अपन दरवज्जापर सर्वेक्षण-चिह्न नहि चाहैत छथि, कारण घर हटेबाक पुरान अफवाह; सुगनी घरक भीतरी मापकेँ अनुमति बिना नहि लैत छथि। ई घटना ‘लोकहित’क नामपर निजी अधिकार स्वतः निलम्बित करबाक प्रवृत्तिक प्रतिपक्ष प्रस्तुत करैत अछि। जोखिम-नक्शा भूमि-अधिग्रहण नहि—ई भेद चित्र, सहमति आ शब्द तीनू स्तरपर सुरक्षित रहबाक चाही।

अस्पतालक दू रोगी-गाड़ी अस्थायी सुरक्षित पट्टीसँ निकलैत अछि। ई परिवहनक कार्यशीलता अछि, स्थायी जलनिकासी-मरम्मतिक उपलब्धि नहि। उर्मिला अपन चिकित्सा-भण्डारक ऊँच रैकक तत्काल व्यवस्था करैत

छथि, जाहिसँ ठोस जोखिम घटैत अछि; ओ नागरिककेँ पानि काल्हिसँ उतरि जाएबाक असिद्ध आश्वासन नहि दैत छथि। रानी आ ममता असुरक्षित बन्द नालीमे नहि उतरबाक प्रतिबन्ध कायम रखैत छथि; सुगनी दलक सदस्यसभक निजी समय आ पारिवारिक दायित्व सुनि सुरक्षित बाहरी काम बाँटैत छथि। एही बिन्दुपर तीन स्त्री-नेतृत्व अलग पेशागत स्थितिमे समन्वय करैत अछि, एकरे एकटा बड़का प्रतिनिधि बनि नहि जाइत।

नूरजहाँक गाड़ी : वस्तु, जीव आ बहीक त्रिस्तरीय अर्थ

नूरजहाँक गाड़ीमे सही ईंटक संग अधकच्चा टुकड़ा अछि; ‘छः गाड़ी ईंट’क औसत संख्या वास्तविक समान गुणवत्ता वा समान भार सिद्ध नहि करैत। ओ नाप-तौल आ सुपुर्दगीक वास्तविक स्थान लिखबए चाहैत छथि। मुंशीक ‘एतेक हिसाब करब तँ पुल कोना बनत?’ प्रश्नक उत्तरमे ओ स्पष्ट करैत छथि जे एखन एहि ईंटसँ पुल बनबाक स्वीकृत आदेश नहि अछि। कथानकक अगिला शीर्षकक पूर्वसङ्केत एतय अछि—सामग्री पहुँचब आ पुल बनल दो अलग घटना। नूरजहाँक किशोरी बेटी पशुक खुरक पट्टी आ खाली गाड़ीक सुरक्षित वापसीक सुझाव दैत छथि; ओ स्वयं हिसाब पुछैत छथि, मुदा नूरजहाँ हुनका प्रतिदिन काजमे लगएबाक बदला पढ़ाइ करबाक आग्रह करैत छथि। पशु-कल्याण, स्त्रीश्रम आ बालिकाक समय एतय काजक अनदेखल लागत खोलैत अछि।

दुपहरक बैठकमे नगरपालिका प्रतिनिधि गाड़ी चलैत देखिकऽ निकासी-काम ‘पूरा’ देखएबाक दबाव दैत अछि। अदिति एहि अनुचित कार्य-फल निष्कर्षकेँ काटैत छथि। तारा तीन अलग परीक्षण—पुरान निकासक सम्भावित रेखा, वर्तमान बहाव आ अस्थायी पैदल पट्टीक भार—दर्ज करबैत छथि। एहि तेसर रेखासँ अगिला ‘पुल’क प्रश्न आगाँ बढ़ैत अछि। एकमुष्ट रसीदक विरोधक बाद नूरजहाँक पहिल ढुलाईक बकायामे आंशिक राशि स्वीकृत, अतिरिक्त चक्करक सुनवाई निर्धारित, सुगनीक सुरक्षित सर्वेक्षणक हाजिरी दर्ज, आ मुहल्लाक जोखिम-नक्शामे समन्वयकक नाम चढ़ैत अछि। ‘स्वीकृत’क प्रकारसभ अलग छथि : राशि-अंश, तारीख, हाजिरी, समन्वयक—कोनो पूर्ण जलनिकास वा अधिकारक अन्तिम प्रमाण नहि।

आख्यानस्तर, शक्ति-अवधारणा आ पाठक आलोचनात्मक भार

कथन-विन्यासमे आधुनिक भोर–दुपहर–साँझक क्रमकेँ प्राचीन गड्गेश–मीमांसक शास्त्रार्थ दू भागमे विभाजित करैत अछि। ई द्विकालीन अन्तर्पाठ अधिल्ला अध्याय १०३ क उदयन-विवादक निरन्तरता दैत अछि, मुदा गड्गेशक विशिष्ट शक्ति–प्रतिबन्धक प्रश्नसे अलग बौद्धिक केन्द्र बनबैत अछि। प्राचीन पक्षमे भीजल लकड़ी प्रयोगक सीमा देखबैत अछि; आधुनिक पक्षमे ‘सूखल पट्टी’ पर ईंट उतारबाक आदेशक भौतिक असंगति अछि। ई रूपकीय समानता प्रभावकारी अछि, मुदा दाहशक्ति-विवादक शास्त्रीय समाधान आधुनिक जलनिकासी अभियान्त्रिकी नहि; मूल अध्याय सेहो एकरा अलग रखैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ खुरमे चिपकल माटि, बाँसक खूँटा, भीजल अन्न आ रसीदक खाली खाना समान्तर अर्थ-समूह बनबैत अछि। व्यञ्जना ‘शक्ति’केँ अधिकारक दबदबा नहि, क्षमता आ अवरोधक स्थितिसम्बद्ध प्रश्न बनबैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक अन्तर्गत ईंट ढोएनिहार स्त्री, गदहा, सफाइकर्मी, सदाय मुहल्लाक महिला, निरक्षर श्रमिक आ किशोरीक श्रम–ज्ञानकेँ नगरक अधिकृत मापक समक्ष दृश्यता भेटैत अछि। तथापि सीमासभ कहब जरूरी : प्रत्येक पात्रक कथन अत्यन्त प्रपत्र-सचेत अछि; किछु स्थानपर तर्क-प्रक्रिया इतबे

सुगठित जे दैनन्दिन टकरावक अव्यवस्थित आवाज कम सुनाइत अछि। श्रमिक भाषाक अलग लय, पशुक व्यवहारक दीर्घ अनुभव आ गामक स्थानिक बोलीकेँ आरो ठहराव भेटित तँ कलात्मक बहुस्वरता गहिर भऽ सकैत छल। अन्तिम संवादमे सुगनी स्पष्ट कहैत छथि जे हवा आ ढलानसँ जतेक पानि उतरल, सर्वेक्षण अपने नाली नहि खोललक। इएह अध्यायक सर्वाधिक ईमानदार समापन : समस्या सुलझाओल नहि, मुदा हुनकर जाँचक नैतिक आ भौतिक शर्त सुधरल।

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०१–१०४ क संयुक्त आलोचनात्मक मूल्यांकन

रोगीक मिनटसँ नालीक माटि धरि : कारण-जालक चारि स्तर

अध्याय १०१ सँ १०४ धरि कथा एकहि सार्वजनिक संकटकेँ चारि अलग निर्णायक प्रश्नमे बाँटैत अछि। पहिल—ककर समय आ देह जोखिममे अछि? दोसर—दृश्य मरम्मतिक नीचाँ केहन संरचनात्मक आ अभिलेखीय तह अछि? तेसर—कामक सुरक्षित विकल्प आ श्रमिकक असहमतिक प्रभावी संस्थागत परिणाम की? चारिम —‘शक्ति’ अथवा क्षमता/बाधा सम्बन्धी विधानक प्रमाण की, आ स्थानीय सर्वेक्षणकेँ नगरक अन्तिम सत्य बनेबाक जोखिमसँ कोना बचाओल जाए? एहि क्रममे रोगीकेँ सुरक्षित पहुँचाएब, शैलजाक शोक, गोमतीक पाट-परीक्षण, रानीक जोखिम-अस्वीकृति, ममताक उपकरण-प्राप्ति, सुगनीक नाप आ नूरजहाँक पशु-ढुलाई एक्के कथा-संसारक भिन्न क्रिया छथि। ई भिन्नता मिटा देलासँ कथा केवल ‘सब मिलि कऽ संघर्ष करैत अछि’क सामान्य वाक्यमे सीमित भऽ जाएत।

घटनात्मक परीक्षणक मूल पञ्जी चारू अध्यायक अलग परिणाम देखबैत अछि : (१) अध्याय १०१ मे एक रोगीक सत्यापित स्थानान्तरण, रेहानाक ओतहि उपचार, सरस्वतीक मृत्यु आ देरीक अनिर्णीत कारण; (२) १०२ मे अदितिक पुरान पर्याप्तता-दावा वापस, नियंत्रित बाहरी सफाइक आदेश आ मजदूरी/भूमिक अलग जाँच; (३) १०३ मे असुरक्षित बन्द नालीमे आजुक प्रवेशक लिखित रोक, बाहरी सफाइक कार्य-प्राप्ति, मजदूरीक विवाद बाँकी; (४) १०४ मे जोखिम-नक्शाक सुधरल सीमाङ्कन, सुगनीक हाजिरी, नूरजहाँक बकायामे आंशिक स्वीकृति आ भारपरीक्षण शेष। **बन्द निकास नहि खुलल; स्थायी पुल नहि बनल; सरस्वतीक मृत्युकारण मात्र जल-नापसँ सिद्ध नहि भेल।** ई तीन नकारात्मक परिणाम कथाक लघु उपलब्धिसभक नैतिक विश्वसनीयता सुरक्षित रखैत अछि।

समयक गति, दृष्टिकेन्द्र आ ज्ञानक अधिकार

कथनकाल १०१ मे मिनट-स्तरीय अछि; १०२–१०४ मे भोर–दुपहर–साँझक दिनक्रम प्रबल होइत अछि। पहिल अध्यायक तीव्र समय-दबाव बादक तीन अध्यायमे परीक्षणक अपेक्षाकृत धीम गति बनैत अछि। १०२ मे पुरान ठेका, भूमि-वचन, दस्तावेजक तिथि आ दू मासक फाइल-विलम्ब पूर्वदीप्तिक सामग्री दैत अछि; १०३–१०४ मे प्राचीन दार्शनिक कालधारा स्पष्ट अन्तःस्थापन अछि। अध्याय १०१–१०२ मे आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’

सङ्केत भेटितहुँ मूल पाठमे स्वतंत्र पुरान शास्त्रीय दृश्य नहि; १०३ मे उदयन–मीमांसक आ १०४ मे गङ्गेश–मीमांसकक स्वतंत्र दृश्य सत्यापित अछि। योजनाक वर्गीकरणकेँ मूल दृश्यसँ ऊपर नहि रखल जाए।

दृष्टिकेन्द्रणक विस्तार एकटा विशिष्ट नारी-प्रधान संस्थागत ज्ञान बनबैत अछि—उर्मिलाक चिकित्सा-समय, शैलजाक शोक, सलमाक दस्तावेजी साहस, गोमतीक बेलदारी, अमृताक भूमि-स्मृति, रानीक ठेका-जोखिम, ममताक सार्वजनिक सेवा, सुगनीक मुहल्ला-नाप आ नूरजहाँक पशु-ढुलाई। मुदा प्रत्येक स्त्री एकरे ‘स्त्रीस्वर’क प्रतिनिधि नहि। चिकित्साक श्रम, राजस्व-दावा, सुरक्षित कार्य-अस्वीकृति आ परिवहन-भाड़ाक अलग संस्थागत तर्क रहैत अछि। ई बहुस्वरता वास्तविक हितक असमानता रूपेँ सफल अछि; दोसर दिस पात्रसभ लगातार एकरे प्रमाण-सुस्पष्ट भाषामे बोली उठैत छथि, जे उपन्यासक शैलीगत एकरूपताक प्रश्न उठबैत अछि।

आख्यानशास्त्र, दार्शनिक अन्तर्पाठ आ प्रमाणक नियन्त्रण

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ चतुष्कमे चारि अलग प्रत्यक्ष–अनुमान सम्बन्ध छथि : गाड़ी देरीक देखल समय/मृत्युक कारण; पाटीक खुलल परत/दोषीक उत्तरदायित्व; दस्तानाक फोटो/वास्तविक सुरक्षा-प्राप्ति; लोक-जलस्तरक माप/नगरक स्थायी भूमि-अधिकार। प्रत्येकमे हेतु आ साध्यक बीच सम्भावित उपाधि वा अतिरिक्त प्रमाण चाही। एक्के ‘प्रमाण’ शब्दक पुनरावृत्ति पर आलोचना समाप्त नहि हो; शैलजाक असहाय प्रश्नक नैतिक भार आ मजदूरक देहगत जोखिम कानूनी पञ्जीमे अपूर्ण रूपेँ ही समाइत अछि। दार्शनिक पक्षमे उदयनक सकारात्मक ईश्वरानुमान आ गङ्गेशक शक्ति–प्रतिबन्धक समीक्षा अलग केन्द्र छथि। शास्त्रीय संवाद कल्पित पुनर्रचना अछि; मूल न्यायकुसुमाञ्जलि वा तत्त्वचिन्तामणिक निर्णायक मूल उद्धरण मानल नहि जाए।

भारतीय रस-औचित्यक दृष्टिसँ शैलजाक चप्पल, सरस्वतीक गरम हाथ, कटोरीक बूँद, गोमतीक औजार-पेटी आ नूरजहाँक गदहाक खुर भाव–वस्तुक रूपान्तरण करैत अछि। ई विवरण लेखाक सूखल रूपकेँ मानवीय आ पारिस्थितिक देह दैत अछि। मुदा कथनमे अन्तहीन पत्रक, प्रति, हस्ताक्षर, नाम आ उपखण्ड पाठकीय अनुभवकेँ थकाबि सकैत अछि। आख्यानगत सावधानी कथानकक प्राण अछि, मुदा प्रत्येक पात्र द्वारा तर्कक पूर्ण वक्तव्य देबाक प्रवृत्ति दृश्य, मौन, क्रोध, सामाजिक पूर्वग्रह आ असहमतिक असममिति दबा सकैत अछि। ई सम्भावित सीमा स्वीकृत करिते श्रम-अधिकार आ प्रमाण-संस्कृतिक साहित्यिक प्रयोगक महत्त्व देखब उचित अछि।

आगाँक परीक्षण : बिनौटक पुल आ आपदा-पूर्व निर्णय

अध्याय १०४ क अन्तिम बाँसक निशान केवल सुरक्षित भारपरीक्षणक सीमा अछि, पुल नहि। तेँ अगिला अध्याय १०५ “बिनौटक पुल” पढ़बाक समय देखबाक चाही—ककर नाप अपनाओल गेल, कोन भार अनुमानित, निजी/सार्वजनिक भूमि-प्रवेशकेँ कोना अलग राखल गेल, आ श्रमिक–रोगी–पशु–विद्यालयक परिवहन हितक बीच कोन नब निर्णय भेल। एहिसँ १०१–१०४ क उपलब्धि अथवा विफलताक पुनः परीक्षण होयत। एखनक निष्कर्ष मात्र ई : आपदासँ पूर्व बचावक निर्माण ‘मरम्मति पूर्ण’क घोषणा नहि, अपूर्ण अवस्थाकेँ लिखित रूपमे स्वीकारि, सुरक्षित सीमित कार्य करैत, विरोधी साक्ष्य लेल जगह छोड़ि देब अछि।

अध्याय १०५ — बिनौटक पुल

स्थल, सामग्री आ सीमित अनुमति : अध्यायक घटनात्मक आधार

“बिनौटक पुल”क आरम्भ तारा बिनौटक नखसँ बाँसक गाँठ खरोंचबाक क्रियासँ होइत अछि। पियर आ कारी बाँसक छाल भीतरक भिन्नता, रातिमे धँसल माटि, आ काल्हिक रोक-निशान—ई तीनू दृश्य पहिने सँ चलि रहल आपदा-पूर्व तैयारीकेँ एक क्षणमे दृश्यमान करैत अछि। कथावाचक पहिने कोनो सरकारी अधिसूचना नहि, कारीगरक स्पर्श चुनैत छथि। एहिसँ कथाक अधिकारक आरम्भ निरीक्षकक कागदसँ पहिने पदार्थक प्रतिरोधमे होइत अछि। मुदा एहिमे स्थानीय ज्ञानक अचूकताक महिमा नहि अछि : तारा स्वयं कादामे पयर नहि देलीह, कारण पछिला दिनक नाप आइ लागू रहबाक निश्चितता नहि छल। अध्यायक पहिल फलित अवस्था एखन पुल नहि, **सावधानीपूर्वक अनिर्णय** अछि।

घटना-पञ्जीक वास्तविक क्रम एना अछि : तारा बाँस छाँटैत छथि; ललित दू पटरीक गुणक भेद देखबैत छथि; श्याम मल्लिक माछक जाल, टोकरी आ चचरीक बाँस-बिनौटक अलग प्रयोजन लिखबैत छथि; हीरा जलस्तर आ धारक चालकेँ भिन्न प्रमाण मानैत छथि; अदिति आधार–जोड़–सीमित भारक क्रम प्रस्तावित करैत छथि। एहि बीच उर्मिला रोगी-स्थानान्तरणक प्रश्न अनैत छथि आ तारा चारि घरक चारि अलग आवश्यकताक सुनवाई करैत छथि। पुरान ईंट खसलापर आधार-संबन्धी अनुमान बदलैत अछि; नव स्थानपर सरकलासँ कटल काठ बेकार होइत अछि। पहिल भार-परीक्षणमे चरमराहट सुनि काज रोकल जाइत अछि; गलत कसनी चिन्हित होइत अछि; धातुक स्वतंत्र जाँचक निर्णय होइत अछि। दोसर परीक्षणक बाद साठि किलोग्रामक सीमित परिचालन-शर्त स्वीकारल जाइत अछि। उपलब्धि एतबे अछि—सँकर अस्थायी चचरीक नियंत्रित पैदल उपयोग; स्थायी सार्वजनिक पुल, वाहन-मार्ग अथवा रोगी-ढुलाई नहि।

एहि क्रमक निर्णायक बात ई जे “काम रोकल गेल” सेहो सकारात्मक घटना अछि। आधार बदललापर दूबारा नाप लेब, चरमराहट सुनि परीक्षण रोकब, गलत कसनी बदलि पुनर्परीक्षा करब—ई सभ कथासंसारक स्थितिमे वास्तविक परिवर्तन अनैत अछि। परिवर्तन-सङ्केतक यांत्रिक गनती एहन घटनाक नैतिक वजन नहि नापि सकैत। उदाहरणार्थ, पाठांश १६ मे “परीक्षण सफल” शीर्षक बनबैत भीड़क प्रत्याशा पर ललितक रोक भारी पड़ैत अछि। एहि नकारात्मक क्रियामे सामान्य उत्कर्ष-बिन्दुक स्थानपर अस्वीकृत उद्घाटनक विशिष्ट उत्कर्ष बनैत अछि।

बिनौट, पेशागत विशेषज्ञता आ आख्यानगत प्रमाण-परीक्षा

अध्यायमे बाँस केवल प्राकृतिक वस्तु नहि, अलग-अलग प्रयोजनक सामाजिक पदार्थ अछि। श्यामक जाल माछक गतिरुद्ध करैत अछि, टोकरी सब्जी धारण करैत अछि, चचरी मनुष्यक भारक जोखिम उठबैत अछि। एक्के सामग्री देखिकऽ एक्के क्षमता मानब अनुचित साधारणीकरण अछि। आख्यानगत भाषामे पक्ष बदलिते साध्य आ उपाधि बदलैत अछि। “बाँस अछि” सामान्य धर्म थिक; “मानवक निर्दिष्ट भार सुरक्षित थामि सकैत अछि” परीक्षणीय साध्य। जालक सफलतासँ पुलक क्षमता अनुमान करब अव्याप्त हेतुक उदाहरण बनि सकैत अछि। ललितक

काठ, पारोक ढील ईंट, उषाक चर्म-पट्टी आ हरिनारायणक लोहेक कसनी सभ अपन-अपन ज्ञानक्षेत्रमे आवश्यक, मुदा कोनो एकटा पदार्थक गुण सँ सम्पूर्ण संरचनाक सुरक्षा सिद्ध नहि होइत।

उषा राम अपन चर्मनमूनाक पकड़ बढ़ेबाक तुलनात्मक प्रदर्शन करैत छथि, मुदा ओकरा वर्षाक राति आ सभ प्रकारक पयरपर सार्वभौम दावा नहि बनबैत छथि। पहिल परीक्षणक चरमराहट पाछाँ चर्म नहि, कसनीक खिसकब कारण निकलैत अछि। ई घटनाक विन्यास पूर्वनिर्धारित दोषी चुनबाक प्रलोभन रोकैत अछि। अनुभूत ध्वनि प्रत्यक्ष अछि, दोषक कारण तत्काल प्रत्यक्ष नहि; घटक खोलला, मूल बिल आ आकार जाँचलाक बाद विशिष्ट सम्भावना भेटैत अछि। तथापि कसनी बदलला मात्रसँ पूरा पुलक अनन्तकालीन सामर्थ्य सिद्ध नहि होइत। अदितिक थैली-परीक्षा एकटा निर्दिष्ट मौसम, निर्दिष्ट आधार आ निर्दिष्ट भारपर प्रमाण दैत अछि—पाठांश २२ मे नव्वे किलोग्रामक स्थिर परीक्षणकेँ साठि किलोग्रामक परिचालन-सीमासँ स्पष्ट भिन्न राखल गेल अछि। ई संख्यात्मक अन्तरक कला-सार्थकता अछि : कथा गणितकेँ निष्कर्षक सीमा बतएबाक भाषा बनबैत अछि, असीमित भरोसाक प्रतीक नहि।

दूटा अलग प्रमाण-प्रश्न अन्ततः अवशिष्ट रहैत अछि। पहिल, सीमित उपयोगक सुरक्षित अवस्था भौतिक परीक्षा पर निर्भर अछि, तें पानि बढ़लापर अनुमति स्थगित होएबाक शर्त स्वीकारल गेल। दोसर, सार्वजनिक बाटक स्वामित्व, रमणीक मखानिया डबराक पट्टा आ पड़ोसक निजी सीढ़ीक अधिकार ओहि संरचनात्मक परीक्षासँ सिद्ध नहि भेल। एकहि सार्वजनिक उद्घाटनसँ पदार्थक क्षमता आ भूमि-अधिकार दुनू सिद्ध करबाक अधिकारीक अभिलाषा तारा रोकैत छथि। कथानक एहि विरोधकेँ समाधानक लम्बा भाषणसँ नहि, लेखाजोखाक अलग पन्नासँ स्पष्ट करैत अछि।

चारि घर, अनुलभ्य बाट आ अनुमति देनिहारक अधिकार

तारा चारि परिवारकेँ बजाकऽ जे सुनवाई करैत छथि, ओ आधुनिक परियोजनाक प्रायः छूटैत “औसत उपयोगकर्ता”क त्रुटि पर आघात अछि। बालकक विद्यालय-बाट, वृद्धक लाठी, निजी मेड़ पर असहमति आ बन्द घरक स्वामित्व—कोनो परिस्थिति एक्के नमूनामे फिट नहि होइत। बादमे साठि किलोग्रामक शर्तक कारण किछु लोक नव चचरी पर चलि नहि सकैत छथि; कथा ओकरा “नियम तोड़ि प्रवेश” वा “स्थायी बहिष्कार” दुनू बनबैत नहि। वैकल्पिक सुरक्षित बाटक व्यवस्था स्वीकारल जाइत अछि। ई निर्णय बराबरीकेँ सभकेँ एक्के मार्गपर चढ़ेबाक बाध्यतासँ पृथक करैत अछि। तथापि उचित आलोचनात्मक प्रश्न शेष रहैत अछि—वैकल्पिक बाटक उपलब्धता कालान्तरमे कतेक नियमित निरीक्षित हएत? वर्तमान अध्याय केवल व्यवस्थाक घोषणा आ निर्दिष्ट उपयोग देखबैत अछि, भविष्यक सफलताक गारंटी नहि।

सामुदायिक नाव–औजार परखक आयोजन कथाक लोककाल बनबैत अछि। परम्परागत ढोलक-उत्सव पहिने औजार, श्रम आ सुरक्षित उपयोगक चर्चा लेल रुकी जाइत अछि। उपस्थित लोकसभ स्वतः निर्माण-मजदूर नहि बनाओल जाइत; इच्छा अनुसार नाम लिखल जाइत अछि। पार्वतीक चेतावनी-पट्टी, पवित्राक गाँठ, उषाक नमूना, श्याम–ताराक माप, सुगनीक जलसर्वेक्षण—ई सभक पारिश्रमिक आ योगदान अलग अछि। ई “विदेह समानान्तर इतिहास”क पाठीय सम्भावना अछि : सार्वजनिक निर्माणक मुख्य कथा केवल अधिकारीक फीता काटब नहि,

बल्कि शिल्पीसभक ज्ञान आ लागतक दस्तावेजमे पुनर्लेखन। उषा अपन डिजाइनक प्रतिकृति लेल लिखित अनुमति माँगैत छथि; परम्परागत बिनौटकेँ ओ व्यक्तिगत सम्पत्तिक पूर्ण एकाधिकार नहि कहैत छथि, किन्तु स्थानीय विशेष संशोधनक श्रेय आ उपयोग-सीमा चाहैत छथि। एहि सूक्ष्म भेदसँ ज्ञान-साझाकरण आ व्यक्तिगत कारीगरीक शोषणक बीच सम्यक् दूरी बनैत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ दृश्यात्मक विन्यास

भोरक बाँस-छालसँ दुपहरक परीक्षण आ साँझक लिखित अनुमति धरि अध्याय मुख्यतः एक दिनक रैखिक क्रममे चलैत अछि। छोट पूर्ववृत्त ललितक पुरान ठेका हरण, उषाक जूता बनएबाक अनुभव आ कालिहक निषेध-खूँटामे अबैत अछि। ई स्मरणसभ अलग ऐतिहासिक काण्ड नहि, वर्तमानक निर्णयक कारणात्मक पृष्ठभूमि छथि। पूर्वकथात्मक विन्यासमे “द्विकालीन अन्तर्पाठ”क सम्भाव्य संकेत भेटितो एहि अध्यायमे स्वतंत्र महाभारत अथवा रामायण दृश्य नहि अछि। “उद्योग” आ “भीष्म” सँ बनल पूर्वापर संकट-धागा अवश्य प्रकट अछि; मुदा कालधारा-समानता केवल पर्वनामसँ सिद्ध नहि मानल जाए। शिल्पक मूल्यांकनमे ई अन्तर अनिवार्य अछि।

कथावाचक तृतीयपुरुषमे रहि अनेक पात्रक ध्यानस्थल बदलैत छथि—ताराक उँगरी, ललितक स्मृति, उर्मिलाक रोगी-चिन्ता, उषाक डिजाइन, सुगनीक मुहल्ला, हीराक नाव, रमणीक पट्टा। एहन परिवर्ती दृष्टिकेन्द्रण अनेक विशेषज्ञताक कक्ष खोलैत अछि। तथापि संवादसभ अक्सर एतेक व्यवस्थित सिद्धान्त-वाक्यमे समाप्त होइत अछि जे वास्तविक बोलचालक वैविध्य किछु घटि सकैत अछि। “अलग मद”, “सीमा” आ “अनुमति”क बारम्बार आवर्तन कथा-नीतिकेँ स्पष्ट करैत अछि, मुदा गीत, भोजन, अल्हुआ, जीराक स्वाद आ मजदूरक छुटल आधा दिनक पर्ची एहि प्रशासकीय शुष्कतासँ देहगत अनुभवसँ फेर जोड़ैत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि, प्रतिपक्ष आ अध्यायविशेष निष्कर्ष

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि ई जे “पुल बनल” आ “पुल सुरक्षित अछि”क बीच सार्वजनिक भाषा पर अनुशासन लगबैत अछि। नैरा आखिरी रिपोर्टमे तारा सँ अनुमोदित वाक्य लिखैत छथि—सँकर अस्थायी बाटक सीमित संरचना परीक्षणक शर्तपर चालू भेल। एहि कथनमे प्रगति अछि, मुदा अति-प्रचार नहि। अंतिम पाठांशमे ललित आधा दिनक छुटल मजदूरी जोड़ैत छथि; नूरजहाँक पुरान बकाया बाँकी अछि; अस्पतालक गाड़ी अपन पुरान बाटे चलैत अछि। प्रतीकात्मक पुल एतय वास्तविक अधिकारक अधूर लेखाक ऊपर चकचका कऽ ठाढ़ नहि अछि।

सीमा सेहो अछि : प्रत्येक छोट श्रम-विवाद तत्क्षण उचित पृथक्करणक वाक्य पाबैत अछि; प्रशासनिक चूकक विवेचन अक्सर बहुत स्पष्ट नैतिक जवाबमे परिणत होइत अछि। फलतः पाठक किछु ठाम स्वयं संघर्षक जटिलता खोजबाक बदला पात्रक तैयार निष्कर्ष सुनैत अछि। तथापि पहिल असफल परीक्षण, पुल-सामग्रीक नुकसानी, सीमित साठि किलोग्रामक शर्त आ जलस्तर बढ़िते रोकबाक नियम ई सहज उपदेशक विरुद्ध ठोस घटनात्मक प्रतिरोध दैत अछि। अध्याय १०५ क वास्तविक परिवर्तन “स्थायी पुलक विजय” नहि, **गलती देखिते काज रोकबाक सार्वजनिक अधिकार आ सीमित सुरक्षित उपयोगक स्थापना** थिक।

अध्याय १०६ — उपचारक स्वीकार

लोहेक पेटी, तीन पंजी आ त्रुटिक पहिचान

अध्याय १०६ क आरम्भ २०३९क वर्षाक भोरमे अस्पतालक लोहेक पेटी खुलबासँ होइत अछि। शीशाक खनखनाहट आ भीजल लेबल पाठककेँ तुरन्त पदार्थक समीप अनैत अछि, मुदा प्रश्न पेटीमे कतेक सामान अछि, एतबे नहि। सामान केखन पहुँचल, ककर देखरेखमे रहल, ओकर परीक्षण भेल की नहि, आ उपयोगक अनुमति ककरा छल—ई जाँच-पथ बनैत अछि। उर्मिलाक रात्रि सेवा-पंजी आ गोदामक उत्तरमे “माल आबि गेल” तथा “सामान सीलबन्द अछि”क विरोध एहि अध्यायक मूल द्वन्द्व अछि। एकहि “उपलब्ध” शब्दमे तीन अलग क्रियाक मिलाबट—निर्गत करब, भौतिक प्राप्त करब आ सुरक्षित उपचारमे उपयोग करब—कथाक संकट जनबैत अछि।

मूल घटना-पञ्जी : अनिरुद्ध दू मूल पंजी आ अपन हस्ताक्षरित आपात सार मँगबैत छथि; सलमा एक सत्यापित दवाइक उदाहरणसँ अलग निरीक्षणाधीन पेटीक अन्तर देखबैत छथि; अनिरुद्ध पूर्वरात्रिक “निर्गत” केँ “उपलब्ध” मानबाक अनपरीक्षित निर्णय स्मरण करैत छथि; शैलजा अपन मृत सासु सरस्वतीक चिकित्सकीय कारणक जाँचकेँ एहि गलतीसँ अलग करैत छथि; जमुना वर्तमान उपचार बन्द नहि करबाक शर्त रखैत छथि; रमा–शबनम मूल पन्ना सुरक्षित राखि संशोधनक विधि बनबैत छथि। बादमे कर्मचारीक अपुष्ट फोन-दावाक अलग पञ्जी बनैत अछि; अनिरुद्ध निर्दिष्ट गलती स्वीकारैत छथि; उपलब्धता-पट्ट तीन श्रेणीमे सुधरैत अछि; रोगी-गाड़ीक वास्तविक उपयोग आ उर्मिलाक पुरान मजदूरीक सुनवाई अलग चलैत अछि। अन्तमे एक पेटी एखनहुँ पहुँचबाक बाकी रहैत अछि।

एहि अध्यायमे अनिरुद्धक स्वीकार “डॉक्टर सभ अपराध मानि लेलनि” एहन सामूहिक सनसनी नहि। ओ मानैत छथि जे अस्पतालमे वास्तविक प्राप्ति आ निरीक्षण-स्वीकृति पुष्टि कएने बिना गोदामसँ निर्गत सामग्रीकेँ उपलब्ध मानि आपात सारपर हस्ताक्षर देलनि। एहि कथनक सीमामे चिकित्सकीय कर्तव्यक कमी अछि; असमान लेबलवला खेप बनएब, महेशक हत्या अथवा सरस्वतीक मृत्युक चिकित्सकीय कारण स्वतः सिद्ध नहि होइत। पात्रक स्वीकारोक्ति जिम्मेदारीक सीमा खोलैत अछि, ओकरा असीम अपराधक बोझ बनबैत नहि।

कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्ध : शब्द, अर्थ आ कारण

“निर्गत”, “प्राप्त”, “उपयोगयोग्य” आ “उपलब्ध”—चारि शब्द एक दोसरा लेल यथेष्ट पर्याय नहि छथि। कथा प्रशासनिक शाब्दबोधक चूककेँ प्रत्यक्ष भौतिक परिणामसँ जोड़ैत अछि। “गोदामसँ माल निकलल” सत्य होइतो अस्पतालमे उपयोगक साध्य सिद्ध नहि होइत; एहि निष्कर्षक लेल सुरक्षित मार्ग, सुपुर्दगी, परीक्षण आ चिकित्सकीय स्वीकृतिक अतिरिक्त अपेक्षा अछि। भाषा अपनहि भीतर प्रमाणक अलग अवच्छेदक माँगैत अछि। सलमाक स्वीकृत बोतल आ सीलबन्द पेटी विरोधी उदाहरण नहि, दू अलग वस्तुक दू अलग प्रक्रिया अछि। अनिरुद्धक सार-पन्ना तेँ स्वतः झूठ कागद नहि, मुदा ओकर सामान्यीकरण अनुचित अछि।

मूल पन्ना फाड़ि नव संख्या लिखबाक कर्मचारीक प्रस्ताव रमा रोकैत छथि। ई निर्णय वैज्ञानिक पुनरुत्पादन जकाँ ऐतिहासिक शृंखला सुरक्षित रखैत अछि—पुरान कागद, गलतीक समय, सुधारक नब तिथि आ सुधारक कारण।

प्रमाणक दृष्टिसँ संशोधनक पञ्जी तखनहि विश्वसनीय जखन ओकर पाछाँक त्रुटि देखबाक बाटो बचल रहय। फोनपर दबाव आयल एहन कर्मचारीक मौखिक दावाकेँ नैरा “अज्ञात आदेश” घोषित नहि करैत छथि; ओ कल-बही सँ मिलान शेष लिखैत छथि। एतय श्रुति-प्रमाण, कार्यालयक शब्द-साक्ष्य आ सम्भावित अनुचित दबाव अलग-अलग स्तरमे रहैत अछि। कहनिहारक परिस्थिति जाँचब आवश्यक अछि, मुदा पूर्वनिर्णीत दोषारोपण ओकरा बदलि नहि सकैत।

अध्यायक त्रिस्तरीय उपलब्धता-वर्गीकरण कोनो सामान्य तालिका-प्रेम नहि; ओ उपचारक समय सँ जुड़ल अछि : (१) भौतिक रूपेँ उपलब्ध आ स्वीकृत, (२) स्वीकृत मुदा पहुँच शेष, (३) निरीक्षणाधीन। पहिलक अभाव सँ रोगीक तत्क्षण खुराक प्रभावित भऽ सकैत अछि; दोसरक लेल ढुलाईक काज चाही; तेसरक लेल प्रमाणिकताक जाँच। “सभ उपलब्ध” जकाँ “सभ अनुपलब्ध” सेहो अनिर्दिष्ट सामान्यीकरण बनि सकैत अछि। ई जटिल भेदक कारण कथा केवल दोषखोज नहि, सुधारक व्यवहारे सिद्ध करैत अछि।

स्त्रीस्वर, शोक आ उपचारक दोहरी समय-रेखा

शैलजा सरस्वती देवीक चादर देखैत अस्पतालक गलतीक प्रति माँगैत छथि, मुदा ओ स्पष्ट करैत छथि जे प्रशासनिक सुधार हुनकर शोकक बदला नहि। एतय स्मृति आ दस्तावेज परस्पर पूरक होइतहुँ एक-दोसराक स्थान नहि लैत। सरस्वतीक मृत्यु-कारणक जाँच आ सामानक गलत उपलब्धता-सार दू अलग प्रश्न छथि। न्यायिक–नैतिक आख्यानशास्त्र लेल ई अनिवार्य भेद अछि : परिवारक क्षति पाठकमे करुणा उत्पन्न करैत अछि, मुदा करुणा कारण-सिद्धिक शॉर्टकट नहि बनबाक चाही। शैलजाक प्रश्नक तिथि तय होइत अछि, मृत्युक कारण एखन निर्णयित नहि।

जमुना देवी उलटा दिशासँ पूछैत छथि—गलत पेटीक जाँच चलितहुँ सही उपचार बन्द किएक हो। अनवरी अपन बेटी रेहानाक चिकित्सा नियमित राखबाक निर्णय करैत छथि। एक परिवारक न्याय-अन्वेषण, दोसरक वर्तमान उपचार-सुरक्षा : एउ विपरीत नहि, दुई भिन्न कालगत आवश्यकता अछि। उर्मिला बतबैत छथि जे चिकित्सकीय अभिलेखक सुधार हुनकर कपड़ा-पंजीक पुरान बकाया आ वेतनक विवाद मिटाबैत नहि। हुनकर सेवा-श्रमक अलग हिसाब चिकित्सकक सार्वजनिक स्वीकारोक्तिक उत्सवमे विस्मृत नहि होअय—ई सशक्त प्रतिपक्ष अछि। देवी गोंडक प्रशिक्षण प्रश्नक अधिकार बनैत अछि; वरिष्ठक आदेश रहितहुँ सत्यापित सीमा लिखबाक आत्मविश्वास विकसित होइत अछि। ई स्त्री-पात्रसभ केवल उपचारग्राही नहि, उपचार-व्यवस्थाक ज्ञाननिर्माता छथि।

स्वीकारोक्तिक नैतिकता, संस्थागत सत्ता आ समाचार-रचना

देवव्रतक प्रतिनिधि अनिरुद्धक गलतीक स्वीकृतिक आधारपर गोदाम-प्रकरण समाप्त मानए चाहैत अछि। बादमे नगर अधिकारी पूरा आपूर्ति-अनियमितताक भार चिकित्सकपर डालए चाहैत छथि। दूटा प्रस्ताव परस्पर विरोधी देखाइत अछि, मुदा दुनूक सामान्य तरकीब एक्के—जटिल कारण-जालकेँ एकटा सही आ एकटा व्यक्तिमे समेटि देब। शबनम तीन सीमित प्रश्न पुछैत छथि : अनिरुद्ध सभ खेप देखलनि की, सभ भुगतान स्वीकृत केलनि की,

तखन “समस्त जिम्मेदारी” केना? शास्त्रीय हेत्वाभासक नाम छापब पर्याप्त नहि, एहन पद्धतिक प्रश्न कथा भीतर क्रियाशील होइत अछि।

नैरा समाचारक शीर्षक बनबैत समय निर्दिष्ट गलती आ जारी जाँचकेँ अलग रखैत छथि। ई अध्याय स्वयं पत्रकारिताक सत्य-निर्माण पर आलोचना बनैत अछि। अनिरुद्ध अनुमति दैत छथि जे सार्वजनिक त्रुटि-संशोधन छपय, मुदा रोगीक निजी नाम आ कर्मचारीक अपुष्ट फोन-दावा नहि। पारदर्शिता आ निजता परस्पर विरोध नहि; सत्यापनक विषयानुसार अलग अधिकार-सीमा अछि। शैलजाकेँ देल प्रमाणित प्रति, बन्द जाँच-पेटीक बयान आ पालि-बदलबाक सार्वजनिक दवा-सूची तीन अलग पाठकीय पहुँच रखैत अछि। उपन्यास निजताकेँ सूचना-नियन्त्रणक बहाना बनबैत अछि की? एहि अध्यायमे कम सँ कम शैलजाक सार्वजनिक सुधार प्रति आ चिकित्सकीय जाँचक तिथि भेटबैत छी, तें साक्ष्यक नियन्त्रित पहुँच सम्पूर्ण मौन नहि बनैत।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण, साहित्यिक सीमा आ निष्कर्ष

अध्याय भोरक पेटीसँ दुपहरक बयान आ साँझक वाहन धरि एक दिनमे अग्रसर अछि। पाठांश ५ क पूर्वस्मृति कथनक्रममे एक छोट पूर्वदीप्ति उत्पन्न करैत अछि, जे गलतीक कारण समझबैत अछि; ओकरा अलग महाकाव्यकालक दृश्य नहि मानल जाए। पूर्वआख्यानक सम्भाव्य “द्विकालीन अन्तर्पाठ” ई विशिष्ट मूल अध्यायमे स्वतंत्र पौराणिक कथानक रूपमे सत्यापित नहि होइत। तृतीयपुरुष कथावाचक अनिरुद्धक द्विविधा देखबैत छथि, मुदा शैलजा, उर्मिला, सलमा, नैरा आ कर्मचारीक वाचिक स्थान स्वतंत्र राखैत छथि। लोहेक पेटी, नील थैली, भीजल ओसारा, पुरान आ नव सार-पन्ना तथा टपकैत छतक पुनरावृत्ति कथावस्तुकेँ सतत असुरक्षाक भौतिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

प्रभावकारी उपलब्धि “स्वीकार” शब्दक पुनर्लेखन अछि : त्रुटि स्वीकारला पर उपचार चलैत रहत, कागदक शृंखला नहि नष्ट हएत, मृतकक कारण स्वतः घोषित नहि होएत, आ कर्मचारीक जिम्मेदारी नहिए चिकित्सकक दोषमे घुलि जायत। कथात्मक सीमा ई जे लगभग प्रत्येक पात्रक संवाद प्रमाणक अन्तिम नियम सहज सुव्यवस्थित वाक्यमे कहि दैत अछि; वास्तविक संकटमे एतेक स्पष्ट सहमतिक भाषा सम्भव कतेक, ई प्रश्न बनैत अछि। फेरो उर्मिलाक अधूर बकाया, शैलजाक अनिर्णीत प्रश्न, बरामदाक टपकैत जोड़ आ पहुँचबाक बाकी एक पेटी उपदेशमूलक पूर्णताकेँ बाधित करैत अछि। अध्यायक उपलब्धि सम्पूर्ण समाधान नहि, **दोषक निर्दिष्ट सार्वजनिक स्वीकार आ उपचारक सत्यापित निरन्तरता** अछि।

अध्याय १०७ — पाँच हस्ताक्षर

पाँच पन्नाक पाँच क्रिया : लिखित सहमतिसँ कार्यान्वयन धरि

“पाँच हस्ताक्षर” गोदामक फाटकक ताला घुमए नहि चाहबासँ शुरू होइत अछि। रमा पहरेदारकेँ ताला छूएबाक पहिने समय आ मुहरक स्थिति दर्ज करबैत छथि; रोगीक घड़ी तात्कालिकता माँगैत अछि, मुदा ई तात्कालिकता साक्ष्य-शृंखला तोड़बाक अधिकार नहि। अध्याय-शीर्षक एकटा औपचारिक समापनक अपेक्षा जगबैत अछि, जबकि पाँच हस्ताक्षर पाँच **अलग कार्यक नियंत्रित आरम्भ** छथि। शबनमक पाँच पन्नामे रोगी-यात्रा,

स्थानीय जलमाप/निकासी, स्वीकृत गोदाम-सामग्रीक सुपुर्दगी, समान अधिकारवाली राहत-रसोइ आ सार्वजनिक प्रति-व्यवस्था लिखल अछि। कथावाचक निश्चित करैत छथि जे एही दस्तावेजक औपचारिक एकता ओकर व्यवहारिक भिन्नता नहि मेटाओ।

पहिल हस्ताक्षर देवव्रतक नियंत्रित गोदाम-सुपुर्दगी पर होइत अछि; जाँचाधीन असमान लेबलवला माल पर दोसर सील रहैत अछि। अस्पतालमे वस्तु पहुँचि गेलो पर उर्मिला “प्राप्त”, “परीक्षणक बाद उपयोगयोग्य” आ “धुलाई लेल” तीन पाँति अलग लिखैत छथि। तुलसीक हस्ताक्षर सुरक्षित रोगी-परिवहनक चालक–विश्राम–चिकित्साकर्मी व्यवस्था पर होइत अछि, चालकक पुरान मजदूरी वापस लेबाक स्वीकारोक्ति पर नहि। स्थानीय जलमापक अनुमोदन बाहरी सुरक्षित निकासक काम खोलैत अछि, मुख्य नालीक भीतरक जोखिमपूर्ण भाग एखन निषिद्ध रहैत अछि। चौठ हस्ताक्षर रुहानी रसोइक कार्यसमय आ अग्रिम मजदूरी वास्तविक निकललाक बाद करैत छथि; पाँचम रमा सार्वजनिक सार आ सुरक्षित परिशिष्टक वितरणपर करैत छथि।

घटनात्मक घनत्वक वास्तविक मापनमे एहि पाँच सहीक अंकसँ बेसी महत्त्व अछि **हस्ताक्षर पाछाँ घटल क्रियाक** : गाड़ी निकलब, कपड़ाक अलग जाँच, बाहरी नालीमे पानि बहब, आश्रयमे कक्ष खुलब, खिचड़ी परसल जाएब आ उपयुक्त सूचना टँगब। एकटा सहीसभक फोटो मंचपर प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि; मुदा ओकर स्थानपर वास्तविक कामक समयक प्रमाण नहि आनि सकैत। शबनम बारम्बार सहीक समय आ तुरन्त अगिला कार्यक समय मिलबैत छथि। शीर्षकक गणनात्मक सरलता पाठककेँ बहुस्तरीय कार्यान्वयनक जालमे प्रवेश करबैत अछि।

गोदामक दोहरी सील, श्रम-पंजी आ लाभक वितरण

देवव्रतक वर्तमान सहयोगकेँ रमा हुनकर पुरान निर्दोषताक प्रमाण नहि बनबैत छथि। महेशक हत्यासम्बन्धी आदेशक प्रश्न, रोकल खेपक स्रोत आ अस्पतालक गलत सारक जाँच अलग जारी अछि। गोदामक मजदूर गोपाल आ पहरेदार अपन कामक समय तथा दर दर्ज करबैत छथि। सोना कठौतिया सरकारी बाटक बाड़ हटएबामे मुफ्त मजदूरी नहि देबाक पक्ष रखैत छथि; हुनकर नव ढुलाईक अग्रिम भेटैत अछि, पुरान देय शेष रहैत अछि। ई द्विपक्षीय व्यवस्था सामर्थ्यवान स्वामित्वक परोपकारक बदला कामक वास्तविक वस्तु, श्रम आ लागतक हिसाब लिखबैत अछि।

ई घटनासभमे दोषमुक्ति आ सेवा-सहयोगक सम्बन्ध खास अछि। देवव्रत यदि आजुक गोदाम खोलैत छथि, तकर अर्थ पुरान दावाक शास्त्रीय बाध अथवा विधिक विमुक्ति नहि; कार्य-सीमित स्वीकृति अपने समयक अलग तथ्य अछि। आधुनिक कानूनी भाषामे ई असम्बद्ध प्रकरणसभकेँ जाँच-पूर्व एकटा समन्वय-बयानमे समाहित नहि करबाक अनुशासन अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ वर्तमान नियंत्रित सुपुर्दगीक हेतु पर पुरान हिंसक आदेशक अभाव अनुमान करब “असिद्ध व्यापकता”क जोखिम बनबैत अछि। उपन्यास सभक विरुद्ध एके अपराधक अटकलो नहि लगबैत अछि, सभकेँ निर्दोष घोषित सेहो नहि करैत।

आश्रयक भोजन : समानता, निजता आ स्त्रीक संगठनात्मक ज्ञान

रुहानी विद्यालय-कक्ष खोलिते बासन, भीजल छत आ दरबज्जाक कुंडी जाँचैत छथि। ई दृश्य शास्त्रार्थक भाषा नहि, भौतिक सुगमता सँ आरम्भ होइत अछि। चारि परिवारक प्रवेश, वृद्धाक खुलल मार्ग, बच्चाक फोटो-निजता आ दानी-मण्डलीक अपेक्षाक विवाद राहतक अधिकारक व्यावहारिक व्याकरण अछि। उपयोगकर्ता-समुदायकेँ जाति–धर्मक आधारपर भोजनक पाँतिमे विभाजित नहि करबाक निर्णय वर्णित अछि, मुदा निज आवश्यकता लेल स्वीकृत गोपनीय विवरणक विकल्प बचल अछि। एतय समानताक अर्थ एक्के थारीमे बैसबाक बलात् आदेश नहि —एक वृद्ध अपन पित्तरि पात्रमे खाइत छथि। एहि सूक्ष्म दृश्यसँ भिन्नताकेँ सहमतिक संग स्वीकार करैत समता निर्माण सम्भव होइत अछि।

रसोइक “दान” तीन दिनक चाउर-दाल धरि अछि; इन्धन, तेल, बासन-धुलाई आ रात्रिक काम ओकरा भीतर स्वतः नहि समा जाइत। रुहानी, रुखसाना, रघु, चन्द्रिका, कंचन, ममता, रानी—एहि आवाजसभक माध्यमसँ परोपकारक महिमाक सँग अनपेड सेवा-श्रमक खतराक परीक्षा होइत अछि। एक महिला कर्मीक नाम गलत लिखल गेलापर ओ स्वयं सुधरबैत छथि, आ अग्रिम भुगतान वास्तवमे देलाक बाद चौठ हस्ताक्षर होइत अछि। ई सजीव पात्र-निर्णय अछि, सामान्य सामाजिक सूची नहि। भोजनक स्वाद, अदरक–जीराक मतभेद, बच्चीक हँसी आ नूरजहाँ–सोनाक एक पाँतिमे बैसब संरचनामे सुखक छोट दृश्य जोड़ैत अछि। शोक आ आपदाक बीच ई शान्त अनुभूति करुणरसकेँ निरन्तर करुणाहि रहबाक बाध्यतासँ बचबैत अछि।

एक साहित्यिक सम्भावित सीमा एतहु अछि : वर्णित राहत-सभा बहुत क्रमबद्ध ढंगसँ श्रम आ निजताक उचित सिद्धान्त पहिचानैत अछि, प्रतिवादमुखी प्रशासनिक पात्र सभ प्रायः शीघ्र मानि लैत अछि। तथापि पाठ ओकरा पूर्ण यूटोपिया नहि बनबैत। आश्रयक छत टपकैत अछि, रसोइक अगिला पालिक गणना शेष अछि, बासन धोनिहारक दू घण्टा प्रारम्भमे छूटि जाइत अछि। एक दिनक वास्तविक उपलब्धि कल्हिक स्थायी आश्वासन नहि।

कथनकाल, परिवर्ती दृष्टि आ सार्वजनिक लेखनक आलोचना

भोरक बन्द ताला सँ रातिक आखिरी रसोइ धरि अध्याय एक दिनमे चलैत अछि। पाँच पन्नाक वस्तुगत क्रम कथनक्रमकेँ व्यवस्थित करैत अछि, मुदा पात्र-स्थान बदलैत रहैत अछि—गोदाम, अस्पताल, नदी, आश्रय, रसोइ आ सार्वजनिक सूचना-पट्ट। एहि बहुस्थलीय विन्यासमे समय-सम्बन्ध मुख्यतः समकालिक आयोजनक श्रृंखला अछि, अलग स्वतंत्र महाकाव्यकालक दृश्य नहि। पूर्वआख्यानक “द्विकालीन अन्तर्पाठ”क प्रारम्भिक वर्गीकरणक विपरीत मूल अध्यायमे प्राचीन कथाक स्वतंत्र दृश्य उपस्थित नहि। साहित्यिक साम्यता अन्यायपछात् प्रशासनिक मरम्मतिक नैतिक प्रश्नमे खोजल जा सकैत अछि; दृश्यगत कालान्तरण मानि देब आधारहीन होयत।

रमा–शबनम–नैराक त्रिस्तरीय लेखन-विन्यास विशेष ध्यानयोग्य अछि : रमा उपलब्ध प्रमाणक सार्वजनिक सार रखैत छथि, शबनम सूचना-पहुँच आ निजी परिशिष्टक सीमा तय करैत छथि, नैरा समाचारक प्रस्तुति सँ किसी एक व्यक्तिक महिमामण्डन रोकैत छथि। सत्ताइस पाँतिक गोपनीय परिचय सार्वजनिक सूचीमे नहि चढ़ैत अछि। उत्तरशास्त्रीय नैतिक आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ पाठककेँ सूचना-संरक्षणक कारण देखाओल जाइत अछि, मात्र

रहस्यसँ रोचकता नहि बनाओल जाइत। पाँच सहीक फोटोसँ सेवा नापबाक बदला पाठककेँ भेटैत अछि : भोजनक थारी, मजदूरक पावती, नावक सीमित यात्रा, अस्पतालक गाड़ी आ जाँचाधीन मालक मुहर।

निष्कर्ष : करारक पूर्णता नहि, उत्तरदायित्वक विभाजन

अध्यायक आखिरी दृश्यमे पाँच व्यक्ति अलग-अलग बाटे घर घुरैत छथि। ओ “एके प्रतिज्ञाक मालिक” नहि; सभ अपन हिस्साक काज कएने छथि। सामूहिकताक ई रूप गठबन्धनकेँ एकमात्र नायकक इच्छामे विलीन नहि करैत। पानिक घटल नाप आ अधूर छरकी, अस्पतालक बचल चुआन, रसोइक अगिला दिनक भात, तथा सीमित चचरी सेहो पाठक लग रहैत अछि। अतः “पाँच हस्ताक्षर”क सिद्ध उपलब्धि पांचो सेवा क्षेत्रमे सीमित क्रिया शुरू करब अछि, स्थायी संकटसमाधान नहि। शल्य-पर्वक आपदा-पूर्व नैतिक उत्कर्ष ई अछि जे कागद वास्तविक श्रमक बादहि अपन सत्य पबैत अछि।

अध्याय १०८ — जलस्तरक बाहर

लाल रेखाक डूबब : गतकालक निर्णयक पुनर्परीक्षा

अध्याय १०८ मे भोरक पहिल उजासमे हीरा सहनीक माप-डण्डाक लाल रेखा पानिमे लुकि जाइत अछि। ई दृश्य तुरन्त अध्याय १०५ आ १०७ क उपलब्धिक पुनर्परीक्षा करैत अछि। काल्हि जे सुरक्षित मानल गेल, ओहि स्थलपर आइ पानिक अवस्था बदलल अछि; नव मापक लेल हीरा पुरान डण्डा नहि उखाड़ैत छथि, दोसर बाँस गाड़ि दुनूक समय लिखैत छथि। तुलना लेल पुरान साक्ष्यक अस्तित्व आवश्यक अछि। मधु मरम्मतिक बाद परीक्षण नहि भेल नाव रोकैत छथि। ई रोक पारगमनक नागरिक आवश्यकता अस्वीकार नहि; नव परिस्थितिमे उपयोगक अनुमति फेर जाँचब अछि। पाँच हस्ताक्षरक प्रति देखाकऽ अधिकारी सेवा-उद्घाटनक सफलता कहए चाहैत छथि, मुदा हीरा प्रश्न करैत छथि—कतेक बेरक नापपर सुरक्षित कहैत छी?।

घटना-क्रम स्पष्ट अछि : लाल निशान डूबैत अछि; पानिक भँवरी आ पेंदीक तीन बिन्दु जाँचल जाइत अछि; गोपाल माझी सरकारी नक्शाक सीधा रेखाकेँ वर्तमान नदी-व्यवहारसँ मिलबैत छथि; छह प्रस्तावित नावमे सँ तीनटा दिनक सीमित यात्राक लेल, एकटा खाली सहायता लेल राखल जाइत अछि, शेषक उपयोग रोकल जाइत अछि; रुखसानाक इन्धन–अनाज लेल सुरक्षित ऊपरी बाटक वैकल्पिक योजना बनैत अछि; अस्पतालक विशेष रोगीकेँ चिकित्सकीय सिफारिश अनुसार भूमि-गाड़ीसँ पठेबाक निर्णय होइत अछि; छरकीक कात जलस्रावक समाचारपर तत्क्षण निरीक्षण, मजदूरी-सुरक्षा आ सार्वजनिक चेतावनी तैयार होइत अछि; बढ़ल पानि कारण चचरीक हलुक पैदल अनुमति सेहो अस्थायी रोकल जाइत अछि; राति सार्वजनिक नक्शा आ नव परामर्श नये समयसँ प्रकाशित होइत अछि। एहि अध्यायक वास्तविक उत्कर्ष **नव अनुमति रोकबाक साहस** अछि।

नदीक चाल, नक्शाक नाम आ प्रत्यक्ष-शब्द प्रमाणक सम्बन्ध

गोपालक प्रतिवाद केवल “स्थानीय व्यक्ति अधिकारीसँ बेसी जनैत अछि” एहन सामान्य दावा नहि। ओ खाली नावक मोड़ आ भरल नावक व्यवहारक प्रमाण-अन्तर देखबैत छथि। सरकारी नक्शाक नीली रेखा वर्षापूर्वक

परिवहन-पथकेँ आजुक नावक सुरक्षित पथ बुझि लेने अछि। पुरान पर्चीक “तिरसूला” नामसँ तिलवाहकक वर्तमान जलमाप स्वतः सिद्ध नहि। गोपाल अपन नामपर “गोपाल मार्ग” लिखबाक प्रस्ताव सेहो अस्वीकार करैत छथि; स्थानीय “पुरान कटान” नाम रखबाक आ भौगोलिक प्रमाण फिर जाँचबाक आग्रह करैत छथि। एहि ठाम आलोचनाक मुख्य बिन्दु नाम–स्थल–कालक त्रिस्तरीय भेद अछि। मानचित्रक प्रमाणिकता पट्टपर लिखल व्यक्तिक प्रतिष्ठासँ नहि, स्थल-सत्यापनसँ बनत।

रमा स्रोतक तीन खण्ड बनबैत छथि—पुरान पर्चीक शब्द, गोपालक प्रत्यक्ष गवाही आ वर्तमान अनिश्चित जलमाप। ई आख्यानगत प्रमाण-विभागक व्यावहारिक उदाहरण अछि। पुरान पर्ची शब्द-प्रमाणक स्रोत बनि सकैत अछि, मुदा ओकर वर्तमान मार्गपर प्रयोग लेल अतिरिक्त संगति अपेक्षित अछि; गोपालक प्रत्यक्ष अनुभव निर्धारित नाव आ समयक सीमा धरि अछि; मापक बिन्दु नब स्थितिक क्षणिक भौतिक साक्ष्य अछि। तिरसूला–तिलवाहकक नाम-सादृश्यसँ वास्तविक जलधाराक समानता अनुमान करब अनिश्चित व्याप्ति अछि। नैरा एहिमे स्वयं अपन पत्रकारिताक कर्तव्य देखैत छथि—गलत रेखा सार्वजनिकता पाबि गेलापर आगामी बचावमे प्रत्यक्ष जोखिम बनि सकैत अछि।

हीराक तीन बिन्दु—कठोर बालू, चलैत गाद आ अपेक्षासँ बेसी धँसल पेंदी—एक्के जलस्तरक भीतर भौतिक विषमता देखबैत अछि। ई पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रमे प्रकृतिक सक्रिय भूमिका अछि। नदी केवल पृष्ठभूमि नहि, निर्देश बदलाबएवाला गतिशील तत्त्व अछि। फेरो ओकरा मनुष्य-जेकाँ उद्देश्यपूर्ण शत्रु कहब पाठसँ बेसी अर्थ आरोपब होएत; नदीक परिवर्तन भौतिक जोखिम बनैत अछि, नैतिक दोष मनुष्यक अपरीक्षित निर्णयरूपमे उभरैत अछि।

बन्द नाव, बदलल आजीविका आ भूमि-अधिकारक सशर्त मार्ग

छह प्रस्तावित नावमे तीनक सीमित उपयोग, एक खाली सहायिका नाव आ बचल असुरक्षित नावक रोक कथाक असुविधाजनक किन्तु उत्तरदायी निर्णय अछि। नाव घटलासँ यात्रीक पाँति, इन्धन-खेप आ मल्लाहक कमाइ प्रभावित होइत अछि। मधु नाव बाँधब, रस्सी जाँचब, चेतावनी देब आ आपात पहरामे रहबकेँ सेहो श्रम मानैत छथि। अनुभववान वृद्ध मल्लाहकेँ निष्क्रिय नहि छोड़ि पारिश्रमिकसहित किनारक संकेत-काजमे रखबाक प्रस्ताव वृद्धक ज्ञानक पुनर्विन्यास अछि; मुदा “अनुभव”केँ वर्तमान धारक प्रमाणक बदला मानल नहि जाइत। अनुभवक मर्यादा एहि कारण कम नहि होइत, ओकर प्रयोजन बदलिएत अछि।

सोना कठौतियाक वैकल्पिक अनाज-ढुलाई किरण राउतक निजी मेड़पर अनुमति बिना नहि चलि सकैत। किरण हलुक अनाजक दू चक्कर, खेतक सीमांकन आ नुकसानक उत्तरदायित्व लिखाओलाक बाद अस्थायी अनुमति दैत छथि। ई शर्त किसानक अधिकारक शोषण बिना राहतक निरन्तरता सम्भव करैत अछि। नाममात्र जनहितक नारा व्यक्ति-स्वामित्व मेटबैत नहि; संकटक बीच सीमित उपयोग आ क्षतिपूर्तिक स्पष्ट सीमा चाहिए। तथापि एहि छोट वैकल्पिक मार्गक वास्तविक क्षमता नदीक समग्र परिवहन-संकट दूर नहि करैत। रुखसानाक अगिला दिनक इन्धन अनिश्चित रहैत अछि, नूरजहाँक नव ढुलाईक संग पुरान बकाया अलग अछि। अध्याय एहि अपूर्णताकेँ छिपबैत नहि।

छरकीक बहुपक्षीय जोखिम आ काम रोकबाक अधिकार

किशोरी दारोगी छरकीक दहिना पादपर पानिक समाचार अनैत छथि। स्थानीय किशोरीक सूचना आपदा-व्यवस्थामे मूल्यवान प्रारम्भिक सङ्केत बनैत अछि, मुदा तारा झरनाइ, भीतरसँ रिसाव आ ऊपरसँ छलकनाइक अलग कारण बताकऽ तात्कालिक “बान्ह टूटत” निष्कर्ष रोकैत छथि। देवकी पालक बकरी हटाओल जाइत अछि, मुदा ओ अपन घरक निकास देखबाक अधिकार नहि छोड़ैत छथि। शिव आ सुगनीक टोली रेतक बोरा धएबाक पहिने जोखिम-भत्ता, सुरक्षा-सामग्री, नाम आ काम रोकबाक सीमा लिखबैत अछि। ई श्रम-नीतिक कथात्मक उपलब्धि विशेष अछि : संकटमे तुरन्त श्रम चाही, मुदा आपातकाल श्रमिककेँ निरुपाय बनाबय नहि।

दू महिला प्रतिनिधि पूछैत छथि जे बान्हक एक कातक ऊँचाइ दोसर घरक पानि भीतर तँ नहि पठाएत। सार्वजनिक सुरक्षा एकटा टोला बचा कऽ दोसराक घरेलू अँगना डुबा देबाक अधिकार नहि। अदिति स्थायी बान्ह-बढ़ोतरीक अनुमति नहि दैत छथि; नाप, सहमति आ बाहरी निकासक अलग परीक्षण चाहैत छथि। शिल्पक दृष्टिसँ एहि प्रसंगमे “नाली खोलब”क पूर्ववर्ती प्रश्न घुरि नव कारण-जालमे आबैत अछि, किन्तु एखन पानिक बदलल स्तर अपन ठोस नव परिस्थिति बनबैत अछि। अति-पुनरावृत्तिक दोष सम्भव अछि, कारण हर बैठकमे पूर्ववत् सीमा-दर्ज प्रक्रिया चलैत अछि। मुदा जोखिम वास्तवमे बढ़ल अछि—एहि कारण केवल भाषा-आवर्तन कहि दृश्यकेँ निष्प्रभावी घोषित करबो उचित नहि।

चचरीक उलटल निर्णय, समय-रचना आ आपदा-पूर्व उत्कण्ठा

अध्याय १०५ मे साठि किलोग्रामक सीमा सहित चालू चचरी एतय आधार भीजलापर अस्थायी बन्द होइत अछि। ई विरोध कृतिक लापरवाही नहि; “सुरक्षा”क समयसापेक्ष परिभाषाक जानि-बूझि निर्मित कथात्मक परीक्षा अछि। जे सीमा काल्हि मान्य छल, ओकर अनिवार्य भौतिक उपाधि—ठोस आधार—आइ बदलि गेल। पात्र अतीतक सहीकेँ झूठ ठहरौने बिना वर्तमान अधिकार रोकैत छथि। कथनक्रम भोरक तुलनामूलक नाप, दुपहरक बदलैत धार, साँझक पुनर्माप आ रातिक पहरा धरि सघन काल-रेखा बनबैत अछि। पूर्वआख्यानक द्विकालीन संकेत एतय स्वतंत्र महाकाव्यकालक दृश्यसँ पुष्ट नहि होइत; कालद्वन्द्व मुख्यतः “काल्हि–आइ–अगिला भोर”क अनुभवगत अन्तर अछि।

अन्तिम समाचारमे नैरा “सभ सुरक्षित”, “सभ खुलल”, “सभ तैयार” जेकाँ पूर्णतासूचक वाक्य काटैत छथि। कहल जाइत अछि—तीन नाव दिनमे सीमित; चचरी अस्थायी बन्द; रोगी लेल भूमि-गाड़ी; छरकीक दू कात अलग निरीक्षण; रसोइ चलैत; जाँचाधीन माल अलग। सार्वजनिक लेखनक ई चयन पाठकीय ज्ञानक नैतिक अनुशासन बनैत अछि। शैलजाक पुरान शिकायत, रेहानाक नियमित दवा, प्रहरीक श्रम आ अस्पतालक भीतरक चुआन कथाकेँ भौतिक धरातलसँ जोड़े रखने अछि। एक क्षणमे सभक समाधान बतबैत विजयघोषणा पाठक नकारैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन : अनिश्चितताकेँ ज्ञानक रूप देब

नदी-नामक त्रुटि, दोहरी माप-डण्डी, नावक पेंदी, बलुआ माटि आ आश्रयक धुँआ संवेदनात्मक वातावरण उत्पन्न करैत अछि। किछु संवाद अत्यधिक नीतिशास्त्रीय सुव्यवस्थामे आयल अछि—जखन प्रत्येक विशेषज्ञ लगभग

आदर्श निर्णय-लेखनक भाषा बोलैत छथि, तखन स्वभावगत ध्वनिभेद कतहु घटैत अछि। मुदा नदीक बढ़ैत पानि ओहि शब्दविश्वक परीक्षण करैत अछि : लिखित अनुशासनक पुनरावृत्तिक बावजूद भौतिक धारा पुनः गणना माँगैत अछि। ई घटनात्मक तनाव बनल रहैत अछि।

अन्तिम दृश्यमे नदीक लाल रेखा फेर नापल जाइत अछि; कियो “नगर बचि गेल” घोषणा नहि करैत। पाँच हस्ताक्षरक समझौता नव जोखिमक भीतर पुनर्लेखित होइत अछि। ई अध्याय शल्य-पर्वक समापनमे विजय-समारोहक स्थानपर अज्ञात रात्रि रखैत अछि। अगिला सौप्तिक-पर्वक रातिक सन्धि आ आपदा-कथाक अपेक्षा एतए सँ उभरैत अछि, मुदा अगिला अध्यायक अनदेखल घटनाकेँ पूर्वघोषित तथ्य मानब अनुचित। शल्य-पर्वक अन्तिम आलोचनात्मक निष्कर्ष ई—**गलतीक जोखिम घटाबबाक लेल पूर्वक सुरक्षित निर्णयकेँ बदलैत तथ्यक सोझाँ स्थगित करबाक नैतिक सामर्थ्य** कथा-नायकत्वक केन्द्र बनैत अछि।

शल्य-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ९७–१०८ क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

निष्ठा, सहायता, शोक आ संरचनात्मक जोखिमक बारह अध्याय

शल्य-पर्वक बारह अध्याय (९७–१०८) मे कथा महाकाव्यीय निष्ठाक संकटसँ आरम्भ भऽ अस्पतालक उपचार-समय, मरम्मतिक भूगर्भ, सुरक्षित श्रम, पुलक भार-सीमा, सार्वजनिक स्वीकारोक्ति, पाँच हस्ताक्षर आ उठैत जलस्तर धरि पहुँचैत अछि। पहिल तीन अध्यायमे शल्य, विभीषण आ कुम्भकर्णक प्राचीन कथाधारा निष्ठाक दूधारी नैतिकताक मञ्च बनबैत अछि; अध्याय १०० सँ आधुनिक समझौता-निर्माणक प्रविधि सघन होइत अछि। १०३–१०४ मे उदयन–मीमांसक आ गङ्गेशसम्बन्धी दार्शनिक दृश्य कारण, शक्ति आ प्रतिबन्धकक प्रश्न खोलैत अछि। मुदा अध्याय १०५–१०८ मे अलग स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि; एतय वर्तमान पदार्थ, समय आ अधिकारक प्रत्यक्ष संघर्ष प्रमुख अछि। एहि वितरणकेँ “सभ अध्याय द्विकालीन” कहि समतल नहि करबाक चाही।

विस्तृत कारणात्मक शृंखला पढ़ला पर कतेको स्तर फूटैत अछि। अस्पतालमे सरस्वती देवीक मृत्यु सत्यापित घटना अछि, ओकर चिकित्सकीय कारणकेँ गाड़ी-देरीसँ एकल रूपमे सिद्ध नहि कएल गेल। अदितिक प्रारम्भिक मरम्मति-अनुमान बादक भौतिक परीक्षणसँ संशोधित होइत अछि; नालीक भीतरी असुरक्षित खण्ड तत्काल नहि खोलल जाइत। दार्शनिक सकारात्मक अनुमानक प्रश्न आदर्श समाधान दैत नहि, जाँचक अनुशासन बनैत अछि। तारा–ललितक निर्माण-प्रयोग सीमित चचरी देत, मुदा अगिला जलवृद्धिपर उपयोग रोकल जाएत। अनिरुद्ध उपलब्धता-सारक निर्दिष्ट त्रुटि स्वीकारैत छथि, मुदा गोदामक अन्य सन्देहक आपराधिक दोष स्वतः नहि निर्धारण होइत। पाँच सही वास्तविक सहायता शुरू करैत अछि; बढ़ल पानि ओकरा पुनर्परीक्षा लेल बाध्य करैत अछि। ई बारह अध्यायक शृंखला “समाधान → अनपेक्षित जोखिम → नवा संशोधन”क चक्रीय, मुदा ऐतिहासिक रूपेँ आगाँ बढ़ैत संरचना रखैत अछि।

युद्धकाण्डक पुनर्पाठ आ कर्तव्यक द्वन्द्व

रामायणक युद्धकाण्ड आ महाभारतक शल्य-पर्वक नाम कथाक परापाठीय संगठन अछि; आधुनिक पात्र प्राचीन पात्रक यांत्रिक पुनर्जन्म नहि। शल्यक छलयुक्त वचन, विभीषणक असहमति, कुम्भकर्णक जानल अन्यायमे सहभागिताक प्रश्न—ई महाकाव्यीय प्रसंग आधुनिक राहतक सीमित सहमति, प्रशासनिक कर्तव्य आ अन्यायक विरोध करबाक नैतिक कठिनाइकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि। वास्तविक नव परिप्रेक्ष्य ई अछि जे वीरताको रक्तरंजित युद्धसँ हटि गलत भार-सर्टिफिकेटपर सही नहि करब, असुरक्षित नालीमे कर्मचारी नहि उतारब, अस्पतालक अतिरंजित सार सुधारब आ नदीपर असुरक्षित नाव रोकबमे देखाओल गेल अछि। तथापि एहि स्थानान्तरणक आलोचना जरूरी अछि : दार्शनिक वा महाकाव्यीय निष्ठाक अनेक स्तर आधुनिक अभिलेख-संशोधनक नैतिक निर्णयमे घटि तऽ नहि रहल? पाठक प्रत्येक दृश्य स्वयं एहि प्रश्नक जटिल उत्तर खोजबाक पड़त।

भारतीय रस-विवेचनक दृष्टिसँ करुणा एकल भाव नहि। शैलजाक मृत सासुक चादर, उर्मिलाक थाकल सेवा, गोमतीक मरम्मतिक निरीक्षण, सुगनीक भुइँ-कथा, नूरजहाँक पशु-ढुलाई आ रुखसानाक खिचड़ी श्रम–शोक–स्वाभिमानक विस्तृत भावक्षेत्र रचैत अछि। हास्यक अल्प दृश्य—उद्घाटनक फीता, अदरक–जीराक स्वाद, खिचड़ीक मतभेद—करुणाक संग औचित्यपूर्ण विराम दैत अछि। एहन विरामक प्रभाव कतेक, ई पाठकीय ग्रहणानुसार बदलि सकैत अछि; मुदा एकर पाठीय उपस्थिति स्पष्ट अछि।

प्रमाण-प्रणालीक समेकित मानचित्र

पर्वक जाँच-आधारकेँ एक व्यापक “दस्तावेज अछि/नहि” श्रेणीमे नहि समेटल जा सकैत। कम सँ कम छह अलग प्रमाण-वर्ग उभरैत अछि : चिकित्सकीय समय आ वास्तविक रोगी-स्थितिक प्रमाण; जमीनक भीतरी परत आ मरम्मतिक सुरक्षा-परीक्षण; बाँस–काठ–कसनीक सामग्री आ भार-परीक्षण; गोदामसँ निर्गत, अस्पतालमे प्राप्त आ उपचारयोग्य वस्तुक अलग गणना; व्यक्तिक सीमित सहमति आ मजदूरीक पावती; नदीक बदलैत जलस्तर, नावक उपयुक्तता आ स्थानीय मार्गक प्रत्यक्ष गवाही। एहि सभमे प्रमाणक उपयोग-सीमा अलग अछि। “कागद” शब्दक सतत पुनरावृत्ति तेँ मात्र औपचारिक वस्तु-प्रेम नहि; सटीक पढ़ला पर प्रत्येक कागदक वैध प्रयोजन बदलैत अछि।

आख्यानगत प्रमाणविवेचनसँ ई शृंखलाकेँ युगान्तर-सम्बन्धक रूपमे पढ़ि सकैत छी, मुदा मूल न्यायशास्त्रीय सिद्धान्त आ आधुनिक विधिक अभिलेख समान वस्तु नहि। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान आ उपाधि जेकाँ संज्ञा विश्लेषणक उपकरण थिक; एहि आधारपर उपन्यासमे रहैत सभ आधुनिक निर्णय स्वतः शास्त्रीय प्रमिति नहि बनि जाइत। “निर्गत”सँ “उपलब्ध” निष्कर्ष, स्थिर परीक्षणसँ चलैत भारक सुरक्षित मान्यता, एक समयक जलस्तरसँ पूर्ण दिनक मार्ग-सुरक्षा, आ आजुक गोदाम-सहयोगसँ पुरान हिंसक आदेशक अभाव—एहि चारि गलत सामान्यीकरणक सम्भावना पर्व स्वयं चिन्हित करैत अछि। इएह एकर दार्शनिक उपलब्धि अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, श्रमक वितरण आ विदेह समानान्तर इतिहास

शल्य-पर्वमे कथावाचक एकटा राजकीय निर्णय-केन्द्रक स्थानपर आवाजसभक बहुल वितरण करैत छथि : अस्पतालक अनिरुद्ध, सलमा आ उर्मिला; नदीक हीरा, तारा, गोपाल आ मधु; मरम्मतिक अदिति, गोमती, ललित, पारो आ हरिनारायण; राहतक रुहानी, रुखसाना, रघु, ममता, रानी, सुगनी, सोना आ नूरजहाँ। नाम सभक उल्लेख मात्र बहुस्वरताक प्रमाण नहि; जखन हुनकर विशिष्ट ज्ञानक आधारपर निर्णय बदलैत अछि—उदाहरणार्थ पहिल भार-परीक्षण रोकल, दवा उपलब्धताक तीन श्रेणी बनल, नावक संख्या घटल, निजी मेड़ लेल दू चक्करक शर्त स्वीकारल—तखन पात्रक कथनाधिकार कारणात्मक बनैत अछि। एहि आधारपर कथा उपेक्षित पेशागत ज्ञानकेँ सार्वजनिक इतिहासक सक्रिय लेखक बनबैत अछि।

सीमा सेहो उल्लेखनीय : बहुत पात्र समान रूपेँ प्रशासनिक स्पष्टता आ अधिकार-भाषाक उपयोग करैत छथि; अलग बोलिक जीवंत सामाजिक विविधता कतेको ठाम नीति-शिक्षाक समान स्वरमे समा जाइत अछि। बारम्बार “अलग पंजी”, “अलग अनुमति”, “जाँच शेष” कहला पर गति मंद पड़बाक सम्भावना अछि। मुदा मनोनुकूल त्वरित निर्णयक बजाए सावधानीक क्रम कथा स्वयं चाहैत अछि। तेँ मूल्यांकनमे गति-समस्या आ विषयक नैतिक प्रयोजनकेँ अलग रखब चाही।

समग्र निष्कर्ष आ अगिला पर्वक कालिक दुआर

शल्य-पर्वक आरम्भमे निष्ठा आ सहायताक वचन पर प्रश्न छल; अन्तमे बाँचल लोकक सुरक्षा खातिर एही वचनसभकेँ समयानुसार पुनः पढ़बाक आवश्यकता सोझाँ अछि। अध्याय १०७ क पाँच हस्ताक्षर आ १०८ क लाल रेखाक डूबब एकटा विशिष्ट संयुक्त संरचना बनबैत अछि : संस्थागत आश्वासनक तुरन्त बाद प्रकृतिक नव परिस्थिति ओकर सीमाक परीक्षा लैत अछि। कथा एतय युद्धक विजय-समाधान नहि, जोखिमपूर्ण रात्रि दैत अछि। अगिला सौप्तिक-पर्वक रात्रिकथा लेल एहि अनिश्चितता सँ पाठकीय अपेक्षा जन्मैत अछि; शेष अध्यायक परिणाम पूर्वानुमानसँ घोषित करब आलोचनात्मक अनुशासनक विरुद्ध होएत।

एहि बारह अध्यायक प्रमुख कलात्मक शक्ति भौतिक सूक्ष्मता आ निर्णयक विशिष्टता अछि; प्रमुख जोखिम नियमबद्ध संवादक पुनरावृत्ति आ कतिपय प्रसंगमे उपदेशात्मक स्पष्टता। तथापि प्रमाण-सीमा जतेक सावधानीसँ रचल गेल अछि, ओहि अनुपातमे उपन्यासक नैतिक केन्द्र सशक्त होइत अछि : **पूर्व निर्णयक स्वत्व बचाउतहुँ ओकर प्रयोग-शर्त पुनः जाँचब, अदृश्य श्रमिकक देय अलग राखब, आ बचावक नामपर अनपरीक्षित जोखिम दोसराक देहपर नहि थोपब**। एहि संचित द्वन्द्वसँ शल्य-पर्व पूर्ण होइत अछि।

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड

अध्याय १०९ — रातिक सन्धि

रात्रिक पहिल पहर : पाँच हस्ताक्षरसँ पाँच वास्तविक काज धरि

सौप्तिक-पर्वक पहिल अध्याय “रातिक सन्धि”क आरम्भ कोनो रणभूमिक परम्परागत रात्रि-आक्रमणसँ नहि, रुखसानाक रसोइमे हाँड़ीक तल्ला हिलाएब आ भीजल मजदूरी-पंजी सीधा करबाक कार्यसँ होइत अछि। एहि उद्घाटनमे दू स्तर एकहि क्षण उपस्थित अछि : जीवित रहबाक न्यूनतम आवश्यकता—भोजन—आ ओ भोजन सम्भव बनेनिहार श्रमिकक समय। उपन्यासक पहिल अध्याय “मृतकक रसोइ”मे जीवन आ अभिलेखक विरुद्धस्थिति छल; एतय रसोइ फेर घुरैत अछि, मुदा आब खतरा एकटा व्यक्तिक गलत मृत्यु-प्रविष्टि मात्र नहि, अनेक संस्थाक आपदा-प्रबन्धनमे श्रमिकक अदृश्य भऽ जाएब अछि। रुखसानाक “पहिने जे काज शुरू भेल अछि, ओकर समय के नहि काटत” सम्बन्धी प्रतिवादक महत्त्व एहि कारण अछि जे संकट-समयमे वितरणकेँ मापनयोग्य आ तैयारीकेँ मुफ्त मानबाक प्रवृत्ति रोकल जाइत अछि। ई तुलना उपन्यासक दीर्घ रसोइ-वृत्तपर आधारित अछि; कथावाचक पहिल अध्यायक दृश्यकेँ एतय स्पष्ट पुनरुक्त नहि करैत छथि।

अध्यायक वास्तविक घटना-पञ्जी कएक ठामक समकालिक कार्यसँ बनैत अछि। आरम्भमे कंचनक नाम दू स्वयंसहायता-दलक पंजीमे पूरा आठ-आठ घण्टा लिखबाक प्रस्ताव रोकल जाइत अछि; एक पंजीमे वास्तविक सही आ दोसरमे सहयोगक सन्दर्भ अलग दर्ज होइत अछि। चन्द्रिका सामग्री, तैयार भोजन, वितरण, शेष आ श्रम-घण्टाक पाँच खाना बनबैत छथि। किरण राउत बटाइवालाक हिस्सासँ बचल चिउड़ाकेँ अनाम दान मानबाक बदला तौल-सहित पृथक पावती चाहैत छथि। रुहानी नमीवला कोठरीमे बालककेँ सुताएब अस्वीकारि वैकल्पिक ठामक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा प्रस्तावकेँ परीक्षणपूर्व सुरक्षित घोषित नहि करैत छथि। सलमा रेहानाक दवा, निरीक्षण आ परिवारक सूचनाक पहरादर-पहर हस्तान्तरण सुनिश्चित करैत छथि। तुलसी थाकल जमीरकेँ बिना विश्राम फेर गाड़ी नहि चलबैत छथि; शबनम तीन फोनक तीन अलग प्रमाण-स्थिति लिखैत छथि। एहि बहुकेंद्रित आरम्भमे सन्धि एकटा महानायकक सहमतिपत्र नहि, अलग-अलग छोट निर्णयक कार्यान्वयन अछि।

घाटक दृश्य रातिक आपदा-उत्कण्ठाकेँ ठोस बनबैत अछि। मधु रात्रिक नावसेवाक सामान्य बन्दी आ विशेष बचावक सम्भाव्य अपवादक भेद पुछैत छथि; हीरा विशेष बचावकेँ चिकित्सकीय, नाविकीय आ स्थल-सत्यापनसँ सशर्त करैत छथि। किशोरक ‘दू अँगुरि’ पानि चढ़बाक सूचना अस्वीकार नहि, मापक स्थान आ समय सहित फेर दर्ज करबाक सलाह भेटैत अछि। अदिति भीतर उतरि नाली खोलेबाक प्रस्ताव रोकैत छथि, तारा–शिव–सुगनी केवल बाहरी निरीक्षण करैत छथि आ प्रतीक्षारत मजदूरक समयो लिखबबैत छथि। एतय जे काज *नहि* कएल गेल—असुरक्षित निकासी खोलब, जोखिमपूर्ण पहराक नाव चलाएब, भीजल कोठरी भरब—सेहो वास्तविक कथात्मक निर्णय अछि, कारण एहि निषेधसँ जोखिमक वितरण बदलैत अछि।

शब्द-प्रमाण, प्रत्यक्ष आ बहुविध अनिश्चितता

आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ शबनमक फोन-पञ्जी अध्यायक विशेष महत्त्वपूर्ण उपकरण अछि। “छरकी टूटि गेल”, “बान्हक पाछाँ पानि ऊपर अछि” आ सम्पर्क असफल—एहि तीनू कथनकेँ एके बान्ह-भङ्ग-सूचना मानलासँ

शब्दक विषय, स्थान आ सिद्धिक स्तर बदलि जाएत। फोन करनिहारक अस्तित्व आ ध्वनि सुनाएब एक तथ्य, कहल घटनाक वास्तविकता दोसर। किशोरक जलचिह्न आ तारा–सुगनीक भिन्न स्थलनाप सेहो पूर्णकालिक, समान बिन्दुक प्रत्यक्ष नहि; अदिति ओकरा एके समयक आँकड़ा बनाकऽ नहि जोड़ैत छथि। उपन्यास एहि ठाम ज्ञानक अभावकेँ ‘किछु नहि जनैत छी’क निरर्थक मौन नहि बनबैत; ओ सीमित ज्ञानक आधारपर सीमित क्रिया सुझबैत अछि। भोरक पुनर्माप, सूचनाक वर्गीकरण आ दूनू कातक खेत–घरक संयुक्त परीक्षण एहि सीमित क्रियाक रूप छथि।

पाँच हस्ताक्षरक कागद अस्पतालमे उपलब्ध वास्तविक दवा, सीमित गोदाम-सुपुर्दगी, चलैत रसोइ, गाड़ी-पहुँच आ अधूर जलजाँचकेँ अलग देखबैत अछि। अनिरुद्ध अस्पतालक ‘उपलब्धता’ अङ्क मौखिक अनुमानसँ नहि बढ़बैत छथि। देवव्रत निजी सीलबन्द भण्डार खोलबाक आग्रहक बदलामे पूर्वस्वीकृत खुले भण्डारसँ जाँचल चादर मँगएबाक प्रस्ताव मानैत छथि, मुदा निजी बहीक जाँच बाकी रहैत अछि। शबनम आ नैरा सार्वजनिक सार आ विस्तृत मूल प्रतिक पृथक्करण रखैत छथि। एतय प्रमाण-शृंखला मात्र दस्तावेज जमा करब नहि; तात्कालिक अधिकारक क्षेत्र निर्धारित करब सेहो अछि। गलत शीर्षक—“सभ सुरक्षित”—गृहस्थ परिवारकेँ खतरनाक यात्रा कराए सकैत अछि; तेँ रुहानी युवककेँ अपन दादाक वास्तविक हाल बतएबाक आग्रह करैत छथि, सम्पूर्ण बस्तीक स्थिति नहि।

अध्यायक निर्णायक चिकित्सकीय कार्यमे गर्भवती स्त्रीकेँ जमीनक ऊँच बाटसँ लेबाक निर्णय होइत अछि। स्थान, चिकित्सकीय आवश्यकता, प्रशिक्षित चालक आ परिवारक सहमति अलग सत्यापित कएलाक बाद गाड़ी चलैत अछि। गाड़ी *निकलल*, टोली धरि *पहुँचल* आ रोगिणीकेँ अन्ततः *चिकित्सकीय परिणाम भेटल*—तीन प्रमाण-स्थिति रमा अलग राखैत छथि। भोरमे सलमाक लिखित खबर स्त्रीक सुरक्षित चिकित्सकीय देखरेखमे पहुँचबाक पुष्टि करैत अछि; निजी नाम आ विस्तृत उपचार सार्वजनिक नहि होइत। एहन सूक्ष्म अवस्थाभेद कथाकेँ परिणामक दम्भसँ बचबैत अछि। आपदाक रस स्वयं अनिश्चयक भीतर अछि, काल्पनिक मृत्युसंख्या बढ़ाएबमे नहि।

रात्रि-काल, स्थानान्तरण आ कथकक दृष्टिकेन्द्र

अध्याय एक रातिक पहिल पहरसँ भोर धरि प्रसारित अछि, मुदा कथन-समय एकरूप नहि। रसोइक बर्तन आ घण्टा गनबाक दृश्य ठहरि विस्तार पबैत अछि; घाट, संचार-कक्ष, अस्पताल आ छरकीक समाचार छोट-छोट खण्डमे बँटि लगभग समकालिक प्रतीत होइत अछि; रातिक पहरबदल आ नव निरीक्षण समयक स्पष्ट चिह्न दैत अछि। कथावाचक तृतीय पुरुषमे बाहरी दृश्य आ किछु पात्रक अनुभूति दूनू उपलब्ध करबैत छथि। रुखसानाक थकान, देवव्रतक खिन्नता, अनवरीक शिथिल हाथ, रुहानीक सावधानी आ रमाक प्रतीक्षाक दृश्य एक केन्द्रीय चेतनामे समाहित नहि होइत। ई बहुकेन्द्रीय संगठन अछि, किन्तु केवल संवादयुक्त पाठांशक ऊँच प्रतिशतसँ बहुस्वरता सिद्ध नहि; पात्रसभक भिन्न हित आ भिन्न निर्णय असली प्रमाण छथि।

पूर्वआख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ वर्गीकरण एहि अध्यायमे स्वतंत्र प्राचीन महाभारत-दृश्यसँ पुष्ट नहि होइत। ‘सौप्तिक’ नाम रातिक आशंका आ शयनक असुरक्षाक अर्थद्वार खोलैत अछि; मुदा कथा आधुनिक रसोइ, छत,

नाव आ गाड़ीमे चलैत अछि। महाभारतक रात्रि-हिंसाकेँ एहि रातिक घटित हिंसा घोषित करब अनर्थ होयत। वर्तमान अध्यायमे रात्रिक मुख्य नैतिकता निषिद्ध हिंसक प्रवेश नहि, बचावक लेल समन्वित जागरण अछि। इएह महाकाव्यीय सम्बन्धक *अन्तर* अछि। अनुवर्ती अध्याय ११३ मे स्वतंत्र प्राचीन दृश्य आबि सकैत अछि; ओकर सामग्री एतय आरोपित नहि कएल जा सकैत।

श्रमक लोक-इतिहास, देह आ आश्रयक चाभी

कंचनक दूहरी पंजी, चन्द्रिकाक पाँच खाना आ बरतन धोअनिहार स्त्रीक छूटल चालीस मिनटक सुधार आपदा-लेखनमे श्रमक मापनक सूक्ष्म राजनीति देखबैत अछि। ‘स्वयंसेवा’ सामाजिक रूपसँ मूल्यवान भऽ सकैत अछि; मुदा दू संस्थाक रिपोर्टमे एके देहक सोरह घण्टा देखेबा श्रमिकक वास्तविक समय दोहरी नहि करैत। रुखसानाक रसोइमे सहयोग आ सशुल्क कामक सीमा स्पष्ट अछि; चन्द्रिकाक सुधार-पर्ची भोजन-वितरणक बराबर कथागत महत्त्व पबैत अछि। ई विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिकेँ सैद्धान्तिक रूपसँ उपयोगी सामग्री दैत अछि : अधिकारीक रातिक बैठक मात्र नहि, बरतन-धुनाइ, खेतसँ अनल चिउड़ा, प्रतीक्षारत मजदूर आ पहराक नाविक सेहो सार्वजनिक इतिहासक अङ्ग छथि।

निजता सेहो केवल डिजिटल खबरक विषय नहि। रसोइमे अनाम भोजन-टोकन, अलग पात्रता-पंजी, रेहानाक उपचार-सूचना, गर्भवती स्त्रीक निजी चिकित्सकीय स्थिति आ वृद्धाक घरक चाभी स्वतन्त्र जीवन-अधिकारक रूप छथि। वृद्धा अपन चाभी स्वयं रखैत छथि; रुहानी हुनका सूखल थैली दैत छथि, अधिकार नहि छीनैत। एहि सूक्ष्म दृश्यसँ आपदा-आश्रय ‘सुरक्षित कैद’ नहि, अस्थायी संरक्षणक स्थल बनैत अछि। कंचनक छोट भाइक कागदक नाव प्रतीकात्मक प्रतिपक्ष अछि : सूखल थारीमे नाव तैरि सकैत अछि, नदीक वास्तविक जोखिममे एहन बच्चाक खेल प्रमाण नहि। अन्तिम सूर्यरेखा आश्वासन दैत अछि, सम्पूर्ण संकटसमाधान नहि।

साहित्यिक मूल्यांकन आ शेष प्रश्न

अध्यायक कलात्मक उपलब्धि सीमित कार्यसभक संरचनात्मक जोड़ अछि। चूल्हि, भीजल पंजी, रस्सी, खड़िया-निशान, चाभी आ कागदक नाव अनेक इन्द्रियगत वस्तु छथि; ओसभ नैतिक विचारकेँ देह आ पदार्थमे स्थापित करैत अछि। तथापि संवादक एकटा सीमा अछि : रमा, शबनम, तारा, रुहानी, रुखसाना आ हीरा बहुत समय अत्यन्त सुव्यवस्थित अधिकार-भाषामे तुरन्त उपयुक्त वाक्य कहैत छथि। संकटमे उग्र भ्रम, मतभिन्नता आ निर्णय-हिचकिचाहटकेँ कथावाचक अपेक्षाकृत शीघ्र विवेकपूर्ण पंजीमे बदलि दैत छथि। साहित्यिक गतिमे एहि कारण प्रशासनिक शिक्षोपदेशक खतरा अछि। एकरा पूर्ण दोष मानबो उचित नहि, कारण छत फेर टपकैत अछि, छरकीक स्रोत अनिर्णीत अछि, निजी गोदाम बन्द अछि आ जलस्तरक भोरक जाँच बाकी अछि। कथावाचकक अंतिम कथनक बल जीतक घोषणामे नहि, रातिक पाँच वास्तविक काज आ पाँच अपूर्ण सीमा संग राखबमे अछि।

अध्याय ११० — गोदाम खुलल

चाभी, द्वितीय कक्ष आ दानक वर्गीकरण

“गोदाम खुलल”क पहिल दृश्य देवव्रतक पीतलसँ कारी पड़ल छोट चाभीसँ शुरू होइत अछि। अध्याय १०७ मे पहिल कक्षक नियंत्रित सुपुर्दगी भेल छल; एहि अध्यायमे *दोसर*, निजी खरीद–दान–व्यावसायिक आपूर्तिक मिश्रित कक्ष अधिकारप्राप्त निरीक्षणमे खोलल जाइत अछि। एहि घटनाक सीमांकन जरूरी अछि : गोदामक दरवज्जा खुलब न तऽ पुरान लेखाक पूर्ण निर्दोषिता सिद्ध करैत अछि, न चिकित्सकीय प्रयोगक सभ सामग्री स्वतः सुरक्षित बनबैत अछि। रमाक उपस्थिति-समय दर्ज करबाक शर्त वस्तु देखबाक अधिकार आ साक्ष्य सुरक्षित करबाक प्रक्रिया अलग करैत अछि। देवव्रत अपन मालिकाना अधिकारक कठोर प्रतिवाद करैत छथि; रमा निजी सम्पत्तिक अधिकार मेटबैत नहि, केवल सार्वजनिक जाँचमे स्थान–समय–साक्षीक नियमन माँगैत छथि।

प्राथमिक गिनतीमे सामान तीन भागमे बाँटल जाइत अछि—तुरन्त उपयोगयोग्य, सफाइ/परीक्षणक बाद उपयोगयोग्य, जाँचाधीन। उर्मिला भीजल कपड़ा अस्पतालक उपचार-कक्षमे पठएबाक विरोध करैत छथि; तारा छतक टपकैत जोड़ पर ठीक कपड़ा टाँगबाकेँ सेहो असुरक्षित मानैत छथि। सहायताक मूल्य केवल दाताक मंशा नहि, उपयोगक परिस्थिति सँ बनैत अछि। उपलब्ध सत्रह रोलमे तीनमे फफूँद, दूटा गाँठ काटल आ बारह ठीक स्थिति भेटब पाठककेँ ठोस मात्रात्मक दृष्टि दैत अछि। मुदा ‘बारह ठीक’क अर्थ उपचारक शैय्या लेल चिकित्सा-स्वीकृति नहि; ओसभ आश्रयक सूखल फर्श आ परदाक सशर्त उपयोगमे जाएत। अन्तमे सोना कठौतियाक गाड़ी स्वीकृत बारह रोल लऽ आश्रय पहुँचबैत अछि। एहि वस्तुगत परिणामसँ शीर्षकक सत्य स्थापित होइत अछि, न कि समस्त गोदाम ‘मुक्त’ भऽ गेल अछि।

अठारम रोल : अभाव, रूपान्तरण आ अपराधक असिद्धि

गिनतीमे अठार रोलक पुरान पर्चीक बदला सत्रह भेटैत अछि; पहरेदार सरजू पहिल कक्षक निकासी-पर्ची मिलबैत छथि, मुदा अठारम रोलक सीधा प्राप्ति-अभिलेख नहि भेटैत। एहि अवस्था मे ‘एक रोल चोरी गेल’ कहब हेत्वाभासक खतरा उत्पन्न करैत अछि। संख्या-अन्तर प्रत्यक्ष/दस्तावेजीय असमानता अछि; चोरी विशिष्ट कर्तृ-हेतु सहित अलग साध्य अछि। बादमे पुरान तोल-पर्चीक पाछाँ कार्यशालाक लिखित नोट भेटैत अछि जे एक रोल काटि दू छोट तिरपाल बनाओल गेल छल; कारीगरक साक्ष्य आ काटल भागक माप मिलैत अछि, मुदा प्राप्तिक अस्पष्ट हस्ताक्षर शेष। परिणाम : ‘चोरी’ श्रेणीक बदला **रूपान्तरित वस्तु—प्राप्ति-पुष्टि शेष**। ई कथात्मक घटना महत्त्वपूर्ण अछि, कारण शुरूक भ्रान्त आरोप सुधारित होइत अछि, मुदा सत्यापनक कार्य समाप्त नहि।

कथा एहिमे ई सूक्ष्म अन्तर राखैत अछि जे ‘नहि भेटल’क निषेध ‘चोरी’क सकारात्मक प्रमाण नहि। रूप बदललाक सम्भावना आ कार्यशालाक पुष्टि पहिल आरोपकेँ कमजोर करैत अछि; तइयो प्राप्तिक हस्ताक्षर अपूर्ण अछि। ई आख्यानगत उपलब्धि-अनुपलब्धि विवेचनक साहित्यिक प्रयोग बनि सकैत अछि, मुदा पुरान शास्त्रीय व्याख्या पाठमे स्पष्ट सूत्ररूपमे उद्धृत नहि; आलोचकीय तुलनाक मर्यादा एतबे अछि। देवव्रत एहि घटनासँ अपन लेखा-पद्धतिक कमजोरी स्वीकारैत छथि आ कर्मचारीसभसँ पुरान प्रविष्टि नहि मेटि संशोधनक तिथि–कारण अलग

लिखबाक नियम बनबैत छथि। एकटा असिद्ध चोरी-कथा वास्तविक संस्थागत सुधारक कारण बनैत अछि—ई अध्यायक गतिमे प्रमुख मोड़ अछि।

गोपनीय बही : साक्ष्यक शृंखला आ निजी जीवनक सीमा

निजी बहीमे तीन पातर जिल्द—निजी उधार, परिवहन/थान खरीद, सामाजिक सहायता—अछि। देवव्रतक आपत्ति केवल अपन हित सुरक्षित करब नहि; ग्राहकी, परिवारक दवा आ निजी ऋणक विवरण सार्वजनिक होएबासँ निर्दोष तेसर लोकक जीवन प्रभावित भऽ सकैत अछि। रमा सम्बन्धित पन्नाक सीमित प्रति बनेबाक, मूल बही बिनु संशोधन सुरक्षित रखबाक आ सार्वजनिक सूचना केवल ‘प्रति सुरक्षित’ धरि सीमित रखबाक प्रक्रिया मानैत छथि। भीजल लिफाफाक बदला सूखल लिफाफा, क्रमाङ्क, समय आ दूनू पक्षक प्राप्ति एकटा उल्लेखनीय दृश्यात्मक अनुक्रम अछि। छापामारीक रोमांच नहि, अभिरक्षाक विश्वसनीयता एहि दृश्यक तनाव बनैत अछि। कर्मचारी निजी पन्नाक मोबाइल फोटो लेबाक चेष्टा करैत अछि तँ देवव्रत ओकर फोन बलपूर्वक नहि छीनि निरीक्षककेँ सूचित करैत छथि। जाँचक प्रश्न आ गोपनीयताक अधिकार दुनू समकालिक रहैत अछि।

अस्पतालक एक पुरान आपूर्ति-सार आ निजी ढुलाई-पन्नाक प्राप्ति-दिनांकमे अन्तर भेटैत अछि; अनिरुद्धक पूर्व स्वीकारोक्ति एहि तथ्यक पृष्ठभूमि अछि। मुदा एहि अन्तरसँ नियोजित औषधि-वञ्चना अथवा महेशक हत्या-संबन्धी दोष स्वतः सिद्ध नहि। रमा आ शबनम जाँच-अधिकारक उचित सीमा राखैत छथि। एतहि एक पुरान आपात रातिक सही दवा-दानक प्रमाण सेहो भेटैत अछि। उर्मिलाक भेद—एक सत्यापित सहायता दोसर असंगतिक निरसन नहि—देवव्रतक चरित्रकेँ एकरे रंगक अपराधी अथवा उद्धारक बनबैत नहि। देवव्रतक भीतर पहिल बेर लेखाक ऐतिहासिक विश्वसनीयतापर शंका उत्पन्न होइत अछि। जटिल पात्र-विकासक आरम्भ इएह अछि; ई पूर्ण प्रायश्चित्तक कथन नहि।

गोदामक खुले फाटकक पाछाँ बन्द जलनिकासी

भण्डारक पाछाँ पुरान जलनिकासी-मुँह देखिकऽ तारा आ अदिति तत्काल भौतिक जोखिम चिन्हैत छथि—ईंटक असमान तह, कंक्रीटक थप्पी, गाद आ ढहबाक सम्भावना। शिव बाहरी बाँस-जाँच करैत छथि; सुगनी असुरक्षित भीतर उतराबाक आदेश अस्वीकारि मजदूरी आ बाहरी नमूनाक शर्त रखैत छथि। फोटो लेल दू फावड़ासँ मुँह खोलि देबाक सार्वजनिक दबावकेँ तारा रोकैत छथि। नदीक बाहरी पानि घटलाक बावजूद गोदामक पाछाँक स्थिर पानिक स्रोत एखन निर्धार्य नहि। ई द्विस्तरीय स्थान-विन्यास अछि : **व्यापारिक पहुँच खुलल, पर्यावरणीय निकास बन्द**। वस्तुक प्रवाह आ जलक प्रवाह समान नहि। अध्यायक अन्तमे रस्सीक मन्द घर्षणक ध्वनि देवव्रतकेँ इएह सम्झबैत अछि—सही रसीदक अन्तमे मनुष्यधरि पहुँचबाक अलग सुरक्षित मार्ग चाही।

रुखसानाक सार्वजनिक सुपुर्दगी-पंजीमे दस बोरा दावा, सात वास्तविक प्राप्ति, दू निरीक्षणाधीन आ एक भीजल बोरा भेटैत अछि। एहि सटीक चार-खाना विभाजनसँ भोजनक मात्रा निर्धारित होइत अछि। चन्द्रिका अतिरिक्त श्रम-घण्टाक प्रश्न उठबैत छथि : दान चाउरक भऽ सकैत अछि, हुनकर समयक नहि। सोना पुरान ढुलाईक भुगतान पहिने सुनिश्चित करबैत छथि। ई सभ छूटा लघु प्रसंग नहि; वस्तु-दानक प्रमुख कथाकेँ श्रमिकक स्वामित्व आ कामक वास्तविक मूल्यसँ संशोधित करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक साहित्यिक आग्रह एहि द्वितीय

लेखाक दृश्यसँ पुष्ट होइत अछि—राहत इतिहास लिखबाक समय केवल दानक वस्तु नहि, ओकरा जाँचनिहार, ढोएनिहार आ बाँटनिहारक देय सेहो उपस्थित हो।

कथन-प्रविधि, चरित्रक अन्तर्विरोध आ उपलब्धि-सीमा

अध्याय भोरक चाभी खोलबासँ रात्रिक फाटक बन्द धरि एक दिनक रैखिक कालमे चलैत अछि। दृश्य-विस्तार मुख्यतः देवव्रतक गोदाममे अछि, मुदा बीचमे रसोइ, आश्रय, पुरान नाली आ नदीघाटक समवर्ती प्रसंग प्रवेश करैत अछि। देवव्रतक मनोवृत्ति पर कथावाचक किछु नजदीकी दृष्टि दैत छथि—दानक सार्वजनिक मान्यता चाहब, हानि–लेखाक भय, सत्यापित दवा-दान पर राहत, निजी अभिलेखक लज्जा। तइयो उर्मिला, रमा, सुगनी, सरजू आ केशरीक आवाज अलग अधिकारक आधारपर प्रतिवाद करैत अछि। ‘सौप्तिक-पर्व’ नामक बावजूद एहि अध्यायमे स्वतंत्र महाभारतीय रात्रि-दृश्य नहि; पूर्वआख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ सङ्केतकेँ वास्तविक दृश्य-संरचना कहल नहि जा सकैत।

कलात्मक विशेषता चाभी–भीजल लिफाफा–रोल–सील–नाली–नावक ध्वनिक वस्तुक्रम अछि। एहि वस्तुसभ द्वारा एके व्यक्ति देवव्रतक नैतिक जटिलता क्रमशः विकसित होइत अछि। दुर्बलता एहि रूपमे सम्भव जे अनेक वार्तालाप तुरन्त न्यायोचित प्रक्रियामे परिणत भऽ जाइत अछि; विरोधी पक्षक कठिन मनोवैज्ञानिक कारणसभ अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि। तथापि वस्तुक वास्तविक कमी, निजी खाताक अस्पष्टता, जाँचाधीन औषधि आ बन्द निकास अध्यायक सफलताकेँ सशर्त रखैत अछि। अंतिम उद्घोष ‘सभ गोदाम मुक्त’ नहि; सत्रहमे सँ सुरक्षित बारह रोल उपयोगमे, मूल निजी बही सुरक्षित जाँचमे, आ नाली एखन बन्द। इएह अध्यायक प्रामाणिक परिणाम।

अध्याय १११ — नावक क्षमता

गोदामसँ घाटधरि : अधिकारपत्र आ भौतिक भारक असममिति

अध्याय ११० क अन्तमे गोदामसँ राहत-सामग्री निकलि रहल छल; १११ क आरम्भमे घाटपर लोक ई खबरकेँ स्वतः पूर्ण नाव-सेवा बुझि लैत छथि। हीराक पहिल प्रतिवाद पाँच हस्ताक्षरक सीमाकेँ नदीक वस्तुगत प्रतिरोधसँ मिलबैत अछि। चादर आ अनाजक बोरा, रोगीक पर्ची, बच्चा, नाविक आ उपकरण—कोनो एक सामानक पाँतिमे नहि समा सकैत। मधु यात्री, सामान आ नाविककेँ अलग गनतीमे रखैत छथि। बालक मायकेँ गोदीमे अछि, मुदा एहि कारण ओकर देहक भार शून्य नहि; नावक सुरक्षा गणनामे अपन नामक स्थान आवश्यक अछि। ‘सहमतिक पाँच सही’ आ ‘नावक आजुक भारपरीक्षण’ अलग प्रमाण छथि। एहि मूल भेदसँ अध्यायक कथानक आरम्भ होइत अछि।

हीरा, गोपाल, तारा, श्याम आ ललितक संयुक्त निरीक्षण क्रमशः किनारक सरकैत रेत, नव गाद, काठक दरार, जंग खाएल कसनी आ पवनक अवस्था देखैत अछि। नियंत्रित स्थिर भागमे बोरा रखि कएल परीक्षणकेँ वास्तविक भयभीत यात्रीक सामूहिक गति समान नहि मानल जाइत। पहिल नावक पाछाँक जोड़ भार उतरला उपरान्त रिसैत अछि, तेँ श्याम ओकरा तुरन्त सेवा-सूची सँ हटबैत छथि। एहि ठाम काठक परीक्षणक असफलता बाह्य दृश्य मात्र

नहि; नावमालिकक एक दिनक कमाइ आ यात्रीक जीवनक बीच निर्णय-अधिकारक संघर्ष छैक। मधु निरीक्षण-पहरा आ रोकल नावक हानिक आर्थिक पक्ष दर्ज करबैत छथि। सुरक्षा शून्य लागतवला नैतिक आदर्श नहि।

हीरा प्रत्येक नाव लेल अलग दिन-विशिष्ट सीमा लिखबैत छथि : पहिलमे नाविकसहित पाँच व्यक्ति, दोसरमे चारि, तेसरमे तीन; सामानक भार पृथक परीक्षणीय। एहि सङ्ख्यासभक उपयोग करते समय पाठककेँ सावधान रहबाक अछि : ई सभ नावपर स्थायी, सर्वकालिक नियम नहि। दुपहरक पहिल फेरा सुरक्षित भेल, फेर तिरछा पवन बदललापर दोसर फेरा रोकल गेल। एक सुरक्षित यात्रासँ अगिलाक सुरक्षा अनुमान करब बदलेल उपाधिक अवहेलना हएत। एहन कारणसापेक्ष अस्थिरता कथामे नदीकेँ कथानकक सक्रिय निर्धारक बनबैत अछि।

केशरीक नाव : काठक स्वामित्व आ जीवन्त रोजी

केशरी बीनक पुरान नावमे लम्बा फाट अछि; ओकरा चलेबाक अनुमति रोकल गेल अछि। खरीदार नगद दाम देकर नावक काठ संग चप्पू, बाँस, रस्सी आ सार्वजनिक घाट-आवागमनक अधिकारो एकरे सामान मानि खरीदबाक प्रयत्न करैत अछि। केशरी काठक निजी मालिकाना आ घाट-मार्गक सार्वजनिक अधिकारक स्पष्ट भेद करैत छथि। ई कथा-विशेषक महत्त्वपूर्ण क्रिया अछि : अधिकारक वस्तु गलत परिभाषित होइतहि आर्थिक बाध्यता अन्तहीन समर्पणमे बदलि सकैत अछि। ललित मरम्मतिक लागतकेँ काठ, धातु आ अनुभवी हाथक मजदूरीमे पृथक करैत छथि। केशरी अपन श्रमक पारिश्रमिक लिखाबयमे हिचकैत छथि—मालिक स्वयं मजदूरी लेत, से समाज कोना देखत? एहि प्रश्नमे स्व-रोजगार आ श्रमक अदृश्यताक वर्गीय अड़चन प्रकट होइत अछि।

मरम्मतिक बैठकमे अग्रिम, शेष ऋण, भविष्यक आयसँ भुक्तान आ ऋण चुकलाक बादक मालिकाना स्पष्ट कएल जाइत अछि। केशरी बिक्री-पत्रपर सही नहि करैत छथि; एकरे संग मरम्मतिक निर्णय भेलो पर नाव तुरन्त चलनयोग्य नहि। ई सकारात्मक परिणाम दू स्तरमे पढ़बाक अछि : पहिल, आर्थिक विवशता मे अनधिकृत सामूहिक कब्जा टरल; दोसर, सुरक्षा-परीक्षण आ जलस्थिति अनुसार भविष्यक उपयोगक प्रश्न खुलल अछि। प्रशिक्षुक युवा कारीगरक काम आ सीखबाक समय अलग दर्ज करबाक निर्णय आर्थिक स्वायत्ततासँ अगिला पीढ़ीक श्रम-शिक्षासँ जोड़ैत अछि। नाव नहि बेचबाक भावुकता यदि कारीगरक मजदूरी फेर अघोषित ऋण बनबैत, तखन अध्यायक नैतिक उपलब्धि अधूरा रहैत। कथा एहि उलट सम्भावनाकेँ देखबैत अछि।

अनुमानक उपाधि : बोरा, बलुआहा आ बदलैत पवन

कथानकमे साक्ष्य आ कथनक सम्बन्धक उदाहरण एहि अध्यायमे पर्याप्त ठोस अछि। स्थिर बोरा उठाओल गेल, तें डेराएल लोक दाएँ-बाएँ सरकलाक परिस्थिति स्वतः सुरक्षित—ई अनुमान अव्याप्त अछि। ‘बलुआहा’ शब्द पुरान काठ-खरीदक ढुलाई-पर्चीपर भेटलाक आधारपर पुरान नदी-मिलनक भूगोल सिद्ध नहि। काल्हिक सुरक्षित फेरा सँ आजुक पवनपर अगिला फेरा अवश्य सुरक्षित—एहो गलत सार्वत्रिकीकरण अछि। तीनू उदाहरणमे पक्ष आ साध्य बदलैत अछि : सामग्रीक स्थिर भार, स्थान-नामक अभिप्राय, आ कालविशिष्ट जलस्थिति अलग-अलग प्रमाण माँगैत अछि। पात्रक रोजमर्रा संवादमे ई भेद उपस्थित अछि; आलोचना एकरा आख्यानगत हेत्वाभासक तुलना दे सकैत अछि, मुदा कृतिक भीतर पूर्ण शास्त्रीय सूत्र पढ़ाएल गेल एहन दावा नहि करैत।

स्थलज्ञानक वितरित व्यवस्था सेहो उल्लेखनीय अछि। गोपाल गादक त्रिभिन्न बिन्दु नापैत छथि; श्याम काठक आवाज सुनैत छथि; तारा भारक संयोजन परखैत छथि; हीरा यात्रा-कुशलता आ सुरक्षा-सीमा तय करैत छथि; मधु मजदूरी आ फेराक पंजी सँभालैत छथि। कोनो एकर अनुभव दोसराक पूरक प्रमाण बिनु सर्वशक्तिमान नहि। ई सामाजिक ज्ञान-वितरणक उपलब्धि अछि। विशेष रूपसँ मदद लेल खाली राखल नावकेँ रातिक माल-ढुलाईमे उपयोग करबाक आग्रह हीरा अस्वीकार करैत छथि। आपदा-पूर्व तैयार संसाधनक अपरिहार्य रिक्तता सेहो काज करैत अछि।

वंचना, प्रतीक्षा आ पत्रकारिताक आचार

दवाइक पर्ची लेने स्त्री तत्क्षण पार होमय चाहैत छथि, मुदा ओहि नावमे स्थान नहि; सलमा ऊपरी भूमि-बाटक गाड़ी खोजैत छथि। समाचारक युवक हुनकर व्यथा कैमरामे देखए चाहैत अछि; स्त्री पीठ घुमा लैत छथि, नैरा शिकायतक तथ्य रखैत निजी चेहरा नहि। बादमे ओहि परिवारकेँ दवा वैकल्पिक बाटसँ भेटैत अछि। कथा अस्वीकृत नाव-यात्राकेँ निरर्थक प्रशासनिक रोक नहि बनबैत; वास्तविक प्रतीक्षा, क्रोध, वैकल्पिक पहुँच आ अन्तिम पावतीक पूरा क्रम दैत अछि। तथापि सभ प्रतीक्षारत यात्रिकेँ एकरे दिन सफल विकल्प भेटल, एहन निष्कर्ष नहि। सार्वजनिक सूचना देरीकेँ स्वीकारैत अछि। लोक-हितक पत्रकारिता पाड़ाक पृष्ठभूमि नहि, घटनाक प्रमाण-वितरणक एकटा सक्रिय चरण अछि।

कथनकाल भोरक घाट-जमावसँ रातिक पहरादारी धरि एक दिनक रैखिक अछि। केशरीक पुरान नावक जीवन-वृत्त आ हीराक पहिल परीक्षणमे घुरि अएबाक स्मरण छोट पूर्वदीप्ति अछि; ई स्वतंत्र महाकाव्यकाल नहि। कथन-गति अनवरत जाँच–रोक–जाँचक आवर्तनमे चलैत अछि। एहि कारण कतिपय दृश्य प्रक्रियात्मक दोहरावक बोध दैत अछि। मुदा पाटमे रिसाव, तिरछा पवन, बिक्री-पत्रक उपधारा, बालकक बैसबाक स्थान आ वैकल्पिक गाड़ी—ई ठोस भिन्नतासभ समान वाक्यावलीकेँ अलग घटनात्मक दाब दैत अछि। नायकत्व सफल फेरा मात्र नहि, समयपर अगिला फेरा रोकबाक नैतिक कौशल सेहो अछि।

निष्कर्ष : सुरक्षित नहि चलाओल गेल भारक इतिहास

अन्तमे केशरी अपन नावक उपयोग-अयोग्यता स्वयं सही करैत छथि; तीन परीक्षित नावक दिनक अनुमति राति समाप्त भऽ जाइत अछि, सहायता-नाव खाली बचाओल गेल अछि। नहि चलल नावक समयक बजट शून्य नहि, पहरा, प्रतीक्षा, रस्सी आ जाँचक लागत अछि। एहि समापनमे नदीक ऊपर वास्तविकत: *नहि* राखल गेल भारक कारण लोकक सोझाँ लिखल अछि। कृति आपदा-रक्षा केनो प्राणरक्षक ‘विजय-यात्रा’ नहि बनबैत; सार्वजनिक रूपसँ जिम्मेदार रोक आ आर्थिक न्यायमे परिणत करैत अछि। एहि कला-दृष्टिक सीमा ई जे निर्णय-प्रविधिक बहुल वर्णन पात्रक अनियोजित भावविश्वकेँ कम समय दैत अछि; केशरीक नावसँ भावनात्मक लगाव आ स्त्रीक औषधि-आकुलता एहन दुर्लभ दृश्य छथि जतय प्रक्रियाक परे जटिल देहधारी अनुभव प्रखर होइत अछि।

अध्याय ११२ — ईशानक हाथ

काठक प्रतिरोध : श्रमदानक नायकत्वक विखण्डन

“ईशानक हाथ”क आरम्भ केशरीक रोकल पुरान नावकेँ सुरक्षित सुखायल ठाम सरकएबाक तैयारीसँ होइत अछि। ईशान पुस्तकक थैला लऽ घाट आबैत छथि आ मददक प्रस्ताव दैत छथि। श्यामक पहिल निर्देश—कतय नहि ठेलबाक अछि—ईशानक बौद्धिक आत्मविश्वासक पहिल परीक्षण बनैत अछि। नावक काठक फाट, नरम गाद आ असन्तुलित जोरक कारण मालिक केशरी स्वयं सेहो बिना निरीक्षण निर्णायक आदेश नहि दऽ सकैत। ईशान स्वेच्छिक सहायता लेल नाम लिखबैत छथि, मुदा मधु स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर निःशुल्क श्रमसँ दोसर कारीगरक मजदूरी नहि कटत, आ चोट लगलासँ जोखिम-पंजीमे हुनकर नाम रहत। एहि आरम्भिक क्रियामे अध्यायक मुख्य नैतिक विचार पहिले सँ ठोस रूपमे निहित अछि : **काममे सहभागी होएब आ कामक अधिकार अपन हाथमे लेल एक नहि।**

ईशान पहिल संकेतसँ पूर्व जोर देबाक चेष्टा करैत छथि; श्याम रोकैत छथि; बादक व्यवस्थित ठेलाइमे हथेलीक पोर घिसि जाइत अछि। देवी गोंड सफाइ आ प्राथमिक उपचार करैत छथि, ईशानकेँ पुनः भीजल गादमे हाथ नहि देबाक सलाह दैत छथि। झुमकीक शिक्षाक समय सेहो जाँचल जाइत अछि। ई छोट घटना अध्यायक कथावस्तुमे विशाल पौराणिक ‘दण्ड’ नहि; सीमित श्रमक अनुभव, चोट, उपचार आ आज्ञा मानबाक अभ्यास अछि। पात्रक कथनक परम्परागत प्रतिष्ठासँ सामग्रीक सुरक्षा तय नहि होइत—हीरा बादमे घाटपर ओहि तर्ककेँ फेर सत्यापित करैत छथि। ईशानक आत्मबदलावक पाठ केवल हुनकर दुखैत हाथ नहि; दोसरक कौशलक निर्णय स्वीकारब अछि।

श्रेयक दू पञ्जी : घाटक काम आ पुस्तकक संशोधन

घाटक घटना संग पुरान पुस्तकक लेखकत्व-प्रश्न समकालिक चलैत अछि। हरिमोहनक पत्रमे ईशानक मूल दार्शनिक विवेचन, मैथिलीक संशोधन आ सरिताक प्रतिलिपि–उदाहरणक श्रमक तीन अलग योगदानक अन्तिम सहमति शेष अछि। एक युवक ईशानक नाव-श्रमक फोटो सार्वजनिक करबाक प्रस्ताव दैत अछि; ईशान स्वयं मानैत छथि जे एहि फोटोसँ पुरान पुस्तकक गलती नहि मेटत। पाठशालाक समिति ईशानक ‘सामाजिक प्रतिबद्धता’क प्रचार करए चाहैत अछि, मैथिली ओकरा योगदान-विवादक बदला स्वीकार करैत नहि। ई दृश्य आलोचनात्मक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण : एक ठाम कएल नीक काज दोसर ठामक आर्थिक वा बौद्धिक ऋणक स्वतः भुगतान नहि। सार्वजनिक छवि अपन न्यायाधिकार बनाबय, ई आशङ्का पात्रसभ स्वयं रोकैत छथि।

सरिता अपन सिलाइ-थानक व्यावसायिक भाड़ा आ पुस्तकक प्रतिलिपि-श्रमक भुगतानकेँ एक नहि मानैत छथि। ओ भुगतानक अग्रिमकेँ ‘उपहार’ नहि, आंशिक श्रम-देय लिखबबैत छथि; भुगतान स्वीकारितहुँ बाँकी गवाहीक अधिकार नहि छोड़ैत छथि। मैथिली प्रमाणित तीन संशोधित अंशक सार्वजनिक पृष्ठ-सन्दर्भ चाहैत छथि, केवल ‘प्रश्न उठाओल’ श्रेय नहि। हरिमोहन सीमित प्रमाणक आधारपर कार्यसूची बनबैत छथि; एक विवादित तारीखकेँ

अनिश्चित रखैत छथि। एहि ठाम ज्ञानक अर्थ केवल सैद्धान्तिक विचारक विषय नहि; ककर हाथसँ वाक्य बदलल, ककर स्मृतिसँ उदाहरण बनल, ककर घण्टा कापीमे लागल—स्रोत-आलोचनाक सामाजिक प्रश्न अछि।

बादक बैठकमे तीन परिणाम स्पष्ट छथि : मैथिलीक प्रमाणित संशोधन सार्वजनिक सूचनामे विशिष्ट अंशसहित चढ़त; सरिताक निश्चित प्रतिलिपि-काजक आंशिक भुगतानक स्रोत आ तिथि लिखल जायत, बाकी दावे सुरक्षित रहत; ईशानक घाट-सहायता घाटक श्रम-पंजीमे रहत, पुस्तकक लेखकत्व-पत्रमे नहि। तीनू अलग-अलग पन्नापर सही करैत छथि। ई ‘सामूहिक सहमति’ पात्रक समान भूमिका घोषित नहि करैत; विवेचनक मूल लेखक, संशोधक, प्रतिलिपिकार, अनुभव-स्रोत आ स्वेच्छिक सहयोगी अलग स्थानमे उपस्थित रहैत छथि। एहन विभाजन उपन्यासक विस्तृत ‘नाम बनाम काज’ समस्या कें ज्ञान-उत्पादनक केन्द्रमे अनैत अछि।

आख्यानगत प्रमाण-श्रेणी आ दार्शनिक आत्मानुशासन

अध्यायक दार्शनिक प्रश्न केवल ई नहि जे ईशान अहंकार त्यागलनि। ऊपरी तौर पर हस्तक्षेपक एक घटनासँ चरित्रक पूर्ण रूपान्तरण सिद्ध करब अनुचित अछि। नैतिक अनुमानक पक्ष ईशानक विशिष्ट काम, साध्य अन्यक कौशलक मान्यता; मध्यवर्ती लिङ्ग के? हाथक छोट चोट स्वयं पर्याप्त हेतुनि। अधिक ठोस साक्ष्य हुनकर तीनटा लिखित निर्णय छथि—प्रचारक अस्वीकार, मैथिलीक प्रमाणित संशोधन स्वीकार, सरिताक भुगतानक सीमा दर्ज। एहि निर्णयसभसँ आंशिक आत्म-संशोधन सिद्ध होइत अछि, भविष्यक चरित्रक सम्पूर्ण निर्दोषिता नहि। मूल तर्कक लेखकत्व ईशानक नाममे सुरक्षित रहैत अछि; न्याय पुनर्लेखनक अर्थ समस्त पूर्वलेखनक अकारण अपहरण नहि।

नावसँ सम्बन्धित दू बोधक भेद आख्यानगत व्यवहारे स्पष्ट अछि। पहिल, ईशान नाव ठेलबमे वास्तविक सहभागी छथि, मुदा ताहिसँ नावक क्षमता निर्धारित करबाक प्रामाणिक योग्यता नहि भेटैत। दोसर, किताबक मूल अंश हुनकर लिखल अछि, मुदा ताहिसँ मैथिलीक संशोधनक अभाव सिद्ध नहि। अनुमत विषय आ प्रत्यक्ष प्रमाणक क्षेत्र बदलिते नामक अधिकार बदलैत अछि। कथाक आकर्षण एहि तुलनामे अछि : गुरु स्वयं ‘हम नहि जनैत छी’ स्वीकारब सीखैत छथि; श्यामक अन्तिम उत्तर ज्ञानकेँ अभ्यासक पूर्वशर्त बनबैत अछि। मुदा एकरा भामती वा तत्त्वचिन्तामणिक शाब्दिक सूत्र ठहराएब पाठक सीमा लाँघब होयत। ग्रन्थ-नामक पृष्ठभूमि विस्तृत उपन्यासमे अछि, किन्तु ११२ क प्रत्यक्ष दृश्य मुख्यतः सामाजिक ज्ञान, अनुभव आ प्रमाणक व्यावहारिक परीक्षा प्रस्तुत करैत अछि।

स्त्रीक श्रम, बालिकाक पढ़ाइ आ बहुपक्षीय दृष्टि

झुमकी रस्सी सुखेबाक पारिश्रमिक आ शिक्षा-समय दुनू चाहैत अछि। ईशानक चोटक दृश्य यदि अकेला ‘विद्वान श्रम करैत छथि’ फोटो बनि जाइत, तँ झुमकीक बालिका-श्रम आ नाविकक पेशागत परिश्रम गौण भऽ जाइत। मधु घाट-पंजीमे झुमकीक कामक नाम-सही राखैत छथि, मुदा बादमे पाठशालाक अभ्यास लेल ओकरा अपन नामक प्रति दैत समय अन्य मजदूरक निजी विवरण ढाँकैत छथि। एतय शिक्षाक आरम्भ अपन श्रम-पहिचानसँ होइत अछि, गोपनीयताक सीमा भाङि नहि। उषा राम अपन चर्म-बन्धनक डिजाइनक उचित श्रेय चाहैत छथि, संगहि स्पष्ट करैत छथि जे ओ मूल काठक सुरक्षा-समस्या ठीक करबाक साधन नहि। रुखसाना ईशानकेँ बासन-सहयोग

देबासँ पहिने पुछैत छथि जे सशुल्क कामगारक रोजगार नहि छिनल जाउ। पात्रक ई प्रतिवादसभ केवल गुरुकेँ उपदेश देबाक पात्र-भूमिका नहि, अपन काजक अधिकार निर्धारित करबाक कार्य छथि।

समय-विन्यास घाटक भोरसँ साँझक समिति-बैसार आ रातिक पट्टीक देखभाल धरि चलैत अछि। बीचमे पुस्तकक पुरान संशोधन-विवादक स्मृति वर्तमान पत्रमार्फत प्रवेश करैत अछि; ई पूर्ववृत्त अछि, स्वतंत्र महाभारतीय दृश्य नहि। कथावाचक तृतीय पुरुषमे ईशानक असहजता आ पछिल स्वीकारोक्ति धरि पहुँचैत छथि, मुदा मैथिली आ सरिताक अलग दृष्टि सेहो बचल अछि। अन्तिम सरिता–नैरा दृश्य खास अर्थवान अछि : नैरा मायक उत्तरकेँ अगिला समाचारक शीर्षक नहि बनबैत छथि। सार्वजनिक प्रसिद्धि आ घरक निजी निर्णयक सीमा एहि छोट मौनमे स्पष्ट होइत अछि।

सफलताक मर्यादा आ कलात्मक प्रतिपक्ष

अध्यायमे शारीरिक असफलता, दस्तावेजीय संशोधन आ नायकत्वक विकेन्द्रीकरणक कलात्मक समन्वय सशक्त अछि। नावक गाद, काठक खरखराहट, पट्टीक लाल रेखा आ सरिताक सिलाइक बही—ई सभ ठोस वस्तु ईशानक आत्म-संशोधनकेँ उपदेशसँ बाहर आनैत अछि। तथापि संवादमाध्यमसँ न्याय-सिद्धान्तक स्पष्ट बयान अत्यधिक होइत अछि; श्याम, मधु, मैथिली, सरिता, रुखसाना आ हरिमोहन क्रमशः लगभग निर्दोष नैतिक विभाजन प्रस्तुत करैत छथि। मानवीय जिद, लाज, आर्थिक दवाब आ अपूर्णताक स्वाभाविक उलझन किछु दृश्यमे संक्षिप्त भऽ जाइत अछि। ई सम्भावित प्रवचनात्मक सीमा स्वीकारब जरूरी अछि।

समापनमे सरिताक राशि पूर्ण भुगतान नहि, मैथिलीक सभ संशोधन अन्तिम स्वीकृति नहि, केशरीक नाव चलनयोग्य नहि, आ ईशानक स्वभावक सम्पूर्ण परिवर्तन सिद्ध नहि। तय भेल अछि मात्र प्रमाणित योगदानक नाम, जाँचाधीन शेष, आंशिक देयक पथ आ स्वेच्छिक हाथक वास्तविक घाट-पंजी। एहि आंशिक उपलब्धिसँ अध्यायक शीर्षक “ईशानक हाथ”क अर्थ दोहरा बनैत अछि—घायल भौतिक हाथ आ लेखकत्वक दस्तावेजपर उत्तरदायी हस्ताक्षर। दुनूक मूल्य एके नहि, मुदा दूनूकेँ अपन सही ठाम राखबाक अभ्यास कथा विकसित करैत अछि।

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०९–११२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

रात्रि, भोर, नदी आ कार्यक शृंखला

नव पर्वक चारू अध्याय एके घटनाक ‘चारि दृश्य’ मात्र नहि। १०९ एक रातिक बहुस्थलीय बचाव, ११० दोसर कक्षक सार्वजनिक-जाँचसहित निजी स्वामित्व, १११ बदलैत नदीमे वजन–क्षमता–जीविकाक संघर्ष आ ११२ श्रमदानक माध्यमसँ ज्ञान-श्रेयक संशोधनक अलग घटनात्मक केन्द्र छथि। तथापि पाँच हस्ताक्षरक अनुपालनक दीर्घ शृंखला सभकेँ जोड़ैत अछि। १०९ मे खुलल भोजन–अस्पताल–गाड़ी–गोदाम–जलनाप काज अलग पुष्टि पबैत अछि; ११० मे गोदामक सत्रहमे सँ उपयोगयोग्य रोल आश्रय पहुँचैत अछि; १११ मे राहतक मात्रा बढ़िते

नावपर असुरक्षित भारक माँग उठैत अछि; ११२ मे रोकल नावक मरम्मतिक श्रम आ पुस्तक-संशोधनक श्रेय एकहि घाटपर जुड़ैत अछि। इएह भौतिक–नैतिक कारण-क्रम अछि।

पर्वक “सौप्तिक” नाम महाभारतक रात्रिक हिंसा, सुति रहल लोकक असुरक्षा आ प्रतिशोधक चिन्ता जगबैत अछि; मुदा अध्याय १०९–११२ मे स्वतंत्र प्राचीन सौप्तिक रणभूमि-दृश्य नहि। ई तथ्य आख्यानक किछु यांत्रिक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ सङ्केतक सुधार माँगैत अछि। आलोचकक उत्तरदायित्व शीर्षकक अर्थ-प्रतिध्वनि आ प्रत्यक्ष दृश्य-समरूपताक अन्तर स्पष्ट करब अछि। एहि चारि अध्यायमे रात्रि-जागरणक नैतिकता हिंसाक बदला सुरक्षित बचावक श्रम अछि। अगिला प्राचीन कथाभागक समग्र अर्थक निर्णय अगिला अध्यायसभ पढ़लाक बादे सम्भव हएत।

प्रमाणक भिन्न अवच्छेदक आ न्यायक सामाजिक उपयोग

चारू अध्यायमे एकटा साझा तर्क-पद्धति देखाइत अछि : कथनक प्रामाणिकता ओकर निर्दिष्ट विषय, ठाम, समय आ उपयोग-क्षेत्रपर निर्भर करैत अछि। रातिक असत्यापित फोन बान्ह-भङ्गक प्रत्यक्ष नहि; निजी गोदाम खोललाक साक्ष्य समस्त सामग्रीक निर्दोषिता नहि; स्थिर बोरा-भारक परीक्षण बदलैत पवनमे यात्रिक सुरक्षा नहि; ईशानक आजुक सहायता पूर्व पुस्तकक लेखकत्व-विवादक समाधान नहि। ई चारि अलग तर्क-दोषकेँ एक सूत्रमे समेटब सम्भव अछि—**एक स्थानक प्रमाण दोसर स्थानक अनधिकृत निर्णयमे रूपान्तरित नहि होअय**। आख्यानगत उपाधि, व्याप्ति आ हेत्वाभासक उपकरण एहि घटनाक विश्लेषणमे उपयोगी छथि, मुदा उपन्यासमे सभ पात्र सूत्रोच्चार करैत नहि चलैत छथि; आलोचना दार्शनिक समानताकेँ मूल शास्त्रीय उद्धरणक रूप नहि दैत।

वितरित श्रम, स्त्री-निर्णय आ नायकक सीमित पुनर्गठन

रुखसाना, कंचन, चन्द्रिका, मधु, हीरा, तारा, उर्मिला, रमा, शबनम, रुहानी, सोना, सुगनी, सरिता आ मैथिली अपन-अपन निर्णय-क्षेत्रमे सक्रिय छथि। ई महिला पात्रसभक संख्या-मात्र नहि, कथामे हुनका सभक सार्वजनिक साक्ष्य आ निर्णय-परिणामक अधिकार देखबाक चाही। कंचनक दूहरी घण्टा रोकिनाइ, चन्द्रिकाक छूटल श्रम सुधार, उर्मिलाक असुरक्षित कपड़ा अस्वीकार, हीराक फेरा रोकब, सरिताक बकायाक सही पदनाम माँगब—सभटा वास्तविक सत्ता-प्रयोग अछि। ई पात्रसभकेँ ‘संकटमे सेवा करनिहार’क एकरे निर्जीव श्रेणीमे रखब ओहि भिन्नताक नाश होयत। केशरीक नाव नहि बेचबाक अधिकार आ ईशानक नकार स्वीकारबाक अभ्यास पुरुष पात्रसभक अपेक्षाकृत कम अधिकारपूर्ण नायकत्वक निर्माण करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ एहि अंशक मूल्य सामान्य स्मारक-इतिहासक प्रतिपक्षमे अछि। सार्वजनिक दस्तावेजमे दाताक नाम चढ़बाक साथहि स्वीकृत सामग्रीक वास्तविक उपयोग, नाविकक रोकल पहरा, बरतन धोअनिहारक चालीस मिनट, प्रशिक्षुकक रस्सी-सफाइ आ प्रतिलिपिकारक संशोधन-देय सेहो दर्ज होइत अछि। एकर अन्तर्विरोध सेहो अछि : कतेक पात्र एके तरहक स्वच्छ विधिक भाषा बोलैत छथि; बहुजातीय आ बहुपेशागत सामाजिक स्थितिक बीच भिन्न बोली, भावनात्मक असमंजस आ असहमतिक दीर्घता एहि चारि

अध्यायमे आओर पैघ स्थान पाबि सकैत छल। भौतिक जोखिमक तात्कालिकता एहि प्रक्रियात्मक पुनरावृत्तिकेँ किछु अंशमे संतुलित करैत अछि।

कथनक अवधि आ असम्पन्न परिणामक सौन्दर्य

एक राति (१०९), एक दिनक नियंत्रित गोदाम-जाँच (११०), अगिला दिनक घाट-परीक्षण (१११) आ नाव-मरम्मति/बैसारक दिन (११२) सघन, लगभग दिनवार कथन-क्रम बनबैत अछि। विस्तृत संवाद आ लघु स्थानपरिवर्तनक कारण नाटकीय काल अनुपातिक रूपेँ धीमा अछि; आपदा-सन्निकटक पहर वास्तवमे निर्णय-पत्रक माध्यमसँ पसरि रहल अछि। कथा जाँचक चरणसभ पर अधिक ध्यान दैत अछि, चमत्कारी उद्धारक क्षणपर नहि। एहि विन्यासक रचनात्मक शक्ति संकटमे जिम्मेवारीक जटिलता देखएब अछि; जोखिम गति-मन्दता आ नीति-दोहराव। पात्रक भीतरक अनिर्णय जतेक गहराएत, ओतेक प्रविधि साहित्य बनत; केवल नाम–पर्ची–सहीक क्रम दोहराएत तँ कथा कार्यालयी अनुकरणमे फँसि सकैत अछि।

एखन चारू अध्यायक सुनिश्चित उपलब्धि सीमित अछि : रातिक सेवा चालू रहल, किछु आश्रय-सामग्री सुरक्षित पहुँचि गेल, किछु नाव निर्दिष्ट दिनमे सुरक्षित फेरा कएलक, केशरी अपन नावक मालिकाना राखि मरम्मतिक विधि तय कएलनि, आ पुस्तकक प्रमाणित श्रेय-संशोधन तथा सरिताक आंशिक देयक व्यवस्था लिखल गेल। मुख्य निकासी-मुँह, शंकास्पद औषधि, निजी लेखाक पूर्ण परीक्षण, नावक स्थायी स्वीकृति आ पुस्तकक शेष विवाद खुलल छथि। एहि खुलल स्थितिमे अगिला सौप्तिक अध्यायसभक सम्भावित रातिक आघातक पूर्वभूमि अछि; कथासंसारमे एखन नहि घटल घटनाकेँ आलोचकीय कथनमे घटित घोषित नहि करब उचित अछि।

अध्याय ११३ — अश्वत्थामाक राति

प्रतिशोधक आरम्भ : रथक काँटा, पितृशोक आ नैतिक विकल्प

सौप्तिक-पर्वक एहि अध्यायमे पहिल बेर प्राचीन रात्रि-आक्रमण स्वयं कथाक केन्द्र होइत अछि। अध्याय १०९–११२ क समकालीन आपदा-प्रबन्धनसँ भिन्न, आरम्भ टूटल रथक धुरीसँ निकालल पातर काँटासँ अछि। अश्वत्थामा ओकरा हथेलीमे पकड़ने रहैत छथि, जखन कृप घायल सैनिकक लेल पानि आ कृतवर्मा बचल घोड़ाक पट्टीक चिन्ता करैत छथि। ई तीन क्रियाक असमानता आरम्भिक कथात्मक बीज अछि : क्रोधक भीतर वस्तु जड़ भऽ रहब, जीवनरक्षाक तत्काल श्रम, आ युद्ध-बचावक व्यावहारिक चिन्ता। काँटाकेँ पहिले सँ तय कोनो दैवी प्रतीक मानब आवश्यक नहि; ओकर अर्थ अश्वत्थामाक आहत स्मृति आ अकारण पकड़ने रहबाक क्रियासँ बनैत अछि।

सरोवरक कात घायल दुर्योधनक संक्षिप्त प्रश्न — “गुरुपुत्र, अहाँ आबो एतय छी?” — वंश, निष्ठा आ हानि एक ठाम अनैत अछि। कृप राजकीय प्रतिष्ठासँ पहिने पट्टी आ उपचारक चिन्ता करैत छथि, जखन दुर्योधन शेष सेनाक मानक बात करैत छथि आ अश्वत्थामा द्रोणक मृत्युकेँ प्रतिशोधक अनिवार्य आदेश बनबैत छथि। कथावाचक अश्वत्थामाक पितृस्मृतिमे थोड़ेक समय लेल घुसैत छथि : धनुषक डोरी चढ़ेबाक पहिने द्रोण द्वारा बालकक अँगुरी

देखबाक स्मृति मानविकता आ हिंसाक बीच वास्तविक तनाव उत्पन्न करैत अछि। शोक सत्य अछि, मुदा शोकसँ प्रस्तावित हत्या स्वतः वैध नहि; ई अध्यायक केन्द्रीय नैतिक व्यतिरेक अछि।

कृतवर्मा शिविरक रसोइ करनिहार, रथचालक, पहरेदार आ घोड़ा सँभालनिहार लोकक थकान स्मरण करबैत छथि। युद्धक 'पक्ष'मे रहबाक बात आ हिंसक अपराधमे सहमतिक बात एक नहि—ई उनका मुखसँ स्पष्ट भेद अछि। वृद्ध सैनिकक रस्सी आठ घायलकेँ उठएबाक श्रम-स्मृतिसँ जुड़ल अछि। अश्वत्थामा क्षण भरि एहि श्रमक मानवीयता देखितो योजना नहि छोड़ैत छथि। तेँ विरोधी तर्क हुनका सुनाएल गेल नहि, एहन नहि; उपलब्ध विकल्प आ अनुभवकेँ अस्वीकार करब हुनकर नैतिक निर्णयक हिस्सा बनैत अछि। अन्तिम मूल्यांकनमे एहि बिन्दुकेँ केवल पात्रक 'नियतिवश' हिंसा कहि टारल नहि जा सकैत।

उल्लू आ काग : प्राकृतिक दृश्यसँ नैतिक अनुमति बनेबाक हेत्वाभास

वटवृक्षक डारपर उल्लूक कागपर टूटि पड़बाक दृश्य अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ज्ञानगत मोड़ अछि। प्राकृतिक शिकारी व्यवहार एकटा प्रत्यक्ष घटना अछि; मनुष्यक सुतल शत्रुपर प्रहार उचित अछि—ई ओकरा सँ निकसल अलग मूल्यनिर्णय। अश्वत्थामा पहिलाकेँ दोसराक हेतु बनबैत छथि। कृपक प्रतिवाद ई अछि जे पक्षीक भूख आ भय मनुष्यक आचरणक अनुमति-पत्र नहि। आख्यानगत विश्लेषणमे पक्ष-परिवर्तन आ असिद्ध व्याप्ति देखल जा सकैत अछि : 'रातिमे असावधान शिकार सहज अछि' सँ 'असहाय मनुष्यक रात्रिहत्या धर्मसम्मत अछि'क निष्कर्ष सिद्ध नहि होइत। ई आलोचनात्मक समरूपता अछि, उपन्यासक पात्र द्वारा आख्यानगत औपचारिक सूत्र-पाठ नहि।

कृप भोरमे चुनौती, पिताक मृत्युक साक्षी एकत्र करब, आ युधिष्ठिरसँ प्रत्यक्ष प्रश्न करबाक विकल्प स्पष्ट करैत छथि। एतय विवेचनक विशेषता ई जे कथावस्तुमे न्यायसम्भावनाकेँ हटाकऽ प्रतिशोधक अपरिहार्यता निर्मित नहि कएल गेल। विकल्प उपस्थित अछि; ओकर अस्वीकार नायकक आहत आत्मसम्मानक परिणाम। कृपक “शोक अहाँक अछि” सम्बन्धी कथनक अगिला तार्किक सीमा एतय महत्त्वपूर्ण अछि—अपन वेदनाक स्वामित्व दोसरक प्राणक स्वामित्व नहि दैत। भारतीय औचित्य-विवेचनक दृष्टिसँ ई सम्बन्ध व्यक्तिनिष्ठ करुणा आ परनिर्णयक मर्यादाक बीच स्थित अछि।

कृतवर्मा अश्वत्थामाकेँ अकेला नहि छोड़बाक तर्कसँ रथपर चढ़ैत छथि; कृप हुनकासँ सहायता आ सहभागिताक अन्तर पुछैत छथि। हिंसा एक व्यक्तिक निश्चयसँ तीन जनक सामूहिक यात्रामे बदलि जाइत अछि। कथनक ई क्रम 'हम केवल दुआरधरि गेल रही' सन उत्तरदायित्व-परिहारक सम्भावित तर्ककेँ पहिनहि अस्थिर करैत अछि। दुआर कात ठाढ़ रहब सेहो घटना घटबाक सहायक परिस्थिति बनैत अछि; ई तथ्य कथावाचक स्पष्ट करैत छथि।

शिविरक भीतरी समय : विश्राम, परिचर्या आ असमान हिंसा

पाण्डवपक्षक शिविर विजय-उत्सवक विशाल चित्र नहि, पट्टी धोअब, खूँटा पर शस्त्र राखब, घोड़ा आ रोगीक पानि सँभालबाक श्रमसँ रचल अछि। बाहरी पहरेदार घायल साथीकेँ पानि देबाक लेल झुकल अछि; दोसरा पहरेदारकेँ चोट अछि। एहि विवरणमे सुरक्षा-व्यवस्थाक कमी देखाएल गेल अछि, मुदा ओकरा हिंसक प्रवेशक स्वीकृति नहि कहल गेल। शत्रुक 'दुर्बलता' आ थाकल मनुष्यक विश्राम-अधिकार एके दृश्यक दू प्रतिस्पर्धी अर्थ छथि।

कथावाचकक दृष्टि बेराबेरी हिंसक निश्चय, घायल सैनिक, परिचारिका आ सहायकपर टिकैत अछि। तें घटना केवल प्रतिशोधक मनोविश्लेषण नहि, शिविरक असमान अनुभवक बहुकेन्द्रीय चित्र अछि।

तम्बूमे धृष्टद्युम्न शस्त्र हाथमे नहि पबैत छथि; “जँ युद्ध अछि तँ शस्त्र दे” कहितो हुनका प्रतिकारक पर्याप्त समय नहि भेटैत। ई वध युद्धक सममित द्वन्द्व नहि, असहाय व्यक्तिपर आक्रमण अछि। तकर बाद उत्तमौजा–युधामन्युक दिशक सैनिक, शिखण्डीक दलक हल्ला, आ द्रौपदीक पाँच पुत्रक हत्या घटैत अछि। पाँच पुत्रकेँ पाण्डव पाँच भायसँ भिन्न मानबाक कथावाचकीय स्पष्टता आवश्यक अछि : आक्रमणक गलत लक्ष्यक कथा कहलाक नामपर वास्तविक मृत व्यक्तिसभक अलग जीवन समाप्त नहि होइत। परिवारक अभिलेखमे केवल पिताक नामसँ चिन्हाओल नवयुवकसभकेँ कथावाचक व्यक्तिगत भविष्य आ शिक्षा देबैत छथि। एहि ठाम विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ वंश-केंद्रित महाकाव्यीय वर्णनक भीतर अनाम सेवक आ अल्पज्ञात युवा जीवनक पुनःप्रवेश देखल जा सकैत अछि।

परिचारिका जीवित घायलकेँ सामानसँ आगाँ रखैत छथि। ओकर पानिक घैल खसि पड़ैत अछि; बचबाक प्रयत्न अपूर्ण रहैत अछि, मुदा ओहि अपूर्णताकेँ अपराध मानब अनुचित होयत। असफल बचाव आ सफल हत्या एके परिणाम-सरणी नहि। कृप एक घायलकेँ हटबाक संकेत दैत छथि, कृतवर्मा थोड़े देरि मार्ग छोड़ैत छथि, मुदा फेर हिंसक अभियानक प्रवेश-व्यवस्था थामैत छथि। क्षणिक दया आ स्थायी सहभागिता संग उपस्थित छथि। एहि अन्तर्विरोधक कारण कृपक उपदेश आ हुनकर कर्मक बीच नैतिक विसंगति आलोचनाक वास्तविक विषय बनैत अछि; हुनका सर्वथा निर्दोष विवेकक प्रतिनिधि घोषित करब मूल पाठसँ असंगत होयत।

कथनकाल, परिणाम आ सौप्तिकक पुनर्पाठ

अध्यायक काल-सीमा साँझक घायल दुर्योधन, वटवृक्षक रात्रि, शिविरक आक्रमण आ भोरक नाम-पञ्जी धरि सघन अछि। कृप द्वारा प्रस्तावित 'भोर धरि ठहरू' आ अश्वत्थामाक तत्काल निर्णय समयक नैतिक अर्थ बदलैत अछि। युद्धक दिनक बाहरी घटनासँ पिताक बचपन-स्मृतिमे क्षणिक पूर्वदीप्ति अछि; उल्लूक आक्रमण भविष्यक हिंसाक उपमानात्मक पूर्वाभास बनैत अछि, भविष्य-दर्शनक प्रमाण नहि। तृतीय-पुरुष कथावाचक एकाधिक आन्तरिक स्थितिपर पहुँचैत छथि, मुदा सभ पात्रक सोच एके समय समान रूपसँ नहि खोलैत। पाण्डव शिविरक अज्ञात सेवक आ घायलक अनुभवद्वारा कथकक नैतिक दायरा विस्तृत होइत अछि।

भोरमे अश्वत्थामा पाण्डव भाइसभ नहि भेटबाक सूचना दैत छथि, दुर्योधन “तखन के मरल?” पुछैत छथि। ई प्रश्न प्रतिशोधक ‘विजय’क कथाकेँ उलटि दैत अछि—अपेक्षित शत्रु जीवित, मुदा अन्य अनेक जीवन समाप्त। कृप मृतकक वधकेँ वीरकथा नहि लिखबाक आग्रह करैत छथि। सरोवरपर अपन पति खोजैत स्त्री आ एक बच्चाक आगमन राजनीतिक इतिहाससँ पृथक नाम-पत्ता–जीवन-सूचनाक अधिकार उपस्थित करैत अछि। सारथिक दू घायलकेँ उठा सकबाक क्षमता, बचल लोकक नाम पूछब, मृतकक देह सम्मान सहित सँभालब आ परिवारक सूचना पठाएब पूर्वक आपदा-अध्यायसभक जीवनरक्षी श्रमसँ वास्तविक नैतिक सम्बन्ध गढ़ैत अछि। **प्राचीन रातिमे हिंसा, आधुनिक रातिमे बचाव**—ई साधारण समानता नहि, उलटल समांतरता अछि।

कलात्मक सफलताक मूल कारण प्रतिशोधक अवरोधित नायकत्व अछि। युद्धोन्मादक वर्णनमे भीषण क्रूरता सजावट नहि बनैत; पात्रक निजी कारण, सहायकक भय, मरणासन्न सैनिकक देह आ नाम पूछैत जनसाधारणक श्रम क्रूरताक सामाजिक विस्तार उजागर करैत अछि। सीमा सेहो स्पष्ट अछि : कृपक नैतिक तर्क अनेक बेर अत्यन्त व्यवस्थित आ आधुनिक अधिकार-भाषामे आबैत अछि; एहि कारण प्राचीन कालधाराक पात्रक ऐतिहासिक वाणी आ आधुनिक आलोचकक भाषा बीच दूरी कतहु कम भऽ जाइत अछि। अश्वत्थामाक अन्तर्मनक हिंसक असंगति प्रबल अछि, मुदा द्वारकातक कृप–कृतवर्माक मानसिक टूटन अल्प दृश्य-स्थान पबैत अछि। ई कमजोरी सँ कृति निरर्थक नहि, उलटे ओकर उपदेश-विरुद्ध क्रियाक अन्तर्विरोध आओर सूक्ष्म कलात्मक विस्तार माँगैत अछि। अध्यायक सुनिश्चित निष्कर्ष एतबे : रात्रिहिंसा घटि चुकल, मृतक जीवित नहि लौटलाह, दोषक कथा लिखल जाएब एखन शेष अछि, आ घायल जीवनक देखभाल फेर आरम्भ भऽ रहल अछि।

अध्याय ११४ — दवाइ आ बचल श्वास

जलप्रवेशसँ श्वाससङ्कट धरि : देहक तात्कालिक घटना-पञ्जी

“दवाइ आ बचल श्वास” प्राचीन रणभूमिक कोलाहलसँ एकदम भिन्न, अस्पतालक पुरान पाँखक भीजल बोरा उठबैत उर्मिलाक दृश्यसँ शुरू होइत अछि। बोरा स्वयं पानि सोखि भारी भऽ गेल अछि; कादोक धार पुरान चिन्हसँ दू अँगुर आगाँ बढ़ल अछि। बाहरी नाली आ भीतरी चुआनक कागद अलग रहितो जमीनपर जलधारा मिलि जाइत अछि। ई पर्यावरणीय कारणक जटिलता अछि : भौतिक परिणाम मिललासँ कारणक दूनू स्रोत एके नहि भऽ जाइत। उर्मिला पहिने सफाइ नहि, रोगीकेँ कता लेब से तय करबाक लेल नर्सिंग-कक्षक खबर दैत छथि। आम श्रमक ‘छोट’ क्रिया—घण्टी बजाएब—संकट-कथाक पहिल निर्णायक परिवर्तन अछि।

नर्सिंग-कक्षक घड़ी चारि बजि सैंतीस मिनट देखबैत अछि; बाहरी फाटकक घड़ी पाँच मिनट पाछाँ अछि। जमुना देवीक श्वास अचानक कठिन होइत अछि, अनवरी पानि बढ़ेबाक पहिल सहज प्रतिक्रिया रोकि सलमाकेँ बजबैत छथि। सलमा प्रशिक्षित सहायता आ स्वीकृत उपकरण मँगबैत छथि; अनिरुद्ध उपलब्धता-जाँच आ उपचारक आदेशक काजमे पहुँचैत छथि। आपातकालक विषयक भौतिक परिस्थिति एकटा वृद्धाक देह आ एकटा पानि-भिजल गलियाराक जोड़पर बनैत अछि। 'दवाइ' केवल उपकारक वस्तु नहि; निर्दिष्ट सुरक्षित स्रोत, योग्य टोली आ वास्तविक उपलब्धता बिनु औषधीय वस्तु उपयोगी प्रमाण नहि।

छोट उपचार-कक्ष नजदीक रहितो असुरक्षित अछि, पाछुक देहरीक लोहेक पल्ला ढीला अछि, सुरक्षित घुमाउ बाट लम्बा पड़ैत अछि। अनिरुद्ध एहि बेर छोट असुरक्षित बाटक बदला लम्बा परखल मार्ग चुनैत छथि। ई निर्णय पूर्वक झुकावक वास्तविक संशोधन अछि, मुदा अचूक सुरक्षा-गारंटी नहि : खाटक पहिया भीजल जोड़पर अटकैत अछि, लोहेक पल्ला हिलि अनिरुद्धक बाँह घायल करैत अछि। खाट नहि उलटल, जमुना तत्काल मृत्युकेँ नहि भेटलीह, अनिरुद्धक बाँह घायल भेल—एहि तीनटा पृथक अवस्थाकेँ एक सनसनीपूर्ण 'विनाश'मे नहि गड्डमड्ड करब चाही।

अनिरुद्धक घायल हाथ : चिकित्सकीय अधिकारक पुनर्वितरण

सलमाक तात्कालिक आदेश “दुनू रोगी छथि” एहि अध्यायक संरचनात्मक सूत्र अछि। जमुनाक श्वासक संकट आ अनिरुद्धक रक्तस्रावक आवश्यकता अलग उपचार माँगैत अछि। अनिरुद्ध घाव लगितो निर्देशन करबाक चाहैत छथि, मुदा दोसर पालिक चिकित्सक हुनका स्वयं रोगी रूपमे जाँच आ उपचार स्वीकार करबबैत छथि। ई दृश्य अधिकार-विलोम थिक : जे देह सामान्यतः निदानक विषय बनबैत छल, ओ स्वयं निदानक विषय भऽ जाइत अछि। किन्तु कथा एहि भूमिकाबदलकेँ चिकित्सकक अपमान नहि, जिम्मेदारी वितरित करबाक प्रशिक्षण बनबैत अछि। सलमा आ प्रशिक्षणप्राप्त टोली जमुनाकेँ सुरक्षित कक्षमे पहुँचबैत छथि, जखन अनिरुद्ध आवश्यक पूर्व-इतिहास बतबैत छथि, अंतिम उपचार-निर्णय नहि देताह।

अनिरुद्ध अपने आपूर्ति-सारक पूर्व त्रुटि आ सरस्वती देवीक मृत्यु-जाँच स्मरण करैत छथि। एहि पूर्वदीप्तिमे दोषबोध उपस्थित अछि, मुदा नब चोट पुरान चूकक न्यायिक दण्ड नहि; ई भेद स्वयं पात्र बुझैत छथि। शैलजा पुरान मृत्यु-प्रकरणक समीक्षा-तिथि माँगैत छथि आ अनिरुद्धक घावमे अपन सासुक प्रश्न गुम नहि होएबाक आग्रह करैत छथि। एहि दृश्यसँ उपन्यास प्रतिशोधात्मक कर्मफल आ संस्थागत उत्तरदायित्वक बीच सूक्ष्म दूरी रखैत अछि। पात्रक शारीरिक पीड़ा ओकर स्वतन्त्र जाँच-फाइल बन्द नहि करैत। नैतिक उत्तरदायित्वक ई व्याख्या अध्याय ११३ क अश्वत्थामाक 'पिताक बदला'क संग तुलना करबाक औचित्य दैत अछि; मुदा आधुनिक अस्पतालमे प्राचीन घटना घटित नहि, केवल नैतिक प्रश्नक पुनर्स्थापन अछि।

सुपुर्द कएल, पहुँचायल आ रोगीकेँ देल : दस्तावेजीय क्रियापदक प्रमाण

जाँचाधीन औषधि-पेटी सीलबन्द रहैत अछि, आ स्वीकृत सुरक्षित स्रोतसँ सामग्रीक व्यवस्था होइत अछि। आपातकाल एकर नियामक सीमा तोड़बाक स्वतः अनुमति नहि। देवी गोंड अपन प्रशिक्षण-पंजीमे ‘दवाइ पहुँचायल’ लिखने छथि, जखन वस्तुतः केवल बन्द पेटी कक्षमे अनने छथि; निरीक्षिका ‘सुपुर्द कएल’ लिखबबैत छथि। एहि छोट क्रियापद-संशोधनमे कथाक ज्ञानमीमांसात्मक शक्ति अछि। सामग्रीक परिवहन, हस्तान्तरण आ रोगीक वास्तविक औषधि-प्रशासन तीनटा अलग क्रियाक प्रमाण छथि। एकर बीचक गलत समानता भविष्यक उपचार-इतिहासमे मिथ्या उपलब्धता रचि सकैत अछि। आख्यानगत विषय-सीमा आ शब्दबोधक दृष्टिसँ एतय शब्दक क्रियार्थक भिन्नता नैतिक रूपसँ फलदायक बनैत अछि।

उर्मिला चादर आ पट्टीक दू कक्षक गणना अलग रखैत छथि, कारण एक रोगीक उपयोग दोसर नामपर चढ़ला सँ वेतनकटौती आ गलत उपचारलेखा दूनू सम्भव अछि। तुलसी तैयार सुरक्षित वाहन आ केवल 'खाली गाड़ी'मे भेद करैत छथि; चालकक प्रतीक्षाक घण्टा लेल पृथक भुगतान स्वीकृत होइत अछि, रोगीकेँ दिखावटी ढुवाइ नहि। देविक प्रशिक्षण, उर्मिलाक कपड़ा-पञ्जी, रुखसानाक भोजन आ चन्द्रिकाक गरम पानि चिकित्सा-संस्थानक भितरी/बाहरी श्रम-विन्यास बनबैत अछि। चिकित्सक नायक एकमात्र उद्धारक नहि; जँ सलमाक निर्णय, उर्मिलाक मार्ग-सफाइ, अनवरीक सूचना आ प्रशिक्षित चालकक विश्राम हटाओल जाए, कथा-परिणाम स्वयं बदलि जाएत।

परिवार, निजता आ ‘बचल श्वास’क अनिर्णीत भविष्य

अनवरी जमुनाक घरक सदस्य नहि, मुदा संकट देखलाक कारण उचित सम्पर्कपर सूचना देबाक माँग करैत छथि; सलमा निजी चिकित्सकीय ब्यौरा सार्वजनिक सूचीपर नहि टाँगबैत छथि। पुतोहु आइब, हाथ पकड़ब, सीमित भेटक अनुमति पाबब आ अगिला परिवारजनकेँ बेराबेरी खबर देब नारी-पात्रक देखभालक निर्णयकेँ निजी अधिकार बनबैत अछि। एखन श्वासमे सुधारक संकेत अछि, मुदा अन्तिम आरोग्य अथवा अस्पतालसँ छुट्टीक घोषणा नहि। पुतोहुक हथेलीपर जमुनाक प्रत्युत्तर पारिवारिक अनुभवक सत्य अछि, चिकित्सकीय मापनक विकल्प नहि।

जमुनाक श्वासक संग पुरान पाँखक नाली निरन्तर टपकैत रहैत अछि। अन्तमे नब घुमाउ बाटक संकेत टाँगल जाइत अछि; अनिरुद्ध ‘घायल; प्रत्यक्ष उपचारक जिम्मेदारी हस्तान्तरित’ लिखैत छथि, आ सलमा अगिला निरीक्षणक समय निश्चित करैत छथि। दुनूक अलग कलम कथा-विन्यासमे कार्य-विभाजनक सघन वस्तु-बिम्ब बनैत अछि। सौप्तिक-पर्वक भय एतय निद्रा-भङ्गक हिंसा नहि, निद्राहीन सेवाक परिश्रम अछि। अस्पतालक समय लगातार चलैत अछि; कोनो एक व्यक्तिक उपस्थितिक अभाव चिकित्सा-व्यवस्थाकेँ समाप्त नहि करबाक चाही।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : तात्कालिकता आ प्रक्रियागत विस्तार

अध्यायक काल-संघटना रातुक अन्तिम पहर, भोर, दुपहर आ अगिला रातिक पालि धरि पसरल अछि। संकट-क्षणमे खाट अटकब, पल्ला टकरायब आ निर्देश भेटब विस्तृत दृश्यक रूप पबैत अछि, मुदा अस्पतालक लेखा–भोजन–पहरेदारीक दृश्य समांतर चलैत अछि। तृतीय-पुरुष कथक सलमा, अनिरुद्ध, जमुना, अनवरी, उर्मिला, देवी, शैलजा आ पुतोहुक क्रिया-बोधक बीच गमन करैत छथि। जलनिकासी, गलियारा आ चिकित्सकीय कक्षक संयुक्त काल-स्थान वास्तविक कथा-उत्पादक अछि; नदी केवल पृष्ठभूमि नहि। आख्यानक 'द्विकालीन अन्तर्पाठ' सङ्केतक विपरीत एहि अध्यायमे स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि भेटैत अछि। तेँ सौप्तिक नाम आ उपचार-सङ्कटक नैतिक प्रतिलोमक रूपमे मात्र अन्तर्पाठीय सम्बन्ध सिद्ध अछि।

कलात्मक सफलतामे सबसँ प्रभावी अनिरुद्धक भूमिकाबदल, सलमाक तुरन्त निर्णय आ शैलजाक अनवरत प्रश्न छथि। आपदा-प्रसंगकेँ करुणरसक भाव-संसाधन देल गेल, किन्तु अति-चमत्कारक सहारे नहि। सीमा ई जे संकट सफलतापूर्वक सँभालबाक बाद बहुत पात्र क्रमशः उत्कृष्ट प्रशासनिक वाक्य कहैत छथि; वास्तविक उपचारक अनिश्चित धड़कन, परिवारक ऊहापोह आ व्यक्तिस्वरक असमानता अधिक लम्बा ठहरि सकैत छल। तथापि छत–नाली, चिकित्सकीय मृत्यु-जाँच आ जमुनाक भविष्य खुलल रहलासँ उपन्यास परिणतिहीन विजयक कृत्रिम सुखान्तक दोषसँ बचैत अछि। 'बचल श्वास' एक समयबद्ध चिकित्सकीय परिणाम अछि, मृत्युकेँ स्थायी रूपेँ परास्त करबाक घोषणा नहि।

अध्याय ११५ — तस्वीरक अनुमति

अपठनीय चेतावनीसँ दृश्य-साक्ष्य धरि : सार्वजनिक ज्ञानक सीमा

अध्यायक आरम्भ पुरान पाँखक देहरीपर भीजल लाल रस्सी आ पढ़बामे कठिन चेतावनी-पन्नासँ होइत अछि। दू वृद्धा बन्द बाटपर आबि ठमकैत छथि; संकेत हुनका रुकबैत अछि, मुदा नव घुमाउ बाटकेँ अपने सँ पूर्ण सुरक्षित घोषित नहि करैत। पहरादारक सहायता लेलाक बाद वृद्धासभ ऊँच बरामदासँ जाइत छथि। एतय लिखित सूचनाक अस्तित्व आ ओकर सार्वजनिक बोधगम्यता दू भिन्न स्तर अछि। जे व्यक्ति आधा भिजल अक्षर नहि पढ़ि सकैत अछि, ओकरा लेल तीर, पहरा आ मौखिक निर्देशन समान महत्त्वक स्रोत छथि। घटना-पञ्जीक पहिल परिवर्तन कोनो डिजिटल प्रकाशन नहि, दृश्य-अक्षमताक बीच सुरक्षित मार्गदर्शन अछि।

उर्मिला निकासीमे उपयोग भेल चादरकेँ 'लापता' घोषित नहि करबाक जाँच करैत छथि आ संकेतक नब दिशाचिह्नपर “भोरक जाँच” लिखबबैत छथि। ई एकटा समय-सीमित सत्य अछि; कालिक सुरक्षित बाट आजुक जलवृद्धिक बाद असुरक्षित भऽ सकैत अछि। आख्यानगत भाषामे कथनक समयावच्छेदक हटला पर साध्य बदलि सकैत अछि। संकेतक कापीमे मात्र एक शब्दक वृद्धि—'भोरक'—सार्वजनिक चेतावनीक ज्ञानगत उत्तरदायित्व बढ़बैत अछि। एहि सूक्ष्म उद्घाटनक कारण बादक मोबाइल-वीडियो प्रसंग एकाएक आबि पड़ल उपदेश नहि, समय-सापेक्ष प्रमाण-संरक्षणक विस्तार बनैत अछि।

बाँसक सीढ़ी, गोमतीक चेतावनी आ तीस-पैंतीस सेकेंडक सीमा

दुपहरक सामग्री-निकासी योजना पर अधिकारी जल्दी करैत अछि, मुदा तारा आ गोमती जोड़ आ गादक जाँचबिनु प्रवेशक अनुमति नहि दैत छथि। संकेत दूरसँ रस्सी, भीजल पल्ला आ जलधाराकेँ एक फ्रेममे राखि छोट भिडियो बनबैत अछि। तखने एक कर्मचारी बाँसक सीढ़ी लेने आगाँ बढ़ैत अछि; गोमतीक रोकबाक आवाज सुनितो सहायक सीढ़ीक छोर आगाँ धकेलैत अछि; पल्ला चरमराइत अछि, पलस्तर झरैत अछि आ सहायक गादमे धँसि असन्तुलित होइत अछि। गोपाल माझीक रस्सी आ ताराक निर्देशनसँ ओ सुरक्षित बाहर अबैत अछि। घटनात्मक परिणाम निश्चित अछि : सहायक फँसल नहि रहल, खरोंच लागल, आ काजक आदेश देबाक क्रमक जाँच बाकी अछि। वीडियोमे सापेक्ष समयक किछु अंश सुरक्षित अछि; पल्ला कमजोर केना भेल, ओकर पूरा इतिहास नहि।

निरीक्षक सम्पूर्ण फोन माँगैत छथि, कारण हुनका ‘फोनमे सब रिकॉर्ड’ भऽ गेल बुझाइत अछि। संकेत स्पष्ट करैत अछि जे तीस-पैंतीस सेकेंडक दृश्य भेटि सकैत अछि; वीडियो शुरू होएबाक पहिने कोठरीमे की भेल, से ओकरा नहि ज्ञात। एहि कथनमे जानल बातक सीमा स्वयं साक्षी तय करैत अछि। गोमती चेतावनीक आवाज सुनाइबाक तथ्यसँ पुरान मरम्मतिक दोषी सिद्ध नहि करैत छथि। एतय प्रत्यक्ष दृश्य, श्रवण, पूर्व इतिहास आ जाँच-अधिकारीक अनुमान अलग श्रेणी छथि। मोबाइलक फ्रेम जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, फ्रेमक बाहरक असिद्ध जगहो ओतबे महत्त्वपूर्ण। कथाक सामाजिक शिक्षा फोटो तकनीकक सर्वज्ञता नहि, ओकर अपूर्णता पहचानब अछि।

अनुमतिक दस्तावेज : फोन एक जीवन अछि, जब्त करबाक खुलल अभिलेख नहि

संकेतक असहजता एतय केवल सामान्य लजाब नहि। फोनमे सहपाठीक निजी स्नेह-सन्देश आ भविष्यक पढ़ाइक बात अछि। अधिकारी सम्पूर्ण गैलरी चाहैत छथि, मुदा तारा केवल निर्दिष्ट पल्ला, पानि आ रोकबाक आवाजक सीमित दृश्य पर्याप्त कहैत छथि। नैरा संकेतकेँ बतबैत छथि जे सार्वजनिक जाँचमे आवश्यक सामग्री देब आ निजी जीवनक अधिकार छोड़ि देब एक बात नहि। सरिता पहुँचि सबसँ पहिने पुत्र घायल अछि की नहि, से पुछैत छथि, फेर ओकर समस्त निजी फोन खोलबाक असहमति स्पष्ट करैत छथि। मायक सलाह उपस्थित अछि, मुदा संकेत स्वयं निर्णय-प्रक्रियाक भागीदार रहैत अछि; एकरा केवल मातृ-प्रतिनिधित्वक उदाहरण कहब ओकर स्वायत्तताकेँ कम करब होयत।

रमाक देखरेखमे तीन कागद बनैत अछि : संरचनात्मक निरीक्षण, प्रत्यक्षदर्शीक बयान आ वीडियो उपयोगक अनुमति। अनुमतिमे आजुक पल्ला, बाहरी पानि, रोकबाक आवाज आ सहायकक बाहर आबबाक क्रम सीमित अछि; निजी चित्र–पत्र–सन्देश निषिद्ध। पासवर्ड सौंपबाक आवश्यकता नहि; मूल वीडियो संकेतक फोनमे, निर्दिष्ट प्रति प्राप्तकर्ताक नाम–समय–अवधि सहित, आ सार्वजनिक प्रसार लेल पुनः अनुमति। एहि नियमक सौन्दर्य ई अछि जे पात्र न तऽ जाँच रोकैत अछि, न सम्पूर्ण निजता समर्पण करैत अछि। सीमित सहयोग तीसरा विकल्प अछि। एतय सहमतिक वस्तु, उद्देश्य, समय आ प्राप्तकर्ताक भिन्नता निर्णयक ठोस संरचना बनैत अछि।

गोमती अपन चेतावनी-आवाज जाँच लेल उपयोगक अनुमति दैत छथि, मुदा ओहि आवाजकेँ जानि-बुझि अपराधक स्वीकृति बनाकऽ सम्पादित नहि करबाक शर्त रखैत छथि। सहायक अपन पैरक दृश्य उपयोगक अनुमति दैत अछि, मुदा घरक नाम, मायेक परिचय आ चित्कारकेँ वायरल सामग्री नहि बनएबाक आग्रह करैत अछि। एक दूरक नर्सक छवि अनायास फ्रेममे अछि; रमाक प्रस्ताव सार्वजनिक संस्करणमे अनावश्यक आकृतिक अस्पष्ट करब, मूल प्रति बिना छेड़छाड़ सुरक्षित राखब अछि। विभिन्न व्यक्ति, विभिन्न आवाज आ अलग उपयोग—ई सभक अलग सहमति आ अधिकार अछि। एतय नैतिक आख्यानशास्त्र 'प्रमाण सुरक्षित करबाक लेल ककरा कतेक जोखिम दऽ सकैत छी' प्रश्नसँ सक्रिय होइत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण आ मनोवैज्ञानिक अर्थ : नायक-वीडियोक अस्वीकार

एहि अध्यायमे दृष्टिकेन्द्रण मुख्यतः संकेतक अनुभवक ओर झुकल अछि। ओकर काँपैत अँगुरी, निजी सन्देशक स्मृति, सार्वजनिक अधिकारीसँ असहमति करबाक भय आ घरक अन्तिम क्षण प्रमुख आन्तरिक दृष्टि बनबैत अछि। तैओ तारा, गोमती, नैरा, सरिता, रमा, उर्मिला आ रुखसानाक स्वतंत्र निर्णय ओकरा केवल 'बहादुर कैमरा-नायक' बनबाक बाट नहि दैत। नैरा सार्वजनिक शीर्षकमे संकेतक नामकेँ नायक-रूपमे उछारबाक बदला स्वीकृत सीमित साक्ष्यक उल्लेख करैत छथि। नायकत्वक प्रतिनिधित्वक प्रश्न एहि रूपमे पुनर्गठित होइत अछि : घेराक बाहर सुरक्षित ठाढ़ व्यक्ति कैमरा चलौलक, वास्तविक उद्धार रस्सी थामनिहार टोली केलक।

नगरक संवादकर्मी वायरल प्रसारक नामपर संकेतक प्रेम-सन्देशक उपहास करैत अछि। एहि दृश्यमें एक प्रासंगिक साहित्यिक विरोध अछि : सार्वजनिक हितक नामपर निजी स्नेह-अभिलेख खँखोरब स्वयं सत्ताक दुरुपयोग भऽ

सकैत अछि। संकेत निजी सन्देश भयवश मेटैत नहि, जाँचक सीमा निर्धारित करैत अछि। घर पहुँचलाक बाद ओ स्वयं छोट नोट लिखैत अछि जे वीडियो ओकर पूरा दिन आ पूरा जीवन नहि। एहि अन्तर्मन-वाक्यसँ डिजिटल युगक 'सबूत' आ व्यक्तिक अखण्ड जीवनक बीच दूरी स्थापित होइत अछि। सरिताक भातक डिब्बा आ भोजनक आग्रह पहिल अध्यायक रसोइ-वृत्तकेँ निर्व्याज घरेलू सन्दर्भ दैत अछि, मुदा एहि ठाम भात डिजिटल श्रमक विरामक पदार्थ सेहो अछि।

सामाजिक श्रम आ साहित्यिक सीमा

रुखसाना राहत-रसोइक अतिरिक्त काजकेँ अनाम स्वयंसेवा मानब नहि दैत छथि; फोटोसँ पहिने संख्या, रान्हनिहारक नाम आ भुगतान-पर्ची माँगैत छथि। उर्मिला रोगीक गोपनीयता लेल परदा टाँगैत छथि। वृद्ध नाविककेँ अफवाहक बदला प्रकाशित स्थान-विशिष्ट सूचना पढ़ि सुनाओल जाइत अछि। ई तीन दृश्य फोटो-आधारित सत्यक सामाजिक प्रतिपक्ष छथि : प्रमाण केवल देखने वस्तु नहि, विश्वसनीय शब्द, सही श्रमलेखा आ निजी सीमाक संरक्षित रहब सेहो अछि। उपमानक दृष्टिसँ वीडियो एक प्रसंगक सादृश्य दोसर दुर्घटनापर आरोपित नहि करैत; तारा पल्लाक वास्तविक कमजोरी लेल पुरान मरम्मति-बही आ संरचनात्मक जाँच आवश्यक कहैत छथि।

अध्याय भोरक चेतावनी सँ अगिला राति धरि कालानुक्रमिक अछि; दुर्घटनाक किछु सेकेंडक दृश्य विस्तृत सामाजिक बहसक कारण बनैत अछि। ई कथन-अवधि आ घटना-अवधिक असमान अनुपात अछि। कलात्मक उपलब्धि डिजिटल अधिकारकेँ निर्जीव नियम-संग्रहक बदला डरैत, सीखैत, प्रेमक सन्देश बचबैत किशोरक अनुभवसँ देखएब अछि। सीमा ई जे अनुमति-पत्रक लगभग प्रत्येक सम्भावित उपधारा संवादमे स्पष्ट होइत गेलासँ कथा कतहु निर्देशिकासदृश बनैत अछि। संवादकर्मी अपेक्षाकृत एकपक्षीय अनैतिक प्रतिपक्ष भऽ जाइत अछि; जाँचक सूचना-आवश्यकता आ निजता बीच अधिक कठिन, समुचित असहमति सम्भव छल। तथापि घटना-विशेषक समयक्रम, आंशिक दृश्य आ वास्तविक बचावक कारण ई विमर्श केवल सिद्धान्त नहि रहैत। अध्यायक अन्तिम प्रमाण-सीमा स्पष्ट अछि : एक लोक सुरक्षित बाहर अएल; सीमित भिडियो सुरक्षित अछि; पूरा फोन सार्वजनिक नहि भेल; पुरान पाँखक संरचनात्मक दशा एखन निर्णायक रूपसँ प्रमाणित नहि अछि।

अध्याय ११६ — पुरान पाँख

बन्द होइत बाट : कालिक सुरक्षित ठाम आइक प्रमाण नहि

अध्याय ११६ मे अस्पतालक पुरान पाँख स्वयं घटनाक केन्द्रीय स्थल-कारक बनैत अछि। आरम्भमे गोमती भीजल रस्सीक खूँटीक नीचाँ फुलल माटि देखैत छथि, खूँटी कसबाक बदला ओकरा चारू कात नब घेरा बना सुरक्षित जमीनक परीक्षण माँगैत छथि। उर्मिला जखनि दू रोगीक पुरान सामानक पञ्जीमे खाली स्थान रखैत छथि, ओ वस्तु-पुनर्प्राप्तिक अधिकार आ कोठरीमे प्रवेशक सुरक्षित अनुमति अलग रखैत छथि। तारा पलस्तरक नव कण देखितो दरारक भीतरी गहराइकेँ बाहरसँ सिद्ध नहि मानैत छथि। एहि तीन आरम्भिक क्रियामे स्थल, समय आ ज्ञानक अभाव त्रिक सम्बन्ध बनबैत अछि : नब क्षति देखाइत अछि, मुदा ओकर पूर्ण कारण–व्याप्ति अनिश्चित; एही अनिश्चितताक बीच प्रवेश रोकबाक निर्णय आवश्यक अछि।

अध्याय ११५ मे एक सहायक सुरक्षित बाहर अएल, से आइक ढाँचा मजबूत होएबाक प्रमाण नहि। नैरा कालिहक भिडियो फेर अनावश्यक नहि चलबैत छथि, आ समय-मिलानक स्वतंत्र सूचना राखैत छथि। पाछुक चिकित्सालय, गेट आ फोनक घड़ी अलग-अलग चलैत अछि; एके घटनाक क्रम बनाबए लेल ओकरा कृत्रिम रूपेँ एक मिनटपर आनब असत्य होएत। कालिक दृष्टिसँ ई सूक्ष्म घटना अछि : आख्यानक सत्य एकटा सार्वकालिक वर्तमान नहि, तिथि आ उपकरणक अनिश्चित समयसँ संयमित रहैत अछि। कालिहक तस्वीर आजुक दरारक प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि।

प्लास्टरक पतरी खसब : जोखिमक वास्तविक उत्कर्ष आ प्रशासनिक निर्णय

आठ बजे लग चबूतराक कात पलस्तरक दू पातर पत्ती खसैत अछि; किछु समय बाद पल्लाक ऊपरक जोड़ झुकल देखाइत अछि। अदिति आदेश दैत छथि जे सभ व्यक्ति निषिद्ध सीमासँ बाहर रहथि। एक वृद्ध रोगीक खाट सुरक्षित घुमाउ बाटसँ फेर लेल जाइत अछि; ओकरा घबराहट नहि, सटीक सीमित सूचना देल जाइत अछि। इंजीनियर सम्पूर्ण भवन कखन ढहत से नहि कहि सकैत छथि, मुदा ओ निर्दिष्ट भागक भार-सुरक्षा प्रमाणित नहि करैत छथि। ई दू निष्कर्ष अनुकूल–प्रतिकूलक सरल विरोध नहि; अनिश्चित विनाश-समय आ तत्काल उपयोग-असुरक्षाक अलग साध्य छथि। सुरक्षा-निर्णय लेल भविष्यक ध्वंसक पूर्ण भविष्यवाणी आवश्यक नहि।

भीड़मे “सभ रोगी दबि गेलाह” आ “किछु नहि भेल” सन विपरीत अफवाह उठैत अछि। नैरा दुनूकेँ सत्य मानि दोहरबैत नहि, बन्द निर्दिष्ट भाग आ सत्यापनाधीन व्यक्तिसूचीक आधिकारिक विवरण देखबैत छथि। अदिति पाछुक देहरी, लोहेक पल्ला, औषधि-कोठरी लगक मार्ग आ भीजल ओसारा बन्द करबाक आदेश दैत छथि, मुदा दू परखल सुरक्षित कक्षमे उपचार सशर्त चालू रखैत छथि। एहि ठाम 'सुरक्षा' सबटा संस्था बन्द कऽ देबाक सरल प्रतीक नहि; जे बन्द होएबाक चाही ओकरा बन्द करब आ जे उपचार चलि सकैत अछि ओकरा जारी रखब—दू अलग उत्तरदायित्व अछि।

दुपहरक निकट भीतरी पुरान कोठरीसँ फेर असमान आवाज आ ईंट–ऊपरी कोनाक टुकड़ी खसब घटैत अछि। एक युवा मजदूर जीविकाक चिन्तासँ भीतरी सामान उठाबए चाहैत अछि, गोमती हुनका रोकैत छथि। मजदूरीक हानि वास्तविक अछि, मुदा वेतनक बदला जान जोखिममे देब स्वीकार्य नहि। पुनः सुनल आवाजक बाद **पुरान पाँखमे सामान लेल प्रशिक्षित कर्मचारीक प्रवेश सेहो रोकल** जाइत अछि। ई पूर्वक आंशिक निषेधसँ कठोर नव निर्णय अछि। सभ अस्पताल बन्द नहि, निर्दिष्ट असुरक्षित संरचनात्मक भागक उपयोग पूर्ण रोकिनाइ अन्तिम प्रशासनिक स्थिति अछि। एतय संरचनात्मक कारणक पूर्ण निर्णायक प्रतिवेदन शेष अछि; 'अस्पताल ढहि गेल' कहब मूल पाठमे समर्थित नहि।

कारणक स्तर : दीवाल, गाद, नाली, गोदाम आ असमय मरम्मति

सुगनी बाहाक मुँह, गोदाम-विस्तारक दीवाल आ अर्धखुलल निकासक जलधारा अलग नापैत छथि। बाहरी पानि कने घटितो अस्पताल लग माटिक नमी ओहि अनुपातमे नहि घटैत; एक स्थानक जलस्तर दोसर स्थानक भीतरी चुआनक प्रत्यक्ष सूचक नहि। गोदाम बगल राखल ईंटक टुकड़ाक स्रोत सेहो बहुकालीन होएबाक सम्भावना अछि; सुगनी नमूनाकेँ समय–ठाम सहित अलग रखैत छथि। ललित विश्वकर्मा प्रस्तावित तत्काल दीवाल तोड़ि नब ईंट देबाक छोट ठेका स्वीकार नहि करैत छथि, कारण छतक भार, भिजल आधार आ बगल राखल सामग्रीक नाप शेष

अछि। एहि घटनासँ उपन्यासक पर्यावरणीय आख्यान सामाजिक अर्थसँ संपृक्त होइत अछि : निकासी खोलब एक खेतक पानि दोसर घरमे मोड़ि सकैत अछि।

पाँच हस्ताक्षरक पहिल राहत-सहमति गोदामक उपयोगयोग्य वस्तु, अर्धखुलल निकास आ पुरान पाँखक स्थायी संरचनात्मक सुरक्षाकेँ एके प्रमाणपत्र नहि बनबैत। देवलोकक कृपाक स्थानपर इहाँ स्थानीय श्रम, जलपथ आ वस्तुक भारक अनुशासित निरीक्षण अछि। आख्यानगत सन्दर्भमे 'गोदामक कक्ष खुलल' हेतु सँ 'निकास सम्पन्न', 'पहिने सुरक्षित घुमाउ बाट' हेतु सँ 'आज पूर्ण सुरक्षित', अथवा 'खसबाक ठोस दिन नहि जनैत छी' हेतु सँ 'चलैत रखब उचित'—तीनू दुष्ट अनुमान होयत। व्याप्ति आ उपाधिक सीमा धरब आवश्यक अछि। एतय ई तर्कपरख समीक्षात्मक पुनर्व्याख्या अछि, कथाभित्र सूत्ररूपेँ स्पष्ट लिखल आख्यानशास्त्र-शास्त्रार्थ नहि।

सामाजिक अभिलेख, विकेन्द्रित आवाज आ स्त्री-पात्रक कार्यक्षमता

गोमती रोकल कार्यघण्टा, मौखिक आदेश आ उपस्थित मजदूरक नाम अलग लिखबैत छथि। उर्मिला चादर–कम्बल–पट्टी आ रोगीक भोजनक अलग प्रयोजन गनैत छथि। तुलसी सुरक्षित भूमिपथ, गाड़ीक ईंधन, चालकक विश्राम अलग रखैत छथि; हीरा नावक नियमित क्षमता जलस्तर बढ़लापर नहि बढ़बैत छथि; रुखसाना असुरक्षित पाँखमे भोजन बनएबाक प्रस्ताव रोकैत छथि। ई सभटा 'महिला सभ सेवा कएलनि' सन एक वाक्यक सामान्यीकरणसँ व्याख्येय नहि। गोमतीक अवरोध बनएब, ताराक नाप, अदितिक लिखित निषेध, रमाक समय-संशोधन, नैराक सार्वजनिक सत्यापन, सलमाक उपचार-निर्णय आ सुगनीक जलनमुना—प्रत्येकक ज्ञान-आधार आ निर्णयक्षेत्र अलग अछि। ई दायित्व-विभाजन विदेह समानान्तर इतिहासमे अनदेखल श्रमक इतिहास पुनः लिखबाक उपयुक्त पाठ-सामग्री दैत अछि।

देवव्रत सार्वजनिक खेपक रसीदक जाँच देबैत छथि, मुदा निजी खाताक प्रमाणक अधिकार अलग मानैत छथि। फूलो अपन घरक भीजल अनाज आ बच्चाक निवासक प्रश्न सार्वजनिक मापनमे जोडबबैत छथि। एक वृद्धा अपन बेटाक पुरान सामग्री उठबाबए चाहैत छथि; चम्पा हुनकर नाम आ वस्तु-दावा दर्ज करबबैत छथि, निषेध तोड़ि भीतर प्रवेश नहि करबबैत। समूचा कथा-स्थान 'अस्पताल' मात्र नहि रहैत; घर, बाजार, गोदाम, खेत, बाहा, आश्रय आ श्रमिकक वेतन एके भौतिक संकटसँ संबद्ध होइत अछि। नैरा लोकक अपुष्ट गुमनाम भयकेँ नामित सूचना-व्यवस्थामे बदलैत छथि, मुदा ककरो नाम देखल बिनु 'सभ सुरक्षित' नहि कहैत। एहि अनिर्णीत सूचीमे उपन्यासक मृत्यु-अभिलेख-प्रसंगक दीर्घ प्रतिध्वनि अछि।

कथाविन्यास, आवृत्ति आ सीमित परिणामक सौन्दर्य

कथन भोरक पहिल नापसँ राति पहराक फेर व्यवस्था धरि दिनवार चलैत अछि। आठ बजे पलस्तर झरब, दुपहरक दोसर ध्वनि, साँझक नव सूचना-पट्ट—ई समयचिह्न घटनात्मक उत्कर्षक भिन्न बिन्दु छथि। कथावाचक बाहरी वस्तु-दृष्टिकेँ गोमतीक आर्थिक चिन्ता, तारा–अदितिक निर्णय-सम्बन्ध, उर्मिलाक थकान आ फूलोक गृह-आशंकासँ जोड़ैत छथि। दीवाल, रस्सी, दारार, गाद, ईंट आ जलधारा कोनो केवल सजावटी बिम्ब नहि; ई सबटा कारण–कार्यक प्रत्यक्ष पर्यावरण तैयार करैत अछि। अध्यायमे स्वतंत्र पौराणिक दृश्य नहि अछि; आख्यानक

'द्विकालीन' यांत्रिक सङ्केतक स्थानपर सौप्तिकक नैतिक प्रतिलोम आ आजुक स्थानिक भयक रूपमे सम्बन्ध देखब उचित अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ संरचनात्मक जोखिमक क्रमिक वृद्धि प्रभावी अछि : 'काल्हि बचल' सँ 'आइ पल्ला झुकल' आ फेर 'प्रवेश पूर्ण रोकिनाइ' धरि वास्तविक स्थिति बदलैत अछि। उर्मिला–नैराक थकान-बीचक हलुक हास्य कागदक लगातार तात्कालिकताकेँ मानवीय श्वास दैत अछि। मुदा पंजी, नाप, अनुमति आ आदेशकेँ बारम्बार सुविचारित संवादमे कहबाक कारण कथा कतहु सूचना-पुस्तिकाक गतिमे चलैत अछि। विशेषतः कतिपय अधिकारी आ श्रमिक असाधारण रूपसँ मिलैत-जुलैत तर्कशुद्ध स्वरमे अपन बात कहैत छथि; बहुस्वरता लिंग–पेशा–नामक विविधतासँ पूर्ण प्रमाणित नहि, भाषा आ मानसिक विरोधक असली अन्तरसँ होइत। तथापि बालकक भीजल अनाज, कर्मचारीक जीविकाचिन्ता आ रोगीक घुमाउ बाटक असुविधा एहि प्रक्रियागत एकरूपताकेँ तोड़ैत अछि। अन्तिम निर्णय वर्तमान-कालीन अछि : निषिद्ध भाग बन्द अछि, परखल कक्षमे उपचार चालू अछि, सामग्री–मजदूरीक दावा दर्ज अछि, कारणक अन्तिम संरचनात्मक जाँच आ अगिला दिनक जलपरीक्षण शेष अछि।

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय ११३–११६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

रात्रिक हिंसा आ रात्रिक उपचारक विपरीत नैतिक दिशासभ

अध्याय ११३ सँ ११६ धरि यात्रा एकटा निर्णायक अन्तर्पाठीय उलटाव निर्मित करैत अछि। अश्वत्थामा पितृशोककेँ असहाय लोकक जीवन लेबाक आज्ञा बनबैत छथि; अस्पतालक सलमा, उर्मिला, गोमती, तारा आ अनवरी असुरक्षा देखिकऽ जीवन बचाएब हेतु ठोस मर्यादा बनबैत छथि। अश्वत्थामाक शिविरमे परिचारिका आ सारथि घायलकेँ उठबैत छथि; आधुनिक अस्पतालमे उर्मिला आ तुलसी चादर, समय आ वाहनक सीमित व्यवस्था राखैत छथि। ई केवल 'भूतकाल बुराइ, वर्तमान अच्छाइ' नहि : कृप आ कृतवर्माक आंशिक दया हिंसक सहभागितासँ अलग नैतिक असफलता अछि, जखन आधुनिक अस्पतालमे घायल अनिरुद्धक पूर्व गलती आ अदितिक अधूर सुरक्षा-निर्णय उत्तरदायित्वक परीक्षणमे अबैत अछि। युग-समानता नहि, समान प्रश्नक विरोधी क्रियात्मक उत्तर एहि अन्तर्पाठक शक्ति अछि।

प्रमाण-सम्बन्धक चारि अलग प्रकार

पहिल अध्यायमे उल्लूक शिकारक प्रत्यक्ष दृश्यसँ मनुष्यहत्याक औचित्य बनबब हेत्वाभास अछि। दोसरमे 'दवाइ सुपुर्द' सँ 'रोगीकेँ दवाइ देल गेल'क अनधिकृत निष्कर्ष रोकल जाइत अछि। तेसरमे छोट वीडियोसँ पूरा फोनक निजी जगत वा भवनक पूर्व इतिहास धरि पहुँचबाक दावा अस्वीकार होइत अछि। चारिमे काल्हिक सुरक्षित बाटक प्रमाण सँ आजुक संरचनात्मक सुरक्षा सिद्ध नहि होइत। चारू ठाम प्रमाणक विषय, समय, स्रोत आ उपयोगक्षेत्र सीमाबद्ध छथि। आख्यानगत पक्ष–साध्य–हेतु आ उपाधिक उपकरण एहि भिन्नताकेँ विश्लेषित करबाक लेल उपयोगी अछि; मुदा ई समीक्षात्मक विधि अछि, मूल शास्त्रीय ग्रन्थक कल्पित उद्धरण नहि।

घटनात्मक घनत्व आ पाठकीय अनुभव

अध्याय ११३ क घटना-वक्र कर्तृ-निर्णय आ अपरिवर्तनीय हत्यासँ बनैत अछि : विकल्प → निषेधक उल्लङ्घन → अनेक मृत्यु → अपरिहार्य पछतावा। अध्याय ११४ क वक्र जोखिमपूर्ण स्थानान्तरण → अनिरुद्ध घायल → सलमाक अधिकारप्राप्त उपचार → जमुनाक समयबद्ध स्थिरीकरण अछि। अध्याय ११५ मे छोट बचाव-वीडियो → सम्पूर्ण फोन माँग → लिखित सीमित अनुमति → मूल प्रति आ सार्वजनिक प्रति अलग राखब, आ अध्याय ११६ मे बढ़ैत संरचनात्मक संकेत → आंशिक रोक → पुनः टुकड़ा खसब → निर्दिष्ट भागक पूर्ण प्रवेश-निषेध अछि। चारू कथामे निर्णयक परिणाम अलग-अलग पुनःनामित कएल जा सकैत अछि; एहिमे 'परिवर्तन-सङ्केत प्रति हजार शब्द'कें वास्तविक घटना-संख्या मानबाक आवश्यकता नहि।

कथन-स्वर, सामाजिक काल-स्थान आ आलोचनात्मक प्रतिपक्ष

प्राचीन राति एक सघन अन्धकारक भीतर पितृशोकक तर्कभ्रंश देखबैत अछि, आधुनिक अध्यायसभ एक-एक दिनक पुनर्माप, चिकित्सा-पालि, डिजिटल सहमति आ अगिला आदेशमे विस्तार पबैत अछि। शिविरक अनाम परिचारिका, नौजवान सारथि आ मृत युवकक भविष्य इतिहासक सामान्य नाम-पञ्जीकें चुनौती दैत अछि; आधुनिक वार्डमे उर्मिलाक कपड़ा, रुखसानाक भोजन आ गोमतीक रोकल मजदूरी एके लोक-इतिहासक अधिक स्पष्ट लेखा बनैत अछि। भारतीय करुण–भयानक रसक सम्भावना आ औचित्यक परीक्षण सभ अध्यायमे अलग फल दैत अछि : शस्त्रहीन वधक वर्णन वीररसक महिमामण्डनक विरोध करैत अछि; जमुनाक बचल श्वास दयाक नाटकीय प्रदर्शन नहि, परिश्रमसिद्ध अस्थायी परिणाम अछि।

एहि खण्डक विशिष्ट कलात्मक सीमा सेहो अछि। प्राचीन पात्रक वाणी कतहु आधुनिक नीति-विवेचनक अति-सुव्यवस्थित भाषा ग्रहण करैत अछि, आ आधुनिक पात्रसभ संकटमे सेहो बारम्बार प्रमाण, सहमति, मजदूरी, गोपनीयता आ सीमा अत्यन्त निर्मल शैलीमे स्पष्ट करैत छथि। एहि कारण कलात्मक अनिश्चितता कतहु कार्यालयी नीतिशास्त्रक पुनरावृत्तिसँ ढकि सकैत अछि। मुदा चोरल जीवनक अपरिवर्तनीयता, चिकित्सकक घायल हाथ, भयमे काँपैत संकेतक अँगुरी आ गोमतीक आर्थिक आशङ्कित युवा मजदूरक चित्र बहिर्जगतक चिर-संकटकें पाठकक देह-अनुभवमे लौटा दैत अछि। चारू अध्यायक कोनो सरल सुखान्त नहि : शिविरक मृतक नहि लौटैत, जमुनाक उपचार जारी अछि, भिडियो दुर्घटनाक सर्वसमाधान नहि, आ पुरान पाँखक संरचनात्मक जाँच शेष अछि।

अध्याय ११७ — नैराक चुनाव

चुनावक विषय : सुरक्षित, असुरक्षित आ एखन अपरखल

“नैराक चुनाव”क आरम्भ अस्पतालक सूचना-मेजपर तीन कागद राखबासँ होइत अछि—पुरान पाँखक बन्द बाट, तुलसीक गाड़ी घुमेबाक स्थान आ अदितिक साँझक माप। ई तीनू दस्तावेज एकहि विपत्तिक विवरण अवश्य छथि, मुदा एक-दोसराक बदला नहि। नैरा अपन कापीमे ‘बन्द’, ‘शर्तसहित खुलल’ आ ‘पुनः परीक्षण बाकी’ तीन वर्ग बनबैत छथि। वर्गीकरणक ई क्रिया अध्यायक प्रथम निर्णय अछि; एतय संकटकें केवल डर अथवा वीरताक

द्विभाजनमे नहि राखल गेल अछि। ‘सुरक्षित’ शब्दक संग समय, स्थान, भार आ उपयोगक सीमा जोड़बाक हुनकर आग्रह सूचना-लेखनकेँ प्रशासनिक सजावटसँ उठाकऽ जीवित लोकक आवागमनक शर्त बनबैत अछि। लालटेन सूचना-मेजेपर रहबाक चाही—ई छोट आरम्भिक आग्रहक अर्थ अछि जे अन्हारमे लिखल निर्णयक दाम दोसर देह नहि चुकाबय। तथापि उजास उपलब्ध होएब सम्पूर्ण ज्ञान उपलब्ध होएब नहि; अध्याय आगाँ एहि सीमा पर बारम्बार लौटैत अछि।

गोमतीक पहरापंजी आ सूचना-पट्टक भाषा सम्बद्ध दोसर समस्या खोलैत अछि। कागद टाँगल अछि, मुदा पानि आननिहार आ मजदूरसभ ओकर लिखल निषेध पढ़ि नहि सकैत छथि। तेँ एके आज्ञा अलग-अलग बोलीमे मुँहजोरी पहुँचेबाक निर्णय होइत अछि। दस्तावेजक अस्तित्व आ ओकर प्रभावी संप्रेषणक अन्तर एहि दृश्यमें सशक्त अछि। पाठककेँ बुझाएल जाइत अछि जे कानून अथवा आदेशक दृश्य चिह्न समाजक सभ सदस्य लेल एके अर्थक नहि। गोमती केवल बाधा ठाढ़ करनिहारी पहरेदार नहि; ओ पहराक थकान, निजी वस्तु उठा लेबाक लालसा आ मौखिक संचारक वास्तविक सीमा चिन्हैत छथि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ एतय आदेशक स्वामीसँ अधिक ओ आदेशकेँ उपयोगी बनाबनिहार श्रमिकक बौद्धिक श्रम महत्त्व पबैत अछि।

चिकित्सकीय समय आ भवनक समय एहि कापीमे समाहित होइत अछि, मुदा मिलि नहि जाइत। सलमा तीन रोगीक अलग स्वास्थ्य-अवस्था कहैत छथि—जमुनाक निगरानी, युवकक पट्टी, आ तेसर रोगिणीक बदलैत श्वास; उर्मिला पूछैत छथि जे खाट मोड़बाक जगह परखल अछि की नहि। अदिति पुरान उत्तरी पाँख आ पाछुक चचरीक निषेध, अपरखल खेतक बाट आ सीमित पूर्वी पट्टीक अन्तर बतबैत छथि। तारा–ललित खाली खाटक घुमाव परखैत छथि, रोगीक देहकेँ भार-परीक्षणक वस्तु बनबैत नहि। खाली खाट घुमि गेल, एहि साक्ष्यसँ प्रत्येक रोगी-खाट सुरक्षित घुमत, एहन अनिवार्य परिणाम नहि निकलैत। यहीं अध्यायक कारण–कार्य अनुशासन अछि : प्रमाण जतेक सीमा धरि पहुँचल, अनुमति सेहो ओतबे।

सुगनीक खेतक नीचाँ अपरखल माटि आ फूलोक घर दिस संभावित जलमोड़, तुलसीक गाड़ी लेल भीड़रहित स्थान, हीराक नावक घटल सेवा-सीमा—ई सभ अस्पतालक भीतरक संकटकेँ विस्तृत भूगोलसँ जोड़ैत अछि। छोट बाट अपनामे सुरक्षित बाट नहि; नाव उपलब्ध रहब रोगी-खाट नावपर चढ़ा सकबाक परखल योजना नहि। संकटस्थानक परिधि भवन, घाट, खेत, गोदाम आ घर धरि पसरैत अछि। पर्यावरणीय आख्यानशास्त्रमे जल केवल भयकारी प्रतीक नहि, बदलैत पदार्थात्मक शक्ति अछि, जकर प्रभाव अलग स्थानपर असमान अछि। सामाजिक दृष्टिसँ अस्पताल बचाबैक नामपर पड़ोसीक घर डुबेबाक छूट नहि। एहि द्वन्द्वकेँ कथा बिनु सरल बलिदान-कथनक सम्हारैत अछि।

निर्णयक लिखित सीमा आ व्यक्तिगत स्थान

रात्रि आठ बजि सैंतालीस मिनट पर अदिति नव निरीक्षण लिखैत छथि—बाहरी पट्टी शर्तसहित उपयोगयोग्य आ सतत पुनःनिरीक्षण आवश्यक। नैरा तत्क्षण चार सीमित निष्कर्ष अलग करैत छथि : उत्तरी पाँख निषिद्ध, पश्चिमी खेत-पथ अपरखल, चचरी–नाव रोगी-खाट लेल अनुपयुक्त, आ पूर्वी पट्टीक केवल अद्यतन जाँचल अंश उपयोगयोग्य। ककरो रोकबाक अधिकार अदिति मात्र धरि सीमित नहि—सलमा आ पहरेदारकेँ सेहो तत्काल

विरामक अधिकार देल जाइत अछि। एहि निर्णयमे अधिकारक विकेन्द्रीकरण अछि, मुदा उत्तरदायित्वक विसर्जन नहि। रमा सहकर्मी संग रहबाक शर्त रखैत छथि; नैरा स्वयं गलियारामे किएक चाहैत छथि, एकर स्पष्ट व्यावहारिक कारण दैत छथि—कक्ष छोड़बाक घड़ी आ गाड़ी-प्राप्तिक घड़ी बीचक वास्तविक अन्तर देखबाक लेल। हुनकर चुनाव आत्मोत्सर्गक नाटकीय घोषणा नहि, निर्दिष्ट निरीक्षणक जिम्मेदारी स्वीकारब अछि।

परिवारसभक असहमति समीक्षाक लेल अनिवार्य प्रतिपक्ष अछि। जमुनाक पुतोहु लम्बा बाटसँ उपचारक देरी देखैत छथि; दोसर रोगिणीक बेटा दसो पयर दूर बन्द दरबज्जा खोलबाक आग्रह करैत छथि। हुनकासभक भय निन्दनीय नहि। उत्तरमे उर्मिला असुरक्षित ऊपरक भाग देखबैत छथि आ सलमा उपचारक समय बतबैत छथि। अन्ततः बेटा छोट बाटक मांग हटाकऽ मायक संग चलबाक अधिकार लिखबबैत छथि। एहि बिन्दुपर सहमति अनिच्छाक निःशर्त समर्पण नहि, नव जानकारीक आधारपर मांगक परिवर्तन अछि। पारिवारिक अधिकार आ तकनीकी निरीक्षणक बीच संवाद अछि। तैओ कृति अधिकतर विशेषज्ञक तर्ककेँ निर्णायक बनबैत अछि; साधारण परिजनक वैध भयक पछिला आर्थिक आ मानसिक परिणामपर आ गहन अन्तर्दृष्टि सम्भव छल।

पहिल युवकक निकासी, प्राप्ति-समय, पट्टी आ औषधि-पन्नाक संग चलब सफल परीक्षण अछि। दोसर रोगिणीक उपकरण-संगतता लेल सलमा आ अनिरुद्धमे मतभेद होइत अछि; उपलब्ध चिकित्सकीय जिम्मेदारीक आधारपर सलमाक निर्णय प्रभावी होइत अछि। उर्मिलाक बहुत देरिसँ बिना विश्रामक काम करब, इंदरक बन्द कोठरीमे छूटल औजार, आ वृद्ध रोगीक अचानक चक्कर बतबैत अछि जे योजनाबद्ध निकासीमे नव बाधा लगातार पैदा होइत अछि। नैराक चुनाव स्थिर आदेश नहि, संशोधित समयसापेक्ष प्रक्रिया अछि। तारा नब ऊपरी नमी देखैत छथि, अदिति ‘नव भार नहि’ लिखैत छथि; पूर्ववर्ती सफलताक आधारपर अगिला मोड़ निर्विवाद मानल नहि जाइत।

पाँच पक्षक पालि-मेजपर नैराक लिखित निर्णय अध्यायक नैतिक केन्द्र अछि। देवव्रत गोदाम-सामग्री उपलब्धताक पाँति जोड़ब चाहैत छथि; नैरा ओकरा अलग रसीदक विषय कहैत छथि। सामग्री भेटलासँ संरचना सुरक्षित होएबाक साध्य सिद्ध नहि होइत। ई आख्यानगत औपचारिक सूत्र संवादमे उच्चरित नहि, मुदा आलोचकक दृष्टिसँ पक्ष, हेतु आ उपाधिक स्पष्ट भेद अछि। एक खाट प्रति चरण; तत्काल रोकबाक अधिकार; सीमित पहरा—ई छोट शर्तसभ आरोपित अस्पष्ट ‘जिम्मेदारी’केँ क्रियायोग्य बनबैत अछि। खाटक पछिला चक्का दक्षिणक आँगनमे उतरब सीमित सफलता अछि, अन्तिम सुरक्षा-प्रमाणपत्र नहि। एक रोगीक स्थानान्तरण चिकित्सकीय निर्णयसँ स्थगित रहैत अछि; रसोइक गाड़ीक प्रतीक्षा-समय सेहो दर्ज होइत अछि। एहि लेखामे देह, श्रम आ समयक अलग-अलग मूल्य देखाइत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण, अन्तर्पाठ आ आलोचनात्मक मूल्य

अध्याय पहिल पहरसँ रातिक अन्तिम पालि लग पहुँचैत अछि। घड़ीक क्षण—आठ बजि सैंतालीस मिनट—कथा-संसारक सत्यकेँ सीमित करैत अछि; कथनकाल मात्र एक निरन्तर प्रवाह नहि, बारम्बार परीक्षण, विराम आ नवीकृत अनुमतिक शृंखला अछि। नैराक आन्तरिक विचार, कबीरक सूखल रुमाल आ रोटीक अल्प घरेलू क्षण, आ उर्मिलाक ‘काम गनू तऽ अधिक, विश्राम गनू तऽ कम’क अनुभव प्रशासनिक विवरणकेँ मानवीय जीवनक लय

दैत अछि। कबीर–नैराक चुप्पीकेँ अनिष्टक पूर्वसूचना मानब पाठकक पछिला जानकारी आरोपित करब होयत; एहि अध्यायमे ओ सामान्य थाकल निकटता अछि। अन्तिम पाठांश स्पष्ट करैत अछि जे नैराक निर्णय ‘जान देबाक प्रण’ नहि। आगाँक दुर्घटनाक आलोकमे ई वाक्य निर्णायक प्रतिरोध रचत।

कथात्मक विन्यासमे द्विकालीन अन्तर्पाठक संकेत अछि, मुदा एहि अध्यायमे स्वतंत्र महाभारत अथवा रामायणक प्राचीन दृश्य नहि। भीष्म-प्रतिज्ञा वा रामायणक दूत-धर्मसँ व्यापक नैतिक प्रतिध्वनि खोजल जा सकैत अछि, मुदा ओ स्वतंत्र कथात्मक घटना नहि। नायकत्वक पुनर्पाठक स्तरपर नैरा एकमात्र उद्धारिका सेहो नहि; तारा, अदिति, सलमा, गोमती, तुलसी, सुगनी, हीरा, रुखसाना आ उर्मिला अपन-अपन विशेषज्ञता सँ निर्णय बदलैत छथि। तेँ एहि अध्यायक सामूहिक दृष्टिकेन्द्रण बहुधा नैराक कापीमे केन्द्रित रहितो एकरे निजी चेतनापर निर्भर नहि।

एहि अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि ‘नायक निर्णय’क अपेक्षाकेँ ‘जाँचल निर्णय’मे बदलब अछि। लाल रेखा, खाली खाट, भीजल माप-छड़ी, रोटी आ समय-सूची—वस्तुसभ कथानकक सक्रिय घटक छथि। सीमा ई जे अनेक पात्र अपन निर्णय अत्यन्त स्पष्ट तर्क-वाक्यमे कहैत छथि, फलतः किछु संवाद प्रपत्रक औचित्य-व्याख्यासदृश भऽ जाइत अछि। सभ पक्षक आवाज लगातार संतुलित रहबाक कारण दुर्घटनाक सम्भावित आकस्मिकता पूर्ण रूपसँ खुलि नहि पबैत; तैओ नव नमी आ बदलल चिह्नक उपस्थिति नियन्त्रणक भ्रान्ति उठबैत अछि। अध्यायक अन्तिम स्थिति : कुछु रोगीक निकासी सफल, अगिला यात्रा जारी, शर्तसहित पट्टीक अनुमति कायम, अन्य बाट निषिद्ध, प्रत्येक नव निरीक्षणपर निर्णय बदलय योग्य। ई सुरक्षित भविष्यक घोषणा नहि।

अध्याय ११८ — उर्मिलाक थाकल हाथ

श्रमिकक देह, कपड़ा-पंजी आ क्रमिक विलम्ब

“उर्मिलाक थाकल हाथ”क आरम्भ उर्मिलाक अकड़ल बाँया हाथ, खाटक चक्का आ भीजल चादरसँ अछि। अध्याय ११७ मे ‘एक खाट प्रति चरण’क लिखित सिद्धान्त छल; एतय एक खाटक वास्तविक भार उर्मिलाक सुन्न होइत अँगुरीपर पहुँचल अछि। ओ स्पष्ट कहैत छथि जे थकानकेँ दुर्घटनाक बाद बहादुरी नहि लिखल जाय, काम बाँटल जाय। ई वाक्य शोकप्रधान पौराणिक आदर्शीकरणक विरुद्ध श्रमिक-देहक अधिकार स्थापित करैत अछि। उर्मिला आवश्यकतानुसार देवी आ प्रशिक्षित परिचारककेँ काज सौंपैत छथि, मुदा कपड़ा-पंजीक जटिल स्मृति आ जिम्मेदारी तुरन्त हस्तान्तरित नहि होइत। कथा एहिसँ श्रमक व्यक्तिनिष्ठ अनुभव आ संस्थाक हस्तान्तरणीय कौशलक बीच अन्तर खोलैत अछि।

साफ ओढ़नाक संकट कोनो उपेक्षणीय पार्श्व-विवरण नहि। रुखसानाक लग दू चादर बाहर गेलाक पंजी अछि, मुदा सुपुर्दगी-समय नहि; उर्मिला बुझबैत छथि जे एक जमुना लग आ एक पहिल निकासीवला युवक संग अछि, रोगिणीक लेल तेसर चाही। पुरान स्वीकृतिसँ आजुक बाँधल गट्ठर स्वतः खोलब सन्देहजनक; मुदा अभिलेखक कमी देखिकऽ रोगीक ठंढ सहबाक लेल बाध्य करब सेहो उचित नहि। सलमाक चिकित्सकीय आवश्यकता आ सुरक्षित स्टोरक जाँच मिलि तेसर चादर खोजबाक वैध मार्ग बनबैत अछि। तीन–चारि मिनटक चाभी-खोज आ

चौथा मिनट ‘गुम’ नहि, अनुभव कएल समय अछि। कथा विलम्बकेँ नैतिक दोषक तुरन्त आरोप नहि बनबैत; समयक लिखित हिसाब आ पछिला कारण-परीक्षण अलग राखैत अछि।

उर्मिलाक नाम, वस्तु आ समयक प्रति ई सूक्ष्म सावधानी भामतीक श्रम-स्मृतिक व्यापक प्रतिध्वनि रचैत अछि, यद्यपि एहि अध्यायमे स्वतंत्र भामती-कालधारा नहि अछि। ‘दू चादर’ लिखबाक तुलना सँ ‘कोन रोगीकेँ कोन स्वच्छ चादर’क ज्ञान अधिक कठिन अछि। अनाम महिला-सेवा कर्मकेँ उपन्यास ज्ञानात्मक श्रमक दर्जा दैत अछि। मुदा एक सीमा देखबाक चाही : उर्मिला सभ पंजीक अनौपचारिक स्मृति अपना लग रखैत छथि, कारण संस्थाक दोसर व्यक्ति पूरा जोड़ नहि बुझैत। हुनकर दक्षता प्रशंसनीय छनि, मुदा संस्थागत विकेन्द्रीकरणक अपूर्णता स्वयं जोखिम अछि। एहि अन्तर्विरोधपर कथा अधिक कठोर आलोचना कऽ सकैत छल।

अस्थायी बाटक अस्थिरता : घटनाक वास्तविक मोड़

तारा–अदितिक नव निरीक्षणमे ऊपरी नमी गाढ़ बुझाइत अछि, मुदा फोटो आ टॉर्चक बदलल उजासक कारण आकार निश्चित नहि। नैरा नव खाट रोकबाक संकेत दैत छथि, पहिल अनुमतिक कागद फाड़ैत नहि, ओकर कात संशोधित आदेश लिखैत छथि। एतय इतिहास रद्द नहि होइत—पहिल समयक उपयुक्त निर्णय बादक समयमे अनुपयुक्त भऽ सकैत अछि। उपचार-कक्षमे एक वृद्धाक बेटीकेँ सीमित समय लेल निकट बैसब अनुमति भेटैत अछि। बेटी–मायक निकटता आ भौतिक दुर्घटनाक सम्भावना एकरे दृश्यक विरोधी भाविक स्वर छथि : करुण रस केवल अनिवार्य मृत्युक पूर्वघोषणा नहि, सुरक्षित संगतिक छोट प्रयत्न सेहो।

अध्यायक घटनात्मक उत्कर्ष पाठांश ११–१५ मे अछि। सलमा नव प्रवेश रोकैत छथि, जखन पहिने मोड़ धरि पहुँचि चुकल खाटकेँ स्थिर ठाम धरि सावधानीसँ लेबाक निर्णय होइत अछि। तखन चारि सदस्य—उर्मिला, देवी, प्रशिक्षित परिचारक आ खाट-सहायक—रोगिणीक संग बाहरी पट्टीपर छथि। पहिने लोहेक घिसटबाक स्वर, तत्पश्चात् ऊपरसँ पलस्तर खसब, भीजल काठ–ईंटक तेज आवाज, आ एक भागक धँसना। पूर्वी पट्टीसँ जुड़ल दोसर भाग विफल भेल; पुरान निषिद्ध उत्तरी पाँख ढहि गेल—एहन पाठ नहि। ऊपरी भारक स्थिरताबारे अनिश्चितता छल, मुदा विशिष्ट टुकड़ा कोन क्षण टूटत तकर पूर्ण पूर्वानुमान उपलब्ध नहि छल। एतय ‘पहिने निरीक्षण भेल’ सँ ‘दुर्घटना असम्भव’ निकालब हेत्वाभास होयत।

उर्मिला खाटक पाछुक पहिया थामि घिरि जाइत छथि; देवी रोगिणीक माथ सम्हारैत छथि; सहायक अपन शरीरक सुरक्षित स्थिति बचबैत छथि। नैरा कापी छोड़ि भीतरी भंगुर भागमे नहि दौड़ैत, बाहरी पहरेदारकेँ नव प्रवेश बन्द करबाक आदेश दोहरबैत छथि। ई नैतिक क्षण प्रचलित वीरगाथाक तात्कालिक दैहिक दौड़क अपेक्षा बदलैत अछि। दुर्घटनामे तुरन्त हुलाससँ भीतर प्रवेश दोसर घिराव जन्मा सकैत अछि। किंतु एतय स्पष्ट कहब आवश्यक जे खाट घिरल अछि आ लोकसभ बाहर नहि निकललाह; ई ‘सुरक्षित बचाव’क दृश्य नहि। रुखसाना गरम भगौना बचेबाक बदला चूल्हि बन्द करैत छथि; कंचन–चन्द्रिका बच्चासभकेँ सुरक्षित कक्षमे पहुँचबैत छथि; तुलसी गाड़ी-दुआर खुलल रखैत छथि। अलग-अलग संरक्षणक ई तत्काल क्रिया सामूहिक ज्ञानक साकार रूप अछि।

धूरक भीतरक आवाज आ आश्वासनक मर्यादा

ढहबाक समय तीन अलग घड़ीमे अन्तर अछि; अदिति–तारा–रमाक पास पूरा एकबिन्दु समय नहि। रमा घटनाकेँ क्रममे लिखैत छथि—आवाज, सामग्री खसब, दोसर आवाज, प्रवेश निषेध। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ प्रत्यक्ष घटना, क्रमसम्बन्ध आ कारणनिर्णयक चरण अलग छथि। समयक असमान उपकरण देखिकऽ घटनाक इतिहास मनमाने घड़ीपर समतल करब प्रमाणक अपमान होयत। नैरा धूरक आरपार उर्मिलासँ आवाज मिलबैत छथि, मुदा ‘निकासी मार्गमे; प्राप्ति अप्राप्त’ लिखैत छथि। उर्मिला आग्रह करैत छथि जे पहुँचने बिना पहुँच घोषित नहि करू। पंजी इहाँ जीवित व्यक्तिक प्रतिस्थापक नहि, ओकर वास्तविक पहुँचक अधूर प्रमाण अछि।

सलमा घिरल रोगिणीक श्वास आ गर्दनक स्थितिक प्रश्न पूछैत छथि; देवी जे देखैत छथि तेतेक उत्तर दैत छथि; अनिरुद्ध, अपन घायल हाथसँ, बाहरी औषधि आ दलक सुपुर्दगी करैत छथि। बेटीकेँ नैरा आवाज भेटबाक पुष्ट खबर दैत छथि, न तऽ पूर्ण बचावक वचन न मृत्यु-सूचना। ‘दू कोठरी’क भौतिक दूरी ओहि ठाम अस्थिर मलबाक कारण समयमे अपरिमेय बनैत अछि। छोट दूरीकेँ छोट बचावकाल मानबाक आकर्षण कथामे देखाओल अछि, तकर विरुद्ध प्रशिक्षित निरीक्षणक आग्रह सेहो। घटना चलैत अछि, मुदा निकासक द्वार एखन बन्द अछि।

सुरक्षित बाहरी ठामसँ पातर रस्सी द्वारा सन्देश आ हलुक सामान पठाओल सम्भव भेल; मनुखक भार वहनक अनुमति नहि। पानीक बोतल पहुँचैत अछि, उर्मिला दू घुट पिबैत छथि आ देवी–सहायक मिलि खाटक भारक एक हिस्सा लेलाक बाद हुनकर काँपैत हाथ कुछु ढील पबैत अछि। एहि सूक्ष्म बदलावमे थाकल स्त्रीक देहकेँ अनिवार्य 'बलिदान'क मुद्रा देबाक बदला बचबाक आवश्यकता, टीमक सहयोग आ स्वास्थ्यक अधिकार भेटैत अछि। उर्मिला अन्तिम पंक्तिमे पंजी जीवित लोकक बदला नहि, ई स्पष्ट करैत छथि। ई कथावस्तुक पहिल मृत्युपंजी-विरोधक महत्त्वपूर्ण प्रत्यावर्तन अछि, मुदा अन्तिम उपसंहार नहि।

कलात्मक उपलब्धि आ सीमाक परीक्षण

दृश्य-काल अत्यन्त सघन अछि। थाकल अँगुरी, चादरक कोन, खाटक पहिया, धूरक परदा, खसैत पलस्तर, टूटल आवाज—एहि इन्द्रियगत विवरणसँ कथन रजिस्टरक शुष्क भाषा सँ अधिक स्पर्शनीय बनैत अछि। कथा तृतीय-पुरुष कथावाचक द्वारा उर्मिलाक देहक निकट, बीचमे नैराक पंजी, तारा–अदितिक निरीक्षण आ बेटीक प्रतीक्षाक दूरस्थ दृष्टिकेन्द्रमे आवागमन करैत अछि। एकहि दुर्घटनाक दृश्य बहुस्थानीय अनुभव बनैत अछि। एहि अध्यायमे स्वतंत्र प्राचीन कथा-दृश्य नहि; आख्यानक द्विकालीन सङ्केतकेँ घटना-प्रमाण नहि मानू। महाभारतक सौप्तिक प्रसंगक हिंसक रात्रिसँ एहि रातिक असुरक्षा एकटा नैतिक विपर्यय अवश्य रचैत अछि : ओतय मनुष्य जानि-बुझि घात करैत अछि, एतय संरचनात्मक जोखिमक बीच बचावक प्रयत्न अछि।

कलात्मक जोखिम दोगुना अछि। एक दिस स्पष्ट निरीक्षण–अनुमति–विरामक बारम्बार प्रतिपादन पाठकेँ प्रक्रियात्मक विवरण बनाबि सकैत अछि; दोसर दिस दुर्घटनाक ठीक अगिला घड़ीमे सर्व पात्र बहुत सुव्यवस्थित भाषा बोलैत छथि, जे वास्तविक भयक टूटल चेतनाक तुलनामे अधिक सुसंगत भासि सकैत अछि। तैओ उर्मिलाक शारीरिक दर्दक सुन्नता आ बेटीकेँ आश्वासन नहि दऽ सकबाक विवशता एहि व्यवस्थित भाषाक भीतर जीवनक अस्थिरता जीवित रखैत अछि। अध्यायसँ निश्चित परिणाम केवल एतबे : भवनक नव भाग धँसल, एक

रोगिणी आ निकासी-दल घिरल, आवाजसँ संपर्क अछि, तत्काल उपयुक्त बचाव-पथ नहि; समग्र ध्वंस अथवा मृत्यु सिद्ध नहि।

अध्याय ११९ — देरिक दूरी

दू कोठरी : स्थल-दूरी आ असमाप्य बचाव-समय

“देरिक दूरी”क आरम्भ नैराक रजिस्टरक ओहि पाँतिसँ होइत अछि जाहिमे रोगिणीक नाम अछि, मुदा बाहरी प्राप्तिक समय खाली। ई खाली स्थान विफल लेखपालक असावधानी नहि; वास्तविक यात्रा अधूर रहबाक सच्चा अभिलेख अछि। गलियाराक दू कातक बीच केवल दू कोठरीक दूरी—कहियो एक हाथ, कहियो नदीक पार — आख्यानक मुख्य काल–स्थान बिम्ब अछि। मलबा, अस्थिर बीम आ अपरखल भारसँ निर्धारित भौतिक दूरी समयक निश्चित मात्रा नहि रहैत। अध्याय ‘दूरी कम अछि तँ देरी अनावश्यक’क सहज अनुमानक निरन्तर प्रतिवाद अछि। रोगिणीक बेटी बारम्बार आगाँ जाए चाहैत छथि; नैरा हुनकर प्रश्न भीतर पहुँचाबबाक जिम्मेदारी लैत छथि, मुदा निषिद्ध सीमा पार करबाक अनुमति नहि दैत छथि। अधिकारक दू रूप—सूचना पाबब आ असुरक्षित ठाम प्रवेश—एक नहि।

तारा–ललितक नाप बतबैत अछि जे बीम उठाओल तँ ऊपरक भार कता सरकत, एखन नहि जनैत छी। एहि नकारात्मक ज्ञानमे वैज्ञानिक अनुशासन अछि : सम्भव खतराक सचेत चिन्ह नहि जनबाक स्वीकार स्वयं निर्णयक उपयोगी सूचना अछि। गोमती मजदूरसभकेँ कहैत छथि जे साहसक परीक्षा नहि चलि रहल अछि; बाहरक दल बचल रहत तखन भीतरक बचाव सम्भव। ई कथन रसात्मक वीरत्वक सामान्य अपेक्षा उलटैत अछि। नायकत्व साहसक प्रदर्शनमे नहि, अनधिकृत प्रयोग नहि करबामे छैक। तैओ एकटा प्रतिपक्ष आवश्यक अछि : सतत प्रतीक्षा राहतमे देरी बढ़बैत अछि। पाठ एहि आलोचनाकेँ परिवारक पीड़ा आ देहक थकान द्वारा वैध ठहरबैत अछि; निर्णयक अर्थ केवल ‘नहि’ कहब नहि, सुरक्षित परीक्षणक अगिला चरण खोजब सेहो अछि।

पहिनहि सुरक्षित पहुँचल रोगीसभक निकासी चलैत अछि; तेसर खाटक परिचारिकाक चप्पल फाटि जाइत अछि, मुदा ओ रोगीक सुपुर्दगी आ अपन पयरक देखभालक काज क्रमसँ जोड़ैत छथि। इहाँ वीर रसक चकाचौंधि नहि, दैनिक चिकित्सा-श्रमक कठोर गणना अछि। रामाक सोझाँ तीन घड़ी तीन अलग समय देखबैत अछि; घटना आरम्भ, प्रवेश निषेध, पहिल संपर्क आ पहिल बाहरी निकास अलग लिखाएल जाइत अछि। कथन-समयक ई सूक्ष्म विखण्डन भविष्यक दोषनिर्णयक पूर्वनिर्धारित कथा बनबासँ रोकैत अछि। समान समयक कृत्रिम निर्माण हेतुसंगत प्रमाण नहि। उपन्यासक कालिक शिल्प घड़ीकेँ सर्वज्ञ सत्यक प्रतीक नहि, त्रुटिसम्भव उपकरणक रूपमे देखबैत अछि।

आवाजक पथ : गवाहीक बहु-स्तरीय निर्माण

भीतर देवी जे प्रत्यक्ष देखैत छथि तेतेक सलमाकेँ बजैत छथि; उर्मिला खाट हिलाबैक अनुरोध बाहरी माप आबय धरि रोकैत छथि। एक पातर रस्सीसँ कागद पहुँचेबाक प्रयोगमे उत्तर तीन लोक मिलि तैयार करैत छथि—परिचारक लिखैत, उर्मिला पढ़ैत, देवी सुधारैत छथि। ई सामान्य ‘गवाही’ नहि, सहयोगात्मक सत्यापन अछि।

कथावाचक सूचना-संचारक माध्यम, लिखबाक हाथ आ अन्तिम सुधार अलग दृश्य बनबैत छथि। सलमा दूरसँ चिकित्सा-निर्देश दैत छथि, मुदा रोगिणीक सम्पूर्ण अवस्था जनबाक दावा नहि करैत। दूरीक एक रूप आवाजक अपूर्णता अछि, जकर उपचार उपलब्ध भाषिक सचेतता अछि; खाटक सुरक्षित मार्गक बदला ओ नहि बनैत।

नैरा उर्मिला, देवी आ अस्पष्ट दूरक आवाजक पृथक स्रोत-चिह्न लिखैत छथि। खाँसी सुनल गेल, मुदा ओ ककर खाँसी छल से अनिश्चित—एकरा रोगिणीक नामपर दर्ज नहि करब प्रत्यक्ष आ अनुमानक अन्तर सुरक्षित राखब अछि। बेटी पूछैत छथि, एतेक कागदमे माय कतय छथि। नैराक उत्तरक निहितार्थ अछि : कागद माय नहि, माय बारे झूठ कहलासँ रोकबाक साधन अछि। एहि वाक्यसँ अभिलेखवादक सम्भावित कठोरता नरम पड़ैत अछि; लेखन स्वयं जीवनक बदला नहि, जीवनक सूचना लेल उत्तरदायी माध्यम अछि। ऐतिहासिक रूपसँ उपेक्षित स्त्री–श्रमिकक वाणी कागदमे प्रवेश पबैत अछि, मुदा ओ वाणी सर्वदर्शी सिद्धान्त नहि बनैत।

हीराक नाव आ गोपालक जलज्ञान भेटलाक बादो अस्पतालक छतपर नाव चढ़ि बचाव सम्भव नहि—ई सरलीकरण दुई बेर टुटैत अछि। नावक बाँस सुरक्षित प्रकाश टाँगबाक साधन भऽ सकैत अछि; अपरखल भार उठाबैक टेक नहि। हीरा निर्धारित घाटपर सामग्री आ निकसल लोकक पारगमनक जिम्मेदारी लैत छथि, भीतरक मलबा हटेबाक नहि। एहि दृश्यमें व्यावसायिक विशेषज्ञताक मर्यादा देखाइत अछि। एक उपकरणक स्थानानुकूल उपयोगकेँ सर्वत्र समाधान मानब कारणदोष अछि। जल–पर्यावरणीय विवरण बारम्बार आवैत अछि, तैओ हर बेर ओकर निर्णय-सन्दर्भ अलग छैक; एतय नाव बचाव-यन्त्रक असम्भव कल्पनाक प्रतिवाद करैत अछि।

रुखसाना भोजन रोकैत नहि, मुदा अतिरिक्त रात्रिक मजदूरी दर्ज करैत छथि। एक दर्शक एहि घड़ी हिसाब लिखब पाप कहैत अछि; हुनकर उत्तर अछि जे मुफ्त भोजन आ अवैतनिक श्रम समतुल्य नहि। एहन प्रसंगक पुनरावृत्ति शिल्पगत जोखिम सेहो अछि : उपन्यास बारम्बार स्पष्ट वाक्यमे नैतिक भेद रचैत अछि। मुदा विपत्तिक समयमे अस्थायी सहायता स्थायी शोषणमे बदलि सकैत अछि—एहि तथ्यक कारण दृश्य केवल घोषणापत्र नहि रहैत। कपड़ा-पंजी बिना धुलाई-चिह्न आ सुपुर्दगी समयसँ वैकल्पिक सूची बनेनाइ लेखनक विफलता बीच विकल्प-प्रमाण बनबैत अछि। नीला किनारवला ओढ़ना देखिते ओकरा गलत रोगिणीक नामपर नहि लिखब, वस्तु-सादृश्य आ वास्तविक स्वामित्वक अन्तर अछि।

प्रतीक्षाक बहु-केन्द्रीयता, वैद्यकीय अधिकार आ सार्वजनिक सूचना

जमुना देवीक सुरक्षित उपचार जारी अछि; सलमा कामक जिम्मेदारी बाँटैत छथि, घायल अनिरुद्धकेँ सही औषधि-सामग्रीक सुपुर्दगी सँभारेबाक जिम्मेदारी दैत छथि। वैद्यकीय पदक प्रतिष्ठा आ वर्तमान देहक क्षमता एक नहि। भीतरक खाटक सहायकक सुन्न हाथ देखिकऽ उर्मिला भारक पुनर्विभाजन करबैत छथि; घिरल लोकसभक शरीर धीरे-धीरे समयक लागत वहन करैत अछि। दृश्य–अवधि विस्तृत अछि, मुदा वस्तुगत प्रगति थोड़ेक; कथा पाठककेँ असह्य प्रतीक्षाक अनुभव देबाक लेल घटनाक अपेक्षा क्रियाक सूक्ष्मता बढ़बैत अछि। रुकल कथा निष्क्रिय नहि : प्रतिक्षण श्वास, पट्टी, औजार, माप आ खबरक लघु घटना घटैत अछि। ई काल-अवधिक मुख्य कलात्मक युक्ति अछि।

लिपिक कतेक मृतकक नाम लिखब पुछैत छथि; रमा तुरन्त मृत्यु-सूचना आ बचाव-पंजीक भेद स्पष्ट करबैत छथि। ओ चार श्रेणी रखैत छथि—सुरक्षित बाहर, घायल–उपचाराधीन, भीतर सम्पर्कमे, स्थिति अपुष्ट। सरिताक प्रारम्भिक गलत मृत्यु-प्रविष्टिक दूरगामी स्मृति एहि ठाम प्रभावी अछि। आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ व्यक्ति-विशेषक मृत्यु साध्य, संपर्कक अभाव अथवा धूरमे अदृश्यता ओकर अनिवार्य हेतु नहि। ‘संपर्कमे’ लिखलासँ सदैव सुरक्षित रहब सिद्ध नहि; ‘स्थिति अपुष्ट’ लिखलासँ मृत्युक विपरीत तथ्य सेहो सिद्ध नहि। एहि श्रेणीसभक औचित्य स्थिति-परिवर्तनक अनन्तर अभिलेख अद्यतन होएबाक सम्भावनामे अछि।

बेटी तेसर बेर ‘दू कोठरीक दूरी’क बचाव-समय पुछैत छथि। नैरा मानैत छथि जे लम्बाइ मापि सकैत छी, मुदा ढहल बीम, माटि आ सुरक्षित खाट-निकासक समय नहि। बेटी ‘झूठि घड़ी’ नहि चाहैत छथि। एहि दृश्यमें पाठकक सूचना-इच्छा आ परिजनक सहनशीलता टकराइत अछि; सत्य घोषित करब तात्कालिक सान्त्वनाक सदैव पर्याय नहि। चित्रमे खाली फाँक देखि तारा कहैत छथि जे फाँक आँखिसँ देखल खाटक बाट नहि। प्रशिक्षित दलकेँ निरीक्षणक अनुमति भेटैत अछि, भार उठेबाक नहि। एक जवान साहसिक स्वप्रवेश चाहैत अछि; तारा ओकर देहक चौड़ाइ आ अनदेखल ऊपरी भारक भेद देखबैत छथि। एहि संवादमे नैतिक संयम अछि, मुदा किछु पात्रक वाणी अत्यधिक सूत्रबद्ध लगैत अछि; ओहि द्वन्द्वमे शीघ्र बचावक वास्तविक अपरिहार्यता आओर गहन उद्घाटित भऽ सकैत छल।

कबीर नैराक निकट पहुँचबाक पहिले सुरक्षित बात-ठाम पुछैत छथि। ओ गलत खबर—सभ घिरल बचि गेलाह—रमा लग पुष्टि बिना प्रचारित नहि करैत छथि। नैरा भीतर उत्तर दैत छथि जे नव मार्ग एखन सुरक्षित स्वीकृत नहि; परिजनक लवंगक डिबियाक औषधीय अथवा सांत्वनात्मक उपयोग सेहो सलमाक सलाह बिना नठहरैत अछि। ओहि डिबियाक उपस्थिति गहन अछि : बेटीक घ्राणस्मृति, शारीरिक श्वास-सङ्कट आ उपचारक अधिकार एक ठाम मिलैत अछि। नाम सुनाएब सम्भव अछि; वृद्धाक उत्तर नहि आयल—ई विशिष्ट अनुपस्थिति दर्ज होइत अछि, ओकरा कोनो अन्तिम जीवन-निर्णय नहि बनाओल गेल। घरेलू स्मृति इलाजक विकल्प नहि, मुदा पात्रक वैयक्तिक इतिहास बचाबैत अछि।

काल-विस्तारक कलात्मक उपलब्धि आ कथाक असम्पन्नता

अध्यायक अन्तिमे सुरक्षित पहुँचि चुकल लोक अपन नामक पुकारक उत्तर दैत छथि; घिरल रोगिणी आ उर्मिलाक दल भीतरसँ आवाज दैत अछि; वास्तविक निकासक बाट नहि बनल। ई दू अवस्थाक संग प्रस्तुति सौप्तिक-पर्वक विशिष्ट नैतिक प्रभाव अछि—किछु सफलताक सम्मान बाकी असफलताकेँ मिटौने बिना। रमा प्रत्येक सुधार अलग दर्ज करैत छथि : अपूर्ण प्रथम नामक पूरा मिलान, गलत खाट पहुँचल औषधिक परिवर्तन। छोटी त्रुटिक सुधार बड़े संकटक निपटारा नहि, मुदा बचल व्यक्तिक जीवनमे निर्णायक।

दृष्टिकेन्द्रण नैराक कलमसँ देवी–उर्मिलाक भीतरक कष्ट, बेटीक प्रतीक्षा, हीराक घाट, रुखसानाक रसोइ आ रमाक अभिलेख धरि फैलैत अछि। कथावाचक बहुस्वरता रचैत छथि, मुदा बहुतो आवाज एके सावधान प्रमाण-भाषामे बोलैत अछि; अभिव्यक्तिक एकरूपता सम्भावित कलात्मक सीमा अछि। ‘दू कोठरी’क पुनरावृत्ति प्रतीक्षाक अनुभूति तीव्र करैत अछि, किन्तु असंख्य संवादमे ई दूरिक तर्क दोहरलासँ कतहु गति स्थिर भासि सकैत अछि।

तथापि एहि स्थिरताक भीतर जानि-बुझि रचल अनिर्णय अछि। वर्तमान परिणाम : किछु रोगी सुरक्षित प्राप्त, संपर्क जारी, निरीक्षणक नब बिन्दु भेटल, मनुष्यनिकासक अनुमति नहि। पाठक आगाँक भयानक घटना जनैत होथि तैओ एहि अध्यायक समयमे उर्मिला–नैराक मृत्यु अथवा मुक्ति अनुमानसँ भरब आलोचनात्मक दोष होयत।

अध्याय १२० — भोरक पहिने

अद्यतन मापक न्यायसँ अचानक विफलता धरि

“भोरक पहिने” पूर्वक अध्यायक खाली ‘बाहर प्राप्त’ पाँतिसँ आरम्भ होइत अछि। भीजल कागदक किनार फुलि गेल अछि, नैरा अंतिम स्पष्ट आवाजक समय दर्ज केने छथि, मुदा अगिला खबरक अपेक्षामे कलम रुकल। राति भरि बनेल सुरक्षित चिह्न स्थायी नहि; नैरा नव कर्मचारीकेँ स्पष्ट करैत छथि जे चिह्न बदलत तँ ओ सेहो हटतीह। एहि आरम्भमे अध्याय ११७ क जिम्मेदार चुनाव आ ११९ क असम्पन्न निकासी एकठाम मिलैत अछि। कथा किसी एक नायिकाक मनमे भविष्यक निश्चित आपदा-ज्ञान नहि बैठबैत। उपयोगी निरीक्षण, प्रावधान आ सतर्कता रहितो नव भौतिक विफलता सम्भव—ई अन्तिम सौप्तिक अध्यायक विषम प्रश्न अछि।

तारा नब रेखा आ अटकल बीमक झुकाव देखैत छथि; अदिति प्रशिक्षित दलकेँ सहारा टिकेबाक आरम्भक अनुमति दैत छथि, भीतर गेल खाट निकालबाक नहि। चिकित्सकीय पथमे सलमा प्रश्नक सही क्रम रखैत छथि, अनिरुद्ध आवश्यक औषधिक नाम–मात्रा जाँचैत छथि। एतय पदक सीमा बारम्बार सोझाँ अछि : डॉक्टर अज्ञात सुरक्षित भारक प्रमाण देबा बिना भीतर नहि जा सकैत, नाविक भवनक छतक सहारा नहि बना सकैत, समाचार-लेखक उपचारक परिणाम नहि लिखि सकैत। एहि श्रम-विभाजनक लाभ ई जे संकट-प्रबन्धन एकल वीरतापर निर्भर नहि। आलोचनात्मक जोखिम ई जे कथन कबितो सामूहिक संचालनक मार्गदर्शिका जकाँ भासैत अछि; अगिला अप्रत्याशित दुर्घटना एहि निश्चित व्यवस्था-विश्वासकेँ कठोर परीक्षणमे रखैत अछि।

घिरल वृद्धाक बेटी ओही लवंगक डिबिया रखैत छथि; सरिता हुनका वर्तमान पुष्ट सूचना जतेक अछि तेतेक कहैत छथि। कबीर पति होएबाक अधिकारसँ निषिद्ध रेखा पार करबाक विशेष स्वीकृति नहि माँगैत छथि, चालक हरिचरण थाकल चालककेँ भोजन-विश्राम देबाक आग्रह करैत छथि, गोमती अतिरिक्त मजदूरकेँ सुरक्षित रोशनीक तार सँभारेबाक काज दैत छथि। एहि छोट क्रियासभक कारण बाहरी टीम जीवित आ कार्यक्षम रहैत अछि। सेवा-व्यवस्थाक असफलतासँ उत्पन्न चोटकेँ पुनः अविवेकी सेवा-प्रयत्नद्वारा नहि बढ़एब—ई अध्यायक पूर्वार्धक साझा तत्त्व अछि।

उर्मिला स्वयं अपन हाथक काँधसँ अँगुरी धरि पसारल दर्द पहिल बेर स्पष्ट स्वीकार करैत छथि। देवीक अनुरोध पर दर्द कहबाक ई क्षण स्त्री-श्रमक कथामे वास्तविक आन्तरिक परिवर्तन अछि। ओ अपनेक शरीरकेँ केवल खाट थामबाक साधन नहि मानबाक दिशा धरि बढ़ैत छथि। रुखसानाक रातिक खिचड़ी, कंचनक कटोरी आ अतिरिक्त मजदूरीक लेखा जीवनक एहि बचल अर्थकेँ व्यापक बनबैत अछि। एहि क्षणक पाठकीय भाव शोकक पूर्वनिश्चितता नहि, थाकल श्रमिकक विश्राम आ उपचारक अपूर्ण सम्भावना अछि।

सम्पर्क-विच्छेदक क्रम : सुनल, देखल, अनदेखल

अदिति नैराक बाहरी निरीक्षण-ठामसँ आधा हाथ पाछाँ हटबाक नव निर्देश दैत छथि; नैरा स्थान बदलैत छथि आ कापीक कोन छोड़बाक लोभमे असुरक्षित ठाम नहि लौटैत। कबीर अपन नोटबुकमे नैराकेँ आखिरी प्रत्यक्ष देखल स्थान आ ‘सम्पर्क उपलब्ध’ लिखैत छथि। घटना-क्रमक ई दू साक्ष्य महत्त्वपूर्ण अछि। दैवी चेतावनी अथवा नियतिपर आधारित छलाँग नहि, निरीक्षणक आधारपर स्थानीय निर्णय भेल। बादमे दुर्घटना होएत तेँ पहिल निर्णय स्वतः लापरवाही सिद्ध नहि; ओ निर्णयक समय उपलब्ध ज्ञान आ जोखिम-माप देखबाक होयत। एहि नैतिक भेदक बिना समीक्षामे पछिला परिणामसँ पहिलक अपराध सिद्ध करबाक उलटल कारणबोध आबि जाएत।

भीतरसँ धातुक आवाज सुनाइत अछि; ककरो ओहिठाम नव टुकड़ा सरकल बुझाइत अछि, मुदा प्रत्यक्ष देखब सम्भव नहि। उर्मिला नव खसबक सूचना दैत छथि; नैरा ओकरा जस्ताक तस्ता अदिति लग पहुँचबैत छथि। तारा ऊर्ध्व भारक अनिश्चितता देखिकऽ नब प्रवेशक विरोध करैत छथि; अदिति ‘प्रवेश स्थगित’ लिखैत छथि। तखन पहिल तेज आवाज आ ऊपरी बाहरी छज्जाक एक कोनक टूटब घटैत अछि। नैरा सुरक्षित चिह्नक भीतर पाछाँ हटबाक कोशिश करैत छथि, धूरक घन बादरि उठैत अछि; कबीर हुनकर ‘सभ पाछाँ’क आवाज सुनैत छथि, मुदा नैराक ठिकाना प्रत्यक्ष नहि देखैत। दोसर आवाजक बाद बत्ती बुझैत अछि आ नैराक नव चिह्नक स्थान मलबासँ ओझरायल। इहाँ तीन तथ्य अलग—चेतावनी सुनल, मलबा देखल, व्यक्ति प्रत्यक्ष नहि देखल। कियो एकटा तथ्य दोसरक पूर्ण प्रमाण नहि।

रजिस्टरक भीजल पन्ना पानिमे बहि बचावदल धरि पहुँचैत अछि। पन्नाक प्राप्ति नैराक देहक स्थिति नहि बतबैत। भीतर देवी, उर्मिला आ सहायकक पहिचानल आवाज सेहो बन्द होइत अछि; सलमाक स्वीकृत संकेत पर कोनो उत्तर नहि। सलमा ‘संकेत नहि भेटल’ कहैत छथि, ‘सभ मरि गेलाह’ अथवा ‘सभ बचि गेलाह’ दुनू अनुमान रोकैत छथि। बाहरी पहरेदारक तीन सदस्य गनल जाइत छथि, एक घायल; नैरा नहि भेटैत छथि, फोनक घण्टी वास्तविक सुनल गेल की केवल चिन्ह रहल से अस्पष्ट। ई श्रेणीगत विवेचन पर अत्यन्त सावधानी आवश्यक : सम्पर्क बन्द, प्रत्यक्ष अनुपस्थिति, प्रत्यक्ष मृत्यु आ घोषित मृत्यु चारि अलग बात छथि। मूल अध्याय केवल पहिल दू तरहक प्रमाण दैत अछि; तेसर आ चारिम एखन उपलब्ध नहि।

तारा पूर्वक सुरक्षित चिह्नकेँ नव ढहलक बाद रद्द करैत छथि। ई निर्णय सँ पहिलक निरीक्षणक सत्य स्वयमेव झूठ नहि बनैत; जानकारीक क्षेत्र आ समय बदलल। आख्यानगत पक्ष-विवेचनमे ‘कालविशिष्ट सुरक्षित भार’ साध्यक अवच्छेदक अछि। ओकरा कालरहित सुरक्षा मानब अनुचित, मुदा उत्तरकालक विपदासँ पूर्वकालक समस्त परीक्षण धोखा छल, एहन सेहो अप्रमाणित। एहि ठाम आलोचककेँ अत्यन्त सूक्ष्म रहबाक अछि : भवनक वास्तविक दोष आ दायित्वक जाँच आगाँ होएत, परन्तु एखनक पाठ कारणक अंतिम निश्चय नहि दैत। नयी चोटक तात्कालिक उत्तर अधिक दुर्घटना रोकब अछि, अपराध-घोषणा नहि।

अनुपस्थित व्यक्तिक नाम : शोक, अफवाह आ अभिलेखीय मर्यादा

रोगिणीक बेटी कबीरसँ नैरा आ उर्मिलाक अवस्था पुछैत छथि; कबीर नैराक आखिरी देखल ठाम आ टूटल सम्पर्कक सत्य बतबैत छथि, सुरक्षित बाहरी पहुँचक वचन नहि। एक स्वयंसेवकक फोनपर उर्मिला बचि गेलीह आ

नैरा घर लौटि रहल छथि, एहन अपुष्ट सन्देश अबैत अछि; कबीर प्रत्यक्षदर्शी, बचावकर्ता आ प्राप्तिक समय पुछि खण्डन करैत छथि। गलत आशा सेहो हिंसक प्रभाव रखैत अछि, कारण ओ परिवारक निर्णय आ शोकक तैयारी बदलि सकैत अछि। एहिठाम प्रेमक बलबूते सत्यक आश्वासन नहि लिखब कबीरक नैतिक विजय नहि, कठिन संयम अछि। कथनक अविश्वसनीय डिजिटल प्रवाहक प्रतिपक्ष पात्रक स्वीकारल अज्ञान बनैत अछि।

रमा चारि स्तम्भ बनबैत छथि—प्रत्यक्ष बाहर पहुँचल, आवाजसँ सम्पर्क रहल, सम्पर्क बन्द, स्वतन्त्र पुष्टि बाँकी। नैरा आ उर्मिलाक नाम ‘सम्पर्क बन्द’मे जाएब कष्टकर अछि, मुदा एकर अर्थ दू मृत्यु लिखब नहि। सरिताक पुरान झूठ मृत्यु-पञ्जी एहि क्षण फेर नैतिक प्रासंगिकता पबैत अछि। आरम्भिक उपन्यासमे जीवित सरिताकेँ मृत कहबाक पंजी अन्यायक कारण बनल छल; एखन ककरो बचल होएबाक असत्य आश्वासन सेहो त्याज्य अछि। निषेधक ई दू दिशा महत्त्वपूर्ण : गलत मृत्यु नहि लिखू, गलत जीवन-पुष्टियो नहि लिखू। व्यक्तिक गरिमा सत्य-असमर्थताकेँ स्पष्ट करबामे सुरक्षित रहैत अछि। कथाभित्र ‘नाम’ गणना अथवा सनसनीक पदार्थ नहि, हरेक अपूर्ण जीवनक अलग दायित्व अछि।

घायल पहरेदारक बयान सुनल चेतावनी देत अछि, देखल नैराक ठाम नहि। कबीर रमा–सलमा–अदितिक सत्यापनक बाद छोट सार्वजनिक सूचना लिखैत छथि, जाहिमे सुरक्षित पहुँचल संख्या पक्का नहि भेल धरि खाली राखैत छथि। ई अत्यल्प सूचना ककरो बचबैत नहि, मुदा परिवारकेँ निषिद्ध रेखा पर दौड़ि अपुष्ट बात खोजबाक जोखिम घटबैत अछि। एतय अभिलेखक उपयोगिताक सीमा स्वयं स्पष्ट कही गेल अछि—कागद मलबा नहि हटबैत। कंचन रुखसानाक लग नैराक लेल राखल पानि ठंढा भऽ गेल कहैत छथि; रुखसाना ओकरा ढाँपि राखबाक कहैत छथि। ई घरेलू वस्तु दर्दक सशक्त ध्वनि अछि, मुदा पानिक ठंढा होएब मृत्यु-सूचक गुप्त कोड नहि। उपन्यास पीड़ा रचैत अछि, पर परिणाम पाठकपर थोपैत नहि।

सौप्तिक-पर्वक अन्हारक अन्तिम संरचना : अधूर रहबाक अर्थ

अन्तिम पाठांशमे तारा–अदिति नव सीमा खींचैत छथि, प्रशिक्षित दल जाँच-यन्त्र आ रोशनी तैयार करैत अछि, गोमती मजदूरक सुरक्षित प्रतीक्षा दर्ज करैत छथि। पूबक नभक बदला फेर जलाओल बत्तीक पीयर उजास भोरक पहिल संकेत बनैत अछि। इहो प्रकाश सिद्ध ज्ञान नहि; मलबाक भीतर प्रवेश एखन अनिर्णीत। कबीर फोनपर नैराक पुरान संदेश देखैत छथि—‘अखन आवाज अएल अछि; कोनो अन्तिम निष्कर्ष नहि’—जकर काल बीति चुकल; ओ नव पाँति ‘सम्पर्क टूटल; अगिला प्रत्यक्ष पुष्टि अपेक्षित’ लिखैत छथि। ई कथनकालक सूक्ष्मतम बिन्दु अछि : एक समयमे सही पाँति दोसर समयमे अद्यतन करब आवश्यक, मुदा नव तथ्य बिनु अन्तिम रिक्त स्थान भरब अनुचित। कथानक असम्पन्न अछि, किन्तु नैतिक बोध अपूर्ण नहि।

अध्यायक रूपक-व्यवस्था बत्ती, भीजल पन्ना, धूर आ अस्थिर रेखासँ बनैत अछि। प्रकाश ज्ञानक आसन नहि, पुनःजाँचक सुविधा; जल जीवनदायिनी वस्तु रहितहुँ संरचनात्मक जोखिम बढ़बैत अछि; रेखा व्यवस्था रखैत अछि, मुदा परिस्थितिसँ निरन्तर बदलैत अछि। कथावाचक दृष्टिकेन्द्रण नैराक चिह्न, कबीरक नब-लिखल पाँति, सलमाक चिकित्सकीय अनिश्चितता, सरिताक नैतिक स्मृति आ रुखसानाक श्रमसँ घुमबैत छथि। पाठकीय प्रत्याशा अति तीव्र अछि, मुदा कल्पित ‘मृत्यु-दृश्य’ नहि। प्राचीन सौप्तिकक रात्रिहिंसामे नामित आ अनाम मृतक

वास्तविक रूपसँ हत्या कएल जाइत छथि; आधुनिक रात्रिक एहि समापनमे अद्यापि अपुष्ट अनुपस्थितिक निश्चित मृत्यु कहब अन्तर्पाठीय अतिरेक होयत।

उपलब्धि ई जे संकटकेँ सनसनीक निर्णयसँ बचाकऽ प्रमाण-संरक्षणक कठिन अनुशासन बनाओल गेल। सीमा ई जे एक पर एक पात्र लगभग समान ‘असिद्ध अनुमान’क चेतावनी दैत छथि, जाहिसँ आन्तरिक आवाजक भेद कतहु कम होइत अछि। घिरल रोगिणीक बेटी, कबीरक निजी भय आ सरिताक स्मृतिक भीतर अधिक भङ्गुर, असंगत चेतना-प्रवाह विकसित कएल जा सकैत छल। तैओ खाली प्राप्ति-स्थान, अपुष्ट समाचारक वापसी आ नब बत्ती अन्तिम दृश्यकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि। निर्णय : **दू भिन्न स्थानपर नैरा तथा उर्मिला-दलसँ सम्पर्क टूटल; नब संरचनात्मक विफलता भेल; बचावक नव जाँच शुरू अछि; मृत अथवा सुरक्षित पहुँचलाक प्रत्यक्ष पुष्टि एहि अध्यायमे नहि।** एहि निष्कर्षसँ आगाँक स्त्री-पर्व / युद्धकाण्डक शोककथा आरम्भ होएत, मुदा ओकर पछिला ज्ञान एतय भरि देब सत्यनिष्ठ समीक्षा नहि।

सौप्तिक-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १०९–१२० क समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

पहिल चारि—मध्य चारि—अन्तिम चारि : कार्य, साक्ष्य आ टूटल सम्पर्क

सौप्तिक-पर्वक पहिल चतुष्टय (१०९–११२) रात्रिक पाँच-हस्ताक्षर व्यवस्था, गोदामक नियन्त्रित सामग्री, नावक क्षमता आ ज्ञान–श्रमक दायित्व स्थापित करैत अछि। मध्य चतुष्टय (११३–११६) प्राचीन अश्वत्थामाक रात्रि-आक्रमणक प्रतिशोधी अन्धकारकेँ आधुनिक अस्पतालक बचाव, औषधि, सीमित भिडियो-सहमति आ पुरान पाँखक निषेधक विपरीत नैतिक दिशामे रखैत अछि। अन्तिम चतुष्टय (११७–१२०) सँ कथा जानल सीमा भीतर चुनल सुरक्षित बाटक वास्तविक परीक्षण धरि पहुँचैत अछि, आ अन्ततः दुर्भाग्यपूर्ण नव ढहना तथा दुई स्थानक सम्पर्क-विच्छेदमे स्थगित होइत अछि। एहि संरचनामे नव खण्ड पूर्वक सफल राहत-व्यवस्थाकेँ निरर्थक नहि बनबैत; उलटे सफल निकासी आ घिरल व्यक्तिसभक अनिश्चित दशाकेँ एक संग स्वीकार करब सिखबैत अछि। वास्तविक घटनात्मक घनत्वकेँ आख्यानक ‘परिवर्तन-सङ्केत प्रति हजार शब्द’ सँ नहि गनल जा सकैत : प्रत्येक परिवर्तनक कारण, परिणाम, शेष जोखिम आ स्वतन्त्र पुष्टि अलग देखबाक अछि।

समयक पुनर्रचना आ कथावाचकक ज्ञान-मर्यादा

एहि पर्वमे दिन–रातिक कथा-सूत्र रैखिक होइतहुँ कथनकालक अनुभव खण्डित अछि। रात्रिक पहरा, अस्पतालक अलग घड़ी, सूचना-मेजक पंजी, पातर रस्सीसँ प्राप्त उत्तर आ फोनक पुरान संदेश सभ कथा-समय अलग–अलग प्रमाणसँ निर्मित करैत अछि। अध्याय ११७ मे आठ बजि सैंतालीस मिनटक निरीक्षण-सत्य अध्याय ११८ क नव नमीसँ सीमित भऽ जाइत; ११९ मे दू कोठरी बचल दूरी समयक अनिश्चितता बनैत; १२० मे पहिल सूचना उपलब्ध होएबाक घड़ी बीति जाइत अछि आ सम्पर्कक नव अपूर्ण पाँति खोलब पड़ैत अछि। ‘देखल समय’ आ ‘कहल समय’क भेद मुख्य तात्त्विक प्रश्न बनैत अछि। पाठक जानैत अछि जे दैहिक घटना घटल, मुदा कथावाचक अपूर्ण साक्ष्यक पात्रकेँ भविष्यक सुनिश्चित परिणाम कत्तहु नहि देबैत। आलोचक सेहो ओहि ज्ञान-मर्यादा मानय।

कथावाचक तृतीय-पुरुषमे अनेक चेतनासँ परिचित छथि, मुदा फोकलाइजेशनक असमानता बचल अछि। नैराक कापी स्थितिसभक वर्गीकरण करैत अछि, उर्मिलाक थाकल हाथ देहक अवधि कहैत अछि, देवी–सलमा श्वासक आंशिक प्रत्यक्ष अनुभव दैत छथि, बेटी प्रतीक्षाक समय जीबैत छथि, कबीर सार्वजनिक सूचना आ निजी भय बीच ठाढ़ छथि। एहि दृष्टिकेन्द्रणक वितरणक कारण घटनाकेँ एकल-नायक अथवा केवल कार्यालयक कथा बनाओल नहि जा सकैत। आन्तरिक मनोवेगक कतहु सीमित प्रस्तुति, तथापि बाहरी वस्तु आ संवादक पैघ संख्या पात्रवाणीकेँ कुछु एकरूप सेहो करैत अछि।

आख्यानगत प्रमाण, शास्त्रीय अन्तर्पाठ आ अनधिकृत निष्कर्षक निषेध

प्रत्यक्ष निरीक्षण, शब्द-गवाही, समयक लेखा, आ अनुमानक भेद एहि पर्वक प्रधान प्रमाण-मूल्य अछि। ‘नाव तैयार’ सँ ‘छतपर बचाव सम्भव’ नहि; ‘खाली खाट सफल’ सँ ‘सभ रोगी सुरक्षित’ नहि; ‘आवाज नआएल’ सँ ‘मृत्यु भेल’ नहि; ‘विगत निर्णयक पाछाँ दुर्घटना भेल’ सँ ‘विगत निरीक्षण जानि-बुझि धोखा छल’ नहि। एहि तर्कक पुनर्निर्माणमे पक्ष, साध्य, हेतु, उपाधि आ कालविशेषक अन्तर उपयोगी अछि। ई विश्लेषण समीक्षकक आख्यानगत उपकरण अछि; मूल पात्रसभ द्वारा सभ सूत्र औपचारिक शास्त्रार्थमे उच्चरित छथि, एहन दावा नहि। ज्ञानक सीमाक स्वीकृति आ उत्तरदायित्वसँ पलायन बीच भिन्नता सेहो आवश्यक : अपूर्ण जानकारीक अर्थ निष्क्रियता नहि, उपलब्ध सीमाक भीतर सुरक्षित काज।

महाभारतक सौप्तिक-पर्वमे राति हिंसक आक्रमणक अवसर बनैत अछि; आधुनिक रात्रिमे बचावक दल घिरल व्यक्तिक रक्षा करबाक प्रयत्न करैत अछि। ई विपरीत समांतरता अत्यन्त प्रभावी अछि, मुदा सरल द्वैतक सीमा अछि। प्राचीन दृश्यकेँ आधुनिक नैतिक भाषा देबाक कारण कालान्तरित पात्रक भिन्नता कतहु घटैत अछि; आधुनिक राहतमे सेहो चूक, अनुचित विलम्ब आ संस्थागत कमजोरीक जाँच शेष अछि। रामायणक सुन्दरकाण्डसँ सीमा लाँघि साक्ष्य पहुँचेबाक व्यापक अवधारणा जुड़ि सकैत अछि, मुदा ११७–१२० मे स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि। भामतीक ज्ञान–श्रम श्रेय, न्यायकुसुमाञ्जलिक अनदेखल कारणक प्रश्न आ तत्त्वचिन्तामणिक प्रमाण-अनुशासन समीक्षामे उपयोगी अवधारणात्मक सम्बन्ध दैत छथि; पात्रसभक प्रत्येक निर्णय ओहि मूल शास्त्रक सिद्धान्तक अनुवाद अछि, एहन दावे सँ बचब आवश्यक।

स्त्री-श्रम, तकनीकी सत्ता आ विदेह समानान्तर इतिहास

उर्मिलाक कपड़ा-पंजी, गोमतीक पहरा, तारा–सुगनीक माप, सलमाक चिकित्सकीय निर्णय, रुखसानाक रसोइ, हीराक नाव, तुलसीक चालकदल, रमाक अभिलेख आ नैराक सूचना—सभक अलग कौशल अछि। स्त्रीक सेवाकेँ स्वाभाविक नि:शुल्क भावनामे विलीन करब ई कृति अस्वीकार करैत अछि। विश्राम, वेतन, सुरक्षित काज, गोपनीयता, निजी स्मृति, परिजनक सूचना-अधिकार आ प्रशिक्षण सभ सामाजिक इतिहासक वस्तु बनैत अछि। एहि बहुखण्डी श्रमक कारण ‘पाँच हस्ताक्षर’ मात्र पाँच हस्ताक्षरकर्ता व्यक्तिक कथा नहि; ओकर पाछाँ अनेक अनाम सहयोगी हाथ अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ स्थानीय स्मृति, नालीक गाद, धुलाई-पंजी, नावक भार आ परिवारक पारिश्रमिक सभ राज्यक एकरेखीय विजय-दस्तावेजक प्रतिपक्ष बनैत अछि।

तथापि आलोचना केवल प्रशंसा नहि। बारम्बार स्पष्ट मर्यादा-वचन संवादकेँ अत्यधिक नियमनकारी बनबैत अछि; समय-प्रपत्रक बहुत विस्तार प्रसंगक भाविक तनाव रोकैत अछि; खण्डान्तरमे ‘सहायता आ मजदूरी अलग’, ‘कागद आ देह अलग’, ‘निषेध आ निर्दयता अलग’ सदृश उपपत्तिक आवृत्ति भेटैत अछि। तकनीकी स्त्री-पात्रक विवेकी स्वरसभक सूक्ष्म वर्गभेद वा बोलीगत भिन्नता आ फैलाओल जा सकैत छल। परिजनक आकुलता कतेको बेर विशेषज्ञक संतुलित उत्तरक अपेक्षा छोट रहि जाइत अछि। नव ढहनाक ठोस पदार्थात्मक विवरण एहि अमूर्त प्रवृत्तिक सुधार करैत अछि, मुदा समस्या पूर्णतः समाप्त नहि।

सौप्तिकसँ स्त्री-पर्व : नामक खाली घर

अध्याय १२० क अन्तिम सत्य ककरो मृत्यु-प्रमाण नहि, **सम्पर्कक विच्छेद आ पुष्टि-पञ्जीक खाली स्थान** अछि। अध्याय १ “मृतकक रसोइ”मे जीवित सरिताक गलत मृत्यु-घोषणा सँ उठल समस्या एतय नव, अधिक पीड़ादायक रूपमे लौटैत अछि—एहि बेर ककरो जीवित घोषित करबाक उतावल सेहो जोखिम अछि। अन्तिम प्रत्यक्ष दृश्य, आखिरी सुनेल आवाज, नव मलबा, क्षतिग्रस्त संरचना, अपुष्ट फोन आ सहायक दलक सुरक्षित निरीक्षण—सभकेँ अलग-अलग दर्ज कएल जाए। स्त्री-पर्वक अगिला अध्यायसभमे वास्तविक मृत्यु-पुष्टि, बचल लोकक दोष, शोक आ उपचारक स्थिति जाँचल जाएत; एहि पूर्वक खण्डमे ओ परिणाम आगूसँ लिखि देब कथाक कालक्रम आ प्रमाण-दुनूक विरुद्ध होयत। सौप्तिक-पर्वक कलात्मक सार ई नहि जे ‘सावधानी बेकार’, न ई जे ‘सावधानी सँ सभ बचत’ : निर्णय समयसापेक्ष अछि, ज्ञान मर्यादित अछि, आ प्रत्येक व्यक्ति तथा ओकर नामक प्रति उत्तरदायित्व अनिश्चिततामे सेहो बनेल रहैत अछि।

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड

अध्याय १२१ — नामक पुष्टि

संकटोत्तर कालक आरम्भ : अनुपस्थितिसँ अपरिवर्तनीय मृत्यु धरि

“नामक पुष्टि”क कथनगत मूल्य ओकर सूचना-परिणाम मात्रमे नहि, बल्कि पिछिला अध्याय १२० क ‘सम्पर्क बन्द’ आ एहि अध्यायक ‘मृत्यु पुष्ट’क बीच कथा जतेक समय, श्रम आ मानसिक प्रतिरोध सँ गुजरैत अछि, ताहिमे अछि। पहिल पाठांशमे पीतलाक घंटीकेँ रमा पोंछैत छथि, बजबैत नहि। सामान्यतया घंटी सामूहिक घोषणा आ लोककेँ एकठाम जुटेबाक उपकरण भऽ सकैत छल; एतय ओकर मौन कथाक आरम्भिक लय निर्धारित करैत अछि। पाठककेँ मृत्युक नाम पहिने नहि देल जाइत, पहिने सुरक्षित पहुँच-बिन्दु, सहाराक जोड़, प्रशिक्षित दल आ पिछिला रातिसँ बन्द बाट देखाओल जाइत अछि। ई विलम्ब ‘रहस्य’ लम्बेबाक सस्ता उपाय नहि; जीवन–मृत्युक जानकारी धरि पहुँचबाक भौतिक प्रक्रिया कथनक अन्तःसंरचना बनि जाइत अछि। एहिसँ सौप्तिक-पर्वक रातिक अधूर दृश्य स्त्री-पर्वक भोरमे प्रवेश करैत अछि।

अध्यायक पहिल घटना घायल बचाव-सहायकक जीवित बाहर आबब अछि। एकर तुरन्त बाद नैराक देह भेटैत अछि। एहि क्रमक रचनात्मक महत्त्व अछि : पाठक एकहि ध्वस्त भवनमे बचल जीवन आ समाप्त जीवन दुनू देखैत अछि। पहिल व्यक्तिक चोट, होश आ अपन नाम कहबाक सामर्थ्यक विस्तार नैराक दृश्यकेँ अधिक कठोर

बनबैत अछि, मुदा ओहि कठोरतामे सेहो लेखक पहचानक प्रक्रिया अन्तर्भुक्त करैत छथि। कबीर कपड़ाक रंगकेँ निर्णायक नहि मानैत छथि; चेहरा आ पुरान छोट निशानक संग दोसर अभिलेख मिलैत अछि। 'नैरा नहि बचलीह'—कबीरक ई छोट वाक्य पूर्ववर्ती दर्जनौँ व्यग्र सवालक कथनात्मक अवसान अछि, मुदा नैराक सम्पूर्ण जीवनक सारांश नहि। ई तथ्य कथा-घटना रूपमे अपरिवर्तनीय अछि; एकर बादक शोक आ उत्तरदायित्व खुलल रहैत अछि।

एहि स्थाने कथनकालक अनुपात विशेष ध्यानयोग्य अछि। भोरसँ साँझ धरि एक दिनक समयमे तीस पाठांश क्रमशः कएक जीवनक अन्तिम समाचार, घायल लोकक देखभाल, भोजन, परिवारक अलग यात्रा आ भीजल कागदक संरक्षण रखैत अछि। जतेक बेर ठोस काम आ धीमा संवाद बेराबेरी अबैत अछि, ओतेक बेर दृश्य-काल धीमा होइत अछि। कथावाचक एक्के भोरमे कोनो सर्वज्ञ निष्कर्षक घोषणा कऽ कथा समाप्त नहि करैत छथि; सत्यापित सूचना पहुँचब, ओकरा सहब, आ फेर रातिक काम आ घरक जरूरत स्मरण करब—तीनू भिन्न मानसिक अवधि छथि। ई भिन्नता अध्यायक शीर्षक 'पुष्टि'केँ स्थिर प्रशासकीय पदसँ चलैत मानवीय अनुभवमे बदलैत अछि।

बहुकेन्द्रित दृष्टि : कबीर, सरिता, रमा आ उर्मिलाक बहिन

अध्यायक कथावाचक तृतीय पुरुषमे कथन करैत अछि, मुदा जकर अन्तरंग सोचकेँ निकटसँ देखाओल गेल अछि, ओ बराबर एक व्यक्ति नहि। कबीरक पहिचान-कक्षमे प्रवेशक पहिने मनक प्रश्न—देखलाक बाद नदेखल नहि कऽ सकब—पाठककेँ हुनकर भयक भीतर पहुँचबैत अछि। सरिताक दृष्टिकेन्द्रमे पुरान नगर-सभा आ नैराक सरकाओल कुर्सीक स्मृति लौटैत अछि। रमा लग दृष्टिकेन्द्र बदलिते नाम-पंक्तिक अन्तर, कार्यक क्रम आ आवाजक सार्वजनिक प्रसार देखाइत अछि। उर्मिलाक बहिनक दृश्य मे कथाक भार रिश्ताक अकेला रुदन नहि, रोजगारक अपन पहिचान पर सेहो पड़ैत अछि। एहि स्थानान्तरणसभक कारण उपन्यास एकटा द्रवित 'समूह-शोक'मे सभ स्त्रीकेँ एकरंग नहि करैत अछि।

सरिताक स्मृतिदृश्य स्पष्ट पूर्वदीप्ति अछि, जकर समय वर्तमान आपदासँ पहिने नगरक बैठकक अछि। नैराक वाक्य—गलतीक खर्च के देत?—आ सरिताक लेल मेजपर कुर्सी सरकाएब वर्तमानमे नैराक अनुपस्थितिक विडम्बना बेसी तीव्र करैत अछि। लेखक नैराकेँ मृत्यु-दृश्य मात्रसँ परिभाषित नहि करैत; जीवित अवस्थामे जकरा समाज बोलबाक स्थान देबाक चाही, ओकर सक्रिय चरित्र-निर्णय वापस उपस्थित करैत छथि। ई स्मृतिक अर्थ महत्त्वपूर्ण : कालक्रममे पाछाँ जाएब कथा आगाँ बढ़ेबाक साधन बनैत अछि। सरिता एखन नैराक अभाव स्वीकारैत छथि, मुदा ओकरा 'नाम काटि देब'क समानार्थी नहि मानैत छथि। एहि प्रतिवादमे प्रथम अध्यायक जीवित सरिताक गलत मृत्यु-सूचनासँ एकटा दीर्घ आवर्तन निर्मित होइत अछि; दुनू समाचारक जीवनगत सत्य समान नहि।

उर्मिलाक देहक संग भीजल रजिस्टरक पन्ना भेटबाक दृश्य खासकर एकटा उलटा कथात्मक अपेक्षा बनबैत अछि। पाठक कागदसँ पहचान तुरन्त मिलबाक आशा कऽ सकैत अछि; मुदा कथानक पहिने देह, चिकित्सकीय परीक्षण आ परिवारक स्वीकृत पहिचानपर टिकैत अछि। ओकर बहिन पूर्ण नाम 'उर्मिला रजक' लिखबाबैत छथि

आ ‘अस्पतालक धोबिन’ कहल जाएबक अपर्याप्तता चिन्हबैत छथि। स्त्री-पर्वक आरम्भमे ई केवल सामाजिक विवरण नहि; कथाक शीर्षकमे जे ‘नाम’ अछि, ओकर भीतर पेशा, परिवार आ आत्मगौरवक अनेक स्तर प्रवेश करैत अछि। शोक-गाथाक सामान्य परम्परामे नाम मृत्युक अंतिम पहचान बनि सकैत अछि; एतय उर्मिलाक अपूर्ण मजदूरी ओकर शेष जीवनक प्रश्न बनि उठैत अछि।

पुनरावृत्त वस्तु, अल्पोक्ति आ शोकक अपूर्णता

पीतलाक घंटी, नैराक फोन, भीजल पन्ना, चाउरक भात, उर्मिलाक कपड़ा-रसीद, सुभद्राक औषधि—ई सभ वस्तु आरम्भसँ अन्त धरि एक प्रकारक ‘सूक्ष्म वस्तु-शृंखला’ बनबैत अछि। वस्तुसभक आवर्तन केवल प्रतीक-विस्तार नहि : हुनकर वास्तविक उपयोग, घरक सम्बन्ध आ सामाजिक अर्थ अलग-अलग अछि। कबीर नैराक फोनक पर्दा बारम्बार खोलैत नहि छथि; बादमे ओहि फोनमे नुन, पुस्तक-मरम्मति आ नैराक घरक सूची भेटैत अछि। मोबाइल एतय डिजिटल समाचारक केवल माध्यम नहि, एक निजी निरन्तरताक अवशेष अछि। एकरा देखिकऽ पाठक बुझैत अछि जे मृत्यु जीवनक साधारण अधूर काजक सूचीकेँ तुरन्त समाप्त नहि करैत।

रुखसानाक रसोइ शोकमे ‘भोजन दऽ सान्त्वना’क रूढ़ चित्रसँ बचैत अछि। कंचन उर्मिलाक बहिनकेँ बारम्बार खएबाक बाध्य नहि करैत छथि; ओ बच्चा लेल आधा कटोरी माँगैत छथि। ई छोट संवाद लम्बा भावुक वक्तव्यक बदला परिस्थितिक नाजुक परिवर्तन देखबैत अछि। कथावाचक स्वयं एहि कामकेँ महान बलिदान कहि ऊँच नहि करैत; भोजनक उपलब्धता, अस्वीकारक अधिकार आ बच्चाक भूखकेँ अलग स्तर पर राखैत अछि। एहि अल्पोक्तिसँ करुण रस उत्पन्न होइत अछि, मुदा विश्लेषणक मुख्य प्रश्न कथनक संयम अछि : लेखकक भाषा कोना मार्मिक रहि कऽ दृश्यपर हावी नहि होइत?

अध्यायक अन्तिमे तीन बन्द लिफाफा आ एक अपूर्ण व्यक्तिगत पहिचानक पंक्ति अलग रखल गेल अछि। कथाक भीतर नैरा–उर्मिला–वृद्ध रोगिणीक मृत्यु पुष्ट, मुदा दोसर वृद्ध पुरुषक नाम शेष अछि। एहन विभाजन लेखनकेँ क्रमिक शोकक रूप दैत अछि : एक परिवारक अंतिम समाचार दोसरक भविष्यबारे निश्चितता नहि दैत। अन्तिम वाक्यमे रसोइक उबलैत पानि आ लाल निषेध-रेखा फेर संग अबैत अछि। एहि द्वन्द्वमे जीवनक अगिला काज आ खतराक अवशेष संग-संग चलैत अछि। ‘पुष्टि’ अध्यायक समाप्ति अछि, आपदाक समग्र समाधान नहि।

कलात्मक उपलब्धि, स्वर-सन्तुलन आ सीमा

एहि अध्यायक मुख्य उपलब्धि मौतक सूचना सुनब आ मौतक कथा लिखबक बीच दूरी रचब अछि। आधुनिक अस्पतालक घटनाक्रममे दृश्य–संक्षेप–पूर्वदीप्तिक सजग क्रम अछि; पंक्तिक विराम, अधूर वाक्य आ लघु उत्तर पात्रक थाकल चेतनाकेँ व्यक्त करैत अछि। महिला पात्र एके ‘त्यागमयी’ आवाज नहि छथि : सरिता सम्बन्धक भाषा बोलैत छथि, रमा वर्गीकरणक सीमा बदलैत छथि, उर्मिलाक बहिन मजदूरीक बही बचबैत छथि, रुखसाना भोजनक विकल्प दैत छथि, देवी गोंड अपना बचबाक अनेक कारण गनबैत छथि। एहि कारण बहुस्वरताक आधार मात्र संवादक अधिकता नहि, भिन्न पात्रक भिन्न निर्णयाधिकार अछि।

तथापि पाठक आलोचनात्मक दूरी रखि सकैत अछि। उपन्यासमे अनकेँ पात्र ठीक समयपर अपन कथनक सीमा स्पष्ट करैत छथि; क्रमशः रमा, सलमा, गोमती आ अदिति जकाँ लोकक वक्तव्य अनेक बेर अत्यन्त सजग

सम्पादकीय चेतावनी जेकाँ लगैत अछि। संकटग्रस्त देहक आकस्मिक, टूटल वा अव्यवस्थित भाषाकेँ किछु आर विस्तार देल जाइत तँ मानसिक विघटन आ संस्थागत संयमक अन्तर अधिक अनुभूतिपरक बनि सकैत छल। संगहि करुणाक तीव्रता मध्यम राखबाक रचनात्मक चुनाव नैराक मृत्यु-दृश्यकेँ सनसनीसँ बचबैत अछि, मुदा अनवरत प्रतिवादक क्रम कखनो शोकक असंगठित समयक अनुभूतिकेँ कम करैत अछि। ई सम्भावित सीमा पाठक भिन्न अनुभवक आधारपर तौलबाक अछि, निराधार दोषारोपण नहि।

अध्याय १२२ — अन्तिम देह

नाम नहि, अनकट कपड़ा : प्रतीक्षाक कथात्मक विन्यास

एहि अध्यायमे मृत्यु-समाचारक निश्चयक बदला मृतकक अनिश्चित पहिचान कथा चलबैत अछि। शवगृहक बरामदामे आधा खुलल सफेद कपड़ा, शशिभूषण महापात्रक नाप-डोरी आ चारि लिफाफा पहिल दृश्य बनबैत अछि। तीन मृतकक पहिचान अलग-अलग रूपसँ पुष्ट होएबाक बादो चौठम देहक नाम रुकेल अछि। शीर्षक ‘अन्तिम देह’ पाठककेँ ‘अन्तिमे नाम भेटत’ एहन प्रत्याशा देत, मुदा अध्यायक अन्त एकटा जानि-बुझि कऽ अनिर्णीत स्थानपर होइत अछि। ई अपेक्षा-विपर्यय कथा-पुस्तकक नैतिक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि : ककरो जीवनक कथा पूर्ण करबाक लागि गलत अन्तिम वाक्य लिखब उचित नहि।

अध्याय १२१ सँ कथनकाल आगाँ बढ़ैत अछि। एतय एक दिनक अनुक्रम—भोरक भीजल ओसारा, दोपहरसँ पहिने परिवारसभक आगमन, पहिचान-कक्षक अलग पालि, दुपहरक संशोधित सूची, सन्ध्याक अनकट कपड़ा—छोट-छोट काल-खंडमे बँटल अछि। घटनाक परिणाम नहि भेटब सेहो कथानकमे नकारात्मक शून्य नहि; ओ अलग प्रकारक परिवर्तन अछि। पहिलमे चौठम पाँतिमे अनुमानित नाम भरबाक दबाव छल; अन्तमे ओहि पाँतिमे ‘पहिचान प्रक्रियामे’ लिखल गेल अछि। कथाक अवस्था बदलि गेल, मुदा मूल प्रश्न कायम अछि। एहिसँ कथाक गति रुकैत नहि, ‘समाधान’क अर्थ बदलैत अछि।

शशिभूषणक कपड़ा-काटबाक काम अध्यायक एक सटीक क्रियात्मक रूपक अछि। नाप लेल कपड़ा काटि देलाक बाद पूर्ववत् घुरा नहि सकैत; अज्ञात देहपर एकटा व्यक्ति-नामक अंतिम आरोपण सेहो सामाजिक रूपसँ कठिनाई बढ़बैत। मुदा कपड़ाक रूपक एतए जमीनसँ कटि कऽ अमूर्त नहि : शशिभूषण बुनकर, ढुलाईवाला आ सहायकक वास्तविक मजदूरीक हिसाब रखैत छथि। सामग्री तैयार राखब आ अंतिम वस्त्र काटबक बीचक अन्तर पात्रक पेशागत ज्ञानसँ जन्मैत अछि। ‘अन्तिम देह’क अर्थ एहि ठाम कोनो सार्वभौम मृत्युतत्त्व नहि, अनिर्णीत व्यक्ति लेल समय आ जगह बचौने रखब अछि।

समांतर परिवार, परस्पर भिन्न कथा आ दृष्टिकेन्द्रण

दू परिवारक पर्चीमे ‘बुधन दास’, ‘बुधन पासवान’ जेकाँ अस्पष्ट अक्षर आ ‘बुधन साह’क भिन्न सम्भावना पहिचानक समस्या बनबैत अछि। कथा एतय एक परिवारकेँ झूठा आ दोसरकेँ साँच कहि कोनो सरल विरोध नहि बनबैत। सबिता अपन ससुरक देह पहिने चिन्हबाक दबावमे छथि; दोसर वृद्धा पतिक चिन्ह खोजैत छथि। दुनू स्त्रीक मन पहिचान चाहे छैक, मुदा दुनू निर्णायक दावे सँ पाछाँ हटैत छथि। ई समानान्तर संरचना दर्शबैत अछि जे

एके दृश्यक भीतर एकाधिक सम्भावित कथाएँ रहैत अछि। पाठक जे नाम चुनबाक लेल उत्कंठित अछि, ओहि पाठकीय अधीरतापर उपन्यास प्रश्न उठबैत अछि।

नामक अस्पष्टताक संग वस्तु-सङ्केतसभ सेहो भ्रमक संभावना बढ़बैत अछि : धोतीक रंग, खाली चश्मा-डिबिया, पटुआक गाँठ, अपूर्ण चिट्ठी, कलाईबन्धक अङ्क ‘४७२’ आ ‘४२७’, नीला धागा, मोबाइलक धुँधल फोटो। एहि वस्तुसभक भूमिका जाँचशास्त्रीय पाठ बनब नहि; आख्यानशास्त्रीय प्रश्न अछि जे लेखक पाठकक जानकारीकेँ केना क्रमशः बढ़बैत आ फेर सीमित करैत छथि। प्रत्येक वस्तु ‘अब समाधान भेटल’क अपेक्षा उत्पन्न करैत अछि, फेर ओकर पर्याप्त नहि होएब दृश्यकेँ खुलल राखैत अछि। एतय सूचनाक वितरण पात्रक अनुभवक संग जुड़ल अछि : नर्स देखल खाटक रंग कहि सकैत छथि, मुदा देह उठबैत समय हुनकर ध्यान दोसर रोगीक श्वासपर छल। कथावाचक ओहि अपूर्णताकेँ भरबाक लेल सर्वज्ञ छलाँग नहि मारैत।

सबिताक वाक्य—गलत नाम घुरा देब तँ दोसर घरक शोक चोरा आनब —अध्यायक अत्यन्त सघन भाषिक केन्द्र अछि। एहि ‘शोक चोराएब’मे एकटा सामाजिक अतिक्रमणक बोध अछि : अपना शोकक तीव्रता दोसरक सम्बन्ध नष्ट करबाक अधिकार नहि बनि सकैत। फेर सबिता पहिचान-कक्षसँ निश्चित उत्तर नहि लऽ निकलैत छथि, आ दोसर वृद्धा सेहो मनक आग्रहकेँ अंतिम निर्णय नहि बनबैत छथि। कथा एहि दू स्त्रीक अनिश्चितताकेँ दुर्बलता नहि, सम्मानित चरित्र-निर्णय रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। ई स्त्री-पर्वमे शोकक बहुवचनीय संरचनाक ठोस उदाहरण अछि।

वस्तुक आवर्तन : लवंग, पीयर कपड़ा, चाभी आ खुलल गाँठ

अध्याय १२१ क लवंगक डिबिया एतय लौटैत अछि; वृद्ध रोगिणीक बेटी ओकरा खाली करि देने छथि, मुदा माय लेल हलुक पीयर कपड़ा चुनैत छथि। एके रंग हुनकर घरक पूर्वजीवनक लघु स्मृति—छोटी बेटीकेँ गुड़ियाक कपड़ा सीब सिखेबाक दृश्य—वापस अनैत अछि। पाठककेँ वृद्धाकेँ केवल ‘चौठम पंक्तिसँ बाहर सुरक्षित पहिचान’क सूचीमे नहि देखबाक निमन्त्रण भेटैत अछि। सूक्ष्म वस्तु-प्रतीक एतय ‘जीवनक विस्तार’क स्थानापन्न बनैत अछि, मुदा देखायल स्मृति सीमित अछि : कतेक बरख पूर्वक घटना अछि, कथावाचक दावे सँ नहि कहैत।

उर्मिलाक बहिनक हाथमे घाटक चाभी आ बकाया मजदूरीक बही निरन्तरित श्रमक अलग वृत्तान्त अछि। शशिभूषणक सामग्रीक रसीद आ उर्मिलाक कामक बही अलग राखल गेल अछि। एहि दोहरी लेखाक कथात्मक प्रयोजन अछि : मृत्युक दृश्य समापन बनि कऽ किसी व्यक्तिक पेशागत जीवनक अधूर पन्ना मेटा नहि सकैत। अध्याय ३७–४८ सँ विकसैत कारीगरक स्वत्व आ श्रमक कथासूत्र मृत्यु-पश्चात् सेहो सक्रिय अछि। एहन आवर्तन पाठककेँ पूर्ववर्ती अध्यायसभ पुनः पढ़बाक बाट खोलैत अछि, केवल नब प्रसंगक परिचय नहि दैत।

शशिभूषणक आखिरी अनकट कपड़ा आ ‘खुलले रहल’ चौठम गाँठ शक्तिशाली अन्तिम बिम्ब अछि। सामान्य कथनमे गाँठ बान्हब बन्दी वा समाधानक बिम्ब भऽ सकैत; एतय गाँठ नहि बन्हबाक निर्णय अनिश्चित व्यक्तिक लेल कोनो गलत नाम निश्चित नहि करबाक दृश्यरूप अछि। कथावाचक एहि वस्तु-बिम्बक अर्थ एकाधिक बेर स्पष्ट करैत छथि। बिम्ब अपने बल पर पाठककेँ निष्कर्ष धरि पहुँचा सकैत छल; तकरा बारम्बार व्याख्यायित करब किछु

पाठकक लेल अनावश्यक पुनरुक्ति भऽ सकैत अछि। तथापि अनकट कपड़ा दृश्यगत स्मरण बनि जायबासँ ई दोहरावक जोखिम आंशिक रूपसँ कम होइत अछि।

दृश्य-लय, दीर्घ संकोच आ समालोचनात्मक सीमा

एहि अध्यायमे घटनाक क्रिया अपेक्षाकृत मन्द अछि, मुदा दृश्यगत तनाव तीव्र। परिवार प्रवेश करैत अछि, देखैत अछि, एखन निर्णय नहि देत, बहार निकसैत अछि; अधिकारी सूची फेर बनबैत अछि; शशिभूषण कपड़ा अलग रखैत छथि। ई पुनरावर्तित क्रिया शोकक समयकेँ ‘अन्तिम संस्कारक तारीख’क दबावसँ अलग करैत अछि। कथन-शैली एक सुस्पष्ट सम्पादित संवाद-क्रममे चलैत अछि, जाहिमे सबिता, दोसर वृद्धा, रमा, शशिभूषण, कबीर, सलमा आ देवी अपन-अपन अनुभवरूपी सीमासँ बात करैत छथि। कथा-आवृत्ति ‘कियो नाम अनुमानसँ नहि लिखू’ वाक्यक अलग रूपमे पुनः लौटैत अछि; अध्ययनक सवाल ई नहि जे ई सिद्धान्त ठीक अछि की नहि, बल्कि ई दोहराव भावात्मक गहनता रचैत अछि अथवा कथाक लय धीमा करैत अछि।

अध्यायक एहन कमजोरी सम्भव अछि जे कार्यालयी संवाद बहुजनक परिस्थितिक अन्तिम व्याख्याक भार अपने काँधपर लेब लगैत अछि। रमा प्रायः कथकक अपेक्षित अर्थ स्वयं कहि दैत छथि; शशिभूषण ओकर नैतिक समानान्तर बनैत छथि। दू परिवारक रुकैत-जाइत भाव, नाबालिगक चश्मा-डिबिया आ अधलिखल चिट्ठीक अस्पष्ट कथा आर लंबा स्वतन्त्र विस्तार माँगि सकैत छल। उपन्यास हुनकर सभ अनुभवकेँ अपूर्ण राखैत अछि—ई एक दिस रचनात्मक शिष्टता अछि, दोसर दिस पाठककेँ अलग परिवारक जीवनीक जटिलतामे कम समय देबाक सीमा। एहि दुनू पक्षकेँ संग रखल जाए तखनहि निष्पक्ष मूल्यांकन सम्भव।

अध्याय १२३ — गान्धारीक प्रश्न

कालधाराक पलटाव : आधुनिक शवगृहसँ युद्धभूमिक मातृ-स्वर धरि

अध्याय १२१–१२२ क आधुनिक चिकित्सकीय स्थलसँ तेसर अध्याय अचानक महाभारतक युद्धोत्तर भोरमे जाइत अछि। ई केवल नाम-जकाँ ‘गान्धारीक प्रश्न’ लिखि महाकाव्यक संकेत देब नहि; सम्पूर्ण स्वतंत्र प्राचीन कालधारा अछि, जाहिमे गान्धारी, धृतराष्ट्र, सञ्जय, दुःशला, द्रौपदी, युधिष्ठिर, कृष्ण आ अनेक अनाम परिवार उपस्थित छथि। एहि परिवर्तनसँ कथा समयक दो अलग धुरी बनबैत अछि : आधुनिक अस्पतालमे चौठम देहक अनिश्चित नाम आ प्राचीन युद्धभूमिमे अनेक परिवारक अनिश्चित मृत्युसमाचार। द्विकालीन संरचनाक सम्बन्ध कथनगत प्रतिध्वनि अछि, सीधा व्यक्तिक समतुल्यता नहि। सरिता गान्धारीक पुनर्जन्म नहि, आ आधुनिक नर्स सञ्जयक प्रतिरूप नहि; भिन्न कालक कथा एक-दोसराक प्रश्नकेँ नब प्रसंगमे सुनबैत अछि।

पहिल दृश्य गान्धारीक आँचरक दू टुटल सीवन आ पट्टीक कसावटसँ शुरू होइत अछि। पट्टीक सम्बन्ध लोकक ज्ञात गान्धारी-पहिचानसँ अछि, मुदा उपन्यास ओकरा स्थिर चिह्न नहि बनबैत; ओ पट्टी केतेक कसल जाउ, तकर निर्णय स्वयं करैत छथि। ‘दुखकेँ अन्हार करबाक लेल नहि’ एहन कथन हुनकर चेतनाक स्वतन्त्रता खोलैत अछि। अगिला दृश्य दुर्योधनक पत्नीक गोटेदार पटुका अछि : युद्धक सत्ताक प्रश्न एक असम्पन्न घरेलू सिलाइमे समा

जाइत अछि। बाहरी साम्राज्यक विनाश आ भीतरी छोट वस्तुक बीच ई आकार-विरोध अध्यायक मुख्य शिल्प अछि। गान्धारीक समग्र दृष्टिकेन्द्र 'महारानी'क श्रेणीसँ लगातार बाहर निकलैत अछि।

अध्यायक वर्तमान कथाकाल युद्ध समाप्त भेलाक बादक एक दिन अछि। रथक यात्रा, मैदान, विभिन्न परिवार, संध्याक पूर्वक प्रस्थान—मुख्य कालक्रम मोटामोटी अग्रसर अछि; मुदा गान्धारीक पुत्रसभक बाल्यकालक स्मृति आ दुर्योधनक पत्नीक घरेलू स्मृति समयकेँ भीतर-भीतर फाड़ैत अछि। कथा युद्धक अन्तिम क्षण विस्तारसँ दोहरबैत नहि; ओहि युद्धक समाचारक बाद बचल समयकेँ मुख्य कथ्य बनबैत अछि। एहि चुनावमे युद्धक 'घटना'सँ अधिक ओकर 'कहबाक अधिकार'क प्रश्न उठैत अछि।

बहुस्वरता : राजमाता, कुम्हारिन, दुःशला, नववधू आ द्रौपदी

गान्धारी अपन रथक मार्ग बदलि घड़ा बनौनिहार परिवारक स्त्रीसँ पुत्रक नाम पुछैत छथि। कुम्हारक उलटल चाक, अधबनल घड़ा आ पानि ढोब गेल पुत्रक अनुपस्थिति युद्धक श्रम-विनाशक अलग आख्यान अछि। ओ स्त्री राजमाताकेँ नमन नहि करैत छथि; उपन्यास ओकर मौनकेँ अपमान नहि, स्वतंत्र शोकक स्वीकृति बनबैत अछि। 'ओ पहिने घड़ा बनबैत छल' जकाँ साधारण वाक्य वीरगाथाक पदावली बदलि दैत अछि : व्यक्ति सैनिकक सहायक मात्र नहि, अपन शिल्पक जीवन वाला लोक छल। गान्धारी ओहि स्त्रीक मुखसँ नाम सुनैत छथि, अपन तर्फसँ पूरा जीवनी नहि रचैत। एहि बिन्दुपर बहुस्वरता शाब्दिक संवादक मात्र बेसी संख्या नहि, राजकीय केन्द्रसँ आवाजक सामाजिक स्थानान्तरण अछि।

दुःशला अपन भ्रातृ-शोकक बीच रथक घोड़ा जोड़ेवाला सैनिकक पत्नीसँ भेटबाक निर्णय करैत छथि। पति-ऋणक बही आ कमाओल मजदूरीक प्रश्न राज्यसँ सहायता भेटबाक सामान्य घोषणाकेँ अधूर बनबैत अछि। ई सूक्ष्म उपकथा दुःशलाकेँ कौरव-वंशक एकटा 'बहिन' मात्र नहि बनबैत; ओ अपन यात्रा, अपन प्रश्न आ दोसर स्त्रीक उत्तर सुनबाक समय निर्धारित करैत छथि। द्रौपदी आ गान्धारी कुटुम्बक मृत्यु-सीमाक पार कपड़ा, जल, लकड़ी आ बच्चाक देखभालक व्यावहारिक आयोजन पर बातचीत करैत छथि। दुनू स्त्रीक दुःख समान नहि, मुदा संवादक आधार प्रतिद्वन्द्वीक पराजय नहि, बचल लोकक आवश्यकता बनैत अछि।

एक नववधूक पति युद्धमे मृत छथि कि बन्दी, निश्चित नहि। हुनकर अनिर्णीत कथा अध्याय १२२ क चौठम शवसँ संरचनात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि। पाठक पिछिला अध्यायक सबिताक संकोच याद करैत अछि; एहि स्मरणक लेल लेखक कोनो आधुनिक दृश्य पुनः चलबैत नहि। एहन दूरस्थ प्रतिध्वनि आख्यानक पाठकीय स्मृति सक्रिय करैत अछि। राजवंशीय शोकक दृश्यक बीच अनाम नववधूकेँ समय देल जेनाइ स्त्री-पर्वक घोषित नामकेँ व्यापक बनबैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण आ ध्वनिक आयोजन

गान्धारीक पट्टी उपन्यासक दृष्टि-व्यवस्थामे जटिल भूमिका निभबैत अछि। कथावाचक बाहरक दृश्य—पसरल आँगन, उलटल चाक, धूर, विजय-पताका—पाठककेँ देखबैत अछि; गान्धारीक अनुभव घोड़ाक खुर, कपड़ाक कोर, लोकक चाल, गन्ध आ स्पर्शसँ बनेल अछि। फलतः कथावाचकक जानकारी आ मुख्य पात्रक इन्द्रिय-अनुभव एक नहि। कथावाचक तृतीयपुरुष, मुख्य दृष्टिकेन्द्र गान्धारी, मुदा अस्थायी रूपेँ दुःशला आ नववधूक

अनुभव सेहो मुखर अछि। एकर कारण ‘अन्हार’ स्वतः अज्ञानक रूपक नहि ठहरैत। जे गान्धारीक आँखिसँ बाहर अछि, ओ हुनकर सुनबाक आ प्रश्न करबाक क्षमता सँ बाहर नहि। ई पात्र-केंद्रित इन्द्रिय-विन्यास अध्यायक शिल्पगत विशेष उपलब्धि अछि।

विजयक पताका तह कएल जाइत अछि; विजयक घंटी श्मशानमे बजबाक बदला सभामे बजयबाक निर्णय होइत अछि। अध्याय १२१ क मौन घंटीक संग ई एक ध्यानयोग्य वस्तु-आवर्तन अछि। दुनू जगह सार्वजनिक ध्वनि रोकेल वा ठाम बदलल गेल; मुदा आधुनिक रमा आ प्राचीन गान्धारीक परिस्थिति अलग। पाठक दुनू खण्ड जोड़ि ‘कथा कहबाक सही समय’क प्रश्न रचैत अछि। ई अन्तरपाठीय समन्वय बिनु प्रत्यक्ष समरूपता कथात्मक एकता बनबैत अछि।

गान्धारीक दुर्योधनक कड़ा उँगरीसँ छुबाक दृश्य आ दुर्योधनक पत्नीकेँ दोष–स्मृति अलग राखबाक उत्तर चरित्रक विरोधी भाव एके समयमे उपस्थित करैत अछि। ओ पुत्रक अपराधकेँ मेटैत नहि, बाल्यकालक स्मृति सेहो नष्ट करैत नहि। एहि मिश्रित चेतनामे चरित्र निस्सन्देह एकरंगी ‘शाप देनिहार माय’सँ अधिक जटिल बनैत अछि। शापक भाषा उठबाक दृश्य सेहो केवल भविष्यक अनिवार्य घोषणा नहि; शोकक उग्र भाषा आ दायित्वक प्रश्न संग-संग चलैत अछि। उपन्यासक अपन गान्धारी-दृश्यक स्वर आ परम्परागत महाकाव्यक सम्पूर्ण व्याख्या एक नहि मानबाक सावधानी जरूरी अछि।

अन्तक अपूर्ण प्रश्न आ साहित्यिक सीमा

अध्यायक अन्तिमे गान्धारी रथक दिशा बदलि फेर कुम्हारिनक घरक बच्चासभक भोजनक खबर लेब जाएत छथि। एहिसँ प्रथम रास्ताक दृश्य अन्तिममे लौटैत अछि। ‘आखिरी गाथा’ कहबाक ठाम ‘पुनः भेट’क निर्णय कथा-चाप बन्द करैत अछि, मुदा शोकक प्रश्न बन्द नहि करैत। अधूरे सिलाइकेँ सेविका फेर सीबैत छथि; ई लघु श्रम-दृश्य आरम्भक वस्तुकेँ अर्थपूर्ण पूर्ण-वृत्त देत अछि। जकर प्रश्नक उत्तर नहि भेटल, ओकरा असफल आख्यान नहि, अधूर समाजक संकेत मानल जा सकैत अछि।

कलात्मक सीमा सेहो अछि। गान्धारीक लगभग प्रत्येक संवाद शुद्ध, सन्तुलित आ नैतिक-चिन्तनसँ भरल अछि; नववधू, दुःशला आ कुम्हारिनक कथनमे सामाजिक अन्तर रहितहुँ भाषिक तिक्तता, अस्पष्टता आ अनपेक्षित उद्वेलन आर बेसी होएत तँ बहुस्वरता अधिक सजीव होइत। युधिष्ठिरक संग दृश्य मे गान्धारीक प्रश्नसभ अनेक बेर उत्तरक सम्भावना पहिनेसँ निर्धारित करैत अछि। उपन्यास एहि प्रकार कतेको ठाम आख्यानक प्रश्नकेँ नैतिक निष्कर्षमे बदलयबाक कगारपर पहुँचैत अछि। तथापि भिन्न-भिन्न घरेलू वस्तु, गन्ध, स्पर्श आ आवर्ती यात्रा एहि तर्कप्रधानता केँ सूक्ष्म दृश्यात्मक संवेदना दैत अछि।

अध्याय १२४ — मन्दोदरीक भीतर

अन्तःपुरसँ नगरधरि : निजी शोकक विस्तृत काल-स्थान

“मन्दोदरीक भीतर” स्वतंत्र लङ्का-कालधाराक अध्याय अछि। पहिल दृश्य राजगृहक अन्नकोठरीमे चिरायल काँसक मापक पात्रसँ खुलैत अछि; एकर अन्त राजगृहक खुलल गलियारामे पानि भरनिहार वृद्धा अपन घरक बाट पुछैत छथि। एहि दू स्थानक बीच मन्दोदरी अन्तःपुर, बाजार, जड़ायल मार्ग, युद्धक्षेत्र आ पुनः अन्नकोठरी पार करैत छथि। समय एक दिनक भीतर संकुचित अछि, मुदा सामाजिक स्थानक विस्तार क्रमशः बढ़ैत अछि। ‘भीतर’ शीर्षककेँ केवल मनोवृत्तिक नाम मानब सीमित होएत : राजगृहक भीतरी प्राचीरक भीतर जे श्रम, भय आ अवरुद्ध आवाज अछि, तकर खुलासा कथा नगरक बाहर कदम रखिते करैत अछि।

रावणक मृत्यु-समाचार आरम्भमे सुनेल रूपमे अबैत अछि, आ देहक सोझाँ भेटिते मन्दोदरीक अनुभव बदलैत अछि। ई कथन-गति मृत्यु-सूचनाक ‘समाचार’ आ ‘प्रियजनक देहसँ सामना’क मानसिक दूरी देखबैत अछि। त्रिजटा सीताक सुरक्षा-संबन्धी उपलब्ध समाचार आ सुनल गप अलग करैत छथि, मुदा एहि कालधाराकेँ आधुनिक चिकित्सालयक प्रत्यक्ष संस्थागत प्रतिरूप मानब गलत होयत। कथाक रचनात्मक साम्य ई अछि जे युद्धक बादो अनिश्चित समाचार लोकक सम्बन्ध बदलैत अछि। मन्दोदरीक शोक रावणक देह देखितहुँ समाप्त नहि होइत; ई दृश्य हुनकर अतीतक स्मृति आ आगामी नव शासनक चिन्तामे बाँटि जाइत अछि।

मन्दोदरी भारी मुकुट स्वीकार नहि करैत, स्वयं सिअल सादी साड़ी चुनैत छथि। वस्त्रक ई परिवर्तन राजकीय पहिचानसँ निजी देहक अनुभव धरि दृष्टिकेन्द्रण बदलैत अछि। ‘ई हमर देहकेँ जानैत अछि’ जकाँ वाक्य वस्त्रकेँ पात्रक जीवनक सतत संगति दैत अछि, मुदा एकरा सम्पूर्ण राजनीतिक मुक्ति कहब जल्दबाजी हएत। मन्दोदरी एखनहुँ राजगृहक आँगन, पहरेदार आ विभीषणसँ संवादक विशेष पहुँच राखैत छथि; साधारण स्त्रीसभक जकाँ हुनका फाटकपर रोकल नहि गेल। उपन्यास एहि असमानताकेँ स्वयं दृश्य-दृश्य पर उभारैत अछि।

मन्दोदरीक चेतना : स्मृति, पश्चात्ताप आ विरोधी भावना

त्रिजटाक सोझाँ मन्दोदरी पूर्वक एकटा मौन स्वीकारैत छथि : ओ राजसभामे सार्वजनिक विरोधक अवसर छोड़ि देने छलीह, रावणक क्रोध आ उपहासक भय हुनका रोकने छल। कथावाचक एहि स्वीकारकेँ पूर्वदीप्तिक रूपमे उपयोग करैत अछि। पुरान समयक एक संक्षिप्त दृश्य वर्तमान चरित्रक ‘हम विरोध कएने रही’ कथनकेँ अधिक जटिल बनबैत अछि। निजी कहब आ सार्वजनिक रूपसँ कहबक भिन्नता ओ स्वयं चिन्हैत छथि। एहि प्रकार पात्र आत्म-निर्दोषताक सरल कथा रचबासँ इन्कार करैत अछि; आत्मालोचनाक स्थान ओकर वर्तमान संवादक भीतर विकसित होइत अछि।

युद्धमार्गमे लाल धागावला सैनिकक देहपर तीन स्त्री अलग-अलग अपन सम्बन्ध अनुमानैत छथि। ओहि दृश्यसँ मेघनादक बचपनक लकड़ीक नावक स्मृति जागैत अछि। ई स्मृति युद्धक वीर-गाथासँ भिन्न घरेलू काल बनबैत अछि : छोट बच्चा नहरक धाराकेँ दोष दैत छल, माँ ओकरा नावक तली देखबाक सिखबैत छलीह। कथा एतए अतीतकेँ ‘सही मेघनाद’क अंतिम सत्यक रूपमे नहि देत; मन्दोदरीक चेतनामे एक समयक जीवित स्नेहक अनुभव

रूपमे देत अछि। बादमे रावणक वीणाक ढील तार रावणक संगीतक स्मृति जगबैत अछि। एहन स्मृतिक कारण मृत राजा केवल एक दैत्यात्मक वा वीर-आदर्शक स्थिर आकृति नहि रहैत, मुदा ओकर निर्णयक उत्तरदायित्वो क्षमा नहि भऽ जाइत।

रावणक देह लग मंत्री 'उपयुक्त' वीर-शोकगाथा लिखेबाक प्रस्ताव करैत छथि। एहि दृश्यमे स्वर पर कब्जाक संघर्ष अछि। मन्दोदरी अपन व्यक्तिगत दुख आ रावणक राजकीय निर्णयक परिणाम दुनू कहबाक अधिकार राखैत छथि। हुनकर ओहि वाक्यक मुख्य सम्बन्ध स्त्री-पर्वक अन्य अध्यायसँ अछि : जखन कबीर नैराक आखिरी सन्देशकेँ सार्वजनिक चित्र नहि बनय देलनि, आ उर्मिलाक बहिन पूर्ण नाम माँगलीह, तखन 'ककर कहानी के लिखत?' प्रश्न आधुनिक दृश्यमे उठल छल। मन्दोदरीक राजकीय शोक-भाषणक इनकार एहि प्रश्नक दूसरा सांस्कृतिक रूप अछि। एतय समानता पात्रक आत्मा वा ऐतिहासिक निरन्तरता नहि, आख्यानक अधिकारक संरचनात्मक प्रतिध्वनि अछि।

गौण पात्र आ लङ्काक सामाजिक भूगोल

तेल बेचएवाली वृद्धाक आधा जड़ायल दोकान आ तराजू राजगृहक बाहरक हानि दृश्य बनबैत अछि। ओ अपन दू पुत्रक खबर पुछैत छथि, मुदा मन्दोदरी तत्काल उत्तर देबाकेँ असमर्थ छथि। अध्यायक अन्तक आगाँ वृद्धाक प्रश्न आ मन्दोदरीक शोक संग-संग चलैत अछि। 'राजघरानाक बड़का लोक' आ बजारक महिला एके शोकमे नहि विलीन होइत। पहिलक संग राज्यक सत्ता आ पछिलुक संग जीविकाक जोखिम अलग अछि। एहि अलगावक कारण लङ्का केवल रावणक किला नहि, तेल, रथ, जल, अन्न, वस्त्र आ स्मृति सँ चलैत शहर बनैत अछि।

रथकारक पत्नीक देह-खोज, भोजन बनबैत स्त्रीक बेटीक चिमटा माँगब, मालिनीक पानि भरबाक काम आ रसोइक वृद्धाक चिरायल माप-पात्र मिलिकऽ उपन्यासक सामाजिक दृश्य-विस्तार रचैत अछि। कियो सिरिफ 'राजकार्यक सेवक' रूपमे रहि नहि जाइत; ककरो अपन घरक बाट चाही, ककरो मायक साधारण चिमटा, ककरो पतिक सूचना, ककरो भोजन बाँटबाक पर्याप्त पात्र। एहि लघु अभिलाषासभक लड़ी महाकाव्यीय इतिहासक एकमात्र विजयी–पराजित केन्द्रसँ कथा बाहर अनैत अछि। मन्दोदरी द्वारा बचेबाक काठ बाजारक घर बनयबाक लेल राखबाक आग्रह निजी शोक आ सार्वजनिक हानिक बीच एक वस्तुगत निर्णय बनैत अछि।

त्रिजटा सीता-संबन्धी समाचारक संग सीमा बतबैत छथि; मन्दोदरी हुनका मुक्त करबा नहि सकबाक अपना अतीत स्वीकारैत छथि, मुदा सीता हुनकर बात सुनबाक बाध्य नहि छथि। ई संवाद स्त्री पात्रसभक परस्पर सम्बन्धकेँ सहज एकजुटता-मात्र नहि बनबैत। सहानुभूति, दायित्व, असफलता आ सुनबाक अधिकारक असमानता अखनहुँ उपस्थित अछि। मन्दोदरीक अन्तःपुरसँ निकलनाइ एहि कारण एकदिनक सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन नहि, परन्तु कतेको छोट सुनवाई शुरू होएबाक वर्णन अछि।

दोहराओल आरम्भ-बिम्ब आ खुलल अन्त

प्रथम पाठांशक चिरायल मापक पात्र अन्तिमक निकट पुनः आबैत अछि। नव पात्र उपलब्ध नहि, ओहि पुरान पात्रक चिरा बाँधबाक प्रस्ताव छल; मन्दोदरी दाम–मापक भरोसा देखबाक बात उठबैत छथि। एतय बिम्ब लङ्काक अवस्था बनबैत अछि : टूटल व्यवस्था तुरन्त नव घोषित करैतहि ठीक नहि भऽ जाइत; जकरा उपयोग

करबाक अछि, ओकर क्षति आ उपयोगिता दुनू देखब पड़ैत। मुदा लेखक पात्रक वाक्यसँ बिम्बक अर्थ प्रायः स्पष्ट करैत छथि; किछु जगह मौन दृश्यपर अधिक विश्वास कएल जाइत तँ बिम्बक खुलापन बचित।

राजगृह लौटलापर रावणक ढील वीणा-तार बहुत छोट दृश्य अछि, मुदा ई उपन्यासक अतीत-सम्बन्धक सूक्ष्म केन्द्र बनैत अछि। रावणक एक रातिक संगीत-स्मृति वर्तमान मे मन्दोदरीक विरोधक अधिकार नहि घटबैत। प्रेमक स्मृति आ अन्यायक आलोचना दोसराक निषेध नहि बनैत—एहि द्वन्द्वसँ चरित्रक जटिलता बनैत अछि। अन्तिम पाठांशमे मालिनी एक वृद्ध पानि भरनिहार स्त्रीक छूटल नाम लऽ अबैत छथि। मन्दोदरी स्वयं ओकर घर जाएबाक प्रश्न सुनबाक लेल खुलल गलियारा दिस बढ़ैत छथि। शीर्षकक ‘भीतर’ कहियो निजी अन्तःपुरमे बन्द नहि; आखिरी क्रियामे कथा बाहरी व्यक्तिक आवाज धऽ लैत अछि।

अध्यायक सम्भावित संरचनात्मक दुर्बलता ई अछि जे रावणक मृत्यु-पश्चात् अनेक स्त्री, वृद्ध, सैनिक आ सेवक छोटे-छोटे दृश्यसभमे लगभग एकहि दिशाक सामाजिक आग्रह प्रस्तुत करैत छथि। एकरे कारण मन्दोदरीक विरोध कखनो अत्यन्त तैयार सार्वजनिक नीति जेकाँ लगैत अछि, आ लोकक बोलीक विशिष्ट स्थानीय रुखापन कम बुझाइत अछि। विभीषणकेँ आदेश देबाक तीन मुद्दा कथानकक ठोस प्रगति अछि, मुदा ओहि आदेशक लागू होएब अध्यायमे देखाओल नहि गेल : लिखल निर्देश आ वृद्धाक घर पहुँचब दू अलग कथा-परिणाम छथि। लेखक अन्तिमे छूटल नामक समस्या पुनः रखैत छथि; तेँ ‘सम्पूर्ण सुधार’क असावधान निष्कर्ष स्वयं पाठसँ मेल नहि खाएत। एहि अपूर्णतामे अध्यायक मानवीय विश्वसनीयता सेहो निहित अछि।

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२१–१२४ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

कथाक संगति : दुइ आधुनिक अध्याय, दुइ स्वतंत्र महाकाव्यीय दृश्य

एहि चतुष्टयक रचना शोकक दू भिन्न स्थानमे, मुदा समयक एके नैतिक तात्कालिकतामे, विभक्त अछि। १२१–१२२ मे ढहल अस्पताल, शवगृह, परिवारक यात्रा, घरक औषधि, रसोइ आ कपड़ा-पंजीक आधुनिक कथाधारा अछि। १२३ गान्धारीक युद्धोत्तर यात्रा आ १२४ मन्दोदरीक लङ्का-यात्रा स्वतंत्र प्राचीन दृश्य रूपमे प्रस्तुत अछि। कथाक मध्यक अचानक काल-परिवर्तनकेँ केवल पौराणिक उदाहरण जोड़ब नहि कहि सकैत छी; ई रचनागत स्थानान्तरण पाठककेँ आधुनिक शोकक ठीक बाद राजवंशीय युद्धोत्तर शोकक दृष्टिसँ देखने बाध्य करैत अछि। गान्धारीक तह कएल विजय-पताका आ मन्दोदरीक अस्वीकारल वीर-शोकगाथा आधुनिक पत्रकारक मृत्यु-चित्र माँगबाक दृश्यकेँ दूरसँ प्रश्न करैत अछि। एक काल दोसराकेँ ‘सिद्ध’ नहि करैत; दुनूक कथनगत तनाव एक-दोसराकेँ नब अर्थ दैत अछि।

कथन-क्रममे प्रथम आधुनिक दृश्य सम्पर्क-विच्छेद → देह भेटब → मृत्यु-पुष्टि → शोक आ शेष काज अछि। दोसरमे तीन नामक पुष्टि → चौठमक अनिश्चितता → दू परिवारक प्रतीक्षा → गलत नाम रोकब। गान्धारीक दृश्य युद्धसमाचार → शवभूमि-यात्रा → अनेक स्त्रीक स्वायत्त कथन → विजय-घोषणाक स्थगन बनैत अछि; मन्दोदरीक दृश्य सुनेल मृत्यु → नगरक विनाशक यात्रा → रावणक देहसँ सामना → अनाम सेवकक घरजाय

अधिकारक प्रश्न। एहि चारि क्रमकेँ एकटा प्रतिमानमे फिट करब उचित नहि। विविधता ई अछि जे निश्चित मृत्यु सेहो कथा-अन्त नहि, अनिश्चित नाम सेहो कथा-शून्यता नहि।

स्त्री-दृष्टिकेन्द्रण, कथन-संयम आ आलोचनात्मक निष्कर्ष

चारू अध्यायमे महिला पात्र अनेक रूपेँ छथि : सरिता अपन प्राणवान स्मृतिक संग बाँचि रहल छथि; नैरा आ उर्मिला देहसँ अनुपस्थित भऽ गेलीह मुदा हुनकर काजक प्रभाव उपस्थित अछि; सबिता आ दोसर वृद्धा पहिचानक अनिश्चितता लऽ जीबैत छथि; गान्धारी राजवंशीय शोकमे अनाम मजदूरक नाम सुनैत छथि; मन्दोदरी अपन घरक भयक इतिहास स्वीकारैत छथि। एहि सभकेँ एकरंग ‘स्त्रीपीड़ा’ कहि देब कथाक सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक विभेद मेटाएब हएत। विशिष्ट दृष्टिकेन्द्रण, स्मृति-दृश्य, वस्तु-बिम्ब आ वार्तालापक माध्यमसँ प्रत्येक स्त्रीक निर्णय अलग आकार पबैत अछि।

मुख्य उपलब्धि शोकक बादक समयक विस्तार अछि। सूतक समाजमे मृत्यु सहलाक बादो भोजन पकब, औषधि पहुँचेब, बच्चाकेँ खुऔनाइ, मृतकक कामक नाम बचेनाइ, कपड़ा नापब, रोएबाक अधिकार आ चुप रहबाक स्वतन्त्रता जारी रहैत अछि। तथापि एकटा सम्भावित रचनात्मक सीमा समूचा चतुष्टयमे फैलल अछि : अनेक संवादसँ पात्र अपन वक्तव्यक अर्थ अत्यन्त स्पष्ट करैत छथि। ई भाषा अभिलेखीय शिष्टता आ नैतिक सजगता रचैत अछि, मुदा चरित्रस्वरक पूर्ण स्वतन्त्रता, अव्यवस्थित दुःख आ पाठकक अनुमानक खुले स्थानकेँ कखनो छोट सेहो कऽ दैत अछि। चारू अध्यायक सशक्त वस्तु-दृश्य—मौन घंटी, अनकट कपड़ा, टुटल सीवन, चिरायल माप-पात्र—एहि विवेचनात्मक प्रवृत्तिक सृजनात्मक प्रतिरोध सेहो छथि।

अध्याय १२५ — कुन्तीक स्वीकृति

अर्घ्यक ठमकल क्षण : युद्धक समाप्तिक बाद कथाक नब आरम्भ

“कुन्तीक स्वीकृति” युद्ध समाप्त भेलाक बादक एक दिन केँ अपन मुख्य कथनकाल बनबैत अछि। पहिल दृश्य गङ्गाक घाटपर काँसक लोटासँ छलकैत पानि आ कुन्तीक अधरमे रुकल हाथसँ खुलैत अछि। एतय पहिने कर्णक जन्मक रहस्यक जानकारी नहि, ओकरा कहबाक शारीरिक कठिनाइ प्रस्तुत अछि। पानि भरब, अर्घ्य देब आ नाम लेब जेकाँ लगातार चलैत अनुष्ठानक बीच एक नामक उच्चारण ठमकि जाएब कथानकमे व्यवधान बनैत अछि। युधिष्ठिरक हाथमे कुशक तिनका, अर्जुनक चढ़ल धनुष-डोरीक कल्पित तनाव आ कुन्तीक लोटाक गील किनार अलग-अलग पात्रक मनःस्थितिक दृश्यात्मक संकेत छथि। शोकसभाक सामूहिक गति रोकि एकटा निजी कथन लेल स्थान बनाओल गेल अछि। एहिमे कथा-घटना आ कहबाक प्रक्रिया एक-दोसराक कारण बनैत छथि : जे कहल नहि गेल, ओहि कारण पूर्ववर्ती घटनाक अर्थ बदलए लगैत अछि।

घाटसँ नीमक छाहरिमे जाएब मात्र स्थल-परिवर्तन नहि। सार्वजनिक मृत्युकर्मसँ सीमित श्रोता-वृत्तमे प्रवेश कथनक स्तर बदलैत अछि। कुन्ती पहिने पुत्रसभकेँ सुनबाक अवसर देबाक आग्रह करैत छथि, मुदा द्रौपदीकेँ सेहो रहबाक कहैत छथि, कारण एहि गुप्त इतिहासक परिणाम हुनकर जीवनपर पड़ल अछि। कथावाचक एहि चुनावकेँ स्त्रीक आत्मकथन आ दोसर व्यक्तिक प्रभावित होएबाक अधिकारक बीच रखैत अछि। कर्णक जन्म-सम्बन्धी

सूचना पाठकक लेल महाभारतीय स्मृतिक परिचित तथ्य भऽ सकैत अछि, मुदा एहि दृश्यभितर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल आ सहदेवक लेल ओ जानकारी अचानक प्राप्त होइत अछि। कथ्यक परिचय आ पात्रक अज्ञानक एहि अन्तरसँ नाटकीय विडम्बना बनैत अछि : पाठक जानैत छथि जे नाम उद्घाटित भेलासँ युद्धक समाप्त इतिहास फेर प्रश्न बनि उठत।

विलम्बित उद्घाटन आ प्रत्यावर्ती कथाक्रम

कुन्तीक कथन तीन अलग अतीत-द्वार खोलैत अछि। पहिल, विवाहपूर्व जन्म आ नदीमे शिशु छोड़बाक स्मृति; दोसर, युद्धपूर्व कर्णसँ भेट आ ओकरा पाँच पाण्डवक बीच चारि भाइकेँ नहि मारबाक आग्रह; तेसर, पिटारीक ढक्कनक सूत अटकल रहबाक असहज दृश्य। ई तीनू पूर्वदीप्ति एक क्रममे सम्पूर्ण जीवनी नहि सुनबैत। पहिल अतीत कुन्तीक भय आ मातृत्वक असमान निर्णय खोलैत अछि; दोसर कर्णक स्वतंत्र चुनाव देखबैत अछि; तेसर भौतिक सूतक स्मरण हुनकर आत्मस्वीकृतिमे अस्पष्टता आ अपराधबोध जोड़ैत अछि। कथावाचक स्मृतिक अनिश्चितता सेहो रखैत अछि—कुन्ती शिशुक मुखक उजासक रंग ठीकसँ याद नहि कऽ पबैत छथि। एकर कारण फ्लैशबैक सर्वज्ञ इतिहासक पुनःप्रसारण नहि, वृद्ध पात्रक वर्तमान चेतनामे अतीतक पुनर्निर्माण बनैत अछि।

अर्जुनक ध्यान घाटपर लकड़ी चिरैत वृद्धसँ हटि कर्णक कादोमे अटकल रथचक्र दिस जाएत अछि। एहि स्मृतिसँ युद्धक पहिने वर्णित निर्णायक क्षण पछाति नव सम्बन्धक आलोकमे पुनः देखाइत अछि, मुदा कथावाचक पुरान क्रिया नष्ट नहि करैत। अर्जुन एहि क्षणक बाद अपन निर्णयक बारेमे सजिलहि “जँ जनैतहुँ तँ...” कहबाक असम्भवता स्वीकारैत छथि। ई प्रतिकल्पनात्मक प्रश्न पाठककेँ वैकल्पिक कथा-संसारक झलक दैत अछि, मुदा लेखक ओहि नघटल संसारकेँ निश्चित घटना बनाकऽ नहि लिखैत। युधिष्ठिरो राज्य आ युद्धक अन्य सम्भावित दिशा सोचैत छथि, मुदा कोन निर्णय बदलित से निश्चित नहि कहैत छथि। एहन अनिर्णीत प्रतिकल्पना अध्यायक शिल्पगत संयम अछि।

बहुकेन्द्रित शोक : पाँच भाइ, द्रौपदी आ राधाक घर

एहि अध्यायक दृष्टिकेन्द्रण लगातार कुन्तीपर केन्द्रित रहलो पर हुनकासँ अलग लोकक अनुभव धरि पहुँचेबाक बाट खोलैत अछि। युधिष्ठिर विश्वासभङ्ग आ राज्यक स्मृतिक भाषा बोलैत छथि; भीम युद्धमे अपन भूमिकाक अर्थमे अनपहिचानल वचनक प्रवेश देखि विचलित छथि; अर्जुनक प्रतिक्रिया हिंसक क्षणक निजी स्मृतिसँ जुड़ैत अछि; नकुल–सहदेव अपन जन्म आ घरक प्रश्नसँ कर्णक जीवनक कल्पना करैत छथि। सभ भाइ एक्के घड़ी मातासँ एक स्वरमे क्षमा नहि करैत। एहि भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया बिना कर्णक जन्मक नव जानकारी एक नाटकीय ‘खुलासा’मात्र भऽ सकैत छल। कथा एक-एक सम्बन्धक भीतर परिवर्तनक अलग लय रचैत अछि।

द्रौपदीक उपस्थिति विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। ओ कर्णक राजसभा-व्यवहारक चोट नहि बिसरैत छथि, यद्यपि कुन्तीकेँ जन्मक सत्य कहबाक अधिकार मानैत छथि। बादमे अपन पाँच मृत पुत्रक शोकक बीच नव जेठ सम्बन्धक अर्थ तत्काल निर्धारित करबाक असमर्थता सेहो व्यक्त करैत छथि। एहि कारण अध्याय जन्मक उद्घाटनकेँ सम्पूर्ण नैतिक पुनर्वास नहि बनबैत। कर्णक दुर्दशा, हुनकर वीरता, पुरान कटुता आ द्रौपदीक अपमान—ई सभ एकहि कथासंसारक परस्पर असुविधाजनक अंश बनल रहैत अछि। कुन्ती द्रौपदीपर अपन आत्मस्वीकृति

स्वीकार करबाक बाध्यता नहि थोपैत छथि। कथा एतय अन्तर्पाठीय पात्रकेँ आदर्शक स्थिर पदवीसँ बाहर आनि असहमतिक स्थान सुरक्षित करैत अछि।

घाटक बायाँ कात कर्णक पालनहार परिवारक वृद्ध सम्बन्धिनीक प्रवेशसँ कथाक केन्द्र राजवंशसँ हटैत अछि। जन्मदात्री मायक कथा राधा–अधिरथक पालनक वर्षोंकेँ खा नहि जाए—एहि आग्रहमे कथा एक व्यक्तिक समानान्तर जीवनवृत्तसभकेँ संग रखैत अछि। वृद्ध स्त्री कुन्तीकेँ तुरन्त विश्वास अथवा सांत्वना नहि दैत छथि। राजकीय घोषणा आ पालनहार परिवारक निजी अर्घ्य अलग-अलग सम्पन्न होइत अछि। एके नामपर अनेक हाथ जल धरैत छथि, मुदा एके भावसँ नहि। ई बहुस्वरता उपन्यासक पूर्वक अध्याय ८५ आ ९४ मे उठल जन्म–पालन सम्बन्धक कथात्मक प्रतिध्वनि सेहो बनबैत अछि; एकरा आधुनिक पात्रक पौराणिक प्रतिरूप मानबाक आवश्यकता नहि।

लोटा, जल आ अवकाशक प्रतीकात्मक क्रिया

आरम्भक छलकल पानि अन्तमे गहिर सन्ध्याक जल, रिक्त लोटा आ दोसर लोकक लेल भरबाक सम्भावनामे बदलैत अछि। ई वृत्ताकार वस्तु-बिम्ब अध्यायक रूपात्मक एकता दैत अछि। मुदा जलक कार्य केवल मातृत्व अथवा शुद्धिक अमूर्त रूपक नहि : शोकक रीति, देहक थकान, घाटक सीढ़ीक फिसलन, सेवकक श्रम आ अनेक परिवारक अलग अर्घ्य—सभ एहि वस्तुक संग जुड़ैत अछि। कुन्ती अन्तमे सेवकक सहारा लैत छथि आ लोटा खाली रखि दैत छथि। एहि क्रियामे स्वीकारोक्तिक पूर्ण विजय नहि, आन लोकक उत्तरक प्रतीक्षा अछि। राधाक घरमे जायबासँ पहिने अनुमति पुछबाक इच्छा कथा-आरम्भक एकतरफा निर्णयक विरुद्ध स्थित नव व्यवहार अछि। किन्तु राधाक स्वयं विस्तृत उत्तर एहि अध्यायमे सुनाओल नहि गेल; ओकर स्वर परोक्ष वृद्ध सम्बन्धिनी द्वारा प्रवेश करैत अछि। ई उपस्थितिक संग एकटा शिल्पगत कमी सेहो कहि सकैत छी।

पाठकक लेल मुख्य अनुभूति ‘गुप्त सत्य भेटल’सँ अधिक ‘सत्य भेटलाक बाद समय कोना चलत’ अछि। कुन्ती बिना क्षमाक आश्वासन पाबि घाटसँ हटैत छथि। भीमक अस्वीकारमे सम्बन्ध पूर्ण विच्छिन्न नहि, अर्जुनक प्रश्नमे तत्काल निष्कर्ष नहि, राधाक घरक चुप्पीमे आगाँक कथा खुलल अछि। ई अपूर्ण अन्त शोकक वास्तविक बहुस्तरित कालसँ संगति रखैत अछि।

कथनक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि परिचित महाकाव्यीय उद्घाटनकेँ स्मृति, समय, बहुश्रोता आ आन्तरिक असहमतिसँ नब बनायब। जन्मक जानकारीक वितरण, द्रौपदीक प्रतिवाद, राधाक घरक अलग रीति, अर्जुनक अनिर्णीत प्रतिकल्पना आ कुन्तीक सीमित समापन एक संग कर्णकेँ बहुवृत्तीय पात्र बनबैत अछि। तथापि अनेक संवाद अत्यन्त सुसम्बद्ध व्याख्यात्मक भाषामे रचल छथि : प्रत्येक पात्र अपन सम्बन्धक सूक्ष्म नैतिक सीमा लगभग पूर्ण वाक्यमे स्पष्ट करैत अछि। युद्धोत्तर आकस्मिक विस्मयक टूटल भाषा वा असंगठित उन्मेष आर विस्तार पबैत तँ कतिपय दृश्य अधिक जीवन्त बनि सकैत छल। राधाक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष स्वरक अनुपस्थिति सेहो राजवंशीय केन्द्रक बचे हुए वर्चस्व दिस संकेत करैत अछि। एहि सीमासभक बावजूद अध्याय जन्मक रहस्यक

समाधानक बदला कथाक अधिकारक पुनर्वितरणपर अन्त होइत अछि—ई एकर अलग आख्यानात्मक पहचान अछि।

अध्याय १२६ — भातक मात्रा

भातक तेसर माप : घटना घटित नहि होएब सेहो कथाक विषय

प्राचीन गड्गाघाटक राजकीय उद्घाटनक तुरन्त बाद “भातक मात्रा” आधुनिक रसोइक पीतलाक कटोरीसँ खुलैत अछि। दुनू अध्यायक आरम्भमे पात्रक हाथ आ जलक निकटता अछि; मुदा १२५ मे हाथ अर्घ्यक नाम रोकैत अछि, १२६ मे चाउरक तेसर माप रोकि नहि पबैत। सरिता नित्य जतेक पकबैत छलीह, उतबे पकएबाक क्रममे मृत नैराक हिस्सा भाँड़मे डालि दैत छथि। एहि अनिच्छित क्रियामे शोक एकटा पैघ घोषणाक बदला शरीरक अभ्यास बनि सोझाँ अबैत अछि। तेसर थारी निकालल, बचल भातक उपयोग कएल, आ अगिला भोर माप घटत कि नहि ई अनिश्चित छोड़ल—एहि सभ साधारण क्रियाक क्रम अध्यायक मुख्य घटनात्मक चाप अछि। कथाक घटना-मानचित्रमे दिस सकैत अछि जे बाह्य सार्वजनिक घटना कम अछि; मुदा भीतरक निर्णय आ स्मृति-सम्बन्ध निरन्तर बदलैत अछि। एकरा शून्य घटना कहब अध्यायक कलात्मक विधान नहि बुझब होयत।

पहिल तीन पाठांशमे भाँड़, फाटल ढकनी, सिलाइक मशीन आ ग्राहकक कुरती एक छोट काल–स्थान रचैत अछि। नैराक पुरान स्वर ‘खून निकैलत’ सरिताक स्मृतिमे उठैत अछि, मुदा कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे वास्तवमे ओ आवाज उपस्थित नहि। एहि स्पष्टीकरणक कारण शोकग्रस्त चेतनाक अनुभूति चमत्कारिक अलौकिक घटनामे नहि बदलैत; भीतर सुनल आवाज आ बाहरक मौनक भेद बनल रहैत अछि। मशीनक चक्का स्थिर रहब, अधबनल कुरती आ ग्राहकक नाप एकर विपरीत समय-सूचक छथि—जगतक काम बन्द नहि भेल, यद्यपि सरिताक कामक गति बदलि गेल। मृत्युक बाद समय स्वतः समान लयमे चलि नहि सकैत; उपन्यास घरक वस्तुसभसँ एहि असन्तुलनकेँ दृश्य बनबैत अछि।

अनेक पूर्वदीप्ति : नैराक एकाधिक जीवित रूप

अध्यायमे वर्तमानक भीतर छोट-छोट पूर्वदीप्ति बारम्बार प्रवेश करैत अछि। भातक अतिरिक्त मात्रा, थारीमे बचे कौरपर माय-बेटीक झगड़ा, बरखामे जरल भातक स्वाद, मशीनक धागाक गिनती, सिलाइक अतिरिक्त मेहनताना—ई स्मृतिसभ एकसमान स्वर्णिम अतीत नहि बनबैत। नायकत्वक एकटा तैयार प्रतिमाक बदला नैरा एहन बेटी रूपमे रहैत छथि जे अपन भागक भात स्वयं परसब चाहैत छलीह, मायक अवैतनिक कसीदाक समयक दाम माँगैत छलीह आ चिर-परिचित घरेलू रीतिपर असहमति प्रकट करैत छलीह। सरिताक आँसू आ हँसी एक संग उठैत अछि; स्मृति शोककेँ एकरंगी नहि करैत।

कथनक आवृत्ति सेहो ध्यान देबाक विषय अछि। नित्य भात परसबाक आदत अनेक दिनक पुनरुक्त व्यवहारकेँ एक दृश्यभितर संघनित करैत अछि; आजुक मात्राक एकल घटनामे ओ सभ दिन वापस प्रवेश करैत अछि। नैराक अलग-अलग भोजन-स्मृति सरिता आ चन्द्रिका लग भिन्न अछि। कबीरक घरमे नैराक भात–दाल विषयक अलग झगड़ा छल। एहि भिन्न-भिन्न स्मृतिसँ मृत पात्रक जीवन एक स्रोतक अधिकारमे बन्धैत नहि अछि। ‘नैरा केहन

छलीह’क एक मात्र आधिकारिक परिचय नहि बनैत; अनेक सम्बन्धक भीतर हुनकर अलग रसोइ, भाषा आ व्यवहार छल।

दृष्टिकेन्द्रण : सरिताक मन लग रहि दोसरा लेल जगह

कथावाचक तृतीय पुरुषमे रहैत छथि, मुदा घरेलू वस्तुक चयन सरिताक अनुभवसँ निर्देशित अछि। चन्द्रिकाक दयामे खाली कटोरी देनेक भावुक घोषणा नहि, भीजल लकड़ी कात करब अछि। कबीर थारीक तेसर हिस्सा देखि तुरन्त दुसराक शोकपर भाषण नहि दैत छथि; ओ पहिने भोजन सुरक्षित रखबाक उपाय बतबैत छथि। मधु जलनिकासीक सूचना लऽ अबैत छथि, मुदा सरिताक कागद पढ़बाक इच्छाक समय पुछैत छथि। छोट बालिका नैराकेँ देने पाठशालाक लेख देखेबाक वचनक उत्तर माँगैत अछि, मुदा सरिता तुरन्त नैराक स्थानापन्न निश्चित नहि करैत छथि। ई चारि अतिथि अपन-अलग सामाजिक समय संग रसोइमे प्रवेश करैत छथि। स्त्रीक शोकक घेरामे सेहो समाजक चलैत वास्तविकता देखाओल गेल अछि।

एहि ठाम सरिता स्वयं सहायताक आकार निर्धारित करैत छथि : नव वस्तु किनबाक बदला एक छोट साफ डिब्बा माँगैत छथि। एहन निर्णय चरित्र-विकासक सूक्ष्म चरण अछि। आरम्भमे थारी परसब हाथक आदतपर हुनकर नियन्त्रण कम देखाइत अछि; अन्तक कात भोजन राखब, बाँटब, ग्राहकक तिथि कहब आ आज सूचना नहि पढ़ब —ई सभमे ओ अपन छोट-छोट अधिकार वापस निर्धारित करैत छथि। मुदा ई परिवर्तन ‘शोकसँ स्वस्थ भऽ गेलीह’क नाटकीय रूपान्तर नहि। अन्तिम पाठांशमे तेसर माप काल्हि फेर उठत कि नहि, से खुलल रहैत अछि। चरित्रक गति पूर्ण समाधान नहि, निर्णय स्थगित रखबाक स्वायत्तता अछि।

वस्तु-शृंखला : तेसर थारी, लाल सूत, कागद आ फोन

भातक तेसर थारी एकटा आवर्ती वस्तु अछि। ओ काल्पनिक श्रद्धाञ्जलि रूपमे सजाओल गेल प्रतीक मात्र नहि : ओकर भीतर वास्तविक भोजन अछि, कीड़ा घुमैत अछि, उपयोगी भाग आ दूषित भाग अलग करबाक निर्णय करब पड़ैत अछि। ई दृश्य कठिन अछि, कारण बेटीकेँ छोड़ेबाक भाव आ खाएबाक वस्तु सम्हारबाक आवश्यकता एक दोसरा सँ भिड़ैत अछि। पाठ स्पष्ट करैत अछि जे चाउर बचएब आ बेटीकेँ छोड़ि देब एके बात नहि। एहि ठाम वस्तु-रूपक अपन सीमा स्वयं देखबैत अछि; साहित्यिक संकेत जीवनक व्यवहारपर पूरा कब्जा नहि करैत।

नैराक निजी कागदक धातुक डिब्बी एखन नहि खोलल गेल। लाल सूत मशीनक चक्का सँ छुडाकऽ कात रखल जाइत अछि, ओकरा जानि-बुझि कऽ ‘अन्तिम चिह्न’क अमूल्य स्थान नहि देल जाइत। फोनक संदेशमे कबीर दवाइक खबर दैत छथि, मुदा नैराक पुरान ‘माय, अहाँ खएलहुँ?’ नहि अबैत। यी तीन वस्तु मृतकक अनुपस्थितिक अलग कथात्मक आकार बनबैत अछि—एकमे गोपनीयताक विराम, दोसरमे कामक निरन्तरता, तेसरमे भाषिक अनुपस्थितिक तीव्र बोध। एहि सूक्ष्म आयोजनसँ उपन्यास पैघ दुर्घटनाक असर घरक गन्ध, ताप, ध्वनि आ वस्तु-व्यवहार धरि पहुँचबैत अछि।

कथनकाल, गतिक उतार-चढ़ाव आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायक मुख्य काल एक दिनक भोरसँ रातिधरि अछि; नैराक बाल्यकाल आ हालक जीवनक अनेक क्षण पूर्वदीप्तिक रूपमे अटकि-अटकि अबैत छथि। बरखा, धुआँ, भात ठंढा होयब, फोनक समय, ग्राहकक तिथि आ दवाइक घड़ी समयकेँ अदृश्य अमूर्तता नहि रहए दैत। विशेष रूपसँ दू दृश्य—सरिता आ कबीरक थारीवाला संवाद आ साँझक बचे भातक उपयोग —कथनकेँ धीमा करैत अछि। जतेक ठाम नियमित भोजनसँ छोट बदलाव अबैत अछि, ओतेक ठाम कथाक मानसिक अवधि बढ़ैत अछि।

पूर्व अध्याय १२५ मे कुन्तीक स्वीकारसँ विशाल राजवंशीय इतिहास हिलैत छल; एतय चाउरक ढेरी आ खाली थारीक स्थिति बदलैत अछि। दुनू अध्यायक घटना-परिमाण असमान, मुदा विषयगत गूँज—बचल लोकक आवाज सुनब, मृत व्यक्तिक जीवनक एकाधिकार नहि करब—अलग स्तरपर बनैत अछि। एकटा सम्भावित सीमा ई अछि जे एहि अध्यायमे आगन्तुक प्रायः असाधारण संवेदनशीलता सँ बोलैत छथि; चन्द्रिका, कबीर, मधु आ ग्राहक सभ अपन सीमा बुझि लै छथि। शोकमे असमर्थ, असहज वा अनसोचल कठोर व्यवहारक विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि। तथापि सरिताक माप घटेबाक अनिर्णय, तेसर थारीक व्यावहारिक समस्या आ नैराक जिद्दी स्मृति एहि सुविचारित संवादसभकेँ जीवनक खुरदुराहट दैत अछि। अन्तिम खाली भाँड़ अन्तिम खाली जीवन नहि; काल्हिक अनिर्णीत माप कथा फेर चलबाक सम्भावना अछि।

अध्याय १२७ — बचलक दोष

घायल चिकित्सकक आरम्भ : जीवित बचब आ अपन कथा कहबक कठिनाइ

“बचलक दोष”क आरम्भ अनिरुद्धक पट्टी, कुर्ताक बटन आ घायल बाँहक असमर्थ गतिसँ होइत अछि। पहिने जे पात्र रोगीसभक चिकित्सा करैत छलाह, एखन स्वयं परीक्षणक निर्धारित समय देखैत छथि। एहि भूमिका-परिवर्तनसँ कथाक दृष्टिबिन्दु बदलैत अछि : विशेषज्ञक शरीरक भीतर पीड़ाक अनुभव प्रवेश करैत अछि। बाहरी दुर्घटनाक विशाल वर्णन फेर दोहराओल नहि जाइत; बटन लगएबाक छोट काजमे ओ दुर्घटनाक बचल प्रभाव देखाइत अछि। भूतकाल एतय आपदाक विस्तृत पुनर्कथनसँ नहि, घायल देहक क्रियासँ उपस्थित होइत अछि। शीर्षकक ‘दोष’ एखन निश्चित नैतिक निष्कर्ष नहि, बचल व्यक्तिक मनमे घुमैत प्रश्नक नाम अछि।

कबीरक प्रवेश पाठकीय प्रत्याशाकेँ मोड़ि दैत अछि। अनिरुद्ध आशंका करैत छथि जे नैराक मृत्यु, ढहल पाँख आ हुनकर पूर्वनिर्णय विषयक कठोर प्रश्न तुरन्त उठत; मुदा कबीर पहिने गाड़ी, पट्टी आ सीढ़ी उतरबाक पीड़ा पुछैत छथि। एहि अप्रत्याशित संवादक्रममे आन्तरिक दृष्टिकेन्द्रण अनिरुद्ध लग टिकैत अछि—कथावाचक हुनकर भय बतबैत अछि, फेर दोसर पात्रक वास्तविक आचरण ओहि अनुमानसँ अलग निकलैत अछि। एहि अन्तरसँ कथानकमे तनाव बनैत अछि, मुदा समाधान क्षमाक दृश्यसँ नहि होइत। कबीर स्पष्ट करैत छथि जे उपचार-सहयोग पुरान गलतीक लेखा मेटेबाक प्रतिज्ञा नहि। पात्र-द्वयक सम्बन्ध विरोध बनाम मेलक साधारण रेखापर नहि चलैत।

दोहरी आत्मकथा : ‘हम जँ...’क पुनरावर्तन

बरामदामे अनिरुद्धक वाक्य अपूर्ण रहि जाइत अछि—ओ जमुनाक खाट लग नहि बढ़ितथि तँ हाथ नहि कटित; आपूर्तिक पहिल रिपोर्टमे त्रुटि रहबाक आ पुरान पाँखक चुआन देखबाक स्मृति फेर अबैत अछि। कबीरक भीतर समान व्याकरणक दोसर अनुक्रम उठैत अछि : ओ नैराकेँ राति घर घुरबाक आग्रह कऽ सकैत छलाह। ‘जँ’क आवृत्ति एहि अध्यायक मानसिक कालक प्रमुख लय अछि। अतीतमे वास्तविक क्रिया बदलल नहि जा सकैत, मुदा पात्र अनेक सम्भावित अतीतक कथा मनमे रचैत छथि। एहि प्रतिकल्पनात्मक कथनकेँ लेखक प्रत्यक्ष घटना बनाकऽ प्रस्तुत नहि करैत। अनिरुद्ध आ कबीर दुनू अपन मनक कथाकार बनैत छथि, मुदा हुनकर कल्पित संस्करणसभ अन्तिम सत्यक स्थान नहि लैत।

कबीर अनिरुद्धक चोटकेँ नैराक मृत्यु-पुनरागमनक कोनो प्रतीकात्मक उत्तर नहि मानैत छथि। शैलजाक आगमन एहि सूक्ष्म सम्बन्धमे तेसर, स्वतन्त्र आवाज जोड़ैत अछि। सरस्वती देवीक मृत्यु-प्रश्नकेँ ओ चिकित्सकक व्यक्तिगत आत्मदण्डक कथामे बदलए नहि दैत छथि। देवी गोंडक छोट उपस्थिति एकटा चौठम दृष्टिकेन्द्र लऽ अबैत अछि : जीवित बचल प्रशिक्षणार्थीसँ लोक मृत उर्मिलाक सम्पूर्ण अन्तिम कथा माँगैत छथि, मुदा हुनकर अनुभवक सीमा अलग अछि। ई अलग स्वर ‘सभ बचल लोक एकहि प्रकारक अपराधबोध भोगैत छथि’ एहन सामान्यीकरण रोकैत अछि। अनिरुद्धक चोट, कबीरक शोक, शैलजाक उत्तर-पिपासा आ देवीक जीवित बचेबाक थकान—चारू मानसिक समय अलग-अलग अछि।

दृश्य-व्यवस्था : गाड़ी, प्रतीक्षालय, उपचारक पर्ची आ घर

अध्यायक स्थान-क्रम अनिरुद्धक घर → वाहन-मेज → गाड़ी → नब उपचार-कक्ष → औषधि-वितरण खिड़की → घर → कबीरक घर → अगिला भोरक रसोइ अछि। एहि यात्रामे पुरान अस्पताल-पाँखक लाल घेर, भीजल चून, फूलोक कोठी आ नालीक अवरोध बाहरक संसारक खतराकेँ स्मरण करबैत अछि। मुदा दृष्टिकेन्द्रक परिवर्तनक कारण कथा लगातार विनाशक दृश्य पर टिकैत नहि; सामान्य रोगीक संग यात्रा, वृद्धक छड़ी आ बालकक पर्ची सम्हारब जैसी छोटी सहचर क्रिया समाहित करैत अछि। मृत्युक बादक जीवनक नित्य समय फेर कथा भीतर लौटैत अछि।

नब उपचार-कक्षमे अनिरुद्धक रोगी बनबक अनुभव एक महत्वपूर्ण उलटफेर अछि। नर्स जखन नाम पुकारैत छथि, कबीर बिना अनुमति भीतर नहि जाइत छथि; अनिरुद्ध स्वयं कहैत छथि जे ओ अकेले प्रवेश करब चाहैत छथि। बादमे अनिरुद्ध अपन चिकित्सकीय पर्ची कबीरकेँ स्वयं पढ़बैत छथि। एहि छोट दृश्यसभमे कथानक ‘सहयोग’ शब्दक भावुक व्यापकता सँ हटि व्यवहारक क्रम देखबैत अछि। चरित्र अपन शरीरक विषयमे निर्णय करबाक अधिकार वापिस खोजैत अछि। अनिरुद्धक पुरान व्यावसायिक परिचय आ वर्तमान निर्भरता एकहि पात्रमे स्थित रहलासँ कथा भावनात्मक गहिराइ पबैत अछि।

कागदक पृथक धारा आ घरेलू बासनक पुनरागमन

एहि अध्यायमे अनेक दस्तावेज छथि—अनिरुद्धक घावक पर्ची, उपलब्ध औषधिक सूची, सरस्वती देवीक संशोधित उपचार-प्रतिवेदन, भवन-जाँच, दुर्घटनाक घटना-वृत्त। एहि सभक कथा-सम्बन्ध ई नहि जे कागद स्वयं

निर्णय सुना दैत अछि; बल्कि अलग-अलग समयक आ अलग विषयक अपूर्ण कथा एक मेजपर जमा अछि। अनिरुद्ध ‘सुरक्षित बाट’क बदला ‘तखन स्वीकृत अस्थायी बाट’ लिखबाक सुधार करैत छथि। एहि शब्द-परिवर्तनक आख्यानात्मक महत्त्व अछि—एक वाक्यक कथाकार अपने पहिले बनाओल क्रमक सीमा स्वीकारैत अछि। लेखक एहि दृश्यकेँ कोनो महाज्ञान-प्राप्तिक चरम बनबैत नहि; अलग टिप्पणी लिखबाक साधारण काजमे आत्मसंशोधन देखबैत अछि।

अध्याय १२६ क भातक दृश्य एहि अध्यायमे अनेक बेर स्मृतिरूपेँ लौटैत अछि। कबीर सरिताक तेसर थारीक पूर्ण दृश्य अनिरुद्धकेँ नहि कहैत छथि; एक पात्रक निजी स्मृति दुसराक लेल सम्पूर्ण सार्वजनिक आख्यान नहि बनैत। चन्द्रिकाक खिचड़ीक दाम अलग पूछल जाइत अछि, शैलजाक निजी दुःख अलग रहैत अछि, आ सुभद्राक लेल दलिया चढ़एबाक दृश्य अगिला भोरमे अन्त बनैत अछि। एहि आवर्तनसँ उपन्यास आपदाक महाकाव्यीय विशालताकेँ सूक्ष्म घरेलू समयमे अनुवाद करैत अछि। आरम्भक घायल बाँह आ अन्तक चूल्हाक आँच दू भिन्न क्रियात्मक धुरी छथि : एक शरीरक असमर्थता देखबैत अछि, दोसर सीमित रूपेँ फेर काज चुनबाक क्षमता।

पाठकीय अनुभव, खुलल दोष आ रचनात्मक सीमा

अध्यायक आकर्षण अपराधीक नाम पाबब नहि, ‘बचल व्यक्ति’क अनुभवमे आत्मदोष, दायित्व आ उपचारक समयक अलग-अलग क्रम देखब अछि। एतय कथा जाँचक निष्कर्ष दैत नहि अछि; दुर्घटना-विवरण, सरस्वती देवीक मृत्यु, भवनक भौतिक विफलता आ नैराक शोक सभ आगाँक कथासँ जुड़ल रहैत छथि। चम्पाक प्रतीक्षालयमे क्षणिक उपस्थिति अगिला अध्यायक सुनियोजित पूर्वसूचना अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे कबीर हुनकर बारेमे अनजान छथि, अतः ई घटना कबीरक अनुभूतिमे नहि, पाठकक जानकारीमे आगाँ बढ़ैत अछि। एहिसँ अध्याय १२८ लेल संक्रमण स्वाभाविक बनैत अछि।

कलात्मक सीमा एहि बातमे देखल जा सकैत अछि जे कबीर, शैलजा, देवी आ अनिरुद्धक बीच अधिकांश निर्णायक वाक्य अत्यन्त सुविचारित आ तार्किक रूपसँ व्यवस्थित छथि। गहिर क्षति जेकाँ अनुभवमे मनक भङ्गुर, विरोधाभासी अथवा असम्बद्ध भाषाक आर उपस्थिति सम्भव छल। तथापि बटन लगाबयमे पीड़ा, रस्ताक गाद, सामान्य गाड़ी लेल प्रतीक्षा, दालियाक मात्रा आ ‘जँ’क अधूर वाक्य ई सम्भावित उपदेशात्मकता सँ पाठकेँ राहत दैत अछि। अध्याय ‘दोषक समाधान’ नहि, दोष विषयक कथा कहबाक अतिरेकपर सावधान दृष्टि रचैत अछि।

अध्याय १२८ — चम्पाक उपचार

परदाक भीतर : कथा कहबाक घड़ीक अधिकार

अध्यायक पहिल दृश्य एकटा स्थिर बूँद, कलाई मोड़िते उठल पीड़ा आ परदाक ओहिपार नाम नहि पुकारबाक निर्णयसँ शुरू होइत अछि। ई तीन संकेत चम्पाक शरीर, भय आ सामाजिक दृश्यताक सम्बन्ध रचैत अछि। चिकित्साकक्षमे प्रवेश करैत पात्रक व्यक्तिगत कथा एखन अनकहल अछि; पाठक हुनकर शारीरिक असुविधा देखि सकैत अछि, मुदा घटनाक पूरा विवरण नहि। कथावाचक तृतीय पुरुषमे रहैत अछि, तथापि चम्पाक संवेदन

आ सङ्कोचक सापेक्ष अधिक जानकारी दैत अछि। खास बात ई जे कथाकार पूरा दृष्य सर्वज्ञ अधिकारसँ आरम्भमे नहि खोलैत; चम्पा स्वयं जतेक कहैत छथि, पाठक धीरे-धीरे ओतेक सुनैत छथि। सूचनाक ई नियोजित वितरण अध्यायक मूल आख्यानात्मक नीति बनैत अछि।

सलमा शेख कुर्सी बदलि देब, एकान्तक विकल्प पुछब, चूड़ी खोलबाक लेल पुनः अनुमति माँगब आ कथनक बीच विराम देब जेकाँ क्रिया करैत छथि। चम्पा अपन हाथ सहायता लेल बढ़ाकऽ फेर पाछाँ खींचि लैत छथि। एहि एक देहगत क्रियामे कथाक आन्तरिक द्वन्द्व घनीभूत अछि : सहयोगक आवश्यकता आ अपन नियन्त्रण छूटबाक भय एक संग छथि। ओ पछिला साँझ विवाद, पकड़ि रोकल जाएब, धक्का आ दीवालसँ टकराएबक सीमित अंश कहैत छथि; पूरा घटना कोन व्यक्तिसँ जुड़ल से अद्यापि नहि ठहरैत। ओ घटनाक सम्पूर्ण कथा तुरन्त नहि कहबाक चुनाव करैत छथि। एहि कारण ‘उपचार’ शीर्षकक अन्तर्गत कथा कहब स्वयं चरणबद्ध क्रिया बनैत अछि, अंतिम प्रकाशन नहि।

स्मृतिक वापसी : सार्वजनिक अपमानसँ निजी भय धरि

चम्पाक निद्रा टूटब, दुआरक चरमराहटसँ चौंकब आ परदा हिलिते भय जागबक वर्णन वर्तमान देहक अनुभवकेँ रातिक मानसिक समयसँ जोड़ैत अछि। अतीतक नगरसभामे हुनकर निजी सन्देशक काटल अंश पढ़ि सुनाओल गेल छल; हँसीक आवाज याद अछि, मुदा मूल प्रति कोन व्यक्ति लीक कएलक से नहि। एहि पूर्वदीप्ति आ वर्तमान चिकित्साकक्षक बीच कारणात्मक सम्बन्ध चोटक भौतिक घटनासँ अधिक व्यापक अछि—एक बेर निजी शब्दक अनधिकृत सार्वजनिक प्रसार भेला बाद अगिला अपन कथन सेहो छिनि जएबाक भय। लेखक ई मानसिक अनुक्रम विस्तारसँ लिखैत अछि, मुदा निजी सन्देशक पूरा पाठ फेर नहि दोहरबैत। पाठककेँ चम्पाक अपमानक तमाशाक दर्शक बनएबाक बदला ओकर बादक असर अनुभव कराओल जाइत अछि।

एहि अध्यायक प्रमुख काल एक दिनक परामर्शसँ राति धरि चलैत अछि। भीतरक कक्षमे प्रश्न, चिकित्सकीय जाँच, पर्ची पढ़ब आ प्रतीक्षा—ई दृश्यसभ विस्तार पबैत छथि। बाहर निकलिते समय अपेक्षाकृत गतिशील होइत अछि : पीपल गाछक नीचाँ भोजन, आश्रयक दुआर, घरक वार्ता, छोट बैठक, सन्ध्याक नब आगन्तुक आ रात्रिक सन्देश। मुदा एहि अग्रसर समयमे पिछला नगरसभा, कल्हिक घरक विवाद, मायक पुरान हाट-जलेबीक इच्छा आ फोनक कटल सन्देशक स्मृतिसभ बीच-बीचमे प्रवेश करैत अछि। फलतः चम्पाक वर्तमान एकरेखीय नहि, अनेक अतीत आ सम्भावित भोरक बीच बनैत अछि।

स्वर-स्थानान्तरण : चम्पा, सलमा, रुहानी आ माय

सलमाक भाषामे चिकित्सकीय क्रम आ विकल्पक सावधानी अछि; रुहानी आश्रयक गाड़ी, भोजन आ पंजीक चिन्तामे छथि; रुखसानाक स्वर भोजनक स्वाद आ मेहनानाक हिसाबसँ बनैत अछि; चम्पाक माय अपन चिन्ता आ अधिकारक घरेलू भाषा बोलैत छथि। एहि भिन्न दृष्टिकेन्द्रसभक भेटसँ अध्यायमे ‘स्त्री’ कोनो एकल अनुभव नहि रहैत। रुहानी चम्पाक उपचारक विस्तृत पत्र बिना माँगने बाहरी बरामदामे प्रतीक्षा करैत छथि। मुदा अपन रजिस्टरमे ‘महिला-उपचार’ लिखने रहबाक कारण पहचान परोक्ष रूपसँ खुलि सकबाक जोखिम पर चम्पा स्वयं

प्रश्न उठबैत छथि। एहि संवादमे रुहानीक सहयोग स्वतः निष्कलङ्क नैतिक महिमा नहि; ओ अपन प्रथापर सोचि रजिस्टर बन्द करैत छथि। एही प्रकार चरित्रक विकास एकटा वास्तविक प्रतिवादक बाद घटैत अछि।

मायक संग वार्ता चिकित्साकक्षक अपेक्षाकृत व्यवस्थित संवादसँ अलग घरेलू तनाव उत्पन्न करैत अछि। माय कहैत छथि जे बेटी छी तँ पूर्ण खबर चाही; चम्पा अपन पीड़ाक कथा कहबाक घड़ी स्वयं चुनबाक बात करैत छथि। एहि ठाम निकटता आ सीमाक बीच संघर्ष अछि। दुनू पक्षमे भय अछि, मुदा भयक अनुभव समान नहि। अध्याय माँकेँ क्रूर विरोधी नहि बनबैत, आ चम्पाकेँ ‘सत्य नदेनिहार’ दोषी नहि। रातिक जलेबी-वार्तामे दुनू फेर हँसैत छथि, मुदा आंशिक हँसीसँ न चोट समाप्त होइत अछि, न पहिल असहमति स्वतः मेटि जाइत अछि। एहि सूक्ष्म विरोधी भावसभक साथे चरित्रक जटिलता बनैत अछि।

उपचारक वस्तु-शृंखला : चूड़ीसँ लिफाफा धरि

आरम्भमे दू अटकल चूड़ी, बदलल कुर्सी, गिलासक बूँद आ चिकित्सकीय पर्ची अछि; अन्तमे लोहेक सन्दूक, निजी उपचार-पत्र आ अलग सम्भावित गवाहीक लिफाफा अछि। चूड़ी खोलब देहक सीमाक ठोस अनुभूति; काँचक बूँद स्पर्शक व्यर्थ प्रयास; लिफाफाक वर्गीकरण ककरो जीवनक दो अलग कथाक स्थान बनैत अछि। ‘हमर उपचार’ आ ‘जे हम देखलहुँ’क दू नामक बीचक अन्तर एहि अध्यायक शीर्षकक सीमा विस्तार करैत अछि। इलाजक कागद कथा-कथनक सम्पूर्ण अधिकार नहि लैत; गवाहीक आगामी सम्भावना अलग राखल अछि। एहिसँ अध्यायक अन्त बन्द निष्कर्ष नहि, दू पृथक भविष्यकाल बनबैत अछि—निर्धारित चिकित्सकीय पुनर्दर्शन आ अनिर्धारित बयानक समय।

भोजनक दृश्य सेहो पूर्व अध्याय १२६ सँ वस्तु-आवर्तन बनबैत अछि। चम्पाक घायल हाथ चम्मच पकड़ि नहि पबैत, तखन बाँया हाथसँ कौर बनबैत छथि। रुहानी हुनकर चोटकेँ निहारबाक बदला पानिक बोतल खोलि दैत छथि। ई अल्प कथन अति-भावुक सहायताक दृश्यसँ बचैत अछि। रुखसाना नोनक प्रश्न पुछैत छथि, मुदा चोटक विवरण नहि; भारी देग स्वयं उतारैत छथि, मुदा मजदूरी अपन खातामे लिखबाक कहैत छथि। भोजन, श्रम आ संवादक एहि पुनरावर्तनमे स्त्री-पर्वक करुणा लगातार वास्तविक जीवनक क्रियासँ जुड़ल अछि।

आगन्तुक, पोस्टर आ कथाक सार्वजनिक प्रसार

आश्रयक गेटपर आएल व्यक्तिक हाथमे किरायाक विवादक छायाप्रति अछि। ओ चम्पाक कक्षक जानकारी माँगैत अछि, मुदा ओकर पहिचान आ पिछला साँझक धक्का देबाक घटनासँ सम्भावित सम्बन्ध एखन निश्चित नहि। पाठक एतय एकटा प्रचलित रहस्य-रचनाक बाट अनुमानि सकैत अछि—नव आगन्तुक आ पुरान हिंसा एकहि व्यक्ति बनि जायत। मुदा मूल कथा एहि त्वरित जोड़केँ अस्वीकार करैत अछि; चम्पा देखल घटना आ अनुमानित सम्बन्ध अलग रखैत छथि। कथात्मक दृष्टिसँ ई विलम्ब केवल अपराध-रहस्य लम्बेबाक रणनीति नहि, मुख्य पात्रक अनुभवक नियन्त्रण हुनका लग राखबाक माध्यम अछि।

नगरभवनक पोस्टर आ बैठकक कार्यवृत्त व्यक्तिगत कथा सार्वजनिक वाक्यमे बदलबाक दुई रूप देखबैत अछि। चम्पा सार्वजनिक गिनतीक भीतर अपन घावक छवि जोड़बाक आवश्यकता पर प्रश्न उठबैत छथि। कार्यवृत्तक ‘टारल जाए’ शब्द भावी प्रदर्शनक सम्भावना छोड़ैत अछि, जखन कि संशोधित वाक्य अधिक निश्चित निषेध

बनबैत अछि। एहि सूक्ष्म पाठान्तरक आख्यानात्मक महत्त्व अछि : कथा भीतर संस्थाक सामूहिक स्वर स्थिर नहि, पात्रक प्रश्नक बाद बदलैत अछि। तथापि लेखकक बारम्बार सचेत, सुधरल भाषा उपदेशात्मक बनबाक जोखिम सेहो उठबैत अछि; लेखक कतेको दृश्यकेँ दैनन्दिन व्यवहारक बदला तैयार नीति-विवादक समीप लऽ आबैत छथि।

संवाद-लय, अधूर समय आ कलात्मक उपलब्धि-सीमा

एहि अध्यायमे संवादक प्रधानता वास्तवमे दृश्य-दर-दृश्य अनुभव होइत अछि—चम्पा आ सलमाक परामर्श, रुहानीक गाड़ी-रजिस्टर, मायक चिन्ता, आश्रय-सभा, कपड़ा सुखबैत स्त्रीक आग्रह, आ रात्रिक फोनक छोट सन्देश। मुदा सभ संवाद एके उद्देश्यक नहि। किछु चिकित्सकीय सूचना लेल, किछु सामाजिक दबाव लेल, किछु निजी सान्त्वना लेल, आ किछु कथा कहबाक सीमा निर्धारित करबाक लेल अछि। एतय बहुस्वरताक असल परीक्षण आवाजक संख्या नहि, भिन्न सम्बन्धमे चम्पाक अलग निर्णयक क्षमता अछि। चम्पा अस्पतालमे एकान्त चुनैत छथि, मायकेँ आंशिक उत्तर दैत छथि, रुहानीसँ गाड़ी माँगैत छथि, फोनपर अपनी सुरक्षा कहैत छथि, मुदा भेटक समय स्वतः तय करैत छथि। एहि क्रममे पात्रक अधिकार लिखित घोषणासँ अधिक घटनात्मक बनैत अछि।

अध्यायक सीमा चिकित्साकर्मीक अत्यन्त अनुकरणीय व्यवहार आ अनेक पात्रक त्वरित सुधारमे अछि। सलमा प्रायः सभ प्रश्नक पूर्वसावधानी अपनबैत छथि; रुहानी तर्क सुनिते रजिस्टर बन्द करैत छथि; सचिव शब्द बदलि दैत अछि। हिंसा-पछातिक सामाजिक दुनिया एतहि सँ बाहिर असहमत, लापरवाह अथवा अपूर्ण सुनवाईवला लोकसँ भरल भऽ सकैत छल; लेखक ओकर व्यापक कठिनाईक किछु भाग गेटक आगन्तुक आ कपड़ा सुखबैत स्त्रीक जल्दबाज आग्रहसँ देखबैत छथि, मुदा संस्थागत प्रसंगमे प्रतिरोध अपेक्षाकृत आसानीसँ सुधरैत अछि। एहन कलात्मक असन्तुलन आलोचनाक योग्य अछि। तथापि अन्तिम रातिमे कलाईक दर्द, अलग लिफाफा, अनिर्धारित बयान आ आगामी वर्षाक बाधित बाट—ई सभ अन्तिम विजयक घोषणा रोकैत अछि। **‘पहिने उपचार, फेर अपन समयपर गवाही’** एहि अध्यायक कथनगत चाप संक्षेपमे धारण करैत अछि; एकर अर्थ न्याय-प्रक्रियाक समाप्ति नहि, मुख्य पात्रक कथा-कहबाक समयक पुनरधिग्रहण अछि।

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२५–१२८ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

चारि कथास्थान, चारि प्रकारक शोक-काल

अध्याय १२५–१२८ मे कथास्थान क्रमशः गङ्गाक प्राचीन घाट, सरिताक आधुनिक रसोइ, अनिरुद्धक घर–अस्पताल–कबीरक घर, आ चम्पाक महिला-परामर्श कक्ष–आश्रय अछि। एहि स्थानपरिवर्तनक क्रममे कथा विराट महाकाव्यीय क्षतिसँ घरेलू व्यवहार आ व्यक्तिगत उपचारधरि सँकुचित नहि, बल्कि सामाजिक अनुभवक अलग-अलग स्तर खोलैत अछि। कुन्तीक स्वीकृति अतीतक लुकाएल घटना सार्वजनिक इतिहासमे प्रवेश करबैत अछि; सरिताक भातक तेसर माप मृत व्यक्तिक दैनिक अनुपस्थितिक लय बनबैत अछि; कबीर–अनिरुद्धक ‘जँ’

अतीतक नघटल विकल्पक पुनरावर्तन अछि; चम्पाक परामर्श भविष्यक कथा कहबाक समयक अधिकार पुनर्निर्धारित करैत अछि। एहि चारू अध्यायक मुख्य समानता ‘दुख’ शब्द मात्र नहि, कथा कहब आ नहि कहबक अलग क्रियात्मक परिस्थिति अछि।

काल, स्वर आ वस्तुक आवर्त

काल-विन्यास चारि प्रकारक अछि : प्राचीन समयमे जन्म आ युद्धपूर्व भेटक पूर्वदीप्ति; आधुनिक रसोइमे एक दिनभितर बारम्बार बाल्य-स्मृति; घायल चिकित्सकक मनमे प्रतिकल्पनात्मक अतीत; आ चम्पाक निजी अनुभवमे अनिश्चित भविष्य। तृतीयपुरुष कथावाचकक स्वरतल तुलनात्मक रूपसँ सन्तुलित अछि, मुदा केन्द्रित चेतना निरन्तर बदलैत अछि। आन्तरिक अनुभवक विस्तारूपमे कुन्ती–सरिता–अनिरुद्ध–चम्पाक अलग केंद्र छथि; कर्णक पालनहार परिवार, चन्द्रिका, शैलजा, देवी, रुहानी आ माय हुनकर सीमाकेँ प्रतिवाद करैत छथि। एहि विसंगत स्वरसभसँ कथनक सामाजिक फैलाव बनैत अछि।

काँसक लोटा, पीतलाक मापक कटोरी, अनिरुद्धक पट्टी, चम्पाक चूड़ी आ लिफाफा—सभ वस्तु देहक क्रियासँ अर्थ पबैत अछि। जल, भोजन, चिकित्सा आ कागदक आवर्तन अध्यायसभकेँ जोड़ैत अछि, मुदा ई प्रतीकसभ पात्रक प्रत्यक्ष अनुभवकेँ निगलैत नहि। नदीक पानि अर्घ्यक माध्यम अछि; चाउरक पानि रोजक रसोइक आवश्यकता; घाव देखबाक पानि उपचारक; महिला-कक्षमे गिलासक एक बूँद अनिच्छित पीड़ाक संकेत। एहि भिन्न उपयोगक संरक्षण उपन्यासक वस्तु-आख्यानक एक विशेष उपलब्धि अछि।

निष्पक्ष आलोचनात्मक निर्णय

एहि चारि अध्यायक संयुक्त सफलता ई अछि जे कथा एकल सार्वभौम ‘शोक-नियम’ नहि बनबैत। कुन्ती तुरन्त क्षमा नहि पबैत छथि; सरिता भातक अगिला माप निश्चित नहि करैत छथि; अनिरुद्ध अपन चोटक कारण समस्त विफलता समाप्त नहि मानैत छथि; चम्पा इलाज पबितहुँ बयानक तिथि खाली राखैत छथि। एहि क्रममे अनिर्णय कथा-रोक नहि, चरित्रक अस्तित्व आ कथनगत भविष्यक सक्रिय अवस्था अछि।

तथापि एखन धरि एहि पर्वमे स्पष्ट आलोचनात्मक जोखिमो जमा होइत अछि : बहुत पात्र असाधारण प्रकारेँ अपन उत्तरदायित्व, अधिकार आ सीमाक भाषामे बोलैत छथि। अनिवार्य आत्मव्याख्याक घनत्व कतेको ठाम दृश्यात्मक असमञ्जस अथवा भाषाक आकस्मिकता दबा सकैत अछि। पाठककेँ स्वतन्त्र अर्थनिर्माणक जतेक अवसर वस्तु, स्मृति आ मौन दैत अछि, नीतिपरक संवाद ओहि अवसरकेँ कखनो पहिनेसँ निश्चित करए लगैत अछि। एहि दुविधाकेँ आगाँक अध्याय १२९ सँ विश्लेषणक कसौटी रूपमे राखब उचित रहत। निष्कर्ष एखन पूरे स्त्री-पर्वक नहि; अध्याय १२५–१२८ क वास्तविक पाठसीमित, अन्तरिम मूल्यांकन मात्र अछि।

अध्याय १२९ — रुहानीक सूची

फाटल सार्वजनिक सूचीसँ कथाक आरम्भ : दृश्यक भीतर पाठकक प्रवेश

“रुहानीक सूची”क आरम्भ रुखसानाक हाथसँ खसल चाउरक मापक कटोरी, भीजल ओसार, आ फाटकपर टाँगल एक फाटल कागदसँ होइत अछि। ई तीन वस्तु एकहि क्षणमे तीन अलग समय खोलैत अछि : भोजन बनबाक तत्काल समय, वर्षा आ भीजल भवनक दीर्घ संकट, तथा आश्रयवासीसभक नाम सार्वजनिक होएबाक अचानक सामाजिक समय। युवकक कागदमे ‘आश्रयक लाभार्थीसभक नामावली’ लिखल अछि, मुदा ओ सूची कोना बनल आ किनका पढ़बाक अनुमति अछि, से कथा तखन धरि नहि जनबैत। कथावाचक पहिने शब्द देखबैत छथि, ओकर संस्थागत वैधता बादमे खोलैत छथि। एहि क्रमक कारण पाठक स्वयं आश्रयक फाटकपर ठाढ़ दर्शक जकाँ आधा जानकारी लऽ प्रवेश करैत अछि। खूँटी लगबैत कागद फाटब मात्र नाटकीय प्रतीक नहि : एहि भौतिक दुर्घटनासँ अनियन्त्रित प्रकाशनक प्रसङ्ग दृश्य रूप पबैत अछि।

दोसरा पाठांशमे रुहानीक जाँचसँ उद्घाटित होइत अछि जे कर्मचारीक हाथमे रहल पर्ची ‘सत्यापन लेल विवरण उपलब्ध कराउ’ कहैत छल, नाम टाँगबाक आदेश नहि। एहि सूचना-विलम्बसँ शीर्षकक ‘सूची’ निष्क्रिय कागद नहि रहैत; गलत पढ़ल आदेश, पुरान उपस्थितिपंजी आ सार्वजनिक प्रदर्शनक बीच गलत रूपान्तरणक कथा बनैत अछि। चम्पाक नामक संग कक्ष-संख्या, वृद्धाक ‘बीमार’ चिन्हन आ दू बच्चाक मायसभक नाम दृश्यताक अलग-अलग जोखिम रचैत अछि। चम्पा फाटकसँ कागद छीनि बिलायल करबाक प्रस्ताव नहि दैत छथि; ओ पुछैत छथि जे कतेक लोक पहिनहिँ पढ़ि चुकल। एकरे सँ पूर्व अध्याय १२८ क उपचार-गोपनीयतासँ वर्तमान अध्यायक कथात्मक निरन्तरता बन्हैत अछि। उपचारक अलग कक्षसँ सार्वजनिक फाटक धरि आयल नामक यात्रा व्यक्तिगत डरकेँ सामाजिक घटना बनबैत अछि।

एके नामक अनेक प्रयोजन : क्रियात्मक घटना-पञ्जी

एहि अध्यायक घटना-पञ्जी पाँच चरणमे विकसित होइत अछि। पहिल चरणमे फाटकपर पुरान नामावली लगैत अछि आ रुहानी ओकरा उतरबबैत छथि। दोसर चरणमे नगरक सहायक लेखापाल विनोद साव अनाजक वास्तविक वितरण आ दोहरी सहायताक शिकायत लऽ आबैत अछि; ओ नाम–कक्ष–लाभक तीन-खानावला रजिस्टर प्रस्तावित करैत अछि। तेसर चरणमे चम्पा आ रुहानी व्यक्तिगत उत्तरक अलग विकल्प, नाम बदलबाक सम्भावना आ अनुमति वापस लेबाक बाटपर विचार करैत छथि; मतदानक बहुमतसँ निजी प्रकाशन तय करबाक अस्वीकार होइत अछि। चारिम चरणमे मंजरी, चम्पाक माय, शबनम, रुखसाना आ जुबैदा अपन-अपन अलग स्तरक दृश्यता चुनैत छथि। पाँचम चरणमे मौखिक आपूर्ति-रोकबाक दबावक बीच समष्टि-लेखा आ सीमित व्यक्तिगत जाँचक दू पृथक पन्ना नगर कार्यालयमे जमा होइत अछि; फाटकक नव पट्टीपर निजी कोठरीक नाम नहि, भोजनक समय आ सुरक्षित निकास लिखल जाइत अछि।

ई क्रममे कोनो एकटा ‘नायकक विजय’ नहि अछि। नगरक अगिला अनाज-खेपक स्वीकृति अन्त धरि नहि भेटैत; रुहानी प्रतिलिपि, प्राप्ति आ अगिला उत्तरक लेल खाली पाँति राखैत छथि। तें आरम्भमे फाटल कागदक बदला

अन्तमे नव पट्टी लगब एक व्यावहारिक परिवर्तन अछि, आपूर्तिक सम्पूर्ण समाधान नहि। चाउरक दाना आरम्भमे छिटकि गेल छल, अन्तमे कटोरीमे फेर भरल जाइत अछि—ई स्पष्ट वस्तु-आवर्तन अध्यायक रूपात्मक चौखट रचैत अछि। दानाक फेर भरल जाएब फाटकपर गलत नामक पूर्व प्रसारकेँ मेटबैत नहि। कथावाचक एहि सीमा स्पष्ट करैत छथि जे बिहान फोटो कियो लेने अछि की नहि, से पूरा पता नहि।

बहुकेन्द्रित दृष्टिकेन्द्रण आ स्त्रीस्वरक भिन्न अर्थ

कथावाचक तृतीय पुरुषमे घटनाक परिवेश देखबैत छथि, मुदा निर्णयक एक केन्द्र नहि बनबैत। रुहानीक प्रशासनिक सजगता, रुखसानाक वास्तविक भोजनोत्पादन, जुबैदाक पठनीय सूचना बनएबाक कौशल, चम्पाक उपचारजनित भय, मंजरीक व्यावसायिक स्वायत्तता आ शबनमक बच्चाक तस्वीरपर आपत्ति—ई सभ दृष्टिस्थान अलग-अलग आबैत अछि। पाठक रुहानीक नामक माध्यमसँ अध्यायमे प्रवेश करैत अछि, मुदा शीर्षकक नायिका प्रत्येक प्रश्नक स्वतः अन्तिम उत्तर देनिहारी नहि छथि। उदाहरणार्थ, चम्पा मूल सहमति-वाक्यमे केवल ‘हाँ’ उपलब्ध रहबाक कमी पकड़ैत छथि, जुबैदा अस्वीकृति देनिहारक नव सार्वजनिक सूची बन्नबाक विडम्बना स्पष्ट करैत छथि, आ तारा बिनौट सुरक्षा-पट्टक चेतावनी तथा निवासीक निजी कथाकेँ अलग राखैत छथि। रुहानी एहि उत्तरसभकेँ अपन व्यवहारमे ग्रहण करैत छथि। नेतृत्वक अर्थ एतय जानकारीक सभ अधिकार अपने लेल राखब नहि, दोसरक हस्तक्षेपक कारण अपन बनाओल व्यवस्था बदलि सकब अछि।

विनोदक चरित्र सेहो सूक्ष्म अछि। ओकर प्रश्न—आश्रयमे वस्तुतः कतेक लोक रहैत अछि—वास्तविक आपूर्ति-सङ्कटसँ निकलैत अछि; तेँ ओकरा साधारण खलनायक बनाओल नहि गेल। मुदा ओकर पहिल तीन-खानावला उपाय व्यक्ति, कक्ष आ भोजनकेँ एकै स्थानमे जोड़ि दैत अछि। रुखसानाक ‘तीस थारी’ आ ‘तीस रात्रिवासी’ एक नहि होएबाक प्रतिवाद कागदक वर्गीकरण नहि, कथा-संसारक भौतिक भिन्नताक स्मरण थिक। पात्रसभक भाषिक स्वर एहि कामक भेदसँ बनैत अछि। रुखसाना चाउर, थारी, तेल आ मजदूरीक भाषा बजैत छथि; विनोद रजिस्टर आ आपूर्तिक; चम्पा प्रश्न आ सम्भावित फोटो-प्रसारक; मंजरी ग्राहक आ सिलाइकक मोलक। एहन संवादक उपयोग बहुस्वरताक सम्भावना बलियो करैत अछि, यद्यपि सभ पात्र अक्सर बहुत स्पष्ट विश्लेषणात्मक वाक्य बजैत छथि।

कथनक समय, कक्ष आ फाटकक स्थान-नाटच

अध्याय एके दिनक भोरसँ राति धरि बढ़ैत अछि। भोजन बनबाक समय, अधिकारीक आगमन, दुपहरिया निरीक्षण, तीन पहरक दूसरा संदेश आ रातिक पट्टी बदलब—ई आन्तरिक घड़िसभ कथाक क्रम बनबैत अछि। अतीतक प्रवेश पूर्ण दृश्य-वापसीक रूपमे नहि, चम्पाक पहिलुक निजी सन्देशक स्मृति, आश्रयक पुरान उपस्थितिपंजी आ देरीसँ आएल पावतिसभक माध्यमसँ होइत अछि। आख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’केँ एहि अध्यायमे स्वतंत्र महाकाव्यीय कालधारा मानब उचित नहि; मुख्य पाठ आधुनिक आश्रयक एक दिनमे अवस्थित अछि। पूर्वदीप्ति व्यक्तिक स्मृति आ कागदक पुरान तिथिसँ प्रकट होइत अछि।

स्थानक व्यवस्था सेहो निर्णायक अछि। फाटक—जतय लोक अनियन्त्रित रूपसँ पढ़ैत अछि; विद्यालयक मेज—जतय पन्नाक शब्द बदलैत अछि; निजी कक्ष—जतय अलग अनुमति सुनल जाइत अछि; नगर कार्यालय—जतय

समष्टि आँकड़ा जमा होइत अछि; आ नव सार्वजनिक सूचना-पट्टी—जतय सुरक्षित निकासक जानकारी भेटैत अछि। कथा स्थान बदलैत दृष्टिकेन्द्रणक सीमा बदलैत अछि। सार्वजनिक बनाम निजी केवळ वैचारिक द्वन्द्व नहि, चलबाक बाट आ कागद राखबाक ठामसँ निर्मित घटना अछि। तारा द्वारा भीजल दीवालक जोखिम जाँचैत सुरक्षित सूचना देबाक प्रश्न पुरान जल-आपदाक कथाधाराकेँ ई पृष्ठ परो जीवित रखैत अछि।

लिखित स्वायत्तताक रूपक आ अध्यायक आलोचनात्मक सीमा

चम्पाक ‘भविष्यमे सार्वजनिक रूपेँ बोलब’ वाला खाली ठाम, मंजरीक अपन व्यावसायिक परिचय, आ रुहानीक नामक कात लिखल ‘सूची फेर देखबाक जिम्मेवारी’ कथाक मुख्य तीन अन्तःबिम्ब छथि। पहिलमे खाली स्थान निर्णय टारबाक अधिकार अछि; दोसरमे स्वयं चुन्नल परिचय जीविकाक माध्यम; तेसरमे नाम व्यक्तिगत कीर्ति नहि, पुनरवलोकनक काजक चिन्ह। एहि आवृत्ति सँ अगिला अध्यायसभक बड़ विषय—शोक, बाँचल लोक आ नामक सार्वजनिक लेखा—लेल कथन-भूमि बनेत अछि। चम्पाक मायक संग सानो घरेलू दृश्य नीति-विवादकेँ आराम आ थाकल देहक आयाम दैत अछि।

एहि रचनाक सीमा सेहो अछि। पर्ची सुधारबाक प्रसङ्ग एक बेर नहि, अनेक पात्र द्वारा लगभग क्रमबद्ध रूपसँ प्रस्तुत होइत अछि; विकल्प, प्राप्ति, सुरक्षित पहुँच, अनुमतिक सीमा—ई शब्दावली कतेको बेर दृश्यकेँ पूर्ण नीति-कार्यशालाक रूप देबाक जोखिम उठबैत अछि। चम्पाक कलाई दुखब, युवकक खूँटी आ रुखसानाक चाउरक दाना ई यान्त्रिकता तोड़ैत अछि, मुदा किछु पात्रक वाणी एकरूप सुव्यवस्थित रहि जाइत अछि। लेखकीय सफलता एतय एतबा अछि जे ई जोखिमक बीच वास्तविक दृश्यात्मक कथा नहि छुटैत, आ अन्तिम अनाज-निर्णय खुलल रहैत अछि। एतय उपलब्धि ‘निजता पर उपदेश’ नहि, **कागद बदललाक कारण पात्रसभक व्यवहार बदलल**—एहि घटनात्मक सम्बन्धमे अछि।

अध्याय १३० — द्रौपदीक बचल दिन

युद्धक बादक भोर : पाँच कटोरी आ पाँच अनुपस्थित जीवन

“द्रौपदीक बचल दिन”क पहिल दृश्य राजगृहक रसोइमे चाउर धोएबाक ध्वनिसँ आरम्भ होइत अछि। प्रस्तुत समय युद्ध समाप्तिक पश्चात्क अछि, मुदा विजयोत्सव वा राज्याभिषेकक वर्णनसँ अध्याय प्रारम्भ नहि होइत। मालिनीक सोझाँ पाँच छोट कटोरी अलग राखल छथि, जाहिमे पूर्वदिन द्रौपदीक पाँच पुत्र भोजन करैत छलाह। वस्तुक दृश्यसँ मृत्यु उपस्थित करबाक ई पद्धति भावक घोषणा कम, अभावक प्रत्यक्ष रूप बेसी दैत अछि। पाँच कटोरीक खरोंच देखितहुँ द्रौपदी सटीक याद नहि कऽ पबैत छथि जे केकर नखक चिन्ह छल। स्मृतिमे ई अनिश्चितता महत्त्वपूर्ण अछि : कथावाचक पात्रक सम्पूर्ण अतीतकेँ घड़ीक नियत क्रममे दोबारा उपलब्ध नहि करबैत, बल्कि अधूर स्मरणसँ शोकक वर्तमान रचैत अछि।

द्रौपदी कटोरी फेकि देबाक नहि, धो कऽ सुरक्षित राखबाक कहैत छथि; मुदा प्रतिदिन पाँचटा खाली थारी चढ़ाएब आ बाहिर भूखल लोककेँ प्रतीक्षा करबाएब सेहो नहि चाहैत छथि। एहि एक निर्णयमे अध्यायक मूल द्वन्द्व अछि—स्मृतिक संरक्षण बनाम जीवित व्यक्तिक आजुक आवश्यकता। स्मृति बचएबाक लेल काम बन्द करब आवश्यक

नहि, आ काम करबाक अर्थ स्मृति बिसरब नहि। अध्याय १२६ क सरिताक तेसर थारीक संग ई बिम्ब गहिर अन्तरपाठीय प्रतिध्वनि बनबैत अछि। सरिताक आधुनिक घर आ द्रौपदीक प्राचीन राजगृह अलग कथा-स्थान छथि; एकरा एके पात्रक पुनर्जन्म वा दैनन्दिन घटनाक सटीक समतुल्यता मानब अनुचित होयत। मुदा दुनू ठाम भोजनक अनुपस्थित प्राप्तकर्ता कौरक संख्या बदलि दैत अछि, आ दैनन्दिन श्रम शोकक समयमापन बनैत अछि।

स्मृतिक अव्यवस्थित आवृत्ति आ शारीरिक समय

पाठांश ४ मे द्रौपदी पाँच पुत्रक नाम मनमे दुहरबैत छथि। प्रतिविन्ध्यक माथपर चाउरक दाना, सुतसोमक प्रश्न, शतानीकक हड़बड़ी, श्रुतकर्मा आ श्रुतसेनक मिलैत स्वर—ई क्षणसभ कालक्रमानुसार नहि, स्मृतिक अलग-अलग बिम्बक रूपमे लौटैत अछि। कथानकक अतीत पात्रक वर्तमान चेतनाक भीतर चुन्नल अंश बनि प्रवेश करैत अछि। कथावाचक ‘सब याद अछि’ अथवा ‘सब बिसरि गेल’ जेकाँ सरल घोषणा नहि करैत। द्रौपदी दोसरक स्वर पहिलक ठाम नहि राखबाक जिद मे शोकक नैतिक निजीपन अनुभव करैत छथि। पाँच संख्या आब केवल गणना नहि, पाँच अलग जीवनक पहिचान अछि।

काल-विन्यास मुख्यतः एक दिनक भोरसँ अगिला भोजनक तैयारी धरि अछि, जकर भीतर रसोइ–सभा–घायल आँगन–कुन्तीक ओसारा–गान्धारीक शिविर–उत्तराक कक्ष–कृष्णक भेंट–निजी अलमारीक दृश्य लगातार अबैत अछि। समयक गति सर्वत्र समान नहि। गरम भातक दू कौर निगरबाक दृश्य किछु क्षणक विस्तारमे चलैत अछि; कतहु नगरक युद्धोत्तर व्यवस्था संक्षेपमे सूचित होइत अछि। द्रौपदी कहैत छथि जे हुनका भूख नहि, मुदा दू कौर आवश्यक छल। बादमे कृष्णक संग संवादमे ई शरीरक असमान लय पुनः व्यक्त होइत अछि : बुद्धिसँ जीवनक आवश्यकता बुझितहुँ देह ओहि बुझाइक समयपर नहि चलैत। शोकक्रेँ ‘ठीक भऽ गेल’क क्रममे नहि, देहक धीमा पुनःकाजमे देखब अध्यायक विशिष्ट कथात्मक बल अछि।

दृष्टिकेन्द्रणक विस्तार : रसोइनसँ विजेता राजसभाधरि

आरम्भक समीप दृष्टि द्रौपदी आ मालिनीपर अछि, मुदा कथन धीरे-धीरे उन सभ लोकक अवस्थादिस बढ़ैत अछि, जिनकर नाम राजकीय भोजक प्रारम्भिक गणनामे नहि छल। घायल सैनिक, काठ-रथ मरम्मति करनिहार, घास ढोबनिहार, रसोइमे काज करनिहार स्त्रीक परिवार, दाँतमे चोट लागल रोगी, रातिक भयमे भोजन नहि करऽ सकैत बालिका—ई सभ युद्धोत्तर संसारक सह-अभिनेतासभ छथि। द्रौपदी युधिष्ठिरसँ पूछैत छथि जे सभामे भोजन बनौनिहार लोक उपस्थित छथि की नहि। भण्डारक लेखा ‘राजपरिवारक नियमित व्यवस्था’ गनैत अछि, मुदा रसोइक स्त्रीक परिवारक संख्या अनुपस्थित अछि। यथार्थ परिवर्तन ई अछि जे द्रौपदीक प्रश्नक बाद विदुर प्रस्तावमे नव पाँति लिखैत छथि, भण्डारक पुनर्गणनाक निर्णय होइत अछि। समस्त भण्डार तुरन्त वितरित भऽ गेल, एहन परिणाम नहि अछि।

भीम घायल सैनिक लऽ सभामे अबैत छथि; हुनकर भारी स्वर तत्काल भोजन देबाक आग्रह करैत अछि। द्रौपदी हस्तक्षेप करैत छथि जे दू सैनिकक शारीरिक आवश्यकता एक नहि—एकर सहायता सँ खुआबाक, दोसरक नरम भोजनक। ई दृश्य भीमक्रेँ क्रूर अथवा अप्रासङ्गिक नहि बनबैत; हुनकर करुणामे व्यावहारिक विभाजन जोड़ैत अछि। युधिष्ठिर, भण्डारी प्रबोध, विदुर, मालिनी आ द्रौपदी सभक कथन-अवस्था अलग अछि, मुदा प्रायः द्रौपदीक

प्रश्न ओ सभक कथनक दिशा बदलैत अछि। नारी-पात्रकेँ केवल पीड़िता नहि, निर्णयक भाषाक निर्मात्री बनाबैत अछि।

शत्रुपक्षक भोजन, अस्वीकारक अधिकार आ द्रौपदी–गान्धारीक दृश्य

अध्यायक मध्यभागमे गान्धारीक शिविरक यात्रा एकटा निर्णायक सामाजिक स्थानान्तरण अछि। द्रौपदी विजय-पताका बिना रथ लऽ जाइत छथि, आ पहिने गान्धारीक संग महिलासभक बात सुनबाक समय चाहैत छथि। एहि ठाम महाकाव्यक युद्धोपसंहारक स्थान विजयक सार्वजनिक दृश्य नहि, पराजित परिवारक भीतरक स्वाभिमान अछि। गान्धारी आ द्रौपदी अपन मृत पुत्रसभक शोक कहैत छथि, मुदा कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे हुनकर जीवन, अन्याय आ सम्बन्ध एक नापमे नहि समाइत। ई दृश्य सहानुभूतिक नामपर इतिहासक भिन्नता मेटबाक प्रयास नहि करैत।

चार्वी—एक रथक धुरा बाँधनिहारक विधवा आ स्वयं सूत कातनिहारी—पाण्डव राजभण्डारक अन्न लेबासँ पहिने विरोध दर्ज करैत छथि। द्रौपदी हुनकर श्रमक असैन्य परिचय सुनैत छथि; अन्न लेबकेँ विजय-स्वीकारोक्ति बनबैत नहि। चार्वी स्वयं नहि खाएबाक निर्णय बनौने राखैत छथि, मुदा बच्चाक अन्न नहि रोकल जाइत। एहि दृश्यमे कथात्मक परिणाम विशेष सूक्ष्म अछि : द्रौपदी ‘सभकेँ मना लेलीह’ नहि; ओ अस्वीकारक स्थान बचबैत छथि। चार्वीक स्वर राजपरिवारक प्रश्नक सहायक मात्र नहि, स्वतन्त्र विरोध अछि। शोकसँ निकलल सम्बन्ध सशर्त सहअस्तित्वक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि।

कुन्ती, उत्तरा आ कृष्ण : तीन सम्बन्धक भिन्न लय

कुन्तीक आगमन पछिला अध्याय १२५ सँ सीधा स्मृति-सूत्र जोड़ैत अछि। कुन्ती अपन जन्मसत्यक कथा कहि देलाक बादो द्रौपदीक पाँच पुत्रक शोक बदलि नहि सकैत छथि। दुनू बीच क्षमाक अनिवार्य घोषणा नहि, बेरक छोट टुकड़ा आ मौन ठाढ़ अछि। एक कथाक पात्रक सत्य दोसरक पीड़ाक स्थान नहि लैत—एहि भिन्नता सँ महाकाव्यीय अन्तर्पाठ एकरूप नैतिक उत्सव नहि बनैत। राधाक घरक भोजन आ दानक प्रसङ्ग फेर उठिते कर्णक कथा जीवित लोकक जिजीविषासँ जुड़ैत अछि।

उत्तरासँ संवादमे गर्भस्थ शिशुकेँ अभिमन्युक ‘प्रतिस्थापन’ मानबाक अस्वीकृति भविष्यकालक एक सूक्ष्म रूप खोलैत अछि। उत्तरा आधा दूध बाँटैत छथि आ द्रौपदीकेँ बिना पूछने ‘अधिक चाही’ कहबाक निर्णयपर हलुक हँसीसँ प्रश्न करैत छथि। एहि क्षणक हँसी पूर्ण स्वस्थताक घोषणा नहि; निकट सम्बन्धमे फेर प्रश्न पूछबाक क्षमता अछि। कृष्णक भेंट सेहो उपदेशात्मक चमत्कारक बदला सैनिकक गलत ठेकानावला पत्रसँ शुरू होइत अछि। शोकक संकट पर ‘भूख उत्सव नहि’ जेकाँ लघु वाक्य अछि, मुदा ओ चूल्हाक वास्तविक समयक प्रश्नक संग जुड़ल रहैत अछि। कथावाचक कृष्णकेँ सर्वसमाधानकर्ता नहि बनबैत।

पाँच वस्तुक अलमारी, आवर्ती भात आ शिल्पगत जोखिम

अध्यायक उत्तरार्धमे पाँच पुत्रक छोट वस्तुसभ—अधघिसल पासा, टुटल धनुषडोरी, अधलिखल अक्षर, कपड़ाक किनार आ ताँबाक छल्ला—अलमारीमे भेटैत अछि। द्रौपदी सभ वस्तुकेँ एक-एक पुत्रसँ जबरदस्ती सम्बद्ध नहि

करैत। एहि ठाम महत्त्वपूर्ण कलात्मक उलट अछि : दृश्य वस्तु स्मृति जगबैत अछि, मुदा स्मृतिमे अचूक नाम-निर्धारण आवश्यक नहि। आरम्भक पाँच कटोरी आ अन्तक एक छोट कटोरी भात बीचक सम्पूर्ण कथाकेँ बाँधैत अछि। पाँच मृत पुत्रक अनुपस्थितिक बीच द्रौपदी अपन लेल सीमित भोजन स्वयं माँगैत छथि। एहि स्वैच्छिक क्रियाकेँ ‘शोक समाप्त’ बनाकऽ नहि पढ़ल जा सकैत; ई जीवित रहबाक नित्य कालक सूक्ष्म पुनरारम्भ थिक।

समीक्षा एकर सीमा सेहो देखैत अछि। लगभग प्रत्येक सार्वजनिक संवादमे द्रौपदी समयसंगत नैतिक उत्तर खोजि लैत छथि। युद्धक बादक आघातमे आवाजक लड़खड़ाहट, प्रशासनिक भूल, अनिच्छित कटुवचन आ असफल संवादक अधिक अवसर सम्भव छल। किछु ठाम राजगृहक वार्ता अत्यन्त सुचिन्तित आ आधुनिक नीति-चर्चा जकाँ सुनाइत अछि। तथापि पाँच कटोरीक अनिश्चित खरोंच, दू कौरक शारीरिक कठिनाइ, चार्वीक अस्वीकार, उत्तरा–द्रौपदीक दूध-विनिमय आ पुत्रसभक अस्पष्ट वस्तु-स्मृति कथा केँ घोषणात्मक होनेसँ बचबैत अछि। “बचल दिन” शीर्षकक अर्थ विजयक बादक समय नहि, मृतकक स्मृतिक बीच प्रत्येक नब कौरक कठिन अर्जन अछि।

अध्याय १३१ — सीताक अग्नि

चिरल कटोराक जलसँ अग्निक सभाधरि : दृश्य-संयोजन

“सीताक अग्नि” युद्धक बाद लङ्काक अशोक-वाटिकामे एकटा चिरल माटिक कटोरासँ आरम्भ होइत अछि। सीता ओहि सँ अशोकक नव पातकेँ पानि दैत छथि; कटोरा खराब भऽ गेलो पर ओकर उपयोग पूर्ण बन्द नहि भेल अछि। एहि सामान्य क्रियासँ अध्याय वस्तुक ठोस अवस्थितिमे पाठककेँ ठाढ़ करैत अछि, जबकि चारू कात युद्धक धुआँ, जड़ायल छत आ घरक समाचारक प्रतीक्षा अछि। ‘अग्नि’ शीर्षक दऽ आरम्भमे पानि देखेब कथात्मक अपेक्षाक विलम्ब अछि : सार्वजनिक परीक्षा सँ पहिने प्रतिदिन जीवन सम्हारनिहारी स्त्रीक दृश्य। युद्धक लक्ष्य सम्पन्न भेलो पर त्रिजटाक सहेलीक बेटाक खबर नहि, माधवीक भायक नाम दू प्रकारसँ लिखल अछि, धन्वती बहुत दूरसँ कूपक पानि आनैत छथि। एहन सहचर रेखासभ विजयक एकल दृश्यकेँ बहुअर्थी बनबैत अछि।

हनुमान सीताकेँ रावणक मृत्यु आ राम–लक्ष्मणक सुरक्षित रहबाक समाचार दैत छथि। मुदा कथावाचक सीताक चेहरापर तुरन्त विजयोत्सवक प्रतिक्रिया आरोपित नहि करैत; पहिने ओ राम घायल छथि की नहि, से पूछैत छथि। सूचना प्राप्त करब आ भावक रूप तय करब दू अलग क्रिया बनैत अछि। वेशभूषा, स्नान, पालकी आ अलङ्कार चुनबाक प्रसङ्ग सेहो एही क्रममे अबैत अछि। सीता अलङ्कार बनौनिहारक श्रमक सम्मान करितहुँ अपन देहक प्रदर्शनक अर्थ स्वयं चुनैत छथि। एहि दृश्यसभसँ आगामी सभाक टकरावक पूर्वभूमि बनैत अछि : स्त्रीक यात्रा कोनो विजय-प्रदर्शनीक वस्तु बनि जाएत कि ओ स्वयं संवाद करनिहारी व्यक्ति रहत? चरित्रक चुनाव कथाक आरम्भहि सँ प्रस्तुत अछि, तेँ सार्वजनिक सभा अचानक जोरल नाटक नहि बुझाइत।

कथनकाल आ बहुस्तरीय आख्यान : दू प्रचलित वाचनक स्पष्ट भेद

अध्याय मुख्यतः प्राचीन लङ्काक युद्धोत्तर एक दिनसँ साँझ धरि चलैत अछि। वाटिका–पथ–रणक्षेत्रक सभा–एकान्त छाजन–वाटिकामे पुनरागमन एहि मुख्य कथनस्थानक क्रम अछि। अन्तर्गत स्मृति सीताक वनक नदी, त्रिजटाक पहिलुक अनुभव, घायल सैनिकक जड़ायल झोपड़ी आ वाटिकाक अनाम परिचारिकासभक जीवनसँ

खुलैत अछि। मुदा पाठांश २२ मे कथावाचक तत्काल घटनादृश्यसँ अलग एक स्पष्ट कथाभाष्य प्रस्तुत करैत छथि : अग्निसँ सीताक अक्षत लौटबाक एक प्राचीन वाचन आ पूर्वे सँ अग्निसंरक्षित सीता तथा छाया-रूपक दोसर प्रचलित वाचन। पाठ स्वयं कहैत अछि जे ई दुनू एके घटनाक समान विवरण नहि।

एहि वाचन-द्वैतक आख्यानशास्त्रीय महत्त्व बहुत पैघ अछि। एक दिस पाठक एखन सभास्थलपर प्रज्वलित अग्निक कथानक देखैत छथि; दोसर दिस कथावाचक ओकर परम्परागत कथासंसारक वैकल्पिक संरचना स्मरण करबैत छथि। ई द्वितीय आख्यानस्तर पात्रसभक आँखिमे देखल वर्तमानसँ स्वतंत्र अछि। पाठांश २३ मे दर्शकसभक व्याख्या सेहो अलग होइत अछि—ककरो लेल देवताक उद्घोष, ककरो लेल सीताक वचनहि पर्याप्त, आ युद्धाग्नि सँ आहत सैनिक लेल लौ स्वयं सहन न होएब। पाठककेँ एकमात्र दैवी दृश्य ग्रहण करबाक आदेश नहि भेटैत। मुदा ई विविधता मूल रामायणक ‘अक्षरशः उद्धरण’ नहि; उपन्यासक भीतर सुनाओल भिन्न वाचनक पुनर्संयोजन अछि। आलोचनामे एहि स्तरकेँ प्राचीन पाठक ऐतिहासिक एकरूपता मानि लऽ समेटब अनुचित होयत।

सभाक दृष्टि, सीताक वाणी आ प्रश्नक दिशा

रामक पहिल सार्वजनिक कथन कुलपर लागल कलङ्क आ लोकमतक सम्भावित सन्देहपर केन्द्रित अछि। सीता उत्तरमे अपराधी द्वारा कएल बलपूर्वक हरण आ पीड़ित स्त्रीसँ चरित्रक जाँच मँगबाक असमानताक प्रश्न उठबैत छथि। कथावाचक आवाजक परिमाण पर नहि, कहबाक अधिकारक दिशा पर ध्यान रखैत छथि। लक्ष्मणक स्तब्ध प्रश्न, वानर-चिकित्सकक अपन देखल सीमासँ सोचल टिप्पणी, त्रिजटाक सीमित देखल बात, हनुमानक मौन आ अज्ञात दर्शकक ‘अग्नि’ उच्चारण—ई अलग-अलग स्वर सार्वजनिक दृश्य बनबैत छथि। ककरा सभाक सोझाँ बाजबाक अधिकार अछि, ककर शब्द सुन्नल जाइत अछि आ ककर अपूर्ण अनुभवकेँ सम्पूर्ण फैसला बनबाओल जा रहल अछि—एहि तनावसँ घटनाक गति बनैत अछि।

सीता लक्ष्मणसँ पूछैत छथि जे हुनका चिन्हबाक निजी स्मृति सभाक अनुमानसँ कोना अलग अछि। त्रिजटा अपन देखल दिनक अनुभव देबैत छथि, मुदा देखलाक बाहर प्रत्येक क्षणक बारेमे सर्वज्ञ दाबी नहि करैत। एहि ठाम कथा-संसारक **दृष्टिकेन्द्रणक सीमा** प्रमुख अछि। पात्रक नजानब पात्रक दोष नहि, आ कथावाचक एहि अनिश्चिततातकेँ बलपूर्वक मिटबैत नहि। समीक्षाक पद्धति एतय कथावाचक के जानैत छथि, कोन पात्र कोन अनुभव धरि पहुँचैत अछि, आ सभा कोन ज्ञान माँगैत अछि—एहि प्रश्न पर आधारित अछि; एहि दृश्यपर कोनो बाह्य दार्शनिक प्रमाण-प्रणाली आरोपित करबाक आवश्यकता नहि।

आगिक बहुअर्थ : विनाश, प्रदर्शन आ अनिच्छित सार्वजनिकता

अग्निक नाम पहिने अज्ञात आवाजसँ उठैत अछि। सीता ओकरा अनिवार्य दण्डक रूपमे चुपचाप नहि लैत, अपन निर्णय कहबाक ठाम माँगैत छथि आ स्पष्ट करैत छथि जे लोक फेर आन स्त्रीसँ एहन परीक्षा माँगि सकैत अछि। ई कथात्मक पूर्वाभास घटना-सूत्रक सामान्य ‘अग्नि-परीक्षा’सँ आगाँ बढ़ि आगाँक समाजमे दृश्य पुनरावृत्तिक जोखिम बनबैत अछि। सीता चुनैत छथि जे कियो पकड़ि कऽ हुनका आगिक कात नहि लऽ जाए; एकटा कठोर

परिस्थितिमे निर्णयक वाणी बचाएबाक ई क्रिया अछि, सन्देह-व्यवस्थाक स्वीकृति नहि। अध्यायक शब्द-संरचनामे पानि, घायल हाथ, धुआँ, लपट, पात्र आ कटोरा सभ आगिक एकध्रुवी 'शुद्धि' अर्थकेँ भङ्ग करैत अछि।

आगि तैयार करनिहार घायल सेवकक पट्टीक प्रश्न विशिष्ट दृश्यात्मक मोड़ अछि। राजपरिवारक आरोप–प्रत्यारोपक बीच एक छोट श्रमिक-देह फेर कथा भीतर प्रवेश करैत अछि। ओ व्यक्ति अग्नि बनबैत अछि, मुदा ओकरो घाव अछि; अग्निक लोक-प्रतीकक नीचाँ आगि लगाबनिहारक वास्तविक शरीर देखाइत अछि। बादमे एक सैनिक अग्निक गन्धसँ जरल झोपड़ी याद कऽ पीठ फेरि बैसि जाइत अछि। एउ दू दृश्य अग्निक उत्सवात्मक वाचनक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि। वस्तु आ संवेदना पात्रसभक स्मृतिक अनुसार अर्थ बदलैत अछि।

अग्निक बादो कथा जारी : पुनर्मिलनक अपूर्णता

सीता सभाक दृष्टिमे फेर ठाढ़ देखाइ दैत छथि, मुदा तत्क्षण जयघोष रोकैत छथि। ई वाक्य-रचना अति महत्त्वपूर्ण अछि—'सभाक दृष्टिमे' दृष्टि-केंद्रक सीमा कहैत अछि, न कि पाठक लेल चमत्कारक एकटा मात्र व्याख्या। राम अपन पहिल कथनक लोकमत-सम्बन्धी कारण बतबैत छथि, सीता ओकर प्रभाव दूरक स्त्रीसभ धरि पहुँचत, से कहैत छथि। दुनूक बीच शारीरिक दूरी घटैत अछि, मुदा कथा साफ रखैत अछि जे घाव तत्काल नहि भरल। एहि कारण पुनर्मिलन 'समस्त संघर्षक अन्तिम समाधान' नहि अछि।

युद्धभूमिक पाछाँ भोजन आ पानिक साधारण काज फेर लौटैत अछि। धन्वतीक लेल कूपक रस्सी, माधवीक भायक खोज, त्रिजटाक नखायल रहब, घायल सेवकक पट्टी, अशोक-वाटिकाक महिलासभक अपना इच्छासँ प्रस्थान चुनबाक प्रश्न युद्धोत्तर संसारक बहुकेन्द्रित कथा बनबैत अछि। राम–सीताक एकान्तमे वनक नदीक ठंढा पानि सम्बन्धी साधारण स्मृति कहबाक असफल इच्छा पाठककेँ बतबैत अछि जे लोकमतक सार्वजनिक बहसमे निजी भेटक सामान्य शब्द दबि गेल छल। पाठांश ३१ मे हाथक स्पर्श 'भेटक' अछि, न्यायालयक फैसला नहि। ई स्पष्ट भेद अध्यायक भावनात्मक समापनकेँ कृत्रिम विजयमुद्रासँ बचबैत अछि।

अन्तिम दृश्य फेर चिरल कटोरापर लौटैत अछि। धन्वती ओकर उपयोगिता देखैत छथि; सीता कटोरा हुनका सौंपि प्रस्थान करैत छथि। आरम्भक पानि आगिक बाद सेहो जीवित अछि। वस्तुक एहि पुनरावर्तनसँ आरम्भ–अन्तक रूपात्मक वृत्त बनैत अछि, मुदा कटोराक चिरा अपने-आप बन्द नहि भऽ गेल। एहि सौन्दर्यात्मक निर्णयमे उपन्यासक उद्देश्य साफ अछि : एगो दृश्य स्त्रीक जीवनक निर्णायक अधिकार सम्पूर्ण रूपसँ लौटा नहि सकैत; ओकरा अपन आगाँक शब्द, विश्राम आ बाट सेहो चाही।

आलोचनात्मक प्रतिपक्ष : आधुनिक वाणी आ महाकाव्यीय पात्र

एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि सीताक वाणीकेँ सभा-नाटकक केन्द्र बना कऽ आश्रित परिचारिका, पानि ढोबनिहार, घायल सैनिक आ प्रतीक्षा करनिहार परिवारक स्वतन्त्र उपस्थितिक सम्भावना खोलब अछि। मुदा किछु संवाद अत्यन्त आधुनिक सामाजिक प्रश्नक स्पष्ट, सुव्यवस्थित वाक्यमे प्रस्तुत अछि। सीताक हर प्रतिवाद लगभग सूत्रवत् पूर्ण होइत अछि, आ रामक उत्तर कखनो अपेक्षाकृत सीमित आ संकोचपूर्ण रहैत अछि; तेँ पारस्परिक संवादक ध्वनिगत असमानता बढ़ैत अछि। ओइ ठाम अधिक टूटल, अपूर्ण, विरोधाभासी संवाद सम्भव छल। दोसर सीमा ई जे दू प्रचलित वाचनक स्पष्ट भाष्य दृश्यक नाटकीय प्रवाह एक क्षण रोकैत अछि। मुदा एही

विरामक कारण पाठक ‘आगि’ नामक एक मात्र सांस्कृतिक प्रतिमामे बन्द नहि रहैत। सफलताक मूल ठाम चमत्कारक नकार वा समर्थन नहि, **वाचनसभक अन्तर राखि पात्रक वाणी जीवित करब** अछि।

अध्याय १३२ — नम्बरक बाद

२०३९ क अस्पताल : स्थिर मृत्यु-गणना आ अस्थिर जीवन

“नम्बरक बाद” २०३९क वर्षाक बाद अस्पतालक अस्थायी कार्यालयमे डगमगाइत मेज सँ आरम्भ होइत अछि। मेजक एक पयर नीचाँ ईंटक टुकड़ा अँटाओल गेल अछि; लाल जिल्दक मृत्यु-पंजी खोलिते मेज काँपि उठैत अछि। एहि लघु भौतिक विवरणमे कथानकक वर्तमान आधार भेटैत अछि : राज्यक स्थिर गणना एक अस्थायी, भीजल, अस्थिर भवनक भीतर तैयार होइत अछि। पिछला अध्याय १३०–१३१ क महाकाव्यीय कालधारासँ कथन फेर आधुनिक समयमे घुरैत अछि। तथापि पिछला अध्यायसभक भोजनक बिम्ब एतय सरिताक आधा भरल टिफिनमे लौटैत अछि। कथा स्थूल कालान्तरक बावजूद वस्तु-स्मृतिक सूक्ष्म कड़ी बनबैत अछि।

मूल सभा सत्यापित मृत्युक कुल संख्या सम्बन्धी सारपत्र पूरा करैत अछि। मुदा उपन्यास एहि अध्यायमे कोनो अंककेँ प्रतीकात्मक ‘अन्तिम सत्य’ घोषित करबाक बदला तीन अलग वस्तु बनबैत अछि—मृत्यु-पुष्टिक गणना, व्यक्ति-पहिचानक लम्बित परीक्षण, आ सम्बन्धित अभिलेखक सुधार। संख्या स्थिर भेलाक अर्थ शोक थिर भऽ गेल नहि। कथाक कथन-विन्यासक केन्द्र ‘कतेक मरल’सँ ‘ओहि संख्याक बाद ककर काज, ककर स्मृति आ ककर अधिकार बाकी’क दिस सरकैत अछि। तेँ स्त्री-पर्वक आखिरी अध्याय आगामी शान्ति-पर्वक प्रशासनिक कथासूत्र खोलैत अछि; एकरे नूतन कथात्मक रूपरेखा कहबाक आवश्यकता नहि, ई स्वयं मूल पाठक संक्रमण अछि।

घटनात्मक चरण : एक मुहर आ दोसरक प्रतीक्षा

अध्यायक घटना-पञ्जी छह क्रममे बनैत अछि। पहिल, रमा मृत्यु-सारपत्रक भाषा सुधारबैत छथि आ ‘सभ विवाद समाप्त’ काटल जाइत अछि। दोसर, उर्मिलाक बहिन बहिनक मृत्यु-पत्र फेर नहि, हुनकर धुलाई आ ढुलाईक देयक अलग कथा खोलैत छथि। तेसर, सरिता–कबीरक आग्रहपर ‘मृतक परिवार सहायता’क सीमित शीर्षक बदैलि ‘देय, उत्तरदायित्व आ अधूरा काजक पंजी’ बनैत अछि। चारिम, निजी पत्र, सन्दूकक चाभी, धार्मिक सेवा, मजदूरी, उपचार आ पुनर्वास अलग-अलग मार्गमे रखल जाइत अछि। पाँचम, माथक कार्यालय देय-पंजीकेँ औपचारिक अधिकारबिहीन ‘स्थानीय स्वैच्छिक प्रस्ताव’ कहि नेतृत्वक प्रश्न उठबैत अछि। छठम, मृत्यु-गणनाक अनुमोदन होइत अछि, मुदा देय-पंजीक पहिल प्राप्ति-क्रमाङ्क आ अगिला बैठकक सूचना मात्र निकलैत अछि।

एहि क्रममे ‘अन्तिम’ शब्द दुइ ठाम अलग अर्थ पबैत अछि। पुष्टि भेल मृत्यु-गणनाक एक प्रशासनिक अन्त अछि, मुदा भुगतान, संरचनात्मक दुर्घटना-जाँच, अधूर घरक काम आ प्रतिनिधित्वक कथा खुलल अछि। पाठांश ३५ मे रमा पहिल पंजीपर मुहर लगबैत छथि, दोसर पर नहि। ई दृश्य शिल्पगत रूपसँ प्रभावशाली अछि, कारण एके हाथसँ दू भिन्न निष्कर्षक गति उपस्थित अछि। कथा दुइ दस्तावेजक समानान्तर अस्तित्वसँ समापन आ अगिला कथासूत्रक बीज एकसँ रखैत अछि।

कथा-दृष्टि : सरिताक शोक, उर्मिलाक बहिनक स्वर, रमा आ नैराक अनुपस्थिति

आरम्भक दृष्टि रमाक कार्यमेजपर अछि, मुदा पाठक शीघ्र सरिताक टिफिन, कबीरक नैरासम्बन्धी निजी चिट्ठी, उर्मिलाक बहिनक रसीद, देवीक प्रशिक्षण-पर्ची, रुहानीक सार्वजनिक भोजन-लेखा, नीरजक अनुष्ठान-पञ्जी आ किशोरीक सन्दूकक चाभी धरि जाइत अछि। एहन बहुकेन्द्रित दृश्य-विन्यासमे मृतकक जीवन केवल सरकारी नाम नहि रहैत। उर्मिलाक बहिन स्पष्ट करैत छथि जे मृत्यु-पत्र मिलि गेल अछि; हुनकर प्रश्न बहिनक श्रमक कथासँ सम्बन्धित अछि। कथावाचक ई स्वरकेँ सरिताक शोकक माध्यमसँ न कहलाइ, अलग उपस्थित करैत छथि। सरिता स्वयं अध्यक्षक कुर्सी पाछाँ सरका दैत छथि, कहैत छथि जे नैराक माय रहलाक कारण सभ निर्णय हुनकर होएत, एहन नहि। एहि क्रियामे नायिका अपन अधिकार छोड़ैत नहि, अन्य आवाजक स्थान बनबैत अछि।

नैराक उपस्थिति एहि अध्यायमे विरोधाभासी अर्थमे तीव्र अछि। ओ जीवित पात्रक रूपमे मंचपर नहि, हुनकर फाइल-आवरण, अपूर्ण सूची, बचल व्यक्तिगत पत्र आ पूर्वक अधूर प्रश्नसभक रूपमे छथि। कबीर निजी चिट्ठी सार्वजनिक जाँचक लेल नहि दैत छथि, जबकि सार्वजनिक कार्यसँ सम्बन्धित पन्ना अलग करबाक सहमति दैत छथि। ई घटनासँ पूर्व अध्याय १२९ क नाम प्रकाशनक प्रश्न फेर लौटैत अछि : मृत्यु भेला परो व्यक्तिक निजता स्वतः सार्वजनिक सम्पत्ति नहि बनैत। सरिता कहैत छथि जे बेटी रहलाक कारण हुनकर हर जाँचक उत्तर माँ लग होएत ई आवश्यक नहि। एकर परिणाम स्मृतिक उन्नत आदर्शीकरण नहि, लेखकत्व आ अधूर कार्य सम्हारनिहार व्यक्तिक अलग स्थान बनब अछि।

सूक्ष्म वस्तुसभ आ अनकहल जीवनक कथा

अध्यायमे वस्तु श्रेणीगत चिन्ह नहि, छोट पृथक कथासंसार अछि। टिफिनक आधा भात सरिताक घरमे नैराक अनुपस्थित भोजन-समयक अवशेष; उर्मिलाक बहिनक भीजल कपड़ा-रसीद कामक समयक आखिरी बचल निशान; किशोरीक लोहेक चाभी मृत वृद्धाक निजी वचनक अपूर्णता; नीरजक पीतलाक थारी आ अलग रसीद श्रम तथा अनुष्ठानक अलग कथा; आ शशिभूषणक अधबनल कपड़ाक किनार एक घरक स्मृति। वस्तुसभक निरन्तरतासँ उपन्यास मृत्यु-गणनाक अज्ञात कुलकेँ स्वतन्त्र मानवसम्बन्धक अनगिन सम्भावनामे फैलाए दैत अछि।

एहि प्रतीकसभक पुनरावृत्ति समय-व्यवस्थाकेँ सेहो प्रभावैत अछि। सरिता बरामदाक पानिक पातर आवाजमे नैराक पुरान हँसी मानू सुनैत छथि। कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे ई स्मृति-जनित भीतरी अनुभव अछि, अलौकिक सार्वजनिक कथन नहि। अन्तःचेतनाक छोट पूर्वदीप्ति एतय यान्त्रिक फ्लैशबैक नहि; वर्तमानक एक ध्वनि पुरान स्नेहक समय खोलि दैत अछि। एहिसँ अध्यायक बहुस्तरीय काल—२०३९ क बैठक, आपदाक राति, पहिनुक मजदूरी, निजी घरक अपूर्ण वचन आ आगाँक सुनवाई—एकहि अस्थायी कार्यालयमे सहअस्तित्व पबैत अछि।

संस्थागत वाणी आ पात्रक असहमति : समापनसँ आगाँक कथा

पाठांश ९–१० क नव पंजीक नामकरण निर्णायक मोड़ अछि। कबीर एहन शीर्षक चाहैत छथि जाहिसँ राहतक एक स्रोत बाकी सभ श्रम-दावेकेँ समेटि नहि ले। रमा प्रस्ताव स्वीकार करैत छथि, मुदा स्पष्ट करैत छथि जे समिति

केवल प्रारम्भिक सत्यापन, अनुशंसा आ अनुसरण करि सकैत अछि; भुगतान अपने आप नहि भेटत। एहि सीमासँ नब रजिस्टर कोनो जादुई समाधान नहि बनैत। एक मजदूरक तत्काल भोजनक दबाव आ विवादित बिलक लम्बित जाँचक बीच अन्तरिम निर्विवाद अंशक अनुशंसा दृश्यकेँ अधिक मानवीय बनबैत अछि। नीरजक धार्मिक सेवा-पारिश्रमिकक अलग रसीद आ इच्छुक परिवारक निर्णय एहि बहुस्वरीय जीवनक आन धाराक प्रवेश अछि। एतय धार्मिक कर्मकाण्डक पक्ष वा विरोधक सामान्य घोषणा नहि, विशिष्ट पात्रसभक अलग जीवनस्थितिक कथा अछि।

समीक्षात्मक दृष्टिसँ शान्ति-पर्वक आरम्भक पूर्वसूचना अध्यायक अन्तमे बहुत स्पष्ट अछि। सरकारी पत्र नेतृत्व आ अधिकृत हस्ताक्षरक शर्त रखैत अछि; नगर प्रतिनिधि स्वयं अध्यक्ष बनबाक प्रस्ताव दैत छथि; सरिता पूछैत छथि जे सरकारी मुहरक बदलामे अन्य आवाज चुप किएक भऽ जाए। अगिला दिनक बैठकक सूचना ‘नेतृत्व, प्रतिनिधित्व आ भुगतान-अधिकारक सार्वजनिक निर्धारण’ कहैत अछि। ई केवल सूचनात्मक अंत-संकेत नहि, आगामी संघर्षक मुख्य पात्र, प्रश्न आ स्थान स्थापित करैत अछि। ‘नम्बरक बाद’ शीर्षक तेँ कथा-कथनक एक सीमा रचैत अछि : मृतकक संख्या गनल गेल, मुदा **गनल जीवनक सामाजिक परिणामक कथा एखन बाकी अछि**।

भाषिक लय आ अन्तिम आलोचनात्मक आकलन

अध्यायक बल ओकर प्रसङ्ग-संयोजन अछि। रमा, सरिता, कबीर, उर्मिलाक बहिन, रुहानी, नीरज, देवी, अनिरुद्ध, गोमती, अदिति आ सरकारी प्रतिनिधिक अलग आग्रह एक कक्षमे आबैत अछि। मुदा एहि बहुतायतक कारण कथा किछु ठाम रजिस्टरक मद-सूची जेकाँ विस्तृत होइत अछि। कार्यालय-विभाजन, स्रोत, क्रमाङ्क, अधिकार, प्राप्ति, अगिला सुनवाई—ई बारम्बार आवर्तन घटनात्मक तनावकेँ शिथिल करि सकैत अछि। पात्रक गहिर आन्तरिक विरामक बदला तर्कपूर्ण सार्वजनिक बोलीक प्रधानता बढ़ैत अछि। लेखक एकर प्रतिकार आधा भात, गील रसीद, किशोरीक चाभी, अनिरुद्धक घायल हाथ आ सरिताक अपन बेटी सम्बन्धी अज्ञानक स्वीकारसँ करैत छथि। एही ठाम पाठ अपन जीवित गहिराइ बचबैत अछि।

शिल्पक पैघ उपलब्धि ई अछि जे अन्तिम मुहर सच्चा अन्त अछि, मुदा सम्पूर्ण जीवनक अन्त नहि। अध्याय १ क सरिताक झूठ मृत्यु-सूचना आ चालू रसोइक बीच जे मूल विरोध छल, एतय वास्तविक मृत्यु-पुष्टि आ शेष कामक पंजीक बीच नव रूपमे उपस्थित अछि। किन्तु ई तुलना सामान्य ‘सब फेर ओतहि लौटल’क दावा नहि : पहिल अध्यायमे मृत घोषित व्यक्ति जीवित छलीह, एतय नैरा आ उर्मिलाक मृत्यु सत्यापित अछि। वस्तु-आवर्तनक समानता घटनाक नैतिक भिन्नता नहि मेटबैत। कथा अपन पहिल सूत्रकेँ रूपान्तरित करि आगामी शान्ति-पर्वक संघर्षक लेल खुलल अन्त छोड़ैत अछि।

स्त्री-पर्व / युद्धकाण्ड : अध्याय १२१–१३२ क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

बारह अध्यायक रूपरेखा : मृत्यु-सूचनासँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व धरि

स्त्री-पर्वक बारह अध्याय (१२१–१३२) क कथनयात्रा सीधी अन्त्येष्टि-क्रमवाला कथा नहि अछि। प्रारम्भमे ‘नामक पुष्टि’ आ ‘अन्तिम देह’म मृत्यु-पुष्टिक कठोर दृश्य आ अधूर पहिचानक प्रतीक्षा अछि। तकर बाद ‘गान्धारीक प्रश्न’ आ ‘मन्दोदरीक भीतर’ महाकाव्यीय शोकक दू अलग स्त्री-दृष्टि खोलैत अछि; ‘कुन्तीक स्वीकृति’ पुरान जन्मरहस्यकेँ युद्धक बाद पुनः कहबाक माध्यमसँ अतीतक सम्बन्ध बदलैत अछि। ‘भातक मात्रा’, ‘बचलक दोष’ आ ‘चम्पाक उपचार’ आधुनिक जीवित लोकक शारीरिक समय, अपराधबोध आ कथनक विलम्ब पर टिकैत अछि। अन्तिम चारि अध्यायमे रुहानीक नाम-सूची, द्रौपदीक बचल दिन, सीताक अग्नि आ नम्बरक बाद क्रमशः सार्वजनिक दृश्यता, जीवित जीवनक भोजन, स्त्रीक स्वतन्त्र वचन आ सामाजिक दायित्वक नव काल खोलैत अछि।

एहि विन्यासमे मुख्य कथाक आधुनिक काल (२०३९क आपदापछाति) आ महाकाव्यीय कालधाराक आवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा सभ बारह अध्यायमे अनिवार्य रूपसँ एकाधिक कालक स्वतन्त्र दृश्य नहि; अध्याय १२९ आधुनिक आश्रयमे केन्द्रित अछि, १३० द्रौपदीक राजगृहक स्वतंत्र प्राचीन दृश्य अछि, १३१ सीताक लङ्काक विस्तृत प्राचीन कथाधारा अछि, आ १३२ फेर अस्पतालक आधुनिक कार्यालयमे घुरैत अछि। एहन वितरणक वास्तविकता आख्यानक सामान्य सङ्केतसँ ऊपर राखबाक चाही। दू भिन्न कथा-काल एके शब्दक जाल नहि बनबैत, बल्कि पात्रक प्रश्नसभक पुनर्रचना करैत अछि।

आवृत्ति, अवधि आ वस्तुक प्रतिध्वनि

एकर प्रमुख आवर्ती वस्तु अछि—नाम लिखल पन्ना, भोजनक थारी, जल-पात्र, चिट्ठी, कपड़ाक टुकड़ा आ सार्वजनिक/निजी द्वार। अध्याय १२१–१२२ मे नाम मृतकक पहिचानक असह्य प्रश्न बनैत अछि; १२९ मे जीवित व्यक्तिक नाम छपलापर भय आ वैयक्तिक चुनावक प्रश्न बनैत अछि; १३२ मे मृत्युक संख्या स्थिर भेलो पर जीवनक शेष काजक नाम-पंजी खुलैत अछि। अर्थ स्थिर नहि; एके वस्तु कथाक काल, पात्रक स्थिति आ पठनक प्रसङ्ग अनुसार बदलैत अछि।

भोजनक आवर्तन विशेष रूपसँ मार्मिक अछि। सरिताक तेसर थारी (१२६), चम्पाक घायल कलाईक कारण कौरक तरीका (१२८), रुखसानाक तीस थारी आ तीस रात्रिवासीक भेद (१२९), द्रौपदीक पाँच कटोरी आ अपना दू कौर (१३०), सीता–त्रिजटाक साधारण भात (१३१), सरिताक आधा टिफिन (१३२)—ई सभ मृत्यु-पछाति दैनन्दिन कालक अलग रूप छथि। एहि पुनरावृत्तिक सौन्दर्य केवल करुण रसक विस्तार नहि : घटनाक बाद व्यवहारिक जीवन फेर केना चलैत अछि, ओकरा कथा असमान देहगत, सामाजिक आ मानसिक समयमे बाँटैत अछि।

नारी-पात्रक समानता नहि, अलग-अलग कथनाधिकार

गान्धारीक प्रश्न आ द्रौपदीक शोक एक समान राजनीतिक घटना नहि; कुन्तीक अपराधबोध आ सरिताक मातृत्व एक प्रकारक इतिहास नहि; सीताक सार्वजनिक सभामे वचन आ चम्पाक निजी उपचारकक्षमे मौन दुनूकेँ ‘स्त्रीक संघर्ष’ कहि एकहि अमूर्त वर्गमे समेटब आलोचनात्मक अन्याय होयत। कथाकार विभिन्न पात्रकेँ अलग रीतिसँ बोलबाक, प्रश्न टारबाक, अस्वीकार करबाक वा भोजन मँगबाक ठाम दैत छथि। रुहानीक आश्रयमे निजी नाम प्रकाशित नहि करबाक चुनाव ओहि क्रमक आधुनिक प्रसङ्ग अछि, जखन द्रौपदी पराजित पक्षक चार्वीकेँ भोजन अस्वीकार करबाक अधिकार रखैत छथि; सीता सभाक प्रश्नक दिशा पलटबैत छथि; सरिता उर्मिलाक बहिनक आवाज अपना माध्यमसँ कहबए नहि चाहैत छथि। एहि सभमे समान घटना नहि, स्वतन्त्र वाणी लेल बनल दृश्य-संरचना साझा अछि।

कथनक बहुकेन्द्रणक बावजूद चयनक सीमा अछि : अध्यायसभमे बहुधा निर्णायक स्त्री-पात्र बहुत स्पष्ट, सही-सही तार्किक वाक्य बोलैत छथि। जीवनक अव्यवस्थित, अल्पशब्दी वा विरोधाभासी चेतनाक अधिक विस्तारक स्थान छल। मुदा बालकक नब चप्पल, पाँच कटोरी, अधघिसल पासा, चिरल कटोरा, पीयर कपड़ाक टुकड़ा, रसोइक कटोरी आ निजी पत्रक लिफाफा जेकाँ अनन्य वस्तुसभ पात्रक जीवित संसार बचबैत अछि। एहि बिम्बसभ बिना अध्यायसभ सरल सामाजिक-सूचना बनि सकैत छल।

ऐतिहासिक, दार्शनिक आ सामाजिक अर्थक बदला आख्यानक अन्तःप्रक्रिया

एहि समीक्षा मे नायक–नायिका पर कोनो बाह्य प्रमाण-विवेचनक सूत्र आरोपित नहि कएल गेल अछि। पाठभितर जे नामक त्रुटि, फोटो, चिकित्सा-पत्र वा मृत्यु-पंजी अछि, ओकर कथात्मक महत्त्व मुख्यतः ई अछि जे **सूचना ककरा केखन भेटैत अछि, ककर आवाज पाठकक सोझाँ अबैत अछि, कोन घटना विलम्बसँ जानीत होइत अछि, आ ककर निर्णय अगिला दृश्यक स्थिति बदलैत अछि**। महाकाव्यीय पात्रसभ सेहो आधुनिक पात्रक ऐतिहासिक समरूप नहि; अलग कालधाराक आख्यान-उपस्थिति छथि। भारतीय काव्यशास्त्रक करुणा, औचित्य आ ध्वनिक दृष्टि जेतय उपयोगी अछि, ओतय बिम्ब, मौन आ प्रसङ्गक अर्थ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा कथा-घटना बिना ओकरा सिद्धान्तक घोषणा नहि बनाओल गेल अछि।

संयुक्त उपलब्धि आ सीमाक अन्तिम निर्णय

स्त्री-पर्वक पैघ उपलब्धि अछि जे ओ युद्धक कथात्मक चरमकेँ मृत्यु-पुष्टिक ठीक बाद बन्द नहि करैत। अपन मृत्यु स्वीकारब, मृतकक वस्तु सँ स्मृति बनेब, जीवित बचबामे अपराधबोध अनुभव करब, सार्वजनिक वक्तव्यक समय चुनब, अपूर्ण श्रमक नाम लिखब आ अगले दिनक भोजन बनएब—ई सभ उत्तरकथाक घटना बनैत अछि। शीर्षक ‘स्त्री’क अधीन शोक व्यक्तिगत वेदना मात्र नहि, जीवनक कथन-व्यवस्था बदलनिहार शक्ति बनैत अछि।

सभसँ उल्लेखनीय सीमा संवादक अत्यधिक सुव्यवस्था आ दायित्व-पंजीक निरन्तर विस्तार अछि। कखनो कथा जीवित दृश्यसँ हटि नीतिगत बिन्दु एकत्र करए लगैत अछि। महाकाव्यीय स्त्री-पात्रसभक आधुनिक अधिकार-वाणी प्रभावी रहितहुँ हुनकर पुरान कथा-स्थानक भाषिक दूरी पर्याप्त नहि बचैत, एहन आलोचनात्मक आपत्ति

सम्भव अछि। तथापि लेखक अनेक ठाम मौन, स्मृतिक असफलता, शारीरिक थकान, अधूर रसीद आ अस्वीकारक स्थिरता सँ एहन प्रवृत्तिक प्रतिवाद करैत छथि।

स्त्री-पर्वक अन्तिम अर्थ ‘सभ प्रश्नक फैसला’ नहि, बल्कि मृत्युशोकक बादक सामाजिक समय शुरू करब अछि। अध्याय १३२ क एक पंजीपर लगल मुहर आ दोसर पंजीपर शेष रहि गेल खाली ठाम एहि पर्वक अत्यन्त सघन समापन-बिम्ब अछि। मृतकक संख्या स्थिर भेल; ओकरा सँ जुड़ल जीवनक कथा एखन रुकल नहि। आगामी शान्ति-पर्वक प्रश्न—शासन के लेत—एहि अनिर्णीत ठामसँ अनिवार्य रूपेँ जन्मैत अछि।

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १३३ — शासन के लेत

उघारल कीलवाली कुर्सी : शासनक प्रश्नक वस्तुगत प्रस्तावना

“शासन के लेत”क पहिल दृश्य २०४०क आरम्भमे अस्थायी कार्यालयक बरामदापर घटैत अछि। रमा अध्यक्ष लेल राखल कुर्सीक उघारल कील देखि ओकरा घेरासँ हटा दैत छथि आ शेष कुर्सी गोलाकार लगबैत छथि। ई कोनो सजावटी विवरण नहि। अध्यायक आरम्भहि मे अध्यक्षताक एकल, अपेक्षाकृत ऊँच स्थान असुरक्षित वस्तु बनि जाइत अछि; समतुल्य बैठकीक व्यवस्था ओकर स्थान लैत अछि। पाठक एखन चुनावक परिणाम नहि जनैत, मुदा प्रारम्भिक दृश्य कथाक सम्भावित दिशा सूचित करैत अछि। लाल जिल्दक सत्यापित मृत्यु-पंजी बन्द अछि, देय आ अधूर काजक पंजी सील लागल कपड़ाक नीचाँ अछि। मृत्युक संख्या निश्चित भेला परो जीवनसँ जुड़ल काम एखन बन्द अछि—एहि विषमता सँ स्त्री-पर्वक अन्तिम अध्यायक कथनक अगिला अवस्था निकलैत अछि।

एहि उद्घाटनमे तीन अलग समय समाहित छथि। पिछिला साँझ कुर्सी अध्यक्षक लेल राखल गेल छल; वर्तमान बिहान ओ असुरक्षित भेटैत अछि; आगामी चुनावक समय ओहिसँ प्रभावित होयत। सरिताक स्मृतिमे नैरा पहिने चप्पल उतारि कागद सोझ करैत छलीह, मुदा आइ ओ कात खाली अछि। एतय स्मृति वर्तमान दृश्यकेँ रोकैत नहि; खाली स्थानक मार्फत पछिला पर्वक वास्तविक मृत्यु वर्तमान शासनक निर्णयमे प्रवेश करैत अछि। शोक स्वयं नेतृत्वक जनादेश नहि बनैत—सरिता अपन मृत बेटीक नामसँ अतिरिक्त मत माँगबाक अस्वीकार करैत छथि। ‘कुर्सी’ तेँ अधिकारक इच्छा, व्यवहारिक जोखिम आ अनुपस्थित लोकक सामाजिक स्थान—तीनूकेँ जोड़निहार रूपक अछि।

चुनावक घटनाक्रम : सत्ता-ग्रहण नहि, अधिकारक अस्थायी विन्यास

अध्यायक घटनात्मक क्रम विस्तृत अछि, मुदा चरणसभ स्पष्ट पहिचानल जा सकैत अछि। पहिने उर्मिलाक बहिन रोकल मजदूरीक सुनवाईक समय प्रश्न करैत छथि; रमा दावाक पुरान अवधि आ नव हस्ताक्षरक वैधता अलग करैत छथि। नगर प्रतिनिधि कार्यालयक पत्रसँ अधिकृत हस्ताक्षरक आवश्यकता पढ़ि सुनबैत अछि, मुदा राहतक अगिला किस्त अटकबाक बात ओकर फोनपर सुनल अनुमान मात्र निकलैत अछि। बैठक वृद्ध चक्कावला कुर्सीपर

आएल व्यक्ति भीतर नहि चढ़ि पएबाक कारण रुकैत अछि; ताराक अस्थायी फट्टा सुरक्षित स्थायी पहुँचक दावा बनि नहि जाइत। सूचना-पत्रक अस्पष्ट शब्द फेर लिखल जाइत अछि, आ आश्रयवासीक गोपनीय ठेकान प्रकाशित केने बिना प्रतिनिधित्वक व्यवस्था सोचल जाइत अछि।

एहि बाधासभक बाद चुनाव टारबाक प्रस्ताव आ तत्काल सुनवाईक माँगक बीच अदिति तीस दिन अथवा विस्तृत सभासँ पहिने समाप्त होएवाली कार्यसमिति प्रस्तावित करैत छथि। रमा संयोजक, सरकारी पत्र-प्राप्तिक कर्मचारी, स्वतन्त्र तकनीकी दल आ भुगतान-स्वीकृतिक कार्यालयक काज अलग-अलग लिखैत छथि। मतदान सँ पहिने सरिता, उर्मिलाक बहिन, अनिरुद्ध आ देवी गोंड अपन अनुपयुक्त अथवा अनिच्छित नेतृत्वक संभावना टारैत छथि; रुहानी निजी नाम खोलने बिना प्रतिनिधित्वक सीमित व्यवस्था करबबैत छथि। अन्ततः गोमती बहुमतसँ अस्थायी संयोजक चुनल जाइत छथि, नगर प्रतिनिधिक असहमति रहि जाइत अछि, आ तत्काल सभ देय चुकबाक बदला उर्मिलाक बकायाक प्रमाणित अंश अग्रेषित करबाक काज शुरू होइत अछि। ई स्पष्ट घटनात्मक परिवर्तन अछि; मुदा विभागीय मुहर, मजदूरी भुगतान, सुरक्षित स्थायी प्रवेश आ व्यापक चुनाव एखन अपूर्ण छथि।

बहुस्वरता, समयक दाम आ दृष्टिकेन्द्रण

तृतीय पुरुषक कथावाचक कोनो एक पात्रक चेतनापर पूरापूर टिकैत नहि। आरम्भ रमा द्वारा वस्तु आ कागद सम्हारबाक क्रियासँ भऽ सरिताक खाली स्मृति, उर्मिलाक बहिनक देय, उमाक दिनक मजदूरी, रुहानीक गोपनीयता, ताराक सुरक्षित पहुँच आ नगर प्रतिनिधिक विभागीय आशंका धरि बढ़ैत अछि। ई बहुकेन्द्रित दृश्य अछि, मुदा सभ पात्र बराबर शब्द नहि पबैत। रमा कागद पर वाक्य लिखबाक कारण मध्यस्थ कथात्मक ठाममे छथि; प्रतिनिधि ‘विभाग’क भाषामे बोलैत अछि; उमा ‘त्यागक रसीद’क अभाव पूछैत छथि। हुनकर प्रश्न सामाजिक अर्थ सँ आगाँ बढ़ि दृश्य-समयक आलोचना करैत अछि : तीन घण्टाक बैठक कसै महिला लेल तीन घण्टा मजदूरीक वास्तविक हानि अछि। कथावाचक सार्वजनिक निर्णयक काल आ निजी जीवनक कालकेँ एके घड़ीमे परस्पर भिड़बैत छथि।

चक्कावला कुर्सी उपयोगकर्ता भीतर आबि गेलाक बाद बैठक फेर चलैत अछि—ई लघु विराम कथाक गति घटबैत अवश्य, मुदा चुनावक पात्रता के करायत से दृश्य मे स्थापित करैत अछि। वृद्धाक सूचना-पत्र पढ़बेबाक आग्रह, उर्मिलाक बहिनक ‘हम बीचमे टोकब’ आ गोमतीक ‘भेल’ काटि ‘व्यवस्था करबाक दायित्व’ लिखबेब संवादक अलग प्रयोजन छथि। पहिलमे कथाक पहुँच, दोसरमे बाधा पहुँचएबाक वैधता, तेसरमे भाषिक सुधारक परिणाम। तें ‘बहुस्वरता’क दावा केवल अनेक संवाद-चिह्नक संख्या सँ नहि, **ककर वचनक कारण वास्तविक लिखित वाक्य बदलैत अछि** एहि क्रियात्मक अन्तरसँ पुष्ट होइत अछि।

वस्तु-आवर्तन : पंजी, फट्टा, भोजन आ रिक्त स्थान

अध्यायमे कागदक दू रूप लगातार टकराइत अछि—उपस्थित, दावेदार, मतदाता आ खर्चक खुला हिसाब; आ निजी ठेकान, उपचार अथवा भयक बन्द लिफाफा। कथा जँ एतबे पर रुकितय तँ ई प्रशासनिक नियमक आख्यान बनि सकैत छल। मुदा उघारल कीलवाली कुर्सी, टपकैत टोटी, छतसँ झड़ल चून, उमार धुलाईक गट्ठर, अनिरुद्धक

पट्टी-बान्हल हाथ आ सरिताक डिबियाक भात सामान्य जीवनक भौतिक उपस्थिति दैत अछि। दुपहरमे सरिता अपन पुरान आदतिक कारण नैराक भाग अलग निकालैत छथि, फेर भात गोमतीक संग बाँटैत छथि। एहि छोट क्रियामे मृत बेटीकेँ विस्मृत केने बिना जीवित सहचरक संग समय बाँटबाक कठिन सम्भावना अछि।

अन्तमे नगर प्रतिनिधि अपन हार मानितहुँ अगिला बैठकक तिथि असहमत सदस्यक अलग खानेमे लिखैत अछि। राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी खलनायकसँ तत्काल परिवर्तित आदर्श सहायक नहि बनैत; ओकर ‘काजक डर’ बाँकी अछि। प्रारम्भक अध्यक्षीय कुर्सी अन्तमे उपयोगमे नहि अबैत; गोमती साधारण गोल घेराक कुर्सीपर बैसैत छथि। एहि आवर्तनक कलात्मक अर्थ ई नहि जे संस्थागत पद समाप्त भऽ गेल, बल्कि पदक दृश्य-महिमा कम कऽ उत्तरदायित्वक जटिलता अधिक देखाओल गेल। अगिला शान्ति-पर्वक महाभारतीय राजधर्म-विमर्श लेल ई अध्याय प्रश्नक आधार रचैत अछि, परिणामक समानता नहि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक उपलब्धि परिणाम-प्रधान विजयक बदला प्रक्रियामे छोट, सत्यापित परिवर्तन देखेब अछि : असहमति काटल नहि गेल, चुनाव समयबद्ध रहल, अग्रेषणक प्रति दावेदारकेँ भेटबाक व्यवस्था बनल, मुदा देय स्वतः चुकता नहि भेल। आरम्भक शोक अंतक दैनिक भोजनमे फेर घुरैत अछि; एहि सँ राजनीतिक दृश्य भावशून्य नहि होइत। तथापि एके बैठकमे पहुँच-सुविधा, प्रतिनिधित्व, निजता, महिला श्रम, चिकित्सकीय स्वायत्तता, वारिसक विवाद, अनुष्ठानक रसीद आ देय-पंजीक लगभग सभ प्रश्न उपस्थित भऽ जाएब अत्यधिक उद्देश्यमूलक संयोजन जकाँ लगि सकैत अछि। अनेक पात्रक वाणी असामान्य रूपसँ सुस्पष्ट, सिद्धान्तबद्ध आ निष्कर्षपर पहुँचबाक क्षमता राखैत अछि। वास्तविक सार्वजनिक सभा-सभक उलझन, असम्बद्ध वक्तव्य आ घुमावदार असहमतिक अपेक्षा एतय नियंत्रित कथात्मक ढाँचा प्रभावी अछि। ई सीमा स्वीकार कएलो पर गोमतीक ‘जीत’क तत्काल प्रतिफल उर्मिलाक बहिनक बही-पत्र बनब अध्यायक सूक्ष्म कलात्मक निर्णय अछि : नेतृत्वक कथा अपने केँ देयक कथामे रूपान्तरित करैत अछि।

अध्याय १३४ — युधिष्ठिरक अरुचि

मुकुटक नीचाँ भीजल दाग : महाकाव्यीय कालमे शासनक नवानुभव

अध्याय १३४ पूर्ण रूपेँ युद्धपछाति हस्तिनापुरक प्राचीन कथा-कालमे घटैत अछि। एतय आधुनिक समितिक स्वतन्त्र दृश्य नहि, आ आधुनिक गोमतीकेँ युधिष्ठिरक प्रतिरूप कहबाक आधारो नहि। तथापि पूर्वक अध्याय १३३ क अध्यक्षीय कुर्सीक बाद एतय झाँपल मुकुट आ ओकर नीचाँ जमा पानिक दाग एकटा स्पष्ट वस्तु-सम्बन्ध रचैत अछि। पहिल अध्यायमे कुर्सीक उघारल कील सत्ता ग्रहणक जोखिम व्यक्त करैत छल; एतय मुकुटसँ पहिने भीजल छतक समस्या देखाई पड़ैत अछि। राजसत्ता नव रूपमे प्रकट होइत अछि—ऊँच प्रतीकक चकाचौंध नहि, ओकरा धारण करनिहार भवनक अदृश्य मरम्मति आ श्रमक प्रश्न। छत किएक टपकैत अछि, पूछबाक लोक नहि होएब कथाक पहिल विसंगति अछि।

दुआर बाहर कलम-घिसल लिपिक, धानक कोठी नापबला वृद्ध आ धागाक गट्ठर लऽ आएल स्त्री ठाढ़ छथि। युधिष्ठिर राजपद त्यागबाक इच्छामे छथि, मुदा स्त्रीक प्रश्न—युद्धमे जीवित आ मृत सैनिकक कपड़ा बनौल गेल, तकर मजदूरी के देत—हुनकर संन्यासक कल्पनाकेँ दोसरा लोकक समयसँ भिड़ा दैत अछि। आन्तरिक संघर्ष बाहरी प्रवचनसँ नहि, दुआरपर रोकल व्यक्ति आ वस्तुक सटीक उपस्थितिसँ घटैत अछि। युधिष्ठिर अपन मनक विरक्ति त्यागि तत्काल सर्वशक्तिमान राजा नहि बनैत छथि; क्रमशः ओ एतबा स्वीकार करैत छथि जे अपन प्रस्थानक प्रभावक उत्तरदायित्व निसंकोच छोड़ल नहि जा सकैत।

निर्णयक क्रम : वनक इच्छा आ दावेदारक पर्ची

घटनासूत्र तीन लोकसमूहक प्रवेशसँ विस्तृत होइत अछि। पहिल समूह कपड़ा बनौनिहार स्त्री आ रसदक श्रमिकसभक अछि, जकर दावाक भुगतान-खाना खाली अछि। दोसर समूह पराजित पक्षक विधवा आ बैल-हरणक दावेदारक अछि, जे राजसभाक ‘विजेता’ चिह्नकेँ प्रश्न करैत छथि। तेसरमे रसोइक घुमन्तु मजदूर, जल देनिहार, पुल-मरम्मतिक शिल्पकार, घोड़ाशालाक बालक आ अस्थायी आवासक दावेदार छथि। लेखक एक संघर्षक नाटकीय चरमक बदला **दावाक विविधतासँ युधिष्ठिरक निर्णयक कठिनाइ बढ़बैत** छथि। ई विस्तार कथाक घटना-सङ्ख्या मात्र नहि; प्रत्येक आगन्तुक पहिने सुझाओल सुलभ समाधानकेँ अपर्याप्त बनबैत अछि। बैलक कर हटेबा पर प्रश्न समाप्त नहि, बैलक मूल्यक दावा शेष; तत्काल अन्न देबासँ मजदूरीक बकाया शून्य नहि होइत।

विदुरक प्रश्न कथात्मक मोड़ दैत अछि : युधिष्ठिर राज्य छोड़थि तँ नियुक्ति के करत, निर्णयक विरोध ककरा लग जाएत, पराजित पक्षक विधवा के सुनत। भीमक प्रतिक्रिया त्वरित व्यवहारिक अछि; द्रौपदीक उपस्थिति शोकक बीच अर्थवान श्रमिक आवाजक ठाम बना रहल अछि। युधिष्ठिर आदेशक किछु कार्य करैत छथि—राहत-अन्न खोलब, दावाक अलग पञ्जी, पर्चीक नकल, उचित स्थानपर अवशिष्ट देय खुला रखब। अन्तिम निर्णय ‘राजा बनब’क स्पष्ट उच्चारण नहि; ‘आइ लोकसभक काजक जिम्मेदारीसँ पाछाँ नहि हटब’ अछि। ई जानि-बुझि रखल अनिर्णय कथानककेँ भीष्मक शय्यापर अगिला अध्यायक जिज्ञासादिस भेजैत अछि।

अन्तरङ्ग दृष्टिकेन्द्रण : विरक्तिक इच्छा आ शोकक अनियन्त्रित स्मृति

तृतीय पुरुषक कथन अधिकतर युधिष्ठिरक मानसिक अनुभवक नजदीक पहुँचैत अछि—मुकुट हुनका रक्तसिक्त लोहाक जकाँ लगैत अछि, बालकक माटिमे खींचल रेखा राजक अस्थायी सीमाक बिम्ब बनैत अछि, आ कक्षक हवा सँ हिलल कपड़ा रणभूमिक तीरक ध्वनि जकाँ अनुभव होइत अछि। मुदा कथावाचक अन्तिम दृश्य मे युद्ध-स्मृतिक ध्वनिसँ तत्काल भौतिक कारणक अन्तर दिखबैत छथि : कक्षमे धनुष नहि, फाटल झरोखासँ हवा आबि रहल अछि। एहि द्विस्तरीय प्रस्तुति सँ पात्रक आघातक अनुभूति सही रहैत अछि, मुदा बाह्य घटनाक समय आ अन्तरङ्ग अनुभूतिक समय एक नहि होइत। स्मृतिक ई छोट आघात-क्षण वीरक कठोरता तोड़ैत अछि; ककरो ओहि क्षणक नाटकीय चमत्कार बनएबाक आवश्यकता नहि।

द्रौपदीक दृष्टि बारम्बार युधिष्ठिरक मानसक स्वकेन्द्रितता तोड़ैत अछि। पाँच पुत्रक मृत्यु हुनकर निजी शोक अछि, मुदा ओ धागावाली स्त्रीक श्रम प्रश्नकेँ अपन दुःखक कारण टारल नहि देब चाहैत छथि। बादमे ओ अपन

एकान्तक अधिकार पुनः ग्रहण करैत छथि; पुत्रसभक शय्या लग घुरि दुआर बन्द करैत छथि। एहि आवर्तनमे समाजक लेल बोलनिहारी स्त्रीकेँ नित्य सार्वजनिक दायित्वक अन्तहीन साधन बनाओल नहि गेल। द्रौपदीक शोक आ हुनकर राजनीतिक प्रश्न अलग रहितहुँ एक-दोसरासँ सम्बन्धित अछि। द्रौपदीक ‘मौन’ युधिष्ठिरक विरक्ति-सन नहि : हुनकर एकान्त माँगब समयक सीमांकन अछि, काज छोड़बाक नीतिगत दावा नहि।

बिम्बक जाल आ संवादक नाटकीय कार्य

पानि, रोटी, धागा, कलम, पंजी, मुकुट आ छत समूचा अध्यायमे परस्पर लौटैत छथि। भीमक आधा बासी रोटी प्रारम्भमे भूखक युद्धोत्तर स्मरण अछि, आ दुपहरि धरि सूखि गेलाक बाद सार्वजनिक पाँतिमे भोजन-पानीक व्यवस्था करबाक प्रत्यक्ष क्रियामे बदलैत अछि। धागाक गट्ठर स्त्रीक अधूर मजदूरीक वस्तु अछि; अन्तमे ओ स्त्री घिसल कलम पर सूत बाँधि ओकर पकड़ सुधारैत छथि। ई रोचक उलटाव अछि : जकर हक राज्यक लिखनिहारी व्यवस्था नहि लिखि सकल, ओहि स्त्रीक श्रमसँ राज्यक लिखनिहारक हाथ चलबाक साधन भेटैत अछि। कथा एतय कोनो दीर्घ उपदेशक स्थानमे कारीगरीक छोट दृश्य रखैत अछि।

वाक्यक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। विदुरक प्रश्न चुनावक उत्तरोत्तर जिम्मेदारी तय करैत अछि; भीमक आवेग परिणाम जल्दी चाहैत अछि; वृद्धक धान-माप वस्तुगत कमी सोझाँ रखैत अछि; पराजित विधवा अपन दावा पर दानक छाप अस्वीकार करैत छथि। ई अलग सामाजिक-भाषिक प्रयोजनसभ संवाद-प्रधान कथाकेँ नाटकीय बनबैत अछि। मुदा न्यायिक-जाँच जकाँ सुव्यवस्थित प्रश्नोत्तरक क्रम कतहु जीवित बोलचालक सहजता घटबैत अछि। हरेक पात्रकेँ लगभग सही कठिन प्रश्न पूछबाक अवसर भेटब लेखकक स्पष्ट नियन्त्रण सूचित करैत अछि।

काल-संयोजन, शेष प्रश्न आ साहित्यिक सीमा

मुख्य कथा एक दिनक बिहानसँ राति धरि चलैत अछि। बीच-बीचमे युद्धक पहिनुक दायित्व, मृत पुत्रसभक स्मृति आ पश्चात्क कामक अनिश्चित दिन प्रवेश करैत छथि। समयक विस्तारित दृश्यक केन्द्र पर्ची देब, विधवाक बैल, युधिष्ठिर–विदुर संवाद आ द्रौपदीक प्रतिवाद अछि; साँझक बाद वन नहि जाएब अध्यायक निर्णायक स्थितिपरिवर्तन अछि। एहन अन्त भविष्यक सत्ता-ग्रहणक परिणाम नहि जनबैत, पाठककेँ भीष्मक ‘ज्ञान’क प्रश्नक दिस पठबैत अछि।

एहि प्राचीन कालधाराक आलोचनात्मक सीमा स्पष्ट अछि : युद्धपछाति हस्तिनापुरक दरबार बहुत बेर आधुनिक सार्वजनिक सेवा-केंद्रक शब्दशः अनुरूप लगैत अछि—पावती, अपील, नकल, पंजी, अधिकारक सीमा, श्रमिकक अलग मद। मूल महाकाव्यक पुनर्कल्पनापर ई पूर्ण निषेध नहि, मुदा ऐतिहासिक कालक भाषिक अपरिचितता आ राजनीतिक संरचनाक स्वतन्त्र जटिलता घटि सकैत अछि। कथाक सर्वश्रेष्ठ क्षण एहन भाषिक अनुशासनसँ बाहरक दृश्य छथि : मुकुटक भीजल दाग, युधिष्ठिरक सुनल झूठ-नहि-मुदा स्मृतिजनित तीर-ध्वनि, द्रौपदीक बन्द दुआर, आ स्त्री द्वारा कलमपर बाँन्हल सूत। ई वस्तुसभ पुरान कथा केँ नब कालक प्रश्नक संग जोड़ैत छथि, बिना दुनूक संसार पूर्णतया एक कएने।

अध्याय १३५ — भीष्मक शय्या

तीरक शय्या आ दू कटोरा : उपदेशक पहिने दृश्य

अध्याय “भीष्मक शय्या” युद्ध समाप्त भेलाक बादक कुरुक्षेत्रमे भोरक ओससँ आरम्भ होइत अछि। तीरक पाँखिसँ टकराइत हवा, लोहमाथपर ठाढ़ बूँद, दू माटिक कटोरा—एकटा खाली, दोसरा मे पानि—आ प्यास बुझाएबाक बारेमे बालकक प्रश्न दृश्यकेँ देहक अनुभवसँ भरि दैत अछि। ‘भीष्म’ नाम मात्र पाठकक परिचित विशाल उपदेश-परम्परा स्मरण करबैत अछि, मुदा कथाकार पहिल क्षणमे शास्त्रीय भाषण नहि, पहुँचसँ दूर पानिक पात्र देखबैत छथि। शिक्षकक शारीरिक निर्भरता आ सुननिहार बालकक साधारण जिज्ञासा अधिकारक परम्परागत ऊँचाइकेँ मानवीय धरातलपर अनैत अछि। अध्यायक दृश्यात्मक संरचना एहिसँ निश्चित होइत अछि : ककरो वचन सुनल जाएबाक पहिने ककर देहक आवश्यकता देखल जाइत अछि?

युधिष्ठिर शय्या लग मुकुट नहि, पिछला दिनक सुनवाई-पंजीक दू नकल लऽ पहुँचैत छथि। पूर्व अध्यायमे जे दावे खुलल छल, से एतय कथाक अगिला घटना बनि रहल अछि। एहि निकट पुनरावृत्तिसँ सम्बन्ध औपचारिक नहि; युधिष्ठिरक ‘वन नहि गेलहुँ’ कहनाइ पिछला अध्यायक अनिर्णीत अन्तकेँ सीधे ग्रहण करैत अछि। भीष्म अपन ज्ञानकेँ कएल क्षतिक जाँचसँ मुक्त कवच नहि कहैत छथि। फलतः पाठककेँ सर्वज्ञ पितामहक अचूक उत्तर सुनबाक अपेक्षासँ हटाकऽ अपूर्ण अनुभववला उत्तरदाता आ प्रतिवादीक दृश्य देखाएल जाइत अछि।

द्रौपदीक प्रश्न : सुननिहारसँ प्रतिवादी बनबाक कथात्मक मोड़

अध्यायक निर्णायक विघटन द्रौपदीक प्रश्नसँ होइत अछि। राजसभामे अपमानक घड़ी उपस्थित विद्वानसभक व्याख्या चलैत रहल, मुदा अपमान रोकल नहि गेल—एहि स्मृतिक माध्यमसँ द्रौपदी पुछैत छथि जे ओहि दिन ज्ञान की करि रहल छल। ई पूर्ण पूर्वदीप्ति नहि : मूल अपमान-दृश्यक विस्तृत पुनःप्रदर्शनक स्थानमे एक स्मृति-वाक्य द्वारा पाठकक पहिनुक महाकाव्यीय जानकारी सक्रिय होइत अछि। कथाकार प्रसिद्ध घटनाकेँ संक्षिप्त स्मरण बनाकऽ वर्तमान शय्यापर प्रश्नक कारण करैत छथि।

भीष्म चुप्पी आ अकर्मण्यता स्वीकार करैत छथि, मुदा द्रौपदी ताहिसँ तुष्ट भऽ नहि जाइत छथि। ओ पुछैत छथि जे एखन हुनकर उत्तर सुनबाक आवश्यकता किएक आ यदि ओ ज्ञानक नब प्रतिष्ठा बनि गेल तँ पहिनुक मौनक क्षति केना दृश्य रहत। एहि संवादक नाटकीय उपलब्धि ई अछि जे भीष्मक स्वीकारोक्ति दृश्य समाप्त करबाक पुरस्कार नहि बनैत। द्रौपदीकेँ ओहि उत्तरक पुनर्परीक्षा, प्रतिवाद आ अभिलेखमे अपन बात पहिने लिखेबाक स्थान भेटैत अछि। लेखक पहिने केवल बोलनिहारक पहचान बदलैत नहि, **प्रश्न–उत्तरक क्रम** बदलैत छथि : पितामहक उत्तर स्त्रीक प्रश्नक बाद लिखल जाएत। आख्यानक संरचनाक भीतर श्रवणक अनुक्रम बदलैत देखाएल गेल अछि।

परिधिक स्त्रीसभसँ दृश्य विस्तार : शोकक बहुविध आवाज

शरशय्याक लग दू अन्य स्त्री अएल छथि—एकक पति मारल गेल, दोसराक बेटाक देह एखन नहि भेटल। पाठकक ध्यान प्रसिद्ध पात्रसभसँ हटि ओहि दुइ परिवारक अलग समयदिस जाइत अछि। पहिली स्त्री अपन

पतिकेँ सैनिकक बदला रसद ढोबनिहार कहैत छथि; अपन पर्ची भीमक हाथमे देब अस्वीकार कऽ लिपिकक प्राप्ति चाहैत छथि। एतय नायिका केवल दुखक प्रदर्शनक साधन नहि; ओ स्वयं निर्णय करैत छथि जे हुनकर कथाक अगिला रूप—नकल आ पावती—ककर माध्यमसँ बनत। दोसरी स्त्री बेटाक करघा-छुरी देखबैत छथि, मुदा देह नहि देखलाक कारण ओकर मृत्यु निश्चित नहि कहैत छथि। दुनू महिलाक अपूर्णता समान नहि : पहिलक मजदूरीक दावाक प्रक्रिया खुलैत अछि, दोसराक बेटाक जीवित अथवा मृत अवस्था एखन अनिर्णीत रहैत अछि। एके ‘विधवाक शोक’क शीर्षकमे दुनू अवस्थाकेँ समेटल नहि गेल।

अध्याय घटनाक क्रममे सहायता आ मजदूरीक दू अलग पर्ची, सार्वजनिक पावती पढ़ि सुनाएब, पराजित पक्षक वृद्ध लिपिकक प्रवेश, पुरान आलमारीक संभावित दस्तावेज आ अस्थायी सुनवाई-स्थलक तैयारी जोड़ैत अछि। एहन अनेक उपघटना भीष्मक शय्याकेँ स्थिर वचन-स्थल नहि रहब दैत, बल्कि बाहरी लोकक आगमनसँ बदलैत सार्वजनिक दृश्य बना दैत अछि। वर्णनक आरम्भमे मार्ग तीरक कतारक कारण बन्द-जकाँ छल; उत्तरार्धमे कृष्ण घायलक उपचार लेल बाट छोड़ैत छथि। प्रवेश करबाक बाटक ई परिवर्तनक कारण पाठक शय्याक निकट अधिकारक नब वितरण अनुभव करैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, अवधि आ मौनक लेखन

कथन तृतीय पुरुषमे अछि आ शय्याक चारूकात बनल एक दिनक दृश्यपर केन्द्रित अछि। भीष्मक पीड़ा, युधिष्ठिरक प्रश्न, अर्जुनक पुरान अस्त्रपर पड़ल नजरि, द्रौपदीक घासक डंठलपर ध्यान आ विधवासभक हाथक वस्तु—एहि सभ बीच दृष्टि आवाजाही करैत अछि। भीष्मक शारीरिक स्थिति कथाक अवधिक गति नियंत्रित करैत अछि। प्रश्नक बाद हुनकर साँस भारी होइत अछि, पानि पहुँचाबय विलम्ब होइत अछि, परिचारक पसीना पोंछैत अछि, विश्रामक आग्रह अबैत अछि। ई विराम ‘ज्ञानक प्रवाह’ रोकैत छथि; उत्तरदायी वृद्धक देहक सीमाकेँ पाठक प्रत्यक्ष अनुभव करैत अछि।

द्रौपदीक मौन प्रारम्भमे देखाइत अछि, मुदा ओ हुनकर निष्क्रियता नहि; घासक डंठल देखबाक घड़ीमे कथावाचक हुनकर प्रश्नक अन्तःतैयारी स्थगित रखैत छथि। वृद्ध लिपिकक मौन फेर दोसर प्रकारक अछि : ओ पूर्वक आदेशक नाम बतबासँ चुकैत अछि, जबकि ओहि आदेशक प्रतिलिपि खोलबाक सार्वजनिक माग उठैत अछि। भीष्मक पहिलुक मौन तेसर भिन्न अवस्था अछि—राजसभामे उपस्थित रहि चोट रोकबामे असफलता। कथाकार एके शब्द ‘मौन’क तीन सामाजिक कार्य बनबैत छथि : आत्मीय स्मरणक समय, अपूर्ण उत्तरक भय आ सार्वजनिक निष्क्रियता। ई भिन्नता शान्ति-पर्वक कथात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।

दू कटोराक आवर्तन आ उपदेशक अनिश्चित परिणति

आरम्भमे दू कटोरा प्यासक प्रश्न बनैत अछि; मध्यभागमे पानिक कटोरा भीष्मक होठ धरि नहि पहुँचि पबैत, तखन अर्जुन पानि पहुँचेबाक व्यवस्था करैत छथि। अन्तमे द्रौपदी खाली कटोरा हटेबाक चाहैत छथि, मुदा परिचारक कहैत अछि जे ओकरा अतिथिक हाथ धोएबाक लेल उपयोग कएल जाएत। वस्तुक अर्थ तीन बेर बदलैत अछि : अनुपलब्ध आवश्यकतासँ क्रियात्मक सहायता धरि, तकर बाद परिधिक श्रमक साधन धरि। ई

आवर्तन सामान्य नैतिक वचनसँ बेसी सघन अछि, कारण शय्यापर रहल शस्त्रक बिम्बक विपरीत कटोराक उपयोग जीवनक नित्य आयोजन खोलैत अछि।

अन्तिम दृश्य युधिष्ठिरकेँ भीष्मक केवल शिक्षाक बदला द्रौपदीक आपत्ति, श्रमिक स्त्रीक अस्वीकार, अज्ञात बेटाक अनिश्चित दशा आ वृद्ध लिपिकक स्मृतिक अलग स्थान राखबाक आग्रह करैत देखबैत अछि। ई अध्यायक प्रामाणिक घटनात्मक परिणति अछि—उपदेशक सम्पूर्णता नहि, कथनक क्रम बदलल। तकर प्रतिफल आगामी आधुनिक अध्याय १३६ मे पहिल बयान आ संशोधनक भाषा मे प्रतिध्वनित होइत अछि। दुनू दृश्य अलग कालमे छथि; एकरा ऐतिहासिक कारण–कार्यक एकल शृंखला नहि मानल जाए। मुदा पार्श्ववर्ती स्त्रीक कथन अगिला पृष्ठपर पहिने रखबाक औचित्य दुनू आख्यान-कालकेँ रचनात्मक संवादमे अनैत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि आ अनिवार्य प्रतिपक्ष

भीष्मक शय्या ज्ञानक ऊँच आसनसँ घटि बहुवक्ता शोक-स्थल बनैत अछि; द्रौपदीक पुरान अपमान वर्तमान प्रश्न बनैत अछि, श्रमिक स्त्री अपन पावतीक माध्यमसँ कथाक सक्रिय पात्र बनैत छथि। महाभारतीय अन्तर्पाठक उपलब्धि ई अछि जे परम्परागत उत्तरदाता स्वयं प्रश्नक विषय बनैत छथि। तथापि भीष्मक स्वीकारोक्ति बहुत बेर आधुनिक, आत्मसमीक्षात्मक आ अत्यन्त सुव्यवस्थित अछि। क्षीण देहक बावजूद हुनकर लगभग प्रत्येक कठिन उत्तर सन्तुलित रहैत अछि; टूटल स्मृति, अनुत्तरित प्रश्न आ असफल संवादक अधिक समय सम्भव छल। पावती आ दावाक समान रूप कखनो शय्याक दृश्यकेँ कार्यालयी बनबैत अछि। मुदा द्रौपदीक ‘अहाँक महानताक नवा अलङ्कार’ नहि बनएबाक चेतावनी आत्मस्वीकारक महिमामण्डन रोकैत अछि। भीष्मक उत्तर अन्तिम निर्णय नहि, अनेक स्वरक बीचक एक उत्तर बनि रहैत अछि।

अध्याय १३६ — पहिल बयान

पहिल वाक्य लिखबाक अधिकार : आधुनिक कथा-कालक पुनरागमन

“पहिल बयान” पुनः २०४०क पहिल जाड़क सामुदायिक कार्यालयमे आरम्भ होइत अछि। टीनक छतपर ओसक बूँद अछि, सरिताक पीतरक डिब्बा अछि, आ मेजपर तीन अलग पन्ना—बयानक खाली प्रारूप, पहिनुक सार्वजनिक सार, तथा सीमित सहमतिक पर्ची—राखल अछि। एतय महाभारतीय दृश्य सँ आधुनिक कथा-कालमे बदलाव स्पष्ट अछि; स्वतंत्र पौराणिक दृश्य ई अध्यायमे नहि अछि। पिछला दू अध्यायमे प्रश्न पूछबाक अधिकारपर जे महाकाव्यीय दृश्य रचल गेल, एतय ओकर रचनात्मक प्रतिध्वनि सरिताक अपन पहिल वाक्य अपने हाथेँ लिखबाक निर्णयमे भेटैत अछि। दू कालधाराक पात्र एकहि व्यक्ति नहि, मुदा **कथाक स्वामित्व ककरा लग अछि** ई प्रश्न पुनर्स्थापित होइत अछि।

अध्यायक ‘पहिल’ शब्द सेहो अर्थवान अछि। सरिताक पहिल सार्वजनिक आपत्ति कथा आरम्भक समयेँ गलत मृत्यु-घोषणाविरुद्ध उठल छल; एखन ओ प्रथम औपचारिक व्यक्तिगत बयान लिखैत छथि। तेँ ‘पहिल बयान’क अर्थ अनुभवक पहिल क्षण नहि, व्यवस्थित सार्वजनिक कथनक नव चरण अछि। पुरान सारक अर्थ आ मूल पन्नाक अवस्थितिक बीच कथानकक नव संघर्ष बनैत अछि। सरिता कहैत छथि जे ओ एखन अपन जीवित

होएबाक प्रमाण फेर-फेर दएबाक नहि, अपन काज आ निर्णयक त्रुटि पर बोलबाक लेल अएलीह। एहि अस्वीकारसँ कथावाचक स्त्रीक अनुभवकेँ मात्र पीड़ित-परिचयमे स्थिर होएबसँ रोकैत छथि।

बयानक घटनाक्रम : कथन-संशोधन स्वयं कथा-घटना

दृश्यक पहिल चरणमे रमा सरिताकेँ प्रश्न पहिने पढ़बाक विकल्प दैत छथि; रुहानी गोपनीय नामक अलग रखबाक नियम स्पष्ट करैत छथि, आ सरिता अपन देखल, सुनल आ अनुमानित बातक कथात्मक सीमा तय करैत छथि। तकर बाद सत्ताइस नामक मूल पन्नाक पुरान यात्रा, नैराक भूमिका, मिलान सम्पन्न होएब, पाँच निजी परिचयक प्रकाशन-शर्त आ अवशिष्ट देयक मुद्दा फेर खोलल जाइत अछि। एतय विस्तृत पूर्वदीप्तिक स्थानमे संवाद-आधारित संक्षेप अछि; कथा बितल अनेक अध्यायक प्रसंग एक विशिष्ट वर्तमान बैठकक भीतर समेटैत अछि। पाठक जानैत अछि जे सूची कतेक दिनसँ चलि रहल छल, मुदा एखन ओहि पुरान सूचीक पढ़ल जाएबाक अर्थ स्वयं विवादक विषय बनैत अछि।

सरिता अपन पहिनुक सहमतिक अस्पष्टतामे चूक स्वीकार करैत छथि : प्रक्रिया-सार प्रकाशित भेल, ‘मिलान सम्पन्न’ शब्द सही छल, मुदा पाठक ओकरा अधिकार पुनर्स्थापन अथवा देय चुकबाक समान मानि सकैत छल। ई स्वीकारोक्ति पूर्ण झूठक घोषणा नहि; दू सही घटनाक बीच छोड़ल पाठकीय खाली स्थानक आलोचना अछि। बाहरक युवकक प्रश्न देखबैत अछि जे सार्वजनिक सार वास्तवमे कतेक प्रकारेँ पढ़ल जा सकैत छल। रमा ओकर कथनकेँ तुरन्त औपचारिक अपराध-आरोप नहि बनबैत छथि; पाठ-समझक एक नब उदाहरणक रूपमे बचबैत छथि। आख्यानशास्त्रीय अर्थसँ **दस्तावेजक पाठक स्वयं कथा-संसारक क्रियाशील पात्र** बनि उठैत अछि : जकरा जे बुझायल, ओहि बुझाइसँ ओकर अगिला यात्रा वा रुकावट बदलल।

मध्यभागमे बदरी, हुनकर पत्नी आ मालती पुनर्वास-पत्रक ‘स्थायी व्यवस्था’ शीर्षकक विरुद्ध नव निवासक वास्तविक पानि, विद्यालय, रोजी आ पुरान खेतक दावाक प्रश्न उठबैत छथि। उमा अपन धुलाईक पालिक बीच उर्मिलाक बकाया पर्चीक प्राप्ति लेबय अबैत छथि, आ प्राप्ति केँ भुगतान नहि मानबाक स्पष्ट भाषा माँगैत छथि। सरिताक बयान फेर शुरू होइत अछि, आ ओ एक ठाम लिखल ‘गलत सहमति’केँ ‘अधूरा अर्थ स्पष्ट नहि केने प्रकाशित सारक सीमित सहमति’मे सुधारैत छथि। अन्तमे तीन-पृष्ठीय बयानपर सही होइत अछि, सरिताकेँ प्रति भेटैत अछि, आ सार्वजनिक सुधारक प्रारूप पर ‘अभी प्रकाशन नहि’ लिखल रहैत अछि। पहिल बयान पूरा भेल, मुदा सार्वजनिक सुधार जारी भेल नहि; ई अध्यायक स्पष्ट सीमित परिणति अछि।

दृष्टिकेन्द्रण : सरिताक भीतरक रिक्तता आ दोसरक स्वकथा

तृतीय पुरुषक कथावाचक सरिताक हातक ठंढा पोर, नैराक खाली कुर्सीक दिस पलटि देखब, ओसक बूँदसँ बालपनक स्मृति लौटब आ कागदपर स्याही सुखबाक संवेगपर टिकैत छथि। मुदा सरिता सभ दावेदारक मुखपात्र बनि नहि जाइत छथि। बदरीक पत्नी नव ठामक पानि आ बेटाक विद्यालयक प्रश्न स्वयं कहैत छथि; मालती पहिनेसँ बसल लोकक जल-अधिकारक स्वतन्त्र कथन दैत छथि; उमा अपन श्रमक समय काटि पहुँचल छथि आ प्राप्तिक शब्द पैघ करबैत छथि। एहि दृश्यसभमे सरिताक केन्द्रित चेतना सँ कथा बाहर फैलैत अछि, आ पुनः हुनकर बयानमे घुरैत अछि।

कबीरक भूमिका रोचक अछि। ओ नैराक अधूर काजक प्रमाणित नकल अनैत छथि, मूल निजी पत्र नहि; सरिता हुनका बाहर बैसबाक विकल्प दैत छथि; कबीर कुर्सी पाछाँ सरका कऽ दूरीक अपन स्थान चुनैत छथि। ई लघु दृश्य वैचारिक संवादसँ बेसी देहगत मंच-सज्जाक माध्यमसँ स्वायत्तताक अर्थ रचैत अछि। पछिला घड़ीमे सरिता कहैत छथि जे नैराकेँ नहि बचा सकबाक प्रश्न आ अपना प्रकाशन-सहमतिमे चूक दू अलग कथात्मक शृंखला छथि। एहिसँ माता-पुत्रक संवाद पूर्ण समाधानपर नहि पहुँचैत, शोकक भीतर परस्पर दूरीक आवश्यक ठाम बनबैत अछि। कथावाचक नैराक अनुपस्थिति पाठकक सोझाँ बारम्बार देखबैत छथि, मुदा मृत व्यक्तिक स्वर कल्पित उद्धरण बनाकऽ उपस्थित नहि करैत।

स्मृतिक काल, लेखनक काल आ अगिला दिनक खुलल कथा

मुख्य दृश्य जाड़क एक दिनक बिहानसँ साँझ धरि अछि। एहि भीतर आरम्भिक गलत मृत्यु-सूचना, सत्ताइस पन्नाक मिलान, नैराक कार्य, सार्वजनिक सारक प्रकाशन, बदरी परिवारक जल-आपदामे रातिक पलायन आ पुरान भूमिपत्र अलग-अलग कालखंडसँ अबैत छथि। ई पूर्वदीप्ति पूर्ण दृश्य बनाकऽ नहि, पात्रक वर्तमान प्रश्नोत्तर, पर्ची आ वस्तु-स्मृतिसँ संक्षेपमे रचल गेल अछि। ई अध्याय एकटा ‘पछिला कथा फेर कहबाक’ प्रयोग सेहो अछि : पाठक पूर्वहि घटनासभ जनैत अछि, मुदा सरिताक संशोधित बयानसँ तकर अर्थ बदलैत अछि। घटना दोबारा घटैत नहि; ओकर कथन-रूप बदलैत अछि।

स्मृतिक काल स्थिर कागदक समयसँ अलग अछि। सरिताकेँ काल्हि किछु नव याद आबि सकैत अछि; रमा कहैत छथि जे तखन पहिल बयान मिटाओल नहि जाएत, अगिला दिनक पूरक बयान जोड़ल जाएत। एतय कथावाचक स्मृतिक परिवर्तनक सम्भावना स्वीकार करैत छथि, बिना पहिनुक वाक्यकेँ अनिवार्य झूठ मानने। कथाक अन्तिम समय भविष्यदिस खुलैत अछि : अदिति काल्हि अपन पुरान मापक प्रतिवेदनक मूल प्रति खोलतीह। सरिता ओकरा अपन बयानक परिणामसँ स्वतः सही वा गलत नहि ठहरबैत छथि। एहि अन्तिम संवादमे अगिला अध्याय १३७ — “पुरान प्रतिवेदन”क स्पष्ट कारणात्मक पूर्वसंकेत उपस्थित अछि।

कागद, ओस, भोजन आ घैल : वस्तुक कथात्मक संरचना

आरम्भक पीतरक डिब्बा आ तेसर पन्ना केवल पुरान कथाक संग्रहक साधन नहि। डिब्बाक ढक्कन नहि खोलब तत्काल स्मृतिमे गहिर उतरबाक विलम्ब अछि; डिब्बाक नीचाँ सूखल कपड़ा बिछाबब वर्तमान लेखनक व्यावहारिक क्रिया। सरिता नैराक निजी प्रश्नकेँ अपन बयानमे वंशानुगत अधिकार जकाँ समेटबाक अस्वीकार करैत छथि; अपन काज आ अपन गलती अपना नामे रखैत छथि। ओहि बीच रुखसानाक भातक गन्ध, बदरीक बेटाक भूख, मालतीक उधार घैल आ टपकैत ओस कथाक दफ्तरक दृश्यकेँ मानवीय देह आ जल-अभावक संसारसँ जोड़ैत अछि।

अध्यायक वस्तु-अन्तर विशेष रूपसँ सार्थक अछि। प्रकाशित सारक शब्द एक बेर फैलि गेलापर पाठकक स्मृतिमे रहि सकैत अछि; सरिताक सुधारक प्रारूप एखन प्रकाशित नहि। एहि कथात्मक विषमतासँ ‘प्रकाशन’ घटना आ ‘सुधार-इच्छा’ घटना अलग रहैत अछि। बदरीक पत्नी लिखबैत छथि जे अस्थायी आश्रय ग्रहण करब स्थायी घर-

स्वीकृति नहि; ई सरिताक कथनक अर्थ-अपूर्णताक समान संरचनात्मक समस्या अवश्य, मुदा भिन्न जीवन-स्थिति अछि। एतय कथाकार विषयगत समानताकेँ नब दावेदारक ठोस वस्तुसभ द्वारा विशिष्ट बना सकैत छथि।

पाठकीय रिक्त स्थान आ रचनाक सीमा

अध्याय १३६ क विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे व्यक्तिक आत्मालोचना ओकर सम्पूर्ण जीवनक अपराधस्वीकार नहि बनैत। सरिता कहैत छथि जे मूल गिनती गढ़ल नहि गेल, आ जकर अनुमति नहि देल गेल छल ओकर भार स्वयं लएबाको नहि चाहैत छथि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई चरित्रक नैतिक विकासक एक सूक्ष्म चरण अछि : ओकर कथन अधिक स्पष्ट भऽ रहल अछि, मुदा ओहिसँ मृत्यु, भुगतान वा पुनर्वासक घटना तुरन्त नहि बदलैत। कथन बदलला सँ सामाजिक व्यवहारमे अगिला संशोधनक सम्भावना खुलैत अछि।

मुख्य कलात्मक सीमा एके बैठकमे बहुत बेसी नियोजित मुद्दाक सन्निवेश अछि। सरिताक स्वतन्त्र बयान, सत्ताइस नामक पुरान पन्ना, निजी परिचय, बदरीक भू-दावा, उमाक मजदूरी, अदितिक माप, रुखसानाक भोजन, कबीरक शोक—सभकेँ एके दिनक कक्षमे प्रायः साफ-साफ जोड़ल गेल अछि। अनेक संवाद कथनक सूक्ष्म संशोधनक तकनीकी भाषामे चलैत अछि; जीवनक लम्बा असम्बद्ध मौन अथवा पात्रक विस्मृत क्षणक स्थान कम भऽ जाइत अछि। मुदा नैराक खाली कुर्सी, कबीरक पाछाँ सरकल कुर्सी, सरिताक ठंढा हाथ आ बालकक रोटीक कोना एहन अत्यधिक सुव्यवस्थाकेँ सन्तुलित करैत अछि। अन्तिम प्रसङ्गमे सरिता अपन पन्ना लऽ घर जाए छथि आ अदितिक नब दस्तावेज काल्हिक लेल खुलल रहैत अछि : ई पद्धतिक उपसंहार नहि, स्पष्ट कथात्मक अविरामता अछि।

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३३–१३६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

युद्धोत्तर कथा किएक नवा आरम्भ बनैत अछि

स्त्री-पर्वक अन्तमे मृत्यु-पुष्टिक पंजी बन्द भेल छल, देय आ अपूर्ण काजक पंजी खुलल रहबाक चाही छल। शान्ति-पर्वक आरम्भमे रमा वास्तवमे ओहि पंजीक ऊपर लागल सील आ हटाओल कुर्सीक सोझाँ छथि। ई संयोगात्मक शीर्षक-परिवर्तन नहि, पूर्ववर्ती कथाक अवशेषसँ बनल अगिला घटनाक चरण अछि। पहिले ‘के जीवित, के मृत’ प्रश्नक कथा, आब ‘ककर वचन सुनल जाएत आ काजक उत्तर के देत’क कथा बनैत अछि। मुदा एहि अर्थमे शासन व्यक्तिगत शोककेँ बदलि देब नहि; सरिताक नैरा-स्मृति, द्रौपदीक पुत्रसभक रिक्त शय्या, आ भीष्मक शय्यापर माताक अपूर्ण खोज मृत्यु-पछातिक समयकेँ निरन्तर कथाभीतर राखैत अछि।

चारि अध्यायक काल-क्रम एकर मुख्य औपचारिक उपलब्धि अछि। १३३ क आधुनिक २०४० क बिहानक अस्थायी समिति आ १३६ क जाड़क पहिल बयानक बीच १३४–१३५ युद्धपछाति प्राचीन हस्तिनापुर आ कुरुक्षेत्रक दू लगातार दृश्य अछि। आधुनिक कथा सँ प्राचीन कथा, फेर आधुनिक कथामे घुरब **अन्तर्पाठीय विन्यास** अछि; ई चारू अध्याय एकहि दिन वा एकही ऐतिहासिक कालमे घटैत नहि। १३४ मे युधिष्ठिर वन नहि जाएबाक अस्थायी निर्णय लैत छथि, १३५ मे भीष्म लग प्रश्न लऽ जाए छथि, आ १३६ मे आधुनिक सरिता अपन लिखित

बयानक शब्द स्वयं सुधरबैत छथि। एहि क्रमक सम्बन्ध निर्णयक समानता नहि, प्रश्नक स्वरूपक क्रमागत परिवर्तन अछि।

‘शासन’ आ ‘ज्ञान’क अपेक्षाक स्थानमे दृष्टि आ स्वरक वितरण

१३३ मे रमा द्वारा गोल घेरामे कुर्सी लगब, चक्कावला कुर्सीपर आएल वृद्धक देरीसँ प्रवेश आ गोमतीक साधारण कुर्सीपर बैसब—ई सभ दृश्य अधिकारक केन्द्र बदलैत अछि। १३४ मे मुकुटक नीचाँ भीजल दाग, दुआरपर ठाढ़ धागावाली स्त्री आ द्रौपदीक बन्द दुआर शासनक सार्वजनिक आकांक्षाक संग निजी दुःखक दूरी देखबैत अछि। १३५ मे पितामहक शरशय्या स्त्रीसभक प्रश्नक आसन बनैत अछि। १३६ मे सरिता अपन बयानक पहिल वाक्य स्वयं लिखैत छथि। ई चारि वस्तु-क्रिया—कुर्सी बदलब, मुकुट न पहिरब, उपदेशक क्रम बदलल, कथनक शब्द सुधरब—एक सतत रूपात्मक शृंखला बनबैत अछि।

परम्परागत महाकाव्यीय दृष्टि जँ राजा–पितामहक वचनपर केन्द्रित होइत, तखन एतय द्रौपदीक आपत्ति, पराजितक विधवा, करघाक छुरी लऽ आएल माता, आधुनिक उमा आ बदरीक पत्नी नजरिक दिशा बदलैत छथि। मुदा ‘सभक स्वर समकक्ष’ कहब अतिरंजना होयत। लिखनिहार रमा, विदुर अथवा महाकाव्यक लेखककेँ कथावाचक निरन्तर महत्त्वपूर्ण माध्यम बनबैत छथि; आम दावेदार प्रायः हुनका माध्यमसँ अभिलेखमे प्रवेश पबैत छथि। बहुस्वरताक उपलब्धिक संग मध्यस्थताक एहि असमानता पर आलोचनात्मक ध्यान रहबाक चाही।

कथनकाल, पुनरावृत्ति आ नब अर्थ

चारि अध्यायमे मूलतः चारि सीमित दृश्य-काल छथि। १३३ एक मतदान-दिनक भोरसँ साँझ; १३४ युद्धपछाति राजकक्षमे एक दिनसँ राति; १३५ भीष्मक शय्यापर भोरसँ नगरदुआरक घुराइ; १३६ आधुनिक जाड़क बिहानसँ साँझ धरि। छोट दृश्य-कालक भीतर बहुत दीर्घ इतिहास बारम्बार प्रवेश करैत अछि—नैराक मृत्यु, पुरान नाम-पंजी, महाभारतक राजसभाक अपमान, युद्धक शरणार्थी, सरिताक गलत मृत्यु-घोषणा आ पुनर्वासक अपूर्ण निर्णय। अधिकांश पूर्वदीप्ति पूरा भूतकालीन दृश्य नहि, वर्तमान संवाद अथवा वस्तुक माध्यमसँ सक्रिय संक्षिप्त स्मृति अछि।

आवर्ती वस्तु-समूह सेहो बदलैत अर्थ पबैत अछि। कुर्सी १३३ मे नेतृत्व आ शारीरिक पहुँचक प्रश्न अछि; १३६ मे कबीर द्वारा पाछाँ सरकाओल कुर्सी संवादक दूरीक स्वायत्तता अछि। पानि १३३ मे टपकैत टोटी आ पहुँचक मरम्मति; १३४ मे महलक भीजल छत; १३५ मे भीष्मक प्यास आ अतिथिक कटोरा; १३६ मे नव बसावटक नलक अभाव आ जाड़क ओस अछि। पंजी–पावती सेहो चारू अध्यायमे सक्रिय, मुदा ओकर काम बदलैत अछि : निर्वाचनक अवधि, युद्धकालीन देय, शय्यापर सुनल बहु-स्वर, आ सरिताक बदलैत आत्मकथन। एके वस्तु फेर-फेर देखाएब मात्र पुनरुक्ति नहि—**ओ वस्तु ककरा द्वारा कखन उपयोग भेल, आ तकर बाद कथाक स्थिति कोना बदलल**, एहि प्रश्नसँ अर्थनिर्माण होइत अछि।

संयुक्त उपलब्धि आ संरचनात्मक सीमा

एहि चारि अध्यायक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कथात्मक खुलापन अछि। गोमती चुनल गेलीह, मुदा दायित्व स्वतः पूरा नहि; युधिष्ठिर वन नहि गेलाह, मुदा राजपदक अनिवार्य स्पष्ट घोषणा नहि; भीष्मक उत्तर सुनल गेल, मुदा हुनकर मौन-इतिहास मेटल नहि; सरिताक पहिल बयानपर सही भेल, मुदा संशोधन एखन प्रकाशित नहि। प्रत्येके ठाम छोट निर्णायक घटना आ दीर्घ अपूर्ण फल अलग रहैत अछि। एहिसँ युद्धोत्तर कथा ककरो एकल नैतिक विजेताक आख्यान नहि बनैत।

संगहि सीमा अछि जे प्राचीन राजधर्मक पुनर्कल्पना आ आधुनिक समितिक दृश्यक प्रशासनिक भाषा बहुत हद धरि एकजेकाँ व्यवस्थित भऽ जाइत अछि। भुगतान-पंजी, दावाक अलग मद, पावती, अधिकारक सीमा, सुनवाईक क्रम, अगिला तिथि—ई सभ शब्दक पुनरावृत्ति कथनक प्रादेशिक, ऐतिहासिक आ पात्रगत स्वरभेद कम कऽ सकैत अछि। कतहु कथाकार कठिन समाज-प्रश्नकेँ समाधानक विधिवत् क्रममे बहुत जल्दी रूपान्तरित करैत छथि। एहन प्रवृत्ति १३३ आ १३६ मे विशेष देखाइत अछि; १३४–१३५ मे ओ प्राचीन कालधाराक अपन भाषिक विशिष्टता कम करैत अछि। मुदा छतक भीजल दाग, सूतक टुकड़ा, शरशय्याक कटोरा आ जाड़क ओस कथा केँ फेर ठोस देहगत जगतमे वापस अनैत छथि।

शान्ति-पर्वक एहि आरम्भक निष्कर्ष ई नहि जे ‘अखने न्याय स्थापित भेल’; एकर अधिक सटीक आख्यानशास्त्रीय निर्णय अछि जे लेखक मृत्यु आ विजयक चरमबिन्दुसँ कथाकेँ हटाकऽ **अपूर्ण उत्तरदायित्वक समय**मे प्रवेश करबैत छथि। अध्याय १३६ क अन्तमे अदिति अपन पहिनुक माप खोलेबाक बात कहैत छथि, जाहिसँ अगिला अध्याय १३७ — “पुरान प्रतिवेदन” लेल स्पष्ट कारणात्मक द्वार खुलैत अछि। ई क्रम कथाक आगाँ बढ़बाक वास्तविक साधन अछि, मात्र नीति-विषयक घोषणाक पुनरावृत्ति नहि।

अध्याय १३७ — पुरान प्रतिवेदन

धूल, पीतलक पट्टी आ बितल निर्णयक दृश्यमय पुनरागमन

“पुरान प्रतिवेदन”क आरम्भ नव दुर्घटना अथवा राजनीतिक भाषणसँ नहि, मापक पुरान पट्टी साफ करबाक एकटा सूक्ष्म क्रियासँ होइत अछि। अदिति धूल फूँकि नहि उड़बैत छथि; भीजल कपड़ाक कोनासँ पट्टी पोंछैत छथि, जकर पहिल रेखा लगभग मेटा गेल अछि। ई दृश्य कथाक अतीतकेँ वर्तमानमे भौतिक रूपसँ अनैत अछि। ओहि पट्टीक उपयोगसँ बनल पुरान प्रतिवेदन कार्यालयक मेजपर अछि; तारा बिनौटक स्थल-पुस्तिका आ नगरक प्राप्ति-पंजी ओकर बगलमे राखल छथि। तीनू कागदमे एकहि भूमिक भिन्न किनार होयबाक उल्लेख कथावाचकक आरम्भिक सङ्केत अछि : समान स्थानक भिन्न वर्णन एकहि घटनामे सरलतासँ विलीन नहि होइत। एतय अतीतकोनो पूर्ण दृश्य-अन्तरण द्वारा नहि, अपितु वस्तुक पुनः उपयोग आ पहिने लिखल वाक्यक वर्तमान परिणाम द्वारा उपस्थित होइत अछि।

स्त्री-पर्वक अन्तिम मृत्युपुष्टि आ शान्ति-पर्वक पहिल बयानक बाद एहि अध्यायमे कथात्मक केन्द्र सरितासँ अदितिक दिस सरकैत अछि। शोक समाप्त नहि भेल; मुदा कथावाचक ओहि शोकक बाद सामाजिक काज कोना

चलैत अछि, से देखाबय चाहैत छथि। अदिति सरिताक पहिल बयानक उदाहरण दैत कहैत छथि जे नब आँकड़ा चिपकाकऽ पुरान निर्णय बिलायल नहि करतीह। ई कथन एहि दृश्यकेँ पिछला अध्यायसँ जोड़ैत अछि, मुदा दुहूक निर्णय भिन्न : सरिता सार्वजनिक रूपसँ अपन अनुभवक भाषा सुधारलीह, अदिति अपन पहिने हस्ताक्षरित तकनीकी वाक्यक सार्वजनिक उपयोग वापस लैत छथि। स्वीकृतिक समानता पात्रक जीवनक एकरूपता नहि, कथनक उत्तरदायित्वक पुनरावृत्त संरचना अछि।

घटनाक्रम : मूल पन्ना मेटाएब नहि, ओकर प्रयोग बदलब

अध्यायक घटनासभ क्रमिक आ सूक्ष्म छथि। ममता अपन सुरक्षा-सामग्रीक खाली प्राप्ति-खाना देखबैत छथि; अदिति बुझैत छथि जे “बाहरी निरीक्षण लेल उपयुक्त” जेकाँ पुरान वाक्य केना सुरक्षित कायदिशक अर्थमे पढ़ल गेल। तारा पुरान ढालक आधार-बिन्दु नहि भेटबाक बात कहैत छथि। गोमती फेर एहन प्रश्न उठबैत छथि जे पुरान प्रतिवेदन वापस लेलासँ ओकर आधारपर चलल विभागीय आदेश अपनहि वापस नहि होयत। एहि प्रथम छओ पाठांशमे तीन अलग परिवर्तन अछि—भाषाक भूलक पहचान, पहिने सँ लिखल श्रमिक-असहमतिक पुनः दृश्यता आ संशोधन प्राप्त करबयवाला कार्यालयसभक वितरण-सूची बनब। कथावाचक घटनाकेँ केवल कागद लिखबाक रूपमे नहि, अनेक समयमे घूमैत निर्णयक उत्तर-जीवन रूपमे देखबैत छथि।

मध्यभागमे रतनक पारिवारिक हाथनक्शा, सूरजक खेतक ऋण, जल आननिहारी महिलासभक पैदल बाट, पारो पत्थरकट्टाक औजार आ रानी हलालखोरक अलग ठेका-घण्टा-पंजी क्रमशः कार्यालयी मेज धरि पहुँचैत अछि। ई पात्र-आगमन मात्र सूची बढ़ेबाक साधन नहि अछि; प्रत्येक आगमन पुरान प्रतिवेदनक एक अघोषित पाठकीय मान्यताकेँ अस्थिर करैत अछि। नक्शामे नदीक पुरान मुँह देखनाइ वर्तमान स्वामित्वक फैसला नहि; छेनी चलाबय सकनाइ भीजल पाटक सुरक्षित भारक ज्ञान नहि; नगर-कर्मचारी ममताक प्राप्ति आ ठेका-मजदूर रानीक भुगतान दुइ अलग अनुभव छथि। एतय अपन आप मानि लेल गेल समानतासभ विघटित भऽ कथाक अगिला निर्णयक शर्त बनैत छथि।

तखन टोली पुरनाधार आ छरकीक दू कात निरीक्षण लेल जाइत अछि। गोदामक मुंशी, रतन, तारा, फूलो आ सूरजक आवाज सँ कार्यालयक स्थिर दृश्य नदीक बदलैत स्थल-दृश्यमे बदलि जाइत अछि। पुरान मुँहक भीजल चिन्ह वर्तमान प्रवाह, पुरान धारा अथवा गोदामक निकासीसँ बनल, ई तय नहि होइत। फूलो पूछैत छथि जे बान्ह काटल गेल तँ पानि ककर घरपर जाएत। ई प्रश्न कथात्मक केन्द्रकेँ ऊँच छरकी सँ नीचला घर-दुआर धरि स्थानान्तरित करैत अछि। स्थलपर किछु नहि काटल जाइत; ओही “नहि कएल” काजमे प्रत्यक्ष घटनात्मक महत्त्व अछि, किएक तँ असुरक्षित कार्रवाई रोकल जाइत अछि।

अन्तमे अदिति मूल प्रतिवेदनपर स्याहीसँ संशोधन नहि लिखैत छथि, अलग वापसी-पत्रपर हस्ताक्षर करैत छथि; मूल प्रति सुरक्षित, विभागसभक लेल नकल आ जाँच-दलक लेल सीलबन्द प्रति अलग रहैत अछि। सूचना-पटपर सार्वजनिक सुधार लगैत अछि; नब जलमापन अथवा नैराक मृत्युकारणक पूर्ण निष्कर्ष घोषित नहि होइत। गोमती अन्तिम पृष्ठमे चारि अलग प्रश्नक खाना खोलैत छथि। ई आगामी अध्याय १३८ क प्रत्यक्ष कथात्मक प्रस्तावना

अछि। तें अध्यायक समाप्ति पुरान दोषक अन्तिम समाधान नहि, जाँच करबाक नब कथानक-ढाँचाक निर्माण अछि।

कथनकाल : भोरसँ साँझक सीमित दिन आ दीर्घ प्रशासनिक अतीत

बाहरी कथन-समय एक दिनक भोरसँ अन्हार धरि पसरल अछि। भोरमे अदितिक पट्टी, दुपहरि पुरनाधारक स्थल-दृश्य आ साँझ सूचना-पट आ दूतक प्रस्थान—ई तीन काल-चिन्ह दृश्यकेँ दृढ़ क्रम दैत छथि। मुदा एहि दिनक भीतर कएक वर्षक परिवर्तित भू-दृश्य, पहिने जारी अनुमति, ममताक पुरान आपत्ति, रतनक पारिवारिक हाथनक्शा आ नैराक निधनक घटनासभ बारम्बार स्मरण होइत छथि। लेखक विस्तृत पूर्वदीप्ति रचबाक बदला पुरान अभिलेख पुनः पढ़बाक माध्यमसँ अतीतकेँ वर्तमानक भाग बनबैत छथि। एहिसँ कथाक अवधि एक दिनक रहितो सामाजिक परिणाम दीर्घ होइत अछि।

विशेष रूपसँ एकहि लिखित वाक्यक पुनः आगमन कथात्मक आवृत्तिक काम करैत अछि। पहिने “साधारण सुधार तत्काल सम्भव” अपेक्षाकृत निश्चिन्त आदेशरूपमे चलल; एखन ओकर अर्थ बाहरी सुरक्षित भाग धरि सीमित होइत अछि। एक्के वाक्यक नब पाठ लेखकक समय-प्रविधि अछि : पुरान निर्णय बदलिएला पर ओकर अतीत नहि मेटैत, वर्तमान क्रियाक कारण बदलैत अछि। मुदा ई पुनर्पाठ कतेको बेर अत्यन्त स्पष्ट व्याख्यात्मक संवादक रूप धरैत अछि; पाठककेँ कखनहुँ वस्तुक संकेतसँ स्वयं अर्थ खोजबाक बेसी अवकाश देल जा सकैत छल।

दृष्टिकेन्द्रण आ आवाजक वितरण

तृतीय पुरुष कथावाचक अदितिक हाथ, मापक पट्टी आ हस्ताक्षरक हिचकसँ दृश्य खोलैत छथि; तथापि पूरा अध्याय अदितिक अन्तरमनक एकल अनुगमन नहि अछि। ममता अपन पहिने लिखल आपत्तिक समय-बिन्दु बचबैत छथि, पारो जोखिमभत्ताक बदला सुरक्षित कामक मजदूरी चाहैत छथि, रानी अपन अधूर भुगतान अलग कहैत छथि, आ फूलो नीचला घरमे पानि ठाढ़ रहबाक परिस्थिति सँ बोलैत छथि। कथावाचक एहि स्त्रीसभक अनुभवक बीच केन्द्र बदलैत छथि। एतय बहुस्वरता केवल विभिन्न पेशाक नाम नहि; पात्रसभ अपन निर्णयक सीमा स्वयं निर्दिष्ट करैत छथि, आ एक-दोसराक पक्षक प्रवक्ता बनबासँ बचैत छथि।

सरिताक उपस्थितिक कथात्मक मात्रा सीमित अछि। ओ नैराक कापी अनने नहि, सुनबाक लेल अएलीह; फेर प्रश्न करैत छथि जे पुरान प्रतिवेदनसँ नैराक मृत्युकारण सिद्ध होइत अछि की नहि। दू संवादक बीच लेखक सरिताक शोकक विस्तृत पुनर्कथा नहि दोहरबैत छथि। ई संयम स्त्री-पर्वक संगठित शोकसँ शान्ति-पर्वक सामाजिक उत्तरजीवन दिस संक्रमणक महत्त्वपूर्ण उपाय अछि। अन्तिम साँझ सरिताक मात्र एतबे आग्रह—अगिला प्रश्नक नाम अलग रहय —अध्याय १३८ क नब नामकरण-विधिक बिम्ब बनि जाइत अछि।

जल-स्थान, औजार आ खाली घरक पुनरावर्ती बिम्ब

नदी एतय सुन्दर परिदृश्य नहि अछि। ऊँच छरकी, नीचला बसावट, गोदामक दीवाल, खेतक मेड़ आ पानि आननिहारी स्त्रीसभक पयरबाट—ई सभ अलग स्थल-स्थितिक कारण पात्रक बोली आ क्रिया बदलैत अछि। जखन जल आननिहारी स्त्री जमीनपर अँगुरीसँ घुमाव खींचैत छथि, तारा ओकरा नक्शामे चिह्नित करैत छथि, मुदा

तुरन्त नब नालीक रेखा घोषित नहि करैत छथि। कथा एहि क्षणमे स्थानीय शरीरक चलल बाट आ संस्थागत नक्शाक बीच संवाद करबैत अछि। ओ संवादक फल प्रारम्भिक दृश्य-संशोधन अछि, अन्तिम मरम्मति नहि।

‘खाली घर’क बिम्ब आरम्भमे ममताक सुरक्षा-सामग्रीक शून्य प्राप्तिक रूपमे अबैत अछि; स्थलपर तारा ‘स्रोत-परीक्षण शेष’ लिखल सफेद खाली घर रखैत छथि; अन्तमे गोमती चारि नब खाना खोलैत छथि। एकटा समान दृश्यरूपक अर्थ बदलैत अछि : पहिल अनुपस्थित सहायता, दोसर स्वीकार कएल अनिश्चितता, तेसर भविष्यक कथानक-शाखा। ई आवर्तन अध्यायक सघन उपलब्धि अछि। तथापि “अलग रखू”, “अलग प्रश्न”, “अलग जाँच” जेकाँ पद बारम्बार संवादमे स्पष्ट रूपेँ अबैत अछि; बिम्बक सूक्ष्मता आ कथावाचकक समझाओल भाषामे कनेक तनाव बनैत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि आ प्रतिपक्ष

अध्यायक प्रमुख सफलता अदितिक चरित्र-विकास अछि। हुनकर स्वीकृति तात्कालिक निर्दोषता अथवा नायकत्व नहि बनैत; ओ अपन पुरान हस्ताक्षरकेँ जाँचक दृश्य वस्तु बनबाक दैत छथि। ममताक पहिनुक असहमति फेर लिखबासँ बचबैत, पारोक कामक सुरक्षा बचबैत आ तारा दूनू कातक वास्तविक जलस्थितिक कठिनाइ खुलल रखैत छथि। कथानक एतय पछातिक जिम्मेदारीकेँ वर्तमानक ठोस क्रियासँ बाँधैत अछि। मूल प्रति नहि फाड़बाक निर्णय कथाक स्मृतिशास्त्रीय अर्थ गहिर करैत अछि : जे गलत छल ओकर निशान बचेबाक चाही, ताकि ओकर पाछाँ चलल समय दृश्य बनल रहय।

सीमा ई अछि जे अनेक पात्रक प्रवेश समान ढङ्गसँ होइत अछि—कियो फाइल अथवा औजार लैत अछि, अपन अनुभव बतबैत अछि, रमा अथवा गोमती एकरा अलग दर्ज करैत छथि। एहि समान आयोजनसँ गति कतहु-कतहु सूचीपरक होइत अछि। तइयो स्थल-जाँचक दृश्य, पारोक छेनी, फूलोक एक-पाँतिक प्रश्न आ अदितिक अनपोंछल धूल विशिष्ट दृश्य-सघनता अनैत अछि। अध्याय अपन अन्तिम लक्ष्य—भूलक सार्वजनिक वापसी आ ओकर अनिर्णीत परिणामक अलग कथात्मक मार्ग—सुस्पष्ट स्थापित करैत अछि।

अध्याय १३८ — दोषक अलग खाना

चारि फाइलक बीचक फाँक : विभाजन स्वयं कथानक

अध्याय १३८ ठीक ओतहिसँ कथा उठबैत अछि जतय १३७ समाप्त भेल छल। अदितिक वापसी-पत्र मेजपर अछि, रमा ओकरा नब कागदसँ झाँपबाक प्रस्ताव पहिने रोकि चुकलीह, आ गोमती चारि खाली फाइल खोलैत छथि। फाइलसभक नाम—भौतिक घटनाक क्रम, सम्भावित कर्तव्य-उपेक्षा, अवैध लाभक आरोप आ जानि-बुझि कएल हिंसाक आरोप—स्वतः जाँचक निष्कर्ष नहि छथि। अध्यायक कथा एहि अलग नामसभक बीच कतेक दूरी बनल रहत, ओहि संघर्षसँ चलैत अछि। गोमती पहिने एक-दोसर फाइलक बीच फाँक छोड़ैत छथि; अन्तमे एके दीवालक चारि टुकड़ामे टूटल जलछाया देखैत छथि। दू दृश्यक बीच अध्याय ई प्रश्न साधैत अछि जे दृश्य विभाजन वास्तविक लोकक जटिल जीवनकेँ अधिक स्पष्ट बनबैत अछि कि खण्ड-खण्ड करि दैत अछि।

कथावाचक आरम्भमे मेजक स्थिर वस्तु-केंद्र सँ कथा खोलैत छथि, मुदा तुरन्त राजनीतिक भाषाक दू अतिवादी आग्रह प्रवेश करैत अछि—‘हत्या’ पहिने लिखू अथवा ‘दुर्घटना’ लिखि सभ समाप्त करू। गोमतीक उत्तर तुरन्त निर्णय नहि, कथा कहबाक गति धीमा करैत अछि। एहि धीमापनमे सामाजिक जोखिम अछि : सरिता–कबीरक शोक, मजदूरक रोकी गेल दाम आ सार्वजनिक भय लोककेँ त्वरित नाम चाहय दैत अछि। लेखक नाम देबाक इच्छा आ समय लैत घटनाकेँ बुझबाक आवश्यकता बीच तनाव रचैत छथि। ई तनाव शुद्ध आख्यानशास्त्रीय अछि, कारण प्रश्न ई अछि—**कथा के कहत, कोन क्रममे कहत आ कतेक अज्ञात अंश स्वीकार करत**।

उद्घाटनसँ प्रेषण धरि घटना-पञ्जी

कबीर नैराक कापीक केवल बाहरी आवरण लैत छथि; निजी लिखावट घरमे रखैत छथि। ई दृश्य शोकक एक भौतिक सीमा स्थापित करैत अछि। अदिति अपन पुरान निष्कर्ष वापस लेबाक पत्र अनैत छथि; तारा जलचिह्न, बन्द नाली, दीवालक कमजोरी आ सार्वजनिक अनुमानक एकरे दृश्यरेखामे मिलाएब पर आपत्ति करैत छथि। नगर-विभागक पत्र बेलदार टोलीक मजदूरी-पंजीक संख्या आधार बनाकऽ लोकपर अनधिकृत भरावक जिम्मा धरबाक प्रयास करैत अछि। एक बेलदार मजदूर अपन वास्तविक माटि-ढोएनाइ स्वीकार करैत, मुदा नक्शा आ आदेशक भूमिका अपना नामपर नहि लैत। एहि श्रृङ्खलामे कथाक आरम्भिक संकट एक सामान्य अभियोग सँ बदलि ‘ककर क्रिया कथासँ बाहर छुटि रहल’ प्रश्नमे परिणत होइत अछि।

मध्यभागमे सामग्रीक बिल, घण्टा-पंजी, प्राप्ति-पर्ची आ नदीक ‘बरुणा/बरुणे’ नामक अनिर्णीत अन्तर सोझाँ अबैत अछि। सहायक ध्वनि-सादृश्यसँ दू स्थानक एकता मानय चाहैत अछि; नैराक पुरान ‘स्रोत सत्यापन शेष’ टिप्पणी भिन्न स्थानक सम्भावना खुलल रखैत अछि। ई प्रसंग पहिनुक पर्वसँ नाम आ पंजीक दीर्घ सूत्र फेर जोड़ैत अछि। ओहि समय नैराक अक्षर देखिकऽ कबीरकेँ एक क्षण ओकर आवाज सुनाएल बुझाइत अछि, जखन कि बाहर वास्तवमे लोटा ठोकेबाक ध्वनि अछि। कथावाचक स्मृतिजन्य अनुभव आ बाहरी ध्वनिक अन्तर स्पष्ट करैत छथि; शोकक आन्तरिक प्रतिध्वनि अलौकिक पुनरागमन नहि बनैत। ई छोट दृश्य प्रशासनिक गद्यक भीतर संवेदना अनबाक समर्थ उपाय अछि।

आगाँ सरिता अपन मृत बेटीक निजी पत्र सार्वजनिक नहि करबाक आग्रह करैत छथि, समिति अपन अधिकारक सीमापर चर्चा करैत अछि, रुहानीक आश्रयक गोपनीयता आ चम्पाक चिकित्सकीय निजता सुरक्षित रहैत अछि, आ उर्मिलाक परिवारक बकायाकेँ चारि आरोपक फाइलसँ अलग देय-पंजीमे स्थान भेटैत अछि। विभाग मजदूरी रोकबाक फेर आग्रह करैत अछि; गोमती श्रमिक प्रतिनिधिक विरोधसहित उत्तर भेजबाक प्रस्ताव बनबैत छथि। अन्तिम भागमे चारि अलग प्रेषण-पत्र बनैत अछि, जकर प्रत्येकमे उत्तर देबाक कार्यालय, तिथि आ गुम अभिलेखक विवरण लिखल अछि। फाइल खुलल अछि, दोष घोषित नहि। ई एहि अध्यायक सीमित मुदा वास्तविक परिणति अछि।

कथनकाल आ घटनाक गति : एक दिन, अनेक अधूरा समय

मुख्य दृश्य भोरसँ रातिक पहिल दीप धरि चलैत अछि। भीतर अनेक पुरान कालधाराक लघु पुनर्स्मरण अछि—अदितिक पूर्व प्रतिवेदन, गोमतीक आठ खेप माटि, नैराक पुरान स्थान-टिप्पणी, उर्मिलाक नचुकल मजदूरी आ

सरिताक अस्पतालक मृत्यु-पुष्टि। मुदा एहि सभसँ कोनो स्वतंत्र पुरान दृश्य खुलैत नहि। ओ सभ वर्तमान संवादकेँ बदलैत सन्दर्भ बनैत अछि। अध्यायक कथनगत अवधि अधिकांश समय कार्यालयी संवादक नाटकीय दृश्य अछि; फाइल-प्रेषणक संक्षिप्त उल्लेख घटनाक गति तेज करैत अछि।

एक महत्त्वपूर्ण काल-असमानता मजदूर आ अधिकारीक बीच अछि। अधिकारीक लेल जाँचक अवधि प्रशासनिक दिनांक अछि; मजदूरक लेल ओही अवधि घरक ब्याज, खाली चूल्हि आ रोकी गेल कमाइ अछि। उर्मिलाक बकायाक आग्रह करनिहारी वृद्धा मृत्युकारणक जाँच रोकबाक नहि, जीविते कएल काजक दाम नरोकेबाक बात कहैत छथि। तेँ कथावाचक 'जाँच पूरा भेलापर भुगतान'क रेखीय सरकारी समयक विरुद्ध परिवारक तुरन्त जीविकाक समय रखैत छथि। ई विभाजित समय अध्यायकेँ मात्र कानूनी-संवाद बनबाक खतरा सँ बचबैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रण : संख्या सँ पिता, फाइल सँ व्यक्ति

तृतीय पुरुष कथावाचक गोमती आ रमाक कार्यालयी क्रियासँ पाठककेँ दिशा दैत छथि, मुदा प्रमुख दृष्टिकेन्द्र निरन्तर बदलैत अछि। बेलदार मजदूरक फाटल हथेली, कबीरक भ्रमित श्रवणानुभव, सरिताक बाटपर ठाढ़ भऽ पानीक बोतल खोलब, वृद्धाक प्राप्ति-पत्र आँचरमे मोड़ब —ई सभ व्यक्तिक अनुभूति दृश्य बनबैत अछि। सरकारी पत्र मजदूरकेँ मात्र संख्या रूपमे कहैत अछि; कथावाचक ओहि संख्याक पाछाँक देह, घर आ निर्णयकेँ लौटबैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे श्रमिकक हर कथन निष्कर्षक स्थान पाबि गेल; ओकर अपन क्रियाक स्वीकृति सेहो कथामे बचेबाक अछि।

गोमतीक आत्म-स्थितिक चित्रण विशेष सूक्ष्म अछि। ओ बेलदार श्रमक साक्षी सेहो छथि आ समितिक संयोजक सेहो; अपन आठ खेपक व्यक्तिगत देयपर स्वतन्त्र सदस्यक जाँच चाहैत छथि। एहि निर्णयसँ कथाक नायिका पहिचान एकरे नीतिशास्त्रीय पूर्णता नहि बनैत। हुनकर भूमिका-विभाजन संवादक भीतर अभ्यासरूपमे देखाइत अछि। विरोधी सहायकक आवाजो दबायल नहि अछि; ओकर प्रश्न—एतेक फाइल खोललासँ अन्त केखन होयत —कथाक अपन सम्भावित लम्बाईपर टिप्पणी जेकाँ सुनाइत अछि। गोमती ओकर प्रतिवाद करैत छथि, मुदा ई प्रश्न पाठकक अनुभवमे रहि जाइत अछि।

नैराक अनुपस्थिति आ वस्तुक दुहरे अर्थ

कबीरक लग नैराक कापीक केवल आवरण अछि, जकर भीतरक लिखावट नहि अएल; नैराक एक पुरान छोट टिप्पणी फाइलमे अछि, मुदा ओ वर्तमान समयमे नव निर्णय नहि दैत। एतय अनुपस्थित पात्रक कथात्मक शक्ति चमत्कारिक उपस्थितिमे नहि, अतीतक सावधानीक नब पाठमे अछि। सरिता अपन बेटीकेँ चारि विवादित कारणक परिभाषा बनबाक वस्तु नहि बनबय दैत छथि; ओ स्वतंत्र मृत्यु-पुष्टिक कथन, निजी वस्तु आ सेवा-सम्बन्धी देयकेँ अलग रखबाक आग्रह करैत छथि। ई स्त्री-पर्वक मातृशोकक पूर्ण पुनरावृत्ति नहि, शोकक स्वरक सामाजिक जीवनमे बदलल स्थितिक निरन्तरता अछि।

वस्तु-बिम्बक स्तरपर चारि फाइलक बीचक फाँक, प्राप्ति-पत्रक नकल, कबीरक खाली कापी-आवरण आ पानि मे चारि भाग बनल दीवालक छवि परस्पर संवाद करैत अछि। अन्तिम जल-छायामे दीवाल वस्तुतः एके अछि, चारि टुकड़ा ओकर हिलैत प्रतिबिम्ब अछि। ई रूपक पंजी-आधारित स्पष्ट भेदक सीमाकेँ दृश्य बनबैत अछि :

फाइल अलग कएला पर वास्तविक लोक, घर, देह आ सामाजिक व्यवस्था एक-दोसरासँ अलग भऽ नहि जाइत। अध्यायक समापनमे कबीरक मनमे उठल प्रश्न—पहिने कारण सिद्ध कि पहिने निश्चित देयक भुगतान—आगामी अध्यायसभक घटना-प्रेरक बनैत अछि।

शैलीक उपलब्धि, पुनरावृत्तिक जोखिम आ परिणाम

एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि एहन बहुस्तरीय कथा-व्यवस्था अछि जतय ‘दोष’ एक अखबारी शीर्षकसँ मुक्त भऽ अनेक क्रिया, आदेश, विराम आ अनुभवक जटिल प्रक्रिया बनैत अछि। संख्या सँ चिन्हल मजदूरक स्वतन्त्र बयान, छोट घरेलू स्मृति, उर्मिलाक बकाया, रुहानीक गोपनीयता आ विभागीय जल्दी—सभकेँ एकहि मेजपर उपस्थित कएल गेल अछि, मुदा ककरो कथा दोसरक उपन्यासिक स्थान नहि हड़पैत। चारि फाइलक विभाजन एतय कथन-स्तरक विभाजन सेहो अछि।

सम्भावित दुर्बलता प्रसंगक अतिशय सुगठित क्रम अछि। लगभग प्रत्येक पात्र अपन बयानक सीमा अत्यन्त स्पष्ट शब्दमे बतबैत अछि; एहन एकरूप भाषिक संयम वास्तविक शोक, क्रोध आ आर्थिक भयक आकस्मिकता कम करि सकैत अछि। विशेषतः अधिकारीसभक अतिवादी भाषा बनाम गोमती–रमाक सम्यक उत्तर किछु दृश्यकेँ अनुमानित विवादमे बदलि दैत अछि। तथापि कबीरक छोट श्रवण-भ्रम, वृद्धाक आँचरमे मोड़ल पर्ची आ जलछायाक अन्तिम रूपक एहि औपचारिकताको भेदन करैत अछि। कोनो दोषी तय नहि भेल, मुदा जे कथामे पहिने ‘सामूहिक जिम्मेदारी’ कहल जाइत छल, ओकर भीतर अनेक पात्रक अलग समय आ अनुभव देखबाक क्षमता विकसित भेल—ई अध्यायक वास्तविक कथात्मक परिवर्तन अछि।

अध्याय १३९ — तर्कक पुनरागमन

दुइ कालक दू ओसार : अध्यायक द्विकालीन रचना

“तर्कक पुनरागमन” शान्ति-पर्वक एहि चरणमे पूर्ण स्वतंत्र प्राचीन कालधारा फेर खोलैत अछि। आरम्भमे उदयनक अध्ययनगृहक देवालसँ चूनक धूरि झरैत अछि, ताड़पत्रक पेटी हटैत अछि, आ दू पन्ना—उदयनक अनुमान आ मीमांसक अतिथिक आपत्ति—भीजल जमीनपर चिपकबाक अवस्था धरि पहुँचैत अछि। कक्ष भौतिक रूपसँ असुरक्षित अछि; विचारक दू भिन्न पन्ना सेहो फाटि सकैत अछि। प्राचीन शास्त्रार्थक उद्घाटन एहि नाजुक वस्तु-दृश्यसँ होइत अछि, विजयोत्सवसँ नहि। कथावाचक औपचारिक मतभेद आरम्भ करबाक पहिने रचना-बचेबाक संकट देखबैत छथि।

पाठांश १० मे अचानक “दूरक नगरमे, २०४०क एकटा बिहान” कहि आधुनिक रहीना ठकुराईक नकलक दुकान खुलैत अछि। बीचमे उदयनक शास्त्रार्थक पृष्ठ छुटैत अछि; आधुनिक कथामे पारिवारिक ग्राहक हटाओल गेल छथि, मजदूरीक गणना आ गवाहीक परिणामक प्रश्न उठैत अछि। पाठांश १५ मे कथा फेर प्राचीन ओसार घुरैत अछि, १९ मे रहीनाक दुकान, २५ मे उदयन, आ अन्तिम दू पाठांशमे आधुनिक समिति-कक्ष। ई **द्विकालीन समानान्तर सम्पादन** अछि, एकहि घटना दुबारा कहबाक कथा नहि। दुनू समयरेखाक पात्रक बीच प्रत्यक्ष

सम्पर्क नहि; नहिए आधुनिक रमा प्राचीन शास्त्रार्थक परिणाम जनैत छथि। संगति अर्थक स्तरपर बनैत अछि—ककरा प्रश्न कहबाक समय देल जाए आ ककरो लिखल पन्ना केकर हाथमे रहय।

एहि बिन्यासक विशेषता ई अछि जे प्राचीन दृश्य आधुनिक दृश्यकेँ आदेश नहि दैत। रहीना अपन मजदूरी लेल जे ठोस आवेदन करैत छथि, ओकर निर्णय उदयनक उत्तरक प्रतीक्षा नहि करैत; उदयनक बहसक अनिर्णय सेहो रहीनाक काज घटबाक तथ्यसँ स्वतः समाप्त नहि होइत। कथावाचक दुइ कालक पारस्परिक आलोक निर्मित करैत छथि, कारणात्मक एकता नहि। एहि रूपमे अध्याय उपन्यासक महाकाव्यीय–दार्शनिक कालधारा आ आधुनिक स्थानीय जीवनकेँ एकहि कथा-व्यवस्थामे राखबाक एक अर्थवान उदाहरण अछि।

प्राचीन घटनाक्रम : स्थगित उत्तर आ शोकक अपन समय

उदयनक विरोधी अतिथिक एक सहपाठी राति मरि गेलाह। अतिथिक शिष्य सभासँ विदा चाहैत अछि; विद्यार्थीसभ क्षणिक रूपसँ विपक्षक चुप्पीकेँ तर्कक अवसर बुझि सकैत छलाह। उदयन पहिने अतिथिक इच्छा जानबाक निर्णय करैत छथि; लिखल उत्तर रहि सकैत अछि, मुदा अनुपस्थित व्यक्तिक आवाज जबरदस्ती पन्नासँ निकालब उचित नहि। अतिथि मृत मित्रक स्याहीक पीतर डिबिया लऽ अबैत छथि, मुदा ओ वस्तु शास्त्रार्थक स्मारक नहि, परिवारकेँ लौटेबाक निजी सम्पत्ति अछि। एतय शोक कथानकक गति रोकैत अछि, आ रोकबाक कारणेँ संवादक नियम बदलैत अछि।

युवा विद्यार्थीक एक प्रश्न मृत्युक दृश्यमे तत्काल वैचारिक निष्कर्ष निकालबाक उतावली देखबैत अछि; अतिथि प्रतिवाद करैत छथि जे मित्रक मृत्यु हुनकर पक्ष अथवा विरोधी पक्षक जीत नहि। ई संवाद स्वयं शास्त्रीय निष्कर्ष देबाक बदला कथनक अधिकारक समय-सीमा निर्धारित करैत अछि। मृत्यु-घटनाकेँ जीतक कथामे बदलबाक प्रयास रोकल जाइत अछि। विरोधी आ उदयन दुनू अपन मत कायम रखैत छथि, मुदा असहमत व्यक्तिक शोक मानि सभा स्थगित होइत अछि। एहि दृश्यकेँ कथाशास्त्रीय दृष्टिसँ पढ़ब अधिक उपयोगी अछि : मृत्यु एकटा *कथाविराम* अछि, कथाक विषयपर उपन्यासक अन्तिम दार्शनिक फैसला नहि।

पन्ना सीबनिहारी वृद्धा भिजल पात अलग करबाक व्यावहारिक तरीका बतबैत छथि। अतिथिक मृत मित्रक परिवारक युवक मूल हस्ताक्षरवला पन्ना वापस माँगैत अछि आ नकलक पारिश्रमिकक प्रश्न उठबैत अछि। एहि दुइ पात्रक प्रवेशसँ प्रसिद्ध विचारकसभक एकल ज्ञान-दृश्य श्रम आ परिवारक वस्तुसंग्रहदिस खुलैत अछि। ओ सभ शास्त्रार्थक विजेता चुनबाक लेल नहि अएल छथि; पन्ना बचाबय आ घरक काज व्यवस्थित करबाक लेल आएल छथि। अतः शास्त्रार्थक काल ‘विचारक समय’ मात्र नहि; मृत मित्रक घर, नकलनिहार आ वृद्धा कारीगरक शारीरिक कामक समय सेहो ओहि दृश्यकेँ बनबैत अछि।

अन्तिम प्राचीन बैठकमे अतिथि अपन प्रश्न फेर उठबैत छथि; उदयन उत्तर दैत छथि, मुदा निर्दोष बालकक मृत्यु आ अव्यवस्थाक प्रश्न समाप्त भऽ गेल, एहन घोषणा नहि होइत। विद्यार्थी खाली निष्कर्षसँ असन्तुष्ट अछि, मुदा विरोधीक असहमतिक लेल उत्तरक पन्ना जतेक स्थान राखल जाइत अछि। अन्तिम आगमनमे मृत मित्रक नाम परिवारक इच्छा अनुसार सीमित राखबाक निर्णय होइत अछि; अतिथि असहमति फेर अनबाक वचन दैत छथि। तेँ अध्याय-शीर्षकक ‘पुनरागमन’ विवादक पूर्ण समाधान नहि, स्थगनक बाद फेर सँ बोलबाक सम्भावना अछि।

आधुनिक घटनाक्रम : गवाहीक मूल्य आ घरक भीतरक दूरी

रहीनाक दुकानक द्वार खोलबाक दृश्य घरेलू जीवनक समयसँ भरल अछि। ओससँ जाम चाभी, ग्राहकक हटाएल दू गठरी, पितियौत भायक कागद, बेटीकेँ विद्यालय पठेबाक समय आ पिछिला सप्ताहक अपूर्ण मजदूरी—ई सभ पाठांश १०–११ मे एक दिनक आरम्भिक दबाव बनबैत अछि। पहिने सत्ताइस नामक प्रसंगमे रहीनाक बयान आ नकल-क्रमक सीमित जानकारी महत्त्वपूर्ण छल; एखन ओहि बयानक परिणाम रोजीक हानिमे दृश्य बनैत अछि। लेखक जाँचक कागदमे सही बात कहबाक घटना अन्तिम नीतिगत विजय रूपमे नहि छोड़ैत छथि; ओकर बाद घरक साझा व्यापार, परिवारक साख आ बच्चीक पढ़ाइ केना बदलैत अछि से देखबैत छथि।

भाय घरक प्रतिष्ठाक खतरा कहैत छथि, रहीना अपन बयानक मूल सीमा पढ़ि सुनबैत छथि—ओ अपन मजदूरीक रसीद देलनि, ककरो जानि-बुझि शब्द हटेबाक घोषणा नहि। ई विवादक मनोवैज्ञानिक केन्द्र अछि। भाइ–बहिनक सम्बन्ध तुरन्त शत्रुता नहि बनैत, मुदा एके अनुभवक मूल्य अलग अछि : भायक लेल ग्राहक गुमेबाक भय प्राथमिक, रहीनाक लेल नकलक भरोस आ अपना नामपर कएल कामक मूल्य प्राथमिक। पैतृक दुकान आ जीविकाक भाषा परस्पर भिड़ैत अछि। लेखक व्यक्तिक निजी सम्बन्धकेँ नीति-विवादक साधारण रूपक नहि बनबैत; ग्राहकक वास्तविक गठरी हटब एक स्वतंत्र कथा-घटना अछि।

रमा आवैत छथि तँ सार्वजनिक तमाशा नहि, सीमित पूरक बयान माँगैत छथि। रहीना ओहि अनुरोधक संग अपन मजदूरीक घाटाक प्रश्न जोड़ैत छथि। दू आवेदन बनैत अछि—एक जाँचक नकल लेल, दोसर देय आ सेवा-सम्बन्धी हानिक लेल। भाय ग्राहकक नाम अनुमति बिना नहि देबाक बात कहैत छथि; रहीना तखन काजक संख्या आ तिथि लिखबाक बाट सुझबैत छथि। पूरक बयानमे रहीना एक सुनल बातकेँ देखल कहल जाएब सँ रोकैत छथि। एहि समस्त घटनाक फल सम्पूर्ण परिवार-मेल नहि; किछु गठरीक गणना फेर करबाक सहमति बनैत अछि, बयान वापस नहि लेल जाइत। कथाक संवेदनशीलता एहि अपूर्ण परिणतिमे अछि।

दृष्टिकेन्द्रण, विराम आ कथावाचकक संयम

प्राचीन खण्डमे दृष्टि उदयनक पन्नासँ अतिथिक स्याही-डिबिया, विद्यार्थीक संकोच आ वृद्धाक हाथ धरि सरकैत अछि। आधुनिक खण्डमे रहीनाक भीजल चाभी, बेटी, भायक नजरि झुकब, रमाक सीमित आवेदन आ ठेलावाली स्त्रीक कागद बचाएब पर ध्यान जाइत अछि। तृतीय पुरुष कथावाचक दुनू दृश्यकेँ जोड़ैत छथि, मुदा कोनो सर्वज्ञ नैतिक न्यायाधीश जकाँ अन्तिम निष्कर्ष नहि सुनबैत छथि। विशेष रूपसँ प्राचीन बहसक बीच एकटा मृत्यु घटि चुकल अछि; कथावाचक ओकर अन्तिम रातिक विस्तृत दृश्य नहि गढ़ैत छथि, शोक करनिहारक प्रतिक्रिया देखबैत छथि। ई अप्रदर्शित मृत्यु कथामे भावात्मक खाली स्थान छोड़ैत अछि।

कथन-अवधिमे एक सूक्ष्म समानता अछि। प्राचीन सभाक विराम मृत्युक बाद अतिथिक शारीरिक आ मानसिक समयक सम्मान लेल अछि; आधुनिक दुकानदार अपन परिवारक तनावक बावजूद बेटीकेँ विद्यालय पठेबाक समय अलग रखैत छथि। दुइ ठाम ‘उत्तर’ स्थगित होइत अछि, मुदा स्थगनक अर्थ पलायन नहि। बादमे रहीना गवाही फेर देलीह आ भाय अपूर्ण काजक गणना स्वीकार करैत छथि; अतिथि शास्त्रार्थ पुनः उठबैत छथि। ई विलम्बक सकारात्मक पुनर्संरचना कथाक कालिक उपलब्धि अछि।

पन्ना, चाभी, धागा आ छायाक प्रतीक-क्रम

प्राचीन अध्ययनगृहमे दू पात भिजला पर चिपकैत अछि; वृद्धा बीचमे पातर सूखल पात दैत छथि। आधुनिक गल्लीत ठेलासँ झरल नकलक पन्ना नालीक लग चिपकैत अछि; रहीना धीरजसँ ओकरा बचबैत छथि, भाय ठेलाकेँ सहारा दैत छथि। ई दृश्य-प्रतिध्वनि बहुत सावधानीसँ रचल गेल अछि। पहिल पन्ना मतभेदक लिखल रूप अछि, दोसर कपड़ाक माप आ कारीगरक मजदूरीक साधन; दुनू बचबैत समय व्यक्तिसभ तत्काल विवाद छोड़ि मिलि काज करैत छथि। तथापि सहयोगसँ पुरान मतभेद समाप्त नहि होइत। एहि बिम्बक कलात्मक शक्ति एकर असम्पन्नतामे अछि।

चाभीक बिम्ब आधुनिक खण्डमे घर–दुकानक सम्बन्धक दुहरी बन्दी बनैत अछि। अन्तिम आधुनिक दृश्य कक्षक चारि फाइलक छाया एक धब्बा बनैत देखबैत अछि, मुदा रमा दीपकक काँच सोझ करिते छाया फेर अलग भऽ जाइत अछि। पिछला अध्याय १३८ क पानिमे चारि टुकड़ा दीवालक छविक संग ई बिम्ब स्पष्ट संवाद करैत अछि। जल–छाया अराजक दृश्य-विभाजन छल; मोमबत्तीक छाया अस्थायी रूपसँ सभ फाइलकेँ एक करेबाक भ्रम पैदा करैत अछि। कथावाचक रूपकेँ पुनरावृत्ति करैत नव स्थान–प्रकाशमे ओकर अर्थ बदलैत छथि।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

एहि अध्यायक श्रेष्ठ उपलब्धि द्विकालीन अन्तर्पाठक संयमित उपयोग अछि। उदयनक बहस आधुनिक रहीनाक जीवनकेँ वैचारिक पाठ नहि पढ़बैत; दुनू कथामे सुनब, रुकब, फेर बोलब, श्रमक नाम आ प्रतिक अधिकारक प्रश्न भिन्न ढङ्गेँ घटैत अछि। प्राचीन वृद्धाक सीबनिहार हाथ आ आधुनिक नकलनिहारक भीजल पन्ना प्रसिद्ध दार्शनिक पात्रसभक एकल प्रभुत्व तोड़ैत अछि। लेखकक संरचनात्मक साहस ई अछि जे अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अनिर्णीत रहैतहुँ पाठककेँ अध्याय असम्पन्न नहि लगैत—कथात्मक पूर्णता निर्णयमे नहि, मतभेदक समय बचा रहबामे अछि।

एकर सीमा सेहो स्पष्ट अछि। प्राचीन उदयन आ अतिथि कठिन क्षणमे सेहो अत्यन्त सुव्यवस्थित, आधुनिक सहमति-संवेदनशील भाषा बजैत छथि; कखनहुँ ई स्वर पात्रक जीवन-कालक अन्तरकेँ कम करैत अछि। प्राचीन शास्त्रार्थ आ आधुनिक बयानक बीच एतेक सार्थक प्रतिध्वनि अछि जे किछु दृश्य पूर्वनियोजित समानान्तर उपदेश जकाँ सेहो बुझा सकैत अछि। तथापि चून झरब, स्याहीक डिबिया, नालीसँ कागद उठेबाक श्रम आ बेटीकेँ विद्यालय पठेबाक दृश्य एहि अत्यधिक क्रमबद्धतामे जीवित अनियमितता जोड़ैत अछि। कथन-शास्त्रीय अर्थमे अध्याय सफल अछि—शोक कने देरि संवाद रोकैत अछि, मुदा प्रश्नक भविष्य नहि मिटबैत।

अध्याय १४० — कर्म आ कारण

पाँचम पंजीक आगमन : कथाक केन्द्रक निर्णायक परिवर्तन

“कर्म आ कारण”क पहिल दृश्य पिछला अध्यायक आधुनिक अन्तसँ प्रत्यक्ष जुड़ैत अछि। भोरक बरामदामे छतसँ बूँद टपकैत अछि; गोमती चारि जाँच-फाइलक संग पाँचम पंजी—मजदूरी आ देय—अपना दिस घीचैत छथि। एहि पाँचम वस्तुक प्रवेश अध्यायक कथानक-विस्तार अछि। पहिने दुर्घटनाक सम्भावित कारण अलग कएल गेल छल;

आब प्रश्न होइत अछि जे जाँच चलैत रहला पर जीवित लोकक देयक काज कोना चलत। आठ खेप माटिक अपन दावा जाँचक समय गोमती संयोजकक कुर्सी अपने लाभमे नहि वापरय चाहैत छथि। एहि आन्तरिक सावधानिक छोट संकेतसँ अध्यायक केन्द्रीय चरित्र ‘कर्तव्यक अधिकारी’ सँ ‘हित-सम्बन्धक भीतर रहल व्यक्ति’ रूपमे उभरैत अछि।

विभागीय पत्र एक श्रमिकक उपस्थिति-नम्बर घेरा मारैत अछि, जबकि सामग्री, नक्शा आ निरीक्षणपर अनेक हस्ताक्षर छथि। बाहर श्रमिकक बच्चा हुनका ‘बाबू’ कहि बजबैत अछि; पत्नी खाली चाउरक झोरा लऽ कर्जक ब्याज बढ़बाक बात करैत छथि। ई दू पासक पाठांश संरचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण छथि : पहिलमे व्यक्ति कार्यालयी संख्या अछि, दोसरमे ओकर पारिवारिक सम्बोधन, देहक घाव आ आर्थिक समय अछि। कथावाचक दूनू रूपकेँ एकहि दृश्य-क्रममे रखैत छथि, जाहिसँ पाठककेँ समझ पड़ैत अछि जे अभिलेखक नामकरण आ जीवनक अनुभव एक्के दृष्टि नहि अछि।

राघवक कथा : साख, परिवार आ गवाहीक स्वायत्तता

राघव सिंहक प्रवेशसँ अध्याय कार्यालयक मेजसँ कारखानाक आँगन धरि पसरैत अछि। ओ पट्टा आ आपूर्तिक अपन भूमिका स्वीकारैत छथि, मुदा मरम्मतिक गुण-निरीक्षणक स्वतः दायित्व नहि लैत। भतीजा पहिल बयानक सही देखिकऽ अपन लिखावट आ देखल समय धरि कथन सीमित रखैत अछि; फाइलक खाली स्थान बादमे के भरलक, से नहि जानैत। कथावाचक एतय भतीजाकेँ ‘सत्य बोलनिहार साहसी युवक’क सरल विजयोन्मुख कथा नहि बनबैत; ओकर स्वतंत्र कथन परिवारक काम आ आर्थिक सम्बन्धपर दबाव अनैत अछि।

राघवक फोनपर पहिने स्थगित सहयोग आब समाप्त होएबाक सूचना पहुँचैत अछि। ओहि सँ व्यावसायिक हानि अधिक ठोस होइत अछि, मुदा कथावाचक ई नहि मानैत जे ठेका निश्चित रूपसँ भतीजाक गवाहीक प्रतिशोधमे तोड़ल गेल। तिथि आ पूर्व फोनक उल्लेख अलग रखल जाइत अछि। राघव कारखानामे मजदूरक बचल भुगतानक हिसाब व्यवस्थित करैत छथि; बहिन भतीजाक ऊपर समस्त व्यापारी क्षतिक दोष नहि देबाक आग्रह करैत छथि। एहि प्रकारेँ एके पात्रक तीन कथन-अवस्था उभरैत अछि—आपूर्तिकर्ता, आर्थिक हानिसँ जूझैत स्वामी आ भतीजाक काका। राघवक निर्णय पूर्ण नैतिक रूपान्तरण नहि; बजार, निजी मान आ मजदूरक देयक बीच बदलैत प्राथमिकता अछि।

साँझ ओ औपचारिक पत्र दैत छथि जे भतीजाक गवाहीपर निजी प्रतिबन्ध नहि रहत आ गवाही कारण उपस्थितिक वेतन नहि कटत। व्यक्तिगत पगार आ श्रमिकक नाम अनावश्यक सार्वजनिक नहि करबाक सीमित शर्त सेहो रहैत अछि। एहि उत्तरसँ कारखानाक आर्थिक संकट समाप्त नहि भेल, मुदा बयानक स्वायत्तता जकाँ एक विशिष्ट कथात्मक उपलब्धि बनैत अछि। भतीजा सेहो काकाक बातक प्रतिलिपि पढ़ि अपन स्वरमे संशोधन स्वीकार करैत अछि—ई सम्बन्धक पुनर्स्थापन नहि, आपसी कथनक सीमा मानबाक चरण अछि।

शशिक दू चाभी : स्वामित्वक एकरूप कथामे दरारि

शशि माहुरी पीतलक दू चाभी, भाड़ा-अनुबन्ध, किरायाक रसीद, बिना अनुमतिक दोसर तालाक आपत्ति आ चौकीदारक हाजिरी-बहीक प्रति लऽ अबैत छथि। एहि प्रवेशक वस्तु-सज्जा स्पष्ट अछि। चाभी गोदाम खोलबाक

अधिकारक संकेत जकाँ देखाइत अछि, मुदा दू छल्ला, टेढ़ पल्ला आ अलग-अलग ताला पहुँचक असमानता देखबैत अछि। शशि भवनक मालिक छथि, मुदा प्रत्येक कक्षक प्रत्येक रातिक क्रियाक प्रत्यक्षदर्शी नहि। एतय कथावाचक ‘मालिक’ जेकाँ एक शब्दक आन्तरिक असंगति अनैत अछि; भवन, किराया, पाछाँक बाट आ जाँच-अधीन मालक सम्बन्ध अलग छथि।

चौकीदार कहैत अछि जे शेखर एक राति चाभी माँगने छल, ओ नहि देलक; दोसर फाटकसँ कियो गेल की नहि, ओ नहि देखलक। पार्वती मजदूरनी अपन भिजल बोरा सुखेबाक मजदूरी भेटि चुकबाक बात कहैत छथि, मुदा पिछला कक्षक माल गनब हुनकर काज नहि छल। ई दुनू सीमित कथन शशिक बचावक पक्षमे जोड़ल ‘सामूहिक बयान’ नहि बनैत। शशि स्वयं चौकीदारक बातक मालिक नहि बनबाक चेष्टा करैत छथि। कथात्मक दृष्टिसँ ई विशेष उपलब्धि अछि : शशिक आगमनक बादो कोनो परिधिक श्रमिक हुनकर आन्तरिक चेतनाक केवल पुष्टिकर्ता नहि बनैत।

पाछाँक प्रवेश-पथक दू स्याहीवाली रेखा, संशोधनक अज्ञात तिथि आ सील लागल कक्षक स्थिति एखन अनिर्णीत रहैत अछि। शशि फेर किराया देबाक इच्छा रखैत छथि, मुदा सक्षम आदेश देखला बिना जाँच-अधीन कक्ष खोलबाक निर्णय नहि भेटैत। दुइ चाभी पुनः अलग राखल जाइत अछि। एहि वस्तु-आवर्तनमे अध्यायक निष्कर्ष अछि : मालिकानाक औपचारिक एकता, कथाक वास्तविक प्रवेशाधिकारक एकता नहि अछि।

बेलदार मजदूरक घर : सार्वजनिक घटनाक भीतर घरेलू काल

मजदूरक फाटल हथेली, पत्नीक खाली चाउरक झोरा आ ब्याजक समयसँ अध्याय आरम्भ भेल। उत्तरार्धमे पत्नी आ बच्चा प्रतीक्षा करैत छथि; बच्चा पिताक प्राप्ति-पर्चीसँ कागदक नाव बनाबय चाहैत अछि, माय रोकैत छथि। ई घरेलू दृश्य बहुत प्रभावी अछि। सरकारी पर्ची बच्चाक लेल खेलक साधन भऽ सकैत छल; मायक लेल ओ समयबद्ध उत्तर माँगबाक एकमात्र वस्तु अछि। कथावाचक एकहि कागदक दू अर्थ स्पष्ट प्रत्यक्ष दृश्यसँ रचैत छथि—कथानकक कार्यालयी साधन आ परिवारक छोट भविष्य। बादमे बच्चाकेँ नाव लेल खाली अखबारक टुकड़ा भेटैत अछि, जाहिसँ वस्तुक अर्थ बदलैत अछि, मुदा भुगतान पूरा भेटल नहि।

स्वतन्त्र भुगतान-सत्यापक विवादरहित मजदूरीक अंश जारी करबाक **अनुशंसा** करैत अछि, तत्काल पूरा रकम नहि बाँटैत। गोमती अपन आठ खेपक दावा अलग सदस्यक हाथमे रखैत छथि। ई दू छोट निर्णय उपन्यासक शान्ति-पर्वमे ‘काज’क कथात्मक अर्थ स्पष्ट करैत छथि : किछु ठोस आगाँ बढ़ल अछि, मुदा सार्वजनिक दुखक सम्पूर्ण समापन नहि भेल। मजदूर गोमतीकेँ अपन लोक बचएबाक संशययुक्त आरोप दैत अछि; गोमती एकरा धिक्कारि बन्द नहि करैत छथि। असहमति शेष अछि, तें दृश्य नायकक जयक घोषणा नहि बनैत।

कथनकाल, स्थानान्तर आ बहुकेन्द्रित दृष्टि

एक दिनक भोरसँ राति धरि कथन-रेखा चलैत अछि। कार्यालयसँ कारखाना, पुनः कार्यालय, बरामदाक प्रतीक्षा, आ अन्हारक खिड़की—ई स्थानान्तर समयक ठहराव आ गतिविधिक तीव्रता बनबैत अछि। एके समयमे भिन्न पात्रक दिन भिन्न गति सँ बीतैत अछि : राघव लेल समाप्त अनुबन्धक सूचना अचानक घटना अछि; मजदूरक पत्नी लेल अगिला सप्ताहक ब्याजक डर पुरान निरन्तर संकट; शशि लेल पुरान दू चाभीक अर्थ अद्यतन सुरक्षा-

सीमा; सरिता लेल नैराक मृत्यु पहिनेसँ निश्चित शोक, मुदा निजी कागद आ अधूर काजक प्रश्न एखन खुलल। कथावाचक एहि समयसभकेँ एक दफ्तरक घड़ीमे समेटबाक चेष्टा नहि करैत।

दृष्टिकेन्द्रण स्थिर गोमतीक भीतर नहि रहैत। राघवक कारखानाक अन्हार कोठरी दिस देखब, चौकीदारक दिनक प्रकाशमे बेर-बेर पलक झपकब, पार्वतीक हाट-दिनक काज बचेबाक आग्रह, मजदूरक फाटल हथेली आ सरिताक कुर्सीपर निःशब्द बैसब —ई सभ लघु दृश्य कथाक ज्ञानेन्द्रियगत फैलाव बढ़बैत अछि। परिधिक पात्रसभक अनुभव एकहि नायकक समाधानक पदार्थ नहि। तथापि कार्यालयक प्रमुख वाक्य-निर्माण गोमती आ रमाक हाथमे अछि; दृष्टिकेन्द्रक विस्तार सभ पात्रकेँ समान आख्यान-अवधि नहि दैत। ई असमानता रचनाक यथार्थवादी सीमा आ संरचनात्मक तनाव दुनू अछि।

प्रतीकक शृंखला : पाँतिक नम्बर, दू चाभी, पाँचम पंजी आ नाव

चारि आरोपक फाइल सँ पाँचम देय-पंजी बनबाक भौतिक विन्यास एहि अध्यायक आरम्भ आ अन्तकेँ जोड़ैत अछि। मजदूरक नम्बर अज्ञात व्यक्तिक प्रतीक नहि, तर ओकर श्रमक वास्तविक पंजीबद्ध रूप अछि; बच्चाक ‘बाबू’ सम्बोधन ओहि नम्बरक जीवन-सम्बन्ध दृश्य करैत अछि। राघवक खाली गत्ताक डब्बाक अनुपस्थिति आ मोट लिफाफाक उपस्थिति उद्योग-पर्वक आपूर्ति-कथा सँ उत्तरकाण्डक पत्र-कथामे संक्रमणक बिम्ब अछि। शशिक चाभी जप्त स्थलपर प्रत्यक्ष पहुँचक सीमित अधिकार चिन्हित करैत अछि। बच्चाक अखबारक नाव अन्तिम दृश्यमे छोट भँवरमे थमकि फेर किनार दिस बहैत अछि; गोमती ओकर गतिक आधारपर दुर्घटनाक कारण नहि बुझैत छथि। ई आत्मसजग दृश्य अछि—रूपक जतेक अर्थवान हो, ओहि सँ कथाक अनिर्णीत तथ्यक निश्चय नहि निकलैत।

अन्तिम पाठांशमे राहतक रसीद, लिखित उत्तर आ मुकदमाक सूचना तीन अलग भविष्यक कथासूत्र बनैत अछि। कथावाचक पाठककेँ आगामी “मदद आ मुकदमा” अध्यायक पहिने सँ अनुगूँज दैत छथि; ई अग्रदीप्तिक स्पष्ट लघु रूप अछि। अदालतक फैसला एखन नहि; मुदा व्यक्तिगत कर्तव्यक उत्तर देबाक तिथि निश्चित होइत अछि। एहि भेदसँ अध्याय अपन सीमित चरमबिन्दु प्राप्त करैत अछि।

उपलब्धि आ कलात्मक सीमा

“कर्म आ कारण”क साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे अनेक कारणक बहसकेँ केवल व्याख्यान नहि छोड़ि राघवक वास्तविक व्यापार-हानि, भतीजाक स्वतन्त्र वाणी, शशिक दू चाभी आ मजदूरक पत्नीक चाउर-झोरा जेकाँ घटनासँ जोड़ैत अछि। एकहि नामसँ चिन्हल व्यक्तिक भीतर विरोधी भूमिका जीवित रहैत अछि। राघव अपन साख बचाबय चाहैत छथि, मुदा मजदूरक रकम दाबि नहि सकैत; शशि भाड़ा-स्वामित्वक दावा करैत छथि, मुदा अज्ञात घटनाकेँ अपन ज्ञान नहि कहैत; गोमती संयोजक छथि, मुदा व्यक्तिगत देयक निर्णायक नहि। एतय पात्रक नैतिक विश्वसनीयता आधिकारिक परिचय सँ नहि, समयानुसार बदलैत छोट निर्णयसभसँ निर्मित होइत अछि।

मुख्य सीमा ई अछि जे कतेको पात्र आश्चर्यजनक रूपसँ एकहि विश्लेषणात्मक वाक्य-लयमे बजैत छथि। हरिवादक दृष्टि अपन आप सटीक भेदमे बदलैत अछि, आ गोमती–रमाक विवेकपूर्ण समापन संवादक प्रायः अनिवार्य घटक बनि जाइत अछि। सामाजिक घटनाक असामान्य अनिश्चितता किछु ठाम पूर्वनियोजित कार्यालयी

स्पष्टतामे ढकाइत अछि। तइयो राघवक बहिनक निजी हठ, भतीजाक असहज चुप्पी, बच्चाक कागदक नाव आ सरिताक बिना नायकत्वक निःशब्द बैसब कथा कैं इन्द्रियसापेक्ष गहिराइ दैत अछि। एहि चारि अध्यायक क्रममे १४० सबसँ बेसी लोकजीवनक अनेक एक-दोसरसँ टकराइत कथा-रेखा एक मंचपर अनैत अछि।

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३७–१४० क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

संशोधनसँ अलग आवाज धरि : चारि अध्यायक अनुक्रम

एहि चारि अध्यायक क्रम एकटा पहिचान योग्य आख्यान-वक्र बनबैत अछि। अध्याय १३७ अदितिक पुरान वाक्यक सार्वजनिक वापसी आ चारि सम्भावित प्रश्नक निर्माण करैत अछि; १३८ ओहि चारि फाइलक भीतर मजदूर, शोकग्रस्त परिवार आ अलग देयक अनुभव प्रवेश करबैत अछि; १३९ एहि विभाजित आधुनिक कथनक बीच उदयन–अतिथिक प्राचीन संवाद आ रहीनाक नकल-दुकानक द्विकालीन समानान्तरता अनैत अछि; १४० आखिरकार पाँचम देय-पंजी खोलि काजक वास्तविक समय आ परिवारक जीविकासँ जाँचक वृत्त जोड़ैत अछि। कथाक निर्णायक गति **पुरान कथन सुधारब → घटनाक एकाधिक सम्भावित कथा अलग करब → सुनबाक समयक नब व्यवस्था → दायित्वक आर्थिक उत्तरजीवन** अछि। ई समाप्ति एकटा अपराधी भेटबाक कथा नहि।

चारू अध्यायक कथनकालमे तीन आधुनिक कार्यालयी दिन आ एक द्विकालीन अध्याय अछि। १३७, १३८ आ १४० आधुनिक घटनाधारामे ठोस भोर–दुपहरि–साँझक क्रम रखैत छथि; १३९ प्राचीन उदयनक कक्ष आ आधुनिक २०४० क रहीनाक दुकानक बीच बेराबेरी आवाजाही करैत अछि। कोनो आधुनिक पात्र प्राचीन दृश्यक जानकारी नहि रखैत; सम्बन्ध पाठकीय तुलनाक स्तरपर निर्मित होइत अछि। एहि स्पष्ट आख्यान-स्तरक कारण प्राचीन बहस आधुनिक समितिक न्यायिक अधिकारक स्रोत नहि बनैत। ओ कथनक नैतिक गहिराइ बढ़बैत अछि, कारण मृत मित्रक परिवार आ रहीनाक परिवार दुनू अपन अलग समयक हक माँगैत छथि।

आवर्ती वस्तु आ कथात्मक स्मृति

पुरान मापक पट्टी आ मूल प्रतिवेदन, चारि खाली फाइल, उदयनक चिपकल ताड़पत्र, रहीनाक जाम चाभी, शशिक दू पित्तरि चाभी आ मजदूरक पत्नीक सुरक्षित पर्ची—ई वस्तु बिनु पाठककैं व्याख्या सुनौने किछु अनुभव लौटा दैत अछि। चिपकल पन्ना दू कालमे बचाओल जाइत अछि, मुदा प्राचीन दृश्य विवादित मतक लेखन बचबैत अछि आ आधुनिक दृश्य सिलाइ-कामक मजदूरीक माप। १३८ क टूटल जलछाया १३९ मे एक धब्बा बनि फेर अलग भेल फाइल-छाया बनैत अछि। वस्तु-आवर्तन कथा कैं स्मृतिक अन्तःलय दैत अछि; ओहि लयक कारण चारि अध्यायक लंबा कार्यालयी संवाद पूर्णतः नीरस नहि होइत।

चरित्रसभक अलग आवाज आ असमान स्थान

गोमती–रमा बारम्बार कथाक केन्द्र छथि, मुदा अदिति, तारा, ममता, रानी, पारो, रहीना, राघव, शशि, कबीर आ सरिता अपन-अपन अनुभवसँ दृश्य बदलैत छथि। विशेष रूपसँ ममता अपन पहिनुक लिखित असहमति बचबैत

छथि; रहीना अपन बयान फिर्ता लेलाक बदला काजक गणना माँगैत छथि; राघव अपन भतीजाक वाणीपर नियन्त्रण नहि करबाक निर्णय करैत छथि; पार्वती हाट-दिनक मजदूरी बचएबाक लेल सुनवाईक दिन चुनैत छथि। एहि विशिष्ट इच्छासभसँ बहुस्वरताक ठोस अवस्था बनैत अछि। तथापि हर पात्र अपन अनुभवक सीमा बहुत साफ प्रकारेँ व्यक्त करैत अछि। वास्तविक संवादक अस्पष्टता, भ्रमित स्मृति, अधीर आंशिक वाक्यक अधिक प्रयोग एहन विपुल कथाविश्वमे महत्त्वपूर्ण भिन्नता आनि सकैत छल।

मूल उपलब्धि, प्रतिपक्ष आ अगिला कथानकक प्रेरणा

एहि चारि अध्यायक श्रेष्ठ उपलब्धि ई अछि जे शान्ति-पर्व शोकसँ बादक राजकाजकेँ केवल सफल पुनर्निर्माणक कथा नहि बनबैत। समितिक निर्णय सामाजिक जीवनक सम्पूर्ण समाधान नहि। पुरान प्रतिवेदन वापस भेल, मुदा नब माप पूरा नहि; आरोप अलग कएल गेल, मुदा दोष तय नहि; प्राचीन विवाद फेर शुरू भेल, मुदा सहमति नहि; विवादरहित मजदूरीक अंशक संस्तुति भेल, मुदा पूरा भुगतान नहि। अन्तिम अध्यायमे तय उत्तर-दिन दैनन्दिन जीवनक ठोस परिवर्तन अछि, जकरा अदालतक फैसला कहब गलत हएत। ई खुलल परिणति उत्तरकाण्डक दीर्घ संरचनाकेँ सम्भावित औचित्य दैत अछि।

मुख्य संरचनात्मक जोखिम मुदा पुनरावृत्तिक अछि : एकेक अध्यायमे कागदक अलग पंजी, सीमित सहमति, अनिर्णीत उत्तर आ अगले दिनक पत्रक समान विन्यास अनेक बेर अबैत अछि। नहि-निर्णयक सौन्दर्य अर्थवान रहबाक लेल ओकर कालिक दाम, व्यक्तिक स्वभाव आ स्थल-विशेष बदलैत रहबाक चाही। एहि चारि अध्यायमे रहीनाक बेटी, ममताक घरक पुस्तक, राघवक कारखानाक मजदूर, पिताक पर्चीसँ नाव बना चाहनिहार बच्चा आ सरिताक शोक ई आवश्यक विविधता अनैत छथि। अगिला अध्याय “मदद आ मुकदमा” लेल अन्तिम प्रश्न स्पष्ट अछि : सहायता आ संघर्षक दू अलग कथावृत्त एक-दोसराकेँ केना प्रभावित करत, बिना एकटा दोसराक कथात्मक अधिकार मेटौने।

अध्याय १४१ — मदद आ मुकदमा

भीजल पत्थरपर सन्दूक : शान्ति-पर्वक नब कथात्मक वस्तु

“मदद आ मुकदमा”क आरम्भ एकटा लोहेक सन्दूकसँ होइत अछि। समिति-कक्षक सीढ़ीपर भीजल पत्थरक ऊपर राखल एहि वस्तुपर पुरान रङमे ‘चिकित्सा-सहायता’ लिखल अछि; भीतर रसीद, औषधि-पर्ची आ खाली कपड़ाक थैली अछि। ई परिचय सहायता-आख्यानक सरल प्रस्तावना बनि सकैत छल, मुदा रमा सन्दूक भीतर लऽ जाएबासँ पहिने ओकरा छोड़ि गेल व्यक्तिक अनुमति आ प्राप्तिक प्रश्न उठबैत छथि। अर्थ एहि ठाम घटनाक बाद जोड़ल उपदेशसँ नहि, वस्तुक प्रवेश-क्रमसँ बनैत अछि : पहिने सन्दूक, फेर चाभी, फेर दानदाता, आ अन्तमे ओ परिवार जकर जीवनपर सहायता आ हिंसा दुनूक छाया पड़ल अछि। पाठककेँ आरम्भमे वस्तुक सामाजिक श्रेणी ‘सहायता’ भेटैत अछि, मुदा पात्रक व्यवहार ओकर कथा-भूमिका क्रमशः विवादित करैत जाइत अछि।

रमेश्वरक हाथमे सन्दूकक दू चाभी छथि। अध्याय १४० क शशिक दू चाभी आ आगामी अध्याय १४३ क रुहानीक चाभीक गुच्छा याद करैत पाठक देखैत छथि जे चाभी एहि उत्तरकाण्डमे स्थिर अर्थवला प्रतीक नहि अछि। शशिक

चाभी स्वामित्व आ प्रवेशक विवाद खोलैत छल; एतय चाभी दानदाताक वस्तुपर नियंत्रणक सीमा पूछैत अछि; आश्रयमे आगाँ ओ प्रशासनक विकेन्द्रीकरणक वस्तु बनत। एकरे धातुक पुनरागमन भिन्न पात्र आ भिन्न निर्णयक कारण अर्थ बदलैत अछि। एहि वस्तु-आवृत्तिसँ कथा एक अध्यायसँ दोसर अध्यायक बीच निरन्तरता रचैत अछि, तथापि प्रत्येक प्रसंगक भौतिक स्थिति सुरक्षित रखैत अछि।

घटना-पञ्जी : दानक सार्वजनिकता सँ त्यागपत्रक अस्वीकृति धरि

मुख्य घटनाक्रमक पहिल चरण देवव्रतक सहायता-विवरण प्रस्तुत करब आ कबीरक महेशक मृत्यु-संबन्धी प्रश्न उठायब अछि। ‘समाजसेवाक मान्यताक आधारपर संरक्षण’ शीर्षक मसौदा सोझाँ अबैत अछि। देवव्रत स्वयं तत्क्षण आपराधिक अपराध स्वीकार नहि करैत छथि, आ कबीर सेहो हुनकर सहायता-मूल्य अस्वीकार नहि करैत छथि। कथात्मक संघर्ष एतय दू पात्रक सरलीकृत नीक-बेजाय विभाजनमे नहि; सहायता देनिहारक सामाजिक प्रतिष्ठा आ पीड़ितक स्वतंत्र कथा कहबाक स्थान बीच बनैत अछि। महेशक पत्नी अपन बेटी संग पहुँचैत छथि, आ आगू राखल संयुक्त उपस्थितिक परिस्थिति अस्वीकारि अलग कक्ष चुनैत छथि। हुनकर अलग बैसब कथाक दृश्य-विन्यास बदलैत अछि : मुख्य मेजपर चलैत बहसक बगलमे एकटा एहन कोठरी बनैत अछि जतय पीड़ित परिवार अपन बोलबाक समय स्वयं निर्धारित करैत अछि।

दोसर चरणमे रमा सहायता-पर्चीक अस्पताल-प्राप्ति आ गोदाम-निर्गत अलग करैत छथि; देवव्रत अपन पूर्व संख्या-संशोधन स्वीकार करैत छथि, मुदा वस्तुक अन्तिम उपयोग एखन मिलानक विषय रहैत अछि। शबनम मलिकक प्रवेश सँ कथाक दिशामे नव मोड़ अबैत अछि : एक अनधिकृत नाम-पट्टीक भरोसापर फाइल खोलल गेल छल; कर्मचारी तीन आवरण देखेनाइ स्वीकारैत अछि, भीतरक विवरण देखल की नहि ओकरा निश्चित कहि नहि सकैत। ई घटना देवव्रतक सहायताक प्रश्नसँ स्वतन्त्र अछि, मुदा दानक प्रतिष्ठा आ प्रवेश-अधिकारक एक्के सार्वजनिक भाषा कतेक खतरनाक भऽ सकैत अछि से दृश्यात्मक रूपमे उद्घाटित करैत अछि। शबनम अपन उपनामक उपयोगकेँ निजी सम्मानक मात्र विषय नहि बनबैत छथि; ओ रिकॉर्डमे अपन असहमतिक ठोस स्थान माँगैत छथि।

तेसर चरणमे महेन्द्र महासेठ आ बिनोद जायसवाल दू अलग खातासहित अबैत छथि। एकटा मध्यस्थ ढुलाई-खिड़कीक समान मुहरसँ हुनकर दू व्यवसाय एक नहि भऽ जाइत; अलग खरीद, अलग तिथि आ अलग मालिकानाक सुधार होइत अछि। एहि लघु प्रसंगक कार्य मुख्य मुकदमाक निर्णय नहि, समान नामसँ एकीकृत कएल व्यक्ति-जीवनक विघटन अछि। अध्यायक शेष भागमे ई घटना एकटा अलग गलीमे जाएबवला दृश्यसँ समाप्त होइत अछि। सुधारक प्रति टाँगलासँ पुरान सार्वजनिक आरोपक स्याही बिलायल नहि होइत—ई अन्तिम छवि “सुधार” शब्दक सम्भावित अति-आशावादी अर्थ सीमित करैत अछि।

चौठम आ सर्वाधिक निर्णायक परिवर्तन प्राप्ति-फॉर्मक भीतर छपल ‘आगाँ कोनो दावा नहि’ वाक्यक उद्घाटन अछि। वस्तु लेबाक रसीद आ भविष्यमे दावासँ हटबाक कथन एकहि कागदपर ठूँसल अछि। एक स्त्रीक अँगूठाक निशानक लग उपस्थित व्यक्तिक जानकारी खाली अछि; कथावाचक एहि खाली स्थानकेँ तत्काल दोषनिर्णय नहि बनबैत छथि। महेशक पत्नी अलग कक्षसँ सूचित करैत छथि जे सहायता-प्राप्ति देखतीह मुदा मृत्यु-बयान दानक

समारोहमे नहि देतीह; बादमे ओ पुरान निशानकेँ तत्क्षण अपन कहबासँ इन्कार करैत मूल पन्ना देखबाक माँग करैत छथि। एहि दू प्रवेशक बीच हुनकर पात्र-विकास ककरो अनुमति भेटबाक प्रतीक्षा नहि, अपन बोलीक परिस्थिति निर्धारित करबाक अभ्यास अछि।

रुखसानाक रसोइक बकाया, सरिताक नैराक मृत्यु-पुष्टिक बात, उर्मिलाक बकाया मजदूरी आ निजी उपचार-फाइलक गोपनीयता एहि कक्षक बहसमे प्रवेश करैत अछि। अन्तिमे गोमती तीन पृथक पत्रपर सही करैत छथि—सहायताक मिलान जारी, त्याग-वाक्यक स्वतंत्र समीक्षा जारी, महेशक मृत्यु-जाँच सक्षम प्राधिकारी लग जारी। ई तीन दस्तावेज बनब वस्तुतः घटनात्मक परिणति अछि। अपराधक अन्तिम न्यायिक निर्णय, पुरान अँगूठाक उत्पत्ति आ औषधिक मार्गक पूर्ण मिलान एहि अध्यायमे नहि होइत; तेँ सफलताक घोषणा नहि, अलग-अलग कथा-रेखाक जीवित रहब समापनक विशेषता अछि।

कथनकाल, दृश्यान्तर आ पीड़ित परिवारक निजी समय

अध्यायक बाहरी समय सबेरे सन्दूक रखलासँ साँझ दरबज्जा बन्द होए धरि पसरल अछि। महेशक पुरान धमकी, मृत्यु, रोगी-सहायता आ वस्तुक पूर्व निर्गत वर्तमानक बातचीतमे पुनः उपस्थित होइत अछि। ई पूर्वदीप्ति लम्बा दृश्य-रूपमे नहि, पुरान पत्र देखाएब आ परिवारक छोट स्मृति-उच्चारणसँ घटैत अछि। कथन-अवधिमे कार्यालयी संवादक विस्तृत दृश्य आ प्राप्ति/पत्रक संक्षिप्त सारांश एक-दोसराक बेराबेरी अछि। पाठांश १८ मे साँझक संकेतक बाद पाठांश २३ मे ‘दुपहरि ढललाक बाद’ कहि सन्दूक खोलबाक दृश्य उपस्थित होइत अछि। एकरा अनिवार्य समय-विरोध कहबाक बदला कथानकक हलुक कालिक ढील मानब उचित अछि : लेखक अलग घटना-क्रम समेटैत कालचिह्न बहुत स्पष्ट रखैत छथि, मुदा सँधान सर्वत्र समान रूपसँ कठोर नहि अछि।

तृतीय पुरुष कथावाचक मुख्यतः रमा–गोमतीक प्रशासनिक मेजक आसपास घूमैत छथि; तथापि महेशक पत्नी आ बेटीक दृश्य दृष्टिकेन्द्रण बदलि दैत अछि। बच्चीक नीला झोरा, माय द्वारा फीता बेर-बेर सम्हारब, आ बेटी द्वारा बनाओल दू घर—एकमे दरबज्जा आ दोसरमे खिड़की—संस्थागत बहसक बीच निजी भयक संवेदी भाषा बनैत अछि। बच्चीक चित्रक दुनू दरबज्जा खुलल अछि; ई कोनो मुकदमाक विजय नहि, पीड़ित परिवारक विकल्प बन्द नहि भेलाक दृश्यात्मक उपमा अछि। सरिताक दृष्टि सहायता-सन्दूकपर नहि, भीजल सड़कपर रहैत अछि। एहिसँ शोककेँ प्रदर्शनक केन्द्र बनेबाक अपेक्षा पात्रक निजी काल-संसार बचैत अछि।

बहुस्वरता, आवर्ती वस्तु आ मूल्यांकन

देवव्रतक जटिलता अध्यायक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। हुनका सहायता देबाक आत्मविश्वास अछि; आरम्भमे जाँच हुनकर सामाजिक श्रेयसँ पहिले स्थान पाओत से हुनका असहज लगैत अछि। अन्तमे ओ पुरान ‘संरक्षण’ मसौदा छोड़ैत, कागद उपलब्ध करब स्वीकारैत, तथापि अपन बचावक अधिकार रखैत छथि। कबीर हुनकर एहि कथनकेँ ‘अपराध स्वीकार’ रूपमे गलत लिखाएब रोकैत छथि। विरोधी व्यक्तिक कथनकेँ सही सीमा देबाक ई क्षण कबीरक चरित्र-विकासक महत्त्वपूर्ण सङ्केत अछि; नैराक मृत्यु-शोक हुनकर भाषाकेँ बदला लऽ लेबाक एकरे दिशा नहि बनबैत। रमा–गोमतीक निश्चय सेहो निर्विवाद आदर्श-प्रशासन नहि : एतय वास्तविक परिणाम पत्र, सुनवाई आ अगिला दिनक उत्तरमे वितरित अछि, जकरा पूरा हेबाक कोनो निश्चित प्रतिज्ञा नहि।

वस्तुसभक आवर्ती जाल अत्यन्त सजग अछि—लोहेक सन्दूक, दू चाभी, खुलल/बन्द कोठरी, उघारल अँगूठाक निशान, सरिताक खाली हाथ, स्याहीक बचल चिन्ह। एहि वस्तु-सम्बन्धसँ ‘मदद’क सामाजिक कथा ‘मुकदमा’क कथासँ बराबरीक स्थान पबैत अछि। मुदा कलात्मक जोखिम ई अछि जे असंख्य पात्र प्रवेश कऽ एकदम उपयुक्त भेद बतबैत छथि; कथावाचक प्रत्येक कथनकेँ शीघ्र श्रेणीबद्ध करैत छथि। देवव्रत–कबीरक सूक्ष्म असहमतिसँ असल जीवंत तनाव उठैत अछि, जबकि किछु सहायक कर्मचारीक त्वरित गलत शीर्षक लगायब अपेक्षाकृत योजनाबद्ध शिक्षण-दृश्य बनि जाइत अछि। तइयो पत्नी आ बच्चीक दृश्यक संयम, रुखसानाक भातक धुआँ आ दोसर गलीमे जाइनिहार दू व्यापारी एहि प्रक्रियात्मक गद्यकेँ जीवनक असमान कालमे फेर स्थापित करैत अछि। अध्यायक अन्तिम प्रश्न दवाइक स्रोतक ओरि जाएत; ई अगिला अध्याय १४२ क कारणात्मक उद्घाटन अछि, कोनो अप्रत्याशित बाहरी मोड़ नहि।

अध्याय १४२ — दवाइक स्रोत

तीन पेटीक रचना : एक कक्षक भीतर बहुतो मार्ग

“दवाइक स्रोत” आरम्भे अस्थायी अस्पतालक औषधि-कक्षमे तीनटा पेटी उपस्थित करैत अछि : स्वीकृत भण्डारक नीली पट्टी, दानदाताक लाल स्याही आ नाम-विहीन तेसर पेटी। ई रङ-विन्यास सरल रहस्यरचनाक साधन बनि सकैत छल—कोन पेटीमे अपराधक रहस्य अछि?—मुदा सलमा तेसर पेटीक सीलबन्द रूपक तस्वीर लेबैत छथि आ सत्यापित दवाइसँ चलैत उपचारक क्रम अलग रखैत छथि। कक्ष-स्थल एतय केवल अस्पतालक पृष्ठभूमि नहि अछि; दरबज्जा, सील, भण्डारण आ चिकित्सकीय सम्पर्क कथानकक गति निर्धारित करैत छथि। पेटी नहि खोलबाक निर्णयक कारण कथा ठहरैत अछि, किन्तु रोगीक उपचारक समय ठहरबाक अनुमति नहि। ई दू गतिसँ अध्याय अपन तनाव रचैत अछि।

अध्याय १४१ क अन्तिम प्रश्न—कौन खेप कतय सँ आयल—दृश्य बदलि १४२ क पहिल औषधि-कक्ष बनैत अछि। कथनक ई अनुक्रम अत्यन्त सघन अछि : पिछला अध्यायक लोहेक सहायता-सन्दूकक अस्पष्ट पर्ची आब अस्पतालक तीन अलग आवरण, भण्डारण-बही आ प्राप्ति-पंजीमे खुलैत अछि। लेखक कोनो गुप्त कक्षसँ सनसनीपूर्ण अपराधी नहि निकालैत; किछु वस्तु सुरक्षित, किछु उपयोगी, किछु अधूर रूपमे चिन्हल रहैत अछि। रहस्यक संवेदना दोषीक तत्काल उद्घाटनसँ नहि, एकहि यात्रा कहने वस्तुक भिन्न कागदी यात्रासँ विकसित होइत अछि।

घटना-पञ्जी : आठ-नौ बण्डलसँ चारि अलग कार्रवाई धरि

पहिल घटनात्मक मोड़ खरीद-पर्चीक नौ बण्डल आ प्राप्ति-पंजीक आठ बण्डलक असमान संख्या अछि। एक लिपिक तुरन्त चोरीक कथा बनबय चाहैत अछि; सलमा परिवहन, स्थानान्तरित रोगी आ फिर्तीक सम्भावित पथ खुलल रखैत छथि। अनिरुद्धक स्मृति कहैत अछि जे एक बण्डल रोगीक संग गेल होयत, मुदा ओ अपन यादकेँ पूर्ण कथनक स्थान नहि दैत छथि। एहिसँ अध्यायक कथा-कथनमे ‘स्मरण’ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा सर्वज्ञ

आख्यान-सूत्र नहि। अनिरुद्धक घायल बामा हाथ आ सलमाक मेजक पाछाँ हुनका नहि बैसब देब चिकित्सकीय नेतृत्वक परिवर्तनकेँ अधिकारक वाक्यमात्र नहि, शरीरक स्थान-विन्यासमे देखबैत अछि।

दोसर मोड़ मीना साहक धातुक पात्रक प्रवेश अछि। ओ कार्यशालाक नमूना, पुरान बिल आ आधा रोकल मजदूरी अनैत छथि। एक अधिकारी ‘चिकित्साक पात्र’ शब्दसँ औषधि-वितरणक पूरा कथा पढ़ि लेबय चाहैत अछि; मीना ओकर सीमित अर्थ कहैत छथि—पात्रक मरम्मतिक बिल भीतर रखल वस्तुक परिचय नहि अछि। एहि विवादक बीच चून–सीपक पुरान निर्माण-पद्धति प्रवेश करैत अछि। एकहि तिथिमे धातु, चून आ औषधि सम्बन्धी काज सम्पन्न भेला पर कथा तुरन्त एक षड्यन्त्रमे एकरूप नहि भऽ जाइत। अदिति सुधारल अपन पुरान प्रतिवेदन अनैत छथि, ललित पुरान निर्माण-वस्तुक स्थानीय पहचान बतबैत छथि, नमूना-परीक्षणक दृश्य आगाँ बढ़ैत अछि। लेखक संकट-कथाकेँ कारणक एकरे तीव्र खोजसँ हटाकऽ विविध श्रमक अनुभवमे पसारैत छथि।

तेसर मोड़ विभा अग्रहरीक आपूर्ति-खाता अछि—खरीद-दाम, ढुलाई, शीत-संग्रह आ लाभक अलग लेखा। विभा एक असमान लेबलवला पेटी पहिले सँ रोकने छथि; सार्वजनिक अफवाह हुनका जमाखोरीसँ जोड़ैत अछि। कथामे ओ केवल निर्दोष व्यापारीक प्रतीक नहि : ओ लाभक सीमा पर विचार करब स्वीकारैत छथि, मुदा चालकक मजदूरी आ दवा-संरक्षणक मूल्यकेँ शून्य नहि बनबय चाहैत छथि। एहि प्रसंगमे आवाजक स्तर मीना सँ विभा धरि बदलैत अछि—एक कसेराक विशिष्ट श्रम आ औषधि-वितरकक व्यावसायिक समय एक्के समग्र ‘दवा’ शब्दमे नहि समबैत अछि।

चौठम मोड़ रहीम मंसूरीक चारि रोकल बोरा मुक्त करबाक आदेश अछि। एतय राहतक लयक बीच प्रत्यक्ष दीर्घ समय अबैत अछि : अपीलक तीन यात्रा, नकलक खर्च, ग्राहकक मृत्यु आ हुनकर बेटीक प्रतीक्षाक चारि मास। आरोप हटब वास्तविक स्थिति-परिवर्तन अछि, मुदा बितल समय वापस नहि अबैत। अन्तमे रहीम आ विभाक चालक एकहि गाड़ीमे अलग पर्ची रखैत छथि। वाहन फेर संयुक्त स्थान अछि, पर सामानक कथात्मक पहिचान अलग। ई छोट दृश्य पहिने के सार्वजनिक आरोप आ साझेदारीक भ्रमक अनौपचारिक प्रतिवाद अछि।

अन्तिम निर्णायक परिवर्तन चारि आदेश बनब अछि : सत्यापित दवाइक निरन्तर पहुँच, सन्देहास्पद खेपक स्रोत-जाँच, मीना–रहीमक देयक अलग कार्रवाई, आ चून–सीपक नमूनाक स्थानानुसार परीक्षण। एक लिपिक ‘दवा मामला समाप्त’ शीर्षक लिखबय चाहैत अछि; गोमती ओकर स्थानपर ‘उपचार जारी, स्रोत-जाँच जारी’ लिखबैत छथि। एहि दुई ‘जारी’क पुनरावृत्ति एहि अध्यायक संरचनात्मक सूत्र अछि—चिकित्सकीय समय आ जाँचक समय दुनू चलैत अछि, मुदा एक-दोसराकेँ पूर्णतः नियंत्रित नहि करैत। सुरक्षित दवा गाड़ीपर निकलैत अछि, चारि बोरा घुरैत अछि, मीनाकेँ मजदूरी-आदेशक प्रति भेटैत अछि; नाम-विहीन तेसर पेटी एखनहुँ सीलबन्द अछि। परिणाम बहुविध अछि, समग्र समाधान नहि।

काल-स्थान, दृष्टिकेन्द्रण आ अनुपस्थित मृत्यु

मुख्य कथा भोरसँ साँझक एक दिनक स्थलयात्रा अछि—औषधि-कक्ष, ओसारा, गोदाम, पुनः बैठक आ सड़क। मुदा उपस्थित वस्तुसभ कएक महत्त्वपूर्ण पिछिला समय घुसा दैत अछि : अनिरुद्धक पुरान निर्णय, जमुना देवीक उपचारक राति, भवनक असुरक्षित बाट, रहीमक चारि मास, मीना द्वारा दोसर पात्र बुझाएब, नैरा–उर्मिलाक मृत्यु।

एहि अतीतक प्रस्तुति मुख्यतः संवाद आ सीमित स्मृतिसँ होइत अछि; स्वतंत्र महाभारतीय अथवा अन्य प्राचीन दृश्य एहि अध्यायमे नहि अछि। कथावाचक अनिरुद्धक अन्तरमनमे मात्र स्थिर नहि; सलमाक वर्तमान आदेश, मीनाक पेशागत आत्मसम्मान, विभाक बाजारगत भय आ रहीमक अपीलक दीर्घ थकान बीच दृष्टि बदलैत छथि।

रहीमक पुरान तकियाक खोल एकटा विशेष स्मृति-वस्तु अछि। एक मृत ग्राहकक बेटी गद्दाक वापसीक प्रतीक्षामे अछि; ई दृश्य चारि बोरा मुक्त हेबाक संस्थागत उत्तरकेँ मृत व्यक्तिक निजी घरेलू अवशेषसँ जोड़ैत अछि। अनिरुद्ध खिड़कीसँ एक लड़का अपन बाबूकेँ पानि देबैत देखैत छथि; वर्तमान दृश्य पछिला उपचार-दिनक स्मृतिपथ खोलैत अछि। कथावाचक ई मानसिक आगमनकेँ मृतकक आवाज अथवा घटनाक निश्चित पुनर्निर्माण बनबैत नहि। स्त्री-पर्वक शोक एतय बिलायल नहि; ओकर रूप शरीर-रक्षा, विलम्ब आ बचल लोकक जिम्मेदारीक बीच नब स्थिति ग्रहण करैत अछि।

बहुस्वरता, अन्तिम चाभी आ कलात्मक प्रतिपक्ष

सलमा, अनिरुद्ध, रमा, गोमती, मीना, विभा, रहीम, ललित, अदिति आ रुहानी एकाधिक सामाजिक भाषाक वाहक छथि। मात्र संख्या बेसी भेला सँ बहुस्वरता सिद्ध नहि; ई ओहि ठाम सजीव होइत अछि जतय पात्र अपन-अपन जीवनक अनुपस्थित लागत कहैत छथि। मीना मजदूरीक पहिल भुगतानकेँ बयानक बदला दान नहि मानैत छथि; विभा चालकक वेतन आ औषधि-सुरक्षा जोड़ैत छथि; रहीम अपीलक खर्च आ घरक प्रतीक्षाक दीर्घता राखैत छथि; रुहानी दवा प्राप्त करबाक अधिकारकेँ अपन एकल चाभीसँ स्वतंत्र करबाक प्रश्न उठबैत छथि। ई परस्पर विरोधी लक्ष्य नहि, भिन्न जीवनकालक सहस्थिति अछि।

एकर कलात्मक सीमा तइयो पर्याप्त स्पष्ट अछि। कथावाचक बारम्बार सबल पात्रक मुँहसँ अत्यन्त सटीक, समान संरचनावला विभाजन कहलवैत छथि—ई अलग, ओ अलग; ई जारी, ओ जारी। एहन वाक्यक नितान्त व्यवस्थित आवृत्ति अस्पतालक हड़बड़ी, उपचारक भय आ श्रमिकक व्यग्रताक असंगठित ध्वनिसभकेँ कम करि सकैत अछि। दू वा तीन पेटीक नाटकीय उद्गम रचनात्मक तनाव जगा सकैत छल, मुदा विस्तारमे कतेको सहायक पात्रक सूची दृश्यकेँ फाइल-पाठक रूप दैत अछि। तथापि अनिरुद्धक बामा हाथ, रहीमक तकियाक खोल, मीना द्वारा कएल नमूनाक प्रदर्शन आ साँझ अलग गन्तव्यक गाड़ी एहि जोखिमकेँ सीमित करैत अछि। अन्तिम पंक्तिक ‘आश्रयमे चाभी एकटा छल, आवश्यकता अनेक’ अगिला अध्याय १४३ क प्रत्यक्ष कथात्मक बीज बनैत अछि।

अध्याय १४३ — आश्रयक नियम

अटकल चाभीसँ सामूहिक निर्णय धरि : वस्तुक भीतर संस्थाक कथा

“आश्रयक नियम”क पहिल क्रिया अछि—ताला दू बेर घुमब, तेसर बेर चाभीक अटकि जाएब। ई तकनीकी खराबी मात्र नहि। रुहानीक एक गुच्छामे फाटक, भण्डार, दवाइक पेटी आ पछिला कक्षक चाभी छथि। एहन आरम्भ पाठककेँ पहिनुक ‘रुहानीक चाभी’ आ अध्याय १४२ क अन्तिम प्रश्न स्मरण करबैत अछि। पहिने संकटमे जीवन बचेनिहार व्यावहारिक अधिकार एखन दैनिक आश्रयक अनेक आवश्यकताकेँ एक व्यक्ति लग रोकि सकैत

अछि। लेखक एहि अन्तरकेँ रुहानीक नैतिक असफलताक आकस्मिक उद्घाटन नहि बनबैत छथि; चाभी अटकबाक भौतिक अनुभवसँ परिवर्तनक आवश्यकता महसूस करबैत छथि।

आश्रयक चारि पन्ना—दरबज्जा, भण्डार, उपचार आ शिकायत—कथा-व्यवस्थाक नब अन्तरङ्ग मानचित्र बनैत अछि। ओ चारि आरोपक फाइल अथवा अस्पतालक तीन पेटी जकाँ बाहरी समिति-उपकरण नहि। घरक प्रतिदिनक कार्य कोना चलय, ककरा भीतर बोलबाक अधिकार रहय, ककर निजी इतिहास गोपनीय रहय—ई प्रश्न एहिमे सन्निहित अछि। कथावाचक आरम्भमे रुहानी आ रुखसानाक तात्कालिक तकरार देखबैत छथि; जुबैदाक कागद रखनाइसँ ओ तकरार सामूहिक निर्णयक दृश्य बनैत अछि। रुहानीक प्रश्नक यात्रा ‘हम चाभी खोलि सकैत छी’ सँ ‘हम नहि रहब तँ काज चलत की’ धरि अछि। ई पात्रक वास्तविक दृष्टिकोण-परिवर्तन अछि, केवल भाषण नहि।

घटना-पञ्जी : चारि पन्ना, दू विवाद आ चाभीक हस्तान्तरण

पहिल चरणमे गोपनीय औषधि चाहनिहार युवती पूछैत अछि जे तीन सदस्यक समिति बनलापर ओकर निजी रोगक पन्ना तीनू पढ़त की। ओकरा कोनो सार्वजनिक परिचय देबाक बाध्यता नहि राखल जाइत। चम्पा दोसर प्रश्न अनैत छथि : आश्रयक बाहर रहि काम करनिहार व्यक्ति निर्णयमे बोलि सकताह की, आ भीतर रहनिहारकेँ मत देबाक पहिने निजी जीवन खोलय पड़त की ? एतय कथा संस्थाक नब सभाक आरम्भकेँ सहमतिजन्य उत्सव नहि, बहुविध असुरक्षाक तकरार बनबैत अछि। रुहानी रहनिहार आ नियमित श्रमिकक भिन्न प्रतिनिधित्व, चिकित्सकीय गोपनीयता आ आपातकालीन प्रवेशक सीमित अधिकार प्रस्तावित करैत छथि। प्रस्ताव तत्काल स्वीकृति नहि अछि; आगामी बहस ओकर ठोस रूप बदलत।

दोसर चरण रानी हलालखोरक टोलीक प्रवेशसँ शुरू होइत अछि। रानीक फाटल चप्पलक पट्टा, घण्टा-पंजी आ बन्द नालीक मुँहक समक्ष कथा सुरक्षित निवासक आवश्यकता आ सफाइ-श्रमक जोखिम एकहि आँगनमे राखैत अछि। निवासीक प्रश्न—नाली नहि खुलल तँ घरमे पानि आएत—सार्थक अछि; रानीक उत्तर अपन देहक जोखिम आ अलग कामक समय खोलैत अछि। अध्याय रानीकेँ सर्वदा इन्कार करनिहारी पात्र नहि बनबैत : सुरक्षित बाहरी सफाइ लेल टोलीसँ विचार करबाक समय माँगल जाइत अछि; भीतरक बन्द नालीक काम अलग रहैत अछि। अन्तिमे सुरक्षित बाहरी सफाइ होइत अछि, मुदा अन्दरक कारण शेष अछि। एहि अपूर्णतासँ आश्रयक नियम बनबाक प्रक्रिया वास्तविक भौतिक परिसरक सीमामे बान्हल रहैत अछि।

तेसर चरण माधव रोनियारक खराब पैकिङ्ग-वस्तु आ आश्रयक अलमारीक बिलक गड्डमड्ड प्रविष्टि अछि। माधव अपन अस्वीकृत खेपक घाटा आश्रयपर नहि थोपबाक निर्णय करैत छथि, पर वितरक द्वारा भविष्यक व्यापारमे हुनका चुप राखबाक शर्त सेहो नहि मानैत। ई प्रसंग मौजूदा चाभी-विवादसँ दूर बुझा सकैत अछि, किन्तु दृश्यात्मक काम ई करैत अछि जे आश्रयक हितक नामपर बाहरी कारीगरक स्वतन्त्र निर्णय हड़पल नहि जा सकैत। रुहानी साक्षी बनि सकैत छथि, माधवक दोकानक मालिक नहि। एहि भिन्नता-संरचनासँ रुहानीक चाभी छोड़बाक निर्णय निजी मनोभाव नहि, व्यवहारमे परखायल सम्बन्ध बनैत अछि।

चौठम चरण मतदान आ हस्तान्तरण अछि। रुखसाना भण्डारक समय, दू जिम्मेवारक उपस्थिति, लिखित निकासी-पावती माँगैत छथि; वृद्धा आपातकालमे फाटक बन्द रहि जेबाक भय रखैत छथि; चम्पा प्रतिनिधि स्वयं शिकायतक विषय भेला पर निर्णयक वैकल्पिक बाट माँगैत छथि। बहुमतसँ नियम स्वीकृत होइत अछि; जुबैदा प्रतिनिधि बनैत छथि आ रुखसाना रातिक जिम्मेदारी लैत छथि। दू सदस्यक असहमति—पहराक पारिश्रमिक आ कोठरीक गोपनीयता—मत-पंजीमे रहैत अछि। रुहानी चाभी जुबैदाक हथेलीपर रखि अपन नामक पाछाँ ‘सदस्य’ लिखैत छथि। एहि एक शब्दक परिवर्तन नब संस्थाक सबसँ घन दृश्यात्मक परिणति अछि; कोनो भाषणक बलपर नहि, हस्ताक्षर आ पदनामक क्रियासँ पात्र बदलैत अछि।

कथनकाल, काल-स्थान आ नब पात्रक उदय

मुख्य समय भोरक अटकल चाभीसँ सांझक मतदान आ अगिला भोरक फर्श-सफाइ धरि फैलैत अछि। बीचमे आश्रयक पहिनुक राति, सुरक्षित सफाइक रोकल मजदूरी, वितरकक पुरान पर्ची, संकटमे रुहानी द्वारा फाटक खोलबाक स्मृति आ निजी चोट बारम्बार उघड़ैत अछि। ई स्मृतिसभ स्वतंत्र पुरान आख्यान-काल नहिए; वर्तमान संवाद आ रुहानीक क्षणिक अन्तरदृष्टिमे प्रवेश करैत अछि। कथावाचक तृतीय पुरुष अछि, मुदा रुहानीक नियंत्रण छूटबाक डर ओकरा मानसिक केन्द्र बनबैत अछि। दोसरे दिस रानीक चप्पल, माधवक थैली, युवतीक गोपनीय प्रश्न आ रुखसानाक चूल्हा पात्र-दृष्टिकेन्द्रक वितरण करैत अछि।

स्थानक अर्थ अतिशय महत्त्वपूर्ण अछि। आश्रयक फाटक आ दवा-कक्षरूपक सीमासभ सुरक्षित प्रवेशक प्रश्न अछि, मुदा पिछिला नाली आ बालिकाक सम्भावित पढ़बाक कोठरी एहन जगह छथि जतय बिना मापने अथवा मरम्मति-देखने केवल नियमसँ सुरक्षा सम्भव नहि। अध्यायक आखिरी दृश्य बच्चीक पढ़बाक प्रश्न लऽ अबैत अछि। नब प्रतिनिधि अपन अधिकारक सीमा स्वीकारि ओकर प्रश्न आगाँक सभाक लेल दर्ज करैत छथि। एतय प्रतिनिधित्वक परिणाम पहिल बेर समिति-स्थापनामे नहि, एक बच्चीक प्रश्न लिखल जाएबामे देखाइत अछि। पूर्व अध्यायक उपसंहार अगिला अध्याय ‘कामक जिज्ञासा’क जनक बनैत अछि।

घरेलू श्रम, स्त्रीक आवाज आ कथात्मक उपलब्धि-सीमा

रुखसानाक ‘भात अधपकल नहि रहय’ कारण सभा रसोइक समयक बाद राखल गेल। ई साधारण समय-समायोजन अध्यायक केन्द्रीय कथात्मक नीति बनैत अछि : सार्वजनिक निर्णयक समय भोजन बनौनिहार स्त्रीक श्रमकेँ ध्यानमे राखि बदलल जाए। रानीक असुरक्षित कामक अस्वीकार, चम्पाक गोपनीयता, माधवक व्यावसायिक स्वतन्त्रता आ जुबैदाक निर्वाचित भूमिका—चारू अलग पात्रक आवाज रुहानीक एकल केन्द्रकेँ क्रमशः विकेन्द्रित करैत अछि। “बहुस्वरता” एतय ककरो प्रतिनिधिक भाषणमे सभ आवाज जोड़ि देब नहि, मत-पंजीमे शर्तसहित असहमति बचनाइ अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहि अध्यायक सीमासभकेँ सेहो देखबाक चाही। बहुतेक प्रश्नक उत्तर अत्यन्त सुविचारित नियमक वाक्य बनि अबैत अछि; अस्थायी आश्रयक थकान, हिंसाक भय आ दैनिक संघर्षक बीच पात्रसभ जे सटीक भाषा प्रयोग करैत छथि, ओ कखनहुँ सहज संवादक अपेक्षा घोषणापत्रक रूप लैत अछि। माधवक खराब खेप सम्बन्धी कथा चाभीक केन्द्रीय धुरीसँ किछु दूर पसरैत अछि; तथापि बाहरी कारीगरक स्वामित्व बचएबाक

संग ओकर अनिवार्य सम्बन्ध पाठमे मौजूद अछि। विरोधक दृश्यक तनाव रानीक फाटल चप्पल, रुहानीक क्षणिक हिचक आ बच्चीक भीजल कापीमे सर्वाधिक प्रबल अछि। अध्यायक प्रभाव एहि कारण बनैत अछि जे नियम बनलाक बाद सभ पुरान क्षति मेटि नहि जाइत; भीतरक नाली बन्द, पुरान मजदूरी शेष, वितरकक विवाद अधूर आ बच्चीक पढ़बाक उत्तर अगिला दिनक प्रतीक्षा करैत अछि।

अध्याय १४४ — कामक जिज्ञासा

खड़ियाक टुकड़ा आ बच्चीक प्रश्न : शान्ति-पर्वक कथात्मक उपसंहार

“कामक जिज्ञासा”क आरम्भ भोरमे जुबैदाक पयरमे खड़ियाक आधा टुकड़ा गड़बाक अनुभवसँ होइत अछि। पिछला अध्यायक बच्चीक पढ़बाक प्रश्न आब स्थानक वास्तविक जाँच बनि घुरैत अछि। छतसँ झरैत चून, भीजल कापी आ पुरान गीलापनक कारी रेखा आश्रयक नब पाठशालाकेँ केवल विजय-उत्सव बनबा नहि दैत अछि। जुबैदा जोखिमवला भीतरक कोठरीक बदला ओसार आ खाली ओसारा चुनैत छथि। एहि निर्णयमे शिक्षाक इच्छा आ भवनक अवस्था दुनूक स्थान अछि। कथावाचक ‘खोलल गेल विद्यालय’क घोषणासँ पहिने ‘कतय नहि खोलल जाए’क दृश्य बनबैत छथि। ई नकारात्मक स्थान-निर्णय सेहो ठोस घटना अछि, कारण ओ बालकसभकेँ असुरक्षित कोठरीमे बैसबासँ रोकैत अछि।

रुहानी एहि दिन सभाक सदस्यक रूपमे बैसैत छथि, पूर्व एकल प्रभारीक रूपमे नहि। चाभीक हस्तान्तरणक परिणाम यथार्थ कथा-व्यवहारमे देखाइत अछि। रुखसाना भोजनक पहिल देगक बाद बैठकमे आबि पबैत छथि, कारण भोजन बनौनिहार दू स्त्रीक मेहनताना अलग लिखल गेल। पढ़बाक प्रश्नक उत्तर देब समाजक बड़ निर्णय होइतहुँ ओकर आधार छोट घरेलू समय-व्यवस्था अछि। एतय शान्ति-पर्व युद्धोत्तर राज्य-निर्णयसँ दैनिक सामाजिक पुनर्निर्माणक कथा धरि पहुँचैत अछि।

घटनाक्रम : प्रवेश, पाठ, उत्सव आ राशनक अगिला संकट

पहिल चरण प्रवेशक शर्तक विवाद अछि। पद्माक झोरामे तीन भाषाक निर्देश, कागद आ घण्टी अछि; संकेत रेकॉर्डिंग-यन्त्र अनैत अछि, मुदा आवाज सार्वजनिक करबाक अनुमति बिना ओकर उपयोग सीमित रखैत अछि। एक बुजुर्ग आश्रयक निवासीसभकेँ पहिल प्राथमिकता देबाक प्रस्ताव रखैत छथि; बाहरसँ ठेला लऽ आयल किशोर पूछैत अछि जे ओ पढ़बा आएत तँ बाहर रोकल जाएत की। पद्मा पढ़बाक अवसरकेँ निवास-पावतीसँ पृथक करैत छथि, मुदा आश्रयक आन्तरिक निजता सेहो सुरक्षित रखैत छथि। एहि दृश्यसँ पाठशालाक ‘समावेश’ शब्द कथनमे शून्य प्रशंसा नहि रहैत; स्थान, समय आ प्रवेशक व्यवहारिक सवाल बनैत अछि। संकेत द्वारा उभार, आकार, श्रवण आ स्पर्शक नमूना रखबाक दृश्य पाठककेँ शिक्षाक अलग-अलग इन्द्रिय-अनुभव दिखबैत अछि; किछु लोकक लेल नमूना अपर्याप्त होयबाक बात सेहो अपनहि कथामे कहल जाइत अछि।

दोसर चरण शोक आ निजताक कथा अछि। सरिता नैराक निजी कापी नहि, अपन सादा रेखावला पन्ना अनैत छथि। बच्ची नैराक लिखल बात पढ़एबाक प्रश्न उठबैत अछि। सरिता निजी लेखन सार्वजनिक नहि करबाक निर्णय रखैत, मुदा प्रश्न पूछबाक साहस सीखएबाक सम्भावना स्वीकारैत छथि। कबीर कटोरी देखि नैराक

सम्भावित प्रतिक्रिया कल्पना करैत छथि; कथावाचक ओकरा नैराक वास्तविक कथन नहि बनबैत। एक बालिका मृतक फेर पढ़ा सकैत छथि की पुछैत अछि; सरिता स्पष्ट करैत छथि जे मृत्यु उलटि नहि सकैत, सीखल बात जीवित रहि सकैत अछि। एहि दृश्य मे लेखक शोकक उत्तरजीवनकेँ शिक्षा-विजयक चमत्कारमे बदलबाक लालचसँ बचैत छथि। नैराक अनुपस्थित उपस्थिति वस्तु आ स्मृतिमे अछि, नव अलौकिक घटनामे नहि।

तेसर चरण इरफान खान आ हरीश पनसारीक वस्तुसभ अनैत अछि। इरफान सुरक्षित गाड़ीमे चौकी पहुँचबैत छथि; पुरान खराब ब्रेकवला ग्राहक-गाड़ी चलाबय अस्वीकार कएलाक कारण हुनकर व्यवसायिक हानि भेल छल। चौकीक दान आ ढुलाईक वास्तविक मेहनताना अलग लेखा अछि; ग्राहक खोएबाक घाटा पाठशालासँ नहि वसूलल जाइत। हरीश गलत छपल आवरणवाली खेप रोकने छथि, मुदा सत्यापित खड़ियाक डिब्बा मूल्यपर बेचैत छथि। किशोरक प्रश्न—नाम खराब भेल तँ असली खड़िया सेहो खराब भऽ जाएत की—दोकानदारक कलङ्कित पहिचान आ वस्तुक वर्तमान गुणक बीच कथा-गाँठ बनैत अछि। ई दू प्रसंग शिक्षा-दृश्यक भीतर ‘काम’ शब्दकेँ शिक्षकक कक्षासँ व्यापक सामाजिक जीवन धरि पसारैत अछि।

चौठम चरण लोकपाठ–खुला खाता–गीतक फागुन आयोजनक अछि। गानक समयक पारिश्रमिक, रसोइक श्रम, सफाइक सुरक्षित मजदूरी आ उपकरणक प्रयोगक सहमति अलग-अलग दर्ज होइत अछि। एक अधिकारी सभ खर्चकेँ ‘उत्सव’ शीर्षकमे मिलाबय चाहैत अछि; जुबैदा अलग श्रमक समय मेटबासँ रोकैत छथि। एहि बीच गीत, चित्र, छोट संवाद आ बच्चाक हँसी कथाक गति बदलैत अछि। एक बालक दौड़ैत रोटी बनबैत अछि, जकर छह पएर अछि; ओ कहैत अछि जे माय जतेक जल्दी रोटी बनबैत छथि, रोटी ताहिसँ जल्दी खतम होइत अछि। रुखसानाक उत्तरमे सेहो हँसी अछि। ई दृश्य पहिनुक फाइल-भाषासँ एकदम अलग बोलचालक सहज विनोद अनैत अछि; शोक रहितो जीवनमे खेलक स्थान बनि सकैत अछि।

पाँचम आ अन्तिम घटनाक्रम पाठशालाक वास्तविक खुलब आ राशनक अगिला विवादक पूर्वभूमि अछि। पहिल पाठमे कटोरी, रसीद आ नापवला डोरी रखल जाइत अछि; बच्चासभ अपन-अपन अर्थ कहैत छथि। युवकक पहरा-ड्यूटी कारण भोर–साँझक दू छोट कक्षा तय होइत अछि। वृद्धा अपन पोताक मुखसँ निर्णय सुनबाक बदला स्वयं बुझेबाक व्यवस्था चाहैत छथि। दरबज्जाक निकास सुरक्षित रखबाक अभ्यास होइत अछि। एक बच्चा अपन नाम पढ़ि फेर काल्हि आबबाक प्रश्न करैत अछि। एतय कथा शिक्षाक आरम्भकेँ नारा नहि, दोबारा आबबाक वास्तविक सम्भावना बनबैत अछि। अन्तमे दू राशन-पर्चीक वर्तनी आ एक परिवारक नव ठामक चूक भेटैत अछि। बच्चीक पहिल प्रश्न ‘हम पढ़ि सकैत छी?’क नीचाँ ओकर अपन लिखल उत्तर अछि; अगिला दृश्य राशन-पाँतिक सुधारेबाक लिफाफा अछि। एहि सीमापर शान्ति-पर्व समाप्त भऽ अनुशासन-पर्वक अगिला कथात्मक संकट आरम्भ होइत अछि।

कथनकाल, दृष्टिकेन्द्रण आ कक्षक बहुस्वरता

कथाक बाहरी समय फागुनक भोरसँ साँझ, फेर आश्रयक दिनान्त-तैयारी धरि सघन अछि। एकर भीतर नैराक अनुपस्थिति, इरफानक पुरान ग्राहक, हरीशक वापस जायवला खेप, रातिक पहरा, पिछला वर्षाक गीलापन आ अगिला राशन-वितरणक पूर्वाभास समवेत छथि। ई अतीत–भविष्य एकहि दृश्य-स्थानक भीतर प्रवेश करैत अछि;

मूल अध्यायमे स्वतंत्र रामायण/महाभारतक प्राचीन कालधारा नहि अछि, यद्यपि आख्यानक प्रारम्भिक सङ्केतमे द्विकालीन अन्तर्पाठ लिखल छल। ओ सङ्केत एतय प्रत्यक्ष दृश्यवर्गीकरणक रूपमे लागू नहि होइत। वस्तुक पुनरावर्तन आ स्मृतिजन्य समय प्रमुख प्रविधि अछि।

दृष्टिकेन्द्रण जुबैदाक पयरमे खड़ियाक चुभनसँ प्रारम्भ भऽ बच्चीक भीजल कापी, पद्माक तीन भाषा, संकेतक उपकरण, सरिताक अटकल श्वास, इरफानक ग्रीस लागल हथेली, हरीशक घुरनिहार खेप, वृद्धाक ‘स्वीकृति’ शब्दपर ठमकब आ बच्चाक दौड़ैत रोटी पर सरकैत अछि। ई वितरणक कारण अध्याय विद्यालयक प्रधानाध्यापकक एकल कहानी नहि रहैत। कक्षा सेहो निश्चित अभिजात ‘ज्ञान देनिहार’क स्थल नहि; बच्चा प्रश्न बदलैत अछि, वृद्धा लिखित अर्थक विकल्प माँगैत छथि, कारीगर श्रमक दर निर्धारित करैत छथि। कथाक स्वर एकाधिक जीवन-क्षेत्रसँ बनैत अछि। एतय कथन-वाचक तृतीय पुरुष रहितो पाठककेँ निर्णयक एकमात्र केन्द्र नहि देत।

शान्ति-पर्वक समापन : उपलब्धि, जोखिम आ अगिला पर्वक पूल

एहि अध्यायक विशेष कलात्मक उपलब्धि घरेलू शोकक बाद रचनात्मक खेल आ सामाजिक जिज्ञासा फेर सक्रिय करब अछि। बच्चीक अपन तीन बाङ अक्षर, सरिताक सादा पन्ना, गीतक कामक दाम, वृद्धाक स्वयं बुझबाक आग्रह आ सुरक्षित कक्षाक सीमा—ई सभ अलग छोट निर्णय मिलि संस्था-निर्माणक पूर्ण कथा बनबैत अछि। ई विजय मृत्युकेँ उलटैत नहि, रुखसानाक रसोइक थकान मेटैत नहि, नाहिए पहिनुक असमानता तुरन्त हटबैत। प्रभाव एहि बातमे अछि जे पात्रसभ एखनहुँ प्रश्न पूछि सकैत छथि।

सीमा ई अछि जे पाठशालाक प्रथम दिनमे बहुत अधिक प्रश्न अत्यन्त ठीक समयपर आ जवाबो अत्यन्त स्पष्ट रूपमे अबैत अछि; प्रवेश, विकलाङ्गता, रेकॉर्डिंग, गोपनीयता, विक्रेता-खर्च, लोकगीतक पारिश्रमिक, भवन-सुरक्षा, मौखिक व्याख्या आ राशनक अन्तर—सभक समाधान प्रारूप एकहि दिनमे बनैत देखाइत अछि। एहि योजनागत सम्पन्नतासँ कथाक स्वतःस्फूर्त अव्यवस्था कम सकैत अछि। मुदा बालकक दौड़ैत रोटी, भीजल कापी आ सरिताक मौनक क्षण एहि यान्त्रिक सम्भावनाकेँ तोड़ैत अछि। शान्ति-पर्वक अन्तिम वाक्यक गति खास अर्थपूर्ण अछि : पाठशाला खुलल अछि, मुदा पहिल परीक्षा आगामी राशन-पाँतिमे होयत। एकटा पर्वक पूरा हेबाक अर्थ सामाजिक संघर्षक समाप्ति नहि; अगिला पर्वक विषय कथाक भीतर सँ स्वाभाविक रूपसँ जन्म लैत अछि।

शान्ति-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १३३–१४४ क समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

शोकक बाद कथानक केना चलैत अछि

शान्ति-पर्वक बारह अध्यायक संरचना केवल युद्धक बाद शासन बनबाक क्रम नहि। अध्याय १३३ मे अस्थायी नेतृत्वक प्रश्न, १३४–१३५ मे युधिष्ठिर–भीष्म–द्रौपदीक महाभारतीय कालधारा, १३६ मे सरिताक पहिल बयान, १३७ मे अदितिक पुरान प्रतिवेदन, १३८ मे अलग दोष-फाइल, १३९ मे उदयन–रहीनाक द्विकालीन सम्पादन, १४० मे कर्म आ मजदूरीक सामाजिक सम्बन्ध, १४१ मे मदद–मुकदमाक समानान्तर धारा, १४२ मे औषधि-वितरण,

१४३ मे आश्रयक सामूहिक नियम आ १४४ मे पाठशालाक उद्घाटन—ई क्रम संस्था-निर्माणक अनेक परत खोलैत अछि। कथाक केन्द्रीय प्रश्न ‘के शासन लेत?’ सँ ‘शासनक पश्चात् व्यक्तिक काज, नाम आ कथा केना चलत?’ धरि सरकैत अछि। एतय अन्तिम चारि अध्यायक स्वतन्त्र दृश्य-स्थान मुख्यतः आधुनिक अछि; रामायण आ महाभारतक सम्बन्ध संरचनात्मक अछि, जबरदस्ती अलग प्राचीन दृश्य ठेलि नहि देल गेल अछि।

प्रारम्भिक अध्यायसभमे सार्वजनिक सभा आ प्राचीन राजधर्मक समकक्षी प्रश्न छथि, मुदा अन्तिम अध्यायसभमे लोहेक सहायता-सन्दूक, दवाइक पेटी, आश्रयक चाभी आ बच्चीक कापी नब केन्द्र बनैत अछि। चारू वस्तु क्रमशः मददक निजी–सार्वजनिक सम्बन्ध, जीवित देहक समय, संस्थाक उत्तराधिकार आ भविष्यक कल्पनाशीलता प्रदर्शित करैत अछि। वस्तुक एहि अनुक्रममे शान्ति-पर्वक कथात्मक गति शासनक वैधता → व्यवहारक व्यवस्था → सामान्य जीवनक नव जिज्ञासा बनि उठैत अछि।

कालक बहुस्तर, दृष्टिकेन्द्रण आ शोकक उत्तरजीवन

कथन-समयमे वर्तमानक भोर–साँझक अनेक दृश्य छथि, मुदा पूर्ण पर्वक समय सीधा रेखीय नहि। युधिष्ठिर आ भीष्मक प्राचीन दृश्य महाभारतीय युद्धोत्तर नैतिक समय खोलैत अछि; उदयनक शास्त्रार्थक शोक-विराम आधुनिक रहीनाक घरक संघर्षक संग समानान्तर सम्पादित होइत अछि; नैरा आ उर्मिलाक मृत्यु वर्तमान पात्रक वस्तु-स्मृति आ मौनमे पुनः अबैत अछि। लेखक पहिने संगठित मृत्युशोकक विरुद्ध जीवित लोकक दीर्घ काजक समय रखैत छथि। लोक प्रशासनक पत्रक तिथि, मजदूरक बकाया घण्टा आ परिवारक खर्चक दिनांक एकरे समकालिक अनुभव नहि; कथा एहि असमानतालोक बीच आवाज देबाक प्रयास करैत अछि।

कथावाचक बहुतेक ठाम तृतीय पुरुषमे रहैत छथि, मुदा दृष्टिकेन्द्रणक स्थिर एकाधिकार नहि। गोमती–रमा कथा-संयोजक अवश्य छथि; तथापि अदिति अपन पुरान वाक्य बदलैत छथि, रहीना अपन दुकानक स्वतंत्र समय चाहैत छथि, महेशक पत्नी अलग कक्ष चुनैत छथि, विभा लाभ–मजदूरीक व्यावसायिक समय रखैत छथि, रानी सुरक्षित सफाइक सीमा कहैत छथि, रुहानी अपन एकल अधिकार छोड़ैत छथि, पद्मा–संकेतक कक्षमे बच्चा आ वृद्धा प्रश्नक दिशा बदलैत छथि। एहि वितरित दृष्टिकेन्द्रणसँ उपन्यासक आरम्भिक मृत्यु-पंजीक ‘एकटा नाम’ शान्ति-पर्वमे अनेक व्यक्तिक सक्रिय कथन-स्थानमे बदलैत अछि।

भाव-भाषा आ सामाजिक बहुस्वरताक उपलब्धि

पर्वक भावभूमि एकरूप करुण रस अथवा प्रशासनिक शान्तता नहि अछि। शोक, संकोच, असहमति, व्यवहारिक धैर्य, व्यावसायिक स्वाभिमान आ कक्षाक हँसी—सभ स्वर उपस्थित छथि। सरिता नैराक कापीक निजी सीमा राखैत छथि; कबीर पुरान विरोधीक वाक्यकेँ गलत अपराध-स्वीकार बनबासँ रोकैत छथि; रुखसाना भोजनक लागतक संग अपन श्रमक समय सेहो गनैत छथि; छोट बालक छओ पएरवला रोटी बनबैत अछि। भावनात्मक असर पात्रसभक जीवनक छिन्न-भिन्न निरन्तरतासँ उत्पन्न होइत अछि। नब पाठशाला नैराक पुनरागमन नहि; तइयो ओहि अनुपस्थिति सँ सीखबाक नव अवसर बनैत अछि। एकर भाषा शोकक अतिनाटकीय उत्कर्षसँ हटि दृश्यक छोट वस्तु आ रुकल संवादक माध्यमेँ अर्थक विस्तार करैत अछि।

एहि सभक संग एकटा आलोचनात्मक आपत्ति अनिवार्य अछि। रमा, गोमती, सलमा, जुबैदा, शबनम, विभा, मीना आ अन्य पात्र कखनहुँ असाधारण रूपसँ स्पष्ट, समान ढङ्गक सिद्धान्त-जेकाँ छोट वाक्य बजैत छथि। संस्था, मजदूरी, गोपनीयता आ अधिकारक अन्तर अनेक बेर लगभग एक्के लयमे व्यक्त होइत अछि। व्यक्तिक विशिष्ट बोली, गामक ध्वनि, हताशाक असंगति आ आकस्मिक सामाजिक घर्षण एहि सुव्यवस्थित बोधसँ दबि सकैत अछि। किछु पात्रक प्रवेश केवल एक नव पन्ना अथवा शुल्कक फरक बतएबाक लेल बनल बुझाइत अछि। ई पात्र-विस्तारक मात्र गुण नहि; महाकाव्यीय विशालता आ कथात्मक गहनता बीचक वास्तविक तनाव अछि। हुनका सभक याद रहबाक सबसँ सशक्त क्षण कागदी विभाजन नहि, शारीरिक क्रिया छथि—रानीक चप्पल, रहीमक तकियाक खोल, महेशक बेटीक घर-चित्र, रुहानीक चाभी छोड़ैत डर, आ बच्चाक दौड़ैत रोटी।

कारणात्मक परिणति आ अगले पर्वक वास्तविक उद्घाटन

बारह अध्यायक समापनमे अनेक वास्तविक स्थिति-परिवर्तन घटल छथि। गोमती अस्थायी नेतृत्व लैत छथि; अदिति पूर्व निष्कर्ष वापस लैत छथि; अलग फाइल बनैत अछि; सहायता-प्राप्तिक कागद भीतर लुकायल दावात्यागक शर्त बाहर अबैत अछि; सुरक्षित औषधिक आपूर्ति चलैत अछि; रहीमक चारि बोरा मुक्त होइत अछि; आश्रयक चाभी एकल प्रभारी सँ चुन्नल प्रतिनिधि लग पहुँचैत अछि; जोखिमपूर्ण कोठरीक बदला सुरक्षित बरामदामे पाठशाला खुलैत अछि। मुदा महेशक हत्याक अन्तिम निर्णय, औषधिक अस्पष्ट तेसर पेटी, रानीक पुरान मजदूरी, आश्रयक बन्द नाली, माधवक विवाद, उर्मिलाक बकाया आ राशन-पंजीक त्रुटि बाँकी अछि। ई बकाया कथा केवल अधूर शीर्षकक सूची नहि; आगामी अनुशासन-पर्वक कारणात्मक धागा अछि।

एहि रूपमे शान्ति-पर्वक साहित्यिक उपलब्धि ‘व्यवस्था स्थापित भऽ गेल’ कहबाक अपेक्षा व्यवस्था कें निरन्तर जाँच आ संशोधनयोग्य जीवन-प्रक्रिया बनाकऽ देखेनाइ अछि। अन्तिम बच्ची अपन उत्तर स्वयं लिखैत अछि, जुबैदा केवल तिथि दर्ज करैत छथि। ई छोट परिवर्तन उपन्यासक दीर्घ नाम–पंजी–श्रमक सूत्रक नव रूप अछि : ककरा नाम लिखबाक अधिकार अछि, एहि प्रश्नसँ आगाँ बढ़ि के अपना प्रश्नक उत्तर स्वयं लिखि सकैत अछि—ई अन्तिम कथात्मक उपलब्धि अछि। एकरे संग राशन-वितरणक आसन्न त्रुटि अध्याय १४५ क द्वार खोलैत अछि; शान्ति-पर्व अपन अलग मुकाम पाबैतहुँ सम्पूर्ण उपन्यासक यात्रा रोकैत नहि।

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १४५ — राशनक पाँति

बोराक फाटल सिलाइसँ सार्वजनिक कथाक उद्घाटन

“राशनक पाँति” एकटा मामूली देखाएवला दुर्घटनासँ खुलैत अछि : फागुन २०४० क भोरमे बोरीसँ दू मुट्ठी चाउर खसैत अछि। रुखसाना ओकरा समेटबाक प्रयत्न करैत छथि, आ कर्मचारी ‘हिसाबमे एतेक नहि लिखाइत’ कहि उपेक्षा करैत अछि। ई आरम्भ अभावक सांख्यिकी नहि, दृश्य आ दृष्टिकेन्द्रक चयन अछि। कथावाचक वितरकक मेज अथवा कार्यालयी आदेशसँ कथा नहि खोलैत; अन्न बीननिहार स्त्रीक झुकल देहसँ खोलैत छथि। रुखसानाक क्रिया फर्शपरक दानाकेँ कागदमे दर्ज अन्नसँ भिड़ा दैत अछि। एकदम आरम्भमे ओ तीन निशान बनबैत छथि—

माल पहुँचल, लोक पहुँचल, अधिकार अपूर्ण। एतय तीन भिन्न परिणाम एके पंक्तिमे रखल जा सकैत छथि, मुदा कथाक अर्थ हुनका सभक अन्तरमे अछि। अध्याय १४४ मे बालकक सीखबाक पंजी आ राशनक पंजी अलग रहल; एतय ई अन्तर विद्यालयक प्रश्नसँ सार्वजनिक वितरणक दृश्य बनि जाइत अछि।

चाउरक साफ बचल दाना अलग पात्रमे, धूरि लागल दाना वितरणसँ अलग रखब केवल स्वच्छताक व्यवहार नहि; वस्तुक नैतिक नाटकक आरम्भ अछि। समापनमे ओही साफ दाना तौलमे जोड़ल जाइत अछि, मुदा “कोनो चमत्कारसँ खाली महीनासभक अन्न वापस नहि आयल”। एहि वाक्यसँ आरम्भ–अन्तक वृत्त बनैत अछि, तइयो पुनरावृत्ति पूर्ण समाधान नहि बनैत। दाना फेर गनल जा सकैत अछि; बीतल महीनाक भूख फेर नहि। वस्तु-आवर्तन आ अनुत्तरित समयक विरोध एहि अध्यायक महत्त्वपूर्ण आख्यानशास्त्रीय उपलब्धि अछि।

घटनाक्रम : नाम-सुधारसँ हितग्राही प्रतिनिधित्व धरि

पहिल संघर्ष सावित्री सरदारक अछि। नदीक धार बदललाक बाद पुरान आ नव गामक पंजीमे हुनकर घर दू ठाम अलग रूपमे दर्ज अछि; आजुक पर्चीपर नाम-सुधार भेलो पुरान वितरण-दिनक सोझाँ खाली स्थान बचल अछि। “नाम सुधरि गेल” कहनिहार कर्मचारीक कथाक समापन-बिन्दु आ सावित्रीक “जे महीनामे हम खाली हाथ घुरलहुँ” प्रश्नक समय-अवधि एक नहि। सावित्री आजुक अनाज लैत छथि, मुदा पुरान क्षतिक निष्पत्ति मानबाक असहमति दर्ज करबैत छथि। घटना-परिणाम स्पष्ट अछि : नाम आ गाम-सूचना सुधरल, पुरान क्षतिपूर्ति विचाराधीन रहल, पृथक आवेदनक क्रमाङ्क भेटल। दृश्यक ‘सफलता’क असमान माप पात्रक वाक्य-द्वन्द्वसँ बनैत अछि; कथावाचक इतर आदेश देबय नहि पड़ैत।

दुलारी राजवारक प्रसंगमे सहायताक थैला निजी ऋणत्यागक प्रपत्रसँ जोड़ल अछि। दुलारीक “गलत शर्त हटे, वितरण नहि रुकय” कथन नायिकासदृश उद्घोष नहि, तत्काल घटनाक दिशा बदलनिहार संवाद अछि। रुखसाना पुरान कागद फाड़ि नहि दैत छथि; गोमती कर्मचारीक सम्पूर्ण कार्य अपने हाथमे नहि लैत छथि। नब अस्थायी निर्देशमे अनाज-प्राप्तिक हस्ताक्षर निजी ऋणक त्याग नहि मानल जाइत अछि; बादमे रद्द-मोहरसहित ओ वाक्य हटाओल जाइत अछि। दुलारीक ऋण-विवाद समाप्त नहि होइत। पुरान गलत प्रति सुरक्षित रहबाक घटना कथा-रचनामे विशेष अर्थ रखैत अछि—जे कागद पहिले पात्रकेँ फँसाबैत छल, ओ आब विगतक भिन्न आख्यान सुरक्षित करैत अछि। मुदा एतय न्यायालयी निष्कर्षक दावा कएल नहि जा सकैत; मूल कथा पात्रक वर्तमान व्यवहार देखबैत अछि।

रेहानाक पयरक दर्द आ अनवरीक उपस्थिति दृश्यकेँ सार्वजनिक कतारसँ निजी उपचारक समयमे लऽ जाइत अछि। एक अंकक अन्तरक कारण उपचार बाधित नहि होए, एहि लेल सलमा आवश्यक वितरण-सङ्केत सार्वजनिक पन्नापर आ चिकित्सा-विवरण निजी लिफाफामे रखैत छथि। अस्थायी स्वीकृति आ अगिला जाँचक तिथि भेटैत अछि; स्थायी नाम-अङ्क सुधार नहि। एहि उपकथामे पाँतिक भौतिक समय—कतार, धूप, अधिकारीक फोन—आ बच्चीक औषधिक अगिला घड़ीक समय टकराइत अछि। कथनक तनाव त्रासदीक नाटकीय गप्पसँ नहि, ई भेदक रोजमर्रा असर सँ उपजैत अछि।

दुपहरि धरि रुखसाना स्वयं समस्त आपत्ति लिखि नहि सकैत छथि। तखन कथा वितरण-कक्षक सामनेसँ हितग्राहीसभक छोट सभामे सरकैत अछि। दूरसँ अएनिहार व्यक्ति, अपूर्ण पहचानवला परिवार आ अनुपस्थित हितग्राहीक आवाजकेँ सुनबाक व्यवस्था बहसक विषय बनैत अछि। अंततः सावित्री मुख्य प्रतिनिधि आ दुलारी सह-प्रतिनिधि चुनलीह; कार्यालयक सम्पर्क-कर्मचारी आपूर्ति चलएब जारी रखैत अछि। सावित्री अपना पुरान क्षतिपूर्तिक प्रश्नपर स्वयं निर्णय नहि करबाक सीमा अपनबैत छथि। ई पात्र-विकास अध्यायक प्रमुख मोड़ अछि : आरम्भमे सावित्री अन्यायक अनुभव कहैत छथि, अन्तमे अन्य लोकक अनुभव सुनबाक स्थिति लैत छथि। हुनकर नाम बदलल सूचीसँ नव सार्वजनिक भूमिकामे गेल; मुदा ओहि भूमिकासँ निजी क्षति मेटाएल नहि।

काल-स्थान, कथावाचक आ सामाजिक बहुस्वरता

अध्यायक वर्तमान एक फागुनक भोरसँ साँझ धरि सीमित अछि। एहि एक दिनक भीतर पूस–माघक रसोइ-मजदूरी, बीतल महीनाक राशन, नदी बदलबाक पुरान घटना, रेहानाक जखम, आगामी चिकित्सा-तिथि आ घुमन्तु लोकक अगिला यात्राक प्रश्न घुसैत अछि। तृतीय पुरुषक कथावाचक वर्तमान दृश्यक भूगोल स्पष्ट रखैत छथि—मेज, इमलीक गाछ, ओसार, पाँतिक पछिला भाग, छोट सभा, भण्डारक दरबज्जा। कथा लगभग अविराम संवाद-दृश्यसँ बनल रहितहुँ बीच-बीचमे धूप चढ़ब आ नरम पड़बाक छोट काल-सङ्केतसँ गति बदलैत अछि। यत्र-तत्र पुरान अस्वीकृति पर्चीक रूपमे वर्तमानमे अबैत अछि; स्वतंत्र दीर्घ अतीत-दृश्य नहि अछि।

कथन-स्वरक वितरण एतय योजनाबद्ध, मुदा सार्थक अछि। सावित्रीक संयमित आग्रह, दुलारीक पैघ प्रपत्रपर व्यंग्यात्मक प्रश्न, सलमाक छोट चिकित्सकीय वाक्य, पद्माक बच्चासँ भाषिक समझाइब, वृद्धक तोल अपन सोझाँ करएबाक आग्रह आ घुमन्तु पुरुषक यात्रा-संकट अलग सामाजिक अनुभव अनैत अछि। बच्चाक “दुइ ठाम गलत अक्षर लिखल तँ दुइ बेर सुधारब?” प्रश्न बहुतेक कागदी बहसकेँ सरल करैत अछि, मुदा बच्चा एतय लेखकक उपदेशक मात्र वाहक नहि : ओ नुकाएल श्रेणीकरणकेँ दैनिक पढ़ाइक अनुभवसँ पकड़ैत अछि। वृद्ध अपन थैला स्वयं गनि सही करैत छथि; सहायता ग्रहण करब हुनकर स्वतन्त्र निर्णयक अन्त नहि बनैत। रुखसानाक अपन श्रम-घण्टा लिखबामे ठमकब लोकहितक महत्ता आ स्वयंकेँ अदृश्य बनबएबाक झिझक एक संग प्रकट करैत अछि।

उपलब्धि आ कलात्मक सीमा : पाँतिक अन्तमे खुलल बाट

अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे राशन-शब्द एकरूप नहि रहैत : अनाजक तौल, बीतल भूख, निजी कर्ज, चिकित्सा-कागद, वृद्धक पहुँच, प्रतिनिधित्व आ वितरणमे लगल श्रम—ई सभ परत एकटा वास्तविक पाँतिक चारू दिस विकसित होइत अछि। तीन निशान, फाटल बोरी, खाली वितरण-पन्ना, रद्द-मोहर आ अपवाद-पंजी परस्पर जुड़ि कथा-चिह्न बनैत अछि। किन्तु कलात्मक जोखिम सेहो स्पष्ट अछि : लगभग प्रत्येक पात्र अपना अनुकूलतम क्षणपर बहुत सुस्पष्ट नियम-वाक्य बजैत छथि, कर्मचारी बेर-बेर गलत समापन सुझबैत अछि आ पात्र तकर ठीक विभाजन करैत छथि। सहज सामाजिक हिचकिचाहट, बहसक पुनरुक्त उलझन, थाकल देहक अस्पष्ट प्रतिक्रिया किछु ठाम दबि जाइत अछि। अनुपस्थित लोकक मत नहि देबाक सवालक निवारणो अपेक्षाकृत सहज रूपमे प्रस्तुत अछि। एतय कथाक सुधारवादी उद्देश्य दृश्यात्मक आकस्मिकता कम करैत अछि।

तइयो अन्तिमे घुमन्तु पुरुष अपन पुरान पास मोड़ि जेबमे रखैत अछि आ फकीराकेँ भेटबाक बाट पूछैत अछि। ई छोट क्रिया नव अध्याय १४६ क सीधा कारणात्मक सेतु अछि। सावित्री–दुलारीक निर्वाचनक बावजूद ओकरा यात्रा आ रोजीक प्रश्नक उत्तर नहि भेटल। तेँ अनुशासन-पर्वक पहिल अध्याय विजय-घोषणापर नहि, एक नव पात्रक चलबाक रुकल बाटपर समाप्त होइत अछि।

अध्याय १४६ — फकीराक पास

खिड़कीक जाली, पीयर पर्ची आ रुकल भोर

“फकीराक पास”क आरम्भ रेलचौकक टिकट-खिड़कीमे काँपैत पीयर पर्चीसँ होइत अछि। पहिल अध्यायक फाटल बोरी जकाँ एतयो एकटा छोट वस्तु पूरा कथा खोलैत अछि; मुदा दृश्य बदलबाक संग प्रश्न अन्न-प्राप्तिसँ चलबाक समय आ कमाइ छिनबाक समय धरि पहुँचैत अछि। फकीरा जीवित छथि, तइयो पुरान यात्राखातामे मृत्यु-चिह्न बाँकी अछि। पात्रक देह आ कम्प्यूटरक लाल अक्षरक विपरीतता कथा-आरम्भमे एकटा तीक्ष्ण विडम्बना रचैत अछि। कर्मचारी मूल खाताक स्थिति अपने नहि बदलि सकैत; फकीराक हाथमे संशोधन-प्राप्तिक प्रति अछि, मुदा तत्काल यात्रापत्र देबाक स्पष्ट आदेश नहि। घटनाक पहिल निष्कर्ष ई नहि जे कार्यालय जीवन स्वीकार करि लेलक, बल्कि जे जीवित व्यक्ति फेर पुरान दस्तावेजक भीतर अटकला।

फकीराक झोलामे तौल-पतरा, गाँठ खोलबाक छुरी, दामक बही आ संशोधित गवाहीक प्रति अलग रखल अछि। वस्तुक ई क्रम पात्रक बहु-भूमिकाकेँ एक दृश्येँ सोझाँ लैत अछि : ओ बोझा ढोनिहार छथि, श्रमिक छथि, पुरान हिंसा-सन्दर्भक साक्षी छथि, आ गलत मृत्यु-प्रविष्टिसँ बाधित यात्री छथि। कथावाचक एहि जीवनसभकेँ एक कागदी परिचयमे समेटैत नहि। छूटल भोरक गाड़ीक बाद फकीरा अपन बहीमे ‘पहिल खेपक मेहनताना नहि भेटल’ लिखैत छथि। ई घटना-सङ्केतसँ जीविकाक क्षति धरि जएबाक अत्यन्त ठोस गति अछि। समय एतय केवल घड़ी नहि, बिक्री आ श्रमक अवसर अछि।

परस्पर जुड़ल उपकथा आ एक दिनक निर्णय-श्रृंखला

घुमन्तु परिवार राशन-पाँतिक अपवाद-सूचीसँ एतय अबैत अछि। सावित्री आ दुलारी नब प्रतिनिधिक रूपमे पहुँचैत छथि; हुनकर आग्रह फकीराक नाम-सुधारक मामला दोहरा देब नहि, कार्यालयसभक बीच लोकक अनुपस्थित भविष्यकेँ रोकब अछि। रमा कर्णक प्रवेशसँ कथा अधिक विस्तृत प्रशासनिक दृश्यक रूप लैत अछि। फकीराक पुरान गवाहीमे हुनका दू लोहेक चोट सुनल गेल छल, ककरो फाटक तोड़ैत देखल नहि—ओ सीमित कथन यात्रा-परिचयक शर्त बनत, एकरा फकीरा अस्वीकार करैत छथि। रमा यात्रा-फाइलमे अप्रासंगिक निजी बयान नहि जोड़बाक बात कहैत छथि। एहि प्रसंगक कथा-फल ई अछि जे पाठक फकीराकेँ पहिने जाँच-अन्वेषणक उपकरण मानि पढ़ने छलाह; एतय हुनका जीवनक अलग घण्टा भेटैत अछि। पुरान लोहेक आवाजक रहस्य नहि खुलैत, तइयो यात्रा-पासक निर्णय अगाँ बढ़ैत अछि।

दोसर धारा नन्दू नट, मैना आ झिलमिलक अछि। हाटक प्रस्तावमे बच्चासभक पूरा राति अनिवार्य उपस्थिति आ ‘लोकहित’क नामपर घटल पारिश्रमिक अछि। झिलमिल अपन पढ़ाइक समय चुनैत अछि; नन्दू लागत लिखैत

छथि आ बेटीकेँ वयस्क कलाकारक दाम बचएबाक साधन नहि बनबैत। अन्तमे छोट मंच, दू घण्टाक प्रस्तुति आ वयस्क कलाकारक स्पष्ट परिश्रमिकक नब मसौदा बनैत अछि; आयोजकक पहिल शर्त हटैत अछि, मुदा पुरान टूटल मंचक मुआवजा अलग रहैत अछि। कथामे ई छोट मंचक धारा फकीराक यात्रा पुनर्बहालीसँ सीधा जुड़ैत अछि, कारण पास भेटलाक बाद फकीरा नन्दूक सामान सुरक्षित ढोबाक उचित दरपर सहमति करैत छथि। कागदक एक गलती सुधरब दोसर पात्रक जीवनमे नव क्रियाक सम्भावना खोलैत अछि—ई कारणात्मकता अध्यायक सशक्त शिल्प अछि।

तेसर धारा फरीद चिकक अछि। परिवारक भोरक व्यापार-समय आ फरीदक साँझक वर्गक बीच स्थान बाँटब कथाक लक्ष्य अछि। विद्यालयक लिपिक स्वीकृत सन्ध्याकालीन कक्षाकेँ सामान्य अनुपस्थितिक रूपमे पढ़ि अतिरिक्त फीस जोड़ने छल; नब प्रवेश-व्यवस्थामे ई त्रुटि सुधरैत अछि। फरीद निर्धारित शुल्कक रसीद लैत अछि, आ पिता संग भोरक कामक सीमित भाग निश्चित करैत अछि। ‘फीस सुधरल’क अर्थ सारा पढ़ाइ निःशुल्क भेल नहि; परिवारक पुरान ऋण फरीदक नामपर सम्पूर्ण देल गेल नहि। एहि उपकथा द्वारा पिता–पुत्रक सम्बादमे प्रेम, परिवारक आर्थिक भार आ नब साक्षरताक बीच नाटकीय तनाव बनैत अछि। “बिना पढ़ने कहियो नहि देब” कथाक आरम्भिक हस्ताक्षर-दुविधाक नव पीढ़ीगत प्रतिध्वनि अछि।

कथनकाल, पहिचानक द्वैत आ दृष्टिकेन्द्रण

वर्तमानक कथा एक दिनक भोरक छूटल गाड़ीसँ साँझक चायदोकान आ पाठशालाक ओसार धरि बढ़ैत अछि। मध्ये पुरान अस्पताल-गवाही, फकीराक बहुतो नाम, नन्दूक पहिनुक कार्यक्रम, फरीदक उधारी आ गत दिनक राशन-पाँति छोट-छोट पूर्वसूचनाक रूपमे अबैत अछि। कथनकालक उल्लेख—गाड़ी निकलि जाएब, एक घण्टाक मशीन-जाँच, पहिल नब खेप, साँझक विद्यालय—दृश्यसभकेँ एक भूगोलमे पिरोइत अछि। अध्याय २६ क गुह-तटसँ पुनरावर्ती नदी–नावक कथाक विपरीत एतय रेलचौक मुख्य काल–स्थान अछि : पटरीक समय, टिकट-खिड़की, हाट आ कक्षाक घड़ी लोकक गतिशीलताकेँ नापैत अछि।

फकीराक ‘साई फकीर’ आ ‘दीवान मदार’ दू पंजीगत उल्लेख छथि; ओ अपना स्वनाम ‘फकीरा’ कहैत छथि। कथावाचक ई नाम-विविधता ‘सही नाम’क एकमात्र रहस्य नहि बनबैत; व्यक्ति स्वयं अपन श्रम आ जीवनसँ कतेक परिचय चाहैत छथि से कथा सुनैत अछि। घुमन्तु परिवारक स्थायी पता नहि देबाक असमर्थता सेहो झूठक उदाहरण नहि, वास्तविक गतिशील जीवनक अनुभव अछि। ओ परिवारकेँ नवीकरणक आवेदन जमा करबाक समय भेटैत अछि, तत्काल पास नहि। एहि खुलल अन्तरसँ फकीराक सफल यात्रा-प्राप्तिक कथाकेँ सभ चलित परिवारक सामूहिक विजय घोषित करबाक प्रलोभन रोकिनाइ सम्भव होइत अछि।

भाव-क्रम, कथा-सीमा आ अगिला कक्षा

अध्यायक भावक गति विडम्बनासँ आरम्भ भऽ आक्रोश, आर्थिक हानि, सतर्क आशा आ अन्ततः सीमित सन्तोष धरि अबैत अछि। फकीरा अन्तमे चायदोकानक बेटासँ कहैत छथि जे पुरान आवाजक रहस्य नहि खुलल, मुदा यात्रा-पास खुलल अछि। पाठक बुझैत छथि जे एतय रहस्य-अन्वेषणक एकटा रेखा जानि कऽ अनिर्णीत राखल गेल। ई चयन पात्रकेँ उपयोगितामूलक साक्षी सँ स्वतन्त्र व्यक्ति बनबैत अछि। नब कार्डक विवरण फकीरा पढ़ि

सुनबैत छथि, ‘पास प्राप्त’ आ ‘छूटल कमाइक दावा शेष’ अलग लिखैत छथि। कथानकक उपलब्धि जीवनक एक कार्य फेर चालू होएब अछि, सम्पूर्ण अतीतक समाधान नहि।

सीमा सेहो अछि : फकीरा, नन्दू, फरीद, रमा आ घुमन्तु परिवार सभ अपन-अपन एकदम स्पष्ट श्रेणीकरणक संवाद बोलैत छथि; दिनक अन्तमे बहुतो प्रक्रिया व्यवस्थित प्रति, तिथि आ अलग दावा-खानामे पहुँचि जाइत अछि। एतेक सममित अनुशासनसँ जीबैत दुनियाक अपूर्ण गड़बड़ी किछु कम जानि पड़ैत अछि। तथापि झिलमिलक बँधैत जूताक फीता, फकीराक गिलास, मैना द्वारा पुस्तक सिएब आ फरीदक पिता-पुत्रक हलुक हँसी एहि संरचनाकेँ घरक असमंजसक ताप दैत अछि। अन्तिम पाठशाला-दृश्यमे संकेत उत्तर देबाक विविध बाट बनबैत अछि। एहि एकटा शिल्पगत संक्रमणसँ अध्याय १४७ क नव प्रश्न खोलैत अछि : चलबाक अधिकारक बाद अपन ढङ्गसँ उत्तर देबाक अधिकारक दृश्य केना बनत?

अध्याय १४७ — संकेतक कक्षा

अधखुलल पट्टी : उपकरण अपने निर्माता सँ प्रश्न पुछैत अछि

“संकेतक कक्षा”क आरम्भ संकेत द्वारा बाँसक पट्टीपर तीन रङक कपड़ा, उभरल धागा, मोट अक्षर आ लकड़ीक छोट चिह्न साटबाक क्रियासँ होइत अछि। ई आरम्भ पूर्वाध्यायक रेलचौकसँ एकदम भिन्न लय अनैत अछि। टिकट-खिड़कीमे व्यक्ति अपन परिचयक आगाँ रुकल छल; एतय उपकरणक निर्माता अपना निर्णयक आगाँ रुकैत अछि। संकेत लाल रङकेँ ‘मदति चाही’क चिन्ह मानने अछि, मुदा पद्मा पूछैत छथि : “अहाँ सोचलहुँ। बच्चासभसँ पुछलहुँ?” अधखुलल पट्टी क्षणभर कक्षाक नैतिक आ कथात्मक केन्द्र बनैत अछि। सामान्यतः उपकरण बनला पर ओकर उपयोग आरम्भ होइत; एतय उपकरण बनबाक प्रक्रियामे उपयोगकर्ता स्वयं ओकर अर्थ पुनर्निर्धारित करैत अछि। एहि छोट उलटावसँ अध्यायक पात्र-विकास शुरू भऽ जाइत अछि।

मीरा मंडल धागा छूति रङ नहि देखनिहार, धागा नहि छुबि सकनिहार आ पढ़ाइ शुरू कएनिहार बच्चाक अलग परिस्थिति सोझाँ अनैत छथि। एक बच्ची टेबुलपर दू धीमा थपकी दैत अछि। पद्मा ओकरा उत्तर मानैत छथि। प्रारम्भक एहि ‘दू थपकी’क हास्यपूर्ण प्रत्यावर्तन पाठांश २३ मे होइत अछि, जखन चलन्त पट्टीक पियर खिड़की अटकैत अछि आ झिलमिल संकेतकेँ ओहि ढङ्गसँ मदतिक संकेत दैत अछि। वस्तु-आवर्तन एतय केवल सजावट नहि : पहिल बेर बच्चीक इशारा मानवीय संवादक अज्ञात भाषा अछि, दोसर बेर ओ शिक्षकक त्रुटि बुझाबयवला सामूहिक भाषा बनि गेल। संकेत पहिने लजाइत अछि, फेर हँसैत अछि। ओकर चरित्रक परिवर्तन कोनो घोषणापत्रसँ नहि, अपन उपकरणक अपूर्णतापर हँसि सकबाक क्षणसँ स्पष्ट होइत अछि।

प्रवेश, भाषा, रिकॉर्डिंग : कक्षाक बहुकेन्द्रीय घटनाक्रम

चलित परिवारक बालक आ ओकर बहिनक प्रवेशक प्रसंग आरम्भिक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। बालिकाक अस्थायी कक्षा-पंजीमे नाम सही छल; स्थायी पता नहि। मीरा आ पद्मा उपलब्ध पढ़ाइक प्रति, चलित सम्पर्क आ अगिला सत्यापनक तिथि राखि आजुक कक्षामे प्रवेश जारी रखैत छथि। अन्तमे ‘पता सत्यापन शेष’ लिखल स्पष्ट आदेश भेटैत अछि, जकर चलैत बालिका कक्षासँ बाहर नहि कएल जाएत। एहि उपकथाक उपलब्धि शिक्षाक वास्तविक

उपस्थिति अछि; काल्पनिक स्थायी पता अथवा सम्पूर्ण पंजी-सुधार नहि। अध्यायक अन्य प्रसंगसभक तुलनामे ई छोट, मुदा अत्यन्त प्रभावी घटनात्मक परिवर्तन अछि, कारण बालिकाक नाम-अक्षर चिन्हबाक दृश्य कथाक प्रारम्भिक सामाजिक उलझनकेँ बच्चाक हाथक क्रियामे रूपान्तरित करैत अछि।

मातृभाषाक कक्षामे रचना धिमाल ‘घर’क अनेक शब्द सुनबैत छथि। पाठशालाक बोर्डपर एक शब्द लिखल रहितहुँ बालकसभ अलग अनुभवक अर्थ अनैत अछि। संकेतक प्रश्न—सभ शब्द पट्टीमे अँटत की?—क उत्तर रचना दैत छथि : “पट्टीमे सभ शब्द नहि अँटत, मुदा सभक शब्द सुनबाक अधिकार अँटि सकैत अछि”। एहि विनिमयक कथात्मक महत्त्व ई नहि जे कियो एक सिद्धान्त घोषित कएलक; मुख्य महत्त्व ई अछि जे शिक्षकक तयार उपकरण समुदायसँ भेटि सीमित होइत अछि। पाँच बच्चाक कक्षाक पूर्ण मजदूरीक विषय अनिर्णीत रहलो आंशिक शिक्षण-घण्टाक स्वीकृति भेटैत अछि। तेँ भाषिक बहुलता काव्यात्मक उत्सव पर सीमित नहि; ओकरा चलएबाक शिक्षकक दिनक समय कथा भीतर देखाओल गेल अछि।

एक स्थानीय संस्था बच्चासभक हाथक संकेत रिकॉर्ड कऽ सार्वजनिक प्रचार करबाक प्रस्ताव अनैत अछि। संकेत पहिने कैमरा उठबैत अछि, फेर अनुमति-पत्रक सामान्य ‘सर्वाधिकार’ वाक्य देखिकऽ रुकैत अछि। पद्माक “चेहरा समूहक सम्पत्ति नहि होइत” कथनक असर कक्षाक दृश्य-विन्यासमे देखल जा सकैत अछि : सामूहिक सामग्री, खर्चक रसीद आ पहचान-रहित प्रदर्शनक विकल्प बनैत अछि, मुदा बच्चा अथवा आश्रयक निवासीसभक चेहराक अनुमति अलग राखल जाइत अछि। अन्तमे संस्थाक संशोधित पत्र अबैत अछि; पद्मा तुरन्त हस्ताक्षर नहि करैत छथि। एहि खुलल निर्णयसँ अध्याय अपन दर्शककेँ राहतदायक ‘सभ सहमत भऽ गेल’ अन्त नहि दैत। संकेतक “पट्टी हमर हाथसँ बनल, मुदा एहि पर अभ्यास करनिहारक आवाज हुनकर अछि” कथन ओकर शुरुआती उपकरण-स्वामित्वसँ परस्पर संवादक बोध धरि यात्रा दिखबैत अछि।

समानान्तर समय : वाहन, घरेलू देखभाल आ कक्षाक परीक्षा

अध्याय विद्यालयक भोर सँ साँझ धरि चलैत अछि, मुदा एक ही दिनक भीतर अनेक काल-सूत्र खुलैत अछि। मदन राउतक एक वाहनपर विद्यालयक फेरा आ सम्भावित रोगी-ढुलाईक एक घड़ीक माँग अछि। सुरक्षित विकल्प-वाहनक योजना बनैत अछि, मुदा पुरान पुनर्निर्देशनक दाम बाकी रहैत अछि। एहि प्रसंगक संरचनात्मक काम शिक्षाक गतिकेँ अस्पतालक संकट-वर्णनसँ जोड़ब अछि। पाठक सौप्तिक-पर्वक रोगी-बचाव पढ़ि चुकल छथि; एहि स्मृतिसँ वाहनक समय-सारणी केवल बसक सामान्य समस्या नहि रहैत। मुदा नव संकटकेँ पुनः नाटकीय ढहनामे बदलल नहि गेल—पूर्वघटनाक स्मृति वर्तमानक नियोजनमे क्रिया करैत अछि।

देवी गोंड अपन अस्पतालक आघातक ‘गवाही’ देबाक माँग अस्वीकारि स्वास्थ्य-संकेत-कार्डक उपयोगसँ सम्बन्धित शिक्षा देबाक प्रयोजन चुनैत छथि। कथावाचक हुनकर माथक चोट, मायकेँ दवा देबाक दायित्व आ प्रशिक्षणक समय—तीन अलग अनुभव एक दृश्य-क्रममे रखैत छथि। भायक संग फोनपर तीख संवादक बाद घरक देखभाल बाँटबाक तात्कालिक व्यवस्था बनैत अछि; पूरा भविष्यक समाधान नहि। देवीक प्रशिक्षण छूटैत नहि, आ संकेतक स्वास्थ्य-कार्ड चिकित्सकीय निदानक स्थान नहि लैत। एहि प्रसंगमे देहगत स्मृतिक गहनताक

अवसर अछि : अस्पतालक दुर्घटना आब स्मृति-भाषामे लौटैत अछि, मुदा पात्र अपन वर्तमान भूमिकाकेँ पुरान घटनामे बन्द नहि करबैत छथि।

मीरा मंडलक पुरान चलन्त कक्षाक सहायक-शिक्षणक मजदूरीक कथा दिनक समापनमे प्रवेश करैत अछि। लिखित रूपसँ स्पष्ट अवधि लेल देयक अनुशंसा होइत अछि; शेष अवधि लेल गवाही आ प्रतिवेदन माँगल जाइत अछि। एकरे संग रचनाक बाँकी शिक्षण-घण्टा, मदनक पुरान फेराक दाम आ संकेतक उपकरण-निर्माणक श्रम मूल्य अनिर्णीत रहैत अछि। कथा एतय शिक्षा-सुधारक चारिटा उपलब्धि आ चारिटा शेष प्रश्न एके निर्णय-पंजीमे रखैत अछि। बच्चीक प्रवेश-स्वतन्त्रता शिक्षकक आर्थिक अदृश्यताक मूल्यपर नहि टिकय—ई उपकथासभक साझा सूत्र अछि।

कथन-स्वरक स्तर, हँसीक विराम आ आलोचनात्मक मूल्यांकन

तृतीय पुरुष कथावाचक संकेत–पद्माकेँ केन्द्र बनाकऽ चलैत छथि, मुदा दृष्टिकेन्द्रण भिन्न-भिन्न कापी, हथेली, आवाज, मातृभाषा, घायल देह आ बालकक प्रश्नक बीच सरकैत अछि। एहि बिखरल दृष्टिकेन्द्रणमे शिक्षक मात्र ज्ञानक स्रोत नहि : ओ बच्चासँ अपन उपकरणक अर्थ सीखैत छथि। पुरान प्रश्नपत्रक ‘चित्र देखि नाम लिखू’ नियमक स्थानपर अर्थ-बुझाइ, सम्प्रेषणक माध्यम आ अगिला अभ्यासक जरूरतक अलग दैनिक आकलन विकसित होइत अछि। पाठकक समक्ष ई बदलाव नाटकीय जीत नहि; एक पाठ-अभ्यासक अनेक दृश्यरूप बनैत अछि। जिलाक औपचारिक वार्षिक परीक्षा एही रूपमे स्वीकार करत, ई बात मूल पाठ नहि कहैत।

कलात्मक दृष्टिसँ एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि दुःखपछाति समाजमे हँसीक पुनरागमन अछि। संकेतक अटकल उपकरणपर बच्चासभक संयुक्त हँसी न त अस्पतालक दुर्घटना बिसरबैत अछि, न मजदूरीक बकाया चुकबैत अछि; मुदा कक्षामे एकटा नव लय देत अछि। तथापि कमजोरी ई जे एके दिनमे भाषिक बहुलता, प्रवेश, कैमरा, वाहन, स्वास्थ्य-कार्ड, घरेलू देखभाल, मजदूरी, मूल्यांकन आ अनुदानक बहुतो उपकथा अत्यन्त सुव्यवस्थित रूपमे समापित/स्थगित कएल जाइत अछि। अध्यायक संवाद कखनो प्रशिक्षण-पुस्तिका-जेकाँ सटीक भऽ जाइत अछि। संकेतक उपकरणक विफलता आ बच्चीक अप्रत्याशित थपकी एहि योजनागत लयक सबसँ जीवन्त प्रतिपक्ष अछि। अन्तमे झिलमिल परीक्षा आ फीसक प्रश्न पुछैत अछि। अर्थ बुझबाक मूल्यांकनक बाद शिक्षण-श्रमक मूल्य अगिला अध्याय १४८ क स्वाभाविक कथात्मक आवश्यकता बनैत अछि।

अध्याय १४८ — पद्माक फीस

तीन बही : शून्य शुल्क आ अदृश्य श्रमक बीच कथा

“पद्माक फीस”क पहिल दृश्य तीनटा बही खोलैत अछि : नामांकन, शिक्षकक घण्टा, आ फीसक खाली खाना। किच्छु क्षण धरि पाठककेँ लागैत अछि जे बालकक मुफ्त प्रवेशक विरोधमे फीस माँगल जाएत; मुदा पद्मा पहिलहि ‘विद्यार्थीसँ प्रवेशक नामपर किछु नहि’ लिखैत छथि। अगिला प्रश्न आ कथा-द्वन्द्व शिक्षकक अतिरिक्त भाषिक मध्यस्थता, अभिभावक-भेंट आ स्वीकृति-पत्र बुझएबाक अदृश्य समयक अछि। एहि अर्थमे शीर्षक जानि कऽ दोहरा अपेक्षा पैदा करैत अछि : ‘फीस’ शिक्षकक कथित निजी वसूली नहि, संस्था द्वारा उपयोग कएल

श्रमक कथामे दृश्यमान मूल्य बनबाक प्रक्रिया अछि। रुखसानाक रसोइसँ अएल जीराक गन्ध विद्यालयक लेखा-कक्षकेँ जीवित श्रमक संसारसँ जोड़ैत अछि।

लिपिक पद्माक पहिनुक स्वैच्छिक सहयोगक उल्लेख करैत छथि; पद्मा स्वेच्छासँ देल समय आ संस्थाक निर्धारित कार्य अलग कागदपर लिखैत छथि। एहि आरम्भिक संवादमे कथानकक केंद्रीय तनाव आवर्तित अछि : ‘सहयोग’ कहि श्रम अदृश्य करब। परन्तु उपन्यास एकटा सर्वसमाधान प्रस्ताव राखि तत्क्षण समाप्त नहि होइत; विभिन्न परिवार आ पेशाक पात्र एहि बहसकेँ अलग दृश्यद्वारा परखैत छथि। तीन बही आरम्भमे लघु लेखा-प्रतीक छथि; अन्तमे ओकर भरल, आंशिक भरल आ बाँकी खाना पुनः लौटैत अछि। संरचनात्मक वृत्त पूर्ण होइत अछि, निश्चायक आर्थिक न्याय नहि।

पेशा, भाषा आ पीढ़ीक चुनाव : चारि पात्र-धारा

सरस्वती ठाकुर अपन बेटीकेँ विद्युत्-उपकरणक प्रशिक्षणमे प्रवेश दिलएबाक चाहैत छथि। भोरक ग्राहक छोड़बाक आर्थिक हानि, जेठानीक संग काम बाँटब आ फॉर्ममे ‘पारिवारिक पेशा’ लिखबाक दबाव एहि प्रसंगक तीन चरण छथि। बेटी स्पष्ट कहैत अछि जे ओकरा मायक कैंची नहि, तारक सुरक्षा सीखबाक अछि। फॉर्म जमा होइत अछि, शुल्कक किछु भाग रसीदसहित चुकाओल जाइत अछि, प्रवेश-परीक्षण आगामी सप्ताह अछि; प्रशिक्षणमे अन्तिम प्रवेश नहि। ई घटना उपन्यासक १५७ व्यवसाय-समुदायक व्यापक सामाजिक विन्यासक भीतर पेशागत निरन्तरता आ पीढ़ीक स्वायत्त चयनक तनाव खोलैत अछि। सरस्वतीक काजक दाम सेहो दृश्यसँ बाहर नहि जाइत : बेटीकेँ पहुँचेबाक लेल माँ छुट्टी लैत छथि तँ ओहि समयक लागत घरेलू हिसाबमे दर्ज होइत अछि। पद्मा फार्म बुझएबाक कामक दाम परिवारसँ नहि, संस्थाक निर्धारित सहायताक मदसँ चाहैत छथि; कथाक एकटा श्रम-धारा दोसराक बोझ नहि बनय, ई प्रश्न दृश्यात्मक रूपमे प्रस्तुत अछि।

हरि नटुवाक आयोजन-प्रस्ताव विद्यालयक फीस-विवादसँ अलग सांस्कृतिक समय अनैत अछि। अधिक पारिश्रमिकक शर्तमे अपन जाति, पेशा आ बोलीक उपहास तथा बच्चाकेँ झूठ-मूठ अपमानित करबाक दृश्य राखल गेल अछि। हरि एहि भाषा अस्वीकारैत छथि; बेटा अंशु अधिक दामसँ किताबक खर्च उठबाक आशा कहैत अछि। पिता–पुत्रक संवाद एकरे नारा नहि : बालक सचमुच घरक खर्चक चिन्ता करैत अछि, पिता सम्भव आमदनी छोड़बाक परिणाम स्वीकारैत छथि। बादमे छोट कार्यक्रम चलैत अछि, अपमानकारी दृश्य बिना दर्शक हँसैत छथि, अग्रिमसँ अंशुक पुस्तक आ यात्राक किछु खर्च अलग रखल जाइत अछि; पूरा शिक्षाखर्च नहि चुकैत। हरिक ढोलकक अन्तिम थाप आ अंशुक पुस्तक बन्द करबाक एकसाथ क्षण श्रम-समय आ पाठ-समयक दृश्यात्मक समकालिकता बनैत अछि। ई अध्यायक सबसँ सफल सान दृश्यसभमे एक अछि।

नसीमा शेरशाहबादी पोथी सिएबाक कामक संग बेटीकेँ विद्यालयमे स्थान दैत छथि, आ स्वयं प्रौढ़-कक्षा चाहैत छथि। बेटी पर घरक बोलीक उपहास होइत अछि; घटना लिखल जाइत अछि, मुदा युवककेँ ओकर पक्ष सुनने बिना निर्णायक दोषी नहि ठहराओल जाइत। नामक अक्षरक सही उच्चारण सीखबाक दृश्य भाषा-अधिकारक अमूर्त बहसकेँ शरीरक आवाजमे बदलैत अछि। नसीमाक जिल्द-सिएबाक रसीद अपन काजक अलग पारिश्रमिक रखैत अछि। बेटीकेँ कक्षामे बैसब जारी रखबाक अनुमति भेटैत अछि; अन्तिम पुरान अभिलेख-सुधार एखन शेष।

माँक प्रौढ़ अध्ययन आ बेटीक आधुनिक विद्यालय एकसाथ चलब इस कृतिक पीढ़ीगत साक्षरता-वृत्तकेँ अगाँ बढ़बैत अछि।

संकेतक निर्मित पट्टी आ विद्यार्थीक आवाजक अलग हकक प्रश्न पुनरागमन करैत अछि। स्थानीय समूह विद्यार्थीक आवाज जोड़ि सामग्री बेचबाक प्रस्ताव दैत अछि, संकेत मना करैत अछि। कक्षामे एक बच्ची उत्तर चित्रसँ दैत अछि, लेखाक पन्नामे लिखित अक्षरक शून्य अङ्क देखाइत अछि। पद्मा अर्थ-बुझाइ आ अक्षर लिखबाक अभ्यासकेँ अलग रखैत छथि। ई प्रसंग अध्याय १४७ सँ सीधा जुड़ल अछि : संकेतक उपकरण द्वारा देल वैकल्पिक उत्तरक भाषा आब शिक्षकक मूल्यांकन-घण्टा आ उपकरण-निर्माणक वास्तविक श्रमक प्रश्न बनैत अछि। एहि प्रकार अध्याय १४८ क शीर्षक ‘फीस’ केवल धन-प्राप्तिक चर्चा नहि, ज्ञानक आदान-प्रदान कतेक व्यक्ति-घण्टा पर टिकैत अछि तकर कथात्मक गणना बनि उठैत अछि।

कथनकालक बुनावट आ अध्यायक नैतिक बहुस्वरता

अध्याय भोरक तीन बहीसँ दुपहरक आवागमन, संझियाक हरिक प्रदर्शन आ रातिक पद्माक अन्तिम लेखा धरि चलैत अछि। अतीतक सन्दर्भ पिछला दिनक झिलमिलक प्रश्न, सरस्वतीक पाछल कमाइ, नसीमाक स्थानान्तरण-पत्र, हरिक पुरान प्रस्ताव आ सहायक-शिक्षकक बकाया द्वारा वर्तमानमे अबैत अछि। कथा एकरे दिनमे अनेक पात्रक सामाजिक समय एकसाथ देखबैत अछि। दुपहरक बैठकमे पद्माक तर्कक लम्बा दृश्य अछि; बीचमे घरक कमाइ, ढोलक, फाटल पुस्तक, बेटी द्वारा रेडियो-माप बनब, चिकित्सकीय निर्देशक छोट निजी दृश्य कथनक गति बदलैत अछि। एतय स्वतंत्र रामायण अथवा महाभारतक प्राचीन दृश्य नहि, यद्यपि उत्तरकाण्डक दीर्घ उत्तरजीवनक रचना एहि सम्पूर्ण अनुशासन-पर्वक संरचनात्मक पृष्ठभूमि अछि।

कथावाचकक दृष्टि पद्माक टेबुल सँ सरस्वतीक झोरा, हरिक मंच, नसीमाक सूई, संकेतक पट्टी, जुबैदाक आश्रय आ रुखसानाक रसोइ-रसीद धरि वितरित अछि। एहि बहुकेन्द्रीय संरचनामे ककरो समस्या दोसराक फीस मे विलीन नहि होइत। उपचारक निर्देश निजी कोठरीमे बुझाओल जाइत अछि, अस्पष्ट मात्रा चिकित्सकसँ फेर पुछल जाइत अछि। भाषिक मध्यस्थताक कार्य आ चिकित्सकीय निर्णयक भूमिका अलग रहैत अछि, मुदा कथनक विशेष महत्त्व सेवा-लेनिहार परिवारक निजताक अनुभवमे अछि। ओ परिवार ‘एखन पैसा देबाक अछि?’ पुछैत अछि; जुबैदाक उत्तर द्वारा अनिश्चित भयक छोट काल-विराम समाप्त होइत अछि। भाषा-बदलाबसँ पात्रक जीवनक गतिमे छोट, वास्तविक अंतर उत्पन्न होइत अछि।

आंशिक निर्णय, पुनरावृत्तिक जोखिम आ जानकीक खुलल प्रति

विद्यालयक समिति पाँच नियम मानैत अछि—कार्य-सङ्केत, सत्यापित घण्टा, संस्था-वार बजट, गोपनीय सीमा आ स्वैच्छिक कार्यक अलग स्वीकृति। परीक्षण-अवधि लेल सीमित मानदेय स्वीकृत होइत अछि; पूर्ण प्रस्तावक वित्तीय निर्णय शेष अछि। मीराक पुरान मजदूरी, मदनक पुरान फेरा आ रचनाक बाँकी घण्टा अलग खुलल रहैत अछि। एहि रूपमे पद्माक फीसक वास्तविक कथात्मक परिणाम पूर्ण भुगतान नहि, अदृश्य समयक आंशिक स्वीकार आ सार्वजनिक लेखामे ओकर स्थान अछि। सरस्वतीक बेटीक प्रशिक्षण-प्रवेश सेहो एखन निर्णयाधीन

अछि; हरिक अनुबन्ध बदललो परिवारक सभ खर्च नहि भरल। अनेक अपूर्णतासँ कथा एकरे निश्चयक केन्द्रमे सीमित रहैत अछि।

कमजोरी ई जे बहुतो उपकथाक विन्यास समान अछि—गलत अथवा अनुदार प्रस्ताव अबैत अछि, पात्र अपन श्रम/परिचयक सीमा स्पष्ट करैत अछि, सुधारल कागद बनैत अछि, आ शेष दावा अलग रहैत अछि। ई पुनरावृत्ति शिल्पक अनुशासित लय अवश्य अछि, मुदा किछु पात्रक विशिष्ट चेतना सुव्यवस्थित सामाजिक सिद्धान्तक वाक्यमे बदलि जाएबाक खतरा बढ़ैत अछि। विशेषतः एक विद्यालयक एक दिनमे एतेक अलग समुदाय-पेशा आ संस्थाक प्रश्नक व्यवस्थित उपस्थिति रचनाक नियोजित रूपरेखा उजागर करैत अछि। एहि सीमाकेँ हरिक मंचक हास्य, नसीमाक सूई सुरक्षित खोंसब, सरस्वतीक बेटी द्वारा रेडियो-माप बनब आ रुखसानाक रसोइक सुगन्ध अनुभवपरक गहराइ दैत अछि।

अन्तिम दू पाठांशमे पुरान बच्चा-चोरीक गलत आरोपक सूचना-पटपर बचल प्रति देखाइत अछि, आ जानकी फेर सार्वजनिक सुधारक माँग करैत छथि। पद्मा कागद तुरन्त फाड़ि अपराधी घोषित नहि करैत छथि; जानकी अपन कथनक जगह चाहैत छथि। तीन बहीक अन्तिम पन्ना भरल अछि, मुदा मेजक एक कात जानकीक प्रति खुलल रहैत अछि। ई खुलल अन्त अध्याय १४९ — “जानकीक खण्डन” केँ कारणात्मक रूपसँ जन्म दैत अछि। फीसक कथा पूर्णतापर नहि, पुरान सार्वजनिक अपमानक बचल आवाजपर समाप्त होइत अछि।

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४५-१४८ क संयुक्त कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

अनाज सँ आवाज, यात्रा सँ पाठ, पाठ सँ श्रम-मूल्य

चारू अध्यायक क्रम एकटा स्पष्ट, किन्तु बहुपरतीय कथा-वक्र अछि : राशनक पाँतिमे सावित्री–दुलारीक प्रतिनिधित्व बनैत अछि; पाँतिक अन्तमे घुमन्तु पुरुष फकीराक पासक बाट पुछैत अछि; फकीराक यात्रा-पास बहाल होइते नन्दूक सामानक खेप चलैत अछि; हुनकर झिलमिल पाठशालामे उपस्थित रहैत अछि; संकेतक कक्षामे बच्चासभ अपन उत्तरक माध्यम तय करैत अछि; तखन पद्मा ओहि कक्षाकेँ चलएबाक भाषिक आ शिक्षकीय श्रमक मूल्यक प्रश्न उठबैत छथि। एहि धागामे ‘कागद’ वस्तुमात्र नहि, पाठकीय अपेक्षा-परिवर्तनक साधन अछि। प्रत्येक अध्यायक अन्त कोनो नव वर्गक अधिकारक उपदेश नहि, आगामी दृश्यक ठोस आवश्यकताक संकेत दैत अछि।

पहिल अध्यायमे चाउरक दाना, दोसरमे पीयर यात्रा-पर्ची, तेसरमे चलन्त स्पर्श-पट्टी आ चौठममे तीन बही—ई चारि वस्तु कथा-वस्तु रूपमे बढैत क्रम रचैत अछि। दाना साक्षात् देहक भूख अछि; यात्रा-पर्ची रोजीक समयक प्रवेश अछि; पट्टी अभिव्यक्तिक वैकल्पिक माध्यम अछि; बही एकरा सम्भव बनौनिहार श्रमक ठोस गणना अछि। एहि वस्तु-क्रममे नव अनुशासन ‘सभकेँ एके प्रकारक नियम’ नहि, अलग जीवन-लयकेँ एक-दोसरापर मेटा नहि देबक आख्यान बनैत अछि। किएक तँ ई विचार वस्तुक आवृत्तिसँ निर्मित अछि, केवल कथावाचकक अन्तिम निष्कर्ष नहि।

समयक बहुस्तर आ चरित्रक सक्रियता

चारू अध्यायक बाह्य समय फागुन २०४० क लगातार भोर–साँझक जीवनमे अछि। तथापि राशनक बीतल महीना, फकीराक छूटल गाड़ी, झिलमिलक पाठशालाक अगिला भोर, देवीक प्रशिक्षण-दिन, सरस्वतीक बेटीक आगामी परीक्षा आ नसीमाक रातिक प्रौढ़-कक्षा—ई सभ फराक भविष्य आ अतीतकेँ एकहि वर्तमानमे राखैत अछि। पूर्वदीप्ति प्रायः व्यक्ति द्वारा पुरान कागद पढ़बाक छोट घटना सँ बनैत अछि, लम्बा स्वतंत्र अतीत-दृश्यसँ नहि। एहि चारिमे कोनो स्वतंत्र प्राचीन महाकाव्यीय दृश्य नहि; उत्तरकाण्डक अन्तर्पाठीय सम्बन्ध दीर्घ युद्धोत्तर पुनर्रचना आ जीवित लोकक उत्तरदायित्वक संरचनाक स्तरपर रहैत अछि। एहि अन्तरकेँ आख्यानक सम्भावित संकेतक स्वतः कथानक मानि नहि पढ़ल गेल अछि।

दृष्टिकेन्द्रण वितरित अछि : रुखसानाक फर्श, सावित्रीक खाली वितरण-पन्ना, फकीराक बही, झिलमिलक जूताक फीता, फरीदक पिता-पुत्रक हिसाब, संकेतक अटकल उपकरण, देवीक घायल देह, सरस्वतीक कैंची आ नसीमाक सुई। एहि सूक्ष्म दृश्य-चयनसँ पाठक लोकक अधिकारक भाषाकेँ व्यक्ति-विशेषक शरीर आ घरमे देखैत छथि। अपेक्षाकृत मुख्य संयोजक गोमती, पद्मा, रमा आ रुखसाना छथि, मुदा घटनाक निर्णायक चुनाव सावित्री, दुलारी, फकीरा, बच्चासभ, नन्दू, देवी आ नसीमा अपने करैत छथि। बहुस्वरताक सीमा एतय तखन उघड़ैत अछि जखन बहुतो पात्र एक्के तरहक स्पष्ट श्रेणीकरण वाक्य बजैत छथि; पाँतिक बच्चाक प्रश्न, झिलमिलक हँसी आ फरीदक पिताक संकोच एहि समानतामे अन्तर अनैत अछि।

भावगत उपलब्धि, रचनात्मक आपत्ति आ अगिला प्रसंग

स्त्री-पर्वक करुण शोक आ शान्ति-पर्वक संस्थागत पुनरारम्भक बाद अनुशासन-पर्वक ई पहिल चारि अध्याय कथात्मक भावक अधिक रोजमर्रा विस्तार करैत अछि : भूख, काम छूटबाक भय, बच्चाक हँसी, भाषाक अपनापन, पेशागत गौरव आ शिक्षणक श्रम-मूल्य। अपेक्षित नाटकीय चरमबिन्दु सभ ठाम निबद्ध नहि; बहीमे छोट परिवर्तन, सही तिथि अथवा सुरक्षित अभ्यासक निर्णय अध्यायक परिणाम बनैत अछि। एहि धीमा कथा-व्यवस्थामे मृतक–जीवितक आरम्भिक त्रासदी सामाजिक सम्बन्धक अनेक छोट सम्भावनामे वितरित होइत अछि।

मुदा एकरे शिल्पक वास्तविक खतरा घटना-ढाँचाक प्रायः एकरूप पुनरावर्तन अछि : गलती चिन्हब, सीमा बतायब, अलग सूची बनायब, आ अनिर्णीत दावा बचायब। ई अनुशासन कथाक स्वतःस्फूर्त अव्यवस्था, स्थानिक बोलिक वैचित्र्य आ पात्रक अव्यक्त विरोधकेँ किछु ठाम घटा दैत अछि। तेँ चारू अध्यायक उपलब्धि गनैत समय नियमक सुस्पष्टता मात्रकेँ कलात्मक महत्त्वक पर्याप्त माप नहि मानब। ओहि ठाम असल साहित्यिक प्रभाव प्रबल होइत अछि जतय कथाक योजना विचलित होइत अछि—दानाक फर्शपर खसब, रेलक भोर छूटब, पट्टीक खिड़की अटकब, हरिक ढोलक आ अंशुक पुस्तक एक संग बन्द होएब।

अध्याय १४८ क अन्तमे जानकीक हाथमे रहल पुरान आरोपक प्रति कथा पुनः सार्वजनिक अपमानक अधूर इतिहास दिस मोड़ैत अछि। एतय समीक्षा अनुशासन-पर्वक परिणाम पूर्ण कहि नहि सकैत; बादक अध्याय १४९ सँ देखबाक होयत जे सार्वजनिक खण्डनक पहिनुक घटना नव पाठकीय स्मृतिमे कोना लौटैत अछि।

अध्याय १४९ — जानकीक खण्डन

दरारहीन शीशा, पीयर कागद : सार्वजनिक स्मृतिक रुकल समय

“जानकीक खण्डन” विद्यालयक पुरान सूचना-पटक काँचसँ आरम्भ होइत अछि। शीशामे दरार नहि, मुदा भीतर लगल आरोपक पर्ची नमीसँ पीयर पड़ि गेल अछि। एहि दृश्यमे वस्तुक दू प्रकारक समय एक संग उपस्थित अछि : काँच अखण्ड अछि, कागद पुरान भऽ रहल अछि, मुदा ओकर अपमान करबाक शक्ति एखन वर्तमानमे काम करैत अछि। पूर्वाध्याय १४८ क अन्तिम खुलल पर्ची एतय मुख्य कथावस्तु बनि जाएत। लेखक एक निष्पादित सार्वजनिक सुधारकेँ ‘समाधान’ कहि बन्द नहि करैत छथि; सही बात जानकारी बनिकऽ विद्यालयक हर ठाम पहुँचल की नहि, ई अगिला घटना-श्रृंखलाक कारण बनैत अछि। भोरमे दू अभिभावक जानकी लगसँ अपन बच्चा हटा लैत छथि। अतः कथाक पहिल वास्तविक व्यवधान नव आरोप नहि, पुरान शब्दक एखनहुँ चालू सामाजिक प्रभाव अछि।

जानकी झोरामे अधबुनल दरीक किनारी, हाटक भाड़ाक रसीद आ खण्डनक मोड़ल प्रति लऽ ठाढ़ छथि। ई तीन वस्तु नारी-पात्रक समाजक तीन अलग स्थान खोलैत अछि—कारीगर, व्यावसायिक हानि भोगनिहार आ अपन अपमानक सार्वजनिक पुनर्लेखन चाहनिहार व्यक्ति। कथावाचक खण्डनकेँ कोनो एक सभामे बजल नायकत्वपूर्ण भाषणसँ शुरू नहि करैत; असदक चाभी, काँच खोलब, पर्चीक प्रतिलिपि आ सुधार पहुँचएबाक देरीसँ शुरू करैत छथि। प्रशासनिक जड़ता दृश्य बनेबाक ई तरीका कथाक अनुशासन-पर्वक लय अनुरूप अछि। किन्तु एहि लयमे जानकीक क्रोध स्वतः समाप्त नहि : बादमे फोनपर पुरान काटल वीडियो फेर आयलापर “ठंडी थकान” देहमे उतरैत अछि। शुरुआतक पीयर कागद आ अन्तक चमकैत स्क्रीन मिलि पुरान अपमानक दू विपरीत भौतिक रूप रचैत अछि।

सुधारक वितरण, राजोक दू पता आ लताक अनुपस्थित बच्चा : बहुकेन्द्रित प्रसंग

अध्यायक पहिल घटनावक्र जानकी–असद–विद्यालयक संवादसँ बनैत अछि। असद पहिल असत्यापित सूचनाक अपना कार्यालयी हिस्साक जिम्मेदारी लैत छथि, मुदा बादमे अज्ञात व्यक्तिद्वारा जोड़ल शब्दक लेखकत्व अपनासँ नहि जोड़ैत। जानकी सार्वजनिक सुधारक भाषा ओतबे व्यापक चाहैत छथि जतबा गलतीक प्रसार विद्यालयक साधनसँ भेल। एहि संवादक कथात्मक विशेषता ई जे विरोधी पात्रकेँ स्थिर अपराधीक भूमिकामे नहि राखल गेल अछि : असद पहिने चूक करनिहार कर्मचारी छथि, मुदा एतय सुधारक सक्रिय सहायक बनैत छथि। सुधारक तीन वितरण-स्थल—विद्यालयक पट, हाटक पर्ची-ठाम आ बस-अड्डाक दुआर—क कथा-बिस्तार सार्वजनिक स्मृतिक अलग-अलग स्थल देखबैत अछि। सुधार तखनहु असीमित नहि : निजी मोबाइलक प्रसार सभ विद्यालयक आदेशसँ बन्द नहि भऽ सकैत। एतय ‘पत्र टाँगब’ आ ‘लोक पढ़ि स्वीकार करब’ बीच बचल दूरी पाठकीय तनाव बनबैत अछि।

राजो भोगताक उपकथा एहि खण्डकेँ केवल जानकीक प्रतिष्ठा-सुधारक एकल आख्यान बनबासँ रोकैत अछि। राजोक बेटी दू घर नहि, गामक पैतृक सम्बन्ध आ नगरक वर्तमान किराया-पता बीच चलैत एक व्यक्ति अछि।

फाइलमे दोहराओल अंकक कारण उपस्थित ‘दू नाम’क भ्रम बालिकाक कक्षामे पहुँछि साथी बच्चीक प्रश्न बनैत अछि। एतय एक कागदी त्रुटि केवल दफ्तरक मामिला नहि रहि बालकक स्वयं-बोधकेँ प्रभावित करैत अछि। राजो बेटी लग बैसिकऽ अपन दू ठामक जीवन बुझबैत छथि, आ बच्ची कापी फेर खोलैत अछि। ई कापी खुलब छोट दृश्यात्मक परिणति अछि, जाहिसँ संवादक अर्थ पाठक शरीरक क्रियामे देखैत छथि। राजोक दू दिनक ढुलाई-मजदूरी आ बेटीक शैक्षिक सहायता अलग प्रकरण बनैत अछि; मजदूरीक आदेश निकलैत अछि, नगद प्राप्ति अगिला समयक घटना रहैत अछि। एहि सूक्ष्म स्थगनसँ कथानक पूर्ण-समाधानक कृत्रिम सरलता टारैत अछि।

लताक प्रवेश आरम्भिक बच्चा-चोरीक आरोप आ मिथुनक वास्तविक गुमशुदगीक बीच दुखद अन्तर कायम रखैत अछि। लता जानकीक संग बैसैत छथि, मुदा अपन बेटाक निजी फाइल सभासमक्ष खोलबाक अनुमति नहि दैत छथि। ई पात्र अपन दुःखकेँ दोसराक खण्डनक प्रचार-सामग्री बनएबाक विरोध करैत अछि। चमेली–गुंजाक अलग संरक्षण-कथा सेहो मिथुनक खोजमे विलीन नहि होइत। अनेक उपकथा एक नगरक साझा ओसारमे भेटैत अछि, मुदा कथावाचक हरेकक अलग समय आ अपूर्ण परिणाम रखैत छथि। एहि बहुकेन्द्रित रचनामे जानकीक खण्डन स्वयं पूरा नगरक अपूर्ण कथासभक एक अस्थायी संगम मात्र अछि।

उक्ति, प्रतिवाद आ दरीक गाँठ : कथनकाल आ पात्रक चुनाव

अध्यायक बाह्य काल एक भोरसँ राति-पूर्व धरि अछि। बीचमे तीन सप्ताहक छूटल हाट, पुरान सुधार-पत्र, अनाम डिजिटल सम्पादन, राजोक पिछला ग्राम-निवास आ मिथुनक जारी खोज छोट-छोट पूर्ववृत्तक रूपमे घुसैत अछि। ई दीर्घ पूर्वदीप्ति नहि, वर्तमानमे पुरान वस्तु पढ़बाक समय अतीतक पुनः सक्रिय भऽ उठब अछि। दृश्य-क्रम विद्यालयक बरामदासँ बाजार समिति, खुला बैठक, सीढ़ी, रेलपुल धरि फैलैत अछि। प्रत्येक ठाम जानकी अपन कथनक शर्त बदलैत नहि, ओकर प्रयोगक स्थल बदलैत छथि। ‘पूर्णतः निर्दोष’क विशाल घोषणा ओ अस्वीकार करैत छथि, कारण हुनका विशिष्ट आरोपक निरसन चाही, सभ समयक नैतिक प्रमाणपत्र नहि। एहि उत्तरमे पात्र केवल निर्दोष पीड़िता नहि, सार्वजनिक भाषाक सक्रिय सम्पादिका बनैत छथि।

सरयू आ हुनकर नतिनीक संवाद अध्यायक भाव-भारकेँ बही-रसीदसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। नतिनी पुछैत अछि जे आब कियो फेर चोर नहि कहत? सरयू निश्चित निष्कलङ्क भविष्यक वचन नहि दैत छथि; ओ सही बातक कागद, काजक दाम आ प्रश्न करबाक ठामक बात करैत छथि। कड़ी सामाजिक स्थिति बच्चाक छोट भविष्य-प्रश्नमे सघन भऽ उठैत अछि। दरीक गाँठ खोलि फेर कसबाक क्रिया एहि दृश्यकेँ शाब्दिक निष्कर्षसँ बेसी गहिर अर्थ दैत अछि। धागा जुड़ि रहल अछि, पुरान खोलबक निशान एखन बाकी अछि। अध्यायक अन्तिम फोन-प्रसंगमे जानकी तुरन्त प्रतिशोधी पोस्ट नहि दैत छथि; ओ नव प्रसारक समय सुरक्षित कऽ सुधारल आधिकारिक पत्रक लिंक पठबैत छथि। एतय नाटकीय विजय नहि, आक्रमणक प्रतिक्रिया पर अपन समयक नियन्त्रण मुख्य पात्र-विकास अछि।

उपलब्धि, अन्तर्निहित आलोचना आ अगिला चेहरा

अध्यायक प्रबल उपलब्धि गलत आरोपक कथाकेँ ‘सत्य बनाम झूठ’क साधारण द्वन्द्वसँ अलग कऽ ‘कहलक के, सुनलक के, सुधार पहुँचल कतए आ ओकर जीवनपर की असर पड़ल’क अनुक्रममे रचब अछि। असदक आंशिक

जिम्मेदारी, महतोक छपाइ, सरयूक वास्तविक शून्य बिक्री, जानकीक विवादरहित अग्रिम-वापसी आ राजोक किताबक निर्धारित सहायता—ई सभ एकहि जीतक घोषणा नहि, अलग गति बला कथात्मक परिणाम छथि। तथापि बड़ कलात्मक जोखिम अछि : लगभग प्रत्येक पात्र अपना अधिकारक सीमा अत्यन्त परिष्कृत, विधिसम्मत वाक्यमे व्याख्यायित करैत छथि; असद, जानकी, पद्मा आ राजो किछु ठाम एके ‘सही वर्गीकरण’क स्वरसँ बोलैत बुझा सकैत छथि। विद्यालयक एक दिनमे एतेक सुधार-प्रपत्रक समेकन नाटकीय संयोगक आभासो दैत अछि। ई जोखिम सरयूक काँपैत दरी, राजोक बेटी द्वारा कापी बन्द-खोलब आ जानकीक देहमे उतरल थकानसँ किछु कम होइत अछि।

अन्तमे फेर काटल वीडियो अएल अछि : सूचना-पटपर सुधार आ फोनपर आरोप एकसाथ उपस्थित छथि। ई युग्म अगिला अध्याय ‘चेहरा आ प्रमाण’ लेल स्वाभाविक कारणात्मक सेतु बनैत अछि। घटना समाप्त होइते नव प्रश्न उपजैत अछि—एखन लोक चेहराकेँ पहचानक रूपमे केना गढ़ि रहल छथि? कथा जानकीक जीवनक ‘अन्तिम खण्डन’ नहि, दृश्य बनबाक कलाक नव परीक्षा खोलैत अछि।

अध्याय १५० — चेहरा आ प्रमाण

दू मोबाइलक मेज : दृश्यात्मक अविश्वासक कथात्मक आरम्भ

‘चेहरा आ प्रमाण’ पिछला अध्यायक अन्तिम डिजिटल पुनरागमनकेँ अपन पहिल वाक्यक भोर बनबैत अछि : एक रातिमे काटल वीडियो तीन बेर फरक नामसँ घुरि चुकल अछि। ई आवृत्ति एक घटनाक तीन अलग आरोप नहि; एक छविक नब शीर्षकबला प्रसार अछि। कथा एहि अन्तरकेँ दृश्य-संपादनक युगमे अर्थक अस्थिरता रूपमे खोलैत अछि। साजिद नटक मेजपर दू मोबाइल आ कागदक खाम राखल अछि; बच्चाक चेहरा सार्वजनिक भीड़क आगाँ देखबाओल नहि जाएत। कथाक शीर्षकमे ‘चेहरा’ बहुत आकर्षक विषय अछि, मुदा लेखक पहिलहि दृश्यसँ चेहरा नहि देखबएबाक चयन करैत छथि। एही विरोधाभाससँ पाठकक अपेक्षा पुनर्गठित होइत अछि : जे देखाइत अछि ताहि पर कम, जे दृश्य काटि-छाँटि प्रस्तुत कएल गेल अछि ओकर कथा-सम्बन्ध पर बेसी ध्यान जाय।

मोहन कंजर ठेलाक अलग कएल छोट पहिया लऽ अबैत छथि। ओकर काज छः दिनसँ आधा अछि, एक ग्राहक बच्चासभक आगाँ ठेला नहि आनबाक कहलनि। मोहनक देहक काँपैत हाथ आ मेजक कात राखल पहिया आरोपक सामाजिक कीमत देखबैत अछि; एकरा ‘चेहरा मिलबाक’ तर्कक अमूर्त बहस नहि बनबाक दैत। सरयू, जानकी आ मोहनक अलग प्रतिक्रिया दृश्य-विन्यासकेँ बहुस्वरित करैत अछि। जानकी उपस्थित लोकसँ प्रत्यक्ष देखल घटना पूछैत छथि, मोहन अपन ठेलाक सामान्य बनावट देखबैत छथि, आ सरयू चुपचाप ई संशय कतेक पुरान अछि से बोध करबैत छथि। विद्यालयक भीतर समितिक दृश्य एहिना बाहरक भय-भाषासँ प्रविष्ट होइत अछि।

‘मूल अभ्यास’ आ ‘काटल प्रति’ : कथाक भीतर दृश्य बनबाक कथा

अध्यायक पहिल प्रमुख आन्तरिक कथा साजिदक नाटक-अभ्यासक रिकॉर्डिंग अछि। समिति मूल दृश्य सीमित सदस्यक समक्ष देखैत अछि : मंचक सजावट, नकली काठक ठेला, पात्र बदलैत अभिनय आ काटल प्रतिमे रहि

गेल छाया परस्पर भिन्न अनुभव बनबैत अछि। लेखक एतय चलचित्रक निर्माणकेँ स्वयं आख्यानक विषय बनबैत छथि। एकर खास प्रभाव ई जे पाठक जानकीक खण्डनक घटना फेर एक नव माध्यममे पढ़ैत छथि; कथाक बीचक ‘दृश्य’ अपन पहिल प्रसंगसँ अलग कएल गेलाक बाद अर्थ बदलि जाइत अछि। मुदा साजिद नब फैलल सभ प्रति ओही मूल फाइलसँ बनल अछि, एहन दावा नहि करैत अछि। एतेक सीमित कथन कथानकमे आरोपक प्रसार कायम रखैत अछि; तुरन्त सभ रहस्य समाधान नहि करैत।

मोहनक मरम्मति-पर्ची तीन अलग कामक विगत देखबैत अछि। ई बहीक क्रम मुख्य पात्रक कामक समयकेँ फेर कथा-अधिकार दैत अछि। एक ग्राहक स्पष्ट कहैत अछि जे अफवाह देखिकऽ आदेश रोकलक; दोसर ग्राहकक आर्थिक तंगी पहिनेसँ छल। ई दू कारणक अन्तर कथात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण, कारण मोहनकेँ सर्वथा बेदाग नायक बना देबाक बदला हुनकर वास्तविक हानि आ अनिश्चित हानिक सीमा रेखांकित होइत अछि। बजारक समिति जातिक नामपर पूर्णतः निर्दोष घोषित करबाक प्रस्ताव दैत अछि; जानकी आ मोहन विशिष्ट आरोपक वापसी चाहैत छथि। एहि विधानमे सामाजिक वर्ग-नामक सामूहिक अपमान सँ व्यक्तिक काम, ठाम, तिथि आ सम्बन्ध धरि कथाक गति उतरैत अछि।

रेवा–जतन–बिरसीक प्रवेश : परिचयसँ पाठकीय भविष्य धरि

अध्यायक दोस्रो मुख्य वक्र रेवा गुलगुलिया आ हुनकर बच्चासभ जतन–बिरसीक अछि। स्थायी घर नम्बर नहि भेटलाक कारण पिछला प्रवेश टारल गेल छल। आब वर्तमान सम्पर्क-ठाम, चलन्त कक्षाक उपस्थिति आ अभिभावकक सहमतिक आधारपर नामांकन स्वीकृत होइत अछि। एहि कथामे नाटकीय चरमबिन्दु हस्ताक्षर मात्र नहि; जतनक अपन पर्ची हाथमे भेटे धरि मुस्कुरा नहि सकब अछि। आदेशक कागद आ बच्चाक भरोसामे समय-अन्तर अछि, जेकरा एक लघु शारीरिक क्रिया द्वारा लेखक देखबैत छथि। बिरसीक नामक उच्चारण रेवासँ फेर पूछल जाइत अछि। नामक सही आवाज, घुमन्तु जीवनक यात्रा आ विद्यालयक स्थिर बेंच बीच दूरी घटैत अछि, मुदा परिवारक गतिशीलता समाप्त नहि।

रेवा अपन छूटल मजदूरी-दिन आ फोटो बनबए देल दाम पुछैत छथि; नामांकनक स्वीकृति पिछला यात्रा-क्षतिक भरपाई नहि अछि। एहि अनिर्णयक कारण पात्रक अधिकारक कथा केवल प्रशासनिक सफलता नहि रहैत, ओकर जीवनक आर्थिक अवधि बचल रहैत अछि। बीचमे एक अभिभावक घुमन्तु बच्चासभक उपस्थिति पर आशंका जतबैत अछि; लता स्वयं मिथुनक शोकसँ उठि एक परिवारकेँ सामूहिक अपराधी बना देबाक विरोध करैत छथि। लताक ई भूमिका अति महत्त्वपूर्ण चरित्र-विकास अछि : हुनकर खोज समाप्त नहि भेल, मुदा शोकक नामपर अइछल आरोपकेँ ओ समर्थन नहि करैत छथि। पाठक हुनका केवल हराएल बच्चाक प्रतीक्षारत माए नहि, दोसर बच्चाक प्रवेश-अधिकार देखनिहार व्यक्ति रूपमे देखैत छथि।

केशरी बीनक नावक समाचार अध्यायक तेसर छोट धारा अछि। नाव एखन परीक्षणपूर्व पानिमे नहि उतरल, काठक पुरान पर्चीमे ‘बलुआहा’ लिखल अछि, मुदा पर्चीक शब्द नदीक स्थायी नक्शा नहि बनैत। बिरसी अपन नव पाठक विषय रूपमे ई शब्द पुछैत अछि, जतन अपन डेरा आ विद्यालयक दू रेखा खींचैत अछि, मुदा बीचमे मिलन-बिन्दु खाली छोड़ैत अछि। ई रिक्त ठाम एहि अध्यायक सशक्त बिम्ब अछि : नामांकन भऽ गेल, मुदा सुरक्षित

चलबाक समग्र भूगोल अधूर अछि। शैक्षिक प्रवेशक उपलब्धि आ जलमार्गक अनिर्णयक बीच ई रेखा साझा प्रतीकात्मक स्थान बनबैत अछि।

कथनकाल, कथावाचकक दूरी आ आखिरी प्रश्न

समय-क्रम रातिक पुनःप्रसारित वीडियोसँ भोरक समिति, दुपहरक प्रवेश आ साँझक सुधार-पत्र धरि फैलैत अछि। बीचमे नाटक-अभ्यासक पुरान दृश्य, नैराक स्मृति, मोहनक छूटल काम, रेवा के पिछला आवेदन आ नावक पुरान ढुलाईक छोट पूर्वदीप्ति चलैत रहैत अछि। तृतीय पुरुषक कथावाचक घटना एकहि पात्रक चेतनामे बन्द नहि करैत; मीरा, मोहन, साजिद, रेवा, जतन, लता आ जानकीक अनुभवक निकट बेराबेरी पहुँचैत अछि। तथापि ओ सभकेँ समान भावगत विस्तार नहि दैत : मोहनक काँपैत हाथ, जतनक मुस्कानक विलम्ब आ लताक बन्द कापी अपेक्षाकृत सघन दृश्य; समितिक अन्तिम प्रारूप अधिक सार-संक्षेपात्मक अछि।

समापनमे जतन पुछैत अछि—के पढ़ि सकैत अछि आ कोन लोककेँ कोनो जमानामे रोकल गेल छल। ई प्रश्न अगिला अध्याय ‘शम्बूकक पाठ’क सीधा उत्प्रेरक अछि। मध्यक समूह-अपमानसँ शिक्षा-प्रवेशक कथा होइत, कथा आब ज्ञानक अधिकारक इतिहासक नव मंच बनबैत अछि। उपन्यास आरम्भिक चेहरेक मिलान-सदृशता सँ श्रोताक प्रश्नाधिकार धरि एक नाटकीय मोड़ बनबैत अछि। एक चेहरा सभक नजरिमे एक जकाँ देखाइत छैक, मुदा एक कक्षाक भीतर सभ बालकक प्रश्न एक जकाँ होएत से कतहु निश्चित नहि।

कलात्मक आपत्ति ई अछि जे अध्याय १४९ सँ १५० मे सार्वजनिक खण्डनक विधि आ ‘सीमित कथन’क वाक्य किछु बेर लगभग समान संरचनामे दोहराएल गेल अछि। नब समितिक रचना, प्रत्येक दावाक अलग पन्ना, ग्राहकक दू कारणक वर्गीकरण आ नावक पर्चीक सीमित अर्थ—ई सभ एकदम व्यवस्थित सामाजिक-शिक्षा पाठ बनि जाएबाक जोखिम रखैत अछि। मुदा मोहनक ठेलाक पहिया फेर जुड़ब, रेवा के बच्चासभक पर्ची आ जतनक अनुत्तरित प्रश्न आलोचनात्मक शिक्षोपदेशकेँ जीवित कथात्मक क्रियामे रूपान्तरित करैत अछि। विशेषतः मोट अक्षरमे लिखल अन्तिम प्रश्न शम्बूक-पुनर्पाठ लेल शीर्षकगत बीज अछि।

अध्याय १५१ — शम्बूकक पाठ

दू प्रश्नक फट्टा : कथाक भीतर कथा कहबाक अधिकार

“शम्बूकक पाठ”क आरम्भ विद्यालयक फट्टापर लिखल दू प्रश्नसँ होइत अछि—“के पढ़ि सकैत अछि?” आ “के फैसला करैत अछि?”। अध्याय १५० क अन्तिम जतनक प्रश्न एहि बेर पाठक बाहरी गतिविधि नहि, कक्षाक पूरा दिनक नाटकीय आयोजन बनि जाइत अछि। जतन अपन नब प्रवेश-पर्ची किताबक भीतर लुकौने नहि, मेजपर सोझाँ राखैत अछि। प्रवेशक कागद अभिनव अधिकारक दृश्यमान चिह्न बनैत अछि; तकरा प्रश्न पुछबाक अनुमति अदृश्य अछि। नवलक चन्दा-प्रदत्त संस्थागत अधिकारक आग्रह पहिल टकराव बनबैत अछि। ओ शम्बूकक प्रसंग पढ़ाएबासँ झगड़ा होएबाक आशंका करैत छथि, जबकि जतन ठीक ओही असुविधाजनक अंश पढ़बाक चाहैत अछि। एहि विरोधमे शिक्षक–विद्यार्थी–दाता तीन अलग कथन-स्थान निर्मित होइत अछि।

पद्मा तीन पोथी टेबुलपर रखैत छथि आ तुरन्त ओकर पन्ना नहि खोलैत। ई स्थगित पाठ-आरम्भ विद्यालयक सामान्य शिक्षण-समयसँ फरक नाटकीय अवधि पैदा करैत अछि। शम्बूकक एक प्रचलित उत्तरकाण्डीय प्रसंग, भिन्न पाठ-परम्परा आ आजुक कल्पित संवादकेँ कक्षाक फट्टापर तीन अलग शीर्षकमे देखाओल जाइत अछि। उपन्यास स्वयं अपन नाटक-रूपान्तरक प्रकृति बतबैत अछि; तेँ समीक्षाकेँ एकरा मूल महाकाव्यक ‘गुप्त असल संवाद’ मानबाक आधार नहि। कथाक भीतर ई भेदक मुख्य आख्यानशास्त्रीय कार्य अछि : श्रोता जानैत अछि जे आब ओ एक व्याख्यात्मक मंच देखि रहल अछि, जकर पात्र प्राचीन कथा-नाम धारण कएने छथि, मुदा संवाद आजुक विद्यालय द्वारा रचल गेल अछि।

कल्पित वनदृश्य, रोकी देल अन्त आ बाल-अभिनेताक अनपेक्षित आवाज

साजिदक मंचपर समान ऊँचाइक चारि आसन, वनक किनार, जलपात्र आ आधा बनल अक्षरक दृश्य लगैत अछि। एकटा शम्बूक-पात्र बैठल अछि, जकर सीखबाक विषय सेहो निश्चित एक शब्दमे नहि—कखनो अक्षर, कखनो तप, कखनो अपन श्वासक अधिकार। ई अनिश्चितता कल्पित संवादकेँ एक विशेष प्रश्नक बजाय अनुभवक बहुआयामी आकांक्षा बनबैत अछि। युवा शिष्यक प्रवेशसँ गुरु–शिष्यक पारम्परिक सम्बन्धक अपेक्षा जगैत अछि, मुदा संवाद शिक्षा पएबाक बाट बन्द भेलापर स्वशिक्षाक कठिन अनुभव दिस मुड़ैत अछि। वृद्धाक प्रवेश नव भावक सघनता अनैत अछि : नियम बदलबाक सम्पूर्ण भार एक देह पर किएक पड़त ? एहि प्रश्नमे शम्बूकक प्राणक चिन्ता आ सामाजिक परिवर्तनक आकांक्षा परस्पर असहज संगति बनबैत अछि।

अभिनयक सबसँ अर्थपूर्ण क्षण पहरेदारक भूमिका निभौनिहार बालकक पाठ भूलब अछि। पद्मा ओकरा तत्क्षण पंक्ति नहि बतबैत छथि; ओ अपन शब्दमे कहैत अछि जे ओकरा केवल आनबाक आदेश भेटल। एतय प्रस्तुति क्षणभरि लिखल पटकथासँ अलग भऽ जाइत अछि : अभिनेता–बालकक अनपेक्षित वाणी पात्र-पहरेदारक आज्ञाबद्धता पर टिप्पणी बनबैत अछि। ई पूर्णतः मिथकीय समयमे प्रवेश नहि, मंच–कक्षा बीच दृश्यात्मक आवागमन अछि। शम्बूकक अपूर्ण अक्षर आ पहरेदारक हथियारक असमानता दृश्यगत निबन्धक अपेक्षा अधिक तीक्ष्ण अछि। लेखक प्रश्न करबाक पक्षमे पात्रकेँ बोलबैत छथि, मुदा मंचक नियन्त्रण अभिनयक छोट गलतीसँ आंशिक रूपसँ मुक्त होइत अछि। एहि लघु अनियोजित क्षणमे कथाक स्वाभाविक जीवन बेसी मुखर अछि।

नाटक शम्बूकक वधक क्षणपर पहुँचि समाप्त नहि होइत। नवल तुरन्त आपत्ति करैत छथि जे प्रचलित आख्यानक अन्त एहन नहि। पद्मा सहमति दैत छथि : मंचित दृश्य नब कल्पना अछि, मूलक कठिन अन्त मेटाओल नहि जा सकैत। एहि दृश्यक रोकब शिल्पगत चयन अछि—रचना दर्शककेँ एक निर्दोष जीवित अन्तक सहज सांत्वना नहि दैत, न शोकदृश्यक पुनराभिनयसँ बालकसभक प्रतिक्रिया थोपैत। बिरसी अपन कापीमे दू खण्ड बनबैत अछि —“जे कहल गेल” आ “हम जे सोचैत छी”। एहि दू खण्डमे पाठ-अनुवर्तन आ स्वतन्त्र पुनर्लेखनक सम्बन्ध दृश्यरूपेँ सघन भऽ उठैत अछि। बालिकाक कल्पित खुलल पोथी मूल कथाक वास्तविक हिंसाकेँ मेटब नहि, हिंसापछाति कल्पनाक नव स्थान अछि।

विद्यालयक भीतरी मंच आ बाहरक घाट : समांतर कथासूत्रक सम्पादन

अध्याय एके प्राचीन नाटकमे सीमित नहि रहैत। विद्यालयक ओसारमे केशरी बीनक नावक मरम्मति, कारीगरक बकाया, मालतीक अधूर पानिक आपूर्ति, गोपालक ‘तिरसूला’ नामक नक्शा, सुशीलाक ‘बड़दरी’ बीज-स्थल आ रेवाक छूटैत मजदूरी-दिनक प्रसंग प्रवेश करैत अछि। एहि समांतर विस्तारकेँ पहिल दृष्टिमे मुख्य विषयसँ विचलन कहल जा सकैत; मुदा संरचनात्मक अर्थमे ई शम्बूकक प्रश्नक सामाजिक अनुगूँज अछि। नाटकमे ‘के पुछत’ प्रश्न छल, बाहरी ओसारमे ‘नाव बेचल की नहि’, ‘नल लगल, पानि पहुँचल की नहि’, ‘ककरो स्मृतिक नदी-नाम माप बनि सकैत की नहि’—एहन अलग चुनावक कथा अछि। कलाकारक मंच आ कारीगरक बैठक एक-दोसराक नकल नहि, स्वतंत्र जीवनक प्रश्न-संसार छथि।

केशरी नाव नहि बेचबाक निर्णयपर अडिग रहैत छथि, मुदा फाटल पाट जाँचे बिना यात्री नहि लैत; विवादरहित मजदूरीक एक अंश साझा कोषसँ देबाक सीमित व्यवस्था बनैत अछि। मालती रखरखाव शुल्कक विरोध मात्र नहि करैत छथि; नल बन्द रहल दिनक उपयोग-मूल्यक प्रश्न उठबैत छथि। एक मासक परीक्षण बनैत अछि, मुदा ओहि साँझ हुनकर घैल खाली अछि। नदीक नाम–मानचित्रक उपकथा भूगोलकेँ स्वयं गतिशील कथास्थान बना दैत अछि; ‘तिरसूला’क दोसर नाम टिका सकैत अछि, मुदा एक पुरान नावक नक्शा आजुक जलापूर्तिक प्रत्यक्ष दृश्य नहि। सुशीलाक बीजक अङ्क बिना माटिक दशाक टिप्पणीक प्रकाशित नहि होएत। एहि प्रसंगसभमे कथाक फट्टापर लिखल ‘के फैसला करैत अछि’क उत्तर एक केन्द्रित शिक्षकक कण्ठसँ बाहर विखरैत अछि।

जतन विद्यालयक भीतर अइ समांतर अनुभवक एक सहज जोड़ बनबैत अछि : केशरीक किताबमे नावक दाम, मालतीक किताबमे पानि, आ पोथीमे शम्बूक अछि। ओकर बालसुलभ तुलना विभिन्न कथाभाषाक अन्तर भुलबैत नहि, बल्कि सवाल बनबैत अछि जे लिखल बातक बाद काज केना देखल जाए। शिक्षकक ‘व्याख्या’क अपेक्षा बच्चाक यथार्थगामी प्रश्न एहि रूपमे कथानकक सक्रिय संयोजक बनैत अछि। पद्मा जतनक अन्तिम उत्तरक अर्थ बदलबाक पहिने ओकर अनुमति पूछैत छथि। एतय शिक्षकक पात्र-विकास उपदेशमे नहि, संशोधन करबाक अपन शक्ति सीमित करबाक क्रियामे व्यक्त अछि।

समयस्तर, दृश्य-विराम आ नाटकीय प्रस्तुति पर कलात्मक आपत्ति

प्रस्तुत कथा विद्यालयक फागुनक एक दिनमे आरम्भ आ समाप्त होइत अछि। एहि दिनक भीतर मंचित ‘प्राचीन’ समय स्वयं कल्पना रूपमे पुनर्निर्मित होइत अछि; नाटकक दृश्य, कक्षा मे लौटब, ओसारक नगर-समिति आ चाकक गाड़ी—ई सभ अलग कथन-स्तर छथि। ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ कहब एतय प्रासङ्गिक अछि, मुदा प्राचीन दृश्यकेँ स्वतन्त्र, काल्पनिक रूपसँ अचिह्नित इतिहास न मानल जाए। लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे शम्बूकक बोलब एहि मंचक नब संवाद अछि। ई आत्मचेतस कथन-प्रणालीक सबसँ महत्त्वपूर्ण कलात्मक अनुशासन अछि। कतिपय समय नाटकक संवाद आधुनिक अधिकारभाषामे अत्यधिक सफाइ सँ बोलैत अछि, जाहिसँ कल्पित वनक देहगत जोखिम कम भऽ बौद्धिक बहस बेसी जानि पड़ैत अछि।

दूसर सीमा विषयसभक घनत्व अछि। शम्बूकक नाटक, रेवाक अभिभावक-उपस्थिति, नवलक चन्दा, केशरीक नाव, मालतीक नल, सुशीलाक बीज, गोपालक स्थाननाम, शकुन्तलाक घैल—एक दिनक विद्यालयक कात एतेक

व्यवस्थित जुटान किछु हद धरि अवधारणा-समर्थक रचनात्मक संयोजन जानि पड़ैत अछि। खास तौरपर प्रत्येक उपकथामे ‘एखन सम्पूर्ण समाधान नहि’क सन्तुलित वाक्य पुनरुक्त होइत अछि। तथापि पात्र-भाषाक अनिश्चितता—पाठ बिसरल बालक, बिरसीक टेढ़ अक्षर, खाली घैल, जतनक खाली मिलन-बिन्दु—उपन्यासकेँ पूर्ण योजनाबद्ध शिक्षोपदेश बनबासँ बचबैत अछि।

अन्तिम दृश्य बहुत सशक्त अछि : फट्टापर पहिल प्रश्न मेटाओल नहि गेल, ओकर नीचे नव प्रश्न जुड़ैत अछि —“पढ़लाक बाद के अपन निर्णय बदललक?”। जतन हाथ नहि उठबैत; ओकर दृष्टि शकुन्तलाक कोमल माटिक घैल पर अछि। ई कक्षाक पाठकेँ अगिला अध्याय १५२ ‘माटिक बकाया’ दिस दृश्यमान वस्तु द्वारा लऽ जाएत। पाठ अन्तिम उत्तरपर नहि, प्रश्नक बाद बदलल निगाह पर समाप्त होइत अछि। एहि दृष्टि-स्थानान्तरणमे कथानकक आगामी गति निहित अछि।

अध्याय १५२ — माटिक बकाया

टूटल घैल आ दोसर आकारक सम्भावना : स्पर्शप्रधान कथाक आरम्भ

‘माटिक बकाया’ ओहि घैलक टूटल किनारसँ शुरू होइत अछि जे पछिला अध्यायमे विद्यालयक कात गाड़ी अटकलापर घिसि गेल छल। एक अध्यायक अन्तिम प्रतीक अगिला अध्यायक पहिल भौतिक घटना बनैत अछि। शकुन्तला पंडित अधपाक माटिक किरिच निकालैत छथि। पूर्ण बासन फेर नहि बनि सकैत, मुदा माटि भिजा कऽ नव रूपमे गूँथल जा सकैत अछि। ई भेद कथानकक अन्तिम पुनर्गठनक सूक्ष्म पूर्वाभास अछि : क्षति अस्वीकार नहि, क्षतिग्रस्त वस्तुक सामग्रीसँ नव सम्भावना। नतिनीक परीक्षा-पत्रपर लिखल ‘मापक आधार लिखू’ वाक्य आ दादीक हाथक टूटल घैल एक समांतर दृश्य बनबैत अछि। माप पुस्तकक संख्या नहि, काजक दाम आ घरेलू श्रमक भौतिक अनुभव होइत अछि।

नतिनी घैलक दाम कोन बहीमे लिखब पुछैत अछि। शकुन्तला चारि खेपक पर्ची अलग निकालैत छथि : दू विद्यालय–रसोइक स्वीकृत खेप आ दू विवादित भुगतानबला खेप। कथा एहि भिन्नताकेँ यान्त्रिक वर्गीकरण नहि, पीढ़ीक संवाद बनबैत अछि। बच्ची ‘फूटल’क सामान्य अनुभवसँ लागतक कठिन प्रश्न धरि पहुँचैत अछि; शकुन्तला ‘हमर टूटल घैल’ आ ‘पहिने स्वीकार भऽ गेल बासन’क अलग भाग्य सुनबैत छथि। कथावाचक दादीकेँ सभ-किछु जाननिहार उपदेशिका नहि बनबैत : निरुकेँ घैलक वास्तविक फाट देखेबाक प्रसंगमे शकुन्तलाक अनुभवक सीमा सेहो खुलैत अछि। एतय ज्ञान हाथक अभ्यास, असफल बासन आ अगिला जाँचक समयसँ बनैत अछि।

नतिनीक भविष्य, भायपोतक भय आ चाकक उत्तराधिकार : पात्र-सम्बन्धक परिवर्तन

अध्यायक पहिल नाटकीय संघर्ष भायपोतक प्रवेशसँ विकसित होइत अछि। ओ चाकक भविष्य बचएबाक चिन्तासँ नतिनीक नामपर उत्तराधिकारक कागद तुरन्त तैयार करब चाहैत छथि। भायपोतक भय उपन्यास उपहासमे नहि बदलैत; भट्ठीक छत चुइ रहल अछि, वृद्धा हाथ थाकि रहल अछि, उत्तराधिकारी नहि रहल तँ

परिवारक कारीगरीक औजार बन्द पड़ि सकैत अछि। मुदा ओ नतिनीक अपन मन आ उम्रक पूर्वनिर्धारित रूप नहि बुझैत। नतिनी माटिक कला छोड़बाक नहि, पुल आ मापक पढ़ाइ करबाक चाह बतबैत अछि। शकुन्तला परिवारक चाक आ नतिनीक भविष्यक बीच अपरिहार्य विरोध बनबासँ मना करैत छथि। ई संवाद कारीगरीक परम्परा बनाम शिक्षा नामक सरल दुहरी विरोधक बदला काम सीखबाक इच्छा आ बाध्य उत्तराधिकारक अन्तरपर ठाढ़ अछि।

चाक, आबा आ औजारक अलग वर्तमान उपयोग लिखल जाइत अछि। शकुन्तला संचालनक अन्तरिम व्यवस्था तय करैत छथि, मुदा वैध मालिकाना परिवारक सभ दावाक जाँचक बाद खुलब। एहि क्रममे भायपोत एकरस विरोधी नहि रहैत : आरम्भमे ओ तत्काल दस्तावेज चाहैत छथि; बीचमे शिक्षककेँ चाक देखेबाक सुझाव देबाक लेल तैयार होइत छथि; अन्तमे नतिनीक उत्तरमे गणितक गलती पकड़ि ओकर दोसर पद्धति सुनैत छथि। ई चरित्रगत सूक्ष्म परिवर्तन उपदेशसँ नहि, साझाक आँगनमे क्रियाक बदलल क्रमसँ सिद्ध होइत अछि। नतिनी सेहो केवल ‘आधुनिक पढ़ाइ’क पक्षमे निष्क्रिय प्रतीक नहि : ओ माटिक चाक देखैत अछि, साँचामे पानि भरबाक कल्पना करैत अछि, आ परीक्षा समाप्त कए बिना चाकपर हाथ नहि धरैत। स्वयं समय चुनबाक ई छोट निर्णय पात्रक भविष्यमुखी सक्रियता अछि।

चारि खेप, निरुक देय, धनीक नाला : वस्तुसँ उपकथाक फैलैत भूगोल

कार्यालयक दृश्य चारि खेपक देयक संग विस्तृत होइत अछि। दू विवादरहित खेपक आंशिक भुगतान जारी करबाक आदेश बनैत अछि; दू खेप पर अलग निरीक्षण बाँकी अछि। पहिल आदेशमे समस्त देयक अन्तिम निबटानक वाक्य देखिकऽ शकुन्तला सही रोकैत छथि, संशोधित पन्ना बनबैत छथि। एहि दृश्यकेँ नायकत्वक एक प्रखर विजय कहब शीघ्रता होयत—ओहि दिन नगद पूरा प्राप्त नहि होइत। वास्तविक कथा-परिवर्तन ई अछि जे पात्र अपन लम्बा अतीत-बकाया एक छोट वर्तमान भुगतानमे गुम होएबासँ रोकैत छथि। समयक दुहरी गति—पुरान काजक लम्बा बकाया आ आजुक स्वीकृतिक क्षण—एहि अध्यायक कथनकालक एक प्रमुख सूत्र अछि।

निरु कुमाल अपन साझा आबाक श्रम आ शकुन्तलाक घरक श्रमकेँ एक कुटुम्बक नाममे नहि समेटबाक आग्रह करैत छथि। पाठककेँ कारीगर स्त्रीक सामूहिकता देखाइत अछि, मुदा ओ एकर भीतर व्यक्तिक अलग मजदूरी नहि मेटबैत। कथा कुम्हार–कुमालक कामक साम्यकेँ वंशगत एकरूपता नहि बनबैत। निरुक श्रम-पर्ची अन्तमे चौखटपर शकुन्तलाकेँ भेटैत अछि। ई छोट अन्त्य-क्रिया याद दिलबैत अछि जे घरक हँसी आ नतिनीक पढ़ाइ संगहि ककरो देय एखन शेष अछि। एहि कारण उपन्यास घरेलू सुखक समापनकेँ आर्थिक न्यायक पूर्णता बनि जाएबासँ रोकैत अछि।

धनी राजभरक नालाक प्रसंग अध्यायक स्थान-सीमा बढ़बैत अछि। किरायाक खेतमे पानि नहि पहुँचल तँ फसिलक संकट, मुदा केवल ऊपरी नाला खोलल जाए तँ नीचाँक घर डूबबाक भय। एहि उपकथामे माटिक खोह आ सिंचाइ नालाकेँ एक भूगोल घोषित नहि कएल गेल अछि; अलग ठामक अलग समस्या रूपमे राखल गेल अछि। करेहक पुरान माप-पत्र आ रतनक ‘जीबछ’ स्मृतिक ठामनाम पिछला जल-आख्यानक दूरगामी प्रतिध्वनि छथि। रतन स्वयं अपन स्मृतिक घाट आ आजुक नक्शाक ठामक अन्तर स्वीकारैत छथि। किन्तु ई सामाजिक भूगोलक अनुगूँज शकुन्तलाक मुख्य कथा केँ किछु समय लेल विलम्बित करैत अछि—पाठक एहि अन्तरालमे

चाकक बकायासँ नदीक इतिहास धरि जाइत छथि। एहि विस्तारणक कलात्मक औचित्य अन्तमे नतिनीक पानिक मापक पढ़ाइ सँ फेर घरक भीतर लौटैत अछि।

आँगन-कार्यालय-माटिस्थल : कालिक रचना आ शरीरक स्मृति

अध्यायक बाह्य काल एक भोरसँ देर राति धरि अछि : घैलक पुनर्गूँथन, परिवारक बहस, कार्यालयक निर्णय, माटिस्थलक अगिला निरीक्षणक तिथि, नतिनीक परीक्षा, संझाक छोट सभा आ रातिक पर्ची-बँटाइ। बीचमे चारि खेपक अतीत, पुरान मालिकाना कागद, बरसातक खोह-धसना, करेहक पुरान माप आ जीबछक बचपनक स्मृति —ई सभ वर्तमानक टुकड़ा-टुकड़ा पूर्ववृत्त अछि। समग्र समय एहि कारण ‘आजु कतबा दाम भेटल’सँ पैघ भऽ ‘पहिने ककर काम, अगिला पीढ़ीकेँ की शेष’क बहुकालीन प्रश्न बनैत अछि। कथावाचक सामान्यतः तृतीय पुरुषमे घटना देखबैत छथि, मुदा शकुन्तलाक हाथक दरद, नतिनीक परीक्षा-पन्ना, भायपोतक मौन आ निरुक अपूर्ण देयक समीप अएलापर दृष्टिकेन्द्रण अत्यन्त संवेदनशील भऽ उठैत अछि।

नतिनी परीक्षा-पत्रपर लिखैत अछि जे जाहि घर धरि नल नहि, ओकर पानि-भरबाक समय एक नियमसँ नहि नापल जा सकैत। एहि प्रश्नमे मालतीक पिछला अध्यायबला अधूर पानिक आपूर्ति नव शैक्षिक रूपमे घुरैत अछि। बच्ची गणितक पाठ मेटबैत नहि; ओकर नीचे अपन देखल अनुभवक प्रश्न अलग जोड़ैत अछि। एहि तरह शिक्षा आ कारीगरीक द्वन्द्व समाधान मात्रसँ नहि, दू विधाक एक कापीमे सहअस्तित्वसँ रचैत अछि। शकुन्तला अपन हाथक दर्द देखएबाक बात कहैत छथि; भायपोत किछु नहि हँसैत छथि। चाकक संरक्षणक कथाक भीतर वृद्ध देहक खर्चक प्रश्न बिना ककरो भाषणक आविर्भूत होइत अछि।

तीन गट्ठरक अन्त, रूपकक जोखिम आ अध्यायक कलात्मक स्थान

अध्यायक अन्तिम संरचना अत्यन्त स्पष्ट अछि : माटिस्थलक सुरक्षा आ प्रवेश, बासनक शेष देय, आ नतिनीक विद्यालय—तीन गट्ठर एक सन्दूकमे राखल जाइत अछि, मुदा एक नहि कएल जाइत। ई वस्तु-विन्यास अध्यायक आ समूचा उत्तरकाण्डक प्रचलित आलोचनात्मक सूत्रकेँ दृश्य बनबैत अछि : परस्पर जुड़ल जीवनक प्रश्नकेँ एक-दोसराक बदला चुकता नहि करल जा सकैत। टूटल घैलक माटि फेर गूँथल जाइत अछि; किछु क्षति अपरिवर्तनीय रहितो श्रमक नव रूप सम्भव अछि। शीर्षक ‘बकाया’ एतय मात्र देय रुपैया नहि, नतिनीक भविष्य, वृद्धाक उपचार आ खोहक सुरक्षित बाट धरि फैलि जाइत अछि।

एहि विवेचनक सार्थे कलात्मक आपत्ति आवश्यक अछि। एक्के दिन कार्यालयक चारि बिल, माटिस्थलक सुरक्षा, नालाक सहमति, नदीक पुरान नाम, परिवारक उत्तराधिकार, नतिनीक विद्यालय आ निरुक मजदूरीक अत्यन्त सुव्यवस्थित छलफल यथार्थक बिखरल अनिश्चितता किछु कम करि दैत अछि। प्रत्येक पात्र असाधारण स्पष्टतासँ ‘अलग मद’, ‘अलग कागद’, ‘आंशिक स्वीकृति’क भाषा बोलैत अछि। निरन्तर एहि ढाँचासँ कथा कखनो-कखनो स्वयं प्रश्न-पञ्जी जकाँ बुझाइत अछि। मुदा भोरक ओस, फूटल घैलक किरिच, चाकक डगमग केन्द्र, बच्चीक गणितक हँसी आ रातिमे भीजल माटिक डल्ला ओहि सुस्पष्ट बयानकेँ रूप-स्पर्शक अनुभव दैत अछि। एहि स्पर्शप्रधान प्रसंगमे पात्र-विकास दृश्यक देहमे रहैत अछि, केवल बोलल नियममे नहि।

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४९–१५२ क संयुक्त कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पर्चीसँ चेहरा, चेहरासँ पाठ, पाठसँ माटि : वस्तु-क्रमक कथा

एहि चारू अध्यायक क्रम एक अर्थपूर्ण संक्रमण रचैत अछि : विद्यालयक पीयर पड़ल आरोप-पर्ची (१४९) → दू मोबाइल आ काटल चित्र (१५०) → शम्बूकक प्रश्न लिखल फट्टा आ अभिनय-पत्र (१५१) → शकुन्तलाक टूटल घैल आ तीन गट्ठर (१५२)। प्रत्येक वस्तु अपना भौतिक रूपमे अलग अछि, मुदा सभक कथा-अर्थ एहि प्रश्नसँ जुड़ैत अछि जे एक व्यक्ति, घटना अथवा भविष्यक बारेमे निर्णय करबाक शक्ति ककर हाथमे अछि। जानकी सार्वजनिक खण्डनक शब्द स्वयं निर्धारित करैत छथि; साजिद दर्शककेँ मूल नाटकक बच्चाक चेहरा अनियन्त्रित नहि देखबैत; बिरसी मूल कथन आ अपन कल्पनाक अलग कोठरी बनबैत अछि; शकुन्तला नतिनीक भविष्यपर तुरन्त मालिकाना-पत्र नहि लिखैत छथि। एहि क्रममे कथनाधिकार समयक संग बदलबैत अछि : आरोप-सहन करनिहार व्यक्ति उत्तर देनिहार बनैत अछि, प्रश्न पुछनिहार बच्चा अगिला कथाक केन्द्र बनैत अछि।

आन्तरिक कारणात्मक जोड़ स्पष्ट अछि। अध्याय १४८ सँ बचल पुरान पर्ची अध्याय १४९ क कथा शुरू करैत अछि। अध्याय १४९ क अन्तमे फेर आयल काटल भिडियो अध्याय १५० क पहिल संकट अछि। अध्याय १५० क अन्तमे जतनक शम्बूक विषयक प्रश्न अध्याय १५१ क कक्षा तय करैत अछि। अध्याय १५१ क अन्तिम निगाह शकुन्तलाक माटिक घैलपर पड़ैत अछि, आ अध्याय १५२ ओकर किरिचसँ शुरू होइत अछि। ई चारि संक्रमण अलग-अलग ‘अगिला अध्याय’क औपचारिक घोषणा नहि, वस्तु वा प्रश्नक वास्तविक पुनःप्रवेश छथि। एकरे कारण २१६-अध्यायवला पैघ उपन्यासक मध्य-विस्तारमे कथा-धाराक निरन्तरता अनुभव होइत अछि।

कथन-काल, स्थल आ स्वरक तुलनात्मक विन्यास

चारू अध्यायक वर्तमान-समय लगभग लगातार विद्यालय–बाजार–आँगनक फागुनक दिनसभमे बन्हल अछि। अतीत प्रायः वर्तमान वस्तु खोललाक संग लौटैत अछि : पुरान आरोपक प्रति, नाटकक मूल रेकॉर्डिंग, चलन्त विद्यालयक पाछिल आवेदन, शम्बूकक पुनर्रचित कथादृश्य, बासनक पुरान रसीद अथवा जीबछक घाटक स्मृति। एकमात्र विशेष अलग कथन-स्तर अध्याय १५१ क मंचित शम्बूक-दृश्य अछि, जेकर कल्पित होएबाक सूचना उपन्यास स्वयं दैत अछि। अतः एहि चारिमे लम्बा निर्विवाद प्राचीन कालधाराक स्वतन्त्र इतिहासबोध नहि, एक आधुनिक कक्षाद्वारा प्राचीन कथाक पुनरभिनय अछि।

दृष्टिकेन्द्रण प्रायः बहुकेन्द्रित रहैत अछि। जानकीक देहगत थकान, मोहनक काँपैत हाथ, जतनक पर्ची प्रतीक्षा, बिरसीक टेढ़ अक्षर, मालतीक खाली घैल, शकुन्तलाक घिसल हथेली आ नतिनीक कापी पाठककेँ अलग लोकक अनुभवमे प्रवेश करबैत अछि। शिक्षक, कर्मचारी, नाविक, घुमन्तु परिवार आ कारीगरक बोलीक सामाजिक प्रयोजन अलग अछि। तथापि सभक बोलबाक भाषिक संरचना हर ठाम समान रूपसँ शुद्ध आ तर्कसंगत भऽ जाइत अछि; एहि कारण पूर्ण बहुस्वरता कखनो-कखनो विधानसभाक अत्यन्त व्यवस्थित आदान-प्रदान जकाँ

बुझाइत अछि। कथाक सबसँ प्रभावी क्षण ओ छथि जतय भाषा अटकैत अछि, अभिनेता पाठ बिसरैत अछि, बच्चा नहि मुस्कुराइत, वृद्धाक हाथ काँपैत अछि अथवा चाक झूमैत रुकैत अछि।

साहित्यिक उपलब्धि आ शेष आलोचनात्मक प्रश्न

चारू अध्यायसभक उपलब्धि ‘समाधानक छोट आकार’कें कला बनाबयमे अछि। खण्डनक प्रति लगल, मुदा अफवाह फेर आबि गेल; विद्यालयमे वास्तविक प्रवेश भेल, मुदा परिवारक रोजीक हानि बाकी; शम्बूकक नाटक प्रश्नपर रुकल, मूल कठिन अन्त मेटाओल नहि गेल; शकुन्तलाकें आंशिक भुगतानक आदेश भेटल, मुदा वास्तविक रकम, सम्पूर्ण देय आ नतिनीक भविष्य अलग खुलल रहल। ई अनिर्णय मात्र कथा अधूर छोड़बाक चाल नहि—किछु देहगत, आर्थिक आ पारिवारिक समय प्रशासनिक समापनसँ धीमा चलैत अछि, एकर रचनात्मक स्वीकृति अछि।

मुख्य कलात्मक कमजोरी सेहो यही संरचनासँ उत्पन्न होइत अछि। अनेक पात्र अपन वाक्य बहुतो बेर ‘एहि विशेष बातक निर्णय भेल, बाकी अलग रहत’क पद्धतिसँ समाप्त करैत छथि। एहि दोहरावसँ संवादक सामाजिक भिन्नता कखनो कम होइत अछि। चारू अध्यायमे लगभग प्रत्येक प्रश्नक उत्तर सुव्यवस्थित आवेदन, संकुचित घोषणा अथवा अलग पंजी बनबैत अछि; ई योजना-प्रधान कथा लोकक अव्यक्त क्रोध, गलती, संयोग आ दीर्घ मौन लेल सीमित जगह छोड़ैत अछि। तथापि जानकीक फोन देखि उतरल थकान, जतनक कापीक खाली ठाम, अभिनयक भूलि गेल पंक्ति आ चाकक नव गूँथल माटि एहि नियोजित स्वरकें चुनौती दैत अछि। आलोचनाक आगामी चरणमे ई देखब आवश्यक रहत जे सभ छोट सुधारक परिणाम सामाजिक व्यवहारमे केना बदलैत अछि, आ कतेक ठाम अभिलेखीय समापनक लय चरित्रक जटिलता पर भारी पड़ैत अछि।

अध्याय १५३ — नदीक माप

बदलैत पानि, बदलैत मापक : आरम्भिक दृश्यक कथात्मक व्याकरण

‘नदीक माप’क आरम्भ कोनो प्रशासनिक घोषणासँ नहि, हीरा सहनीक हाथमे पकड़ल बाँसक लग्गीसँ होइत अछि। भोरक उजास, भीजल डोरी, सरकल गाँठ आ पाँकपर बचल घासक रेखा—एहि चारि सघन दृश्य-चिह्नसँ पाठक एक एहन संसारमे प्रवेश करैत अछि जतय जलक वर्तमान स्थिति आ ओकर पिछला निशान एक-दोसरासँ पूर्ण मेल नहि खाइत। कथावाचक पाठककें नदीक अन्तिम अर्थ पहिने सँ नहि बतबैत छथि; दृश्य देखबैत छथि, तकर बाद गोपाल माझीक प्रश्न आ हीराक आत्मसंशय सुनबैत छथि। हीराक ‘आइ देखब ... कतय हम स्वयं गलत’ कथन एक अनुभवी पात्रकें सर्वज्ञ मार्गदर्शकक स्थानसँ हटा कऽ परिवर्तनशील, सीखैत चेतनाक रूपमे स्थापित करैत अछि। एहि कारण नदीक माप मात्र कथा-वस्तु नहि, कथा कहबाक विधि बनि जाइत अछि : प्रत्येक निसानक अर्थ ओकर समय, ठाम आ देखनिहारक दृष्टिसँ बन्हल अछि।

२०४० क दोसर पोखरि-उराहिक कार्यदलक उपस्थिति घटनाकें एक निश्चित सामाजिक समय दैत अछि। उराहि शुरू करबाक पहिने बाहर जाएवला पानिक बाट, नावक सुरक्षित मार्ग आ काज करनिहारक पारिश्रमिक जाँचबाक निर्णय होइत अछि। एहि स्थलपर कथा जलसँ श्रम दिस आ श्रमसँ सार्वजनिक निर्णय दिस सरैत अछि। गोमती

कुदार लेने घेरामे जाएवला युवककेँ रोकैत छथि; एहि रोकमे मात्र जोखिम-प्रबन्धन नहि, कथानकक गति बदलबाक सामर्थ्य अछि। उपन्यास सामान्यत: ‘काम शुरू भेल’ कहि दृश्य बन्द नहि करैत; ‘काम केना, ककर द्वारा, कोन समय’क प्रश्न द्वारा कथा लम्बबैत अछि। एतय ई विस्तार उचित लगैत अछि, कारण पानिक गति आ मजदूरक देह एकहि भौतिक स्थलपर जोखिम उठबैत अछि।

देहक मापसँ उपकरणक माप : दृष्टिकेन्द्रण आ पात्रक आत्म-संशोधन

हीराक लग्गीपर ‘भरि ठेहुन’, ‘भरि कमर’ आ ‘भरि मर्द’क रंगपट्टी अछि। नव सहायक जेखन अपन ठेहुनकेँ सार्वभौम माप बुझैत अछि, हीरा देहसभक अनुपातक भिन्नता देखबैत छथि। ‘हमर देह हमर स्मृति अछि’—ई कथन अनुभवक अवमूल्यन नहि, ओकर सीमा स्वीकार करबाक वाक्य थिक। दृश्य पहिने हीराक देहगत ज्ञानक भीतरसँ देखल जाइत अछि, फेर ताराक मापफीता आ सहायकक दृष्टिकेँ जगह दैत अछि। एहि दृष्टि-परिवर्तनसँ कोनो एक पात्रक आवाजक एकाधिकार टूटैत अछि। तारा पुरान चिह्नकेँ एकदम अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ स्थिर आरम्भ-बिन्दु आ अलग सुधार-पञ्जी बनबैत छथि। हीरा स्वयं बतबैत छथि जे बाँसक माथ फेर काटलापर ओ सभ रंगपट्टी नहि मिलौने छलाह। एहि छोट स्वीकारोक्तिसँ हुनकर चरित्रक विकास घटैत अछि—अनुभवक प्रतिष्ठा आत्मसुधारसँ बढ़ैत अछि, अकाट्य घोषित कएल गेलासँ नहि।

दूधाराक तीन परीक्षण-बिन्दु पाठककेँ स्थलक एक लघु क्रमिक मानचित्र दैत अछि : ठोस बालू, मुलायम गाद, तेज धक्का देनिहार धार। तीनू पर एकहि पद्धति कार्य नहि करैत। अगिला परीक्षण-नावक दृश्य एहि कथात्मक नियमकेँ क्रियामे बदलबैत अछि : हीरा पहिने बाम घुमबाक कहैत छथि, मुदा गोपालक देखल धार आ अदितिक संकेत सुनि तत्काल दहिनक निर्णय लैत छथि। ई घटना केवल संवादक उदाहरण नहि; पात्रक निर्णयमे वास्तविक परिवर्तन अछि। नाव सुरक्षित कात पहुँचैत अछि, फेर हीरा गलतीक ठाम स्वयं पेंसिलसँ चिह्नित करैत छथि। एहि लघु दृश्यमे आरम्भिक प्रतिज्ञाक फल भेटैत अछि। तथापि यात्रा सुरक्षित समाप्त होएब सभ मौसम लेल मार्ग खुलि गेल, एहन समापन नहि बनैत। सीमित दिनक उजास, पुनर्माप आ प्रशिक्षित नाविकक शर्तसँ छोट बाट खुलैत अछि। कथा ‘भेल’ आ ‘होइत रहत’ बीचक अन्तर बचबैत अछि।

नाम, स्मृति आ भौगोलिक काल : पूर्वदीप्तिक संयमित प्रयोग

पाँचम पाठांशमे गोपाल ‘तिरसूला’ आ ‘तिलवाहक उतरही मोड़’क नाम अलग करैत छथि। ई अन्तर सुननिहारक लेल भाषिक सूक्ष्मता जकाँ भऽ सकैत अछि, मुदा नावक गलत मोड़ जीवित लोकक जोखिम बनि सकैत अछि। पाठक एहिसँ बुझैत अछि जे कथा-स्थान केवल दृश्य-पृष्ठभूमि नहि; विशिष्ट नामक संग जुड़ल क्रियाक सम्भावना अछि। पुरान उद्धार-पर्ची आ आजुक स्थल-जाँच दुनू कथामे अबैत अछि, मुदा कथावाचक ओहि पुरान घटनाकेँ स्वतंत्र पूर्ण दृश्य बनाकऽ नहि दोहरबैत छथि। एहि अध्यायक मुख्य कालरेखा २०४० क वर्तमान कार्यदलक अछि; अतीत कापी, नाम आ पात्रसभक वाचिक स्मृतिसँ वर्तमानक भीतर प्रवेश करैत अछि। पूर्वआख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’क आरम्भिक सङ्केतकेँ एहि पाठमे प्राचीन महाकाव्यक स्वतंत्र कथादृश्यक रूपमे नहि पढ़ल जा सकैत।

रतन वनक दू पीपरक स्मृति एहि समय-रचनाक मार्मिक उदाहरण अछि। स्मृतिमे एके संग देखल गेल दू गाछ वस्तुतः अलग कालक निकलैत अछि—एकटा बाढ़िमे ढहल, दोसर बादमे रोपल गेल। रतनक आवाजमे लाजसँ बेसी शोक अछि; तें पुरान ज्ञानक सुधार ‘गलत वृद्धक पराजय’क कथा नहि बनैत। आजुक दूरी आ बचपनक दिशा अलग राखि ओ अपन निजी कापी वापस लैत छथि। ओहि कापीक एक सहमत अंश सार्वजनिक कार्य-पत्रमे जाएत। एहि माध्यमसँ कथा निजी स्मृतिक जीवित लय आ सार्वजनिक मानचित्रक वर्तमान उपयोग, दुनूकेँ बिनु गड्डमड्ड केने स्थान दैत अछि। गोपालक पुरान उद्धार-पत्रमे उलटल बाटनाम सेहो सुधरैत अछि, मुदा एहि सुधारसँ २०३९ क आपदामे के कोन आदेश देलक, तकर पूरा कथा अपने-आप प्रमाणित नहि होइत। अतीतक ‘एकमात्र सच्चा पुनर्निर्माण’ करबाक बदला उपन्यास अपूर्ण स्मृति आ बदलैत स्थलकेँ एक-दोसरक संग रखैत अछि।

अठारहम पाठांशक ‘कमला’ नाम आ उन्नीसमक कंकड़ धार एहि परिवेशकेँ आरो व्यापक बनबैत अछि। शकुन्तलाक माटिक दामक कागद पुरान संगमक नक्शा नहि, धनी राजभरक मौसमी जलप्रवाहक दावा अपन-आप जमीनक मालिकाना नहि। पाठकीय दृष्टिसँ मुख्य बात ई नहि जे कोन नाम सदा सत्य अछि, बल्कि कथावाचक कोन वस्तुकेँ कतेक अर्थ देबाक अनुमति दैत छथि। नामक प्रसार कथानकमे सम्भावना उत्पन्न करैत अछि; ठामक वर्तमान अनुभव ओ सम्भावनाकेँ सीमित करैत अछि। एहि संयममे नदी-आख्यानक विशेष कलात्मक विश्वसनीयता अछि।

नदीक बीच जीवित श्रम : अनुपस्थित पात्रक कथात्मक उपस्थिति

काजक अलग-अलग घण्टा आ दाम नापबाक आग्रह अध्यायक क्रममे बेर-बेर लौटैत अछि। मधु केवटक आपत्ति, घरक दुआर ढँकल गेल स्त्रीसभक अनुभव, गाद ढोएनिहारक भाड़ा आ धोबिघट्टाक पाट नापबाक समय—ई सभ कथाकेँ जलबिज्ञानक एकमुखी दृश्य होएबासँ रोकैत अछि। खास प्रसंग उर्मिलाक अनुपस्थिति अछि। हुनकर मृत्यु पहिने सत्यापित भऽ चुकल अछि; कथावाचक वर्तमान कार्यदलक पंजीमे हुनका काल्पनिक सहभागी बनाकऽ नहि आनैत। सरिता जीवित उर्मिलाक पहिने कहल आपत्ति स्मरण करैत छथि, मुदा वर्तमान स्त्री-श्रमिकसभ अपन माप स्वयं दैत छथि। मृतकक स्मृति जीवितक निर्णयक स्थान नहि लैत। उर्मिलाक अधूर धुलाई-बही फेर कागद बनि सोझाँ अबैत अछि; शोक एतय रोदनक एकल दृश्य नहि, भविष्यक जिम्मेदारीक रूपमे कथाक भीतर टिकैत अछि।

नतिनीक प्रश्न—घिसैत बाँसपर सही अङ्क केना बचत—एहि अध्यायक बिम्ब-संरचनाकेँ नव पीढ़ीक चेतनामे उतारैत अछि। ओकर भूमिका कथाक बाहरी पाठकक प्रश्नसँ मिलैत अछि : परिवर्तित वस्तुमे पुरान चिन्हक भरोसा कतेक? दृश्य रसोइक भात, कादोक गन्ध आ बच्चाक हँसीक बीच घटैत अछि, जाहिसँ मापक अमूर्त चर्चा देहगत जीवनसँ अलग नहि होइत। राजइनारक झुकल खूँटा आ चारि अलग सार्वजनिक सूचनाक दृश्य ई बतबैत अछि जे नदीक मापक कथामे ‘खुलल’ आ ‘रोकल’ एक्के दिनक भिन्न स्थानक विशेषण भऽ सकैत अछि। कथा संसारक जटिलताकेँ एकटा विजय-पट्टमे समेटबाक प्रयत्न स्वयं एक पात्रक आपत्तिक विषय बनैत अछि।

लाल डोरी, पुरान गाँठ आ रिक्त हस्ताक्षर : अन्तक रूपाकार

अन्तिम दृश्य मे हीरा पुरान रंगपट्टी फाड़ि नहि दैत छथि; नव नाप ओकर एक कात बन्हैत छथि आ पुरान गाँठपर छोट सूत लगबैत छथि। ई चित्र अध्यायक आरम्भक भीजल डोरीकेँ नव अर्थ दैत अछि। नाप बदलल अछि, स्मृति मेटायल नहि; सुरक्षित छोट बाट खुलल अछि, सर्वकालिक अनुमति नहि; श्रमक दाम लिखल अछि, सभ बकाया चुकल नहि। अन्तिम रिक्त हस्ताक्षर-घर रमणीक आगामी प्रश्नक लेल छोड़ल जाइत अछि। एहि प्रकार अध्याय १५४ क सार्वजनिक घाट आ मत्स्य-अधिकारक विवाद पहिने सँ कथानकक अन्तर्गत सम्भावना बनि चुकल अछि। कथाक समापन एकटा निर्णयपर होइत अछि, मुदा ओहि निर्णयमे अगिला दृश्य लेल जगह राखल गेल अछि।

अध्यायक उपलब्धि जलक गतिशीलता, देहक ज्ञान, स्मृति-आधारित स्थान आ श्रमिकक समयकेँ एक साझा, मुदा बहुदृष्टिकेन्द्रित कथामे बुनब अछि। सीमा सेहो एहि गुणसँ उत्पन्न होइत अछि : एकहि अध्यायमे तिलवाह, पोखरि, कंकड़, राजइनार, बाहा-मुँह, अनेक कारीगर आ देय-खाताक क्रम पाठकक ध्यान अनेक ठाम बाँटैत अछि। अधिकांश पात्र अत्यन्त साफ, संक्षिप्त प्रशासनिक भाषामे अपना माँगक सीमा स्वयं घोषित करैत छथि; एहि कारण सहज विवादक अपूर्ण, कटु वा अटपट स्वर कखनो कम सुनाइत अछि। तैयो हीराक नाव-निर्णय, रतनक शोक आ अन्तिम बाँसक दोहरी पट्टी एहि सूची-जकाँ फैलावमे जीवित दृश्यात्मक केन्द्र बचा लैत अछि।

अध्याय १५४ — सहमतिक दस्तावेज

बन्द किवाड़ आ तीन कागद : स्थलक नाटकीय आरम्भ

पछिला अध्यायक अन्तिम रिक्त हस्ताक्षर-घर एहि अध्यायमे बरकी पोखरिक पक्का घाटपर लागल नव तालाक रूपमे ठोस संघर्ष बनि उठैत अछि। रेणु गोंढ़ी भीजल रस्सी खोलैत छथि, आधा बाँस हटि गेल अछि, मुदा बीचक लोहेक किवाड़ बन्द अछि। ‘मत्स्यपट्टाधारीक अनुमति बिना प्रवेश निषिद्ध’ वाक्य के एकटा पर्चीपर लिखि राखल गेल अछि। ई लिखित वाक्य आ देखाइत किवाड़क मेल कथाक आरम्भिक प्रतिरोध रचैत अछि। रेणुक प्रश्न पानिमे प्रवेशक साधारण अधिकारक प्रश्न अछि, मुदा ओकर नाटकीय शक्ति ओहि भेदमे अछि जे माछक उत्पादनक पट्टा आ सार्वजनिक पायरिक उपयोग एकहि वस्तु नहि। पात्र एहि भेदक उत्तर पएबाक लेल मूल परिशिष्ट माँगैत छथि; कथावाचक बिना संघर्षक अर्थ स्पष्ट केने ओहि आधा वाक्यकेँ अन्तिम सत्य नहि मानैत।

रमणी बिन्दक प्रवेशसँ आरम्भिक दृश्य बहुस्वर बनैत अछि। रेणु घैला भरबाक पयरिबाट चाहैत छथि, रमणी जाल पसारबाक सुरक्षित ठाम आ श्रमक पहचान। दुनू स्त्री समान समुदायगत नारा नहि बोलैत छथि। तेसर सीढ़ीक ढीला पाथर आ ऊपरक सुरक्षित बाटक परीक्षण एहि अधिकार-विवादमे भौतिक प्रतिरोध जोड़ैत अछि। एहिसँ ‘सम्पूर्ण घाट खोलब’ वा ‘सम्पूर्ण बन्द राखब’—दुनू सरल अन्तक सम्भावना टुटैत अछि। कथा तीन कागदक दृश्य दिस बढ़ैत अछि : सार्वजनिक आवागमन, मत्स्य-उत्पादन, आ धुलाई-स्नानक समय तथा निजता। चबुतरा अस्थायी रंगमंच बनैत अछि; कागद तीन दृश्य-रेखा, आ परस्पर संवाद तीन भिन्न संघर्ष-धुरी बनि जाइत अछि।

रेणु आ रमणीक समानान्तर, असमान संघर्ष : बहुकेन्द्रित दृष्टि

रेणुक पुरान प्राप्ति-पर्ची एहन वस्तु अछि जे पछिला समयक व्यर्थ कार्यालय-यात्रा वर्तमानमे अनैत अछि। हुनकर कथनमे घरक पानि, रोगीक पहुँच आ धोबिनक समय अछि; रमणीक बहीमे जालक सूत, रातिक पहरा आ माछ छँटाइ करनिहार स्त्रीसभक मेहनत। परस्पर समर्थन रहितो दुनूक कथनक प्रयोजन अलग अछि। अन्तमे दुनू अलग मसौदापर हस्ताक्षर करैत छथि, आ अपन-अपन वस्तु—रमणीक जाल, रेणुक घैला—लऽ घर घुरैत छथि। एहि समानान्तर रचनासँ पात्रसभ केवल ‘नारी अधिकार’क अमूर्त प्रतिनिधि नहि रहैत; हुनकर अलग जीवन-क्रिया दृश्य बनैत अछि।

कथावाचक दृष्टिकेन्द्रण समय-समयपर रमणी, रेणु, रमा, तारा आ अन्य पात्रसभक लग सरकबैत छथि। पट्टाधारीक प्रतिनिधि सेहो अपन शुल्क आ जाल-सुरक्षाक तर्क बजैत अछि। ओ अवश्य प्रतिपक्षी अछि, मुदा ओकर जालक वास्तविक क्षतिक आशंका पूर्णतः अनुपस्थित नहि कएल गेल। रमा तत्काल स्वामित्वक निर्णय घोषित नहि करैत छथि; प्रतिनिधिक मतभेद दर्ज होइत अछि आ सुरक्षित ऊपरी बाट अस्थायी रूपसँ खुलैत अछि। बीसम पाठांशमे रेणु घैला लऽ ओहि खुलल भागपर पहुँचैत छथि। ई संक्षिप्त दृश्य बहसक दीर्घ क्रमक फल अछि। ओ विजय-भाषण नहि देलीह; पानि भरि घर घुरि गेलीह। एहि लौकिक क्रियामे अध्यायक उपलब्धि अधिक विश्वसनीय लगैत अछि, कारण पाठक हकक अमूर्त वाक्य नहि, ओकर उपयोग देखैत अछि।

अनुमति, अनुवाद आ निजी कागदक कथन-स्तर

आठमसँ बारहम पाठांश धरि कथा अपन पट्टाविवादसँ हटि सहमतिक अर्थ स्वयं पूछैत अछि। सुरक्षित नामसँ जुड़ल पाँच फाइल सार्वजनिक सभामे नहि खोलबाक निर्णय होइत अछि। एक स्त्री लेखा-जाँचक अनुमति दैत छथि, मुदा अपन पहिल नाम वा निवास प्रकाशित करबाक नहि। दू अलग हस्ताक्षर-घरक दृश्य कथा-कर्ममे एकटा सूक्ष्म मोड़ अछि; पात्रक ‘नहि’ सेहो घटनात्मक परिणाम दैत अछि। कथाक कागदसभ एतय केवल निष्प्राण वस्तु नहि, पात्रक निजी आवाज कतेक दूर जाएत तकर सीमा देखबैत अछि।

हीरा मेचेक विवाद एहि संरचनाकेँ दोसर कोणसँ देखबैत अछि। हुनकर अंगूठा-चिह्न अछि, मुदा अनुबन्धक भाषा हुनका बुझाओल नहि गेल छल। स्वतन्त्र अनुवादक द्वारा ‘चलबाक पथक मरम्मति’ आ ‘दीर्घकालीन विशेष उपयोग’क भेद खुललापर पहिनुक कागदकेँ अन्तिम स्वीकृति कहबाक प्रक्रिया रोकल जाइत अछि। कथनशास्त्रीय रूपमे ई एक ‘पुनर्पाठ’ दृश्य अछि : पहिने मौजूद पाठक अर्थ आगाँ बदलैत अछि, किन्तु कागदक भौतिक अस्तित्व मेटैत नहि। अतीतमे बजल वा नहि बजल शब्दक अर्थ वर्तमानक वाचिक दृश्य द्वारा नव बनैत अछि। एहि पुनर्पाठक संग अनुवादकक मजदूरीक पृथक उल्लेख अछि, जाहिसँ भाषा-बदलनिहार स्वतन्त्र कर्मी दृश्यसँ बिलायल नहि होइत।

देहक निजता, मातृनाम आ श्रमक स्मृति : उपकथासभक संलयन

धुलाईक पाट, स्नानक समय आ सार्वजनिक फोटो-रेकॉर्डिंगक विवाद अध्यायक केन्द्रीय थीमकेँ देहक दृश्यता धरि लऽ जाइत अछि। चम्पा अपन चिकित्सा-अनुभव सार्वजनिक नहि करैत छथि; मात्र सभासँ कहैत छथि जे सार्वजनिक सीढ़ी देखब आ ककरो देहक चित्र प्रकाशित करब अलग क्रिया अछि। हुनकर बोलबाक अवधि छोट,

मुदा कथात्मक असर गहिर : सबसँ प्रासंगिक निजी इतिहास न कहब सेहो एक निर्णय अछि। उर्मिलाक मृत्युपछाति स्मृति एतय दोसर रूपमे लौटैत अछि। नव घाट-उद्घाटनमे हुनकर नामसँ मुफ्त सफाइ-सेवा घोषित करबाक प्रस्ताव रोकल जाइत अछि। मृतकक नाम जीवित श्रमिकक श्रमक दाम मेटाबयक औजार नहि बनय—एहि निर्णयमे पूर्ववर्ती शोकक कथा वर्तमानक क्रियामे उपस्थित अछि।

नीलिमा नुराङक विवाह-पञ्जीमे मातृनाम बहाल होइत अछि, मुदा पूरा पारिवारिक इतिहास सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि देल जाइत। रमणीक मायकेक ‘गाँगी’ पत्र आ पुरान बागमती–बंगमत्ती लिखल जलाधिकार-पत्र स्मृतिक अलग पाठ-स्तर अनैत अछि। ई नामसभ आजुक पोखरिक निश्चित सीमा नहि बनैत। कथा इतिहास, निजी हस्तलेख आ वर्तमान सार्वजनिक कार्यकेँ एके समय जोड़ैत अछि, मुदा एकटा कागदमे विलीन नहि करैत। एहि कारण ‘दस्तावेज’क शीर्षक सँ प्रेरित पाठक अपेक्षा—सबटा विवाद अन्तमे एक कागदसँ हल होएत—चिन्तित रूपसँ उलटि जाइत अछि : यहाँ बहुत रजिस्टर चाही, कारण जीवनक क्रिया अनेक अछि।

श्रमक कीमत आ उत्सवक गीत : आवृत्ति आ अन्तराल

रमणीक बेटी अपन जालक गाँठक दामक प्रश्न उठबैत अछि। ई प्रसंग मायक श्रमक पहिले सँ चलैत कथाकेँ नव पीढ़ीमे विस्तृत करैत अछि। बेटी एखन मजदूर अछि की शिक्षार्थी, से ओकर राय पूछल जाइत अछि। कार्यदिवसक चौथ पन्नामे सफाइ, सुरक्षा, पाट, गीत आ बाँसक खर्च अलग राखल जाइत अछि। सामूहिक श्रद्धा-दिनक गीत नव घाटपर उठैत अछि, मुदा ओहि उत्सवसँ ककरो नियमित मेहनताना निःशुल्क नहि बनैत। उपन्यासक पर्व-आवर्ती संस्कार एतय पूर्ववर्ती बन्द बाटक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। कालिक अन्तर कोनो विशाल पूर्वदीप्तिसँ नहि, एक्के गीतक दोसर अवसरसँ अनुभव होइत अछि।

तीन दस्तावेजक संक्षेप के बाद अन्तिम दृश्य अत्यन्त अर्थगर्भित अछि। सार्वजनिक सुरक्षित ऊपरी सीढ़ी खुलल, तेसर ढीला सीढ़ीपर लाल सूत हिलैत रहल। लाल सूत कथाक दृश्यात्मक ‘अल्पविराम’ जकाँ अछि—एक बाट खुलल, दोसर एखन रोकल। रमणी जाल, रेणु घैला आ रुहानी गोपनीय लिफाफा लऽ अलग दिशा धरैत छथि। एहि विभाजित समापनमे बहुकेन्द्रित कथा अपन सौन्दर्य पबैत अछि। तथापि आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे प्रायः प्रत्येक पात्र अपन बात एतेक स्वच्छ, वर्गीकृत कार्यालयी शैलीमे बजैत छथि जे विवादक सहज भाषिक असमता कम देखाइत अछि। अधिक विरोधी, अधूरा वा परस्पर बाधित संवाद दृश्यकेँ आरो जीवन्त बना सकैत छल। तैयो पानि भरबाक वास्तविक क्रिया, बेटीक अटकैत प्रश्न आ लाल सूत छोट-छोट नाटकीय क्षण रचैत अछि, जे वैधानिक मसौदाक लम्बा वर्णनकेँ कथा बनौने रखैत अछि।

अध्याय १५५ — हिंसाक गवाही

खुलल घाटसँ बन्द कोठरी : स्थानान्तरणक नाटकीय अर्थ

अध्यायक पहिल वाक्यमे बरकी पोखरिक काल्हुक गीतक ‘भीजल स्वर’ बचल अछि, मुदा अगिलहि क्षण कथा खुलल घाटसँ आश्रयक सुरक्षित कोठरी दिस मुड़ि जाइत अछि। ई स्थानान्तरण केवल दृश्य-परिवर्तन नहि। पछिला अध्यायमे सार्वजनिक पायरिक उपयोगक अधिकार मुख्य छल; एतय एक व्यक्तिक अपन अनुभवक

सार्वजनिकता पर नियन्त्रणक प्रश्न अछि। गीतक अवशिष्ट स्वर आ सुरक्षित कोठरीक मौन एक-दोसरक विरोधी नहि, अनुभवक दू भिन्न सामाजिक विस्तार छथि। कथावाचक कोठरीमे आएल पुरुषकेँ आरम्भमे नाम नहि दैत छथि। ई अनामता कथाक सनसनी उत्पन्न करबाक कृत्रिम छल नहि; पात्र स्वयं कतेक परिचय साझा करब चाहैत छथि, तकर निर्णयक संग कथनक दूरी समायोजित होइत अछि। खिड़की लग नीच चौकी चुनब, पर्दा ढील राखब, बाहरक निकास देखबाक इच्छा—ई सभ बाहरी क्रिया पात्रक अन्तर्द्वन्द्वकेँ बिना अनधिकृत आत्मालापक प्रस्तुत करैत अछि।

रुहानी ‘आइ अहाँकेँ सभसँ पहिने की चाही?’ पूछैत छथि। उत्तर उपचार आ शब्द चुनबाक अधिकारक क्रममे अबैत अछि। पुरुष अपन संग दू पुरुष द्वारा यौन हिंसा भेलाक मूल तथ्य स्वयं कहैत छथि, मुदा समय, ठाम आ परिचयक विवरण स्थगित करैत छथि। ई विशिष्ट कथन-रचना पाठककेँ एक नैतिक सीमापर ठाढ़ करैत अछि : कथा घटना घटलाक बात बतबैत अछि, मुदा हिंसाक विस्तृत दृश्य रचि पीड़ितक देहकेँ प्रदर्शनक वस्तु नहि बनबैत। कथावाचक हिंसाक कालिक पुनरभिनय नहि करैत; घटना-उपरान्त वर्तमान निर्णयक क्रमपर ध्यान राखैत अछि। एतय ‘घटना’क अनुपस्थिति नहि, ओकर असंवेदनशील दृश्यांकनसँ संयमित दूरी अछि। उपचार-पत्र आ बयान-पन्ना अलग रहब स्वयं कथानकक निर्णायक भेद बनि उठैत अछि।

काँपैत अँगुरी, आधा सिलल बटन आ दू वाक्य : आघातक देहगत समय

पुरुषक काँपैत अँगुरी, कुर्ताक आधा टूटल बटन, सिलाइक आधा पूरा करब आ कपड़ाकेँ अपन लग रखबाक इच्छा आघातक अनुभवकेँ दृश्यात्मक, मुदा गैर-उत्तेजक शिल्पमे प्रस्तुत करैत अछि। चिकित्सकीय उपचारक बादो कपड़ा ओकरा सँ जबरन नहि लेल जाइत। आधा सिलल बटन जीवनक तात्कालिक सामान्य क्रिया आ अव्यक्त पीड़ाक संगति रचैत अछि। एहिसँ पाठक हिंसाक मनगढ़न्त दृश्य देखबाक बदला पात्रक देहक वर्तमान सीमासँ परिचित होइत अछि। एहन विवरण मनोवैज्ञानिक आख्यानक ‘भीतर’ प्राप्त करबाक लेल अनिवार्य आत्मस्वीकारोक्ति नहि माँगैत। पात्रक अन्तर्जगत ओकर चुनल आसन, वस्तु, विराम आ स्वेच्छाक निर्णय द्वारा पढ़ल जाइत अछि।

कथनकाल एतय लगभग एक दिनक क्रममे चलैत अछि : भोरक आगमन, उपचार, दुपहरिक कार्यालयी समानान्तर कथा, दोसर स्वास्थ्य-चर्चा, साँझक मित्र-भेटक योजना आ रातिक लिफाफा। घटना-बाहुल्य रहितहुँ कालिक अवधि मानसिक रूपसँ धीमा लगैत अछि, कारण प्रत्येक निर्णय-पहिने संकोच, विकल्प आ संशोधनक समय दैत अछि। खास दृश्य एक्कैसम पाठांशमे भेटैत अछि—मित्रकेँ भेटबाक पहिले खाली चौकी दुआरसँ दूर सरकाओल जाइत अछि। पुरुष मात्र दू वाक्य लिखैत छथि : ‘हम जीवित छी। हम एखन सब बात नहि कहब।’ एहि दू वाक्यक बीचक मौनकेँ कथावाचक स्वयं भरैत नहि छथि। ई आघात-कथाक एक सटीक साहित्यिक चुनाव अछि। पाठकक जिज्ञासा अधूर रहैत अछि, मुदा अधूरापन पात्रक अनुभवक अस्पष्टता नहि, कथनाधिकारक सचेत सीमा अछि।

उपचार, संवादक दूरी आ कथावाचकक संयम

रुखसाना खुलल भोजन-पंजीकेँ कोठरीमे आनबासँ रोकैत छथि। स्वास्थ्यकर्मी आवश्यक उपचारक पन्ना दैत छथि, मुदा ओकरा दोषी-पहिचान वा अन्तिम निर्णयक वाक्य नहि बनबैत। चम्पा दुआर बाहर पानि राखि घुरि जाइत छथि, भीतर प्रवेश करबाक अनुमति नहि भेटलापर अपमानक कथा नहि रचैत। मित्रकेँ भेंटबाक समय तय करब, तकरा फेर स्थगित करबाक जगह राखब, उपचार चालू रहबाक विकल्प चुनब—ई सभ निर्णय पात्रक व्यक्तित्वकेँ घटनाक ‘पीड़ित’ नाममे सीमित नहि करैत। कथाकारक संयम एहि बातमे अछि जे पात्रक साहसक प्रदर्शनक लेल ककरो निजी कथाकेँ सामुदायिक मंचपर नहि चढ़बैत। पुरुष कहैत छथि जे हुनकर कथा संस्थाक ‘सफलता-कथा’ नहि बनय; ई सीमा उपन्यासक कथन-प्रक्रियापर सेहो लागू होइत बुझाइत अछि।

कियो अपरिचित परिचय-पत्र देखाकऽ भीतर जएबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा ओहि मात्रसँ भेटक दृश्य नहि खुलैत। घटनात्मक रूपमे ई छोट रोक महत्वपूर्ण अछि : कथानक संकटकेँ ‘अब अधिकृत लोक आयलाह, तेँ विस्तृत बयान होयत’क परिचित ढाँचा मे नहि धकेलैत। स्वयंसेविकाक प्रश्न—मौन रहला पर अपराधी बचत की—एक वास्तविक प्रतिवादी स्वर अछि। जुबैदा ओकर प्रश्न अस्वीकार नहि करैत, मुदा घायल व्यक्तिक निजी निर्णयकेँ सार्वजनिक सामूहिक क्रोधक अधीन नहि करैत छथि। संवादक बहुस्वरता एतय मात्र सहमत लोकक अनुक्रम नहि; तत्काल न्यायक आकांक्षा आ निजी समयक आग्रह बीच वास्तविक तनाव उपस्थित अछि। तथापि स्वयंसेविकाक असहमति जल्दी प्रशिक्षणक प्रश्न बनि जाइत अछि; एकर भावनात्मक आ सामाजिक जटिलता पर कथा आरो देर ठहरि सकैत छल।

समानान्तर नाम-आख्यान : रमणी, रेणु, नीलिमा, रोजी आ निरंजन

बीच-बीचमे कथा बरकी पोखरिक कार्यालय आ अन्य अभिलेख-संघर्ष दिस सरैत अछि। रमणीक नाम साझा उपयोग-पञ्जीमे जुड़ैत अछि, मुदा मत्स्यपट्टाक अन्तिम स्वामित्व आ माछ बिक्रीक पिछला रकमक विवाद शेष रहैत अछि। रेणुक ‘धौरी’ लिखल पुरान पत्र स्थल-स्मृति अछि, आजुक निश्चित नदी-नक्शा नहि। नीलिमाक मातृनाम विवाह-पञ्जीमे फेर स्पष्ट होइत अछि, मुदा ‘नीमा’ लिखल निजी पत्रक भौगोलिक अर्थ अलग रहैत अछि। एहि उपकथासभमे एकटा संरचनात्मक समानता अछि : व्यक्तिक अपन नाम आ अनुभव ओकरा सँ बाहरक संस्था द्वारा एकहि वर्गमे समेटल जाइत अछि, आ पात्र स्वयं ओहि समेटबाकेँ चुनौती दैत अछि।

रोजी लालबेगीक दृश्य एहि व्यापक कथावृत्तक खास स्थान अछि। हुनकर समुदाय, पेशा आ धार्मिक स्वपरिचय प्रशासनिक खानेमे आपसमे मिलि गेल अछि; ओ एहि तीनूकेँ अलग बजबाक अधिकारक माग करैत छथि। निरंजन किसानक प्रसंगमे ‘किसान’ नामक अंश आ वास्तविक खेतीक पेशा मिलि गेलासँ बैंकक प्रक्रिया अटकल अछि। कथात्मक दृष्टिसँ एहि प्रसंगसभकेँ पुरुषक हिंसाक अनुभवक समान घटना मानब अनुचित हएत। समानता केवल एतबा अछि जे ‘व्यक्तिक अपन कथन’ आ ‘बाहरसँ देल विवरण’क बीच खींचातानी चलैत अछि। जीवनस्थितिक भिन्न घनत्व—हिंसा, श्रमिक परिचय, परिवारक स्मृति आ बैंकक नाम—अलग राखब उपन्यासक बहुस्वरता बुझबाक शर्त अछि।

पुरुषक नाजुक उपचार-दृश्यसँ कार्यालयक अनेक नाम-संशोधन पर बारम्बार जएला पर पाठकक भावनात्मक एकाग्रता छिटकि सकैत अछि। मुदा प्रतिवादमे ई संरचना एक कथात्मक छलछलाहट उत्पन्न करैत अछि : हिंसा भोगल व्यक्ति अपन समय चाहैत छथि, तेँ कथा हुनका निरन्तर प्रश्नक घेरेमे राखि नहि सकैत; दोसर लोकक जीवनो चलैत रहैत अछि। ई पाठकीय दूरीक नैतिक व्याख्या अछि, अनिवार्यतः पूर्ण कलात्मक सफलता नहि। अध्यायक कसौटी एहि बातमे अछि जे हिंसा-सूत्र फेर घुरलापर वस्तु आ देहक छोट विवरण पाठकक स्मृति जीवित रखैत अछि कि नहि। आधा बटन, खिड़की, थारी, नीच चौकी आ लिफाफा एहि स्मृतिसूत्रकेँ बचौने रखैत अछि।

‘एखन नहि’ : समापनक भाषा आ अनिर्णीत भविष्य

अन्तिम रसोइ-दृश्यमे पुरुष अपन भोजनक थारी लैत छथि, मित्रक सम्भावित रात्रि-निवाससँ अलग सुरक्षित भेट चाहैत छथि, आ कोठरी साझा नहि करबाक चुनाव करैत छथि। सुरक्षा-पञ्जीमे सार्वजनिक खर्चक मद आ बन्द निजी विवरण अलग लिखल जाइत अछि। एहि असामान्य व्यवस्थासँ अगिला अध्यायक ‘नियमक अपवाद’क कथा-बीज उत्पन्न होइत अछि। अन्तिम क्षणमे पुरुष खाली बयान-पन्ना फाड़ैत नहि, ताहिपर ‘एखन नहि’ लिखि लिफाफा बन्द करैत छथि। एतय ‘नहि’ अन्तिम चुप्पीक अर्थ नहि, वर्तमान समयक सीमांकन अछि; ‘एखन’ भविष्यक सम्भावना खोलि रखैत अछि। जालक हिलैत डोरीक अन्तिम चित्र पुनः बरकी पोखरिसँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि, मुदा निजी देहक इतिहासक रूपक बनबाक भ्रमसँ बचैत अछि।

अध्यायक उपलब्धि एहि संयमित नाट्य-विधिमे अछि : हिंसा स्वयं दृश्यात्मक तमाशा नहि बनैत, पात्रक हस्तगत विकल्पसभ कथानकक वास्तविक मोड़ बनैत अछि; अनेक उपकथासभक बीचो एक व्यक्तिक मौनक स्वायत्तता सुरक्षित रहैत अछि। सीमा ई जे संस्थागत लोक लगभग सभ संवेदनशील अवसरपर अपेक्षाकृत सही वाक्य बजैत छथि, जकर कारण सहायता-परिस्थितिक असली मनमानी, भ्रम अथवा दीर्घकालिक असफलताक व्यापक नाटकीय कठिनाइ घटि सकैत अछि। ‘एखन नहि’क अन्तिम शब्द एहि सीमाक बावजूद अत्यन्त शक्तिशाली अछि, कारण ओ समाधानक स्थानपर समयक अधिकारकेँ मुख्य कथात्मक उपलब्धि बनबैत अछि।

अध्याय १५६ — नियमक अपवाद

तीन घरक प्रपत्र आ चौठ घरक अभाव : अभावसँ आरम्भ भेल कथा

अध्यायक आरम्भ बरखामे भीजल नील कागद आ एके प्रकारक सैकड़ो छपल प्रपत्रसँ होइत अछि : नाम, स्थायी पता, शिकायतक कारण—तीन घर; चारिम घर कतहु नहि। पिछला अध्यायक हिंसा-पीड़ित पुरुषक निजी विकल्प आब संस्थागत संरचनामे ठाम माँगैत अछि। नाटकीय रूपमे ई ‘रिक्त घर’ कथाक नब नायक नहि, मुदा नब संघर्षक मूर्त वस्तु अछि। बरखाक कारणेँ बहरायल सूचना-पट्टीक अक्षर आ प्रपत्रक अनम्य खाना एक विरोधी बिम्ब-जुड़ी रचैत अछि : बाहरी शब्द मेटाइत छथि, भीतरक प्रपत्र अत्यन्त स्थिर अछि। कथाक प्रश्न ई थिक जे जे व्यक्तिक जीवन एहि स्थिर खानेमे नहि समाइत, ओकरा प्रवेश केना भेटत।

पुरान भोजन-वितरण खिड़कीक पास शिकायत-फट्ठा जोड़बाक प्रस्ताव जुबैदा रोकैत छथि। ई रोक कथामे महत्त्वपूर्ण स्थानगत मोड़ अछि। नव काउंटर पाछूक बरामदामे बनत, जतय बैसल व्यक्तिक आँखि आ कागतक ऊँचाई बराबर हो; पर्दा वैकल्पिक रहत। एतय स्थापत्य विवरण कथानकक अर्थ रचैत अछि। एकहि घरमे सार्वजनिक भोजन, निजी शिकायत आ अभिलेखीय सुधारक अलग स्थान बनैत अछि; स्थानक संगठन सामाजिक सम्बन्धक संगठन बनि जाइत अछि। पात्रक स्वायत्तता कथावाचकक उपदेश नहि, देवाल, खिड़की, पारी आ समयक व्यवस्था द्वारा दृश्य बनैत अछि।

अपवादक अर्थक संवाद : पात्रसभक बहुस्वरता

रमा नियमक एकरूपता आ कर्मचारीक सुविधा पर प्रश्न उठबैत छथि, रुहानी समान प्रपत्र आ समान पहुँचक भेद रखैत छथि। कथा एतय एकटा सस्ता प्रतिपक्ष नहि रचैत, जतय एक पात्र ‘दुष्ट नियम’क समर्थक आ दोसर ‘मुक्ति’क प्रतिनिधि हो। रमा स्वयं पूछैत छथि—के निर्णय लेत, कतेक दिनमे, अपील कतए? एहि प्रश्नसँ अध्यायक संघर्ष व्यक्तिक तत्काल राहतसँ व्यवस्था केना टिकत से दिस सरैत अछि। पिछला अध्यायक पुरुष खिड़की देखबैत छथि, मुदा अपन अनुभव प्रशिक्षणक उदाहरण बनयबाक अनुमति नहि दैत। पाठकक लेल ई सजीव निरन्तरता अछि : कथानक एक पात्रक घाव लऽ कऽ तुरन्त सार्वजनिक प्रदर्शन नहि बनबैत, ओकर चुनल सीमा नब व्यवस्थाक भाषा बदलैत अछि।

छठम पाठांशमे चारि पृथक नियम उतरैत अछि। ‘उपचार’, ‘बयान’ आ ‘प्रकाशन’ अलग सहमति, तत्काल आवश्यक सेवा आ लेखा-जाँचक अलग गति, प्राप्ति-अङ्क आ व्यक्तिक भिन्न पहिचान, तथा आवेदन फिर्ता लेलापर पहिनुक सेवा न काटब—ई सभ कथामे नब कार्य-प्रविधि अछि। केवल सूची गनला पर एकरा कथा कहल कठिन; मुदा प्रत्येक नियम पछिला अध्यायक एक विशेष दृश्यसँ जुड़ल अछि। अध्याय १५५ क खाली बयान-पन्ना, निजी औषधि-पर्ची आ सार्वजनिक खर्च-रजिस्टर एतय नब प्रपत्रक भिन्न खानेमे घुरैत अछि। कथा एना अपन अतीतक वस्तुसभक अर्थ परवर्ती अध्यायमे पुनर्वितरित करैत अछि।

अनिता, बसन्ती आ अमला : भिन्न अनुभवक समानान्तर कथा

अनिताक पुरान प्राप्ति-पर्चीक घिसल किनार एक छोट दृश्यात्मक संकेत अछि। हुनकर जातिगत गलत वर्गीकरणक कारण कमाइक आवेदन गलत खिड़की गेल; ओ खुलल सभा नहि, गोपनीय भेट चुनैत छथि। गलती सुधरबाक प्रक्रिया हुनकर परिवारक अप्रासंगिक विवरण फेर सार्वजनिक करि नब चोट नहि पहुँचाबय, ई हुनकर मूल कथात्मक आग्रह अछि। अध्याय नव नियमक पहिल ठोस परीक्षण अनिताक अनुभवमे करैत अछि : व्यक्तिगत पूरा प्रति, सार्वजनिक सीमित स्थिति, आ विवादरहित श्रमक दाम रोकल नहि जाएब। उपन्यास तत्काल पूरा नुकसान भरल गेल, ई दावा नहि करैत; कागद थैलीमे सीधा राखबाक अनिताक क्रिया एक छोट, आंशिक परिवर्तनक शारीरिक चित्र बनैत अछि।

बसन्ती पानक जीवनमे ‘पान, सवासी, पनर’क प्रशासकीय पर्याय आ हुनकर स्वयं बोलल परिचयक भेद उठैत अछि। हाटमे सुकैत पानक पातक चिन्ता हुनकर कार्यालय-यात्राकेँ जीविकाक समयसँ जोड़ैत अछि। बादमे पानक खुरचल किनारपर पानि छिड़कबाक दृश्य पहिल पातक चिन्ता पुनः लौटबैत अछि। एहि वस्तु-आवर्तनसँ भाषा-

संशोधनक अमूर्त प्रसंग बाजारमे बितल समयक खर्चसँ जुड़ि जाइत अछि। अमला सर्बरिया तीन परिवारक तीन अलग आवरण आ लाल धागाक गाँठ लऽ अबैत छथि। सरकारी यन्त्र एक सामूहिक अङ्क प्रस्तावित करैत अछि; अमला सामूहिक वर्तनी-सुधार आ व्यक्तिगत लाभक भिन्नता सुरक्षित रखैत छथि। अन्तमे लाल धागाक तीन गाँठ ढीला होइत अछि, मुदा तीन प्राप्ति स्वतन्त्र रहैत अछि। ई शुरूआत आ अन्तक वस्तु-साम्यता पात्रक निर्णायक हस्तक्षेपकेँ दृश्यात्मक रूप दैत अछि।

तीनू स्त्रीक कथा आपसमा केवल एक नारा द्वारा नहि जुड़ैत। अनिताक समस्या गलत सामाजिक वर्ग, बसन्तीक समस्या स्वपरिचयक हटैत शब्द, अमलाक समस्या अलग परिवारक आवेदन एक अंकमे समेटबाक प्रवृत्ति अछि। समानान्तर सम्पादन पाठककेँ बारम्बार एक खिड़कीपर घुरबैत अछि; प्रत्येक बेर नव वस्तु—घिसल पर्ची, हरियर पात, लाल धागा—लेनिहारक दृष्टिकेन्द्र बदलैत अछि। ई बहुस्वरता वास्तविक अर्थमे तबे सफल अछि जखन पात्रसभक विशिष्ट क्षति बचल रहय। उपन्यास एहि भेदकेँ अधिकांशत: निभबैत अछि, मुदा प्रत्येक प्रसंगक समाधान लगभग समान ‘प्राप्ति, आदेश, शेष जाँच’क क्रमपर बनैत गेलासँ लयमे अनुमानयोग्यता अबैत अछि।

रूप, स्पर्श आ ज्ञानक पहुँच : नव खिड़कीक बहुमाध्यमीयता

जुबैदा तीन अलग पर्चीक आकार बनबबैत छथि—मदद, अभिलेख-सुधार, गोपनीय बात। रंगकेँ पर्याप्त नहि मानि स्पर्शसँ चिन्ह बुझबाक उपाय जोड़ल जाइत अछि। संकेतक कक्षासँ आएल बालकक प्रश्न दृश्यकेँ छोट विराम दैत अछि; पद्मा उत्तरक बदला नमूना हाथमे दैत छथि। ई प्रसंग अध्याय १४७ क बहुमाध्यमीय शिक्षाक स्मृति जगबैत अछि, मुदा ओहि पहिनुक अध्यायक सरल पुनरुक्ति नहि। एतय छात्रक अनुभूति संस्थागत प्रवेशक वास्तविक आकार बदलैत अछि। कथात्मक दृष्टिसँ ‘सुनेल नियम’ आ ‘छू कऽ बुझल चिन्ह’क भेद पाठकीय अनुभवकेँ सेहो भौतिक बनबैत अछि। वृद्ध दम्पतीक धुँधल तस्वीरवला दृश्य ई प्रश्न अलग रूपमे दोहरबैत अछि : सामान्य भोजनक जरूरत आ विशेष अनुदानक अपीलक समय एक नहि। भोजनक थारी तत्काल उठैत अछि, मुदा पर्ची अगिला दिन धरि बचल रहैत अछि। दृश्य सभ काजक पूर्णता नहि, अलग-अलग कथन-अवधिक समायोजन अछि।

खिड़कीक बजट, कर्मचारीक पारी, प्रशिक्षण आ विश्रामक प्रश्न उपन्यासक श्रमधुरी पुन: सक्रिय करैत अछि। यदि नब व्यवस्था केवल रुहानी, जुबैदा आ रुखसानाक अदृश्य मुफ्त समयपर चलत तँ पछिला अध्यायक स्वतंत्रता-दृष्टि स्वयं कमजोर पड़त। रुखसाना भोजन-वितरण छोड़ि गोपनीय सुनवाईक अनिश्चितकालीन भार नहि लैत छथि। एहि नकारमे पात्रक निरन्तर विकास अछि : ‘सहायता’क भाषा ओहि व्यक्ति पर बाध्यकारी नब बोझ नहि बनय जे पहिनहि सँ सेवा करैत छथि। कथा-प्रणालीक विस्तारक संग श्रमिकक देहगत समयक उल्लेख संरचनात्मक एकसूत्रता रचैत अछि।

नदी-नामक ध्वनि आ चलैत अभिलेखक पूर्वसूचना

अठारहम–उन्नीसम पाठांशमे नदी-यात्राक सूची ‘तिलवाह’, ‘तिलयुगा’ आ ‘तिलयुगबा’क निकट ध्वनिवला नामसभक कारण जटिल भऽ जाइत अछि। गोपाल माझी कहैत छथि जे ध्वनिक समानता पहुँचबाक घाट बदलि सकैत अछि। रचना छात्रसभक वर्तमान उठान-बिन्दु स्वतंत्र पूछबाक निर्णय लैत छथि। एहि प्रसंगक सम्बन्ध

पहिल नदी-मापक अध्यायसँ स्पष्ट अछि : चिह्न आ नामक भिन्न कालिक मूलकेँ मानि, वर्तमान यात्राक दिशा फेर तय करबाक जरूरत। तेँ ई उपकथा केवल सूचना-तकनीकक समस्या नहि, कथानकक जल-स्थानक निरन्तरता अछि। गलत नामसँ छूटल तीन परिवारक यात्रा-खर्चक दावाक स्मरण कथा-संसारक पात्रसभकेँ फेर एकठाम जोड़ैत अछि।

उनतीसम पाठांशमे सीमापार चलैत सत्यापन-शिविरक प्रस्ताव अबैत अछि। प्रस्तावित ‘समस्त नामक सूची’क स्थानपर रमा स्थानीय सहमति आ पृथक अधिकारक आधार माँगैत छथि। ई अध्यायक निकट भविष्यक कथा-बीज अछि : खिड़कीक भीतर बनल प्रवेश-विधि गाम-गाम गेलापर केना बदलब, से अगिला अश्वमेध-पर्वक व्यापक चलनशील भूगोलक तरफ संकेत करैत अछि। एहिमे प्राचीन अश्वमेधक स्वतंत्र दृश्य एहि अध्यायमे उपस्थित नहि; पर्वगत नामक अर्थ आगाँक कथाक संरचनासँ तुलना योग्य अछि। अन्तिम पर्ची ‘हमरा सुनल जाय, मुदा सभक आगाँ नहि’ उद्घाटनक तीन घरवला फार्मक सघन प्रतिलोम बनैत अछि। पहिने प्रपत्र व्यक्तिक सभ विवरण माँगैत छल; अन्तमे एक अनाम आवाज स्वयं सुनाइबाक शर्त दैत अछि। एही बदलावमे अध्यायक कथा-यात्रा पूर्ण होइत अछि।

कलात्मक उपलब्धि आ अपवादक रूपकक सीमा

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि प्रशासनिक डिजाइनकेँ जीवन्त स्थान, वस्तु आ समय द्वारा कथामे रूपान्तरित करब अछि : भीजल नील कागद, नीच खिड़की, बराबर आँखिक ऊँचाई, स्पर्श-पर्ची, धागाक अलग गाँठ आ अन्तिम अनाम पर्ची। पात्रक निजी अनुभव सार्वजनिक नब नियमकेँ बदलैत अछि, मुदा नव नियमक बजट आ कर्मचारीक पारीक प्रश्न व्यक्तिगत इच्छाक बाहरे कठिनाई बनाकऽ उपस्थित रहैत अछि। खास रचनात्मक सीमा ई जे प्रत्येक सुधार-प्रसंगमे रमा अथवा रुहानी तुरन्त उपयुक्त वर्गीकरण सुझबैत छथि, कर्मचारीक प्रतिवाद जल्दी समाहित भऽ जाइत अछि। परिणामतः पाठक सुधारक दिशा अक्सर अनुमानि लैत अछि, आ कथात्मक अप्रत्याशितता घटैत अछि। अनिताक संशय, बसन्तीक छूटल कमाइ आ स्थायी अनुमति नहि भेटबाक तथ्य ई सरलताकेँ पूरा विजय-कथामे बदलए नहि दैत।

अन्तमे किछु नामक जगह अनाम आवाज रखब कथाक नैतिक सफलता मात्र नहि, ओकर रूपगत निर्णय अछि। २०४० क बरखासँ शुरू भेल दिन रात्रि-रसोइक पातर धारपर समाप्त होइत अछि। एके छत भीतर सभ व्यक्तिक लेल समान प्रवेश-दरबज्जा नहि, अपन बाट चुनबाक सम्भावना अछि। कथावाचक एहि बातकेँ भविष्यक आख्यान खोलि रखैत छथि—खिड़की खुलल अछि, अन्तिम न्याय-सिद्धि घोषित नहि।

अनुशासन-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १४५–१५६ क समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पाँतिसँ खिड़की धरि : बारह अध्यायक वस्तु-शृंखला

अनुशासन-पर्वक बारह अध्यायक क्रम साधारण वस्तुसभक बदलैत अर्थपर आधारित अछि। राशनक पाँति (१४५) सार्वजनिक वितरणक देहगत अनुभव खोलैत अछि; फकीराक पास आ संकेतक कक्षा (१४६–१४७)

यात्रा आ शिक्षाक प्रवेशक भिन्न समय देखबैत अछि; पद्माक फीस (१४८) शिक्षा-श्रमक छिपल खर्च सोझाँ अनैत अछि। जानकीक खण्डन, चेहरा आ प्रमाण, शम्बूकक पाठ (१४९–१५१) सार्वजनिक छवि, मंचित कथा आ बोलबाक अधिकारक बीच पाठकीय दूरी रचैत अछि। माटिक बकाया (१५२) वस्तु आ कुटुम्बक उत्तराधिकारक जटिलता खोलैत अछि। अन्तिम चारि अध्याय (१५३–१५६) नदीक बाँस, घाटक ताला, निजी लिफाफा आ त्रिखाना फार्मसँ एक नब रूपाकार बनबैत अछि। एहि भिन्न वस्तुसभक माध्यमसँ पर्व एकहि मुख्य प्रश्नक आवृत्त पुनर्पाठ करैत अछि : ककर जीवनक कार्य, नाम आ समय ककरो दोसर लिखल सूचीमे कोना समाइत वा छूटैत अछि।

एहि क्रमकेँ एक घटनाक बारह विस्तार कहब उचित नहि। छात्रक मातृभाषा, जालक दाम, नदीक नाव, यौन हिंसासँ प्रभावित व्यक्तिक निजी समय, माटिक उत्तराधिकार आ मृत उर्मिलाक श्रम—सभक घटना-स्वरूप अलग अछि। ओकरा जोड़निहार तत्त्व एके नायक वा एके मुकदमा नहि, वस्तु आ स्मृतिक आवर्तन तथा सार्वजनिक दैनन्दिन जीवनक साझा भूगोल अछि। बारहम अध्यायक अगिला अध्यायक प्रवेश-स्थिति बनबाक अनेक सघन जोड़ अछि : १५२ क माटि आ जल-प्रश्न सँ १५३ क माप; १५३ क रिक्त हस्ताक्षर-स्थान सँ १५४ क घाट; १५४ क सार्वजनिक घाटक स्वर सँ १५५ क निजी कोठरी; १५५ क बन्द सहमति-पन्ना सँ १५६ क नव खिड़की। एहि क्रममे उत्तरकाण्ड दीर्घ परिणामक उपन्यासात्मक काल बनैत अछि, केवल युद्धक बादक परिशिष्ट नहि।

कथाकाल आ दृष्टिकेन्द्र : दीर्घ शोकक बीच दिनचर्याक दृश्य

पर्वक प्रमुख वर्तमान काल २०४० क सामाजिक पुनर्गठन अछि। पूर्व आपदाक २०३९ क स्मृति निरन्तर लौटैत अछि, मुदा एकरे आधारपर सभ अध्याय स्वतंत्र पूर्वकालीन घटना-दृश्य नहि बनबैत। उर्मिला आ नैराक अनुपस्थितिक अनुभूति, कपड़ा-पंजी, रसोइ, विद्यालय आ घाटक पहुँचमे अलग-अलग उठैत अछि। शोकक अवधि कैलेंडरक दिनसँ बेसी व्यक्तिगत पुनरावृत्तिसँ बनैत अछि। पात्रसभ अतीत स्मरण करैत छथि, मुदा वर्तमान मजदूरक सम्मतिक स्थान मृतकक स्मृति नहि लैत—ई उपन्यासक भावात्मक गाम्भीर्यक महत्त्वपूर्ण कारण अछि। अध्याय १५३–१५६ मे स्वतंत्र महाभारतीय वा रामायणीय प्राचीन दृश्य नहि भेटैत; अन्तर्पाठ मुख्यतः पर्वक नाम आ पूर्ववर्ती कथा-स्मृतिसँ कार्य करैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रणक वितरण एहि पर्वक व्यापक उपलब्धि अछि। उपन्यास रुहानी, गोमती, सरिता, जानकी, रमणी, रेणु, हीरा, फकीरा, पद्मा आ अनेक अल्पविराम-जकाँ अबैत पात्रसभक अनुभवक लग सरैत अछि। तथापि ‘बहुस्वर’क अर्थ केवल धेरै पात्रक नाम नहि। सबसँ प्रभावशाली क्षण ओ छथि जखन अलग-अलग पात्रक कथन-सीमा संघर्ष रचैत अछि : रमणी जाल चाहैत छथि, रेणु पायरी; कर्मचारी एक फार्म चाहैत अछि, निवासी गोपनीय खिड़की; नीच चौकीपर बैसल पुरुष उपचार चाहैत छथि, मुदा तत्काल विस्तृत बयान नहि। एहि अन्तरसभसँ पाठकक अनुभव बदलैत अछि। कथावाचकक बाहरी दूरी, वस्तु-वर्णन आ संवाद—तीनू मिलि पात्रक भीतर पहुँचबाक एकाधिक बाट खोलैत अछि।

नैतिक दबाव नहि, कथात्मक असम्पन्नता : पर्वक अन्तिम लय

अनुशासन-पर्वक निर्णयसभ प्रायः आंशिक छथि : सार्वजनिक घाटक ऊपरी सीढ़ी खुलैत अछि, ढीला तेसर सीढ़ी बन्द; साझा उपयोग-पञ्जीमे नाम चढ़ैत अछि, पट्टाक देय वा स्वामित्व नहि निपटैत; जातिगत गलत श्रेणीक सुधार आरम्भ होइत अछि, पुरान छूटल भुगतानक सम्पूर्ण भरपाई नहि; नब गोपनीय खिड़की परीक्षण-अवधि लेल खुलैत अछि, स्थायी शासकीय अनुमोदन नहि। एहि असम्पन्नता मे कथात्मक ईमानदारी अछि, कारण एकटा छोट घटनाक फलसँ सभक भाग्य बदलि गेल, एहन अतिनाटकीय समापन नहि बनैत। अगिला अध्याय लेल जगह बचल रहैत अछि, आ पाठक स्वयं समयक पाछाँ चलैत अछि।

मुदा ताहिसँ एक शैलीगत समस्या सेहो बनैत अछि। अनेक अध्यायक संवाद एक्के प्रकारक विरोध-स्वीकार-स्थगन-संशोधनक क्रममे बढ़ैत अछि; पात्रसभ बारम्बार ‘ई अलग, ओ अलग’क भाषा बजैत छथि। ई पुनरावृत्ति सामाजिक जीवनक जटिलता देखबैत अछि, मुदा कखनो-कखनो पात्र-विशेषक बोलबाक लहजा समान बनबैत अछि। तीसरे, चौथे वाक्य धरि प्रशासनिक वर्गीकरण स्पष्ट भेला पर नाटकीय तनाव घटि जाइत अछि। ‘शम्बूकक पाठ’क मंचीय रूप, ‘हिंसाक गवाही’क कातर मौन आ ‘नदीक माप’क नाव घुमेबाक त्रुटि एहन क्षण छथि जतय उपन्यास एहि प्रक्रिया-प्रधान लयकेँ तोड़ि सजीव नाट्यक बल पुनः प्राप्त करैत अछि।

अश्वमेधक पहिने : स्थानीय ठामसँ चलैत कथाजगत

अध्याय १५६ क अन्तिम यात्रा-प्रस्ताव अगिला अश्वमेध-पर्वक कथात्मक द्वार खोलैत अछि। एखन धरि बरकी पोखरि, आश्रय, विद्यालय, नगर कार्यालय आ तिलवाहक किनारक स्थिर ठाम बारम्बार लौटैत रहल अछि। आब चलैत सत्यापन-शिविरक प्रस्तावसँ एहि स्थानीय व्यवस्था गाम-गाम कतेक बदलत, से अगिला कथानकक सम्भावना अछि। ई परिवर्तन स्थानक मात्र विस्तार नहि; जकरा ‘अपन बाट चुनबाक अधिकार’ भेटल, ओ अपन ठामसँ बाहर नव सत्तासँ कोना भेंटत, तकर कथा-बोध अछि। एकर आधारपर शान्ति-पर्वक शासकीय पुनर्गठन आ अनुशासन-पर्वक दैनिक नियम-व्यवहारक भेद स्पष्ट होइत अछि : पहिने ‘के शासन लेत’ छल; आब ‘लोकक पयर, नाम, समय आ निजी स्वर लेल केहन नियम जीबैत अछि’ मुख्य कथा बनि गेल।

एहि पर्वक समग्र उपलब्धि महाकाव्यीय ‘अनुशासन’केँ दण्ड आ आज्ञाक महान घोषणामे नहि, लोकक ठोस श्रम, यात्रा, शोक आ निजताक अलग जीवनरेखामे बदलि देब अछि। एकर सभसँ पैघ कलात्मक सीमा अनेक प्रक्रियात्मक संवादक एकरूपता, विस्तारक सम्भावित भार आ सहज विरोधक अत्यधिक नीक-सँ-सुलझल भाषा अछि। तथापि पहिल राशन-पाँतिसँ अन्तिम अनाम पर्ची धरि विकसित वस्तु-श्रृंखला उपन्यासक दीर्घ उत्तरकाण्डकेँ दृश्यात्मक सम्बन्ध प्रदान करैत अछि। अन्तिम अनाम स्वरक ‘सुनल जाय, मुदा सभक आगाँ नहि’ आग्रह आगामी यात्राक लेल कथाक मर्म बचा रखैत अछि।

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १५७ — छूटल घोड़ाक बाट

घोड़ाक पयर आ रास्ताक अर्थ : नब पर्वक आरम्भिक दृश्य

अश्वमेध-पर्वक आरम्भ राजकीय विजयक औपचारिक घोषणासँ नहि, घोड़ाक पीठपर सुनहला किनारवला वस्त्र सीबैत कारीगरक सुई अटकबासँ होइत अछि। ई लघु अवरोध महाकाव्यीय विस्तारक भीतर श्रमक सूक्ष्म दृश्य रखैत अछि। सेनापतिक लेल घोड़ाक निर्बाध गति अधिकारक विस्तार थिक; अर्जुन घोड़ाक आँखि देखैत छथि, जतय राजाज्ञा नहि, खुलल मैदान अछि। कथावाचक घोड़ाक आन्तरिक एकालाप नहि रचैत छथि; अर्जुनक दृष्टिक भीतरसँ पशुक गतिशील देह आ सैनिकक आज्ञापरक अर्थक विरोध देखबैत छथि। आरम्भक एहि दू अलग अर्थ-क्षेत्रसँ पाठककेँ अगिला प्रश्नक प्रतीक्षा होइत अछि—एके बाटपर चललासँ सभक सहमति एके होइत अछि की? घोड़ा ककरो भाषा नहि बुझैत, मुदा ओकर पाछाँ चलैत लोककेँ उत्तर देब पड़ैत अछि; ई भेद चौठम-पाँचम पाठांशमे प्रत्यक्ष संवाद बनि जाइत अछि।

सभामे यात्रा-पत्रक पहिल पाँतिपर युधिष्ठिरक ठहरब कथा-अवधिक पहिल बड़का विराम अछि। वैभवशाली राजसत्ता पन्नाक एक वाक्य पढ़बाक क्रियामे संकुचित होइत अछि। ओ विजयक घोषणासँ पहिने बाटपर रहनिहार लोकक आवाजक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा पन्ना फाड़ैत नहि छथि। ई अपूर्ण निर्णय आख्यानकेँ सहज न्यायोद्धारक उपदेश बनबासँ रोकैत अछि। तेसर पाठांशमे द्रौपदी सेनाक बाहरक लोक—बाट साफ करनिहार, घोड़ाकेँ चारा देनिहार, रात्रि-सेवामे लागल स्त्री-पुरुष—केँ यात्रा-पत्रक खाली किनारमे प्रवेश दिअबैत छथि। पन्नाक मुख्य भाग राजाज्ञाक, खाली किनार अदृश्य श्रमक ठाम बनैत अछि। द्रौपदीक लिखल ‘जतए बाट लेल श्रम लेब, ओतए ओकर दाम देब’ वाक्य केवल भावात्मक टिप्पणी नहि रहैत; छठम पाठांशमे पुल मरम्मति आ आठममे चारा देनिहार किशोरक पारिश्रमिकक निर्णय ओकर फल बनैत अछि। एही प्रकार कथा छोट लिखित हस्तक्षेपकेँ अगिला दृश्यसभमे जाँचैत अछि।

खेतक मेढ़पर ठहरल जुलूस : दृश्य-समय आ निर्णयक परिवर्तन

पहिल दू गाम निर्विघ्न पार करबाक संक्षिप्त कथनक तुरन्त बाद तेसर गाममे बलुआ माटि, नब बोआएल खेत आ धँसल पयरक सघन दृश्य खुलैत अछि। दू ग्रामक यात्रा सारांशमे बीतैत अछि; तेसर गामक एक मेढ़पर अनेक पाठांश लगैत अछि। अवधि-विस्तारक एहि चुनावसँ ‘अवरोध’ मात्र संकट नहि, अर्थ-निर्माणक केन्द्र बनैत अछि। सैनिक भाला उठबैत अछि, अर्जुन ओकर हाथ रोकैत छथि, एक स्त्री माटिक लोटा राखि पूछैत छथि जे काल्हि धरि जे मेढ़ छल से आइ राजमार्ग केना भेल। काल्हि–आइक द्वि-क्षण सामाजिक अधिग्रहणक अनुभवकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। स्त्रीक पति युद्धमे मरल अछि, मुदा ओकर प्रश्न प्रतिशोधक भाषा नहि; फसलक समय आ पानिक दिशाक भाषा अछि। कथावाचक ओकरा ‘अज्ञात ग्रामवासी’क सामान्य भीड़मे विलीन नहि करैत छथि, तथापि ओकर नाम नहिएँ दैत—ई अनाम उपस्थिति महाकाव्यक नामधारी विजेताक विरुद्ध एक सजग रूपगत चुनाव भऽ सकैत अछि।

छठम–सातम पाठांशमे मुख्य घटना केवल घोड़ा रोकब नहि, बाटक अर्थ बदलब अछि। पुरान पुलक टूटल कड़ी, राजभण्डारक सामग्री, स्थानीय कारीगरक दर आ पुलक क्षमता-जाँच तीन नव क्रियात्मक शर्त बनैत छथि। गामक प्रधान साफ कहैत छथि जे घोड़ा पार करबाक अनुमति अपन न्यायसभा बन्द करबाक समर्पण नहि। अर्जुन शर्तक सीमित शब्द लिखबाक निर्णय स्वीकारैत छथि। एहि निर्णयक फल आठम पाठांशमे हुनकर स्वयं लिखल पाँतिसँ देखाइत अछि : मार्ग देब आ राजकीय अधीनताक घोषणा दू अलग लेख। आरम्भमे यात्रा-पत्रक किनार द्रौपदी भरने छलीह; आब अर्जुन स्वयं ओकर बगलमे लिखैत छथि। पात्र-विकासक ई वास्तविक, छोट आ दृश्यात्मक संकेत अछि। मुदा ओ पूर्णरूपेँ अश्वमेध-हिंसासँ बाहर निकलि गेलाह, एहन निष्कर्ष पाठ नहि दैत; हुनकर विजयक इच्छा आ अगिला प्रदेशक सम्भावित संघर्ष बचल अछि।

नवयुवक सैनिकक हथेलीपर रश्मिक खुरदुरापन लगब एक जटिल राजनीतिक संवादकेँ देहगत अनुभवमे बदलैत अछि। अर्जुन रश्मि धरबाक नियन्त्रण आ दोसरक जीवनपर अधिकारक अन्तर समझबैत छथि। सैनिक तुरन्त आदर्शवादी वक्ता नहि बनैत; ओ भोरमे कारीगरक दाम देबाक थैलाक गाँठ जाँचबाक स्वेच्छा व्यक्त करैत अछि। एहि सूक्ष्म क्रियासँ परिवर्तन नारेक स्तरपर नहि रुकैत। तथापि अर्जुन आ सैनिकक उत्तर अपेक्षाकृत तत्पर होइत अछि; आन्तरिक प्रतिरोधक दीर्घ अनुभव पाठककेँ कम भेटैत अछि। ई अध्यायक एक सम्भावित कलात्मक सीमा अछि : सत्ता-संरचनाक गहन दबावक तुलना मे किछु पात्रक नैतिक पुनर्विन्यास जल्दी सम्पन्न होइत अछि।

फागुनक वाहन आ प्राचीन घोड़ा : द्विकालीन समानान्तर सम्पादन

दसम पाठांश अचानक २०४० क फागुनक अन्तिम सप्ताहमे पहुँचैत अछि। समयक एहि कटावकेँ कथावाचक एके इतिहासक अगिला दिन नहि मानैत छथि। प्राचीन घोड़ाक यात्रा आ आधुनिक निरीक्षण-दलक वाहनक बीच समानता सत्ता आ गतिशीलताक रूपमे अछि; दुनूक संस्थागत स्थिति, काल आ पात्र अलग छथि। रमा कर्ण वाहनक छतपर बन्हल सन्दूकक गाँठ खोलैत छथि, कारण भीतरक कागदक मालिककेँ यात्राक जानकारी देब आवश्यक अछि। पहिल दृश्यक घोड़ाक पयर जतेक प्रसारित सत्ता, एहि दृश्यक वाहनक चक्का ओतेक प्रशासनिक चलनशीलता सम्भावित करैत अछि। मुदा रमा कहैत छथि जे ‘गामक दुआर खोलबाक अधिकार हमर गाड़ीक टायरमे नहि अछि’। ई वाक्य अर्जुनक सीमित मार्ग-स्वीकृतिक आधुनिक प्रतिध्वनि अछि, पौराणिक अधिकारक सीधा अनुवाद नहि।

एकादश–तेरहम पाठांशमे यात्रा-आदेश, स्थानीय अनुमति, मूल अभिलेखक स्थिरता, सत्यापित नकल, बन्द गोपनीय आवरण, अनुवादिकाक पारिश्रमिक आ चालकक अग्रिम क्रमशः सोझाँ अबैत अछि। प्रत्येक बात लऽ कऽ गाड़ी आधा पहर देरीसँ निकलैत अछि। उपन्यास एहि देरीकेँ प्रशासनिक विफलताक एकमात्र चिह्न नहि बनबैत; देरीक भीतर श्रमक नाम आ कागदक स्वामित्वक कथा धरैत अछि। खाली परदावला सीट विशेष रूपसँ मार्मिक अछि : ई ओहि अज्ञात भविष्यक आवेदकक लेल जगह अछि जकर निजता दलक व्यवस्थामे पहिने सँ सोचल गेल। एहन वस्तु स्वतः ‘सहमत व्यक्ति’ नहि बनि जाइत, मुदा संभावित भागीदारीक कालिक प्रत्याशा रचैत अछि।

फरीदा कुरैशीक बजारक उपकथा मुख्य यात्रासँ हटि सार्वजनिक छविक जटिलता खोलैत अछि। प्रारम्भिक बहिष्कार-पर्ची हटैत अछि, बाजार-संघ अपन आदेश वापस लैत अछि, पर शेष ग्राहक-शिकायत आ छूटल बिक्रीक क्षति स्वतः समाप्त नहि। फरीदा 'निर्दोष'क सम्पूर्ण उद्घोषणा रोकैत छथि; सही परिमाणमे सूचना लिखब चाहैत छथि। दू किशोर अपमानक बदला अपमान द्वारा लेबाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा फरीदा तकरा रोकैत छथि। ई छोट नाटकीय मोड़ पात्रक पहिले सँ चलैत सामाजिक चोटकेँ नब कर्म-नीतिसँ जोड़ैत अछि। ग्राहकक डर तुरन्त नहि उतरैत, कर्मचारीक बकाया वेतन शेष रहैत; अधूर फल कथा-विश्वकेँ सहज विजयगाथा बनबाकसँ बचबैत अछि।

रीताक औजार, गामक पुस्तकालय आ अनुपस्थितिक खाली खाना

रीता एक्काक दृश्य यात्रा-आख्यानमे द्वितीय सामाजिक केन्द्र जोड़ैत अछि। हुनकर वास्तविक सिलाइ-औजारक उधार आ घाट-मरम्मतिक आवेदनसँ जोड़ल झूठ जमानत एके 'कर्जा' नहि। अलग रसीद, अलग तिथि आ जब्ती स्थगित करएबाक लिखित प्रयासक दृश्य कथानकक ठोस परिवर्तन अछि; समस्त ऋण माफ नहि भेल। रीता अपन साँच देय चुकएबाक निर्णयसँ केवल पीड़िता नहि, विरोधक विषय स्वयं निर्धारित करनिहारी पात्र बनैत छथि। बाहरी दृष्टिकेन्द्रण ओकर थैली, रसीद आ औजारक माध्यमसँ चरित्र उघारैत अछि; कथावाचक हुनकर भीतरक सभ चिन्ता पाठककेँ सीधे नहि दैत छथि।

विद्यालयक पुस्तकालय-कक्षमे जखन निजी आवेदन लेल अलग ठाम बनैत अछि, गामक साझा सार्वजनिक स्थल एक नब कथात्मक भूमिका पबैत अछि। बालकसभ बाहर चित्र बनबैत छथि, भीतर नामक कागद पढ़ल जा रहल अछि; अध्याय दृश्य-दूरीसँ निजताक सीमा बनबैत अछि। प्रधान 'सर्वेक्षण पूरा' काटि 'पहिल बैठक सम्पन्न' लिखबबैत छथि, जकरासँ कथात्मक समापन आ संस्थागत समापन अलग होइत अछि। बुजुर्ग महिलाक तीन घण्टा हाट छूटब आ अगिला बैठकक संयुक्त घड़ी यात्राक कालकेँ कार्यालयक समयक बाहर विस्तार दैत अछि। एतय यात्रा मात्र नक्शापर दूरी नहि; लोकक दैनिक जीविकासँ काटल समय सेहो अछि।

अन्तिम दू पाठांश फेर प्राचीन आ आधुनिक कालक बीच सम्पादन करैत अछि। पुलक मरम्मति पूरा भेल, किशोर अपन नामक प्राप्ति स्वयं भरैत अछि, गाम सीमित बाटक सहमति दोहरबैत अछि। आधुनिक मेजपर रमा दू अलग आवरण—प्रवेशक सहमति आ देय-अधिकारक सुधरल दावा—राखैत छथि। पशुक पयरक आवाजक स्थानपर ठंढा भेल वाहनक चक्का अछि। सरिता पुछैत छथि जे आज भेटबाक मना करनिहारकेँ काल्हि 'अवरोध' लिखल जाएत की, रमा 'उत्तरक प्रतीक्षा' लिखब चुनैत छथि। ई अतिक्रमणसँ प्रतीक्षा धरि भाषा बदलबाक क्षण अध्यायक अन्तिम नाटकीय घटना अछि। अगिला अध्यायक 'अर्जुनक पहिचान' लेल ई एक योजनाबद्ध प्रश्न छोड़ैत अछि : सत्ता जकरा नाम दैत अछि, ओकर अपन नाम आ सम्बन्ध कोना सुनल जाएत?

उपलब्धि आ सीमा : अनुवर्ती यात्राक नाटकीय गति

अध्यायक उपलब्धि दुनू कालधाराकेँ घटनाक समानार्थी नहि, वस्तु-संबन्धी प्रतिध्वनि बनाकऽ जोड़ब अछि : घोड़ा–वाहन, सुई–मुद्रा, मेढ़–विद्यालयक बाट, श्रमक खाली किनार–अनुवादिकाक पारिश्रमिक, किशोरक लिखल नाम–गामक नकल। दोसर दिस, विषयगत समानताक अति-सजग योजना किछु संवादकेँ एके प्रकारक सूत्रबद्ध

बनबैत अछि : प्रत्येक पक्ष श्रम, अनुमति आ अलग कागदक उचित भेद तुरन्त पहचानि लैत अछि। प्राचीन राजकीय दबावसँ संघर्षक गम्भीरता किछु कम होइत देखाइत अछि। तथापि तेसर गामक धँसल पयर, सैनिकक हथेलीक रश्मि, रीताक थैली आ फरीदाक तराजू एहन दृश्य छथि जे सिद्धान्तक पुनरुक्तिक स्थानपर विशिष्ट जीवन-संसार रचैत छथि। अश्वमेधक ई आरम्भ विजयोत्सव नहि, बाटक अर्थपर अनिर्णीत बहुवाणी बहस बनि कऽ प्रभावी होइत अछि।

अध्याय १५८ — अर्जुनक पहिचान

राजद्वारक घण्टा आ अनुपस्थित पिता : परिचयक कथात्मक प्रश्न

अध्याय मणिपुरक राजद्वारक पित्तरि-घण्टी, घोड़ाक ताजा टाप आ बभ्रुवाहनक धनुषक डोरीसँ खुलैत अछि। घण्टाक ध्वनि दूरक आगमनकेँ वर्तमान बनबैत अछि; जकर विषय राजकीय आदेश छैक, ओ बभ्रुवाहनक लेल अनुपस्थित पिताक वापसी बनैत अछि। हुनकर प्रश्न—‘अतिथि कहब कि हमर राज्यक अधिपति?’—दू भिन्न सम्बन्धक समान समयमे टकराव अछि। कथावाचक पिताक भावुक मिलनक निश्चित अन्त देबाक बदला पात्रकेँ प्रश्नक स्थिति मे राखैत छथि। एही कारण राजद्वार केवल भूगोल नहि; पहचानक द्वार अछि। चित्राङ्गदा प्रशिक्षण-समय पूरा भेलाक बादे बेटाकेँ बजबैत छथि। हुनकर निर्णयसँ कथावाचक माएक दीर्घ अनुपस्थित-पिता-वर्षक कार्यकेँ एक वर्तमान दिनक राजकीय नाट्यसँ छोट नहि करैत। ओ बेटाकेँ पिता आदरब, मुदा प्रजाकेँ उपहार नहि बनय देबाक बात कहैत छथि। मातृ-वाणी केवल नैतिक सन्देश नहि, अगिला द्वन्द्वक रूपगत पूर्वसंकेत अछि।

तेसर–चारिम पाठांशमे अर्जुनक आगमन भेंटक शान्त लय बदलैत अछि। स्वागतक थारी, सेनापतिक असन्तोष, अर्जुनक वीरता-स्मृति आ बभ्रुवाहनक काँपैत हाथ—चारू मिलि पिता-पुत्रक दृश्यकेँ पौरुष-परीक्षामे सरका दैत अछि। बेटा नगरकेँ युद्धसँ बचबएबाक साहसक बात करैत छथि, मुदा राजकीय अधीनताक शर्तपर धनुष उठएबाक तैयारी सेहो व्यक्त करैत छथि। चित्राङ्गदा तखन राजद्वार बनौनिहार कारीगरक अनुत्तरित मजदूरी सोझाँ अनैत छथि। महाकाव्यीय मिलनक बीच ई बिल-प्रसंग जानि-बुझि नाटकीय उच्चता तोड़ैत अछि : राजा आ पुत्रक प्रतिष्ठा कहबाक पहिने दरबज्जा कोना खुलल, तकर श्रमक स्मरण। ई हस्तक्षेप दृश्यकेँ एकाधिक स्तर दैत अछि, मुदा संवादक आदर्श नैतिक सजगता अत्यधिक तत्पर जानि पड़ि सकैत अछि।

चित्राङ्गदा, उलूपी आ मातृत्वक अलग-अलग समय

पाँचम–छठम पाठांशमे उलूपीक आगमन कथाक दृष्टिकेन्द्र बदलबैत अछि। नदीक कातक चमकैत वस्त्रक वर्णन सीमित पहरुआ-दृष्टिसँ होइत अछि—जल उतरि रहल अथवा सूतक उजास, से ओ स्पष्ट नहि बुझैत। ई छोट दृश्यात्मक अनिश्चितता अलौकिक आ साधारणक सीमारेखा खुला रखैत अछि, मुदा कथावाचक कोनो चमत्कार घटल घोषित नहि करैत। उलूपी मणिपुरक अधिकार माँगए नहि अएलीह; चित्राङ्गदाक आवाज मेटबाक जोखिम पूछैत छथि। हुनकर स्मृतिमे युद्धमे मरल इरावान अबैत छथि, मुदा ओ अपन शोककेँ दोसर बेटाक माएक अस्तित्वपर कब्जा करबाक कथा नहि बनबैत छथि। एहि संवादसँ मातृत्व एक जैविक सम्बन्धक सारांशक बदला अलग देह, श्रम, शोक आ निर्णयक दीर्घ समय बनैत अछि।

चित्राङ्गदा राज-काजक वर्ष, उलूपी इरावानक शोक आ बभ्रुवाहनक पालन-शिक्षा—तीन अलग कालरेखा एक राजसभामे भेटैत छथि। सातम पाठांशमे तीन प्रकारक पन्ना पसारल जाइत अछि : मणिपुरक दैनिक राज-काज, घोड़ाक प्रवेश-घोषणा आ स्वागतक अभिलेख। सेनापति एक राजमुद्रामे सभ बन्द करए चाहैत अछि; चित्राङ्गदा लाल डोरी खोलि पहिल पन्ना अलग रखैत छथि। वस्तुक खुलैत गाँठ कथाक केन्द्रित अर्थ बनैत अछि : एके डोरीसँ बाँधल वस्तुक अर्थ एक नहि। अहाँ शास्त्रीय युगक राज्य-प्रणालीक वास्तविक ऐतिहासिक प्रतिलिपि पढ़ि रहल छी, एहन पाठ दावा नहि करैत; ई उपन्यासक निर्मित प्राचीन दृश्य अछि, जकर भीतर स्त्रीक वाणी राज्यक दीर्घ समयक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

युद्धाभ्यासक नाटकीय विडम्बना : अपेक्षित मृत्यु आ जीवित उत्तर

आठम–एगारहम पाठांश अध्यायक शिखर छथि। अर्जुन आ बभ्रुवाहनक धनुष-दूरी मापल जाइत अछि; घोड़ा रणस्थलक बाहरी कात बन्हल अछि। पहिल बाण धरतीमे, दोसर मुकुटक किनार, तेसर अर्जुनक धनुषक डोरी काटैत अछि। क्रियाक बढ़ैत तीव्रता पाठककेँ महाकाव्यीय पिता–पुत्र संघर्षक स्मृतिक दिशामे लऽ जाइत अछि। मुदा कथावाचक निर्णायक बाणक स्थानपर टूटल डोरीक दू छोरपर विराम दैत छथि। ओ कहैत छथि जे किछु अन्य कथामे घातक परिणाम आ नागमणि द्वारा मृत्युक चुनौतीक प्रसंग अछि; एहि उपन्यासक प्रस्तुत दृश्यमे मे अर्जुन मरैत नहि छथि। जीवित बभ्रुवाहन पिता सँ कहैत छथि जे माए, गुरु आ अपन राज्यक मैदान हुनका धनुष चलाएब सिखौलक। अर्जुन अपन अनुपस्थितिक वर्ष स्वीकारैत हुनकर हाथ पकड़ैत छथि; विजयक घोषणा नहि करैत छथि।

एतय कथनक विशेष उपलब्धि प्रसिद्ध महाकाव्यीय घटनाप्रत्याशाकेँ सक्रिय कऽ फेर एक अलग घटना चुनब अछि। पाठक जे प्राणघातक मिलनक आशङ्का करि सकैत छल, ओकरा लेखक बाणक टूटल डोरी आ सार्वजनिक सीमित स्वीकृतिमे रूपान्तरित करैत छथि। ई परिवर्तन मूल महाभारतक शाब्दिक पाठक सुधार अथवा ऐतिहासिक घटना सिद्ध करबाक दावा नहि, आधुनिक उपन्यासक अन्तर्पाठीय पुनर्रचना अछि। अर्जुनक भाव-विन्यासमे ठोस परिवर्तन अछि : आरम्भक कठोर चुनौतीक बाद ओ बेटाकेँ ‘अनुपस्थितिक वर्ष नहि हारलें’ कहैत छथि। तथापि मानसिक परिवर्तनक बीचक संकट अत्यल्प दृश्य-समयमे घटैत अछि; एतेक वर्षक अनुपस्थितिक क्षति एकटा अभ्यासक बाद पूरापूरि समाप्त भेल, एहन पाठ नहि कहलाक बावजूद परिणति कनेक तत्पर लगि सकैत अछि। चित्राङ्गदाक नहर मरम्मति सुनबाक लेल राजकाजमे लौटब एहि भावुक समापनकेँ जानि-बुझि स्थगित करैत अछि।

टूटल बाणक दू टुकड़ा—बभ्रुवाहन आ अर्जुन लेल—व्यक्तिगत स्मृतिक वितरण करैत अछि, मुदा चित्राङ्गदा सार्वजनिक पत्र अलग राखबाक आदेश दैत छथि। बभ्रुवाहन संगीतमे माएक नाम छूटबाक शर्त अस्वीकारैत छथि। व्यक्तिगत मिलन आ सार्वजनिक कथनक अलग नियन्त्रण दुनू एकठाम देखल जाइत अछि। उलूपी बाहरी सीमापर साक्षी रहलाक बाद भूमि अथवा पुत्रपर दावा नहि करैत छथि; एहि पात्रक उपस्थितिसँ कथावाचक ‘माता’क एकमात्र स्थिर नमूना बनएबाक जोखिमसँ बचैत छथि।

तेरहम पाठांशमे कथा ‘ई प्राचीन यात्राक समयसँ बहुत दूर’ कहि २०४० क आश्रयमे पहुँचैत अछि। एहि स्पष्ट काल-विभाजक वाक्यसँ प्राचीन आ आधुनिक पात्रक सहजातीय पहचानक भ्रम नहि रहैत। कबीर पुरान पालन-पंजीक दू नकल देखैत छथि; जन्मसम्बन्धी रिक्त स्थानक तुरन्त उत्तर मँगबाक बदला ओ पालन करनिहारी स्त्री लग भेटघाटक समय लेल पर्ची लिखैत छथि। नैराक मृत्यु हुनका टारल भेटक समयक महत्त्व फेर बुझौने अछि। एहि तरह अतीतक महाकाव्यीय अनुपस्थित-पिताक प्रश्न, आधुनिक उपन्यासमे देखभालक अनुपस्थित-लेखनक प्रश्न बनैत अछि। चित्राङ्गदाक राजकीय पालन-वर्ष आ कबीरक पालन करनिहारीक देहगत श्रम शाब्दिक रूपेँ समान नहि, मुदा कथानक दुनूकेँ सम्बन्धक दीर्घ अवधि देबाक आग्रह द्वारा जोड़ैत अछि।

कबीरक बरामदामे पालन करनिहारी स्त्रीक पीठक दुखाइ पुछब व्यक्तिगत नाट्यक निर्णायक समय अछि। पुरान ऊनी कम्बलक सुई-टाँकाक गाछ, पड़ोसिनक अधूर नाम आ बीमारीक राति जगनिहार दू ज्ञात, एक अज्ञात व्यक्ति उत्पत्तिक एकवचन कथाकेँ अनेक देखभालकर्ता लोकक कथामे बदलैत अछि। कबीर रिक्त नाम अपने सँ नहि भरैत छथि। जखन ओ सरितासँ कहैत छथि जे जन्मक फैसला नहि, ‘हम केना बचलहुँ’क बाट भेटल अछि, तँ कथाक मुख्य प्रश्न ‘के जन्म देलक’ सँ ‘के कतेक समय देखभाल कएलक’ दिस सरैत अछि। एहिमे सुभद्राक जन्मसम्बन्धी निजी कथनक अधिकार सेहो बनल रहैत अछि; कबीर ओ पत्र बलपूर्वक नहि माँगैत छथि।

दुर्गा आ सूरजक उपकथा : एके अध्यायमे असमान जीवन-समय

आधुनिक कथाधारामे कबीरक आत्मपरिचयसँ अलग दुर्गा गंगाईक व्यापार आ सूरज गंगोताक ऋण-समयक प्रसंग अबैत अछि। दुर्गा पुरान उधारवाला व्यापारीक कथित एकाधिकार नकारैत छथि, मुदा नब खरीदारक खराब माल लौटेबाक शर्त सेहो स्वीकारैत छथि। दू खराब थैली खुद घाटामे लिखबाक निर्णय हुनकर चरित्रकेँ सुविधाजनक ‘अन्याय सहनिहार’ अथवा ‘निर्दोष विजेता’क एकरूप छविसँ बाहर निकालैत अछि। छोट खेपक दाम भेटैत अछि, ढुलाईक आधा पारिश्रमिक एखन बाकी अछि। सूरजक खेत नदी-कटानमे गेल अछि, ऋण माफ नहि होइत; पुरान उपजक अनुमानक बदला वर्तमान छोट आमदनीक आधारपर किस्तक नव समय बनैत अछि। ‘धेमुड़ा’ नामक स्रोतपत्र रेखाङ्कनक स्मृति बचबैत अछि, वर्तमान भूमि-सीमाक अन्तिम निर्णय नहि।

कबीर, दुर्गा आ सूरजक तीनू कथा नब दायित्वक अलग ‘बही’पर समाप्त होइत अछि। ई विषयगत रचना बहुत सजग अछि; प्रत्येक प्रसंगमे अलग आवक-जावक, अधूर नाम अथवा सीमित सुधार रहैत अछि। ई सामान्यीकरण जीवनक विविधता एकत्र करैत अछि, मुदा एक जोखिमो अछि : स्त्री-व्यापारी, किसान आ परिवारक भावानुभव प्रत्येक बेर लेखा-पत्रमे समाहित भऽ जएबासँ आख्यान अधिक योजनाबद्ध लागए लगैत अछि। दू खराब थैलीक गन्ध, हरिहरक कादो लागल चप्पल आ कम्बलक टाँका एहि यांत्रिक सम्भावनाकेँ तोड़ैत छथि। विशेषतः सूरजक ‘टलल डरकेँ जीतक झण्डा नहि बना’ कथन घटनाक सीमित परिणतिक प्रति सजग लय दैत अछि।

द्वि-समापन आ उपलब्धिक सीमा

उन्नतीसम पाठांशमे मणिपुरक काल फेर लौटैत अछि : बभ्रुवाहन बाणक टुकड़ा लऽ माएक लग अबैत छथि, मुदा चित्राङ्गदा हुनका अगिला दिनक लोकनिर्णय दिस देखबैत छथि। तेसर दशम पाठांशमे आधुनिक रुहानी निजी लिफाफा अलग रखैत छथि, रमा स्थानीय सम्पर्कक नाम खाली छोड़ैत छथि, कबीर पालनक इतिहासक कापीक

चाभी स्वयं रखैत छथि। टूटल बाणक टुकड़ा आ बन्द निजी कापी समान वस्तु नहि, मुदा दुनू सम्बन्धक अधिकारक सीमित स्वामित्वक बिम्ब छथि। अध्यायक कलात्मक शक्ति एहि दोहरा समापनमे अछि; एक पिता-पुत्र भेट आ एक जीवनपर्यन्त पालन-स्मृतिसँ निःसृत प्रश्न अलग रहितहुँ एके रूपगत स्पन्दन पबैत अछि। सीमा ई जे अतिरिक्त दुर्गा–सूरज प्रसंगक कारण मूल पिता–पुत्र द्वन्द्वक भावात्मक रेखा बीचमे विखण्डित होइत अछि, आ संवादसभ अनेक बेर पात्रक व्यक्तिगत बोलीसँ अधिक सुगठित सार्वजनिक नैतिक वाक्य बनैत छथि। तथापि मणिपुरक घण्टा आ कबीरक कम्बलक टाँका एहि विस्तृत अध्यायकेँ दु-कालीन आख्यानक सजीव रूप दैत अछि।

अध्याय १५९ — चलैत अभिलेख

जीर्ण बसक छतपर सन्दूक : स्थानान्तरणक दृश्य-रचना

अध्याय ‘२०४०क चैतक पहिल भोर’क निश्चित वर्तमान समयसँ आरम्भ होइत अछि। सरिता जीर्ण बसक छतपर बन्हल सन्दूकक डोरी कसैत छथि, चालक भीतर राखलासँ यात्रीक जगह घटबाक बात कहैत अछि। सन्दूकमे मूल परिचयपत्र नहि, खाली कागद, प्राप्ति-पुस्तिका, दरी, ढाँपल मुहर आ अनुवादकक पारिश्रमिकक अलग लिफाफा अछि। वस्तुक ई सूची कथा सुरू होइतहि एक विचित्र प्रत्याशा रचैत अछि : एखन ककरो निजी कथा सन्दूकमे नहि, मुदा अनेक अनलिखल आवाज लेल जगह अछि। रमा पूछैत छथि जे गाममे दरी पसारब पहिने की लोकक बात सुनब; सरिता उत्तर दैत छथि—पहिने पूछब जे कतए पसारबाक अनुमति अछि। दरी वस्तु होइतहुँ कथात्मक प्रवेशाधिकारक चिह्न बनैत अछि। बाहरी वर्णन आ छोट संवाद मिलि दलक भावी नीतिक विवरण दिअबैत अछि, मुदा ई नीति भौतिक क्रिया—गाँठ कसब—द्वारा पहिल दृश्यसँ जुड़ल रहैत अछि।

दोसर–तेसर पाठांशमे यात्राक ‘पृष्ठभूमि’ कहल जा सकएवाला काज स्वयं दृश्य बनैत अछि। रुखसाना निजी लिफाफाक पहुँच-सीमा बतबैत छथि, अनुवादकक घण्टा निःशुल्क ‘सहयोग’सँ पारिश्रमिक देयमे बदलैत अछि, कबीर कैमरा खोलबाक पहिने लोकक इच्छा पूछबाक निश्चय करैत छथि। नैराक मृत्युपछाति कबीर अपन कलमक अधैर्य पहचानि रहल छथि। ई छोट आत्म-संशोधन हुनकर पुरान तत्पर प्रकाशन-कथाक अनुगूँज अछि; उपन्यास पात्रक रूपान्तरणकेँ ‘आब ओ सुधरि गेलाह’ कहि घोषित नहि करैत, व्यवहारक धीमा विकल्पमे देखबैत अछि। बसक काँचमे सरिता–कबीरक थरथरात अलग चेहरा एक जटिल साझा यात्राक दृश्य-बिम्ब बनैत अछि : दुनू संग चलैत छथि, मुदा एक-दोसरक अनुभवक मालिक नहि छथि।

बोर्डक नाम आ विद्यालयक ओसारा : स्थानक बहुभाषिकता

चौठम पाठांशमे सरकारी बोर्डक लिखल नाम आ बुजुर्गक बजाओल ‘गाछक मोड़’क नाम अलग अछि। रमा फोटो लेबाक जगह दूनू नाम आ बतौनिहारक सहमति नोट करैत छथि। ई मामूली भाषिक भिन्नता पहिल यात्रा-अध्यायक ‘गामक दुआर’क प्रश्नकेँ अधिक स्थानीय रूप दैत अछि। लोक शिविरक दलकेँ देखिते राहतक पाँति बनए लगैत छथि, सरिता पहिने सामूहिक अनुमति माँगैत छथि। एहि क्षणमे कथा पाठकीय अपेक्षाकेँ तोड़ैत अछि : सार्वजनिक मदतिक गाड़ी देखि जे राहत-वितरणक परिचित क्रम बनि सकैत छल, ओकर बदला भाषा आ स्थानक बातचीत अबैत अछि।

विद्यालयक ओसारा पाठांश ५–६ आ १४–१५ मे फेर-फेर लौटैत अछि। प्रतिमा राजवंशीक पाछाँ लाल सूतसँ चिह्नित पुरान लोहेक डंडा आ बच्चासभक खुलल आवागमन-बाट, दुनू एके परिसरक अलग दृष्टि बनैत अछि। दुकानक प्रतिनिधि शिविर लगबाक अनुमति सँ जमीनक स्वामित्व सिद्ध करए चाहैत छथि। प्रतिमा अस्थायी टेबुलक जगह बदलैत छथि, किन्तु मूल भूसीमाक फैसला नहि सुनबैत छथि। पनरहम पाठांशमे राजोक बेटी कापी लऽ खुलल बाटपर दौड़ैत अछि। बच्चीक देहक गति विवादित जमीनक अमूर्त नक्शाकेँ दैनिक जीवनक दृश्य बनबैत अछि। ओकर दौड़लासँ जमीनक निर्णय नहि भऽ जाइत; किन्तु जे रस्ता आजु खुलल अछि ओकर भविष्यक प्रश्न पाठकक अनुभवमे ठोस बनैत अछि। विद्यालय-स्थान एतय न्यायालयक प्रतीक मात्र नहि, पढ़ाइ, दुकान, आ पैदल आवागमनक प्रतिस्पर्धी प्रयोजनवला जीवित काल–स्थान अछि।

कुमुदीक अनुवादक-कापी एहि बहुभाषिक स्थानकेँ कथन-प्रविधिक प्रश्नमे बदलैत अछि। ‘वापसी’ आ ‘नवा प्रवास’क अर्थ अलग होएब स्थानीय अनुभवक समय बदलैत अछि। एक ही व्यक्ति पुरान श्रम-स्थानसँ चलि नब घर पहुँचल छथि—एहि क्रमकेँ एक सरकारी शब्दमे समेटला पर पहिनुक मजदूरी कथासँ छूटि सकैत अछि। कुमुदी स्वतन्त्र मध्यस्थ छथि : ओ भाषा बदलैत छथि, आवेदकक कथा अपन नामे नहि लैत छथि। नौजवान लिपिकक ‘एक अर्थ कऽ देब’ आग्रह आ किशोरीक अपन माएक नाम स्वयं लिखबाक घटना सँ संवादक अधिकार एक हाथसँ दोसर हाथमे सरैत अछि। कथावाचक अपन सर्वज्ञ वाणी द्वारा समाधान थोपबाक बदला अनुवादकक चुप रहबाक निर्णायक क्षण सेहो देखबैत छथि।

रामवतीक यात्रा-पत्र : पुरान श्रमक समय, वर्तमान ठामक भाषा

रामवती खत्वेक प्रवेश एहि अध्यायक प्रमुख पात्र-केन्द्र अछि। हुनकर पहिल यात्रा-पत्र आ विवाहपछातिक परिचय-पत्र मूल रूपेँ हुनकेँ पहिने लौटि गेल छल, मुदा दूनू पञ्जीक एकीकरण नहि भेल। ई पूर्वघटनाक संक्षिप्त स्मरण वर्तमान शिविरमे नब कर्म-दृश्यक आधार बनैत अछि। रामवती अपन पुरान धान-रोपनीक मजदूरीकेँ नब आवासक कारण छूटि गेल विषय नहि मानैत छथि। हुनकर वाक्य—‘ओहि खेतमे कएल रोपनीक दिन हमरा सङ्ग चलि अएल’ —समयकेँ देहसँ जुड़ल यात्रारूपेँ उपस्थित करैत अछि। विवाहक बाद ठेगाना बदलबक अर्थ अतीतक श्रम मेटाएब नहि। एहि दृश्यकेँ महाकाव्यीय पात्रक आधुनिक प्रतिरूप बना देब उचित नहि; ई पूर्ण आधुनिक कालधाराक श्रम–स्थान अन्तर्विरोध अछि।

‘साँती’ नामवला पर्ची कथानकक एक पुनरावर्ती ध्वनिक संकट अछि। नव कर्मचारी मिलैत-जुलैत नदीक नाम तत्क्षण जोड़ए चाहैत अछि, रामवती पुरान अक्षर जसक तस रखबाक निर्णय लैत छथि। एहि समयमे प्रश्न ‘साँच नदी कुन’क निर्णायक व्याख्या नहि; यात्राक स्रोत-नामक निजी इतिहास आ वर्तमान भूगोलक अलग समयक स्वीकृति अछि। रामवती अपन दावी लिखबैत छथि, प्राप्ति पर अगिला जाँचक तिथि भेटैत अछि, तत्काल रोकल मजदूरी नहि। हुनकर चूड़ाक पोटरी, छूटल भोजनक समय आ रोपनीक एक दिन फेर छोड़बाक आशङ्का कार्यालयी दृश्यकेँ देहक भुख आ जीविकाक समयसँ जोड़ैत अछि। कुमुदी चूड़ा साझा करैत छथि, मुदा ओकरा अनुवादकक मजदूरी नहि मानैत छथि। मित्रताक लघु बिम्ब आ सशुल्क श्रमक अलग वर्तमान, दुनू संग रहैत अछि।

गिरवीक कड़ा आ खर्चक कमी : दोसर पड़ावक दृश्यगत विस्तार

शिविरक दोसर पड़ाव सीमातीर्थमे शारदा कसौधन आ वृद्ध ग्राहकक गिरवी-कड़ाक उपकथा खुलैत अछि। शारदा दोहराओल ब्याजक गलती स्वयं सोझाँ अनैत छथि; भाय पुरान दर बचए चाहैत अछि; वृद्धा अपन शब्दमे दर फेर सुनि नब गणना चुनैत छथि। कड़ा एखन दुकानमे रहैत अछि, मुदा सुधारल देयक प्रति वृद्धाक हाथमे पहुँचैत अछि। वस्तुक भौतिक अनुपस्थिति आ कागदक नव उपलब्धि बीच जकर दूरी अछि, से अध्यायक अनिर्णीत भावनात्मक स्थिति बनैत अछि। वृद्धाक ‘बिनु कड़ा हाथमे’ अधिकारक गर्मी अनुभव करब एक छोट साहित्यिक रूपान्तरण अछि : प्रशासनिक पाठ देहगत अनुभूति बनैत अछि। ई कथा रामवतीक मजदूरीसँ भिन्न स्वरक अछि, कारण एतय शारदा स्वयं अपन व्यावसायिक गलत हिसाब सुधारैत छथि, आ ग्राहक मूल ऋणक दायित्व नकारैत नहि।

बीसम–तेइसम पाठांशमे फोटो लेल अनुमति, कुमुदीक अतिरिक्त घण्टा, चालकक प्रतीक्षा आ सार्वजनिक दान-पेटीक प्रस्तावक बीच नव संघर्ष होइत अछि। सरिता प्रशासनिक यात्राक खर्च आश्रयवासीक राहतक धनसँ भरबाक मना करैत छथि। कार्यालयसँ अतिरिक्त स्वीकृति मँगायल जाइत अछि; तुरन्त सभ देय चुकि गेल, एहन नहि। कथा उपयोगी लय तँ बनबैत अछि, मुदा लगभग प्रत्येक उपप्रसंगक समापन एक अस्थायी लेखा, अलग पर्ची अथवा अगिला तिथिपर होइत अछि। एहि रूपगत पुनरावृत्तिक कारण बहुत व्यक्तिगत अनुभव एके प्रशासनिक तालमे बद्ध होएबाक जोखिम अछि। तथापि जलघटक ढाँपल मुँह, चालकक थाकल प्रतीक्षा आ रामवतीक निजी चिट्ठी नहि खोलबाक निर्णय एहन क्षण छथि जतय पात्रक स्थितिसँ दृश्य नब जीवट पबैत अछि।

तीन पर्ची, लाल कलम आ खाली कुर्सी : कथनाधिकारक संचरण

चौबीसम पाठांशमे रामवती, प्रतिमा आ शारदाक तीन पर्ची अलग-अलग अवस्थामे बन्द होइत अछि—दूनू नामक मिलान शेष, विद्यालयक जमीन-सीमा शेष, गिरवीक सुधारल ब्याजक बाद मूल ऋण शेष। एहि तुलना मे घटना-सारक लघु ताल जकाँ अछि। मुदा अगिला चारि पाठांश कथाकेँ नब अर्थ दिस मोड़ैत अछि। कबीर नैराक पुरान चारि खाली खाना स्मरण करैत छथि; ओ शिविरक कागदसँ तत्क्षण समाचार बनेबाक जल्दी नहि करैत। रमा देखैत छथि जे प्रारम्भिक प्रतिवेदनमे कुमुदी, प्रतिमा, शारदा, रामवती सभक काज ‘निरीक्षण-दलक उपलब्धि’क एकहि शीर्षक नीचाँ दबि रहल अछि। सरिता लाल कलमसँ काजक लग अलग अङ्क लगबैत छथि, अपन नाम ‘संयोजन’क भीतर सीमित रखैत छथि।

अध्यायक आरम्भिक खाली सन्दूक अन्तिम पाठांशमे भरल प्राप्ति-पुस्तिका बनि लौटैत अछि। मुदा ई ‘सभ समस्या निपटल’क भौतिक प्रतीक नहि; अनेक बकाया देयक प्रतीक्षाक घर अछि। सरिता घर घुरि नैराक खाली कुर्सीपर शिविरक कागद नहि राखैत छथि। शोकक निजी स्थानमे सार्वजनिक उपलब्धिक अतिक्रमण नहि होइत। सरिता ‘जकर काज हम केवल सँभाललहुँ, ओकर श्रेय हम नहि लेब’ कहैत छथि; ई अन्तिम वाक्य अगिला अध्यायक ‘सरिताक योगदान’क स्पष्ट कथात्मक बीज अछि। एहि कारण १५९ कैं मात्र भ्रमण-शिविरक स्वतंत्र रिपोर्ट बुझब कमजोर पढ़ाइ होएत। ई अध्याय व्यक्तिगत आवाजक बाट सँ सार्वजनिक लेखकत्वक अगिला संघर्ष धरि कथा-सेतु रचैत अछि।

शैलीगत उपलब्धि आ सीमा : अभिलेख चलैत अछि, कतेक देह चलैत अछि?

अध्यायक समग्र रचना गतिशीलता आ स्थिरताक द्वन्द्वपर टिकल अछि : बस चलैत अछि, कागदक मूल कार्यालयमे रहैत अछि; नाम अलग जगह अबैत अछि, रोपनीक पुरान दिन संग चलैत अछि; कड़ा दुकानमे रहैत अछि, सुधारल हिसाब घर जाएत; नैराक कुर्सी स्थिर अछि, सरिताक लाल कलम नव श्रेय लिखैत अछि। एकरो संग कुमुदीक अनुवाद-स्वरक स्वायत्तता बहुस्वरता कैं सही मायनेमे बढ़बैत अछि। सीमासभ सेहो स्पष्ट छथि : आकस्मिक विवादक लय बारम्बार ‘फोटो, स्पष्टीकरण, अलग पर्ची’क गति अपनबैत अछि; किछु सरकारी कर्मचारी केवल एक सरलीकृत गलत प्रस्ताव राखबाक लेल उपस्थित लगैत छथि; अधिकांश सही विकल्प तत्क्षण उपयुक्त पात्र द्वारा सोझाँ आनल जाइत अछि। एहि बावजूद रामवतीक छूटल रोपनी, वृद्धाक कड़ा आ नैराक खाली कुर्सी एहिठाम घटनाकैं मात्र प्रक्रियात्मक संवाद बनबासँ बचबैत अछि।

अध्याय १६० — सरिताक योगदान

चारि रङक धागा : आत्मकथात्मक श्रमक वस्तु-संरचना

‘सरिताक योगदान’क आरम्भमे सरिता चारि रंगक धागासँ चारि गट्ठर बान्हैत छथि। प्रतिलिपि कएल दार्शनिक पन्ना, उदाहरणक स्रोत, चूल्हि–अतिथि–नकलक समयक खर्च आ सीमातीर्थक चलैत शिविरक प्राप्ति—चारू सामग्री एकहि मेजपर छथि, मुदा एक-दोसरासँ दूर राखल गेल छथि। एहि सजग दूरीक दृश्य अध्यायक रूपक अछि : अलग काजक इतिहासकैं एक पवित्र ‘योगदान’क अस्पष्ट नाममे घोरि नहि देब। मेजक कोनामे नैराक खाली कलमदान अछि, जकरा सरिता हाथ नहि लगबैत छथि। एहि अनुपस्थित वस्तुसँ पूर्व स्त्री-पर्वक शोक वर्तमान किताब-जाँचमे प्रवेश करैत अछि, मुदा नैराक व्यक्तिगत स्मृति तत्काल सार्वजनिक पन्नाक हिस्सा नहि बनैत। कथावाचक भोरक चैतक हवा आ धुलल साड़ीक हलुक गति देखबैत छथि; कार्यसूचीक बीच घरक जीवित हवा बनल रहैत अछि।

दोसर पाठांशमे मैथिली, ईशान आ हरिमोहनक आगमन पुस्तक-लेखनक एकत्रित सामना बनैत अछि। पहिल संवादसँ सरिता प्रश्न बदलबैत छथि : ‘हमर नाम कोन स्थानपर छपत’ मात्र नहि, ‘कोन काज के कएलक, कखन कएलक’। मैथिली अपन पहिनुक ‘घरक सहयोग’ कहल कार्यक्रम-पत्रक भाषा स्वीकारैत छथि, मुदा सरिता एक नव सहलेखक-पदक जल्दबाजी सेहो रोकैत छथि। पात्रक एहि प्रतिरोधमे एक महत्त्वपूर्ण चरित्र-निरन्तरता अछि : पहिल अध्यायक मृत घोषित रान्हनिहार सरिता आब श्रेय बँटबाक प्रक्रियामे अपन काजक सीमा स्वयं तय करैत छथि। ओ न जीवनक सभ श्रमक मालिकाना चाहैत छथि, न ओकरा ‘अमूल्य सेवा’क धुँधला श्रेणीमे विलीन होएब दैत छथि।

पन्नाक स्याही आ संशोधनक अवधी : बहु-कथक श्रेय

हरिमोहनक तुलना-काज दृश्यकैं भाषिक सूक्ष्मता दैत अछि। मूल विवेचनक पाँति ईशानक लिखावटमे, किछु स्वच्छ प्रतिलिपि सरिताक हाथमे, प्रश्नक बाद बदलल किछु उत्तर मैथिलीक संशोधनक छापसँ जुड़ल छथि। मुदा सभ संशोधनक तिथि भेटल नहि अछि। ई सूचनासँ लेखकत्वक कथा एक छलाँगमे ‘एक लेखक/एक अन्याय’क

सरल आख्यान नहि रहैत। ईशान ‘दार्शनिक उत्तर हमर’ कहैत छथि; मैथिली ‘प्रश्नक बाद उत्तर बदलल’क प्रसंग छोड़ए नहि दैत छथि; सरिता पृष्ठवार समय जाँचबाक आग्रह करैत छथि। कथावाचक तेसर व्यक्ति बाहरी रहितहुँ प्रत्येक पात्रक अलग दावाक भाषा स्थान दैत छथि। ई व्यावहारिक बहुस्वरता, एक नायकक अंतिम सत्य-घोषणासँ अधिक सघन रूप होइत।

तेसर गट्ठरक पुरान चाउर, तेल आ दिया-बातीक खर्च अध्यायक सभसँ निजी वस्तु-श्रृंखला अछि। कागद सुखएबाक रातिक गन्ध—भीजल पन्ना, चूल्हिक खरानी, स्याही—सरिताक स्मृतिमे जीवित अछि; मुदा कोन पृष्ठ ओहि राति लिखल गेल, एकर तिथि मात्र गन्ध नहि कहि सकैत। आख्यानगत महत्त्व ई नहि जे गन्धक ‘प्रमाणिकता’ तय कएल जाए, बल्कि स्मरणक समय लिखित तिथिसँ भिन्न होइत अछि। पूर्वदीप्ति पूर्ण दृश्यरूपेँ अभिनय कऽ वापस नहि अबैत; घ्राणस्मृति छोट बिम्बक रूपमे वर्तमान मेजपर उतरैत अछि। सरिताक स्मृति आ हरिमोहनक लेखकीय सामग्री परस्पर संवाद करैत छथि, मुदा कथावाचक ककरो अनुभव दोसराक कथा पर थोपैत नहि।

‘घरक सभ भोजन लेखकक उधारी नहि’ कथाक एक विशेष सूक्ष्म वाक्य अछि। रसोइक श्रमकेँ नाम देबाक आग्रह यदि घरक प्रत्येक सामान्य भोजनकेँ पुस्तकक उत्पत्ति सिद्ध कऽ दे, तँ पात्रक जीवन एक अन्य प्रकारक अतिशयोक्तिमे फँसि जाएत। सरिता अतिथि लेखकक लेल अतिरिक्त भोजनक दिन चिह्नित करैत छथि, सामान्य जीवनक दिन अलग रखैत छथि। एहि छोट विभाजनमे उपन्यास सरिताकेँ सर्वत्यागी घरेलू प्रतिमाक बदला विचारशील, काजक वास्तविक सीमा बुझनिहारी स्त्री रूपमे स्थापित करैत अछि। तथापि संवादक तेज, अत्यन्त सुव्यवस्थित वर्गीकरण लेखकक शास्त्रार्थ-सदृश आग्रहक पुनरावृत्तियो बनि सकैत अछि; हर वस्तु पंजीमे ठीक-ठीक अलग होइत जा रहल अछि, मानवीय स्मृतिक उलझनक दीर्घ कठिनाई किछु सीमित देखाइत अछि।

उमाक सहकारीक श्रम आ मीनाक खेत : मुख्य कथाक समानान्तर, समरूप नहि

सातम–नवम पाठांशमे उमा राजधोबक प्रवेश सरिताक आत्मस्मरणसँ बाहर समकालीन श्रमक एक स्वतंत्र दृश्य खोलैत अछि। चारि स्त्रीक सामूहिक धुलाईक श्रम एक पुरान ठेकेदारक नामसँ बिल होएबाक प्रस्ताव उमा अस्वीकारैत छथि। ओ सामूहिक बिल स्वीकार करैत छथि, मुदा सदस्यवार श्रम आ हिस्साक अलग पन्नाक माँग करैत छथि। एक सदस्य रोगी रहबाक कारण दू दिन कम काज कएने छलीह; ओकर श्रम-दिन झूठ बराबर नहि देखाओल गेल, साझा पूँजीक हिस्सा अलग रहैत अछि। ई दृश्य लेखकीय योगदानक चर्चाक मात्र उदाहरण नहि; उमाक अपन ग्राहक-हानि आ नव छोट आदेशक ठोस आर्थिक परिणाम अछि। पुरान ग्राहक अगिला ठेका नहि नवीकृत करैत, आमदनी घटैत अछि। सरिता उमाक समाचारकेँ अपन पुस्तकक ‘विजयक दृष्टान्त’ बनएबाक मना करैत छथि। एहिसँ उपन्यासक भीतर एक नैतिक-सौन्दर्यगत आत्मसजगता उभरैत अछि : एक स्त्रीक जीविकाक हानि दोसर स्त्रीक बौद्धिक संघर्षक सजावटी प्रमाण नहि बनए।

तेरहम–पनरहम पाठांशमे मीना थारू आ परिवारक कृषि-पट्टाक विवाद अलग रूपमे लौटैत अछि। पिता, माए आ बेटी तीनू भूमि, नालाक खतरा आ औषधिक खर्चक अलग चिन्ता लऽ अबैत छथि। लम्बा कम्पनी-पट्टाक बदला सीमित खेतीक वैकल्पिक करारक परीक्षण चुनल जाइत अछि; कम्पनी उपकरण-किरायाक प्रस्ताव वापस लैत

अछि; औषधिक धन जुटएबाक कठिनाई बढ़ैत अछि। कथावाचक एतय ‘अधिकार सुरक्षित भेल = सम्पूर्ण जीवन सुधरल’क सरल रूपान्तरण रोकैत छथि। परिवारक निर्णय स्वतन्त्र अछि, मुदा ओकर आर्थिक मूल्य अछि। उमाक ग्राहक-घाटा आ मीनाक कम्पनी प्रस्ताव गमायब अलग व्यवसायिक घटना छथि; दुनूकेँ एके नारी-स्वाधीनताक नारेमे समेटि देल जाए तँ पात्रसभक विशिष्ट कथा मेटि जाएत। पाठमे सरिता बिना मँगने मूल करार नहि लैत छथि; मैथिली सेहो एहि घटनाकेँ तुरन्त दार्शनिक उदाहरण नहि बनबैत छथि। ई आत्मसंयम रचना-पद्धतिक आलोचनामे उल्लेखनीय अछि।

बेला तुरहाक अस्थायी बाजार-स्थानान्तरण समानान्तर श्रमक तेसर अनुभव अछि। ऊँच चबूतरापर पानि कम जमेबाक लाभ अछि, मुदा ग्राहकक बाट दूर अछि। बेला दृश्य मार्ग-चिह्न, शुरुआती शुल्क-समायोजन आ सुरक्षित जाल-मरम्मति कोनाक तीन शर्तसँ नब ठाम स्वीकार करैत छथि। पहिल दिन तीन पुरान ग्राहक नहि पहुँचैत; दू नव ग्राहक अबैत छथि। ई मिश्र परिणाम जीवित बाजारक कथात्मक समय अछि। हुनकर ‘नब ठाम स्वीकार केलहुँ, मुदा पुरान ग्राहक गमौलहुँ—दूनू लिखू’ आग्रह मात्र कागदक रूपक नहि, एक व्यवसायिक आवाजक विशिष्ट समापन अछि। सरिता हुनकर ग्राहक-उधारीक निजी बही सार्वजनिक नहि करैत छथि। एही भाँति ‘श्रेय’ एतय प्रशंसाक छवि बनबासँ बेसी चयनित कथन-अधिकारक लय बनैत अछि।

सीमातीर्थक अनुवाद आ परिश्रमक मुद्रा : वाणी-सञ्चरणक सीमा

उन्नीसम–बीसम पाठांशमे मीना सार्कीक चर्मकारी-नमूना आ सीमापारक साझेदारीक प्रसंग अबैत अछि। पहिल परीक्षणमे पानि लगला पर ढील भेल पट्टा वापस गेल छल; नव सिलाइ आ परीक्षणक मानक बनि रहल अछि। एहि व्यावसायिक दृश्यकेँ कथावाचक अनुवादक कुमुदीक भूमिकासँ जोड़ैत छथि। ‘साझा अधिकार’केँ ‘डिजाइनक पूर्ण बिक्री’ बना देल अनुवाद अर्थ बदलैत अछि, आ सीमापारक श्रमक मुद्रा अलग अछि। मीना सही करबासँ पहिने पंक्ति फेर सुनैत छथि; नमूनाक भुगतान स्वीकृत होइत अछि, नब डिजाइनक उपयोगक अलग अनुमति भविष्यक विषय रहैत अछि। ओहि संग कुमुदीक अनुवादक पारिश्रमिक सेहो अपेक्षित अछि। कथात्मक स्तरपर ई महत्त्वपूर्ण प्रसंग अछि, कारण शब्दक विकल्प आर्थिक घटना घड़ैत अछि—एतय अनुवाद केवल पहिने सँ घटल घटनाक बयान नहि, अगिला सम्भावनाक रूपरेखा बदलैत अछि।

सुई-घाववाली हथेली, चर्मक ढीली गाँठ आ कुमुदीक बोलल शब्दक तुलना एक सजीव संवेदी श्रृंखला अछि। भाषा-सम्बन्धी एक अमूर्त बहस शरीरक घाव आ कारीगरीक पदार्थसँ जुड़ैत अछि। तथापि उपन्यासक बारम्बार ‘एक वाक्य गलत’ आ ‘दू अलग अधिकार’क संरचना एहि बिन्दुपर अनुमानयोग्य बनए लगैत अछि। प्रत्येक उपकथामे समझदार पात्र, झटपट अलग भुगतान-पंक्ति आ भविष्यक स्वीकृति-पत्रक क्रम कथात्मक संघर्षक स्वतन्त्रता घटा सकैत अछि। एहि कलात्मक आपत्तिक बावजूद मीना सार्कीक अस्वीकृत हस्ताक्षर आ पट्टाक नब परीक्षण सुस्पष्ट क्रिया छथि; मात्र सिद्धान्तक संवाद नहि।

पुस्तकक ‘धन्यवाद’ सँ प्रकाशित नव पृष्ठ धरि : मुख्य घटनाक परिणति

एक्काइसम–चौबीसम पाठांशमे कथा मुख्य मेजपर घुरैत अछि। ईशानक नव मुद्रण-मसौदामे प्रतिलिपिक तीन दिन, स्रोतक अपुष्ट स्मृति आ घरेलू व्यवस्थाक दस्तावेजित अंश अलग छथि; मुदा घरक श्रमक पारिश्रमिक

‘पुनर्गणना शेष’ अछि। हरिमोहन चार विभागक प्रारम्भिक स्रोत-पत्र बनबैत छथि, आ अनाम पड़ोसिन जेकाँ छूटि रहल लोकक अनुमति लेल रिक्त पाँति सेहो रखैत छथि। मैथिली योगदान नामसहित स्वीकार करैत छथि, मुदा एकरा प्रमाणित सहलेखनक अन्तिम निर्णय नहि मानैत छथि; ईशान स्रोत-जाँचक प्रतिबद्धता लिखैत छथि। परिणामस्वरूप विद्यालयमे प्रकाशित होएवाला नव पत्र एक प्रारम्भिक संशोधन अछि, सम्पूर्ण इतिहासक अन्तिम फैसला नहि। पुरान ‘धन्यवाद’ पन्ना नष्ट नहि कएल जाएत; पुरान प्रति राखनिहार पाठक संशोधन माँगि सकैत छथि। एतय उपन्यासक परापाठ—पुस्तकक एकाधिक संस्करण—स्वयं कथा-घटनाक विषय बनैत अछि।

एकर कथात्मक महत्त्व ई जे ‘नाम जोड़ल गेल’ कहि दृश्य समाप्त नहि होइत। सरिताक नकलक वास्तविक देय एखन बाकी अछि, उदाहरणक मूल स्रोत-जाँच एखन बाकी अछि, मैथिलीक स्वतंत्र संशोधनक अन्तिम श्रेय-निर्णय एखन बाकी अछि। ईशानक पुरान निजी व्यय-बहीमे भोजनक अग्रिम भेटैत अछि, मुदा प्रतिलिपिक मजदूरीक प्राप्ति नहि। एहि अनिर्णीतता सँ पात्रसभक शेष भविष्य बचैत अछि। मानवीय सम्बन्धमे स्वीकारोक्ति, आर्थिक हिसाब आ साहित्यिक लेखकत्व एके पल समाप्त नहि होइत—उपन्यास एहिकेँ घटनाक अलग लयमे स्थापित करैत अछि। ई प्रसंग अध्याय ८२–८४ क शिक्षक–शिष्य आ ज्ञान-श्रेय विवादक दीर्घ पुनरागमन सेहो अछि; मुदा पहिने लिखल घटना फेर शब्दशः दोहराओल नहि, नब पृष्ठक प्रकाशन आ मजदूरीक प्रश्न द्वारा आगाँ बढ़ैत अछि।

नैराक कलमदान, मैथिलीक रिक्त पृष्ठ आ अन्तिम चारि गट्ठर

पचीसम–छब्बीसम पाठांशमे कबीर आ मैथिलीक उपस्थितिसँ कथा बौद्धिक श्रेयक पृष्ठसँ निजी जीवनक भीतर लौटैत अछि। कबीर अपन पालन करनिहारी स्त्रीक पड़ोसिनक अधूर नाम याद करैत छथि; सरिता रिक्त ठाम छोड़बाक सहमति दैत छथि, मुदा नाम भेटलापर सम्बन्धित व्यक्तिक उत्तरक अवसरक बात रखैत छथि। मैथिली सरितासँ अपना स्वतंत्र नाम लिखबाक अनुमति नहि, एक आपसी जीवन-सम्बन्धक भीतर स्वीकार्यता पूछैत छथि। सरिता कहैत छथि जे मैथिली अपन नाम स्वतंत्र रूपसँ लिखथि; सरिताक श्रेय ओकर भूमिका नहि बनय। मैथिली एहि उत्तरकेँ कोनो दार्शनिक सूत्र नहि बनबैत, अपन कापीक पहिल रिक्त पन्नापर नाम लिखैत छथि। ई क्रियात्मक समापन दृश्यात्मक रूपेँ शक्तिशाली अछि। नामक उच्चारक बदला हाथक लेखन, स्वायत्तताक नारेक बदला खाली पृष्ठक भरब—यही कहानीक देह बनैत अछि।

अन्तिम पाठांशमे चारू रंगक गट्ठर फेर बन्द होइत अछि। लाल सार्वजनिक प्रति विद्यालय जाएत, घरक व्यय-बही निजी रहत, शिविरक भुगतान-सूची अधिकारी लग जाएत, स्रोत-सूची अनुमति अनुसार समीक्षाक लेल खुलत। पहिल पाठांशक रंग-बँटल मेज अन्तिममे अलग-अलग यात्रा पर जाएवाली सामग्री बनि बदलैत अछि। कथाक बीचमे अनेक उपकथा होइतहुँ आरम्भ-अन्तक वस्तु-समरूपता एक सुदृढ़ विन्यास बनबैत अछि। नैराक खाली कुर्सी अपन ठाम छैक; नव पुस्तक-पन्ना हुनकर मृत्यु बदलि नहि सकैत। एहिमे लेखक कथा-विश्वक उपलब्धि आ हानि अलग राखैत छथि। अन्तिम वाक्य मैथिलीक भविष्यक स्वतंत्र पन्नाक सम्भावना दैत अछि, तखन सरिताक योगदान दोसरक वाणीमे फेर अदृश्य नहि हो—ई पूर्ण भविष्यक घोषणा नहि, एक खुलल कथात्मक प्रतिज्ञा अछि।

आलोचनात्मक परिणाम : श्रेयक कथा बनबाक उपलब्धि आ एकर जोखिम

अध्यायक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि लेखकीय श्रेयकेँ केवल सिद्धान्तक विषय नहि, चारि रंगक धागा, स्याहीक किनार, हल्दी लागल तेल-रसीद, कम्बलक सुई-टाँका, धोएल कपड़ा आ हस्ताक्षर कएल नव पन्नाक दृश्य-माध्यमसँ कहब अछि। एक नायकक अधिकार-लाभक स्थानपर अनेक श्रमिकक भिन्न काजक लेखन-दृश्य अछि। सरिता अपन प्रश्न स्वतंत्र रूपसँ निर्धारित करैत छथि, मैथिली पछतावाक आवेगमे अविचारित श्रेय नहि बाँटैत छथि, ईशान अपन मूल विवेचनक हिस्साक संग बाकी काजक श्रेय स्वीकारैत छथि। मुख्य दुर्बलता कथाक अत्यधिक बहुखण्डी अनुक्रम अछि : एके अध्यायमे पुस्तकक पन्ना, सहकारी धुलाई, कृषि-पट्टा, माछबजार, सीमापार चर्मकारी, विद्यालयक प्रकाशन—सभ समेटबाक कारण भावनात्मक चरमक लय बेर-बेर टूटैत अछि। दोसर, लगभग सभ पात्र वैचारिक भेद सूक्ष्मता सँ जल्दी कहि दैत छथि, जाहिसँ सामान्य जीवनक असमर्थ भाषा आ अस्पष्ट मनोभाव लेल जगह कम होइत अछि। तथापि नैराक खाली कलमदानक मौन, सरिताक दीपक-गन्धक स्मृति आ मैथिलीक पहिल रिक्त पन्नापर नाम लिखब ई योजनाबद्धताकेँ गहिर मानवीय अनुभवसँ सन्तुलित करैत अछि।

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १५७–१६० क संयुक्त कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

स्थिर खिड़कीसँ चलैत बाट : पर्वगत काल-स्थानक विस्तार

अनुशासन-पर्वक अन्तिम ‘नियमक अपवाद’मे स्थानीय खिड़की आ बस्तीक स्थिर भूगोल अधिक महत्त्वपूर्ण छल। अश्वमेध-पर्वक पहिल चारि अध्याय एहि खिड़कीकेँ गाड़ीक चक्का, घोड़ाक पयर, बसक सीढ़ी आ अलग गामक प्रवेश-दरबज्जा धरि लऽ जाइत अछि। १५७ क राजघोड़ा संग आधुनिक वाहनक समानान्तर कथा, १५८ क मणिपुरक पिता–पुत्र सम्बन्धक संग कबीरक पालन-इतिहास, १५९ क चैतमे चलैत शिविर, आ १६० क चारि गट्ठरक अलग यात्रा—ई सभ घटनात्मक रूपसँ एक नहि, मुदा ‘ककर अनुमति, ककर नाम, ककर श्रम’क यात्रा-बदलैत प्रश्न साझा करैत अछि। महाकाव्यीय अश्वमेधक सार्वभौम गतिक विपरीत आधुनिक आख्यानमे प्रवेश प्रत्येक गामक अलग अनुमति पर निर्भर रहैत अछि। दूनूकेँ एके शासन-प्रणाली मानि लेब कथा-रूपक मुख्य बारीकी नष्ट करब होएत।

आख्यानक समकालीन धारा २०४० क फागुनक अन्तिम सप्ताहसँ चैत धरि बढ़ैत अछि (१५७, १५९–१६०)। मध्यवर्ती आधुनिक प्रसंगमे वसन्तक समय अछि; प्राचीन कथा स्पष्ट रूपेँ एक अलग ऐतिहासिक–कल्पनात्मक कालधारा थिक। १५७ क आरम्भ आ समापन दूनू कालक प्रत्यावर्तनसँ रचल अछि; १५८ मे सेहो प्राचीन मणिपुर–आधुनिक आश्रय–पुनः मणिपुर–पुनः आश्रयक सम्पादन अछि। १५९–१६० मे स्वतंत्र प्राचीन दृश्य नहि, अतीतक स्मृति आ पुरान उपन्यास-घटनाक पुनरावर्तन वर्तमान अनुभवक भीतर समाहित अछि। पूर्वआख्यानक ‘द्विकालीन अन्तर्पाठ’ सम्बन्धी यांत्रिक सङ्केतकेँ एहि वास्तविक अन्तरक अनुसार पढ़ल आवश्यक अछि। विशेषतः १५९ मे चलैत बसक कथा १५७ क प्रारम्भिक आधुनिक प्रस्तावक पूर्ण दृश्यरूप विस्तार अछि।

कथनकाल, अवधि आ आवृत्तिक चारि भिन्न संयोजन

अध्याय १५७ मे पहिल दू ग्रामक यात्रा छोट सारांश, तेसर गामक मेढ़ आ पुल-विवाद विस्तृत दृश्य अछि। १५८ मे मणिपुरक राजद्वारक आगमन, धनुषाभ्यासक दू-तीन क्षण, कम्पन आ सार्वजनिक पत्र दीर्घ समयक पिता-पुत्र अनुपस्थितिक संक्षेप भीतर ठहरैत छथि। १५९ मे एक भोरसँ राति धरि बसक यात्राक क्रमिक अवधि कथा चलबैत अछि, मुदा पुरान मजदूरीक दिन आ शिविरक अगिला तिथिसभ निरन्तर वर्तमानकेँ फैलाबैत छथि। १६० मे एक भोरसँ राति धरि पुस्तकक एक बैठक अनेक पूर्वघटनाक स्मृतिकेँ एक मेजपर अनैत अछि। एहि अलग कालिक विन्याससँ आरम्भक महाकाव्यीय गतिसँ निकसि सरिताक घरेलू वस्तु-समय धरि रचनाक लय क्रमशः छोट, घना आ व्यक्तिगत बनैत अछि।

वस्तु-आवर्तन सेहो बदलैत अर्थ दैत अछि। १५७ मे राजघोड़ाक रश्मि आ आधुनिक वाहनक रस्सी नियन्त्रणक सीमा बतबैत अछि; १५८ मे टूटल धनुषडोरी, आधा बाण आ टाँकल कम्बल संबंधक टूटल–जोड़ल स्मृति बनैत अछि; १५९ मे खाली प्राप्ति-पुस्तिका दिनक अन्तिम पृष्ठमे अनेक लोकक हस्ताक्षर सँ भरैत अछि; १६० मे रंगीन गट्ठर अलग-अलग काजक आख्यान-स्तर बनैत अछि। नैराक खाली कुर्सी १५८, १५९ आ १६० मे विविध प्रसंगमे लौटैत अछि। एहि वस्तुसँ शोकक व्यक्तिगत अवधि सार्वजनिक प्रगतिक सामूहिक घड़ीसँ पृथक बनल रहैत अछि; मुदा अत्यधिक पुनरावर्तनक कारण एही बिम्बक स्वतः भावनात्मक असर घटबाक जोखिमो अछि।

पात्रस्वर आ सार्वजनिक लयक समस्या

द्रौपदी, चित्राङ्गदा, उलूपी, रमा, रुहानी, कुमुदी, रामवती, शारदा, उमा, दुर्गा, मीना, बेला, सरिता आ मैथिली—अनेक स्त्री पात्र एहि चारि अध्यायमे प्रभावी निर्णायक भूमिका निभबैत छथि। मुदा बहुस्वरताक मात्र गणना पर्याप्त नहि। वास्तविक भिन्नता एतय अछि जे द्रौपदी मार्गक श्रमक पाँति जोड़ैत छथि, चित्राङ्गदा राज्यक दैनिक पालन-वर्षक पक्ष लैत छथि, उलूपी अपन निजी शोकक अधिकार बचबैत छथि, रामवती पुरान रोपनीक दिन संग लेब चाहैत छथि, शारदा अपन व्यावसायिक गलती स्वयं सुधारैत छथि, सरिता पुस्तकक सहयोग-संज्ञा भीतर गुम कएल श्रमक ठीक काज निर्धारित करैत छथि। प्रत्येकक घटना अलग रहला परे उपन्यासक बहुस्वरता उपयोगी बनैत अछि।

एहि बहुस्वरताक कलात्मक सीमा जटिल अछि। बहुत पात्र असाधारण स्पष्टतासँ सही भेद वक्तव्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि; प्रशासनिक अथवा सैनिक प्रतिपक्ष तुरन्त अपेक्षाकृत सरलीकृत, गलत सूत्र बोलैत अछि। परिणामस्वरूप बहसक परिणाम आगू सँ अनुमानित भऽ सकैत अछि। उदाहरणार्थ अनुवादक–मजदूरी, सार्वजनिक–निजी प्रति, प्रवेश–स्वामित्व, जन्म–पालन, संशोधन–लेखकत्वक जोड़ीसभ फेर-फेर सामनाक विपरीत शब्द बनि अबैत छथि। उपन्यासक दृश्यमय पल—रश्मिक खुरदुरापन, बभ्रुवाहनक काँपैत थारी, रामवतीक चूड़ा, वृद्धाक कड़ा, कबीरक कम्बल, सरिताक हल्दी-रसीद—एहि अतिस्पष्ट संवादकेँ अधिक मानवीय अस्पष्टता आ पदार्थक प्रतिरोध दैत छथि।

चारि अध्यायक फलित अवस्था आ अगिला पाठकीय प्रत्याशा

१५७ मे घोड़ाकेँ सीमित बाट भेटैत अछि, राजकीय सार्वभौम अधिकारक निर्विवाद स्वीकृति नहि; आधुनिक दलकेँ एक गामक बैठक भेटैत अछि, सभ गामक संयुक्त सहमति नहि। १५८ मे अर्जुन बभ्रुवाहनक जीवित अस्तित्व आ स्थानीय राज्यक सीमा स्वीकारैत छथि, मुदा दीर्घ अनुपस्थितिक क्षति एक दृश्यसँ मेटैत नहि; कबीर पालनक इतिहासक बाट पबैत छथि, जन्म-उत्तर पूर्ण नहि। १५९ मे अनेक आवेदकक अलग प्राप्ति बनैत अछि, मुदा मजदूरी, भूमि-सीमा, गिरवीक मूल ऋण, प्रशासनिक खर्चक शेष प्रश्न रहैत अछि। १६० मे सरिताक नाम आ काज प्रकाशित प्रारम्भिक संशोधनक पन्नापर अबैत अछि, मुदा मजदूरीक सम्पूर्ण देय आ सहलेखनक अन्तिम निर्णय शेष अछि। एहि अपूर्णतासँ महाकाव्यक ‘विजय पछाति अधिकार’क पारम्परिक आशाक स्थानपर उत्तरदायित्वक दीर्घ समय बनैत अछि।

अगिला अध्याय १६१ ‘मैथिलीक अपना नाम’क लेल चौबीसम–छब्बीसम पाठांशमे तैयार भेल स्वतंत्र नाम-पृष्ठ एक वास्तविक कथात्मक पूर्वसूचना अछि। किछु पैघ आयोजनक अन्तिम जयघोषक बदला एक पन्नापर स्वयं लिखल नामक दृश्य अश्वमेध-पर्वक आरम्भिक आलोचनात्मक सार बनैत अछि। एहि चारि अध्यायक उपलब्धि जीवनक अलग समय आ सम्बन्धकेँ महाकाव्यीय गतिशीलताक भीतर जगह देब अछि; सीमा—एक समान प्रक्रियात्मक संवाद, तीव्र नैतिक आत्मसुधार आ बहुत उपकथाक संकुलता— सेहो स्पष्ट अछि। एही द्वैतसँ पाठक ई नब पर्वकेँ कोनो सिद्धान्तक पूर्ण विजयक कथा नहि, बनैत-सुधरैत बहुपात्रीय आख्यान रूपमे पढ़ि सकैत अछि।

अध्याय १६१ — मैथिलीक अपना नाम

पुरान प्रूफक तीन बिन्दु : श्रेयक कथानक कोना आरम्भ होइत अछि

भोरक तिरछा उजास, पीयर पड़ल प्रूफ-पन्ना आ ओकर दहिना कातक तीन स्याही-बिन्दुसँ अध्याय शुरू होइत अछि। ईशानक लेल बिन्दु छपाइक दाग अछि; मैथिलीक स्मृतिमे ओ तीन सम्भावित उत्तर अलग रखबाक अपन चिह्न थिक। एहि एक वस्तुक दू व्याख्या पाठककेँ बिना लम्बा प्रस्तावनाक ‘के लिखलक’ आ ‘ककर प्रश्नसँ लेखन बदलल’क विवादमे प्रवेश करबैत अछि। कथावाचक मैथिलीक स्मृतिक जानकारी आरम्भे दऽ दैत छथि; तेँ रहस्य अपराधी-खोजक नहि, श्रेयक व्यावहारिक सत्यापनक रहैत अछि। छापाखानाक पुरान बही, तीन प्रूफ, प्राप्ति-मुहर आ लिखावट-भेद एके मेजपर आबैत अछि, मुदा सभटा समान महत्त्वक प्रमाण नहि बनैत।

प्रथम आठ पाठांशक नाटकीय केन्द्र मैथिलीक आत्म-पहिचान अछि। ओ ईशानक लिखल उत्तर अपना नाम नहि करैत छथि, बल्कि अपन प्रश्न, वैकल्पिक तर्कक्रम आ प्रतिवादक बौद्धिक रचनाकेँ ‘घरक परामर्श’क श्रेणीसँ बाहर अनैत छथि। एहि सूक्ष्म सीमांकनसँ संघर्ष पति-विरोधक सरल कथा नहि बनैत। ईशानक आन्तरिक असुविधा कथावाचक पाठांश २ मे पहिनेसँ कहि दैत छथि; उत्तरमे हुनकर धीरे-धीरे पढ़बाक दृश्य पाठांश २४ मे आबैत अछि। बदलैत व्यवहारक बीच अटकल अवधि पात्रक परिवर्तनकेँ विश्वसनीयता देइत अछि, मुदा मनक अर्थ पहिनेसँ खोलि देलासँ पाठकीय अनुमान लेल किछु जगह घटैत अछि।

शाखित घटनाक्रम : छापाखाना, चालक, विक्रेता आ घाट

दुपहरि पहिनेसँ कथा एक्के छापाखानामे नहि टिकैत। हरिचरणक गाड़ी-भाड़ा आ चालकक रात्रि-मजदूरी अलग कएल जाइत अछि; प्रतीक्षा-अवधिक विवाद बचैत अछि। लक्ष्मी कठबनियाक पुरान संयुक्त ऋण सार्वजनिक पटसँ हटैत अछि, मुदा वस्तुक देय शेष अछि। लखन सतारक पारीक मौखिक गवाही, औजारक प्राप्ति आ ठेकेदारक बिल अलग रखि विवादरहित मजदूरीक अनुशंसा कएल जाइत अछि। विनीता केशरवानीक निजी उधारी आ साझा पारिवारिक खरीदक खातासँ ‘घर’ एकरूप वित्तीय कर्ता नहि, बहु-अधिकारवला स्थान बनि उठैत अछि। ई चारि प्रसंग समकालिक सामाजिक सर्वेक्षण मात्र नहि, मुख्य सहलेखन-विवादक संग कथात्मक सापेक्षता बनबैत अछि।

तथापि चारू शाखाक प्राप्ति एक-जकाँ नहि। हरिचरणक भुगतान आदेश अछि, खातामे जमा होएबाक पुष्टि नहि; लक्ष्मीक सार्वजनिक बदनामीक पर्ची सुधरैत अछि, आपूर्तिक मूल्य नहि भेटैत; लखनक विवादरहित पहर स्वीकृत होएबाक अनुशंसा अछि, जोखिम-भत्ता अनिर्णीत; विनीता अपन एक किस्त चुकबैत छथि, बाँकी संयुक्त विवाद अलग रहैत अछि। अन्तिम समाचार ई असमान फलित-अवस्थासभकेँ फेर एकत्र करैत अछि। एहि पुनरागमनसँ शाखित कथा बिखरैत नहि, तथापि पाठकक स्मृतिपर पात्रनाम आ मदक घनत्वक भार पड़ैत अछि।

दृष्टिकेन्द्र आ आवाजक स्वायत्तता

मुख्य दृष्टिकेन्द्र मैथिलीक छापाखानावला अनुभवक नजदीक अछि, मुदा कथावाचक सरिताक आन्तरिक अनुशासन, ईशानक संकोच, आ लखन-विनीताक माँगकेँ अलग दृश्यात्मक अवकाश दैत छथि। सरिता हुनकर देखल हाटक उदाहरणकेँ मैथिलीक प्रश्नक स्वत्व बनएबाक विरोध करैत छथि। लखन खुलिकऽ कहैत छथि जे हुनका अपन नामक व्याख्यापर किताब नहि, मजदूरी चाही; मैथिली ओहि बातकेँ मानि हुनकर अनुमति बिना नाम नहि छापबाक निर्णय करैत छथि। एहि संवादमे गौण पात्र मुख्य पात्रक विचारक दृष्टान्त बनबाक मना करैत अछि—बहुस्वरताक ई वास्तविक परीक्षण अछि।

विनीताक परिवारक पुरुषक ‘भरोसा’वला तर्क आ विनीताक हस्ताक्षर-अधिकारक उत्तर दूनू सुनाएत अछि, किन्तु कथावाचक स्पष्ट सहानुभूति विनीताक निर्णय दिस रखैत छथि। लक्ष्मीक ‘कर्जमाफी’क बदला गलत आरोप हटेबाक आग्रह कथा-भाषामे नाम देबाक अधिकारक तेसर रूप अछि। एहि पात्रसभक अलग पेशा आ सामाजिक सम्बन्ध हुनकर स्वरकेँ किछु भिन्न बनबैत अछि, मुदा सभक संवाद असाधारण सुव्यवस्थित तर्कमे रूपान्तरित होएबाक जोखिमो बनैत अछि।

काल-व्यवस्था, भौतिक वस्तु आ अन्तिम निर्णय

भोरसँ राति धरि चलैत एक दिनक घटनाक्रममे प्रूफ-पन्ना बारंबार लौटैत अछि। प्रारम्भक तीन बिन्दुसँ अन्तिम सुधारपत्रक पूरा हस्ताक्षर-क्रम धरि, कागद कथनक स्थिर केन्द्र रहैत अछि। दिनक बीच शाखित कामक समय संक्षिप्त कथनमे गुजरैत अछि; ईशान आ मैथिलीक वार्तालाप, पुरान गाँठि-जाँच, आ पहिल हस्ताक्षरक क्रम दृश्यरूपेँ विस्तार पबैत अछि। पहिल सही मैथिली करैत छथि, दोसर ईशान, तेसर हरिमोहन; सरिताकेँ अनावश्यक

रूपेँ हस्ताक्षर नहि कराओल जाइत। एहि सूक्ष्म क्रमान्तरमे कथानकक मुख्य परिवर्तन स्थूल विजय-घोषणा बिना सम्पन्न होइत अछि।

अध्याय समाप्त होइत अछि पुरान आवरण फाड़बाक बदला भीतर सुधारपत्र रखबाक क्रियासँ। अतीतक गलत श्रेयकेँ मेटेनाइ नहि, दृश्य बनाकऽ राखब पाठकीय स्मृतिक संरचना बदलैत अछि। ईशानक ‘हमरा दूनूक बीच की बदलत’ प्रश्नपर मैथिली सार्वजनिक सुधार आ घरेलू सम्बन्धक उत्तर अलग करैत छथि। अन्तिम पाठांशमे नैराक खाली कुर्सी अचानक समीकरण बदलैत अछि: सही श्रेयक अर्जित क्षण मृत्युजन्य रिक्तताक सर्वसमाधान नहि। अगिला अध्यायक ‘प्रमाता’ शीर्षक पृष्ठपर राखि कथावाचक बौद्धिक अधिकारक प्रश्नकेँ खुलल छोड़ैत छथि।

आलोचनात्मक फलित

एहि अध्यायक उल्लेखनीय साधना स्वामित्वक विषयकेँ प्रूफ, हाशिया, मुहर, हस्ताक्षरक क्रम आ संशोधन-वितरणक वास्तविक व्ययमे देह देब अछि। शिल्पगत सीमा ई जे बहुते शाखाक सम्बन्ध ‘ककर अधिकार ककर नाम’ वाक्यरचनासँ प्रत्यक्ष बुझायल जाइत अछि; किछु दृश्य पाठककेँ तुलनात्मक सम्बन्ध स्वयं खोजबाक अधिक अवसर दए सकैत छल। तथापि स्त्री-बौद्धिक कर्तृत्वक दावा ईशानक लेखनकेँ नकारि नहि, प्रमाणित प्रकरणक सीमा निर्धारित कऽ अर्जित होइत अछि; एहि जटिल संयममे अध्यायक कथात्मक विशिष्टता अछि।

अध्याय १६२ — प्रमाताक दावा

दू कालधाराक अनपेक्षित मिलान : धुँधला अक्षरसँ चलैत हाट धरि

पहिल आठ पाठांशमे ताड़पत्र, मोरपाँख, मेटल अक्षर आ तेसर पुरान नकलक सहारे उदयनक शास्त्रार्थक दृश्य उभरैत अछि। वृद्ध लेखिकाक ‘जे मेटल अछि, ओकरा साफ अक्षर कहि नहि पढ़ू’ उपदेश मात्र नहि: ओ अपन नकलक तिथि आ सीमित गवाही स्पष्ट करैत छथि। कुम्भक भीतर शीतल जल अछि वा बालु—एहि बहसमे ढक्कन खुलला पर दुनू आशिंक कथन एक संग सही भेटैत अछि। कथाकार दृश्यात्मक परीक्षणसँ प्रतिष्ठाक तुलना करबैत छथि, बिना उदयनकेँ अचूक निर्णयकर्ता बनौने। क्षतिग्रस्त पाठक रिक्त स्थान खाली रहबाक निर्णय पहिल दृश्य-क्रमक पूर्ण, मुदा सीमित, परिणाम अछि।

नवम पाठांशक ‘बहुत पछिला समयक २०४०क चैत’ कथन एक स्पष्ट काल-उल्लङ्घन अछि। प्राचीन ओसारसँ आधुनिक चलैत शिविरक गाड़ी धरि कथन कोनो पात्रक स्वप्न वा उद्धरणक रास्तासँ नहि, सीधा दृश्य-सम्पादनसँ बढ़ैत अछि। एहि संक्रमणकेँ ऐतिहासिक घटनासभक प्रत्यक्ष कारण-शृंखला मानब अनुचित; ई दू भिन्न समयमे ज्ञानक अधिकार, श्रमक स्वामित्व आ परक कथनक जाँचक कथात्मक अनुनाद अछि। पहिल दृश्यकेँ शास्त्रक पूरा इतिहासक प्रमाण नहि, उपन्यासक भीतरक पुनर्रचित प्रसंग मानि पढ़ब आवश्यक अछि।

आधुनिक शाखासभक रचना : एक हाटक भीतर अनेक देय

सरोज खरकौटक जालक धागा, सीबनक श्रम, पूँजी आ जाल खींचबाक जोखिम अलग कएल जाइत अछि; सोनमती तुरी नमूना, रंग आ ढुलाईक दायित्व बाँटैत छथि। निरु कुमाल साझा आबाक कर्जक विरुद्ध सीमित खेप,

अलग गुण-जाँच आ प्रशिक्षु किशोरीक नामक प्रस्ताव राखैत छथि। एहि तीनू व्यवसायिक दृश्यसभमे बस्तुक बनल रूप पाठककेँ ओकर भीतर लुकल समय देखबैत अछि। जालक गाँठ, बाँसक चौखटा आ तीन असमान बासन ई बतबैत अछि जे तैयार मालक एक नामसँ श्रमक अलग चरण दृश्यसँ ओझर भऽ सकैत अछि।

समानान्तर घटनासभक फल असमान अछि: सरोजक साझा जालक लागत-नियम बनैत अछि, मुदा पूँजीक वास्तविक प्राप्ति बाकी; सोनमती अग्रिम आ आदेशक दू प्रतिक बिना सही नहि करैत छथि; निरुक छोट साझेदारी तय अछि, प्रशिक्षुक भविष्यक हिस्सा अनिर्णीत। फलस्वरूप कथा ‘एक दिनमे सभ अधिकार भेटि गेल’ जकाँ अविश्वसनीय पूर्णता नहि बनबैत। कमलेश खटिकक लाल पट्टीक प्रसंग समूह-दोषक आरोपसँ व्यक्तिगत वस्तु-विक्रयक गवाही दिस मुड़ैत अछि। सार्वजनिक सामूहिक आरोप हटैत अछि, मुदा आर्थिक क्षतिक दावा अलग शेष अछि।

गति आ विसंगति : सुनवाईक तारीख समाधान नहि

मंगरी गोराइतक बन्द कारखाना आ सात मजदूरक प्रसंगमे चारिक हाजिरी प्रारम्भिक रूपेँ मिलैत अछि; तीनक दस्तावेज मँगायल जाइत अछि। सुनवाईक तिथि भेटल, धन नहि—मंगरीक ई पुनरुक्त आग्रह कथा-समयक एक मार्मिक भेद अछि। कार्यालयक चक्र जतेक बेर फाइल बन्द करबाक प्रयत्न करैत अछि, दावाक जीवित समय ओतेक बेर नव आरम्भ माँगैत अछि। सोना कठौतियाक ‘बेढ़ी’ पड़ाव केवल ढुलाई-पर्चीपर नामक रूपमे उपयोग होइत अछि; ओकरा अज्ञात नदी-संगम मानि नक्शा बनबय पड़बाक अधिकार कथा नहि दैत। नाहिद मोगलक ‘लिवरी’ खेतक स्मृति आ गिरवी-प्रस्ताव सेहो व्यक्तिगत सहमतिक प्रश्न होइत अछि, सुनिश्चित भूसीमाक प्रमाण नहि।

यी दृश्य सभ एक दिनक हाटमे असामान्य रूपसँ अधिक विवाद समेटैत अछि। कथावाचक प्रत्येक समूहकेँ दू-तीन पाठांश दैत छथि; एहि संक्षेपसँ सामाजिक विस्तार भेटैत अछि, मुदा मंगरीक घर वा नाहिदक पारिवारिक मनोविज्ञानक गहिराइ सामर्थ्य भरि नहि खुलैत। खास कऽ भायक फोन काटि देबाक क्रिया संवादक स्पष्टतासँ अधिक मौनक तनाव रचैत अछि; ई छोट स्थान पाठकेँ नाहिदक भविष्यक सम्भावित प्रतिरोध सोचबाक मौका दैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रक बहुलता आ विचारक कथारूप

उदयनक सभा प्रवेश-विवादसँ शुरू होइत अछि, जतय सुनबाक अधिकार आ तर्कक सत्यता अलग कहल गेल अछि। आधुनिक हाटमे सरोज, सोनमती, निरु, कमलेश, मंगरी आ नाहिद अपन अनुभवक विवरण स्वयं दैत छथि; रमा परस्पर भिन्न परिणाम एकसाथ ‘सम्पन्न’ नहि लिखैत छथि। ई बहुस्वरता केवल कतेक लोक बजल, तकर गणना नहि: कमलेशक गवाह ‘पट्टी देखल’ आ ‘विक्रेता देखल’क अन्तर स्वीकार करैत अछि; निरुक प्रशिक्षु अपन नामक अधिकार उठा सकैत अछि; मंगरी प्रशासनक उत्तरक शब्द बदलवबैत छथि। तथापि सभ आवाजक भाषण लगभग एक्के स्पष्ट निर्णय-वाक्यपर पहुँचैत अछि, जाहिसँ पात्र-विशेषक कथन-लय किछु समान होइत अछि।

वृत्ताकार समापन : ‘अचूक’ शब्दक काटाइ

सत्ताइसम–उनतीसम पाठांशमे कथा पुनः छापाखाना लौटैत अछि। ईशान ‘हमर निर्णय अन्तिम’ लिखबाक विकल्प पुछैत छथि, मैथिली सहलेखनक मान्यता आ तर्कक जाँचक अधिकार दूनू बचबैत छथि। ईशान प्रारूपक ‘अचूक’ काटैत छथि। आरम्भमे उदयन अपन नामकेँ मेटल अक्षरक प्रमाण माननासँ मना कएने छलाह; समापनमे ईशान अपन नामकेँ अकाट्य निर्णयक मुहर बनबय चाहबाक गलती संशोधित करैत छथि। ई आरम्भ-अन्तक समान्तर रचनात्मक रूपेँ कार्यशील अछि, यद्यपि कालधारासभक बीच कोनो वास्तविक पात्रगत सम्पर्क नहि।

अध्यायक सबसँ नीक बिम्ब जालक गाँठ अछि—लिखित पन्नाक गाँठ, पूँजी-श्रमक गाँठ, आ नब भूमिकाक शब्दकेँ खोलबाक कठिनाइ। एकर सीमा तेहन अछि जे ‘सही हाथक पहचान’क अन्तिम टिप्पणी तुलनाक अर्थ पाठक लेल फेर स्पष्ट कऽ दैत अछि। दृश्यसभ पर्याप्त सक्षम छल, तेँ एहि अर्थक किछु अंश अनकहल रहित तँ व्यञ्जना आरो खुलि सकैत छल।

अध्याय १६३ — पुरान पुस्तक नव भूमिका

‘सम्पूर्ण’ शब्द काटब : संशोधनक काल-विस्तार

हरिमोहनक खिड़कीमे आधा सुखायल प्रूफ आ पुरान आवरणक नव भूमिकापर सरकि पड़ब अध्यायक उद्घाटनकेँ अत्यन्त वस्तुनिष्ठ बनबैत अछि। पुरान आवरणपर ईशानक एकल नाम, भीतर मैथिलीक छुटल योगदान—पुस्तकक बाहर आ भीतरक अन्तर एके मेजपर दृश्य बनैत अछि। ईशान पहिल भूमिकाक ‘सम्पूर्ण’ काटैत छथि; ओकर पाछाँ अपन मूल लेखनक सूची, मैथिलीक प्रमाणित सहलेखन, सरिताक श्रम आ अनिर्णीत प्रश्नक अलग पञ्जी बनैत अछि। कथानकक लक्ष्य एतय पिछिला अध्यायक निर्णय दोहराएब नहि, स्वीकार कएल निर्णयकेँ पाठक धरि पहुँचेबाक कठिन कालावधि देखेब अछि।

छापाखानाक प्रशिक्षु लड़कीक प्रश्न कथा-समयकेँ महत्त्वपूर्ण रूपेँ बाहर विस्तार दैत अछि। पुरान प्रति जखन बिखरि चुकल, तत्काल स्वीकृति भविष्यक प्रत्येक पाठकक जानकारी नहि बदलि सकैत। अधूरा पता-पञ्जी, डाकघरविहीन गामनाम, वितरणक खर्च आ पुरान प्रतिक संग निःशुल्क संशोधन-पत्र—ई सभ भविष्यक अनिश्चित पठनसमयकेँ वर्तमान निर्णयक अङ्ग बनबैत अछि। ईशानक व्यक्तिगत पारिश्रमिक आ प्रकाशकक सार्वजनिक वितरण-दायित्व अलग लिखल जाइत अछि; सरिताक मजदूरी एहि खर्चक भुक्तानी नहि।

मुख्य शृंखला आ कामक अन्तर : सरिताक उपस्थितिक अर्थ

सरिता छापाखानामे आबि धन्यवादसँ पहिने बकाया नकलक दिन गनैत छथि। हुनकर दू दिनक हस्ताक्षर एखन शेष अछि, एही कारण ओ केवल स्वीकृत पाँति पर सही करैत छथि। एकर कथात्मक प्रभाव शब्दक प्रामाणिकतासँ अधिक समयक असमान गति अछि: लेखकक भूमिका एक दिनमे सुधरि सकैत अछि, किन्तु कामक देयक दफ्तरक समय अलग चलैत अछि। नैराक पुरान कागद थैलीसँ निकालि फेर बिना देखौने रखबाक क्रियामे कथावाचक शोककेँ सार्वजनिक समारोहक भाग नहि बनबैत छथि। मैथिली सेहो एहि क्षण बड़का भाषण नहि दैत छथि—मौन पात्रसभक आपसी दूरीक सम्मान बनैत अछि।

दृश्य-श्रृंखला : माछबजारसँ पुनर्वासक जमीन धरि

विनोद केवर्तक माछबजार-विवादमे ठेकेदारक छूट आ छोट विक्रेताक छाँहक स्थानक बराबरीक प्रश्न उठैत अछि। आदेशमे अस्थायी सुविधा-मद बनैत अछि; पछिला वसूलीक समायोजन बाकी अछि, आ बेटीकेँ वास्तवमे छाँहक ठाम भेटल की नहि, ओ अनिर्णीत। सोना कठौतियाकेँ भाड़ाक आदेश भेटैत अछि, जमा-पुष्टि नहि; दानक फोटो आ वाहन-श्रमक देय अलग होइत अछि। एहि दू प्रसंगमे लिखित शब्द आ प्राप्त भौतिक लाभक बीच दूरी लगातार जीवित रहैत अछि।

फूलचन लोधक बराबर क्षेत्रफलवला दूरक भूखण्डक प्रस्ताव एक रुचिकर कथात्मक प्रतिवाद अछि। पिता लेल खेती, सिंचाइ आ हाट धरि बाट निर्णायक; पुत्र लेल शीघ्र घर भेटबाक आशा। दूनूक मतक अन्तर एके पीड़ित परिवारकेँ एक स्वर बनाय देबाक सहज प्रवृत्तिक प्रतिरोध करैत अछि। स्थल-जाँच तय होइत अछि, मुदा देरीक मूल्य एक पूरा मौसमक अस्थायी आश्रय भऽ सकैत अछि। लक्ष्मी झाँगड़क पुरान अनुबन्धक नकल प्राप्ति अछि, मजदूरीक सत्यापित वसूली नहि; भायक थाकल असहमति आ थैलीक डोरी सम्हारबाक क्रिया एक भावनात्मक अन्तराल रचैत अछि।

तुलसी दोनवारक दू गामक अधिकार आ बदरी नोनफरक पुरान खेत-पत्र पुनः ठोस भूगोलक जटिलता अनैत अछि। ‘बुढ़नद’ आ ‘बलथी’ जेकाँ नाम कथामे स्रोत-सन्दर्भ बनैत अछि, स्वतः प्रमाणित नक्शा नहि। पात्रसभ एक-दोसराकेँ सहमति दैतो अपन दावाक भिन्नता नहि गुमबैत छथि। ई श्रृंखला पुस्तकक ‘एक नाम = सम्पूर्ण कर्तृत्व’क समस्याकेँ जमीनक ‘एक नाम = एक अधिकार’क सरलीकरणसँ जोड़ैत अछि, मुदा दूनूक जाँच-क्रिया अलग अछि।

नव भूमिकाक स्वर : आत्ममुग्ध कथकक सुधार

प्राचीन शास्त्रार्थक ‘पराजित विरोधी’, ‘अचूक निष्कर्ष’ आ ‘अखण्ड परम्परा’ जेकाँ पुरान पद अन्ततः संशोधनशील भाषा पबैत अछि। ई परिवर्तन केवल वैचारिक फैसला नहि: ईशान स्रोतक पाठान्तर लिखैत छथि, मैथिली ‘सहयोग’ शब्दसँ सहलेखन धुँधल होएबाक खतरा बतबैत छथि, हरिमोहन शीर्ष-पृष्ठक प्रमाणित प्रति खोलैत छथि। ‘निष्कलुष’क बदला ‘संशोधनक लेल खुला’ लिखब पाठकसँ पुस्तकक सम्बन्ध फेर गढ़ैत अछि। कथावाचक एतए ईशानक भीतरी परिवर्तनकेँ अंशतः प्रत्यक्ष क्रियाक सहारे देखबैत छथि; पुरान शब्द काटबक आवृत्ति पुनर्रचित लेखकीय स्वरक प्रमुख शिल्प अछि।

अन्तिम पन्नाक द्वार : उर्मिलाक लिफाफा

अठाइसम पाठांशमे विनोदक बेटी कहैत छथि जे नाम लिखल अछि, मुदा छाँहक ठाम एखन देखबाक अछि। इएह पङ्क्ति मैथिलीक छपल नामक प्रगतिकेँ बिना छोट केने ओकर सीमा बनैत अछि। उनतीसम पाठांश अगिला भोरमे उर्मिलाक परिवारक पुरान कपड़ा-मजदूरीक पर्ची मिलने कथा नव लक्ष्य दिस घुरबैत अछि। छापाखानाक बण्डल आ उर्मिलाक लिफाफा अलग करब फेर एक भौतिक सम्पादन अछि—एक अध्यायक समापनक वस्तु अगिला अध्यायक प्रथम दृश्य बनबाक तैयारी करैत अछि।

एहि अध्यायक उपलब्धि संशोधनक निष्कर्षसँ बढ़ि कऽ ओकर वितरण-जीवन देखब अछि। सीमा ई जे विभिन्न देय-प्रसंगसभ बहुत बेर एके भेदात्मक रचनामे प्रस्तुत छथि—आदेश बनाम प्राप्ति, नाम बनाम काम, स्मृति बनाम स्थल। एहि दोहरावसँ अनुशासन बनैत अछि, मुदा अलग पात्रक समूचा भावजगत अनेक बेर संक्षिप्त रहि जाइत अछि। तइयो फूलचन-पुत्रक असहमति, लक्ष्मीक भायक थकान आ सरिताक मौन कथाकेँ एकरे निर्णयसूत्रमे सिमटबासँ रोकैत अछि।

अध्याय १६४ — उर्मिलाक देय

लिफाफाक धागासँ धुलाईघाटक रिक्त ठाम धरि

अध्याय १६३ क अन्तिम लिफाफा १६४ क पहिल दृश्य बनि लौटैत अछि। सरिता ओकर भीतर आवेदन-नकल, घाटपर कपड़ाक प्राप्ति आ अस्पतालक रात्रि-पारीक प्रति अलग गनैत छथि। छापाखानाक संशोधन-पत्रक संग उर्मिलाक बकाया नहि मिलाओल जाए—ई कथात्मक सीमा पहिल दू पाठांशे बनि जाइत अछि। धुलाईघाटक पाटपर पड़ल धूप आ उर्मिलाक खाली निर्धारित स्थान मृत्युकेँ अमूर्त शोक नहि रहए दैत; गट्ठरक तीन रंगक डोरी, नाम, दिन आ श्रमक याद रिक्त स्थानक सामाजिक आयाम बनबैत अछि। तीन रंगक वस्तुगत भेद पिछिला अध्यायसभक सरिताक गट्ठरक संग अनुनाद रखैत अछि, मुदा उर्मिलाक अपन कामक विशिष्टता मेटबैत नहि।

उर्मिलाक बहिन ‘मृतकक प्रतिनिधि’ शब्द पर कलम रोकैत छथि। ओ मृतकक बहिन आ परिवारक सहमत प्रतिनिधि छथि, मुदा उर्मिला स्वयं हुनकाभितर विलीन नहि। एहि भाषिक संशोधनसँ कथा उत्तराधिकारक परिचयकेँ व्यक्तिक जीवनक पूर्ण विकल्प नहि बनए दैत। बैठकमे सहायता-राशि भेटल तथ्य मजदूरीक प्रश्नक उत्तर बनबय चाहैत अछि; रमा राहत-पञ्जी बन्द कऽ देय-पञ्जी खोलैत छथि। कागद बदलबाक ई छोट क्रिया दृश्यगत मोड़ थिक—एक कार्यालयी कथाक अन्तिम पङ्क्तिक बदला दोसर कथाक आरम्भ।

निर्णयक बहु-अवस्था आ कथा-समयक खिंचाव

उर्मिलाक राति-पारी, दू गट्ठरक धुलाई, ढुलाई-भाड़ा, ग्राहकक चादर आ परिवारक राहत अलग रहलाक कारण अध्याय एकरे ‘भुगतान’ घटनाक अन्तर्गत नहि बन्द होइत। पहिने हाजिरी, उमाक सीमित स्मृति आ ग्राहकक सही मिलैत अछि; तखन विवादरहित मजदूरीक आदेश होइत अछि। ‘अन्तिम निस्तारण’ वाक्य बहिनक विरोधपर हटैत अछि। दसम पाठांशमे आदेश जारी अछि, जमा नहि; तीसममे बैंकसँ दू गट्ठरक आंशिक जमा-पुष्टि आबैत अछि। ई बीचक बीस पाठांश कथन-समयकेँ प्रतीक्षा आ समानान्तर जीवनसभक रास्तासँ विस्तारित करैत अछि।

उमरि गेल काजकेँ आपदाक ‘स्वैच्छिक सेवा’ कहि निःशुल्क बनएबाक ठेकेदारक प्रयत्नपाछाँ बहिन पहिनुक तय समय आ दरक प्रश्न उठबैत छथि। कथा हुनका पूर्ण विजेता नहि बनबैत: आधा पारीक अलग विवाद, ढुलाई आ ग्राहकक वस्तु-फिर्ती एखन शेष अछि। बहिन अपन थैलीमे मूल पन्ना सुरक्षित रखैत छथि, आ बैंकक जमा-पुष्टि प्राप्त कएलाक बादो कोनो विजय-उद्गार नहि करैत छथि। एहि संयममे आर्थिक क्रियाक कथा आ शोकक कथा एक-दोसराक स्थान नहि लैत।

शाखित श्रम-जगत : प्रतिनिधि कथा नहि, पृथक लोक

मध्यभागमे किरण राउतक बटाइदार ऋण, फूलमती तियरक नव जालसमूह, केदार बौरीक प्रवासी मजदूर, शिव धाँड़ीक नाम-लिखावट आ नूरजहाँ ईटफरोशक पशुसेवा पाँच अलग कथात्मक इकाई बनैत अछि। किरणक गलत संयुक्त ब्याज घटैत अछि, मूल बीहन-ऋण बचैत; फूलमती पुरान नामक अधीन रहबाक बदला सीमित नव खेपक शर्त चुनैत छथि; केदारक समूहमे एक मजदूरक पैसा जमा, दोसरक खाताक अंकक गलतीसँ अटकल; शिवक बकाया जमा-पुष्टि भेटैत अछि, देरीक क्षति एखन दावा; नूरजहाँक ढुलाईक विवादरहित देय स्वीकृत, गदहाक उपचारक प्रश्न अनिर्णीत। एहि अन्तरसभक विशिष्ट उल्लेख जरूरी, नहि तँ मध्यभाग केवल उदाहरण-प्रदर्शन बुझाएत।

फुलवाक घरक भाड़ा आ बैंक-जमा संदेशक समय कथाक बाहरी श्रम-अभिलेखसँ निजी घरेलू समय जोड़ैत अछि। शिवक दू वर्तनीक कारण अटकल मजदूरी आन पात्रसभक मुद्दाक प्रतिकृति नहि; ई भाषिक चूकक अपना घटना अछि। नूरजहाँक गदहाक खुरक दरार, ढुलाईक सुरक्षित मार्ग आ उपचारक खर्चक असमान विवाद श्रमक साधनकेँ जीवित जन्तुक देह धरि विस्तारित करैत अछि। वस्तु-छविसभ, जँ सावधानीसँ पढ़ल जाए, तँ केवल प्रमाणक उपकरण नहि; अलग जीवन-जगतक अनुभूति बनैत अछि।

सरिता आ बहिनक मौन : दुःखक असमानता

तेइसम–चौबीसम पाठांशमे कथा अपन सर्वाधिक भावात्मक विराम पबैत अछि। सरिता नैराक बन्द दराज खोलि नहि पबैत छथि; उर्मिलाक बहिन कपड़ाक बही खोलए विवश छथि, नहि तँ मृतकक मजदूरी केओ मानबे नहि करत। समान वर्षक मृत्यु दूनूकेँ नजदीक अनैत अछि, मुदा कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर जीवन आ काज अलग-अलग रहल। डोरीक टुकड़ा सरिताकेँ देखाकऽ फेर अपन थैलीमे राखब बड़ मूल्यवान दृश्य अछि: स्मृति सार्वजनिक फाइलक सम्पत्ति नहि बनैत। एहि मौनमे पाठकक शोकानुभव भाषणसँ नहि, अलग-अलग असमर्थता आ क्रियासँ निर्मित होइत अछि।

बादमे उमा अपन नव पालिक मजदूरी उर्मिलाक परिवारक दावासँ अलग रखबैत छथि। मृत स्त्रीक कामक स्मृति आ जीवित स्त्रीक वर्तमान मेहनताना—दूनूकेँ एके विरासत मेँ मिलाय देबासँ कथानक इनकार करैत अछि। एहि बिन्दुपर उर्मिलाक बहिनक स्वर एकाधिकारक नहि: ओ परिवारक दावाक प्रतिनिधि छथि, आन स्त्रीसभक वर्तमान श्रमक स्वामिनी नहि।

नदीक नाम आ कटलगेल वाक्य : अग्रसंकेतक द्वैध रूप

नन्दिनीक ‘पुरैनि’ जलखाता आ तुलसीक ‘बलान/भुतहीबलान’ लिखावटकेँ सत्यापित भौगोलिक निर्धारणक स्थान नहि देल जाइत। वस्तुक प्राप्ति-पर्ची, गाड़ी-भाड़ा, पारिवारिक उपयोगाधिकार आ नदीक वास्तविक सीमाक बीचक अन्तर कथावस्तुमे पृथक रहैत अछि। अठाइसम–उनतीसम पाठांशमे पानीक दागवला मूल बही आ साफ नकलक बदलल अङ्क एक नब प्रलेखीय संशय बनबैत अछि; मुदा दागक आधारपर अपराधी ठहराओल नहि जाइत। बत्तीसामे ‘मृत्यु उपरान्त खाताक समापन’क आधा छपल वाक्य आगाँक विवादक स्पष्ट अग्रसंकेत थिक। पाठकक लग सूचना अछि जे कटान भेल, किन्तु पूरा मूल वाक्य वा भेजनिहारक निश्चित जानकारी नहि।

अन्तिम पाठांशमे बहिन मृत्युक प्रमाणपत्र, आंशिक बैंक-पुष्टि, शेष दावा आ उर्मिलाक अपन डोरी चारि अलग ठाम रखैत छथि। बरामदाक पानिमे हुनकर पएरक छाप मेटा जाइत अछि, जबकि जमा-रकम आ बचल देय लिखल रहैत अछि। क्षणिक शारीरिक छाप आ अपेक्षाकृत टिकाउ अभिलेखक ई प्रतिपक्ष साधारण ‘कागद सदा सत्य’क रूपक नहि: कागदमे शेष देय ओतबे बचल अछि जतेक समाधान असम्पूर्ण।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

अध्यायकेँ केन्द्र देनिहार उर्मिलाक बहिनक स्पष्ट आवाज, धुलाईघाटक रिक्त पाट आ बैंक-पुष्टिक नीरव क्षण अछि। विशेष उपलब्धि ई जे अन्य मजदूरक अनेक कथा जोड़लाक बादो अन्तिम दृश्य बहिनक अपन घर जा कपड़ा सुखेबाक कामपर घुरैत अछि। सीमा ई जे मध्यक पाँच-सात छोटे विवादक संक्षिप्त समाधान-प्रणाली बारंबार समान गति धारण करैत अछि; उर्मिलाक अन्तरंग जीवन फ्लैशबैकक विस्तृत दृश्य रूपेँ नहि, दोसरसभक वस्तु-स्मृतिसँ उपलब्ध होइत अछि। तथापि मृत्युकेँ राहतक सम्पूर्ण कथा बनबासँ रोकब आ जीवित/मृत दुनू स्त्रीक स्वतंत्र कामक समय बचायब एहि अध्यायक दृढ़ आख्यानशास्त्रीय साधना अछि।

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६१–१६४ क संयुक्त कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

चारि अध्यायक कथात्मक सेतु

१६१ क प्रूफ-पन्ना आ ‘सहलेखिका: मैथिली’क प्रमाण १६२ मे प्रतिष्ठा आ कथनक जाँचक कालान्तरित द्वन्द्व बनैत अछि। १६३ मे सही श्रेय छापब आ पुरान पाठकधरि पहुँचेबाक दीर्घ सामाजिक समय खुलैत अछि। १६३ क अन्तिम उर्मिलाक लिफाफा १६४ क आरम्भक केन्द्र बनैत अछि। एहि प्रकार ‘अधिकारक नाम → मान्यताक सीमा → सुधारक वितरण → मृतकक बचल श्रम’क क्रम चारि अध्यायकेँ जोड़ैत अछि; ई एकरे घटनाक चारि संस्करण नहि। प्रत्येक कड़ी अपन अधूरा प्रश्न अगिला दृश्यक आरम्भ बना दैत अछि।

काल, दृश्यघनत्व आ दृष्टिकेन्द्रक संयुक्त परीक्षण

१६१, १६३ आ १६४ भोर-रातिक क्रम, कार्यालयक भेटघाट आ एक दिनमे अनेक सुनवाईक शाखा सँ बनल अछि; १६२ मे प्राचीन शास्त्रार्थ आ २०४०क चैतक शिविरक बीच प्रकट काल-विच्छेद अछि। चारू अध्यायमे अग्रसंकेत मुख्य रूपेँ वस्तु द्वारा होइत अछि—१६१ क ‘प्रमाता’ पन्ना, १६२ क भूमिकाक शब्द, १६३ क उर्मिलाक लिफाफा, १६४ क कटलगेल सन्देश। कथावाचक अनेक पात्रक भीतरक स्थिति जानैत छथि, मुदा एके स्थिर दृष्टिबिन्दुपर नहि टिकैत; छापाखाना, हाट, घाट, अस्पतालक बैठक आ घरक भिन्न दृश्य संग कथन-निकटता बदलैत रहैत अछि।

वस्तु, आवाज आ अनिर्णीत परिणाम

प्रूफक स्याही, ताड़पत्रक धुँधला अक्षर, जालक गाँठि, पुरान आवरण, धुलाईक डोरी आ बैंक-सन्देश बारंबार एहि कारण अर्थपूर्ण छथि जे ओ पाठककेँ ‘के कहल’, ‘के कएल’, ‘के प्राप्त कएल’क भिन्न काल देखबैत अछि। मुदा

प्रत्येक पात्रक आवाज अखिल वैचारिक एकमत नहि अछि। फूलचनक पुत्रक असहमति, मंगरीक सुनवाई-संबन्धी थकान, उर्मिलाक बहिन आ सरिताक पृथक शोक, तथा लक्ष्मीक भायक प्रश्न—ई सभ अलग राग खोलैत अछि। मुख्य शिल्पगत जोखिम बहुते प्रसंगक एकरा जेकाँ व्यवस्थित तुलनात्मक वाक्य-विन्यास अछि; किछु स्थानपर कथाकार पाठकक अपेक्षित अर्थ स्वयं बताबि दैत छथि।

अगिला अध्यायक अपेक्षा

अध्याय १६४ क अन्तमे आयल अर्ध-वाक्यक मूल प्रसंग अगिला कथा लेल खुलल अछि। एहि ठाम एकर अर्थ निश्चित रूपेँ घोषित करब पाठकक ज्ञान-सीमासँ बाहर जएब हएत। अग्रक्रममे पुछल जएबाक चाही जे उद्धृत वाक्य के काटलक, पाठक वा पात्रकेँ ओकर पूरा स्वरूप केखन भेटैत अछि, आ कोन क्रिया वास्तवमे बदलैत अछि। अश्वमेध-पर्वक ई दोसर चारि-अध्याय खण्ड एतहि अन्तिम निष्कर्ष नहि, एक सुसंगत अन्तरिम पड़ाव पबैत अछि।

अध्याय १६५ — वाक्यक तात्पर्य

लुप्त ‘केवल’ : अधूरा वाक्यक कथात्मक शक्ति

अध्याय १६४ क अन्तिम कटल वाक्य अगिला अध्यायमे स्वयं उद्घाटनक वस्तु बनैत अछि। विद्यालयक बरामदापर पद्मा दुनू प्रति पसरबैत छथि : एक सार्वजनिक रूपसँ फैलल अपूर्ण सन्देश, दोसर नगरक लेखा-शाखासँ प्राप्त प्रमाणित पत्र। कागद उड़ाएवला पवन दृश्यकेँ चलायमान रखैत अछि; पन्ना थामि राखनिहार पत्थर पाठककेँ पाठकर्मक भौतिक श्रम देखबैत अछि। रहस्य ‘कियो किछु बदललक’ सँ आगाँ बढ़ि एकटा खास भाषिक क्रियामे केन्द्रित होइत अछि : ‘केवल’ शब्द आ ओकर पछिलका अंश हटाएलासँ राहत-अनुदानक सीमित समापन सम्पूर्ण सेवा-देयक समापन बुझाइ लगैत अछि। पूरा पत्र कहैत अछि जे तत्काल राहत-अनुदानक खाता बन्द भेला सँ धुलाई, ढुलाई आ अन्य प्रमाणित श्रमक जाँच बाधित नहि हएत। एकरे प्रतिपक्षमे कटल वाक्य उर्मिलाक बकाया अदृश्य करैत अछि। एहि तरहेँ अर्थ-हेरफेर कथा-संसारक वास्तविक आर्थिक जोखिम बनैत अछि; ई केवल भाषावैज्ञानिक कौतुक नहि।

पद्माक पढ़बाक क्रम—मुख्य पाँति, संलग्नक, जारी-अङ्क, मार्जिन, पछिला पृष्ठ—कथनक गति धीम करैत अछि। छपल दावाक त्वरित असरक विपरीत पाठ-पुनर्निर्माण धीर, अनेक कागदक बीच सम्पन्न होइत अछि। बरामदासँ नगरपालिका आ फेर धोबिघाट धरि स्थान-परिवर्तन सेहो जाँचक तीन अलग स्तर रचैत अछि : पाठक मूल, संस्थागत जारीकरण आ जे मनुष्यपर ओहि पाठक परिणाम पड़ल। बहिनक प्रश्न ‘एहि वाक्यसँ खातामे पैसा आबि जायत?’ कथाक निर्णायक प्रत्युत्तर अछि। सरिताक ‘नहि’ एक पूर्वानुमित सुखान्तकेँ तुरन्त रोकैत अछि। पूरा वाक्य प्रकाशित भऽ सकैत अछि, मुदा शेष मजदूरीक धन एखन नहि पहुँचल।

सुधारक प्रसार, सीमित प्रकाशन आ अज्ञात कर्तनिहार

मूल प्रेषण-बहीमे ‘परिवारक सहमति’वाली गोल मुहरक अङ्क नहि भेटब कथाक दोसर रहस्यक बाट खोलैत अछि। मुदा रमा नक्कल मुहर देखिते केकरो दोषी नहि बनबैत छथि; कागद, वितरक आ प्राप्ति-समयकेँ अलग

सूत्रमे राखैत छथि। सरिताक मोबाइलमे संदेशक मूल पठेनिहार आ अगिला समूहक अग्रेषक अलग भेटैत छथि। एतए कथावाचक गोपित अपराधीक परिचय देबाक वचन नहि दैत; ओ संचार-शृंखलाक बहुस्तरीयताकेँ नाटकीय बनबैत अछि। पुरान कटल पन्ना जरा कऽ 'मेटाएब' नहि, ओकर बगले सार्वजनिक खण्डन चिपकाएब महत्त्वपूर्ण कथात्मक चयन थिक। पाठक पहिल भ्रम आ ओकर संशोधनकेँ एकसंग देखैत छथि; कथा संशोधित इतिहासक नामपर पूर्ववर्ती भूल मेटबैत नहि अछि।

एकरे संग निजताक सीमा पुनः खिंचल जाइत अछि। पद्मा पत्रक क्रमाङ्क, तिथि, जारी शाखा आ सार्वजनिक वाक्य उपलब्ध करबैत छथि, मुदा बैंक-अङ्क, घरक पता आ उर्मिलाक निजी डोरीक चित्र रोकैत छथि। एहि भेदक कथा-उपयोग गम्भीर अछि : 'पूरा वाक्य' आ 'सम्पूर्ण निजी फाइल' पर्याय नहि। रमा सत्यापनक लेल निर्धारित कार्यालयी बाट खुलल रखैत छथि। सार्वजनिक सुधारक सफलता तखन मापल जाइत अछि जखन उर्मिलाक बहिन स्वयं सूचना-पटपर वाक्य पढ़ि शेष पालि-जाँचक तारीख लऽ घुरैत छथि; ढुलाईक अस्पष्ट गाड़ी-अङ्क एखन बकाया अछि। पाठकीय राहतकेँ अधूरा देयक बोध नियंत्रित करैत अछि।

एक दिनमे अनेक खाता : दृश्य-वितरण आ पात्रस्वर

अध्यायक मध्यभाग नसीम इदरीसीक सिलाइ-आदेशसँ कमला ठाकुरक गिरवी-कड़ा, नाहिद मोगलक सशर्त गिरवी, सुगनी सदायक पुनर्वास आ गीता कोरीक सीमापार कपड़ा-देय धरि फैलैत अछि। ई सभ उर्मिलाक मृत्युक एके कारणक शाखा नहि; ओसारा, दुकान, मुहल्ला आ बजारमे बिखरल स्वतंत्र संघर्ष छथि। नसीम पाँच रंगदार थैली आ निजी मापबही अलग रखैत छथि; गोपनीय प्राप्ति-अङ्क सार्वजनिक सूचीमे कामक वस्तु आ मजदूरीक हिसाब बचेबाक उपाय बनैत अछि। कमलाक प्रसंगमे वृद्धाक कड़ाक स्वामित्व स्वीकारल जाइत अछि, मुदा गिरवी-मुक्तिक शुल्क आ परिवारक ऋणक विवाद शेष अछि। नाहिद डरक बीच पूर्ण अस्वीकृति नहि, केवल सीमित हिस्साक जोखिम चुनैत छथि। एकरे द्वारा पात्रसभ 'सदा नहि' अथवा 'सदा हँ' कहनिहार नैतिक प्रतिमा नहि बनैत, व्यावहारिक विकल्पक जिम्मेदारी उठबैत छथि।

सुगनीक डोरी आ मुहल्लाक नब सूची कथाकेँ प्रतिनिधित्वक संकट दिस मोड़ैत अछि। आपात निकासी लेल सहमति स्थायी पुनर्वासक स्वीकृति नहि : तीन परिवारक जीवन-शर्त अलग देखाओल गेल अछि। किंतु एहि निर्णयसँ पानिक गाड़ीक कमी आ अस्थायी व्यवस्था पर देरीक बोझ बढ़त, से सेहो कथावाचक कहैत छथि। गीता विवादरहित कपड़ाक खेपक आंशिक बैंक-जमा देखैत छथि, मुदा 'सम्पूर्ण देय समाप्त' लिखल रसीदपर सही नहि करैत छथि। दुर्गा गंगाईक नव बिक्री आ सूरज गंगोताक पुरान ऋण एके धूपमे घटैत अछि, फेरो परस्परक कथानक-कारण नहि बनैत। एहिसँ दृश्य-समूह व्यापक सामाजिक कथा बनैत अछि, एकरे नायकक सर्वशक्तिमान विजयगाथा नहि।

वस्तु-आवर्तन, कथन-अवधि आ शिल्पगत सीमा

मुख्य घटना एक भोरसँ साँझ धरि घटैत अछि; पत्रक जाँच, सार्वजनिक पढ़ाइ, सुनवाई, बैंक-सन्देश आ पुनः सूचना-पट समयकेँ कएक बेर विराम दैत अछि। कथावाचक पद्मा, सरिता, बहिन, नसीम, कमला, नाहिद, सुगनी आ गीता लग बेराबेरी ठहरैत छथि। केओ एकटा चेतना समस्त दृश्यपर स्थायी नियन्त्रण नहि रखैत। पवनमे

काँपैत कागद, सुईक टाँका, कड़ाक टेढ़ फूल, निकासीक डोरी आ करघाक धागा वस्तुसभक अलग जीवनक कारण अर्थ पबैत अछि। अन्तिम दृश्य धरि ‘कागदक पिन’ स्वचालित न्याय नहि, पढ़निहार लोकक लगातार श्रमक सहारे टिकल अछि।

आलोचनात्मक सीमा सेहो एतहि अछि। लगभग प्रत्येक शाखामे कागजक गलत समापन, सशर्त सही आ शेष दावाक स्पष्ट व्याख्या फेर भेटैत अछि; कतहु पात्रक संवाद स्वाभाविक झिझकसँ बेसी पद्धतिक आदर्श-वाक्य लगैत अछि। दृश्यसभ कम अवधि पबैत छथि, जाहिसँ विशेष व्यक्तित्वक दीर्घ मौन, आवेग अथवा गलत निर्णय कम उघड़ैत अछि। तथापि गीता बैंकमे वास्तविक आंशिक रकम पहुँचब, सुगनीक निर्णयक आपूर्ति-लागत आ बहिनक अधूरा भुगतान एहि सूत्रबद्धतामे प्रतिरोध पैदा करैत अछि। अध्यायक मौलिक फल ई जे पाठक जानि लैत अछि—कटल वाक्य सुधरि सकैत अछि, मुदा कटलगेल श्रमक समय स्वतः नहि घुरैत।

अध्याय १६६ — बुनकरक बाजार

खटालक भीजल पाट : वस्तु, गन्ध आ बजारक दृश्य

भादवक भोरमे सुकठीक खटालक काँच पाटीपर ओस नहि, माछक टोकरीक पानि अछि। विनोद केवर्त फिसलैत बाट सुरक्षित करए पाटा उठबैत छथि; तखन यूसुफ अंसारी लाल आ पीयर किनारवला दू थान संग धूसर नमूना अनैत छथि। उद्घाटनमे अलग गन्ध, रंग, जल आ काठक स्पर्शक घनत्व अछि। पछिला अध्यायक गीता कोरीक आशङ्काक एतय पहिल वाक्यसँ सक्रिय भऽ जाइत अछि : वस्तु बेचबाक पहिने श्रम-खाता खोलब आवश्यक। बाजार दृश्य नाटकीय मंच थिक, मुदा केवल पृष्ठभूमि नहि; भीजल कपड़ा, धँसल पाट, अवरुद्ध निकास आ अटकल ग्राहक व्यवहारक दिशा बदलैत छथि।

यूसुफक पूर्वानुभव छोट पूर्वदीप्तिक रूपमे सम्मिलित अछि। अस्पतालक नामपर गलत स्वीकृतिक पट्टीवाला अज्ञात खेप आ हुनकर वैध मालक बीच भेद त पहिने दर्ज भेल, मुदा देरीक कारण सूत रुकल, बेटाक प्रशिक्षण शुल्कक तारीख निकलल, बजारमे प्रतिष्ठा घायल भेल। इएह कारण वैध स्वामित्वक सुधारपत्र कथामे सजावटी सम्मानपत्र नहि, पुनः कारोबारक नाजुक अवसर अछि। कथावाचक ई सेहो नहि कहैत जे अज्ञात खेपक स्रोत जाँच पूरा भऽ गेल; अध्यायक अन्तमे समिति केवल यूसुफक वैध थानपर सामूहिक दोषारोपण हटबैत अछि।

छह खाँचा आ सातम रोकल रकम : श्रमक बहु-अभिकर्तृत्व

पार्वती ताँतीक ‘लाभ आधा-आधा’ पर ठहरब अध्यायक पहिल निर्णायक मोड़ अछि। हुनकर घरक दोसर दू स्त्रीक तानी-बान्हन श्रम, करघाक मालिकाना, सूत, रङ्ग, बिगड़ल कपड़ाक क्षति आ बिक्री सभ यूसुफक सहजरूपेँ कहल ‘आधा’मे समा नहि सकैत। पवित्रा पटवा अपन गँथाइक दर बुनाइक दरमे मिलबाक प्रतिवाद करैत छथि। गीता छह खाँचा—सूत, रङ्ग, बुनाइ, गँथाइ, ढुलाई, बिक्री—आ सातम ‘रोकल पैसा’ लिखबैत छथि। मुदा ओ रोकल पुरान कम्पनीक रकम नब ग्राहकपर नहि थोपैत छथि। एहिमे कथाक संगठनक प्रमुख सौन्दर्य अछि : संयुक्त वस्तु तैयार करब आ एक व्यक्ति दोसरक श्रम-इतिहास अपन कऽ लेब, ई दू भिन्न क्रिया छथि।

सकीना रंगरेज अपन पुरान खराब रंगाइक उत्तरदायित्व स्वीकारबाक लेल तैयार छथि, मुदा एकहि आधारपर दोसर खेपक ग्राहक-उधारी मेटए नहि दैत छथि। रंग-नमूनाक जाँच, गोपनीय ग्राहकक पहिचान आ खटालक नालीमे बचे रंग छोड़बाक प्रश्न मिलि रंगाइक व्यवसायकेँ मात्र कौशल-वर्णनसँ अलग करैत अछि। अही प्रकार उषा रामक नमूना-डिजाइनपर अनुबन्धमे एक खेपक दाम आ भविष्यक सभ उत्पादनक अधिकार अलग कएल जाइत अछि। कारीगरी हुनकर पुश्तैनी पेशागत पहिचानक बन्धन नहि बनैत; प्रशिक्षण लेल पहिल अग्रिमक सम्भावना सेहो खुलैत अछि। तीनू कारीगर—पार्वती, पवित्रा, उषा—मिलि नव वस्तु तैयार करबाक केवल परीक्षण-सहमति करैत छथि, बेचल वस्तुक सफलता एखन कथामे नहि घटल।

छोट व्यवसायसभक पृथक कथा आ मोलभावक असमान समय

विनोदक माछ-बजारमे थोक-गाड़ी द्वारा छाँह कब्जाक पुरान कथा, फूलमतीक जालक पूँजी-वितरण, हीराक मानकीकृत जलमाप, चन्द्रिकाक मखान चुनाइ-फोड़ाइक श्रम आ गीत-प्रस्तुतिक मजदूरी—ई दृश्यसभ एके बजारक भीतर भिन्न उत्पादनकाल रचैत अछि। पहिल छोट बिक्रीमे अलग प्राप्ति भेटैत अछि, मुदा पुरान ठेका-वसूली शेष अछि; गीतमे भोजन देब प्रस्तुति-श्रमक अनिवार्य पारिश्रमिक नहि मानल जाइत। बिन्देश्वरी साहुक घानी बेचबाक प्रसंग एक भिन्न समयधारा अछि—पूर्वजक तख्ती आ बाट सुरक्षित रखिकऽ विक्रेय मशीनक सूची बनैत अछि; घटल दामपर बिक्री आ पुरान मजदूरी-ऋण भुगतानक दिशा तय होइत अछि।

देवकी पालक पशुबाट बचाबए तम्बू हटेबाक अस्थायी निर्णय आ किरण राउतक पुरान ‘अधवारा’ शब्दकेँ वर्तमान जलनिकासक नक्शा नहि मानबाक प्रतिवाद एहि बहुध्वनितामे भूगोलक प्रसंग अनैत अछि। ई नाम कथा-संसारक पुरान कागदमे रहैत अछि; ओकरा आधुनिक स्थानक स्वतः नक्शा बनाकऽ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। बजारक समिति अक्सर तुरन्त निर्णय चाहैत अछि, मुदा ग्राहकक परीक्षण, किसानक मौसम, कम्पनीक बकाया आ रंगक सूखबाक अवधि फरक-फरक समय माँगैत अछि। एहन विषम लयकेँ एक दिनक हाटमे समेटब कथनक उपलब्धि आ जोखिम दुनू अछि।

गेल नहि छल दोष : विलम्ब आ वास्तविक भुगतानक परीक्षण

सजाओल थान भीजल भेटला पर सकीना तुरन्त दोष नहि मानैत छथि; नमूना सुखए आ परीक्षणक समय माँगैत छथि। यूसुफ बेचनिहारसँ एक दिनक मोहलत लैत छथि, बदलामे व्यापारी अग्रिम घटा दैत अछि। ई क्षण अध्यायक नैतिक जटिलता वाढबैत अछि : सतर्क निर्णयक आर्थिक मूल्य वास्तविक अछि, केवल बड़बोलापन नहि। मेलेमे नव साझेदारीक मसौदामे अलग अग्रिम, क्षतिक कारण सिद्ध भेला पछाति कटौती, डिजाइनक अनुमति आ भुगतान देरीक दावा राखल जाइत अछि। मुदा मसौदा बनला मात्रसँ धन प्राप्त नहि। पार्वतीक आपत्तिपछाति यूसुफक एकल बैंक खाताक बदला चारि अलग भुगतान-मार्ग बनैत अछि, आ पहिल बिक्रीक पाछाँ चारि भुगतान-सन्देश पहुँचैत अछि। ई सम्पन्न घटना बाकी सम्भावित खेपक अनुमानसँ अलग देखाएल अछि।

पिता-पुत्रक अन्तःकथा : दुई ध्वनिक संग-सहवास

मध्यभागमे यूसुफक बेटा तार-मरम्मतिक औजार-पेटी लऽ अबैत अछि। परम्परागत करघा सीखब आ नव मरम्मतिक पेशा चुनबक बीच तनाव वाणिज्यिक साझेदारीसँ भिन्न, घरेलू कथा-रेखा अछि। पिता पहिने ‘आ करघा?’ पुछैत छथि, बेटा कहैत अछि जे सीखब तँ अपन इच्छासँ। कथावाचक क्षणभरि पिता केँ स्मृतिमे लऽ जाइत छथि : करघाक पहिल ठकठक आ गलत आरोपक दिन बेटाक दफ्तर-दौड़। साँझ बेटा अपन पहिल कमाइक लिफाफा दैत अछि; यूसुफ ओकरा फेर बेटाक हाथमे राखि दैत छथि। ‘करघाक ठकठक’ आ ‘तारक टुनटुन’क युग्म नब पीढ़ीक स्वतंत्रताकेँ ध्वनिक स्तरपर रचैत अछि।

एहि अध्यायक शिल्पगत सीमा ई जे प्रत्येक व्यवसायक प्रतिवाद लगभग एके तरहेँ ‘अलग रसीद’, ‘अलग जिम्मेवारी’ आ ‘अधूरा निर्णय’क सूत्रपर लौटकऽ अबैत अछि। बहुते पात्र एक दिनमे असाधारण स्पष्टतासँ अपन नीति कहि सकैत छथि; भीड़मे वास्तविक अनसुनी, असमञ्जस आ हिंसक मोलभाव कम ठहरैत अछि। तथापि भीजल रङ्गक नमूना, कम भेल अग्रिम, यूसुफक विलम्बित कमाइ आ बेटाक अलग आवाज सूत्रकेँ एकदम सपाट होमए नहि दैत। अध्याय साझेदारीक प्रशस्ति नहि, साझेदारीक अन्तर्निहित देयक सूक्ष्म मानचित्र बनबामे अधिक सफल अछि।

अध्याय १६७ — बिना सम्राटक नाप

दू नक्शाक टकराव : स्थिर हरियर आ मौसमी बहुरङ

भादवक अन्तिम सप्ताहमे पंचायत-घरक बरामदापर दू नक्शा एक दोसराक सोझाँ तानल अछि। जिलाक पहिल नक्शापर चौर, मखानिया डबरा आ बालूघाट एक हरियर पट्टी बनैत अछि; ताराक दोसर नापमे जलक रंग ऋतु संग बदलैत अछि आ पशुक बाट लेल उज्जर रेखा अछि। ललित विश्वकर्मा पहिलहि क्षण झुकल काठक पट्टापर डोरी तानि भौतिक त्रुटि देखबैत छथि। ‘सरकारी नक्शा सीधा’ कहनिहार कर्मचारीक सोझाँ देवकी अपन ऊनक गट्ठर ‘रिक्त सार्वजनिक भूमि’ लिखल जगहपर रखि दैत छथि। दृश्य प्रत्यक्ष टकराव रचैत अछि : अभिलेखक वर्गीकरण आ प्रतिदिनक उपयोग एके धरतीक दू अलग कथन छथि।

शीर्षकक ‘सम्राट’ कोनो नब ऐतिहासिक पात्रक प्रवेश नहि, नापपर अन्तिम एकल अधिकारक दावाक रूपक बनैत अछि। रमा साफ कहैत छथि जे ग्रामसभा मालिकाना बाँटबाक अन्तिम अदालत नहि; एहि दिन मौसमी उपयोग, असहमति आ पुनर्मापक तिथि निर्धारित होएत। शीर्षकक अर्थ कथानकमे तखन गहिर होइत अछि जखन सहमत रेखाक बगलमे असहमत व्यक्तिक नाम सेहो लिखल जाइत अछि। नक्शा सत्यक एकल विजेताक विजयपत्र नहि, अनेक अपूर्ण ज्ञान-विवरणक सह-अस्तित्वक साधन बनए लागैत अछि।

जल, बीहन आ श्रम : तीन ठामक अलग कथात्मक समय

मखानिया डबरामे फूलमती तियरक बीहन, नन्दिनी भंडारीक दू जल-पात्र आ हीरा सहनीक मापछड़ी कथाकेँ प्रयोगात्मक दृश्य बनबैत अछि। पहिल पात्र भीतरक, दोसर बाहरक पानिक; गादक कारण छड़ीक नाप एके ठाम बदलि सकैत अछि। तारा वर्तमान जलरेखा आ बरखाक सम्भावित विस्तार अलग बनबैत छथि। डबराक ठेकेदार

चुनाइ, सुखाइ आ फोड़ाइक घण्टाकेँ बीहनक दाममे मिलबय चाहैत अछि; श्रमिक स्त्रीसभ अलग श्रमक नाम माँगैत छथि। सत्तो देवीक प्रसंगमे बीहनक असल कर्ज आ फोड़ाइक मजदूरीक एकतरफा कटौती पृथक कएल जाइत अछि—अन्तिम हिसाब शेष रहलोपर अगिला खेपमे कटौती रोकल जाइत अछि।

पछियारी चौरक कथा मौसम-भेद पर चलैत अछि : बरखामे माछ आ पशुचरण, पानि उतरला पर खेती। सुशीलाक धान, देवकीक बकरी आ एक मछुआर किशोरीक जाल एक-दोसराकेँ सम्पूर्ण रूपसँ विस्थापित नहि करए, ताहि लेल समय-खण्ड निर्धारित होइत अछि। देवकी अपन ऊन-दोकानक चबूतरा दू हाथ छोट करैत छथि—ई त्यागक केवल महिमामण्डन नहि, गणनीय व्यापारिक घाटा अछि। फूलो चौरसियाक पान-बाड़ी लेल निकासक दिशा बदलल जाइत अछि; पुरान दू क्यारीक आंशिक भरपाई भेटैत अछि, मुदा रोगक करिया दागक सम्पूर्ण कारण निकासपर आरोपित नहि कएल जाइत। नन्दिनी जलमापन मानैत छथि, जमीन बेचबाक निर्णयपर सही नहि करैत।

बालूघाट तेसर स्थल अछि : सूरज गंगोताक नदीमे कटलगेल पुरान खेत नक्शाक नब बालूसँ नहि घुरैत; अदिति पुरान आ नव सर्वेक्षणक ऋतु-तिथि अलग करबैत छथि। ललितक फर्जी बढ़ाओल बिल रद्द होइत अछि, मुदा वैध मजदूरी देबाक आदेश सात दिनक भीतर जारी करबाक लिखित आश्वासन मात्र अछि। अमृता चौहानक नोनथराक स्मृति-पट्टिका भूमि-दावाक निस्तारण नहि; गोमती बेलदारक आधुनिक ढुलाई-मजदूरी हुनकर पृथक दावा अछि। एक माटि, अनेक समय आ भिन्न अधिकार : कथाक तीन स्थलक विन्यास एहि बातकेँ घटनासँ सिद्ध करैत अछि।

पुरान जलनाम : स्मृति आ वर्तमान स्थलक कथनभेद

सुगनी सदायक कोसी–कोसिकाक पारिवारिक बाढ़िलेखा, किरण आ सुशीलाक ‘बूढ़ी गंडक’ शब्दवला अलग पुरान बहीसभ आधुनिक नदी-रेखा बनबयक लेल पर्याप्त नहि ठहरैत अछि। एक नब नक्शानवीस समान शब्दसँ मिलान करए चाहैत अछि, मुदा सुशीला पहिने अपन खेतक वर्तमान माप देखए चाहैत छथि। तारा मूल वर्तनी बचबैत भौगोलिक जोड़ हटबैत छथि। कथा-शिल्पमे ई महत्त्वपूर्ण विराम अछि : स्मृतिक आवृत्ति कथाक अन्तःकाल बतबैत अछि, मुदा वर्तमान घटनाक स्थल-निर्धारणक पूर्ण स्थानापन्न नहि बनैत। कथे भीतर मौजूद भिन्न काल-नक्शा एक-दोसरासँ विमर्श करैत अछि, विलीन नहि होइत।

दृश्यसँ निर्णय धरि : कथनक गतिक असमानता

भोरक पंचायत, डबराक नापचौकी, चौरक पशुबाट आ दुपहरिक बालूघाट—स्थानान्तरण एक दिनक बैठककेँ विस्तृत सर्वेक्षणक रूप दैत अछि। तखतापर रंगीन रेखासभक क्रमसम्पादन पाठकक ध्यान बारंबार वस्तुक सूक्ष्म अन्तर दिस घुमबैत अछि। अन्तिम संयुक्त बैठकीमे तीन मौसमी नक्शा बनैत अछि : बरखा, पानि उतरबाक समय, जोखिम आ अस्थायी रोक। ई बहुरेखीय स्थानक रचना अछि, मुदा कालगत सभ समस्या दूर करब एखन सम्भव नहि। रमा एकर अन्तिम पद लिखबैत छथि—जहाँ निर्णय अधूरा, ओतय अधूरा घोषित करू। फूलोक भरपाई आ सूरजक कटान-दावा समान स्तरीय ‘सफलता’ नहि।

अन्तिम दू पाठांश अध्यायक रचनात्मक दिशा बदलि दैत अछि। मंजूर नक्शासभ एकटा पैघ डिजिटल चित्र बनि मुख्य दफ्तर चलि जाइत अछि; देवकीक हाथमे मोबाइल नहि, अमृताकेँ व्यक्तिगत प्रति चाही, सूरजकेँ छोट अक्षर

पढ़बाक बाधा अछि। ‘ऑनलाइन’ उत्तरपर देवकीक ‘हमर बकरी ऑनलाइन बाटे नहि चलत’ हँसी राजनीतिक व्यंग्यक संग श्रवणीय लोकस्वर बनैत अछि। रमा कागजी प्रति, पढ़ि सुनाबए योग्य पाठ आ संशोधनक अधिकारक प्रस्ताव राखैत छथि, मुदा एखन वितरण नहि भेल। कथाक अन्त ठीक ओहि असम्पन्न क्रियापर रोपल अछि जे अगिला अध्याय १६८ क आरम्भक कारण बनत।

रूपकक उपलब्धि आ विस्तारक कठिनाइ

दूटा नक्शाक टकराव, डोरीक घिसट, बालूक हाथसँ खसब, खाली कागजपर ‘लाभार्थी’ लिखल रहब—ई सभ ठोस दृश्य अछि; एहि कारण शीर्षकक बड़का ‘सम्राट’ रूपक जीवन-सापेक्ष बनैत अछि। जँ शीर्षककेँ सर्वशक्तिमान प्रशासनपर सहज विजयक घोषणा मानल जाए तँ नन्दिनीक असहमति, सूरजक हानि, ललितक अटकल धन आ दफ्तरमे बन्द डिजिटल प्रतिक शेष संकट छूटि जायत। शिल्पक जोखिम ई जे प्रत्येक स्थलमे सही प्रक्रिया देखबएवला पात्र फेर प्रकट होइत अछि, जाहिसँ अनायास आवेगक जगह निर्देशात्मक संवाद बढ़ैत अछि। उपलब्धि ई जे कथक सही प्रक्रियाकेँ तात्कालिक सुखान्त नहि बनबैत : रेखा खिंचब आ लोकक हाथधरि ओकर उपयोग पहुँचब कथानकक दू पृथक घटना छथि।

अध्याय १६८ — फेर लौटत प्रति

भादवसँ अगहन : दस्तावेजक यात्रा आ कालगत अन्तराल

पिछिला अध्यायक भादवक अन्तिम सप्ताहसँ कथा अगहनक भोरमे पहुँचैत अछि। ई स्पष्ट कालान्तर महत्त्वपूर्ण अछि : १६७ मे केवल मुख्य दफ्तर पहुँचल डिजिटल नक्शा, १६८ मे काठक बाकसमे मोड़ल उपयोगयोग्य कागजी प्रति बनि गाम घुरैत अछि। एहि दू अध्यायक बीच प्रशासनिक निर्माण, छपाइ आ पहुँचक बितल समयक विस्तृत दैनिक वृत्तान्त नहि, परिणामस्वरूप प्राप्त बाकस देखाओल गेल अछि। बाकसक तलमे सूतसँ बन्हल पुर्जा, नील स्याहीक रेखा आ ककरा कतेक पृष्ठ भेटत, से सभ कथावस्तुक भाग अछि। सूरज गंगोताक ‘कागद घुरा कऽ की भेटत?’ पहिल नाटकीय प्रश्न अछि; ताराक उत्तर धरती लौटएबाक असमर्थता स्वीकारैत क्षतिक लुप्त नहि होएबाक अन्तर बुझबैत अछि।

रमा मूल कार्यालयमे रहबाक निर्णय नहि तोड़ैत छथि; रुहानी प्रतिक क्रमाङ्क, तिथि, संशोधन-इतिहास आ निजी नामक सीमित प्रसार ठहरबैत छथि। एहि ढंगसँ ‘प्रति’ मात्र प्रतिलिपि नहि, पाठक हाथमे अधिकारपूर्वक पहुँचल संशोधनयोग्य साधन बनैत अछि। चन्द्रिकाक गरम पानिक भाप आ गोमतीक छाजन सँ नक्शा बचाबयक क्रिया एक सूक्ष्म उलटब अछि : जतय सरकारी दस्तावेज प्रभुत्वक उपकरण बुझाइत छल, ओतय ओकरा सुरक्षित रखब स्वयं मजदूरसभक श्रम बनि गेल।

दान, फसल आ बसावट : प्राप्त प्रति सँ बदलैत निर्णय

सुधा राय स्कूल लेल जमीन दानक घोषणा करए तत्पर छथि, मुदा किरायेदारसभक दैनिक आवागमन पहिल नक्शामे अदृश्य अछि। किरायेदार स्त्रीक बच्चा, वृद्धक कम सुनबाक कठिनाइ आ नतिनीक बात दोहराएब दृश्यकेँ

नाम-पट्टिकाक उत्सवसँ हटाकऽ रास्ताक वास्तविक जीवनपर केन्द्रित करैत अछि। दान वापस नहि लेल गेल, ओकर पूर्वशर्त बदलल : सुरक्षित वैकल्पिक बाट जाँचना, किरायेदारक पृथक सहमति आ तकर बाद सीमांकन। तैयार धन्यवाद-पत्र शिक्षकक थैलीमे लौटब अनुष्ठानक स्थगनक सटीक दृश्य अछि।

रमेश कुशवाहाक तीन लौकी नक्शाक नीला निकास-चिह्न लग राखल जाइत अछि। ई वस्तु पाठककेँ कागजक रंग आ फसलक नाजुक देहक असमानता देखबैत अछि। रमेशक पत्नी खेतीक क्षति आ दोबारा रोपबाक मजदूरी अलग पढ़बैत छथि; सीमित समयक निकास-परीक्षण आ मुआवजाक प्रक्रिया लिखित होइत अछि, मुदा रकम एखन जमा नहि अछि। फूलो चौरसियाक ‘खिरोइ’ लिखल पुरान परिवार-पत्रकेँ आजुक नाला-रेखाक स्वतः प्रमाण नहि मानल जाइत। एहि कारण रमेशक नालाक लाभ फूलोक पान-बाड़ीपर सम्भावित क्षतिक स्वतः खण्डन नहि करैत; अगिला स्थल-जाँच आवश्यक रहैत अछि।

बदरी नोनफरक अस्थायी बसावटमे पानीक कम धार, गहिर गड़हा आ रातिक रोशनीक अभाव आधिकारिक ‘पुनर्वास उपलब्ध’ पाँतिक विपरीत अनुभव अछि। पत्नी अपन खाली घैलसँ वास्तविक दूरिक हिसाब खोलैत छथि; दू भोरुक आ एक साँझक चक्कर कागजमे चढ़ैत अछि। अस्थायी निवास स्वीकारब आ स्थायी घर छोड़बाक सहमति देब अलग ठहरैत अछि। मुदा एहि प्रतिवादक मूल्य अनुदानक त्वरित किस्त रोकब आ मरम्मतिक सामानमे देरि होएब थिक। कथावाचक पात्रकेँ केवल जीतनिहार नायिका नहि बनबैत, असहमत निर्णयक थाकल परिणाम सेहो देखबैत अछि।

दू ऋण आ छोट दोकान : व्यक्तिगत कथाक अवकाश

रतन भुइयाँक कथामे एक पुरान दिन-गणनाक गलती, वास्तविक औजार-उधारी आ अस्वीकारल हस्ताक्षरवाला कथित कर्ज तीन भिन्न अंश छथि। रतन अपन पहिनुक गलती स्वीकारैत छथि; ताहिसँ अन्य झूठ दावा स्वतः सही नहि होइत। विवादित ऋणक हिस्सा तत्काल वसूलीसँ हटैत अछि, सही छोट उधारी बचैत अछि, रोकल मजदूरी एखन बैंक नहि पहुँचैत। संकेत कम पढ़निहारक लेल पाँति-पाँतिक बगलमे अर्थसूचक चिह्न बनबैत अछि, मुदा रतनक स्पष्ट अनुमतिक बिना फोटो नहि खींचबाक आग्रह सेहो अछि। पढ़ब, बुझब आ अपन प्रति पर नियंत्रण प्राप्त करब एहि दृश्यकेँ घटनात्मक परिणाम दैत अछि।

बीना कलारक पैतृक हिस्साक आधा स्वीकृति आ घरक कोठरीक शेष विवादक बीच हुनकर लघु दोकान खुलैत अछि। घरक पूर्ण सम्पत्ति-समझौता नहि भेलोपर ओ स्वतंत्र व्यापारक खाता आरम्भ करैत छथि। पाँच सामानक सीमित जगह, हटाओल दू शीशी आ अपन नाम लिखल काठक पट्टा कथनक अनुपात बदलैत अछि : सामूहिक बाकस-बँटबाराक विराट दृश्यसँ पाठक एक छोट दुकानक वास्तविक परिमित स्वायत्तता धरि पहुँचैत छथि। एहि अन्तरकेँ ‘समस्त अधिकार प्राप्ति’ कहब उपन्यासक वर्तमान स्थिति सँ बेसी दावा हएत।

पठनीयता, श्रव्यता आ दानक नियन्त्रण : पाठकक निर्माण

एक दल सभक नाम, जाति आ पता सहित खुलल पोस्टर छपय चाहैत अछि; रुहानी सार्वजनिक कारण आ निजी हिंसा-आश्रयक जानकारीक बीच स्पष्ट भेद रखैत छथि। सार्वजनिक उपयोग-नक्शा आ सम्बन्धित व्यक्तिक निज विस्तृत प्रति अलग बनैत अछि। एक वृद्ध स्त्री नतिनीकेँ मौखिक अनुमति दैत छथि; बात फेर सुनाओल, पुष्टि

कएल, तखन प्रति देल गेल। नतिनी कागद कब्जा नहि करैत, दादीक निर्देशपर सम्हारैत अछि। एहि दृश्यसभमे पाठकक अर्थ केवल पढ़ि सकनिहार शिक्षित व्यक्ति नहि; सुननिहार, मौखिक सहमति देनिहार आ कमजोर दृष्टिवाला सेहो अछि।

रघुक खर्च सम्बन्धी प्रश्न समाजक 'मुफ्त प्रति'क पाछाँ दबाओल मुद्रण, अनुवाद, यात्रा आ श्रमक गणना खोलैत अछि। एक दानी प्रति खोलबाक चाभी अपने हाथमे रखए चाहैत छथि; सरिता एहन दानकेँ नव बन्द गोदामक सम्भावना कहैत छथि। खुला खाताक पाठमे चन्द्रिका, गोमती, तारा आ गीता अपन सार्वजनिक भाग पढ़ैत छथि, निजी व्यापारक समस्त खाता नहि। किशोरीसभ संशोधनक कार्यालय आ वाणी द्वारा जानकारी देबाक विकल्प माँगैत छथि। कागज–आवाज–मोट अक्षरक विविध प्रति स्वीकारल जाइत अछि, कारण मोबाइल चार्ज नहि रहबाक ग्रामीण अनुभव निर्णायक अछि। ई अध्याय वस्तुतः अभिलेखक पाठकक बहुरूपी निर्माणक कथा अछि।

सरिताक मौन आ वृद्धाक किवाड़ : समापनक भीतर नव प्रवेश

अन्तिम वितरणमे दानक तख्ती खाली, रमेशक मुआवजा अपैत, बदरीक असहमति कायम, रतनक सही मजदूरी अटकल आ बीनाक छोट दोकान खुलल रहैत अछि। एहि असमान फलसभकेँ कथक एक झूठ समापनक भीतर नहि राखैत। सरिता नक्शाक रिक्त कोनामे नैराक पुरान खाली घर याद करैत छथि; ओ मृत बेटीकेँ प्रतिक भीतर 'उपस्थित' घोषित नहि करैत। कबीरक प्रश्न 'जे नहि घुरल, ओकर की?' पर सरिताक उत्तर नफेरबाक शोक आ घुराए जा सकएवला देयक बीच अन्तर खींचैत अछि। ई करुण विराम सम्पूर्ण अध्यायक नैतिक ऊर्जा अनुभवे रूपेँ केन्द्रित करैत अछि।

तेसर अन्तिम पाठांशमे काँपैत हाथवाली वृद्ध किरायेदार पानि माँगैत छथि, घरक भीतरसँ बन्द किवाड़क चाभीकेँ प्रश्न बनबैत छथि। रमा पहिने गिलास भरि दैत छथि, तखन अगिला बैठकीक पन्नामे वृद्धक देखभाल, स्वीकृति आ प्रतिक उपयोगक प्रश्न लिखैत छथि। समापनमे दानक अपूर्ण घोषणा आ बदरीक पत्नी पर घैलक भार एकसंग देखाएत अछि। एहि दृश्य-कटावसँ पर्व समाप्त होइत अछि, मुदा कथाक केन्द्र कागजी उपलब्धिसँ वृद्ध देह, घरेलू निर्भरता आ देखभालक अगिला प्रसंग दिस सरकैत अछि।

शिल्पक जोखिम एखनओ अछि : प्रत्येक दावे लेल विभाजित पञ्जी बनबाक पुनरावृत्ति पात्रक स्वतंत्र भाषिक स्वरकेँ कतहु सूत्रधर्मी बनबैत अछि। तथापि वृद्धाक पहिने पानि माँगब, सरिताक नैराक नामपर मौन आ बदरीक परिवारक प्रतिकूल तात्कालिक परिणाम एहि अध्यायमे प्रक्रियाक एकरसतालाई तोड़ैत अछि। विशेष उपलब्धि 'अभिलेख घर पहुँचल' जेकाँ सफलताक वाक्यकेँ 'घरक किवाड़ के खोलत?'क अनिर्णीत प्रश्नमे बदलि देब अछि।

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६५–१६८ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

चारि अध्यायक कारण-सम्बन्ध : वाक्य सँ उपयोगयोग्य प्रति

अध्याय १६४ क अधूरा ‘खाता-समापन’ वाक्य १६५ मे पूरा पाठक पुनर्स्थापनक द्वारा संशोधित होइत अछि; श्रमक भुगतान फेरो अधूरा रहैत अछि। १६५ क अन्तिम सूत-धागा प्रश्न १६६ मे पार्वती–यूसुफक नब साझेदारीक खाता बनैत अछि। १६६ क अस्थायी पशुबाट, जलनिकास आ सामूहिक बिक्रीक स्थलक प्रश्न १६७ क नक्शा-विवादमे विस्तार पबैत अछि। १६७ क डिजिटल नक्शा कार्यालयमे पहुँचल, मुदा लोकधरि प्रति नहि घुरल; इएह १६८ क काठक बाकसक उद्घाटनक पूर्वशर्त थिक। चारू अध्यायक सम्बन्ध केवल विषयक समानता नहि : कटल वाक्य → पृथक श्रम-लेखा → बदलैत स्थानक संयुक्त नाप → प्रतिक वास्तविक वितरण, ई घटनावली पाठकक अपेक्षाकेँ क्रमसँ पुनर्निर्मित करैत अछि।

काल-व्यवस्था : लगातार दिन, मौसमक विराम आ स्मृतिप्रवेश

१६५ क कथा भोरसँ साँझक एक कार्यदिवस, १६६ क भादवक हाटे भोरसँ साँझ, १६७ क भादवक अन्तिम सप्ताहमे एक सर्वेक्षण-दिनक रूपमे रचल अछि। १६८ अगहनमे छलाँग लगबैत अछि; भादवक मानचित्रक ‘पहिल उपयोगयोग्य प्रति’ बनबाक बीचक अवधि प्रत्यक्ष दृश्य नहि, पश्चात् परिणामक माध्यमसँ बताओल जाइत अछि। यूसुफक पुरान आरोपक स्मृति, घानीक पूर्वजक वस्तु, सुगनीक बाढ़ि-बही आ सरिताक नैरा-स्मरण भिन्न अवधि आ अनन्तरता रचैत अछि। ई सभकेँ एके कालगणनाक ‘फ्लैशबैक’ कहब पर्याप्त नहि : किछु स्पष्ट पात्र-स्मृति छथि, किछु वस्तुमे बचल अभिलेख, किछु कथावाचकक सङ्क्षिप्त अतीत-विवरण।

दृष्टिकेन्द्र, संवादिता आ वस्तुक वैभिन्न्य

पद्मा पूरा पत्र पढ़ैत छथि, पार्वती श्रमक अदृश्य घंटा देखबैत छथि, देवकी ‘रिक्त भूमि’मे पशुक बाट देखैत छथि, रमा वितरित प्रतिक वास्तविक उपयोगपर प्रश्न उठबैत छथि। एहि केंद्र-परिवर्तनसँ कियो एक व्यक्ति सर्वज्ञ समाधानदाता नहि रहैत। तथापि कथावाचक अनेक पात्रक वाणीकेँ एक-जकाँ सत्यापित अधिकार–शेष दावा–अलग प्रति केर स्पष्ट रचनामे ढालि दैत छथि; ई कृतिक बहुस्वरताक एक कलात्मक सीमा अछि। नसीमक सुई, सकीनाक भीजल रङ्ग, तारा–ललितक डोरी, रमेशक लौकी, बदरीक पत्नीकेँ चाही पानिक घैल आ रमा द्वारा खोलल काठक बाकस ओकर विरोधमे ठोस देहधर्मिता अनैत अछि।

सम्पन्न घटना आ स्थगित निर्णयक लेखा

१६५ मे उर्मिलाक श्रमदेयक अर्थ सार्वजनिक रूपसँ सुधरैत अछि, मुदा बकाया नहि चुकैत; गीताक आंशिक बैंक-जमा वास्तविक अछि। १६६ मे पहिल थानक बिक्रीपछाति चारि अलग भुगतान-सन्देश भेटैत अछि, मुदा गलत अस्पताल-पट्टीक स्रोत आ गीताक बाँकी कम्पनी-देय शेष। १६७ मे तीन मौसमी नक्शाक अनुमोदन, आंशिक भरपाई आ पृथक मजदूरीक दू रसीद अछि, मुदा सूरजक खेत, अमृताक जमीन आ ललितक वैध धन एखन नहि भेटल। १६८ मे उपयोगयोग्य प्रति बाँटल जाइत अछि, बदरीक समस्या दर्ज होइत अछि, रतनक झूठ कर्जक

विवादित हिस्सा हटैत अछि आ बीनाक दोकान खुलैत अछि; मुदा मुआवजा, असल बकाया, दानक बाट आ स्थायी घरक संकट जीवित अछि। ओहि अधूरापनकेँ कथानकक असफलता कहि समाप्त नहि कएल जा सकैत; ओ अगिला घटनाक आवश्यकता निर्मित करैत अछि।

अश्वमेधक समग्र गति : घोड़ाक बाटसँ श्रम आ प्रतिक घुरान

पर्वक पहिल चतुष्टय (१५७–१६०) प्राचीन अश्वमेधक घोड़ा, मणिपुरक अर्जुन–बभ्रुवाहनक सम्बन्ध, आधुनिक चलैत शिविर आ सरिताक ज्ञान-श्रमक पुनर्लेखनक संग शुरू होइत अछि। दोसर चतुष्टय (१६१–१६४) सहलेखक-श्रेय, पुरान ग्रन्थक नव भूमिका आ उर्मिलाक मृत्युपछाति बचल देयपर केन्द्रित अछि। अन्तिम चतुष्टय (१६५–१६८) शब्दक सही आशय, बजारक अलग-अलग श्रम, ऋतु-परिवर्तनक मानचित्र आ अधिकार-सहित प्रतिक वापसी देखबैत अछि। ई क्रम विजय-यात्राक एकरे केन्द्रसँ रोजमर्राक अनेक घर धरि केन्द्र-भङ्ग थिक। मुदा प्राचीन राजाश्वमेध आ आधुनिक पंचायतक दृश्य पूर्ण रूपसँ एके समयपर नहि घटैत; हुनकर सम्बन्ध अन्तर्पाठक पुनर्संरचना अछि, शाब्दिक एकरूपता नहि।

पर्व-समापनक आलोचनात्मक निष्कर्ष : अर्थ आ पहुँचक दूरी

एहि बारह अध्यायक प्रभावशाली औपचारिक सूत्र ‘अधिकारक साक्ष्य’सँ ‘अधिकारक उपयोग’ धरि जएबाक क्रम अछि। सही नाम छपबाक बाद पाठकधरि पहुँचेबाक प्रश्न, नाप ठीक भेलाक बाद नक्शाक प्रति देबाक प्रश्न, राहतक खाताक सही आशयपछाति बचल श्रमदेय, आ सामूहिक साझेदारीक बाद अलग मजदूरीक वास्तविक बैंक-जमा—सभ ठाम अन्तिम रूपेँ वस्तु अथवा धनक बाट निर्णायक बनैत अछि। एहि कारण अध्याय १६८ क वृद्धाक ‘घरक किवाड़’ प्रश्न अगिला आश्रमवासिक-पर्वक वृद्धावस्था आ देखभालक कथासँ कथात्मक सेतु बनबैत अछि। एतय अन्तिम निर्णय ई नहि जे व्यवस्था सुधरि गेल; निर्णय ई अछि जे कागद लिखबाक कथा अपन प्राप्तकर्ता, ओकर देह आ ओकर असुविधाक अगिला कथा बिना पूर्ण नहि होइत।

अश्वमेध-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १५७-१६८ क सम्पूर्ण आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पर्वक तीन चतुष्टयक समग्र कथा-विन्यास, समयक रूपान्तरण, प्राचीन–आधुनिक अन्तर्पाठ, पात्र-सम्बन्ध, कागजक परिसंचरण आ उत्तरकाण्डक निरन्तरता विषयक विवेचन ऊपर ‘अश्वमेधक समग्र गति’ आ ‘पर्व-समापनक आलोचनात्मक निष्कर्ष’ उपशीर्षकमे संयुक्त रूपसँ प्रस्तुत अछि। सम्पूर्ण पर्वक मूल्यांकनकेँ आंशिक फलप्राप्ति, अनिर्णीत देय आ बुज़ुर्गक देखभालक नव प्रश्नक एकत्रित पाठक रूपमे पढ़ल जाए।

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १६९ — धृतराष्ट्रक हाथ

पलटल लोटा : आदेशक गतिसँ देहक गतिधरि

आश्रमवासिक-पर्वक पहिल दृश्य हस्तिनापुरक पुरान राजगृहमे एकटा लोटा पलटबासँ आरम्भ होइत अछि। पानि फर्शपर पसरैत अछि, धृतराष्ट्रक हाथ पुरान आज्ञा देबाक मुद्रामे उठैत अछि, मुदा देह ओहि मुद्रा मुताबिक नहि चलैत। कथावाचक “राजसिंहासन छोड़लाक बादो” बचल हाथक गति आ कमि गेल शारीरिक सामर्थ्यकेँ एकहि छोट दृश्यक भीतर एक-दोसराक विरुद्ध राखैत छथि। एतय इतिहासक व्यापक पूर्वकथा समझाएबाक बदला एक क्षणक देहगत विसंगति द्वारा सत्ता-परिवर्तन देखाओल गेल अछि। लोटा, पानि, चौकी आ कोहनी—चारि ठोस वस्तु आरम्भक अर्थ बनबैत अछि; “धृतराष्ट्रक हाथ” शीर्षकक पहिल अर्थ आदेश देनिहार हाथ नहि, सहायता कखन स्वीकार करब से चुननिहार हाथ अछि।

माधव कोहनी पकड़ए बढ़ैत अछि तखन धृतराष्ट्र हाथ हटबैत छथि। “हमरा देहसँ पहिने हमरा पुछू”क बाद ओ कोनो सर्वथा सहायता-अस्वीकार नहि करैत छथि; लोटा उठेबाक आ चौकीक स्थान कहबाक निर्देश दैत छथि, स्पर्शक अनुमति अलग राखैत छथि। ई दोहर कथात्मक मोड़ अछि—पुरान राजा अपन एकतरफा आज्ञाक अभ्यस्त छथि, मुदा एतए सहायताक सीमारेखा पूछल-देहल संवादसँ बनैत अछि। अगिला दृश्ये चौकी बदलावक सूचना नदेबाक प्रसंग एहि छोट क्षणकेँ पसारि दैत अछि : कोठरीक वस्तुक स्थान बदलल जनएबाक अधिकार सेहो वृद्धक जीवनक हिस्सा अछि।

धृतराष्ट्र, विदुर आ श्रमिक स्त्री : एके दृश्यभितर भिन्न अधिकार

युधिष्ठिरक प्रस्तावित विशेष भोजनक सम्मुख धृतराष्ट्र अनाजक मापक प्रश्न उठबैत छथि। दू विधवा रसोइनक देरीसँ भेटैत हिस्साक विवरण कथाकेँ वृद्ध राजाक निजी दुर्बलतासँ श्रमक वितरणदिस मोड़ि दैत अछि। गान्धारीक छोट हस्तक्षेप—रसोइमे काज करनिहार स्त्रीक अन्न वृद्ध देहक दान नहि, ओकर श्रमक हिस्सा अछि—पात्रसभक दृष्टिकेन्द्रण अलग करैत अछि। धृतराष्ट्र माधवक मजदूरीक बात सुनैत छथि, मुदा तत्काल खातामे सुधार भऽ गेल एहन दृश्य नहि घटैत। संजयक लिखल पात आ माधवकेँ अपन हिसाब कहबाक अवसर देब घटनाक वास्तविक सीमा अछि।

विदुरक आगमन प्राचीन राजनीतिक स्मृतिक संक्षिप्त पूर्वदीप्ति खोलैत अछि। धृतराष्ट्र पुत्रमोहक पुरान निर्णयनपर अपन दोषक बोध कहैत छथि; विदुर हुनका तत्काल निष्पाप ठहराएबासँ इनकार करैत छथि, मुदा वृद्ध भेला कारण जीवनक प्रत्येक आनन्द निषिद्ध सेहो नहि करैत। हथेली पकड़ब आ विदुरक धीरे हाथ निकालब एक संवादक दृश्यात्मक अन्त अछि। एहि इशारामे दोषक स्मरण आ निकटताक सीमा दुनू अछि। तदनन्तर वृद्ध रसोइन मापमे कमी बताबए अबैत छथि; ओ क्षमा माँगबाक मंचसज्जाक पात्र नहि, अपन स्वतन्त्र दावा लऽ अएलीह। एहि उपस्थितिसँ पछतावाक राजकीय कथा श्रमिक स्त्रीक रोजक समयसँ कटैत अछि।

एकर आलोचनात्मक महत्त्व ई जे धृतराष्ट्रक आत्मस्वीकारकेँ कथावाचक अन्तिम समाधान नहि मानैत छथि। माधव अपन बच्चाक लेल अन्न आनबाक चिन्तामे अछि; ओ वृद्ध राजाक नीतिवचन सुनि आत्मशुद्धिक समारोह

करबाक लेल नहि बैसल। स्त्री अपन गठरी लऽ निकलि जाइत छथि, राजा-पद स्पर्श नहि करैत छथि। एहि छोट अस्वीकारसभसँ कथाक बहुस्वरताकेँ आधार भेटैत अछि : राजाक अन्तर्मन बदलए लगैत अछि, मुदा ओकरा चारूकातक जीवन स्वयं ओकर परिवर्तनक प्रमाणपत्र बनबाक बाध्य नहि।

प्राचीनसँ आधुनिकक काट : किवाड़, नतिनी आ निमन्त्रण

बारहम पाठांशमे गान्धारीक हाथ धरणासँ पहिने धृतराष्ट्र अनुमति पुछैत छथि; पत्नी उत्तरमे अपन भविष्यक बाट चुनबाक अधिकार सुरक्षित रखैत छथि। ठीक एकर बाद तेरहम पाठांश “सन २०४०क विदेहपुर” लिखि कथा-कालनक स्पष्ट काट लगबैत अछि। ई परिवर्तन पात्रक पुनर्जन्म वा एक घटनेक दू प्रमाण नहि; पाठककेँ एक सवाल अलग समयक अलग परिस्थिति मे जाँचबाक व्यवस्था अछि। प्राचीन चौकीक साटे आधुनिक घरक फुलल किवाड़, राजकीय परिचारकक साटे नतिनी, आ राज्यक अनाजक साटे पंचायतक मरम्मति-पंजी।

वृद्ध किरायेदार स्त्री अपन नतिनीकेँ प्रति पढ़बाक अनुमति दैत छथि, मुदा अपना नामसँ निर्णय देबाक अनुमति नहि। घरमे विभागीय निरीक्षण आ आमन्त्रित अतिथि बीच सीमाक घोषणा, दू स्थानीय साक्षीक शर्त, निजी सन्दूक नहि खोलबाक निश्चय—ई सभ संवाद भौतिक स्थानक नियन्त्रण-संघर्ष बनि जाइत अछि। भीजल किवाड़क निचला पाट मरम्मत होइत अछि, मुदा पूरा चौखट बदलब वा घर छोड़बाक निर्णय नहि होइत। पुरान कील आ छोट काठक टुकड़ा नतिनी व वृद्धाक स्मृतिमे रहैत अछि; कागजक पट्टा बनि नहि जाइत। वस्तुक भौतिक विशेषता एतए अधिकारपर लिखल अमूर्त वाक्यकेँ कथारूप दैत अछि।

छपाइक चमक आ वास्तविक श्रम : नाटकीय प्रलोभनक रचना

छपाइ-कम्पनीक आकर्षक नमूना-पुस्तिका मध्यभागमे नव संघर्ष खोलैत अछि। मोट अक्षर, श्रव्य प्रति आ सुरक्षित डिजिटल भण्डारक प्रस्ताव वास्तविक उपयोगिता राखैत अछि; रतन भुइयाँकेँ मोट अक्षर सचमुच उपयोगी लगैत अछि। तकर नीचाँ लिखल एकमात्र सर्वर, पाँच वर्षक शुल्कनिर्धारण आ निकास-प्रतियुक्त विकल्पक अभाव, पहिल प्रस्तावक अर्थ बदलि दैत अछि। एहि संरचनामे पाठक पहिने उपयोगी वस्तु देखैत अछि, फेर ओकर छिपल निर्भरता। प्रतिनिधिक “सुरक्षा”क कथनकेँ रुहानी आ संकेत अलग अर्थ दैत छथि। तत्काल हस्ताक्षर नहि होएब सम्पन्न घटना अछि; कम्पनीक स्थायी निष्कासन एखन नहि।

किशोरीसभक वाचन-श्रमकेँ “स्वेच्छा-सेवा” लिखब प्रस्ताव स्वयं शिक्षात्मक काजक भीतर वर्गभेद खोलैत अछि। रुहानी एहि निःशुल्क मानल समयकेँ छात्राक पढ़ाइक अवसरक हानिसँ जोड़ैत छथि। संकेत सार्वजनिक रूपसँ अपन बजटक अपूर्णता मानैत अछि। एतए कथा अन्याय चिन्हबाक एकरे विश्वसनीय सूत्र—नाम, भुगतान, सहमति, पहुँच—दोहरबैत अछि; किन्तु एक महत्वपूर्ण घटना सेहो घटैत अछि : सस्ता योजना आब महँग देखाइत अछि, मुदा ओकर मूल्यक वास्तविक सामाजिक स्रोत दृश्य होइत अछि। स्थानीय प्रति, सीमित निजी पहुँच आ वार्षिक समीक्षा पर निर्णय भेल; गरीब परिवार लेल सहयोगक अलग मद प्रस्तावित भेल।

कथनक आयाम, अन्तिम किवाड़ आ आलोचनात्मक सीमा

अध्यायक काल-व्याप्ति प्राचीन भोरसँ राति धरि आ आधुनिक भोरसँ साँझ धरि दू दृश्य-शृंखलामे बँटल अछि। कथावाचक धृतराष्ट्रक मनक क्षणिक रोष, युधिष्ठिरक संकोच, संकेतक भूल आ वृद्धाक सावधानी धरि पहुँचैत छथि; दृष्टिकेन्द्र स्थायी एक व्यक्ति लग नहि रहैत। संवादसभक घनत्व बहुत अधिक अछि, जखनकि पानिक बहब, काठ काटबाक ध्वनि, भीजल वस्त्र आ काँपैत अँगुरी शब्दक गति धीम करैत अछि। ई रूप-विरोध पाठककेँ निर्णयक सिद्धान्तसँ हटाकऽ ओहि सिद्धान्तक रोजक उपयोग पर पठबैत अछि।

अन्तिम दृश्य नब किवाड़ सहज खुलबाक अछि, मुदा वृद्धा अपन चाभी नतिनीकेँ देबासँ पहिने पुछैत छथि जे ओ राति रहब चाहैत अछि की नहि। लोटाक पहिले अनुमति आ चाभीक पहिले प्रश्न—एहि दूनू दृश्यसँ अध्यायक चक्र बन्द होइत अछि; गान्धारीक अगिला यात्राक प्रश्न आगाँ खुलैत अछि। कलात्मक सीमा ई जे लगभग प्रत्येक विवाद अत्यन्त सुसंगत नैतिक संवादमे परिणत होइत अछि; छोट प्रशासनिक निर्णयसभक घनत्व पात्रक असुविधाजनक मौनकेँ कतहु कम अवसर दैत अछि। तदपि वृद्धाक भौतिक घर, माधवक अनचुकल मजदूरी आ कम्पनीय नियन्त्रणक अधूरा खतरा समापनकेँ सहज विजय-घोषणा नहि बनय दैत।

अध्याय १७० — गान्धारीक प्रस्थान

गठरीक गाँठ : विदाइ नहि, निर्णयक आरम्भ

पछिला अध्यायक धृतराष्ट्र–गान्धारी संवादक बाद कथा फेन प्राचीन हस्तिनापुरक भोरमे शुरू होइत अछि। गान्धारी सूखल औषधि, दू साधारण वस्त्र आ पुरान धागावाली गठरीकेँ खोलि फेर बाँधैत छथि। राजमहलक प्रचुर भण्डारक विपरीत यात्रा लेल स्वयं चुनल कम वस्तु कथानकक पहिल दृश्यात्मक प्रतिपक्ष अछि। पुरान धागा ताहि समयपर कोनो रहस्य-संकेत घोषित नहि कएल गेल; ई अपन जीवनक भारक सीमित देहधारी वस्तु बनि टिकैत अछि। धृतराष्ट्र जखन वनमार्गक धूलिक बात करैत छथि, गान्धारी राजगृहमे जमल धूलिक प्रत्युत्तर दैत छथि। ई प्रतिवाद स्थल छोड़बाक निश्चयक लम्ब तैयारीकेँ एक वाक्यमे देखबैत अछि।

गान्धारीक मूल कथन—“हम अहाँक आँखि नहि, अहाँक पत्नी छी”—दाम्पत्यक पुरान एकरूप कथनकेँ चुनौती दैत अछि। ओ धृतराष्ट्रकेँ त्यागब आ राजमहलक दिनचर्या छोड़ब अलग क्रिया कहैत छथि; पति चाहथि तँ अपन कारणसँ संग चलथि। पट्टीक पुरान किनार स्पर्श करैत ओ इहो स्मरण करबैत छथि जे आँखि बान्हबाक एक निर्णय जीवनक सभ आगाँक चयनक अधिकार छीनि नहि सकैत। एहि दृश्यमे महाकाव्यीय चिह्नकेँ कथावाचक स्थिर प्रतीकक रूपमे नहि, पात्रक नब स्व-अर्थनिर्धारणक केन्द्रक रूपमे बरतैत छथि।

सुरक्षाक प्रस्ताव आ यात्राक वास्तविक अवसंरचना

युधिष्ठिरक उद्यान, शान्त निवास आ औषधिक व्यवस्था पक्कड़ रोकबाक अपील आरम्भमे उचित चिन्ताजकाँ सुनाइत अछि। मुदा गान्धारी पूछैत छथि जे निवास चुनबाक प्रश्न हुनका सँ के पुछलक। राजाक भयकेँ खलनायकी नहि बनाओल गेल अछि; ओ स्वयं स्वीकार करैत छथि जे सुरक्षा-चिन्ता हुनकर इच्छा रोकब चाहैत अछि। तकर बाद कथा अधिक महत्त्वपूर्ण ठोस विवरणमे उतरैत अछि—कुन आश्रममे जल-अन्न अछि, ओकर

सहमति भेटल की नहि, वर्षाक बाद पूबक घाट फिसलैत अछि, पछिमक बाट लम्बा मुदा रातिक छाजनवला अछि। एहि वास्तविक स्थान-विश्लेषणसँ स्वतन्त्रता नारा नहि, यात्रा-योग्यता पर विचार बनैत अछि।

विदुरक छोट दृश्य गान्धारीक निर्णयकेँ दोषसँ सम्पूर्ण मुक्त करबाक शॉर्टकट बन्द करैत अछि। वन जा पाप समाप्त नहि; प्रतिदिन दोसर लोकक संग केहन व्यवहार करब, से आगाँक प्रश्न अछि। काठक खिलौनाक टूटल पहिया उठब आ पहिनुक चोटिल घोड़ा-सम्हारनिहार बालकक उपेक्षा याद करब एतय नाटकीय पूर्वदीप्ति अछि : मातृशोकक केन्द्रमे रहितो गान्धारी अपना राजगृहक दोसर बालकक पीड़ा पहिचानैत छथि। ओ खिलौना राजभवनमे छोड़ैत छथि; स्मृतिक अधिकार अपन गठरीमे बन्द नहि करैत।

आश्रित श्रमक अलग स्वर आ दूनू यात्राक सहमति

रसोइक वृद्ध परिचारिकाक तीन दिनक मजदूरीक दावा पिछिला अध्यायसँ एतय अबैत अछि, मुदा रकम एखन नहि प्राप्त भेल अछि। गान्धारी अपन विदाइक भोजक नामपर ककरो देय नहि कटबाक शर्त कहैत छथि; स्त्रीक “आशिष?” प्रश्नक उत्तरमे ओ भुगतानक आवश्यकताकेँ पहिचानैत छथि। माधवक प्रसंग आरो ठोस अछि। गान्धारी पहिने “आज्ञा” नहि, “प्रश्न” कहि सेवा-सहमति माँगैत छथि। माधव अपन बुढ़ि माय, बालक आ देय मजदूरीक कारण पहिल पड़ाव धरि सेवा मानैत अछि, आजीवन नहि। राजा-रानीक यात्रा-गौरवक बीच एहि सीमित सहमति सँ श्रमिकक अपन कालरेखा खुलैत अछि।

धृतराष्ट्र आखिर संग चलबाक निर्णय करैत छथि, मुदा पएरक अक्षमता स्वीकार करैत छथि। गान्धारी अलग-अलग कारणक निर्णय कहैत छथि; सेवा लेल रथ रहि सकैत अछि, विजय-प्रदर्शन लेल नहि। नगरद्वारक तोरण हटेबाक प्रसंग राजकीय विदाइकेँ सार्वजनिक बाटक प्रश्नमे बदलैत अछि। विजय-जयकारक स्थानपर जल लऽ जएबला लोकक नियमित बाट बचाएब प्रधान होइत अछि। युद्धमे पुत्र गमौने दोसर विधवा नाम बतबैत छथि; ओहि नामक सुनाइ मातृशोकक समतुल्यता नहि बनबैत। राजपरिवारक व्यापक वेदनाक बीच जनसाधारणक बेगर विलयन आवाज उपन्यासक महत्त्वपूर्ण भिन्नता अछि।

सन २०४०क बस : अनुकृति नहि, अन्तरपाठीय रूपान्तरण

सोलहम पाठांश “सन २०४०क विदेहपुर” लिखि प्राचीन यात्रा काटि आधुनिक वृद्ध किरायेदारक घर पर आबैत अछि। किवाड़क नव निचला पाट मरम्मत भऽ गेल; आब ओ तीन दिन लेल मायकेक गाम, पुरान पोखरिक बाँध आ अपन माइक माटि-ढोएनिहार स्मृति देखए चाहैत छथि। कथासँ यथार्थक स्तरपर ई संक्रमण विशिष्ट अछि : एक स्त्री राजमहलक शोकक कारण निकलैत छथि, दोसर अपने घरक चाभी राखि परिवारक श्रम-स्मृतिक ठाम जाए चाहैत छथि। दुनू यात्राकेँ एकहि घटना मानब उपन्यासक स्वयं स्थापित दूरीकेँ मेटाएब हएत।

नतिनीक सिलाइक-काज आ बुजुर्गक देखभालक प्रश्न दूटा स्वतन्त्र पात्रक समयक तनाव खोलैत अछि। पंचायत विकल्प, मार्ग, औषधि, पड़ाव, आपात सम्पर्क आ मेजमानक सहमतिसँ योजना बनबैत अछि; यात्रा-निषेध घोषित नहि करैत। फोनपर मेजमान युवती अपन बूढ़ि माय आ बालकक जरूरत कहैत छथि, जाहिसँ वृद्ध अतिथिक अधिकार दोसर परिवारक मुफ्त देखभालक आदेश नहि बनैत। परिचित महिला चालकक मजदूरी स्पष्ट अछि। एहिमे सहायताक वास्तविक सीमा नायिकाक रोमानी स्वतन्त्रतापर सन्तुलन रखैत अछि।

डिजिटल यात्रा-पासक प्रस्तावमे काल्हि अस्वीकारल निजी डेटा-कब्जाक युक्ति फेर अबैत अछि। वृद्धा बस टिकटक लेल पूरा स्वास्थ्य-कथा देबाक कारण पुछैत छथि; सीमित आपात सम्पर्क आ औषधिक कागजी सूची अलग बनैत अछि। सुधाक दानक बैंक-प्राप्ति एहिबेर देखाओल गेल अछि, मुदा दान केवल किवाड़क मरम्मतिमे स्वीकारल जाइत अछि; यात्रा लेल स्वतन्त्र खर्चक निर्णय रहैत अछि। ललितक सरकारी मरम्मति-बिल एखन अनचुकल अछि; वृद्धाक नब किवाड़क मजदूरी चुका देल गेल होएब हुनकर दोसर बकायाकेँ पूरा नहि करैत। ई भेद बिछुरल कथारेखाक स्वतन्त्र परिणाम सुरक्षित रखैत अछि।

बाटक बीच रुकबाक अधिकार : अवधि, समापन आ सीमा

बस-ठामपर नतिनी पायदान चढ़बाक पहिने हाथ देबाक अनुमति पुछैत छथि; गान्धारीक प्राचीन गठरीक समानान्तर वृद्धाक ओढ़नी, सिक्का, औषधिक थैली आ चाभी आधुनिक दृश्यकेँ मूर्त बनबैत अछि। कातक दुकानदार पूरा पता पूछैत अछि, मुदा वृद्धा केवल अगिला पड़ावक नाम कहैत छथि। एकत्र ध्वनि—सब्जीक टोकरा, बाजारक यात्री, बसक धूलि—राजकीय प्रस्थानक तोरणक प्रतिनाद बनैत अछि। अन्तमे यात्रा-अवधि निश्चित सम्पन्न नहि, केवल पहिल पड़ाव धरि आगाँ बढ़ल अछि; कथावाचक थाकल यात्रिणीकेँ अजेय वीराङ्गना नहि बनबैत।

अन्तिम पाठांश स्वयं स्पष्ट कहैत अछि जे राजगृहक गान्धारी आ २०४०क बसयात्रा एके घटनेक दू प्रमाण नहि। एहि कथकीय आत्म-स्पष्टीकरणसँ अन्तर्पाठीय अर्थक अतिरेकि पाठ रोकल जाइत अछि, मुदा शिल्पगत प्रश्न उठैत अछि : दृश्य स्वयं जे भेद रचि चुकल अछि, ओकर अन्तमे कथावाचक द्वारा फेर घोषित करब पाठकक सक्रिय व्याख्याक स्थान घटबैत अछि। एतबे नहि, अनेक पात्र बारंबार चुनबाक अधिकार अत्यन्त सुस्पष्ट शब्दमे कहैत छथि। तथापि पहिल पड़ावमे रुकबाक सम्भावना, नतिनीक सिलाइक आ अनचुकल श्रमिकदेयक कारण ई अध्याय नारा बनि नहि रहैत; खुलल यात्रा अगिला अध्यायक संशोधित योजना लेल जगह छोड़ैत अछि।

अध्याय १७१ — कुन्तीक शेष वचन

थारीक चाउरदाना आ अवशिष्ट कथनक अवकाश

गान्धारीक प्रस्थानक तुरन्त बाद प्राचीन राजप्रासादमे कुन्ती एक सूखल चाउरदाना रहल पीतलका थारी देखैत छथि। सेविका हाथ बढ़बैत अछि, मुदा कुन्ती स्वयं थारी साफ करबाक निर्णय लैत छथि। राजमाताक गरिमासँ असङ्गत मानल घरेलू क्रिया हुनका एहन छोट स्वाधीन समय दैत अछि जाहिमे अनुमति नहि माँगए पड़ैत। अध्याय १६९ क पलटल लोटा, १७० क गठरी आ १७१ क थारी—तीन अलग वस्तु-आरम्भ छथि, जेकर माध्यमसँ महाकाव्यक वृद्ध पात्रसभक विराट इतिहास देहक दैनिक क्रियामे बँटैत अछि। गान्धारीक अनुपस्थिति आ प्रासादक पैघ लगैत ओसारा रिक्त स्थानक सहारे तनाव बढ़बैत अछि।

युधिष्ठिर मायकेँ राजगृहमे अपन भावनात्मक सहारा कहैत छथि। कुन्ती निर्णय दोहरबैत छथि, मुदा पुत्र पहिने ओकरा थकानक क्षणिक लक्षण मानि लैत छथि। “हमर निश्चयकेँ थकानक रोग मत बनाउ”क प्रतिवाद कथा-अधिकारक टक्करकेँ तेज करैत अछि : ककर अनुभवक व्याख्या दोसर पात्र करि सकैत अछि, ककर निर्णय

दोसरकेँ स्वीकार करबाक चाही? युधिष्ठिरक मनमे हरएबाक भय कथावाचक देखबैत छथि, तेँ ओ खलनायक नहि; मुदा भयक औचित्य मायकेँ रोकेबाक अधिकार नहि।

कर्णक अनुपस्थित उपस्थिति : पूर्वदीप्ति आ पश्चात्तापक समय

अर्जुन “कोनो बात एखन कहब शेष अछि?” पूछैत छथि, कर्णक नाम तत्काल नहि उच्चारैत। कथावाचक एहि अनकहल नामकेँ उपस्थित कहि दृश्यक अर्थ खोलैत छथि। तखन कुन्ती कर्णक मातृत्व छिपेबाक निर्णय स्वीकार करैत छथि, मुदा मृत कर्णक अपन मित्रता, जीवन आ विकल्पकेँ राजवंशक उपशाखा बनायबासँ मना करैत छथि। ई स्मृतिखण्ड घटनाक कालक्रममे कोनो नब खुलासा मात्र नहि : कर्णक जीवन, युद्धक समय, बादक स्वीकृति आ वर्तमान वंशावलीक प्रश्न चारि कालगति एक संवादमे उपस्थित छथि। कथन-काल संक्षिप्त अछि, नैतिक समय अनुल्लङ्घनीय।

युधिष्ठिर पूर्वे सँ जन्मसत्य जानैत छथि; एतए समस्या ओकर “पहिल जानकारी” नहि, सामाजिक अभिलेखमे मृत व्यक्तिक जीवनकेँ केना लिखल जाए से अछि। कुन्ती पुत्रसभसँ स्वतः क्षमा प्राप्त नहि करैत छथि; अर्जुन प्रश्न लिखि पुछबाक अथवा दूरी रखबाक स्वतन्त्रता पबैत छथि। युद्धभूमिक धूलि अर्जुनक स्मृतिमे उठब एक आन्तरिक पूर्वदीप्ति अछि, मुदा तकरा बहि कऽ पृष्ठपर पुनः विस्तृत युद्धदृश्य नहि रचल गेल। एहिसँ वर्तमान सभाक संवाद अतीतक घायल केन्द्रकेँ नब अर्थ दैत अछि, अतीतक परिणाम बदलैत नहि।

नकुल–सहदेवक संवादमे माद्रीक अनुपस्थित स्मृति जुड़ैत अछि। पालनकेँ ऋणक अन्तिम किस्त नहि मानबाक कुन्तीक कथन मातृत्वक ‘कर्ज’ रूपक बदलैत अछि; द्रौपदी आगि–वनयात्राक त्याग-वृत्तान्तक भीतर अनाम रसोइया आ पानि ढोएनिहार स्त्रीक श्रमक प्रश्न उठबैत छथि। अध्याय प्राचीन राजपरिवारक भावनात्मक केन्द्रसँ लगातार अन्य आश्रित लोकक कालकेँ देखैत अछि; त्यागक विराट रसक बदला यात्रा-व्यवस्थाक हिसाब सेहो महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

वनक पहिलो पड़ाव : संयुक्त यात्रा, अलग निर्णय

कुन्ती पाँचू पुत्रक समक्ष अनुमति नहि माँगैत छथि; प्रेम, भय, विरोध आ समर्थनकेँ अनुमति देबाक औपचारिक शक्ति बनबाक नहि दैत छथि। पुलक कात जल भरनिहार युवती सँ मरम्मतिक श्रमक बारेमे पूछल कथा केन्द्रीय परिवारक बाहर एक छोट समाज-स्थान खोलैत अछि। गान्धारी लग पहुँचि कुन्ती संग चलबाक आग्रह नहि थोपैत छथि; अगिला पड़ाव धरि सहयात्रा आ तकर बाद अलग पुनर्निर्णय स्वीकार होइत अछि। पन्द्रहम पाठांश प्राचीन शृंखलाक एक अस्थायी पूर्णता अछि, अंतिम वनवास-परिणाम नहि।

एहि भागक वैशिष्ट्य अछि जे कुन्तीक दीर्घ अपराधबोधकेँ शोकक पराकाष्ठासँ मात्र नहि मापल गेल। गान्धारीक अन्तिम उत्तर कि बोझ संग रहब आ दोसरपर राखि देब भिन्न अछि, अध्यायक आखिरी पाठांशमे आएत। एहि स्थानान्तरित समापनसँ प्राचीन यात्रा आधुनिकक बीच छूटि फेर लौटैत अछि; कथाक पाठ-क्रम पाठककेँ दुनू दृश्यरेखा अलग याद रखबाक माँग करैत अछि।

आधुनिक पड़ाव : योजनाक संशोधन आ परिवारक अलग स्वत्व

सोलहम पाठांशमे २०४०क विदेहपुरक वृद्धा पहिल बस-पड़ावमे उतरि थकानक कारण यात्रा स्थगित करैत छथि। अध्याय १७० क सम्भावित ठहराव एतए सम्पन्न निर्णय बनैत अछि; ओ घरपर अधिकार नहि बदलैत। धर्मशालाक “परिवारक उत्तरदायी पुरुष” पाँति वृद्धाक आत्मपरिचयक सम्मुख प्रश्नग्रस्त होइत अछि। चालक आपात सम्पर्ककेँ मालिकाना-सहमतिक विकल्पसँ अलग करबैत छथि। एहि रूपमे तात्कालिक निवासक छोटी रजिस्टर-घटना गान्धारीक प्रस्थानक वैचारिक संवादकेँ नब सामाजिक परिस्थिति मे परखैत अछि।

नतिनी सिलाइक-मशीनक पैडल रोकि फोन सुनैत छथि; बातचीतक बाद फेर ओकरा चलबैत छथि। ई उपकरणक पुनरागमन हुनकर अपन श्रमकालकेँ दृश्यमान करैत अछि। वृद्धा कहैत छथि जे लोकक टिप्पणी दुनू पीढ़ीक समयक मालिक नहि हो। मुदा अगिला दृश्ये वार्षिक समीक्षा सँ कम्पनीक “एकीकृत पारिवारिक अधिकार” प्रस्ताव अबैत अछि, जे वयस्क व्यक्तिक अलग सहमतिक बदला परिवारक एक सदस्यक डिजिटल हस्ताक्षर चाहैत अछि। घरक भीतरक दया आ व्यावसायिक सेवाक अनुबन्ध एक शब्द “परिवार”क विभिन्न कथात्मक उपयोग बनैत अछि।

कबीर अपन पालनक प्रमाणित इतिहासक नाम जोडबाक आवेदन स्वयं भरैत अछि; अनिर्णीत जन्म-पाँतिमे अनुमान नहि लिखैत। नैराक अनुपस्थिति सरिताक शोकक पृष्ठभूमि अछि, जखन कि कबीरक प्रमाणित पालन-इतिहास आ वर्तमान वयस्क चयन एहि दृश्यकेँ अलग कथा-धुरी दैत अछि। पछिला अध्यायसभक स्मरण मात्र अध्याय-भूमि नहि; कबीरक वास्तविक हस्ताक्षर नब घटना अछि, किन्तु नाम जोड़ल कार्यालयद्वारा एखन स्वीकृत नहि भेल। ललितक सही सरकारी मरम्मति-बिलक भुगतान एखन बैंकमे नहि पहुँचल; कथावाचक स्वीकृतिक चमक आ प्राप्तिक अभाव अलग देखबैत छथि। एहि दू कथा-रेखा विरासत आ देय दुनूक अधूरा परिणाम बनाकऽ चलैत अछि।

बाँटल आख्यानकाल, कथकीय सावधानी आ आलोचनात्मक निर्णय

अध्याय १७१ क पाठक्रम एकरेखीय नहि : पहिने प्राचीन भोरसँ प्रथम पड़ाव (१–१५), तकर बाद आधुनिक यात्रा-पड़ाव आ सार्वजनिक समीक्षा (१६–३०), अन्तिमे फेर प्राचीन आगि-निकट राति (३१)। एहि “वापसी”सँ कुन्तीक शेष वचनक भाव-समापन पूरा होइत अछि, मुदा आधुनिक कथाधाराक विवाद खुलल रहैत अछि। मैथिली वनयात्राक पन्ना पढ़ैत छथि, तकरा आधुनिक न्यायिक साक्ष्य नहि मानैत छथि; एहि आन्तरिक पाठक-पात्रक उपस्थितिसँ उपन्यास अपने अन्तर्पाठीय वाचनक सीमा बतबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई जे कुन्ती, गान्धारी, सरिता, रमा आ वृद्धा प्रायः विलक्षण स्पष्टतासँ स्वायत्तता, प्रेम आ प्रमाणक भेद कहैत छथि। कर्णक जटिल सम्बन्धक आन्तरिक अस्थिरता, पुत्रसभक सन्देह आ स्त्रीसभक मौन अधिक दीर्घ दृश्य पाबि सकैत छल। तथापि थारीक एक दाना, स्कार्फक तह, सिलाइक-मशीनक पेडल आ राजप्रासादक रिक्त ओसारा उपदेशात्मक संवादकेँ ठोस जीवनसँ जोड़ैत अछि। अन्तमे कुन्ती क्षमा प्राप्त करब नहि, बोझ दोसरपर नहि थोपब चुनैत छथि; ई परिणाम तत्काल प्रायश्चित्तक विजय नहि, अनिश्चित सहयात्राक आरम्भ अछि।

अध्याय १७२ — ईशानक कमरा

खुलबाक कठिन किवाड़ : निज विद्वत्तासँ सार्वजनिक पाठधरि

पिछला तीन अध्यायक वृद्ध-यात्रासँ हटि अध्याय १७२ सीधे सन २०४०क विदेहपुरमे खुलैत अछि। पुस्तकालयक पछिला कोठरीक ताला घुमबैत ईशानक हाथ अटकैत अछि; आर्द्रतासँ फुलल किवाड़, मेजक कागद आ ढीला पड़ल नाम-पट्टी एके दृश्यभितर छथि। पहिल दृष्टिमे ई कमरा एकाकी विद्वानक प्रतिष्ठाक ठाम लगैत अछि, मुदा सात दिनमे सार्वजनिक बाल-पाठकक्ष बनेबाक समितिक पत्र कथात्मक परिस्थिति उलटि दैत अछि। कोठरी शोधक उपयोग लेल देल गेल छल, निजी स्थायी पट्टाक रूपमे नहि; बन्द दरबज्जाक बाहर बच्चासभ पढ़ैत रहल, से ईशान पछाति देखैत छथि।

ढील नाम-पट्टी ओकर घिसैत व्यक्तिगत अधिकारक सरल प्रतीक बनि सकैत छल, किन्तु कथा ओकरा व्यावहारिक कथावस्तु बनबैत अछि। एकटा पेंच निकालल, दोसर जंगायल; अन्तमे धातु फेर उपयोग लेल पुस्तकालयमे रहैत अछि। आरम्भ आ मध्यान्तरक एहि वस्तु-आवर्तनसँ “कमराक मालिक के?” प्रश्नक उत्तर दोसर दिश मुड़ैत अछि : कमरा खाली करबाक जिम्मेवारी, निजी पन्नाक सुरक्षा, बालकक पठनीय जगह आ सार्वजनिक पुस्तकसभक पंजी।

पुरान श्रेय-विवादक सङ्क्षिप्त पूर्वदीप्ति आ सम्बन्धक सीमा

आरम्भिक तेसर पाठांश मैथिलीक मूल तर्क आ सरिताक नकल-श्रम छूटबाक पुरान प्रसंगकेँ संक्षेपमे घुरबैत अछि। नव भूमिकामे संशोधित श्रेय सार्वजनिक भऽ चुकल अछि, किन्तु ताहि पछि ईशानक निमन्त्रण आ मित्रता घटल। कथावाचक एतय दू अनुभव एकरे श्रेणीमे नहि डालैत—प्रश्न उठेबाक उचित सामाजिक परिणाम आ अपमान देखबाक निर्दय आनन्द। एहि भेदसँ पात्रक आत्मपक्ष पूर्ण रूपेँ वैध नहि भऽ जाइत, मुदा ओकर अपमान उपन्यासक मनोरञ्जन सेहो नहि बनैत।

मैथिली कोठरीमे आबि अपन हस्तलिखित मूल पन्ना लैत छथि। ईशान संयुक्त प्रकरणक उपयोगी प्रति राखबाक अनुमति माँगैत छथि; मैथिली निजी नोटबुकक पृष्ठ नहि देबाक सीमा ठहरबैत छथि। पछिला सहलेखन-सुधारकेँ ओ वैवाहिक सहजीवनक पुनर्स्थापन नहि मानैत छथि। ई प्रसंग दस्तावेजक स्वामित्व आ निकट सम्बन्धक कथा एके मेजपर अनैत अछि, मुदा दूनूकेँ अलग निर्णयक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि। ईशान स्मृतिक प्रसंग छेड़य चाहैत छथि, पर मैथिली अपन कागद लऽ ठाढ़ छथि—एहि देहगत स्थिति कथावाचकक कथनसँ बेसी कठोर दूरीक दृश्य बनबैत अछि।

अन्तिम भागमे मैथिली सार्वजनिक व्याख्यानक लेल प्रश्न आ स्रोत पहिने पठएबाक शर्त लिखैत छथि; निजी सम्बन्धक निर्णय एहि पत्रमे नहि दैत छथि। ईशानक “दोष स्वीकारब पुरस्कार अर्जित करबाक उपाय नहि” नामक निजी पाँति ओकर परिवर्तनक दावा मात्र अछि; पाठकक प्रमाण आगाँक व्यवहारमे अछि—फोन नकरब, पत्रक उत्तरक प्रतीक्षा करितो अपन अध्ययन जारी रखब, आ मैथिलीक उत्तरकेँ प्रदर्शनक प्रमाणपत्र नहि बनायब। पूर्ण दाम्पत्य-समाधान एहि अध्यायमे नहि अछि।

कमराक विवादमे अनेक स्वर : समिति, पाठक आ कर्मचारी

रुखसाना बच्चासभक उज्जर कोठरी चाहैत छथि, मुदा श्रेय-त्रुटिक कारण ईशानक सार्वजनिक उपहासक विरोध करैत छथि। आनन्द अदालत जएबाक सल्लाह दैत छथि; ईशान निजी पन्ना जप्त होयब आ सार्वजनिक कमरा खाली करब अलग स्थिति कहैत छथि। रोहितक सूची निजी दस्तावेज आ खुला रैक लेल किताबक भेद बनबैत अछि। बालिका “मोटका पोथीमे चित्र अछि?” पूछैत छथि, फेर “प्रश्न पढ़ब” कहैत छथि। ई प्रश्नक निर्दोष उत्सुकता विद्वानक अपन खोइजयल पदविक केन्द्रकेँ तोड़ैत अछि।

पुस्तकालय-समितिक पश्चातवर्ती बैठकमे निजी प्रकाशक मेज-रैक दानक बदला पाँच वर्षक अनिवार्य पुस्तक-खरीदक शर्त रखैत अछि। ई प्रस्ताव अध्याय १६९ क छपाइ-कम्पनीक मुफ्त सुविधा-वाले नियन्त्रणसँ सम्बद्ध कथा-मोटिफ अछि; मुदा कोनो एके कम्पनी होयबाक प्रमाण नहि। ईशान सार्वजनिक सुनवाईमे निजी हितसँ परे सवाल उठबैत छथि, रुखसाना बहु-प्रकाशक खरीद-पंजी चाहैत छथि। निर्णय : शर्त पुनर्लेखन लेल सहायता स्थगित, पाठकक्ष खोलबाक तारीख नहि टरल। एहि जटिलता सँ संस्थागत दृश्य आदर्श नीतिवचनक अपेक्षा वास्तविक भिन्न गति पबैत अछि।

रसीद, मजदूरी आ तथ्यक स्थगित फल

पुरान पेटीमे भेटल सरिताक कामक रसीदपर पन्ना-संख्या अछि, वास्तविक भुगतानक पुष्टि नहि। ईशान एकरा बकायाक जाँचमे पठबैत छथि; सरिता मूलक फोटो, पन्ना-संख्या आ लिखनिहारक पहिचान दर्ज करबाक बाद लिफाफा सील करबैत छथि। सरिता स्पष्ट कहैत छथि जे नकल-श्रमक नापल देय आ घरक देखभालक अनिर्णीत समय एके दानक मद नहि। पन्ना भेटल—ई घटना सम्पन्न अछि; रकम बैंकमे पहुँचल—एहन घटना एखन नहि। एहि फर्ककेँ कथावाचक सरिताक असन्तोष द्वारा जियाबैत छथि, ईशानक पश्चात्ताप द्वारा नहि मेटबैत।

नव पाठ-कक्ष खोलबापूर्व रानी सफाइकर्मीक धूलि, साधन आ पारिश्रमिकक प्रश्न उठौत छथि। समिति दस्ताना, मुखावरण आ अतिरिक्त समयक मजदूरी स्वीकृत करैत अछि। कारीगरक हाथसँ नाम-पट्टी हटब आ सफाइकर्मीक नामित श्रम एक दृश्य-क्रम बनैत अछि; बालकक पाठकक्ष उपलब्ध होएबाक पाछाँ लागल देह-समय अनदेखल नहि रहैत। उद्घाटनमे संशोधित संयुक्त श्रेय सार्वजनिक पुस्तकक पहिल पन्नापर अछि, सरिताक श्रेय सहित; अलग सूचना-पत्रमे हुनकर भुगतान दावा एखन समीक्षा मे अछि। सही नामक छपाइ आ पूर्ण आर्थिक प्राप्ति दुन्हू अलग कथात्मक स्तर छथि।

पढ़ाबयक बदला सुनब : चरित्रक सीमित पुनर्निर्माण

ईशान घरक छतक नीचाँ हावामे उड़ैत पन्नासँ संघर्ष करैत छथि; नाम-पट्टी हटला बाद हुनका बड़का व्याख्यानक आसन नहि भेटैत। मुन्ना एक प्रश्नक समाधान लेल अबैत अछि, मुदा पुरान प्रतिष्ठाक प्रति स्वीकृति देबाक शर्त स्वीकार नहि करैत। ईशानक धुआँ–कुहासाक उदाहरणपर मुन्नाक प्रतिप्रश्न आ विद्वानक नामसँ सत्य प्रमाणित नहि होयबाक कटाक्ष एक दृश्य-क्रिया बनैत अछि। “उत्तर संशोधनाधीन” लिखब पात्रक वैचारिक परिवर्तनक क्रिया-चिह्न अछि; ई आलोचना विषयवस्तुक शास्त्रीय परीक्षण नहि, कक्षा-संवादक शक्ति-सन्तुलन देखैत अछि।

एहि शिक्षणक बाद ईशान सार्वजनिक पाठकक्षमे पहिल अभ्यास निःशुल्क, निजी शिक्षाक श्रम-दाम पहिने स्पष्ट ठहरबैत छथि। उद्घाटन-दिन रोहित हुनका पहिल पाठ पढ़एब पुछैत अछि; ओ आज सुनबाक चुनाव करैत छथि। कथाक गति यहाँ बाहरी प्रतिष्ठा-ह्राससँ भीतरी अनुशासनक नव रचने धरि पहुँचल अछि। मुदा कथावाचक ईशानक पुनर्स्थापनकेँ विजयाभिषेक नहि बनबैत—मुन्नाक कॉपीमे गलती रहैत अछि, पाठकक्षमे आन बच्चा अपन नाम लिखैत अछि, आ ईशान बाहरक साधारण आसनपर बैसल छथि।

संयोजन आ कलात्मक सीमा : संशोधित पाठ, असंशोधित सम्बन्ध

अध्याय पूर्णतः आधुनिक समयमे स्थित अछि; प्राचीन महाकाव्यक प्रत्यक्ष दृश्य नहिएक बराबर अछि। तैँ पिछला तीन अध्यायक द्विकालीन बनावटसँ ई अध्याय स्पष्ट औपचारिक विराम लैत अछि। एक सप्ताहक समयसीमा, “दू दिन बाद”, “अगिला भोर”, उद्घाटन आ साँझक क्रमक सहारे एक कोठरी सात दिनमे सार्वजनिक पाठकक्ष बनैत अछि। संयुक्त श्रेयक प्रति, निजी लिफाफा, रकम-बकाया रसीद, नाम-पट्टी आ विद्यार्थी-कॉपी वस्तु-आवर्तनक क्रम बनबैत अछि। अध्यायक वाक्य “प्रमाणक सुधरैत बाट” नब शीर्षक अछि, किन्तु एक निश्चित मुक्तिदान नहि।

कलात्मक जोखिम ई अछि जे मुन्ना, बालिका, रुखसाना आ ईशान अनेक बेर ठीक ओहि नैतिक प्रश्नक स्पष्ट रूप प्रस्तुत करैत छथि जे पाठक दृश्यसँ स्वयं बुझि सकैत छल। ईशानक परिवर्तन बहुत व्यवस्थित कहल गेल अछि; पुरान असुरक्षा, क्रोध अथवा गम्भीर स्वार्थक नव उभारक अवकाश कम अछि। तथापि फाटल रसीद, निजी पन्नाक लिफाफा, रानीक सफाइक खर्च आ मैथिलीक शर्तयुक्त पत्र पात्रकेँ एकरे आत्मोद्धारक सूत्रमे समेटि नहि दैत। अन्तिमे नव पाठकक्ष नगरक अछि, मैथिलीक अगिला उत्तर हुनकर अपन ठामसँ आबयबाक अछि, आ सरिताक वास्तविक भुगतानक प्रश्न खुलल अछि।

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६९–१७२ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पर्वक प्रवेश : ककरो हाथ पकड़बाक पहिले ककर वाणी?

अश्वमेध-पर्वक अन्तिमे संशोधनयोग्य प्रति लोकधरि घुरैत अछि; आश्रमवासिक-पर्वक पहिल चारि अध्याय ओहि प्रश्नकेँ वृद्ध देह, घरक चाभी, यात्रा-सहमति आ सार्वजनिक अध्ययन-कक्ष धरि विस्तृत करैत अछि। १६९ क लोटा-स्पर्श तथा वृद्धाक किवाड़, १७० क गठरी तथा बस-पायदान, १७१ क थारी तथा धर्मशालाक रजिस्टर, १७२ क ताला तथा नाम-पट्टी—सभ बिन्दुपर ककरो पहुँच, सहायता आ अधिकार एकरे क्रिया नहि अछि। एहि रूपमे पर्वक प्रवेश राजसत्ताक क्रमशः त्यागक साधारण कथा नहि, स्नेह-सम्बन्धक भीतर व्यक्तिक अलग निर्णयक कथारूप अछि।

चारू अध्यायक घटना-प्रवाहमे एक विशेष कारण-सेतु अछि। १६९ मे धृतराष्ट्र स्पर्शक अनुमति पुछैत छथि आ गान्धारी चलबाक पूर्वसूचना दैत छथि; १७० मे गान्धारी सचमुच प्रस्थान करैत छथि, आधुनिक वृद्धा अपन यात्राक निर्णय बनबैत छथि। १७१ मे कुन्ती अलग भावनात्मक संकटसँ वनधरि पहुँचैत छथि, आधुनिक वृद्धा पहिल

पड़ावमे रुकबाक निर्णय करैत छथि, कबीर अपन पालन-नाम आवेदन भरैत अछि। १७२ मे वृद्ध-यात्राक दृश्य हटि ईशानक पुस्तकालय-स्थानक पुनर्वितरण अबैत अछि; पहिनुक सहलेखन-श्रेय, अपन स्थान आ दोसरक अधिकारक प्रश्न नव संस्थागत कथा पबैत अछि।

१६९ मे प्राचीन राजगृहक भोरसँ राति आ आधुनिक पंचायतक भोरसँ साँझक साफ क्रम-विभाजन अछि। १७० मे वनमार्गक पहिल पड़ाव धरि प्राचीन काल चलैत अछि, तत्पश्चात् आधुनिक बसयात्रा होइत अछि, आ अन्तिम पाठांश दूनूक पृथकता स्पष्ट करैत अछि। १७१ क सम्पादन अधिक जटिल—पहिने प्राचीन वनयात्रा, फेर २०४०क आधुनिक पड़ाव आ वार्षिक समीक्षा, अन्तिमे फेर कुन्ती–गान्धारीक रात्रि-वार्ता। १७२ क सात दिनक आधुनिक कथा प्राचीन प्रत्यक्ष दृश्य छोड़ि स्थानीय समयक सूक्ष्म क्रमपर ठहरैत अछि। एही अन्तरसँ चारि अध्याय एकरूप मिथकीय रूपान्तरण नहि लगैत।

अतीतक स्मृति सेहो भिन्न मात्रामे अछि। १६९ मे धृतराष्ट्रक राजसभा आ पुत्रमोह संक्षेपमे स्मरण होइत अछि, १७० मे गान्धारी टूटल खिलौनासँ उपेक्षित बालकक घाव याद करैत छथि, १७१ मे कर्णक गोपित मातृत्व वर्तमान सभामे अनकहल नामक रूपमे उपस्थित अछि, १७२ मे ईशानक पुरान गलत श्रेय संशोधित भूमिकासँ ज्ञात होइत अछि। अतीत न पुनः घटैत अछि, न छूटि जाइत अछि; प्रत्येक वर्तमान निर्णय ओकर प्रति नब स्थान निर्धारण करैत अछि।

कथावाचक आ बहुस्वरता : सहाय्य पात्रसभक स्वतन्त्र समय

तृतीयपुरुष कथावाचक राजाक रोष, युधिष्ठिरक भय, अर्जुनक स्मृति, ईशानक असुविधा आ आधुनिक वृद्धाक थकान धरि दृष्टिकेन्द्र बदलैत छथि। तथापि विशेष अर्थ उन्हीं पात्रक आवाजसँ बनैत अछि जकरा राजकीय वा बौद्धिक कथा गौण बनौने रहितय—माधवक तीन दिनक मजदूरी, रसोइनक अनाज, नतिनीक सिलाइक, महिला चालकक सशुल्क श्रम, कबीरक अलग पालन-परिचय, रानीक सफाइक मूल्य। ई पात्रसभ वैचारिक सूत्रक उदाहरण मात्र रहि जाएत तखन बहुस्वरता घटत; अनेक ठाम हुनकर अलग आर्थिक समय दृश्यकेँ असहमत रखैत अछि।

प्रतीकक पुनरागमन सेहो सूक्ष्म अन्तर संग अछि। धृतराष्ट्रक हाथ जखन माधवसँ पानि लैत अछि, स्वीकृत स्पर्शक कथा बनैत अछि; गान्धारीक हाथ धृतराष्ट्र लग जाइत अछि, दाम्पत्यक अलग चुनाव; वृद्धाक हाथ बस-पायदान चढ़ैत अछि, अस्थायी सहायता; ईशानक हाथ नाम-पट्टी छोड़ैत अछि, सार्वजनिक कमराक अधिकार मानब। एके मोटिफमे चारि स्थानक सामाजिक अर्थ बदलैत अछि। एहि कारण पाठककेँ “हाथ”क एकरूप सार्वभौम अर्थ नहि, क्रमिक परिवर्तित सम्बन्ध पढ़बाक पड़ैत अछि।

सम्पन्न, अनिर्णीत आ केवल प्रस्तावित परिणाम

१६९ मे वृद्धाक किवाड़क सीमित मरम्मति सम्पन्न, वार्षिक जाँचक प्रक्रिया निर्धारित, कम्पनीक नियन्त्रणवला तत्काल हस्ताक्षर रोकल; माधवक अनचुकल देय सुलझल नहि। १७० मे गान्धारीक प्रस्थान आ वृद्धाक बसयात्राक पहिल चरण सम्पन्न; सुधाक मरम्मति-चन्दा बैंकमे पहुँचल, मुदा ललितक अलग सरकारी मरम्मति-बकाया नहि। १७१ मे कुन्तीक वनप्रस्थान, वृद्धाक पहिल पड़ावमे रुकब, कबीरक अपन आवेदन, कम्पनीक

सामूहिक सहमति-शर्त अस्वीकारब सम्पन्न; कबीरक आवेदन स्वीकृत नहि, ललितक बैंक-राशि बाँकी। १७२ मे ईशानक कमरा सार्वजनिक पाठकक्ष बनल, मूल पन्ना मैथिलीकेँ घुरल आ संशोधित श्रेय छपल; सरिताक बकायाक अन्तिम भुगतान नहि, दाम्पत्यक पुनर्मिलन नहि।

ई भिन्न परिणाम उपन्यासक संरचनात्मक गुण अछि। प्रपत्रमे “स्वीकृत” लिखलापर पैसा पहुँचब आवश्यक नहि; यात्रा शुरू भेला पर नियत गाम पहुँचब आवश्यक नहि; श्रेय-सुधार भेला पर व्यक्तिगत सम्बन्ध लौटब आवश्यक नहि। मुदा एहि भेदक बारंबार सीधा मौखिक घोषणा कथाक आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि। पात्रसभ लगभग सदिखन नैतिक रूपसँ सजग तर्क करैत छथि; अनिश्चित इच्छा, व्यवहारिक चूक, असहज चुप्पी आ विरोधी चरित्रक सघन अनुभव कखनो सूत्रक नीचे दबि जाइत अछि।

अन्तरिम निर्णय आ शेष पर्वक दिशासूचना

एहि चारि अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि ई जे वृद्धावस्थाकेँ निष्क्रिय देखभालक प्रश्न नहि, कथात्मक काल आ विकल्पक प्रश्न बनबैत अछि। वृद्धा पहिल दिन पूरा बाट नहि चलि सकैत छथि; ई असफलता नहि, यात्रा रोकबाक स्वतन्त्रताक उपयोग अछि। कुन्ती अपन शेष सत्य कहि क्षमा नहि माँगि लैत छथि; ईशान सहलेखन-श्रेय सुधारि मैथिलीक स्नेह नहि खरीदैत छथि। कथामे सहायकक प्रेम आ सहायताग्राहीक चयन अलग रहैत अछि।

आश्रमवासिक-पर्व एखन १६९–१८० क पहिल चारि अध्यायपर अछि; एहि मूल्यांकनकेँ समग्र पर्व-निर्णय मानब अनुचित हएत। अगिला अध्याय १७३ “मैथिलीक दूरी” लेल मुख्य अनुत्तरित प्रश्न ई अछि जे ईशानक सार्वजनिक सुधार आ मैथिलीक निज निर्णय कथन-अवकाशमे केना मिलत वा अलग रहत, आ नब पुस्तकालय-व्यवस्था पूर्वक अदृश्य श्रमकेँ कतेक दिन धरि सही श्रेय आ देय देत। एतए मूल पाठमे जे सम्पन्न नहि, ओकर भविष्यफल अनुमानक रूपमे निश्चित नहि कएल जा रहल अछि।

अध्याय १७३ — मैथिलीक दूरी

दू चाभीक आरम्भ : श्रेय-सुधार आ निवास-निर्णयक अलग कथा

सन २०४०क भोरमे मैथिली अपन मेजपर दू चाभी अलग रखैत छथि—एकटा किरायाक अध्ययन-कक्षक, दोसर ईशानक पुरान घरक। ई उद्घाटन दृश्य पिछला अध्यायक सार्वजनिक श्रेय-संशोधनकेँ निजी जीवनक नव परिस्थिति संग जोड़ैत अछि, मुदा एकर परिणाम पहिनेसँ निर्धारित नहि करैत। राति लिखल व्याख्यानक पन्ना सुखा गेल अछि; निजी सम्बन्धक उत्तर एखन लिखल नहि अछि। सुखल कागद आ अनलिखल उत्तरक विरोधक भीतर कथनक प्रस्थान-बिन्दु अछि : सार्वजनिक विवेचन लेल पाठ तैयार भऽ सकैत अछि, मुदा अन्तरङ्ग सम्बन्धक निर्णय ओहि गति सँ नहि होइत। दुइ चाभी द्वन्द्वक वस्तु मात्र नहि, भिन्न दरबज्जाक वास्तविक उपयोग आ अधिकारक संकेतन छथि।

पुरान पन्नापर लाल आ कारी स्याहीमे ईशान आ मैथिलीक हस्तक्षेप भेटैत अछि। प्रश्न बचल छल, लेखकाक नाम पछिला संस्करणमे छुटल; संशोधित संस्करणमे नाम घुरल। ई भूतकालक लघु पूर्वदीप्ति अध्यायक वर्तमानकेँ

आवश्यक पृष्ठभूमि दैत अछि, किन्तु “नाम घुरब”कें “बितल दिन घुरब”क पर्याय नहि बनबैत। पाठक आरम्भे सँ जानैत अछि जे न्यायोचित सहलेखनक स्थापना एक उपलब्धि अछि, वैवाहिक मेल-मिलापक कथात्मक अनिवार्यता नहि। एतए लेखकक आलोचना कथाक निर्णयक स्वतंत्रतामे निहित अछि, ने कि मैथिलीक कोनो अन्तिम घोषणा मे।

कार्यक्रम-पत्रक त्रुटि : सार्वजनिक कथाक अनधिकृत निजी विस्तार

रुखसाना जे कार्यक्रम लऽ अबैत छथि, ओहिमे पुस्तकक सहलेखनक संग “विख्यात दम्पतीक पुनर्मिलन” शीर्षक जोड़ल अछि। ई कथानकक पहिल स्पष्ट विघ्न अछि। कार्यक्रमक निचली पाँति अध्ययन-समितिक कल्पित निष्कर्षकें मैथिलीक जीवनपर आरोपित करैत अछि। मैथिली अपन सार्वजनिक उपस्थिति लेल शर्त रखैत छथि : तर्कपर चर्चा, दू वक्ताक अलग समय, निजी विवाहक प्रचार नहि। रुखसाना सुधारक सन्देश पठबैत छथि; पहिल पन्नाकें मात्र फाड़ि समाप्त नहि कए, ओकर संग सुधारक प्रति जोड़ल जाइत अछि। तैं कथात्मक घटना गलत सूचना छपब, आपत्ति, सुधार-कार्रवाई आ पूर्व-त्रुटिक अभिलेखनक चारि क्रममे बढ़ैत अछि; सभाक वास्तविक वातावरण एतहिसँ बदलब प्रारम्भ करैत अछि।

मध्यावकाशमे राजनक दू माला आ प्रस्तावित फोटो ई विवादकें फेर दृश्यात्मक बनबैत अछि। मैथिली मंचक बगलसँ उतरि जाइत छथि; ईशान माला नहि लैत छथि; फोटोकार कैमरा नीचाँ करैत अछि, मुदा राजनक खिसियाहट रहैत अछि। एतए कोनो समग्र जनमत परिवर्तन नहि होइत—किछु दर्शक उठि जाइत छथि, चन्दाक खर्च विवाद बनैत अछि। रुखसाना खर्चकें सार्वजनिक बहीमे दर्ज रखबाक, मुदा ओहि खर्चक एवजमे स्त्रीक वैयक्तिक निर्णयक अभिनय नहि करएबाक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। कथाक वस्तुसभ—कार्यक्रम-पत्र, माला, कैमरा, खर्च-बही—भ्रामक सामाजिक कथानक रचनाक अलग-अलग उपकरण बनैत छथि।

सन्दूकक चौखट आ संशोधित सहकार्यक दृश्य

पुरान घरक दृश्य घनिष्ठ स्मृतिक संभावनासँ भरल अछि। जाम खिड़कीक किर्र ध्वनिसँ मैथिलीकें वर्षाक एक साझा अध्ययन-साँझ याद अबैत अछि। ई स्मृति मधुर अछि, तकर सत्यता पात्र नहि नकारैत छथि; मुदा भूतकालक सुख वर्तमानक अनुबन्ध स्वयं नहि बनि जाइत। वस्तु समेटबाक दृश्य—कपड़ा, माय देल पीतलका लोटा, निजी पत्र, संयुक्त रूपसँ किनल पुस्तक—स्वामित्वक अलग श्रेणी दृश्य मे अनैत अछि। ईशानक “सन्दूक उठएबामे सहायता” आ “भीतरक चिट्ठी नहि पढ़ब” बीच मैथिलीक रेखा कागदक नियमक बदला देहक सहकार्य मे उतरैत अछि; दूनू चौखट पार करए वस्तुकें कात मोड़ैत छथि।

एहि दृश्यकें पुनर्मिलनक रूपक मानि लेल जाए तँ पाठक गलती करत। सन्दूक उठब सफल संयुक्त श्रम अछि, जे घरमे फेर बसबाक निर्णय नहि। सरिताक नकल-श्रमक बकाया-रसीद एहि भावनात्मक दृश्यकें भिन्न सामाजिक समयमे काटैत अछि। मैथिली स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर छपल सहलेखनक श्रेय सरिताक भिन्न श्रमक देय नहि मेटबैत; ईशान हिसाब स्वतंत्र परीक्षणधरि खुलल राखबाक बात करैत छथि, सरिता लिखित प्राप्ति लेबाक बादे विदा होइत छथि। ई तेसर आवाज निजी सम्बन्ध-द्वन्द्वकें “दू बुद्धिजीवीक समाधान”मे समेटबासँ रोकैत अछि।

पाठकक्षमे तर्कक जीवित असहमति आ कथकक ज्ञान-वितरण

सार्वजनिक पाठमे मैथिली पहिने बोलैत छथि; हुनकर हस्तलिखित पूर्वप्रश्न आ संशोधित प्रकाशित प्रति दुनू प्रस्तुत होइत अछि। ओ छात्र-श्रोता लेल सहलेखनक पदवीकेँ आलोचना सँ ऊपर नहि रखैत छथि। मुन्नाक गलती-पछाति सही उत्तर सम्बन्धी प्रश्न, बालिकाक अगिला संस्करणक सुधार-सम्भावना, आ ईशानक अस्वीकार नहि बल्कि संशोधन—ई संवादसभ कथनकेँ स्थिर नैतिक विजयक बदला फेर जाँचल जा सकनिहार पाठ बनबैत अछि। ईशानक व्याख्यानमे मैथिली एक अपूर्ण तर्कपर सार्वजनिक प्रतिप्रश्न करैत छथि। कथात्मक उपलब्धि “दूनू सहमत भेला” नहि, वरन् सम्बन्धक अन्तरक बीच बौद्धिक असहमति सुरक्षित रहब अछि।

तृतीयपुरुष कथावाचक मैथिलीक निजी चिन्ता, ईशानक पीड़ा आ छात्रसभक प्रतिक्रिया देखबैत छथि। मुदा कथा कोनो एक पक्षक भावकेँ निर्णायक प्रमाण नहि बनबैत। रुखसानाक चूक स्वीकारब, राजनक नाराजगी, प्रश्नकर्ताक चुप्पी, लीलाक सन्दर्भ-उद्धरणक व्यावहारिक प्रश्न—सभ अलग सामाजिक स्थानसँ एके कार्यक्रमकेँ देखैत अछि। लीलाकेँ गलत पहिल संस्करण आ सुधार-पत्र दुनूक सन्दर्भ देबाक सलाह कथानकक “मुद्रित स्मृति”क प्रश्न पर आगाँक छोट समाधान अछि; प्रकाशनक इतिहास मेटि नव शुद्ध इतिहास लिखब एकर निष्कर्ष नहि।

किरायाक पावती, खुलल गली आ अनिर्णीत भविष्य

मैथिलीक अलग आवास स्वतन्त्रताक रूपक कहब आसान अछि, मुदा कथा ओहि स्वतन्त्रताक आर्थिक शर्त स्वयं देखबैत अछि। किरायेदारी-पावती एकल नामपर सुधरल; कक्षाक भाड़ा अध्यापन आ अनुवादक कमाइसँ चुकब; अगिला पखवाराक आय अनिश्चित। सार्वजनिक निःशुल्क पाठ आ निजी प्रूफ-जाँचक सशुल्क श्रम अलग राखल गेल अछि। बच्चीक चित्रमे साझा बगैचा आ भिन्न दरबज्जा, फेर दू किरायेदारक साझा जल-पाइप—एहि वस्तु-आवर्तनसँ दूरीक अर्थ परस्पर असम्पृक्तता नहि रहैत। ई आधुनिक स्थान-चित्र अध्यायक वैचारिक प्रश्नकेँ कागजसँ बाहर जल, भाड़ा, बाट आ पहुँच मे मूर्त करैत अछि।

समाचारपत्र छोट सुधार छपैत अछि, मुदा पहिल भ्रामक खबर कतेक लोक पढ़लक, तकर हिसाब नहि अछि; फोटो-सहमतिक नव नियम केवल प्रस्तावित अछि। मैथिली ईशानकेँ पाठस्रोतक त्रुटिक सन्देश पठबैत छथि; निजी सम्बन्धपर बातक समय अलग रहैत अछि। अध्यायक अन्तमे चम्पा माइक अस्पष्ट औषधि-पर्चा नेने पहुँचैत छथि। कथावाचक मैथिलीक अध्यायकेँ केवल स्वतन्त्रताक चमकदार निष्कर्षपर रोकैत नहि, स्त्री श्रम आ देखभालक दोसर कथाक कठिन आरम्भमे बदलैत छथि। सीमा ई जे पात्रसभ बेर-बेर अत्यन्त सुव्यवस्थित व्याख्या करैत छथि; अनुभूत मौन आ आर्थिक अनिश्चितताक किछु दृश्य सेहो एही व्याख्याक घेरामे पड़ि सकैत अछि। तदपि अन्तिम चम्पा-प्रवेश अध्यायक खुलल संरचना सिद्ध करैत अछि।

अध्याय १७४ — माइक औषधि

धुँधल अक्षर आ दू घड़ी : उपचार बनाम जीविकाक आरम्भिक तनाव

एहि अध्यायक उद्घाटनमे माइक पर्चापर पानिसँ पसिरल एक अक्षर अछि, डब्बामे मात्र दू खुराक बाँचल अछि, आ आश्रयक भोरक प्रकाश एखन ओसारधरि नहि पहुँचल। दृश्य तुरन्त समय-सङ्कट रचैत अछि, मुदा अस्पष्ट लिखावटकेँ कोनो पात्र अनुमानसँ औषधि-नाममे रूपान्तरित नहि करैत। चम्पाक सिलाइक छओ थैलाक समय, माइक दर्द आ आसन्न किरायाक अनिश्चितता एके भोरमे जमा होइत अछि। मैथिली दू अलग कागदपर इलाजक समय आ कमाइक समय लिखैत छथि। एहि समकालीन क्रमक तनाव कथा केन्द्रीय शक्ति अछि : देहक पीड़ा विलम्ब नहि चाहैत, किन्तु रोजीक श्रम तत्काल स्थगित कएलासँ उपचारक अगिला खर्च जोखिममे पड़ैत अछि।

माय अपन खर्चकेँ बेटीपर बोझ बुझैत छथि, चम्पा लिखित हिसाबकेँ स्नेहक अपमान नहि मानैत छथि। रुखसाना भोजन आ निजी औषधिक खर्च अलग करैत छथि; जुबैदाक रसोइ-पाली लेल सशुल्क समय दर्ज करबाक शर्त तय होइत अछि। एहि लघु दृश्यसभमे माँ-बेटीक दारुण सम्बन्धक एकरे भाव-समाधान नहि, श्रम-विन्यासक ठोस प्रश्न अछि। सहायताक एक नारीसँ दोसर नारीक अवैतनिक श्रममे खिसकब कथाक नजरसँ बचैत नहि। पात्रसमूहक आवाज एक-दोसराक सहयोगी अछि, मुदा बजट-सीमा आ व्यक्तिगत भय अलग राखल गेल अछि।

अस्पतालक क्रम : चिकित्सकीय कथनक अधिकार ककर?

अस्पतालक फाटकपर भीड़, बैसबाक कठिनाई आ सार्वजनिक रूपसँ रोग-विवरण पूछल जाएब दृश्य-क्रमकेँ धीमा करैत अछि। चम्पा माय लेल उपयुक्त पहुँच माँगैत छथि, मुदा चिकित्सकक समक्ष माइक बोलबाक स्थान ओ नहि लैत छथि। माय अपन पीड़ा, थकान आ दवाइक समय स्वयं कहैत छथि; जाँच बाद नव पर्चा भेटैत अछि। पाठ-घटना स्पष्ट अछि—अस्पष्ट पुरान पर्चाक स्थानपर चिकित्सकक जाँचल नब निर्देश, अगिला जाँचक तिथि आ दवाईक वास्तविक खरीद। ई मेडिकल सलाहक बाहरी ग्रन्थ नहि; उपचार-संवादमे रोगिणीक स्वरोपस्थिति कथाक केन्द्र अछि।

चिकित्सालयक परामर्श आ दवाईक खर्च सफल भऽ गेलासँ महीनाक आयक भय समाप्त नहि भेल। कथा बिलकेँ परामर्श, औषधि आ यात्रा तीन रकममे बाँटैत अछि; पर्चाकेँ कथानकक अन्तिम मुक्ति-पत्र नहि बनबैत। माय स्वयं निर्देश बदलबाक प्रश्न पुछैत छथि, चिकित्सक स्पष्ट उत्तर दैत छथि। चम्पा अपन भुजा-पकड़ अधिकारक बदला लिखित समय रचैत छथि। एतए उपचारक “कथा” एक बाहरी विशेषज्ञक सर्वज्ञ घोषणा नहि, साक्षात् शरीर, प्रयोगयोग्य निर्देश आ भविष्यक अपूर्ण खर्चक बीच गठित सम्बन्ध अछि।

अमरेशक आगमन : निजी इच्छाक लेल अलग कथाकाल

अमरेश अस्पतालक बाहर भेटैत अछि, मुदा दवाइ आनएबाक प्रस्ताव मनाएब उत्तर नहि पबैत; चम्पा साँझ आधा घण्टा टहलब चाहैत छथि। माँ एहि इच्छाकेँ सामाजिक नियन्त्रणक स्वरमे अन्तिम निर्णायक नहि बनबैत छथि; अपन चिन्ता स्वीकार कऽ बेटीक विकल्प पहिचानैत छथि। साँझ अमरेश निर्धारित समयपर अबैत अछि, चम्पा सिलाइक अन्तिम पट्टी पूरा करबाक लेल देरी करैत छथि। एतए प्रतीक्षाक एक नब छोट दृश्य बनैत अछि : प्रेमी

अपन समयक हिसाब स्वयं रखैत अछि, स्त्रीक मजदूरीकेँ भेटबाक कीमत नहि ठहरबैत। चम्पाक चेहरापर एहि साधारण वाक्यक प्रभाव कोणो व्यापक प्रणय-संकल्पसँ बेसी ठोस बनैत अछि।

पोखरिक पातर साँझ, कागदक नाव, चनाक दू दोना, नींबूक बीया आ हँसी अध्यायक प्रमुख लय-परिवर्तन अछि। एतए जलस्थान अपदाक पूर्वसूचना नहि; असुरक्षित सार्वजनिक निगाहक बीच चुनल सामान्य समयक आश्रय अछि। चम्पा अपन अंशक दाम दैत छथि, किंतु बादक जलेबी अपन आयसँ खुआबैत छथि—राशिक अलग-अलग व्यावहारिक अर्थ अछि। दुनू युवक-युवती भविष्यक अलग नगरक सम्भावना पर बोलैत छथि; अमरेशक नौकरीक प्रश्नक निर्णय चम्पा अपना हाथमे नहि लैत छथि। प्रेमक कथा परिणयक संक्षिप्त प्रस्तावमे धँसि नहि जाइत; ओ विकल्पक अनिश्चिततामे टिकैत अछि।

मजदूरीक काटल घण्टा : ‘सेवा’ शब्दक कथात्मक फेर-अर्थ

विद्यालयक ठेकेदार आठ घण्टाक काज, स्वेच्छा-कटौती आ सप्ताहान्त भुगतानक प्रस्ताव रखैत अछि। चम्पा प्रत्येक थैलाक सिलाइ-माप, धागा आ समय गनैत छथि; तीन थैलाक अग्रिमपर सहमति भेटैत अछि, बाकी काज एखन खुलल अछि। आश्रयक अलग बहीमे कार्यक चार घण्टा अनुचित रूपसँ काटल अछि; निजी उपचारक दू घण्टाक मजदूरी चम्पा स्वयं नहि माँगैत छथि, मुदा सम्पन्न काजक देय दर्ज करबबैत छथि। “स्वेच्छासेवी सेविका” शीर्षक हटएबाक आग्रह अनुदानक भाषामे श्रम अदृश्य बनबाक दृश्यात्मक उदाहरण अछि।

रुखसानाक बजट-क्षीण होयबाक आशंका अनुत्तरित खलनायकी नहि ठहरैत; चम्पा कार्यक परिमाण घटायब स्वीकार करैत छथि, मजदूरीक नाम बदलि कमी नुकायब नहि। रुहानी भविष्यक बजटमे पारिश्रमिक आ वास्तवमे स्वेच्छासँ देल समय अलग कोठरी प्रस्तावित करैत छथि। एहि क्रममे कथा लेखाक पारदर्शिता आ घरेलू देखभालक तनावकेँ एके कथात्मक परिसरमे राखैत अछि; मुदा पुरान अनुदानक अन्तिम जाँच एखन पूर्ण नहि अछि। अतः दृश्य “प्रशासन सुधरि गेल”क नहीं, सीमित लिखित सुधार आ खुलल विवादक अछि।

माइक छोट स्वायत्तता, दीर्घकालीन पुनरावृत्ति आ कलात्मक सीमा

औषधिक घड़ीपर माय स्वयं पानि भरैत छथि आ चिकित्सकक निर्देशानुसार गोली लैत छथि; चम्पा मिलान करैत छथि, मुदा माइक हाथमे दवाई थमाएब अनिवार्य दृश्य नहि बनैत। बादमे माय सुईक छोट थैली बनबैत छथि—टेढ़ सिलाइ सहित। ई वस्तु चम्पाक पैशागत श्रमक प्रतीक होइतहुँ माइक स्वयं सक्रिय अवदान सेहो अछि। सप्ताहक नव कार्य-सारिणी सोम, बुध, मंगल, शनि, बृहस्पति आ रविक भिन्न समय खोलैत अछि। व्यक्तिगत इच्छा लेल राखल रविक साँझ रोजीक समयक आलोचनात्मक पूरक अछि, ककरो देय नहि।

आखिरी पोखरि-दृश्य चिकित्सालयक कठोर समयक प्रतिचित्र अछि; पहिल दृश्य मे दू खुराक आ अनिश्चित मजदूरी छल, अन्तिममे दवाई घरमे अछि आ तीन थैलाक अग्रिम भेटल अछि। तथापि अमरेशक प्रशिक्षणक ठाम, माइक दीर्घ उपचार, दवाइक अगिला लागत आ कम्पनी-सर्वरक निजी-सूचना प्रस्ताव सभ अनिर्णीत अछि। अध्यायक विशेष उपलब्धि देखभालक दायित्वकेँ स्त्रीक वैयक्तिक जीवनक सम्पूर्ण हरण नहि बनबएब अछि। जोखिम ई जे पात्रसभ बहुत बेर अधिकारक उत्तम सूक्ति बोलैत छथि; सहज चना-बीया आ चासनीक दृश्य एहिसँ भिन्न स्वतंत्र संवेदना दैत अछि।

अध्याय १७५ — कबीरक चिट्ठी

अटकल दराज, अनपठाओल सम्बोधन आ शोकक काल-विचलन

अध्याय कबीरक अटकल दराज खोलब सँ शुरू होइत अछि। चाभी कनेक पाछाँ घुमएबाक नैराक जीवित दिनक क्रिया आब नैराकेँ प्रत्यक्ष उपस्थित कए बिना स्मृतिमे लौटैत अछि। भीतर नीला सूत, टिकट, दू लिफाफा आ सादा पन्ना अछि; छोट वस्तुसभ मृतकेँ वापस नहि अनैत, तथापि हटाओल सेहो नहि जाइत। कबीर “नैरा लेल” लिखैत छथि, जखनकि पत्रक कोनो पठेबाक पता नहि। आरम्भे सँ “पत्र”क संचार-परिणाम स्थगित अछि; ओकर काज जीवित प्रेषकक भीतर समयक असन्तुलनकेँ भाषा देनाइ अछि।

“अछि” आ “छल” बीच कबीरक ठहराव कथनकालक अत्यन्त सूक्ष्म क्षण अछि। मृत्युक तथ्य ज्ञात अछि, मुदा प्रत्यक्ष सम्बोधनक व्याकरण पुरान सम्बन्धक निरन्तरता चाहैत अछि। कबीर नैराक मुखसँ नव संवाद गढ़ि ओकरा विश्वसनीय स्मृति घोषित नहि करैत छथि। सुभद्राक रसोइमे तेसर गिलास नहि निकलल; दू व्यक्तिक संवादक बाद कोनो कृत्रिम सान्त्वना नहि अछि। चायक दाग पड़ल पन्ना बदलल नहि जाइत। छोट सम्पादन-अस्वीकार—दाग सहित पत्र बचल—शोकक असुधार्य अवशेषक सशक्त शिल्प अछि।

जन्म-पंजी आ पालन-पंजी : अधिकार-सुधारक सीमित घटना

रमा कर्णक कार्यालयसँ खबर अबैत अछि जे डिजिटल प्रारूप “परिवारक मूल परिचय”क एक घरमे जन्म आ पालनक दू अलग सम्बन्ध जोड़ि देलक। एक लिपिक अनुमानसँ रिक्त जन्मस्थान भरबाक शॉर्टकट दैत अछि। कबीर ओकरा नहि मानैत छथि; सुभद्राक पालन-इतिहास दर्ज हो, मुदा अपुष्ट जन्मक निष्कर्ष ताहिसँ नहि गढ़ल जाए। रुहानी हस्तलिखित सुधार-पत्र दैत छथि; रमा अस्थायी सत्यापित प्रति उपलब्ध करबैत छथि। “पालन-इतिहास दर्ज” आ “जन्म-निर्णय सम्पन्न”क फरक निर्णायक अछि। एहि दृश्य मे कथाक घटना एक विशिष्ट प्रशासनिक सफलता अछि, अस्तित्वक सम्पूर्ण उत्तर नहि।

नैराक स्मृति-कोषक प्रस्ताव, निजी कम्पनीक निःशुल्क सॉफ्टवेयर आ सम्बन्ध-विवरण साझा करबाक शर्त अनुपस्थित व्यक्ति पर प्रतिनिधिक अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। कबीर स्पष्ट सहमति नहि दैत छथि; रमा असहमतिक विकल्प वार्षिक समीक्षा मे जोड़ैत छथि। पछिला सभामे विवादरहित सार्वजनिक प्रति पुरान व्यवस्थासँ जारी रखबाक, निजी अनुबन्ध रोकबाक आ आवेदनक समय-खर्चक गणना प्रकाशित करबाक निर्णय होइत अछि। एहि स्थितिकेँ “सम्पूर्ण निजता-सुरक्षा लागू” कहब गलत : उपयोगी सुविधाक वैकल्पिक पद्धति भविष्यक कार्यदलपर अछि, जन्मक पाँति अप्रमाणित अछि।

नैराक आवाज बनाम कबीरक स्मृति : कथकक संयम

कबीर स्मृतिक विवरणमे एक बरखा-दिनक घड़ी, झगड़ाक तिथि आ चुप्पीक कारणक अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि। पत्रमे “हम तोरा सभ बेर बूझलहुँ”क सुविधाजनक कथन नहि, “बहुत बेर नहि बूझलहुँ” लिखैत छथि। ई पाठ अपने ही स्मृतिलिखनक विश्वसनीयतापर प्रश्न उठबैत अछि। नैराक काज स्मरण होइत अछि, मुदा हुनकर

स्थानपर मृत्युपछाति नव अधिकारपूर्ण वाणी निर्माण नहि होइत। तृतीयपुरुष कथावाचक कबीरक पश्चात्तापक भीतर जाइतहुँ नैराक अनुपस्थित चेतनाकेँ कथित उद्धरणक रूपमे वापस नहि लबैत छथि।

सरिता जेबमे राखल पत्रक विवरण पुछैत नहि छथि; सुभद्रा सेहो अपुष्ट जन्म-कथा कहबाक दबाव मानैत नहि छथि। निजी पत्रक गोपनीयता आ पालनकर्ताक स्मृतिक स्रोतसीमा दूनू एकरे स्वर नहि। शोकक मुख्य अपूर्णता एतय अस्तित्वगत अछि : चिट्ठी लिखल जा सकैत अछि, उत्तर नहि आयत। अभिलेख संशोधित भऽ सकैत अछि, नैरा नहि घुरत। एहि असममितिक निरन्तर स्मरणसँ उपन्यास अपने कागदी विवादक समाधानकारी ऊर्जा पर संयम राखैत अछि।

गमछा-विक्रेता, कम्बल आ अनेक श्रमक असम्बद्ध उपस्थिति

कपड़ा बेचएवाली बुनकर अपन गमछाक दाममे धागा, रंग आ बुनाइ-मजदूरीक अलग हिसाब बतबैत छथि। कबीर पूरा दाम चुकबैत छथि; फोटो लेल नकार भेटैत अछि। ओहि स्त्रीक कथात्मक काज केवल नैराक स्मृति जगाएब नहि, अपन बिक्रीक समय आ पुरान खेपक अनचुकल बकायाक सूचना देब सेहो अछि। तेँ कबीरक शोक-केन्द्रित अध्यायमे सेहो पात्रक बाहर समाजक अलग अर्थव्यवस्था चलैत अछि। नैराक श्रमिककेँ पहिने पानि देबाक पुरान शिक्षा स्मरण होइत अछि, मुदा कबीर ओकरा अपन नैतिक दोषक सम्पूर्ण क्षमा नहि मानैत छथि।

सुभद्राक पुरान कम्बलपर पड़ोसिनक टाँका पालनक बहुस्तरीय अवदानक दृश्य बनबैत अछि। कबीर सुभद्राकेँ संशोधित प्रति देखबैत छथि; ओ अपन नामक सही उच्चारण पढ़ैत छथि, मुदा कहैत छथि जे पालन-श्रम कागद पहिने सृजित नहि कएलक। वस्तु, श्रम आ स्वीकृतिक अलग काल-सरणि अछि। अन्तिमे कबीर पत्रकेँ “नैरा लेल, अनपठाओल” लिखि कम्बलसँ अलग सन्दूकमे रखैत छथि। एक वस्तु पालनक समय, दोसर मृत्युपछाति प्रेमक शब्द-संसार; दू वस्तु एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि।

अन्तक असम्पन्नता आ अगिला भोरक कथानुक्रम

सार्वजनिक बैठक किछु विवादरहित सेवाकेँ बचाएब आ निजी अनुबन्ध रोकबए सक्षम भेल, मुदा नैराक स्मृति-कोषक भविष्यक सूची, जन्म-पंजीक अपूर्णता आ निज पत्रक पाठकीय स्थिति खुलेल अछि। अन्तिम बरामदामे सरिता अपन विद्यालयक चाभी सम्हारैत छथि। कबीर हुनका जगा देबाक प्रस्ताव करैत छथि; सरिता मना करैत छथि। पाठक लेल “जगाएब” एक सामान्य सहायताक वाक्य अछि; अगले अध्यायक भोर-दृश्यक प्रस्तावना सेहो। कथात्मक कौशल एहि ठाम मृत्यु-पछाति शोककेँ भव्य समाप्तिक बदला अगिला दिनक कामक सूक्ष्म तैयारीमे छोड़ब अछि।

कलात्मक सीमा ई जे लगभग प्रत्येक दस्तावेजी मोड़ संग पात्रक व्याख्या बहुत स्पष्ट अछि; निजी कम्पनीक अनुबन्धक खतरा पाठकीय खोजभन्दा उपदेशात्मक खुलासा बनि सकैत अछि। मुदा पत्रक अटकल भाषा, गिलासक खाली स्थान, चायक दाग आ नामविहीन अर्धस्मरणक दृश्य ई घोषित नीति सँ बाहर अपूर्ण जीवनक अनुभूति सुरक्षित रखैत अछि। अध्याय अपन शीर्षकसँ शोकपत्रक पठाओल उत्तरक वचन नहि दैत; अन्ततः “न पठाओल” रहनाइएकर सटीक रूप-समाप्ति अछि।

अध्याय १७६ — सरिताक भोर

तेसर गिलास, दूधक तह आ देहमे लौटैत मृत्यु

अध्यायक आरम्भ भोरसँ पहिने सरिताक चूल्हि लग अछि। घुटनाक पीड़ा, बामा हाथसँ सहारा लऽ उठब, तेसर गिलास दिस स्वतः बढ़ैत अँगुरी आ दूध उफनब—ई सभ वस्तु आ शारीरिक क्रिया नैराक अनुपस्थितिक कथन करैत अछि। रोदनक लम्ब वक्तव्य नहि, कलाईक दुखाइ आ बर्तनक रोजक क्रम शोकक गति निर्धारित करैत अछि। नैराक मृत्यु सरिताकेँ पहिनेसँ ज्ञात छनि, मुदा देह प्रत्येक भोर एहि ज्ञानक प्रत्यक्ष नब अनुभव करैत अछि। अध्यायक शीर्षक “भोर” अतः केवल काल-सूचना नहि; पुनरावृत्तिक विरुद्ध प्रतिदिन शरीरक नव आरम्भ अछि।

खाली कुर्सीपर नीला शाल राखब वा नहि राखब, दिनक काम अपने कहल आदेश सन लगब, देहक अभ्यासमे पूर्वक बेटी-स्वर याद आबब—एहि नान्हि विकल्पसभसँ कथावाचक चरित्रक आन्तरिक निकटता रचैत छथि। कथक सरिताक भीतर जाएत छथि, मुदा नैराक मृत्युकेँ दृश्य-समय सँ उलटि पुनर्जन्म बनएबाक प्रयास नहि। गलीक दूधविक्रेता आ बस्तावाली बालिका अपन समय सँ चलैत छथि; संसार मृत्युक क्षणपर रुकेल नहि अछि। एहि कठोर असमानताक कारण सरिताक आश्रय जड़ वस्तुसभमे नहि, अपना गति चुनबाक सीमित सामर्थ्यमे अछि।

फाटक खोलब आ साझे पाठकक्षक सामाजिक समय

विद्यालयक फाटकपर रामसखी चाभी लेबाक प्रस्ताव दैत छथि; सरिता बाहरी फाटक खोलबाक काज साझा करैत छथि, भीतरी बहीक जिम्मेदारी अपन राखैत छथि। रामसखीक झाड़ू-सम्बन्धी हँसी दृश्यकेँ कोनो राजकीय विधानक भारीपनसँ बचबैत अछि। सरिताक हँसी बेटीकेँ बिसरबाक चिह्न नहि बनैत। पूर्वक ईशानक अध्ययन-कक्ष आब साझा पाठकक्ष भेल अछि, जतय खुलल पुस्तक-तख्ता, बालकसभक नीच आसन आ टूटी खिड़कीक काँटी अछि। सरिता उड़ैत पन्ना सम्हारैत मैथिलीक व्याख्यान आ बच्चासभक चित्रक कार्यक्रम अलग लगबैत छथि; एक दीवालपर भिन्न प्रकारक पाठक उपस्थिति सम्भव होइत अछि।

आठ बजेक नौ बालक-बालिका संग कथाक समय शिक्षा-कक्षक सूक्ष्म दृश्य बनैत अछि। भीजल पदचिह्न पोंछबाक छोट श्रममे सरिता आ मयंक संग बैसैत छथि। जलमार्गक सार्वजनिक नक्शा पढ़ैत एक बालक सरकारी प्रति मे पोखरिक पगडण्डी नहि भेटबाक बात कहैत अछि; सरिता जाँचबाक कार्यक्रम तय करैत छथि, तत्काल नक्शाकेँ झूठ नहि ठहरबैत। ई “नक्शा पढ़ब”क पाठ पुस्तकक शिल्पक प्रति जागरूकता सेहो बनैत अछि : प्राप्त प्रतिक अंश आ स्थलपर चलल अनुभव बीच आंशिक असङ्गति कथा आगाँ जाँचबए चाहैत अछि। पाठकक्ष न स्मारक मात्र, न जाँच-समाप्ति; उपयोगमे राखल ज्ञानक खुलल स्थान अछि।

बालकक प्रश्न : मृतकक नाम आ प्रतिस्थापन-अस्वीकार

मयंक नैराक नाम पुछैत अछि, फेर ओ कखन आबतीह से। सरिता मृत्यु स्पष्ट शब्दमे कहैत छथि। बालकक अगिला प्रश्न नक्शा के पूरा करत, कथाक महत्त्वपूर्ण विस्थापन अछि—मृत्यु-सूचना सँ भविष्यक सामूहिक काज दिस, मृत व्यक्तिक अनुपस्थितिक सत्य बचौने। सरिता बच्चा आ गामक जानकारसभकेँ आगाँ बढ़बाक पात्र

मानैत छथि, मुदा कियो नैराक बदला नैरा बनत नहि कहैत छथि। एतए उत्तर न शोक-प्रतिस्थापनक कल्पना बनैत अछि, न नैराक काजक जड़ पूजा। मूल पाठक एहि क्रममे मृत्युक असल असाध्यता आ उत्तराधिकारक वास्तविक सम्भावना भिन्न रहैत अछि।

कक्षाक अन्तमे गोंदक निशान देखिकऽ सरिता ओकरा नोचए लगैत छथि, फेर रुकि जाइत छथि; न सभ निशान तुरन्त मेटायब आवश्यक, न सभ निशान स्मारक बनायब। दो बालिका पुस्तक बाँटि पढ़ैत छथि, मुदा सहायता-सूचीमे ककर पात्रता छैक तकर अलग जाँच आवश्यक अछि। एहि सहअस्तित्वमे दृश्य-दृष्टि आ संस्थागत काल एकरे गति सँ नहि चलैत। बच्चासभ आपस मे तुरन्त पुस्तक साझा करैत छथि; विद्यालयक अधिकार-निर्णय अपन समय लैत अछि। ई फरक अध्यायक शिक्षा-स्थानक अत्यन्त उपयोगी आ आलोचनात्मक विशिष्टता अछि।

नामक नूतन कार्यविभाजन आ छात्रवृत्तिक अनिश्चितता

पद्माक वार्षिक जाँचक फाइलमे नैरा “मुख्य सम्पर्क” रूपमे दर्ज छथि; सरिता मृत्यु-तिथि लिखित रूपसँ सही राखबाक संग काजक पुरान श्रेय नहि मेटाएब चाहैत छथि। अपन जिम्मेदारी ओ फाटक, पुस्तक, उपस्थिति धरि रखैत छथि; निर्माणक माप आ बिलक वैधानिक परीक्षण अभियन्ताक अंश ठहरबैत छथि। नामक परिवर्तन एक व्यक्ति द्वारा मृत बेटीकेँ प्रतिस्थापित करब नहि, काजक जिम्मेदारी बाँटल समय अछि। ई संस्थागत दृश्य अध्यायक घरेलू भोरक विस्तार करैत अछि : घरमे चाभी उठेबाक गति आ विद्यालयमे जिम्मेदारी स्वीकार करबाक सीमा दूनू पात्रक चुनेबाक क्रिया अछि।

“नैरा स्मृति सहायता केन्द्र”क मुफ्त डिजिटल पृष्ठक प्रस्ताव चिट्ठी, पारिवारिक फोटो आ छात्रवृत्तिक पात्रताकेँ एक निजी संग्रहमे घुसाबय चाहैत अछि। सरिता मृत व्यक्तिक नामपर सहायता चलबाक विरोध नहि करैत छथि; निजी पत्र, कबीरक अप्रमाणित जन्मक सूचना आ अल्पवयस्कक फोटो-सहमति अलग रखैत छथि। प्रतिनिधिक अगिला वर्षक शुल्क आ गुप्त पात्रता-गणनाक प्रश्नक लिखित उत्तर माँगल जाइत अछि; तत्काल अनुबन्ध नहि भेल। नव आबि बसल बाढ़ि-पीड़ित परिवारक छात्रवृत्तिक नाम सूची मे नहि छैक—एतए कथा देखबैत अछि जे संवेदनशील स्मृति-योजना सेहो पुरान निवास-पत्रक आधारपर अनजाने लोककेँ बाहर कऽ सकैत अछि। महिलाकेँ केवल लिखित प्राप्ति भेटैत अछि, अन्तिम लाभ नहि।

श्रमक तीन दिन आ घरेलू स्वाद : शोकक बाहरक वास्तविकता

रामसखी पोखरि-सफाइक स्त्री-श्रमक गुमनाम “स्वयंसेवक” श्रेणीपर प्रश्न उठबैत छथि; सरिता वास्तविक दिहाड़ी, स्वेच्छा, उपकरण-भाड़ा आ दान अलग मद बनबैत छथि। विद्यालयमे रामसखीक तीन दिनक अतिरिक्त सफाइमे ठेकेदारक बिल दू दिन देखबैत अछि। सरिता विवादरहित दू दिनक भुगतान रोकि नहि रखबाक आग्रह करैत छथि, तेसर दिनक जाँचक तिथि लिखैत छथि। एहि दू दृश्य मे रामसखी केवल सरिताक शोक घटेबाक साथी नहि, अपन देय आ श्रमक आवाजवाली स्वतंत्र पात्र छथि। एतए सामाजिक कथासूत्र घरेलू दुखसँ स्वायत्त गति पाबैत अछि।

भोजनक लौकी आ अनुपस्थित आलू-भुजिया, रसोइमे नमकक बदलल स्थान, सावित्रीक जीराक छौंक—ई विषयक उद्घोषणा नहि, स्वाद आ गन्धक माध्यमसँ मरणोत्तर समयक अनगिनत सूक्ष्म रूपान्तरण अछि। रसोइ

पहिल अध्यायक “मृतकक रसोइ”क दूरगामी प्रतिध्वनि बनैत अछि; पहिने जीवित सरिताकेँ सरकारी मृतक घोषित कएल गेल छल, आब सचमुच मृत नैरा बिना घरमे जीवित माता नित्य भोर रसोइ बना रहल छथि। दूनू मृत्यु-परिस्थिति समान नहि, तथापि घरेलू क्रियाक कथात्मक महत्त्व एतए नव, अधिक अनाथ समय-पाटपर लौटैत अछि।

सावित्रीक मेला आ अन्तिम भोर : सहमतिक अस्थायी रूप

सावित्री अपन औषधि-पर्चा लऽ सरिता लग अएलीह, मुदा हुनका मेला जएबाक इच्छापर सभक हँसी भेटल अछि। सरिता सुनैत छथि, पर्चा स्वयं सावित्रीक सोझाँ रहए दैत छथि; चम्पा जखन पहुँचैत छथि तँ माय अपन मुँहसँ यात्रा-निर्णय कहैत छथि। बाट आ बैठबाक स्थान देखल जाएत, आधा बाट थाकलासँ वापस घुरि सकब। एतए वृद्धावस्थाक स्वायत्ततापर पिछला आश्रमवासिक-पर्वक प्रश्न आधुनिक यात्रा-इच्छामे फेर अबैत अछि, बिना कोनो प्राचीन दृश्य प्रत्यक्ष रूपेँ दोहरौने। यात्रा एखन योजना अछि, सम्पन्न मेला-दर्शन नहि।

अन्तिम राति नैराक पुरान उपस्थिति-पत्र काटल नहि जाइत; नव कार्यसूचीमे सरिताक वर्तमान दायित्व लिखल अछि। घरमे तेसर गिलास न दैनिक पूजा बनैत अछि, न बलपूर्वक हटाओल जाइत। अगिला भोरक अन्तिम दृश्य मे सरिता अपन औषधि खाइत छथि, पानि चढ़बैत छथि, विद्यालयक चाभी उठबैत छथि। अध्याय चक्राकार अछि—भोरसँ भोर; मुदा आरम्भ आ अन्त एकरे क्षण नहि : मध्यक विद्यालय, बालकक प्रश्न, जीविका-देय आ सावित्रीक विकल्प सरिताक दिनमे वास्तविक अन्तर आनैत अछि। कलात्मक सीमा उपदेश-सूत्रसभक आवृत्ति अछि; उपलब्धि ई जे दुःखक समाप्तिक झूठ कथा नहि गढ़ि, ओकर संग काज करबाक परिवर्तनशील गति देखाओल गेल अछि।

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १७३–१७६ क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

छविमे सम्बन्ध नहि समाइत : चारि कथाधाराक प्रवेश

आश्रमवासिक-पर्वक पहिल चारि अध्यायमे वृद्ध देह आ गमनक स्वतंत्रता, पुस्तकालयक पुनर्विन्यास आ पारिवारिक अधिकारक सीमा देखाओल गेल छल। १७३–१७६ मे कथा “संस्थागत सुधार भेलाक बाद जीवन कोना चलत?” पर केन्द्रित होइत अछि। मैथिलीक श्रेय फेर छपल, मुदा विवाहक निवास-निर्णय अलग अछि; चम्पाक मायकेँ पर्चा भेटल, मुदा उपचारक खर्च बेटीकेँ कामसँ काटैत अछि; कबीरक पालन-अभिलेख सुधरल, मुदा नैराक मृत्यु आ अपुष्ट जन्मक प्रश्न बचल अछि; सरिता विद्यालयक चाभी पबैत छथि, मुदा बेटीकेँ कोनो मानवीय कार्यसँ बदलि नहि सकैत छथि। एहि चारू अध्यायक एकता समान नीतिसूत्र नहि, अपूर्ण सुधारक बाद रोजक जीवित समयक क्रम अछि।

चारि आरम्भिक दृश्यसभ—दू चाभी, धुँधल पर्चा, अटकल दराज, तेसर गिलास—कथा-प्रविधिक भिन्न औजार अछि। चाभीकेँ खोलबाक अधिकार, पर्चाकेँ व्यावहारिक उपचारक असुविधा, दराजकेँ अपठाओल स्मृति, गिलासकेँ मृत्युक बादक अनुपस्थिति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। ओ सभक अर्थ एकरूप “कागज बनाम

जीवन”क उपदेश नहि; पात्रक भौतिक स्थितिसँ प्रत्येक उपकरणक अलग व्यवहार बनेत अछि। दृश्यसभ प्रमाणित रूपसँ सन २०४०क आधुनिक विदेहपुरमे घटैत अछि; एहि चारि अध्यायमे प्राचीन महाकाव्यक प्रत्यक्ष क्रमिक दृश्य नदारद अछि। अतः आश्रमवासिकक पूर्वक द्विकालीन रूप एहि खण्डमे स्मृति आ आधुनिक कथा द्वारा धारित अछि।

कथन-अवधि, पूर्वदीप्ति आ भोरक पुनरावर्तन

१७३ मे एकसँ अधिक दिनक क्रम, सार्वजनिक कार्यक्रम, समाचारपत्रक सुधार आ अगिला भोरक चम्पा-प्रवेश अछि। १७४ मे अस्पतालक तीव्र क्रमसँ साप्ताहिक कार्य-सारिणी धरि समय फैलैत अछि; पोखरिक शान्त दृश्य कार्यक नापल घण्टाकेँ भिन्न अनुभव दैत अछि। १७५ मे लिखल जा रहल एक पत्र कएक दिनक कार्यालय, घरेलू स्मृति आ सार्वजनिक बैठक बीच रोपल अछि; पुरान झगड़ाक अनिश्चित तिथि स्वयं कथकक स्मृतिगत सीमा प्रदर्शित करैत अछि। १७६ मे भोरसँ अर्को भोर धरि चक्राकार संरचना अधिक सघन अछि। एहि अन्तरकेँ देखिते कथनक अवधि बराबर नहि : कबीरक पत्रमे घटना रोकिनिहार मनस्थितिक घनत्व, चम्पाक बहीमे भिन्न कमाइक घण्टा आ सरिताक देहमे पुनरावृत्तिक दिनचर्या अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

पूर्वदीप्ति सेहो चारि रूपमे अछि—मैथिलीक साझे अध्ययनक वर्षाक साँझ, चम्पाक पुरान निजी सन्देशक सार्वजनिक भेला सँ उत्पन्न भय, कबीरक नैरा संग अपूर्ण याद, सरिताक नीला शाल आ बच्चासभ संग नैराक काज। ई स्मृति न एकरे दर्जाक तथ्य, न वर्तमान निर्णयक स्वतः आज्ञा। मैथिली पुरान सुख पबैतहुँ अलग रहैत छथि; चम्पा दागदार सार्वजनिक अनुभव सँ डरितहुँ पोखरिक बाट चुनैत छथि; कबीर नैराक काल्पनिक उत्तर लिखबासँ बचैत छथि; सरिता स्मारकक बदला खुलल पाठकक्ष रखैत छथि। स्मृतिसँ व्यवहारक एहि भिन्न प्रतिक्रियासँ पात्रक आन्तरिक जीवन एकरे परिणामक अनिवार्यता सँ मुक्त रहैत अछि।

आवाजक वितरण : सार्वजनिक शीर्षक आ निजी कथनक फाँक

१७३ मे आयोजकक “पुनर्मिलन” शीर्षक मैथिलीक वास्तविक निर्णयक गलत सार्वजनिक अनुकरण अछि। १७४ मे “स्वेच्छासेवी” शब्द चम्पाक पारिश्रमिक श्रम ढाँकैत अछि। १७५ मे “परिवारक मूल परिचय” डिजिटल घर पालन आ जन्मक भिन्न सम्बन्ध गड्डमड्ड करैत अछि। १७६ मे “नैरा स्मृति सहायता केन्द्र” नामक चकमक निजी पत्र-संग्रह आ छात्रवृत्तिक अपारदर्शी वर्गीकरण छिपाएब चाहैत अछि। एहि चारि स्थितिमे नामकरणक क्रिया घटनासँ अलग सत्ताधारी कथन रचैत अछि; पात्रसभ विरोधक लेल पहिने ओकर लिखल रूप देखैत छथि, फेर आपत्ति दर्ज करैत छथि। कथाभितर अभिलेख आ प्रचार स्वयं प्रतिस्पर्धी कथावाचकक सदृश उपस्थित छथि, मुदा कियो सर्वज्ञ नहि।

रुखसाना, राजन, सरिता, माइक स्वयं, अमरेश, सुभद्रा, रामसखी, मयंक, पद्मा, रमा आ बाढ़ि कारण आयल विधवा—एहि पात्रसभक अलग जरूरत मुख्य नायकसभक निर्णयमे हस्तक्षेप करैत अछि। जँ सभक आवाज केवल एक समान नैतिक निष्कर्षक पुनरुक्ति बनि जाए तँ बहुस्वरताक दाबी दुर्बल हएत; विशेष सफल क्षण ओ अछि जतय पात्रक सामाजिक समय स्वतंत्र होइत अछि। रामसखीक तेसर दिनक मजदूरी, चम्पाक अग्रिम,

राजनक फूल-खर्च, सुभद्राक सही उच्चारण, मयंकक नक्शा पूरा करबाक प्रश्न आ विधवाक अनिर्णीत छात्रवृत्ति—ई सभ एकरे जीवनक तर्क-रक्षापर आश्रित नहि।

सम्पन्न उपलब्धि, खुलल जाँच आ दुःखक अचुकल दूरी

१७३ मे संशोधित कार्यक्रम, सीमित सार्वजनिक पाठ, अलग किरायेदारी-पावती आ पत्रक अलग अनुमतिवाली व्यवहार-रेखा सम्पन्न; समाचारपत्रक छोट खण्डन छपल, मुदा पहिल समाचारक पहुँच अज्ञात; सरिताक नकल-श्रमक वास्तविक भुगतान खुलल। १७४ मे चिकित्सक जाँच, नव पर्चा, औषधि खरीद, किछु मजदूरी-पुनर्दर्ज आ तीन थैलाक अग्रिम सम्पन्न; उपचारक भविष्यक खर्च, अनुदानक पुरान जाँच आ निजी सूचना-सर्वरक प्रस्ताव खुलल। १७५ मे पालनकर्ताक नामवाली अस्थायी सत्यापित प्रति जारी, कम्पनीक निजी अनुबन्ध रोकल; जन्मक प्रश्न अप्रमाणित, नैराक पत्र अनपठाओल। १७६ मे विद्यालयक काजक अंश सरिता लैत छथि, गलत नाम-सूची लेल जाँच निर्धारित; निजी संग्रह अनुबन्ध पर हस्ताक्षर नहि; रामसखीक तेसर दिनक भुगतान विवादित, सावित्रीक मेला-यात्रा एखन तय नहि।

ई परिणामसूची अतीव आवश्यक अछि, किएक तँ एहि उपन्यासमे “सहमति”, “प्राप्ति”, “अस्थायी प्रति”, “सुधार” आ “पूर्ण भुगतान” एक-दोसरक पर्याय नहि। शोक-सन्दर्भमे सेहो नाम सुधार आ हानि-सुधार अलग; नैराक मृत्यु कोनो रजिस्टरक फेरबदल सँ उलटि नहि सकैत। कथा नव जीवित भूमिका बनबैत अछि, मृत व्यक्ति ओकर जादुई उत्तरदाता नहि। एहि भेदक कारण आधुनिक संस्थानक कथा आ निजी शोकक कथा संग चलैतहुँ एक-दोसराकेँ निगलैत नहि।

आलोचनात्मक फैसला आ शेष पर्व लेल परीक्षण

चारू अध्यायक कलात्मक शक्ति नान्हि वस्तुक आवर्तनमे अछि। मैथिलीक लोटा, माइक औषधि-डब्बा, कबीरक गमछा–कम्बल–लिफाफा, सरिताक तेसर गिलास—प्रत्येक वस्तु पूर्ववर्ती जीवनक श्रम, स्मृति अथवा स्वाधीनता केँ भाषा देबैत अछि। खास कऽ कबीरक अनपठाओल पत्र आ सरिताक चूल्हि दृश्य अधूरा सम्बन्धक अनुभवकेँ स्पष्ट भाषणक सहायता बिना व्यक्त करैत अछि। विरोधाभासो अछि : अधिकार, भुगतान आ निजी-सहमति पर पात्रसभक संवाद कएक बेर अद्भुत रूपसँ समस्वर आ परिपक्व छैक; पाठकक स्वतन्त्र अनुमान लेल अधिक दृश्यगत मौन सम्भव छल। ताहिसँ कथा-रचना बिना दोष कहब उचित नहि।

अगिला चारि अध्याय १७७–१८० वास्तविक पाठसँ जाँचबाक अछि : वृद्धक सहमति, विदुरक मार्ग, निजी क्षमा आ आश्रयक बाहर सम्बन्धी शीर्षक भविष्यसूचक अध्ययन-सूत्र मात्र छथि। एखन धरि भेटल पैटर्न शेष पर्वक अनिवार्य निष्कर्ष नहि; पाठमे असामान्य असहमति, असफलता अथवा नब कथन-प्रविधि भेटल तँ मूल्यांकन फेर परखल जाएत।

अध्याय १७७ — वृद्धक सहमति

मेलाक तीन बाट : निर्णयक अधिकारक दृश्यात्मक उद्घाटन

आरम्भमे चम्पा माइक लाठीक घिसल रबर जाँचैत छथि, आ सावित्री सवाल करैत छथि जे ई मरम्मति हुनका मेलासँ रोकबाक बहाना तँ नहि। एहि घरेलू व्यंग्यसँ कथा तुरन्त दू अलग उद्देश्य खोलैत अछि—सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करब आ यात्रा पर बुजुर्ग व्यक्तिक अपना निर्णयक अधिकार। ओसारपर मुख्य सड़क, पोखरिक पाछाँक बाट आ घर रहि चित्र मँगएबाक तीन विकल्प लिखल अछि; मुदा तेसर विकल्पमे “हमर लेल के चुनत” प्रश्न एकटा वास्तविक कथात्मक असुविधा बनैत अछि। सूची जानकारी दैत अछि, इच्छा नहि बनबैत।

सावित्रीक इच्छा एक बेर घोषित भेलाक बाद स्थिर जिद्द नहि। फाटकपर भीड़ देखि ओ पाछाँक बेंचवला बाट चुनैत छथि, घुटना थाकलापर गीत बीचमे छोड़ि घुरबाक निर्णय करैत छथि, आ अगिला भोर आराम करबाक बात कहैत छथि। अध्याय एहि क्रममे इच्छा बदलनाइ आ इच्छा छीनि लेनाइ बीच अन्तर बनबैत अछि। मेला पूरा देखबाक संख्यात्मक उपलब्धिक बदला एक जन अपन सामर्थ्यक समय कतेक नियंत्रित करि सकैत अछि, तकर कथात्मक परीक्षण होइत अछि। गीतक अधूरापन हारक चिह्न नहि, चुन्नल विराम अछि।

लाठी, दीया आ मजदूरी : वस्तु आ स्मृतिक पृथक् गति

चम्पाक सात थैलाक जाँचक श्रम, रुखसानाक अतिरिक्त रसोइ-पाली आ अनुपक औजार-कार्यशालाक समय यात्राक सहचर घटना अछि। नारीक देखभाल अनिवार्य अवैतनिक सेवा बनि नहि जाए, ताहि लेल कार्य-घण्टा, परिवर्तित जिम्मेदारी आ मजदूरीक पृथक् पर्चीक उल्लेख अछि। चम्पा सलाहकार-समूहमे प्रवेश सेहो एही शर्त पर स्वीकार करैत छथि जे समय आ यात्रा-खर्च घोषित होअय; रामसखी हस्तक्षेप कऽ घरक देखभाल आ सार्वजनिक सेवा दुनूमे स्त्री-श्रमक लोपकेँ प्रश्न बनबैत छथि। कथा अधिकारक आदर्शवादी कथनकेँ आयक ठोस शर्तमे उतारैत अछि।

सावित्रीक पाँच रुपैयाक दीया एकटा महत्त्वपूर्ण स्मृति-वस्तु अछि। लोकगीत सुनि हुनका विवाह-पछाति पहिल मेलाक याद अबैत अछि, जतए माय अपन पसिन्नसँ किछु किनबाक कहने छलीह, मुदा ओ किछु किनि नहि सकलीह। एहि संक्षिप्त पूर्वदीप्तिक पाछाँ वर्तमानमे छोट दीया किनब पहिल जीवनक अधूरल इच्छासँ संवाद करैत अछि। दीयाकेँ केवल “स्वतन्त्रताक प्रतीक” मानल जाए तँ कुम्हारक दोकान, वास्तविक मूल्य आ वृद्ध शरीरक थकानक स्थलिक महत्त्व हेरा जाएत। सरिताकेँ सावित्री गीतक अधूरल दू पाँति सुनबैत छथि—स्मृति कागदक पूर्ण अभिलेखक बजाय जीवित कण्ठमे बचैत अछि।

सहमतिक पन्ना : सहायताक कथन बनाम जीवनक कथन

बस-अड्डाक कर्मचारी वृद्ध सुविधा लेल समस्त रोग-विवरण माँगैत अछि; नियम देखलापर स्पष्ट होइत अछि जे आयु आ चलबाक कठिनाइक सामान्य घोषणा पर्याप्त छल। फाटकक सहायता-मंडपमे “प्रमुख देखभालकर्ता”क पाछाँ उपचार, आवास-परिवर्तन आ धनप्राप्तिक व्यापक स्वीकृति जुमल छल। कथानकक दूटा क्रमशः खुलैत कागद बुजुर्गक आवाजकेँ सुविधाक अदृश्य कीमत बनएबाक प्रयत्न देखबैत अछि। सावित्री “केवल आजुक

यात्रा” सीमांकन लिखबैत छथि; रमा निजी प्रतिलिपि आ अनुमति वापस लेबाक व्यवस्था पर प्रश्न उठबैत छथि। आपत्ति-पत्र भेटल, मुदा वांछित तत्काल सुविधा नहि—ई परिणाम स्वयं अनिर्णीत रहैत अछि।

वृद्ध किरायेदारक कथाधारा सावित्रीक स्थितिक मात्र अनुकृति नहि। छाजन टपकैत अछि, अस्थायी तीन रातिक रहब स्वीकार होएत, मुदा स्थायी घरक अधिकार नहि छोड़ल जाए—ई हुनकर अलग आग्रह अछि। चम्पा कागद देखए बढ़ैत छथि, किरायेदार पहिने हुनकर परिचय पुछि कागद फेर मोड़ैत छथि; रमा लग पहुँचला पर स्वयं दैत छथि। एहि लघु रोकसँ पाठकदेखैत अछि जे सामान्य सहानुभूति स्वयं कोनो व्यक्तिक निजी पत्र पढ़बाक अधिकार नहि। रातिक बैठकमे किरायेदारक लिखित शर्त सुनाओल जाइत अछि, मकानमालिकक सहमति अनुपस्थित भेला सँ मामला “विचाराधीन” रहैत अछि।

द्विकालीन सम्पादन आ दृष्टिकेन्द्रक सीमा

आधुनिक मेलाक लम्ब दृश्यक पाछाँ प्राचीन आश्रमक बाँसक डण्डा खसबाक लघु प्रसंग अबैत अछि। संजय तुरन्त उठबए बढ़ैत छथि, धृतराष्ट्र पहिने स्थान पूछैत छथि, स्वयं हाथ बढ़ाकऽ असफल भेलापर स्पष्ट सहायता माँगैत छथि। एहि दृश्यकेँ आधुनिक सहमति-कागदक सीधा ऐतिहासिक उदाहरण मानब अनुचित; दूनू अलग काल, व्यक्ति आ परिस्थितिक दृश्य छथि। मुदा कथक ओकरा क्रमसँ राखि वृद्ध व्यक्ति द्वारा सहायता स्वीकारब आ हुनकर आवाज हटेबाक बीच नाजुक दूरी पाठकक अनुभवमे अनैत छथि। कुन्तीक अनाज-मापकक आगामी जाँच एहि दृष्टिकेँ व्यापक सामुदायिक वितरण धरि लऽ जाइत अछि।

तृतीयपुरुष कथन सावित्रीक वर्तमान निर्णयकेँ चम्पाक सुरक्षाभयक अधीन नहि करैत। कथावाचक कतहु स्पष्ट बतबैत छथि जे मायकेँ रोकबाक चम्पाक अनुमान गलत पड़ल; एहि सुधरैत पूर्वधारणासँ दृष्टिकेन्द्र सावित्रीक अनुभवक प्रति खुलैत अछि। तथापि अधिकारक सूक्ष्म भेद अनेक पात्र—रमा, पद्मा, रामसखी, चम्पा—लगातार सुव्यवस्थित वाक्यमे रखैत छथि। ई पुनरावृत्ति कथाक नीतिगत पारदर्शिता बढ़बैत अछि, मुदा मेला देखबाक इन्द्रियानुभवक खुलल विस्तार किछु घटबैत अछि। गीत, भीड़ आ दीयाक थोड़ेक अव्याख्यायित समय एहि उपदेशात्मक घनत्वकेँ सन्तुलित करैत अछि।

सम्पन्न घटना आ अधूरल प्रतिज्ञाक भेद

वास्तवमे सावित्री मेला देखलनि, मार्ग बदललनि, सीमित सहायतालेल आपत्ति दर्ज करबौलनि, दीया किनलनि आ बीचमे घुरि अएलीह; चम्पा सीमित अवधिक समूह-सदस्यता स्वीकार कएलीह। वृद्ध किरायेदारक छाजन एखन नहि सुधरल, नियम-परिवर्तन लेल समूह मात्र चुनल गेल, चिकित्सकीय व्यापक अनुमति हटेबाक स्थायी नियम एखन बनबाक अछि। एही असमान उपलब्धिसँ अध्याय अन्ततः समस्त वृद्ध-कल्याणक समाधान नहि, निर्णयक अधिकार बचाएबक कठिन अभ्यास बनैत अछि। जे दीया अगिला भोर खिड़की लग रहैत अछि, ओ सुखक सजावटसँ बेसी सावित्रीक अपन दिनक क्रम निश्चित करबाक प्रमाणित जीवनवस्तु अछि।

अध्याय १७८ — विदुरक मार्ग

प्राचीन वनसँ आधुनिक सभाकक्ष : द्विकालीन कथनक स्पष्ट विन्यास

अध्याय प्राचीन आश्रममे विदुरक ओस पड़ल पादुकासँ शुरू होइत अछि। उत्तर दिसक पगडण्डी पूछब जखन धृतराष्ट्रक “बैसबाक बात”क प्रश्नसँ टकराइत अछि, तखन वनगमन केवल स्थानान्तरण नहि रहैत—मन्त्रीक पुरान अधिकार-सम्बन्धसँ अलग जीवन चुनबाक घटना बनैत अछि। विदुर बिना सिंहासनक सेहो “दरबार” बनि सकबाक सम्भावना रखैत छथि। गान्धारी प्रतिवाद करैत छथि जे विदुरक अपन प्रस्थानक घोषणा सेहो ककरो ऊपर एकतरफा निर्णय नहि बनय। एहि संवादमे कथक त्यागकेँ स्वतः निर्दोष महिमामण्डित नहि करैत।

वनवासी स्त्रीक नाला आश्रमक सुरक्षा लेल राखल पत्थरसँ मुड़ि गेल अछि। संजय वृद्धक फिसलनक डर रखैत छथि, स्त्री अपन घरक पानि माँगैत छथि; विदुर दूनू बाट नापबाक कहैत छथि। दू घण्टामे पत्थर हटैत अछि, पकड़बाक टेक बनैत अछि, पानि फेर झोपड़ीक बाट लैत अछि। राजमुद्रावला अंगूठी दए ई काजक दाम चुकएबाक विदुरक प्रस्ताव स्त्री अस्वीकार करैत छथि; श्रम आ जलक अधिकार, राजपरिवारक उपहार नहि। एक बालकक नाव आ लकड़िक चिड़ै ओहि अल्प, भौतिक बदलावकेँ जीवित स्थानीय पैमानापर देखबैत अछि।

अभिलेखीय चाभी आ संस्थाक सर्वज्ञ बनबाक आकांक्षा

सन २०४०क विदेहपुरमे दृश्य कटैत अछि : विद्यालयक सभाकक्षमे पीतलक पुरान ताला रखल अछि आ समीक्षा-समिति दस्तावेज उठएबाक, निजी अनुमति देबाक, शिकायतक अन्तिम फैसला करबाक स्थायी अधिकार चाहैत अछि। रमा “सुनवाई”, “सिफारिस”, “निर्णय” तीन अलग शीर्षक बनबैत छथि। एक मुद्रण कम्पनी कम खाँजमे कम खर्च देखैत अछि; सरिता पुरान ताला आ नव चाभीक आधारपर एकाधिकारक नाम-परिवर्तनक खतरा व्यक्त करैत छथि। राजसभाक अतीतक रूपमे कोनो शाब्दिक पुनर्जन्म नहि; कथन दूनू कालक प्रशासनिक अधिकारक संरचनात्मक अनुरूपता पाठकक सोझाँ क्रमशः रखैत अछि।

सावित्री स्वयं पहुँचि सीमित मेलायात्रा-सहमतिक सन्दर्भ रखैत छथि; वृद्ध किरायेदार लिखित रूपमे अपना घरक चाभी आ वापसी-समयक माग पठबैत छथि; फूलमती साझा जाल-श्रम पर निर्णय लेल असहमतिक स्थान चाहैत छथि; नन्दिनी जलमापक देबकेँ जमीनक अधिकार-त्याग नहि मानबाक शर्त रखैत छथि। ई आवाजसभ अलग-अलग हित आ स्थानसँ आबैत अछि। समितिक तात्कालिक गति ककर जीवनक समय बचबैत आ ककर पाछाँ छोड़ैत—इएह अध्यायक बहुस्वरताक मूल्यांकनक ठोस आधार अछि, केवल बहुतेक वक्ता होएब नहि।

दृश्यगत मौन, अभिगम्यता आ अनिर्णीत देय

श्रवणबाधित वृद्ध सदस्यक प्रश्न एक अप्रत्याशित कथात्मक हस्तक्षेप अछि। जखन सभ सदस्य समय-सीमित बहसक महत्त्व पर बोलि रहल छथि, तखन ज्ञात होइत अछि जे पिछिला दुइ बैठकक कार्यवृत्त ओहि सदस्यकेँ सुलभ रूपमे देलिये नहि गेल। दृश्य एहि कारण पूर्ववर्ती “खुलल सभा”क दाबीकेँ भीतरसँ सीमित करैत अछि; निर्णय कएल गेल जे लिखित सूचना, पढ़ि सुनाओल प्रति आ संकेत-भाषाक सहायता लेल अलग खर्च राखल

जाए। अभिगम्य संचारक भौतिक व्यवस्था कथाक वाचक-संरचनामे प्रवेश करैत अछि—ककरा बोलबाक आ सुनल जाएबाक साधन प्राप्त अछि?

सरिता मतदानसँ पहिने अधूरल तथ्य पढ़ैत छथि : किरायेदारक छाजन टपकैत अछि, चम्पाक दू घण्टाक देय बैंकमे नहि पहुँचल, फूलमतीकेँ जाल-समूहक बाजार-पत्र नहि भेटल। अन्तिम पन्नामे सेहो चम्पाक लेल “आदेश जारी” लिखल अछि, “भुगतान सम्पन्न” नहि; फूलमती अपन नावक हिस्सा लिखल गलती “जालक हिस्सा” करबाक सार्वजनिक संशोधन स्वयं करैत छथि। ई अत्यन्त छोट भाषिक परिवर्तन सम्पूर्ण संस्थागत सुधारक पहिल वास्तविक परीक्षा बनैत अछि। कथाक समाधान सरकारी मसौदा पास होएब नहि, सुधार करबाक बाट खुलल रखब अछि।

विदुरक प्रस्थान, खाली आसन आ भूतकालक बोझ

वनाश्रमक अन्तिम दृश्य मे विदुर नहि केवल धृतराष्ट्र, गान्धारी आ संजय लग प्रस्थानक सूचना दैत छथि, बल्कि अपन वचन सुधारबाक अधिकार स्पष्ट राखैत छथि। पुरान राज-अंगूठी न नदीमे फेकैत छथि, न माटिमे गाड़ैत—झोराक भीतरी कोठरीमे रखैत छथि। त्यागक चकाचौंधवला विसर्जनक बदला अपूर्ण दायित्वक अवशेष बचैत अछि। खाली आसनपर तुरन्त कियो नहि बैसब, ई अवकाश कथाक लयमे सत्ता-परिवर्तनक असहज रिक्तता बनबैत अछि। आधुनिक कालमे ईशान पुरान विचारसँ अपन नामक स्थायी मिल्कियत हटएबाक पंक्ति लिखैत छथि। दूनू कालक आन्तरिक लघु-क्रियामे परित्याग आ सुधारक कठिन भिन्नता अछि।

कथावाचक आधुनिक समितिक संशोधित मसौदा विस्तृत रूपमे बतबैत अछि—छओ-मासीय बदलैत संयोजन, प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व, निजी दस्तावेजक सीमित उपयोग, स्वतंत्र अपील; दू सदस्यक असहमति सेहो कार्यवृत्तमे रहैत अछि। ई शिल्पगत पारदर्शिता पाठककेँ सम्पन्न निर्णयक सीमा देखबैत अछि, मुदा एकहि अध्यायमे लगभग सभ वक्ता प्रशासनिक सूक्ष्मता असाधारण सफाइसँ बोलैत छथि। वनवासी स्त्रीक पानि रोकल पथ आ मौन श्रवणबाधित सदस्यक दृश्य ओहि विचार-कथनकेँ जीवनक भौतिक देरीसँ जोड़ैत अछि।

क्षमा-प्रश्नक अग्रसंकेत आ मूल्यांकन

अन्तिम भोरमे पुरान ताला इतिहासक सामानक संग राखल गेल अछि; सार्वजनिक सूचनापटपर प्रश्न अछि जे असहमति सुनल गेलाक बाद निजी क्षमा देबाक अधिकार ककर। सरिता उत्तर नहि भरैत छथि। ई स्पष्ट अग्रसंकेत अगिला अध्यायक निजी क्षमाक विषयकेँ खोलैत अछि, मुदा विदुरक मार्गक परिणाम अनिर्णीत नहि छोड़ैत : प्रस्थान भेल, समितिक संरचना बदलल, सार्वजनिक सुधार-पुस्तिका चलल। सीमित उपलब्धि आ नव प्रश्नक सन्धि अध्यायक प्रमुख कथात्मक उपलब्धि अछि।

अध्याय १७९ — निजी क्षमा

दरारिवला मापक : क्षमा-प्रार्थनासँ पहिने घटल अन्नक कथा

वनाश्रममे आरम्भक अनाज-मापकक तल्लामे दरारि अछि; परिचारिका सुवासाक भाग कम पड़ल अछि। धृतराष्ट्र राजभण्डारसँ नव मापक मँगएबाक प्रायः आदेश देनिहार छथि, मुदा रुकि पूछैत छथि जे आश्रमक भण्डारक अधिकार ककर लग अछि। बहीमे दू दिनक खाली प्रविष्टि भेटैत अछि; टूटल मापक आ लिखबाक चूक अलग-अलग घटना छथि। सुवासा अपन युद्धमे मृत बेटाक गलत लिखल नामक इतिहास लऽ अबैत छथि, मुदा भोजनक कम मात्रा आ पुत्रक स्मृति एक विषय नहि, ई स्पष्ट करैत छथि। कथाक आरम्भे निजी हानि आ ठोस आर्थिक सुधारक भिन्न समय स्थापित भेल अछि।

धृतराष्ट्र “क्षमा कऽ सकब?” पुछैत छथि; सुवासा “एखन नहि” उत्तर दैत छथि आ भोजनक हिस्सा एहि उत्तरसँ घटत नहि, ताहि भरोसा माँगैत छथि। एहि कथात्मक क्षणमे पराजयक अभिनय नहि; क्षमा माँगनिहारक इच्छा आ आहतक अस्वीकृति एकहि दृश्य मे रहैत अछि। दू दिनक कम अनाजक भरपाई पहुँचैत अछि, बाकी अभिलेख-परीक्षण अगिला भोर लेल। गान्धारीक क्रोध सेहो सेवा रोकल बिना बचैत अछि। अध्यायक भावमूलक घनत्व “क्षमा नहि”क उद्घोषसँ बेसी सुवासाक कपड़ा पसारबाक साधारण काज आ गान्धारीक अनुनय अस्वीकार करि उठि जाएबमे अछि।

तीन मेज आ दोसरक आवाज : आधुनिक कथा-सम्पादन

आधुनिक दृश्य एकटा भीजल सूचना-पत्रसँ शुरू होइत अछि, जाहिमे “क्षमा” शब्द स्याहीसँ पसिरि गेल। सरिता नव पन्नामे क्षमाक वैयक्तिक अधिकार आ अलग जारी रहनिहार अपील, बकाया, जाँच लिखैत छथि। विद्यालयमे निजी बयान, अभिलेख-जाँच आ भुगतान लेल तीन अलग मेज राखल जाइत अछि। ई स्थानिक व्यवस्था नैतिक बहसकेँ कथात्मक संरचना दैत अछि : सार्वजनिक माफी मांगब भुगतानक रकम नहि, आपत्ति-पत्र सुधारब भावनात्मक मेल नहि। प्रिन्टिङ्ग कम्पनी क्षमापत्रक अन्तमे पूर्व विवाद समाप्त मानबाक पाँति जोड़ैत अछि, जकरा पद्मा रोकैत छथि।

सावित्री आपत्तिक सुधार चाहैत छथि, मुदा युवकक माफी सुनब आ निर्णयक अधिकार ओकरा देब एक नहि मानैत छथि। चम्पाक बैंक-प्राप्ति एखन खाली; कम्पनी प्रतिनिधिक माफी ओकर समितिक मजदूरी नहि चुकबैत। ई क्षण गत अध्यायक “आदेश जारी”क अपूर्णताकेँ फेर कथामे सक्रिय करैत अछि। पात्रसभ एतए भावनात्मक नाटकक दोहराव नहि, भिन्न प्रकारक कथन—विनय, कानूनी मसौदा, बैंक-पंक्ति, निजी अनुभव—क सीमा दर्शबैत अछि।

घुमन्तु कथाधारा : साझा माँग आ पृथक् यात्रा

गौरी कपरिया, रेवा गुलगुलिया, जानकी आ आन घुमन्तु समूहक प्रवेश अध्यायक फलक व्यापक करैत अछि। संकटग्रस्त पटरी छोड़बकेँ सरकारी सूची “समूह स्वेच्छासँ स्थान छोड़लक” बनाकऽ प्रस्तुत कएने अछि। गौरी असुरक्षित पटरी खाली करब स्वीकार करैत छथि, स्थायी दावा छोड़ब नहि। लाल निशानक वास्तविक सीमा आ

बिना नाप विस्तारक अन्तर अधिकारीक परिशिष्टसँ स्पष्ट होइत अछि। सुधारल नापकेँ पूर्ण पुनर्वास मानि नहि लेल गेल; सुरक्षित अस्थायी ठाम चुनबाक सूची तीन दिनमे भेटबाक वचन अछि, गोदाम-पथारपर तेसर पक्षक दावा अबाध अछि।

गौरीक संयुक्त गठबन्धन तीन उद्देश्य लेल बनैत अछि—संकट-वेलाक पड़ाव, बेदखली नोटिस आ शिक्षा/उपचारक बाट—मुदा गौरी, रेवा, जानकीक निजी यात्रा अलग रहैत अछि। रेवा बेटीकेँ परीक्षा धरि राखतीह, जानकी सरयूक स्वास्थ्य अनुसार निर्णय लेतीह, गौरी दक्षिणी हाटमे तिरपालक काज देखतीह। गौरी अपन नेतृत्वकेँ सभक घुमन्तु परिवारक जीवनपर सार्वभौम सही बनबाक नहि दैत छथि। एहन बहुस्वरतामे “घुमन्तु” नाम सामाजिक वर्ग अछि, एके इच्छा रखने वाला सामूहिक पात्र नहि।

नैराक अनुपस्थिति, कबीरक कथन आ स्मृतिक सीमा

सरिता नैराक पुरान निजी सहायता-पत्रक शीर्षक सुधरबैत छथि—निजी सहायता सरकारी प्रमाणन नहि। नैराक मृत्यु पछाति सरिताक शोक जाँच स्थगित करबाक औचित्य बनि नहि जाए; अनिरुद्धसँ सम्बन्धित पुरान तकनीकी फाइल अगिला सुनवाई धरि खुलल रहैत अछि। दूसरी ओर व्यक्तिगत माफी सुनबाक समय सरिता स्वयं तय करब चाहैत छथि। शोक आ प्रशासनक प्रक्रिया परस्पर विरोधी नहि, भिन्न समयक विषय बनैत अछि।

कबीर टूटल पाटी ठोकैत बालिकाकेँ कहलनि जे गलतीक किछु भाग सुधरि सकैत अछि, किछु हानि नहि घुरत, आ चोट खेनिहारक उत्तर ओ लिखि नहि सकैत छथि। ई दृश्य मुख्य सभाक अमूर्त नीतिवाक्यक अपेक्षा बेसी संघन अछि, किएक तँ काठक ढील कील सम्हारब आ मृत सम्बन्धक अपूरणीयता एक संग रहैत अछि। मैथिली आ ईशानक छात्र-संवादमे सेहो क्षमा लेल दबाव अस्वीकार भेल, मुदा ओकर भाषा स्पष्टीकरणात्मक अछि; कबीरक काजक दृश्य कथकक अवधारणाकेँ क्रियामे अधिक विश्वसनीयता दैत अछि।

अधूरल समाधान, कथन-अवधि आ आलोचनात्मक सीमा

अध्याय बहुस्थलीय कटावसँ बनल : वनाश्रमक अन्न-माप, विदेहपुरक विद्यालय, घुमन्तु समूहक सार्वजनिक सुनवाई, अस्पताल-आश्रयक सम्बन्ध आ फेर सुवासाक नव भोर। वनाश्रमक अन्तिम दृश्य मे सुवासा अपन बहीक प्रति माँगैत छथि; बकाया मापकक दू दिनमे सँ एक दिनक साक्ष्य भेटल, दोसरक नहि। धृतराष्ट्र क्षमाक प्रश्न फेर नहि दोहरबैत छथि। आधुनिक अन्तिम दृश्य मे व्यक्तिगत क्षमा स्वीकार करनिहारक नामक कोनो सार्वजनिक सूची नहि; सुधरल बेदखली-सूचना, सीमित गठबन्धन आ अपीलक दिन मात्र टाँगल अछि।

कलात्मक दृष्टिसँ दरारिवला मापक, भीजल “क्षमा”क अक्षर, तिरपालक गठरी आ कबीरक काठक पाटी चारि स्वतन्त्र वस्तु-शृंखला छथि। सभकेँ एक महान न्यायसिद्धान्तक एके रूपक बना देल जाए तँ वस्तुक स्थानिकता मेटाएत। अध्यायक उपलब्धि एहि विविधताकेँ कथासूत्रमे जोड़ब अछि; सीमा ई जे कतेको पात्र लगातार अति स्पष्ट नैतिक वर्गीकरण करैत छथि, परिणामस्वरूप किछु संवाद सभाक कार्यवृत्तसँ लगैत अछि। मुदा सुवासाक अविचल “एखन नहि” एहन संरचना अछि जे पाठककेँ निर्णयक असुविधा सहित छोड़ैत अछि।

अध्याय १८० — आश्रयक बाहर

चटाईक गाँठ आ बारह खाट : अनुदानक संख्या बनाम जीवनक स्थिति

हीरावती कुररियारक चटाईक अर्धचन्द्राकार बाँस-पसली हवा मे काँपैत अछि, भीतर आश्रयक बारह खाट अछि, बाहर हुनकर औजार आ अधसील चटाई। उद्घाटनक एहि दृश्य मे जीवनक गतिशील श्रम आश्रयक स्थिर भवनसँ टकराइत अछि। अनुदान प्राप्तिक लालचमे कार्यस्थलक उपयोग, दू रातिक शरण आ स्थायी निवास एक “आवास-लाभार्थी” प्रविष्टिमे जोड़ल गेल अछि। हीरावती कहैत छथि जे काजक पावती निवासक निवेदन नहि; रुहानी गलत संख्या पर लाल रेखा खींचैत छथि, मुदा पन्ना फाड़ैत नहि। कथा गलत अभिलेखक इतिहास मिटा कऽ शुद्ध आरम्भक भ्रम नहि रचैत।

रुखसाना भोजनक थारी गनबाक बात कहैत छथि, भोजन लेनिहारक समस्त जीवनक प्रश्नावली भरबाक नहि। चम्पाक पर्चामे “स्वेच्छासँ आश्रय स्वीकार”क नीचाँ भविष्यक स्थायी पुनर्वास-दावा छोड़बाक शर्त अछि। कथा सेवाक अलग-अलग क्षणकेँ स्थायी बन्धन बना देबाक जाल देखबैत अछि। रुहानी, जे पहिने आश्रयक संचालनकर्ती छथि, एहि अध्यायमे अपन संस्था लेल सुविधाजनक संख्या त्यागि बाहर रहनिहार व्यक्तिक जरूरतक नव वर्गीकरण बनबैत छथि।

सरयूक आवाज आ सहायताक पुनरावर्ती समय

सरयू दू राति रुकलाक कारण स्थायी निवासी मानि लिखल गेल छथि; ओ बेटी लग घुरबाक चाह रखैत छथि। रुहानी चार अलग प्रश्न करैत छथि—आइ कतय रहब, उपचारक सम्पर्क, गोपनीयता आ फेर कखन पूछब। बीचमे सरयू पानि माँगैत छथि; कागदक जल्दी शरीरक विरामकेँ दबा नहि सकैत। एहि क्षणमे कथन-अवधि विस्तारित होइत अछि : फॉर्मक एक स्थायी खाँजक बदला रोज-रोज बदलि सकनिहार जीवन-निर्णय। कर्मचारीक सुविधा घटैत अछि, मुदा पात्रक आवाज बढ़ैत अछि।

अन्तमे सरयू बेटी लग जाएबाक तैयारी करैत छथि; घर छोड़पत्र पर जानकी सही नहि करैत छथि। रुहानी आपातकालमे फेर सहायताक उपाय आ रात्रि-निवासक लिखित शर्तक प्रति दैत छथि। कथानकक सफलता सरयूकेँ आश्रयमे बरकरार रखब नहि, संस्थासँ निकलबाक बादो प्रवेशक अधिकार बचल रहब अछि। “घुरि आएब”क सम्भावना पहिल “आवास-लाभार्थी” स्थायी श्रेणीकेँ समयगत रूपसँ खोलि दैत अछि।

चन्द्राक गीत, हीरावतीक नाप आ उत्सवक तनाव

नगर-उत्सव समिति कलाकार लेल आश्रयक आपात खाट उपयोग करबाक प्रस्ताव रखैत अछि, मजदूरीक बदला “लोकहितमे मंच” चाहैत अछि। चन्द्रा बादीक समुदाय पर नामसे “समस्त स्त्री कलाकार”क सामूहिक अनुबन्ध आरोपित होइत अछि। चन्द्रा अपन गायन, ताल-प्रशिक्षण, अवधि, विश्राम, रेकॉर्डिङ्ग आ यात्रा-शुल्क पृथक् लिखबैत छथि; पुरान लोकपाठक आधा बकाया देय अछि, तेँ नव अनुबन्ध सम्पन्न नहि। हीरावतीक प्रश्न—चटाई बनौना वस्तुक दाम, गीत गाबय सेवा मात्र किएक—अध्यायक लोकनाटकीय प्रतिवाद अछि। जातिनामसँ व्यक्ति-निर्णयक स्वतः स्वामित्वक भ्रम टूटैत अछि।

हीरावती सुरक्षित अस्थायी ओसारक एक सप्ताहक दिन-समय पबैत छथि; ओकर बदलामे निःशुल्क चौकीदारीक पुरान शर्त हटैत अछि। ग्राहकसँ अग्रिम लऽ नव बाँस किनैत छथि, मुदा स्थायी घरक पट्टा नगरक जाँचमे अटकल अछि। मोबाइल ठाम आ स्थिर कामक भरोसा बीचक विरोध कथा सूक्ष्म रूपसँ खोलैत अछि; ग्राहकक पावती सार्वजनिक नाम-सूची नहि बनैत। चन्द्राक गलत पोस्टर रोकल गेल आ नव परिचय सही छपल, मुदा बकायाक बैंक-प्राप्ति आ मंचक अन्तिम सहमति एखन बाकी।

प्राचीन अरुणाक पानि : आश्रमवासिक-पर्वक समापन-विन्यास

वनाश्रममे अरुणा सामूहिक रसोइमे श्रम करैत छथि, राति अपन मरम्मति चाहनिहार घरमे रहबाक इच्छुक छथि। आश्रमक मचान हुनकर पानिक खाँड़ बन्द कऽ दैत अछि; कुन्ती, संजय, अरुणा आ श्रमिक ढलान मापि बाँस सरकबैत छथि। भण्डारक ओसार छोट करबाक कीमत पड़ैत अछि, मुदा जल पुरान बाटसँ बहैत अछि। धृतराष्ट्र अरुणाक दुआरपर पहुँचि अपन पूर्वक “सभक हित” कहि आदेश देबाक प्रवृत्ति स्वीकार करैत छथि; अरुणा हुनकर आत्मालोचनाकेँ जीवनक अंतिम केंद्र नहि बनाबैत—हुनका पानि निकास आ बाँसक हिसाब चाही। एहि प्रत्युत्तरसँ प्राचीन दृश्यक स्वतन्त्र कथा-सत्ता सुरक्षित अछि।

प्राचीन आश्रम आ आधुनिक आश्रयक नामसाम्यक बाहरी आकर्षण अछिये, मुदा कथनक वास्तविक सम्बन्ध शारीरिक बसावट, जल-निकास, श्रम आ आश्रय-विहीन मानी गेल व्यक्तिक अधिकारक अलग घटना-समूहमे अछि। प्राचीन दृश्य अपन निर्णयपर पूरा होइत अछि; आधुनिक समापनमे रुहानी “भीतर अबैत, बाहर रहैत आ फेर घुरैत” लोकक अलग सुनवाईक पट्टी टाँगैत छथि। आगामी यादव-उत्सवक बाँस पोखरिमे प्रतिबिम्बित अछि, मुदा एखन गाड़ल नहि गेल—इएह दृश्य पर्वान्तक बाद अगिला पर्वक कथात्मक द्वार खोलैत अछि।

निष्कर्ष : सेवा-क्षेत्रक सीमा आ शिल्पक आलोचनात्मक तनाव

अध्यायमे घरक अधिकार, अस्थायी कार्यस्थल, आपात भोजन, उपचार आ लोककलाक मंच अलग-अलग भौतिक स्थान माँगैत अछि। रुहानीक चाभीक गुच्छा ककरो जीवनक भविष्य बन्द नहि करि सकैत, ई हुनकर वक्तव्य कथा-व्यवस्थापनक प्रमुख सूत्र अछि। तथापि एहि सूत्रक पुनःपुनः स्पष्ट उद्घोषणा कतहु पात्रक द्विविधा तात्कालिक हल कऽ दैत अछि। हीरावतीक चटाई, अरुणाक बन्द खाँड़, सरयूक विश्राम आ चन्द्राक घुँघरू अधिक सघन कथात्मक वस्तु छथि : एहि दृश्यक अपूर्णता पाठककेँ प्रश्न सोचबाक अवकाश दैत अछि। आश्रमवासिक-पर्व एतए पूर्ण होइत अछि, मुदा स्थायी घरक जाँच, कलाकारक पुरान बकाया आ अनुदानक वास्तविक कमी जेहने बाकी, तेहने राखल गेल अछि।

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १८१ — यादवक उत्सव

पीतलक चक्र आ दोहर खाँज : विजय-दृश्यक पहिल अन्तर

आधुनिक उत्सवक आरम्भ पीतलक चमकदार चक्र लुढ़कबासँ होइत अछि। एक कात दानदाता कम्पनीक नामवला सजावटी चक्र, दोसर कात सुमित्रा कामीक दोहर खाँजवला भार-थामनिहार जोड़ अछि; नाप-जाँचक पर्ची सजावटी वस्तुक दाम दर्ज करैत अछि, उपयोगी जोड़क निर्माताकेँ खाली छोड़ैत अछि। वस्तुक ई युग्म आगामी अध्यायक द्वन्द्वक सूक्ष्म रचना अछि—प्रतिष्ठाक दृश्यता आ सुरक्षित श्रमक अदृश्यता। उत्सव-मैदानक प्रस्तावित नक्सा सेहो रिक्त भूमि मानि बनल अछि, जखनकि रुखसानाक अस्थायी दोकान, बच्चाक खेलक ठाम आ हीरावतीक ग्राहकक ओसार पहिनेसँ ओतए अछि।

अध्यक्ष चाहैत अछि जे कठिन बरखक बाद बिना आपत्ति खुशी मनाओल जाए। कथक ओकर उत्सव मनएबाक इच्छाकेँ गलत ठहराबय सँ पहिने ओकर भाषणक पाछाँ पानि भरल गड्ढामे बाँस उठबैत मजदूरसभकेँ देखबैत अछि, जिनकर लिखित मजदूरी-दर नहि अछि। ई परतदार दृश्य पाठकक दृष्टि मंचक अग्रभागसँ पाछाँक श्रमधरि लऽ जाइत अछि। आनन्दक कथन आ आनन्द निर्माण करनिहारक देहक बीच दूरी कथात्मक घटना अछि, स्थिर उपदेश नहि।

द्वारकाक घाट : प्राचीन विजयक समयक अलग अधिकार

प्राचीन द्वारकामे शंख आ राजवंशक रथक उत्सव बीच जलवाहिका किशोरीक घट ढलकि रहल अछि, नाविकसभक घाट पहुँच संकीर्ण भेल अछि। कृष्णक पहिल क्रिया केवल प्रहरीकेँ हटएब नहि; उत्सवी व्यापारिक नावक मालिकसभ द्वारा दुपहरिया घाट-समय हथियाएबाक कारण पूछब अछि। बलराम राजवंशक वीरता आ नाविकक देहक श्रमक बराबरीक प्रश्न रखैत छथि। नाविक एकटा समान जयघोष नहि, अपन जल-आवागमनक समय माँगैत छथि। एहि दृश्य मे प्राचीन कथा आधुनिक नक्शाक सादृश्यसँ अधिक समृद्ध, अपने जल-व्यवस्था आ राजनीतिक अहङ्कार सहित उपस्थित अछि।

कृष्ण उत्सवक खुलल बाटक व्यावहारिक निर्णयक बाद राजकुमारसभक रोष समाप्त मानि नहि लैत छथि। किशोरी जल लऽ घर घुरैत अछि, नव पहरा-क्रम बनैत अछि, मुदा राजवंशक असन्तोष बचैत अछि। एतए कथक प्राचीन उत्सवकेँ आगामी मौसल-विनाशक निश्चित यान्त्रिक पूर्वघोषणा नहि, एकटा वर्तमान सत्तासम्बन्धक उग्र अवस्था बनबैत अछि।

धातुक जोड़क श्रेय : उत्सवक सामग्रीक अन्तर्कथा

सुमित्राक पुरान नमूनाक तिथि आ उत्सव-ठेकेदारक नव प्रयोगक पंजी परस्पर भिड़ैत अछि। नजीर सिकिलगर तकनीकी तुलना करैत भीतरी खाँज, रस्सीक टिकाव आ भारपरीक्षणक समानता बतबैत छथि; मुदा उत्तरकालीन नमूना-तिथि चोरबाक पूर्ण मंशा सिद्ध नहि करैत। सुमित्रा अपन दावाकेँ प्रमाणित उपयोग आ सुरक्षित मञ्चधरि सीमित रखैत छथि। परीक्षणक दौरान एक पुर्जा घुमि गेलाक बाद मञ्चक ओ भागक काम रुकैत अछि। कथात्मक संकट एतए अधिकार-श्रेयक भाषिक बहससँ प्रत्यक्ष शारीरिक जोखिममे रूपान्तरित होइत अछि।

सुमित्रा “मानद सम्मान” स्वीकारि अपन डिजाइन-विवाद समाप्त लिखएबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि। नव उत्पादन-मसौदामे हुनकर डिजाइनक हिस्सा, छोटलालक घिसाइक मजदूरी, नजीरक जाँच-शुल्क आ जोखिमक बीमा अलग दर्ज होइत अछि; पुरान आरोप स्वतंत्र फाइलमे रहैत अछि। सुमित्राकेँ अग्रिम परीक्षण-भत्ता भेटैत अछि, सम्पूर्ण भविष्यक उत्पादन-लाभ एखन नहि। मंचक आधा खाली रहब उत्सवक असफलता समान दिखैत अछि, मुदा बच्चोंक सुरक्षित खेलेबाक स्थान बचब एहि शिल्पगत रिक्तिक वास्तविक मूल्य अछि।

रसोइ, गीत आ रेकॉर्डिङ्गक अधिकार : बहुध्वनि

रुखसाना तीस स्वयंसेवकक भोजन नि:शुल्क “समुदाय-सहयोग” मानबाक बदला अनाज, ईंधन आ काजक कीमत लिखए चाहैत छथि। चन्द्रा बादी जीवित मंच-प्रस्तुति आ डिजिटल रेकॉर्डिङ्गक अलग अनुमति रखैत छथि; आयोजक पहिने सम्पूर्ण स्वरकेँ स्थायी सम्पत्ति बनए चाहैत छल। चन्द्रा आ सुमित्राक लघु संवादमे “सभक सुनबाक” आ “सभकेँ बेचबाक” अधिकारक भेद उभरैत अछि। एहि समान हितक बीच श्रमक प्रकृति अलग : एक आवाजक प्रदर्शन, दोसर वस्तुक नाप आ भार। कथक सभकेँ केवल कलाकार-रूपकमे घोलि नहि दैत।

चन्द्राक गीतक प्रथम प्रदर्शन सम्पन्न होइत अछि; मंचक पाछाँसँ बेचल जाएवला रेकॉर्डिङ्ग ओ रोकबैत छथि। कथामे आयोजन-सम्बन्धी नियम बनब एक बात, ओकर उलङ्घनक क्षणमे कलाकारक वास्तविक प्रतिवाद दोसर। स्थानीय सुरक्षित प्रतिलिपि हटेबाक पुष्टि माँगल गेल अछि, पुरान डिजिटल विक्रेता-फाइलक जाँच शेष। एहि भेदसँ कथानक “अनुबंध बनि गेल अर्थात् सभ ठीक”क सरल धाराकेँ अस्वीकार करैत अछि।

अन्तिम रातिक काँपत हाथ : मौसल-प्रवाहक अगिला संकट

उद्घाटनमे दीया जलैत अछि; रंगोलीपर वर्षाक रङ्ग बहैत अछि; चन्द्राक प्रस्तुति आ मजदूरी-खाता समानान्तर अछि। अन्तिम पहरमे पीतलक प्यालाक लग एक युवकक हाथ काँपैत अछि, आ समिति बदनामीसँ बचबाक लेल ओकरा बाहर करए चाहैत अछि। चम्पा दूरसँ देखैत छथि आ सहायता चाहनिहार देह आ बिक्री-विवादक अलग जाँचक प्रश्न रखैत छथि। एहि दृश्यपर अध्याय समाप्त होएब उत्सवक विजय-गीतसँ स्वास्थ्य-सङ्कटमे कथात्मक लय-परिवर्तन अछि।

उपलब्धि : सुरक्षित पाट, संकटकालीन बाट, सुमित्राक सीमित उत्पादन-अनुबन्ध, भोजनक अलग व्यय आ चन्द्राक प्रदर्शनक पहिल प्राप्ति। अपूर्ण : सम्पूर्ण मजदूरी, पुरान डिजाइन-विवाद, रेकॉर्डिङ्गक जाँच आ काँपत युवकक स्थिति। उपन्यासक शैलीगत सीमा ई जे लगभग सभ पात्र कागदक परिभाषामे कुशल अछि, मुदा हाथ काँपनिहार देहक अचानक आगमन पाठकीय निश्चितताकेँ भङ्ग करैत अछि। मौसल-पर्वक आरम्भ एहि अव्यवस्थित भौतिक आ मानवीय घटनासँ अधिक प्रभावकारी बनैत अछि।

अध्याय १८२ — मादक दिन

उलटल प्याला आ द्वैध कथनकाल : आपात दृश्य

अध्याय १८१क काँपत युवकक सूत्र तत्क्षण विस्तृत दृश्य बनैत अछि : प्याला माटिमे उलटैत अछि, ढोल अबाध बजैत अछि, चम्पा घुटना टेकैत छथि। उत्सवी तालक निरन्तरता आ दीपकक देहक अस्थिरता कथनक दू अलग अवधि रचैत अछि। चम्पा अपन सीमित कौशल स्पष्ट करैत प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी बजबैत छथि; जेब टटोलब, कागदक उधारी सबकेँ देखाएब, नामक प्रचार रोकैत छथि। एतए दृष्टिकेन्द्र चिकित्सकीय सर्वज्ञ नहि; उपस्थित देखभालकर्तीक सीमित देखल आ रोगीक स्वयं कहल बात सँ कथा बढ़ैत अछि।

दीपक उत्तर देबाक स्थितिमे संक्षेपेँ नाम कहैत छथि, मित्र राकेश पुरान सेवन आ भयक बारे अनुमानित जानकारी दैत अछि। कथा ओहि अनुमानसँ पदार्थक निश्चित प्रकार वा निदान सिद्ध नहि करैत। चिकित्सालय गमनमे दीपकक समझल सहमति आ घरमे खबर भेजबाक सीमित इच्छा केन्द्रीय रहैत अछि। बादमे चिकित्सक उपचारक सम्भावना बतबैत छथि, मुदा काजपर घुरबाक तत्काल गारण्टी नहि दैत। रोगीक भावी जीवनकेँ एक शपथ, एक चिकित्सा आ एक सार्वजनिक दण्डक सीमित कथानकमे बन्द नहि कएल गेल अछि।

द्वारकाक दोसर उत्सव-दिन : वीरताक दबाव आ जलक अधिकार

प्राचीन द्वारकामे विजय-उत्सवक दोसर दिन घाट फेर बाधित अछि, एहि बेर मदिरा पीबैत युवकसभ आ नाविकक रस्सी खोलबाक अपमानक कारण। बलराम काँपत युवककेँ विश्राम दैत छथि आ वृद्धाक जलपात्रसँ स्वयं पानि पीबि पीबाक सामूहिक दबावकेँ चुनौती दैत छथि। कृष्ण नाविकक प्रत्यक्ष अनुभव पूछैत छथि, अपमानक बाद एकत्र नियम रखैत छथि—घाट खुलल रहय, पीबाक जबरदस्ती नहि, अचेतक देखभाल अनिवार्य। साम्बक मुड़ल आँखि आ फेकल पात्रक टुकड़ा असहमति बचल रहबाक दृश्य-चिह्न छथि।

ई प्राचीन दृश्य आधुनिक दीपकक चिकित्सा-रिपोर्टक पूर्वज कथा नहि, कथात्मक प्रतिध्वनि अछि। द्वारकामे सार्वजनिक बल आ सामूहिक अपमानक दवाब प्रमुख, विदेहपुरमे देहक उपचार, रोजी, बिक्री आ निजता अलग कथासूत्र। दूनूकेँ एकरे “मद्यपानक दुष्परिणाम”क उदाहरण मानल जाए तँ नाविकक रोजीक संकट, दीपकक अनिश्चित रोगावस्था आ साम्बक सामूहिक गर्वक भिन्नता मेटायत। द्विकालीन संरचनाक सफलता एहि अन्तर बचबएमे अछि।

दीपकक आवाज आ सार्वजनिक चेहराक भूख

उत्सव सचिव पर्दा खींचि दृश्य छिपए चाहैत अछि; पत्रकार फोटो माँगैत अछि; पदाधिकारी शपथक प्रचार चाहैत अछि। कथा एहि तीनू प्रयासकेँ प्रतिस्पर्धी सार्वजनिक कथनक रूपमे व्यवस्थित करैत अछि, जकरा समक्ष दीपकक संक्षिप्त “मदद चाही”क स्वर अछि। राकेश माइक गालीक भय आ मित्रक काज छूटबाक प्रसंग बतबैत अछि; दीपक स्वयं परिवारकेँ फोन करैत अछि, माय क्रोधसँ शुरू कऽ भोरमे आएबाक कहैत छथि। एहि छोट घरेलू संवादमे तुरन्त क्षमा वा चमत्कारिक परिवर्तन नहि, सम्बन्धक समयगत सम्भावना बनैत अछि।

उपचारक गोपनीय अभिलेख आ अवैध बिक्रीक अनुसन्धान स्वतन्त्र मार्ग पाबैत अछि। पद्मा सुनी बात आ देखल व्यवहारक समय अलग रखैत छथि; पुलिस सार्वजनिक रसीद आ स्वतंत्र गवाही पर जाँच करबाक स्वीकार करैत अछि। कम्पनीक नि:शुल्क परामर्शक प्रस्तावमे उपचारार्थीक प्रचारक विवरण माँगल गेल, जे कटाओल गेल। सामाजिक आलोचना एहि ठाम कथन-तकनीक बनैत अछि : एक घटना पर अनेक अपूर्ण कथावाचक छथि, मुदा ककरो अनुमानकेँ उपन्यास तत्काल अन्तिम सत्य नहि करैत।

सुमनक लाल बिन्दु : देह-कथासँ कलाकृति-कथाक काट

मध्य भागमे सुमन टिकुलहार अपन तीन रेखा आ लाल बिन्दुवला पुरान नमूना कम्पनीक नब फलकपर देखैत छथि। कथा अचानक उपचारसँ कलात्मक नमूनाक उपयोगक प्रश्न पर कटैत अछि; ई गौण घटनाधारा नहि, एकसँ अधिक निजी अधिकारक एकत्र सार्वजनिक उत्सवमे घुलि जाएबाक खतरा देखबैत अछि। छपाइघरक खर्च-पंजी छपल प्रति गनैत अछि, नमूनाक उपयोग-अधिकार खाली राखैत अछि। सुमन सभ गोल चिह्नपर स्वामित्व नहि माँगैत, विशिष्ट रेखाक क्रम आ पुरान तिथि पर दावा करैत छथि।

आगाँक चालीस फलक लेल सीमित अवधि, नाम, पारिश्रमिक आ पुनर्मुद्रणक अलग अनुमति सहित अनुबन्ध भेल; पहिल अग्रिम भेटल। पुरान अनधिकृत नकलक क्षतिपूर्ति एही अनुबन्धसँ समाप्त नहि भेल। एक बच्ची सुमनक आकृति देखि भिन्न रेखाक क्रमसँ अपना हाथक गोल बनबैत अछि, आ सुमन रोकैत नहि छथि। सीखबाक रूपान्तरण आ व्यावसायिक नकलक अन्तर एक दृश्यगत जवाब बनैत अछि, जकर लेल लम्ब व्याख्याक आवश्यकता कम पड़ैत अछि।

अस्पतालसँ स्मारक धरि : अपूर्ण अन्तक अग्रसंकेत

दीपक अतिरिक्त देखभाल लेल चिकित्सालयमे रहैत छथि; मित्र राकेश ठेकेदारक समक्ष पुरान तीन रातिक श्रम-रसीद रखैत अछि। देयक तारीख लिखल गेल, भुगतान एखन सम्पन्न नहि। चम्पा अपन घायल कलाई सहित घुरि माइक लग चुप बैसैत छथि, दीपकक नाम नहि खोलैत। ई चुप्पी कथाक शोर सँ नैतिक अवकाश अछि, जखनकि सार्वजनिक कार्यक्रम शोरक द्वारा प्रत्येक जीवनकेँ एक प्रचारक कथा बनए चाहैत अछि।

अन्तिम दृश्य मे मृतकक नामक स्थायी स्मारक, फोटो आ आसपासक व्यापारी पट्टिकाक विशेषाधिकारवला प्रस्ताव अबैत अछि; सुमनक सीमित डिजाइन-सहमतिक बाहर नव उपयोगक चित्र बनल अछि। रुहानी लाल रेखा खींचि विषय अगिला सभामे रखैत छथि। व्यसन-उपचारक अध्याय स्मारक-ठेकाक तात्कालिक निष्कर्ष नहि दैत, बल्कि निजता आ बाजारीकरणक नव कथारूपी प्रश्न खोलैत अछि। एहि संक्रमणक शिल्पगत उपलब्धि अछि, मुदा अनुगामी प्रत्येक कथाधारामे समान भाषिक स्पष्टता पात्रसभक स्वाभाविक विरोधक तीखापन किछु कम करैत अछि।

अध्याय १८३ — स्मारकक ठेका

फागुनक घाट आ विज्ञापनक खाली खाना : स्मृतिक सार्वजनिक दृश्य

सन २०४१क घाट-आदर पर्वक भोरमे रामसखी काइ हटबैत छथि आ पानिमे भीजल कागदपर “अमर स्मृति, स्थायी प्रायोजन” छपल अछि; जकरा पाछाँ मृतकक नाम नहि, विज्ञापन लेल खाली खाँचा अछि। ई उद्घाटन स्मरणक बाजारीकरणकेँ लेखकक उद्घोषणासँ पहिने दृश्य बना दैत अछि। सरिता डगमग कुर्सी नीचाँ ईंट रखैत छथि; ई लघु घरैलू उपाय आँचलिक स्मृति-स्थल बनएबाक प्रस्तावक पाछाँ वास्तविक ढाँचागत अस्थिरता सँ अर्थपूर्ण विरोध रचैत अछि।

शैलज चमकीला पत्थरक नमूना देखाकऽ दस वर्षक चित्र, नाम-सूची आ दोकान-प्रचारक अधिकार माँगैत अछि। सरिता नैराक निजी पत्र-फोटो आ नाम व्यावसायिक अधिकारस्वरूप देब अस्वीकार करैत छथि; रुहानी स्मृतिस्थल चाहनिहार आन परिवारक जरूरत उठबैत छथि। दूनूक सार्वजनिक तिक्तता महत्त्वपूर्ण अछि : पूर्ववर्ती अध्यायसभमे सहकर्मी स्त्री-पात्र प्रायः एक-दोसरक निष्कर्षकेँ समर्थन देनिहार छथि; एतए दू वैध किन्तु अपूर्ण इच्छा एक-दोसरासँ टकराइत अछि। चम्पाक बीचमे चुप रहब एहि असहमतिमे वास्तविक अवधि जोड़ैत अछि।

घाटक हाथ आ दुकानक तीन डिब्बा : स्मृतिक निचाँ श्रम

रामसखी स्वच्छता-काजक मजदूरी, गादक निस्तारण, पानिमे उतरनिहारक सुरक्षा आ भाँगल सीढ़ीक मरम्मतिक अलग व्यय उठबैत छथि। कम्पनी एहि कामक रकम चमकीला पत्थरक लागतमे मिला देने अछि। उर्मिला रजकक बहिन अस्पतालक रात्रिपाली, घाट-धुलाई आ कपड़ा ढुलाईक बचल दावा देखबैत छथि; मृत उर्मिलाक नाम शिलापर खोदबाक प्रस्ताव एहि बकायाक दाम चुकएबाक स्वतः उपाय नहि। यथार्थ क्रियाक बीच ई अन्तर आलोचनात्मक छैक : स्मारकक रूपरेखा बढ़ैत अछि, मुदा काइ हटौनिहारक हाथक हरा दाग एखन वर्तमानक काम कहैत अछि।

फरजाना चूड़ीहारक तीन डिब्बा—लाहक हाथक कड़ा, शीशाक जोड़ी, मशीन बनल चूड़ी—स्मृतिसँ जुड़ल एक महँग “पवित्र” व्यापार बनएबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत अछि। खरीदारक स्वतंत्र पसिन्न, सामग्रीक स्रोत आ पारिश्रमिक अलग रखल गेल अछि। कमला जैन भोजन-दाम आ निजी धार्मिक अनुष्ठानक प्रचार अलग करैत छथि; भतीजी रिद्धिक निजी असहमति परिवारक दोकानक वास्तविक बहस बनि रहैत अछि, कियो एक ही दिनमे पूर्ण मेलक घोषणा नहि करैत। एहि कथाधारासभक विस्तार स्मारककेँ केवल सरिता–रुहानीक बौद्धिक बहस नहि रहए दैत।

द्वारकाक नाव आ अपूर्ण पित्तरि : काल-स्तरक व्यवस्थित पृथक्करण

बीचमे प्राचीन द्वारकाक घाटपर एक नाविक अपन मृत भायक नाम राजकीय विजय-गीत लेल नावपर खुरचए देब अस्वीकार करैत अछि। नाविकक पत्नी ओहि दिन सार्वजनिक नामपट नहि चाहैत छथि। बलराम नावक स्वामित्व पहिचानैत छथि; कृष्ण नामक मानवीय सम्बन्ध राजकीय आभूषणसँ स्वतंत्र रहबाक बात रखैत छथि। आधुनिक

शैलजक कम्पनीक व्यावसायिक शर्त आ प्राचीन राजवंशक गौरव एक वस्तु नहि, मुदा कथन-सम्पादन मृतकक स्मरणकेँ जीवित परिवारक निर्णयसँ काटबाक दू अलग दबाव समान्तर पढ़बैत अछि।

रामसखीक पएरसँ निकलल अपूर्ण अक्षरवला पीतलक पट्टी पहिचान बिना सुरक्षित डब्बामे राखल जाइत अछि। शैलज एहि वस्तुकेँ संग्रहालयक प्रस्ताव सँ जोड़ए चाहैत अछि; पद्मा भेटबाक स्थान, समय आ साक्षी लिखैत छथि। धातु न केकरो मृतक-नामक अन्तिम प्रमाण अछि, न कम्पनीक नब स्वामित्वक चाभी। कथा जँ एहि वस्तुकेँ तुरन्त ऐतिहासिक रहस्यक समाधान बनवित, तखन सार्वजनिक स्मृतिक निर्माण सम्बन्धी मूल द्वन्द्व घटि जाइत; विलम्ब ओकर अर्थ खुलल रखैत अछि।

निविदा, अनुमति आ असहमतिक प्राप्ति : कथा-विकास

तारा समस्याकेँ चार निर्णयमे बाँटैत छथि—स्मरण लेल ठाम, पत्थरक ठेका, मरम्मति आ नामक सूची। रुहानी आ सरिता एक-दोसरक अपूर्णता पहचानैत छथि; संयुक्त प्रस्तावमे नाम जोडनाइ वा नहि जोड़नाइ परिवारक चुनाव, बिना नाम दीप रखबाक सुरक्षित ठाम, सार्वजनिक प्रतिलिपिक वास्तविक लागत आ निजी फोटो-पत्रक पृथक् अनुमति अछि। पुरान मजदूरी आ क्षतिपूर्तिक दावाक अन्त एहि स्मारकसँ नहि। शैलज प्रतिस्पर्धात्मक निविदामे निर्माण-दाम देब सकैत अछि, मुदा नाम-सूची पर एकाधिकार नहि।

नगर अधिकारी निर्माणक अस्थायी रोक आ खुलल निविदा स्वीकार करैत छथि, दू तकनीकी विकल्पक जाँच बाकी अछि। किछु लोक स्मारकक देरीसँ निराश छथि; शैलजक सम्भावित लाभ घटल, मुदा कथा स्वतः ओकर कम्पनीकेँ अपराधी घोषित नहि करैत। सरिता अपन बेटी नैराक नाम लेल एखन “नहि”, आन स्त्री अपन पतिक नाम लेल “हँ” चुनि सकैत छथि। समान दुःखसँ समान सार्वजनिक कथन निकलबाक अनिवार्यता टुटैत अछि। एहि असमयक, असमान इच्छासभक कारण एहि अध्यायमे बहुस्वरता पूर्वक अनेक अध्यायसँ अधिक विश्वसनीय अछि।

खाली गिलास आ नेतृत्वक अगिला संघर्ष

रुहानी राति आश्रय लौटि दू विरोधी पत्र पढ़ैत छथि—पुरान स्वयंसेवक पद छोड़बाक कहैत, युवा सदस्य एक व्यक्ति-हस्ताक्षरक वर्चस्व रोकबाक। एहि क्षणमे स्मारक-विवाद संस्थागत नेतृत्वक नव कथापथ खोलैत अछि। सरिता घर घुरि नैराक खाली गिलास हटबैत नहि, नामपटपर नहियो चढ़बैत; ओकरा देखैत चूल्हिपर पानि गरम करैत छथि। काइ लागल हथेली, फरजानाक डिब्बा आ उर्मिलाक बहिनक देह हुनकर स्मृति-कथनक भीतर फिरैत अछि। एहि भाव-सघन दृश्यसँ सार्वजनिक समिति-विवाद निजी शोकक साधारण आवर्तनमे घुरि अबैत अछि।

अध्यायक कमजोरी—प्रायः प्रत्येक व्यावसायिक दावा तत्काल शब्दशः विवेचित होइत अछि—किन्तु सरिता–रुहानीक वास्तविक तिक्तता आ निर्माणक अनिश्चित काल कहानीकेँ नैतिक जीतक सरल अन्तसँ रोकैत अछि। स्मारकक ठेका एखन लागल नहि; स्वच्छता आ घाट-मरम्मति चलैत अछि; अनुत्तरित नेतृत्वक प्रश्न अगले अध्यायक कारण बनैत अछि। ई परिवर्तन कार्यसूचीक अनिवार्य सूची नहि, आश्रयक भीतर टूटैत सहमतिक कथा-परिणाम अछि।

अध्याय १८४ — रुहानीक चुनाव

मतपेटीक उखड़ल कोन : नेतृत्वक दृश्यात्मक प्रस्तावना

सन २०४१क विदेहपुरमे पीतरङ्गक मतपेटीक उखड़ल कोन रुहानी देखैत छथि। भीतर बाँसक बुरादा आ अधजड़ल कील देखए लेल ओ पेटी उलटि दैत छथि; चुनावक पवित्र पात्र नहि, मरम्मति चाहनिहार सामुदायिक वस्तु सोझाँ अछि। पिछला स्मारक-विवादे सँ रुहानी पर पक्षपातक आरोप अछि, मुदा युवा कार्यकर्ताक आग्रह केवल रुहानीक पद हटएब नहि—सार्वजनिक बही आ निजी विवरणक चाभी एके व्यक्तिक नियन्त्रणसँ निकालब अछि। उद्घाटनक टूटल पेटी बादमे निर्वाचित समूहक सामूहिक मरम्मतिक प्रतीक्षा करैत अछि, जाहिसँ आरम्भ–अन्तक वस्तुगत वलय बनैत अछि।

मतदाता-परिभाषाक विवादमे हीरावती दिनमे काज करैत छथि, जानकी चलैत घरवाली छथि, रुहानी स्थायी निवासी नहि छथि। नियममे “नियमित सार्वजनिक सहयोगी” लिखल अछि, अवधि अस्पष्ट। पद्मा छओ मासक उपस्थिति-बही अनैत छथि; रुहानी स्वयं वोटर जोड़बाक वा हटएबाक एकाधिकार नहि चाहैत छथि। “आश्रयक सदस्य”क कालिक अर्थ एहि कारण खुलैत अछि : रहबाक खाटसँ बाहर श्रम, आपदा-पाली आ सार्वजनिक सेवा सेहो संस्था निर्माण करैत अछि। चुनावक कथा वोट गिनबाक पहिने मताधिकारक वाचिक-संरचनाकेँ परखैत अछि।

प्रत्याशीक आवाज, दानक शर्त आ अपीलक समय

झरना दू वर्षक बाढ़ि-पालीक आधारपर स्वतन्त्र प्रत्याशी छथि; “रुहानीक लड़की” कहल जाएब अस्वीकार करैत छथि। महेन्द्र अपन पुरान राहत-गाड़ीक कामक वास्तविक योगदान लऽ अबैत अछि, मुदा दातासँ शीघ्र अनुबन्ध लेल अध्यक्षक व्यापक आपात-हस्ताक्षरक अधिकार चाहैत अछि। झरना आपात उपचार आ नाम/पत्रक स्थायी उपयोगक बीच अधिकार अलग रखबाक प्रश्न उठबैत छथि। दूनू पात्रक इच्छा अलग अछि; महेन्द्रकेँ केवल दुष्ट प्रतिद्वन्द्वी बना देला सँ ओकर राहतक वास्तविक काम आ समर्थकक भय हेरा जायत।

महेन्द्रक समर्थक कम्पनीक दानक वचनपत्रकेँ हुनकर जीतसँ जोड़ैत छथि; पाठमे “कार्यकारी नेतृत्वक निरन्तरता” लिखल अछि, विशिष्ट नाम नहि। महेन्द्र अपन पाठन-व्याख्याक भ्रम स्वीकार करैत अछि, पत्र मतपेटीसँ अलग सार्वजनिक प्रस्तावक पेटीमे जाइत अछि। मतगणनामे दू अस्पष्ट मतपत्रक कारण सार्वजनिक पढ़ल गेल, दू बेर गिनती भेल, झरना अल्प मुदा स्पष्ट अन्तरसँ निर्वाचित भेलीह। महेन्द्रक लिखित आपत्ति लेल सात दिनक समीक्षा-प्रक्रिया बनल अछि; परिणाम आज लागू होइत अछि, पुनर्गणनाक सम्भावना पूर्णतः बन्द नहि। ई अपूर्ण नियन्त्रण कथात्मक दृष्टिसँ वास्तविक लोकतान्त्रिक तनाव बचबैत अछि।

रुचि-छबीलीक गाँठ आ शान्तिक तोरण : निर्वाचनक बाहर श्रम

रुचि धारिकार आ छबीली सुरक्षा-संकेतक बाँस-चटाई लैत छथि। रुचिक पारिवारिक बुनौट, छबीलीक बदलल गाँठ आ नगरपालिका उपयोगक इच्छा एकहि हस्तनिर्मित वस्तुमे अछि। झरना व्यक्तिगत श्रेय, कच्चामाल, प्रति-घण्टा मेहनताना, परीक्षण आ पुनर्मुद्रणक पृथक् व्यवस्था सुझबैत छथि। छबीलीक एक गाँठ टेढ़ पड़ैत अछि; जानकी

संकेतक सुरक्षा लेल परीक्षणक महत्त्व बतबैत छथि। माँक गवाही बेटीकेँ बुननिहार बनएबाक व्यावहारिक आधार अछि, मुदा बेटी अपन गलती सुधारैत स्वतंत्र कारीगर पात्र बनैत छथि।

शान्ति बारी विवाहक मौर-तोरण लेल दानक नामपर मुफ्त काज देब अस्वीकार करैत छथि। ओ लागतक आधा अग्रिम, बाँकी हस्तान्तरणपर चाहैत छथि; कम बजटवला परिवार लेल कम किरायाक पातर तोरणक विकल्प दैत छथि। विवाहक बेटी स्वयं हलुक सजावट पसिन्न करैत छथि, पहिल अग्रिम अपन बचतसँ दैत छथि। अन्तमे रुचिक तीस सुरक्षा-पट्टीक प्रारम्भिक खेपक कच्चामाल-अग्रिम आ शान्तिक तोरणक वास्तविक अग्रिम स्वीकृत/प्राप्त होइत अछि; छबीलीक नव गाँठक सुरक्षा-परीक्षण एखन शेष। चुनावक राजनीतिक समय आ शिल्पक मजदूरीक समय ई समानान्तर घटना-शृंखला जोड़ैत अछि।

प्राचीन घाट-पहरा आ चाभीक हस्तान्तरण : कालक भिन्न लय

आधुनिक मतगणनाक बीच प्राचीन द्वारकामे यादव युवकसभक घाट-पहराक प्रथम अधिकारक दाबी अबैत अछि। साम्ब राजवंशक इच्छा पर जोर दैत अछि, वृद्ध नाविक ज्वार, माछमारक नौका आ रोगी लेल रातिक मार्गक सूची राखैत अछि; कृष्ण बलसँ खींचल रस्सीक वास्तविक श्रम याद दिलबैत छथि। प्रस्ताव सार्वजनिक सुनवाई बिना लागू नहि होएत; साम्ब असन्तुष्ट अछि। आधुनिक चुनावक परिणामक संग प्राचीन सभाक कोनो सीधा कारण-सम्बन्ध नहि, मुदा जखन पदक अधिकार सार्वजनिक समयक मालिक बनबाक प्रयत्न करैत अछि, तखन दूनू कालक संरचनात्मक तनाव पाठकीय रूपसँ उजागर होइत अछि।

झरना विजय पाछाँ पहिने तीन चाभी मँगैत छथि—सार्वजनिक पंजी, सामग्री-भण्डार, निजी स्वास्थ्य-कक्ष। तेसर चाभी गोपनीय रखरखाव अधिकारी लग वापस दैत छथि; पहिल दूटा रसीदसहित हस्तान्तरित होइत अछि। रुहानी हलुकता आ खालीपन एक संग अनुभव करैत छथि। एहि शारीरिक द्वन्द्वसँ संस्थापकक पदछोड़बाक स्थिति सपाट नैतिक विजय नहि रहैत; चाभी अनेक आपदाक रातिमे रुहानीक देहक विस्तार बनि गेल छल। झरना ओहि चाभीक विभाजनसँ संस्थाक अधिकार-अन्तर ठोस क्रियामे बदलैत छथि।

अन्तिम परिणाम, विश्लेषणक सामर्थ्य आ शेष संशय

रुहानी स्वेच्छासँ अध्यक्ष पदक प्रत्याशी नहि बनैत छथि, मुदा पुरान अनुबन्धक उत्तरदायित्व जाँच लेल उपलब्ध रहबाक कहैत छथि। झरना निर्वाचित छथि, महेन्द्र आपत्तिक रसीद लऽ गेल अछि; सार्वजनिक लेखा-परीक्षकक अलग चुनाव भविष्यक विषय अछि। तारा तीन मासक जाँच-चक्र प्रस्तावित करैत छथि, चम्पा जाँच करनिहार आ हिसाब देनिहारक एके व्यक्ति नहि होएबाक अन्तर रखैत छथि। शैलजक संशोधित दानक नव लिफाफा रात्रिमे पहुँचैत अछि, तत्काल स्वीकृत नहि। “नेतृत्व बदलल अछि; देय, अपील आ सहमतिक सीमा नहि मेटल” सूचनापट कार्यक निरन्तरता आ सत्ताक सीमितता एक संग व्यक्त करैत अछि।

अध्यायक आख्यानगत श्रेष्ठता मतगणनाक अनिश्चितता, नामांकनक इतिहास, कुण्ठित पराजय आ रुहानीक खालीपनकेँ शिल्प-व्यवसायसभक स्वतन्त्र घटनासँ जोड़ब अछि। सीमा ई जे प्रत्येक मुद्दाक लिखित समाधान अत्यन्त क्रमबद्ध गतिसँ प्रस्तुत अछि, जकरा कारण वास्तविक चुनावक अव्यवस्था कतहु कम देखाइत अछि; तथापि दू अस्पष्ट मतपत्र, महेन्द्रक असहमति, परीक्षणाधीन गाँठ आ दानक अनपढ़ल पत्र कथाक भविष्यकेँ

वास्तविक रूपसँ खुलल रखैत अछि। अन्तिम काइ लागैत सीढ़ी बतबैत अछि जे संस्थापकक पद गेलासँ घाटक प्राकृतिक आ सामाजिक मरम्मति समाप्त नहि भेल।

आश्रमवासिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १६९–१८० क सम्पूर्ण संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पर्वक रचनात्मक दिशा : रहबाक अधिकारसँ जाएबाक अधिकार धरि

आश्रमवासिक-पर्वक पहिल आठ अध्यायमे धृतराष्ट्र–गान्धारी–कुन्तीक वृद्ध-निर्णय, ईशानक सार्वजनिक अध्ययन-कक्ष, मैथिलीक निवास-निर्णय, चम्पाक माइक औषधि, कबीरक अनपठाओल पत्र आ सरिताक शोकपछाति दैनिक समय अलग-अलग कथा-सूत्र बनैत अछि। अन्तिम चारि अध्याय एही सूत्रकेँ सावित्रीक मेला-यात्रा, विदुरक प्रस्थान, सुवासाक क्षमा-अस्वीकार आ हीरावती–सरयूक आश्रयबाहरी जीवनसँ विस्तृत करैत अछि। एहि बारह अध्यायमे “वनगमन” केवल जगत छोड़ि देबाक स्थितिक पुनरुक्ति नहि; मनुष्यक अपना ठाम चुनबाक क्षमता, परिवर्तनक बादो अधिकार बाँचल रहबाक प्रश्न आ सम्बन्धक सीमित दायित्वक नाटकीय संयोजन अछि। (अ.१६९–१८०)

पर्वक अन्तमे रुहानी आश्रयक बाहरक पट्टीपर भीतर अबैत, बाहर रहैत आ फेर घुरैत लोकक आवाज अलग सुनबाक बात लिखैत छथि। एहि समापनधरि पहुँचबाक लेल प्राचीन आश्रमक डण्डा, पानिक खाँड़, मापकक दरारि आ विदुरक पदुका एक कथा-शृंखला, आधुनिक घरक चाभी, औषधि-पर्चा, चटाई आ मेलेमे किनल दीया दोसर शृंखला बनबैत अछि। वस्तुसभ एके वैचारिक पदक पुनरुक्ति नहि, पात्रक अलग श्रम, थकान, भविष्य आ स्मृतिक स्थानीय केन्द्र छथि। (अ.१६९–१८०)

कथनकाल : भोरक पुनरावृत्ति आ असम्पूर्ण घटना

आश्रमक आनाज-मापक दू दिनक कमी एक भोरक प्रार्थनासँ नहि सुधरैत; सुवासा दोसर भोर सेहो जाँचबाक बात कहैत छथि। आधुनिक परिवारक देखभालमे औषधिक अवधि, चम्पाक मजदूरीक घण्टा, सरिताक विद्यालयक चाभीक रोजक वापसी आ सरयूक दू रातिक खाटक निर्णय अलग-अलग छोट अवधि रचैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ कथनकाल “घटना घटल, समाधान भेटल”क एकरैखिक गति तोड़ैत अछि। विशेष रूपसँ अध्याय १७७ मे मेलासँ घुरब बीचमे तय होइत अछि, १७९ मे क्षमा नहि देब समयपूर्वक वैध उत्तर बनैत अछि, १८० मे आश्रय छोड़बक बादो फेर आबबाक अधिकार बचैत अछि।

पूर्वदीप्तिक उपयोग सेहो वृहत ऐतिहासिक जानकारीक ढेरी नहि। सावित्रीक पहिल मेलाक स्मृति वर्तमान पाँच रुपैयाक दीयाकेँ नब अर्थ दैत अछि; मैथिलीक पुरान साझा वर्षा-दिन वर्तमान अलग घरकेँ अस्वीकार नहि करबैत; कबीरक नैरा-स्मृति कल्पित उत्तररहित पत्र बनैत अछि; सरिताक भोर शोकक स्थिति मेटए नहि चाहैत। प्राचीन प्रसंगक तृतीयपुरुष कथन आ आधुनिक कालक निकट दृश्य मिलि पात्रक सम्बन्धक अनिवार्य परिणति रोकैत छथि। (अ.१७३–१७७)

बहुस्वरता : सहायक संस्थाक बाहर स्वतंत्र कथापथ

रमा, पद्मा, चम्पा, सावित्री, फूलमती, वृद्ध किरायेदार, गौरी, रेवा, जानकी, हीरावती, चन्द्रा आ अरुणाक योगदान केवल मुख्य पात्रक विचारकेँ सही ठहरएबाक नहि। वृद्ध किरायेदार टपकैत छाजनक बादो घर-त्याग अस्वीकार करैत छथि; फूलमतीक जाल-हिस्साक त्रुटि आधुनिक समिति अपन हाथसँ सुधारबाक बाट पबैत अछि; गौरी गठबन्धन बनबैतहुँ सदस्यसभक निजी यात्रा नहि गनैत; हीरावती साप्ताहिक कामक ठाम लैतहुँ स्थायी घरक जाँच खुलल रखैत छथि। एहि पृथक परिणतिसभमे बहुस्वरताक जीवित सम्भावना अछि। (अ.१७७–१८०)

तथापि साङ्गठनिक विचारक अत्यधिक स्पष्ट भाषा एक सीमा अछि। बहुत पात्र एक्के समय “अलग मद”, “सीमित सहमति” आ “प्राप्ति”क अर्थ समान प्रवीणतासँ समझबैत छथि; पात्रक स्वभावगत कठिन मौन, हितगत गलत बुझाइ आ असुविधाजनक प्रतिक्रिया किछु दृश्ये अधिक देखा सकैत छल। प्राचीन सुवासाक साफ अस्वीकार आ आधुनिक सरिता–रुहानीक आगामी भिन्नता एहि शैलीगत समस्वरताकेँ तोड़बाक विशेष प्रभावी क्षण छथि।

द्विकालीन अन्तर्पाठ : मिथकीय अवशेषक वास्तविक उपयोग

प्राचीन धृतराष्ट्रक आश्रम केवल आधुनिक समितिक विचारक शास्त्रीय मंच नहि। आश्रमक अनाजक दरारि, वनवासी स्त्रीक पानि, अरुणाक छाजन आ विदुरक उत्तर दिस यात्रा अपना वास्तविक वस्तु, स्थानीय दबाव आ अधूरल परिणाम सहित घटैत अछि। आधुनिक विदेहपुरक जीवन आरम्भसँ अलग इतिहास आ अलग संस्थागत समयमे अछि। कथन-सम्पादन एहि दुई संसारक बीच आवर्ती प्रश्न बनबैत अछि—ककर आवाज सुनल जाए, सहायता ककर खर्च पर, ककर स्मृति निर्णायक मानल जाए—मुदा पात्रक शाब्दिक पुनर्जन्म वा एकक घटना दोसरक प्रमाण कहल नहि गेल अछि। (अ.१७७–१८०)

विदुरक अंगूठी नदीमे नहि फेकल जाएब एकटा विशेष रचनात्मक संयम अछि। अतीत नाटकीय रूपसँ समाप्त नहि; ओकर अपूर्ण जिम्मेदारी झोरामे बचैत अछि। आधुनिक विद्यालयक पुरान ताला फेंकल नहि, इतिहासक सामानक संग रखल गेल अछि। एहि दुई वस्तुक अलग अर्थ छैक—एक व्यक्ति अपन मन्त्रिपदक स्मृति लऽ चलैत छथि, दोसर समुदाय विगत एकाधिकारक स्मारक रखैत अछि—मुदा पाठककेँ दूनू दृश्य पुरान व्यवस्था परिवर्तनक त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया पर सोचबैत अछि।

अभिलेखक कथात्मक रूप : पूर्ण समाधानक अस्वीकार

आश्रमवासिकक आधुनिक पृष्ठभूमिमे “स्वीकृति प्राप्त” “भुगतान सम्पन्न” नहि; “आश्रयमे दू राति” “स्थायी पुनर्वास” नहि; “क्षमा-प्रार्थना” “दावा समाप्त” नहि। एही अध्यायसभक यथार्थवादक केन्द्रीय शिल्प विविध दस्तावेजक अलग कथनकाल बनब अछि। सरिता, रमा, पद्मा अभिलेख सुधारैत छथि, मुदा प्रत्यक्ष अनुभवक स्थान पूरी तरह कागद नहि लैत। सावित्रीक घुटना, चन्द्राक घुँघरू आ हीरावतीक चटाई पन्नापर न समा सकनिहार शेष सम्बन्ध बनि रहैत अछि। (अ.१७७–१८०)

पर्वक वास्तविक उपलब्धि मुदा एहि कारण छोट नहि : सुनवाई आ अपीलक अलग व्यवस्था, वृद्धक अलग निर्णय, अभिलेखक सार्वजनिक सुधार-पथ, गौरीक सीमित उद्देश्यवला गठबन्धन, आश्रयक भीतर–बाहर भिन्न सेवा-प्रकार आ निजी क्षमाक अस्वीकारक अवकाश। अनेक देय आ जाँच शेष रहबाक तथ्य कथाक अपूर्णता नहि, व्यवस्थित निश्चयक पाछाँ चलैत जीवनक कालिक विस्तार अछि। आलोचनात्मक निष्कर्ष एतबे : आश्रमवासिक-पर्व “सब छोड़ि शान्ति भेटल”क कथा नहि, छोड़बाक, रुकबाक, मदद लेबाक आ अस्वीकार करबाक अलग-अलग समयक कथा अछि। (अ.१६९–१८०)

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८१-१८४ क प्रथम संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

उत्सवक रंगसँ संस्थाक मतपेटी धरि

मौसल-पर्वक पहिल चारि अध्याय एक उत्सवक बहुआयामी घटनासँ आश्रयक चुनावधरि जाइत अछि। अध्याय १८१ मे विजयोत्सवक मञ्च, पीतलक दान-चक्र आ धातुक जोड़क शिल्प विवाद; १८२ मे काँपत दीपकक स्वास्थ्य आ सुमनक डिजाइन; १८३ मे स्मारक-ठेका आ सरिता–रुहानीक तिक्तता; १८४ मे मतदाता-पंजी, झरनाक विजय आ चाभीक वास्तविक हस्तान्तरण अछि। ई क्रम केवल संस्था सुधारक क्रमिक सफलता नहि, उत्सवक प्रदर्शनक भीतर नव शक्ति-सम्बन्ध जन्म लेबाक कथात्मक आकृति अछि। (अ.१८१–१८४)

प्राचीन द्वारकाक चारि लघु दृश्यक क्रम स्वयं स्वतन्त्र अछि : विजय-प्रदर्शनमे घाट बन्द, मादक युवकसभक दबाव, मृत नाविकक नामसँ राजकीय स्मरणक दावा, नव यादवसभक पहरा-स्वामित्वक आग्रह। कृष्ण–बलरामक निर्णय प्रतिदिनक स्पष्ट स्थानीय अवरोध हटबैत अछि, मुदा साम्बक असन्तोष आ युवा राजवंशक घमण्ड बचैत अछि। ई शेष असन्तोष आगामी विनाशक निश्चित फल-पट्टी नहि; एहि खण्डक भीतर शक्ति-व्यवहारक अनिर्णीत परिवर्तन अछि। (अ.१८१–१८४)

कथासूत्रक काट आ पात्रक स्वतन्त्र समय

सुमित्राक भार-परीक्षण कथाकेँ चमकीला मञ्चसँ खतरेवला काठ धरि लऽ जाइत अछि। दीपकक उपचारक अवधि मंचक नारा वा पुलिस-जाँचक गति मानि नहि चलैत; राकेशक तीन रातिक मजदूरी अलग विषय अछि। सुमनक नमूनाक सीमित चालीस फलकक अनुमति व्यापारक समय तय करैत अछि; नैराक स्मरण सरिताक निजी अनिश्चित समयमे रहैत अछि। मतगणनाक दू अस्पष्ट पर्ची सात दिनक समीक्षा खोलैत अछि, जखनकि झरनाक कार्य आरम्भ होइत अछि। एहि असमान अवधिसभक कारण चारि अध्याय एके व्याख्यात्मक नारा बनि नहि जाइत। (अ.१८१–१८४)

विशेष ध्यान देबाक अछि जे हर सहयोगी पात्रक स्वतन्त्र सामाजिक कार्य अछि : रुखसानाक रसोइ, चन्द्राक गायन, सुमित्राक जोड़, नजीरक परीक्षण, सुमनक चित्र, रामसखीक काइ-सफाइ, फरजानाक चूड़ी, कमलाक भोजन, रुचि–छबीलीक चेतावनी-पट्टी आ शान्तिक तोरण। ई सभ कथाधारा नायकक आश्रित प्रतीक नहि;

अधिकांशमे वास्तविक अग्रिम, अपूर्ण बकाया, कच्चामाल, ग्राहकक विकल्प वा सुरक्षित परीक्षणक ठोस चरण वर्णित अछि। (अ.१८१–१८४)

वस्तुसभक आवर्तन आ कथनक लय

पीतलक चक्र–प्याला–अपूर्ण पट्टी–मतपेटी वस्तु-शृंखलाक धातु-आकर्षण साझा रखैतहुँ अलग अर्थ रचैत अछि। पहिल चक्र प्रायोजकक चमक, दोसर प्याला संकटग्रस्त देहक उद्घाटन, पीतलक अपूर्ण पट्टी अनिश्चित इतिहास, मतपेटीक उखड़ल कोन सुधार चाहनिहार लोकतान्त्रिक संस्थाक दृश्य अछि। एहिमे प्रतीक-यान्त्रिकता नहि : प्रत्येक वस्तुक भौतिक उपयोग, छूएनिहार हाथ आ पाछाँक घटना कथात्मक अर्थ निर्धारित करैत अछि। (अ.१८१–१८४)

सरिताक खाली गिलास आ रुहानीक चाभीक गुच्छा एहि धातु-शृंखलाक विरोधी निजी वस्तु छथि। गिलास शोकक्रेँ सार्वजनिक नामपटमे बदलए नहि दैत, चाभी पदछोड़बाक साथे बरखसभक सेवा आ नियन्त्रणक संलग्न दुःख अनुभव करबैत अछि। अध्याय १८३क सार्वजनिक तिक्तताक बाद १८४ मे सरिता आ रुहानीक छोट स्पर्श बिना हँसीक सुलहक सम्पूर्ण घोषणा नहि; जखन संस्था चलबाक अधिकार एक देहसँ दोसर हाथ धरि पहुँचैत अछि, तखन सम्बन्धक भावो निश्चयपूर्वक सरल नहि होइत।

अन्तरिम मूल्यांकन आ शेष छओटा अध्यायक परीक्षण

१८१–१८४क सम्पन्न घटना अलग राखल जाए : सुरक्षित मञ्चक परीक्षणक कारण एक भाग रोकल, सुमित्राक भावी उत्पादनक हिस्सा लिखल, दीपक अतिरिक्त उपचार स्वीकार कएलक, सुमन सीमित मुद्रण-अनुबन्धमे प्रवेश कएलीह, स्मारकक एकाधिकारवला ठेका रोकल आ प्रतिस्पर्धात्मक जाँच ठहरल, झरना अल्प किन्तु स्पष्ट मतान्तरसँ अध्यक्ष चुनलीह। अपूर्ण : दीपकक उपचारक परिणाम, ठेकेदारक पूरा मजदूरी, स्मारक निर्माण, महेन्द्रक अस्पष्ट मतपत्र आपत्ति, छबीलीक गाँठ-परीक्षण, शैलजक नब दान-शर्त। एहि अन्तरक अवहेलना समीक्षाक्रेँ प्रशंसात्मक सारांश बना देत। (अ.१८१–१८४)

शैलीगत संकट एखन सेहो अछि : पात्रक संवाद बारंबार अद्भुत ढङ्गे प्रक्रिया-भेद पर सम्पूर्ण अधिकार रखैत अछि, जकरा कारण किछु दृश्य कथन-कलेवरसँ बेसी नीति-दस्तावेज भऽ जाइत अछि। मुदा दीपकक देहक काँपब, सरिता–रुहानीक तिक्तता, महेन्द्रक अस्वीकार आ रुहानीक खालीपन एहि अति-सुव्यवस्थाक्रेँ सृजनात्मक रूपसँ भङ्ग करैत अछि। ई केवल अध्याय १८१–१८४ क अन्तरिम फैसला अछि; मौसल-पर्वक आगामी अध्याय मूलपाठसँ पढ़लाक बादे समग्र निष्कर्ष बनत। (अ.१८१–१८४)

अध्याय १८५ — दानक शर्त

लिफाफाक उद्घाटन : उदारताक भाषामे अधिकारक प्रश्न

सन २०४१क भोरमे नव अध्यक्ष झरना दूटा लिफाफा अलग रखैत छथि। शैलजक कम्पनी स्थायी नाम-एकाधिकार छोड़ितो प्रचारक प्रधान भागीदारक अधिकार बचौने अछि; देवव्रतक पत्र उपचार आ रसोइक निधि संग

“अनावश्यक विवादसँ रक्षा”क अस्पष्ट वाक्य जोड़ैत अछि। एहि दुहरी आरम्भमे दान स्वयं निष्कपट अथवा अपराधजन्य निर्णय नहि, पात्रक अपन-अपन हितवला कथात्मक प्रस्ताव बनैत अछि। झरना पहिने वृद्धसभक लेल पानि रखैत छथि : कागदक असाधारण तनावक बीच साधारण दैनिक आवश्यकताक छोट दृश्य कथा-समयकेँ धरतीपर रखैत अछि।

रमाक वाक्य—देवव्रतकेँ दोषी ठहराबय अथवा दानक आधारपर निर्दोष घोषित करबाक अधिकार हुनका नहि—एहि अध्यायक अनिर्णीत अवस्थाक केन्द्र अछि। पुरान दवाइ-खेपक निर्गत आ प्राप्ति-पंजीमे अन्तर अछि; महेशक मृत्यु आ धमकीक प्रश्न अन्यत्र विचाराधीन छथि। एही असमान काल-सूत्रसभकेँ एक धमाकेदार उद्घाटनमे समेटबाक बदला कथा विशिष्ट जाँचसभकेँ जीवित रखैत अछि। ई विलम्ब रोमांच बढ़ेबाक बनावट भरि नहि, समानान्तर काजक सामाजिक अवधि अछि।

ताड़क रस, भगौना आ जमा-पत्र : दानक प्रतिकथासभ

सूरज चौधरीक घिसल हथेली, सूखल रसक लोटा आ खाली बोतल मुख्य सभाक बाहरी जीवनक प्रवेशद्वार छथि। पिताक विरासत-आधारित कौशल आ बेटाक सुरक्षित चढ़ाई, न्यूनतम प्रशिक्षण, स्वच्छ गैर-मादक पेय आ उत्पादक-स्वामित्वक आकांक्षा एक-दोसरासँ टकराइत अछि। पहिल दस खेप धरि सीमित चिह्न मानबाक सम्भावना आ जीवनभरि नकल-अधिकार अस्वीकार करबमे भेद अछि। अन्तमे नन्दू प्रशिक्षण-श्रमक अलग पारिश्रमिक स्वीकार करैत छथि; पुरान कौशल नष्ट नहि, ओकर देहगत लागत दृश्य बनैत अछि।

अमीनाक कम्बलमे लपेटल भगौना आ पुलिसक दू भोजन-रसीद एहि सभाक सबसँ तीक्ष्ण छोट प्रतिकथा अछि। खाएल भोजनक दाम चुकब दान नहि—एहि एक वाक्यक पाछाँ वास्तविक नगद भुगतान, लिखित आदेश आ “सहायता-भोजन” केँ “क्रय कएल भोजन” करबाक सम्पन्न क्रिया अछि। अरुण बरनवालक कर-जमा, बचल अपील योग्य मद आ रोकल मजदूरी अलग-अलग समयमे रहैत अछि। एक मजदूरक रकम पहुँचैत अछि, दोसरक देय बचैत अछि। तेज सार्वजनिक आदर्शक बीच एहि असमान छोट उपलब्धिसभसँ समाजक वास्तविक गति बनैत अछि।

द्विकालीन समुद्र-दृश्य आ दानक वस्तुगत रूप

प्राचीन द्वारकामे कुलपतिक अन्नक मटका लकड़िक पुलक मरम्मति लेल अछि, मुदा दानदाता अपन नावकेँ पहिल अधिकार चाहैत अछि। वृद्ध नाविकक श्रम आ सभक आवागमन एहि शर्तसँ टकराइत अछि। कृष्ण प्रस्तावित विशेषाधिकारकेँ अलग सुनवाईक विषय राखैत छथि; अन्न श्रमिकसभक भोजनमे उपयोग होइत अछि, पुलक मात्र एक टुकड़ा जुड़ैत अछि आ साम्बक अपमान-बोध शेष रहैत अछि। आधुनिक बैंकखाताक नियमक ऐतिहासिक प्रमाण एतय नहि, एक पृथक कथा-समयमे दान आ सुविधा-नियन्त्रणक अनुरूप तनाव अछि।

मटका, सूखल रसक लोटा, खाली भगौना, बैंक-जमा पत्र आ रातिक खाली बोतल वस्तुसभ एकहि रूपकक पुनरावृत्ति नहि। ओ क्रमशः श्रमक भोजन, पितृकौशल, बिक्रीक मूल्य, वैध देय आ भावी उत्पादनक अस्थायित्व रखैत अछि। कथावाचक आधुनिक खुलल सभा आ प्राचीन घाटकेँ जोड़ैत छथि, मुदा पुरान दिनक कारणे आधुनिक निर्णय भेल एहन कार्यकारण गढ़ैत नहि। एही भेदसँ महाकाव्यक अन्तर्पाठ पुनर्लेखन बनैत अछि, आरोपण नहि।

मतदानक विलम्ब, असहमति आ नेतृत्वक स्वतन्त्रता

सात घोषित शर्तमे स्वतंत्र खाता, निजता, खुलल आपूर्ति, सेवा पाबएबक बदला अपील नहि छोड़ब, पुरान जाँचक स्वायत्तता आ त्रुटिपर रोक/वापसीक प्रक्रिया अछि। बच्चाक औषधिक चिन्तावला स्त्रीक प्रश्न एहि नियमसभकेँ क्षणभरि मानवीय तात्कालिकतामे बदलि दैत अछि। अन्ततः नव कोषक निश्चित सीमित भाग तत्काल आवश्यकता लेल स्वीकृत होइत अछि, शेष जाँच धरि स्थगित रहैत अछि। महेन्द्रक विरोध-पत्र दर्ज रहैत अछि आ झरना निर्णायक मतदानक अपन अधिकार नियमक परिधिसँ बाहर नहि बढ़बैत छथि। एहि तरह सत्ता परिवर्तनक बाद पहिल परीक्षा एक आदेश नहि, प्रक्रियासँ स्वयं बान्हल निर्णय अछि।

रुहानीक तेलक खर्च पूछब निर्णायक अछि : नेतृत्वक नैतिक स्वाधीनता चूल्हि आ दीपकक नियमित बजटसँ मुँह फेरि नहि सकैत। देवव्रतक असन्तोष कथा नहि मेटैत; संशोधित शर्तपर हस्ताक्षर सहमति अछि, अपन विवादक अन्तिम समाधान नहि। अन्तिम पन्नामे ताराक कार्यालयसँ निकलल मूल-बिनु हस्ताक्षरक छायाप्रति अगिला अध्यायक अग्रसंकेत अछि। ई अध्याय समापनक तुष्टि बदला स्वयं आलोचक-पक्षक भूल सम्भव होएबाक दिशामे कथन मोड़ि दैत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष : बहुस्वरताक शक्ति आ भाषणक घनत्व

झरना, देवव्रत, महेन्द्र, सूरज, नन्दू, अमीना आ अरुण एकता-नाराक फेरबदल मात्र नहि; अलग आर्थिक जोखिम, स्मृति आ समय रखने छथि। तथापि लगभग सभ पात्र अत्यन्त सुव्यवस्थित अधिकार-भाषामे आपत्ति राखैत छथि। पाठकीय व्याख्याक अवकाश कतहु समिति-प्रस्तावक घनत्वसँ संकुचित होइत अछि। अमीनाक खाली भगौना, नन्दूक ताड़क छाँह आ रुहानीक तेलक प्रश्न ओहि उपदेशात्मक सम्भावनाकेँ चुनौती दैत मूर्त जीवन बचबैत अछि।

अध्याय १८६ — ताराक भूल

“सहमति प्राप्त”क उलटल कथन : आत्मसमीक्षक पात्र

अलमारीक सड़ल कागदक गन्ध आ लाल “सहमति प्राप्त” टिप्पणीसँ अध्याय खुलैत अछि। छायापत्रमे रहैत हस्ताक्षर तारा स्वयं नहि बनौने छलीह, मुदा कार्यालयक टिप्पणी पर विश्वास कए आगाँ निर्णय बढ़ेने छलीह। घटनाक नैतिक घनत्व एहि भिन्न जिम्मेदारीमे अछि। उपस्थितिपंजीक सभा वास्तवमे बाहा-मुँहक सुरक्षित सफाइ लेल छल; स्थायी उपयोगक सहमति कागदमे बादमे प्रवेश कएलक। अदितिक तकनीकी “स्थल जाँच” अनुमति आ कटल पत्रक “स्थायी उपयोग” एक नहि। कथन त्रुटिक अर्थ प्रकट करैत अछि, कर्ताक पहिचान एखन रिक्त रखैत अछि।

तारा सार्वजनिक रूपसँ अपन उपयोग-सम्बन्धी भूल स्वीकार करैत छथि। महेन्द्रक प्रश्न—ओ स्वयं झूठ लिखलीह कि नहि—केँ ओ अतिसरलीकरण मानि टारैत नहि, ज्ञात आ अज्ञात भाग अलग बतबैत छथि। महेन्द्रक काकीक घर-बाटक प्रसंगसँ कागदक गलत वाक्य मानवीय जोखिम बनैत अछि। झरना विवादित पत्रक आधारपर नव

स्थायी अधिग्रहण रोकबैत छथि, मुदा सुरक्षित अस्थायी आवागमन चलैत रहैत अछि। तात्कालिक निषेध आ समग्र जाँचकेँ कथा अलग घटना रूपेँ रखैत अछि।

पिताक बिनौट आ बेटीक गाँठ : श्रेयक आन्तरिक विभाजन

श्याम मल्लिकक तीन अलग बाँस-नमूनामे तारा द्वारा बाँधल नव गाँठक श्रम पिताक नाममे समा गेल अछि। पारिवारिक विश्वासक भीतर हुनकर अलग मजदूरी बिलुप्त भऽ गेल छल। तारा बिनौट बाँसक सामग्री-दाम आ गाँठ बनएबाक श्रमकेँ अलग रखैत छथि; श्याम स्वीकार करैत छथि जे ग्राहकक पुरान अग्रिम परिवारक खर्चमे खर्च भेल। मुदा मात्र स्वीकारोक्तिसँ पुरान भुगतानक रकम सिद्ध नहि। नव नमूनामे साझा श्रेय दर्ज होइत अछि; पुरान देय बैंक-बही मिलान धरि खुलल रहैत अछि।

काँटावला श्यामक अँगुरीसँ तारा चिमटी लगा काँटा निकालैत छथि—ई पितृ-पुत्री सम्पर्क कार्यालयक मंचसँ पृथक, बिना प्रशस्तिपत्रक दृश्य अछि। श्याम बेटीक व्यक्तित्वकेँ एक भूलमे समेटबाक अस्वीकार करैत छथि, मुदा सहज क्षमा नहि दैत। एहि मध्यम स्वरमे सम्बन्धक समय कार्यालयक त्रुटि-संशोधनसँ अलग बहैत अछि। “गाँठ” वस्तुगत कारीगरी सेहो अछि आ पाठकक लेल असमाप्त हिसाबक अनुगूँज सेहो; प्रतीकक प्रसार श्रमक माप छोड़ि शुद्ध उपदेश नहि बनैत।

चूड़ी, धागाक थैला आ नव व्यावसायिक स्वायत्तता

रेखा साहु लहेरीक लाहक चूड़ीमे मानवीय हाथक असमानता बाजारक तकनीकी त्रुटि बनि सकैत अछि, मुदा मूल डिजाइन-स्वामित्व आ ग्राहकक निजी नापक प्रश्न अलग अछि। नसीमक मशीन परीक्षणक चालीस चूड़ीक सीमित अनुमति ठहरैत अछि; नष्ट मालक भार साझेदारीमे बँटैत अछि। पहिल चारि चूड़ी सही निकलैत अछि, पाँचम चिरि जाइत अछि; वीडियो संयुक्त परीक्षण लेल राखल जाइत अछि, विज्ञापन लेल नहि। नव अग्रिम मिलल, पुरान नकलक विवाद नहि समाप्त भेल।

सकीब अबदलक नीला सार्वजनिक थैला आ लाल निजी थैला कथाक स्पष्ट दृष्टिगोचर विभाजन अछि। रस्सीक खरीद प्रमाणित भेल, एक ढुलाई-मद एखन सत्यापनमे अछि। सार्वजनिक निधिक उपयोगसँ हटि अपन घरक कम खर्च करबाक कठिन निर्णय एहि नैतिक दृष्टान्तक परिवारगत प्रतिमूल्य देखबैत अछि। बच्चीक किताबक प्रश्न “पारदर्शिता”क अमूर्त शब्दकेँ छोट घरेलू अभावमे बदलि दैत अछि। कथावाचक सकीबकेँ निर्दोष संत बनबैत नहि, ओकर अपन गलती आ खर्च देखबैत अछि।

सार्वजनिक गलतीक संशोधन आ अनसुनी झिंगरी

तारा गलत टिप्पणी वापस लैत छथि, सात दिनक आपत्ति, पन्द्रह दिनक मूलपंजी-खोज आ तीस दिनक स्वतन्त्र सुनवाईक सीमा निर्धारित होइत अछि। निजी हस्ताक्षर सार्वजनिक सूचना-पट्टपर नहि टाँगल जाइत; केवल विवादक सार, आधार-भेद आ आपत्तिक समय चढ़ैत अछि। अलग-अलग कार्यालय, पंचायत आ प्रभावित समूह लग दिनांकित प्रतिक व्यवस्था भेलाक बादो मूल हस्ताक्षरक रचयिता अज्ञात अछि। दस्तावेजक संशोधन भविष्यक अनुकूल इतिहास रचबाक बहाना नहि, पुरान गलती बचौने राखबाक प्रतिज्ञा अछि।

झिंगरीक दुई दिनक रोकल मजदूरी आ आपत्तिक अवसर नपेबाक प्रसंग महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि। हुनकर अर्जि पुनः पंजीकृत भेल, विवादरहित एक दिनक उपस्थितिक जाँच आदेश भेल, भुगतान सम्पन्न नहि। अन्तमे रुखसानाक पत्र सामूहिक रसोइक अगिला प्रश्न खोलैत अछि। एहि प्रकार क्रमशः एक त्रुटि सँ स्वतन्त्र पाँच श्रमकथा आबैत अछि; मूल विसंगतिक समाधान सबक उपचार नहि। बाहाक भीजल ध्वजा आ लालटेनक पातर बाती गलती सुधारबाक कार्यकेँ भव्य विजयक बदला न्यून संसाधनक अविराम प्रयत्न बनबैत अछि।

शिल्पक आलोचनात्मक सीमा

एक दिनमे अनेक व्यक्ति प्रायः उचित प्रक्रिया पहिचानि सफल संशोधन सुझबैत छथि; ई समूहवाची तर्कक नैतिक बल अछि, मुदा जटिल संस्थागत विचार प्रत्येक पात्रक मुखमे अतिशय सुसंगठित लगि सकैत अछि। तथापि पाँचम चूड़ी फाटब, बैंकमे ढुलाईक शेष सत्यापन, महेन्द्रक संशय आ श्यामक अपूर्ण हिसाब कथा-समाधानक जल्दबाजी रोकैत अछि। नाट्यक विश्वसनीयता निष्कर्षक घोषणा नहि, लगातार शेष रहल प्रश्नमे सुरक्षित अछि।

अध्याय १८७ — रसोइक घाटा

चालीस नाम, सत्ताइस थारी : कथाक मापनात्मक विरोध

भोरक चारि बजे राखिमे बचल फुलकी आ सूचीक ऊपर चालीस, नीचे सत्ताइस थारीक स्वीकृति—ई उद्घाटन संख्याक नैतिक असमानताकेँ भौतिक समयसँ जोड़ैत अछि। रातिमे तेरह नाम लिखनिहार स्वयंसेवक भूखक वास्तविकता देखबैत अछि, मुदा ओकर पंक्तिसँ अनाज, ईंधन आ श्रम उत्पन्न नहि होइत। रुखसाना “आगिसँ पहिने हिसाब” कहि कथाक गतिमे आवश्यक विराम अनैत छथि। चूहाक काटल बोरी, खराब दाल आ फाटल हथेली बनावटी लेखा-तर्ककेँ देहक श्रमक अनुभवमे बदलैत अछि।

पद्माक चारि खानामे रुखसाना पाँचम “खराब भेल वस्तुक घाटा” जोड़ैत छथि। एहि जोड़सँ अन्नक साधारण क्षति, जानि-बुझि खराब खेप आ रसोइवाली पर थोपाल भरपाई अलग दिस जाइत अछि। कथक स्वयं निरपेक्ष गणक नहि; ओ चूहाक छेद, बेगनक चोट आ परिवहनक दबावक माध्यमसँ प्रत्येक अंकीय अभावक दृश्य कारण दैत अछि। एतए सूची अन्तिम सत्य नहि, पुनर्रचित होइत एक कथात्मक वस्तु अछि।

रघुक कनसार, चन्द्रिकाक पुआ आ स्त्रीसभक स्वेच्छा

रघु साहुक कनसार राहतक स्वयंसिद्ध हितैषी व्यापार नहि; राहत-शिविर स्वयं भुजाइ आरम्भ कएलाक बाद हुनकर ग्राहक घटल अछि। दू दिनक भुजाइ-आदेश निश्चित भेलो हुनकर पुरान बजार नहि घुरैत। चन्द्रिका राय हलुआइक सत्तर पुआक पुरान रसीदमे आंशिक रकम बादमे पहुँचल, शेष देय रहैत अछि; नव आदेश लेल सीमित अग्रिम लेब असुरक्षित इतिहासकेँ मिटबैत नहि। ई दू प्रसंग देखबैत अछि जे सामाजिक सहायता किनको जीविकाकेँ अप्रत्यक्ष रूपसँ छोट सेहो कऽ सकैत अछि।

गुरमीत कौर धार्मिक सेवाक स्वेच्छा आ लगातार निश्चित कामक मजदूरी अलग मानैत छथि। माछ आ मखानक श्रम-मेलामे फूलमतीक नाव, ईंधन, जाल आ धनियाक चुनाई-श्रमक लागत खुलैत अछि; सलमानक सागक खराब

पात भाई-बहिनक स्नेहकेँ व्यापारिक जिम्मेदारीसँ मुक्त नहि करैत। अनेक पेशागत स्वर एक संग होइतो प्रत्येकक व्यक्तिगत आर्थिक शर्त रहैत अछि। एहि ठाम बहुस्वरता केवल पात्रक जातीय/धार्मिक परिचय नहि, अलग भुगतान-रचना आ असहमतिक स्वर अछि।

माइक स्मृति आ विश्रामक कथा-समय

रुखसाना अपन मायकेँ याद करैत छथि जे खराब बेगनक उपयोग करब सिखौने छलीह; मुदा माय अनन्तकाल धरि स्त्रीक श्रम करबाक आदेश नहि देने छलीह। पूर्वदीप्तिक एहि मोड़पर “गरीबीमे किछु बेकार नहि”क लोकजीवन-सूत्र समयक मर्यादा पबैत अछि। रुखसानाक निर्धारित सम्पूर्ण विश्रामक माँग एहि अध्यायक आन्तरिक चरमबिन्दु अछि : पहिल बेर रसोइक कथा रसोइक स्थायी उपस्थितिक शर्त हटबैत अछि।

नव पालि-पंजी लागू भेला पर रुखसाना घरमे आधा घण्टा बिना खाता खोलने बैसैत छथि, बच्चीक गोलीक खेल देखैत छथि, आ अपन लेल एक पातर रोटी बनबैत छथि। ई भोजन सत्ताइस अथवा चालीस थारीक गणनामे नहि अछि। पुरान मायेक रुमाल आ दूरसँ उठैत आश्रयक धुआँ कथा सफल संस्थागत नियमक अंतिम चिह्न नहि, स्वतन्त्र समयक संवेदनात्मक अनुभूति बनैत अछि। कथनक समापन दस्तावेजक पाठसँ बाहर आवि अनुभवक मौन अवधि पर टिकैत अछि।

सीमित भोजनक निर्णय आ द्विकालीन साम्य

सात अतिरिक्त थारी लेल चाउर भेटैत अछि, तरकारी आ ईंधन तुरन्त नहि; चिकित्सकीय प्राथमिकतावला आ सामान्य राहतभोजनक समय अलग निर्धारित कएल जाइत अछि। बाँकी लोक लेल दोसर केन्द्रसँ भोजनक पुष्टि होइत अछि। झरना प्रचार-बैनरक खर्च रोकैत छथि, एक महीनाक परीक्षण-दर आ साप्ताहिक पुनरावलोकन बनबैत छथि। एहि ठाम एक दिनक भोजन सम्पन्न भेल एतबे कहल जा सकैत अछि; स्थायी पर्याप्त कोष आ रुखसानाक सम्पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्यक निर्णय नहि।

प्राचीन द्वारकाक वृद्ध रान्हनिहारि सार्वजनिक भोजमे श्रमक नाम छूटबाक प्रश्न उठबैत छथि। कृष्ण बाँचल, खराब आ प्रयोग भेल अन्नक अलग हिसाब तथा वृद्धाक देय आ विश्रामक आदेश देबैत छथि; राजकुलक अवहेलनाक अंत नहि होइत। आधुनिक रुखसानाक दृश्यकेँ एहि प्रसंगक पुनर्जन्म नहि मानब चाही; समान वस्तु—अन्न, अग्नि, बर्तन—केँ भिन्न सामाजिक-कालमे कथा रखि देखबैत अछि जे कीर्तिक राग श्रमक आवाजकेँ केना ढाँपि सकैत अछि।

पाठकीय दूरी आ मूल्यांकन

चन्द्रिकाक दू पाँतिक तख्ती “राहत निःशुल्क / श्रम निःशुल्क नहि” विचारक दृष्टिसँ सफल, मुदा एकाधिक संवाद लगातार नीति-सूत्र बनबाक कारण पाठकक अव्याख्यायित अनुभव संकुचित भऽ सकैत अछि। तुलनात्मक रूपसँ रुखसानाक सूजित कलाई, चूल्हिक अधजरल लकड़ी, फाटल बेगन आ खेलैत बच्ची कथाकेँ अधिक स्वायत्त बनबैत छथि। उपलब्धि ई जे राहतक सफलता थारीक संख्यासँ नहि, ताहि संख्या लेल चुकाओल अदृश्य समयसँ मापि देखबैत अछि।

अध्याय १८८ — औजारक बाजार

लोहेक तीन माप आ सीलबन्द चौठम पेटी

भोरक निहाइपर छल्ला, हुक आ हलक फाल तीन वैध आदेशक वस्तु छथि; सीलबन्द अनाम पेटी चौठम, अनिर्णीत वस्तु अछि। अज्ञात स्रोतवाली पेटी आ हरिनारायणक सामान्य औजारकेँ एक अपराध-कथामे बदलल पुरान प्रचारक परिणाम हुनकर घटल ग्राहकी अछि। अजितक किरायाक भय आ पिता द्वारा विशिष्ट उपयोग-आदेश देखाएबाक निर्णय रहस्यक गुत्थी मात्र नहि, परिवारक जीविकाक वास्तविक काल अछि। पेटी खोलि सनसनी रचबाक बदला कथा ओकरा अलग सुरक्षित जाँचमे पठबैत अछि।

पुलिसक निरीक्षणमे सामान्य ऑर्डरक सामान वैध कार्यसँ मेल खाइत अछि; अनाम पाट अथवा पुरान जब्त पेटीक स्रोतक अन्तिम निर्णय नहि। ग्राहक नन्दलाल डरक कारण रद्द आदेशक सारा क्षति भरि नहि सकैत, मुदा एक हलक फालक वास्तविक अग्रिम दैत छथि। अजितक आशा प्रश्नक रूपमे बचैत अछि—सभ ग्राहक घुरता की नहि? तीन बिक्री, एक अग्रिम, दू अपूर्ण आदेश; एहि असमान संख्यासँ अध्याय अपन सफलता अभिलेखमे सीमित रखैत अछि।

कुम्हारक रिसैत घैल आ प्रशिक्षु नालबन्दक सीमारेखा

कमलेश दबगर अधूरल नाली-मरम्मतिक पूरा शुल्क अस्वीकार करबाक समय ग्राहकक रिसैत घैल देखबैत छथि। वास्तविक मरम्मतिक अधूरापन ई दृश्य प्रमाणसँ अधिक, हुनकर कारीगर-ईमानक नाटकीय प्रतिदृश्य बनैत अछि। दू मासक अस्थायी किराया-अनुबन्ध भेल, अतिरिक्त जमानत किस्तमे देबाक रहत, पुरान बाढ़-नुकसानक प्रतिपूर्ति नहि। ओकर दोकान कल्हि खुलि सकत, भविष्यमे किराया फेर विवाद होएत। कथक फलकेँ स्थायी पुनर्वास कहि नहि बढ़बैत।

सलीम नालबन्द घोड़ाक नाल आ आधुनिक वाहन-प्रशिक्षणक दू पेटी साथे लएने छथि। पुरान औजारक स्मृति नवा ब्रेक-जाँचक पूर्ण दक्षता सिद्ध नहि करैत। ओ सीमित धुरी-मरम्मति स्वीकृत कऽ प्रशिक्षित निरीक्षकक प्रमाणपत्र अलग रखैत छथि; पिछिला प्रशिक्षण-भत्ता बैंकमे एखन नहि। पिताक अपूर्ण स्वीकृति आ प्रशिक्षणक कारण घटल आमदनी पुरान–नवा पेसाक कृत्रिम विजयकथा रोकैत अछि। ई पीढ़ीगत प्रश्न नाटकीय क्रोधक बजाय दाम, दक्षता आ पंजीक शब्दमे उभरैत अछि।

बजारक बहुस्वरता : फोटो, निकाय आ ग्राहक

एक युवकक काटल फोटोक आधारपर हुककेँ अपराधी वस्तु घोषित करबाक इच्छा सार्वजनिक सन्देहक दृश्य अछि। झरना वास्तविक नाम आ स्रोतक आग्रह करैत छथि; शबनम, रमा, रेखा आ फरजाना सुरक्षा-नियमक आड़मे निजी प्रचार-शुल्कवला “अनुमत व्यापार” बोर्डक भेद खोलैत छथि। ग्राहकसभक असहमतियो बचैत अछि। मंचपर अदितिक चेतावनी—सीमित औजार-जाँच सम्पूर्ण नाव-पथक सुरक्षा नहि—कम ताली पाबैत अछि, किन्तु नाविकसभ लिखित प्रति माँगैत छथि। लोकप्रतिक्रियाक एहि असमान गतिसँ कथा मात्र लोकप्रिय विजय-प्रदर्शन नहि रहैत।

हीराक गाँठ, फूलमतीक जाल, ललितक काठ, सलीमक पहीया आ हरिनारायणक छल्ला वस्तुसभ समुदायक श्रम-विभाजन खोलैत अछि। तथापि सभ पात्रक चेतावनी बराबर सुव्यवस्थित भाषिक नीति बनि जाए तखन सामाजिक भाषाक भिन्नता घटबाक खतरा अछि। अजितक ठिठकल बही, नन्दलालक डर आ सलीमक पिता-सम्बन्ध एहि अति-स्पष्टतासँ कथाकेँ बचबैत अछि।

कीलक लघु दृश्य आ प्राचीन धातु-पात्र

अन्तमे अजित एक छोट कील उठा पूछैत अछि जे गलत उपयोगक सम्भावनासँ ओकर निर्माण रोकल जाए की नहि। हरिनारायण वस्तुक निर्धारित काज, ग्राहकक व्यवहार आ गलत उपयोगकेँ अलग रखैत छथि। ई प्रश्न पाठकक समक्ष लौटैत अछि, मुदा कथावाचक फाटकपर लगल कानूनक तरह ओकरा अन्तिम सत्य नहि बनबैत; बाँचल कर्ज आ चलैत हाट पाठकेँ दू वस्तु एक संग देखबैत अछि।

प्राचीन द्वारकाक आखिरी एकल दृश्य बलरामकेँ राजकुलक चिह्नवला धातु-पात्र उठौनिहार मजदूरक नाम नहि भेटबाक अनुभव दैत अछि। ई दृश्य आगू बलरामक दूराइक भावभूमि बनैत अछि; आधुनिक अनाम पेटीक कारण अथवा सिद्धान्तक प्रमाण नहि। कथन-संयोजनक बल प्राचीन वस्तुकेँ राजनीतिक धातु-रूपक बनबैत नहि, काज करनिहार अनुपस्थित व्यक्तिक कथात्मक अभाव बनबैत अछि।

अध्याय १८९ — बलरामक दूराइ

प्राचीन कालक मुख्य दृष्टिकेन्द्र आ मौनक दायित्व

एहि अध्यायक पहिल नौ पाठांश प्राचीन द्वारकाक समयमे ठहरैत अछि। उत्सवक उलटल थारीपर मालिकक चिह्न अछि, मुदा धोएनिहार-पहरुएक नाम नहि। कैलाशक बेटाक तीन दिनक बदला दू दिनक श्रम लिखल गेल अछि; “बलरामक नाम” कहि ओकर शिकायत रोकल गेल छल। कथा एक शक्तिशाली पात्रकेँ अपन अनुपस्थित अवस्थामे नामक दुरुपयोगक सामना करबैत अछि। कर्तृत्वक विभाजन एतए प्रमुख अछि—बलराम स्वयं प्रत्येक अन्याय नहि कएने छथि, मुदा हुनकर नामसँ बनल चुप्पीक एक हिस्सा हुनकरो पर पड़ैत अछि।

युवकक आरोप—बलराम बल सिखौलनि, आब बल रोकैत छथि—स्मृतिक पूर्वदीप्ति खोलैत अछि। बालककेँ वार करबाक शिक्षा तऽ स्मरण अछि, जीतल बालक द्वारा पराजितकेँ उठेबाक शिक्षा देल गेल की नहि, एकर उत्तर नहि। बलराम अपन हाथ गदाक मुठियासँ हटबैत छथि; ई दृश्य पदत्यागक घोषणा सन नहि, क्रोधक सम्भावनाकेँ रोकबाक मौन चयन अछि। कृष्णक संग बही-मिलानमे दूनू भ्रष्टाचारक निर्णायक घोषणा नहि करैत; बाँचल अन्न आ खर्चक अन्तरकेँ अलग चिन्हैत छथि।

राजसभाक आसन छोड़ब विरुद्ध नागरिक प्रश्नसँ भागब

घाटक पाछाँक युवतीक घरक पानि उत्सवक अपशिष्टसँ बाधित अछि। बलराम तत्काल जल मँगाएबाक आदेश देबैत नहि, युवतीसँ स्वयं पहुँचबाक बाट पूछैत छथि; पगडण्डीक पहरा हटैत अछि, बाँकी सफाइ तय होइत अछि। राजकुलक सभा मे वृद्ध नाविकक आवाज आ युवासभक “बाहरी” आरोप अलग सुरमे बजैत अछि। बलराम

निचला सीढ़ीपर बैसैत छथि आ अपन मौनकेँ दायित्व कहैत छथि। ई देहगत अवस्थाबदल पद-भाषणसँ बढ़ि दृश्यात्मक अछि।

अन्ततः बलराम दैनिक राजकीय उत्सवसँ दूर स्वतंत्र साधनाक बाट चुनैत छथि; प्रमाणित देयक लिखित जाँचक जिम्मेदारी छोड़ैत नहि। कृष्ण हुनका रोकैत नहि। ई स्वैच्छिक प्रस्थान उपन्यासक आश्रमवासिक त्यागक प्रतिकृति नहि : एतए वयस्क शक्ति-पुरुष अपन उपस्थितिक छाया घटए चाहैत छथि। कथा प्रश्न बचौने अछि—दूरी न्याय सुनिश्चित करत वा नयका रिक्तता बनौत? अगिला अध्यायमे परिणाम पढ़ल जाएत।

आधुनिक दूध, हथौड़ी आ ढोल : तीन स्वतन्त्र जीविका

आधुनिक कटावमे भोला यादव अपन दूधक चारि दिनक देयक अन्तिम रकम बैंकमे सचमुच पबैत छथि, मुदा दूध-सहायता सूचीमे दोसर बच्चाक छूटल नाम अलग विवाद अछि। विक्रेताक स्वार्थ सम्भव मानल जाइत अछि, तेँ पात्रता-निर्णयमे हुनकर मत नहि; तथापि प्रत्यक्ष देखल तथ्य सुनएबाक अधिकार रहैत अछि। नागरिकक दोहरा सामाजिक स्थान—लाभान्वित व्यवसायी आ समुदाय-साक्षी—संवादमे टिकैत अछि।

नजीर सिकिलगरक सामान्य औजारपर आरोपक आधार निरीक्षणमे नहि भेटैत, मुदा ग्राहक नघुरला सँ चारि मासक हानि नहि मेटैत। हरिनारायणक टूटल कुंडी मरम्मतिक वास्तविक आदेश पबैत छथि; अनाम धातु-खेपक जाँच अलग। करुण दमाई बाजा मरम्मति आ अगिला दिनक प्रस्तुति हेतु अलग मानदेयक आग्रह करैत छथि; आयोजक अग्रिम आ शेष रकमक व्यवस्थित अन्तर मानैत अछि। मञ्चक ढील तख्ताक मरम्मतिक भुगतान कलाकारक मानदेयसँ काटल नहि जाएत। तीनू कथासूत्र अदालत-जेकाँ एक फैसला नहि, श्रमक भिन्न समयक रूप बनैत अछि।

लय, श्रवण आ निजी सहमतिक संरचना

करुणक नव कसनीवला बाजाक अन्तिम हलुक थापक ध्वनि रुखसानाक निर्धारित श्रम-अवधि समाप्त भेलाक बाद सुनाइत अछि। ओ सहायता देबाक लेल फेर दौड़ैत नहि; एही मौन संयममे पूर्व अध्यायक विश्राम-अधिकारकेँ कथन विस्तार भेटैत अछि। रुहानी डिजिटल रेकॉर्डिंगक प्रस्ताव साक्षी रूपमे आनैत छथि, अन्तिम हस्ताक्षर नहि करैत; करुण निजी अभ्यासक ध्वनि आ सार्वजनिक प्रसारणक अनुमति अलग रखैत छथि। एक सांगीतिक स्वर केवल अलङ्कार नहि, कलाकारक अपने ध्वनिपर अधिकारक कथा-स्थान बनैत अछि।

दृश्यगत सीमा ई जे तीनू आधुनिक पेशागत प्रसंग अत्यधिक नियम-समर्थक संवादसँ समान रागमे मिलि जाएबाक जोखिम अछि। मुदा बेटी द्वारा दूधक सूची पर प्रश्न, नजीरक घटल ग्राहक, बालिकाक नाचबाक इच्छा आ बलरामक क्रोध-दबाओल हाथ एहि रागमे अलग मानवीय विराम अनैत अछि। कथन प्राचीन बलरामक निर्णय आ आधुनिक जीवनक बीच रूपक-साम्य देखबैत अछि, शाब्दिक कारण-सम्बन्ध नहि।

अध्याय १९० — कृष्णक अन्त

प्राचीन समुद्रक संकट आ अपूर्ण गवाही

अध्याय प्राचीन द्वारकाक रक्त-दाग लागल रस्सी आ गुम लोकसभक पुकारसँ आरम्भ होइत अछि। नशा, पुरान अपमान आ आपसी प्रहारक बीच कुन युवक पहिने शस्त्र उठौलक—ई अनिर्णीत अछि। घायल नाविकनी स्वीकृति दैत छथि जे ओ सम्पूर्ण आरम्भ देखल नहि; कृष्ण ओ अधूरल कथनकेँ अधूरहि दर्ज करबैत छथि। राजवंशक विनाशकेँ एक शाश्वत श्रापक सघन दृश्य कहब आसान, मुदा कथा घायल नाविकनी, कुटिलादेवीक गुम पोता आ डेराएल बालकक व्यक्तिगत कथा-अवकाश खोलैत अछि।

सरकण्डाक कठोर डाँठ शस्त्र बनैत अछि; लोक ओकरा नियतिक मुसल कहैत छथि, तथापि प्रत्येक चोट अपन हाथसँ पड़ैत अछि। मिथकीय नाम आ मानवीय कर्तृत्वक ई संगति अध्यायक निर्णायक अन्तर्पाठीय शिल्प अछि। कृष्ण घायल लोककेँ पहिने सहायता देबाक निर्देश दैत छथि, शत्रुक पहिचानक अनिर्णय नहि मेटबैत। परिणामस्वरूप “महाविनाश” कथा एक अखण्ड शौर्य-दृश्य नहि, अलग-अलग घर आ अपूर्ण सूचीवला संकट बनैत अछि।

शिकारी जराक तीर : जानब, देखब आ परिणामक भिन्नता

वनमे जरा घासमे चमकैत आकृतिकेँ मृगक कान मानि पूरा देह देखनहि तीर छोड़ैत अछि। तीर कृष्णक पएरमे लगैत अछि; शिकारीक घोषणा जे हत्या-इरादा नहि छल, घावक भौतिक तथ्य नहि बदलैत। कृष्ण तत्काल तीर जोर-सँ निकालबाक निषेध कऽ पानि आ कपड़ाक सहायता माँगैत छथि। पछिला संवादमे शिकारीक भय, बदला-आक्रमणक आशंका आ सत्यक लेखाजोखा समान दृश्य समयमे रहैत अछि। शिल्पगत दृष्टिसँ ई क्षण रसात्मक उदात्तीक बदला थकान, रक्तस्राव आ सँभरणक असम्भाव्य अन्तिम प्रयत्नसँ रचल अछि।

कृष्णक स्मृतिमे द्यूतक सभा, सुदामा, राधिका, युद्ध आ अनाज-बही अलग-अलग टुकड़ा भऽ आवैत अछि; ओ अपन जीवनक समस्त खण्डकेँ एक मात्र दैवी अर्थमे नहि बाँधैत छथि। कथक स्पष्ट वाक्यमे हुनकर मृत्यु रखैत अछि। समुद्र नहि रुकैत; सहायता-सूची आ अपूर्ण आदेश जीवित लोकक हाथमे बचैत अछि। ई समापनक दार्शनिक व्यापकता हुनकर सन्दर्भित देहसँ अलग नहि। जरा घुरि अएला पर प्रतिशोध रोकल जाइत अछि, मुदा मृत्युक परिवर्तन नहि; एतय क्षमा आ दण्डक अंतिम घोषणा सेहो नहि।

आधुनिक कालमे कृष्णक मृत्यु-कथाक दुरुपयोगक प्रतिरोध

कटावक बाद विदेहपुरमे दुर्गा दनुवारक बाँस ढोएबाक वनमार्गक विवाद अछि, कृष्णक आधुनिक पुनर्जन्म अथवा कृष्ण-मृत्युक प्रत्यक्ष परिणाम नहि। निविदाक “सुरक्षा लेल मार्ग बन्द” बोर्ड पुरान मौसमी सीमासँ बढ़ल अछि; दुर्गा असीम वनाधिकार नहि, सीमित सुरक्षित बाट आ वैध बाँसक परिमाण चाहैत छथि। खसल माटिक वास्तविक खतरा देखलाक बाद भारी गाड़ी रोकि हलुक पैदल-साइकिल बाट समयसहित खुलैत अछि, शेष व्यापक वन-अधिकार अनिर्णीत अछि।

माधुरी दांगी आ अनन्याक असी थैलीक चूड़ा-मखान उत्पादनमे स्त्रीसभक भुजाइ, छनाइ आ श्रम-दर अलग दर्ज होइत अछि। दू थैलीक वजन विवादित, बचल रकमसँ पहिल प्रत्यक्ष भुगतान होइत अछि। घरमे देवन एकाएक पूर्ण समर्थक नहि बनि जाइत छथि; ओ बही नहि फाड़ैत, अगिला प्रयोगक सहमति दैत छथि। ई छोट परिवर्तन कृष्णक मृत्यु-स्मृतिक कोनो प्रत्यक्ष समाधान नहि—आधुनिक कथा एक स्वतन्त्र जीविकात्मक चालमे आगाँ बढ़ैत अछि।

नैराक मृत्यु, निजी फोटो आ नायकत्वक सीमा

स्थानीय आयोजक नैराक चित्र कृष्णक दैवी प्रतिशोधवला स्मारकसँ जोड़बाक आग्रह करैत अछि। सरिता साफ मना करैत छथि : नैराक मृत्यु अपन घटना आ अधूरल जाँच रखैत अछि; मिथकक नामपर ओकरा प्रतिशोध बनायब शोकक उपयोग होएत। कबीर अपन निजी अनपठाओल पत्र सुरक्षित रखैत छथि, विद्यालयक नैराक सार्वजनिक काजपर विद्यार्थी लिखथिन तकर विरोध नहि। दू सम्बन्धक सीमित सहमति कथावाचक द्वारा नकली मेल-मिलापमे नहि बदलल गेल।

एहि अविरोधी कटावसँ एक गूढ़ प्रश्न उठैत अछि : महाकाव्यक अन्तक प्रभाव आधुनिक शोककेँ अर्थ देत वा ओहि शोकपर स्वामित्व जमा लेत? सरिताक गिलास आ वनक तीर समान अर्थवला प्रतीक नहि; एक मृत बेटी संग बचल सम्बन्धक घरेलू वस्तु, दोसर प्राचीन कथाभितर मृत्युक कारण। कथक स्वयं दूनू घटना अलग रखबाक संकेत दैत अछि।

मूल्यांकन : महाविनाशक सघनता आ विचारक अतिव्याख्या

अध्यायक सर्वाधिक प्रभावी भाग कृष्णक अन्तिम थकान, जरा द्वारा अप्रत्याशित घाव आ वृद्धाक एक नामक माँग अछि। संवादसभमे लगातार नैतिक रूपेँ निर्दोष सावधानी रखबाक प्रवृत्ति मृत्यु-दृश्यक जोखिमो अछि : कृष्ण असाधारण स्थिर विवेक रखैत छथि, जे मानवीय अस्थिरताक सम्भावना घटा सकैत अछि। तथापि दृश्य देहक अन्त, आंशिक गवाही आ वापस नआबएवला समयकेँ टारैत नहि; इएह ओकर वास्तविक कलात्मक प्राप्य अछि।

अध्याय १९१ — सबटा टूटल नहि

उराहिक तीसरा चक्र आ “सम्पूर्ण सफलता”क अस्वीकार

गोमती बेलदार बाँसक खूँटा एक बित्ता पाछाँ करैत छथि, किएक तँ पहिल ठाम माटि भीतरसँ फँसबाक खतरा अछि। आरम्भिक दृश्य एक नाप-कथन नहि, घटनाक तात्कालिक संशोधन अछि। तेसर वार्षिक उराहिमे पाछल वर्षक गलत उपस्थितिपंजी जानि-बुझि संरक्षित रहैत अछि : एक पुरुषक समय दू बेर, दू स्त्रीक समय दबायल छल। कथन “पुरान गलत पन्ना फाड़ि नव सही बनाउ”क सुगम रेखीय इतिहास टारैत अछि।

रामसखीक अँगूठाछापवला उपस्थिति-कागदमे भुगतान/भविष्यक क्षतिपूर्तिक समर्पण छुपल अछि। गोमती उपस्थिति, सुरक्षा, विश्राम आ दावाक अलग पंजी बनबैत छथि। एउटा कामक श्रम-दरमे चेहरा-आधारित भेद

रोकल जाइत अछि; औजारभाड़ा अलग। विवादक एहि क्रममे ठेकेदारक आपत्ति सेहो सुनल जाइत अछि, मुदा ओकर सुविधाकेँ मजदूरक अधिकारक बराबर नहि घोषित कएल जाइत।

गाद, जाल, खेत आ मधुक अधूरल पारिस्थितिकी

सूरज गंगोताक कटानवला खेतक सीमा आ फूलमतीक जीरा छोड़बाक जाल-पथ गादक निस्तारणपर टकराइत अछि। गोमती पहिने माटि राखबाक सहमति चाहैत छथि; रमणी बिन्द पुरान जलस्तरक चिन्ह देखबैत छथि; हीरा मेच एक सुरक्षित घाटसँ सम्पूर्ण बाढ़क क्षति समाप्त नहि होएबाक भेद रखैत छथि। एहि दृश्यसभमे पानि कथाक केवल प्रतीक नहि—माटिक घनत्व, खोलल निकास, जालक दोसर लागत आ खेतक सीमा बदलनिहार भौतिक शक्ति अछि।

बटोही धामीक खाली मधु-पात्र प्राचीन पेशा घुरि अएबाक अनिश्चितता देखबैत अछि। बदैल गेल छत्ता, खसल गाछ आ सुरक्षित मौसमी निरीक्षणक सीमामे हुनकर नब रोजी एखन बनेबाक अछि। पुतुलक किताब-जेकाँ रंगाओल बाँसक डब्बा फेरसँ नाम-स्वामित्वक प्रश्न राखैत अछि, मुदा वास्तवमे मधु भेटल नहि। आख्यान आशावादी घोषणा नहि, रिक्त पात्र संग प्रशिक्षणक तिथि दैत अछि।

वेतनक वास्तविक समय आ रामसखीक एक अङ्क

घाटक पायरि चलबाक योग्य होइत अछि; खतरनाक पट्टी निरीक्षण धरि बन्द रहैत अछि। मजदूरी सीधे कामगारक मान्य माध्यमसँ दएबाक नियम बनैत अछि, बैंक-विहीन श्रमिक लेल साक्षीवला नकद विकल्प सेहो। रामसखीक खाता-संख्यामे एक अङ्क गलत भेटला सँ हुनकर भुगतान रोकल जाइत अछि, दूसर सभक नहि। सुधारक दोसर पहरमे पुष्टि होइत अछि; एतय “भुगतान आदेश” आ वास्तविक खातामे धन पहुँचनाइ बीच कथात्मक अन्तर स्पष्ट अछि।

रामसखी धन देखिकऽ विजय-नारा नहि करैत छथि; घरक चूल्हि, टोपरी-मरम्मति आ बेटी लेल कापीक राशि मनमे गनैत छथि। ई घरक सूक्ष्म भविष्यक गणना सार्वजनिक उपलब्धिक घोषणाक विरोधी काल बनैत अछि। गोमतीक हाथक छाला आ रातिक पुरान-नव पन्नाक छाया एही अर्थकेँ आगाँ लैत अछि : श्रम-समानता एक सामाजिक नियम संग एक देहक असहज निरन्तरता सेहो अछि।

बच्चीक अधूरल चित्र आ आगामी खतरा

विद्यालयक बच्ची साफ घाटक चित्रक एक कात जानि-बुझि अधूरल छोड़ैत अछि, किएक तँ ओतए काम एखन रोकल अछि। ई आंशिक दृश्य उपन्यासक लेखकीय रूपकेँ व्याख्यायित करबाक सबसँ सफल लघु शिल्प अछि। शिक्षकक “चित्र पूरा किएक नहि” प्रश्न पाठकक अपना “कथा पूर्ण कियैक नहि” उत्सुकतासँ संवाद करैत अछि। बच्चीक उत्तर नीतिगत सभा नहि, अपन देखल वस्तुक सौन्दर्यात्मक सीमा अछि।

अगिला भोर डिजिटल प्रति लेल “अधिकृत केन्द्रीय स्वामी” नियुक्त करबाक निविदा टाँगल भेटैत अछि। तारा पहिने गोमतीक तीन प्रतिक सामुदायिक हिस्सा सुरक्षित अछि कि नहि, से देखैत छथि। ई अग्रसंकेत सफल

स्थानीय श्रम-पंजीक विरुद्ध नव संस्थागत अधिकारक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा निविदा एखन मात्र प्रस्ताव अछि, कम्पनीकेँ स्वामित्व भेटल नहि। एहि भेदकेँ बचाएब आगामी समीक्षाक आवश्यक शर्त अछि।

पर्वक अर्थ : विघटनपछाति कार्यरत समाज

कृष्णक मृत्युपछाति ई अध्याय महाकाव्यक सीधे घटनाक्रमक व्याख्या नहि; आधुनिक समाजमे शोक, उजड़ल श्रम आ पुनर्निर्माणक निर्बाध कथा अछि। शीर्षक “सबटा टूटल नहि” एक पूर्ण आश्वासन नहि : बचल अछि पायरिक सुरक्षित भाग, भुगतानक प्रणाली, बच्चीक अधूरल चित्र; नहि बाँचल अछि खेतक सम्पूर्ण भूमि, जालक पुरान मोल वा वनमे सहज मधु-संग्रह। एतय अधूरापन अल्पदृष्टिक परिणाम नहि, दृश्यगत मूल्यांकनक शर्त अछि।

अध्याय १९२ — नव मालिकक डर

तीन प्रतिक जगतमे एकल स्वामित्वक प्रतिपक्ष

अभिलेखघरक दुआरपर तारा विवादित निविदा उतारैत नहि, ओकर पाँति-पाँति नकल उतारैत छथि। केन्द्रीय स्वामीक प्रस्ताव पूर्वक सामुदायिक तीन प्रतिक व्यवस्थाक विरोधमे अछि। महेन्द्रक सुविधा-तर्क वास्तविक : बाढ़मे बही भीजल, गुम कागद भेटबाक समय लागल। संकेत सेहो एकभण्डारणक उपयोगिता नकारैत नहि; विवाद निकास रोकेबाक अधिकार आ गलती सुधारक नियंत्रणपर अछि। एतय खलनायक-विरोधी प्रचारक सुविधा नहि, सुविधा आ स्वायत्तताक असाधारण सूक्ष्म संघर्ष अछि।

सूरज गंगोताक प्रतिमे जलनिकासक सीमित सहमति अछि, मुआवजा विचाराधीन; नव मसौदा केवल “सहमति प्राप्त” लिखैत अछि। फूलमतीक सामान्य पुरान जाल-मरम्मति आ सार्वजनिक काजसँ बढ़ल हानि दुनू “जाल अनुदान”मे समा जाइत अछि। एक पाँतिक श्रेणी कथात्मक स्मृतिपर हिंसा कतेक करि सकैत अछि से एहि दू वस्तुगत भेदमे स्पष्ट अछि। किन्तु आलोचना एतय कानूनी फैसला नहि सुनबैत, दस्तावेज ककर आवाजक काल-सीमा समेटैत अछि तकर विश्लेषण करैत अछि।

सबीना मीरशिकार : कौशल-पंजीक बाहरक व्यक्तित्व

सबीना मीरशिकार अपन जालक फाटल टुकड़ा आ सुई लऽ दाम पूछए अबैत छथि; सभा-प्रवेशक मूल उद्देश्य अभिलेख-बचाओ आन्दोलन नहि। हुनकर समुदायकेँ पुरान पेशासँ बाँधि निषिद्ध शिकारक प्रस्ताव भेटैत अछि, मुदा ओ वैध जाल-मरम्मतिक छोट जीविका चुनैत छथि। कम्पनीक प्रस्तावित “योग्य व्यवसाय-वर्ग”मे हुनकर पुरान समुदाय-नाम अछि, नव कौशलक ठाम नहि। तारा हुनकर अपन शब्द लिखैत छथि, मुदा सबीना पहिने एक काजक उचित दाम चाहैत छथि, अपन जीवनकेँ उदाहरण बनाएबक अनुमति नहि दैत। एही प्रतिरोधसँ पात्र विचारक प्रदर्शनसँ बाहर अपन दिनक मालिक रहैत छथि।

फूलमती जालक तेसर ढील गाँठ देखबैत छथि; सबीना स्वयं दोबारा सीबि त्रुटि सुधारैत छथि। पहिल किस्तक रकम भेटैत अछि, स्थायी रोजी नहि। परिवारक युवक नव पैसावाला संदिग्ध प्रस्ताव लऽ फेर आबैत अछि, सबीना

दाम, स्थान आ वैधताको स्पष्ट विवरण माँगि ओहि अस्पष्टता अस्वीकार करैत छथि। एहि भिन्न संवादमे न जोखिम-अस्वीकारनिहार पात्र पूर्ण आर्थिक सुरक्षित अछि, न पारिवारिक इतिहासक भार शून्य होइत अछि।

धागाक तीन रंग : प्रसारित कथन आ संशोधनक स्मृति

संकेतक तीन धागा जारी-कार्यालय, सामुदायिक प्राप्त प्रति आ प्रभावित व्यक्तिक निजी प्रति अलग रखैत अछि। तीनू समान कानूनी “मूल” नहि; प्रत्येकक अलग उत्पत्ति आ उत्तरदायित्व अछि। अन्तर भेटला पर पुरान पाठ मिटाएब नहि, नव अन्तर-पत्र लिखबाक प्रस्ताव अछि। एहिसँ कथा आपन लिखबाक प्रक्रियापर अप्रत्यक्ष टिप्पणी करैत अछि—कोनो एक कथावाचक एक व्यक्ति-समुदायक सम्पूर्ण अनुभवक अन्तिम स्वामी नहि। मुदा प्रामाणिक जारी-पत्रक आवश्यकता कथा अस्वीकार नहि करैत।

संकेत-बोली, पैघ अक्षर, ध्वनि-प्रति आ पढ़ि सुनाएबक श्रम वास्तविक खर्च सहित पूछल जाइत अछि। वृद्धा अपन आवाज रिकॉर्ड होएबाक स्थान पहिने बुझब चाहैत छथि। नैराक अनुपस्थित उपस्थितिक स्मरण एहि दृश्यसँ जुड़ैत अछि, मुदा पाठ ओकरा सर्वज्ञ नैतिक आदेश नहि बनबैत। बचल बच्चीक पोखरि-चित्रक अधूरल कात स्वतन्त्र रखबाक सरिताक आग्रह पाठकेँ पूर्णताको कृत्रिम दाबकेँ प्रश्न बनबैत अछि।

मतदानक स्थिति आ उद्घाटन रहित अन्त

झरना संशोधित मसौदामे विधिसम्मत मूल अभिलेख जारी कार्यालयमे, समुदायक प्राप्त प्रति अलग सुरक्षित पेटीमे आ निजी प्रति सम्बन्धित व्यक्तिक नियन्त्रणमे रहबाक रेखा पढ़ैत छथि; बाहरक प्राविधिक सेवा स्वीकार्य, निकास-नियन्त्रणक एकाधिकार अस्वीकार्य। महेन्द्रक पेटी चोरी जाएबाक प्रश्नपर जवाबी रखरखाव व्यवस्था जोड़ल जाइत अछि। मुदा नगरपालिका निविदा एखन रद्द भेल नहि; लिखित आपत्ति विधिसम्मत रूपसँ जमा करबाक आवश्यकता अछि।

पहिल परीक्षणमे रामसखीक नामक मात्रासँ अन्तर भेटैत अछि; दाम बदलैत नहि, तथापि नाम सुधारबाक आवश्यक होइत अछि। जाल-मरम्मतिक कामक अगिला दिन सबीनाक हाट-समयसँ टकराएबला देखिकऽ तारा समय बदलैत छथि। अन्तिम वाक्य “कागदकेँ ओकर मालिक लग पहुँचबाक यात्रा”क बाट खोलैत अछि। कथा एकल मालिकक डर खत्म घोषित नहि करैत; यात्रा आ पहुँचक असमानता अगिला पर्वक प्रमुख खुलल प्रश्न बनैत अछि।

समग्र शैलीगत मूल्यांकन

अध्याय अभिलेख-स्वामित्व पर बौद्धिक रूपसँ घन संवाद रखैत अछि; तदपि यदि केवल व्यवस्था-नियम पढ़ल जाए तखन सबीनाक जीवनक प्रत्यक्ष अभाव, फूलमतीक जाल आ गोमतीक खुरदुर हथेली खोआएत। कतिपय पात्रक भाषण बड्ड सुघर प्रक्रियावादी अछि, जकर कारण जीवनक उलझन मुद्रित घोषणापत्र सन लगि सकैत अछि। मुदा गलत गाँठ दोबारा सीबब, भोजनक थारीपर हँसी, वृद्धाक “आवाज कतय जायत” प्रश्न आ आगामी हाटक समयक आपत्ति बहुअर्थक जीवन फेर घुरबैत अछि।

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८५–१८८ क संयुक्त मध्यवर्ती आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

चारि बजार, चारि प्रकारक अदृश्य श्रम

१८५क दान, १८६क कागद-संशोधन, १८७क भोजन आ १८८क औजार-काम एके कार्यालय-प्रक्रियाक चारी उदाहरण नहि। सूरजक चढ़ाई, रेखाक चूड़ी, रुखसानाक भोर-साँझ आ हरिनारायणक निहाइ अलग श्रमिक समय रचैत अछि। दान लेल राखल भोजनक खर्च बाजारक श्रम नष्ट नहि करैत, छायाप्रतिक सहमति वास्तविक भूमि-अधिकार नहि बनैत, अधिक थारीक नाम अनाज उत्पन्न नहि करैत, आ सामान्य हुकक भयावह फोटो औजारक अन्तिम उपयोगक गवाही नहि दैत। एहि विविध प्रसंगसभक भिन्न दृश्यगत पदार्थ कथा-संसारकेँ एकसूत्री उपदेशसँ बचबैत अछि। (अ.१८५–१८८)

नव अध्यक्ष झरनाक निर्णयक प्रसार प्रत्येक अध्यायमे नियंत्रित रहैत अछि। ओ दानक शर्त जाँचबैत छथि, तारा अपन पक्षक गलती स्वीकार करैत छथि, रुखसानाक प्रतिरोध बिना नियम अर्थहीन होइत, हरिनारायण ग्राहकक जोखिम स्वयं लैत छथि। एक “उद्धारकर्ता” द्वारा क्रमिक विजयक संरचना नहि, अनेक सक्रिय निर्णायक केन्द्रक वितरित रचना अछि। (अ.१८५–१८८)

प्राचीन द्वारकाक लघु दृश्यसभक स्थान

१८५क पुल-दाता, १८७क वृद्ध रान्हनिहारि, १८८क श्रमिक-विहीन धातु-पात्र प्राचीन दृश्यसभक अपन पूर्ण वा अपूर्ण कार्यकथा बनैत अछि। १८६मे आधुनिक बाहा-मुँहक वार्षिक उत्सव अछि, प्राचीन कृष्ण–बलरामक स्वतंत्र अन्तराल नहि; एहि भिन्न विन्यासकेँ कृत्रिम ढंगसँ बराबर अध्यायगत द्विकालीन काट कहब गलत हएत। प्राचीन घटना आधुनिक अभिलेखक उत्पत्ति नहि, समानान्तर सामाजिक तनावक पाठकीय अनुभव अछि। (अ.१८५–१८८)

चारू अध्यायमे वस्तुक वापसी—मटका, बोतल, लालटेन, रुमाल, सीलबन्द पेटी—कथा भीतर हुनकर अलग उपयोगक कारण अर्थ पबैत अछि। रूपकक अतिरंजना टारि वस्तुगत श्रमक मानक परखब जरूरी अछि। (अ.१८५–१८८)

अपूर्ण परिणाम आ आन्तरिक आलोचना

पूर्ण सम्पन्न : सीमित दानक शर्तस्वीकृति, ताराक गलत टिप्पणी वापस लेब, रुखसानाक निश्चित विश्रामक पहिल दिन, नन्दलालक एक फालक अग्रिम, अमीनाक भोजनक दाम, रेखाक सीमित परीक्षण। शेष : देवव्रतक पुरान खेप, झिंगरीक मजदूरी, रेखाक पुरान नकल, रसोइक दीर्घकालीन बजट, धातुक अनाम पेटीक स्रोत आ हरिनारायणक ऋण। ई अन्तर पाठमे वास्तविक खुलल रहैत अछि। (अ.१८५–१८८)

समूहचर्चाक अनेक वाक्य प्रक्रियागत निर्दोष रूपसँ व्यवस्थित अछि, जइमे पात्रक भावगत विस्फोटक अवकाश घटैत अछि। रुखसानाक अपने लेल बनाओल पातर रोटी आ अजितक कीलक लघु दृश्य नीति-भाषाक एहि अतिशय सुघर लयकेँ भङ्ग करैत अछि। आलोचनामे अध्यायसभक ई सीमा सेहो सुरक्षित रहत। (अ.१८५–१८८)

मौसल-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १८१-१९२ क सम्पूर्ण समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

रंग-उत्सवसँ विघटन आ पुनर्निर्माण धरि

मौसल-पर्वक आरम्भ उत्सवक मञ्च, दीपकक काँपैत देह, स्मारक-ठेका आ रुहानीसँ झरना लग चाभी हस्तान्तरणसँ होइत अछि (अ.१८१–१८४)। मध्य खण्डमे दानक शर्त, ताराक भूल, रसोइ-श्रम आ औजारक बजार (अ.१८५–१८८) संस्था-बदलावक असल खर्च देखबैत अछि। अन्तिम चारि अध्यायमे बलराम अपन नेतृत्वक छायासँ दूरी चुनैत छथि, कृष्ण यादव-कलहपछाति जरा-वाणसँ मरैत छथि, आधुनिक पोखरि-उराहि सफल-अपूर्ण दुनू रूपमे चलैत अछि आ नव अभिलेख-एकाधिकारक खतरा उठैत अछि (अ.१८९–१९२)। ई क्रम मात्र पतन-संरचनाक रेखीय चित्र नहि, जीवनक विविध समय एकसाथ बहबाक संरचना अछि।

राजवंशक हिंसा पुरान गौरवक चमत्कारी नियतिसँ पूर्ण व्याख्यायित नहि। सरकण्डाक मुसलनामक भीतर वास्तविक हाथक हिंसा, अपूर्ण गवाही आ घायलसभक सहायता अधिक सघन अछि। कृष्णक मृत्यु दैवी प्रतिशोधक संकेत सँ आधुनिक नैराक मृत्युकेँ कथावाचक एक नहि करैत। सरिता आ कबीरक अस्वीकार एहि पर्वक मिथकीय विस्तारक मर्यादा निर्धारित करैत अछि। (अ.१८९–१९०)

पर्वमे प्राचीन द्वारकाक दृश्यसभक अनुपात क्रमशः बढ़ैत अछि। १८१–१८८क छिटपुट समकालिक उद्घाटन १८९मे बलरामक नौ-पाठांशीय प्रमुख समय बनैत अछि; १९०मे कृष्णक मृत्यु तेरह पाठांशक सघन प्राचीन खण्ड बनबैत अछि। १९१ आ १९२ पूर्णतः आधुनिक कथा समयमे रहैत अछि। ई अनुक्रम ध्वस्त राजकुलसँ नव लोकजीवनक प्रत्यक्ष निरन्तरता सिद्ध नहि करैत; उलट पाठककेँ ई प्रश्न पूछबैत अछि जे एक कालक महाविनाशक पाछाँ दोसर कालक साधारण कार्य केना चलैत अछि।

बलरामक गदा नहि उठाएब आ नजीरक छेनी पर सही माप लगायब एकहि व्यक्ति-धर्म नहि; दूनू दृश्य भिन्न व्यक्ति आ संस्था रखैत अछि। कृष्णक तीर आ आधुनिक वनमार्ग पर सुरक्षा-सहमति सेहो कारण-कार्यक प्रत्यक्ष जोड़ी नहि। समरूपता कथा-पाठक द्वारा रचल अनुरणन अछि, प्रत्यक्ष इतिहासक प्रमाणीकरण नहि। (अ.१८९–१९०)

कथनकाल, वस्तुक अवतरण आ पात्रक एजेंसी

अधिकांश आधुनिक अध्याय भोरसँ रातिक सीमित दिनक अन्तरालमे संचालित अछि, मुदा अतीतक ऋण, वर्षो पुरान आरोप, वार्षिक उराहि आ भविष्यक समीक्षा-तिथि नियमित समयसँ अलग पथ बनबैत अछि। पाठक एके समयमे तत्काल रोगी-भोजन, लेखा-जाँचक महीना, पुर्खाक पेशागत शिक्षाक पीढ़ी आ मृत्युपछाति शोकक निरन्तरता अनुभव करैत अछि। दस्तावेजक तिथिक कथनकाल आ देहक थकानक अनुभव-कालरि बीच रचना आलोचनात्मक ऊर्जा पबैत अछि।

चाभी, चक्र, थारी, पत्रक छायाप्रति, लाहक चूड़ी, सीलबन्द पेटी, उलटल थारी, काठक नाव, पोखरिक अधूरल चित्र आ तीन रंगक धागा वस्तुसभ अपन भिन्न कथा-उपयोग रखैत अछि। अनिर्णीत वस्तुकेँ प्रत्येक बेर सार्वभौम

प्रतीक बनायब नुकसानदेह हएत। खास कऽ रुखसानाक निजी रोटी, कुटिलादेवीक गुम पोताक नामक माँग, जराक देखबाक भूल आ सबीनाक पहिल जालक दाम—ई सभ वस्तु-निर्देश रहितो दृश्यक भीतर अपूर्व मानवीय घनत्व रखैत अछि।

बहुस्वरताक उपलब्धि आ पाठकपर अतिकथनक भार

झरना अध्यक्ष होइतहुँ निर्णयक एकाधिकार नहि लैत; रुहानी पूर्वसत्ताक स्मृति राखैत छथि, महेन्द्र अनेकपल विरोधी तर्क दैत छथि, तारा अपन पक्षक भूलक नाम लैत छथि। रुखसाना, सकीब, करुण, सूरज, सलीम, दुर्गा, माधुरी, गोमती आ सबीना अपन आर्थिक स्थिति सँ भाषिक हस्तक्षेप करैत छथि। हुनकर आवाजकेँ केवल उपेक्षित जाति-वर्गक सूची कहि छोड़ेब अपर्याप्त; प्रत्येक अपन काज, जोखिम, दाम आ मर्यादाक शर्त स्वयं रचैत अछि।

एहि उपलब्धिक सीमा ई अछि जे उपन्यास लगभग प्रत्येक प्रसंगमे नियमक नैतिक सही वाक्य तत्क्षण उपलब्ध करबैत अछि। किछु संवादमे स्वाभाविक हकलाहट, गलत बुझनाइ आ असंगत व्यक्तिगत इच्छा लेल जगह घटैत अछि। मुदा ताराक भय, श्यामक सहज क्षमाक अस्वीकार, रुहानीक खालीपन, नन्दूक असहमति, कुटिलादेवीक एक नामक प्रश्न आ सबीनाक कथाकेँ उदाहरण बनएबाक अनिच्छा महत्त्वपूर्ण अपवाद छथि। आख्यानशास्त्रीय आलोचना एहि उपलब्धि आ सीमादूनूकेँ संग रखैत अछि।

मौसल-पर्वक वास्तविक समापन

अध्याय १९२ धरि देवव्रतक दीर्घ दानक शेष भागक निर्णय, पुरान खेपक मूल बही, वनक व्यापक अधिकार, सूरज गंगोताक मुआवजा, फूलमतीक जाल-हानि, सबीनाक स्थायी रोजगार आ अभिलेख-निविदाक औपचारिक स्थगन सभ प्रश्न अनिर्णीत अछि। तेसर उराहिमे सुरक्षित घाटक हिस्सा खुलल, रामसखीक भुगतान पहुँचलक, समुदायक प्रतिक परीक्षण शुरू भेल; ई ठोस उपलब्धि छथि। “सबटा टूटल नहि” वाक्य पाठमे एहि असमानताक साथे सत्य अछि, सर्वत्र पुनरुत्थानक घोषणाक रूपमे नहि।

समग्र रूपसँ मौसल-पर्व व्यक्तिगत वीरताक क्षरणक कथा मात्र नहि; ककर नाम, ककर काम आ ककरा अपन प्रति रखबाक अधिकार—ई प्रश्न भविष्यक लोकजीवनमे केना पसरैत अछि तकर कलात्मक परीक्षण अछि। अगिला महाप्रस्थानिक-पर्वक समीक्षा एहि स्थितिक शेष उत्तर स्वयं मूल पाठसँ देखत; १९२क वर्तमानपर उत्तर थोपल नहि जाएत।

महाप्रस्थानिक-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय १९३ — यात्राक घोषणा

मुकुटक भार आ महाप्रस्थानक अपूर्ण उद्घाटन

परीक्षितक मस्तकपर भारी पड़ैत मुकुटक दृश्य महाप्रस्थानिक-पर्वक आरम्भकेँ कोनो निर्विकार त्याग-मन्त्र नहि बनबैत। युधिष्ठिरक हाथ स्थिर अछि, मुदा निश्चिन्त नहि; युवराजक संरक्षण, प्रशासनक अनुभव रखने युयुत्सु आ

सुभद्राक आगामी पीढ़ीपर अधिकारक चर्चा राजत्यागसँ पहिने अबैत अछि। त्याग करनिहारक स्वैच्छिक यात्रा आ पछुआ लोकक अनैच्छिक दायित्व एके घटनाक दू असमान समय बनैत अछि। प्राचीन कथाधारामे नीति-निर्णयक प्रस्तुति एहि क्षण नायकक अन्तःसंघर्षसँ बाहर नगरक अनाथ, खेत आ कर-संग्रहक प्रश्न खोलैत अछि।

द्रौपदी अपन पएरक निर्णयक उपस्थिति अनुभव करैत छथि; भाइसभक देह सेहो एके भावमे नहि चलैत। अर्जुनक अदृश्य धनुष, भीमक सीढ़ीक स्मृति, सहदेवक गणनाक थकान आ नकुलक सैनिक-दृष्टि संयुक्त यात्राकेँ बहुकेन्द्रित बनबैत अछि। कुकुर पाछाँ आबैत अछि, मुदा ओकर आगामी महत्त्वक कोनो अन्तिम अर्थ एखन कथक नहि थोपैत। देहक अलग छाप भविष्यक पतनसभक संकेत भऽ सकैत अछि, किन्तु पहिल अध्यायमे ओ केवल व्यक्तिगत यात्राक असमानता अछि।

२०४२क चौर : महाकाव्यसँ आधुनिक कटावक शिल्प

छठम पाठांशमे सन २०४२क विदेहपुरक तारा मल्लिकक खाली पेटीपर दृश्य कटैत अछि। प्राचीन राजमहलक मुकुटक बदला सूखल कपड़ा, कागदक प्रति, भाड़ा आ रसीद अबैत अछि। ई कटाव कथाक पाठककेँ दू दूर कालमे घुमबैत अछि, मुदा पाण्डवसभक यात्राकेँ आधुनिक अभिलेख-दलक उत्पत्तिक कारण नहि बनबैत। एक कात त्यागसँ पहिने नागरिक जिम्मेदारी, दोसर कात निधि समाप्त होएबाक पहिने अभिलेख वापस लोकक हाथ धरि पहुँचेबाक काज; दूनू प्रश्न समानान्तर कथा-चिन्ताक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

नगर-कार्यालयक कार्यक्रम चारि ठामक अछि, मुदा चौरक भीजल बाट, पुरान नक्शा, खेतसँ घुरबाक घड़ी आ विद्यालयक पढ़ाइक समय ओहि योजनाकेँ बाधित करैत अछि। वृद्ध श्रमिक नगरक अनुमति आ साझा बाटक अधिकार अलग करैत छथि। बच्चा कागदक पेटीमे दवाइ खोजैत अछि; सरिता ओकरा असत्य आशा नहि दैत। एक दिनक नाटकीय अवधि बारंबार स्थगित होएबाक कारण लम्बा लगैत अछि : कथाक वास्तविक गति वाहनक घड़ी नहि, श्रोता लोकक जीवनतालिका निर्धारित करैत अछि।

पीपरक बैठक : प्रश्नक अधिकार आ पाठकक अपेक्षा

दू स्त्री आ एक युवक विद्यालयक भीतर नहि, पीपरक छाहँमे बैसबाक निर्णय करैत छथि। उराहिक दू दिनक पुरान मजदूरी, पानिसँ कटैत खेत आ सार्वजनिक नाम छपबाक जोखिम तीन पृथक कथात्मक समस्या छथि। गोमती पुरान दावाक तुरन्त भुगतानक वचन नहि दैत; नियमक प्रति आ सुनवाईक बाट उपलब्ध करबाक उपयोग अलग बतबैत छथि। एहि दृश्यसँ “कागद पहुँचाओल” सफलता-घटना सँ “कागद पढ़ि प्रश्न करबाक” सामाजिक प्रक्रिया बनि जाइत अछि।

घरमे सूखल सन्दूक नहि, ताला ककरा लग रहत, निरक्षर व्यक्ति प्रति केना बुझत—ई प्रश्न अभिलेखक अमूर्त सार्वजनिकताकेँ स्थान, मौसम, शिक्षा आ सुरक्षा प्रदान करैत अछि। अन्ततः सार्वजनिक कागद विद्यालयक सुरक्षित अलमारीमे राखल जाइत अछि, निजी कागदक स्थानीय संरक्षकक चुनाव अगिला बैठकपर छोड़ल जाइत अछि। एहि अन्तरकेँ “त्रि-प्रतिक पूर्ण हस्तान्तरण” कहब अनुचित होएत; कार्यक्रमक एक हिस्सा सम्पन्न अछि, स्थानीय साझा व्यवस्थाक महत्त्वपूर्ण निर्णय शेष।

दृष्टिकेन्द्र आ नैराक अनुपस्थितिक कथन

सरिताक हाथमे नैराक नीला झोरा नहि, अपन सीलल थैला अछि। पुत्री जीवित रहितथि तँ की करितथि—एहि सम्भावनाक भावनात्मक दबाव ओ अनुभव करैत छथि, मुदा ओकरा बेटी द्वारा कहल नव वाक्य बनाकऽ नहि लिखैत। “हम सुनि रहल छी” कहि सरिता अपन शोकक उल्लेख करितो अधूरल मजदूरीक प्रश्नपर फेर ध्यान दैत छथि। कथक ओकर आन्तरिक अनुभूति धरि जाइत अछि, मुदा अनुपस्थित नैराक चेतनाक मनगढ़न्त साक्षात्कार नहि करबैत; एही संयमसँ शोकक दृष्टिकेन्द्र अलग आकार पबैत अछि।

तारा नगरक प्रदर्शन-विवरणक माँग आ सहमति-विहीन सामूहिक फोटोक प्रस्तावक विरोध करैत छथि। तीन ठामक बदला एक ठामक हस्तान्तरण दर्ज करबाक निर्णय उपलब्धिक संख्यात्मक व्यंग्य अछि। “सहमतिक प्रतीक्षा” लिखल टिप्पणी कथा भीतर एक नवल अर्थ-संकेत बनैत अछि : असफल संख्या आ सही प्रक्रिया एकहि नाप नहि। किन्तु कथाक लगभग सभ सक्रिय पात्र निजताक भाषा अत्यन्त स्पष्ट बजैत छथि; संवादक एहन सुव्यवस्था कखनहुँ संघर्षक स्वतःस्फूर्त उलझन घटा सकैत अछि।

जलबाटक खुलल प्रश्न आ अध्यायक अन्त

शहरक पन्नामे जलबाट बन्द अछि, बस्तीमे बरखापछाति ओतयसँ पुनः पानि कटैत अछि। वृद्धक आग्रह—एक दिनक देखाइकेँ दू वर्षक स्थायी अर्थ नहि बनाउ—कथानकक स्थानीय समय-मान खोलैत अछि। तारा “मौसमी जाँच अपेक्षित” लिखैत छथि। एहि तरह एक दृश्य-समय आ नदीक आवर्ती काल एक-दोसराक सीमाक भीतर रहैत अछि; कथक नदीकेँ रहस्यक सर्वव्यापी प्रतीक बनएबाक आवश्यकता नहि अनुभव करैत।

अन्तिम पृष्ठमे पेटी खाली भेला परो सूची लम्बाइत अछि : स्थगित दौरा, मजूरी-दावा, जलबाटक जाँच आ निजी विवरणक रक्षा। “अन्तिम दौरा” प्रशासनक नाम छल, लोकक समस्या समाप्त भेल तकर घटना नहि। आरम्भक पाण्डव-यात्रासँ एक रूपकात्मक प्रश्न उभरैत अछि—चलि जाएबक बाद बाँचल लोकक जिम्मेदारी के उठा सकैत अछि—मुदा उत्तर आधुनिक बस्ती अपने घटना आ निर्णयसँ गढ़ैत अछि।

अध्याय १९४ — द्रौपदीक बाट

फाटल गाँठ : महाकाव्यक नायिकाक देहगत वर्तमान

द्रौपदी अपन फाटल वस्त्रसँ काँट निकालैत छथि; भव्य हिम-यात्रा एक अनिवार्य छोट मरम्मतसँ शुरू होइत अछि। भीमक झोरामे सुई नहि, बचल अन्न अछि। प्यास, घुटनाक दुखाइ, पवन आ छोट विराम यात्रा-समयकेँ ठोस बनबैत छथि। “हम कारण नहि, थोड़ेक विराम माँगैत छी” कहि द्रौपदी अपन देहक माँगकेँ समूहक निर्णयपर अपराध-बोध बन्ने नहि दैत। एहि साधारण संवादमे पात्रक एजेंसी महाकाव्यक दैवी उपाधिसँ स्वतंत्र अछि।

फाटल वस्त्रक गाँठ आरम्भमे स्वयं कएल तात्कालिक काज अछि; अन्तमे ओकर दोबारा खिंचब जीवनक श्रमक असफल परित्याग नहि, पुनः प्रयासक दृश्य अछि। एक वस्तु आरम्भ आ अन्तकेँ बाँधैत अछि—आख्यानगत

वृत्ताकृति बनैत अछि—मुदा ओकरा द्रौपदीक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक एकमात्र रूपक बनबाउ तँ वही एक-कारणीय अर्थ दोहरा देब जकरा उपन्यास परखैत अछि।

स्मृतिक अनाक्रमिक वापसी : एक जीवनक अनेक काल

ठंढा पानि इन्द्रप्रस्थक मयसभाक स्मृति अनैत अछि, जकर ऐश्वर्यक पाछाँ घड़ा भरनिहार अनाम हाथ पढ़ाइत अछि। पाञ्चालक अगिला भोरक बरतन-ध्वनि स्वयंवरक प्रख्यात दृश्य सँ भिन्न अछि; द्यूतसभा, वनवासक भीजल काठ, मृत पुत्रसभक अलग हँसी आ सुभद्राक संग असहज निकटता अलग-अलग स्मृति-वर्तुल बनबैत अछि। ई पूर्वदीप्तिसभ किसी मुकुटधारी जीवनीक संक्षेप नहि, वर्तमान प्यास आ हड्डीक थकान द्वारा क्रमशः खुलैत जीवन-टुकड़ा छथि।

द्रौपदी स्वयं स्वीकार करैत छथि जे हुनकरो रोष आ निर्णयसभ सदैव सम्यक नहि छल। एहि स्वीकारोक्तिमे कथक स्त्रीक समस्त क्रिया आदर्श बनबैत नहि; विरोध, ईर्ष्या, गलत वचन, शोक आ हँसी संग रहबाक ठाम बचैत अछि। प्राचीन चरित्रकेँ आधुनिक घोषणापत्रक तैयार प्रवक्ता बनेबाक जोखिम कतहु अछि, मुदा भूख आ प्यासक अद्वितीय स्मृति संवादक एकरूपता तोड़ि दैत अछि।

द्यूतसभाक अनुत्तरित प्रश्न : एकवाक्यीय जीवनचरित्रक प्रतिपक्ष

अर्जुन अपन विजयकेँ निर्णय समझि लेने होयबाक सम्भावना स्वीकार करैत छथि; युधिष्ठिर धर्मक वचन आ लोकक जीवन बुझबाक अन्तर देखैत छथि। द्रौपदी प्रश्न करैत छथि—“जँ हमर जीवनक अन्तिम कारण कियो एक शब्दमे कहत” तँ ओ शब्द ककर चयन होएत? ई प्रश्न कथापर टिप्पणी सेहो अछि : मृत्यु-पछाति पात्रक नियत अर्थ कोन कथनाधिकारी तय करैत अछि? तकर उत्तर मात्र पुरुष-व्याख्याद्वारा दिअल जाए, तखन स्त्रीक अपन लम्बा अनुभव कटि जाइत अछि।

द्यूतसभाक वस्त्र-रक्षाक मिथकीय प्रभाव सँ बाहर द्रौपदी मुख्य अपमानक नैतिक प्रश्न सजीव रखैत छथि; ओहि समयक क्रोध आ प्रश्न दूनू एक नहि। महाप्रस्थानक प्रचलित अर्थमे अर्जुनक प्रति स्नेह “पतनक कारण” कहल जाइत अछि। मूल अध्याय ओ स्नेहक अस्वीकार नहि करैत, मुदा पुत्रशोक, वनजीवन आ राजनीतिक अधिकार-विहीन निर्णयक अनेक पक्षक बीच ओकर एकाधिकार अस्वीकार करैत अछि। कथा प्रचलित उत्तरकेँ हटाकऽ असत्य नव अन्तिम उत्तर नहि दैत।

दृष्टिकेन्द्र, देहपतन आ कथनक दूरी

युधिष्ठिर आगाँ चलैत छथि, द्रौपदीक देहक नजदीक भीम अछि : एहि स्थानिक विभाजनमे नैतिक उत्तर देनिहार आ गिरैत देहक ताप सुननिहारक दूरी चित्रित होइत अछि। पाथर खसि गेलाक बाद द्रौपदी दू बेर सँभलबाक चेष्टा करैत छथि; भीमक हाथ पहुँचेबाक पहिने हुनकर देह धरती छू लैत अछि। दृश्य समय के विस्तार सँग कथक मरबाक क्रियाकेँ उपदेशक त्वरित उदाहरण बनबाक सँ रोकैत अछि।

अन्तिम क्षणमे युधिष्ठिरक पक्षपातवला कारण सुनाइत अछि, मुदा द्रौपदी अपन स्मृतिमे ओकर अपूरक स्वरूप बुझैत छथि। भीम फाटल गाँठ देखिकऽ छोट मरम्मतक तथ्य राखैत छथि। युधिष्ठिरक उत्तर कथाभितर उपस्थित

पात्रक कथन अछि; एकरा समस्त कथा-संसारक निरपेक्ष कथक-निर्णय मानब भूल हएत। एहि केन्द्र-परिवर्तनसँ प्रचलित महाप्रस्थान आख्यानक भीतर आवाजक संघर्ष रचल गेल अछि।

कलात्मक प्राप्य आ सीमा

पाथर, सुईक अभाव, गहिराइतक पानिक घूँट आ अर्धस्मृत गीत मृत्युकेँ केवल करुण-रसक स्थिर प्रतिमा नहि बनबैत। आँखिमे देखल आ हातमे धेल्ला जीवनक अन्तर पाठक बुझैत अछि। द्रौपदी अंतिम क्षणमे पूर्ण न्याय-सभा नहि सजबैत छथि; नहि त हुनकर पक्षसँ सर्वज्ञ निर्णयक घोषणा अछि। एहि कारण आरम्भक हलुक गाँठ अंतमे प्रतिनिधित्वक अत्यन्त सघन दृश्य बनैत अछि।

तथापि “ककरा कथा कहबाक अधिकार” प्रश्नक स्पष्ट पुनरावृत्ति कतहु पाठकीय अर्थग्रहणक अवसर कम करैत अछि; पात्र कएक बेर अपन आत्मविवेचना अत्यन्त आलोचनात्मक भाषा मे स्वयं रखैत छथि। एहि शैलीगत जोखिमक बावजूद मृत्यु-पतनक दृश्य, भीमक बेबस हाथ आ द्रौपदीक अन्तिम मौन कोनो “सही पाठ”क पूर्ण नियन्त्रणमे नहि रहैत। ओहि अवशिष्ट मौनमे अध्यायक स्वतन्त्र आख्यानगत गहराइ अछि।

अध्याय १९५ — भाइसभक दूरी

घटैत समूह : मृत्युशृंखलाक समय-रचना

द्रौपदीकेँ पाछाँ छोड़लाक बाद सहदेव आपसी दूरी गनबाक चेष्टा करैत छथि, मुदा भीमक प्रश्न—सभक पएर एक सन अछि की—समान-गतिक असम्भवता खोलैत अछि। सहदेवक फिसलन, नकुलक सहायक हाथ आ दण्डक हस्तान्तरणसँ मृत्युक दृश्य आरम्भ होइत अछि। युधिष्ठिर बुद्धि-अभिमानक कारण कहैत छथि; मुदा सहदेवक अन्तिम देहगत अनुभव ओहि एक वाक्यसँ स्वतंत्र रहल। “मार्गक कारण” आ व्यक्तिक जिएल जीवनक बीच ई दूरी अध्याय १९४क बहस आगाँ बढ़बैत अछि।

नकुलक हाथमे दू डण्डा, झरनाक टूटैत प्रतिबिम्ब, सहदेवक नामक व्यर्थ पुकार आ स्वतन्त्र रूप-प्रशंसाक स्मृति—एहि क्रममे पात्रक पतन हठात् नीतिशिक्षा नहि, शोकद्वारा जटिल बनैत अछि। अर्जुनक गाण्डीव-विहीन हथेली, युद्धक असफल प्रतिज्ञा आ “योद्धा”क बदला “भाइ” कहबाक इच्छा एहि लयमे अगिला परिवर्तन अछि। कथन बारंबार गणनात्मक आकार घटबैत अछि—पाँच भाइ, तीन, दू, एक—मुदा प्रत्येक घटती संख्याक भीतर अतिरिक्त स्मृति प्रवेश करैत अछि।

भीमक भूख आ युधिष्ठिरक अन्तिम एकाकीपन

भीम अपरिमित भूतकालक पाछाँ “हम भूखल छी” कहैत छथि। एहि वाक्यक तत्काल अर्थ देहक सामान्य आवश्यकता अछि; एकरा लालच आ पतनक पूर्वनिर्धारित प्रमाण मानि लिअब स्वयं पात्रक वर्तमानकेँ झुठलाएत। पाथरक दरार, खिंचल मांसपेशी आ छातीमे वेदना मृत्युकेँ भौतिक बनबैत अछि; युधिष्ठिर निकट आबि हाथ धरैत छथि। एहि निकटताक समयमे धार्मिक व्याख्या आ परिजनक अन्तिम बातचीत बीच कठोर तनाव छैक।

अन्ततः कुकुर संग बचैत अछि, जकरा दैवी तर्कक वक्ता नहि बनाओल गेल अछि। ओकरा पानि चाही, तकर देह चलि सकैत अछि। युधिष्ठिर शेष पानि साझा करैत छथि; ई छोट क्रिया मृत्यु-पर्वक महान धर्मवाक्यक कोलाहलसँ स्वतंत्र जीवित सम्बन्ध राखैत अछि। कथक मृत्युशृंखला पूरा कऽ देलाक बावजूद उत्तर-श्रेणी नहि बनबैत, किएक तँ तात्कालिक दुःख कोनो अन्तिम कारणसूत्रमे पूर्णतः समा नहि सकैत।

जावेदक परदा : अकस्मात् आधुनिक दृश्य-परिवर्तन

सत्ताइसम पाठांशमे दृश्य विदेहपुरक आश्रयक आँगनमे कटैत अछि। जावेद कलन्दर जीवित पशुक पुरान प्रदर्शन छोड़ि कपड़ाक चिड़ै, कागदक बन्दर आ परछाईंवला नवा कला रचि रहल छथि। प्राचीन हिम-पतनक बाद बच्चासभक “बन्दर नहि?” प्रश्न मृत्यु-पर्वक नैतिक प्रतिरूप नहि; ओ प्रदर्शनक वास्तविक आर्थिक संकटक स्वतंत्र कथन-धुरी अछि। एहि असमान दृश्यक भिड़न्त पाठकसँ “त्यागक बाद आजीविका” प्रश्न उठबैत अछि, मुदा प्राचीन पात्र आधुनिक कलाक कर्ता नहि बनैत।

जावेदक नब कार्यक्रममे कागदक बन्दर भूखल छोट पुतरीकेँ अन्न बाँटैत अछि। दू दर्शक “असल करतब” चाहैत उठि जाइत छथि। कपड़ाक दृश्य बच्चाक लेल कथा बनैत अछि, मुदा बाजारी दाम घाटि जाइत अछि। एतए कलाकारक आन्तरिक दृष्टिकेन्द्र—भय, थरथराइत हाथ, पुरान पशु फेर नहि अनबाक निर्णय—नैतिक परिवर्तनक निजी लागत अनुभव करबैत अछि।

एक सय अठारि रुपैयाक नाटकीय हिसाब

खेलसँ ११८ रुपैया प्राप्त, कपड़ा-बाँस पर ४०, आवागमन ३२ आ अंशुक मेहनताना २० देलाक बाद जावेद लग २६ रुपैया बचैत अछि। एहि चारि संख्या माध्यमसँ कथानक कलात्मक स्वतन्त्रताकेँ मजदूरीक समय आ न्यूनतम आयक प्रश्नमे रखैत अछि। जावेद पशु बिना कार्यक्रम सम्भव भेल, ई स्वीकार करैत छथि, मुदा ओही कमाइ सँ घर चलत, ई दावा नहि करैत। अगिला कार्यक्रमसँ पहिने समय, स्थान आ न्यूनतम दाम तय करबाक संकल्प एक भावी अनुबन्ध अछि, पूर्ण आर्थिक सफलता नहि।

अंशु अपन सहायता-पारिश्रमिक लैत अछि आ पढ़ाइक समय सुरक्षित रखबाक शर्त रखैत अछि। चन्द्रा पोस्टरक “करामाती जानवर” पुरान शब्दक आलोचना करैत छथि। कलाकार, बालसहायक, गायिका आ आयोजक एके नैतिक अनुकरणक एक-स्वर नहि; प्रत्येक अपन श्रमक अलग लागत सँ हस्तक्षेप करैत छथि। प्रतीकक दृष्टिसँ परदाक फाटल पाँख महत्त्वपूर्ण, मुदा ओकर वास्तविक मरम्मत आ पेशागत भाषा सुधारब सेहो पाठकक लेल ततेक आवश्यक अछि।

मूल्यांकन : अनुपात आ कथनगत जोखिम

प्राचीन पक्ष मृत्युशृंखलाक सघन काल विस्तार रखैत अछि, आधुनिक पक्ष किछु घण्टाक प्रदर्शन आ आय-गणना। दूनूक पुनःसंपर्क विषयगत सम्भावना मात्र अछि—संग छोड़लाक बाद शेष जीवनक दायित्व—प्रमाणित इतिहास-सम्बन्ध नहि।

एक सीमा ई जे प्राचीन भाइसभक चरित्रक्रममे पारम्परिक पतनकारण बारंबार अवश्य प्रवेश करैत अछि; भिन्न जीवनक जटिलता सँ पढ़बाक आह्वान स्वयं कथक स्पष्ट करैत अछि। मुदा भीमक भूख, अर्जुनक “भाइ”, नकुलक दण्ड आ जावेदक छब्बीस रुपैयाक ठोस आंशिक परिणाम एहि सिद्धान्त-वाक्यसभकेँ अनुभवक पृथक लय प्रदान करैत अछि।

अध्याय १९६ — फकीराक स्टेशन

सुधरल परिचय, असुधरल श्रम-समय

स्टेशनक माल-दुआरक उठल लोहाक पत्तर फकीराक छड़ीक नोकसँ जाँचल जाइत अछि। पंजीमे मृत घोषित भेल फकीराक यात्रा-पास सुधारल अछि, मुदा नव स्टेशनक ठेकेदार लेल “साई फकीर” आ “फकीरा”क भिन्न उल्लेख पुनः प्रश्न उठबैत अछि। एक प्रशासनिक सुधारक समाप्त परिणाम दोसर संस्थाक काम-बँटवारा स्वतः सुनिश्चित नहि करैत। कथानकक आरम्भ एहि प्रकार पहिने अर्जित अधिकारक अपूर्ण उपयोगसँ, न किसी नव वैश्विक षड्यन्त्रसँ, जुड़ैत अछि।

माल-व्यवस्थापक भोरसँ साँझ धरि निःशुल्क उपलब्ध रहबाक अपेक्षा करैत अछि। फकीरा मध्यान्ह धरि निश्चित दरपर दू घण्टाक प्रतीक्षा स्वीकार करबाक प्रस्ताव दैत छथि, किन्तु असीमित उपलब्धता अस्वीकार करैत छथि। पहरेदारक पाली लिखल अछि, मजदूरक नहि—एहि विषमतामे कामगारक अपन दिनपर कथात्मक अधिकार प्रश्नांकित होइत अछि। फकीरा नायक-भाषण देलाक बाद तुरन्त बड़ विजय नहि पबैत; तिनका सीमित काम आ किछु विवादित मद भेटैत अछि।

बक्सा, बोरा आ नाप : श्रमक क्रियात्मक दृश्य

भारी बक्साक अतिरिक्त उठान बिना नव दाम स्वीकार नहि, दू बोरा साझा उठानमे वास्तविक तौल मिलानक आग्रह : एहि छोट क्रियासभसँ श्रमक जोखिम कथा भीतर ठोस रहैत अछि। युवा सहायक जल्दी कमाइ चाहैत अछि; फकीराक सावधानी ओकर आर्थिक अधैर्यकेँ निरस्त नहि करैत। व्यवस्थापक अतिरिक्त बक्साक अनिर्दिष्ट काम फकीरासँ करबा नहि पबैत; एहि कारण बक्सा-भाड़ाक भुगतान सेहो नहि भेल। समीक्षामे एकरा रोकल मजदूरी कहब गलत होएत—एखन ओ काम स्वीकृतो नहि, सम्पन्नो नहि।

नन्दू नटक बाँस-पटरा आ कपड़ाक गठरी लऽ जेबाक अलग अनुबन्ध बनैत अछि; फकीरा ढील रस्सीक गाँठ फेर कसैत छथि। काजक हानि मात्र निजी आयक घाटा नहि, दोसर मनुष्यक शारीरिक जोखिम भऽ सकैत अछि। पुरान पेशागत कौशल एहि दृश्यसँ “भिखारीक पुनर्वास”क रैखिक कथा टारैत अछि; स्टेशनक श्रमिक, यात्राक सहायक आ पारम्परिक नटक दलक बीच एक सक्रिय पेशागत व्यक्तित्व उभरैत अछि।

हसन-जुबैदाक अलग प्रतिकथा

बस-अड्डाक कात हसनक मरम्मति-मेजक उपयोग लेल स्थायी पट्टा नहि, सीमित अस्थायी घड़ी स्वीकृत भेल अछि। जुबैदा आपत्तिपर घड़ीक पन्द्रह मिनट शेष रहबाक तथ्य रखैत छथि, किन्तु खाली बसक चक्काक

वास्तविक जोखिम देखिकऽ मेज स्वयं सरकबैत छथि। ई दृश्य “अधिकारी सदा गलत”क आसान प्रतिपक्ष नहि बनबैत : सुरक्षा-माप आ व्यवसाय-अधिकारक सीमित समायोजन होइत अछि, स्थायी स्वामित्वक समाधान नहि।

जुबैदाक सिलाइक-कारीगरीक सात दिनक सीमित जोड़-मरम्मति शर्त आ आश्रयमे अलग समयक नौकरीक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि। ओ केवल फकीराक कथा समर्थन करबाक लेल उपस्थित नहि; ग्राहकक दाम, जिम्मेदारी, खुदक पाली आ स्वतंत्र कमाइ अलग राखैत छथि। हसन तिरस्कारपूर्ण “पुरान बक्खो” सम्बोधनक सामना अपन मरम्मतिक कौशल प्रस्तुत कऽ करैत अछि; कथक कलङ्कक उत्तर असाधारण महापुरुषत्वसँ नहि, दृश्यक भीतर कएल वास्तविक कामसँ दैत अछि।

ध्वनि, स्मृति आ कथनकाल

रेलक घण्टी, डण्डाक टकराहट आ मायसँ सुनल अपूर्ण गीत फकीराक वर्तमानक बीच स्वतंत्र स्मृति-कण छथि। हुनका रागक नाम मालूम नहि, मुदा सुरक एक हिस्सा बचल अछि। एतए संगीतक अस्पष्टता अभिलेखीय सत्यापनक असफलता मात्र नहि; निजी समयक अपन निरन्तरता अछि। पुरान निःसंदिग्ध रातक दू लोहाक आवाजक प्रश्न अन्तमे उठैत अछि, पर फकीरा बिना देखल ककरो दोषी नहि कहैत। ई संकेत रहस्यशृंखलाकेँ चलैत रखैत अछि, मुदा दिनक कमाइक कथा पर ओकर स्वामित्व नहि जमए दैत।

अन्तिम दृश्य मे सरिता आ फकीराक बाट अलग होइत अछि—एक स्टेशन दिस, दोसर रसोइक पुरान ओसार दिस। नैराक शोकक स्मरण भेटते फकीरा ओकरा सभ संवादक प्रवेश-पत्र नहि बनबैत। एतए महाप्रस्थानिक दृश्यक कुकुर-पएरक छाप आधुनिक माटिपर प्रमाण नहि अछि, ई भेद मूल पाठ स्पष्ट रखैत अछि। एहि कथन-निषेधक कारण अध्याय आधुनिक लोकजीवनकेँ महाकाव्यक आदेश-अनुचर बनबाक सँ बचबैत अछि।

आलोचनात्मक परिणाम

सुधरल यात्रा-पास, दू बोरा उतारेबाक प्राप्त रकम आ नन्दूक गठरी-कार्य निश्चित होइत अछि। प्रतीक्षा समयक देय आ छूटल कमाइक दावाक जाँच खुलल अछि; हसनक स्थायी पट्टा नहि मिलल; जुबैदाक छोट व्यवसाय चलैत अछि। पूर्ण, आंशिक आ लम्बित परिवर्तनक ई भेद कथाक संगठन लेल आवश्यक अछि।

सीमा ई जे श्रमिकसभक संवाद बहुधा गणना-सचेत आ प्रक्रियागत निर्दोष अछि। तथापि ग्राहकक तिरस्कार, युवकक अधैर्य, वास्तविक घूमैत बस आ फकीराक स्मृतिक अधूर लय एहि घन तर्कप्रधान लयमे असुविधाजनक मानवीय अन्तराल प्रदान करैत अछि।

अध्याय १९७ — पहिल कोठरी

खुलैत दरबज्जा, निषेधक कथा आ वस्तुक अस्पष्ट मालिक

सरिता आश्रयक पुरान रसोइक ताला स्वयं खोलैत छथि। धूलि, टीनक डब्बा, डोरी आ खड़ियाक पन्ना आरम्भक दृश्यगत वस्तु छथि; नील झोरा देखिते सरिता एकरा मृत बेटी नैराक मानि नहि लैत छथि। कथक शोकग्रस्त आँखिक सम्भावित गलत पहिचानकेँ संवेदनशील रूपमे देखबैत अछि—व्यक्ति जे देखए चाहैत अछि, से वस्तु

वास्तवमे ओकरहि होय, ई जरूरी नहि। एहि तरह स्मृति आ दृश्यगत सत्यक अन्तर कथानकक वस्तु-व्यवस्थामे घुसैत अछि।

रुखसानाक दू घण्टाक समय, जुबैदाक गरम पानि आ सफाइ-सूचीक क्रम कथाक गतिकेँ मर्यादित करैत अछि। तीन कपड़ाक ढेरी—सार्वजनिक रसोइ-पंजी, अस्पष्ट स्वामित्ववला वस्तु, नैरा सम्बन्धी निजी कापी-लिफाफा—कोनो जीवनक अन्तिम वर्गीकरण नहि, आजुक व्यावहारिक अलगाव अछि। आगाँ चारिम घर “मालिक अथवा सन्दर्भ अस्पष्ट” जुड़ैत अछि। वस्तुसूची भविष्यक फैसला सुरक्षित रखनेवला अस्थायी कथानक उपकरण बनैत अछि।

उर्मिलाक पाली : अभिलेखक तिथि आ देयक दूरी

फाटल पन्नामे उर्मिलाक रात्रिक बासन-धोनाइक समय लिखल अछि, मुदा ओहि सँ सम्पूर्ण पारिश्रमिक भुगतान सिद्ध नहि होइत। उर्मिला सेहो मृत छथि; हुनकर परिवारक शेष बकाया खुलल अछि। सरिता काजक पन्नाक सत्यापन-योग्य प्रति भुगतान-जाँचक लेल सुरक्षित राखैत छथि। एहि दृश्यसँ मृतकक श्रमक सार्वजनिक आवश्यकता आ मृतकक निजी जीवनक संरक्षण एके वस्तुमे असमान दायित्व रूपेँ उपस्थित अछि।

नैराक कापीमे कम पानि भेटनिहार आश्रय-कोठरीक क्रम संग एक स्त्रीक निजी वाक्य अछि। जुबैदा सार्वजनिक नल-खाता मिलाओल जाएबाक प्रस्ताव दैत छथि, ताकि पानि-वितरणक हिसाब बिना निजी दुख प्रसारित कएल जाँचल जा सकए। एतए मूल कापी फाड़ि देब अथवा सभ उघारि देब—दूनू तीव्र विकल्प कथा अस्वीकार करैत अछि। विशिष्ट पृष्ठक्रम लिखि नियंत्रित उपयोगक तेसर बाट बनैत अछि।

फोटोक माँग आ मातृत्वक गैरस्वामित्व

दानदाताक लेल नैराक चेहरा आ जीवनक कथा भेजबाक प्रस्ताव आयल अछि। कर्मचारीक उत्साह पूर्णतः दुर्भावनापूर्ण नहि, मुदा सरिता भातक खर्च, श्रमिकक मजदूरी, मरम्मति आ स्वीकृत सार्वजनिक कामक पन्ना अलग पठएबाक आग्रह करैत छथि। “माय छी”क अर्थ निजीक सम्पूर्ण मालिक नहि—एहि उत्तरसँ शोकक कथा वंशगत स्वामित्वक आसान अनुमान अस्वीकार करैत अछि।

निजी लिफाफाक मुहर नहि तोड़ल गेल; सम्बोधन सेहो स्पष्ट नहि। कबीरकेँ सूचना भेटैत अछि, लिफाफा रखबाक तत्काल अधिकार नहि। फोनक सम्भावित कार्य-सूचना आ निजी सन्देशक उत्सुकता बीच अन्तर राखल जाइत अछि। एहि समय पाठक जानबाक इच्छा रखैत अछि, मुदा कथन जानी-बुझी रहस्य नहि उघाड़ैत—ई अनुद्घाटन कथात्मक नैतिक निर्णय अछि, सामान्य थ्रिलरक चोर-दरबज्जा नहि।

सीमातीर्थक स्वतन्त्र कटाव : अनुवाद आ यात्राक रिक्त समय

पन्द्रहम पाठांशमे कथास्थल सीमातीर्थ होइत अछि। मैत्री श्रेष्ठक पुरान नेपाली जारी-पत्र, ओकर हिन्दी रूपान्तर आ अस्पतालक रिक्त प्राप्ति-बही औषधि-खेपक स्थिति अलग करैत अछि। “ढुलाई लेल छोड़ल” गलत रूपेँ “अस्पतालमे प्राप्त” अनूदित भेल छल; कुमुदी एकर संशोधन करैत छथि। प्रस्थानक दर्ज तिथि आ अस्पतालक

भौतिक प्राप्तिक तिथिक बीच यात्राक अनदेखल अवधि अछि—अनुवाद द्वारा एहि खाली समयक पूर्ति कएल नहि जा सकैत।

कुमुदीक नाम, कार्य-दिन आ शुल्क लिखबाक सुधार स्वीकृत होइत अछि; राशि उपलब्ध छल मुदा गलत मदमे अटकल। भण्डारपालकेँ पुरान सील-गिनतीक दू रसीद भेटैत अछि, तथापि ताप-संरक्षणक एक समय-अन्तर रिक्त अछि; दवाइक गुणवत्ता सम्पूर्ण सुरक्षित मानल नहि गेल। एहि घटना-रेखा मे अनुवादकक श्रेय, भुगतानक प्रक्रिया आ वास्तविक औषधि-गुण तीन अलग परिणाम छथि। आधुनिक कटाव सरिताक कोठरीसँ संयोगमात्र नहि : दूनू स्थलमे कागदक जरूरी अंश उघारब आ अनिर्णीत रिक्ति यथावत् रखबक अलग संरचना अछि।

दृश्य-समापन आ सीमित उपलब्धि

साँझमे कर्मचारी सार्वजनिक दान-पत्र संशोधित करैत अछि—नैराक फोटो नहि, खर्चक मद आ देयक तिथि अबैत अछि। लिफाफा सुरक्षित रहल; किछु सार्वजनिक पृष्ठक क्रमांकसूची बनल; भुगतानक एक तिथि निर्धारित भेल, सभ शेष राशि नहि भेटल। कथानक कोठरीक समस्त अतीत नहि सुलझबैत, किछु वस्तुक जिम्मेदारी उचित ठामपर रखैत अछि।

सरिता आ कबीरक संवादमे “तोहर निर्णय की?” प्रश्न मुख्य अछि। कबीर अपन अनपठाओल पत्र एखन निजी रखबाक निर्णय करैत छथि। एहि सँ मृत स्त्रीक निजी जीवनक सम्मान आ जीवित पुरुषक अपन निजी पत्रक अधिकार एकहि वाक्यक भीतर बिना बराबर ठहराओल सहअस्तित्व पबैत अछि। दृश्याकृतिमे “कोठरी” बन्द चेतनाक रूपक नहि, सार्वजनिक काज आ व्यक्ति-सम्बन्धक अलग निकासवला भौतिक स्थल रहैत अछि।

अध्याय १९८ — मृतकक फोन

बन्द यन्त्र आ कथनक आकर्षण

नैराक फोनक सार्वजनिक उपयोगक माँगक संग अध्याय उठैत अछि। स्मृति-सभा करनिहार लोक निजी सन्देशसँ मृतकक “आत्मीय” रूप रचए चाहैत छथि; सरिता आ कबीर सार्वजनिक कार्य-पन्ना आ निजी संवाद अलग करैत छथि। कथा फोनक स्क्रीन पाठककेँ नहि उघारैत, ओकर बाहरी पहचान, रखबाक स्थान आ खोलबाक प्रस्तावकेँ नाटकीय दृश्य बनबैत अछि। रहस्यक केन्द्र “भीतर की लिखल अछि?” सँ “भीतरक बात ककरा पढ़बाक अनुमति?” दिस सरकैत अछि।

सचिव कैमरा झोरामे रखैत छथि, मुदा निजी जीवनसँ प्रेरणाक तर्क छोड़ैत नहि। कबीर स्वीकार करैत छथि जे नैराक साथी रहितो हुनका सभ प्रश्नक उत्तर नहि भेटल छल। ई अल्पज्ञान सम्बन्धक विफलता मात्र नहि, दोसर व्यक्तिक स्वतन्त्रता सेहो अछि। शबनमक खीर आ आजुक रसोइ-बजटवला छोट संवाद स्मारक-विचारक भावनात्मक महत्त्वक बीच भोजनक स्वतन्त्र भौतिक तात्कालिकता रखैत अछि।

रफीकक स्वयं-परिचय : जीवित आवाजक समानान्तर कथा

रफीकक परिचय-पत्रमे बोलीक नाम आ समुदाय-परिचय एक “सुरजापुरी” घरमे मिलल छल। ओ स्वयं अलग शब्द लिखबाक अधिकार चाहैत छथि। स्थानीय सहायक अभिलेखमे दू घर अलग राखल जाइत अछि, सरकारी मूल प्रारूप तत्काल बदलबा कक्षमे सम्भव नहि। प्राप्ति-सत्यापन आ पूर्ण प्रणाली-संशोधनक दूरी मूल पाठक निर्णायक खुलल परिणाम अछि। एतए जीवित व्यक्तिक कथन, मृतकक सन्देश आ संस्थाक वर्गीकरण अलग अवस्थामे रहैत अछि; एकरे समान “पहिचानक समस्या” बनायब पर्याप्त नहि।

रफीकक “सउरा” आ सरकारी प्रति “सौरा” दुई स्रोत छथि, मैत्रीक ढुलाई-पत्रक “ललबगेया” तेसर स्वतंत्र पाठ अछि। “नैराक खोजल नदी”क आकर्षक शीर्षक स्रोत-भेद मेटा सकैत अछि, तेँ रफीक दोसर कथाक खोजक बनबा अस्वीकार करैत छथि। उपन्यास एतए भावनात्मक संस्मरणक शैली स्वयं जाँचैत अछि—अतिशयोक्त श्रेय मृत व्यक्तिक सम्मानक नामपर ताहि व्यक्तिक सावधानीकेँ विकृत कऽ सकैत अछि।

कबीरक दृष्टिकेन्द्र आ स्मृतिक निजी अवकाश

कबीरकेँ नैराक व्यंग्य, वर्षाक कीचड़ आ रोजमर्रा क्षण याद पड़ैत अछि। निजी स्मृति आ मूल फोनक लिखित पंक्तिक बीच कथक सचेत अंतर रखैत अछि। कबीर अपन स्मृति सुनबा सकैत छथि, मुदा नैराक द्वारा दोसरकेँ लिखल सन्देश सभामे पढ़ि देबाक अधिकार नहि मानैत छथि। एहिसँ चरित्रक प्रेम कोनो महिमामयी सर्वज्ञ अधिकार नहि, अपन सीमाक अनुभव बनैत अछि।

रुखसानाक अपूर्ण मजदूरी आ जुबैदाक प्रश्न फोनक कथा भीतर प्रवेश कएने अछि; सार्वजनिक श्रम-पन्ना पहिले सँ उपलब्ध होयबाक बावजूद निजी यन्त्र खोलबाक प्रस्तावक महत्त्वपूर्ण कथात्मक आलोचना एहि ठाम होइत अछि। मृतकक जीवनकेँ “अन्तिम वाक्य” बनएबाक प्रलोभन मृत्यु-आख्यानक समापनक इच्छा अछि; कथाक पात्र एहि अन्तिमकथनक उत्सुकता पर सीमित रोक लगबैत छथि।

दृश्यक वास्तविक फैसला आ अधूरा भविष्य

फोनक बाहरी स्थिति दर्ज होइत अछि, यन्त्र सुरक्षित बन्द पेटीमे राखल जाइत अछि, संयुक्त संरक्षण-सही होइत अछि। कबीर स्पष्ट जोड़ैत छथि जे भीतरक सन्देशक प्रकाशन-स्वीकृति नहि देने छथि। तकनीकी संरक्षणक प्रक्रिया-सलाह भविष्यक सम्भावना अछि, सामग्री खोलबाक अनुमति नहि। स्मृति-सभाक वैकल्पिक मसौदा तैयार करबाक प्रस्ताव स्वीकार भेल, कार्यक्रम एखन निश्चित नहि।

अन्तिम रातिमे कबीर अपन अनपठाओल खाम बन्द रखैत छथि। बाहरी पतंगक लेल बल्बक रोशनी कम कएलाक साधारण क्रियामे “सभ दरबज्जा खोलब”क विरुद्ध स्नेहक समुचित सीमा दृश्य बनैत अछि। एहि लघु वस्तु-क्रियाक कलात्मक प्रभाव सीधा सिद्धान्त-वाक्यसँ बेसी सहज अछि। अध्याय भावुक अन्तिम भाषण नहि दैत, बन्द फोन आ मृत नैराक अपरिवर्तनीय तथ्यक बीच जीवित व्यक्तिक दायित्व छोड़ैत अछि।

कथात्मक सीमा

कथक अनेक पात्रसभ द्वारा गोपनीयता, श्रेय आ सीमाक सिद्धान्त अत्यन्त सुव्यवस्थित ढंगसँ कहबैत अछि। साहित्यिक संवाद जखन हर प्रस्तावक तर्क तुरन्त उपयुक्त उत्तर पाबि लैत अछि, तखन मंचीय असहजता घटि सकैत अछि। तथापि कबीरक रुमाल, शबनमक खीर आ रफीकक गुड़क टुकड़ी नैतिक बहसक बीच निज-स्वर आ देहगत जीवन बचबैत अछि।

अध्याय १९७क बन्द लिफाफा सँ १९८क बन्द फोन धरि वस्तुक तकनीक बदलैत अछि, मूल विरोध नहि। एकर अर्थ कागद वा डिजिटल यन्त्रक शुद्ध विरोध नहि; सार्वजनिक उपयोग, निजी सम्बन्ध आ स्रोतक स्वीकृत सीमाक कथा भीतर विस्थापित अधिकार अछि। एहि निरन्तरताक कारण नवा अध्याय नव रहस्य नहि, पुरान प्रश्नक कठोर विस्तार बनैत अछि। (अ.१९७–१९८)

अध्याय १९९ — बिना नामक कथा

सूतबान्हल लिफाफाक दृश्य-प्रस्तावना

लिफाफापर नाम नहि, “कथा लेल” लिखल अछि। आगन्तुक चेहरा छिपेबाक नाटक नहि करैत, मुदा घर आ कामक चिन्ह सार्वजनिक नहि करबाक शर्त रखैत अछि। कथा सुनबाकेँ स्वीकृति आ पहिचान सार्वजनिक करबाक अनुमति एक नहि—ई भेद नाट्यक आरम्भे सँ खुलैत अछि। पहिल पूर्वसूचीमे घरक नाम बाहर छपि जाएबाक अनुभव भयक सामाजिक कारण दैत अछि; पाठक प्रश्न करैत अछि जे लिखल शब्दक लेखक, सम्पादक आ प्रकाशित रूपक नियन्त्रण ककरा लग रहत।

पद्मा तीन पन्ना अलग रखैत छथि—स्वीकृत कथन, जाँचब योग्य कागद, प्रकाशनक सीमा। वक्ताक श्रम-पंजीमे दू दिनक घण्टाक खाना रिक्त छल, मुदा मूल पंजी ओकरा लग नहि। ओ जे देखल से ओकर बयान अछि; कर्मचारीक बदला काज निश्चित रूपसँ के कएलक तकर प्रत्यक्ष दृश्य ओ नहि देखल। कथन-पत्र आ प्रशासनिक सत्यापनक पत्र अलग बनैत अछि। एहि विभाजनकेँ स्वतः कथाक प्रामाणिकता सुनिश्चित कएल गेल कहब नहि चाही; प्रक्रिया शुरू भेल अछि, आरोपक अन्तिम निश्चय नहि।

पूनमक दोसर कथाधारा : पुरखा-नामक दखल

पूनम चिड़ीमार वर्तमानमे रसोइक जूटक ढकन सीबैत छथि। पुरखा-समुदायक शिकार-संबन्धी चित्र बनएबाक उत्साह हुनकर आजुक कारीगरीकेँ गलत अर्थ देबाक जोखिम उठबैत अछि। ओ फोटोपर “परम्परागत चिड़ीमार जाल” नाम अस्वीकार करैत छथि, किएक तँ ग्राहक गलत काम समझि सकैत अछि। एहि छोट प्रतिरोधमे वर्गीकृत समुदाय मात्र ऐतिहासिक अध्ययन-वस्तु नहि, अपन वर्तमान बाजारक अर्थ चुननिहार सक्रिय कथापात्र बनैत अछि।

पद्मा मौखिक स्मृतिक सीमित स्वीकृत अंश आ वर्तमान सिलाइकक विस्तृत वस्तुगत विवरण दू अलग पृष्ठमे रखैत छथि। पूनमक पित्तरक अँगूठी, जूटक मोट सूत आ तैयार ढकन कथा भीतर स्वतः पूर्ण प्रतीक नहि; ई वास्तविक

श्रमक साधन अछि। हुनकर भुगतानक तिथि तय होइत अछि, पर बैंक-रकम तत्क्षण पहुँचल, एहन घटना नहि। अतीतक सम्मान आ वर्तमानक दाम दूनूक भिन्न समय बचल रहैत अछि।

सोमरीक भाषा आ अनुबन्ध-समयक तनाव

सोमरी हेम्ब्रम सन्थाली भाषामे मुख्य शर्तक मसौदा लबैत छथि। ठेकेदारक प्रतिनिधि कामक मौसम बीतबाक भय देखबैत अछि, आ ऋणग्रस्त युवक शीघ्र कमाइ चाहैत अछि। अनुवाद-मिलानक धैर्य बनाम मजदूरीक तात्कालिक आवश्यकता एहि दृश्यकेँ पूर्वनिर्धारित सद्गुणक वादविवादसँ बचबैत अछि। सोमरी अनुवादक श्रमक दाम अलग माँगैत छथि; पहिल किस्तक लिखित स्वीकृति भेटैत अछि, सम्पूर्ण मिलानक परिणाम एखन बाकी।

रुखसानाक रसोइक ढकन आ सोमरीक अनुबन्ध एकहि कोठरीमे अलग आर्थिक कालखय रखैत छथि। पहिल तात्कालिक उत्पाद अछि, दोसर आगूक जोखिमकेँ रोकबाक श्रम। नहि पूनम, नहि सोमरी केवल गुमनाम कथकक सहायक उदाहरण छथि; दूनूक काजक ग्राहक, बाजार आ भुगतानी पृथक छैक। समाजक बहुस्वरता एहि स्वतन्त्र कथाधाराक मार्फत उभरैत अछि, न मात्र भाषावलीक विविधता सँ।

पनार-परोला : भिन्न स्रोतसभक अ-जोड़

रफीकक बोलीमे “पनार” उच्चरित रूप अछि, मैत्रीक पुरान परिवहन-पत्रमे “परोला” लिखल अछि। कुमुदी अपन पृष्ठपर दू समानान्तर रेखा खींचैत छथि, बीचमे जोड़निहार तीर नहि। ई दृश्य कथन-शिल्पक विशेष अर्थ रखैत अछि : गद्य अनेक कथा-सूत्र पातर दूरीपर राखि सकैत अछि, मुदा पाठकक रूपकप्रियता सबकेँ एक नदीक मार्ग बनाबय चाहैत अछि। कथा तत्क्षण ओहि त्वरित जोड़केँ रोकैत अछि।

स्रोतक अलग दिनांक, उच्चारण आ लिखित शब्द सुरक्षाक लेल आवश्यक छथि। मुदा एहि विभाजनपर युवक अधीर होइत अछि—कथा छापब कि मात्र चेतावनी? सरिताक उत्तरक संग पाठमे वास्तविक सौन्दर्यात्मक प्रश्न उठैत अछि : सावधानीक अतिरेक कथा कहबाक स्वतन्त्र गतिकेँ धीमा बनबैत अछि कि नहि? लेखकक पात्रसभ सहमतिक पक्ष चुनैत छथि, तथापि अधैर्यक आवाजक उपस्थितिसँ विवाद एकमात्र स्वर नहि रहैत।

स्वीकृत मुद्रण, रिक्त स्थान आ कथानकक खुलल अन्त

पद्मा स्वीकृत मसौदा पढ़ि सुनबैत छथि; वक्ता दू वाक्य बदलैत अछि। सामुदायिक पाठशालामे सीमित पाठ आ पुस्तिकामे बेनाम मुद्रणक स्वीकृति भेटैत अछि; तस्वीर, ध्वनिमुद्रण आ पहिचान उघारब अस्वीकृत। मूल श्रम-पंजी प्राप्त होएबाक निवेदन अलग जाइत अछि। अतः पाठ प्रकाशित होएबाक सीमा तय भेल; पंजीमे छूटल घण्टाक जिम्मेदार व्यक्ति, वास्तविक भुगतान आ सुधार-अदेश एखन अनिर्णीत अछि।

अन्तिम सूतक धागा आगन्तुक घरक कापी बाँधबाक लेल वापस लैत अछि। कागदक मुँह बाँधल रहि कऽ कथा कहब—ई दृश्य नाटकीय निष्कर्ष अछि, चमत्कार नहि। पद्माक चारि खानावला रिक्त पन्ना अगिला अध्यायक अग्रसंकेत बनैत अछि। “रिक्त” एतए भूल मात्र नहि; एखन नहि भरल निर्णय, आगूक संवाद आ स्रोतक सीमा अपन ठाम सुरक्षित रखैत अछि।

अध्याय २०० — शब्दक अन्तिम जाँच

चारि पातर पट्टी : कथन-शिल्प अपन पाठमे उपस्थित

पद्मा “प्रत्यक्ष”, “श्रुत”, “अनुमान”, “कल्पना” लिखल चारि कागदक पट्टी पसारैत छथि। ई वस्तुसभ पाठमे कथनक प्रकार स्पष्ट करबाक सामुदायिक शिक्षण-साधन बनैत अछि; इनका अपनासँ बाहरी बाहरी प्रमाणपरीक्षाक सम्पूर्ण दार्शनिक व्यवस्था मानब समीक्षा-पद्धतिक गलत विस्तार हएत। प्रमुख आख्यानशास्त्रीय प्रश्न ई अछि जे कथक पाठककेँ कखन एक व्यक्तिक देखल घटना, कखन सुनल स्मृति आ कखन नाट्यक कल्पित प्रसंग देखाबैत अछि।

जगत अपन नाटकमे रिक्त श्रम-पंजीक दृश्य बनाबए चाहैत अछि। पद्मा ओकर कल्पनाकेँ वर्जित नहि करैत छथि; वास्तविक कर्मचारीक पहिचानपर बनावटी अपराध-दृश्य आरोपण नहि हो, एहि सीमा लेल ओ आग्रह करैत छथि। सरिता नाटकमे डरक सच्चाई आ व्यक्ति-विशेषपर झूठ आरोपक अन्तर रखैत छथि। फलतः कथन-पद्धति केवल सूचनाक वर्गीकरण नहि, साहित्यिक कल्पनाक औचित्यक आधुनिक कथा-प्रश्न बनैत अछि।

आशा भूमिजक विस्थापन : दुःख आ खर्चक भिन्न कथा-रेखा

आशाक टीनक डिब्बामे खननक्षेत्रसँ हटाओल परिवारसभक भाड़ा, औषधि, यात्रा आ रुकल कमाइक पर्ची अछि। वृद्धाक घर घुरबाक चाहना सुरक्षा-भय संग जुड़ल अछि; दोसर परिवार निःशुल्क रहितो श्रम गुमौने अछि; तेसर परिवारक सदस्य दूर कमाइ पर अछि। “सभ बेघर लोक घर घुरि गेल”क जगतक नाटक-वाक्य एहि अलग जीवन-स्थितिसभक सोझाँ बदलैत अछि। पात्रसभक भिन्न गति ओकरा पूर्ण सामूहिक वापसीक छलपूर्ण एकरे कथा सँ बचबैत अछि।

उपलब्ध रसीद देखब, परिवारक अपन दुःख सुनब आ खननक कारण प्रत्येक खर्च निश्चित मानब तीन अलग कथन-स्थिति छथि। तेसर वाक्यक जाँच बादमे होएत; सहायता-पत्र सुनवाई सूचीमे पहुँचब भूमि-सुरक्षा अथवा प्रत्यावर्तन सम्पन्न होएब नहि। आशाक अलग-अलग प्रति मे अद्यतन क्षतिपूर्तिक अन्तिम रकम नहि लिखल गेल। एहि असमाप्त प्रक्रियामे विस्थापनक सामाजिक समय सरकारी वर्गीकरणक तात्कालिक पूर्णतासँ प्रतिरोध करैत अछि।

तुलसीक हड़ताल : एक घटना, दू अलग कथात्मक अन्त

परिवहन-मजदूरसभक बकाया पाली-भत्ता आ विश्रामक लेल हड़ताल चलि रहल अछि। अस्पतालक विशेष रोगी-स्थानान्तरणक माँगपर समिति सीमित अपवाद चुनैत अछि—लिखित चिकित्सकीय आदेश, उपयुक्त वाहन, परिजनक सहमति, निर्धारित समय, जोखिम-भत्ता आ बाहरी माल नढोएबाक शर्त। ई दृश्य “मानवीयता बनाम श्रमिक अधिकार”क सरल द्वन्द्व नबनाइ व्यक्तिगत रोगी आ सामूहिक आन्दोलनक अलग तात्कालिकता देखबैत अछि।

वाहन दोसर केन्द्र पहुँचैत अछि; रोगीक उपचारक परिणाम गोपनीय आ अज्ञात अछि। मालिकक प्रतिनिधि एकरा “हड़ताल समाप्त” प्रचारित करए चाहैत अछि, मुदा तुलसी अस्वीकार करैत छथि। आपात यात्राक सफल

निष्पादन आ आन्दोलनक समाप्ति दू अलग कथात्मक परिणाम छथि। अन्ते चालक घुरि आबैत अछि, अतिरिक्त यात्राभत्ताक हस्ताक्षर शेष रहैत अछि। एहि सटीक भेदसँ घटना-समापनक भाषिक अपहरण रोकल गेल अछि।

नदीक नाम आ बाँसक गाँठ : अनुवादित आवाजक दूरी

नसीमाक पारिवारिक सम्बोधनक गलत अनुवाद प्राप्तकर्ताक पहिचान बदेल सकैत अछि; अमीरक तीन रसीद अलग दिनांक राखैत अछि। “महानन्दा” मूल पत्रक शब्द अछि, ओकरा आजुक आर्थिक मार्गक निश्चित नाम मानब अनुमान होएत। श्याम मल्लिक आ विनोद केवर्तक “चिलोन” / “चिलौन” वर्तनी सेहो एके जलकरक सीमा स्वयं प्रमाणित नहि करैत। एहि प्रसंगसभमे कथक शब्दक ध्वनि, पृष्ठक काल आ काजक भौतिक अर्थ भिन्न राखैत छथि।

श्यामक बाँसक गाँठ अनेक वस्तु बनेबाक सम्भावना देखबैत अछि—माछ रोकबाक जाल, टोकरी, चचरी—मुदा उपयोग आ जोखिमक अन्तर बिना गाँठक एकहि अर्थ नहि। जगत एहि पर गीत लिखि सकैत अछि, गीत स्वयं सरकारी जलकर-सीमा बनि नहि जायत। एहि उत्तरमे कला आ भू-स्वामित्वक ज्ञान-विधिक बीच सुव्यक्त दूरी अछि; कला कयनाय निषिद्ध नहि, रचित दृश्यकेँ ऐतिहासिक नाप बनायब अनुचित।

पाठशालाक बहुस्वरता आ आत्मालोचना

सामुदायिक पाठमे गुमनाम व्यक्तिक कथन स्पष्ट रुपेँ ओहिक कहल अनुभव रूपमे छपबाक तय होइत अछि; सम्पादक स्वयं मूल श्रम-पंजी देखने नहि अछि। कार्यालयक प्रत्युत्तर केवल निवेदन प्राप्त होएबाक अछि, गड़बड़ी स्वीकृत होएबाक नहि। जगत एहि फरक पर पुनः अधीर होइत अछि; पद्मा ओकरा प्रत्येक पन्नाक कथन-सूत्र परखबाक कहैत छथि। एहि तरह कथा-पाठक स्वयं विश्वासक मात्रा चुनबाक अभ्यास करैत अछि।

बच्ची पोखरिमे माछ देखबाक बात, दोसर बच्चा दादीक पुराने माछक स्मृति, तेसर बालक सम्भावित बाढ़क भय कहैत अछि। वृद्ध श्रोता प्रश्न उठबैत छथि—देखलहुँ, मुदा गलत बुझलहुँ तँ? एहि प्रश्नसँ चारि पट्टी आलोचनारहित व्यवस्था नहि रहैत। पाठमे कागदक श्रेणी जतबा उघारबैत अछि, ततेक व्यक्तिगत अर्थ-निर्माणक संशय सेहो बचल रहैत अछि।

समापनक वस्तुसभ, कथनक सीमा आ आलोचना

रातिमे सरिता चाउर फटकैत छथि; आशाक रबरबान्हल डिब्बा, तुलसीक हड़ताल-कपड़ा, नसीमाक सिएल पुस्तक-जिल्द आ श्यामक बाँसक गाँठ अपन भौतिक ठामपर रहैत अछि। चारि शब्द ककरो वस्तुक नवा मालिक नहि बनबैत; ओ केवल पाठककेँ बुझबाक विनय सिखबैत अछि। अध्याय संपूर्ण जीवनकेँ सिद्धान्तक सूत्रमे समेटैत नहि, वस्तु आ कथनक बीच दूरी रहए दैत अछि।

सीमा ई जे चारि भेदक शैक्षिक प्रदर्शन बहुतेक पात्रक मुखसँ एक स्वरक बोधवाक्य बनएबाक जोखिम रखैत अछि। मुदा हड़तालक अधूर वेतन, विस्थापित परिवारक अलग इच्छा, नदी-शब्दक अनिश्चय आ जगतक कल्पनात्मक अधैर्य नैतिक वर्गीकरणक निर्जीव पृष्ठक बदला परस्पर विरोधी जीवन-समय खोलैत अछि। एहि

कारण शीर्षकक “अन्तिम जाँच” यथार्थमे अन्तिम सत्य नहि; आगूक पाठकक जिम्मेदार, निरन्तर जाँचक उद्घाटन अछि।

महाप्रस्थानिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १९३–२०० क संयुक्त आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

यात्रा सँ पाठशाला : पर्वक कथात्मक गति

पर्वक आरम्भ उत्तराधिकार हस्तान्तरणसँ होइत अछि; प्राचीन राजपरिवार राज्य छोड़ैत अछि (अ.१९३)। तकर बाद द्रौपदीक गिरब (अ.१९४), सहदेव–नकुल–अर्जुन–भीमक क्रमिक अन्त (अ.१९५), आ आधुनिक लोकजीवनक क्रमशः विस्तृत दृश्य (अ.१९६–२००) पाठकीय समयक आकार बदलैत अछि। “महाप्रस्थान” इएह नहि जे सभ नायक चलि जाइत छथि; कथा पूछैत अछि जे पछुआ लोकक सार्वजनिक काम, निजी शब्द आ जीविकाक अनुत्तरित दायित्व केना बाँचैत अछि।

कारण बतौनिहार स्वर आ अनुभवक बहुलता

युधिष्ठिरक मुखसँ द्रौपदीक पक्षपात, सहदेवक बुद्धि-गर्व आ भीमक भूखक पारम्परिक अर्थ प्रवेश करैत अछि। मुदा कथन देहक अन्तिम क्षण, भाईक स्नेह, मृत पुत्रक स्मृति आ अपूर्ण प्रश्न द्वारा ओहि कारणसभक सम्पूर्णताकेँ परखैत अछि। ककरो “एक दोष” कहि पूरा जीवन समाप्त करबाक शिल्पगत खतरा पाठ स्वयं अपन संरचनामे उघारैत अछि। (अ.१९४–१९५)

आधुनिक पात्रसभ—सरिता, तारा, गोमती, रुखसाना, फकीरा, जुबैदा, जावेद, रफीक, पद्मा, आशा, तुलसी, पूनम आ सोमरी—एकहि कथा-उद्देश्यक प्रतिनिधि नहि। प्रत्येकक अपन समय-सीमा, पेशागत दाम, संरक्षित निजी अंश आ असहमत परिणाम अछि। जावेदक २६ रुपैयाक बाँचल आय आ विस्थापित परिवारक असमान घरवापसीक स्थिति पात्रकेँ ठोस जीवनक लागत पर रखैत अछि, सामान्य न्याय-घोषणा पर नहि। (अ.१९५–२००)

कथनकाल, पूर्वदीप्ति आ द्विकालीन सम्पादन

द्रौपदीक प्याससँ इन्द्रप्रस्थ, द्यूतसभा, वनवास आ पुत्रशोकक पूर्वदीप्ति खुलैत अछि। नकुलक डण्डा आ अर्जुनक खाली हथेली अतीतक शौर्यकेँ वर्तमान निर्बलतामे बदलैत अछि। आधुनिक पक्षमे अबोध पुरान कर्मचारी-दृष्टि, तिथि, भुगतान आ नकलक अपेक्षाक समय एक-दोसरसँ ताल नहि मिलबैत। एहि बहुधा असमान कालगतिकेँ “अतीत-पुनर्जन्म”क शाब्दिक कारण-सम्बन्ध बनाओल नहि जा सकैत।

१९७मे सरिताक कोठरीसँ सीमातीर्थक अनुवाद-कार्यालय, फेर कोठरीमे वापसी होइत अछि। ई कटाव घटनाकेँ शास्त्रीय एकमात्र अखण्ड काल बनाएबक बदला अनेक जीवन-स्थल रूपेँ उघारैत अछि।

रिक्ति, अनुद्घाटन आ वस्तुक कथात्मक कार्य

कुकुरक उपस्थितिक आगामी अर्थ, द्रौपदीक आत्मकथाक अधूर वाक्य, विद्यालयक निजी पेटीक संरक्षक, औषधि-खेपक तापसमय, नैराक अनपठाओल लिफाफा आ बन्द फोन, गुमनाम व्यक्तिक असिद्ध आरोप, अनूदित नदी-नाम—ई सभ रिक्ति एक सन रहस्य नहि। किछु भविष्यक कथानक खोलैत, किछु व्यक्तिक मर्यादासँ बन्द रहैत, किछु अलग जाँचक तिथि चाहैत अछि। आलोचना ई भिन्नता नबुझत तँ एक सामान्य “अपूर्णता”क प्रतीकसँ सामग्रीक वास्तविक शिल्प अदृश्य भऽ जाएत।

मुकुट, वस्त्रक गाँठ, सहदेवक डण्डा, नाटकक परदा, स्टेशनक उठल लोहा, नील झोरा, फोनक पेटी, लिफाफाक सूत आ चारि पातर पट्टी अध्याय-विशेषक भौतिक क्रिया करैत अछि। द्रौपदीक गाँठ एक दिनक मरम्मत, फकीराक पर्ची कमाइक काम, नैराक फोन सुरक्षित निजी स्मृतिक सीमाबद्ध यन्त्र, पद्माक पट्टी शिक्षणक वस्तु अछि। एहि वस्तुसभकेँ एकटा सर्वव्यापी दार्शनिक चिह्नमे विलय करब शिल्पक विवरण घटाएत।

पाठकीय भरोसा, असहमति आ औपदेशिक जोखिम

प्रक्रियागत सावधानीक शैली बहुत स्थानपर स्वयं पात्रक मुखसँ उपदेश-जकाँ सुनाइत अछि। छात्र जगतक अधैर्य, सचिवक भावुक स्मारक-इच्छा, युवकक ऋण-संकट, ठेकेदारक समय-चिन्ता आ कार्यालयक प्रदर्शन-चित्रक माँग एहि एकरूप नैतिक भाषाक प्रतिवाद बनबाक सम्भावना लैत छथि। किन्तु कथक अनेक बेर मुख्य पात्रक सही उत्तर तुरन्त उपलब्ध करा दैत अछि, जाहिसँ पाठकीय व्याख्याक अवकाश घटि सकैत अछि।

एहि जोखिमक प्रतिकार दृश्यगत असफलता आ खुलल प्रश्न करैत अछि : एक बस्तीमे मात्र प्रति-वितरण, जावेदक बहुत कम बचल धन, फकीराक लम्बित प्रतीक्षाभत्ता, कोठरीक निजी वस्तुक अस्पष्ट स्वामित्व, रफीकक अपरिवर्तित केन्द्रीय फाराम, आशाक अनिश्चित क्षतिपूर्ति आ तुलसीक अबहूँ चलैत हड़ताल। ई वास्तविक अधूरापन कथाकेँ सिद्धान्तक निर्बाध सफलता-श्रृंखला नहि बनए दैत।

अन्तरिम निष्कर्ष : अगिला चारि अध्यायक सीमा

ई आठ अध्यायक विशेष प्राप्य एकहि पाथरक गिरब आ कागदक दुरुस्त पंक्तिक बीच तुलना मात्र नहि, अलग कथा-समयमे उत्पन्न अलग कथन-अधिकार देखब अछि। द्रौपदीक बहुजीवन, श्रमिकक घंटा, मायक निजी निषेध आ कथाकारक कल्पना एकहि स्वामित्वक वाक्यमे न समेटल जाएत। एहि शेष प्रतिरोधमे पर्वक शिल्पगत सार अछि।

अध्याय २०१ — सीमातीर्थक विदाइ

पटरा, बालू आ नदीक दैनन्दिन समय

सीमातीर्थक २०४२क भोरमे मधु केवट नावक पुरान पटरा खोलि बालू झाड़ैत छथि। अटकल सिक्का आ भीजल कागदक कोना दूनू भेटैत अछि, मुदा सिक्का भेटबासँ शान्ति बोटेक पुरान उतार-मजदूरीक देय चुकता नहि होइत। “विदाइ”क शीर्षकक विरुद्ध ई आरम्भ यात्रा समाप्त करबाक उत्सव नहि, चलैत कमाइक अपूर्ण हिसाब सँ बनैत

अछि। कथा नावक देह, चप्पूक समय, बोरा उतरबाक श्रम आ लिखित प्राप्ति बीच अन्तर खुलबैत अछि; नदिक सुन्दर दृश्यसे पहिले घाटक श्रम-दिन सोझाँ अछि।

मधु द्वारा भाड़ा, बोझ, उतार-मजदूरी आ नाव रोकल समयक अलग खाना बनायब दृश्यक क्रियात्मक केन्द्र अछि। लिपिकक आशंका जे यात्री डेराएत आ व्यापारीक तर्क जे सीमा-चौकीक प्रतीक्षा नाविकक “सामान्य जोखिम” अछि, खुलल प्रतिपक्ष बनबैत अछि। मधुक प्रश्न—नाव जखन चौकी धरि जाइते नहि, तखन ओकर घड़ीक दाम चप्पूसँ किएक गनल जाए—समयक सामाजिक बँटवारा देखबैत अछि। पाठक एकटा नियम तैयार होइत देखैत अछि, समाधानक पहिले विवादक परिभाषा स्पष्ट होइत अछि।

नदी-नाम आ एकाधिक हिसाबक कथन-संयोजना

“गंडक/गंडकी”क दू रूप शान्तिक बहीमे मौजूद अछि। व्यापारीक प्रतिनिधि एकर आधारपर दू खेपक सम्भावना कहैत अछि; शान्ति बोरा-बाँधबाक चिन्ह आ उतार-बही अलग देखबैत छथि। नदी-नामक ध्वनि आ खेपक संख्या एक तरहक कथात्मक तथ्य नहि। “गोही” नामवला पन्ना सेहो युवाक तात्कालिक नक्शा पूरा करबाक उतावली सँ जुड़ैत अछि; मधु प्रश्न द्वारा ओहि रेखाकेँ रोकेलनि। ई पाठ वस्तु तथा शब्दक अनिश्चितता कथाकारक सार्वभौमिक रहस्य-बोध नहि, स्थानीय लेखा-संघर्षक विषय बनाएल अछि।

शान्तिक अगिला सुधार एहि द्वन्द्वकेँ व्यवहारिक बनबैत अछि : “नाव रोकल समय” लिखल पर्याप्त नहि, ककर आदेशपर रोकल गेल से चाही। व्यापारी बढ़ा-चढ़ा समय लिखबाक आशंका लबैत अछि; शान्ति दूनू पक्षक प्रति आ परस्पर मिलानक उपाय रखैत छथि। ई प्रत्यक्ष संवाद कथावाचकक सम्पूर्ण व्याख्या बिना प्रशासनक अस्पष्ट रेखाकेँ दृश्यगत संघर्षमे बदलैत अछि। मुदा पृष्ठपर सहमति होइतहि सीमाचौकीक समस्त वास्तविक प्रतीक्षा-दाम स्वीकृत भऽ गेल, एहन निष्कर्ष गलत हएत।

पीतलक ताला : घरक कथा आ असहमतिक अधिकार

नावक भाड़ा-बैठकक बीच जल-समितिक घरक स्त्री पीतलक ताला नेने अबैत छथि। कर्जक मूल रकम, भुगतानक किस्त आ प्रतीक्षाक अतिरिक्त माँग एकहि पाँतिमे लिखल अछि; ओ तकर तीन भाग करैत छथि। एहि अप्रत्याशित आगमनसँ नदी-श्रमक कथा घरेलू ऋणक भिन्न लय प्राप्त करैत अछि। स्त्री पुरा ऋण “शून्य” लिखि झूठ मुक्ति नहि चाहैत छथि। हुनका लिखल कागदक आगूक पाठक सेहो दिखैत छथि—ओ व्यक्ति जे कल्हि भुगतानक दावा दोहराओत।

दू रसीदक प्रति बनबैत छथि, मुदा घरक निजी उधार सार्वजनिक नहि करैत छथि। कुमुदी ऋणक शेष आ अगिला खेपक अग्रिम लेल एकहि “देनदारी” अनुवादक त्रुटि अलग करैत छथि। हुनकर घरक किशोर दू बेर भोजनक समय याद करबैत अछि। एहि छोट पुनरावृत्तिसँ कथा बुझेबैत अछि जे कर्जा-जाँच अनन्त देरीक बिनमूल्य श्रम नहि हो; घरक भोजनक समय स्वयं एकटा वैध कथा-समापनक शक्ति अछि। अन्तिम पन्नामे पीतलक ताला फेर सन्दूकपर लागैत अछि, मुदा विवादक अन्तिम निर्णय नहि।

चन्दाक नील झोरा आ “यात्रा सम्भव”क भिन्न अर्थ

चन्दा मुण्डाक उधड़ल सीबनवला नील झोरा भीतर सुरक्षित दस्तावेज राखैत अछि। पहिचानक पुष्टि, काम छोड़बाक प्राप्ति आ यात्रा-कागद—तीन पृथक् वस्तु मेजपर अबैत अछि। बकाया मजदूरी “अलग विचाराधीन” रहितो यात्रा-अनुमति पूर्ण अछि। कागदक औपचारिक योग्यता आ मनुष्यक चलि पड़बाक निर्णय एक नहि; चन्दा युवा श्रमिकसँ अपन गतिक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। वृद्ध नाविकक “घर तँ घर” प्रश्नक उत्तरमे ओ घरकेँ पुरस्कार नहि, निवासक सम्भावना कहैत छथि।

अन्तमे एक युवक तत्क्षण बस पकड़ैत अछि, चन्दा अपन समय स्वयं चुनैत छथि। हुनकर झोरा पछिला नील स्मृतिक सजावटी वस्तु नहि; स्वनिर्णय आ अपूर्ण देयक परिवहनीय जगह अछि। कथावाचक चन्दाक अनिश्चित मनकेँ मनोवैज्ञानिक दुर्बलता नहि बनबैत। यहीं “विदाइ” अनेक इच्छाक बहुवचन होइत अछि—कोनो दल घुरैत अछि, कियो एखन नहि, कियो अगिला भेटक शर्त तय करैत अछि।

पहिल परीक्षण-खेप : सीमित उपलब्धि आ शिल्पगत सीमा

मधु आ समितिक तीन सदस्य सही करैत छथि; तीन यात्राक परीक्षण शुरू होइत अछि, भाराधिक्यवला सामान मधु उतरबैत छथि आ पहिल यात्रामे बच्चाक सुरक्षा देखैत छथि। शान्तिक पुरान बकाया दावा संलग्न रहैत अछि; सीमा-चौकीक प्रतीक्षा-खर्चपर पूर्ण सहमति नहि। एतए घटना “नव नियम लागू”क सीमित स्तरधरि घटल अछि, “पुरान अन्याय समाप्त” नहि। सांझक हवा आ माछक चमक एहि श्रममय वर्तमानकेँ गीतिक विस्तार दैत अछि।

एहि अध्यायक प्राप्य न्यायपरक प्रश्नकेँ अनेक जीवनक समयमात्रामे साकार करब अछि : नाव रोकबाक घण्टा, घरक भोजन-विराम, ऋणक अगिला किस्त आ चन्दाक स्वतन्त्र प्रस्थान। सीमा ई अछि जे मधु, शान्ति, कुमुदी आ पद्माक प्रक्रियागत भाषा बारम्बार असाधारण रूपेँ व्यवस्थित होइत अछि, जाहिसँ स्वाभाविक संघर्ष कथकक पूर्वनिश्चित दक्षताक प्रदर्शन लागए सकैत अछि। मुदा प्रतिपक्ष, अपूर्ण दाम आ अन्तिम ताला एहि सरल विजयोत्सवक समापन रोकैत अछि।

श्रमक चारि मद : एकल दर सँ अनेक कथा धरि

नावभाड़ाक चर्चा आरम्भहि मे मधु द्वारा बनाओल चारि घरक कागदपर टिकैत अछि—यात्रीक भाड़ा, सामानक भार, उतारबाक मजदूरी आ रोकि राखबाक समय। व्यापारीक प्रतिनिधि जखन चौकीक देरीकेँ नाविकक सामान्य जोखिम कहि छोड़ए चाहैत अछि, तखन विवाद समयक स्वामित्वपर पहुँचैत अछि। घाटपर देरी एक अमूर्त प्रशासनिक विलम्ब नहि; नावक अगिला खेप, श्रमिकक प्रतीक्षा आ यात्रीक अन्य अवसरक वास्तविक हानि अछि। पुरान दर-पत्रक बदलामे नब चारि-खाना प्रारूप एहि कथामे कथाक गति बदलनिहार वस्तु अछि—ओ विभिन्न पात्रकेँ अपन काम स्पष्ट स्वरमे कहबाक अवसर दैत अछि।

समझौता हस्ताक्षरित भेलाक बादो कथा “नियम बनल, न्याय भऽ गेल”क छलाङ नहि लगबैत। दूनू पक्षक घड़ीक प्रति, कारण-लिखल प्रतीक्षा, उतारबाक अलग सेवा आ पहिल तीन यात्राक परीक्षणक व्यवस्था अपन शर्तसभ पर निर्भर अछि। साँझक पहिल खेपमे भार बेसी देखिकऽ मधु सामान उतारबैत छथि; घाटपर वास्तविक देरी होइत

अछि। परन्तु शान्तिक पुरान उतार-मजदूरीक दाबी ओहि नब अनुबन्धमे स्वतः भुक्तान नहि भेल। एतए कथन एहन ‘समाप्ति’ गढ़ैत अछि जाहिमे एक नब प्रक्रिया आरम्भ भेल, मुदा पहिनेक देयक समय अडिग रहल।

घरक ताला आ यात्राक कागद : असमान प्रस्थानक संरचना

जल-समितिक घरसँ आयल स्त्री पीतलक ताला मेजपर राखैत छथि; एहि प्रवेशमे घर, ऋण, जल-निकासी आ कार्यालयक बही एक दृश्य-स्थानमे टकराइत अछि। मूल कर्ज, चुकाओल दू किस्त आ अतिरिक्त माँगक लेखा एके रेखामे रहलाक कारण अपन घरक विषयमे बोलबाक शक्ति घटैत अछि। स्त्री ऋणमुक्तिक असत्य पर्ची माँगबाक बदला “मिलान शेष” स्वीकार करैत छथि। कथानकक उपलब्धि ई नहि जे ओ सभकेँ क्षमा करबैत छथि, बल्कि जे सम्पूर्ण बकाया मानि हस्ताक्षर करबाक तत्काल दबाव रोकल जाइत अछि। ताला अन्तमे फेर सन्दूकपर लगैत अछि; ओकर बन्द रहब चुप्पीक प्रतीक मात्र नहि, निजी अभिलेखपर परिवारक अधिकारक दृश्य सेहो अछि।

चन्दा मुण्डाक उधड़ल नीला झोरा आ “यात्रा सम्भव” लिखल पत्रक बीच दोसर प्रस्थान-समस्या खुलैत अछि। कर्मचारीक प्राप्ति-मोहरसँ चन्दाक पुरान मजदूरी चुकल नहि; घर घुरबाक भौतिक सुविधा भेटलासँ ओ तुरन्त जाएबाक निर्णय नहि करैत छथि। युवा सहकर्मी अपन बाट चुनि सकैत अछि, चन्दा अपना हिसाब देखैत ठहरि सकैत छथि। लेखक एतए घरक रूपककेँ पुरस्कार वा अन्तिम शरण बनाकऽ प्रस्तुत नहि करैत। उलटे दू प्रस्थानक अलग काल—परिवारक निर्णय आ मजदूरीक निबटारा—एके पात्रक भीतर निर्भर होएबासँ बचैत अछि। एहि अन्तरकेँ महाप्रस्थानिक शीर्षकसँ तुलना कएल जा सकैत अछि, मुदा प्राचीन राजयात्रासँ एकर घटनात्मक उत्पत्ति सिद्ध नहि होइत।

अध्याय २०२ — कबीरक वापसी

लाल किनारवला रुमाल : वस्तुक स्मृति आ मूलक अनिश्चितता

कबीर अलमारीसँ लाल किनारवला रुमाल आ तीन लिफाफा निकालैत छथि—पालनक कागद, जन्मसम्बन्धी अपुष्ट कथन आ निजी चिट्ठी। तेसर खाम ओ एखन भीतर राखैत छथि। आरम्भे सँ तीन विषयक सीमा अलग अछि। मायकेँ रुमाल कबीरक घर-अएबाक दिनसँ जोड़ल स्मृति अछि, मुदा ई वस्त्र पहिने कतए बनल तकर ज्ञान नहि। एहि सूक्ष्म अन्तरसँ अपनत्वक वास्तविक अनुभव आ वंशक पूर्ण कथा समानार्थी नहि रहैत।

मायक छानैत चाउर, गौरैयाक घोंसला आ कबीरक लग राखल खाम एक घरेलू अवधि रचैत अछि जाहिमे पहचानक प्रश्न दैनिक स्नेहकेँ विस्थापित नहि करैत। घोंसलाक घास पुरान डारिपर नब तिनकाक दृश्य अछि; ओकरा “जन्मक प्रमाण” बनाबय चाहब पाठकक रूपकातिशय हएत। उपन्यास वस्तुक स्नेहमूल्य स्वीकारैत अछि, किन्तु दस्तावेजक शून्यक स्थानमे कल्पनात्मक जन्म-इतिहास भरबाक लेल ओकरा उपयोग नहि करैत।

पालनसम्बन्ध आ जन्मक कथा : रिक्त घरक शिल्प

रुहानी आ रमा कर्णक समक्ष पालन-सम्बन्धक अवधि, उपलब्ध शिक्षा-पत्र, जन्म-स्रोतक स्थिति आ व्यक्तिगत इच्छाक खाना अलग बनैत अछि। कर्मचारी एक सरल पारिवारिक रेखा खींचि सॉफ्टवेयरक सुविधा चाहैत अछि; कबीर ओकरा अपन जीवनक जटिलताक मूल्यपर स्वीकृत नहि करैत। प्रतीक्षारत वृद्ध पुरुष रिक्त घरसँ बालकक अपमानक भय व्यक्त करैत छथि। एहि विरोधक कारण रिक्ति महज कथाकारक तकनीक नहि—भविष्यक सामाजिक प्रश्न उत्पन्न करनिहार अनावृत स्थान अछि।

कबीर अपन पालन करनिहारी मायकेँ “अस्थायी” दर्ज करबाक निषेध रखैत छथि, जन्मसम्बन्धी कथनक सत्यापन सेहो रोकैत नहि। एतए नायकक विजय अपन वंश खोजि लेब नहि, दू तरहक सम्बन्धक वाक्य स्वयं चुनबाक अधिकार अछि। सुभद्राक कथन संग अगिला भेटक आवश्यकता एखन रहैत अछि; मूल पुष्टि केनाइ बाकिये अछि। कथक कबीरक मनक कष्ट सुचित करैत अछि, मुदा अनुपस्थित जन्मदाताक जीवनचरित्र मनसँ गढ़ि नहि दैत।

घाट आ प्रेषण : दोसर कथाधाराक आर्थिक काल

अभिलेख-केन्द्रसँ कबीर शान्ति बोटेक घाट-सम्पर्कमे प्रवेश करैत छथि। तीन पारगमनक परीक्षणमे उतार-मजदूरी “समाहित” लिखल जाएबाक व्यापारी दावा उठैत अछि; शान्ति पूछैत छथि जे ई पाँति के कखन जोड़लक। सीमा दू कात हुनकर कामक नाम दोहराओल जाइत अछि, मुदा ओ दूनू काज करनिहार एके स्त्री छथि। कथाकार पहचानक घरेलू प्रश्नक समानान्तर श्रमिकक पेशागत पुनर्नामकरण रखैत अछि—तथापि दूनू विवादक कारण अलग।

अमीर कुल्हैया तीन परिवारक धन-प्रेषणपर चर्चा करैत छथि। साझा कोडक दलाल गति आ शुल्कक वचन दैत अछि; परिवारक एक सदस्य निकास-बाट आ व्यक्तिगत प्राप्तिक अधिकार माँगैत अछि। रोगी माय लेल तुरन्त रकम पठएबाक जरूरतवला श्रमिककेँ अमीर उपदेशे सँ टारैत नहि—दू अधिकृत सेवाक दर आ जोखिम बतबैत छथि। “फरियानी” नामक पुरान पन्ना पूरा प्रेषण-मार्ग सिद्ध नहि करैत; नसीमाक “मेची” यात्रा-पत्रक कटाव सेहो स्वतन्त्र समस्या अछि।

तीन घरमे वापस अबैत कथन

कबीर सुभद्राकेँ भेटैत छथि, फेर सरिताक विद्यालयमे ढीला मेजक पाया आ भीजल ईंटक वास्तविक काम करैत छथि, आ साँझ माय लग घुरैत छथि। ई त्रिस्तरीय वापसी—स्रोतव्यक्ति, सार्वजनिक शिक्षा, पालनक घर—“वापसी”क शीर्षककेँ एकमात्र जैविक मूलक खोजसँ बचबैत अछि। सुभद्राक सम्भावित उत्तर सभ पर स्वामित्व नहि, सरिताक प्रति विश्वसनीय उपस्थितिक श्रम, मायसँ अनैच्छिक दूरी नहि। प्रत्येक दृश्य अलग सामाजिक सम्बन्धक समय रखैत अछि।

माय जन्मदात्रीक बारेमे अपन जिज्ञासा कहैत छथि; कबीर प्रश्नकेँ आरोपमे नहि बदलैत छथि। खिचड़ीक चम्मच, बजारसँ नुन आनबाक आखिरी आग्रह आ लाल रुमालक देखब घरेलू क्रियामे स्थिरता अनैत अछि। एहि

वस्तुसभक क्रम प्रमुख आन्तरिक कथानकक अन्त नहि करैत, उलटे देखबैत अछि जे जन्मक अपूर्ण वाक्य रहितो माय-बेटाक जीवित वार्तालाप पूरा दिन भरि बनैत रहैत अछि।

नैराक बन्द खाम, खुलल रकम आ पाठकीय प्रतिरोध

कबीर “निजी—अनपठाओल” खाम नहि खोलैत छथि; नैराक फोन संयुक्त संरक्षणमे अछि। रुमालक कपड़ा, निजी चिट्ठी आ सार्वजनिक अभिलेख तीनू भिन्न कथन-द्वार छथि। अगिला भोर प्रेषणमे पहिल परिवारक रकम पहुँचबाक पुष्टि, दोसरक बाटमे रहब आ तेसरक पुनःनिर्देश-जाँच अलग दर्ज होइत अछि। एहिसँ बैचक प्रारम्भक “गेल दलक समाचार” आ घरेलू “वापसी”क बीच असिद्ध पूर्णताक दावा नहि बनैत।

एहि अध्यायक विशेषता सम्मुखवर्ती जीवनक स्नेहकेँ अपनत्वक वैधानिक प्रमाणक केवल अनुपूरक नहि बनबाएब अछि। तइयो अनेक पात्र कागदक श्रेणी, स्वतन्त्रता आ गोपनीयताक नियम निरन्तर प्रौढ़ भाषा मे बजैत छथि; कथामे असहज मौन आ स्वतःस्फूर्त भूलक मात्रा कखनो कम लगैत अछि। वृद्ध पुरुषक विरोध, दलालक जल्दबाजी, मायक अदेखल जन्मदात्रीप्रतिक प्रश्न आ बच्चाक पाथर चुनब एहि शिक्षणधर्मी एकरूपतामे महत्त्वपूर्ण भिन्न स्वर जोड़ैत अछि।

रसोइक घड़ी आ जन्मक रिक्तता : कालक दू असंगत मान

कबीरक जन्मसम्बन्धी जिज्ञासा मुख्य कथा छैक, मुदा सुभद्राक भिजल चाउर, औषधिक नियत घड़ी आ रातिक खिचड़ी एहि जिज्ञासाकेँ घरेलू समयमे रखैत अछि। माइक “पहिने नाश्ता कऽ लिअ” कहब कथाक तनाव घटाबयवला निरर्थक ठहराव नहि; स्मृति आ खोजक बीच देहक नियमित आवश्यकता केँ ठाम देब अछि। गौरैयाक पुरान डारिपर नव घोंसला बनबएबाक चित्र पालनक अनुभवक प्रतिपक्ष बनैत अछि, किन्तु पाठ ई निश्चित नहि करैत जे रुमालक मूल बुनकर वा जन्मक पहिल घर ओहि दृश्यसँ प्रकट भऽ गेल।

रुहानीक मेजपर “मूल परिवार”क रिक्त स्थान देखिकऽ कर्मचारी दू घरक नामकेँ एक रेखासँ जोड़बाक सुझाव दैत अछि। ई सरल चित्र पाठकीय सौन्दर्यक सुविधा देत, मुदा अपुष्ट जन्मकथा आ दस्तावेजी पालन-वर्षक बीचक भेद मेटाओत। कबीरक विरोधक महत्त्व केवल तथ्य-सुधार नहि; ओ जीवनक दू विशिष्ट समय—पालनक लम्बा पुनरावृत्तिमूलक श्रम आ जन्मक अनिश्चित एककालिक घटना—क कथात्मक असमानता रेखांकित करैत अछि। नब प्रति एहि असमानता केँ दृश्य बनबैत अछि, कानूनी पूर्ण समाधान नहि। वृद्ध पुरुषक आपत्ति एहि व्यवस्था केँ नितान्त निर्विवाद नहि रहने दैत।

घाटक बीचक अन्तराल, काजक वापसी आ निजी मौन

बीचमे शान्तिक उतारघरक मजदूरी, अमीरक धन-प्रेषण आ नसीमाक सिएल जिल्दवला यात्रापत्र प्रवेश करैत अछि। दू कातक काम अलग होइतहुँ एक व्यक्तिक नाम दोहराएब, एक साझा कोडक सुविधा आ रकम नपहुंचबाक जोखिम—ई सभ छोट समानान्तर कथा पाठककेँ परिवारक रेखाक विषयसँ बाहर पहुँचबैत अछि। प्रवासी युवक तुरन्त विकल्प चुनैत अछि, दोसर परिवार प्रतीक्षा करैत अछि, तेसर अलग प्राप्तकर्ताकेँ अनुमति दैत

अछि। एहि असमान परिणामक कारण “निर्णयक स्वतन्त्रता” कोनो एकरूप सफल जीवनक मोहर नहि, अनेक आवश्यकताक भीतर बनल चयन अछि।

घर घुरल कबीर स्कूलक ढीला मेजक पाया देखैत छथि आ खर्चक केवल अनुमान दैत छथि। जन्मक खोजक नाटकीय उत्कर्षक बजाय काठक फाट आ बच्चाक ठेस खएबाक सम्भावना पर दृश्य टिकैत अछि। नैराक स्मृतिसँ सरिता जुड़ैत छथि, मुदा मृत बेटीक निजी कथन एतय नवा सार्वजनिक कथा बनबैत नहि छथि। रातिमे कबीरक कापी अलग-अलग घरक नाम आ अपुष्ट प्रश्न सुरक्षित रखैत अछि; “आब परिवार भेटि गेल” जेकाँ सरलीकृत अन्त अनुपस्थित अछि। एहि अवरोहणसँ उपन्यासक चरित्र न्याय-वादक प्रवक्ता मात्र नहि, काजक भार लऽ बाँचैत व्यक्ति बनि सकैत अछि।

अध्याय २०३ — साथक जीव

हिमक एक घूँट आ देहक साझा सीमाबोध

भीमक मृत्युपछाति युधिष्ठिर हिमवर्ती निर्जन बाटपर असगर छथि, संग कुकुर अछि। पात्रमे बचल एक घूँट पानिक चमक आ घायल पएर दृश्यकेँ अमूर्त नैतिक परीक्षा सँ पहिने जीवनक देहगत संकट बनबैत अछि। कुकुर पहिने दाँत देखबैत अछि, युधिष्ठिर हाथ हटाकऽ प्रतीक्षा करैत छथि; जीव अपन पएर स्वयं आगाँ करैत अछि, तकर बाद पट्टी बान्हल जाइत अछि। ई संक्षिप्त विलम्ब “करुणा”क घोषणा नहि, भयग्रस्त प्राणीप्रतिक व्यवहारक ठोस पद्धति बनैत अछि।

इन्द्रक रथ आ स्वर्गक निमन्त्रण प्रवेश करिते कथाक दांव बदलैत अछि। युधिष्ठिर अपन भाइसभकेँ घुरा नहि सकलाह, मुदा जीवित सहचरकेँ एखन छोड़नाइ हुनकर निर्णयसँ जुड़ल अछि। इन्द्रक तर्क मृत भाइसभक त्याग आ कुकुरक लेल अवसर छोड़ेबाक कथित असमानता पर केन्द्रित अछि; युधिष्ठिर दूनू घटनाक अलग स्थितिक बात करैत छथि। एहि विरोधकेँ कथक एकान्त ज्ञानोपदेशमे नहि बदलैत—ठंढ, थकान आ बगलमे घायल जीवक प्रतीक्षा एकर नाटकीय दबाव बचबैत अछि।

पाँचम पाठांशमे २०४२क विदेहपुरक आश्रयक बाहर घायल भूरा कुकुर देखाइत अछि। छप्परक मरम्मत, पाँच दिनक कथित अवधि, चिकित्सकीय जाँच आ बच्चाक सुरक्षासम्बन्धी पड़ोसीक चिन्ता कथा-स्थितिक व्यावहारिक आधार अछि। प्राचीन कुकुर धर्मक अवतार सिद्ध होएत; आधुनिक कुकुरक लेल एहन अन्तिम रूपान्तरण नहि। दुनू धारा केवल आघात-प्रतिक्रियाक तुल्य रूपक नहि, अपन-अपन तथ्यसम्पन्न आख्यान छथि। एहि भेदकेँ कायम रखब बहुत आवश्यक अछि।

रुहानी आगू बढ़ि पड़ोसिनक बच्चाक भय सुनैत छथि, ओसारक सुरक्षित दूरी देखबैत छथि, चिकित्सा आ मरम्मतक व्यय अलग रखैत छथि। जावेद अपन बहीमे पशु-प्रदर्शन छोड़बाक कमाइक लागत देखबैत छथि; मीरा बंजारासँ पट्टी लेल रुई खरीदबमे दान आ मूल्यक अन्तर उठैत अछि। एतए जीवक साथक दावा ककरो श्रमकेँ बिनदाम करबाक छूट नहि। बरखाक चटाइ, दवाइक गन्ध आ भीजल दरीक निरन्तरता दृश्यगत संवेदनाक माध्यम अछि।

बिनु दराईक दू खाता : स्नेह आ आयक कथन-सम्बन्ध

बिनु दराई परिवारक धन-प्रेषणमे सामूहिक खर्च आ अपन व्यक्तिगत बचतक रकम पृथक लिखबाक समाचार लैत छथि; रकम एखन प्राप्त नहि। सासु चिन्ता करैत छथि जे दू खाता बनत तँ दू चूल्हि होएत। बिनु दू थारीमे धान बाँटि फेर एक भण्डारमे रखैत छथि। एहि छोटी घरेलू क्रियामे अपन आयपर वाक्य कहबाक अधिकार आ परिवारक संग रहबाक इच्छा परस्पर विरोधी मानि नहि लेल गेल।

“सीर” पुरान पत्रक स्थल-संकेत अछि, जकर आधारपर देवर यात्रा-पत्रक सरल रेखा चाहैत अछि। बिनु अक्षरक गुमनाम व्याख्या स्वीकार नहि करैत; अमीर अलग पुष्टि चाहैत छथि। सेवा-केन्द्र निर्देश प्राप्त करैत अछि, रकमक वास्तविक पुष्टि एखन नहि। बिनुक नब लेखापुस्तिका बहुल सम्बन्धक उपकथा बनैत अछि; कुकुरक संगक करुणा संग मिलाओलासँ पहिने एकर स्वतन्त्र आर्थिक कथा पहिचानब जरूरी।

सुपैनक ठेला, रुई आ अनिश्चित दाम

मीरा आ हुनकर बहिनक ठेलाक पुरान ग्राहक-पत्रमे “सुपैन” लिखल अछि। ई लेखा ककरा कतेक खेप गेल तकर सीमित स्मृति राखैत अछि, पर पूरा जल-नक्शा नहि। साझेदारीक व्यापारी एक दरमे काम जोड़बाक प्रस्ताव दैत अछि; बहिन अपन पुरान ग्राहकक मान्यताक जाँच चाहैत छथि। आश्रयकेँ साफ रुई चाही तखन बहिनक वस्तु खरीदबाक प्रश्न उठैत अछि, मददक नामपर सम्पूर्ण ढेर निःशुल्क लऽ लेब नहि।

पछिला भागमे एक दिनक अलग ढुलाई तय होइत अछि, दोसर दिनक साझेदारीक दर ओहि दरपत्रक निरीक्षणक प्रतीक्षा करैत अछि। छोट उपकथा समग्र अध्यायक लय धीमा करैत अछि, मुदा प्राणी-करुणाक बड़ नैतिक उद्घोषक कात छोटे व्यापारक ठोस अधिकार बचबैत अछि। पाठक बुझैत अछि जे सहमति अलग-अलग व्यक्ति आ वस्तुक अनुसार बदलैत अछि; “साथ” सामूहिक मालिकानाक पर्याय नहि।

धर्मक रूपान्तर आ आधुनिक कथाक अनिर्णीत उपचार

प्राचीन कुकुर धर्मरूपेँ उद्घाटित होइत अछि, परीक्षा सम्पूर्ण होइत अछि; आधुनिक कुकुर चिकित्सक लग पहुँचैत अछि मुदा पूर्ण स्वास्थ्यक आश्वासन नहि, अस्थायी स्थान आ मरम्मतक व्यवस्था एखन परीक्षणाधीन अछि। ई समापनक मूल संरचनात्मक असममिति अछि। महाकाव्यक करुणा दैवी प्रतिफल पबैत अछि, आधुनिक देखभाल अनिश्चित श्रम आ पुनः भेटक समय माँगैत अछि।

आलोचनात्मक जोखिम ई जे पात्रसभक सावधान उत्तर अनेक ठाम पाठशालाक आदर्श पाठ बनि जाइत अछि। तइयो घायल जीवक झिझक, पड़ोसिनक उचित सुरक्षा-प्रश्न, जावेदक वास्तविक लागत, बिनुक अपूर्ण प्रेषण आ बहिनक ग्राहकदेय कथा भीतर बिना आसान निपटानक बाँचैत अछि। एहि जीवनसमयक पृथकता महाप्रस्थानक अन्तिम नैतिक दृश्यकेँ आधुनिक लोकक मृत्यु-पश्चात् दायित्वसँ एकरस नहि होने दैत।

चोट, दूरी आ पशुक अवाचिक उपस्थिति

हिमालयक दृश्य कुकुरक चोट, पानिक एक घूँट आ युधिष्ठिरक हाथ पाछाँ करबाक व्यवहारसँ शुरू होइत अछि। कुकुर दाँत देखबैत अछि; राजा ओकरा “उद्धार”क निष्क्रिय वस्तु मानि पकड़ि नहि लैत छथि। जीव स्वयं पएर

सरकबैत अछि, तखन पट्टी बँधैत अछि। एहि सूक्ष्म समय-विलम्बमे कथन एक एहन प्राणीक उपस्थिति स्वीकार करैत अछि जे शब्द द्वारा अपन मन प्रकट नहि करैत। एतए पाठकक लग कुकुरक सम्पूर्ण अन्तर्मनक दावा नहि अछि; ओकर कँपब, हटब आ फेर चलब देखल व्यवहार अछि। एहि दृष्टिसँ जीवक कथात्मक स्वतन्त्रता दैवी रूप उद्घाटित होएबासँ पहिनहि स्थापित होइत अछि।

वर्तमान आश्रयमे पुरान कुकुर घायल अछि; ओ सावधानीपूर्वक चटाइपर राखल जाइत अछि, पड़ोसिन बच्चाक सुरक्षाक प्रश्न उठबैत छथि आ उपचारक परिणाम अनिश्चित अछि। पुरान महाकाव्यक कुकुर अन्तमे धर्मरूपमे प्रकट होइत अछि; आधुनिक कुकुरक विषयमे कोनो एहन रूपान्तर कथा दावा नहि करैत। कथनक तुलनात्मक सामर्थ्य एहि स्पष्ट असमानतामे अछि : प्राचीन यात्रामे संग छोड़बाक अस्वीकार देवताक परीक्षा बनैत अछि, आधुनिक आश्रयमे ओ निर्णय मरम्मतक पाँच दिन, चिकित्सकीय खर्च आ रातिक पहरक वास्तविक व्यवस्थामे उलझल रहैत अछि। देवत्वक आश्वासन बिना भऽ रहल देखभालकेँ कथाक स्तरपर घटिया अर्थ नहि देल गेल अछि।

चरित्रसभक सीमित सहयोग : करुणा आ श्रमक परस्पर जाँच

रुहानी जावेदक मेहनाना पशुक दवाइमे मनमाना ढंगसँ काटबाक विरोध करैत छथि; जावेद अपन पहिल पहरक सेवा दैत छथि; कबीर साप्ताहिक समयक सीमा बतबैत छथि; बिनु आध घण्टा भरि सहयोग स्वीकार करैत छथि। एहि अलग प्रतिज्ञासभसँ मिलि सामूहिक देखभाल बनैत अछि। केओ असीमित त्यागक वचन नहि दैत, आ एतबेँ कथानकक नैतिक उपलब्धि अछि। पड़ोसिनक कुकुर-काटबाक भयकेँ खलनायकक मूर्खता नहि बनाओल गेल; गलीक बालक आ पशुक सुरक्षा दुनू कथाक वास्तविक बाहरी शर्त छथि।

मीरा बंजाराक बहिन अपन “सुपैन” लिखल व्यापार-कापी सँ रास्ताक निरपेक्ष भूगोल नहि गढ़ैत छथि; ओ ग्राहक आ कमाइक स्मृति राखैत छथि। रुहानीक आश्रयक लेल रुई उचित दामपर खरीदल जाइत अछि, पूरे ठेलाकेँ दानमे नहि बदलल जाइत। बिनुक घरमे सामूहिक खर्च आ व्यक्तिगत बचत अलग लिखबाक निर्णय होइत अछि, मुदा रकमक प्राप्ति एखन अपुष्ट अछि। ई दू समानान्तर रोजी-कथा एक दयापरक केन्द्रक चहुँओर श्रमिकसभकेँ स्वायत्ततासँ रखैत अछि। घायल पशुक कथा सबहक श्रमक मूल्य मेटाकऽ करुणा-प्रदर्शनक उत्सव नहि बनैत।

अध्याय २०४ — पर्वत नहि दरबज्जा

फुलल किवाड़ आ लौटबाक अपूर्णता

भोरमे खुलल पाठशालाक किवाड़ बरखाक पानिसँ अटकैत अछि। बच्ची कापीक गत्ता मोड़ि नीचे सरकबैत छथि, सरिता पहिने चौखट ठीक करबाक आग्रह करैत छथि। दूर हिमवर्ती महाप्रस्थानक अगिला भागक शीर्षक “पर्वत नहि दरबज्जा” एहि साधारण मरम्मतकेँ केन्द्रीय कथन-घटना बनबैत अछि। पाठकक ध्यान “ऊँचाई पार कएल” सँ “भीतर प्रवेशक अधिकार केना बनत” दिस घुरैत अछि।

कबीर पुरान मेजक नव कील देखैत छथि; यात्रा-सँ फिर्ता लोकक अनुभव पर्चीक बक्सामे रखल अछि, मुदा स्थानीय बालक पूछैत अछि जे पहिने कथा सुनत कि गनती करत। सरिता नैराक मृत्यु आ उर्मिलाक अपूर्ण देयक नाम लैत छथि, मुदा विद्यालयकेँ मृत बेटी अथवा संस्थाक स्मारक बनबाक पूर्वनिर्धारित अधिकार नहि देत। सांझक वार्षिक लोकपाठ–खुला खाता–गीत आयोजनक तैयारी एतय एक दिनक समापनक बदला फेर-फेर आबएवला सार्वजनिक समयक रचना करैत अछि।

यात्रा-फिर्ता कागद आ ठेलाक स्वतन्त्र गतिकी

मीरा बंजाराक बहिन चारि बोरा पहुँचा देलीह, मुदा चौथ रसीद पहिने अनुपस्थित छल। सोनमती तुरीक बाँस आ निरु कुमालक माटिक सामान साझेदारीमे रहितो अपन अलग टूट-फूट जोखिम रखैत अछि। प्रबन्धकक “साझा निर्णय अन्तिम” रेखा सहकारिताक भीतर नव एकाधिकारक खतरा अनैत अछि। मीरा पन्नाक संशोधन चाहैत छथि जे हर खेपक मालिक अपन क्षतिक सत्यापन कराएत।

बहिन एक दिनक साझेदारीक परीक्षण स्वीकार करैत छथि, सम्पूर्ण कारोबार सौंपी नहि दैत; चौथ ग्राहकक पर्ची फोनपर भेटितो भुगतान तुरन्त नहि पहुँचैत। ई क्रम मूर्त घटनात्मक अन्तर महत्वपूर्ण अछि—वस्तु पहुँचल, प्राप्तिक किछु लेखा आएल, रकम शेष। “सुपैन” कैँ साहित्यिक अद्भुत भौगोलिक सूत्र कहि समस्त कथा खोलब कठिन अछि; उपलब्ध पन्नामे ओ ग्राहक-लेखाक सीमित संकेत अछि।

लोकपाठ आ कथाक अनुद्घाटन

पद्माक यात्रापत्रमे कथनक स्रोत आ प्रकाशन-अनुमति अलग चिन्हित अछि। वाचनक समय ओ किछु पन्ना जानि-बुझि छोड़ैत छथि। श्रोता सवाल करैत अछि जे अधूरा पाठकेँ पूर्ण कथा केना मानल जाए; पद्मा स्रोत-व्यक्तिक स्वीकृति नहि भेटबाक कारण स्पष्ट करैत छथि। एहि अनुद्घाटनमे कथावाचकक सर्वज्ञता नहि, जीवित कथापात्रक वाचनीयता-निर्णयक सीमा उभरैत अछि। ई स्वतन्त्र सौन्दर्यात्मक प्रश्न अछि—रिक्त पृष्ठ पाठकक जिज्ञासा बढबैत अछि, मुदा ओकरा पूरा करबाक हक स्वयमेव नहि दैत।

अन्तिम प्रतिवेदनमे यात्राक “सभ उपलब्धि” लिखि अनुदान लएबाक प्रस्ताव छल; सरिता शेष काजक शेष रहब दर्ज करबाक पक्षमे छथि। खुला खातामे गोमतीक उराहि-मजदूरी, शान्तिक उतार-श्रम, अमीरक धन-प्रेषण विकल्प आ बिनुक अप्राप्त रकम अलग रहैत अछि। रंगीन प्रचार-पुस्तिकाक प्रस्ताव गुमनाम कथक आ नैराक निजी स्मृतिक चिह्नकेँ प्रेरक शीर्षक बनबए चाहैत अछि। एहि विवादसँ समापन लिखबाक राजनीतिक आ कथात्मक लालसा एकहि दृश्य मे परखी जाइत अछि।

हिमक अन्तराल आ आधुनिक अधिकार-हस्तान्तरण

पन्द्रहम पाठांशमे हिमवर्ती युधिष्ठिर, इन्द्रक रथ आ धर्मक रूपान्तरित संगक जीव पर कथा क्षणभरि लौटैत अछि। प्राचीन अन्तिम आरोहणक दैवी निष्कर्ष आधुनिक विद्यालयक अधिकार-हस्तान्तरणक पूर्वघटना नहि। तत्पश्चात् जावेदक पशु-विहीन परछाईं, घायल कुकुरक विश्राम आ बच्चासभक प्रश्न आधुनिक दृश्यक्रमकेँ घुरबैत अछि। कटाव पाठककेँ तुलना करबाक आमन्त्रण दैत अछि, मुदा कथा-दूनूक स्वाधीन समय मेटैत नहि।

समितिक चाभी संकेतक हाथमे तीन महीना रखबाक आग्रह उठैत अछि; ओ स्थानीय किशोर-किशोरीक श्रमक स्वायत्तता स्वीकारैत छथि। एक बालिका परीक्षा कारण समिति-कार्य मना करैत छथि—सरिता स्वीकृति आ अस्वीकृति दुनूकेँ अधिकार मानैत छथि। चाभीक दू हस्ताक्षर आ विषयानुसार पढ़बाक सार्वजनिक प्रति ई घटना पूर्ण करैत अछि; पर नव समितिक दीर्घकालीन क्षमता, नाम-निर्णय आ शेष भुगतान अझुक परीक्षणक विषय रहैत अछि।

कलात्मक समापनक अपूर्ण सभा

वार्षिक आयोजनक फलक लेल “खुलल दरबज्जा”, “खुला पाठशाला” आ “प्रश्नक आँगन” नामक विकल्प पर किशोरसभ असहमत छथि। मतदानक अन्तिम परिणाम नहि देल जाइत। एक वृद्धा उर्मिलाक देयक खाली घरसँ थाकल प्रश्न पुछैत छथि—कतेक दिन धरि खाली जगह? सरिता अगिला दिन मूल मजदूरी-पन्ना मिलाबबाक समय दैत छथि। ई प्रश्न “रिक्ति नैतिक अछि” कहि कथा समाप्त करब नहि, कालक्रमगत जवाबदेही माँगैत अछि।

कथाक अन्तिम चित्र—आधा खुलल किवाड़, बच्चासभक दरबज्जाक चित्र, चाभी-हस्तान्तरणक हस्ताक्षर, समापनक बिना अलग भोज—पर्वतारोहणक महान दृश्य सँ स्पष्ट विपरीत आकारक अछि। शिल्पगत उपलब्धि ई जे सामुदायिक संस्थाक जन्मक सौन्दर्य वस्तुक मरम्मतमे अछि। सीमा इएह जे पद्मा, तारा आ सरिताक सही प्रक्रिया सम्बन्धी उत्तर बहुतेक विवादमे तात्कालिक भेटैत अछि; नाम-मतदान आ उर्मिलाक परिवारक अधीरता एहि सुव्यवस्थित प्रवाहक आवश्यक प्रतिरोध बनैत अछि।

चाभीक घटना : समापन नहि, संस्थागत कथाक नवा आरम्भ

भोरक अटकैत किवाड़ आ घिसल चौखट उपन्यासक पहिल रसोइसँ दूर पहुँचि एक सामुदायिक ठामक दैनिक जीवनसँ पाठकक सामना करबैत अछि। “दल विदा” कहि कथा बन्द करबाक प्रलोभनकेँ दरबज्जाक काज रोकैत अछि। चाभीक हस्तान्तरण सहीक दृश्य अछि; मुदा चाभी पाबि लेब, स्थानक नियमित खर्च सँभालब आ लोकक भरोसा प्राप्त करब तीन भिन्न समयक घटना छथि। ३१म पाठांशक आधा खुलल दरबज्जा एहि कारण उन्नत प्रतीकक अतिरिक्त एक व्यावहारिक परिणामो अछि—रङक गन्ध बाहर जाएबाक लेल ओ खुलल रहल।

नव समितिमे बच्ची आ स्थानीय कारीगरक भूमिका केन्द्रमे अएलाक बाद तारा अथवा सरिताक प्राधिकार बिलायल नहि होइत; ओकर उपयोग बदलैत अछि। नब निर्णय स्वतः वैध मानि नहि लेल जाइत, जँ तकि तकरा पढ़ल, प्रश्न कएल आ वास्तविक खर्च सँ जोड़ल नहि जाए। पाठक सोझाँ व्यवस्था बनबाक दैनन्दिन प्रकृति खुलैत अछि : गलत कीलक मरम्मत, वस्तुक सूची, भुगतानक अलग मद, अपन घरमे घुरबाक समय आ विरोधक आवाजक लेल कागत। उपन्यास जँ एहि लघु कार्यक्रमक परिवर्तनकेँ एक ऐतिहासिक ‘क्रान्ति’ कहैत तँ कथाक पैमाना बिगड़ित; एतय “अधूरल हस्तान्तरण” अधिक सटीक अन्तिम वर्णन अछि।

उर्मिलाक परिवारक वृद्धा जखन खाली नामक स्थान देखैत छथि तँ ओ केवल मनोनुकूल लिखल नाम माँगि नहि रहल छथि; ओ पूछैत छथि जे कतेक दिन धरि श्रमिकक उपस्थिति अपूर्ण लिखल रहत। सरिता एतय दू प्रश्न अलग रखैत छथि : व्यक्तिक नामक सार्वजनिक स्मरण आ तकरा देल जाएबला अधूरल दाम। मौखिक

आश्वासनक बदलामे मूल पर्ची देखबाक अगिला तिथि एहि क्षणक कथात्मक परिणाम अछि। कथा उर्मिलाकेँ स्मारकक निष्क्रिय उपाधि बनएबाक पूर्वे परिवारक प्रश्न सुरक्षित करैत अछि।

बहु-परतवला अन्तिम दृश्य—घुरबाक तैयारी, साझा भोजन, रङक गन्ध, बच्चासभक दरबज्जा-चित्र, कारीगरक औजारक सूची आ कागद—महाप्रस्थानक पर्वक अन्तरिम समापनकेँ सामान्य काममे बिसर्जित करैत अछि। “कथा समाप्त”क अनुशासनसँ तुलना करब तँ ई सघन दृश्य-विलम्ब अछि : कर्मकारसभ अपन जीवनक आगामी समयमे प्रवेश करैत छथि, मुदा पाठकक हाथमे किछु काजक सूची रहि जाइत अछि। एहि क्रममे महाकाव्यक उत्तुंग आरोहणसँ आधुनिक दरबज्जाक नीचे उतरल कथन ऊँचाईक ह्रास नहि, दृष्टिकेन्द्रक परिवर्तन थिक।

स्वर्गारोहणिक-पर्व / उत्तरकाण्ड

अध्याय २०५ — स्वर्गक सूची

पीतलाक पट्टी आ नामक चयन

अध्याय हथौड़ीक चूकल चोटसँ खुलैत अछि। किशोर पीतलाक नाम-पट्टीपर कील ठोकए चाहैत अछि, सरिता ओकरा पहिने नाम पढ़बाक कहैत छथि; एक बेर उकेरल नाम सुधारेब कठिन। प्रस्तावित पहिल सूचीमे संस्थाक पदाधिकारीसभक सुन्दर अक्षर अछि, रातिक ढुलाई, गील बिछाओन उठाएब आ सफाइक श्रमक उल्लेख नहि। उपन्यास एतए स्मरणक राजनीतिकेँ अमूर्त विचार नहि, पट्टीक माप, अक्षरक ऊँचाइ आ उपलब्ध स्थानक विषय बनबैत अछि। नव समितिक युवती दू अलग प्रस्तावित सूची मूल रूपमे सुरक्षित रखैत छथि; अन्तरक उत्पत्ति छिपाबए नहि चाहैत।

उर्मिलाक बहिन कपड़ा-पंजी मे “बलिदानी” शब्दक आगाँ वास्तविक धुलाई, रातिक ड्यूटी आ बचल भाड़ाक स्थान पूछैत छथि। गोमती बहीक तीन रंग—काम, आंशिक प्राप्ति आ विवादित अतिरिक्त मद—पढ़ैत छथि; मुदा हुनक पढ़ाइ मृत्यु-कारणक प्रमाण नहि। पद्मा “जीवन आ श्रमक सत्यापित विवरण” तथा “दावा आ जाँचक वर्तमान स्थिति” अलग लिखैत छथि। एहि सँ कथा शोकक सांकेतिक श्रद्धाञ्जलिक बदला अद्यापि जीवित आर्थिक दायित्व देखबैत अछि।

बुधनक नामक पुनरागमन : सूचीक अनिश्चितता

शशिभूषण महापात्र “बुधन दास”क नाम देखिते अस्पतालक पहिल भ्रम मोन करैत छथि: एक देहक नाम बुधन दास वा बुधन साह, तकर पहिचान तखन पूर्ण नहि छल। ओहि समय कपड़ाक रसीदपर अनुमानित नाम जोड़बाक अस्वीकृति एखन पछिला घटनाक कारणमूलक प्रत्यागमन बनैत अछि। रमा चिकित्सा-सम्बन्धी मृत्युसूचना, देहक व्यक्तिगत पहिचान आ सार्वजनिक प्रकाशन-अनुमतिक तीन अलग प्रश्न रखैत छथि। ई पुनरागमन कथानकक एक पुरान विवादकेँ नव वस्तु—पीतलाक पट्टी—पर फेर सक्रिय करैत अछि, समाधानक झूठा आभास नहि दैत।

किशोरक प्रश्न—पट्टीपर नाम न चढ़लासँ कियो जीवित भऽ जाइत अछि की—विस्मरणक पीड़ा आ गलत नामक हानि एक संग देखबैत अछि। निर्णय भेल जे अपुष्ट व्यक्तिनाम ठोस पट्टीपर नहि जाएत; जाँचक क्रमांक

सार्वजनिक प्रगति-पञ्जीमे रहत, परिवारक निजी सामग्री सुरक्षित। पहिने छपल त्रुटिपूर्ण पन्ना नष्ट नहि; पुनरीक्षणक इतिहास सुरक्षित। एतए कथावाचक सुधारक प्रक्रियाकेँ कथानकक फल बनबैत छथि, मुदा मरल व्यक्तिक पहिचानक अन्तिम उत्तर नहि गढ़ैत।

प्राचीन स्वर्गक सूची : द्विकालीन कथनक ठोस सीमा

एकादश आ द्वादश पाठांशमे स्वर्गारोहणक प्राचीन दृश्य: युधिष्ठिर देवलोकमे दुर्योधनकेँ प्रतिष्ठित आसनपर देखैत छथि, मुदा अपन भाइसभ आ द्रौपदी नहि। महाकाव्यीय कथानकमे सम्मानक क्रम आ प्रियजनक अनुपस्थितिक अन्तर युधिष्ठिरक प्रश्न रचैत अछि। आधुनिक स्मारकक नामसँ विचारात्मक समानता देखल जा सकैत अछि, पर दुर्योधनक आसन नगरक सरकारी पञ्जी नहि; प्राचीन समयक नैतिक संकट अपने कथाविश्वमे स्थापित अछि।

दुनू समयक एकरे मुख्य बिन्दु “सूची पूर्ण अछि, तेँ प्रश्न नहि”क प्रतिरोध अछि। युधिष्ठिर अदृश्य प्रियजनक स्थितिक उत्तर चाहैत छथि; उर्मिलाक बहिन मृत श्रमिकक वास्तविक काज तथा बकायाक उत्तर। मुदा मृतक-पहिचानक वैज्ञानिक/प्रशासनिक जाँच आ देव-आलोकक कथानक यथार्थ भिन्न छथि। पद्माक लोकपाठमे प्राचीन कथाकेँ आधुनिक अभिलेखक सचोट साक्ष्य नहि बनाओल जाएत। ई अन्तर राखले द्विकालीन सम्पादन कलात्मक सिद्ध होइत अछि।

जीवित श्रमिकक पारिश्रमिक, शोक आ निजता

उमा कहैत छथि—ओ जीवित छथि, हुनका दिनक मजदूरी चाही, मृतक-सूचीक स्थान नहि। सोनमती बाँसक स्मारक-चौखटक लागत आ अपन समयक दाम माँगैत छथि। एक पुरुष सफाइकर्मीक नामे प्रतिनिधित्वक दावा करैत अछि; कमला पूछैत छथि जे ओ ककर स्वीकृति लेने अछि। नव समितिक लेखिका सत्यापित नाम लेल अलग व्यक्तिगत सहमति मँगबैत छथि। एतए अनेक स्वर एके “सहयोगी” सामूहिक पदमे समा नहि जाइत; प्रत्येक आवाज लेखनक नियम बदलैत अछि।

उर्मिलाक बहिन प्रकाशनक शर्त रखैत छथि जे निजी बीमारी आ अन्तिम क्षणक नाटक नहि छपय। कबीर आ सरिता नैराक निजी फोनक कथनकेँ प्रेरक घोषणा बनबाएब रोकैत छथि; माय होएब सम्पूर्ण निजी वाणीक मालिक होएब नहि। नीरज पंडा आ शशिभूषण कारीगरक दाम, परिवार-सहायता आ स्वैच्छिक शोक-अनुष्ठानक पारिश्रमिक अलग रखैत छथि। “गंगा”क पुरान यात्रा-नामसँ सभ मृतकक वास्तविक देह-परिवहन सिद्ध नहि होइत। एहि सूत्रसभमे शोकक वाचनाधिकारक अनेक सीमाबोध अछि।

सुधारल पट्टीक आन्तरिक अपूर्णता

अन्तिम व्यवस्थामे सत्यापित मृत्यु-पहिचान आ प्रकाशन-सहमतिक नाम एक तहमे; जीवित-मृत श्रमिकक कामक अलग विवरण दोसर तहमे; विवादित पहिचान आ रकमक जाँच तेसर संरक्षित तहमे रहैत अछि। पदाधिकारीक अनुदान-श्रेय अलग फलकपर। पहिल पीतलाक पट्टीपर नामक बनिस्पत स्मारकक प्रयोजन आ जाँचक तिथि ठोकल जाइत अछि। यांत्रिक अन्तिमता सँ संशोध्य सार्वजनिक कथा धरि एतबा परिवर्तन वास्तविक घटना अछि।

परन्तु उर्मिलाक शेष रातिक देय आज नहि चुकल; सुनवाईक तिथि मात्र निश्चित अछि। बुधनक पहिचान अपर्याप्त, नैराक अनुपस्थिति अकाट्य। कबीरक एक क्षणक कल्पना जे नैरा नाम पढ़ि लेतीह, सरिताक उत्तरसँ अलग वास्तविक शोक पबैत अछि। एहि सूक्ष्म दुःख आ सामूहिक खिचड़ीक थारीवाला मानवीय विरामक बिनु अध्याय आदर्श स्मारक-समितिक रिपोर्ट भऽ सकैत छल। उपदेशात्मक समान स्वरक जोखिम रहितो अपूर्ण परिणाम कथा-समाप्तिक कृत्रिम सुखक प्रतिरोध करैत अछि।

उकेरल अक्षरक कठोरता आ सुधरि सकनिहार कागद

पीतलाक पट्टीमे पहिल कील चूकब एक अर्थपूर्ण आकस्मिक घटना अछि : स्मरणक औपचारिक भव्यता सामग्रीक साधारण प्रतिरोधसँ शुरू होइत अछि। पत्थर पर एक बेर उकेरल नाम फेर बदलब कठिन, मुदा परिवारक कथन, चिकित्सकीय मृत्यु-विवरण आ प्रकाशनक सहमतिक रूप भिन्न होइत अछि। रमा तीन खाली पन्ना मेजपर रखैत छथि; शशिभूषण पुरान सामग्री-रसीदक अपुष्ट “बुधन” नाम पुनः सुनबैत छथि। ई दृश्य कथामे गलत स्मृति स्थायी भऽ जाएबाक ठोस जोखिम उपस्थित करैत अछि। नाम रोकि देल गेल, मुदा कोनो व्यक्तिक मृत्यु झुठलाओल नहि गेल।

अन्तमे पहिल पट्टीपर संस्थाक पदाधिकार-क्रमक बदलामे स्मारकक प्रयोजन आ जाँचक तिथि उकेरल जाइत अछि; सत्यापित नामक अलग पट्टी परिवारक स्वीकृतिसँ लगैत अछि। ई विन्यासक परिवर्तन कथा-शिल्पक भीतर सेहो अर्थ बदलैत अछि। एक स्थिर “अन्तिम सूची”क बदला सुधारक तिथि, खुलल प्रश्न आ सुरक्षित बन्द पन्ना मिलि कथानकक बहुस्तरीय स्मृति बनबैत अछि। उर्मिलाक परिवारकेँ सुनवाईक समय भेटल, मुदा पूरा देय नहि। पित्तरि जकाँ चमकैत वस्तु एहि अपूर्णताकेँ भुलाबयक साधन नहि बनि सकल।

स्वर्गक दृश्यपर फोकलाइजेशन : उपस्थितिक अर्थ

प्राचीन खण्डमे युधिष्ठिर दुर्योधनक स्वर्गीय प्रतिष्ठा देखैत छथि, मुदा भाइसभ आ द्रौपदीक अनुपस्थिति हुनकर अनुभवक केन्द्रमे अछि। कथक ई नहि कहैत जे समस्त देवलोकक न्यायव्यवस्था युधिष्ठिरक दृष्टिसँ पूर्णतया समझि लेल गेल; ओ पाठककेँ युधिष्ठिरक आश्चर्य आ प्रश्नक भीतर रखैत अछि। दृश्य-सूची आ अनुभव-स्मृतिक बीच ई दूरी आधुनिक पट्टीक नामविवादसँ प्रतिध्वनित भऽ सकैत अछि, मुदा स्वर्गक पुराणकथाकेँ कार्यालयी अभिलेखक रूपक मात्र बनाकऽ खाली कएल नहि जा सकैत। प्राचीन कथाधारा अपन धार्मिक कल्पना आ पात्रक आघातक संग अलग स्तरमे उपस्थित अछि।

उमा आ कमला जखन श्रमिक-पञ्जी सँ प्रश्न उठबैत छथि, तखन मृतक आ जीवित श्रमिककेँ एके नामावलीमे जोड़बाक प्रस्ताव हटैत अछि। उर्मिलाक “बलिदानी” उपाधि जँ धुलाई, रातिक ड्यूटी आ सामान उठएबाक श्रम झाँपि देत, तँ स्मारक कथा जीवनक अधिकांश समय खो देत। नैराक नामसँ निजी फोनक वाक्य लेने नब “सन्देश” बनायबाक विरोध एहि समस्यानिकट अछि। शोकक जन-प्रकाशन आ निजी मनक अधिकार एक नहि; कथामे प्रतीकक सार्वजनिक रचना ओकर स्रोत-पात्रक अनुत्तरित मौनसँ प्रतिरोध पबैत अछि।

अध्याय २०६ — उत्तरा आ परीक्षित

जीवित लोक लेल एखन की : प्रश्नक स्थान

पिछला अध्यायक स्मारकक सूची सुधरला बाद एक बालिका लिखैत अछि—“जीवित लोक लेल एखन की?” नव पन्नाक कील ढीला अछि; रुहानी बालककेँ सुरक्षित ऊँचाइपर सहयोग करबाक सीमा दैत छथि। कथाक आरम्भ एहि छोट दृश्यसँ मृतकक स्मरणक दायरा छोरि बाँचल व्यक्तिक चिन्ता सोझाँ रखैत अछि। हथौड़ीक ध्वनिसँ डरनिहार बच्चा, पानीमे भीजल कापी आ अनिच्छुक कथनक अलग स्थिति मिलि पीड़ित बालमनक एकरे उदाहरण बनबए नहि दैत।

संकटग्रस्त बच्चासभक नाम आ फोटो दानदाताकेँ देखबए लेल प्रदर्शित करबाक प्रस्ताव सरिता ठुकरबैत छथि। रुहानी खेलक आ चित्रक अलग चटाइ बिछबैत छथि; कियो बोली सँ, कियो रंग सँ, कियो मौन सँ उपस्थित भऽ सकैत अछि। एक शिक्षक “दुःख कहबाक अभ्यास”क तात्कालिकता चाहैत छथि, रुहानी सभ गप्प आइ कहबाक बाध्यता पर प्रश्न उठबैत छथि। कथात्मक दृष्टिकेन्द्र बालकक अपन समयक मर्यादा देखबैत अछि, नायकक उद्धारक भाषण नहि।

उत्तराक निकट दृष्टिकेन्द्र : शिशुक साँस बनाम वंशक भविष्य

प्राचीन समयक पाठांश ७–१२ मे अभिमन्युक मृत्यु आ परीक्षितक बचबाक महाकाव्यीय कथानक उत्तराक देहगत भय सँ फेर पढ़ल जाइत अछि। ब्रह्मास्त्र सँ संकटग्रस्त गर्भक रक्षाक प्रसंगक बाद उत्तरा शिशुक नाक लग हथेली राखि साँस सुनैत छथि। महलक लोक “कुरुवंशक बचल दीप” कहैत अछि; उत्तरा बालककेँ गरम राखब, दर्शकक भीड़ सीमित करब आ नींदक घड़ी बचेब चाहैत छथि। वर्तमान मातृत्वक नजदीक दृश्य प्राचीन वंशरक्षक अलंकारकेँ अनिश्चित जीवित समयमे बदलबैत अछि।

सुभद्रा वीर अभिमन्युकेँ केवल रणक मृत प्रतीक बनबाएब नहि चाहैत छथि; हुनकर बाल्यक भूख, खेल आ धूलि स्मरण करैत छथि। पैघ भेल परीक्षित टूटल माटिक धनुषक बहाने सम्पूर्ण सुधारक दायित्व पुछैत छथि; उत्तरा जतेक सँभव ततेक सुधार करबाक, सभक शोक एक हाथमे नहि लेबाक उत्तर दैत छथि। बादक पुरान दृश्य पाठांश २५–२६ मे प्रहरीक काँपैत हाथ आ विश्रामक विनती राजकुमारकेँ दूसराक “एखन नहि” सुनबाक सीख देत अछि। ई प्राचीन प्रसंग आधुनिक बालकक प्रत्यक्ष जीवन नहि, दोसर कालक कथात्मक प्रश्न अछि।

बालकक सुरक्षा : वैधानिक मद सँ भौतिक बाट धरि

आश्रयक बच्चा खाँसि उठैत अछि; रुखसाना धूलि सँ ओकरा दूर रखैत छथि, लकड़ी घिसबाक काज बाहर करबबैत छथि। कर्मचारी सुविधा लेल रोगक कारण कागदमे लिखबाक कहैत अछि, मुदा ओ केवल देखल धूलि दर्ज करैत छथि, रोगक कारण चिकित्सकक जाँचपर छोड़ैत छथि। मायकेँ अगिला बेर सुरक्षित निकासक स्पष्ट बाट चाही। परित्यक्त बेञ्च हटैत अछि, अस्थायी खड़ञ्जाक समय ठहरैत अछि, पक्का मरम्मति पर राशि अनिर्णीत अछि। एहि क्रियासँ बालसुरक्षा केवल भावना नहि, दृश्य-संरचनात्मक प्रश्न बनैत अछि।

पाठशालाक दू तख्ती—सुरक्षित पानि, निकास आ देखभालक समयक सार्वजनिक सूचना; दोसर बच्चासभक स्वेच्छाक प्रश्न—दर्शकक जानकारी आ व्यक्तिगत निजता अलग करैत अछि। बालिका अपन बनाओल किवाड़क चित्र राखए चाहैत अछि, मुखक फोटो नहि। हर भयक कथा प्रकाशन-योग्य नहि होइत। तइयो ई प्रक्रिया पात्रसभ अत्यन्त सटीक भाषा मे परिभाषित करैत छथि; साहित्यिक जोखिम ई जे व्यक्तिगत त्रासक असंगत अनुभूति आदर्श दिशानिर्देशक रूपमे संकुचित भऽ जाए।

स्वैच्छिक श्रद्धा, नव श्रम आ उर्मिलाक अलग बकाया

नीरज पंडा बचल बालक लेल अनुष्ठान करबए चाहनिहार परिवारक स्वेच्छा स्वीकार करैत छथि, मुदा ओकरा साझा राहत-खातासँ दानदाता-निर्धारित खर्च बनबाएब अस्वीकार करैत छथि। श्रद्धा, पारिश्रमिक आ भोजन-छतक सहायता तीन भिन्न काम छथि। एक वृद्धा श्रद्धाकेँ अपमानित नहि करबाक आग्रह करैत छथि, दोसर परिवार अनुष्ठानमे भाग नहि लेबाक निर्णय लैत अछि। दूनू परिवार सामान्य नलसँ पानि भरैत रहैत अछि। ई छोटी समान समयक क्रिया सहअस्तित्वक कलात्मक आधार अछि।

उर्मिलाक बहिन पुछैत छथि—एखन नब बच्चासभक कपड़ा के धोअत? गोमती नव धुलाई आ बाल-देखभालक समय-पत्र बनबैत छथि; एक सदस्यक “घरक स्वाभाविक काज” तर्कपर स्त्री अपन दोकानक घड़ी त्यागबाक बात रखैत छथि। उपन्यास ई त्यागकेँ बिना जाँच अनुमानित कमाइ नहि बनबैत; वास्तविक काम लेल तय दर चाहैत अछि। उर्मिलाक मृत्युक पूर्वक बकाया आ आजुक नव श्रम अलग रहैत अछि। एहि भेदक बिना मृतकक स्मृति दोसर स्त्रीक अनभुगतान श्रम पर ठाढ़ होइत।

माटिक घोड़ा, दोहरल प्रश्न आ अधूर कल्हि

बालकक माटिक घोड़ा टूटि जाइत अछि, जावेद मरम्मति आ कल्पनात्मक खेलक विकल्प दैत छथि। बच्चाक हँसी भयक अस्थायी अवकाश बनबैत अछि, सामाजिक क्षतिक क्षमादान नहि। कबीर नैराक निजी अनपठाओल चिट्ठी नहि खोलैत; ओ मृतकक अनुपस्थिति बच्चे-कथा पर चिपकाबए नहि चाहैत छथि। सरितो रंगवला किवाड़केँ अपन बेटीक मृत्यु-प्रतीक बनबाएब सँ बचैत छथि। एहि दृश्यसभमे कथक वयस्कक शोक आ बालकक अलग जीवनक बीच विराम बचा पबैत छथि।

अन्तिम किशोर पुछैत अछि—“बचल लोक ककर गलतीक बदलामे जीअय?” पद्मा जवाब नहि देत, अगिला पाठ लेल प्रश्न राखैत छथि। ई अस्पष्टता कलात्मक अछि, कारण प्राचीन परीक्षितक भविष्य राजवंशक पुनरुत्पादनमे सीमित नहि, आ वर्तमान बालक पर पुरान दुर्घटनाक समस्त ऋण नहि लादल जाइत। दिनक परिणतिमे सुरक्षित बाट खुलल, नियमित निधि एखन अधूर, आश्रयक डर पूरा समाप्त नहि। कथानक शोकक बदलामे खेल-सम्भावना दैत अछि, निश्चित मुक्तिक घोषणा नहि।

शिशुक साँस आ भविष्यक भार : उत्तराक अन्तर्गति

अभिमन्युक मृत्यु आ ब्रह्मास्त्रक स्मृतिक बीच उत्तरा शिशुक नाक लग अँगुरी धरि साँस अनुभव करैत छथि। इष्ट वंशक रक्षक रूपमे परीक्षितक घोषणा आरम्भसँ चलैत अछि, मुदा माइक तात्कालिक प्रश्न कपड़ा, नींद, भूख आ

भय अछि। महाकाव्यक राजनीतिक काल आ प्रसूतिक सूक्ष्म समय एहिठाम समान वेगसँ नहि चलैत। सुभद्रा अभिमन्युकेँ “वीरक प्रतीक” बनेबाक स्मृतिक विरोध करैत छथि—जीवित बेटाक भूख आ दौड़ब विसरि जायब तँ मृत्यु सँ पहिने ओकर जीवनहिक लोप होएत। एहि भावनात्मक विचारकेँ कथक उत्तराक शरीरक अनुभवसँ अलग उपदेश मात्र नहि बनबैत।

परीक्षितक छोट धनुष टूटलापर उत्तरा “राजा बनब तँ सभ ठीक करबाक पड़त?” प्रश्नक उत्तर असम्भव सर्व-संशोधनक वचनसँ नहि दैत छथि। समयक छलाँग—शिशुसँ खेलनिहार बालक धरि—भविष्यक परम्परा बुझबैत अछि, मुदा पूरा जीवनचरितक नाटकीय सम्पूर्णता नहि दैत। सैनिकक काँपैत हाथ देखनिहार परीक्षितकेँ पहिने सैनिकसँ पूछबाक शिक्षा देल जाइत अछि; ओ विश्राम चाहैत अछि। राजा होएबाक पहचानक पूर्वे “एखन नहि” सुनबाक ई छोट दृश्य पात्रक मनुष्य रूप निर्माण करैत अछि।

बालकक प्रश्न, तख्ती आ दृश्य-गतिक अधिकार

समकालीन विद्यालयमे धूलिक कारण बच्चाक खाँसी उठब, चिकित्सकीय कारणक अनुमान रोकब, आ बेंच हटाकऽ सुरक्षित निकास खोलब—ई सभ घटना बाँचल लोकक भविष्यक प्रश्नकेँ आजक देहगत जोखिममे अनैत अछि। खड़ञ्जाक पक्का मरम्मत एखन स्वीकृत नहि, अतः सुरक्षित मार्गक अस्थायी खुलबकेँ स्थायी आधारभूत सुविधा बनल कहब असिद्ध। माय अपन भयक अन्त चाहैत नहि, अगिला बेर धूलि उठत तँ निकास कतय रहत से जानब चाहैत छथि। कथन भावक नकारक बजाय परिस्थितिक क्रियात्मक पुनर्गठन प्रस्तुत करैत अछि।

बालिका अपन फोटो नै, रंगल किवाड़क चित्र सार्वजनिक तख्तीपर राखय चाहैत अछि। एहिसँ कथा बालसाक्षीक उपस्थिति आ दृश्य-प्रकाशनक अधिकार अलग करैत अछि। माटिक छोट घोड़ा टूटलापर जावेद ओकरा नाटकक शक्ल दैत छथि; हँसी क्षणिक अछि, बालकक चोटक भाव मनसँ हटाएबक आदेश नहि। सरिताक नैरासम्बन्धी पीड़ा ओकर चित्रपर आरोपित नहि होइत। एक बच्चाक चित्र, दोहरल प्रश्न आ राति उबलैत भात—ई प्रतिमासभ किसी अति-साधारण “भविष्य उज्ज्वल” निष्कर्षक बदला प्रश्न स्वीकार करबाक सामुदायिक जीवन देखबैत अछि।

अध्याय २०७ — जनमेजयक प्रश्न

आकस्मिक हँसी आ कथामे प्रवेशक अनिश्चित ध्वनि

खुलल पाठशालाक मेजक ध्वनि-यन्त्रसँ अचानक स्त्रीक हँसी बजैत अछि; कार्यक्रमक पुरान अपूर्ण सूचीक कारण बटनक स्थिति स्पष्ट नहि। कथा एहन अस्थिर ध्वनि सँ आरम्भ होइत अछि जेकर वास्तविक स्रोत पहिने जाँचबाक अछि। किशोरक पछिला प्रश्न “बचल लोक ककर गलतीक बदलामे जीअय?” तख्तीपर एखनहुँ रहैत अछि। ध्वनि-पाठ, अनाम आवाज आ प्रश्नक बीच आरम्भिक तनाव कथनक विश्वसनीयता तथा सुननिहारक अधिकारक मुद्दाकेँ नाटकीय वस्तु दैत अछि।

रशीद भाटक कापीमे दादीक सिखाओल चारि पाँति आ पुलिया टूटलाक बाद स्वयं रचल तीन पाँति अलग रंगमे अछि। देव गाइने सारङ्गीक टुटल तार सहेजैत छथि, भतीजी रागिनी अपन वादनक अधिकार प्रश्न करैत छथि। किछु मौखिक पाँति जुड़ैत अछि, मुदा ओकर श्रेय एके पुरातन लोकगीतक नामे मेटब उचित नहि। ध्वनिक पारिवारिक हस्तान्तरण आ कलाकारक नवीन रचना कथा भीतर समान समयरेखा नहि।

जनमेजयक सभा : शोकसँ प्रतिशोधक विस्तार

छठम पाठांशमे परीक्षितक मृत्यु-पछिला हस्तिनापुरक राजसभा अबैत अछि। जनमेजय पिताक तक्षकदंशक घटना सुनैत छथि; पिताक संग बिताओल दिनक निजी शोक राज्यसत्ताक सार्वजनिक प्रतिशोधक भाषा ग्रहण करैत अछि। वृद्धक प्रश्न—दण्डक परिधि ककरा धरि फैलत—राष्ट्रक अथवा धर्मक सहज नीति-वचन नहि, राजाक निर्णयक भविष्यगत जोखिम बनैत अछि। यज्ञक प्रस्तावक समय कथा राजाक रोषक संग विरोधी सुनवाई रखैत अछि।

कथा-क्रम यज्ञक आरम्भ, सर्पसभक अग्निमे पड़ब, तक्षककेँ खींचबाक प्रयास आ आस्तीकक प्रवेश धरि जायैत अछि। आस्तीक यज्ञ रोकबाक वर माँगैत छथि; जनमेजय हिंसा रोकैत छथि, किन्तु पूर्वमे झोंकल जीव वापस नहि होइत। एहि अन्तक महत्त्व “न्याय पूर्ण”क दैवी सुखान्त नहि; विनाशक चाल रोकब आ विनष्टक अपरिवर्तनीयता एकसाथ स्वीकारब अछि। पात्रक नैतिक निर्णय परिणतिक अनिवार्य क्षतिक मध्य घटैत अछि।

श्रोता-किशोरक व्यवधान आ द्विकालीन कटाव

आधुनिक पाठशालाक किशोरी पूछैत छथि जे सभ सर्प मारला सँ पिता घुरि आएत की। युवक राजाक प्रतिशोधक भाषा समर्थन करैत अछि; पद्मा कथा बीचमे रोकि प्रश्न लिखैत छथि। प्राचीन यज्ञक घटनासँ आधुनिक कक्षाक कटाव बारंबार होइत अछि, मुदा पाठशालाक श्रोता जनमेजयक राजसभाक अन्तःसाक्षी नहि बनैत छथि। ओ सभ कथा सुनि प्रश्न करैत छथि; कथाक भीतर श्रवण-स्तर आ घटनास्तर अलग रहैत अछि।

कबीरक नैराक फोन आ अनपठाओल चिट्ठीक स्मृति एहि सुनबाक समय चुपचाप उठैत अछि। ओ मृतकक अन्तिम रहस्य खोलि प्रश्नक उत्तर दएबाक प्रयत्न नहि करैत छथि। महाकाव्यक प्रतिशोध विरुद्ध हुनकर निजी शोकक विरोध रचनात्मक रूपसँ बनैत अछि, किन्तु कबीर जनमेजयक नैतिक प्रतिनिधि अथवा प्रत्यक्ष समकक्ष नहि। किशोरीक पछिला प्रश्न—जकर कथा सुनल जाए, ओ बीचमे रोकि पुछि सकैत अछि की—अध्यायक भविष्यक वाचन-विवाद खोलैत अछि।

गानक दाम : कथावाचनक जीविकात्मक आधार

रशीदक पछिला फागुनक गायन आ संगतकारक अलग बकाया अछि। नव कार्यक्रम-प्रबन्धक पुरान आवाजसहित नब पाठ ऑनलाइन राखबाक जल्दी चाहैत छथि। रशीद व्यक्तिगत उपकारक नगद नहि, आयोजनक आधिकारिक प्राप्ति चाहैत छथि; देव एक बेरक गायन, विद्यालयमे सुनब आ सार्वजनिक पुनःप्रसारण लेल अलग स्वीकृति रखैत छथि। जीविकाक ई हस्तक्षेप महाकाव्यक श्रुति-परम्परा पर आकर्षक भाषणक वास्तविक मूल्य खोलैत अछि।

गायनक पाठमे चारि पुरान आ तीन नव पाँतिक श्रेय जँ मिलि जाए तँ ककरो बनाओल श्रम लुप्त हएत। कार्यक्रमपछाति दू रसीदक प्राप्ति देखल जाइत अछि, पुनःउपयोगक दर पहिने सँ लिखल रहैत अछि; मुदा पिछला गलत उपयोगक पूरा हिसाब एखन बाकी। “लोक-संस्कृति बचल”क एक घोषणासँ रंगमंचक आर्थिक अनुक्रम पूरा नहि होइत। रशीदक आवाजमे पुलिया टूटबाक धूलि लेखकीय रचना आ व्यक्तिगत स्मृतिक संग रहैत अछि।

ध्वनि-सम्पादन, श्रवणाधिकार आ सीमा

नव रेकॉर्डिंगक पहिल प्रति कलाकारसभ सुनैत छथि; एक ठाम देवक वादनक बीच मोबाइलक सूचना-धुन घुसि गेल अछि। छोट तकनीकी घटना विशाल पूर्वपरम्पराक कथानकेँ आजुक ध्वनि-फाइलक सम्पादन-नियमसँ जोड़ैत अछि, मुदा एकरा तकनीकी सुधार मात्र कहब कम हएत। गानक ध्वनि, कलाकारक पहिचान, शुल्क आ अनुमतिक भविष्य एके फाइलमे एकरूपेँ नहि ठहरैत।

रशीद–देव–चेतनक प्रसंगमे कथा-स्रोत, मौखिक परिवर्धन आ आर्थिकी तीनो स्तर खुलैत अछि। सीमा ई जे पद्मा आ प्रमुख पात्र बहुधा एकदम संतुलित तर्क दैत छथि, जाहिसँ राजाक हिंस्र आवेगक तुलनामे आधुनिक वादविवाद बड़ व्यवस्थित लगैत अछि। मुदा किशोर-प्रश्नक व्यवधान, रेकॉर्डिंगक आकस्मिक आवाज, कलाकारक अपूर्ण पिछला भुगतान आ राजाक अपरिवर्तनीय हिंसा एहन व्यवस्था तोड़ि दैत अछि।

अन्तःकथा, विराम आ श्रोताक प्रतिप्रश्न

जनमेजयक सर्पयज्ञक प्राचीन कथामे पिताक मृत्यु सँ उपजल शोक आगिक सार्वत्रिक दण्डमे परिणत होइत अछि। पाठशालामे पद्माक वाचन ई इतिहास-काल सीधा पुनर्जीवित नहि करैत; ओ वर्तमान श्रोताक समयमे पुनः कथित कथा अछि। किशोरी जखन पूछैत अछि जे सभ सर्प मारलासँ राजाकेँ पिता घुरि भेटताह कि नहि, तखन पाठ बीचमे रुकैत अछि। एतय विराम कथा सुनबाक असफलता नहि, कथावस्तुपर श्रोताक नवा नियन्त्रण अछि। आस्तीक द्वारा यज्ञ रोकब अगिला परिवर्तन अछि, पिछला मरल सर्पक जीवन घुरबाक काल्पनिक उपाय नहि।

कथा-संरचनाक दू तह स्पष्ट राखब आवश्यक अछि : जनमेजयक शोक आ आदेश प्राचीन कथाजगतक घटनाक्रम; पद्माक समकालीन वाचन, बालकक प्रश्न आ रिकॉर्डिङ-सम्पादन आधुनिक घटनाक्रम। पाठक एके घटनाकेँ दू कालमे “फेर घटैत” नहि देखैत, बल्कि पुनःकथनद्वारा बदलैत ग्रहण अनुभव करैत अछि। रशीदक पारिवारिक हँसी आकस्मिक बजि उठब सेहो एहि कथन-स्तरमे तेसर स्वरक अनधिकार प्रवेश अछि। महाकाव्यक प्रतिशोध आ आजुक प्रसारणक सहमति समान अन्याय नहि, मुदा दूनू प्रसंगमे ‘ककर निर्णय ककरा पर लागू?’ प्रश्न अलग रूपेँ उठैत अछि।

गानक सात पाँति : विरासत आ मौलिकताक श्रम-रचना

रशीदक कापीमे दादीसँ भेटल चारि पाँति आ पुलिया टूटलापर स्वयं रचल तीन पाँति अलग स्याहीमे अछि। ई विवरण गीतकेँ एक असीम, अनाम “लोकस्वर” कहि समेटबाक प्रतिरोध करैत अछि। पुरान धुन, नव अनुभव, वादकक सारङ्गी आ मोबाइलमे घूमैत काटल अंश चारि अलग सम्पादन-स्रोत बनबैत अछि। रशीदक आजुक

मजदूरीक रसीद प्राप्त भेल, मुदा फागुनक पुरान देय एखन बाकी; नाम ठीक लिखि देब दरिद्र कलाकारक पारिश्रमिकक विकल्प नहि। ध्वनिक सौन्दर्यक संग तकर आर्थिक निर्माण-सम्बन्ध पाठमे खुलैत अछि।

साँझ संपादित ध्वनिपाठ कलाकारसभकेँ फेर सुना कऽ रशीद, देव आ संकेत अलग भिन्नता चिन्हैत छथि। एक जगह पुरान मोबाइलक सूचना-धुन समा गेल छल; देव ओकरा आजुक वादनक अंश स्वीकार नहि करैत। श्रोता-पाठशाला, अध्ययन लेल पुनःश्रवण, सार्वजनिक प्रसार आ विज्ञापन चारि उपयोग अलग स्वीकृत होइत अछि। ई तकनीकी विभाजन शिल्पगत सेहो अछि : रिकॉर्डिङक दिखाइत अखण्डता सम्पादनद्वारा बनैत अछि, जकर कण्ठ आ तार वैयक्तिक श्रम अछि। अध्याय अनधिकृत पुरान प्रसारक स्रोत आखिरी धरि अनिश्चित राखैत अछि, तेँ उपलब्धि सावधान नव प्रसारणक शुरुआत मात्र।

अध्याय २०८ — उग्रश्रवाक श्रोता

दागल पन्ना : वंशगान आ इतिहासक अलग कथन

चेतन भटक पोथीक दू पन्नामे पियर घी-दाग आ नील पसरल स्याही अछि। एक पन्ना पुरान अनुष्ठानक गाओल वंश-पंक्ति, दोसर बहुत बादक निमन्त्रणक प्रति; चेतन अपन गायनमे एहि दू रिक्त बिन्दुक बीच वंशक सीढ़ी बना देने छलाह। ई स्वीकारोक्ति कोनो बहिरंग नैतिक पराजय नहि, रोजीक अर्जित स्वर आ आत्मसुधारक कठिन भेट अछि। पोथीक भौतिक परत कथा-सूत्रक गलत जोड़ देखबैत अछि।

एक घरक प्रतिनिधि अपन पुरखाक सम्मान घटबाक भय व्यक्त करैत छथि। चेतन गीत हटेबाक नहि, गानपर चढ़ाओल निश्चित वंश-दाबी हटेबाक बात करैत छथि। वृद्धा दादीक स्मृतिक महत्त्व राखैत छथि, मुदा ओ लोकगीतकेँ सरकारी इतिहासक मुहर नहि बनबैत। ओहि विवादसँ “स्मृति बनाम इतिहास”क सरलीकृत लक्षण नहि, इतिहास बनि जएबाक विवेकहीन घोषणाक सामाजिक लागत खुलैत अछि।

नैमिषारण्यक वाचन : कथकक अधिकार श्रोता सँ बदलैत अछि

पाँचम पाठांशमे शौनकक दीर्घ यज्ञक नैमिषारण्य अबैत अछि। उग्रश्रवा सौति अपन पिता लोमहर्षणक परम्परा आ जनमेजयक सर्पयज्ञमे वैशम्पायनसँ सुनल कथाक श्रृंखला बतबैत छथि। ई स्तरित श्रुति-व्यवस्था स्पष्ट वाचन-फ्रेम अछि : वैशम्पायनक पूर्ववाचन, उग्रश्रवाक स्मरण, शौनकक सभा आ वर्तमान पाठक—एके आख्यानक अलग स्थानिक तथा कथनात्मक स्तर। उग्रश्रवा सुनल आ नहि जनल बातक सीमा स्वयं कहैत छथि।

एक परिचारक केवल तपस्वीसभक प्रश्नक अधिकार मानैत अछि; पानि अननिहारी स्त्री आ काठ जुटौनिहार युवकक उपस्थितिमे शौनक वाचनक पहुँचक प्रश्न खोलैत छथि। उग्रश्रवा आसन हटाकऽ प्रश्नक ठाम दैत छथि। स्त्री राजकुलक कथा भीतर अनाम श्रमिकक अनुपस्थिति पूछैत छथि। ई केवल “सभक लोकशाही अधिकार”क आधुनिक घोषणाक आरोपण नहि; कथनमे ककर श्रवण आ प्रश्न प्रवेश पाबैत अछि, तकर वाचन-फ्रेमक सक्रिय पुनर्रचना अछि।

सर्पयज्ञक अपूर्ण स्मृति आ दोसर स्रोतक प्रवेश

शौनकक प्रश्नपर उग्रश्रवा परीक्षितक मृत्युसँ जनमेजयक यज्ञ आ आस्तीकद्वारा रोकल गेल हिंसा सुनबैत छथि; युवक पुछैत अछि जे मरि चुकल जीवसभक कोन कथा? वाचक साफ रखैत छथि जे यज्ञ रुकल, मरल जीव घुरि नहि आएल। एतए घटना-समापन आ जीवनक पुनःप्राप्ति बीच अन्तर अछि, जे पिछला अध्यायक नैतिक गति संग कथात्मक संवाद करैत अछि।

दोसर कुलक श्रोता भिन्न स्मृति लऽ अबैत छथि; परिचारक अनुक्रम टूटबाक भय कहैत अछि। उग्रश्रवा विरोधी स्रोतक उल्लेख स्वीकारैत छथि, अपने वाचनक धागा फेर पकड़बाक दायित्व लैत छथि। शौनकक वनमे पानि अननिहारी स्त्री युद्धक पछिला खेतक दिनचर्याक अभाव पूछैत छथि; वाचक जे नहि सुनल, ओकरा पिताक नामपर बेचब अस्वीकार करैत छथि। एहि असहमतिपूर्ण पुनरावृत्तिसँ आख्यानक अधिकारक केन्द्र क्रमशः वाचकसँ श्रोताक सहभागिता दिस सरकैत अछि।

साजिदक कैमरा : वाचनाधिकारक नब माध्यम

वर्तमान विदेहपुरमे साजिद नट नव वयस्क कलाकारक छाया-अभिनयक सीमित अंश देखबैत अछि। तीन बरख पुरान विद्यालयक भिडियो काटि बच्चा चोरबाक गलत आरोप पसरल छल, किन्तु नव अभिनयमे ओ पुरान दृश्य प्रयोग नहि। एक बाँसक चौखट, कपड़ाक पर्दा आ बूढ़ हाथीक कठपुतरी कथा भीतर महत्त्वपूर्ण—जीवित पशुक प्रदर्शन नहि। साजिद मूल रेकॉर्डिंगक स्वामित्व, अभिनय करनिहारक श्रेय आ पुनरुपयोगक शर्त अलग रखैत अछि।

निर्धारित आयक एकदम ठोस दृश्य अछि : बारह सय रुपैयाक कार्यक्रम-प्राप्ति, सत्यापित दू सय खर्चक बाद एक हजारक विभाजन—पाँच सय साजिद, तीन सय दुनू अभिनेताक डेढ़-डेढ़ सय, दू सय चौखट-बजौनिहार। रकम नहि अएल तँ एकतरफा कटौती नहि। साँझ बारह सयक प्राप्ति पुष्टि आ कलाकारसभक भुगतान-प्राप्ति लिखल जाइत अछि। “कलाकारकेँ आवाज” कहि सारांश बना दएबासँ ई वस्तुगत श्रम-व्यवस्था लुप्त हएत।

दुर्गाक गीत, चेतनक सुधार आ अपूर्ण विवाद

दुर्गा दनुवारक गीत-कापीमे “लखनदेइ” नाम अछि; पुरान टिप्पणी लोकनाम, काव्यपद आ स्थल-मापनक भेद रखैत अछि। दुर्गा अपन गायनक श्रेय स्वीकारैत छथि, मुदा नाम देखिते कोनो निश्चित भौगोलिक माप घोषित कएल नहि जाए। एहि अलग उपकथासँ वंशक मौखिक कड़ी जेकाँ लोकगीतक ध्वनि सेहो स्वतः अन्तिम स्थल-सत्य नहि बनबैत। काव्य-श्रवणक स्वतन्त्र महत्त्व बचैत अछि।

चेतन गलत वंशदाबी हटेबाक पर्ची स्वयं दैत छथि, परिवारक मूल निजी सामग्री उपयोगक अनुमति अलग रहैत अछि। ओ नव गीत गाबबाक वेला आगाँ सारैत छथि ताकि संशोधित प्रति पहिने परिवार पढ़य। अधेड़ पुरुष एखन पूर्ण सन्तुष्ट नहि; चेतनक आगामी कमाइक संशय सेहो अवशिष्ट। साजिदक पहिल उचित भुगतान पुरान वायरल आरोपक पूरा क्षति-पूरण नहि। ई अपूर्णता उपन्यासकेँ सुधारक अति-आशावादी अन्तिम दृश्यसँ रोकेल अछि।

बच्चाक रथ, आगूक रामकथा आ अन्तरिम निष्कर्ष

पाठशालाक बाहर बच्चा काठक रथ घुमबैत अछि; एक नेतृत्व करैत अछि, दोसर पुछैत अछि जे ओकरा किएक नहि पूछल गेल। बाँसक दू पातर रस्सी जोड़ि रथक मोड़ दूनू हाथपर निर्भर होइत अछि। पद्मा एहि खेलकेँ प्राचीन आख्यानक अभिलेखीय प्रमाण नहि लिखैत छथि। नाटक, खेल आ इतिहासक अलग स्रोतत्व सुरक्षित रखैत एहि दृश्यसँ कथनाधिकारक प्रश्न बाल-क्रियामे प्रवेश करैत अछि।

अन्ते अगिला दिन लव–कुश द्वारा रामक दरबारमे कथावाचनक तैयारी अछि; एक युवती प्रश्न करैत छथि जे राजा अपन कथा सुनिकऽ वाचककेँ बीचमे टोकबाक अधिकार देताह की। शौनकक श्रोता, चेतनक गलत दावा-संशोधन आ साजिदक कैमरा एके साक्ष्य नहि, मुदा कथात्मक अधिकारक भिन्न स्थल छथि। एहि अध्यायक सौन्दर्य ई जे श्रुति-परम्परा, कागद, कैमरा आ बाल-खेलकेँ एकल सत्यक सूत्रमे बाँधल नहि; श्रोता-दृश्य क्रमशः वाचनकेँ पुनर्लिखबाक सम्भावना उघारैत अछि।

वक्ता-श्रोता-पूर्ववक्ता : कथनस्तरक अनेक घेरा

नैमिषारण्यक सभामे उग्रश्रवा शौनककेँ जनमेजयक यज्ञक कथा सुनबैत छथि, जखन कि पाठक पहिने पद्माक समकालीन पाठशालामे जनमेजयक प्रसंग सुनि चुकल छथि। ई क्रम ऐतिहासिक घटना–प्राचीन कथावाचन–आधुनिक पुनर्वाचन–पाठकीय पुनर्रचना केँ अलग कऽ देखबाक निमन्त्रण अछि। उग्रश्रवाक वंशगत कथक-परम्परा एक मात्र सर्वज्ञ स्वरक स्थान नहि लैत; वनमे पानि अननिहारी स्त्री, लकड़ी जुटौनिहार आ कुलक आन श्रोता बीच-बीचमे प्रश्न करैत छथि। ओ लोक कथाकेँ ऊर्जासँ भरबैत छथि, मुदा उग्रश्रवाक कथा-ज्ञान स्वतः पूर्ण नहि बनैत।

विद्यालयक तख्तीपर पद्माक दू वाक्य लिखब एहि कथनस्तरक आधुनिक समकक्ष दृश्य अछि : गानमे नाम आएल, आ ताहिसँ अखण्ड वंश सिद्ध भेल—दुनू भिन्न दाबी। चेतनक पुरान पोथी जीविकाक माध्यम अछि; गलती हटाबैत हुनका नव गीतक सम्भावना खोजबाक पड़ैत अछि। वंशगानक स्मृतिक मान राखि अनिश्चित वंश-सम्बन्धक सार्वजनिक सुधार करब गीतकेँ निष्प्राण ऐतिहासिक “डाटा” मे बदलल नहि। एतए कथनक मालिकाना एकटा व्यक्ति सँ दोसर व्यक्ति लग स्थानान्तरण मात्र नहि, सभ स्रोतक पृथक् पहचान सँ रचल सामूहिक श्रवणक प्रक्रिया अछि।

छाया-खेलक फ्रेम आ अपमानक अधूरल अतीत

साजिदक पुरान विद्यालयीय वीडियो काटि बच्चा-चोरीक झूठ आरोप बनाओल गेल छल। आधुनिक छायानाटक एहि घावक त्वरित प्रतिकारक प्रचार नहि बनैत; बाँसक चौखट, अन्हारमे कलाकारक अदृश्य मुख, हाथक ध्वनि आ वयस्क अभिनयक सहमति नव फ्रेम बनबैत अछि। पर्दापर जे दृश्य अछि तकर पाछाँ श्रमिकक हाथ अछि, ताहि लेल चौखट बजौनिहार युवक अपन नाम माँगैत अछि। ओकरा नाम देबावला कागदक छोट संशोधन कला-रचनाक सामूहिकता उजागर करैत अछि, जे सामान्य पर्दा दर्शकसँ लुका रखैत।

छाया-कार्यक्रमक बारह सय रुपैया प्राप्त भेला पर दू सय खर्च घटि बचल एक हजारक बँटवाराक सहमति तय होइत अछि। ई निर्णय पात्रसभक आर्थिक अधिकारक सीमित पुष्टि अछि; पुरान दुष्प्रचारक क्षतिपूर्ति नहि। प्रबन्धकक इच्छित अनिश्चित प्रतिशतक बदला निश्चित रकम लिखब पाठकीय विश्वसनीयता बढ़बैत अछि, मुदा कथक सभ कठिन विवादक पूर्ण समाधान नहि दैत। अन्तिम बच्चाक रथक खेलमे प्रश्न-पुछबाक अधिकार जीवित अभ्यास बनैत अछि, आ अगिला लव–कुश प्रसंगक प्रस्ताव संपूर्ण उपन्यासक आगामी कथा-स्तरक अग्रसंकेत बनैत अछि; रामक सभा एखन सम्पन्न नहि।

महाप्रस्थानिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय १९३–२०४ क समग्र आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

पर्वक रूपरेखा आ काल-सम्पादन

अध्याय १९३–१९५क प्राचीन महाप्रस्थान—परीक्षितकेँ उत्तराधिकार, द्रौपदी आ भ्रातृगणक क्रमिक पतन—अध्याय २०१–२०४मे सार्वजनिक जीवनक कठिन वापसीधरि सम्पादित अछि। बीचक १९६–२००मे स्टेशन, कोठरी, बन्द फोन, गुमनाम कथा आ पाठशालाक प्रश्न पृथक् आधुनिक दृश्य छथि। २०३मे युधिष्ठिरक घायल सहचर आ इन्द्रक रथक कथा विस्तारित होइत अछि; २०४मे प्राचीन आरोहणक छोट पुनरागमन भोरक अटकल किवाड़ आ साँझक चाभी-हस्तान्तरणक बीच राखल गेल। अतः पर्वक रचना केवल पतनक उत्तराधिकार क्रम नहि, प्रस्थान आ प्रत्यावर्तनक असमान समांतर प्रक्रिया अछि।

प्राचीन पक्षमे दैवी धर्मरूपक उद्घाटन कथात्मक परीक्षाक समाप्ति अछि। आधुनिक कुकुर स्वस्थ भऽ गेल, बिनुक रकम पहुँचि गेल, शान्तिक बकाया चुकि गेल, मीरा-बहिनक सभ दाम भेटि गेल अथवा विद्यालयक सम्पूर्ण मरम्मत भऽ गेल, एहन समापन नहि। एहि असममिति मे आधुनिक सामाजिक काल दैवी कालक सँग स्वतः समाप्य नहि रहैत।

आवाजक अधिकार आ मूलक असिद्ध निरन्तरता

द्रौपदीक अन्तिम जीवनकेँ एक दोषमे मेटबाक विरोध, फकीराक अपनी यात्रा-समयक गवाही, कबीरक पालन-स्मृति, शान्तिक पारगमन-मजदूरी आ अनाम कथकक शर्त एकहि कथात्मक प्रकार नहि। एक कात दैवी कारण बतौनिहार पात्रक विरोधी आवाज, दोसर कात जीवित व्यक्तिक निजी संस्मरणक प्रकाशन सीमा अछि। कथा ई भिन्नता स्वीकार कऽ एक नायकक सार्वभौमिक कथनक बदला अलग-अलग दृष्टिकेन्द्र बनबैत अछि।

२०१क “गंडक/गंडकी” आ “गोही”, २०२क “फरियानी” आ “मेची”, २०३–२०४क “सीर” आ “सुपैन” बिखरल पुरान अभिलेखीय शब्द छथि। इनका आधारपर एक प्राचीन नदी-पथ, एक वंश अथवा एक समकालीन खेपक स्वयंसिद्ध अखण्ड मानचित्र रचब मूल पाठसँ बाहरक अनुमान हएत। उपन्यासक स्थल-वर्णन आ अभिलेखीय नामक बीच एहि प्रतिरोधक साहित्यिक अर्थ अछि।

भौतिक वस्तु आ सीमित समाप्ति

पटरा, ताला, नील झोरा, लाल रुमाल, घायल कुकुरक दरी, ठेलाक अलग रसीद आ फुलल किवाड़ क्रिया-सक्षम वस्तु छथि : ओ समय रोकैत, श्रम गनैत, निजी सामग्री बचबैत अथवा सुरक्षित प्रवेश उपलब्ध करबैत अछि। कागदक प्रतीक मानि मात्र नहि, घटना आगाँ बढ़ेबाक भौतिक साधन रूपेँ इनकर उपयोग देखब जरूरी अछि।

अध्याय २०४क अन्तिम “आधा खुलल दरबज्जा” कथात्मक रूपेँ पूर्ण विरामो आ आगूक प्रश्नो अछि। चाभी हस्तान्तरित भेल, मुदा समिति नियम, नियमित व्यय, मृतक श्रमिकक देय, सार्वजनिक नाम आ सुधारक समय भविष्यक कथा लेल रहि गेल। महाप्रस्थानिक-पर्वक समग्र आलोचनात्मक उपलब्धि अनुपस्थित नायकक स्थानमे जीवित लोकक स्वातन्त्र्यपूर्ण, अपूर्ण आ पुनरावृत्तिमूलक दायित्वकेँ दृश्यमान करब अछि।

शिल्पगत उपलब्धि आ आपत्ति

महाकाव्यक अन्तिम आरोहण आ आधुनिक संस्थागत श्रमकेँ जोड़बाक समय रचना बहुधा तुलनात्मक दृश्य-द्वार बनबैत अछि, प्रत्यक्ष कार्यकारण नहि। तथापि पात्रसभ निजता, श्रेय आ जिम्मेदारीक सुव्यवस्थित न्यायसंगत वाक्य अनेक बेर तुरन्त उपलब्ध करैत छथि; एहि कारण स्थितिक अनिश्चित भाव-कम्पन आलोचनात्मक उदाहरणमे बदलबाक खतरा अछि।

शिल्पक प्रतिपक्ष कथा भीतर अनसुलझल कर्ज, गृह-वापसीक अलग समय, क्षतिग्रस्त मेज, थाकल कारीगरक पारिश्रमिक, वृद्धाक “कतेक दिन रिक्त?” आ बच्चीक समिति-कार्य अस्वीकारमे उपलब्ध अछि। ई सभ स्वायत्त आवाज मुख्य पात्रक आदर्श पद्धतिकेँ लगातार परखैत छथि।

स्वर्गारोहणिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय २०५–२०८ क संयुक्त मूल्यांकन

स्वर्गक सूची सँ प्रश्न करनिहार श्रोता धरि

अध्याय २०५मे युधिष्ठिरक स्वर्गीय सभा-दृश्य आ आधुनिक स्मारकक नाम-चयन; २०६मे उत्तरा–परीक्षितक जीवित भविष्य आ समकालीन बच्चासभक सुरक्षित जीवन; २०७मे जनमेजयक प्रतिशोध आ पाठशालामे गानक श्रम; २०८मे नैमिषारण्यक उग्रश्रवा आ वर्तमान चेतन–साजिदक वाचनाधिकार। ई चारि अध्याय मृतकक सम्मान, बाँचल लोकक दायित्व, हिंसाक अनुत्तरित क्षति आ ककरा प्रश्न पुछबाक जगह अछि—एहि क्रमशः विस्तृत विषयक अलग दृश्य बनबैत अछि।

प्राचीन कथाधारा एकहि निरन्तर काल नहि। स्वर्गारोहणसँ पूर्वकालक उत्तराक शोक, जनमेजयक सर्पयज्ञ, फेर नैमिषारण्यक वाचनक फ्रेम—ई उल्टल क्रम पाठककेँ ऐतिहासिक रेखाक बदला कथनक परत पढ़बाक आग्रह करैत अछि। आधुनिक २०४२क पाठशाला प्राचीन दृश्यसभक साक्षी नहि; ओ कथा सुनबाक, बुझबाक आ आपत्ति करबाक भिन्न स्तर अछि।

वस्तुगत अभिलेख आ जीवित मुखक दूरी

पीतलाक पट्टी, ढील कील, माटिक घोड़ा, पुरान गानक अलग स्याही, टुटल सारङ्गी-तार, चेतनक घी-दागल पोथी आ साजिदक कैमरा कथाकेँ वस्तुगत आधार दैत अछि। प्रत्येक वस्तुक विशिष्ट काम अछि; सबकेँ एक विशाल प्रतीक-चक्र बनायब आलोचनात्मक सरलीकरण हएत।

उर्मिलाक स्मारक-नाम लिखल गेल, मुदा पूरा मजदूरी देय बाकी; बच्चाक सुरक्षित निकास खुलल, पक्की खड़ञ्जा मरम्मत बाकी; रशीदक आजुक कार्यक्रमक पारिश्रमिक सही, पुरान बकाया अलग; चेतनक वंश-दाबी सुधरल, पुरान कुल-सम्मानक विवाद पूर्ण शान्त नहि; साजिदक पहिल आमदनी भेटल, पुरान गलत आरोपक पूरा क्षतिपूर्ति नहि। ई क्रम कथा-समापनक बहुवचन बनबैत अछि।

श्रवण, कथन आ पुनःकथनक अधिकार

स्वर्गारोहणिक-पर्वक नव उपलब्धि श्रोता-वाचनक नाटकीय संरचना अछि। पद्माक कथा बीच किशोरी प्रश्न करैत अछि; जनमेजयक सभामे न्याय आ प्रतिशोधक भिन्न स्वर; उग्रश्रवाक शौनकसभा मे अनाम श्रमिकक पक्षसँ प्रश्न; चेतनक मौखिक इतिहासमे दू वंशस्रोतक गलत मिलान; साजिदक वयस्क प्रस्तुति पर कलाकारक श्रेय—एहि असमलय अवस्थासभमे “कथा ककर?” प्रश्न अलग संकट पबैत अछि।

उग्रश्रवाक स्रोत-वर्णन वाचक–पूर्ववाचक–श्रोता–वर्तमान पाठकक अनेक कथन-स्तर उघारैत अछि। आधुनिक कालमे मौखिक गीतक पूर्वपाँति तथा नव रचनाक भिन्न शिल्प-स्थान रहैत अछि। संगहि जनमेजयक हिंसा रुकलाक बाद मरल जीव वापस नहि आबैत, जेना स्मारकक नामसँ मृत श्रमिकक अधूरल वेतन तत्काल देल नहि जाइत। एकर तुलना नाटकीय अछि, शाब्दिक समानता नहि।

अन्तरिम निष्कर्ष आ शेष सीमा

अध्याय २०५–२०८ स्वर्गारोहणिक-पर्वक आरम्भिक चारि अध्यायक संयुक्त मूल्यांकन मात्र अछि। मूल उपन्यासक कुल २१६ अध्याय अछि, आगूक २०९–२१६ पढ़ने बिना समग्र उत्तरकाण्डक निर्णायक अन्तिम कला-विवेचन करब अनुचित। २०८क अन्तिम लव–कुश प्रश्न आगूक कथाक स्पष्ट अग्रसंकेत अछि; स्वयं एहि अध्यायमे राजा रामक सुनवाई सम्पन्न नहि।

बाधा/सीमा एहिठाम सेहो : अनेक पात्र प्रभावी आदर्श सूत्र शीघ्र कहैत छथि; कल्पना आ इतिहासक प्रायः निर्दोष वर्गीकरण चित्रित होइत अछि। मुदा कियो नाम छपए नहि चाहैत, कियो भुगतानक पुरान बही रखैत, कियो वंशगानक दावा सुधारेबासँ रोजी घटबाक भय अनुभव करैत, कियो मृतकक कथा पर प्रश्न रोकैत—एहि असंगत जीवनी-कालसभक कारण उपन्यास केवल सूचना-सत्यापनक शिक्षण-पुस्तिका नहि होइत।

अध्याय २०९ — लव कुशक पाठ

उद्घाटनक कापी : परम्परागत गीत आ जीवित गायिकाक भिन्न काल

फूलमती पमरियाक अँगुरी गीतक कापीक कोनापर अटकब आ हारमोनियमक ढीला सुर अध्यायक ध्वनिगत प्रवेश अछि। एतय कथा गीत गाबय सँ पहिने गीतक शीर्षकपर प्रश्न उठबैत अछि : निमन्त्रणमे फूलमतीक नाम अछि, मुदा प्रस्तुति 'पुरान परम्परागत' कहि चिह्नित होइत अछि। गीतक आयु आ कलाकारक वर्तमान कर्तृत्वक बीच ई दूरी अध्यायक घटनात्मक कारण बनैत अछि, मात्र सामाजिक टिप्पणी नहि। चेतन भटक वंशगान-संशोधनक अगिला दिन ई दृश्य राखल गेल अछि; पिछला अध्यायक विवाद एतय नकल नहि, जीवित गायनक स्वतन्त्र समस्या बनैत अछि।

फूलमती माएसँ प्राप्त अपमानकारी पाँति अध्ययनक लेल सन्दर्भसहित बचाबए तैयार छथि, मुदा अपना मुँहसँ फेर गाबए अस्वीकार करैत छथि। हुनकर 'पुरान शब्द' हटाएब इतिहास मिटाएब नहि : दस्तावेज, अनुसन्धान-पाठ आ मंचीय उच्चारण कथाक भीतर तीन अलग क्रिया बनैत अछि। आयोजक युवकक 'गीत घटि जायत' चिन्ता आ गायिकाक 'कलाकार घटैत छथि' प्रतिप्रश्नसँ कथोपकथनमे लोकपरम्पराक निर्जीव संरक्षण आ जीवित मनुष्यक सक्रिय चयन भिड़ैत अछि।

अयोध्याक सभा : अन्तःकथा आ राजकीय श्रोताक सीमा

प्राचीन अयोध्यामे वाल्मीकिसँ सीखल लव–कुशक गायन आधुनिक कार्यक्रमक बाद लगाओल गेल स्वतंत्र काल-स्तर अछि। राजदरबारमे धूप, रत्न, पहरेदार आ वीणाक स्वर गायनकेँ सार्वजनिक शक्ति-संरचनाक भीतर प्रवेश करबैत अछि। कुमारसभ रामक पराक्रम मात्र नहि, सीताक वनक एकान्त आ राजकीय निर्णयक पीड़ा सेहो गबैत छथि। राजाक स्थिर हाथ आ सभासदक कठिन पाँति हटेबाक आग्रह दृश्यगत तनाव रचैत अछि; कथक समाधान घोषित करबाक बदला सुनब जारी रहबाक क्रियाकेँ वजन दैत छथि।

एहि दृश्यकेँ सीताक प्रत्यक्ष आत्मवचन कहब गलत हएत : सीता सभामे अनुपस्थित छथि आ हुनकर जीवन कुमारसभक मुखसँ, वाल्मीकिक रचित कथाक माध्यमसँ पहुँचैत अछि। एक कथाक भीतर दोसर कथा गाओल जा रहल अछि; कथनक स्रोत, मंच आ श्रोता अलग-अलग छथि। समान मुखाकृतिसँ कुमारसभक वंश तुरन्त निर्णीत नहि होइत; राम वाल्मीकिसँ संवादक आवश्यकता बुझैत छथि। उपहार अस्वीकार करब गीतक मूल्य शून्य करब नहि, राजकीय प्रसन्नताक बदला कथा बदलबाक लेनदेनसँ दूरी अछि।

गायन-अनुज्ञा, श्रमक समय आ लयक स्वामित्व

करीम डफालीक पुरान धुनकेँ 'जन-धुन' कहि बिना अनुमति उपयोग करबाक प्रस्ताव, चम्पाक चोरी भेल निजी सन्देशक चुनावी उपयोगक पछिला अस्वीकारसँ जुड़ैत अछि। करीमक स्वतन्त्र धुन, फूलमतीक संशोधित शब्द आ जावेदक छाया-प्रयोगक सम्भावना एकेक कलाकारक भिन्न सर्जन-अधिकार रखैत अछि; सहयोगक अर्थ सामूहिक बेदखली नहि। ढोलकक धीमा-तेज थाप आ गानक बीच चुनल मौन कथा भीतर नाटकीय विराम छथि—मृत्यु-शोकक सर्वग्रासी रूपक बनाकऽ ओकरा पढ़ब ओहि पात्रक इच्छा विपरीत होएत।

खर्च-पृष्ठमे फूलमतीक प्रस्तुति लेल आठ सय, करीमक वादन तथा नव धुनक एक बेरक उपयोग लेल छओ सय, अभ्यासक अलग दू सय रुपैया तय भेल अछि। अग्रिम प्राप्ति दर्ज अछि, शेष भुगतानक देय-पर्ची बनल अछि; सम्पूर्ण भुगतान सिद्ध नहि। एहन सीमित निष्पत्ति कथानकक प्रमुख नियन्त्रण अछि : कागद तैयार होएब, पैसा खातामे उपलब्ध होएब, कलाकारक हाथमे पहुँचनाइ आ भविष्यक रेकॉर्डिंग-अनुमति एके घटना नहि। अलंकारिक 'परम्परा बचल' निष्कर्षक ठाम कथक उपयोग-अवधि आ आर्थिक सम्बन्धक विशिष्ट तथ्य राखैत छथि।

बालक-खेल आ समयान्तरक समरूपता-प्रतिरोध

अयोध्याक बगैचामे कुमारसभक माटिक रथ, पाथरक नदी आ टहनीक पुलक खेल गीतक गम्भीर दरबारी प्रदर्शन पछाति कथनकालक विराम अछि। राजकीय दृष्टिसँ बाहरक बाल-आकांक्षा तखने दृश्य बनैत अछि जखन ओ गानक वंशगत उपयोगसँ स्वतन्त्र छथि। वर्तमान पाठशालाक बच्चासभक धनुष-खेलमे एक बच्ची सीताक भूमिका स्वीकार करबाक बदला प्रश्न पुछनिहार श्रोता बनए चाहैत अछि। ई दू दृश्य रूप-साम्य रचैत अछि, मुदा ओ एके ऐतिहासिक घटना वा एके बाल-अधिकारक अवस्था नहि।

नदी-नामक अन्तराल सेहो जरूरी अछि। 'त्रियुगा' आ 'लक्ष्मणा'क काव्य-प्रसंगकेँ 'तिलयुगा' वा 'लखनदेइ'क समकालीन भू-रेखासँ बराबर मानबाक प्रस्ताव पर तख्तीमे प्रश्नचिह्न आबैत अछि। फूलमती लोकनामक स्मृति स्वीकारैत छथि, मुदा अपन गीतकेँ अभियान्त्रिक माप नहि बनबैत छथि। आख्यानमे प्राचीन पाठ, आधुनिक गीत आ आजुक स्थल-मापन परस्पर संवाद करैत अछि, एक-दोसराक अभिलेखीय स्थान कब्जा नहि करैत।

सार्वजनिक पाठक घटना, शेष असहमति आ शिल्पगत मूल्यांकन

साँझक कार्यक्रममे नव स्वीकृत गीत गाओल जाइत अछि; प्रश्न उठैत अछि, गायिका अपन निर्णय स्पष्ट करैत छथि, आ भुगतानक शेष स्थिति खुलल रहैत अछि। अध्यायक उपलब्धि गायिकाकेँ 'परम्पराक वाहिका' रूपेँ निष्क्रिय नहि रखि संशोधन, विराम आ प्रस्तुति-समयक निर्णायक व्यक्तिक रूपमे देखेबाक अछि। श्रोताक कठिन प्रश्न एकदम समाप्त नहि; समिति, कलाकार आ बालक-श्रोता अलग-अलग श्रवण-अधिकार लऽ बाहर निकलैत छथि।

आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि : आयोजकक प्रस्तावक उत्तर कलाकार आ पद्मा लगभग प्रत्येक बेर अत्यन्त सुस्पष्ट नैतिक भाषामे दैत छथि; अधिक अस्पष्ट स्वार्थ, भावात्मक चूक वा स्वरतोड विरोधक स्थान घटि सकैत अछि। मुदा लवक काँपैत कंठ, राजाक अनुत्तरित मौन, फूलमतीक गानक विराम आ बच्चीक भूमिका-अस्वीकार एहि शिक्षणात्मक प्रवृत्तिक भीतर वास्तविक सौन्दर्य-विरोध रचैत अछि। अन्तक तख्ती—राजा सुनि सकैत छथि, मुदा सभ आवाज ओ नहि लिखैत छथि—अध्यायक कथनाधिकारक सार अछि, ऐतिहासिक घटना-निर्णय नहि।

अध्याय २१० — भामतीक चारिम सूत्र

पाठ, व्याख्या, आपत्ति आ आजुक प्रश्न : चारि पन्नाक रचना

मृणालक तख्तीपर 'तत्तु समन्वयात्'क लग स्याहीक दाग छैक। ओ दाग पोंछि सुन्दर पृष्ठ बनएबाक बदला पहिने पाठ पढ़बाक निर्णय करैत छथि। चारि अलग पन्ना—पाठ, व्याख्या, आपत्ति, आजुक प्रश्न—अध्यायक कथात्मक संरचनाकेँ वस्तुगत रूप दैत अछि। सूत्रक दार्शनिक विषय ब्रह्मवाक्यक तात्पर्य; लोकसमितिक मतदान नहि। ई अन्तर स्वयं पात्र स्पष्ट करैत छथि, ताहि लेल आलोचनामे ई प्रसंग दार्शनिक सिद्धान्तक नीतिगत प्रमाण नहि, पाठक पुनःप्रसंगीकृत होएबाक नाटकीय घटना मानल जाएत।

रमेश घासीक अनुपस्थितिमे 'कलाकारसभक सर्वसम्मत सहयोग' लिखल जाइत अछि। एहिसँ 'समन्वय' एक व्यावहारिक अपप्रयोग बनैत अछि : आयोजनक पक्षमे रहब आ निःशुल्क बाजा उपलब्ध करब समानार्थी नहि। आधुनिक दृश्य आ प्राचीन पाठगृहक दृश्य एक-दोसरासँ वाक्यात्मक प्रतिध्वनि रखैत अछि, कार्यकारण नहि। कथाकार संस्कृत सूत्रक अर्थ घोषित करि सामाजिक प्रश्न हल नहि करैत; उलटे एक सूत्र-शब्दकेँ प्रशासनिक सर्वसम्मतिक आवरण बनएबाक असुविधा देखबैत छथि।

भामतीक पाठगृह : स्त्रीक सम्पादकीय हस्तक्षेप

प्राचीन मिथिलाक कल्पित अध्ययनगृहमे वाचस्पति, भामती, मृणाल आ लोहना उपस्थित छथि। संशोधित पन्नापर सभक मत लिखल गेल, मुदा लोहना खराब भेल नकलक दाम आ अपन असहमति नोंदबैत छथि। 'सभक मत' कहि मौनकेँ सहमति बना देबाक क्षण एतय कथानकक मोड़ अछि। भामती संशोधित मूलक बगल प्रश्नक चिह्न बचबैत छथि; ओ नव सूत्र जोड़ि देनिहार विदुषीक आसान महिमामण्डन नहि, सम्पादकीय स्मृतिक सजीव पात्र छथि।

मृणाल अध्यासक रस्सी-साँप दृष्टान्त सम्झैत छलीह, मुदा ओ स्वयं मानैत छथि जे श्रमपर्चीक असत्य सहमति देखबासँ सूत्रक सम्पूर्ण दार्शनिक अर्थ सिद्ध नहि होइत। प्राचीन संवादक ई आत्म-सीमा विशेष उल्लेखनीय अछि। भामती आ लोहना मूल प्रति, संशोधित प्रति आ अधूरा खर्चक पृष्ठ अलग रखैत छथि; शास्त्रीय व्याख्याक गाम्भीर्य आ पन्ना बनौनिहारक श्रम एकहि दृश्यप्रवाहमे भेटैत अछि, परस्परकेँ ग्रसैत नहि।

कलाकारक आवाज : कथनमे समयक आर्थिक विस्तार

रमेशक ढोलक-वृत्तमे अभ्यासक डेढ़ घण्टा, बाजाक एक दिनक उपयोग आ मंचीय वादन तीन पृथक् समय-आधारित क्रिया छथि। अभ्यास लेल एक सय अस्सी, बाजाक उपयोग लेल डेढ़ सय, प्रस्तुति लेल सात सय पचासक प्रस्ताव बनैत अछि। करुण दमाई सामान्य घिसाइ आ वास्तविक क्षतिक अलग जिम्मेदारी देखबैत छथि। एहि भौतिक विवरणसँ कलाकारक स्वर केवल प्रतिरोधी कथन नहि रहि व्यवस्था बनबए मे सहभागी निर्णय बनैत अछि; मंचक चमक घटाएबासँ बाजाक श्रम अदृश्य होएबाक रोक होइत अछि।

अभ्यासक एक सय अस्सीक तत्काल प्राप्ति होइत अछि; बाँकी नौ सयक भुगतान-आदेश जारी होइत अछि, बैंक-प्राप्ति नहि। मंचपर घोषक पहिने रमेशक नाम छोड़ि दैत छथि, विराममे तारा पर्ची देखबैत छथि, फेर घोषणा

सुधरैत अछि। ई परिपाटी कथात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण : श्रेयक ध्वनि मंचपर तत्काल बदलि सकैत अछि, धनक गतिक लेल अलग समय चाही। समय-भेद मेटि 'न्याय सम्पन्न' लिखब स्रोतक सूक्ष्मता नष्ट करत।

नामक पाठ, नदीक रूप आ व्याख्याक अनुशासन

अपूर्ण काव्यपाठक 'कृतसारा' पदकेँ एक विद्यार्थी स्वतंत्र नदी मानए चाहैत अछि। मृणाल मूल वाक्यक अभाव बतबैत छथि, हीरा समकालीन जलमापक शर्त राखैत छथि, पद्मा स्रोतपंजीमे अपूर्ण पाठ लिखैत छथि। बच्चाक बनाओल नीला लहर-चित्रकेँ 'कल्पना' नाम देबाक दृश्य कथनक अन्तर्निहित विधि दर्शबैत अछि : कलात्मक रेखा स्वीकार्य अछि, किन्तु ओकरा वर्तमान भूगोलक निश्चित नक्शा कहि प्रस्तुत नहि कएल जा सकैत।

एहि अनुक्रममे मृत श्रमिकक सम्मानसूची आ चुकल मजदूरीक कागद सेहो अलग राखल जाइत अछि। सरिताक दृष्टि उर्मिलाक अपूर्ण देयपर ठहरैत अछि, मुदा ओ अपन मुइल बेटीक जीवन हर उदाहरणक प्रमाण बनएबाक आग्रह नहि करैत छथि। एहि प्रतिरोधक कारण दार्शनिक समन्वय, नाम-संशोधन आ श्रम-भुगतान तीन अलग कथादायी ठाम कायम रखैत अछि।

संवादक बहुस्वरता आ उपदेशात्मकताक जोखिम

हरिमोहनक विरोधी प्रश्न, एक महिला द्वारा जिज्ञासाक योग्यताक प्रश्न, रमेशक बजैत बाजा, बच्चाक ताल-गनती आ भामतीक पन्ना-रक्षा—ई सभ अखंड टिप्पणी नहि, भिन्न सामाजिक समयक स्वर छथि। कथा दार्शनिक पाठक बीच बाजा बजबैत अछि; बौद्धिक एकाग्रताक समय कारीगरक थकान आ बच्चाक हँसीसँ कटैत अछि। एतय बहुस्वरता पात्रसंख्या मात्रसँ नहि, संवादक असमान दायित्वसँ उभरैत अछि।

सीमा : पाठक एक बेर फेर लगभग सभ महत्त्वपूर्ण भेदक सटीक परिभाषा तुरन्त भेटैत अछि, जाहिसँ कथाक खोज-प्रक्रिया कतहु पाठशालाक आदर्श अनुशासन बनि जाइत अछि। तथापि रमेशक अधूरा भुगतान, असहमत पन्ना, अपूर्ण 'कृतसारा' आ स्मारकपर बकाया श्रम एहन प्रतिरोध छथि जे सूत्रक एकरे अर्थमे समापन रोकैत अछि। 'चारिम सूत्र'क कथात्मक उपलब्धि सर्वमत नहि, संगहि राखल असहमतिक निरन्तर पठनीयता अछि।

अध्याय २११ — उदयनक शेष तर्क

लाल पर्ची आ कथाक प्रारम्भिक असमानता

हमीदा मिरियासीनक बहीसँ खसल पातर लाल पर्चीमे प्रस्तुति स्थगित आ पारिश्रमिक बाकी लिखल अछि। पहिल दृश्य न तऽ ईश्वर-सिद्धि अछि, न शास्त्रार्थ—ई एक कलाकारक रोकल आयक वस्तुगत सूचना अछि। तत्पश्चात् उदयनक दार्शनिक बहस आरम्भ होइत अछि। एहि क्रमसँ अध्याय पाठककेँ दर्शनक पैघ अमूर्त प्रतिपक्ष सँ आगाँ स्थानीय जीवनमे वापस अनैत अछि; 'शेष' शब्द तर्कमे मात्र नहि, रोकल भुगतान आ बिना-सहमतिक गीत-प्रयोगमे सेहो अलग-अलग अर्थ पबैत अछि।

पद्मा पहिने उदयनक पक्ष आ प्रबल मीमांसक पूर्वपक्षक दू पन्ना बनबैत छथि। एक सदस्य शोकग्रस्त लोकक नामपर प्रश्नक पन्ना घटाबए चाहैत अछि; सरिता अपन बेटी नैराक मृत्युक दार्शनिक उदाहरण रूपेँ अनधिकृत

उपयोग रोकैत छथि। एहि दृश्यसँ शोक सार्वजनिक बहसक सर्वसुलभ सामग्री नहि रहि मृतकक व्यक्तित्व आ परिवारक स्वतन्त्र कथन-सीमा बनैत अछि। कथावाचक नैराक मृत्युक कारणक आध्यात्मिक व्याख्या नहि दैत छथि।

कल्पित मिथिलाक शास्त्रार्थ : द्वन्द्वक दृश्यकाल

प्राचीन मिथिलाक कल्पित अध्ययनगृहमे उदयन आ मीमांसक अतिथि शास्त्रार्थ पुनः आरम्भ करैत छथि। अतिथि मृत मित्रक लेखन-पात्र संग नेने छथि; बहसक बीच निजी हानि उपस्थित अछि, मुदा ओ स्वतः एक पक्षक विजयक तर्क नहि बनैत। दरारिवला घट आ बीयाक दृष्टान्तवाला दृश्य विन्यासमे दार्शनिक दाबी ठोस वस्तुसँ उभरैत अछि; आपत्ति, पुनर्प्रश्न, उत्तर आ शेष आपत्तिक कथनकाल खसल पातर पन्नाक जल्दबाजीसँ भिन्न अछि।

अतिथिक विरोध केवल 'अज्ञानी संशय' नहि : कर्ताक स्वरूप, प्राकृतिक प्रक्रिया, रोग, बाढ़ि आ निरपराधक पीड़ा सम्बन्धी कठिन प्रश्न लिखल जाइत अछि। उदयन अपन पक्ष रखैत छथि, मुदा विशेष व्यक्तिक मृत्यु कारणक सर्वज्ञ व्याख्या करबाक दावा टारैत छथि। लेखनिक 'पूर्वपक्ष शेष' लिखैत अछि, पराजय नहि। कथा आध्यात्मिक मान्यताक निर्णायक समाधान नहि देत; ओकर शास्त्रार्थ दृश्य प्रतिवादी आवाजकेँ सम्पूर्ण वाक्य दैत अछि। ई पात्रक विचारक सौन्दर्यगत विन्यास अछि, आलोचक द्वारा सिद्धान्तक औपचारिक परीक्षण नहि।

पोथी-बन्धन, श्रमिकक श्रेय आ प्रतिपक्षक प्रतिलिपि

वृद्ध पोथी-सीबनिहार स्त्री दू भिन्न पन्ना एकहि बन्धमे राखबाक व्यावहारिक प्रश्न उठबैत छथि। नकलकार शिष्यक रातिक श्रम पहिने केवल गुरुक उत्तरक खर्चमे दर्ज छल; उदयन पूर्वपक्षक प्रतिलिपि लेल अलग भुगतानक मद बनबबैत छथि। ई प्रसंग दार्शनिक उत्तरक स्वीकृति नहि, विरोधी आवाजक भौतिक संरक्षण अछि। विचारक परम्पराकेँ उपन्यास कागद, धागा, स्याही, समय आ श्रमक माध्यमसँ साकार करैत अछि।

अतिथि मृत मित्रक नाम बहसक शीर्षकमे नहि चाहैत छथि। ई आपत्ति सरिताक नैरासम्बन्धी अनुमति-वाक्यसँ अनुगूँजित अछि, मुदा दुनू प्रसंगक जीवन-सत्य, युग आ निर्णय अलग। प्राचीन दृश्यकेँ आधुनिक कलाकारक पारिश्रमिकक वैधानिक साक्ष्य बनायब वा हमीदाक पर्चीसँ उदयनक दार्शनिक पक्षक सत्य सिद्ध करब कथाक अपन अनुशासनक विरुद्ध हएत।

हमीदाक गीत : ध्वनिक सीमा आ देयक अलग तिथि

हमीदा अपन गीतक अपमानकारी कटावक पूर्ण नकल सीमित जाँच-दलकेँ देखेबाक लेल तैयार छथि, सार्वजनिक सभामे पुनःप्रसारणक लेल नहि। एक सदस्य गलत प्रयोगक प्रमाण देखएबाक नामपर ओही अपमान फेर प्रसारित करए चाहैत अछि; गायिका पुनः मना करैत छथि। हुनकर गीतक बही प्रदर्शनक वस्तु नहि, स्मृति, चयन आ पेशागत कामक दस्तावेज अछि। बालिकाक आधा बिसरल दू पाँति पर हमीदाक हँसी एहि कड़वाहटक बीच जीवित सर्जनात्मक क्षण रचैत अछि।

भुलल नामक मूल रसीदपर सफेदा पोतबाक बदला तिथि-युक्त सुधार लिखल जाइत अछि। पुरान उपस्थिति-पत्र भुगतानक रसीद नहि; रमेशक नौ सयक आदेशो बैंक-प्राप्ति साबित नहि करैत। हमीदाक आजुक पारिश्रमिकक रकम अनिर्णीत अछि, मुदा अपमानकारी सार्वजनिक उपयोग रोकबाक निर्णय लिखल गेल अछि। एकल 'कलाकार भुगतान' शीर्षकमे भिन्न कलाकारक अलग देय मिलाएब अस्वीकार होइत अछि। कथावस्तुक सूक्ष्मता एहि नकारात्मक निष्कर्षसभमे अछि—की नहि भेल, से स्पष्ट।

अन्तिम दुई पन्ना : कथात्मक अनिश्चय आ मूल्यांकन

अन्तमे दीवालपर दू पृथक् पन्ना अछि : दार्शनिक पक्ष–पूर्वपक्ष–अनुत्तरित प्रश्न–कल्पित दृश्य आ कलाकारक उपयोग, सुधार, देय आ अनुमति। विचार तथा आर्थिक घटना एक संग प्रस्तुत छथि, तइयो एकर सत्य-निश्चयक पद्धति एक नहि। हमीदा बही लऽ जाइत-काल आधा तान गुनगुनबैत छथि; ध्वनि अधूरि रहैत अछि, जेना भुगतान। कागदक धागासँ बाँधल दुई पक्ष अन्तिम सहमतिक मूर्ति नहि बनैत।

अध्यायक शक्ति प्रबल विरोधीकेँ तर्कक कमजोर पुतला नहि बनएब आ शोककेँ विचारक सजावट नहि बनएब अछि। सीमा ई जे उदयन, अतिथि, पद्मा आ सरिताक अत्यन्त सन्तुलित उत्तरसभक मध्य असमर्थ, आवेगशील वा अनबुझल व्यक्तिक अराजक आवाज सीमित अछि; शास्त्रार्थ कतहु कलात्मक नाट्यक बदला व्यवस्थित पाठ-बैसार बनैत अछि। मुदा अपूर्ण देय, शोकक थकान आ रातिक नकलकारक श्रम प्रतिपक्षक कथात्मक वास्तविकता दृढ़ करैत अछि।

अध्याय २१२ — गङ्गेशक कक्षा

मेटल नहि गेल प्रश्न आ इतिहासक बेनाम श्रम

अध्यायक पहिल वाक्य तख्ती पोंछैत बालिकासँ आरम्भ होइत अछि। 'उदाहरण ककर जीवनसँ लेब?' प्रश्न ओ मेटए नहि चाहैत; मृणाल अगिला तिथि ओहि प्रश्नक नीचाँ जोड़ैत छथि। एहि क्रियासँ दिन बदलैत अछि, प्रश्न नहि। तकर संग हेमा देवक पुरान इतिहास-प्रदर्शनीक बही अछि जाहिमे दस पुरुषक नाम आ स्त्रीक बेनाम श्रमक पाँति छल। दू पढ़ाएवला नाम, एक अपूर्ण नाम आ एक अस्फुट चिह्न—एतबा स्रोत-सीमा कथाक आरम्भमे देल गेल अछि।

वर्तमान पाठशालामे तत्त्वचिन्तामणिक चारि प्रमाणखण्डक नाम पढ़ैत समय विद्यार्थी ईश्वरक प्रश्नकेँ पाँचम खण्ड जोड़ि दैत अछि; मृणाल गलती सुधारैत छथि, मुदा बालककेँ अपमानित नहि करैत। एहि छोट संवादमे 'पढ़बाक अधिकार' आ 'पाठक वास्तविक संरचना' दुहूक रक्षा अछि। कथामे लोकपाठक स्वतन्त्रता कृति-विशेषक विद्वत् विभाजन मेटएबाक अनुमति नहि, बल्कि प्रश्नक पुनरावृत्तिपर आधारित शिक्षण-सम्बन्ध अछि।

गङ्गेशक कल्पित पाठगृहमे मालती आ माधवक प्रवेश

प्राचीन मिथिलाक साहित्यिक दृश्य, ऐतिहासिक व्यक्तिक यथार्थ-जीवनीक सीधा प्रतिलेख नहि। मालती धानुकक भीजल मापक पात्र, माधव नाविकक रस्सीक गाँठ आ विद्यार्थीसभक पुस्तकीय उदाहरण कथनकेँ वस्तुगत टक्कर

दैत अछि। आकार एक देखलासँ पात्रक क्षमता एक नहि होइत; नदीक रंग देखलासँ वर्तमान गहिराइ नापल नहि जाइत। गङ्गेशक कक्षा एतय 'घट-पट'क स्थिर शिक्षण-रूपसँ बाहरी लोकक काजपर दृष्टि घुमबैत अछि, तथापि गङ्गेश स्वयं सीमित उदाहरणकेँ सिद्धान्तक सम्पूर्ण उत्तर नहि मानैत छथि।

प्रश्नकर्ता मालतीक आवाज केवल ज्ञानक वस्तु नहि। ओ अपन धानक घाटा, पात्रक दोष आ कामक समयक वास्तविक विवाद लऽ उपस्थित छथि। माधवक नावक गाँठक चित्र शिष्य बनबैत अछि, मुदा पानीक गति चित्रमे जड़ नहि होइत। अध्याय एहि असंगतिक कारण लोकक अनुभवकेँ अचूक नियम नहि बनबैत; जिज्ञासा स्वयं पात्रसभक पक्षधरता आ प्रयोजनसँ बनैत अछि।

श्रोता द्वारा कल्पित इतिहासक सीमा निर्धारित करब

वर्तमानकालक युवती स्पष्ट पुछैत छथि—मालती–माधवक वास्तविक पुरान दस्तावेज कतय? मृणाल उत्तर दैत छथि जे हुनकासभक जीवन आ संवाद उपन्यासक कल्पित रचना अछि, गङ्गेश आ दार्शनिक परम्परा अलग ऐतिहासिक सन्दर्भ। एहि प्रसंगक मूल्य एतबा नहि जे काल्पनिक दृश्य 'खण्डित' भेल, बल्कि कथा अपन स्तर बदलैत अछि : प्राचीन घटनाक दृश्य पुनः सार्वजनिक कथनक विषय बनि जाइत अछि, आ श्रोता ओकर ऐतिहासिक आधार पुछैत अछि। साहित्यिक जगत आ मूल स्रोतक बीच असम्पूर्ण अनुरूपता उपन्यास स्वयं स्वीकारैत अछि।

शब्द-ज्ञानक संवादमे लोकक कथनक काल, कथनकर्ता आ स्वयं देखल अथवा सुनल वृत्त अलग राखल जाइत अछि। आधुनिक बालक श्रमिकक अनुभव गलत होएबाक सम्भावना उठबैत अछि, पद्मा आदर आ जाँचकेँ दुहू आवश्यक बतबैत छथि। ई संवाद पाठकक विचार-प्रक्रियाक नाटकीय स्वरूप अछि; आलोचनामे एकरा दार्शनिक प्रमाणपरीक्षाक स्वतंत्र शास्त्रीय ग्रन्थ बना देब अध्यायक स्वभाव बदलि देत।

हेमाक पूरक पन्ना : स्थानीय इतिहासक संशोधित कथन

हेमा बेनाम स्त्री-श्रमकेँ एक काल्पनिक निश्चित नामसँ भरबाक बदला प्रमाणित दू नाम, एक अपूर्ण नाम आ अनुपस्थित लोकक प्रश्न अलग रखैत छथि। विद्यालयक मूल पाठ्यपुस्तक तत्काल संशोधित करबाक अधिकार समिति लग नहि; तेँ पूरक इतिहासपन्ना, स्रोत-टिप्पणी आ खुलल कक्षामे नियमित उपयोगक प्रस्ताव बहुमतसँ स्वीकृत होइत अछि। कथानकक परिणाम सीमित अछि—पूरक सामग्री स्वीकारल गेल, मूल पुस्तक यथावत्। एहि असमान अवस्थाक कारण 'इतिहास सुधारल' कहि सम्पूर्ण विजय गाबब कठिन अछि।

बच्चासभ घरक निजी बक्सासँ अनुमति बिना कागद नहि उठेबाक निर्णय करैत अछि। पुरान रसोइक खर्चसँ स्त्री-श्रमिकक संख्या निश्चित निकालल नहि जाइत। नसीमाक पन्ना-मरम्मतिक समय, हेमाक नकल, आजुक छपाइ आ वितरणक लागत अलग-अलग राखल जाइत अछि। ज्ञान-प्रसारक अर्थ एतय कक्षाक व्याख्यासँ बाहर रसीद, प्रतिलिपि आ स्रोत-मालिकक अनुमति धरि विस्तार पबैत अछि।

कथनकाल आ आलोचनात्मक सीमा

बालिकाक तख्ती पोंछबाक भोरसँ पूरक पृष्ठक साँझक वाचन धरि एक दिनक वर्तमान प्रवाह अछि; प्राचीन कक्षा एकाधिक दृश्य-खंडमे लौटैत अछि। दुहूक बीच सामान्य 'उदाहरण' प्रश्न अछि, मुदा साझा कर्ता वा प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रभाव नहि। अन्तक मुद्रित दार्शनिक पोथीक मुखपृष्ठपर सहायक लोकसभक नाम खाली भेटब आगामी अध्याय २१३ क श्रेय-विवादक स्पष्ट अग्रसंकेत अछि।

अध्यायक उपलब्धि इतिहासमे स्त्रीक नाम जोड़बाक अभिलाषाकेँ अनिश्चितता मेटबाक अनुमति नहि देब अछि। सीमा : पात्र जतेक तेजी सँ गलत सामान्यीकरण चिन्हैत छथि, ओतेक तेजी सँ विधिवत् विकल्प उपस्थित करैत छथि; दुविधाक अनिर्णीत व्याकुलता कम भऽ सकैत अछि। मुदा मापक वास्तविक विवादक अधूरापन, पाठ्यपुस्तक नबदलल रहब आ छात्राक अन्तिम अनुत्तरित प्रश्न एहि कथाकेँ बन्द शिक्षण-आदर्श बनबाक सँ रोकैत अछि।

अध्याय २१३ — मैथिलीक अपना वाणी

छापाखानाक किनार : आत्मस्वीकृतिक नाटकीय संकट

नव पोथीक अधसुखायल स्याही, सरिताक अँगुरी आ मैथिलीक लाल प्रूफ-चिह्न अध्यायक आरम्भ अछि। इति-पूर्व मैथिलीक सहलेखनक श्रेय सुधरल, मुदा सरिताक श्रम 'सहयोग'क सामूहिक शीर्षकमे अदृश्य होइत रहल। एहि विरोधमे कथा केवल खलनायक-संशोधन नहि, सुधार करैत व्यक्ति स्वयं दोसर गलती दोहराबैत छथि, से देखबैत अछि। मैथिली पहिल व्याख्यानमे पृष्ठक्रमक भौतिक सूत-चिह्न खोजबाक सरिताक योगदान अपना वाक्यमे समेटि लेने छलीह। हुनकर विलम्बित स्वीकार अध्यायक वास्तविक अन्तर्गत घटना अछि।

मैथिलीक लिखित आत्मस्वीकृति कागदपर एक निश्चित रूप पबैत अछि—सरिताक निरीक्षणक श्रेय तत्काल नहि देब हुनकर अपन निर्णयक त्रुटि छल। सरिता अपन कामक रसीद रखैत छथि, मुदा स्पष्ट करैत छथि जे श्रमक उल्लेख आ पुरान मजदूरी-दावाक भुगतान अलग। ओ उर्मिलाक देय अपना खाता मे नहि जोड़ैत छथि। ई त्रिसंवाद —लेखकीय अपराधस्वीकृति, कार्यक विशिष्ट साक्ष्य, आर्थिक देय—'नैतिक क्षमा'क एकरे वाक्यसँ मुक्त राखल गेल अछि।

सहलेखनक सीमा आ समष्टिगत प्रशंसाक खतरा

ईशान अपना मूल दार्शनिक विवेचन आ मैथिलीक प्रमाणित सहलेखनक भेद बनौनहि रखए चाहैत छथि। एक प्रारूपमे 'समस्त उदाहरण सामुदायिक श्रमसँ बनल' लिखल छल; मैथिली एकरा अति-विस्तृत मानी काटैत छथि। एकटा व्यापक सम्मान-सूत्र प्रायः श्रेयक सूक्ष्म विभाजन मेटा दैत अछि—यही अध्यायक स्वतन्त्र साहित्यिक चिन्ता अछि। लेखकत्व एक नामक स्थानपर केवल अनेक नाम जोडि देब पर्याप्त नहि; ककरा द्वारा मूल विचार, संशोधन, निरीक्षण, छपाइ आ नकल कएल गेल, एकरा अलग आवाज चाही।

रमाक पहिनुक आपत्ति संशोधन-बहीमे रखल जाएत, मैथिली ओकरा अपना अनुमति बिना सार्वजनिक जीवनवृत्त नहि बना दैत छथि। बुजुर्ग पाठक लेखकक त्रुटि छापबाक विरुद्ध आपत्ति करैत छथि; ओ आपत्ति सेहो छापाखानाक पंजीमे अक्षुण्ण रहैत अछि। अतएव अध्यायमे 'सही सम्पादक'क निर्बाध विजयोत्सव नहि, सार्वजनिक लिखित पाठक सुधारक अधिकारसँ सहमत नहि भेल पाठकक उपस्थिति अछि।

खुलल शिक्षा : नियमक संक्षेप आ अवरोधक उत्पादन

दार्शनिक उच्चपाठमे पूर्व प्रमाणपत्र अनिवार्य कहनिहार सूचना एक जटिल शिक्षण-क्रमकेँ गलत संक्षेपमे बदलैत अछि। मूल नाजुक पाण्डुलिपि छूबाक प्रशिक्षण, उन्नत अध्ययनक कौशल, प्रारम्भिक कक्षा आ प्रश्नबैसार अलग छल; बादक विज्ञप्तिमे सभ एक पाँति बनि गेल। फरीद चिकक फिस-सुधारल रसीद आ बिरसीक प्रश्न एहन प्रशासनिक संक्षेपक सामाजिक परिणाम देखबैत अछि। कथावाचक दोषकेँ केवल दमनकारी नियतिमे नहि समेटैत, भाषिक लापरवाहीक संस्थागत शक्ति देखबैत छथि।

बालकक सुरक्षा, मूल प्रति संरक्षण, प्रारम्भिक अध्ययनक प्रवेश आ निजी जन्मकथा अलग नियम बनैत अछि। कबीर अपन जन्म-स्रोतक बन्द लिफाफा सार्वजनिक नहि करैत छथि; पाठशाला प्रवेश लेल न्यूनतम सुरक्षित सम्पर्क आवश्यक, पूरा निजी वंश-इतिहास नहि। एगारह पुरान आवेदन बचल, पाँच विद्यार्थी पुरान प्रति लऽ गेल छलाह; दू परिवार तत्काल संशोधित पत्र लेलनि, बाकी धरि सूचना पहुँचनाइ बाकिये अछि। नियम पारित होएब आ नियमक पहुँच भिन्न घटना रहल।

कथन-नैतिकता : निजी कापी, छपल स्वीकृति आ अनछपल जीवन

मैथिली अपन दोष प्रकाशित करैत छथि, सरिताक श्रमक वास्तविक नाम रखैत छथि, निजी नैराक कापी नहि खोलैत छथि। एहि बहुवस्तु दृश्यमे 'प्रकाशन' स्वयं सर्वश्रेष्ठ नैतिक क्रिया नहि; किछु जीवन सार्वजनिक, किछु अंश सीमित, किछु व्यक्ति अपन इतिहासक निर्णायक बना कऽ छोड़ल जाइत छथि। सरिता नसीमाक सिएल जिल्द अनुमति बिना नहि खोलैत छथि। नैराक अप्रत्यावर्तनीय मृत्यु श्रम-स्वीकृतिक सच्चा खुशीकेँ खण्डित नहि करैत, तकर अलग भावकाल रखैत अछि।

छापाखानाक लागत सचमुच बाधा अछि, तेँ मैथिली अपन आत्मप्रशंसाक आधा पन्ना घटाबए तैयार छथि। सरिताक हँसी एहि आर्थिक प्रत्युत्तरक मानवीय तनाव कम करैत अछि। अन्तिम मुद्रित पृष्ठक हाशियामे भविष्यक संशोधनक रिक्त ठाम श्रेयक समाप्ति नहि, सम्पादकीय अपूर्णताक स्वीकृति अछि। 'अपना वाणी' एतय निरंकुश लेखकीय स्वर नहि, दोष स्वीकारि नब वाक्य सार्वजनिक करबाक जोखिम अछि।

अध्यायक शिल्प-समीक्षा

अध्याय दुई समानान्तर वर्तमान संकट—पोथीक भूमिका आ पाठशालाक नियम—केँ एके पात्रसभक यात्रा आ पन्नाक पुनर्लेखन द्वारा जोड़ैत अछि। एतय प्राचीन कथाधाराक प्रत्यक्ष दृश्य नहि; पिछला दार्शनिक पाठक परिणाम आधुनिक प्रपत्र-रूपमे आबैत अछि। कथनकाल दिनक विभिन्न पहरमे चलैत, बारम्बार छापाखानाक तरफ लौटैत अछि। संवाद द्वारा आत्मालोचना विशद भेलाक कारण पाठकक स्वतन्त्र अनुमान कखनो कमि सकैत

अछि। मुदा मैथिलीक अधसुखायल स्याही, सरिताक अस्वीकृत 'प्रेरणा' शब्द, फरीदक कार्य-समय आ नैराक बन्द कापी दृश्यकेँ केवल सुधार-रिपोर्ट बनएबसँ बचबैत अछि।

अध्याय २१४ — नैराक खाली जगह

घरेलू वस्तुक प्रवेश आ रिक्तताक अप्रतिस्थापन

अध्याय पित्तरि थारीक कातसँ चाउरक दाना हटबासँ आरम्भ होइत अछि। सरिताक श्रमक नाम पोथीमे छपि गेल, मुदा नैराक मृत्यु सँ उत्पन्न खालिपन एक अक्षरो घटल नहि। ई पहिल कथन पिछला अध्यायक आशावादी मुद्रण-समाप्तिक लग रखल गेल असंगतिक घोषणा अछि। सरिता थारी उठाकऽ घाट दिस जाइत छथि : शोकक कथा निष्क्रिय स्मारकपर नहि, चलैत श्रम आ सामुदायिक वस्तु-विनिमयमे प्रवेश करैत अछि।

घाटक समारोहक पहिने धोनिहारक गठरी ढोएबाक सुरक्षित बाट नपबाक प्रश्न उठैत अछि। उर्मिलाक पुरान नापक सन्दर्भ राखल जाइत अछि, मुदा वर्तमान माटिक ढलान फेर नापल जाइत अछि। मृत व्यक्तिक स्मृति वर्तमान काजक उपाय सुझबैत अछि, वर्तमान परिस्थिति ओकरा जसक तस लागू करबाक अनुमति नहि देत। रुखसाना आ रेणुक हँसी उर्मिलाकेँ निर्जीव माला नहि बनबैत, हुनकर व्यवहारक सजीव भिन्नता बचबैत अछि।

बहुवाची नैरा : अति-महिमामण्डनक प्रतिरोध

आयोजक 'नैरा: घाटक अमर रक्षक' जेकाँ प्रस्ताव रखैत अछि, संगहि ओ सभ किछु पहिने सँ देखैत छलीह एहन वाक्य। सरिता अस्वीकार करैत छथि; कबीर नैरासँ अपन असहमति आ हुनकर गलतीक स्मृति सुनबैत छथि। ई बहुस्वरता मृतकक मानवीय जटिलताकेँ भक्तिपरक सर्वज्ञतासँ बचबैत अछि। सरिता प्रस्ताव फाड़ि नहि दैत छथि; झूठ प्रचारपत्रक संशोधन-इतिहास आ चन्दाक स्रोत सेहो जाँचबाक कहैत छथि। एतय कथन-नैतिकता सम्मानक भाषिक सौन्दर्यसँ बेसी सार्वजनिक उत्तरदायित्वक घटनाक्रम अछि।

नैराक कपड़ा गलत मोड़ब, फोटोपर ककरो नामक मात्रा सुधरब आ स्वयं फोटो-ग्रहणमे चूक करब जेकाँ छोटी स्मृतिसभ व्यक्ति केँ अपूर्ण, विवादशील आ हँसाबय योग्य बनबैत अछि। कबीर चायक दोकानपर हँसैत छथि; ओ हँसी स्मारकक मंचपर दोहरायल 'श्रद्धांजलि' नहि। एहि छोट वस्तु-आधारित पुनरावर्तनमे दुःख आ हास्य एक संग सम्भव छथि, बिना ई कि एक दोसराकेँ निष्प्रभावी कए देत।

अनुपमाक पत्र : सीमित सहमतिक कथात्मक सीमा

अनुपमा सेन नानीक मूल बंगाली पत्र नहि, अनुमति भेटल दूटा पुस्तक-मरम्मतिक खर्चवाली पाँतिक सीमित प्रति अनैत छथि। निजी सम्बन्ध, पता आ जीवित वंशजक नाम ढाँपल अछि। नकलक मूल भाषा, तिथि आ प्रयोजन लिखल जाइत अछि; संकेत फोटो लेबाक पहिने पुनः सहमति पुछैत अछि। एहि प्रसंगमे पन्ना पढ़बाक इच्छा आ सार्वजनिक प्रसारक अधिकार परस्पर भिन्न छथि। निजी स्रोत एकटा मौन पात्र जकाँ कथा नियंत्रित करैत अछि, बिना स्वयं मंचपर उपस्थित भेल।

तीन ठाम सत्यापित नकल राखबाक प्रस्ताव बनैत अछि, मुदा ओकरा बीच भविष्यक संशोधनक मिलानक नियम अनिर्णीत अछि। एक नकलसँ दुसराकेँ जानि सकबाक सुविधा आ एक व्यक्ति द्वारा समस्त परिवारक पत्र प्रकाशित करि देबाक भय अलग। कथाकार प्रसारकेँ स्वतः मुक्ति नहि मानैत; स्रोतक स्वामित्व, पत्रमे उल्लिखित अन्य लोकक निजता आ प्रतिक सत्यापनक खर्च कथा भीतर रखैत छथि।

अनुपस्थित व्यक्तिसँ काल्पनिक प्रत्युत्तरक निषेध

कबीर अनपठाओल पत्रक उत्तर नैरासँ कल्पना करब चाहैत छथि। सरिता ओकरा हुनकर अपन लिखल बात मानैत छथि, नैराक उत्तर नहि। तारा अस्पष्ट समूह-फोटोमे नैराक पहचान निश्चित करबाक प्रस्ताव रखैत छथि; सरिता अनिश्चितता स्वीकारैत छथि। एहि दू प्रसंगमे अनुपस्थितिक सौन्दर्यगत उपयोग स्पष्ट अछि : मृत व्यक्तिक दृष्टिकेन्द्र कथकक उपलब्ध नहि, शेष लोक अपन स्मृति बतबैत छथि, किन्तु मृतकक मनक सर्वज्ञ व्याख्या नहि दैत।

अध्यायक अन्तिम थारी धुनब, खाली जगहकेँ नव नाम नहि देब, आ नैराक निजी कापी बन्द राखब—ई सभ नकारात्मक प्रतीक मात्र नहि, अन्तिम दृश्यगत क्रिया छथि। शोक अमूर्त तत्त्ववचन नहि, शरीरक पुनरावृत्तिमूलक दिनचर्या बनैत अछि। अन्य पात्र अपन काज पूरा करैत छथि, मुदा उर्मिलाक देय आ नैराक अनुपस्थिति बचल रहैत अछि। ई असमाप्ति कथाक सचेत भाव-गति अछि।

शिल्पक उपलब्धि आ सीमा

घाटपर झाड़ू, टूटा सीढ़ी, संकुचित बाट, पूजा-सजावट, गीत आ मरम्मतिक रेखा मृतक-स्मृतिक संग बिना समानार्थी भेल उपस्थित अछि। मृत्यु-शोकक दृश्यकेँ कियो अन्तिम भाषण द्वारा बन्द नहि करैत। तथापि आयोजकक अतिशयोक्तिपूर्ण प्रस्ताव आ सरिताक तत्काल सुस्पष्ट अस्वीकार कथाक विवादकेँ एक मानवीय भूलक बदला नैतिक शिक्षाक छाँह दे सकैत अछि। अनिर्णीत चन्दा, गलत फोटो, अप्रेषित पत्र आ बाँसक मेज-पाया एहि सुस्पष्टताक प्रतिकार छथि।

अध्याय २१५ — वितरित अभिलेख

पोखरिक चौठ उराहि : दीर्घकालक पुनरावृत्ति

२०४२क चैत्रमे चारि वर्षक चौठ सामुदायिक उराहिक वर्णन अछि। उद्घाटनमे गोमती पहिने सुरक्षित पाट बनएबाक आदेश दैत छथि; नामक हाजिरी बचेबा सँ पहिने जीवित देहक सुरक्षा आवश्यक अछि। ई दृश्य उपन्यासक पहिल रसोइ आ अभिलेखक विरोधकेँ नब सामाजिक क्षेत्रमे लौटबैत अछि। पोखरिक पाँक, मखानक डाँट, चप्पलक टूटल पट्टा आ सफाइक विरामक माप कथात्मक समयकेँ दीर्घ इतिहासक दाबी सँ निकालि एक काजक दिनक भीतर रखैत अछि।

पहिल आधामे श्रमिकक क्रमाङ्कित पर्ची, समय, विश्राम, मजदूरी-दर आ अलग निजी पहचानक बात अछि। एक मजदूरक आधा घण्टाक विश्राम दू बेर काटल गेल; गवाही मिलाकऽ सुधार होइत अछि, मूल गलती मेटल नहि

जाइत। बच्चा खतनाक पाँकमे टोपरी उठबैत अछि—गोमती ओकर कामक कथनकेँ स्वीकारैत छथि, मुदा जोखिमपूर्ण बाल-मजदूरीकेँ हाजिरीक नाम देब पर्याप्त सुधार नहि। कथा श्रमक मान्यता आ सुरक्षाक अलग दायित्व रचैत अछि।

रंगीन पन्ना, अलग पहुँच आ वस्तुक कथावाचकत्व

उज्जर पन्ना सार्वजनिक हिसाबक, नील पन्ना अनुमति-पाओल जाँचक, मटिआ आवरण निजी विवरणक अछि। ई रंग-भेद सजावट नहि; ककरा की देखबाक, संशोधन करबाक वा फोटो पसारबाक अधिकार अछि, से पाठककेँ दृश्य रूपमे बुझबैत अछि। रमा कर्ण कार्यालयक मूल पंजी नहि, अपन पहिनुक अस्वीकृति, प्राप्ति-अङ्क आ लिखित अनुरोधक प्रमाणित प्रति लऽ अबैत छथि। एतय 'मूल'क स्थानक जटिलता लेखक ईमानदारीसँ कहैत छथि; वितरित अभिलेखक अर्थ मूल सरकारी पंजीक अवैध कब्जा नहि।

एक चमकदार कम्पनी-प्रस्ताव समस्त प्रति एक केन्द्रीय भण्डारमे राखि सुविधाजनक मोबाइल प्रमाणपत्र देबाक बात करैत अछि। गोमती नेटवर्कक अनुपस्थितिमे श्रमिकक दावाक स्थिति पुछैत छथि; कम्पनी स्पष्ट उत्तर नहि देत। एक स्वयंसेवक अनेक प्रति सँ भ्रमक डर उठबैत अछि। रमा स्वीकार करैत छथि जे तीन प्रति तीन गलती सेहो बना सकैत अछि; तेँ संशोधनक तिथि, पुरान रूप, जिम्मेदार व्यक्ति आ मिलानक नियम जरूरी। तकनीक अथवा बहुसंख्यक प्रति कोनो चमत्कारी समाधान नहि।

मतदानक अवकाश : मास-आधारित काल-छलाँग

अध्यायक मध्यखन अचानक कतेको मास पछिलका कार्तिकक लोकपाठ-खुला-खाता-गीतक बैसार आबैत अछि। ई काल-छलाँग महत्त्वपूर्ण : चैत्रक स्थल-कार्य आ कार्तिकक नीति-निर्णय एक दिनक तात्कालिक उपलब्धि नहि। रूपान्तरणक बीच प्रस्ताव, जाँच, खर्चक आकलन आ सदस्यक गोपनीय मतदानक समय छैक। महिला मजदूर ठेकेदारक सामु हाथ उठाकऽ विरोध करबाक भय बतबैत छथि; गुप्त मत आ लिखित अल्पमतक अधिकार तय होइत अछि। श्रोता-वाक्य सँ सभाक पद्धति बदलैत अछि।

मतगणना सार्वजनिक अछि, व्यक्तिगत मत अनाम। बहुमतसँ प्रतिक वितरण स्वीकृत, तथापि अनेक प्रति सँ गलती बढ़बाक अल्पमत-आपत्ति कार्यवृत्तमे बचल। संरक्षकक तीन अलग हस्ताक्षर आ लागतक तीन मासक प्रस्ताव संस्थाक नब वर्तमान बनबैत अछि; कोनो एक हाथमे सभ चाभी नहि। कथा 'लोकतन्त्र' शब्दक मात्र उद्घोष नहि, बालकक गैर-मतदाता भूमिका, वयस्क मताधिकार, विरोधी मतक दृश्य उपस्थिति आ रखवारीक वेतनक विभाजन देखबैत अछि।

भुगतानक असमान गतिक कथा

पुरान पोखरि-हाजिरीक दू समय सुधरल, एक भुगतान-अङ्क अपूर्ण रहल, एक मजदूर बैंक-द्वारा भुगतान चाहैत अछि। वैधानिक प्रक्रिया, आदेश, वास्तविक रकमक आगमन—तीन अलग अवस्था छथि। रमा अपन पुरान 'मौखिक दबाव स्वीकार नहि' लिखित आपत्तिक सार्वजनिक सार अनैत छथि, मुदा गोपनीय गवाहक निजी

परिचय नहि खोलैत। मूल पंजी पर चलैत जाँच पुरानहि अनिर्णीत। सरिता अपन निजी रोकल देय आ नैराक निजी फोनकेँ नव सार्वजनिक निर्णयक अधिकारमे समाहित नहि करैत छथि।

अन्तक महिला घरमे अपन काम-पर्ची देखेबाक कहैत छथि, जे कतेको अनौपचारिक श्रमक सामाजिक समयक नाटकीय पुनर्दावा अछि। दोसर स्त्री अगिला उराहिमे नापबाक कौशल सीखए चाहैत छथि। एहि छोट हस्तान्तरणसँ पात्र सामुदायिक संस्थाक दर्शक नहि, कार्य-प्रक्रियाक सम्भावित आगामी कर्ता बनैत छथि। कागदक तीन प्रति लेल बनल व्यवस्था तखन जीवित अछि जखन लिखल पन्ना पढ़निहार आ ओकरा चुनौती देनिहार लोक बचल छथि।

समग्र शिल्प-समीक्षा

कथाकार एक ओर दीर्घ चारि-वर्षीय पुनरावृत्ति, दोसर कात चप्पल टूटबाक एक क्षण, फेर महीनासभक अन्तरसँ मतदानक अन्तिम दृश्य जोड़ैत छथि। ई पैमाना-परिवर्तन अभिलेखकेँ निष्क्रिय सूचना नहि, श्रमिकक दिनक घटनामय व्यवस्था बनबैत अछि। सीमा : नियम आ व्याख्या संवादमे बहुत जल्दी व्यवस्थित होइत अछि; श्रमिकक विपरीत इच्छा कखनो प्रस्तावक 'उचित प्रश्न' मात्र रहि जाइत अछि। मुदा निजी नाम नहि छपए चाहनिहार स्त्री, असहमत मतदाता, गलत चिह्न, बालसुरक्षा आ सरिताक अन्तिम खाली लोटा समानता-वाचक विजयोत्सवकेँ अस्वीकार करैत अछि।

अध्याय २१६ — कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

शीर्षकक पुनरागमन : पहिल रसोइसँ अन्तिम भात धरि

अन्तिम अध्याय सरिताक चूल्हामे काठी सरकेबाक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। पहिल अध्यायक जीवित सरिताकेँ मृत घोषित करनिहार सूचना सँ उठल रसोइक आगि एतय नैराक वास्तविक मृत्युपछाति फेर देखाइत अछि। ई आरम्भ–अन्तक आवर्तित विन्यास अछि, यांत्रिक रूपेँ आरम्भिक समस्याक निरसन नहि। सरिता करिया कंकड़ अलग करैत छथि; पहिने नैरा दाना चुनबामे अधीर छल। पुत्री-सम्बन्धी स्मृति घरेलू क्रियामे अचानक आएल अछि, कथक ओकरा चमत्कारिक पुनःआगमन नहि बनबैत।

कबीर कुआँक चरखी सँ पानि भरैत छथि, संकेत अलमारीक खूँटी लैत अछि, तारा मतगणनाक प्रतिक मिलान बतबैत छथि। प्रशासनिक पन्ना घर धरि पहुँचैत अछि, मुदा सरिता खायबाक समयकेँ ओकर अन्तहीन विस्तार नहि बनए दैत। विश्वास आ जाँचकेँ विरोध मानब अस्वीकार करैत छथि। चूल्हाक धुआँ, लोटाक पानि, थारीक किनार आ सांझक आवाज उपन्यासक विस्तृत सार्वजनिक आलोचनाकेँ पुनः देह-आधारित समयमे संकुचित करैत अछि।

घरेलू श्रमक विभाजन आ भोजनक बहुस्वरता

गोमती पुछैत छथि जे पोखरिक घण्टा गनल जाइत अछि, घरक चाउर चुनब, पानि गरम करब आ भात रान्हबाक घण्टा के गनत। सरिता उत्तरमे मुहरक माँग मात्र नहि, 'रोज ई काम करत के' प्रश्न रखैत छथि। अतिथि भोजन

बनबैत परिवारक सदस्यक सक्रिय बँटवारा सोचैत छथि; कथा एहि प्रश्नकेँ पूर्ण समाधान घोषित नहि करैत। दैनन्दिन दायित्वक असमान आवृत्ति दूरक संस्थागत न्यायसँ स्वतः मेटैत नहि।

रुहानीक थारीमे कबीर बेसी भात परोसैत छथि; ओ आधा वापस रखबाक कहैत छथि, कबीर सुधारैत छथि। भोजन साझा करब बराबर भाग थोपब नहि, कतेक चाही से कहबाक स्वतन्त्रता सेहो। एक क्षणक नमक-विवादमे हँसी उठैत अछि; हास्य बाढ़ि, मृत्यु अथवा अदालतक देरी मेटि नहि दैत, मुदा ओहि साँझ लोक एक-दोसराक संग जीवित रहबाक अवकाश पबैत छथि। एहि छोट संवादसभमे समस्त महाकाव्यक कथनाधिकार गृहस्थीक्रियाक रूप लैत अछि।

अनुपस्थित नैराक असमाप्य समय

नैराक खास कटोरी, चाउरक खुरचन, कपड़ा मोड़बाक भूल आ तारा लग अनुत्तरित प्रश्न स्मृतिक अलग आकार छथि। पात्रसभ नैराकेँ सर्वज्ञ रक्षक, अचूक सुधारक वा लौटि आएल आत्मा नहि बनबैत छथि। तारा अपन प्रश्न पूरा नहि कऽ सकबाक बात कहैत छथि; सरिता बन्द कापीक शेष निजी अंश खोलबाक इनकार करैत छथि। मृतकक समस्त आवाज समेटबाक अधिकार ककरो लग नहि अछि। कथा एतय मौनक भिन्न प्रकार—अनपठाओल पत्र, नखुलल कापी, रिक्त कुर्सी—केँ भावुक एकरे चिह्नमे नबदलि उपस्थित रखैत अछि।

नदीक जल भाप, माटि आ दोसर धारमे रूप बदलैत अछि, मुदा सरिता स्पष्ट अनुभव करैत छथि जे जलचक्र मृत बेटीकेँ ओही देह, स्वर आ असहमतिसहित घुरा नहि देत। एतय विश्वक असंख्यताक बोध व्यक्तिगत मृत्युकेँ छोट नहि करैत। ई अन्तिम अध्यायक एक महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक संयम अछि : ब्रह्माण्डीय रूपक शोकक समाधानक दावा नहि करैत; अपूरणीय हानिक सोझाँ ओकर सापेक्षता खुलैत अछि।

अधूरा अभिलेख : अनिर्णीत परिणामक कथात्मक स्वीकार

गोमती एक मजदूरक चिह्नित भुगतान-घरमे त्रुटि देखबैत छथि; मूल रकम पहुँचबाक सूचना नहि। तारा तुरन्त सुधारेबाक लेल उठैत छथि, सरिता पर्छाक समय नोंदि भोजन पहिने करबाक कहैत छथि। रमा कर्ण दरबज्जासँ अगिला दिन पुनःजाँचक आश्वासन देइत छथि, भीतर भोजनक समय नहि लैत छथि। सार्वजनिक कामक जिम्मेदारी आ व्यक्तिगत समय एक दोसरकेँ नकारैत नहि, किन्तु समस्त काज आजहि पूरा होएबाक जबरदस्ती नहि रहैत।

पाठशालाक बच्चासभ अगिला दिन अलमारी खुलबाक प्रश्न करैत छथि; नव भूमिकाक छापल स्वीकृति अछि, मुदा अगिला संस्करणमे बच्चाक आपत्तिक स्थान बाकी; जावेदक कार्यक्रममे कलाकारक अलग देय, घायल कुकुरक उपचारक समय छैक; उर्मिलाक बकाया ऐतिहासिक पन्नामे बचल अछि। ई छोट कथावृत्तसभ 'महान समापन'क अपेक्षा खण्डित करैत अछि। कथात्मक पूर्णता सम्पूर्ण सामाजिक समस्याक शून्यीकृत परिणाम नहि, ककरा कतेक काम करबाक अछि से देखैत पाठकक विदाइ अछि।

दृष्टिकेन्द्र, घटना-अवधि आ अन्तिम दृश्य

कथावाचक तृतीयपुरुषे रहैत छथि, मुदा दृश्य-संयोजन सरिताक देह, स्मृति, भूख आ नीरव प्रतिक्रियाक निकट अबैत अछि। किछु पातर पूर्वदीप्ति—जीवित सरिताक मृत्यु-सूचना, नैराक रसोइक चूक—अन्तिम साँझक भीतर नैराक अनुपस्थिति दृढ़ करैत अछि। लम्ब इतिहास आ २१६ अध्यायक संघर्ष एक थारीक आवृत्तिमे संक्षिप्त होइत अछि, फेरो कथक पाठकसँ 'बचैत सभटा सिद्ध' कहि नहि कहैत। अन्तिम क्रिया : सरिता एक खसल चाउरक दाना बटकीमे रखैत छथि, कबीरकेँ भात परोसैत छथि, स्वयं खए लगैत छथि।

एहि दृश्यकेँ चाउरक दानामे नैराक पुनर्जन्म, नदीमे मृत्यु पर विजय वा परिवारक पूर्ण चंगाइ पढ़ब मूल पाठक विरुद्ध हएत। दाना बचब साधारण देखभालक क्रिया अछि; नैराक खाली जगह ताहिसँ नहि भरैत। दुआर आधा बन्द रहैत अछि ताकि हवा आबि सकय। ई अन्त 'कथा बाकी अछि'क अलंकारिक घोषणा बनाबए सँ बेसी काव्यात्मक : मानव जीवनक दिनचर्या जारी अछि, मृत्यु अपरिवर्तनीय अछि, प्रश्न अगिला दिन सेहो अछि।

उपन्यास-समाप्तिक सौन्दर्यगत उपलब्धि आ आपत्ति

एहि अन्तमे कोनो देवता, सर्वज्ञ न्यायाधीश अथवा एक महापुरुष द्वारा समस्त विवादक समाधान नहि। पानि, भात, बाँस, खुरचन, प्रश्नपट्टी आ तीन चाभीक व्यवस्था अन्तक वस्तुसंसार बनबैत अछि। मूल शीर्षक 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'क भीतरी संघर्ष बाहरी युद्धक समापनसँ नव भाषा पबैत अछि : जाँचब की भरोसा करब, स्मृति की कल्पना, स्त्रीक नाम की श्रम, शोक की भोजन। ई विरोधसभ एकरे सूत्रमे गुम नहि होइत।

सीमा : अन्तिम सभाक अधिकांश पात्र अपन उत्तर विचारपूर्वक आ लगभग सुसंगत भाषा मे दैत छथि; एकटा बहुस्तरीय समाज एतय अनावश्यक रूपसँ सुव्यवस्थित अनुभूत भऽ सकैत अछि। किन्तु मृत्यु पर सरिताक शारीरिक विराम, तारा लग नैराक अनुत्तरित प्रश्न, गलत भुगतान चिह्न, कबीरक बन्द पत्र आ भोजनक असमान भूख एहन असंगत जीवन-सत्य छथि जे अंतिम भाषणक संभावना लगातार घटबैत अछि। उपन्यास जे व्यक्ति सँ प्रारम्भ होइत अछि, अन्तमे ओही स्त्रीक स्वयं भोजन करबाक घटना दैत अछि—मुक्तिक घोषणासँ छोट, मुदा भावात्मक रूपसँ गम्भीर।

स्वर्गारोहणिक-पर्व / उत्तरकाण्ड : अध्याय २०५–२१६ क समग्र कथा-आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

स्वर्गारोहणसँ जीवित श्रोताक अधिकार धरि कथन-स्तर

पर्वक आरम्भमे स्वर्गीय न्याय-सूची (२०५), उत्तरा–परीक्षितक जीवित भविष्य (२०६), जनमेजयक प्रतिशोधक प्रश्न (२०७) आ उग्रश्रवाक श्रोता-समाज (२०८) क्रमशः महाकाव्यक एकरे अन्तिम काल नहि, पुनःकथनक परत रचैत अछि। तकर बाद २०९मे लव–कुशक राजसभामे गायन आ वर्तमान गायिकाक स्वराधिकार; २१०–२१२मे भामती, उदयन, गङ्गेशक अलग कल्पित अध्ययनक दृश्य; २१३–२१६मे आधुनिक छपाइ, घाट, संस्था आ रसोइक समापन। ई क्रम प्रत्यक्ष कालक्रमिक इतिहास-रूप नहि; उपन्यास श्रवणक केन्द्र बदलैत अछि।

कथा-संसारक प्राचीन दायरा राजा, गुरु आ शिष्यक प्रश्नक सँ उत्पन्न, आधुनिक दायरा गेबवाली, काम करनिहार, नकलकार, वृद्धा, बच्चा आ शोकग्रस्त परिवारक जीवनसँ। एहि दुनू कालखण्डक समावेशकेँ शाब्दिक प्रमाण वा एक-से-एक पात्र-अवतार मानब अनुचित। साहित्यिक सम्बन्ध प्रश्नक स्थानान्तरणमे अछि : कथा ककरा कहबाक छूट, के सुनत, कथा बदलएबाक अधिकार के, आ सुननिहार कखन प्रतिवाद करि सकैत अछि।

गीत, शास्त्रार्थ आ पोथी : तीन आभ्यन्तरिक कथन-प्रणाली

लव–कुशक गान महाकाव्यक भीतर महाकाव्यक कथा सुनबैत अछि; राम स्वयं कथित जीवनक एक श्रोता बनैत छथि। भामतीक पन्ना मूल, भिन्न प्रति, आपत्ति आ आजुक प्रश्न रूपेँ बचैत अछि। उदयनक संवादमे पूर्वपक्षक पन्ना बांधल जाइत अछि; गङ्गेशक कल्पित कक्षा श्रोताक इतिहास-सवालसँ पुनःदेखल जाइत अछि। एतए कथा अपन कहनक साधनकेँ दृश्य बनबैत अछि—गायन, प्रतिलिपि, बही, प्रश्नपट्टी, मंच आ प्रकाशन। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई आत्मचेतन आख्यान-रचना थिक।

आधुनिक फूलमती, करीम, रमेश आ हमीदाक अलग संगीत-व्यवहारक तुलना प्राचीन गायनसँ होइत अछि, मुदा लोकसंगीतक सम्पत्ति-विवाद लव–कुशक युगक ऐतिहासिक नियम होएबाक दावा नहि। एहि सावधानीमे साहित्यक सौन्दर्य अछि : समान संवेदनाक असमान सामाजिक परिणाम, जे कथापरम्परा जीवित रखैत छथि बिना सभ कालकेँ एक बनौने।

कथनकालक आवृत्ति आ अनिर्णीत कालखण्ड

पर्वक दीर्घ समय रेखा प्राचीन कथाक अनेक अलग काल-स्तर, २०४२क वर्तमान दिवस, चैत्रक पोखरि-उराहि, कार्तिकक मतदान आ व्यक्तिगत स्मृतिक अचानक पूर्वदीप्ति सँ बनल अछि। विशेषतः २१५क चौठ उराहि—चारि वर्षमे चौठ बेर—समुदायिक श्रमक बारहमासी/वार्षिक आवर्तनक भाव बनबैत अछि; तकर बाद महीनासभक अन्तरसँ नियम-बनब देखाएल गेल। अध्याय २१६ एक साँझक भीतर अनेक पूर्वकालक वस्तु फेर अनैत अछि, मुदा समयक चौड़ाइ एक घरक आगिपर सिमटैत अछि।

प्रत्येक सम्पन्न घटना लग अपूर्ण परिणाम बचल अछि—गायनक अग्रिम भेटल, सम्पूर्ण मानदेय नहि; रमेशक अभ्यासक भुगतान, शेष आदेश मात्र; हमीदाक अपमानकारी उपयोग रोकल, पुरान पारिश्रमिक बाकी; हेमाक पूरक पन्ना स्वीकृत, मूल पुस्तक अपरिवर्तित; मैथिलीक भूमिका संशोधित, समस्त देय नहि चुकल; अभिलेख तीन ठाम पहुँचल, मूल जाँच तथा मिलानक भविष्यमुखी प्रश्न बाकी। ई असम्पूर्णता कथात्मक इतिहासक निरन्तर समय अछि, अवश्यंभावी निराशावाद नहि।

स्त्रीदृष्टि, अनाम श्रम आ मृतकक स्मृति

सरिता, मैथिली, भामती, मृणाल, फूलमती, हमीदा, हेमा, गोमती, रमा, तारा, अनुपमा आ रुहानी आपसमे एक स्वर नहि। केहनो स्त्री सार्वजनिक गानक शब्द चुनैत छथि, कियो पृष्ठक्रमक श्रेय, कियो मूल स्रोतक मर्यादा, कियो कामक समय, कियो अपन निजी जीवन नछपएबाक अधिकार। एहि भिन्नताक कारण स्त्री-पात्र कृतिमे सजावटी नैतिक प्रतिमाक समूह नहि, असमान निर्णयवाली कथात्मक व्यक्तित्वसभक धारा छथि।

नैराक अनुपस्थिति पर्वक अन्तमे विशेष बल प्राप्त करैत अछि। जन्म-पंजी आ मृत्यु-पंजीक आरम्भिक विषय ओकर मृत्यु बदलि नहि सकैत। बेटी मरलाक बाद सरिता अपन वास्तविक शोकक स्थानपर कागदक विजय नहि रखैत छथि। उर्मिलाक श्रमक देय आ घाट-नाप अलग रहैत अछि; निजी स्मृतिमे दोष, हँसी, थकान आ शिकायत बचैत अछि। मृतकक 'सम्पूर्ण' रूप गढ़ब स्नेहक प्रमाण नहि; कथाक प्रभाव एहि स्वीकारसँ जन्मैत अछि।

शिल्पगत प्रश्न : उपयोगी स्पष्टता बनाम कथात्मक अतिनिर्देशन

पर्वमे पात्रसभ बारम्बार अनुज्ञा, श्रेय, रसीद, मूल, प्रति, निजता आ सार्वजनिक निर्णयक अन्तर सुस्पष्ट शब्दमे कहैत छथि। एहि पुनरावृत्तिक लाभ ई जे कथा अनेक मामिलाकेँ एकरे रहस्यक अन्धा धागामे नहि जोड़ैत। मुदा ओकर कलात्मक जोखिम ई जे जीवनक कठिन क्षण सेहो आदर्श कार्यविधि सीखयबाक 'उदाहरण' बनि जाए; विपरीत पात्रक विचार, असहज मौन, पात्रक अपने भीतर विरोधाभास आ कथकक नब अनिश्चितता कैं आरो स्थान भेटबाक सम्भावना अछि।

एहि जोखिमक सन्तुलन प्रेमक छोट असफलता, बालकक तर्क, आयोजकक भूल, श्रमिकक अधूरा भुगतान, मृणालक स्वयं 'नहि बुझलहुँ' स्वीकार, अनपठाओल पत्र आ सरिताक खुरचनक विराम दैत अछि। शिल्पक सबसँ सफल ठाम तह अछि जखन उपन्यास नियम नहि सुनबैत, एकटा वस्तु छोड़ि दैत अछि—उदाहरणार्थ दागल पन्ना, बन्द कापी, हेराएल नाम, खाली थारी वा चाउरक बचल दाना।

समग्र उपन्यास : आख्यानशास्त्रीय मूल्यांकन

२१६ अध्यायक संयुक्त कथन-योजना

ई संरचना किसी एक वीरनायकक संकुचित जीवन-चरित्र नहि, घरेलू, अभिलेखीय, नदी-भूगोल, श्रम, संचार, चिकित्सा, हिंसा, न्याय, प्रेम, मृत्यु आ सामुदायिक शिक्षाक अनेक घटना-घनत्वक लम्ब आख्यान अछि। उपन्यासक अध्याय-पर्वक्रम महाकाव्यक पाठकीय अपेक्षा जगबैत अछि, मुदा आधुनिक कालमे अन्तिम राजकीय समन्वय अथवा दैवी समाधानक स्थानमे बहुविकल्पी सामान्य दिनचर्या प्रधान रहैत अछि।

प्राचीन कथाधारा सेहो केवल पात्रनामक संकेत नहि; कतेको दृश्य स्वतंत्र कथन-काल, पात्रक प्रश्न, लय आ श्रोताक सीमासहित रचल गेल अछि। भामती, उदयन, गङ्गेशक दार्शनिक प्रसंग कथाभितर सुनल-समझल-बदलबाक स्थल छथि, शास्त्रीय निष्कर्षक वैज्ञानिक प्रतिपूर्ति नहि। समग्र आलोचनाक मानदण्ड एहि कारण घटना-क्रम, फोकलाइजेशन, कथन-स्तर, समय-अवधि, पुनरावृत्ति, पात्रक आवाज, पाठकीय अपेक्षा आ रचनागत विराम रहल अछि।

आरम्भक रहस्यसँ अन्तिम अपरिवर्तनीय हानि

पहिल अध्यायमे जीवित सरिताकेँ मृत घोषित करनिहार अभिलेखक विडम्बना रहस्यजनक कथात्मक प्रस्थान देलक। अन्तिम अध्यायमे सरिताक मृत्यु-सूचना सँ शुरू भेल रसोइ नैराक वास्तविक मृत्युपछाति जीवनक आवश्यक श्रमस्थल रूपमे घुरैत अछि। जीवित मृतकक नाम सुधरब आ मुइल व्यक्तिक देह वापस नआब—ई

प्रतिलोम उपन्यासक भावात्मक भारक एक ठोस केन्द्र अछि। एहि आवर्तित विन्यासक प्रामाणिक विश्लेषण पहिल आ अन्तिम दूनू अध्यायक वास्तविक क्रियापर आधारित अछि, न कि चूल्हाक कुनै रहस्यमय भविष्यवाणीक कल्पना पर।

सत्ताइस नामक पुरान सूची, गलत पंजी, अनुज्ञाक प्रश्न आ सार्वजनिक इतिहासक संशोधन आख्यानक बृहत् धागा छथि, मुदा प्रत्येक पात्रक आन जीवन अलग कथात्मक धरातल रखैत अछि। कियो औषधि चाहैत अछि, कियो कपड़ाक दाम, कियो आपन गीत, कियो सुरक्षित पोखरि, कियो मात्र प्रश्न पुछबाक समय। समस्त उपन्यासकेँ एक अपराधी खोजबाक कथाक संक्षेप बनायब ओकर सामुदायिक बहुकेन्द्रीय संरचनाकेँ छोट करब हएत।

वस्तु, स्थल आ ध्वनिक पाठकीय स्मृति

चूल्हा, रसोइक पात्र, रेलक गेट, नावक पटरा, सन्दूकक पन्ना, कपड़ाक टुकड़ा, बाँसक खूँटी, ढोलकक थाप, अधसुखायल स्याही आ नदीक पानि अपन-अपन अध्यायक विशिष्ट कार्य करैत अछि। वस्तुसभ कोनो एक भारी 'मूल प्रतीक'क स्थायी रूप नहि; ओ परिस्थिति बदलैत अपन उपयोगो बदलैत अछि। एक युगक गीत दोसर दिनक माप नहि, एक नकलक प्रमाण दोसरक निजी पत्र नहि, एक स्मारकक नाम मृत श्रमिकक भुगतान नहि। एही असमानताक पुनरावृत्ति पुस्तकक वस्तुगत संरचनाकेँ दृढ़ करैत अछि।

ध्वनिक पुनरावृत्ति—रेलक आवाज, नाविकक बोल, बाजाक ताल, लोकगीतक मौन आ चूल्हाक फेन—दीर्घ गद्यक भीतर सूक्ष्म अवधि बनबैत अछि। एहन ठाम आख्यान सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि जखन भावक कथन ओकर वस्तु/ध्वनिक क्रियाक पाछाँ अबैत अछि, पहिने उपदेशक रूपमे नहि।

दृष्टिकेन्द्र आ पात्रक वैयक्तिक अधिकार

तृतीयपुरुष कथक अनेक पात्रक मानसिक स्थिति धरि पहुँचैत छथि, मुदा दृश्य-निकटता एके केन्द्रमे स्थिर नहि। सरिताक रसोइ, नैराक जाँच, फकीराक चौक, कलाकारक रसीद, गड्गेशक कल्पित कक्षा आ बच्चासभक प्रश्नबाड़ी पाठककेँ अलग ज्ञान-सीमा दैत अछि। ई बदलैत फोकलाइजेशन औपचारिक सर्वज्ञ घोषणाक स्थानमे पात्र-निकट दृष्टिक बहुलता बनबैत अछि। तथापि कतेको ठाम पात्रक आन्तरिक अर्थ कथावाचक स्वतः स्पष्ट करैत छथि, जाहिसँ पाठकक स्वतन्त्र सम्भावना कमि सकैत अछि।

उपन्यासक महत्त्वपूर्ण नैतिक-सौन्दर्यगत नियम ई नहि जे हर पात्र सदैव सही अछि; बल्कि एक पात्रक निजी अनुभव पर दोसरक पूर्ण कथा-कब्जा अनुचित ठहरैत अछि। एहि कारण सरिता नैराक पत्रक अनलिखल उत्तर नहि बनबैत छथि; कबीर पालन-मायक जीवनकेँ जन्म-स्रोतक अनिश्चितता सँ मेटैत नहि; फूलमती पुरान अपमानकारी पाँति मंचपर नहि गबैत छथि। कथनाधिकारक ई भिन्न रूप विभिन्न अध्यायमे दृश्य बनैत अछि।

शिल्पगत कमजोरीक सुस्पष्ट पहचान

महाकाव्यीय विस्तारक चुनौती इहो अछि जे अध्यायसभमे अनेक काल-रेखा, समाजसमूह आ शास्त्रीय अन्तर्पाठ एकत्र भेला सँ कतेको प्रसंगक अलग भावक लय संक्षिप्त पड़ि सकैत अछि। पात्रसभक अत्यधिक विधिसम्मत

संवाद कतहु मुखर जीवन कें पुस्तकक सम्पादकीय निर्देशबोधमे बदलैत अछि। स्रोत अलग राखबाक बारम्बार आग्रह औचित्यपूर्ण होइतो जँ लगभग प्रत्येक व्यक्तिक मुखसँ तुरन्त समान परिपक्वता आबए, तँ स्वतन्त्र व्यक्तित्वक भाषा-संसार समान सुनाइ सकैत अछि।

दोसर जोखिम ओहि ठाम अछि जखन प्राचीन कथा आधुनिक प्रश्नक अत्यधिक सटीक समकालीन प्रतिबिम्ब बनए; पाठक युगक ऐतिहासिक भिन्नताक बदला लेखकक प्रस्तावित समानता देखैत अछि। उपन्यास अनेक ठाम ई भय स्वयं टारैत अछि—'कल्पित' कथा कहि, स्रोतक काल अलग राखि आ काव्यनामकें स्थलमापन नमानि। आलोचनात्मक मूल्यांकनमे एहि उपलब्धि आ बाँचल असावधानीक सम्भावना दुनू राखबाक चाही।

समग्र मूल्यांकनक निष्कर्ष

सम्पूर्ण २१६-अध्यायी आख्यानक अन्तिम उपलब्धि एहन कथा-समापन अछि जाहिमे काम करनिहार लोकक स्वायत्तता, मृतकक अप्रत्यावर्तनीयता, स्त्री-श्रमक नाम, निजी स्मृतिक असम्पादनीय अंश आ सामुदायिक संस्थाक सुधारक समय संग-संग रहैत अछि। महाकाव्यक विशालता एतय मात्र पात्रसङ्ख्या अथवा पर्व-सङ्ख्यासँ सिद्ध नहि मानल गेल अछि; ओकर प्रश्न नब युगमे कथनाधिकारक बहुवचन सँ जाँचल गेल अछि। पृष्ठ-पृष्ठक शिल्पगत विषमता, विचारक अपेक्षाकृत शीघ्र स्पष्टता आ अनेक प्रक्रियाक शिक्षणधर्मी पुनरावृत्ति आलोचना मांगैत अछि, मुदा ई आपत्तिसभ कृतिक मानवीय श्रम-केन्द्रित प्रश्नक साहित्यिक महत्त्व समाप्त नहि करैत।

अन्तमे नायकक सिंहासन नहि, सरिताक थारी अछि; विजयघोष नहि, आधा खुलल किवाड़; भविष्यक अचूक भविष्यवाणी नहि, अगिला भोर जाँचबाक गलती। नैरा वापस नहि अएलीह, तइयो भात पकैत अछि। एहि विषम युगपत् सत्यकें अक्षुण्ण रखब उपन्यासक अन्तिम आख्यानगत साहस थिक।

असङ्गति आ आख्यान-विधि

व्याख्या, मूल्यांकन आ अन्तिम निष्कर्ष

असङ्गति : त्रुटि नहि, कथा बनबाक एक सम्भावित विधि

“कुरुक्षेत्रम्‌ अन्तर्मनक”क दीर्घ आख्यानमे असङ्गति एकरे प्रकारक नहि अछि। कखनो पात्रक देह आ सरकारी प्रविष्टि एक-दोसराकेँ नकारैत अछि; कखनो दू साक्षीक वाणी अलग पड़ैत अछि; कखनो पुरान महाकाव्यक काल आ विदेहपुरक आजुक समय एक पृष्ठपर संग आबैत अछि; कखनो कथा सम्पन्न क्रिया आ अनिर्णीत परिणामक बीच दूरी बचा दैत अछि। एहि सभकेँ केवल लेखकीय भूल कहि हटाएब आख्यानक सक्रिय प्रश्नकेँ अनदेखब होएत। मुदा प्रत्येक भिन्नता स्वतः सर्जनात्मक उपलब्धि सेहो नहि। साहित्यिक परीक्षणक केन्द्र ई रहबाक चाही जे कोन अन्तर पाठकक ज्ञान, दृष्टिकेन्द्र, समयबोध अथवा पात्रक स्वतन्त्रता बदलैत अछि; आ कोन अन्तर कथा-निर्माणमे अनिच्छित असावधानी जकाँ बचि जाइत अछि।

एहि निष्कर्षक आधार उपन्यासक वास्तविक घटनाक्रम अछि, कोनो बाहरी सिद्धान्तकेँ कथा पर बलपूर्वक लागू करबाक इच्छा नहि। आख्यानशास्त्रमे कथा-घटना आ ओकर कथन-रूप अलग चिन्हला पर असङ्गति केना काम करैत अछि, से स्पष्ट होइत अछि। दू अलग प्रविष्टि कथासंसारक एकरे सत्य नहि; दू अलग वक्ता अनिवार्यतः झूठा नहि; दोसर कालरेखाक सहउपस्थिति स्वतः ऐतिहासिक निरन्तरता नहि। असङ्गतिक अर्थ घटनाक सन्दर्भ, कथावाचकक सूचना, पात्रक सीमित ज्ञान आ पाठकक अपेक्षाक बीच निर्मित होइत अछि।

आरम्भक मृत्यु-पंजी आ अन्तिम मृत्युक असमानता

अध्याय १ “मृतकक रसोइ”मे सरिता जीवित छथि, मुदा हुनका नामपर मृत्यु-सूचना पहुँचैत अछि। ओ चूल्हि सम्हारैत छथि, सम्बन्ध निभबैत छथि आ अपन अस्तित्वक प्रश्न प्रशासनसँ उठबैत छथि। एतए असङ्गति घटना-संसारक भीतर बनल अछि : लिखल मृत्यु आ जीवित देह सह-अस्तित्वमे छथि। कथानक एही दूरीसँ गति पबैत अछि। पाठक पहिने फैसला नहि पबैत जे त्रुटि के कएलक; पाठककेँ विभिन्न जीवनकथा, प्रपत्र, मौखिक बात, निजी पन्ना आ जिम्मेवारीक अलग रूप पढ़बाक पड़ैत अछि।

अध्याय २१६ “कुरुक्षेत्रम्‌ अन्तर्मनक” मे रसोइ फेर आबैत अछि, मुदा आब नैराक मृत्यु वास्तविक अछि। पहिल अध्यायक गलत मृत्यु-सूचना आ अन्तिम अध्यायक अपरिवर्तनीय शोककेँ एक समान प्रतीक बना देब नैतिक आ कलात्मक दुनू रूपसँ त्रुटि हएत। पहिल कथा दुरुस्त होएब योग्य नाम-स्थिति पर प्रश्न करैत अछि; अन्तिम कथा ओहि क्षतिक सामना करबैत अछि जकरा कियो सुधार-पत्र वापस नहि आनत। कथात्मक आवर्तनक शक्ति एके वस्तु—भात, चूल्हि, थारी—क भीतर बदलि गेल अर्थसँ बनैत अछि। समान दृश्य वस्तुतः असमान परिस्थिति देखबैत अछि।

अभिलेखीय विसङ्गति : रहस्यक निर्माण, निराकरणक विलम्ब

“सत्ताइस नाम”मे संख्या पाठककेँ सम्पूर्ण सूची प्राप्त भेलाक भ्रम दैत अछि, मुदा छब्बीस नामक प्रति आ एक बन्द नामक निर्णय अलग-अलग काज करैत अछि। ई भेद गणनाक गलती नहि; सहमति, साक्ष्य आ सार्वजनिक प्रसारक बीच अलग समयक कथा अछि। तह खोलबाक अनुमति टारल गेल अछि; जाँचक इच्छा आ नामक स्वामित्व एके पात्रक हाथमे नहि। एहि प्रतिरोधसँ पाठकीय जिज्ञासा स्थगित होइत अछि, मुदा ओ स्थगन कथात्मक नैतिकताक रूप ग्रहण करैत अछि।

“चौदह विसंगति”, “सुविधाजनक त्रुटि”, “मूल पन्ना” आ अनेक हस्ताक्षर-सम्बन्धी अध्यायमे प्रतिलिपि आ मूलक अन्तर कहानीक प्रस्थान होइत अछि। एकहि नामक बदलल वर्तनी, एकहि यात्राक उलटल समय, एके व्यक्ति पर अनेक प्रशासनिक दर्जा—एहि सभकेँ निश्चित अपराधक पूर्वघोषणा नहि मानल गेल अछि। अलग अभिलेख पाठकक जानकारी बढ़बैत अछि, मुदा सत्यक स्थान अनिवार्यतः स्थिर नहि करैत। जे कथा-सूचना प्रारम्भमे निर्णायक लगैत अछि से दोसर दृश्य आएलापर आंशिक बनि सकैत अछि। एहि अर्थमे विरोधाभास कथा-विस्तारक यन्त्र बनैत अछि।

कथनकालक विस्थापन आ महाकाव्यक आधुनिक पुनर्पाठ

प्राचीन महाभारत, रामायण आ भामती–उदयन–गङ्गेशक प्रसंग आधुनिक विदेहपुरक रेखीय इतिहासक भीतर सामान्य स्मृतिवापसी जकाँ व्यवस्थित नहि छथि। अनेक प्रसंग स्वतन्त्र दृश्यरूपमे उपस्थित होइत छथि, जकर बाद आधुनिक पात्रक जीवन प्रवेश करैत अछि। एहि अध्यायीय काटसँ पाठककेँ दूटा अलग कालक अनुभव एक सँग धारण करबाक पड़ैत अछि। प्राचीन पात्र आधुनिकक प्रत्यक्ष पूर्वज, पुनर्जन्म अथवा एकरे नामक जैविक निरन्तरता छथि—एहन दावा प्रत्येक दृश्यसँ सिद्ध नहि होइत।

ई विधि साम्यक संग दूरी सेहो रचैत अछि। द्रौपदीक प्रश्नक अर्थ आधुनिक स्त्रीक श्रम वा सहमतिक प्रश्नमे प्रतिध्वनित भऽ सकैत अछि, मुदा ओहिसँ ऐतिहासिक परिस्थिति समान नहि भऽ जाइत। कथन-क्रमक स्तर पर भिन्न युगक दृश्य एक-दोसराकेँ आलोचनात्मक आलोक दैत अछि; कथाक वस्तुगत कालमे ओ अलग रहैत अछि। असङ्गति एतए कालदोष नहि, द्विकालीन संयोजनक शिल्प अछि—जाबत धरि कथा अपन दुनू कालक पृथक् व्यक्तित्व सुरक्षित रखैत अछि।

दृष्टिकेन्द्रक बदलैत निकटता आ कथावाचकक सीमित सर्वज्ञता

उपन्यासक तृतीयपुरुष कथावाचक सरिताक घरेलू दिनचर्या, नैराक अनुसंधान, फकीराक चौक, नाविकक माप, बुनकरक श्रम आ गीतगबैयाक अनुभवक पास अलग-अलग दूरीसँ जाइत छथि। प्रत्येक दृश्य एकरे केन्द्रसँ नहि देखल जाइत। जकरा सरकारी पन्नामे एक शब्दमे चिन्हल गेल अछि, ओकर अपन दृष्टिमे परिचय अनेक सम्बन्धक मिलान अछि। कथावाचकक जानकारी विस्तृत भेलो पर पात्रक अविश्वास, स्मृति वा इन्कार सम्पूर्ण मिटैत नहि।

एहि कारण विरोधी अनुभवकेँ एक सर्वसम्मत कथनमे बदलि देब पाठकक उत्तरदायित्व समाप्त करत। उपन्यासक सशक्त दृश्य ओ छथि जतय ककरो लिखल निष्कर्ष दोसर व्यक्तिक उपस्थितिसँ बदलैत अछि। कमजोरी तखन

प्रकट होइत अछि जखन अनेक पात्र एक-जेकाँ सुव्यवस्थित स्पष्टीकरण दैत छथि; ताहि क्षण बहुस्वरता जीवन्त असहमतिक बदला पूर्वतैयार तर्कक प्रतीत होइत अछि। असङ्गतिक सौन्दर्य-शक्ति एहि सीमा सँ बचला पर निर्भर अछि।

बोलल वाक्य, अनपठाओल पत्र आ मौनक कथा

सार्वजनिक अभिलेख, निजी कापी, धमकीक फोन, नामक पर्ची, अनपठाओल पत्र आ गीतक स्वर—ई सभ कथाभितर कथनक अलग माध्यम छथि। लिखल शब्दक स्वामित्व आ सुनल वाक्यक विश्वास एके नहि। अध्याय २१४ “नैराक खाली जगह”मे अनुपस्थित नैराक नामपर काल्पनिक प्रत्युत्तर गढ़बाक इच्छा अस्वीकार होइत अछि। ई क्षण असङ्गतिक नकारात्मक रूपकेँ उघारैत अछि : शोकग्रस्त व्यक्तिक इच्छा आ मृतकक सम्भावित वाणी बीच जे रिक्त स्थान अछि, ओकरा कल्पना-सत्यक रूपमे भरल नहि जा सकैत।

लव–कुशक पाठ, लोकगीत, मृणालक प्रश्न आ मैथिलीक भाषा-सम्बन्धी निर्णयमे कथनक अधिकार पुनः पुनः बाँटल जाइत अछि। कोन व्यक्ति ककर कथा कहि सकैत अछि, के अनुमोदन देत, आ ककर नाम पाठमे बचत—ई सभ कृतिमे औपचारिक विषय बनैत अछि। कथाक भीतर कहानी सुनबाक, लिखबाक आ संशोधित करबाक दृश्य उपन्यासकेँ अपन निर्माण-पद्धति पर विचार करबैत अछि। एतए भाषा केवल घटनाक सूचना नहि, स्वयं विवादक सक्रिय स्थल अछि।

अधूरा परिणाम आ अनिर्णीत अन्तक शिल्प

उपन्यास बारम्बार आवेदन प्राप्त होएब आ अन्यायक निवारण होएबमे भेद करैत अछि। मजदूरीक आदेश पारित भऽ सकैत अछि, मुदा रकम खातामे नहि पहुँचैत; स्थल-नक्शा स्वीकृत होइत अछि, मुदा नदीक बहाव बदलैत अछि; कार्यक्रमक अनुमति मिलैत अछि, मुदा कलाकारक सम्पूर्ण देय बाकी रहैत अछि। एहन उदाहरणमे अपूर्णता कथानकक त्रुटिपूर्ण समापन नहि, सामाजिक क्रियाक अलग-अलग गतिक चित्रण बनि सकैत अछि।

अध्याय २१५ “वितरित अभिलेख”मे अनेक प्रतिक वितरण लोकस्वामित्वक साधन अछि, मुदा अधिक प्रतिमे त्रुटि फैलबाक सम्भावना सेहो बचल अछि। बहुमत निर्णयक बादो अल्पमतक आपत्ति नष्ट नहि होइत। अध्याय २१६ मे साझा भातक बीच भुगतानक गलती अनिर्णीत रहैत अछि। कृति जँ सभ प्रश्नक एकै बेर समाधान कऽ देने रहितय, तँ आरम्भक विरोधाभास केवल शेषमे दुरुस्त होएब योग्य भूल बनि रहितय। अनिर्णीत अन्त ओकरा समाजक निरन्तर उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि।

वस्तु-आवर्तन, ध्वनि आ कथात्मक अर्थक उलटफेर

पानि, भात, बाँस, चाभी, कपड़ाक टुकड़ा, रंगीन पन्ना, नाव, ढोलक आ चूल्हि बारम्बार अबैत अछि। प्रत्येक वस्तु दोसर उपस्थिति पर ओकर पहिल अर्थ जस-के-तस नहि रखैत। नाव पहिने यात्रा, बादमे जोखिमक माप आ कखनो साझी जिम्मेवारीक स्थल होइत अछि। चाभी निजता सुरक्षित रखबाक उपकरण सेहो अछि आ अधिकार साझा करबाक विषय सेहो। वस्तुक पुनरावृत्तिसँ कथा अनेक अध्यायमे स्मृतिक एक लय बनबैत अछि।

एहि लयमे असङ्गति अर्थ-परिवर्तनक साधन अछि : एके वस्तु अलग पात्रक हाथमे अलग नैतिक समस्या रचैत अछि। वस्तुकेँ एकरे निश्चित प्रतीकमे बन्द करब एहि बहुआयामी अर्थक विरोधी हएत। सरिताक थारी उपन्यासक समापनमे केवल विजयक घोषणा नहि; भोजनक श्रम, अनुपस्थित व्यक्तिक स्मृति, आ अगिला दिनक अपूर्ण कामक संग उपस्थित भऽ पाठककेँ अनेक समय एकसाथ अनुभव करबैत अछि।

विरोधाभास, विरोधी बयान आ वास्तविक शिल्पगत दोष : आवश्यक भेद

कथाभितरक विरोधाभास आ पाठक विरुद्ध लेखकक अनिच्छित असङ्गति अलग कसौटी माँगैत अछि। जँ मूल अध्यायमे दू पात्र अलग समय लिखैत छथि, आ दृश्य एहि अन्तरक कारण अथवा परिणामक जाँच करैत अछि, तँ ई कथात्मक संघर्षक अङ्ग अछि। जँ कोनो घटना असिद्ध अछि आ कथावाचक स्वयं ओ अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि, तँ ओकरा त्रुटि नहि कहल जाएत। मुदा जँ एके दृश्यमे वस्तु, वक्ता, समय अथवा कारण बदलि जाए आ कथा ओ परिवर्तनकेँ कतहु पहचानय नहि, तँ खाली ‘बहुस्वरता’ कहि ओकर बचाव नहि कएल जा सकैत।

पहिल प्रकारक अन्तरकेँ पाठक देखैत अछि, पात्र अनुभव करैत अछि आ कथा ओकर परिणति पर काम करैत अछि। दोसर प्रकारक अन्तर पाठककेँ बिना कारण कथा-संसारक भरोसासँ बाहर फेकैत अछि। कृति कतेको ठाम प्रमाण, निजता, श्रेय आ न्यायक भेद अत्यन्त स्पष्ट रूपेँ समझबैत अछि; एहि अति-व्याख्याक कारण पात्रक स्वतन्त्र आवेग कमि सकैत अछि। प्राचीन दृश्य आधुनिक दावाक बहुत सटीक समरूपता बनलाक समय ऐतिहासिक भिन्नताक संवेदना सेहो धुँधला पड़बाक खतरा अछि। एकटा प्रामाणिक समीक्षा एहि सीमासभकेँ स्वीकार कऽ मात्र रचनात्मक असङ्गतिक उपलब्धि चिन्हैत अछि।

पाठकीय कार्य : असम्भव सम्पूर्णताक बदला सजग सहपाठ

असङ्गति कृतिमे पाठकसँ अतिरिक्त श्रम माँगैत अछि। जीवन-खाता आ वास्तविक देह, निजी पत्र आ सार्वजनिक प्रति, मिथकीय उद्घोष आ आधुनिक अदालत-प्रपत्र, स्मरण आ तथ्य—एक-दोसराक स्थान नहि लऽ सकैत। पाठककेँ तय करबाक पड़ैत अछि जे कोन सूचना प्रत्यक्ष दृश्यसँ भेटल, कोन पात्रक कथनसँ, कोन दस्तावेजसँ, आ कोन भविष्यक सम्भावना मात्र अछि। एके पूर्ण कथा तत्काल नहि भेटब पाठकक कमी नहि; उपन्यास पाठकसँ अधूरा ज्ञानक संग नैतिक निर्णयक अभ्यास करबैत अछि।

मुदा पाठकसँ सक्रियता माँगबाक नामपर मूल घटनाक अस्पष्ट निर्माणक जिम्मेवारी सम्पूर्ण रूपेँ पाठक पर नहि छोड़ल जा सकैत। कथाक सुव्यवस्थित पुनरावृत्ति, वस्तुक विश्वसनीय स्मृति, विरोधी कथनक सन्दर्भ आ समयक ज्ञेय संकेत आवश्यक छथि। “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”क सफलताक स्थान ओहि ठाम अछि जतय असङ्गति पाठककेँ अधिक सजग करैत अछि, कम विश्वस्त नहि।

निष्कर्ष : कथाक भीतरक कुरुक्षेत्र

२१६ अध्यायक यात्रा एक व्यक्तिक विजयक सुस्पष्ट आख्यान बनबाक बदला सम्बन्ध, अभिलेख, श्रम, मृत्यु आ स्मृतिक परस्पर अपूर्ण इतिहास बनैत अछि। आरम्भक गलत मृत्यु-दर्ज, मध्यक नाम-पन्ना आ लोकस्वामित्वक विवाद, अन्तक वितरण-पद्धति आ नैराक असंशोधनीय अनुपस्थिति—ई सभ मिलि असङ्गतिक बहुरूप निर्मित

करैत अछि। एक तहमे कृति अन्यायक दस्तावेजी सुधार चाहैत अछि; दोसर तहमे ओ मानैत अछि जे मानव-हानि, मौन, व्यक्तिगत अनिच्छा आ जटिल सामाजिक समय कोनो सम्पूर्ण कागजी निष्कर्षमे नहि समाइत।

तेँ एहि उपन्यासमे असङ्गति कथनक विधि तखन बनैत अछि जखन ओ दृश्यगत, कालगत, दृष्टिगत वा वाचिक अन्तरक रूपमे रचल जाए आ पाठक ओकर कलात्मक कार्य पहचानि सकय। असङ्गति अपने आपमे गुण नहि, मुदा गुणकारी कथा ओहि अन्तरकेँ प्रश्न, विराम, प्रतिरोध आ स्मृतिक शिल्प बना सकैत अछि। सरिताक अन्तिम रसोइ सभ विवाद समाप्त नहि करैत; ओ जीवित लोकक फेरसँ जीवन आरम्भ करबाक अवकाश बचबैत अछि। एहि अवकाशमे उपन्यासक ‘अन्तर्मनक कुरुक्षेत्र’ अपन सर्वाधिक मार्मिक आख्यानात्मक अर्थ पबैत अछि।

मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र : सिद्धान्त आ प्रयोग

गजेन्द्र ठाकुर

खण्ड-१ — सिद्धान्त

खण्ड-२ — कथाक धार, समयक घाट

मैथिली उपन्यासमे आख्यान-विधान : कथा-आख्यान-विधान : परम्परा, सिद्धान्त आ पाठ

[मैथिलीक सभसँ पैघ उपन्यास “गोहि सभक बीच जलसमाधि”]

खण्ड-३ — आख्यानक अन्तर्मन

मैथिली उपन्यासक कथा-विमर्श : कथा-आख्यान-विधान परम्परा, सिद्धान्त आ पाठ

[मैथिलीक दोसर सभसँ पैघ उपन्यास “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक”]

विदेह — स्कैन करू

www.videha.co.in/

videha-ejournal.github.io/videha/